

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

क्रम संख्या

8295

काल नं०

020-5 312

खण्ड

संस्कृत-हिन्दी कोश

(सप्त हजार नये शब्दों तथा लेखक द्वारा सफन्त छन्द एव साहित्यिक तथा भारत के प्राचीन इतिहास में प्राप्त भौगोलिक नामों के परिशिष्टों सहित)

लेखक
बामन शिवराम आष्टे

मो ती लाल ब नार सी दा स
दिल्ली :: पटना :: बाराबन्सी

● श्री सी लाल बनारसीदास
बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-७
चौक, वाराणसी-१ (उ० प्र०)
अधोक राजपथ, पटना-४ (बिहार)

प्रकाशक के आधीन सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल्य पन्द्रह रुपए
प्रथम संस्करण १९६६
द्वितीय संस्करण १९६९

श्री सुन्दरलाल जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७
द्वारा प्रकाशित तथा श्री शान्तीलाल जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-७ द्वारा मुद्रित

स्वर्गीय श्री वामन शिवराम आप्टे द्वारा संकलित संस्कृत-इंग्लिश तथा इंग्लिश-संस्कृत कोशों से सभी लोग परिचित हैं। हमने उपर्युक्त दोनों कोशों के बहुत सस्ते संस्करण जिनके मूल्य इस समय बीस रुपए प्रति सेट, जिसका पहले ३२ ६० मूल्य था—प्रकाशित किए। लोगों ने इनको कितना अपनाया इसका ज्वलंत उदाहरण इन बात से मिलता है कि तीन वर्षों के अन्दर ही इनके बीस-बीस हजार के संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गये और इनकी मांग दिन-प्रति-दिन बढ़ती ही जा रही है।

संस्कृत से हिन्दी में अभी तक कोई अच्छा कोश उपलब्ध नहीं था। जो दो-एक उपलब्ध भी हैं उनमें बहुत थोड़े ही शब्दों को स्थान दिया गया है जिससे विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं। इनके मूल्य भी इतने अधिक हैं कि साधारण संस्कृत के विद्यार्थी को खरीदना कठिन-सा हो जाता है। हम लोगों को इसका अभाव बहुत दिनों से खटक रहा था। अन्त में आप्टे के 'स्टुडेंट्स संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी' का ही अनुवाद प्रस्तुत करने की योजना हमलोगों ने निश्चित की। इस संस्कृत-हिन्दी कोश में लगभग कुल सत्तर हजार शब्द हैं जिनमें लगभग दस हजार शब्द मये मिये से लिए गये हैं। इन्हें स्वर्गीय आप्टे ने अपने संस्करण में नहीं लिया था। इस तरह यह कोश एक बहुत बड़ी कमी को पूरा करता है।

दिल्ली

१-३-६६

प्रकाशक

दो शब्द

प्रस्तुत 'संस्कृत-हिन्दी कोश' श्री वी० एस० आप्टे की विख्यात 'दी स्टुडेंट्स संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी' का राष्ट्रभाषा हिन्दी में सर्वप्रथम अनुबाद है।

आप्टे की 'डिक्शनरी' का छात्रवृन्द में सर्वत्र सर्वाधिक मान है। इसी से इसकी उपादेयता निर्विवाद और सर्वसम्मत है।

प्रस्तुत हिन्दी-संस्करण में तीन विशेषताएँ हैं। एक तो प्रायः सभी मूल शब्दों की व्युत्पत्ति इसमें दे दी गई है—जिससे यह छात्रों के लिए और भी अधिक उपयोगी बन गया है। दूसरे विद्यार्थियों की सामान्य जानकारी के लिए उपसर्ग और प्रत्यय का संक्षिप्त दिग्दर्शन करा दिया गया है। तीसरी बात यह है कि इस कोश के अन्त में परिशिष्ट के रूप में शब्दों का नया संकलन जोड़ दिया गया है। इसीलिए यह कोश अब न केवल छात्रवृन्द के लिए ही उपादेय है अपितु संस्कृत भाषा के सभी प्रेमी पाठकों के लिए अपरिहार्य हो गया है।

अनुबादक

भूमिका

[कोशकार का श्रवण आक्षेप]

यह संस्कृत-इंग्लिश कोश जो मैं आज जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, न केवल विद्यार्थी की बिर-प्रनीक्षण आवश्यकता को पूरा करता है, अपितु उसके लिए यह सुख भी है। जैसा कि इसके नाम में प्रकट है वह हाई स्कूल अथवा कॉलेज के विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार किया गया है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर मैंने वैदिक शब्दों को इसमें सम्मिलित करना आवश्यक नहीं समझा। परन्तु मैं इस विषय में वेद के पश्चात्ती साहित्य तक ही सीमित रहा। परन्तु इनमें भी रामायण, महाभारत पुराण, स्मृत, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदान्त, भौतशास्त्र, व्याकरण, अलंकार, काव्य, कल्पित विज्ञान, ज्योतिष, मनीष आदि अनेक विषयों का समावेश हो गया है। वर्तमान कोशों में से बहुत कम कोशकारों ने ज्ञान की विविध शाखाओं के तकनीकी शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हाँ, वास्तव्य में इन प्रकार के शब्द पाए जाते हैं, परन्तु वह भी कुछ अंशों में ही सीमित हैं। विशेष रूप में उस कोश में जो मुख्यतः विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए तैयार किया गया हो, ऐसी भाषा नहीं की जा सकती। यह कोश तो मुख्य रूप से गद्यरचना, काव्य नाटक आदि कृतियों के ही सीमित है, यह बात दूसरी है कि व्याकरण, न्याय, विधि, गणित आदि के अनेक शब्द भी इसमें सम्मिलित कर लिये गये हैं। वैदिक शब्दों का अभाव इस कोश की उपादेयता का किसी प्रकार तम नहीं करता, क्योंकि स्कूल या कॉलेज के साधारण काल में विद्यार्थी की जो सामान्य आवश्यकता है उसको यह काम भौतिकी-रासायनिक कर्तव्यशास्त्रों में कुछ अधिक ही पूरा करता है।

काव्य के अन्तर्गत, शब्दों के विभिन्न अर्थों पर प्रकाश डालने वाले उद्धरण, सदृश उदाहरणों से लिये गये हैं कि-विद्यार्थी को। परन्तु है। हो सकता है कुछ आवश्यकताओं में ये उद्धरण आवश्यक प्रतीत न हों, फिर भी संस्कृत के विद्यार्थी का विशेषतः आरम्भिक ही उपयोग पर्यायवाची या समानार्थक शब्द इन्होंने में विवेचन ही उपयोगी प्रमाणित होंगे।

दूसरी ध्यान देने योग्य इस काम की विशेषता यह है कि अत्यन्त आवश्यक तकनीकी शब्दों की, विशेषतः न्याय, अलंकार, और नाटकशास्त्र के शब्दों की—व्याख्या इसमें यथा स्थान दी गई है। उदाहरण के लिए—प्रश्नोत्तर प्रथा, उचिततः मन्त्र, मीमांसा रक्षाविभाव, प्रवेशक, रत्न, वाक्य आदि। जहाँ तक आवश्यकता या सम्भव है, मैंने मुख्य रूप में काव्य प्रकाश वा ही प्राथम्य दिया है—एक ही कही-उही शब्दालोक, कुशलवाचन और स्वभाववाचक वा भी उपयोग किया है। नाटकशास्त्र के लिए साहित्यिक शब्दों की मुख्य गणना है। इस प्रकार सम्पूर्ण गद्यरचना लोकोक्ति अथवा विविध अभिव्यक्तियों को भी यथा स्थान रखता है। उदाहरण के लिए—गम, सेतु, रत्न, मयूर, दाह आदि। आवश्यक शब्दों से सम्बद्ध पौराणिक उपाख्यान भी यथा स्थान दिये हैं उदाहरणतः दम्भे—दंड, कर्णिकर, प्रह्लाद आदि। न्यूनतम प्रायः नहीं दी गई—हाँ अत्यन्त विविध तथा अतिविशेष, ज्ञान, हृषीकेश आदि शब्दों में इसका उल्लेख किया गया है। तकनीकी शब्दों के अतिरिक्त अन्य आवश्यक शब्दों के विषय में दिया गया विवरण विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—उदा० मयूर, मानव वेद इत्यादि। कल आवश्यक लोकोक्ति 'गद्य' शब्द के अन्तर्गत दी गई हैं। प्रस्तुत काल का और भी अधिक उदाहरण बनाने की दृष्टि में अत्र मैं तीन परिचित भी दिये गये हैं। पहला परिचित

छन्दों के विषय में है—इसमें गद्य, भाषा, तथा परिभाषा आदि सभी आवश्यक सामग्री रख दी गई है। इसके तैयार करने में मुख्यतः वृत्तरेखाकर और छन्दोमञ्जरी का ही आशय लिया है। परन्तु उन छन्दों को भी जो भाषा, भारवि, दण्डी, अथवा भट्टि ने अतिरिक्त रूप से प्रयुक्त किया है, इसमें रख दिया गया है। हमारे परिशिष्ट में कालिदास, भवभूति और बाण आदि सस्कृत के महाकावियों की कृति, तथा जम्बू बिबरन आदि दिया गया है। इस विषय में मैंने मैक्समूलर की 'इंडिया' तथा बन्लमदेव की मुभाषितावली की भूमिका से जो कुछ ग्रहण किया है उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। नीतरा परिशिष्ट भौगोलिक नामों का मण्ड है, इसमें मैंने कनिष्कद्वय के 'एग्जेंट व्याघ्राकी' से तथा इल्लिस सस्कृत विश्वानुरी में उपसृष्ट श्री बोक्क के विषय से बड़ी सहायता प्राप्त की है तदर्थ मैं हृदय से उनका आभार मानता हूँ।

कोश के अन्तर्गत का ज्ञान आगे दिये गये "कोश के देखने के लिए आवश्यक निदेश" से सभी-भौति हो सकेगा। मैं केवल एक बात पर आपका ध्यान खीनना चाहता हूँ कि मैंने इस कोश में सर्वत्र 'अनुस्वार' का प्रयोग किया है। व्याकरण की दृष्टि से चाहे यह प्रयोग सर्वथा गलत न हो, तो भी छात्रों की दृष्टि से सुविधाजनक है। और मुझे विश्वास है कि कोश की उपयोगिता पर इसका कोई दुःप्रभाव नहीं पड़ना है।

समाप्त करने से पूर्व मैं उन सब विविध कृतियों का ज्ञान हूँ जिनमें इसको तैयार करने में मुझे सहायता मिली। इसके लिए सबसे पहली रचना प्रोफेसर तारानाथ तर्कबाबुवरति की 'वाचस्पत्य' है। इन काश में दी गई सामग्री का अधिकार उसी से लिया गया है जबकि कई स्थानों पर संशोधन भी करना पड़ा है। कर्णधारा सस्कृत-इंग्लिश विश्वानुरी में जो शब्द, अर्थ और उद्गरण उपलब्ध नहीं हैं वे इसी कोश में लिये गये हैं। दूसरा कोश 'दी सम्पूत-इंग्लिश-विश्वानुरी' प्रो० मोनियर विलियम्स का है जिसका मैं बड़ा कर्णी हूँ। इस कोश का मैंने पर्याप्त उपयोग किया है। अतः मैं इस सहायता का आभारी हूँ। अन्त में मैं 'ब्रह्मन् बटंरुष' के कर्ता डॉ० राय और बौधालक को धन्यवाद देने बिना नहीं रह सकता। इनके कोश में अनेक उद्गरण और मन्त्र हैं—परन्तु अधिकतर वैदिक साहित्य से लिये गये हैं। इनके विपरीत मैंने अधिकतर उद्गरण अपने उन मन्त्र से लिये हैं जो भवभूति, जगन्नाथ पतिन, राजशेखर, बाण, काम्य प्रकाश, गिराधारावध, किरानाजुनीय नैषधचरित, लकर-माध्य और वेणोसहार आदि की सहायता से तैयार किया गया है। इनके अतिरिक्त उन संस्कृतज्ञों और सम्पादकों का भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनकी सहायता यदा-कदा प्राप्त करता रहा हूँ।

अन्त में मुझे विश्वास है कि 'स्टुडेंट्स सस्कृत-इंग्लिश विश्वानुरी' केवल उन विद्यार्थियों के लिए ही उपयोगी सिद्ध नहीं होगी जिनके लिए यह तैयार की गई है—बल्कि सम्पूर्ण के सभी पाठक इससे लाभ उठा सकते हैं। कोई भी कृति चाहे वह कितनी भी भावधानों में बची न तैयार की गई हो—संबंधा निर्दोष नहीं होती। मेरा यह कोश भी कोई अपवाद नहीं है। और विशेष रूप से उस अवस्था में जबकि इसे छात्रों की दीक्षणा की गई हो। अतः मैं उन व्यक्तियों से, जो इस कोश को अपनाकर मेरा सम्मान करें, बड़ा निवेदन करता हूँ कि जहाँ कहीं इसमें वे कोई अशुद्धि देखें, अथवा इसके सुधारने के लिए कोई उत्तम सुझाव देना चाहें, मैं मैं दूसरे संस्करण में उनकी समावेश करने में प्रसन्नता अनुभव करूँगा।

पूना, १५ फरवरी, १८९०।

बी० ए० आठे

कोश देखने के लिए आवश्यक निर्देश

१. शब्दों को देवनागरी बर्णों में अकारादि क्रम से रक्ता गया है।
२. पुल्लिङ्ग शब्दों का कर्त्कारक एकवचन रूप लिखा गया है, इसी प्रकार नपुंसक लिङ्ग शब्दों का भी प्रथमा विभक्ति का एकवचन रूप लिखा है। जो शब्द विभिन्न लिङ्गों में प्रयुक्त होना है, उनके आगे स्त्री०, या पुं० एवं नपुं० लिखकर दर्शाया गया है।
विभेदक शब्दों का प्रातिपदिक रूप रखकर उसके आगे वि० लिख दिया गया है।
३. जो शब्द क्रियाविभेदक के रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा विभेदक या तथा विभुत्वात् होते हैं उन्हें उस तथा वा विभेदक के अन्तर्गत कोष्ठक के अन्तर् रक्ता गया है जैसे 'पर' के अन्तर्गत परेभ या परे अर्थात् 'समीप' के अन्तर्गत समीपन या समीपे।
४. (क) शब्दों के केवल भिन्न-भिन्न बर्णों को पृथक् अक्षरी क्रमांक देकर दर्शाया गया है। सामान्य अर्थात्मात को स्पष्ट करने के लिए एक से अधिक पर्याय रक्ते गये हैं।
(ख) उद्भूत प्रमाणों के उल्लेख से देवनागरी के शब्दों का प्रयोग किया गया है।
५. जहाँ तक हो सका है शब्दों का प्रयोगाधिक्य तथा बहुत्व की दृष्टि में क्रमबद्ध किया गया है।
६. प्रत्येक मूल शब्द की सलिल व्युत्पत्ति [] कोष्ठक में दे दी गई है जिसमें कि शब्द का यथाार्थ ज्ञान हो सके। प्रत्यय और उगम की सामान्य जानकारी के लिए—सामान्य प्रत्यय-सूचि साथ सलन है।
७. (क) समान शब्दों को मूल शब्द के अन्तर्गत ही पढ़ी रेखा (-मूल शब्द) के पश्चात् रक्ता गया है, जैसे 'अग्नि' के अन्तर्गत—अग्नि, 'अग्निहोत्र' प्रकट करना है।
(ख) समान शब्दों में—मूल शब्दों के पश्चात् उत्तरम्बद्ध—को मिलाने में सविध के नियमानुसार जो परि-वर्तन होते हैं उन्हें पाठक का स्वयं ज्ञाने का अभ्यास होना चाहिये—यथा 'पूर्व' के साथ 'अपर' को मिलाने में 'पूर्वपर', 'अवय' के आगे 'गति' को मिलाने में 'अधोपति' बनता है। कई स्थानों पर उन समान शब्दों को जो सारमत्ता में न समझे जा सकें पूरा का पूरा कोष्ठक में लिख दिया गया है।
(ग) जहाँ एक समान शब्द ही ध्रुवने समान शब्द के प्रथम लक्ष्य के रूप में प्रयुक्त हुआ है वहाँ उस पूर्वम्बद्ध को शीर्ष रेखा के साथ 'तथा' कर दर्शाया गया है जैसे—द्विज (समस्त शब्द) में 'इन्द्र' या 'राज' आदना है तो लिखें—'इन्द्र,—'राज, और इनमें परेने 'द्विजेत्र' या 'द्विजराज'।
(घ) सभी कर्त्क सामान्यरूप (उदा० कृतोपम, यदन्वित, हृदिष्पृष् आदि) शब्द पृथक् रूप में उच्चारण रक्ते गये हैं। मूल शब्दों के साथ उन्हें नहीं आडा गया।
८. कृदन्त और लटित प्रत्ययों में मूल शब्दों की मूल शब्दों के साथ न रखकर पृथक् रूप में उच्चारण रक्ता गया है। कर्मण 'कर्मकर्म' 'अधकर' 'अन्वयय' 'प्राप्तनन' और 'हितवत्' आदि शब्द 'कृत' और भय आदि मूल शब्दों के अन्तर्गत नहीं लिखेने।
९. स्त्रीलिङ्ग शब्दों को प्रायः पृथक् रूप में लिखा गया है, परन्तु अनेक स्थानों पर पुल्लिङ्ग रूप के साथ ही स्त्री-लिङ्ग रूप दे दिया गया है।
१०. (क) धातुओं के आगे आ० (आत्मनेपदी), पर० (परस्मैपदी) तथा उभ० (उभयपदी), के साथ लल-खोनक चिह्नन भी लगा दिये गये हैं।
(ख) प्रत्येक धातु का पर, लल, लकार () कोष्ठ के अन्तर् धातु के आगे रूप के साथ दे दिया गया है।
(ग) धातु के लट् लकार का, प्रथम पुरुष का एक बर्णनात् रूप ही लिखा गया है।

(घ) धातुओं के साथ उनके उपनग्युक्त रूप अकारादिभ्य से धातु के अन्तर्गत ही दिखलाये गये हैं ।

(ङ) पद, वाच्य, विशेष अर्थ अथवा उपसर्ग के कारण धातुओं के परिवर्तित रूप () कोष्ठकों में दिखलाये गये हैं ।

११. धातुओं के लभ्य, अनीय, और य प्रत्यययुक्त कृदन्त रूप प्रायः नहीं दिये गये । शत्रुन्त और शानजन्त विशेषण तथा ता, त्व वा य प्रत्यय के लगाने से बने भाववाचक समा शब्दों को भी पुष्कल रूप से नहीं बिना गया । ऐसे शब्दों के ज्ञान के लिए विद्यार्थी को व्याकरण का आश्रय लेना अपेक्षित है ।
यहाँ ऐसे शब्दों की रूपरचना या अर्थों में कोई बिगोचना है उन्हें यथास्थान रच दिया गया है ।
१२. शब्दों से संबद्ध पौराणिक अन्त कथाओं को शब्दार्थ के यथार्थ ज्ञान के लिए — () कोष्ठकों में संक्षिप्त रूप से रक्खा गया है ।
१३. जो शब्द या संबद्ध पौराणिक उपाख्यान मूल कोश में स्थान न पा सके उन्हें परिशिष्ट के रूप में कोश के अन्त में जोड़ दिया गया है ।
१४. संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त छन्दों के ज्ञान के लिए, तथा अन्य भौगोलिक वाच्य एवं साहित्यकारों की नामात्म्य जानकारी के लिए कोश के अन्त में परिशिष्ट जोड़ दिये गये हैं ।

विशेष अक्षरव्यय

छात्रों की भावस्थिरता का विशेष ध्यान रखकर इन शीघ्र भी अधिक उत्पादक बनाने के लिए प्रायः सभी मूल शब्दों के साथ उनकी मूलिन् श्रुतियाँ दे दी गई हैं।

शब्दों की रचना में उपसर्ग और प्रत्ययों का बड़ा महत्त्व है इनकी पुरी जानकारी ता ज्ञाकारण के बढ़ने में ही होगी। फिर भी इसका यहाँ दिग्दर्शन अत्यन्त लाभदायक होगा।

उपसर्ग—“उपसर्गेषु शब्दार्थो बलादन्वेष्य नीयते। प्रशास्यतेन मन्त्राविहास्यपरिहारम्॥”

उपसर्ग शब्दों के पूर्व लग कर उनके अर्थों में विभिन्नता ला देने हैं —

उपसर्ग	उदाहरण	उप	उपसर्गम्
अभि	अभ्युपेक्षन्	दुष्	दुष्प्रवचनम्
आधि	आधिष्ठानम्	दुः	दुर्भाव्यम्
अनु	अनुसन्धनम्	नि	निन्दितः
अप	अपवसा	निम्	निष्कारणम्
अधि	अधिष्ठानम्	निर्	निर्धन
अभि	अभिधापणम्	पर	पर्यायः
अव	अवतरणम्	परि	परिहासक
आ	आगमनम्	प्र	प्रबन्ध
उत्	उत्थाव उद्गमनम्	प्रति	प्रतिक्रिया
		वि	विज्ञानम्
		सु	सुकर

अन्वय—यागुत्रा के परधान् लगाने वाले प्रत्यय कुन् प्रत्यय कहलाने हैं। परदा के परधान् लगाने वाले प्रत्यय मडिडन कहलाने हैं।

द्वन्द्वप्रत्यय	उदाहरण	ऊर्ध्व	आगमक
अ, अक	निपठित्वा	क (अ)	अ, क,
अच्, अच्	खिदा	कि (इ)	किकि,
अच्	पच, मर	कृन्	किदुः,
अचच्	कर	कृन् (न न)	हृन्, छिन्न,
अनीचर्	कुम्भकार	कृन् (न न)	उत्कृन्,
आन्चच्	कचच्	कृन् (नि)	कृत्ति
इच्	कचनीच, दशमीच,	कृन् (वा)	पठित्वा
इन्	स्युष्ट्याच्	कृ (उ)	गृन्
इन्चच्	पाच	कृन्	दुर्भीचति
इन्	स्वन्धिन्	कृन् (य)	कृन्,
इन्चच्	राचिन्	कृ (व)	वीच
उ	त्रिचिन्	कृन् (वर)	नचर
उच्	कार	चिन्	स्युच्, वाच्
		कृन् (अ)	स्तानचचः
		कृन् (अ)	त्वाच, वाचः

विभुच् (इन्)
 वूरच् (उर)
 इ (अ)
 इ (उ)
 ष (अ)
 षिनि (इन्)
 षाम्ल (अन्)
 षत् (अ)
 ष्वल् (अक)
 तुच्
 तुमन् (तुम्)
 मद्
 यन्
 र
 न्यन् (य)
 ष्ट (अन)
 षिन्
 वरच्
 वृञ् } (अक)
 वृन् }
 ष (अ)
 षान् (अन्)
 षानच् (आन या मान)
 ष्टन् (अ)
 तद्धित तथा उच्चादि प्रत्यय
 अञ् (अ)
 अण् (अ)
 -मुन् (अम्)
 अम्नानि (अस्नान्)
 आलच्
 आलुच्
 इञ्
 इन्च्
 इमानच् (इमन्)
 इधच्
 इठन्
 इन्
 ईकक् (ईक)
 ईयमुन् (ईयम्)
 ईरच्
 उरच्
 उलच्
 ऊद्

योगिन्, त्यागिन्
 भङ्गुर
 दूरण,
 प्रभु
 ग्राह
 स्वामिन्
 स्वार स्मार
 कार्यं
 पाठक
 कर्त्तुं,
 कर्तुम्
 प्रदान
 गेय, देय
 हिम्ब
 आदाय
 पठन, करणम्
 यज्वन्
 ईश्वर
 निन्दक
 क्रिया
 पचन्
 गायन वनमान
 दानम्, अन्धम्
 उदाहरण
 शौच्य,
 ईश्वर
 मरम्, तपम्
 अघ्नान्
 वाचाल
 दपाल्
 दापार्षि,
 कुमुदिन
 गार्गिन्,
 फेनिल
 गार्गिठ
 श्योनिम्
 शाकीय,
 लक्ष्मीयम्
 शरीर
 दन्तुर
 हृत्क
 कर्कशु

ष्ट
 एषमुच् (एषुम्)
 क
 कल (स्व)
 कम् (ईन)
 क्ण् (ई)
 कचम्
 छ (ईय)
 ज (अ)
 ज्य (य)
 टघ् (नन)
 ठक् }
 टन् } (डक)
 टन् }
 इनमच् (अनम्)
 इनर (अनर)
 इक् (ण्य)
 ष्य (य)
 नरच् } (नर, नय)
 नमच् }
 नमिन् (नम्)
 त्यक् }
 न्यन् }
 नट
 नाल
 दधन्च्
 नक् } (आयन)
 नञ् }
 न
 मनुच् (मन्)
 मनुच् (मन्)
 मण्टु
 माश्च
 य
 यञ्
 र
 लच्
 कलच्
 विनि
 क्कन् (क)
 व्यञ् (य)
 मन् (स)
 ह

वेच्
 अन्वेष्टु
 राष्टकम्, सुवर्षकम्
 कुप्लनम्
 क हाकुमीन
 मूनी,
 अक्षरचण,
 त्वदीय, भवदीय,
 पीथं शाल
 पाञ्चजन्य
 मायनन
 पामिक,
 नैमिक्
 शीष्टिक
 व नम
 ननर
 शीलय या, य
 देय
 प्रियतर
 प्रियतम
 मन्त्र
 पाञ्चाय
 अचन्य
 कुच्, मवच
 मवेषा
 शानुदहन
 आञ्कलायन
 वाज्यायन
 अचयम
 ईमन
 अण्वन
 अन्धय
 ऊर मात्र
 मन्त्र
 शान्त्र
 मधुर
 भासाल
 रज्जुबन्धा
 यशस्विन्
 पश्चिक्
 शीत्यं, नैपुण्य
 चिबीर्षा
 इह

संकेत सूचि

अ०	अव्यय	पर०	परमपद
अक०	अकर्मक	प्या०	प्यामिति
अल० स०	अलुक् समान	बमं० वा०	बमं वाच्य
अव्य० स०	अव्ययीभाष समान	कन्० वा०	कन् वाच्य
आ०	आरम्भे पद	ब० ब०	बहु बचन
उदा०	उदाहरणान	स० अ०	सम्बन्धावस्था
उप० स०	उपपद समान	अ० पु०	अव्ययपद
उभ०	उभयपदी	स० पु०	सम्बन्ध पुरुष
कर्म० स०	कर्मधारय समान	उ० पु०	उत्तम पुरुष
स० ल०	तत्पुरुष सथास	ब० स०	बहुवीहि समास
तु० त०	तृतीया तत्पुरुष समान	अधि०	अधिकृतकाल
दे०	देवो	इच्छा०	इच्छासंकेत, मग्नत्वं
इ० स०	इन्द्र समान	भु० क० कृ०	भुक्तकालिक कर्मणि
हि० क०	हिकर्मक		कृदन्त (कल)
हि० स०	हिन् समान	स० कृ०	समास्य कृदन्त (उभयन्)
हि० त०	हितीया तत्पुरुष समान	बमं० कृ०	बर्तमानकालिक कृदन्त
प० ल०	षष्ठी तत्पुरुष समान		(संभल या गानजल)
न० स०	नञ् समान	धिप०	धिपत्तिसंकेत
तुल०	तुलनात्मक	कर०	करभकारक
ना० धा०	नामधानु	कन्०	कन् कारक
माप्र०	सम्प्रदान कारक	कर्म०	कर्मकारक
सम०	समन्त पद	जाल०	जालकारक
तु०	तुम्हना करो	वाति०	वातिकारक
प्र०	प्रश्नासंकेत	ब०	बदिक
उपा०	उपाधि	धन० पा०	नामा पाठान्तर
उ० अ०	उत्तमावस्था	सबो०	सबाधन
ग० व०	गक बचन	यह०	यहलुङ्गल
सा० वि०	साधनात्मिक (निर्देशक)	मब०	सबध
	विशेषण	न०	नदेव
वि०	विशेषण	दा०	गश्दग
बी० ग०	बीजगणित	अधि०	अधिकरण कारक
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	उप०	उपसर्ग
बन०	बर्तमानकाल	म्हा०	म्हादिपद्य
भूत०	भूत काल	अदा०	अदादिपद्य
प्रा० स०	प्राति समान	जु०	जुहावादिपद्य
न० ब०	नञ् बहुवीहि समान	स्वा०	स्वादिपद्य
न० त०	नञ् तत्पुरुष समान	दि०	दिवादिपद्य
पु०	पुम्बिध	तु०	तुदादिपद्य
नप०	नपुंसक लिंग	क्या०	क्यादिपद्य
स्त्री०	स्त्री लिंग	ब०	बरादिपद्य
नर०	नरसंकेत	ह०	रुधादिपद्य
पुषा०	पुषोदरादिष्वात्	तना०	तनादिपद्य

संकेताक्षर—सूचि

अ० पु०	अग्नि पुराण	बौधि०	कौण्डिन्य
अ० ग०	अन्यापदेश शतक	कौपी०	कौपीनकी उपनिषद्
अ० म०	अनन्य महिला	ग० २०	गंगा लहरी
अप०	अथर्व वेद	घोषाल०	Ghosal's System
अन०	अनघराषव		of Revenue
अभ०	अभ्रपूर्णाष्टक	चण्ड०	चण्ड कौण्डिक
अधर०	अभ्रकाण	गण०	गणरत्नमहोदधि—वर्षमान
अमद०	अमरगानक		रूप
अधि०	अभिमारक	चन्द्रा०	चन्द्रालोक
आनन्द०	आनन्द लहरी	बाण०	बाणभय शतक
आर्या०	आर्या मन्जरी	बाण०	बाणकाण्डक
आर्य०	आर्यभट्टायनसूत्र	बाण०	बाण चण्ड
ईश०	ईशानियद्	वीर०	वीरपञ्चानिका
उ० हू०	उद्धव हूत	छ०	छन्दोमञ्जरी
उ० म०	उद्धव मदेश	छा०	छान्दोग्योपनिषद्
उपादि०	उपादि सूत्र	ज्ञानकी०	ज्ञानकीरञ्ज
उत्त०	उत्तर रामचरित	जै०	जैमिनी सूत्र
शूक०	शूकवेद	जै० न्या०	जैमिनीय न्यायमाना चिन्मर
एकाध०	एकाधनाममाता	ज्यो०	ज्यातिय
गै० उ०	गैत्रेय उपनिषद्	न० कौ०	नक कौण्डो
गै० डा०	गैत्रेय ब्राह्मण	नारा०	नाराणाथ बाध्मण्यम्
कठ०	कठोपनिषद्	नै० डा०	नैमिरीय ब्राह्मणक
कथा०	कथार्थरत्नाकर	नै० उ०	नैमिरीय उपनिषद्
कनक०	कनकशरणसूत्र	शिका०	शिकाट श्रेय
कर्पूर०	कर्पूर मञ्जरी	नै० म०	नैमिरीय महिला
कनि०	कनि विविहवन	न० वा०	नैवार्तिक
	नैल कठ दीक्षित कृत	हाय०	हायभाग
कवि०	कविग्रन्थ	दृ० म०	दृगाम्बुजानी
का०	कादम्बरी	दून०	दूनबाध्मण्य
कान्या०	कान्यायन	द० म०	द० म० महाग्रन्थ
काम०	कामन्दकी नीति	नवरत्न०	नवरत्नमान्या
काव्य०	काव्यप्रकाश	ना० भा०	नारायण भाव्य
काव्या०	काव्यादश	नागा०	नागानन्द
काशि०	काशिकावलि	नाला०	नालाथं मञ्जरी
कि०	किरणार्जुनीय	नाभ०	नारायण भट्ट
कीर्ति०	कीर्तिबौद्धी	नार्य०	नार्यभौष
कुमा०	कुमार सभर	निष०	निषध
कुव०	कुवलयानन्द	नी०	नीमिमार
कृष्ण०	कृष्णकर्णामुत्र	नीति०	नीति प्रदीप
केन०	केनोपनिषद्	नील०	नीलकण्ठ
कौ० अ०	कौटिल्य अर्थशास्त्र	नै० प०	नैवध
कोश०	कायकल्पनक	पृष०	पृषनर

पञ्च०
पञ्च०
पा०
पा० यो०
पुण०
प्रनाप०
प्रति०
प्रबोध०
प्रस०
ब० शि०
बान०
बान० रा०
बु०
ब० ब०
ब० उ० (बृहदा०)
ब० क०
ब० म०

भ० पु०
भग०
भट्टि०
भट्ट०

भा०
भा० प्र०
भाग०
भाषि०
भाषा०
भाष०
म० ना०
म० पु०
मनु०
मभा० (महाभा०)
महा०
महावीर०
मा०
मान०
मार्क०
माल०
मालकि०
मी० मू०
मुद०
मुल०
मुम्ब०
मुम्ब०

पञ्चदशी
पञ्चरात्रम्
पाणिनि की अष्टाध्यायी
पातञ्जल योगशास्त्र
पुण्यदत्त
प्रनापराष्ट्रीय
प्रतिमा
प्रबोधचन्द्रोदय
प्रमत्तगाथा
बयाल सिन्धुलेख
बालचरित
बालराधापथ
बुद्ध माहित्य (बुद्धिस्त लेख)
बुद्धचरितम्
बृहदारण्यक उपनिषद्
बृहद् कथा
बृहस्पतिना—बराहमिहिर-
कृत
भविष्योत्तर पुराण
भगवद्गीता
भट्टिकाव्य
धनुं हरिश्चन्द्रकथयम्
१ भुवाम्, ० मीनि
३ बँराय
भारत मञ्जरी
भाषप्रकाश
भागवत
भाषिनी विनास
भाषा परिच्छेद
भोज चरित
महानारायण उपनिषद्
यम्य पुराण
मनुस्मृति
महामाष्य
महाभारत
महावीर चरित
मातृमयीका
मानसार
मार्कण्डेय पुराण
माननीमाष्य
मालविकाग्निमित्र
मीमांसा सूत्र
मुद्ररक्षितचर
मुद्ररक्षितसती
मुरखचौध
मुम्बूत

मुञ्ज०
यात्र०
यात्र०
योग०
रत्ना०
रघु०
रस०
रत्नम०
रा०
रति०
राज०
राजप०
राजप०
राम०
राम्नि०
रत्न०
बराह०
बाब०
बा० प०
बास०
बि०
बि० पु०
बिक्रम०
बिस्व०
बे० दे०
बे० ना०
बेणी०
बेदपा०
बैज०
ब०
बाकर०
बा० बि०
बा०
बात स्तो०
बाजूं०
बाब्द०
बाभा०
बासि०
बा०
बा० पु०
बा० म०
बासि०
बाबानन्द०
बासु०
बाकु०
बा०
बापार०

बृहस्पतिक
बात्रकम्प्य स्मृति
बादशाहमुद्रय
योगसूत्र
रत्नावली
रघुवशा
रत्नगोचर
रत्नभद्रनी
रामायण
रत्नमञ्जरी
राजप्रसन्न
राजमरगिणी
रामचरितम्
रत्न महामाय
बनस्पतिगाथा
बराहमिहिर की बृहस्पतिना
बाबानन्देय महिना
बाबूपदीय
बाबुवदला
बिक्रमोर्वशीयम्
बिष्णु पुराण
बिक्रमाकदेवचरित
बिष्णु गुणार्थ चतु
बेदान्त देसिका
बेदान्त सार
बेणीसहार
बेदपादपत्र
बैजयन्ती
बाकुलला नाटक
बाकर विचित्रय
बाब्दार्थ विनासवि
बातपत्र बाह्य
बात स्तोकी
बाजूंवर
बाब्दकम्प्यमुद्र
बारीर भाव्य
बासिहोत्र
बासुपात्रक
बासुपुराण
बासुबाहियन् स्तोत्र
बासु भास्त -
बाबानन्देय स्मृती
बाबुपात्रक
बाकुलीति
बासुपत्र
बापार सिक्क

श्याम०
 धूम
 श्वेत० (खेरा०)
 सर० क०
 मुधा०
 स्वप्न०
 सव०
 सा० द०
 सा० का०
 सा० प्र०
 मि०
 मि० म०
 सा० मू०
 मि० म०

श्यामलावण्डक
 धूमवोष
 श्वेताश्वनरांपनियद
 सरस्वती कण्ठाभरण
 मुधासहरी
 स्वप्नश्यामश्वदन्तम्
 सर्वदर्शन सपह
 साहित्य संपण
 साम्य कान्तिरा
 साक्ष्यप्रवचन भाष्य
 मिडान्त वीमर्दी
 मिडान्त मुक्तावरी
 मान्य मूष
 सिडान्तदेवा सपह

मु० (मुष्०)
 मुभा०
 मुशामब०
 मुभापिन०
 मू० मि०
 मी०
 हस०
 हन०
 हर०
 हरि०
 हन्दी०
 हपे०
 हि०
 हस०

मुष्णत
 मुशामित रन्नाकर
 मुष्णतु की वासवदत्ता
 मुशामितरत्नभाण्डागा
 मूषे मिडान्त
 सौम्यं लहरी
 हसद्वल
 हनुमश्राटक
 हरविजय
 हन्दिगणुगल
 हलापय
 हपेचरित
 हिनापदेश
 हेमचन्द्र

संस्कृत-हिन्दी-कोश

अ

अ मासरी वर्षायाना का प्रथम अक्षर ।

अ. [अम् ; ङ] 1 विष्णु, पश्चिम 'शेख' को प्रकट करने वाली नील (अ+उ+म्) ध्वनियों में से पहली ध्वनि —अकारो विष्णुसहित उकारानु चोदकर । अकारानु ग्नुना इड्या पल्लवत् स्यादात्मक ॥ 2 विच, इड्या, वासु, या कैचालवर ।

(अक्ष०) 1 मीटन के दंत (in) अंग्रेजी के दंत (in) या अल (un) तथा युनानी के अ (a) या (un) के समान मराठात्मक अक्षर देने वाला उपसर्ग जो कि निवेधान्मक अक्षय सदा के स्थान पर सदाको, विशेषणी गव अक्षयों के (किवाओं के भी) पूर्व लगाया जाता है । यह 'अ' हो 'अक्षयिन्' दन्त को छोड़कर शेष स्वरादि धातुओं में पूर्व 'अम्' बन जाता है ।

'अ' के माताप्यपवा छ अर्धे विनाये गये हे --

(क) सावृक्ष सभासना वा सक्पना यथा 'अज्ञाज्ञान' साज्ञान के समान (केन्द्र भादि स्थले ज्ञान) पानु साज्ञान न होकर, अविच वेद्य भादि । (ख) अज्ञान = अनुपस्थिति निषेध, अभाव, अविद्यमानता यथा 'अज्ञानम्' ज्ञान का न होना, इसी प्रकार, अज्ञीय, अज्ञय, अचटक, अचट' भादि । (ग) किम्विना-अज्ञान वा भेद यथा 'आट' काहा नहीं, रूपसे वे चित्र वा अन्य कोई वस्तु । (घ) अज्ञप्ता सपुना स्युमता, अज्ञाप्यवापी इत्यर्थ के रूप में प्रयुक्त होता है—यथा 'अनुदरा' पत्नी कमर वाली (कुसोदरी वा तदनु-अनुदरा) । (च) अज्ञात्सम्प=दुराई, अज्ञोप्यता मुखा मनुकरण का अर्थ प्रकट करना यथा 'अज्ञात्' पल्लव वा अननुपुक्त समय 'अज्ञायम्' न करने योग्य, अनु-विद्य, अज्ञोप्य या करा काम । (छ) चिरीय चिरीयो प्रीतिष्ठा, वैपरीय यथा 'अपीति' नीति-विद्वाना, अनीतिष्ठा, 'अपिन्' जो श्रेय न हा, काया । उपसृक्त छ अर्धे विनाशित्वा इत्यर्थ में एक सकारित्त

है यन्मातृपदमभावेन तदव्यय तदव्ययम् । अज्ञात्सम्प विनाशक अर्थको मरु शशीनिता ॥ दे० न भी । इदम अर्था के साच इसका अर्थ माताप्यत 'नही' होता है यथा 'अज्ञात्सम्' न अनाकर, 'अपयवन्' न देनेसे हुए । इसी प्रकार 'अज्ञात्सम्' एक बार नहीं । कभी-कभी 'अ' उपसर्प के अर्थ को प्रमाथित नहीं करता यथा 'अज्ञयम्', 'अनुपयम्' यथाप्यत ।

2 हिम्मवादि चोतक अव्यय—यथा (क) 'अ अन्-धम्' यहाँ दया (आह, अरे) (ख) 'अ पयसि त्वं आत्स' यहाँ भर्त्सना, निंदा (यिच, छि) अर्थ को प्रकट करना है ; दे० 'अकरणि' 'अजीवान' भी । (ग) सञ्चोचन में भी प्रयुक्त होता है यथा 'अ अगन्त' (घ) इसका प्रयोग निवेधान्मक अव्यय के रूप में भी होता है । 3 भूतकाल के लकारों (लट्, लृट् और लृङ्) को स्वरचना के समय पानु के पूर्व 'अ' नाम के रूप में जोड़ा जाता है यथा अगच्छन्, अगम्, अगच्छिष्यत्तु में ।

अच्छयिन् (वि०) [मानिन् अक्षय वस्य न० दे०] (यहाँ 'अ' का अ्यजन ध्वनि माना गया) जो कर्मदार न हो, अक्षयकल ('अनुपिन्' शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ।)

अक्ष (पुं०) इय० अक्षयिनि-ते) बाटता, बिगनय करना, भावन में हिम्मा बाटना, 'अक्षयपर्विन्' भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है । वि 1 बाटना 2 घोषा देना ।

अक्ष [अम् ; अम्] 1 हिम्मा, भाग, दुःख, मृदुमी विपत्ति -अनु० १/४० म्पु० १/१९—प्रथम दशियानु-कृमता का० १५९ अक्षम् । 2 सर्जित में हिम्मा, भाग स्वतोमान-अनु० १/१००, १/१००१, पाठ० १/११५ 3 मित्र को सखा कभी-कभी मित्र के लिए भी प्रयुक्त 4 अक्षाय वा रेखाय की कोटि ५ कथा (साभाव्यत अर्थ के अर्थ में, अम् का प्रयोग होता है-दे०) । अक्ष०—अक्षः अक्षायपार, हिम्मे का हिम्मा, अक्षि (कि० वि०) हिम्मेदार, -अक्षयत्सम् अक्षयार --पृथ्वी पर देवताओं के अर्थ को मेकर अक्षय मेना आदिग अक्षयार, 'नार इव चरन्स्य पुग० १५३, यथाप्यत के आदिपर्व के १८-१३ तक अध्याय, भास्व इव, हृदिन् (वि०) उत्पन्न चिन्तार, मृदुवा, गरी पिच्छदांगारकषीया पुष्पिभावे पर पर पाठ० १/१३२-१३३ लक्ष्मणम्-विद्यो को एक समान हर में काना, स्वर मय्य स्वर, मृक्षम्बर ।

अक्षकः [अम् + अक्षन्, चिन्ता अक्षिका] 1 हिम्मेदार, मृदुवाचारी, मज्जी 2 हिम्मा, मय्य, भाग, कम् और विचम ।

अक्षयम् [अम् + स्यट्] बाटने की क्रिया ।

अंशवित् (पु०) [अश् + वित् + वृत्] विभाजक, बाटने वाला ।

अंशाल (वि०) [अश् लाति -ला + क] साक्षीदार, हिस्सा पाने का अधिकारी । 2=अमल दे०

अंशित् (वि०) [अश् + इति] 1 हिस्सेदार, सहदायभागी, - (पुनर्विभाजकरणे) मरे वा मृत्यु समाप्तिन, यात्र० २।११८, 2 भागो वाला, साक्षीदार ।

अंशु [अश् + कु] 1 किरन, प्रकाशकिरण, चरु०, धमे० गरम किण्वो वाला, मृगे, मृगौषधिभिर्प्रतिभागरविन्दम् कु० १।३०, चमक, दमक 2 विन्दु वा किनारा 3 एक छोटा या मूकम कण 4 घागे का छोर 5 पोशाक, सजावट, परिधान 6 मणि । मम० उरुकम् अंश का पानी, आलम् गमिपुत्र या प्रभाषण्डल, चर, -पति, -भृत्, -बाण, -भर्तृ स्वामिन्-हस्त-सूर्ये (फिरोजी को धारण करने वाला या उनका स्वामी), -पदम् एक प्रकार का रोगी कपडा, -मासा प्रकाश को मासा, प्रभाषण्डल, भासिन् (पु०) मृगे ।

अंशुकम् [अश् + क-अश्व मृगानि विधया यस्य] 1 कपडा, मासायन पोशाक । मिताशुका-विक्रम० ३।१२-कपडाशुकाशेषविलजितनलाय-कु० १।१८, ग० १।३०, 2 मृगानि या मकंद कपडा-अध० ६४, प्राय-नेशमी कपडा या मलमल । 3 ऊपर जोडा जाने वाला बन्ध, लबादा, अधोवस्त्र भी । 4 पता 5 प्रकाश की मय ली ।

अंशुमत् (वि०) [अश् मनुषु] 1 प्रभाषण्डल, चमकदार, -ज्यानिवा गविग्गमान भग० १०।०१ 2 नोकदार । भास (पु०) 1 मृग, -वान्निस्त्वैरिवाशुमान् रघु० १५।१० 2 मगर का पीछ, दिलीप का पिता और अममजस का पुत्र ।

अंशुमत्कला-केले का पीघा ।

अंशुक (वि०) [अश् प्रभा प्रतिगण वा लाति-ला + क] चमकदार, प्रभाषण्डल स वागवय मणि ।

अंशु (पु० पर०) असहाय-अभाषयति दे० अश् ।

अंश [अश्-अच्] 1 भाग, चर दे०अग, 2 कथा, असफलके, कथे की हट्टी । मम० कूट वील या मोच का शिल्प अथवा कुम्भ, कथो के बीच का अंतर, -अश् 1 कथा की गथा के लिए कथव 2 मनुष्य, चकक रीठ का ऊपरी भाग भार कथे पर रखा गया भार या जुवा, -धारिक, भासिन् (वि०) (अने) कथे पर जुवा या भार होने वाला -विचक्षित् (वि०) कथो की ओर मुका हुआ, -मक्षमसविर्वाणि पक्षलापया, -श० ३।२४ ।

अंशक (वि०) [अश् + कृत्] बलवान्, हृष्टपुष्ट, शक्तिशाली पचवृत् कथे वाला, -प्रा वा युगध्यायनबाहुरसल रघु० ३।३४ ।

अंशु, (म्हा० आ०) अंशुते, अंशित्, अंशित) जाना, समीप

जाना, प्रयाण करना, आरम्भ करना, प्रेर० 1 भेजना 2 चमकना 3 बोलना ।

अंशति ली (स्त्री०) [अश् + अति-अहादेवापत्] 1 भेट, उपहार 2 व्याकुलता, कष्ट, बिना, दुःख, बीमारी (वेद०) ।

अंशुत् (नपु०)- (अश्-हमी यादि) [अश् + अमुन् हुक् च] 1 पाप-सहाया सहानिमत्ता विहृत्य, अलम् कि० ५।१० 2 व्याकुलता, कष्ट, बिना ।

अंशति ली (स्त्री०) [अश् + क्तिन् महादिभ्याम् इट्] उपहार, दान ।

अंशु (अह-किन्-अहति गच्छयनेन) 1 पैर 2 पैर की जड़ तु० अदि, 3 चार की सक्ता । सम० च जड़ (पैर) में पीने वाला, बूझ, स्कन्ध, पैर के तलवे न। ऊपरी दिम्बा ।

अश् (म्हा० पर०) अकनि, अकित) जाना, साप की तरह टेढ़ा-भेड़ा चलना ।

अश्कम् [न कम्-मुक्कम्] मुक्त का अभाव पीडा, विपत्ति, पाप । अश्क (वि०) [न क्] गजा चः केतु (अवपतनशील गिरीविन्दु) ।

अश्कमिच्छ (वि०) [न क्मिच्छ-न० न०] जो सबसे छोटा न हा (जैसे सबसे बड़ा, मझना) बरा, श्रेष्ठ छ लीपन बुद्ध ।

अश्कण्या [न त्] जो कुमारी न हो जो अब कुमारी न रही हो ।

अश्कर (वि०) (न क्) 1 लला अपात्रिक 2 कर या मुली से मुक्त 3 अक्षय, निकम्मा, अकर्मण्य ।

अश्करणम् [कृ भावेऽयद् न त्] अक्रिया, कार्य का अभाव अकरणात् मन्दकरणे येव नु० अदेवी की कड़ाकने 'सम पिण इत्र बैटर देन नचिव' (Something .. better than nothing.) बैटर देट देन नैवर (Better Late than never) न होने से कुछ हाहा मला हैं, कभी न होने से देर में होना अच्छा है ।

अश्करणि (स्त्री०) [नश् + कृ + अति] अमकलता निराशा, अप्राप्ति, अधिकांशण कोमने वा पाप देने से प्रयुक्त, नत्स्यकारणेशान्नु सिद्धा० भगवान् को उनकी बाधा पूरी न हो, उसे अमकलता मिले ।

अश्कर्म (वि०) [न क्] 1 जिसके कान न हो, बहुरा 2 कर्मरहित अर्णव ।

अश्कर्त्तव्य (वि०) [नश् + कृत् + स्मृद् न क्] टिगना । अश्कर्मन् (वि०) (न क्) 1 निष्किय, बालम्ली, निकम्मा 2 दुष्ट, पतित 3 (म्हा०) अश्कर्मक, अश् (नपु०) 1 कार्य का अभाव 2 अनुचित कार्य, दोष, पाप । लक्ष० -अशिक्षा (वि०) 1 जिसके पास काम न हो, बाली, मिठम्मा 2 अपापी, कुम् (वि०) कर्म से मुक्त वा अनुचित कार्य करनेवाला, -शेष कर्मफल मोचने से मुक्ति का अनुभव ।

अर्धकर्म (वि०) [गति कर्म वच, व० कृ०] बहु विधा
वित्त का कर्म न हो (स्त्री०) -अर्धकर्मिका।

अर्धकर्म (वि०) [गति कर्म अर्धकर्म वच, न० व०] अर्धकर्म,
भाग्यहीन, परब्रह्म की उपाधि।

अर्धकर्म (वि०) [न० व०] 1 ताम्रकट रहित, लूङ्ग 2 विष्णुपार
(स्त्री०) -अर्धकर्मिका।

अर्धकर्म (वि०) [न० व०] 1 अनियमित, जिस पर कोई
निबंधन न हो, 2 सुवर्ण, अयोध 3 अनुकूलनीय।

अर्धकर्मक (अर्धक०) [न कर्मकाल - न० त०] अर्धकर्मक,
एकाग्रक, महत्ता सांख्यिक रूप से अर्धकर्मकालानुता
सह विद्यवासे न युक्त - हि० ११०, अकारण, बिना
किसी कारण के, अर्थ ही सांख्यिक दार्शनिकी-
मता विष्णुपाति विज्ञानिकाल प० २१६५-कर्म तथा
तयोक्तस्मात्परायणत्व रघु० १४१५५. ७३।

अर्धकर्म (वि०) [न० व०] 1 आकरिमक, अत्रयाचित,
-सहसा पुनरुक्तविकल्पनवाक्य उत्तर० ६११५, मा०
५१३१, 2 जिसमें तथा वा इतनी न हो। सम० -
-अर्धकर्म (वि०) सहसा उत्पन्न वा उत्पन्न, -सांख्य-
कर्म कोष वाङ्मयिका का अत्रयाचित प्रयोग - अर्ध-
कर्मक सांख्यिक घटना सांख्यिक (वि०) कर्म होते ही
पर जाने वाला, शुद्ध अर्धकर्मक नृप का दर्द।

अर्धकर्म (वि०) [न० व०] अत्रयाचित रूप से उत्पन्न, महत्ता,
-दार्शनिक चरण अत्रयाचित नृपति घना कर्मिक-
द्वय गदानि तथा वा ० २१२१।

अर्धकर्म (वि०) [न० व०] 1 दुष्का, राग वा प्रेम से युक्त
2 अनिष्टक, अनिष्टकारी 3 प्रेम से अर्धकर्मिक प्रेम
की अर्धकर्मिता से युक्त, वा ० ११२३ 4 अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक प्रेम

अर्धकर्म (वि०) [न० व०] [अर्धकर्म-नमित्त] अनिष्टकारी
प्रेम में, बिना इष्टक के अर्धकर्मिक प्रेम ५ उत्तर
० कृतवतनु पापार्थ्यात्म्यकामत्त मनु० ११०४५।

अर्धकर्म (वि०) [न० व०] 1 अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक 2
गुरु की एक उपाधि 3 परब्रह्म की उपाधि।

अर्धकर्म (वि०) [न० व०] कारणहीन, निराकार, स्वतः-
स्फूर्त, -कर्म कारण प्रयोजन वा अकारण का अर्धकर्म -
किमकारणमेव दृष्टेन विमपन्वै रत्ये न दीयते - कु०
५१० अर्धकर्मक, अर्धकर्मक, अर्धकर्मक - (कु० वि०)
बिना कारण के, अयोधकर्म, अर्थ।

अर्धकर्म (वि०) [न० व०] अनुपयुक्त - अर्थ अनुचित वा
बुरा काम, अर्धकर्मक काम। सम० -कारित्
बुरा काम करने वाला, जो बुरा काम करे, कर्मक
विमूढ़।

अर्धकर्म (वि०) [न० व०] अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक न
गलन समय, अर्धकर्म वा अनुपयुक्त, (किसी बात के लिए)
अनुपयुक्त समय - अर्धकर्मिक हि नारीवाक्यकालो
मनासः - रघु० १२१११। सम० - अनुपयुक्त - अनुपयुक्त

अर्धकर्म पर धारण करने वाला पुनः, -अर्धकर्मिक बिना अनु
के उपाधि हुआ अनुपयुक्त (बाल०) अर्थ अर्थ, - अर्ध-
-अर्धकर्म, - अर्धकर्म (वि०) बिना अनु के उपाधि हुआ,
अर्धकर्मिक, - अर्धकर्मिक, - अर्धकर्मिक 1 अर्धकर्म में
अर्धकर्म का उपाधि वा इच्छा होता, 2 अनुपयुक्त, अर्थ,
- अर्धकर्म के विपरीत वा अनुपयुक्त समय, - अनु
(वि०) 1 समय की हाथि वा देरी को सहन न करने
बाला, अर्धकर्म, 2 अनु की भांति अनुपयुक्त के साथ अर्धकर्म
समय तक न टिकने वाला।

अर्धकर्म (वि०) [गति कर्मक कर्म न० व०] जिसके
पाम कुछ भी न हो, विमूढ़क गरीब, नितांत निर्धन-
अर्धकर्मक: अनु प्रथम न समयकाल - कु० ५१७७।

अर्धकर्मिक (वि०) [अर्धकर्मिक - अर्धकर्मिक] अनु न करने
बाला, निपट अर्धकर्मिक, अर्थ ० २१८।

अर्धकर्मिक (वि०) [उप० त०] 1 अर्धकर्मिक, -अर्धकर्मिक-
विदमकर्मिककर्मक च - अर्धकर्मिक ३ 1 2 अर्धकर्मिक, सीधा।

अर्धकर्मिक (वि०) [न० त०] 1 जो उठ न हो, जिसकी
गति अर्धकर्मिक का अर्धकर्मिककर्मककर्मिक - अर्धकर्मिक
२१२, 2 प्रथम, काम करने योग्य 3 अर्धकर्मिक 4 अर्धकर्मिक।

अर्धकर्मिक (वि०) [न० व०] कर्मिक से नहीं (इसका प्रयोग केवल
अर्धकर्मिक से होता है)। सम० - अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक
नाम, -अर्धकर्मिक (वि०) अर्धकर्मिक, अर्धकर्मिक से भी अर्थ
न हो अर्धकर्मिककर्मिक अर्धकर्मिककर्मिककर्मिककर्मिक -
उत्तर० - अर्धकर्मिककर्मिककर्मिककर्मिककर्मिककर्मिककर्मिक
(पाठान्तर) अर्धकर्मिककर्मिककर्मिक - उत्तर० ५१३५।

अर्धकर्मिक (वि०) [न० त०] 1 बिना अर्धकर्मिक की धातु, सोना
अर्धकर्मिक 2 कोई भी अर्धकर्मिक की धातु।

अर्धकर्मिक (वि०) [न० त०] 1 अर्धकर्मिक, दुर्भाग्यवस्तु, 2 जो
अर्धकर्मिक वा अर्धकर्मिक न हो, -अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक, अर्धकर्मिक।

अर्धकर्मिक (वि०) [न० व०] 1 अर्धकर्मिक 2 अर्धकर्मिक 3
अर्धकर्मिक 4 अर्धकर्मिक का अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक का अर्धकर्मिक
है 5 अर्धकर्मिक का अर्धकर्मिक।

अर्धकर्मिक (वि०) [न० व०] अर्धकर्मिक से युक्त, -अर्धकर्मिक
अर्धकर्मिक का अर्धकर्मिक, अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक।

अर्धकर्मिक (वि०) [न० व०] 1 जो अर्धकर्मिक न था
हो, 2 अर्धकर्मिक या अर्धकर्मिक तरीके से अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक, 3 अर्धकर्मिक,
जो अर्धकर्मिक न हो (जैसे अर्धकर्मिक), 4 अर्धकर्मिक 5 अर्धकर्मिक
कोई काम न किया हो 6 अर्धकर्मिक, अर्धकर्मिक, -ता जो
बेटी होने पर भी बेटी न मानी अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक के अर्धकर्मिक
अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक, -अर्धकर्मिक (वि०) अर्धकर्मिक न था हो,
काम का न किया जाना, जो काम कभी हुआ न था
हो। सम० - अर्धकर्मिक (वि०) अर्धकर्मिक, -अर्धकर्मिक (वि०)
अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक का अर्धकर्मिक न हो, अर्धकर्मिक
(वि०) 1 अर्धकर्मिक, अर्धकर्मिक, अर्धकर्मिक अर्धकर्मिक का 2
अर्धकर्मिक या अर्धकर्मिक के अर्धकर्मिक से अर्धकर्मिक - अर्धकर्मिक (वि०)

भविष्यहित, — एतन् (वि०) अनपराधी, - ३ (वि०) कृतघ्न - भी, - बुद्धि (वि०) अज्ञानी ।
 भवष्ट (वि०) [भव् + ष्ट + क्त] जो होता न गया हो ।
 सव० - बन्ध, - रोहित् (वि०) बिना जुटे खेत में बढ़ने वाला या पकने वाला, बहुतायत से बढ़ने वाला - अहोप्यपन्था इह सत्यसयम् - कि० ११७, एतु० १६७७ ।

भवसा (स्त्री०) [भक् + कन् + टाप्] माता, माँ ।
 भवत (वि०) [भक् + क्त] मना हुआ, अभिप्रेक्षित, (दूसका प्रयोग सामान्यतः समस्त पदों में होता है जैसे धनवान्) - क्या रात ।

भवत्सु [भवत् + क्त] कवच (वस्त्रम्) ।
 भवन् (वि०) [नास्ति क्वा यन् - न० व०] अव्ययमित्त - क्तः [न क्रम न० त०] क्रम या व्यवस्था का अभाव, गड़बड़ी, अनियमितता 2 अभिव्यक्त का उल्लेखन ।

भवित् (वि०) [नास्ति क्वा यन् - न० व०] किया गन्व, भुज् - या [न० त०] कियागन्वना कर्मव्य की उपेक्षा ।
 भव्त् (वि०) [न० त०] जा निर्दय न हो २ एक वादव जा कृष्ण का मित्र और चाचा ।

भवकोष (वि०) [नास्ति क्वा यन् - न० व०] कोष गठित - ष [न० न०] ऋष का अभाव का उपमा समन ।
 भविकल (वि०) [नल् + किलच् + क्त] 1 न देका हुआ, कर्मण रहित, अनवर 2 जा निर्दय न हो अविकल ए० ५१११ ।

भञ्ज [भ्रा० स्वा० पर० अक० मेट्] (अवति-अवधानि, अक्षित) 1 पतना, 2 व्याप्त होना, पैटना 3 मविन होना ।

भक्षः [अच् - अच् भक्ष् - म वा] 1 सुरी, घुरा 2 गाड़ी के बीच में लगा लकड़ी का वह भाग जिसमें लाल या लकड़ी की वह छड़ फगई हुई होती है जिस पर पहिया चलता है 3 गाड़ी, छकड़ा, पहिया 4 तराज की इड़ी 5 शीमिक अक्षाय 6 बोरर, बोरर का पाया 7 श्राय 8 कर्प नामक १६ मासे की एक माल 9 बन्दे (विश्रीलक) का पीया 10 सौप 11 गखर 12 अन्ना 13 अन्न 14 कानूनो कार्य विधि, मुकदमा 15 अन्नाप, -स 1 इन्द्रिय, इन्द्रिय-विषय 2 मासुदिक लक्षण 3 नीला पीया । सम० - अक्षकोल (लक्ष) पुत्र की नील - आक्षय्य पीसर का नक्षत्र, आक्षय्य जुआरी - कर्मः सप्त त्रिकोण में सामने की गया, - बुधाल (वि०) - शौड (वि०) जुआ खेलने में निपुण, - कूटः बाल की पुतली कोविद (वि०) - ३ (वि०) पीसर खेलने में कुशल क्लृप्त, जुआ खेलना, पीसर खेलना ज 1 प्रत्यक्षज्ञान, मजान, 2 बख 3 होरा - ३ विष्णु, सत्य विद्या जुआ खेलने की कला या विद्या, इवैक वृक्ष 1 न्यायाधीश 2 नृप का अधीशक, - शैवज जुआरी जुआनार ,

क्षुत पीसर का खेल, जुआ, - क्षुतं नृपबाज, जुआरी, युक्ति, गाड़ी में जुता हुआ खेल या गाड़ पटल 1 न्यायालय 2 कानूनी दस्तावेजों के रखने का स्थान पादकः कानून का पठित, न्यायाधीश, बाल पासा फेंकना, पाब मौलस श्रुति, न्यायधर्म के प्रवर्तक वा उसके अन्यायी, - ज्ञान अज्ञाः अक्षरत्वा, अज्ञान । भार गाड़ीभर बॉस, - भासत नृप म्दाशमाला, हार क्लृप्त क्षम्यप्रणयो नया कर कु० ५१११ राज् नृप का व्यमनी, पासा में प्रधान, कर्त नायक पासा, बाट, जुआ-खाना, ग्रा की मेज, हृषय नृप में पूर्ण दक्षता या निपुणता ।

अक्षकिक (वि०) [न० त०] स्थिर, दृढ़, जो स्थल न हो, जो बोरी बेर रहने वाला न हो, दुर्लभायुक्त जया हुआ, (ताक लगाने या टकटकी के समान) ।

अक्षत (वि०) [नल् + षण् + क्त न० न०] (क) जिसे चोट न लगी हो स्वमनस कर्ममक्षता गैर कु० ६१२ (ख) जो टूटा न हो, समुपुर्ण अविभक्त न 1 मित्र 2 कट-वटक कर पूर में मुखाण गण भावण - सा (बहु०) अनट्टा अनाज, मक्ष प्रकाश न वामिक उन्मत्ता पर काम जाने बात पिछोते, बटे २३, जल से घाये हुये चाबद गाक्षतान्दमना ए० ए० १३ जी, यव न 3 पाय, बिनी की प्रकाश क अनाज 2 हिकडा (पु० भी) सा हृन्वत् कन्या । सम० शोचि, (स्त्री०) वह कन्या जिसमें मास्य सभोग न किया गया हो मनु० ५१७५ ।

अक्षय (वि०) [न० त०] अक्षय्य अगम्य अपरिष्णु अक्षर, एतु० १३१६ मा । अक्षय एव 2 क्षय, आवेश ।

अक्षय (वि०) [न० व०] त्रिमका नाग न हो अनरुह अक्व, - [प्रभाषनायकनिर्णयवाग्भट्टास्य एतु० ६१२१] सम० मृतीया (स्त्री०) वैशाखमास क गुल्मनाथ की नीर ।

अक्षय्य (वि०) [न० न०] ता एव न हो मह अक्षय्यात् तापवदभागमस्यैव दृग्गोप्यम्बदा हि न त० २१७३ ।

अक्षर (वि०) [न० न०] अक्षरान्गो, अनवरर कु० ३१५०, भग० २५११५ 2 स्थिर दृढ़ । ३ मित्र 2 शिष्यु । ४ (क) बलमाना का एक अक्षर अधारणात्मकाराणि म० १००३ अक्षर श्रुति । (ख) कर्त एक स्थान पकाक्षर पर ब्रह्म मनु० २१८ (ग) एक वा अक्षर बल, समर्थक्य से भाषा अभिप्रेक्षाशक्तिव्यक्ति, अक्षय्य म० ३१७५ 2 अनादेश, पित्राक्षर (बहु०), 3 अक्षरान्गो नाया, ब्रह्म 4 गानी ५ आकाश 6 परमाक्षर भाषा । सम० - अक्षे गलदा का अक्ष, चं (क) कु, - क्त, (क)

लिपिक, लघ्वट, नकलनवाँस। इसी प्रकार कीचक
'कीची, कीचिक: पेशेवर लेखक। च्युतर्क किसी
अक्षर के लुप्त होने के कारण दूसरा ही अर्थ निकलना।
अक्षुब्ध (नपुं०) कृत्वा बर्णों की सख्या में बड़ छद
का मत अक्षरी तुलिका सरकोटा या कनक।
- (वि०) म्यास 1 लिखना, बर्णक्रम 2 बर्णमात्रा 3 वेद
प्रविकारा तन्वी रूप० 1८1६६ धुक: विद्वान्,
विद्यार्थी। अक्षित (वि०) अक्षित, बिना
पदा लिखा। शिक्षा (स्त्री) गुरु अक्षरा की विद्या।
सम्बन्ध बर्णविन्यास लिखना, बर्णमात्रा।

अक्षरक [म्याये कन्०] रबर, अक्षर।

अक्षरक [वि० वि०] अक्षर धनु (बीध्याय)] एक एक
अक्षर करके 2 गणना, सफ़ट करके।

अक्षरको (स्त्री०) [अक्ष-मनुष्य-कोष्] शैल, पाने द्वारा
संग, दूध का अक्ष।

अक्षरि (स्त्री०) [न० त०] अक्षरिष्णुता, म्याया, ईध्या।
अक्षर [वि०] [न० व०] कृत्रिम नकलन। २
प्राकृतिक अक्षर।

अक्षि (नपुं०) [अक्षयन विषयान् अक्ष् (वि०)] अक्षिणी,
अक्षीणि, अक्षणी, अक्षय अक्षि 1 अक्ष 2, हा की
गन्ना। मम० कफ प्राणकी-रथ० १६६७। कृट,
कटक सोल: सारा अक्ष का देना, अक्ष
की पुनर्जा। सत (वि०) 1 दुषयमान उपस्थित -
श० २८१, 2 अक्ष में रङ्गने वाला, अक्ष का कोटा,
पुञ्जित नाट्यमय हास्या जाद दश० १५०। -
पक्षम्-सोमन्। न० पक्ष अक्ष 1 अक्ष की शिखी
2 शिखी म सबड अक्ष का राग विक्षिप्त,
विक्षिप्त तिरछी नडा, अधभुकी अक्ष म देना।

अक्षुब्ध (वि०) [न० त०] न टूटा हुआ, अक्षय 2 अक्षित
अक्षय-अक्षुब्धजन्य बेगा० ११०, 3 आ कटा पीटा
न गया हा, अक्षयारण्य मि० ११३०।

अक्षय (वि०) [न० व०] शैली में रहित, बिना दूध।
-अ) अक्षय शैल 2 (आ०) दूध विद्यार्थी, कुपाय।
सम० अक्षु (वि०) आक्षयक में विरहित।

अक्षय: [अक्ष + अक्ष] अक्षयोट, (मरा० डोगरी अक्षय)।

अक्षयक (वि०) [न० त०] स्थिर, कीर-रथ ७३७४।

अक्षयिणी (स्त्री) [अक्षया राधा सर्वव्यापिनिष्ठाया वा
उक्षिणी व० त०] [अक्ष-उक्ष-पिनि-हीष्]
पुरी चतुरविधी सेवा जिसमें २१८७० रथ, २१८७०
हाथी, ६५६१० घोड़े तथा १००३५० पदाति हो।

अक्षय (वि०) [न० व०] जो टूटा न हो, मनुष्य, समस्त
-अक्षय पुण्याय फलविष-अ० २१०--अक्ष (वि०
वि०) निरक्षर, अक्षित।

अक्षय (वि०) [न० व०] जो टूटा न हो, टूट न सके, पूरा,
सम्पूर्ण, -अ) न टूटा, निरक्षर म करना, -अ) समय।

अक्षयि (वि०) [न लक्षित -न० त०] 1 न टूटा
हुआ, 2 विफलित, बाधरहित। सम०-अक्षय
(वि०) सदा आभोग्रिय, अक्षु बहु समय या अक्षु
जिसमें सदा की प्रति पुण्यादि उपलब्ध हो, (वि०)
फलदायी।

अक्षय (वि०) [न० त०] 1 जो बीजा या छोटे कद का न
हो, जिसकी नागैरिक कृष्टि न सकी हो 2 अक्षय, सदा,
-अक्षय मद्ये विगजमान दश० 3।

अक्षय (वि०) [न० त०] न चूटा हुआ, न टफनाया हुआ
म, न 1 प्राकृतिक अक्षय 2 अक्षर के सामने का
पात्र।

अक्षय (वि०) [नालि विषयम् अक्षयिण्यम् यस्य -न०
व०] 1 मनुष्य, समस्त, पूरा, इनका प्रयोग प्राय
सर्व क साथ पाया जाता है एतद्धि लक्ष्मीविक्रमे
मर्ममेवाक्षयिण्य मनि -मनु० १५९ 'शैल (वि०
वि०) पुष्प रूप में 2 मृत्ति जो परत की न हो, कुटी
दृष्टि है।

अक्षयिक (पुं०) [नञ्, शिट् -विषयम् न० त०] 1 वृत्त-
मात्र 2 शिकारी कुला।

अक्षयिण [न० त०] अक्षयिणि, अक्षयण। मम० -अक्षयिण
अक्षयिणकर, लक्ष्मीविक्रमक।

अक्षु (स्त्री०) अक्षु अक्षु अक्षयि, अक्षयिण्यि,
अक्षयि 1 मक्षिण मनि में जाना, टेढ़े में चलना, 2
जाना (अक्षयि आक्षयि-अक्षि)।

अक्ष (वि०) [न लक्ष्मीति-नञ् + इ, न० त०] 1 चलने में
असमर्थ, अक्षय, -अ) 1. वृत्त 2. पहाड़, पत्थर
3 शीघ्र 4 दूर्य 5 मान की सख्या। सम०-अक्षय
पर्वत की पुत्रा, पाथरी।-अक्षु (पुं०) 1 पहाड़ी
2 पक्षी (वृक्षवासी) 3 'शरम' नायक जन्तु जिसकी
आठ टांगे मानी जाती हैं 4 सिंह, -अक्ष (वि०)
पहाड़ में धूमने वाला, जंगली, -अक्षु शिखावील।

अक्ष (वि०) [मय-बाहुलकाय अ-न० त०] न जाने
गला। अक्ष (पुं०) वृत्त।

अक्षति: (स्त्री०) [न० त०] 1 आशय वा उपाय का
अभाव, आशयकता 2 प्रवेश न होना (आ० और
आश०)।

अक्षति (ती) क (वि०) [न० व०] निरसहाय, निरक्षय,
निराशय, -आशयनाशयितादाय-दश ९, दशस्वपति-
का गति या० १३४६।

अक्षय (वि०) [न० व०] नीरोप, स्वस्थ, रोगरहित।-अ)
1 अक्षय, दुर्घाई 2, स्वास्थ्य 3. विशहरण विद्वान्।

अक्षयकार: (पुं०) [अक्षय करोति-अक्षय+इ+अन्
भूवाचनस्य] वैद्य, चिकित्सक।

अक्षय (वि०) [न लक्ष्मीति-मन्+कृत् न० त०] 1.
दुर्गम, न जाने सोच, वृक्ष के बाहर (आ० और

कृत्तिका नक्षत्र, —शामं पश्चिम अग्नि की रक्तने का पात्र या स्थान, अग्निहोत्री का घर; —धारणं अग्नि को सदा प्रतिष्ठित रखना, —द्वारिण (शिव) वा अग्नि-पुरा —द्वारिणः यत्र के सारे उपकार—अनु० ११४, —द्वीषा (स्त्री०) अग्नि द्वारा परीक्षा; —धर्मः उपासना प्रवृत्ति, —पुराण व्यास प्रणीत १८ पुराणों में से एक, —प्रतिष्ठा (स्त्री०) अग्नि की स्थापना, विशेष कर विवाह सरकार की, —प्रवेशः —प्रवेश्य अग्नि में उतरना अर्थात् पति की शिला पर किसी विधवा का गती होना, —प्रसरः फलीता, प्रकमक पत्थर, —बाहुः भुजा, —अ १ कृत्तिका २ मोना, —भु (नपु०) १ अत २ मोना, —भू अग्नि में उल्लस्य अग्निभय, —अग्निः सूर्यकाल मणि, फलीता, —अधः—अधन वर्षण या गड द्वारा आय वेदा करना, —अधीं पावनशक्ति का मद होना, भूख न लगना, —भुक्तः १ देवता २ आहुतमात्र ३ मूत्र में आय रहने वाला, आर में बाटने वाला, अतमज का विशेषण—पंच० १, —भुक्तो गौरी घर, —दक्षः पश्चिम गौरीपर्व या अग्नि-पर्व की अग्नि की प्रतिष्ठित रखना, दक्ष —दक्षः (पु०) १ इतिष नामक एक सिद्धी कीडा २ अग्नि की शक्ति ३ लोक, —लोक अग्नि का वह संसार जो भेद निवार के लोक स्थित है—अधु (स्त्री०) स्वाहा, दक्ष की पुत्री की अग्नि की पत्नी, —अधक (वि०) पीठिक —अधु १ भुजा २ बकरी, —धीर्व १ अग्नि की शक्ति २ मोना; —अधक—अधक—अधक अग्नि का मन्त्र, वह स्थान या घर जहाँ पवित्र अग्नि रखी जाय—अधकाय स्थापिताः इत् ३, —अधिष्ठा १ दीपक राकेट, २ अग्निमय बाण ३ अणुबाध ४ कुसुम या केसर का गोत्रा ५ केसर, —अधिष्ठा १ कनर २ मोना, —अधु, —अधु, —अधो अधि दे० —अधु, —अधु आदि—अधकार १ अग्नि की प्रतिष्ठा २ शिला पर तब की दाह किया—नाजय हायोर्गिन-सम्भार—अनु० ५१६, ११७, ११८, —अधक —अधक १ अना २ अग्नि की शक्ति ३ अना, अग्नि (वि०) या शिव (वि०) अग्नि को भासी बनाना अग्नि के सामने, —अधकारं मार्गवि० ५१७ —अधु (पु०) एक दिन से अधिक चलने वाले यत्र का एक भाग, —अधो (पु०) अतम में कई दिन तक चलने वाला यही अणुपण्डित या दीर्घकालिक सरकार जो ज्योतिषीन ११ एक आचरवक अणु है, —अधी १ अग्नि में आहुति देना, २ अग्नि की अग्नि को स्थापित करना और उनमें आहुति देना, —अधीष्णु (वि०) अग्निहोत्र करने वाला, वा बहु अग्नि की अग्निहोत्र द्वारा होजाति की दक्षित रखता है ।

अग्निमत्स्य (अनु०) अग्नि की दवा तक, प्रसक्त प्रयोग सप्तपद में 'क' वायु (बलाता, भस्म करना) के साथ किया जाता है—अ चकार अदीपमत्स्य—रघु० ८१७, 'अ' बलावा जाता ।

अध (वि०) [अधु-रत्न नलोपचय] १ प्रथम, सर्वोपरि, मुख्य, सर्वोपर्य, प्रथम, 'अग्नि मुख्य रात्री, २ अन्ध-मिक, —अं १ (क) सर्वोपरि स्थल या उच्चतम बिन्दु (विप०—मूलम्, मध्यम्), (आत्म) शीघ्रता, प्रसारता, नाशिका—नाक का अग्रभाग, समस्त एव विद्या जिज्ञासेमबन्ध—का० ३४६—जिज्ञासा के अग्र भाग पर थी, (अ) घाटी, निम्न, समतल—ईशानं, पर्वतं आदि २ सामने ३ किसी भी प्रकार में सर्वोपर्य ४ अन्ध, उपदेश ५ आरम्भ ६ अर्थात्, अतिरिक्त, समस्त पदों में जब यह प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है—'पूर्वभाष्य' सामने' 'नोक' आदि, उदा० 'वाद-चरण : मम—अग्नि (श्री) क. (कम्) सैन्यमन्त्र—अनु० ७११२, —अधः प्रथम आसन, मान-आसन—मूला० ११२, —अधः = अधस्ता—मः देना, मार्गदर्शक, सबसे आगे चलने वाला —अधु (वि०) श्रेष्ठ, प्रथम श्रेणी में रखे जाने योग्य, —अध पदले पैदा या उत्पन्न हुआ, —अध अग्रजना, बड़ा भाई—अध्वेय मनुष्यरक्षणने मे—रघु० १०७३ २ आहुत—अध बड़ी बहन, इसी प्रकार 'अध', 'आधक', 'जाति', अन्धम् (पु०) १ उरने जन्मा हुआ, बड़ा भाई २ आहुत दक्ष० १३—अधिष्ठा जिज्ञा की शक्ति, —अधिष्णु (वि०) पतिव आहुत जो मूलक शब्द में दात भेज है, —अधुः भागे-भागे जाने वाला दून—अधुकाफोवाचदून—वेधी० ११०७, रघु० १११०, —श्रीः (श्री) प्रमुख नेता—अध्वेयशोभनकृत्नाम्यो-नाम्—रघु० ५१४, —आध. पैर का अगला हिस्सा, 'पैर का अगला पदा, —आधु आदर का सम्मान का सर्वोपर्य या प्रथम चिह्न, —अध पीने में श्राव्यवृत्ता—अधः १. प्रथम या सर्वोपर्य भाव २ श्रेष्ठ, श्रेष्ठ भाग ३ शोक, निरा, —अधिष्णु (वि०) (संभवतः) को पहले प्राप्त करने का अधिकार प्रकट करने वाला, —अ - अ- अग्नि (स्त्री०) अग्निवाक्यता का लक्षण या उद्दिष्ट पदार्थ, —अधि हृदय का भाग, हृदय—अन कारोत्सु—वेधी० ३ —अधिष्णु (वि०) नेत्रक करना, सेना के आगे चलना बुधम्ब से रत्नगिर्यम्-यस्यवाची—का० ७१२६, अधिष्णु (पु०) मुख्य शीर, प्रथम योद्धा, अध्यायी यम द्वारा मनुष्यों के कार्यों का सेवा—श्रीवा रखने की बड़ी, —अध्या (स्त्री०) प्रजापति का हाथ, अध्यात्मपुत्रे दुहिते रत्नकवचकपरा—अ० ४ (पाठ०)—अधु—अधिष्णु—नेत्रक करने वाला—रघु० ५१३, ५१७, —अधुः (पु०) (—) कर, —अधिष्णु

हाथ या मुखा का अर्धला भाग, हाथी की सूंठ का सिरा, कभी २ उगली का उगलियों के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है, राहिन हाथ—अथाग्रहन्ते मुकुलीकृता-मुली कुमा० ५५३—हाथक (क) —अर्धका आरम्भ मार्गशीर्षे (मार्गसिरे) महीने का नाम, —हार राजाभा द्वारा हारिणों की वीचननिर्वाहके शान से दी गई भूमि—कस्मिपिचरुद्वारे—दण० ८१० ।

घटतः (वि० वि०) [अधे अशदा—तसिन्] (सवत्सरकारक के साथ) 1 सामने, के अगले के ऊपर, आगे 2 की उपस्थिति में, 3 प्रथम; मम०—हर-नेना ।

अधिय (वि०) [अधे भव—अध—प] प्रमुख (कम, श्रेणी आदि में), प्रमुख, मुख्य 2 बड़ा, ज्येष्ठ, —क बड़ा भाई ।

अधिष (वि०) [अधे भव—अध—प] प्रमुख आदि क बड़ा भाई ।

अधीष (वि०) [अधे भव—अध—प] प्रमुख, सर्वोत्तम आदि; दे० अधिम ।

अधे (क्रि० वि०) 1 क सामने, पहले (काल और देय वाचक) 2 की उपस्थिति में, 3 के ऊपर 4 बाद में फलन—एवमधे कथन, एवमधेपि उच्यते इत्यम् आदि 5 सबसे पहले, पहले 6 ओरो में पहले; मम०—ना-नेना, —विधिषु—अ पहले तीन वर्षों में से कोई एक पुत्र्य वा विवाहित स्त्री में विवाह कराया जाता है, —विधिषु (स्त्री०) एक विवाहित स्त्री जिसकी बही बहन वही विवाहित है—अधेप्याया यद्युहाया कन्यायामुत्पत्तेजना, मा चाधेदिधिषुश्रया पूर्वा क दिधिषु म्याना, "पति अधेदिधिषु स्त्री का पति,—कन्-क अवन को यौना या अग्नि मिन, —हर (वि०) आगे २ चलने वाला, नेता—मनिमज्जा-मधेन केमरी—अर्ज० २१२ ।

अधुप (वि०) [अधे जान—अधु+पत्] 1 प्रमुख, सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, सर्वोत्तम, प्रथम—नदङ्गमधुप मधवन महाकनी—गण० ३१८६, महिषी १०६६ अधिकरण के साथ भी, मम० ३१९८८, —क बड़ा भाई ।

अधु—अधु—दे० (चु० उच०) बुरा करना, पाप करना ।

अधु (अधु—अधु) 1 पाप—अधोविश्रमविधौ पटी-तमी—वि० २१८, २१ मवन आदि 2 कुकृत्य, अपराध, दंड वि० ६१३३ 3 अकृत्य, दुष्टदेवा विपति—किमादपानां मधवा विधानम्—क्रि० ३१५२, दे० अनप 4 अनविचना, (अनोष) 5 व्याघ्र, कष्ट—घः एक राजन का नाम, एक और पुत्रता का भाई जो कन के यहाँ मध्य सेनार्थिन था । मम०—अधुप दे० ऊपर अधुप,—अधु (अधु) अपविचना का पति, अधीक विदुः,—आधुप (वि०) गड़ित राजन विमाने वाला,—आधु—आधुप (वि०) परिभाषक,

पापनाशक,—अधुप (वि०) विजोषक, पाप को हटाने वाला, अक्षयदे के राज जिनका मध्या-शांका के समय प्राय काष्ठयो द्वारा पाठ होता है (अधु-म० १० सू० १९०) सर्वोत्तमप्रथमत्रय त्रय विद्वत्प्रथम-पथम् अधुप० विद्व मधि, —रुह दृष्ट आदयी जैसे धोर, शमिप (वि०) किसी के पाप या अपराध को बतलाने वाला ।

अधुप (वि०) [न० व०] आ गत्य न ही, ठहरा, अगु, पाभन्-वन्दमा त्रिकी क्रिये उन्नी होती है ।

अधोर (वि०) [न० व०] आ गजनक न हो भीषण न हो २ गिर वा गिर का कोई रूप जिसमें अधार—धोर हो । मम० एक मात गिर का अनु-यायी, —प्रभास भीषण पापय वा अधिम पतिता ।

अधीष (वि०) [मार्तल धामो यम्य वर वा न० व०] धनिनिन, नि धरत क प्रथम कय के प्रथम दी अक्षर वा, ए, तथा म ।

अधुः (मत्त० आ०) देहा-मेदा कचना, [च० उच०—अधुवनि-ने अधुयिन् अधुवन्] 1 चिह्नित कथा अथ काव्य-म्वनामधेयां ह्यन-न० नानाविध नरनालीकृदि अधुन मन्नामुकम्—विषय० ६१३, 2 निरतः 3 शब्दा मयाना, कलाकुत कचना—नकी मोक्ष गुण भव म्वनिता या दुर्जनैर्नीकृत—अर्ज० ती० ५६ 4 चलनर, इतलाना आना ।

अधु (प०) [अधु—अधु] 1 गाढ़, लघु भी; —अधुप गावदुग्दीरिवासी—हु० अ० 2 बिजु वरत अना-का ह्यु पदको दानन—गण० ३१० धरतः लक्षण कर्तु-दाय—उदो कियेपिबो ह्यु—हु० ११२—अना ३ पादु निधोरा—मम० ८१८१, 3 अधु मन्ता ४ वा मन्ता ४ पार्व पशु, मनिधय गृह्य-मय पृथक् ह्यु पूर्विनि मिद्रि—क्रि० ३१८०—विद्यु शब्दकर्मधुमानमधि यकला निरतिन द्विषम् मम० ती० १० ५ गजक हा एक लक्ष ६ कौटिल्या या महा दुआ उपकरण ७ गजक-रचना का एक प्रकार लक्ष के दस करो म से एक दे० मा० २० ५१० ८ पक्षि ह्यो ह्ये पक्षि माता म्यत एक माह बहा में बाँस; मम०—अधुपार, अब गजक क आयायी अधु से मान्य प्रकृत कायम ह्यु पूर्वाहु के अन्त में—अधुमहन—क्रिया खाना है उन अधुपार बतने है गैक कि शकुन्ता का छोटा अधु अर्था मातविकर्मविषय वा दुमरा अधु,—मध मन्था-विजान (अकालित या वीचनविषय), —धरत-वा (अ० स्त्री०) 1 बिजु मयाना वा अक्षेण कना 2 बाहुन वा मनुष्य का आकने की शक्ति परिष्कले 1 दुमरी आर बरना 2 किसी की मोह में पड़करना वा प्रेम के हाथ भाव रिखाता (आकि-गन के अक्षर २२) —वार्कि—वार्की (स्त्री०) 1.

आसिगन-साधदगाह बितर मङ्गलव्य द्युपामी प्रसीद-नाल०
८१२, २. राई, नर्स; -श्रावः अकृपणित में एक
अवतार की प्रकिया [अवतारे १-२] शारि लंकावामी के
अदल-बदल से एक विचित्र श्रुतला से बन जाती है,

—आव्य (वि०) १ गीद में बीटा हुआ या लिया हुआ
जैसे कि एक बच्चा २ मुगल, निकटस्थ, मुलक कि०
५१२, - कृष्ण (या आस्थक) बद्ध का वह
भाग जहाँ सब अङ्गों का विषय सूचित किया गया हो
बहुमुख कहलाता है, इसी से बीज और फल का संकेत
होता है—उदा० मान० १ में काष्ठदकी और अब-
साकिया उस अंग का संकेत करती है जिसका अतिव्यय
अविश्व और अग्र पाशों का करण्य है। इनमें कथावस्तु
का कम भी संक्षेप में बनना दिया जाता है, —विद्या
सक्या-विज्ञान, अक्षरार्थवः।

अक्षय [अक्षय-स्पृष्ट] १ चिह्न, प्रतीक २ चिह्नित करने की
क्रिया ३ चिह्न लगाने के माधन, सहूर लगाता आदि।
अक्षयिः [अक्षय + अति, बुल्यम्-अक्षयं की वा-अक्षयति
अक्षयिणी] १ तथा २ अति ३ बढ़ा ४ वह आदर
या अतिहास करता है।

अक्षयुत [अक्षय + उत्थ] नाभी, कुडी

अक्षयुत [अक्षय + उत्थ] १ अक्षुका किमलय, कायल
-दशाक्षरक वरुण लक्ष-गं० २१२०, मममणद के
रूप में प्राय इसका 'नकीर' का 'नीरु' अर्थ होता है-
मममकनददृष्टादृष्टान्-मं० २१२ नकीरों दाह,
(आल०) कलय मयान, प्रशा-अनन कम्पापि कुला-
दृष्टय गं० ३१२, २ पानी ३ अक्षर ४ बाल ५
रमोषी, मुजम।

अक्षयुति (वि०) [अक्षयुत + इत्यच्] नवव्ययविन उत्पन्न,
य परमविभव विष्णु० ११२-माना काम ने किम
लय पैदा कर दिये है।

अक्षयुत [अक्षय + उत्थ] (नाहे का) कौटा या हाकने
की छड़ी (आल०) नियंत्रक, महाधक, प्रशासक
निद्राक उद्योग या राक-निद्राकृपा। कश्य, कवि निय
यन में मुक्त हाक ही या उन पर कई बन्धन नहीं
होते। मय० अक्षुःपीलना-अ-बेनुकायां-वमनादकृपा-
पर सि० १२१६, कुर्षर दुर्दान्त, अक्षरिन्
(पु०) हाथीवान।

अक्षयुतिल (वि०) [अक्षयुत + इत्यच्] अक्षयुत से हाका
गया।

अक्षयुतिम् (वि०) [अक्षयुत + तिप्] अक्षयुत मन्ने वाका।

अक्षयुत, अक्षुवा-दे० 'अक्षयुत'।

अक्षयुत-दे० अक्षयुत।

अक्षयुतः-दे० अक्षयुत।

अक्षयुतः-दे० अक्षयुत।

अक्षयुतः-दे० अक्षयुत।

अक्षय (वि०) [अक्षय-व्यत्] दामने वायव्य, चिह्नित या
अकिल करने वायव्य, अक्षयः एक प्रकार का दाल या मूदन।

अक्षय (पु० पर० अक्ष० मेट) [अक्षयति-अक्षयति] १ पेट के
बल भरकना ३ रोचना।

अक्षय (उभा० पर० अक्ष० मेट) [अक्षयति, आनक्षय, अक्षयिन्,
अक्षयति] आना, चलना, (पु० पर०) १ चलना, चक्कर
काटना २ चिह्न लगाना।

अक्षय (अर्थ०) [अक्षय + अक्षय] मयोवक जयप जिसका
अर्थ है "अक्षय" अक्षय, श्रोतान् निम्नमेव 'मय
'हा (द्विमा कि 'अक्षय' में), -अक्षय कल्पितकृपायां गान
-का० २२१, किम जाइ कर इसका अर्थ राना है
'चिंतना कम 'चिंतना अधिक-उपेन कार्य भवता-
इवगणा किमङ्ग वास्तववता नरम-पत्र० ११३१।
काशकाग ने इसक निम्नाकित अर्थ बताये है-
'अक्षय च पुनश्च च मङ्गलामुपवाग्लया। ह्येयं महापान
वैच ह्यङ्गलस्य प्रययति।' 'मङ्गल-रचना-छात्र
निर्देशिका' का ६-५२ भी दम्। ५-१ शरीर
२ अंग या अंगर का अवयव-रक्षाङ्गनिर्माण-
विधो विधान-पुत्रा० ११२ ३ (क) किसी मनुष्य
अङ्ग का प्रयोग या विभाग एक स्वयं या अंग जैसे
मन्त्राङ्ग गायत्र्य-चतुर्ङ्ग अक्षय, अक्ष (स) मनुष्य या
महापक स्वयं पुत्र (ग) अवयव, मातृमूत्र घटक
-नरङ्गस्य मधुम मद्राक्षना-पु० ३१६६, (घ)
विशयणाऽप्य का शोणमाग, गीण, महारक या आश्रित
अंग (श) मूष्य बन्धु का महापक डै। (इसका वि०
है 'पयाव या अक्षयुत'-अक्षुःरीडरमण्यक सर्वेङ्गाति
रया पुन-मा० द० ५१७ (च) महापक माधन
या युक्ति ४ (ज्याक०) गदक का मूल रूप ५ (क)
नाटक में पाशों संधिदा के उपभाग (ख) शीण
नक्षत्रों से एक ममन्त शरीर ६ छ की सम्पदा के
लिए आलकारिक कचन ७ मन्, -भा० (पु० ३० ६०)
एक देश का नाम, उस देश के वामी-पर प्रदेश
बताव के वर्तमान भाग्यपुर के ज्ञात नाम स्थित है।

मय०-अक्षयि-अक्षुःमात्र शरीर के अंग का
संबन्ध, गीण अंग का मूष्य अंग में संबन्ध वा पोष्य
अंग का पोषक अंग में संबन्ध (गौमयमभार उप-
कायोपकारकभावत्वात्), अक्षिमात्तजुपाभावात्-यङ्गाङ्गिभ्य
तु सकर-का० प्र० १०, (अनुपास्यानाहाकत्वम्)
-अक्षीय-अक्षीय अंगों का स्वामी, कर्ष (पु०
रात्र, पति, ईदर अक्षीयज। -अक्षुः
रेण्ड-अक्ष-आल (वि०) १ शरीर पर उपका
हुआ, या शरीर में उष्मा हुआ, आगेरि २ सुन्दर,
अक्षयुत, - (अक्षुः)-अक्षुः १ पुत्र २ शरीर के बाह्य
(मय० भी), ३ प्रेम, काम, प्रेमावेश ४ शराबखोरी,
अस्ती ५ एक रोग, - (आ) पुकी, - (अ)

बधिर; —हीन: छोटे छः हीनों में से एक; —श्वस्तः उपयुक्त मनो के साथ हाथ से शरीर के अंगों को स्पृशं करना; —वर्तिक (स्त्री०) बालिगन, —वर्तिक्या=दे०, अकपालि—अथर्कू छोटे बड़े सब अंग; —यू: 1 पुत्र 2 कामदेव, —यज्ञ 1 साधो-पचात, लकवा—विकल इव भूया स्वास्यामि—श० २, 2 अग्रहाई केना (वैसा कि सोकर उठते ही मनुष्य करता है) —यंत्र एक मंत्र का नाम, —यव 1 जो अपने स्वामी के शरीर पर मालिश करता है, 2 मालिश करने की क्रिया, इसी प्रकार 'यवक' या 'यवति'. —यवर्ष गठिया रोग, —यव्य, —यव्य यज्ञ से संबद्ध गौण क्रिया, —रक्षक शरीर रक्षाक, व्यक्तियत मेवक, पच० ३—रक्षण किसी व्यक्ति की रक्षा. —रक्षणो कर्षक, पोषाक. —रथः 1 सुगन्धित लेप, शरीर पर सुगन्धित उबटन का लेप, सुगन्धित उबटन, —रथ० १२२७, ६१६० कुमा० ५१११, 2 लेपन क्रिया, —विकल (वि०) 1 अपाहत, लकवा मारा हुआ, 2 मूर्च्छित, —विकृति (स्त्री०) 1 शरीर में कोई विकार होना, अवमाद 2 मिरगी का दौरा, मिरगी —विकार शारीरिक दोष, —विक्रम: अंगो का हिलाना, शारीरिक चेष्टा, —विद्या 1 ज्ञान के साधनभूत व्याकरण आदि शास्त्र 2 अंगो की चेष्टा या चिन्तों को देखकर अनुमान करने की विद्या, बहुलसहित का ५१२वा अध्याय अत्रिमें इस विद्या का पूर्ण विवरण निहित है —विधि गौण या सहायक अधिनियम जो कि मुख्य विषय का सहकारो है, —वीर मुख्य या प्रधान नायक, —वीर्य 1 मदन, ६वित्त या इशारा 2 सिर हिलाना, आंग झपकना, 3 परिबलित शारीरिक रूप; —सत्कार, —सत्किन्ना शरीर को आभूषणों से सुशोभित करना, शारीरिक अलकरण, —संहति (स्त्री०) अग्रमण्डित, अंगो का सामंजस्य शरीर, देहव्यक्ति, —सप्त शारीरिक सपर्क, मैदुन, मधोग, —सेषक निजी नोकर, —हार हाथ हाथ, नृत्य, —हृति: 1 हावभाव 2 रस-भूमि, रग-भाला, —हीन (वि०) 1 अपाहृित, विकलांग, 2 विकृत अंगवाला ।

अङ्क [अङ्क + अन्, स्वार्थे कन्] 1 अङ्ग—अक्षतमधुर-रत्नानां म कुमुदलमङ्गकैः—उप० २१२०, २४ 2 शरीर—सि० ४१६६ ।

अङ्गन्=दे० अङ्गनम् ।

अङ्गति: [अङ्ग + गति] 1 सवारी, यात्र (स्त्री० भी), 2 अति 3 बड़ा 4 अतिशयोक्ती आशय ।

अङ्गव [अम वायति घटि वा, दे—यो + क] सामूहिक, कलम को कोहनी से ऊपर मुका से पहना जाता है, बाहुबन्ध, —उपशामीकराङ्गव—विष्णु० १११४, सचट्टवत्रङ्गवङ्गवेत—रघु० ६१०३, —व: 1

किञ्चिका के शानरराज आदि का पुत्र, 2 ऊँसला से उत्पन्न सङ्घम्य का पुत्र—रघु० १५१०, इसकी राजधानी का नाम आद्यदीपा वा ।

अङ्गुलं-अं [अङ्गु + लुट्] 1 टहलने का स्थान, भागन, चौक, सड़न, बगइ, गुरु, गणन' व्यापक अन्तरिक्ष, 'भुज केसरवृक्षस्य मास० १, 2 सवारी 3 जाना, चलना आदि ।

अङ्गुना [प्रशस्तम् अङ्गुम् अस्ति वय्या—अङ्गु + न + टाप्] 1 स्त्रीभाष, नृप, राज, हृदिण^० इत्यादि, 2 सुन्दर स्त्री 3 (ज्यो०) बन्धा गति। सङ्०—अम: 1 स्त्री वाति 2 स्थिया, —प्रिय (वि०) स्त्रियो का प्रिय —प्रिय अशोकवृक्ष ।

अङ्गुन् (पुं०) [अङ्गु- अङ्गुन् वृत्तम्] पक्षी ।

अङ्गार-र [अङ्गु- आरन्] 1 कायला, ज्वला हुआ वा वन: हुआ, ठंडा, —उपगो दृष्टि चाङ्गार शीत कृष्णत्वय करम्—हि० ११८०, —त्वया स्वहस्तोनाङ्गारा कथिता —पच० १ तुलने स्वय अपने पैरो में कुल्हाड़ी मारने, तु० अपने लिए स्वय लाई मोदना 2 मगल ग्रह, —र लाज रग। सम०—घातिका अगौठी, कागरी —पाथी, —सकठी अगौठी कागरी, —कलरी —काली नाना प्रकार क पोथा का नाम विशेष 'पुत्रा' धृषधी ।

अङ्गारक-रं [अङ्गार + स्वार्थे कन्] 1 कोयला 2 मगल ४7 —विषद्वय्य प्रशोभय्य बृहस्पते—मृच्छ० १०३१, —कार: मगल ग्रह का मार्ग 3 मगलवार (दिन 'वासर), —ए एक छोटी चिनगारी। सङ्०—अथ मूला ।

अङ्गारकित (वि०) [अङ्गारक + इच्छ] मूलना हुआ भूना हुआ ।

अङ्गारि (स्त्री०) [अगार-अन्वर्थे टन प्वा० कलाप] कागरी, अगौठी ।

अङ्गारिका [अगार-अन्वर्थे टन-काप च] 1 कागरी 2 गन्ने की पौरी 3 किष्कू वृक्ष की कली ।

अङ्गारिणी [अगार + इन् -कोप्] 1 छाटी अगौठी 2 मला ।

अङ्गारित (वि०) [अङ्गार + इच्छ] झुलना हुआ, भूना हुआ, अथकला—र-न पलाज वृक्ष की कली, —ता 1 -दे० अङ्गारिणी 2 कली 3 मला ।

अङ्गारोष् (वि०) [अङ्गार + छ] कायका तैयार करने की सामर्थी ।

अङ्गिका [अङ्गु + क + टाप्] कोली, अंगिया ।

अङ्गिन् (वि०) [अङ्गु + इन्] 1 शारीरिक, देहवारी, —अर्थात्काममोक्षामायितार इवाङ्गुवान्—रघु० १०८४, १८, 2 गौण अंगो वाला, मूलन, प्रवाल—वे रत्नवा-गिनो धरार्, एक एक अनेकङ्गो अङ्गारो वीर एव वा-सा० ४०१ ।

अक्षिप्तः अक्षिप्तश् (पुं०) [अक्ष् + अत् + इत्] अक्षेय के अनेक मुक्तों का इत्या एक प्रविष्ट अक्षि; — (ब० ब०) अक्षिप्ता अक्षि की लक्षणा ।

अक्षीकरणम्, अक्षीकरणः, अक्षीकृतिः (स्त्री०) [अक्ष् + च् + इत्] — कृ + चम्, कृ + क्त्विप् १. स्त्री-कृति २. लक्षणति, प्रतिका, किन्नेवारी भावि ।

अक्षयेय (वि०) [अक्ष् + छ] शरीर लक्षणी ।

अक्षयः [अक्ष् + उन्] हाथ ।

अक्षुब्धः-री=रे० अक्षुब्धः ।

अक्षुब्धः [अक्ष् + उक्त्] १. अक्षुब्ध २ अगूढ (नपुं० भी), ३ अक्षुब्ध भर की नाप (नपुं० भी) का ८ जो के बराबर होती है, १२ अक्षुब्धों को एक 'वितर्गि' या मास्तिर और २४ अक्षुब्धों का एक 'हाथ' का नाप होता है ।

अक्षुब्धिः-स्त्री, अक्षुब्धिः-स्त्री(स्त्री०) [अक्ष् + उक्त्] १. अक्षुब्धी (पापों अक्षुब्धियों के नाम—अक्षुब्ध, तबेनी, मध्यामा, अनामिका और कनिष्ठा या कनिष्ठिका है) - वीरका पञ्चाशत की अक्षुब्धी कहुलाती है २ अक्षुब्ध, वीर का अगूढ ३ हाथी की सूट की नाप ४ अक्षुब्ध नाप विशेष । मय० - लोचनं मलकं पर चक्षुषं का अर्थ चक्षुषाकार तिरक, मं—बाध अगूठे की रक्षा के निमित्त बना एक प्रकार का दस्ताना जिसे अक्षुब्ध परतने है. बुद्धा, -बुद्धिका मोहर लगाने की अगूठी मोहन, -स्फोटनं बूटकी बजाना, अक्षुब्धी बटकाती, -सिखा अक्षुब्धिया में मकेल—मुखादिनीकाक्षुब्धिमज्जवेच—कुमा० ३।८१, —सखेयः अक्षुब्धियों के इतारे में सबेत् करना, —अक्षुब्धः नापन ।

अक्षुब्धिका अक्षुब्धि ।

अक्षुब्धी (स्त्री) अक्षुब्धि-अक्षुब्धि [अक्षुब्धि (वि०) + छ-स्वायं क्त्] अक्षुब्धी-नव सुचरितमक्षुब्धीय मून प्रस्तु मयेव-स० १।१०, —(पुं० भी)—काकुत्स्थस्याक्षुब्धीयक अट्टि० १।१८८ ।

अक्षुब्धत् [अक्ष् + म्वा + क्] १. अगूढ, वीर का अगूढ २ 'अगूढा भर' नाप विशेष जो अक्षुब्ध के लक्षण होती है । मय०—नाथ (वि०) अगूठे की लम्बाई के बराबर 'प पुत्र निष्कर्ष' लक्षणम्—अक्षुब्धः ।

अक्षुब्धवत् [अक्षुब्धत् नव—अक्षु] अगूठे का नापन ।

अक्षुब्ध्व [अक्षुब्ध्वः ऊचम्] १. नेत्रमा २ तीर ।

अक्ष्व (म्या० म्या० अक्ष्व० अक्ष्व०) [अक्ष्वते—अक्ष्वति] १ जामा २ आरंभ करना ३ लीप्राता करना ४ धनकाना ।

अक्ष्वन् (न०) [अक्ष्व् + अक्षु] पाप-वेणी० १।१२, (पाठोत्तर)

अक्षि-अक्षिः—[अक्ष्व् + च्] १. वीर २. पुत्र की बट ३. लोके का बोधा चरण । मय०—दः वृत्त—विजु अक्ष्वद्विषाङ्ग—वेणी० २।१८८—वाम (वि०) अक्ष्वे

की भाँति अक्ष्वे वीर का अगूढा वृत्तने वाका—अक्ष्वन्ः टकना ।

अक्ष्व् (म्या० उचम् इदित् अक्ष्व० अक्ष्व०) [अक्ष्वति—ने, अक्ष्वति, वामाक्ष्व, अक्ष्वत्, अक्ष्वत्] १ जामा, हिलना, २ सम्मान करना, श्रावना करना भावि, दे० 'अक्ष्व्' से सबद्ध —व् (पुं०) [म्या०] स्वरो के लिए प्रयुक्त गत्य ।

अक्ष्वन्तु (वि०) [न० ब०] नेत्रहीन, अथा, विषय (वि०) अक्ष्वन्त, (नपुं०) [न० ट०] अराव जीव, रोनी अक्षि ।

अक्ष्वन्त (वि०) [न० ट०] जो कोई स्वभाव का न हो, शान्त, नीच्य ।

अक्ष्वन्तुर (वि०) [न० ब०] १ 'चार' की लम्बा से रहित २ [न० न०] अनामी ।

अक्ष्वर (वि०) [न० ट०] स्थिर—चराचर विषय—कुमा० २।५; —चराचरान्मन्वरा—मनु० ५।२१ ।

अक्ष्वत् (वि०) [न० ट०] दृढ़, स्थिर, निश्चित, स्थायी—विजयन्तमिवाचन चामरम्—विष्णु० १।४—स १ पहाड, (बही १) चट्टान २ काबला या कील ३ शान की लम्बा, ला पुत्रो, स इडा । मय० कम्पका, लम्बा, बुहता, मुला हिमालय पर्वत की पुत्रा 'पार्वती' कीला पुत्रो, स, बाल (वि०) पहाड पर उत्पन्न, -जा, -अस्ता पार्वती, स्थिव (पुं०) कोयल, श्वि (पुं०) पर्वतों का नाम, इन्द्र का विदापण जिसने पहाडों के पत्त काट दिये थे ।

अक्ष्वत्स स्व (वि०) [न० ब०] चक्षुःलटाईहिन, स्थिर, स स्व [न० ट०] स्थिरता ।

अक्ष्वत् (वि०) वी० [अक्ष् + च्चिन् + चिञ् + वृत् न० ट०] १ सपक्षदारी से रहित, २ धर्मवृत्त्य ३ उग्र ।

अक्षित (वि०) वी० [न चित् - इति न० ट०] १ गया हुआ २ अविचारित ३ एकत्र न किया हुआ ।

अक्षित (वि०) [न० ब०] १ अकल्पनीय २ बुद्धिरहित, अज्ञान, मूर्ख ३ न साक्षा हुआ ।

अक्षिप्तलीय-अक्षिप्तव्य (वि०) [अक्ष् + चिन् + अनीयत्, चिन् + वत्] जो सोचा भी न जा सके, समझ से परे, -वत् नव प्रभाव—रघु० ५।३३, -व्यः शिव ।

अक्षिप्तिल (वि०) [व० ट०] अग्रस्थाधिक, माकस्थिक, पक्ष० २।३ ।

अक्षिर (वि०) [न० ट०] १ लक्षण, अक्षिक, लक्षणस्थानी, दे० 'चुति', 'चात्', 'त्रभा भावि २ नया—रघु० ८।२०; समस्त वधो में 'अक्षिर' का अर्थ है—हाथ में, अक्षी, कुछ ही पहले—अक्षुत्तं प्रीत्यसमवधविज्ञान—स० १; अक्षी अक्षी, 'प्रभुता—न० ४—अक्षी २ जिसने अक्ष्वे को पैदा किया है (यह एक हरिणी के शिष्य व कदा नया है जो प्रलोचनप्राप्त चल बसी है)—अक्षवा नाथ जिसने

बहने को जन्म दिया है—रं [कि० वि०] [अचिरेण, अचिराय, अचिरात् और अचिराय्य ही इसी अर्थ के शब्दक हैं] 1 बहुत देर नहीं हुई, अभी कुछ पहले 2 हाल ही में, अभी, 3 सोच, अस्वी, बहुत देर न करके । सम०—अंशु, आभा,—दृष्टि,—प्रवाह,—भास्व,—रोचिस् (स्त्री०) विजली—^०सुविलासचक्रा लक्ष्मी—कि० २।१९, भासा तेजसा चानुत्पिन्दि—स० ७।७ ।

अचेतन (वि०) [न० व०] 1 निर्जीव, अचेत,—चेतन 'नेतृ-मेघ' ५, 2 सोचरहित, अज्ञानी ।

अच्छ (वि०) [नञ् + छो + क] स्वच्छ, निर्मल, पारदर्शक, विमुक्त—मुक्ताच्छदस्तच्छविदन्तुरेयम्—उत्त० ६।२७, मेघ० ५१;—कि० दलमच्छा मति—भासि० १।१६, —च्छः 1 स्फटिक 2 भास्व—^०अन्न भी । सम०—उत्तम् [अच्छोद] (वि०) स्वच्छ जल वाला—व कादम्बरी में बोलत हिमालय पर्वत पर स्थित एक शीघ,—भस्व-रोच ।

अच्छ-च्छा (अव्य०) वै०—की आर, (कम कारक के साथ) की तरह ।

अच्छवत् (वि०) [न० व०] 1 उपनीत न होने के कारण या सुद होने के कारण वेद को न पढ़ने वाला, 2 छदरहित रचना ।

अच्छावाकः [अच्छ + वच + पञ्ज] सोमयाग का श्लिषिक जो होता का महायक होता है ।

अच्छिद (वि०) [न० व०] छिदरहित, अक्षत, निर्दोष, दोषरहित—अच्छिद नपच्छिद यच्छिद धादकमणि, सर्वे भवन्तु मेच्छिद श्राद्धधाना प्रवादत, —इ [न० न०] निर्दोष कार्य या दया, दोष का अभाव, 'ब्रह्म, बिना रहे, आदि म जन्म तक ।

अच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1 अदृष्ट, लगातार चलने वाला, अनवरत 2 जो कटा न हो, अविभक्त, अक्षत, अक्षय्य ।

अच्छोदन्म् [नञ्—छृ + लिच् + ल्यट्] आभेट, शिकार ।

अच्छुत् (वि०) [न० न०] 1 अपने स्वल्प से न गिरा हुआ, दृष्ट, स्थिर, निश्चिकार, अचल 2 अनवरत, स्थायी, —त विष्णु, सर्वशक्तिमान् प्रभु, —गच्छाम्यच्छुत्तमं-नेन—साय० ५ (यहा 'ज' का भी अर्थ है—दृष्ट, जो वासनाओं का शिकार न हो) । सम०—अच्छाः बलराम या इन्द्र,—अपञ्च,—आत्मक,—पुष्य कामदेव, कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र,—आवाहत्,—वात्स पीपल का वृक्ष ।

अज् (म्भा० पर० अक० सेट्—आशंभानुक्त लकारो मे विकल्प से 'बी' आदेश होता है) [अजति, शशीन्, अजितुम्, अजित-नीम] 1 जाना 2 हाकना, नेतृत्व करना 3 लेंकना (उपल्लां के साथ इत घातु का प्रयोग केवल सेव में ही पाया जाता है) ।

अज (वि०) [न० त०—न जायते नञ्—जन् + ङ] अजन्मा, अजादि,—अजस्य मुहूर्तो अज्—रघु० १०।२४, —अ 1 'अज' संबन्धितमान् प्रभु का विशेषण, विष्णु, शिव, ब्रह्मा 2 आत्मा, जीव 3 मेधा, बकरा 4 मेघराशि 5 अन्न का एक प्रकार 6 चन्द्रमा, कामदेव । सम०—अजो (स्त्री) कटीली काकमाधो, धमामा,—अजिर्षं छोटा पशु,—अज्ज बकरे और घोड़े,—दृष्टं बकरे और मेंढे,—अज् अजगर नामक भारी साँप या, बहने है बकरिया को गिरल जाता है,—(री) एक पोषे का नाम—मल दे० नी० 'अजगान्,—जीव,—जीविक, गजरीया, हनी प्रकार—'व, —'वात्स 1 कलाई, 2 एकप्रदेश का नाम (वर्तमान अजमेर),—जीव 1 अजमेर नामक स्थान का नाम, 2 युधिष्ठिर की उपाधि,—जीवा,—जीविका अजमेर—एक औषध का नाम जिसे मराठी में 'आवा' कहते हैं—^०धुवी मेडासिनी पोषे का नाम ।

अजकष- [अज विष्णु क बहुधाण्य वातीनि—वा + क] शिव का धनुष ।

अजका-अजिका [स्वायं कन् + टाप्] छाटी बकरी बकरी का बच्चा ।

अजकाव- [अज विष्णु क बहुधाण्य अर्चनि इति अज्—जम्] शिव का धनुष पित्तक ।

अजकष [अजगो विष्णुम्न वातीनि—वा + क] शिव का धनुष, पित्तक ।

अजकष [अजगो विष्णुम्नमवनीनि—अज् + अज्] शिव का धनुष, पित्तक ।

अजड (वि०) [न० व०] जो जड़ न हो, मनमग्नता ।

अजल (वि०) [न० व०] अनप्य विशाकान् ।

अजनिः (स्त्री०) [अज् + जनि] पय मायं ।

अजन्मन् (वि०) अनुपपन्न, 'अजन्मा' प्रभु का विशेषण, (पु०) परमानन्द, छुटकारा, अप्रयुक्ति ।

अजस्य (वि०) [न० त०] उन्मत्त होने के अर्थात्, मानव-जानि के प्रतिकूल, स्व अणुकुलमूक अणुष घटना जैसे कि नृचाल ।

अजष [न० व०] वह श्राद्धज जो मध्योपायना उचिन् रूप में नहीं करता है ।

अजम (वि०) [न० व०] दांत रहित,—अः 1 मेंढक, 2 मृग 3 बच्चे की वह अवस्था जब उसके दांत नहीं निकले हैं ।

अजय (वि०) [न० व०] जो जीता न जो मरे, जो हराया न जो लके, नाथ,—अः हार, पराजय,—आ भाग ।

अज्य (वि०) [नञ् + जि + यत् न० त०] जो जीता न जा सके, म० ५।२९, रघु० १।८।

अज्यर वि० [न० त०] 1 किये कमी बुझाया न जाये, अवा

अचान 2 जो कभी न मुझसे, अनसवर; -नुराजमवर
विट्-रघु० १०११-ए देखा, -ए परचाया ।

अचर्य [नञ् + च् + यत् + न० ट०] (अविहित वा अभ्याहृत
सगर्भ के साथ) विपत्ता-परीचर्यं अरुहोपविष्टन्-
रघु० १८१७ ।

अचर्य [वि०] [नञ् + च् + यत् + र न० ट०] अविहित, अन-
वरत, लगातार रहने वाला, -'दोषाप्रवृत्त्य-रघु०
२१६८, -अं (अच्य०) सदा, अनवरत, लगातार-
तत्त्व धनोत्पन्नम्-उत्त० ४१२६ ।

अच्छास्पर्शा [न चक्ष् + स्वाशोऽन-हा + ण्यु न० ङ०]
सजाया सक्ति का एक भेद जिसमें मुझसे पर-दान्यता
के कारण सट नहीं होता, जैसे कुला प्रथिति-कुल
धरिया दुष्या, इसे उपद्राव लक्षणा भी कहते हैं ।

अच्छास्पर्श [न चक्ष् + णिङ् यत्, हा + ण्यु न० ङ०]
सजा सज्ज (जिनका लिंग नहीं बदलना चाहे वह
विशेषण की भाँति हो) को न प्रयुक्त किया जाय-
उदा-भेद (अध्वर) धृति प्रयाचम् (प्रमाण अथवा
प्रमाणा नहीं) ।

अक्षा (स्त्री०) [नञ् + अञ् + इ + टाप्] 1 (साक्ष्य
द्वयं क मतामुनार) प्रकृति या मार्गा, 2 बकरी ।
सम० -अक्षस्य, बकरियों के गल में लटकने
वाला धन, (आन०) दिनी बन्तु की निर्यंकरणा
सूचक करने में इसका उपयोग होता है । धर्मार्थ-
काममोक्षाया उपवेकोऽपि न विद्यते । 'मनश्चेत् तस्य
जम निर्यंक्तम् ।' शीघ्र चालकः महर्ष्या ८०
-अक्षे आदि ।

अक्षाजि (स्त्री०) [अक्षेन भाव ग्याज अय्याम् -
अञ् + आञ् + इत्] सफेद या काला जीरा ।

अक्षाल [वि०] [न० ट०] अनुपपन्न -अक्षालमनमुक्षेभ्यो
मुनाक्षाली मुनी बन्तु-पञ्च० ९, अ) अर्था उपपन्न
न हुआ हो, पैदा न किया गया हो अविकसित हो,
'कपुद्गु, 'कल द्रवादि । सम० -अरि, अणु
(वि०) जिसका कोई रूप न हो, वा किसी का साथ
न हो, (-रि-भू) 'युधिष्ठिर' की उपाधिवा-हृत
जातयज्जालारे इवमेव स्वर्गाग्नि -सिधु० २१२०,
न ह्येति यज्जनयत्सवजाजानाणु -वेणी० ३१२३;
सिञ् तथा हुमरे अनेक देवताओं की उपाधि,
-कपुद्गु-न् (ए०) शोरी उत्र का देव जिसका कुछ
अग्नी न निकला हो, -अक्षय (वि०) जिसके शरीर
आदि अविज्ञान सिद्ध न हो, -अक्षयार, अक्षयक,
नाशानिज जिसकी अग्नी तक क्षमकता न मिली हो ।

अक्षालि [नास्ति काका शब्द-आशया विज्ञादेव-न० ङ०]
जिसके शरीर न हो, वन्धीहीन, विधुर ।

अक्षालिः [अक्षेण शाली लीकनं अय-उण्] महर्षिवा, बकरियों
का आधारी ।

अक्षालेय (वि०) [अक्षेऽपि भावेय-यथास्थान प्रापणीम्:-
इति अञ्-अथ-आ + ली + यत्] उराय कुम्भ का,
निर्मय (बैले कोड़ा) ।

अक्षिल (वि०) [नञ् + च् + णि + क्त] 1. जो सीला न जा सके,
अक्षेय, दुर्घर ० त पुष्य... मह-उत्तर० ५१२७ 2 न
सीला हुआ (देव आदि) अनियमित, अनिष्ट,
० आसन्, ० अक्षिये = जिनसे अपने मन वा इन्द्रियो का
ध्यान नहीं किया है, -सः विष्णु, शिव, वा बुद्ध ।

अक्षिणं [अञ् + अण्] बाय, सिद्ध या हृत्की आदि, विशेषकर
काले हृत्त की रोएँदार काल जिसके आसन करते हैं
वा जो गह्वरे के काम आती है-अथाक्षिणाद्याधर-
कुया० ५१३०, ६७, कि० १११५. 2. चमड़े का पीला
वा पीकनी । सम०-अक्ष, -अक्षी, -अक्षिणा चमगादर,
-शैविः हृत्त, कृष्णमार धन-अक्षिण् (वि०) धन-
धर्म गह्वरे वाला, -शेषः धनधर्म का व्यवसाय करने
वाला ।

अक्षिर [अञ्-किरन्] शीघ्रभावी, स्फूर्तिवान्;
-२ 1. आसन, अहाता, अलाका, उदकाक्षिररकीर्ण-
का० ३९, 2. शरीर 3 इन्द्रियमय पदार्थ 4 बाहु,
हुवा 5 मेढक, -रा 1 एक नदी का नाम 2. दुर्गा का
नाम ।

अक्षिण्ड (वि०) [न० ट०] 1. सीधा 2 अन्धा, अरा,
ईमानदार, -० भास्विभ-वि० ११९३, बेलाग और
अरा; -ह्यः मेढक । सम०-अ (वि०) सीधा चलने
वाला, -अरेहिनर्मात्राण-अण्० ६३१-अ तीर ।

अक्षिण्डु [न० ङ०] मेढक ।

अक्षीकृत्य [अथवा शार्धोपनेन क ब्रह्माण याति प्रीथाति
वा + क्त] शिव का धनुष ।

अक्षीकृत्य [अथेय गमनाय गने अयन्-ङ० ट०] शीप ।

अक्षीकृत्य (वि०) [न० ट०] न पचा हुआ, न सड़ा हुआ,
-अं अयच ।

अक्षीकृत्य (स्त्री०) [नञ् + च् + क्तिन्] 1 मन्दानि-
कैर-शोर्षभवाद् आनभोजनं परिशील्यते-हि० २१५७ 2.
अन्, सक्ति, शय का अभाव ।

अक्षीकृत्य (वि०) [न० ङ०] निर्वीच, जीव रहित, -अः [न०
ट०] मरता का अभाव, मृत्यु ।

अक्षीकृत्यः (स्त्री०) [नञ् + शीच् + णि] मृत्यु, मरता का
अभाव (अविनाश के रूप में प्रयुक्त)-अक्षीकृत्ये
छट भूवात्-मिड्रा०-अरे हुत् 1 अनवान् हुत्ते मृत्यु दे,
अवधान् करे, तुल मर जाओ ।

अक्षय 1 शान्त 2 अलगा हुआ कोसला ।

अक्ष (वि०) [नञ् + अञ् + क न० ट०] 1 न चलने वाला,
आन रहित, अनुपबधीन-अयो प्रथित है शान्त-अणु०
२११५२ 2 अज्ञानी, अनसवर, मूर्ख, मूढ़, अणु (अणुओं
के विषय में भी कहा जाता है)-अञ्ः
श्रीर पुण्डरी के विषय में भी कहा जाता है)-अञ्ः

सुकमारोप्य-मनु० २० ३. अज्ञान, समझ की शक्ति ही हीन ।

अज्ञान (वि०) [न० त०] न जाना हुआ, अज्ञात। अनजान-पत सलिले समञ्ज-रघु० १६।७२। सय-धर्मा, भासः शिव कर रहना (पापवश के विषय में-अज्ञातवास' प्रसिद्ध है) ।

अज्ञान (वि०) [न० व०] अनजान, बेमसल, न- [न० त०] 1 अनजानपना, 2 विशेष करके आध्यात्मिक अज्ञान-अर्थात् अधिष्ठा जिसके अधीन हो कर मनुष्य अपने आप को ब्रह्म से पृथक् समझता है तथा भौतिक संसार की वास्तविकता को मानता है । समस्तपदों में 'अज्ञान' का अनुवाद 'अनजाने में' 'अनवधानता में' बेमसली में किया जा सकता है । 'आध्यात्मिक' उच्चारित इत्यादि ।

अज्ञान् (भा०) उभ० सक० बेंदु) [अञ्चनि-ते. आनञ्च अञ्चिन् अञ्चयान्-अञ्चान्. अकन-अञ्चिचत्] 1 मुकाना, शिरोऽञ्चिचत्वा-भट्टटि० १।८० 2 जाना हिलना, मुकाना होना-अवगत्या अथमञ्चलि भट्टटि० ४।०२ त्वं वेदञ्चलि लोमम्-भावि० १।४६ लावायित हुना 3 पूजा करना सम्मान करना, आदर करना, सुगोभित करना, सम्मानित करना दे० आगे 'अञ्चिन' 4 पार्यया-करना, इच्छा करना, 5 बुझना, अस्पष्ट बोलना । प्रेर० वा च० उभ०-प्रकट करना प्रकाशित करना-मुद्रमञ्चय गीत० १० उपसर्गों के साथ प्रयोग, अणु-नूत्र करना, हटाना हटाना, आ मुकाना, उभ-1 ऊपर उठना 2 उभन होना, प्रकट होना, उदञ्चनमानस्य ग० म० ६ उषु लीचन, (जल) ऊपर निकालना, नि-1 झरना, इच्छा करना २. कम करना, अपेक्षा करना-अञ्चनि वयसि प्रथम-भावि० २।८७ पर-मोदना, मुद्रना-वातापेक्ष्य पराञ्चनि द्विरदाना गदा हव-भावि० १।६५, वरि-पुमाना भवत् मे डालना, मरोडना, नि-लीचन। नीचे को झरना, पीटना पीटना, सम् भीड करना, इकट्ठे हाकना, इकट्ठे मुकना ।

अञ्चल-ल [अञ्च+अलच्] 1 वस्त्र का छोर या किनारा, मोट या झालर-श्रीधामञ्चलसिध पीनस्तन-जपनाया-उद्भट 2 कोना या शीर्ष का बाहरी कोण-दुर्वाञ्चलं पश्यति केवल मनाच्-उद्भट ।

अञ्चलित (मू० क० क०) [अञ्च+ल] 1 (क) मुड़ा हुआ, झका हुआ, रघु० १८।५८, (ख) घनुवाकार, सुन्दर (वैते कि भीह), अमलिपमन् रघु० ५।७६, छन्दे-वार, वृष्टराजे (वैते कि शाल); 2 सम्मानित, सम्मानित, सुगोभित, श्रीधामयाव, सुन्दर; वसेयु श्रीधामञ्चल-विक्रमेय-कु० १।३४, 'ताम्यो पशाम्याम्-रघु २।१८, १।२४, 3 सिला हुआ, बना हुआ, व्यवस्थित-अर्था-

ञ्चिता सावर्ण्यविताया (रचना)-रघु० ७।१०, अर्धमुक्ति वा पितोया हुआ । सम०-यू अनुधा-कार वा सुन्दर लीको बानी ली ।

अञ्चु (रघा० पर० सक० अनिदु) [कृषी कृषी-आतनेपर] अनक्ति-अस्ते, अस्ता 1 केपना, सावना, रन पीतना 2 स्पष्ट करना, प्रस्तुत करना, चिबन करना 3 जाना 4 चमकना 5 सम्मानित करना, तमारम करना 6 सजाना, प्रेर०-1 सावना, 2 शोभना, चमकना उपसर्गों के साथ, अञ्चि-उपकरण जुटाना, सुन-ञ्चित करना, अञ्चि-1 लीपना, सावना 2 कमुपित करना, मलिन करना, अञ्चिचि-प्रकट करना, व्यक्त करना; अ-1 लेप करना 2 सफल बनाना, तैयार करना, 3 सम्मानित करना, नि-प्रकट करना, व्यक्त करना, जाहिर करना-अञ्चिञ्चनव मखड व्यपक्ति रघु० ५।१६, सि० २६ ।

अञ्चन [अञ्च+स्यट्] (परिचय वा दक्षिण-परिचय दिया के) रसाक हापी-न 1 लीपना पीतना, मिलाया 2 प्रकट करना, व्यक्त करना 3 कामन वा सुगम जो आशो में लगाया जाता है, -विमोचन दक्षिणअञ्चनेन सम्भाव्य-रघु० ७।८ अणु० उभ० ४।१९, मूञ्च० १।३४, (आम० भी) अज्ञानान्धस्य लोकस्य आनञ्चन प्रलाकया । अणुमोक्षिण येन तद्वै परिचये नम ॥ विज्ञा० ६५, (गु०) दाग्निव परमोक्षनम् 4 लेप पीटन-वर्षक उदहन 5 नसी 6 आश 7 टाचि 8 (-नं, -ना; मा० शा०) व्ययार्थ, व्ययार्थ के प्रकट होने की प्रक्रिया, अनेकार्थक शब्द का प्रयोग जिसका प्रयोग विशेष अर्थ होना है-अनेकार्थस्य व्ययव्य वाचकस्य नियन्त्रिते । सर्वोपायैरवाच्यायंभीक्षुव्यापुनिरञ्चनम् ॥ काव्य २, दे० व्यञ्जनां ली । सम०-अञ्चत् (न०) ॥ अञ्च का पानी-समञ्जस मुद्रना कपाने की मलाई ।

अञ्चन्या (अञ्च+स्यट्+टाप्) 1 उत्तर भारत की दक्षिणी 2 हुनुयान् वा मारस की माला ।

अञ्चलि [अञ्च+लि] 1 दोनों सुने हाथों का मिलाकर बनाया हुआ कटोरा, करसुपुट, अलिचर अणु-सुपुरो मुक्तिआञ्जलि-पंच० १।२५, प्रकीर्णं पुष्पाणां हरिचरमयोरञ्जलिद्वय-वेणी० १।१, अलिचर कुल, इती प्रकार-अलस्याञ्जयो दस-या० ३।१०५, दस संज्ञितयो अर्थात् जल मे तर्पण, -अथवा-अञ्जलिपुटोपय-वेणी० १।४, अञ्जलि रघु०, अणु०, कु वा -अथा, हाथ जोड़कर नमस्कार करना 2 अत एव सम्मान वा नमस्कार का चिह्न, रघु० १।१०८, 3 नवाच की मार-कुडव । सम०-अञ्जल (न०) हाथ जोड़ना, आदरपूर्वक नमस्कार-कारिका मिट्टी की मुद्रिया, -कुड-ई दोनों सुने हाथों को जोड़ने से बने कटोरे के आकार का गर्त, हाथ की सुली हुयेथिया ।

अञ्जलि [अञ्जलि-वि-क] काये प्रकाशते-क+क+टाप्] एक छोटा पुष्प।

अञ्जलि (वि०) [अञ्जलि-अञ्जली, अञ्ज् + अञ्ज्] अ-कुटिल, सीधा, ईमानदार, बरा।

अञ्जलि (अञ्ज०) 1. सीधी तरङ्ग से 2. यथावत्, उचित रूप से, ठीक तरह से-दिघादे सट पकायनञ्जलि-अञ्जलि-१०० ११३१ 3. सीमा, अस्ती, सुरन्त।

अञ्जलि -ञ्ज् [अञ् + इण्ड् इण्ड् वा] पूर्व।

अञ्जलि-२ [अञ्ज् + ईरन्] अञ्जोर वृक्ष की जाति का जोर उनके फल।

अट् (भ्वा० पर० क०) वेद् आ० विरल] [अटति, अटिन] इपर उपर घुमना (अटि० के शाब्), (अटि शाब्दिक के माथ), मो बटो मिश्रामट-मिशा० मिशा मागे जाओ - आट नैकटिकावपा-अटि० ११२२, (अट-अट) अट्टकले, स्वभावत इपर उपर घुमना जैसे कि कोई तापु तत घुमता है।

अट् (वि०) [अट् + अट्] घुमने वाला : (समास-प्रयोग) :

अटने [अट् + अट्] घुमना, घूमना कः १-मिता०, गाँव आदि।

अटि-नी (स्त्री०) [अट् + अटि डीप् वा] घन्य का लांबदाय विना, निम्नत स्वल्पनिकेसिनाटनी सीकरीय घन्यो अविजयान्-१०० ११११४।

अटा [अट् + अट् + टाप्] हापु मत्तों की भाँति इपर उपर घुमने की आगत, इनी प्रकार अट्टया, अट्टया।

अटव (क०) व [अट् + अट् + क] बहुधा वास्तक का पीछा।

अटि-की (स्त्री०) [अट् + अटि डीप् वा] इन, जगल-आदिद्वयने अट्टया अट्टोप्-य० २।

अटिक [अटि + अट्] इन में काय करने वाला, दे० 'आटिक'।

अट्ट (भ्वा० वा०) 1. बध करना 2 अतिक्रम्य करना, परे जाना (आल० कय से नी), -अट्टे०-1 घटाया, कम करना 2. घुमा करना, तिरकत करना।

अट्ट (वि०) [अट्ट + अट्ट] 1. ऊचा, उन्नततरपुल 2 वार-वार होनेवाला, लगातार जाने वाला 3 मुच्छ, मुसा -ट्ट् [अट्ट + अट्ट] 1. बटारी 2 कनूरा, मीनार, बूँद-अट्टेप्रमाणद्वि इव-१०० १११७ 3 हाट, बडी 4 महल, विद्यालय अट्ट-अट्ट मीनय, मात, अट्ट-अट्टा अनपदा-अट्टा (अट्टम् अट्टम् तुल विधेय वेदां ते-मीकचठ)। सम०-अट्टाकाः अट्टाका, अट्टा-अट्टिक, अट्टम् और की हूँती वा अट्टाका, शिव का अट्टाका-अट्टकल-अट्ट-५८; -अट्टिक (पु०) 1. शिव, 2. अट्टाका काकार होने वाला।

अट्टक [अट्ट् + अट्ट् स्थावे कन् + टाप्] शीबारा, महल।

अट्टक-अट्टकः [अट्ट् इव अट्टि-अट्ट् + अट्ट् स्थावे कन्] बटारी, बालासाला, शीबारा, महल।

अट्टालिका [अट्टात् + स्थावे कन्] महल, उन्नय भवन। सम०-आराः राव, फिनारि करने वाला, (रावमहलों का निवासी)।

अट्टव [अट्ट् + अट्ट्] डाल।

अट्ट (भ्वा० पर०) 1. डाल करना 2. (दिवा० वा०) डाल लेना, बीना ('अट्ट' के स्थान पर)।

अट्ट (क०) क (वि०) [अट्ट् - अट्ट् कुत्साया क्त् वा] बहुत छोटा, मुच्छ, मगम्ब, अमय इत्यादि, समास में-'हाल' और 'हीनासवा' अर्थ को प्रकट करता है, 'कुत्साय-सिद्धा०' हेय कुम्हार।

अट्टि (स्त्री० -अट्टी) [अट्ट् + इन् डीप् वा] 1. धुई की मोक 2. बुरे की कील, कील का कावला जो नाड़ी के नाक को रोकने के लिए लगाया बाव 3. सीमा।

अट्टिकम् (पु०) अट्टिका, अट्टिकम् [अट्ट् + इमिण्, अट्ट् + टा, अट्ट् + ल] 1. सुलभता, 2. आनय प्रकृति 3. आठ सिद्धियों में से एक दीवीसिद्धि जिसके बने से अट्टिक 'अट्ट' बीना छोटा बन सकता है।

अट्ट (वि०) (स्त्री० -अट्टी) [अट्ट् + उन्] मुच्छ, बारीक, मट्टा, अट्ट, परमाणु-अट्टी-अणोरपीयान्-मग० ८१९, -अट्ट 1. अट्ट = अट्ट पत्तीकृत-अट्ट 2. उ०, अट्टा देना-अट्ट 'मिल का ताव' से 2. समक का मत 3 शिव का नाम। सम०-आ विजली, देव्य आनय अट्ट, आवाः अट्ट-सिद्धात्, अट्टवार।

अट्टक (वि०) [स्थावे कन्] 1. अट्टिकम्, अट्टिकम्, 2. सुदय, अट्टिक बारीक 3. तीव्र।

अणोत्प, **अणिक** (वि०) (अण् + इमिण्, अण् + इण्ड्) मुच्छतर, मुच्छतर, अट्टिक मुच्छ; अणोरपीयान्-मग० ८१९।

अण्-नी [अण् + अ] 1. अणकोप 2. फोटा, 3. अण-अट्टा के बीचकृत अर्थ से उत्पन्न होने के कारण 'अणर' की बहुधा 'अट्टार' कहलाता है 4. घुमनादि का कल्परीफोण 5. बीम, 6. शिव। सम०-अण्कम्बं अणिका करता, -अणकार, अणिक (वि०) अट्टे के आकार का, अणकार, अणुताकार, (-२-सिः) अणुत्प-अणु(अः)-अणुकाः फोटे, -अ (वि०) अट्टे से उत्पन्न, (-अः) 1. पत्ती, पत्तवार अणु-अणु ३।५२ 2. अणुकी 3. हाप 4 अणुफनी 5. अट्टा, (-आ) कल्परी, -अट्ट शिव का नाम, -अण्वं, -अट्टि (स्त्री०) फोटा का अणु वाला, -अ (वि०) पत्तवार अणु।

अण्क [अण्-स्थावे कन्] फोटा, -अ छोटा अण-अणवर्-अणुत्प-अणुवि-वि० ११९।

अणुत्प [अण् + आणुप्] अणुनी।

अन्वीरः [अन्व+ईरच्] पूर्ण विकसित पुरुष, अन्वयात्
द्वन्द्वपुट पुरुष ।

अन्व० पर० अक० वेद [अन्वि, अन्-अन्वि] 1
आना, चलना, घूमना, लगातार चलते रहना 2 प्राण-
करना (अनुया वै०) 3 बाचना ।

अन्वत् (वि०) [न० व०] नटहरित, नटरी डांस वाला, -
चट्टान, डबला चट्टान ।

अन्वत्वा (अन्व०) [नन्+तत्+वा] ऐसा नहीं, "उचित
(वि०) अनधिकारी, अनभ्यस्त ।

अन्वत्तुम् (अन्व०) [नन्+तद्+तुम् न० त०] अनूचिन रूप
से, अनधिकृत रूप से ।

अन्वत्तुम् (सा० शा०) 'अन्वत्वा' से एक अन्वत्वा का
नाम जिसमें कि प्रतिपाद्य पदार्थ-कारण के बिद्यमान
रहने हुए भी दूसरे के गुण को ग्रहण नहीं करना-
काव्य० १० ।

अन्वत् (वि०) [स्त्री०-म्बो] [न० व०] 1 बिना डोरी
का, या बिना संगीत के तार का 2 बिना लयाम का
3 बिद्यार्थीय नियम की कोटि से बाहर की बन्तु या
अनिवार्य रूप से बंधन की कोटि में न हो-हृस्व-
ग्रहणमन्त्रम् सिद्धा० 4 सुवर्णित या अनुभव मित्र
किया ।

अन्वत्-अन्विष्ट-अन्विष्ट-अन्विष्ट-वि० [नान्वि तन्वा
यन्-न० व०, न नन्वि न० त०, न० त०] नावधान,
अस्मान्, मनर्क, ज्ञायक, अनन्विना मा स्वयमेव वृत्त-
कान्-कु० ५।१४, १५० १।३।२५ ।

अन्वत्-अन्वत्तुम् वि० [न० व०] धार्मिक नवउत्तर्या की
अवदन्तना करने वाला ।

अन्वत् (वि०) [न० व०] तर्कहीन युक्तिरहित, -क [न०
त०] 1 उक्ति या तर्क का अभाव बुरा तर्क
2 नरहीन बयम करने वाला ।

अन्वित (वि०) [न० त०] न गाया हुआ अग्रथा-
गित, -न [वि० वि०] अग्रथागत कर से । सम्०

अन्वित, -उपलत (वि०) अग्रथागत रूप से होने
वाला, अकम्पान्य होने वाला- उपलत दर्शनम्-
कु० ६।५५ ।

अन्वत् (वि०) [न० व०] नन् गठित ल [न० त०]
पानाल-क निव । सम०-लम्बु, -स्वर्त्त (वि०) नन्
रहित, बहुत महार अन्वत् ।

अन्वत् (अन्व०) [इन्व+तन्विम्] 1 इसकी अपना,
इसमें (बहुधा तुलनात्मक अर्थ वाला) किन्तु परम्यो
नगर्भित माम्-मन्० ३, ५ 2 इस या उस कारण
से, कलत, सो, इस लिए (यन् 'यस्मान्' और हिं
का महत्त्वभी-अभिहित या अन्वत्तुम्) १५० २।५३,
३।५०, कु० २।५ 3 वहाँ से, अर्थ से या इस स्थान
से, (-वारम्, -अन्वत्) इसमें परचात् । लम्ब०-अन्वत्,-

निमित्त इस कारण, फलतः, इस कारण से, -अन्व
(अन्व०) इस ही लिए-अन्वत् अर्थ से लेकर, इसके
कार, -वर (क) इसमें आये, और फिर, (अन्व० के
साथ) इसमें परचात् (अ) इसमें परे, इसमें आये,
भाग्यावसामत परम्-सा० ५।१५ ।

अन्वत् [अन्+अन्वत्] 1 हुआ, बावु 2 आया 3 अन्वत्ती
के रेखा में बना हुआ कपडा (यह शब्द बहुधा लप०
होता है) ।

अन्वत्ती [अन्+अन्विष् दीप्] 1 मन 2 पटनम 3 अन्वत्ती ।

अन्वि (अन्व०) [अन्+इ] 1 विशेषण और क्रिया-
विशेषणों से पूर्ण प्रयुक्त होने वाला उपसर्ग-अन्वन्,
अधिक, अतिशय, अत्यधिक उन्मत्त वा भी यह शब्द
प्रकट करता है, भातिहारे अत्यधिक दूर नहीं, क्रिया
और कृत्वन रूपों से पूर्व भी प्रयुक्त होता है-स्वभावो
इत्यतिरिच्यते आदि 2 [क्रियावा क साथ] ऊपर,
परे, अति इ-परे जाना इसी प्रकार 'अन्व', 'अन्'
और 'अन्व' आदि ऐसे अन्वत्ता पर 'अन्वि' उपसर्ग नमस्कार
जाना है । 3, क, 1 महा व नवनामो के साथ] ऊपर,
परे, पार करने हुए क्षेत्र पर प्रमत्त, पुत्र्य, उन्मत्त,
ऊपर, नमोप-बन्धो के रूप में द्वितीया विभक्ति के
साथ, या बहुवचन के प्रथम पद के रूप में, अन्वत्ता
नन्वत्त्व मन्वत्त में गायामान उन्मत्ता और प्रयुक्तना के
अर्थ का प्रकट करता है अन्विषो, 'साव्यो'-ग्रन्थशा
यो माध्यागो गन्वत् 'साव्य' इतिवा गन्वा, अन्वत्ता
द्वितीया पद के साथ उन कर इसका अर्थ-अन्विषो
होता है, गन्वत् इव अन्वत्ता से द्वितीया पर में दूसरी
विभक्ति होने से अन्विषो-साम्येतिच-न । 'साव्य'
अन्विषोना साम्याय एवो प्रकार अन्विषोच, इ०
कार अन्वि देवत्त इत्य-मिद्वा० । अ) (कुरन्त
गन्वा स पूव । अन्विषोच अन्विषोच, अन्विषोच, उपा०
'आवर' अन्विषोच कार, अन्वत्ता-अन्विषोच आया,
इसी प्रकार 'अन्व', 'अन्व', 'अन्वत्' इत्यादि (ग)
अपवाद, अन्विषो अन्विषो (अन्वत्तना) तथा शेष
[मन्वा] ३ अर्थ में एता-अन्विषोच-विद्या मन्वि
न वृत्तये-मिद्वा० ।

अन्विषो 1 अन्विषोच कहानी 2 अन्विषोच माध्याय ।
अन्विषोच [अन्+इत्+अन्वत्] कृत्वन अधिक परिश्रम,
अत्यधिक बहहन ।

अन्विषोच (वि०) [अन्विषोच कर्मात्-अ० व०] कोड़े की न
यागने वाला, कोड़े की भांति कर में न आने वाला ।

अन्विषोच (वि०) [अन्विषोच कर्मात् अन्वत्-अ० व०]
भारी शीत शीत वाला, विशालकाय ।

अन्विषोच (वि०) [अन्विषोच कर्मात्-अ० व०] अन्वि
कटित-अन्व कृत्वन कर्मात्, १२ राशिवां तप
कटित तपन्वा करने का शब्द; मन्० १।१२१३-५ ।

अतिशयः [अति + श् + यञ्] 1. शीघ्रता वा नवीनता का उत्कृष्टता, द्रुत के समान बढ़ना 2. कर्तव्य वा अधिपत्य का अर्थ, उत्कृष्टता, सर्वोपरि का अतिक्रमण, सर्वत्र प्रवेश, लक्ष्मी, श्रेष्ठ, विरही, श्लाघ्य 'लक्ष्मी अत्यन्त-मेव सुखे-सुखी' ३। १०. 3. शीघ्रता (लघुत्व का) गुणवत्ता-अनेककालपर्यन्त अतिशय-उत्तम- ४, 4. शीघ्रता, बढ़ जाना (सुख 'द्रुत' के साथ)-स्वजातिवृद्धिक्रम 5. ज्येष्ठा, मूल, अश्लेषा 6. शारी आक्रमण 7. अधिपत्य 8. दुःखयोग 9. दुःखसंहार ।

अतिशय्य [अति + श् + यञ्] आगे बढ़ जाना, समय का शीघ्रता, अधिपत्य, योग, अन्वय ।

अतिशय्योव (वि०) [अति + श् + यञीच्] सर्वादा भग करने के योग्य, उन्नेषा करने के योग्य अथवा उत्कृष्टता करने के योग्य 'वं मे सुहृद्वायम्-सं- २, १, ६, ७ ।

अतिशय्यन् (वि०) [अति + श् + यञ्] आगे बढ़ा हुआ, आगे गया हुआ, परे पहुँचा हुआ अति-शो-तिक्रमण-अधपतिपथ-योग- १०१, शीघ्रता हुआ गया हुआ, पहला, (-सं) अतीत विषय, अतीत की बात, अतीत ।

अतिशय्य (वि०) [अतिक्रमण, अर्थात्-श्रां-सं] चारपाई रहित, चारपाई के बिना काग चलाने वाला ।

अतिशय (वि०) [अति + श् + यञ्] (मयात् में) बढ़ने वाला, बढ़कड़कर काम करने वाला, सर्वोत्कृष्ट रहने वाला सर्वश्रेष्ठ-सुहा- १।२, किन्नीचपत्तारितिवैश्वर्यहो महात्माचिन्-सुहा- ६, शीघ्रियों के प्रभाव को मनादृत करने वाले रोगी के हाथ ।

अतिशय्य (वि०) [अतिशयिणो लभो लय-सं-सं] अत्यन्त तीव्रता यथ बाधा, -सं- मयक ।

अतिशय (वि०) [आत्मनिक्रमण-श्रां-सं] 1 अत्यन्त यत्न, विन्तुल श्रद्ध 2 सर्वनालीय ।

अतिशय (वि०) [अत्यन्तिक्रमण-श्रां-सं] 1. बढ़े चढ़े गुणों वाला, 2 गुणरहित, विक्रमता, -सं- अत्यन्त अत्यन्त मय ।

अतिशय (वि०) [आत्मनिक्रमण-श्रां-सं] अत्यन्त बढ़िया साथ ।

अतिशय (वि०) [अत्यन्तिक्रमण-श्रां-सं] दुर्बल, -सं- श्राद्धः 1 आत्मनिक्रमण के विषय-श्रीमे तपसा का स्वर्ग विष्णु का मम अति, 2. लघु ज्ञान 3. आगे बढ़ जाना, दुबल को पीछे छोड़ देना-आदि ।

अतिशय (वि०) [अत्यन्तिक्रमण-श्रां-सं] येनाशो के ऊपर विक्रम प्राप्त करने वाला ।

अतिशय (वि०) [अति + श् + यञ्] बहुत परिश्रमशील, लघुमन, -सं-कर्मिणी का शीघ्रता, रक्षिणी, स्वक-रक्षिणी, रक्षकारिणी लला ।

अतिशय [अति + श् + यञ्] आत्यधिक अन्वय, अति के अधिक करना ।

अतिक्रमः [अति + श् + यञ्] 1. सर्वादा का उत्कृष्टता, 2. आगे बढ़ जाना 3. अतिक्रमण 4. सर्वो की स्वरित मति, सर्वो का एक राशि पर योग्यता समान्य द्रुत बिना द्रुतरी राशि पर चले जाना ।

अतिक्रम्य, **अतिक्रम्यता**, **अतिक्रम्यता** [अतिक्रमणः लघु-श्रां-सं] कुतूहल, सुं, शीघ्रता, लीक का शीघ्रता ।

अतिक्रम (वि०) [अतिक्रमणो लघु-श्रां-सं] अत्यन्त, जो आजाय न हो ।

अतिक्रम (वि०) [अतिक्रमणः श्रां-सं] अति बल का पिता से बढ़ा हुआ ।

अतिशील [अति + शी + ल] (रक्षिणो की) अनाचारता उद्गम ।

अतिशरत् [अतिशरत् + अतिशरत् + अत्यन्त] [अति + शरत् (लघु-श्रां-सं)] अधिक, उत्कृष्टता (अश्रां-सं के साथ) 2. अत्यधिक, अत्यन्त, बहुत अधिक, बहुत ।

अतिशय्य [अत्यन्तिक्रमण-श्रां-सं] न्यूनता, अधधिकता अथवा लालसा, 'त्या न कर्तव्या-पथ- ५-अत्यधिक लालस नहीं करना चाहिए ।

अतिशयि [अतिशयि मयकति, न अतिशयि-अन् + इचिन्] मनु के अनुसार 'पापी' का अन्वय-एकराश तु निष्कल-निष्कल-स्युत । अतिशयि विष्णो अत्यन्त-अत्यन्त-अतिशयि-स्युत । अत्यन्त ३।१०२, अन्वय (अश्रां-सं) अतिशयि-निष्कल-स्युत-सं- ४, कुतूहल-अतिशयि-सं- ५-विश्व अथवा स्वागत के योग्य अन्वय । अत्यन्त-किन्ना, सुहा, लालसा, अतिशय, शीघ्र अन्वय-सं का मन्वय-स्युत स्वागत, अतिशयि, अन्वय-सं की सेवा-अर्थः अतिशय करने का अधिकार, अन्वय-सं का मन्वय ।

अतिशय [अति + श्रां + यञ्] बहुत अधिक दान, अत्यधिक उदारता, -अतिदाने बलिष्ठ-पथ- ५० ।

अतिशय [अति + शि + यञ्] 1. हस्तान्तरण, नव-रथ, सुख के साथ 2 (अश्रां-सं) अत्यन्त लान् हीने वाली प्रक्रिया, श्राद्ध के कारण प्रक्रिया, एक मनु के चर्च का सुखी मनु पर आगे-अतिशय-अतिशयों नाम इतर-अत्यन्त इतर-अत्यन्त प्रबोधना आदेश (शीघ्रता), वा, अत्यन्त प्रबोधना-इत्यादि पर्यन्त-अत्यन्त अत्यन्तः अतिशयि-सं उच्यते । 'नोत्तुको लयः' बहु अतिशयिता वा श्राद्ध का निरन्तर है ।

अतिशय (वि०) [अत्यन्तिक्रमण-श्रां-सं] शीघ्रता से बढ़ा हुआ, अतिशय, अत्यन्त, अत्यन्त, शीघ्रता-विश्व-अतिशयि-सं का-सं- ५-श्रीगो (अत्यन्त शीघ्रता) से बढ़ी हुई ।

अतिशय (वि०) [अत्यन्तिक्रमण-श्रां-सं] अत्यधिक अत्यन्त या शीघ्र ।

अतिशय (वि०) [अत्यन्तिक्रमण-श्रां-सं] 1. बहुत कोने

वाला, 2. निद्रा से बंचित, निद्रारहित,—इं निद्रा के कथ्य से परे—इं बहुत अधिक सोना ।

अतिगन्ध-अतिगन्धि (वि०) [अतिक्रान्त. नायम्—प्रा० स०] नाभ से उतरा हुआ, नाभ से भूमि पर जाया हुआ ।

अतिगन्धवा [पञ्चसर्वसतिक्रान्त प्रा० स०] पाच वर्ष से अधिक अवस्था की लड़की ।

अतिगन्धतम [अति + पत् + स्युट्] उबकर भाये निकल जाना, भूल, उपेक्षा, अतिक्रमण, अत्यधिक, सीमा से बाहर जाना ।

अतिगन्धि [अति + पत् + क्लिप्तन्] 1 सीमा से परे जाना, समय का बीतना, 2. कार्य का पूरा न होना, असफलता ।

अतिगन्धः [अतिरिक्त बहुल् पच मस्य—इ० स०] सामान्य का मूल ।

अतिगन्धिन् (पु०) [पचानामतिक्रान्त—प्रा० स०] सामान्य सड़का की अपेक्षा अच्छा मार्ग, सन्मार्ग ।

अतिगन्धर (वि०) [अतिक्रान्त परान्—प्रा० स०] जिसने अपने शत्रुओं को पराजित कर दिया है, —र बहु शत्रुओं को शक्ति में बढ़ा बढ़ा हो ।

अतिगन्धरिच्यः [प्रा० स०] अत्यधिक ज्ञान पहचान या समिष्टता—किञ्च—अतिपरिचयादवज्ञा—(अतिपरिचय से होता है अर्थच जनावर भाय) ।

अतिगन्धतः [अति + पत् + गन्ध] 1 (समय का) बीत जाना 2 उपेक्षा, भूल, अतिक्रमण—चेरन्कार्यातिपात वा० १, (यदि इस प्रकार दूसरे कर्तव्य की उपेक्षा न की गई), सर्वसम्मत नियम या प्रथाओं का उल्लंघन, 3 जा पडना, घटना 4 दुर्व्यवहार या दुष्प्रयोग 5 विरोध, वैपरीत्य ।

अतिगन्धतक [अतिपात—स्वायं कन्] बढ़ा जघन्य पाप, व्यविचार ।

अतिगन्धतिन् (वि०) [अति + पत् + गिच् + गिन्ति] गति में आम बड़ जाने वाला, सिप्रतर (समास में) रघु-३।३० ।

अतिगन्धय (वि०) [अति + पत् + गिच् + यन्] विकलित या स्थगित करने योग्य—कायमननिपात्य धर्मकार्य देवस्य—वा ५ ।

अतिगन्धयः [अतिगन्धिन् प्रकथ्य—प्रा० स०] अत्यंत सातत्य, बिल्कुल लगा होना, अहितारस्ववृष्टिम्—रघु० ३।५८ ।

अतिगन्धे (अभ्य०) [अति + प्र + गी + के] प्रमात में बहुत लड़के, प्रमात काल में—यन्० ४।६२ ।

अतिगन्धेः [अति + प्रच्छ + नञ्] इन्द्रियातीत सत्यता के विषय में प्रत्यक्ष, तंग करने वाला तर्कहीन प्रथम—उदा० बहुदारभ्यक उपनिषद् में बालाकि का याज्ञवल्क्य के प्रति बड़ा विषयक प्रथम ।

अतिगन्धेः, अतिगन्धेः (स्त्री०) [अति + प्र + सच् + घञ् क्लिन् वा] 1 अत्यधिक लगाव, 2 घुट्टा

3 किली (म्या०) निवम का अर्थ अधिक विस्तार अर्थात् अतिव्यापित 4 बहुत घना सपरक 5. प्रपञ्च, अलमतिप्रसोपे—प्रा० १ ।

अतिगन्ध (वि०) [इ० स०] बहुत बलवान् या शक्तिशाली,—कः अथवाय्य वा बेजाड पोड़ा,—सं बड़ा बल, भारी शक्ति,—का एक शक्ति शाली मय या विद्या जिसे विद्यामिषि में राम की सिखाया ।

अतिगन्धका [अतिक्रान्ता वाला बाल्यावस्था—प्रा० स०] दो वर्ष की अवस्था की गाय ।

अतिग (वा) इः [प्रा० स०] अत्यधिक बौद्ध, भारी बजन, सा मुक्त कठ ध्यसनातिमारात् चक्रन्द—रघु० १।६८ अत्यधिक रज के कारण । सम०—व. लक्ष्मण ।

अतिगन्धः [अति + भू० + गिच् + अच्] उत्कृष्टता ।

अतिगन्धीः (स्त्री०) [अति + भी + गिच्] विजली, दन्त के बज्र की कोष ।

अतिगन्धिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 आधिक्य, पराकाष्ठा, उच्चतम स्वर "नि सध, वा, आधिक्य वा पराकाष्ठा तक पहुँचना—न सवलोकस्य मितल प्रथा—माल००, दूर तक प्रसिद्ध,—वि० १।३८, १।०।८ 2 साहसिकता, जलोचिष्य, अधिष्य की सीमाओं का उल्लंघन करना—वि० ८।२० 3 प्रभुवना, उत्कृष्टता ।

अतिगन्धिः (स्त्री०)—नाम [प्रा० स०] अहतर, बहुत अधिक धर्म, अनिमाने व कौरवा—वाण० ५० ।

अतिगन्धे—मानुष (वि०) अतिमानव ।

अतिगन्ध (वि०) [अतिक्रान्तो मात्राम्—प्रा० म०] मात्रा में अधिक, अत्यधिक, अतिशय—सुदु सभानि—वा० ८।३, जिसका बिल्कुल समर्थन न किया जा सके,—मुनिहर्षेण्वामनिमात्रकशिषाम्—कृ० ५।४८,—य—मात्रकः (अभ्य०) मात्रा से अधिक, अतिशय अत्यधिक ।

अतिगन्धय (वि०) [अतिक्रान्तो मायाम्—प्रा० स०] पूर्णत मुक्त, मायारिक माया से मुक्त ।

अतिगन्धत (वि०) [अतिगन्धेन मुक्त—प्रा० म०] 1 पुनः रूप से मुक्त 2 बजर 3 मोर्तियों (की माला) से बड़ कर,—सः,—सः—सः एक प्रकार की मना (माधरी) जो आम की घिया के रूप में आम के बूझ पर लिपटी रहती है ।

अतिगन्धति (स्त्री०) अतिमौल [प्रा० म०] (मृग्य से) बिल्कुल छुटकारा ।

अतिगन्धे (वि०) [अतिगन्धिन् रहो मन्धिन्—इ० म०] बहुत फूलोंवा या सिप्रतर—सारमेमातरहसा—स० १।५ ।

अतिगन्धेः [अतिक्रान्तोरथम्—प्रा० स०] एक अद्वितीय पोड़ा जो अपने रथ में बैठा हुआ ही घुड़ करता है (अमिताभ्योबधेस्यसु नम्रोक्तोऽतिरथस्तु स) ।

अतिरक्तः [प्रा० स०] अती घाल, दूत गमन, हुकूमती ।
अतिरक्तम् (पु०) [प्रा० स०] 1 असाधारण या उत्कृष्ट
रक्ता 2 रक्ता से बढ़-बढ़ कर ।

अतिरक्तिः [प्रा० स०] 1 ज्योतिष्योप यज्ञ का एक ऐच्छिक
भाग 2 राशि का मध्य भाग ।

अतिरिक्त (वि०) [अति + रिच् + क्त] 1 जागे बढ़ा हुआ
2 फाल्गु 3 अर्धचिक 4 अतिरिच, उत्सुप ।

अति (सी) रैकः [अति + रिच् + क्त] 1 आचिष्य, अति-
स्यता, महता, गौरव 2 समधिकता, अधिक्येय,
बाहुस्य 3 अमार ।

अतिरिक्त् (पु०) [अति + रिच् + क्त्विच्] 1 बुटगा, (स्त्री०-ङ्)
एक अत्यन्त सुन्दरी स्त्री ।

अतिरो (सी) चक्र (वि०) [अति + रो (सी) मन् + च]
बहुत बालो वाला, बहुत रोग वाला, -ङ् 1 एक
कमली बकरा 2 बका चम्बर ।

अतिसंक्रान्तं [अति + सं + क्त] 1. अत्यधिक उपवास
रचना 2 अतिक्रमण ।

अतिसिद्धिम् (वि०) [अति + सिद् + गिति] तलनिर्वा या
भूमें करने वाला ।

अतिस्वप्न (वि०) [अति + स्वप् + गिति] तलनिर्वा या
बहुत बड़ा, बढ़, अधिक आसु का ।

अतिवर्धनचिन्तितम् (पु०) [प्रा० म०] जो बर्ध और प्राधमो
की पर्याप्त से परे हो ।

अतिवर्तनं [अति + वर्त् + क्त] शत्रु प्रपराय, सामान्य
प्रपराय, दण्ड से अधिक-दण्ड प्रकार के दण्ड प्रपरायो
का वर्णन मनु न किया है-मनु० ८१-१० ।

अतिवर्धितम् (वि०) पाठ करने वाला, दूसरों में जागे निकलने
वाला, जागे बढ़ने वाला, अतिक्रमण करने वाला,
उत्पन्न करने वाला ।

अतिव्याधः [अति + वृ + क्त] अतिकठोर, मामी और
अपमान युक्त बचन, भार्यसा शिष्टकी-अतिव्यादा-
न्यायिनेन मनु० ११४३ ।

अतिव्याधिम् [अति + वृ + क्त] बहुत शोकनेवाला,
बामो ।

अतिवृद्ध [अति + वृ + क्त] 1 विनाशा, दापन
2 बहुत अधिक परिश्रम करना या बहुत बोझा उठाना
3 पंचक, भोजना, छुटकारा पाता ।

अतिवृद्ध (वि०) [प्रा० म०] वीर्यघन -ङ् दुष्ट हाथी ।

अतिवृत्त [प्रा० स०] अतीत नामक विप्रेयी अधिक का
पौरा ।

अतिवृत्तः [प्रा० स०] बहुत अधिक फैलाव, व्यापकता ।

अतिवृत्ति (स्त्री०) [अति + वृत् + क्त] जागे बढ़ वाला,
अतिक्रमण, अतिरचना ।

अतिवृत्ति (स्त्री०) [अति + वृत् + क्त] अत्यधिक या भारी
बर्धा, बहुत विषयक ६ विपरिणयो में से एक; दे० रीति ।

अतिवेष (वि०) [अतिक्रमणो वेला पर्याप्त कृतं वा—प्रा०
स०] अत्यधिक, फाल्गु, सीमारहित, -ङ् (वि० वि०)
1 अत्यधिकता से, 2 विना श्चतु के, विना मोक्ष के ।

अतिव्याधिः (स्त्री०) [अति-वि + व्या + क्त] 1 किसी
निघम वा विद्यात का अनुचित विस्तार 2 प्रतिज्ञा में
अनभिप्रेत वस्तु का निष्का लेना, 3 लक्षण में लक्षण के
अतिरिक्त अन्य अनभिप्रेत वस्तु का भी आ जाना,
(व्याय में) अतिरिक्त फलस्वल्प वह वस्तुएं भी सम्मि-
लित हो जायें जो लक्षण के अनुसार नहीं आनी चाहिये,
लक्षण के तीन दोषों में से एक ।

अतिव्याधः [अति + वि + अच्] 1 आचिष्य, प्रमुक्तता,
उत्कृष्टता; वीर्य० रचु० ३१६२, तस्मिन् विद्याना-
तिघने विद्यानु - रचु० ६१११, 2 भेद्यता (पुत्र, पद
और परिमाण आदि की दृष्टि से); तस्मात् में प्राय
विशेषणों के साथ प्रयुक्त होने पर "अधिकता के
साथ" अर्थ होता है- आसीदनिघण्टुशब्दः—रचु० १७।
२५, (वि०) भेद्य, प्रमुख, अत्यधिक, बहुत बड़ा,
बहुल । मम०—उत्सिः (स्त्री०) 1 बड़ाकर या अति-
पर्याप्तपूर्ण रूप में कहे हुए बचन, अतिरचना 2
अनकार अथवा ना० ६० कार में ५ भेद तथा काव्य
प्रकाशकार ने ६ भेद माने हैं ।

अतिव्यय (वि०) [अति + वी + क्त] जागे बढ़ने वाला
(ममाम में) बड़ा, प्रमुख, बहुत-न आचिष्य, बहुतायत,
बहुलता ।

अतिव्याधम् (वि०) [अति + वी + क्त] जागे बढ़ जाने
या बढ़-बढ़ कर रहने की प्रवृत्ति वाला ।

अतिव्याधिम् (वि०) [अति + वी + क्त] 1 भेद्य, बढ़िया,
प्रमुख इदमनुभवमतिव्याधिम् अत्ये वाच्याद् ध्वनिर्वृत्ते-
कथित - काव्य० १, चिकित्सा० ५१२१, 2 अत्यधिक,
बहुल ।

अतिव्याधनं [अति + वी + क्त] उत्कृष्टता, भेद्यता ।

अतिव्याधिन् (वि०) [अति + वी + क्त] जागे रहने वाला,
जागे बढ़ जाने वाला 2 अत्यधिक ।

अतिव्येधः [अति + सिच् + क्त] अविच्छिद्य भाव, बंधा
हुआ भाग (जैसे कि समय का) कुछ अत्यधिक ।

अतिव्येधितः [अत्यव्येधितकाल—प्रा० स०] सर्वोत्तम
स्त्री में भेद्य पुत्र ।

अतिव्येध (वि०) [अत्यव्येधकाल—प्रा० स०] 1 बन् में
कुने से बढ़ा हुआ (जैसे कि पूरक) 2 कुने से भी बधा
बोता : बन् सेवा ।

अतिव्येधितः (स्त्री०) [अति + वृत् + क्त] धनिष्ठ संघर्ष
या साक्षिप्य, भारी आनक्ति ।

अतिव्येधनं [अति + वृ + क्त] छत्र करना,
बोसा देना, परातिबंधान् स० ५१२५, फाल्गुणी,
जाकहायी ।

अतिशब्दः [अति+शु+अच्] 1 आगे बढ़ने वाला 2 नेता
अतिशयः [अति+युञ्+अच्] 1 स्वीकार करना,
 देना—रघु० १०।४२, 2 अनुमति देना (जो दृष्टा हो)
 3 (नौकरी से) पृथक् करना, कार्यभार से मुक्त करना।
अतिशयम् [अति+युञ्+अच्] 1 देना, स्वीकार करना,
 सोचना—कु० ३।१६, 2 उदारता, दानशीलता 3 बंध
 कला 4 विवीच।
अतिशयं (वि०) [प्रा० स०] सर्वोत्तम या सर्वश्रेष्ठ,—बं-
 परब्रह्म—अतिशयार्थं शयार्थं—मृग० ।
अति- (सौ) - साटः [अति+शु+अच्] पेशिया,
 बरोडी के साथ दस्तो का आना।
अति(सौ)सारिण् (पु०) [अत्यंत सारयति मल] अतिसार नाम
 का रोग जिसमें बारबार शीघ्र जाना पड़ता है, (वि०)
 —अति(सौ)सारिण् (वि०) अतिसारो यस्यास्ति—इति,
 शुकृ च] अतिसार रोग से पीड़ित, पेशिया रोग से ग्रस्त।
अतिश्लेहः [प्रा० स०] अत्यधिक अनुराग, ह्नु पापयात्री-
 स० ४, दुराई की आशका में प्रवेश होता है।
अतिश्यामं [प्रा० स०] अश्वत्थर तथा स्वरो के लिए
 पारिभाषिक शब्द।
अतीत (वि०) [अति+इ+त] 1 परे गया हुआ,
 पार गया हुआ 2 आगे बढ़ने वाला, परे जाने वाला,
 पत, बीता हुआ आदि, मृत, सत्त्व्यामतीत या
 संख्यातीत अत्यर्थ।
अतीन्द्रिय (वि०) [प्रा०स०] ज्ञानेन्द्रियों की पटुच के बाहर,
 —य आत्मा या पुत्र (साध्य दर्शन); परमात्मा,—य 1
 प्रधान या प्रकृति (सा० द०) 2 मन (वेदान्त)।
अतीव (अव्य०) [अति+इव] क्व, अधिकता के साथ, बहुत
 अधिक, बिल्कुल, बहुत ही, पीडित, हृष्ट आदि।
अतुल्य (वि०) [न० त०] अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय, अनु-
 लनीय,—स 'तिल' का पीसा, तिल।
अतुल्य (वि०) [न० त०] अनुपम, बेजोड़।
अतुल्यार (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो। सम०—रुच-
 पूर्व, इसी प्रकार अनुहिनकर "रविम, 'शामन्, 'शचि
 भावि।
अतुल्या [न० त०] थोड़ा सा भास।
अतीव्य (वि०) [न० त०] 1 जो चमकीला न हो,
 धुंधला 2 दुर्बल, निर्बल 3 निरर्थक, इमी प्रकार
 अतेजस्व, अतेजस्विण्,—स् (पु०) [न० त०] धुंधला-
 पन, छाया, अंधकार।
अत्ता [अत्+तक्+टाप्] 1 माला 2 बड़ी बहुत 3
 सात।
अत्ति (स्त्री०) अतिशया [अत्+क्तिन्, स्वाच् क्त् च]
 बड़ी बहुत आदि।
अत्त, अत्तु [अत्ति सतत गच्छति—अत्+न, गु हा]
 1 हवा 2, सूर्य।

अत्यमि [प्रा० स०] पावन शक्ति की बहुत अधिकता।
अत्यमिन्द्रिय [प्रा० स०] ज्ञानेन्द्रियों मज का दूरग
 ऐच्छिक भाग।
अत्यकुल (वि०) [प्रा० स०] निरकुल, नियन्त्रण में
 रहने के अर्थात्, उच्छ्वल जैसे हाथी।
अत्यन्त (वि०) [अतिक्रान्त अन्तम् सीमायु—प्रा० स०]
 1 अत्यधिक, अधिक, बहुत बड़ा, बहुत बलवान्,
 "वेरम्—बड़ी शक्तता, इसी प्रकार "मयो 2 सुपूर्ण,
 पूरा, तितांत 3 अन्त, अन्त, चिरस्थायी; कि वा
 तत्वात्यन्तवियोगमोक्षे ह्यधीभिते—रघु० १।४।६५,
 कस्यात्यन्त सुखमपनतम्—मेष० १०२,—तं (अव्य०)
 1 अत्यधिक, बहुत अधिक, 2 हुंसा के लिए, आशी-
 बान, जीवन्मथर। मय०—अन्तथा निम्नता या
 पूर्ण सत्ताहीनता, निम्नता अनन्तत्व,—न्त (वि०)
 मरा के लिए गया हुआ, जो फिर कभी न आवेना,
 कथमत्यन्तगतता न मा दहे—रघु० ८।५।६,—अतिम्
 (वि०) 1 बहुत अधिक चलने वाला, बहुत तेज या
 शीघ्र चलने वाला, 2 अत्यधिक, अधिक,—अतिम्
 (पु०) जो विद्याधी की भांति जगताम अपने लक्ष क
 साथ रहता है,—सवीय, 1 अतिष्ट सामीप्य, अनाथ
 नीरन्तर्ष, काशाधनोत्तरव्यममयो—, 2 अधिकोप्य
 सहअतिस्तव।
अत्यन्तिक (वि०) [अत्यन्त+इन्] 1 बहुत अधिक या
 बहुत तेज चलने वाला 2 बहुत निकट 3 जो सवीय
 न हो, दूर,—अं अतिष्ट सामीप्य, अत्यर्हात पत्नीय वा
 अत्यन्त समीप होता।
अत्यन्तोप (वि०) [अत्यन्त + उप] 1 बहुत अधिक चलने
 वाला, बहुत तेज चलने वाला—उन्धी परपरीक्षा
 स्वमायन्तोपवमुनयु—अर्द्धि०।
अत्यव [अति+इ+अच्] 1 बला जाना, बीत जाना,
 काल* 2 समाप्ति उपमहारा, अन्तान्, अनुपस्थिति
 अन्तर्धान 3 मृत्यु, नाश 4 भय, घोट, दुराई—
 प्राणात्यये च समाप्ते—या० १।१०५ 5 दुःख 6 दोष,
 अपराध, अतिक्रमण 7 आक्रमण, अतिमान।
अत्यधिक—दे० आत्यधिक।
अत्यमि (वि०) [अत्यय+इच्] 1 बड़ा हुआ, आगे
 निकला हुआ, 2 उत्कृष्टन विक्रम हुआ, जिन पर
 अत्याचार किया गया है।
अत्यमिम् (वि०) [अति+इ+मिनि] बढ़ने वाला, आगे
 निकलने वाला।
अत्यर्थ (वि०) [प्रा० स०] अत्यधिक, बहुत बड़ा,
 बेहद, अं (वि० वि०) बहुत अधिक, निहायत,
 अत्यन्त।
अत्यह्नु (वि०) [प्रा० स०] अर्थात् में एक दिन से अधिक
 रहने वाला।

यन्-वाच के लिए अनेक अमलप्राथम्याएँ और अपनी सुरक्षा के लिए तथा विपत्ति, पाप, बुराई, एष दुःखीय से बचाव के लिए असक्य प्राथम्याएँ पाई जाती हैं, इसके अतिरिक्त दूसरे वेदों की भाँति इसमें भी शाक्तिक एष औपचारिक स्वरूपों में प्रयुक्त होने वाले अनेक सूक्त हैं जिनमें प्रायःनामों के साथ-साथ देवताओं का अभिनन्दन किया गया है। सम० —विशिः, -विष् (पुं०) अथर्ववेद के ज्ञान का भंडार, अथवा अथर्व-ज्ञान से संपन्न—गुरुना अथर्वविदा कृत-विष्—रघु० ८।४, १।५।*

अथर्वविष्: [अथर्व + विष्, न रि:] अथर्ववेद में दिग्घात अथवा इतमें सिद्धिदत्त संस्कारों के अनुष्ठान में कुशल

अथर्वीय [अथर्व + अन्-पुं० दीर्घ] अथर्ववेद की अनु-
-धान पद्विती।

अथवा = दे० 'अथ' के अन्तर्गत।

अथ [अदा० पर० सक० अनिट] [अनि, अन्-अथ] 1 आना, निगलना, 2 नष्ट करना 3 दे० 'अद्', प्रेर० सिलवाना, सन्नत० विद्यस्तति—ज्ञाने की इच्छा करना।

अथ, अथ (वि०) [अद् + विष्पु, अन् वा 1] (समान के अर्थ में) ज्ञाने वाला, निगलने वाला।

अथेष्ट (वि०) [न० ब०] दुस्तहीन, -ष्टः बहु साप जिसके अहरीले दात तोड़ दिये गये हैं।

अथिष्ण (वि०) [न० त०] 1 जो दाया न हो अर्थात् बाया 2 जिसमें पुरोहिताँ की दक्षिणा न दी जाय, बिना दक्षिणा का (जैसे यज्ञ) 3 सरल, दुर्बलमना, मुक्त 4 अनुपस्थित, अवकाश या अण्ड, गवार, 5 प्रतिकूल।

अथ्यथ (वि०) [न० त०] 1 दृष्य का अनधिकारी, 2 दृष्य से मुक्त या बरी।

अथ्य (वि०) [न० ब०] दन्तरहित, बिना दाँतों का।

अथ्यत (वि०) [न० त०] 1 न दिया हुआ 2 अनुचित तरीके से दिया हुआ 3 जो विवाह में न दिया गया हो, -सा अविवाहित कन्या—स बहू दान जो रद्द कर दिया गया हो। सम०—आथयिष्ण (वि०) जो न दी हुई वस्तुओं को उठा कर ले जाता है—जैसे कि बोर, —पूँजी बहू कन्या जिसकी सगाई न हुई हो—अर्थात् पूर्वव्यायक्यते—मात० ८।

अथ्यत (वि०) [न० ब०] 1 दन्त रहित 2 बर शब्द जिसके अन्त में 'अथ' या 'अ' हो, -स-आक।

अथ्यत (वि०) [न० त०] 1 जो दाँतों से सब्ब न रहता हो 2 दाँतों के लिए अनुपयुक्त, दाँतों के लिए हानिकारक।

अथ्य (वि०) [न० ब०] अनल्प, प्रचुर, पुष्कल।

अथ्यसं [न० त०] 1 न दिखना, अनवलोकन, अनुपस्थिति, दिखाई न देना 2 (ध्या०) अन्तर्धान, लोप, मृत्ति—अथ्यसं लोप पा० १।१।१६०।

अथ्य (सर्व०) [पुं० स्त्री०—अथ्यी, मृत्पुं०—अथ्यः] यह (किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु की) और संकेत करना जो अनुपस्थित हो या बर्त्ता के समीप न हो—इदमस्तु सन्निभुष्ट स्त्रीपदरथात् शैतवी कथ्यम्। अथ्यस्तु विद्-कृष्ट तथिति परोक्षे विज्ञानीयात्। 'यह' 'वहाँ' 'धामने' अर्थ को भी प्रकट करता है। 'यत्' के सहायक भी 'तत्' के अर्थ में भी प्रायः प्रयुक्त होता है। वस्तु जब कभी यह 'सबब साधक सर्वनाम' के तुल्य वाद प्रयुक्त होता है (शोऽपी, ये अमी आदि) तो इस का अर्थ होता है 'प्रसिद्ध' 'सुख्यात्' 'पुम्ब' 'ये' तत् भी।

अथ्यत् (वि०) [न० त०] 1 न देने वाला, कृपण 2 अङ्की का विवाह न करने वाला।

अथ्यवि (वि०) [न० ब०] दूसरे गण की धातुओं का समूह, जो 'अथ' से आरम्भ होता है।

अथ्यव्य (वि०) [नास्ति दावी यस्य—न० ब०] जो (सपत्ति में) हित्ते का अधिकारी न हो।

अथ्यव्यव्य (वि०) [न० त०] 1 जो उत्तराधिकारी न बन सके, 2 [न० ब०] जिसके कोई उत्तराधिकारी न हो।

अथ्यव्यिक (वि०) [स्त्री०—अथ्यव्यिकी] [न दायाग्रहित देख]—नञ् + दाय + अन् न० ब०] 1 जिसका कोई उत्तराधिकारी दायेदार न हो, -अदायिक धन राज्यधामि—काण्य० 2 [न० त०] उत्तराधिकार से सबब न रहने वाला।

अथ्यवित्ति (स्त्री०) [दातुं श्रेतुम् अयोग्या—दो—कित्] 1 पृथ्वी 2 अर्द्धित देवता, आदिवा की दाता, पुराणों में इसका वर्णन देवों की माता के रूप में किया गया है, 3 बाणी 4 गाय। सम०—अ, -संबन्ध देवता, दिव्य प्राणी।

अथ्यव्ये (वि०) [न० त०] 1 जो दुर्गम न हो, वहाँ पहुँचना कठिन न हो 2 [न० ब०] यह स्थान अहाँ किल न हो—°विषय एक दुर्गमहित देख।

अथ्यव्य (वि०) [न० न०] 1 जो दूरत हो, मनीष (काळ और देश की स्थिति में), -ये शारीर्य, पर्वत-वसन्तदूरे किल वन्यमोक्षे—रघु० ६।१४, विशदो जूरे कर्मोऽङ्गि अत्रुर्गमशा मिद्वो, अथ्यव्य-न्, -त्, -रन्, -रे, -रेण (सम्प्रदान या सबब के साथ), अधिक दूर नहीं, बहुत दूर नहीं।

अथ्यव्य (वि०) [नास्ति दत्तं अस्ति यस्य न० ब०] वृष्टि-हीन, अथा।

अथ्यव्य (वि०) [नञ् -पुं०-क] अथ्यव्य, अथ्यव्या, 'पुम्ब'—का पहले न देखा गया हो; 2 अननुत्त 3 अद्युत्पुम्ब, अनवर्थाकृत, बिना शोषा हुआ, अज्ञात 4

अनुपम, अस्वीकृत, अर्थात्—अ 1 अनुपम 2 विपत्ति
आय, आरम्भ (पुत्र या अनुपम) 3 गुण तथा
अनुपम को कि मुक्त तथा पुत्र के अनुपमता कारण है;
4 देवी विपत्ति या ध्वज (कैसा कि भाग या पानी
आदि से)। सम०—अर्थ (वि०) आध्यात्मिक या मूढ़
अर्थ वाला, आध्यात्मिक,—अर्थ (वि०) अन्धकारहा-
रित्क, अनुपमहीन—अर्थ (वि०) जिसके परिणाम
अपुत्र्य हो,—अर्थ अनुपम्य कर्मी का जाने जाने
वाला फल ।

अपुत्र्य (स्त्री०) [न० त०] बुरी या देवपुत्रं वृष्टि, कुदृष्टि
—अर्थ (वि०) [न० व०] अंधा ।

अपेय (वि०) [न० त०] जो देने के लिए न हो, जो दिया
न जा सके या दिया न जाना चाहिए,—अर्थ जिसका
देना न उचित है और न आवश्यक है, इन अर्थों
में पत्नी, पुत्र, परांहर और कुछ अन्य वस्तुएँ
जाती हैं ।

अपेय (वि०) [न० त०] 1 जो देवराजों की भाँति न हो,
या स्थिर न हो 2 देवविहीन, अपवित्र, अधार्मिक—
जो देवता न हो । सम०—असुख (वि०) जहाँ वर्षा
न हुई हो, माना की भाँति दूध पिछाने या पानी देने
के लिए जहाँ वर्षा का देवता काम न करना हो,—
विनयवि श्रेयमदेवतात्काशिचराय नमिन्कुरवचका-
सते कि० १।१३ ।

अपेय [न० त०] 1 अनुपयुक्त स्थान 2 बुरा देश । सम०
—काल अनुपयुक्त स्थान और अनुपयुक्त समय स्थ
[वि०] अनुपयुक्त स्थान पर उड़ान हुआ उपयुक्त
स्थान से विगत ।

अपेय (वि०) [न० व०] 1 दोष बुराई और वृत्ति आदिपों
न मुक्त 2 अस्वीकृत सम्पत्ता आदि माहित्य के
दोषों से मुक्त १० राग - अदोषो दोषाधो—काव्य०
? अदाय गुणवाच्यम् १०० क० १ ।

अपेय [न० व०] 1 वह समय जो चाहने के लिये व्यावहा-
रित्क न हो 2, न० त०] न दुहा जाना ।

अपेय (अर्थ०) 1 नष्टवृत्त विच्छेद, अवयव, निम्ननेत्र—
रथ० ११।६५ 2 प्रकटन, स्पष्टत्व में - अशलाघिप
व वनन परित्रयवृत्तया—अभि० १।९५ ।

अपुत्र्य (वि०) [अ- + पु- वृत्त- न भूपम् इति वा]
आपत्रयत्रनक शिष्य, कर्मयं, ० गव, ० दमन, ० रूप,
गुरु अधीनिक;—सं 1 आदिपर्व, आरचयंत्रक मात
या घटना, विलक्षण घटना चमत्कार 2 अपभ्रंश,
अचरित्र, आरचयं (पु०) भोः -सः मात या नौ
रथों में से एक, अपुत्र्य (अनोत्तर) रथ । सम० - लाघ-
-अदिर या और की अ-अर्चयंत्रक रास,—स्वप्न-
सिखका नाम ।

अपवि - [अ- + पविन्] अपवि ।

अपव (वि०) [अ- + अपवृत्] बहुत अधिक जाने वाला,
वेद ।

अप (वि०) [अ- + अ-] जाने के योग्य—अपुत्र्य मोहन,
जाने के योग्य पदार्थ, (अपव०) भाव, इस दिन—
अपत्तं त्वां स्वरयति दास्य हतात्मः—मात० ५।२५,
"रात्री—भाज की रात, यह रात । सम०—अपि अजी,
अब तक, आज तक, अभी नहीं,—गुण संदे छिन्ने
अपि अचरित नाचापि कुपन्—वेदी० ०।१।१,
(शौर्त्तपात्रिका के ५० श्लोक 'अचापि' से आरंभ
होते हैं),—अपवि (अर्थ०) 1 आज में नेकर, 2 आज
तक—पूर्वम् पहले, अब, - प्रवृत्ति (अर्थ०) आज से,
इस दिन से नेकर, अब प्रवृत्तयवननामि तवापि दास
—कु० ५।८६,—अपेय (वि०) आत्मन-प्रमत्ता, यह
स्त्री जिसका प्रथम नाम निकट है—अपचरिणीमाचष्टम्बे
—वा० ५।२।१३ ।

अपवृत्त (वि०) (स्त्री०—भी) [अ- + वृत्-पु, पुट् ष]
1 आज से सब रक्षते हुए, संकेत करने हुए या विस्तृत
होते हुए; 2 आधुनिक, -अः आधुनिक, यह दिन, बाल
दिन की अपवि, दे० 'अनलक्षण' भी,—भी (अर्थात् वृत्ति)
कथ ककार का नाग (= ० पुट्)

अपवृत्तयव = अचलन 1 आज का 2 आधुनिक ।

अपवृत्तयव—[न० त०] गुण्य वस्तु, निकम्मा पदार्थ; तादृश
विहिता कारिकाया कवचती अवेत्—हि० प्र० ५३;
निकम्मा या अचरिण्य छात्र वा विद्यार्थी ।

अपि—[अ- + पिन्] 1 पहाड़ 2 पत्थर 3 बन्ध 4 मूत्र 5
सूर्य 6 शेष-राशि, बाहल 7 एक प्रकार का माप 8
मात की सहाय । सम०—ईक,—अपि,—अपि,
—राजः आदि, 1 पर्वतो का स्वामी, हिवालय 2 शिव
(कैलासपति) —कीला पृथ्वी—अपि,—अपि,—
अपि,—अपि (पु०) पहाड़ो का माप या उन्हें लोड़ने
वाला, इत का विशेषण,—शेषि-भी (स्त्री०) 1 पहाड़
की बाटी 2 पर्वत में निकलने वाली नदी,—अपि,—राजः
आदि, देखिये 'ईक,—अपिः शिव,—अपिम्,
—साम् पहाड़ की बाटी,—अपिः पहाड़ो का माप,
सोहा ।

अपेय—[न० त०] देवराहित्य, बुराई का न होना परि-
विष्टता, मुहुता—अपु० ५।२ ।

अप (वि०) [मारित इव अस्य न० व०] 1 रो नहीं, 2
अधिलीन, अनुपम, एकमात्र,—कः बुद्ध का नाम,
—अपु [न० त०] ईत का अभाव, एका, तादात्म्य,
विशेषता कदा और विषय का तादात्म्य का प्रकृति और
अन्या का तादात्म्य, परम सत्य । सम०—अपिन् (=
अपि) 1 विषय और कदा तथा प्रकृति एवं वात्सा के
तादात्म्य का प्रतिपादक 2 बुद्ध ?

आहारम्—[न० त०] जो दरवाजा न हो, मार्ग या रास्ता को विभक्त रूप से द्वार न हो;—अधारेण न चातीयाद् शब्द का शेषमा वा पुनः—मम० Y।३३ ।

अधितिथि (वि०) [न० इ०] जिसके समान कोई दूसरा न हो, बेबीड़, सासानी,—न केवल रूपे विन्ध्यप्रदेशीया मासिका—मासिको २; 2 बिना साथी के, अकेला,—यद् बहुधा ।

अध्वेन (वि०) [न० इ०] 1 ईन हीन, एकस्वरूप, एक-स्वभाव, समभाव, अपरिचरितसौल, 'न युवदु सयो.—उत्त० १।३९, 2 बेबीड़, सासानी, एकमात्र, जनन,—सम् 1 ईत का अभाव, सादात्म्य, विशेषणया बहु का किय या आर्या के साथ, या प्रकृति का आत्मा के साथ; दे० 'अध्वय' की 2 परमसत्य या स्वयं बहु । मम०—आध्विन्=अध्वयवादिन् दे० ऊपर, वेदान्त का अनुयायी ।

अध्वज (वि) [अद् + अध, अन्व स्वाने वादेण] निम्नतम, अध्वजस्य, अणत कमीना, बहुत बुरा, नीचे या निकट (युध, योग्यता और पदाधिक की दृष्टि में) (विप० उत्तम)।—मः निम्नज लम्पट,—आधी स्नातुयिती यतासि न पुनन्सस्वाधमस्यानिकम्—काण्ड० १, —या निकम्मी तुल्यवर्तीनाः । मम०—अध्वज्ज् वैर, —अध्वज् नाभि में नीचे का शरीर,—अध्वक,—अध्विकः कुंठदार (विप० उत्तमर्ष)।—भूतक,—भूतकः कुम्भी, साइस ।

अधर (वि०) [नञ् + धृ + अद्] 1 नीचे का, अधर, निचला 2 नीचे, कमीना, अधन, गुणों में नीचे दर्जे का, घटिया, 3 निकतर, दक्षिण,—रः नीचे का (कमी ऊपर का) भोष्ठ, भोष्ठमात्र,—यकवर्षिबाधाराष्टी—मे० ८२; पिबमि रसिगर्वस्वधरम्—श० १।२४,—रम् 1 शरीर का निम्नतर भाग 2 अधिभाषण, आस्वान (विप०—उत्तर), कमी २ उत्तर के लिए भी प्रयुक्त होता है । मम०—उत्तर(वि०) 1 उच्चतर और निम्नतर अन्ध और दृग्,—गात्र सम्यक्साधयो 'अस्तिर्मे-विष्यति—मासिको १, 2 शीघ्र का विमन्त्र मे, 3 उल्टे ढग में, उलट-पलट 4 निकटतर और दूरतर,—भोष्ठः नीचे का भोष्ठ,—भोष्ठः शीघा का निचला भाग,—धामम् चुम्बन, माण्ड० अधरोष्ठ को पीना,—मधु,—प्रमत्तम् भोष्ठो का अमृत,—स्वस्तिकम् अधोदिन् ।

अधरस्वाम्,—रत्न,—स्वात्,—रात्,—सात्,—रेष (अध्व०) नीचे, गले, निचले प्रदेश में ।

अधरोष्ठ (नता० उभ०) [अधर + स्थि + कृ] भागें बढ़ जाना, पटक देना, पराजित करना ।

अधरोष्ठ (वि०) [अधर + अ] 1 नीचे का 2 निचिल, कम-कित, निरस्कृत ।

अधरोष्ठः (अध्व०) [अधर + एष्त्] 1 पहले कित 2 परमों (जो नील गया) ।

अध्वयोः—[न० त०] 1 बेईमानी, घुट्टा, अन्वयः; अन्वयैव अन्वयायुषं 2 अन्वयाय कर्म, अन्वय या युक्त्य, वाप । कर्म और अधर्म, स्वायथात्म में बंभित २० गुणों में दो गुण हैं और यह आत्मा से सबम रहते हैं, ये दोनों क्रमशः तुल्य और बुद्ध के क्विचित् क्षरण हैं, यह इन इन्धिया से प्रत्यक्ष नहीं हैं, परन्तु इनका अनुमान युवयंम्य तथा तर्कना के द्वारा लगाया जाता है 3 प्रजा-पति या सूर्य के एक अनुचर का नाम,—यही साकार बेईमानी,—संयं विधेयमे मे रहित, बहुता की उपा-धि । सम०—अध्वकम्, आधिन् (वि०) घुट्ट, पापी । अध्वया (न० इ०) विद्याया स्त्री ।

अध्वज्, अधः (अध्व०) [अधरः अस्मि, अधरशब्दस्य स्थाने अवादेश] 1 तने, नीचे—यत्पचो पाय विद्यारि सर्व-त,—शि० १।२, निम्नप्रदेश में, नारकीय प्रदेश में या नरक में (अक्षरक के अनुसार 'अध' शब्द का अर्थ कर्तृकारक का होता है—अक्षर आदि, अगारान के साथ—अधो ब्रह्मात् पतति या अधिकात्म के साथ—अधो गृहे गते), 2 मध्यकारक के साथ 'अध्वयशोधक अन्वयो' की भांति प्रयुक्त 'क नीचे' 'के नीचे' अर्थ की प्रकट करने हैं—नरकगाम्—श० १।१६ (यत्र द्विर् चिन की जानी है ना अध होता है)—नीचे-नीचे या नीचे—अधोऽपि गमनं यदधुपयना स्वीकम्—अनु० १० १०, (कर्मकारक के साथ) नीचे में, नीचे ही नीचे—नवानधोऽन्यत्रतनं यत्पचरत्—मि० १।१। मम०—अधुक्त् अधोत्तर,—अध्वज्, शिपुं—अध्वज् दे० ऊपर—उत्पत्तस्य मैयत्,—कर हाथ का नि-चला भाग (राम्),—अध्वज् यंगे मड जाना, इय देना, आमानिन कृता—अध्वजम् अट्ट अट्ट मृत सोऽना यति (स्त्री०), अध्वजम् पातः 1 नीचे की आर विर्या या उरना उत्तरना 2 अध पवन हात,—अध्वं(प०) नश—अध्व वात, शिपुका स्पष्टिद्धा (मराठी में 'यदधो' रहत है)—विद्या (स्त्री०) अधोविन्द् रसिग का रसिग,—अधि (स्त्री०) नीचे की ओर दमना चल गति दे० ऊपर, अन्वयः धाम का कृता आत्म विचार करने काय व्यक्तियों क ईदने के लिए, धाम 1 शरीर का निचला भाग 2 किंगो नीर का निचला हिस्सा—अध्वजम्,—शोषः—यानाम लोक, निम्नतर प्रदेश—अध्वक, अध्वक (वि०) नीचे की मुच किये हुए, लम्ब 1 पदाना, मातृक 2 कही मरम् रेशा,—आयुः अपानवायु, अध्व-रा, स्वस्तिकम् अधोदिन् ।

अधस्तन (वि०) [स्त्री० स्त्री] [अधश् + ट्, घृट् +] निचला, निम्न स्थान पर स्थित ।

मासिक 4 उपयुक्त (पु०—री,—बन्ध) 1 राज
पुत्र, पदाधिकारी कार्यकर्ता, अवीरक, प्रधान, विवे-
क, मासक 2 सही दावेदार, मासिक, स्वामी ।
अधिकृत (वि०) [अधि+कृ+क्त] अधिकार प्राप्त, नियुक्त
आदि,—सः राजपुत्र, पदाधिकारी, किसी पद के
कार्यभार को सभालने वाला ।
अधिकृति (स्त्री०) [अधि+कृ+क्तिन्] हक, अधिकार,
स्वामित्व, दे० अधिकार ।
अधिकृत्य (अव्य०) [अधि+कृ+ (कृत्वा) ल्यप्] उल्लेख
करके, के विषय में, के संबंध में—दोषसमयमधिकृत्य
शेषताम्—स० १, शकुनतामधिकृत्य इवीति—स०
२ ।
अधिकृत्य } [अधि+कृ+पञ्, ल्यट् च] हमला,
अधिकृत्यम् } बर्बादी ।
अधिकृत्ये—[अधि+कृ+पञ्] 1 वाली, दोषारोपण,
अपमान, अवलम्बित्व इवानुशासनम्—कि० १।२८ 2
पदभ्युत्तर करना ।
अधिकृत्य (वि०) [अधि+कृ+क्त] 1 अधिकृत, प्राप्त
आदि—अर्ध० २।१०, 2 अधीत, ज्ञान, सीखा हुआ,
किशित्वेन पुष्कल्यनधिगतसामान्य इव—उत्त० ६।३० ।
अधिकृत्यः } [अधि+कृ+पञ्, ल्यट् च] 1 अर्जन,
अधिकृत्यम् } प्राप्त 2 प्राप्तित् अर्थजन, ज्ञान 3 व्यापार-
िक लाभ, लाभ, संपत्ति प्राप्त करना,
निष्कादे प्राप्ति—मिता० या धनप्राप्ति,
4 स्वीकृति 5 मेषुन ।
अधिकृत्य (वि०) [अधिका गुण दस्य] 1 श्रेष्ठ मूत्र रखने
वाला, योग्य, गुणी—दोष्का दोषा इमधिकृत्ये नाथये
सम्बकामा—अध० ९, 2 जिसकी डोरी कसकर खिची
हो (जैसे धनुष) ।
अधिकृत्यम्—[अधि+कृ+ल्यट्] किसी के ऊपर चलना ।
अधिकृत्यम्—[अधि+कृ+ल्यट्] अर्थ ।
अधिकृत्यम्—[अधि+कृ+ल्यट्] 1 ताज
जिह्वा 2 जिह्वा की सूजन (रोग) ।
अधिकृत्य (वि०) [अध्याक्या ज्या यथ अधियत ज्या वा]
धनुष की डोरी को कस कर नीचे धूर, या कस कर
खिची हुई डोरी वाला (जैसा कि धनुष) । स०—
धनुष—कार्यकृत (वि०) धनुष की डोरी को नाने
हुए—शब्द-साधित्यकार्मुके—स० १।६ ।
अधिकृत्यका [अधि+कृत्य+का] विरिपस्य (पत्ताइ के
ऊपर की समतल भूमि) उष्णसमथमि—स्वानु
तपस्यन्तमथित्यकावाम्—कु० ३।१०, अधिकृत्यामिभ
धातुमथ्याम्—रघु० २।२९ ।
अधिकृत्यः [अध्याक्या दस्य—शा० म०] दात के ऊपर
निकलने वाला दात ।
अधिकृत्यः अधिकृत्यता [शा० म० अधिकृत्यता—नी देव

देवता वा] इष्टदेव प्रधान देव, अधिराजक देवता,
यवाचे पातुके परचातर्तु राज्यधिकृत्ये—रघु० १।२।
१७, १६।२, भाषि० ३।३
अधिकृत्यम्, अधिकृत्यताम् [अधिप्राप्त्युत्तु देव देवता वा] किसी
वस्तु की अधिकृत्यानी देवता ।
अधिकृत्यः [शा० म०] दरमेधवर ।
अधिकृत्यः [अधि+कृ+पञ्] सन्ध, महुक ।
अधिकृत्यः, अधिकृत्यः [अधि+कृ+पञ्, इति वा] स्वामी,
दातक, राजा, प्रभु, प्रधान—अथ प्रधानाधिकृत्य-
प्रभादे—रघु० २।१ (अधिकृत्य सहाय में प्रयुक्त) ।
अधिकृत्यो [शा० म०] दे०—गायिका, स्वामिनी ।
अधिकृत्य (वि०) [अधिका प्राजा यस्य स० म०] बहुत
सजान वाला (स्त्री वा पुष्य) ।
अधिकृत्यः [अधि+कृ+ल्यट्] स्वामी, श्रेष्ठ, प्रभु ।
अधिकृत्यम् [अधि+कृ+क्त शा० म०]—मूल अधिकृत्य-
मधिकृत्य इतमानम्] परमेधवर, परचाय्या वा तस्य-
इवी समान व्यापक प्रभादे ।
अधिकृत्य (वि०) [अधिका प्राजा यस्य स० म०] मान
के अधिकृत्य, बहुत अधिक, अपरिमित ।
अधिकृत्यः [शा० म०] लौक का महीना, मलमास ।
अधिकृत्यः [शा० म०] 1 प्रधान यज्ञ 2 ऐने यज्ञ का अभि-
कर्ता ।
अधिकृत्य (वि०) [अध्याक्या रथ गृधिन वा] रथाक्य,—
कः—1 मूल, मासिक 2 मूल का नाम जो अग्रेसर का
राजा तथा कर्म का यासक पिता वा ।
अधिकृत्य, (पु०) अधिकृत्यः [अधि+कृ+ल्यट्] 1
+ट् वा] प्रभुसत्ता प्राप्त वा राज्यशासक मन्त्राट,
—अध्यामन्त्रेण भुवनेध्याधिराजस्य—उत्त० १।१९,
राजा प्रधान, स्वामी (अनुष्य और दशदिशा का),
हिमालयो नाम नवाधिराज—कु० १।१ इसी प्रकार
मूत्र, नाग आदि ।
अधिकृत्यम्, अधिकृत्यम् [अधिकृत्य राज्य राज्यम् इव]
1 गाड़ी हकूमत वा मन्त्राट का शासन, नवीभन्ता,
गाड़ी मयारा 2 माहात्म्य देव का नाम ।
अधिकृत्य (वि०) [अधि+कृ+क्त] 1 मन्त्र, चड़ा हुआ
2 हडा हुआ ।
अधिकृत्यः [अधि+कृ+पञ्] 1 राजासौ 2 मन्त्र होना,
चरना ।
अधिकृत्यम् [अधि+कृ+ल्यट्] चढ़ना, मन्त्र होना,
पिता—अध० ८।१०—औ मीड़ी, लीड़ी का इडा
(कफडी आदि का) ।
अधिकृत्य (वि०) [अधि+कृ+ल्यटि] चढ़ने वाला,
मन्त्र होने वाला, ऊपर उठने वाला,—औ मीड़ी,
जैने की पीठी या इडा ।

अभिलोकम् [अभ् + लो०] 1 विषय के संदर्भ रखने वाला 2 विषय में ।

अभिवचनम् [अभि + वच् + ल्यट्] 1 परमात्मनः, परम में बोलना, 2 शोक, उल्लास, अभिवचन ।

अभिवाहः [अभि + वच् + णिच् + घञ्] 1 शासन, विवाह, वास, उत्साहिन च इत् इत् निरिच्छितायाः—का० ११३, वसति, वचना 2 करना देना 3 सत्कारन के पूर्व देना का आवाहन वचन आदि 4 शोकात्, परावर्ष, मन्वादा 5 वृथासि और लुपिता उच्यते मनाया, वृथयुक्त तथा महकदार वषाणी का लेखन—अभिवाहत्पुहमेव माता—रघु० ८।१४ वि० २।२० ।

अभिवाहनम् [अभि + वच् + णिच् + ल्यट्] वचन से बोलना, मूर्ति की श्राविक प्रतिक्रिया, मूर्ति में देवता की श्राव-प्रतिष्ठा करना ।

अभिवासा [अभि + विच् + क्त] बहु स्त्री जिसके रहते हुए पति दूसरा विवाह कर के, शा० १।७३-४, मनु० ५।८०-८१ ।

अधिकेत् [अभि + विद् + कृच्] एक स्त्री के रहते हुए दूसरा विवाह करने वाला ।

अधिकेत्, अधिकेत्स्यु [अभि + विद् + घञ्, ल्यट् का] एक स्त्री के रहते अधिकेत् स्त्री में विवाह करना ।

अधिक्यः [अभि + जि + अच्] 1 आचार 2 उदात्मना, (आग पर रखकर) धर्म करना ।

अधिक्यत्वम्, अधिक्यत्वम् [अभि + जि (श्री) + ल्यट्] धर्म करना, उदात्मना, -की [अभिधीयते पञ्चतन्त्र—आचारे ल्यट् + क्रीप्] वृक्षा, अर्धीः ।

अधिक्यी (वि०) [अधिक्यी धीरेभ्य] ऊँची प्रतिष्ठा वाला, सर्वश्रेष्ठ, बड़ा बनाइय, प्रमुखतामय्य स्वामी—इस महत्प्रभुत्वात्तद्विषयवचनविधीशासनमय्य आनिनी—कु० ५।५३ ।

अधिक्यत्वम् [अभि + क्त्वा + ल्यट्] 1 निकट होना, पास में स्थित होना, पहुँच 2 पद, स्थान, आचार, धामन, जगत्, नगर 3 निवास स्थान, आवास, 4 अधिकार, शक्ति, निग्रहव्यवस्था 5 सत्कार, उपनिवेश ० पक्ष, (राजी आदि का) रहितवा 7 दुष्टान, निरिच्छ निग्रह 8 आजीविका ।

अधिकृत (वि०) [अभि + क्त्वा + क्त] 1 (कर्तृवाच्य के रूप में) (क) स्थित, विद्यमान (ख) अधिकृत (ग) निवेशन, प्रधानता करना 2 (कर्तृवाच्य के रूप में) (क) स्वस्त, अधिकृत (ख) भरा हुआ, वस्त, अधिकृत (ग) परिच्छिन्न, सुरक्षा प्राप्त, अजीकृत (घ) नीत, वृथासि, अधिष्ठ, प्रधानता विदा वदा ।

अधिकारः—दे० अधिकार, स्वागत स्वाधीनतादानवस्तम्—कु०—२।१८ ।

अधीकृत (वि०) [अधीकृत + क्त] कृष पदा लिखा,

निष्कास—अधीकृत वस्तुधामानेयु—अध० १२०, (विद्य आकल्प आदि में) ।

अधीकृतः (स्त्री) [अभि + र् + क्त] 1 अध्वपन, अनु-धीकृत 'मोक्षायत्नप्रधारणः—अधि० १।१, 2 स्मरण, शक्त्यावरण ।

अधीक्य (वि०) [अधिक्यत्पु इत्यु प्रभुत्—आ० स०] आनिष्ठ, पालकृत, निगरे (बहुधा वस्तु परीं में) स्वामे शक्ता कामिनां वृत्तयोना—आधि० ३।१४, स्वधीनं बहु देहिनां मुक्तम्—कु० ५।१०, इत्यादिनां दुष्टमेतन् स्वधीना हि तिष्ठन्—रघु० १।७२ ।

अधीक्यत्वः (स० कृ०) [अभि + र् + धामन्] विद्याधी, देवताधी ।

अधीर (वि०) [अ० ट०] 1 अज्ञसहीन, गीर 2 उक्ति, उत्पीडित, उदात्मना 3 अक्षिर 4 वैदरहित, अंधक,—रा 1. निवर्त्ती 2 स्वकी वा समकाम् स्त्री ।

अधीर्यताः [अभि + र् + घञ्—उपसर्गव्य धीर्यत्] एक छोटा कोट जिससे सारा शरीर ढक जाय, मन्वादा, दे० अधिवाह की ।

अधीर्यः [आ० व०] स्वामी, सर्वोच्च स्वामी वा आनिष्ठ, प्रभुत्वात्पत्र राजा—अध०, भूय, मनुयु आदि ।

अधीर्यरः [आ० व०] सर्वोच्च स्वामी वा निवोक्ता ।

अधीर्य (वि०) [अभि + र् + क्त] अधीर्यक, श्रावित—अधः अधीर्यक पद वा कर्त्तव्य, देहा कार्य विलसे सामर्थ्य का उपयोग हो सके, (अधीर्यः—अकार-पूर्वको व्यापारः—हिता०) ।

अधुना (अन्व०) [इदानीमुत्पारस—पा० ५।३।१७] अब, इस समय प्रयदानामधुना विद्वन्ना—कु० ५।११ ।

अधुनात्मन (वि०) [स्त्री०-नी] [अधुना + ट् + ल्यट्] वर्तमान काल में सबय रखने वाला, आधुनिक ।

अधुन्यः [अ० ट०] अकाली दुर्द भाग ।

अधुतिः (स्त्री०) [अध् + ध् + क्त] 1 युवता का संयम का अभाव विधिलता 2 अक्षयम् 3 दुःख ।

अधुव्य (वि०) [अ० ट०] 1 अक्षय, दुर्भाग्य, अनविषयम् (वि० अधिव्य) अधुव्यधामिनामय्यव्य दादीराले-रिवाच्यं—रघु० १।१६, 2 अजीला, अजीला 3 चम्बी ।

अधीक, अधीक्य, अधीक्युक्त—दे० 'अधु' के नीचे ।

अधुव्य (वि०) [अधिव्यत्पु अक्षय इतिव्यम्—आ० व०, अक्षयव्येति व्यानीति इति—अधि + यत् + अच्] शोषर, कृष,—अधीक्योश्च विषयत्वं गीरत् स्वार-द्विः—आधि० ५।१७, २ निरीक, अधिष्ठाता,—अः अधीक्यक, प्रयत्न, मुक्त—अधीक्योश्च प्रकृति युक्ते अक्षरपरम्—अध० १।१०, अब, अक्षय परीं में; अक्ष, देना, धार, धार ।

अधुव्यत्पु [आ० व०] अधुव्यत्पु अक्षर 'अधु' ।

अध्यायि (अध्) विवाह सरकार की अधि के निकट या ऊपर, (मृ०-नि) विवाह के अन्तर पर अधि को साथी करने स्त्री को दिया जाने वाला उपहार, धन—विवाहकाले यस्त्रोभ्यो दीयते ध्यायितसिन्धौ, तदध्-निकृत् सद्भिः स्त्रीयन परिकीर्तितम् ।

अध्याधि (अध्) [अधि+अधि] ऊपर, ऊँचे (कर्म० के साथ) लोकम्—सिद्धा० ।

अध्याधिषेयः [शा० सं०] अत्यन्त अपचाय या दुर्बलधन, कुत्सित याचिया ।

अध्याधीन (धि०) [शा० सं०] नितान्त अधीन, विस्तृत बधीयत, जैसे कि दास सेवक—वा० ३।२२८ ।

अध्यायः [अधि+इ+अच्] । ज्ञान, अध्यायन, स्मरण 2= दे० अध्याय ।

अध्यायनम् [अधि+इ+स्युट्] सीखना, जानना, पढ़ना (विशेषतया वेदो का), ब्राह्मण के षट्कर्मों में से एक । वेदाध्ययन केवल प्रथम तीन वर्षों के लिए विहित है, ब्रह्म के लिए नहीं—मनु० १।८८-५१ ।

अध्यायं (धि०) [अधिकर्मथं यस्य] जिसके पास अतिरिक्त भाषा हो—ज्ञानमध्यायंभाषता—महा० अर्थात् १५०, "पौत्रजघातात्—पञ्च २।१८ ।

अध्यायसायम् [अधि+अव+सो+स्युट्] 1 प्रयत्न, दृढ-निश्चय आदि, दे० अध्यायसाय 2 (सा० शा० में) प्रकृत और अप्रकृत दोनों बन्तुओं का हम उय से एक रूप करना जिससे कि एक बन्तु दूसरी में किसी हो जाय, निजीर्याध्यायनात् प्रकृतस्य परेष यत् काव्य० १०, इसी प्रकार की एककृपात् पर अतिश-योक्ति अलंकार और साध्यवसाना लक्षणा आश्रित है ।

अध्यायसायः [अधि+अव+सो+अच्] 1 प्रयास, प्रयत्न, परिश्रम 2 दृढनिश्चय, सकल्प, मानस प्रयत्न या विचारों का ग्रहण, 3 वैयं, उद्यम, लगातार कोशिश ।

अध्यायसायिन् (धि०) [अधि+अव+सो+अधि] प्रयत्न-शील, दृढसकल्प भागा, वैयंशाकी, उत्साही ।

अध्यायसय [अधि+अव+स्युट्] अधिक ज्ञाना, एक बार का ज्ञाना पचे बिना फिर जा केना ।

अध्याय्य (धि०) [आत्मन संबद्धम्] आत्मा या व्यक्ति से संबध रखने वाला, -त्वम् (अध्) आत्मा से संबद्ध-त्वम् परबद्ध (व्यक्ति के रूप में प्रकृत) या आत्मा और परमात्मा का संबध । सम०—ज्ञानम्, विद्या आत्मा या परमात्मा संबधो ज्ञान अर्थात् ब्रह्म एव आत्म-विषयक आत्मकाटी (उपनिषदों द्वारा बताये गये सिद्धांत)—रति (धि०) जो परमात्मचिन्तन में मूल का अनुभव करे ।

अध्याय्यिक (धि०) [स्त्री०—की] अध्याय से सम्बन्ध रखने वाला ।

अध्याय्यकः [अधि+इ+अच्+स्युट्] पढ़ाने वाला, गुरु,

शिक्षक-विशेषतया वेदो का, व्याकरणः; न्यायः; भूतक अर्थात् अध्यायक । विष्णुस्मृति के अनुसार अध्यायक दो प्रकार के हैं—एक तो 'आचार्य' को कि बालक को यज्ञोपवीत पहनाकर वेद-पाठ में सीखित करते हैं, दूसरे 'उपाध्याय' जो अपनी जीवनिका कर्मों के लिए अध्या-यन काम करते हैं, दे० मनु० २।१४०-५१ ।

अध्याय्यम् [अधि+इ+अच्+स्युट्] पढ़ाना, सिखाना, व्याख्यान देना, ब्राह्मण के षट्कर्मों में से एक, भारतीय स्मृतिकारों के अनुसार 'अध्याय्य' तीन प्रकार का है । पर्याय किया जाने वाला 2 मञ्जूरी प्राप्त करने के लिए 3 की गई सेवा के बदले ।

अध्याय्यिन् (धि०) [अधि+इ+अच्+स्युट्] अध्यायक, शिक्षक ।

अध्यायः [अधि+इ+अच्] । पढ़ना, अध्यायन, विशेषतः वेदो का, 2 पाठ या पढ़ने के लिए उचित समय 3 पाठ व्याख्यान 4 लक्ष्य, किसी रचना के भाग, निम्नादिन कुछ ऐसे नाम हैं जो संस्कृत लेखकों में 'अध्व' या 'भाग' को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किये हैं। सर्वों वगैरे परिच्छेदोद्देशानाध्याय्याह्वसह उन्मेषात् परिवर्त-श्च पटक कादमानम्, स्थान प्रकरण वैध पबोल्ग-याह्निकानि च, स्वकाशो तु पुराणायो प्राप्य परि-कीर्तितो ।

अध्यायिन् (धि०) [अध्याय+गिनि] अध्यायन करने वाला, अध्यायनशील ।

अध्यायक (धि०) [अधि+आ+इह,+अच्] 1 सहाय, बड़ा हुआ, 2 ऊपर उठा हुआ, उत्पन्न 3 ऊँचा, श्रेष्ठ, शीघ्र, निम्नतर ।

अध्यायोपः [अधि+आ+इह,+अच्+पुङ्+अच्] । उठना उन्नत होना आदि 2 (के० द० में) भ्रमवश एक वस्तु को अन्यवस्तु समझना, भ्रम के कारण एक वस्तु के मूल दूसरी वस्तु में जाटना, भ्रमवश गम्भी का साथ भ्रमवशना अनर्पन्तरज्जी सप्रागोपवत्, अत्रयद्वय ब्रह्मणि अगद्वयारोपवत्, वस्तुनि अस्तव्यारोपोऽध्यारोप वे० हा०, 3 ध्यानिपूर्ण ज्ञान ।

अध्यायोपयम् [अधि+आ+इह+अच्+पुङ्+स्युट्] 1 उठना आदि 2 (बीह) होना ।

अध्यायाय [अधि+आ+अच्+अच्] । शीघ्रादिक बहनेना या होना 2 बह केत जिसमें शीघ्रादिक बो दिया गया हो ।

अध्यायाह्निकम् [अध्यायाह्न (पितृगृहात्पितृगृहमन्त्र) लक्षार्थं उन्] ३ प्रकार के स्त्रीयनो (बह अन्वलि जो एक स्त्री अपने पिता के घर से पति के घर को बिदा होने समय प्राप्त करती है) में से एक—वस्तुवर्षभते नारी नीययाना तु पितृकान् (गृहाय) अध्यायाह्निकं नाम स्त्रीयन परिकीर्तितम् ।

अध्यासः, अध्यासवन् [अधि+भा+पञ्, लृट् वा]
1 ऊपर बैठना, अधिकार में करना, प्रशान्त करना 2
शासन, स्थान ।

अध्यासः [अधि+भा+पञ्] 1 विद्या आरोग्य, विद्या
ज्ञान, २० 'अध्यासो' को जी 2 परिशिष्ट 3 कुचलना
-याभाष्यते सत दशः—वा० २।२।१७ ।

अध्याहारः [अधि+हा+हृ+पञ्, लृट् वा] 1
अध्याहारवन् [अधि+हृ+पञ्] मूलपत्रा को हटा कराना, नई कल्पना, अन्वयावा वा
अनुमान ।

अध्यक्षः [अधिपत उच्च् वाहनत्वेन] अंत्याधी ।
अध्यक्षः [अधि+पक्ष+पञ्] उडा हुना, उन्मत्त,—शः
विष—डा वह स्त्री जिसके पति ने उसके रहते हुए
हुनरा विवाह कर लिया हो दे० अधिविष्ठा ।

अध्यक्षवन् [अधि+पक्ष+लृट्] किसी कार्य को करने की
प्रेरणा देना, विशेषतः साधारण के द्वारा, अर्थात् साधार
पुंसक किसी कार्य में प्रवृत्त करना,—भा विशेषण,
याचना ।

अध्यक्ष (वि०) [न० त०] 1 अनिश्चित, अनिश्च 2
अनिश्च, संकट, पुनश्चकल्पय, —वन् अनिश्चितता,
यो प्रुधाधि परिच्छेद्य 1 प्रुधाधि निश्चये, प्रुधाधि
नश्य मन्वति अग्र्यं नञ् ।व च ।

अध्यक्ष (पु०) [अध्+अन्विप् वकारस्य वकारः] 1 रस्ता,
मार्ग, मार्ग, मकर मार्ग २ (क) दूरी, स्थान (चक्रकर
पार किया गया और पार करने के लिये) -अधि
लक्षितम्भान् बुध्ने न बुधोपय—रघु० १।१७ उल्म-
चिताम्बा—मेघ० ४५ (क) यात्रा, भ्रमण, प्रहरण,
अस्थान—नैक प्रपञ्चोत्थानम् मनु० ८।१०, 3 समय
(कार), मूर्तकार 4 आकार, अनलिख 5 उपाय
साधन, प्रथानी 6 आक्रमण । सम०—शः 1 मार्ग
चलने वाला, यात्री, बटोही—अन्तानकतकम्भावा-
नुदाविद्याचार्यव्यवन्—कु० ६।१८ ('गामिन्), 2
अंत 3 अन्तर 4 पूर्व,—भा नंगा,—वतिः पूर्व,
—शः 1 यात्रा करने के लिए गाड़ी 2 हुकरा जो
चलने में सतुर हो ।

अध्यक्षीय [(वि०) [अध्यक्ष+य, वत् वा] यात्रा पर जाने
अध्यक्ष्य [के शीघ्र, तेज चलने वाला—अति उत्तमव्य-
तुरणवाची—अट्टि० २।१४,—शः,—शः तेज
चलने वाला यात्री, बटोही ।

अध्यक्षः [अन्धान् इत्यर्थे रति—इति अन्धन्+प+क
अन्धा न अन्धरि कुटिलो न प्रवति नञ्+अन्+अन्,
अन्धरि कुटिलानां सारथिषो निपातः बहुविध—विश०]
मत्, धार्मिक संस्कार, शोचमान, तन्मन्वे विस्मयित
—रघु० ५।१,—शः,—रघु आकाश वा वायु ।
सम०—बीज्योवा अध्यक्ष संबधी संस्कार, इसी प्रकार

*अध्यक्षीयः—आयधिकार, पारमिष्कृति,—भीमांसा
वैमिनि की पुंसबीमांसा ।

अध्यक्ष्युः [अन्ध+अन्ध+पुन्] 1 अन्धिक, पुरोहित, पारि-
याधिक रूप से डोहने 'अध्यासु' तथा 'अध्या' से अति-
रिपत अन्धिक, 2 अनुभव । सम०—शः अनुभव ।
अध्यक्षि—अन्धवन् ।

अध्यात्मन् [न० त०] उन्मा, अन्धकार ।

अन् [अन्ता० पर० हेट्] [अनिति, अनित] 1 हांस लेना,
2 हिलना, बीना, प्रेर० जानबलि, मन्मन्० अनिति-
वति । (विधा० वा०) बीना, 'अ' उपसर्ग के साथ—
बीवित रहना—अहं पुनरेव प्राणिमि—भा० ३५,
प्राणिमस्तथ मानसं—गामि० ५।३८ ।

अन् [अन्+अन्] हांस, प्रव्याप्त ।

अन्ध (वि०) [न० व०] जिसका पैरुक सम्पति पर कोई
अधिकार न हो ।

अन्धकदुग्धिः—दे० आनकदुग्धि ।

अन्धः (वि०) [न० व०] दुग्धिहीन, अन्धा ।

अन्धकार (वि०) [न० व०] 1 अन्धने में अन्धकार, भूक,
गूना 2 अन्धकारित 3 अन्धने के अन्धकार,—रघु दुर्भचन
वाची, मिष्ठा वा अन्धकार, (वि० वि०) बिना अन्धों
के—'अन्धित बीहृ'देव रघु० १।४।२५ ।

अन्धमिः [न० त०] 1 अन्ध का न होना, अन्ध के अन्ध
कोई दूसरी वस्तु—अन्धमिःअन्धमिः अन्धनेव अन्धमे,
अन्धमिःअन्धमिः अन्धको न अन्धमिः अन्धमिः । मि०
2 अन्ध का अन्धकार, (वि०) [न० व०] 1 अन्ध
अन्ध की अन्धकारता न हो—अन्धमे विधिअन्धमिः
क अन्धमिः अन्धमिःअन्धमिःअन्धमिः—रघु० ८।२५, 2
अन्धमिः न करने वाला, 3 अन्धमिःअन्धमिः अन्धमे विर-
हित, अन्धमिः 4 अन्धमिःअन्धमिः अन्धमे अन्धमिः
अन्धमिः ।

अन्ध (वि०) [न० व०] 1 अन्धकार, अन्धकार—अन्धमिः
वैनामनेति—रघु० १।४।२०, 2 अन्धकार, अन्धकार,
—अन्धमिःअन्धमिः—शः २।१३, अन्ध अन्धमिःअन्धमिः
अन्धमिःअन्धमिः—अन्धमिः 3 अन्धकार, अन्धकार,
अन्ध, अन्धकार—अन्धमिःअन्धमिःअन्धमिः—रघु०
५।१०, अन्धमिःअन्धमिः अन्धमिःअन्धमिः—शः ४, अन्धकार
अन्ध अन्धकार ही अन्ध हो या जो अन्ध के अन्धकार
अन्धकार अन्धकार पर अन्ध ही 4 अन्धमिः, अन्धमिः,—शः
1 अन्धे अन्धों, 2 अन्धमिः वा अन्ध का अन्ध ।

अन्धकदुग्धि (वि०) [न० व०] 1 अन्ध, अन्धकार 2
(अधि की भांति) अन्धकार ।

अन्धक (वि०) [न० व०] अन्धकार, अन्धकार, अन्धकार
अन्धकार, अन्धकार अन्धकार—शः ५।१,—शः (अन्ध-
कार), अन्धकार—अन्ध 1 अन्धकार, वायु, अन्धकार,
2 अन्ध । सम०—अन्धका अन्धकार,—मेघ—अन्ध

केस, प्रेनपत्र, ०केसकिमोपधेनं (अचलित) कु० ११७,
*सपु. *अनुसूत बादि—विष की के साथ ।

अनन्यत्व (वि०) [न० व०] विना अन्य, चर्कण का साक्ष्य
के—नेने हुए अनन्यत्वने—सा० ६०, —सपु ३ अकारण,
बातवचन २ परबहु विष्णु वा नारायण (पु० भी) ।

अनन्यत्व (पु०) [अतः सफटं बहुति—वि०] [अनन्यत्वान्,
*ब्रह्मही, *दुःखचाम् बादि०] १ कैक, शीघ्र २ नृच-
रायि,—ही (अनन्यत्वही) नाम ।

अनति (अन्य०) [न० त०] बहुत अधिक नहीं, 'अनति'
से नारम्य होने वाले समस्त परों का विशेषण 'अति'
से नारम्य होने वाले शब्दों की भाँति किया जा
सकता है ।

अनतिविपरिचिता—विताम्य का अभाव, न्यायमान्यता का
एक रूप धाराप्रवाहा, ३६ वाक्यों में से एक ।

अनन्तत्व वि० [स्त्री०—नी] [न० त०] अथ वा नाम
दिन से सत्रय न रखने वाला, पाणिनि का एक पाठि-
भाषिक शब्द जो लज और लूट-अकार के अर्थ को
ब्रकट करता है, —नः जो चालू दिन न हो, अतीताया
राधेः परचाचन आगाधिया राधेः पूर्वर्तिन बहिलो
दिबलोअचनन—तिङ्शान्, तङ्गिन काक ।

अनन्तक (वि०) [न० त०] १ जो अधिक न हो, २ अतीत
पूर्व ।

अनन्तः [न० त०] अपनी इच्छा से कार्य करने वाला
स्वाधीन बर्द, कोटल ।

अनन्तत्व (वि०) [न० त०] १ अत्यन्त, अत्यन्त २ साक्ष्य
हीन ।

अनन्तत्वः } [न० त०] न पढ़ना, चर्कण में विराम, बहु
अनन्तत्वम् } समय जब कि इस प्रकार का विराम होगा
है या होगा चाहे, एक अन्तका सा विद ('विबन्')
अथ चिष्टानध्याय—उत्तर० ४—किसी पूज्य अतिथि
के सम्मान में दिया गया अन्तका ।

अनन्तम् [अन्+त्युट्] तास केना, जीना ।

अनन्तान्तरक (वि०) जो सत्यने के अन्तर्गत हो ।

अनन्त (वि०) [नास्ति अन्तो यस्य न० व०] अनन्तरहित,
अपरिमित, निरन्तरी, अन्तव, —*अत्यन्तवस्य वस्य—
कु० ११३, —तः १ विष्णु की शय्या सेवना, कुज,
बलाया, शिव, नागों का पति शानुक २ बादल ३
कहानी, ४ चोदह ग्रन्थियों से मुक्त रेशमी डोरा जो
अनंत चतुर्दशी के दिन दक्षिण मुखा पर बाधा जाता
है, —सा १ पृष्ठी (अनन्तही) २ एक की सक्का ३
पारंगी ४ शारिवा, अनन्तमूल, हूर्वा अथि पोषे,
—सपु १ आकार, बातवचन २ अतीतता ३ मोक्ष ४
परबहु । मय०—सुतीया वैशान, माहपर और
पारंगीपं मास की समन्वय की तीर्थ—कृत्विः शिव,
इन्द्र, —द्वैः १ सेवनाय २ नारायण को सेवनाय के अन्तर

जोता है,—वार (वि०) अतीत विस्तारयुक्त, निरन्तरी,
—*रिक्त सन्वत्सरायन्—अथ० १,—अन् (वि०)
अपरिमित रूपवाला, विष्णु,—शिवः सुविष्टिउर का
अन्त—मय० ११६६ ।

अनन्तर (वि०) [नास्ति अन्तरं यस्य—न० व०] १ अनन्तर-
रहित, अनन्तरहित २ जिसके बीच देव काल का
कोई अन्तर न हो, सदा हुआ, सदा हुआ ३ समस्त,
परीक्ष का, विष्णुक्त विना हुआ, निकटवर्ती (अपारायन
के साथ) बहुवाक्यविन्युत्तर—मय० २१११, ४ अनु-
वर्ती, सविष्टित होना (समाय में) ५ अपने से ठीक
नीचे के वर्ष का,—सपु १ संसकता, सविष्टिता २
बहु, परमात्मा,—सपु (अन्य०) सुरल भाष, परमात्मा
२ (सम्बन्धकता की दृष्टि से) भाष में, (अपारायन
के साथ)—दुःखपारायणवाक्यान्तरम्—सपु ३१७,
मोदानविचेरनन्तरम्—३१३३ ३६, ३७, ३१ । मय०—ब
वा—का १ अथि वा वैव माता में, अपने ने ठीक
अपर के वर्ष के पिता के द्वारा उत्पन्न सतान—मय०
१०४२ 'सपरिवा' भाई बाल, (अ) छाटी वा बनी
बहुन—अनुष्ठितान्तराविषाह—सपु ७११२ इमी
प्रकार *कात ।

अनन्तरीय (वि०) [अनन्तर+ञ] सन्ध्या में ठीक बाद का ।

अनन्त (वि०) [न० त०] १ अशिन, सक्कण, बही, अडि-
तीथ २ एकमात्र, अनूप, जिसके साथ और दुनगा न
हो ३ अविचल, एकाग्र, अन्य की आर न जाने वाला,
—अनन्याविचलनयन्तो मा ये जना पर्यायाने—मय०
११००, मयान में 'अनन्त' शब्द का, अनुवाद किया जा
सकता है 'दूसरे के द्वारा नहीं' और किसी आर मय
या निर्देशित नहीं' एकाग्रही । मय०—अतिः (स्त्री०)
एकमात्र सहाये वाला अनन्यगनिके अने विगतपालके
चातके—उडुट्, -चित्त, -चित्त, -केसल, कल्प,
-मन्त्र, —द्वेष (वि०) एकाग्रचित्त, त्रिमता अन्
और करो न हो;—अन्, अनन्त (पु०) कामदेव,
प्रेम ना देवना—मा मुमुक्षुत्वम प्रथमनन्यवग्रमा—मा०
११३२,—पूर्वः सह पुत्रव त्रिके श्री कोई स्त्री न हो,
(—र्षी) दुःखार्गी, विनयार्गी स्त्री—सपु ० ६७,
—वाक् (वि०) किसी और अर्थि की ओर न्याय न
रखने वाला;—अनन्यभाव प्रतिमाजुहि—कु० ३१६३,
—विषय (वि०) किसी और से मन्त्र न रखने वाला,
—अति (वि०) १ कैके ही स्वभाव का २ त्रिमकी
दुसरी अर्थिका न हो ३ एकविध मनोवृत्ति विधान—
साधान्, —साधारण्य (वि०) दूसरे से न मिलने
वाला, असाधारण, एकाग्रचित्त रूप से बना हुआ, केम-
गाय,—अनन्यकारी साधारण्यो वाक्यस्त्वत्वाः पुस्तका—
विषय० ३११८ 'रावणक,—सपु ० १११८;—अनुक्त
(वि०) [स्त्री०—की] वैशेषी, अनुपच ।

अनन्तः [न० त०] 1. संबंध का अभाव 2 (सा० वा०) एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की तुलना उची से की जाय—और उसको ऐसा बेबाध सिद्ध किया जाय जिसका कोई और उपमान ही न हो। जैसे गगन गगनाकार भावर. सागरोपमः, रामराजमयोर्वृद्ध रामराजमयोर्वि ॥

अन्य (वि०) [न० व०] अन्हीन (जैसे सुखकाशय) । अन्यकारणम् [न० न०] 1 बोट न पहुँचाना 2 सुपुत्रकी अन्यकारणम् का अभाव 3 (कानून में) श्रृंखल न अन्यप्रिया शुकाना ।

अन्यकारः (न० त०) अहित का अभाव—कारिन् (वि०) अहित न करने वाला, निर्वोप ।

अन्यत्वं (वि०) [न० व०] मन्ताहीन, निस्मन्तान, जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो ।

अन्यत्रय (वि०) [न० व०] वृष्ट, निर्लम्ब ।

अन्यत्रयः [न० त०] बहु गन्ध या श्रद्ध न हो, व्याकरण की वृष्टि में वृद्ध गन्ध ।

अन्यतर (वि०) [न० व०] जिसमें में निकलने का कोई मार्ग न हो, अन्यायाचित, अक्षम्भ,—रः बन्ध सुबंध अधिकार करने वाला ।

अन्यथा (वि०) [न० व०] 1 हाथ या श्रय से रहित, 2 अनन्तर, अर्थात्, अर्थात्—अन्यमन्वयनपायमुन्निवन्तम् (चन्द्रम्) वि० २।११.—वाः [न० त०] 1 अनन्तरता, स्थायिता 2 शिव ।

अन्यथायिन् (वि०) [अन्यथाय + णिन्] अनन्तर, दृढ, निम्बर, अर्बुक मयन टिकाड अचल—अथाथात्रियम् तस्मिन् शोभासीदनपायिनी—रघु० १०।११, ८।१३, अनयायिनि मयायुयु मद्रथयमे पतनाय शम्भरी—कु० ४।११ ।

अन्यथेन—किम् (वि०) [न० व०, न० त०] 1 अभावधान 2 लापरवाह, परवाह न करने वाला, उदासीन 3 स्वतन्त्र, दूसरे की अपेक्षा न रखने वाला, 4 निष्पक्ष 5 अमरुद्ध,—वा [न० त०] अभावधानी, उदासीनता कम् (वि०) [वि०] बिना ध्यान के, स्वतन्त्र रूप से, परवाह न करने हुए, बेपरवाही में ।

अन्यथेन (वि०) [न० त०] 1 जा दूर न गया हो, बीता न हो 2 विचलित न हुआ हो (अपा० के साथ) अर्थात्—अन्यथेनम् अर्थम्—विद्वा० 3 अविग्रहित, संपन्न—अन्यथादनयेनीश्वरपथ लोकात्वंत सेवने—मुद्गा० १।१४ ।

अन्यथिन् (वि०) [न० त०] अनजान अपरिचित, अनभ्यस्त (श्राय सह० के साथ) अ ऊनवन्ध—स० ५, अ परयेववर्णद्वाराण्य—सहा० २ ।

अन्यथायिनि (स्त्री०) [न० त०] पुनरहित का अभाव—मनाननभ्यायुक्ता वा काम शान्तिम् वः शयी—वि० २।४१

अन्यथायि—वा (वि०) [न० व०] जो निकटस्थ न हो, दूरस्थ भावि शमित्य (वि०) दूर से ही बिरहने वाला विद्वा० ।

अन्यत्र (वि०) [न० व०] बिना बादलों के, स्वयमया वृष्टि—बहु तो बिना ही बादलों के आकाश में वृष्टि होने लगी—अत्रान् अन्यथायिनि वा शकम्बिक बटना ।

अन्यः [न० त०] बहु शत्रुण या दुमरो को न हो नमस्कार करता है और न उनके नमस्कार का उत्तर देना है ।

अन्यमित्यत्र (=मित्यत्र) (वि०) [न० त०] कजल, मन्वीवृत्त ।

अन्यत्र (वि०) [न० व०] वन्ध न पहले हुए, नया—रः वीदयिषु ।

अन्यः [न० त०] 1 दुर्बलस्था, दुराचरण, अन्याय, अनीति 2 दुर्नीति, दुराचार, कुमार्थ 3 विपत्ति, दुःख, मनु० १।०।१५, 4 दुर्भाग्य, बुरी किस्मत 5 ब्रजा शकना ।

अन्यथेन (वि०) [न० व०] स्वेच्छाचारी, अनियायित—मृगमन्वृष्टयनयनम्—रघु० ३।३९ 2 जिसमें ताना न रुका हो ।

अन्यथे (वि०) [न० व०] अनमोल, अनुम्य, जिसके मूल्य का अनुमान न लगाया जा सके,— वः गन्त या अनुचित मूल्य ।

अन्यथे (वि०) [न० त०] अनुम्य, सर्वाधिक सम्मान ।

अन्यथे (वि०) [न० व०] 1 अनुपयुक्त, निकम्मा 2 भ्रायुहीन, सुवर्हित 3 हासिकार्क 4 अर्थहीन, निर्गमक,—वै [न० त०] 1 उपयोग या मूल्य का न होना 2 निकम्मा या अनुपयुक्त वस्तु 3 विपत्ति, दुर्भाग्य—रक्षोपनिषत्पिनात्प्रांत्—वा० ९, सिद्धेयनपा बहुनीधर्षित 4 अर्थ का न होना, अर्थ का अभाव । सम० कर (वि०) [म्प्र०—री] अनिष्टकर, शानिकर ।

अन्यथे, अन्यथेन (वि०) [न० त०] 1 अनुपयुक्त, निर्बन्धक 2 छात्रहीन 3 अर्थ हीन 4 लापरवहित 5 दुर्भाग्यपूर्ण, कम् अर्थहीन या अमयन बात ।

अन्यथे (वि०) [न० त०] 1 अर्थाधिकारी अभाग्य 2 अनुपयुक्त (सह० के साथ वा अभाग्य में) ।

अन्यथे [नास्ति अल पर्याप्तिसंन्य—न० व०] 1 अर्थ 2 अर्थि वा अर्थिवेदता 3 पावनदासि 4 पित्त । सम० व (वि०) [अनन्त शक्ति] 1 गर्भी या श्राय को नष्ट करने वाला, 2,—रे० अर्थिन् वीर्य (वि०) अर्थ्यायि वा पावनदासि को अगाने वाला, जिन्हा अर्थि की पत्नी स्वाहा, श्रावः श्रुपा का मास, अर्थिमाश ।

अन्यथेन (वि०) [न० त०] 1 आत्मस्वरहित, वृत्त, परिश्रमी 2 अयोग्य, अक्षयम् ।

अन्यथे (वि०) [न० त०] 1 बहुनश्यक 2 जो पोधा न हो, उच्चारण, उच्चार (जैसा कि मनु भादि) अधिक,

जल्पयन्त्यासन्नम्—पञ्च० ११३६ विकसितवहनाम-
नल्पजल्पेपि—भामि० १११०, २१३८ ।
अन्यकाल (वि०) [न० व०] 1 अनाहुत, 3 अग्रप्रोथ 2
द्विस्तके लिए कोई गुवायस या भौका न हो,—कः
[न० त०] स्थान या कार्यक्षेत्र का अभाव ।
अन्यग्रह (वि०) [न० व०] जो रोका न जा सके—सुकुमार-
कायमनग्रह स्मर (अभिहित) मा० ११३९ ।
अन्यच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1 सीमांकन रहित, अपु-
बकृत 2 सीमाहृत, अधिक 3 अनिदिष्ट, अधिविस्त,
अधिकृत 4 अबाधित ।
अन्यथा (वि०) [न० त०] निर्दोष, कसकरहित, अनिय -
रूप० ७१३० । सम०—अर्थ,—रूप (वि०) निर्दोष
या नितान्त सुन्दर अथवा बाला (—त्री) रूपवती
स्त्री ।
अन्यथावा (वि०) [न० व०] निरपेक्ष, ध्यान न देने वाला,
—नपुं [न० त०] प्रमाद, असावधानता, ता-
सापरवाही ।
अन्यथि (वि०) [न० व०] असौमिल, अपरिमित ।
अन्यथम् (वि०) [न० न०] जो नीच या तुच्छ न हो, बड़ा,
श्रेष्ठ, सुधर्मनिबन्धमा भासम् - रघु० १६१२, १११४ ।
अन्यत्र (वि०) [न० न०] अविश्राम, निरंतर "धनुर्ज्या-
स्फालनकूपयुक्तं मा० २१४, तम् (कि० वि०) बिना
कै लयातार ।
अन्यत्रय (वि०) [अवस्थित्यु अर्थ भव - इत्यर्थे नञ् +
अत्रार्थे + यत् न० त०] मुख्य, मर्यादा, सर्वश्रेष्ठ ।
अन्यत्रय - इति (वि०) [न० न०] अवलंबहीन, निर्गन्धित -
—इ—अन्यत् स्वतन्त्रता ।
अन्यत्रोभयम् [न० त०] वर्षों के नीचे के मास किया जाने
वाला एक संस्कार ।
अन्यत्र (वि०) [न० व०] 1 अस्त 2 निरवकाश, र-
[न० त०] । अत्रकाद का अभाव, कुतम होना,
अनामयिकता, क यदि यथ यथ ध्रुवमनवमरुद्वल
एवाधिवाव - मा० ११२० ।
अन्यस्कर (वि०) [न० व०] मकरहित, स्वच्छ, माफ ।
अन्यस्य (वि०) [न० न०] अस्थिर, स्या [न० न०] ।
अस्थिरता 2 अनिश्चित अस्या 2 अस्थिरप्रकृता,
कल्पिता 3 (दर्शन० में) किसी अन्तिम विचार पर न
पूर्वबना, काय-वाग्ण की गैरी परगण जिसका अन्त
न हो, नरक का एक दोष—एवमन्यनवस्या भ्यासा मूल-
क्षतिकारिणी—काव्य० २ एव च "प्रसन्न—मा० ।
अन्यथावा (वि०) [न० व०] अस्थायी, अस्थिर, अचान,
—न. वायु - नम [न० त०] । अस्थिरता, 2 आचा-
रप्रकृता अस्पष्टता ।
अन्यथिचित (वि०) [न० न०] । अस्थिर, अस्थिरचित 2
परिवर्तित 3 आचार ।

अन्यथैक (वि०) [न० त०] असावधान, बेपरवाह,
उदासीन ।
अन्यथैक-आ—दे० अनपेक्ष-आ ।
अन्यथैकानम् [नञ् + अन् + ईत् + ल्युट्] सापरवाही, अ-
सावधानता ।
अन्यथाम् [नञ् + अन् + ल्युट्] उपासत, आभरण
उपवास ।
अन्यथार (वि०) [स्त्री-री] [न० त०] अविनाशी ।
अन्यत् (पु०) [अन् + अन्तु] 1 गाड़ी 2 भोजन भाग 3
अन्य, 4 प्राची 5 रवाईपर ।
अन्यस्य-यक (वि०) [न० व०] श्रेय रहित, ईर्ष्यारहित,
—या [न० त०] । ईर्ष्या का अभाव, 2 अथि की पत्नी,
स्त्रियोक्ति परित्यागित और सतीय का उन्ना मनुष्य ।
अन्यत् (नपु०) [न० न०] दुरादि, दुष्टि ।
अन्यकाल [न० न० नि०] 1 कुमय 2 दुष्टि (अन-
वत् "अन्नाकाल" मन्त्र का अनियमित रूप) । सम०
—अन्—जो व्यक्त दुष्टि में भूक से अपने आपकी
बचाने के लिए स्वयं दूसरे का दाग बन जाता है ।
अन्यकुल (वि०) [न० न०] 1 पाल, प्रकृतिवत्, स्वस्थ
2 अदल ।
अन्यगत (वि०) [न० न०] 1 न आया हुआ, न पहुँचा
हुआ नावद्वयय भेदव्य नावद्वययमागतम्—हि०
११५, 2 अगत, जो न गया है 3 अधिव्युत्, जाने
बाना, ४ नीच सम० की 4 अज्ञान,—तम् अधिव्य-
त्कान, अधिव्य । सम०—अन्येकान् अधिव्य की ओर
देखना आने की आर दृष्टि रखना,—अवाचः आन
बाना भौतिक कष्ट या विपत्ति,—आर्षेया वह कन्या
जिनका मर्यादक अथवा आश्रम न हुआ है, आ
अस्का,—विधात् । ५०] जाने बान अनिष्ट का पहल
हो म निराकरण करने वाला अधिव्य के विषय में
सावधान दूरदर्शी (पञ्च० ११३१ नथा हि० ६१५ में
इय नाम की एक पहल) ।
अन्यगत (वि०) [न० व०] न आया 2 अत्रानि ।
अन्यगत (वि०) [न० व०] निरपराध, निर्दोष—आन
प्राणाय व यत् न प्रहृन्मनागि—श० ११११ ।
अन्यथा [न० त०] अन्विता आचरण, दुराचरण, कुरीति ।
अन्यत्र (वि०) [न० व०] कृप का समी से युक्त,
साप रहित, उदा ।
अन्यत्र (वि०) [व० त०] 1 अन्तु, उदासीन 2 न
पका हुआ, अकामन—अज्ञे धर्ममनात्रु—रघु ११२१
3 अज्ञा, स्वच्छ ।
अन्यस्यम् (वि०) [न० व०] 1 आत्मा वा मन के रहित
2 अनात्मिक 3 विद्यने अपने ऊपर विचार्य नहीं रखना
है,—(पु०) जो आत्मिक न हो, आत्मा के मिल
अर्थात् मस्तर शरीर । सम०—अ—वैदिक (वि०)

अपने हाथको न जानने वाला, मूर्ख, अज्ञ—आ तावट-
नामने—श० ६,—संघर्ष (वि०) मुर्ख ।
असत्कर्मवीर (वि०) [नञ्+आसत्+वीर+ङ] जो अपने ही
कार्य के लिए कार्य करने का अभ्यस्त न हो, नि-
स्वार्थ, स्वार्थ रहित ।
असत्कर्मवृत्त (वि०) [आसत्+कर्म+वृत्त+ङ] असत्कर्म-
नञ्+आसत्+वृत्तु न० त०] असंपत्ती, इन्द्रिय
परायण ।
असाध (वि०) [न० व०] असाध्य, निषेध, त्यक्त, मान-
गिरती, बिना सा—आ बच्चा, बिपदा स्त्री,
मायापन त्रिकला कोई रक्षक न हो—नाथपत्न्यम्बदा
शोकाग्रमनसा विराम्यसे उत्तर० १।६३ । मम०
सुखा असाधात्थव ।
असाधर (वि०) [न० व०] उदासीन उपेक्षावान,
र [न० न०] अश्वेतला, निरन्कार, अज्ञा—अष्टी-
षानादने—शा० २।३, ३८ ।
असादि (वि०) [न० व०] आदि रहित, विन्य, असादि-
कात् न बना आता हुआ, --आदादिनादिकात्—शु०
३।६ । मम०--असत्,--असत् (वि०) आदि और
अन्य रहित, निन्य [न०] शिष्य, निन्य (वि०)
हिनका आग्रह और समाप्ति न हो शास्त्रन--अप्यत्न
(वि०) त्रिकला आदि, मय और अन्य कुछ भी न हो,
निन्य ।
असादीनेत्र (वि०) [न० त०] निर्दोष—एष्टामुष्केनारी
नमनाशनबर्माशिनम् - शि० २।२० ।
असाध (वि०) [न० व०] १—दे० अनर्त २ असक्षय,
माने के असाध्य ।
असाधुष्यत् [न० व०] १ हुनो पदा के बीच में आ जाने
के कारण ममास के विभिन्न पदा का पृथक्करण २
विपत्त प्रथमे न आना ।
असाधन (वि०) [न० व०] १ अज्ञान २ अयोग्य, अकु-
शल्य असाधनी ।
असाधक { (वि०) [न० व०] स्वार्थ क्त [विना नाम का,
असाधक] अग्रसिद्ध, (पु०) । मन्मथम २ कनिष्ठा का
नका मायमा के बीच की अगुयो दे० मोक्षे अना-
धिका ।—(न०) । इवामीर ।
असाध्य (वि०) [नास्ति आस्य रोमां पश्य न० व०] स्व-
स्थ, नदुःख, --अ, अयु स्वास्थ्य अचता होना—
महापुरुषेणा कादम्बरीमनायं पश्यथ का० ११०,
उत्तरे स्वास्थ्य के विषय में पूछनाथ की, --अ विष्णु
(कदरों के मत में 'सिद्ध') ।
असाध्य, असाधिका [नास्ति नाम असाधुनिष्ठम् वदता—
स्वार्थे क्त] कान्ती तथा दिव्यनी अन्तले के बीच की
अधुनी—इसका यह नाम एक क्षिप्र तथा क्षिप्रगी अन्-
धियों की प्राणि इसका कोई नाम नहीं; पुरा कवीना

पचनाप्रसवे कनिष्ठिकाविच्छिन्नकालिदासा, असाधि
तत्पुत्रकबेरुपावादनमिका सावित्री बभूव । मुद्रा० ।
असाधर (वि०) [न० व०] जो हुनरे के बधीनृत न हो,
'तो रोषस्य का० ४५ जो कोष के बधीनृत न हो, स्व-
तन्—एतावत्प्रमत्ताह्लात्प्र यदनायतमुत्थिता—हि०
२।२२, स्वतंत्र बोधिका ।
असाधस्त (वि०) [न० व०] जो कष्टप्रद वा कठिन न हो,
आमान,—असाधोक्मिन् 'से कर्मवि त्वया सहायेन
प्रवितथ्यु—शा० २,—स १ मरुता, कठिनाई का
असाध,—सेन—आमानी मे, बिना किसी कठिनाई के ।
असास्त (वि०) [न० व०] १ अचरित, निरन्तर, असाध
२ निन्य, --अयु (अव्य०) सगातार, निन्यक्य से -
असास्त तेन पश्ये लभिता, हि० १।१५, ४० ।
असास्त्र (वि०) [न० व०] आग्रह न होना—बिकारं अयु
पर्यायोऽज्ञाता १ न प्रतीकारस्य—शु० ३ ।
असाधेय (वि०) [न० व०] कुटिल, बेईमान—अयु १
कुटिलता, कष्ट २ गेह ।
असाधक (वि०) [स्त्री०-बी] [न० व०] असाधक—का यह
कन्या जो अमी नक रत्नमाला न हुई हो ।
असाध (वि०) [न० व०] अचरित, नीच, अधम
—ई १ जो आर्य न हो, २ यह देग जहाँ आर्य न हों,
३ गृह ४ अक्षय ५ अयोग्य ।
असाधकम् [असाधं देवे ममम्—असाधं+क] अज्ञ की
नकरी ।
असाध (वि०) [न० व०] १ जो अविद्या में सम्बन्ध न
रहता हो, अर्बेदिक—मददो शास्त्रमप्येनी असाधे—
शा० १।१।१६, (- अर्बेदिक—निष्ठा०) २ जो अवि-
प्राप्त न हो ।
असाधक (वि०) [न० व०] असाध्य अवनवहीन—अ-
असत्प्र का असाध नैगण्य, --की शिव की बोधा ।
असाधक (पु०) का [न० व०] रत्नमाला स्त्री ।
असाधनिष्ठ (वि०) [न० व०] फिर न होने वाला, फिर
न लौटने वाला ।
असाधिच्छ (वि०) [न० व०] न बिधा हुआ, जिनमें छिद्र
न किया गया हो ।
असाधुक्तिः (स्त्री०) [न० व०] १ फिर न लौटना २ फिर
अप्य न होना, मोक्ष ।
असाधुच्छि (स्त्री०) [न० व०] मुखा परना, 'सिद्धि' का
एक प्रेह ।
असाधनिष्ठ (पु०) [न० व०] जो जीवन के चार आध्यों
में से किसी को न मानता हो, न किसी में सम्बन्ध रखता
हो । असाधनी न निष्ठेनु अथवेकमपि द्विः—शु० ।
असाधक (वि०) [नञ्+आ+धु+क] जो किसी की
न मुने, हीट, किसी की बात पर काम न दे—विषया-
नसाधक रयु० १५।४१ ।

अनात्मन् (वि०) [नञ् + अच् + अच् + वच् + वच् + वि०] जिसने भोजन न किया हो, उपवास रखने वाला ।

अनास्था [न० त०] उपवासिता, उपस्थता, आस्था का अभाव—अनास्था बाह्यवस्तुषु—कु० ६।६३, पिरेप्ल-नास्था अन् भोक्तृकेषु—रघु० २।५७, स्त्री पुमानित्य-नास्थेया वृत्तिर्हि महति सताम्—कु० ६।१२, २ अथा या विश्वास का अभाव, अनादर ।

अनाहत (वि०) [न० त०] १ आघातरहित, २ कोरा या नया ।

अनाहार (वि०) [न० व०] बिना भोजन के रहने वाला, उपवास करने वाला—र [न० त०] भोजन न करना, उपवास रखना ।

अनाहुति (स्त्री०) [न० त०] १ होम का न होना, काँट होम जो होम कहलाने के जो योग्य न हो २ एक अनु-चित आहुति ।

अनाहृत (वि०) [न० त०] न बुलाया हुआ, अनिमन्त्रित, । सम०—उपब्रह्मिन् बिना बुलाया वक्ता, उपविष्ट (वि०) अनिमन्त्रित अम्वागत के रूप में बैठा हुआ ।

अनिकेत (वि०) [न० व०] गृहहीन, आवागार्यर, जिसका कोई नियत वासस्थान न हो (अनै सन्ध्यामी) ।

अनिमीर्यं (वि०) [न० त०] १ न निगला हुआ २ (मा० शा० में) जो गुल या छिपा हुआ न हो, प्रसून, व्यक्त ।

अनिच्छ-च्छक } (वि०) [नास्ति इच्छा स्वयं न० व०,
अनिच्छ-च्छक } नञ् + इच्छुक्, नञ् + इच् + क्तुं न०
अनिच्छत् } न०] न चाहता हुआ, इच्छारहित, बिना इच्छा के ।

अनित्य (वि०) [न० त०] १ जो नित्य न हो, मरा रहने वाला न हो, क्षणभंगुर, अशाश्वत, नश्वर २ क्षणस्थायी आकस्मिक, जो नियमन अनिवार्य न हो, विरोग्य, ३ अनाधारण, अनियमित, ४ अनिश्चर, चञ्चल, ५ अनि-रिक्त, सशिरम—विजयस्य ह्यनिरिक्तत्वात्—प० ३। २२, —रघु० (कि० वि०) कदाचिन्, अकस्मान् । सम०—कर्मन्, —किञ्चा आकस्मिक काय व्रीणा कि किमी विद्येय निमित्त से किया जाने वाला वह, मेच्छिक या सामयिक अनुष्ठान,—वत्, —इत्क, —इश्मि, माना पिता के द्वारा अन्वयो रूप से किसी को दिया गया पुत्र, —आसः क्षणभंगुरता, क्षणभंगुर स्थिति—समासः बहु मयान्त्राः प्रत्येक स्थिति में अनिवार्य न हो (जिसका भाव अन्वय-अन्वय विमिष्टत्वं परो ह्यग भी मयान् रूप से प्रकट किया जाय) ।

अनिष्ट (वि०) [न० व०] निराशरित, जागने वाला, (आल०) जागरक ।

अनिश्चयम् [न० त०] १ नकं २ जो इष्टिय का विषय न हो, मन ।

अनिभूत (वि०) [न० त०] १ सांभ्रमिक, प्रकाशित, जो छिपा न हो, २ वृष्ट, साहसी ३ अनिश्चर, भङ्गुः । दे० 'निभूत' भी ।

अनिभक्तः [अन् + इप् + अन्विम = जीवन तेज कायते प्रका-शते के -क] १ मरक २ कोयला ३ मधुमक्खी ।

अनिमित्त (वि०) [न० व०] निकारण, निराधार, आक-स्मिक,—आत्मस्वदन मुकुलाननिमित्तहारी—वा० ७।१७, —सम् १ पर्याप्त कारण का अभाव २ अपवादुन, बुरा घटुन—ममार्तिनिमित्तानि हि वेदयति—मूच्छ० १०, —(कि० वि०) 'त. -अकारण, बिना हेतु के । सम०—निराकारिका अपवादुनो का निराकरण ।

अनिमि (मे) व (वि०) [न० व०] टकटकी लगाये एक स्थान पर जमा रहने वाला, बिना औषि सपके - जने-मनस्वपामनियेयवृत्तिभि—रघु० ३।६३, —अ १ देवता २ मछली ३ विष्णु । सम०—वृष्टि, —लोचन (वि०) टकटकी लगा कर या गिरर दृष्टि में देखने वाला ।

अनियत (वि०) [न० त०] १ अनियमित २ अनिश्चयन, सदृश्य, अनियमित (रूप ना) "इत्यम् आचारोऽस्यमे—शा० २, ३ अन्वयार्थित, आकस्मिक ४ नश्वर । सम०—अक आनिश्चयन अक (गणित में) —आत्मन् (वि०) जिसका मन अपने बजा में न हो,—दुष्का दुष्करणयोग्य स्त्री भ्यानिश्चयिणी, वृष्टि (वि०) १ यथा काम करने वाला (यादृ) जिसका प्रयोग निश्चयन न हो, जिसकी आर नियत न हो ।

अनियत्रम (वि०) [न० व०] अयमय, अनियमित स्वतन्त्र "अनुवायो नाम नपस्वित्रम—वा० १ ।

अनियम [न० त०] १ नियम का अभाव, नियंत्रण, अनियमित या निश्चित क्रम का अभाव, विदेश या अ-विश्विन नियम का अभाव—पचम लघु सर्वत्र मन्त्रय द्विचतुष्टया, पाठे पाठे वृत्तयेय संवेद्यनियमा मन । छ० म० २ अनिश्चयता, निश्चयाभाव, मरक ३ अनुचित आचरण ।

अनिरक्त (वि०) [न० त०] १ ग्राह्य रूप में न कहा हुआ २ ग्राह्य रूप में प्रकटा न किया हुआ जिसकी परि-भारा स्पष्ट न हो म० न० अग्राह्य निश्चयन महिन ।

अनिरुद्ध (वि०) [न० त०] बिना राकटिक बाला म्ब तत्र अनियमित म्ब-उद उच्छ्वसन उदरम्, —इ १ एतन् २ प्रदम्भ क एक पृथ का नाम । सम०—वचन १ ममा मार्ये ब्रह्मै काटं गोक न हो, २ आकाश, अन्-रिष्टा - नाशिकी अनिरुद्ध की पत्नी उवा ।

अनिर्णय [न० त०] अनिश्चयता, निर्णय का अभाव ।

अनिर्वेश [(वि०)] न निर्णयानि दत्ताह्वानि यन्प] बन्ध अनिर्वेशाह् के ग्रथ या मरक क फलमकल्प अर्थात् क दन दिन जिसके न कीत हों ।

अनिर्वैत [न० त०] निश्चयन नियम या विदेश का अभाव ।

अभिषेच (वि०) [न० त०] अपरिभाषणीय, अवर्धनीय
—इयं परब्रह्म की उपाधि ।

अभिर्धारित (वि०) [न० त०] जिसका कोई निर्गम या
निरचय न हुआ हो ।

अभिर्ध्वनीय (वि०) [न० त०] 1 कहने के अग्रग,
अवर्धनीय 2 ध्वनि करने के अधोप्य—ध्वन् (वेदांत में)
1 माया, धम, अज्ञान, 2 मत्सर ।

अभिर्ध्वान (वि०) [न० ब०] अनध्वना, जिसमें अभी स्थान
नहीं किया ।

अभिर्ध्वज [न० त०] अनवसाद, विषाद या नैराश्य का
अभाव, स्वावलम्बन, उत्साह ।

अभिर्ध्वजित (वि०) [न० त०] लिख्य, अज्ञान, दुष्टी ।

अभिर्ध्वजितः (स्त्री०) [न० त०] 1 र्विनी, विकल्पता 2

अभिर्ध्वजितः [निघंतेता -अभिर्ध्वजितशास्त्री मय मुद्रांतराल
गता उद्धृत ।

अभिकः [अन् + इन्च्] 1 वायु 2 वायुदेवता 3 उपदेवता,
जो मन्थना में ४९ है तथा वायु की धेणी में आते हैं 4
गरीर में रहने वाली वायु विदायो में से एक बाल
5 गडिया या और कोई राश जो वातप्रकाय के कारण
उपज्मन माना जाता है । सम० अक्षय्य वायु का
मार्ग, अज्ञान, वासित् (वि०) वायुमयी, उपवास
करने वाला (१० म्) सा० आत्मन् वायु
का पुत्र, हनुमान् और भीम की उपाधि, आश्वय 1
वातरोग 2 गडिया सन् अभि (वायु ब) निघं
इसी प्रकार 'ध्वच्' ।

अभिकीर्तित (वि०) [न० त०] जो मुक्तिर्धारित न हो,
मुक्तिर्धन न हो—'कायस्य वाग्जान् भागिनीं वृथा
मि० १२० ।

अभिज्ञम् (अभ्य०) [न० ब०] अज्ञात, निरन्तर
अज्ञानमय मकरकुर्मुसमयो म्जमावहन्मभिमतो म--
घ- ३६, भा० ० २१९२ ।

अभिज्ञ (वि०) [न० त०] 1 न चाहा हुआ जिसकी
इच्छा न हो अननुकूल 2 अल्प 3 बुद्धा, दुर्भाषण,
अनुकूलमन्त्र 4 मज्ज डारा प्रसामानित, अक्ष 1
बुद्धि दुर्भाग, विपत्ति, 2 अनुविद्या अहित । सम०
आर्षित (स्त्री०) -आप्याहन्म् अर्षित परार्थ का
प्राप्त करना अर्षाहित करना अह्नु वृत्ताधर्मानकारक
घट प्रसन्न 1 अर्षोत्सव पटना 2 मद्यप पदाधे,
तर्क या निवय से मन्त्र, -कल्म् बुद्धा परिणाम
सका बुद्धि की आजका, हेतु अपराकुल ।

अभिष्यन्म् (अभ्य०) [न० त०] इस प्रकार जिससे कि
नहीं कर पश्युक्त यह दूसरी और न निकले अर्षित
वृत्त बालुर्गक नहीं ।

अभिस्तोत्रं (वि०) 1 जो पार न किया गया हो, जिससे
सूक्तकारा न मिला हो 2 जिसका उत्तर न दिया गया

हो, जिसका निराकरण न किया गया हो (दीधारापय
की भांति) ।

अभीकः-कम् [अन् + ईकन्] 1 मेना, सैव्यपति, सैनिक
दस्ता, दल, वृष्ट्या तु वाग्ध्वानीकम् -मम० ११२, 2
सन्तुह, मर्ग 3 सत्राम, लडाई, युद्ध 4 पत्ति, श्रेणी,
बलती हुई सेना की टुकड़ी 5 अधभाम, प्रयाग, पुन्य ।
मय०--कम् 1 गोंडा 2 तिपही (मुपजित), पुरे-
दार 3 महाभय या हाथी का प्रशिक्षक 4 युद्धनेत्री
या बिगुल 5 संकेतक, चिह्न, संकेत ।

अभीकिली [अनीकाना सच—अनीक+इनि+डीप] 1
मेता, सैव्यदल, सैव्यधी 2 नीम सेनाई या पूर्ण सेना
(अर्षोहिणी) का दायम भाग ।

अभीक (वि०) [न० त०] जो नीला न हो, श्वेत,—वाक्चि
(पु०) श्वेत घोड़े वाला, अर्जुन ।

अभीक (वि०) [न० त०] 1 प्रमुख, सर्वोच्च 2 स्थायी या
नियता न होना (सब० के साथ) मायाभाषानीयोन्मि
सबुल -म० २, का: विष्णु ।

अभीकवर (वि०) [न० त०] 1 जिसके ऊपर कोई न हो,
अनिर्धारित 2 असमर्थ—वाक्ता सविधेयनीकवर मयनी
वर्णमहो मवारकान्—भा० ० २१८०, 3 जो ईश्वर से
मन्त्र न रखे 4 नास्तिक । सम०-वाक्: नास्तिक वाद,
ईश्वर का सर्वोच्च ज्ञातक न मानने वाला, नास्तिक ।

अभीक (वि०) [न० त०] उदासीन, इच्छारहित, हा
अवहृलना, उदासीनता ।

अभु (अभ्य०) । अभ्यधीभाव ममान बनाने के लिए मज्ञा
गदा के साथ प्रयुक्त होता है, या किया अथवा कृदन्त
गदा न पूर्व प्राडा जाता है, अथवा स्वल्प मन्त्रबाधक
अभ्य के रूप में कर्मकारक के साथ प्रयुक्त होता है
और मय प्रवर्धनीय माना जाता है । 1 पञ्चान्, पंचधे,
मने नारदमनु उपाधिर्षित विष्म० ५, कर्मण मुष्ठा-
यन् सविधेयः मुष्ठाश्विना प्रातरवर्षित्छन् २पु०
-१२६, अनुविष्णु विष्णो पाञ्चान् मिद्वा० 2 माध-
माध ग्म-याम, अज्ञान मा नीरनिज्ञानपुना बहुवयो-
प्यायनूराकथनीय् -रपु० १३११, अनुव्य वारा-
गयी—मया के साथ साथ स्थित या बनी हुई, 3 के
बाद, पञ्चकण संकेत दिया जाता हुआ—अपमन्
प्राबधेन् 4 के साथ, साथ ही, सबद्ध - नदीयन् अर्षितान्
सना मिद्वा० 5 बटिया या विष्म हर्षे का, अनुवृत्ति
मृग हर्षीना, 6 किसी विशेष स्थिति या लक्षणे-
अकनी विष्णमनु मिद्वा० 7 भाग, हिस्सा, या साझा
रकने मान् कथोर्तुरमनु 8 पुनराश्रित, अनुविध-
सिद्ध दिन-द-दिन, प्रति दिन 9 की और, दिशा में, के
निकट, पर, -अनवनमशानियन्—मिद्वा०—'तवि—नदि
मि० ७२४, मदी के निकट 10 कमानानार, के अनु-
मार, अनुकूल्य, निरपिध कम में, अनुकूल्यम्

(छोटे बड़े की दृष्टि से) 11 की भांति, के अनुकरण में—सर्व सामान्य है त्रिधा विरूपा त्वं तु व्यर्थं मानुः—
विष्म० ५।२५; इसी प्रकार अनुवर्ज—बाह में र-
पना, गर्भने की नकल करना, 12 अनुकृप—तथैव
सोःसुरन्वयो राजा प्रकृतिरम्बनात्—रघु० ५।१२,
(अनुपतोऽयम्) ।

अनुक (वि०) [अनु + कृन्] 1 लालची, लोभ्य 2 कामुक,
विलासी ।

अनुकल्पन् [अनु + कृ + ल्युट्] 1 बाव का कथन 2 सबब,
प्रबचन, बार्तालाप ।

अनुकमीकृत् (वि०) [अनु + कृ + अल्प (मुबन्) + ईधनुन्
कनादेशः] छोटे से बड़े का, सबसे छोटा ।

अनुकल्पक (वि०) [अनु + कृ + क्युट्] बयान्, करना
करने वाला ।

अनुकल्पन् [अनु + कृ + ल्युट्] करना, ठगना, बयान्, लाना,
सहानुमति ।

अनुकला (स्त्री) [अनु + कृ + क्युट्] कला, दया ।

अनुकल्प (वि०) [अनुकृ + ल्युट्] १-नीय, सहानुमति
का पात्र, —किं तन्म वेनासि ममानुकल्प्या—रघु०
१।५।५; कु० ३।१७-१८: हृत्कार, हृत्प्राप्ती हृत ।

अनुकरणम्—कृतिः (स्त्री) [अनुकृ + ल्युट्, कित्त्वा वा]
1 नकल करना, प्रतिलिपि, अनुकृपता, सयानता,
सहानुकरणम्—एक अक्षरकारः ।

अनुकर्ष—कर्षणम् [अनु + कृ + क्युट्] 1
सिखाय, आकर्षण, 2 (आ०) पूर्ब नियम में भाग वाले
नियम का प्रयोग 3 ग्राही का तला या घूरे का लट्टा
4 कर्तव्य का विलस से धारण, अनुकर्षण भी ।

अनुकल्पः [अनु + कृ + ल्युट्] मुद् का गौण अनुदेश जो
आवश्यकता होने पर उस समय प्रयुक्त किया जाता है
जब कि मुक्य निदेश का प्रयोग समब नहीं—प्रमु प्रथम
कल्प्ये योजकल्पेन वर्तते—मु० १।१३०, २।१५० ।

अनुकामीन (वि०) [अनुकाम + ङ] अपनी इच्छा के
बनुसार काम करने वाला, —अनुकामीनता स्वर्ग—
भट्टि० ।

अनुकारः—दे० अनुकरणम् ।

अनुकाल (वि०) समयोचित, सामयिक ।

अनुकीर्तनम् [अनु + कृ + ल्युट्] कथन, प्रकाशन ।

अनुकूल (वि०) [अनु + कृ + ल्युट्] 1 मनोवाञ्छित,
अभिमत, जैसे कि मान्, मान्य आदि 2 मित्रता पूर्ण
दुपायपूर्ण 3 अनुकृप, —अः मित्रत्वान तथा दुपाय पति,
(एकस्मिन्—सा० द० वा, एकस्मिन्—एकस्यामेव नाधि-
कामान् आशयः) नायक का एक मेद—अन् अनुकूल,
दुपा—नारीभायानुकूलताभावरति वेत्—काव्य० ९ ।

अनुकूल्यति (ना० वा०) अनुकूल या सुभाषिक होना,
प्रशम होना ।

अनुकल्प (वि०) [आ० सं०] अनुमित, 'हातेपार' जैसा
कि आरा ।

अनुकल्पः [अनु + कृ + ल्युट्] 1 उत्तराधिकार, क्रम,
ताता, क्रमव्ययन, क्रमबद्धता, उपलक्ष्य—अनुकल्पे
वक्तुमनुकल्पता—रघु० ६।७०, वषट्कार्त सर्वमनु-
कल्पे—१।५।६०, 2 विषय सुधी, विषयतादिका ।

अनुकल्पन् [अनु + कृ + ल्युट्] 1. क्रम सुबैक बाये बड़ना,
2 अनुगमन—विष्म (स्त्री) विषय सुधी विषय-
तादिका जो किसी द्रव्य के क्रमबद्ध विषयों का दिख-
यान करताय ।

अनुकल्पा—दे० अनुकरणम् ।
अनुकूलः [अनु + कृ + ल्युट्] दया, कृपा, दयालुता
(अर्थ० के साथ) —अनुकूलतामदेव न ते ममनु-
कूल—सा० ३, मेघ० १।१५ ।

अनुकल्पम् (अभ्य०) प्रतिक्षण, अगतात्, बारबार ।

अनुकल्प (पु०—सा) [आ० सं०] इतरात् या आरति
का दृष्टकाल ।

अनुकल्पे [आ० सं०] उदीमा के कुछ मन्त्रियों में बुद्धियों
की बी जाने वाली कृति ।

अनुकल्पति (स्त्री) [अनु + कृ + कित्त्वा] 1 पता लगाना,
2 विवरण देना, प्रकट करना ।

अनुग (वि०) [अनु + गम् + ङ] (सम०) पीछे चलने
वाला, मिलान करने वाला, —अनुग, आशा-
कारी सेवक, साथी तदनुगतानामनु—रघु० २।५८,
९।१२ ।

अनुगति (स्त्री) [अनु + गम् + कित्त्वा] पीछे चलना --
गलानुगतिको साक - पीछे चलने वाला, अनुकरण
करने वाला ट० 'गत' के कल्पगत ।

अनुगमः—अनुग [अनु + गम् + ल्युट्] 1 अनुगमण
2 सहमरण अपन स्वर्गीय पति की चिन्ता पर विधवा
स्त्री का सती होना 3 नकल करना, समीपतर आना 4
समकल्पना, अनुकल्पना ।

अनुगच्छति (वि०) [अनु + गम् + क्युट्] दहाड़ा हुआ,
—तत्र दहाड़ा ।

अनुगच्छे [अनु + गम् + क्युट्] सोपाक, व्याका ।

अनुगच्छिन् [अनु + गम् + क्युट्] अनु-
यायी, सहचर ।

अनुगृह्य (वि०) [अ० सं०] अगल मुन रखने वाला,
उत्ती स्वभाव का, अनुकूल या कीर्तिकर, उपयुक्त, अनु-
कृप, समागच्छीक, —(श्रीभा) उल्लेखितस्व हृदयानु-
गृह्या बधस्या—मुच्छ० ३।३ मय को मुकृकर,
अभिमत, मनोमुकृक (सा० वा० के अनुसार वहाँ
'वा से अभिप्राय 'सौवृत्त' कीमा के है) —अनु (वि०
वि०) 1. अनुकूल, इच्छाओं के समक 2 अभिप्रायपूर्वक
या समकल्प के साथ (अम० में) 3 स्वभाषण ।

अनुवाहः—ह्रस्व [अनु+हृ+अन्, ल्युट् वा] 1 प्रवाह, हवा, उपकार, आहार—विद्यहानुग्रहकर्ता—अर्थ०
1 पारार्थमानुग्रहप्रवृत्तपुण्यम्—रघु० २।३५, 2 स्वीकृति
3 सेवा के पृच्छमान की उक्षा करने वाला दल ।

अनुवास्तकः [आ० अ०] कोर, निवास्तक ।

अनुवाचः [अनु+वाच्+ट्] 1 सहचर, अनुयायी, नीकर, सेवक—तेजानुचरेण सेनो.—रघु० २।४, २६।५२,
—रा.—सी (स्त्री)वासी, सेविका ।

अनुवाचकः [अनु+वाच्+क्युल्] अनुवाच, सेवक,—रिका
वासी सेविका ।

अनुवाचित (वि०) [अ० अ०] 1 गलत, अनुपयुक्त 2 निराशा,
अयोग्य ।

अनुवाचिता, चिन्तितम् [अनु+चिन्+अ+टाप्, ल्युट् वा]
1 वाच करना, सोचना, मनन करना 2 प्रत्याख्यान,
फिर से ध्यान में लाना, 2 अनवरत सोच, चिन्ता ।

अनुवाचाच् [अनु+वाच्+चिन्+अन्] ताची या बोली
का वह छोर जो कंधे के ऊपर होकर छाती पर लट-
कता रहता है ।

अनुवाचिन्तिः (स्त्री०)—श्लेषः [अनु+चिद्+चिन्त, चञ् वा]
कट कर अलग न होना, नाश न होना, अनवरतना ।

अनुवा-वात (वि०) [अनु+वाच्+इ, क्त वा] वाच में
उत्पन्न, पीछे अन्ना हुआ, छोटा भाई—असौ कुमार
स्मनशांजुवज्जि रघु० ६।३८,—अ.—वात छोटा भाई,
—आ.—वाता छोटी बहन ।

अनुवाच्यम् (पु०) [अ० अ०] छोटा भाई—जननाथ तवा-
नजन्मानम्—कि० २।१७ ।

अनुवाचिकम् (वि०) [अनुवाच्+चिन्] आश्रित परोप-
जीवी—(पु०—स्त्री) पगवलकी, सेवक, अनुचर अवच-
नीया प्रमवोऽनुवीविचि—कि० १।४, १० ।

अनुवासात्मन् [अनु+जा+अह, ल्युट् वा] 1 अनुमति,
सहपति, स्वीकृति 2 जाने की अनुमति या छुट्टी 3 बहाना
4 आज्ञा, आदेश ।

अनुवासायकः [अनु+जा+चिच्+क्युल्] आज्ञा देने वाला,
दुबस देनेवाला ।

अनुवासायक—अति (स्त्री०) [अनु+जा+चिच्+ल्युट्,
चिन् वा] 1 अधिकृत बहाना 2 आज्ञा या आदेश
जारी करना ।

अनुवाच्येच्छम् (अर्थ०) योच्छेता की दृष्टि के अनुसार ।

अनुवाच्यः [अनु+वाच्+अन्] 1 व्यास—सोपचारमुपजात-
विचारं तानुवर्षयन्नुत्तरं देवे—शि० १०।२ (व्यास
और मुरा), 2 कामना, इच्छा 3 बस पीने का पात्र
4 मद्य ।

अनुवाच्यः [अनु+वाच्+अन्] पश्चात्ताप, संताप—
जातानुतापेण मा विद्वे० १।३८ संताप से पीड़ित ।

अनुवाच्यकम्—अनुवर्ष 3 और 4 ।

अनुवाचितम् (अर्थ० अ०) वाग वाता करके बर्बाद क्य
करके, अस्तित्व युक्तता से ।

अनुवाच (वि०) [अ० अ०] जो बलिष्ठ उत्पन्न न हो, जो
पश्चात्तापकारी या अल्पवृत्त न हो ।

अनुवाच (वि०) [अ० अ०] 1 जिससे अच्छे कोई और न
हो, जिससे बड़िया कोई और न हो, सबसे अच्छा,
सबसे बड़िया, प्रमुख रूप से सर्वोपरि—सर्वद्वयेषु
विषय इष्यमाहुरनुवाचम्—हि० प्र० ४,—अनुवाच् वति-
मुत्तमात्—मनु० २।२४२; 2 (आ० में) जो उत्तम
पुत्र न प्रयुक्त न किया जाय ।

अनुवाच (वि०) [अ० अ०] 1 प्रवान, मुख्य 2 बड़िया,
सर्वोत्तम 3 बिना उत्तर का, मूक, उत्तर देने में असमर्थ
—अवयववक्ता च अवयवमुत्तरणम्—नी० 4 निविचत,
सिचर 5 विध्न, घटिया, छोटा, कमीना 6 पतिनी,
—रम् उत्तर का अभाव, (टाहमटल वा आगाकारी
का उत्तर अनुवाच कहला जाता है) —रा दक्षिण
विधा ।

अनुवाचरंभ (वि०) [अ० अ०] सिचर, अनुवोदित, बलिष्ठम्
—अपामिवाचारमुत्तरणम्—कु० ३।४८ ।

अनुवाच्यम् [अ० अ०] प्रवत्य वा हरगर्भी का अभाव ।

अनुवाच्य (वि०) [अ० अ०] पामिनि वा नैतिकता के
सूची से बलिष्ठ, बलिष्ठ शक्त, निमित्त—“अनुवाचा-
सूचिनिः कलिबदना—शि० २।११२ ।

अनुवाच्यः [अ० अ०] बचद वा बहुवार का अभाव
—ओकस्यमा—अर्थ० २।६३, घालीनता ।

अनुवाचिकम् (वि०) [अनुवाच्+चिन्] जो बचद के
कारण चुका हुआ न हो—आम्येषु ० नी अर्थ—अ० ४ ।
१७ ।

अनुवाच (वि०) [अ० अ०] पतनी कमर वाला, पतका,
हुल, श्लेष (रे० 'अ')

अनुवाचीनम् [अनु+वाच्+ल्युट्] निरीक्षण ।

अनुवाचात् (वि०) [अ० अ०] अनुस्वर, जो उदात्तस्वर की
वर्ति उच्च स्वर से उच्चरित न होता हो, स्वरघात
हीन—सः नृदम्बर ।

अनुवाच (वि०) अनु [अ० अ०] 1 जो उदार (दानवील) न
हो, कर्मन्, अनुत्तर, अचर 2 जो अपनी पत्नी के अनुकूल
चलने वाला हो या वह जिसकी पत्नी पति के अनुकूल
चलने वाली हो—अस्मिन्पत्नीवर्ति पुनः स ब्रह्मवृत्तारो
मुदारस्य-काव्य० ४; ('बपाता' के अर्थ में जो अनुकूल
होता है) 3 उपयुक्त और योग्य पत्नी वाला ।

अनुवाच्यम्—विषयम् (अर्थ० अ०) प्रतिरिप, विष-व-विप ।

अनुवाच्यः [अनु+वाच्+अन्] 1 पीछे छिपेता करना, निषय
या निषेध को पीछे कियी पूर्व निषय की ओर छिपेता
करे—अपासंभवमनुवाचः सवाभाय—वा० १।३१२; 2
निदेव, आदेश ।

अनुकूल (वि०) [न० त०] जो सहकारी या पर्यायुक्त न हो—'ता सत्युपमा सद्यदिति—स० ५।१२० ।

अनुकूल (वि०) [न० त०] 1 जो सहकारी न हो, विनीत, सौम्य 2 जो उन्नत या बहुत ऊँचा न हो ।

अनुकूल (वि०) [अनु + कृ + क्त] 1 अनुगत, पीछा किया गया (कई बार कर्म० में प्रयुक्त) 2 भेजा हुआ या जोटाया हुआ (कैसे कि ध्वनि)—सम् सचीत में काल की माप—भाषा दूत ।

अनुकूलः [न० त०] बिबाह न होना, बहुद्वय में पालन ।

अनुवाचकम् [अनु + वाच् + क्त] 1 पीछे जाना या भागना, पीछा करना, अनुसरण करना—तुरण कथितस्य स० २; 2 किसी वचार्थ का अत्यंत पीछा करना, अनु-संधान, यथेष्टथा 3 किसी वचो को पाने का अवफल प्रयास करना 4 सफाई, पवित्रीकरण ।

अनुव्याप्तम् [अनु + प्वा + क्त] 1 विचार, मनन, धार्मिक चिंतन 2 साधविचार, याद,—या न प्रीतिविक्रपात् स्वयन्व्याप्तसम्भवा—कु० ६।२१, 3 हितचिन्तन, मित्यचिन्तन ।

अनुवचः [अनु + वी + क्त] 1 यथावन, प्रार्थना प्रह-तिष्य स कस्यानुवच प्रतिगुह्यति—स० ४, 2 गाली-नाता, विष्टता, सान्त्वनायुक्त आचरण, 3 नम्रनिवेदन, मित्यत, प्रार्थना, 'आम्रवचम्—विनीत सतोचन 4 अनु-वासन, प्रसिद्ध, आचरण के अधिनियम ।

अनुवचः [अनु + वच् + क्त] वाच, कोलाहल, गूत्र, प्रतिपत्ति ।

अनुवाचक (वि०) [अनु + वी + क्त] मुखी, विनम्र, विनीत ।

अनुवाचिक (वि०) [अनु + वच् + क्त] संबोधक, -- का नाटक की मुख्य वाच नायिका की अनुचरि जैसे कि सखी, धारिणी या दासी आदि,—सखी प्रवर्तिना दासी प्रेष्या धार्यिका तथा । अन्वाचक सित्यकार्ष्ण्यो विज्ञेया ह्यनुवाचिका ।

अनुवाचिक (वि०) [अनु + वाचा + क्त] 1 नास्तिक्य, नास्तिका से उन्मत्तित,—कम् अनुवनाता । सम०—आदि, अनुवाचिक वचं (अनु + वच् + क्त) ने आरम होने वाला सत्यक व्यञ्जन ।

अनुविरटि [अनु + विट् + क्त + क्त] पूर्ववर्ती अनुकम के अनुसार वर्णन,—नृपयाम्परिविष्टता क्रियाभाष्य कर्मभाष्य । क्यसो योज्ज्वलितो यथायस्य तदुच्यते । सा० ६० ।

अनुव्रीतिः—तु० अनुवच

अनुवचतः [न० त०] उपचात या क्षति का अभाव, --अतिन बिना किसी क्षति के प्राप्त किया ।

अनुवचनम्—पठतः [अनु + वच् + क्त, वच् + वा] 1 ऊपर पढ़ना, एक के बाद दूसरे का पठना 2 पीछा

करना, अनुसरण 3 भाग 4 वैराधिक—सम् (अव्य०) [अनु + वच्] क्रमिक अनुसरण, अनुगमन,—अता-नृपात् कुसुमान्गुह्यत्—भट्टि० २।११; (अतामनु-पात्य—एक सता से दूसरी सता पर जाकर, या सताओं को गुहा कर) ।

अनुवच (वि०) [प्रा० त०] मार्ग का अनुसरण करने वाला,—वच् (वि० वि०) सड़क के साथ साथ ।

अनुवच (वि०) [प्रा० त०] जितान्त कदम कदम अनुसरण करता हुआ, वच् सम्प्रसारित गावन, पीत का टोक, (अव्य०) 1 कदम के साथ—साथ, पैरों के निकट; 2 कदम कदम करके, प्रति पद, 3 शब्दना 4 एडियो पर, बिल्कुल पीछे, तुरन्त बाद—गच्छतां पुरो अग्रतो, अह-मप्यनुपदमागत एव—स० ३ (प्राय सब० के साथ, या समाप्त में इसी अर्थ में) (ती) आदिवाचकमुपद सम-नृपात् पाणिना एव १।१३१,—अवोषा प्रतिगुह्य-तावध्यानुपदमागत—१।४४ ।

अनुवचनी [प्रा० त०] मार्ग, सड़क ।

अनुवचिन् (वि०) [अनुवच् + क्त] अनुसरण करनेवाला इतने बाला अर्थात् अन्वेषक, या पृथक्—अनुपदमन्वेष्टा गवामनुपदा सिद्धाः ।

अनुवचोपा [अनुवच् + उप + टाप्] नृणा, वृत्, ऊँची एडियों का नृणा, या नृणा ।

अनुवच [न० व०] उपा रहित, ऐसा अक्षर जिसक पूर्व कोई दूसरा अक्षर न हो ।

अनुवचि (वि०) [न० व०] छन्द रहित, कपट रहित - एवम् सापुत्रानुपचि विमुञ्च विवर्तने उत्त० २।२ ।

अनुवचत्वात् [न० व०] 1 वर्णन न करना, बयान न देना 2 अनिश्चिन्ता, संशय, प्रमाणाभाव ।

अनुवचति (अर्थ०) [न० व०] 1 अनुपपत्ता, अतिरिक्त, -- लज्जा वाक्यसंबन्धनात्प्रयानुवचति—भाषा० ८२, नापयं उरिष्ट या किसी सबद अर्थ को प्राप्त करने में अनुफलता 2 अभावहार्तिका, अभावहार्तिका न होना 3 अनुपपत्ति, नर्तक्य कारण का अभाव ।

अनुवच (वि०) [न० व०] अनुसनीय, बेजोड़, अर्थात्सम, अत्यंत श्रेष्ठ का उल्लिख परिचय प्रवेश की हृदयी (कुमुद की सखी) ।

अनुवचति (वि०) [अनु + वच् + क्त + क्त], अनुवचता अनुवचय [- य] संबोध, अनुसनीय ।

अनुवचत्वात् [अर्थ०] [न० त०] पशुचान न होना, अत्यंत न होना, बीमाचको की दृष्टि में ज्ञान का एक कारण, परन्तु नैयायिकों की दृष्टि में नहीं ।

अनुवचकः [अनु + वच् + क्त + क्त + क्त] शेष का अभाव, अत्यंत होना ।

अनुवचोक्ति [न० त०] अपने अर्थ के अनुसार व्योमवीर्य कारण न करने वाला ।

अनुप्रासः [न० त०] रोग की उखाड़ने या बड़काने वाली परिस्थिति ।

अनुप्रासहीन [न०] व्यायसासन में हेतुप्रमाण का एक वेद जिसके अन्तर्गत प्रसक्तबन्धी सभी शास्त्र बाने आ जाती हैं, और दुष्टात्म द्वारा, चाहे वह विषेकारक ही या विषेकारक, कार्यकारण-विज्ञान के सामान्य नियम का मन्वर्षन नहीं हो पाता—बना सबै नित्य प्रमे-याथात् ।

अनुप्रासः [न० त०] 1 उपर्या की शक्ति से विरहित शब्द [निपात आदि] 2 (न० व०) जिसमें कोई उपर्या न हो ।

अनुप्रासालम् [अनुप + स्था + ल्यट्] अभाव, निकट न होना ।
अनुप्रासित [न०] उप + स्था + क्त] जो उपस्थित नहीं, अग्रगण्य ।

अनुप्रासिनिः (स्त्री०) [अनुप + स्था + क्तिन्] 1 नीर-हाजरी 2 पाद करने की अव्योपगत ।

अनुप्रास्य (वि०) [न० त०] 1 जिसे बाँट नहीं सनी 2 अग्रपुन, कोरा, नया (काका) ।

अनुप्रास्य (वि०) [न० व०] जो स्पष्ट रूप से दिखालाई न दे या पहचाना न जा सके ।

अनुप्रासः न० अनुप्रासनम् ।
अनुप्रासकम् [अनु + प्र + विष् + क्त] उच्यते पातक जैसे चं गे, हत्या आदिचार आदि, विनाश्यानि में देने ३५ तथा अनुप्रासि में ३० पातक मिताये गये हैं ।

अनुप्रासम् [अनु + प्रा + ल्यट्] दवा के साथ या पीछे पी जाने वाली वस्तु, औषधि देने की मात्रा ।

अनुप्रास्यम् [अनु + प्रा + ल्यट्] प्रथम, मुख्य, आजा-पालन ।

अनुप्रासः [प्रा० त०] अनुप्रायी ।

अनुप्रास (वि०) [प्रा० त०] 1 नियमित, उपयुक्त मान रखने वाला, कमबद्ध - वृत्तानुसूत्रे च न वार्तिदीर्घे-दु० ११२५ "केच जिनके बाध यथाक्रम है, "बाध जिनके अंग सुवर्तित हैं, इनसे प्रकार 'दृष्ट', 'वांश', 'प्रासि 2 कमबद्ध विममिन्दिवार 1 यम०—अ (वि०) नियमित परम्परा में उपपन्न,—कस्ता विममिन्दि रूप से बन्धे देने वाली गाय ।

अनुप्रासः (वि० वि०) नियमित रूप में, क्रमागत रीति अनुप्रास्य (वि०) [न० त०] 1 विरहित २ यद्योपवीत कारण न किये हुए ।

अनुप्रास्यम् [अनु + प्रा + ल्यट्] पचिष्णों का अनु-सरण, टीहू लगाना ।

अनुप्रास्य, अनास्य [अन्व० त०] कदापत रीतिपुर्णक—गेह 'तद्-वद् आसते, वेदम् अनुप्रास्य-वद् विज्ञा० ।

अनुप्रास्यः [प्रा० त०] अनिश्चित उपकोच, आनुप्रासि ।

अनुप्रासः [अनु + प्रा + विष् + क्त] 1 शकला—रघु० ३१२२, १०५१; 2 अनुप्रास—अपने की हृदये की दृष्टा के अनुकूल होना ।

अनुप्रासः [प्रा० त०] बाध में किया जाने वाला प्रसन । (अध्यापक के पूर्व कथन से संबंध) ।

अनुप्रासिनिः (स्त्री०) [अनु + प्रा + क्तिन् + क्तिन्] 1 प्रवाह मर्षण 2 यमों का अत्यधिक गर्क संघत सम्बन्ध ।

अनुप्रासालम् [अनु + प्रा + ल्यट् + विष् + क्त] आराधन, संराधन ।

अनुप्रासिनिः (स्त्री०) [अनु + प्रा + भाष् + क्तिन्] श्रावत करना, पहुँचाना ।

अनुप्रासः [अनु + ल्य + अच्] अनुप्रायी, वेदक—सानुप्रास्य प्रभुरपि अनासाध्यानाम् - रघु० १३१७५ ।

अनुप्रासः [अनु + प्रा + अनु + क्त] एक समय अन्विष्टों अक्षरा या वर्णों की पुनरावृत्ति—अर्थात्साम्ययनुप्रास—काव्य०; परिभाषा और उदाहरणों के लिए दे० मा० द० ६३३-३८, और काव्य० ९, ३१ उल्लास ।

अनुप्रास (वि०) [अनु + वच् + क्त] 1 बंधा हुआ, बकड़ा हुआ, 2 यथा क्रम अनुसरण करने वाला, कम स्वकथ जाने वाला 3 संबद्ध 4 अनवरत चिपका हुआ, लगातार ।

अनुप्रासः [अनु + वच् + क्त] 1 बचन, कलना, मन्त्र, आशक्ति, बहाना (शब्द० आश) 2 अनाथ परम्परा, मानस्य, धैर्यी, शुक्ला—बाध कुछ स्थिरता विर-तानुबन्धम्—श० ४११६, और, मत्सर^०; सानुबन्धः कथ न स्व सपदों में निरापद - रघु० १६५; 3 अनु-क्रम, फल (सुध या अक्षुध) 4 दरावा, योचना, प्रयोजन, कारण—अनुबन्ध परिभाषा देस-काली च उपपन्न । सारा-पराधी चालोक्य दम्ब दृष्टयेषु पाणयेत्—मनु० ८११९६; 5 मन्त्र जोड़ने वाला, शीघ्र 6 आरंभिक लक्ष (विद्यात् के आरम्भक लक्ष) 7 (व्या०) एक लक्षक अक्षर जो कि इस लक्ष के स्वर या विभक्ति में कुछ विरो-धता का शोचक हो जिसके साथ वह जुड़ा हो—जैसे कि 'यम्' में नृ 8 बाधा, दृष्टक 9 आरंभ, उपक्रम 10 मार्ग, अनुप्रास ।

अनुप्रास्यम् [अनु + वच् + ल्यट्] मन्त्र, परम्परा, सित-लित्ता आदि ।

अनुप्रासिन् (वि०) [अनुप्रास + क्तिन्] [प्रायः समस्त पर के अन्त में] 1 मन्त्र, धमकत, अनुकूल 2 क्रम, परि-प्रायी, कमस्वरूप—नुअ दुःखानुबन्धि-विश्व०; ४ एक दुःख के बाद दूसरा दुःख या दुःख कभी अकेला नहीं आता 3 कलता कुलता हुआ, सम्पन्न, अनाथ—ऊर्ध्व गत वस्त्र न चानुबन्धि—रघु० ९६७, अनाथ या लक्ष व्यापक ।

अनुप्रास्य (वि०) [अनु + वच् + क्त] 1 प्रथम, मुख्य; 2 आरे धारों के लिए (जैसे वीच) ।

अनुभवम् [प्रा० द०] पीछे विगत हीनत्वम्, मुख्य सेवा की रक्षा के लिए पीछे जाती हुई सहायक सेवा ।

अनुभवोः [अनु + भृ + भिच् + वच्] 1 भाव का विचार, प्रत्यास्मरण, 2 कर्म पढ़ी हुई सुत्रों को पुनर्पठित करना ।

अनुभवोः [अनु + भृ + भृत्] प्रत्यास्मरण, पुनःस्मरण ।

अनुभवः [अनु + भृ + भृच्] 1 साक्षात् प्रत्यक्ष ज्ञान, स्थितिगत विरोधान और प्रयोग से प्राप्त ज्ञान, मन के संस्कार जो स्मृतिवन्धन हो ज्ञान का एक भेद, दे० तर्क० ३४, (नैययिक ज्ञान प्राप्ति के प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द नामक चार साधन मानते हैं, वेदात्म्यी और मीमांसक इनमें अर्थापत्ति और अनुपलब्धि नामक दो साधन और जोड़ देते हैं), 2 तदुर्बा—अनुभव बचसां सति लुप्तसि—नै० ४।१०५, 3 ममस 4 फल, परिणाम । मय०—सिद्ध (वि०) अनुभव द्वारा ज्ञात ।

अनुभावः [अनु + भृ + भिच् + वच्] 1 मर्यादा, स्थिति की मर्यादा या यौद्ध राक्षसी चमक दमक, वैभववाप्ति, बल, अधिकार,—(परमेशपुर सरो) । अनुभाव, विशेषान् सेवापरिपूर्णादिव—रघु० १।३७;—समाकनीयानुभावा अस्याकृति—म० ७. ७. (सा० धा० में) दृष्टि, संकेत आदि उपर्युक्त लक्षणों द्वारा भावना का प्रकट करना,—भाव मनोवश साक्षात् स्वगत व्यवयति येतेऽनुभावा इति कथना, यथा भ्रमण कोपयन् व्यवक—दे० सा० द० ११२, 3 दुष्ट मकल्प विषयान् ।

अनुभावक (वि०) [अनु + भृ + भिच् + वच्] अनुभव कराने वाला, शोचक ।

अनुभावचमम् [अनु + भृ + भिच् + वच्] संकेत और इंगितों द्वारा भावनाओं का शोचक ।

अनुभावचमम् [अनु + भाप् + भृत्] 1 कही हुई बात को छानने के लिए फिर से कहना, 2 कही हुई बात की पुनरावृत्ति ।

अनुवृत्ति (स्त्री०) = पु० अनुभव ।

अनुवृत्तः—[अनु + भृ + वच्] 1 उपरोक्त 2 की हुई सेवा के बदले मिलने वाली माफ़ी प्रतीति ।

अनुवृत्तः (पु०) [प्रा० म०] छोटा भाई ।

अनुवृत्तः (वि०) [अनु + भृ + वच्] 1 ममत्त, अनुमान, इजाजत दिया हुआ, स्वीकृत, 'यचना—म० ४।१, इत्यादि के लिए अनुवृत्त 2 धारा हुआ, विघ्न,—सं वेदी—यम् स्वीकृति, अनुमोदन, अनुवृत्ति ।

अनुवृत्तिः (स्त्री०) [अनु + भृ + भिच्] 1 अनुभा, स्वीकृति, अनुमोदन 2 अनुवृत्ती पुनः प्रीचया । मय०—यम् स्वीकृति मुचक पत्र वा लेख ।

अनुवृत्तम् [अनु + भृ + भृत्] 1 स्वीकृति, रजापदी 2 स्वतन्त्रता ।

अनुवृत्तम् [अनु + भृ + भिच् + वच्] यद्यो द्वारा आवाहन का प्रतिच्छ ।

अनुवृत्तम् [अनु + भृ + भृत्] पीछे चलना—तन्मरणे चानुवृत्त करिष्यामीति मे निरूप्यः—हि० ३, विचारा का सती होना ।

अनुवा [मा + अच्] अनुमिति, दिये हुए कारणों से अनुमान, दे० अनुमिति ।

अनुवाचम् [अनु + मा + वच्] 1 अनुमिति के माध्यम द्वारा किसी निश्चय पर पड़बना दिये हुए कारणों से अनुमान लगाना, अनुमान, उपमंसार, न्याय शास्त्र के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के चार माध्यमों में से एक 2 अटकन, अन्दाजा 3 सादर 4 (मा० धा०) एक अटकन जिसमें प्रमाण निर्धारित करने का भाव अन्वेषण इत्ये प्रकट किया जाता है—मा० द० ७११—यत्र पण्य-बलाना दृष्टिमितिना पन्थि नत्र मग, तच्छापरि-पित्तसरो चावच्यमाना पुं स्वरो मन्वे ॥ दे० काण्य० १०, 1 मय०—उक्तिः (स्त्री०) तर्कना, तर्क सहाय अनुमान ।

अनुवाचक (वि०) [स्त्री० --विचक] अनुमान कराने वाला, जो अनुमान करने का आचार बन सके ।

अनुवाच [पा० म०] आवाची यज्ञोना,—अच् (अव्य०) प्रथिमान् ।

अनुवर्ति (स्त्री०) [अनु + मा + वित्] दिये हुए कारणों से किसी निश्चय पर पड़बना, वह ज्ञान या निश्चय द्वारा या न्यायवजन तर्क द्वारा प्राप्त हो ।

अनुवेष्ट (वि०) [अनु + मा + वच्] अनुमान के योग्य, अनुमान किया जाने वाला—तन्मानुषेया प्राग्भ्या—रघु० १।२० ।

अनुवेष्यम् [अनु + वृ + वृत्] मद्रथि, शयन, स्वीकृति, ममत्ति ।

अनुवाच [अनु + वृ + वच्] एकीय अनुवृत्तान का एक अंग, गीष् या गुरुक यज्ञानुवृत्तान्, [प्राय 'अनुवाच' लिखा जाता है 'अनुवाच' भी] ।

अनुवाचु (पु०) [अनु + वा + वृच्] अनुवाची ।

अनुवाचम्—मा [अनु + वा + वृच्] शिष्या टापु] परि-अन, अनुचरवर्ग, सेवा करना, अनुसरण । अनुवाचिक [अनुवाचा + टच्] अनुचर, सेवक, म० १।२ ।

अनुवाचः [अनु + वा + वृत्] अनुचरण ।

अनुवाचिक (वि०) [अनु + वा + वित्] अनुवाची, सेवक, अनुचरी—(पु०) पीछे चलने वाला (अ० आर्थ०)—रामानुजानुवाचिन—परावर्तकी वा सेवक,—अपेक्षित सेवोऽनुवृत्तविवर्ग—रघु० २।४, १९ ।

अनुवोचम् [अनु + वृ + वृच्] वरीचक, विज्ञान, अध्यापक ।

अनुपयोगः [अनु + युञ् + घञ्] 1 शक्य, पृच्छा, परीक्षा
2 निरा, शिक्षको 3 वाचका 4 प्रवाह 5 वायिक चित्तन
टीका-टिप्पण्यः । घञ्-—घञ् (घु०) 1 प्रयत्नकर्ता 2
अप्यापक, अध्यापन युञ् ।

अनुपौषणम् [अनु + युञ् + ष्युट्] युञ्, पृच्छा ।
अनुपौषकः [अनु + युञ् + ष्युट्] शक्य ।

अनुरूपः (वि०) [अनु + रञ् + ष्युट्] 1 साह किया हुआ,
रसो 2 प्रसन्न, समुष्ट, निष्ठावान् ।

अनुरक्तिः (स्त्री०) [अनु + रञ् + क्तिञ्] प्रेम, भासक्ति,
अनुराग, स्नेह ।

अनुरक्त (वि०) [अनु + रञ् + ष्युट्] प्रसन्न करने
वाला, समुष्ट करने वाला ।

अनुरक्तवत् [अनु + रञ् + ष्युट्] श्रावण, समुष्ट करना,
मुक्त देना, प्रसन्न करना, समुष्ट रखना ।

अनुरक्तव्य [अनु + रञ् + ष्युट्] 1 अनुकर लगना, तुल्य
या तु बहनों की भावना से उत्पन्न अनवरत प्रसि-
ध्वनि, 2 'अनुरा' नामक मन्त्र वाक्य, तु०, वाक्य-
विक रूपन से व्यञ्जित होने वाला अर्थ अन्वय-कम-
न्त्रपदादेशानुगतवर्णो दो अर्थ्य—सा० ४०४ ।

अनुरक्ति (स्त्री०) [अनु + रञ् + क्तिञ्] प्रेम, आसक्ति ।
अनुरक्ता [प्रा० सं०] रणबन्दी, उद्योगार्थः ।

अनुरक्तः—सिद्धम् [प्रा० सं०] युञ्, प्रसिध्वनि ।
अनुरक्त (वि०) [प्रा० सं०] युञ्, एकान्तप्रिय, निजी,
—सं (वि० वि०) एकान्त में ।

अनुरक्तः [अनु + रञ् + घञ्] 1 आश्रित 2 प्रक्ति,
आसक्ति, निष्ठा (विप० अचाराय) प्रेम, स्नेह (अर्थ०
६ साध या समाज में) कटकिरेव प्रथयति अचरुणाया
कपोलेन—सा० ३११५, १५० ३११०, 'इदमित्त सकेत
या प्रेम को प्रकट करने वाला एक आश्रयकेत ।

अनुरक्तिम् (वि०) [अनु + रञ् + क्तिञ्] आसक्ति,
अनुरागवत्] प्रेम में उन्मोहित ।

अनुरागम् [वि० वि०] [अर्थ० सं०] राग में, इत राग
प्रति राशि ।

अनुरागा [प्रा० सं०] ०० नक्षत्री में से मत्तहृदी नक्षत्र,
पहू चार नक्षत्र का समूह है ।

अनुकम्प (वि०) [प्रा० सं०] 1 मद्द, विलना-जुलना,
तदनुकम्प, वात्स, अनुकम्प कर्म—५० १, 2 उपयुक्त
या वात्स, अनुकम्प, (म० ६ के साथ या समाज
में)—अथ क्षिप्रानुभवस्य त्वर्त्तौकडागी विषय०
५१११ ।

अनुकम्प-यत् (वि० वि०) मय्यनुकम्पना वा अधिभक्ति-
—यत्, यत्-] युञ्क ।

अनुकम्पः—अन्व [अनु + रञ् + घञ्, ष्युट् वा] 1 चिन्त,
आश्रयना, रक्षापूर्ति करना 2 मन्त्रपात्र, आशापालन,
निष्ठा, विचार धर्माभ्युपार्थान्—का० ११०, १८०

११२, 3 आश्रयार्थक प्राथना, वाचना, निवेदन 4
चिन्त का पालन ।

अनुरीचिन्—अक (वि०) [अनुरोच + चिन्ति, अविस्त् +
ञ्चत्] विचारी ।

अनुकम्पक [अनु + रञ् + घञ्] श्रावति, पुनरक्ति ।
अनुकम्पकः—रुचः [अनुकम्प + घञ्, ष्युट् वा] योर ।

अनुकम्पः—केवलम् [अनु + रञ् + घञ्, ष्युट् वा] 1 अवि-
पेक, ऐक्यमर्दन 2 सुगन्धि लेप, उबटन—सुरभिमुक्तुम्—
धुपायुकेयमानि—का० ३०५ ।

अनुकम्प (वि०) [प्रा० सं०] 1 'बार्दी में'—ऊपर से नीचे
की ओर जाने वाला—निवर्तित, स्वाभाविक कमा-
नसार (विप० प्रतिशोधम्), (अन्) अनुकम्प—'कृष्ट
लेख प्रतिशोध कर्षति—विद्या०, निवर्तित विद्या में
लेख चलाया हुआ, 2 मिथित (जैसे कि जाति)—अन्
(वि० वि०) स्वाभाविक या निवर्तित क्रम में—आ
(सं० सं०) मिथित आश्रित । अन्—अर्थ (वि०)
पक्ष में बोलने वाला,—अज्ञानानुपानुसारान् प्रवाच.
कृतिना विर—वि० ०१२५,—अ—अन्वत् (वि०)
ठीक क्रम में उ-पर, उन्मोहित के पिता तथा नीचवर्ण
की माना में उपर सन्धान, मिथित जाति का ।

अनुकम्प (वि०) [सं० सं०] 1 अधिक नहीं, न कम न
अधिक 2 स्पष्ट या साफ नहीं ।

अनुकम्पः [प्रा० सं०] बयनादिवा ।
अनुकम्प (वि०) [प्रा० सं०] अन्वत् टेढ़ा, कुट्ट टेढ़ा वा
तिरछा ।

अनुकम्पवत् [अनु + रञ् + ष्युट्] श्रावति, सम्बर पाठ,
अप्यापन ।

अनुकम्पार [प्रा० सं०] वर्ष ।
अनुकर्तव्य [अनु + कृ + ष्युट्] 1 अनुभवन (आठ०
मी), अनुवर्तिना, आशाकारिता, अनुकम्पता 2 प्रसन्न
करना, अनुग्रह करना 3 स्वीकृति 4 कर्म, परिणाम
5 पूर्ववृत्त में पुनिकरना ।

अनुवर्तिन् (वि०) [अनु + वृत् + चिन्ति] 1 अनुवर्ती,
आशाकारी 2 अनुकम्प (कर्म) के साथ या समाज में ।

अनुवर्त (वि०) [प्रा० सं०] वृत्त की रक्षा के अधीन,
आशाकारी—अः अधीनता, आशाकारिता ।

अनुवर्तकः [अनु + वृत् + घञ्] 1 श्रावति करना 2 कर्म
के उद्धारन, अनुवाय, अध्याय ।

अनुवर्तव्यम् [अनु + वृत् + चिन्ति + ष्युट्] 1 सम्बर पाठ
कराना, अध्यापन, शिक्षण 2 स्पष्ट पाठ करना, ३०
'अन्व' अन्व के साथ ।

अनुवर्तः [प्रा० सं०] वह रिता जिन ओर की हुवा हो ।
अनुवर्तः [अनु + वृत् + घञ्] 1 सामान्य रूप से
श्रावित 2 आश्रय, उदाहरण, वा सम्बन्ध की दृष्टि से
श्रावित 3 आश्चर्यकर श्रावित या पूर्वकथित बात का

उत्प्रेष्य, विधेय रूप से बाह्यण वधों का बहु भाग जिससे पूर्वोक्त निदेश या विधि की व्याख्या, विषय या उसके टीका-टिप्पण निहित है और जो स्वयं कोई विधि या निदेश नहीं है 4 सम्बंधन 5 विवरण, अकवाह ।

अनुवाचक, वाचिन् (वि०) [अनु + वच् + श्चुत् - चिनि वा] 1 व्याख्यापरक 2 समरूप, समस्वर ।

अनुवाच (वि०) [अनु + वच् + णिच् + यत्] 1 व्याख्येय, उदाहरणसापेक्ष 2 (व्या०) वाच्य में किसी उक्ति का कर्ता, 'विधेय' का विपरिणतार्थक जो कि कर्ता के विषय में कुछ विधि या नियम करता है, वाच्य में पहले से ज्ञात अनुवाच या कर्ता की पुनरुक्ति विधेय के साथ सबब अतलाने के लिए की जाती है, अतः उसे वाच्य में पहले रखना जाना है--अनुवाच-मनुस्वैव विधेयमधीरोवेत् ।

अनुवाचन् (अव्य०), समय समय पर, बार बार, फिर दोबारा ।

अनुवाचत—अनुच् [अनु + वाच् + घञ् स्तुट् वा] 1 समाप्त रूप आदि सुगणित द्रव्यों में सुवासित करना 2 कपड़ों के किनारे बुद्धोच्च सुगणित बनाना 3 (न भी) पिचकारी, ठेक का एनिदा करना, या म्निष्य बनाना ।

अनुवासित (वि०) [अनु + वास् + क्त] धूपित, धुनी दिया हुआ, सुगणित किया हुआ ।

अनुवासितः (वि०) [अनु + वित् + क्तिन्] निरुपय प्राप्त ।

अनुविद्ध (वि०) [अनु + वृद्ध्यु + क्त] 1 छिटा हुआ सूरज किया हुआ, कौटानुविद्धरत्नादिमाधारभवेन काव्यता—सा० ६० 2 उपर पैला हुआ, अलर्नेटिन, पूर्ण, व्याप्त, मिश्रित, मिलावट वाला अर्न्तविधित—सरसिञ्जनुविद्धं वैश्वेतेनापि रम्यम्—सा० १।२०, 3 सयुक्त, सबद्ध 4 स्थापित, जड़ा हुआ, चित्रित—रत्ना नुविद्धाणवमेमलाया दिशः सगन्तो भवः दक्षिणम्या—रघु० ६।६३ ।

अनुविवाचन् [अनु + वि + वा + स्तुट्] 1 आज्ञाकारिता 2 आदेशादि के अनुपय कार्य करना ।

अनुविवाचिन् (वि०) [अनु + वि + वा - चिनि] आज्ञाकारि विनीत ।

अनुविवाचा [अनु + वि + वा + घञ्] बाद में नष्ट होना ।

अनुविष्टव, [अनु + वि + स्तृच् + घञ्] कलम्बकप बाधा का होना ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु + वृत् + क्त] 1 आज्ञाकारी अनुवासी 2 अबाध, निरन्तर ।

अनुवृत्तिः (स्त्री०) [अनु + वृत् + क्तिन्] 1 स्वीकृति 2 आज्ञाकारिता, अनुकूलता, अनुप्राप्तिता, नैरन्तर्य 3 अनुकूल या उपयुक्त कार्य करना, आज्ञापालन, धीन सहमति सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना-कातां चानुपे-

यपि प्रसिद्धं बलेन - उप० ३, वा० १, 4 (व्या०) आज्ञायाम् नियम में पिछले नियम की पुनरुक्ति या पुनः पिछले नियम का आज्ञायाम् नियम पर निरन्तर प्रभाव 5 पुनरुक्ति - वर्णानामनुवृत्तिरनुप्राय ।

अनुवेष - तु० अनुव्याप ।

अनुवेषम् [अव्य०] [प्रा० म०] कभी कभी बारबार इति स्मृच्छयनवेलेमादत् - रघु० ३।५ ।

अनुवेश शनम् [अनु + विष् + घञ् स्तुट् वा] 1 अनुगमन बाद में दामिल होना, 2 बड़े भाई के विवाह में पहले छोटे भाई का विवाह ।

अनुच्छजनम् [अनु + वि + अच् + स्तुट्] शीघ्र लक्षण वा चिन्त ।

अनुच्छत्ताय [अनु + वि + अच् + स्तृ + घञ्] (म्या० में) प्रत्यक्ष का बोध या ज्ञानता, (वेदा० में) मनाभाव या निर्णय का प्रत्यक्षीकरण ।

अनुव्याप—वेष [अनु + व्याप् + घञ्, विष् + घञ् वा] 1 चोट पहुँचाना, छटना सूरज करना नहि कौटानु-वेपदयो रन्ध्रव रन्ध्रव व्याहृन्मुषोसा सा० ६० १, 2 गहर में मूषामोद मदिद्या कृतानुव्याप-मुदयन- शि० २।०० 3 विषय 4 बाधा दामन ।

अनुव्याहरणम्—व्याहार [अनुव्या + हृ + स्तुट्, घञ् वा, 1 पुनरुक्ति बारबार बचन 2 अविभाषा कोमता ।

अनुवज्जन्त-अज्जा [अनु + वज्ज् + स्तुट् क्यप् वा] अनुगमण अनुगमन विशेषण वा जिहा हुआ हुआ अव्यागत ।

अनुव्रत (वि०) [प्रा० म०] अकल, निष्ठावान्, मन्तन (ब्रह्म या मन्त्र) के साथ ।

अनुव्रातिका (वि०) [अनु + व्रत् + क्त] शी के साथ या शी में मान लिया हुआ ।

अनुव्राय [अनु + व्रा + अच्] 1 पत्रवाण्य मन्त्राप्य कट २२, २२कनशरमन्त्रमन्त्र मा० ८, इत्यादिमन्त्रान्

ज्या मा भूदिति विष्णो १ शि० २।११, 2 अति ब्रह्म वा बोध विपुलात्मा जगद्य पर शत - शि० २८ ।

३ -यस्मिन्मनुकानुवासा सर्वत्र प्राणिनः सुखी - मा० ८।१ ३ पृष्ठा 4 वृहता सकम्, औसा इह कमागत (विनी) पदार्थ में यज्ञ आरम्भित 5 (वरा० में) पुनर्मौ का परिष्कार वा कल वा कि उसके साथ ययुक्त रहना है और पुनर्जन्म में अश्वासी सुखि का उपभोग कराके किम जीव का भोगों में प्रविष्ट करना है 6 ऋज के मासमें से मंद जिये पारिव्रातिका रूप में 'उत्साह' कहते हैं दे० बीजानुवाय ।

अनुव्रजान (वि०) [अनु + व्री + शानच्] वेः प्रकः करना हुआ या नसिकता का एक भेद, यह नासिका अर्न्त प्रयोग के विषय का प्रयास करके उदात्त और चिन्म गणनी है ।

अनुव्रजिन् (वि०) [अनु + व्री + शानच्] वेः प्रकः करना हुआ या नसिकता का एक भेद, यह नासिका अर्न्त प्रयोग के विषय का प्रयास करके उदात्त और चिन्म गणनी है ।

अनुव्रजिन् (वि०) [अनु + व्री + शानच्] वेः प्रकः करना हुआ या नसिकता का एक भेद, यह नासिका अर्न्त प्रयोग के विषय का प्रयास करके उदात्त और चिन्म गणनी है ।

अनुव्रजिन् (वि०) [अनु + व्री + शानच्] वेः प्रकः करना हुआ या नसिकता का एक भेद, यह नासिका अर्न्त प्रयोग के विषय का प्रयास करके उदात्त और चिन्म गणनी है ।

अनुव्रजिन् (वि०) [अनु + व्री + शानच्] वेः प्रकः करना हुआ या नसिकता का एक भेद, यह नासिका अर्न्त प्रयोग के विषय का प्रयास करके उदात्त और चिन्म गणनी है ।

अनुव्रजिन् (वि०) [अनु + व्री + शानच्] वेः प्रकः करना हुआ या नसिकता का एक भेद, यह नासिका अर्न्त प्रयोग के विषय का प्रयास करके उदात्त और चिन्म गणनी है ।

शब्दाः 2 परधाताप करने वाला, पद्यताने वाला 3 अपविक्रम कृपा करने वाला 4 मानो किसी फल के कारण संबद्ध ।

अनुसूचः [अनु + सू + च्] भूत प्रेत, राजसूय ।
अनुसूचिक-आसित् [(वि०)] अनु + सूच + क्त, गिति आस्तु-आसित् [तुप् वा] विवेकक, सितक, शासन करने वाला, दंड देने वाला -कवि पुराणअनुसूचिसिंहारम् - प्रम० ८१२, भासन कर्ता, एष चोरासूचामी राजेति महाभारतप्रति - विष्णु ० ४ ।

अनुसूचकम् [अनु + सूच + क्त] आदेश, प्रोत्साहन, सितक नियमों विधियों का ब्रह्माणा - महत्यधिकेप इवानु-शासनम् - कि० १२८, आदेश वा सिका के पदः तन्मनोरनुशासनम् - मनु० ८१२२, आसित्क ० मन्त्राओं के लिये सर्वश्री नियमों का निर्धारण तथा आसिका शास्त्रानुशासनम् - सिद्धा० ।

अनुसूचिभ्यम् [अनुसूच + चिनि] किवाचीक, सीजने वाला ।
अनुसूचिभिः (स्त्री०) [अनुसूच + चिन्] सिधाय, अध्यापन, आदेश, आज्ञा ।

अनुसूचीकम् [अनु + सूचि + क्त] अधिप्रेत तथा धर्मपूर्ण प्रेषण, महान प्रयत्न वा अभ्यास, महत वा बारबार प्रयास वा अभ्यस्य ।

अनुसूचक, सूचकम् [अनु + सूच + क्त, स्तुट् वा] गज, परधानाप, अंड, दही अर्ध में अनुसू (सो) धितम् ।
अनुसूच [अनु + सू + च्] वैदिक परागर ।
अनुसूचता (वि०) [अनु + सू + क्त] 1 सबद्ध 2 सलन वा समवन ।

अनुसूचः [अनु + सू + च्] 1 गहन अयाच, मरुच, म-गा साहचर्य, 2 मेल 3 : र्ता का वारम्परिक मरुच 4 आचम्यक परिभाष 5 दवा, नरम, कठना ।

अनुसूचिक (वि०) [अनुसूच - 5] अनिवार्य फलम्बक, सहवर्ती ।

अनुसूचिन् (वि०) अनु + सूच + चिनि] 1 सबद्ध, अनुरण साः 2 अनिवार्य परिभाष के रूप में आने वाला, 3 आःहारिक, साःभाच, छा जाने वाला -विभूतानुचरि प्रयोगेति वन - कि० ११२५ ।

अनुसूचकोच (वि०) [अनु + सूच + कोच] (सम् की प्राप्ति) पुर्वभाष्य ने छात्र ।

अनुसूचकः - सेकम् [अनु + सूच + क्त, स्तुट् वा] दोबारा पानी देना, फिर से जक छिड़कना ।

अनुसूचिः (स्त्री०) [अनु + सूच + चिन्] प्रशमा, सिधा-गिच (क्यानुसार) ।

अनुसूच्य (स्त्री०) [अनु + सूच + क्त] 1 प्रशमा में अनुसूचन, वाली 2 सरस्वती 3 बलीय बसनों का एक छद् विहसन जाठ ४ अक्षरी के चार २ पाव होने हैं ।

अनुसूच्युः - आसित् (वि०) [अनु + सूच + क्त, चिनि वा] कार्य करने वाला, अनुसूचन करने वाला ।

अनुसूचानम् [अनु + सूच + क्त] 1 कार्य करना, चर्चकृत करना, कार्य में परिचय करना, कार्यनिष्पादन, आज्ञा-पालन, उपरम्भने तपोऽनुसूचानम् - म० ४; धार्मिक तप-वचनों का प्रयोग 2 आरथ, उत्तरदायित्व, कार्य में व्यस्तता 3 आचरणपद्धति, कार्यपद्धति, 4 धार्मिक सम्कारों वा कृत्यों का प्रयोग ।

अनुसूचकम् [अनु + सूच + क्त] कार्य करना ।
अनुसूच (वि०) [न० त०] 1 को गर्म न हो, ठंडा 2 शीत-राग, मुल, शिथिल - ल्म शीतलसर्ष, - ल्म कुमुद, नीक कमल ।

अनुसूचः [अनु + सूच + क्त] पिछला पहिवा ।
अनुसूचानम् [अनुसूच + वा + क्त] 1 पुच्छा, मवेपथ, गहन निरीक्षण वा परीक्षण, बाध 2 उद्देश्य 3 दोबारा, कमबद्ध करना, तत्पर होना 4 उपबृकर सवोन ।

अनुसूचिह (वि०) [अनु + सूच + वा + क्त] पुच्छाक किया गया, बाध पहलाक किया गया, - ल्म (कि० वि०) सङ्गि-पाठ में, सङ्गि-पाठ के अनुसार ।

अनुसूचकः [प्रा० स०] निर्वाचित और उचित सवाम जैसे कि गच्छा का ।

अनुसूचकम् [अनु + सूच + क्त, स्तुट्] निर्वाचितरूप से किसी कार्य की समाप्ति ।

अनुसूचद्ध (वि०) [अनु + सूच + क्त + क्त] सकुल ।

अनुसूचः [अनु + सू + च्] अनुपामी, माषी, अनुचर ।

अनुसूचकम् [अनु + सू + क्त] 1 अनुसूचन, पीछा करना, पीछे जाना 2 समनुकल्पना ।

अनुसूचः [अनु + सूच + क्त] सर्तदुस अनु, मरीच्य ।

अनुसूचकम् (अर्थ०) [प्रा० म०] 1 यज्ञ के पश्चात् 2 प्रत्येक यज्ञ में 3 प्रतिक्षण ।

अनुसूच (वि०) [प्रा० म०] मनाया हुआ, मित्र सवुच, अनुकन ।

अनुसूच्यम् (अर्थ०) [प्रा० स०] प्रति सायकाल ।

अनुसूचकम् [अनु + सूच + क्त] सकेत करना, इशारा करना ।

अनुसूचः [अनु + सू + क्त] 1 पीछे जाना, अनुसूचन (बाल० ग्री), पीछा करना - अन्वयानुसूचि अच-लोक्य म० ७ विचर ने आशय आ रही थी उस और वेत्तने हुए 2 समनुकल्पता, के अनुसार, प्रयोग के अनुकर, 3 प्रथा, रिवाज, रत्न 4 माता हुआ अधिचर ।

अनुसूचकः - शारिन् (वि०) [अनु + सू + क्त गिति वा] 1 अनुपामी, पीछा करने वाला, पीछे जाने वाला, सेवा करने वाला मृदानुसारिन् पिनाकिन्दम् - स० ११६; - कृपानुसूचि च मन्म - प० १२७८; 2 के

अनुकूल या अनुकूप, बाद में आने वाला—बधायास्त्र^१
अनु० ७३१; ३ लताका करना, डूँडना, लोजना, बीच
करना ।
अनुसारका [अनु+सु+विच्+बच्+टाप्] पीछे जाना,
पीछा करना—उत्पापलतायमानतां कुर्वानास्वनुसार-
णाम् - महा० ।
अनुसूचक (वि०) [अनु+सूच्+ञ्च्] सकेत करने वाला,
दूझारा करने वाला ।
अनुसूतिः (स्त्री०) [अनु+सु+क्त्तिन्] पीछे जाना, अनु-
सरण, अनुकूप होगा, अनुसार होगा ।
अनुसूत्रम् [त्रा० सं०] सेना का पिछला भाग, अनुसरक
सेना ।
अनुसूत्रम् (अब्ध०) [अब्ध० सं०] क्रमशः प्रविष्ट होकर
कमानुसार अन्तर आकर - गेह गेहमनुसरम्-सिद्धा० ।
अनुस्तरणम् [अनु+स्त्+ण्] चारों ओर बसेरना या
फैलाना, —भी गाए, विशेषतया बहु गाए जिसका
वर्तमान अर्थेष्टि सम्कार के समय किया जाय ।
अनुस्तरणम् [अनु+स्त्+ण्] १ फिर से ध्यान में लाना,
स्मरण करना, २ बारबार स्मरण करना ।
अनुस्मृति (स्त्री०) [अनु+स्मृ+क्त्तिन्] १ वह स्मृति या
स्मरण जो पिय हो २ अर्थ विशेषों को छोड़कर केवल
एक ही बात का चिन्तन करना ।
अनुसूत (वि०) [अनु+सिच्+क्त—ऊट्] १ नियमित
तथा निर्बाध रूप से मिला कर बुना हुआ २ सिला
हुआ, बधा हुआ, ३ सुषमा और सुशुद्धसिला ।
अनुसूत्राः [अनु+स्त्+ण्] १ अनुकूप शब्द करना
२ बाद में राज्य करना, गुज, दे० 'अनुसरण' ।
अनुस्वारः [अनु+स्व+ण्] नासिक्य ध्वनि जो दफिन के
ऊपर एक बिन्दु लगा कर प्रकट की जाती है और जो
सदैव पूर्ववर्ती स्वर से संबद्ध होती है ।
अनुहरणम्, हारः [अनु+हृ+ण्] चञ्, वा] नकल,
मिलना-जुलना, समागत ।
अनुकः, कम् [अनु+उच्+क. कृत्स्न वि०] १ कुल, बस
२ अनौचित्य, स्वभाव, चरित्र, बस की विशेषता ।
अनुधान (वि०) वा - कः [अनु+बन्+कान् वि०] १
अध्ययनशील, विद्वान् विशेषतया वेद, वेदानों में ऐसा
पारंगत विद्वान् जो उन्हें तुना सके और पढ़ा सके,--
इदमनुधनुधाना—कु० ६११५, २ सुधी ।
अनुध (वि०) [अ० सं०] १ न के जाना गया, २ अवि-
बाहित, —हा अविबाहित स्त्री । सप० - माल (वि०)
उजाला,—मालम् (दा०) कुमारी करना से संबोध,
—आस्ता (पु०) (दा०) १ अविबाहित स्त्री का भाई
२ राधा की उपपत्नी का भाई ।
अनुदकम् [उदक्य बभावाः न० सं०] जल का बभावा,
सूत्रा पदका ।

अनुदोषः [अनु+उच्+विच्+पञ्] 'अपेक्ष कम्' एक
अक्षरकार का नाम जिसमें कि क्या कम् पूर्ववर्ती सन्धौका
उल्लेख होता है;—अनाक्षरानुदोष उद्विष्टानां कोषेय
वत्—सा० व० ७३१ ।
अनुप (वि०) [न० सं०] १ जो बाटिया न हो, कम न हो,
अभाव वाला न हो—अनापने वैभवापान्ते—रघु०
६१५०—अनुपपूर्णा—रघु० ६१३७; २ पूर्ण, सफल,
सकल, बहा, महान् सि० ४१११ ।
अनुप (वि०) [अनुपता भाप यन्मिच्—अनु+अप्+
अच्—ऊरुनोरिं इति ऊ] असीय, अक्षरहीन अथवा
दलदल भावा प्रवेश—क, षच् १ अक्षरहीन स्थान या
देश २ एक देश का नाम (वाः व० व०)—रघु०
६१३७, ३ दलदल, कीचड़ ४ पानी का शाकाज ५ नदी
का किनारा, पर्वत का पहलू ६ शैल ७ शैल ८ एक
प्रकार का शीतल ९ हाथी । सप०—अनुप भाई, अक्षरक,
—आय (वि०) दलदल वाला, कीचड़ से भरा हुआ ।
अनुपान, अनुराधा—अनुपान, अनुराधा ।
अनुप (वि०) [न० व०] जिसके अन्त न हो, -कः सूर्य का
सांग्रथ अथवा (जिसका अक्षरहीन होने का अर्थ
पाया जाता है) उषा, दे० अथम् । सप०—आरुधि
सूर्य (अनुप जिनका सांग्रथ है) ;—यत् तिरस्वीन-
मनुस्मारण्ये—सि० ११२ ।
अनुकिल (वि०) [न ऋजित—न० सं०] १ अयात,
दुर्बल, सक्तिहीन २ दर्परहित ।
अनुचर (वि०) [न ऊपर—न० सं०] १, रेहीका, बबर बीती
(भूमि) दे० उत्तय और अनुपाम २ जिसमें रेह न हो ।
अनुच्—च (वि०) [न० व०] १ बिना अच् का २ जो
अच्चेद का जाता न हो, वा अच्चेद का अच्चेत न हो,
यज्ञोपवीत न होने के कारण जिसे वेदाध्ययन का अर्थ
कार न हो—अनुचो मागवक—मृग० ।
अनुचु (वि०) [न० सं०] जो मात्र न हो, कुटिल
(माल), अयोग्य, दुष्ट, बेईमान ।
अनुच्य (वि०) [न० व०] जो कर्त्तव्य न हो—एनामनुचा
करोमि—अ० १;—आर्षेयशरच्छोरेरनुच्य (गृध्र)
—रघु० १२५५, अर्थेक जिन को तीन अक्षरों से उच्च्
होना पड़ना है—अचिच्छ्य, देवच्छ्य और विनुच्छ्य ।
जो अर्थिन वेदाध्ययन करके ब्रह्म में देवताओं का आधा-
हन करता है, और फिर गृहस्थाश्रम में रह कर पुत्र प्राप्ति
करता है वही 'अनुच्य' कहलाता है दे० रघु० ८१२० ।
अनुचिन् [न० सं०]—अनुच ।
अनुत् (वि०) [न० सं०] १ जो सत्य न हो, मिथ्या
(शब्द) जिन व नामुत् दूषात्—अनु० ४१३८,
—सत्य वसत्यता, झूठ बोलना, धोखा, आसनाकी २
कृषि (चिर० 'एत') मनु० ४५५, १ सप०—अनुचम्,
—आचम्, —अचम्पाम् झूठ कहना, मिथ्या भाषण,

अंत (वि०) [अन् + तन्] 1 निकट 2 अन्तिम 3 सुन्दर, मनोहर, मेघ० २३, सि० ४१४० (इसका सामान्य अर्थ—'सीमा' या 'छोर' है, यद्यपि 'सम्बन्ध' का उद्देश्य देते हुए यति-शब्द इसका अर्थ 'रख' करते हैं) 4 नीचतम, निम्नोत्तम 5 सबसे छोटा, —त (कुछ अर्थों में तन्) 1 (वि०) छोर, मर्यादा, (देश-काल की दृष्टि से) सीमा, करम सीमा, अन्तिम बिन्दु या पराकाष्ठा, —स सावरोटा पृथिवी प्रशस्ति हि० ४१५०, —दिगते भ्रूयते भाषि० ११२, 2 छोर, सङ्घट, किनारा परिवार, सामान्य रूप से स्थान या भूमि, —यत्र रम्यो वनत, उत० २१२५, —भेदकातात् स्निग्धो जलोद्भूयतम्य —स० ४, रघु० २१५८, 3 बनी हुई किनारी का पल्का—वच०, पट०, 4 सामीप्य, सन्निकटता, पट्टीस, विश्वमाता —नगा प्रजातातविक्रमण्य (गङ्गा-रम्) रघु० २१३६, सुलो वयात वज्रत —पच० २१११५, 5 समानि, उपसहार, अवसान, —मेकाते—रघु० ११५१, दिवति निहिलम् —रघु० ४११, 6 मृत्यु, नाश, जीवन का अन्त, —राका अनेतवतिवनी न्वदेते—रघु० २१४८, अद्य कात कृतातो वा दुस्त्वान्त करिष्यति—उद्घट 7 (अश० में) शब्द का अन्तिम अक्षर 8 मर्यादा में अन्तिम शब्द 9 (प्रश्न का) निरचय, निर्णय या अन्तिम निरचय—उपयोगिण दुष्प्रीत्यस्तवयनोल्लिखदधिभि भग० २११६; 10 अन्तिम अक्ष, अवशेष—यथा निशाण, वेदान्त 1 प्रकृति, दगा, प्रकार, जाति 12 वृत्ति, तन्त्र गुदान । सम०—अवसायिन् (पु०) बाह्य अवसायिन् (पु०) 1 नाई 2 बाह्य, गीच जाति का, —अर, —अरच, —कारिन् (वि०) शालक, मारक, संहारक, —अर्यन् (तपु०) मृत्यु, —काल, —वेला मृत्यु का समय, —कृन् (पु०) मृत्यु, —य (वि०) किनारे तक जाने का, पूरी तरह से जानकार या परिचित, (समाप्त में) —यति, —यतिन् (वि०) नाश होने वाला, —यन्-मन् 1 समाप्त करना, पूरा करना 2 मृत्यु, —वीचकम् सा० शा० में एक अलंकार, —पाल 1 सीमा की रक्षा करने वाला, 2 द्वारपाल सौच (वि०) मृत, शिवा हुआ, —सौच शब्द के अन्तिम अक्षर को निकाल देना, —शासिन् (वि०) (वि०) सीमास्त प्रदेश के निकट रहने वाला, निकट ही रहने वाला, (—पु०) विद्यापी (को विद्या प्रद्वय करने के निमित्त सर्वेष्ट गुरु के निकट रहना है), बाह्य (जो गौर के किनारे रहता है) —वेला=पु० काल—छव्या 1 भूमिपथ्या 2 अन्तिम मर्यादा, मृत्युशय्या 3 कश्चित्नाम या इत्यन्तम भूमि, —अतिष्ठा अन्वेषित लस्कार, सद् (पु०) विद्यापी, तन्प्रासते बुभित्वातसद् —कि० ९१३४ ।

अन्तक (वि०) [अन्तयति—अन्त करोति भृन्] मारने वाला, नाश करने वाला, शाङ्क - रघु० १११२१ ।

- क 1 मृत्यु 2 साकार मृत्यु, संहारक, यम, मृत्यु का देवता, —शुचिप्रभावाभ्यामि तात्प्रकीर्णि प्रभुं प्रहृन्तुं रघु० २१६२ ।

अन्तल (अन्व०) [अन्त + लत्तु] 1 किनारे से 2 आखिर कार, अन्त में, अन्ततोगत्या, निदान 3 अन्त, कुछ 4 भीतर, अन्तर 5 अन्तम रीति से ('अन्त' के सभी अर्थ 'अन्त' में समा जाते हैं)

अन्ते (अन्व०) ['अन्त' का अधि०, कि० वि० में प्रयोग] 1 अन्त में, आखिरकार 2 भीतर 3 (को) उपस्थिति में, निकट, पास ही । मम० --बास 1 पटोली, साधी, 2 छात्र सि० २१५५, वेणी० ३१६ -बासिन् तु० अंतवाग्नि ।

अन्तर (अन्व०) [अन् + अन्त तुशागमपच] 1 [किमात्रा के साथ उपसर्ग की भांति प्रयुक्त होता है तथा मध्य बोधक अव्यय समाप्त जाता है] (क) बीच में, क मध्य में, के अन्तर 'हनु, धा, गम, भू, इ, 'ली आदि (क) के तीर्थे 2 (कि० वि० प्रयोग) (क) के मध्य, के बीच, के दरम्यान, के अन्तर, मध्य में या अन्तर, भीतर (विप० बहि) अद्वयान्त रघु० २१:२, अन्तर्वचन मृग्यते विक्रम० १११, आन्तरिक रूप से, मत में (स) अद्यय कृत् का पत्रकर -अन्तर्वा गत (हृत् परिगुह) 3 (विद्युत् होने योग्य अन्वय-बोधक के रूप में) (क) में, के मध्य बीच में, क अन्तर (अधि० के साथ) निवमन्तरादीनि सप्या बहिन् -पच० ११३१, अन्वयन्तरमन्तु -श्वर ११:१ (स) के मध्य (कर्म० के साथ) वेद० -तिर्यग्यात् कुप्योरन्तरबहिन् आम -गत० (य) में के अन्तर भीतर, बीच में (सब० के साथ) प्रतिबन्ध जलचयन रोचयमाचे वेणी० २१५, अन्त कर्त्तृकचुचय रत्न० २१३, —लघुवृत्तितया भिदा गत बहिरात्तु नृप्य महलम् -कि० २१५३, 4 समस्त शब्दों में यदि प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त किया जाय तो बहुधा निर्माकित अर्थ होते हैं आन्तरिक रूप से, के अन्तर, भीतर भीतर रह कर, भरा हुआ, अन्तर की ओर आन्तरिक, गुप्त, तन्तुस्थ तथा बहुशक्ति मर्यादा के किन्तवियोग-भात्मक रूप बनाने वाला(नात समस्त पदा में अन्त का र् अर्थ के प्रथम द्वितीय सर्व तथा य ए स् म पुन विमर्ग का रूप धारण कर लेता है त्रैने अन्त काच अन्त न्य आदि) । मम० अन्तिम आन्तरिक भाग वह अन्तिम जो पाचन शक्ति को उपेक्षित करे, —अन्त (वि०) 1 अन्त की ओर, आन्तरिक, अन्तर्गत (अप० के साथ), प्रथमपद पूर्वव्यं—पातञ्जल० 2 दाह के मन्त्र या अंग के आवश्यक भाग में संबद्ध, या अंग के आवश्यक भाग में संबद्ध, या उनका उल्लेख करने वाला, 3 त्रिव, प्रियमत्र (सन्) 1 अंतर्गत अंग

हृदय, मन 2 चक्षुषः शिष्य, वा विषयस्तन् अस्मिन्; —
 आकाशः तेषां बहू रूप्य वा बहू यो मनुष्य के हृदय में
 रहता है (उपनिषदों में प्रायः यह शब्द पाया जाता
 है) — आकृतम् गुण और शिष्या हुआ प्रयोजन,
 — आत्मन् (पु०-स्त्री) अंतर्मन प्राण वा आत्मा,
 मन वा आत्मा, आन्तरिक भावना, हृदय, — बीजसत्त्वो-
 त्तरात्मान्य — मय० १२।१३, मय० ६।४०, 2 (दश०
 में) अनाहित सर्वोपरि प्राण वा आत्मा (मानव के
 भीतर रहने वाला) अंतरात्माति देहिनाम् — कु० ६।
 २१, — आराध (वि०) अपने आप में मस्त, अपने
 आत्मा या हृदय में ही मूख ईडने वाला, योत
 मुकोनरात्मान्यमान्योतिरेष स — मय० ५।२६,
 — इष्टिप्रथम् आन्तरिक मय वा आनेन्द्रिय, — करणम्
 हृदय, भावना, विचार और भावना का स्थान, विचार
 शक्ति, मन, चेतना — प्रमाण० प्रथमय — स० १।२२,
 — कुशिल (वि०) अन्दर से कपटी (आत्मा०)
 (—स) सीप, — कोषः अन्दर का कोण, कोषः गुण
 कोष, अन्दरकी गुण्य, — बद्ध (वि०) व्यर्थ, अना-
 शयक, निष्फल — किमनेनात्येदुना सर्व० — मय०,
 — मय दे० 'अन्तर्मात्र' के लिये, — गर्भ (वि०) पेट
 वाली, गर्भवती, गिरन्तु — गिरि (अव्य०) पहाड़ों
 में, — मूढ (वि०) अन्दर से छिपा हुआ, 'विष्य' हृदय
 में अज्ञान छिपाए हुए मूढत्व, वैहृत्, — प्रथमम्
 पर का भीतरी भाग, अन्तः — अन्तः पर के अन्दर
 की लुकी जगह, अन्तः (वि०) शरीर में स्थान,
 — अन्तर्गु पेट, अन्तर्गम्य जलन या मूत्रन, — तस्य
 (वि०) अन्तर्गत में युक्त (—क) अन्दरकी अन्तः या गर्भी,
 — स० ३।११, अन्तर्गम्य, बाह्य 1 अन्दरकी जलन
 2 मूत्रन ईश. परिधि के बीच का प्रदेश, — इतरम्
 पर के अन्तः विजो या लून दरवाजा, चि — हित
 अति दे० अन्तः के लिये, — वदन् दो व्यक्तियों
 के बीच में कपडे का परदा, — वदन् (अव्य०) पर
 (विभक्तियुक्त शब्द) के भीतर, — वरिष्ठानम् सबसे
 लीचे पहला जाने वाला कपडा, — वस्त, — वाच्य 1
 (अप०) बीच में अज्ञान रहता 2 यजुर्भूमि के मध्य
 में बताया हुआ मन्त्र (सत्कार विधि या में प्रयुक्त),
 वासित — वासित्म् (वि०) 1 बीच में समाविष्ट
 2 परिभाषित वा समाविष्ट, अंतर्गत होने वाला,
 पुरम् 1 महान का अन्दरकी भाग जो महिष्मारी के
 उपयोग के लिए निवृत्त किया गया हो, निष्पत्ते के रहने
 का कर्मण, रत्नवाल, — कस्यात् पुरं कश्चित् प्रथिति —
 पंच० १, 2 रत्नवाल में रहने वाली विष्णु, राजी या
 रागिनी, स्त्रियों का समुदाय — विरहपूर्वकम् नृकम् राजवं
 प० ३, अन्वयः, 'रत्नवाल', 'कली अन्तःपुर का अन्तः-
 शक या सरक', 'अन्तः-कम्पकी', 'अन्तः महल की

स्त्रियां रत्नवाल की महिष्मारी, 'अन्तःपुर की
 गर्भ', — कदाचिदन्तःपुरार्थनामत पुरम्, कथयेत् — म०
 २, 'सहृद्यः अन्तःपुर से संबंध रखने वाला, — अन्तरिकः
 कम्पकी — 'अन्तः', — अन्तरिकः (स्त्री०) 1 मनुष्य का
 शरीर या उसका आन्तरिक स्वभाव 2 राजा का मन्त्र-
 ण्य वा मन्त्रिक 3 हृदय वा आत्मा, — प्रथमम् अन्तः
 आन्तरिक विरोध अन्तःपुर, — अन्तःपुरम् — भीतरी
 आवास, — वाच्य (वि०) 1 जिसने आत्माओं को रोका
 हुआ हो — अन्तःपुरार्थिपरमन्त्रो राजराजस्य दधी-
 मेघ० ३, 2 जिसके आत्मा अन्दर ही अन्दर निकल रहे
 हो, अन्तः, — भावना दे० 'अन्तर्मात्र' के अन्तर्गत,
 — अन्तः (स्त्री०) भूमि का भीतरी भाग, — अन्तः ईश-
 मन्त्र, आन्तरिक विरोध, भीम (वि०) भूमि के
 लिये रहने वाला, अन्तः (वि०) उदात्त, व्याकुल,
 मूत (वि०) गर्भ में ही भर जाने वाला, — वाच्यः वाली
 और स्वभाव की रोकना, — बीज (वि०) 1 निहित,
 गुण, अन्तः शिष्या हुआ, 'मन्य हुआने' — उत्तर०
 ३।१२, अन्तर्निहित, — अन्तः — पुरम्, तु०, — अन्तःक,
 वासितः अन्तःपुर का अन्तःशक, — अन्तः पर्वतवती
 स्त्री, अन्तः, — वासित्म् (नपुं) अन्तःपुर, — वाच्य
 (वि०) बड़ा विद्वान्, वेद, आन्तरिक संबंधी या
 चिन्ता, आन्तरिक अन्तः, — वैदि-भी गया और प्रभुता के
 बीच का मूत्रण, — अन्तःपुर (न०) पर के अन्तः का
 कर्मण, भीतरी कोठा, — अन्तःक कम्पकी, — शरीरम्
 मनुष्य का आन्तरिक वा अन्तःक भाग, शरीर का
 भीतरी भाग, शिला विन्ध्य पहाड़ में निकलने वाली
 नदी, अन्तः (वि०) अन्तःचरन, — अन्तः पर्वतवती
 स्त्री, — अन्तः आन्तरिक पीडा, शोक, अन्तः, — अन्तःक
 (वि०) जिसका वाली भूमि के अन्दर रहता हो, —
 नदीमानान् मन्दिना मन्तवतीम् — मय० ३।१२, — अन्तः
 (वि०) अन्तः में भ्रम हुआ, या शक्तिशाली, अन्तः
 भागों और अन्तः अन्तः पुरम् नृकम् नानि सत्पति-
 त्वाम् — मेघ० ३०, (—) आन्तरिक कोष या भद्रा,
 आन्तरिक विधि वा तस्य, — अन्तःक (अव्यय) सेनाओं
 के बीच में, — अन्तः ('अन्तः') अन्तःपुर, अन्तः
 के अन्तः और अन्तः के बीच में स्थित है, और
 वागिन्द्रिय के अन्तः में लपकें से बोले जाते हैं, — अन्तः
 अन्तः हाथों, — अन्तः गुण या दवाई हुई होती, — अन्तः
 हृदय का भीतरी भाग ।

अन्तः (वि०) [अन्तर्गतवागिन्द्रिय-रा क] 1 अन्तः होने वाला,
 भीतरी का, (वि०) बाह्य 2. निकट, समीप 3. संबद्ध,
 शक्ति, प्रिय-अपमन्यन्तरो मम-भारत 4. समाप्त
 ('अन्तर्गत, भी) (अन्तः और अन्तः के विषय में) —
 अन्तः अन्तःपर्वत-या० १।१।५० 5. से विज्ञ, अन्तः (अप०
 के साथ) 6. बाहर का, बाह्य-अन्तः, बाहर रहने वाला

(इस अर्थ में इसके रूप विकल्प से कर्ता० व० ब०, अथा० और अर्थ० एक व० में 'सर्व' की भांति होते हैं) इतिष्-अन्तर्गाथा पुरि, अन्तरावै तन्वर्षे,—रज्जु 1. (क.) भीतर का, अन्तर का—सीधने मुकुलान्तरेषु—रत्न० १२६, (ख.) छिद्र, नुराल 2 आत्वा, हृदय, मन—सद्युक्त पुरुषान्तरविधौ महेश्वरस्य—विक्रम० ३, 3. परवात्वा, 4. अन्तराल, मध्यवर्ती काल या देस—अन्तःकुषान्तरा—विक्रम ४१२६, बृहद्भुजान्तरम्—रज्जु० ३१५४, 'अन्तरे' का बहुधा अनुवाद किया जाता है—मध्य में, बीच में—न मुषालम्बुं गन्तव्यं स्तमान्तरे य० ६११७, 5. स्थान, जगह, देस—मुषालम्बुजान्तरमय-कम्पम् कु० ११४०, दीर्घं श्रय शाक्यस्य नाम्ना दानु-वर्षिणि—रा० शोक मन् करो, —अन्तरम्-अन्तरम्-बृहत् ० रास्ता छोड़ो, 6. पक्ष, अन्तर जाना, प्रवेश, कथन रखना—केचनन्तरे वेदाम् नापदेश—रज्जु० ६१६६ लघ्वान्तरा नाशरवेण्येति गेहे—१६१३, 7 अर्थात् (काय की), निर्दिष्ट अर्थात्,—मामान्तरं देवम्—अमर०, इति तौ विरहान्तरसमी—रज्जु० ८१५६, 8 अक्षर, लघोय, समय—यावत्स्वामिन्दुवृक्षे निवेशयिन्मन्तरान्तेषो यवानि—ना० ७, 9 भेद (दो वस्तुओं के बीच) (सर्व० के साथ या सामान में)—नव मम च समुद्र-पञ्चम्योरिवात्मन्—मालवि० १, यदन्तर मयं-मैत्रराजयोर्वेदन्तं कामसैन्येतेषां—रा०, द्रुप सामन्ता गिहान्तरम्—रज्जु० ८१०, 10 (मार्ग) मित्रता, गेष, 11. (क०) भेद, अन्व, त्वरा, परिवर्तित, बदला हुआ (नीति, प्रकार, इन आदि) (प्याल) गन्धिमे इम अर्थ में 'अन्त' सर्वैव समस्तपद का उन्तर पद रहता है तथा इसका लिंग बही बना रहता है—अर्थात् ननु० चाहे पुर्वपद का कुछ भी लिंग हो—कल्याणम् (अन्याकन्या), राजान्तर (अन्वी राजा), गृहान्तरम् (अन्यद् गृहम्), इमका अनुवाद बहुधा 'अन्व' शब्द से किया जाता है) —इदमव्यक्तान्तरागेपिता—उ० ३, परिवर्तित दशा, (ख) विविध, विभिन्न (ब० ब० में प्रयुक्त)—लोकौ नियम्बन् इवारमदशान्तरेषु—ज० ४१२, 12 विशेषता, (विशिष्ट) प्रकार, विभेद, या किस्म—ब्रीहिलान्तेऽप्यनु—वि०, भीनो राक्षसन्तरे तद्० 13, दुर्दला, आशोच्य स्थान, अक्षरकला, दोष, लघोय स्थल,—ग्रहरेदन्तरे रिपु—अमर०, मुख्य मत्त तावन्तरे—कि. २१२, 14. बयान्त, प्रत्यामूनि, प्रतिमूनि, 15. सर्व भेदता,—गृहान्तरं ब्रवीति विलम्भाधानु—मालवि० ११६ (यह अर्थ ११ सञ्चालनमे ये नी जाना जा सकता है), 16. वस्त्र (परिधान) 17. प्रयोजन, वाषय (मस्ति०)—रज्जु० १६१८२ 18. प्रतिनिधि, स्थानापति, 19. हीन हीना । समय—अक्षया गर्भवती स्त्री,—अ (वि०) अन्तर का रहस्य जानने

वाला, प्राप्त, दूरवर्ती,—मान्तरात्वा विधौ वातु विवेराया न भ्रमते—कि० १११२४,—विज्ञा (अन्तरा रिक्त) परिधि का मध्यवर्ती प्रवेश या दिशा,—रु (इ) क्वः आन्तरिक मानस, आत्मा (मानस के अन्तर निवास करने वाला देवता जो कि उसके सब कार्यों को देखता है)—प्रभवः विधित्वा जति मे अन्व लेने वाला,—स्व—स्वाधिन्, —विश्वत् (वि०) 1 आन्तरिक, आन्तरिक, अन्तहित 2. अन्व-विश्वत्, अन्तर्वर्ती ।
अन्तरगतः (अव्य०) [अन्तर + तसिन्] 1 भीतर, आन्तरिक रूप में, मध्य, 2 के अन्तर (सर्व० के साथ) ।
अन्तरगत्य (वि०) [अन्तर + तस्य] आत्यन्त निकट, आन्तरिक, निकटगम्य, परिष्कृत्य, सत्यतम — अ उन्नी श्रेणी का अक्षर ।
अन्तरयः राव [अन्तर ; अय् — अय्] अक्षरों, बाधा, रुकावट,—स येन स्वमन्तरायां प्रथमि भूतो विधि रज्जु० ३१४५, ६१६५, अन्व से बाधनपरतिन कृष्ण-मागस्य अन्तरावी तपस्विनो ब्रह्मती—वा० (पाठ०)
अन्तरयति [ना० पा०—पर०] 1 बीच में डालना, हटाना, स्थगित करना, भवतु नाशरवेण्यार्थि—उत्तर० ६, 2 विरोध करना, 3 दूर हटाना, पीछे से चलेलना ।
अन्तरयण : अन्तरय
अन्तरा (अव्य०) [अन्तरेण- इण् + डा] 1. (कि० वि० के रूप में) (क) अंतर अन्तर, भीतर की आग (ख) मध्य में, बीच में, विश्वकुरिकान्तरा निष्प० २, रज्जु० १५१०, (ग) मार्ग में, बीच में विषयवा च मातरा—महावा० ७३८ (घ) परीष में, निकट ही, लगभग (ङ) उन्नी बीच में (च) समय मध्य पर, यहाँ वहाँ, कहीं कहीं, कुछ समय तक अब, अभी—अन्तरा पितृसन्तान्तरा एकाम्बुद्वयान्तरा मुकुलामय कुन्नालाय—का० ११८, 2 (कमें के साथ स० अव्य० की भांति) (क) अन्तरा तथा वा च कर्मणश्च—महा० (ख) के चिन्ता, विचार—न च प्रवोद्वन्मन्तरा चापक्य मन्वति वेदते—मुद्रा० ३ । समय—अन्तः छाती—अक्षेष्ट, —अक्षसम्बन्ध—आत्मा या जीवात्मा, जो अन्व और मध्य की अवस्थाओं के बीच में रहता है, विष्णु दे०—अन्तदिम्—केचि-नी (स्त्री) 1.नामाधिन् कराडा, दुर्भीच, इमोरी 2 एक प्रकार की दीवार रज्जु० १२१३, ३—भ्रुवम् (अव्य०) सीमों के बीच में ।
अन्तरावः—अन्तरय मु०
अन्तरात्मन् { [अन्तर स्व्यवधानमीवात् आराति गृह्णाति अन्तरात्मन्] अन्तर + आ + रा + क् रज्जु लक्ष्यं 1. मध्यवर्ती प्रवेश, स्थान, या काळ, अवकाश—इति-माया पुर्वम्याय च विद्योन्तराल दक्षिणपूर्वा—सिद्धा०, अन्तराले बीच में, के मध्य, के बीच, अवकाल के समय, बाध्याच, परिष्कृतोद्भवमान्तराले—उत्तर० १३११,

2. भीतर, अन्दर, भीतरी या मध्यमान 3. विहित
व्यति या समुदाय ।

अन्तरि (री) अन् स्वर्गपृथिव्योर्मध्ये ईश्वरते—इति—
अन्तर + ईश + अन्, पुरो० ह्रस्व. वा) आकाश और
पृथ्वी के बीच का मध्यवर्ती प्रदेश, वायु, आकाशरज
आकाश । सम० —अन्तरम् आकाशरण का अर्थ, —ग,
—अन्तर पत्नी, —अन्तरम् शीत, —शोकः मध्यवर्ती प्रदेश
जो कि एक स्थान लोक समझा जाता है ।

अन्तरित (वि०) [अन्त + इ + क्त] 1. बीच में गया हुआ,
अन्तवर्ती, 2. अन्दर गया हुआ, गुप्त, उका हुआ, पृथक्
किया हुआ, अदृश्य, पादपालरित एव विषयवस्तुयोर्यो
पश्यामि - अ० १, अन्त के पीछे छिपा हुआ, —सारसेन
स्वदेहान्तरितो राजा - हि० ३, पूर्व के पीछे छिपा हुआ
3. अन्दर गया हुआ प्रतिबिम्बित—स्फटिकनिष्पन्नरि-
तान् मृगशावकान् (क) अथकृत्, वाचिन, गोकपा गया—
स्वाच्छान्तरितानि साध्यानि मुद्रा० ६।१५, मोघालम्ब्य
देवतान्तरितपोष्य - पञ्च० २।१३, (ख) पृथक्कृत,
अदृश्य, अदृष्ट, अदृष्ट, अदृष्टान्तरितमाद्यथा दुर्भयायमाना
मात० ८, गवैरन्तरिन शिषे नव मूलच्छायातुरारी
पशो मा० २० (ग) डरा हुआ, विरोहित 4
श्रीलाल अष्ट, विष्णुल, महान् - अन्तरिते गमिन्तु प्रचर-
न्तान्तरि का० ३३ 5 अन्तरितान् भूना हुआ ।

अन्तरीय [अन्तर्मध्ये गता आर्या अन्त २० स०, अन्त
रिन्तम्] भूमि का टुकड़ा जो समुद्र के भीतर चला
गया हो, भूनामिका, द्वीप ।

अन्तरीयम् [अन्तर + ङ] अन्तरीयम् ।

अन्तरीय (अर्थ०) [अन्त + इन् + ङ] 1 [कर्म] के साथ
म० अर्थ० के रूप में] (क) विद्याय, के विद्या, विद्या-
न्तारान्तरायमन्तरेण ध्यायि श्रद्धुमिच्छामि—मुद्रा० 3, न
राज्ञापराधमन्तरेण प्रजासंभवात्सम्युपचरति उपन०
२, मासिक को मरुत्तमाधमन्तरेण मधुवनम् शामि०
१।११०, (ख) के विषय में, अनेक करने हुए, के साथ
में—अथ प्रवन्तमन्तरेण बोधुभोऽन्या इतिराग म०
२, अन्तरीय देवी अमुगनीय-अन्या मत्तुलनाम्भन्त गनीऽन्य
-म० ५, (ग) के बीच में, गया या आन्तरेण
अन्तरीयम् - महा० 2 (वि० वि०) (क) के बीच में,
के अर्थ (ख) हुदय में ।

अन्तर्वंत (वि०) [अन्त + वन् + क्त, निनिर्वा] 1 बीच
अन्तर्वाचिन् में अर्थ में, गया हुआ, (दो अर्थ की भाँति)
बीच में बोधा हुआ, 2 अन्तःस्थित, अन्तःस्थितिय,
विद्यमान, अन्तर्गत 3 गुप्त, आन्तरिक, अन्दर की ओर,
अन्दर, गुप्त, - अन्तर्वन्तमायम् मे अन्तर्वन्तम् परं तव -
हु० ६।१०, शीतिलान्तरान्तरालकट - रघु० १।१५३
मन्वन्तर्वन्तरीय अन्तर्वन्तर्वन्तं मन् - अ० ११८८
4 स्मृतिरथ से गया हुआ, भूना हुआ, 5 अर्थ हुआ

हुआ, शीतल, 6. अदृष्ट । अर्थ०—अन्तर्मा गुप्त
उपमा, —अन्तर्वन्तं अन्तर्वन्तं तु० ।

अन्तर्वा [अन्तर + वा + अङ्] आच्छादन, पोषण, —अन्तर्वा-
मुपयुक्तपकावनीयु—वि० ८।१२ ।

अन्तर्वाचिन् [अन्तर + वा + चिन्] अदृश्य होना, शोकात्मक,
दृष्टि से गुप्त जाना—अन्तर्वाचिना रात्रिका पालि-
शौचम्—काव्य० १०; ०म् वा इ=अदृश्य होना,
शोकात् होना ।

अन्तर्वाचि (स्त्री०) [अन्तर + वा + चि] शोकात् होना,
गोप्य ।

अन्तर्वाचक (वि०) [अन्तर + अन्तर्वीचि—ञ् + क्त] अन्दर की
ओर, आन्तरिक ।

अन्तर्वाचिक [अन्तर + अन्तर्वीचि] 1 अन्तर्वीचि या अन्तर्वीचिक
होना, अन्तर्गत होना, —तेषां वृत्तानामोपलब्धन्तर्वाचि-
काव्य० ८, 2. अन्तर्हित भाव ।

अन्तर्वाचिका [अन्तर + अन्तर्वीचि + अन्तर्वीचि] 1 अन्तर्वीचिक
करना, 2 अन्तर्वीचिकता या चिन्ता ।

अन्तर्वीचि (वि०) [अन्तर + वीचि] आन्तरिक, बीच में ।

अन्तर्वीचिक (वि०) [अन्तर + वा + क्त] 1. बीच में रचना
हुआ, पृथक्कृत, अदृष्ट, गुप्त, छिपा हुआ—अन्तर्वीचिक
अनुपमा वनराज्या—अ० ५, 2. शोकात् हुआ, अर्थ,
अदृश्य—अन्तर्वीचिके अर्थिनि—अ० ५।२; 1 सम०
—अन्तर्वीचि (पु०) विच ।

अन्त (अर्थ०) [अन्त + इ] पाठ में (संब० के साथ),
(स्त्री०—रिति) बरी बहूत (मात्के में) ।

अन्तिका [अन्त + इ स्वायं कन् टाप्] 1 बरी बहूत 2
चुन्दा, अंगठी, 3. एक पीयूष का नाम (सातसाय्य वा
सातसाय्य बीचि) ।

अन्तिक (वि०) [अन्त. सायीव्यभ्याप्यीति—अन्त + इन्] 1
निःशु, सधीय (संब० वा अथा० के साथ), 2
पृथक्ने वाला, 3 टिकाऊ, तक, —अन्तिकता,
सायीव्य, पर्वीत, उपस्थिति, —न स्वकान्ति सकान्तिरुक्—
हि० १।४५, अन्तिक—रघु० २।२४ कल्पे—चर—अ०
१।२४, (वि० वि०) [संब० और अथा० के साथ अथात्
अथाम के अर्थ में] निःकट, पर्वीत में,—अन्तिक आयात्
पामस्य वा—सिद्धा०, सायीव्य या अस्थि में, अन्ति-
केय—निःकट (अर्थ० के साथ) अन्तिकम्—निःकट पाठ
में, मे (अथा० वा संब०) कथावन्त, अन्तिके निःकट,
—रमयन्त्यान्तरान्तिके निःकटे वक्त० १।२०। संब०

—आध्वय पाठ को अन्तु का महाराज केने नाम, महापात्र
महारा (जैना कि बुद्ध के द्वारा जता को दिया
जता है) ।

अन्तिक (वि०) [अन्त—विभक्त] 1. चुपचाप जानेवाला,
2 आचारी, अन्त का, अर्थ—अन्तर्वाचकवर्ती वरमा-
पी न आन्तिक—हि० १. 1 सम०—अन्तिक आचारी

दो में से (पुरुष या पदार्थ) एक, दोनों में से कोई या एक (सब के साथ), सत परिष्कारपूर्वक—
 बालि० १।२, अन्वतरस्याम् (रा का अर्थ० ए०
 व०) किसी तरह, दोनों तरह इत्यादि।

अन्वतरतः (कि० वि०) [अन्वतर+तसिन्] दो में से एक ओर।

अन्वतरेक्षुः (अन्व०) [अन्वतरस्मिन्महृति -अन्वतर+एषु-
 ति०] दो में से किसी एक दिन, एक दिन, दूसरे दिन।

अन्वतः (अन्व०) [अन्व+तसिन्] 1. दूसरे से 2. एक ओर, अन्वतः—अन्वतः, एकतः—अन्वतः—एक ओर—दूसरी ओर, तपनमण्डलदीपितमेकत सततवैश-
 तनोभूतमन्वत --कि० ५।२, 3. किसी दूसरे कारण या प्रयोजन से।

अन्वत्र (अन्व०) [अन्व+त्र] (प्रायः =अन्वस्मिन्—
 सत्रा या विशेषण के बल से) 1. और अन्वत्, दूसरे स्थान पर 2. किसी दूसरे अवसर पर 3. सिवाय, के बिना 4. अन्वया, दूसरी अवस्था में।

अन्वथा (अन्व०) [अन्व+थात्] 1. बरना, दूसरी रीति से, भिन्न तरीके से—वदभाषि न तद्वृत्ति भाषि चेन्न तदन्वथा—हि० १, अन्वथा-अन्वथा एक प्रकार से—
 दूसरे ढंग से, अन्वथाञ्च दूसरी तरह करना, परिचयन करना, बदलना, बिगाड़ना, मिथ्या करना—रथया कदाचिदपि नम बचनं नाग्यथाकृतम् पच० ४, 2. गरी लो, बरना, इसके विपरीत—अन्वथा नास्ति कथनमन्वथा वास्तव्ये ता न पच्येत्—उत्तर० ३, 3. इनके विपरीत 4. विधापन से, झूठपने से—किमन्वथा मृदितिमी मया विभाषितपूर्वा—विक्रम० २, 5. गलती से, भ्रम से, बुरे ढंग से जैसा कि अन्वथा मिद्ध दे० नीचे। सम०—अनुपस्थातिः (स्त्री०) दे० अर्थापति,—कारः परिचयन, बदल बदल, (—कारञ्) [कि० वि०] भिन्न तरीके से, भिन्न ढंग से—पा० ३।४।२७,—क्यातिः (स्त्री०) धारिण की गलत अवधारणा, सामान्य रूप से (दोष-नाशक में) मिथ्या अवधारणा,—भावः अवलंबन, परिचयन, भिन्नाडा,—वाचिन् (वि०) भिन्न रूप से या मिथ्या बोलने वाला, (विधि में) अपकायी मात्री—
 कृति (वि०) 1. परिवर्तित 2. बरना हुआ 3. भावा विद्ध, सबक सबेसे से विज्ञान,—वेध० ३,—सिद्ध (वि०) जो मिथ्या ढंग से प्रदर्शित या प्रमाणित किया गया हो, (न्याय में) उस कारण को कहते हैं जो सत्य न हो, तथा जो केवल मात्र आकस्मिक एव दूरगामी परिस्थितियों का उत्प्रेक्षक करे,—सिद्धम्,—सिद्धिः (स्त्री०) मिथ्या प्रदर्शन, अनावश्यक कारण, आकस्मिक या केवल मात्र सत्पूर्वी परिस्थिति—भाषा० प० १६,—स्तोत्रम्—अध्योषित जाना, अर्थ 1।

अन्वथा (अन्व०) [अन्व+था] 1. किसी दूसरे समय, दूसरे

अवसर पर, किसी दूसरे मामले में—अन्वथा भूषण पुरां क्षमा लब्धेव योपिनाम् वि० २।४६, रघु० १।१७३, 2. एक बार, एक समय पर, एक अवसर पर, 3. किसी समय।

अन्वद्यौष (वि०) [अन्वदा+द्य] 1. किसी दूसरे से संबंध रखने वाला 2. दूसरे में रहने वाला।

अन्वद्भिः (अन्व०) [अन्व+द्भिः] किसी दूसरे समय (= अन्वदा)।

अन्वदुष्—दु -य (वि०) [अन्व इव पश्यति—अन्वदुष्+स, विद्मन्, कञ् वा आत्थ्वञ्] परिवर्तित, असाधारण, अजीवा।

अन्वद्य (वि०) [न० व०] न्यायग्रहित, अनुपपन्न,—व. 1. कोई न्याय रहित या अवैधकृत्य—दे० 'न्याय', अन्वद्येन अन्वद्य के साथ, अनुचित ढंग से 2. न्याय का अभाव, अधिच्युत का अभाव 3. अनियमितता।

अन्वद्यिन् (वि०) [अन्वद्य+णिन्] न्यायग्रहित, अनुचित।

अन्वद्यम् (वि०) [न० त०] 1. न्याय रहित, अवैध 2. अनुचित, अज्ञानमयी 3. अप्रामाणिक।

अन्वद्यु (वि०) [न० त०] दोषग्रहित, मृदिति, पूर्ण, समस्त सकल,—अधिक न मृदिति न आद्यकला से अधिक। सम०—अन्व (वि०) निर्दोष अंगे वाला।

अन्वद्युः (अन्व०) [अन्व+एषु नि०] 1. दूसरे दिन, जगते दिन, अन्वद्युःसामान्यतरस्य भाव जिज्ञासमाना—रघु० २।२६, 2. एक दिन, एक बार।

अन्वद्यौष्य (वि०) [अन्व—कर्मव्यतिहारे द्विचम्, पूर्वपदे मुच्यते] एक दूसरे को, परस्पर (संबन्धमयी भाति) प्रायः समस्त पदों में, कलकः पारस्परिक झगडा, इसी प्रकार 'वशात्,—अन्व्यु (अन्व०) आपस में। सम०—आभावः पारस्परिक मत्सा का न होना, अभाव के दा प्रकारों में से एक, ('मेव' का समानार्थक),—आन्व्य (वि०) आपस में एक दूसरे पर नियंत्रण, (—य) आपस में या बदले की निर्भरता, कार्यकारण का (न्याय में) हलनेतर नश्व,—उक्तिः (स्त्री०) बालात्प,—अन्व्यः पारस्परिक द्वेष या शत्रुता,—विधान साक्षीदाने द्वारा रिच्य का पारस्परिक विभाजन (बिना किसी ओर पक्ष के सम्मिलित हुए),—कृतिः (स्त्री०) किसी बस्तु का एक दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव,—व्यतिकारः—संबन्ध इत्येतर किधा या प्रभाव, कार्य कारण का पारस्परिक नश्व।

अन्वद्य (वि०) [अनुगत अशुभ इतिवचन - य० स०] 1. दुष्ट 2. नुग्न बाप में माने वाला,—अन्व्यु (अन्व०) 1. बाप में, परन्तु 2. तुल्य बाप में, मानने, नीचे पा० ३।२१।

अन्वद्यु (अन्व०) [अन्+अन्व+विच्यत्+ए० व०] 1. बाप में, 2. पीछे से 3. नीचीभाव से व्यवहृत, अनुकूल

रूप में, अन्वयपूर्वक, — भाष्यम्, — भाष्ये निष्ठापूर्वक व्यवहृत होता 4. (कर्म० के साथ) परचात् हात्म् अन्वयवती मन्वयवतीपरम् — १५० २।१९।

अन्वयम् (वि०) [अनु + प्रञ्च + चिन्त्] पीछे जाने वाला, पीछा करने वाला, अनुचित पीछे की ओर, पीछे से।

अन्वयः [अनु + इ + अच्] 1. पीछे जाना, अनुगमन, अनुगामी, परिजन, सेवकवर्ग—का त्वमेकात्मिकी और निरन्वयप्रमे वने-भट्टि० ५।१६, 2. साक्षर्य, मेकजोल, मन्वय, 3 बन्धन में शब्दों का स्वाभाविक क्रम या मन्वय, व्याकरण, विषयक क्रम या संबंध, नात्पर्याय्या वृत्तिमातृ यदापान्यवबोधने—सा० ३०, शब्दों का युक्तियुक्त मन्वय 4 नात्पर्य, अभिप्राय, प्रयोजन 5 जानि, कुल, वय—रघुनामन्वय वन्वये—१५० १।९, १।२६, ६ वसत, समानि, बाद में जाने वाली समान-नाम्न शून्य अन्वय—वा० १।११०, 7 कार्यकारण का नर्कमगत संबंध, नर्कमगत वैगन्धर्व, अन्वयान्त्य यतोऽन्वयान्तरत्न—भा० ८, (त्या० में) [हेतुसाध्यव्यो-व्यतिरन्वय]—भा०गीय अनुमितिवाद में साथ और हेतु की मगत तथा अपरिहार्य महकविता का वर्णन। मन्व०—आगत (वि०) आनुपूर्वात्मिक—अः वसतवन्तो प्रमेना, १५० ६।८, —व्यतिरेकः (की या कप) 1 विषयक और निषेधात्मक प्रतिज्ञा, सहमति और वैधर्म्य ज्ञानि निष्ठा 2 निवम और अपवाह, आशानि (स्त्री०) स्त्रीकारात्मक प्रतिज्ञा वा सहमति, अर्थात्कारमुक्त सामान्यपर ।

अन्वयर्ष (वि०) [अनुगत अर्थम्—शा० ४०] शब्द की व्युत्पत्ति के द्वारा ही जिसका अर्थ आगामी से जाना जा सके भाष के अनुकूल, साधक—तथैव सोऽनुग्रहन्वयो राजा प्रकृतिरज्ज्वान्—१५० ४।१३, अन्वयोर्षैवपुत्रवरा—कि० १।१६४। मन्व०—ब्रह्मण्य शब्द के अर्थ की शब्दय स्विकार करना, (विप० इद्)।—सखा 1 उपयुक्त नाम, एक पारिभाषिक नाम जो अपना अर्थ स्वयं प्रकट करता है, 2 यथाच नाम जिसका अर्थ स्पष्ट है।

अन्वयवर्णनम् [अनु + अर्थ + क् + ल्यट्] क्रमपूर्वक चारों ओर बन्वरेता ।

अन्वयवर्णनं [अनु + अर्थ + क् + ल्यट्] 1. शिथिल करना 2 इच्छानुसार व्यवहार करने देना, कामचागनुमा, 3 विच्छाचरितता ।

अन्वयवर्णनं [अनु + अर्थ + लो + क्त] (वि०) समुक्त, मन्वय, वया हुआ ।

अन्वयवर्णनं [अनु + अर्थ + अच् + चञ्] जाति, कुल, वय ।

अन्वयवर्णनं [अनु + अर्थ + ईञ् + अच् + टाप्] विहाव विचार ।

अन्वयवर्णनं [अनुयाता अष्टकान्—शा० ४०] भाष्यशीर्ष वाल

की युक्तिवा के परचात् जाने वाले वीच, नाम वीच फाल्गुन के कृष्णपक्ष की नवमी ।

अन्वयवर्णनम् [अन्वयवर्णनं + अच्] अन्वयवर्णन के विन होने वाला भाव या ऐसा ही कोई वृत्ता अनुधान । -

अन्वयवर्णनम् (अन्व०) [शा० ४०] उत्तर इतिवच विद्या की ओर ।

अन्वयवर्णनम् (अन्व०) [अनु + अर्थ—शा० ४०] विन-व-विन, प्रति विन ।

अन्वयवर्णनम् [अनु + आ + ध्या + ल्यट्] बाद में उल्लेख करना, या यिनमा, पूर्वोक्त का उल्लेख करते हुए व्याख्या करना ।

अन्वयवर्णनम् [अनु + आ + चि + अच्] 1. प्रचलन कार्य का कथन करके वीच कार्य की उक्ति, मुख्य पदार्थ के साथ वीच पदार्थ का बोधना, 'च' विधात का एक अर्थ—सो विधातयट या धानय—वहां पर जिसके के प्रचलन कार्य—(विधातं बोधते जाने) के साथ एक वीचकार्य (गाय का के आना) भी बोध विधात यथा है 2. इस प्रकार का स्वयं एक पदार्थ ।

अन्वयवर्णनम् (अन्व०) [अनु + आ + चि + अच्] ('उपयवे' की वांति इसका प्रयोग 'क' के साथ होता है) पूर्वक की सहायता करना, (यह विकल्प से उपयवे सज्जा जाता है) 'कृष्य, वा 'कृष्या' ।

अन्वयवर्णनम् (वि०) [अनु + आ + चि + क्त] 1 बाद में या के अनुसार, कहा हुआ, पुनः काम पर लगता हुआ 2 वदितया, वीच महत्त्व का ।

अन्वयवर्णनम् [अनु + आ + चि + अच्] एक कथन के परचात् वृत्ता कथन, पूर्वोक्त की पुनर्कथित ।

अन्वयवर्णनम् [अनु + आ + ध्या + ल्यट्] अनिहोन की जनि में लभिधार रचना ।

अन्वयवर्णनम् [अनु + आ + ध्या + क्त] (व्यवहारविधि में) 1. अमानत, किसी तीसरे व्यक्ति के पास बरोहर या प्रति-युति बना करना जिससे कि समय पर वह वधाच स्वामी की वीची वा लके 2 वृत्तरी बरोहर 3 अन्वयवर्णन विन्ता, सेव, पचात्ताय ।

अन्वयवर्णनम्-अन्वयम् [अनु + आ + ध्या + अच्] स्वार्थे क्ण च) एक प्रकार का स्वी-चन की विहाव के परचात् चि-कुल वा पतिपुत्र की ओर से वा उसके अपने सहायियों की ओर से उपहार स्वरूप दिया जाने—विधातान्तरतो वच्य मन्वय वृत्तुकालिचया, अन्वयवे तु उद्गृह्य मन्वय चिन्त् (अच्) वृत्तात्ताय ।

अन्वयवर्णनम्—अन्वयम् [अनु + आ + र्ण + अच्], ल्यट् वा मूच च) स्वार्थे, उपयवे, विधेयताया बखानान (इह का अनुच्छाता) की पुनित संस्कार के वृत्तक का अतिकारी बनाने के लिए स्वार्थ करना ।

अन्वयवर्णनम् [अनु + आ + र्ण + ल्यट्] स्त्री का अपने वनि के लय के साथ चिन्ता पर देना ।

अन्वयान्म् [अनु+आप्+स्युट्] 1. सेवा, परिपूर्णा, पूजा
 2. हुतरे के पीछे आसनबद्ध करना 3. शेष, शोक ।
 अन्वयार्थः (—यन्) ,—अन्वयम् [अनु+आ+इ+स्युत्
 स्वार्थे कम्] पितरों के सम्मान में द्रव्यबन्धना के दिन
 किया जाने वाला मातृक भाव ।
 अन्वयादिक (वि०) [स्वो+—की] दैनिक, प्रतिदिन का ।
 अन्वयादित्—तु० अन्वयाधेय

अन्वित (वि०) [अनु+ए+क्त] 1. अनुगत, अनुष्ठित, सहित,
 युक्त, 2 अधिकार प्राप्त, रखने वाला, आहुत, प्रमा-
 नित (करण के साथ या समाम में) 3. सयुक्त, जोड़ा
 हुआ, समागत 4. व्याकरण की दृष्टि से सयुक्त ।
 सम०—अर्थ (वि०) प्रकारण में ही जिसके अर्थ आसानी
 से समझ में आ सकें,—अपवाद—अन्वितस्वभावः
 यीमांसको का एक सिद्धांत जिसके अनुसार वाच्य में
 शब्दों का अर्थ सामान्य या स्वयं रूप से नहीं होता,
 बल्कि किसी विशेष वाच्य में एक शब्द से सबद्ध होकर
 शब्द का जो अर्थ निकलता है, वह ज्ञाता है । दे०
 काव्य० २, अन्वितस्वभाववाच्य की वही सिद्धांत है ।

अन्वीअन्वन्—आ [अनु+ङ्+स्युट्, अच् का] 1 शोक,
 दुःखता, शोचणा 2 प्रतिदिन ।

अन्वीत्—तु० अन्वित ।
 अन्वुचम् (अव्य०) [आ+सं०] एक शब्द के परप. न् हुनरी
 शब्द ।

अन्वेच—अवाच्—आ [अनु+एच्+अच्, स्युट् वा ङित्या
 टाप्] दंडना, सोचना, देखभाल करना—यम नृत्या-
 न्वेषामन्मकर हुता—श० १।२४, रत्नाम्बेचणवशाया
 द्विचां रम्० १२।११ ।

अन्वेचक, अन्वेचिन, अन्वेष्ट (वि०) [अनु+एच्+स्युल,
 गिति, तुच् वा] दूढ़ने वाला, सोचने वाला, पूछ ताछ
 करने वाला ।

अन् (स्त्री०) [आप्+क्विप्+ह्रस्वश्च] (पनिष्ठित
 भाषा में केवल ब० ब० में ही रूप होते हैं—यथा
 वाय, अप, अद्भि, अद्भुष २, अयाम्, अयु, परन्तु
 वेद में एक वचन और द्विवचन ही होते हैं) पानी, साँप
 शैब स्युतेदस्वि—मन्० २।५०, तस्वी बहुधा तुष्टि
 के पात्र गर्भों में सब से पहला तत्त्व समझा जाता है
 यथा—अप एव समर्थातो तासु बीजवसानान्जत्—मन्०
 १।८, श० १।१ परन्तु मन्० १।१०८ में कलाया गया
 है—कि मन, आकाश, वायु और ओष्ठि अथवा अग्नि
 के परधान्तेजस्य वा ओष्ठिसे जलों की उत्पत्ति हुई ।
 सम०—अट् जलचर, जलीय जन्तु,—वसिः 1 जल
 का स्वामी बचन 2 समुद्र, हुतरे यमस्त यवो को शब्दों
 के अन्तर्गत देखो ।

अन् (अव्य०) 1 (वातु के साथ जुड़कर इसका निम्नांकित अर्थ
 होता है)—(क) से दूर, अथवाति अपनयति (ख)

ह्रास,—अपकरोति-दूरी तद्दृ से या गलत होय से
 करता है (ग) विरोध, निषेध, प्रत्याख्यान—अपकर्षति
 अपचिनोति (घ) धरं—अपचह, अयु (मेर०),
 2. त० कीर ब० सं० का प्रथम पद होने पर इसके
 उपयुक्त सभी अर्थ होते हैं—अपयानम्, अपयाज्यः—एक
 दूरा या अष्ट शब्द,—भी निश्चर, अपयारः अयानुष्ट
 (विप० अनुराग), अधिकारा स्वामी पर 'अप' को
 निम्न प्रकार से अनुरित कर सकते हैं—'दूरा' अथवा
 'अष्ट' 'अशुद्ध' 'अयोग्य' आदि 3. पृथक्पृथक् अव्यय
 (अवा० के साथ) के रूप में—(क) से दूर—यत्—यत्
 प्रत्ययलोकेभ्यो लकारा वर्तमानेभ्यं—अष्टि० ८।८७
 (ख) के बिना, के बाहर—अपहरे मयार—सिद्धा०
 (ग) के अपवाद के साथ, सिद्धाव—अप विगतोभ्यो
 वृष्टो देव—सिद्धा०,—के बाहर, को छोड़कर, इन
 वाक्यों में 'अप' क साथ कि० वि० (अव्ययीभाव
 समास) भी बनते हैं—विष्णु मसारः—विना विष्णु
 के, विगतोवृष्टो देव—अर्थात् विगतों को छोड़कर अप
 निषेध और प्रत्याख्यान को भी जलता है—'काम,
 'काम् ।

अपकरोत्यम् [अप+ङ्+स्युट्] 1 अनुचित रीति में कार्य
 करना 2 अनुपयुक्त काम करना, शोच पहुँचाना,
 दुर्बलहृत्तर करना, कष्ट पहुँचाना ।

अपकर्तु (वि०) [अप+ङ्+तृच्] हासिकारक शब्द
 वाचक, (पु०—तीं) अच् ।

अपकर्षम् [प्रा० सं०] 1 च्छेप में निस्तार 2 हृत्कर्षाशोच,
 —हलन्त्यापकर्म ब०—मन्० ८।४, 2 अनुचित,
 अनुपयुक्त कार्य, दुष्कर्म, दुष्कृत्य 3 दुष्टता, हिंसा,
 उत्पीडन ।

अपकर्ष [अप+ङ्+अच्] 1 (क) नीचे की तर
 सोचना, कम करना, घटाना, हासि, मास—नेत्रापकर्षं
 —वेणी० १, ह्याम् (ख) अनाह्वर, अपयान (ग) अर्थों
 में विप० उत्कर्ष) 2 बाद में जाने वाले शब्दों का पूर्व-
 विचार (अवा० काव्य और यीमाता आदि में) ।

अपकर्षक (वि०) [अप+ङ्+स्युट्] कच करने वाला
 घटाने वाला, में निकासने वाला—शोषामन्मय (काव्य-
 मय) अपकर्षक—मा० ४० १ ।

अपकर्षन् [अप+ङ्+स्युट्] 1 दूर करना, लीचकर
 दूर करना या नीचे ले जाना, अस्मिन् कृत्वा, निकास
 देना 2 कम करना, घटाना 3 दूरने का स्थान ले
 लेना ।

अपकार [अप+ङ्+अच्] 1 हासि, शोच, क्षापान,
 कष्ट (विप० उपकार) उपकर्षार्थ्या मन्त्रिं निषेधा-
 पशार्गिणा, उपकाराण्युपकारागैश्च सन्तु 2 दूरने
 का दूरा चिन्तन, हुतरे को शोच पहुँचाना 3 कुष्ठता,

हिला, उत्पीडन 4. गिरा हुआ, नीचे कर्म । सम०—
अभिन् (वि०) देवी, दुरात्मा, - विद् (स्त्री०-जीः)
—सद्यः गालिपी, अस्सेना शयक तथा अपमानजनक
शब्द ।

अपकारक, -कारिन् (वि०) [अप + कृ + क्त्वं चिनिर्वा]
जति पहुँचाने वाला, अनिष्टकारी, कष्टप्रद, अहितकारी,
पशु० ११५, सि० २१३०-कः, - ही बुरा करनेवाला ।

अपकृष्टि - तु० अपकार, इसी प्रकार अपकृष्टा - बाघात,
बोट, अनिष्ट, कुकृत्य, श्लेषपरिचोष ।

अपकृष्ट (वि०) [अप + कृष्ट + क्त] 1 शीघ्र कर बाहर
किया गया, दूर हटाया गया 2. नीचे कमीना, अपघ
(वि०) उन्कृष्ट - न कश्चिद्दर्शनामपघमपकृष्टोऽपि
भजने - श० ५१०, - ष्टः कीना ।

अपकीर्णाली - समाचार, सूचना
अपचित (स्त्री०) [अच् + पच् + क्तिन्] 1 कल्पावन,
परिष्कारना का अभाव 2. अपघ, अजीर्ण ।

अपकम्पः अय - कम् + घञ्] 1 दूर जाने जाना, पलायन,
पीठ दिवना, 2 (तमय का) बीतना, - (वि०)
1 कमरहित 2. अनियमित, गलन काम वाला ।

अपकम्पय कम्प [अप + कम् + ल्यट्, घञ् वा] पीछे
मुड़ना हटना, उठाना, भागना ।

अपकील [अप + क्लृ + घञ्] गामी, मर्त्याना ।

अपक्ष (वि०) [अ० व०] 1 पर्याय में या उठान की शक्ति
में रहित, 2 किसी पक्ष या दल में अपघ न रखने वाला
3 त्रिनके (मित्र सम्बन्ध न हो 4 निष्पत्त, पक्षरहित ।

अपक्षयः [अय + क्षि + अच्] छीजना, ह्राम, नाश ।

अपक्षेपः शेषव्यम् [अप + क्षिप् + घञ् ल्यट् वा] 1 दूर
बचना या नीचे फेंकना 2 फेंक देना, नीचे रखना,
बैधानिक दर्शन में निश्चित पाँच कर्मों में से एक कर्म,
दे० कर्मन् ।

अपराध [अपरि (शेष) कर्मणि गृह्णाज्य] जिसने बर्-
कना प्राप्त कर ली है, दे० अपराध ।

अपराध, मरणम् [अप + मृ + अप, ल्यट् वा] 1 दूर
जाना, हट जाना, विद्वान, मरणात्मा मायमया - हि०
५६५, 2 मिरना, हटना, ओझल होना - पुराणपया-
पगमादन्तर - रघु० ३१७, 3 मृत्यु, मरण ।

अपगत (स्त्री०) [अप + गत् + क्तिन्] दुर्भाग्य ।

अपघर [अप + गृ + अच्] 1 निवा, मर्त्याना 2 निष्क,
मर्मक ।

अपघ्नित (वि०) [अप + घ्न + क्त] (बादलकी भाँति)
गर्जनाकुण्ड ।

अपघ्नः [अप + घ्न + क्त्वं] 1 न्यूनता, कमी, ह्रास, छीजन,
मिगकट (आल० भी) - कक्षापघय दश० १९०, 2
नाश, क्षयकलता, दोष ।

अपघ्नितम् [अप + घ्न + क्त] दोष, दुष्कृत्य, दुष्कर्म—
बाह्योत्पत् प्रसक्त मनापघ्नितोत्पत्तितो दोषव्याम्—
श० ५१९ ।

अपघ्नतः [अप + घ्न + घञ्] 1 प्रत्यान, मृत्यु—निवृत्तो-
वपक कांतकापघ्नार निर्विघ्न—दश० ७२, 2 कमी,
अभाव 3. दोष, अपराध, दुष्कर्म, दुराचरण, दुर्म

—राज्यमायुते कश्चिदपघ्नार प्रवर्तते—रघु० १५१७

4. हानिकर या कष्टप्रद आचरण, भाँति 5. दोष
या कमी—नापघ्नानामन् स्वधितिक्या—सि० १४१२,

6 अत्यापघ्नकर या अपघ्न—कृत्वापघ्नारोऽपि परैता-
निष्कृतविधिम्, अनाप्य कुले कोप प्राप्ते काले नदी
यथा । सि० २१८५, (यहाँ अ० भी बाघात या अति
का अर्थ रखा है) ।

अपघ्नारिन् (वि०) [अप + घ्न + क्तिन्] कष्ट पहुँचाने
वाला, दुष्कर्म करने वाला, दुष्ट, बुरा ।

अपघ्नितः (स्त्री०) [अप + घ्न + क्तिन्] 1 हानि, छीजन,
नाश 2 अघ 3 शयनित, समृद्धि, पाप का प्राव-
रिचत 4 तन्मानन, पुजन, भावर प्रवर्तन, पूजा—विहि-
तापघ्नितमहीमृता - सि० १६१९ (इसका अर्थ 'हानि'
और 'नाश' भी है) ।

अपघ्नय (वि०) [अ० व०] बिना छाते के, छतरी
के बिना ।

अपघ्नय (वि०) [अ० व०] 1 छायारहित 2 चमक-
रहित, धूमना—कः जिसकी छाया न होती हो,
अपघ्न परमात्मा, तु० नै० १४२१, शिव प्रजना
कियदस्य देवास्तथा नलस्यासि तथानि नैवान्,
द्वीरयन्तीष तथा निरैषि सा (छाया) नैषधन प्रिद-
सेषु तेषु ।

अपघ्नयेः - छेदनम् [अप + छिद् + घञ्, ल्यट् वा] 1
काट कर दूर कर देना, 2. हानि 3 बाधा ।

अपघ्नयः [अप + घ्न + अच्] हार, पराभव ।

अपघ्नतः [अप + घ्न + क्त] कुपुत्र, की गुणो की दृष्टि
में माता पिता में हीन हो—आनुस्वगुणो जातस्वन्-
जात पिनु सम, अतिजातोऽपि कस्तन्मादपघ्नतोऽ
घमाघय - मुद्रा० ।

अपघ्नन् [अप + अ + ल्यट्] मुकरना, गुप्त रखना ।

अपघ्नोक्तम् [अ० व०] जिसका पक्षीकलन न हुआ हो,
पशुमहान्तो का सुकर्म रूप ।

अपघ्नी [अघ्नः पट् पटी—न० त०] 1 कपड़े का परां
या बीमार विशेष रूप से 'कनात' को तम्बू की चारो
ओर से बेर लेती है 2 परां । शब्द०—शेषः
(अपघ्नोक्तः) परां के एक ओर गावन. शेषः (=

अकल्पात्) अघ्नी के परां को एक ओर करके, (यह
शब्द बहुधा रमयक के विदेशार्थ प्रयुक्त होता है तथा
अघ, उतापकी या चबराहट के कारण हृद्यबाहट के

काच पाच के प्रवेश को द्रव्य कहते हैं वैया कि विना किसी वृत्तिका (ततः प्रविष्टि आदि) के, पाच अकस्मात् पर्यं को उठा कर प्रविष्ट होता है ।

अच्छु (वि०) [न० त०] 1. क्षुब्ध, अन्न, अंबुधि, मोक्ष, 2 जो बोलने में क्षुब्ध न हो 3 रोपी ।

अच्छ (वि०) [न० त०] अन्न + पद + अच् । पढ़ने में असफल, न पढ़ने वाला, दुष्ग्राहक तु०, 'अच्छ' ।

अच्छिन्त (वि०) [न० त०] 1 जो विचार या वृत्तिमान् न हो, मूल, अनादी-विभूषण बौद्धपरिचयानाम् - अर्जु० नी० ७, 2 जिसमें कुशलता, दृष्टि तथा गुणों को सहायता करने का अभाव हो ।

अच्छ (वि०) [न० त०] जो किसी के लिए न हो, --जीविकाय चापये-शा० ५३११९ ।

अक्षरार्थम् [अक्ष + त् + अक्षर] 1 उपवास रखना (स्नाना-व्यायामं) 2 तृप्ति का अभाव ।

अक्षरान्नकः [अक्ष + तन् + अन्न] एक प्रकार का रोग जिसमें अकस्मात् अच्छी आती है, दौरे पड़ते हैं तथा पेशियों में सिक्कन होती है ।

अक्षति-लिक (वि०) [न० व०] जिसका स्वामी न हो, जिसका प्रति न हो, अविवाहित ।

अक्षतीक (वि०) [न० व०] जिसकी पत्नी न हो ।

अक्षतीचंय [प्रा० सं०] अक्षरकृत तीर्थयं । बुरा तीर्थस्थान ।

अक्षयम् [न पतति पितरान्जनेन - अक्ष + यत् + यत्] 1 सन्तान, बच्चे, प्रजा, मंगल (मनुष्यों की और वस्तुओं की), बेटा या बेटा, एक ही कुल में उत्पन्न पुत्र, पौत्र तथा प्रपौत्र आदि - अक्षय पौत्रप्रथिति गोत्रम् - शा० ४। २।६२, -अपर्ययिन् नीवारमापयथोर्ध्वीर्मुने - रघु० १।५०, 2 अपत्यवाचक प्रत्यय । सम० - काम (वि०) सन्तान का इच्छुक, -कः शक्ति, -कथयः अपत्यवाची प्रत्यय, -विकल्पिन् (वि०) सन्तान का विधेता, बहु पिता जो धन के साधन से अपनी कन्या को भावी जायाता के हाथ बेच देता है, --अक्षुः 1 मेकडा 2 साप ।

अक्षय्य (वि०) [व० व०] निर्लेख, बेहया, --या, --वचन लज्जा, हया ।

अक्षयिण्य (वि०) [अक्ष + यत् + इण्य] सर्वांग, लकीका ।

अक्षयस्त (वि०) [अक्ष + यत् + स्त] बुरा हुना, अक्षयी, तृणाप्यस्त --तरणों से विक्रिय कीत ।

अक्षय (वि०) [न० व०] अपरिचित, विना सङ्क के -कम् (अक्षयः) [न० त०] जो मार्य न हो, माय का अभाव, कुमार्ग (वाक्य०), (आक्ष०) नैतिक अनिमित्तता या स्वच्छ, दुष्कर्म या कुमार्ग -अपये पदमर्षयति हि भूतवनादींश्च रक्षोमिच्छिता - रघु० १।७४, 1 सम० -वर्षिण्य (वि०) कुमार्ग पर चलने वाला, विषयवाची ।

अक्षय्य (वि०) [न० त०] 1 अक्षय्य, अनुचित, असंगत, वृत्तित-अकार्य कार्यवत्कामपथ्य पथ्यवृत्तितम् - रा०

2. (आवृ० में) अक्षय्यमकर, रोगजनक (वैया कि योजन, पध्याध्य) अन्त्यापयति कमानध्यभुवं न रोगा - हि० ३।१११७, 3 बुरा दुर्भाग्यपूर्ण । सम० --वर्षिण्य (वि०) कष्टप्रद ।

अक्षयः [न० व०] विना पैर का, - इम् [न० त०] 1. आवास या स्थान का अभाव, 2 सक्षय स्थान वा अनुपयुक्त भावास 3 ऐसा शब्द जिसके साथ अक्षी विभक्ति-विक्रम न हुआ हो 4 अन्तर्गत । सम० - अक्षर (वि०) सलम, समपत्त, समीपस्थ (-रूप) सामीप्य, सलसलता ।

अक्षयिण्यम् (अक्षय०) [अक्षय० त०] बाढ़ भोर ।

अक्षयम (वि०) [व० न०] आयमवयव से होने ।

अक्षयस (वि०) [व० त०] यस की सम्या से हुए ।

अक्षयान्यम् - अक्षयम् [अक्ष + दा + अक्षय् अक्षयं कन् + यत्] 1 पवित्रावरण, मान्य योजनचर्चा 2 उत्तम कार्य, सर्वोत्तम कार्य (कदाचिन् 'अक्षयान्यम्' के अक्षय पर) 3 अमी-भाति पूर्ण रूप से किया गया कार्य, निष्पन्न कार्य ।

अक्षयार्थः [न० त०] 1. कुछ नहीं, बला का अभाव 2 वाक्य में प्रयुक्त गर्दो का अर्थ न होना -अक्षय-त्रिपि वाक्याय सत्यन्तसति-काव्य० 2 ।

अक्षयिण्यम् (अक्षय०) [अक्षय० त०] मध्यकाली प्रदेश न, परिधि के दोनो प्रदेशों के बीच ।

अक्षयवस्त [प्रा० सं०] पिपात्र भूत वस्तु ।

अक्षयैः [अक्ष + हिच् + अक्ष] 1 बचनम् उपदेश नाम का उल्लेख करने हुए सभेत्त करना - ईश्वर व्यासो यद्वदतुरपदेशे - दश० ६० हेत्यपदेशान् प्रतिज्ञाया पुनश्चैन नियमनम् न्या० शा० 2 बहाना, छल कारण, आश्र - केनापदेशेन पुनराश्रय मन्त्रायाम् शं० २, रसापदेशान्मिच्छावर्तना रघु० २।१ 3 काग्यों का बर्चन, तक प्रस्तुत करता भारतीय व्याख-वाद के पाँच अंगों में से दूसरा - हेतु - (बीमे० के अनुसार) 4 तिलाणा, 1 चतुः 5 स्थान दिशा 6 अमीकृति 7 प्रसिद्धि यत् 8 छल ।

अक्षय्याम् [प्रा० सं०] बुरा इच्छ, बुरी वस्तु ।

अक्षय्यार्थम् [प्रा० सं०] अक्षय का उल्लेख आसली हुए के अतिरिक्त कोई हुआ प्रवेश हुए ।

अक्षय्य (वि०) [व० त०] जिसमें बुरा न हो, पुनर्प्राप्त । अक्षय्याण्यम् [प्रा० सं०] दूर विचार अनिष्ट चिन्तन, सम ही वचन कायना ।

अक्षय्यत [प्रा० सं०] अक्षय्यन निराश्रय, लाक्षण । सम० - अक्षयिण्य पतिन तथा निम्न भाति में उत्पन्न मनु० १०।२१, ४६ ।

अक्षय्यस्त (वि०) [अक्ष + अक्षय + स्त] 1. सिक्किका वया,

अतिशय, वृत्ति 2. कर्णन रूप से या बुरी तरह पीना हुआ, 3 लयत, —रुतः कुट्ट, पाबी, जिसमें दूरे भले की सहाय न हो।

अपवयः [अप + ती + अप्] 1. से जाना, हटाना, विरा-
करण करना 2 दुर्नीति या दुराचार 3. क्षति, अप-
कार—ततः सपलापयनस्यपराशुमयसफुरा—सि०
२।१४।

अपवयम् [अप + ती + स्तुट्] 1. से जाना, हटाना—नाति
अपवयननाय—स० ५।६, 2. आरोप्य देना, इमान
करना 3 अथ परिशोध, करीब्य का निर्वाह।

अपवय (वि०) [अ० स०] विना नाक का,—अतिकीर्ष्य-
ब्रह्म्य अकारापनसं मुखम्—अट्टि० ४।११।

अपवयति (स्त्री०) } [अप + वृत् + क्तिन्, वञ्, स्तुट्
अपवय-नीचम् } वा] हटाना, से जाना, नष्ट करना,
प्रायश्चित्त, (पाप का) परिशोधन—पापामावपनुतये
—मनु० १।१२।५।

अपवयः [प्रा० स०] अमृष्ट पलन, बुरी तरह पकना, पड़ने
में अमृष्टि,—दादमापपाता अस्य जाना।

अपवय (वि०) [अ० स०] सामान्य पापों के उपयोग से
वृत्ति, नीची जाति का।

अपवयिष्ठः [पापप्रोक्तान्दं बहिष्कृतं—अपवय + इत्] }
किन्ती बड़े पाप या अपराध के कारण जाति से बहि-
ष्कृत होकर जो अपने सहायियों के साथ सामान्य
पापों में मान-मान के योग्य नहीं है।

अपवयम् [अप + वा + स्तुट्] अथेय, बुरा देय।

अपवृत्त (वि०) [अ० स०] जिसके चित्तों या कूल्हों की
बनावट सुदोष न हो—सौ बेंडये कुल्हे।

अपवय्याता [अपगत प्रजाता यस्या व०स०] बह स्त्री जिसका
गर्भगत हो गया हो।

अपवय्यातम् [अप + वृ + दा + स्तुट्] वृत्त, रिक्तवत्।

अपवय्य—जी (वि०) निवृत्त, निर्धन, निरसक—रघु०
३।११।

अपवययी [अप + वृ + स्तुट् + डीप्] अन्तिम तपस्यवृत्त।

अपवय्यवत् [अप + वाप् + स्तुट्] धर्मवता, अपवयस।

अपवय्यः [अप + वृत् + वञ्] 1 नीचे पिठना, फलन—
अपवय्यवति महतामप्यपत्रयनिष्ठा—व० ४ 2
अष्ट शब्द, अष्टाचार (अतः) अष्टय शब्द चाहे वह
व्याकरण के नियमों के विपरीत हो और चाहे वह
ऐसे अर्थ में प्रयुक्त हुआ हो जो असंस्कृत न हो 3. अष्ट
प्राण, (काव्य में) बदरिचो अथि के द्वारा प्रयुक्त
प्राकृत शोकी का विम्वतन रूप, (शास्त्र में) संस्कृत से
जिनमें कोई भी प्राण—अः-रीरादिदिः काव्येष्वपभ्रम
इति स्मृता, आरभेत् संस्कृताव्यपभ्रमसंस्कृतोदितय-
काव्याद्यर्थे ?।

अपव्यः (स्त्री० में) [अपकृष्टं नीचते—वा + क वा०] कुप-

बनुया में मुई का उतर से ठीक पूर्व या पश्चिम की
ओर प्रयाग, अतिशयलय।

अपवयः [अप + वृत् + वञ्] जो बहारा जाता है, वृत्त,
गर्वा।

अपवयसः [अप + वृत् + वञ्] छुना, चरना।

अपवयसः [अप + वृत् + वञ्] अनाधर, सम्मान का न होना
माछन—तन्मते दृढधरज्ञानमपमानं व पुष्कलम्—
पंच० १।६१।

अपवयसः [अप + वृत् + वञ्] छोटा रस्ता, बगल का मार्ग
बुरा रास्ता।

अपवयस्यम् [अप + वयस + स्तुट्] 1. गोरक साक करना,
मजिना, साक करना, 2. ह्वामत अपवयता, मान्य
कटना।

अपवयस्य (वि०) [अ० स०] 1. जीने मुंह वाला 2. विषय,
कुप्य।

अपवयस्यम् (वि०) [अ० स०] जिसके चिर न हो, "कलेवर-
अमर०।

अपवय्यम् [प्रा० स०] 1. आकस्मिक या असाध्यिक मरण,
दुर्घटना के कारण मृत्यु, 2. कोई बारी प्रय या रोम
जिससे कि रोमी (जिसके जीने की आशा न रही हो)
आशा के विपरीत स्वस्थ हो जाता है।

अपवय्यति (वि०) [अप + वृत् + क्त] 1 जो समझ में न
आ सके, अस्पष्ट जैसे कि कोई वाक्य या वस्तुता 2.
जो सत्य न हो, जिसे कोई पसन्द न करे—विहितं
मयाश्च सदृशीदमपवय्यतिवभ्युत्पार्थनम्, यत्न—सि०
१।५।४६।

अपवय्यन्त (न०—सः) [प्रा० स०] बदनामी, कर्मक, अप-
कीर्ति—अपवय्यो यद्यस्ति कि मृत्युना—मनु० नी० ५५।

अपवय्यन्तु [अप + वा + स्तुट्] दूर जाना, बापित मुड़ना,
भागना।

अपव (वि०) [न० व०] (कुछ अर्थों में 'सर्वनाम' की याति
प्रयुक्त होता है) 1. बराहिसिन्धी, बेबोय, तु० अनुत्तम,
अनुत्तर 2 [न० त०] (क) हुमरा, अन्य (वि० व
नाम की याति प्रयुक्त) (ख) और, अतिरिक्त (ग)
हुमरा, और (घ) निवृत्त, अन्य—मनु० १।८५, (ङ)
मुच्छ, मध्यम 3. किसी और से संबंध रखने वाला,
जो अपना जिन्ही न हो (विप० स्व) 4. पिछला, बाद
का, हुमरा, बाद में (काक और देव की दृष्टि से)
(विप० पूर्व), अन्तिम—राधेराटः कावः विप०,
अव वृत्तीतानुत्तम समास के प्रथम पद के रूप में
प्रयुक्त होता है) स्व 'पिछला भाग' 'उत्तरार्ध' अर्थ होता
है;—'कस्य नाम का उत्तरार्ध', 'हिंसकः सर्विषो' ;
उत्तरार्ध, 'कावः का पिछला भाग', 'पि० कर्मा',
'अप्यं वरत्ताय वः' 'अप्यं का उत्तरार्ध', 5. आध्यायी,
अवका 6. पश्चिमी—सि० ५।१, कु० १।१, 7. पश्चिमी

निम्नतर, 8 (ग्रा० में) अविस्तृत, अधिक न इकठ्ठे बाका; जब 'अपर' शब्द एक वचन में एक (एक, पक्ष) के सह संबंधी के रूप में प्रयुक्त होता है तब इसका अर्थ होता है 'दूसरा, बाद का'—एकी यपी वैतरणपदेनाम् सौराज्यरम्यालपरी विवर्णम्—रम् ० ५।६०, जब यह ब० व० में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है 'दूसरे' और इसके सहसंबन्धी शब्द प्रायः 'एके' 'केचित्' 'काश्चित्' 'अपरे' 'अन्ये' आदि हैं—एके समुद्रबल्लेरेणुसहसि शिरोभिराजामपरे महीभूत—गि० १२।५५, कुछ और,—शाबिन केचिदध्यधुम्नं-माङ्गुपरैऽम्बुषी, अन्ये त्वमचिपु पीतान् गृहास्त्वन्ये व्यलेपय, केचिवासिपत स्वग्ना भयात्केचिदपूणिषु । उदतारिपुःस्त्रोधि बानरा सेतुनापरे—भट्टि० १५।३१-३३,—४ 1 हाथी का पिछला पैर 2 शत्रु,—रा 1 पश्चिमी दिशा 2 हाथी का पिछला भाग 3 गर्दाशय, गर्भ की स्थली 4 गर्भाशय्या में रुका हुआ रजोधर्म,—रम् 1. पश्चिम्य 2 हाथी का पिछला हिस्सा,—रम् (कि० वि०) पुन, पश्चिम्य में, अपरंश्च इत्यने अतिरिक्त, अपरेण पीछे, पश्चिम में, के पश्चिम में (कर्म० या सब० के साथ) । सम०—अग्नि (अग्नि-दि० ब०) दक्षिण और पश्चिमी अग्न्या (दक्षिण और गार्हपत्य),—अंशम काव्य के द्वितीय प्रकार गुणोत्तमव्याय के अठ मंदो में से एक मंत्र, काव्य० ५. प्रथम व्याख्या में किसी और का गौण अर्थ है, उदा०—अस त स्तनोक्कीपी पीनलन-निर्मर्दन, नाम्पुःअवनस्प्यसी नीबीविश्रमन कः । यदा म्युवाररस कथन का जग है,—अंत (वि०) पश्चिमी सीमा पर रहने वाला, (स्तः) 1. पश्चिमी सीमा या किनारा, अन्तिम छोर, पश्चिमी तट 2 (ब० ब०) सहाय पर्वत का निकटवर्ती पश्चिमी सीमा प्रदेश या बहू के निवासी—अपरान्तजयोधतं (अनीकं) रम् ० ५।५३, पश्चिमी लोग 3 इस देश के राजा 4 मृत्यु—अन्तकः—अन्तः(ब० व०)—अपरः,—रे,—राणि दूसरे और दूसरे, कई, बहुत—अर्धम् उत्तरार्ध,—अर्द्धः दोपहर बाद, दिन का अन्तिम या समापक पहर,—दूसरा पूर्वदिशा,—आन्तः बार का समय,—अन्तः पश्चिम देश का वासी, पश्चिमी लोग,—दक्षिणम् (अव्य०) दक्षिण पश्चिम में,—पक्ष 1 मान का दूसरा या कल्पपत्र, 2 दूसरी या विपरीत दिशा, प्रतिवादी (विधि में),—अर (वि०) कई एक, बहुत से, विधि,—अपररा सार्धा मच्छन्ति—पा० ६।१।१४ सिद्धा०—कई समुदाय या रहे हैं,—वाचिनीयाः पश्चिम के निवासी पाणिनि के शिष्य,—प्रवेद्य (वि०) जो दूसरों के द्वारा आसानी से प्रकाशित हो सके, विषय,—राक्षः राक्षि का उल्लार्ष या राग का अन्तिम पहर,—भोक्ः दूसरी दुनिया, अगला लोक, स्वयं,—स्वस्तिकम्

शिक्षित में पश्चिमी विन्दु,—हैम्य (वि०) सर्वाँ के उत्तरार्ध से संबंध रखने वाला ।
अपरस्त (वि०) [अप+रञ्च्+स्त] 1 राशीय, अधर-रहित, पीला,—स्वासापरस्तावर.—स० ६।५, 2. अस्त-मृष्ट, सन्तोषरहित ।
अपरस्ता-स्त्वम् [अपर+तन्, त्वन्वा] तुमरा या निम्न होता, (२४ मूषो में से एक), निम्नता, विषय, अपेक्षिकता ।
अपरस्तः (स्त्री०) [अप+रम्+स्तान्] 1. विच्छेद (= अवरति तु०) 2 अस्तोप ।
अपरत्र (कि० वि०) [अपर+त्रत्] दूसरे स्थान पर, और कहीं, एकत्र या स्वच्छिन्—अपरत्र एक स्थान पर—दूसरे स्थान पर ।
अपरत्र [प्रा० सं०] 1 शत्रुता, विवाह (सगति के प्रयोग के विषय में) अक्षित बिना शत्रु के, बिना विचार के (किसी वस्तु की अधिकार में करते समय), 2. बचनानी ।
अपरस्वर (वि०) [इ० सं०—अपरत्र पर च, पूर्वपदे सुच] एक के बाद दूसरा, निर्बाध, अव्यंजित, १। सार्धा मच्छन्ति सनतमविच्छेदेन मच्छन्तोऽप्यनेः—विद्या० ।
अपरराज (वि०) [ब० सं०] राहीन,—य [न० त०] 1 अस्तोप, सतोप का अभाव, अनुगम का अभाव अपरासतोप्ये रत्—कि० २।५०, 2 विरान्त, तापुना ।
अपरारम्भ (वि०) [अपर+अम्भ्+किप्] ('रात्रे, रात्री, रात्रे) दूर न किया गया, मूढ़ न फेरा हुआ, समुक्त होने वाला सामने होनेवाला (अव्य०) (-रात्र्) के सामने । मय० मूक्त (वि०) (स्त्री०—औ) 1 मूढ़ न मोड़े हुए, मह मायने किए हुए, 2. साहजपूर्वक पग रखते हुए ।
अपरारम्भित (वि०) [न० त०] जो पीता न गया हो, अश्रेय -स्तः 1. विषयो अन्यु 2 विष्णु, शिष—सा दुग्दिबी जितुकी पूजा विषया दशमी के दिन की जाती है, एक प्रकार की अधिधि जो कि ताबीज के रूप में मुद्रा में बांधी जाती है, 3 उत्तर-पूर्व दिशा ।
अपरारम्भ (प० क० इ०) [अप+राप्+स्त] 1 जिसने पाप किया है, किसी को कष्ट दिया है, अपराध का करने वाला, कष्ट देने वाला, (कर्म में श्री प्रयुक्त)—कर्मि-न्विप पुनार्हजगदा मकुत्तात्—स० ४, 2 जो बृक गया हो, विधानों पर न लगने वाला (गौर की शक्ति)—निमित्तादपरारम्भेऽर्धान्कन्येव दक्षिणतम्—सि० २।२६ 3. जिसने उन्मथन किया है, अतिफाल्गु,—इत् अपराध, कष्ट ।
अपरारम्भितः (स्त्री) [अप+राप्+कित्] 1 दोष, अपराध, 2. पाप ।
अपरारम्भः [अप+राप्+भम्] अपराध, दोष, चुनै, पाप

—कमपरामर्श मयि परस्मि—विक० ४।२९,—
यथापरामर्श-दधानाम्—रूप० १।६।

अपरस्मिन् (वि०) [अप+राम्+स्मिन्] कथकर,
दोषी।

अपरिच्छाः [न० ब०] जिसके पास न कोई सामान हो, न
नीकर बाकर, जो सब प्रकार से हीन हो—विदारी-
परिग्रह, —शुः 1. अस्वीकृति, इकारो 2. दरिद्रता,
दरीही।

अपरिच्छय (वि०) [न० ब०] गरीब, दरिद्र।

अपरिच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1. जिसका अन्तर न पहु-
चाना गया हो, 2. सीमा रहित।

अपरिणय [न० न०] चिरकौम्य, ब्रह्मचर्य।

अपरिणीता [न० न०] अविवाहित कन्या।

अपरितस्त्वानम् [न० त०] अमीमता, असंख्याता।

अपरीक्षित (वि०) [न० त०] 1. बिना परीक्षा किया हुआ
बिना जांचा हुआ, अप्रमाणित 2. अविचारित, मूलता-
पूर्ण, विचारहीन (पुरुष या वस्तु) 'कारक नाम पंचम
नम्ब' पंच ५, जो बर्ता विचारहीन न हो, 3. जो
गुण्ट रूप में स्थापित या सिद्ध न हुआ हो।

अपक्व (वि०) [न० त०] कोषशून्य —अपक्वपत्रवाधर-
मोहिता रूप० १।८।

अपक्व (वि०) [स्त्री०]—वा—सी [ब० न०] दुरूप,
विरूप बड़ोंना शकल वाला वस्त्र [प्रा० सं०] विकृतता।

अपरेतु (अथ०) [अप+एतुम्] अगत दिन।

अपरोक्ष (वि०) [न० न०] 1. दृश्य 2. प्रत्यक्ष 3. जो दूर
न हो अन्व (कि० वि०) की उपस्थिति में (मब०
के साथ), अपरोक्षान् प्रत्यक्ष रूप से, दृश्यतापूर्वक।

अपरोक्ष [अप+रक्ष+घटा] बज्रेंन, निषेध।

अपर्व (वि०) [न० ब०] बिना पत्तो का, —अर्षी पार्वती या
दुर्गादेवी, कार्तिकादि इम नाम का कार्ग्य बनलाते हुए
कृत्न श् मय विद्याभ्यासपूर्वनिना परा हि काला
नभस्मना तुन, नन्द्यवाराकोमिनि प्रियवदा बदन्य-
गर्भेन क ना पुगादिद कु० ५।२८।

अपर्वान्त (वि०) [न० न०] 1. जो यथेष्ट वा काकी न
हो अर्जुन जो पर्वान्त न हो 2. अमीमित 3. अयाग्य,
असमर्थ,—अपर्वान्त तदर्थमाक बन् मोमाभिर्गमितम्
अन० १।३०।

अपर्वान्तः (स्त्री०) [नञ्+परि+वाप्+स्मिन्]
यथेष्टता का अभाव।

अपर्वीय (वि०) [न० ब०] कमरहीन, —कः कम या
प्रमाथं का अभाव।

अपर्वित (वि०) [नञ्+परि+वम्+क्त] जो रात
का रक्ता हुआ न हो, ताजा, नूतन।

अपर्वन् (वि०) [न० ब०] जिसमें जोड़ न लगा हो,
(न्यु०) [न० त०] 1. जोड़ वा संयोग बिन्दु का अभाव

2. जो पर्व का दिन न हो—अर्वात् अनुपयुक्त समय
वा ऋतु।

अपत्त (वि०) [न० ब०] बिना मास का, —अपत्त कीम
वा कुडी।

अपत्तनम्-अपत्तयः [अप+त्त+त्पृट्, पञ्च वा] 1.
छिपाना, धोपन 2. छिपाने वा जानकारी में मुकर
जाना, टालमटोल,—न हि प्रत्यक्षसिद्धस्यापत्तयः कन्
सम्पत्ते—हारी० 3. सत्यता, विचार व भावनाओं को
छिपाना, घटाकर बतलाना। सम०—अपत्त (विधि
में) उस व्यक्ति पर किया जाने वाला बर्ताना जो
कि दोष सिद्ध होने पर भी अपने दोष को स्वीकार
नहीं करता।

अपत्तयिन् (वि०) [अप+त्त+पान] मुकरने वाला,
दोष को स्वीकार न करने वाला, छिपाने वाला।

अपत्तयिष्वा [अप+त्त+प्लुट्] निश्वा टाप्] अत्यधिक
प्यास या इच्छा, वा सामान्य तुषा (कई बार इसी
अर्थ में 'अपत्तयिष्वा' शब्द भी प्रयुक्त होता है, परन्तु
उसे अप्युद्ध समझा जाता है)।

अपत्तयिन्-काल्पक (वि०) [अप+त्त+पिनि, उक्तञ्
वा] 1. प्यासा 2. प्यास या इच्छा में रहित—प्रका-
पिनी भविष्यति कदा न्येतेऽपत्तयिष्वा—मन्नाम०।

अपत्त (वि०) [न० ब०] बिना वायु वा हवा के, हवा से
सुरक्षित—अपत्त [प्रा० सं०] अन्तर के निष्कट नगारा
हुवा बाग वाटिका या उद्यान।

अपत्तकः-का [अप+त्त+कृत्] कियों टाप्] 1. मोतर का
कमरा, छाननाघार 2. बालावन, मोषा—तत्पत्तकम्मा-
वपत्तकत्—मुद्रा०।

अपत्तकम् [अप+त्त+त्पृट्] 1. प्राक्कादन, पर्व 2.
पीसाक, बरस।

अपत्तर्ष, [अप+वृत्+भञ्] 1. पूर्ति, सयति, किसी
काम की पूर्णता वा निष्पत्तता—अपत्तर्षे नृनीषा—पा०
२।३।६, कियारवर्षेण्वनूकीविमाकुला—कि० १।१६,
अपत्तर्षे तुतीयेति भलतः पालिनेरपि—नै० १।७।६८, कि०
१६।५९, 2. अपवाद, विशिष्ट नियम—अपिष्याप्या-
पत्तर्षेणपरमं—मुमु० 3. मोक्ष, परमगति,—अपत्तर्ष-
महोदयाधेयोमृदुबनभाविब धर्मयोगी—रूप० ८।१६,
4 उपहार, दान 5. त्याग 6 छोहना (जैसे बाण का)।

अपत्तर्षन् [अप+वृत्+त्पृट्] 1. त्याग, (प्रतिज्ञा)
पालन, (अपवाद) परिषोध, 2. उपहार वा दान 3.
परमगति।

अपत्तरी [अप+वृत्+भञ्] 1. निकाल लेना, दूर
करना 2. (गन०) सामान्यविभाजक जो दोनों साम्य-
गणितियों में व्यवहृत होता है।

अपत्तरीयम् [अप+वृत्+त्पृट्] 1. दूर करना, स्वार्थ
स्वाभावान्तरण 2. निकाल लेना, दञ्चित्त करना, न

त्यासोऽपि त्विद्विषयव्यय न च दायापवर्तनम्—मनु०
१/७१।

अपवाहः [अप + वृ + घञ्] 1. निन्दा, प्रसंसा, कलक—लोकान्वादी बलवान्मते मे—रघु० १४/४०, आसोप
मोकनिन्दा,—देव्यामपि हि वैदेह्यां मायावाधो यतो जन.
—उत्तर० ११६, 2. सामान्य नियम को बाधित करने
वाला विशेष नियम (विष० उत्तरं)।—अपवाधिरिषो-
त्तरणां कृतव्याप्तयः परे—कु० २/२७, रघु० १५/३
3 भाष्य, आज्ञा—ततोपवादेन पताकिनीपतेरपवाह
निह्वयिषती महाश्वम्—कि० १४/२३, 4. निराकरण,
(वेदान्त०) मिथ्याज्ञान या मिथ्याविश्वास का निरा-
करण,—रघुविद्यार्तस्य संप्रत्य रज्जुभासत्ववत्, वस्तुभूत-
बहुषो विद्यार्तस्य प्रप्रज्ञादेव वस्तुभूतकथतोऽप्येव
अपवाद—तार० 5. भरोसा 6. प्रेम, घनिष्ठता ।

अपवाहक } (वि०) [अप + क् + क्तृन्, गिनि वा] 1
अपवाहिन } कलक लगाने वाला, निन्दक, बदनाम करने
वाला—मृगयापवाहिनो मायायेन सं० २, 2. बिरोध
करने वाला, एक ओर रखने वाला, निकाल देने
वाला ।

अपवाहणम् [अप + वृ + णिच् + ण्यट्] 1 आच्छादन,
छिपाव, 2 जोखल होना ।

अपवारित (मू० क० कृ०) [अप + वृ + णिच् + क्त]
ढका हुआ, छिपा हुआ, —तम्, अपवारितकथं छिपा
हुआ या गुप्त द्रव्य, —तम्, अपवारितकेन, अपवार्यं
(अन्व०) (माटकी में बहुधा प्रयुक्त) 'पृष्व्' एक
ओर अर्थ प्रकट करने वाला अव्यय (विष० प्रकामम्)
यह द्रव्य से बोलने को कहते हैं कि केवल बही
मुने जिस कहा गया है—तन्मूवेदपवारित रहस्य तु
यदन्यस्य परावृत्त्य प्रकाशयते, निपातककेशान्मपवादा-
न्दरा कथान्—सा० २० ६ ।

अपवाह-हणम् [अप + वृ + णिच् + घञ्, स्युट् वा] 1
दूर ले जाना, हटाना 2 घटाना, एक राशि में से
दूसरी राशि को निकालना ।

अपवाहिन (वि०) [व० सं०] निर्वाह, वाधारहित—रघु०
२/३८

अपविष्ट (मू० क० कृ०) [अप + व्यप् + क्त] 1 दूर
रेंका हुआ, व्यक्त, अस्वीकृत, उपेक्षित, दूरीकृत, सूजन,
विरहित 2 नीच, कमीना—इ०, पुत्र. माना या
पिता या दोनो से त्यागा हुआ पुत्र जिसे किसी अपवि-
ष्टित व्यक्ति ने गोद ले लिया हो, हिन्दुको में १२
प्रकार के पुत्रों में से एक—मनु० १/७१, याज्ञ०
२/१३२ ।

अपविद्या [प्रा० सं०] अज्ञान, आध्यात्मिक अज्ञान, माया
या भ्रम (अविद्या),—तत्त्वस्य सविस्तिर्वापविद्याम्
कि० १६/३२ ।

अपवोध (वि०) [व० सं०] जिसके पाठ सीधा न हो, या
बराबर सीधा हो—आ [प्रा० सं०] सराबर सीधा ।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप + वृत् + क्तिन्] भ्रंशता,
निवृत्तता, वृत्ति ।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप + वृ + क्तिन्] दूराव, छिद्र,
रथ ।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप + वृत् + क्तिन्] भ्रम, समानि ।

अपवृत्तः [प्रा० सं०] गलत अवग्रह या दूरे ढग से (योगी
आदि में) छेद करना ।

अपव्यय [प्रा० सं०] अप्ययिक लर्षं, अपव्यय ।

अपव्ययवृत्तम् [प्रा० सं०] अलग-अलग, दूरा गगन ।

अपवाहक (वि०) [व० सं०] निर्वाह, निरस्तक, —कम्
(कि० वि०) निवृत्तता के साथ ।

अपवादः = नु० अपवाद ।

अपवाहः [प्रा० सं०] 1 अशुद्ध शब्द (आ० की दृष्टि
से), अष्ट शब्द (रूप और अर्थ की दृष्टि में), —
एक शक्तिर्बैकल्पप्रमादात्मतादिभि, अपवाहोऽपवाह्या
शब्दा अपवाहा इतीतिहा । अपवाहःशब्द नामने
मुना० 2 शाम्य शब्द 3 आ० की दृष्टि से अशुद्ध
भाषा 4 छिद्रकी बाला शब्द, गाली दुर्बलन निदा ।

अपवारितम् (वि०) [अप + वृ + णिच् + क्त] अपवृत्त-
वर्तनम्] व० सं०] निर रहित, बे निर का ।

अपवृत्त (वि०) [व० सं०] शोकरहित, (वृ) आया ।

अपवाहक (वि०) [व० सं०] शोकरहित, —कः अशोकरहित ।

अपविष्टम् (वि०) [व० सं०] 1 जिसक पीछे कोई न हो,
अनिय (अधिकतर 'पविष्टम्' शब्द के अर्थ में ही प्रयुक्त
होता है—नु० उत्तम और अदुनम, उत्तर और अनु-
सार),—अपविष्टव्ययने रामस्य शिरसि पादपङ्कज-
स्पर्शम्—उत्तर० १ प्रसीदतु महाराजो मयाऽननापविष्ट-
येन प्रथमेन—इती० ६, 2 अत्यन्त प्रथम, सर्वप्रथम
3 चरम, —अपविष्टव्ययिमा कष्टाभापर प्राणवत्सहम्
रासा० ।

अपवधः [अप + धि + अच्] गरी, तर्किया ।

अपधी (वि०) [व० सं०] भीत्यं से रक्षित—ति०
११/५४ ।

अपवाहः = दे० अपान ।

अपवृत्तम् [अप + वृत् + क्त] हाथी के अकृष की मोक ।

अपवृत्त (वि०) [अप + वृत् + क्त] 1 विरुद्ध, विपरीत, 2
अननुकूल प्रतिफल 3 शायी,—वृत् (वि० वि०) 1
विरुद्ध 2 असम्यक्तापूर्वक, 3 विपरीतता के साथ बली-
शानि, ठोक नरहू में ।

अपवृत्तः—न (वि०) [अप + वृत् + क्तृन्, क्तृन् वा]
विरुद्ध, विपरीत ।

अपवृत्त [अप + वृत् + अच्] 1 जाति से बहिष्कृत, नीच
पुत्र, प्राय, समाप्त के अन्त में प्रयुक्त होकर अर्थ होता

हूँ—दुष्ट, पापी, अविश्वस्य, कायात्मिक वा ० ५, रे रे लक्षिबापमया—बेबी ० ३, २, छ प्रकार की अनुलोम सुनान—अर्थात् पहिले तीन वर्णों के अनुद्यो द्वारा अपने से तीस वर्णों की स्त्री में उपलब्ध मगान—विप्रसव (बच्चे बने) नृपतेचर्चयोः इषी, वैश्वस्य वर्णं वैकस्मिन् पहिले उपलब्ध स्मृता । मनु० १०।१०

अपसटः [अप + ण् + अच्] १. प्रस्थान, पलायन २. उचित कारण ।

अपसरणम् [अप + ण् + ल्यट्] जाना, बापस मूढ़ना, पलायन ।

अपसर्जनम् [अप + ण् + ल्यट्] १ त्याग, उत्सर्ग, २. उपहार वा दान ३. मोक्ष ।

अपसर्य—वैक्य [अप + लृप् + ल्युन्, स्यात् कन् च] मुत्तचर, जासुम्, मोदया, —आपसर्यंजनात् यथाकालं स्वपण्यति त्वु० १।२५६, १।३११ ।

अपसर्यणम् [अप + लृप् + ल्युट्] पीछे हटना, लौटना, जासुमी करना ।

अपसम्भ—सम्भक् [ब० सं०] १ जो बाधा न हो, दायं—अपसम्भेन हस्तन, -मनु० ३।१४४ २ विपद, विपरीत, -सम्भम् (सम्भ०) दाईं बार, दाहिने कंधे के ऊपर न तनेऊ की शरीर के सामे भाग पर लटकाना (वि० तस्यम् -जब कि वह बायें कंधे के ऊपर न लटकेता है) अब छ दाहिनी भाग रखत हुए किसी की परिक्रमा करना, तनेऊ का दायें कंधे में लटकाना ।

अपसम्भयन् (वि०) [अपसम्भ -मनुपु] दाहिने कंधे पर नें यज्ञोपवीत पहनने वाला ।

अपसाटः [अप + ण् + घञ्] १ बाहर जाना, लौटना २. निर्गमस्थान निकाल ।

अपसाटणम्—आ [अप + ण् + ल्युट्, स्त्रियां टाप्] हाटकन दूर करना, हाकना, बाहर निकालना—किमर्थमपसाटणां क्रियते मृदा०, स्थान देना ।

अपसिद्धान्तः [धा० सं०] मूल्य वा अमयुक्त निर्णय ।

अपस्यतिः (स्त्री०) [अप + लृप् + क्तिन्] दूर बने जाना ।

अपस्यत् [अप + क् + अप मुदाभास] १ पहिले को छोड़कर गाड़ी का कोई भाग (—रथ् भी) २ बिछा, मल ३ योगि ४. मृदा ।

अपस्यतम् [अप + स्था + ल्युट्] १ किसी सबषी की मृत्यु क उपगत किया जाने वाला स्थान २ मृतक स्थान, स्थान किये हुए पापी में स्थान करना ।

अपस्यस्य [वि०] [ब० म०] जिसके पास संदिय न हो, —सप्तविंशत् नो भ्राति राज्ञीतिरपस्यसा—मि० २।१२२ ।

अपस्यस्यं (वि०) [ब० सं०] अज्ञाहीन ।

अपस्यस्यः—स्युतिः (स्त्री०) [अपस्य + घञ्, क्तिन् वा] १ स्यस्य सक्ति का अभाव २. मिटवी रोम, मुर्छा रोम ।

अपस्यस्यिन् (वि०) [अप + स्य + धिभि] मिटवी रोम के दस्त ।

अपस्युति (वि०) [ब० सं०] विस्तरणधीन ।

अपस्यु (वि०) [अप + ह् + ष] (समाप्त के अन्त में) दूर हटाना, दूर करना, नष्ट करना,—अपिय यदि जीवितापहा—रथु० ८।६५ ।

अपस्युतिः (स्त्री०) [अप + ह् + क्तिन्] दूर करना, नष्ट करना ।

अपस्युतम् [अप + ह् + ल्युट्] दूर हटाना, निवारण करना ।

अपस्युतम् [अप + ह् + ल्युट्] १ दूर ले जाना, उठा न जाना, दूर करना २ बुझना ।

अपस्युतितम्—हास्य [अप + ह् + ल्युट्, घञ् वा] अकारण होने, मुर्छता पूर्ण देखी, एसी हूँकी जिससे आत्मा में नाश वा आर्ष (नो-बालामपस्युतितम्) ।

अपस्युतित (वि०) [अपस्युत + इत्च्] दूर फेंका हुआ, रदी किया हुआ, परित्यक्त ।

अपस्युति (स्त्री०) [अप + ह् + क्तिन्] १ त्याग, छोड़ देना २. एक जाना, मोक्षक होना ३ अभाव, निकास देना ।

अपस्युतः [अप + ह् + घञ्] १ उठा के जाना, दूर ले जाना, दूर लेना, नष्ट कर देना,—निशापस्युतः, विष् २ छिपाना, मानस न पढ़ने देना,—कषमात्पापहार करोमि—शं० १, अपने अप्त की, अपने भाग को और अपने चरित्र को मैं किस प्रकार छिपाऊँ ?

अपस्युक्तः [अप + ह् + अच्] १ छिपाव, गोहन, अपनी भावना ज्ञान आदि का छिपाना, २ सबाई से मुकर जाना, दुगाव—के छ—या० १।३।४४, ३. प्रेम, स्नेह ।

अपस्युतिः (स्त्री०) [अप + ह् + क्तिन्] १ सत्य को छिपाना, मुकरना २. एक बलकार जिसमें प्रसृत वस्तु के साम्यिक चरित्र को छिटा कर कोई और काल्पनिक वा अत्यय स्थापना की जाय—वेद नभोमस्यस्य-भ्युगति, वैवाचक तारा नवनेत्रमक्षरा । काव्य०, १० हीं समुत्कला तथा दे० सा० द० ६।३।८४ वृष्ट ।

अपस्युक्तः [अप + ह् + अच्] बटाया, कमी करना ।

अपस्यु (अध्य०) दे० अपाच् ।

अपस्युः [न० म०] १ अपव, अजीर्णता २ अपरिपक्वता ।

अपस्युतणम् [अप + जा + ष + ल्युट्] १. दूर कर देना, हटाना २. अस्वीकृति, निराकरण ३. अदावणी, कार-बार का समेट लेना ।

अपस्युतणम् (न०-मं) [अप + जा + ष + धिभि] चुकटा कर देना, कारबार उठा देना ।

अपस्युतिः (स्त्री०) [अप + जा + ष + क्तिन्] १ अस्वीकृति, दूर करना, २ फौ से उपलब्ध संकेत, नव धारि—वि० १।२० ।

अपस्यु (वि०) [अपस्यु अस्वीकृतिवच्] १. विचयान, प्रत्यक्ष २. [ब० सं०] वेचहीन, सत्यय भाषीं वाला ।

अप्राकृत, } (वि०) [न०त०] जो समान पक्षित में न हो,
अप्राकृत्येय } विषेयतः बहु व्यक्तित्व जो विरादरी में अपने
अप्राकृत्यय } इन्-बाधको के साथ एक पक्षित में बैठने का
अधिकारी न हो, जाति बहिष्कृत।

अप्राकृत्यः—गक [अप्राकृत्य तिर्यक् चलति नेत्र यत्र अप+
अङ्ग घञ्, कन् च] 1 आँसु की बाहरी कोर, या आँसु
की कोण - चलापाकला दृष्टि-पा० ११२४, 2. सम्प्रदाय
सूचक मांसे का तिलक 3. कामदेव, प्रेम का देवता।
सम०—अशोभन्—दुष्टिः (रथो०)—चिलोफिलान्,—
बोलाचम् निरुद्धो चितवन, कुनसियों से देवता, पलक
अपकना, —देशः आँसु की कोर, —नेत्र (वि०)
सुन्दर कनसियों से युक्त जौली वाला (यह प्राय
स्त्रियों का विशेषण है) यद्यपि पुरुर्यथाकाननया परि-
वृत्तायंभुवो मयाह दृष्टा - विक्रम० १११७।

अपाञ्च [अपाञ्चति—अञ्च+क्विप्] 1. पीछे की ओर
अपाञ्च } जाने वाला, या पीछे स्थित, 2 अनुसृत, अनुसृत
3 पश्चिमी 4 दक्षिणी—ह् (अभ्य०) 1 पीछे, पीछे
की ओर 2 पश्चिम की ओर या दक्षिण की ओर।

अपाञ्ची [अप+अञ्च+क्विप् स्त्रियां ङीप्] दक्षिण या
पश्चिम दिशा, ह्स्तरा—उत्तर दिशा।

अपाञ्चीन (वि०) [अपाञ्ची+त्स] 1 पीछे की ओर स्थित,
पीछे की ओर मुड़ा हुआ 2 अनुसृत, अनुसृत्यह्—
ह् ७।१४ 3 दक्षिणी 4 पश्चिमी 5 विरोधी।

अपाञ्च्य (वि०) [अपाञ्ची+यत्] पश्चिमो और दक्षिणी।
अपाञ्चियीय (वि०) [न० त०] 1 जो पाणिनि के नियमों
के अनुकूल न हो 2 जिसने पाणिनि-व्याकरण को
सही भाँति नहीं पढ़ा हो, फलबन्धाही विद्वान्, संस्कृत
का अनुसन्धान करने वाला।

अपाञ्चन् [न० त०] 1 निकम्मा बर्तन 2 (आल०)
अयोग्य या अनधिकारी पुत्र, दान लेने के लिए
अयोग्य 3 कुपान, जो उपहार दान आदि का अधि-
कारी न हो। सम०—अपुत्रा, अपाञ्चीकरचम्
अनुचित तथा निर्ममोद कर्म करना, अपाञ्चता, दे०
मनु० ११।००, —अपिण् अयोग्य पुरुषों को देने
वाला, —भृत् (वि०) अयोग्य और निकम्मे व्यक्तियों
का भरणपोषण करने वाला—शयनापाञ्चन्भूवति
राजा—यच० १।

अपादानम् [अप+आ+दा+त्सुट्] 1 ले जना, दूर
करना, अपसृत्य 2 (आ० में) अपा० का अर्थ—
ध्रुवमपावेज्यादानम्—पा० १।४।२४।

अपाञ्चन् (पु०) [अपकृष्ट अच्चा प्रा० स०] कुमार्ग,
दुरामार्ग।

अपात्तः [अप+अन्+अच्, अपानयति म्बाधिकम्—अप
+आ+नी+इ वा] स्वास बाहर निकालना, स्वास
लेने की क्रिया, शरीर में रखने वाले पौच पदार्थों में से

एक जो कि नीचे की ओर जाता है तथा मुँहासे के मार्ग
से बाहर निकलता है, —मा, —मन् मुँहासा। सम०
—आरम्भ गृहा, —अवनत, —आयु, प्राणवान्—जिसे
अपान कहते हैं।

अपाञ्च (वि०) [ब० स०] मिथ्यात्व से रहित, सत्य।
अपाञ्च-क्विप् (वि०) [ब० स०, णिि वा] मिथ्याप, पवित्र
पुण्यात्मा।

अपाञ्च (अप्-जल-का सब० ब० ब०) [मामा में प्रथम पर के
रूप में प्रयुक्त]—अपञ्चिन् (न०) बिजली, —अपाञ्च
अग्नि और सावित्री की उपाधि, —मात्, —पतिः 1
समुद्र 2 बहन, —निधिः 1 समुद्र 2 विष्णु, —अपञ्च
(सपु०) भोजन, —अपञ्च अग्नि—योजि मसुद्र।
अपाञ्चान् [अप+अन्+अच्, कुलदीर्घा] पिचडा, एक
वृत्ति।

अपाञ्चान्बन्धम् [अप+अन्+त्सुट्] तफाई करना, धुँड
करना, (रोग पापाधिक) को दूर करना।

अपाञ्चः [अप+इ+अच्] 1 चले जाना, बिदाई 2
विद्योत—ध्रुवमपावेज्यादानम्—पा० १।४।२२, येन ज्ञान
प्रियापाये कष्टह हस्तकौकिलम् भट्टि० १।७५, 3
योद्धा होना, लोप, अभाव 4 नास, शक्ति, महार -
करणापायविभिन्नवर्णना—रघु० ८।४२, 5 अजित,
दुर्गाय, विपत्ति, भय (वि० उपाय) (वि०) मां भक्तिना-
पाय—हि० ४।६५ 6 हानि, क्षति।

अपात्त (वि०) [न० त०] 1 जिसका पान न हो 2
अज्ञेय, सीमाहीन 3 जो समान न हो, अपाञ्चिक
4 पट्टे के बाहर 5 जिसे पार करना कठिन हो,
जिन पर विजय न पाई जा सके, —रम् नदी का
दूसरा तट।

अपात्तं (वि०) [अप+अत्+स्त] 1 दूरत्व, दूरदर्शी, 2.
निकटत्व।

अपात्तं } (वि०) [अपगतं अर्थं यस्मान् ब० म०]
अपात्तं } 1 अर्थ, अनामक, निकम्मा, 2 निरर्थक,
अर्थहीन, -अर्थ अर्थहीन या अज्ञान बात या तर्क
(मा० शा० की दृष्टि से स्वभावात्सर्वी दोष तु० काञ्च०
३।२८, समुद्रापाञ्चिन् यत्तदपार्थम्योपपद्यते)।

अपाञ्चन् [अप+आ+च्+त्सुट्, क्तिन् वा]
अपाञ्चि (स्त्री०) } 1 उच्चाटन 2 इकना, लपटना,
बेलना 3 छिपावना, गोपन करना।

अपाञ्चन् [अप+आ+च्+त्सुट्, क्तिन्
अपाञ्चिः (स्त्री०)] वा 1. लौटना, पीछे हटना, अपच-
पेन 2. बुझना।

अपाञ्च्य (वि०) [ब० स०] आधर्महीन निरवन्त,
अन्याय, —यः शरण, महारा, जिसका महारा सिन्हा
आय 2 चढोवा, शांतिपाना, 3. शिररुद्धा।
अपाञ्च्यः [अप+आ+अच्+अच्] शरकत।

अपत्यम् [अ+प+त्य्] 1. फेंक देना, रखी कर देना 2. छोड़ देना 3. बच करना ।

अपत्यरथम् [अ+प+थ+त्य्] विदार, झोटना, धूर हटना—२० 'अपत्यरथ' ।

अपत्यु (वि०) [अ+त्यु] निर्जीव, मृत ।

अपि (सम्ब०) [कई बार मातुरि के परात्मकार 'अ' का लोप—अपि मातुरिस्त्वोपरमाशोप्यस्येयोः—विधा, पिधानम् आदि] 1 (सत्रा और वाक्यों के साथ प्रयुक्त होकर) निकट वा ऊपर रखना, जो और के जाना, तक पहुँचाना, सामीप्य सन्निकटता आदि 2. (पृथक् कि० वि० या सर्वो० सम्बन्ध के रूप में) और, भी, एवम्, पुनश्च, इसके अलावा, इसके अतिरिक्त—अपि ते सोदरस्तेहोप्येपेपु—स० १, कपनी और ते तो, अपनी हारी जाने पर—विष्णुसंभवापि राम-पुत्रा पाठिता—पृ० १, अपि अपि, अपि च, भी, और भी—अपि स्तुति, अपि सिच—सिद्धा० न मासि न चैव, न चापि, नपि वा, न चापि न—न, 3 'भी' 'अपि' 'अतु' शब्दों के अर्थ पर बल देने के लिए भी बहुधा इसका प्रयोग होता है, अथापि—आज भी, इदानीमपि—अब भी, यथापि—अथर्वे, चाहे, तथापि—ता भी, कई बार केवल 'तथापि' शब्द के प्रयोग से ही 'अपि' का अन्वयाहार कर लिया जाता है—उपा० कि० ११२८, 4 अथर्वे (भी, चाहे)—अरुचिक्रमनुविद्ध लैबन्तनापि रथम्—स० ११२०, चाहे ऊपर के उपा हुआ, इयमधिकमनोसा बाल्लेनापि तन्वी—स० चाहे बन्कल दम्भ में 5 (शब्द के आरम्भ में प्रयुक्त होकर 'प्रत्यय सूचक') अपि सन्निकृतोऽयं कुम्पति—स० १, अपि क्षिप्रार्थमुत्तरं समित्कुम्पम्.... अपि स्वल्पत्वा नपति प्रकृतौ—हु० ५१३३, ३५, ३५, ६, आसा, प्रत्यासा (शब्द-विधिक के साथ) कुलं रामकृष्णं कर्म, अपिजीवेत्त शास्त्राचार्यम्—उत्तर० २ बहुषे आसा है कि शास्त्राय बालक जो उठेगा। विधे० इस अर्थ में 'अपि' बहुधा 'आस' के साथ जुड़ कर विभक्तित भाव प्रकट करता है (क) संभावना 'सम्भवा' (स) शायद, तथैवत, (न) 'थवा ही अच्छा हो यदि', 'जैसी आतिरक इच्छा या आसा है कि—अपि नाम कुम्पन्ते-रियमसवर्णसंज्ञेय-अथवा स्यात्, स० १, स० ७, तदपि नाम मनागततीर्थाति रतिरप्यन्यात्मनोरम्—स० १, आसद, सम्भवत—अपि नामाहं पुरुरवा अवेकम् विष्णु—स० आसा ही अच्छा होता यदि मैं पुरुरवा होता ? (प्रत्ययशब्द शब्दों के साथ जुड़ कर 'अतिविषयता' के अर्थ को बनाता है) कोई, कुछ, जोपि—कोई, कियपि—कुछ, कुछापि—कहीं, इस शब्द को 'अज्ञात' 'अवर्णनीय' 'असिद्धिपूर्व' अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है—अतिचर्चित पराधीनान्दः कोपि हेतु—

उत्तर० ६१२२, 8. (सक्या शब्द शब्दों के पर्याय प्रयुक्त होने पर 'काल्प्ये' और 'अप्रत्यय' का अर्थ होता है) चतुर्थापि वर्धनाम्—आरौ दम्नी का, 9. (यह शब्द कभी २ 'सर्वे' 'अतिविषयता' और 'संका' भी प्रकट करता है)—अपि कीरौ अवेत्—अण० शायद यहाँ थोर है 10. (विधिक के साथ 'संभावना' अर्थ होता है)—अपि स्तुतिविष्णुम्, 11. पुत्रा, मित्रा—अपि आया स्वयसि चानु गणिकायास्ये गहितमेतत्—सिद्धा०, लज्जा की बात है, चिकार ही—विष्णुसंभवे-दशमपि सिधेतलाहम्, 12 सोदू लकार के साथ प्रयुक्त होकर 'यथा' की उदात्तता' प्रकट करता है और दूसरे को यथाशक्ति कार्य प्रकट करता है—अपि स्तुति—सिद्धा० (आप चाहें तो) स्तुति करें,—अपि स्तुत्यापि सेवासास्तप्ययुक्त नराधन—अटि० ८१८२ 13 कभी विष्णुवादि श्रोतक सम्बन्ध के रूप में भी प्रयुक्त होता है 14 'इत्थं' 'काल' (अत एव) के अर्थ में कभी ही प्रयुक्त होता है 15 सर्व० के साथ प्रयुक्त होकर 'अन्वयाहार' के भाव को प्रकट करता है—उदा० सपिपोपि स्यात्, यहाँ (विष्णुरपि)—आसा, एक बूट) कैसा कोई शब्द अन्वयाहृत किया जाता है, सम्भवत 'एक बूट ही' अतिप्रोत् है ।

अपिर्षोर्षे (वि०) [अपि+र्ष+स्त] 1. स्तुति किया गया, परास्त्री 2 कथित, कथित ।

अपिश्चिक्रम् (वि०) [अ+च+कृ] 1 जो गलत न हो, स्वच्छ अपकित 2 गहरा ।

अपिष्णु (वि०) [अ+पि] 1 जिसका पिता जीवित न हो, 2 अपिष्णु ।

अपिष्णु (वि०) [अ+पि] अपिष्णु ।

अपिष्णु (वि०) [अ+पि] अपिष्णु ।

अपिष्णु (वि०) [अ+पि] अपिष्णु ।

अपिष्णु (वि०) [अ+पि] अपिष्णु ।

अपिष्णु (वि०) [अ+पि] अपिष्णु ।

अपिष्णु (वि०) [अ+पि] अपिष्णु ।

अपिष्णु (वि०) [अ+पि] अपिष्णु ।

अपिष्णु (वि०) [अ+पि] अपिष्णु ।

अनुष्ठा (स्त्री०) [नास्ति पुषान् यस्या—न० व०] बिना पति की स्त्री—आयुष्कावीरिणी से मति—अट्टि० ५।७०।

अनुचः [न० त०] जो पुत्र न हो, (वि०)—अनुचः(वि०) (स्त्री०—अनुचिका) जिसके कोई पुत्र या उत्तराधिकारी न हो।

अनुष्ठा (स्त्री०) [न० व० क्, टप् इत्य च] पुत्रहीन पिता की ऐसी कन्या जिसके कोई पुत्र न हो, जो पुत्राभाव की स्थिति में पिता द्वारा पुत्रोत्पत्ति के लिए निवृत्त न की गई हो, तु० 'अकृता'।

अनुवर् (अभ्य०) [न० त०] फिर नहीं, एक ही बार, यश के लिए। सम०—अन्वय (वि०) न लौटने वाला, मृत,—आद्यात्मन् फिर न लेना, वाग्वि न लेना—आयुर्विः (स्त्री०) फिर न लौटना, परम गति, प्राप्य (वि०) जो फिर प्राप्त न हो सके,—अथ 1 जो फिर उत्पन्न न हो (रोगाधिक भी), 2 मोक्ष या परमपति।

अनुष्ट (वि०) [न० त०] 1 जिसका पोषण ठीक तरह से न हुआ हो, दुबला पतला, जो स्थूल न हो 2 (स्वर) जो ऊँचा या भीषण न हो, मृदु, मन्द 3 (मा०मा०) जो (अर्थ का) पोषक या बहुमूलक न हो असंबद्ध, अर्थात् दोषों में से एक—उदा० सा० ६० ५७५—विशेष्य विस्तरे ध्योऽग्नि विष्णु मूच च विषे—एतद् आकाश का विशेषण 'वितत' शब्द मूच को मानिने में कोई सहायता नहीं करता—इतलिए असंबद्ध है।

अनुष [न पूयते विधीयते—यु० प, न० त० तारा०] माल-पुत्रा, सर्कादिक डाल कर बनाया गया रोटी से मोटा पदार्थ, इसे 'पूरा' कहते हैं।

अनुषीष, अनुष्य (वि०) [अपूषाय हितम्—छ, यत् च] अनुष सवन्वी,—अप्य—आटा, भोजन।

अनुषी (स्त्री०) [न० त०] सेपल का पेड़।

अनुषं (वि०) [न० त०] जो पूरा या भरा न हो अथवा अतल्पम्—अपूर्वमेकं शतं अनुषाम्—रघु० ३।८८, अनुषं एव पंचरात्रे शोहोदस्य—मालवि० ३।

अनुषं (वि०) [न० व०] 1 जैसा पहले न हुआ हो, जो पहले विद्यमान न था, अविद्यमान, अनुपूर्वम् नाटकम्—स० १।२, 2 अनोखा, असाधारण, अद्भुत, —अपूर्वो दृश्यते बह्विं कश्चिन्मा स्तनमदले, इन्द्रो दृष्टीवाग हृदि अममसु भीमल शृंगार० १०, निराळा अनुषम, अनुपूर्वम्—अपूर्वकर्मवाद्यालमपि मुने विमूष माम्—उत्तर० १।५६, अत्यन्त नुमाना करने वाली 3 अज्ञात 4 अत्यन्त,—अनु 1 किमी करो का दूरवर्ती फल जैसा कि सत्कारों के फलस्वरूप स्वर्ग-प्राप्ति 2 इष्ट और अनिष्ट को भावी सुख दुःख के अन्तिम कारण है,—कै पदबद्ध। 3 सम०—असि (स्त्री०) जिसे कभी तक पति प्राप्त नहीं हुआ, नुमागी कन्या,—असि, यथा आधिकारिक विवेक या आज्ञा।

अनुष्य (अभ्य०) [न० त०] अन्न से नहीं, साध-साध, समष्टि रूप से।

अपेक्षय } [अप+ईत्+स्युट्, अय+ईत्+अ] 1 अपेक्षा } प्रत्याज्ञा, आशा, वाह, 2 आशयकता, प्रकृत, कारण—प्रायः समाप्त में स्थुलियासुखया वल्लिरेषापेक्ष इव स्थित—अ० ७।१५, जलने की प्रतीक्षा में 3 विचार उल्लेख, लिहाज—कर्म के साथ अर्थ में, प्रायः समाप्त में, कारण या कमी कभी अर्थ में, (अपेक्षया, अपेक्षाया) समाप्त में बहुधा प्रयुक्त का अर्थ—'का उल्लेख करते हुए' 'लिहाज करने' के नियम' नियमापेक्षया—रघु० ५।५९, प्रथमपुत्रता-पेक्षया—मेघ० १७, अथ अयम् गुणीभूत नरपेक्षया आभ्यास्वीव वमकारिकरत्नात्—आभ्य० १, इसकी तुलना में 4 मेलबोल, सबब 5 देखना, ध्यान, साक्षात्की—देहापेक्षास्तथा वयं यथा शोषागुणीयकम्—अट्टि० ७।४९, 6 सम्मान, समाधर 7. (स्या० में) = आकाशा।

अपेक्षणीय } (वि०) [अप+ईत्+अनीयर्, उभयम्, अपेक्षितव्य, अर्थेक्षितव्य, अर्थेक्षितव्य] अर्थेक्षित करने के योग्य, जिसकी अपेक्ष्य } आशयकता या आशा हो, जिसकी प्रत्याज्ञा या विचार किया जा सके, शास्त्रीय।

अपेक्षित (अ० क० कृ०) [अप+ईत्+अ] जिसकी तलाश की गई हो, जिसकी आशा की गई हो, जिसकी आशयकता हो, जिसका विचार किया गया हो,—तम् चार, इच्छा, लिहाज, उल्लेख।

अपेक्ष (अ० क० कृ०) [अप+ईत्+अ] 1. गया हुआ, आमतल हुआ, अंतोव्युत्पत्तिविशेषाभ्याम्—अि० २।१, 2 विषयों का विचक्षण, विवक्ष (अप० के साथ) अर्थात्नेपत्तम् अर्थेक्ष्यं—मिड्डा०, 3 मूल्य, वक्षिण (अप० के साथ या समाप्त में) नुमावापेत—मिड्डा०, उद्वहदनकथा तामबन्धापेत रघु० ७।१०, मिदोप।

अपेक्षि (नेट् य० पु० ए० व०) (मवृत्त्यन्वयादि अपेक्षी से सबद्ध समासों के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त) 'करा, 'द्वितीया, 'स्वापत्ता आदि जहाँ इस शब्द का अर्थ होता है 'के बिना' 'निकास कर' 'सम्बन्धित न करने' उदा० 'वाचिका—इत प्रकार का सवारोह जहाँ स्यापारिभो को सन्धिष्ठित न किया जाय,—इसी प्रकार 'द्वितीया आदि।

अपेक्षः [अपसि (वैषकर्मणि) संवत्साज्यः—हा० ८०] 1 अधिक वर्गों वाला, या कम वर्गों वाला 2 जो सोलह बरस के कम आयु का न हो, मयु० २।१८८ 3. धिस्तु 4. अतिनीच 5 मूर्खता।

अपेक्ष (वि०) [अप+अ+अ] दूर हुआ या गया (अप० के साथ); कल्पनापेक्ष = कल्पनाया अपेक्ष; ई० अपपूर्वक 'यह'।

अपौरुषः [अ + पृ + ष] 1. हठाना, दूर करना, विरोध 2. तर्क शक्ति के प्रयोग द्वारा यदुपनिवारण 3. तर्क देना, युक्ति देना 4. निषेधात्मक सक्रम (विप० ऊः अपरत्तर्किताराम्य ह्यो विपरीतसत्तर्कः)—स्वय-मुहापोहसमर्थः—नहाया०, ऊहापोहनिर्ण करोवनयना वाचस्त्रिषत्तरापु—भाषि० २।७५, अत ऊहापोह= किसी प्रश्न से संबन्ध पूर्व चर्चा 5 प्रसंगानुसृत वय के अन्वय न जाने वाली बातों को विचार-कोटि से निकास देना, —उहापोहो वा शब्दार्थ (यहाँ गादे-अर 'अपोह' का अर्थ 'अतहापुर्ण' अर्थात् 'तादृशत्वात्' करते हैं)।
अपौरुषण् [अ + पृ + षण्] 1. हठाना—अपौरुह, 2. तर्कशक्ति—मत स्पष्टिक्रमिणपौरुह न—म० १५।१५।
अपौरुषीय (वि०) [अ + पृ + षण् + अपौरुष, ष्यत् वा]
अपौरुष्य } दूर हठाने या ले जाने के योग्य, प्रायश्चित्त (गप का) करने के योग्य, तर्क द्वारा स्थापित करने के योग्य।

अपौरुष्य-अपौरुष्येय (वि०) [नास्ति पौरुष यस्मिन् न० व० न पौरुष्येय—न० त०] 1. युक्तार्थहीन, कायर, भीरु 2. अशौचिक, अनुपयोगित, ईश्वरहृत—अपौरुष्येया वेदा अपौरुष्येयव्रतिष्ठ मुषर्भन्दिगुरित्याख्याते—मा० ९, बी मनुष्य द्वारा न स्थापित किया गया हो।—अन्व, वेद्यन् 1. कायरता 2. ईश्वरीय शक्ति।

अपौरुषोक्तिः, अन्व [अपो गरीत्य पाठकत्वात् याम इव—अनुक्त समास] एक यज्ञ का नाम, सामवेद के एक यज्ञ का नाम जो उक्त यज्ञ की समाप्ति पर बोला जाता है, व्योमिष्टोम यज्ञ का अंतिम वा सातवा भाग।

अप्यम्बः [अपि + इ + अन्] 1. उपगमक, सम्मिलन 2 (नदियों का) उमड़ना 3 प्रवेश, नष्ट होना, अन्तर्धान, मय, किसी एक में लीन हो जाना 4 नाश।

अप्रकरणम् [न० न०] जो मुख्य या प्रधान विषय न हो, अप्रामाणिक या अप्रबद्ध विषय।

अप्रकाश (वि०) [न० व०] 1 न चमकने वाला, अचकारपूर्ण, प्रकाशरहित (ज्ञान० भी)—प्रकाशचक्रप्रकाशय लोकात्मक इवाचल—रघु० १।१८, 2 स्वतः प्रकाशित 3 गुप्त, गहन्य, —अन्व, —बो (अभ्य०) गुप्त-रूप से, अप्रकट।

अप्रकृत (वि०) [न० त०] 1 जो मुख्य या प्रधान न हो, अनुभविक 2 अप्रकृत, विषय से अलग, दे० प्रकृत, प्रकृत, अप्रकृतमन्त्रसंज्ञा—इतर-उचरकी (विषय से बाहर की) बातें बोलना, विषयानुसृत बात न करना, —अन्व (सा० शा० में) उपमान अर्थात् तुलना का मानक (विप० उपमेय)।

अप्रणय (वि०) [न० व०] इतनी तेजी से जलने वाला कि धुंधले विलका अनुसरण न कर सके।

अप्रणयन (वि०) [न० त०] साहचर्यहीन, सर्वांग, विनीत

(विप० मूक्य)—मूक्यः पाठ्यं वसति निवर्तं वृत्तवपा-प्रणयनः—वि० २।२६।

अप्रणय (वि०) [न० व०] निश्चित, आनुगत।

अप्रणय (वि०) [न० व०] 1. निश्चलान, संतान रहित 2. अवात 3. यहाँ वसती न हो, बिना बसा।

अप्रणयन् (वि०) [न० व०] संतान रहित, निवर्त के कोई अप्रवात } बच्चा या संतान न हो—अतीतायाप्रवर्तति वाचपास्तयवापुः—याज्ञ० २।१५५, —हा निश्चलान स्त्री, वांश स्त्री।

अप्रतिफलम् (वि०) [न० व०] 1. अनुपम कार्य करने वाला, 2. कथिनाय।

अप्रति (ली) कार (वि०) [न० व०] कारणात्, अतहात्।

अप्रतिष्ठ (वि०) [न० व०] 1. विवेक हठाना न वा सके, बबेय 2. जिसे टोका न जा सके 3. अकृष्ट।

अप्रतिष्ठम् (वि०) [न० व०] 1. युद्ध में निष्ठा कोई प्रति-द्वी न हो, अप्रतिरोध्य 2 अनुद्ध, कायवाह।

अप्रतिष्ठा (वि०) [न० व०] 1 अपतिरोपी, विपत्तमूक्य 2 अनुपम।

अप्रतिष्ठिताः (स्त्री०) [न० व०] 1. कार्य का सम्पन्न न होना, अस्वीकृति, 2 उदेसा, अचहेलना 3. समसदारी का अभाव 4 निरुपय का अभाव, अत्यन्तना, विह्वलना—'विह्वल आदि का० १५९ (अप्रतिष्ठिताः स्वादिष्टानिष्टदंशनितिवि) 'तिसाभ्यसवा—का० २५० 5. (अत) स्मृति का अभाव,—उत्तरस्याप्रति-पतिप्रतिमा—मीम००।

अप्रतिष्ठम् (वि०) [न० व०] 1. निर्बाध, बेरोकटोक 2. बिना अड़के के अन्त से प्राप्त, जिसमें किसी धुंधले का भाग न हो (उत्तराधिकार की भाँति)।

अप्रतिष्ठा (वि०) [न० व०] अप्रतिरोध्य शक्ति वाला, अनुपम वसधारी।

अप्रतिष्ठ (वि०) [न० व०] 1. विनीत, सतम्य 2 अपर्यु-त्पन्नमति, मरदुष्टि।

अप्रतिष्ठ (वि०) [न० व०] अप्रतिष्ठनी—इ अवाच योद्धा।

अप्रतिष्ठ (वि०) [न० व०] अनुजनीय, बेबोझ, अप्रतिष्ठनी इसी प्रकार अप्रतिष्ठात्।

अप्रतिष्ठ (वि०) [न० व०] ऐसा बीर युद्ध जितके मुका-बले का बोझा बीर कोई न हो, बेबोझ, अप्रतिष्ठनी योद्धा—बीभन्तिमप्रतिष्ठं तमप निवेद्य—स० ५।२०, ५, ७।३३।

अप्रतिष्ठ (वि०) [न० व०] निषिद्धोय, निषिधाय—अर्ध-कृताधिकयोग सततोऽप्रतिष्ठः स्वल्पं नवमति—मिता०।

अप्रतिष्ठम् (वि०) [न० व०] 1. अनुपम, अयोग्य 2. अनुपम रूप वाला 3. अनुद्ध।

अप्रतिषेध (वि०) [न० व०] अनुकूलप्रतिषेधान् ।
अप्रतिष्ठा-रत्न (वि०) [न० व०] जिसका प्रतिष्ठाहीनतासक्त न हो, वहाँ एक ही अर्थ का राज्य हो—रत्न० ८१७ ।
अप्रतिष्ठा (वि०) [न० व०] १ अस्थिर, अदृढ़, अस्थायी २ अकारण, अर्थ ३ बदनाम ।
अप्रतिष्ठापनम् [न० त०] अस्थिरता, दृढता का अभाव (भाव० वी)—तकप्रतिष्ठापनान्यप्यथानुमेयम्—पारी० ।
अप्रतिष्ठ (वि०) [न० त०] १ लज्जा, बाधा रहित, अप्रतिरोध्य—अल्पदगुहे ऽमि—पंच० १, पुत्रभता-मप्रतिष्ठप्रसरथायस्य ऋषयोति—वेणी० १, अक्षित बेचोर दक्षिणमन्त्र २ अज्ञान, अज्ञत, अप्रभाषित;—सा बुद्धिप्रतिष्ठा—मनु० २।४० पच० ४।२९, प्रती प्रकार अक्षित, अमल ३. जो निराश्रय न हो। सम०—नेत्र (वि०) स्वल्प अक्षो बाला ।
अप्रतीत (वि०) [न० त०] १ अप्रसन्न, अप्रसूय २ (सा० पा० में) जो स्पष्ट रूप से न समझा जा सके, एक प्रकार का शब्ददोष (उस शब्द को 'अप्रतीत' कहते हैं जो किसी विशिष्ट स्थान पर ही प्रयुक्त होता हो, सामान्य प्रयोग का शब्द न हो) । दे० काव्य० ७ ।
अप्रस्ता [न० त०] कुमारी कन्या, जिसका दान न किया गया हो ।
अप्रत्यक्ष (वि०) [न० व०] १ अदृश्य, अगोचर २ अज्ञात अनुपस्थित ।
अप्रत्यक्ष (वि०) [न० व०] १ आत्मविश्वास रहित, अविश्वासी—(अधि०के साथ) बलवदधि शिक्षितानामात्म-न्यप्रत्यक्ष चेत—शं० १।२२ अनभिज्ञ ३ (आ० में) प्रत्यक्ष रहित,—च १ आशुका, अविश्वास, विश्वास का अभाव—क्षेमप्रत्यक्षानाम्—पच० १।१९१ २ समझ में न जाने वाला ३ जो प्रत्यक्ष न हो—अर्थबदधातुर-प्रत्यक्ष प्रातिपदिकम्—प्रा० १।२।४५ ।
अप्रवृत्त (अव्य०) [न० त०] कार्य से दाहिनी ओर ।
अप्रवृत्त (वि०) [न० त०] अर्थान, नीच, घटिया—आवा तावदप्रवृत्तानो—हि० २,—कृष् (०) स्वभू १ अर्थानता, गौणस्थिति, घटियापन २ नीच या अनुभव कार्य ('अप्रवृत्त' शब्द प्रायः लुप्त० में प्रयुक्त होता है चाहे वह अकेला प्रयुक्त हो या समास में) ।
अप्रवृत्त (वि०) [न० त०] जो बीता न जा सके, अजेय—यदाश्रीष भीष्यमत्यन्तसुर हत पाषाणाहवेभ्यश्चुध्यम्—महा०, मालवि० ५।१७ ।
अप्रवृत्त (वि०) [न० त०] १ गतिहीन, अवाक्य २ अस-मर्थ, अयोग्य, अशय (सब० या अधि०के साथ) ।
अप्रवृत्त (वि०) [न० त०] जो प्रमादी न हो, सबरदार, सावधान, जागरूक ।

अप्रवृत्त (वि०) [न० व०] आगोचर-प्रगोचर से विरत, उदात्त, अप्रसन्न ।
अप्रवा [न० त०] भ्रातृ भान (विप० प्रमा) ।
अप्रवाच (वि०) [न० व०] १ असीमित, अपरिमित २ अनधिकृत ३ अप्रामाणिक, अविश्वस्त—शं० ५।२५—कृष् [न० त०] जो किसी कार्य में प्रमाण रूप से प्रस्तुत न किया जा सके; अर्थात् वह कार्य जो अप-रिहार्य न समझा जाय २. असबद्धता ।
अप्रवाह (वि०) [न० व०] १ सबरदार, जागरूक—इ [न० त०] सबरदारी, अश्वापन, जागरूकता ।
अप्रवेय (वि०) [न० त०] १. अपरिमित, असीमित, सोमारहित, २ जिसका भलीभाँति विश्वय न किया जा सके, न समझा जा सके, अजेय—अक्षित्यस्या-प्रवेयस्य कार्यतत्त्वाधीनः—मनु० १।३—अन्व बहू ।
अप्रवृत्तिः (स्त्री०) [न० त०+प्र+वा+अति] न जाना, प्रगति न करना, (केवल कोसने के लिए ही प्रयुक्त होता है)—अप्रवृत्तिस्ते शठ भूमात्—सिद्धा० (भगवान् करे, तुम प्रगति न कर सको) दे० अजीबान, **अप्रयुक्त (वि०)** [न० त०] जो इस्तेमाल न किया गया हो, जो कार्य में न लाया गया हो, अव्यवहृत, २ गलत तरीके से काम में लाया गया शब्द ३ विरल, असाधारण (मा० शा० में), (शब्द के रूप में किसी विशेष अर्थ या लिंग में प्रयुक्त चाहे वह कोश-कारो से सम्यक्त ही क्यों न हो—तथा अन्ये दिवगोप्य पिशाचो रासमोपचा काव्य० ७, यहाँ 'शैबन' शब्द "अक्षरकोश" द्वारा समझ होने पर भी कविषो के द्वारा पुलिग में प्रयुक्त नहीं किया जाता—अत यह 'अप्रयुक्त' है) ।
अप्रवृत्ति (स्त्री०) [न० त०] १ कार्य में न लगना, प्रगति न करना, किसी बात का न होना २ आलस्य, किामून्यता, उत्तेजन या प्रोत्साहन का अभाव ।
अप्रसन्नः [न० त०] १ आमिल का अभाव २ सबर का अभाव ३ अनुपयुक्त समय या अवसर,—अप्रसन्न-विधाने च धातु शब्दा न जायते ।
अप्रसिद्ध (वि०) [न० त०] १. अज्ञात, लुप्त,—कु० ३।१९, २ असाधारण, असाधारण ।
अप्रस्ताधिक (वि०) [स्त्री०—की०] [न० त०] विषय में सबर न रखने वाला, अस्वगत (=अप्रस्ताधिक दे०) ।
अप्रस्तुत (वि०) [न० त०] १. जो समय या विषय के उप-युक्त न हो, जो प्रसन्नानुक्त न हो, अस्वगत २. बेहूदा अर्थानुपुर्ण ३. आकस्मिक, अस्वगत । सम०—अस्वगत-एक अलंकार जिसमें विषय से भिन्न अर्थात् अप्रस्तुत का वर्णन करने से प्रस्तुत अर्थात् विषय का संकेत हो

जाता है—अप्रस्तुतप्रसंग का वा सैव प्रस्तुताथवा—
काम्य० १०, इसके ५ शेष हैं—कार्ये निमित्ते
सावान्ते विधिषे प्रस्तुते सति, उपलभ्यन्त वस्तुस्तुल्ये
न्युत्पत्त्येति च पचना—अर्थात् जबकि प्रस्तुत विषय
पर (क) कार्य के रूप में दृष्टिपात किया जाय—
जिसकी प्रचना कारण बनलाकर दी जाती है, (ख)
जब कार्य को बतलाकर कारण पर दृष्टिपात किया
जाय । (ग) जब कोई विशेष निश्चय लेकर सामान्य
बात पर दृष्टि डाली जाय (घ) जब किसी सामान्य
बात का कथन करके विशेष निश्चय पर दृष्टिपात
किया जाय, अथवा (ङ) जब कि समान बात का कथन
करके समान बात पर दृष्टिपात किया जाय, उदा०
के लिए का० १० और सा० ६० ७०५ ।

अग्रहृत (वि०) [न० तं०] 1. जिसे चोटे न सही हो 2
पलत की भूमि, अनजुती 2 नया वा कंठरा कपका ।

अग्रकारणिक (वि०) [स्त्री-की] [न० तं०] 1 जो
प्रकरण से सबब न रहता हो, —अग्रकारणिककन्याभि-
धानेन प्राकरणिकस्यासौचोऽप्रस्तुत प्रस्ता—काम्य० १० ।

अग्रहृत (वि०) [न० तं०] 1 जो गवाक न हो 2 जो
मौखिक न हो 3 जो साधारण न हो, असाधारण
4. विधेय ।

अग्रहृत (वि०) [न० तं०] गीच, अधीन, घटिया ।

अग्रहृत (वि०) [न० तं०] 1 जो श्रावत न किया गया
हो, —अग्रहृतयोस्तु वा राति सैव सयोग ईरित—
भाषा० 2. जो न पहुँचा हो या जो न आया हो, 3.
नियमन अनधिकृत, अननुयायी 4. न आया हुआ,
न पहुँचा हुआ । सम०—अवतर, —काष्ठ(वि०)
दूरे समय का, अनागतिक, जो ज्ञानु के अनुकूल न
हो, —काष्ठ बचन बृहस्पतिरपि बुधन्, सजते बुद्धय-
वज्ञानमपमान च पुष्कलम्—पद्य० १।६३, —वीच्य
(वि०) अवयस्क नात्रालिङ्, —व्यवहार, —वच्य
(वि०) (विधि में) अल्पवयस्क मार्बंजिक कार्यों में
अपने उत्तरदायित्व के बरतते भाग लेने के लिए जिस
को आया न हो, अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का)
—अग्रान्त्यवहादोऽग्री यावत् चोद्यवाधाधिक—दश० ।

अग्रान्ति, (स्त्री०) [न० तं०] 1. न मिलना, —तदग्रान्ति-
महातु भविष्येनायोग्यपातका—काव्य० ४, 2 जो
किसी नियम से निवृत्त या स्वातिर न हुआ हो,
—विधिरत्य-तमग्रान्ती नियम शाक्तिके सति—नीमा०
3 किसी बात का न होना, किसी घटना का घटित
न होना ।

अग्रान्ति (वि०) [स्त्री०—की] [न० तं०] 1. जो
प्रासांगिक न हो, अनुचितवस्तु, —इदं बचनमग्रान्ति-
यिकम्—2. अविद्यमान, जिस पर अटोला न किया
जा सके ।

अग्नि (वि०) [न० तं०] 1. नागचंद्र, अग्निचक्र, अग्नि-
कर, —अग्निचक्र च पद्यस्य यकता योला कपुर्कः—
रामा०, मनु० ४।११८, 2. निष्कृत, अग्नि, —कः सनु,
पुराण, —कम् सनुतायुर्न वा अग्निचक्रकर्म, —वाग्नि-
शाहस्य शाब्दो स्त्री नाचरोत्कविचरिषियम्—मनु० ५।
१५६, 3. सम०—कारिण, —कारक, (वि०)
अग्निचक्र, अग्निचक्र—इव (४०), —वाग्नि
(वि०) निष्कृत और कठोर सख्य बीकने वाला,
—अन्यार्थअग्निचक्र—मा० १।७३, बाता वस्तु नूहे
नास्ति प्रायो वाग्निचक्रादिनी—पाथ० ४४ ।

अग्नीति (स्त्री०) [न० तं०] 1. नागचक्री, अग्नि 2.
घातुता ।

अग्नीष्ट (वि०) [न० तं०] 1. जो डीठ न हो 2. भीष,
वेध, असाहवी 3. जो बयस्क न हो, —डा 1. अग्नि-
वाहित कन्या 2 बहु कन्या जिसका विवाह तो हो
गया हो, परन्तु अभी तक बयस्क न हुई हो ।

अन्यत् (वि०) [न० तं०] बहु स्वर जो आवाज की दृष्टि
से लंबा न किया गया हो ।

अन्यत् (स्त्री०) [—रा, रा] [बहुवचः सःसि अन्-
प्लिति—अपु+सु+असुन्] [तु० रामा० अन्य
निर्मलनाशेव रसात्स्यारिषिय, उत्पेतुर्नैकवचस
सत्प्राप्तरसोऽमबन्] । आकाश में रहने वाली
वेधामार्गों को गन्धों की परिवर्तन सपत्नी जाती है,
उन्हें अलकोडा बनी रहिकर है, बहु आन्या रूप बदल
सकती है तथा विषय प्रभाव से मुक्त है, बहु शब्द
रूप की संतर्किया है और 'स्वभाव्या' कल्पनाती है ।
बाग ने इस प्रकार की परिवर्तन के १४ कुलों का बर्णन
किया है—वे० का० १११, यह सख्य बहुधा बहुवचन
में (विषय बहुवचनरस) प्रयुक्त होता है, परन्तु
एक बचन में प्रयोग तथा 'अन्यत्' रूप कई बार
देखने में आता है—नियमविष्कारिणी मेनका नाम
अन्यत्ः प्रेषिता—स० १, एकापसर आदि०—र४०
७।५३ । सम०—वीच्य अन्यत्को के गहाने के
लिए पवित्र तालाब, यह समबत किसी स्थान का
नाम है—दे० सा० ९, —वसिः अन्यत्को का स्वामी
इन्द्र की उपाधि ।

अन्यत् (वि०) [न० व०] 1. निष्कल, फलरहित, संकर
(स० और आल०) "ला मोरपय, "लकार्य आदि
2. अनुचंद्र, निरवर्क, व्यर्थ, —यथा यदोऽफल, स्त्रीषु
यथा मोर्षिकि चाफल, यथा यदोऽफल दानं तथा विषो
पुत्रोऽफल । मनु० २।१८। पुत्रवत् से हीन, अधिया
किया हुआ, —अकलोऽह् कलस्तेन कोधास्ता च निराहता
—रामा० । सम०—अज्ञाति, —अज्ञेय (वि०) जो
पारिधनिक धाने की इच्छा नहीं रहता, स्वाधरहित,
—अफलाकांक्षिभ्यः किमते बहुधाधिभिः—महा० ।

अकौल (वि०) [न० ब०] जिना साथ का, आग रहित
—अन् अकौली ।

अकल-अक (वि०) [न० तं०] 1 स्वच्छन्द, न बधा हुआ, बेरोक 2 अर्पहीन, बेमालक, बेहुडा, बिरोधी—
उदा० याचक्योचिमतु मीनी ब्रह्मचारी च मे पिता, माता तु मम ब्रह्मसौख्यपुत्रश्च पितामह । (बिरोधी)—
वरद्वय कबकपातुकाभ्यां द्वारि स्थितो नाथति मङ्ग-
कानि—अनर० रायमुकुट । सम०—मुक्क (वि०)
हुमुक्क, माली से मुक्त, बदबवान ।

अकल्य-आकल्य (वि०) [न० ब०] निरहीन, एकाकी ।
अकल (वि०) [न० ब०] 1 दुबल, बलहीन, 2 अर-
क्षित,—सा स्त्री (अपेक्षाकृत बलहीन होने के कारण),—नून हि से कथिवा विपरोलबोधो ये नित्य-
मातुरबला इति कामिनीनाम्, यात्रिविगोस्तत्कार-
पुष्टिपातौ शक्यपयोधि विजितास्त्वका कथ ता --
मत् ११११, ०जन स्त्री, —अकल्य निर्वसता, बल की कमी, वै० बलाबलम भी ।

अकाथ (वि०) [न० ब०] 1 अनियन्त्रित, बाधरहित,
2 पोडा से मुक्त,—च [न० तं०] 1 बाधाहीनता
2 निराकरण का अभाव ।

अकाल (वि०) [न० तं०] 1 जो बालक न हो, जवान,
2 छोटा नहीं, पूर्ण (जैसा कि चन्द्रमा) ।

अकाष्ट (वि०) [न० तं०] 1 जो बाहरी न हो, भीतरी
2 (आल०) गरिष्ठित, आनकार ।

अकिलकः [आप इच्छन यस्य—ब० स०] बरवानि,
(जो समुद्री शाली पर पकती है)—अकिलन बह्निमसौ
विवाति रघु० १३१४ ।

अकृद (वि०) [न० तं०] मूर्क, नासमझ—अपवादनामम-
बुडानाम् सा० सू० ।

अकृदि (स्त्री०) [न० तं०] 1 समझ की कमी, 2
अज्ञान, मूर्खता । सम०—पूर्व, —पूर्वक (वि०)
अनभिदं—(ब०—वैकम्) (वि०) अनजान-
पने में, अज्ञात रूप से ।

अकृत्-अकृ (वि०) [न० तं०] मूर्क, मूढ़, (पुं०) जह,
(स्त्री०)—अकृत् अज्ञान, बुद्धि का अभाव ।

अकौष (वि०) [न० ब०] अजान, मूर्क, मूढ़, च
[न० तं०] 1 अज्ञान, अज्ञा, समझ का अभाव—
शोषुताश्चाप्ये—मत् ० ३१२, तिसरंशुर्बोधमबोध-
विस्तवा स्य भूयतीनां चिति स्य अन्तव—कि० १६,
2 न जानना, आनकारी न होना । सम०—अक्य
(वि०) जो समझ में न आ सके, अकल्पनीय ।

अक्य (वि०) [अन्वु वाचते—अन्+अन्+इ] अल में
पैदा हुआ या अल से उत्पन्न,—अक्य 1 कमल २
एक अक्षर की संख्या (१०००००००००) । सम०
—अकिया कमल का छता,—अ,—अच,—मू,

—बोनि ब्रह्मा के विशेषण,—अक्य कमलों का विभ
सूर्य,—अक्यः शिव की उपाधि ।

अक्या [लिपया टाप्] स्त्री ।

अक्यिनी [अक्य+इनि, लिपया डीप्] 1 कमलों का
समूह 2 कमलों से पूर्ण स्थान 3 कमल का पीषा ।
सम०—पतिः सूर्य ।

अक्यः [अपो ददाति—दा+क] 1 बावल 2 बर्ष (इस
अर्थ में नपु० भी) 3 एक पर्वत का नाम । सम०
—अक्यं आधा बर्ष,—अक्यः शिव,—अक्यं पाताम्बी,
—सारः एक प्रकार का कपूर ।

अक्यिः [आप पीयते अन—अप+वा+कि] 1 समुद्र,
जलाशय, (आल० भी) दुग्ध, कार्य०, ज्ञान० आदि
किसी चीज का भंडार या समूह 2 ताम्र, सोन, 3
(गण० में) शान की संख्या, कई बार पाण की
संख्या । सम०—अक्यिः बाधवादि,—अक्यः—अक्यः
समुद्रज्ञाय,—अ 1 चन्द्रमा, 2 शङ्ख, (- इति)
1 बाष्पी (समुद्र से उत्पन्न) 2 लक्ष्मीदेवी,—द्वीपा
पृथ्वी,—अपरी कृष्ण की रानधानी द्वारका, नव-
मीलकः चन्द्रमा,—अक्यी मंशरी की शीप,—अक्यः
विष्णु,—सारः रत्न ।

अक्यार्थ्य (वि०) [न० ब०] जो ब्रह्मचारी न हो,—अक्य,
यंक्त [न० तं०] लम्पटना, कामुकता, 2 मैथुन ।

अक्यार्य्य (वि०) [न० तं०—अक्य+अक्य+यत्] 1
जो ब्राह्मण के लिए उपयुक्त न हो,—अक्यार्य्यम-
वर्त्तं स्यात् ब्राह्मण्य ब्राह्मणो हितम्—हुला० 2
ब्राह्मणों के लिए शक्यत—अक्य अक्यार्थोचित कार्य,
या जो ब्राह्मण के लिये योग्य न हो । नाटकों में
प्राय यह शब्द 'दुहाई देने के अर्थ में प्रयुक्त होता है—
अर्थात् 'ग्याकारो ग्याथयता करो' एक अर्थजन्य शीघ्र
और जपत्य कर्म हो गया है'—अर्थव्य शोचनव्यव्य
व्याजिनकल्पित पुत्र, अक्यार्य्यमन्कालजीवी शोक-
स्थितो द्विज—मू० क० ।

अक्यार्य्य (वि०) [न० ब०] ब्राह्मणों से विमुक्त या
विरहित—नाक्यार्य्यमन्जीनि—मत् ० ११३२२ ।

अक्यलि (स्त्री०) [न० तं०] 1 अक्यि या आसक्ति का
अभाव 2 अविश्वास, मन्दिग्धता ।

अक्यव्य (वि०) [न० तं०] 1 जो काने योग्य न हो ।
2 काने के लिये निषिद्ध,—अक्य वाने का निषिद्ध
पदाथ ।

अक्यव (वि०) [न० ब०] असाधा, बदकिस्मत ।

अक्यव (वि०) [न० तं०] अक्यम, कुत्सित, कुट्ट,—अक्य १.
दुष्कर्म, पाप, कुट्टता 2 शोक ।

अक्यव (वि०) [न० ब०] निर्भय, सुरक्षित, अयमुक्त,
—वैराग्यभेदाभयम्—मत् ० ३१३५,—अक्य १. भय का
अभाव, भय से दूर रहना, 2 सुरक्षा, अभाव, भय का

डर से रखा,—मेवा सत्याग्रह बतान्—बंघ १, 1 सम०—कुम् (वि०) 1. जो बरानक न हो, मुटु, 2. सुरक्षा देने वाला,—सिद्धि 1. सुरक्षा या विस्वसनीयता का सिद्धोप, 2. मुटुनेरी,—ब,—बाकिन्,—अव (वि) सुरक्षा का बचन देने वाला,—कविता,—बालम्,—प्रबन्ध नय से युक्ति का बचन या सुरक्षा की गारंटी,—सर्वप्रदानेव्यग्रयप्रदान (प्रधानम्)—पत्र० ११२००,—बन्धु सुरक्षा का विस्वास दिकाने वाला मिश्रित पत्र, तु० प्राचिनिक 'सुरक्षा बाचरव'—बाकना रसा के लिए प्रायेण,—बन्धुम्—बाष् (स्त्री) सुरक्षा का बचन या नय से युक्त कर देने की प्रतिक्रिया ।

अव्यक्तर—कृत (वि०) [न० ट०] 1 जो नयानक न हो 2. सुरक्षा करने वाला

अव्यक्तः [न० ट०] 1 अविक्रमानता,—अत एव नवावधी महा०, 2. कृत्कार्य मोक्ष,—प्राचिनमनमभिमामाञ्जलि वा—प्रि० १२१३०, १८१२७. 5-तयापि वा—प्रि०—अथाय सर्वभूतानामनवाय च रक्षताम्—गाम० ।

अव्यय (वि०) [न० ट०] 1. जो न होना हो 2. अनु-पयुक्त, असुप्त 3. दुर्मग्यपूर्ण, अवाया,—उपनतमवधी-रयन्यव्यय्या—कि० १०५१ ।

अव्यय (वि०) [न० व०] 1. जिसका तापित में कोई हिस्सा न हो, 2. अविभक्त ।

अवायः [न० ट०] 1. न होना, अव्यतिष्ठ,—सोती प्राचो-बायन्—मुच्छ० १ (अत्यन्त हो गया) 2. अनुपस्थिति, कमी, अक्षमता,—सर्वाभाष्यभावे तु बाहुवा रिक्च-मागिन—अनु० १११८८, अविक्तर समास में,—सर्वाभावे हरेभूष—१८९, सब कुछ विफल हो जाने पर 3. सर्वनाश, नृप्यु, विनाश, सतासुप्तता,—नामाय उपमन्वे—जारी० 4. (दार्शन० में) शोष, असता, अविद्यमानता या निषेध, कर्णादे के मतानुसार तातवा परार्थ वा बर्ण, (इसके दो अर्थ हैं—सर्वाभाष और सर्वान्वाभाव, पहले के फिर हीन उपनेत्र हैं प्रायभाष प्रव्यताभाव, और अन्वयताभाव) ।

अवाक्यता [न० ट०] 1 सत्यविषयन या निर्णय का अभाव 2. भाषिक ध्यान का अभाव ।

अवाचित (वि०) [न० ट०] न कहा हुआ । सम०—पुष्क बहु लम्ब की कमी प० या स्त्री० में प्रयुक्त न होता हो—अर्थात् नित्यस्वीकृत ।

अवि (अव्य०) [अन् + वा + फि] (बाहु और कर्मों से पूर्व लगाया जाने वाला उपसर्ग) अर्थ—(क) 'की ओर', 'की विधा में', अविभक्त की ओर जाना, अविद्या, 'नयनम्', 'दानम्' वादि (अ) 'के लिए' 'के विरुद्ध' 'अन्', 'अन्' वादि (न) 'पर' 'ऊपर' 'सिन्' पर विद्यमाना वादि (व) 'ऊपर से' 'ऊपर' 'परे' 'नु' ठानी ही वाला, 'अन्' (अ) 'अविभक्तता से' 'अनुत्'

'अन्' 2. (विशेषण तथा स्वल्पन लंका कर्मों से पूर्व लगाने वाला उपसर्ग)—अर्थ—(क) तीव्रता और प्राधान्य, 'अर्थ'—प्रधान कर्तव्य, 'साक'—अत्यंत साक 'नव-विकलकृत् तथा (अ) 'की ओर' 'की विधा में', अन्वयीभाव समास बनाना 'वैषम्य', 'अव्यय', 'अवि' वादि 3. (कर्म० के साथ संघ० अर्थ० के अन् में) (क) 'की ओर' 'की विधा में' 'के विरुद्ध' (कर्म० के साथ या इसी अर्थ में समास के साथ) अन्वयि या अन्वयिनि समासः पठति, अन्वयिनिशोते विदुः—विद्या० (अ) 'विदुः' 'पठते' 'आयने' 'उपस्थिति में' (न) पर ऊपर, अर्थात् करते हुए, के विषय में—आयु देववती यातराजि—विद्या० (ब) 'पुष्क' 'अन्', एक-एक करके (विमान द्वारा)—अन् अन्वयिनिशोते—विद्या० ।

अवि (की) क (वि०) [अवि + कन्] कायी, कण्ठ, विशाही,—सांख्यिकारणिक बुद्धोचित काचन स्वक-नवतोमसमा—रघु ११५, अवि लिखे—कुशाही लं एवं नम्यपि योर्विक—अट्टि० ८१२१ ।

अविशोभा [अवि + शोभ् + शब् + टाप्] कामना, इच्छा, सामन्ता ।

अविशोभित् (वि०) [अवि + शोभ् + चिदि] काकता रक्षने वाला, कामना करने वाला ।

अविशय (वि०) [अविशुद्ध कामो लक्ष्य—अवि + कन् + अन् व० ट०] स्त्री, प्रेमी, इच्छुक, कामना-युक्त, कामुक (कर्म० में या समास में)—आपे त्यागवि-कामाहम्—महा०—अः (प्रा० ट०) 1. स्नेह, प्रेय 2. कामना, इच्छा ।

अविश्वः [अवि + कन् + अन्, अन्वृद्धिः] 1. आरम्भ, प्रयास, व्यवसाय,—नेहाधिकमनाशोक्ति अन्वयवो न विद्यते—अनु० २१४, 2. निश्चित भावजनन या धारणा, अधिदान, हुमका 3. आरोग्य, सवार होना ।

अविश्वकम्—अति (स्त्री०) [अवि + कन् + ल्युट्, पितृन् वा] उपायजन, भावजन करना—वे०अ०अविश्व ।

अविशोक्त [अवि + कृत् + अन्] 1. पुकारना, पिलकाना 2. अपसव्य कर्तना, निहा करना ।

अविशोक्त [अवि + कृत् + अन्] पुकारने वाला, वाली देने वाला, कर्मक लगाने वाला ।

अविश्वान् [अवि + श्वा + टाप्] 1. चपक-दपक, लोधा काति,—आप्यविश्वान् तयोरासीय इकतो बुद्धवेधोः रघु० १५५, सुवर्षाये न अन् कर्मणं पुष्पति स्वायवि-श्वान्—नेष०, ८० कु० ११४३, ७१८८, 2. कर्तना, शोचना करना, 3. पुकारना, संबोधित करना 4. शाय, अधिदान 5. लक्ष, पर्याय 6. प्रतिष्ठि, अक्ष, कुष्मादि, माहात्म्य ।

अविश्वानम् [अवि + श्वा + ल्युट्] अवाधि, यक्ष ।

अभिवाचः—अभ्यवन् [अभिवाच् + अच्, स्युट् वा] 1. (क) उपासना, पास जाना वा आना, दर्शनार्थं समन, पहुँचना,—तवाहूतो नाभिगमेन त्वयम्—रघु० ५।११, १७।७, ७०७।७। अभिवाचमनासुर्वं तेनाप्यनाभिगमिता—१२।३५, 2 शनोय (स्त्री वा पुरुष के साथ)—परदारभिवाचनम्—का० १५७, प्रसङ्गं शास्त्रभिगमे—भा० २।२९१।

अभिवाच्य (स० क०) [अभिवाच् + य] 1 उपासक, दर्शनीय अभिवाच्य, कु० ६।५६, 2 श्राप्य, आमन्त्रक,—भोमकालीनृपगुणो अष्टप्यथाभिगम्यरथ—रघु० १।१६।

अभिवाचनम्— [अभिवाच् + स्युट्, क्त वा] जगती तथा अभिवाचितम्] शोषण दहाइ, धाँकार।

अभिवाचित् (वि०) [अभि + गन् + गिति] निकट जाने वाला, समोय करने वाला।

अभिवाप्ति (स्त्री०) [अभि + ग् + क्तिन्] सखाय, बचाव।

अभिवाप्सु (पु०) [अभि + ग् + तृच्] बचाने वाला, सखायक।

अभिवाहः [अभि + वाह् + अच्] 1 छीन लेना, उग्राय, लूटना 2 धावा, हमला 3 लसकार 4 शिकार 5 अधिकार, प्रभाव।

अभिवाहयम् [अभि + वाह् + स्युट्] लूटना, छीन लेना।

अभिवाहयम् [अभि + वाह् + स्युट्] 1 राबना, हागबना, 2 बुरी भावना से अधिकार करना।

अभिघात [अभि + हन् + घञ्] 1 आघात करना, मारना चोट पहुँचाना, अहार,—ठटाभिघातादिषु लभयच्छु—कु० ७।५९, 2 विध्वंस, पूर्ण नाश, मन्मोच्छेदन—दुःखत्रयाभिघाताद्विजज्ञासा तदभिघातके हेतो—सा० का० १,—सम् कठोर उच्चारण (अभिघ नियमों की उल्लंघना के कारण)।

अभिघातक (वि०) [स्त्री०—लिका] (मारकर) पीछे हटाने वाला, दूर कर देने वाला।

अभिघातिन् (पु०) [अभि + हन् + गिति] शत्रु।

अभिघार [अभि + घृ + गिच् + घञ्] 1 धी 2 यज्ञ में धी की आहुति,—प्रणीतपुत्रदाग्नाभिघारधोरस्तन्नुपात्—महावी० ३।

अभिघारणम् [अभि + घृ + गिच् + स्युट्] धी छिन्नकना।

अभिघ्रायन् [अभि + घ्रा + स्युट्] सिर सूचना (स्नेह-सूचक चिह्न)।

अभिघ्न [अभि + घ्न + अच्] अनुचर, सेवक।

अभिघ्नयन् [अभि + घ्न + स्युट्] 1 शाब्दान-सूचना, जाहू, टोना, बुरे कामों के लिए बन् पड़ कर जाहू करना, हुनवाला 2 धारना।

अभिघार [अभि + घ्न + घञ्] 1. (महादि श्राव) शाब्द सूचक करना, मन्मूय्य करना, जाहू के मनो का बुरे कामों के लिए प्रयोग करना, जाहू, करना 2 हत्या

करना। सम०—अघ्न जाहू के मनो द्वारा किया गया। जाहू,—अघ्न जाहू का स्युट्, जाहू करने के लिए मन्मूय्य करना,—शि० ७।५८,—अघ्न,—होय जाहू टोने के लिए किया जाने वाला यज्ञ, होय।

अभिघारक } (वि०) (स्त्रियाम्—रिषी,—रिषी) [अभि
अभिघारिन्] + घृ + गिच्, गिति वा] अभिघार करने वाला, जाहू टोना करने वाला,—कः,—री ऐन्दु-जालिक, जाहूवर।

अभिघ्नन् [अभि + घ्न + घञ्, अच्] 1 (क) कुटुम्ब, वध, अन्वय (स) अन्वय, उत्पत्ति, कुल 2 उत्पन्न कुल में जन्म, उत्पन्न कुटुम्ब में उत्पत्ति, स्तुत्य तन्महात्म्य यदभिजनतो यच्च गुणत—भा० २।१३, शील शील-लतात्पत्तन्मभिजन सदाह्वना—भर्तृ० २, ३९, 3 जन्मभूमि, मातृभूमि, बापदादाओं की जन्मभूमि (विष० निवास), यच्च पूर्वकल्पिय सोऽभिजन - विद्वा० 4 क्याति, प्रतिष्ठा 5 घर का मुखिया या कुलमुख्य (श्रेष्ठव्यक्ति), 6 अनुचर, परीजत।

अभिघ्नयन् (वि०) [अभिघ्न + यत्] उच्छन्न कुल का, उत्पन्न वध में उत्पन्न,—"बतोरिन् श्लाघ्ये विधत्ता वृत्तिर्षी पदे—भा० ४।१८।

अभिघ्नय [अभि + जि + अच्] जीत पूर्ण विजय।

अभिज्ञात (पु० क० क०) [अभि + ज्ञ् + क्त] 1 (क) उत्पन्न, भग० १६।३।५, (ख) सर्वका विज्ञान (ग) योग्य 2 जगत् पूजा, वेदा हज्ज 3 कुलीन उच्छन्नकुल में उत्पन्न, उच्छन्न वध में जन्म लेने वाला—त्रायस्मेनाभिज्ञानेन वृत्र शोचयेना वृत्र स्यु० १।७।६, गिरट्, नञ्-अभिज्ञान सन्वय्य वचनम् विषम० १ 4 योग्य, उचित उपयुक्त 5 घरर हाँचकर, प्रजन्मना-यामभिज्ञानवाचि - कु० १।६५, 6 मनोहर, सुन्दर 7 विद्वान्, बुद्धिमान् विवेकशील—मकीर्णं नाभिज्ञानेनैव नाप्रबुद्धेयु मस्कृतम् (बदेंत)।

अभिज्ञाति (स्त्री०) [अभि + ज्ञ् + क्तिन्] उत्पन्न कुल में जन्म।

अभिज्ञिष्यन् [अभि + ज्ञ् + स्युट् जिप्रार्थे] वाक से सिर का स्थान करना (स्नेहसूचक चिह्न)।

अभिज्ञिन् (पु०) [अभि + जि + विषय] 1 विषय 2 एक नक्षत्र का नाम।

अभिज्ञ (वि०) [अभि + ज्ञ् + क्त] 1 जानने वाला, जान-कार, अनुभवशील, कुशल (सब० वा अभि० के साथ अथवा समान में)—यदा कीर्त्तयामिन्द्रमुद्रमने तदाय्य-मिज्ञो जत - उदार० ५।३४, अभिज्ञाच्छेदवासानां त्रिपत्ने तन्दन्द्रमा - कु० ७।४१, मेघ० १६, रघु० ७।६५, अनाभिज्ञो यवान्सेवाधमय्य १, 2 कुशल, दख, चतुर—भा 1 पहचान 2 याद, स्मृति चिह्न।

अभिधानम् [अभि + धा + स्तुट्] 1. पशुधान, —द्वयभिधान-
होती है वहाँ तेज अशुद्धता—राजा ० 2. स्मरण, प्रत्या-
स्मरण 3. (क) पशुधान का चिह्न (पुष्प वा वस्तु),
—द्वय यौगिक्यमित्य भास्येतिहासतः च आर्यायाम्
—भा० १, अट्टि० ८।१८८, १२४ प्रती प्रकार 'जाकु-
न्त 4. अष्टमंडल में कामा चिह्न। तय० —आच-
रकम् पशुधान का पुष्प, अगुठी अ० ४।

अभित (अभ्य०) [अभि + गतित्] (चि० वि० के रूप
में अथवा कर्म० के साथ सं० अर्थ० के रूप में प्रयुक्त)
1. निकट, की ओर, सब ओर से, —अभिनसं पृथा-
मुनुत्सेहेन परितस्तरे—चि० ११८, 2 (क) निकट
मिळा हुआ, समीप में, —तो राजाश्रीवाद्याक्यं मुनंभ-
जित स्थितम्—राजा० (स) के सामने, की उप-
स्थिति में, —गन्धाम्भिःप्रमृशितो मुच्यमुवाकम्—चि०
२।५९, 3 सम्मुख, मूढ़ के आगे, सामने चि० १।१,
१४, 4 दोनों ओर, —पृथाचुबिलकपत्रमितस्तु-
षीद्वयं पृथत—उत्तर० ४।२०, अट्टि० १।१३७, 5
पहने ओर पीछे 6 सब ओर से, बाएँ ओर से,
(कर्म० या सं० के साथ) —परिक्रानो यथाभ्यापार
राजानमभिन स्थित—पालवि० १।७, 7 पूर्ण रूप से,
पूरी तरह से, सर्वत्र 8 तीव्र ही।

अभिताप [अभिनप् + पञ्] अन्तर्गम्य—चाहे प्ररोर की
ही या मन की, आवासेज, कष्ट, अधिक दुःख या पीडा
—चि० १।१, चि० १।४, बलवान्मुनयं मनसोऽभिताप
—विष्णु० ३।

अभिताप (चि०) [प्रा० सं०] बहुत जाल, जालमुलं
—रघु० १५।४९।

अभितानम् (अर्थ०) [अर्थ० सं०] दक्षिण की ओर
(=पु० प्रदक्षिणम्) ।

अभित्तव —अवकम् [अभिद् + जप + स्तुट् वा] आक्रमण,
हमला।

अभित्तो [अभि + दृह् + पञ्] 1 चोट पहुँचाना, बह्यंभ
रचना, हानि करना 2 गाली, विन्दा।

अभित्तवन् [अभि + धृप् + स्तुट्] 1 मूढ श्रेयसि से
आविष्ट होना 2 आधाधार।

अभिधा [अभि + धा + अञ् + टाप्] 1 नाम, तन्ना (प्राय
पमास में)—इत्युच्य वसन्नाभिधः—सा० ६० २
2 शब्द, अर्थ 3 शाब्दिक अभिधा वा अर्थार्थ, संके-
तन, शब्द की तीन अभिधाओं में से एक, —आध्यापौऽ
भिधा बोध्य—सा० ६० २ (अभिधा—शब्द के
संकेतित अर्थ की बतलाती है) स.सूच्योर्वस्तव मुक्तो
यो व्यापारोऽप्याभिधोऽप्ये—काव्य० २। 1 तय०
—अभिधम् (वि०) अपने नाम को नष्ट करने वाला
—मूल (वि०) शब्द के संकेतित वा मुक्तार्थ पर
आधारित।

अभिधानम् [अभि + धा + स्तुट्] 1 कठना, बोधना, नाम
रचना, संकेत करना, —एतावताभ्यांभाभिधमभिधानम्
निब० 2 प्रकथन, बचन हे० पा० २।१२ चिह्न० 3.
नाम, संज्ञा, पर, —अभिधानं तु पश्चात्तस्याहूय-
नोपम्—का० ३२, तथाभिधानात् व्यपत्ते नतानन.
चि० १। आध्याभिधानात् २४, (अभ्यस्तव के अर्थ
में) मुकारा गया, नाम जिना गया—आध्याभिधानात्
वचनात्—रघु० ३।२०, 4. वाचन, व्याख्यान 5. कोष,
शाब्दावली, सुप्रत (अतिथि दो वर्षों में पु० में भी)
1. तय०—कोष, —वाक्का शब्दकोश।

अभिधाक (स्त्री० - किका, - किली) (वि०) [अभि + धा
अभिधाकित्] + स्तुट्, भिदि वा]
1 नाम रखने वाला, वाचक, —कर्म, कुल्याभिधाकिली
—अवर०,—सकेत करता है, अर्थ बतलाता है, भाष
रखता है, 2 कहने वाला, बोधने वाला, बतलाने-
वाला, —कठवीर्यिदभिधापिभि धित्तये—अवध० २३,
आध्याभिधापी पुष्प पुष्पमांसात् उच्यते—चिका०।

अभिधाकम् [अभि + धा + स्तुट्] आक्रमण, पीडा करना।
अभिधेय (सं० कृ०) [अभि + धा + प्रत्] 1 नाम दिने
पाने योग्य, कथनीय, वाच्य 2 नाम के बोध्य (उर्ध्व०
में) अभिधेयाः पदार्था, —अर्थ 1. तापंजला, अर्थ,
भाव, तात्पर्य—चि० १।५५, 2. भावाभाव 3. स्थित,
—इहाभिधेय सप्रबोधनम्—काव्य० १, इति प्रथो-
जनाभिधेयसदृशः—पुष्प० 4 मुक्तार्थ (=अभिधा)
—अभिधेयाभिधानात्प्रतीतिर्लक्ष्योऽप्येते—काव्य० २।

अभिध्या [अभि + ध्ये + अञ् + टाप्] 1. बुझने की उपरि
के लिए लक्ष्यपाना, 2 प्रकल कामना, चाह, सामान्य
इच्छा, —अभिध्यापदेसात्—बृह० 3 चहूँ करने की
इच्छा।

अभिध्यायम् [अभि + ध्ये + स्तुट्] 1. चाहना, प्रकल इच्छा
करना, लक्ष्यपाना, कामना करना 2. मनने करना,
प्रथित।

अभिकम् [अभि + जन् + पञ्] 1. प्रहर्ष, प्रकृत्यता,
प्रसन्नता 2 प्रशंसा, सराहना, अभिनन्दन, बधा देना,
3 कामना, इच्छा, 4 प्रोत्साहन, कार्य में प्रेरणा।

अभिकम्बम् [अभि + नन् + स्तुट्] 1. प्रहर्षण, अभिवाचन,
स्वागत करना, 2 प्रकल करना, अनुबोधन करना
3. कामना, इच्छा।

अभिकम्बनीय } (सं० कृ०) [अभि + नन् + कनीय, ष्य्
अभिकम्ब] वा प्रहृत्य होना, प्रकथित होना, सराहा
जाना, —कामनेतयभिकम्बनीयम्—अ० १, रघु० ५।३३।

अभिकम्ब (वि०) [अभि + सं०] मुका हुआ, विनोद, —स्तथा-
भिरामस्तवकामिनाम् रघु० ३।३३२।

अभिकम्बः [अभि + नी + ष्य्] 1 शरक खेचन, अंश
विशेष, नाटकीय अर्थण (मिठी मनोवाच वा अर्थण की

दृष्टि, संकेत या मुद्रादि से प्रकट करने वाला) —नृत्या-
भिनयक्रियाभूतम्—कुं ५१७१, अभिनयान् परिचिनु-
मितीकृता—रूप० १३३, नर्तकीरतिनयातिक्रिन्ती
१११४ २ नाटकीय प्रदर्शनी, स्वांग, मंच पर प्रदर्शन
करना,—आभितानियं तमयं यस्तां द्रष्टुमना
सलीकपाल—विक्रम० २१८, सा० ६० अभिनय का
निरूपण इस प्रकार करता है—प्रवेदिनयोऽन्यस्यान्-
कार स चतुर्विध, आङ्गको बाहिकश्चैवमाहायं सात्वि-
कम्यथा। १७४। अभिनय—किसी वशा का अनुकरण
करना है, यह चार प्रकार का है—(१) आंगिक—
शारीरिक चेष्टाओं द्वारा व्यक्त होने वाला (२)
बाहिक—शब्दों द्वारा प्रकट होने वाला (३) आहाय-
वेदाभ्यां, बालकार, सजावट आदि से व्यक्त होने
वाला (४) सात्विक—स्वेद, रोमांच आदि के द्वारा
आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने वाला।

अभिनय (वि०) [श+सं०] १ बिस्तुल नया या ताजा
(सर्वथा) पुराकालिभ्योऽभिनया—सा० ३१८, ५११,
का वच् का० २, नवोदा २ बहुत छोटा, अनुभवहीन।
सम०—बोधन—व्यक्त, नौ जवान, बहुत छोटा।

अभिनयम् [अभि+यङ् ल्युट्] आँख पर बोधने की
पट्टी, बधा।

अभिनियुक्त (वि०) [अभि+नि+युञ्+क्त] काम में
लगा हुआ, व्यस्त।

अभिनियुक्त (वि०) [अभि+निर्+युञ्+क्त] १ सुपतित
होने के कारण झुटा हुआ कार्य या छोटा हुआ कार्य २
सूचना के समय सोया हुआ।

अभिनियोगम् [अभि+निर्+या+ल्युट्] १. प्रयाग २
आक्रमण, किसी शत्रु के सामने अभिप्रस्थान।

अभिनियुष्ट [यु० क० कृ०] [अभि+नि+विष्+क्त] १
तुला हुआ, सीना, झुटा हुआ २ दृढ़ता पूर्वक जमा हुआ
साबधान, लगा हुआ ३ सम्पन्न, अधिकार युक्त,—गु-
मिरमिनियुष्ट (गर्भ) ओकपालानुसारी—रूप०
२१०५, ४ दृढनिश्चयो, कृतसंकल्प ५ (कदंबं)
हठी, उराग्रही।

अभिनियुक्तता [अभिनियुष्ट+तल्+टाप्] दृढसंकल्पता,
दृढनिश्चय, निदानोपयमावारेवर्षाभिनियुक्तता—
सा० ६०—अर्थात् निरा, बदनामी या अपमान की
परवाह न करते हुए अपने उद्देश्य पर दृढ़ता से जाने
रहने वाला।

अभिनियुक्ति (स्त्री०) [अभि+नि+युञ्+क्तिन्] निष्-
क्रान्त, पूर्ण।

अभिनियेक [अभि+नि+विष्+यञ्] १ लगन, आसक्ति
एकनिष्ठा, दृढ निश्चय (अभि० के साथ या लगाव
में), कतमस्येते आर्वाभिनियेक—विक्रम० ३, यहाँ
निरपेक्षआपारेभिनियेक का० १२०, बलीया-

न्यल्लोभेऽभिनियेक—सा० १, अत्ययुते वस्तुभिनियेकः
—मिता० २ २ उक्त अभिनाय, दृढ प्रत्याका ३.
दृढसंकल्प, दृढ निश्चय, वेदं,—अवकाराभ्यां नितां-
तत्कामिनियेकमीरम्—रूप० १४४३, अनुभव-
सतोषिया कुं ५१७, ४ (योगदर्शन में) एक प्रकार का
ज्ञान जो मृत्यु के भय का कारण हो, सांसारिक
विषय-आलनाओं तथा शारीरिक आभोगप्रभोद में व्यस्त
रहना साथ ही यह भय भी लगा रहे कि मृत्यु के द्वारा
इस सब से वियोग हो जाना है।

अभिनियेक्षिन् (वि०) [अभि+नि+विष्+क्षिन्] १
आसक्त, संसक्त २ जमा रहने वाला, अनन्यचित्त, ३
दृढ निश्चयो, कृतसंकल्प।

अभिनियेकमयम् [अभि+निष्+यम्+ल्युट्] बाहर निक-
लना।

अभिनियेक्यः [अभि+नि+ल्युट्+यञ्—सत्य बल्यन्] १
बर्णमाला का अक्षर।

अभिनियेक्यम् [अभि+निष्+यम्+ल्युट्] दृढ़ पदना,
निकल पदना।

अभिनियेक्षति (स्त्री०) [अभि+निष्+यम्+क्षिन्] १
पूति, समाप्ति, निष्पन्नता, पूर्णता।

अभिनियुक्त [अभि+नि+युञ्+क्त] मुकरना, छिपाना।

अभिनीत (यु० क० कृ०) [अभि+नी+क्त] १ निकट
लगा गया, पहुंचाया गया २ किया गया, नाटक के
रूप में सीला गया ३ मुमुग्धित, अन्नकृत, अत्यन्त भेद्य
४ उपयुक्त, उचित, योग्य,—अभिनीततर वाक्याभिव्यु-
वाच युक्तिर—सहा० ५ सहजधीन, दधानु, स-
चित्त ६ कूट ७ कृपाल, मित्र सद्गुण।

अभिनीति (स्त्री०) [अभि+नी+क्तिन्] १ इगित,
भावयुगं अय विहाय, २ कृपालता, मित्रता, सहज्युता,
—सात्वपूर्वमभिनीतिहेतुकम् कि० १३१६।

अभिनेत् (यु०) नाटक का पात्र,—श्री नाटक की पात्री।

अभिनेतव्य (सं० कृ०) [अभि+नी+यत्, तव्यत् वा] १
अभिनेय } नाटक के रूप में खेले जाने योग्य,—दृश्य

नवाभिनय तदोपायोगान् व्यक्तम्—सा० ६० २७३, तस्य
(प्रबलस्य) एकदेश अभिनयायं कृत—उत्तर० ४,
इसका एक अंग रंग मंच के उपयुक्त बना दिया गया।

अभिनेत (वि०) [न० तं०] १ न टूटा हुआ, अनकटा २
विकृत ३ अपरिचित, ४ जो बल्य न हो, बड़ी,
एकरूप (अप० के साथ),—अभिमिचोभिनेतमभिनेत-
व्यगन्—प्रबोध०।

अभिनेतम् [अभि+यन्+ल्युट्] १ उपायजन २ दृढ़
पदना, आक्रमण करना, बढ़ाई करना ३ कूच करना,
रवानगी।

अभिपत्ति (स्त्री०) [अभि+यन्+क्तिन्] १ उपायजन,
निकट जाना २ पूर्ण।

लिनवन् (मू० क० इ०) [अथि + प् + क्त] 1. लयीप गया हुआ या आया हुआ, उपासित, की ओर झुका हुआ या गया हुआ 2. आया हुआ, भरोसा करना, 3. पराभूत, पराजित, पीड़ित, निरस्तार किया हुआ, पकड़ा हुआ, —कालापिपसा. लीदण्डि विक्तासितयो यथा—रामा०, दोष०, कर्मल०, ध्यात्र० आदि 4. प्राग्ग्रहीण, सफटवन्त, 5. स्वीकृत 6. दोषी ।

अधिपरिष्कृत (वि०) [अधि + परि + क्त + क्त] बुरा हुआ, बरा हुआ, बाहरवन्त, उकड़ा हुआ, —शोक, क्रोध आदि से ।

अधिनुरन्तम् [अधि + नृ + क्त] मरना, काद में लाना ।

अधिपुत्रम् (अर्थ०) [अधि० स०] कर्मल ।

अधिप्रवचनम् [अधि + प्र + नी + क्त] वेदवचनों के द्वारा संस्कार करना ।

अधिप्रवचः [अधि + प्र + नी + क्त] प्रेम, कृपादृष्टि, अनुत्पन्न ।

अधिप्रवृत्त (मू० क० इ०) [अधि + प्र + नी + क्त] संस्कार किया हुआ, —अन्त्याम लोकस्थितय म राजा यथाध्वरे बह्निराभिप्रवृत्त -अट्टि० ११४, 2 लायाहुवा ।

अधिप्रवचनम् [अधि + प्र + क्त] फैलाना, विस्तार करना, ऊपर से बालना ।

अधिप्रवक्षिणम् (अर्थ०) [अधि० स०] दाहिनी ओर ।

अधिप्रवर्तनम् [अधि + प्र + क्त + क्त] 1. आगे बढ़ना 2. प्रयत्न, आचरण 3. बहना, बाहर जाना जैसे पसीने का निकलना ।

अधिप्रवृत्तिः = दे० प्राप्ति ।

अधिप्रायः [अधि + प्र + इ + क्त] 1. मध्य, प्रयोजन, उद्देश्य, आशय, कामना, इच्छा, —अधिप्राया न सिध्यन्ति तेनैव वर्तते अयम्—यच० ११५८, सामिज्जामाधि क्वाप्ति—यच० २, सम्भीर मध्य, प्राय कुरेरधिप्राय 2. अर्थ, प्राय, तात्पर्य, या अर्थ अथवा किसी परिच्छेद का उपलक्षितप्राय, तेषामयवधिप्राय—इस प्रकार का उनका आशय है, तात्पर्य (परिच्छेद का) 3. सम्मति, विषयान्, 4. संबंध, उपलक्ष ।

अधिप्रेत (मू० क० इ०) [अधि + प्र + इ + क्त] 1. अर्थ-पूर्ण, उद्दिष्ट, साध्य, आकर्षित, —अध्यायमर्थोऽधिप्रेत, निवेदयामधिप्रेतम्—यच० १, 2. इष्ट, अधिअहित, —यथाधिप्रेतमनुष्ठीयताम्—हि० १ 3. सम्मत्, स्वीकृत 4. प्रिय, अधिकार ।

अधिपोषणम् [अधि + प्र + उञ् + क्त] छिड़कना, छिड़काव ।

अधिपण [अधि + क्त + क्त] 1. कष्ट, शया 2. बाध, उतरा कर बहना ।

अधिप्लुत (मू० क० इ०) [अधि + क्त + क्त] पराभूत, व्याकुल (सा० तथा शाल०) ।

अधिप्लुतिः (स्त्री०) [प्रा० स०] वृद्धिप्राय या क्षीयनिवृत्त (विप० कर्मोद्दिप), बाध, विह्वल, काम, प्राय और स्वभा ।

अधिपत्यः [अधि + पू + क्त] 1. हार, पराजय, धमन; —स्पष्टीकृतका इव सूक्ष्मकालानन्दवन्तेषोऽधिपत्यमिति—स० २१०, (जब हुमरी घण्टि के द्वारा आभन्त, अचर्य या पराभूत हो)—अधिपत्य- कुल एव सत्यत्र—रघु० ११४, 2 पराभूत होना, —अधिपत्यविच्छाद्य—का० ३५६, आक्रान्त या प्रभावित होना, (जबारिक से) मूलित होना 3 निरस्तार, अपमान, —निरति-मवसाटा परकथा—अर्जु० २१६४, 4. निरावर, मानमन, —अनभ्यक्षोकाधिपदेवमाकृति—कु० ५१४९, 5 प्रबलता, उद्भूत, विस्तार, —अध्यायिप्रमवाकृष्य प्रवृत्तानि कुलमिति—यच० ११४१, कि० २१३० ।

अधिपत्यम् [अधि + पू + क्त] हारी होना, पराजित करना, जीतना, पराभूत होना ।

अधिपत्यम् [अधि + पू + क्त] विजयी करना, पराजित करने वाला बनना ।

अधिपतिन्—मात्र (मू) क (वि०) [अधि + पू + क्त], उक्तम् वा] 1. पराजित करने वाला, हारने वाला, जीतने वाला 2. हारने से जाने बड़ने वाला, परतो-कृष्ट, धेष्ट होने वाला, —अद्वैतेषोऽधिपतिना—रघु० ११४४, कि० १११६ ।

अधिपत्यम् [अधि + प्राप् + क्त] सम्बोधित करते हुए बोलना, प्रायण देना ।

अधिपृतिः (स्त्री०) [अधि + पू + क्त] 1. प्रभावता, प्रभूत्व 2 जीतना, हारना, पराजय, —अधिपृतिप्रथाय-भूत मुमुक्षुमिति न धाम प्रातिनः—कि० २१२०, 3. अवासर, अपमान ।

अधिपत्य (मू० क० इ०) [अधि + क्त + क्त] इष्ट, अभीष्ट, प्रिय, प्यार, अधिकार, आत्मनीय—नामि-जोषितादन्वयमियततराह्व मयति तवअनुवा—३५, ५८, अधिपत्यमद्यतो बाध पुष्कोर बाहु—अट्टि० ११२७, 2 सम्मत्, स्वीकृत, माना हुआ, —न किञ्च भवतां स्थान देव्या नृहेऽधिपत्यं तत्—उत्तर० ३१३२, अधिप्राहात्प्राध्यायिप्रमवाकृष्यमिति अधिपत्यमनुष्ठीयताम्—शारी०, सम्प्रानित, बाधुत, —सम् कामना, इच्छा, —सः प्रियव्यक्ति, प्रेमी ।

अधिपत्यम् (वि०) [प्रा० स०] 1. मृता हुआ, इच्छुक, आनुर, उक्तमि, —अवतोऽधिपत्यः सवीहते सव्यं कर्तुं-मुपेत माननाम्—शि० १११२, (यहाँ 'अ' 'निश्चय' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अधिपत्यम् [अधि + मन् + क्त] 1. विद्येय यशों को पकड़ संस्कारवृत्त करना, या पवित्र करना, —वाञ्छ० ११२३७, 2. बुझाना, अनोहार 3. सम्बोधित करना, आशयित करना, परामर्श देना ।

अभिषेकः [अभि+प्+अप्] 1 हत्या, नाश, बध करना 2 युद्ध, सपर्यं 3 अपने ही पक्ष द्वारा विजयासथात, अपने ही पक्ष वालों के प्रथ 4 बधन, कैद, बेदी या हथकड़ी ।

अभिषेकः [अभि+प्+अप्] 1 सलता, एव, 2 कुचलना, नृत्यसोद, (सन् द्वारा) देना का उच्छेद, उजाटना 3 युद्ध, सप्राय 4 मंदिरा, गराज ।

अभिषेकः (वि०) [अभि+प्+अप्] कुचलने वाला, दमन करने वाला,—अन् कुचलना, दमन करता ।

अभिषेकः-संज्ञम् [अभि+प्+अप्] [अभि+प्+अप्] ल्युट् वा

अभिषेकः-संज्ञम् 1 स्वर्ग, सपर्यं 2 अम्यासात, हिंसा, बलात्कार, सभोग—इत्याभिमार्गान्मन्यमान—या० ५१२०, इन्द्रियासक्ति के कारण किया गया आभियान अथवा सतीय अष्ट करना या बलात्कार,—पराभिमार्गों न तत्प्राप्ति कु० १५४३ मल्लि० = परधर्मम् मनु० ८३५२, याज्ञ० २१२८ ।

अभिषेक-संज्ञम् (वि०) [अभि+प्+अप्] [अभि+प्+अप्] पितृ अभिषेक-संज्ञम् वा 1 स्वर्ग करने वाला, सपर्यं में जाने वाला, 2 बलात्कार करने वाला, —त्वकलपामिषयी वैरास्य धनमिष—देश० ६३ ।

अभिषेकः [अभि+प्+अप्] गरा, मादकता ।

अभिसान [अभि+प्+अप्] 1 गौरव, स्वाभिमान, सम्माननीय या योग्य भावना,—सदाभिमार्गकना हि मानि—सि० ११६७, 2 अहकार, धमक, रस, महत्मन्याता, बहू धमकी, गर्वीला 3 सवी पदाधी को आत्मा से संकेतित करना, अहकार की किंवा, व्यक्तित्व, 4 कल्याण, अवधारणा, बटकर, विभासा, सम्पत्ति 5 स्तेह, प्रेम 6 हृष्टा, कामया 7 वोट पट्टेचना, हत्या करना, बोट पट्टेचाने का प्रयत्न करना । सम०—आलिम् (वि०) धमकी—शून्य (वि०) गर्व या धमक से रजित, विनीत ।

अभिषासिन् (वि०) [अभि+प्+अप्] 1 आध्यात्मिक 2 अहम्यन्, धमकी, गर्वीला, सम्प्री 3 सभो पदाधी को आत्मा से संकेतित मानने वाला ।

अभिषुक् (वि०) [अभि+प्+अप्] 1 जो किसी की ओर मूक किये हुए हो, जो ओर, किसी की ओर मुका हुआ, सामने,—अभिषुक्ते ययि अह्वयधितम् य० २१११, 2 पाप माने वाला समोप जाने वाला, निकट पहुँचने वाला,—विष्णु० २१२ 3 विचार करते हुए, प्रमत्ता, उच्छेद (कुछ करने के लिए)—अनाभिमूक मूयं—मुद्रा० २११९, प्रसादाभिमूर्खी वेधा प्रत्युवाच विदोक्त कु० १११६, ५१५०, उवाच० ७५५, या० १०११३, 4 अनुकूल, अनुकूलतापूर्वक सम्पन्न 5 मुह ऊपर को उठाये हुए—अ—अन् (अन्) की ओर, दिशा में सामना करते हुए, के सामने, की उपस्थिति में, के निकट (कर्म) या तत्र० के नाप ब्रधवा समाप्त में)

—आसीताभिमूक गुरोः—अन्० २१११३, विष्णुपुरा-भिषुक् स विधीयमानः—कि० २१५९, मेघध्यावि-युक्तमसोच्ये,—श० १, कर्म बदाध्यामिन्मं ययि मान-माचं—य० १३११ ।

अभिषासन्—आप्+अप् [अभि+प्+अप्] नरक वा, निष्ठा टाप् च 1 नीमता, धार्मता, अनुरोध, नरक निवेदन ।

अभिषासिन्—आसिन्—(यु०—सी) समुत्ता की भावना के साथ पहुँचने वाला—शान्, सुभयन्, यन्० १२५३ ।

अभिषासु—आसिन् (वि०) [अभि+प्+अप्] पितृ वा निकट जानेवाला, आक्रमण करने वाला ।

अभिषासु [अभि+प्+अप्] 1 उपारमन 2 चकारा करता, धारा बोलना, आक्रमण करना,—रथाभिमार्गेण—इवा० १०, युद्ध के लिए प्रस्थान ।

अभिवृत्त (यु० क० इ०) (वि०) [अभि+प्+अप्] 1 (क) अत्यंत, लता हुआ, मोन, जुटा हुआ (क) वरिष्ठता, र्थवृत्तान्, युद्धकल्प वाला, मुला हुआ, वरिष्ठता, शापधान,—इद दिव्य शाल्य विषिकरुमिन्मूकोन कनका—उत्तर० ३३०, 2 सुविज्ञ, दल,—आत्मार्थेष्वभि-युक्तानां पुष्पाणां—कुमारिण 3 (अत) विज्ञान, सुपरिचित, सुयोग्य न्यायाधीश, पश्चित (यु०—इसी अर्थ में) न हि शक्यते वैशम्यवाक्यंमिन्मूकोनापि—का० ६२, 4 आक्रान्त, जिन पर हमला कर दिया गया हो,—अभिवृत्त त्वयैव ते कन्यास्वभासात्—ये—सि० २११०१, मुद्रा० ३१२५, 5 जिस पर अभियोग लगाया गया हो, जिन पर दोषों का आरोपण किया गया हो, कम्मारापित्त, मूच्छ० ११२, अभियोजित, प्रतिवादी,—अभिवृत्ताग्रिमयोग्य दधि कृषादिपरहृद्यन्-नारद० 6 विपुक्त ।

अभिवृत्त (वि०) [अभि+प्+अप्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (यु०—स्ता) 1 शान्, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2 (विधि में) आरोपक, शारी, मुद्दई, अभिवोचक, मनु० ८१२२, ५८, याज्ञ० २१९५, 3 सिन्ध्याभिवोदी ।

अभिवोचः [अभि+प्+अप्] 1 गवाय, कनक, मेक-जोन,—सुभययै—नपस्तान्मनयोपविशोवावा—या० ९१, ५१, चौर० ११, 2 वना कन्याय, वीरव, प्रथम, प्रयास,—सत स्वय परहितेषु कृताभिवोधा—अर्जु० २१७३, 2 (क) किसी वीर को सीधने की कल्पना,—कस्या कलायाभिवोधी अश्वयो—याज्ञ० ५, (ख) सीकना, विद्वान्,—अभिवोचय सव्यादरिषाद्यानाम् अभिवोचयैरेवेनाम्—वाचस्पती 4 आक्रमण हुनका, चकारा (किसी) देस वा नगर पर)।—मुनितां वनगोचराभिवोद्याम्—कि० १३११०, २१५५, ५, (विधि में) आरोप, दोषारोपण, सुषंषण—अभिवोच-मविस्तीर्य नैव प्रत्यभिवोचयेत्—याज्ञ० २५५ ।

अभिवोचः (वि०) [अभि+प्+अप्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (यु०—स्ता) 1 शान्, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2 (विधि में) आरोपक, शारी, मुद्दई, अभिवोचक, मनु० ८१२२, ५८, याज्ञ० २१९५, 3 सिन्ध्याभिवोदी ।

अभिवोचः [अभि+प्+अप्] 1 गवाय, कनक, मेक-जोन,—सुभययै—नपस्तान्मनयोपविशोवावा—या० ९१, ५१, चौर० ११, 2 वना कन्याय, वीरव, प्रथम, प्रयास,—सत स्वय परहितेषु कृताभिवोधा—अर्जु० २१७३, 2 (क) किसी वीर को सीधने की कल्पना,—कस्या कलायाभिवोधी अश्वयो—याज्ञ० ५, (ख) सीकना, विद्वान्,—अभिवोचय सव्यादरिषाद्यानाम् अभिवोचयैरेवेनाम्—वाचस्पती 4 आक्रमण हुनका, चकारा (किसी) देस वा नगर पर)।—मुनितां वनगोचराभिवोद्याम्—कि० १३११०, २१५५, ५, (विधि में) आरोप, दोषारोपण, सुषंषण—अभिवोच-मविस्तीर्य नैव प्रत्यभिवोचयेत्—याज्ञ० २५५ ।

अभिवोचः (वि०) [अभि+प्+अप्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (यु०—स्ता) 1 शान्, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2 (विधि में) आरोपक, शारी, मुद्दई, अभिवोचक, मनु० ८१२२, ५८, याज्ञ० २१९५, 3 सिन्ध्याभिवोदी ।

अभिवोचः [अभि+प्+अप्] 1 गवाय, कनक, मेक-जोन,—सुभययै—नपस्तान्मनयोपविशोवावा—या० ९१, ५१, चौर० ११, 2 वना कन्याय, वीरव, प्रथम, प्रयास,—सत स्वय परहितेषु कृताभिवोधा—अर्जु० २१७३, 2 (क) किसी वीर को सीधने की कल्पना,—कस्या कलायाभिवोधी अश्वयो—याज्ञ० ५, (ख) सीकना, विद्वान्,—अभिवोचय सव्यादरिषाद्यानाम् अभिवोचयैरेवेनाम्—वाचस्पती 4 आक्रमण हुनका, चकारा (किसी) देस वा नगर पर)।—मुनितां वनगोचराभिवोद्याम्—कि० १३११०, २१५५, ५, (विधि में) आरोप, दोषारोपण, सुषंषण—अभिवोच-मविस्तीर्य नैव प्रत्यभिवोचयेत्—याज्ञ० २५५ ।

अभिवोचः (वि०) [अभि+प्+अप्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (यु०—स्ता) 1 शान्, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2 (विधि में) आरोपक, शारी, मुद्दई, अभिवोचक, मनु० ८१२२, ५८, याज्ञ० २१९५, 3 सिन्ध्याभिवोदी ।

अभिवोचः [अभि+प्+अप्] 1 गवाय, कनक, मेक-जोन,—सुभययै—नपस्तान्मनयोपविशोवावा—या० ९१, ५१, चौर० ११, 2 वना कन्याय, वीरव, प्रथम, प्रयास,—सत स्वय परहितेषु कृताभिवोधा—अर्जु० २१७३, 2 (क) किसी वीर को सीधने की कल्पना,—कस्या कलायाभिवोधी अश्वयो—याज्ञ० ५, (ख) सीकना, विद्वान्,—अभिवोचय सव्यादरिषाद्यानाम् अभिवोचयैरेवेनाम्—वाचस्पती 4 आक्रमण हुनका, चकारा (किसी) देस वा नगर पर)।—मुनितां वनगोचराभिवोद्याम्—कि० १३११०, २१५५, ५, (विधि में) आरोप, दोषारोपण, सुषंषण—अभिवोच-मविस्तीर्य नैव प्रत्यभिवोचयेत्—याज्ञ० २५५ ।

अभिवोचः (वि०) [अभि+प्+अप्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (यु०—स्ता) 1 शान्, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2 (विधि में) आरोपक, शारी, मुद्दई, अभिवोचक, मनु० ८१२२, ५८, याज्ञ० २१९५, 3 सिन्ध्याभिवोदी ।

अभिवोचः [अभि+प्+अप्] 1 गवाय, कनक, मेक-जोन,—सुभययै—नपस्तान्मनयोपविशोवावा—या० ९१, ५१, चौर० ११, 2 वना कन्याय, वीरव, प्रथम, प्रयास,—सत स्वय परहितेषु कृताभिवोधा—अर्जु० २१७३, 2 (क) किसी वीर को सीधने की कल्पना,—कस्या कलायाभिवोधी अश्वयो—याज्ञ० ५, (ख) सीकना, विद्वान्,—अभिवोचय सव्यादरिषाद्यानाम् अभिवोचयैरेवेनाम्—वाचस्पती 4 आक्रमण हुनका, चकारा (किसी) देस वा नगर पर)।—मुनितां वनगोचराभिवोद्याम्—कि० १३११०, २१५५, ५, (विधि में) आरोप, दोषारोपण, सुषंषण—अभिवोच-मविस्तीर्य नैव प्रत्यभिवोचयेत्—याज्ञ० २५५ ।

अभिवोचः (वि०) [अभि+प्+अप्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (यु०—स्ता) 1 शान्, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2 (विधि में) आरोपक, शारी, मुद्दई, अभिवोचक, मनु० ८१२२, ५८, याज्ञ० २१९५, 3 सिन्ध्याभिवोदी ।

अभिवोचः [अभि+प्+अप्] 1 गवाय, कनक, मेक-जोन,—सुभययै—नपस्तान्मनयोपविशोवावा—या० ९१, ५१, चौर० ११, 2 वना कन्याय, वीरव, प्रथम, प्रयास,—सत स्वय परहितेषु कृताभिवोधा—अर्जु० २१७३, 2 (क) किसी वीर को सीधने की कल्पना,—कस्या कलायाभिवोधी अश्वयो—याज्ञ० ५, (ख) सीकना, विद्वान्,—अभिवोचय सव्यादरिषाद्यानाम् अभिवोचयैरेवेनाम्—वाचस्पती 4 आक्रमण हुनका, चकारा (किसी) देस वा नगर पर)।—मुनितां वनगोचराभिवोद्याम्—कि० १३११०, २१५५, ५, (विधि में) आरोप, दोषारोपण, सुषंषण—अभिवोच-मविस्तीर्य नैव प्रत्यभिवोचयेत्—याज्ञ० २५५ ।

अभिवोचः (वि०) [अभि+प्+अप्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (यु०—स्ता) 1 शान्, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2 (विधि में) आरोपक, शारी, मुद्दई, अभिवोचक, मनु० ८१२२, ५८, याज्ञ० २१९५, 3 सिन्ध्याभिवोदी ।

अभिवोचः [अभि+प्+अप्] 1 गवाय, कनक, मेक-जोन,—सुभययै—नपस्तान्मनयोपविशोवावा—या० ९१, ५१, चौर० ११, 2 वना कन्याय, वीरव, प्रथम, प्रयास,—सत स्वय परहितेषु कृताभिवोधा—अर्जु० २१७३, 2 (क) किसी वीर को सीधने की कल्पना,—कस्या कलायाभिवोधी अश्वयो—याज्ञ० ५, (ख) सीकना, विद्वान्,—अभिवोचय सव्यादरिषाद्यानाम् अभिवोचयैरेवेनाम्—वाचस्पती 4 आक्रमण हुनका, चकारा (किसी) देस वा नगर पर)।—मुनितां वनगोचराभिवोद्याम्—कि० १३११०, २१५५, ५, (विधि में) आरोप, दोषारोपण, सुषंषण—अभिवोच-मविस्तीर्य नैव प्रत्यभिवोचयेत्—याज्ञ० २५५ ।

अभिवोचः (वि०) [अभि+प्+अप्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (यु०—स्ता) 1 शान्, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2 (विधि में) आरोपक, शारी, मुद्दई, अभिवोचक, मनु० ८१२२, ५८, याज्ञ० २१९५, 3 सिन्ध्याभिवोदी ।

अभिवोचः [अभि+प्+अप्] 1 गवाय, कनक, मेक-जोन,—सुभययै—नपस्तान्मनयोपविशोवावा—या० ९१, ५१, चौर० ११, 2 वना कन्याय, वीरव, प्रथम, प्रयास,—सत स्वय परहितेषु कृताभिवोधा—अर्जु० २१७३, 2 (क) किसी वीर को सीधने की कल्पना,—कस्या कलायाभिवोधी अश्वयो—याज्ञ० ५, (ख) सीकना, विद्वान्,—अभिवोचय सव्यादरिषाद्यानाम् अभिवोचयैरेवेनाम्—वाचस्पती 4 आक्रमण हुनका, चकारा (किसी) देस वा नगर पर)।—मुनितां वनगोचराभिवोद्याम्—कि० १३११०, २१५५, ५, (विधि में) आरोप, दोषारोपण, सुषंषण—अभिवोच-मविस्तीर्य नैव प्रत्यभिवोचयेत्—याज्ञ० २५५ ।

अभिवोचः (वि०) [अभि+प्+अप्] आक्रमण करने वाला, हमला करने वाला, दोषारोपण करने वाला, (यु०—स्ता) 1 शान्, आक्रमणकारी, आक्रान्ता 2 (विधि में) आरोपक, शारी, मुद्दई, अभिवोचक, मनु० ८१२२, ५८, याज्ञ० २१९५, 3 सिन्ध्याभिवोदी ।

अभिव्यक्तिम् (वि०) [अभि+वृत्+विभि] मनोमय पुरुषक
 लया हुआ, मुला हुआ, 2 आच्छन्नकारी, हुलाकार
 3 बोधोत्पन्न करने वाला (दु०) भावी, मूर्ख ।
 अभिरक्षणम् } [अभि+रक्ष+ल्यट्, कक्ष बा] छत्र और
 अभिरक्षा } से बचाव, पूरा से बचाव,—प्रधान्यभाव
 विलसोऽभिप्राया वि० ११८८ ।
 अभिरसिः (स्त्री०) [अभि+रस्+सिञ्] आनन्द, हर्ष,
 सतोष, आसक्ति, लभन,—इ मृगयामिरतिर्न दुरोहरम्
 (तमसाहृत्) रघु० १७७, वि० १५४५ ।
 अभिराज (वि०) [अभि०+रज्+घञ्] 1. आनन्दकर,
 हर्षपूर्ण, मधुर, शक्तिकर—मनोभिरामा (केका.) रघु०
 ११३०, २७२२, 2. सुन्दर, सुहावना, मनोहर, मनोरम,
 —स्वार्थम्भारोपयत्तमुनात्—मृगयामिरामा—नेष० ५१,
 राम इत्यमिरामेव मधुरा तन्त्र बोधित—रघु०
 १०१७०,—अन् (अव्य०) सुन्दर टीति से वीर्या-
 त्प्रभिराम—स० १७७ ।
 अभिरक्षिः (स्त्री) [अभि+रक्ष्+ङ्] 1. इच्छा, धीक,
 पक्षपत्नी रज, हर्ष, आनन्द,—वसति भाभिरक्षि—
 भर्तु० २१६३, परस्पररक्षिण्यभिप्रायो विवाहः—का०
 २८३, 2. रण की इच्छा, महत्ताकांक्षा ।
 अभिरक्षितः [अभि+रक्ष्+क्त] प्रेषी,— वि० १०१६८ ।
 अभिरक्षत् [अभि+रक्ष्+क्त] ध्वनि, विस्माहृष्ट, कोलाहल ।
 अभिरक्ष्य (वि०) [अभि+रक्ष्+ञ्] 1. अनुकूल, समन्-
 क्त, उपयुक्त—अभिरक्ष्यत्या बभौ बल्लभम्—स०
 १ पाठ० 2. सुन्दर, हर्षपूर्ण,—उत्कण्ठायामिच्छाय बराय
 मनुनाय च (कन्वा दद्यात्) मनु० ११८८, 3. प्रिय,
 प्यारा, इष्ट, कृपापात्र 4. विद्वान्, बुद्धिमान्, समस्तदार,
 —अभिरक्ष्यभूमिच्छा परिशदियम्—स० १,—य 1
 चन्द्रमा, 2. विश्व 3. विष्णु 4. कामदेव । सम०—पति
 'रक्षि के अनुकूल सुन्दर पति प्राप्त करना', ताम का
 एक संस्कार जा परमोक में अञ्जा पति पाने की इच्छा
 से किया जाता है—मूच्छ० १ ।
 अभिरक्ष्यमाणम् [अभि+रक्ष्+ल्यट्] कुर कर पार करना,
 छलाय लेना ।
 अभिरक्ष्यन्म् [अभि+रक्ष्+ल्यट्] इच्छा करना, चाहना ।
 अभिरक्षित (भू० क० इ०) [अभि+रक्ष्+क्त] इच्छित
 चाहा हुआ, उत्कण्ठित,—अन् इच्छा, कामना, मकल्प ।
 अभिरक्षणम् [अभि+रक्ष्+घञ्] 1. कवन, शब्द, भाषण
 2. पोषण, बर्णन, विशेष विवरण, 3. किसी धार्मिक
 कर्मस्थ या किसी उद्देश्य की प्रतिष्ठा की उद्बोधना ।
 अभिराजः [अभि+रज्+घञ्] काटना, कटाई, लवन ।
 अभिराजः [कई बार 'रज्'] [अभि+रज्+घञ्] इच्छा,
 कामना, उत्कण्ठ, अनुराग, प्रियतम से मिलने की
 उत्कण्ठा, प्रेय (प्राय. अभि० के साथ) अतोऽभिराजे
 प्रथम तदाविधे मनो बन्ध—रघु० ३१५, न क्लृप्त सत्यमेव

कल्पसत्तायं भवानिच्छात्—स० २, पंच० ५१६७ ।
 अभिरक्षणम्,—अभि (वि०) [अभि+रक्ष्+
 —अभ्युक्] मन्त्र, विभि, उच्छन्न बा]
 कामना या इच्छा करने वाला, (अर्थ० अभि० के
 साथ वा उर्ध्वत में) चाहने वाला, आनन्दित, लालची,
 —यदायंमत्यामिच्छामि मे मनः—स० ११२२, अमन-
 भवान् नूनमरातिष्वभिराज्युक्—वि० १११६८, वि०
 १५१५९ ।
 अभिरक्षित (वि०) [अभि+रक्ष्+क्त] चिन्ता हुआ,
 मुद्रा हुआ—उत्प, अविच्छेद्यम्, 1. चिन्तना, सोचना
 2. लेख ।
 अभिविधि (वि०) [अभि+वी+धि] 1. विपदा हुआ,
 सदा हुआ, आशय,—रघु० ३१८ 2. आश्रित्य किये
 हुए, कपडे हुए—नेष० ३६ ।
 अभिवृत्ति (वि०) [अभि+वृत्+क्त अथ क] 1. सुख,
 भाषावृत्त 2. क्रीडा वृत्त, बखिर ।
 अभिवृत्ता (शा० सं०) एक प्रकार की सफ़ाई ।
 अभिवृत्तम् [अभि+वृत्+ल्यट्] 1. उद्योग 2. नदरिच्छा ।
 अभिवृत्तम् [अभि+वृत्+ल्यट्] सादर नमस्कार, शब्द
 मन्त्र और भक्ति के साथ हुएरों के चरण स्पर्श करना,
 नीचे से 'अभिवृत्त' ।
 अभिवृत्तम् [अभि+वृत्+ल्यट्] वारित होना, बरसना,
 पानी पड़ना ।
 अभिवाद्यः—आनन्दम् [अभि+वृत्+घञ्, ल्यट् वा] सल-
 म्यान नमस्कार, छोटी के द्वारा बड़ों को प्रणाम, पिच्छ
 के द्वारा बुध को प्रणाम इन्हें तीन बातें विहित हैं—
 (१) प्रत्यक्षान्—अपने स्थान से उठना (२) पावोन-
 सख—पैर पकड़ना या छूना (३) अभिवाद्य—
 'प्रणाम' शब्द मूँठ से कहना—विद्यमें अभिवाद्य व्यक्त
 की उपाधि तथा अभिवाद्यक का नाम—वर्ध० १ ।
 अभिवाद्यक (वि०) [स्त्री—विद्यक] 1. नमस्कार करने
 वाला, 2. नम, सम्मान पूर्ण, विनीत ।
 अभिविधि [अभि+वि+धि+क्ति] 1. पुरा अभिमान या
 सवोध, 'भा' का एक अर्थ—याह मयावतिभिप्यो
 —पा० २१११३ आर्यिक लीला ('अतिथि लीला'
 का वितीची), इसका अनुवाद 'धे' के साथ 'मिताते
 हुए' शब्दों से किया जाता है उदा—आवाक्यम्=
 आवालेम्य हरिभक्ति, 2. पूर्ण प्रकार ।
 अभिविधत् (वि०) [अभि+वि+ध्+क्त] सुभिक्ष्यार,
 सुप्रतिष्ठ ।
 अभिवृत्तिः (स्त्री०) [अभि+वृत्+क्ति] बहना, विकास,
 योग, लफणता, सत्यप्रता ।
 अभिवृत्तः (भू० क० इ०) [अभि०+वि+वृत्+क्त]
 1. प्रकट किया हुआ, प्रकाशित, उद्बोधित 2. विहित,
 स्पष्ट, साफ ।

अभिषेकः [अभि + स्तु + क्] प्रशंसा, स्तुति ।
अभिषि (स्व) ष [अभि + स्वप् + षञ्] 1. प्राय, वहाय, टपना 2 भावना 3 अतिवृद्धि, दतिरेक, भाषिय, अतिरिक्त भाव, —स्वर्णनिष्कल्पचमनं कुर्ये-कोपनिवेशितम् (श्रीमद्भिरथयम्) कु० १।१०, अतिरिक्त अनर्थात् की दूर करके, अर्थात् उद्योगात्न द्वारा—स्तु०—रघु० १५।२९ ।
अभिषिञ्जः [अभि + स्वञ् + षञ्] 1 अर्पण 2, अत्याधिक आशक्ति, प्रेम, स्नेह, —विद्यास्वनिष्कलं—दश० १५५, बहुो अभिषिञ्ज—मा० १ ।
अभिषिञ्जकः [अभि + स्व + षि + षञ्] गरण, भाषय ।
अभिषिञ्ज्यः [अभि + स्व + स्तु + षञ्] गृहणी प्रशंसा ।
अभिषिञ्ज्याः [अभि + स्व + स्तु + षञ्] युद्ध, संशय, संघर्ष—अन्य स्वार्थसिन्ध्याः—हुता० ।
अभिषिञ्ज्येः [अभि + स्व + विहृ + षञ्] 1. विनियम, 2 अन्तर्विषय ।
अभिषिञ्ज्यः—अकः [अभि + स्व + षा + ष, स्वार्थे कन् च] 1. घोषा देने वाला, बचक, 2 शिष्यक, काष्ठन भगाने वाला ।
अभिषिञ्ज्याः [अभि + स्व + षा + ष + टाप्] 1 भाषण, उद्घोषणा, शब्द, कथन, प्रतिज्ञा, —तेन सत्यामित्यन्वेन विनयंमनुमिच्छन्ता—रामा०, बचन का पालन करने वाला, 2 बोला ।
अभिषिञ्ज्यात् [अभि + स्व + षा + स्तुट्] 1 भाषण, शब्द, मोहोदय उद्घोषणा, प्रतिज्ञा, सा हि सत्यामित्यन्वाभा—रामा०, 2 ठगना, घोषा देना—परामित्यन्वात्पर यद्यप्यस्य विधेष्टितम्—रघु० १०।७५ 3 उद्देश्य, इरादा, प्रयोजन—अत्यामित्यन्वेनात्याव्याधिष्यन्त्यक-र्तृषु च—मिता० 4 सम्पि करना ।
अभिषिञ्ज्याच्च = अभिषिञ्जि ।
अभिषिञ्ज्यः [अभि + स्व + षा + षि] 1 भाषण, मोहोदय उद्घोषणा, प्रतिज्ञा 2 इरादा, लक्ष्य, प्रयोजन, उद्देश्य 3 निहितार्थ, अविश्रुत अर्थ, बैसा कि—अयमभिषि- (आत्म्यात्मक कृषिचो में बहुधा प्रयुक्त) 4 सम्पत्ति, विचारात् 5 विशेष अनुभव, अनुभव की शर्त, प्रति-बंध, करार ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + ष + ष + षञ्] एकता ।
अभिषिञ्ज्यतिः (स्त्री०) [अभि + स्व + पत् + षिञ्] पूर्ण रूप से प्रभावित होना, अपने मत को बदल देना, परिवर्तन, बदल जाना ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + परा + ष + षञ्] अभिष्यत् काल ।
अभिषिञ्ज्यात् [अभि + स्व + पत् + षञ्] 1 दृक्छटे मिलना, उपायय, समय 2 युद्ध, संशय, संघर्ष, 3 अभि-साय ।

अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + षञ् + षञ्] संघर्ष, रिशत, संयोजन, संघर्ष, वैयुक्त—अनु० ५।१३ ।
अभिषिञ्ज्याच्च (वि०) [अ० ष०] अर्पण होने वाला, आपने सका हुआ, सम्मान की दृष्टि से देखने वाला ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + षञ्] 1 अनुप्रास, अनुप्रास, 2 शायी ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + स्तुट्] 1 उपायय, मुकामला करने के लिए वाला, 2 इम्तियान, संवेदना, नायक या नायिका द्वारा मिलने का स्थान नियत करना—त्वदभिषिञ्ज्याच्चैव वचन्ती पतति—परानि किञ्चित् वचन्ती—गीत० ९ ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + षञ्] स्तुति, रचना ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + स्तुट्] 1 उपहार, दान 2 हवा ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + स्तुट्] उपायय, मुकामला करने के लिए शत्रु के निकट जाना ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + षञ्] [अभि + स्व + षञ्, स्तुट् वा] युद्ध, संयोजन, शान्त, उरली ।
अभिषिञ्ज्याच्च (अन्य०) [अन्य० ष०] उपरिष्ठ के समय, उष्मा-समय—विद्योद्योगोपरिस्वायमुष्मके—शि० १।१६ ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + षञ्] शिष्य के मिलने के लिए जाना, (मिलन स्थान) नियत करना या स्थिरकरण, —रतिमुचसारे यतविद्यारं बदनमनोहृदयेद्यु-नीत० ५, २ बहु स्थान वहाँ नायक नायिका नियत समय पर मिलते हैं, शकेतस्वक, स्फटितपुष्टि न कथमभिषिञ्ज्याच्च-नीत० ५, ३ हुताय, भाषण, श्लोत्रविद्यारं पुरस्य नः—रामा०। समय—स्वाम्यन् मिलने के लिए उप-युक्त स्थान, दे० 'अभिषिञ्ज्याच्च' के नीचे ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + षञ् + टाप्] बहु स्त्री को अपने शिष्य से मिलने जाती है, या उसके द्वारा नियत संकेत का पालन करती है कु० ६।१३, रघु० १६।१२, —कामाशिकी तु वा याति सङ्केतं शिष्यात्कारिका—अनर० सा० १० निष्ठाकित ८ स्थान नायक नायिकाओं के मिलने के लिए निर्धारित करता है (१) श्रेष्ठ (२) शय (३) अन्न यदिर (४) हृत्ती का घर (५) अंगल (६) तीर्थ स्थान (७) स्वस्थानमृत्ति (८) नदीतट, श्रेष्ठ वादी मन्त्रदेवात्मयो हृत्तीपुहं शयन्, याचक च स्वस्थानं च नद्यादीनां तटी तथा ।
अभिषिञ्ज्याच्च (वि०) [अभि + स्व + षिञ्] मिलने, दर्शन करने, आक्रमण करने, जाने वाला, पत्नी से बाहर जाने वाला—मुद्राभिषिञ्ज्याच्च—उत्तर० ५, —श्री—दे० ऊपर अभिषिञ्ज्याच्च ।
अभिषिञ्ज्याच्च [अभि + स्व + षञ्] आशक्ति, अनुप्रास, प्रेम, इच्छा, च सर्वथाप्रियेनेह—अन० १५।७ ।
अभिषिञ्ज्याच्च (वि०) [अभि + स्तुट् + षञ्] पूर्ण रूप से कला हुआ, पूर्ण विकसित (जैसे कि फूल) ।

अभिहत (वि०) [अभि+हृत्+क्त] प्रहृत (आल० वे जी) पीटा गया, बाहल, पायल किया गया—घारा-बिरालय इत्यादि शब्द—आत्मि० ५, अमर० २, 2 जिस पर प्रहार किया गया है, अभिभूत, पराभूत, शोक, काम, दुःख 3 आधायम 4 (गण०) गुणित ।

अभिहितः (स्त्री०) [अभि+हृत्+मित्त] 1 प्रहार करना, पीटना, बोट पहुँचाना 2 (गण०) गुणन, गुणा ।

अभिहृत्पत्य [अभि+हृत्+पत्य] 1 निकट लाना, जाकर लाना—रघु० ११।५३, 2 लूटना ।

अभिह्वः [अभि+ह्वे+अच्] 1 आवाहन, आमन्त्रण 2 पूर्ण रूप से यज्ञागुच्छान 3 यज्ञ, बलिदान ।

अभिह्वारः [अभि+हृत्+पञ्] 1 ले जाना, छूट लेना, चुरा लेना 2 हनना, आक्रमण 3 सम्पत्ति से मुस-जित्त करना, शस्त्र ग्रहण करना ।

अभिहासः [अभि+हृत्+पञ्] दिल्लपो, मजाक, विनोद ।

अभिहित (सु० क० कृ०) [अभि+वा+क्त] 1 कहा गया, बोला गया, बोधित किया गया, 2 सर्वोचित किया गया, फुकारा गया । मम०—अन्वयवाह, —आदि (सु०) नैवायिको का एक विशेष प्रकार का सिद्धान्त (या उस सिद्धान्त के अनुयायी) । इस सिद्धान्त के अनुसार नैवायिकलोग मानते हैं कि शब्द स्वतन्त्र रूप से अपना अर्थ रखते हैं, जो बाद में वाक्य में प्रयुक्त होने पर एक संपूर्ण विचार को अभिव्यक्त करते हैं, दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि यह वाक्य के शब्दों का तर्कसंगत सव्य ही है जो वाक्य के अर्थात् अर्थ को प्रकट करता है न कि शब्दों का केवल अपना भाव । अतः वे तात्पर्यार्थों में विचार रखते हैं जो कि वाच्यार्थ से भिन्न है—काव्य २ ।

अभिहोष [श० सं०] शो को बाहुल्य देना ।

अभी (वि०) [न० व०] निर्णय, निरद, रघु० १।६३, १५।८।

अभीक (वि०) [अभि+कृ० दीर्घ] 1 प्रबल हुआ रखने वाला, आतुर 2 कामुक विधायक, विलासी—मेदि-नियन सरयसोपगतानभीकान्—सि० ५।६५, 3 निर्णय, निरद ।

अभीषण (वि०) [अभि+षण्+उ, दीर्घ] 1 बुराया हुआ, बार २ होने वाला 2 उतत, निरन्तर 3 अत्याधिक, —अमर (अव्य०) 1 आचार पुन पुन 2 लगा-तार 3 अत्यन्त, बहुत अधिक ।

अभीषाल = तु० अभीषाल ।

अभीष्यन् (वि०) [अभि+ष्यन्+त्+क्त] बाहा हुआ अभीष्ट, —तन् कामना, इच्छा ।

अभीषित् (वि०) [अभि+ष्यन्+त्+मित्त, उ वा]

अभीष्यु इच्छुन, प्राप्त करने की इच्छा वाला ।

अभीष्ट [अभि+ष्यु इत्य ईरसति वा, अभि+ईर्+अच्]

1 अभीष्ट, योग्य, गवरिवा 2 स्वाहा, (दे० आभीष्ट) । मम०—अस्मी स्वाहो का शक्ति ।

अभीष्टाक्षः [अभि+ष्यु+पञ्] कोमला, दे० अभीष्टाग ।
अभीष्टोः—षु [अभि+ष्यु+अच्] अत इच्छुम्—अभि+ष्यु+क्तु वा 1 आगच्छ, स्वाहा—तेन हि मुच्य-न्ताममोक्षम्—शं० १, 2 प्रकाशकरण—प्रफुल्लतापि-च्छनिभेरभीष्टुभि—सि० १।२२, 'अत् अत्युज्जल, अत्युत्तम 3 इच्छा 4 आसक्ति ।

अभीष्टङ्गः—तु० अभिषण ।

अभीष्ट (सु० क० कृ०) [अभि+ष्यु+क्त] 1 आहा हुआ, इच्छित 2 प्रिय, कृपापात्र, प्रियतम—अद-प्रिय-तम, अहा मुहम्बानिनी, प्रेमिका—अष्टक 1 अभीष्ट पदार्थ 2 अधिकतर पदार्थ—अत्यस्मै हृदय देहि नान-भीष्टे पद्याह्ये—अदृष्ट० २०।२५ ।

अभूज (वि०) [न० न०] 1 शो हुआ हुआ वा टंडा मेदा न हो, सोचा 2 स्वल्प, रोगमुक्त ।

अभूज (वि०) [न० व०] बाहुरहित, मूला ।

अभूजिष्वा [न० त०] जो शब्दों या शेरिका न हो, स्वतन्त्र शब्द ।

अभू [न० त०] विष्णु, जो पैदा न हुआ हो ।

अभूत (वि०) [न० न०] सत्ताहीन, हुआ न हो, अवि-द्यमान, अवास्तविक, मिथ्या । मम० **अभूतपत्य** अवस्तु कथन, कथपटु वा व्ययमय शान कहना, —तद्वाच्य, जो पहले विद्यमान न हो उसका होना वा बनना, या बदलना—अभूतनप्राये चिन्म अक्षुण्ण रूपण सचयते त करोति ह्यणीकरोति—सिद्धा० नु० पया-धरीभूतचतु समुद्राय्—रघु० २।३, —अभू (वि०) जो पहले न हुआ हो, जिससे आगे कोई न बड़ा हो—अभूत वेणो राजा चित्तमगिर्गम, वासव० १, बेनी० ३।२—आहुधर्षणो जो पहले न हुआ हो उसका प्रकट होना,—अभू (वि०) शम्भुहीन, जिसका कोई शत्रु न हो ।

अभूति (स्त्री०) [न० त०] 1 मत्ता हीनता, अधिकमा-मत्ता 2 निर्धनता ।

अभूतिः (स्त्री०) [न० त०] 1 भूमि का न होना, भूमि को छोड़कर अन्य कोई पदार्थ, 2 अनुपपन्न स्वाहा या पदार्थ, अनुचित स्थान,—अभूतिरवशोविनयस्य श० उ, 3 सत्त्व मनोरथानामप्यभूतिविश्वनामवसर-तस्कार—त० मेरी आशाओं से बहुत अधिक आगे बड़ा हुआ—सि० १।५२ ।

अभूत, अनुभूति (वि०) [न० त०] 1 जिसका आहा न दिया गया हो 2 जिसको समर्थन प्राप्त न हो ।

अभेद (वि०) [न० व०] 1 अविभक्त 2 समकल्प, बही—अ. [न० त०] 1 भिन्नता का अभाव, समरूपता वा समोचिता का होना,—तद्गुणमभेदो व उपमासोपदे-

कयोः—काञ्च० १०, 2. ध्वजित एकता—पृच्छतीं तद्
 बहुविरुद्धेषु—कि० १११६, सि० ११७९, बाह्यास्वो
 विच्छद्वीरोत्तरेषु—सू० ११२४।

अवेष्ट, } (वि०) [य० सं०] 1. बो धेया व वा तके 2.
 अर्धविक्रि० अविद्याम्, —कृन् हीरा।

अवोष्य (वि०) [य० सं०] 1. कान्ते के अवोष्य, घोष्य
 के लिए निविष्ट, अविधि—अव्य (वि०) विच्छका
 घोष्य वृत्तों के निम्ने कान्ते के अणुपणुक्त ही।

अव्यञ्ज (वि०) [य० सं०] 1. निकट, उन्नीय 2. टाका,
 मया—इत्तं सीमितमव्यञ्जं संवहारेऽप्युत्तरं तयोः—
 महा०,—अन् सामीप्य, साक्षिणः।

अव्यञ्जु (वि०) [श० सं०] हाक ही का ध्वजित।

अव्यञ्जः [अभि+अव्यञ्ज+कण्] 1. किसी ठेक वा चिकने
 पदार्थ को सारीर पर बलना, ठेक की साक्षिण—
 अव्यञ्जनेपथ्यसम्बन्धकार—कु० ७१७, 2. साक्षिण, सेप,
 3. उच्यते।

अव्यञ्जकत्वम् [अभि+अव्यञ्ज+कृत्] 1. चिकने पदार्थों को
 सारीर पर बलना, 2. साक्षिण करना 3. बाँधों में
 काबल बलना 4. चिकना पदार्थ, ठेक, उच्यते।

अव्यञ्जिक (वि०) [श० सं०] 1. अवेष्टाकृत अर्थिक 2.
 बद्ध चक्र कर, गुण वा परिपामयें अवेष्टाकृत अर्थिक,
 अर्थिक उन्नीय, अर्थिक बद्धा—नवतलमोऽप्यव्यञ्जिक-
 कुटीरान्—अग० १११४३, (अर्द्धं वारं अया० और
 करण० के साथ)—हान्यं एकव्यञ्ज-कुत्तरेभ्यो वृत्तोऽप्य-
 चिक वच—अणु० ८१३२०, 3. सामान्य से अर्थिक,
 असाधारण, प्रयुक्त—अव पञ्चम्यञ्जिक—सं० ६१२।

अव्यञ्जना—ज्ञानम् [अभि+अन्+ज्ञा+अङ्+टाप्, स्वरु
 वा] 1. स्वीकृति, 2. सहमति, अनुमति—इष्टाम्यन्ना
 गुणना गरीयसा—कु० ५१७, रघु० २।६९ 2. बासा,
 भावेत् 3. छुट्टी स्वीकार करना, बर्बात करना 4
 तर्क को स्वीकार करना।

अव्यन्तर (वि०) [श० सं०] 1. नीतरी धाम, आन्तरिक,
 अन्तस्थी (विप० बाह्य) रघु० १७४५९, का० ६६,
 याज्ञ० ३।२९३, 2. अन्तर्गत होना, किसी समूह
 सारीर का एक अणु—देवी परिवन्ताम्यन्तरः मात्सवि०
 ५, 3. दीक्षित, परिचित, कुशल (अभि० के साथ या
 समास में)—सञ्जीवकेऽम्यन्तरे स्व—मात्सवि० ५, अही
 प्रयोगाम्यन्तरः प्राक्तिकः—मात्सवि० २, 4. निकटतम,
 ध्वजित, अत्यन्त सबद्ध—स्वकात्पाम्यन्तरा येन—पञ्च०
 १।२५९,—रघु० 1. भीतर का, नीतरी, अन्दर का,
 (किसी वस्तु का) अन्तस्थी धाम, भीतरी स्थान
 समीपिआम्यन्तरकोनपाचकाम्—रघु० ३।९, अण०
 ५।७७, 2. सम्मिलित किया हुआ स्वतः, तयय वा
 स्थान का अन्तस्थान—अन्तात्पाम्यन्तरे—बंश० ४, 3.
 वन। तव०—करण (वि०) अन्दर ही अन्दर गुण

अणों वाता, प्रत्यक्षमान की कक्षि को अन्दर रखने
 बाका, विषय० ४,—कसा गुप्त कसा, प्रेम लीला
 वा हाकनात्र प्रवृत्तित करने की कला।

अव्यन्तरकः [अव्यन्तर+कन्] ध्वजित विच।

अव्यन्तरीकृत [अव्यन्तर+कृत्+ङ] (ता० उच०) 1.
 दीक्षित करना, परिचित करना—प्राणम्याहस्तु-
 मिच्छन्ति मन्वेभ्यम्यन्तरीकृता—रासा० 2. परिचय
 कराना—सर्वविधमेषु अव्यन्तरीकरणीया—का० १०१,
 रघ० १५९, १६२, 3. किसी को निकटविष बनाना-
 बाह्यात्पाम्यन्तरीकृता—बंश० १।२५९।

अव्यन्तरीकरणम् [अव्यन्तर+कृत्+ङ+कृत्] दीक्षित
 करना, परिचय कराना—सर्वोपनिर्वायानु व घृतकला-
 स्वम्यन्तरीकरणम्—रसा० ३९।

अव्यन्तकम् [अभि+अन्+कृत्] 1. प्रहार, क्षति 2.
 रोष।

अव्यन्तित-अव्यन्तित (यु० क० इ०) [अभि+अन्+कृत्]
 1. रोषी, बीषार 2. घोट लावा हुआ, चावल।

अव्यन्तितम् [अव्य० सं०] अणु के ऊपर आक्रमण (कि०
 वि०) सन्तु की ओर वा सन्तु के विपट्ट बर्दाई करना।

अव्यन्तितोन्नीयः—कृत् [अभि+अन्तित+ञ, छ, यत् वा]
 बहु बोझा को नीतापूर्वक सन्तु का
 अव्यन्तितः—कृत् का सामना करता है—उपनिषद-
 निधीको रोषेण त्व व मंतु—वि० ५।४७, सारीको-
 ऽनुमस्यसात्परम्यमिथो भवामि ते—४६।

अव्यन्तः [अभि+ए+अन्] 1. जाना, पहुँचना 2. (सूर्य
 का) अस्त होना।

अव्यन्तर्धन्य-अव्यन्तर्धी [अभि+अर्धं+स्तुट्, अङ्+टाप्
 वा] पूजा, सजावट, मयादरः।

अव्यन्तरे (वि०) [अभि+अर्धं+कृत्] निकट, समीप, स्थान
 के निकट या समीप होने वाला, समीप जाने वाला—
 अव्यन्तरेमापकृतयस्त्वयाम्—रघु० २।३२,—अणु० सामीप्य,
 हीनविषय अन्धकारविषय वामाभ्यर्थं किमुत्साम्यति
 नीत० ७, अव्यन्तरे परितरन्त्य निभेरन्तरः प्रेमान्वया राधया
 —नीत० १, सि० ३।२१।

अव्यन्तर्धन्य-ना [अभि+अर्धं+स्तुट्, सिधवा टाप्] प्रार्थना,
 अनुरोध, दरखास्त, मागिसा—नामङ्कमनेन—कु०
 १।५२।

अव्यन्तर्धन्य (वि०) [अभि+अर्धं+पिनि] वाचना वा
 प्रार्थना करने वाला।

अव्यन्तर्धुवा [अभि+अर्धं+धुक्, सिधवा टाप्] 1. पूजा, 2.
 मादर, सम्मान, समादर।

अव्यन्तहित (वि०) [अभि+अर्धं+कृत्] 1. सम्मानित,
 प्रतिष्ठित, अत्यन्त समीप 2. योग्य, सुहृदवता, उपयुक्त,
 —अव्यन्तहिता सन्धुषु दुत्यकपा वृत्तिविधेष्वेव तयोवना-
 नायु—कि० ३।१११।

अभ्यसकर्मणम् [अभि+अव+कृप्+त्युट्] निकासना, लीचकर बाहर करना ।

अभ्यसकासः [अभि+अव+कास्+घञ्] लुलो अगह ।

अभ्यसकथाः—अवम् [अभि+अव+लक्+घञ्, त्युट्, वा] 1. इट कर धनु का मुकाबला करना, धनु पर चढ़ाई करना 2 धनु को निश्चाय करने के लिए प्रहार करना 3 आयात ।

अभ्यसहृद्यम् [अभि+अव+हृ+त्युट्] 1 नीचे फेंके देना 2 भोजन ग्रहण करना, गले के नीचे उतारना (कथादबोजनयत्—मिता०) ।

अभ्यसहारः [अभि+अव+हृ+घञ्] 1 भोजन ग्रहण करना, आहार लेना, खाना पीना आदि 2 आहार—अभ्यसह्योऽभ्यसहारार्थवाची—काशी०, 'सवादापेक्षी—मालवि० ४ ।

अभ्यसहायं (वि०) [अभि+अव+हृ+ष्यत्] खाने के योग्य, भोज्य,—सर्व आहार,—सर्वशौचरिक्त्य अभ्यसहायमेव विषय—विष्णु० 3 ।

अभ्यसतनम् [अभि+अस्+त्युट्] 1 बार-बार करना, बार-बार किया गया अभ्यास 2 निरन्तर अध्ययन, अनुशीलन—(ताम्) विद्याभ्यसनेनेव प्रसारयितुमर्हसि—रघु० १।८८ ।

अभ्यसुयक (वि०) [स्त्री-विष्ठा] [अभि+असु+ष्युल्] ईर्ष्या, डाहभग, निन्दक, कलक लगाने वाला,—मातापत्यपरेद्वेषु प्रदिशतोऽभ्यसुयका—अण० १।११८ ।

अभ्यसुया [अभि+असु+यक्+अ+टाप्] डाह, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध,—तात्राभ्यसुयाविनिवृत्तये य—रघु० ६।७४, रूपेण वेनेयु ब साम्यसुया—अ० २, १।६४ ।

अभ्यस्त (भू० क० कृ०) [अभि+अस्+क्त] 1 बार-बार दोहराया गया, बार-बार अभ्यास किया गया,—नयनयोभ्यस्तमामोलनम्—अमर० १२, प्रयोग में लाया गया, आदन वाली हुई,—अनभ्यस्तरथधर्वा—उत्तर० ५, 2 सीखा हुआ, पढ़ा हुआ,—सीखवेऽभ्यस्त-विद्याना—रघु० १।८, भर्तुं ३।८५, 3 (गण०) गुणा किया गया 4 (आ० में) ड़िख किया गया ।

अभ्यसकर्म [अभि+आ+कृप्+घञ्] हाथ से छाती ठोक कर लकड़ारना (जैसे पहलवान कुत्ती के लिए) ।

अभ्यसकाकलितम् [अभि+आ+काङ्क्ष्+क्त] 1 विध्या आरोप, निराधार सिद्धांत 2 इच्छा ।

अभ्यसधानम् [अभि+आ+ध्या+त्युट्] मिथ्या आरोप, लाञ्छन, मिथ्या, बदनामी ।

अभ्यस्यता (भू० क० कृ०) [अभि+आ+गम्+क्त] 1. निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 2 अतिथि के रूप में आया हुआ,—सर्वभारम्यागतो गृह—हि० १।१०८,—सः अतिथि, शोक ।

अभ्यसपथः [अभि+आ+गम्+घञ्] 1. निकट आना या

जाना, पहुँच, दर्शनाथे गमन—एषोपनाभ्यासपथमथा मुद—शि० १।२३, किं वा मयभ्यासकारणं ते—रघु० १।६८, महावी० २।२२, 2 सामीप्य, परोक्ष, 3 मुकाबला, हल्ला 4 मुद्द, सद्योग 5 शत्रुता, विद्वेष ।

अभ्यासमयम् [अभि+आ+यम्+त्युट्] उपागमन, पहुँच, दर्शनाथे गमन, हेतु तदभ्यासनेने परीक्षु—कि० १।४ ।

अभ्यासाधिकः [अभि+आपार+ठन्] परिवार के पालन में यत्नशील ।

अभ्यासाक्षतः [अभि+आ+हृत्+घञ्] हल्ला, आक्रमण ।

अभ्यासानम् [अभि+आ+दा+त्युट्] उपक्रम, आरम्भ, शुरुवात करना ।

अभ्यासानम् [अभि+आ+घा+त्युट्] रक्षण, डालना (जैसा कि ईषन) ।

अभ्यास्य (वि०) [अभि+आ+अप्+क्त] बीमार लग्न, रोबी ।

अभ्यासात् [अभि+आ+पत्+घञ्] सकट, दुर्भाग्य ।

अभ्याससं-अर्धवम् [अभि+आ+मुद्+घञ्, त्युट् वा] मुद्, मद्योग, सभर्ष, आक्रमण ।

अभ्यासरोह-रोहणम् [अभि+आ+रूह+घञ्, त्युट् वा] चढ़ना, सवार होना, ऊपर तक जाना ।

अभ्यासृष्टिः (स्त्री०) [अभि+आ+सृप्+क्तिन्] दोहराना, बार-बार होना, दे० 'अभ्यासृष्टि' श्री ।

अभ्यास (वि०) [अभि+अप्+घञ्] निकट, समीप—आ 1 पहुँचना, आना होना 2 समीपस्थ परोक्ष, आम पास का (दे० 'अभ्यास'),—शायसाम्भासे समुपबिन्द—पच० २, सहसाभ्यासता वैसीमभ्यासपरिचयिनीम्—महा०, दश० ६२, 3 परिचाय, फल 4 अभ्युदय, प्रत्याघास, अट 'सोद्वत' के अर्थ में शाय प्रयुक्त ।

अभ्यास [अभि+आ+अप्+घञ्] आवृत्ति,—आ-कथाता-आकथाता इति पदान्यासाऽभ्यासपरिमर्माति घोटयति—शागी०, नाम्यासकर्मसीसते-यच १।१५१, 2 बार-बार किसी कार्य को करना, लगातार किसी कार्य में लगे रहना,—अविदतभयाम्यासात्—का० ३०, अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्यं च गृह्णते—अण० ६।३५, ४४ अनवरत अभ्यास के द्वारा, (पठित और अविद्वान् रहना) १।२।२, 'निगृहीतेन वनता—रघु० १०।२३, इसी प्रकार धार, अन्तर आदि 3 आसन, प्राण, चतन,—अमङ्गलान्यासतिम्-कु० ५।६५, या० ३।६८, 4

पाठनास्य विषयक अनुशासन, कथापद, सैनिक कथापद 5. पाठ करना, अध्ययन करना,—काव्यत्र-विशेषाम्यास काव्य० १६ आसपास का, सामीप्य, परोक्ष ('अभ्यास' कैलिय)—पूतयतिरिवाभ्यासे (से) यशो परमृताग्मयी—कु० ६।२, ('अभ्यासे-से' लोको का यहाँ अर्थ 'नय' को संबोधित करता है जो कि उसके निकट है—अभ्यासु अपने आपको पूर्ण रूप से उसके सामने प्रकट करके ।

यहाँ पाठ्य की उपमा पूर्वतः सुरक्षित है—अर्थात् स्वयं चूष रहते हुए अपनी स्त्री को संबोधित करने के बहाने अपने प्रियतम से बात करना, अर्थात् अपने सहाय्य से सीता पुनश्चात् बन्—उत्तर ० ७१५, आपकी स्त्री हुई; अर्थात् (आ) बाला—विद्या (अलङ्कार) (आ) (आ) में द्वित्व होता ८ द्वित्व हुए नु.सम्ब का प्रथम अक्षर, द्वित्व अक्षर ९. (अप०) नृपा १०. सम्मिलित मात्र, गीत की टेक। सय०—वत् (वि०) उपकृत, निकट गया हुआ,—श्लोः अनवरत रहतु वित्त से उत्पन्न अनोयोग,—अर्थात्-योगेन ततो भागिच्छान्नं वनवप—अप० १२१५,—श्लोः द्वित्व किये हुए अक्षर को हटा देना,—अर्थात् द्वित्व अक्षर से उत्पन्न अन्तगाल।

अभ्यासात्मन् [अभि + आ + अत् + भिच् + लृट्] अणु का साधना करना या उस पर हुसला करना।

अभ्यासुत्तम् [अभि + आ + ह् + लृट्] १. प्रहार करना, चोट पहुँचाना, हत्या करना २ रोक लगाना, बाधा डालना।

अभ्याहारः [अभि + हा + ह् + षञ्] १ निकट आना, ले जाना २ सुटना।

अभ्युत्थन् [अभि + उ + लृट्] १. (अल) छिड़कना, तर करना,—परम्याभ्युत्थानपरम्याणां (नाम्न) रण० ११५७, २ अभियेक द्वारा सत्, ३।

अभ्युत्थित (अ०) [अभि + उ + लृट्] प्रथम, प्रया के अनुकूल।

अभ्युत्थयः [अभि + उ + लृट् + षञ्] १ वृद्धि, आगम २ सम्प्रदा।

अभ्युत्थोत्थन् [अभि + उ + लृट् + लृट्] उच्च स्वर से चिल्लाना।

अभ्युत्थानम् [अभि + उ + लृट्] १. (आने आगम में) सत्कारार्थ उज्जा, बिम्बी के सम्मान में बड़े होना, २ रक्षा होना, सम्मान जाना कृत करना ३. उज्जा (आ० आ०)। उपरित मरणाना, यथांदा, (नस्य) नृपाम्भ्यान्वितरिणा नस्य, मरण प्रजा—रण० ५३, बड़ा यदा हि धर्मस्य स्मृतिर्भवति भाग्ये, अभ्युत्थानस्य धर्मस्य तदात्मानं सञ्जायते—अप० ६३।

अभ्युत्थानम् [अभि + उ + लृट्] किसी पर उज्जाना, दुःख, अक्रमात् शरणता, प्रमत्ता करना अलक्षितान्भ्युत्थानो नृपेण—रण० २१७।

अभ्युत्थः [अभि + उ + लृट् + षञ्] १ पूर्व तदादि का निवृत्तता, पूर्वोदय २ उन्नति, मरणानता, मीमांसा, उजा उज्जा, मरणान्—सुशानि न स्वाभिनमभ्युत्थाना—रण० १, यथा हि सांकायुत्थयान् नान्याम्—रण० ३। १८. ३. उत्थय, उत्थय का प्रथम ४. उपक्रम, आगम।

अभ्युत्थारम् [अभि + उ + लृट् + षञ्] विपरीत

बात के द्वारा उदाहरण या निर्वचन देना।

अभ्युत्थित (अ० क० क०) [अभि + उ + लृट् + लृट्] १. निकला हुआ २. उन्नत २. पूर्वोदय के अक्षर पर उजा हुआ। अभ्युत्थयः—अलङ्कार [अभि + उ + लृट् + षञ्], लृट्, अभ्युत्थयतिः (स्त्री०) [अभि + उ + लृट्] १. किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति या अतिथि के सम्मानार्थ उज्जर बनना २. निकलना, होना, उत्पन्न होना।

अभ्युत्थत [अभि + उ + लृट् + लृट्] १. उजा हुआ, ऊपर उठाया हुआ, यथा कि—आयुष, अल्प २ तत्पर, तैयार, प्रयत्नशील ('अभ्युत्थय' सम्प्र० अभि० के अर्थ का अर्थ में) ३. जाये गया हुआ, निकला हुआ, सामने दिखाई देने वाला, निकट जाने वाला,—कृतमभ्युत्थतनुतेनरन्—रण० ८१५, ४. अर्थात्थि दिया हुआ या लया हुआ।

अभ्युत्थत (वि०) [अभि + उ + लृट् + लृट्] १. उजा हुआ, उजा किया हुआ, २. ऊपर की उजरा हुआ, बहुत ऊँचा—कु० १३३३।

अभ्युत्थतिः (स्त्री०) [अभि + उ + लृट् + षञ्] बड़ी उन्नति या समृद्धि।

अभ्युत्थयः [अभि + उ + लृट् + षञ्] १. उपायन, पहुँच २. स्वीकार करना, मानना, साथ समझना, (शेष) मान लेना ३ विन्मोहारी, प्रतिज्ञा करना, निर्वचन मालिनी १. मरिदा, करार, प्रतिज्ञा। लष०—सिद्धिः मानी हुई प्रस्तावित योजना या सुक्ति।

अभ्युत्थयतिः (स्त्री०) [अभि + उ + लृट् + षञ्] १. महावतायें निकट आना, दया करना, ह्वा करना, अनुग्रह, ह्वा,—अनयाभ्युत्थयत्या—स० ४, २. हाइल, तसली ३. रक्षा, बचाव,—बाह्याभ्युत्थयती च शपथे नाम्नि पातकम्—अप० ८११२, ४. इकरार नामा, स्वीकृति, प्रतिज्ञा ५ स्त्री का गर्भवती होना (विशेषतः चाँदी की विषया पत्नी का निषेध द्वारा)।

अभ्युत्थयः [अभि + उ + लृट् + षञ्] १ प्रतिज्ञा, वादा, इकरार २. मानन, वृत्ति, उपचार,—अस्मिन्प्रत्या विद्वाभ्याम्प्राये—कु० ३११९।

अभ्युत्थयन् [अभि + उ + लृट् + लृट्] सम्मानपूर्वक उपहार, प्रमोहन, चिन्तन।

अभ्युत्थयः (अ० क० क०) [अभि + उ + लृट् + लृट्] १. निकट आना हुआ, उत्पन्न २. प्रतिज्ञात, स्वीकृत, अंगीकृत—अप० १८।

अभ्युत्थय (अभ्य०) [अभि + उ + लृट् + लृट्] पहुँच कर, स्वीकार करके, प्रतिज्ञा करके। सय०—अभ्युत्थय—हिमचूषमांसाय के १८ अक्षरों में से एक, २. गीत और सेवक के मध्य की हुई सविदा का भव। अभ्युत्थयः, अभ्युत्थयः [अभि + उ + लृट्] अर्थ—उ-अभ्युत्थयः [अभि + उ + लृट्] एक प्रकार की रोटी, अर्थात्:

बाटी ।
अजकल [अजि+कल+अज] 1 ठक करना, दलील देना, बिचार विमर्श करना 2 आगमन (घटना), अनुमान, अटकल,—पराम्भहृत्वात्तान्त्वयि तन्तुराणि स्वययति—सा० १ १४, 3. अज्ञातार करना, 4. समझना ।
अज् [अज्+अ] अजित, जानन्न, अजित] जाना, हार उधर घूमना—कोश्वालप्र निर्मयः—यट्टि० ४११, १४११० ।

अजम् [अज्+अप् या अज्+अप् अपो विभक्ति—म्+क] 1. बादल 2 बायमवल, आकाश—परितो विषाणु वषट्प्रसिार—सि० ११३, दे० अजम्हिह् आदि 3. चिल-चिल, अवरक 4 (सम्०) गुन्य । सम०—अथकाश्च वचाय के लिए केवलसमाज बादल, बारिश होना,—अथकाश्चिक,—अथकाश्चिन (वि) बारिश में रहकर (तपस्या करने वाला), बारिश से बचाव का कोई उपाय न करने वाला,—उत्थ आकाश में उत्पन्न इन्द्र का वध,—आमः ऐरावत नाम का हाथी जो धरती को बारल किये हुए है,—वष 1 बायमवल 2 गुब्बारा,—विशाच,—विशाचक, राहु की उपाय, वेधा-तुर,—वृष्य एक प्रकार की मत्त, गुब्बम् 1 पानी 2 अथच वान, हवाई किना,—आतम इन्द्र का हाथी ऐरावत,—आत्म,—वृष्यम् बादलो की पक्ति या समूह ।

अजम्हिह् (वि०) [अज+हिह्+अप् मृगाम] बादलो की घूमन शक्त्य स्थल करने वाला अर्थात् बहुत जैवा,—अजम्हिह्मा प्रामादा—मेघ०९६, प्रामादप्रलिह-माधरोह—रघु० १४२९,—ह वायु, हवा ।

अजम्क [अज+कम्] चिलचिल, अवरक । सम०—अस्मन् (तपु०) अवरक का कुला, अवरक की श्रम—आस्मन् इत्यात् ।

अजम्बु (वि०) [अज+कम्+अप् मृगाम] बादलो की घुने वाला, बहुत जैवा,—आदावाअजम्बु प्रया-न्यत्य फलशालिनम्—यट्टि०,— व 1 वायु, हवा 2 पाटा ।

अजम् (स्त्री०) [अज+अ+उ] इन्द्र के हाथी ऐरावत की सहचरी, पूर्वदिशा के दिग्ज की हृदिनी । सम०—अज,—अस्मन् ऐरावत ।

अजि-भी (स्त्री०) [अज+अन् बीप् वा] 1. लकड़ी की बनी हुई नोकदार फरही जिनसे नाव को सफाई की जाती है, 2 कुलार, बुरशी ।

अजित (वि०) [अज+इज्] बादलो से आन्वहित, बादलो से घिरा हुआ—रघु० ३११२ ।

अजिथ (वि०) [अज+थ] बादलो से संबध रखने वाला, आकाश या मुक्ता अथवा बादलो में उत्पन्न,— व. विजयी, —अप् मानने वाले बादलो का समूह ।
अजिषे [न० त०] अजिषय, योग्या, उपायकर्ता ।

अज् [अज्+अप्] 1. लक्ष्मी, वीर्य 2. जरा, बीधा ।

अज् [अज्+अप्] [अजित, अजितुम्, अजित] 1. जाना, की ओर जाना 2. सेवा करना, सम्मान करना 3. शब्द करना 4. जाना, (यु० प० वा प्रेर०) [आज-यति] 1. टूट पड़ना, आक्रमण करना, रोष से कष्ट होना, किसी व्यक्ति से पीड़ित होना 2. रोमी होना, कष्टग्रस्त या रोगग्रस्त होना ।

अज (वि०) [अज्+अज्, अज्+अ] कष्ठा (जैसा कि फल),—भाः 1 जाना, 2 कष्ठा, रोष 3. लेषक, अनु-चर 4. यह, स्वयम् ।

अजकल-वष (वि०) [अ० त०, न० त०] 1. अजुग, दूरा, अकल्याणकर—रघु० १२४२,—अजकलरठम् कु० ५१६५, अजकल्य शील यत्र अजुग नायैवमखिलम्—गुण्य० 2 भाग्यहीन, दुर्भाग्य पूर्ण,—अः एरष का वृक्ष,—अम् अशोभनीयता, दुर्भाग्य, अकल्याण, प्राय नाट्य-नाट्य में प्रयुक्त—आन पाप प्रतिहत-मज्जकलम्—तु० मयवान् कल्याण करे ।

अजकल (वि०) [न० व०] 1 जिना मजापट का, अलकार रहित 2. जिना सात वृ या जिना भाव का (उबला हुआ चावल),—अः एरष का वृक्ष ।

अजल (वि०) [न० त०] 1 अजन्तल सम के लिए अजलथ्य, अज्ञात 2 नायमन्, प्रयाय,—तः 1 समय 2 उपना, रोग, 3 मृत्यु ।

अजति (वि०) [न० व०] इर्ष्या, दुष्ट, दुश्चरित्र,—ति 1 पुने वरगी 2 चोद 3 मयम्,—तिः (स्त्री०) [न० त०] अज्ञान, लताहीनता, ज्ञान का अभाव, अजुदशिता—अमर्त्यताजि वर अज्ज्या—मनु० ५१२०, ५२८२, । सम० पूर्ण (वि०) यज्ञाहीन, विचारहीन ।

अजल (वि०) [न० त०] जो यज्ञ में न हो, लही दिमाग का ।

अजवम् [अजति मुक्त अनयम्—अज्+आघारे अजम्] 1 कर्न बासन पात्र 2 सामर्थ्य, शक्ति ।

अजसत् (वि०) [न० व०] जो इर्ष्या या अहम्कृत न हो, उदार ।

अजसत् { (वि०) [न० व०, क्त् वा] 1 जिना मन का अजसत्क [पान के 2 वृद्धिहीन (जैसे कि वाष्क) 3. प्यान न देने वाला, 4 जिन्का अपने मन के ऊपर कोई नियन्त्रण न हो 5 स्नेहीन (यु० मः) 1. जो इच्छा का अंग न हो, अत्यन्तज्ञान का अभाव 2. प्यानशून्य (पु०-भा) परमेश्वर । सम०—अज(वि०) अज्ञान, अविचारित,—अः,—नील, नायकंथ, र्जु किया गया, चिकित्त,—बीजः प्यान न देना,—द्वर (वि०) जो मुक्कन न हो, जो अचिकन न हो ।

अननात् (अन्व०) [न० ङ०] षीण नहीं, बहुत, आत्यन्तिक ।

अननुच्य (वि०) [न० ङ०] 1. अननुचिक, जो अननुचो-
चित न हो 2. अही मनुष्य का माना जाना बहुत कम
हो, —अन्व० [न० ङ०] 1 जो मनुष्य न हो, 2 राजका ।

अनन्व-अन्व (वि०) [न० ङ० क्तृ च] 1 वैदिक यज्ञों
में रहित, बहु लकार विद्यमान वेदग्रन्थों के पाठ की
आवश्यकता न हो 2 जिसे वेद के पढ़ने का अधिकार
न हो जैसे गृह या स्त्री 3 जो वेदपाठ से अनविद्य
हो, —अननात् अन्वनात्—अनु० १२११४, 4 रीण
की बहु विकल्पा जिनमें प्राणुमय की फिमा न की
जाती हो, —अनया कथमन्यायात्कीटा न हि जीवन्ति
जना मनाननया—आदि० १११११ ।

अन्य (वि०) [न० ङ०] 1. जो मुक्त या मद न हो,
फुल्लिग, बुद्धिमान् 2 तेज, अन्त, प्रचण्ड (बायू
आदि) 3 अनल्प, अति, अधिक, बहुत, तीव्र, —अनन्व-
मदबुद्धि—उत्तर० ५१५, अन्वयिन्सदिन्द्रे नितिल-
माशरीरदिन्द्रे आदि० ४११ ।

अन्य (वि०) [न० ङ०] विना अहंकार के, स्वार्थ या
सात्त्विक आर्मानों के शून्य, यथाराहित, —अरथेण-
यथार्थैव वृत्तमननिकेतन—अनु० ११२९ ।

अन्यत्ता-अन्व [न० ङ०] उदासीनता, स्वार्थरहितत्व ।

अन्य (वि०) [न० ङ० नृ-अन्यात्] जो कभी मृत्यु
को शान्त न हो, न मरने वाला, अविनाशी, —अनरा-
मरत्तराशो विद्यामर्ष च साधयेत्—हि०, पत्र० ३,
मनु० २११८८, ११ देव, देवता 2 पाग 3
सोता 4. तैनास को मर्यादा (स्वाधिक गिनती में इनमें
ही देवता हैं) 5 अमरत्व 6. इंद्रियों का देह—रा
1 इन्द्र का आवासस्थान (तु० अमरावती) 2 नाल
3 सोन 4 गुलाम्भ, —री 1 देवपत्नी, देवकन्या
2 इन्द्र की राजपत्नी। मम०—अङ्गना, —स्त्री
दिव्य अमरा, देवकन्या—पुष्पाय मलानि हरायराङ्गना
ति० ११५१. अवि० देव-पत्न्ये अथानु मूमेह पहाड
—अधिप, इन्द्र; ईश, —ईश्वर, —वसिः,
—सोता, —राज, देवताओं का स्वामी, इन्द्र की उपाधि,
कई बार विष्णु और शिव की भी उपाधि—आचार्यः,
—कृष्ण, —शुक्ल; देवताओं के मुक्त, वृत्तमिति की
उपाधि, —अन्याया, —सहिष्णी, —सहित (स्त्री)
स्वर्गीय नदी, यमा की उपाधि, 'नटिनीरोचसि
वसन्—भर्तु० २११२३, अन्वयः देवताओं का
आवासस्थान, स्वर्ग, —अन्यत्र विद्यमानदेवी के उस
भाग का नाम जो नर्मदा नदी के उत्पन्न स्थान के
निकट है—कीट, —कीट; अमरविह द्वारा उचित
संस्कृत भाषा का एक मुद्रसिद्ध कोश—तत्तः,—आद्य
1. दिव्य वृक्ष, इन्द्र के स्वर्ग का एक वृक्ष, —अमरतर-

मुमुमवीरस्येकसर्पसकलकायस्य—आदि० ११२८
2.—वेद दाप 3 कल्पवृक्ष, —शुक्रः देवता
बाह्यन को मन्दिर वा मूर्ति संबंधी कार्य करता हो,
मन्दिर का अवीक्षण,—पुष्प, देवताओं का आवा-
सस्थान, दिव्य स्वर्ग,—शुक्ल,—शुक्लः कल्पवृक्ष,
—अन्व, —अन्व (वि०) देवताओं जैसा,—एतन्व
स्फटिक, —कीटः देवताओं की दुनियाँ, स्वर्ग, 'सा
स्वर्गीय मुक्त,—तेषु मय्यन्वर्तमानो मन्वन्परमोक्त-
ताम्—अनु० २१५,—सि० अमरकोश के रचयिता
का नाम, बहु जैन धर्मोक्तम्बी है, कहा जाता है कि
विक्रमादित्य महाराज के नवरत्नों में एक रत्न थे ।

अनरता-अन्व [अमर+तत्, स्वत् वा] देवता ।

अनरताकृती [अमर+अनुप, दीर्घ] देवताओं का आवासस्थान,
इन्द्र का घर,—सप्तभ्रमेत्कृतुपातिनामका निजीमिता-
श्रीष विद्याप्रकाशती । शिशु० ।

अनर्थ (वि०) [न० ङ०] जो बरफपर्वत न हो, दिव्य,
अविनाशी,—'शारेयं रपु० ७५५३, 'शुक्लम्—स्वर्ग,
'सा अविनाश्वता, —स्वः देवता। सम०—अन्या
देवतानी गंगा की उपाधि—विक्रमांशु० १८१०४ ।

अनर्थम् (नपु०) [न० ङ०] शरीर का बहु अणु जो पर्यं-
स्थल न हो। सम०—वैदिक मर्मस्थल को न बीच
वाना, मृदु, कोमल ।

अनर्थ (वि०) [न० ङ०] 1. उचित सीमाओं को पार
करने वाला, सीमा को उल्लंघन करने वाला, अमादर
करन वाला, अनुचित,—अनर्थोपायमनर्थो विषयस्ति-
प्यति सर्वदा—पत्र० ११४२, उपाय स्वमनर्थं कर्म
कानु विधीर्षति—गम्या० 2 सीमारहित, असीमा—आ
[न० ङ०] उचित सीमा का उल्लंघन करना,
आचरणहीनता, अप्रतिष्ठा, उचित सम्मान की
अवहेलना ।

अनर्थ (वि०) [न० ङ०] असहनशाल, —की [न० ङ०]
1 अहंमत्ता, असहनशीलता, वैधर्म्यता,—अनर्थ-
शुभेन जनस्य जन्तान न आहत्येन न विधिषादर—
कि० ११३३, ईर्ष्या, ईर्ष्यादुस्त कोष,—किन्व अतस्तात-
प्रतापोक्त्येवमर्थ—उत्तर० ५, सा० सा० में ३३
अधिपानी धाको में से एक—अनर्थं दे० सा० ६०;
रस० दिग्मपरिभाषा बताता है—परकृताकृतावि-
नानापरामर्शयो मीनशाक्याक्यादिकारणानुविधर-
वृत्तिविशेषोऽनर्थं 2 कोप, आशय, कोप,—पुष्पधाम-
पौंदरीपिनेन गाडीविना—वेनी० २, सावर्धं मूढ,
कुपित, सावर्धम् कोषपूर्वक 3. तीव्रता, प्रचण्डता ।
सम० अ (वि०) कीट का अलङ्कनीयता से
उत्पन्न,—हृत्कः कोषपूर्वं हृती, सिल्ली उपाया ।

अनर्थम्, —विकत, } (वि०) [न० ङ०, न० ङ०] वैश्वीय,
अनर्थम्, —वैश्व } असहनशील, क्षमा न करने वाला—अनर्थ

१३२६, २ कुंड, कुपित, प्रचण्ड स्वप्न का - हृदि
 शनो मासोपव्ययमय - रघु० ३१५३-अनिमन्व्य-
 धामाहिते पाण्डुरुरे-वेणो Y, 3 प्रचण्ड, दुः-
 सकल्प ।

बधक (वि०) [न० व०] 1. मलरहित, मलमुक्त, पवित्र,
 निष्कलक, विनाल, -अमला मुहुर - पथ० २११३१,
 विद्युत्, निष्काट 2 ज्वेन उन्मथन, -कणवितस्तामल-
 8-तापयम्-कु० ७३२२, रघु० ६१८०, -सा 1 लघुमी
 वेधी 2 नाल 3 अतिके का बुद्ध, -सम् 1 पवित्रता
 2 अवरक, 3 परब्रह्म। मय०-पतत्रिन् [पु०-त्री]
 अरली हय, -श्लम्, -मसिः फटिक पत्थर ।

बधोत्सव (वि०) [न० तं०] स्वच्छ, बेदाग, पवित्र,
 (वैदिक रूप से भी) -कुलममलिन मत्वेवाय जनी न
 च जीवितम् -मा० २१२, ।

बधतः [अय्+अत्+च्] 1 राव 2 मूर्खता 3 मूर्ख 4
 समय ।

अध (वि०) [न० तं०] अर्धगमित- (अव्य०) 1 से,
 निष्कट, पास 2 के साथ, से मिलकर, जैसा कि अधाथ,
 अधावस्था (स्त्री) नूतन चन्द्रमा का दिन, सूर्य और
 चन्द्र के संपर्क का दिन, -अमाया नु सुदा सोम
 ओपथी प्रतिपद्यते - व्यास 2 चन्द्रमा की सोलहवीं
 कला, पु०-आमा। मय०-अत्त नूतन चन्द्रमा के
 दिन की सहायि, -वर्षम् (नप०) अमा का पवित्र
 काल, नूतन चन्द्रमा का दिवस ।

अधास (वि०) [न० व०] 1 बिना मास का, मास रहित,
 2 दुबला-पतला, बलहीन, -सम् [न० तं०] या
 मास न हो, मास को छूड़ कर और कोई वस्तु ।
 मय०-ओषधिक (वि०) [न० स्त्री] की मासवृत्त बने
 हुए पावलो से संबंध न रखने वाला ।

अधाथ [अधा+थच्] राजा का सहचर, या अनुयायी,
 भयो, अधाथपुत्री सवर्षानिगिन - रघु० ३१२८ ।

अधात्र (वि०) [न० व०] 1 मीमांसित, अर्धगमित
 अर्धु, अममल 3 जो आरम्भिक न हो, -त्र
 परब्रह्म ।

अधावस्थ-ना [न० तं०] अनादर, अपमान, अवज्ञा ।

अधावस्थम् [न० तं०] गिरा ।

अधाविन् (वि०) [न० तं०] दिनभ्र, विनोत ।

अधालुष (वि०) [स्त्री०-स्त्री] [न० तं०] अमानता,
 मनुष्य से संबंध न रखने वाला अधाधिक, अधाधिक,
 अधास्वयं - आङ्गिरीयातमापव्यमानुष्याम् - ता०
 १३२ ।

अधालुष्य (वि०) [न० तं०] धनन्यायित, अप्रीय्य आदि ।

अधास (मा) स्त्री -अधावनी या अधावस्था ।

अधास (वि०) [न० व०] अनुदित, पाण्डो, माधार्गिन,
 निष्काट 2 जो माया न जा सके, -या 1 कण्ट-

व्युत्ता, ईमानदारी, निष्काटता 2 (वेदा० में) अध
 का अनाद, परमात्मा का ज्ञान बन् पण्डित ।

अधायिक, -**धायिन्** (वि०) [न० तं०] मायाहित,
 निरुत्थल, ईमानदार ।

अधावस्था, -**धाव्या** { अधा+अय्+वन्, धव् वा, अमा
अधावस्थो, -**धातो** { +अय्+अय्, धव् वा } नूतन
(अधावस्थो-धातो) चन्द्रमा का दिन, बहु समय जब कि
 सूर्य और चन्द्रमा दोनो संपर्क रखते हैं, प्रत्येक चान्द्र
 मास के इतने पक्ष का पन्द्रहवां दिन-सूर्याचन्द्रमसो
 य पर संपर्कमे मासाधम्या-गाथिन० ।

अधित (वि०) [न० तं०] 1 जो माया न गया हो अमीम,
 सोमारहित, विद्याल-मित ददाति हि पिना मित भाना
 मित सुत, अनिमन्त्र हि दाना अतार का न पूजयेथ-
 गमा० 2 उपविन, अवातु 3 अज्ञात 4 अलम्कूल ।

सम०-अधर (वि०) गद्यार्थक, **आध** (वि०)
 अनिकान्तिष्क, अमीम प्रभाजन, **ओज्ज** (वि०)
 अमीम तेजावुक्त, अधिक पक्षितपान्त सर्वशक्तिमान्
जेज्ज, -**दृति** (वि०) अमीम नव वा कानिपुक्त
 -**विष्क**-1 अमीम वय धात्री 2 विष्णु ।

अधित्त [अय्+दृच्] वा मित न ता, अत्र [राधा, वैश्व,
 प्रतिवृद्धी, विपरीत, -ग्यातामाम्या मित व मद्रब्राह्मण,
 ब्रह्म-वि०-१३६, नव्य मिश्राजानमान्-१०१,
 प्रकृत्यमिवा हि नामाम-यव वि० १११२१ । मय०
 -धात, धायिन्, धव्, हन् -ववा का माने
 वाला, **विन्** (वि०) अति मध्या ११ कोने के वाला,
 अधिर्धातियर्थाब्रह्मण च पर-ने० ११३१ ।

अधिष्या [कि० वि०] [न० स्त्री] या यिष्या न ता,
 सचयक नाम वनपुत्र प्रियदर्शन का - रघु० १६१६ ।

अधियन् (वि०) [अय्+यिन्] यथा गता ।

अधिषथ [अय्+धृच्] 1 सामान्य वृत्त का गतार्थ, 2 इत्यत्र
 की मायावा 2 उभयपक्ष निरुत्थल निष्कण्टका
 3 मान ।

अधीषा [अय्+वत् ईङ्गमयः] 1 रत्न धारणार्थ, रोम 2
 हुन काय अम कण्ट, ३१११ ता नोद ।

अयुक् (वि० वि०) [अय्+उक्+च्] उभयमन्त्र-व-गमा०]
 काट अर्थात् या पृथ्वी के अन्तः से निष्का (इत अर्थात्
 का नाम व गुरुत्वात् न तात्त जाय, मा म यत्पुत्र-
 १३ प्रथमार्थ अनाम-गण्डः ० ५५, ८० उभयमन्त्र-
 विन-व-मय अयममन्त्र-विधिद्वय-व-वर्ति-व-व्यक्तो
 २३ तः। शिवन ८८ ।

अयुक्त (वि०) [न० व०] 1 अत्रिह दशन गते न पदे
 ता, या जने से स्वल्प तथा 2 क्रमधारण क वृत्त के
 अत्रिह दृष्टकरण न मित्रा ता, अत्रि मास प्राप्त न हुआ
 ता, **रुक्म** एक ३, ११११ (वाक्य या तन्वकार आदि)
 जो नदेव पकड़ा जाता है वना नहीं जाता । मय०

—हस्त (वि०) चित्तस्थयी, कबूत (कार्यवाही के लिए) बलस्थयी, परिचितस्थयी,—नारा प्रकृत्या नाम्ब व्यये चामुत्तरहस्त्या—अनु० ५।१५०।

अमृशिताः (स्त्री०) [न० त०] 1. स्वातन्त्र्यपूर्वता 2. स्वतन्त्रता वा मातृ का भाव ।

अमृतः (अर्थ०) [अदम् + मृतम् उल्ब-मत्स्य] 1. बहा मे, बहा 2. उत स्वान मे, ऊपर मे अधो परमाक मे या स्वमे मे 3. इत पर, ऐसा होने पर, अब न आये ।

अमृष्य (अर्थ०) [अदम् + मृष्य उल्ब-मत्स्य] (विप० इह) 1. बहा, उत स्वान पर, बहा पर, अमृष्यान् बवना - इत् ० १२७ 2. बहा, (मे) कुछ पहले हा बुरा है वा कहा गया है) उत अबन मे 3. बहा, ऊपर, पर-माक मे, आगामे अन्य मे-वायव्यमीष वा तन्तुवांशेना-मृष मुष बभन् 4. बहा - अनेनेवाभेका सर्वे नगरेऽमृष प्रसिता -कथा० ।

अमृषा (अर्थ०) [अदम् + मृष्य उल्ब-मत्स्य] इस प्रकार, ऐत गीत मे ।

अमृष्य (अदस्-मव०) ऐत वा (केवल समान मे) । सम० -कुल [अदम् म०] (वि०) ऐमे कुल मे सबब राने बाला (-सम्) प्रसिद्ध बराना, -मुष्य, -मुषी ऐमे प्रसिद्ध कुल वा पुत्र वा पुत्री, दे० आमुष्यायण ।

अमृष्यु - क, अ (वि०) [स्त्री०—सी, सी] [अदस् + मृष्य + क्त्विन्, कञ्, क्त वा स्थिया ङीप्] ऐसा, इस प्रकार का, इस रूप वा इन का ।

अमृतं (वि०) [न० त०] आकारहीन, अशरीरी, शरीर रहित (विप० मृन्-मृन्त्वयम् -अवच्छिन्नवर्गामाणव-त्वम् -मुक्ता०),—सं-तिष्ठः सम० -मुषः (वैशे०में) धर्म, अथवा जैसे मुषो को अमृतं वा अशरीरी समझा जाता है ।

अमृशित (वि०) [न० व०] आकार हीन, रूपरहित,— तिष्ठित्त्वात्—तिष्ठिः (स्त्री०) [न० त०] रूप वा आकार का न होना ।

अमृष्य -कृष्ण (वि०) [म० व०] 1 निर्मूल (धा०), (आश०) बिना किसी आधार के, विराधार, आधार रहित 2 बिना किसी प्रमाण के, जो मूल मे न हो -नायल लिखते किञ्चित्—मल्लि०, 3 बिना किसी शैलिक कारण के जैसा कि सांख्य का 'प्रमाण' ।

अमृष्य (वि०) [न० व०] अमशाल, बहुमूल्य ।

अमृष्यत्वात् [सत्त्वमे न० त०] एक सुगन्धित धान की जड़, (कस या उशीर) जिस के परदे या टट्टिया बनती है ।

अमृत (वि०) [म० ङ०] 1 जो धरा न हो 2 अमर 3. बाधनाही, अनश्वर,—क 1 देव, अमर, देवता, 2 देवो के वैश अन्वयसदि,—सा 1. मायक धराव 2 नागा प्रकार के शीशों के नाम,—सम् 1. (क) अमरता (घ) परमपुष्टि, मोक्ष—अनु० १२।१०४, स विषे

चामुत्तम च—अमर०, 2 वैशों का सामूहिक शरीर 3 अमरता की सुविधा, स्वर्लोक 4. सुधा, पीपुष, अमृत (विप० विष) को समूह मयन के फल स्वल्प प्राय समझा जाता है—देवानुरेवमृतमनुनिर्धर्मवन्मे—कि० ५।२०, विद्याप्यमृतं शास्त्रम्—अनु० २।२२९, विषमप्यमृतं क्वचिदुदेवमृतं वा विषमिषवरेष्वप्या—रघु० ८।४६, (प्राय, वाष्, बचनम्, शमी आदि अमृतों के साथ प्रयुक्त होता है) कुमारबन्धामृतमिताशरन्-रघु० १।१६ 5. सोमरस 6 विष नामक शीष 7 यक्षदंष—अनु० ३।०८५, 8 अवाचितमिहा (दान), विना याने दान मिलना—मृत स्वाचारित मैक्षमपुत्रं म्यादयाचिनम्—अनु० ६।४, ५, 9 बल—अमृताध्यात जीमून्—उत्तर० ५।२१, तु० भोजन के पूर्व वा अन्त में आचमन करते हुए बाह्यको के द्वारा खड़े जालवाले पत्र (अमृतीपस्तरणमसि स्वाहा, अमृतापिधानमसि स्वाहा) 10 शीषवि 11 वी,—अमृत नाम यस्ततो नम्य किङ्क्षेपं मुकुतिम्—सि० २।१०७, 12 दूष 13 आहार 14 उबले हुए चावन, भात 15 मिष्ट पदार्थ, कोई भी अमृर वस्तु 16 मोना 17 पाग 18 विष 19 परबद्ध । म०—अमृ, -अर,—वीधितिः—कुत्ति,—रक्षिः चरना कः विशेषम्,—अमृतीधितिमे विरमेने—ने० ५।१०४, -अमृत्सु,—अमृत्सु,—आसिम् (पु०) वह जिसका भोजन अमृत है, देवता, अमर,—आहरणः मरह जिसने एक बार अमृत चुराया वा,—उत्पत्ता—मन्वी (—अमृ),—उत्पन्नम् एक प्रकार का मुर्दा,—कुम्भम् वह कतम जिसमें अमृत रक्ता हो,—आरम् गीतावर,—मर्ष (वि०) अमृत या जल से भरा हुआ, अमृतमय (—अं) 1 आर्या 2 परमात्मा,—सर्वविषी ज्योत्स्ना, चाक्षी,—इव (वि०) चन्द्रकिरण जो अमृत छिड़कती है (—क) अमृत प्रकाश,—धारा 1 एक छन्द का नाम 2. अमृत का प्रवाह,—प 1 अमृत वाच करने वाला, देव वा देवता 2 विष्णु 3 आर्या पीने वाला,—द्रव्यममृतपनामवाशःछायाभावधरमम् मधुप्लवमविहीते—सि० ७।४२, (यद्वा अं) का 'अमृत पीनेवाला' भी अर्थ है) -कला अमृता का गुण्डा, अमृती की बेल, दास, श्याम,—अमृ 1 देव, देवता 2 शोका, चन्द्रमा,—अमृ (पु०) अमर, देव, देवता जो यक्षोप का साथ देता है,—भू (वि०) जगमरण के मुक्त,—अंशवन्मृ अमृत प्राय करने के लिए समुद्र का मयन,—रसः 1 अमृत, पीपुष,—काम्यपुठरसाधारः—हि०, दिविचकाव्या-मृतरसात् पिशाच,—अनु० १।४०, 2 परबद्ध,—सस्त, -सलिका अमृत देने वाली बेल,—शक अमृत जैसे मधुर बचन बोधने वाला,—शार (वि०) अमृतमय (—रः) वी,—कू—कुत्तिः 1 चन्द्रमा(अमृत बुजाने वाला) 2 देवताओं की प्राण,—सौधरः अमृत का धार,—उष्ण-

अन्धकार-का [अन्धा + का + क + टाप् -अन्धवीरदेवत्
अन्धाकार वधि] वाता ।

अन्धाकारिका [अन्धाकार + क + टाप् इत्थत्] 1. माता, बर वहिना, (अन्धा) तथा स्नेहपूर्वक भाव्य 2. अन्धाता नामक पीसा 3. काश्चिराज की सबसे छोटी पुत्री—विचित्रवीर्य की पत्नी, (बंध, उल्लापती ने निरन्तरताम विचित्रवीर्य के लिए एक पुत्र पैदा करने के लिए आस का आवाहन किया—तब आस के द्वारा उत्पन्न 'पांडु' की बहु माता बनी) ।

अन्धिका [अन्धा + कन् + टाप् इत्थत्] 1. माता, बर वहिना, ('अन्धा' की माति स्नेह और भावर लुचक भाव्य) ,—अन्धिके अन्धिके मृगु मय चित्रितम्—मृच्छं १, 2. जिब की पत्नी पावती, —आर्षीनिर्बयामानु रपाकाविरम्बिकाम्—कु० ६१०, 3. काश्चिराज की महाकी पुत्री, तथा विचित्रवीर्य की ज्येष्ठ पत्नी, अपनी छोटी बहन की माति इतके भी कोई संतान नहीं हुई, फिर आस के द्वारा इसमें उत्पन्न पुत्र 'वृत्तराष्ट्र' कहलाये ऊपर दे० 'अन्धा' । वच०—पतिः, —माता शिव, —पुत्रः—सुतः वृत्तराष्ट्र ।

अन्धिकेयः—अक [अन्धिका + ठ] [अन्धिका वृद्ध रूप—'आधिकेय' द्वे] मनेत्र या कातिकेय, वा वृत्तराष्ट्र ।

अन्धु (नपु०) [अन्ध् + उन्ध्] 1. अल—नामयम् शितमम्बु वायन—काव्य० १०, 2. अन्धिर के अन्तर्गत प्रतीय ताव । मम०—अन्ध पानी की ईद, —अन्धकः (छोटी दाक वाला) धरियाल, —चिरासः धरियाल, —कीकः—कर्म रुक्मा, —केसरः तीव्र का पेड़, किया पित्त नर्षण, पित्तों को बलदान, —ब, —अर, —कारित् (वि०) अल में रहने वाला, जलचर, —अनः शीसा, —अन्धन् शील, —अ अल में उत्पन्न, जलज (विप०) स्वल्पज—मृगशीनि च नाम्यानि स्वल्पान्धुजादि च—रामा० (अ) 1. चन्द्रमा, 2. कूर 3. शारस पक्षी 4. अक, (अम्) 1. कमल, —इसीरोच नन्द मृगमन्थुवेन—शृवार० ३, 2. इन्द्र का वज, "मृ", अलसाः इमल से उत्पन्न देवता, ब्रह्मा, "अलसा कर्मोदेवी, —अन्धम् (नपु०) कमल, (पु०) 1 चन्द्रमा 2 अक 3. शारस पक्षी, —अन्धरः जलचोर, पूर्व, —इ (वि०) अल देने वाला (—इ) बादल—अन्धान्धान्धोकरभूमिनाम्ने—रघु० ३१५३, —अरः 1. बादल—अधिनयमानुचराय योयम्—कु० ४१५३, अन्धमृगानुचरोपरोच—रघु० ६१५५, 2. अन्धक, —विः 1. पानी का दास्य, जलपात्र, —अन्धविषटः—शिष्टा०, 2. समुद्र, —आरं—अरं० २१६, 3. आर की कव्या, —विधिः पानी का छडावा, समुद्र, —देवामुदिर-मृगयन्मृगिष्येकम्—कि० ५१३०, —ब (वि०) पानी पीने वाला (—इ) 1. समुद्र 2. वचन—अक का

स्वामी, —अलः जलचारा, जलप्रवाह, गती या सरता बह्माम्बुपातप्रतिपा मुद्दिभ्यः—अधि० ११८, —अन्धरः, —अन्धरन्ध्रं कन्धक, निर्भरी का पेड़—अन्धं अन्धमन्धय यन्मन्ध्रवाचकम्, न पात्रबहुपादेय तस्य वारि प्रवीर्यति 1. —अन्धं कमल, —अन्धु (पु०) 1. अन्धक, बादल 2. समुद्र 3. अन्धक, —आयक (वि०) जो केवल अल में ही उत्पन्न हो (—अ) अन्ध—अन्धु (पु०) बादल, —अन्धितमुचितमन्धुधां अन्धम्—कि० ५१२, —अकः 1. समुद्र 2. वचन, —राशिः कलासय या पानी का बंधार, समुद्र—अधि ज्वलत्वीर्यमिवाभुत्पाठी—अ० ३१३, चन्द्रोदयारम्भ इवाभुत्पाति—कु० ३१६०, रघु० ६१५३, ११८२, —अन्धु (नपु०) 1. कमल 2. शारस, —अन्धु—अन्धु कमल—विमुक्तान्धुसहा न वारि-इभु—कि० ५११०, —अधिषी कमल, —आरुः 1. बादल—अदिवन्तमिवाभुत्पाहन्—वि० ३११, अन्धुविषं शिवम-विषये विदितं नाम्बुत्पाहन्—केच० १०१२, 2. शील 3. जलवाहक, —आशु (वि०) पानी से बाले वाला (-पु०) बादल, —आशुषी काठ का डोक, एक प्रकार का पानी उडीकने का बर्तन—विहारः अल कीडा, —असः एक प्रकार का वेत, नरकुल जो अल में पैदा होता है, —अरन्ध्रं जलप्रवाह, जलचारा, —अधिषी डोक—अधिषी अल शिवकने का पात्र ।

अन्धुक्त् (वि०) [अन्धु + अन्धुत्] पत्नीका, जिसमें अल हो, —ती एक नदी का नाम ।

अन्धुकुत (वि०) [अन्धु + क्त् + क्त्] बर बडावा हुआ, होठों को अन्ध करके बरपत्त रूप से कहा हुआ, मुह में ही कहा हुआ, मुह से बूक उछालते हुए कहा हुआ । —तम् बडबडाने का गन्ध, भानु के दूरति का गन्ध—अधति सुहृन्नाभायन मन्ध्रकृन्नाम्बुसित-गुरुषि स्वानम्बुकृतामि—उत्तर० २१२१, मा० २१६ महापी० ५१५१ ।

अन्धु (न्या० जा०) [अन्धते, अन्धित] अन्ध करना, भावान्ध करना ।

अन्धत् (नपु०) [अन्धु (अन्धु) + अन्धुत्] 1 अल—अन्धमन्ध-म्भसायनराशिपत्त प्रतीयते—कु० २१२०, स्नेहमा-मन्धर प्राञ्ज कोऽन्धसा परिचिपत्त—सि० २१५५, अन्धसाकृन्तम्—अल द्वारा किया हुआ, पा० ६१३३, 2. आकाश 3. अन्धकुटीरों में अल में पीसा स्थान । तस्य० - अ (वि०) अल में उत्पन्न (—अ) 1 चन्द्रमा 2 शारस पत्नी, (—अम्) कमल—आके तब मृगान्धोवे कश्मिन्दीवच्छयम्—शृवार० १०, इसी प्रकार 'पाद', 'नेत्र', 'शेठ', 'अन्ध कमलों का समूह—कुन्धुवच मृगपथि शीयवन्धोवचअन्धम्—वि० ११६५, 'अन्धम् (पु०), —अधिः—अधिः कम्पलोगय देवता, ब्रह्मा की उपाधि, —अन्धम् (नपु०) कमल, —इ, —अरः बादल,

—वि.—विधिः—राशिः बल का बहार, समुद्र—सम्-
 वाग्मोधिभस्मेति मृदागद्या नवापगा—सि० २।१००,
 बादवाग्मोनिधीन्त्वे वेलेव प्रवत् जया ५८, इसी
 प्रकार—अमसा निधिः, सिन्धुभिराकिल्य इवाग्मसा
 विधि—सि० १।२०, कलक मृदा,—बहू (नपु०—इ)
 —बहू कमल—हेवाग्मोवहस्तस्याना लहायो वाम
 वाग्रनम्—कु० २।४४, (पु०) सारल पक्षी,—सारम्
 मोषी,—पुः पुमा, अक्षकार ।

अमोक्षिणी (अमोक्ष + इति + ङीष्)। कमलका पीषा, कमलो
 का मूत्र, —कननिवासविलासम्—भृ० २।१८, 2
 कमलो का मूत्र 3 बहु स्थान जहाँ कमल बहुतायत
 में हो ।

अम्यय (वि०) (रभी०—वी) [अप + म्यट्] जलीय, या
 जल में बना हुआ ।

अन्न—सु० मात्र ।

अन्त (वि०) [अप + अन् + ङ]। मट्टा, लोधा,—कट्वन्त-
 लम्बापुष्पतोयमकसाविधाहिन (अहाग) —भृ०
 १।७१, म्, अटान, लोहापन, ६ प्रकार के रंगों में
 से एक, 2 सिरका 3 मोनिवा साग, इमली, 4 नींबू
 का वृक्ष 5 उड़मान । मय०—अन्त (वि०) मट्टा
 किया हुआ,—उद्धार मट्टी इकार,—वेकार लको-
 तरे का वृक्ष,—वीष् (वि०) मट्टी गण बाधा,—घोरस
 मट्टी छात्र,—जबोर,—निष्क नींबू का वृक्ष,—पिलम्
 एक रोग जिसमें आहार आनायय में खूब कर अन्त
 हो जाता है, वृक्षा पिशा,—कम् इमली का वृक्ष,
 (—सम्) इमली,—रस (वि०) मट्टे स्वाद वाला
 (—स) मट्टान, तेजाबी अण,—बृक्ष इमली का वृक्ष,
 —सार, नींबू का पीषा,—हरिद्रा आषाहृदीका पीषा ।

अन्तक [अन्त + कन् (अन्पार्थ)] लकुच, बड़हर ।

अन्तान (वि०) [न० न०] 1 जो मूत्राशय न हो (पृष्पादिक)
 2 स्वच्छ, साफ उज्ज्वल (बेहरा), अनल, बिना
 बादलों का,—पदाभिवायवादेपु क्रमोपम्लानदधीन,
 —न वाणपुपवृक्ष, तुपहरिका ।

अन्तानि (वि०) [न० व०] समाप्त, न मज्जति बाम्ना,—नि
 (स्त्री०) [न० त०] 1 सक्ति 2 ताजगी हरियाली ।

अन्तानिन् (वि०) [न० त०] स्वच्छ, साफ,—नी वाणपुष्प-
 वृक्षों का मयू ।

अन्ति (स्त्री) का [अन्त + कन् ०, १, २, अन्त +
 ङीष् + क + टाप् का] 1 मूह का मट्टा म्बार, मट्टी
 इकार 2 इमली का वृक्ष ।

अन्तिकम् (पु०) [अन्त + इमनिष्] मट्टान, मट्टागन ।

अन् (स्वा० आ०) [ई कार भी, व०, विद्योपन, उर उपमयं
 के मात्] [अयो, अयापके, अविन्, अपिन] जाता ।
 अन्त् अल प्रवेश करना, हस्तप्रेष करना,—द्वन्द्व
 उपसम्पाना (यति)—मूच्छ० २, अन्त् 1 निकलना

(जैसा कि चन्द्रमा, सूरज) 2 कलवा-मुक्कना, मयूड
 होना, उक् 1 निकलना, उपना (जैसा कि सूर्य)—उक्वति
 हि यथाक्व कानिनीपक्षपाथ—मूच्छ० १।५७, 2
 प्रकट होना, दिखलाई देना—मूहोती यस्मिन् प्रादोषयो-
 द्यन्तीह याजका—महा० 3 फटना, उदय होना, अन्य
 लेना, उल्लास होना—तपोदयेदयवबुनियेच—ने०
 ३।१२, यथाभ्येर्षम उपदेते—शत०, परा (रा को का
 हो जाने पर) भावना, वापिस होना, माह बाना ।

अव. [इ + अव्] 1 जाना, चलना, फिरना (अधिकतर
 समास में—अनभव), 2 पूर्वजन्म के अच्छे कृत्य
 3 अच्छा प्राय, अच्छी किस्म—शुद्धाणिरवागित
 —रथ० ५।२९, 4 लेने के का वाला । मय०—अव्यित,
 अव्यक्त (वि०) लोभाभ्युत्थली, अच्छी किस्म वाला,
 —मुकमें सदा नयनताप्रकाश—कि० ५।२० ।

अव्यक्तम् स्वार्थ्य का होना, दीरोगता ।

अव्यक्त (वि०) [न० व०] यज्ञ न करने वाला—अ [न०
 त०] यज्ञ का न होना, बुरा यज्ञ ।

अव्यथि (वि०) [न० त०] 1 जो यज्ञ के योग्य न हो
 (जैसा कि उष्ट्र) 2 जो यज्ञ करने का अधिकारी न
 हो (जैसा कि पशोपवीत में हीन शायक) 3 लौकिक,
 मृत्क ।

अव्यय (वि०) [न० व०] । वना हो गल (कप हर्गंवाला
 —पदवाचना—रथ० ६।५२, ल [न० त०] यम
 या उद्योग का अभाव, अव्ययने, लल, लल, अना-
 याय, बिना परिश्रम के आगतोय में तत्पराता के माय ।

अव्यया (अव्य०) [न० त०] त्रिम प्रकार होना चाहिये वैशे
 न होना, अनुपयुक्त रूप में अनुचिन इव ये, यन्त
 नगीके में । मय०—अर्थ (वि०) 1 जो नितान भाव
 के अनुकूल न हो, अर्थीय भावार्थित 2 असंग,
 अवाग्य, मिलता न० ३।२, अयूड, यन्त अनुप्रसो
 द्विषो यथावत्प्रथायव नक त०, अन्त्यकः अयूड
 या अन्त्य जान, गलन भाव, इच्छ (वि०) 1 जो
 इच्छानुकूल न हो, नायमद 2 अपरिचित, ताकथी

—उचित (वि०) अयुक्त, अनुपयुक्त,—अर्थ (वि०) 1. जो
 जैसा होना चाँहिये वैसा न हो, अयुक्त, अनुपयुक्त,
 अयोग्य, इदमवधानव स्वाधिनचेष्टितम्—वेणी० २,
 2 अर्थहीन, अर्थ, माधरहित (—अर्थ) (अर्थ०) 1.

अयुक्तता के साथ, अनुपयुक्तता के साथ, 2 अर्थ,
 अकार्य, बेकार,—नयुक्चरित इ० मयू० १।२४०
 —तच्छब्द अनुपयुक्तता, असंगतता, अर्थहीन,—शोतलम्

आगामीन घटना का होना, पुर, पूर्व (वि०) जो
 पहले कभी न हुआ हो, अनुपूर्व, अनुपम,—पुन (वि०)
 गलन तरीके में कार्य करने वाला,—अन्त्यकारित
 (वि०) शारदानुकूल कार्य न करने वाला, अर्थाधिक,
 —अव्ययास्तारणी ५ न विद्याये पिता प्रवृ—आर० ० ।

अव्ययम् (अव्य०) बलती से, अनुचितरीति से ।
 अव्ययम् [अन् + व्युत्] 1. भावा, हिम्मा, चम्मा, वैशा कि
 राधाव्ययम् २. राह, पय, तर्क, सकृत्—अव्यय-
 विज्ञानयनात्—रघु० १६४४, 3 स्वयं, अथ, पर,
 4. प्रवेष्टाहार, व्युत् न प्रवेश करने का मार्ग—अव्ययम् च
 सत्त्वं अवाभागायवस्थिताः—अम० ११११ 5. पूर्व का
 मार्ग, पूर्व की विद्युत् देखा से उत्तर वा दक्षिण की
 ओर गति, 6. (अत एव) इस मार्ग का अवधि-कारक,
 छ भास, एक समयविद्यु से दूसरे समयविद्यु तक जाने
 का समय—दे० उत्तरापथ, दक्षिणापथ, 7. विद्युत् और
 अयनमंथनी बिन्दु,—दक्षिणम् अव्ययम्-चिह्निरन्तु का
 अयन, उत्तरम् अव्ययम्-दीप्य अयन 8. अतिव्ययम्
 —नाम्न पन्ना विद्योत्प्रमाय-वेला० । अथ०—अव्ययः
 दोनों अयनों के मध्य की अवधि (दोनों अयनों का
 अर्धकाल),—दुर्लभ ग्रहणरेखा ।
 अव्ययित (वि०) [न० त०] अविन्यमित, जिसको रोका न
 जा सके, स्वेच्छाकारी, मनमानो करने वाला ।
 अव्ययित (वि०) [न० त०] 1. अविन्यमित, 2. वित पर
 प्रतिबन्ध न लगा हो 3. जिसकी काट-काट न की गई
 हो, अविन्यत (वैशा कि तादृज् आदि),—वेद्य० १२ ।
 अव्ययम् (वि०) [न० व०] पर्याप्त, बरदान, अकीर्तिकर
 ('अव्ययम्' से) इती अर्थ में, (अन्०—अः)
 अनायी, अययीति, सुकानि, अययान, निम्ना—अययो
 महाव्योति—अनु० ८१२०, किययतो ननु चोरयत-
 पम्—उत्तर० ३१२३, म्बराजकोशेत्थयस, प्रपृष्टम्—
 रघु० ६४१, 1 अय०—कर (वि०) (स्त्री—री)
 अययाम, कलकी ।
 अव्ययस्य (वि०) [न० त०] अययाम, कलकी ।
 अव्यम् (अन्०) [इ + अन्] 1. कोहा,—अचितपाययोऽपि
 मार्गं अजले सैव कथा शरीरिन्—रघु० ८४१, 2.
 इत्यात, 3 सोना, 4. धातु, 5. अणु नामक लकड़ी ।
 (पु०) अणि । अय०—अण्व्,—अण्वम् हृषीका,
 मूलक,—अधिकः 1. कोहे का बाण 2. बहिमा कोहा 3. कोहे
 का बड़ा परिमाण,—अण्वः (अव्ययकात्) 1. बुबक,
 बुबक पत्थर,—अण्वोर्दत्तम्बनाच्छुद्धमवकाशेन कोह-
 वत्,—शु० १५९ स चकम् परस्मात्तत्त्वकाय् इवायतम्
 —रघु० १७६३, उत्तर० ४१११, 2 मूबयान् पत्थर,
 'अणिः बुबक पत्थर—अवकात्तपणिसाकोकेव कोहवातु-
 मन्तःकरणाकाष्ठवती—मा० १,—आणः सुहार, कोहे का
 कण्ड करे वाका,—अधिकं कोहे का अय वा बुर्वा—अण्वः
 कोहे का अयन, दक्षिण का वायवर भागि, इसी प्रकार
 —आण्व्,—अण्वः कोहे का हृषीका—अवोकेनाय
 इमाव्ययस्य—रघु० १५१३,—अण्वम् कोहे का धृत्,
 —आण्व् कोहे की बाली,—अण्वः कोहे की बुबक,—अण्वः
 कोहवातु—उत्तर० ४१११,—अतिवा कोहे की धृति,

—अण्वम् कोहे का अय, इसी प्रकार 'एक', 'एकः,
 —अण्वः कोहे की मोक बना हुआ बाण—अण्वत्त्वम् अण्व-
 अण्वोर्दत्तम् रघु० ५१५५,—अण्वः 1. कोहे की बाली 2.
 कोहे की बाली, मोकदार कोहे की छद्—रघु० १२१५,
 —अण्वम् 1. कोहे का बाण 2. अण्वः काय, तीक्ष्ण
 उपाय-विद्या, (पु० वायव्युक्तिकात्)०—अण्वः (वि०)
 कोह-हृषक, कटोर, निम्बूर,—सुहृदयो हृषक प्रतिवर्-
 तात् रघु० ११२ ।
 अव्ययस्य (अव्ययस्य) (अन्०) [स्त्री०—की] [अन् +
 व्युत्] कोहे या और किसी धातु का बना हुआ ।
 अव्ययित (वि०) [न० त०] न माना हुआ, अर्थात्
 (विद्या, बाह्य आदि)—अव्ययं स्वयं व्ययितम्—अनु०
 ५५,—अन् व्ययितं विद्या । अय०—अण्वत्,—अण्व-
 स्थित विद्या निमन्य वा शर्चना के पूर्ववा हुआ,—
 अव्ययितोपनिष्ठासंयु केवलम्—शु० ५१२२,—अण्वः
 विद्या मांवी वा अर्थात् विद्या पर जीवित रहना ।
 अव्ययस्य (वि०) [न० त०] 1. (अव्ययित) जिसके लिए
 यह नहीं करना चाहिए, या जो सब करने का
 अधिकारी न हो (बुद्धादिक), 2. (अत एव) अति-
 अधिकृत, पतित 3. सब करने का अर्थात्कारी ।
 अय०—अण्वत्,—अव्ययस्य उत व्ययित के लिए
 यह इतना जिसके लिए अण्वः को यह नहीं करना
 चाहिए—अनु० ३१६५, ११६० ।
 अव्यय (वि०) [न० त०] न बना हुआ, । अय०—वाय
 (वि०) जो बाली न हो, ताका, जो उपयोग में आने
 के कारण बीज-बीज न हुआ हो,—'मं च दीपयम्
 —रघु० १२३, ताका, बिला हुआ ।
 अव्ययव्ययिक (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] 1. जो
 कल्प न हो, म्याय विद्यक, अन्वित 2. अवास्तविक,
 अर्धगत, शुकुका ।
 अव्ययव्ययम् [न० त०] 1. अयोम्यता, अष्टादा 2. वेनुका-
 पन, अयनता ।
 अव्ययम् [न० त०] 1 न बावा, न हिम्मा-नुमान, उद्हरना,
 टिकना 2 स्वभाव ।
 अवि (अव्य०) [इ + इति] 1. विचारिकों के प्रति नञ
 संबोधन, मोह, ए, बरे आदि सामान्य संबोधन बोधक
 अव्यय,—अवि विवेकविश्रांतिनिहितम्—नास्तवि०
 १, अवि मो महाविद्युत्—स० ७, अवि विद्युत्सप्तमानां
 त्वपरि च कुक्षं न ज्ञातास्ति—दुष्० ५१३२, ३०
 अविम् १५५, ११, ४४ । 2. शर्चना वा अनु-
 रोध बोधक अव्यय —अवि इति देहि दर्शनम्—शु०
 ४१२०, मोक्षप्रदान तथा अनुभव के अर्थ में भी—अवि
 अन्वितानुभवं वर्णं तन्वयि अवि अनाकुर्वन्—आवि०
 २१५०, 3. सामान्य सामुह्य-बुद्धा बोध अव्ययन

—अधि जीवितनाथ अधिधि—१० ०१२, अधीयमेध परिहास—५१६२ ।

अधुन (वि०) [न० त०] 1 जो मुक्त न हो, या जिस पर जीन न कसा गया हो, 2 जो मिला हुआ न हो, सबद या समुक्त न हो 3 जो मन्त वा धार्मिक न हो, ध्यान रहित, उपेक्षाधीन 4 अन्धकारापेक्ष, अनन्धत, जो नियुक्त न हुआ हो, 'बुद्धि, 'चार 5 अवोपय, अनुचित, अनुपयुक्त—अधुनोप्य निवेद्य— पा० ५१२। ६२, महा० ६. सूत्र, बाल्य । सम०—कुल अनुचित वा गलत काम करने वाला,—अधुनः शब्द का वह अर्थ जो दिया न गया हो, जैसे कि 'अधि' शब्द,—अधुन (वि०) अतस्त, अनुपयुक्त,—अनुपयुक्त्य किमत् पर वद—कु० ५१५१ ।

अधुन-सह (वि०) [न० त०] 1 पृथक्, अकेला 2 उ-बाहक, विषम । सम०—अधिभू (पु०) भाग,—० ४—सम्बन्ध,—हर दे० अधुन्य के अन्तगत,—सप्तः सात घोडो वाला, सूर्य ।

अधुनपथ (अन्ध०) [न० त०] 1 सब एक साथ नहीं, कर्मस्य यथाकर्म । सम०—अधुन्य—कर्मपूर्वक सम-सना,—भाषः अनुक्रम, अनुक्रमिकता ।

अधुन्य (वि०) [न० त०] 1 अकेला, न्यारा 2 निराका, विषम (सम्बन्ध) । सम०—अधुन्य—पथ सत्यपथ नामक पीठा,—नयन,—नेत्र,—सौख्य विषम (३) बसो वाला, शिव—कु० ३१५१६९,—बाष्प,—अर, विषम (५) बाधो वाला, कामदेव,—बाह्य,—सप्तः सात घोडो वाला सूर्य ।

अधुन्य (वि०) [न० त०] निराका, विषम (विप० यु०—सम) । सम०—अधुन्य,—बाष्प,—अर पाप बाधो वाला, कामदेव,—अधुन्य—सत्यपथं—वतुर्युद्धर-गुण्युगपथ—शि० ६१५०,—पलाश—सत्यपलाश,—पाष,—अधुन्य पहले और तीसरे पाद में मिल अर्थो वाले एक में अक्षर रत्नने वाला अनुपात का एक घेद,—नेत्र,—सौख्य,—अस, सप्तः सात ।

अधुन (वि०) [न० त०] न मिला हुआ, पृथक्कृत, असम्बद्ध,—सम् दस हजार, दस सहस्र की मर्या । सम०—अधुनापक अच्छा अधुनापक, सिद्ध (वि०) (बेधे में) अधुनकरणीय, अन्तर्निहित,—सिद्धि (स्त्री०) ऐसा प्रभाव जिससे निःशय हो कि कुछ बनसूए तथा मान्सादि अपृथक्करणो, तथा अन्तर्हित हैं ।

अधे (अन्ध०) [इ+एच्] 1 सबोधनात्मक अन्धय या सबोधन का मन्त्र प्रकार (==अधि) - अये गौरीनाथ विपुलहर धारो जिनपन—अर्ध० ६१२३२ 3 विमयादि घोलक अन्धय—(क) बौध, अये आदि अन्धो में अनुचित आचर्य तथा विनय की भावना,—अये

भातलि—स० ६ (स) उदासी, सिमला—अये देव-पादपुत्रोपकीनिलोत्प्रेष्यम्—मुद्रा० २, लोक (५) कोष (५) सलबली, लोभ (६) प्रत्यास्मरण (७) भय(८) बकाबट ।

अधोपः [न० त०] 1 अलग्नाथ, विद्योग, अन्तराल 2 अधोप्यता, अन्तर्हित, असर्गात् 3 अनुचित संबन्ध 4 विद्युर, अनुपयुक्त्य प्रती या पति 5 हबोडा (अधोप तथा अधोपन) 6 अर्धय ।

अधोपथः (स्त्री० - वा, - वी) [अय इव कठिना गौर्धानी दस्य—ब० सं० नि० अच्] सुद पिता और सैर/माता की सन्तान दे० आधोपन ।

अधोप्य (वि०) [न० त०] अधो गोप्य न हो, अनुपयुक्त, निरर्थक ।

अधोप्य (वि०) [न० त०] अिय पर आक्रमण न किया जा सके, जिसका मुकाबला न किया जा सके,—अधापोप्या मत्तबाहो अधोप्या प्रतिभाति न—रामा०,—अधा मारु नदी के तट पर स्थित कर्नाम अधोप्या नगरी, रघुवरा में उज्ज्वल सूर्यवशी राजाओ की राजधानी ।

अधोनि (वि०) [न० व०] 1 प्रक्रमण, निपय,—अधोनिग्या-निगस्य—कु० २१२ 2 ता कोष न उज्ज्वल न हो, अधर्म अथवा अर्थन रूप न उज्ज्वल, वि० (स्त्री०) [न० त०] जो योगिन न गी,—नि बद्ध, शिव, सम०—अ,—अन्धन् (वि०) का उदात्त न न ऊर्ध्वः हो सामान्य ऊर्ध्वगति के प्रवहार जिसने अन्ध न लिया हो तनयाम चर्चा-नाम् २पु० ४८, कन्या-गन्तमयोनित्रय भवनामाने मंगली० ११०, ईश्वर ईश्वर शिव, (—आ) सत्त्वा जनक की पुत्री लीना जो कि सैत के सूत्र में उज्ज्वल हुई थी ।

अधोपपद्यम [न० त०] समकालीनता वा अभाव ।

अधोपिष्ठ (वि०) [स्त्री० - की] [न० त०] व्याकरण के नियमानुसार जो शब्द व्युत्पन्न न हो ।

अर [च्+अच्] पहिले के अर्थ या शिष्य का अधोप्याम (रिभी) - अर सधार्थने नाभि नाभी धारा प्रति-छिन्ना—पच० १४८, 1 म० अन्तर (ब० व०) अरो का अन्तराल—विषय० १४, अरु,—अरुक्तः 1. रहट जिसके द्वारा कुंभ में पानी निकाला जाता है, 'अरु रहट में प्रयुक्त किया जाने वाला बोल,—अरु-मालाछ 'रीमार्येण मणोतेनादीना नच० ५, 2 गहरा कुञ्जी ।

अरजम्, अरज, अरजक (वि०) [न० व०] 1 चुक वा घर्द में रहित, साफ स्वच्छ (बाल० भी) 2, रज वा बासना से युक्त 3 जिसे मासिषः धर्म न होता हो, (स्त्री० - का) वह कला जिसे अजी रजोवर्धन कारण नहीं हुआ ।

अरन्ध्र (वि०) [न० इ०] जिसमें राखवा न कमी हो,
रखवा से चिड़िया; (सू०) कागजार।

अरुचिः (पुं०, स्त्री०) [स्त्री०—ची] कमी की लकड़ी
का टुकड़ा, जिसके चर्बण से दाढ़ के अक्षर पर बाल
बढ़ाई जाती है, आम उतपन करने वाली लकड़ी—
कु०, पत्र० ११२१६, —ची (हि० ब०) यथापि प्रव-
नित करने के लिए लकड़ी की दो लथिवाईं, —विः 1.
सूर्य, २ आम 3. कमीता, चकमक पत्थर।

अरुण्य (कई बार पु० भी) [अनेमें गम्भे से वे बसि-
हृ + अण्य] अंगल, बन, उजाड़, —विधानाचे कृत्य
जिन जगदरुण्य हि भवति उत्तर० ११३०, माता मन्व
सुहे गानि धार्या धामियथादिनी, अरुण्यं देव कृत्य
अचारुण्य तथा मृदुम् -पाप० ४४, अंगमी, अंगल में
उत्पन्न (यदि समल पर का प्रथम अण्य हो),
"शौच्यु अंगमी वीच, इती प्रकार 'वाकार', 'भूष्कः ।
सम०—अरुण्यः बन की देव देख करने वाला,
गन्धिक, —अण्यन्तु, —आण्यु अंगल में चले जाना,
वागप्रत्य मेवा, —अरुण्य, —सु (वि०) 1 अरुण्यवासी,
जगल में रहने वाला—ईकल्य मम तावदीवृक्षमपि
स्वोहादरुण्योक्त-वा० ४५६, 2 विशेषतः बहु जिलने
जपना परिहार छोड़ दिया हो जो वागप्रयमी हो गया
हो, जगल में रहने वाला, —अरुणी जगली केना, अरु-
जगली हाथी (जो पालतू न हो), —अरुज जगली चिड़िया
—अरुजिका (हा०) जगल में चढ़ना का प्रकार
(आल०) निरपेक्ष शृंगार या वागमूषण, मेला बनान-
गियार जिसे कोई देखने लगाने वाला न हो, इसी
लिए, मलिनमाच—इसीका शिवाभोजकता हि वेच -
कु० ७५२२, पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं—अनवा-
अन्यभद्रिका म्गदिदि भाव, -- अर (अक्षर जी),
- शीच (वि०) जगली, अ (वि०) अण्य, —अयो-
जगली अरुण्यवा या प्रया, जगली स्वभाव, तपारुण्य-
मनीश्रीवाय्य धाम्यधर्म नियोजिन पत्र० १,
—अरुणिः—१५ (दु) राज जगल का स्वामी, सिंह
या व्याघ्र का विशेषण, इसी प्रकार अरुण्यवा
पति, —अरुण्यः 'बन में बिराज' (आल०) मूलं गुण्य
को बन में ही (यहाँ कोई सुनने-टोकने वाला नहीं
होता) जपना तादृक् प्रकट कर सके, - अरु (वि०)
जगल में उत्पन्न, जगली, —अरुणिका शील, —अण्य
अंगल में चले जाना, —रुण्यः अरुण्यपास, अरुण्य
(अं०) अंगल में रोगा, अरुण्यरोदन, (आल०)
मेला रोगा जिसे कोई सुनने वाला न हो, निष्कल
कनन—अरुण्यं नवा रुदितम्—हा० २, प्रीक्षा अरुण्य-
हीमन्य अरुण्यदितोपमम्—पत्र० ११३१३, तदलम्बु-
दारुण्यरुण्यै—अरुण्य० ७६, —अरुण्यः जगली कीबा,
पहाड़ी कीबा, —अरुण्यः—ल्लाभनः जगल में चले जाना,

अंगल में वागप्र, —अरुण्य (वि०) अंगल में रहने
वाला (पुं०) अरुण्यवासी, वागप्रवी, —अरुण्यवा-
—अरुण्यः (अं०) = "रुदितम्—अण्य (पुं०) अंगली
कुता, चिड़िया, —अरुण्य अंगल की कच्चीटी।

अरुण्यम् [अरुण्य + अण्य] अंगल, बन।

अरुण्यमिः-शी (स्त्री०) [अरुण्य + अण्यु कर्त्तृ ष] एक
बड़ा अंगल, या बौद्ध भवनमि, विस्तृत उजाड़।

अरुण्य (वि०) [न० ट०] 1 अण्य, विरुण्य, अण्यत्पत् 2.
अरुण्युष्, सुदिच्छित, पराङ्मुख, —अण्यु अरुण्यु।
अण्य—अण्य (वि०) अण्य करने में न कमाने वाला
(—क) कुता (अरुण्यी में जिला जिला प्रकार की
मन्ना के अण्य करने वाला)।

अरुण्य (वि०) [न० ट०] 1 अण्युत् 2 कुत, मिच्छक,
—मिः (स्त्री०) [न० ट०] 1 आचार-मार्ग का
अभाव (देव की प्रवृत्त उत्पन्न से पैदा होने वाला),
—स्वानीच्छकल्लोकेन वेत्सो वा प्रवृत्तियति अरुण्यः
वा—हा० ४० 2 पैदा, कष्ट 3 चिन्ता, श्रेय, वैश्वी,
श्रीय, —अण्यते भुवनमि हि रुदितोः—कि० १५५१,
4 अरुण्योच, अरुण्यवाच, 5 निराङ्गना, कुली 6.
एक वैदिक देव।

अरुण्य (पुं०, स्त्री०) [अ + अण्य = अण्य, व नासि वच]
1. कुली, कई बार मुष्का, 2 एक हाथ की माप, कुली
से कमी उसकी के छोड़ तक की माप, सवाई नापने
का पैमाना—अरुण्यन्तु निष्कलियेन मुष्का—अरुण्य,
मध्यांनिकर्परोमेने श्रावणिक कर, इदंमुष्करो
रुण्यरुण्य, सकनिच्छिक, । कुला०, कि० १८६, 1.

अरुण्यः [अरुण्य + अण्य] कुली।

अरुण्य (अण्य०) [अ + अण्य] 1 ठेकी से, निच्छ, पाव ही,
उपनिच्छ 2 उत्तरता के साथ।

अरुण्य, अरुण्यत्प (वि०) [न० ट०] 1 जो मुष्कर न
हो, अरुण्योपमक, अरुण्यक 2 अरुण्य, अण्यरुण्य।

अरुण्य [अ + अण्य] किवाड़ का तिका—अरुण्यरुण्यरुण्य
हायवाण्य महाशी० ११२७, (—रु—री, शी)—अण्य-
कोटिचिपटिताररुण्यो वास्याम्ह पञ्चरुण्यत्— नाभि०
१५८, 2 अण्यन, ध्यान, —रु जारी।

अरु (अण्य०) [अर + अ + के] (क) बड़े उतावलेपन
(स) तथा पुत्रा और अरुणा की प्रकट करने वाला
सर्वोचन शोक अण्य—अरुने महापत्रं प्रति कुतः
अरुण्य—अण्य०।

अरुण्यम् [अण्यु अण्यहाण्योच पमाभि विन्दते—अर +
अण्यु + अ] 1. कण्य (कामदेव के रवि वालों में से
एक—दे० पत्रवाच के शीचे)—अण्यवरुण्यवृत्तिः—
हा० ३१५, बहु सुर्ष-कमल—तु—सुर्षवृत्तिविनिवाह-
विन्दम्—कु० ११३२; स्वक, अरुण्य, पुष्क भाषि
2 आल या नील कण्य, —कः 1. हाथ कुली, 2.

तावा । सम०—अस (वि०) कमल जैसी आंखों
वाला, विष्णु की उपाधि— बसप्रभम् तावा, —नाथि,
—भः विष्णु—द्वयो मदीय देवत्वकास्तु प्रभवानर
विन्दनाम—जाति० ४८०—सम् (पु०) ब्रह्मा ।

अरविन्दी [अरविन्द + इति + ङीप्] 1 कमल का पौधा
—प्रतीतमायुष्य मूर्त्ति सुदिव्यवाग्विन्दी—मृदि०
५१००, 2 कमल फूल का समूह 3 वह स्थान जहाँ
कमल बहुतायत से होते हैं ।

अरस (वि०) [न० व०] 1 रसहीन, नीरस, फीका
2 भद्र, दुःखहीन 3 निर्वल, बलहीन, अयाय ।

अरसिष्ठा (वि०) [न० त०] 1 हवा, रसहीन, फीका,
विना स्वाद का, 2 भावना या स्वाद से विरहित भन्द,
काव्यादि का रस लेने में अयत्न, कविता के मम का
न जानने वाला अरसिष्णु कविबलिवेदन निर्गल
या तिस, या तिस, या तिस उद्भूत ।

अराम, अरामिन् (वि०) [न० व०, न० त०] शान्त,
बासना रहित,—तमहमरागमक्रमा कृष्णवैपायन जन्-
नेयो ११४ ।

अराजक (वि०) [न० व०] बिना राजा का, ब्रह्म राजा
न हो—नागरिक के मतपट्टे गमा०, मनु० ७३१, अराज-
के जीवनोंके दुर्बला बलवत्तरं, पीडयते न हि विनेत्
प्रभुत्वं कस्यापिदात् । महा०, शोधक राज्यभाराज
कम् चाय० ५७ ।

अराजम् (पु०) [न० त०] ज्ञा राजा न हो । सम०

—भोषीन (वि०) राजा के काम के अनुपयुक्त, स्था-
पित (वि०) ज्ञा किसी राजा द्वारा प्रतिष्ठित न किया
गया हो, अवैध, वै-कानुनी ।

—रति [न० न०] 1 मनु, सुरमन, —देश सोऽयमरति-
शापितजन्ममिन् ज्ञया पूरिता—वेणी० ३१३१,
2 छ की मर्या । सम०—भ्रम मनुष्यों का भाव ।

अरस (वि०) [ऋ-विच अरम् आत्ति, ला+रु] मृदा
हुआ, टेढ़ा, पादावगमाङ्गुली मालवि० २१४, —स
1 बरू मृदा 2 मतवाला है, यो,—सा पृथ्वी, वेद्या
वागमता । सम०—केशी धुपराज वाली वाली स्त्री,
—मत्स्या निराकामदगलकपशा—रघु० ६८११, —सम्भम्
(वि०) मृदा हुई पलकी वाला—कु० ५१४५ ।

अरि [ऋ + इति] 1 शत्रु दुश्मन, विजितार्थिपुर सर
रघु० ११५९, ६१, ४४ 2 मनुष्य जाति का शत्रु
(मनुष्य के मन की आत्मा करने वाले ६ शत्रु बताये
ये हैं काम क्रोधस्तया सोमो मदमाही च मत्सर,
—इतारिषुवृंगजेवेन—कि० ११५ 3 छ की मर्या
4 पावों का भाव 5 पहिया । सम०—अर्थय (वि०)
शत्रुओं को पराजित या पराभूत करने वाला,—कुम्भम्
1 शत्रुओं का समूह, 2 शत्रु,—अन् शत्रुओं का नाश
करने वाला,—चित्तम्,—चित्ता शत्रुओं के नाश के

लिए बनाई हुई योजनाएँ, विषेय विनाश का प्रत्याशन,
—नन्द (वि०) शत्रु को प्रथम करने वाला, शत्रु को
विजय दिलाने वाला, भा० बहा शक्तिशाली शत्रु—रघु०
१८०१,—नूदन,—हृन्,—हिल्लक, शत्रुओं का नाश करने
वाला—रघु० ९१८८ ।

अरिष्यभाज्, अरिष्यधीय (वि०) [न० त०] जो वैतुक
सपत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी न हो (जैसे
कि काई नमुनकना आदि प्रवृत्तियों के कारण अनाधिकृत
कर दिया गया है) ।

अरिष्य [ऋ + इति] 1 डाक, सोनेरत्नवैभरतीरिवाभन
हि० १२०३१, 2 पलवार, मन्त्र ।

अरिष्य (वि०) [अरि + दम् + मत्, मुदायम] शत्रुओं का
दमन करने योग्य शत्रु विरोध शत्रु का जीतने वाला ।

अरिष्य [न० न०] गान्धार क्यां हाना—अ एक प्रकार
का मृदागम ।

अरिष्य (वि०) [न० न०] अज्ञान, पूर्ण, अविनाशी, निरापद
—ष्ट 1 अज्ञा 2 अज्ञानी कीका 3 शत्रु 4 माना
प्रकार के पीछे के नाम (क) शिरे का वृक्ष (ख)
नीम का वृक्ष 5 महान्,—ष्टम् 1 दुग्धय शान्त
बदाक्यती 2 दुग्धयविधित अरिष्यमृचक घटना,
अपयुक्त 3 अरिष्यक लक्ष्मण-विषयन मनुष्यमृचक
शिविका धरन यन्मादकवय भारि लयने तत्कल्पक
मरिष्य स्यादरिष्यमृचिधीती 4 शीघ्राय, अरिष्यी
किस्मन् मय 5 शीघ्र 6 छात्र 7 मादक लक्षण—
वि० १८१३३, सम०—मृहम् मृचिकागम्, सति
(वि०) मोक्षायज्ञाना या मृचो बलने वाला, शत्रु,
—तिः (स्त्री०) मुरसा, लीमाय का उत्सराधि-
कार, अनवरत मय, तदचक्रता विधन्नातिताया
कामपरिष्यनातिमाशास्मते—महाशी० १, अरिष्य-
मिच, विरु, सद्य प्रमता का पदम्—अरिष्यकृष्ण
परिना विमरिष्या—रघु० ११५५, सुष्य,—हृन्
(पु०) अरिष्यजातक, किन्तु को उपाधि ।

अरिष्य (स्त्री०) [न० न०] 1 अरिष्यका, किसी वस्तु
का अच्छा न लगना,—चर ही बाधाभावापुष्येति—का०
१४६ 2 बुर न लगना, स्वाद न लेना, उच्छ्रुतः
जाना—मनिपातितयवत्कामादिककारिष्यमृत्—मुष्-
3 मलाजनेक मात्स्या का अभाव ।

अरिष्यक, अरिष्य (वि०) [न० त०] अज्ञान करने वाला ।

अरिष्य (वि०) [न० त०] रोषमुक्त, स्वस्थ, नीरोष ।

अरिष्य (वि०) [न० त०] स्वस्थ, नीरोष ।

अरिष्य (वि०) (स्त्री-पा, षी) [ऋ + उजम्] 1 अरिष्य
या कुत्र २ नाक, बुरा, गिरक, अज्ञ, दुष्कधी (अरिष्य-
सात्स्या के विपरीत प्रयातकालीय श्रेष्ठ का रव)
—वपमानवधानि पृथंयम्—कु० ४ । १, २, 3 विविधः

आयुज 3. युज-यः 1. काक रंग, उषा का रंग वा प्रातः कालीन सूर्याभंग, 2. सूर्य का क्षयिण—सूर्य उषा, —आयिष्कृतान्त्र पुनःसूर्यकोशः—शं० ५११, ७५४ विभावरी बहुराज्य कल्पते—सु० ५१४४, रघु० ५१०१, 3. सूर्य—राज्ये वासकलाकाशकेन सु० ३१३०, मनुज्यते सूर्यसंवेरुणासुविर्—रघु० ५१६९, अथ 1 काक रंग, 2 सोना 3 केसर। सम०—अथयः मरुत, —अनुज, —अथयः अथय का छोटा भाई, मरुत, —अथिष् (पु०) सूर्य, —अथयः 1 अथय का पुत्र उदाय, 2 अग्नि, क्षयिण मनु, कर्म, सुधीव, दम और भविष्योक्तुवार (—वा) समुना, शप्यते, —ईश्वर (वि०) काक भाँको वाला—अथयः दिन निकलना, उषा, —अथतो षटिका क्षातरसभोदय उच्यते, —अथयः काक, अथयन् मूल कमल, —अथिष् (पु०) शिव, —अथिष्ः काक पूज या कर्मको का प्यार, सूर्य (—वा) 1. सूर्य पत्नी 2 छाया, —सोच्य (वि०) काक भाँको वाला (—यः) कन्त, —सौरभिः विषका क्षारिण अथय है, सूर्य।

अचक्षित, अचक्षीकृत (वि०) [अचक्ष + चक्ष्य (ना० वा०) + क्त, अचक्ष + चि + क्त + इत् + क्त] मास किया हुआ, साक्षर्य में रगा हुआ, पित्रक रंग का किया हुआ स्वनामकृताचार्यिताय कनुकुम्—सु० ५१११।

अक्षय्य (वि०) [अक्षयि यथासि तुरति—इति अक्ष + युष् + यत् + अक्षयि] अक्षय्यता को छेदने वाला, धायक करने वाला, पाडाजनक, तीक्ष्ण, मर्मवेधी—अक्षय्यमिवाजान-पतिर्वापत्य दन्तिन—रघु० ११०१, कि० ११५५, 2 तीक्ष्ण, उग्र कटुस्वभाव।

अक्षय्यतो [न क्षयती प्रतिरोधकारिणी] 1 यक्षिण्ट की पत्नी—अक्षय्यतमक्षय्यता स्वाहयेव हविर्भुञ्जन्—रघु० ११५६, 2 प्रजात कालेन तारा, यक्षिण्ट की पत्नी, क्षयिण्टन का एक तारा (पुराणों के अनुसार यक्षिण्ट क्षयिण्टों में एक है तथा अक्षय्यती उमकी पत्नी) अक्षय्यती, कदम प्रजापति की (देवहृति से उत्पन्न) १ पृथिवी में से एक थी। वह दाम्पत्य-महता का सर्वश्रेष्ठ नमूना है, आर्वाधिक भक्ति के कारण विवाह संस्कारों में वर के द्वारा उसका आवाहन किया जाता है। इसी क्षय्य हनु भी उसको बही सम्मान दिया गया है, वा क्षय्यपिया को सु० कि० ६१११, अथ पति की भाँति यह भी रघुयय के रूपमें निजो विवाह को निर्दोषिका और नियोजिका रही, राम में पतिव्रतकी सीता का निर्दोषन देवभूत के रूप में उगी न किया। कहते हैं कि अिनका मरुत-नाल निष्कट ही, उन्हे अक्षय्यती तारा दिखलाई नहीं देता हि० ११०६। सम०—आविः, —अथः—यतिः यक्षिण्ट, क्षय-विमरुत का एक तारा, —अक्षय्यतायः दे० श्याव के नीचे।

अक्षय्य (वि०) [न० त०] अक्षय, अक्षय।
अक्षय (वि०) [न० त०] 1. अक्षय, 2. अक्षयता, उच्यते।
अक्षय्य (वि०) [च + अक्षि] धायक, षट् क्षया हुआ, —(पु०) 1. काक का पोषा, मरार 2. काक क्षयिण्ट—(मनु०) 1. मर्मवेधक, धाय, अथ (पु०) भी। सम०—अक्षय (वि०) क्षयिण्ट करने वाला, धायक करने वाला।
अक्षय्य (वि०) [न० वा०] 1. रूप रहित, आकाररूप 2. सुकर्म, विषय 3. विषय, अक्षय, —अक्ष 1. एक बुरी या बड़ी आकृति 2. छाँवों का प्रधान तथा वेदात्मिकों का बह्य। सम०—अक्षय्य (वि०) जो सौन्दर्य से आकृष्ट या बर्धित न किया जा सके, अक्षय्यार्थ मदनस्य निषहार्थ—सु० ५१५१।

अक्षय्यक (वि०) [न० वा०] बिना किसी आकृति या रूप के, जो आध्यात्मिक न हो, धायिक।
अरे (अक्ष०) [अ + रे] एक सर्वोपनायक अक्षय्य—(क) छोटी को बुझाने के लिए—आरता वा अरे इत्यर्थः शीतल्य, न वा अरे यानु कामायाना पति प्रिया यथति—सत० (शाकभल्य ने अपनी पत्नी यैवेदी से कहा) (य) अक्षय्यक यै—अरे महाराज प्रति कुत क्षयिण्टा—उत्तर० ४ (य) ईर्ष्या प्रकट करने के लिए।

अरेक्ष्य (वि०) [न० वा०] 1 निर्णाय, निष्कलक 2 निर्मल पवित्र।
अरे रे (अक्ष०) [अरे-अरे इति कोष्ठाया द्वित्वम्] विस्म-यादि शोषक अक्षय्य (क) कोष पूर्वक बुझाना—अरे रे दुर्घोषयन्मुना कुषलन्वेनाप्रयय—बैषी० १, अरे रे काषाट-त० (ख) अक्षय्य से छोटी को सर्वोपित करना वा बुझापूर्वक बुझाना—अरे रे राधागर्भमारुत मृतापतद-त०।

अरोक (वि०) [न० वा०] क्षयिहीन यत्न, बुधका।
अरोक (वि०) [न० वा०] रोगमुक्त, नीरोग, स्वस्थ अक्षय्य, —अरोया सर्वविधाभविष्युत्सर्वशतायुषः—मनु०, —अ, अक्षय्य स्वास्थ्य -न नाममात्रेण करोत्य-रायम्—हि० १११६०।

अरोक्षिन्, अरोक्ष्य (वि०) [न० वा०] नीरोग, स्वस्थ।
अरोक्षक (वि०) [अ०] शिवा] [न० त०] 1 जो चमकीला न हो 2 भूय मर करने वाला, —कः ब्रूय का रूप लयना, अक्षयिकर, नृपत्या।
अक्षः (पु० वा०) 1. मर्म करता 2. स्तुति करना।
अक्षः [अक्ष + अक्ष + क्त + अक्षय] 1 प्रकाशकिय, विजयी नी चमक 2 सूर्य, —आयिष्कृतान्त्रपुनःसर एकतोऽङ्गे—शं० ५११, 3. अग्नि 4 स्थातिक 5 ताता 6. रविवार 7 आक का पोषा, मरार—अक्षेस्वोपरि शिखिं व्युत्-निध नवभक्तिकाकुमुदम्—शं० २१९ अक्षयिण्ट न विद्याय सुधाती, यान्ति सेवका, शोऽक्षय्यपतिस्त्वाम्यः

सदानुष्पणमोक्षिणं सन्-बंध० ११५१, ३ इन्द्र, १
 आहार १० बारह की संख्या। सप-—अस्मन् (पु०)
 —उपसः सूर्यकालप्रति, —आहू, मदार, मारु, —अनुसु-
 क्तः सूर्य और चन्द्रमा का संयोग, राशौ, वा अभावाभ्यां।
 —आला सूर्यपत्नी, —अवन एक प्रकार का रक्त-
 चन्दन, —अः कर्म की उत्पत्ति, यम, मृगीन (—भी)
 स्वर्ग के देव अग्निनीकुमार, —अस्य सूर्य पुत्र कर्म
 का विशेषण, यम और शनि दे० 'अस्यामर' (—आ)
 यमुना और तापी नदियाँ, —अिष् (स्त्री०) सूर्य
 की स्थािति, —अिष्मन्, —आमरः रविवार, —अवनन,
 —अुषः—सूर्य, —अुषुः शनि, कर्म और यम के नाम,
 —अम्, —आश्वः कल्प (सूर्य-कर्म), —अम्बलम्
 सूर्यमंडल, —अिष्मन् मदार से विद्या (तीवरा विद्या
 करने वाले पुत्र के लिए पहले मदार से विद्या करने
 का विधान किया गया है, ताकि तीवरी कभी नोपी
 हो जाय), —अनुषांदिनाहास्यं सूर्यवि० अं सपइहं
 कावयः ।

अर्धः—अन् } [अर्ध + कल्पन् अर्धकादि कुम्भ -
 अर्धमा—भी } [आरा०] अर्धो, किलो वा अर्ध
 (यह दारुआजे का बन्द करने रखने के
 लिए लकड़ी के बने बन्द है) अर्धो, विदितो, आरा०,
 —पुराणकारोपेनुको दूधोश्च रघु० १८४ १५५,
 अनावाहास्यं—अन् २, मन्मथम् द्रुपदान्तर्का
 विनाशितासीव विधाअनापनी -वि० १ आ००
 से पर बन्द बाधा, रोक वा अबाधक अन् ५ वृ० ग
 प्रयुक्त होता है—इतिवत् सर्वव्यापारोऽपि मातं
 धारयन्—रघु० ११०९, वाकि धारयन् ६ उप
 प्रवत् -५१०९, कं केवलमपेतेन विदितो धारयन्
 नियन्तन्—आश्व० ८, ९० अर्धोर्धो २ अन्
 वा आ० ।

अर्धिका [अर्धो + क् + टाप् इत्यम्] अर्ध
 छोटी चटखती ।

अर्धे (स्त्री० पर०) [अर्धन्, अर्धन्] मन्थन तथा
 मन्थ रचना, मन्थ आना—परीक्षका उप न सान्
 उर्धे वापीन राशिनि मन्थकाणि मृधाणि० ।

अर्धे [अर्ध + अर्ध] १ मन्थ, बीजन्—अुष्मन् उपा-
 पन्थ—अन् ० ८१९८ मात्र० २१२५ कुन्था म
 कुपरीक्षका हि मन्थो वैगंधो पातितो—अन् ० ११२,
 मन्थके मन्थ से घटी हुई, अर्धमन्थित, इसी प्रकार अर्ध
 अर्धे अर्धे मन्थयन् २ पूजा की माघयो, देवताया
 वा लक्ष्मी व्यासका की गारद श्राद्धि वा उपा
 कुष्मन्मूर्धे कल्पिनाथ नमं—मेघ० ५ (इत
 श्राद्धि का सामान निम्नांकित है—आप तीर
 कुशाव व दधि शनि मन्थयन्मन्थं च मिश्रांशकं
 अर्धान्नाम् प्रकीर्तित । २० 'अर्धे' शीघे । स्य०

—अर्धे (वि०) सामान्य उपहार के योग्य, —अर्धकम्
 मन्थ को दर, उचित मन्थ, मन्थो में घटत बड़
 लक्ष्मीमन्थम्,—लक्ष्मीमन्थ मन्थानक, मन्थो का
 मन्थानिर्धारण करना, कुर्वीत नैवा (वर्षावाम्) प्रत्यक्ष
 अर्धमन्थान नृप—अन् ० ८१४०० ।

अर्धो (पु०) शिव ।

अर्धे (वि०) [अर्धे + अर्धेर्हति] १ मन्थान्, अर्धम्—
 अर्धो २० १० के नी० २ मन्थान्तीय—आनध्या-
 न्त्येमादाय दुरात्म्यदो गिरि -कु० ६५०, वि०
 १११५, —अर्धे किसी देवता वा सम्प्राय व्यक्ति को
 गारद श्राद्धि वा उपहार, अर्धेयस्मि विक्रम० ५,
 दत्तु मन्थे पुर्णार्धे फलैश्च मन्थयन् २
 ११२५, अर्धेयस्मि शक्ति नृपम् रघु० १११६,
 कु० १२८, ६५० ।

अर्धे (स्त्री० उभ०) [अर्धनिन्, अर्धि] १ (क) पूजा
 करना, अर्धिदान करना, श्राद्ध कराना—रघु०
 ११६, ९० २१२१, ५८५, १२८१, मनु० ३१२३
 —आर्धे इन्द्रापीनु परनाथविद्यान्—अर्धि० १११९,
 १५६३, १७५५ (य) मन्थान करना अर्धे अर्धक
 करना मन्थाना—अन् ० २१२, २ अर्धि करना
 (वेद०), (५० पर० वा प्रे०) मन्थान करना, अर्ध-
 क्त करना पूजा करना स्वर्गो कर्माभित्तवर्धिका
 —कु० ११९ अर्धि, अर्धि— पूजा करना, अर्ध-
 क्त करना मन्थान करना अर्धोर्धेयस्मि नृप
 शिवाय—अर्धि० ११२, मन् १११६ प्र १ अर्धि
 करना, अर्धिदान करना, २ मन्थान करना, पूजा
 करना, अर्धोर्धेयस्मि अर्धोर्धेयस्मि—अर्धि० २१२० ।

अर्धे (वि०) [अर्ध + अर्धे] पूजा करने वाला, आरा-
 यना करने वाला—क उपेक सुर्वेवैश्राधक --
 मनु० १११२२० ।

अर्धे (वि०) [अर्ध + अर्धे] पूजा करने वाला, श्रुति
 करने वाला मन्थ, —ना पूजा अर्ध म अर्धो का
 और देवो का आराधन म सम्मान ।

अर्धोर्धे, अर्धे (१० इ०) [अर्ध + अर्धो अर्धे वा]
 पूजा वा आराधना करने का आरा, मन्थान्तीय आरा-
 योय—रघु० २१० मन्थे ० ६१० ।

अर्धे [अर्ध + अर्धे] १ पूजा आराधना २ कृ
 श्रुति म शक्ति मन्थो पूजा की आरा शीघेर्हिरध्या-
 निन्थाना प्रकीर्तित मन्थो ।

अर्धे (स्त्री०) [अर्धे + इन्] विक्रम, (आय शी)
 देवता वा (दान-दान या मांथ) आर्धि, —आर्धोदा-
 मन्थानिर्धारणप्रदीपारिवाशि- -रघु० ११११, नैवास्था-
 विन्थयन् इव अिन्थयिष्मन्—विक्रम० ।

अर्धिमा (वि०) [अर्धि + मन्थु] मन्थयाना, उन्मथन
 चमकदार-विक्रम० ११२, (५०) १ अर्धि, २ अर्धे ।

उज्ज्वल, उज्ज्वल रंग वाला, —ज्वल स्नेह-ज्वला
बाला, हनुमान् ।

अर्धे [अ + न] 1 सागवान का दूध 2 (वर्ष)मासा का
एक अर्धर ।

अर्धकः [अर्धासि सति यस्मिन्—अर्ध + क, सलोपः]
(केन्युक्त) समुद्र, सागर (बाल० भी) शोक शोक
का समुद्र, इसी प्रकार चित्त, अर्ध बनसमुद्र, सतारा-
पंचलधन—अर्ध० ३११० । सम०—अन्तः सागर की
सीमा,—उज्ज्वल चन्द्रमा (-वा) लक्ष्मी, (-वन्)
अमृत,—पीत,—बालम् कित्ती वा जहाज,—संघिः
1 सागर वाली बरफ, जलो का स्वाभी 2 विष्णु ।

अर्धम् (नपु०) [अ + असुन् मुट् वा] जल । सम०—बः
बादल,—अर्धः सख ।

अर्धस्वत् (वि०) [अर्धम् + भ्रुत्] बहुत अधिक पानी
रखने वाला, (पु०) सागर ।

अर्धम् [अर्ध + ल्युट्] निन्दा, फटकार, अपमान या माली ।
अतिः (स्त्री०) [अर्ध + क्तिन्] 1 पीसा, शोक, दुःख—
सिरोर्रति सिर-दरदं 2 अनुष का किनारा ।

अर्धिका [अर्ध्—अर्ध्] बड़ी बहू (नाट्य साहित्य में) ।

अर्ध् (पु० आ०) [अर्धयते, अर्धति] 1 श्राध्ना करना,
साधना करना, विद्ययाज्ञान, मायना, अनुसूच करना,
दीन भाव में मायना (दिकम्प) —आभिप्रमर्षमर्थयते—
दश० ७१, तमभिक्रय नर्दश भव आर्धमिहे वसु—
महा०, प्रथममर्षाचक्रे योद्धुम् अर्ध् १४१९, 2
प्राप्त करने का प्रयत्न करना, बाहना, इच्छा करना,
अभि—मायना, विद्ययाज्ञान, श्राध्ना करना—इम
सारङ्ग प्रियाप्रवृत्तिनिमित्तमभ्यर्षये—विक्रम० ४,
अर्धकाप किलोदन्वात् रामायाम्बधितो ददी—पु०
४१८, अभिप्र—1 मायना, श्राध्ना करना 2 बाहना,
अ—1 मायना, श्राध्ना करना, साधना, श्राध्ना
—नेत्र मन्त्र श्राध्दये—अ० २ बाहना, आवस्यकता
होना, इच्छा करना, प्रबल अभिलाष रखना,—अहो
विष्णवत्य श्राध्तिर्षमिद्वय—प० ३, स्वपति प्रार्थ-
यन्ते—अव० ११२०, अर्ध् ७४८, रघु० ७१०,
६४, 3 हुड़ना, तलाश करना, खोज करना,—प्रार्थ-
यन्त तथा सोनाम्—अर्ध् ७४८ 4 आक्रमण
करना, दूट पड़ना—असौ अश्वतोकेन यवनामा प्रापित
—मार्क० ५, दुर्भयो नरप-त्की विनास प्रायन्त-
मिति रघु० १५१९, १५६ प्रति 1 (पुट के
जित्) नरकावना मुकावना करना, संभ्रुत् व्यवहार
करना—गने सोवाइम् नदक्यो प्रत्यर्थन राघवम्—
अर्ध् ६१२५, 2 किसी को शत्रु बनाना, सम्—
1 विषयाम करना, साधना, असाह्य रखना, चिन्त
करना—ममर्षये नरपथ प्रिया गति विक्रम० ४१३५,
मया न साप् समधिन्म्—विक्रम० २, अनुपपुस्त-

मिवात्मान समर्षये—स० ७, 2 समर्षन करना, सन्त-
यता करना, प्रमानादारा सिद्ध करना—उपलयेवाधै-
दाहुरभेन समर्षयति, समर्षि—अर्ध—साधना करना,
श्राध्ना करना आदि ।

अर्धे [अ + धृन्] 1 आशय, प्रयोजन, लक्ष्य, उद्देश्य,
अभिलाष, इच्छा—आतापो ज्ञानसमन्ध योतु अतो
प्रवर्तने, सिद्धे परिपयो—मुद्रा० ५, सवास के उत्तर
पद के रूप में प्राय इसी अर्थ में प्रयुक्त होता तथा
विभनाफित अर्थों में अनुदित किया जाता है 'के
लिए' 'के निमित्त' 'की वातिर' 'के कारण' 'के बदले
में', सजाओं को विशेषण करने के लिए विशेषण के
रूप में भी प्रयुक्त होता है—सन्तानार्थय विषये—
रघु० ११३४ तां देवनापिबन्तिपिकिर्षा (केनम्) २१६,
दिवाधी वयापु मिद्रा०, यज्ञायात्कमयो-
ज्यत्र—अग० ३१९, किञ्च विशेषण के रूप में भी यह
इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है यथा—अर्धम्, अर्धे या
अर्धयिः किञ्चर्षम्—किञ्च प्रयोजन के लिए, बेलाप-
नरुषार्थम्—स० ४ तद्वर्णनाभुच्छमोर्भुषाव्यान्तार्य-
मादर—कु० ६१३, नगार्थं ज्ञाज्ञापर्यं पच०
१४२०, मदर्धे—अन्तर्भोविना—अग० ३१९, प्रत्या-
ख्याता मया तत्र नरुष्यार्थाय देवता—नरु० १३१९,
अनुपपन्थय आर्धय—२३१९, 2 कारण, प्रयोजन,
हेतु, साधन—अनुपपन्थय किण्वार्थे—रघु० २५५,
साधन या हेतु ३ अभिप्राय, तात्पर्य, मायकता,
आशय—अर्धे तीन प्रकार का है—वाच्य (अभि-
व्यक्त), लक्ष्य (संप्रेषित या बोध) और अर्थ्य
(अर्धित) नददीनी सन्तारौ—काव्य० १, अर्धो
वाच्यश्च लक्ष्यश्च अर्थ्यश्चोक्ति विधानम्—स० ६०
२, 4 बन्तु ना विषय पदार्थ, सागस—अर्धो हि
कन्या परकीय एव स० ६१२१, जो ज्ञानेन्द्रियों के
द्वारा जाना जा सके, ज्ञानेन्द्रिय की वस्तु, इन्द्रिय—
हि० ११४६, कु० ७३१ इन्द्रियेभ्य पराङ्मार्थं अर्ध-
व्याच पर धन—कट० ज्ञानेन्द्रियों के विषय पदार्थ
है रूप रस गंध, स्पर्श और लज्ज) 5 (क)
मासका, व्यापार, बाल काय—अर्ध प्रणिपत्रोऽप्यधौ-
ज्ज्ञानाय—वर्णो २, अर्धोऽनर्थोऽनर्थमाद्य एव—
कु० ३१८, अर्धोऽनर्थोऽनर्थो—दश १३, यज्ञोऽर्थ-
मेव० ५६, साधन-व्यापार अर्धयि मयवेन नाम (साध-
नोपकरण), मनेपार्था—मेव० ५, सदेना की बातें
अर्धयि सदेना (स) जित इच्छा (स्वाधर्षसाधनत्पर-
मन्० ४१२६, इयमेवार्थसाधनम् रघु० ११२९,
राजार्थं ११७५, सर्वार्थोऽनर्थक—अन० ७१२१, मास-
विक्रमा न मे कश्चिदर्थं—मार्क० (न) विषय-
मायवी, विषय-मायवी के परिचित कराऊँगा,
(यै आपकी विषय-मायवी के परिचित कराऊँगा),

लेन हि अन्व गृहीतायां वचसि—विध्व० २, (अदि
 ऐवी वात है ती मुझे इत विध्व की आलकारी होनी
 चाहिए), ६. दीकत, बन, अन्वसित, लय्या—स्वाभाव
 वानुवाच्यताम्—रघु० ११०, विध्वी कष्टसंभवताः—
 पंच० १११३, 7. बन या सांसारिक ऐश्वर्य का
 प्राप्त करना, जीवन के चार पुष्पाओं में से एक—
 अन्य तीन हैं—धर्म, काम और मोक्ष; अर्थ, काम
 और धर्म मिलकर प्रसिद्ध त्रिक बनता है, पु० कु०
 ५१३८,—अप्यर्थकामौ तस्यास्ता धर्म एव मनीषिणः—
 रघु० ११२५, 8 (क) उपयोग, स्थित, वाच, भवार्थ;
 —तथा हि सर्वं तस्यात्मन् परार्थकफला गुणा—रघु०
 ११२६, भावार्थ उदयाने सर्वतः संप्रत्यक्षोके—अण०
 २१४, ३० अर्थ और निरर्थक त्री (ब) उपयोग,
 भावध्वन्यता, अकृत, प्रयोजन—कला० के भाव;
 —कोऽयं पुषेन वातेन—पच० १ (अस पुष के बीदा
 होने से क्या लाभ ?) कचच वेत्तार्थ—दश० ५९,
 कोऽन्वितरत्ना मुने—पच० १०३३, कूर अन्वित मुनी
 की बना परचाहू करते हैं ? अंत० २१४८,—योग्योर्वाः
 कस्य न स्यात्प्रवेन—ति० १८१६, वैव तस्य क्ले-
 नायां नाकृतेनेह कचचन—अण० ३११८, 9 याचना,
 याचना, प्रार्थना, दावा, याचना 10. कार्यवाही,
 अधिपयोग (विधि०) 11 वस्तुस्थिति, याधार्थ, जैता
 कि यधार्थ, और अधीन ने—०त्सवित् 12 रीति,
 पकार, तरीका 13 गोक, दूर रखना—माहाकाशो
 घूम, प्रतिपेय, उन्मूलन 14. विष्णु ॥ सम०
 —अधिकारः स्पष्टेऽपि ता कार्यदार, कोषाभ्यस का
 पद०, १२ न नियोकलभ्यो—हि० २,—अधिकारिन्
 (पु०) कोषाभ्यस,—अस्तरन् 1 अन्व अधिकार या
 सिन्ध अर्थ 2 दूसरा कारण या प्रयोजन—अर्थात्म-
 र्थान्तरभाष्य एव कु० ३११८ 3. एक नई बात या
 परिस्थिति, नया मामला 4 विरोधी या विपरीत अर्थ,
 अर्थ में भेद, ०न्वतः एक अलग जिसमें सामान्य से
 विशेष या विशेष से सामान्य का. न्यर्थन होता है,
 यह एक प्रकार का विशेष से सामान्य अनुमान है
 अथवा इसके विपरीत—उत्तररथान्तरन्यास स्यात्
 सामान्यविशेषयो ॥ (१) हनुमान्निर्मतरत्तु पुष्करं
 कि महामर्यादा ॥ (२) गुणधस्तुसमर्थाद्वाति नौषो-
 ऽपि वीरधम्, गुणभावात्पुष्क्रेण सुधं विरटि वायेते ॥
 पुष्कल०, पु० काव्य० १० और सा० १० ७०९,
 —अन्वित (वि०) 1 धनवान्, दीनतावद् 2 धार्थक,
 —अन्विन् (वि०) जो अपना अनीष्ट सिद्ध करने के
 लिए या धन प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है,
 —अन्वकारः साहित्यकारण में बहु अन्वकार जो का ती
 अर्थ पर निर्भर हो, या विवक्ष्य निर्णय अर्थ से
 किया याव, सख से नहीं (वि० अन्वकार),

—आन्वकः 1 बन की प्राप्ति, वाच 2. किसी
 शब्द के अधिकार की मत्तमाना,—अन्वसिः (स्त्री०)
 1. परिस्थितियों के आधार पर अनुमान लगाना, अनु-
 मानित वस्तु, कल्पितार्थ, ज्ञान के पाँच साधनों में से
 एक अथवा (मीमांसकों के अनुसार) पाँच प्रमाणों में
 से एक, प्रतीयमान अवसति का समानान करने के
 लिए यह एक प्रकार का अनुमान है, इतका प्रसिद्ध
 उदाहरण है—“भीमी देवस्त” विद्या न कुम्भते, यद्वा
 देवस्त के ‘वोटपन’ और ‘दिन में न खाने’ की अवसति
 का समानान ‘यह रात्रि की अवसत जाता होता’
 अनुमान से किया जाता है; 2 एक अन्वकार (कुछ
 साहित्यकारिणों के अनुसार) जिसमें एक सबब उचित
 से ऐसे अनुमान का मुझाव मिलता है जो प्रस्तुत
 विषय से कोई सबब नहीं रखता—या इसके ठीक
 विपरीत है; यह कैमूतिकन्याय या दण्डशास्त्रान्याय से
 मिलता जुलता है; उदा०—सुरोऽयं हरिणाशौना मुकृति
 स्तनमश्नते, मुक्ताभावाप्यश्नन्त्ये के अर्थ स्वार्थिकुत्ता ।
 अर्थ० १००, अनितानावरोऽपि मार्थेन वजते वीध रुवा
 वरीतिगु—रघु० ८१४३,—अन्वसिः (स्त्री०) धन
 प्राप्ति, इती प्रकार ‘अन्वसिन्त्य’,—अन्वसिः (नाटकों
 में) एक प्रकार का अन्वकार—अन्वसिः (स्त्री०) धन
 प्राप्ति, इती प्रकार ‘अन्वसिन्त्य’,—अन्वसिः (नाटकों
 में) एक प्रकार का अन्वकार—अन्वसिः (स्त्री०) धन
 प्राप्ति, इती प्रकार ‘अन्वसिन्त्य’,—अन्वसिः (स्त्री०)
 धन की धन्य या धनी—अन्वसिन्त्या विरहित पुष्क-
 ल एव—रघु० २१४०,—अन्वः—राशिः कोष, धन का
 भंडार,—अन् (स्त्री०—री),—अन् (वि०) 1 धनी
 बनाने वाला 2 उपवोधी, सामदायक,—आन् (वि०)
 धन का इच्छुक, (—औ—वि० ध०) धन और चाह
 का गुण, रघु० ११२५,—अन्वन् 1. कतिन बात 2.
 आधिक कठिनाई—न मुखेर्वक्त्रेण वृ—नीति०—अन्वन्
 किसी कार्य का सम्यक् करना—अन्वन्तार्थकृत्या-
 —नेव० ३८,—वीरधम् अर्थ की महताई—आन्वेर-
 वीरधम्—उद्भूट०, कि० २१२७,—अन् (वि०) (स्त्री०)
 अन्वित्वाय, अन्ववोधी, निजुल्लभ्य,—अन् (स्त्री०)
 अर्थ से दरिपुर्ण (—अन्) 1 वस्तुओं का समूह 2.
 धन की बरी रकम, बड़ी संपत्ति,—अन्वन् 1.
 वास्तविक सार्थ, मयार्थता, 2. किसी वस्तु की वास्त-
 विक प्रकृति या कारण,—अ (वि०) 1. धन देने
 वाला, 2. साधदायक, उपवोधी 3. उदार,—अन्वन्
 1. अतिव्याद, अत्यन्त 2. अत्यायपूर्वक किसी की
 संपत्ति से लेना, या किसी का उचित पाचना न देना,
 —अन् (अर्थ की दृष्टि से) साहित्यिक वृत्ति या शोध,
 साहित्य-रचना के चार शीलों में से एक—हृदये हीन
 है—अव दोष, चरुचरीय और वाच्य दोष, इनकी वि-
 वाच्यताओं के लिए—१० काव्य० ७,—अन्वन् (वि०)

धन के ऊपर आश्रित,—निष्कण्ठः निर्धारण, निर्णय,
—कृतिः 1 धन का स्वामी, राजा,—किञ्चिद्विद्वत्पार्थिवं
बनाये—रघु० १५६, २१४६, ९१३, १८११, पंच०
११७५, 2 कुबेर की उपाधि,—चर,—सूक्त (वि०)
1 धन प्राप्त करने पर जुटा हुआ, लालची 2 कद्रुष,—
—मङ्गलः (स्त्री०) नाटक के महान् उद्देश्य का प्रमुख
साधन या अवसर, (इन साधनों की सख्या पाँच है,—
बीज बिन्दु यत्नाका च प्रकारा कार्यमेव च, अर्थप्रकृतय
पञ्च हात्वा योग्या यथाविधि—सा० २० ३१७),
—प्रयोगः व्याख्योती,—अर्थः शब्दों का यथाक्रम रचना,
रचना, पाठ, श्लोक, चरण—रा० ७५५ ललितार्थबोधम्
चिक्रम् ० ११५५,—बुद्धि (वि०) स्वार्थी,—बोधः
वास्तविक आशय का संकेत,—श्लेषः शब्दों में अर्थ—अर्थ-
भेदने शब्दभेद,—भाषण,—वा सम्परि, धन-दीलत,
—मुक्ता (वि०) शार्धक,—साध- धन की प्राप्ति,—श्रीम
कालच,—वाहः 1 किसी उद्देश्य की घोषणा, 2 निरव-
सायक घोषणा, घोषणाविवेक प्रकथन, व्याख्यापरक
टिप्पणी, किसी भाषण की उक्ति या कथन, भाषण
(इसमें उचित अनुष्ठान के करने से उत्पन्न फलो का
बर्णन करते हुए किसी विधि की अनुष्ठाना की जाती
है, साथ ही अर्थने पक्ष के सम्बन्ध में ऐतिहासिक निर-
खेन देकर यह बतलाया जाता है कि इसका उचित
अनुष्ठान न करने से अनिष्ट फल मिलता है) 3
प्रशंसा, स्तुति,—अर्थदार एव, दोष तु मे कथितकथय-
उत्तर० १,—विकल्पः 1 सचाई से इधर-उधर होना,
सध्यों का लोड-भरोड, 2 अपकाय, 'वेकाल्यम् श्री,
—बुद्धिः (स्त्री०) धन-समय,—अर्थः धन का संचय
करना, 'त्र (वि०) उपवेन्दे की शायों का जान-
कार—शास्त्रम् 1 धन-विज्ञान (सांख्यिक अर्थशास्त्र)
२. राजनीति-विज्ञान, राजनीतिविषयक शास्त्र, राजनय
—द० १२०, इह सद् अर्थशास्त्रकारान्विधा सिद्धि-
मुच्यतेवेति—मुद्रा० ३ 'अर्थशास्त्रे राजनीतिज्ञ,
३ आर्थशास्त्रे जीवन का शास्त्र,—शौचम् उपवेन्दे
के नामले में ईशानरागे या शरण—सर्वेदा वैव
शोषातामर्थशोष पर स्मृत्म्—मनु० ५११०६,
—संज्ञानम् 1 धन का संचय 2. धन,—संज्ञकः वाक्य
वा उक्त से अर्थ का संचय,—सारः बहुत धन—पंच०
२१४२,—सिद्धिः (स्त्री०) अभीष्ट सिद्धि, सफलता ।
अर्थः (अर्थ०) [अर्थ + तसिन्] 1 अर्थ या किसी
विषय उद्देश्य का उल्लेख करते हुए,—अर्थार्थतो गीर-
वम्—मा० ११०, अर्थ की महारथ, 2 कल्पन, काल्प
में, सचमुच,—न नामत वेकसमर्थोऽर्थ—शा० ३१५६,
3 धन के लिए, लाभ या प्राप्ति के लिए—ऐक्यवर्ध-
नपेठमीधरमय लोकोपेत केपेठे—मुद्रा० ११४५ 4
के कारण ।

अर्थना [अर्थ + भृत् + टाप्] प्रार्थना, अनुरोध, मासिक.
याचिका—शै० ५११११ ।
अर्थवत् (वि०) [अर्थ + भृत्] 1 धनवान् 2. शार्धक,
अभिप्राय वा अर्थ से परिपूर्ण,—अर्थवान् सखु मे राज-
शब्द—रा० ५, 3 अर्थ रखने वाला—अर्थवत्पार-
प्रत्यव प्रातिपदिकम्—पा० ११२५५ 4. किसी प्रयो-
जन को सिद्ध करने वाला, सफल, उपयोगी ।
अर्थवला [अर्थ + भृत् + टाप् + टाप्] धन-दीलत, सम्पत्ति ।
अर्थवत् (अर्थ०) ['अर्थ' का अर्थ का रूप] 1 सच बात
तो यह है कि, निस्सन्देह, कस्तुतः—वृषिकेण वण्डो
भसित इत्यनेन तत्सहचरितमपूरमज्ञमर्थावाचां
मर्धति—सा० २० १०, 2 परिस्थिति के अनुसार,
तथानुसार 3 कहे का वाच यह है कि, नामों के
अनुसार ।
अर्थवः [अर्थवते इत्यर्थ + कन्] 1 चिल्लाने वाला, चौकी-
दार, 2 विशेषतः घाट जिसका कर्म्य दिन के
विभिन्न निश्चित समयों की (जैसे कि आगने का, सोने
का, या योजन करने का) घोषणा करना है ।
अर्थव (भू० क० कृ०) [अर्थ + क्त] प्राप्ति, याचित,
इच्छित—सच वाह, इच्छा, मासिक ।
अर्थवत्-रथम् [अर्थवत् + तल् टाप्, तल् वा] 1 मागना,
प्रार्थना करना, 2 वाह, इच्छा ।
अर्थवत् (वि०) [अर्थ + इति] 1 प्राप्त करने की चेष्टा
करने वाला, अभिप्रायी, इच्छुक—करा० के साथ
अथवा समान में—कोषधर्माभ्याम्—मुद्रा० ५, को
बधेन मर्थावी स्यात्—मुद्रा०, अर्थवी—पंच० ११५९,
2. अनुरोध करने वाला, या किसी से कुछ मांगनेवाला
(सब के साथ)—अर्थी शरणार्थिभ्यस्तु—कथा० 3 मनोरथ
रखने वाला, (वृ०) 1 याचक, प्रार्थविता, विभुक्त,
दीन याचक, निवेदक, विधाहार्थी—यथाकामाभिलाषिना
—रघु० ११६, २१६४, ५१३१, ९१२७, कोर्जी गतो
गीरवम्—पंच० ११४६६, कन्यारत्नमयोनिवन्म अ-
तावास्ते वय चापि—महावी० ११३, 2 (विधि
में) बादी, अभियोगता, प्रातिपदिक,—स अर्थवत्सक
वाचवधिप्रत्ययिनां स्वय, वदंत् सचयच्छेदान् अर्थवत्-
रासतन्त्रित—रघु० १७३१, ३. नेत्रक अनुचर । स०
—आद्य. याचना, माँगना, प्रार्थना मा० ९१३०,
—सम् (वि० वि०) विचारियों के अधिकार में करते
—विभज्य देहंनं धर्वाविहातकृतः—शै० १११११ ।
अर्थवत् (वि०) [अर्थ + क्त] 1. पूर्णनिश्चित, अभिनेत, कष्ट
उठाना माय में बदा का—धारी वातानार्थीयं—मनु०
१२११६, 2 सब रखने वाला—अर्थ वैव सर्वार्थि-
मय० ७७२७ ।
अर्थवत् (वि०) [अर्थ + भृत्] 1. जिससे सर्वप्रथम शायना
की वाच, 2 योग, उचित 3. उपभुक्त, आनन्द के

इस उचर न ह्रास वाला, साधक—स्तुत्य स्तुतिजि-
 र्धाभिरुपनस्ये मरन्मती—रघु० ४।६, कु० २।३, ४,
 घनी, दौलनमद ३ ममभद्रा, बुद्धिमान्,—अर्थम् गेह ।
 अर्ध (स्वा० पर०) [अर्धनि, अर्धिन] १ कुल देना, व्यक्त
 करना, प्रहार करना, चोट पहुँचाना, मारना—रत्न
 महाभाषि अनुपूर्वाद्यौ—अर्धि० १२।५६ दे० नीचे
 प्र०, २ मानना, शर्वांता करना, निवेदन करना
 —निर्मोक्षिणाद्युर्ध्वं शरद्वृषन मर्दति चानकोर्धि—रघु०
 ५।१७, (प्र० वा घ० पर०) १ (क) मत्ताना,
 पीड़ित करना, दुःखाना—ताम्रादिन, कोप, मय
 आदि (म) प्रहार करना, चोट पहुँचाना, घायल
 करना, बध करना येनारिदन् दैत्यपुर पिताकी—
 अर्धि० ३।६६, अति—अधिक मताना, आक्रमण करना,
 दूट परना—अप्यादीन् शान्तिनः पुत्रम्—अर्धि० १५।११५,
 अधि दुःखाना, मताना, पीड़ित करना ।

अर्धन (वि०) [अर्ध + न्] दुःखाने वाला, मत्तानेवाला,
 —अथ पीडा, कष्ट, चिन्ता, उर्ध्वमत्ता, क्षीय, —अन्,
 —मा १ जाना, हिलना २ पूछना, मीनना ३ बध
 करना, चोट पहुँचाना, पीडा देना ।

अर्ध (वि०) [अर्ध + णिच् + अच्] आधा, आधा भाग
 बनाने वाला, —अर्धम्, —अर्धः १ आधा, आधा भाग
 —अर्धनातो समुत्पन्ने अर्धं (यजति पर्वित, पण्यमर्धं
 दिवसस्य—विक्रम० २, पर्वर्धं विधिच्छन्—श० १।१,
 आधा-आधा बँटा हुआ (अर्धं मन्त्रं को लगभग सब
 मन्त्रा व विनयेण मन्त्रों के साथ जोड़ा जा सकता है
 मन्त्रा के साथ समान में प्रथमपद के रूप में इसका
 अर्थ है—आधा) "हाय—अर्धकायस्य, विरोधियों के
 साथ इसका अर्थ कियविरोधपात्रक है, "व्याघ्र—
 आधा काटा, कमसूत्रक सख्याओं के साथ "सख्या का
 आधा" अर्थ होता है, "तृतीयम्—दो और आधा
 तीसरा अर्थात् अर्द्धाः मन्त्र० अर्ध (नपु०)
 अपांगपूर्वित, आध का सपकना—मूच्छ० ८।४२,
 —अर्धम् आधा शरीर—अस्तः, आधा भाग, आधा
 हिस्सा,—अर्धिन् (वि०) आधे का हिस्सेदार,
 —अर्धः,—अर्धम् १ आधे का आधा, चौपाई—बदोर-
 धांधेमागाम्या तामपोयजाम्ने—रघु० १०।५६, २
 आधा और आधा,—अर्धवैकः आयासीमी, आधे
 शिर की पीडा,—अर्धदोष (वि०) जिसके पास केवल
 आधा ही दोष रहे,—आत्मन् १ आधा आत्मन्
 —अर्धसिन मोचभित्तोर्धित्तो—रघु० ९।७३, मय हि
 दिवीकस्तां समसमार्थानोपेर्धिमस्य—श० ७ (आध-
 नुक् अतिथि की अपने ही आत्मन् पर अर्धसिन देना
 अधिक सम्मान का चिह्न समझा जाता था)
 २ सम्मानपूर्वक अभिवादन करना ३. निन्दा दे मन्त्रित
 —अन्तुः १ आधा शीर, दूध का चोट, २ अनुवी के

नाम्न की अर्धवर्तुत्कार काय, बालेन्तु के आकार की
 मल-छाप—शै० ६।२५, ३. बालचन्द्र के आकार के
 समान शिर वाला बाण (=अर्धचन्द्र नी०), "मौलि
 शिब,—वेध० ५६,—उत्तल (वि०) आधा कड़ा
 हुआ,—रायचन्द्र इति अर्धवर्ते महात्मान—उत्तर० १,
 उल्लिः (स्त्री०) मलबाणी, अन्तर्बाधित बाणी,
 —उत्तल १ अर्धचन्द्रमा का निकलना २ आधिक
 उदय,—आत्मन् सन्नाधि यें बैठने का एक प्रकार का
 आसन,—अर्धकम् चित्रों के पहलुने का अन्तर्बन्ध,
 पेटीकाट,—अर्ध (वि०) आधा किया हुआ, अपूर्ण,
 —आरम्,—री एक प्रकार का माप, बायीं शरीर
 —यथा कावेरी नदी, इसी प्रकार "आहनवी,—मुष्कः
 २४ लड़ियों का हार,—वीर्य गोलाई,—अर्ध
 (वि०) बालेन्तु के आकार वाला, (—अर्ध) १
 आधा चन्द्रमा, बालेन्तु—साधेचन्द्र चित्रित य—कु०
 ६।७५, २ शेर की पूँछ पर अर्धवर्तुत्कार चिह्न,
 ३ बालचन्द्र के आकार के शिरे वाला बाण—अर्ध-
 चन्द्रमूर्धैर्वागीरिचच्छेद कर्षणीमुष्कम्—रघु० १२।१९,
 ४ बालचन्द्र के आकार की मल-छाप ५. अर्धवर्तु के
 रूप में झुका हुआ हाथ, जो कि किसी वस्तु को पक-
 डने के लिए मोड़ा गया हो, "अर्धं हा—तर्दनिना देकर
 बाहर निकालना—वीर्यतामस्वामर्धचन्द्र—पंच० १,
 —अर्धकार,—अर्धकृति (वि०) आधे चन्द्रमा
 के आकार वाला,—आत्मक अगिया,—विष्णु
 —विष्कः १ आधा दिन, दिन का मध्यभाग, २ १२
 घण्टे का दिन,—नाराचः बालचन्द्र के आकार का
 लोहे की नोक वाला बाण,—नारीकः,—नारीचः
 शिब का एक रूप (आधा पुरुष तथा बायीं स्त्री)
 —नाभम् आधी किलरी,—निशा भय्यराधि, बाधी रात
 —पञ्चोत्तल (स्त्री०) पञ्चोत्तल,—अधः आधे पक्ष की
 माप,—अधम् आधा मार्ग (—अधे) मार्ग के अर्ध में,
 —अर्धः आधा पहरा, इक घण्टे का समय,—अधः
 आधा, आधा भाग या हिस्सा,—तर्धमानेन लक्ष्मण
 काकिलिन्—कु० ५।५०, रघु० ७।४५,—आधिक
 (वि०) आधे भाग का साक्षीदार,—आध् (वि०)
 १ आध भाग का हिस्सेदार, आधे भाग का अधिक-
 कारी, २ साक्षी, साक्षीदार,—आत्मकः दिन का
 मध्यभाग, दोपहर,—आत्मकः,—आधकः १२ लड़ियों
 का हार, (आधकक २४ लड़ियों का होता है),
 —आधा १ आधी मात्रा, २ अर्धक वर्ण,—आधे
 (अर्ध०) मार्ग के बीच में—विक्रम० १।१३,—अर्धः
 आधा महीना, एक पक्ष,—आधिक (वि०) १. अर्धके
 पक्ष में होने वाला २ एक पक्ष तक रहने वाला,
 —अर्धः (स्त्री०) आधा किया हुआ हाथ,—अधः
 आधा पहर,—अधः किसी दूरे के साथ दूध पर बैठ

कर मुद्रा करने वाला योद्धा (जो कि स्वयं 'रथी' के समान कुशल नहीं होता)—रथे रथेऽभिमानि व विमुन-
 इच्छापि वृद्धते, वृथी कथं प्रमादी च तेष मेऽर्थं यो मत
 म्हा०, —रात्र आधीरात—अधार्पराधे स्तिमितप्रवीणे
 —रथु० १६५, —विमलं, —विजयवीर्यं वृत् नु
 तथा वृत् से पूर्व विसंगंभ्रनि, —वीर्यवन्त् निरखी
 चितवन, कमकी, —बुद्ध (वि०) अथेइ उन्न का,
 —बैनासिक कणाद का अनुयायी (अर्थविनास का
 दाकिक) —बैशतम् आधा या अपूर्णवच -कु० ५।३१,
 —आसत. वृत्त में केन्द्र से परिधि तक की दूरी,
 —आसत् पचास, —शेष (वि०) जिसके पास केवल
 आधा ही शेष रहा है, —श्लोक आपादलोक या
 लोका के दो चरण, —सीरिन् (पु०) 1 बटाईदार,
 अपने परिधम के बदले आधी फसल लेने वाला किसान
 —वाङ् १।१६६, 2 =६० अधिक, —हार ६५
 सवियों का हार, —हृष्य लघु स्वर का आधा ।

अर्थक (वि०) [अर्थ + क्त] आधा, दे० 'अर्थ'
अर्थिक (वि०) (लो०—को) [अर्थमर्हति—अर्थ + टन्]
 1. आधी नाप रखने वाला 2 आधे भाग का अधि-
 कारी, —कः अर्थसंकर, —वैद्यक्यात्मसुपुल्लो वाह्यणेन
 तु संकृत, अधिक त तु विज्ञेयो भोग्यो विद्विर्न
 संशय—वराह० ।
अर्थिन् (वि०) [अर्थ + इनि] आधे भाग का साक्षीधार ।
अर्थवन् (वि०) [अर्थ + वन्] आधा, दे० 'अर्थ'
 करना, जमाना, —पाषाणानुग्रहप्रतपुच्छत्—रथु०
 २।३५, 2. बीध में डालना, रखना, 3 देना, भेंट
 करना, त्यागना, —स्वदेशार्थपानिच्छये—रथु० २।५५,
 मुक्षार्थेषु प्रकृतिप्रगमा—२३१९, तन्कुल्य महर्ष-
 यम्—मग० १।२७, 4 वापस करना, देना, लौटा
 देना आसत् अमर० 5 छेदना, चोटना—तीक्ष्णनुखा-
 पौर्णवीर्यां नर्तु सर्वां व्यधारयत्—रामा० ।

अर्थितः [अर्थ + णिच् + इत् लुक् पुकागम] हूय, हूय्य का
 माल ।

अर्थे (म्हा० पर०) [अर्थति, आनर्त्, अर्थितुम्] 1
 की ओर जाना, 2 बंध करना, चोट मारना ।

**अर्थे (रुं) कः—अर्थ् [अर्थे (रुं) + णिच्—उद्—इ +
 इ] 1 सुजन, (नामा प्रकार की) रसोली 2 दस
 कराई की संख्या 3 भारत के पश्चिम में स्थित आर्द्र
 पहाड़, 4 लीप, 5 बारह 6 मास पिछ 7. ताप जैसा
 राजस जिसे इन्द्र ने मारा था ।**

अर्थक (वि०) [अर्थ + क्त] 1 छोटा, सुकम, थोड़ा 2
 दुबला, पतला 3 मूल 4 बच्चा, छोना, —कः 1
 बालक, बच्चा—भृगुस्य यामावयमन्तमकं—रथु०
 ३।२३, २५; ७।६७, 2 किसी जानवर का बच्चा
 3. मूल बड़ ।

अर्थे (वि०) [अर्थ + यत्] 1 अर्थ, बहिया 2. आधर-
 नीय, —रुं: 1 स्वामी, प्रभु 2. तीसरे वर्ण का व्यक्ति,
 वैश्य, र्थी वैश्य की स्त्री । सम०—अर्थः सम्मान्य
 वैश्य ।

अर्थवन् (पु०) [अर्थं श्रेष्ठ विमती—मा + कनिन् वि०]
 1 मूल 2 पितरों के प्रधान—पितृनामवंसा शान्तिम्
 —मग० १०।२९, 3 मदार का पीना ।

अर्थवी (वि०) [अर्थ + वीप्, आनुक्] वैश्य जाति की स्त्री ।

अर्थवृ (पु०) [अर्थ + वनिप्] 1. घोड़ा, —इलपीडनप्रघ-
 भवता वजा—सि० १।२।३, 2 चन्द्रमा के दस घोड़ों
 में से एक 3 इन्द्र 4 शोकपूर्णपरिमाण—ती 1 घोड़ी
 2. कुटीनी, दूती ।

अर्थवृत् (वि०) [अर्थे काले देशे वा अञ्जाति अञ्च +
 विन् लुक्] अर्थवत् 1 इस आर आते हुए
 (विप० परञ्च्) 2 की ओर मुका हुआ, किसी से
 मिलने के लिए आता हुआ 3 इस ओर होने वाला 4
 नीचे या पीछे होने वाला 5 बाद में होने वाला, बाद का
 —रु (अव्य०) 1 इस ओर, इधर की तरफ 2 किसी
 एक स्थान से 3 पहले (समय या स्थान की दृष्टि में)
 —यन्मूढेरवाकं सलिलमयं ब्रह्माश्रमभूम् का० १।१५

अर्थवृत् (वि०) [अर्थवृत्तवामो हरेत् परमो नृप—वाङ्
 २।१७३, ११३, १।२५६, 4 नीचे की ओर, पीछे,
 नीचे (विप० ऊर्ध्व) 5 बाद में, परान्त 6 (अधि०
 के साथ) के अन्तर निकट—एते चार्वाणुपवनमूर्ध
 छिन्नवर्षीकुरुगयाम्—स० १।१५, मम०—कालः
 बाद में आने वाला मध्य, —आर्थिक (वि०) आत्मन्-
 काल से संबंध रखने वाला, आधुनिक, ीत आधुनिकता,
 उत्तरकालीनता, —कालम् नदी का निकटस्थ तट ।

अर्थवीर्य (वि०) [अर्थवी + र्य] 1 आधुनिक, हाल का
 2 उम्दा, विरोधी, —वन् (अव्य०) (अथा० के
 साथ) 1 इस ओर 2 के बाद का—वर्षार्थं पृथिव्या
 अर्थवीर्यमन्तरिज्ञात् जग० ।

अर्थवीर्य (तपु०) [अर्थ + असुन् व्यापी घृट् च] बवासीर ।
 सम०—अर्थ (वि०) बवासीर को नष्ट करने वाला
 (—अन्) सुरण, भिलावा (क्योकि कहते हैं कि यह
 बवासीर नाशक है) ।

अर्थवत् (वि०) [अर्थवत् + वत्] बवासीर से वीरित ।

अर्थे (म्हा० पर०) [अर्थति, अर्थितुम्, आनर्त्, अर्थित्]
 (आर्थ प्रयोग—आ०, रावणो नाहते पुत्राम्—रामा०)
 1 अधिकारी होना, शोष होना (कर्म० तथा अनु-
 मन्त के साथ) —किमिदं नायुध्यानमरेष्वरान्माहृति
 —स० ७, 2 अधिकार रखना, अधिकारी बनना—अनु
 यार्त् पिथ्य रिष्यमर्हति—स० ६, न स्त्री स्वातन्त्र्य-
 मर्हति—मनु० १।३ 3 शोष होना, पाप बनना
 —अर्पना मयि बवाङ्, कर्तुमर्हति—ने० ५।११३, वच०

१३७, 4. अन्धम होना, योग्य होना—न से वाचाभ्य-
पचारमूर्हेति—स० ३१८, सर्वे से बचनस्य कर्मो
नाहंति वाच्योक्ति—मनु० २८८, 5. योग्य होना,
अनुवाद 'सकता'—न से बचनस्य वाचिमुमूर्हेति—
स० ४६, पूजा करना, सम्मान करना नीचे दे० २०
7. (अन्धम पुत्र के साथ—कर्मो-कर्मो अन्धपुत्र के
साथ भी—पुत्रपुत्र का प्रयोग होता है), 'मूर्हे' वापु
मुपु आशेष, विष्ट प्रार्थना तथा परामर्श के लिए
प्रयुक्त होता है—इसका अनुवाद होता है—कृपा
करना, अनुग्रह करना, प्रसन्न होना—विद्याभ्यासा-
मूर्हेति सोपुमूर्हेत्—रघु० ५१२५, कृपा प्रतीक्षा
कीजिए;—मूर्हेति मे प्रथम विदुमुन्—२१५८,
[वे०+भा पु० पर०] सम्मान करना, पूजा करना,
—राजाजिहत् मधुपर्कपानि—मट्टि० ११७, मनु०
३११९९।

मूर्हे (वि०) [मूर्हे + भृच्] 1. आचरणीय, आचर योग्य,
पात्र, अधिकारी—अह्विभोजयन् विभो बन्धमूर्हेति पात्र-
कम्—मनु० ८३९२, 2 योग्य, दावेदार, अधिकारी,
(कर्म०, दुमुन्मत्त, तथा समाल में)—वीरार्हे वीरक
रिक्च पतिनासादिती हि स.—मनु० ११४४, सत्कार-
मूर्हेत्य न च कल्पसे—रामा०, तस्मात्पार्श्वे वयं ह्यनु
वार्ताशब्दान् स्वबान्धवान्—मग० ११७, इसी प्रकार
मानं वचं वचं आदि 3 मुहावना, उचित, उपयुक्त
—केवल यानमर्हं स्यात्—वच० ३, (सर्व० के साथ
भी)—न नृपोऽर्हो महोन्नाम् वच० १८७-९२,
4 उचित मन्थ का, कीमत का, दे० नीचे,—हीः 1
इत्थं 2 विष्णुः मन्थं (जैसा कि 'महाहर्षे')—महाहर्ष-
शाय्यापरिवर्तनमभ्यूते—कु० ५१२, (महाहर्षो यस्या
—मस्तिनाथ)—ह्रीं पूजा, आराधना।

मूर्धन्य—भा [मूर्धं + भावे ल्युट्] पूजा, आराधना, सम्मान,
आचर तथा सम्मान के साथ व्यवहार करना—मूर्ध्या-
मर्हेते कर्ममन्वो नमकभूते—रघु० १५५, सि०
१५१२२।

मूर्ध्नि (वि०) [मूर्धं + भान्] योग्य, अधिकारी, पूजनीय—
(सि०) 1 बुद्ध 2. बौद्धधर्म की पुरोहिताई में उच्चतम
पर 3 जैनियों के मुख्य देवता, तीर्थकर—सबंभो जित-
रगादिदोषैर्बलैर्बल्यपूरित, यथास्मिन्वाथंकीदी च देवोः
हन् परतेष्वर।

मूर्ध्नि (वि०) [मूर्धं + न वा०] योग्य, अधिकारी,—सः
1 बुद्ध 2. बौद्धधर्म।

मूर्ध्नी (स्त्री०) पूजा के योग्य होने का द्रव्य, सम्मान,
पूजा,—बोधार्होतीचर्चनीयै—विद्या०।

मूर्ध्नि (स० क०) [मूर्धं + भ्यात्] 1. योग्य, आचरणीय, 2.
प्रशंसा के योग्य।

मनु (म्वा० उभ०) [अकृति-डे, अस्तिमुन्, अस्ति] 1.

सक्षमा, 2. योग्य या उच्चम होना 3. रोचना, हुर
रचना, दे० अकम्।

अमनु [अन् + मनु] 1. विष्णु का संक को उसकी पूछ
में होता है 2. पीकी हस्तात्।

अमकः [अन् + मनु] 1. बुझते बाध, मुर्खें, बाध—
सहाटिका चप्यपुत्रराका—कु० ५१५५, अकं बाध-
कृपापुत्रिदन्—मेघ० ९७, (यह उच्च मनु० भी है
जैसा कि यस्मिन्नाथ के उद्धरण—एवाभावकल्पकालि
ताक्षाम्—वे प्रकट होता है) 2. मरुत के पुत्र 3.
धरीर पर मका कुजा केसर,—का 1. बाध से बच नर्ष
उक की भापु की कथा 2. मर्को के स्वामी कुबेर
की राजधानी—विनाति बस्यां अस्तिराकाका
मनोहृदा वैश्वकल्पम सखीः—भाषि० २१०, अकथा
के बसतिराका नाम यदोषवराभाम्—मेघ० ७। स०
—अक्षिपः—ईश्वरः,—यतिः अकका का स्वामी,
कुबेर—अप्यकीचमरराककेवरो—रघु० १५१५,
—अन्तः पुत्र का किनारा या लड,—कथा 1. मंगा,
मगा में गिरने वाली नदी, 2. आठ से बड़ नर्ष के बीच
की भापु की लड़की,—प्रजा कुबेर की राजधानी,
—अंशुतिः पुत्रो की पतिवर्ता—सि० ९१३।

अमकः—आकः न एषोऽम्यात्, पर्य कल्पम्—स्वार्थं कम्
—सारा०] कुछ नुकी से निकलने वाली राक, बाध
रव की काक महावर (मौनीय काले में लिखो हारा
धरीर के कुछ अर्थ इसके हारा रने वाले से—विशेषक
ने पीरो के तल हार बोध) —(एवाकाश) विरो-
जिताकलकपाटमेन—कु० ५१४४, माकवि० ११५,
अकलकाका परवी ततान—रघु० ७३७, विषयो
हुतायं पुत्र विरवं विष्णोविताकलकप्ययति-मुष्क
४१२५। स०—रतः महावर, काकारत—अकलर-
करताभायकलरररविती, अकापि चरवी उत्था, पय-
कोशममप्रवी—रामा०,—रतः महावर का नाम रव।

अमक (वि०) [न० व०] 1. विज्ञरहित 2. परिपात्र
विज्ञ न हो, अनुभव, अकलकृ—कैलाशहा अरु-
कलाहन्—रघु० १४५,—अन् 2. बुरा या असुख
विज्ञ 2 को परिभाषा न हो, बुरी परिभाषा।

अमकित (वि०) [न० ट०] अमृष्ट, अनपकोकित—अक-
जितामूलतमो नृपेव—रघु० २१२७।

अमकनी (स्त्री०) [न० ट०] दुर्भाव, बुरी नियत, निर्बन्धता।

अमक (वि०) [न० ट०] 1. अनुभव, अज्ञात, अक-
कोकित 2. विज्ञरहित, 3. विल पर कोई विविध
विज्ञ न हो 4. वेकने में अमृष्ट 5. विसर्षे कोई अक्षुभा
न हो, अक-कपट से रहित 6. अर्षो की वृष्टि से
नीच। स०—यति (वि०) अनुभव रूप से
पुनने बाधा,—अमकता अज्ञात कल्प, अककक कल्प

—बहुविधतामनस्यव्यवस्था—कु० ५।३०.—लिंग

(वि०) जो बेध बढ़ते हुए हो, जिनका नाम पना छिपा हो,—बाध (वि०) किसी अल्प वस्तु को संबोधित करने बोलने का—कु० ५।१७।

अलम्बक [अलति स्थिति इति लम् + बिष्प्, लम् अर्धपति इति अर्ध + अन्, स्थानम् सन्, अर्धो न भवति] पानी का लोप ।

अलम्बु (वि०) [ल्भी० बु—ल्भी] [न० त०] 1 जो हल्का न हो, भारी, बड़ा 2 जो छोटा न हो, लम्बा (छत्र शास्त्र में) 3 मगिन, ममीर 4 बहुत, प्रचण्ड, बहुत बड़ा । सम०—उपल चट्टान—प्रतिज्ञ (वि०) ममीर प्रतिज्ञा करने वाला ।

अलम्बकरणम् [अलम् + कृ + ण्यत्] 1 सजावट, सजाना 2 आभूषण (शा० तथा आल०)—सूत्रनि तावदघोष-मुपाकरं पुष्यरत्नमलद्वयं भूष—भृ० १।१२।

अलम्बुरिण्य (वि०) [अलम् + कृ + ण्यत्] 1 आभूषणों का लोकोत्तर, 2 सजाने वाला, मगाने की क्रिया में कुशल ।

अलम्बुरः [अलम् + कृ + घञ्] 1 सजावट, सजाने या अलंकृत करने की क्रिया 2 आभूषण (अल० से भी)—अलम्बुर स्वर्ण्य-विष्णो—१ 3 अलकार जिसके शब्द, अर्थ तथा शब्दार्थ के अनुसार नीच भेद है 4 काव्य के गुण दोष बनाने वाला शास्त्र । सम०—शास्त्रम् काव्य कला तथा साहित्य शास्त्र,—मुषधम् आभूषण बढने के लिए सोना ।

अलम्बुरकः [अलम् + कृ + घञ्, स्वार्थे कन्] आभूषण, सजावट मनु० ७।२००, [अलम् + कृ + लृत्] सजाने वाला ।

अलम्बुहति (स्त्री०) [अलम् + कृ + क्तिन्] 1 सजावट 2 आभूषण, कर्णालङ्कृति—अयध० १३, 3 साहित्यिक आभूषण, अलकार—तदोपी शब्दार्थो मनुपावन-लङ्कृती पुन क्वापि—काव्य० १, जो विद्यामय्येते काव्य शब्दापरिचिनलङ्कृती, अही न मय्ये कस्याहनृण्य-मनल हृती—चन्द्र० सातलङ्कृति श्रवणकोमलवर्ण-रात्रि—भाषि० ३।६, (पहो अं द्वितीय तथा तृतीय अर्थ प्रकट करता है)

अलम्बुधिया [अलम् + कृ + ध + टाप्] अलंकृत करना, आभूषित करना, सजाना । (अल० भी) ।

अलम्बुधरीय (वि०) [न० त०] जो लोधा न जा सके, पार न किया जा सके, जहाँ पहुँचा न जा सके, पहुँच के बाहर ।

अलम्बु [अल + अन् + इ] एक प्रकार की पक्षी ।

अलम्बुधरः,—बुधः [अल सामर्थ्यं भुगानि—अ + अन् गुणा० अन् तारा०] मिट्टी का कलन, मन्दान, घड़ा ।

अलम्बु (अव्य०) [अन् + अन् बा०] 1 (क) पयान्,

यद्येष्ट, काकी (सत्र० वा तुमुन्मन के साथ)—तस्याल-मेया क्षुधितस्य तुन्वी—रघु० २।३९, अन्यथा प्रात-रायाय कुर्माम स्वामल वयम्—भट्टि० ८।१८, (क) समकाल, तुल्य (सत्र० के साथ) देवैस्त्वो हरिदम्बु सिद्धा०, अल मत्तो मत्तनाय- बहुभा० 2 योग्य, सलम (तुमुन्मन के साथ) अल मोक्षतुम्—सिद्धा०, बरेम शमित लोकानल दद्यु हि लक्ष्म—कु० २।५६, (अधि० के साथ भी) —व्यासाभिप लोकानामलमन्मि निवान्ने—रामा० 3 बच, बहुत हो चुका, कोई आवश्यकता नहीं, कोई लाभ नहीं (निषेधात्मक बात रखना), करण० वा क्लान्त के साथ, अलमन्मया गृहीत्या—मान्धि० १।२०, आलप्यालमिद बभोर्पयन् दारानपाहुरुत्—विष्० २।४०, अल महीपाल तथ श्रेण—रघु० २।३४, कु० ५।८२, अलमियिङ्कु कुमुदी—श० ६, इनने कल पयान है, 4 (क) तुल्य-रूप से, पुरी तरह से—अहंस्तेन शर्मनिमुनल वारि-धारा महल्ले—मेघ० ५३, स्वमपि विलतमल स्वधिण मीनयालम्—श० ७।३४, (ख) बहुत अत्यधिक, बहुत ही अधिक,—तुदनि अलम् का० ०, यो मच्छयन बिद्धिन प्रति—अमर० । सम०—कर्मणि (वि०) कार्य करने में मशय, वल, कुशल कु है० 'हू के नीचे,—बौद्धिक (वि०) बौद्धिक के लिए उपेक्षित,—अल (वि०) यद्येष्ट वल रखने वाला, पनवान्,—निरा-दिष्टयल्लक्षेन् प्रणिभु म्यालभय—मनु० ८।१५२,—अल अधिक धूर्त, धूर्तपुत्र धर्मा का अवार—कुक्षीय (वि०) 1 जो मनस्य क योग्य है, कस्य के लिए पयान है, बल (वि०) पयान बल आली, यद्येष्ट शक्तिमानी,—बुद्धि पयान समल भूषुम् (वि०) योग्य, मशम—विनाशयधनभूलाग्ज्यादे लयल सुन—सा० ०।९ ।

अलम्बुध (वि०) [न० त०] जो मधट या बिचवी न हो, दुग्ध रचित वाला स्र-अल पुर ।

अलम्बुध [अल पृथगानि इति अन् - कृ पृथ० पथ्य ब] 1 बदन, छिद्र, 2 कले गुण हाथ की धुलोनी ।

अलम्बु (वि०) [न० व०] 1 गृहहीन, आबारा 2 नाश न होने वाला, अविनश्यत, अ [न० त०] 1 अल-नश्वरता, स्थायित्व 2 ब्रह्म, उप्यति ।

अलम्बु [अलम् अव्ययते अव्ययते का अर्थ—अन्, अन् + घञ्, वा घाक० परम्पयम्] 1 पायल कुला वा मशोमल व्यनि 2 मकेव मदार ।

अलम्बे (अव्य०) [अर + रा + के रय्य क] बहुधा नाटकी में प्रयुक्त होने वाला पैदाकी बोली का दाब जिसका कोई अपना मतलब नहीं ।

अलम्बाम्बु [न० त०] कुल में पानी देने के लिए अइ से बना हुआ म्यान दे० 'आम्बाम्ब' ।

असम् (वि०) [न० त० सम् + विभृ] न समकने वाला ।

असत् (वि०) [न लसति आश्रियते—सम् + सम्] 1

अभिष, स्फूर्तिहीन, सुस्त, झाली 2. बका हुआ, झाला, झालाना,—भार्यबलापकसाधारणरी शारिके—भास-वि०, ५, अमर० ४१०, विक्रम० ३१२, नगन-मलसम्—भा० ११७, 3. मृगु, कोयल 4. डीका, मन् (गति में)—सौशीघ्राटावलकनमला—वेध० ८२, 1 शम०—ईश्या बहु स्त्री विसर्गी मयवरी दृष्टि हो ।

असत्क (वि०) [असत् + कम्] अकर्मण्य, सुस्त,—अ-अकारा, सेट का एक रूप ।

असत्तः—सम् [न० त०] अंवार, अथवली लकड़ी—निर्वाणालातलापयम् पु० २१२३ ।

असत्तु—सु (स्त्री) [न—अस्यते; न + सम् + उ—निष् वसोपस्य वृद्धि—तात्०] स्त्री सोकी—सु (नपु०) 1 तुमकी का बना पान-पात्र 2 तुमकी का हलका फल जो पानी पर तैरता है—कि हि नाभैतत् (स्युनि मन्वल्पलादुनि श्वावाक फलना इति—महा-वी० १, मनु० ११५४ । मम०—असत्तु सोकी का कला हुआ चुरा,— शास्त्र तुमकी का बना बर्तन ।

असत्तु [अ + पठ, मृच् + अच् स्य क] इराध्या ।

असिः [सम् + इन्] 1 भीरु 2 विष्णु 3. सोबा 4 कोयल 5 मयिरा । सम०—कुल्लु भीरा का मृद, सकुल मयिरा के मृद से बरा हुआ—असिकुल मृदकुलकुमुनिराकुलनवदमालतमाले—गी० सकुल कुल्ल नामक पीषा,—असिह्वर, असिह्वराले के भीतर का सोबा, घाटी, कोयल तानु—असि जो भीरों को अच्छा लगे (—इ) लाक कनक, (—वा) विष्णु देसा फूल,—असि भीरों का मुखार,—असिः=असि तु० ।

असिक्कम् [अस्यते मूष्यते—असु + कर्मणि इक्] मत्तक,—असिक्केय हेमकारितना—धामि० २१०१, विद्वेषा० ३६ ।

असिन् (पु०) [असु + इनि] 1 विष्णु 2 भीरा,—मनि-निवाश्रितनि माधवधोनिमायु—शि० १५४,—भी भीरो का मृद,—अरमतासिनी शिमीश्रे—शि० १७२, अमिनीविष्णु कथना वय—असुं १५५ ।

असिन्धः [दे० 'असिन्ध'] एक प्रकार का सौं ।

असिङ्ग (वि०) [न० व०] 1 अिनका कोई विशिष्ट चिह्न न हो, चिह्न रहित 2 दूरे चिह्नों वाला 3 (आ० में) किकका कोई निग न हो ।

असिन्धरः [असिन्धु—असिः असुं + इत् न वरयति इति प् + अच् पुरो० मृच्] असिपात्र, दे० 'असिन्धर' ।

असिन्धुः [अस्यते मूष्यते, असुं—कर्मणि क्तिप्] 1 पर के दरवाजे के सामने का चबूतरा—असासिन्धोरम्यु—भासवि० ५, 2 दरवाजे पर बनी चौकोर अथव ।

असिन्धुः [न० त०] 1 कोयल 2 भीरा 3. कुत्ता ।

असिन्धुः—दे० असिन्धुः ।

असिन्धुः—असुं—दे० असिन्धुः ।

असिन्धु (वि०) [असुं + धीकम्] 1 अग्रिय, अक्षिपर 2. असत्त, विध्या, अमयकुल—असिन्धुकोपाश्रये—भा० १४७, 'अथवा—अमर० २३, ३८, ४३,—अम् 1. मस्तक 2. विष्वाय, असत्पता ।

असिन्धु (वि०) [असिन्धु + इनि] 1 अक्षिपर, अग्रिय 2. सिन्धु, अन्वने वाला ।

असुः [असुं + उच्] छोटा अस्-पात्र ।

असुत्, 'असत्तु [तासित विभक्ते मृदु सोपी यञ्] एक समास जिसमें पूर्व पद की विभक्ति का सोप नहीं होता, उदा०—सप्तविजय, आत्मवेपथु ।

अस्ये, अस्येते (अस्य०) [अरे, अरेरे ह्येच उच्य कः] बहुधा गटकों में प्रयुक्त निरर्थक क्त जो पितापुत्री सोपी में वाये बाते हैं ।

अस्येक (वि०) [न० व० क्] वेदाय—अः परस्य ।

अस्येक (वि०) [न० व०] 1 जो दिखाई न दे—बैसा कि—लोकालोक इवाचक,—रपु० ११६८ [न सोपयत इति अस्येकः—मनि०] 2. विद्यमें कोय न हो 3. (अस्ये कर्म न होलेके कारण) जो मृत्यु के उपरांत किसी दूसरे लोक में नहीं जाता,—अः—अम् [न० त०] 1 जो लोक न हो, 2. सवार की सवार्पित या नाश, लोगों का अभाव—रथ सर्वनिर्वालोकात् नालोक कर्तुर्भवेति—रामा० । सम०—आत्मन्य असा-धारण, असाधारण ।

अस्येकम् [न० त०] असुपयता, दिखाई न देना, अन-ध्यान होना ।

अस्येक (वि०) [न० त०] 1 सान्त, सोमरहित 2. दुष्ट, स्थिर, 3. अथचल 4 जो प्यासा न हो, इच्छा रहित ।

अस्येकम् (वि०) [न० त०] 1 इच्छाओं से मुक्त 2. जो तालकी न हो, विषयो से उत्तमोत्त ।

अस्येकिक (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] 1 जो लोक में प्रचलित न हो, असाधारण, असाधारण 2. जो सामान्य भाषा में प्रचलित न हो, अर्थ—लेखों के लिए विशिष्ट, अर्थ साहित्य में अग्रमूलक, वैदिक 4 प्राक्काल-पत्रिक, 'अम् किसी मन्व का विरल प्रयोग—अलो-किकवाद्यतः स्वकोषे न वानि मावादि समुत्पिक्केक, विलोक्य तैरप्युना प्रचारयय प्रयात् पुत्रोपासमव्य—विका० ।

अस्य (वि०) [असुं + च] 1. तुच्छ, महत्त्वहीन, मन्व्य (विष० महत् या दुर्क) मनु० ११३१, 2. छोटा, बौद्ध, सुल, बरा सा (विष० बहु)—अस्यव हेतो-बंधु ह्युपिअस्य—रपु० २१४७, १, २, 3. अरवलीक जो बोड़ी देर बीधे 4. कनी-कनी होने वाला, विरल,

—लघु, —लघ्व, —लघ्वत् (वि० वि०) 1 जरा 2 जरा से कारण से, —प्रीति (लघ्वेन प्रियते—प्राप्ता०) 3 अनायास, बिना किसी कष्ट या कठिनाई के । सम०—अल्प (वि०) बहुत हो जरा सा, सूक्ष्म, बोझा-बोझा करके, —अणु = प्राण दे०, —आर्वाणिन् (वि०) बोझा चाहने वाला, सतुष्ट, बोझे से ही सतुष्ट, —आणुत् (वि०) बोझी ढेर जीने वाला—मेघ० ४।१५७, (—पु० पु०) 1 छोटी प्राणु का, बच्चा, 2 बकरी, —आहार, —आहारिन् (वि०) मिताहारी, खाने में जीततपर्व का (—र.) परिमितता, भोजन में सयम—इतर (वि०) 1 जो छोटा न हो, बड़ा 2 जो कम न हो, बहुत, जैसे रा कल्पना, नाना प्रकार के विचार, —अज (वि०) ईश्वरी, अचूरा, —अजायक छोटे साधन, —अथ (वि०) बोझी गध वाला (—अथ्) लाल कमल, —अथिष्ठ (वि०) कियमाण्य, —अथ, —अथ (वि०) बोझे वस्त्र धारण किये हुए—अथ्० १।३७, —अ (वि०) बोझा जानने वाला, उबले ज्ञान वाला, मोटी जानकारी रखने वाला, —अत्तु (वि०) 1 टिंगना, छोटे कद का 2 दुर्बल, पतला, —अष्टि (वि०) जिसका मन उदार न हो, अदूरदर्शी, —अन (वि०) जो वनवान् न हो, वनहीन, —अणु० ३।६६, १।१४०, —अधी (वि०) दुर्बलमना, मूर्ख, —अजस्र (वि०) बोझी सतान वाला, —अप्रामाण्य, —अप्रामाण्यक (वि०) 1 बोझे बजान का, बोझी माप का, 2 बोझे प्रमाणो वाला बोझे से साक्ष्य पर निर्भर रहने वाला, —अप्रधी (वि०) विरलता से प्रयुक्त, कमी-कमी प्रयुक्त, —अप्राम्य, —अणु (वि०) बोझा इवास रखने वाला, देने का रोगी (—अ) 1 बोझा इवास लेना, दुर्बल इवास 2 (व्या० में) वर्णमात्रा के महा प्राणनाहीन अक्षर—उदा०—स्वर, अर्धस्वर, अनुनासिक तथा कृच्, ङ्, त्, न्, ज्, इ, द्, अक्षर, —अण (वि०) दुर्बल, वनहीन, कम शक्ति रखने वाला, —अडि, —अडित (वि०) दुर्बलअडि, मूर्ख, अज्ञानी—अणु० १।२।७५, —आविष् (वि०) वाक्—इष्य, बोझा बोलने वाला, —आव्यस (वि०) पतली कपूर वाला, —आवम् (वि०) बोझा सा, जरा सा, —अवि (वि०) छोटे कद का, टिंगला (—अति—स्त्री०) छोटी आकृति या वस्तु, —अव्य (वि०) बोझी कीमत का सन्ता, —अव्यस्र (वि०) बोझी समझ का, अज्ञानी, मूर्ख, —अव्यत् (वि०) बोझी वापु का, कर्मणिन्, —आविन् (वि०) अल्पभाषी, —अविष्ट (वि०) अज्ञानी, अधिष्ठित, —अविष्य (वि०) सीमित परास या धारिता से युक्त, अस्वाल्पविषया मति—रघु० १।२, —अवित्त (वि०) कमजोर, दुर्बल, —अरत्त (पु०) पोखर, छोटा जोहड़ (जो गमियों में तुल जाता है) ।

अल्पक (वि०) [स्त्री०—अल्पिका] [अल्प+कन्] 1 छोटा, बोझा 2 लुट, नीच ।

अल्पव्यय (वि०) [अल्प+पप्+लघ्+मुन्] (बोझा पकाने वाला) लालची, कनुस, मन्त्रीपुस;—अः कृपण ।

अल्पवाः (अव्य०) [अल्प+वाल्] 1 बोझे बग में, जरा, बोझा—बहुको दवाति आमुद्ययिकेषु, अल्पवा आडेषु—पा० ५।४।४२, टीका, 2 कमी-कमी, यथा कदा ।

अल्पित (वि०) [अल्प कृतार्थे निष् कर्मणि—इत्] 1 घटाया हुआ, 2 सम्मान की दृष्टि से नीचा, तिरस्कृत—मया त यकोत्पितकन्यपारायं—नै० १।१५

अल्पिष्ठ (वि०) [अतिप्रयेन अल्प—अथ्त्] म्यूनाति-म्युन्, छोटे से छोटा, अल्पन्त छोटा ।

अल्पीकृ (मना० उभ०) छोटा बनाना, घटाना, बच्चा में कमी करना ।

अल्पीयस् (वि०) [अतिप्रयेन अल्प—ईयत्] अपेसाकृत छोटा, बूझने से कम, बहुत बोझा ।

अल्पा [अल्प्यते इति जन+विष्, अले भूषार्थे लानि गुणानि—ला+क] याता (सबोधन अल्प) ।

अल् (म्ना० पर०) [अवति, अविन वा अत्] 1 रस्ता करना, बचाना, —अमबतामयतां च धुरि स्थित—रघु० १।१, प्रत्यक्षामि प्रपन्नमनूभिरेकमु वस्ताभिरष्टमि-रीश—श० १।१, 2 प्रमन करना, समष्ट करना, सुल देना, विक्रमस्ने न आयवर्ति माजिते त्वभि—रघु० १।१७५, न मायवर्ति सद्योपा रत्नसुरभि मेविधी—१।१५, 3 पसन्द करना, कामना करना, इच्छा करना 4 कृपा करना, उन्नत करना (बातुपाठ में इत् बातु के और अनेक अर्थ दिये गये हैं, परन्तु अल्प साहित्य में उनका प्रयोग किरक होता है) ।

अल् (अव्य०) [कई बार आरंभिक 'अ' को लुप्त कर दिया जाता है जैसा कि 'पूर्वार्गी गीयमिधी बगाल' कु० १।१ में] [अल्-अल्] 1 (सं बो० अल्० के रूप में) इर, ररे, छामने पर, नीचे, 2 (विद्या से पूर्व उपसर्ग के रूप में) यह प्रकट करता है (क) नकल्प, दुःख निश्चय—अवध् (अ) विसरव, परि-व्याप्ति—अवध् (ग) अनावर—अवध्वा (घ) बोझा पन, बीहीनवहलिन (ङ) जायव लेना, सहारा लेना अवलम्ब (च) परिधीकरण-अवधात (छ) अक्ष-मूम्यन्, परावय—अवहलिन वापुत् (वगवर्धति) (ज) आवेश देना—अवकल्प (झ) अवसाद, नीचे लुप्तना—अवत्, अवसाह (ञ) ज्ञान—अवकम्—अवह, 3. तत्पुत्र्य मयास के प्रथम अल् के रूप में हुसका अर्थ होता है—अवकृष्ट, उदा०—अवकोक्तिः—अवकृष्टः कोकिलया सिद्धा० ।

अल्पक (वि०) [अल्-अल्पार्थे—अल्त्] 1. नीचे की

भोर, पीछे की भोर 2. बिनील, बिनीची, —अम्
बिनीच, बीपील ।

अवसरः [अव + क् + अच्] भूल, बुहारन ।

अवसर्तः [अव + क्त + घञ्] टुकड़ा, घञ्जी ।

अवसर्तवन् [अव + क्त + अच्] काटना, घञ्जिया करना ।

अवसर्तवन् [अव + क्त + अच्] 1 बाहर निकालना,
बीचना 2 निष्कासन ।

अवसर्तित (वि०) [अव + क्त + क्त] 1 घुट, अवलो-
कित 2 बात 3 किया हुआ, पूरीत ।

अवसाकः [अव + काच् + घञ्] 1 अवसर, मौका, —जाते
बापहिनीये बहनि रघुधरा को नवम्यावकास —वेपी०

३१७, लक्ष् के माघ प्रसूत होकर इसका अर्थ होता
है— काव के लिए जेठ या अवसर प्राप्त करना,

—लम्बावकाशोर्विषयमा तत्र दम्पो मनोभव - कथा०
११४१ 2 (क) स्थान, जगह ठौर—अवकास किलो-

दम्बागामायास्यथितो ददौ रघु० ४१५८ इसी प्रकार
—अव्यवकाशायवगाहे—विक्रम० ४, यथावकाशं नी

उचित स्थान पर मे आना रघु० ६११४,—अस्माकम-
मित न कर्षाधिहावकास - पृ० ४८८, अवकाशो

विचिकीत्य महाजनघो समागमे- रामा० (क)
पदार्थक, प्रवेश, पहुँच, अन्तर्गमन (छाया) शुद्धे तु

दम्बतले सुलबावकाशा—ग० ७१२२, लक्ष् के माघ
बहुना इन्ही अर्थों में प्रयोग—लम्बावकाशो मे मनोरथ

ग०१, शोकावेगदूषिते मे मनसि विवेक एव
नाशकता लभते पवी०, इ या से पूर्व लगकर भी

अर्थ होता है— 'स्थान देना' 'प्रवेश करना' 'मार्ग
देना' अर्था हि दम्बा निगिरावकासम्- मूच्छ०

३१६, तस्माद्देवो विपुसमनिर्निर्वावकाशोऽवभानाम्—
पृ० ११७६, अवकाशं क्व- रोचना, बाबा

हालना—मयनलकिलोन्वीरकडावकाशा (निद्रा)—
मेघ० ११, 3 अन्तराज, बीच का स्थान या समय 4

हारक, बिचर ।

अवकीर्ण (वि०) [अवकीर्ण + इति] सवम का उल्लेखन
करने वाला, बह्नुअर्थ इत को जोड़ देने वाला, (पृ०—

वी) धर्मनिष्ठ विद्यावी जिसने (वैयुनादिक करके)
अपने बह्नुअर्थ इत को लौटा और समयहीनता का

परिचय दिया, —अवकीर्णो भवेत्तन्वा बह्नुपाटी तु
योगिनम्, गर्भं पशुमात्म्य नैर्हन्त स विपुष्मति—

मात्र० ३१७८०, यन् ३११५५ ।

अवकुञ्चनम् [अव + कुञ्च् + अच्] मुकाव, मोड़,
मिकुञ्चन ।

अवकुञ्चनम् [अव + कुञ्च् + अच्] 1 घेरना, घेरा टाकना
2 आहूट करना, कब के पकड़ना ।

अवकुञ्चित (वि०) [अव + कुञ्च् + क्त] 1 घेरा टुका,
परिरोपित 2 आहूट ।

अवकुञ्चित (यु० क० कृ०) [अव + कुञ्च् + क्त] 1. बीचकर
बीचे किया हुआ, 2. घेर हुआ हुआ 3. निष्कासित,
बाहर निकाला हुआ 4. घेरिया, मोच, पतित, बहिष्कृत

(विप० उल्लेख या प्रकृत)—कः बहु नीकर जो
छाड़-बुझाव जाधि का काम करता है (सर्वावेनष्टोव-

यिनियुक्त); —पथो देवोऽवकुञ्चत्य, बहुकुञ्चत्य वेत-
नम्—मनु० ७१२२६ ।

अवकुञ्चित (स्त्री०) [अव + कुञ्च् + क्त] 1 संवभ
सम्भाना, समावना, समाव्यता—स्वेव मोक्षये अवव-

कुञ्चायेव—सिद्धा० (अवकुञ्चितिरसम्भावना) 2.
उपयुक्तता ।

अवकुञ्चित (वि०) [अवकुञ्च क सुल यस्मात्—अवनम्
(फलसुव्यता) तदीयित्वा लोकात्मस्य इति अवक + ईच्

+ गिति] फलहीन, बबर (बैसा कि वृक्ष) ।

अवकोकिल (वि०) [अवकुञ्च. कोकिलया] कोकिल द्वारा
तिरस्कृत ।

अवक (वि०) [न० ल०] जो टेढा न हो, (आद्य०) ईमा-
नदार, सच्चा ।

अवकम्ब (वि०) [अव + कम्ब + घञ्] अर्थ २ खन करने
वाला, उदाहने वाला, हिनाहिलाने वाला,—कः

चित्ताना, चील, बीकाना ।

अवकम्बम् [अव + कम्ब + अच्] जोर से चित्ताना, ऊँचे
स्वर से रोना ।

अवकम्बः [अव + कम्ब + घञ्] नीचे उतरता, उतार ।

अवकम्बः [अव + क् + अच्] 1 मूच 2 मजहूरी,
किराया, भेत का भाडा 3 किराये पर देना, पढ़ते पर

देना 4 (राजा को दिया जाने वाला) कर या राजस्व,
सूक्त (राजशास्त्र इत्यम् मित्रा०) ।

अवकान्तिः (स्त्री०) [अव + कम्ब + क्त] 1 उतार 2
उपामय ।

अवकान्ति [अव + क् + ग + टाच्] भूल, चुक ।

अवकोकिलः [अव + कुञ्च् + घञ्] 1 बेमेल ध्वनि 2
कोयना 3 बुझपन, निन्दा ।

अवकीर्णः [अव + क् + अच्] 1 टपकना, मोल
पड़ना 2 कचकल, पीप ।

अवकीर्णवन् [अव + क् + अच् + अच्] बूट २ टपकना, मोल
या बूट्टे का गिरना ।

अवकुञ्चः [अव + कुञ्च् + अच्] बेसुरा लकल ।

अवकुञ्चनः [अव + कुञ्च् + घञ्] अचुरा पवन या अचुरा
उषाकना ।

अवकुञ्चः [अव + क् + अच्] नाज, झरपानी, ज्वल, सवही ।

अवकुञ्चनम् [अव + क् + अच्] (आद्य जाधि को) घुसाने
के साधन ।

अवकुञ्चित [अव + क् + अच् + क्त] 1 काकम् किया 2.
बासोपे ।

अवधोषणम् [अव + शिष् + ल्यट्] 1 नीचे की ओर फेंकना, कम के बीच प्रकारों में से एक, दे० 'कर्म' 2 घृणा, नफरत 3 बदनामी, लाछन 4 पराजित करना, दमन करना—की वागदोर, लगी।

अवस्यन्धम् [अव + स्यन् + ल्यट्] बाटना, नष्ट करना।

अवसातम् [प्रा० स०] बहरी गई।

अवगमनम् [अव + गम् + ल्यट्] 1 अवज्ञा, तिरस्कार, अवहेलना 2 निदा, लाछन 3 अपमान, मानभंग।

अवगाह [प्रा० स०] फोडा चुकी ओ गाल पर हँती है।

अवगति (स्त्री०) [अव + गम् + क्तिन्] 1 ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण, समझ, मध्य और निश्चित ज्ञान—ब्रह्मावगतिविधि पुराण ब्रह्मावगतिस्वप्रतिज्ञाना—शत०।

अवगम—**गमनम्** [अव + गम् + घञ्, ल्यट् वा] 1 निकट जाना, नीचे उतरना 2 गमनशा, प्रत्यक्षीकरण, ज्ञान।

अवगाह (मू० क० कू०) [अव + गाह् + क्त] 1 डुबकी लगाया हुआ, घुसा हुआ, डूबा हुआ—अमनह्वरमिवावगाहानि—म० ७, 2 नीचे दबाया गया,—नीचा, गहरा (शा० आल०)—अभ्युन्नता पुरस्तादवगाहा अवधनोवावधनान्—म० ३।७, 3 धनीभूत, जमा हुआ (जैसे रक्त)।

अवगाह—**गाहवम्** [अव + गाह् + घञ्, ल्यट् वा] 1 स्नान, —सुभगसिलावगाहा—म० १।३ सदावगाहक्षमवारिसत्त्व—ऋतु० १।१ 2 डुबकी लगाना, डूबाना, घुसना—परदेशावगाहनान्—हि० ३।१५, अवगाह-अवगाहाना—रघु० ५।४७, दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्य सरो निर्मितम्—भृगुशा० १, 3 (आल०) निष्पान होना, सीख लेना 4 स्नानागार।

अवगीत (मू० क० कू०) [अव + गी + क्त] 1 बेमेल स्वर से गाया हुआ, बुरा तरह से गाया हुआ 2 घम-काया हुआ, गाली दिया हुआ, कोना गया 3 लुप्त बदमाश 4 गान द्वारा अवगाहक रूप से चोट किया गया, —तम् 1 व्ययगान, परिहास 2 चिकार, लाछन।

अवगुण [प्रा० म०] अपराध, दोष, बुराई—अन्यदोष परावगुणम्—अनिल० कि० १।३।४८।

अवगुण्डनम् [अव + गुण्ड + ल्यट्] 1 घुँट निकालना, छिपाना, चुकी बाँटना 2 परा (गुह के लिए) (आल० भी) —अवगुण्डनवीला कुलजाधिनरे-घदि—सा० २०—हनुशीर्षावगुण्डन—मुद्रा० ६, 3 घुँट, चुकी।

अवगुण्डवत् (वि०) [अवगुण्डन + मत्पुं] घुँट से डका हुआ, पर से आवृत्त, बनी नारी—सा० ५।

अवगुण्डिका [अव + गुण्ड + क्त + टाप्] 1 घुँट, परा 2 आवरण 3 चिक या परा।

अवगुण्डित (मू० क० कू०) [अव + गुण्ड + क्त] परा पड़ा हुआ, डका हुआ, छिपा हुआ—रत्नगीतिविराच-गुण्डित—कु० ४।११।

अवगुरणम्—**गुरणम्** [अव + गुर + ल्यट्] घुँटकना, घम-काना, मार डालने के इरादे से प्रहार करना, सत्त्वों से आक्रमण करना।

अवगूहनम् [अव + गूह + ल्यट्] 1 छिपाना, प्रच्छन्न रखना 2 आलिंगन करना।

अवग्रह [अव + ग्रह + घञ्] 1 समस्त पर के घटक अन्वों को अलग अलग करना, सन्निच्छेद करना 2 इत प्रकार की पृथकता की घोषण करने वाला चिह्न 3 विराम, सन्धि का न होना (जैसा कि—बिष् ता च त च मदं च इमा च मा च—इत्तमं च+इमा=वेमा सन्धि नहीं हुई) 4 ए और ओ से परे 'अ' का लोप हो जाने पर 5 चिह्न 5 वर्षा का न होना, सूखा पड़ना अनार्युटि वृष्टिर्भवति वास्यानामवग्रह-विशोषिणाम्—रघु० १।१२, १०।४८, नभोनभस्ययो-र्वृष्टिमवग्रह इवान्तरे—१२।२५, सूषेव सीता तपवग्रह-जनाम् कु० ५।६१, 6 बाधा, रोक 7 हृदयियों का समूह 8 हाथों का मस्तक 9 प्रकृति, मूलम्बभाव 10 दण्ड (विप० अनुग्रह) 11 कोखना गाली देना।

अवग्रहणम् [अव + ग्रह + ल्यट्] 1 बाधा, रोक 2 अनार, अवहेलना।

अवग्रहः [अव + ग्रह + घञ्] 1 टूटना, विधोवन 2 अखन 3 ताप दे० 'अवग्रह'।

अवग्रहः [अव + घट्ट + घञ्] 1 बिल, गुहा, मांढ 2 छिना, चक्की (अनाज पीसने के लिए), 3 ओर से झिलना।

अवग्रहणम् [अव + प् + ल्यट्] 1 रगड़ना 2 मलना 3 पीसना।

अवघात [अव + ह् + घञ्] 1 प्रहार करना 2 चोट पहुँचाना, मारना 3 प्रच्छेद आघात, तीव्र आघात—कषोबघातनिपुणं च नाहवघाता दुर्गीकृता करिबेण (भृगु)—नीति० २, 4 घान भाँड़ को जोखल से टालकर मस्तक से घटाना।

अवघूर्णनम् [अव + घूर् + ल्यट्] घुमेरी भागा, चक्कर माना।

अवघोषणम्—**घा** [अव + घुप् + ल्यट्] 1 घोषणा करना 2 उद्घोषणा।

अवघ्राणम् [अव + घ्रा + ल्यट्] सूँघने की क्रिया।

अवघ्न (वि०) [न० व०] न बोलने वाला, चुप, माफी रहित—अकुलना माध्वमाधवघना विष्टिनि—सा० १, —नम् 1 उक्ति का अभाव, चुपनी, मौन 2 निष्ठा, लाछन, भर्त्सना—'अव (वि०)' भागा न घालने वाला।

अवधनीय (वि०) [अ० घ०] 1. जो कटने के या उच्चारण करने के योग्य न हो, अवधीय या अविष्ट (आवा) —बायोप्यवधनीयेषु तदेष द्विषुषं मयेत्-मनु० ८।२६९, 2 जो निन्दा या लाज्जन के योग्य न हो, निन्दा के मुक्त —लोकेरवधनीया भवति—मुष्क० २, 3 ता कटने में अनीचिय, निन्दा से मुक्ति—उठेया अयवहर्तव्ये कुनो ह्यवधनीयता उत्तर० १।५।

अवध (धा) कः [अव + धि + अच्, पञ्च वा] धवन करना (कच फूल आदि का) —तत् प्रविष्टत कुमुमावधयम-भिनन्दनी सखी—शं० ४, अविष्टतकुमुमावधायमे-दात्—शि० ७।३७।

अवधारणम् [अव + धृ + णिच् + ल्युट्] किसी काम पर नियुक्त करना, प्रयोग, प्रगणन की पद्धति।

अवधुर्-कः [अवनता पूरा अव मय्य वा हो ल] रथ के ऊपर सहारना हुआ कपड़ा, ध्वजा के गिराभाग में बना हुआ (सीरी रैंग) अघोष्ण वस्त्रम्, पिच्छा-वस्त्रममम्रावधयाम जम् शि० ५।१३, दिवमकर-वारमस्यावधुल्लामारकलाय - का० २६।

अवधुर्भवम् [अव + धृ + ल्युट्] 1 पूरा करना, पीसना, धुर्ण बनाना 2 पूरा बुरकाना विशेषकर कोई सुखी दबा पाव पर बुरकाना।

अवधुर्-दं अवधुर्।

अवधुर्कः-कम् [अवनता पूरा मय्य, इत्य मन्वद्-सञ्ज्ञाया कन्] मन्त्रियों की उद्धाने के लिए हुज या चक्र।

अवधुर्-च्छा [अव + छृ + क] आवरण, ढकन—काचनावच्छदान् (अज्ञान) —राधा०।

अवच्छिन्न (भू० क० कृ०) [अव + छिद् + क्त] 1 काटा हुआ 2 अलगया हुआ, बटा हुआ, पक्क किया हुआ 3 (नर्कशास्त्र में) अपने विहित विनियत गुणों द्वारा दूसरी सब वस्तुओं में पक्क की गई वस्तु 4 सीमित, बिल्कुल निर्दिष्ट दिक्कामाद्यवच्छिन्न-अने० २।१ 5 किसी विमोचन में यत्न, विनियत, निर्दिक्त तथा उपपन्न।

अवच्छिन्नि (वि०) [अव + छृ + क्त] मिथित तत् अदृश्यम्।

अवच्छिन्न [अव + छिद् + घञ्] 1 अर, अग ५ सीमा, मर्यादा 3 विच्छेद 4 अर, विवेचन (विमोचनो द्वारा), विनिश्चयीकरण 5 दृढ़ निश्चय, निश्चय, फैला—पन्द्रायेऽन्यत्रवच्छेदे विमोचनमिन्नेत्र - वाक० ६, 6 पदाने का वह गुण जो उसे श्रोत्रों के अलग कर दे, पत्रगतसी गुण 7 सीमा सीधता परिभाषा करना।

अवच्छेदक (वि०) [अव + छिद् + क्त] 1 विभाजक 2 निर्धारक, निर्णायक 3 सीमा सीधने वाला 4 विवे-क, निर्णायक 5 विशेष लक्षण कः 1 जो विषय पर अरे 2 विषय, लक्षण, गुण।

अवच्छेदक [अव + धि + अच्] पराजय, हारों पर विजय, —नेत्रलोकावजयाय वृत् —रघु० ६।६२।

अवच्छिन्ति (स्त्री०) [अव + धि + क्तिन्] विषय, पराजय।

अवज्ञा [अव + ज्ञा + क] अनादर, तिरस्कार, अवमति, अवहेलना (कर्म०, वरप०, अर्थ० या सब० के साथ) —आत्मन्यवज्ञा विधिलोचकार—रघु० २।४१, ये नाम केचिद्विह न प्रथमन्यवज्ञाम्—शं० १।६। तम० —अवज्ञा तिरस्कारपीडित, नीचा दिखाया गया—कुम्भ० नीचा दिखाये जाने की बेइया—मा जीवन् व परा-वज्ञादु अरम्भोऽपि बीवति—शि० २।४५।

अवज्ञानम् [अव + ज्ञा + ल्युट्] अनादर, तिरस्कार।

अवष्टः [अव् + अट्] 1 विषय, गुण 2 गर्त—अवष्टे चापि ये गम प्रसिधेम कलेवर, अवष्टे ये निष्ठीयते—राधा० 3 कुआ 4 शरीर का कोई दबा हुआ या नीचा भाग, नाडीघण, अवटवैभवमेतानि स्थानान्य परीक्षे—पाञ्च० १।१८ 5 शरीर। तम०—कण्ठः गद्रे में घुसा हुआ कठुरा (आल०) अनुभवधुवन्, जिसने सतार का कुछ न देखा हो।

अवष्टि-टी (स्त्री०) [अव् + अटि पञ्जे ङीष्] 1 विषय 2 कुआ।

अवष्टीट (वि०) [नासिकाया नन अवष्टीटम्, अव + टीट् न् नामिकाया मशायाम् नासिकाप्यवष्टीटा, पुष्पोऽप्यव-टोत्] जिसकी नाक बगटी है, बगटी नाक वाला।

अवष्टु [अव + टीक् + टु] 1 विल 2 हुआ 3 गदतन का एकभाग, 4 शरीर का उठा हुआ अंग—दुः (स्त्री०) गदतन का उठा हुआ भाग,—दु (नपु०) विषय, वरार।

अवष्टीमम् [अव + टी + क्त] पक्षी का उड़ान, नीचे की ओर उड़ना।

अवसत्त-सम् [अव + तत् + घञ्] 1 हार 2 कर्णभूषण, अगुडी के आकार का आभूषण, कान का गहना (आम० भा) —गया ममेऽप्रमदावसता—कु० १।५५, स्ववाहन-आमचतवत्सता - ७।३८, रघु० १।५५, 3 शिरो-भूषण मुकुट (आल०) आभूषण का काम देने वाली कोई भी वस्तु—तामरशाकसता अलसनिवेधा—चात० २।१, पुत्रोपावसतामि परित्रामि—रामा०—गुण्यवसन मालत्तम्—मुष्क०।

अवसत्तकः [अव + तत् + क्त] कर्णभूषण, आभूषण, अवसत्तवति (ना० घा० पर०) कर्णभूषण के रूप में प्रयुक्त करना, कानों की कानियाँ—नामा—अवसत्तवति दयमाना प्रमदा शिरोधकुमुयानि - शं० १।४।

अवसत्ति (स्त्री०) [अव + तत् + क्तिन्] फैलाव, प्रसार।

अवसत्त (भू० क० कृ०) [अव + तत् + क्त] गदर किया हुआ, धमकाया हुआ—अवसत्ते नकुलीभितम्—आलेटी सबसे का गर्त धूमि वर अज्ञा होता, (कृपक के

इय से इस प्रकार मनुष्य की अस्थिरता के विषय में कहा जाता है) — अक्षतपत्रे नकुलोपेत त एतत — मित्रा० ।

अक्षतरणम् [प्रा० घ०] अक्षुद्यता, अत्याचकार — क्षीणेऽक्षत-
तम — अक्षर०, अक्षकार-अक्षयमसिद्धाये अक्ष-
ताम्बुजवलेन — शि० १११५७, (यहाँ मल्लि० बहना
है — यद्यपि क्षीणेऽक्षतम तम इत्युक्त तथापि इह
विरोधाद्विसेस्तादरेण मामात्मयेव प्राहम्) ।

अक्षतरः [अव + तु + अच्] उतार, नौ० ३१५३, शि०
११४३ ।

अक्षतरणम् [अव + तु + ल्युट्] 1 स्नान करने के लिए
पानी में नीचे उतारना, उतार, नीचे आना 2 अक्षतर
दे० 'अक्षतर' 3 पार करना 4 स्नान करने का
विशेष स्थान 5 एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद
करना 6 परिचय 7 उद्भूत किया हुआ, उद्भरण ।

अक्षतरणिका [अवतरणे + कन् लृत्वा टाप्] 1 प्रथम के
आरम्भ में किया गया मंगलाचरण, ओं कि, कहते हैं,
स्योपिथ किये गये देवताओं को स्वर्ग से नीचे उतार
जाता है, 2 प्रस्तावना, भूमिका ।

अक्षतरणी [अवतरति धन्वोऽजाया — अवनृ + करणे ल्युट्]
भूमिका ।

अक्षतपणम् [अव + तु + ल्युट्] शान्ति देने वाला
उपचार ।

अक्षतारणम् [अव + तद् + णिच् + ल्युट्] 1 कुचलना,
रोधना, नीलामिका सुरभिष कुमुदस्य मित्रा मृन्नि
स्थितिर्न शरशैरवतादनाति — उतार० १११४ 2
मारना ।

अक्षतानः [अव + तन् + घञ्] 1 फैलाव 2 घनुव का
तनाव 3 आचरण, यधोक्षा ।

अक्षतारः [अव + तु + घञ्] 1 उतार, उदय, आगम
— बसन्तावतारणसमये — वा० १, 2 रूप, प्रकट होना
— मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवताज्जलाबुधुम् — शक०
3 देवता का मृगि पर पदार्थ, अक्षतर लेना — काऽप्येय
सप्रति नव पुरुषावतार उत्तर० ५१३३ यमार्थं-
कामाभोग्नागामिवतार इवाङ्गवान् — रघु० १०८४, 4
विष्णु का अक्षतार — विष्णवेन दत्तावतारणहेन शिल्पो
महासकटि-अर्ण० ३१५५, (विष्णु के दस अक्षतार नीचे
लिखे पलोक में बताया गये हैं — वेदानुदरते अगन्नि-
बहते भूयोऽनुमिद्धते, दैव्य दारयते वलि छलयते क्षण-
क्षय कुर्वते । पीलस्य अयते हल कलयते काशस्थामान-
न्वत, म्लेच्छान्मुद्रयते दयाकृतिरुते कृष्णाय तुभ्य
नम ॥ मत्स्य धर्मो वराहच नरसिंहोऽथ वामन,
रामो रामच च इन्द्राय च बुद्ध कल्की च ते दश ॥ गीत०)
5 वना दर्शन, विकास, अन्न — नवावतार कलादि-
बोलेषुम् — रघु० ३१३६, ५१२४, 6 तीर्थ स्नान

7 (जहाज से) उतरने का स्थान 8. अनुवाच 9.
जोहड़, तालाब 10 प्रस्तावना, भूमिका ।

अक्षतारक (वि०) [स्त्री० -- रिक्ता] [अव + तु + णिच् +
प्लुट्] 1 किसी को जन्म देने वाला 2 अक्षतार
लेने वाला ।

अक्षतारणम् [अव + तु + णिच् + ल्युट्] 1 उतारना 2.
अनुवाद 3 किसी भूत प्रेत का क्षोभ 4 पूजा,
आराधना 5 भूमिका या प्रस्तावना ।

अक्षतीर्णं (भू० क० कृ०) [अव + तु + क्त] 1 नीचे जाया
हुआ, उतारा हुआ 2 स्नात 3 पार गया हुआ, पार
किया हुआ — अपि नामावतीर्णसि बाणगोचरम् —
मा० १ ।

अक्षतीका [अव + तित् लोकम् अस्या, प्रा० व०] स्त्री या
गाय जिसका किसी दुष्टता के कारण गर्भ मार
गया हो ।

अक्षतिन् (वि०) [अव + दी + इति] जो विधाजन करता
है, काटकर पृथक् करता है, पक्ष पात्र भागों में
बाँटने वाला ।

अक्षदश [अव + दश + घञ्] ऐसा चरण जो जल के
स्नान से प्यास मरो, उनेजक ।

अक्षदाघ [अव + दह + घञ् ह्यम् घ] 1 गर्मी 2 शीघ्र
मृत्यु ।

अक्षदात (वि०) [अव + दी + क्त] 1 मन्दर — अक्षदात-
कानि ददा० १०३ 2 स्वच्छ, पवित्र, निर्मल,
परिष्कृत — गर्शविद्यादानधना — का० ३६, 3 उन्मज्जल,
ध्वेत — रज्जिकरकलावदान कुलम् — का० २३३, कुदा-
वदाता कणहसमाला — अहि० २११८, 4 गृणी, सद्गुणो
अन्यमिन्म् — अन्यमिन् न कृतमवदान कर्म — का० ६२,
5 पाला — स ध्वेत या पीना न ।

अक्षदानम् [अव + दा + ल्युट्] 1 पवित्र एवं माय्यता
प्राप्त बुद्धि 2 सम्पन्न कार्य 3 तीर्थ अर्पण या
कीर्तिकर कार्य, पराक्रम, गुरवीरता, प्रशस्त सकलाता,
गणीयमान त्रिगुणवदान — कु० ७५४८, प्रायश्चर्यव-
दाननीचितात् — रघु० ११२१, 4 कथावस्तु 5 काट
कर टुकड़े करना ।

अक्षदारणम् [अव + द् + णिच् + ल्युट्] 1 पारना,
बाटना, मोदना, काट कर टुकड़े करना 2 कुशल,
क्षुण्ण ।

अक्षदाह [अव + दह + घञ्] गर्मी, जलन ।

अक्षदीर्णं (भू० क० कृ०) [अव + द् + क्त] 1 बाँटा
हुआ, टूटा हुआ 2 पिचकाया हुआ, क्षति 3 दह-
बनाया हुआ ।

अक्षधोहः [अव + दुह + घञ्] 1 दुहना, 2 दूध ।

अक्षध (वि०) [व० ङ०] त्याग्य, निष्क, प्रकृता के
अभाव्य — न चापि काञ्च नक्षतित्यक्षम् — वाक्यि०

१।२, २. सचीव, दीप कुल, निष्ठा, अरविचक्र, अत्रिय—उदयवहृदयवर्मा तामयवाचपतेः—रघु० ७।७०, 'अनवक' भी ३ चर्चा के अर्थात्, 4. नीच, अक्षय, —अश्व 1. अयराव, रोप, खोट 2 पाप, दुर्लभस 3 लाक्षण, निष्ठा, शिखरी—उदयवहृदयवर्मा तामयवाचपते—रघु० ७।७० ।

अवधौलम् [अव + धूत् + ल्युट्] प्रकाश ।
अवधानम् [अव + धा + ल्युट्] 1 ध्यान—अवधानपरे बकार सा प्रत्ययान्तिमिते विकीर्णने—कु० ४।२, गुकाप्रता, मावधानी—उदावधान मृषोति—सावधानतापूर्वक मुद्रता है २ अग्रय, सतर्कता, चौकसी, अवधानात् सनकीतापूर्वक, ध्यानपूर्वक—मृग्युन जना अवधानात् किमादिना क्षान्दितास्य—विष्णु० १।२, (पाठ०) ।

अवधार [अव + धृ + धिच् + धञ्] सही निश्चय, सीमा ।
अवधारक (वि०) [अव + धृ + धिच् + धञ्] सही निश्चय करने वाला ।

अवधारण (वि०) [अव + धृ + धिच् + ल्युट्] प्रतिबन्धक, सीमाबन्धन करने वाला, धम्, -धा 1 निश्चय, निर्धारण 2 पृष्ठीकरण, बल 3 सीमा नियत करना (गन्ता के अर्थात्) —यावदवधारणे, एवावधारणे, माय काल्प्ये अवधारणे—अन० 4. किसी एक विद्वाने तक -या करने पूर्वक करके प्रतिबन्ध लगाया ।

अवधि [अव + धा + धि] 1 प्रयोग, प्यान 2 सीमा, मर्यादा अन्तर्गतकारी या एकान्तिक—(स्थान और समय की दृष्टि से), तिारा, समाप्ति—स्वरसाधारणिया मरम्भनी—कु० ४।४३, उपसंहार, याव, मयात् के अन्त में अर्थ होता है 'के साथ मयात् होने हुए' 'यथात्मन' 'यक' एव ने जीवित्वादि प्रवाद—उत्तर० १, 3 नियतकाल, समय—रघु० १६।१२, धोषान् मासान् विरहृदिकसम्पापितम्भाचयेर्षा—मेघ० ८९, अवधि—सहस्रिके अन्ते—तन्मे, अन्तक—तत्तक 4 पूर्वनिर्वाण 5 निरुक्ति 6 प्रमाण, शिखा, विधाय 7 विवर, वर्त ।

अवधीर (धु० पर०) अवहेलना करना, अनार करना, नाका दिखाना,—अवधीरितयुद्धवनस्य—हि० १, धृवा करना, निरुकार करना ।

अवधीर्यम् [अव + धीर + ल्युट्] अनार पूर्वक बर्ताव करना ।

अवधीर्यथा [अव + धीर + ल्युट् + टाप्] अनार, तिरस्कार,—कृतकवसि नाववीर्यामपरार्द्धेऽपि यथा धिरं पथि—रघु० ८।४८, माकवि० ३।१९, अय स ते तिष्ठति सङ्गमोत्सुको विद्य कृते मीय यतोऽवधीर्यथा—उ० ३।१४ ।

अवधूत (धु० क० कृ०) [अव + धृ + क्त] 1 शिखारा हुआ, लहराया हुआ 2 त्यागा हुआ, अस्वीकृत, भुजित—रघु० १९।४३, 3. अपमानित, तिरस्कृत,—तः बहु सम्भासी विद्यते सासारिक बयनो तथा विषय-वासनायो को त्याग दिया है—यो विलम्ब्याथयान् वरुणनाथस्येव स्थित पुमान्, अतिवर्णयमी योगी अवधूत, त उच्यते । या—अनारस्थात् बरेभ्यस्तात् पुनससार-बधनात्, तत्पदस्यर्षिकिडात्वावयवतोऽनिवीर्ये ।

अवधूतम् [अव + धृ + ल्युट्] 1 शिखारा, लहराया 2 क्षोभ, कपकपी 3 अवहेलना ।
अवध्व (वि०) [न० त०] मारने के अयोग्य, पथि, मृत्यु से मुक्त ।
अवध्वः [श० न०] 1 परिव्राण, उन्मोचन 2 घृण, राव 3 अनार, निदा, काँठन, 4 विर कर अन्न होना 5 बुरकना ।

अवध्वम् [अव + ल्युट्] 1 रसा, प्रनिरसा—नलो० १।४, 2 लुपिकर, प्रमनतासायक 3 कायता, इच्छा 4 हृष, लोभो ।

अवधत् (धु० क० कृ०) [अव + धृ + क्त] 1 नीचे झुका हुआ, झिन्, विनय, प्रथय 2 दूबटा हुआ झुकना हुआ, नीचे गिरता हुआ ।

अवधति (स्त्री०) [अव + धृ + क्त] 1 झुकना, मल्लक झुकाना, झुकाव,—अवधतिपथने—मृ० १।२, वि० १।८, 2 पॉष्य में छिपाना, दूबना 3 प्रमाण, दबक 4 झुकाव (अति धनुष का)—धनुषामधनति का० (यहाँ अं का अर्थ 'अवनमन' भी होता है) 5 धामीयता, विनम्रता ।

अवधत्त (धु० क० कृ०) [अव + नहृ + क्त] 1 निमित्त, बना हुआ 2 स्थिर, बैठाया हुआ, बांधा हुआ, बूटा हुआ, एक जगह रक्का हुआ,—अधु डोल ।

अवधत्त (वि०) [श० न०] अवन्त, झुका हुआ—पर्याय-पुण्यस्तवकायनसा—कु० ३।४४, धाम् पैरो पर गिरा हुआ ।

अवध (धा) य [अव + धी + अव्, धञ्, वा] 1 नीचे के बाधा 2 नीचे उतारना ।

अवधत्त (वि०) [नत नासिकाना, अव + नाट्, दे० अवटीट] अघटीट अघटीट का नाम ।

अवधवाच [अव + नम् + धञ्] 1 झुकना, नमस्कार करना, पैरो पर गिरना 2 नीचे झुकाना ।

अवधवहः [अव + नहृ + धञ्] बांधना, पैटी लगाना, कसना ।

अधति—नी (स्त्री०) [अव + धि, पजे धीच्] 1 पृथ्वी 2 बाहुल 3 सती । सम०—ईधत्,—ईधत्, —नाधत्,—धति,—वाकः धृवासी, राधा—निरधति-पतीना तैरकाले धनुषि—रघु०—१०।८६, ११।१३, १२।१३, १३।१३, १४।१३, १५।१३, १६।१३, १७।१३, १८।१३, १९।१३, २०।१३, २१।१३, २२।१३, २३।१३, २४।१३, २५।१३, २६।१३, २७।१३, २८।१३, २९।१३, ३०।१३, ३१।१३, ३२।१३, ३३।१३, ३४।१३, ३५।१३, ३६।१३, ३७।१३, ३८।१३, ३९।१३, ४०।१३, ४१।१३, ४२।१३, ४३।१३, ४४।१३, ४५।१३, ४६।१३, ४७।१३, ४८।१३, ४९।१३, ५०।१३, ५१।१३, ५२।१३, ५३।१३, ५४।१३, ५५।१३, ५६।१३, ५७।१३, ५८।१३, ५९।१३, ६०।१३, ६१।१३, ६२।१३, ६३।१३, ६४।१३, ६५।१३, ६६।१३, ६७।१३, ६८।१३, ६९।१३, ७०।१३, ७१।१३, ७२।१३, ७३।१३, ७४।१३, ७५।१३, ७६।१३, ७७।१३, ७८।१३, ७९।१३, ८०।१३, ८१।१३, ८२।१३, ८३।१३, ८४।१३, ८५।१३, ८६।१३, ८७।१३, ८८।१३, ८९।१३, ९०।१३, ९१।१३, ९२।१३, ९३।१३, ९४।१३, ९५।१३, ९६।१३, ९७।१३, ९८।१३, ९९।१३, १००।१३ ।

—हर (वि०) पृथ्वी पर बुझने वाला, आबारागदं, बुझकर, —प्र वहाइ, —तलम् पृथ्वीतल, —मडलम् भूमंडल, —वहू, —वृद वृक्ष ।

अबोधनम् [अब + निवृ + ल्यट्] 1 प्रशालन, मार्जन —न कुषादिनुसुत्रप्रप पादयोश्चाननेजनम् —मनु० २।१०९, 2 धीनं के लिए जानी, पैर बोझा 3 श्राद्ध में पित्रदान की वेदी पर बिछाये हुए कुशों पर जल छिड़कना ।

अबन्तिः - ही (स्त्री०) [अब + निवृ + ल्यट्] 1 एक नगर का नाम, वर्तमान उज्जयिनी, हिन्दुओं के सात पवित्र नगरीयों में से एक, कहा जाता है कि यहाँ मरने से शाश्वत सुख मिलता है—अथाध्या मधरा भाषा काशी काञ्चिचरितिका, पुरो हारावती वैव सप्तैता मोक्षदायिका । अबन्ती की स्त्रिया काम-कला में अत्यन्त कुशल हानी है, तु० आत्यय एव निपुणा मुद्गशो रत्नकर्मणि—वालग० १०।८२, 2 एक नदी का नाम, —(पृ० - ब० व०) एक देश का नाम जिसे काञ्चकल मालका कहते हैं, तथा वहाँ के निवासियों, इसकी राजधानी मित्रा नदी के तट पर स्थित उज्जयिनी नगरी है—इत्येके नगराचल में महाकाल का एक मन्दिर भी है, अबन्तिनामोऽयमदधवाहू —रघु० १।३२, असी महाकालनिकेतनस्य वसप्रदूर किल चन्द्रभासे —(१।३४, ३५, प्राचावन्तीनुदयनकथाको- विग्रहप्राम्द्वान् - मेघ० ३०, अकनीपुत्रजयिनी नाम नगरी—का० ५२ । सम०—मुरख अबन्ती नामक नगर, उज्जयिनी ।

अबन्ध (वि०) [न० त०] जो बन्धन न हो, उर्वर, उपजाऊ ।

अबपतनम् [अब + पत् + ल्यट्] उतरना, नीचे आना ।

अबषाक (वि०) [अबकृष्ट पाकी यत् - व० न०] बुरी तरह पकाया हुआ, - क बुरी तरह से पकाना ।

अबषातः [अब + पत् + घञ्] 1 नीचे गिरना—अबषातरथा- रथातम्—मनु० २।३१, पैरो पर गिरना, (आल०) कापमुसी 2 उतरना, नीचे आना 3 बिबर, गर्त 4 विशेषकर हाथियों को पकड़ने के लिए बनाया गया बिल या गर्त अबषातानु हस्त्येष गर्ते छन्ने नृणा- दिना—यादव रोधामि निधन्मन्वषातमाल करीष इत्ये पश्य रसा०—रघु० १६।१८ ।

अबषातनम् [अब + पत् + निवृ + ल्यट्] गिरना, टुकुराना, नीचे गिरना ।

अबषातित (वि०) [अबषात (ना० वा०) + निवृ + क्त] आतिवहिकृत, ऐसा अतिवृत्त जिसको विगदरी के गेग अल्प वाय में मोशन कराने के लिए अनुमति, न देते हो ।

अबषीरः [अब + पीर + निवृ + घञ्] 1 नीचे दबाना, दबाव 2 एक प्रकार की औषधि जिसके सूखने से शीत होती है, नरस ।

अबषीरनम् [अब + पीर + निवृ + ल्यट्] 1 दबाने की क्रिया 2 नरस, ना शक्ति, आशात ।

अबबोध [अब + बोध + घञ्] 1 जानना, जागृक होना (विप० स्वप्ने) - यो तु स्वप्नावबोधी तौ भूतानां प्रत्योदयो कु० २।८, मनु० ६।१७, 2 ज्ञान, प्रत्यक्षी-करण स्वप्ननामवहाराइभुव साम्ने रजस्वामपराव- बोध रघु० ७।४१, ५।६४, प्रतिकूलेषु दीवन्त्याव- बाय क्रोध इत्येते सा० ६०, 3 विषेचन, निर्वाय 4 निषाण, ममूचन ।

अबबोधक (वि०) [अब + बोध + क्त] सकेतक, दवाने वाला, क 1 मूय, 2 भाट 3 अध्यापक ।

अबबोधनम् [अब + बोध + ल्यट्] ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण ।

अबभङ्ग [अब + भङ्ग + घञ्] नीचा दिखाना, जीतना, हराना ।

अबभोज [अब + भोज + घञ्] 1 चमक-दमक, कानित, प्रकाश 2 ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण 3 प्रकट होना, प्रकाशन, अल पेरथा 4 रम्य, पट्टव भोज 5 मिथ्याज्ञान ।

अबभासक (वि०) [अब + भास् + क्त] प्रकाशक, कम् परब्रह्म ।

अबभूम (वि०) [अब + भू + क्त] लिकुड़ा हुआ, मुका हुआ, टड़ा किया हुआ ।

अबभूष [अब + भू + घञ्] 1 मुख्य यज्ञ की समाप्ति पर श्राद्ध के लिए किया जाने वाला स्नान भूष कोट्यल कुण्डाधनो मेधेनावभूषादनि रघु० १।८४, १।२०, १।१३१ १।३।६१, 2 मार्जन के लिए कुल 3 अनिश्चित यज्ञ जो प्रबहन मुख्य यज्ञ की श्रुटियों की शान्ति के लिए किया जाता है, सामान्य यज्ञानुष्ठान - स्नानकवचनमे तन्मन्त्राय मि० १।४।१० । मय० - स्नानम् यज्ञानुष्ठान की समाप्ति पर किया जाने वाला स्नान ।

अबभ्र अपहरण, उठाकर ले जाना ।

अबभ्रट (वि०) [नन नासिकाया - अब्र + भ्रटच्] बपटो नाक वाला ।

अबभ्र (वि०) [अब + अब्र + क्त] 1 पापपूर्ण 2 क्षणित, कभीना 3 भाटा, नीच, छटिया (विप० परम) -अबभ्रकान- लकानवमा पुरीन् - रघु० ९।१४, वै० 'अबवच' 4. अगला, धनिष्ट 5 पिछला, सबसे छोटा ।

अबभ्रत (मं० क० कृ०) [अब + भ्र + क्त] क्षणित, क्षुण्णित । सम० अब्रकुस, अनुना को नामने वाला हाथी, यदयत जन्नेनुकामाऽयमताइकुसुवह—मि० १।२।१६ ।

अबभ्रति (स्त्री०) [अब + भ्र + क्त] 1 अब्रकुसना, अनारद 2 अरवि, नापसदनी ।

अबभ्रकी [अब + भ्र + क्त] 1 कुचपत्ता, 2 बर्बाद करना, अथाहार करना ।

अबभ्रसं. [अब + भ्र + घञ्] स्वसं, मयसं ।

अधर्मः [अध + मृ + धञ्] 1 विचारविमर्श, आलोचना, 2 नाटक की पाँच मुख्य सन्धियों में से एक - अध मुख्यकलीपाय उद्भूतनी गर्भतोऽधिक., शापाद्यै साम्प्रदायिक सौज्यमर्थ इति स्मृत. । सा० द० ३६६; 'विमर्श' भी इसी को कहते हैं, 3 आक्रमण करना ।

अधर्मवेषम् [अध + मृ + ल्युट्] 1 असहजगीलना, अवहिन्युता 2 मिटा देना, मिटा डालना, स्मृतिपत्र से निष्कासन ।

अधर्मात् [अध + मृ + धञ्] अनादर, तारस्कार, अध-हेलना ।

अधर्मात्मन्-ना [अध + मृ + णिच् + ल्युट् युच् वा] अनादर, तारस्कार ।

अधर्मात्मिन् [अध + मृ + णिच् + णात्रि] तारस्कार करने वाला, भूषा करने वाला, अपमान करने वाला धिक्कामुपस्थिन्धोऽजमानितम् - शा० ६, अथि धाम्-भुषात्वमानिनि - शा० 3 ।

अधर्म्यम् (वि०) [अध + मृ + ण्यत्] तिर झुकाने हुए । सम० - अथ (वि०) तिर को नीचे झटका कर लेटा हुआ, जैसे कि सन्तुष्य (वि०) देव उतानसया देवा अधर्म्यंशया मनुष्या ।

अधर्मोक्तम् [अध + मृ + ल्युट्] स्वतंत्र करना, मुक्त करना, डीला करना ।

अधश्च [अध + च + अच्] 1 (शरीर का) अंग - मुख-द्वयमुक्त्वा ताम् - रघु० १२:४३ अधश्च ४०, ४६, सदश्च, -कस्मिंश्चिदपि जीवति नन्वा-न्यायवचने-मुद्रा० १ 2 भाग, अर्ध 3 तर्कमय मुक्ति या अनुमान का घटक या अंग (यह पाँच हैं प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन) 4 शरीर 5 घटक, सविधाधो, उपादान (जैसे किसी प्रमिथन के) । सम० अधश्च के सविधाधो अधो का आशय ।

अधश्चक्षः (अध्) [अधश्च + श्च्] अंग अंग करके, अलग २, टुकड़े टुकड़े करके ।

अधश्चक्षि (वि०) [अधश्च + क्षि] अधश्च, अंग या उपादानों से बना हुआ, (पु०-धो) 1 पूर्ण 2 अनुमान-वाच्य या कोई तर्कसाधक सधि ।

अधर (वि०) [न धर इति अधरः म० त०, धृ + अच् वा०] 1. (क) आधु में छोटा-; मासेनाबर = दासाबर - सिद्धा० (स) बाध का, पथकर्त्री, पिच्छला (सथय और स्थान की दृष्टि से) -यदवरं कौशाम्बा, यदवरमाग्रहाक्षम्बा - सिद्धा० 2. अनुवर्ती, उत्तरपत्नी 3 शीघ्र, अपेक्षाकृत शीघ्र, दृष्टिया, कम 4. शीघ्र, महत्पथीन, सबसे बुरा, निम्नतम (वि०) उत्तम) अन्धकृत्यमवरं स्मृतम् - काव्य० १, दूरंगे ह्यवरं कमं-दुष्टिधोपाद्रमज्जद - सम० २:४९, क्वचरुवागः सुधा पिधानादधीलाचरारवि - अणु० २:२३८ 5 अन्तिम

(वि०) प्रथम) सामान्येया प्रथमावत्त्वम् - कु० ७:४४, 6 न्यूनानिन्यम्, (श्राय समाप्त के उत्तरपद के रूप में अको के साथ) -यदवरं साधितिविधाय - अणु० ८:६०, अ्यवरा परिपद् शेषा - १२:११२, वाज० २:६९, 7. परिचयो, -रघु हाथी की पिच्छली बाध (- रा भी) । सम० अधः 1 घोड़े से थोड़ा भाग, न्यूनानिन्यम् 2 उत्तरार्ध 3 शरीर का पिच्छला भाग, -अधर (वि०) नीचतम, सबसे दृष्टिया - न हि प्रकृष्टान् प्रेष्यान्नु प्रेषयन्वरावरात् रामा० - अन्ध (वि०) अन्त में कहा हुआ, - अ (वि०) अपेक्षाकृत छोटा, बनीयान् (- जः) छोटा भाई - विधर्मराजा-वरजा रघु० ६:५८, ८४, १२:३२, - बर्ध (वि०) शीघ्र जाति का (- भः) 1 शूद्र 2 अन्तिम या शीघ्र वर्ण, बर्धक, - बर्धकः शूद्र - अतः सूर्य, - अतः परिच-धो पहाड (जिसके पीछे सूर्य डूबना हुआ समझा जाता है) ।

अधरतः (अध्) [अधर + तसिच्] पीछे, बाध में, पिच्छला, पथकर्त्री ।

अधरति (स्त्री०) [अध + र्त् + क्तिन्] 1 उठरना, रुकना 2 विराम, विधाय, आराम ।

अधरोक्ष (वि०) [अधर + क्ष] 1 पदावनत, झोटा विना हुआ 2 वृत्तित ।

अधश्चक्ष (वि०) [अध + क्ष + क्त] 1 टूटा हुआ, पटा हुआ 2 रोणी ।

अधश्चक्षिः (स्त्री०) [अध + क्ष + क्तिन्] 1 स्काबट, प्रतिबन्ध 2 बेरा 3 प्राप्ति ।

अधश्चक्ष (वि०) [व० स०] कुकर, विकलांग ।

अधरोक्षकः [अध + क्ष + ष्यञ्] भूख न लगाना ।

अधरोक्ष [अध + क्ष + धञ्] 1 बाधा क्वाबट 2 प्रति-बन्ध अन्त प्राणावरोध - मुञ्ज० १:१, 3 अन्तपुर, अनामभाना, रनसव जिन्ये विनीतैरवरोधवली - कु० ७:७३, १ गृहेषु राज - स० ५:३, ६:११, 4. राधा की राधियाँ (समर्पित रूप से) (श्राय व० व०); - अधरोक्षे महत्पथि - रघु० १३:२, ४:६८, ८७, ६:४८, १६:५८, 5 बेरा, बन्दीकरण 6 किलावरी, मासेवरी, 7 दक्कन 8 बाधा, गोट 9 शीकीदार 10 हलकापन, शीबलापन ।

अधरोक्षक (वि०) [अध + क्ष + ष्यञ्] 1 बाधा डालने वाला, 2 बेरा डालने वाला, -कः पहेरेदार, -कम् रोक, बाध ।

अधरोक्षम् [अध + क्ष + ल्युट्] 1 किलावरी, मासेवरी 2 बाधा, 3. स्काबट, दक्कन 4 राधा का अंत-पुर - राधावरोधकम् रवतारयन्त - शि० ५:१८ ।

अधरोक्षक (वि०) [अधरोक्ष + क्त] 1 बाधाबन्धक, दक्कन डालने वाला 2 बेरा डालने वाला । -कः

अतपुर का पहरेदार.—का अतपुर की पहरेदार-
स्त्री—ययस्तुराधिहोअरोधिका—वि० १२।२०।
अधरोधिन् (वि०) [अधरोध+इनि] 1 रुकानट डालने
वाला, बाधा डालने वाला, 2 घेरा डालने वाला।
अधरोधम [अध+रुह्+निष्+ल्यट्, युकायम] 1
उन्मूलन 2 नीचे उतारना 3 ले जाना, अञ्चित
करना, घटाना।
अधरोहः [अध+रुह्+घञ्] 1 उतार 2 नीचे से छोटी
तक बूझ के ऊपर लिपटने वाली लता 3 अक्राम 4
लटकनी हुई धागा (जैसे बड़ की) - अधरोहगत-
कीर्ण बटमासाद्य तस्थु - रामा० 5 (सगीत में)
स्वरो का ऊपर से नीचे आना।
अधरोह्यम् [अध+रुह्+ल्यट्] 1 उतारना, नीचे आना
2 चढ़ना।
अधर्व (वि०) [न० व०] 1 राहूल 2 बुरा, नीचा,
—अं 1 लोकापवाद, अपकीर्ण, कलक, बड़ा, -सोडु
न तत्पूर्ववर्णानीधे -रघु० १।३८, 2 लाइन, निन्दा
—न चावदद्भर्तुवर्णमायां—५७, कोई दुबचन नहीं
कहा।
अधस्त (वि०) [अध+लृ+घञ्] [‘कस्त’ भी
लिखा जाता है] श्वेत, —अ श्वेत वर्ण।
अधस्तम् (वि०) [अध+लृ+क्त्+न्] विपका हुआ, लया
हुआ, सटा हुआ, —अ कयर।
अधस्तम्ब [अध+लम्ब+घञ्] 1 नीचे लटकना
2 महारे लटकना सहाग (आल० भी) - तन्नुआलाव-
लम्बा—मेष० ७०, कुनूयन भवनहार मेवां भर्तु०
१।६७, 3 स्तन, जाट, आश्रय (शा० तथा आल०)
—गावलम्बयमना—रघु० १९।५०, दूसरे के सहारे चलने
वाली, —सन्ततिविभ्रंदिनवलम्बानाम्—म० ९, देवे-
नेश दत्ताहस्तावलम्बे—रत्न० १।८, 4 अन्त बैसाखी
या छड़ी जो सहारा के लिए रखी जाती है।
अधस्तम्बम् [अध+लम्ब+ल्यट्] 1 स्तन, सहारा, आश्रय
—अधस्तम्बनाय दिनमर्तुरभून् पतिष्यत करसहस्रमपि
वि० ९।६, प्रथमानविलम्बयतेरत्नम्बन्वायं—श० ५।३,
मम पुच्छे करावल्मन्व ह्यन्योनित्—हि० १,
2 सहायता, मदद।
अधस्तित्त (मू० क० क०) [अध+लृप्+क्त] 1 घमडी,
उड़त, अधिमानी 2 लिपा गुना, सना हुआ।
अधस्तोड (मू० क० क०) [अध+लृह्+क्त] 1 बाया
हुआ, भवाया हुआ—दर्वरथोवनीदे—छ० १।७,
2 बाटा हुआ, लप लप करके पीया हुआ, स्पृक्त
(आल० भी) —नधवीनवावलीयावया—दश० १७,
अधानी से व्याप्त, —अधश्चालावलीयप्रतिवल्कलये-
रत्नरोवियाम्—वेणी० ३।५, बागें ओर से धिरा
हुआ 3 निपका हुआ, नष्ट किया हुआ।

अधस्तीला [अधरा स्तीला—श्रा० सं०] 1 शीशा, श्लेष्,
प्रमोद 2 तिरस्कार।
अधस्तुञ्चनम् [अध+स्तुञ्च+ल्यट्] 1 काटना, फाड़ना,
उखाड़ना, केना 2 उन्मूलन।
अधस्तुञ्चनम् [अध+स्तुञ्च+ल्यट्] 1 भूमि पर लोटना या
लुटकना 2 लटाना।
अधस्तोषः [अध+लृप्+घञ्] 1 तोड़ना, धरोधना,
छोड़ना 2 बुरची हुई कोई वस्तु।
अधस्तोषा [अध+लृप्+अ+टाप्] 1 राहना 2 किसी
को मुग्धजित करना।
अधस्तेप [अध+लृप्+घञ्] 1 अहंकार, घमड
—प्रियसम्भोगवन्धस्तेपमद वि० ९।५१, (यहाँ अ'
का अर्थ 'लेप करना' भी हो सकता है), —अधस्तमाना-
वलेषा मृदा० ३।२२, 2 अभाचार, आक्रमण,
अपमान, कलात्कार कि भवतीनाममुरावलेषेनाप-
राद्धम—विक्रम० १, ददुष्य पवनावलेषजं मुञ्जति वाप्य-
मित्राञ्जनाविलम् रघु० ८।३५, 3 लीपना पीतना,
4 आभूषण 5 मथ, ममात्र।
अधस्तेपनम् [अध+लृप्+ल्यट्] 1 लीपना पीतना
2 नेत्र, कोई चिकना पदार्थ 3 सथ 4 घमड।
अधस्तेह [अध+लृह्+घञ्] 1 घाटना, लपकपाना
2 अर्क 3 चटनी।
अधस्तेहिका—अधस्तेह (३)।
अधस्तोक्त [अध+लृक्+घञ्] 1 देवना, इष्टि डालना,
2 इष्टि।
अधस्तोक्तम् [अध+लृक्+ल्यट्] 1 अधस्तोक्त करना
इष्टि डलना, देवना,—तो बभूववस्तोक्तनसमा रघु०
१।१६०, 2 इष्टि में रचना पथेवेषण करना—दीर्घि-
ह्वाचस्तोक्तनवातागना मालवि० १, 3 इष्टि, शीश
4 नखर, प्राची योगनिदानविशदं पाकनैरधस्तोक्तं
—रघु० १०।१४, 5 लोख करना, पूछना।
अधस्तोक्तित (मू० क० क०) [अध+लृक्+क्त] देवा
हुआ,—अध इष्टि, प्राची।
अधस्तरक [अध+लृ+अपु तत सजायां हुन्] 1 रध,
छिद्र 2 विडकी, दे० 'अधस्तरक'।
अधस्तराः [अध+लृ+घञ्] 1 निन्दा 2 विषबाध,
भरोमा 3 अधोलना, अनादर 4 सहारा, आश्रय 5
बुरी गिफाँट 6 अवेसा।
अधस्तरावः [अध+लृप्+अपु] छिपटी, लपकी।
अधस्त (वि०) [न० त०] 1 स्तन, मुस्त 2 जो धव्य या
आज्ञाकारी न हो, अधस्ताकारी, स्वेच्छाकारी 3 जो
किसी के अधीन न हो—अधस्तो विषयान्वा—का०
५५, 4 लावार, इन्द्रियों का सस कु० ६।५५, 5
पराधित, असाहाय, शक्तिहीन—कार्येते ह्यधस्तः—
मग० ३।५, कथयवतो ह्यधस्तोविष विद्यावि—मुञ्ज०

१०।११। वस-—इतिवर्धित (वि०) विसका म
वीर इतिवर्धित इति वृत्ते के अवीर व ही ।

अवसकृतः [न० ङ०] वी वृत्ते की इका के अवीर व ही ।

अवसातानम् [प्रा० ष०] 1. नष्ट करना 2. काटना, काट
विराता 3. झूलना, झूठ जाना ।

अवसेकः [अव + सिन् + वञ्] वसा हुआ, सेप, बाड़ी,
—वृत्तात्—आसि व० ५, क्या का सेप भाग, अर्ध
या आसि विसका केवल नाम ही जीवित हो या क्या
महानी में ही विसका बर्धन हो—अथवा विसका
केवल नाम ही सेप रहा हो, आसि० रूप से मृत
पुत्र के लिए प्रयुक्त, —सायसेपमिष भद्रिम्या
वचनम्—आसि० ४, अथवात्—युग्मे मे आसिसेप
वचः—आ० २, नेरी बात मुने, मुझे अपनी बात पूरी
करते रो ।

अवस्य (वि०) [न० ङ०] 1 जो वस में न किया जा
सके, विसकी निवन्धन में न लाया जा सके 2 अवि-
वारी—अथ वरपक्षवदयेव वनो—वेधी० ४।५, 3.
अनुपस्थ, आशयवकः । ममः कुः मेरा मेटा जिसकी
मिमाना वा शासन में रहना अवभव हो ।

अवस्यम् [अव०] [अव + षी + ङम्—तारा०] 1
आवस्यकण मे, अविवायं रूप से—स्वाभ्यस्त नव-
जलमयं मोक्षपिपित्तमवस्यम्—मेघ० १५, 2 निवन्ध
से, बाड़े कुछ भी हो, संबन्ध, बर्धन, विन्धदेह
—अवस्य यत्तारिचित्तारभुविष्यति विषया—मनु० ३।
१५, तां तावन्न विषयान्वातात्परायमेकपत्नीम् [इत्य-
सि] मेघ० १०।१३, अवस्यसेव आस्यत् निरवयपूर्वक
यदि इति व० इ० के साथ जोड़ा जाता है तो इसका
अर्थ अनुनासिकान् मृत हो जाता है— अवस्यवाच्य
—ओ निविधत् रूप से पकाया जाव, अवस्यवाच्ये—ओ
निविधत् रूप से किया जाता है ।

अवस्यमानिविम् [वि०] [अवस्यम् + इति] अवस्य
होने वाला, अविवायं—अवस्यमानिविन्धो भावा भवति
महाभागि—सि० प्र० २८ ।

अवस्यक (वि०) [अवस्य + कन्] आनटाक, अविवायं,
अनुपस्थ ।

अवसता [अव + षी + क्] कुहरा, पाला, घृह ।

अवसत्तः [अव + षी + ष] 1 कुहरा, मीस 2 पाला,
पकेर मोक्ष—अवसत्तःअवसत्तःस्य कुहरिकस्य चासताम्
—उत्तर० १।१९, 3 घसद ।

अवस्यवचम् [अव + धि + वञ्] आज के ऊपर से कोई
वस्तु उतारना (वि०) [अविधयवचम्]—अविधयवाच-
यवनासाविपुर्वादिभूतो व्यापारककारः पाकारिकस्य
वाच्य—आ० ४० २ ।

अवस्यन् [वृ० ङ० इ०] [अव + साप् + ण] 1.
बहारा विना क्या, साता क्या, चकड़ा क्या 2. से/पर

कटा हुआ 3. निकटवर्ती, संलग्न 4. वातायुक्त,
सूका हुआ 5. बोना हुआ, संवा हुआ ।

अवस्यन्त्यः [अव + साप् + ण] 1. टेक लगाता,
सहारा देना 2. आवण, आवार—अवस्यन्ती-
सुतावष्टम्—आ० १४, अष्टमसुतावष्टमनिवन्ध—
वा० १, उत्पन्नमार्गं वैदिकवर्धं करोति—वच० १,
3. अष्टकार, वस 4. सुनी, लस 5. होना 6. उपकम,
आरम्भ 7 उदरगा, रोक 8. पाठन, पढ़ निवन्ध 9.
पक्षागत, सम्मता ।

अवस्यन्तानम् [अव + साप् + ण] 1. टिकना, सहारा
देना 2. सुनी, लसम् ।

अवस्यन्तव्य (वि०) [षी०—वी] [अवष्टम् + वष्ट]
मुनहरी, सोने का बना हुआ, अथवा कानों के बराम्भ
करा,—रवीरवष्टमवन्धे पवित्रा—रघु० १।५३
(अं का अर्थ उपर्युक्त इव से किया जाता है, परन्तु
प्रस्तुत प्रश्न में इसका अर्थ हीना 'जीवन्ती,
साहसी') ।

अवसत्त (वृ० इ० इ०) [अव + साप् + ण] 1. स्वमित,
प्रस्तुत 2. संपर्कीकृत, पर्यर्षी ।

अवस्यविषय [अवष्टत् सविधनी अयं क्व] 1. बरदे की
पट्टी को मुट्ठों के नीचे पैरों में लपेटे जाती है ३०
प्रकार पट्टी या पट्टे से बांधना या पट्टका बांध कर
विशेष मुद्रा में होना—अथवाः श्रीधारास्य इत्या
वैवासाविषयका—मनु० ४।११२, 2. अतः वेष्टन,
पटका या पट्टी ।

अवस्योन्मन् [अव + ण् + षी + ण] पक्षियों के मुँह की
नीचे धे कीर उतारन ।

अवस्यः [अव + सो + क्वम्] 1 आवासास्वान, घर 2.
गोष 3 विद्यालय वा महाविद्यालय, दे० 'आवस्य' ।

अवस्यन्त्यः [अवस्य + ण्] महाविद्यालय, विद्यालय ।

अवसत्त (वृ० इ० इ०) [अव + ण् + ण] 1 उपास
(आसि० वी) शिषिक 2 तलाप, अवसित, बीता
हुआ—अवसत्तानां रात्री—हि० १, 3. बोना हुआ,
बोधा—रघु० १।७० ।

अवसत्तः [अव + ण् + ष्व] 1. नीका, सुपुत्र, वस्य
—अवसत्तार हास्यानि—अ० २, अवसत्तारवसत्त-
प्रदानव वषासि वः—सि० १२७, विसर्धेत् सत्कार-
अ० ७, 'उत्पन्नम्—बोधे के मुताबिक—आसि० १, २
(आः) उपपन्न सुवीन—अवसत्तैवसात्त वृत्तः
इ० ७।४०, अवसत्तःअवसत्तान प्रकाशितवृत्त—अ०
१, दे० 'अवसत्त' की 3. स्थान, वसम्, सेप 4 अथ-
कास, लासप्रव अवसत्ता 5. वसत्त 6 बर्धन 7. उदार
8. कृत पदाकर्षी ।

अवस्यतेः [अव + ण् + वञ्] 1 मुलत करना, डीम
करना 2. स्वेच्छानुसार कार्य करने देना 3. स्वकीयताः ।

अवस्यते [अव + स्य् + चञ्] भेदिता, गुलबहार ।
अवस्यन् [अव + स्य् + स्यट्] नीचे उतरना, नीचे जाना ।

अवसाद्यः [अव + स्य् + घञ्] 1 उदासी, मुन्हा, सुली 2 बर्बादी, विनाश—विपरीत तावदसाद्यकरी—कि० १८२३, ६३११, 3 अन्त, समाप्ति, 4 स्फुटि का अभाव, बकान, बकानट 5 (विधि में) अभियोग का साराव होना, पराजय, हार ।

अवसाद्यक (वि०) [अव + स्य् + गिच् + घञ्] 1 उदास करने वाला, मूछित करने वाला, असफल बनाने वाला 2 अन्तता लाने वाला, बकान पहुँचाने वाला ।

अवसादनम् [अव + स्य् + गिच् + स्यट्] 1 पतन, नाश, 2 उत्सर्जन 3 समाप्त कर देना ।

अवसादानम् [अव + सो + स्यट्] 1 ठहरना 2 उपसहार, समाप्ति, अन्त,—दोहावसाने पुनरेव दोध्रीम्—रघु० २।२३, तच्छिष्याध्ययननिवेदितावसानाम्—१।२५, 3 मृत्यु, योग—श्री० ५।१८, मृत्युवसानाने सपद परस्युपतिष्ठति—श० ६, 4 बीना, मर्यादा 5 (व्या० में) किसी शब्द का अन्तिम का अन्तिम अक्षर (विप० बादि) 6 विराम 7 स्थान, विश्रामस्थल, आवास-स्थान ।

अवसाद्यः [अव + सो + घञ्] 1 उपसहार, अन्त, समाप्ति 2 अर्वाशिष्ट, 3 पुति 4 सफ़्त, दुर्निवचय, निर्णय ।

अवसित (म० क० कृ०) [अव + सो + क्त] 1 समाप्त, अन्त किया गया, पूरा किया गया,—मुपसत्यवसिते क्विवा-विधौ—रघु० १।३७, अवसितम् परासी—दश० ११, उस पशु का काम समाप्त हो चुका है,—वचस्यवसिते तस्मिन्मार्गं विप्रचारयन्—कु० २।५३, 2 ज्ञात, अवगत 3 प्रस्तावित, निर्धारित, निश्चय किया गया 4 अमा किया हुआ, एकत्र किया हुआ (जैसा कि अन्त), 5 बधा हुआ, नती किया हुआ, बाधा हुआ ।

अवसोकः [अव + सिच् + घञ्] 1 छिद्रकाय, चिद्योना—देस को नु अलावसेकाविसि—मुञ्ज० ३।१२ ।

अवसोचन् [अव + सिच् + स्यट्] 1 छिद्रकना 2 छिद्रकने के लिये पानी—पाद०—मनु० ४।१५१ 3 शक्ति निका-लना ।

अवसोचयः—इयम् [अव + स्यन् + घञ्, स्यट् वा] 1 आक्रमण करना, आक्रमण, हुमकाट 2 उतार 3 शिबिर ।
अवसोचिन् (वि०) [अव + स्यन् + गिन्] आक्रमणकारी, हमलावार, बलात्कार करने वाला ।

अवसोचरः [अवकीर्णते इति—अवसोचरः कृ + अप, स्यट्] 1 विष्टा, मल 2 गुरुदेश (योनित् सिन्, मुदा कारि) 3 गर्द, बुराहाल ।

अवसोचयन् [अव + स्य् + स्यट्] विच्छोना, विच्छावन ।

अवसस्ता (अव्य०) [अवसिन् अवसस्तात् अवसित्यर्थे—अवर् + अस्ताति अवादेशः] 1 नीचे, नीचे से, नीचे की ओर 2 अवसस्तात् नीचे ।

अवसस्ताः [अव + स्य् + घञ्] 1 परा, 2 चादर, कनात 3 चटाई ।

अवस्यु (तपु०) [न० त०] 1 निकामी वस्तु, मुच्छ हात—अवस्युनिबन्धपरे कथं नृ ते—कु० ५।६६, 2 अवा-स्तविकता, सागहीनता—अवस्युवस्तारोपोज्ञानम् ।

अवस्था [अव + स्था + अङ्] 1 हालत, दशा, स्थिति—स्वाभिन्नो मह्यवस्था कतेते—पञ्च० १ विषय दशा,—नृत्पाठस्य स्वसु हत—रघु० १२।८०, तां ताम-वस्था प्रतिपद्यमानम्—१३।५, ईदृशोवस्था प्राणो-ऽग्नि—श० ५, कु० २।६ (श्रय समास में)—तदवस्थं पञ्च ५, उस दशा की पट्टया हुआ 2 हालत परिस्थिति—3 काल दशाक्रम, जीवन,—बयोवस्था तस्या मृत्युत—मा० १।२९ 4 रूप, छवि 5 दर्जा, अनुपात 6 स्थिरता,—नृदना जैसा कि 'अवस्था' में दे० 7 स्थाया-लय में उपस्थित होना । मय०—अस्तरम् बरकी हुई दशा, -अवस्थुय मानवजीवन की चार चरणों (बाल्य, कौमार्य जीवन और वार्धक्य), ऋष्यु नील अवस्थाएँ (जाग्रत, स्वप्न, तथा सुषुप्ति),—इयम् जीवन के दो पहलु—सुख और दुःख ।

अवस्थानम् [अव + स्था + स्यट्] 1 सबा होना, रहना, बसना 2 स्थिति, हाजिर 2 आवासस्थान, घर, ठहरने का स्थान 3 ठहरने का समय ।
अवस्थापिन् (वि०) [अव + स्था + गिन्] ठहरने वाला, रहने वाला ।
अवस्थित (म० क० कृ०) [अव + स्था + क्त], 1 रहा हुआ, ठहरा हुआ,—एवमवस्थिते—का० १।५८, उन गन्धिनियोगों में, 2 उद्देश में स्थिर, दुष्ट 3 टिका हुआ, साहाय लिये हुए ।
अवस्थितिः (स्त्री०) [अव + स्था + क्तिन्] 1 निवास करना, बसना 2 निवासस्थान, आवास ।

अवस्थानम् [अव + स्यन् + स्यट्] बुद र टपकना, रिसना ।

अवसन्नम् [अव + सन्न + स्यट्] नीचे टपकना, नीचे गिरना अव पात ।

अवसति (स्त्री०) [अव + स्य् + क्तिन्] 1 निवास करना, बसना 2 निवासस्थान, आवास ।

अवस्यन् [अव + स्यन् + स्यट्] बुद र टपकना, रिसना ।

अवसन्तम् [अव + सन्न + स्यट्] नीचे टपकना, नीचे गिरना अव पात ।

अवसति (स्त्री०) [अव + स्य् + क्तिन्] 1 निवास करना, बसना 2 निवासस्थान, आवास ।

अवस्यन् [अव + स्यन् + स्यट्] बुद र टपकना, रिसना ।

अवस्यन् [अव + स्यन् + स्यट्] बुद र टपकना, रिसना ।

अवस्यन् [अव + स्यन् + स्यट्] बुद र टपकना, रिसना ।

अवस्यन् [अव + स्यन् + स्यट्] बुद र टपकना, रिसना ।

अव्यभिचिः [प्रा० स०] जो जाना, पाटा ।
अव्यहारः [अव + हृ + प्र] 1. चोर, 2. शार्क नाम की मछली 3. अन्धारी युद्धविद्या, सत्वि, 4. मुखावा, भागवत 5. अर्धत्याग ४ मुकुटनी, वास्तु जेना ।

अव्यहारकः [अव + हृ + क्तृ] शार्क मछली ।
अव्यहारी (स० कृ०) [अव + हृ + ण्यत्] 1. के जाने के योग्य, हटाने के योग्य 2 वर के योग्य, सजा दिये जाने के योग्य, 3 पुन प्राप्त करने योग्य, फिर मोल लेने के योग्य ।

अव्यहारीक [अव + हृ + क्तृ + टाप्] वीवार ।
अव्यहस्तः [अव + हृ + क्तृ] 1 मुक्तमान, मुक्तान, 2. विलसती, मयाक. उपहास-यच्छावहासाभिमताकृतो-ज्जि-अन० १११४२ ।

अव (व) द्विवचन-स्वम् [न वद्विः निष्ठाति इति-स्था + कृत्वा०] 1 पावक, 2. आन्तरिक भावगोपन, ३३ अग्निधारिभावों में से एक-अग्नीरवकज्जावेर्हृषत्कार-पुत्तिरवद्वि-वा- सा० व०, रस० के अनुसार--वीवा-दिना निमित्तान् हृषत्तनुनावाना गोपनाय वद्वितो भाव-विशेषोऽवद्वि-उवा० कु० ११८४, भागि० २१८० ।

अवहृत्कः--सा [अव + हृत् + क, रिभया टाप्] अनाहर, निरस्कार, अवहृत्कान्--अवहृत्का कुटव अमुकरे मा गा--भागि० ११६ ।

अवहृत्कान्--ना [अव + हृत् + क्तृ, रिभया टाप्] अवहा ।

अवहा (अव्य०) [अव + अन् + क्तिप्] 1. नीचे की ओर 2. दक्षिणी, दक्षिण की ओर । सम०--आत्मन् अनाहार,--अव (वि०) दक्षिणी,--वृक्ष (वि०) (स्त्री-की) 1 नीचे की ओर देखने वाला--अवाक-नृक्षान्गोपरि पुष्पमुत्ति--रभु० २१६०, १५१०८, 2 सिर के बल--क्षिरम् (वि०) नीचे की ओर षटकारे हुए--स मूदो नरकं याति कालपुत्रमवाक्क्षिरा-अनु० ३१२४९, ८१९४ ।

अवहा (वि०) [अवनतान्वाणि इन्द्रियाणि मन्य - व० स०] अग्निप्रायक, वरजक ।

अवहा (वि०) [अवनतमवमन्य - व० स०] नीचे की ओर किये हुए, नीचे की ओर के हुए ।

अवहा (वि०) [न० व०] बाधीरहित, मूक--(नपु०)--वृद्ध ।

अवहा (वि०) [अव + अन् + क्तिप्] 1. नीचे की ओर झुका हुआ, मुका हुआ--अनंतविलसतिभरेण अनावाचः--वि० ११७९, 2. नीचे की ओर स्थित, अनेकाङ्ग नोष्ठ 3. सिर के बल 4. दक्षिणी--(पुं० नपु०) वृद्ध,--की 1 दक्षिणदिशा, 2. निम्नप्रदेश ।

अवहा (वि०) [अवहा + क्त] 1. नीचे की ओर, सिर के वर 2. दक्षिणी 3. ऊपर हुआ ।

अवाच्य (वि०) [न० व०] 1. विषे संबोधित करना उचित न हो,--अवाच्यो वीक्षितो नाम्ना अवीचानपि धो यदेत्--अनु० २११२८, 2. बोके जाने के अयोग्य, निष्कृष्ट, वृष्ट--अवाच्यं वदतो विज्ञा क्वं न पठिता तव--रामा०, अम० २११६ 3. अल्पव्य उचित, अर्थात् हाटा अकथनीय । सम०--वैकः शोभने के अयोग्य स्थान, यौनि ।

अवाच्य (वि०) [अव + अन् + क्त] झुका हुआ, नीचा ।
अवाचः [अव + अन् + क्त] सांठ जेना, स्वास अंदर की ओर से जाना ।

अवाच्य (वि०) [प्रा० स०] 1. शीघ्र में स्थित वा झुका हुआ--वे० सदास 2. अंतर्गत, अन्निमित्त 3. अवीच, गूना 4. अनिष्ट संभव से रहित, असंबद्ध, अतिरिक्त । सम०--विह,--विज्ञा नम्यवर्ती विद्या (वैसा कि - आनेवी, ऐशानी, नैर्धती और वाचवी),--वैकः दो स्थानों का सम्बन्धती स्थान, अन्तःप्रवेश ।

अवाच्य (स्त्री) [अव + भाप् + क्तिप्] प्राप्त करना, ग्रहण करना--उप. कियेसे उपवाचितावनम्-मु० ५१६४ ।

अवाच्य (न० कृ०) [अव + भाप् + क्तृ] प्राप्त करने के योग्य ।

अवारः--रभु [न वार्येते अनेन-पु + कर्मणि वच्च्] 1. नदी का निकटस्थ किनारा 2. इस ओर । सम० - वारः समुद्र,--वारीच्य (वि०) 1. समुद्र से संबन्ध रखने वाला 2. समुद्र की पार करने वाला ।

अवारीच्यः [अवार + क्त] नदी की पार करने वाला ।

अवाच्यः प्रथम पति की छोड़कर उसी वारि के किसी दूसरे पुरुष से उत्पन्न हुआ किसी स्त्री का पुत्र--द्विती-येन तु यः पिता तवर्थायां प्रजायते. अवाच्य इति स्वात्-सुवर्थाय व वारितः ॥

अवाच्यः (पु०) [बोन् (यक्) + वनिप्] चोर, चुराकर के जाने वाला ।

अवाच्य (वि०) [न० व०] मन्त्र न पढ़ने हुए, गंवा (पुं०) वृद्ध ।

अवाच्य (वि०) [स्त्री०-की] 1. अवाच्यवि 2. निरावार, विवेक शून्य ।

अविः [अन् + इन्] 1. मेघ [इसी अर्थ में--स्त्री० की] --वीनकाभुंकरस्तावीन्--अनु० १११३८, ३१९, 2. सूर्य 3. पहाड़ 4. वायु, हवा 5. ऊनी कपक, 6. हाक 7. वीवार, बाड़ा 8. पहा,--विः (स्त्री०) 1. मेघ 2. एतत्स्वभा स्त्री । सम०--कः देव,--अवीरवः एक प्रकार का जंगल (जो मेड़ों के रूप में विद्या काटा है)--अनु०--इत्तम्,--वरीरम्,--वीरम्, मेड़ का रूप,--कः मेड़ की वाक, ऊनी कपड़ा,--वाकः पठारिया,--स्वल्प मेड़ों का स्थान, एक वरर का

नाम—अधिव्यक्तं बुकल्पत माकनो धारणावतम्
—सुहावा०।

अधिका [अधि + क्] भेदा, —का भेद, —कम् हीरा ।

अधिका [अधि + क् + टाप्] भेद, भेदी ।

अधिकात् (वि०) [न० ब०] जो सोझी न मारता हो,
अधिमान न करता हो ।

अधिकल्प (वि०) [न० ब०] जो सोझी न बंधारे, जो
अधिमान न करे—विद्वानोऽधिकल्पना भवति—
मुद्रा० ३ ।

अधिकल्प (वि०) [न० त०] १ अजल, समन्त, पूरा,
संपूर्ण, सारा—सानीप्रियाप्यधिकल्पानि—धनु० २।६०,
१०० कलम्—मेघ० २।३३४, 'शरकल्पद्रमधुर - मा०
२।११, पूर्ण, पूर्णलोकार्णव २ नियमित, मुख्यविषय,
सुसंगत, शास्य—कल्पविकलतलत गायत्रीबंधहेता
शि० ११।१० ।

अधिकल्प (वि०) [न० ब०] अपरिवर्तनीय,—रूप १ सदेह
का अभाव २ इच्छा या विकल्प का अभाव ३ विधि
या नियम—अन्व० (अव्य०) निस्सन्देह, निस्संकोच ।

अधिकार (वि०) [न० ब०] अधिकार—र, अधिकृत,
अपरिवर्तनीकता ।

अधिकृतिः (स्त्री०) [न० त०] १ परिवर्तन का अभाव २
(सायक ४० में) अनेकत विज्ञान जिते प्रकृति कहेते
हैं और जो इस विषय का भौतिक कारण है,—मुख-
प्रकृतिरधिकृति—सा० का० ।

अधिक्रम (वि०) [न० ब०] धनिकहीन, दुबल,—म
कारणता ।

अधिक्रम्यः (वि०) [न० ब०] अपरिवर्तनीय, निकार,
—सन् बहू ।

अधिकृत (वि०) [न० त०] अजल पूर्ण, समन्त—विश्वेन्दु
प्रतिषेध सगामिप्रबोद्धपावितलम्—स्मृति ।

अधिकृत (वि०) [न० त०] शरीररहित, परब्रह्म का विरो-
ध,—हो (व्या० ३०) निरसमाय—जिसके विद्यालय
कहाँ से पूरक-पूरक अर्थ को अधिव्यक्ति न हो सके ।

अधिकृत (वि०) [न० ब०] बाधारहित, बिना रुकावट
के, 'सति (वि०) अनेके मार्ग में निकार ।

अधिकृत (वि०) [न० ब०] निर्विषय, —अन्व० बाधा या रुका
वट से मुक्ति, कल्याण (पह शब्द नयुक्त लिये है,
यद्यपि 'विषय' दु० है) साधयाम्यहमविषयमनुभू-
रपु० १।१११ अधिकृतसन्तु से ज्येष्ठा पितृके कृत्रि युक्ति-
नाम्—१।१११ ।

अधिकृत (वि०) [न० त०] विचारहीन, विकेरहित—१
[न० त०] अधिभेद, नासभ्यो ।

अधिकृत (वि०) [न० त०] बिना विचारा हुआ, जो
अज्ञानी-व्यक्ति विचारा न गया हो। सम०—विषय,
पक्षगत, पक्षपातपूर्ण सम्प्रति ।

अधिकृत (वि०) [न० त०] १ उचित अनुचित का
विचार न करने वाला, विकेरहीन २ आसुकारी ।

अधिकृत (वि०) [न० त०] अनजान—(पु०—
) परमेश्वर ।

अधिकृत [न० त०] परिशो की सीधी उक्तान ।

अधिकृत (वि०) [न० न०] १ जो झूठा न हो, सच्चा
—सद्विषयमवादीयममेय विवेचि—शि० ११।१३, अधि-
नया चितया सति मा गिर - ६।१८, २ पूरा किया
हुआ, सकल, —धम् [न० त०] सबाई, — अधिपतमाह
प्रियवदा - छ० ३ प्रियवदा ठीक (सही) कहुती है,
—धम् (अव्य०) जो निष्ठा न हो, सबाईपूबक—मनु०
२।१४४ ।

अधिकृत—अन्व [न० त०] पाग ।

अधिकृत (वि०) [न० न०] जो दूर न हो, निकटस्थ,
समीपस्थ रम् सामीप्य—रम् (अव्य०) निकट, दूर
नही, इसी प्रकार—अविदूरेण, अविदूरान्—दूरान्—दुरे ।

अधिकृत (वि०) [न० त०] अज्ञात, सूअर, नामस, छा
[न० न०] १ अज्ञान, सूअरता ज्ञान का अभाव २
आध्यात्मिक अज्ञान ३ अज्ञ, याया (पह शब्द वेदान्त
में बहुधा प्रयुक्त होता है, इसी याया के द्वारा व्यक्त
विषय को (जिसका सम्बन्ध कोई अधिकृत नहीं)
ब्रह्म में अन्तर्हित न करना है, यह ब्रह्म ही मन् है) ।

अधिकृत (वि०) [अविद्या मण्ड] जो अज्ञान या अज्ञ
के द्वारा उत्पन्न हो ।

अधिकृत [न० त०] या विषय न हो, विचारित इसी
विषयका प्रति शक्ति—: अर्धमिष विषयविषयके विधि-
मामन्तु शब्द—मेघ० १० ।

अधिष्ठा (अव्य०) विष्णुवर्षादिशब्द अव्यय या अर्थ के
अवधारण पर सहायता बोलने के लिए "सहायता,
सहायता" बोला जाता है ।

अधिष्ठा (वि०) [न० त०] जिनके वश में न किया जा सके,
विपरीत, विरोधार्थकताम् मुद्रा० ४।२ ।

अधिष्ठा (वि०) [न० व०] अधिनीत कुर्वनीत, अधिष्ठा—का
[न० त०] १ शिष्टता या शालीनता का अभाव २ दुर्ब-
वहार उग्रहान अधिष्ठा या उग्रहव्यवहार अवसा-
चर्याविषय मृगया नृपतन्त्रकथामु छ० १।२५,
अभयता, आचरण का अनौचित्य, ३ अधिष्ठाकार,
अनार ४ अराजक युयं दीप ५ चपट, अहंकार,
पुष्टता अधिष्ठापनवद विद्या मा० ।

अधिष्ठा (वि०) [न० त०] १ विषय का अभाव २ अन्तर्हित या
अविचार्य परिश्र, विदुक्ता न होने बांध सक्क ३, सर्वत्र
अधिनामार्थान सम्बन्धकारं न तु नास्तीरियकथम्—
काठ्य० ० ।

अधिष्ठा (वि०) [न० त०] १ विषयसूय, दुःखीय २
कृत्, उग्रह ।

अविषय (वि०) [न० सं०] 1. न बटा हुआ, अविभाजित, संयुक्त (जैसे कि पारिवारिक सम्पत्ति) 2. जो टूटा न हो, समस्त ।

अविधान (वि०) [न० सं०] जो बांटा न गया हो, अनि-
यत—सः [न० सं०] 1. बटवारा न होना 2 बिना
बटा राखना ।

अविधाज्य (वि०) [न० सं०] जो बांटा न जा सके
—अव्य० 1. न बांटा जाना, 2. जो बँटवारे के योग्य न
हो (कुछ ऐसी वस्तुएँ होती हैं जो बँटवारे के लयय
भी बाँटी नहीं जाती)—उदा० बन्धु वामनसकार
कुमानसुदक त्रिषय.. योग्येय प्रचार च न विधाज्य
प्रचरते— मन्० १।२११, ११२ न बाँटा जाना, बँटवारे
की अपेक्ष्यता ।

अविरल (वि०) [न० सं०] विरामरहित, न रुकने वाला,
सतत, निरन्तर अविरतोक्तम्पत्तिनेन—वेद्य०
१०२, सो० मन्वेदप्रवर्णितोद्योग्यं सर्वं विद्ययी मवेत्
करतः अभ्यास के जड़मति होन सुवान्—सम्
(अव्य०) निष्पत्तापूर्वक, लगातार— अविरल परकारे-
कृतां सताम्— भाषि० १।११३ ।

अविरल (वि०) [न० सं०] निरन्तर— तिः (स्त्री०)
[न० सं०] 1. सतत, निरन्तर 2 कामावुरती ।

अविरल (वि०) [न० सं०] 1. बना, सधन,—चारिचार
—उत्तर० १, ठेग बौछार 2. सटा हुआ 3. स्थूल,
मोटा, ठोस 4 निर्विघ्न, लगातार,— सम् (अव्य०)
1. अनिच्छतापूर्वक—अविरलमनिक्रियु पवन—स०
१।७, 2. निर्विघ्न से, लगातार ।

अविरोधः [न० सं०] सुसंगतता, अनुकूलता—साधान्यास्तु
परार्थसुखमनूत स्वार्थविरोधं च— मन्० २।७४,
अपने स्वार्थ के अनुकूल ।

अविस्मय (वि०) [न० सं०] आश्चर्यकारी—कः [न० सं०]
विस्मय का अभाव, आश्चर्यहीन—अव्य, अविस्मयेन
(अव्य०) बिना डेर किये, बीछर ही ।

अविस्मय (वि०) [न० सं०] बिना डेर किये, बीछरकारी,
झिड़, आश्चर्यकारी,— सम् (अव्य०) बीछरतापूर्वक, बिना
डेर किये ।

अविना [अन् + हलच्] भेदः ।

अविचलित (वि०) [न० सं०] 1. अनभिद्येत, अनुद्विष्ट
—भातर. इत्यच एकवेदप्रवृत्तमविचलितम् 2 जो
बोल्ने या कल्ने के लिए न हो ।

अविचलित (वि०) [न० सं०] 1. जिसकी सामग्रीय न की
गई हो, जो अभी-बाँति विचारण न गया हो 2.
जो विवेचना या नेत्र न जानता हो, विस्मित 3.
सार्धबन्धित ।

अविचल (वि०) [न० सं०] विचाररहित, विवेकमूल्य—कः
[न० सं०] 1. श्लेषक ज्ञान वा विचार का अभाव, अवि-

चार—अविचलः परधारायां वदन्—कि० २।१० 2.
वाच्यवाची, उदात्तवाच्य ।

अविचल (वि०) [न० सं०] अचरित, अवेदमूल्य, निरर
—का अवेद वा भय का अभाव, अरोसा,—अव्य, अविच-
लेन (अव्य०) निरसदेह, निरसकोप ।

अविचलित (वि०) [न० सं०] 1. निःसंक, निरर 2. निरस-
देह, विरराशी,—मुद्रावाच्यत्वं मूढास्त्वचम्यवचि-
कित्ता—काव्य० ।

अविचल (वि०) [न० सं०] बिना किसी अन्तर या नेत्र के,
बराबर, समान,—सः,—अव्य 1. अन्तर का अभाव, सम-
नता 2. एकता, समता । सम०—स चीनों के अन्तर
को न समझे वाला, अविभेदक ।

अविच (वि०) [न० सं०] 1. जो अचरित न हो,—कः 1.
अचर 2. राजा—वी 1. नवी 2. पुत्री 3. अकाश ।

अविचल (वि०) [न० सं०] अचोचर, अनुपम—कः [न०
सं०] 1. अभाव 2. अविचलानता—देवविचये विं न
वीचय प्रकाशानम्— हि० २।७१, 3. अविचल, जो लुब्ध
के अन्तर न हो, परे, अक्षुब्धकर— न अविचलीयता-
विचयो नाम—स० ४, सकल अचनामविचलः—आ०
१।३०, अर्चनों की समित से वाहर, 3. अविचली की
अपेक्षा ।

अवी [अचत्वात्पानं लज्जया इति—अन् + ई] रसवका
स्त्री ।

अवीचि (वि०) [न० सं०] तरंगमूल्य—चिः अरु-विचये ।

अवीर (वि०) [न० सं०] 1. जो वीर न हो, कायर 2.
जिसके कोई पुत्र न हो,—रा बहु स्त्री जिसके न कोई
पुत्र हो, न पति हो (विप० 'वीर' जिसकी परिभाषा
यह है—पतिपुत्रहीनारी वीर प्रोक्ता अवीरिणिः)
अनपित भूषा मातनवीरप्रायश्च वीरिणः—अव्य० ४।
२११ ।

अवृत्ति (वि०) [न० सं०] 1. जिसकी कृता न हो, जो
विचलमान न हो 2. जिसकी कोई वीचिका न हो,—तिः
(स्त्री०) [न० सं०] 2. वृत्तिका अभाव, वीचिका का
कोई भाग्य न होना, अचरित काव्य—अवृत्ति-
कृतिता हि स्त्री प्रमुद्येत् स्थितिकल्पयि—मन्० १।७४,
१०।१०१, आचरीतायेनेवात्सावृत्तायेककालिकम्—४।
२२३, 2. पारिस्थिक का अभाव, 'सर्वं अनिस्तल ।

अवृत्ता (अव्य०) [न० सं०] अर्च नहीं, लक्षणा पूर्वक ।
सम०—अर्च (वि०) लक्ष्य ।

अवृत्ति (वि०) [न० सं०] अचिंच न करने वाला,—चिः
(स्त्री०) [न० सं०] वृत्ति का अभाव, अनावृत्ति ।

अवृत्तक (वि०) [अन् + ईच + अन्वृच्] निरुत्थक करने
वाला, देशरक करने वाला, अचोचक ।

अवृत्तव्य [अन् + ईच + अन्वृच्] 1. किसी वीर देशका, अचर
हालात 2. उदात्तवाची करना, देशरक रखना, ठेग

करना, बर्षीकरण, निरीक्षण—इर्ष्याभयवैक्षण्यजागकक
—रघु० १५।८५, 3 ध्यान, देखरेख, पर्यवेक्षण 4
कयाल करना, ध्यान रखना—वे० 'अन्यवेक्षण'।

अन्येक्षणीय (सं० कृ०) [अन्य + ईक्ष् + अनिपर] देखने के
योग्य, आदर करने के योग्य, ध्यान रखने के योग्य,
विचार किये जाने के योग्य—तपस्वितामाय्यमन्येक्ष-
णीया—रघु० १५।६३।

अन्येक्षा [अन्य + ईक्ष् + अङ्ग + टाप्] 1 देखना, दृष्टि डालना
2 ध्यान, देखरेख, कयाल।

अन्येक्ष (वि०) [न० त०] 1 न जाने योग्य, गुप्त 2
रग्त करने के योग्य,—छ बड़का।

अन्येक्ष (वि०) [न० ब०] 1 असीम, सीमारहित, निस्सीम
2. अज्ञानिक, —स [न० त०] जानकारी का छिपाव,
—सा प्रतिफल समय।

अन्येष (वि०) [कियाम्—की] [न० त०] 1 अनिय-
मित, जो नियम या कानून के अन्तर्गत न हो—अन्येष
पुरुषम कुर्वन् राज्ञो हर्षेन धुष्यति 2 जो शास्त्रपरिहित
न हो।

अन्येषाम् [न० त०] एकता।

अन्येषाम् [अन्य + उन् + ल्युट] मुझे हुए हाँ ने छिड़काव
करना—उत्तानेनैव हृतेन प्रोक्षण परिकीर्तितम्,
मन्त्रस्ताम्भुक्षण प्रोक्त तित्तवाचोक्षण स्मृतः ॥

अन्येषीः [अन्य + उन् + षन्, नि० न लोपे] छिड़काव
करना, गीला करना।

अन्येष्य (वि०) [न० त०] 1 अस्पष्ट, अग्रकट, अदृश्यमान
अनुष्णरित—बर्षे अस्पष्ट भाषण—शा० ७।१७, 2
अदृश्य, अस्पष्ट, 3 अनिश्चित—अन्येष्योयमहितयोऽ-
यम्—अम० २।२५, ८।२०, 4 अतिक्रान्त, अरपित
5 (बीज० में) अज्ञान,—स्त 1 विष्णु 2 शिव 3
कामदेव 4 मूल प्रकृति 5 पूर्व,—स्तम् (वेदान्त
में) 1 ब्रह्म, 2 व्यापारिक अज्ञान, (सां० द० में)
सर्व कारण, प्रवृत्ततामक नियम का मूलतत्त्व जिससे
भौतिक सत्ता के सारे तत्त्व विकसित हुए हैं—बुद्धे-
रिधाभ्यस्तमुदाहरति—रघु० १३।१०, महत्त परम-
व्यक्तमभ्यस्तापुत्र पर—कठ० 3 आत्मा,—स्तम्
(अर्थ०) अज्ञानरूप से, अस्पष्ट रूप से। सम०
—अनुष्णरम् अनुष्णरित तथा निरपेक्ष ध्वनियों की
संज्ञा करना,—आदि (वि०) जिसका आरम्भ अज्ञात
हो,—विद्या बीजगणित का एक हिमाव,—षर (वि०)
अनुष्णरित शब्द,—मूलप्रथमः सांसारिक अनित्य
रूपों वृक्ष (सां० में),—राग (वि०) हल्का लाक,
गुलाबी—(—मः) उखा का रंग,—अव्यक्त रागमन्त्रण
—अमर०,—राशि (बीजगणित में) अज्ञान प्रक या
परिमाण,—स्तम्भम्,—अस्पष्ट शिव—अन्येषु,—आर्ष
(वि०) जिसके मार्ग अज्ञाय और अज्ञेय हैं,—बाष्

(वि०) अस्पष्ट रूप से होकर आना,—सांख्यम्
अज्ञात परिमाणों की समीकरण राशि।

अन्येष (वि०) [न० त०] 1 अनुष्ण, अनाकुल, स्थिर,
दांत 2 किसी काम में न रुग्ना हुआ

अन्येषु (वि०) [न० त०] जो अतविभक्त या दोषयुक्त न
हो, सुनिश्चित, ठोस, पूरा।

अन्येष्यत्त (वि०) [न० ब०] 1 विज्ञानरहित, लक्षणरहित
(जैसे कि लिंगवेद्यक) ० ना कथा 2. अस्पष्ट,—मः बिना
सोच का पशु (सोच आने की आशु होने पर भी)।

अन्येष (वि०) [न० ब०] पीडा से मुक्त,—ष. माप।

अन्येष्विच [न-अन्य + टिपच्] 1 नृप, 2 मनुज, वी 1
पृथ्वी 2 आधीरात. रात।

अन्येषि (श्री) चार. [न० न०] विद्योय का अभाव
—अन्योन्यस्याश्रीभारो अवेदान्तगणानिक मनु०
१।१०।१२ एकनिष्ठता, बफावारी।

अन्येषिचारिन् (वि०) [न० त०] 1 अविरोधी, अप्रति-
कूल, अनुकूल कृ० ६।८६, 2 अपवादरहित,—मदुष्यते
पार्षेति पापवशात् न कृपामियम्यभिचारि मनुष्य कृ०
५।३९ रघोपनिषातिनोऽर्था इति यदुष्यते तदभ्यामि-
चारिबन्ध ३० ६, 3 नन्दुर्ग, मदाशानी, ब्रह्मचारी
(सती), 4 स्थिर, स्थायी, अद्वान्त।

अन्येष (वि०) [न० ब०] 1 (क) अपरिवर्तनीय, अ-
विनष्टकर, अक्षरित वेदादिनागिन नियम एतमज-
मन्ययम- सम० २।२१, विनातमन्ययमनाय न कश्चि-
त्कर्तुमर्हति—१७ (म) नियम, आचरण अथवात्
प्रारम्भयम्—अम० १५।११, अकीर्ण कर्माव्यभि ते-
ऽन्ययाम्—२।३४, 2 जो सर्व न किया गया हो, जो
अर्थ नष्ट न किया गया हो 3 मिन्यवी 4 शास्त्रन
फल देने वाला,—अ 1 विष्णु 2 शिव, अम् 1
ब्रह्म, 2 (ध्या० में) वह शब्द जिसके रूप में बचन
लिंग आदि क कारण कोई विकार नहीं होता—सर्वेषु
विष्णु सिद्धेषु सर्वेषु च विपत्तियुः बचनेषु च
सर्वेषु यत्र स्थिति तदभ्ययम्। सम०—आत्मन् (वि०)
अविनष्टर या नियम—(स्तम्) आत्मा या ब्रह्म—अन्ये-
अन्ययो की सुधी

अन्येषीभाव. [अन्ययममन्यम प्रकल्पनेन, अन्येष + च्छि +
पु + षन्] 1 सम्कृतभाषा के चार मुख्य समासों
में से एक, क्रियाविशेषण समास (अन्येष से बना हुआ
अर्थात् अन्यय अथवा क्रिया विशेषण तथा नञा के मेल
से बना हुआ) अक्षरित, अनुष्णम् आदि 2 अन्य का
अभाव (दृष्टिता के कारण)—उन्तो द्विपुत्रि चार्धे मन्वोने
नियमन्यवीभाव, तनुपुत्र कर्षचारम येनाह् स्या बहु-
वीहि। उन्पुट० (जो सम्कृत के समासों को समासों
के आगने रत्न देता है) 3 अन्ववर्ता।

अन्येषीक (वि०) [न० त०] 1 जो मुठान न हो, लम्बा

2. प्रिय, अक्षयिकर भावनाओं से रहित, —इत्थं विरः
प्रियतया इव सोऽम्बुलीकाः सुखाय सुखतनयवयव तथा
अम्बुलीका—वि० ५११ ।

अम्बुधरान (वि०) [न० व०] 1. मिला हुआ, पास का,
अन्तररहित 2. मूला हुआ 3. ओं इका न ही, मंगा 4.
अनाशयान, कायरवाह, —नम् कायरवाही ।

अम्बुधरन्व (वि०) [न० व०] 1 जो नियत न ही, हिसने-
बुलने वाला, अस्थिर —स्वभारविधिविषयम्बुधरान्—
कु० ११३३ 2 अनिश्चित, विभ्रंशक, अनियमित—क्या
1 अनियमितता, मायता-प्राप्त नियम से स्वरुन
2 धाम्भविद्व्य व्यथना ।

अम्बुधरिन्वत (वि०) [न० त०] 1 जो प्रचलित व्यथना
या कानून के अनुरूप न हो 2 विनियमरहित, अचक्र,
अस्थिर —अम्बुधरिन्वतचिरान्त्य प्रलायोऽपि अचक्रुर —
नीति० ९, 3 जो कमबख्त न हो, विधिपूर्वक न हो ।

अम्बुधरहृदयं (वि०) [न० त०] 1 जो अपने आतिथ्यपूर्वों
के नाम जाने पीने का अधिकारी न हो, आतिथ्यरहित
2 जो मुकदमे का विषय न बनाया जा सके, व्यवहार
के अयोग्य ।

अम्बुधरित (वि०) [न० न०] व्यवधानरहित, माघ मिला
हुआ ।

अम्बुधरुव (वि०) [न० त०] 1 अधिककित, अस्पष्ट
—नवेदं तद्व्याहृतमामोन् इदमनाम्नाम्नाम्बुधरुवम्—
वत० 2 प्राथमिक, तत्त्व (वेदात्त०) 1. प्राथमिक
तत्त्व इन्द्र के नमनुरूप —इससे तत्तार की सभी
वस्तुएँ बनी 2 (सांख्य० में) प्रथम— प्रकृति का
प्राथमिक अणु ।

अम्बाजः—अम् [न० त०] 1 कुल-कण्ठ का अभाव,
ईमानदारी 2 सादगी, अक्षमिता —बहुधा नयास में
'मुन्व' और 'मनोहर' के साथ— प्राकृतिकता या
अक्षमिता के अर्थ में प्रयुक्त—इद किन्नाम्बाज-
मनोहरवपुः घ० १:१८ ।

अम्बाजक (वि०) [न० न०] 1 जो बहुत विस्तीर्ण न हो
2 जिसने समस्त को न आधा ही, विशेष ।

अम्बाधार (वि०) [न० व०] जिसके पास कोई कार्य न
हो, काम में न लगा हुआ, —रः [न० त०] 1 काम
से विराम 2 ऐसा काम जो न ही किया जा सके, न
समझ में आये 3 जो अपना मिथी आधार न हो,
—अम्बाधारैव आधारान्—दुबरी के मानकों में हलतकैव
करता ।

अम्बाधितः (प्री) [न० त०] 1 अम्बुधित वित्तार, या
प्रतिष्ठा पर अम्बुटी आधि 2 परिभाषा में विवेक बने
काम का इतिवत् न होना, परिभाषा के तीन दोषों
में से एक—अम्बुधिते दोषे अम्बुधित्यापत्तेरनम्बाधितः ।

अम्बाध्व (वि०) [न० त०] जो सारी स्थिति के लिए

अम्बु न ही, समस्त वित्तार पर छाया हुआ न ही
—अम्बुधित्यापत्त्यः । धम०—पूतिः (प्री) [प्री०
२० में] शीतल प्रयोग की एक श्रेणी, देवकाम्य की
स्थिति के शक्ति विधवागता—वैषे धुल-धुल
—अम्बा-अम्बुति शक्तिकी विशेषण रूपसे—आवा०
२३ ।

अम्बाहृत (वि०) [न० त०] न टूटा हुआ, बाधारहित,
निर्बाध; मानी हुई (आज्ञा)—अम्बुहृताहृता—
रघु० १९:५७ ।

अम्बुधरन्व (वि०) [न० त०] 1 अमुपगत, अमुपकम्प,
अम्बुधर, बनाही—अम्बुधरन्वी वाक्यान्वः—का०
१९६, 2. (अम्बु) जिसकी अम्बुधरि निमित्त न ही,
—अम्बु धारा के आकरन्व तथा वाक्यार आदि के ज्ञान
से कल्प स्थिति, पल्लववाही भाषाशास्त्री ।

अम्बुत (वि०) [न० व०] जो शक्ति अक्षर तथा अन्य
वस्तुनिष्ठान का वाक्य न करता ही—अम्बुतान्य-
मन्वाया आतिथ्याधीनविधानम्, सङ्ग्रहकः समेतानां
परिचरन् न विद्यते । अम्बु १२: ११५, ३: १०० ।

अम्बु 1. (स्वा० वा०) [अन्वुते, अहित—अम्बु] 1. अम्बुत
होना, पूरी तरह से करना, प्रविष्ट होना—अम्बु-
धरिण काम्येऽम्बु— इदृष्टि० २१०, कि० १२:२१,
2 पकचना, भाग या भाग, उपस्थित होना, प्राप्त
करना—अम्बुधरान्वाक्येऽम्बु—आ० ११२६१, 3. प्राप्त
करना, इष्टन करना, मान्य लेना, अनुभव प्राप्त
करना—अम्बुधरैः पापपूर्वविद्वेष कर्मकम्बुते—हि०
११८०, रघु० ९१९ न वैशककमम्बुते—अम्बु०
११०९, कर्म दुष्टोदात्तधरे नैरिष्य—दी० ११५३ ।
उप—प्राप्त करना, उपभोग करना, इष्टन करना—न
प लोकात्पापम्बुते—महा०, कियाम्बुधरपापम्बुते
—अम्बु० ६१८२ वि—पूर्व रूप से करना,
व्याप्त होना, स्वान इष्टन करना—अम्बुधरान्वाक्य
मनोष्य युगपत् अमानसे विव—रघु० ४११५, इदृष्टि०
११५ १५१६६ ।

अम्बु 2 (कृत्वा पर०) [अम्बुधरिन्वति] 1 जाना, उप-
भोग करना—निषेध नुरवेऽमीन्वात्—अम्बु० ११५१,
अम्बुधरिन्वति अर्थ निषाद्य—अम्बु० ३१११०, 2. स्वयं
लेना, दत्त लेना—अम्बुधरिन्वति अर्थेव अम्बुधरि
धनम्—हि० ११११५-१६, अम्बुधरिन्वति अर्थेव
देवभोगम्—अम्बु० ९१२०, अम्बुधरिन्वति अर्थेव
कर्मभावात्—महा०, (अम्बुधरिन्वति) अम्बुधरिन्वति,
अम्बुधरिन्वति, अम्बुधरिन्वति (अम्बु० के
साथ)—आत्मव्यपन्नान् देवान्—मिथ्या०, अ—1.
पीना,—न प्राप्तोतीकम्बुते—इहा०, 2. जाना,
विषयान्—प्राप्तम्बुधरिन्वति—इहा०, 3. जाना,
विषयान्—प्राप्तम्बुधरिन्वति—इहा०, ३०१,
१११३, १५११९, अम्बु—1. जाना,—अम्बुधरिन्वति

लक्ष्मीयाम्—बन् ० ६११९, ११२१९, २. स्वाय
लेना, अनुभव लेना, रस लेना—यदा फलं समलानति
—यद्वा ० ।

अक्षयम्—अक्ष् [न० त०] अक्षय या क्षुर क्षुण्ण ।

अक्षयिका (स्त्री०) [न० त०] १ कम्बोरी, शक्तिहीनता
२ अयोध्या, अक्षयता, अक्षय तपश्चरणा वा न गुणा-
साधितरथा—रघु० १०।३२

अक्षय्य (वि०) [न० त०] अक्षय, अक्षय्यहर्ष ।

अक्षय्य, अक्षय्य (वि०) [न० व०, न० त०] १ निर्णय
निष्पत्त—प्रविद्यालयम्—हि० १।८१, २ सुरजित,
सम्येह रहित ।

अक्षयम् [अक्ष्+स्युट्] १ अक्षयि, प्रवेशन २ क्षान्ता,
क्षिप्तता ३ स्वाय लेना, रस लेना ४ आहार—अयान
वात्ता मरुत्क्षिप्त व्यालामाम्—भर्तृ० ३।१०.
(बहुधा विशेष्य (बहुव्रीहि) समास के अन्त में 'साले
वाला' 'सिद्धका भोजन है .') फलमूलाद्यन हुतायान
पचनायान आदि ।

अक्षया—[अयान निष्पत्ति—अयान+अयच्+क्विप्] क्षाने
की इच्छा, भूष ।

अक्षयानावा [अक्षयनिष्पत्ति—अयान+अयच् क्विप् यावे
ञ्] भूष, व्युत्थानाय फलवद्विभूत्या—भट्टि० ३।४०.
अन्यादाप्रानाया निवर्तते यानापिपासा—सत० ।

अक्षयानिष्ठ. अक्षयानुक्त (वि०) [अयान+अयच् (ना०
पा०)+स्य, स्ये उक्तञ्] भूषा ।

अक्षयि (पुं० स्त्री०) [अयन्ते वृत्ति - अय्+अनि] १
इन्द्र का बन्ध, मरुत्य महायनिष्पन्नम्—रघु० ३।५६
२ बिबली की चमक—अनुबनमसनिगत—सिद्धा०.
अयानि कल्पित एव वेधसा रघु० ८।५०, अक्षनेर-
मृतस्य चौरमर्षेणानुचक्रावुधरायच योनय—कु०
५।५३, ३. फल कर मारेजाने वाला अक्षय ४ अक्षय की
नोक—भिः (पुं०) १ इन्द्र २ अयनि ३ बिबली से
पैदा हुई आण ।

अक्षय्य (वि०) [न० व०] जो क्षयों में न कहा गया हो
—किमर्थमक्षय्य वक्षते—का० ६०, जो सुनाई न दे, अक्षय्य
१ अक्षय्य अक्षय्य इन्द्र २ (ता० व० में) प्रधान या
प्रकृति का आरम्भिक अक्षय—इक्षतेनक्षय्यम्—शारी०
१।१ ।

अक्षरत्न (वि०) [न० व०] अक्षहाय, परिव्यक्त, सरपररहित
—अक्षरवद्यरगोऽस्मि—सा० ६, इसी प्रकार 'अक्षरत्न्य' ।

अक्षरीर (वि०) [न० व०] शरीररहित, बिना शरीर का
—१ परमात्मा, ब्रह्म, २ कामदेव, प्रेम का देवता
३ सत्यवासी जिसने अपने सांसारिक सबंध त्याग
दिये हैं ।

अक्षरीरिण्य (वि०) [न० त०] शरीररहित, अपाण्डित,
स्वर्गीय (श्राव. धापी, बाक् आदि शब्दों के साथ) ।

अक्षरत्न (वि०) [न० व०] जो सर्वरक्षण के अनुकूल न
हो, पाण्डित । सम०—विहित, सिद्ध जो सर्वरक्षण
से अनुपेक्षित न हो ।

अक्षरत्नीय (वि०) [न० त०] शास्त्रविद्वत्, विधि-विद्वत्,
अनैतिक ।

अक्षित (पुं० क० इ०) [अक्ष्+अ] १ क्षया हुआ, क्षुण्ण
२ उपमृत्त ।

अक्षितज्ञानी (वि०) [अक्षितास्तुप्ताः गात्रोऽयं] वह स्थान
जहाँ पहले मवेशी चरा करते थे, पशुओं के चरने का
स्थान । दे० "अक्षितज्ञानी" ।

अक्षिणः [अक्ष्+इण्] १ चोर २ चावल की माहुति ।

अक्षिणः [अक्ष्+इण्] १ आम २ सुवर्ग ३ चायु ४ पिशाच,
—रघु० शीरा ।

अक्षिरण्य (वि०) [न० व०] बिना सिर का—(पुं०) बिना
सिर का शरीर, कवच, चर, तथा ।

अक्षिण्य (वि०) [न० व०] १ अनुभव, अयमलकारी
—अक्षिणा दिशि दीप्यायां शिवाम्लेष भयावहता (इन्द्र)
रामा० २. अमाता, बदकिस्मत, —बन् १ दुर्भाग्य,
बदकिस्मती २ उपद्रव । सम०—अक्षिणः १ अनु-
चित अम्बहार, आचरण की अक्षिण्यता २ दुराचरण ।

अक्षिण्य (वि०) [न० त०] १ सिध्दतरहित, उज्वल, २
असक्त, असत्य, अयोग्य ३ नास्तिक, अक्षिण्य ४
जो किसी प्रामाणिक वचन द्वारा सम्यक्त न हो ५ जो
किसी प्रामाणिक शास्त्र द्वारा विहित न हो ।

अक्षीत (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो, गर्म । मय०
—अक्षी, —रक्षिण्यं सुवर्ग ।

अक्षीतिः (स्त्री०) [निपातोऽयम्] अक्षी (यह शब्द सर्वत्र
स्त्रीलिङ्ग एक व० में प्रयुक्त होता है चाहे इसका
विशेष्य कुछ ही हो) ।

अक्षीयंक्त (वि०) = दे० अक्षिरण्य ।

अक्षुण्ण (वि०) [न० व०] १ जो हाक न हो, गवा, मलिन,
अपवित्र, —सोऽक्षुण्णि सर्वकर्मसु, —विषाण या मातम के
अक्षर पर २ काला, —भिः (स्त्री०) [न० त०]
१. अपवित्रता २ अच. पतन ।

अक्षुण्ण (वि०) [न० त०] १. अपवित्र २ अक्षुण्ण,
मलत्त ।

अक्षुण्णि (वि०) [न० व०] १ अपवित्र, मलिन २ दुष्ट,
—भिः (स्त्री०) [न० त०] अपवित्रता, मलिनता ।

अक्षुण्ण (वि०) [न० व०] १ अयमलकारी २ अपवित्र,
मलिन (वि०) दुष्ट ३ अमाता, बदकिस्मत, —बन् १
अयमलकता, २ पाप ३ दुर्भाग्य, विपत्ति—भाषे
कुतन्वययुग्म प्रजाताम्—रघु० ५।१३, १ सम०
—अक्षयः अक्षुण्ण क्षुण्ण ।

अक्षुण्य (वि०) [न० त०] १ जो रिक्त या क्षुण्य न हो २
परिचर्चा किया गया, पूरा किया गया, निष्पादित

—स्वविधीनस्वप्न भुव (सदृशों में श्रमः प्रयुक्त)
बचना कार्य सम्पन्न करो ।

अमृत (वि०) [न० त०] विना पकड़ा हुआ, कच्चा,
अव्यक्त ।

अशेष (वि०) [न० व०] जिसमें कुछ बाकी न बचा हो,
सम्पूर्ण, समाप्त, पूरा, समाप्त—अशेषोन्मयीयोग माय-
वस्थानि केवलम्—उद्भूट०, शरीरशेषेण फलेन
मुक्तात्—रघु० ३११५, ४८.—कः [न० व०] जो
बाड़ी न बचा हो,—कम्, अशेषेण, अशेषतः (वि०
वि०) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से,—अशेषिणस्तोत्रावरोपे-
नस्तु क—कु० ५१८२, येन शून्याशेषेण इत्यस्मात्प-
म्योर् मयि—प्रथ० ४३५, १०१११, मनु० ११५९ ।

अशोक (वि०) [न० व०] जिसे कोई रस न हो, जो
किसी प्रकार के रस या शीक का अनुभव न करता हो,—कः 1 काल काले बाका एक प्रसिद्ध वृक्ष
(कश्मिरमय है कि सिन्धु के बचलान्तर्ग से इसमें फूल
बिल आते हैं) तु०—अमृत सद्यः कुमुदाश्लोक
पादेन नापीयत सुन्दरीणां मण्डपमिच्छित्तनुपुरेण—
कु० ३१२६, मेघ० ७८, रघु० ८१६२, मार्क० ३१२२,
१६, 2 विष्णु 3 मौर्यवश का एक प्रसिद्ध राजा,—कम्
1 अशोक वृक्ष का फूलना (कायदेव के पीछे बाधो में
से एक) 2 पारा । सभ०—अतिः कवचवृक्ष,—अजन्मी
वैद्य कुम्भपात्र की अष्टवीं,—तप्त०—मन्त्र०—पुष्पाः
अशोकवृक्ष,—विराट्,—अन्व० एक उत्तम का नाम
जो तीन टाल तक रहता है,—अशिका अशोक वृक्षों
का उद्धान, 'न्याय दे० 'न्याय' के लीपे ।

अशोक (वि०) [न० त०] जिसके लिए शोक करना उचित
नहीं—अशोकान्मन्वशोकान्मन् प्रजापदादिषु जायते—
मन० २१११ ।

अशोक [न० व०] 1. पवित्रता, मेलापन, मलिनता—पथ०
१११९५ 2. किसी वस्त्र के अन्व के कारण—अमना-
नीच) मूलक, (किसी वस्तु की मूल्य के कारण—
मृताशोक) पातक—अशोकमृताशोकरीचनीच शान्ति-
सह—मनु० ११११८२ ।

अशोक—वृक्ष ।

अशोकपिच्छा [अशोक पिच्छ इत्युच्यते अस्यां निवेद्यकिपायां
—पा० २११७२] आने पीने के लिए नियमन, दाखत
जिसमें आने पीने के लिए शीघ्र कामवित किये जाते
हैं—अशोकपिच्छतीयती प्रतना स्मरकर्मणि—मट्टि०
५१९२ ।

अशोक (इ० व०) [अशेषे विरार, इवायं कम्] 1. दक्षिण
में एक देश 2. उक्त देश के निवासी ।

अशोक (पुं०) [अशु + अशिन] 1. पत्थर—माराश्लेषेण-
बाधमिच्छेत्पाराशरितामन्त्र—रघु० ४१७७ 2. कमीठा,
ककमक पत्थर 3. बासक 4. बज्र । सभ०—अशोक
१६

शिलाशीत,—कुम्,—कुम्क (वि०) पत्थर पर रसकर
पीज तोड़ने वाला (इन्द्रकः) मन्तों का सम्पादन,
शान्तस्व—पाठ० ३१४९, मनु० ६११७,—सर्वः,
—सर्वम्,—सर्वकः,—कम्,—योनिः पत्रा, —कम्,—अम्
1. बेंक, 2. मोहा,—अशु (नपु०),—अशुकम्—शिला-
शीत,—अतिः पत्रा,—आरम्भः पत्थर तोड़ने के लिए
हथौड़ा,—कुम्क शिलाशीत,—आत्मन् पत्थर की सरल
या लोहे का इमामरस्ता,—आर (वि०) पत्थर या
लोहे बीसा (—र, —रम्) 1 मोहा 2 नीलमणि ।
अशुकम् [अशमनोऽशोज शक० परकर्म] 1 अमीठी,
अचार 2 अंत, वैदना 3 मूल्य ।

अशुकम्—कम् [अशमानमन्तयति इति—अशमन् + अं +
शुक् + क्त] अकार, अमीठी,—क एक पीपे का नाम
जिसके रसों से ब्राह्मण की लपटो बनाई जाती हैं ।

अशुपी (भापु० में) [अशमान राति इति रा + क + शीप] (मृदाशय में) एक रोग का नाम जिसे पथरी कहते हैं,
मृषकृच्छ्र ।

अशुम् [अशुते नेत्रम्—अशु + रक्ष] 1. शीशु, 2. रश्मि
(शय 'अश' लिखा जाता है),—अः किनारा (बहुधा
समास के अन्त में प्रयुक्त होता है) । सभ०—अ
रश्मि पीने वाला, राक्षस, मरुत्तक ।

अशुच्य (वि०) [न० व०] बहुरा, जिसके काम न हों,
—कः शीप ।

अशुच्छ (वि०) [न० त०] याद का अनुष्ठान न करने
वाला,—इः याद का अनुष्ठान न करना । सभ०
—अशुच्य (वि०) जिसने याद-अनुष्ठान में भोजन न
करने का व्रत ले लिया है ।

अशुच्छ (वि०) [न० त०] 1 न बचा हुआ, अथक 2
अनवरत, लगातार—रम् (अन्व०) निरन्तर, लगातार ।

अशुः—ओ (स्त्री०) [अशु + शि पक्षे शीप्] 1 (कपरे
का या थर का) किनारा, बीच समास के अन्त में अशु, क,
पि, वट तथा और कुछ शब्दों के साथ बहल कर
'अशु' हो जाता है—दे० अशुःरस) 2. (अशु की) तेज
धार—मृषस्य हस्तु कुलिशं कुण्डलाश्रीभ लभ्यते—कु०
२१३०, 3 किसी वस्तु का ठेक किनारा, धार ।

अशुकी—अ (वि०) [न० व० कृ, रस्य क] 1. बीहीन,
असुन्दर, विचर, शि० १५१९९ 2. भाष्करीय, जो सम्प-
न्न न हो ।

अशु (नपु०) [अशुते आनोति नेत्रमरुतंशयम्—अशु + क्त] शीशु—पपात भूमी सह लीनिकाशुपि—रघु० ३१६१ ।
अम०—अशुच्य (वि०) आशुओं से उत्पन्न, अशुओं
से उका हुआ,—अशु शीशु की वृद्ध, अशुविद्यु—अशुपूर्व
(वि०) आशुओं से बरा हुआ, 'अशु आशुओं से बरो
हुई शकों वाला,—अशुच्य (वि०) आशुओं से परा
हुआ, अनुष्मत्,—रसः शीशु पिरम, शीशु का

गिराना, —बूध (वि०) आसुओं से भरा हुआ, 'आसुल आसुओं से भरा हुआ तथा आसुल—रघु० २।१.
—बुध (वि०) आसुओं से युक्त, अनागत आसु गिराने वाला,—लोषण—नेत्र (वि०) आसुओं से भरी हुई आँसों वाला, जिसकी आँसु आसुओं से भरी हुई हो।

असुत (वि०) [न० त०] 1 न मुना हुआ, जो मुनाई न दे 2 मूर्ख, अविश्वित।

असौत (वि०) [न० त०] अवैदिक, जो वेदों के द्वारा अनुमोदित न हो।

अश्वेवस् (वि०) [न० त०] 1 अपेक्षाकृत जो उत्कृष्ट न हो, षट्ठिया (नपु०—स्) दुराई, दुःख।

अश्लील (वि०) [न श्रिय लति—सा+क] 1. महा कुप्य 2 ग्राम्य गन्दा, अकसत्र.—अश्लीलप्रायान् कलकलान्—दश० ४९, 'परिवाद—पात्र० १।१३ 3 अपराधित, —लम् 1 देहाती या पवारु भाषा, भाली 2 (सा० शा० में) रचना का एक दोष जिसमें ऐसे शब्द प्रयुक्त किये जायें जिनसे श्रोता के मन में शर्म, भ्रुणुषा और अमंगल की भावना पैदा हो—उदा० साधन सुमह-शय्य, मुग्धा कुहमन्तिननेन दम्बरी वायु स्थिता तत्र सा, तथा—मुद्रावननिभिल्लो मरिचिवाया विनाशात्—में साधन, वायु और विनाश शब्द अश्लील हैं और कर्मश शर्म, भ्रुणुषा और अमंगल की भावना पैदा करते हैं—'साधन' शब्द तो लिय (पुरुष की अनेनद्रिय), 'वायु' शब्द अपान (पृदा से निकलने वाली दुर्गन्धयुत वायु) तथा 'विनाश' मृत्यु की प्रकृत करता है।

अश्लेषा [न निष्कथति यत्रोपप्लेनं सिद्धुना, विलस्य + घञ् । तारा०] 1 नवीं नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं 2 अनैक्य, वियोग। सम०—ज, —मघ, — न केतुपह अर्थात् उत्तर का शिरोबिन्दु।

अश्व [अश्व + क्वन्] 1 घोडा 2 सात की तस्का का प्रकट करने वाला प्रतीक 3 (कोड़े जैसा बल रखने वाले) मनुष्यों की दौड़,—आश्वत्थवपुष्पयुते विध्याचारश्च निमेष द्वैदयागुलमेदुदश्च रित्दन्तु हुयो मत ।—श्वी (हि० श०) घोडा और घोड़ी। सम०—अश्वनी हृटर, —अश्वि (वि०) जो अश्वारोहियों में प्रबल हो, जिसके पास घोड़े अधिक हो,—अश्व्यन् अश्वारोहियों का मेनापति,—अश्विकम् अश्वारोहियों की सेना,—अश्रिः मैना,—आश्वर्येण अश्वचिकित्सा—विज्ञान—आरोह (वि०) घोड़े पर चढा हुआ (—ह) 1 बुद्धसवार, अश्वारोही 2 बुद्धसवारी,—अश्व (वि०) घोड़े की माति चीड़ी छाती वाला,—कर्म,—कर्मक 1 एक बुद्ध 2 घोड़े का कान,—कुटी बुद्धपाल,—कुसल,—कोविद (वि०) घोड़ों को सभाने में चतुर,—करज-सम्पर,—सुरः घोड़े का सुग,—योध्यम् बुद्धसाल, अस्त-बल,—वातः घोड़े की चरामाह,—वसनशास्त्रा घोड़ों

को भ्रमाने का स्वान,—चिकित्सक,—शैकः शक्तिशाली, पशुओं का डाक्टर,—चिकित्सा घोड़े की चिकित्सा, पशुचिकित्साविज्ञान,—अश्वः नराश्व (जिसका शरीर घोड़े का, तथा गर्दन मनुष्य की होती है),—दूतः बुद्ध-सवार दूत,—भायः घोड़ों को चराने वाला, घोड़ों का समूह,—निबन्धिका घोड़ों का साइस, घोड़ों को बाधने वाला,—घः साइस,—पालः—पालक,—रक्षः घोड़ों का साइस—अंश साइस,—सा बिजली,—महिषिका भैंसे और घोड़े के बीच रहने वाली स्वाभाविक सन्तान,—मूक (वि०) जिसका मूह घोड़े जैसा है (—कः) घोड़े के मूह वाला पशु, किल्लर, देवदत्त (—श्री) किल्लर स्त्री,—निन्दन्ति मन्वा वतिमधमस्य-मु० १।११.

—शैकः एक ब्रह्म जिसमें घोड़े की बलि बढ़ाई जाती है—वयासबोधे ऋतुराट् सर्वपापनोदन—मनु० १।१२१?—शैकिक—शैवीय (वि०) अश्वमेध के उपयुक्त या अश्वमेध से संबंध रखने वाला (—क—य.) अश्वमेध के उपयुक्त घोडा,—युष् (वि०) जिसमें घोड़े जुते हुए हो (जैसे कि घोडागाड़ी), (स्त्री०) 1 एक नक्षत्रयुक्त अश्विनी नक्षत्र 2 भेष राशि 3 अश्वि-नक्षत्र,—रक्षः अश्वारोही या घोड़े का रक्वबाला, साइस,—रक्षः घोडागाड़ी (—बा) गधपादन पर्वत के निकट बहने वाली एक नदी,—रक्षम्,—रक्षः बधिया घोडा, या घोड़ों का स्वामी—अर्थात् उरुषी प्रथा,—साला एक प्रकार का लोप—कर्म= अश्व-मूक, दे० किल्लर और गधर,—अश्वम् साइ घोड़ों की जोड़ी,—श्व अश्वारोही,—शार,—शारकः अश्वारोही, श्वश्रम,—बाहः बाहकः बुद्धसवार,—श्वि (वि०) 1. घोड़ों को सभाने में बुद्ध 2 घोड़ों का दण्ड (पु०) 1 वेगवत् बुद्धसवार 2 नक्ष का विशेषण,—श्व बीजाक्ष, साइसघोडा,—शैकः घोड़ों का चिकित्सक,—शास्त्रा अस्तबल,—शारः बछेरा, बछेरी,—शास्त्रम् शालिहीय, पशु चिकित्सा—विज्ञान की शास्त्र-पुस्तक,—श्रुयास्तिका घोड़े और गीदर की स्वाभाविक सन्तान,—साश्व,—साश्वि (पु०) बुद्धसवार, अश्वारोही अश्वमेधिक रघु० ७।४७,—शारथ्यम् कोचबानी, शारथिपना, घोड़ों और रथों का प्रबंध—मुत्तानामघ-शारथ्यम् मनु० १०।४७,—स्वाज्ञ (वि०) अस्वत्थ-में उत्पन्न (—मन्) बुद्धसाल, तवेना,—शारकः बुद्धसवार, घोड़ों को चराने वाला,—श्वयम् 1. घोड़े की इच्छा 2. अश्वारोहित।

अश्वक (वि०) [अश्व + क्वन्] घोड़े जैसा—कः 1. छोटा घोडा, 2 भाड़े का टट्टू 3 सामान्य घोडा।

अश्वकिल्लो [अश्वस्य कं मूक तस्काकारोत्सवस्य इति शीप्—तारा०] अश्विनी नक्षत्र।

अश्वस्तः (स्त्री०—री) [अश्व + ष्टरप्] सम्पर।

अवस्था: [न इतिचरं शास्त्रलीनुशादिवत् तिष्ठति—स्था + कृ पृथो० तारा०] पीलक का वेह,—ऊर्ध्वमूलो-
बाष्पभाक् एषोऽवस्थाः समानम्—कठ०, मन्० १५।१।
अवस्थान् (पु०) [अवस्थेयं स्वाम् बलमवस्थ, पृथो०
तु० मही०—अवस्थेयाव्य यत्स्वाम् नरतः प्रविशो-
यतन्, अवस्थामैव बालोऽत्र तस्मात्प्राम्ना प्रविष्यति]
द्रोण और कृपी का पुत्र, कुदगर्य दुषीचन की भार से
रुद्धने वाला ब्राह्मण पांडा; व सेनापति (यह अत्यन्त
युद्धवीर, प्रचण्डशैवी, युद्ध योद्धा था, इसका ब्रह्म-
तेज कर्म के साथ वायुद्वय में प्रकट हुआ, जब कि
द्रोणाचार्य के परचात् कर्म का सेनापतित्व विना गया
—दे० शैवी० तृतीय अंक, यह सात चिरजीवियों में
से एक है) ।

अवस्तान्, —स्वस्तिक (वि०) [न एषो मय इति—इवत् +
दृष्टुं तुट् च, न० त०] [स्वस्तन + टन् च न०
त०] १, जो आगामी कल का न हो, आज का २ जो
आगामी कल का प्रथम नहीं रहता है मनु० ४।३, ४।
अवस्थक (वि०) [अव + ठन्] जो बोधो में लीपा जाय ।
अवस्थान् (पु०) [अव + इन्] १ अवबारीही, घोड़े का
समाने वाला शौ (हि० ब०) देवताओं के ही वैद्य
को कि सूर्य के द्वारा बोधी के रूप में एक अग्रज म
जुद्धमें देवा हुए थे ।

अवस्थो [अव + इनि + ईन्] १ २० नक्षत्रों में सबसे
पहला नक्षत्र (जिसमें तीन तारे होते हैं), २ एक
अज्ञात जो बाद में अश्विनीकुमारों की भाग्य मानी
जाने लगी, सूर्य पत्नी जो कि बोधो के रूप में छिपी
हुई थी । सम०—कुबारी, —बुधी कुली सूर्यवा
पत्नी अश्विनी के प्रथम पुत्र ।

अव्यो (वि०) [अव + छ] घोड़ों में मूत्रक रत्नवाला
बोधो का प्रिय, क्व घोड़ों का समूह, अवबारीही
सेना—हि० १८।५ ।

अव्ययलीन (वि०) [न इति वदलीपि यत्र—न० ब०,
ततः ल] जो छ लीनों में न देखा जा सके, जो
केवल जो व्यक्तियों के द्वारा लिखित या निर्णीत किया
जाय, बन् रहस्य ।

अव्यय [अथावथा युवना पीर्ममासी भाषाधी सा अस्ति
यत्र भासे अन् वा ह्रस्व] अथाइ का महीना (प्राय
‘आथाइ’ लिखा जाता है) ।

अव्यय वि० [अव्यय + कन्] आठ भागों वाला, आठ
तहू वाला, —क जो पाणिनि नियत आठों अध्यायों
का जनकार है, या उनका अध्ययन करता है,—का
पुष्पिता के परचात् सप्तमी से आरम्भ करके जाने वाले
तीन (सप्तमी, अष्टमी और नवमी) दिन २ उन तीन
महीनों की अष्टमियाँ, अर्थात् चित्तों का तर्पण होता
है, ३ उपर्युक्त विनों में किया जाने वाला आठ-

अनुष्ठान,—कम् १. आठ अवधियों की बनी कोई
सन्धी वस्तु २. पाणिनिपूर्वों के आठ अध्याय ३.
अव्यय का एक लक्ष (अव्यय ८ अव्यय वा वल मंशों
में विभक्त है) ४. आठ बस्तुओं का समूह—यथा
बाणराष्ट्रकर्म, शांटाष्टकम्, गंधाष्टकम् भादि ५. आठ
की संख्या । सम०—अव्य, —कन् एक प्रकार का
फलक या कृपा विश पर आठ कामों बने होते हैं और
जो पाँदा खेरने के काम जाता है ।

अव्यन् (त० वि०) [अव्य + कनिन्, तुट् च] (कन्०
कमे०—अव्य—अव्यो) आठ, कुछ तन्त्राओं तथा तथा
वाचक शब्दों से मिलकर इतका रूप समाप्त में ‘अव्यन्’
रह जाता है, उदा० अव्ययवन्, अव्ययविद्यति, अव्य-
यय प्रादि । सम०—अव्य वि० जिसके आठ लक्ष
या अवयव हैं—कम् १. शरीर के आठ अंग जिनसे
अति नम्र अतिबादन किया जाता है, ‘पल्ल’,—प्रथम
साध्याङ्गनमस्कार शरीर के आठों अंगों से किया जाने
वाला नम्र अतिबादन—जानुम्या च तथा यद्व्या
पाणिभ्यामुरसा धिया, शिरसा वक्त्रा दुष्ट्या प्रथामो-
ऽप्याङ्ग ईरित ॥ २. योग्यास्त अर्थात् मन की एका-
ग्रता के आठ भाग ३. पूजा की साधनी, ‘कव्यन् आठ
वस्तुओं का उपहार, ‘स्य आठ लीचियों से बनी
एक प्रकार की श्वर उतारने वाली वृष, ‘सैषुवन् आठ
उकार का सभोग-रत्न, प्रथम की प्रगति में आठ
अवस्थाएँ—स्वरत्न कीर्तन केति, प्रेक्षक मुद्राभाषणम्,
सकस्योऽप्यवसायवच क्रियाविष्णितरेष च १,—अध्यायी
पाणिनि मुनि का इनावा व्याकरनप्रथम जिसमें आठ
अध्याय हैं,—अव्यय अष्टकोण,—अव्यय अष्टकोषीय
—अह(न्) (वि०) आठ दिन तक होने वाला,
—अर्ष (वि०) आठ कानों वाला, (—कै) ब्रह्मा
की उपाधि,—कव्यन् (पु०),—अव्ययः राजा जिसने
अपने आठ कर्तव्य पूरे करने हैं (आठ कर्तव्य—आदाने
च विसर्ग च तथा प्रैचनियेययो, प्रथमे चार्यवचने
श्वरहास्य वेक्षण, दक्षदुषो तथा रत्नसेनाष्टमतिको
नृप ।—कृषवत् (अव्य०) आठ बार,—कोष आठ
कोष वाला, अष्टपहल,—कव्यन् आठ गोबों का सहैडा,
—मुष (वि०) आठ तहू वाला,—वाप्योऽप्यनुमत्ययन्
मनु० ८।४००, (—कम्) वह आठ वृष जो ब्राह्मण
में अव्यय पावे जाने चाहिए—इवा सर्वभूतेषु, शाति,
अनमुदा, लीचन्, अनापान्, गंधकम्, अकार्यम्,
अस्पृहा केति—यो । १। ‘आव्यय (वि०) इन आठ गुणों
से युक्त,—अष्ट (आ) अकार्यकम् (वि०) अद-
तालीय, तव (वि०) आठ तहों वाला,—अव्यन्,
(—आ) अद्वितीय,—अव्यय,—अव्यय पीवीय,
—अव्यन् १. आठलक्षियों का एक कर्मक, २ अष्टकोण,
—अव्यन् (अष्ट) पीवे दे०,—अव्य (स्वी०) आठ

दिग्बिन्दु—पूर्वाग्नेयी दक्षिणा च नैर्ऋती पश्चिमा तथा, वायवी चोत्तरीहानी दिशा अष्टादिशा स्मृता ।
 °कश्चिन्मः आठ दिग्बिन्दुओं पर स्थित आठ हविर्गियों, °धात्वा आठों दिशाओं के आठ दिशापाल “इन्द्रो बृहत् पिपुपति (यम्) नैर्ऋतो वरुणो मरुत् (शायु), कुबेर ईश पतय पूर्वार्दीना दिशा क्रमात्—अमर०, °धत्वाः आठों दिशाओं की रक्षा करने वाले आठ हाथी—ऐरावत पृथ्वीको चामन कुमुदीञ्ज्वन, पुष्प-वन्त साबैर्भौम सुप्रतीकरच दिग्नाडा—अमर०, —धातुः आठ धातुओं का समुदाय—स्वर्ण कृष्ण च ताम्र च रज्जु यथादेव च, शील लोह रसपथेति धातवोऽष्टौ प्रकीर्तिता ।—पञ्च,—द् (°ष्टं या °ष्टां) वि० 1. आठ वीरों वाला, 2 कथा में कथित सरभ नाम का जन्तु, 3 सिटकिनी 4 कौलास पर्वत (—र, —श्च) 1 सोना—आवजिताष्टापदकुमठोयै—कु० ७।१०, वि० ३।२८, 2 पासा खेलने के लिए बिसाल या एक फलक, कूटा,—°षञ्च् सोने की पट्टी, —बङ्गल एक पोड़ा जिसका मूह, पूँछ, अयाल, छाती तथा मुँह सफेद हो (—सञ्च्) आठ वीभाग्यसूचक बस्तुओं का समूह, कुक्ष के मतानुसार ये हैं—मृगशीरो क्वा माय केशवो ज्यवन तथा, बीजयन्ती तथा मेरी दीप इत्यष्टयङ्गसम् । इतरी के मतानुसार—लोकैः स्थित्यङ्गलाभ्यो ब्राह्मणो गौर्गुहाश्रय, हिरण्य सित-रादित्य आपो राजा तथाष्टयम् ।—आत्मन् एक ‘कुडब’ नामक माप,—भास्विक(वि०)आठ महीनों में एक बार होने वाला,—वृत्तिः अष्टकप, शिव का विशेषण—आठ रूप हैं—पाँच तत्त्व (पृथ्वी, अल, अग्नि, वायु और आकाश), सूर्य, चन्द्रमा, तथा यज्ञ करने वाला पुरो-हित—तु०, व० १।१, या वृष्टि अष्टराधा वहति विधिभूत या हविर्या च होर्षी, ये द्वे काल विषत वृत्तिविषययुक्ता या स्थिता व्याप्य विरक्तम् । यामाहु सर्वभूतप्रकृतिरिति यथा प्राणिन प्राणवत्, प्रत्यक्षानि प्रपञ्चस्तन्विरक्तु वस्तानिरष्टाधिरिच्छ ॥ या सक्तु में ससोप से कहे गये निम्नांकित क्रमानुसार नाम—अल वज्रित्वा यष्टा सृषोचन्द्रमसी तथा, आकाश वायुरवनी मृत्योऽष्टौ पिनाकिन । °षट् आठ रूपों वाला, शिव,—रत्नम् समष्टि रूप से ब्रह्म किये गये आठ रत्न,—रस नाटकों में प्रयुक्त आठ रस—शुभाह्लास्यकथनरीरीरचवालका, बोधत्वाद्मृतसमी केव्यष्टौ नाट्ये रसा स्मृता । अल० ४, (इनमें नया रस ‘शोभा’ भी जोड़ दिया जाता है—निबं-द-स्वायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रस-०) °आष्व्य (वि०) आठ रसों से सम्पन्न, या आठ रसों को प्र-दत्त करने वाला—विष्णु० २।१८,—विधि (वि०) आठ तर्क वाला, या आठ प्रकार का,—विशतिः

(स्त्री०) (°ष्टां) अठाईस,—अध्वजः,—अक्षत् ब्रह्मा, (आठ काण या चार सिर रखने वाला)
 अष्टतय (वि०) [अष्टन्+तयच्] आठ सत्र या आठ अंगों वाला—यच्च सत्र तिलाकर आठ माला ।
 अष्टधा (अव्य०) [अष्टन्+धा] 1 आठ तरह वाला, आठ बार 2 आठ भागों या अनुमाणा में—विन्वा प्रकृतिरष्टधा—म० ७।४, विन्वीरुष्टधा विप्रसत्तार वषा—रघु० १६।३ ।
 अष्टय (वि०) [स्त्री०—मी] [अष्टन्+इट् म् च] आठवा,—न आठवाँ भाग,—सो चांद्रमास के दोषों पक्षों का आठवा दिन । स०—अज्ज आठवाँ भाग,—कालिक (वि०) जो व्यक्ति सान समय (पूरे तीन दिन तथा चौथे दिन का प्रातः काल) भोजन न करके आठवें समय पर ही भोजन ग्रहण करता है—मनु० ६।१९ ।
 अष्टयक (वि०) [अष्टय+कन्] आठवाँ,—पौषमाष्टक हरेत्—याज्ञ० २।२४४ ।
 अष्टविका [अष्टयी+कन् ह्रस्व, टाच्] चार ठोले का बजन ।
 अष्टवस्त्रम् (वि०) [अष्ट च वस्त्र च] अठारह । स०—उषपुराज्यम् गीण या छोटे पुराण, अष्टानुपुराणानि मुनिभिः कथितानि तु, आठ सनत्कुमारगेन मारसिंह-मल परम्, तृतीयो नारद श्रोत कुमाराण तु भास्वित्य चतुर्थं शिवधर्माख्य माहात्म्यन्दोषाभाषितम् दुर्वासो-क्तमाश्वयं नारदोक्तमत परम्, कथित यानत्र वैव तर्षवाननेगितम्, ब्रह्माण्ड वाक्य वाच कालिकाह्वय-मेव च, महिषशूर तथा ताम्र सौर सर्वाधर्मश्वयम्, पराशरोक्त प्रवर तथा मयाकतइयम् । इदमष्टादश श्रोक्त पुराण कोर्ममजितम्, चतुर्थां सस्थित पुष्य सहिताना भूयेत—हेमाद्रिः । पुराज्यम् अठारह पुराण,—भाद्रा पाण्डु बेंणव च सौम मागवत तथा, तथात्मन्म-रदीयं च मार्कण्डेय च सत्यम्, आग्नेयश्वक श्रोक्त भविष्यनक्षत्र तथा, दशम ब्रह्मवैवर्तं लिङ्गमेकादश तथा, वाराह ब्राह्म श्रोक्त स्थाव्य वाच चबोदशम्, चतुर्दश नामन च कौपीं पंचवक्त्र तथा, मत्स्य च भाठर वैव ब्रह्माश्वत्यास तथा ।—विचारणवत्म् मुद्रदत्तेशास्त्री के अठारह विषय [अष्टवके के कारण]—हे० मनु० ८।४-७ ।
 अष्टिः (स्त्री०) [अस्+कित्न् पुं० वाच्य] 1 श्लोक का पाया 2 सालह की सख्या 3 बीज 4 वृद्धली ।
 अष्टोका [अष्टित्तत्त्वकडिनास्थान राति—रा+क रत्न क. शीर्षं—तारा०] 1 श्लोक मटोल धारी, 2 श्लोक ककरी या पत्थर 3 धिरी, वृद्धली 4 बीज का अनाथ ।
 अम् 1. (अवा० पर०) [अस्ति, माशीत्, अस्तु, स्वात्— वाचैवानुक्त लकारों में सर्वोप स्वरचलना—अवशिप् चू

घातु है] 1. होना, रहना, विद्यमान होना (केवल कर्ता) नामवाचीनी सदाचीत्—घट्। १०।१२२, —नयेवाहं वातु नासम्—अथ० २।१२, भागीदाता नलो नाम—नल० २।२, 2. होना (अपूर्ण विधेयक की क्रिया या विधेयक शब्द के रूप में प्रयुक्त, बाद में छेदा, विशेषण, क्रियाविशेषण या और कोई समानार्थक शब्द आता है) धादिके सति राजनि—मनु० १।१११, आचार्ये सस्थिते सति ५।८०, 3. सवध रचना, अधिकार में करना (अधिकर्ता में सब०)—अथमान्ति हृस्व तत्—पंच० ५।७९, यद्य नास्ति स्वय प्रजा—५।७०, 4. भागी होना तस्य प्रयत्न फल नास्ति मनु० ३।१२२, 5 उदय होना, मटित होना प्राप्तिपच मम मनसि—का० १।४२, 6. होना 7. नेत्र्य करना, हो जाना, प्रमाणित होना (सप्र० के साथ) त स्वात्तु स्थिरमथितयोगमुक्त्वो नि श्रेयसायानु न—विक्रम० १।१, 8 यथात्त होना (सप्र० के साथ) मा तथा पावनाय स्यात्—मनु० १।१८९, अनेनृपाले परिदीपमान शाकाय वी स्यात् सवधाय वा स्यात्—उगन्नाथ, 9 उग्रनाथ, बहना, रहना, बनना, भाषात करना, हा पित क्वासि हे मुधु - भट्टि० ६।११, 10 विशेष सवध रचना, प्रमाणित होना (अथ० के साथ) कि नृ यन्तु यथा बयमन्नामेवमित्ययमन्मान् प्रति स्यात् स० १, अन्तु अच्छा, हा पित, एवमन्तु, त्वात्तु उमना ही हाव, रचनि, अद्युक्त पूर्ण भूनात्मिक क्रिया का रूप बनाने के लिए घातु में पूर्व बाह्य जाने वाला 'आम' कई बार घातु से पुनर्क करके लिखा जाता है न पातया प्रथममात्र पयात् परघातु—रघु० १।९१, १।८६, अलि नभापत होना, खेप्ट होना, बड़ पड़ कर होना, अलि सवध रचना, अपने भाग का हिरनवार बनना अन्वमात्रिप्यात्—सिद्धा० आचिन्त-निकम्पना, उग्ररता, दिशाई देना आचार्यक विदिति मान्यमात्रिदोतीत् मा० १।२६, प्रभुस प्रकट होना, ऊपर का उग्ररता, प्रादुरासीनमानद मनु० १।९, रघु० १।१२५, व्यलि (आ० व्यतिहे, व्यन्ति, व्यतिस्ते) बड़ जाना बड़ पड़ कर होना, खेप्ट या बड़िया होना, मात कर देना अन्व्या व्यति-स्ते नु धर्माणि धर्म, भट्टि० २।७५।

अथ (दिवा० १२०) [अथानि, अन्] 1 फेंकना, छारना, डाल से फेंकना, (बहुक) हासना, निशाना लगाना, 'निशाना' में अर्थ०) स्रियकायदिचीकात्सम् रघु० १।२।२, भट्टि० १।५११, 2. फेंकना, ले जाना, जाने देना, छोड़ना, छोड़ देना, बीछा कि 'अस्त नाम' 'अस्तधाक' और 'अस्तकोष' में, दे० अस्त; अलि—, निशाने से परे (नीर बोली आदि) फेंकना,

हाथी होना; अस्तस्य दूर परे निशाना लगाकर, बड़ पड़ कर, (हि० त० त० में बड़ कर), अलि—, 1. एक के ऊपर दूसरी वस्तु रखना 2. बोझना, 3. एक वस्तु की प्रकृति को दूसरी में बदलना,—आद्यवर्णानाव-न्यन्वस्यति—मारी०, अथ—1. फेंक देना, दूर करना, छोड़ना, त्याग देना, रद्वी में हानना, अस्वी-कार करना—किमिष्यपास्यामरजानि यौवन—कु० ५।५४, सार ततो शास्यमपास्य कस्य—पंच० १, सि० १।५५, सगरजपास्य—वेणी० ३।४, इत्यादीनां काव्यमक्षणम्यथास्तम् त० व०, अस्वीकृत, निरा-कृत 2. हाक कर दूर कर देना, हिलर बिगार करना, अलि—, 1 अध्यास करना, भक्क करना—अध्यमतीव वतमासिधायन्—रघु० १।६७, मा० १।१२ 2 किन्ती कार्य को बार-बार करना, दोहराना—मुनमुक्त रोमन्वन्म्यस्तु—स० २।६, कु० २।५०, 3. अध्ययन करना, संस्वर पठना, पढ़ना—वेदमेव महाअध्ययन् मनु० २।१६६, ५।१५७, उद्—, 1. उठाना, ऊपर करना, सीधा करना—पुच्छमुदध्वति सिद्धा०, 2. मुझ जाना, 3. निकाल देना, बाहर कर देना, इथि—1. निकट रचना, घरोहर रखना 2. निकट—अनेन मुक्ताव देना, प्रस्तुत करना—किमिदमुपयस्तम्—स० ५, सदुपन्यस्यति कायकर्मय—कि० २।३, 3. सिद्ध करना, 4. किसी की देख रेख में देना, सुपुई करना 5. परिवारण बर्णन करना, लि—, 1. उपक्रम करना, रखना, नीचे फेंकना—गिन्नरिपु एव स्वस्य मेघ० १३, दृष्टिपूत न्यसेपाद—मनु० ५।५६, 2 एक बौर रखना, छोड़ना, त्यागना, परित्याग करना, तिनावलि देना—त मन्मतीचिह्नमपि राजलक्ष्मी—रघु० २।७, म्यस्तवन्मन्व- वेणी० ३।१८, हथी प्रकार—प्राणम् अस्थति—3 अन्दर रखना, किसी वस्तु पर रखना (अथि० के साथ) —गिरस्याभा म्यस्ता अथ ८२, चिक्व्यस्त विष में डाला हुआ—विक्रम० १।५, लनप्यतोशीरम्—स० ३।९, लगाना हुआ—अयोधे न मद्रिको म्यस्यति धारमध्वम्—भट्टि० १।२२, मेघ० ५९, 4 शीपना, हवाके करना, देखरेख में रखना अथमपि तव सुती म्यनराज्य—विक्रम० ५।१७, धारति स्वयं मा—भट्टि० ५।८२, 5 देना, अग्रण करना, हिलरज करना—रासे शीर्यस्वतामिति—रघु० १।२२, 6 कहना, भावने रखना, प्रस्तुत करना—अर्वा-नर म्यस्यति—मन्कि० सि० १।१७, 7. मिष्—1 निकाल फेंकना, फेंक देना, छोड़ना, छोड़ देना, धारित बोध देना,—निस्त्यापाम्नीर्वयथास्तुपुष्कम्—सि० १। ५५, १।६३ 2. मध्द करना, दूर करना, हुराना, मारना, मिटाना—अज्ञाप सावधमेव ततो निरस्तम्—रघु० ५।७१, रक्षति केटी परितो निरास्तम्

—मृष्टि० ११२, २३६, ३ निकालना, निष्कासन, निर्वाहित करना—गुहाभिरस्ता न तेन वैदेहसुता मन्तः—रघु० १४८४, ४ बाहर फेंकना, (तीर) छोड़ना ५. अस्वीकार करना, (सम्प्रति भादि का) निराकरण करना ६. ग्रहण लगना, छिप जाना, पृष्ठभूमि में गिर पड़ना—मृष्टि० १३, बरा—, छोड़ना, त्यागना, त्याग देना,—छोड़ देना—प्रास्त-समुद्रो मुद्याचिषसति—कि० ५१२०, २ निकाल देना ३ अस्वीकार करना, निराकरण करना, प्रत्यास्थान करना—इति यदुक्त तदपि प्रास्तम्—सा० ६० १, परि— १. बाहरें बाहर फेंकना, सब बाहर फैलाना, प्रसार करना २ फैला देना, बेचना—ताभोष्ठ्यमंस्त-श्च स्थितस्य—कु० १४४, ३ मोड़ लेना—पर्वत विलोचनेन—कु० ३१८८, ४ (अग्नि) गिराना, नीचे फेंकना—रघु० १०७४, मनु० १११८३ ५ उलट देना, पलट देना, ६ बाहर फेंकना—रघु० १३१३, ५४४९ परिणि—, फैलाना, बिछाना, पर्वु—, १ अस्वीकार करना, निकाल देना २ निषेध करना, आक्षेप करना, प्र—फेंकना, फेंक देना, उछाल देना, बि—, उछालना, बखेला, अलग-अलग फेंकना, फाड़ देना, नष्ट करना—मृष्टि० ८११६, ९३११, २ सड़ों में बिभक्त करना, पृथक् कर देना, क्रम से रखना—स्वय वेदान् व्यसन्—पच० ४५०, विव्यास वेदान् यस्मात्स तस्मात् व्यास इति स्मृत,—महा०, रघु० १०८५, ३ अलग-अलग लेना, एक-एक करके लेना—तदस्ति कि व्यस्तमपि विस्तोचने—कु० ५१२०, ४ उलट देना, पलट देना ५ निकाल देना, हटा देना—बिनि—, १. रखना, बसा करना, रख देना—विन्यस्यन्ती भुवि गणमया देहसीदत्तपुत्री—मेघ० ८८, मृष्टि० ३१३, २ जमा देना, किसी की ओर निर्वास करना—एमे विन्यस्तमानसा—रामा०, ३ सौंपना, दे देना, सुपुर्ण कर देना, किसी के जिम्मे कर देना,—मुत्-विन्यस्तपत्नीक—याज्ञ० १४५५, ४ क्रम में रखना, संवारना, बिचरि—, १ उलट देना, पलट देना, ओघा कर देना, २ बदलना, परिवर्तन करना—उत्तर० १, ३ क्रमवस्त होना, चलत सम्भवा,—प्रतीकारो व्याधे मुक्षामिति विपर्वस्यति जन्—मनु० ३१२, ४ परि-र्वात होना (अक०) क्त्— १ लाना, एकत्र करना, मिलाना, जोड़ देना—मनु० ३१८५, ७१५७ २. समाप्त में जोड़ देना, समाप्तकरना ३ सामुदायिक र से ग्रहण करना—समस्तरथश्चा पृथक्—मनु० ७१९८, सयुक्त रूप से या अलग अलग, सति—, १ रखना, सामने माना, बसा करना, २ एक ओर रखना, छोड़ना, त्यागना, छोड़ देना—सत्यास्तमाम्—रघु० २१५९, सत्यसाधरय मात्रम्—मेघ० ९३, कु० ७६७, ३ दे

देना, सौंपना, सुपुर्ण करना, हवाने करना—मग० ३१३, ४ (अक० के रूप में प्रयुक्त) सत्तर को त्यागना, सांसारिक बंधन तथा सब प्रकार की आस-स्तियों को त्याग कर विरक्त हो जाना—सदृश शश-भङ्गुर तदर्थवित्त कन्यस्तु सत्यस्यति—मनु० ३१३२, 'अस्' (भ्या० उभ०) [असति—ते, असित] १ जाना, २ लेना, ग्रहण करना, पकड़ना ३ चमकना (इस अर्थ को दक्षिण के लिए प्रायः निम्नांकित उदाहरण दिये जाते हैं— निष्प्रभश्च प्रभूरस भ्रमताम्—रघु० ११ ८१, तेनास लोक पितृभ्याम् विनेषा—१४२३, लाव-ण्य उत्पाद्य इवास यत्न—कु० १३५, वामन ने महा 'दिदीधे' (सभका) अर्थ को जाना है—चाहे यह बुरह ही है, उपर्युक्त उदाहरणों में 'आस' का 'चमक' का समानार्थक भाव लेना अधिक उपयुक्त है—चाहे इसे शाकटायन की भांति—तिष्ठन्तप्रति-रूपकमव्ययम्—अव्यय मानें, या कल्हण की भांति इसे व्याकरणविरुद्ध प्रामादिक प्रयोग—दे० मस्मि० कु० १३५ पर) ।

असंघत (वि०) [न० त०] १ समयरहित, अनियमित २ बचनहीन, जैसे—अमयनोऽपि मोक्षार्थी—में ।

असम्भ, [न० त०] सम्प होना, नियन्त्रण का अभाव, विघोषत ज्ञानेन्द्रियों के ऊपर ।

असंस्मरहित (वि०) [न० त०] व्यवधान रहित, अवकाश रहित (समय और काल का) ।

असंशय (वि०) [न० व०] सदेह से मुक्त, निश्चयवान्—अम् (अष्ट०) निम्सन्देह, असन्दिग्धरूप से, निश्चय ही,—असंशय सशपरिग्रहसत्ता—श० १२२ ।

असंशय (वि०) [न० व०] जो सुनने से बाहर हो, जो सुनाई न दे, असंशये—सुनने के श्रेय में बाहर—मेघ० २१०१ ।

असंलुप्त (वि०) [न० त०] १ अनिश्चित, अयुक्त २ जो सबके साथ मिल कर न रहना हो, संपात का बंटवारा होने के पश्चात् जो फिर न मिला हो (तत्पराधिकारी के रूप में) ।

असंस्तुत (वि०) [न० त०] १ स्तुकाहीन, अपरिस्तुत, अपरिभाषित २ जो सँवारा न गया हो, सचाया न गया हो ३ जिसका कोई घोषनात्मक वा परिष्कारा-त्मक संस्कार न हुआ हो,—तः व्याकरणविरुद्ध, अपायम् ।

असंस्तुत (वि०) [न० त०] १ अज्ञात, अनजाना, अपरि-चित—असंस्तुत इव परिचर्याको हाथको जन्—का० ७३, कि० ३१२, २ अज्ञातारण, निश्चि ३ सामयस्य रहित—भाषति पश्चात्संस्तुत वेत्—अ० १३४ ।

असंस्थानम् [न० त०] १. सर्वात्म का अभाव २ अन्व-यत्वा, पक्व ३ कमी, दरिद्रता ।

असंस्थित (वि०) [न० त०] 1. अस्थवस्थित, कबराहित 2 असंगृहीत ।

असंस्थित (स्त्री०) [न० त०] 1. अस्थवस्था, यक्षवध ।

असंहत (वि०) [न० त०] 1. न बुझा हुआ, असंगुण, विचाररत हुआ, 2 —सः पुरुष या आत्मा (सा० व०) ।

असक्त (अस्य०) [न० त०] एक बार नहीं, बार-बार, बहुधा—असक्तकारणं तरिक्त्वा—रघु० १।२३, मेघ० १२, १३, 1 सम०—असक्तिः—बारबार चिंतन, मनन, —वर्षाकाः बारबार वन्य ।

असक्त (वि०) [न० त०] 1 अनासक्त, वेधभाव, उदासीन असक्त मुञ्जमन्थकृत—रघु० १।२१, 2. न फंसा हुआ—श० २।१२, 3. सांसारिक बाधनाओं तथा सबंधों के प्रति अनासक्त,—अस्यु (अस्य०) 1 अनासक्तिपूर्वक, 2 अनवरत, विना रुके ।

असक्त (वि०) [न० व०] अनासक्ति ।

असक्तिः [न० त०] अयु, विरोधी ।

असक्तोष्ण (वि०) [न० त०] जो एक ही मोक्ष या कुलका न हो ।

असक्तपुत्र (वि०) [न० त०] जहाँ भीरु-सङ्कटा न हो, सुखा हुआ, चौधा (जैसे कि सङ्कट) —अः भीरी सङ्कट ।

असक्तव्य (वि०) [न० व०] विनती से परे, वधनारहित, अनगिनत समू० १।८०, २।१५, ३—अस्यु अन्ततः ।

असक्तव्यस्य (वि०) [न० त०] वधनारहित, अनगिनत ।

असक्तव्येव (वि०) [न० त०] अनगिनत, —अः क्षिप की उपमा ।

असङ्ग (वि०) [न० व०] 1 अनासक्त, सांसारिक बन्धनों से मुक्त 2 बाधरहित, निर्बाध, अनुच्छिन्न 3 असंगुण बनेला, निलिप्त, यः [न० त०] 1 अनासक्ति - यन् ६।७५, 2 पुरुष या आत्मा (सा० व०) ।

असङ्ग (वि०) [न० त०] 1 न बुझा हुआ, न मिला हुआ 2 अनुचिन, बनेक 3 उज्ज्वल, अशिष्ट, अपरिष्कृत ।

असङ्गति (स्त्री०) [न० त०] 1 मेक का न होना 2 असङ्गता, अनौचित्य 3 (सा० व०) एक अलकार जिसमें कार्य और कारण की स्वामी अनुकूलता न पाई जाय जहाँ कारण और कार्य के प्रतीचमान संबंध का उल्लेख न हो ।

असङ्ग (वि०) [न० व०] न मिला हुआ,—अः 1 विद्योग, अलगवा 2 असङ्गता ।

असङ्ग (वि०) [न० त०] 1 न मिला हुआ, असङ्ग 2. सांसारिक विषयों में अनासक्त ।

असक्त (वि०) [न० व०] संसाहीन,—ज्ञा विद्योग, असह-मति, अनाभवस्य ।

असक्त (वि०) [न० त०] 1 अधिष्ठाया, जिसका अधिपत्य न हो—असति त्वधि—हु० ५।१२, मनु० १।१५५, 2 संसाहीन, अवास्तविक,—आत्मनो ब्रह्मपा-ग्नेयमसत्त न करिष्यति 3 बुरा (विष० सत्)

सदसङ्गचित्तोत्थेव—रघु० १।१०, 4. दुष्ट, पापी, निष्ठ जैसे 'विचार 5 अभाव 6. यत्न, अनुचित, मिथ्या, अवलम्ब—इति यदुक्तं तदसत् (प्रायः विद्याया-स्य रचनाओं में प्रयुक्त)—(पु०—नू) वन, (नपु०—नू) 1. अनस्तित्व, अलता 2 वृत्, मिथ्यात्व—ही दुष्टचरिणा स्त्री—असती भवति सप्तम्या—ब० १।५१८। सम०—अस्युत् (पु०) बहु ब्राह्मण यो पाषंडव्यक्त रचनाओं को पढ़ता है, जो अपनी वेदशास्त्रा की उपेक्षा करके दूसरी शास्त्रा का अध्ययन करता है शास्त्रारं कहुलाता है—स्वशास्त्रा य परित्यज्य अन्यत्र कुले यमम्, शास्त्रारं य विज्ञेयो वर्जयेत् फिमायु ५।—आलयः 1. चर्मविच्छेद आरथ या सिद्धांत 2 अनुचित साधनों से (वन की) प्राप्ति 3. बुरा साधन—आचार (वि०) बुराचारी, बुरा आचरण करने वाला, दुष्ट (—ः) अशिष्ट-आचर, —अस्युः—फिमा 1 बुरा काम 2. बुरा व्यवहार,—अस्युः 1. गलत कार्य, 2. मिथ्या प्रथम,—अ(ज्ञा)ः 1 बुरा दौध 2 बुरी राय, पक्षपात 3 बन्धनों जैसी इच्छा,—वेधिल्लम् इति, आचार—प्रातिपद्यस्ये-प्लितम् ५। ५।६,—दुष् (वि०) बुरी दुष्टि वाता —ब० 1 बुरा मार्ग 2 अनिष्ट-आचरण या सिद्धांत; —नाथो ह्येतं मतामस्यबुधामायु, समानो ह्येतम्—वा० ५।३६,—अरिष्टः बुरे मार्ग को ग्रहण करना,—अरिष्टः 1 बुरी वस्तुओं का उद्धार 2 (विक्रि भाति) अनुपयुक्त उपहार ग्रहण करना या अनुचित व्यक्तियों से लेना,—आयः 1 अनस्तित्व, अभाव 2 बुरी राय या दुर्गति 3 अहितकर आचरण,—दुष्ति,—अस्युत् (वि०) अनिष्टकर आचरण करने वाला, दुष्ट (—तिः स्त्री०) 1 नीच या अपमानजनक पैदा 2 दुष्टता,—अस्युत् 1 गलत सिद्धांत, 2 चर्मविच्छेद सिद्धांत,—अस्युः बुरी गति—हेतुः बुरा या आभावी कारण, वे० 'हेलाभात' ।

असत्तायो—दुष्टता ।

असत्ता [न० त०] 1 अस्तित्व, 2. जो सचाई न हो 3. दुष्टता, बुराई ।

असत्त्व (वि०) [न० व०] 1. शक्तिहीन, सत्तारहित 2. जिसके पास कोई पदु न हो—स्वम् [न० त०] 1. अनस्तित्व, 2. अवास्तविकता, असत्ता ।

असत्त्व (वि०) [न० त०] 1. वृत्, मिथ्या 2. कल्पविक, अवास्तविक—स्वः मूढः—स्वम् मिथ्यात्व, वृत्त शोकात्, वृत्त । सम०—आविम् (वि०) वृत्त शोकसे कर्म,—शेष (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहने वाला, मूढा, कमीना, शोकेतः; 'वे कने सही पद कारिता—ः ।

असत्त्व (वि०) [स्त्री०—ज्ञी] [न० त०] 1. अज्ञान, बेबेक 2. अशोध, अनुपयुक्त, असङ्ग, 'संयोगकारिण

—का० १२, अयोध—मात. किमप्यस्युसं विद्वत्
 बभस्ते—वेणी० ५।३।
 असक्तम् (अव्य०) [न० त०] गुरुत् नही, देरी करके।
 असक्त (नपु०) (केवल 'असक्त' शब्द की रूपरचना में हि०
 वि० ब० के परचात् प्रयुक्त) सधिर।
 असक्तम् [अस् + क्तृ] जेकना, (अनूक) दागना, (तीर)
 चलाना, जैसा कि 'दृष्यमान' = अनुक में,—कः पीतसाल
 नाम का बस—निरसनैरसनैरुपायेता— शि० ९।४७।
 असक्तिष्व (वि०) [न० त०] 1 जिसमें सन्देह न हो, स्पष्ट,
 साक्ष 2 निश्चित, शक्यरहित,—अव्य० (अव्य०)
 निरचय ही, निस्सन्देह।
 असक्ति (वि०) [न० ब०] 1 जिनका जोष न हुआ हो
 (जैसे कि शब्द), 2. बचनरहित, अबद्ध, स्वतन्त्र,
 —वि सधि का अभाव।
 असक्तः (वि०) [न० त०] 1 जो शत्रुशस्त्रों से मुक्तजित
 न हो 2 घृत्, घमडी, पक्षितमन्य।
 असक्तिफलं [न० त०] 1 पदार्थों का दृष्टिगोचर न होना,
 इन को वस्तुओं का बोध न होना 2 दूरी।
 असक्तिवृत्ति (स्त्री०) [न० त०] वापिस न मूडना
 —असक्तिवृत्ते तदतीतयेषः शि० ९।२ नील गया
 सदा के लिए—रघु० ८।१६।
 असक्तिष्व (वि०) [न० त०] जो पित्रदान से सक्त न हो,
 जो सधिर सबध से मुक्त न हो, जो अपने बंध या
 कुल का न हो।
 असक्त्य (वि०) [न० त०] तमा में बैठने के अयोग्य,
 गैरार, नीच, अवलील, अशिष्ट (दण्ड)।
 असक्त (वि०) [न० त०] 1 जो बराबर न हो, विषय
 (जैसा कि सख्या) 2 असमान (स्थान, सख्या और
 मर्दा की दृष्टि से) असमं समीपमान—पञ्च०
 १।१४, 3 असम्युक्त, बेजोड़, अनुठा। सम०—इष्टु,
 —शाय, —साध्यक विषय सख्या के तीरो की धारण
 करने वाला, कामदेव जिनके पांच बाण हैं,—नयन,
 —नेत्र,—लोचन (वि०) विषय सख्या की अतीतो
 वाला, शिब जिसके तीन बाण हैं।
 असक्तजित (वि०) [न० त०] 1 अस्पष्ट, जो बोधमय
 न हो—स्वल्पदसम्यक्तसम्युक्तमित्येते—उत्तर० ४।४,
 भा० १०।२, 2 अयुक्त, अनुचित,—यद्यपि न कापि
 हानिर्दशामन्यस्य रासने चरति, असमजतामिति
 मला तथापि तरलायते शैल—उद्बट० 3 बेतुका,
 निरर्थक, मूर्खतापूर्ण।
 असक्तवापिन् (वि०) [न० त०] जो घनिष्ठ या अन्तर्हित
 न हो, आनुपगतिक, विच्छेदित। सम०—कारणम्
 (तर्काश्च में) आनुपगतिक कारण, अन्तर्हित या
 घनिष्ठ संबन्ध न होना, एककर्मवाचकविशेषमवाच्यसम-
 वाधितुल्य—भाषा० तथा तनुयोग पटस्य।

असक्तत्व (वि०) [न० त०] 1 अपूर्ण, अधिक, अपूरा
 2 (व्या० में) सपात से युक्त न हो, जिसमें सपात
 न हुआ हो 3 पुष्क, विपुक्त, असक्त—विप० अन्तर
 —इत्युक्त्वा सपात की रचना (सपात के विच्छे
 को प्रकट करने वाला शब्ध)।
 असक्तवापत् (वि०) [न० त०] 1 जो अभी पूरा न हुआ
 हो, अपूरा रहा हुआ,—रघु० ८।७६, कु० भा० १९, 2
 जो पूरी तरह प्रहण न किया गया हो, अपूर्ण।
 असक्तवीर्य (अव्य०) विना प्रती भाति विचार किये।
 सम०—कारिण् (वि०) विना विचारे काम करने
 वाला, अधिवेकी, असाधवान।
 असक्तव्यति (वि०) [न० ब०] दहित, दुखी—ति (स्त्री०)
 [न० त०] 1 दुर्भाग्य 2 कार्य का पूरा न होना,
 अवाकलता।
 असक्त्युत्तं (वि०) [न० त०] 1 जो पूरा न हो, अपूरा 2
 जो साग न हो 3 अपूर्ण, अधिक—जैसा कि शब्ध
 —चन्द्रमसमूर्णमव्यक्तमिदानीम्—मुद्रा० १।६।
 असक्त्यव्यं (वि०) [न० त०] 1 जो जुड़ा हुआ न हो,
 अवगत 2 निरर्थक, बेतुका, अर्थहीन, "आ(प्र)कारिण्
 निरर्थकः शाने करने वाला—अनम्बद्ध अस्वशिम—पृच्छा०
 ९, बेहूदा व्यक्ति 3 अनुचित, गलत—अनू० १२।६
 —इत्तुं बेतुका शब्ध, निरर्थक या अर्थहीन शब्ध
 जैसे कोई कहे—यावज्जीवनत मोनी—प्रादि—दे०
 'अवद्ध' भी।
 असक्त्यव्यं (वि०) [न० त०] जिनका कोई सम्बन्ध न
 हो, किसी से संबन्ध न रखने वाला—कः [न० त०]
 संबन्ध का न होना, संबन्ध का अभाव—यद्वा साध्यव-
 द्यमित्यन्तसंबन्ध उदाहृत—भाषा० ६८।
 असक्त्यव्यं (वि०) [न० त०] 1 जो सकीर्ण न हो, विसृप्त
 2 जहाँ लोगों की भीड़-भाड़ न हो, अकेला, एकान्त
 3 सुखा हुआ, सुगम।
 असक्त्यव्यं (वि०) [न० त०] जो सम्यक न हो, असमाध्य
 —क 1 अनन्तित्व, 2 अयथावधाना 3 अर्थभावना।
 असक्त्यव्यं, असक्त्यव्यं (वि०) [न० त०] 1 असक्त्य
 2 अयोध।
 असक्त्यव्यं [न० त०] समझने की कठिनाई या असमर्थता,
 असमाव्यता।
 असक्त्युत्तं (वि०) [न० त०] जो इष्टिम उपायों से प्रका-
 शित न श्या गया हो, अज्ञात, प्राकृतिक,—असक्त्युत्तं
 मन्थनम्—कु० १।३१ 2 जो अभीमाति वाला
 पोसा न गया हो।
 असक्त्युत्तं (वि०) [न० त०] 1 अननुपदिन, अननुज्ञान,
 अस्वीकृत 2 नापसन्द, अक्षिणर 3 असह्युत्त, विम्व
 मत रखने वाला,—तः शान—शान् दोषैरसक्त्युत्तान्
 काव्य० ७। सम०—कारिण् (वि०) स्वाधी की

स्वीकृति के बिना उसकी चीज उठा के जाने वाला, चोर ।

असम्पत्ति (स्वी०) [न० त०] 1. विमति, अवहृषति 2 असवीकृति, नापसंदगी ।

असम्पत्ति (स्वी०) [न० त०] 1. मोह का अभाव 2 अमकला, स्वैये, गान्धितता 3 वास्तविक ज्ञान, सच्ची कल्पवृष्टि ।

असम्पत्ति (स्वी०) [स्त्री०—सीधी] [न० त०] 1 घुरा, अनुचित, अपद 2 अपूर्ण, अपूरा ।

असत्कम् [अत्+कल्प्] 1. लोहा 2 अन्ध छोड़ते समय पड़ा जाने वाला मश 3 हथियार ।

असत्कर्ष (वि०) [न० त०] मिलन जाति या वर्ण का अर्थ नाम कुलपतेरिपमवर्णलेखसंभवा स्थान्—घा० १ ।

असह (वि०) [न० व०] 1. जो महा न भाय, असह्य, अभीर 2 असहिष्णु, (प्राय मन्त्र० के माघ कर्म० के रूप में)—ना स्वीत्यभावात्सहो भयस्य—मूढा० ४।१३ ।

असह्य (वि०) [न० व०] असहिष्णु, असहनशील, ईर्ष्यालु, न शान्, मज् [न० त०] असहित्वा, अभीरता, परगुणामयम अनुया ।

असह्यवीर्य, असहित्वा (वि०) [न० त०] जो सद्मा न असह्य, } हाथ, दुग्ध, अहन्त्य—अमहा-
वीर्य भगवन्नुपमन्वमवेदि म—रघु० १।३१, १।१२५, कु० ८।१ ।

असहाय (वि०) [न० व०] 1 मिश्रीन, अकेला, एकाकी 2 बिना सगो माधियों के—मनु० ७।३०, ५५, ना, लक्ष्म अकेलान, एकाकीयन ।

असाहाय्य (अव्य०) [न० त०] 1 जो जीवों के सामने न हो अद्वय रूप में, अप्रत्यक्ष रूप से ।

असाक्षिक (वि०) [स्त्री० की] [न० व०] 1 जिसका कार्य पताह न हो, बिना साक्षी के, जिसका कोई साक्षी न हो । असाक्षिकेयु ल्यर्थे । मित्रो विवदमानयो मनु ८।१०५ ।

असाक्षिन् (वि०) [न० त०] 1. जो चरमदीय गवाह न हो 2 जिसका साक्ष्य कानूनी दृष्टि में शक्य न हो 3 जो किसी कानूनी दस्तावेज को प्रमाणित करने का अधिकारी न हो ।

असाक्षणीय } (वि०) [न० त०] 1. जो सम्पन्न न किया
असाक्ष्य } जा सके, या पूरा न किया जा सके 2 जो प्रमाणित होने के योग्य न हो 3 जिसकी चिकित्सा न हो सके (रोग या रोगी) —असाक्ष्य कुष्ठे कोप प्राये काले यथो यथा—सि० २।८४ ।

असाधारण (वि०) [न० त०] 1. जो सामान्य न हों, असाधारण, विशेष, विशिष्ट, 2. (तर्क शास्त्र में) जो सत्य या विपक्ष किसी में भी होने के रूप में विद्यमान

न हों—वस्तुमयस्वाद् आधुतः स स्वसाधारणो मत 3. निजी, जिसका कोई भीर दावेदार न हो—कः तर्क-शास्त्र में हेत्वासास, अर्थकालिक के तीन प्रेरी में से एक ।

असाधु (वि०) [न० त०] 1. जो अच्छा न हो, दुरा, स्वावर्द्धित, अश्रिय,—अतोर्हेति संनुमसाधु साधु वा—कि० १।४, 2. दुष्ट 3. दुष्चरित्र (अर्थिक के साथ) असाधुमतिरि—सिद्धा० 4. प्रपन्न, अपभ्रष्ट (छन्द) ।

असाधुत्विक (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] बिना बदतर का, जो शत्रु के अनुकूल न हों—कि० २।२४० ।

असाधारण (वि०) [न० त०] 1. जो साधारण न हो, विशेष—रघु० १।५।३९, 2. असाधारण—अन्वय विद्योप या विभिन्न संपत्ति ।

असाध्य (वि०) [न० त०] 1. अनुपयुक्त, असोमन, अनुचित—तन्म (अव्य०) अनुचित रूप से, अवीर्यना-पूर्वक [फिजाविशेषण के रूप में बहुधा प्रयुक्त] = असाध्यत—विषयव्योपि संबन्धे स्वयं अनुमसाध्यतम्—कु० २।५५, सप्रत्यभावात्प्रत बन्नुमुक्त मूलकपाणिना—सि० २।३१, रघु० ८।१०५ ।

असार (वि०) [न० व०] 1 नीरस, स्वाहीन 2 (क) रसहीन, निरर्थक (ख) निकम्मा, अशयन, साहीन—असार ससार परिमृशितान्म चिद्वनवम्—भा० ५। ३०, उत्तर० १, असारं मनु ससारे मान्यतत्पुन्युत्प-यम्—धर्म० १२।१३, 3. व्यर्थ, असाध्यक 4 निर्बल, कमजोर, बलहीन,—अनुमान्यसासारता सति काय-साधिका (ममबायो हि दुर्बल) पञ्च० १।३३१, सि० २।५०, -र, -रन् [न० त०] 1 अनाद्ययक, या महत्त्वहीन भाव 2 एतद् वृक्ष 3. अगर की लकड़ी ।

असारता [असार+तत्+टाप] 1. नीरसता, 2. निकम्पायन, 3 साहीन प्रकृति, साधयवुर अवस्था—विधिमा देहनुत्तामसारताम्—रघु० ८।५१ ।

असाहस्य [न० त०] बलप्रयोग का अभाव, सुशीलता ।

असिः [अम्+इन्] 1 तलवार 2 पशुओं की हथका करने वाला बाण्—सि (अव्य०) नृ, पु० अस्मि । सम०—बंदः गालो के नीचे रखा जाने वाला छोटा तलिया,—सीधे तलवार ही जिसकी पीछिका का सामन है, वेतन पाने वाला सैनिक योद्धा, बंधु,—बंधुकाः मगरबन्ध, बद्धिवाल, —दंतः बद्धिवाल,—बारा तलवार की धार—सुरगज इव दंतोर्भवन्वै-त्यासिधार—रघु० १०।८६, ४१,—वारजालम् १ (किन्हीं के मतानुसार) तलवार की धार पर सजे होने की प्रकृति—(हूतों के मतानुसार) पृथ्वी पत्नी के साथ रुद्र की उसके साथ वैशुव की इच्छा की दृष्टता पूर्वक रोकना;—यथैक्यनस्वापि प्रकटा नीर-

मुच्यते, अविद्याउपगत नाम वदन्ति मुनिपुंगवा ।
 अक्षया—युवा युवत्या सार्वं अमृतममृतं वदाक्षरेत्,
 अमृतनिवृत्तसगं स्यादविद्याउपगतं हि तत्—यादव
 2 (अत आठ०) कोई भी अत्यन्त कठिन कार्य
 —सत्ता केनोद्विष्ट विषयमविद्याउपगतविद्यम्—अतं
 २।२८, ६५—आद्यः—आद्यकः शस्यकार, सिकलीगर
 वा शस्य-परिष्कारक,—अेनुः,—अेनुका शकृ-विक्रमाक०
 ५।६९,—वष (वि०) जिसके पत्ते तलवार की जाहूति
 के हैं—रघु० १५।४८, (—अः) 1 गन्ना, ईस 2
 एक प्रकार का वृक्ष जो कि निचले सतार में उगता
 है, (—अम्) 1 तलवार का फल 2 प्यान् ०अन्न एक
 प्रकार का नरक जहाँ बुद्धों के पत्ते ऐसे लीक्य होते
 हैं जैसे कि तलवार,—वक्क गन्ना, ईस,—पुच्छ,
 —पुच्छक सूँस, गियुमार, सडुची मछली—पुत्रिका,
 —पुत्री छुरी,—मेघ विट्कारि,—हृष्यम् तलवार या
 छुरियों में लडना,—हेति. लज्जारी पुरुष, तलवार
 रखने वाला ।
 अतिकम् [अति + कन्] ठोड़ी और निचले ओठ के बीच
 का भाग ।
 अतिस्त्री [सित्त के शब्दाद्ये शुभा जरीती तद्विज्ञा अन्दा
 —असित्त—तकारस्य क्तादेशे क्रीप् च] 1 अन्त पुर
 की युवती परिचारिका 2 पञ्जाब देश की एक नदी ।
 अतिशक्ति [सत्रावा कन् ह्रस्व] युवती सेविका ।
 अस्ति (वि०) [न० त०] जो संकेद न हो, काला, नीला,
 गहरे रंग का,—असिता मोहरजनी—या० ३।५, याज्ञ०
 ३।१६६, "कोथना, ०यना आदि,—सः 1 गहरा नीला
 रंग 2 चान्द्रवाल का कृष्ण पक्ष 3 शनिग्रह, 4 काला
 सप, —ता 1 नील का पीछा, 2 अन्त पुर की दासी
 (जिसके बाल अधिक आयु के कारण संकेद न हुए
 हो) ३ 'असिनी' 3 यमुना नदी । सम०—अब्जम्
 —उत्पलम् नील कमल,—अश्विन् (पु०) अग्नि,
 —अश्वन् (पु०)—उषसः गहरा नीला पत्थर,—केवा
 काले बालो वाली स्त्री,—केवात (वि०) काली जूल्की
 वाला,—गिरि, —जमः नील गिरि, शीघ्र (वि०)
 काली गर्दन वाला (—अः) अग्नि,—अश्वन (वि०) काली
 आँसों वाला—मेघ० ११२,—पत्त कृष्ण पक्ष,—फलम्
 नीला नाटियल—भृगुः काला हरिण ।
 अस्ति (वि०) [न० त०] 1 जो पुरा या सपन्न न हो 2
 अपूर्ण, अन्वरा 3 अप्रमाणित 4 अनपका, कृष्ण 5
 जो अनुमेय न हो,—अः हे-वासात के पाँच मुख्य भागों
 में से एक, यह तीन प्रकार का है (1) आध्यात्मिक
 —जहाँ गूण के आधय की सत्ता सिद्ध न हो (2)
 स्वक्यात्मिक—जहाँ निरिद्ध स्वल्प पक्ष में न पाया
 जाय तथा (3) आध्यात्मिक—जहाँ सहवर्तता की
 उन्नत स्थिरता वास्तविक न हो ।

अस्तिः (स्त्री) [न० त०] 1 अपूर्ण विषयमत्ता, विफ-
 लता 2 परिपक्वता की कमी 3 निम्नलिखित का अभाव
 (योग में) 4 (तर्क में) बहु उपसहार जो प्रसिद्धा
 से सम्मोदित न हो ।
 अस्तिर [अस् + किरच्] 1 शहीर, किरण 2 तीर,
 सिटकनी ।
 अस्तु [अस् + उन्] 1 स्वाम, प्राण, आध्यात्मिक जीवन
 2 मूलात्माओं का जीवन 3 (ब० ब०) शरीर में
 रहने वाले पाँच प्राण—अनुभि इमान् यशस्विची-
 यत—कि० २।१९, (नपु०—स्तु) शोक, दुःख ।
 सम०—धारणम्—का जीवन धारण, जीवन, अस्तित्व,
 —अम. 1 जीवन का नाश, जीवहानि—अस्तित्वम्-
 अस्तित्वयुक्तम्—अतं ० २।२८, 2 जीवन का अय
 या आशय,—अतं (पु०) जोषित जन्तु, प्राणी,
 —सच (वि०) प्राणों के समान प्यारा (- अः)
 पति, प्रेमी ।
 अस्तुम् (वि०) [अस्तु + मत्पु] 1 जीवन, प्राणी—(पु०)
 1 जीवन प्राणी ४।२९, 2 जीवन ।
 अस्तुत्त (वि०) [न० ब०] 1 अग्रमन्, दुष्टी 2 त्रिसका
 प्राण करना आसन न हो, कठिन शब्द [न० न०]
 दुःख, पीडा । सम०—आशुत्त (वि०) दुःख से
 पीडित,—अशुत्त (वि०) अत्यन्त पीडाका शब्द
 (वि०) अग्रसल्ला वेदा करने वाला मनु० ११।१०
 — शीघिका विषय जीवन ।
 अस्तुत्त (वि०) [न० न०] अग्रसल्ला, दुष्टी ।
 अस्तुत्त (वि०) [न० ब०] निस्तल्ला, पुच्छहीन ।
 अस्तुर [अस्तु + र, न सृज इति न० न० वा] 1 ईश्व, राक्षस
 रामायण में नामा का कारण बनलाया गया है
 मुरागप्रिग्रहादेवा मुरा इत्यभिहितुना, अग्रनि-
 पदहानस्या देवैवारचामुरागान्तवा । 2 दंतताओं का
 आयु, ईश्व, दानव 3 मूत्र, प्रेत 4 मृगं 5 हाथी 6
 गहू, 7 बाइल—रा 1 राति 2 राशिविषयक संकेत
 3 वेद्या री दानवी, अमृर की पत्नी । सम०
 —अश्विन्,—राज्—राक्षः 1 अनुओं का स्वामी 2 अश्वि
 की उपाधि, प्रज्ञाद का पीय-आचार्य,—मृकः 1 अमृतों
 के मूत्र मुक्ताचार्य 2 शुक्राह, —आशुत्त ताबे और टोंन
 की मिश्रित धातु,—अश्वन्,—किति (वि०) राक्षसों
 का नाम करने वाला, शिब (पु०) राक्षसों का शत्रु
 अर्थात् देवता,— साया राक्षसी जादू,—रिपुः—शुभनः
 राक्षसों का हन्ता, किन्तु ह्नु (पु०) 1 राक्षसों का
 नाम करने वाला, अग्नि इन्द्र आदि 2 चिप्यु ।
 अस्तुरता [न० ब० न० मत्पु रता यत्था] एक प्रकार का
 पीछा, तुलसी का एक भेद ।
 अस्तुर्य (वि०) [अस्तुराय शिवा नवा० यन्] राक्षसी,
 जासुरी ।

अनुभव (वि०) [न० त०] जो भावना से उपज्ज न हो सके, प्राय करने में कठिन—विद्यम० २।९।

अनुसू [अन् + प्राणन् सुचित्—सू + शिच्] तीर,—स मासि सासुसू सासो येवायेवायमायव—कि० १५। ५।

अनुसूय (पु०) [न० त०] शान्—वि० २। ११७।

अनुसूयन् [सून् आवरे + सूट्, न० त०] अपमान, अन्याय।

अनुसूयिक (वि०) [न० त०, न० ब० कृ०] जितने कुछ पैदा नहीं किया है, बाक।

अनुसूिः (स्त्री०) [न० त०] १ वेदा न करना, बाह्यपना २ अन्नभन, स्वातान्तरण।

अनुसूति (तृ० षा० पर०) १ हाहू करना, ईर्ष्यान् होना—कथ चित्रगती अर्ता मया ऽनुसूति—मालवि० २ मान घटाना, अप्रमत्त होना, घृणा करना, असन्तुष्ट होना, झूठ होना (सप्र० के साथ)—अनुसूति सचिषी-पदेशाय-का० १०८, अनुसूति मह्य प्रकृतय विक्रम० ४ प्रम० ३। ३१।

अनुसूक (वि०) [अनुसू + कृन्] १. ईर्ष्यान्, मान घटाने वाला, निरक २ असन्तुष्ट, अप्रमत्त, —क अरधान कर्ता, ईर्ष्यान् व्यक्तित्,—अनु० २। ११४, षा० ३।६, याज्ञ० १।२८।

अनुसूयन् [अनुसू + सूट्] १ अपमान, निन्दा २. ईर्ष्या, हाहू।

अनुसूय [अनुसू + अच् + टाप्] १ ईर्ष्या, अन्याहणना, हाहू—कृष्णद्रव्यां मुवाचाना य प्रणि कोप—पा० १।४। ३६, साधुयन् ईर्ष्या के साथ, २ निन्दा, अपमान—अनुया पगुनेषु दायादिष्करणम्—विद्वा०, रघु० ६। २३, ३ कोष, रोष वधूर मुवाकृष्टिर्दददो—रघु० ६।८२।

अनुसू [अनुसू + उ] २. ईर्ष्यान् हाहू करने वाला २ अप्रमत्त।

अनुसूयं (वि०) [न० ब०] सूर्यरहित।

अनुसूयंशय (वि०) [सूर्यमपि न पश्यति—दृष्ट् + अश् + मुन्] सूर्य को भी न देखने वाला—(अन्त पुर की राशिओं के शिष्य में कहा जाता है कि उन्हें सूर्य देखना भी दुर्लभ था)—अनुसूयंशया राजबारा—सिद्धा० २—इया सती पतिव्रता स्त्री।

अनुसू (मपु०) [न सृज्यते इतरगतवत् समुज्यते सहज स्वात्—न + सून् + शिच्—सारा०] १ शरिर २ मगल यह ३ केसर। शय०—करः लसिका,—बरा त्पचा, चमद्री—बारा १. शरिर की धारी २ चमद्री,—ब—वा लोहू पीने वाला राजस—सत्तः शरिर का गिरना,—बहा रस्त बाहिका, नाडी—शिषीकणम् शरिर का बहना,—आ(आ)कः शरिर का बहना।

अनेक्य,—क्य (वि०) [न० त०] जिते देखते १ की म भरे, मनोहर, सुन्दर।

अनीक्य (वि०) [न० ब०] १. सौर्यरहित, अश्वत्थ-रहित, जो सनीका न हो—शरीरलक्षणावन्—भा० १। १७, २. कुक्ष, विकलांग—अथ १. विकलांग, युवा की हीना २. विकलांगता, कुम्भता।

अनीक्यिता (वि०) [न० त०] १. अरक्त, दुष्ट, स्वाधी २. अज्ञात ३. अविश्रित, साधवान—रघु० ५।२०।

अनीक्य (पु० क० इ०) [अन् + क्त] १. कैका हुआ, शिष्य, छात्रा हुआ, त्यागा हुआ—अरुणये मन्थपास्तोऽनीक्यः—वेपी० ६, २ सत्याप ३. यथा हुआ। शय०—अन्य (वि०) दयारहित—श्री (वि०) मुर्ख,—अनीक्य (वि०) इतर उधर विचारा हुआ अन्धकारित, कर्मरहित,—अनीक्य (वि०) अनयित।

अनीक्यः [अन्यन्ते सूर्यकिरा यन—अन् + आदेशे क्त] अनीक्य या परिभाषक (जितके पीछे सूर्य हुआ हुआ माना जाता है)—अश्विरोद्युमन्थिरन्यन्तत्—वि० १।१, विश्वम्भवास्तमिन्मन्सूर्यवत्—रघु० १।१११; ष० ४।१; २. सूर्य का हुआ ३. हुआ, (आन्) गिरना, पतन—वे० नीचे, अरुण—गन्, अरु—इ, शान् (क) हुआ, परिषदी क्षितिज में गिरना, पक्षोऽन्यत्—सूर्य दृष्ट गया (अ) कर्ना, मष्ट होना, दूर हुआ, अंतर्गत होना, मनाप होना—विषयिणः कस्याप्योऽन्तः पता—पच० १।१४६, वृत्तिरस्तमितः—रघु० ८।११; (ग) मरना—अथ चास्तमितः स्वनाम्ना—रघु० ८।५१, १२।११, १। शय०—अन्यक,—अग्नि,—विष्टि,—चर्षित, अस्ताचल पहाड़ या पश्चिमी पहाड़,—अन्य-कम्भयन् क्षितिज के पश्चिमी भाग पर आकाशविकृत सूर्य अन्धकार का दृष्टते समय आराम करना—अन्यवी (दि० ब०) हुआ और निकलना, उदय और पतन,—अस्तोदयावदियदप्रविणिलकाकम्—गृहा० १।१७,—म (वि०) इवने बाका, तारे की भाँति अनुसूय हो जाने वाला,—गणम्ब १. हुआ, शिपना २. अनुसू, जीवन के सूर्य-प्रदीप का बुझना, भा० १।

अनीक्यन् [अन् + अय (आ०) अस्तम्—अन्यवर्णन अयन्—पति] (सूर्य का) हुआ।

अनीक्यः [अरुणीयते गन्धोऽस्मिन् इति अस्तम् + इ + अच्] १ (सूर्य का) हुआ—कौत्सकाकास्तमं विष-न्वते—कि० ५।३५, (शिव० उदयः) २. नाथ, अन्त, पतन, हाजि ३. पात, अविश्रय—उदयस्तमयं च रघु-इहात्—रघु० १।१४ तिरोधान, अन्धकार वस्त होना, प्रमाप्रदोहास्तमयं द्यासि—रघु० १।१३, ६. (किसी ग्रह का) सूर्य से संयोग।

अनीक्य (अन्व०) [अन् + क्तित्] १. होना, शय, शिष्यवान, जैसा कि—अश्विरोद्युमन् में, 'काय, २. प्रायः किसी घटना

या कहानी के शारम में या हो केवल "अनुपूरक" अर्थ में प्रयुक्त होता है, अथवा 'अत यह है कि' अर्थ को प्रकट करता है—अस्ति सिद्ध प्रत्ययसिद्धि एव—पञ्च-
४। सम०—आद्य बर्ण या अवस्था (जैन मतानुसार)
—मास्ति (अर्थ०) सन्निध्य, आधिक रूप से सत्य।

अस्तित्वम् [अस्ति + त्व] सत्ता, विद्यमानता।

अस्तौषम् [न० त०] चोरी न करना।

अस्त्यागम् [न० त०] मित्रकी, कलक।

अस्त्रम् [अस् + ट्ठन्] 1 फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार,—प्रयुक्तनव्यस्त्रमितो वृषा म्यान्-२५०
२।३४, प्रत्याहतास्त्रो गिरिसाप्रभावात्—२।४६, ३।५८,
अपिस्तास्त्र पिपुरेव—२५० ३।३६, आयुषविज्ञान 2
तीर, तलवार 3 घनुष। सम०—अ (आ) शारम्
अस्त्रबाला, तोपखाना, आयुषागार—आश्वात् ब्रह्म,
घाव,—अटक तीर,—कार,—कारक,— कारिन् हथि-
यार बनाने वाला,—चिकित्सक, चौरफाड़ या शत्रु किया
करने वाला, जगद्—विधि या योगफाड़ या शत्रु किया,
जराही,—शोक—अधिक (पु०)—धारिन् (पु०) सैनिक,
योद्धा,— निष्कारणम् हथियार के वाग को रोकना—मत्र
अस्त्रबालन या प्रत्याहण के समय पड़ा जाने वाला
यत्र,—मात्र,—मात्रक निकलीयार,—युद्धम् हथियारों
के लड़ना,—आद्यबन्ध अस्त्रधारण या बालन में बुझलना,
—विष्— आयुष विज्ञान में दक्ष,—विद्या,—आस्त्रम्
—वेदः अस्त्रबालन विज्ञान या कला, आयुषविज्ञान
—बुद्धि (स्त्री०) अस्त्रा की बौधाय, शिक्षा सैनिक
अभ्यास, अस्त्र बालन व प्रत्याहण की शिक्षा।

अस्त्रिन् (वि०) [अस्त्र + इन्] अस्त्र से युद्ध करने वाला,
घनुषधारी।

अस्त्रो [न० त०] 1. ओ रक्षो न हो 2 (व्या० में) पुल्लिङ्ग
और नपुंसक लिंग।

अस्थान (वि०) [न० व०] बहुत गहरा,—नम् [न० त०]
1 बुरा स्थान, 2 अनुचित स्थान, पदार्थ या अवसर।

अस्थाने (अर्थ०) बिना श्चतु के, उपयुक्त स्थान ने
बाहर, बिना अवसर के, जगत् अगह पर अयाग वन्तु
पर—अस्थाने महानयोसर्षे क्रियते—मुद्रा० ३।

अस्थानर (वि०) [न० त०] 1 चर, जगम, अस्थिर 2
(विधि में) निजी चल वन्तु जैसे कि नर्पान, पगु,
घन आदि (=जगम)।

अस्थि (नपु०) [अस्थते—अस् + स्थिन्] 1 हड्डी
(कई समय पदों के अंत में बदल कर 'अस्थ' रह
जाता है—२० अनस्थ, पुष्पास्थ) 2 पत्न की गिरि
या गुडली—न कार्ष्णिस्तिव न नुधान्—मनु० ४।७८।
सम०—हृत्,—लेजम् (पु०), सध्व,—नार,—
स्नेह, धवी, वन्मा,—अः 1. धवी, 2 वन्मा,—गुच्छ
एक धवी,—घन्तु (पु०) गिब,—पंजरः हड्डियों

का डाँचा, कंकाल,—अस्थेय मृतक की हड्डियों को
गंगा या किसी अन्य पवित्र जल में प्रवाहित करना,
—अभयः—भय हड्डियों का भाने वाला, कुला
—अभयः हड्डी का दूट जाना—भावा 1 हड्डियों का
हार 2 हड्डियों को पकन,—सास्त्रिन् (पु०) गिब,—अस्थे
(वि०) ठठरी मात्र—सध्व 1 शवदाह के परवान्
उसकी हड्डियों और अस्त्रावेषों को एकत्र करना,
2 हड्डियों का वेग, सधि जात, जाडबन्दी, सध्व-
पेषम् प्लवक की अस्थियों को गंगा या किसी अन्य पवित्र
जल में प्रवाहित करना,—स्थूण, हड्डियों का स्तम्भ
के रूप में बाण करने वाला स्तूप।

अधिष्ठी (स्त्री०) [न० त०] 1 दुर्गना या जगम का
अभाव (आल० भी) 2 मर्गादा या विष्ट व्यवहार
का अभाव।

अस्थिर (वि०) [न० त०] जो स्थिर या दृढ़ न हो,
डाँबीधन, चञ्चल।

अस्थानम् [न० त०] मर्गक का न होना, (किसी चीज
के) स्थान का टालना—प्रधानन्यायिष्ठ पुष्प्य द्वाप-
स्थानम् वरम्—नु० टलाज न बन्वाव अन्ध।

अस्थित (वि०) [न० त०] 1 जो स्थित न हो स्थित रूप
से दिवाट न हो 2 घुमना, या मात्र मगध में
न आर मदिग अस्थितहृत्स्ति नूतान वेदान्तवाक्यात्—
शाशा०।

अस्थित्य (वि०) [न० त०] 1 श्चतु के योग्य न हो
2 अस्थि, जगमन।

अस्फुट (वि०) [न० त०] दुकट, अस्फुट द्रव्य दुर्बोध
भावाः। सम० कलम घुषम वा दुकट पारिष्काम,
—वाक् (वि०) कुलना कर बालने वाला, अस्फुट-
भायी।

अस्मत् (सर्व०) [अस् + मद्भिः] सर्वनामविषयक प्राति-
पदिक त्रियम वि उनामन्वयवयो पुरुषवाचक
सर्वनाम के अन्त कर उनने से यह अपा० का इ०
व० का रूप भी से, पु० प्रथमाभा, त्रीवाक्या। सम०
—विष, अस्मावुक्त्त (वि०) 1 भागे ममान या हम
जैसा।

अस्मदीय (वि०) [अस्मद् + इच्छ] हमारा, हम सब का,
—यस्मदीय न हि तयस्तेमा—पञ्च २।१०५,
भग० १०।२६।

अस्मत्तो (वि०) [न० त०] 1 जो स्मृति के भीतर न
हो, स्मरणार्थो 2 अर्थ, आद्य-परमेश्वरों के विषयी 3
स्मरते मगदाय मे मत्रय न रश्ने वाला।

अस्मि (अर्थ०) [अस् + मिन्] 'अस्'—श्रीवा शानु का
व्यमान काल, उत्पन्न पुरुष, एक बचन] मैं—अहम्;
—आमन्तेरस्मि जगम् जाल—वि० ३।६, अस्थय ध्व
कुमुदावचय कुक्षयमास्मि करोगे मस्य—काव्य० ३।

अभिन्ना [अभिन् + तल् + टाप्] बहुकार ।
 अस्मृति. (स्त्री०) [न० ल०] स्मृति का अभाव, भूलना ।
 अस्त्रः [अस् + रन्] 1 किनारा, कोश 2 सिर के बाल,
 —स्त्रम् 1 आंगु 2 रथिर । सम०—अंशः बाण, —अस्त्रम्
 यास, —य. रथिर पीने वाला राक्षस, —या जोक
 —मात्का अस्त्रस, आस्त्रस, भास ।
 अस्त्र (वि०) [न० व०] 1. अधिकत, निर्धन 2. जो
 अपने न हो ।
 अस्त्रतत्र (वि०) [न० त०] 1 आश्रित, अधीन, पराधीन
 —अस्त्रतया स्त्री पुत्रप्रदाना—अस्त्रि 2 विनांत ।
 अस्त्रव्य (वि०) [न० व०] निवारहिन, जागरक, —व्यः
 1 देवता 2 अग्नि ।
 अस्त्रवः [न० त०] 1 मन्व स्वर 2 व्यजन, —रष्
 (अव्य०) ऊँचे स्वर में नहीं, धीमी आवाज से ।
 अस्त्रव्यं (वि०) [न० त०] जो स्वयं प्राप्त करने के योग्य
 न हो—अस्त्रव्यं लार्कवद्विष्ट घमंयव्याचरेण्ये तु—या०
 १।१५६ ।
 अस्त्रव्य (वि०) [न० त०] 1 जो नीरोग न हो, रोगी
 अस्त्रव्य अस्त्रव्या—न० ३, अत्रिद्यग्न ।
 अस्त्राध्यायः [न स्वाध्यायो वेदाध्ययनमस्य—न० व०] 1
 जिनमें अभी अध्ययन आरंभ नहीं किया जिसका अभी
 ज्ञानधीन सन्कार न हुआ हो 2 अध्ययन में फकावट
 (जैसे कि अष्टमी, दशम आदि के कारण जन्ध्याय) ।
 अस्त्राधिक्य (वि०) [न० त०] जो किसी वस्तु का अधिकारी
 न हो, जो स्वामी न हो । सम० विषयः विना
 स्वामी बने किसी वस्तु का देवता ।
 अह (भा०) जा० या चुरा० उभ०) - तु० अह ।
 अह (अव्य०) [अह् + घञ् + प्र०] न लोप] निम्न
 अर्थों को प्रकट करने वाला निपात या अव्यय- (क)
 स्तुति (ख) विधोष (ग) दुःखसकल या निरपय (घ)
 अस्वीकृति (ङ) प्रथम तथा (छ) पद्धति या प्रथा
 को अहहेत्यन्त ।
 अहम् (वि०) [अहम् + तुम्] घमदी, अहकारी, स्वार्थी
 —अहम् १।२० ।
 अहत (वि०) [न० त०] 1 असत, अनाहत 2 बिना
 घुला, नया, —सम् बिना घुला (कोरा), या नया
 कपडा, तु० 'अग्रहत' ।
 अहम् (तपु०) [न जहाति त्यजति संवाच परिवर्तय, न +
 हा + कनिन् न० त०] (कन्० अह, अह्नी-अहनी,
 अहानि—अह्ना अहोम्याम् भावि 1 दिन (दिन
 और रात दोनों को मिलाकर) —अघाहाति - मनु०
 ५। ८४, 2 दिन का समय—सव्यापारासहवि न तथा
 पीडयेन्महियौ—पैष० ९०,—यद्यह्ना कुण्ठे पापम्—
 विन में, (अवस्त पद के अन्त में 'अहम्' बदल कर
 'अह—अहम् या अह्' रह जाता है परन्तु समस्त पद

के आदि में यह 'अहम्—या अहर्' बन जाता है यथा
 —अहपति या अहर्पति भावि । सम०—आयवः
 (अहरा०) दिन का माना—अहविः उप-काल,—अः
 सूर्य,—अवः (०हर्गं) 1 यज्ञ के दिनों का तिल-
 सिता, 2 महीना,—अहव्यं (अव्य०) प्रतिदिन, हर
 रोज, दिन प्रति दिन,—अहव्यं दिन-रात,—अह्विः सूर्य,
 —अहव्यः सूर्य,—अह्विः सूर्य,—अहव्यं दिन का आरंभ,
 प्रभात, उप-काल—अहव्यकला मुहूर्तं स्यादहोरात्र तु
 तावत्—मनु० १। १५, १५,—अह्वः—अह्वं सार्यकाल ।
 अह्वं (सर्वं) ['अहम्' सन्द का कर्त्तुं कारक ए० व०]
 में । सम०—अह्विका श्रेष्ठता के लिए होइ, प्रतिद्विदिता,
 —अह्विका 1 होइ, प्रतिधीयिता, अपनी श्रेष्ठता
 का दावा—अह्वमह्विकया प्रथामयाभस्तायाम्—का०
 १५, 2 अह्वका 3. सैनिक अह्वनयता,—अह्वः 1.
 अत्रिमान, आत्मसहाया, वेदान्त दर्शन में 'आत्मेयम'
 अह्विका या आध्यात्मिक अज्ञान समझा जाता है,—अव०
 २। ७१, ७४, मनु० १। १५, 2 अह्व, स्वाभिभाव,
 गर्व 3. (ता० व० में) सृष्टि के मूलतत्त्व का भाव
 उत्पादको में से तीसरा अर्थात् आत्माभिमान या
 अपनी सत्ता का बोध,—अह्विन् (वि०) घमदी,
 स्वानिमायी,—अह्विः (स्त्री०) अह्वकार, घमव, —अह्वं
 (वि०) होइ में प्रथम रहने का इच्छुक,—अह्विका,
 —अह्विका 1 होइ के साथ सैनिकों की दौड़, होइ,
 प्रतिधीयिता—अह्वमह्विभिकया वियासुभि— वि० १५।
 ३२, 2 हीन मानना, आत्मसहाया,—अह्वं स्वाभि-
 मान, अपनी श्रेष्ठता का दृढ़ विचार,—अह्वः 1. अह्वर,
 अह्वकार—भावि० ५।१०, २= 'मति तु०—अह्विः (स्त्री०)
 1 आत्परति या स्वानुराग जो आध्यात्मिक अज्ञान
 समझा जाता है (वेदा०) 2. इष्य, पयं, अह्वकार ।
 अह्वशीय, अह्वार्यं (वि०) [न० त०] 1 जो चुराये जाने
 के योग्य न हो, या हटाये जाने अथवा हार के योग्य जाने
 के योग्य न हो—अह्वार्यं ब्राह्मणव्यं अह्वः—अह्वशीयति
 स्थिति—मनु० ९। १८९, 2 अह्वार्य, निष्कारान्
 3 दृढ़, अविधन, अननुमेय—कु० ५। ८,—अह्वः पहाड़ ।
 अह्व्यं (वि०) [न० त०] बिना जोता हुआ,—स्वा
 योजय की फली (राधापत्र के अनुसार अह्व्यता सबसे
 पहली स्त्री की जिसे ब्रह्मा ने पैदा किया—और मीठय
 को दे दिया, इन्द्र ने उसके पति का रूप धारण करके
 उसे सत्य से फुलझाया इस प्रकार उसे बीजा दिया ।
 दूसरे कथानक के अनुसार वह इन्द्र को बाधनी की
 और उसके अनुराग तथा नम्रता के बन्धीभूत हो यह
 उसकी चापक्रीला का शिकार बन गई थी । इसके
 अतिरिक्त एक और कहानी है जिसके अनुसार इन्द्र
 ने चन्द्रमा की सहायता प्राप्त की । चन्द्रमा ने सूर्य
 भगकर आधी रात को ही बांध दे दी । इस बांध ने

गीतम को अपने प्रातः कालीन विन्यस्त्य करने के लिए क्या दिया। इन्हें ने अन्तर प्रविष्ट होकर गीतम का स्थान ग्रहण किया। जब गीतम को अहल्या के पञ्चमष्ट होने का ज्ञान हुआ तो उसने उसे आश्रम से विचरित कर दिया और चाप दिया कि वह पत्थर बन चाप तथा तब तक अनुपपन्न अहल्या में पड़ी रहे जब तक कि अक्षरम के पुत्र राम का अक्षर-स्पर्श न हो, जो कि अहल्या को फिर पूर्ववत् प्रदान करेगा। उसके पश्चात् राम ने उस वीन-रथा से उसका उद्धार किया—और तब उसका अपने पति से पुनर्मिलन हुआ। अहल्या प्रातःस्मरणी— उन पाँच सती तथा विदुषः अरिष महिष्कारों में ए० है विमका प्रातः काल नाम केला अक्षरक है—अहल्या, दीपवी, सीता, तारा बंधोदरी तथा, पञ्चकन्या स्मरणी-नात्य महापातक—साक्षिणी। सम०—आर इष्ट,—अन्वयः सहायन्य मुनि, अहल्या का पुत्र।

अहू (अध्य०) [अह अशति इति—हा + कृ पृषो०] विन्ययादि शीलक निपात निन्नाकित ०धीं में प्रयुक्त होता है—(क) शोक, शेर—अहू कर्ममप्यचितता विधे—अनु० ०१९२, ३११, अहू शानराशिचित्त—मुद्रा० २ (क) आश्रय, विन्यय—अहू महता निस्ती-आश्रयपरिषिद्धयुक्त—अनु० २१२५, ३६. (ख) दया, तरस—आमि० ५१३९ (ख) झुलाना (ङ) क्कावट।

अहि [आहि—आ + हृ + इत्—न च वित् आङो ह्रस्वश्च] 1. सौप्त, अजगर—अहय मरिचा तत्र निषिधा इन्द्रा स्मृता—कथा० १५८४, 2 सुर्व 3 राहुग्रह 4 नृबामुर 5 शोकेबाज, बधमाज 6 बायल। सम०—कोत. बाय, हवा,—कोष सौप्त की सौप्तनी—अक्षयम् कुडुरयुता,—अन्त (पु०) 1 कृष्ण (कालिय नाम को मारने वाला) 2 इन्द्र—सुषिक सौप्त एकदने वाला, सेपरा, बाजोगर,—अक्षि,—इह,—आर,—रिपु,—विशिष्ट (पु०) 1 मर 2 नेवला 3 मोर 4 इन्द्र 5 कृष्ण—कि० ५१२७, सि० ११३१,—सुष्ठवम् सौप्त और नेवले, —सुष्ठविका सौप्त और नेवले के अर्थ स्वाभाविक बर, —विमोक्षः सौप्त की केषुकी, —वलि. 1 सौप्त का स्वामी, बाहुकि 2 कोई बड़ा सौप्त, अजगर सौप्त—पुत्रकः सौप्त के आकार की बनी किल्ली,—केन, —ननु अशोय, —अध्यम् किसी छिपे हुए सौप्त का अर्थ, शोले की शकका, अपने-मिचो की आर से भय,—मुष् (पु०) 1 मर 2 मोर 3 नेवला—भुत् (पु०) मिर; **अहित्ता** [न० तं] 1 अतिपटकारिता का अभाव, किसी प्राणी को न मारना, मन बचन करने में किसी को पीडा न देना—अहित्ता परमोधर्म—अय० १०५, अनु० १०१२, ५१४४, ६१७५, 2 मुरला।

अहित्क (वि०) [न० तं] अतिपटकर, निर्दोष, अहितक —अनु० ५१२४६।

अहित्क एक अथा सौप्त।

अहित (वि०) [न० तं] 1. जो रक्ता न गया हो, धरा न गया हो, जमाया न गया हो 2 अशोय, अनुचित —अनु० ३१२०, 3 अतिकार, अतिपटकर 4 अनुपकारक 5 अपकारी, विरोधी,—त अनु०—अहितानि-कोष्ठनेस्तर्जयप्रिय केतुमि—रपु० ५१२८, ९१७, ११६८,—तम् हानि, अति।

अहित (वि०) [न० तं] जो ठंडा न हो, गर्म। सम०—अनु०—अर,—तेजम्,—धुति,—अक्षि, सुर्प।

अहीन (वि०) [न० तं] 1 अशुभ, पूर्ण, समस्त 2 जो छोटा न हो, बड़ा—अहीनबाहुशक्ति गतास—रपु० १८१४, 3 जो अक्षिप्त न हो, अक्षिकार प्राण—अनु० २१२८३ 4 आतिबहिष्कृत न हो, अक्षरिष न हो,—अः कई दिनों तक होने वाला यज्ञ, (अव-धी)। सम०—आधिम् (पु०) गतासो देने में अशयम्, अशोय गताह। **अहीर**: [आभारी + पृषो० साधु] भाला, अहीर।

अहत (वि०) [न० तं] जो यज्ञ न किया गया हो, जो (आहुति के रूप में) इन्हें न प्रस्तुत न किया गया हो—अनु० १२१६८,—त अर्थविषयक चिन्तन, मनन, प्राथना और वेदाध्ययन (याच महायज्ञा और कर्तव्यो में से एक)—अनु० ३१३७ ७५।

अहे (अध्य०) [अह + ए] (क) शिष्टकी अर्थना (ख) लय तथा (ग) विद्यो को प्रकट करने वाला निपात।

अहेतु (वि०) [न० ब०] निष्कारण, स्वयं प्रकृत अहेतु पक्षपाताय—उत्तर० ५११७।

अहे (हे) तुल (वि०) [न० ब० कृ] निष्कारण, निष्कारण, निष्प्रयोजन—अय० १८१२२।

अहो (अध्य०) [हा + हो न० तं] निन्नाकित अर्धो को प्रकट करने वाला अध्यय—(क) आश्रय वा विन्यय—अहया शिचकर अहा कामी स्वना पक्षयि- वा० २१२, अहो मधुरमाता लक्ष्मणश० १, अहो बुकना-कलिका—मानव० १, अहो रूपयहो शीर्षमहा अक्ष-महो धुति—रापा० (अहो उसका रूप आश्रय अक्षक है—अदि) (ख) पीडाजनक आश्रय—अहो ते विन्यय अतनवधम्—का० १४५, 2 शोक या शेर—अहो सुष्ठव-न्य सहायमाकदा पिडमभय—शा० ६, विचिहो अक्ष-वाभिति मे यति—अनु० २१९१, 3 इमला (शाबास, बहुत लुभ) —अहो देवदत्त पक्षति शोभनम्—विद्या० 4 शिष्टकी (वि०) 5 झुलाना, लक्षोचित करना 6 ईर्ष्या, डाह 7 उपभोग, सुति 8. क्कावट 9 कई बार केवल अनुपूरक के रूप में—अहो नु क्षम् (बी), सत्तान्य रूप से आश्रय जो शोचक ही—अहो नु क्षम् ईशुती-मक्षयां प्रपत्नीदित्त—श० ५, अहो नु क्षम् शोभते-

काकतालीय नाम—आ० ५, 'अहो बत' प्रकट करता है (क) दया, तरल तथा खेद-अहो बत' महोपायं कर्तुं व्यवसिता बयम्—अ० १।४४, (ख) सतीष-अहो बतसि स्पृहणीमपीये—कु० ३।२० (मल्लि० यहाँ 'अहो बत' को संबोधन के रूप में प्रहलन करता है (न) संबोधित करना, बुलाना (घ) वक्रावट । सम०

—वृषिका=तु० आहोवृषिका ।

अज्ञाय (अव्य०) [ज्ञ + घञ् वृद्धि, वृषी० वत्त्वं वाचम्]
 दुरगत, शीघ्र, पीरन—अज्ञाय वा निवृत्तवत् कलमपुत्र-
 तनं—कु० ५।८९, अज्ञायं तावदकमेतं तमो निरस्तम्
 —रघु० ५।७१ कि० १६।१६ ।
 अज्ञीक(वि०) [न० व० कप्] निर्बन्ध, डीठ—कः वीढमिच्छु ।

आ

आ देवनागरी वर्णमाला का द्वितीय अक्षर ।

आ 1 विष्णुवादिद्योतक अव्यय के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) स्वीकृति 'हाँ' (ख) दया 'आह' (ग) पीडा या खेद (बहुधा—आत् या आ किता जाता है) 'हा' 'हूँ' (घ) प्रत्याखरण 'अहो—ओह' आ एव किंसातीतु—उत्तर० ६ (च) कई बार केवल अनुपूरक के रूप में प्रयुक्त होता है—आ एव मन्यसे 2 (सत्रा और क्रियाओं के उपसर्ग के रूप में) (क) 'निकट' 'पार्श्व' की ओर 'मग ओर' में 'सब ओर' (सुख क्रियाओं की देनी) (ख) गत्यर्थक नयनार्थक, तथा स्थानान्तरणार्थक क्रियाओं से पूर्व लगकर विपरीतार्थ का बोध कराता है—यथा गम्—जाता, जानम्—जाता, वा—देना, जाता—लेना 3 (अपा० के साथ विद्युक्त निपात के रूप में प्रयुक्त होकर) निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है—(क) आरम्भिक सीमा, (अभिधि) 'से', 'से लेकर' 'से दूर' में से—आमुस्तातु औतमिच्छामि—स० १, आ जन्मन—स० ५।१२५ (ख) वृषकरणीय या उपसहारक सीमा (सर्वाथा) को प्रकट करता है—'तक' 'अतक कि नहीं' 'यथास्तम्' 'अतक कि'—आ परितोषा-द्विषुषां स० १।२, नीलास्तु—वेध० ११, नीलास्तु तक (ग) इन दोनों अर्थों को प्रकट करने में 'आ' या तो अव्ययीभाव समाप्त में अथवा सामासिक विशेषण का रूप धारण कर जाता है—आबालम् (आबालेभ्य) हरिप्रकित, कई बार इस प्रकार का बना हुआ समाप्त पद अन्य समासों का प्रथम अर्थ बन जाता है—सोऽबालम् बुद्धा-नाभाफलोदयकर्मणाम्, आ समुद्रसिरीशानायानाकरच-वर्त्मनाम्—रघु० २।५, आगच्छ विलम्बि—स० ७।१७ 4 विशेषणों के साथ (कई बार अज्ञातों के साथ) लग कर 'आ' अन्वर्थवाची हो जाता है—आपादुर—इषत्सवेत, कुछ सफेद, आलस्य—स० ७।१७, आकम्प्य—सुदु कम्पन, इसी प्रकार 'आनील' 'आरक्त' ।

आ=तु० आम् ।

आः 1.—तु० आम् 2. उच्यते (आ) ।

आत्मकम् [आ + कम् + क्त्वं] शीघ्र गारता, खेपी बघारता ।

आकम्प्यः [आ + कम्प्य + क्त] 1. सुदु कप 2. हिलना, कापना ।

आकम्प्यम् [आ + कम्प्य + क्त्वं] कम्प्युक्त गति, हिलना । आकम्पित, आकम्प्य [आ + कम्प्य + क्त, र वा] हिलना हुआ, कापना हुआ, हिला-डुका, चिलुम्ब ।

आकरः [आकुर्वन्परिच्यन्—आ + कृ + च] 1. खान—भिराकरोद्भवत्—रघु० ३।१८, आकरे पधराणामां अन्य-काचमगं कुत—हि० प्र० ४४ (आसं०) खान वा किमी वस्तु का समुच्च साधन—मातो नृ पुष्पाकरः—विद्यम० १।९, अक्षेणपाकरम्—मर्त्त० २।६५ कु० २।२९, 3 सर्वात्तन, सर्वश्रेष्ठ ।

आकरिक (वि०) [आकर + क्त] (राज के द्वारा) नियत व्यक्ति जो खान का अधीक्षक करता है ।

आकारित् (वि०) [आकर + इति] 1. खान में उत्पन्न, खनिज 2 अष्टी मूलक का—दधनमाकरिति करितिः श्रुतं—कि० ५।७, 1 ।

आकर्षणम् [आ + कर्ष + क्त्वं] सुनना, खान लगा कर सुनना ।

आकर्षः [आ + कृ + क्त] 1 बिचार वा (अपनी ओर) लीचन, 2 लीच कर दूर के जाला, पीछे हटाना 3 (बन्धु) तानना 4 प्रलोभन, सम्मोहन 5 पासे से संलग्न 6 पासा या चौधर 7 पासों से संलग्न का फलक, विद्यात 8 आनेन्द्रिय 9 कसौटी ।

आकर्षक (वि०) [आ + कृ + क्त्वं] बिचार करने वाला, प्रलोभक—कः वृषक, मोहवृषक ।

आकर्षणम् [आ + कृ + क्त्वं] 1. लीचन, लीच लेना, सम्मोहन 2. पचघट करने के लिए फुसलाना, —श्री वृक्षों से फल फाड़ उतारने के लिए किभादे पर से मुड़ी हुई लकड़ी, लगी ।

आकर्षिक (वि०) [स्त्री०—शी] [आकर्ष + क्त] वृष-लीच, सम्मोहन ।

आकर्षित (वि०) [आ + कृ + क्त] लीचने वाला (जैसे कि दूर की वंश) ।

आकलनम् [आ + कल् + ल्युट्] 1 हाथ रखना, पकड़ना
—अर्थकालन—का० १८३, बन्दीगृह में रहना 2
दिखना, हिसाब लगाना, 3. पाह बच्चा 4 पूछ ताछ
5 समझ-बुझ ।

आकल्पः [आ + कृप् + चिच् + घञ्] 1 आभूषण, अल-
कार—आकल्पसारी कृपावीभावन—दश० ६३, रूप०
१७२२, १८१५२, 2 बेवाम्बा 3 रोग, बीमारी ।

आकल्पकः [आ + कृप् + णिच् + क्तल] 1 दुष्पूर्ण स्मृति,
स्मृति का लोप 2 मूर्खा 3 हर्ष या प्रसन्नता 4 अथकार
गाठ या बोट ।

आकथ [आ + कथ् + अच्] कसौटी ।
आकथिक (वि०) [आकथेण चरनि-इति आकथ + क्तल]
परचने वाला, कसौटी पर कतने वाला ।

आकीर्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [अकम्पत् + क्तल टिलोप]
1 अथानक होने वाला, अर्थात्त, अप्रत्यागिन, महत्ता
2 निष्कारण, निराधार—नववृष्ट्यापिष्टो अण्डेद्विव्य-
माकथिक म्यात—शां० ।

आकाङ्क्षा [आ + काङ्क्ष् + अ + टाप्] 1 इच्छा, चाह-
भक्त—सुष्ट०, अमर ४१, 2 (आ० में) अर्थ को पूरा
करने के लिए आवश्यक शब्द को उपस्थिति, किसी
विचार या भाव्य के भाव को पूरा करने के लिए तीन
आवश्यक तत्वों में से एक (दूसरे दो हैं—यांयता और
आहति) आकाङ्क्षा प्रतीतिपरवसानविहृ - सा० द०
२ अर्थ की पूर्ति का अभाव 3 किसी को और दलना
4 प्रभावित, इत्यादि 5 पूछ-ताछ 6 शब्द को यथाथता ।

आकाय [आ + चि + कर्मणि घञ् चितो ह्रस्वम्] 1
चिन्ता पर रमनी हुई अंगि, 2 चिन्ता ।

आकार [आ + कृ + घञ्] 1 रूप, शकल, आकृति-द्विधा०
दो रूपों को या दो प्रकार की 2 पहलू मूल, मुवा-
कृति, बेहता—आकारसदृशरत्न रूप० १११५, १६१७,
3 (विशेषत) बेहरे को रस दम-विषमसे मनुष्य के
आन्तरिक विचार तथा मनोवृत्ति का पाता लभ-सम्बन्ध
सबतन्त्रमन्त्र मुद्राकारैरुत्तम च—रूप० ११२०, भवान-
निप मन्त्राकारमस्त—विक्रम० २, 4 उद्यान, सकेत,
निद्यानी । अम०—भूमि (स्त्री०)—चोचमन्, गृहमन्
छिद्यम, मन के भावों का छिद्यानी ।

आका (क) रथ, भा [आ + कृ + णिच् + ल्युट्, बुच् वा]
1 आभरण, बुलावा-भवनकारणाय—दश० १७५,
2 आह्वान ।

आकाशः [आ + कृ + अल् + अच्] ठीक
मय ।

आकाशिक (वि०) (स्त्री०—की) [अकाल + क्तल] 1
आणिक, अल्पवाकिक—मन्० ४११०३, 2 बेमोसिय,
अकालपक्व, असायिक—आकाशिकी बीज्य यक्ष-
निम्—कु० ३१४, मच्छ० ५११,—की बिजली ।

आकाशः—शब्द [आ + काश् + घञ्] 1 आकाश
—आकाशमवा सरस्वती—कु० ४१३, ५, ० चारिन्
आदि 2 अन्तरिक्ष (पौषको नाम्) 3 मूक्य और
वायविक इत्ये दो समस्त विषय में व्याप्य है, वैशेषिक
द्वारा माने हुए ९ इत्ये में से एक, यह 'शब्द' गुण का
आधार है—शब्दगुणकमाकाशम्—तु०—भूतिविषय-
गुणा या निश्चता व्याप्य विह्वम्—त० ११, अवाग्मन
शब्दगुण गुणस पदम् (नामान् - आकाश) विमानेन
विवाहमान—रूप० १२१, १, 4 मुक्य स्थान 5
स्थान - मपर्वतचक्राकाश पूर्वकीम्—महा०, भवनाकाश-
मजयताम्भुरगि भासि० २१, १६५ 6 ब्रह्म (अन्त-
रिक्ष स्वरूप) आकाशमन्त्रिणाल् ब्रह्म० यथापानय-
माकाशलावानयमन्त्रत् दयाकाश छा० 7 प्रकाश,
स्वच्छता, 'आयु' में अर्थ को प्रकट करने वाला
आकाशो शब्द नाटको में प्रयुक्त राना है जब कि रम-
यच पर स्थित पात्र पवन किसी ऐम अवस्थित ने वृष्टता
है जो बह्नी उपस्थित न हो, और ऐसे कार्यात्मक
उत्तर को मुनता है आ कि धर्मणि 'कि कथर्था'ि
आदि शब्दों से आग्म्य प्राप्त है—दूरस्थाभाषण
यन्त्राभाषणविशेषतम्, परोक्षान्तरित काक्य नदीकाशो
निगच्छते ॥ भवन तु० निम्नार्थक आकाशवाचिन
को (आकाशे) विवेक कसेरवसोर्गानुत्पन्न, मुवा-
लकनि च नित्तोवर्णागि लोचने । (धुनिर्भवमय)कि
श्रीवि आदि० त० ३। मम०—ईश, 1 इष्ट 2
(विधि में) अमहाय व्यक्तिक (जैम हि बन्धा, स्त्री,
दोष्ट) जिसके पास वायु के अतिरिक्त और कोई
वस्तु नहीं है—कक्षा विविज कम्प, ब्रह्म, -मः पक्षी
(—सा) आकाशस्थित मवा, मङ्गल दिव्य मवा
- नदत्याकाशगङ्गाया आत्मन्द्रामदिव्यं—रूप० १।
७८.—धमस चन्द्रमा, -अमिम् (पु) सरोवरा,
प्राचीय मे बना नाय का सगमा, बन्दुक वा गोप
आदि चलाने के लिए भाँस म बना छिद्र 1—श्रीयः
—प्रदीप 1 आणिक भाव में टिकाकी के अक्षर पर
लक्ष्मी या विलु का स्वागत करने के लिए हठकी पर
क्या हुआ शोषक, 2 बौग क सिरे पर बंध कर
जमाया जाने वाला दोषा वा लाकटेन, प्रकाशस्तम्भ
पर रक्ता हुआ दोषा या लेप, भावितम्—1। रम-
मव पर अनुपस्थित व्यक्तित से भाषण करना, एक
कार्यात्मिक भाषण जिसका उत्तर इस प्रकार दिया
जाय—मानो यह बात सम्भूत कही और मुनी कई
हैं—कि श्वीपोति दन्वाटये चिन्ता पात्र प्रयुज्यते, भुत्वे-
वानुक्तमप्यर्थ तन्म्यादाकाशाभाषितम्—सा० ४० ४२५,
2 आकाश में कही बात या शब्द, -बद्धकम् लोको,
यावत् 1 हवाई जहाज, गुबारा 2 आकाश में
पुनने वाला, रक्षिम् (प०) किसी की बाहुरी विचारों

की रखा करने वाला,—**बचनम्** ^०आधितम्—**वे०**
—**कर्मन्** (मपु०) 1. सन्तुष्टि 2. शान्ति, बापु,
—**बाधी** आकाश से आई हुई आकाश, अमरीरिणी
बाधी,—**सकिसम्** वर्षा, औस—**स्वष्टिकः** बोला ।

आकिञ्चनम्, आकिञ्चनम् [अकिञ्चन+अण्, अण् वा
गरीबी, धन का अभाव ।

आकीर्णं (भू० क० कृ०) [आ+कृ+ण] 1 बिखरा
हुआ, फैला हुआ भरा हुआ, व्याप्त, सकुल—**अचा-
ल्य** भरा हुआ, परिपूर्ण, भरपूर—**अनाकीर्णं** मन्ने
दुतबहुरीसं गृहमिव—**श०** ५। १०, आकीर्णमपिपत्नी-
नामृदबहारोपधि—**रघु०** १।५० ।

आकुञ्चनम् [आ+कुञ्च+त्त्वं] 1. झुकाना, सिकोड़ना,
सकोचन 2 पौष कर्मों में से एक—**सिकुञ्चन** 3 एक
करना, डेर लगाना 4 टेढ़ा होना ।

आकुल (वि०) [आ+कुल+क] 1. भरपूर, भरा हुआ
—**अकलमिमिआलाकुल** (मपु०) —**भर्तु०** २।५, बाध्या
कुला बाध—**नल०** ५।१८, आलापकुनुहकाकुलनरे
शेषे—**अमर** ८। 2 प्रभावित, प्रभावमान, पीड़ित,
माहृत—**हृषं**, शोक, विस्मय, स्नेह आदि 3 ध्वस्त,
लीन 4 भराया हुआ, विस्मय उद्भिन्न—**अभिचय**
प्रतिष्ठासुरासोत्कायव्याकुल—**शि०** २।१, विस्मिन
किन्तव्यविमूढ, अविचारित,—**आकुल**, अत्यन्त कुल
5 बिखरे बाल बाला, अव्यवस्थित 6 असंगत,
बिरोधी,—**कम्** आबाध जगह ।

आकुलित (वि०) [आ+कुल+क] 1. दुःखी, उद्भिन्न,
विस्मय—**मागीचलव्यतिकराकुलिते** सिन्धु—**कृ०** ५।८५
2 फैला हुआ, 3 मलिन, धूमिल,—**धूमवृष्टे**—**श०** ५,
4 अभिमूत, पीड़ित,—**शोकं**, पिपासा आदि ।

आकुलित (वि०) [आ+कुल+क] कृष्ट सकुचित—**अन**
शरशम्यवेदनाकूलनिषिभागेन—**का०** १६६, ८१ ।

आकृतम् [आ+कृ+क] 1 अर्थ, इगार, प्रयोजन—**हरी-
रिताकृतमनीलवाजिनम्**—**कि०** १।२६, 2 भावना,
हृदय की स्थिति, संवेद,—**बुधामयल कम्बन तरलय-
व्याकुलजो वेपम्**—**उत्तर०** ५।२६, **भावाकृत**—**अमर**
५ भा० १।११, **साकृतम्**—**भावनापूर्वक**, सामिप्राय
(प्राय नाटकों में रसमय के निदेश के रूप में) 3.
अलक्ष्य या विज्ञाता 4. चाह, इच्छा ।

आकृतिः (स्त्री०) [आ+कृ+क्तिन्] 1. रूप, प्रतिमा,
लक्ष—**बोधवैभवाकृतिरन्वकारि**—**शि०** ३।४, 2.
शरीर,काया—**किमिव हि मधुराणां मण्डल ताकृतीनाम्**
—**शि०** १।२०, **विकृताकृति**—**मनु०** ११।५३ इत.
प्रकार शरीर 3 दशम, सुन्दर रूप, भद्ररूप,—**न ह्याकृ-
तिं बुलदुर्गं विजहाति बुलम्**—**मनु०** १।१६, यथा-
कृतिस्तत्र नृणा वसति—**मुद्राधित** 4 नमूना, लक्षण
5 कर्त्तव्य, वासि । **स०**—**अक्षः** आकरण के किसी

विशेष नियम से लक्ष्य रखने वाले शब्दों की सूची—**बो**
केवल नमूनों की सूची है (बहुधा यथपाठ में अंकित)
यथा असादिगण, स्वरादिगण, चादिगण आदि,—**कृषा**
घोषातकी नाम की स्तर ।

आकृष्टि (स्त्री०) [आ+कृ+क्तिन्] 1. आकर्षण 2.
सिंचाव, मुद्रासाधन (यमित ज्योतिष) ;—**आकृष्टि-**
तनितवच महीतया यत्त्वस्व नृत् स्वामिन्मुख स्वसक्या,
आकृष्ट्यते तपततीव भाति तमे ससम्पत्तात् क्व पतिष्य
मे । **मोक्ष** ० 1, 3. वन्य का शोचना या शुकाना,
ज्या—**अमर** ० ।

आकौशर (वि०) [आके वनिके कीर्त्तते इति वा+कृ+अप्
+टाप्—**आकौशर** दृष्टि सा वदित वक्ष्य इति
—**आकौशर+अण्**] अथमुद्रा, अर्थनिरीक्षित (बौद्ध)
—**निरीक्षितवाकेरलालभमुपा कि०** ८।५३, **मु०** ३।२१,
दृष्टिराकेरल किञ्चित्कुटापांगे प्रसारिता, योजितार्थ-
दृष्टालोके ताराव्यावर्तनीतरा ।

आकौशेरः (श्रीक मन्त्र) मकर राशि ।
आकम्बः [आ+कम्+अण्] 1. रोग, चिल्लाहा 2. पुका-
रना, आह्वान करना, 3. मन्त्र, चिल्लाहट 4. मित्र,
रक्षक 5 भाई 6. रोगे का स्थान 7. बहु राधा जो
अपने मित्र राजा को दूसरे की महायता करने से रोके
वह राजा जिसकी राजधानी निम्नी हुई किसी दूसरी
राजधानी के पास है ।—**मनु०** ७।२०७ ।

आकम्बनम् [आ+कम्+त्त्वं] 1. विलाप, इदन 2 ऊँचे
स्वर से पुकारना ।

आकम्बिक (वि०) [आकम्ब वावति इति आकम्ब+ठञ्]
वह व्यक्ति जो किसी दुःखिये के रोगे को सुकर शीघ्र
कर उसके पास जाता है ।

आकम्बित (भू० क० कृ०) [आ+कम्+क] 1. बहाइने
वाला, या कृष्ट २ कर देने वाला, 2. आहृत, बुलाया
हुआ,—**तम्** चिल्लाहा, दहाइना ।

आकम्बः—**कम्बन्** [आ+कम्+अण्, स्तुट् वा] 1. निकट
जाना, उपायगन 2 टूट पड़ना, आक्रमण करना,
हमला 3 एकड़ना, हकना, कब्जे में करना, 4 पार
करना, प्राप्त करना 5 विस्तार करना, बकर
लगाना, बड़ बड़ कर होना 6. सक्ति से अधिक बोझा
करना ।

आकम्बत (भू० क० कृ०) [आ+कम्+क] 1. एकड़ा
हुआ, अधिकार में किया हुआ, पराजित, पराजुत
—**आकम्बतविद्यामार्गम्**—**रघु०** १३।३७, **तक** शब्-
ना भरपूर, अधिकृत, हका हुआ—**धुम्बुधे** तेन धाकामं
यज्ञमायतन महत्—**रघु०** १०।२१, **दक्षिणिकुलना-**
कान्तम्—**भर्तु०** ३।१४, इसी प्रकार **अमर्ष** अर्ष,
शोक आदि, 2. मरदा हुआ (माली बोल से) 3. कड़ा
हुआ, बहइ लगा हुआ, जाने पड़ा हुआ—**रघु०**

१०३८, मालवि० ३५, ४ प्राप्त किया हुआ, अधिकार में किया हुआ।

आकांक्षित् (स्त्री०) [आ + कम् + क्तिन्] १ ऊपर रखना अधिकार में करना, पददलित करना—आकांक्षित-समाहितपादरीठम्—कु० २।११ २ पराभूत करना, दखाना, लभना ३ आरोहण, आगे बढ़ जाना ४ शक्ति, शौर्य, बल।

आकाम्यक [आ + कम् + क्यल्] आकाम्यकर्ता, हुमलावर।

आकीर्ण-ञम् [आ + कीर् + घञ्] १ खेल, क्रीडा, आभोर २ प्रमदवन, कोडोद्यान आकीर्णवंतास्तेन कल्पिता स्वेय वेरमनु—कु० २।४३, कमप्याकीर्णमायाद्य तत्र विविधमिषु—दश० १२।

आकृष्ट (मू० क० कृ०) [आ + कृ + क्त] १ डाट-उपट किया हुआ, निन्दित, निरम्कन, कथकिल—शि० १२। २७, २ ध्वनि, चोत्कारपूर्व ३ अभिशाप,—ष्टम् १ और की पुकार २ घोर शब्द या वदत, मालीगलीज-युक्त भाषण—माजीरमविकारण्य आकृष्टे चोषस-म्व—कात्या०।

आकीर्ण-शतम् [आ + कृ + घञ्, ल्युट् वा] १ पुकारना या जीर में चिल्लाना, उच्चस्वर से रोना या शब्द २ निन्दा, कलक, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना—मात्र० २।२०२ ३ अभिशाप, कोसना ४ शपथ लेना।

आकृष्टे [आ + क्लृ + घञ्] आईना, सीलापन, छिडकाव।

आक्षय्यतिक (वि०) (स्त्री०- क्री) [अक्षय्यतेन निर्वृत्तम् इति—उक्] जूर से प्रभावित या समाप्त किया हुआ।

आक्षय्यम् [आ + क्षय् + ल्युट्] १ उपवाम रखना, उपवास या व्रत द्वारा आत्ममुक्ति, सयम।

आक्षय्यटिक [अक्षयट् + उक्] १ घृतक्रीडा का निर्वायक, घृतगृह का अपीक्षक २ न्यायाधीश।

आक्षय्य (वि०) (स्त्री०—क्री) [अक्षय्य + अण्] अक्षय्य या गीतम का लिध्य,—अः न्यायशास्त्र का अनुयायी, नैयायिक, ताकिक।

आक्षर [आ + क्षर् + गिन् + घञ्] कलक लगाना, (व्यभिचारारदिकका) दोषारोपण करना।

आक्षरयन्-त्वा [आ + क्षर् + गिन् + ल्युट्] कलक, दोषारोपण (विशेषण व्यभिचार का)।

आक्षरित (मू० क० कृ०) [आ + क्षर् + गिन् + क्त] १ कलकित २ दोषी, अपराधी।

आक्षिक (वि०) (स्त्री०—क्री) [अक्षेप दोष्यति अयति क्ति वा—अल + उक्] १ ग्नी में जूआ मेटनं बाला, २ जूर में जीता हुआ ३ जूर में सबब रखने बाला—आक्षिक कृष्णम्—मनु० ८। १५९, जूर में किया हुआ कड़ा,—कम् १ जूर में जीता हुआ वन २, जूर का जूर।

आक्षिप्तिक [आ + क्षिप् + क्त + टाप्, क, दृक्] रणयण पर भाति हुए किसी पात्र के द्वारा गान विशेष—विक्रम० ४।

आक्षीष (वि०) [आ + क्षी + क्त नि०] १ जिसने कुछ मद्यपान किया हुआ हो २ मस्त, नशीब पूर।

आक्षेप [आ + क्षिप् + घञ्] १ दूर फेंकना, उछालना, खींचकर दूर करना, छीन लेना—अधुकाक्षेपविक्रमिञ्जिता-नाम्—कु० १।१४, पीछे हटना २ मर्त्याना, सिद्धकना, कलक लगाना, अपशब्द कहना, अक्षय्यपूर्ण निन्दा—प्रब्रह्मतावा—उत्तर० ५।२९, विरुद्धमाक्षेपवचनित्तिहितम्—कि० १४।२५ ३ मन की उछाट, मन का लिखाव—विषयाक्षेपयन्मन्त्रु—प्रज्ञे० ३।४७, २३, ४ प्रयत्न करना, लगाना, भरना (जैसे कि रण)—गोरोचनाक्षेपनास्त्यगौरं कु० ७।१७, ५ सकेत करना, (किसी हुम्ने शब्दार्थ का) धान लेना, समझ लेना—स्वमिदये पराक्षेप—काव्य० ७, ६, अनु-मात ७ धरोहर ८ आपत्ति या संदेह ९ (सां० शां० में) एक अलंकार जिसमें विवक्षित वस्तु को एक विशेष अर्थ जतलाने के लिए प्रकटन दबा दिया या व निविष्ट कर दिया जाय—काव्य० १०, सां० ४० ७।१४, और रसयाधर का आक्षेपप्रकल।

आक्षेपक [आ + क्षिप् + ल्युट्] १ फेंकनेवाला, २ उछाट करने वाला, कलक लगाने वाला, दोषारोपण करने वाला ३ भिक्वी।

आक्षेपयम् [आ + क्षिप् + ल्युट्] फेंकना, उछालना।

आक्षोड-ञ [आ + अक्ष् + ङट्] (ङ) + अण्] अक्षरगत की छकड़ी। दे० 'अक्षोड'।

आक्षोडयम् [आक्षोडनम्] आक्षेप निकार।

आक्ष, **आक्षल** [आ + क्षन् + ड, व वा] फावड़ा, लुपि।

आक्षय्यल [आक्षय्यति भेदयति पूर्वान्—आ + क्षय् + डल्य्, इत्यनेनम् तारा०] इन्द्र—आक्षय्यल काम-निद बनाये,—कु० ३।११, तमोश् कामरूपानामन्या-सष्टलविक्रमम्—रघु० ४।८३, मेघ० १५।

आक्षय्यिक [आ + क्षय् + इक्य्] १ नाटने वाला, ललिक २ बूहा या मूसा ३ सुजर ४ चार ५ कुदाल।

आक्षर [आक्षन् + ङट्] १ फावड़ा २ नाटने वाला, ललिक।

आक्षरतः-तम् [आ + क्षन् + क्त] प्राकृतिक ताकाव, या जलाशय, खाड़ी।

आक्षरतः [आ + क्षन् + घञ्] १ चारों ओर से खोदना २ फावड़ा ३ कुदाल, बलदार।

आक्ष [आ + क्षन् + कृ रिचक] १. मूषिक, बूहा, छच्छुदर, -अनु वाछति धामनां मद्यपतेराक्षु सुचारः कपी—पृथ० १।१५९, २ खोर ३. सुजर ४. फावड़ा

5. कञ्ज-विभवे सति वीचानि न वचाति बहुव्रीहि न, तदाहुताभ्यम्—। सम०—उत्कारः बन्मोक, वमी,—उच्य (वि०) वृहो हे उत्पल (-उच्य) वृहो का निकलना, वृहो का समूह,—गः,—वचः,—रचः,—वाहुकः गणेश शिवका बाहुन वृहा है,—वातः वाड, नीचवाति का पुत्र, (शा०) कौ पकड़ने और मारने वाला, वृहडा,—वाचायः बहुवच परस्पर—वृज्— वृज विस्या, ।

आश्लोः [आश्लिद्घन्ते वास्यन्ते प्राथिनोऽत्र—आ+श्लिद्+घञ्+प्रा०] शिकार करना, पीछा करना । सम०—शौर्यकय 1 चिकना कर्ष 2 ज्ञान, गुफा ।

आश्लोटक (वि०) [आश्लोट+कञ्] शिकार करने वाला—कः शिकारी,—कञ् शिकार ।

आश्लोटिक [आश्लोटे कुशल ७क] 1 शिकारी 2 शिकारी कुला ।

आश्लोटः [आश्ल लनिवमिव उटानि पर्यानि अस्य—अ० स०] अश्लोट का वृक्ष ।

आश्व्या [आश्व्यायतेजया ० आश्व्या+अश्] 1. नाम, अविधान - कि वा अकुनल्लेप्यस्य मानुसाश्व्या - स० ७।५, ३३, परचादुमाश्व्या मुमुर्षो जगाम - कु० १।२६, तदाश्व्या भवि परमे रब्० १।१०, बहुधा समास के अन्त में अब प्रयुक्त होना है तो इसका अर्थ होना है 'नामक' या 'नाम वाला'—अथ किमाश्वम्य राजर्व मा धर्मपत्नी धा० ७ वृषभाम्य काश्यम् आदि ।

आश्व्यात (भु० क० कृ०) [आ+श्व्या+त] 1. कहा हुआ, बताया हुआ, बोधना किया हुआ 2 गिना हुआ, पाठ किया हुआ, उतारना हुआ 4 नामपद या क्रियापद, सम् क्रिया, वाचप्रधानमाश्व्यातम्—। नि०, वाचध्वने विशिष्टस्य विधेयध्वने बोधने, समर्थ स्वार्थ-यन्त्रय शब्दो आश्व्यातमुच्यते ॥

आश्व्यातिः (स्त्री०) [आ+श्व्या+तिङ्] 1 कहना, समाचार, प्रकाशन 2 वर 3. नाम ।

आश्व्यातम् [आ+श्व्या+त्सुट्] 1 बोलना, बोधना करना, बनलाना, समाचार 2. किमी पुरानी कहानी की ओर निर्देश करना—आश्व्यात पूर्वपूर्वाश्लि सा० ९० (उवा०—देवः सोऽज्यमरातिशोषितबलैरीत्यन्तु ह्या पुरिना केची० ३।३१) 3 कबा, कहानी विशेषरूप से काव्यनिक या पौराणिक, उपाश्व्यान—अपरा पुकरवत् चकम् इत्याश्व्यानविद आश्व्याती—मा० २, मा० ३।२३३, 4 उत्तर—प्रमाश्व्यानयो वा० ८।१।१०५ 5. भेदक वर्ष ।

आश्व्यानकम् [आश्व्यान+कम्] कबा, छोटी पौराणिक कहानी, कबायक,—आश्व्यानकाश्व्याधिकेतिहासपुरा-पाकर्मनेन—का० ७ ।

आश्व्याचक (वि०) [आ+श्व्या+चञ्] कहने वाला,

सूचना देने वाला,—कः 1 वृत्, हुरकार—आश्व्यान-कस्य वृत्सुनृत्ति—घट्टि० २।५५, 2. अष्टवृत्, सदेववाहक ।

आश्व्यायिका [आश्व्यायक+टाप् इत्यञ्] 'यव' रचना का नमूना, सुव्यंजत कहानी,—आश्व्यायिका कबाय-त्स्यात्कवेसाधिकेतिवन्, अस्याम्यकवीर्षां च वृत्तं यव क्वचित् क्वचित्, कदाशानां श्वेषच्छेद आश्व्यात इति वच्यते । आश्व्यायिकापद्यनाथां छन्दसां येन केनचित् । अस्यापदेशेनावशात्सुम्ने मास्यंयुचनम्—सा० ९० ५६८, (साहित्य शास्त्र के लेखक 'शहरचना' को प्रायः दो (कबा और आश्व्यायिका) भागों में बाँटे हैं, वह भाग के हर्षपरित को 'आश्व्यायिका' तथा काव्यवीर को 'कबा' के नाम से पुकारते हैं । यही इस प्रकार के वेद को स्वीकार नहीं करता—काव्या० १।२८—तत्कबाश्व्यायिकेत्येका श्वाति-सहाइवाश्लिता ॥

आश्व्यायिन् (वि०) [आ+श्व्या+यिनि] जो व्यक्ति कहलाता है, सूचना या समाचार देता है—रहस्याश्व्यायीव स्वयति मुमुकषान्तिकचर—स० १।२४ ।

आश्वये (स० कृ०) [आ+श्व्या+यन्] कहने या समा-चार देने के बोध, शब्द शब्दों में कहने के बोध, मौखिक संदेश भेष० १०३ ।

आश्वीतिः (स्त्री०) [आ+यन्+क्तिङ्] 1. पूर्वचना, आगम,—साकस्यास्य यतागतम्—राधा०, इति निश्चित भियतनागतय शि० ९।५३ 2. अधिग्रहण 3 वापसी 4 उद्यम ।

आश्वीन् (वि०) [आ+यन्+तुन्] 1. जाने वाला, पूर्वचनेवाला, 2 बटका हुआ, 3 बाहर से जाने वाला, बाह्य (कारण आदि) 4. नैमित्तिक, मानुषिक, आकस्मिक,—सु नवायतुक, अजयवी अतिथि । सम०—अ (वि०) मानुषिक रूप से या अकस्मात् उत्पन्न होने वाला ।

आश्वीयुक्त (वि०) (स्त्री०—का,—की) 1. अपनी वृक्षा से जाने वाला, बिना बुलाये जाने वाला—आश्वीयुक्ता वयम्—वृत्त० २. मुला-भटका (जैसे कि आश्वर) —वाङ्म० २। १६३ 3 आनुषंगिक आकस्मिक, नैमि-त्तिक—हायामातुका शिवात्—आश्व० 4 प्रक्षिप्त, जेपक (पाठ)—अथ गन्धर्ववाच्यमावनिस्वायानुक्तः पाठ—यत्कि० कु० ९।५६ पर,—कः 1 अन्त जेपक, हस्तजेपक 2. अजयवी, अतिथि, नवायतुक ।

आश्वयः [आ+यन्+वञ्] 1 आना, पूर्वचना, सर्वत्र देना—उतायां पूर्वकृत्याया प्रवृत्तस्यायम कुत—उत्तर० ५।२०, अश्वयत्वात् व्यकतवः सर्वाः प्रयत्नव्यहृत्पत्नये, राश्वयामे प्रकीर्यन्ते—प्रय० ८। १८, रघु० १५।८०, पंच० ३। ५८, 2. अधिग्रहण—एवोज्या मुद्राया

आगम—मुद्रा० १, घ० ६, विद्यागमनितिसम् ।
 —विक्रम० ५, ३ जन्म, मूल, उत्पत्ति—आगमा-
 पाथिनोऽनित्यास्तास्तिविक्रमं भारत—अय० २।१४,
 ४ सकलन, सध्वं (घनका) अर्षं, घनं आदि 5
 प्रवाह, अलमार्गं, धारा (पाणी की) रक्त, फेन
 6 बीजक या प्रमाणक—दे० अनागम 7 ज्ञान
 —शिल्पप्रदेयाभा—अय० २।५ प्रथमां सद्गुणागम,
 आगम सद्गुणरम्भ—रघु० १।१५ 8 आय, राजस्व
 9. किसी वस्तु का बंध अधिवहण—आगमेऽपि बल
 नैव भुक्ति स्तोत्रादिपथ नो—वाङ् ० २। २७ 10
 सर्पति की वृद्धि, 11 परंपरागत सिद्धान्त या उपदेश,
 धार्मिक लेख, धर्मग्रन्थ, शास्त्र—अनुमानेन न चागम
 क्षत—कि० २। २८, परिशुद्ध आगम—२३, 12
 शास्त्राध्ययन, वेदाध्ययन 13 विज्ञान, दर्शन,—बहुधा-
 पारमार्थिकानां पंचान सिद्धिहेतवः—रघु० १०। ७६,
 14 वेद, धर्मग्रन्थ—न्यायान्तीतारम्भान्तरपेक्षाभिवा-
 यने—कि० १। ३९ 15 धार प्रकार के प्रभाषा से
 से अग्निम जिसे नैयायिक 'शब्द' या 'आपत्तवाच्य' करते
 हैं ('वेद' ही ऐसे प्रमाण समझे जाते हैं) 16 उपलब्ध
 या प्रत्यय 17 (शब्द साधन में) वर्ण की वृद्धि या
 अन्त क्षेप 18 कृदि—इहागम—19 सिद्धान्त का ज्ञान
 (विषय प्रयोग) । सम०—नोल (वि०) अयोनि,
 पठित, परीक्षित,—बृह (वि०) ज्ञान में बड़ा हुआ
 बहुत विद्वान् पुरुष—प्रतीप इत्यागमपदलोके रघु०
 ५। ४१,—वेदिन् (वि०) 1 वेदों को जानने वाला
 2 शास्त्रनिष्ठात—सपेक्ष (वि०) प्रमाणकतापेक्षी,
 प्रमाणक से सम्बन्धित ।
 आगमन्त्र [आ+गम्+ल्युट्] 1 आना, उपासमन्
 पहुँचना—रघु० १२। २४, 2 शौटना 3 अधिग्रहण
 4 मँपुनेच्छा के लिए किसी स्त्री के पास पहुँचना ।
 आगमिन्, आगमिन् (वि०) [आगम्+गिन्, वा ह्रस्व]
 1 आने वाला, भावी 2 आसन्न, पहुँचने वाला ।
 आगम् (न्य०) [इ+अगुम्, आगवेश] 1 दोष, अप-
 राध, उल्लंघन—सहित्यं यातमागमिन् सुनीरत इति
 यत्त्ववा—शि० २। १०८ द्वौ रिपु मम मजो समागतौ
 —रघु० ११। ७४, कृताना—मुद्रा० ३। ११ 2
 पाप । सम०—कृत् (वि०) अपराध करने वाला,
 क्षपराधी, जुर्म करने वाला—अभ्यर्चमागमन्कृतमस्पृशद्भिः
 —रघु० २-३२ ।
 आगस्तौ [अगस्त्यस्य इदम्, अयं—यलोप] दक्षिण दिशा ।
 आगस्त्य (वि०) [अगस्त्यस्येदम्, यम्—यलोप] दक्षिणी ।
 आगाथ (वि०) [आगाथ एव स्वाधं अम्] बहुत गहरा,
 अबाह, (आल० भी) ।
 आगामिक (वि०) (स्त्री०—की) [आगाम+ठक्] 1.
 भविष्यत्काल से सम्बन्ध रखने वाला—मतिरागा-

मिका जेवा वृद्धिस्तकास्वापिनी—ह्रस्व ० 2 आसन्न,
 आने वाला ।
 आगामुक (वि०) [आ+गम्+उकञ्] 1 आने वाला,
 2 पहुँचने वाला 3 पावो ।
 आगारम् [आगम्+अङ्] घर, आवास ।
 सम०—हाह घर की आग लगा देना,—हाह्मिन्
 (वि०) घर फूँक व्यक्ति, गृहदाहक (घम आदि),
 —घम् किसी घर में निकलने वाला पृथ्वी ।
 आगूर् (स्त्री०) [आ+गूर्+निवृत्] स्त्रीकृति, सहर्षति,
 प्रतिज्ञा ।
 अगु (गु) रगम् [आ+गूर्+ल्युट्] गुप्त मुद्राव ।
 आगु, (स्त्री०) सहर्षति, प्रतिज्ञा ।
 आग्निक् (वि०) (स्त्री० की) [अग्नेरिद वा०—ठक्]
 अग्नि से संबन्ध रखने वाला, पश्चान्ति से संबद्ध ।
 आग्नीव्रम् [अग्निमित्ये अग्नीन्, तस्य प्ररथन्, रथ् अस्वाध
 अम्—आग०] यज्ञानि अग्निने का स्थान, हृषनकुण्ड,
 —प्र यज्ञानि जलाने वाला पुरोहित ।
 आग्नेय (वि०) (स्त्री०—यो) 1 आग से संबन्ध रखने
 वाला, प्रचर 2 अग्नि की अग्नि,—यः 1 एकद या
 कानिकेय की उपाधि 2 दक्षिण-पूर्वी (आग्नेय कोण)
 दिशा,—यम् 1 कृत्तिका नक्षत्र 2 सोना 3 शंकर
 4 घो 5 आग्नेयाश्च ।
 आग्नेयोजनिक [अग्नेयान् जनयन् दीयते अग्ने—ठक्] भोज
 में सर्वप्रथम या सबसे आगे आगन पहच करने का
 अधिकारी शास्त्रण ।
 आग्नेय [अग्ने अयन् शब्द,यत्ने कर्पया पृथो ह्रस्व दीर्घ
 व्यत्यय] अग्निष्टाम पाग में सोम की प्रथम आहुति,
 —अम् यथां ऋतु के अन्त में नये अन्न तथा फलादिक
 से युक्त होव ।
 आग्रह [आ+ग्रह+अच्] 1 पकड़ना, घट्टन करना 2
 आक्रमण 3 दूब सकल्य, दूधमर्षिन, दूधता—यत्नेऽपि
 काकस्व पदापिचाग्रह—नै०, कु० ५।७ पर अस्मि०,
 4 कृपा, सरक्षण ।
 आग्रहाण्य [अग्रहाण्य+अन्] मार्गशीर्ष का शहीना,
 —की 1 मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा 2 पुनर्वसु
 नाम का नक्षत्र—पुत्र ।
 आग्रहाण्य (वि०) क [आग्रहाण्यो पीर्षेनास्यस्मिन् मासे
 —ठक्] मार्गशीर्ष का शहीना ।
 आग्रहारिक (वि०) (स्त्री०—की) अग्रहार (शास्त्रार्थों को
 दात में दी जाने वाली भूमि) प्राप्त करने का अधिकारी
 शास्त्रण ।
 आग्रहता [आ+ग्रह+णिप्+युच्+टाप्] 1. शिक्का-
 बुलना, कर्पना, किसी से रचवना—रथि,अराधयुना.
 नमस्कृत—शि० १।१० 2 धर्षन, रसद् ।
 आग्रथं, अग्रथम् [आ+ग्रथ्+अच्, ल्युट् का] आग्निक्

करना, रण, किसी से रदरना—सहस्यसाधर्वात्म्य-
 दोदकप्रवृत्तस्य निरायिनोऽस्य वि० १०१५४ ।
आचारः [आ + हृ + चञ् + निपात] हृ, सीमा ।
आचाराः [आ + हृ + चञ्] 1. प्रहार करना, मारना, 2
 बोट, प्रहार, घाव,—भीष्माचारप्रतिहतनक्षत्रचरन्-
 कवनः—श० ११३३, अश्वमेधिनः सदाचारान्—कु०
 २१५०, 3 बदकिस्मतों, बिपिन 4 कसाई-आना
 —आचार नौयमानस्य—हि० ४१६० ।
आचारः [आ + च् + घञ्] 1 छिड़काव 2. विशेषकर यज्ञ
 की अंतिम में धी हासना 3 धी ।
आचर्यन्म् [आ + च् + लृट्] 1 लोटाया 2 उछालना,
 धुमना, चक्कर मारना, तेरना ।
आचोषः [आ + च् + घञ्] बलाया, आघाहन ।
आचोषणम्—आ [आ + च् + लृट्, शिष्या टाप्] उदात्तण,
 दिहाण, —एवमाचोषणया कृत्यायाम् पञ्च० ५ ।
आचरणम् [आ + घञ् + लृट्] 1 सूचना 2 स्वीय, मुनि ।
आचार्य [आचारणा सम्भू—अच्] अगारो का समूह ।
आचारिक (वि०) (स्त्री०—की) 1 आचारिक, कायिक 2
 हाव भाव से युक्त, आचारिक चरटाओं में व्यक्त
 —अचूकाः भिनय, दे० अचिनय—क नवनकी या
 डायाःरिया ।
आचरित [अचिन्त् + भण] बहर्णानि, अचिन्ता की मनात
 (पञ्च) ।
आचरन् (पु०) [आ + च् + लृट्] उचि वा०] विद्वान् पुरय ।
आचरथ, [आ + च् + घञ्] कुल्हा करना, आचरन करना
 (उपेनी पर जल लेकर पीना) ।
आचरन् [आ + च् + लृट्] कुल्हा करना, धार्मिक
 अनुष्ठानों से पूर्व तथा भोजन के पूर्व और परवान्
 रूपों में म जल लेकर घूट-घूट करके पीना दद्यादा-
 चयन तत् वाञ्छ० ११०४० ।
आचरन् [स्वार्थे आधारे वा क्त] पीकदान ।
आचय [आ + चि + अच्] 1 इकट्ठा करना बीजना 2
 समूह ।
आचरणम् [आ + च् + लृट्] 1 अग्र्याम करना, अनु-
 करण करना अनुष्ठान-धर्म, मंगल आदि 2 चारण-
 धर्म, व्यवहार,—अपीनक्षत्राचारप्रचारे—ने० ११४,
 उदाहरण (वि० उपदेश) 3 प्रथा, परिभाषा 4 सहाय ।
आचारण (वि०) [आ + च् + क्त] 1 अमने कुल्हा करके
 मूठ गुद्द कर लिया है, या जिसने आचरन कर लिया
 है 2 आचरन के योग्य ।
आचार्य [आ + च् + घञ्] 1 आचरन करना, कुल्हा
 करके मूठ साक करना 2. पानी या घने पानी के झाप ।
आचार [आ + च् + घञ्] 1 आचार, व्यवहार,
 काय करने की शक्ति, बालचरन 2 प्रथा, रिवाज,
 प्रचलन यस्मिन्नेते य आचारः पारम्यैकमायतः

मनु० २११८, 2 लोकाचार, प्रथा संबंधी कानून
 (वि० व्यवहार) समाज में प्रथम पद के रूप में यदि
 प्रयुक्त हो या बर्न होता है 'प्रथाबंधी', 'पूर्ववत्'
 'व्यवहार या प्रचलन के अनुसार'—दे० 'पुत्र', 'काज'
 4 रूप, उपचार,—आचार इत्यर्थहितेन यथा
 गृहीता—श० ५१३, महावी० ३१२८ रिवाजी वा रूप
 उपचार—आचार प्रतिपद्यन्—प० ४ । मम०—वीथः
 आरती उचारने का शेष,—घुषहृष्टम् मास के द्वारा
 पूर्वो ग्रहण करने का संस्कार—विशेष जो कि ब्रह्मनुष्ठान
 के समय किया जाता है;—रघु० ७२७, कु० ७८२,
 —पुत (वि०) बुद्धाचारी—रघु० ७१३,—मेघः
 आचरण संबंधी निबन्धों का अन्तर,—अष्ट, —पतित
 (वि०) स्वयं अष्ट, जिसका आचार—अवधार विवाद
 गया हो, या जो आचरण में पतित हो गया हो,—साज
 (प०, क० व०) बात की सीमें जो कि समान
 प्रदर्शित करने के लिए किसी राजा या प्रतिष्ठित
 महानुभाव पर फेंकी जाती है—रघु० ७१०,—कैरी
 पुष्पमूमे आचरिते ।
आचारिक (वि०) [आचार + ठक्] प्रचलन या निबन्ध के
 अनुकूल, अधकृत ।
आचार्य [आ + च् + घञ्] 1 सामान्य अध्यापक या
 गुरु 2 आचार्यात्मिक गुरु (जो उपनयन करता है तथा
 वेद की शिक्षा देता है)—उपनीव नुच शिष्य वेद-
 मध्याप्येद्वि, सकल्प सरहस्य च तमाचार्ये प्रवर्तते ।
 —मनु० २१४०, दे० 'अध्यापक' पञ्च मी 3 विधिष्ट
 विद्वान् का सम्प्रदाय 4 (जब व्यक्ति याचक सिवाय
 से पंच लगना है) विद्वान्, पतित (अपेजी के 'हाक्टर'
 प्रदत्त का कुछ समानार्थक)।—वी० गुरु (स्त्री),
 आचार्यात्मिक गुरुजानी । मम० उपासन्म् धार्मिक गुरु
 की सेवा करना, -विद्य (वि०) प्रतिष्ठित, सम्मान-
 ननाय ।
आचार्यकम् [आ + च् + घञ्] 1 शिक्षण, अध्यापन,
 (पाठार्थिक) पढ़ाना-लक्ष्मणाया पुनश्चके विद्या-
 पाचार्यक शर—रघु० १२१०८,—आचार्यक विजयि
 मान्यमाचारासीने—मा० ११२६, 2 आचार्यात्मिक
 गुरु की कुलात्मता ।
आचार्यानी [आचार्य + कृप्—अनुक्] आचार्य या घने
 गुरु की पत्नी, सक्षमलम्बुत्वाय न पुनश्चद्विस्तृते, व्यवर्ध
 देवमाचार्येनाचार्यानी च पार्यतीम्—महावी० ३१६ ।
आचित (पु० क० क०) [आ + चि + क्त] 1. पूर्ण, भरा
 हुआ, इका हुआ—कचाचिती विद्यविद्यामयी कवी
 —कि० ११३६, आचिनयधरा शीः—आदि 2. ईवा
 हुआ, गुवा हुआ, गुना हुआ—अर्वाचिता सावर्याचि-
 ताया—रघु० ७१० कु० ७१६१, 3 एकचित, सचित,
 डेर किया हुआ,—क 1. गारी भर बोझ 2 (ननु०

भी) बस भार या यात्री भर की लोल (८०,००० तोला) ।

भाष्यवचम् [भा + वृच् + ल्यट्] 1. ब्रसना, ब्रस लेना 2 ब्रस कर बाहर निकाल देना, (भापु० में) सिगी लगाना ।

भाष्यद्वारः [भा + छ् + गिच् + पञ्] कपडा, पहनने का वस्त्र ।

भाष्यद्वारणम् [भा + छ् + गिच् + ल्यट्] 1 ब्रसना, छिपाना 2 ब्रसकन, म्यान 3 कपडा, वस्त्र —अपभाष्यद्वारणानामै —भाज्ञ० १८२, 4 छात्रन ।

भाष्यरित (वि०) [भा + श् + र् + क्त] 1. मिथित, मिलाया हुआ 2 ब्रसना हुआ, नुजलाया हुआ, —सम् 1 नखों को आपस में एक दूसरे से म्यङ्क कर एक प्रकार का शब्द पैदा करना, नखबाज 2 ठहाका मार कर हलना, अट्टहास ।

भाष्यरितकम् [भाष्यरित + कन्] 1 नाभून की बरौच 2 अट्टहास ।

भाष्यरिते —बन्धम् [भा + छिद् + पञ् + ल्यट् का] 1 काट देना, अपच्छेदित 2 बरा हा काटना ।

भाष्यरितम् [भा + छ् + ल्यट् + ल्यट् -पृषो०] अंगुलियां बटकाना ।

भाष्यरितम् [भा + छिद् + ल्यट् पृषो० इत् भोत्] शिकार करना, पीछा करना ।

भाष्यरम् [अजाना समूह - अञ् + वृञ्] रेवड, बकरो का मुँह ।

भाष्यरम् [अजगव + अञ्] शिव का हनुय ।

भाष्यरम् [भा + अन् + ल्यट्] जैसे कुल में जन्म होना, प्रसिद्ध या विख्यात कुल ।

भाष्यरम् [भा + अन् + पञ्] जन्म, कुल, —बन् जन्मस्थान ।

भाष्यरम् (वि०) (स्त्री०) —यो [भाञ्जे विधेयैर्ग्रिप भाञ्जे अन्ववाहो यथास्थानमन्व -ब० सं०] 1 अछी नन्स का (जैसे घोडा) 2 निर्मय, निरसक, —अः अछी नन्स का घोडा —वाक्ताभिभिनन्दुय्या स्थालनोर्ग्रिप परे परे, भाष्यरान्ति यत् सभाभाभाजानेयास्तत स्मृता —सद्वक्० ।

भाष्यः [अजल्पस्याम्, अञ् + इच्] 1 पृष्ट, लडाई, सभ्य से तु भाष्यत एवाञ्जी तावान् स ददुष परे -रघु० १२५५, 2 कुन्तो या दोह की प्रतिवाधिता 3 रण-क्षेत्र —सत्पाषाणो नयनसलिल चापि तुल्य म्यांन —विश्वर० ३१९ ।

भाष्यी, —अणम् [भा + जीच् + पञ्, ल्यट् का] 1 जीविका, जीवननिबन्धि का साधन, भरण, —भवत्या-जीवन तस्मात् -पञ्० ११४८, तु० क्पाञ्जीव, अजाजीव, सत्पाषाणो जादि सञ्जी की 2 पैसा, वृत्ति, —अः जैन-विशुक् ।

भाष्यीविका [भा + जीच् + व + कन् + टाप्, अत् इत्च्म्] पैसा, जीवन निबन्धि का साधन, वृत्ति ।

भाष्यरु —भाञ् (स्त्री०) [भा + अन् + विलच्, भा + अन् + विलच्] 1 बेगार, बिना पारिधमिक प्राप्ति किये काम करना 2 बेगार में काम करने वाला 3 बरक बास ।

भाष्यरितः (स्त्री०) [भा + शा + गिच् + पित्त, पुकायाम्, लृस्ववच्] आदेश, हुकुम, आज्ञा ।

भाष्यरितः [भा + शा + अञ् + टाप्] 1 आदेश, हुकुम —तथेति सेषामिव अर्तुराज्ञान् - कु० ३१२२ 2 अनुज्ञा, अनुमति ।

सम० —अनुय, —अनुयार्थिन्, —अनुयार्थिन्, —अनुयार्थिन, —अनुयार्थिन्, —सवचक, —बह (वि०) आज्ञाकारी, आज्ञानुवर्ती, —कार, —कारिन् (वि०) आज्ञा मानने वाला, आदेश का पालन करने वाला, आज्ञाकारी, (—रः) सेपक, —कारणम्, —पालनम् आज्ञा मानना, आदेश का पालन करना, —पञ्चम् हुक्मनाया, लिखित आदेश, —प्रतिघात, —-रंग, आज्ञा न मानना, आज्ञा के विरुद्ध कार्य करना —नाज्ञाभङ्ग सहते नृवर नृप-यस्त्वाद्या सार्थप्रिया - मुद्रा० ३१२२ ।

भाष्यरितम् [भा + शा + गिच् -ल्यट्, पुकायाम्] 1 आदेश देना, हुक्म देना 2 जलना ।

भाष्यरितम् [भा + अञ् + वृच्] 1 पिचलाया हुआ धो, —मन्त्राह्वयहोवाच्यम् - वा० १ (वृह ब्रुधा 'पुन' से म्रिन समझा जाता है—मार्गविहीनमाञ्च म्यात् धनीभूत वृत् भवेत्) । सम० पात्रम् —स्वाकी पिचले हुए धो को रबने का बतन, —भृञ् (पु०) 1 अग्नि का विशेषण 2 देवता ।

भाष्यरितम् [भा + अञ् + ल्यट्] सींग, तीर या किसी ऐसे ही और मन्त्र को घोडा सींच कर घरीर से बाहर निकालना ।

भाष्यरितः (म्या० पर०) [भाञ्छति, भाञ्छित] 1 लवा करना, विन्तार करना, 2 विनिर्मलित करना, (हृद्दी या टाग भादि की) ठीक बेटाना ।

भाष्यरितम् [भाञ्च् + ल्यट्] (हृद्दी या टाग का) ठीक बेटाना ।

भाष्यरितम् [अञ्जतस्येदम् -अञ्] 1 मरहम, विशेषण आधो के लिए 2 बर्ही, —, भास्ति या हनुमान्, — दाधारपि-बर्हीवाञ्जतनीलनलपरितप्राप्ते - का० ५८ ।

भाष्यरितः [अञ्जतस्येदम् अण्, स्थिया ङीप्] भाञ्जी में शलने का मरहम या अञ्जत । सम० —काशी लेप या अञ्जत आदि तैयार करने वाली स्त्री ।

भाष्यरितः [अञ्जत + टक्] हनुमान् ।

भाष्यरितः [अटव्या चरति मवां वा -टक्] 1 बनवाली जल में उरने वाला पुरुष 2 मार्यवर्षक, अनुधा ।

भाष्यरितः [भा + अट् + इच्] 1 एक प्रकार का पक्षी (गरारि) ।

भाटीकम् [भाटी + क् + ल्यट्] बहरे की उछक-बूढ़ ।
 भाटीकरः [भाटी + क् + अच्] शक्ति ।
 भाटीयः [भा + तुप् + घञ्, पृषो०] टल्यम् । 1 घमड, स्वाभिमान, हेकड़ी, साटीकम्—घमड के साथ, राजकीय या साही हथ से (रामच के निवेश के रूप में प्राय प्रयुक्त) 2 सूजन, फोलाव, विस्तार, फुलाना—लौ०—फटाटोपी भयङ्कर—वि० ३।७४ ।
 भाडम्बरः [भा + डम् + अरन्] 1 घमड, हेकड़ी 2 दिमाक, सपनि, बाहरी ठाठ-बाट—विचित्रनारीसह-क्याडम्बरम्—का० ५, निर्गुण घोभले नैव विपुलाडम्बरोऽपि ना—भा० ३११५, 3 आक्रमण के सकेतस्वरूप विगुल का बजना 4 आरभ 5 प्रचम्पता, रोच, अनेज 6 हूष, प्रसन्नता 7 बादलों की गरज, हाथियों की चिंभाइ 8 मुद्देमरी 9. वृद्ध का कोलाहल या धोर-गुल ।
 भाडम्बरान् (वि०) [भाडम्बर + इनि] हेकड़, घमडी ।
 भाडकः—कम् [भा + डीक + घञ्, पृषो०] अनाथ की माय, बीधार्थी दोग—अष्टमष्टिभेनेत् कुचि कुचयोऽष्टौ तु पुष्कलम्, पुष्कलानि च चत्वारि भाडक परि-कानि ।
 भाडघ (वि०) [भा + घ्य + क, पृषो०—सारा०] 1 घनी, घनबाल आडवाऽभिजनबानासिम् कोऽप्यंति सद्घो मया—मग० १६।१५, पृ० ५।८, 2 (क) सम्पन्न, समृद्ध, सम्पन्नतायुक्त, (करण० या सनात के अनिय पद क रूप में) —सत्य० पृ० ३।९, विष्णुस सध्या - बजासपल्लाबम्पादुपाय - दश० १८ (क) विधित, मिश्रित, गन्धाद्य अत्र उत्तमगन्धादया—महा० 3 प्रचूर, पर्याप्त । सम० अर (वि०) [स्त्री०—री] या कभी ऐश्वर्यशाली रहा हो ।
 भाडघङ्कर (वि०) [स्त्री०—की] समृद्ध करना,—अन् समृद्ध करने का सम्पन्न, घन ।
 भाडघन्मिच्छन्,—भाड्क (वि०) [आद्य—इत् + इण् + उक्तम् वा] घन संपन्न या प्रतिष्ठित होने वाला ।
 भाडक (वि०) [अणक + अण्] नीच, भोका, अधम—कम् विशेष आसत में होकर मुँचन करना, रतिबन्ध—भाडक मुरत नाम दम्पत्यो, पार्वतसम्बन्धो ।
 भाडक (वि०) [स्त्री०—की] [अणु + अण्] अत्यन्त छोटा,— वच् अत्यन्त छोटापन या सूक्ष्मता ।
 भाडिः (पु० स्त्री०) [अणु + इञ्] 1 गाड़ी के घुरे की कील, अक्षकील 2 घुटने के ऊपर का भाग 3 हड, मीमा 4. तलवार की धार ।
 भाड् (वि०) [अघ्ने अच्—अण्] अडे से पटा होने वाला (जैसे कि पत्ती),—इः हिम्भ्यगं या बडा की उपाधि इन् 1 अडो का डेर, पशु-नक्षियों का समूह, पक्षि-शावक 2 अडकीय, फोता ।

भाड्यीर (वि०) [आभ्यवर्तित बन्ध—ईरच्] 1 बहुत अडे रखने वाला, 2 पयस्क, पूर्णवयस्क (जैसे कि साइ) ।
 भाड्युः [भा + तङ्क + घञ्, कुल्लम्] 1 रोच, धारी की बानारी—दोषोतीप्रायप्रसन्न ब्राह्मणं गामपतिं वा, वृद्धं वा पतिं विरातकु कृत्या वा ब्रह्महृष्टिं—याज्ञ० ३।२४५ 2 पीड़ा, आधि, व्यथा, वेदना—किप्रि-विस्तीर्ण्यतान्—शा० ३, भातकुम्भुरितकठोरमन्-गुर्णी—उत्तर० १।४९, विक्रम० ३।३, अर, भावोका—पुरुषायुषधीविन्धो निरातकु निरोत्थ—रघु० १।६३, भा० 1, त्रास 4 डोल या तबले की आवाज ।
 भाडकम्बन्धम् [भा + तङ्क + ल्यट्] 1. जमाना, गाड़ा करना, 2. अमा हुआ दूध 3 एक प्रकार की छाउ 4 प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना 5 भय, सकट 6. गति, वेग ।
 भाडल (वि०) [भा + लन् + क्] 1 फैलाया हुआ, विस्तारित 2 नाना हुआ (जैसे कि धनुष की डोरी) ।
 भाडलानि (वि०) या—सङ्गा [आतेने विस्तीर्णं पश्चा-दिना अयित् शीलमस्य—सारा०] 1 किसी का बंध करने के लिए प्रयत्नशील, साहसी—गुंरं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुभूत, आततायिनमायात हन्यादेवा-विचारयन् । मनु० ८।३५-०-१, अथ० १।१६, 2 अथय पाप करने वाला जैसे कि चोर, अपहृतरकर्ता, हथियार, आग लगाने वाला महापातकी आधि—अग्निवी गरादश्चैव सत्तोऽग्नौ घनाण्ट् संघषावाहरश्चैतान् पद विद्यादानतायिन—शुक० ।
 भाडल (वि०) [भा + तन् + घञ्] 1 गर्मी (सूर्य, अग्नि आदिकी) धूप,—आतपयोऽग्निस्त घान्य—महा०, वृष में डाला हुआ, प्रचंड—श्रुतु० १।११ 2 प्रकाश । सम०—अव्ययः सूर्य की गर्मी (धूप) का गुजरना, या धीन जाना, सूर्यास्त—आतपत्ययसिंहालीवारामु—रघु० १।५२,—अभाषः छावा,—उचकम् मरीचिका,—अन्,—प्रकम् छाता—उत्तमपक्षान्ममनातपच—रघु० ३।१३, ४७, पृ० ६।५ राज्य स्वहस्तघनदण्डमिवातपत्रम्—श० ५।६,—लङ्कान् गभीं या धूप में रहना, लूण जाना—आतपलङ्कानाडलदस्त्वधारीरा सङ्कुतला—श० ३,—आरभम् छाता छतरी—नृपतिरकुड दत्वा धुने मितान्तवारणम्—रघु० ३।७०, १।१५,—शुक (वि०) धूप में सुझाया हुआ ।
 भाडल्यः [भा + ल्य + गिच् + ल्यट्] शिव ।
 भात (ता) [आनरति अनेन भा + तु + अण्, घञ् वा] दरिया की उतराई, मार्गव्यय, भाडा ।
 भातर्षेणम् [भा + तुप् + ल्यट्] 1 सन्तोष 2 प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना, 3 दीवार या फर्श पर सफेदी करना (उत्सव आदि के अवसर पर) ।
 भातारि (वि०) [भा + ल् + (तल्) + गिनि] एक पत्ती, धील ।

आतिथेय (वि०) [स्त्री०—की] [अतिथिपुं साधु—उज्ज्वल अतिथेय इदं क्व वा] 1 अतिथियों की सेवा करने वाला, अतिथियों के उपयुक्त—प्रत्युज्जगामातिथिमातिथेय रघु० ५।२. १२।२५, तस्मात्तिथेयो बहुमानपूर्वया—कु० ५।३१, 2 अतिथि के उचित या उपयुक्त—आतिथेय सत्कार शं० १,—यम् अतिथि-सत्कार—आतिथेयमनिवारितातिथि—शि० १५।३८, सज्जान्तिथेया धय-मा० २।५०,—की सत्कार, मेहमान नवाजी—भाषि० १।८५।

आतिथ्य (वि०) [अतिथि + ध्यञ्] सत्कारचौल, अतिथि के लिए उपयुक्त—ध्वः अतिथि,—ध्वम् सत्कारपूर्वक स्थापन, अतिथि-सत्कार—तथानिर्घटिकाशास्त्ररय-श्लोमपरिधमम् रघु० १५।८।

आतिथेशिक (वि०) [स्त्री०—की] [अतिथेया + उक्] (ध्या० में) अतिथेय से सम्बद्ध—नु०।

आतिरे (रि) ध्वम् [अतिरेक] ध्वञ्, एते उभयपद वृद्धि] कालमुपल, अधिकता, बहुतायत।

आतिशय्यम् [अतिशय + ध्यञ्] अधिकता, बहुतायत, गृह्य परिमाण।

आतु [अत् + उज्] अटो को बना देना, धरई (घड़ो को बंध कर बनाई गई नौका)।

आतुर (वि०) [ईददर्थं आ + अत् + उरक्] 1 बोटिल, घायल 2 (रोग में) प्रसन्न, प्रभावित, पीड़ित—राज-पावरका तत्र राघव मदनानुरा—रघु० १२।३२, कामे, भयं आदि 3 दम (भय वा शरीर में), आकाशेशान्त्तु चिह्नेया बालवृद्धकृपातुरा मनु० ४।१८३, 4 उत्सुक, उतावला 5 दुबल, कमजोर—र रोषी। सम०—शाखा हस्पताल।

आतोद्यम्—**द्यम्** [आ + द्यु + ध्यञ्, स्वार्थ कन् च] एक प्रकार का वाद्ययंत्र—आतोद्यकियामारिका विषय—वेणी० १ क्रममातोद्यनिरोदिनेमितान्—रघु० ८। ३४, १५।८८, उत्तर० ७।

आत (भू० क० क०) [आ + दा + क्त] 1 लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ—एवमातरति—रघु० ११।५७, मालवि० ५।१, 2 अंगीकार किया हुआ, उत्तरदायित्व लिया हुआ 3 आकृष्ट 4 खींचा हुआ, निस्सारित—गामातलवार खुरूप्येष्व—रघु० ५।२६ इसी प्रकार आतबल ११।७६, ले जाया गया। सम०—गन्ध (वि०) 1 जिसका घन्ध निकाल दिया गया हो, आकान्त, पराजित—केनासपत्नी वागवक—शं० ६ 2 सूधा हुआ (कैसे कि मूल)—आतगन्धमधुय गात्रुभि—शि० १५।८४ (वहाँ आं न० 1 में बताया अर्थ भी रहता है),—गर्भ (वि०) कवमानित, निरस्कृत, अनादृत,—बन्ध (वि०) राजकीय दण्ड को धारण करने

वाला,—सम्बन्ध (वि०) जिसका मन (हृद आदि के कारण) स्वानातङ्गित हो गया हो।

आतक (वि०) [आत्पन् + क्त] (समाप्त के अन्त में) से बना हुआ, से रचा हुआ, स्वभाव का, लक्षण का, पक्षी पक्षि तहो वाला, सन्धय = सविष्य स्वभाव का, इसी प्रकार दुःख, दहन।

आतकीय, **आतकीय** (वि०) [आत्क (त्) + छ] प्रपणे से सम्बन्ध रखने वाला, अपना—सर्वे कान्तमातकीय परपति शं० २, स्वामिनमातकीय करिष्यामि—हि० २, औल लेना,—प्रसादमातकीयमिवालयदणं—रघु० ७।६८, कु० २।१९, बन्ध, सम्बन्धी, आतक्य।

आतम् (पु०) [अत् + मणिपुं] 1 आत्मा, जीव—किमात्माना यो न जिनेन्द्रियो भवेत्—हि० १, आत्मान रचिन विद्धि शरीर रघवेव तु—कट० ३।२, 2 स्व, आत्म इम अर्थ में प्राय यह शब्द जोनों पुरुषों में तथा पुल्लिंग के एक क्वचन में प्रयुक्त होता है चाहे उस मन्त्रा शब्द का लिंग, क्वचन कुछ ही हो जिसका यह उल्लेख करना है—आद्यभद्रशनेन आत्मानं तुनीमत्—शं० १, गुण ददशुगन्मान मर्गां स्वप्नेयु वासने—रघु० १।७६, देवी प्राणप्रभवनात्मानं गङ्गादेव्या विदुञ्जति—उत्तर० ७।२, मायायति कुर्मन्त्रिय आत्मनमात्मना—महा० 3 परमात्मा, ब्रह्म तन्माया एतन्मायात्मानं आकाश समुत्त—उप०, उत्तर० १।१, 4 मार, प्रहृति दे० 'आत्मक' ऊपर 5 चरित्र, विशेषता 6 नैसर्गिक प्रकृति या स्वभाव 7 व्यक्ति या समस्त शरीर स्थित सर्वोपेतोकी कान्त्वा मेहरिवायना—रघु० १।१४, मनु० १०।१२, 8 मन, बुद्धि—मदात्मन्, महात्मन् आदि 9 समस्त तु० आत्मानमपत्र, आत्मेवन् आदि 10 विचारणगति, विचार और तर्क-शक्ति 11 मयागता, जीवत, नाश 12 रूप, प्रतिभा 13 पुत्र आत्मा वै पुत्रनामाभि 14 देवत्व, प्रयत्न 15 मूर्ध 16 अग्नि 17 वायु—से बना वा से युक्त अर्थ को प्रकट करने के लिए 'आतम्' शब्द मयाप्त के अन्त में प्रयुक्त होता है—दे० आतक। सध०—

—**अधीन** (वि०) अपने ऊपर आश्रित, स्वाश्रित, निराश्रित—(म) 1 पुत्र 2 माला, पत्नी का भाई 3 यन्त्रवा या विद्वक् (ताटप माहिल्य में),—अनुपयन्-मन् व्यक्तित्व मेवा,—अपहृष्टः—अपने प्राप को छिपाना—कष वा आर्यापत्तार करोमि—शं० १, —अपहारकः छपवेपी, कपटी, —**आरम्भ** (वि०) 1 प्राण प्राप्ता करने के लिए प्रयत्नशील (कैसे कि कोई योगी), आरम्भान का अन्वेषक—आत्मारामा विहितस्तयो निबिक्तये समाधी—वेणी० १।२३, 2 अपने प्राप में प्रसन्न,—**आशित्** (पु०) सखी (ऐसा समझा जाना है कि मछली अपने बच्चों को या अपनी जाति के

बन्धे कमबोर कीर्तों को धारक पत्नी है) तु०—मात्सा ह्व बना विव वस्यमित पररपत्न—रामा०,—आयकः अपने ऊपर निर्भर करता,—ईश्वर (वि०) बाल्या-रुक्त, अपना स्वामी आप—आत्मवचरामां न हि मातु विन्वा उवाविमेदप्रबयो प्रकलि—शु० ३१५०, —इयुव. 1. पुत्र 2. कामदेव (-आ) पुत्री,—अन्-कीर्णम् (पुं०) 1. जो अपने परिश्रम पर निर्भर करता है, शक्ति 2. मन्वृत् 3. जो अपनी पत्नी के ऊपर आश्रित रहता है (यन्० ८१६२ पर कुल्लुक), 4 पाप, सार्वजनिक शक्तिता,—कर्म (वि०) 1. अपने आप को श्रेय करने वाला, शक्तिमान से युक्त, शर्माही 2. श्रद्धा या परमात्मा को-प्रेम करने वाला,—आ (वि०) यम में उपजा हुआ,—हां मनोरथः—सा० १, (-त्सु) [अन्०] एक बोर, जो मन में कहा हुआ समझा बाव (विप० प्रकाशम्—बोर से) (यह कृपा राजमन्त्र के निर्देश के रूप में मातकों में प्रयुक्त होता है) —यह 'पवनत' का ही पर्याय है जिसकी परिभाषा यह है—अभावात् कस्य यद्गस्तु तद्विह स्वयत्न वतम्—सा० १०६,—सुक्ति (स्त्री०) मुक्ता, किसी मानवर के छिपने का स्थान,—शक्तिम् (वि०) स्वामी, मातृकी,—आत्माः 1. आत्मदत्ता, 2. नास्तिकता,—आत्मकः,—आत्मिन् (पुं०) 1. आत्मकत्पारा अपने आप को स्वयं माननेवाला, व्यापारदेवत्तु भाष्यात्म स्वयं बोड-स्युदकादिभि, अवेवेनेव भुगण्ण आत्मकाशी त उन्मत्ते ॥ 2 नास्तिक,—बोधः 1. मुर्खा 2. कौशा—कः—कालम् (पुं०)—आत्त,—प्रवक,—सम्भवः 1. पुत्र—तमात्तजन्मानमव चकार—रपु० ५१३६, १३३३मातृमातृनुकपायामात्मजन्मसम्पत्तुक—रपु० १३३३, मा० १, कु० ६१२८, 2. कामदेव,—आ 1 पुत्री—वद्य युव चरणयोर्जनकात्मजाया—रपु० १३१ ७८, तु० नमात्मजा आवि 2. तर्कशक्ति, समझ,—अय-अपने ऊपर विजय प्राप्त करना, आत्मत्याग, आत्मो-त्सर्ग,—अ-विपु (पुं०) शक्ति, जो अपने आप को जानता है,—आत्मम् 1. आत्मा या परमात्मा की जान-कारी, 2. अध्यात्म ज्ञान, —सत्यम् आत्मा या परमात्मा की आत्मविक प्रकृति,—स्वाम्यः 1. स्वार्थयोग 2. दूसरे के धरने के लिए अपनी हानि करना, आत्महत्या,—स्वामिन् (पुं०) 1. आत्महत्या करने वाला—आत्म स्वामिन्यो मातृबोद्धकाजनाः—आत्मा ३१५, 2. नास्तिक—आत्मम् 1. आत्मरक्षा 2. शरीर-रक्षण,—अर्क-आर्त्ता—प्रसादभाभीयमिहात्मवर्त्त—रपु० ७१६०, —अर्कत्वम् 1. अपने आपको देना 2. आध्यात्मिक ज्ञान,—शक्तिम् (वि०) 1. अपने आपको पीछे करने वाला 2. आत्महत्या करने वाला,—शिव (वि०) तमात्तर हृदय में होने वाला, अपने आपको शक्ति विप,

—शिवता अपनी विद्या,—शिवित्वम् अपने आपका प्रत्युत्तर करना (शक्ति मिली जाती कि किसी देवता के प्रति शक्तिमान)—शिव्य (वि०) आत्मत्याग का अनवरत अन्वेषक,—अय (वि०) स्वयं अभाववान्—अवकः—अ-कः—आकाश अपने गुरु विद्या विद्वत् बनना,—अन्व-कः—अन्वकः अपना निजी शर्माही—आत्म-मातु स्वयं पुत्रा आत्मविपुः स्वयुः कुता, आत्मजातु-पुत्रात्म पित्रा आत्मवाच्यवाः—अन्वकः। अर्थात् पीली का पुत्र, पुत्रा का पुत्र, बौर माता का पुत्र,—बोधः 1. आध्यात्मिक ज्ञान 2. आत्मा का ज्ञान,—बौर,—बोधिः 1. श्रद्धा,—वचनवचनिते उचितम् सर्वत्र निर-मात्मम्—शु० २१५३, 2. शिवम् 3. शिव—अ० ७। ३५ 4. कामदेव, प्रेम का देवता 5. पुत्र (स्त्री०—पुः) 1. पुत्री 2. बुद्धिदेवता, सत्य,—आत्मा परमात्मा का अर्थ,—आत्मिन् (वि०) 1. स्वामिनी, आत्मरथी 2. शर्माही,—आत्मिन् (वि०) अपने लिए यह करने वाला, (पुं०) शिवात् पुत्र्य को आश्रय आत्म्य प्राप्त करने के लिए अपने तथा दूसरे व्यक्तियों की आत्मा का अन्वेषण करता है, जो सब शक्तियों को अपने समान समझता है—अर्कत्वम् भाष्यात्म सर्वभूतानि आत्मनि, सय पवनमात्मवासी स्वाराज्यव्यभिचरति—यनु० १२११,—बोधिः—पु (पुं०), कु० ३१००—रक्षा अपना बचाव,—आयः जन्म, उत्पत्ति, मृत—वैराग्यात्मसत्यता लम्—मुद्रा० ३११, ५१२३, मु० ३१२३ १७११६,—अन्वक (वि०) अपने आपको बोझा देने वाला,—अन्वका आत्म-अय. अपने को बोझा देना,—अय-अन्वका,—कृष्ण अपनी हृत्वा स्वयं करना,—अय (वि०) अपनी इच्छा पर आश्रित रहने वाला (—अः) 1. आत्मनिवर्णन, आत्म-प्रकाशन 2. अपना निवर्णन, शर्माहीता, "अं मी," अन्विक शर्माही करना, विजय प्राप्त करना,—अन्व (वि०) अपने ऊपर नियन्त्रण रखने वाला, आत्मसत्यही, अपने मन व इन्द्रियों को यम में रक्षक वाला, शिव (पुं०) बुद्धिमान् पुत्र्य, शक्ति, जैसा कि 'तरणि शोकमात्मवित्' में,—शिव्य आत्मा का ज्ञान, आत्म्यात्म-आय,—बोधः 1. पुत्र 2. पत्नी का धार्ड 3. किन्तुक (मातृको में)—सुक्ति (वि०) आत्मा में रहने वाला (विः—स्त्री०) 1. हृदय की शक्तिका, अपने से छवच रखने वाली नेटवर्क,—अपनी निजी शक्तिका या परिस्थिति—विश्यायम् शिवित्त-आत्मवृत्ती—रपु० २१३३,—अर्थिः (स्त्री०) अपनी निजी शक्तिका या योग्यता, अर्थात् शक्ति या कर्म—देव निहाय हृद पीयव्यात्मकता—अर्थ० ११३६१, अपनी शक्ति के अनुसार—आत्मा,—सुक्तिः (स्त्री०), अपनी शक्तिका स्वयं करना, शर्माही बचावना, जीव मात्मा,—अन्वकः अपनी इन्द्रियों पर कर्त्तु रखना,

—**अभयः**—अभयशुभ्र १. पुत्र—अकार नाम्ना रू-
मात्सर्वसम्भय—रु० ३१२१, १११५७, १७१८ २ प्रेम
प्र देवता, कामधेय ३ इन्द्रा की उपाधि, विष, विष्णु
(—आ) १ पुत्री २ समस्त, सप्तश्र (वि०) १ स्वस्व-
चित्त, २ बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, ह्यु—भातिन्,
—ह्युभ्यन्—ह्युवा आत्मपदात्, —हित (वि०) अपने
लिए हितकर, (—सम्) अपना निजी भला या कल्याण ।
आत्मनो (अभ्य०) ['आत्मन्' का कर्म० ए० व०] आत्म-
नाथी कर्तृकारक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है—
अथ वास्तुमिता स्वमात्मना—रु० ८१५१, तुय स्वयम्,
बहु प्राय कश्चि संख्याशुभ्रक शब्दों के साथ जोड़ा
जाता है—उभा०—'द्वितीय' आप सहित दूसरा अर्थात्
बहु तथा स्वय ।
आत्मनीय (वि०) [आत्मन् + क] १ अपने से सबब रखने
वाला, अपना निजी, कर्तव्य आत्मनीय—मात्वि०
४, २. अपने लिए हितकर—आत्मनीयमुपतिष्ठते—कि०
१३१९, —अ १ पुत्र २ पत्नी का भाई ३ बिदूषक
(गादकी में) ।
आत्मनेपथम् [आत्मने आत्मा—कलबोधनाय पदम्—अलुक्
स०] १. आत्मनाथी कथापद, दो प्रकार के कथापदों
(परस्परपद तथा आत्मनेपद) में से एक त्रिममें कि सम्कृत
भाषा की धातु—क्याबकी पाई जाती है, २ आत्मनेपद
के अर्थवत् ।
आत्मन्धरि (वि०) [आत्मान विधायि इति—आत्मन् + धृ
+ शि, मुम् व] स्वार्थी, लालची, (जो केवल अपनी
ही उपरपूति करता है)—आत्मन्धरिस्त पिभित्तेन-
राधाय—सहि० २१२३, हि० ३११२१ ।
आत्मन् (वि०) [आत्मन् + भृन्—अभ्य व] १ स्वस्व-
चित्त, २ शान्त, दूरदर्शी, बुद्धिमान्—किमिवावसाद-
करयात्मकताम्—कि० ६११९ ।
आत्मचरता [आत्मन् + तम् + टाप्] स्वस्वचित्तता, स्वनि-
ययन, बुद्धिमता—प्रकृतिध्यात्यवमात्मचरता—रु०
८१०, ८४ ।
आत्मसात् (अभ्य०) [आत्मन् + साति] अपने अधिकार
में, अपना निजी, (शब् 'क' और 'भू' के साथ)—दुग्नि-
रपि कर्तृमात्सत्—रु० ८१२ ।
आत्मैक्य (वि०) (स्त्री०—की) [आत्मन् + टम्] १
सतत, अनवरत, अनन्त, स्वाधी, नियत्याधी—न
आत्मैक्यो भविष्यति—मुद्रा० ४, विष्णुसुखतकस्या-
पत्तिकथनेपते—२११५, अय० ६११, २ अत्यधिक,
अधुर, सर्वाधिक ३ सर्वोच्च, पूर्ण—आत्मैक्यी स्वत्व-
निष्पत्ति—मिता० ।
आत्मैक्य (वि०) [स्त्री०—की] [अय्य + ट्] १
नामाकारी, सर्वनामकार २ पीडाकर, अयमनकर, अनुभ-
वुषक ३ अत्यावश्यक, अर्थात्सर्व, भाषाती ।

आद्येव (वि०) (स्त्री०—की) [अदि + अद्] अदि से संबंध
रखने वाला, या अदि की संतान,—क अदि का
काम्य,—की १ अदि की पुत्री २ अदि की पत्नी
३ रत्नवला स्त्री ।
आद्यैक्या [आद्येवो + क् + टाप्, ह्रस्व] रत्नवला स्त्री ।
आद्यबंध (वि०) (स्त्री०—की) [अद्यन् + अद्] अद्य-
वेद या अद्यर्था जूषि से सबब रखने वाला,—कः १.
अद्यवेद का अध्येता या ज्ञाता ब्राह्मण २ ब्रह्म का
पुरोहित जिनसे सबब ब्रह्मकर्म पद्धति का विधान
अद्यवेद में विहित है ३ स्वय अद्यवेद ४ मू-
पुरोहित ।
आद्यैक्यिक [अद्यन् + ट्] अद्यवेद का अध्येता ब्राह्मण ।
आद्यक [आ + द् + अद्] १ ब्रह्म, ब्रह्म करने में वेदा
द्वारा थाव २ ब्रह्म, दात ।
आद्यरः [आ + द् + अद्] १ आद्यर, पूज्यभाव, सम्मान,
—निर्माणमेव हि तदाद्यरमात्मनोवम—भा० ११४९, न
आद्यरार्थेन न विद्विषादर—कि० ११३३, कु० ६१२०
२ अकामन, सत्वधानो, सम्मान्य व्यवहार, कु० ६१११,
३ अनुकृता इच्छा, स्नेह—न्यायशास्त्राचार्यदर कु०
६११३, सत्कृत्यनगरिताराकादर का० १२२, ४
प्रिय वेदा—मृत्युमनासाय, लोकादनिधिता—कु०
६१४१, ५ उपक्रम, आरम्भ ६ वेम, आरम्भित ।
आद्यश्म [आ + द् + अद्] स्मरण, इज्जन, सम्मान ।
आद्यो [आ + द् + अद्] १ आद्या, मृत देवताओं का
शोभा, सर्वे—आत्मानमाकाशव च सोममानवाद्यदिने
स्मिन्मिनाय त्थी न० ६१० ३ मूक पादुकिपि
त्रियसे प्रतिनिधि नगर की जाय, (आद्य०) नमुना,
प्रतिकृति प्रकार आदमें विहितानाम्—मुष्क०
११४८, आद्य सर्वमाभ्यागाम् का० १, इसी
प्रकार, गणानाम् अदि ३ कार्य की एक प्रति
किया ४ टीका, मध्य ।
आद्यशक [आद्योः + क] दण्ड, जाईना ।
आद्यसम् [अ + द् + अद्] १ दिग्गजाका, प्रवर्जन
२ उष्ये ।
आद्यन् [आ + द् + अद्] १ चलन २ शोट पहुँचाना,
हत्या करना ३ अरो-शोदा मुनाना, घना करना
४ समान ।
आद्यन् [आ + द् + अद्] १ लेना, स्वीकार करना,
पकडना—कुशाकुशुगारागपरिजताद्यन्कि—मु० ५१११,
आदान हि विषयार्थ भला कार्यरूपकारिन्—रु०
४८६, २ उपायन, प्रायण ३ (रोग का) लक्षण ।
आद्यमिन् (वि०) [आ + दा + मिन्] इष्टय करने वाला,
प्राप्त करने वाला ।
आदि (वि०) [आ + दा + कि] १ प्रथम, प्राथमिक,
आदिप—निदान त्वाधिकारश्च—अधर०, २ मूक,

पहला, प्रधान, प्रमुख—आद्य—सदास के अन्त में—इसी अर्थ में भी० दे० ३ समय की दृष्टि से प्रथम,—वि०
 1 आरम्भ, उपक्रम (वि०) अन्त—अप एव सप्तजोवी तानु बीजममामुत्त—मनु० ११८, भग० २१४१, अश्वशिरानादिसम्भू—कु० २१९, समाप्त के अन्त में प्रयुक्त होकर बहुधा निष्पन्निक अर्थों में अनुचित किया जाता है—'आरम्भ करके' 'बनीरा' २ 'इसी प्रकार और भी (उसी प्रकृति और प्रकार के), 'ऐसे'—इन्द्रादयी देवाः—इन्द्र तथा अन्य देवता, या 'मू' आदि में आरम्भ होने वाले शब्द धातु कहलाते हैं और प्राणिनि के द्वारा बहु प्रायः व्याकरण के सम्बन्धमूह की प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किये गये हैं अदावि, दिवादि, स्वादि इत्यादि, 2. पहला भाग या अक्षर, 3 मुख्य कारण। सम०—अन्त (वि०) जिसका आरम्भ और समाप्ति दोनों हो—(सम्) आरम्भ और अन्त, 'मन्—सम्भ, समापिका—उदात्त (वि०) वह शब्द जिसके आरम्भिक अक्षर पर स्वराधान ही, कर,—कर्त्—कृत् (प०) सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा का विशेषण—भग० ११२७ कवि. प्रथम कवि, ब्रह्मा की उपाधि—श्वोर्षिक उसी ने सत्ता की सर्वप्रथम रचना की तथा वेदों का ज्ञान दिया, वास्मीकि की उपाधि श्वोर्षिक उसी ने सर्वप्रथम कवियों का पद्यप्रदान किया—अब कि उनमें श्रीच दम्पती के एक पत्नी की श्वाय के द्वारा मारा जाता हुआ देखा, उनमें उस दुष्ट श्वाय की पाप दिया और उसका बन्दी शोक अपने आप कविता के रूप में प्रकट हुआ (श्वोर्षिकत्वमापन्नत स्य शोक), इसके पश्चात् ब्रह्मा ने वास्मीकि को राम का चरित लिखने के लिए कहा, फलस्वरूप सत्सन्त साहित्य में प्रथम काव्य 'रामायण' के रूप में प्रकट हुआ,—काव्य रामायण का प्रथम शब्द,—कारणम् (विश्व का) प्रथम या मुख्य कारण, जो कि वेदान्तियों के अनुसार 'ब्रह्म' है, तथा नैयायिकों—विशेषत वैशेषिकों—के अनुसार विश्व का प्रथम या चोत्तिक कारण 'मनु' है, परमात्मा नहीं,—काव्यम् प्रथम काव्य—अर्थात् वास्मीकि रामायण दे० 'आदि कवि,—श्वः 1 प्रथम या सर्वोच्च परमात्मा—पुरुष शाश्वत दिव्य आदिदेवत्वम् विश्वम् भग० १०१२, १११८, 2. नारायण या विष्णु 3 शिव 4 सूर्य,—ईश्व हिरण्यकशिपु की उपाधि, कर्त्तृ महाभारत का प्रथम अक्षर,—ऋ (शु) कवः 1 सर्वप्रथम या आदिम प्राणी, सृष्टि की स्वामी 2 विष्णु, कृष्ण या नारायण—ते च प्राणुद्दन्वन्त सुबुधे आदिपुरुष—रघु० १०६७ सर्वव्यंशवर्षिकमादिपुरुष,—वि० १११४—सम्भूत जननालक शक्ति, प्रथम शीर्ष,—सम्भूत (वि०) 1 सर्वप्रथम

उत्पन्न हुआ,—(श्वः—ऋ) 'आदिपुरुष' आदिम प्राणी, ब्रह्मा की उपाधि 2 विष्णु—रसतलादादि-नयेन पृथा—रघु० १३८, 3 बड़ा भाई,—कृष्ण पहली गौष, आदिम कारण,—ब्रह्मः 'प्रथमपुरुष' विष्णु की उपाधि—उसके तृतीय अवतार (बरा-हावतार) की ओर उल्लेख—कर्मिण (स्त्री०) 3 माया की शक्ति 2. दुर्वा की उपाधि,—सर्व-प्रथम सृष्टि।

आदितः, आदी (अव्य०) [आदि+तडिन्, अणि० ए० व०] आरंभ के लेकर, लक्ष्ये पहले—तद्वैभक्तिो हुनम्—उत्तर० ५१२०।

आदितोः [आदिति+इच्] 1 अदिति का पुत्र 2. देवता, सामान्य देव।

आदित्यः [आदिति+त्थ] 1. अदिति का पुत्र, देव, देवता 2 बारह आदित्यो (सूर्य के भाय) का समुदायवाचक नाम—आदित्यानाम्ह विष्णु—अथ० १०१२१, कु० २१२४ (बहु बारह आदित्य केवल प्रलयकाल में उदित होते हैं)—मु० वेणी० ३१६, वल्गु विश्व बहुकार्त्त-नोदितो हावतार्का 3 सूर्य। विष्णु का पंचवा अवतार, वासनावतार। सम०—अंशकम् सुवंदक,—सुदुःसूर्य का पुत्र, सुवीच, यम, शनि, कर्म।

आदि (श्री) श्वः—अन् [आ+दी+त्त=आदीत्यस्य नाम्—आ+क] 1 दुर्भाग्य, कष्ट, 2 दोष—दे० 'अनादीनव'।

आदिव (वि०) [आदी भव—आदि+दिवच्] प्रथम, पुरातन, मौलिक।

आदीनव—दे० 'आदीनव'।

आदीनवम् [आ+दीन्+स्युट्] 1. आय लगाना 2. मङ्गलाना, सवारता 3 उत्सवादि अवसर पर दीवार फल आदि को चमका देना।

आदत् [आ+क० क०] [आ+द+क्त] 1. सम्मानित, प्रतिष्ठित, 2 (कर्तृवाच्य के रूप में) (क) उत्साही, परिश्रमी, दक्षिण, साधवान, (ख) सम्मान युक्त।

आदोषणम् [आ+दिच्+स्युट्] 1 जूना सेलना 2 जूना सेलने का पासा 3 जूना सेलने की विद्यात, सेलने का स्थान।

आदोषः [आ+दिच्+अन्] 1 सुषम, शाशा—आतुरादे-समादाय—रामा०, आदोष वैसकाव्यः प्रतिमहाह—रघु० ११९२, राघदिष्टादेष्टकृत—वाह० २१३०४, राजा के द्वारा निषिद्ध कार्य को करने वाला 2. सहाह, मित्रो, उपदेश, मित्र 3. विचारण, सूचना, उल्लेख 4. प्रविध्यकथन—विप्रलिनकादेशमथनानि—का० १४, ६ (व्या०) स्वनापण—वातोः स्थान इवादेशं सुवीचं सन्वयेकम्—रघु० १२५८।

आवेष्टित् [आ + विष् + पिति] 1 आवेश देने वाला, हुकम देने वाला 2 उत्तेजक, मजकाले वाला—रघु० ६८, —(६०) 1 सेनापति, आभ्या 2 ज्योतिषी ।

आवृत्त (वि०) [आवृत्ति मय—वृत्] 1 प्रथम, आवृत्ति कालीन 2 मूलिया, प्रमुख, अग्रगण्य—आसीन्यहीलितामाद्य प्रथमवर्णसामिधे—रघु० १११३ (समास के अन्तमें) आरम्भ करने, बरीरा २, दे० आवृत्ति,—आ 1 युवा की उपाधि 2 मास का पहला दिन,—कुम् 1 आरम्भ 2 अनाज, आहार । सम०—कविः 'आवृत्ति' ब्रह्मा या वास्तवीक की उपाधि, दे० 'आवृत्ति' ।—जीवन्व विषय का मुख्य या भौतिक कारण जो साध्य मलानुसार 'प्रधान' वा प्रधानिय कहलाता है ।

आवृत्त (वि०) [आ + विष् + क्त, ऊट् नत्व च, 'अट्' खाना से व्युत्पन्न प्रतीत होता है] बहुभोजी, घाउष्य, पेट, मुक्कड़—कि० ११५ ।

आवृत्तोः [आ + वृत् + घञ्] प्रकाश, चमक ।

आवृत्तवत् [आ + वृत् + क्तवन्त्] 1 बरोहर, निक्षेप-एकी ह्यनीय सर्वत्र दानायमनाधिक्ये कात्या०, योगाय-मनविधीत योगदानप्रतिग्रहम्—मनु० ८।१६५, 2 बिक्री के सामान का घूर्तता के साथ मूल्य बढ़ाना ।

आवृत्तवर्णम् [अवर्णम् + घञ्] कर्बोरान ।

आवृत्तक (वि०) [अवर्णम् + क्त] अन्वयी, बेईमान ।

आवृत्त [आ + वृत् + घञ्] 1 घृषा 2 बलान् चोट पहुँचाना ।

आवृत्तवत् [आ + वृत् + ल्युट्] 1 दोष या अपराध का निरचय, दण्डादेश 2 निराकरण 3 चोट पहुँचाना, सताना ।

आवृत्त (पुं० क० कृ०) [आ + वृत् + क्त] 1 चोट पहुँचाया हुआ, 2 तर्क द्वारा निराकन 3 दण्डादिष्ट, सिद्ध-दोष ।

आवृत्तम् [आ + वृत् + ल्युट्] 1 रखना, ऊपर रख देना 2 देना, मान लेना, प्राप्त करना, बाणिय लेना, 3 यज्ञानि को स्थापित करना (अभ्याधान)—पुनर्दात्र किंवा कुर्यात् पुनराधानमेव च—मनु० ५।१६८ 4 करना कार्य में परिणत करना, निष्पन्न करना 5 बीच में रखना, रख देना.—तुषो विषोपाधानहेतु विद्धा वस्तुयम्—सा० ६० २, प्रजाना विनयाधाना-दक्षणाङ्गुणादि—रघु० १२४६ वीरारोपण उन्वा-दन—कौतुकाधानहेतो—मेघ० ३, गर्भधानस्यार्थि-ध्यात्—९, 7 निक्षेप, बरोहर—याज्ञ० २।०३८, २४७ ।

आवृत्तक [आवृत्त + क्त] महाबास के पश्चात् गर्भधान के निमित्त किता जाने वाला सन्कार ।

आवृत्त [आ + वृत् + घञ्] 1 आशय, स्तर, टंक 2 (कत) संभावे न्यून की शक्ति, महायता, संरक्षण

मद्व—त्येव घातकाधार—मनु० २।५०, 3. भावन आशय—तिष्ठन्त्याप इवाधारे—संघ० १।६७, बराबरपार्थ भूताना कुत्रिधाराता गत—कु० ६।६७, कु० ३।४८, छं० १।१६, 4 आलक्षण, आधारात्त्वप्रमुख प्रवर्तनी—रघु० ५।६, 5 पुत्रिधा, भाषा, पुत्रता, (तदवन्व) 6 नहर 7 अधिकरण कारक का भाव, स्थान—आधा-रोपिकरत्नम् ।

आधिः [आ + धा + क्ति] 1 सामयिक पीडा, बेचना, चिन्ता (विप० व्याधि—सांरीरिक पीडा)—न तेषामाद्य मति नाधयो व्याधयस्तथा—महा०,—मनोगतमाधिहेतुम्—सा० ३।११, रघु० ८।२७, ९।५४, मनु० ३।१०५, मादि० ४।११, 2 विपत्ति, अविशाप, सन्नाप—यान्त्वेव गृहिणीयद्य मुक्तयो धामा कुलम्याधय—म० ४।१७, महावी० ६।२८, 3 निक्षेप, बरोहर, गिरबी, रेहन—याज्ञ० २।२३, मनु० ८।१४३, 4 स्थान, आवात 5 अवस्थान, ठिकाना 6 परिवार के व्रतन-योषय के लिए चिन्तागुर । सम०—क (वि०) पीडाघन, - भोगः बरोहर की बीज का उपयोग (जैसे बोझे गाय आदि का), स्तेयः स्थानी से पृष्ठे बिना बरोहर की गति को मचं करने वाला व्यक्तित ।

आधिकारिक [अधिकरण + क्त] ग्यायाधोस—मुक्क०९ ।

आधिकारिक (वि०) [स्त्री० - की] 1 सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ 2 अधिकारी ।

आधिकार्यम् [अधिक + घञ्] अधिकता, बहुतायत, प्राच्य ।

आधिदेविक (वि०) [स्त्री० - की] [अधिदेव + क्त]

1 अधिदेव या इन्द्रिया के अधिष्ठातृ देव से सम्बन्ध रखने वाला (जैसा कि एक मन्त्र) मनु० ६।८३, 2 देवकृत, भाग्य में निम्नी हुई— (पीडा आदि), सुभूत के अनुसार पीडा मीन प्रकार की है—आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक ।

आधिपत्यम् [अधिपति + यक्] 1 सर्वोपरिता, शक्ति, प्रभु-मता— गाय मुराधामाधिपत्यम् (अवाप्य)—भग० २।८, 2 राजा का कर्तव्य पात्रकी पुत्र प्रकृष्णाधि-पत्ये—महा० ।

आधिभौतिक (वि०) [स्त्री० - की] [अधिभूत + क्त]

1 प्राणियों पर्याप्तदान उपग्रह (पीडा आदि) 2 प्राणियों से सम्बन्ध रखने वाला 3 प्रारम्भिक, भौतिक ।

आधिपत्यम् [अधिपति + यञ्] अधिपति का पद या अधिकार, प्रभुमता, सर्वोपरि प्रथम्य कभी भूप कुपार्यादाधिगजमकाय म ग्नु० १०।३० ।

आधिदेविकम् [अधिदेवताय क्त] उट्, नक्ष काले दत्त - क्त, वा] सम्पत्ति, उपहार आदि जो दुस्तर विवाह करने पर पहली पत्नी को सम्भोगार्थ दिवा जाय,

—अथ द्वितीयविवाहादिना पूर्वदिनेषु पारितोषिकं दत्तं दत्त तद्विधेयनिकम्— पिबन्, तु० पाठ० २।१५३, १४८।

जायनिक (वि०) (स्त्री०—औ) [अधुना+ठञ्] नवा, जायनिक का, नव का, हाक का।

आधोरजः [आ+धी+स्युट्—धीर्धं गतिवातुर्धे] महावत, पीलवान्,—आधोरजाग्री नवसर्वाधिपते—रघु० ७।४५, ५।४८, १।४१९।

आध्यात्मम् [आ+ध्या+स्युट्] 1. पूँक मारना, फुलाव (आल०) वृद्धि 2 बोधी चचारना 3. चौकीनी 4. देत का फूलना, शरीर का फुलाव, बसोवर।

आध्यात्मिक (वि०) (स्त्री०—औ) [अध्यात्+ठञ्] 1. परमात्मा से सम्बन्ध रखने वाला 2. आत्मा सम्बन्धी, पवित्र 3. मन से सम्बन्ध रखने वाला 4. मन से उत्पन्न (पीडा, दुःख आदि) दे० “आधिदैविक”।

आध्यात्मम् [आ+ध्+स्युट्] 1. चिन्ता 2. दुःख पूर्ण प्रत्यास्तरण 3. मनन।

आध्यात्मिक [अध्यापक+अच्] शिक्षक, धर्मोपदेष्टा, दीक्षा-गुरु।

आध्यात्मिक (वि०) (स्त्री०—औ) [अध्यात्+ठञ्] अध्यात् द्वारा उत्पन्न अध्यात् (बेदात् ० में) एक वस्तु के गुण व प्रकृति को दूसरी वस्तु पर आरोप करके।

आध्वनिक (वि०) (स्त्री०—औ) [अध्वन्+ठञ्] यात्रा पर, यात्री—कालारोधेषि विश्वाजी जनस्याध्वनिकस्य वै—महा०।

आध्वर्यव (वि०) (स्त्री०—औ) [अध्वर्यु+अच्] अध्वर्यु या यजुर्वेद से सम्बन्ध रखने वाला,। अच् 1 यज्ञ में किया जाने वाला कार्य 2. विधेयत- अध्वर्यु नामक पुरोहित का कार्य।

आध्वः [आ+ध्व+विष्प, तत अच्] 1. बाधु भीतर चौकीना 2. स्वास लेना, फूक मारना।

आध्वक [आध्वयति उक्ताहवत करोति अच्+विष्+ध्वन्त् तारा०] 1. बड़ा सैनिक दौल—नगाडा—यमजानक-गोमुखा सहस्रैवाभ्यह्वन्त-वन० १।१३, 2. मरवाने वाला आध्वक। सम०—हुंभिः कृष्ण के पिता वामु-देव की उपाधि (-चि, -औ (स्त्री०)) बड़ा दौल, नगाडा।

आध्वति (स्त्री०) [आ+ध्व+क्तिन्] 1. मुकुना, नम-स्कार करना, झुकाव (आल० भी)—मुचयन्विष-मिधावति प्रपेदे—कि० १।३।५, 2. नमस्कार या अभिवादन 3. अडाबल, सत्कार, अडा।

आध्वत् (वि०) [आ+ध्व+क्त] 1. बांधा हुआ, मड़ा हुआ 2. बड़कोप, बंधकपक्ष (वेता कि उधर) —इः 1. डोक 2. बस्त्रों का पहनना, बनाव-निवार।

आध्वन्त् [आ+ध्व+स्युट्] 1. धुँह, वेहरा—रघु० ३।३, —नृपच कांत पिबत सुतात्मर्—१७, 2. चिन्ती बन या पुस्तक के बड़े २ अर्थ (उदा० रत्नमंथार के दो मानन)।

आध्वन्त्सु [अध्वन्+ध्वन्] 1. अन्वयहित उत्तर-धिकार 2. अन्वयान रहित आसनता।

आध्वन्त्सु [अध्वन्+ध्वन्] 1. अन्वयपक्ता, अन्वयता (काल, स्थान और तथ्या की दृष्टि से)—आनन्वाद् व्यभिचाराण्य—आध्व० २, 2. असीमता 3. अन्वयरता नित्यता 4. ऊर्ध्वलोक, स्वर्ग, शारी सुख—यस्यु नित्यं कृतमतिर्धर्मेषाधिपद्यते, अथाच्छुपान. कस्यापि हीम्न-मानन्यमस्तुते—महा०।

आध्वन्त् [आ+ध्व+अच्] 1. प्रसन्नता, हर्ष, खुशी, सुख,—आनन् इन्द्रायो विद्वान् विमेति कदाचन, 2. इष्यत, परमात्मा (मनु० भी इसी अर्थ में) 3. मित्र। सम० कामन्त्, अन्त् काशी,—यतः दुःखिन के वरुण,—पूर्व (वि०) आनन्त् से अंतरोत्त (—अच्) परमात्मा,—अथक शीर्ष।

आध्वन्त् (वि०) [आ+ध्व+अच्] प्रसन्न, हर्षोत्फुल्ल,—यु-प्रसन्नता, हर्ष, सुख।

आध्वन्त् (वि०) [आ+ध्व+स्युट्] सुखकर, प्रसन्न करने वाला,—अच् 1. अन् करना, प्रसन्न करना 2. प्रथम करना 3. मित्र या अतिथियों के साथ, मित्रने पर अथवा विदा होते समय सम्बोधित अन्वहार, लौक्य, सिध्दता।

आध्वन्त्स्य (वि०) [आनन्+अयट्] 1. आनन्त् से परि-पूर्ण, सुख या हर्ष सहित,—यः परमात्मा, “कीकः अन्-स्तम आचरण मा शरीर का परिचाल।

आध्वन्त् [आ+ध्व+इन्] 1. हर्ष, प्रसन्नता 2. जिज्ञासा।

अध्वन्त् (वि०) [आ+ध्व+यिनि] 1. प्रसन्न, सुख 2. सुखकर।

आध्वन्त् [आ+ध्व+अच्] 1. रत्नच, नाद्वेषाभा, नाचवर 2. युद्ध, लडाई 3. देव का नाच (‘शौराट्ट’ भी इसी देश का नाम है)।

आध्वन्त्स्यम् [अध्वन्त्स्य भाव—ध्वन्] 1. अनुपयुक्तता, निरर्थकता—ध्वान्त्वन्त्स्यमित्थिते—कार्त्ता०, आध्वान्त्वन्त्स्य कियार्थत्वादान्वन्त्स्यमतर्धानाम्—ई० शा० 2. अयोध्या।

आध्वान्त् [आ+धी+अच्] आल।

आध्वान्त् (पुं०) [आध्वान्+इति] मधुवा, शीघर—आध्वान्त्स्यमपकृष्टनकात्—रघु० १।५।५, ७५।

आध्वान्त् (वि०) [आ+धी+अच्], आध्वान्त्स्यः निकट जाने के योग्य,—अध्वः आध्वान्त्स्य से की हुई अन्वय अन्ति (‘अधिधानि’ भी कहलाती है)।

कावाणः [आ + गृह् + घञ्] 1 बन्धन 2 मलावरोध कञ्च 3 सम्भारं (विद्योपेत करके को) ।

आत्मिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अत्मिन् + अण्] वायु से उत्पन्न, —क, —आत्मिकः हनुमान्, नीम ।

आत्मिका (वि०) [प्रा० सं०] हल्का काला वा नीला, —कः काला घोडा ।

आनुपूर्विक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अनुपूर्व + ठक्] हित-कर, अनुकम्प ।

आनुकूल्यम् [अनुकूल + घञ्] 1. हितकारिता, उपयुक्तता —यवानुकूल्यं दम्पत्योस्त्रिभवंस्तत्र बर्षते—याज्ञ० १। ७४, २. कृपा, अनुग्रह ।

आनुशास्त्रम् [अनुगत + घञ्] ज्ञान-गृह्यज्ञान, परिचय ।

आनुशुच्यम् [अनुशुच + घञ्] हितकारिता, उपयुक्तता, अनुकम्पता ।

आनुशासिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अनुशास + ठक्] देहानी, प्रामोण, संसार ।

आनुशासिक्यम् [अनुशासिक + घञ्] अनुशासिकता ।

आनुश्रविक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अनुश्रव + ठक्] अनुसरण करने वाला, पीछा करने वाला, पर्वचिह्न या लीक के सहारे पीछा करने वाला, अध्ययन करने वाला ।

आनुपूर्व्यम्—व्यं—स्त्री [अनुपूर्वस्य भावः घञ्], उत्तो वा शीघ्रि य—सोप०] क्रम, परम्परा, मिलसिला मनु० २।४१ २ (विधि में) बनों का नियमित क्रम—पशानुपूर्व्यां विप्रस्य शत्रवस्य षत्रुरोत्तरान्—मनु० ३।२३ ।

आनुपूर्व्यं—व्यं—व (अव्य०) एक के बाद दूसरा, ठीक क्रमा-नुसार ।

आनुमानिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अनुमान + ठक्] 1 उपसंहार में सम्बन्ध रखने वाला 2 अनुमान प्राप्ति, —कम् शास्त्री का 'प्रधान'—आनुमानिकमप्येवेवामिति चेष—ब्रह्म० ।

आनुमानिक [अनुमाणा + ठक्] अनुयायी, श्रवक, अनुचर ।

आनुसक्तिः [आ + अनु + क्तञ् + क्तिन्] रग स्नेह, अनुराग ।

आनुलोमिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अनुलोम + ठक्] 1. नियमित, क्रमबद्ध 2 अनुकूल ।

आनुलोम्यम् [अनुलोम + घञ्] 1 नैमित्तिक या सीधा क्रम, उपयुक्त व्यवस्था—आनुलोम्येन मन्त्रा जाता येयान् एव ते मनु० १०।५, १२ 2 नियमित मिलसिला या परंपरा 3 अनुकूलता ।

आनुवेष्टयः [अनुवेष्ट + घञ्] यह पशोली जिनका घर अपने घर से एक छाइकर हो—आनुवेष्टयानुवेष्टयो ष कल्पामे विंशति द्विरे—मनु० ८।३२२ (२५ पर कुल्लूक कहना है—निरन्तर गृहवासो प्रातिवन्ध्य—उपनयनपूर्वगृहवासानुवेष्टय) यह शब्द 'अनुवेष्टय' लिखा भी पाया जाता है ।

आनुवर्जिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अनुवर्ज + ठक् स्त्रियां ङीप्] 1 सबद्ध, सहवर्ती 2 ध्वनित 3 अनिवाय, आवश्यक 4 अनुधान, गोप—अनुभि स्वात्नु वदविध-कीचत मनु लक्ष्मी फलमानुपूर्विकम्—कि० २।११, अयानरवानुपूर्विककथनेऽन्वाचय सिद्धा० दे० 'अन्वाचय' 5 सखन, शोकीन 6 आनुवेष्टिक, आनु-पानिक 7 (व्या०) अध्याहार्य ।

आनुष (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अनुपदेशे भव—अण्] 1 जलीय, दलदलीय, आर्द्र 2 दलदल—भूमि में उत्पन्न, —ष दलदली भूमि में घूमने वाला पशु (जैसे भैंस) ।

आनुष्यम् [अनुष + घञ्] ऋणपरिशाप, दायाद्व विभाना, उच्छृणता, दे० अनुष्णा ।

आनुसक्त-स्य (वि०) [अनुसक्त + अण् (स्त्री०) घञ्] वा मृदु, कृपाळु, दयाळु—क, स्यम् 1 मुद्रा 2 कृपा मनु० १।१०१, ८।११३, ३ कृपा, दया, अनुकम्पया ।

आनुपुण्य-स्यम् [अनुपुण्य + अण्, घञ्, वा] भद्रापन, आशुष ।

आनु (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अनु + अण् स्त्रियां ङीप्] अन्तिम, अन्त का, —तस्य (अव्य०) पूर्णकर्म से, अन्त तक ।

आनुत्तर (वि०) [आनुत्तर + अण्] 1 आनुत्तरिक, मुक्त छिया हुआ उत्तर० ६।१२, मा० १।२६, २ अन्तस्तम, अन्तर्परी, स्य अन्तस्तम स्वभाव ।

आनुत्तरि (वि०) [अनुत्तरि + अण्] [अनुत्तरि + अण्] स्त्रियां ङीप्] 1 वायव्य स्वर्गोप, दिग्घ 2 वायु में उत्पन्न, स्य व्योम, पृथ्वी और आकाश के बीच का प्रदेश ।

आनुत्तरणिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अनुत्तरण + ठक्] परिमलिन (जैसे श्रेणी में, मेला में) ।

आनुत्तरिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अनुत्तरण + ठक्] घर में रहने वाला, या घर में उत्पन्न ।

आनुत्तरिका [अनुत्तरा + अण् + टाण्] बड़ी बहन ।

आनुत्तोल (व्या० पर०) [दोस्तान, दासिन] 1 शुकना, उषर में उषर या उषर में उषर म्य-उत्त 2 हिलाना, इयकपाना ।

आनुत्तोल [अ + दात् + घञ्] 1 शुकना, शुकना 2 हिलाना शुकना ।

आनुत्तोलम् [आनुत्तोल + घञ्] 1 शुकना 2 हिलाना-शुकना, म्यञ्, कश्चिन् हाना, िंशामारविन्दमुत्तरदुहा टाक चामरानुत्तोलनात् उद्भूट 3 कृपाया ।

आनुत्तय [अनुत्तय + अण्] मोक्ष ।

आनुत्तयिक [अनुत्तय + ठक्] रमाडरा, आनुत्तयम् [अण् + घञ्] अद्यापन ।

वीर्य, कण्ठकस्त, कठिनाई में रंजना हुआ—आपनमय-
 कनेयु वीर्यिता: कन्व वीर्यता—४० २।१६, वेध० ५२ ।
 तय०—कल्या वर्धनी, वर्धनी, वर्धनी स्त्री—सम-
 आपनसत्वास्ता देवुरापाभूरित्येध—रघु० १९।५९ ।
आपनित्यक (वि०) [अपनित्य परिचलत् निवृत्तम्—कन्] विनियम द्वारा प्राप्त,—कन् विनियम द्वारा प्राप्त वस्तु या सम्पत्ति ।
आपराहृय (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अपराहृय+ठञ्] टीसरे पहर होने वाला ।
आपस्व (वपु०) [आप्+असुन्] 1 वस्त्र—आपोमिर्माजं हुवा 2 पाय ।
आपस्तः [आ+प्+अञ्] 1 टूट पड़ना, गिर पड़ना, हुमका करना, आ घबड़ना, उतरना—तदापातप्रया-
 त्यभि—कु० २।१५, गच्छापातविकल्पितवेधनादास-
 ह्वन—रघु० १२।७६ 2 उतरना, गिरना, नीचे
 झूलना 3 (क) वर्धमान कृष वा काल—आपातरम्या
 विषया वर्धनपरितापिन कि० ११।१२, आपातसुरमे
 भोगे निमुन्ना कि न कुर्वते—सा० ६० भाषि० १।
 ११५, मा० ५ (ख) प्रथम दर्शन—दे० 'आपातत'
 4 चटित होना, प्रकट होना ।
आपाततः (बन्ध०) [आपात+तसिन्] पहली निगाह में,
 हुमका करते ही, तुरत ।
आपापः [आ+प्+अञ्] 1 अपापित, प्राप्त 2 पारि-
 तोषिक, पारिथमिक ।
आपापवन् [आ+प्+विच्+ल्युट्] पहुँचाना, प्रका-
 शित करना, मुकाब होना—इत्यस्य सत्त्वान्तरा-
 पापने—सिद्धा० ।
आपापन्—सकम् [आ+पा+ल्युट्] 1 नवपौ को मरनी,
 पानसोष्ठी - मुच्छ० ८, आपान पानकलता देवनाभि-
 प्रभोदिता—महा०, 2 बचबाला, बहिरालय—ताम्बु-
 लीना दर्शनत रचितपानमूय—रघु० ४।५२, कु०
 ६।४२, आपानकमलस्य—का० ३२ ।
आपापतिः [आ+पा+क्तिच्=आपा, तदधममति—अन्
 +इन्] वृ ।
आपीकः [आ+पीड+अञ्, अच् वा] 1 पीडा दना,
 चोट पहुँचाना 2 निषेधना, बीचना 3 कष्टहार,
 माया—ब्रह्मपीडकपालसङ्कल्पमन्त्राकिनीचारय—
 मा० १।२, 4 (अन्) मुकुटमणि तस्मिन्कुलापीडनिभे
 विपीडन्—रघु० १८।१२ मा० १।६, ७ ।
आपीक (मू० क० क०) [आ+पी+क्त] कलवान्, मोटा,
 सबल,—का कुर्वा, आपीकोष्ण—सिद्धा०,—सम् एव, घन
 का लक्ष्मण—आपीनभारोद्ग्रहणव्यलात्—रघु० २।१८ ।
आपुषिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अपु+उक्] 1
 बच्चे पूर बनाने वाला 2 जिते पूर अधिक पसंद हो,
 —क पूर बनाने वाला, हलवाई,—कम् पूरों का डेर ।

आपुष्यः [अपुष्य साप् वा० व, अपुष+अच् वा] बाटा ।
आपुषः [आ+प्+अञ्] 1 प्रवाह, धारा, परिमाण
 —स्वेदापुषो युवतितरिता आप गच्छत्येकानि—शि०
 ७।७४, 2 भरना, पूरा करना ।
आपुषन् [आ+प्+ल्युट्] भरना, भर कर पूरा करनेवा,
 कर्त्ते कृतम्—पञ्च० १ ।
आपुष्यन् [आ+प्+अञ्] धातु की एक प्रकार (सञ्-
 क्त 'टीन') ।
आपुष्ठा [आ+प्रश्+अञ्+टाप्] 1 समाहाय 2 बिदा
 करना, 3 विज्ञाता ।
आपोषानः [आपसा अनेन अधानम् इति—अप्+
 आनच्] अधान से पूर और पश्चात् आचरण करने के
 मन्त्र (क्रमशः—अनुनोस्तरणमसि स्वाहा, ओ
 अनुतापधानमसि स्वाहा) याज्ञ० १।१२, १०६,—अम्
 भोजन के लिए स्थान बनाना, तथा भोजन को उक
 देना ।
आप्त (मू० क० क०) [आप्+क्त] 1 हासिल किया,
 प्राप्त किया, उपलब्ध किया—'काम', 'साप आदि
 2 पहुँचा हुआ, आ पकड़ा हुआ, 3 विश्वास योग्य,
 विश्वसनीय, प्रामाणिक (समाचार आदि), 4 विश्व-
 स्त, गोपनीय, निष्ठावान (पुरुष)—रघु० ३।१२, ५।३२,
 5 धनिष्ठ, सुपरिचित 6 तर्कमय, समझदारी से
 युक्त,—अः 1 विश्वासयोग्य, विश्वसनीय, योग्य व्यक्ति,
 विश्वस्त पुरुष या साधन,—आप्त यथावैरकता तर्क
 स०, 2 सबकी मित्र, निश्चालम्बनुराजाना वधाप्य
 धनदानम्—रघु० १२।५० कश्चापनवर्गाश्च अत्रम्या
 —मालवि० ५,—अम् 1 लब्धि 2 आपातसाम्य ।
 सम० काम (वि०) 1 जिनने अपनी इच्छा पूर्ण
 करनी है 2 जिनने मासार्थक इच्छाओं और आसक्तियों
 का त्याग कर दिया है (—अ) परमात्मा,—वर्गा
 वर्धनी स्त्री,—अचमन् किमो विद्याम योग्य या विश्व-
 स्त व्यक्ति के श्रेष्ठ—रघु० ११।६२, १५।४८,—आप्
 विश्वास के योग्य, जिसके मन्त्र प्रामाणिक और विश्व-
 सनीय होते हैं—परगणितम्यानयोगे वैकिकेति ते सन्तु
 किन्नातवाच म० ५।२५ (—स्त्री०) 1 स्त्री
 मित्र या विश्वसनीय पुरुष की सहाय 2 वेद, धृति,
 प्रामाणिक बचन (यद शब्द म्नि इतिज्ञास और
 पुराणो पर भी त्याग होता है जो कि प्रामाणिक समझे
 जाते हैं)—आप्तवान्मानात्मा साध्य त्वां प्रति का
 कथा—रघु० १०।२८, धृति (स्त्री०) 1 वेद 2
 स्मृतियाँ आदि ।
आप्तिः (स्त्री०) [आप्+क्तिन्] 1 हासिल करना, प्राप्त
 करना काम, अधिग्रहण 2 आ पहुँचना, (पुर्ववृत्ता में)
 वस्तु होना 3 योग्यता, बहिर्दृष्टि, भीषिक्य ४ सम्पत्ति,
 पूरा करना ।

आन्व (वि०) [अन्वा + इन्व्—अन्, उत्तः स्वार्थे ञ्च्ञ]
1. अवयव 2 [आन् + ञ्च्ञ] प्राप्त करने के योग्य, प्राप्य ।

आन्वय (मू० क० इ०) [आ + ञ्च्ञ + क्त] 1. मोटा, बसवान, हृष्टपुष्ट, ताकतवर 2. प्रत्यय, संतुष्ट, —अन्व 1. प्रेम 2. वृद्धि, बढ़ना ।

आन्वयवन् —ना [आ + ञ्च्ञ + स्तुट्, वृत्त्वात्] 1. पूरा करना, मोटा करना, 2. उत्तीर्ण, पूर्ण—वैकल्याभ्यायना भवति—अन्व० १, 3. आने बढ़ना, क्षीण्यति करना 4. मोटापा 5. हल-वर्धक शीघ्रता ।

आन्वयवन् [आ + प्रञ्च् + स्तुट्] 1. विद्या करना, विद्या दीयाना 2. स्वागत करना, सत्कार करना ।

आन्वयवीन (वि०) [आन्वय + ञ्च्ञोति—ञ] पैरो तक पहुँचनेवाला (घरन आदि) ।

आन्वयः, ञ्चवन् [आ + ञ्च्ञ + अच्, स्तुट् वा] 1. स्नात करना, पानी में डुबा देना 2. बारी बोर पानी का छिड़काव करना । अन्व०—प्रतिष्ठा वा अन्वयवन्वितम् (पु०) दीक्षित गृहस्थ (दिवसे ब्रह्मचर्य अवस्था पार करके गृहस्थ्य अवस्था में परावर्ण किया है) पु० 'स्नातक' ।

आन्वयः [आ + ञ्च्ञ + घञ्] 1. स्नात 2. छिड़काव 3. बाढ़, जल-प्रापन ।

आन्वयः [ईयन्तृकार इव कर्तोऽन्व—पु०] अक्षीय ।
आन्वय (मू० क० इ०) [आ + अन् + क्त] 1. बोधा हुआ, बोधा हुआ 2. जहाया हुआ—रघु० ११५० 3. निमित्त, बना हुआ—भाष्यद्वयका तात्पर्यपरिच्छेद—का० ४९, महानकार बँडो दुर्ग, 4. प्राप्त 5. बाधित,—अन्व ('अ' भी) 1. बाधना, जोड़ना 2. जूझ 3. आनुषण 4. स्नेह ।

आन्वयः, —अन्व [आ + अन् + घञ्, स्तुट् वा] 1. अन्व, अन्वयन (वाल्०)—प्रेमावर्णविर्वाचन रत्न० ३११८, अन्व ३८, 2. जूधे की रस्ती 3. आनुषण, सजावट 4. स्नेह ।

आन्वय [आ + अन् + घञ्] 1. फाट डालना, शीघ्रकर बाहर निकालना 2. मारडालना ।

आन्वयः [आ + वाच + घञ्] 1. कष्ट, पीट, तकलीफ, सताना, हानि—अ. प्राणावाचमाचरेत्—अन्व० ४१५४, ५१, —आ 1. पीडा, दुःख 2. प्राणतिक वेदना, बाधित ।
आन्वयः—वे० आन्वय ।

आन्वयवन् [आ + वृत्त्वात् + स्तुट्] 1. डान, सजावटारी 2. सिद्धन, सुचन ।

आन्वय (वि०) (स्त्री०—क्री०) [अन्व + अन्] आगत उबधी या बाहक से उत्पन्न ।

आन्वयिक (वि०) (स्त्री०—क्री०) [अन्व + क्तञ्, क्त्वात् ङीप्]
बाधक, सतायाना—आन्वयिक कर—अन्व० ७१२९, ३१ ।

आन्वयवन् [आ + ञ्च्ञ + स्तुट्] 1. आनुषण, सजावट (वाल्०)—किमिषयाप्रासाधरनादि यौगले पृठ त्वया

पार्थक्योविषयकम्—पु० ५१४४, प्रसङ्गावरण पराकटः—कि० २१३२ २. आन्वय बोधन करना ।

आन्वय [आ + ञ्च्ञ + क्त] 1. प्रत्यय, चक, कान्ति—दीपानां अन्वयः क्त्वा—अन्व० ४, 2. बर्ण, नापाठ, रूप—अन्वयवन्वितं वृत्तान्तम्—अन्व० १२१२७ 3. आन्वय, विख्या-वृत्तान्त—अन्व० ही सन्धी को प्रकट करने के लिए यह उन्व प्रकटः सजावट के अन्व में अनुकूल होता है—अन्व-वृत्तान्तम्—अन्व० ११५८, अन्वयवन्वितम्—रघु० २११० 4. प्रतिविम्बित प्रतिष्ठा, उन्वय, प्रतिविम्ब ।

आन्वयवन् [आ + अन् + ञ्च्ञ] कटावट, कोकोरित ।

आन्वयः [आ + ञ्च्ञ + घञ्] 1. अन्वयवन् 2. प्रस्तावना, वृत्तिका ।

आन्वयवन् [आ + ञ्च्ञ + स्तुट्] 1. अन्वयवित करना, अन्वयवन् 2. अन्वयवन्—अन्वयवन्वाचयन्पूर्ववाहः—रघु० २१५८ ।

आन्वयः [आ + ञ्च्ञ + अच्] 1. चक, प्रकाश, कान्ति 2. प्रतिविम्ब—अन्वयवन् विद्या अन्वयवन्वाहात् पट स्फुरेत्—वेदवत्, 3. (क) विख्या-वृत्तान्त, अन्वयवन् (प्रायः सजावट के अन्व में)—अन्वयवन् अन्वयवन्वितम्—रामा० (अ) अन्वयवित, अन्वयवन्—तत्त्वाह्वयवाहा-सन्—आ० २, अन्वयवन् की बाधित विचार्य देता है, 4. अन्वयवित या अन्वयवन् की (बैसा कि 'हेत्यानात्' में) 5. हेत्यानात्, लर्ण का रूप दे० 'हेत्यानात्' 6. आन्वय, अन्वयवन् ।

आन्वय (स्व) र (वि०) 1. आन्वय, उन्वयवन्,—र ५४ उपवेष्टाओं का अनुवाद वाचक नाम ।

आन्वयविक (वि०) (स्त्री०—क्री०) [अन्वयवित + क्त]
1. आन्वयवन् 2. अन्वयवितवन्, अन्वयवितवन्, —अन्व अन्वयवित, अन्वयवित, अन्व ।

आन्वयवित (वि०) (स्त्री०—क्री०) [अन्वयवित + अच्, क्त्वात् ङीप्] अन्व से अन्वयवित नाम, अन्वयवित (नाम आदि) —तां पार्थकीयवितवन्वितं नाम्ना—पु० ११२६, —अन्व अन्वयवित, अन्व अन्व से अन्व ।

आन्वयवितवन् [अन्वयवित + अच्] 1. अन्व की अन्वयवित—रत्न० ३११८ 2. अन्वयवित 3. अन्वयवित 4. अन्वयवित ।

आन्वयवित [अन्वयवित + अच्] 1. अन्वय, अन्व 2. अन्व, अन्वय—दे० 'अन्वयवित' ।

आन्वयवितविक (वि०) (स्त्री०—क्री०) [अन्वयवित + क्त]
की फिरी अन्व-वितवित में हो,—अन्व अन्वयवित ।

आन्वयवितवन् [अन्वयवित + अच्] फिरी के अनुकूल होना—अन्व अन्वयवित—अन्वयवित करने का अन्वयवित के लिए आता है 2. के अन्वयवित होना, अन्वयवित करने—दीपानि-वृत्तान्तम् पु०—रत्न० ३१२, 3. अन्वयवित ।

आन्वयवितवन्, आन्वयवितवन् [अन्वयवित + अच्, अन्वयवित]
दीपवित, अन्वयवित ।

आविष्कारिक (वि०) (स्त्री०—की) [आविष्केष + उङ्] रावणिक से अन्वय रखने वाला—आविष्केष-निकं यते रामावर्षभकस्मितम्—रामा०, महावी० ५।

आविष्कारिक (वि०) (स्त्री०—की) [आविष्कार + उङ्] उपहार के रूप में देव, कर्म भेट, उपहार।

आवीरकम् [आवीरकश्च भाष—अप्यञ्] अनवरत आवृत्ति, बहुलमावीरकम्—पा० ३।२।८१।

आवीरः [आ अयन्तात् विभ राशि-रा + क तारा०] ग्वाला, —आवीरवाकनयनाहृतमानसाम दत्त वनो यमुपते तदिव महाभ—उद्भूट 2. (पं० ६०) एक देश तथा उसके निवासी,—ही 1 ग्वाले की पत्नी 2 आवीरवाति की स्त्री। सम०—वसिक, फल्की (रुही०),—वसिका ग्वालों का भाव उत्पान, ग्वालों के रहने का 'प'।

आवीरक (वि०) [आविष्य सति दधाति—अ क] भयानक, नीचप,—कम् भोट, शारीरिक पीडा।

आवुल (वि०) [आ + भू + ल] कुछ मुड़ा हुआ या थुका हुआ।

आवृत्तिः [आ + भृ + चञ्] 1 घेर, परिधि, विस्तार, विस्तारण (दीर्घाकरण), परिसर, परिवारण—अक-पितोऽपि ज्ञात एव यथाभ्यासोपलक्षणोपलक्षेति—पा० 1. गणनाभोग—नमो विस्तार 2 लबाई-पौडाई, परिमाण—प्रभासोपलक्ष—वेध० १२, विस्तृत नास ने 3 प्रयत्न 4 ताप का विस्तृत फल (चिते वरुण क्षतरी के रूप में प्रयुक्त करता है) 5 उपभोग, कृषि-विष याभोगेष तैवाहर—शान्ति०।

आव्यन्तर (वि०) (स्त्री०—दी) [आव्यन्तर + अच्] भीतरी, आन्तरिक, अदक्नी।

आव्यवहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [आव्यवहार + उङ्] भोज्य, जाने के योग्य (आहारिक)।

आव्याप्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [आव्याप्त + उङ्] 1 आव्याप्तबलित 2 आव्याप्त करने वाला, पोहचाने वाला 3 निकटत्व, पक्षों में रहने वाला, सल्लभ (आव्याप्तिक)।

आव्यव्ययिक (वि०) (स्त्री०—की) [आव्यव्यय + उङ्] 1 मञ्जुलोम्य, समुद्रिजनक—अनन्वयिकं अन्वयक-वर्धनम्—मुक्क० ८, 2 उन्नत, गौरववासी, महत्त्वपूर्ण—कम् बाह्य वा पितरों को भेंट वा उपहार देने का संवहार।

अव्य (अव्य०) [अच् + पिच्—वा० कृष्णाभाष—तात् विचप्] विन्नाफित मानवों को प्रकट करने वाला विस्मयादि कोटक अव्यय—(क) अवीकरण, स्वीकृति—'कोह'—'ही'—'वा कुम्—यासवि० १ (म) प्रत्यान्तरक—वां भादम्—वा० ३—जोह—अव पता कना (म) निष्कषेन 'निष्कष्य ही' 'अवश्य ही'—आ विरस्य कम् अस्मिन्प्रायः (प) उत्तर।

अव्य (वि०) [आव्याते ईत् पठ्यते—आ + अच् + कर्माधि

पच्—तारा०] 1 कच्चा, अनपका, अपक्व (विष० 'पक्व') आमान्त्स्य - मनु० ५।२२३ 2 हुरा, अपरि-पक्व 3. जाने में न पकाया हुआ (वर्तन बाधि) 4. अनपका,—मः 1 रोग, बीमारी 2 अजीर्ण, कृच्छ्र 3 सूती से बलम किया हुआ अनाम। सम०—आत्मन्-अनपके भोजन का (नेट में) स्थान, उदर का अचरी भाग, पेट,—कुंभ कच्ची मिट्टी का घड़ा—हि० ७। ११,—सधि (तपु०) कच्चे मांस या सब के अन्वये की दुर्लभ,—अव एक प्रकार का बुहार—तु०—स्वेध-मामन्वर प्राज्ञ कोऽप्रज्ञा परिपुञ्जति—सि० २।५५,—अव्य (वि०) कोमल ल्वाचा वाला,—पाचम् विना तपाया हुआ स्तन,—विनाश वजति सिप्रामागपामि-वाचि—मनु० ३।१०९,—अव्यम् पेषिष,—एक आमाशय में होने वाला भोजन का अन्न,—वस्तः कृच्छ्र,—सुकः अजीर्ण की पीडा, पूर्वं का दर्द।

अव्यम् (वि०) [प्रा० सं०] प्रिय, मनोहर।

अव्यः [प्रा० सं०] एरक का पौधा।

अव्य (शा) मन्व्य [अमन् + व्यञ्] पीडा, शोक।

आव्यव्यय-वा [आ + मन् + पिच् + म्युट, वृच् वा] 1. सम्बोधित करना, बुलाना, आवाहन देना 2 बिदा लेना, बिदा होना 3 अधिवाहन 4 (अव्यय्य अतिव्याप्य-पावृते—याञ् १।११-5 अनुमति 6 समाकम्प, —अव्यय्यामन्वय्य दन्त्याऽव्यय्याम् तज्जन्नातिकम्प सा० ६० १. 7 कवीयन शरकः।

आव्यव्य (वि०) [आ + मन् + अच्] कुछ घमरी स्वर वाला, बरगडाहट करने वाला—अनामहाश फलम-विदुल लक्ष्यमे यजिनाना—मेष० ३५,—वाः जरा रभीर स्वर, मह्यदाहट।

आव्यय [आ + मी + कर्णे अच् तारा०, आव्येन वा अव्यये इति वाच्यम्] 1 रोग, बीमारी, बन्धोव्याधा दर्पाय महाबा० ४।२०, आमयस्तु रतिराम-सम्ब—रघु० ११।५८, सि० १००, 2 इति, इति।

आव्ययान्ति (वि०) [आव्यय + तिन्ति नि०] बीमार, भंदा-निर्बोधि, अनिमाद्य रोग म शम्भ,।

आवरणान्, निष्क (वि०) (स्त्री०—की) [प्रा० सं०—आवरणे अन्तो यस्य य-सं०] मृत्यु पूर्वत एवमे वाला, आजीवन आमान्तात्ना पण्या कोपास्तान्त्व-भङ्गना शि० १।११८, अग्नोत्पत्त्याव्ययीचारी कषे-वाचरणातिक - मनु० १।१०१,

आवर्ष [आ + मृ + चञ्] 1 कुचलमा, मतलमा, निष्के-दना 2 विषम व्यवहार।

आवर्षा [आ + मृ + चञ्] 1 रत्नं करता, रचयिता 2. उत्साह, पगामर्ष।

आवर्ष, -वर्षम् [आ + मृ + चञ्, ल्युट् सा] श्लेष, श्लेष, अचहणशीलता दे० 'अवर्ष'।

शालकः,—की [आ+भृ+भृन्-त्विषां षीप्] शीषले का वृक्ष,—कम् शीषला (फल) —कदारमलकाश्रादादि-मानां—भाषि० २।८।

श्रावणः [अमात्य+अन्] मन्त्री, परावर्षदाता— २० 'अवगत' ।

श्रावणस्य [अमानम+ध्वञ्] वीडा, शोक ।
श्रावित्ता [श्राविष्यते तिष्यते—विष्+षक्—टारा०] जमा हुआ दूध व छाछ, उबले और फटे दूध का मिश्रण, छेना ।

श्राविष्य [अन्+टिप्, दीर्घवच] 1 मास—उपानयन् पित्र-निवाविष्यस्य—रघु० २।६९ 2 (आत्म०) तिकार, बलि, उपभोग कर्तु (राज्यम्) —रघुश्रुतेश्चदसाणा द्विपानामपिपता यथो—रघु० १।२।१ तिकार की गया, दण० १६४, 3 आहार, तिकार के लिए धारा 4 शिवन, 5 इच्छा, आत्मता 6 उपभोग, मुसक और शिव शरन् ।

श्रावितम् [आ+मीत्+त्पृट्] शीषो का बन्द करना या मूदना ।

श्रावित्ति (स्त्री०) [आ+मृत्+त्तिन्] पहनना, धारण करना (बस्त्र, कवचादिक) ।

श्रावित्त् [श्रा० सं०] 1 आरम्भ 2 (नाटक में) प्रारम्भ, प्रस्तावना (मङ्गल का प्रत्येक नाटक 'श्रावित्' से आरम्भ होता है) सा० ६० में दो गई परिभाषा—नदी विद्रुपका वासी परिष्कारक एव वा, वृक्षधारेण सहिता सनाय यत्र कुर्वते । शिवैवाप्ये स्वकार्याणि प्रस्तुता-क्षेपिनिमिष, श्रावित् तन् विज्ञेय नाम्ना प्रस्तावनाञ्चि मा । २८७.—कम् (अव्य०) वृक्ष के लाने ।

श्रावित्त्क (वि०) (स्त्री०) की परलोक से संबंध रखने वाला—श्रावित्त्क श्रेय—सूत्र, नैवालोच्य मदीयनी-रपि चिरानामुक्तिव्यतिना - सा० ६० ।

श्रावित्त्वाय (वि०) - च (स्त्री०—की) [अमृष्य स्थान-स्यात्स्य नडा' कम् अलुक्] मातृल में उत्पन्न, ऐसे उच्चवर्गीय व्यक्ति का पुत्र या सुविधायक कुल में उत्पन्न, जापञ्चायको व स्वधर्म-कर्म, तदामृष्या-यत्स्य तत्रअक्षत सुगृहीतनाम्ना अट्टगोपालस्य पौत्र - मा० १. पञ्चमी० १ ।

श्रावित्त्वाय [आ+मृत्+त्पृट्] 1 डाला करना, स्तनन करना 2 उल्लेखन, निशानना, सेवामुक्त करना 3 धारण करना नाटना ।

श्रावित्त्वाय [आ+मृत्+त्पृट्] कुचलना—मा० ३ ।

श्रावित् [आ+मृत्+षट्] 1 हर्ष, प्रसन्नता, मुग्धता 2 मुग्ध (ब्यापी), तोरम—श्रावित्मुग्धित्स्त्री स्वनि-दशामानुकारितम् -रघु० १।४३ श्रावित् कुसुमभव मूत्रेव यत् मूत्रमन्त्र न हि कुसुमानि धारयन्ति—मुभाषित, सि० २।२०, मेघ० ३१ ।

श्रावित् (वि०) [आ+मृत्+त्पृट्] सूच करने वाला प्रसन्न करने वाला—कम् १. सुखी, प्रसन्नता 2 सुवर्णित करता ।

श्रावित् (वि०) [आ+मृत्+षिणि] 1 प्रसन्न, 2 सुवर्णित—मर्ग० १।३५ ।

श्रावित् [आ+मृत्+षट्] बोरी, शकल ।

श्रावित् (वि०) [आ+मृत्+षिणि] बोर ।

श्रावित् (पुं० क० ङ०) [आ+म्ना+क्त्] १. विचार किया हुआ, सोचा हुआ, कथित—समी हि शिष्टेरात्मनो बल्यन्तदाशामय स(धम्) च—जि० २।१०, 2. शरीर, आवृत 3. प्रत्यासृष्ट 4. परम्पराप्राप्त,—सम् अव्ययन ।

श्रावित् [आ+म्ना+त्पृट्] १. वेद वा कर्म शंको का शस्त्र वाट वा अध्वन 2. उल्लेख, आवृत्ति ।

श्रावित् [आ+म्ना+षट्] १. (क) पुष्प-नरम्परा (स) अट: वेध, श्रावित् वेध (श्रावित्, अनियत् तथा वारम्भक सहित)—अधीती यत्पुष्पमिष्येव—दश० १२०, श्रावित्पुष्प श्रावित्पुष्प जोकसंज्ञ, श्रावित्-वेद्य पुनर्वेदा प्रकृता सर्वतोमुखा । बहूः 2 परम्परा प्राप्त प्रसन्न, कुल या राष्ट्रीय प्रचार 3. वादत सिद्धांत, 4. परामर्श वा शिक्षण ।

श्रावित् [अविष्क+ङ्क+] वृत्ताष्ट और क्रावित्केय की उपाधि ।

श्रावित् (वि०) (स्त्री०—की) जलीय,—क: मच्छली ।
श्रावित् [अम्+रत्, दीर्घ] आम का वृक्ष—कम् आम का फल । सम०—कृत्: एक पहाड़का नाम—शानु-मानाशकट—मेघ० १७,—येसो अमरू, अमरूट,—कम् आमों का आम, अमरुई—सोहमाश्रयम् कित्वा—राधा० ।

श्रावित् [आम भावन्नत अति—अम्+रत्+टा०] १ अमरे का पेड़,—सम्—अमरे-का फल (अमरा आम जैसा एक बहुत फल होता है) ।

श्रावित् [आ+प्रान्+कम्] १ अमरे का वृक्ष 2. अवावट ।

श्रावित् [आ+प्रिष्ठ+षिप्+त्पृट्] पुनर्हित, शब्द या ध्वनि की आवृत्ति ।

श्रावित् [आ+प्रिष्ठ+षिप्+कम्] १ शब्द या ध्वनि की आवृत्ति 2 (व्या०) द्वित्व होना, (द्वित्व हुए शब्दों में से) दूसरा शब्द ।

श्रावित् - श्रा [आ सम्प्रक् श्रांत् रसो मन्त्र—इ० सं० स्त्रिया टाप्] इमली का पेड़—अस्मू सदात, अमलता ।

श्रावित् (स्त्री०) का [श्रावित्+कम्+टाप्, इष्यन्, फले पुत्री० दीर्घ] १ इमली का वृक्ष 2. पेट की आकृता (सटाटा) ।

श्राव [आ+र+अच्, अम्+षट् वा] १. पुत्रवत्ता, आ जाना 2. धनानय, धनार्जन (विप० 'अवृ') 3 आश्रय, राक्षस, प्राप्त इव्य—श्रावेषु स्वामिनाहो धाम आय-सिद्धा०, काव० १।३२२, ३२६, वृष्ण० २।६,

मन् ८४१९, आध्यात्मिक व्यव करोति—अपनी काम-
दनी से अधिक लग्न करता है, 4. नका, काम 5
अन्तपुर का रत्नक। सम०—अन्वी (हि० व०) आय
वीर व्यव ।

आयकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [अयकृत+कृत]।
साधक, परिश्रमी, व्यवक,—क जो अपने उद्देश्य की
सिद्धि के लिए सबल उपायों का सहारा लेता है
(तीर्थयात्रायेन योऽन्विक्रमेण आय कृतिको जय) तु०
काव्य० १०, अयकृतनेन अन्विक्रमेण इति आय
कृतिक ।

आयत (यु० क० क०) [आ+यत्+कृत] 1. लम्बा
—सतयध्यर्ध (योजनम्) आयतत भद्रां 2 विकीर्ण,
अतिविस्तृत 3 बड़ा, विस्तृत, गम्भीर 4 लोचा हुआ,
आकृष्ट 5 सयत, नियमित,—तः आयतकार (रसा-
पिपित में)। सम०—अयत (वि०) (स्त्री०—की)
—लक्षण,—नेत्र,—लोचन (वि०) बड़ी आंखों
वाला,—अयत (वि०) लम्बी कोर की आंखों वाला,
—आयति (स्त्री०) दीर्घ निरतरता, बहुत देर बाद
जाने वाला मविय—सि० १५५,—अयत केले का
पौधा (पेठ),—लेख (वि०) दीर्घाक्षकार—कु० १।
४०,—सूत्र (यु०) चारण, शत ।

आयतनम् [आयतनेन आयत्+स्युट्] 1 स्थान, आवास,
घर, विधानस्थल (आन० भी)—शुलायतना—मुद्रा०
७, अन्ताड, स्नेहस्तदेकायतन अयाम—कु० ७५५,
उद्यमं केन्द्रित हो गया, रघु० ३३३६, सर्वाभिनयाना-
मेकमप्येकायतनम्—का० १०३, (सत) आशय,
घर 2 यज्ञ भवन का स्थान, वेदो 3 पवित्र स्थान,
पुण्यभूमि—जैसा कि—देवायतन, महायतनम् आदि
में 4 मकान बनाने का स्थान ।

आयतिः (स्त्री०) [आ+या+शति] 1 लम्बाई, विस्तार
2 प्राची समय, मवियन्त, संघः—का० ४,—भ्रूयसी
सक मदायतायति—सि० १४५५, रहयत्पापुपेयमा-
यति—हि० २११४, 3 प्राची फल या परिणाम
—आयति सर्वकार्याणां तदायत च विचारयेत्—मनु०
७।१०८, (सि०) १११५, २।४३, 4 महिला, प्रताप 5
हाथ फैलाना, स्वीकार करना, प्रत्य करता 6 कर्म
—पचासिध द्रव लम्बा कृत्यव्यापारिषमम्—मनु०
७।२०८ (कर्मसमयम्—कुल्लुक) 7 नियोजन, (यन
का) निग्रह ।

आयत (यु० क० क०) [आ+यत्+कृत] 1 अचीन,
आश्रित, सहारा लिए हुए (अधि० के साथ या समस
में)—दीर्घायत कुने अन्य मदायत तु पौलस्य—वेणी०
३।३३, मायायतमत परम्—स० ४।१६, 2 वय,
बिनीत ।

आयतिः (स्त्री०) [आ+यत्+कृत] 1 आयय, अचीनता

2 स्नेह 3 सामर्थ्य, शक्ति 4 हृद, सीमा 5 युक्ति,
उपाय 6 महिला, प्रताप 7 आचरण की स्थिता ।
आयथातथम् [अयथातय+पञ्च] अयोधता, अनुपयुक्तता
अयोधित्य—सि० २।५६ ।

आयतनम् [आ+यत्+स्युट्] 1 लम्बाई, विस्तार 2
नियोजन, निग्रह 3 (अनुप की प्राप्ति) तानना ।
आयतनम् [आयतिरय लोयते अय लो+ङ (आ०) अत्रायो
कन्] धर्म का अभाव, प्रबल नालसा ।

आयत (वि०) (स्त्री०—की) [आययो विकार अणु] लोह
निर्मित, लोहा पातुनिर्मित—आयस दशमेव वा—मनु०
८।३१६, सक्ति मां जल्प तत्राययी ग्यज्ञा—धामि०
२।५९,—की कवन, बन्धन,—सम् 1 लोहा, मुष्ट बृह-
मिवाभाल हीमीभूतानिभयामम्—कु० ६।५५, स कर्णं
परन्थातदयस्कान्त इवायमम् रघु० १।७६३, 2 लोह-
निर्मित वस्तु 3 हविषार ।

आयत (यु० क० क०) [आ+यत्+कृत] 1 वीरिन,
पुत्री 2 घोट साया हुआ 3 कुट्ट, नागज 4 नोकन ।
आयतनम् [आ+या+स्युट्] 1 आना पहुँचना 2 नैमित्तिक
मनोभाव, स्वभाव ।

आयामः [आ+यत्+पञ्च] 1 लम्बाई तिरंगायायामोभी
—मेघ० ५७, 2 प्रसार, विस्तार कि० ७।६, 3
फैलाना, विस्तार करना 4 निग्रह, नियोजन, रोकथाम
—प्राणायामप्रायणा—भय० ४।२०, प्राणायाम पर
तप—मनु० २।८३ ।

आयाम्यन्तु (वि०) [आयाम+मनुप] विस्तारित, लम्बा
—विक्रम० १।४, सि० १।१६५ ।

आयतः [आ+यत्+पञ्च] 1 प्रयत्न, प्रयास, कष्ट,
कठिनाई, शय—बहुलायाम—रघु० १।८२४, तु०
'अनायाम' 2 घकाष्ट, यकन, स्नेहमलानि इ धानि
देहवानि मयानि च, शोकहरी तत्रायत सर्वस्वज्ञात्
प्रवर्तते । यद्वा० ।

आयाम्यन्तु (वि०) [आ+यत्+मिति] 1 परिश्रान्त,
बका हुआ 2 प्रयास करने वाला, प्रबल उपयोग करने
वाला—मनस्तु तद्वाञ्छन्तमयापामि—श० २।१, ५।१ ।

आयुक्त (यु० क० क०) [आ+युज्+कृत] 1 नियुक्त,
कार्यभार-युक्त (सब० या अधि०) अहि० ८।११५,
2 मयुक्त, प्राण,—कत मयो, अतिकर्ता या कर्मिण्यार ।

आयुक्तः यम् [आ+युज्+कृत] हविषार, डाक, नरक
(यह तीन प्रकार के हैं—(क) प्रहरण—अध्यात्मिक
(ख) हस्तमत्त—बौद्धिक (ग) यन्त्रयुक्त—आध्या-
त्मिक,—न ये त्वदप्येन विभोऽहमायुक्तम् रघु० ३।१३।
सम०—अ(आ)भारम् सत्समाहार, हविषार गोधाम
—अहमन्मायुधकार प्रविषयायुधसहायो पचासि—वेणी०
१, मनु० १।२८०,—अयुक्त्यु (वि०) अन्वयण से
जीवन-निर्वाह करने वाला, (—यु०) पोडा, विप्राही ।

आयुषिक (वि०) [आयुष+उन्] अस्वास्थ्यो से सम्बन्ध रखने वाला—क: सिपाही, सैनिक ।

आयुषिन्, आयुषीय (वि०) [आयुष+इति क वा] हृदि-वायो को धारण करने वाला, (पुं०—स्त्री०)—जीवा, योद्धा ।

आयुष्मत् (वि०) [आयुस्+अयुष्] 1. जीवित, जीता हुआ 2. दीर्घायु (वाटको में प्रायः बुद्ध पुत्र सत्कुलो-ज्ज्व स्वधितयो को इसी नाम से सम्बोधित करते हैं, उदा० एक सारथि राजा को 'आयुष्मन्' कह कर सम्बोधित करता है, ब्राह्मण को भी अभिवादन करने के लिए इसी प्रकार सम्बोधित किया जाता है— नु० मनु० ५।१२५,—आयुष्मन्, अथ लोभ्येति वाच्यो विप्रो-प्रमियाधने) ।

आयुष्य (वि०) [आयुस्+यत्] लम्बा जीवन करने वाला, जीवनप्रद, जीवनसधारक—इव मधस्वनायुष्यमित्ति नि वेद्यत् परम्—मनु० १।१०६, ३।१०६,—आयुष्य जीवन प्रद शक्ति ।

आयुस् (नपु०) [आ+इ+उच्] 1. जीवन, जीवनावधि दीर्घमायु—रघु० ९।६२, तथकेवापि वटस्थ आयुर्मर्माणि रक्षति—हि० २।१५, तत्रायुर्वै पुरुष एत० 2. जीवन दायक शक्ति 3. आहार (आयुष्य नाम 'आयुस्' का अन्तिम 'स्' बदलकर अशोध व्यक्तो से पूर्व 'त्' तथा शोध व्यक्तो से पूर्व 'द्' बन जाता है) । सम०—कर (वि०) (स्त्री०—स्त्री) दीर्घ-जीवन करने वाला, - काम (वि०) दीर्घायु या स्वास्थ्य को कामना करने वाला,—इच्छन् 1. दीर्घायु 2. धी, - बुद्धि (स्त्री०) लम्बा जीवन दीर्घायु,—वेदः स्वास्थ्य वा दीर्घायु-विज्ञान—वेदेषु, —वेदिक, - हेमिन् (वि०) दीर्घय से सम्बन्ध रखने वाला, (-पु०) वैद्य, डाक्टर,—शेषः जीवन का शोध धाम, शेषतया—वच० १।२, जीवन का ज्ञान या अवतान, - स्तोत्रः (आयुष्टोम) दीर्घायु पाने के लिए किया जाने वाला यज्ञ ।

आयुषे (अव्य०) [प्रा० सं०] स्नेहशोधक सम्बोधनात्यक अव्यय ।

आयोगः [आ+युज्+घञ्] 1. निम्नित 2. क्रिया, कार्य-सम्पादन 3. पुण्योपाहार 4. समुद्रतट या नदी किनारा ।

आयोषाजः [अयोषज्+अज्] गृह द्वारा वैश्व स्त्री से उत्पन्न पुत्र (इसका व्यवसाय बर्द्धांगिरी है—नु० मनु० १०।४८), - स्त्री इत जगि की स्त्री ।

आयोषजन् [आ+युज्+त्] 1. सम्मिलित होना 2. पकड़ना, ग्रहण करना 3. प्रयास, प्रयत्न ।

आयोषजन् [आ+युष्+त्यट्] 1. युद्ध, लड़ाई, सहाय - आयोषने इत्ययमिति सहाय—रघु० ६।४२, आयोष-नापसरतां त्वयि वीर याते ५।७१, 2. युद्धमिति ।

आट—रम् [आ+ट्+घञ्] 1. पीतक 2. बधोपित मोहा 3. कोण, किनारा, - टः 1. मयक वृद्ध 2. अनि-ग्रह,—रा 1. मोषो की रात्री, 2. वायु, अत-बलाका । सम०—कटः,—इत् पीतक, उत्तर० ५।१४ ।

आरक्ष (वि०) [आ+रक्ष्+अच्] परिरक्षित,—कः,—सा 1. प्ररक्षण, परिरक्षण, रक्षक (पहुरेदार, सन्तरी)—आरक्षे मन्थने स्थितान्—रामा०, शा० ३।५, मनु० ३।२०४ 2. हाथी की कुंजसधि, 3. देना ।

आरक्ष (क्रि) क (वि०) [आ+रक्ष्+अच्], आरक्ष+उन् वा] 1. पहुरेदार, सन्तरी 2. देहती या पुतिल का दशाधिकारी (सैक्रेट्टे) ।

आरक्षः [आ+रट्+अच्] गट, वाटक का पाथ ।
आरक्षिः [आ+रक्ष्+अङि] भंडार, जलाकंठ ।

आरष्य (वि०) (स्त्री०—आ,—आ) (अरष्य+अच्, स्थिया टाप्, औप् वा] बंगली, जलक में उत्पन्न ।

आरष्यक (वि०) [अरष्य+अच्] कन लक्ष्मी, मन में उत्पन्न, जलली, जलक में उत्पन्न,—कः बंगल में रहने वाला, जलली, बनवाणी,—तपः बहुभायमजय्य दत्तान्-रष्यका हि न—श० २।१३,—कम् आरष्यक इव, (यह ब्राह्मणधर्मों से सबट शक्ति तथा शारीरिक रचनाओं का एक समुदाय है जो वा तो जलक में रहे धमे हैं या वहाँ उनका सम्भवन किया गया है) —अरष्येऽरष्यमानत्वात् आरष्यकम्—बृहदा०, अरष्ये-अव्ययानदेव आरष्यकम्प्राहृतम् ।

आरक्षिः (स्त्री०) [आ+रम्+क्तिन्] 1. विराम, रोक 2. प्रतिभा के सामने दीप-दान, वा कपूर-दीपक द्रुमान, आरती उतारना ।

आरत्नसम् [आ+रत्+अच्, नत्+घञ्] आरती नालो यथो वस्य द० सं०] मंद, वायक का पक्षार ।

आरत्निः (स्त्री०) [आ+रत्+क्तिन्] आरम्भ, शुरु ।

आरत्नः [आरत्+अट्] उपक्रमशील वा साहसी पुरुष, -टः—दी दिलेरी, विषवाह, ही 1. नाट्यकला की शाखा, २० शा० द० ४२० तथा नामे 2. साहित्य की एक शैली 3. विशेष नृत्यशैली ।

आरम्भः [आ+रम्+घञ्, मृच् च] 1. आरम्भ, शुरु, "उवाच आरम्भो बोधना—नृत्वारम्भे हर पशुपतेरारं-नावाधिनेच्छाम् मेघ० ९१, 2. प्रस्तावना 3. कार्य, व्यवसाय, कृत्य, काम—आमर्भे सपुत्रारम्भः—रघु० १।१५, ७।८१, यच० १।११६, ४. त्वरा, वेध 5. प्रयास, प्रयत्न—मप० १।११२, 6. दृश्य, कर्म—विषादितारम्भ इवावसत्ये—रघु० २।३१, 7. आर शम्भत, हल्ला करना ।

आरम्भश्च [आ+रम्+त्पूर्व मृच् च] 1. कान् में करना, पकड़ना 2. पकड़ने का स्थान, वस्ता, बीटा ।

खर (रा) कः [जा + ख + खच्, बन्, वा] 1 जायाव
2 चिह्नाना, मूर्तना ।

आरस्वम् [अरस् + प्वन्] नीरसता, स्वास्वीनता ।
आरा—दे० 'आर' के नीचे ।

आरम् (अव्य०) [आ + रा वा० अति—तारा० 'आर'
का स्या० ए० व०] 1 निकट, के पास (अप० के
साथ या स्वतंत्र)—तमर्ष्यमारारभित्तमान्—रघु० २।
१०, ५।३ 2 दे दूर, (कर्म० के साथ—इन दोनों
अर्थों में) वि० ३।३१, दूर, दूरस्थ 3 फासले पर,
दूरी से उत्तर० २।२४ ।

आरतिः [आ + रा + क्तिच्] अच् ।

आरत्नोष् (वि०) [आरात् + ष्] 1 निकट आसन्न 2 दूर का ।
आरत्निकम् [आरात्नायि निर्वन्त्म् ष्] 1 रात के
समय भयवान् की मूर्ति के सामने मारती उलारना—
सर्वेषु चाज्ञेषु च संस्कारेषु आगतिक भक्त्यन्तम्
कुर्महि 2 मारती उलारने का योग्य—थिरसि निरि-
त्तार वाचमागतिकस्य भ्रमयति मयि भ्यस्ते कृपाई
कटाक्ष—शकरः ।

आराधय [आ + राप् + ल्यट्] 1 प्रसन्नना, मनोव,
मेवा (आतिर)—वेधामाराधनाय—उत्तर० १, यदि वा
आनकीमयि आराधनाय श्लेषना मुञ्चते नानि मे
व्या—१।१२ 2 मेवा, पूजन उपमाना, अर्चना,
(देवता की), -आराधनायाश्च सर्वास्मैनाम्—कु०
१।५८, अग० ७।२२ 3 प्रसन्न करने के उपाय इद
तु ते भक्तिरन्न सनामाराधन वपु—कु० १।७३ 4
सम्मान करना, आदर करना—उत्तर० ४।१७ 5
पकाना 6 प्रति, दासिय निभाना, जिप्पि, -आ ठवा
—मी (देवता की) पूजा, उपासना, अर्चना ।

आराधयि (वि०) [आ + राप् + णिच् + लृच्] उपासक,
विनय सेवक, पूजक ।

आराध [आ + रप् + धञ्] 1 मूर्ती, प्रसन्नना—इन्द्रिया-
राध—अप० ३।१६, आरामाराधा—वेणी० १।३१, एका-
राम—याज्ञ० ३।५८ 2 बाध, उच्छात्—मियाराधा हि
वैदेहासीत्—उत्तर० २, आराधनायिपतिविवेकविकल
—मामि० १।३१ ।

आराधिक [आगम + ठक्] मारी ।

आराधिकः [अराल + ठक्] रसोद्घा ।

आध [आ + धृ] 1 सुखर 2 कंकवा ।

आध (वि०) [आ + ऊ + णिच्] नूने रम का ।

आध्व (धू० क० ङ०) [अ + धृ + ष्] सवार, बड़ा
हुवा, ऊपर बीठा हुवा—आस्त्रो वृणी मवता—सिद्धा०,
प्राय कर्तुवाच्यं यं प्रयुक्त—आश्वमदीन्—रघु० १।७७ ।

आध्व (स्त्री०) [आ + धृ + णिच्] बड़ा ऊपर उठना,
ऊंचयन् (आल० व शा०)—आध्वार्कभंजति महता-
नक्षत्रप्रोद्यमिष्ठा—श० ४, ५।११ ।

आरेक [आ + रिच् + धञ्] 1 रिक्त करना, 2 संकुचित
करना ।

आरेकित [आ + रिच् + णिच् + क्त] भीषी हुई या शिकोरी
हुई (आँस की ओरें) ।

आरोपय [आरोप + प्वन्] मच्छा स्वारभ्य ।

आरोप [आ + ष्ट् + णिच् + घञ्, पुकागम] 1 एक वस्तु
के गुणों को दूसरी वस्तु में आरोपित करना—बन्तु-
न्यक्सारोपोऽप्यारोप्ये—वे० सू०, पहले मड़ना
—दोषारोपों गुणेष्वपि—अमर० 2 मान लेना (जैसा
कि 'सारीषा नक्षत्रा' में) 3 अध्यारोपण 4 बोझा
लादना, दायारोपण करना, इलजाम लगाना ।

आरोपयम् [आ + ष्ट् + णिच् + ल्यट्, पुकागम] 1 ऊपर
रखना या जमाना, रचना आदिआरोपयन्वन्मृताम्
रघु० ७।२०, कु० ५।२८ (आल०) मन्थापन, जमा
देना—अधिकारारागम्—नु० ३, 2 पीसा लगाना,
3 वस्तु पर चिन्ना यथाना ।

आरोह [आ + र्हृ + ष्] 1 चढ़ने वाला, सवार, जैसा
कि 'अश्वारोह' तथा 'स्वधनारोह' 2 चढ़ाव, ऊपर
जाना, सवारो करना 3 ऊपर उठी हुई जवह उभार,
ऊँचाई 4 डेकड़ा, घमर 5 पहाड़, डर 6 स्त्री की
छाती, लिनम्ब—आ रास न बरारोहा उच्छट, आरो-
हैर्निबद्धवृहत्तिन्म्यांशवे—शि० ८।८ 7 लम्बाई, 8
एक प्रकार की नाप 9 मानः ।

आरोहक [आ + र्हृ + णिच्] सवार बालक (हँकने
वाला) ।

आरोहणम् [आ + र्हृ + ल्यट्] 1 सवार होने, ऊपर चढ़ने
या उच्य होने की क्रिया—आरोहणार्थं नवमीबनेन
कामस्य शोषानविव प्रयुक्तम् कु० १।३१, 2 (चोड़े
की) सवारी करना 3 जीना, सँजी ।

आरि [अर्कस्थापयम्—इन्] अर्क का पुत्र, धम की
उपाधि, हनि इह, कर्म, मुहूर्त, वैधर्म्यत वपु ।

आरि (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [आरि + अण्] तारकीय, तारो
द्वारा व्यवस्थित अथवा तारो से सम्बद्ध ।

आरि (आ + अर् + अण् + टप्) एक प्रकार की शैली
मधु-यक्षी ।

आरिण्यम् [आरि + णि] जगली गहर ।

आरि (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [आरि + अण्] अर्क का वस्तुस्य लो प्रकत, पूजा
करने वाला, पुज्यात्मा ।

आरि (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [आरि + टप्] आरि के संबंधी,
या आरि के ही आस्था करने वाला,—अण् आरि के का
विशेषण ।

आरिण्यम् [आरि + अण्] 1 अरुणता 2 स्पष्टवाचिता, लह-
तीव, सारण, ईमानदारी, निष्कपटता, सवारकुट्टय
होना—आरिणा क्षाप्तिराशंभु—अप० १।३७, संशयार्थ-
कथ्य—का० ४५—3. सारणी, विनम्रता ।

भाष्येति [अर्थतत्त्वावधारणम्-इत्य्] अर्थन का पुत्र, अर्थिनम् ।
 चर्च (वि०) [आ+च+क्त] 1. कष्ट प्राप्त, उच्छ्वेत,
 पीडित, श्राय तपान में-कावर्त, बुधार्थ, तुषार्थ,
 भाषि 2 बीमार, रोगी-आरंभ कर्त्तव्यम्-२५०
 ११२८, मन्० ४१२१६ 3. दुःखित, कष्टप्राप्त, उच्छ्वेत-
 वस्त, बलाघार-भीषित, अग्रहण-कार्तव्याचार य.
 कर्त्तव्यं न प्रहृष्टमनासि-श० ११११, २५० २१२८,
 ८१११, १२११०, १२ । उच्य-कर्म, -व्यभि,
 -स्वर, वर्देवरी भावाव, -कम्, -कम्, दुःखियों
 का मित्र ।

चर्च (वि०) (स्त्री०-वा, -वी) [चतुस्त्व श्राप-अच्]
 1. चतुर् के अनुक्रम चतुस्त्वर्थी, नीचनी-अभिन्नुय
 विचलितार्थी-२५० ८११९, ५० ४१६८, कल्प-
 काव्येन -२५० ११२८, 2. मासिक श्राय सम्बन्धी,
 -अर्थ वर्ष का अनुभाग, वर्ष-बी छोड़ी-कम् 1.
 (स्त्रियों का) मासिक श्राय-नौपनच्छेत्तमत्तोऽपि
 नियमार्थवदर्थवत् - मन्० ४१४०, ३१४८ 2. मासिक-
 श्राय के पर्याय गणनाधान के लिए उपयुक्त दिन, 3.
 पूज :

चार्चयेयी उच्यतेत्या स्त्री

चार्चि (स्त्री०) [आ+च+सित्] 1 दुःख, कष्ट, व्यथा
 पीडा, शान (आरौतिक या भौतिक)-चार्चि न पर्यायि
 पुत्रावमस्तदर्थ-विक्रम० २११६, भास्वनातिव्ययनकला
 सम्यग् द्युतमानाम्-मन्० ५१ 2. मासिक वेदा, वाच्य
 दुःख -उत्कृष्टति-अग्र १९, 3. बीमारी, रोग
 4 वन्य की शोक 5 विनाय, विषय ।

चार्चिणी (वि०)(स्त्री०-नी) [चर्चिन् उत्कृष्टति सञ्]।
 चर्चिन् के पद के उपसृत ।

चार्चिकम् [चर्चिन् +५५.७] चर्चिन् का पद, मर्षादा ।
 चार्च (वि०) (स्त्री०-नी) 1 किसी वस्तु वा वस्तुओं से
 सम्बन्ध रखने वाला 2 अर्थ सम्बन्धी, अवर्धित,
 (अर्थ-कर्म) भाषी उनका भाषि ।

चार्चिक (वि०) (स्त्री०-नी) [अर्थ+उच्] 1. श्राव्ये 2.
 बुद्धिवाञ् 3 धनवान् 4 तन्मयुक्तं, आस्तिक ।

चार्च (वि०) [अर्थ+उच् श्राव्ये] 1. नीका, नवीघार,
 मोला तन्त्रीमाडो मयलकिले-वेध० ८०, ४३, 2
 कम्पक, हरा, रक्षोका 3 नाका, क्वा-काचीघाटी-
 पराग-मयार २, कात्तमाडीपराधम्-काव्यि० ३।
 १२, 4 मूत्र, जीमक-श्राय अर्थ, बवा, उक्त कल्पना
 बीते कर्मों के साथ कला "किमा हुवा" "पतीमा
 हुवा" "पिपला हुवा" अर्थ प्रकट करता है-स्वैहार्ड-
 हुवा-अर्थ से पिपले हुए रिक्त कला, -अर्थ उक्त
 मन्त्र । तप-काचम् हुती लक्ष्मी, -कृत्(वि०)
 चीपा हुवा, विनात फिडा हुवा-आरंभकः किलका
 वाचिन्.-श० १, -आर्थं ताया क्वरक ।

चार्चम् [आर्च+उच्] हरा क्वरक, नीका क्वरक ।
 चार्चि (वा० वा०-२२०) नीका कला, हर कला
 -अर्थ० २१५१ ।

चार्च (वि०) [अर्थ+अच्] (अर्थ के आरम्भ में ही
 प्रकृत) भाषा । अर्थ-आरम्भ (वि०) (स्त्री०-नी)
 (आ० में) भाषी आरम्भ में कम् हुने वाला,
 -अच्] आरंभकाल क् वाचो के सम्बन्ध रखने
 वाली विचलितार्थी न अर्थ (वि०-आरंभकाल)
 -अर्थिक (वि०) (स्त्री०-नी) भाषे अर्थीने एते
 वाच ।

चार्चिक (वि०) (स्त्री०-नी) [अर्थ+उच्] भाषे का
 उत्कीर्ण, भाषे से सम्बन्ध रखने वाला, -अर्थ भाषी
 काल के लिए श्रेष्ठ होता है, वेच स्त्री के उच्यन्
 उच्यन् विचका सम्बन्धनय श्राव्य के श्राप होता है,
 दे० उच्यन्, 'अर्थिक' के नीचे ।

चार्च (वि०) [अ+अच्] 1. चार्चन, वा-अर्थ के योग
 2. नीच, आदरणीय, सम्माननीय, कुलीन, उच्चपदस्थ
 -व्यावसायिकविचारिणे मन्-श० ११२२, वह श्राव्य
 श्राव्य नाटकोपयोगी श्रावा में सम्मान लुप्त विशेषण
 के रूप में प्रयुक्त होता है, अर्थोचन की आदरपूर्ण प्रति
 है, अर्थ सम्माननीय वा आदरणीय नीचान् जी । अर्थ
 आदरणीय वा सम्माननीय नीचानी थी । अर्थो की
 अर्थोचित करने के लिए 'चार्च' शब्द के प्रयोग के
 निम्नांकित नियम हैं- (क) भाषी नदीपुत्रकारार्थ-
 नाम्ना परस्वरम् (अ) अस्त्वत्पुत्रवर्षाव्यां गयीरार्थेति
 पाठव (ग) (कलाम्) अवात्त चार्चति केरः (घ)
 स्वेच्छवा नामिर्वावर्षिचि चार्चति केरः-श० २०
 ४११, 3 अत्युक्त, अर्थोच, श्रेष्ठ, -अर्थः 1. हारण के
 लोच, हिन्दु-आदि जो अनाथ, अन्तु तथा दास से ग्रिन्
 हैं । 2. जो अपने देश के निवासी तथा धर्म के प्रति निष्ठा-
 वान् हैं-कृत्यवाचारत्तु कार्यकृत्यव्यनाचरत्, लिच्छि
 त्ताचारारे त वा कार्य इति स्मृत । 3. श्रेष्ठे तीन
 वर्ण (वि०-ब्रह्म) 4 सम्माननीय वा आदरणीय पुरुष
 प्रतिष्ठित व्यक्ति 5 अत्युत्पन्न पुरुष 6 सम्पन्न
 पुरुष 7 स्वामी, शक्ति 8 वृत्, अत्युक्त 9. विष
 10. वैश्य 11. स्वधुर (जैत कि "कार्युच") 12.
 बुद्धमन्वान्, - अर्थ 1 पारंगती 2 स्वयं 3. आदरणीय
 दक्षिण 4. उच्य, दे० परिशिष्ट । उच्य-अर्थः श्रेष्ठ
 और उत्तम (अर्थ) लोगों का आचार, विशेषतः वह
 बुद्धि जो पूर्वी अर्थ से परिधीन अर्थ एक ही-अर्थ है
 तथा शिवके उत्तर में विनाश, एव दक्षिण में विषय
 पर्यंत है-दु० मन्० २१२२, मातृपुत्रात् ३ पूर्वात्त-
 बुद्ध्यात्त पर्यन्तम्, उत्तरोत्तर धर्मोः (विचलितार्थोः)
 आरंभितं किमुर्वाः । १०१४ नी-बुद्ध (वि०) 1.
 श्रेष्ठ पुरुषों से सम्बन्धित, श्रेष्ठ पुरुषों का शिव, सम्मा-

मनीय व्यक्तियों के पास बिनाकी वस्तु बनावयास होती है,—सामान्यतः निम्नहीतयेन रघु० २।३३, २. आदरणीय, गद,—देव बहु देव जहो आर्यं लोप बसे हुए है,—बुध १ सम्भालनीय व्यक्ति का बेटा २ आध्यात्मिक बुध का पुत्र ३ बड़े बार्द के बुध का सम्मान सूचक पद, पत्नी का पति के विषय तथा सेनापति का राजा के लिए सम्मानसूचक पद ४ अस्तुर का पुत्र बर्बाद पति (प्रत्येक नाटक में, बहूया सर्वोपन के रूप में, अन्तिम दो बर्षों के लिए प्रयुक्त), प्रथम (वि०) १ जहाँ आर्यं लोप बसे हो २ जहाँ प्रतिष्ठित व्यक्ति रहते हो—विष्णु (वि०) आदरणीय, योग्य, पूज्य (—कः) सज्जनपुत्र, वीरवज्रानी पुत्र, (ब० व०) १ योग्य और आदरणीय व्यक्ति, सभ्य या सम्माननीय व्यक्ति—आर्यमित्रान् विद्यापथाभि—विष्णु० १, २ श्रेष्ठ, मान्यवर (आदरवृत्त सर्वोपन)—नव्यार्यमिदं प्रथममेव आदरपत्न—अ० १,—सिन्धि (९०) पासडी—बुध (वि०) सदाचारी, गद—रघु० १।५।५—वेद (वि०) अच्छी वेदभूषा में, आदरणीय वेद धारण करने हुए,—सत्यम् सत्यकृत् और ज्योतिषिक सत्य—बुध (वि०) जो वेदों व्यक्तियों को शिकर हो ।

मार्गकः [मार्ग + कन्] १ सम्भालनीय वा आदरणीय पुत्र, २ बाबा, बहा ।

मार्गक, मार्गिका [मार्ग + कन्] हस्त, पक्ष इत्यम्] आदरणीय महिला ।

मार्ग (वि०) (स्त्री०—सी) [ऋषीरदम्—कन्] १ केवल ऋषि द्वारा प्रयुक्त, ऋषिसन्धी, मार्ग, वैदिक (वि०) शौचिक वा श्रेष्ठ—मार्ग प्रयोग, सर्वदो शास्त्रार्थोपायार्थ—सिद्धा० २. पवित्र, पावन, अतिमानव,—के विवाह का एक प्रकार, जाठवेदी में ये विवाह का एक भेद जिसमें दुर्बलिन का पिता वर महोत्सव से एक वा दो बोधी साथ प्राप्त करता है—आचार्यस्तु संक्षेपम्—पाठ० १।५९, मनु० ९।१९६, विवाह के जाठ प्रकारों के नामों के लिए दे० 'उदाह',—केम् पावन पाठ, वेद ।

मार्ग्य [ऋचम + ञ्य] बहका जो पर्वत बड़ा हो गया हो, काम में लाया जा सके वा साह बनाकर छोड़ा जा सके ।

मार्ग्य (वि०) (स्त्री०—सी) [ऋषि + ङ्] १ ऋषि से उद्यम करने वाला २ योग्य, महानुभाव, आदरणीय ।

मार्हत (वि०) (स्त्री०—सी) [महर् + ञ्] वैदिक के सिद्धांतों से उद्यम करने वाला,—क वैद, वैदिक का अनुयायी,—तन् वैदिक के सिद्धांत ।

मार्हणी,—मर्षण [महर् + ञ्, नृम्] बोधिता ।

मार्क—सम् [आ + क् + ष्] १ बर्षों का देर, मछली आदि के बड़े, २ पीला रश्मि ।

मार्कस्य [अरुधर्ष + ष्] पतिवा सौप ।

मार्कस्यम् [आ + क् + ल्युट्] १ पकड़ना, कब्जा करना २ कृता ३ मार बालना ।

मार्कस्य [आ + ल्युट् + ष्] १ माधव २ बुनी, टंक (जिसके सहारे मनुष्य बड़ा होकर विद्याम करता है) —इह हि पतता नास्त्यालो न चापि विद्यतेनाम्—शा० ३।२, ३ सहारा, रक्षा—तवालम्बादम्ब स्फुरत्कमुनर्षणं सहसा—अप० ४ आशय ।

मार्कस्यम् [वा + ल्युट् + ल्युट्] १ माधव, २ सहारा, बुनी, टंक—कि० २।१३, सहारा देते हुए—मेघ० ४, ३ माधव, आवास ४ कारण, हेतु ५ (सा० सा० में) जिस पर रस आश्रित रहता है, वह पुत्र वा बन्तु जिसके उत्पन्न से रस की निष्पत्ति होती है, रस को उत्पन्न करने वाले कारण का रस से नैतिक और अनिर्वाय संबंध, रस की निष्पत्ति के कारण (विद्याय) के दो भेद हैं—आलंबन और उद्दीपन, उदा० बीमत्स में दुर्बल्युक्त मास रस का आलंबन है, तथा हृदी प्रस्तुत परिचितियाँ जो आलंबन कीडे आदि की चिन्ताओं भावनाओं को उत्तेजित करती हैं इसके उद्दीपक हैं, हृदी रसों के विषय में—दे० सा० ४० २।१०-२३८ ।

मार्कस्यम् (वि०) [आ + ल्युट् + षि] १ कटपला हुआ, सहारा लेना हुआ, झुकाता हुआ २ सहारा देने वाला, बनावे रखने वाला, बामने वाला ३ पत्ने हुए ।

मार्कस्य-अवम् [वा + ल्युट् + ष्, नृम्, ष, पक्षे ल्युट्] १ पकड़ना, कब्जा करना, स्पष्ट करना २ पकड़ना ३ मार 'बालना (विशेषतः यज्ञ में पशु—बलि देना) अस्वात्म्ये, दयात्म्ये ।

मार्कस्य-अम् [आ + ल्युट् + ष्] १ आवास, घर, निवास गृह—ने हि तुष्टात्पनाथार्वा निधनस्यालम्बे चिरम्—रामा०—सर्वस्मिन्नस्वानह्नात्मवान्—रामा० जो जन्मस्वान में रहा २ आशय, आसन या बमह—द्विवात्म्यो नाम मर्गाचिरात्—कु० १. इसी प्रकार देवालयम्, विद्यालयम् आदि ।

मार्कस्य (वि०) [अर्कस्येवम्—अम्] पागल कुत्ते से मखर रखने वाला या उन्मत्त लक्षण—मार्कस्य विचित्रिच सर्वतः प्रभुतम्—उत्तर० १।१० ।

मार्कस्यम् [अलम्बयत्य आ + ल्युट्] १ बीकान, स्वाधर्हिता २ झुकाता ।

मार्कस्यम् [अलम्बयत्य आ + ल्युट्] १ आशय, आसन या बमह—द्विवात्म्यो नाम मर्गाचिरात्—कु० १. इसी प्रकार देवालयम्, विद्यालयम् आदि ।

मार्कस्य (वि०) (स्त्री०—सी) [मार्कस्ये इष्यत् अर्कस्येवम्—अम्] सुल, काहिल, बीला-बाला ।

आलास्य (वि०) [अलसस्य भावः— ध्वज्] मुल, डीला-
हाडा, काहिल, —स्वप्न मुली, गिबिलता, स्फूर्ति का
अभाव - अलसस्य चा-अनुप्राह कर्मस्वालास्यमुच्यते
- न्यून, आलास्य (स्वप्न का अभाव) ३३ अग्नि-
चारिभावो मे से एक है—उदा० न तथा मूययत्यङ्ग
न तथा भापते समीप, कुम्भते मुहुरासीना वाला
गर्भमगन्तना—ना० द० १८३ ।

आलास्यम् [अलास + अण्] अलसी हुई लकड़ी ।

आलास्यम् [आ + ली + ल्यट्] १ वह स्तम्भ जिससे हाथी
बाँधा जाय, बाँचे जाने वाला लकड़ा, रस्सा भी जिससे
हाथी बाँधा जाता है - अलमुदमिवाला नमनिर्वाणस्य
दन्तिन—रघु० १।३१, ४१६, ८१, आलासे मुहुरते
हस्ती -मृच्छ० १।५०, २ हबकडी, बँध ३. जबीर,
रस्सा ४ बँधना, बाँधना ।

आलासिक (वि०) (स्त्री० - की) [आलास + टञ्] उस
वृत्ती का काम देने वाली वस्तु जिसके सहारे हाथी
बाँधा जाता है, —आलासिक स्वार्णमिव त्रिपेद्र—रघु०
१।६३८ ।

आलास्य [आ + ल्यट् + घञ्] १ आलसी, प्राण, समा-
लाप अथे रक्षिणेन वृक्षवाटिकासालाप इव भूदने
-वा० १, २ कथन, उल्लेख ।

आलास्यम् [आ + ल्यट् + गिष् + ल्यट्] बोलना, बातचीत
करना ।

आलास्य-बु (स्त्री०) बीया, पेठा कद्दू, कुम्हड़ा । दे०
'अलास' ।

आलास्यते [आल पर्याप्तभावेत्ये इति --आल + आ + लृट्
+ गिष् + अच्] कपड़े का बना पता ।

आलि (वि०) [आ + अल् + इत्] १ निकम्मा, मूल्य २
ईमानदार—कि १ विष्णु २ मयमकन्वी, - लि, ली
(स्त्री०) १ (किमी स्त्री की) सहेली तिषार्थनायादि
किमप्यय बहु कु० ५।१३, ७।६८, अमर २३, २ पत्नी,
परास, अलिच्छिन्ने देवा (पु० आलि) -तोषात्मभा-
स्करालीर देवे मुनिपरम्यरा कु० ६।६९, रघुपति -
अमर ८०, ३ देवा लकीर ४ पुल ५ पुत्रिया, बाप ।

आलिङ्गनम् [आ + लिङ्ग + ल्यट्] पररभण, गले लगाना,
गन्धवाही देना - (स प्राय) आलिङ्गननिर्वर्तिन्—रघु०
१०।१५ ।

आलिङ्गन् (वि०) [आ + लिङ्ग + इति] गन्धवाही देने
वाला, (पु०-नी), आलिङ्गय जो के दान के आकार
जैसा बना छोटा डोल ।

आलिङ्ग्य [अलिङ्ग्य एव स्वायं अण्] मिट्टी का बड़ा बड़ा ।

आलिष्य - अष्कः [आलिष्य + अण्, स्वायं कन् व] १ घर
के सामने बना चीनरा, बबुतरा २ सोने के लिए ऊँचा
बनाया हुआ स्थान ।

आलिष्यम् [आ + लिष् + ल्यट्, मूच् च] उत्सवों के अङ्-
२१

सर पर दीवारों पर लकड़ी करना, कर्म लीपना आदि,
मु० 'आदीपनम्' ।

आलीक्ष्य [आ + लिष् + षत्] बन्दूक से निशाना लगाने
समय बाहिने घुटने को आगे बढ़ा कर भीरु बाँचे वीर
को मोड़ कर बँडाना, —अतिउदासीदक्षिणकीर्तिना
—रघु० ३।५०, दे० कु० ३।७० पर बलिष् ।

आलु [आ + लृ + इ] १ उल्लू २ भावुक, काका
आवनुत्, - लृ (स्त्री०) घडा, - ल (नपुं०) लट्टो
को बाँध कर बनाया गया देवा, चलाई (दो पशु को
बाँध कर बनाई गई वीक) ।

आलुञ्जन् [आ + लृञ् + ल्यट्] काटना, टुकड़े-टुकड़े
करना ।

आल्लिष्यन् [आ + लिष् + ल्यट्] १ लिखना २ चिपचप
करना ३ कुरचना, — ली कृषी, कलम ।

आलेख्यम् [आ + लिष् + ष्यट्] १ चिपकारी, विष— इति
सर्गम्भो बाधोर्बलस्यालेख्यदेवता—शि० २।६७, रघु०
३।१५, २ लिखना । सम०—लेखा बाहोर् कपरेखा,
विषय, —शेष (वि०) चिप को छोड़ कर जिसका
भीरु कुछ रोष न रहा हो अर्थात् मून, मरा हुआ
—आलेख्यशेषस्य पितु—रघु० १।५।१५ ।

आलेप-नम् [आ + लिष् + षत्] १ नेल या
उबटन आदि का मलना, लीपना, पोतना २ लेप ।

आलोक-नम् [आ + लोक् + षत्, ल्यट् वा] १ दर्शन
करना, देखना २ दृष्टि, पहलू, दर्शन—यद्यलोकै
मूकम्—वा० १।९, कु० ७।२२, ४६ मुक्—विष्ण०
४।२४, ३ दृष्टि-परास—आलोकै ते निपलति पुत्र सा
बलिभ्याकुला वा—मेघ० ८५, रघु० ७।५ कु० २।४५,
४ प्रकाश, प्रभा, कान्ति - विरालोक लोके—वा०
५।३० १।३७, ५ माट, विशेषतः माट द्वारा उष्णरित
स्तुति-गन्ध (जैसे 'अय, आलोक्य')—यद्यबुदीरिखालोक
—रघु० १।७।२७, २।९, का० १४ ।

आलोचक (वि०) [आ + लोच् + ल्यट्] आलोचना करने
वाला, देखने वाला, —कम् दर्शन-वाक्ति, दृष्टि का
कारण ।

आलोचनम्-ना [आ + लोच् + ल्यट्, वृष् वा] १ दर्शन
करना, देखना, सर्वज्ञ, समीक्षा २ विचार करना,
विचार-विमर्श ।

आलोचनम् - ना [आ + लृच् + गिष् + ल्यट्] १ बिलोना
हिलाना, लुञ्च करना २ मिथय करना ।

आलीक्ष्य (वि०) [आ + लृ + षत्] १ कुक कपोता हुआ, (आँसु
की) धुनाया हुआ २ हिलारा हुआ, बिखरना—अमर
३, मेघ० ६१ ।

आल्लेखः [अलि + अल्] मुनिपुत्र, बंवल वह की उपाधि ।

आल्लिष्य (वि०) [अलिष् + अल्] अलिषित से आने वाला,
या लक्ष्य रखने वाला, —लक्ष्य अल्लिषी का राजा,

कायं याया हुआ, भयं कोषे 4 निमग्न, लीन अवि-
कार में किया हुआ, जुटा हुआ ।

आबिम्बु (अब्य०) [आ + ब्बु + इत्] निम्नांकित अर्थ प्रकट
करने वाला अभ्यस-आलो से सामने 'बले रूप में'
'प्रकटन' (प्राम यद् अभ्यस अन्, भू और कृ पाणु
के पूर्व लगता है) —आधार्यक विद्यार्थि आत्मययाविग-
भीतु —मा० ११२६, (याति) आधिपत्याकणपुरम्पर
एकतोर्क —मा० ४११, तेषामाविरभुद्बद्धा—कु० २१२
रघु० १५५५ ।

आबीलम् [आ + ब्ये + क्त] यशोपवीत (चाहे किसी प्रकार
सम्ब, अपमस्य पहना हुआ हो) ।

आबुक् (नाटपयालीय भाषा में) फिला ।

आबुकु [आ + बिबु, आभमुत्तानि दति उद् + क्त + इ]
बहुनी, बीजा, — उत्तर० १, ग० ६ ।

आबुन् (स्त्री०) [आ + बुन् + क्तिप्] 1 मुहनी हुई,
प्रविष्ट होनी हुई 2 कम, जानुपूर्व, पदति, रीति
- अनर्थवाचना कार्य विपद्निवेदन मुने - मनु०
३११८ याज्ञ० ३१२, ३ रात्रे का मोह, मार्ग, दिशा
4 बुद्धिकरण सबंधी मस्करा - मनु० २१६६ ।

आबुल (भू० क० कृ०) [आ + बुल् + क्त] 1 मुडा हुआ,
बचकर भागा हुआ, लौटा हुआ 2 बोहरगा हुआ,
- द्विरावृत्ता इव द्विदा - सिद्धा० 3 बाइ किया
हुआ, अध्ययन किया हुआ ।

आबुलित (स्त्री०) [आ + बुल् + क्त] 1 मुहना,
लौटना, बाणिस आना, - तपोवनावृत्तिभयम् रघु०
२११८, भय० ११३, 2 प्रत्यावर्तन, प्रतिनिवर्तन 3
बचकर भागा, बारी और जाना 4 (सूर्य का) उसी
स्थान पर फिर लौटना - उदगावृत्तिपथेन नाद
- रघु० ८१३३, 5. जन्म-मरण का बार २ होना,
सासारिक जीवन, —अनावृत्तिभयम् कु० १३७६
आवृत्ति, दोहराना, सस्करण (आवृत्ति प्रयोग), 7
बोहराया हुआ पाठ, अध्ययन—आवृत्ति सर्वशाम्भवा
बोधार्थि गरीयसी उद्धृत० ।

आबुष्टि (स्त्री०) [आ + बुष् + क्त] बगना, बारिज
की बीछार ।

आबेन [आ + बिञ् + घञ्] 1. बेचैनी, चिन्ता, उन्मत्तता,
विशोभ, घबड़ाहट अलगावैगेन श० २, अमह ८३
2 उतावली, हुबहूडी 3 शोभ—(३३ व्यभिचार-भाषी
में से एक समझा जाता है) ।

आबेनम् [आ + बिच् + क्त] 1 समाचार देना,
सुचना देना 2 अभ्यावेदन 3 अभियोग का वर्णन
(विधि० में) 4. अधिवाचन, बर्तीदाना ।

आबेन [आ + बिच् + घञ्] 1 प्रविष्ट होना, प्रवेष्ट 2.
अधिकार में करना, प्रभाव, अभ्यास, स्वयं अधिमान
का प्रभाव—रघु० ५११९ ३. एकनिष्ठता, किसी पदार्थ

के प्रति अनुरक्ति 4. चयन, हेकड़ी 5 हुबहूडी, शोभ,
कोष, प्रकोप 6. आसुरी भूतबाधा 7. लक्ष्मे की बहोली
या गिराणी की मूछा ।

आबेनानम् [आ + बिच् + क्त] 1 प्रविष्ट होना, प्रवेष्ट 2
आसुरी प्रेतबाधा 3 प्रकोप, कोष, प्रचम्बता 4.
निर्माणी, कारखाना-मनु० ११२६५, ५ पर ।

आबेनिक (वि०) (स्त्री०-बी) 1 विविष्ट, निजी 2.
अन्तहित- क अनिष्टि, दणक ।

आबेष्टक [आ + वेष्ट् + क्त] दीवार, बाड़,
अड्डाता ।

आबेष्टनम् [आ + वेष्ट् + क्त] 1 लपेटना, बँधना,
बँधना 2. रकना, लिफाफा 3 दीवार, बाड़, अड्डाता ।

आबल (वि०) [अच् + अण्] बानेवाभा, मोलता (बहुधा
समास के अन्तिम पर के रूप में प्रयुक्त होता है)
उदा० हूणाग, आभयाल, —अ [अच् + घञ्] क्षाना
(बैसा कि 'आतराध' में) ।

आबलनम् [आ + घञ् + क्त] 1 प्रत्यासा, इच्छा- इष्टा-
मसनमाधी:—सिद्धा० 2. कहना, बोधना करना ।

आबलता [आ + घञ् + क्त] 1 इच्छा, अधिकाय, आसा
- विदधे विद्यबाधता चापे सीता क लक्ष्मणे—रघु०
१२१४, मट्टि० ११५, 2 भावण, बोधना 3 कल्पना
- आसतापरकल्पितास्वप्नि भवकथानन्दसाम्नी लयः
- मा० ५१३ ।

आबलु (वि०) [आ + लु + उ] इच्छुक, आशावान् ।

आबलु [आ + लु + अ] 1 भय, भय की सम्भावना,
- नष्टासङ्घारिणसिखो मन्थन चरति—श०
१११६, आबलुया मुक्तम् - चर्तु० ३५, 2. सन्देह,
अनिश्चयारभकता, —इत्यासङ्घारामाह- नदाचर 3.
अविश्वास, शक ।

आबलित (भू० क० कृ०) [आ + बलु + क्त] 1. भीत,
हरा हुआ, —लम् 1 भय, 2 सन्देह 3 अनिश्चयायकता ।

आबल [आ + ली + अच्] 1 गजनकटा, विश्रामस्थक,
शरणावार 2 निवास-स्थान, आवास, आसन, आबल-
स्थान - सामुर्गनाधिसायात्—भय० १५८, अयुष्कृ०
—उत्तर० ११४५, 3 पाय, आधार—विद्यकोर्षि
विगाहते नय इततीर्ष पयसासिवायान—कि० २१३,
तु० जलाशय, आमाशय, रक्ताशय आदि 4. वेष्ट 5.
अर्थ, इरादा, प्रयोगन, भाव—इत्याशय, एवं क्पेरा-
शय (टीकाकारों के द्वारा बहुधा प्रयुक्त है० 'अभि-
प्राय') 6. आभवाओं का स्थान, मन, हृदय—अह्वारता
मुद्राकेय सर्वभूतासयस्थित—अम० १०१२०, महावी०
२१३७, 7. सम्पन्नता 8. कोटर 9. मन, इच्छा 10.
भाय, किस्मत 11. (आनवर्तों की पकड़ने के लिए
बनाया हुआ) धर्म—आले परपक्षतो नृपं सिद्
इवाशये—अहा० । सम०—अक्षः अग्नि ।

बाह्य [आ+यु+अच्] 1. अग्नि 2. असुर, राक्षस 3 बायु ।

बाह्यम् [आधोर्भाव - अण्] 1 वेग कुर्वा 2 सींची हुई धारा, अरिष्ट (अधिकतर 'असुर' लिखा जाता है) ।

बाह्या [आ+अच्+अच्] 1 (क) उन्मील, प्रत्याया, अधिव्य-उत्पाया व सुरद्विषाम्-रघु० १२।१६, आशा हि परम दुःख वैराघ्य परम सुखम्-मुद्राम्०, स्वयाद्ये सोषाद्ये 2 विष्या भाषा या प्रत्याया 3 स्थान, प्रदेश, दिग्देश, दिशा-अथस्वयाचरिताभासाननाथास्व-अयो पयो-रघु० ४।४४, कि० ७।१ । सम०-अभित्त,-अमन (वि०) आशयान्, आशा बहाने वाला,-मत्र दिग्मत्र दे० 'अष्टदिग्मत्र',-सन्तु आशा की ओर, शीघ्र आशा-मा० ४।३, १।२६-पाक विष्णुपाक दे० 'अष्टदिग्पाक',-विद्यापिशा आशा की कल्पना-सृष्टि,-अन्न 1. आशा का अन्न, विश्वास, भरोसा, प्रत्याशा-सूर्यपि विरहसुखमाशाश्च साह-यति-स० ४।१६, मेघ० १०, 2 तमली 3 मकड़ी का आला,-भेष निराया, माउन्मील,-हीन (वि०) निराश, हृत्वाह ।

बाह्याह दे० 'अ(आ)बाह' ।

बाह्याह्य (स० कृ०) [आ+हात्+ह्यत्] 1 बरदान द्वारा प्राप्य 2 अतिरूपणीय, बाह्यनीय-रघु० ४।८४, -स्यम् बाह्यनीय पराये, बाह, इच्छा,- मालवि० ५।२०, 3 आशीर्वाद, मंगलाचरण-आशाम्यमन्यतु-नक्तमृतम्-रघु० ५।३४ ।

आशीर्वाह्य (वि०) [आ+शिञ्+ह्यत्] शलकार (आभू-बयो ही) कृ० ३।२६ ।

आशित (वि०) [आ+अच्+क्त] 1 भूक्त, लाया हुआ 2 खाकर तृप्त,-सन् भोजन करना ।

आशितकृषी (वि०) [आशिता अयनेन तुला गाथी यत्र,-अच्, निपातनात् कृप्] वहके पशुओं द्वारा चरा हुआ ।

आशितभेष (वि०) [आशित+भू+अच्, मुम्] तृप्त होने वाला, सतृप्त होने वाला (भोजन के रूप में)-अन् 1. जाहार, भोज्य पदार्थ 2 अधाना, तृप्ति (पु० भी) -करीष्याशितभेषम्-अङ्गि० ४।११ ।

आशिर (वि०) [आ+अच्+ह्यच्] भोजनभट्ट,-र 1 अग्नि 2 सूर्य 3 राक्षस ।

आशीर्वा (स्त्री०) (श्री०, शीर्ष्मान्-आदि) [आ+हात्+शिञ्, ह्यच्] 1 आशीर्वाद, मंगलाकामना (परि-भाषा-वास्तव्याह्वान नाम्येन कनिष्ठम्याशिर्वायेते, इष्टाकारक वाक्यमाशी वा परिकीर्तता ।) 'आशिर्' और 'वट' शिवायक शब्द हैं, आशीर्वाद ही केवलमान किसी की मंगलाकामना या सद्भावना की अभिव्यक्ति है-वह चाहे पुरी ही या न हूँ, इसके विपरीत 'वट'

शब्द की भावना अधिक स्थायी और पुरेता की निरन्तरक है- नून०-वर त्वेव मासी-स० ४, आशिमो मुञ्जनातीयो वननामापद्यते-का० २९१, अशोषा प्रतिगुह्णतावर्षानिपवमाशिर-रघु० १।४४, अशायी-कृ० ७।४७, 2 प्रायना, बाह, इच्छा-कृ० ५।७६, अग० ४।२१, 3 नाय का विरिणा दात (सु० 'आशीर्वा') । सम० बाह, -अच्छम् (आशीर्वाद आदि), आशीर्वाद, मंगलाचरण, किसी प्रायना या सद्भावना की अभिव्यक्ति-आशीर्वाचनमयुक्तां नित्यं यस्मात् प्रकुर्वते-सु० ६० ६, मन० २।२३, चिच (आशीर्वा) सौ ।

आशी [आशीर्वादे अना आ+यु+क्विप् पयो०] 1 सौय का विरिणा दात, 2 एक प्रकार का मण्डिच 3 आशीर्वाद, मंगलाचरण । सम० चिच 1 सौय, -गल्पदाशोचिचभोजयती-रघु० ३।५७, 2 एक विशेष प्रकार का सौय-कणाशोचिचमण्डिचि प्रगाम्ने-वेणो० ६।१ ।

आशु (वि०) [अप्+उच्] तेज, फुरीला, -सु-सु (स्य०) चावल (जो बरखात में ही खीझनापूर्वक एक जाते हैं) -सु (अभ्य०) तेजी में उल्टी से, तुरन्त, शीघ्र-अथे भानोस्त्वज्जाशु-मेघ० ३१।२२ । सम०-आशिरु, -कृत् (वि०) जल्दी करने वाला, बुद्ध, फुरीला-कोपिकु (वि०) गुस्मैला, चिर्बावडा, स (वि०) फुरीला, तेज (-न.) 1 वायु 2 मूर्ध 3 वायु पपा-वनास्वाहितपूर्वमाशु-रघु० २।५६, १।१८०, १२।१, -सौष (वि०) अनाशन प्रखन् दात वाला (-श्) शिव की उपाधि,- व्रीहि वर्मान मे ही एक जाने वाले चावल ।

आशुपुत्राणि [आ+पुत्र+सन्+अनि] 1 बायु, हवा 2 अग्नि-मक्षपुत्रानि हवीषि प्रतिगुह्णन्वेतयोप्याशु-मनि-४४ ।

आशुकुटिन् (पु०) [आशोतेऽग्निम् इति-आ । गी । विच् स इव कुटिनि इति निवि] पहाड़ ।

आशुषम् [आ+पुष्+गिच्, म्, २] मूषका ।

आशीर्वा [अशीच-अण्] अपरिधता दे० 'अशीच' दना-हम् वाक्यमाशिर श्रावण्य विशेषेण मन्० ५।५१, ६१, ६२, वाङ्म० ३।१८ ।

आशुर्व (वि०) [आ+चर् । प्यु सुट्] बन्धनारण्यं, बिलशन, अमापारण, आशुर्वजनक, अशुर्वन-आःकर्वा तथा दोहोऽगोषेत्-विज्ञा०, तदनु वपुषु पुण्यमाशुर्व-नेया-रघु० १६।८७ आशुर्वदेवतां मनुष्यलोक-स० ७,-स्यं 1 अचम्भा, वगम्कार, कौतुक-विपाशुर्व सारदेणे प्राणदा यमद्वैतका--उद्भूट, कर्मविषयानि-उत्तर० १-आशुर्वजनक काम-अग० १।१६, २।२९ 2 अचरज, विरानय, अचम्भा 3

(विस्मयादि झोटक अर्थ = के रूप में प्रयुक्त) आश्चर्य (कितना अचम्भा है, कितनी अजीब बात है) — आश्चर्य परितोडिनोअंरमते यथातकल्पण्या-वात् ० २५।

आश्चर्य (रन्थी) तन्म [आ + च् + रन्थ्] त् + ल्युट्] 1 स्थित, छिड़काम 2 पलकों के धी चुपड़ना।

आश्च (वि०) (स्त्री०-झी) [अश्चम् + अच्] पत्थर का बना हुआ, पथरीला।

आश्चर्य (वि०) (स्त्री०-झी) [अश्चमा विकार - अच्] पथरीला, पत्थर का बना हुआ, -अ. 1 पत्थर की बनी कोई वस्तु 2 तुर्य का सारण अर्थ।

आश्चिक (वि०) (स्त्री०-झी) [अश्चम् + ठञ्] 1 पत्थर का बना हुआ 2 पत्थर डोने वाला।

आश्चान (पु० क० कृ०) [आ + च् + श् + ण] 1. बसा हुआ, सभित - - कि० १६।१०, 2 कुछ सूखा—पश्चात्प्रायान् कर्दमान् - रघु० ६।२६, कु० ७।९, पूर्ण के सहारे बुझाने हुए (जैसे बाल) - - रघु० १७।२२।

आश्चयन् [आ + च् + यिच् + ल्युट्] पकाना, उबालना। आश्चम् [अश्चयन् - स्वायेंञ्] अश्म।

आश्रम—अश् [आ + श्रम् + घञ्] 1 पण्डाला, कुटिया, कुटी, झोपड़ी, सन्यासियों का आवास या कक्ष 2 अवस्था, सन्यासियों का धर्मसंघ, ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चार अवस्थाएँ (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वान-प्रस्थ तथा सन्यास), क्षत्रिय (जीर वैश्य) भी पहले तीन आश्रमों में पदार्पण कर सकते हैं, तु० प्र० ७।००, विक्रम० ५, कुछ लोगों के विचारानुसार बहू चीजें आश्रम में भी प्रविष्ट हो सकते हैं (तु०-म कलाश्रम-मन्थमाश्रित-रघु० ८।१८) महाविद्यालय, विद्यालय 4 जंगल, झाड़ी (जहाँ सन्यासी लोग तपस्या करने हैं)। सम० गृह धर्मसंघ के प्रधान, प्रसिद्धक, आचार्य, - धर्मः 1 जीवन के प्रत्येक आश्रम के विभिन्न कर्तव्य 2 वानप्रस्थी के कर्तव्य - य इमाशाश्रमधर्मं नियुञ्जते-श० १, - - यश्च- - मच्छलम्- - स्थानम् सन्याशाश्रम (आश-वास की भूमि समेत), तपोवन - शान्तिदमाश्रमपदम् - श० १।१६- षष्ठ (वि०) धर्मसंघ से बहिष्कृत, स्वधर्मव्युत् - वासित्, आश्रय, - - अश् (पु०) सन्यासी, वानप्रस्थ।

आश्रमिक, आश्रमिन् (वि०) [आश्रम + ठञ्, इति वा] धार्मिक जीवन के चार काल या पदों में किसी एक से संबद्ध रहने वाला। आश्रकः [आ + च् + अच्] 1 विद्याभवन, सदन, अधिष्ठात - - सोहृदादपुष्पनाथयामिनाम् - उत्तर० १।५५, ५।१, 2 जिसके ऊपर कोई वस्तु आश्रित रहती है 3 ग्रहण करने वाला, आश्रय-तनाश्रय दुष्प्रसहस्य तेजस - रघु० ३।५८ 4 (क) शरणस्थान, शरणगृह—भर्ता वै ह्याश्रय स्वीयान्—वेता०, तदहमाश्रयोभूजनेनेव

स्वामिकानां करोमि—मूढा० २, (ख) आश्रय, घर 5. सहारा लेने वाला (प्रायः समस्त में) 6. निर्भर करना (प्रायः समस्त में) 7. पालक, प्रतिपोषक—विनाश्रय न विच्छिन्ति पवित्रता शक्तिः कथाः—उद्भूट 8 बूनी, स्तम्—रघु० ९।६ 9. तरकस—बाणनाथयमुखात् समुद्रतन् रघु० ११।२९ 10 अविचार, समोदन, प्रमाण, अधिकार पक्ष 11 प्रेक्षणीक, संकल्प, साहचर्य 12 दूसरे का सख्य लेने वाला, छः युगों में से एक। सम०—असिद्ध, - - छिः (स्त्री०) हेष्वाभाव का एक प्रकार, असिद्ध के तीन उपयोगों में से एक, - - आश्र, - - भुम् (वि०) सपक में जाने वाली वस्तुओं का उपयोग करने वाला (—अ, - - अ) अग्नि, - - दुर्गत क्रियते पूर्ण श्रीमान्नामविबुद्धये, कि नाम सलसर्गः, कृते गार्धनाभावत्—उद्भूट, - - विष्णु विशेषण (अने विशेष्य के अनुकूल अपना लिय रखने वाला शब्द)।

आश्रयणम् [आ + श्रि + ल्युट्] 1. दूसरे के परलक्ष में रहना, शरण लेना 2 स्वीकार करना, छंटना 3. शरण, शरणस्थान।

आश्रयिन् (वि०) [आश्रय + इति] 1. सहारा लेने वाला, निर्भर करने वाला 2 सबद्ध, विचरक—विक्रम० ३।१०।

आश्रय (वि०) [आ + श्रु + अच्] आजाकारी, आजापालक - मिश्रजामनाश्रय—रघु० १९।५९, मै० ३।८५, - - अ. 1 नदी, दरिया 2 प्रतिज्ञा, वाचा 3 यौव, अतिक्रमण—रे० 'आश्रय' भी।

आश्रिः (स्त्री०) [श्रा० सं०] तलवार की धार।

आश्रित (पु० क० कृ०) [आ + श्रि + ण] (कर्म० के नाथ कर्तृनाथ में प्रयुक्त) 1. सहारा लेते हुए—कृष्णाश्रित - कृष्णमाश्रित—सिद्धा० 2 रहने वाला, बाल करने वाला, किसी स्थान पर स्थिर रहने वाला 3 काम में लगने वाला, सेवा में रखने वाला 4 अनुसरण करने वाला, अभ्यास करने वाला, पालन करने वाला—कु० ६।६, ऋट्टि० ७।५२, 5 निर्भर करने वाला 6. (कर्मनाथ के रूप में प्रयुक्त) सहारा लिया हुआ, बसा हुआ, - - तः पराधीन, सेवक, अनुचर, - - अस्वराश्रितानाम्—हि० १, प्रभूणा प्रायश्चलं गौरवमाश्रितेषु कु० ३।१।

आश्रित (पु० क० कृ०) [आ + श्रु + ण] 1. सुना हुआ, 2. प्रतिज्ञात, सहमत, स्वीकृत, - - तन् पुकार यो हुसरा सुन सके।

आश्रुति (स्त्री०) [आ + श्रु + णिच्] 1 सुनना 2 स्वीकार करना।

आश्रयेकः [आ + श्रि + अच्] 1. आश्रित, परिष्कृत, कोला-कोली— आश्रयेकानुपचूतगकार्कस्यसाक्षिणी

—सि० २१७, अथर्, १५७२, १५, कष्ठावलेप-
प्रणयिनि जने—मेघ० ३११०६, 2. सर्पक, घनिष्ट
सबध, सबध, ५ वा १वा नक्षत्र ।

आरव (वि०) (स्त्री०—बही) [अरव + अण्] घाड़े से
सम्बन्ध रखने वाला, घाड़े के पास से जाने वाला,
—इसमें घोड़ों का समूह ।

आरवत्थ (वि०) (स्त्री० स्त्री) [अरवत्थ + अण्]
पीपल के वृक्ष में सबध रखने वाला, या पीपल से बना
हुआ,—एषम् पीपल का फल, बरबँटे ।

आरवयुज (वि०) (स्त्री०—औ) [अरवयुज + अण्]
आदिबन मांस से सबध रखने वाला, जे आदिबन
मांस—मनु० ६११५,—औ आदिबन की पूर्णिया का
दिन ।

आरवलक्षिक [अरवलक्षण - टक्] भलातरी, अरव-
चिकित्सक, माइस, (घाड़े की देखभाल करने वाला) ।

आरवस्य [आ + अरव् + घञ] 1 साम सेना मुक्त
शरत सेना, सेनालाभ 2 तमस्वी, श्रोत्राजन 3 रक्षा
और सुरक्षा की वारता 4 रोकथाम 5 किसी पुत्रक
का पाठ या अनुष्ठान ।

आरव्यासनम् [आ + इत् + शिच् + श्युट] प्रोन्वाहन,
दिखाता, तमल्ली तदिद द्वितीय हृदयाव्यासनम्
—म० ७ ।

आरविष्क [अरव + टञ्] घृत्नकार ।

आरविषन [अरव् + विन् न्त अण्] मांस का नाम (जिनमें
चन्द्रमा अग्निनी तलत्र के निकट होता है) ।

आरविषनेषी (टि० व०) [अरविषनी + इच्] 1 दो अरविषनी
कुमार (देवनाभो के बंध) 2 मुकुल और सहयव के
नाम, पाँच पाठका में में अरविष दो ।

आरविषन (वि०) (स्त्री० स्त्री) घाड़े द्वारा व्याप्त (यात्रा
आदि) नज्वा मिट्टा० ।

आरवाहू [आरवाही पूर्णिया अस्मिन्नामे अण] 1 हिन्दुआ
का एक महोत्सव (नून और जुड़ाई में जाने वाला),
—आरवाहूय्य प्रथमदिवसे—मेघ० ०, शंते विष्णु
सहायार्डे कानिके प्रतियोगिने वि० पु० 2 उरु की
लकड़ों का दण्ड जिन मन्थनी पाण्डु करने हैं अथा-
जिनापाडिचर प्रथमवाक हु० ६१३०, डा ००वां
या २१ वां नक्षत्र—पुरापाठक तथा उरुपाठक, दो
आरवाहू मांस की पूर्णिया ।

आरवाहन [आरटम + ज] आरवाहा वाग ।

आरव (अव्य०) निम्नांकित जवाँ का प्रकट करने
वाला विस्मयपरिच्छिन्नक अव्यय (क) प्रथमस्मरण
—आ उपनयतु भवान् भर्तृवर्षन्—विक्रम० ० (व)
श्रीध आ कथयथापि गणयथास्म उत्तर० १—आ
पापे निष्ठ निष्ठ—मा० ८ (क) वीरा आ दीनम्
—काम्य १० (घ) अपाकरण (मनेय विरोध)

—आ क एप मयि स्थिते—मुद्रा० १—आ. नृधा-
मवलपाठक—बेपी० १ (इ) शोक, श्वर—विद्याभा-
तरमा प्रदयते नृपयान् भिक्षामहे निरुषया—उज्जुट ।

आरव (अदा० आ०) (आग्ने आम्नि) 1 वैतान, सेटना,
आराम करना—उत्तदानमनाम्प्यताम् विक्रम० ५

—आस्वतामिनिबोक्त मन्नामीताभिमुख गुरो—यनु०
२११३ 2 रहना बाय करना तावद्वर्षाव्याप्तने देव-

शोक—महा०, यशाम् गन्धते तत्रायमास्ताम् का०
१०६ कुकाम्ने मिट्टा० 3 चुपचाप बैठे रहना,
मात्रतापुण व्यवहार न करना, इकार बैठना आसीन

स्वाम्-यापयति इत्यम् सि० २१७ 4 होना, अस्मिन्
या विद्यमानता होना, 5 स्थित होना, गम्भा होना

—जगन्ति यस्या सत्किाधामान्—सि० ११२ 6
मानना, टिके रहना, किमो अरव्या में ठहरना या

निश्चर रहना (अवचरन या विवाध किया की प्रकट
करने के लिए बहुधा वर्तमान वाचिक कुर-न प्रथमा के

साध डम वातु का प्रयोग होता है—विद्याभ्यासवैश्वाम्ने
पथ० १ लाइता रहा और गच्छता रहा 7 परिगत

होना परिग्राम होना (मय्य० क माय्) आना
मानमनुष्टये मुकुराना नोनिनेवेरेव सि० ११२७

8 जाने देना, एक शींग रुत देना या रूठ देना,—आना
तावत् रहने दो जाने दो, प्र०० विद्याना, चिठक-

वाना, स्थिर करना आरामस्वामिन्क पृथ्वीम् मिट्टा०,
अधि लेटना, बमना, अधिकार करना, उचिष्ट होना

(स्थान में कथ० क माय्) निदृष्टा कुपयतिना
म पणशाकाम्प्यम्—य्य० ११७, २१३ ४१६९,
५१०, प्रथमव्या प्राग्निरेवमप्यामिनव्यम्—मालवि०

१ अरु 1 निकट बैठना जाना 2 मेवा काका,
मेवा में प्रयुक्त रहना—सानीभ्यामन्वयत्त म० १,

अस्वामितमन्वयत्ता रथु० ११६ 3 घटना देना
—नामन्वयत्त—य्य० २१२६ इत् उदामीन या वेन्दग

होना तिष्ठित या निग्लेष्ट होना, निष्क्रिय या अक्रमन्थ
होना—तृकमिन्वदात्मन भरना मा० १ विधाय

वैर नामने नराडने व उदाम सि० २१७०, प्रथ०
११९, मटा० १, उष 1 मेवा में प्रयुक्त होना, मेवा

करना, पूजा करना अस्वामिन्वय मदयाम् अरु०
११, उद्यानात्मनामान्मन्वयन्मयागन् ७ २१३६

2 उपायमन करना का आर जाना उपामाचिकिरे
इत् देवगन्धर्वाकिन्नरा अर्द्धि० ४११०३, अट्ट० 3

भाग देना, (पुण हृष्टों का) अनुष्ठान करना 4
(मयध) दिनाता उपाम् पश्चिमेप तु—रामा०

5 भागना, सेटना अने पाठपुण्या प्रकथा क्लेश-
मयामिन् महा०, मनु० १११८८६ 6 आशय लेना,
काम में लगाना, प्रयोग करना लक्ष्मोपास्थते घण्

हृते—मा० ८० ७, 7 धनुषिया का अभ्यास करना 8

प्रत्याघा करना, प्रतीक्षा करना, वसुधै-1. उपासना करना, पूजा करना, अर्चना करना-पर्याप्तान् लक्ष्म्या - रघु० १०।६०, कु० २।३८, मनु० ७।३७, 2 (रक्षा के लिए) पहुँचना, शरण लेना, या सश्रम में आना - अग्रजन्ता एव सर्वत्र नरेन्द्र यदुपासते-पंच० १।२५१, 3. घेरना, घेरा डालना 4 भाग लेना, हिस्सा लेना 5. आश्रय लेना, सन्-1. बैठ जाना प्रत्युवाच समाधौन यमिच्छन् रामा० 2 मिल कर बैठना, समुप 1 सेवा के लिए प्रस्तुत रहना, पूजा करना, सेवा करना- समुपास्यन् पुत्रभोग्यया स्तुपयैवाविहृते-न्द्रिय श्रिय -रघु० ८।१५, 2 अनुष्ठान करना - ते थय मय्या समुपासत- रामा० ।

आप्त [आप् + पञ्] 1 आगम 2 अनुप (सम्, भी) न कामि मा मुमु, साप - कि० १५।५ ।

आप्तक (भु० क० कु०) [आ + सञ्ज् + क्त] 1 अपत्यक, कृतसकम्प, जुटा हुआ, लया हुआ । प्राय अधि० के नाव या समाय में 2 स्थिर, टिका हुआ गिबरा-मकतमथा - कु० ६।४०, 3 निश्चर, अनवरत, शाश्वत । सम्० - चित्त, -वेस्त, -धानम् एकविष्ट, एकाय ।

आप्तस्ति (स्त्री०) [आ + सञ्ज् + क्तिन्] 1 अनुगम, भवि, लगाव, बालिकावरीतेज्यास्तिसि - का० १२०, 2 उन्मुकता, लगाव ।

आप्तज्ञ [आ + सञ्ज् + घञ्] 1 अनुगम, भक्ति-सुभा-सङ्गोध्य-का० १७३, 2 सम्पर्क, अनुक्ति, चिपकाव (पकूज) स शौचलासङ्गमपि प्रकाशते - कु० ५।१९, ३।६६ 3 साहचर्य, संयोग, सम्मिलन, 'स्यन्वय' कर्म-फलमाज्ञ भव० ६।२०, इमी प्रकार 'काम्तासङ्गम्' आदि 4 स्थितिकरण, वन्धन ।

आप्तज्ञिनी [आप्तज्ञ + इनि + स्त्री] चक्रवात, वयुला, हवा ।

आप्तज्जनम् [आ + सञ्ज् + ल्यट्] 1 बोधना, ज्ञाना, (शरीर पर) धारण करना 2 फंस जाना, चिपकना - ज्ञानिबोधयामञ्जनात्- शं० १।३३, ५।१। 3 अनुगम, भक्ति 4 सम्पर्क, सामीप्य ।

आप्तसि, [आ + सञ्ज् + क्तिन्] 1 मिलन, संयोग 2 अतरप मेल, पवित्र सम्पर्क, - किमपि किमपि मन्द मन्दधा-मनियोगान् - उत्तर० १।२७, 3 उपलब्धि, लाभ, उपार्जन, 4 (तर्क में) सामीप्य ही या ही से अधिक निकटस्थ गतिगो को सम्बन्ध और उनके द्वारा अनि-व्यक्त भाव-करण सन्निधान तु पदव्यासप्तिसम्पत्ते - माथा० ८३ ।

आप्तन् (नपुं०) मूल (कर्म० द्वि० व० के पञ्चात्) सती विषयिनियों में 'आप्त्य' के स्थान में विकल्प से आवेश होने वाला शब्द ।

आप्तव्य [आप् + ल्यट्] 1 ईटना, 2 आसन, स्थान, स्थूल

-स बाधवेनात्मनमनिकटव्य- कु० ३।७, आसन्नं मृषु - अपना आसन छोड़ना, उठना -रघु० ३।११, 3 एक विशेष अर्थस्वात्त या बैठने का इम्-नु० पद्य 'सोर' 4 बैठ जाना या उठना 5. गतिक्रिया की विशेष विधि 6 शत्रु के विपक्ष किसी स्थान पर इठे रहना (विप० धामम्), विदेशीनि के ६ प्रकारों में से एक-सपिनाविबहो यामयाम ईधमाधय-अवर० मनु० ७।१६०, याज्ञ० १।३४६ 7 हाथी के शरीर का अगला भाग, घोड़े का कन्धा, -सा 1. आसन, तिपाई जिम पर बैठा जाय, टेक 2. बैठने का एक छोटा स्थान स्टूल 3 दुकान, आगलिका । मम० संबधीर (वि०) बैठने के लिए दृढ़ सक्षयवाला, अपने आसन पर दृढ़, -निपेयुपीयामनबन्धुधोर - रघु० ७।६ ।

आप्तसौ [आमच्छेज्याम् - आ सत् - ट, नृन् वि० स्त्री] तकियेदार आराम कुर्सी ।

आप्तस (भु० क० कु०) [आ + सत् + क्त] 1 उपासक (काल, स्थान और सम्पत्ता की दृष्टि से) निकट, -आसन्नविधा - दौम के लगभग या निकट 2 निकट-वर्ती, मनिहित- आसन्नपत्ने कृते - शारी० । सम्० - काकाः 1 मृत्यु का समय 2 जिनकी मृत्यु निकट, हो, परिष्कारकः-चारिका व्यभिगत सेवक, शरीर रक्षक ।

आप्तम्बाध (वि०) [आसमन्तात् सम्बाधा यञ् व० प०] 1 समबद्ध, रोका हुआ, (चारी जोर से) घेरा हुआ -आप्तम्बाधा यथियन्ति पन्थानं शार्वट्टिभि - रामा० ।

आप्तम् [आ + सु - अण्] 1 अर्क, 2 काड़ा 3 मद्यनिकर्यं -अनामथाव्य करव मद्यव्य-कु० १।३१, शास्त्रां आदि ।

आप्तवन्म [आ + सत् + लिच् + ल्यट्] 1 प्राप्त करना, उपलब्ध करना 2 आक्रमण करना ।

आप्तार [आ + सु - घञ्] 1. (किसी वस्तु की) मूललाधार बौद्धार - आसारमिक्तसिनिवाणयोगान् - रघु० १३। २९, मेघ० १७ गुणधार - य३, इवी प्रकार 'सुहित', 'सुधिर' आदि - आसारसौर्विष्टिबन्धुव - कि० ३, मूलला-धार बारिष्ठ हुई 2 शत्रु का घेरा राक्षसा 3 आक्रमण, अचानक हमला 4 अपने किसी मित्र राजा की सेवा 5 रसद, आहार - यच० ३।५१ ।

आप्तिकः [असि - ठक्] सङ्गचारी, तलवार लिए हुए ।
आप्तिसारम् [अप्तिसार इव अत्यन्त अण्] एक प्रकार का इतविशेष -अम्यस्तीव इतमाप्तिसारम् - रघु० १३।६७, व्याख्या के लिए दे० असि के नीचे 'असि-धारा' शब्द ।

आप्तुति (स्त्री०) [आ + सु + क्तिन्] 1 अर्क, 2 काड़ा ।
आप्तुर (वि०) (स्त्री०-घी) [अपु + अण्] (विप०

द्वैती 1 असुरों से सबन्ध रखने वाला 2 मृत-प्रेतों से सबन्ध रखने वाला, — प्रासुरी माया, आसुरी राक्षि आदि 3 नारकीय, राक्षसी—आसुर बाधमायित मन् ७११५, (आसुर-आचरण के पूर्ण विवरण के लिए दे० मन् १६१ ७-२४) — ८ 1 राजस, 2 षोडश प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें कि वर, वधु को उसके पिता या पितृकबाधको से खरीद लेता है (दे० उद्वाह) — आसुरो द्रविण्यादानत् — याज्ञ० ११६१, मन् ३१३१, — री 1 शत्यचिकित्सा, जरीही 2 राक्षसी — स प्रमादासुरीभि — देवी० ११३१

आसुरित (वि०) [आ + सृ + क्त] 1 माला पहने हुए या माला के रूप में, 2 अतर्पित।

आसृकः [आ + सृ + क्त] गीला करना, खीचना, ऊपर से उड़ेलना।

आसेचनम् [आ + सिच् + ल्यट्] ऊपर से उड़ेलना, गीला करना, छिड़कना।

आसेकः [आ + सिच् + घञ्] गिरस्तारी, हिरासत, कानूनी प्रतिबंध यह चार प्रकार का है — स्थानामेय कालकृण प्रवासान् कर्मणस्तथा — नारद।

आसेवा — बन्धु [आ० म०] 1. सोत्याह अम्यास, किसी किन्ना का मतत अनुष्ठान, 2 बारबार होना, आवृत्ति — या० ८१३१०२, आसेक पीन पुण्यम् — सिद्धा०।

आस्कन्द — हनम् [आ + स्कन्द + घञ्, ल्यट् वा] 1 आक्रमण, हमला, सतीत्याहा, परबन्धिना प्रसक्तस्य — वेगी० २, 2 चटना, सभारी करना, रौंदा, 3 भस्मीना, दुर्बन्धन 4 धोखे की सरपट चाल 5 लडाई, युद्ध।

आस्कन्धितम् — लक्षम् [आ + स्कन्द + क्त, स्वार्थे क् वा] धोई की चाल, धोखे की सरपट चाल।

आस्कन्धिन् (वि०) [आ + स्कन्द + णिनि] बड़ बैठने वाला, हट्ट पहने वाला — रघु० १७५२।

आस्तरः [आ + स्तृ + अच्] 1 चादर, ओढ़ने का वस्त्र 2 दर्री, बिस्तरा, चटाई — शा० २१२० 3 बिस्तरण, फेंकाव (बन्धादि)।

आस्तरणम् [आ + स्तृ + ल्यट्] 1 बिस्तरण, बिछावन 2 बिस्तरा, तह, कुण्डम् कूलो की सभारी — कु० ४१ ३५, तमालवास्तरणाम् लघुम् — रघु० ६१५४ 3 बद्धा, रजाई, बिस्तर के कपड़े 4 दर्री 5 हाथी की जीन-पीसा, साज-सामान, रसीन झूल।

आस्तरः [आ + स्तृ + घञ्] कँलावा, बिछाना, बनेरना। म० — बद्धिना छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट।

आस्तिक (वि०) (स्त्री० — की) [अस्ति + क्त] 1 जो ईश्वर और परलोक में विश्वास रखता है 2 अपनी धर्म-पररक्षण में विश्वास रखने वाला 3 पवित्रता, मन्त्र, ब्रह्मण्य — आस्तिक ब्रह्मदानघञ् — याज्ञ० ११२६८।

आस्तिकता, — स्वम्, आस्तिक्यम् [आस्तिक + तल् स्वल् घञ् वा] 1 ईश्वर और परलोक में विश्वास 2 पवित्रता, अस्ति, श्रद्धा — अथ० १८५२ आस्तिक्यं ब्रह्मदानना पर्यायैर्व्यागमाथपु - शकरो०।

आस्तोकः एक प्राचीन मृत्ति, अन्तक का पुत्र (अरस्तार के बीच में पड़ने में ही जनमेजय ने नलक नाग को छोड़ दिया था, जिसके कारण कि मांगव रत्ना गया था)।

आस्था [आ + स्था + अञ्] 1 श्रद्धा, देखभाल, आदर, विश्वास, ध्यान रखना (अधि० के साथ) मर्यादा-स्थापनाइत्यम् — रघु० १०५३ मर्यादास्था न ते चेत् — अथ० ३१२० दे० 'अनास्था' भी 2 स्वीकृति, धारा 3 धूर्ती, सहानु, टेक 4 आगा, भरोमा 5 प्रयत्न 6 दया, अवस्था 7 मन्त्र।

आस्थानम् [आ + स्था + ल्यट्] 1 स्थान, जगह 2 नीच, आधा 3 सभा 4 दलभान, श्रद्धा, दे० 'आस्था' 5 सभागृह 6 विश्रामस्थान, — नी 1 सभा-अर्थन। म० — गृहम्, — निकेतनम्, मन्त्र सागणन।

आस्थित (पु० क० कृ०) (कन्वाच्य के रूप में प्रयुक्त) रहने वाला, बसने वाला, आश्रय देने वाला काम में लगने वाला, अन्वय करने वाला, अपने आपको श्रान्तने वाला।

आस्थयम् [आ + यद् + ल्यट्] 1 स्थान, जगह आसन और — न्यायपरद शीवराजसंज्ञितम् रघु० ३१२६ ध्यानाग्रद मनवर्तिविद्ये कु० ३१६२, ५११० ४८ ६९, 2 (आल०) आवास स्थान, आश्रय कर्मण्य कारुण्यम्पदम् — भाषि० ११० 3 श्रेणी, दर्जा, केन्द्र-स्थान 4 मर्यादा प्रामाणिकता, पर 5 व्यवसाय, काम 6 धूर्ती, आवय।

आस्थयवम् [आ + गन्त् + ल्यट्] घटकना, काँपना।

आस्थयी [आ० म०] होइ, प्रसिद्धिता।

आस्थाक [आ + गन्त् + सिच् + अच्] 1 भारना, रगड़ना, पने २ चलाता 2 फटफडाता 3 विशेष रूप से हाथों के कानों की फटफडाइत।

आस्थाकलम् [आ + स्थ + सिच् + ल्यट्] 1 गन्धना, दवा कर रखना (पानी आदि का), झिलना फटफडाता — अन्वयवन्त्युत्पत्कालनकूपूर्णम् या० २१६, आवां जलाग्नालनतलरणां रघु० ११६१२, ३१५९, ६१ ७३, अथ ५४, ऐरावत कर्कशेन हस्तेन कु० ३१२२ 2 घमड, टेकड़ी।

आस्थोत् [आ + ल्यट् + अच्] 1 आक वा मदार का पीषा 2 नास ठोकना, 'दा नवमन्त्रिका का पीषा, बङ्गली बसेली।

आस्थोरणम् [आ + स्तृ + ल्यट्] 1 फटकना 2 काँपना 3 फूक मारना, फुलाना 4 सिकाड़ना, बन्द करना 5 नास ठोकना।

आस्वाक (वि०) (स्त्री०—की), आस्माकीन (वि०) [अस्वन् + अण्, आण्, अस्माकं आदिश्च] ह्यारा. ह्यस सब का—आस्माकवर्तिनाभिध्यात्—सि० २।६३, ८।५०।

आस्पम् [अस्पने वागोऽत्र—अत् + स्पृत्] 1 भूँह, जबड़ा आस्पकुहरे विद्यताम् 2 बेहरा, आस्पकमलम् 3 मुग का वह भाग जिससे बर्णीचचारण में काम लिया जाता है, 4 भूँह, बिबर—इथास्वम्, अक्लास्पम् आदि । मन्— आस्प का, लुआव,—वमम् कर्मल,—लाङ्गकः 1 कुना, 2 मूजर— लोभम् (नपु०) दाड़ी ।

आस्पन्धम् [आ + स्पन्ध् + स्पृत्] बहना, रिसना ।
आस्पन्धय (वि०) [आस्प घयति—ये + ल मुम्] मुलचुम्बन करने वाला ।

आस्था—[आ + स्थ् + षण्य्] दे० आसना ।
आस्थम् [अथ + अण्] शिबर । म०—प- लून पीने वाला, राक्षस ।

आस्थ [आ + स्तु + अण्] 1 पीडा, कष्ट, दुःख 2 बहाव, स्रवण 3 (मवाद आदि का) बहना, निकलना, 4 अपराध, अतिक्रमण 5 उबलने हुए चाबको का माग ।

आस्थाय [आ + स्थ् + षण्य्] 1 बाव 2 बहाव, निकलन 3 लार 4 पीडा, कष्ट

आस्वाक [आ + स्वद् + षण्य्] 1 पसना, माना—पूताकृ- रावादाकयाकच्छ - कु० ३।३२, हि० १।१५२ 2 म्बाद केना आनास्वादे विक्तवचना को विहाय समर्थं मेष० ४१, सुभास्वादापर—हि० ५।७६ 3 मुलापभ्रम करना, अनुभव करना, अम् (वि०) स्वाशिट, रमीला आस्वादवर्द्धि कर्कसेस्तुधानाम् रपु० २।५ ।

आस्वाचनम् [आ + स्वद् + णिच् + स्पृत्] पचना, माना ।

आह (अध०) [आ + हन् + इ] 1 निष्पाकित माषनाओ को घोलन करने वाला विष्मयाविद्योतक अव्यय—(क) शिबकी (ख) कठीरता (ग) मात्रा (घ) फेंकना, भेंजना 2 'कहना' 'बोलना' का प्रयुक्त करने वाली सदाय किया के वर्तमान शक के प्रथम पुरुष के एक वचन का अनिश्चित रूप (भारतीय वैवाकर्यों के मतानुसार यह रूप 'हूँ' वातु का है तथा पाश्चात्य विद्वान् इसको 'अहूँ' से बना हुआ मानते हैं, सरकृत भाषा में इस वातु के वर्तमान रूप—आह, आहूतु, आहुः भाव, और आहूय् हैं ।)

माहल (मू० क० इ०) [आ + हन् + ल] 1 जिस पर प्रहार या आघात किया गया हो, पीटा गया (दोष मानि) 2 रीदा गया— पाशाहल यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति—सि० २।४६ 3 शान्त, मारा हुआ 4 मृगित (मृगित में) 5 लुहकाया हुआ (पासा) 6 विध्या

कहा हुआ,—सः डोल,—स्म् 1. नई पीडाक, गया बरन 2 माषहीन या निरर्थक भाषण, अस्माकना की युवोमित—उदा० एष बंध्यामुत्रो याति—मुभा० । सम०—कण्व (वि०) = माहितलभय ।

आहृति. (स्त्री०) [आ + हृत् + क्तिन्] 1. हृष्या करना 2 प्रहार, चोट, मारना, पीटना 2. मर्षित, छड़ी ।

आहूर (वि०) [आ + हृ + अण्] (समास के अन्त में) लाने वाला, ले आने वाला, ग्रहण करने वाला, पकड़ने वाला—समित्युक्तफलाहरे—रपु० १।६९,—प 1. ग्रहण करना, पकड़ना 2. पूरा करना, सम्पन्न करना 3. यज्ञ करना ।

आहूरणम् [आ + हृ + स्पृत्] 1. ले आना, (निफट) लाना—सविदाहरणाय प्रस्थिता वयन्—न० १ 2 पकड़ना, ग्रहण करना 3 हटाना, निकालना 4 सम्पन्न करना, (वसादिक) पूरा करना 5 विवाह के समय युक्तित्व को उपहार के रूप में दिया जाने वाला वन, दहेज,—सप्तानुत्पाहर्णीकृतधी—रपु० ७।३२ ।

आहूक [आ + हृ + अण्] 1 मुट्ट, सधान, सवाई—एवं विचिनाहवकेष्टितेन—रपु० ७।६७, हृष्या स्वजनमाहृषे—अम० १।३१ 2 कलकार, चुनौती, आह्वान, 'काम्या लड़ने की इच्छा 3 यज्ञ—तत्र माषवदसौ महाहृषे—सि० २।४४ ।

आहूचनम् [आ + हृ + स्पृत्] 1 यज्ञ—इष्टमाहूचनमवग्रन्नाम्—सि० १।३३ 2 आहृति ।

आहूचनीय (स० इ०) [आ + हृ + ङीवर] आहृति देने के योग्य,—कः गार्हपत्यानि से ली हुई अग्निमन्त्रित अग्नि, तीन अग्निवो में से एक (पौष) जो यज्ञ में प्रज्वलित की जाती है । दे० 'अग्निषेत' शब्द 'अग्नि' के नीचे ।

आहारः [आ + हृ + षण्य्] 1 लाना, ले आना, या निफट लाना 2 भोजन करना 3 भोजन—वृत्तिमकरोत्—पच० १, भोजन किया । सम०—वाकः भोजन का पचना,—बिबरहः भोजन की कमी, भूभो मरना,—सम्भवः—शरीर का रस, लसीका ।

आहृष्ये (स० इ०) [आ + हृ + ष्यत्] 1 ग्रहण करने या पकड़ने के योग्य 2 लाने या ले आने के योग्य 3 कृत्रिम, नैमित्तिक, बाह्य— आहार्यशोभाहृतेरुभाय—प्रट्टि० २।२४, न रम्यमाहार्यमेषकते युगम्—कि० ४।२३, कु० ७।२० पर मन्त्रि० भी, 4 साभिभाव्य, अभिप्रेत,— उदा० रूपक में उपमेय या उपमान का आरोप जिसके विषय में बस्ता पूर्ण रूप से जानकार होता है । 5 भूभार या आनुना से संप्रेषित या प्रभावित, अभिनय के चार प्रकारों में से एक ।

आहूत्वः [आ + हृ + षण्य्] 1 पशुओं को पानी पिलाने के लिए कुएँ के पास बनी कूट 2 सधान, मुट्ट 3. आह्वान, कलकार 4. अग्नि ।

आहिष्णिकः [आहिष्+ङ्क] विषाद पिता और वैदेही माता से उत्पन्न वर्षासंकर, --आहिष्णिको विषादेन वैदेह्यामेव आषते--मनु० १०।७।

आहित (प्र० क० क०) [आ+या+क्त] 1 स्थापित, उखा गया, जमा किया गया (घरोहर के रूप में रखा गया) 2 अनुसृत, संकृत 3 सम्पन्न, किया गया।
सम०--अग्नि श्राद्धण जो यज्ञ की गावन अग्नि को अभिमार्जित करता है, -अक (वि०) चिह्नित, चित्ती-दार, --सकल (वि०) परिचायक चिह्न वाला, --ककुन्ध इत्याहितश्रौतमनु० ग्य० ६।७। (मस्ति० के अनुसार अकले गुणां के कारण प्रख्यात)।

आहितुषिकः [अहितुष्येन दोष्यति ङ्क] बाजींग, खेरोर, एन्द्रजातिक या जादुगर अर्ह खत्वाहितुषिका जीर्ण-विषो नाथ--मुद्रा० २।

आहुति (स्त्री०) [आ+हृ+क्तिन्] 1 किसी देवता को आहुति देना, पुण्यकृत्यों के उपलक्ष्य में क्रिये जाने वाले यज्ञों में इष्यसामग्री इष्य कुं में डालना --हीमुराहुतिसामनम् ग्य० १४२, 2 किसी देवता को उद्दिष्ट करके दी गई आहुति (इष्यसामग्री)।

आहुति (स्त्री०) [आ+ह्वे+क्तिन्] चनीनी, बलकार, पाह्लान।

आह्वय (वि०) [अहि+ङ्क] गाधो ने मन्वष म्बने वाला --पञ० १११११।

आहो (अव्य०) निम्नांकित भावनाओं को व्यक्त करने वाला विस्मयादि बोलक अव्यय, (क) मन्द्य या विकल्प, प्राय 'किम्' का सहसंबन्धी कि संभानय वत निवेदितव्यम् आहो निष्कम्पति तम हृि पापवाभि श० १।२७, दारत्यागी भ्राम्याहो परम्बोन्वर्षासुल -श० ५।२६ (म) प्रथमाक्षकता --सम०--पुरुषिका 1 अत्यधिक अहमगना या धमक--आहोपुनिका दर्षाया म्यान्भावनामनि --अमर०, आहोपुनिका पद्य मम महलकान्धि --मट्टि० ५।२७, 2 सैनिक आग्रयलाया सेनी बधाला 3 अपने पराक्रम की वीय मारना निज भुषबलाहोपुनिकाम्--भासि० १।८४, -स्वित् (अव्य०) 'सदेह' 'धमावना' 'सभाष्यना' आदि भावनाओं को प्रकट करने वाला अव्यय ('किम्' का सहसंबन्धी)।

--आहोविक्रमसो ममापचरितेविष्टमित्तो वीरधाम् --श० ५।९, कि द्विज पत्नी आहोवित् सच्छति --मिदा०।

आह्वयम् [अह्वा मय् अञ्, रिनो का समुह, बहुत दिन।
आह्विक (वि०) (स्त्री०--की) [अह्वि भव, अह्वा निर्वृत साम्य - ङ्क] 1 सैनिक, प्रति दिन का, प्रति दिन किया गया, दिन भर किया गया धार्मिक संस्कार या कर्मव्य जो प्रति दिन निवृत समय पर किया जाने वाला है, प्रतिदिन किया जाने वाला कार्य, जैसे कि भोजन करना, स्नान करना आदि कृत्वाह्विक सबूत विष्म० ४, 2 सैनिक भोजन 3 सैनिक कार्य या छात्रसाय।

आह्लाद [आ+ह्लाद्+ङ्क] सुधी, हर्ष-साह्लाद वचनम् पञ० ४।

आह्लासकम् [आ+ह्लाद्+ङ्क] प्रमत्त करना, वृक्ष करना।

आह्व (वि०) [आ+ह्वे+ङ्क] 1 जो पुकारता है, वक्तला है बुझाने वाला ह्वा आ ह्वेः अक+टाप् 1 बुलाया पुकारना 2 नाम, अभिधान (प्राय गमल र अन्त में) अथलाद् जनाह्व आदि।

आह्वय [आ+ह्वे+ङ्क] 1 नाम अभिधान (समाम का अन्तिम पर) काव्य रामायणाह्वयम् रामा० 2 एक बान्नी अभिधान जो यज्ञों की लडाईं जैसे पञ्चमेघ में होने वाले जगशे से पैदा हो (गानन के १/८ नामों में से एक)--पण्डुर्वक पशि-मरादिषोचने आह्वय मन० १।३ पर राषशानन्द की व्याख्या।

आह्वयनम् [आ+ह्वे+ङ्क] नाम अभिधान।

आह्वानम् [आ+ह्वे+ङ्क] 1 बलकार, आमन्त्रण 2 बुलावा, निमन्त्रण, आमन्त्रण करना, मुहदाह्वान प्रकुर्वीत-पञ० ३।६७, 3 कान्नी आमन्त्रण (बचहरो या सरकार से किसी म्यापार्थिकरण के सम्बन्ध उप-स्थित होने के लिये बुलावा) 4 देवता का संबोधन --मनु० १।२७२, 5 बुलावो 6 नाम, अभिधान।

आह्वय [आ+ह्वे+ङ्क] 1 बुलावा 2 नाम।
आह्वयक [आ+ह्वे+ङ्क] 1 हुल, मदेशवाहक --आह्वयकान् भुविपतेर्याद्याम्--मट्टि० २।४३।

इ [अ+ङ्क] कायदेव (अव्य०) (क) क्रोध (ख) पुकार (ग) कथना (घ) शिष्टकी तथा (ङ) जापधर्म

की भावना को प्रकट करने वाला विस्मयादिव्योक्त अव्यय।

४ (क) (अंश ० पर०) (एति, इत) 1. जाना, की ओर जाना, निकट जाना—गतिम पुनरिति सर्वरी—रघु० ८।५९ 2 पहुँचना, जाना, प्राप्त करना, चले जाना—निर्मुञ्चि ह्यवेति—मृच्छ० १।१४, मत्त हो जाता है, बचाव होता है, इसी प्रकार मद्य, सन्तुषं, मृशताम् आदि, (क) (अंश ० उभ०)—दे० अय् (ग) (दिवा० जा०) 1. जाना, आ घबकना 2. भागना घूमना 3 सीधे जाना, बार बार जाना। अति—1 परे चले जाना, पार करना, ऊपर से चले जाना—अवा-दतीये हिमवानधोमूले—कि० १४।५४,—स्थानव्य ते नमनविषय यावदत्येति मानु मेघ० ३४, उदित से आंशुल हो जाता है 2 आगे बज जाना, पीछे छोड़ देना, पछाड़ देना,—मत्पमतीय हृतिती हृतिश्च वर्तन्ते वाचिन—श० १, विज्ञोतनः कानिभस्तीय तस्वी—कु० ७।१५, मि० २।२३ 3 पास से निकल जाना, पीछे छोड़ देना, मूल जानना, उपेक्षा करना—श० ६।१६, रघु० १५।२० 4 बिताना, बीतना (ममय का)—अवेति रजनी या तु रामा०, अतीते दशगन्त्रे, दे० 'अतीते', अति 1 पार रचना, चिन्तन करना, संद पूर्वक पाद करना (मम० के साथ) —रामस्य दशगन्त्रोत्ताकध्वेति तत्र लक्ष्मण—भट्टि० ८।११, १८।३८, कि० ११।७४ 2 ('अधीने' इस अर्थ में नदेव 'आमनेपद') विद्या प्राप्त करना, अध्ययन करना, पढ़ना—उपाध्यायादधीते—मिड्डा०, मो-ज्येद्वि वदान्—भट्टि० १।२, (प्रेम० अध्यापयति, इच्छा०—अधिप्रियामते) अनु—, 1 अनुसरण करना, पीछे चलना—प्रयत्ना प्रालम्बन्तु—रघु० १।९० 2 सफल होना 3 अनुसरण (आ० या रचना में) 4 जाना मानना, अनुकूल होना, अनुकरण करना, अच्छा—, पीछे जाना, अनुसरण करना, अन्तर— 1 बीच में जाना, हस्तक्षेप करना 2 टोकना, बाधा डालना 3 छिपाना, गुप्त रखना, परदा डालना—दे० 'अनागत', अन्त 1 चले जाना, बिदा होना, पीछे हटना जोर पड़ना, अवेहि दूर हा जाया, दूर हटो 2 बर्बाद होना, मुक्त होना दे० 'अनेन 3 मरना, मर्त होना, अति—, 1 जाना, पहुँचना, निकट जाना—अस्मानमृतीतोऽध्वेति भट्टि० ५।८४ 2 अनुसरण करना, सेवा करना 3 प्राप्त करना, मिलना, भुगतना, (अच्छी दूरी जाने) धोना, अधिप्र—, की ओर जाना, इरादा करना, अर्थ रखना, उद्देश्य बना का—कर्मणा धर्माधरीति स मद्राजानम्—श० १।८।३२ अम्या— पहुँचना, अम्यन्—, 1 उठना, ऊपर जाना 2 (जाल०) फटना-कुलना, समुद्र होना, अम्यन्— 1. निकट जाना, पहुँचना आगुहचना—श्वेतीतकाल-स्यहमम्युपेति—रघु० ५।१४, १६।२२, 2 बिदापट

दना को पहुँच जाना, प्राप्त करना—सर्वं न तच्छब्द-कामम्युपेति—मि० ३।६१, 3. विन्मेशरी केना, यत्-मत्त होना, स्वीकार करना, (कोई काम करने की) प्रतिज्ञा करना;—मन्वायेते न वाम् कुमुदायम्युपेताय-कृत्या—मेघ० ३८ 4. मान्येन्य, अपना केना, स्वीकार करना, 5 माझा मानना, अवीनता स्वीकार करना, अन्ध—, जानना, ज्ञान प्राप्त करना, ज्ञानकार होना—अवेहि मां किञ्चुरत्यन्तु—रघु० २।३५, कु० ३।१३, ४।९, आ—, जाना, निकट स्थितकना, उद्—1 (तारे आदि का) उदय होना, (बाध० भी) जाना, ऊपर उठना—उपेति पूर्व कुमुदं तत् फल्गु—श० ७।१०, उदेति सविता ताम्र—आदि 2 उठना, उछलना, पैदा किया जाना 3 फलना-फूलना, समुद्र होना, उच—, 1 पढ़ना, निकट स्थितकना, पास जाता योगी पर स्थानम्युपेति चाष्टम्—अन्ध० ८।२८ 2 निकट जाना, में से निकलना, प्राप्त करना, (किसी रङ्ग को) पढ़ने जाना,—उपेति सत्य परिचायत्य-ताम्—कि० ४।२२, 3 आ पढ़ना, मिर्—, बिदा होना, प्रस्थान करना, परत—, 1 चले जाना, दीख जाना, माग जाना, वापिस मुड़ना,—य परीति स जीवति—पृथ० ५।८८ 'भागने जाना अनीना जाय बवा केता है', तु०, 'जान बवाने के लिए भावना, 2 पहुँचना, प्राप्त करना—कि० १।३९ 3 इत बतार में कुछ करना, मरना, दे० परेत, परि—, 1 परिष्कार करना, प्रदक्षिणा करना,—चरण्यास भक्तिवन्न परीया—मेघ० ५५, मनु० २।४८, 2 चेरना, चारो ओर चक्कर लगाना—दूतवधपरीत गृहमिष—श० ५।१०, विषव-ल्लिभि परीताभिर्महोपरि—रघु० १२।६१, इसी प्रकार 'कोपपरीत 3 पास जाना, (बीचों का) चिन्तन करना 4 बदलना, रूपान्तरित होना, प्र—, 1 निकल जाना, बिदा होना,—बीरा प्रेत्यास्मान्कोकारद्वता सचलि-केन 2 (अत) बीज से बिदा लेना, बरना, प्रेत्य पर कर—न च तस्मै नो ह—अन्ध० १७।२८ मनु० २।९, २६, अति—, 1 वापिस जाना, लौट जाना,—प्रनीयाय वृरो सकाशम्—रघु० ५।३५, भट्टि० ३।१९ 2 विश्राम करना, अरीना करना—क अथ्वेति संवेय-मिति—उत्तर० ४, 3 ज्ञान प्राप्त करना, समझना, जानना प्रतीयते धानुरिबेहित क्ली—कि० १।२०, मि० १।६९ 4 विख्यात होना, प्रसिद्ध होना—सोऽय बट रथाम इति प्रतीत—रघु० १२।५३ 5 प्रसन्न होना, समुद्र होना—रघु० ३।१२, १६।२१ १ अन्ध०—प्रत्यापयति) विश्राम स्थाना, अरीना पैदा करना बलवान् सुयमान प्रत्यापयतीये वे हृदयम् श० ५।२१, ता स्वचारिभ्यमुद्दिष्य प्रत्यापयन्तु वैषिकी—रघु० १५।३३, प्रत्यम्—, स्वान्त या उत्तरण करने के लिए

उठ कर अगबानी करना—सपथया प्रत्युविद्याय पार्वती।
—कु० ५१३१, वि— 1 चले जाना, बिदा होना
—तस्यामह त्वयि च मप्रति वीर्यवित्त— श० ५१२२,
इसी प्रकार वीर्यवित्त, वीर्यवित्त 2 परिचित होना
—सदृश विपु विपु यत्न व्येति तदव्ययम्—मि० 3
रूप करना—दे० व्यय, विचार—, बदलना (बुराई
के लिये) दे० विपरीत, व्यति—, 1 बाहर आना,
पथविचलित होना, अतिक्रमण करना—रेखामात्र-
मपि क्षुण्णदा मनोवैर्येन परम्, न व्यतीत्यु प्रजा-
स्तस्य नियन्तुमिच्छतव । रघु० ११७, 2 (समय
का) गुजरना, व्यतीत होना—सप्तव्यतीत्युत्पिण्णुपानि
सस्य दिनानि—रघु० २१२५, व्यतीते काले-आदि 3
परे चले जाना, पीछे छोड़ना—रघु० ६१५७, व्यय—
1 बिदा होना विचलित होना, मुक्त होना—व्यपेतम-
दमस्वर—वाङ्० ११२६७ स्मृत्पाचारव्यपेतेन माण्येन
—२१५, 2 चले जाना, बुरा होना, अलग-अलग होना
—समेत्य च व्यपेयाताम्—हि० ४६, मनु० १११८२,
१११७, समु—, इकट्ठे आना, इकट्ठे मिलना, समनु—,
साथ चलना, अनुसरण करना, समथ—, 1 एकत्र
होना, इकट्ठे आना—समवेता युयुत्व—अण० ११२,
2 सबद्ध होना, समुक्त होना दे० समसाध, समा—,
इकट्ठे आना या मिलना—समेत्य च व्यपेयाताम्— हि०
४६५, समुत्—, एकत्र होना, सचित होना—अय समु-
दित सर्वा गुणाना यण—रत्न० १६, समुप—, उप-
लब्ध करना, प्राप्त करना, सप्रति—, निषेध करना,
निश्चिन्त करना, निर्धारित करना, अनुमान लगाना
— कि तत्कथ वेत्युपलब्धता विकल्पवन्तोऽपि न सप्र-
तीयु—भट्टि० १११० ।

इक्षव (दे० व०) गन्ना, ईस, ऊस ।

इक्षु [इक्षतेऽन्नी माधुर्वात्—रु०+क्यु] गन्ना, ईस ।
साम०—काण्ड, —इक्षु गन्ने की दो जातियाँ—काग
और मुञ्जवृक्ष, —कुट्टक गन्ने इकट्ठे करने वाला
—या एक नदी का नाम,—पाकः गुड, शीरा, राव,
—मलिका गुड और शक्कर से बना प्रोथ्य पदार्थ,
मती,—मालिनी,—मालवी—एक नदी का नाम,
—मेहुः मयूमेहु— यन्त्रम् गन्ना पेलने का कालू,
—रस 1 गन्ने का रस 2 गुड, राव या शक्कर,
—रथम् गन्ने का खेत, गन्ने का जंगल,—वाटिका,
—बाटी, गन्ना का उद्यान, बिकार, दानकर, गुड
या राव,—सार गुड या राव ।

इक्षुक [स्नाथे क्यु] गन्ना, ईस, दे० इक्ष ।

इक्षुकीया [इक्षुक+छ निर्याय टाप्] गन्ने की बयारी ।

इक्षुर [इक्षुम् राति— इति रा+क] गन्ना, ईस ।

इक्षुवाङ् [इक्षुम् इक्षुम् आकरोति इति इक्षु+वा—क
+ङ्] अयोध्या में राज्य करने वाले सूर्यवंशी राजाओं

का पूर्व पुरुष, यह वैश्वत मनु का पुत्र था—और
सूर्यवंशी राजाओं में सबसे प्रथम पुरुष था ।—इक्षुवाङ्कु
वंशीवन्त प्रजापताम्—उत्तर० ११८२ इक्षुवाङ्कु की
सन्तान—वलिस्तवमामिधनाकुर्वाभिद हि कुलधनम्
—रघु० ३१०० ।

इक्षु, इक्षु (व्या० पर०) (एवति, इक्षति) जाना,
हिलना-दुलना, (प्राय 'प्र' के साथ) हिलना-दुलना,
कापना—मा० ६ ।

इक्षु (व्या० उभ०) (इक्षति ते, इक्षति) 1 हिलना,
कापना, क्षुब्ध होना—यथा दीपो निषातस्यो ने क्षुब्धे
—मण० १११५, १४२३ 2 जाना, हिलना-दुलना ।

इक्षु (वि०) [इक्षु+क] 1 हिलने दुलने योग्य 2 आदर्य
जनक, विन्मयकारी,— म 1 इधारा या मकेन 2
इहित द्वारा मनोभाव का संकेत देना ।

इक्षुन्म् [इक्षु+ल्भृ] 1 हिलना-दुलना, कापना 2
जान, दे० इक्ष ।

इक्षुन्म् [इक्षु+क] 1 घटकना, हिलना 2 आन्तरिक
विचार, इरादा, प्रयाजन—आश्रयवेदिभि—का०
७, पथ० ११४३, अग्निमन्त्रावमिनाङ्गितमया कु०
५१६२, रघु० ११२०, वि० ५१६९ 3 इगारा, मकत,
अवधिषेप—पथ० ११८४ 4 विद्येयत मंगरे के
विभिन्न अंगों को चेटा जा आन्तरिक इरादा का
आभाव दे देती है अवधिषेप आन्तरिक भावनाओं को
प्रकट करने में समर्थ है आकारैरिङ्गितमया
गृह्यतेऽन्तरेण मत—मनु० ८१२६, मय०—कोशिक,
—म (वि०) बाहरी अणुचट्टा के द्वारा आन्तरिक
मनोभावों को आवस्था करने में कुशल, मकेता को
जानने वाला ।

इक्षुर्ष, -वी [इक्षु+उ= इक्षु त् घटित सधयति इति—शो ;
क] एक औषधि का वृक्ष, हिमाट का वृक्ष, मालकगनी
—इक्षुर्वीपादय सोऽयम्—उत्तर० १११४,—इक्षु
इक्षुदी का फल ।

इक्षुष्ठा [र्षु+श+टाप्] 1 कामना, अभिलाष, रश्चि,
इक्षुष्ठा—रश्चि के अनुसार 2 (गणित में) प्रश्न या
समस्या 3 (व्या० में) गणन का रूप । मय०—हालम्
अभिलाष का पूर्ण होना,— निरक्षु (स्त्री०) कामनाओं
की शान्ति, सामागिक इक्षुष्ठाओं के प्रति उदासीनता,
—कर्म किन्ती प्रश्न या समस्या का समाधान
—रत्नम् अभिलषित सोन—मेष० ८५,— सधुः कुबेर
—संघम् (स्त्री०) किन्ती की कामनाओं का पूर्ण
होना ।

इक्षुः [र्षु+क्यप्] 1 अध्यापक 2 देवों के अध्यापक
बृहस्पति की उपाधि ।

इक्षुवा [इक्षु+टाप्] 1 वज्र—जगत्प्रकाश तदवोपनिष्यया
—रघु० ११४८ ११६८, १५१२, 2 जगद्वाप, वान 3

प्रतिमा 4. कुट्टिनी, दूतिका, गाय । सम० - शीकः सद्य
यत्र कान्ते वाचा ।

द्वयः [द्या कान्ते षरति-इय् + किय्- इट् + चर्
+ अच्] द्वय वा बहुधा जो स्वच्छन्दता पूर्वक रूपमें
के लिए छोड़ दिया जाय ।

इडा-त्ता [इत् + अच्, क्त्य इत्त्वम्] 1 पृथ्वी 2. नाथय
3. आहार 4. नाथ 5. एक देवी का नाम, मनु की
पुत्री 6. बुध की पत्नी तथा पूकरवा की माता ।

इडिका [इडा + क, इत्त्वम्] पृथ्वी ।

इतर (या० वि०) (इत्-रा, न्यु० इत्) [इना
कामिन तर-इति-त् + अच्] 1 अन्य, दूसरा, दो में
से अर्थात्-इतरो इहने स्वकर्मणाम् रूप० ८।२०,
अने० पा० 2 सेष वा इतर (ब० ब०) 3 दूतग, मे
मिन्य (अपा० के साथ) -इतरतापाताति यच्छया
वितर तानि सह अनुरानन उद्भूट, इतरा राक्षसादेव
राक्षसानुचरो पति-भट्टि० ८।१०६ 4. विरोधी, या
तो अकेला स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त होता है अथवा विरो-
धण के साथ, या समाप्त के अन्त में -अङ्गमादीतराणि
च रामा०, विजयानेनगाय वा- महा० इवां प्रकार
दोषण (बाया) काम (दाया) आदि 5 नीच
अथम, गवारा, मामान्य-इतर इव परिभूय ज्ञान मन्त्र-
वण जरीहृन्-भा०-१५६। मन्त्र०-इतर(या० वि०)
पारम्परिक, स्व-स्व, अन्याय्य आश्रय - पारम्परिक
निर्भरता, अन्याय्य सबब-योग 1. पारम्परिक मन्त्र
या मन्त्र, जि० १०।२६, 2 इन्द्र मनात का एक प्रकार
(विप० समाहार इन्द्र) जहाँ कि प्रत्येक अंग पृथक्
रूप में देखा जाता है ।

इतरत्र (अव्य०) [इतर + तन्निम्, क्त् वा]
अन्यथा, उसमें भिन्न, अन्यत्र दे० अत्यन्त, अन्यत्र ।

इतरथा (अव्य०) [इतर + थाल्] 1 अन्य रीति से, और
दूसरे से 2 इतिवत् रीति से 3 दूसरी ओर ।

इतरेषु (अव्य०) [इतर + एषुम्] अन्य दिन, दूसरे
दिन ।

इत्तम् (अव्य०) [इदम् + तन्निम्] 1 अतः, यहाँ से,
इधर से, 2 इस व्यक्ति से, मुझ से -एत म इत्य
प्राण्योर्ननेन एवाहति अयम् कु० १।२५ 3 इस
दिशा में, मेरी ओर, यहाँ-इतो निवारति विमुट्-
भूमि कु० १।२, प्रयुक्तभयप्रतिभितो युवा स्यात्
-रूप० २।३६, इत इनां देव - इष्व इत ओर महा-
राज (नाटकी में) 4. इस लोक से, 5. इस समय
से, इत-इत-एक ओर-दूसरी ओर या एक
स्थान में-दूसरे स्थान पर, यहाँ-वहाँ ।

इति (अव्य०) [इ + क्तम्] 1 यह अव्यय प्रायः किसी
के द्वारा बोले गये, या बोले समझे गये शब्दों को बैसा
का बैसा ही रख देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है

जिसको कि हृष अनेवी में अवतरणांश भिन्नों द्वारा
प्रकट करते हैं, इस प्रकार कही गई बात हो सकती है
(क) एक अकेला शब्द जो शब्द के स्वरूप को इतनि
के लिए प्रयुक्त किया गया हो (शब्दस्वच्छन्दताक)-राय
रामेति रामेति कुञ्जत मयूराक्षर-रावा०, अक्षय
पकिग्याह-मयू०, (ख) या कोई प्रातिपदिक जो
कि अपने अर्थों को संकेतित करने के लिए कर्तृकारक
में प्रयुक्त होता है (प्रातिपदिकार्थशोभक)-य-
स्त्वपामिःपथभारित पुरा.....कमारम्पु नारव इत्-
वोपि स'-वि० १।३, अथैमि वीनामनवेति-रूप०
१।४।०, दिर्गाप इति राखेत्-रूप० १।१२, (ग)
या पूरा वाच्य अब कि 'इति' शब्द वाच्य के केवल
अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाता है (वाक्यार्थशोभक)-
आस्यामि कियदुभुवो मे रथति शीर्षीकिका इति
-वि० १।१३, 2 इस सामान्य अर्थ के अतिरिक्त
'इति' के निम्नांकित अर्थ हैं (क) 'क्योकि', 'यतः'
'कारण यह कि' आदि शब्दों में व्यक्तीकरण-वैदे-
जिकोऽर्थमिति पृच्छामि-उत्तर० १ पुराणमित्येव न
माधु सर्वम्-वाचवि० १।२, प्रायः 'किम्' के साथ
(ख) अविश्रय वा प्रयोजन-रूप० १।३० (ग)
उपसंहार श्रावक (विप० 'अथ'), इति प्रथमोऽङ्ग-
-यहाँ प्रथम अंक का उपसंहार होता है
(घ) अतः, इस प्रकार, हम रीति में इत्युक्तवन्त
परिग्रह्य दोष्यामि-कि० १।१८० (ङ) इस स्वाभाव
या विवरण बाला-मोघ्य पुरुषो हस्तीनिर्जानि (च)
जैसा कि नीचे हैं, नीचे लिखे परिणामानुसार-राय
भिचानो हरिर्दिव्याच-रूप० १।३१ (-) जहाँ
तक 'की हैसियत से, के विषय में (धारिता और
सबब प्रकट करते हुए)--पितेति स पुत्र्य, अश्यागक
इति निन्द, शीप्रवति मुकरम्, निभ्रतमिति चिन्तनीय
भवेत्-सा० ३ (ज) निःसंन (प्रायः 'आदि' के
साथ) इत्युत्पुत्रिष श्रीयानित्यादी तदनन्व-चन्द्रा०
गौ पुस्तकचक्रा इत्य इत्यादी-काव्य० २, (झ) मानी
होई सम्प्रति या उद्धरण-इति प्राप्तिः इत्यपिपतिः,
इत्यमर विश्व-आदि (ञ) स्पष्टांतरण। सम०
-अर्थः सावर्ण्य, सार, अर्थम् (अव्य०) इस प्रयो-
जन के लिए, अतः-कथा अपहृति या निरर्थक बात,
-कथम्, -कथवी (वि०) नियमन उचित वा वाच-
स्वक (अन्व-यम्) कर्तव्य, दायित्व, 'ता, -कर्मता,
-कृत्यता कोई भी उचित गत वाचस्पक कार्य, -कृत्य-
तन्तुः कि कर्तव्य विमुद्ध, असमभव में पड़ा हुआ,
अवाञ्छित, हृत्तुद्धि, -वाच (वि०) इत्थमे विलग्न भागा, या
ऐसे भुज का, -कुलम् 1 घटना, बात 2 कथा, कहानी ।

इतिह (अव्य०) [इति एव ह कित्-इ० सं०] ठीक इस
प्रकार, बिल्कुल परंपरा के अनुसार ।

इतिहासः [इति + ह + आस (अच् धातु, लिट् लकार, अन्य पुं०, ए० व०)] 1 इतिहास (परंपरा से प्राप्त उपाख्यान समूह) - धर्मार्थकाममोक्षापाप्त्युपदेवसमन्वितम्, पूर्ववत् कथायुक्तमितिहास प्रथमते । 2 वीर-वाधा (जैसा कि महाभाग) 3 ऐतिहासिक माधव, परंपरा (जिसको पौराणिक एक प्रमाण मानते हैं) ।
सम् - निबन्धनम् - उपाख्यानयुक्त या वर्णनात्मक रचना ।

इत्थम् (अव्य०) [इत् + पम्] इस लिए, अतः, इस रीति से - इत्थं रते कियेपि भूतमद्वयक्यम् - पु० ४।४५, इत्थं गते - इत् परिस्थितियों के कारण ।
सम् - कारम् (अव्य०) इस प्रकार, - भूत (वि०) 1 इस प्रकार परिस्थितियों में फसा हुआ, ऐसी दशा में प्रस्त - कु० ६।२२, कथमित्यभूता - मालवि० ५, का० १४६, 2 मन्त्रा, गणालय, मही (जैमि कि कहानी), - विषय (वि०) 1 इस प्रकार का 2 इस प्रकार के गुणों से युक्त ।

इत्थं (वि०) [इत् + क्त्वात्, नृक्] जिसके पास जाया जाय, जहाँ पहुँचना उपयुक्त हो - इत्थं गित्येयं गुरु-वत्, - स्था 1 जाना, मांग 2 डालो, पालकी ।

इत्थं (वि०) (स्त्री० - री) [इत् + क्त्वात्, नृक्] 1 जाने वाला, बोधा करने वाला, यात्री 2 क्रूर, कठोर 3 नीच, अधम 4 रणित, निश 5 निश्चिंत - र. दिग्दर्श - री 1 व्यभिचारिणी, कुलटा 2 अभियारिका ।

इदम् (सा० वि०) [पु० - अव्यय, स्त्री० - इदम्, नपु० - इदम्] [इत् + कर्मिन्] 1 यह - जा मगो है (बकना क निकट की वस्तु की ओर संकेत करने हुए - इदमस्तु सविच्छेद रूपम्) इदं ननु इति पशुच्यते शा० ५, यह है कथन की सत्यता 2 उन्मिष्य, वर्तमान (यहाँ की भावना को प्रकट करने के लिए कर्त्तारक के रूप प्रयुक्त विधेयं जाते - उपमर्शिय - यह गीते में, इसी प्रकार, - इमे स्म, अयमायच्छामि - यह मैं आता हूँ) 3 यह गद्य नुग्न ही बाद में आने वाली वस्तु की ओर संकेत करना है जब कि 'एतद्' शब्द पूर्ववर्ती वस्तु की ओर अनुत्पन्नव्यय श्रेयं यदा सविच्छेदमिति - मनु० ३।१६० (अव्य० - वक्ष्य-माद्य - कुल्लु०) श्रुत्वात् इदम् 4 किसी वस्तु को अधिक स्पष्टतया या अनुत्पन्न वस्तुत्वने या कई बार शब्दाधिष्ठय प्रकट करने के लिए एक शब्द एतं, ननु एतद्, अदम्, किम् अथवा निमी पुरुष साधक सर्वनाम के साथ जुड़ कर प्रयुक्त होता है - काव्यमा-परत्थविनयम् - म० १।२५, मयम्, मांयम् - यह यहाँ, -> यम्हें तो - शा० ४, अने यहाँ ता मैं हूँ ।

इदानीम् (अव्य०) [इदम् + दानीम्, इत् + च] अब, इस समय, इस विषय में, अभी, अब भी - बतते प्रतिष्ठ-

स्वेदानीम् वा० ४, आर्येषु इदानीमिति - उत्तर० ३, इदानीमिष्ये अभी, इदानीमपि - अब भी, इन विषय में भी ।

इदानीन्तन (वि०) (स्त्री० - नी) वर्तमान, धार्मिक, वर्तमान जार्मिक ।

इदं (मू० क० इ०) [इत् + क्त] जला हुआ, प्रकाशित - इत् 1 घुस, गर्मी 2 दीप्ति, वनमः 3 आश्चर्य ।

इदम् - ध्वम् [इध्वातेऽगिनानेन - इत् + म्] इधम, विशेषकर वह जो यज्ञानि में काम आता है - रघु० १५।३०, 1 मम० - जिह्वु अग्नि, - प्रथमवचनः कुम्हारी, नुटार (परम्) ।

इध्वा [इत्थं क्त्वा - टाप्] प्रज्वलन प्रकाशन ।

इत (शि०) [इत् - नृक्] 1 पाय, शक्ति वाली, बलवान् 2 माहुरी, - अ. 1 स्थायी २ मृत्यु - शि० २।६५, 3 गजा न न महोत्तमहोत्तमपाकम् - रघु० २।५ ।

इन्द्रिन्द्रि [इत् + क्त्वात्, नि०] बड़ी मधु-मक्ती - लाभा-दिन्द्रिन्द्रिगु निपान्तम् - भाषि० २।१८३ ।

इन्द्रिरा [इत् + क्त्वात्, नि०] लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी । मम० - आत्मवत् इन्द्रिरा या आश्रय, नील कमल, शम्भिरः विष्णु का विशेषण (- वत्) नील-कमल ।

इन्द्रिराणी [इन्द्रिर + इति + ङीप्] नील-कमलों का समूह ।

इन्द्रोत्थार [इन्द्रा वाग्य इत्थम् अच् - अ० म०] नील कमल ।

इन्दु [उर्नाम स्रोतद्वयं चन्द्रिकया भूवनम् - उन्द् - उ आदेर्निच] 1 चन्द्रमा - दिव्योप, इति गजेन्दुगन्दु सौर्गिण्याविव - रघु० १।१२, 2 (सहित में) 'गर्क' की गच्छा 3 तपः । मम० कर्मण्यु मर्षेद कमल, कला चन्द्रमा की कला या अंश (द्वयं कलायां विनती में १६ है, पौराणिक कथाओं के आधार पर इन्द्र में प्रवेश करने वाला चन्द्रमा १६ देवताओं के द्वारा नियमों वाली है) - कलिका 1 केतकी का वीषा 2 चन्द्रमा की गद कला काल्प चन्द्रकान्तमणि (- सा) राग, - लय 1 चन्द्रमा का प्रतिदिन घटना 2 नृत्त-चन्द्र दिवस प्रतिपदा, - अ, - पुत्र नृत्तवह (- जा) रवा या नमदा मदी, अन्वकः सप्त, - अन्वः चन्द्रमा की कला, अर्धचन्द्र, - आ कुम्हारी, भूम्, - शोकर, - शीलि, मन्त्रक पर चन्द्र का धारण करने वाला देवता, शिव, मणि चन्द्रकान्तमणि, - अन्वकम् चन्द्रमा का परिवेष, चन्द्र मण्डल, इत्यन्तं मूर्ति, - से (रे) का चन्द्रमा की कला, - लोहकम्, - लोहम् पानी, - बहता इन्द्र का नाम है० परिभाषित, - वास्तवः मंगलवार ।

इन्दुपत्नी [इन्दु + मत्तुप् + ङीप्] 1. पृथिव्या 2 'अञ्ज' की पत्नी, 'माञ्ज' की बहन ।

इन्द्रः [इन्द्रु + र प्रयो० ऊनच्] ब्रह्मा, मूषा ।

इन्द्रः [इन्द्र + रन्, इन्द्रोक्ति इन्द्रः, इति ऐदवर्षे—मल्लि०]

1 देवो का स्वामी 2 वर्षा का देवता, वृष्टि 3 स्वामी या शासक (मनुष्याधिक का), प्रथम, श्रेष्ठ (पदाधी के किन्नी वर्ष में) : सर्वव्यवसाय के अन्तिम पद के रूप में नरेन्द्र - मनुष्यों का स्वामी अर्थात् राजा इन्दी प्रकार मृगेन्द्र-शोर,—मजेन्द्र, शोमिन्द्र कपोन्द्र,—श्री इन्द्र की पत्नी, इन्द्राणी (अन्तरिक्ष का देवता इन्द्र भारतीय आर्यों का वृष्टि-देवता है, देवों में प्रथम श्रेणी के देवताओं में इनका वर्णन मिलता है, परन्तु पुराणों की वृष्टि से यह द्वितीय श्रेणी के देवता माने जाते हैं। यह कश्यप और अदिति के एक पुत्र हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शिव के चिक से यह निम्नतर है, परन्तु यह और दूसरे देवताओं में प्रमुख है और सामान्यत इन्हें सुरेण या देवेन्द्र आदि नामों से पुकारा जाता है। जैसा कि वेदों में बर्णित है उसी प्रकार पुराणों में भी यह अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी के अधिपत्यान् देवता माने जाते हैं, इनका लोक स्वर्ग कहलाता है। यह वज्र धारण करते हैं, बिजली को भेजते हैं और वर्षा करते हैं, यह अमुरों के साथ प्राय युद्ध में लगे रहते हैं और उनका भयभीत करने रथन है, परन्तु कई बार उनमें पराजय भी हो जाते हैं। पुराणों में बर्णित इन्द्र काम-कला और श्राद्धाचार के निष्प्रे प्रख्यात है, इनका सबसे बड़ा उदाहरण उनके द्वारा नीलम की पत्नी अहल्या का मतीव्यहरण है जिसके कारण इन्द्र अहल्या-जार कहलाता है। गौतम ऋषि के साथ से इन्द्र के शरीर पर स्त्री-योगिनी त्रैवे हज्जार बिज्ज बन जाते हैं इमीलिए उसे मघानि कहते हैं, परन्तु बाद में यह बिज्ज 'जीव' के रूप में बदल जाते हैं इस लिए यह महत्त्वसे, सहस्र-योगिनी या महत्त्वसे कहलाने लगे हैं। रामायण में वर्णन आता है कि गवण के पुत्र मेघनाद ने इन्द्र को पराजय कर दिया गया वह उसे उड़ा कर लका में ले गया, इन्दी साहसिक कार्य करने के उपलक्ष में मेघनाद को 'इन्द्र-विज्ज' की उपाधि मिली। ब्रह्मा तथा दूसरे देवताओं के बीच में पदने पर कही इन्द्र का छूटकारा हुआ। इन्द्र के विषय में बहुधा वर्णन मिलता है कि वह सर्वव्यवसाय का १०० वर्ष पूरा करने में सफल रहता है, क्योंकि यह विश्राम किया जाता है कि जो कोई १०० वर्ष पूरा कर लेता, वही इन्द्र का पद प्राप्त कर लेता, वही कारण है कि वह मवर और रघु के प्रथीय बौद्धों को उड़ा कर ले गया, दे० २५० तृतीय सर्ग। यह सर्वव्यवसाय कर लेने वाले ऋषि-मनियों से बधनीत रहता है और अन्तराए भेज कर उनके मार्ग में बिज्ज डालने का प्रयत्न करता है (दे० अन्तर-रघु)। कहा जाता है कि उनमें पर्वत के पंच काट

शले जब कि वह काट देने लगे थे। उन्दी सबसे उलने बल तथा वृष की हत्या कर दी। इनकी पत्नी पुत्रोमा राक्षस की पुत्री है, इनके पुत्र का नाम उबलनी है। यह अर्जुन के पिता भी कहे जाते हैं।)। स्व०—अनुकः,—अश्वरजः विष्णु और नारायण की उपाधि,—अरिः एक राक्षस,—आयुष्मन् इन्द्र का शस्त्र, इन्द्रवधुष्प रघु० ३१४, कौरुः—1. 'मदर' पर्वत का नाम 2 बट्टान (-सम्) इन्द्र की स्वजा,—कुम्भारः इन्द्र का हाथी, ऐरावत,—कूटः एक पर्वत का नाम—कौरुः (कः),—बकः 1 बौध, शीघ्र 2 ज्यैष्ठ्याम् या सम-मल बना चवुनार 3 मूर्ती या श्रेष्ठेज जो दोबार के साथ लगा हो,—गिरि महेंद्र पर्वत,—गुहः,—आश्राय इन्द्र का अध्यात्मक, अर्थान् बहुस्मृति,—शोचः,—शोचक एक प्रकार का कीड़ा जो सफेद वा लास रग का होता है,—आयुष्मन्,—अनुक (मनु०) 1 इन्द्रवधुष्प 2 इन्द्र की कमान,—आसम् 1 गरु प्राण त्रिम अर्जुन में प्रयत्न किया था, युद्ध का शीघ्र-पंच 2 जादुवरी, वाजीगरी—स्वनेन्द्रबालमदन मनु जीवमोक —शा० २१२, बालिक (वि०) छपपूर्य, अमान-विक, भगवत्सु (—क) वाजीगर, जादुगर,—जिन् (पु०) इन्द्र को जीतने वाला, रावण का पुत्र जो लक्ष्मण के द्वारा मारा गया। रावण के पुत्र मेघनाद का दूसरा नाम 'इन्द्रविज्ज' है। जब रावण ने स्वर्ग में जाकर इन्द्र में युद्ध किया तो मेघनाद उसके साथ था—बह बड़ी बट्टाएंगे के साथ लडा। 'शिव' ने अदृष्ट होने की शक्ति प्राप्त कर लेने के कारण मेघनाद ने अपनी इस जादू की शक्ति का उपयोग किया, फलत इन्द्र को बाप बर बह उने लका में उठा लाया। ब्रह्मा तथा अन्य देवता उसे मृत्यु करने के लिए आये और उन्होंने मेघनाद की 'इन्द्रविज्ज' की उपाधि दी, परन्तु मेघनाद इन्द्र का मृत्यु करने के लिए राजी न हुआ जब तक कि उसे प्रमत्ता का बर्दान न दिया जाय। ब्रह्मा ने उसको इस अर्जुन-मर्ष की भावने से इकार कर दिया, परन्तु मेघनाद अपनी मांग का निरन्तर आग्रह करता रहा और अन्त में अपना अर्माट प्राप्त कर लिया। रामायण में लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का शिर काटे जाने का वर्णन है जत कि वह यज्ञ कर रहा था।) हेंतु,—विश्वविज्ज (पु०) कश्मण,—कुलम्,—कुलकम् रुई का गर्दा,—बाकः देव-दाक का वृक्ष,—नीलः नीलकान्तमणि,—नीलकः पद्मा,—पत्नी इन्द्र की पत्नी शची,—पुरीक्षितः बृहस्पति,—प्रत्यम् यमुना के किनारे स्थित एक नगर जहाँ पांडव रहते थे (यही नगर आज काल कर्नाटक जिल्लो है)।—इन्द्रग्रन्थमस्तवत्कारि मा मनु वैश्वः—वि० २१६३,—अष्टवधुष्प इन्द्र का शस्त्र, बज्र,—मेघवधुष्प

सोड, — बहः 1 इन्द्र के सम्मान में किया जाने वाला उत्सव 2, बरसात, — सौकः इन्द्र का समाग, स्वर्गलोक, — बसा, — बसा दो उद्यो के नाम दे० परिशिष्ट, — बहः 1 इन्द्र का शत्रु या इन्द्र को भगने वाला (जब कि स्वरापात अन्तिम स्वर पर है), प्रह्लाद का उपाधि, रघु० ७।३५, 2 इन्द्र त्रिसका शत्रु है, वरु का विशेषण (जब कि स्वरापात प्रथम स्वर पर है) [वह घटना सातपुत्र शास्त्रण के एक उपपन्नान की ओर संकेत करती है, यहाँ बललाया गया है कि वरु के पिता न अंजन पुत्र को इन्द्र के मारने वाला बनाने का विचार किया और उसे "उन्द्रशत्रुवपसव" बोलने को कहा, परन्तु भूल से उनसे प्रथम स्वर पर बलाघात किया और इन्द्र के द्वारा मारा गया - तु० निशा-५२-मंत्रों हीन स्वस्तो बर्षों वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्षमसि, म वाजसो वज्रमान हिनस्ति मर्षद्वयानु स्वस्तो गगघात् ।] शक्य एक प्रकार का कीड़ा, बीरबहुटी, सुत, — शुभ (क) जयला या नाम (ख) अर्जुन का नाम (ग) गान्धर्वज शक्ति का नाम, — सेनानी: इन्द्र की सेनाओं का नेता, कान्तिकेय की उपाधि ।

इन्द्रम् [इन्द्रन्प राज क मुख यव—तारा०] सभा-अवन, बड़ा मकरा ।

इन्द्रायी [इन्द्राय पत्नी आनुक् + डीप्] इन्द्र की पत्नी, शची ।

इन्द्रियम् [इन्द्र + प-इय] । वल, शक्ति (वह गुण जो इन्द्र में विद्यमान था) 2 शरीर के वह अवयव जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्ति किया जाता है, जैसे अवयव (इन्द्रिया) दो प्रकार के हैं (क) ज्ञानन्द्रियाँ या बुद्धीन्द्रियाँ—ध्यान त्यरुचक्षुषी जिह्वा नासिका श्रैव पचमी (शुष्क के अनुसार 'मर्' भी) (ख) कर्मन्द्रियाँ—पापुपत्र हस्तपाद शक् चैव दशमी स्मृता मु० २।१९, 3 शारीरिक या पुरुषोचित शक्ति, ज्ञानशक्ति 4 वीर्य 5 पाच की सख्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। सम०—अगोचर (वि०) जो दिव्यदर्श न दे सके, —अर्षः 1 इन्द्रियों के विषय (वह विषय वे हैं— रूप वासो गंधरसस्पर्शविषय अमी—अमर०), अग० ३।२४, रघु० १।३।२५, आश्वत्थम् इन्द्रियों का आवास अर्णव शरीर,—गोचर (वि०) जो इन्द्रियों द्वारा देखा जा जाना जा सके (—र) ज्ञान का विषय, प्रायः, —अर्षे: इन्द्रियों का समूह, समष्टि रूप से प्रहण की गई पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ—बलभानिन्द्रियघामो विद्वानमपि कर्षति—मनु० २।२।१५, निर्बंधार मधुतीन्द्रियवर्ग—शि० १०।३, — शक्य वेतना, प्रत्यक्ष करन की शक्ति, निष्कः ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण,—बसः अज्ञेयता,—विप्रति-पत्तिः (स्त्री०) इन्द्रियों का उन्मादंगमन,—सप्तशक्यः

ज्ञानेन्द्रिय का मणक (बाहेर वह बाह्य विषयो में हो या मन में) स्वल्प अज्ञेयता, अज्ञेयता, जडिगा ।

इन्द्र्य (न० आ०) [इद्रे या इयं, इड्] प्रज्वलित करना, जलाना, आग लगाना, (कर्मवा०—इन्द्र्यते) जगाया जाना, प्रदीप्य होता इद्रे उठना, सम्, प्रज्वलित करना ।

इन्द्र्य [इन्द्र्य् + घञ्] इवन, (लकड़ी कोयला आदि) । **इन्द्र्यन्म्** [इन्द्र्य् + ल्यट्] 1 प्रज्वलित करना, जलाना 2 इवन (लकड़ी आदि) ।

इभः [इ + भृत्, क्तिञ्] हाथी, —भी हथिनो । सम० — अरिः सिंह, — आनन गणेश मु० 'गजानन' निमी-सिका बभुराई, वडिभमा, मतकीना,—चालक महावन,—योदा अन्वयवस्तः हथिनो,—पोतः अन्वयवस्तः हाथी, हाथी का वक्ता, पयसि (स्त्री०) हथिनो ।

इभ्य (वि०) [इभ मजयर्हेति यत्] घनाभ्य, घनवान् — म्य 1 राजा 2 महावत,—भ्या हथिनो ।

इभ्यक (वि०) [स्वार्थे कन्] घनाभ्य, घनी ।

इभ्यत् (वि०) [इडम् + कनुप्] इमाना अधिक, इतना बढ़ा, इतने विभवार का—इयत्तयात्, वम० १३, इवान्त वर्षाणि तथा महोद्यम येषु० १३।०, इतने वर्षे— इय नीतिरितीयोर्णी—शि० २।३०, इतनी ।

इष्यता, इष्यस्वम् [इयत् + तत् + टाप्, लृक् वा] 1 (क) इतना, निश्चित मात्र या परिमाण—ईडम्नया क्यभियचनया वा—रघु० १३।५, न + यम परि-च्छेत्सुमिषणयालम्—२।७७ (ख) सीमित सख्या, सीमा—न मुषानोभियनया रघु० १०।२८, 2 सीमा, मानक ।

इरणम् [ऋ + अण् + ष्यो०] 1 मरुत्त 2 रिहाली या लुनई भूमि, बज्रर भूमि, मु० 'दग्नि' ।

इरस्वस्व [इरया जलेन माद्यन्ति वचंते इति इरा-मद् + स्वत्, ह्रस्व मुम्] 1 बिकली की कौष, बिकली के गिरने से पैदा हुई आग, 2 आडवाजल ।

इरा [इ + नृन्, इ काम गति ग + क वा तारा०] 1 पृथ्वी 2 वनता 3 वाणी की देवता सस्वन्ती 4 जल 5 आहार 6 मदिरा । सम०—ईशः वरुण, विष्णु, यमोऽ, —अरुण ओंश, इमी प्रकार 'इगवर्ष्य' ।

इरावत् (पु०) [इग + मनुप्] समृद्ध ।

इरिस्वम् [ऋ + इन्द्र्य क्तिञ्च] लुनई भूमि, रिहाली जमीन ।

इरिषि - लु (वि०) [उर्वे + आत्, ष्यो०] नाशक, हिंसक — च. (पु० स्त्री०) ककडी ।

इत् (पु० पर०) [इलति, इन्ति] या (चु० उभ०) 1 जाना, चलना-फिरना 2 सोना 3 फेरना, भेजना, डालना ।

इत्ता [इन् + क् + टाप्] 1 पत्नी 2 गाय 3 अक्नुना —दे० 'इडा' । सम० शोकः कम् पृथ्वी, धरती भूमरल,—भरः पहाड़ ।

इकिा [इका + कन्, इक्त्] पृथ्वी, धरती ।
इक्त्वा—का: [इ + क्त्] [इक् + क्त, इक् + क्त + क्त + क्त वा] मृगशिरा नखन के ऊपर स्थित पाँच छारे ।

इच (अच्य०) [इ + चन्त् वा०] 1 की तरह, वैसे कि (उपमा दधाति इष्ट) —वाग्विचि तत्कौ—रघु० १।१, 2 मानों, (उपेक्षा को दधाति इष्ट) —पर्यायीक विभाकिनम्—रु० १।६, लिप्यतीच तमोज्ञानि वर्णवीबाञ्जन नभ—मृच्छ० १।६४ 3 कुछ, थोड़ा सा, कदाचित्—कडार इवायम्,—मृग०, 4. (प्रत्य-वाचक शब्दों से जुड़े हुए) 'संभवतः' 'कतलाइये तो' 'निम्नस्तेह'—विना सीता देव्या किमिच हि न दुःख म्पु-पते --उत्तर० ६।३०, क इव— किम प्रकार का, किस भाति का, मुहुर्मयिच—केवल क्षण भर के लिए, किचि-दिच—बरा सा, थोड़ा सा, इसी प्रकार ईषदिच, नाचि-रादिच आदि ।

इशीका—शीका ।

इष् (क) (तु० पर०) (इच्छति, इष्ट) 1 कामना करना, चाहना, प्रबल इच्छा होना इच्छामि सब-विनमात्रावा से कु० ३।३, 2 छोटना, 3 प्राप्त करने का प्रयत्न करना, तकाश करना, दूटना, 4 अनुकूल होना 5 ही करना, स्वीकृति देना (भा० वा०) 1 चाहता जाना 2 नियत किया जाना हस्तच्छेदन-मिष्यते मनु० ८।३२२, अन्—, दूटना, कोशिस करना, प्रयत्न करना, अचि, जो करना, चाहना, धरि—, दूटना, प्रति—, प्राप्त करना, स्वीकार करना देवस्य गामन प्रतीप्य- रा० ६, (स) (दि० पर०) (इष्टयति, इष्टिय) 1 जाना, चलना-फिरना 2 कैलाना 3 डालना, फेंकना अन्—दूटना, ईदने के लिए जाना— न रत्नमन्विष्यति मयते हि नत्— कु० ५।२५, प्र—(प्राय 'प्रेर०') 1 ० च देना, डाल देना, फेंक देना—मट्टि० १५।३३ 2 भेजना, प्रेषण करना—किप्रथमपय पेरिगा म्पु ग० ५, (ग) (भा० उभ०) (एदिा) जाना, चलना-फिरना, प्रव—, अन् सरन करना ।

इच: [इच् + अच्] 1 बचानी, शक्ति मन्त्र 2 अचिचन मात्र, —अचिचिनेऽचिचिनेसपक्षत सि० ६।४९ ।

इचि (शी) का [इच् ग-गादी वन्त् अत इचम्] 1 सरपट्टा, नरकुल, अच्यम् म्पु० १२।२३ 2 बाण ।

इचिर: [इच् + किरच्] अचि ।

इच् [इच् + उ] 1. बाण 2. पाँच की संख्या । सम०—अचम्—अनीकम् बाण की लोक,—अचलम्,—अचम् वन्त्, रघु० ११।३७, —आजः 1 वन्त् 2 वन्त्, योडा, भग० १।४, १७,—कारः—इत् (ए०) बाण बनाने

वाला, —चरः—भूत् वन्त्, —वचः, —विशेषः तीर जाने का स्थान, बाण का परात,—प्रबोधः बाण छोड़ना, तीर चलाना ।

इचुषि: [इच् + षा + कि] तरकल ।

इष्ट (तु० क० छु०) [इच् + क्त] 1 कामना किया गया, चाहा गया, जो से चाहा हुआ, अमिलपित 2 मिय, पसंद किया गया, अनुकूल, प्यारा 3 पूज्य, आदरणीय 4 प्रतिष्ठित, सम्मानित 5 उत्कृष्ट, यहाँ से पूजा गया—अः प्रेमी, पति,—अन् 1 चाह, इच्छा 2 सत्कार 3 यज्ञ, (अच्य०) स्वेच्छापुर्वकः । सम०—अचः अभीष्ट परार्थ,—आपत्तिः (स्वी०) चाही हुई बात का होना, चाही का अर्थवा जो प्रतिचाही के जी अनुकूल हो—इष्टपत्नी घोषान्तरमाह—अन०,—अच्य (वि०) सुपय युक्त (—अः) सुपयित परार्थ (—अन्) रेत,—अचः,—इच्छता अनुकूल देन, अमिनाचक देव ।

इच्छका [इच् + तक्त्] इष्ट-मृच्छ० ३ । सम०—मृह् इटों का चर,—चित्त (वि०) इटों से बना (इष्टकथित) मी,—अवातः चर की नीच रचना,—अचः इटों से बना मार्ग ।

इच्छापुस्तम् [महाहार इ० स० पूर्वपदवीधं] यज्ञादिक पुष्प-कापी का अनुष्ठान, कूर्प अनुष्ठान तथा सुदूरे चर्मकारों का सम्पादन—इष्टापुर्वीधे सपलसमानात्—महावी० ३।१ ।

इचि: (स्त्री०) [इच् + कित्] 1 कामना, प्रार्थना, इच्छा 2 इच्छक होना या कोशिस करना 3 अभीष्ट पदार्थ 4 अभीष्ट नियम या आवश्यकता की प्रति (माध्यकार द्वारा कात्यायन के शानिको अथवा पतञ्जलि के माध्य में कुछ अनिश्चित जोड़ना—इष्टयो माध्यकारम्) तु० 'उपमन्थानम्' 5 आवेग, शीघ्रता 6 आशयच, आवेग 7 यज्ञ । सम०—अचः कचन, इसी प्रकार 'मृच्,—पशुः यज्ञ में भलि दिया जाने वाला जानवर ।

इष्टिका [इष्ट + तिकृत् + टाप्] इष्ट आदि, दे० 'इष्टका ।

इष्क: [इच् + म्क] 1 कामदेव 2 वसन्त ऋतु ।

इष्कः अन् [इच् + क्त्] वसन्त ऋतु ।

इच् (अच्य०) [इ काम स्थिति—सो + कित् म्ि० ओमोप] कोच, पीडा और चोक की भावना को अभिव्यक्त करने वाला विरमयादि शौचक अच्यम् ।

इह (अच्य०) [इच् + ह इषादेय] 1 यहाँ (काल, स्थान या दिशा की ओर संकेत करते हुए), इस स्थान पर, इस दशा में 2 इस लोक में (वि० परब्र वा अन्तु) । सम०—अन्तु (अच्य०) इस लोक में और परलोक में, यहाँ और वहाँ,—लोकः यह गत्वार या जीवन,—अच्य (वि०) यहाँ विद्यमान ।

इहृत् (वि०) [इहृ + त्प] यहाँ रहने वाला, इस स्थान का, इस लोक का ।

ई

ई (पुं०) [ई + शिच्] काश्चिद् (अच्०) (क)
 शिष्टता (ख) पीडा (ग) शोक (घ) क्रोध (ङ)
 अनुकथा (च) प्रत्यक्षज्ञान या चेतना (छ) तथा
 स्वार्थन की भावना की अभिव्यक्त करने वाला विलम्ब-
 याचिद्योक्त अव्यय ।

ई (क) (रिचा० वा०) (ईसते) जाना (ख) (अवा०
 पर०) 1 जाना 2 चमकना 3 व्याप्त होना 4 बाहना,
 कामना करना 5 फेंकना 6 खाना 7 प्रार्थना करना
 (आ०) 8 गर्मबत्ती होना ।

ईष् (आ० पर०) (ईसते, ईसित) 1. देखना, ताकना,
 झालोचना करना, अवलोकन करना, टकटकी लगा कर
 देखना या घूरना 2 खयाल रखना, विचारना, सम-
 खाना - सर्वभूतस्वमात्मान - ईसते योग्युक्तारता -
 भा० ६।२९, 3 हिसाब में लगाना, परखाह करना
 - नाभिजनमीसते - का० १०४, न कामभूतिवचनीय-
 मीसते - कु० ५।८२ 4 सोचना, विचार करना
 - तस्यै एसात बहुव्यां प्रजापेय - छा० 5 साधनान
 रक्षना या किली के भले बुरे का ध्यान करना (सम्प्र०
 के साथ) - कुल्पाय ईसते मार्ग - सिद्धा० (लुभाषाम्
 पराशोचयति इत्यर्थ) अश्वि - आशका करना
 कुक्कचकिलो लोक सत्येव्यगममीसते - हि० ५।१०२,
 बने० वा०, अन्व - ध्यान में रखना, सोच करना,
 दृढ़ता, दृष्ट-नाष्ठ करना, अच - 1 प्रतीक्षा करना,
 इंतजार करना - न कालमेषसते स्नेह मुञ्च० छ, 3
 कु० ३।२६ 2 आचर्यकता होना, बकरत होना, कर्मी
 होना - ताम्बार्थी सत्कथिरिच इव विद्वानेषसते - शि० ।
 २।८६, विष्णु० ४।१२, कु० ३।१८ 3 सावधान
 रहना, खयाल रखना, ध्यान रखना - किमपेक्ष फलम्
 कि० २।२१, वल लब्धोऽयं व्यञ्जकत्वेऽनिरमपेक्षते
 - सा० ५० ४, हिसाब में खाना, सोचना, विचार
 करना, आदर करना (प्राय 'न' के साथ) - तदानपेक्ष्य
 स्वशरीरभार्यम् - कु० ५।१८, अश्वि - की ओर
 देखना, अच - 1 दृष्टि शालना, प्रेषण करना, अव-
 लोकन करना 2 निशाता लगाना, ध्यान में रखना
 - पोत्यमानानपेक्षेऽन्व - भा० १।२८, सम्मान
 करना - रघु० ३।२१, विविधोत्सुक्यापेक्ष्य प्राय
 - ८।६०, मेरे सम्मान की जातिर 3 रक्षवाली करना,
 रक्षा करना - लम्प्या दुहितरयरेक्षस्य - उत० १,
 4 सोचना, विचारना - यदवाचयदस्य मानिनी - कि०
 २।३, उच - 1 दृढ़ता, सोचना, देखना - सप्रधान-
 मुदीक्षिता - कु० ६।७, ७।६७, 2 प्रतीक्षा करना
 - नीणि वयोप्युदीक्षत कुमार्यनुमती मनी - मनु० ९।
 १०, अच - 1 आशा करना, अभिष्य में देखना,

उत्प्रेक्षमाणा अचनाभिषातम् - मुहा० २, 2 अनुमान
 लभाना, अज्ञात करना - किमुःशेषे कुतस्त्वोऽप्यभिषा-
 - उत्तर० ४, 3 बिस्वास करना, सोचना - उत्प्रेक्षानो
 बय तावन्मनिषत् विभीषणम् - रामा०, अश्वि - मुहं
 ताकना, उच - 1 अश्वेहलना करना, नजर अबाज करना,
 परखाह न करना, - उत्प्रेक्षते व स्वधकम्बिनीर्जटा - कु०
 ५।४७, रघु० १।४।३४, 2 भाग जानने देना, जान देना,
 टाकमटोल करना, - नोपेक्षते क्षणमपि राजा साहसिक
 नरम् - मनु० ८।३।४४ 3 ध्यान में देखना, विचारना,
 निर - 1 टकटकी लगाकर देखना, घूरी तरह से
 देखना, - येन्वा ... निरीक्षमाण सुतरा दयात्
 - रघु० २।५२, मग० १।२२, मनु० ५।३८, 2 ईदना,
 खोजना - निरीक्षते केनिषत प्रविश्य क्रमेण कटक-
 जालमेव - विष्णु० ७, परि - 1 अश्च करना, ध्यान-
 पूर्वक जांच पड़ताल करना - अतः परीक्ष्य कर्तव्य
 विद्योवास्वगत रघु - श० ५।२४, मासिक १।२, मनु०
 १।१४, 2 परीक्षण करना, जांच करना, परीक्षा
 लेना - माया मयोद्वाभ्यपरीक्षितोऽसि - रघु० २।६२,
 यत्नत्परीक्षित पुण्ये - याज्ञ० १।५५, पौरुष के विषय में
 ध्यानपूर्वक जांच गया प्र - 1, देखना, ताकना, प्रत्यक्ष
 करना - तमाद्याल प्रक्ष्य - पच० १, रघु० १२।४४,
 कु० ६।४७ मनु० ८।१४७ प्रति - 1, इन्तजार करना
 - सपत्स्ये व काशोऽयं काल कश्चित्प्रतीक्ष्यताम् - कु०
 २।५४ मनु० १।७७, प्रतिधि - 1, प्रत्यवलोकन करना,
 शि० - 1, देखना, ताकना, - न वीक्ष्य वपयुमनी - कु०
 ५।८५, अच - 1, ध्यान करना, खयाल रखना, सम्मान
 करना (प्राय 'न' के साथ) - न व्यपेक्षत समनुसुका
 प्रजा - रघु० १।१६, सच - 1, देखना, ताकना
 2 चिन्तन करना, विचार करना, हिसाब में लगाना
 - तेजसा हि न बय समीक्ष्यते - रघु० १।११, कु०
 ५।१६, 3 ध्यानपूर्वक जाचना - अस्वीक्ष्यकारिन्,
 सच - 1, देखना, निरीक्षण करना, 2 सोचना
 समुप - 1, अश्वेहलना करना, निरादर करना - वे० 'उच'
 अच ।

ईक्षक [ईश् + श्च्] वक्षक ।

ईक्षण [ईश् + नृत्] 1 देखना, ताकना 2 दृष्टि, दृश्य
 3 अश्च - इत्यदिशोभासिनेक्षण - रघु० २।२७,
 इसी प्रकार 'अलोकेशणा' ।

ईक्षिष्क [ईक्षण + श्च्] अंशित्वी, प्रविष्यवक्ता ।

ईक्षति [ईश् + शिच्] देखना, दृष्टि - ईक्षतेर्नाश्चम्ब्यम्
 - अष्ट० ।

ईक्षा [ईश् + श्च् + टाच्] 1 दृष्ट 2 नजर डालना,
 विचार करना ।

ईक्षिका [ईम् + क्त्वा, ईक्षा + क्त्वा + टाप् वा इत्यम्] 1. बीज
2. झांझना, झलक ।

ईक्षित (इ० क० क्त्वा) [ईम् + क्त्वा] देखा हुआ, ताका
हुआ, लपटा किया हुआ, -तम् 1. बुद्धि, वृष्य 2. बीज
-अभिमुखे मेयि सहस्रयोगिनान्-वा० २।११ ।

ईष्, ईष् (म्वा० पर०) (ईक्षति, ईक्षित) 1. जाना,
हिसना-बुलना, डीबाडोल होना, प्रे०-भूषना, भूषना
2. हिसाना, प्र-हिसाना, कगमगाना-प्रैक्ष्ण्य क्षुधिता
सिति-अट्टि० १।७।०८, प्रेक्ष्ण्यभूमिभूष-वा०
१।५, मयत् १ ।

ईष्, इष्म् (म्वा० आ०) 1. जाना 2. निरा करना, कलंक
लगाना ।

ईष् (अदा० आ०) (ईडे, ईषित) स्तुति करना-अभि-
नीक्ष दुरोहितान्-अट्टि० १।११ शोकान्तामभवदीक्ष-
मान-रघु० १।८।१७, अट्टि० १।५।७, ८।१५ ।

ईषा [ई + अ + टाप्] स्तुति, प्रशंसा ।

ईष्य (स० क्त्वा) [ईष् + क्त्वा] प्रशसनीय, स्वाभ्य-मनस्य
नीक्ष्य भवत पितेव-रघु० ५।३५

ईतिः (स्त्री०) [ई + क्तिच्] 1. महामारी, दुःख, मौलव ।
सकट, ईति बहुधा ६ कही जाती है-1. अतिपृष्टि
२ अनापृष्टि ३ टिड्डीबिल ४ चूहे ५. लोहे बीर
६ बाहर से आक्रमण-अतिपृष्टिरेनापृष्टिः साक्षमा
मुषका मुषका, प्रत्यासथासथ राजान् कवेता इत्ययः
स्मृताः । -निरातका निरीतव-रघु० १।१३,
2. सकामक रोग 3 (विदेश में) भूमता विदेश यात्रा
4 दगा ।

ईष्णा [ईष् + तल् + टाप्] गुण (विप० 'दुषस्ता')-विष्णो
रिवास्थानवधारणीयम् ईष्णनावा क्यमित्यथा वा
-रघु० १।१५ ।

ईष्ण-क (वि०) (स्त्री०-कौ-कौ) (ईष्ण्य की)-ऐसा, इस
प्रकार का, इस पहलू का, ऐसे गुणों से युक्त ।

ईष्णा [आप् + षिष्ठा - आप् + सन् + ष] 1 प्राप्त करने की
इच्छा 2 कामना, इच्छा ।

ईष्णत (वि०) [आप् + सन् + ष] इष्णित अभिप्रेत,
प्रिय-तम् इच्छा, कामना ।

ईष्णु (वि०) [आप् + सन् + उ] प्राप्त करने का प्रयत्न
करने वाला, प्रयत्न करने की कामना या इच्छा करने
वाला (कर्म० और शुभ० के साथ परम्पु प्राप्त, समाप्त में)
-सौरभ्यमीप्सुर्निते से मुक्षमाकृतस्य रघु० ५।१३ ।

ईर् (अदा० आ०) (ईर्, ईर्ष) (म्वा० पर० की)
(कामान् - ईरित) 1. जाना, हिसना-बुलना, हिसाना
(सक० की) 2 उटना, निकलना, उगना; (पुत्रा०
-उम०) वा जेर० (ईरमति, ईरित) 1. जेकना,
जोडना, (लीर) कलना, शकना-देरिरेण्य महाहूमम्
-अट्टि० १।५।२ 2. कृपना, उच्चारण करना,

दोहराना -इरीरेण्यवीच तथा निरीरि-नै० १।५।२१,

शि० १।६६, शि० १।२६, रघु० १।८, वा० १।२५

3. बचाना, हिसना-बुलना, हिसाना-वादेरितरप्य-

वापुभिः-वा० १, 4. निवृत्त करना, काय लेना,

अ-उटना (जेर०) 1. कृपना, उच्चारण करना,

कमन करना, जोकना, -अदीरिडोर्नः पशुपापि गृह्यते

-पद्य० १।४१, रघु० २।६, 2. आने प्रवृत्त करना

-यद्यथाको वपुदीरिपिप्यति-रघु० ८।६२ 3. जेकना,

(वासा बादि) मुककाना रघु० १।१८, 4. (पुक्ति

बादि) उटना 5. प्रशंसन करना, प्रशंसित करना,

प्र-1. शकना, जेकना-वा० २।२ 2. जेरित करना,

पकेलना-रघु० ५।२५, 3. उकसाना, मककाना,

पलाना, अ-1. कृपना 2. हिसाना, हिसना-बुलना,

सम्पु-1. कृपना, शोकना ।

ईर्यः [ईर् + क्त्वा] वानु, -मन् 1. मुख्य करने वाला,

हिसाना वाला, बचाने वाला, 2. जाने वाला 3.-इर्य ।

ईरिय (वि०) [ईर् + इन्] मन्स्यक, बंधर, -मन् अन्तर,

बन्धर भूमि-मूर्त्तनिव निःसम्भवादीरीरिप्यनिवन्

-रामा० ।

ईर्यं = ईर्यं ।

ईर्यन् [ईर् + मन्] वाच ।

ईर्यं [ईर् + क्त्वा + टाप्] (वाकिक विषय के रूप में) इधर

उधर भूमता ।

ईर्यक (पु० स्त्री०) [ईर्य क्त्वा + उन् वा०] कर्की ।

ईर्यं = ईर्यं ।

ईर्यं, ईर्यं (म्वा० पर०) (ईर्यति, ईर्यित) बाहु करना,

ईर्यात् होना, हुसरो की सकलता को देखकर अच-

हित्यु होना, (सम० के साथ)-इत्ये ईर्यति-शिखा०,

शि० ८।३६ ।

ईर्यं, ईर्यं, ईर्यक (वि०) [ईर्यं + अन्, उन्, क्त्वा वा]

बाहु करने वाला, ईर्यात् ।

ईर्यं, ईर्यं [ईर्यं + अन्, ईर्यं + क्त्वा, यकीपः] बाहु,

बलन, हुसरो की सकलता को देखकर बलन पैदा

होना ।

ईर्यं (सं) सु, ईर्यं (सं) (वि०) [ईर्यं + आन्, उ वा]

बाहु करने वाला, अर्थात् ।

ईरिः (स्त्री०) [ईर् + क्ति ष] एक इषियात्,

इषा, छोटी तलवार ।

ईर् (अदा० आ०) (ईर्, ईरित) 1. उच्च करना, स्वामी

होना, शासन करना, बाधेना देना (सं० के साथ)

-अर्वाणाभीधिते त्वं मयसि च निराधीयस्ये वा-

र्यन्-अर्द० १।३० 2. दोग्य होना, सक्ति रखना,

(पुत्र० के साथ) वापुर्वनीये इरिणम् इहीतुम्

-रघु० ८।१३, 3. स्वामी होना, अधिकार में

करना ।

द्वि (वि०) [ईप् + क] 1 अग्रजाने वाला, स्वामी, मालिक, दे० नीचे 2 दासिदासी 3 सवोपरि,—का 1. मालिक, स्वामी (सब० के साथ या समास में), कर्षिबीया मनसां वसन्तु—कु० ३।३४ इसी प्रकार ब्राह्मी और बुरेसा भावि 2 पति 3 ग्यारह ४. शिव, —सा 1 दुर्गा 2 ऐश्वर्यशालिनी स्त्री, ब्रह्माव्य महिला । सम०—शोकः उत्तर पूर्वी दिशा,—दुरी,—नगरी बनारस, बाराणसी, सखः कुबेर का विशेषण ।

द्विजानः [ईप् + ङी + क्त] 1 शासक, स्वामी, मालिक 2 शिव—कु० ७।५६ 3 मूर्ध (शिव के कर्ण में) 4 विष्णु,—श्री दुर्गा ।

द्विजाना-स्वम् [द्विजाना + स्वम्] 1 शिव + तत् + टाप्, स्वक वा । सर्वोपनिता, महत्त्व, शिव की आठ सिद्धियों में एक, दे० 'अविनय' या 'मिद्धि' ।

द्विखर (वि०) (स्त्री०—रा—री) 1 तमिलमध्यम, घोष, समर्ष (तुमुन् के साथ) कु० ४।११, 2 ब्रह्माव्य, लोकतम्य,—ः 1 मालिक, स्वामी—ईश्वर साको-अंत सेवते—मुद्रा० १।१४ 2 राजा, राजकुमार, शासक 3 ब्रह्माव्य या ब्रह्म आरमी—मा प्रथमेश्वरं वसन्तु हि० १।१५, तु० 'उलटे हाथ बरेली की' 4 पति—कि० १।१९, 5 परमेश्वर 6. शिव—विष्णु० १।१ 7 कामदेव,—रा,—री दुर्गा । सम०—निषेधः परमात्मा के अतिरिक्त को न मानना, नास्तिकता,—मुद्रक (वि०) पुण्यात्मा, प्रवत,—सघम् (तपु०) मन्दिर,—सम्भु राजकीय दरबार या सभा ।

द्वि (स्त्री० उच०) (ईपि-ने, ईपित) 1 उड़ जाना 2 देखना, मकर बालना 3 देना 4 मार बालना ।

द्विः [ईप् + क] आधिक्य मात्र, तु० 'द्वि' ।

द्विम् (अध्य०) [ईप् + अति] 1 अर, कुछ सीमा तक,

थोड़ा सा—ईयन् भूमिगतानि—दा० १।३ । सम०—उष्ण (वि०) तुनमुना -कर (वि०) 1 थोड़ा करने वाला अन्यास पूरा हो जाने वाला,—अलम् उषणा पाणी,—वाष्प (वि०) हल्का पीला, कुछ सफेद,—पुष्पः अन्न और भूमि अविन,—रत्न (वि०) पीला लाख, हल्का लाल,—सम्भ—प्रसम्भ (वि०) थोड़े से से सुलभ,—हस्तः थोड़ी हथी, मुक्कराहट ।

द्विषा [ईप् + क + टाप्] 1. राक्षी की कड़, 2 हलस ।

द्विषिका [ईया + क्त, इत्थम्] 1 हाथी की आँसू की पुननी 2 रत्नाज की कृषी 3 हृदियार, तीर, बाण ।

द्विषिः [ईप् + किरिच्] अग्नि, आग ।

द्विषीका [ईप् + क्वृन्, इत्थम्, दीर्घश्च] 1 रत्नाज की कृषी, 2 ईट 3 इषीका ।

द्विष्णु -ष्ण-—इष्ण, इष्ण ।

द्वि (स्वा० जा०) (ईहते, ईहित) 1 कामना करना, चाहना, मोचना (कर्म० या तुमुन् के साथ) —अग० १।१०, भट्टि० १।११ 2 प्राप्त करने का प्रयत्न करना 3 लक्ष्य बनाना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, कोशिश करना,—माधुर्वं मधुविमुना रथयितुं क्षार-म्बेरीहते—मर्तु० २।६, बाज० २।१६, सम्—1 कामना करना, इच्छा करना, 2 करने का प्रयत्न करना, कोशिश करना प्रयागि वञ्छ-वमुभि समी-हितुम्—कि० १।११ ।

द्विः [ईप् + अ] 1 कामना इच्छा 2 प्रयत्न, प्रयास, चेष्टा मनु० १।२०५ । सम० भृगु 1 भेड़िया 2 नाटक का एक अङ्क जिसमें ४ अङ्क होते हैं परिभाषा के लिए दे० सा० ६० ५१८, वृक भेड़िया ।

द्विहित (भू० क० कृ०) [ईप् + क्त] 1. चाह हुआ, मोचा हुआ, प्रयत्न किया हुआ— तम् 1 कामना, इच्छा 2 प्रयत्न, प्रयास, 3 अध्ययन कार्य, कर्म—कि० १।२२ ।

३

कः [अच् + क्] शिव का नाम, ओम् के तीन अक्षरों (अ-उ+म्) में से दूसरा—दे० अ.—(अध्य०) 1 पूरक के रूप में काम में आने वाला अध्यय—उ उमरा—सिद्धा० 2 विभिन्न अर्थों को प्रकट करने वाला विन्म-वाचिच्छोक्त अध्यय, (क) तुकार,—उ मंगि माभा तपनो निषिद्धा पश्चात्तुमाख्यां तुयुषी जगाम—कु० १।०६ (स) शीब (ग) अनुकम्पा (घ) आदेश (ङ) स्वीकृति (च) प्रयत्न वाचकता या केवल (छ) पूरणाधिक, श्रेय्य साहाय्य

में मुख्य रूप से अर्थ (अर्थों), न (नों) और किम् (किम्) के साथ प्रयुक्त होता है, दे० शब्दों को ।

उत्त (भू० क० कृ०) [वच् + क्त] 1 कहा हुआ, बोला हुआ 2 कथित, बताया हुआ (वि०) अनुमित या सम्भावित 3 बोला हुआ, मन्नाथिल—असाधनुको-पि सहाय एव—कु० ३।०६ 4 वर्णन किया गया, बयान किया हुआ,—सम्भु नापण, प्रवसन्मुष्णय, वाक्य । सम०—अनुमत कृता और विना कहा हुआ,

--उपसंहारः संक्षिप्त वर्णन, धाराय, इतिथी,--निबन्धः कठो वाग का निर्बाह करना, वृष्णः ऐसा शब्द (स्वी० वा न्यु०) जो वृ० भी हो, और जिसका वृ० से निम्न अर्थ निकल ही सकेना से ही प्रकट होता है,--अत्युत्त भाषण और उत्तर, आस्मान ।

उत्सित (स्वी०) [वृष् + क्लित्] 1. भाषण, अभिव्यक्ति, बक्तव्य - उत्किरदांस्तरम्यासः स्वास्त्रावाग्यविद्योषयो., कदा० ५।१२०, मनु० ८।१०५ 2. भाषण 3 अभिव्यक्त करने की शक्ति, गद्य की अभिव्यक्तनाशक्ति --शैवा कि - एकयोग्यत्वा पुण्यवती विवाकरनिष्ठा-करो -ममर० ।

उत्पन्न [वृष् + वृष्] 1 कथन, भाषण, स्तोत्र 2. स्तुति, प्रशंसा 3 सायबेद ।

उत् (वृ० उभ०) (उत्सित, उत्सित) 1. छिड़कना, चीका करना, तर करना, बरसाना --ओषन् शोणितमम्भादा. --भट्टि० १७१, ३१५, सि० ५।१०, रघु० १११५, ००, कु० १।५५ 2. निकालना, बिक्री कराना, अर्थि--, पवित्र तथा अभिमार्जित जल छिड़कना, - शिनिमि शकुन्तलाममप्यव श० ४, हरि--इधर-उधर छिड़कना, प्र , पवित्र जल के छोटे देकर अभिमार्जित करना, - प्रमाणवये तथा श्राद्धे प्रोक्षित छिड़काम्यया--वाज० १।१०९ मनु० ५।२७. शंभू- , जल के छोटी से अभिमार्जित करना--याज्ञ० १।२५ ।

उत्सन्न [उष् + स्युट्] 1. छिड़काव 2 छोटे देकर अभिमार्जित करना--वसिष्ठमन्त्रोत्सन्नमात् प्रमावात्--रघु० ५।२७ ।

उत्स (वृ०) [उष् + क्लित्] ईश वा सोइ-कु० ७।३० (कुछ समाप्तों में उत्स का 'उत्स' रह जाता है - मूर्च्छा, बुद्धि आदि) । सम०--तरः छोटा ईश वृ० कल्पतर ।

उत्स, उत्सन् (म्या० पर०) (भोजित, उत्सृजित, भोजित, उत्सित) जाना, हिलना-चलना ।

उत्सा [उष् + क + टाप्] पत्नीकी, डेगणी ।

उत्स (वि०) [उत्साया उत्सृजत् यत्] 1. पत्नीकी में उत्साया हुआ--सुयुष्मस्य च होमवान्--भट्टि० ५११ ।

उत्स (वि०) [उष् + रन् सवचान्तादेश] 1 नीचण, कूर, हिल, जंगली (वृष्टि आदि से) "इदंन 2 प्रवृत्त, इरावणा, प्रधानक, मकर--सिंहनिपातमुद्यम्--रघु० ३।०, मनु० १।७५, १२।७५, ३ कक्षिणासी, मन्व-वृत्त, दास्य, तीक्ष्ण--उत्सां तपो वेदान्--श० ३, भाव्यंत यमं उत्सोक्तान्--वेद० ११३, अने० वा० 4 तीक्ष्ण, प्रचण्ड, यमं 5 ऊँचा, मर, -शः 1. सिव या द्य 2. वर्षसंकर जाति--अपिच पिता और पुत्र माता की सतान 3 केरक देश (वर्तमान मलाबार) 4. री-

रह । सम०--ईश (वि०) तीक्ष्ण गंध वाला (—शः) 1 चण्डक वृक्ष 2 कहुपुत्र--चरिणी, --अंधा दुर्गा देवी,--जाति (वि०) तीक्ष्ण वंश में उत्पन्न, भारव, --इदंनक्य (वि०) धीर शहीन शक्ति, प्रधानक वृष्टि शक्ति,--अन्यन् (वि०) मन्ववृत्त कहुपु की धारण करने वाला, (पु०) शिव, इन्द्र, --लेखना शिव की शोटी, गंगा,--लेखः मयुरा का राखा और कंठ का पिता (कथ में अपने पिता को यही से उतार कर कारवार में डाका था, परन्तु कुष्ण ने कंठ को धार कर उसके पिता को कारवार से मुक्त कर विश्वामा-सीन किया) ।

उत्सव (वि०) [उत्स + वृष् + वृष्, युवागतः] तीक्ष्ण वृष्टिवाला, इरावणा, विकारण ।

उत्स (वि० पर०) (उत्सृजित, उत्सित वा उत्स--अधिकार में मू० क० इ० के रूप में प्रयुक्त) 1. उत्सव करना, एकन करना, 2. शीकीन होना, प्रवृत्तता अनुभव करना 3. उत्सव वा शोष्य होना, भाव्यस्त होना ।

उत्सित (मू० क० इ०) [उत्स + क्लित्] 1 योग्य, डीक, सही, उपयुक्त--उत्सितस्तुपाक्यम्--उत्तर० ३, प्राच युग्म के साथ--उत्सितं न ते मङ्गलकाले रोषितुम् --श० ४ 2 प्रवृत्तित, प्रयुक्त,--उत्सितेषु करवीर्येषु - श० ४ 3 भाव्यस्त, प्रवृत्तित (समाप्त में)--नीवार-भाष्योपवीत्--रघु० १।५०, २।२५, ३।५५, ६०, ११।१, कि० १।३५, 4 प्रवृत्तनीय ।

उत्सव (वि०) [उष् + पित् + वृ] 1 (स्त्री वातां में) ऊँचा, मन्वा--सितधारयोष्णम्--कु० ७।१३, उत्सव, उत्सृजत् (परिवार आदि) 2. ऊँचा, ऊँची भाषा का वाक्-उत्सवा पक्षिणा--सि० ५।१८ 3. तीक्ष्ण, दास्य, धीर । सम०--सः नारियल का पेड़,--सः ऊँचा शीतल, नृत्य आदि--नीच (वि०) 1. ऊँचा नीचा 2. विचित्र, --लक्ष्मणा,--विष्ठा, ऊँचे मस्तक वाली स्त्री, - ईशव (वि०) ऊँचा वर बहूण करने वाला (मज्जाविक) रघु० ३।१३, दे० इत पर मलिक० ।

उत्सवी (अन्य०) [उत्सवीत् + वृष्] 1. ऊँचा, ऊँचाई पर, उत्सुण, (शाल० भी)--भित्तोवगाइरिभित्तायमुष्णकैः--सि० १।१६, १६।४६ 2. ऊँचे स्वर वाला ।

उत्सवृत् (वि०) [वृ० स०] 2. ऊपर की ओर निकल हुए, ऊपर की ओर देखते हुए 2. विचकी जाँचें निकाल दी गई हों, अंधा ।

उत्सव्य (वि०) [वृ० स०] 1. नीचण, प्रधानक, उर 2 कुलीन 3 ऊँची भाषा का वाला 4. फोकी, पिन्-विदा ।

उत्सव्यः (उत्सृज्यः शंशो वच--अन्वा० व०) रत्त का यतिम पहर ।

उत्सव्यः [उत्स + पित् + वृष्] 1. अंधा, पाँच, कहुपुत्र

—कलीष्वयेन— सं० २।९, तु० 'कलौष्वय' भी 2 एकत्र करना, संकष करना (कूल आदि) —कृष्योष्वय नामयति—सं० ४, तु० १।१९, 3 स्त्री के ओङ्गे की गठ 4. समृद्धि, अन्वयय ।

उष्णत्वात् [उष् + षट् + स्फुट्] 1 ऊपर वा बाहर जाना 2. उष्णारण करना ।

उष्णत्वं (वि०) [उष् + षत् + षत्] हिल्लो-दुल्लो वाला, —कम् मत् ।

उष्णत्वात् [उष् + षत् + स्फुट्] बने जाना, कृष करता ।

उष्णत्ति (सं० सं० क्त०) [उष् + षत् + क्त] बलने के लिए ताप, प्रत्याग करने वाला—रघु० २।६ ।

उष्णात्तम् [उष् + षट् + णिष् + स्फुट्] 1 हूक कर बाहर करना, निकाल देना 2. बियाग 3 बुर हुडाना, (कीचै का) उन्मुक्त 4 एक प्रकार का जाय-डीना 5 आहुतिन पकाना, धानु का नाश करना ।

उष्णात् [उष् + षत् + णिष् + षत्] 1. कषण, उष्णारण, उष्णोषणा 2 बिष्ठा, मोषर—मानुषष्णार एव स—हि० प्र० १९, मनु० ४।५.० 3 छाडना ।

उष्णारणम् [उष् + षट् + णिष् + स्फुट्] 1 बोलना, कषण करना, —बाष्-शिक्षा० २, बेव^२ 2 उष्णोषणा, उष्णीरता ।

उष्णावच (वि०) [मनुष्यसंकाशिव्याज—उदत् च अवाच च] 1. ऊँचा, —तीषा, अनियमित—मनु० ६।७३ 2 विचित्र, विचिन्ना—मनु० १।१८, शि० ४।४६ ।

उष्णः—कः [उष्णता हुआ वस्तु—सं० सं०] प्रजा पर लहरान वाला शत्रु, शत्रु ।

उष्णैः (अभ्य०) [उष् + षि + ईत्] 1 उत्पन्न, ऊँचा, ऊँचाई पर, ऊपर (विप० नीच—चीः)—विपद्युष्णै स्वेयम्—मनु० २।२८, उष्णैस्वान—पा० १।२।२९ 2 ऊँची भाषण से, कौलाहलपूर्वक 3. प्रचलना से, आत्यन्त, अत्यधिक—विश्वसति भयमूर्खैर्भोक्षमाणा यन्तात्—रघु० १।२२ 4. (समास में विशेषण के रूप में प्रयुक्त) (क) उन्मत्त, कुलीन—अनौष्ण्यमूर्खै पयकङ्कनीयुक्त—कु० ५।६४, सं० ४।१५, रत्न० ४। १९ (क) दुःख, प्रयुक्त, शक्ति—उष्णैस्त्वै अवात्सेन—कु० २।४० । सम०—मुष्णम् 1 हुडाना, हल्लागुल्ला, गुल्लागुल्ला 2. ऊँची आवाज में की गई घोषणा,—बाष्-बाड़ी प्रसङ्ग,—शिरस्त्वं (वि०) उष्णोषण, महानुभाव—कु० १।२२,—अवत्त,—स (वि०) 1 बड़े कानो वाला 2. बहुरा, (पुं०) इष्ट का पांडा (जो 'समृद्ध-अन्वय से श्राव्य'—कहा जाता है) ।

उष्णैस्त्वाम् (अभ्य०) [उष्णैस् + त्वम् + त्वाम्] 1 अत्यन्त ऊँचा 2. बहुत ऊँचे स्वर से ।

उष्णैस्त्वाम्—तम् (अभ्य०) [उष्णैस् + त्वम् + त्वाम् च] 1 ऊँचे स्वर से 2 अत्यन्त ऊँचा—कु० ७।९८ ।

उष्ण् (तुहा० पर०) (उष्णति, उष्ण्) 1 बांधना 2. घुट करना 3 छोड़ देना, त्याग देना ।

उष्णत्वं (वि०) [उष् + षत् + क्त] 1 नष्ट किया हुआ, उन्नाश हुआ (कदाचित् 'उष्णत्वं') २० उष्णिष्ठ 2 कल्प (रचना आदि) ।

उष्णत्तम् (धातु—वि०) [उष् + षत् + षत्] 1 बमकता हुआ, इषर-उषर हिल्ला-दुल्ला हुआ 2 हिल्ला-दुल्ला, बल्ला-फिरला 3 ऊपर की उड़ता हुआ, ऊपर ऊँचाई पर जाता हुआ ।

उष्णत्तम् [उष् + षत् + स्फुट्] ऊपर की जाना, मरपना या उठना ।

उष्णावचम् [उष् + षट् + णिष् + स्फुट्] 1 बाहर डकना 2 तेल मलना, मेघ या उदतन में शरीर पोतना ।

उष्णावच (वि०) [उष्णावत् धातुसम्] नियोजन में न रहने वाला, निरकुल, उषर ।

उष्णावच, ० बसिम् [उदगत शम्भवात्—गं० सं०] 1 शम्भ (नागरिक और धार्मिक—विधि-यन्त्र) के बिहट्ट आचरण करने वाला 2 विधि-यन्त्र का उन्मेषन करने वाला ।

उष्णत्वं (वि०) [उष्णता शिभा यस्य] 1 शिभा युक्त 2 बमकीला, किसकी ज्वाला ऊपर की ओर जा रही हो—रघु० १।९।७० ।

उष्णितिः (स्त्री०) [उष् + षि + षिन्त्] मूलोच्छेदन, विनाश । कोसल—रत्ना० ९ ।

उष्णित् (सं० क० क्त०) [उष् + षि + क्त] 1 मूलोच्छेदन, विनष्ट, उन्नाश हुआ—उष्णित्प्रायश्चित्तोक्त कुलटा गोषान्तर शीर्षा—मुद्रा० ६।५ 2 नीच, अधम ।

उष्णित्स्त्वं (वि०) [उन्नत शिवाज्य—सं० सं०] 1 ऊँची गंधेन वाला (शो०) 2 उन्नत 3 (अत) कुलीन, श्रेष्ठ, महानुभाव—शीलात्मजायि पितृशक्तिरमोऽ प्रियायम्—कु० ३।७५, ६।७० ।

उष्णित्प्र (वि०) [सं० सं०] कुतुरमुना (शोष की छत्ररी) से बरा त्याग,—कर्म यत्न प्रवर्तित महोष्णित्प्रिधाम-वन्ध्याम् मेघ० ११,—अध् कुतुरमुना, साप की छत्ररी ।

उष्णित्त्वं (सं० क० क्त०) [उष् + षि + क्त] 1 शेष, बचा हुआ, 2 अन्वोक्त, व्यक्त—रघु० १०।१५ 3 शोषी, बरपना, पुराने विचार या भाविकार,—अध् 1 नूतन, खड, अविशिट्ट (विशेषण यज्ञ या साहार का)—नोष्णित्त्वं कर्मविह्वलन—मनु० २।५६ । सम०—अध् नूतन, मुक्तावाच्य—शौरम् मोग ।

उष्णित्त्वं [उष्णाति शीर्षं यस्मिन्] 1 तक्षिका 2 शिर ।

उष्णित्त्वं (वि०) [उष् + षत् + क्त तस्य क्] नूला मुस्रिया हुआ ।

उष्णित्त्वं (वि०) [उष् + षि + क्त] 1 मुखा हुआ—प्रबल-शिवीष्णुत्वेन शिवाया—अध् ८९, उतातोष्ण-

मन्वृकपाटिशीरसनिम्बम्—काण्ड० ७, अन्वचरसवितो-
च्छ्वननाश्रुष्टम्—रस० १५ 2. मोटा 3 ऊँचा, उत्तम ।

उच्छ्वकृत (वि०) [उच्छ्वत् + कृत]—ब० सं० 1 बेक-
नाम्, अनियमित, निरनुशा—बाघा—मं० ३, अन्व-
हुच्छ्वकृत सत्वमन्वच्छ्वानियमितम्—सि० २।६०
2 स्वेच्छाचारी 3 अनियमित, क्रमहीन ।

उच्छ्वेदः श्वम् [उच्छ्वि + चञ्, स्यूट् वा] श्ववोच ।
कर फेंक देना 2 मुकोच्छ्वेदन, उच्छाड़ देना, काम तमास
कर देना—सता मकोच्छ्वेदकर पिता ते—रघु० १।४।७
3 अपच्छेदन ।

उच्छ्वेदः—श्वम् [उच्छ्वि + चञ्, स्यूट् वा] श्ववोच ।
उच्छ्वोचन (वि०) [उच्छ्व + चञ् + चिच् + स्यूट्] 1 मुखादे
वाला, मुझा देने वाला—उच्छ्वोकमुच्छ्वोपपमिन्नि-
याणाम्—भग० २।८ 2 अलना,—श्व् मुखा देना,
कुम्हलाना, मुझना ।

उच्छ्व (च्छा) श् [उच्छ्वि + चञ् + चञ्, वा] 1
(तारो आदि का) उचप होना 2 उठाना, उत्पापन
3 ऊँचाई, उल्लेख (शारीरिक और नैतिक)—शुक्लोच्छ्वादी
कुम्भविशदेषो वितत्य स्थित श्वम्—मेघ० ६०, कि०
७।२७, ८।२३, 4 विकास, वृद्धि, गहनता, गुण—कि०
८।२७ नीतोच्छ्वायम्—५।३१, 5 धमड़ ।

उच्छ्वयणम् [उच्छ्वि + चञ् + स्यूट्] उच्छ्वयन, उत्पापन ।
उच्छ्वित (भू० क० क०) [उच्छ्वि + क्त] 1 उठाया हुआ,
उत्पापित 2 ऊपर गया हुआ, उदगत 3 ऊँचा, मड़ा,
उत्तम, उपरन 4 पैदा किया हुआ, जाग 5 बंधमान,
ममूढ़ बढ़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त 6 अभिमानी ।

उच्छ्विति = उच्छ्वय
उच्छ्वसनम् [उच्छ्व + चञ् + स्यूट्] 1 सांस लेना, बाह
भरना 2 गहरी सांस लेना ।

उच्छ्वसित (भू० क० क०) [उच्छ्व + चञ् + क्त]
(कर्त्तरि प्रयोग) 1 गहरी सांस लेना, सांस लेना 2
मूह से भाप बाहर निकालना 3 पूरा जिला हुआ,
बिभूष 4 तपोलाज—मेघ० ५२, 5 आश्वसित—उक्-
तोच्छ्वसितहृदया—मेघ० १००,—तन् 1 सांस, प्राण
—सा कुम्भपतेरुच्छ्वसितमिव—शं० ३, 2 प्रफुल्ल,
फूंक मारना 3 सांस बाहर निकालना—रघु० ८।३, 4
गहरी सांस लेना, उभार, चरकन ५ शरीर में रहने
वाले पीच प्राण ।

उच्छ्वसातः [उच्छ्व + चञ् + चञ्] 1. सांस, सांस अन्वर
जीबना, सांस बाहर निकालना—मुकोच्छ्वसातण्यम्
—विष्णु० ५।२२, अद्भु० १।३, मेघ० १०२ 2 प्राणो
का आश्वय 3 आह भरना 4 आशवासन, प्रोत्साहन
—अथ ११, 5 फुफ्फुकी 6 पुस्तक का छत्र या माग
(जैसे हृषिकेश का) गु० बध्याय ।

उच्छ्वसिन् (वि०) [उच्छ्वसात + इनि] 1 सांस लेने वाला

2 गहरी सांस लेने वाला, मड़ू भरने वाला 3. पिटने
वाला, मुझलेवाला ।

उच्छ्वसि (वि०) शी [श्रा० सं०] एक नगर का नाम, मालवा
प्रदेश में वर्तमान उज्जैन, हिन्दुओं की सात पुण्य-
नगरियों में से एक, (गु० अवन्ति)—शीबोर्षां कुम्भजय-
विमुक्तो मा स्व भूकञ्चयिन्वा—मेघ० २७ ।

उच्छ्वसतम् [उच्छ्व + चञ् + चिच् + स्यूट्] मारना, हुला
करना—शौरस्योच्छ्वसतम्—सिद्धा० ।

उच्छ्वहाय (वि०) [उच्छ्व + हा + शानच्] ऊपर जाता
हुआ, (सूयें की भाँति) उदग होता हुआ—उच्छ्वहायस्य
मानो—मुद्रा० ५।२१ 2 जाता होता हुआ, बाहर
जाता हुआ, शीबिता बराकीम्—मा० १० ।

उच्छ्वय (वि०) [श० सं०] 1. फूंक मरा हुआ, फुलाया
हुआ—उज्ज्वमवदनाम्नोका मितस्य क्वानि सङ्गता—सा०
६० 2 दारदार, झुका हुआ,—अः 1 विचर, फुलाव,
फूंक मारना 2 तोड़ कर टुकड़े करना, बुतार करना
उच्छ्वसा-मण्यम् [उच्छ्व + चञ् + चञ्, स्यूट् वा] 1. अन्हाई
लेना 2 मूह बाना, 3. फीलाना, वृद्धि ।

उच्छ्व (वि०) [उच्छ्वता या यस्व—श० सं०] बहु क्त्-
वर्ग विभक्त बन्धु की श्रेणी हुई हो ।

उच्छ्वक (वि०) [उच्छ्व + चञ् + चञ्] 1 उजला, चमकीला,
काठियुक्त—उज्ज्वकपलां मुसम्—सि० १।४८ 2
प्रिय, सुन्दर—सर्षो मितसोच्छ्वक—नी० ३।१२६ 3
फूंक मरा हुआ, फुलाया हुआ 4 अभिव्यक्त,—कः
प्रेम, राध,—कम् सोना ।

उच्छ्वकनम् [उच्छ्व + चञ् + स्यूट्] 1 अलना, चमकना
2 कान्ति, दीप्ति ।

उच्छ्व (गुदा० पर०) (उज्ज्वल, उज्जित) 1. त्यागना,
छोड़ना, तिलाजलि देना—मपादि विद्युत्निवृत्तस्यपुञ्जा-
चकार—रघु० ५।७५, १।४०, ५१ आतपाबोञ्जितं
बान्यम्—महा०, भूष में टाना हुआ 2 टालना, बचना
—उदये मववाच्यमुञ्जता—रघु० ८।८४ 3. उत्सर्जन
करना, बाहर निकालना—अधिरतोञ्जितवारिधिपा-
च्छ्विः—कि० ५।६, सि० ५।६३ ।

उच्छ्वकः [उज्ज्व + चञ्] 1 बावल 2 भक्त ।

उच्छ्वकम् [उज्ज्व + स्यूट्] त्यागना, दूर करना, छोड़ना ।
उच्छ्व (गुदा० पर०) (उज्ज्वलित, उज्ज्वलित) बाले इफट्टी
करना, बीगना (एक-एक करके)—सिलातन्वुच्छ्वत-
—मनु० ३।१००

उच्छ्व [उच्छ्व + चञ्] बाले इफट्टी करना या अनाज के
दाने बीगना, टान्मञ्जवध्याङ्कितसैकतानि—रघु० ५।८,
मनु० १०।११२,—उज्ज्व बाले इफट्टी करना । तम०
—वृत्ति—शील (वि०) शी विलोछन से अपनी
बीबिका बलाता है, सेत में बचे अनाज के कर्णों को
चुन कर वेत करने वाला ।

उज्ज्वलम् [उज्ज् + ल्यट्] श्वेत में पड़े अनाज के दानो को एकत्र करना ।

उज्ज्व [उ + टच्] 1 पता 2 हास । सम०—**ज्**—**जम्**—(उटम्भो जायते) क्षीणही, कुटिया, भायम (पयोवाला)—उज्ज्वद्वारिषिक नीवारवालि बिलोक-यत—श० ४१२०, रघु० १५०, ५२ ।

उज्जुः (स्त्री०) **उज्जु** (नपु०) [उज् + कुञ्] 1 नख, 2 तारा—इन्दुप्रकाशात्सोडुनुत्वा—रघु० १६१५, 2 जल (केवल नपु० में) । सम०—**ज्जम्**—राशि-**ज्ज**,—**ज्ज** कटो का बना बंडा,—तिलीर्षदंस्तर मोहाहुपनालि सागरम्—रघु० ११२, केनोहुपेन परलोकमदो तरिष्ये—मृच्छ० ८१२३—(प) बडमा—मृच्छ० ४१२४—**ज्जित**,—**राज्ज** चन्द्रमा—जितमुहु-पनिना—रत्ना० ११५, रत्नायकमयोदुपदेशव रसमय—कु० ५१२२—**ज्ज**: आकाश, अन्तरिक्ष ।

उज्ज्वरः [उ जान्म् वृणोति—उ + वृ + लघ्व्, मृम् उक्तृष्ट उम्बर—प्रा० सं० दस्य ङल्म्] 1 गुलर का वृक्ष (ओदुम्बर), 2 घर की देहली या इवोडी 3 हिमडा 4 एक प्रकार का कोड़ (—ल्म् भी),—रघु० 1 गुलर का फल 2 ताबा ।

उज्ज्वः—उज्ज्व ।

उज्ज्वयन्म् [उज् + वी + ल्यट्] ऊपर उठना, उठान लेना—गौरी विरुणोदयने निरातापम्—ने ११२५ ।

उज्ज्वार (वि०) [प्रा० सं०] 1 सफिकर, श्रेष्ठ 2 प्रबल, भयावह—उज्ज्वारमरुत्पारिष्वारिवो क्षुब्धपर्या-सितस्माधरम् मा० २१२३ ।

उज्ज्वीन (मू० क० कू०) [उज् + वी + क्त] उडा हुआ, ऊपर उठता हुआ,—**ज्ज** 1 ऊपर उठना, उठान लेना 2 पक्षियों की एक विशेष उठान ।

उज्ज्वीयन्म् [उज्ज्व स इव आचरति—यक्, उज्ज्वीय + ल्यट्] उठान ।

उज्ज्वीशः [उज् + वी + शिच्] उज्ज्वी तस्य ईश] शिव ।

उज्जुः [उज् + र्ज्] देव का नाम, वर्तमान उड़ीसा, दे० ओडु ।

उज्जेरक [?] आटे का लड्डू, गोला, रोटी—तर्बोबेरक-सज—याज्ञ० ११२८१ ।

उज्ज (अव्य०) [उ + शिच्] (क) सन्देश (क) प्रथम वाचकता (ग) सोचविचार और (घ) तीव्रता ।

उज्ज (अव्य०) [उ + क्त] 1 निम्नांकित माननाओं को अवि-
श्वकत करने वाला अव्यय—(क) सन्देश, अनिश्चितता
अनुमान (घ),—**ज्जित** भयमातपदोय, स्वातुल यथा मे
नगति वर्तते—शा० ३, स्वाधुरव्यम पुष्प—गण०
(क) विकल्प, श्राय 'कि' का सहवर्ती (घ)—**ज्जित**
नृहमिहपरिष्कृत्य चर्मास्तनैषु पलितमृत मोक्षप्रानि-
सुक्तिरियम्—शा० १५५, कु० ५१२३, 'उज्ज' के स्थान
में 'आहो' या 'आहोस्वित्' भी प्रयुक्त होता है, कई

बार तो 'आहो' 'आहोस्वित्' या 'स्वित्' को 'उज्ज'
से जोड़ दिया जाता है (ग) साहचर्य, सयोग ('और'
'भी' शब्दों द्वारा समुच्चयात्मकता का बोध करने
वाला)—उज्ज बलवानुताबल (घ) प्रथमवाचकता—
—उज्ज दग्ध पतिष्यति 2 प्रति-इसके विपरीत, दूसरी
ओर, बलि—सामवादा सकोप्य तस्य प्रत्युत
दीपका—गि० २५५ 3 किम्—कितना अधिक,
कितना कम दे० किम्, उज्ज—उज्ज या-या—एकमेव वर
पुसायुत राज्यमुताश्रम—गण० ।

उज्ज्व (?) अगिरा का पुत्र, तथा बृहस्पति का बड़ा
भाई ।—**ज्जुज्ज**,—**ज्जुज्ज्वम्** (पु०) बृहस्पति, देव-
ताओं का नृप, तथ्यभूतध्यायुज्ज्वजगादापे गदायज्ज-
—गि० २१६९ ।

उज्ज (वि०) [उज्-स्थायं कम्] 1 इच्छुक, लालायित, उत्क-
ण्ठित (समान में)—अद्रिमुतासमागमोक—कु० ६१५५
मानसोक्त—मेघ० ११, कई बार नुमुन् के साथ—गि०
४१६८, 2 शियमान, दुःखी, शोकाश्रित 3 उन्मत्ता ।

उज्ज्वल्य (वि०) [व० सं०] बिना अथिया पहने या बिना
कचच धारण किये हुए ।

उज्जल (वि०) [उज् + कटप्] 1 बडा, प्रशस्त—उत्तर०
४१२९ 2 गतिशाली, ताकतवर, भीषण 3 अत्य-
धिक, ज्यादा—अन्युक्तं पापयुगीर्हिव फलमधनुसे-
हि० ११८५, 4 भरपूर, समृद्ध 5 मदिरासेवी, मदमत्त,
उन्मत्त, मदीकट 6 श्रेष्ठ, उत्तम 7 शिष्य,—इ. 1.

हाकी के मलक से बहनेवाला मद 2 मदयुक्त हाकी ।

उज्जल (वि०) [उज्जान कठो बस्य] 1 गर्दन ऊपर की
उठायें हुए, (अत) तयार, तैयार, करने के लिए
उत्सुक (समान में) आशापनीकठ श० २,

रथस्वनोत्कण्ठमयं ब्राम्मीकीये तपोबने—रघु० १५११
2 (अन) चिन्तागुर, उत्सुक,—**ज्ज**—**ज्ज** सयोग करने
की एक रीति ।

उज्जल [उज् + कण्ठ + अ + टाप्] 1 चिन्तागुरता, बेचैनी—
—वास्ययथ गुरुनलेति हृदय सत्युष्टमुत्कण्ठया—श०
४१५, 2 शिय बन्नु या प्रियतम पाने की लालसा
—द्वितीरिषिक सोत्कण्ठमुद्वीक्षते—अयम् २४, 3 श्रेष्ठ,
शोक, किसी शिय बन्नु या व्यक्ति का स्पष्ट हो
जाना यात्रोत्कण्ठ—मा० ११५, मेघ० ८३ ।

उज्जल (मू० क० कू०) [उज् + कण्ठ + कम्] 1 चिन्ता-
गुर, श्रायित होनेवाला, शोकाश्रित 2 किसी शिय
बन्नु या व्यक्ति के लिए लालायित,—**ज्ज** अपने अनु-
पस्थित प्रेमी या पति से मिलने की प्रबल लालसा
रखने वाली नायिका, आठ नायिकाओं में से एक—
शा० व० १२१ में दो गई परिभाषा—आगन्तु कृत-
चित्तोऽपि देवात्रायति यदियं, तदनायमनुज्जलति
बिहोत्कण्ठिता तु सा ।

अलम्बन (वि०) [उन्नत अम्बरोज्य—ब० सं०] गर्दन ऊपर उठाये हुए, उन्नीचा—उलम्बनर वाक्कमित्युवाच—सि० ५।१८।

अलम्ब्य (वि०) [ब० सं०] कांपता हुआ, —क, —अम्ब्य कापना, कपकपी, झोब—किम्बिकप्राशोक्तम् दित्त समुदीकते—अमर २८, भाषाणि ७२।

अलम्बरः [उद् + कृ + अच्] 1 डेर, समुच्चय 2 अम्बर, बट्टा 3 मलबा—मूच्छं ३।

अलम्बेर [ब० सं०] एक प्रकार का वाद्य-उपकरण, बाजा।
अलम्बेणम् [उद् + कृ + ल्यट्] 1 काट देना, फाड़ देना 2 उखाड़ देना, मुकोच्छेदन।

अलम्बे [उद् + कृ + अच्] 1 ऊपर को खींचना 2 उन्नति, प्रयुक्तता, उन्नत, समृद्धि—निनीच् कुलमुत्कर्षम्—मनु० ५।२४४, १।२४ 3. बुद्धि, बहुतायत, अधिकता—नचानामपि मुतायामुत्कर्षं पुपुवुर्गुणा—रघु० ५।११ 4 उत्कृष्टता, सर्वोपरि गुण, यत्र उत्कर्षं न च बन्विनां यदिष्यत् सिध्यन्ति कथ्ये चले—गो २, 5 अहमन्यता, सेखी 6. प्रसन्नता।

अलम्बेणम् [उद् + कृ + ल्यट्] 1 ऊपर खींचना, ऊपर लेना, ऊपर करना।

उल्लसः [उद् + कृ + अच्] 1 एक देश का नाम, वर्तमान उन्नीचा या उस देश के निवासी (ब० सं०), अथवा अथ-प्रान्तदेश उल्लस परिकीर्तित—दे० 'ओङ्'—उल्लसा-दधित पथ—रघु० ५।३८ 2 बहुलिया, धिडीमार 3 कुली।

उल्लस्य (वि०) [ब० सं०] पूछ फैलाये हुए और सीधी उठाये हुए—रघु० १६।६४।

उल्लसिका [उद् + कृ + ल्यट्] 1. चिन्तानुरता, बेचैनी—आता मोल्लसिका—अमर ७८, 2 लालसा करना, शोध प्रकाश करना, किसी वस्तु या व्यक्ति का मुपल हो जाना 3 काम खींचा, हेल्ला, 4 कली 5 तरंग—श्रुमितमुक्तिककारल यम—तरंगो द्वारा लुब्ध—मा० ३।०। (यहाँ स्वयं 'उल्लसिका' का अर्थ 'चिन्तानुरता' है) सि० ३।७०। लभ०—आद्यच् गद्यरचना का एक प्रकार जिसमें समास बहुत हों तथा कठोर वर्ण हों—अनेकमुक्तिकाप्रायः समासाद्यं दृढा-बन्धम्—छं०।

उल्लस्यन् [उद् + कृ + ल्यट्] 1 फाड़ना, ऊपर को खींचना 2 उठाना, (हल आदि), खींच कर ले जाना—सद्यः सीरोक्तवधुर्नि क्षीरमाकङ्क मासम्—वेद्य० १७, 3 एखना—आदि० १।७३।

उल्लारः [उद् + कृ + अच्] 1 अनाज फटना 2 अनाज की ढंरी लगाना 3 अनाज होने वाला।

उल्लासः, लयम्, उल्लासिका [उत्क + अच् + अच्, ल्यट्, अच् वा] लज्जारता, गले को झाड़ करना।

उल्लिक (वि०) [उद् + कृ + अच्] हवा में उड़ना हुआ, ऊपर की दिशाएँ हुआ, आरंभ करता हुआ—कु० ५।२६, ६।५, रघु० १।३८।

उल्लोत्थम् [उद् + कृ + ल्यट्] 1 प्रवृत्ता करना, कीर्तितान करना 2 पोषणा करना।

उल्लुब्धम् [उन्नतः कुटो वच ब० सं०] ऊपर को मुह करके लेटना या सोना, चित लेटना।

उल्लुब्धः [उद् + कुब् + क] 1 अटमक 2 जू।

उल्लुब्ध (वि०) [उल्लस्य कुनात्—अत्या० सं०] पतित, कुल को अपमानित करने वाला—यदि यथा बदिति क्षितिपस्तथा, स्वमसि कि पितृकुलुकया त्वया—शं० ५।२७।

उल्लुब्धः [प्रा० सं०] (कोयल की) कुक।

उल्लुब्धः [उन्नत कुटमस्य—ब० सं०] छाता, छनरी।

उल्लुब्धम् [उद् + कुद् + ल्यट्] कुदना, ऊपर को उल्लाना।

उल्लुब्ध (वि०) [उल्लस्य कुनात्—अत्या० सं०] किनारे से बाहर निकल कर बहने वाला।

उल्लुब्ध (वि०) [उद् + कुल + क्त] किनारे तक पहुँचने वाला—सि० ३।७०।

उल्लुब्ध (प्र० सं०) [उद् + कृ + अच्] 1. उखाड़ा हुआ, उठाया हुआ, उन्नत 2 श्रेष्ठ, प्रयुक्त, उत्तम, सर्वोच्च—मनु० ५।१६३, ८।२८१ बल०—पथ० ३।३६, बलबन्धर 3 जोता हुआ, हल चलाया हुआ।

उल्लुब्धः [उल्लुब्ध + अच्] रिवरत—उल्लुब्धविव ददती—का० २३२ बाह्य० १।३३८।

उल्लुब्धकः [उल्लुब्ध + कृ] 1 धूल, रिवरत 2 (वि०) [उद् + कुब् + अच्] रिवरतक्षोर, धूल लेने वाला—मनु० १।२५८।

उल्लुब्धः [उद् + कृ + अच्] 1 ऊपर जाना, बाहर निकलना, प्रस्थान 2 क्रमान्विति 3. विचलन, अति-कथन, उल्लेखन।

उल्लुब्धम् [उद् + कृ + ल्यट्] 1 ऊपर जाना, बाहर निकलना, प्रस्थान 2. च्याई 3. पीछे छोड़ देना, भागे बढ़ जाना 4 (दरीर में से) आना—अथ पलायन अर्थित् मृत्यु—मनु० ६।६३।

उल्लुब्ध (स्वी०) [उद् + कृ + क्तिन्] 1. बाहर निकलना, ऊपर जाना, कृच करना 2. भागे बढ़ जाना 3 उल्लेखन, अतिकथन।

उल्लुब्धः [उद् + कृ + अच्] 1 ऊपर या बाहर जाना, प्रस्थान करना 2 जाने बढ़ जाना 3. उल्लेखन अतिकथन।

उल्लुब्धः [उद् + कृ + अच्] 1 हल्ला-मुल्ला, गुलनपाडा 2 पोषणा 3 कुरी।

उल्लुब्धः [उद् + कृ + अच्] बाईं या तर होना।

उल्लुब्धः [उद् + कृ + अच्] 1 उठोचना, अद्यापि

2 शरीर का ठीक हालत में न रहना 3. रोग, विशेष-
कर सामुद्रिक रोग ।

उत्थिलत (भू० क० क०) [उद् + क्षिप् + क्त]

1 ऊपर की फेंका हुआ, उछलना हुआ, उछलना हुआ
2 पकड़ा हुआ, सहारा दिया हुआ, 3. घुस, बधिभूत,
आहत—विस्मय—रत्ना०, 4 विराया हुआ, ध्वस्त,
—ज्म घटूरा, घटूरे का पीथा ।

उत्थिलिका [उत्थिल + क्त + टाप्] पन्द्रकला
के आकार का कान का आभूषण ।

उत्थेष [उद् + क्षिप् + घञ्] 1 फेंकना, उछलाना
—पशुलोप—मेघ० ४९, 2 जो ऊपर फेंका या
उछाला जाय—विदूषणोपाय विदूषु बाह्वि० २।१३
3 भेजना, प्रेषित करना 4 बमन करना ।

उत्थेषक (वि०) [उद् + क्षिप् + ष्वन्] ऊपर फेंकने या
उछलाने वाला, उन्नत करने वाला या ऊपर उठाने
वाला—याज्ञ० २।२७४,—कः 1 रूपरे भादि घटने
वाला—वस्त्राद्युत्थिष्यत्य०, रतीत्युत्थेषक—मिता० 2
भेजने वाला या आदेश देने वाला ।

उत्थेषणम् [उद् + क्षिप् + ल्यट्] 1 ऊपर फेंकना, उठाना
या उछलाना—अभिधानलोहितलो० बाह्वु षटोत्थेषणम्
—श० १।३० 2 वैयक्तिकों के मतानुसार पंच कर्मों में
से एक कर्म—उत्थेषणं 3 वमन करना 4 भेजना, प्रेषित
करना 5 (अनाज साक करने के लिए) छाज 6 पक्षा ।

उत्थित (वि०) [उद् + क्त + क्त] मिलाकर युष्ठा
हुआ, युना हुआ या जडा हुआ—कुमुदोत्थितान्
बलीभूत—रघु० ८।५३, १३।५४ ।

उत्थला [उद् + क्त + क्त + टाप्] एक प्रकार का सुवाय ।
उत्थला (भू० क० क०) [उद् + क्त + क्त] 1 सोदा हुआ,
सोद कर निकाला हुआ 2 उद्धृत, बाहर निकाला
हुआ—उत्तर० ३ 3 जड से उपाडा हुआ, जड समेत
तोडा हुआ (सा०)—लोका० उत्तर- ३।१६ 4
(आल०) (क) उन्मूलित, बिल्कुल नष्ट किया हुआ,
ध्वस्त—किमुत्थात नन्दवधस्य—मद्रा० १, °लवणी मन्-
रेण्वर प्राप्त—उत्तर० ७, (स) परच्युत, बधिकार
या शक्ति से बर्चित किया हुआ—फली सर्वधंयामानु-
सखातप्रतिरोषिता—रघु० ४।३७ (बहौ 'उत्थात'
का अर्थ 'उन्मूलित' भी है),—सम् एक वर्त, रन्ध्र,
ऊबट-साइड भूमि । सम०—कैलिकः (स्त्री०) खल-
शैल में सींग या दात से घातती क्षोदना—उत्थातकैल
शृंगारैर्ब्रकीका नियच्छते ।

उत्थाति (वि०) [उत्थात + णि] विषय, अँधी-नीची,
विषय (विप० 'सत्त')—उत्थातिनी भूमिरिति यथा
रविमसयमनाद्वयस्य मन्दीकृतो वेध—श० १ ।

उत्त (वि०) [उद् + क्त] आर्द्र, नीला ।

उत्तलः [उद् + तल + क्त] 1 मिला, भोर का बुझा,

मुकुट के ऊपर धारण किया जाने वाला आभूषण
—उत्तलानहृत भारि मूर्धभेजम्—सि० ८।५७—सु०

'कथोलत' 2 कान का आभूषण—शा० ५।१८,
भावि० २।५५ ।

उत्तलित (वि०) [उत्तल + इत्] 1 कानों में आभूषण पहने
हुए 2 मिला में धारण किया हुआ—मत्तु० ३।२२९ ।

उत्तल (वि०) [उत्तल + क्त] 1 कानों
के बाहर निकल कर बहने वाला—रघु० १।१५८ ।

उत्तप (भू० क० क०) [उद् + तप् + क्त] जलवाया
हुआ, गरम किया हुआ, मूलसाया हुआ—'कणक'
—शा० ४३,—प्लम् मूला मति ।

उत्तप (वि०) [उद् + तप्] 1 सर्वात्प, श्रेष्ठ (सहृथा
समास में) द्वितीयात्—इती प्रकार सुर' भादि -प्राये-
बाधयध्वयोनामयुष ससंगतो जायते—मत्तु० २।६७,
2 प्रमुल, सर्वाच्च, उच्चतम, 3 उन्नततम, मुख्य,
प्रधान 4 सबसे बडा, प्रथम, मनु० २।२५९,—कः
1 विष्णु 2 अन्तिम पुरुष (अधेकी में इसी 'उत्तप
पुरुष' को प्रथम पुरुष कहते हैं),—भा श्रेष्ठ महिला ।
सम०—अङ्गम् शरीर का श्रेष्ठ अंग, सितर,
—अधिपद् द्विपत्यङ्गुलीनाम्—रघु० ७।५१, मनु०
१।९३, ८।३०० कु० ७।५२, अय० १।१२७,—अक्षय
(वि०) अँधी-नीचा 'अक्षय, कच्छा, बीष के दर्जे
का, और बुरा,—अर्धः 1 बडिया या घात 2 अन्तिम
आधा,—अह अन्तिम या बाह का दिन, अष्टमा दिन,
भ्रायसात्सी दिन, अक्षयः—अक्षयिकः (उत्तमर्ग)
उधार देने वाला, साहूकार (विप० 'अक्षयर्ष'), -वधम्
अँधा पद, पु(शु) ष्वः 1 किया के रूपों में अन्तिम
पुरुष (अधेकी वायवरचना के अनुसार प्रथम पुरुष) 2
परमात्मा 3 श्रेष्ठ पुरुष, -सलोक (वि०) उत्तम क्वाति
का, बीमान, यक्षबी, सुविख्यात,—सहृह (°स्त्री)
पर-स्त्री के साथ साठ-गाठ बर्थात् प्रेम संबंधी जारों
करना,—साहृहः,—सम् उच्चतम भाषिक दण्ड, १०००
पय का दण्ड (कुल बीरों के मतानुसार ८००००) ।

उत्तमीय (वि०) [उत्तम + ङ] सर्वाच्च, उच्चतम, सर्व-
श्रेष्ठ, प्रधान ।

उत्तम्य, —अक्षय [उद् + त्म + क्त, ल्यट् वा] 1
समाप्तना, धामे रक्षना, सहारा देना—बुधनोत्तम्यवस्त-
म्भान्—का० २६०, 2 बुनी, टेक, सहारा 3 रोकना,
गिरफ्तार करना ।

उत्तर (वि०) [उद् + तरत्] 1 उत्तर दिशा में पैदा होने
वाला, उत्तरीय (सर्व० की भांति ऊपर रचना)
2 उच्चतर, अपेक्षाकृत अँधा (विप० 'अक्षय')—अक्षय-
तीतर कायम्—रघु० १।६० 3 (क) बाह का,
दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० 'वृत्त') पूर्व में येष
—उत्तर वेध—'बीमांशा, उत्तरार्धः भादि—'राम-

उत्तर (वि०) [उद् + तरत्] 1 उत्तर दिशा में पैदा होने
वाला, उत्तरीय (सर्व० की भांति ऊपर रचना)
2 उच्चतर, अपेक्षाकृत अँधा (विप० 'अक्षय')—अक्षय-
तीतर कायम्—रघु० १।६० 3 (क) बाह का,
दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० 'वृत्त') पूर्व में येष
—उत्तर वेध—'बीमांशा, उत्तरार्धः भादि—'राम-

उत्तर (वि०) [उद् + तरत्] 1 उत्तर दिशा में पैदा होने
वाला, उत्तरीय (सर्व० की भांति ऊपर रचना)
2 उच्चतर, अपेक्षाकृत अँधा (विप० 'अक्षय')—अक्षय-
तीतर कायम्—रघु० १।६० 3 (क) बाह का,
दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० 'वृत्त') पूर्व में येष
—उत्तर वेध—'बीमांशा, उत्तरार्धः भादि—'राम-

उत्तर (वि०) [उद् + तरत्] 1 उत्तर दिशा में पैदा होने
वाला, उत्तरीय (सर्व० की भांति ऊपर रचना)
2 उच्चतर, अपेक्षाकृत अँधा (विप० 'अक्षय')—अक्षय-
तीतर कायम्—रघु० १।६० 3 (क) बाह का,
दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० 'वृत्त') पूर्व में येष
—उत्तर वेध—'बीमांशा, उत्तरार्धः भादि—'राम-

उत्तर (वि०) [उद् + तरत्] 1 उत्तर दिशा में पैदा होने
वाला, उत्तरीय (सर्व० की भांति ऊपर रचना)
2 उच्चतर, अपेक्षाकृत अँधा (विप० 'अक्षय')—अक्षय-
तीतर कायम्—रघु० १।६० 3 (क) बाह का,
दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० 'वृत्त') पूर्व में येष
—उत्तर वेध—'बीमांशा, उत्तरार्धः भादि—'राम-

उत्तर (वि०) [उद् + तरत्] 1 उत्तर दिशा में पैदा होने
वाला, उत्तरीय (सर्व० की भांति ऊपर रचना)
2 उच्चतर, अपेक्षाकृत अँधा (विप० 'अक्षय')—अक्षय-
तीतर कायम्—रघु० १।६० 3 (क) बाह का,
दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० 'वृत्त') पूर्व में येष
—उत्तर वेध—'बीमांशा, उत्तरार्धः भादि—'राम-

उत्तर (वि०) [उद् + तरत्] 1 उत्तर दिशा में पैदा होने
वाला, उत्तरीय (सर्व० की भांति ऊपर रचना)
2 उच्चतर, अपेक्षाकृत अँधा (विप० 'अक्षय')—अक्षय-
तीतर कायम्—रघु० १।६० 3 (क) बाह का,
दूसरा, अनुवर्ती, उत्तरवर्ती (विप० 'वृत्त') पूर्व में येष
—उत्तर वेध—'बीमांशा, उत्तरार्धः भादि—'राम-

हरिणम् (ख) बाघामी, उपसहारात्मक 4. बाघा (विप० बलिष) 5 बहिया, मूष, खेट 6 बघेताकृत अधिक, से अधिक (बहुधा लक्ष्यान्वये से युक्त समस्त पदों से अन्तिम बघ के रूप में प्रयुक्त) —बहुगुण विवसति = २६, अष्टोत्तर शतम् १०८, 7 से युक्त या सहित, पूर्ण, मुख्यतया से युक्त, से अनुगत (समास के अन्त में) —राजा तु हरितायैता दु खोनरेव श० ५, अखोनरोखिता—कु० ५।६१ 8 पार किया जाना,—रः 1 आघामी समय, बघिष्यत्कास 2 बिष्णु 3 विष 4 विराट राजा का पुत्र,—रा 1 उत्तर दिशा—अभ्युत्तरस्या विधि देवतायाम्—कु० १।१ 2 एक नक्षत्र 3 विराट राजा की पुत्री और अभिमन्यु की पत्नी,—रम् 1 अबाब,—प्रबन्धके प्रतियन्मुत्तरम् —रम् ८।४०,— उत्तरादुत्तर वाच्य वरता मन्त्रायते —रम् १।६० 2 (विधि में) प्रतिवाद, प्रत्युक्ति 3 मयास का अनिय पद 4 (मीमांसा में) अधिकरण का बोधा अंग—उत्तर 5 उपसहार 6 अघोष, अघोषिष्ट 7 अधिकता, आबधकता से ऊपर, दे० ऊपर उत्तर (वि०) 8 अघोष, अन्तर (गणि में), रम् (अव्य०) 1 ऊपर 2 बाद में—नत उत्तरम् इन उत्तरम् आदि। सम०—अन्तर (वि०) उच्चतर और निम्नतर (आल० भी),—अधिकार,— रिता, रम् मर्यादा में अधिकार, बरासत, उपोती—अधिकारिन् (प०) किसी के बाद उसकी मर्यादा पाने का हकदार, अघमन् (अघमन् न की ग हो गया) 1 सूर्य की (मूमाध्य रेखा से) उत्तर की आग गति अंग० ८।२४ 2 मकर से कर्क शकान्त तक का काल,—अर्धम् 1 शरीर का ऊपरी भाग 2 उत्तरी भाग 3 दूसरा भाग—उत्तरार्ध (विप० 'पूर्वार्ध')—अहू. आगामी दिन,—आभास विषया उत्तर, भासा उत्तर दिशा, अधिकारिन् पति कुंभर का विवेचन,—आभासा २१ वीं नक्षत्र जिसमें तीन तारों का पूज है, अत्यन्त ऊपर पहुँचने का अर्थ—इतोत्तरायण का० ४३, वि० २।१९, कु० ५।१६,—इतर (वि०) उत्तर से भिन्न अर्थात् दक्षिणी, (— रा) दक्षिण-दिशा, उत्तर (वि०) 1 अधिक और अधिक उच्चतर और उच्चतर 2 क्रमागत, लगातार बर्धनशील—स्नेहेन दृष्टि—रम् १, पाठ० २।१३६ (— रम्) अभ्युत्तर, उत्तर का उत्तर—अभ्युत्तररोत्तरेण—मुद्रा० ३, ओष्ठः ऊपर का होठ(उत्तरों—री-ष्ठ),—काष्कम् गमायण का सातवीं काण्ड,—काय शरीर का ऊपरी भाग—रम् ० १।६०,—कासः प्रविष्यत्काल,—कुष्ठ (पु० व० ब०) संसार के ९ भागों में से एक, उत्तरी कुष्ठों का देग,—सौख्यः (पु० ब० ब०) उत्तरी कोशल दस—विद्युत्तरत्तरमुत्तर-कोशलम्—रम् ० १।१,—विष्या अन्वेषित संस्कार,

बौद्धिक क्रांताधिक कर्म,—छत्त विस्तर की चार, विद्याधन (सायणम्)—रम् ० ५।६५, १।७।२१,—ब (वि०) बाद में पैदा होने वाला,—अन्वेषिताः (पु० ब० ब०) उत्तरी अन्वेषि प्रदेय,—बाष्क (वि०) जो बाष्काकारी न हो, बनाव देने वाला, मुष्ट,—विष् (स्त्री०) उत्तर दिशा ईश्वर,—बाष्क उत्तर दिशा का पारक या स्वामी कुंभर,—च्छः 1 उत्तरी कुंभ 2 बाह्यमाय का कुष्क पक्ष 3 किसी विषय का द्वितीय पक्ष—अर्थात् उत्तर, उत्तर में प्रस्तुत तर्क बहुल का बनाव विद्याय पक्ष (विप० 'पूर्वपक्ष')—प्रापयन् पवन व्याघ्रिन्मुत्तरपक्षताम्—वि० २।१५ 4 प्रदर्शन की गई सचार्थ या उपसहार 5 अनुमान की प्रक्रिया में भीष उक्ति 6 (मी० में) अधिकरण का पंचिर्वा अंग(सदस्य),—च्छः 1 ऊपर पहुँचने का अर्थ 2 विद्या-वन या उत्तरच्छद,—च्छः उत्तरी मार्ग, उत्तर दिशा को ले जाने वाला मार्ग,—अर्थम् 1 समास का अन्तिम पद 2 समास में दूसरे शब्द के साथ जोड़ा जाने वाला शब्द,—बहिष्या उत्तर-पश्चिम दिशा,—बाघः कानूनी अधिकार का दूसरा भाग, दावे का अबाब,—दुष्कः—उत्तर पुत्रक,—पूर्व उत्तर-पूर्व दिशा,—प्रच्छः रखाई का साक्ष या उच्छाल, रखाई,—अत्युत्तरम् 1 तर्क-वितर्क, बाद-विवाद, प्रत्यारोप 2 कानूनी मुकदमों में पक्ष-समर्पण,—क (ख) स्तुमी १२ वीं नक्षत्र जिसमें दो तारों का पूज होता है,—भाषयन्—बा २६ वीं नक्षत्र जिसमें दो तारे रहते हैं,—सौमन्ता बाद में प्रणीत मीमांसा—वेदान्त दर्शन (मीमांसा)—जिसे प्रायः पूर्वं मीमांसा कहते हैं—से विभ्र),—स्यम्नम् वास्तविक उत्तर का संकेत,—अर्थम्, न् (नपु०) वृद्धावस्था, जीवन का ह्रासमान काल,—अर्थम्—बाष्क (नपु०) ऊपर पहुँचा जाने वाला अर्थ, पुष्टा, बोधा या अंगरक्षा,—बहिष् (पु०) प्रतिकारी, मुद्भाग्य,—साष्क सहायक, मददगार।

उत्तरङ्ग (वि०) [व० सं०] 1 तरणित, बलप्राप्तित, कुम्ब—मुद्रा० ६।३, 2 उलझती हुई लहरों वाला—रम् ० ७।३६, कु० ३।४८।

उत्तरतः—रम् (अव्य०)[उत्तर+तत्, भाति वा] 1 उत्तर से, उत्तर दिशा तक 2 बाईं ओर की (विप० बहिष्कतः) 3 पीछे 4 बाद में।

उत्तरत्र (अव्य०) [उत्तर+त्र] पश्चात्, बाद में, फिर, नीचे (किसी रचना में), अन्तिम रूप में।

उत्तराहि (अव्य०) [उत्तर+आहि] उत्तर दिशा की ओर, (अर्था० के साथ) के उत्तर में,—अट्टि० ८।१००।

उत्तरीकम्—कम् [उत्तर+क, वा कम्] ऊपर पहुँचा जाने वाला अर्थ।

उत्तरेष (अव्य०) [उत्तर + एषम्] (म०, कर्म० के साथ अथवा समास के अन्त में) उत्तर ही ओर, के उत्तर दिशा की ओर— तथागार वनपत्रिगुहानुसारेणा-स्मदीयम्—येष० ७७ अ० पा०, मा० १।०५।

उत्तरायुः (अव्य०) [उत्तर + आयुम्] अगले दिन, आगामी दिन, काल ।

उत्तमैरम् [उद् + तर्भ + त्युट्] अवरदल छिद्रकी ।

उत्तार (वि०) [उपपतस्तानो विस्तारो वस्तान् - व० स०]

1. पतारा हुआ, फैलाया हुआ, विस्तार किया हुआ, प्रसृत किया हुआ—उत्तार० ३२३, 2 (क) पिल लेटा हुआ—मा० ३, उतानोच्छ्वनमकपाटितारं सनिभे— काव्य० ७, (ख) सीधा, सड़ा 3 सुखा 4 स्पष्ट, निष्कपट, मरा—स्वभावोत्तमहृदये प्रा० ५, स्पष्टवक्त्रता 5 ननोदर 6 छिछला। सम० पाद एक राजा, ध्रुव का पिता, 'क ध्रुव' (उतानपाद का पुत्र), ध्रुव तारा, - शाय (वि०) पीठ के बल सोता हुआ, पित लेटा हुआ—कदा उतानपथ पुत्रक जन-विपत्ति मे हृदयाद्धारम्— का० ६२, (-ब—धा) छोटा बच्चा, दूध-पीता या दूधमूँहा अर्थात्, शिशु ।

उत्तारः [उद् + तर्भ + घञ्] 1 भारी गर्मी, ज्वर 2 कष्ट, पीडा 3 उत्तेज 4, जोश ।

उत्तारः [उद् + त + घञ्] 1 परिक्लृप्त, बहन 2 पाद उतरना 3 तट पर लगना, तट पर उतराना 4 मुक्ति पाना 5 बमन करना ।

उत्तारकः [उद् + त् + णिप् + क्तृत्] 1 उदारक, बचाने वाला 2 शिव ।

उत्तारकम् [उद् + त् + णिप् + क्तृत्] उतारना, उदार करना, बचाना, —ष विष्णु ।

उत्तम (वि०) [अत्था० स०] 1 बड़ा, मजबूत 2 प्रथम, शोर—सि० १२३१३ सुप०, भयावक, भीषण—उत्ता-लास इमे शरीरस्य पुण्या शरिरहृमा—उत्तर० २३०, सि० २०।६८, मा० ५।११, ३, 4 हुक्कर, कठिन 5 उन्नत, उत्तम, ऊँचा—सि० ३।८, लः सव्यर ।

उत्तुङ्ग (वि०) [शा० स०] उन्नत, ऊँचा, लम्बा—करभने बानुमुत्तुङ्ग प्रमुञ्जति प्रथीयसीम् सि० २।८९, 'हेम-पीठानि २।५ ।

उत्तुम् [उद्गत तुपीज्जमात् - व० स०]—भूमि से पृथक् किया हुआ या भूना हुआ (लाजा) अर्थ ।

उत्तमक (वि०) [उद् + तिञ् + णिप् + क्तृत्] 1 अकामने वाला, अकामन वाला, उद्दीपक—सुप्त, काम' आदि ।

उत्तमन्—ना [उद् + तिञ् + णिप् + त्युट्, घञ् वा] 1 जोस दिलाना, मजकाना, उकसाना—समर्थ श्लोक—मुद्रा० ५, महावी० २, 2 उकेलना, होकना 3 अंकन, प्रेषित करना 4 उठ कराना, धार लगाना, (सत्पारिक) चक्काना 5 बड़ावा देना, मोत्याहूत देना ।

उत्तोर (वि०) [व० स०] उठी हुई या खड़ी मेहराको आदि से कहा हुआ—उत्तोरण रात्रपथ प्रवेदे—कु० ७। ६३, रघु० १।११० ।

उत्तोरकम् [उद् + तुण् + णिप् + त्युट्] ऊपर उठाना, उभारना ।

उत्प्राय [उद् + त्यप्र + घञ्] 1 निष्ठावलि देना, छोड़ देना 2 फेरना, उडाकना 3 सामारिक घातनाओं से संस्थान ।

उत्प्राय [उद् + त् + घञ्] अत्यन्त भय, भातक ।

उत्थ [वि०] [उद् + स्था + क] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त) 1 से पीदा या उत्पन्न, उदय होने वाला, जन्म लेने वाला—दमीकोत्थेन समीरयेन कु० १।८, ६।५९, रघु० १।२८२ 2 ऊपर उठना हुआ, ऊपर प्राना हुआ ।

उत्थानम् [उद् + स्था + त्युट्] 1 उदय होने या ऊपर उठने की क्रिया, उठना—यानैयंत्थुत्थानम्—भर्गु० ३।९ 2 (नक्षत्रादिक का) उदय होना—रघु० ६।३१ 3 उदयम्, उत्थानि 4 यनोत्थान 5 प्रथान, प्रथान, चेष्टा—मैदण्डेरुहपोर लघुअवन्त्यायानयोयु बपु मा० २।५, यनु-यान प्रथेयह—मनु० ९।२१५, (घञ् क् तिप्) प्रथान, कल्पनि-अभिपश्य 6 पीठय 7 तप, प्रथप्रता 8 युद्ध, लड़ाई 9 नेता 10 अंगन, अग्रमण्डप 11 अर्थि सीमा, षट् 12 जागना,—एकाम्बुती देव-उठनी कानिक-मूर्ति एकादशी, किष्णुप्रवोधिनी ।

उत्थानम् [उद् + स्था + णिप् + त्युट्, घञ्] 1 उठाना सडा करना, गगाना 2 उभारना, उन्नत करना, 3 उन्नेजिन करना, भरकाना 4, जगाना, प्रबुद्ध करना (आल० भी) 5 बमन करना ।

उत्थित (भू० क० क०) [उद् + स्था + क्तृत्] 1 उदित, या (अपने आयन से) उठा हुआ—बचा निष्ठाभ्या-नितमन्विन सन्—रघु० २।६१, ७।१०, ३।६१, कु० ७।६१, 2 उठाना हुआ, ऊपर गया हुआ—सि० १।१०, ३ आत, उत्थित, उदयन,—उदितयेन—रघु० २।६१, कृट पडा (कैसा कि जाय) 4 बकता हुआ, बर्धनेयसि (बल में), प्रगति करना हुआ 5 सीमा-अर्थ 6 विभूत, प्रसून—मा० ६।५। सम०—अंशुकिः फेलाई हुई हथेली ।

उत्थिति (स्त्री०) [उद् + स्था + क्तृत्] उन्नति, ऊपर उठना ।

उत्थमम् [वि०] [व० स०] उकटी पलकों वाला—उत्त-क्षमणोयनयोपररदुग्धिम्—मा० ५।१५, विक्रम० २ ।

उत्थः [उद् + प्त् + ण्] पथी ।

उत्थलम् [उद् + प्त् + त्युट्] 1 ऊपर उठना, उछलना 2 ऊपर उठना या जाना, चढ़ना ।

उत्थलक (वि०) [उलोमिता पताका वच—व. व०] बड़ा

ऊपर उठाए हुए, वहाँ सबेरे फहरा रहे हों—पुरंदरवी
पुरमुलताकम्—रघु० २।७४।

उत्पत्तिम् (वि०) [उत् + पत् + इच्छ्] उठता हुआ,
ऊपर जाता हुआ।

उत्पत्तिः (स्त्री०) [उत् + पद् + पितृ] 1. जन्म विपु-
ल्यतिमतामपत्तिमता—रघु० ८।८३, 2 उत्पादन—कुमुद
कुमुदीत्यानि श्रुयते न तु दुष्यते—भृगुरा० १७, 3
श्रोत, मूक—उत्पत्ति शब्दात्ताया—का० ४५, 4
उठना, ऊपर जाना, दिखाई देना 5 काम, उपजाऊपन,
पैदावार। सम०—उत्पत्तिः जन्म का एक प्रकार
(उपनयन संस्कार करने या यज्ञोपवीत पहना कर
छात्र को दीक्षित करना), द्विजत्व का चिह्न—मनु०
२।६८।

उत्पन्नः [उत्क्रान्त पन्थानम्—प्रा० स०] कुमारां (जात०
श्री) - गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकाममजागत, उत्पन्न-
प्रतिपत्त्यर्थं न्याय्यं अर्थात् ज्ञानम्। महा० (परि-
त्यागे विधीयते—पञ्च० १।३०६), सि० १।२।२४,
—अम् (अव्य०) कुमारां पर, पञ्चदश (मूला-अटका)।

उत्पन्न (भू० क० इ०) [उत् + पद् + क्त] 1 जात, पैदा
हुआ, उँसल 2 उठा हुआ, ऊपर गया हुआ 3 अर्थात्।

उत्पल (वि०) [उत्क्रान्त पल मासम्—उद् + पल् + अच्]।
मासहीन, क्षीण, दुबका-पतल—अम् 1 नील कमल,
कमल, कुमुद—अथावतार कमलादिबोत्पलम्—रघु०
२।३६, १।२।८६, मेघ० २६, नीलोत्पलपञ्चधारया—सं०
१।८, इसी प्रकार—रक्त 2 सामान्यतः पोषा।
मय०—अक्ष- चक्षुम् (वि०) कमल जैसी आँखों
वाला, -पञ्चम् 1 कमल का पता 2 किसी स्त्री के
नासून से की गई खोप, नक्षत्र।

उत्पलिन (वि०) [उत्पल + इनि] कमलों से भरपूर,—श्री
1 कमलों का समूह, 2 कमल का पोषा जिसमें कमल
समे हों।

उत्पलनम् [उद् + प्ल + ल्यट्] मार्जन करना, शोधन करना
—मय० ५।११५।

उत्पलः [उद् + पल् + पितृ + घञ्] 1 मूलोच्छेदन,
उत्पलन 2 बाह्य कान में शोध।

उत्पल्यम् [उद् + पल् + पितृ + ल्यट्] उखाड़ना, मूलो-
च्छेदन, उन्मथन।

उत्पलिका [उद् + पल् + पितृ + प्लु + टाप्, इत्यम्]।
ब्रह्म की छाया।

उत्पलिन (वि०) [उद् + पद् + पितृ + गिनि] (बहुधा
समान के अन्त में प्रयुक्त) मूलाच्छेदन करने वाला,
छात्रने वाला—कीर्त्यादीय धानर-पञ्च० १।२१।

उत्पलः [उद् + पल् + घञ्] 1 उड़ाव, उखाड़, कृचना
—एकपातेन एक छलाह में 2 उलट कर आना,
ऊपर उठना (आल० श्री)—करनिहतकणुकमया पागो-

त्पला मनुष्याधाम्—हि० १, अने० पा० 3 अमहीनी,
सकटभूक अथवा या आकस्मिक घटना,—उत्पातेन
आपिते च—वाति०, वैशी० १।२२, सापि सुकुमार-
नुभगेत्युत्पातपरपरा केचम्—काम्य० १० 4. कोई
सामाजिक संघट (बहान, मुवाकल आदि), केतु
—का० ५, 'वृषतेकाकेतु—मा० १।४८। सम०
—पथनः—वात्तः—वातासिः अग्निष्मूक या प्रचण्ड
वायु, अमर वा आधी—रघु० १।५।२३।

उत्पाद (वि०) [वि० स०] जिसके पैर ऊपर उठे हों,— व-
ज्यम्, उत्पत्ति, प्रादुर्भाव—दुष्के च शोचितात्पादे
शास्त्राङ्गुलेने तथा—वाज० २।२२५, 'महानुत्पद् पञ्च०
२।१७७। सम०—अयः—यनः 1 बच्चा 2 एक
प्रकार का हीतर।

उत्पादक (वि०) (स्त्री०—विका) [उद् + पद् + पितृ
+ क्त], सिखा या टाप् इत्य च] उपजाऊ, फलोत्पादक,
पैदा करने वाला, -कः पैदा करने वाला, जनक पिता,
—कम् उदगम, कारण।

उत्पादनम् [उद् + पद् + पितृ + ल्यट्] जन्म देना, पैदा
करना, जनन—उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपाकम्
मनु० १।२७।

उत्पादिका [उद् + पद् + पितृ + प्लु + टाप्, इत्यम्]।
1 एक प्रकार का कीड़ा, दीमक 2 माता।

उत्पादिक (वि०) [उद् + पद् + पितृ + गिनि] पैदा हुआ,
जात—सर्वमृग्यादि महानुत्पद्—हि० १।२०८।

उत्पादी [उद् + पल् + घञ् + क्रीप्] स्वात्म्य।

उत्पिन्नर-रु (वि०) [अ पा० स०] 1 मूलत, जो पिचड़े
में बन्द न हो 2 कमहीन, अल्पवृहत्।

उत्पीडः [उद् + पीड् + घञ्] 1 दबाव 2 (क) धारा-
प्रवाह, धाराप्रवाही बहाव—आप्योत्पीड—का० २९६
—उत्पीड इव धूमस्य मोहः प्राणाबुधोति माय—उत्तर०
३।९, नयनसलिलोत्पीडकच्छावकाजाय—मेघ० ९१ (स)

उत्पीडित, आधिक्य,—पुरोत्पीडे तदावस्य परीबाहः
प्रतिशिक्षा—उत्तर० ३।२९ 3. क्षय, फल।

उत्पीडनम् [उद् + पीड् + पितृ + ल्यट्] 1 दबाना, निचो-
ड़ना 2 पैलना, आघात करना—का० ८२।

उत्पुच्छ (वि०) [अ० स०] जिसकी मुँह ऊपर उठी हो।

उत्पुलक (वि०) [अ० स०] 1 रोमांचित, जिसके रोपटे
सबे हो गये हों 2 हृषीकूलक, प्रसन्न।

उत्पन्न (वि०) [अ० स०] प्रकाश बनेले वाला,—प्रवा-
पूर्व,—अः दहकीती हुई आग।

उत्पत्तः [उद् + प्र + प्लु + अच्] गर्भपात।

उत्पासः-साम् [उद् + प्र + अत् + घञ्, ल्यट् वा] 1.
फेंकना, पटकना 2 नवाक, अकाल 3. बहुरास 4.
खिली उड़ाना, उपहास करना, ध्वंसोक्ति।

उत्पेक्ष्यम् [उद् + प्र + ईप् + ल्यट्] 1. वृष्टिपात करना,

उत्साहः [उद् + सृ + धञ्] 1. प्रयत्न, प्रयास—सुन्दरसाहसमानित—मय० १८१६ 2. शक्ति, उमय, दृष्टा—मन्दासाहस्योऽस्ति मृगयाप्राप्तिका भावभ्येन—स० २, मन्दासाहस्यं कृपा—दि० ३, मेरे उत्साह को मत लोको 3. वैयं, ऊर्जा या तेज, राजा की तीन शक्तियों में से एक (प्रभाव और मंत्र से शक्तियों और हैं) कु० ११२२. 4. दृढ़संकल्प, दृढ़निश्चय—हृत्तितेन भाविसन्तोसाहस्यता वृत्ति—अनव १०, 5 सामर्थ्य, योग्यता—मनु० ५१८६ 6 दृढ़ता, सहन-शक्ति, बल 7 (अल० शा० में) दृढ़ता और सहन-शक्ति बहु भावना मानी जाती है जिससे वीर उस का उदय होता है—कार्याग्नेयु सरम्भ स्वयानुत्साह उच्यते—सा० २० ३, परंपराक्रमदानाद्विस्मृतिजना मीन-त्यास्य उत्साह रत्न० 8 प्रसन्नता। सम०—अर्थः वीररत्न (- नम्) ऊर्जा या तेज की वृद्धि, शौर्य,—अश्वि (स्त्री०) दृढ़ता, तेज, दे० (३) ऊपर, - हेतुकः (वि०) कार्यं करने की विद्या में प्रोत्साहन देने वाला या उत्पत्ति करने वाला।

उत्साहनम् [उद् + मद् + निष् + ल्युट्] 1 प्रयत्न, अथवाय 2 उत्साह बढ़ाना, उत्पन्नना देना।

उत्सिक्त (म० क० कृ०) [उद् + सिच् + क्त] 1 छिड़का हुआ 2 चमकी, अहकारी, उद्वत 3 बाहुबल, उमरना हुआ, अत्यधिक दे० सिच् (उद्-पूर्वक) 4 बचल, अशान्त—श्रीनीपादस्त्रिया वाचमुत्सिक्त-मनसा तथा - मनु० ८।७१।

उत्सुक (वि०) [उद् + सु + सिच् + क्त ह्रस्व] 1 अत्यन्त इच्छुक, उत्कण्ठ, प्रयत्नशील (करण या अधिकरण के नाप अथवा समान में)—निद्रया निद्राया बोधुक सिद्धा०, मनोनिवोधाच्चयोत्सुक मे - रघु० २।१५, मेघ० ९२, समान—स० ३।१५ 2 बेचैन, उद्विग्न, आतुर - रघु० १२।२५, 3 बहुत चाहने वाला, आसक्त बसोत्सुक—रघु० २।२२, 4 सिद्धमान, कुद्वद्वाने वाला, शोकाश्रित।

उत्सृज (वि०) [उत्सृज् + क्त] 1 डोरी से न बंधा हुआ, डोला, (रस्ती के) बंधन से मुक्त—सि० ८।१३, 2 अनियमित 3 (पाणिनि के विषय के) विपरीत—सि० २।११२।

उत्सृज् [उत्सृज् + क्त] 1 सायंकाळ, संघा।

उत्सृज् [उद् + सिच् + धञ्] 1 छिड़कान, उड़ेलना 2. फुहार छोड़ना, शोषार करना 3 उमड़ना, वृद्धि आशय—उत्सृजोत्सृजा—महावी० ५।३३ २९०, बल० भादि 4. चमड़, अहकार, वृष्टता—उपवा विविक्त, सप्तमनोत्सृजा कोसलेस्वरम्—रघु० ५।७०, अनुत्सृजो लक्ष्म्याम्—वर्त० २।६५।

उत्सृज् (वि०) [उत्सृज् + धि] 1 उमड़ने वाला, आत्यधिक 2. चमकी अहकारी, उद्वत—आत्येक्यन्-लोकिनी—स० ५।१०।

उत्सृज्यम् [उद् + सिच् + ल्युट्] फुहार छोड़ना या शोषार करना।

उत्सृज् [उद् + सिच् + धञ्] 1 ऊँचाई, उन्नतता (बास० भी)—पयोधरोत्सृज्यविशोर्भलहति (बलकम्) कु० ५।८, २५, ऊँची या उमरी हुई छाती 2. मोटाई, मोटापा 3. शरीर,—अथ मारना, बच करना।

उत्सृज्यः [उद् + सिच् + ङ्] मुक्कराहट।

उत्सृज्य (वि०) [उ० ल०] ऊँची आवाज करने वाला,—कः [प्रा० ल०] ऊँची आवाज।

उत्सृज्यस्ते (ना० वा० भा०) [उद् + स्वप् + ष्यङ्] सुधावस्था में बोलना, बड़बड़ाना, उद्विग्नता के कारण स्वल्प भाषा।

उत् (उप०) [उ + सिच् + ल्युट्] नाम और धानुओं में पूर्व लगने वाला उपसर्ग, वय० में निम्नांकित अर्थ उदाहरणसहित बतलाये गये हैं—1 स्थान, पद, या शक्ति की दृष्टि से श्रेयता, उच्च, उद्गत, ऊपर, पर, अतिशय, ऊँचाई पर (उद्वल) 2. पार्ष्वय, विषाजन, बाहर, से बाहर, से, अलग अलग आदि (उद्गच्छति) 3 ऊपर उठना (उतिष्ठति) 4 अभिग्रहण, उपलब्धि—(उर्वाति) 5 प्रकाशन (उच्छरति) 6 आश्चर्य, चिन्ता (उत्सुक) 7 मुक्ति (उद्गत) 8 अनुस्थिति (उत्पन्न) 9 कूक मारना, फुलाना, शोकना—(उत्सुक) 10 प्रकाशता—(उद्विष्ट) 11 शक्ति—(उत्साह)—सजाओ के साथ समकर इससे विशेषण और अर्थबोधक समाप्त बनाये जाते हैं—उत्सृज्य, उत्सृज्य, उदाह, उन्निद्रम्, उत्सृज्य और उदाहमम् आदि।

उत्सृज् (अन्व०) [उद् + अन्व + सिच्] उत्तर की ओर, के उत्तर में, ऊपर (अथा० के साथ)।

उत्सृज्य [उद् + ल्युट् वि० नलोप] पानी,—अनीत्वा पकृता वृत्तिपूर्वकं नावतिष्ठते—सि० २।३५, 1 सम०—अन्तः पानी का किनारा, लट तीर—आदिकान्ता-स्त्रियाधो अनीत्वात्तत्त्व इति भूयते—स० ५,—अश्विन् (वि०) व्यासा,—आधारः जलाशय, होव, कुनी,—अन्व-अन्तः पानी का अन्त, मुगड़ी, उदरम् अनीदर (एक राय त्रियम्—पेट में पानी भर जाता है),—अन्तम्, अश्विन्,—शिव्या,—अन्तम् मूत्र पुंशो या पित्तो का जल में लयन करना—बुकोदरस्वोदक-क्रिया कुः वेपी० ६, याज्ञ० ३।५,—बुधः पानी का बंधा,—बुधः पानी में बुलना, स्नान करना,—बुधम् पानी पीना,—बन्तु,—दार्शिक, दार्शिक बल देने वाला (- ङ) 1. पित्तों को जल-दान करने

बाला 2 उत्तराधिकारी, बन्धु-बाधव, -बाधव =
 कर्मन्, -बाधः बाधल, -भारः, -बोधः बोधनी बोधने
 की बधनी, -बद्धः गरज के साथ बोधार, -बाधकम्
 कोई भी बन्धव्यति जो बल में पैदा होती है, -बाधितः
 (स्त्री०) ज्वर दूर करने के लिए रोगी के ऊपर
 अभियन्तित बल छिड़कना -उ० बाल्युदकम्, -स्वामी
 शरीर के विभिन्न ज्यों पर बल के छोटे देना,
 -हाट पाप्ने बोधे बाला कहार ।

उदक (कि०) क (वि०) [उदक + कृच्, कृच् वा]
 पनीला, रसेदार, जलमय ।

उदकेष्वरः [अलृक् सं०] उदकवर, जल में रहने वाला जन्तु ।

उदकत (वि०) [उच् + अच्च् + क्त] उठाया हुआ, ऊपर
 की उभारा हुआ, -उदकतमुदक रूपान् -सिद्धा० ।

उदक्य (वि०) [उदकमूर्द्धनि दृष्ट्या० - उदक + यच्]
 जल की अपेक्षा करत वाला, -क्या कानुसती स्त्री,
 रक्षरवला स्त्री ।

उदक्य (वि०) [उपत्यमप्र मय्य- व० सं०] 1 उन्नत
 सिम्बर बाटा, उभंग हुआ, ऊपर की ओर गन्वत करता
 हुआ, यथा १ दंत 2 लबा, उतय, उंवा, उन्नत,
 उच्छ्रित (आल०) -उदक्यवनायुग्मि -वि० २।१,
 ५।१९ उदक्य सन्वत शब्द रूप० २।५३, उदक्य-
 ज्जुतव्यान् वा० १।७, उंकी छन्नने 3 विवृल विद्यान्,
 विवृल बहा अर्वात्तियावोऽप्यव्यवाद् रूप० ६।३२
 4 बयोपुद् 5 उल्काट, पूज्य, धेट्ट, अविबुद्ध, बवित
 -स मगलोऽव्यवप्रभाव -रूप० २।७१, १।६४,
 १।१५० 6 प्रवर, असह्य (साधारणिक), 7 भाषण,
 भवाकह गदमे दृगमूरप्रतागकाय् -रूप० १।६९,
 8 उनेवित प्रवण्ड, उल्लयित -मदीशरा ककुपान्
 -रूप० ६।२२ ।

उदक्युः [उच् + अच्च् + क्यच्] (तेज आदि गन्ने के लिए)
 चमड़े का बर्तन, कुत्ता ।

उदक्युः [उच् + अच्च् + क्यच्] (पु० - उदक्यु
 लु० - उदक्यु, स्त्री० - उदीपी) 1 ऊपर की ओर
 मुड़ा हुआ, या जाना हुआ, 2 ऊपर का, उदक्युतर 3
 उत्तरी, उत्तर की ओर मुड़ा हुआ 4 बाद का । सम०
 -अग्निः उत्तरी पहाड़, दियामय, अघनम् (= उत-
 गमय), भूमध्यरेखा से उत्तर की ओर सुयं की प्रगति
 -अभ्युक्तिः (स्त्री०) उत्तर दिशा से लौटना, -उदपा-
 वृत्तिगमने नारद -रूप० ८।३३, -स्यः उत्तरी देवा,
 -प्रवण् । (वि०) उत्तरीमुख, उत्तर की ओर मुका
 हुआ, -मुक् (वि०) उत्तराभिमुख, उत्तर की ओर मुह
 किया हुए -उत्पत्तोदकमूय बन् -मेघ० १४ ।

उदक्युत्तुः [उच् + अच्च् + लृच्] 1 बोका, शीत, -उदक्युत्तु
 सरजूतु पुत्र, विशाच -वस० १।७, 2 उदय होता
 हुआ, चकता हुआ 3 इकना, उदक्युत्तु ।

उदक्युत्तु (वि०) [व० सं०] दोनों हृदयों को मिला
 कर समुद्र बनाये हुए ।

उदक्युत्तु (वि०) [अन्वा० सं०] 1 मछली 2 एक प्रकार का
 साँप ।

उदधिः दे० 'उदन्' के नीचे ।

उदन् (वपु०) [उन्च् + कनिन् = उदक इत्यस्य उवन् जायेत्]
 जल, (यह शब्द प्रायः समान के आरम्भ या अन्त में
 प्रयुक्त होता है, और कर्म० के वि० २० के पदवन्
 -उदक' के स्थान में विकल्प में आयेज होता है, सर्वनाम-
 स्थान में इसका कोई रूप नहीं है, समान में अन्तिम
 न् का लोप हो जाता है उदा० उदधि, अश्वोद, शीरोद
 आदि) । सम० -कुंभ, जल का घड़ा -मनु० २।१८२,
 ३।६८, -ज (वि०) जलीय, पनीला, -बाल 1 पानी का
 बर्तन 2 बादल, -वि 1 पानी का आशय, समुद्र -उदधे-
 रिच विन्मगाननेष्वभ्यवशास्य विमलाना इवविन्त् रूप०
 ८।८, 2 बादल, 3 शीत, सरोवर 4 पानी का घड़ा
 -कन्या, ठमया, मुता मयूद की पुत्री लक्ष्मी, विशाला
 पुत्री, 'राज जलो का राजा अर्वात्तु महामागर, -मुता
 लक्ष्मी, द्वारका (कृष्ण की राक्षसणी), -बाधव् - श्री
 पानी का घड़ा, बर्तन, -वाच -बन्धु कापु के निकट
 का बाहड़ या हुआ, 'बहक (शा०) कुल का मंडक,
 (आल०) अन्वुम शोभ, जो केवल अपने आत्म-प्राप्त
 की बन्धुओं का ही सीमित ज्ञान रखता है -नु० कृष्ण-
 मयूद, वेष्म लेप, लेट्ट, वेरट, विष्णुः बल की बूँद
 कु० ५।२४, भार जल चारण करने वाला अर्वात्तु
 बादल, मय्य जो का पानी, धामः मय्य बाहक
 का पश्चिमर्वा भाव - मेघः पानी उगमाने वाला बादल,
 साधणिक (वि०) नमकीन या खारी, -बद्ध
 बादल की सरज के साथ उंठार, पानी की कुञ्जर,
 -बासः जल में रहना या बसना, महम्यरावीश्वरवात-
 नगरा -कु० ५।२७, -बाहू (वि०) पानी लाने वाला
 । ह) बादल, बाहून्म्य पानी का बर्तन, शरवः
 पानी म भाग कर्मोरा -विष्णु [उदकेन जनेन इवयति]
 छाछ, मट्ठा (जिसमें दो भाग पानी तथा एक भाग
 मट्ठा हो) - हरणः पानी निकालने का बर्तन ।

उदन्त [उदगान्तो मय्य व० सं०] 1 ममाधार,
 मूलकार्तो, पूरा विवरण, वर्णन, इतिवृत्त - धृत्वा राज
 प्रियादन्त -रूप० १।२६६, कामोदन्त मुहमुपगत-
 नः प्रामाणिकचिदन्त -मेघ० १०० 2 पश्चिमात्ता, मायु ।

उदन्तक [उदन्तः कन्] ममाधार, मूल कार्तो ।

उदन्तिका [उद + अन् + मिच् + क्च् + टाच् इत्यच्]
 सनाथ, मण्डित ।

उदन्तय (वि०) [उदक + क्यच् वि० उदन् जायेत् + विक्च्]
 प्यासा, -क्या प्यास, निकेश्यंतायुधवाप्रातीकार,
 -वेपी० ६, मट्टि० ३।६० ।

उद्यमन् [उद्य + मन् + लुप्, उद्यन् आदेश, मस्य ण]
समुद्र, -उद्यमन्शब्दात् -- बालरा० ११८, रघु० ४१५२,
५८, १०१६, कु० ७१०३ ।

उद्यय [उद् + इ + यन्] 1. निकलना, उगना (आत्म०
भी) - चन्द्रोदय उद्योदये - रघु० १०३६, २१०३ ऊपर
आना 2 आबिम्बित, उत्पन्न - यनोदय. प्राक् - श०
७३०, कर्मोदय - रघु० ११५, फल का निकलना या
निष्पन्न होना - कु० ३१८ 3 सृष्टि (विप० प्रलय)
कु० २१८ 4 पूर्वादि (उद्ययाचल - जितके पीछे से मूर्ध
का उदय होना माना जाता है) - उद्ययमूलसाङ्गमरी-
चिम्बि - विक्रम० ३१६ 5 प्रगति, समृद्धि, उदय
(विप० अस्तित्व) - तेजोदयस्य युगपद्युद्ययनोद्ययाम्याम्
- श० ४११, रघु० ८१८४, १११०३, 6 उगनन,
उत्कर्ष, उदय, वृद्धि - उद्ययमस्तमस्य ण रघु० ११८९,
७ फल, परिणाम 8 निष्पन्नता, पूर्णता
- उपस्थितोदयम् - रघु० ३१९, प्रारम्भमद्वन्द्वोदय
११२५, 9 काम नका 10 आय, राजस्व 11 व्याज
12 प्रकाश, चमक । सम० - अक्षयः - अत्रि,
- गिरि, - यन्त्र, - शील पूर्व दिशा में होने वाला
उद्ययाचल, जहाँ से मूर्ध और चन्द्रमा का उदर होना
माना जाता है - उद्ययगिरिबलासीबाकमन्दागुणाम्
- उद्भूत, जिनोदयवर्गमिनायमुत्कर्षे शि० १११६
नत उद्ययगिरिर्बैक उद्य मा० २१०, - अथ उद्यया-
चल का पठार जितके पीछे से मूर्ध का उदय होना
समझा जाता है ।

उद्ययन् [उद् + य + ल्युट्] 1 उगना, बढ़ना, उदर जाना
2 परिणाम, - यः 1 अगम्य मूर्ति 2 बलदेश का
राजा - प्राप्याकस्मीन्ददनकथाकोविदब्राम्बुद्धान् - मेघ०
३०, (उद्ययन प्रतिष्ठ बगदवयो राजा वा यह बाल्यराज
के नाम से विख्यात है) उद्ययन कौलास्त्री में राज्य
करता था । उद्ययस्त्री की राजकुमारी वासवपत्नी
ने उसे स्वप्न में देखा, तथा देखते ही वह उस पर
मोहित हो गई । चण्ड महोत्सव में उद्ययन को पोछने
में पकड़ लिया और कारागार में डाल दिया, परन्तु
वह में मन्त्री के द्वारा मुक्त किये जाने पर वह
वासवपत्नी को उसके पिता तथा अपने पतिद्वन्द्वी से
निकास कर ले भागा । रत्नावली नामक नाटिका का
नायक भी उद्ययन है । इसके जीवन की घटनाओं
के आधार पर और कई रचनाएँ हो चुकी हैं)
दे 'अस्त' भी ।

उद्ययन् [उद् + यद् + यन्] 1 पेट दुग्धोदरपुरकाय
- सम० २१११, तु० कुमोदरी, उदरजरी आदि 2
किसी बस्तु का भीतरी भाग, बाह्य, तहाना पत्र०
२१२५, रघु० ५१००, एका कारवायि कर्मवीरवन्क-
नम्बम् - श० ११२५, ११२९, अथ ८८. 3. जलोदर
२५

रोग के कारण पेट का फूल जाना - लस्य हीरदं जने
- पेट० 4 बच करना । सम० - आमाशुः पेट का
फूलना, - आमाशुः पेषिष, अतिहार, - आर्कः मानि,
- आशेषः केचुषा, पीलासृग्नि, - यन्त्र 1 क्लेशनाथ
या त्रिषिया, कचक या चिगृहवस्तर ओ केवळ छाती पर
पहनना आद्य 2 पेट को कठने वाली पट्टी, - विशाखा
(वि०) पेट, साइ, (बहुजीवी जिसकी भूख राखणों
वैधी होती है), (- यः) शोचनघट्ट, - वृष्य (अर्थ०)
जब तक पूरा पेट न भर जाय - उदरपुरं मुंछे
- सिद्धा०, पेट भर कर जाता है, - शोचनघट्ट, - भरन्
पेट भरना, पाकन पोषण करना, - अथ (वि०) पेट के
बच लेट कर सोने वाला (- यः) भूय, - सर्वस्वः
पेट, बहुजीवी, स्वादलोत्प, (जिसके लिए पेट ही सब
सूखे है) ।

उदरश्चि [उद् + च् + श्चिन्] 1 समुद्र 2 मूर्ध ।
उदरश्चरि (वि०) [उदर + म् + इत्, मूलानाम्] 1 कैवल
अपना पेट भरने वाला, स्वार्थी 2 पेट, बहुजीवी ।

उदरवत, उदरकि - त (वि०) [उदर + मनुर् भास्य
व, उदर + क्त, हल्च वा] बड़ी तीव्र बाला, स्वल्-
काय, मोटा ।

उदरिन् (वि०) [उदर + इनि] बड़ी तीव्र बाला, मोटा,
स्वल्काय, - भी यन्त्रेती स्त्री ।

उदरकः [उद् + अर्क (अर्थ०) + चञ् - उद् + ऋप् + चञ्
+ चञ्] 1 (क) अन्न, उपसहार, - गुलादकम्
- का० ३२८, (ख) फल, परिणाम, किसी किन्ना का
भावी फल - किन्तु कस्यांकोर्क अर्थव्यति - उतर०
४, प्रयत्न सफलोदकं एष - मा० ८, मनु० ४१७६,
१११० 2. अर्थव्यत्काल, उत्तरकाल ।

उदरिष् [वि०] [अर्थव्यति शिवाञ्च ब० सं०] चमकने
वाला, ऊपर की ओर ज्वालाना विकीर्ण करने वाला,
ज्योतिर्मय, उज्ज्वल - स्फुरद्भवि सहासा त्तीयादशः
कृत्वा किञ्च निष्पद्यत कु० ३१७१, ३१७९, रघु०
७१२४, १५१०६, - (ए०) 1 क्षिति - प्रतिष्ठीयिष्यं
कसे ओरते तेमिवास्तम् - शि० २१२२ २०५५,
2 कामवद 3 शिव ।

उदरितान् [उद् + अ + शी + क्त] घर, जाबाब ।

उदयु (वि०) [उद्युताभ्युत्थि मस्य - ब० सं०] फूट-फूट
कर रोने वाला, जिसके अक्षिरस आँसु बह रहे हों,
रोने वाला - रघु० १२१४, अम १११ ।

उद्यतन् [उद् + अत् + ल्युट्] 1 फँकना, उठाना, सीधा
साधा करना 2 बाहर निकाल देना ।

उद्यत (वि०) [उद् + आ + ट् + क्त] 1 उच्च, उन्नत
अर्थव्य का० ९२, वेणी० १, 2 भ्र, प्रतिष्ठित
3 उदार, बदान्य 4. प्रसिद्ध, विश्रुत, महान् - मन्त्रि-
वालयकिना - मानि० ११०६, 5 प्रिय, प्रियवच

6. उष्ण स्वरापाठ दे० नी०—सः 1. उष्ण स्वर में उष्णरित—उष्णरहात्—पा० ११२१, तात्पर्यादिपुं स्वानोपध्वाने नियमोऽनुपात्—सिद्धा०, अनुदात्त के नीचे भी दे०,—विहृत्स्वरौनेकपदे य उदात्त स्वरापाठ—सि० २१५५, 2 उपहार, दान 3 एक प्रकार का वाद्य—उपकरण, बड़ा डोल,—सम् (अल० शा०) एक अलंकार—सा० ६० ७५२, तु० काव्य० १०, उदात्त वस्तुन सपन्महता चंपलक्षणात् ।
- उष्णः [उद्+अन्+घञ्] 1 ऊपर की सास लेना 2 हास लेना, स्वास, 3 पांच प्राणों में से एक जो कण्ठ से आविर्भूत होकर सिर में प्रविष्ट होता है—अन्य चार हैं—प्राण, अपान, समान और व्यान,—स्पन्द-व्यथपर वक्त्र गात्रनेत्रप्रकोपन, उद्वेगवति मर्माणि उष्णानि नाम मास 14 नात्रि ।
- उष्णाम्बु (वि०) [ब० सं०] बिसने शक्न उठा लिया है, शक्न ऊपर उठाये हुए—मनुष्यपुंभित्तिर्व्यादीर्भंबद्धि-रुदायुषी, वेणो० ३१२२, उष्णाम्बुनात्तस्तान्दाता-श्रेय राघव—रघु० १२१४४ ।
- उषार (वि०) [उद्+आ+रा+ङ्] 1 दानशील, मुक्त-हृदय, दानो 2 (क) भद्र, श्रेष्ठ—स तर्कति विनेतुदा-र्यते—रघु० ८११ ५१२२, अय० ७१८ (ख) उष्ण, विख्यात, पूज्य,—कौत्सो—अि० ११८८, 3 ईमानदार, निष्कपट, सारा 4 अच्छा, बढ़िया, उमदा—उषार कल्प—सा० ५ 5 बायो 6 बहा, विस्तृत, विशाल, शानदार—रघु० १३७९,—उषारनेपथ्य-भूगम्—६, 6 मूल्यवान् वस्त्र पहने हुए 7 सुन्दर, मनोहर, प्यारा—कु० ७११४, सि० ५१२१,—रम् (अय०) जोर से—सि० ४१३३ । मम—आत्मन्,—चेतस्—चरित,—ममस्—सत्त्व (वि०) विशाल-हृदय, महामना—उषारचरिताता तु वसुधैव कुटुम्बकम्—हि० १, -षी (वि०) उदात्त प्रतिभाशील, अत्यन्त बुद्धिमान्—रघु० ३१३०,—उषार (वि०) जो देवने में सुन्दर है, वही आसो वाला—कु० ५१३६ ।
- उषारता [उदार+ता+टप्] 1 मुक्तहृत्ता, 2 समृद्धि (अभिज्यन्ति की) बचसाम्—मा० ११७ ।
- उषास (वि०) [उद्+अन्+घञ्] उत्सव, बीतराग, बेलाग,—सः 1 निस्पृह, दार्शनिक 2 तदम्बता, अनासक्ति ।
- उषासिन् (वि०) [उद्+आस्+णिनि] 1 निस्पृह, 2 तत्त्ववेत्ता ।
- उषासीन (वि०) [उद्+आम्+मानच्] 1 तटव्य, बेलाग, निष्कप—तद्विष्णुमूर्धासीन स्वामेव पुष्य बिदु—कु० २११३, (भौतिक मनार की रचना में कोई भाग न लेने हुए) दे० साव्य 2 (विधि में) अभियोग में अमबद्ध व्यक्ति 3 निरपक्ष (जैना कि राजा या

- राष्ट्र),—नः 1 अजनबी 2 तटव्य मय० ६१९ 3 सामान्य परिचय ।
- उषासितः [उद्+आ+स्था+क्त्] 1 अधीसक 2 डार-पाल 3 भ्रष्टिया, गुल्तर 4 तपस्वी जिसका ब्रत नङ्ग हो गया है ।
- उषाहरणम् [उद्+आ+हृ+ल्युट्] 1 बर्णन, प्रकथन, कहना 2 बर्णन करना, पाठ करना, समालाप आरम्भ करना—अर्थाङ्गुरसमव्ययमुदाहरणमनुपु—कु० ६१५५, 3 प्रकथनारम्भ नीत या कविता, एक प्रकार का स्तुतिपाल जो 'अपति' जैसे शब्द से आरम्भ हो तथा अनुप्रास से युक्त हो—वरणेभ्यस्त्वदीर जयोदाहरण भूत्वा—बिष्णु० १, जयोदाहरण बाङ्गोर्गापयानस किप्रदान्—रघु० ४७८, बिष्णु० २१४, (येन केनापि तालेन गद्यपद्यसमन्वितम्, जयत्युपक्रम मालि-न्यादिप्रासविचिचितम्, तदुदाहरण नाम विभक्त्यष्टाङ्ग-सप्तम्—प्रतापरद 1 4 निदर्शन, मिथ्या, वृथान-—समूहालमचनन्त पराश्रोहन्ति मानिन, प्रव्यसितान्य-तममस्तौदाहरण रवि 1 सि० २३३३ (न्या० में) अनुमानप्रक्रिया के पांच अंगों में से तीसरा 6 (अल० शा०) 'दृष्टान्त' जो कुछ अलंकारात्मिकों द्वारा अलंकार माना जाता है—यह अर्थान्तरन्यास से मिलता जुलता है—उदा० अमिषपुणोर्जि पदार्थो द्योपौकेन निन्दितो भवति, निविलससयनराजो गन्धे-नोपेण लघुन इव । रम०, (दोनों अलंकारों में भेद स्पष्ट करने के लिए 'उदाहरण' के नी० दे० रस०) ।
- उषाहार [उद्+आ+हृ+घञ्] 1 मिथ्या या वृष्टात 2 किसी भाषण का आरम्भ ।
- उषित (भू० क० कृ०) [उद्+इ+क्त्] 1 उगा हुआ चढ़ा हुआ—उषितमृदितम्—मा० १, मासि० २८८ 2 जैना, लडा, उन्म 3 बढ़ा हुआ, आविष्ट 4 उत्पन्न, पैदा हुआ, ५ कथित, उष्णरिः (उद् वः) यकृत रूप 1 मम—उषित (वि०) -विश्वो में पूर्ण-शिक्षित ।
- उषीकणम् [उद्+ईस्+ल्युट्] 1 ऊपर की ओर देखना 2 देखना दृष्टियात करना ।
- उषीकी [उद्+अन्+क्त्+घञ्+कीप्] उतर दिशा, -तेनोषीकी दिगमनसः—मेघ० ५३
- उषीकीन (वि०) [उषीकी+ण] 1 उतर दिशा की ओर मुड़ा हुआ 2 उतर दिशा में मग्न रहने वाला ।
- उषीच्छ (वि०) [उषीकी+घञ्] उतर दिशा में होने या रहने वाला, च्य 1 गङ्गवती नदी के पश्चिमोत्तर में स्थित एक देग 2 (ब० व०) इम देश के निवासी रघु० ८१६६, च्यम एक प्रकार की सुगन्ध ।
- उषीय [उदगता आवा यञ् उद्+अप् (ईप्) व० म०] बहुत पानी, जलप्लावन बाड़ ।

उदीरणम् [उद् + ईर् + ल्युट्] 1 बोलना, उच्चारण,
—अनिच्छयना उद्वाह प्रणयो वासो न्यादीनिभिरदी-
रणम्—कु० २।१२, 2 बोलना, कहना 3 फेंकना,
(तत्प्राधिक का) बहाना ।

उदीर्ष (मू० क० इ०) [उद् + ईर् + षत्] 1 बड़ा हुआ,
उगा हुआ, उत्पन्न 2 कृता हुआ, उत्पन्न 3. बसित,
गहन ।

उद्गम्भरः दे० उद्गम्बर ।

उद्गमल = उद्गमल ।

उद्गडा [उद् + गह् + क्त—टाप्] विवाहित स्त्री ।

उद्देव्य (वि०) [उद् + एज्—णिच् + क्त्वा] हिमाने वासा,
रूपाने वासा, भयकर—उद्देव्यान् भुतगणान् न्यवेपीत्
—मट्टि० १।१५ ।

उद्दयति (स्त्री०) [उद् + गम् + क्तिन्] 1 ऊपर जाना
उठना, बढ़ना 2 आविर्भाव, उदय, उदयस्थान 3 बमन
करना ।

उद्दयिष्य (वि०) [उद्गमो गन्धोऽय—डर्० सं० इत्यम्]
1 मुग्धयुक्त, स्ववृद्धार—विजम्भणोद्दयिष्य कुड्मलेभ्य
—रड० २६।५३ 2 नीरु गध वासा ।

उद्दयम् [उद् + गम् + क्त] 1 ऊपर जाना, (तारो
आदि कि), उगना चढ़ना—आज्यभ्रमोद्दयमेन—स०
१।१५, 2 (बासो का) नीचे लहे होना—रोमोद्दयम
प्रदुन्दुमुपाया—कु० ५।७३, मालवि० ५।१ अमर
३६, 3 बाहर जाना, बिदा 4 जन्म, उत्पत्ति, रचना
—पारिजातसोद्दयम्—मा० २, आधिर्भाव—फलेन
नहकारस्य पुष्पाद्गम इव प्रका—रघु० ४।९, कतिपय—
कुमुदोद्दयम कदम्ब—उ० ५२, उ० ३।२०, अमर ८१, 5
उभार, उत्पन्न 6 (किसी पीपे का) अकुरण—हरित-
तृणोद्दयमशङ्कुया मृगीभि—कि० ५।३८, 7 बमन
करना, उगलना ।

उद्दयन्म [उद् + गम् + ल्युट्] उगना, दिखाई देना ।

उद्दयमनीय (सं० इ०) [उद् + गम् + अनीयर] ऊपर
जाने या चढ़ने के योग्य, —यत् बले कपटो का बोधा
(तस्माद्दुग्गमनीय यद्वीतयोर्बन्धनोर्दुग्मन्)—धीतोद्दयम-
नीयवामिनी—रड० ५२, मूर्च्छितयत्पुत्रपानीयवस्त्रा—
कु० ७।११ (यहाँ मल्लि० 'उ' का अनुच्चार 'बोतवस्त्र'
करते हैं और कहते हैं कि 'दुग्गब्रह्मं तु नायिकाभि-
प्रायम्' दे० बही) ।

उद्दयद् (वि०) [उद् + गह् + षत्] गहरा, गहन, अत्य-
धिक, अत्यंत—उद्दयद्दरगोधया—मा० ५।७, ६।९,
—इन् आधिक्य, —(अब्ध०) अत्यधिक, अत्यन्त ।

उद्दयान् (पुं०) [उद् + नै + लृच्] यज्ञ के मुख्य चार
ऋषिओं में से एक जो सामवेद के मन्त्रों का गान
करता है ।

उद्दयारः [उद् + य् + क्तम्] 1. (क) निष्कासन, ब्रह्मा

बमन करना, कष्ट डालना, उत्सर्जन—सर्परीकम्प-
नद्रानां मदीयान्मुग्धनिष्पु—रघु० ५।५७, अशु० २।३९,
मेघ० ६३, ६६, वि० १२।९, (ख) बरन, प्रवाह विद्य
में धरो हुई बात का बाहर निकालना—रघु० ६।९०,
महावी० ६।३३, 2. बार बार करना, बर्षण—मा०
२।१३, 3. बूक, कार 4. उकार, अंत्यवर्ण ।

उद्दयारिन् (वि०) [उद् + य् + णिच्] 1 ऊपर जाने
वासा, उगने वासा 2 बमन करने वासा, बाहर भेजने
वासा—रघु० १३।५७ ।

उद्दयिरणम् [उद् + य् + ल्युट्] 1 बमन करना 2 बर
या कार गिराना 3. उकारवा 4 उद्गमन ।

उद्दीप्तिः (स्त्री०) [उद् + नै + क्तिन्] 1 ऊँचे स्वर से
गान करना 2 सामवेद के मन्त्रों का गान 3. भार्वा
ह्य का एक वेद—दे० परिशिष्ट ।

उद्दीप्यः [उद् + नै + क्त] 1 सामवेद के मन्त्रों का गान
(उद्गीता का पद्य) 2. सामवेद का उत्तरार्ध—युवात
उद्दीप्यिदो वसन्ति—उत्तर० २।३, 3. 'शोभ्' से
परधात्वा का तीन अक्षरों का नाम है ।

उद्दीप्य (वि०) [उद् + य् + षत्] 1 बमन किया हुआ
2 उगला हुआ, बाहर उदेला हुआ ।

उद्दीर्ष्य (वि०) [उद् + य् + षत्] ऊँचा किया हुआ,
ऊपर उठाया हुआ—वेणी० ६।१२ ।

उद्दयन्तः [उद् + क्तम् + क्तम्] अनुच्चार, उच्चारण ।

उद्दयिष्य (वि०) [उ + षत्] उद्गमनयुक्त (आल० नी) ।
उद्दयः—हृष्य [उद् + ग्रह् + अच् ल्युट् वा] 1 केना,
उठाना, 2 उला कर्षे को बाधित अनुच्छान अथवा
अप्य इत्यो से सम्पन्न हो सकता है 3. उकार ।

उद्दयद् (उद् + य् + क्तम्) 1. उठाना का केना, 2.
बाह का उत्तर देना, प्रतिपार ।

उद्दयिष्णिका [उद् + ग्रह् + णिच् + युच् + टा + क,
इत्थम्] बाह का उत्तर देना ।

उद्दयिष्ठि (पुं० क० इ०) [उद् + य् + णिच् + षत्]
1 ऊपर उठाया हुआ वा किया हुआ 2. हटाया हुआ
3. श्रेष्ठ, उत्तम 4. न्यस्त, युक्त किया गया 5. बद्ध,
नष्ट 6. प्रत्याख्यान, वाह किया गया ।

उद्दीप्य, उद्दीपिन् (वि०) [उगता व्रीधा यस्य—ड०
सं०, उभता व्रीधा—मा० सं० ३०—उद्दीप्या + इति]
गहन ऊपर उठाये हुए—उद्दीप्यैर्नृद्रे—मालवि०
१।२१, अमर ६३ ।

उद्दः [उद् + ह् + ष] 1 श्रेष्ठता, प्रमुक्ता (सवाल के
अन्त में) बाह्योद्दय—एक श्रेष्ठ बाह्य—उद्द-
दयश्च नियतकिञ्च न तु विषेष्णकिञ्च—शिव्वा०,
तु० मतलिककार्मणिकका प्रकाशमुद्दयत्कयो, प्रकाश-
वाचकायमुद्दि—अमर० 2. प्रकृता 3. श्रेष्ठता 4.
अग्नि 5 मनुष्य ६. सर्परीक्यत आधिक वायु ।

उद्बुधः [उद् + बुद् + भञ्] ककरी का लक्ष्य विज पर
बहुई ककरी एक कर बडना ही, आगरी-भीहोपुन-
भयलक्ष्मी कलिदायकान् विजय-भट्टि ७।१२२।
उद्बुधनम् [उद् + बुद् + भञ्, बुद् वा] राक,
...३३ उडकाना-वेध ११।

उद्बुधन् [उद् + बुद् + भञ्] १ राकना, बीटना-भयो-
वुधन्कोटकीरि सवा पुष्ते न जात किण-मुष्क २।११, २. जोटा।

उद्बुधः [उद् + बुद् + भञ्] बीकीवार मा बीकी
(जिलने हीय सरसक दल ठहरे)।

उद्बुधकः [उद् + बुद् + गिष् + भञ्] १. कुमी २. कुं
की रस्ती और डोल, कुर्दी की धरती (-भम् भी)।

उद्बुधन (वि०) (स्त्री-भी) [उद् + बुद् + गिष् +
भञ्] बीकना, ताका बीकना-बर्न यो न करोति
भिन्धितमति. स्वर्गशीलोद्बुधनम्-हि १।१५३, -भम्
२. प्रकट करना-बेनी १. २. उकत करना, ऊपर
उठाना ३. कुमी ४. कुर्दी पर की रस्ती ब डोल, पानी
निकासने की धरती।

उद्बुधतः [उद् + बुद् + भञ्] १. बारंन, उपकन-उद्-
धात. भयको दाताम्-हुं २।१२, आमुनाकपोद्बुधात
भाकिनीयो भगुर्विष-रद् ५।२० २. संकेत, उल्लेख
३. प्रहार करना, धामक करना ४. प्रहार, बध्प,
भाधात ५. हथकीका, लक्ष्मीका, (बाकी भादि का)
धक्का-वि० १।२२, रद् ० २।०२, बेनी ० २।२८, ६
उठना, उकत होना ७. भूधर ८. लान ९. पुस्तक
भाय, भयाय, अनुभाय, परिच्छेद।

उद्बुधोः [उद् + बुद् + भञ्] १. अंभी बाबाय में कहना
दिडोरा पीटना २. सर्वजन प्रिय बात, सामान्य विचारण।

उद्बुध [उद् + बुद् + भञ्] १. सटनक २. नूँ ३. मच्छर।

उद्बुध (वि०) [अभा० सं०] १. विज्ञाता मना, डठल या
ध्वज उठा हुआ ही-उद्बुधयध गृहीतिकापाम्-रद् ०
११।५१, लक्ष्मीकायना. मा० १, २ मजदूर, भयानक।
सम०-पाकः १. हड देने वाला २. एक प्रकार की
मच्छरी ३. एक प्रकार का सप।

उद्बुधुर (वि०) [प्रा० सं०] १. जिसके दोत लने, या
बाहुर निकले हुए हूँ २. अंधा, मन्दा ३. भयानक,
मजदूर।

उद्बुधम् [उद् + बु + भञ्] १. बकन, लीव-उठाने क्रिय-
नामी हु मत्पानां लव रज्जुभि-महा० २. पालन
बनाना, बस में करना ३. मजदूरिया, कटि ४. बुद्धा,
अंगीठी, ५. बहनाल।

उद्बुध (वि०) [उद् + बु + भञ्] १. ऊर्ध्वी २. विनीत।

उद्बुध (वि०) [सं० मं०] १. निर्वध, अनिधित, निरकुश,
नूनन-वि० ५।१० २ (क) सवक, सलाल-रद् ०
१।१५८ (क) बीकन, लक्ष्मी में बूर-भोतसुद्भान-

दियजे-रद् ० १।१०-वि० १।११५. भयावह
४ ल्लेच्छाचारो ५ अतिबहुत, विशाल, बडा, अ.पथिक
-मेध० २५, रत्ना० २।५, -कः १ यम २. बह०,
-भम् (अब्ज०) प्रचक्षता के साथ, भीषतापूर्वक,
बलपूर्वक - धर्मोद्धान् ज्योतिष्यत-उत्तर० ११९।

उद्बुधकम् [उद् + बु + गिष् + भञ् + कम्] एक प्रकार
का गह्वर, लसोरे का पल।

उद्बुध (वि०) [उद् + बु + भञ्] बंधा हुआ, बड।

उद्बुध (पु० क० इ०) [उद् + बु + भञ्] १. बलाधा
हुआ, विगिष्ट, विक्षेप रूप से कहा गया २. इच्छित
३. बाह्य हुआ ४. समझाया गया, सिखाया गया।

उद्बुधः [उद् + बु + भञ्] १. प्रचलित करने वाला,
बलाने वाला २. प्रजालक।

उद्बुधक (वि०) [उद् + बु + गिष् + भञ्] १. उत्तेजक
२. प्रकाशक, प्रजालक।

उद्बुधन् [उद् + बु + गिष् + भञ्] १. प्रदाने वाला,
उत्तेजना देने वाला २ (अभ० या०) जो रस को
उत्तेजित करे, रे० 'आकलन' ३. प्रकाश करना, जलाना
४. शरीर को रसम करना।

उद्बुध (वि०) [उद् + बु + भञ्] बमकता हुआ, रहकना
हुआ, -भ, -भम् गुग्गुल।

उद्बुध [उद् + बु + भञ्] धमरी अधिवासी।

उद्बुधः [उद् + बु + भञ्] १. संकेत करने वाला, निदेश
करने वाला २. वर्णन, विगिष्ट वर्णन ३. निर्दशन,
व्याख्यान, दुष्टान्त ४. निरचयन, पुष्का, सम-वेषण,
सोज ५. ससिधन ककत्थ या वर्णन-एष तुद्देगत
प्रोक्तो विमूढविस्तरगे मया-भा० १०।५०, ६. धन-
कायं ७. अनुबन्ध ८. अधिवाय, ध्वजोत्तन ९. स्वान,
प्रदेश, जगह-अहोः प्रवातनुभगोऽनुद्देहा-भा० ३,
मालवि० ३।

उद्बुधः [उद् + बु + भञ्] १. निरखन, दुष्टान्त
२ (गणित में) प्रथम, मन्दा।

उद्बुध (सं० इ०) [उद् + बु + भञ्] उदाहरण देकर
स्पष्ट करने या समझाने ज्ञान के राज्य २. अधिगत,
लक्ष्य, -स्वम् । लक्ष्यार्थ, प्रोत्साहक २. किसी व्यक्ति
(क्रिया)का कर्ता, (विप० विधेय) रे० 'अनुवाच भी।

उद्बुधोः [उद् + बु + भञ्] १. प्रकाश, प्रमा (सा० और
आल०)-विनिर्धने कृतीद्बुधोत्तम्-महा०, कुलीद्बुधोत्त-
करी लव रामा० अलङ्कत कण्ठे हुद् २. किसी पुस्तक
के प्रमाण, अध्याय, अनुभाय वा परिच्छेद।

उद्बुधकः [उद् + बु + भञ्] मागना, पीछे हटना।

उद्बुध (पु० क० इ०) [उद् + बु + भञ्] १. अंधा किया
हुआ, उकत, ऊपर उठाया हुआ-भाङ्गुलमुकतं बुधन्
-भट्टि १।० आमांशोत्तरि रबीनि-भा० १।८,
उठाई हुई, रद् ० १।५० हाका हुआ-वि० ८।५३

2. प्रतियोग, अत्यन्त, अत्यधिक 3. अतिमात्री, निरर्थक, अर्थहीन कृता हुआ—अत्यन्तशोचतः—रघु० १२।११
4 कठोर 5. उत्पत्ति, मूलकारण हुआ, प्रसन्न मनोमन-
राया—कि० १।१८, १९, मरदोहता अत्यन्त विषेष्ट
कु० ३।११ 6. शासन, राजसी—वीरोहता ममयतीव
पतिर्भरिणीम्—उत्तर० ६।१९, अत्यन्त, अत्यधिक,—तः
राज-मल्लः । तयः—अत्यन्त, अत्यधिक (वि०) धर्मो,
अहंकारो, धर्मही ।

उद्यतिः (स्त्री०) [उद्+हृ+मित्त] 1. उत्पन्न 2. चर्च, अतिमान, -वि० ३।२८ 3 अत्यन्तवृत्ता, वृत्तता 4 प्रहार ।

उद्यम [उद्+ध्मा+त- धमादेशः] 1. आशय निकालना, बनाना 2. धोर साध लेना, होपना ।

उद्यम्य [उद्+हृ+स्यृट्] 1. निकालना, बाहर करना, (बन्ध्याधिक) उतारना 2. निचोड़ना, निस्तारण, उखाड़ लेना,—अटक मनु० १।२५२, शम्भुशोच्यते-
गम्—मिता०, 3 उद्यम करना, मुक्त करना, बन्धन
करना—वीरोहतीवितलस्य—रघु० २।२५, स वन्धुर्वी
विपश्चानामापदुद्धरणमम्—हि० १।३, 4. उन्मूलन,
व्यस, परम्पत्ति 5 उद्योग, ऊपर करना 6. बन्धन
करना 7 मोक्ष 8 अद्यपरिचोद ।

उद्यम्य-उद्यम्य (वि०) [उद्+हृ+स्यृट्+तृच्, श्चुत् वा] 1 ऊपर उठाने वाला 2 आशीर्वाद, सपत्ति का हित्सेवार ।

उद्यम्यं (वि०) [उद्+हृ+स्यृट्+तृच्] कृष्ट, प्रसन्न,—वीः 1 बहुत प्रसन्नता 2 किसी कार्य को सफल करने के लिए उत्तरदायित्व लेने का साहस 3 उत्सव (बार्मिक पर्व) ।

उद्यम्यन् [उद्+हृ+स्यृट्] 1 प्राण कृटना 2 रोमांच होना, पुलक ।

उद्यम्यः [उद्+हृ+स्यृट्] 1 यथाग्नि 2 उत्सव, पर्व 3 इस नाम का यावत् जो कृष्ण का चापा तथा मित्र या (अथ अक्षर द्वारा कृष्ण मयुरा के चापे लये, ही गोचुक पालियो में उद्यम से मयुरा जाने और वहाँ से कृष्ण को बाणिस सिखा जाने की श्रावणा की । यावत् के अर्थ अन्त-मात्री विनाश को देख कर उद्यम कृष्ण के पास लये और पूछा कि अब क्या करें, कृष्ण ने तब उद्यम की बतलाया कि वह अक्षरिकायम आकर तपस्या करें तथा स्वर्गलाभ करें । 'उद्यमकृत' और 'उद्यमसिद्धि' की रचना का विषय 'उद्यम' है ।

उद्यम्य (वि०) [उ० स०] हाथ माने पतारे हुए या उडायें हुए ।

उद्यम्यन् [उद्+धा+स्यृट्] 1 वृत्ता, अनीठी, यज्ञकुम्भ 2 उत्सव देना, बन्धन करना ।

उद्यम्यन् (वि०) [उद्+हृ+स्यृट्] उद्यम्य हुआ, बन्धन किया हुआ,—तः हाथी बिलके मस्तक से मय चूना बन्ध ही गया हो ।

उद्यम्यः [उद्+हृ+स्यृट्] 1 शीघ्रकर बाहर निकालना, निस्तारण 2 मुक्ति, भाग, बचाव, अन्वेषण, मुक्त-कारा 3. उद्योग, ऊपर करना 4. (विधि में) वैयक्त सम्पत्ति से वैयक्त किया गया वह भाग जिसका नाम केवल व्येष्टे पुत्र ही उठा सके, छोटे भाइयों को पित्त माने वाले भाग के अतिरिक्त वह अंश जो कामुनन बड़े भाई को ही मिले—मनु० १।११२, 5. वृद्ध की मृत का छोटा भाग जिसका स्वामी राधा होता है—मनु० ७।९०, 6 अद्य, 7. सम्पत्ति का पित्त से प्राप्ति ही जाना 8 मोक्ष ।

उद्यम्यन् [उद्+हृ(पु)+स्यृट्+स्यृट्] 1. उद्योग करना 2 बचाना, भय से निकाल लेना, मुक्तकार, मुक्ति ।

उद्यम्य (वि०) [उद्+स्यृट्+तृच्] 1 अतिपणित, निरर्थक, मुक्त 2 वृद्ध, निरर्थक 3 भारी, भारपूर—हि० ५।१५ 4. मोटा, कृता हुआ, लुब्ध 5. शीघ्र, बचाव—शानि० ५।५० ।

उद्यम्य (पु० क० क०) [उद्+पु+स्यृट्] 1. विकारा हुआ, गिरा हुआ, उठावा हुआ, ऊपर फँका हुआ—अक्षर-मरोहतीवपि कुञ्जिकम्,—धन० 2 उद्यत, उँथा ।

उद्यम्यन् [उद्+पु+स्यृट्, गुणान्तः] 1. ऊपर फँकना, उठाना 2 विकारा ।

उद्यम्यन् [उद्+स्यृट्+स्यृट्] वृत्ती देना, गुणान्तः ।

उद्यम्यन् [उद्+स्यृट्+स्यृट्+स्यृट्] चूरा करना, पीसना; चूरा या चूरा इत्यन्ता—अमोहकम्—काव्य० १० ।

उद्यम्यन् [उद्+स्यृट्+स्यृट्] रोंपटे सके होना, पुलकना, रोमांचित होना ।

उद्यम्य (पु० क० क०) [उद्+हृ (पु)+स्यृट्] 1. बाहर शीघ्र हुआ, निकामा हुआ, निचोड़ कर निकाला हुआ 2 उठावा हुआ, उन्नत, उँथा किया हुआ 3 उखाड़ा हुआ, उन्मूलित—उद्यम्यः—रघु० २।१० ।

उद्यतिः (स्त्री०) [उद्+हृ (पु)+मित्त] 1. शीघ्र कर बाहर निकालना, निचोड़ना 2. निचोड़, चूना हुआ अर्थ 3 मुक्त करना, बचाना 4. विशेषतः भाग से मुक्ति निकालना, पवित्र करना, मोक्ष—अवन्ते टीर्थानि स्वर्गामिह अत्यन्तविधि—महा० २८ ।

उद्यम्यन् [उद्+ध्मा+स्यृट्] अनीठी, वृत्ता, स्त्रीच ।

उद्यम्यः [उन्मयुद्धकामिति शीघ्रम्—उद्+उन्म+स्यृट्, मि० उन्मोचस्यृट्] एक शरिया का नाम । तीर्थक्षेत्र अनीठपरिमितयोः—रघु० १।१८ ।

उद्यम्यन् (वि०) [अप्रा० स०] डीला किया गया—अ, अन्म 1. देवता, लटकना 2. स्वयं लौकी लगा लेना ।

उद्यम्यन्कः [उद्+अन्+स्यृट्] वर्षाशंकर भाति की शीघ्री का काम करता है—पु०—उद्यम्य—आशीर्वाचन

विद्यायां धातास्तांभोपवीचीन, तस्वीव नृपकन्यायां धातः सुनिक उच्यते । सुनिकस्य नृपत्या तु धाता उच्यन्त्याकाः स्त्रिया, निर्णयनेयैश्चैत्राणि अस्तुकारण अकल्पतः ।

उच्यन्ते (वि०) [उ० सं०] सकल, समस्त ।
उच्यन्तव्य (वि०) [उ० सं०] अध्वपरिपूर्णे, अध्वपरिष्ठावित वि० ३।५९ ।

उच्यन्तु (वि०) [उ० सं०] भूयाएँ ऊपर उठाने हुए, भूयाओं की कैलाये हुए—प्राकृतमये फले लोभापुद्बहा-हुरिर्बे वामन—रघु० १।३ ।

उच्युद्ध (पू० क० इ०) [उ०+यु०+कृ] 1 जागा हुआ, जगाना हुआ, उत्तेजित 2 खिला हुआ, कैला हुआ, पूर्ण विकसित—सा० १।१५, 3 यात्र विकसाया गया 4. प्रत्यामृत ।

उच्योक्तः—अनम् [उ०+यु०+यिच्+कञ्, ल्यट् वा] 1 जगाना, ध्यान दिखाना 2 प्रत्यास्मरण करना, उठाना—तनु कथ रामादिरत्यापुद्बोधकारणैः सीता-दिभिः क्षामाविकानां रघुपुंवाच—सा० १० ३, इसी प्रकार—रत्न० ।

उच्योक्तव्य (वि०) [उ०+यु०+यिच्+क्युच्] 1 ध्यान दिखाने वाला, 2 उत्तेजना देने वाला,—कः सुयै ।

उच्युद्ध (वि०) [उ०+भृ०+भृच्] 1 शेष, प्रमुक्त—पदे पदे सन्ति भटा रणोद्धृता—नी० १।१३२ 2 उत्कण्ठ, महानुभाव,—इः 1 अजाय फटकने के लिए छात्र 2 कष्टवा ।

उच्युः [उ०+यु०+युच्] 1 उत्पत्ति, रचना, अभ्य, प्रसव (सा० तथा आल०) इति हेतुस्तदुच्युते—काव्य० १, मास० ३।८०, बहुधा समास के अन्त में 'से उत्पन्न' अर्थ की प्रकट करता है—अकट्टुवा—विश्व० १।३ मणिराकरोद्धुः—रघु० ३।१८ 2 अंत, उत्पन्नत्वान 3. विघ्न ।

उच्युक्तः [उ०+यु०+कञ्] 1 उत्पत्ति, समस्त 2, अधीनार्थ ।

उच्युक्तव्यम् [उ०+यु०+यिच्+ल्युट्] 1 चिन्तन, कल्पना 2 उत्पत्ति, उत्पन्न, सृष्टि 3 अनवधान, उपेक्षा अच्युक्तना ।

उच्युक्तवित्तु (वि०) [उ०+यु०+यिच्+तृच्] ऊपर उठाने वाला, उत्कण्ठ बनाने वाला ।

उच्युक्तः [उ०+भा०+कञ्] चमक, इति ।

उच्युत्सित्, उच्युत्सुर (वि०) [उच्युत्सु+इति, वृत्च् वा] देशीयमान, चमकीला, उत्कण्ठ,—विभूषणोद्गाति विनद्धभोगि वा—कु० ५।७८ मच्छ० ८।३८, अमर ८१ ।

उच्युत् (वि०) [उ०+यिच्+यिच्] उगने वाला, अकुर फूटने वाला—(पू०) 1 वीथे का अकुर—अकुरोर्धिभ-नचोद्भिदि—अमर० 2 वीथ 3 झरना, फोहरा ।

सम०—अ (वि०) (उच्युत्) फूटने वाला, (वीथे की गति) उगने वाला (—क्याः) वीथ, - विद्या बनस्पति विद्यान ।

उच्युत् (वि०) [उच्युत्+क] फूटने वाला, उगने वाला ।
उच्युत् (पू० क० इ०) [उ०+यु०+क] 1 जात, उत्पन्न, प्रसूत 2 (सा० तथा आल०) उत्सु 3 वीथपर जो शान्तिद्वयो द्वारा जाना जा सके (गुणादि) ।
उच्युत्ति (स्त्री०) [उ०+यु०+कित्] 1 प्रजनन, उत्पादन 2 उत्पन्न, उत्कर्षण, समृद्धि—वर लम्बुरल हृद्येय-लक्ष्मणोद्भूतये विधि—कु० ६।८२ ।

उच्युते—अनम् [उ०+भिद्+यञ्, ल्यट् वा] 1 फूट पड़ना, बेचना, दिखाई देना, आविर्भाव, प्रकट होना, उदना—उमास्तनोद्भूतमनुप्रभृष्ट—कु० ७।२८, त योहना-द्भूतविशेषकान्त—रघु० ५।१८ वि० १८।३६ 3 निर्भर, फोहरा 4 रोमाच जैसा कि पुष्पकोद्भूत में ।

उच्युत्थवः [उ०+अय्+कञ्] 1 आधुनिक, चक्कर देना. (सलवार आदि का) घुमाना 2 घुमाना, 3 खेद ।

उच्युत्थवन् [उ०+अय्+क्युट्] 1 धर-उपर—हिमना-जुलना, घुमाना 2 उगना, उठना ।

उद्यत (पू० क० इ०) [उ०+यम्+क्त्] 1 उठाया हुआ, अंका किया हुआ—अभि, ०पाणि आदि 2 संभाल कर रखने वाला, परिश्रमी, चुन्त 3 तुला हुआ, तना हुआ (यनुप आदि)—वि० १।०१ 4 आमादा, तैयार, तत्पर, उत्सुक, तुला हुआ, लगा हुआ, व्यस्त (सप्र०, अवि०) तथा अनुप्रसूत के मास या बहुधा समास में)—उद्यत म्येयु कर्मणु—रघु० १।७।१, हनु स्वजनमुद्यता—अग० १।४५ अय०, कथ० आदि० ।

उद्यमः [उ०+यम्+कञ्] 1 उठाना, उत्पन्न 2 सतत प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, शैथं—निधाम्य बैना तपसे क्लोचयाम् कु० ५।३—वाचाक मेना न नियन्मुद्यमात्—५ दुष्ट सकल्प—उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै—यच० २।१३१ 3 तैयारी, तत्परता । सम०—भृत् (वि०) धीर परिश्रम करने वाला—अर्ज० २।७४ ।

उद्यमन् [उ०+यम्+ल्युट्] उठाया, उत्पन्न ।
उद्यमिन् (वि०) [उ०+यम्+गिनि] परिश्रमी, सतत प्रयत्नशील ।

उद्यमान् [उ०+या+ल्युट्] 1 भ्रमण करना, दहलना 2 बाग, बगीचा प्रमोदवन,—बाह्योद्यमान्धितहुरति-रत्ननिद्राधीनहर्मा—मेघ० ७, २६, ३३ 3 अभि-प्राय, प्रयोजन । सम०—वाक,—वाल्कः,—रजकः मासी, बाग का रजवाला, ।

उद्यमानम् [उ०+या+ल्युट्+कञ्] बाग, बगीचा ।
उद्यमान्य [उ०+या+यिच्+ल्युट्, युकायम्] घटादिक का पारम, समाप्ति ।

उद्योगः [उद् + युञ् + घञ्] 1. प्रयत्न, चेष्टा, काम-बंधा
—उद्देवमिति सधिस्य त्वेनेन्द्रोद्योगमात्मनः—एष०

२।१४० 2 कार्य, कर्तव्य, पत्र—कुप्योद्योगस्तत्र दिनकृ-
तपत्राधिकारी सती न—विष्णु० २।१, वैश्व, परिधमः।

उद्योगिन् [उद् + युञ् + चिनुन्] वृत्त, उद्यमी, उद्योग-
शील ।

उद्यः [उद् + र्ह्] एक प्रकार का जल जन्तु ।

उद्यध [उद्गतो रथो यस्मात्—ग० सं०] 1 रथ के घुरे की
कील, तसेल 2 घुरा ।

उद्यध [उद् + ध् + घञ्] गोरवृत्त, कोमाहल ।

उद्यध (मू० क० छ०) [उद् + रिष् + षत्] 1 बड़ा
हुआ अत्यधिक, अतिगण्य 2 विषय, स्पष्ट ।

उद्यध (वि०) [उद् + र्ह् + क्] गष्ट करने वाला, गष्ट
सोदने वाला (तट—आदि) यथा 'कूलमदुग्ध' में ।

उद्यधः [उद् + रिष् + घञ्] वृद्धि, आधिक्य, प्राक्त्व, प्राच्यं
—आनोद्देशकादिप्रतिपत्तयधन्यः सत्यनिष्ठाः—वेणो०

१।२३, गत्योद्देशक जघनपुत्रिने—सि० ७।७४।

उद्यधर [उद् + धस् + र्ह्] वर्ष ।

उद्यधन् [उद् + ध्व् + ल्युट्] 1 उपहार, दान 2 उद्ये-
लना, उभाइना ।

उद्यधन्—उद्यधितिः (स्त्री०) [उद् + ध्व् + ल्युट्, क्तिन्
वा] धमन करना, उगलना ।

उद्यधत् [उद् + ध् + घञ्] 1 अवस्था, आतिगण्य
2 आधिक्य, बाहुल्य 3 (तेल, उद्यधन आदि) मुद्राधित
पदासो की मानिद्य ।

उद्यधन्म् [उद् + ध्व् + ल्युट्] 1 ऊपर जाना, उठना
2 उगलना, बाइ 3 सम्पृद्धि, उपगमन 4 करबट बचलना,
उछाल लेना—चटलयाफोडतनयेधिलानि—मेघ० ४०

5 पीसना, बुरा करना 6 मुद्राधित उद्यधन आदि
पदासो का शरीर पर लेप करना, या पीढा आदि की
दूर करने के लिए मुद्राधित लेप ।

उद्यधन्म् [उद् + ध्व् + ल्युट्] 1 वृद्धि, 2 दबाई हुई
होती ।

उद्यध् (वि०) [उद् + ध्व् + अच्] 1 ले जाने वाला, आगे
बढ़ने वाला 2 आरी रहने वाला, निम्नतर रहने वाला
(बस आदि), कुल—उत्तर० ४, इसी प्रकार रजुइहं

४।२२, रघु० १।९, १।१५४,—ह्रः 1 पुत्र 2 बापु
के मात स्तरो में से चौथान्तर, 3 विवाह,—ह्रः

—पुरी ।

उद्यधन् [उद् + ध्व् + ल्युट्] 1 विवाह करना
2 सहारा देना, सहाये रखना, उठाये रखना—मूढ
प्रयुक्तोद्गहनक्रियाया—रघु० १३।१, १४।२०, रघु०

२।१८, कु० ३।१३ 3 ले जाया जाना, सवारी करना
मनु० ८।३७० ।

उद्यध (वि०) [उद् + ध्व् + घञ्] धमन किया हुआ,

उपका हुआ,—मन् 1. उपकला, धमन करना,
2 अनीटा, स्टोब ।

उद्यधत् (वि०) [उद् + ध्व् + षत्] 1 धमन किया हुआ
2 गव रक्षित (हाथी) ।

उद्यध [उद् + ध्व् + घञ्] 1 उपकला, बाहर फेंकना
2 हुक्मागत करना 3 (लक्ष्० में) पूर्व पद के
अन्त में पश्चवर्ती उतराग के अस्तित्व का अभाव
(विष्णव) ।

उद्यधः [उद् + ध्व् + घञ्] 1. निर्वासन 2, तिलांचलि
देना 3 बच करना ।

उद्यधन्म् [उद् + ध्व् + षिष् + ल्युट्] 1 बाहर निकालना,
निर्वासित कर देना 2. तिलांचलि देना 3. (बाग से)
निकालकर दूर करना 4 बच करना ।

उद्यधः [उद् + ध्व् + घञ्] 1 समाजना, सहारा देना
2 विवाह, पाणिग्रहण—असवर्णन्यम् त्रयो विधि-
ग्रहाहकर्मणि—मनु० ३।४३ (स्मृतियों में आठ प्रकार

के विवाहों का वर्णन है—शाह्यो देवस्तथा चार्थं प्राजा-
परयस्तथासुर, गाधर्वा राक्षसश्चैव वैशाख्यथाष्टम-
स्मृत) ।

उद्यधन्म् [उद् + ध्व् + षिष् + ल्युट्] 1 उठाना 2 विवाह,
—श्री 1 बहनी, रस्ती 2 कौडी, बराटिका ।

उद्यधिष् (वि०) [उद्वाह + ङ्] विवाह से संबंध रखने
वाला, विवाह विषयक (पञ्चादिक) मनु० १।१५।

उद्यधिष् (वि०) [उद् + ध्व् + षिष्] 1 उठाने वाला,
लीचने वाला 2 विवाह करने वाला,—श्री

रस्ती, डोरी ।

उद्यध् (मू० क० छ०) [उद् + विद् + षत्] सम्यक्,
पीडित, शोकप्रस्त, चिंतित ।

उद्यधन्म् [उद् + धि + ईष् + ल्युट्] 1 ऊपर की ओर
देखना 2. वृष्टि, आँस, देखना, नजर डालना—सखी-
जनेद्वीधमकीमदीमुक्त्—रघु० ३।१ ।

उद्यधन्म् [उद् + धीद् + ल्युट्] वला समता ।

उद्यधन्म् [उद् + ध्व् + ल्युट्] धमन, वृद्धि ।

उद्यधत् (मू० क० छ०) [उद् + ध्व् + षत्] 1 उठाया
हुआ, उँचा किया हुआ 2 उपसर्कर बढ़ता हुआ,
उमड़ा हुआ—उद्यधत् क इव सुखावह परेषाम्—सि०

८।१८ (यहाँ 'उद्यधत्' का अर्थ विचलित, धुँसल है) ।

उद्यधः [उद् + विद् + घञ्] 1 कापना, हिलना, लुहगना
2 क्षीय, उलंजना—मग० १।२।१५ 3 आसंफ, अय

—आनोद्देशोस्तिमितवयन वृष्टनक्षिर्भवाभ्या—मेघ०

३६, रघु० ८।७ 4 चिन्ता, क्षेण शोक 5 विस्मय,
आश्चर्य,—गम् सुपारी ।

उद्यधन्म् [उद् + विद् + ल्युट्] 1 क्षीय, चिन्ता 2 पीडा
पहुँचाना, कष्ट देना—उद्यधन्कर्मैर्धैविष्यहृत्पिता प्रवाम-
येत—मनु० ८।३५२, ३. शेर ।

उडेवि (वि०) [उडता डेरियं व० सं०] जहाँ जान
का राही उडेवी हो—विमान मधुमेदेवि—रघु० १७।१।

उडेक [उड् + क् + अच्] हिलना, कापना, बलधिक
कणकणी ।

उडेक (वि०) [उडकान्तो वेकाम्—अस्ता० सं०] 1 अपने
उट से बाहर उमड़ कर बहने वाला (नदी आदि)
—रघु० १०।३६, का० ३३३ 2 उचित सीमा का
उल्लंघन ।

उडेकित (भू० क० कृ०) [उड् + केल् + क्त] हिमाया
हुआ, उडाला हुआ,—तम् हिलाना, झड़ोडना ।

उडेक्य (वि०) [ए० सं०] 1. डीला किया हुआ—क्या-
चिपुडेक्यवातात्वात्थं—रघु० ७।१६, कु० ७।१७,
2 इन्धनमुक्त, कथनरहित,—मय 1 घरा डालना,
2 बाफा, बाइ 3 पीट या कूड़े में पीडा ।

उडेकु (प०) [उड् + कु + तुच्] पति ।

उडेकु (मपु०) [उड् + कु + तुच्] ऐन, जोड़ी दे०
उडेकु ।

उड् (क्या० पर०) (उमड़, उल— उड) बाइं करना,
तर करना, झान करना—या पृथिवी पयसोऽप्यन्ति ।

उड्यन् [उड् + ल्युट्] तर करना, बाइं करना ।

उड्यन्, उड्युर, उड्युच, उड्युह [उड् + उर—उड वा]
मुसा, चूहा ।

उड्यत (भू० क० कृ०) [उड् + न्यु + क्त] 1 उडया
हुआ, उडत किया हुआ, ऊपर उडया हुआ (बाल०
मी)—मर्तु० ३।२४, वि० १।७९, नताप्रतभूमिभागे
—स० ४।१४ 2 ऊँचा (बाल० मी) लम्बा, उल्टा,
बड़ा, प्रमुत्—रघु० १।१४, विक्रम० ५।२२, कि० ५।
१५, १४।२३, 3 मायक, भरा-पूरा (रबी का बरसकल
आदि), तः अवसर,—तम् 1 उड्यत 2 उड्यान,
ऊँचाई । सम०—आणत (वि०) उड्यत बीर हलित,
मिय—अनुर तुप्रताननम्—अमर०,—आरक(वि०)
दुर्धान,—चिरम् (वि०) अहमम्, बडा घमडी ।

उड्यति (स्त्री०) [उड् + न्यु + णिच्] 1 उड्यत, ऊँचाई
(बाल० मी) नीचे दे० 'उड्यति' 2 उल्लंघन, मर्यादा,
अभ्युदय, समृद्धि—स्त्रीकोनोप्रतिवायायानि स्तोकेनायार-
धोगातिम्—रघु० १।१५०, वि० १६।२२, मासि० १।
४०—महाजनस्य मयकं कस्य नोप्रतिकारक—हि०
३ 3 उडाना । नम०—ईशः गयड, (उड्यति का
स्वामी) ।

उड्यतिन् (वि०) [उड्यति + मनुच्] उड्यत, उड्यता हुआ,
फुला हुआ (जैसे कि स्त्री का कसकल)—सा पीनो-
द्विजमलयोपधुग्य घते—अमर ३०, वि० १।७२ ।

उड्यन्तम् [उड् + न्यु + ल्युट्] 1 ऊपर उडाना ऊँचा
करना 2 ऊँचाई ।

उड्यन् (वि०) [उड् + न्यु + ल्यु] कवा, बीधा, उड्यु,

ऊँचा (बाल० मी)—उड्यन्ताप्रपटमधुपमण्डितम्
तम्—सि० ५।३१ ।

उड्यन्, उड्यन्तः [उड् + नी + न्यु, घञ् वा] 1 उडाना,
ऊँचा करना 2 ऊँचाई उड्यन्त 3 सत्यम्, समता
4 अटकल ।

उड्यन्तम् [उड् + नी + ल्युट्] 1 उडाना, ऊँचा करना,
ऊपर उडाना 2 पानी खींचना 3 पर्यालोचन, विचार-
विमर्श 4 अटकल ।

उड्यत (वि०) [उड्यता नासिका यस्य व० सं०] ऊँची नाक
वाला,—उड्यत उड्यती बरभम्—भट्टि० ४।१८ ।

उड्याव [उड् + न्यु + घञ्] चिल्लाहट, रडाह, गुजन,
बहुहलाना ।

उड्याव (वि०) [उड्यता नासिर्यस्य—व० सं०] जिसकी
नासि उड्यो हुई हो, लुदिल, तोड़ वाला ।

उड्याह [उड् + नह + घञ्] 1 उड्यार, स्त्रीति 2
बीधना, बचनयुक्त करना,—हृष चाकलों के मोड़ से
बनी काँची ।

उड्यिह (वि०) [उड्यता निद्रा यस्य—व० सं०] 1 निद्रा
रहित, आगा हुआ—नामुप्रिद्रामबनिह,यना लोषयाताय-
नस्य—मेघ० ८८ विद्यमयत्युड्यिह एव जरा - सं०
६।४, मूद्रा० ४ 2 प्रसून, पूर्णविकसित मुकुलिन
(कमल आदि)—उड्यिहपुष्पाशिमहेश्वराज्ञा—सि० ४।
१६, ८।२८ ।

उड्यैतु [उड् + नी + तुच्] उडान वाला—(प०) यत्र के
१६ श्रुतिश्री में से एक ।

उड्यन्तवन् [उड् + मन् + ल्युट्] बाहर निकलना, पानी
से बाहर निकलना ।

उड्यन्त (भू० क० कृ०) [उड् + म् + क्त] 1 मद्यप,
नश में चूर 2 विधिपत, उड्यन्त, पागल—इवचोऽप्यन्ती
—विक्रम० २, मनु० १।७९, 3 फूला हुआ, उड्यन्त,
बहुसो पच० १।१६१, वि० ६।३१ 4 भूत वा जे
से बाधित—याज्ञ० २।३२, मनु० ३।१११, (बात-
पितवसेप्य मनिपानप्रदमभवेनाप्युट्—मिला०); तः
चतुरा । मय०—कीति,—वेसाः शिव,—मद्यप एक देग का
नाम (वट) गग। शीघ्र कसकल करती हुई बहती है।
—ब्रह्म०,—क्य (वि०) देवने में पागल,—प्रमणित (वि०)
पागल की बहक (—तम्) पागल के शब्द ।

उड्यन्तम् [उड् + म् + ल्युट्] 1 झाडना, ठेक देना 2
बघ करना,—अन्योन्मत्तोपबन्ता—रघु० ७।५२ ।

उड्यव (वि०) [उड्यतो मद्यो यस्य—व० सं०] 1 नश
में चूर, शराबी, रघु० २।१, १६।१४ 2 पागल,
भोषोदीन, उडाऊ—सि० १०।४, १६।६९ 3 पशा
करने वाला, माहक—मधुकता कृतवा मुहुकमयध्वनिमुद्रा
निमुद्राधरामुजये—सि० ६।२०,—बः 1 विधिपति
2 नशा ।

उन्मत्त (वि०) [उद् + मुत्तो मरणोपत्य—ड० सं०] प्रेम-
पीडा, प्रेमोद्दीप्त—तदाप्रमत्तमवस्था मितुर्भू—कु०
५।५५।

उन्मत्तव्यु (वि०) [उद् + मद् + इत्युच्] 1 पापक
2 मते में चू, अज्ञाने मरिचा पी हुई हा 3 किते मर
पुता हो (हापी) ।

उन्मत्त-नरक (वि०) [उद् + मत्त मता मत्त—ड० सं०,
कच् च] 1 उत्तेजित, विकृष्ट, सङ्कुष्ट, बेचैन—रघु०
११।२२, कि० १५।५५ 2 बेद प्रकट करना, किली
मिच के बिछोह से उदात्त 3 आसुर, उत्सुक,
उत्पापका ।

उन्मत्तवस्ते (ना० धा०, जा०—उन्मत्तीयु) बेचैन होना,
मन में क्षुब्ध होना ।

उन्मत्तः [उद् + मत् + चञ्] 1. खोन 2 बच करना,
हत्या करना ।

उन्मत्तकम् [उद् + मत् + कम्] 1. हिलाना, क्षुब्ध करना
2 बच करना, हत्या करना, धारना 3. (सकड़ी
आदि से) पीटना ।

उन्मत्तक (वि०) [ड० सं०] प्रकाशमान, वनकीला - रघु०
१६।६१ ।

उन्मत्तक [उद् + मद् + क्युट्] 1 रगड़ना, मलना
2 मालिश करने के लिए मृत्तिका (तैलाधिक) ।

उन्मत्तः [उद् + मत् + चञ्] 1 मालना, अतिपीडा
2 हिला देना, क्षुब्ध करना 3 बच करना, हत्या करना
4 बाल, पाश ।

उन्मत्त (वि०) [उद् + मद् + चञ्] 1 धामन, बिलिन
2 अमृतकित, - डः 1. पालनपन, बिलिनि। अहो
उन्मत्त उत्तर० ३ 2 नीर सजोम 3 बिलिप्लता,
मनक (मानसिक विचार) 4 (अस० शा० में) ३३
नवाग्निभाषे में से एक—बिलममोह उन्मत्तः काम-
वीकभयादिभि—सा० ६० ३, या विप्रलम्भमहापरि-
वरमालन्नादिजन्माज्यमिध्रन्वावभास उन्मत्त - रम०
5 शिला—उन्मत्तं वीथय पधानाम् सा० ६० २ ।

उन्मत्तव (वि०) [उद् + मद् + चिच् + क्युट्] पापल
बना देने वाला, मापक, - कः कामदेव के पाप वाधो
में से एक ।

उन्मत्तव्यु [उद् + मा + क्युट्] 1 तोलना, मापना 2 माप,
तोल ३ मत्त ।

उन्मत्तं (वि०) [उन्मत्त मापति—अत्या० सं०] कुवार्न-
मायो, -कीः 1. कुवार्न, कुवार्न से विचलन (आस० की)
2 अमृति आशय दुरी धान—उन्मत्तं प्रसिध्तामि
इतिवामि—सा० १६५, °प्रकृतं—१०३, - श्वेत्
(अथ०) मूला-मटका—यच० १।१६१ ।

उन्मत्तं [उद् + मद् + चिच् + क्युट्] रगड़ना, पीछाना,
मिटाना ।

उन्मत्तः [उद् + मा + क्युट्] माप, तोल, मत्त ।

उन्मत्त (वि०) [शा० सं०] मिला-मुका, विच-
विचिच ।

उन्मत्त (नु० सं० क्यु०) [उद् + मिच् + क्युट्] मूला
द्वजा (आम जादि), शिला दृका, फुलना दृका,
—सम् क्युटि, शालक—कु० ५।२५ ।

उन्मत्तः—अमृत् [उद् + मीत् + चञ् स्फुट् वा] 1. (आसो
का) सोलना, जागति 2 प्रकाशित करना, सोलना
— उत्तर० ६।३५ ३ फुलना, फूक मारना ।

उन्मत्त (वि०) (स्त्री० शी) [उद्—उन्मं मूल मत्त
—ड० सं०] 1 मूह ऊपर की ओर उठते हुए,
ऊपर देखते हुए अंटे मूह हृति पवनः कित्तिवि-
त्यम्मीनि—मेष० १५, १००, रघु० ३।३९, १।१२६,
आथर्व० १।५३ 2 तीरार, तुला दृका, निकटस्थ,
उद्यत तमरस्थसमाधयोन्मत्त—रघु० ८।१२, वन
में बने जाने के लिए तत्पर—१६।५, ३।१३

3 उत्सुक, प्रतीक्षक, उत्कण्ठित—तस्मिन् मर्यानामाद्यं
जाते परिणयोमुखे—कु० ६।३५, रघु० १२।२६,
६।२१, १।१३३ 4 धान्दायमान, मज्ज करता हुआ
—कु० ६।२ ।

उन्मत्त (वि०) [शा० सं०] उँचा मज्ज करने वाला,
कोलाहलमय ।

उन्मत्त (वि०) [उद्गता मूत्रा वसता - ड० सं०] 1 बिना
मूत्रर का 2 मूला दृका, शिला दृका, (कूल की
भक्ति) फुला हुआ ।

उन्मत्तकम् [उद् + मद् + क्युट्] जड़ से काट लेना,
उखाटना, मृत्तच्छेदन करना—न पादपोमृतनवचकि
रह—रघु० २।३५ ।

उन्मत्तः [शा० सं०] मृत्तता, मोटाटा ।

उन्मत्त—वपम् [उद् + मिच् + चञ्, स्फुट् वा] 1 (आसो
का) सोलना, पलक मारना—मूद्रा० ३।२१, 2 शिला,
मूला, फुलना—उन्मेष यो मम न महुते जाति—द्वीरी
निशावान्—काव्य० १०, दीपिकाकमलोन्मेष कु०
२।३३ ३ प्रकाश, धीप, दीपित सता प्रलोम्बेच-
मर्त्त० २।११५ निवृत्तुन्मेषवृत्त्युत्—मेष० ८।४ जग
जाता, उटना, दिखलाई देना, प्रकट होना, जान—
सा० ३।१३ ।

उन्मत्तकम् [उद् + मद् + क्युट्] सोलना, डीका करना ।

उन्मत्त (उप०) 1. यह उपसर्ग क्रिया या सहायों से पूर्व लग
कर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है—(क) निकटता,
तत्कालि—उपविद्यति, उपमच्छति (क) मालि, योग्यता
—उपकरोति (ग) व्यापि—उपकीर्णं (घ) परामर्श,
निश्चय (जो अन्वयाक द्वारा श्रव्य है) उपविद्यति,
उपदेश (ङ) मृत्, उपरति—उपरत्त (च) शेष,
अपराध—उपचत (छ) देना—उपवसति, उपहरति

(घ) खेडा, प्रवाल—उपल्पा नैष्य (ङ) उपक्रम, आरम्भ—उपक्रमते, उपक्रमः (झ) अध्ययन—उपाध्याय, (ट) आवर, पूजा—उपस्थानम्, उपचरति पितर पुत्र, 2 जिस समय यह उपसर्ग कियाओ से संबद्ध न होकर सज्ञा शब्दोंसे पूर्व लगता है तो उस समय—सामीप्य, समता, स्थान, सख्या, काल और अवस्था आदि की संज्ञित, तथा अधीनता की भावना आदि अर्थों को प्रकट करता है। उपकनिष्ठिका—कनिष्ठिका के पास वाली अंगुली, उपपुराणम्—अनुपनी पुराण, उपसृष्ट—सहायक अणुयापक, उपाध्यायः—उपप्रधान, अव्ययीभाव समासों में भी इन्हीं अर्थों में इसका उपयोग होता है—उपगङ्गम्=नगया समीपे, उपकूलम्, ०वनम् आदि 3 सख्यावाचक शब्दों के साथ लग कर सख्याबहुव्रीहि बन जाता है और 'संगम' 'प्राय' 'तकरीबन' अर्थ को प्रकट करता है,—उपत्रिंशत्—संगम तीस 4 पृथक् रहता हुआ भी यह (क) कर्म के साथ हीनता को प्रकट करता है—उपहरि सुरा.—सिद्धा० देवता हरि के निकट है (ख) अर्थि० के साथ यह 1 'अधिकता' और 'उत्कृष्टता' को—उपनिष्के कार्याणम्, उपपरायं हरेर्गंगा 2 तथा योग या जोड़ को प्रकट करता है।

उपकण्ठः—कण्ठम् [उपगल कण्ठम्—अल्पा० सं०] 1 सामीप्य, सान्निध्य, पड़ोस—प्राय तालीवनस्थानमसुपकण्ठे महोदधे—रघु० ५।३५, १३।५८ कु० ७।५१ मा० १।२ 2 ग्राम या उसकी सीमा के पास का स्थान—(अव्य०) 1 रदंन के उपर, गले के निकट 2 के निकट, नजदीक।

उपकथा [प्रा० सं०] छोटी कहानी, किस्सा। उपकनिष्ठिका कन्नी अंगुली के पास वाली अंगुली। उपकरणम् [उप+ङ+ल्युट्] 1 सेवा करना, अनुग्रह करना, सहायता करना 2 सामग्री, साधन औजार, उपाय—उपकरणोभावमायाति—उत्तर० ३।३, परोपकारोपकरण शरीरम्—का० २०७, याज्ञ० २।२७६, मनु० १।२७० 3 औषिका का साधन, जीवन को सहारा देने वाली कोई बात 4 राजचिह्न।

उपकर्षणम् [उप+कृष्+ल्युट्] मुनना। उपकणिका [उपकर्ष (अव्य०)+कन्+टाप् इत्वम्] अफवाह, जनश्रुति।

उपकर्ष (वि०) [उप+कृ+तृच्] उपकार करने वाला, अनुग्रहकर्ता, उपयोगी, मित्रवत्—हीनान्यनुपकर्षी प्रवृत्तानि विकुन्ते—रघु० १७।५८—उपकर्षी रसादीनाम्—सा० इ० ६२५, शि० २।३७।

उपकल्पनम्—वा [उप+कल्प+णिच्+ल्युट्, युष् वा] 1 तैयारी 2 उपलक्षित (तथ्यो) कल्पन करना, धनुना।

उपकारः [उप+कृ+षञ्] १ सेवा, सहायता, भय, अनुग्रह, आभार (विप० 'अपकार') उपकारापकारी हिलक्ष्य सङ्गमेतयो—शि० २।३७, साम्येत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जन—कु० २।५० ३।७३, याज्ञ० ३।२८५ 2 तैयारी 3 आनुषण, सजावट,—री 1 राजकीय तर्क 2 महल 3 सराय, धर्मशाला।

उपकार्यं (वि०) [उप+कृ+ष्यत्] सहायता करने के उपयुक्त—वा राजभवन, महल—रम्या रघुपतिनिधि स नभोपकार्या बाल्यात्परामिव दद्या महनोभूवास—रघु० ५।६३, शाही सेना—५।५१, ११।९३, १३।७९, १६।५५, ७३।

उपकुञ्चिः—चिक्ता [उप+कुञ्च+कि, कन् टाप् च] छोटी इलायची।

उपकुम्भ (वि०) [अल्पा० सं०] 1 निकटस्थ, समकत 2 अकेला, निराल, एकान्त।

उपकुर्वाणः [उप+कृ+घानन्] श्राद्धाण श्राद्धाचारी जो गृहस्थ बना चाहता है।

उपकुल्या [उप+कुल+यत्+टाप्] नहर, बाई।

उपकृष्य—ये (अव्य०) [अल्पा० सं०] कुएँ के निकट, 'बलाशय' कुएँ के पास बना चुबक्या जिसमें गाय भैर पानी पीते हैं।

उपकृतिः (स्त्री०)—उपक्रिया [उप+कृ+किल्न्, ष वा] अनुग्रह, आभार।

उपकृष्णः [उप+कृष्+षञ्] 1 आरम्भ, शुरु—रामायक-मयाकस्या रक्षपरिभक्त नवम् रघु० १२।४० राम के द्वारा आरम्भ किया गया 2 उपायमन, साहसिक बल पूर्वक आगे बढ़ना—मा० ७, इसी प्रकार—घोषिन सुकुमारोपकृष्ण—मा० 3 उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवसाय, कार्य, नीतिम का काम 4 योजना, उपाय, तरकीब, युक्ति, उपाचार—सामादिविश्वकर्मे मनु० ७।१०७, १५९, रघु० १८।१५, याज्ञ० १।३४५, शि० २०।७६, 5 परिचर्या, चिकित्सा 6 ईमानदारी की जोष दे० 'उपधा'।

उपकल्पनम् [उप+कल्प+ल्युट्] 1 उपायमन 2 उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवसाय 3 आरम्भ 4 चिकित्सा, उपचार।

उपकल्पिका [उपकल्पन+ङीप्, कन्, टाप् ह्रस्व] मूत्रिका, प्रस्तावना।

उपकीडा [अल्पा० सं०] खेल का मैदान, खेलने का स्थान।

उपकीला—कल्पम् [उप+कल्प+षञ्, ल्युट्] निम्बा, सिड़की, अपकर्ष—प्राणैक्यकोशमलीमसैर्वा—रघु० २।५३।

उपकोष् (पु०) [उप+कृष्+तृच्] (ओर से रेंघता हुआ) गया।

उपस्य (स्य) [उप + स्यन् + अच्] बीजा की प्रकार ।
उपस्यः [उप + सि + अच्] 1 रट करना, ह्रास, हाति 2 स्यः ।
उपस्येयः [उप + सिप् + अच्] 1. केंकना, उछाकना 2 उल्लेख, इंगित संकेत, मुहाबत—कामोपश्लेषमाधी तनुमपि रचयन्—मुद्रा० ४।३—राशुण कलुपसेय पापस्य—वेणी० ५ 3 बमकी, विशेष दोषारोपण ।
उपस्येयश्च [उप + सिप् + अच्] 1. नीचे केंकना, झाल देना 2 दोषारोपण, दोषी ठहराना ।
उपस्य (वि०) [उप + ग् + इ] (केवल समासान्त में) 1 निकट जाने वाला, पीछे चलने वाला, सम्मिलित होने वाला 2 प्राप्त करने वाला—अनु० १।५६, सि० १६।६८ ।
उपस्यः [प्रा० सं०] अग्रधान धेनी ।
उपस्यत (भू० क० ह्र०) [उप + ग् + त] 1 गया हुआ, निकट पहुँचा हुआ 2 बटित 3 प्राप्त 4 अनुभूत 5 प्रतिज्ञान, सहृदय ।
उपस्यति (स्त्री०) [उप + ग् + क्तिन्] 1 उपायमन, निकट जाना 2 जान, जानकारी 3 स्वीकृति 4 उपलब्धि, अवाप्ति ।
उपस्यन्—अवन् [उप + ग् + अच्, स्यट् वा] 1 जाना, बाहुल्य होना, निकट जाना सीमन्ते च त्वदुपस्यमश्न मन् नीप बनुनाम्—मेघ० ६५, मुद्राहाग आना—आयर्जनात्नान्धोपस्यमात्कुमारी रघु० ६।१९, १।५० 2 जान, जानकारी 3 उपलब्धि, अवाप्ति—विश्वामोपस्यमात्—भिन्नगणय—श० १।१४ 4 समोप (स्त्री-पुरुष का) 5 समाज, मण्डली—न पुनश्चमालामुपस्यन्—हि० १।१३६ 6 चलना, भ्रमणना, अनुभव करना 7 स्वीकृति 8, करार, प्रतिज्ञा ।
उपसिरि-रश्च (अभ्य०) [अभ्य० सं०—टच् (सेनकम्य मतेन)] पहाड़ के निकट, —रिः उत्तर दिशा में पहाड़ के समोप स्थित देश ।
उपसु (अभ्य०) मौ के समीप, —सु ग्वाला ।
उपसुक् [प्रा० सं०] सहायक अध्यापक ।
उपसुह (भू० क० ह्र०) [उप + सुह् + क्त] गुप्त, भासित, —इच् भासित—उपसुहानि सवेपथूनि च—कु० ४।१७, सि० १०।८८, कष्टमलेषोपसुहम्—अनु० ३।८२, मेघ० ९७ ।
उपसुहन् [उप + सुह् + अच्] 1 गुप्त रखना, छिपाना 2 भासित 3 आवरण, अचम्भा ।
उपसुहः [उप + सुह् + अच्] 1 कैं, पकड़ 2 हार, अनाथा—मुद्रा० ४।२ 3 कैदी 4 सम्मिलित होना, जोड़ना 5 अनुभव, मोलाहन 6 लघु ग्रह (राहु, केतु आदि) ।

उपसुहन् [उप + सुह् + अच्] 1. पकड़ना (नीचे से) समाले रखना, (बीता कि 'पापोपसुहन्' में) 2. पकड़, गिरफ्तारी 3. सहाय देना, बढ़ावा देना 4. वेत्नायमन—वेदोपसुहन्वापि तावत्तापय प्रभुः—राजा० 1 ।
उपसुहः [उप + सुह् + अच्] 1. उपसुह देना 2. उपहार ।
उपसुहाहः [उप + सुह् + अच्] 1. भेंट या उपहार 2. विशेष रूप से वह भेंट को किसी राधा या प्रसिद्धि व्यक्ति को दी जाय, नजराना ।
उपस्यतः [उप + हन् + अच्] 1. प्रहार, चोट, अभिज्ञेय अनु० २।१०५, पाठ० २।२५६ 2. विनाश, बर्बादी 3. स्वर्ण, सफर 4. सप्रहार, उत्पीडन 5. रोक 6. पाप ।
उपस्योच्यन् [उप + पूप् + अच्] विद्वान् पीठना, अवाप्ति करना, विज्ञान देना ।
उपस्यः [उप + हन् + क्त] 1. अन्वयत सहारा—ज्योतिषोपस्यन्-तरोर्बलतयो—रघु० १।४। २. सत्य, सहाय, संज्ञा ।
उपस्यः [प्रा० सं०] एक प्रकार का काल हल ।
उपस्यन् (गु०) [प्रा० सं०] यमुताक, चम्पा ।
उपस्यः [उप + सि + अच्] 1. इकट्ठा होना, जोड़, अ-वृद्धि 2. वृद्धि, बाढ़, आधिक्य—अक्ष० का० १०५, स्वसकयपचमे सि० २।५७, १।३२ 3. परिमाण, डेर 4. समृद्धि, उत्पान, अभ्युदय ।
उपस्यः [उप + अच् + अच्] 1. इलाय, चिकित्सा 2. निकट जाना ।
उपस्यरश्च [उप + अच् + अच्] निकट या समीप जाना ।
उपस्यम् [उप + सि + अच्] एक प्रकार की यज्ञानि ।
उपस्यारः [उप + अच् + अच्] 1. सेवा, सुधुवा, सम्मान, पूजा, सकार—अस्मत्तोपस्यारम्—रघु० ५।२० 2. शिष्टता, नम्रता, सौम्य, नम्र अभ्यहार (सौम्य का बाह्य प्रदर्शन) परिश्रम—हि० १।१३३, विधिनंनस्किनाम्—मालवि० ३।३, 'पदं न संविद—कु० ४।९ केवल सम्मान सुपच उचित, बाहुकारिता-पूर्ण अभिनन्दन 3. अभिवादन, प्रभावुकुल नमस्कार अर्थात्—नोपचार्यहीति—श० ३।१८, अक्षय, —मालवि० ४. अजति—रघु० ३।११, नमस्कार करते समय दोनों हाथ जोड़ना 4. संकोचन वा अविवादन की रीति का एक रूप,—राजसह हत्येच मां प्रत्युपचार सोमते तातपरिजनस्य—उत्तर० १, यथा मुत्सरोपचारोप—६ 5. बाह्य प्रदर्शन वा रूप, संस्कार, —प्राक्पेथीरिच लिङ्गैरेव उपोपचारः—विष्णु० ४ 6. चिकित्सा, उपचार, इलाज वा चिकित्सा का प्रयोग, शिष्टि—दश० १५ 7. अन्वयत, अनुष्ठान, सहायन, प्रवच—अथर्था—अनु० १।१११, १०।३२, कामोप-चारैषु—दश० ८१, प्रेम—वार्ता के संघासन में 8. अर्थात्कति अति करने या सम्मान प्रदर्शित करने के

साधन प्रकीर्णानिवोधधारम् (राजधान्यम्) रघु०
३४, ५४१, ५ अत (पूजा, उत्सव या सजावट आदि
की) कीर्ति भी साधक बस्तु—सम्मानकोषधारणाम्
—रघु० १०७७, कु० ७८८, रघु० ६११, पूजा की
बस्तुओं या उपचारों की सभा भिन्न-भिन्न (५, १०,
१६, १८ वा ६४) बतलाई गई है 10 व्यवहार,
लोक, आचरण - वैश्व-भूरीषधार च—मनु० ११११६
11 काम में आना, उपयोग 12 धर्मनिष्ठान, सत्कार
—प्रयुक्त पाणिग्रहोपधारी—कु० ७८६, महावी०
११२० 13 (क) आलंकारिक या साधकिक प्रयोग,
गौण प्रयोग (वि० 'मुक्त्य' वा 'प्राथमिक प्राय',
—अचेतनेऽपि चेतनबद्धपरदर्शनान्—शारी०, न चास्य
करयुक्तत्व तत्त्वतोऽस्ति इति भ्रुक्येऽपि उपधार एव
शरणं स्यात् काव्य० १० (ख) समता के आधार
पर बना काल्पनिक अभिज्ञान—उभयरुपा चैव युद्धा
उपचारेणाभिधित्वान्—काव्य० २ 14 रिखल 15
बहाना—शि० १०:२ 16 प्रार्थना, याचना 17 बिसर्ग
के स्थान में स् या घ का होना

उपधितिः (स्त्री०) [उप + धि + क्तिन्] हुकट्टा करना
सचय करना, बचन, वृद्धि

उपधूलनम् [उप + धूल + ल्यट्] गरम करना, जलाना।

उपध्वंसः [उप + ध्वं + शिच् + घञ्] ध्वंसन, नाश।

उपध्वंसनम् [उप + ध्वं + शिच् + ल्यट्] 1 प्रलोभन
देकर मनाना या फूसलाना, समझा बुझा कर किसी
कार्य के लिए उसका—उपध्वंसनैरेष स्व ते दापयित्
प्रयतिष्यते—द्रा० ६५ 2 आभय देना।

उपजन् [उप + जन् + अच्] 1 जोड़, वृद्धि 2 परिशिष्ट
3 उगना, उद्गमस्थान।

उपजल्पनम्-पिम्ब [उप + जल्प + ल्यट्, वा] बात,
बालचीत।

उपजाप [उप + जप् + घञ्] 1 चुपचाप कान में फूस-
फुमाना या समाचार देना—परकुल्ये भूदा० २
2 गध के विशे के साथ मूल बातचीत, फूट के बीज
बांकर बिद्रोह के लिए भड़काना—उपजाप इतनेन
तानाकोपकतस्त्वधि— शि० २१९, उपजापमहान् विज-
रूपमन् स विधाना नृपतीन्मदोद्धत—कि० २४७, १६।
४२ 3 अनेक, विधाय।

उपजीवक-किन् (वि०) [उप + जीव् + क्तिन्, जिति
वा] किसी दूसरे के सहारे रहने वाला, से जीविका
करने वाला (करण० के साथ या समास में)—जाति-
मातोपजीविनाम्- मनु० १२११४, ८१२०) नाना-
प्रयोगोपजीविनाम् १२५७, धृतोपजीव्यस्मि—मुञ्च०
२, -(पु०) पराभिन, अनुत्तर—जीमकात्तैर्नृपणु
स इभूयोपजीविनाम्—रघु० १११६।

उपजीवकम्—जीविका [उप + जीव् + ल्यट्, क्तिन् वा]

1 जीविका 2 जीवन-निर्वाह का साधन, गुजारा
या बुनि निम्नितार्थोपजीवनम्—वाच० ३१२३६

3 जीविका का साधन, सपनि आदि—किष्किर्त्स्वोप-
जीवनम्—मनु० ११२०७।

उपजीव्य (वि०) [उप + जीव् + क्त] 1 जीविका प्रदान
करने वाला—याज्ञ० २१२०७ 2 तरलक, तरलज
देने वाला 3 (आल०) जिनके के लिए सामग्री
देने वाला, जिससे कि यन्त्र्य सामग्री प्राप्त करे
—सर्वेषां कविमस्थानामुपजीव्यो भविष्यति—महा०,
—व्यः 1 सशक 2 श्रोत्र या प्रामाणिक व्रज (जिससे
कि यन्त्र्य सामग्री प्राप्त करे)—इत्यलमुपजीव्याना
मान्यानां व्याख्यानेषु कटासिनसोषेच—सा० ६० २।

उपजीव्य-वचम् [उप + जीव् + घञ्, ल्यट् वा] 1 स्नेह
2 सुयोगभोग 3 बार-बार करना।

उपज्ञा [उप + ज्ञा + अञ्] 1 अन्त करण में अपने आप
उपज्ञा हुआ जान, आधिकार (प्राप ममास में अहो
न्त्) समझा जाता है) पानिनेरपज्ञा पानिन्पुत्र ग्रन्थ
— सिद्धा०, प्राचिनमोक्ष रामायणम् रघु० १५६३
2 व्यवसाय या पहले कमी न किया गया हो— लोकेऽ
भूदुपज्ञमेव विद्युया सौजन्यजन्म यथा—रघुवच पर
मस्ति०।

उपज्ञोकनम् [उप + जीव् + ल्यट्] सम्मानपूर्णा घँट या
उपहार, नजराना।

उपज्ञाप [उप + तप + घञ्] 1 गर्मी, ओष 2 कष्ट,
दुख, पीडा, शोक—सर्वेषां न कश्चन न स्पृहात्पुपतापा
— वा० १३५ 3 सतक, मुनीवत 4 बीमारी
5 घोमना, हड़बडी।

उपज्ञापनम् [उप + तप् + शिच् + ल्यट्] 1 गरम करना
2 कष्ट देना, मारना।

उपज्ञापिन् (वि०) [उप + तप् + णिन्] 1 तपाने वाला,
जलाने वाला 2 गर्मी या पीडा को सहन करने वाला,
बीमार रहने वाला।

उपतिष्यम् [अण्य० म०] 1 आगनेया नक्षत्रपुत्र 2 पुनर्बन्धु
नक्षत्र।

उपत्यका [उप + त्यक्त् - पवंतस्थासन्न स्वलमुपत्यका
—सिद्धा०] पवंत की ललहटी, निम्नप्रभास्य—प्रलवा-
द्रेवत्यका—रघु० ४४६६, एते मन्व हिमवतोऽगिरेरेव-
त्यकारभ्यवासिन संप्राप्त्या—सा० ५।

उपवशः [उप + वश् + घञ्] 1 भुज या व्यास लगाने
वाली बस्तु, बात, बटनी अथवा आदि—द्विधानुपवशा-
नुपपाद्य—दश० १३३, अश्रमासोपवश पित्र नशयोभिना-
सवम्—वेणी० ३ 2 काटना, डकू मारना 3 आतसक
रोग।

उपवशांकः [उप + वृश् + शिच् + क्त] 1 मार्गदर्शक,
निर्देशक 2 इरापाल, साकी, गवाह।

उपबन्ध (वि०) [उप + बन्ध् + क्त] लगभग दस ।
उपबा [उप + बा + अङ्] १ उपहार, किसी राजा या महापुरुष को दी गई भेंट, नखराना, — उपदा विधिस्व. शास्त्रशास्त्रिका कोशालेश्वरम् १५० ५११, ७१० २ रिखत, वृत् ।
उपबाध्—**नकम्** [उप + धा + ल्युट्, कन् च] १ आहुति, उपहार २ सरला या अनुग्रह प्राप्त करने के लिए दी गई भेंट, जैसे कि रिखत ।
उपबिम्ब (स्त्री०), **उपबिम्बा** [प्रा० स०] मध्यवर्ती दिशा, जैसे कि ऐगानो, आग्नेयी, नैऋत्ये और बायबी ।
उपवेश—**वेष्टता** [प्रा० स०] छाटा देवता, पटिया देवता ।
उपवेशः [उप + विश् + घञ्] १ शिक्षण, अध्ययन, नसीहत, निर्देशन—सुशिक्षितोऽपि सर्वं उपवेशेन निष्पन्नो भवति—माल वि० १, शिवरांपदेशामुपदेशकाले प्रवेदिरे प्राशनमजन्मविद्या—शु० ११३०, मालवि० २११०, स० २१३ मनु० ८१२७७, अमर० २६, १२१५७ परीपदेशे पाश्चात्यम्—हि० ११०३ २ विशिष्ट निर्देश, उल्लेख ३ व्यपदेश, बहाना ४ दीक्षा, दीक्षा-सम्बन्ध देना—चन्द्रसूत्रमंथने तीर्थं सिद्धेशेन शिवालये, मन्त्रमात्र-प्रकथनमुपदेशे स उच्यते ।
उपवेशक (वि०) [उप + विश् + क्त] शिक्षण प्रदान करने वाला, अध्ययन करने वाला, —कः शिक्षक, निर्देशक, गुरु या उपदेशक ।
उपवेशनम् [उप + विश् + ल्युट्] नसीहत करना, शिक्षण देना ।
उपवेशिन् (वि०) [उप + विश् + शिनि] नसीहत करने वाला, शिक्षण देने वाला ।
उपवेश्ट (वि०) [उप + विश् + ष्] नसीहत या शिक्षण देने वाला, (प०—ष्ट) अध्यापक, गुरु, विशेषकर अध्यापक गुरु, —चक्रवर्ती वयमस्त्रिज संभवान्कर्मोपदेशा हृत्—वेणी० ११२३ ।
उपवेशः [उप + विश् + घञ्] १ मन्त्र २ चादर, इकन ।
उपवेशः [उप + विश् + घञ्] १ गाय के स्तनो का अग्रभाग २ दूध दूहने का पात्र ।
उपवेश [उ + वृ + अच्] १ दुःखद दुःखटना, मूसीबत, नकट २ बोट, कूट, हानि—पुनामसमर्पणायुपवेशा-यान्तो भवेत्कोप—पच० ११३२४, निरुपवेश स्वानम्—पच० १३ बलात्कार, उपवेश ४ राट्ट-सकट (राजा, युक्ति या शत्रु के प्रकोप से) ५ राष्ट्रीय अमानि, बिद्रोह ६ लक्षण, अकम्मात् या टपकने वाला रोग ।
उपवेशः [उप + वृ + मन्] उपबिधि, एक अग्रधान या तुच्छ धर्म-विषय (वि० पर) मनु० २१३३, ५१४४ ।
उपवा [उप + वा + अङ्] १ उल, जालसाजी, धोखा-

देही, कपट—मनु० ८११३ २ ईमानदारी की बाँध या परीक्षण—(बर्माईयलरीलक्षणम्—ग्रह भार प्रकार [निष्ठा, निष्कलता, सत्य तथा साहस का कष्ट गया है] ; (श्रीभयेत्) बर्माईयामिधिसांश्च सर्वाणि सचिबान् पुनः—कालिका प्र० ३. उपाय, तरीक—अवधोनिशु रासोके कोपया मरणादुते—शि० ११५८ ४ (ध्या० में) अन्त्याहार से पहला, १ सप०—मृतः बेईमान सेवक,—शुचि (वि०) परीक्षित, निष्ठावान् ।
उपवातुः [प्रा० स०] १ पटिया धातु, अर्धधातु—ग्रह विनती में सात है—सप्तोपवातव. स्वर्णमासिक तारमासिक कन्, तुल्य कौश्य च राशित्व सिन्दूर च मित्राजतु । सोनामासी, रूपामासी, सुलिया, कासा, मुवांश्व, सिहुर और शिलाजीत । २ शरीर के अग्रधान काव जो निती में छ है—स्तन्य रजो मसा स्वेदो दन्ता केशास्तबैव च, अोजस्य सत्यधातुना कमात्यनोपवातव—(दूध, रज, बर्षी, पसोना, दान, बाल और मोज) ।
उपवातम् [उप + वा + ल्युट्] १ ऊपर रखना या आराम करना २ तर्किया, गव्देशार नामन—विपुलमुपधान भूजलता—मनु० ३१७९ ३ विशेष-धता, व्यक्तित्व ४ स्नेह, कृपा ५ धार्मिक अनुष्ठान ६ भेदता, भेदत गुण—सोपधाना विष्य धीरा स्वपसी कटवयन्ति ये—शि० २१७७, (यहाँ 'उपधान' का अर्थ तर्किया भी है) ।
उपवागीमम् [उप + वा + अनीयर्] तर्किया ।
उपवाचनम् [उप + वृ + विश् + ल्युट्] १ सचिन्तन, विचार-विमर्श २ क्लीचना, (अकृही द्वारा) विचार ।
उपवि [उप + वा + क्ति] १ धोखादेही, बेईमानी, —अरिपु हि विजवाचिन श्रितीया विदधति सोपधि सन्निवृत्त-यानि कि० १४५, ६० 'अनुपवि' भी २ (विधि में) सचाई को बहाना, झूठा मुझाब—मनु० ८१६५, ३ धाम, धर्मकी, बाध्याता, यिया फुसलाहट—बलो-पधिविनिर्वाणम् व्यवहारानिबन्धेन—याज्ञ० २३१, ८९ ४ पवित्र का वह भाग जो नाभि और पुट्टी के बीच का स्थान है, पहिया ।
उपविकः [उपवि + क्त] धोखेबाज, प्रवचक—(दे० औपविकः अक्षि वृद्ध रूप) ।
उपवृत्ति (वि०) [उप + वृत् + क्त] १ धृती दिया गया २ मरणाभय, भावता पीडा-ग्रस्त,—सः मनु ।
उपवृत्तिः (स्त्री०) [उप + वृ + क्त] प्रकाश की किरण ।
उपव्याजः [उप + व्या + ल्युट्] मोट्ट,—नम् पूँक मारना, हाँस लेना ।
उपव्याजीवः [उप + व्या + अनीयर्] १ और क् से पूँक रहने वाला महाप्राण किरण—उपव्याजीवतामोद्यो—शिदा०

उपनयनम् [प्रा० सं०] गीष् तज्जघ पूज, जघधान तारा (एसे सारे किनती में ७२९ अक्षरसे जाते हैं) ।

उपनयनम् [प्रा० सं०] उपनयनम् ।

उपनयन [मू० क० छ०] [उप+नय्+क्त] आया हुआ, पहुँचा हुआ, प्राप्त, आ टपका हुआ आदि ।

उपनयिः (स्त्री०) [उप+नय्+क्तिन्] 1 पास जाना 2. मुकना, तति, नमस्कार ।

उपनयः [उप+नी+अच्] 1 निकट जाना, ले जाना 2. उपलब्धि, अर्थात्, शोध लेना 3 काम पर लगाना 4 उपनयन संस्कार—अनेक पहनाना, वेदाध्ययन की रीति देना—गृह्योक्तकर्मणा येन समीप नीयते गुरोः, बालो वेदाय तद्योगात् बालस्वीपनय विदुः । 5 तर्क-शास्त्र में भारतीय अनुमान प्रक्रिया के पाँच अंगों में से चौथा—प्रस्तुत विधिष्ट तर्क का प्रयोग—व्याप्तिविधिष्टस्य हेतोः पक्षधर्मता प्रतिपादकं बचनमुपनय -- तर्क० ।

उपनयनम् [उप+नी+ल्यट्] 1 निकट ले जाना 2. उपहार, भेंट 3 अनेक-संस्कार आसमावर्तनाकुर्वान्-कृतोपनयनो द्विव्—मनु० २।१०८, १७३ ।

उपनयनिका [प्रा० सं०] बन्धनवास का एक भेद, यह मायुष्य-अनक वर्षों के योग से बनता है, उदा० तु० काण्ड० ९ में दिने मयं उदाहरण की—अपसारय धनसारं कुक्षहारं दूर एव किं कर्मणः, अस्मत्समाप्तिं मृषामैरिति वदति दिवाविना वाक् ।

उपनयः—नयनम्=दे० उपनय ।

उपनायकः [उप+नी+क्त्वाच्] 1 नाट्य-साहित्य या किसी अन्य रचना में बह पात्र जो नायक का प्रधान सहायक हो, उदा० रामायण में लक्ष्मण, मालतीमाधव में मकरन्द आदि 2 उपरति, प्रेमो ।

उपनायिका [प्रा० सं०] नाट्य-साहित्य या किसी अन्य रचना में बह पात्र जो नायिका की प्रधान सखी या सहेली हो जैसे मालतीमाधव में मदपत्निका ।

उपनाहः [उप+तह्+घञ्] 1 गठरी 2 किसी घाव पर लगाई जाने वाली मरुह्य 3 बीणा की सूटी जिहको घरोड़ने में सितार के तार कले जाते हैं ।

उपनाहम् [उप+तह्+घञ्] 1 उबटने आदि का लेप 2 मासिका करना, लेप करना ।

उपनिक्षेपः [उप+नि+क्षिप्+घञ्] 1 बरोहर या न्यास के रूप में रखना 2 सुनी बरोहर, कोई वस्तु जिसका रूप, परिमाण आदि जग कर उसे दूसरे का समान दिया जाता है—वाङ्म० २।२५, (इम पर मित्ता० कहती है)—उपनिक्षेपो नाम रूपसम्बन्धाप्रदर्शनेन रक्षार्थाय परस्य हस्ते निहित इत्यम् ।

उपनिधानम् [उप+नि+धा+ल्यट्] 1 निकट रखना 2. जमा करना, किसी की देख-रेख में रखना 3. बरोहर ।

उपनिधिः [उप+नि+धा+क्ति] 1 बरोहर, अमानत 2 (विधि में) गृह्यरथ अमानत—वाङ्म० २।२५, मनु० ८।१८५, १४९, तु० मेधातिथि—उपनिधिस्तद्वत् सर्वज्ञानव्यादिना विहितं निधिष्यत—तु० वाङ्म० २।६५, और मित्ता० में उक्तविधे नारद ।

उपनिधातः [उप+नि+धा+ल्यट्] 1 निकट पहुँचना, निकट आना 2 आरम्भिक तथा अप्रत्याशित आरम्भण या घटना ।

उपनिधातिन् (वि०) [उप+नि+धा+तिन्] अर्थात् न आ टपकने वाला, अप्रार्थनियतिनीतिर्नर्था—म० ६ ।

उपनिष्पन्नम् [उप+नि+ष्पन्+ल्यट्] 1 किसी कार्य की समाप्ति करने का उपाय 2 बचन, विन्द ।

उपनिष्पन्नम् [उप+नि+ष्पन्+ल्यट्] आमन्त्रण, बुलावा, प्रतिज्ञापन, उद्घाटन ।

उपनिषेधित (वि०) [उप+नि+धिष्+क्ति] रक्षित गया, रखाति किया गया, बसाया गया कु० ६।३७ रघु० १५।२९ ।

उपनिषद् (स्त्री०) [उप+नि+सद्+क्विप्] 1 ब्राह्मण ग्रन्थों के माथ सल्लभ कुछ रहस्यवादी रचना जिनका मुख्य उद्देश्य वेद के गूढ़ अर्थ का निरचय करना है—भाषि० २।६०, मा० १।७ (निम्नालिप्त व्युत्पत्तिर्था) उसके नाम की व्याख्या करने के लिए यी गई है—

(क) उपनीय तस्मात्तान् ब्रह्मणामस्तद्भव यत्, निहृत्पविदा तज्ज व तस्मादुपनिषद्भवेत् । या (ख) निहृत्पलस्यैव स्वविधा प्रत्यक्त्वा परम्, नयवपास्त-सभेदमतो योगनिषद्भवेत् । या (ग) प्रवृत्तिहेतुत्रि-शेषास्तन्मूलोच्छेदकत्वात्, पक्षोपसर्पविद्या तस्मादु-पनिषद्भवेत् । मुचनकोपनिषद् में १०८ उपनिषदों का उल्लेख है, परन्तु इम सभा में कुछ और बढ़ि हुई हैं 2 (क) एक गूढ़ या रहस्यमय निदान (ख) रहस्यवादी ज्ञान या शिक्षा—महावी० ७।२ 3 पर-मान्या के सवच में सत्य ज्ञान 4 पवित्र एवं धार्मिक ज्ञान 5 गोपनीयता, एकात्मता 6 सतीत्यर्थ ब्रह्मन ।

उपनिषदः [उप+निष्+ङ्+घञ्] गवी, मुख्यधर्म, राजमार्ग ।

उपनिष्कन्धम् [उप+निष्+कम्+ल्यट्] 1 बाहर जाना, निकलना 2 एक धार्मिक अनुष्ठान या संस्कार निम्न वर्षों के सर्वप्रथम बाहर लुत्ता हुआ में निकाला जाता है (यह संस्कार प्रायः चार मास की आयु होने पर मनाया जाता है) तु० मनु० २।३७ 3 दम्ब या राजमार्ग ।

उपनृत्यम् [व० म०] नाचने का स्थाव, नृत्यशाळा ।

उपनृत्यु (वि०) [उप+नी+तृच्] जा नृत्य करता है, या निकट जाता है, ले जाय वाला—कु० १।५०,

मालवप्रिज्ञानस्योपनेत्री—शा० ९, (पु०—सा) उप-
नयन सकार को करने का शब्द ।

उपन्यासः [उप + नि + बन् + घञ्] 1. निकट रहना,
अपठ बयल रहना 2 बरोहर, अमानस 3. (क)
बकतभ्य, सुखाद, प्रस्ताव—पाठक अल एष बचनोप-
न्यास—श० ५ (ग) भूमिका, प्रस्तावना—विपति
सन्कीर्लीकबचनोपन्यासमाकीजन—अमर २३ (ग)
सकेत, उल्लेख—आत्मन उपन्यासपूर्वम्—श० ३
4 गिज्ञा, विधि ।

उपपत्तिः [प्रा० सं०] प्रेमी, चार—उपपत्तिरिव नीचे
पविचयान्तेन बन्धः—शिव० १११५५ १५१६३, मनु०
३।१५५, ५।२१६, २।७।

उपपत्ति (स्त्री०) [उप + पृ + क्तिन्] 1 होना,
घटित होना, आविर्भाव, उत्पत्ति, जन्म—शिव० ११६९,
मनु० १३।९ 2 कारण, हेतु, आधार—कि० ३।५२
3 तर्क, युक्ति उपपत्तिमदुहित बच—कि० २।१,
युक्तिबन्धने 4 योग्यता, औचित्य 5 निवचन, प्रदर्शन,
प्रदर्शित उपसहार—उपपत्तिपदाहुता बलात्—कि०
२।२८ 6 (अकार्यागत या ज्यामिति में) प्रमाण, प्र-
दर्शन 7 उपाय तरकीब 8 करना, जन्म में लाना,
प्राप्त करना, सम्मान करना—स्वाचीपपत्ति प्रति
दुर्बलात् रघु० ५।१२, तात्पर्यानुपपत्ति—भाषा०
द० अनुपपत्ति 9 अवधि, प्राप्ति—असत्तय प्राक्
तनबोधने—रघु० १।४।८ कि० ३।१।

उपपद्य् [प्रा० सं०] 1 वह शब्द जो किसी से पूर्व लगाया
गया हो या बोधा गया हो—अनुपपद्य वेदन्
कि० १।८।४, (अनुपपद्ये) तस्या स राजोपपर
निशानम्—रघु० १६।४० 2 परवी, उपाधि, सम्मान-
सूचक विशेषण गया आर्य, गर्मन—कच निरुपपद्यमेव
बाणकवयिति न आर्य बाणकवयिति—महा० ३
3 बाण्य का नीचत्व, किसी किमा या किपा से बने
सत्रा (कृपला) सत्रो से पूर्व लगाया गया उपसर्ग,
निपात आदि शब्द ।

उपपद्य (म० क० क०) [उप + पृ + क्त] 1 प्राप्त,
मेधित, सहित, युक्त 2 ठीक, दीप्य, उचित, उपयुक्त
(सब० या बधि० के साथ)—उपपद्यमिद बिसौषण
भायो—विष्णु० २, उपपद्यमेतद्विष्णु राजजि
—श० २।

उपपरीक्षा, अपनम् [उप + परि + ईङ् + भञ्, ल्युट् वा]
अनुसंधान, अधि पढ़ना ।

उपपातः [उप + पत् + घञ्] 1. अपत्यासित घटना
2 सकट, मुसीबत, दुर्घटना ।

उपपातकम् [प्रा० सं०] गुण्य पाप, जन्म—महापातक-
तुल्यानि पापाण्युत्तमि यमि तु, तानि पातकस्रजानि
तन्म्यूननुपातकम् । ब्राह्म० २।२।१० ।

उपपातकम् [उप + पत् + पित् + ल्युट्] 1. कार्यासित
करना, अथल में लाना, सपन्न करना 2 देना, दीपना,
प्रस्तुत करना 3 प्रयासित करना, प्रदर्शन, सबे द्वारा
स्थापना 4 परीक्षा, निवचन ।

उपपातकम् = उपपातकम् ।

उपपातकं-अर्थम् [अया० सं०] 1 कथा 2 पाख्यान, वाच्य
3 विरोधी पक्ष ।

उपपीडनम् [उप + पीड् + पित् + ल्युट्] 1 वेदना,
निषेधना, बर्षाद करना, उजाडना 2 प्रपीडित करना,
घोट पहुँचाना—व्याजिनिकोपपीडनम्—मनु० ६।६२,
१२।८० 3 पीडा, वेदना ।

उपपुरम् [प्रा० सं०] नगराक्ष ।

उपपुराणम् [प्रा० सं०] गीण या छोटा पुराण (इनके
नामों को जानने के लिए दे० 'अष्टादाशन्')

उपपुरिका [अया० सं०] सजाया कन्, टाप, इत्थम्]
अर्थाई लेना, होचना ।

उपप्रबर्षणम् [प्रा० सं०] निदोष करना, सकेत करना ।

उपप्रबालम् [प्रा० सं०] 1. दे देना, शीप देना 2 रिश्वत,
उपाय—उपप्रबालीमार्जोरी हितकृत्राश्रयंते जने—पच०
१।५५ 3 उपहार ।

उपप्रबालनम् [प्रा० सं०] 1 बहकाना, फुललाना
2 रिश्वत, फुललाहट, सल्लाख—उच्चबाबवाण्युप-
प्रबालनानि दश० ४८ ।

उपप्रेक्षणम् [प्रा० सं०] उपेक्षा करना, अवहेलना करना ।

उपप्रेक्ष् [प्रा० सं०] आनन्दन, बुलावा ।

उपप्लव् [उप + प्लु + क्त्] 1 विपत्ति, दुष्करण, सकट,
दुःख, आपदा—अथ मदनबबूलप्लवान्ते परिपालया-
बभूव—कु० ४।४५ अथियुन दामवुप्लवेम्भ.
प्रजा पति—रघु० २।४८ 2 (क)दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना,
आघात, कष्ट—कश्चित् बायादिप्लवो व—रघु०
५।६ वेध० १७ (क) बाया, कलाकट 3 उल्लान,
सताना, कष्ट देना—उपप्लवाय लोकाना धूमकेतुरिषो-
त्पित कु० २।३२ 4 हर, भय, दे० नी० 'उप-
प्लविन्' 5 असाक्षुन, अविष्टकर देवी उपप्लव 6 विरोध-
कर मृगबहण वा शत्रुघ्न 7 राहु 8 अराजकता ।

उपप्लविन् (वि०) [उपप्लव + इति] 1 दुःखी, कष्टग्रस्त
2 अथाचार में पीडित—नृपा इषोपप्लविन परेम्भ
—रघु० १३।७।

उपप्लवः [उप + क्लृ + घञ्] 1 सबध 2 उपसर्ग
3 रतिक्रिया का आसन विशेष ।

उपप्लवः-अर्थम् [वदं + घञ्, ल्युट् वा] तक्रिया ।

उपप्लव (वि०) [प्रा० सं०] कुल, बोधे बहुत ।

उपप्लवः [अया० सं०] कहीनी से नीचे का हाथ का भाग ।

उपप्लवः [उप + प्लु + घञ्] 1 भाग आना, पक्षधनन
2 (कविता का) एक भाग ।

उपधाता [प्रा० म०] बोलचाल की गौण भाषा ।
उपच्छत् (स्त्री०) [उप + भृ + क्त्विप्, तुकागम] यज्ञो में प्रयुक्त होने वाला गोल प्याला ।

उपभोग [उप + भुज् + घञ्] 1 (क) रसास्वादन, खाना, चक्करा—न जानु काम कामानामुपभोगेन धाम्यति—मनु० २।१८, याज्ञ० २।१७३, काम०—भग० १६।११ (क) उपभोग, प्रयोग—सं० ६।४ 2 रति-मुक्त, स्त्रीसहवास रघु० १।४।२४ 3 कलौपभोग 4 आनन्द, सन्तुष्टि ।

उपमन्त्रयाम् [उप + मन्त्र् + ल्यट्] 1 सवोधित करना, आसन, बुलावा 2 उक्तमाना, उपच्छदन ।

उपमन्थनी [उप + मन्थ् + ल्यट् + ङीप्] अग्नि को उद्दीप्त करने वाली लकड़ी ।

उपमर्द: [उप + मृद् + घञ्] धर्मण, रण, उवाच, वोज के नीचे कुचल जाना,—अयामु तावदुपमर्दपद्मानु बृह्ण लोत्रं किनोदय मन मुमनोलनामु- गा० द० (यहाँ 'उपमर्द' का अर्थ है—उड़न व्यवहार या सभोगजन्य रतिमुक्त) 2 नाश, आघात, वध करना 3 शिष्टकना, दुर्वचन कहना, अपमानित करना 4 भूली अलग करना 5 आरोग का निराकरण ।

उपमा [उप + मा + अञ्] 1 समरूपता, समता साम्य स्फोटोपम भृतिगिनेरु सम्भूना- सि० १।४, १।७।२, १ (अ० मा०) एक दूधदे ने भिन्न दो पदार्थों की तुलना, तुलना, तुलना—साधर्म्यमपमा भेदे—काण्ड० १०, सादृश्य सुदर वाक्याधीपस्कारक-मपमाकृति-रत्न०, या—उपमा यत्र सादृश्यलक्षणी-मल्लसति उयो, हसोव कृष्ण ते कीर्ति स्वर्गज्ञायवयगते । बन्दा०, ५।३, उपमा कालिदास्य—सुभा० 3 तुलना का मापदण्ड—उपमान, क्या बातों निदान-धा नेगते सोपमा मृता—भग० ६।१९ दे० 'द्रव्य नी०, बहुधा समासात् में 'की भांति' मिलने-जुड़ने—द्वयं च न वृक्षोपम-रघु० १।७७, इसी प्रकार अनुरोध, अनुपम आदि 4 समानता (चित्र, मूर्ति आदि की) । सम०—ब्रह्मन् तुलना के लिए प्रयुक्त किये जाने वाला पदार्थ—सर्वापमाद्रव्यमव्युच्यते—कु० १।४९ ।

उपमातृ (स्त्री०) [प्रा० सं०] 1 दूसरी माता, दूध पिलाने वाली धात 2 निकट संबंधिनी स्त्री—मातृपसा मातृ-सानी पितृपस्रो पितृपसा, वधू पूर्वजपत्नी च मातृतुल्या प्रकीर्तिता—शान्द० ।

उपमानम् [उप + मा + ल्यट्] 1 तुलना, समरूपता—जाता-स्तदुपमानवासा—कु० १।३६ 2 तुलना का माप-दण्ड जिससे किसी की तुलना की जाय (वि० उपमेय) उपमा के चार अंशित गुणों में से एक—उपमानम्-पुत्रिलसिनाम्—कु० ४।५, उपमान्यापि सखे प्रपुप-मान वपुस्तत्या—विष्णु० २।३, सि० २०।४९

3 (न्या० दर्शन में) सादृश्य, समानता की गण्यता, चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जो यथार्थ ज्ञान तक पहुँचाने में सहायक होता है—इसकी परिभाषा—प्रतिष्ठसाधन्यायं साधनोधनम्, या, उपमितिक-अनुपमान उपमे सादृश्यज्ञानात्मकम्—तर्क० ।

उपमितिः (स्त्री०) [उप + मा + क्तिप्] 1 समरूपता, तुलना, समानता—पल्लवोपमितिगाम्यसपसा- सा० द०, लदानव्योपमिनी इरिटना—नी० १।२८ 2 (न्या० द० में) सादृश्य, नियमन, सादृश्य से प्राप्त वस्तुज्ञान, उपमान के द्वारा विगमित उपसंहार—अप्य-अप्यनुमितिसंयोगमितिशब्दे—भाषा० ५२ 3 एक अलंकार—उपमा ।

उपमेय (सं० कृ०) [उप + मे + यत्] समानता या तुलना करने के योग्य, तुल्य (करम० के साथ या समान में) भूषिष्ठसाम्योपमेयकानि गुहन-रघु० ६।८, १८।३४, ३७, कु० ७।२, यम् तुलना करने का विषय, तुलनीय (वि० उपमात्) उपमानोपमेय-यदकन्येन वस्तु—बन्दा० ५।७, ९। नव०—उपमा एक अलंकार जिसमें उपमेय और उपमान की तुलना इन दृष्टि से की जाती है कि उनके समान कोई और वस्तु है तो नहीं,—विशेषात् उपमेयानामयो—काव्य० १० ।

उपमन्त्र्य (पु०) [उप + मन्त्र् + ल्यट्] पति अंतर्गम्यतार-मन्त्र ममाधिना कु०—५।४५, रघु० ७।१, सि० १०।४५ ।

उपमन्त्रम् [प्रा० सं०] चौरफाट का एक छोटा उपकरण ।
उपमम [उप + म् + अर्] 1 रिशह, विवाह करना कन्या चक्रलतापमा मन्त्रजा नवयोवना सा० द० 2 प्रतिबन्ध ।

उपममन्त्र [उप + मन्त्र् + ल्यट्] 1 विवाह करना 2 प्रतिबन्ध लगाना 3 अग्नि को स्थापित करना ।

उपमय्य (पु०) [उप + यज् + ल्यट्] यज्ञ के मालहृ ऋषिजी में से 'उपयज्' का पाठ करने वाला प्रति-प्रख्याता नामक ऋषिक ।
उपमायक (वि०) [उप + याच् + क्वल्] मानने वाला, प्राणी, विवाहाधी, चिञ्जुक ।

उपमायकम् [उप + याच् + ल्यट्] निवेदन करना, मांगना, प्राथना करने के लिए किया के निकट जाना ।
उपमायित (मू० क० कृ०) [उप + याच् + क्त] जिससे मांगा गया हो, या प्राथना की गई हो,—तम् १ निवेदन या प्राथना 2 मनोतो, अपनी अभीष्टमिष्टि हो जाने पर देवता को प्रमत्न करने के लिए प्रतिज्ञात भेट (चाहे वह कोई वस्तु हो या मनुष्य) जिसेप्री प्रियते तुभ्य प्रदास्याम्युपायितम् एव० १।१४ अथ यथा मवतया करालामा प्रापूपायित स्त्रीरत्नमपुतैव्यम्

—मा० ५ ३ अपनी इष्टसिद्धि के लिए देवता के प्रति प्रार्थना या निवेदन ।

उपवासिककर्म—ऊपर वे०, उपवासित—मिथ्यापतनानि कृत-विद्विधदेवतापूजाविकारानि—का० ६४ ।

उपवास [उप + वस् + पञ्] यज्ञ के अतिरिक्त यज-वेदीय यज्ञ ।

उपवासम् [उप + वा + ह्यत्] पहुँचाना, निकट आना, —हृदोपयाने श्वेतिला बभूव—कु० ७।२२ ।

उपयुक्त (मू० क० कृ०) [उप + युज् + क्त] १ सक्रम २ योग्य, सही, उचित ३ सेवा के योग्य, काम का ।

उपयोग [उप + युज् + पञ्] १. काम, लाभ, प्रयोग, सेवन —अमन्ति 'अनङ्गोऽसकिययोपयोगम्—कु० १।७

२ औपधि हैयार करना या देना ३ योग्यता, उपयु-क्तता, शीघ्रिय ४ संपर्क, आगमनात् ।

उपयोगिन् (वि०) [उप + युज् + णिन्] १ काम में आने वाला, लाभदायक २ सेवा के योग्य, काम का ३ योग्य, उचित ।

उपरस्त (मू० क० कृ०) [उप + रञ्ज् + क्त] १ कष्ट-प्रस्त, सफटप्रस्त, दुग्धी २ ग्रहण-प्रस्त ३ रजिन, रगोन --शि० २।१८, —स्त ग्रहण-प्रस्त मूर्धे या चन्द्रमा ।

उपरत्न [उप + रज् + अच्] अग रत्नक ।

उपरत्नम् [उर + रज् + ह्यत्] गहनेदार, गान्द, चीरसिं ।

उपरत्त (मू० क० कृ०) [उप + र्त् + क्त] १ निवृत्त, विरक्त - रज्ज्यारत्ने—मनु० ५।६६ २ मृग -अष्ट-

दशमो प्रायमनान्त्योपरत्तन्त्य—मुद्रा० ४। सप्त०-कर्मन् (वि०) सामाजिक कार्य पर अरोमा न करने वाला,

—स्पृह (वि०) इच्छा में मूय, सामाजिक आसक्ति और मर्गनिधो के प्रति उदासीन ।

उपरतिः (स्त्री०) [उर + र्त् + क्तिन्] १ विरक्ति, निवृत्ति २ मृग ३ विषय-भोग में विरक्ति ४ उदा-सीनता ५ यज्ञार्थि बलिष्ठ कर्मों से विरक्ति, प्रयापान्त

के हेतु किये जाने वाले कर्मकांड में अविश्वास ।

उपरत्नम् [प्रा० म०] उपप्रधान या बट्टिया रत्न, —उपरत्नानि काचयच करोरुज्जमा तथैव च, मरुता मुक्तिन्तया ग्राम इत्यादीनि बहुन्यपि । गुणा यथैव रत्नताम्परन्येव

ने तथा, किन्तु किचिरतो हीना विद्योऽन्यमूदाहृत ।

उपर (ग) न [उप + रत् + पञ्] १ विरक्ति, निवृत्ति २ परिवर्जन, त्याग ३ मृग ।

उपरत्नम् [उप + र्त् + ह्यत्] १. रति मुग से विरक्ति २ प्रयान्तरु कर्मकाण्ड से विरति ३ विरक्ति, निवृत्ति ।

उपरत्तः [प्रा० ग०] १ अन्नधान अग्निव धानु २ गीच भाव या आबेद ३ अन्नधान रत्न ।

उपरत्तः [उप + रञ्ज् + पञ्] १. मूर्धे ग्रहण, चन्द्र ग्रहण २७

—उपरत्नानि शक्ति समुपमता रोहिणी योगम्

—श० ७।२२, शि० २०।४५ २ राहु या शिरोविषु की ओर चबने वाला ३ काली, लाज रग, रंग ४. सफट, कष्ट, आघात, —मुषालिनी हैमविशोपरत्नम्—रघु०

१६।७ ५ सिद्धी, निष्ठा, दुर्बलन ।

उपरत्तः [प्रा० म०] भास्वराय, रत्नप्रतिनिधि, उप-सात्क ।

उपरि (अव्य०) [ऊर्ध्वं + रिप्, उप आदेशः] पुषकृष्ण से प्रयुक्त होने वाला संबन्धोपक मध्यम (बहुधा

सब० के साथ, कर्म० तथा अधिक० के साथ विरक्त प्रयोग), निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है—(क)

ऊपर, अधिक, पर, पै, की ओर (विप० अर्थः) (सब० के साथ—सतम्परि बनानाम्—श० ७।७, अथाकम्-

अस्योपरि पुण्यदृष्टि पपात्—रघु० २।६०, अर्कस्योपरि—ग० २।८, बहुधा समाल के मत में, रथे, तस्कर

(स) समाप्ति पर,—तिर पर, सर्वानन्दानामुपरि बर्त-माना—का० १५८ (ग) परे, अतिरिक्त,—भा० २।२५३ (घ) के सबध में, के विषय में, की ओर, पर

—परस्परतोपरिपर्यपीयत्—रघु० ३।२४—भा० ३।२३, तयोपरि प्रायोपवेशन करिष्यामि—तुम्हारे कारण

(ङ) के बाद,—मुहूर्तमुपरि उपाध्यायस्वेषामश्नुत्—पा० ३।३।९ मित्रा० १ सप्त०—उपरि (ऊर्ध्वपरि)

१ (कर्म० और सब० के साथ अथवा स्वतन्त्र रूप से) निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) बरा ऊपर

—लोकानुपर्यपर्यान्ते माधव—वीर० (स) उच्च से उच्च-तर, कहीं ऊँचा, ऊपर, ऊँचाई पर—उपर्यपरि सर्वोपा-मादित्य इव तेजसा—मा० २ (क्रियाविशेषण के रूप में)

अर्थ है (क), अत्यंत ऊँचाई पर, पर, ऊपर की ओर (विप० अर्थः)—उपर्यपरि पश्यन्त सर्व एव दृष्टिप्रति

—दि० २।२, बहुधा समाल में—स्वयद्गोपरिक्रित्तम्—भा० १।३।९ (ख) इसके विवाय, इसके अतिरिक्त, अधिक, और—छातानुपरि चैवाष्टी तथा ब्रह्मरथ मर्यात्—महा० (ग) बाद में—अथा पूर्व तासौपरि च तथा नैव अविता—भा० २।७, अपि पीतानुपरि च पिबेत्—मुमुक्षुत्,—अर (वि०) ऊपर विषयने

वाग्ना (पक्षी आदि)—सम्,—स्व (वि०) अधिक ऊपर का, अपेक्षाकृत ऊँचा,—अथः ऊपर का अर्थ वा पार्ष्वं,—अथः ऊपर या अपेक्षाकृत ऊँचाई पर होता

—मूर्त्तिः (स्त्री०) ऊपर वाली चट्टी ।

उपरिष्ठात् (अव्य०) [ऊर्ध्वं + रिष्ठात्, उप आदेशः]

१. क्रियाविशेषण के रूप में इसका अर्थ है—(क) अधिक, ऊपर, ऊँचे—अर्त्त० ३।१३१, भा० १।१०५ (ख) इसके आगे, बाद में, इसके पश्चात्—कस्यामागतंसा हि कस्याच्चतुपरिष्ठाद्भवति—भा० ६, इवम्परिष्ठात्

व्याख्यात्म्, अन्त में (ग) के पीछे (विप० उरुत्तरत्त)

2 संबंधबोधक कल्पय के रूप में इसका कार्य है—(क) अधिक, पर (उप० के साथ, कर्म० के साथ विरल प्रयोग) सि० १११३ (ख) विर से वीर तक (घ) के पीछे (सर्व० के साथ) + क ।

उपरोक्तम् [उप + र् + क + कन्] रतिक्रिया का आसन विशेष (विपरीतक) भी कहलाता है—जरावेकपद कृत्वा द्वितीय स्फुटयत्नित, नारी कामपते कामी वक्ष स्यादुपरोक्त । शब्द० ।

उपलक्षकम् [उपगत रूपक दृश्यकाथ्य साधुस्येन—शा० घ०] बटिया प्रकार का नाटक, इसके निम्नांकित १८ भेद गिनाये गए हैं—नाटिका चोटक गोष्ठी सट्टक नाट्य-रासकम्, प्रस्थानोत्सवाय काम्यानि प्रेक्षण रासक तथा, समापक शीघ्रद्वित शिल्पक च शिवासिका, दुर्बलिका प्रकरणी हल्कीशो माणिकेत च । सा० २० २७६ ।

उपरोधः [उप + र् + धञ्] 1 अबबाधा, रुकावट, रोक—रघु० ६।४४ छि० २०।७४ 2 बाधा, कट—उपोधनिवासिनामुपरोधो मा मू०—मा० १, अनुग्रह सत्त्वेव मोपरोध—चिकम० ३ 3 आच्छादित करना, चेटा डालना, अचरख करना 4 सज्जा, अनुग्रह ।

उपरोधक (वि०) [उप + र् + धञ् + क्तृ] 1 अबबाधक 2 बाध करने वाला, चेटा डालने वाला,—कम्, भीतर का कनरा, निजी कमरा ।

उपरोधम् [उप + र् + धञ् + क्तृ] अबबाधा, रुकावट आदि दे० उपरोध ।

उपकः [उप + का + क] 1 पत्थर, पाषाण—उपलकाक-वेतदङ्कक मोमयानाम्—मृदा० ३।१५—कान्तो कथ धटितवानुपलेन वेत—रघुकार० ३, मेघ० १९, वा० १।४४ 2 मूल्यवान् पत्थर, रत्न, मणि ।

उपलकः [उपल + कन्] पत्थर,—सा 1 रेत, बालका 2 परिष्कृत शंकर ।

उपलक्षणम् [उप + लक्ष् + ल्यट्] 1 देखाता, दृष्टि डालना, अधिक करना—वेलावलक्षणार्थम्—शा० ४ 2 चिह्न, चिह्निष्ठ या संकेत रूप—चिकम० ४।३३ 3 पद, पदवी 4 किसी ऐसी बात का ध्वनित होना जो वस्तुतः कही न गई हो, किसी अतिरिक्त वस्तु को और या अन्य किसी समकक्ष पदार्थ की ओर संकेत अवकी केवल एक का ही उल्लेख किया गया हो, समस्त वस्तु के लिए उसके किसी एक भाग का कथन, पूरी जाति को प्रकट करने के लिए व्यक्ति की ओर संकेत आदि (स्वप्रतिपादकत्वे सति स्वेनाप्रतिपादकत्वम्)—मन्वग्रहण शास्त्रास्याप्य कलक्षणम् वा० १।१।४।८० निडा० ।

उपलम्बिः (स्त्री०) [उप + लम् + क्तृ] 1 प्राप्ति, अदायित्व, अभिग्रहण—इति हि मे स्यात्कपदोपलम्बि—रघु० ५।५६, ८।१७ 2 पर्यवेक्षण, प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान—नामाव उपलम्बे—सु० व्या० सू० ३।२८

3 समग्र, मति 4 अटफल, अनुमान 5 सकल्पता, आविर्भाव (मोपासको ने 'उपलम्बि' को प्रथमा का एक भेद माना है) दे० 'अनुपलम्बि' ।

उपलम्बः [उप + लम् + क्तृ, मू०] 1 अभिग्रहण—अम्ना-दक्षुलीयोपलम्बात्स्वतिष्ठकम्भा—शा० ७ 2 प्रत्यक्ष-ज्ञान, अभिज्ञान, स्मृति से भिन्न संबोध (अर्थात् अनुभव)—प्राक्तनोपलम्ब वा० ५ श्रावो मुत्तस्पर्शमुखाकलम्भात्—रघु० १।४।२ 3 निरपेक्ष करना, जानना—अभिध-विश्वोपलम्बाव—श० १ ।

उपलानम् [उप + लम् + लिच् + ल्युट्] लाइ प्यार करना ।

उपलक्षिका [उप + लक्ष् + क्तृ, क्तृ] व्यास ।

उपलक्षणम् [प्रा० सं०] अपसकृन्, देवी घटना जो अनिष्ट सूचक हो ।

उपलक्ष्या [उप + लम् + सन् + व + टाप्] प्राप्त करने की इच्छा ।

उपलेपः [उप + लिप् + धञ्] 1 लेप, मासिक 2 मकाई करना, सफेदी पोतना 3 अबबाधा, अर्थ होना, (ज्ञानेन्द्रियो का) सुग्रह होना ।

उपलेपयम् [उप + लिप् + ल्युट्] 1 मासिक, लेप, पोतना 2 मल्लम्, उदटन ।

उपलम् [प्रा० सं०] बाग, बगीचा, लगाया हुआ जगक—पाथच्छापोपलम्बुप केनैकं सूचिभिर्—मेघ० २३, रघु० ८।७३, १३।७५, लला—उद्यान की झल ।

उपवर्ष [उप + वर्ष् + धञ्] सूत्रम या श्योरेवार वर्णन ।

उपवर्षयम् [उप + वर्ष् + ल्युट्] सूत्रम वर्णन, श्योरे वार चित्रण—अतिशयोक्तयन् व्याख्यानम्—मुद्रत, याज्ञ० १।३२० ।

उपवर्षयम् [उप + वर्ष् + ल्युट्] 1 व्याख्यानम् 2 बिला या परकाता 3 राज्य, 4 कीचर, दलदल ।

उपवसत् [उप + वस् + क्तृ] मति ।

उपवसत् [उप + वस (स्वप्न) + क्तृ] उपवास इत ।

उपवासः [उपवस् + धञ्] 1 जल—सोपावासम्पूह वसेत्—याज्ञ० १।१७५, ३।१९०, मनु० १।१।१९६ 2 यज्ञानि का प्रदोष करना ।

उपवाहणम् [उप + वह् + षिच् + ल्युट्] ने जाना, निकट लाना ।

उपवाहः,—सा [उप + वह् + ष्युच्, लिप्वा टाप्] 1 राजा की सवारी का हाकी या हथेली, चक्रवर्त्योपावाह्या गजवा—मृदा २ 2 राजकीय सवारी ।

उपविद्या [प्रा० सं०] मातारिक ज्ञान, बटिया ज्ञान ।

उपविष्—वम् [प्रा० सं०] 1 कृषिग्रहण 2 निद्रा-जनक, मूलकारि नशीली शीघ्र-अर्कसीर स्मृतीशीर नषैव कलिहारिका, धधुर करवीरश्च पंच कोविद्या मृता ।

उपवीचयति (ना० वा० पर०) (किसी देवता के आगे) बीना या सारंगी बजायाना—उपवीचयितुं यवी रवेष्टया-
नृनिवेन नारद—रघु० ८।३३, मै० ६।६५, कि०
१०।३८।

उपवीचयन् [उप + वे + षत्] 1 जनेऊ तस्कार, उपचयन
तस्कार 2 जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसको हिन्दु जाति
के प्रथम तीन वर्ण धारण करते हैं—पिम्बयसामुपवीच-
सस्य मातृक ब धनुर्कजित इषन्—रघु० १।१६४, कु०
६।६, शि० १।७, मनु० २।४४, ६४, ४।३६।

उपवृहयन् [उप + वृह + लृट्] वृद्धि, सम्प्रयत्न।

उपवेदः [प्रा० स०] षट्पादा ज्ञान, वेदों से निष्पन्न वर्णों का
ग्रन्थसमूह। उपवेद विनती में चार हैं, और प्रत्येक वेद
के साथ एक एक उपवेद लगाने हैं—उदा०, ऋग्वेद के साथ
आयुर्वेद (मुमुक्षु बादि विद्वानों के मतानुसार आयुर्वेद
अथर्ववेद का उपवेद है) यजुर्वेद के साथ धनुर्वेद या
सैनिक शिक्षा, सामवेद के साथ माधर्ववेद या सभ्यता और
अथर्ववेद के साथ स्वायम्बर-सम्प्रवेद या याज्ञिकी।

उपवेदो-दानम् [उप + विद् + धञ्, लृट् वा] 1 वैदना,
दानन ज्ञाना वैसा कि प्राचीनवेदान में 2 लगन
होना 3 मन्तोत्सर्ग।

उपवेणयन् [उप + वेणु + ङ्] दिन के तीन काल
—अर्धदिं प्रातः काल, मध्याह्नकाल और सायंकाल
—चित्त्या।

उपव्याख्यानम् [प्रा० स०] बार में बोड़ी हुई व्याख्या या
टीका।

उपव्याख्य [प्रा० स०] एक छोटा सिकारी बीता।

उपसव्य [उप + सव् + षञ्] 1 शान्त होना, उपशान्ति,
शास्त्रान्त—कुतोऽप्या उपसव्य—वेणी० ३, मनुर्विं सह
एष वायुपयाम नो सात्वबवादि स्फुटम्—अमर ६,
निर्बल, रोक, परिममाप्ति 2 विश्राम, झुट्टी, विराम
3 शान्ति, स्वैर्य, धैर्य 4 जालेन्द्रियों का निगमन।

उपसवयन् [उप + सव् + षिच् + लृट्] 1 शान्त करना,
शान्ति रखना, श्प करना 2 लक्ष्यकरण, 3 बुझाना,
विराम।

उपसव्यः [उप + षी + अच्] 1 पास लेटना 2 मोहर, बात
का स्थान—शि० २।८०।

उपसव्यम् [अत्या० स०] शयन या नगर के बाहर का
कुला स्थान, नगराश्रम, उपनगर—अर्धोपशब्दे रिपु-
मनगत्य—रघु० १६।३७, १५।५०, शि० ५।८।

उपसवाक्षा [प्रा० स०] शीघ्र वाक्ता, अप्रधान वाक्ता।

उपसवाप्तिः (स्त्री०) [प्रा० स०] 1 विराम, शमन, प्रश-
मन—रघु० ८।३१, अमर ६५ 2 आश्वासन,
अभिषमन।

उपसवायः [उप + षी + षञ्] भारी-भारी से सोना, बूसरे
पहरेदारों के साथ रात की सोने की भारी।

उपसवायम् [अत्या० स०] घर के निकट का स्थान, घर
के आगे का सड़प,—अम् (अम्) घर के निकट।

उपसवायम् [प्रा० स०] सड़प विज्ञान या धन्व।

उपसिक्ता-अन्यम् [उप + सिक् + न, लृट् वा] अचिपन,
धीमना, प्रतिज्ञाच।

उपसिक्त्वाः [प्रा० स०] शिष्य का शिष्य—शिष्योपशिष्यी-
दृपवीचवालमरेह तन्मन्वन्मिचवाम—उपुष्ट।

उपसोभयन्-सोभा [उप + भूय + लृट्, न वा] लजाना,
असङ्गत करना।

उपसोभयन् [उप + भूय + षिच् + लृट्] सूचना,
सूचना।

उपसृति (स्त्री०) [उप + सृ + क्तिन्] 1 सुनना, गान
देना 2 अचन-परास 3 रात की सुलाई देने वाली
मृत्तिली मिश्रादेवी की भविष्यसूचक देवदात्री—नवतं
निर्गत्य वतिकिष्णमामुभकर बभ, नृपते ठडिदुर्बारा
वेदप्रश्नमुपसृतिम् । हारा०, परिजनोंपि भाव्याः
सततमुपसृतिर्न निर्जगान—का० ६५ 4 प्रतिज्ञा,
स्वीकृति।

उपसोभयन्-अन्यम् [उप + सिक् + षञ्, लृट् वा]
1 पास पास रखना, सपर्य 2 आश्रितन।

उपसोक्तयति (ना० वा० पर०) कविता में स्तुति करना,
प्रशंसा करना।

उपसंभवः [उप + सव् + षञ् + ङ्] 1 दमन करना,
रोकना, बाधना 2 मृष्टि का जल, प्रकन।

उपसंयोगः [उप + सव् + युञ् + षञ्] गौण सव्य,
सुधार।

उपसंरोहः [उप + सव् + रह् + षञ्] एक साथ उगना,
ऊपर उगना, अनूर खाना (अन्न भरना)।

उपसंशयः [उप + सव् + श् + षञ्] करार, सविदा।

उपसंख्यानम् [उप + सव् + ख्ये + लृट्] अन्त पट, अन्तर
बहिर्योगोपस्थानयो—पा० १।१।३६।

उपसंहरयन् [उप + सव् + ह् + लृट्] 1 हटा केना,
बाधित केना 2 रोक रखना 3 बाहर निकालना
4 आक्रमण करना, हमला करना।

उपसंहारः [उप + सव् + ह् + षञ्] 1 एक स्थान पर
कर देना, सिकोड देना 2 बाधित केना, रोक रखना

3 सचय, सवाह 4 बंदोखना, सवेयना, सवापिठि
5 किसी भाषण की दृष्टि थी 6 सारसग्रह, ससिपत
विचरन् 7 संक्षेप, सहृष्टि 8 पूर्वज्ञा 9 विनाश, नृप्यु

10 आक्रमण करना, हमला करना।

उपसंहारिन् (शि०) [उप + सव् + ह् + षिन्] 1 सवा-
विष्ट करने वाला 2 एकाधिक, अचरबी।

उपसंयोगः [उप + सव् + षिच् + षञ्] सार, सारांश,
संक्षिप्त विवरण।

उपसंख्यानम् [उप + षञ् + ख्या + लृट्] 1 बौढ़ना

2. बाय में बोझा हुआ, वृद्धि, अतिरिक्त निर्देयान (यह शब्द प्रायः काल्पायन के वाक्पिण्डों के लिए प्रयुक्त होता है, किन्तु काल्पायन वाक्पिण्ड के सूत्रों में नहीं सूट ब नुओं को सुधारना है, अतः ये परिशिष्ट का काम देते हैं) उदा०—कुमुदाधिरामप्रभावाधनानामुपसक्त्यानाम् पु० इति 3. (व्या० में) रूप और अर्थ की दृष्टि से प्रत्यादेश ।

उपसंख्यः—ह्रस्व [उप+सम्+घृ+अप्,ल्युट् वा]

1. प्रसन्न रहना, सहारा देना, विश्रांति करना 2. सावर अभिवादन (चरण स्पर्श करते हुए) स्फुरति रमसा-त्यानि पाशोपसङ्ग्रहणा च—महावी० २।३० 3 स्वी-करण, बरान देना 4 विनम्र संबोधन, अभिवादन 5 एकत्रीकरण, मिश्रण 6 ग्रहण करना, (पत्नी के अङ्गीकार करना रूप में)—दारोपसङ्ग्रह—याज्ञ० १।५६ 7 (बाहरी) परिशिष्ट, कोई ऐसी वस्तु जो या तो उपयोगी हो, अथवा सजावट के काम आवे, उपकरण ।

उपसर्गः (स्त्री०) [उप+सम्+क्विप्] 1 संयोग, मेल 2 सेवा, पूजा, परिचर्या 3 अंत, दान ।

उपसर्गः [उप+सम्+क्] 1 निकट जाना 2 अंत, दान ।

उपसङ्गम् [उप+सम्+ल्युट्] 1 निकट जाना, समीप पहुँचना 2 गुरु के चरणों में बैठना, शिष्य बनना—उत्तोपसङ्ग चके श्रेणस्येवम्बस्वकर्मणि—महा० 3 पास-पवौत 4 सेवा ।

उपसंज्ञान [उप+सम्+तनु+चञ्] 1 अव्यवहित संयोग 2. सतति ।

उपसंज्ञानम् [उप+सम्+धा+ल्युट्] जोड़ना, मिश्रण ।

उपसंन्यासः [उप+सम्+नि+अम्+चञ्] डाल देना, छोड़ देना, त्याग देना ।

उपसमाधानम् [उप+सम्+धा+धा+ल्युट्] एकत्र करना, ठहर लगाना—उपसमाधानं राक्षीकरणम्—सिद्धा० ।

उपसंपत्ति (स्त्री०) [उप+सम्+पद्+क्विप्] 1 समीप जाना, पहुँचना 2 किसी अवस्था में प्रविष्ट होना ।

उपसंपन्न (पुं० क० ङ०) [उप+सम्+पद्+क्त्] 1 उपलब्ध 2. पहुँचा हुआ, 3 उपस्कृत, अन्वित 4 यज्ञ में बलि दिया गया (पशु), बलि दिया गया—मनु० ५।८१.—श्वम् मशाशा ।

उपसंज्ञाः—वा [उप+सम्+धा+चञ्, व वा] 1. वाक्पिण्ड—कि० ३।३ 2. वैनोपुर्व अनुरोध—उप-संज्ञाया उपसंज्ञानम्—या० १।३।४० सिद्धा० ।

उपसर्गः [उप+सम्+अप्] 1 (संज्ञ का गाय की ओर) अविगमन 2. गाय का प्रथम गर्भ-गर्भाभ्युत्तर—सिद्धा० ।

उपसर्गम् [उप+सम्+ल्युट्] 1 (किस्ती की ओर) जाना 2 जिसकी कारण ग्रहण की जाय ।

उपसर्गः [उप+सम्+चञ्] 1 बी-रती, रोग, रोग से उत्पन्न होना आदि विकार—श्रीण ह्युत्सवोपसर्गा प्रभृता—मुभूत 2. मुनीवत, कष्ट, सकट, आघात, हासि—रत्न० १।१० 3 अपसक्तुन, अनिष्टकर प्राकृ-तिक घटना 4 ग्रहण 5 मृत्यु का लक्षण या चिह्न 6 घातु के पूर्व लगने वाला उपसर्ग—निपाताश्चाद्ययो शेषा प्रादयस्नुपसर्गका, शोचकत्वात् क्रियायो लोका-दवगता इमे । विनती में उपसर्ग ०० है—तथाहि प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निम् या निर्, दुस् या दुर्, वि, वा (क्) नि, अधि, अपि, अति, नि-नु, उच्, अति, प्रति, परि, उप, वा २२ यदि निम्-निर् और दुस्-दुर् को अलग २ शब्द समझा जाय । इन उपसर्गों की विधेयता के सम्बन्ध में दो सिद्धान्त हैं । एक सिद्धान्त के अनुसार तो घातुओं के अनेक अर्थ होते हैं (अनेकाभां हि वातव), अब उपसर्ग उन घातुओं के पूर्व जोड़े जाते हैं तो वह केवल घातुओं में पहले से विद्यमान—परन्तु गुण पडे हुए—अर्थ का प्रकाशित कर देते हैं, वह स्वयं अर्थ की अभिव्यक्ति नहीं करते क्योंकि वह हैं ही अर्थहीन । दूसरे सिद्धान्त के अनु-सार उपसर्ग अपना स्वतंत्र अर्थ प्रकट करते हैं, वह घातुओं के अर्थों में सुधार करते हैं, बढ़ाते हैं, और कई अर्थों को विस्तृत करते हैं—तु० सिद्धा०—उपसर्गं वाच्यं बलात्तन्व नोपेत, प्रहाधार-सहाराविकारपरिहारवत् । और न० वाच्यं वाच्ये कश्चित्कश्चिन्नमनन्वते, तमेव विनिन्द्यप्य उपसर्ग-गतिस्त्रिधा ।

उपसर्गम् [उप+सम्+ल्युट्] 1 उठेलना 2 मुनीवत, सकट (ग्रहण आदि), अपसक्तुन 3 छोड़ना 4 ग्रहण लगना 5 अधीनस्थ व्यक्ति या वस्तु, प्रतिनिधि 6 (व्या० में) बहु शब्द जिसका अपना मूल स्वतंत्र स्वल्प भ्युत्पत्ति के कारण या रचना में प्रयुक्त होने के कारण गट हो गया हो और जब कि वह दूसरे शब्द के अर्थ का भी निर्धारण करे (विप० प्रथमा) ।

उपसर्गः [उप+सम्+चञ्] समीप जाना, पहुँच ।

उपसर्गणम् [उप+सम्+ल्युट्] निकट जाना, पहुँचना, अवसर होना ।

उपसर्ग्या [उप+सम्+यत्+टाप्] गर्भावो हुईं या ऋतुमती गाय जो संज्ञ के उपयुक्त हो ।

उपसम्बः [प्रा० सं०] एक राजस, निकुंभ का पुत्र तथा सुद का माई ।

उपसुर्वकम् [उपसुर्व+कम्] सुर्वमण्डल या परिवेश ।

उपसृष्ट (पुं० क० ङ०) [उप+सम्+क्त्] 1 मिश्राया हुआ, संयुक्त, संलग्न 2 भूत-वैतकिष्ट, या भूत-वैत-प्रस्त—उपसृष्टा इव भूदाधिष्ठात्रवता—का० १०७ 3. कष्टवस्त, अविभूत, अतिप्रस्त—रोगोपसृष्टतनुहुं-

वर्ति यन्मुक् —रघु० ८।१५४ बह्वच-वस्त 5 उपवर्ग-
वस्त (वायु) —कथद्रुहोपसृष्टयो कर्म—पा० १।५।
१८. —व्यः बह्वच से वस्त सूर्यं वा चन्द्रमा, —व्य
मेषु, सत्रोगे ।
उपलोकः—उपलोकं [उप+लुक्+लोक, ल्युट् वा] 1. उरे-
कना, छिद्रकना सीषना 2. बीजना, रस, —नी कञ्छी
वा कटोरी विससे उडेना काम ।
उपलोक्यन्, —सेवा [उप+लुक्+ल्युट्, व+टाप् वा]
1 पूजा करना, सम्मान करना, आराधना 2. उपासना
—राज्—मनु० ३।६५ 3. लिप्त होना—विषय
4 काम लेना, (स्त्री का) उपभोग करना—परदार
—मनु० ५।१३५ ।
उपलोक्यः [उप+लुक्+ल्युट्, मुट्] 1 जो किसी इतर की वस्तु
को पूजा करने के काम आवे, सपटक, अवयव
2. (कथ) (सरको, निर्ण आदि) मसाला को भोजन को
स्वादित बनाये 3 सामान, उपबन्ध, उपाग, उपकरण
—वि० १।८।२ 4 घर-गृहस्त्री के काम की वस्तु
(जैसे साहु) यात्रा १।८।३, २।१९३, मनु० ३।६८,
१२।६६, ५।१५० 5. जानूचन 6 निन्दा, बरनामी ।
उपलोक्यन् [उप+लुक्+ल्युट्, मुट्] 1 बघ करना, मत-
विमत करना 2 सचय 3 परिवर्तन, सुधार
4 अन्धाहार, 5 बरनामी निन्दा ।
उपलोक्य [उप+लुक्+ल्युट्, मुट्] 1 अतिरिक्तक, रि-
तिभट्ट, 2. अन्धाहार—(म्युन पद की रूति) —साहा-
अनुपस्कार विष्णुवर्तिमिद्राकुम्भ—कि० १।१३८
3 सुन्दर बनाना, सजाता, सोभायुक्त करना—उपलये-
वार्थ सोपकारमाह—रघु० १।१।५७ पर मल्लि०
4 जानूचन 5 प्रहार 6 सचय ।
उपलोक्य (मू० क० छ०) [उप+लुक्+लुक्, मुट्] 1 तैवार
किया हुआ 2 सचित 3 सजाया गया, अलङ्कृत किया
गया 4 अन्धाहृत 5 सुधार गया ।
उपलोक्यति (स्त्री०) [उप+लुक्+लुक्, मुट्] परिचित ।
उपलोक्यन्—अन्य [उप+लुक्+ल्युट्, ल्युट् वा] 1 टंक,
सहाय 2. प्रोत्साहन, उकसाना, सहायता 3 आचार,
नीच, प्रबोधन ।
उपलोक्यन् [उप+लुक्+ल्युट्] 1 कैलाना, विज्ञाना,
बरना 2 चाहर, 3 बिस्तरा 4 कोई विचारई हुई
(चाहर आदि) —मनु० उपलोक्यमसि स्थाहा ।
उपलोक्यी (स्त्री०) [शा० सं०] रक्षक ।
उपलोक्यः [उप+लुक्+लुक्] 1. गोर 2 (शरीर का) मध्य
भाग, वेदु, —रघु०—रघु०—रघु० 1. (स्त्री वा पुरुष की) अनने-
न्द्रिय, विशेषतः भोजि—स्नान मोनोपवादेभ्या स्वा-
ध्यायोपलम्बिभ्याः—वाङ्० ३।११५ (पुरुष का लिय)
स्नानोपलम्बणीयु—मनु० १।२० (स्त्री की योगि),
इती वायुपलम्बण्य—वाङ्० ३।१२० (वहूँ यह अन्य दोनों

अनों में प्रयुक्त हैं) 2. गुदा 3 मूला । सम०—विष्णुः
इन्द्रियवचन, संवम—वाङ्० ३।११५, —अन्य—अन्य,
पीपक का दूध (क्योकि इसके पत्ते स्त्री-नीमि के
आकार के समान होते हैं) ।
उपलोक्यन् [उप+लुक्+ल्युट्] 1 उपस्थिति, धानीय
2. पुरुषना, आना, प्रकट होना, सर्वेण देवा 3 (क)
पूजा करना, आराधना, आराधना, उपासना—सूर्योपल-
मात्रातिनिवृत्तं पुत्रकृतसं यामुपेय—विष्णु० १, सूर्यो-
पलान् कुर्व—विष्णु० ५, याङ्० १।२२, (क) भविष्य-
वम, नमस्कार 4 आभास 5 देवालय, पुष्पलवक, यन्त्र
6 स्वरण, प्रत्यास्वरण, स्मृति—वाङ्० ३। १६० ।
उपलोक्यन् [उप+लुक्+ल्युट्] 1 निष्कट रक्षण,
तैवार होना 2 स्मृति को बरनामी 3 परिवर्तन, सेवा ।
उपलोक्यकः [उप+लुक्+ल्युट्] देवक ।
उपलोक्यतिः (स्त्री०) [उप+लुक्+लुक्] 1 पास जाना
2. सावीच्य, विद्यमानता 3 अवाचित, प्रतिज्ञा 4 सम्पन्न
करना, कार्यान्वित करना 5 स्वरण, प्रत्यास्वरण
6. सेवा, परिचर्या ।
उपलोक्यः [उप+लुक्+लुक्] गीला होना ।
उपलोक्य-श्लेष [उप+लुक्+लुक्, ल्युट् वा] 1 स्वर्ण
करना, सम्पर्क 2 स्नान करना, संज्ञान, बीजा
3 कुल्ला करना, नाचमन करना, बाबैज करना, (अंधो
पर अंध के छोटे देवा—एक भासिक कृत्य) ।
उपलोक्यतिः (स्त्री०) [शा० सं०] तपु चर्माहारण वा विधि
अन्य (यह सत्वा में १८ है) ।
उपलोक्यन् [उप+लुक्+ल्युट्] 1 रज का नासिक क्षाव
होना 2 बहव्य ।
उपलोक्यन् [शा० सं०] राजस, लान (जो भूमि अथवा
पृथ्वी से प्राप्त हो) ।
उपलोक्यः [उप+लुक्+लुक्] गीलापन, पसीना ।
उपलुक्त (मू० क० छ०) [उप+लुक्+लुक्] 1 अल-
विज्ञात, विस पर आभास किया गया हो, लीज, पीठित,
बोत लगा हुआ—कु० ५।७६ 2 अनिजुत, नाचक,
माहृत, परामृत—दाक्षिण्य, लोभ, रण, काय,
शोक आदि 3 सर्वथा विनष्ट—कथमवापि देवोन्ने-
पहता बयम्—मुद्गा० २, देवोपलुक्तस्य बुद्धिरचना पूर्व
विपर्ययति—मुद्गा० १।८ 4 निवृत्त, जलना किया गया,
उपेक्षित 5 बुधित, कल्पित, अपविशीलत—आटीरे-
मैः पुराविमर्शैर्वा यदुपहृतं तत्रत्यन्तोपहृतम्—विष्णु ।
सम०—आलस्य लुब्धमना, उद्विग्नमना,—दूष् (वि०)
पीपिवाया हुआ, अंधा किया गया—कि० १।१।८,
—श्री (वि०) मुद्ग ।
उपलुक्त (वि०) [उपलुक्त+लुक्] हलधाय, अज्ञाना ।
उपलुक्तिः (स्त्री०) [उप+लुक्+लुक्] 1. प्रहार 2. बघ,
हत्या ।

उपहृत्य [प्रा० स०] बाँधी का चौधियाला ।
उपहृत्यम् [उप + हृ + क्त] 1 निकट जाना, जाकर लाना 2 प्रहण करना, पकड़ना 3 देना आदि को भेंट प्रस्तुत करना 4 बलिपशु देना 5 भोजन परोसना या बाँटना ।
उपहृत्य (भू० क० कृ०) [उप + हृ + क्त] मजाक उड़ाया गया, मस्जाना किया गया, —सम्बन्ध व्यत्ययपूर्ण अट्टहास, हसी उड़ाना ।
उपहृत्यका [उपहृत्य + क्त + टाप्, इत्वम्] यान-दान, —उपहृत्यकाम्यास्तान्मूल कर्तृसहितम्बुध्वाय—दश० १११ ।
उपहार [उप + हृ + वज्] 1 बाहुति 2 भेंट, उपहार—रघु० ४।८४ 3. बलि-पशु, यज्ञ, देना का मन्त्राना—रघु० ११।११ 4 सम्मान-मूक भेंट, अपने बर्तों को उपहार देना 5 सम्मान 6 शांति के मूल्य स्वरूप बलि पूरक उपहार—हि० ४।११० 7 अन्त्यागो में परोसा गया भोजन ।
उपहारिन् (वि०) [उपहार + णिनि] देने वाला, उपहार प्रस्तुत करने वाला, जाने वाला ।
उपहास्यः [?] कुतल देश का नाम ।
उपहासक [उप + हृ + क्त] 1 मजाक उड़ाना, हसी-खिल्ली—रघु० १२।२७ 2 व्यत्ययपूर्ण अट्टहास 3 हसी मजाक, बोलचाल । सम०—आस्वस्यम् वाचम् उपहास की सामग्री, मीठ, उपहास्य ।
उपहासक (वि०) [उप + हृ + क्त] हसी-मजाक उड़ाने वाला, —कः विबुधक, खिल्ली बाज ।
उपहास्य (वि०, स० कृ०) [उप + हृ + क्त] मजाकिया—गान्गु या या—हसी मजाक की वस्तु बनना, डिठोखिया—गमिष्याम्पुहास्यताम् रघु० १।३ ।
उपहित (वि०) [उप + हा + क्त] रखा गया, दे० उप-पूर्वक 'या' ।
उपहितः (स्त्री०) [उप + ह्ने + क्त] बुलाया, आह्वान, निमन्त्रण,—वि० १।४३० ।
उपहारः [उप + हृ + क्त] एकाल या अकेला स्थान, मित्रो जगत्—उपहारे पुनरित्यल्लय धनमिधम्—दश० ५४ 2 सामीप्य ।
उपहृत्यम् [उप + हृ + क्त] 1 बुलाना, निमन्त्रित करना 2 शर्चना मन्त्रों के साथ वाताहृत करना ।
उपशु (अर्थ०) [उपगत्य अभावो यम्] 1 मन्द स्वर से, फालाफूसी 2 चुपके से, गुप्त रूप से—परिषेनुधुषाम्-वाग्म्याम्—रघु० ८।१८—शुः मन्द स्वर में की गई शर्चना, मन्त्रों का अर्थ करना सु०, मनु० २।८५ ।
उपशरत्तम् [उप + श + क्त + क्त] 1 आरम्भ करने के लिए निमन्त्रण, निकट जाना 2 तैयारी, आरम्भ, उप-कम 3 श्राविक अनुष्ठान करने के पश्चात् वेध-पाठ

का उपकम—हु० उपकमेत्—वेदोपकरणस्य कर्म करिष्ये—आयणी मथ ।
उपशरत्तम् (नपु०) [उप + श + क्त + क्त] 1 तैयारी, आरम्भ, उपकम 2 श्राविक के पश्चात् वेध-पाठ के उपकम से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान (हु० आयणी) वाग्म० १।१४२, मनु० ४।१११ ।
उपशक्त (नृ० क० कृ०) [उप + श + क्त + क्त] 1 निकट लाया हुआ 2 यज्ञ में बलि दिया गया 3 आरम्भ, उपकम ।
उपशक्तम् (अर्थ०) [अर्थ० स०] जलो के सामने, अपने समक्ष ।
उपशक्तानम्-नक्तम् [उप + श + क्त + क्त + क्त] पहले कर्त्तुं च छोटी कथा, मूल या आस्थापिका—उपशक्तानंविना तावद् भारत प्रोष्यते बुधे—महा० ।
उपशक्तः [उप + श + क्त + क्त] 1 निकट आना, पहुँचाना 2 चर्चित होना 3 प्रतिज्ञा, करार 4 स्वीकृति ।
उपशयम् [प्रा० स०] 1 चोटी या किनारे के निकट का भाग 2 शीघ्र भय ।
उपशयन् [उप + श + क्त + क्त] दीक्षित होकर वेदाभ्यन करना ।
उपशयन् [प्रा० स०] 1 उपभाग, उपशीर्षक 2 कोई छोटी भग या अवयव 3 परिशिष्ट का पूरक 4 चर्चित प्रकार का अतिरिक्त कार्य 5 किञ्चन का शीघ्र भाग—वेदागो के परिशिष्ट स्वरूप लिखा गया अन्वय समुद् (ये शार है पुराणन्यायीमासाधनशास्त्राणि) ।
उपशरत्तः [उप + श + क्त + क्त] 1 (आयण में शब्द का) स्थान 2 कार्यविधि ।
उपशरत्त (अर्थ०) (केवल 'हृ' धातु के साथ प्रयोग)—महार देना—उपशरत्तं वा हृत्वा—सहारा देकर—वा० १।४।३३ मित्रा० ।
उपशरत्तम् [उप + श + क्त + क्त]—मन्त्रना, शोपना (गोबर आदि से) पीतना (मन्त्रों, वृत्ता आदि)—मनु० ५।१०५, १०२।१२४, मठद (सुषोमागोमयादिना नमार्जनानु-लेपनम्—वेधातिथि) ।
उपशयन् [उप + श + क्त + क्त] 1 अनुष्ठान करना, (प्रचलित प्रथा से) विचलन ।
उपशयन् [उप + श + क्त + क्त] 1 लेना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, अर्पण करना—विषयश्च बाह्यम् बुद्ध्या इव्योपादानमाचरेत्—मनु० ८।४१७, विशा०—का० ७५ 2 उन्मेष, अर्थन 3 समावेश, मिलना 4 साक्षात्क पदार्थों में अपनी शान्तिप्रदो व यत्न को टटाना 5 कारण, प्रयोजन, प्राकृतिक या शान्कामिक कारण—पाटशोपादानो ध्रम—उत्तर० ३, अने० वा० 6 सामग्री विनये कोई वस्तु कर्म, शौचित्य कारण—निमित्तदेव इन्द्र स्यादुपादानं च

बेलात्—अधिकरणमाका 7. अधिक्यवना की एक रीति विषय में अपने वास्तविक वर्ष को प्रकट करने के अतिरिक्त न्यूनपद की प्रति भी अन्वयाहार द्वारा कर दी जाती है—स्वमिदये परासोप उपादानम्—काव्य० २। सम०—आरण्यम् अतिथि कारण—प्रकृति-द्वयोपादानकारण व ह्युपादानमाव्यम्—नारी०—अन्वया—अबहत्स्वार्था, दे० काव्य० २, सा० दे० १४ मी।

उपाधिः [उप + धा + धा + क्] 1. आलसाजी, घोला, दूध 2 प्रवचना, (वेदान्त में) छापने वारण करना 3. विवेक या विवेक गुण, विशेषण, विशेषता—तदुपधावेव सङ्गत—काव्य० २, यह चार प्रकार का है—आति, गुण क्रिया, तथा सत्ता 4. वध, उपनाम (चट्टानाच्यं, महामहोपाध्याय, वज्रित आदि) 5 सीमा, (देस काल आदि की) अवस्था (बहुधा वेदान्तदर्शन में) 6 प्रयोजन, सम्योग, अभिप्राय 7 (तर्क में) किसी सामान्य बात का विशेष कारण 8 जो व्यक्ति अपने पितावर का भरण-पोषण करने में साधकाव है।

उपाधिक (वि०) [अया० सं०] अधिक, अधिकत्व, अतिरिक्त ।

उपाध्याय [उपेधाधीयेते अस्मान्—उप + अधि + इ + धञ्] 1 अध्यापक, गुरु 2 विद्योक्त अध्यापकगुरु, धर्मशिक्षक (उपाध्यायक—जो वेद के किसी भाग की केवल धार्मिक प्राप्ति करने के लिए पढ़ाता है—आचार्य से निम्न पदवी का) तु०—मनु० २।४४, (फेदरे तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुन, योऽध्यापयति नृत्यर्धमुपाध्याय स उच्यते। दे० अध्यापक और आचार्य के नीचे भी,—वा स्त्री-अध्यापिका— बी 1 अध्यापिका 2 गुरुपत्नी ।

उपाध्यायिणी [उपाध्याय + ङीष्, आनुष्] गुरुपत्नी ।

उपायह (स्त्री०) [उप + नञ् + क्त्विप् उपसर्गदीर्घ] बयल, झूठा—उपानहृत्कालस्य सर्वा धर्मावृत्तेषु नृ—हि० १।१२२ मनु० २।२६, स्वा यदि धिक्ते राजा स कि नापान्त्युपायहम्—हि० ३।५८।

उपाय [प्रा० सं०] 1 किनारी, ओर, गेट, पल्ला, सिरा—उपान्तयोकिञ्चुहित विहृक्ते—रघु० ७।५०, कु० ३।६९, ७।३२, अमर २३, उलार० १।२६ कल्कम्—का० १।१६ 2 अस्ति को कोर—रघु० ३।२६ 3 अव्यवहित सामिन्ध, पक्षी—उपोपात्तमित्त विद्व—हिकम्—रघु० ३।५७, ७।२४, ९।२१, मेघ० २४ 4 पावर्धमान, मितम्—वेद्य० १८।

उपायिक (वि०) [प्रा० सं०] निकटत्व, समीची, पड़ोसी,—कम् पड़ोस, साथीपण ।

उपायक (वि०) [उपाय + क्त] अन्तिम से पूर्व का—उपायकमुपात्तस्योपायकान्यम्—चिदा०—स्वः धीस की कोर,—स्वप्न पड़ोस ।

उपायः [उप + इ + धञ्] 1. (क) साधन, तरकीब, युक्ति—उपाय चिन्तयेत्प्रोत्पन्नसाधाय व किल्लयेत्—पद्य० १।४०६, अमर २१, मनु० ७।१७७ ८।४८, (ख) पद्धति, रीति, कृत्रिम 2. आरम्भ, उपक्रम 3 प्रयत्न, चेष्टा—पद्य० ६।३६ मनु० १२।४८ १०।१४ 4 यन्तु पर विजय पाने का साधन (युद्ध और है—साधन, समर्पिता-वार्ता, स्वयम्-विश्राम, भेदः—पूट डाकना और दूधः—सजा देना (शोभा चाका कोलना), कुछ लोग लीन और जोड़ देते हैं—भावा—धीर्धी, उभेसा—दीर्घ-येव, अबहेलना, इन्द्रकाल—साधु-टोना करना, इस प्रकार कुछ सत्यता सात हुई)।—चतुर्धोपायसाध्यै तु रिपी साम्बभगविका—शि० २।५४, सामाधोनामुपायान् चतुर्धमिपि पश्चिदा—मनु० ७।१०९ 5 लम्बिकित होना (गायन आदि-में) 6 पर्वणमा । सम०—अनुसु-धुम्, ध्रुवु के विपक्ष की जाने वाली चार तरकीबें—दे० (वि०) तरकीब निकासके में चतुर सुप्रियः धीर्धी तरकीब अवर्तु दद,—योगः साधन वा युक्ति का प्रयोग—मनु० १।१० ।

उपायकम् [उप + क्त + ल्युट्] 1 निकट जाना पड़ना 2 शिष्य बनना 3 किसी धार्मिक सत्कार में व्यस्त रहना 4 उपहार, भेंट—मालविकोपायन प्रेषिता—मालवि० १, मन्वोपायनयोपानि कम्पुनि सरिता पति—कु० २।३७, रघु० ४।७९ ।

उपायकः [उप + का + रन् + धञ्, नृन्] वारण, उप-क्रम, मुक्त ।

उपायक्य—ना [उप + कर्त् + ल्युट्, युच् वा] कमाना, काय उठाना ।

उपाय (वि०) [व० सं०] बोधे मूल्य का ।
उपायकः—अन्वय [उप + का + लृप् + धञ्, नृन्, ल्युट् वा] 1 पुर्वक, उदाहरण, निम्ना—अन्वा महदुपाय-म्यन गतोऽस्मि—व० ५, तथोपायकमे पतिताऽप्यि—मालवि० १, मुद्राहा उदाहरण तिर-वाये पर 2 विनय करना, स्वीकृत करना ।

उपायकम् [उप + का + लृप् + ल्युट्] 1. बाणित जाना वा मुद्रना, सीटना—ल्युटुपायकर्मभाक्त्वे नन (करोति)—रघु० ८।५३ 2 धूमना, चक्कर काटना 3 पर्वणमा ।

उपायकः [उप + का + धि + क्त] 1. अवर्धन, आधन, उछारा—मनु० २।४८ 2. पाव, पाने वाला 3. बरोला, निर्मेर रहना ।

उपायकः [उप + का + क्त + ल्युट्] 1. देवा में उपनिष्ठा, पूजा करने वाला 2 सेवक, अनुचर 3. धृष्ट, निम्न-वर्ति का व्यक्ति ।

उपायकम्—ना [उप + का + ल्युट्, युच् वा] 1. देवा, हाथी, देवा में उपनिष्ठा रहना 2. धीर्ध कनोपाय-

नात् (विनस्यति) वच० १।१६९, उपासनामेत्य पितु
स्व सुख्यते—ने० १।२४, मनु० १।१०७, भग० १।३।७,
याज्ञ० ३।१५६ २ अथत्, तुला हुआ, जुटा हुआ
—सधीत् मू० ६, मनु० २।६९ ३ पूजा, आदर,
आराधना, धाराम्नास ५ धार्मिक यजन ६ यज्ञानि ।
उपासा [उप+आत्+अ+टाप्] १ सेवा, हाजरी
२ पूजा, आराधना ३ धार्मिक यजन ।

उपासलक्ष्यम् [प्रा० य०] सूर्य छिपना ।
उपासितः (स्त्री०) [उप+आत्+किल्त्] १ सेवा, सेवा
में उपस्थित रहना (विद्येयता देवता की) २ पूजा,
आराधना ।

उपास्यम् [प्रा० स०] गौण या छोटा हथियार ।
उपाहारः [प्रा० स०] हल्का जलपान (फल, मिष्ठान
आदि) ।

उपाहित (पू० क० ह०) [उप+आ+धा+क्त]
१ स्थापना, जमा किया गया, पहुँचा गया आदि
२ सबड, सम्मिलित,—स. ज्ञाप से जय, या ज्ञाप से
होने वाला विवाह ।

उपेक्ष्यम्=उपेक्षा ।
उपेक्षा [उप+ईम्+अ+टाप्] १ नजर-अदाज करना,
लापरवाही बरतना, अबरहलना करना २ उदासीनता,
भ्रमा, नकरत—कुर्वाण्येना हतवीरितेऽस्मिन्—रघु०
१।५६९ ३ छोड़ना, छुटकारा देना ४ अबरहलना,
दाब पंच, मक्कारो (मुठ में चिहित ७ उपायो में
से एक) ।

उपेत (पू० क० ह०) [उप+इ+क्त] १ समीप आया
हुआ, पहुँचा हुआ २ उपस्थित ३ युक्त, सहित
(करण के साथ या समाग में)—पुत्रमेव गृह्यतेत
चक्रवर्तिनमन्त्रि—स० १।१२ ।

उपेक्षः [उपगत इन्द्रम्—अनुजत्वात्] विष्णु या कृष्ण, (इन्द्र
के छोटे भाई के रूप में अपने पोषक अवतार (नामन)
के अवसर पर) दे० इन्द्र, उपेन्द्र- ब्रह्मादिपि शारुलो-
ऽपि—मीठ० ५, दनुषेन्द्रस्वयंतोन्द्र एव स—सि०
१।१७० ।

उपेय (स० ह०) [उप+इ+यत्] १ पहुँचने के योग्य
२ प्राप्त कर लेने के योग्य ३ किसी की साधन से
प्रभावित होने के योग्य ।

उपेय (पू० स० ह०) [उप+इ+यत्] १ साधन,
एकत्र किया हुआ, जमा किया हुआ २ निकट लाया
हुआ, निकटस्थ ३ मुठ के लिए पकितबड ४ मारण्य
५ विवाहित ।

उपोत्सव (वि०) [अत्वा० स०] अतिम से पूर्व का,
—सम् (अक्षरम्) अतिम अक्षर से पूर्व का अक्षर ।

उपोत्थातः [उप+उत्+हृत्+थञ्] १ मारण्य
२ प्रस्तावना, भूमिका, उदाहरण, समुपयुक्त तर्क या

दुष्टान्त ४ सुयोग, भाष्य, साधन—तत्रप्रतिष्ठावक-
मुपोत्थातेन माधवातिकमुपेयात्—मा० १ ५ विरले-
षत्, किसी वस्तु के तथ्यों का निबन्ध करना ।

उपोत्थलक (वि०) [उप+उत्+लृत्+लृत्] पुष्ट
करने वाला ।

उपोत्थलनम् [उप+उत्+लृत्+लृत्] पुष्ट करना,
मर्मथन करना ।

उपोथनम्—उपोथितम् [उप+लृत्+लृत्, क्त वा]
उपवास रचना, ब्रत ।

उप्लि (स्त्री०) [वृत्+किल्त्] बीज बोना ।

उष्म् (तुपा० पर०) (उन्मति, उन्मत्त) १ भीषण,
हड्डाल २ सीधा करना ।

उष्, उष्म् (तुपा० कृपा० पर०) (उन्मति या उन्मत्त,
उन्मत्ति, उन्मत्त) १ सतीमित करना २ संक्षिप्त करना
३ बरना—अलकुमभन्मिभ्रतस्य सपदि सरस्याः समान-
यन्थास्ते—भा० २।१४४ ४ बाष्पादित करना, ऊपर
बिछाना—सर्वममनु कालुन्धमोम्भतीकर्ण शिलीमूनी
—मट्टि० १।३८८ ।

उष् (सर्व० वि०) (केवल द्विवचन में प्रयुक्त) [उ+भृक्]
दोनों, उभो तो न विजानीत भग० २।१९, कु०
४।४२ मनु० २।१६ लि० २।८ ।

उभय (सर्व०, वि०) (स्त्री०-यो) [उम्+अयट्]
(यद्यपि अर्थ की दृष्टि स यह शब्द द्विवचनगत है,
परन्तु इसका प्रयोग एक वचन और बहुवचन में ही
होता है, कुछ शैयाकरणों के मतानुसार द्विवचन में भी)
दोनों (पुरुष या वस्तुएँ) उभयव्यक्तिगतोय समर्थये
—स० ७, उभयमानसिरे वमुधाधिषा—रघु० १।९,
उभयी सिद्धिमुद्भववायु—ऽ।२३ १।३८, अमर
६०, कु० ७।७८, मनु० २।५९ ४।२४, १।३४ ।
सम०- चर (वि) अल, स्थल या आकाश में विचरन
करने वाला, अल स्थल चारो, -विद्या दा प्रकार की
विद्याएँ, पग और अपरा, अर्थात् अध्यात्म विद्या और
लौकिक ज्ञान, विष्य (वि०) दोनों प्रकार का,
—केतन (वि०) दोनों स्थानों से केतन ग्रहण करने
वाला, दो स्त्रीयों का सेवक, विद्यादासधाती, —अन्वय
(वि०) (स्त्री और पुरुष) दोनों के बिह्व रहने वाला,
—सन्धः उभयपति, दुविधा ।

उभयतः (अव्य०) [उभय+तसिम्] १ दोनों ओर से,
दोनों ओर, (कर्म के साथ)—उभयत कुल्य गोषा
—सिद्धा० याज्ञ० १।५८, मनु० ८।३१५ २ दोनों
वशाओं में ३ दोनों रीतियों से—मनु० १।५७, १।५८ ।
—सत्, —कल (वि०) दोनों ओर (नीचे और ऊपर)
दोनों की पक्ति वाला, मनु० १।४३, —मुक्त (वि०)
१ दोनों ओर सेजने वाला २ दुग्धा (मकान आदि)
(—की) आती हुई पाप—याज्ञ० १।२०६-७ ।

उत्सव (अव्य०) [उत्सव+पठ्] 1. दोनों स्वामी पर, 2 दोनों और 3 दोनों अवस्थार्थों में—रघु० ३।१२५, १६७।

उत्सवापि (अव्य०) [उत्सव+पाप्] 1. दोनों रीतियों से—उत्सवापि घटते—विक्रम० ३२ दोनों वशाओं में।

उत्सव (ने) घृ (अव्य०) [उत्सव+घृत्, पठ्] घा [1 दोनों दिन 2 भागामी दोनों दिन।

उत् (अव्य०) [उत्+ङ्] (क) शेष (ख) प्रथमवाचकता (ग) प्रतिज्ञा या स्वीकृति और (घ) सौम्य या सान्त्वना की प्रकट करने वाला विलम्बादि शोचक अव्यय।

उत्ता [त्री विधस्य या सधमीरिव, उ जिबं माति मन्यते पतित्वेन मा+क वा तारा०] 1. हिमवान् और मेवा की पुत्री, पिब की पत्नी, कालिदास नाम की व्युत्पत्ति इस प्रकार करता है—उ मेति (ओह, बस जब तपस्या न करें) मात्रा तपसो निषिद्धा परशुवामुवाक्या मुमुक्षी जगाम—कु० १।२६, उमावृथाहूी—रघु० ३।२३ 2 प्रकाश, आभा 3 यज्ञ, ख्याति 4 शान्ति, प्रशान्तता 5 रात 6. हृत्पी, 7 जन। सम०—नृशः—अणकः शिवास्वयं पर्वत (उत्ता का पिता होने के नाम)।—वसिः शिवा—मूहुरन्मुरचयनमनुष्य निरुदराहमामपतित्वेन—कि० ५।१४, इसी प्रकार ईश, 'बलन्त', 'सहाय, आदि,—कुतः कालिकेय या गणेश।

उत्थ (ङ्) रः [उत्+ङ्+अच् पूर्वो] तरसा, हार की चौखट की ऊपर वाली सफरी।

उत् [उत्+क] भेद।

उत्थः (स्त्री- - स्त्री) [उत्सा गच्छति, उत्त्+गम्+ङ्, मत्तोपदेश] 1 सप, सौर्य अगुनीचोरसहाता—रघु० १।२८, १०।५, ११ 2 नाग या पुराणों में ब्रह्मिन् मानव मुख वाला अर्धदिव्य सौर्य-देवगणबर्मानुचोरस-राक्षसान्—मत्त० १।२८, मनु० ३।१९१ 3 वीसा,—वा एक नगर का नाम—रघु० ६।५९। सम०—अरिः—अणकः,—साम्पुः 1 एवम् (सौर्यो का शत्रु) 2. मोर, - इक्ष्वा, राज्ञः शत्रुकि वा शेषनाम,—अस्तिर(वि०) विद्या—मृदिका के स्थान में सौर रखने वाला,—अव्ययः शिव (सौर्यो से मुमुक्षित),—साररुचकः,—अन् एक प्रकार की चन्दन की सफरी,—अव्ययम् नामों का आधासम्बन्ध अर्थात् पाताल।

उत्थः—अव्यः [उत्त्+गम्+अच्, सकोप, मुवायव्यच] सौर्य।

उत्थः (स्त्री- - स्त्री) [उत्+ङ्, उत्थ, रपरथच] 1. वेडा, भेद—बुकीचोरसमासावः मृत्युराशय गच्छति—महा० 2. एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मार दिया था,—बौ भेड़ी।

उत्थकः [उत्थ+क] 1. वेडा, भेद 2. बाणक।

उत्थकः [उत् उत्कटं प्रथति इति- उत्+अच्+ङ् पूर्वो- उत्थोपः] भेद, भेद।

उत्थरी (अव्य०) [उत्+अरीक् वा०] 1. सहमति या स्वीकृति शेषक अव्यय (इस अर्थ में यह लघ्वे क्, न् और अच् धातुओं के साथ प्रयुक्त होता है—तथा गतिसञ्चय या उपसर्ग समता जाता है, इसी लिए 'उत्-रीकृत्या' न बनकर 'उत्थरीकृत्य' बनता है, इस अर्थ के रूपान्तर है—उत्थरी, उत्थरी, अरी और अथरी) 2. विस्तार (अथरीकृत [तना० उत्थ०] सहमति देना, अनु-मति देना, स्वीकार करना—गिरं न कं कामुरीचकार—मासि० २।१३, सि० १०।१४)

उत्थ् (मृ०- - अच्) [उत्+अनुत्, उत्थ रपरथच] छाती, कक्षस्थल—अय्योरत्को वृषकल्पम्—रघु० १।१३, कु० ६।५१, उत्थति क् छाती से लगाना। सम०—कलम् छाती की शोट,—कृहः—कालः छाती का रोम, फेफड़े की किल्ली की नुनन, प्लूरिजी,—कृहः शोमी, भेषिया,—आणम् कवच, सीमाकम्—सि० १५।८०,—कः,—नृः, उत्थिन्, उत्थिष्णुः स्त्री की छाती, स्तन,—रजाते रश्मिद्वयामुरीचकुम्भी—सि० ८।५३, २५, ५९,—मृषणम् छाती का मांसपत्र,—कृष्णक मतिव्यों का हार जो छाती के ऊपर लटक रहा हो,—अव्ययम् छाती, कक्षस्थल।

उत्थिन (वि०) [उत्थ्+इत्थ] विद्याल यज्ञस्थल वाला।

उत्थय (वि०) [उत्थ्+यत्] 1 औरत सन्तान 2 एक ही वर्ष में विवाहित दम्पती का पुत्र या पुत्री 3 उत्तम,—अव्यः पुत्र।

उत्थयत् (वि०) [उत्थ्+मत्तुप्, मत्स्य च] विद्याल यज्ञ-स्थल वाला, चौकी छाती वाला।

उत्थी स्वीकृतिशेषक अव्यय—२० उत्थरी (उत्थीकृत अनुमति देना, अनुज्ञा देना, स्वीकृति देना—अयोरीकृत तथा—मृद्वि० ८।११, रघु० १५।७) 2 अनुसरण करना, आश्रय देना अथि शेषकुरीरोपि नोवेत्—मासि० १।४४।

उत्थ् (वि०) (स्त्री- - इ- - स्त्री) तु० (वरीयत्, उ० व० वरिष्ण) 1. विस्तृत, प्रचलत 2 महान्, बड़ा—रघु० ६।७४ 3 अतिशय, अधिक, प्रचुर 4. शब्द, मृत्युधान् कीमती। सम०—अस्ति (वि०) प्रकाल, युधिष्ठात—रघु० १५।७४,—अव्यः कामनावहार के रूप में विष्णुप्रयत्नान्,—अव्य (वि०) उत्तम व्यक्तियों द्वारा विद्याका सुविधान किया गया हो—अव्य० ६१,—वार्धः स्त्री सफर,—विष्णव (वि०) पराक्रमी, बलशाली,—अव्य (वि०) उँची मायाय वाला, अत्यन्त सञ्च-कारी,—अव्यः मृत्युधान् हार।

उत्थी—उत्थरी

उपका—उत्कल ।

उपेकायः [उपेव सुप्रं नामी गर्वप्रय—ब० स०] एकही, तु० ऊर्णनाथ ।

उषा [ऊर्ण+उ वृत्त्व] 1 ऊन, नमदा या ऊनी कपडा 2 पौषों के बीच केखण्ड—दे० ऊर्णा ।

उषांतः [उष+अट+अप्] 1 अष्टमा 2 वर्ष ।

उषेरा [उष शास्वादिक्मुष्वाति—अट+अप्] 1 उपबाक भूमि—सि० १५।१६ 2 भूमि ।

उषेरी [उरुम् महतीरुपि अरुन्ते बधीकरोति—उष+अप्+क गौरा० षीप्—तारा०] इन्द्रलोक की एक प्रसिद्ध नगर जो पुकरवा की पत्नी बनी, (उषेरी का ऋषिदे में बहुत उल्लेख मिलता है, उसकी ओर दृष्टि डालते ही मित्र और वरुण का योग्य स्मरित हो गया—जिससे अमर्य और बसिष्ठ का जन्म हुआ [दे० अगस्त्य] मित्र और वरुण द्वारा चाप दिये जाने पर वह इस लोक में आई और पुकरवा की पत्नी बनी, जिसकी कि उसने स्वर्ग से उतरते हुए देखा था तथा जिसका उसके मन पर अनूकल प्रभाव पडा । वह कुछ समय तक पुकरवा के साथ रही, परन्तु साप की सन्नाति पर कि स्वर्गलोक चली गई । पुकरवा को उसके विधोय से अत्यन्त दुःख हुआ, परन्तु वह एक बार फिर उसे प्राप्त करने में सफल हो गया । उषेरी से 'आयुष्' नाम का पुत्र पैदा हुआ—और फिर वह सब के लिए पुकरवा की छोड़ कर चली गई । विक्रमोपधीय में दिया गया ब्रत कई शाली में चिक्र है, पुराणों में उसकी नारायण भूमि की जथा से उत्पन्न बताया गया है ।) सम०—रमण—बालमः—सहायः—पुकरवा ।

उषाकि [उष+अ+उप्] एक प्रकार की ककड़ी, दे० 'हवाक' ।

उषी [ऊर्ण+कु, नलोयः, ह्रस्व, ङीप्] 1 'अभ्यन्त प्रदेश' भूमि—स्तीकमुष्वा प्रयाति—म० १।१०, कुवाप कोष्पधरामिर्वासीम् रम्० २।३, १।१५, ३०, ७५, २।६६ 2 पृथ्वी, वरती 3 सुली अग्रह, मैदान । सम०—ईशः—ईश्वरः—वष—वृत्ति राजा,—वः 1 पहाड 2 क्षेत्रनाथ,—भूत् (पु०) 1 राजा 2 पहाड,—ऋः वृष—सि० ५।७ ।

उषयः [वृत्+कृष्, संप्रसारण] 1 कता, वेद 2 कोयल सुप—योगिनीधियनबोलेयधालकारिसम्बोपकण्ठविपिनालबयो ब्रवीति—मा० १।२, सि० ५।८ ।

उष्य—दे० उलय ।

उष्क [वृत्+ऊरु सप्रसारण] 1 उल्क—नौलकोष्प-क्याको वेदि रिवा नुर्येव्य कि दूषणम्—मत्० २।१३, त्यजति मूषमूष्क मीतिनायकक्राक—सि० १।१६ ५ 2 इन्द्र ।

उल्लसलम् [ऊर्णं लम् उल्लसम्, पुषो० का+क] ओसली (जिसमें धान कूटे जाते हैं)—ब्रह्महत्यायाल्लसलम्—महा०, मनु० ३।८८, ५।११७ ।

उल्लसलकम् [उल्लसल+कम्] सरल । उल्लसलिक (वि०) [उल्लसल+उल्] सरल में पीसा हुआ ।

उल्लतः [उल्ल+उलप्] अजगर, शिकार को बसोच कर भारने वाला विषहीन सर्प ।

उल्लुकी [?] नाम कन्या (यह कौरव्य नाम की पुत्री थी, एक दिन जब वह गया में स्नान कर रही थी, उसकी दृष्टि अर्जुन पर पड़ी । वह उसके रूप पर मूग्ध हो गई, फलत उसने अर्जुन को अपने घर पाताल लोक में शिवा स्नान का प्रबंध किया । वहाँ पहुँचने पर उसने अर्जुन से अपने आपको पत्नीरूप में स्वीकार करने की प्रार्थना की जिसे अर्जुन ने बड़े सकोच के साथ स्वीकार किया । 'इरावतु' नाम का एक पुत्र उल्लुकी से पैदा हुआ । जब बभ्रुवाहन के तीर से अर्जुन का मित्र बट गया था तो उस समय उल्लुकी की सहायता से ही उसे पुनर्जीवन मिला ।)

उल्का [उष्+कृष्+टाप्, वय्य ल] 1 आकाश में रहने वाला दाहक तत्व, लुक सि० १।५।११, मनु० १।३८ बाण० १।१४५ 2 जलती हुई ककड़ी, मसाल 3 अग्नि, ज्वाला—वेध० ५३। सम०—अग्निर् (वि०) मधालुकी—वासः उल्कागिरि का टूट कर गिरना,—नुकः एक राजस या प्रेत (अग्निवा बैताल)—मनु० १२।७१, मा० ५।१३ ।

उल्लुकी [उल्ल+कुष्+क+ङीप्] 1 केतु, उल्का 2 मयान ।

उल्लम्,—वष् [उष+व (व) नु, वय्य ल वम्] 1 भ्रूय 2 योगि 3 मयासय ।

उल्ल (व) व (वि०) [उष्+व (व) वृ+अष् पुषो०] 1 दाहा, जना हुआ पयोप, प्रचूर (सर्प आदि) 2 अधिक, अतिगम्य, तीव्र—सि० १०।५५, कु० ७।८५ 3 दुष्ट, बलशाली, बडा—सि० ७०।५१ 4 स्पष्ट, साफ—तस्यासौदुल्लयो मार्गं—रभू० ४।३३ ।

उल्लुकः [उष्+मुक्, वय्य ल] अलती ककड़ी, मसाल ।

उल्लुल्लसलम् [उष्+ल्लसल+ल्यट्] 1 लडांग लगना, लापना 2 अतिक्रमय, तीव्रना ।

उल्लस (वि०) [उष्+ल्लु+अष्] 1 डांडाडोळ, कपनजाल 2 धने बाली वाला लोमण ।

उल्लसलवम् [उष्+ल्ल+ल्यट्] 1 आगन्ध, हर्ष 2 रोमाश ।

उल्लसित (पु० क० इ०) [उष्+ल्लु+सत्] 1 चमकीला, उज्वल, आभायुक्त 2 आगन्धित, प्रसन्न ।

उल्लाव (वि०) [उष्+लाष्+ल] 1 रोय से मुक्त,

स्वात्मोन्मुख 2. एक, चतुर, कुशल 3. पक्षि
4. मानसिक, प्रथम ।

उत्पन्नः [उच् + लृप् + घञ्] 1 भाषण, शब्द,—मुता
मयायुत्पन्नोक्तायाः—उत्तर० ३ 2 अथमानजनक-
शब्द, सोपासक भाषण, उपालन—सोलोक्ताया. सोडा
—मर्तु० ३।६ 3. उर्वरी भाषाज से पुकारना 4 सवेग
या रोग आदि के कारण भाषाज में परिवर्तन
6 संकेत, मुताप ।

उत्पाप्यम् [उच् + लृप् + णिप् + यत्] एक प्रकार का
नाटक—दे० सा० ६० ५४५ ।

उत्पन्नः [उच् + लृप् + घञ्] 1. हर्ष, सुधी—सोला-
सम्—उत्तर० १, सकीर्णोक्तासम्—उत्तर० २,
उत्पास कुम्भपक्षेपहटलपनमरापुष्पवधानाम्—सा०
६० 2 प्रकाश, ज्ञाना 3 (अल० सा० में) एक जल-
कार—परिभाषा - अन्यदीपयुगदीपयुक्तमयस्य गुण
दोषयोरोद्धान्मुलास.—रस०, उदाहरणों के लिए दे०,
रस०, या चन्द्रा० ४।१३१, १३३ 4 पुस्तक के प्रमाण-
वध्याय, अनुनाग, पर्न, काउ आदि, जैसे कि काव्य के
दस उदाहरण ।

उत्पासनाम् [उच् + लृप् + णिप् + ष्ट्यट्] ज्ञाना ।
उत्पल्लित (वि०) [उच् + लृप् + क्त] प्रसिद्ध,
विख्यात ।

उत्पल्लि (वि०) [उच् + लृप् + क्त] रखा हुआ, जिला
किया गया—मणि शाखोत्पल्लि—अनु० २।४४ ।

उत्पल्लवम् [उच् + लृप् + ष्ट्यट्] 1 लोडना, काटना
—पादकषायुक्करोत्पल्लवनेषु पणान् दस (दस)
—याज्ञ० २।१७ 2 बालों को मोचना, उखाड़ना ।

उत्पल्लवम् - **उत्पल्लव** [उच् + लृप् + ष्ट्यट्, अ वा]
व्यापकित - बीरा-बीरा तु सोल्लुक्तभाषणै लोपये-
युम्—सा० ६० १०५—**सोल्लुक्तम्**—व्यङ्ग्यपूर्वक,
नाटकों में प्रायः अर्थनिर्देश के रूप में प्रयुक्त ।

उत्पले [उच् + लिङ् + घञ्] 1 संकेत, जिक 2 वर्षान
उक्ति 3 भूराज करना, लूटवाई 4 (अल० सा० में)
एक अलंकार—अनुभवंतुभोल्लेकादेकस्योल्लेख इत्यते,
स्त्रीणि कामोपश्रिभि स्वर्द काश शत्रुभिरैशि स
—चन्द्रा० ५।१९, तु०, सा० ६० ६८२ 5 राधना,
भूरचना, काटना, —अनुरमुत्पलेक-का० १९१, कुट्टिम?
२३२ ।

उत्पल्लवम् [उच् + लिङ् + ष्ट्यट्] 1 रचना, भूरचना,
छीलना आदि 2 मोड़ना—याज्ञ० १।१८८, मनु०
५।१२४ 3 बमन करना 4 जिक, संकेत 5 लेख,
चित्रण ।

उत्पलो [उच् + लोप् + घञ्] किलान या शांतिधाना
पदोभा,तिरपास ।

उत्पल्लो (वि०) [उच् + लोप् + घञ्, इत्य लत्वम्]

वति बंधन, अथवात बंधनहीन—भा० ५।१,—कः
एक बड़ी लहर वा तरंग ।

उत्पन्न, उत्पन्न—दे० उत्प, उत्पन्न ।

उत्पन्नम् (पुं०) [उच् + कर्मणि—सञ्] (कर्म०, ए०
६०—उत्पन्ना, संघो० ए० ४० उत्पन्नम्, उत्पन्न, उत्पन्नः)
सूक्त-ग्रह का अधिष्ठातृ देवता, भूय का पुत्र, राक्षसों
का गुरु, वेद में इनका नाम 'काव्य' समस्त इनकी
बुद्धिमत्ता की क्वाण्टि के कारण मिलता है—तु० कवी-
नाम्नना कविः; अम० १०।३७, ये गुरु व वर्गभास्व
के प्रप्रेता माने जाते हैं—याज्ञ० १।४, नागरिक राज्य
व्यवस्था पर भी गुरु प्रमाणस्वरूप समझे जाते हैं—
शास्त्रयुक्तमसा प्रधीतम्—यच० ५, अध्यापितस्वोद्यन-
सनसापि नीतिम्—कु० ३।६ ।

उत्पी [उच् + ई, सञ्] कामना, इच्छा ।

उत्पी (बी) ए०—एम्, **उत्पी** (बी) एवम् [उच् + ईरन्,
कित्, सम्प्र०, उच् + कीरन् वा, स्वावर्षे क्न् च] बीर-
युक्त, सच—सत्यस्तोषीरन्—स० ३।९ ।

उच् (म्वा० पर०) (बीषति, बीषित-उचित-उष्ट) 1 अलाना,
उपयोग करना, खपाना,—बीषाचकार कामाग्निर्वस-
वममहृनिष्कम्—मट्टि० ६।१, १५।६२, मनु० ५।१८९
2 दम्ब देना, पीटना—दम्बनेव तपन्योवित्—मनु०
५।३७३ 3 मार डालना, घोट पहुँचाना ।

उचः [उच् + क्] 1 प्रभात काल, पी फटना 2 लम्पट
3 रिहाली बरती ।

उचवम् [उच् + ष्ट्यट्] 1 काली मिर्च 2 अबरक ।

उच्यः [उच् + क्यप्] 1 बलि 2 सुवर्ष ।

उच्यत् (स्त्री०) [उच् + क्यत्] 1. पी फटना, प्रभात—श्री-
पाषिरोच्यति—रघु० १२।१, उच्यति उच्यथ—प्रभात
काल में उठकर 2. प्रातः कालीन प्रकाश 3 साध्यका-
लीन (प्रातः और साय) अधिष्ठातृदेवी (हिं० ब० में
प्रयोग) । बी दिन का अवसान, सायकालीन सध्या ।
सम०—बुधः अग्नि—उत्तर० ९ ।

उचा [ओषत्पन्वकारम्—उच् + क्] 1. प्रभात काल, पी
फटना 2 प्रातः कालीन प्रकाश 3. संघा 4. रिहाली
बरती 5 डेगची, बटलोही 6. बाज राजस की पुत्री
तथा अनिष्ट की पत्नी [उचा ने अनिष्ट को स्वप्न में
देखा, और उस पर मोहित हो गईं । उसने अपनी
सखी चित्रलेखा की सहायता माँगी—चित्रलेखा ने
उसे परामर्श दिया कि वह बाज पास रहने वाले सभी
राजकुमारों के चित्र अपने साथ ले ले । अब ऐसा
किया गया, तो उसने अनिष्ट को पहचान लिया और
उसे अपने नगर में लिया ले गईं, वहाँ कि उसका
अनिष्ट से विवाह हो गया—दे० 'अनिष्ट' शी) ।
सम०— ईशः उचा का स्वामी अनिष्ट,—कालः भृगः,
—पतिः,—रवमः अनिष्ट, उचा का पति ।

उपस्थि (वि०) [उत् + स्थि + क्त] 1. बसा हुआ 2. बसा हुआ ।
उपस्थि = २० उपस्थि ।

उपसृग् [उत् + पृग्, कित्] 1 उट्टे, —बसोपुद्गामीशतवाहित-
यम्—रघु० ५।३२, मनु० ३।१६२, ५।१२०, १।१
२०२ 2. वैया 3. कमुधान् सवि—श्वी उट्टेनी ।

उपसृक्ता [उत् + कृत् + टाप्, इत्वम्] 1 उट्टेनी 2 उट्टे की
सकल की मिट्टी की बनी मरिचा रत्नने की सुराही
—सि० १२।२६ ।

उपस्य (वि०) [उत् + स्य] 1 तप्य, सर्व—^०मधु, ^०कर
मादि 2 तीक्ष्ण, स्थिर, पुतीला—बावदे नातिपीतोष्णो
नभस्वाग्निश्च दक्षिण—रघु० ५।८, (यहाँ 'उपस्य' का
सर्व 'सर्व' भी है) 3 रिक्त, तीक्ष्ण, चरपरा 4 चतुर,
प्रवीण 5 शोभी, —अप्य, —अप्य 1 ताप, यमी 2 शीघ्र
श्रुतु 3 धृप। सम०—अप्य, —अप्य, —अप्य;— शीघ्रिणि,
—रक्षिणः,—रक्षिणः गर्भ किरणो बाला, सूर्य—रघु० ५।४
८।३०, कु० ३।२५—अक्षिणः,—अक्षिणः,— उपपत्तः
यमी का निकट आना, शीघ्र श्रुतु,—उपस्य गर्भ या
तप्य पानी,—आक्षिणः,—कः गर्भ श्रुतु—आक्षिणः । 1 गर्भ
2 गर्भ भाप,—आक्षिणः—अप्य शला छतरी,—यद्यपि
अप्योऽपिबोष्णारप्यम्—कु० ५।५२ ।

उपस्य (वि०) [उत्स्य + कृत्] 1 तेज, पुतीला, सक्षिप 2
अररपला, पीडित 3. यमी पहुँचाने वाला, सर्व करने
वाला,—कः 1 अर 2 निराध, शीघ्र श्रुतु ।

उपस्यन् (वि०) [उत्स्य + क्त] यमी न सह सकने योग्य,
दाम, सतप्य,—उत्स्यन् शिशिरे निधीयति तरोर्मला-
लवाले शिली—विष्णु० २।२३ ।

उपस्यन्ता [उत्स्य + क्त, ति० उत्स्य आवेश, टाप् + इत्वम्] माँड ।

उपस्यन् (पु०) [उत्स्य + इति] यमी ।
उपस्यन्,—अप्य [उत्स्यीयते हिताति—इत् + क् टाटा०]

1 जो सिर के चारो ओर बोधी बाप 2 बत कम्परी,
साफा, शिरोवेष्टन, मुकुट—बलाकापाप्युरोष्णीयम्
—मनु० ५।१९ 3 प्रवेदक बिह्व ।

उपस्यन्ति (वि०) [उत्स्यीय + इति] शिरोवेष्टन पहले हुए या
राजमुकुट धारण किए हुए—का० २२९—(पु०) सिव ।

उपस्यन्,—उत्स्यकः [उत् + स्य, कृत् व] 1 यमी 2 शीघ्र
श्रुतु 3. शोष 4 तरपरी, उत्सुकता, उत्स्यन्ता ।
सम०—अप्यस्य (वि०) श्रुतु,—अप्य (पु०) सूर्य,
—श्वेध, बभारा, भाप से स्नान ।

उपस्यन् (पु०) [उत् + स्यन्ति] 1 ताप, यमी—अप्योष्ण
—मनु० २।४०, मनु० ५।२३१, २।२३, कु० ५।४६,
७।४४ 2 बाष्प, भाप—कु० ५।२३ 3 शीघ्र श्रुतु
4 तरपरी, उत्सुकता 5 (स्या० में), ए व् स्
और ह् अक्षर दे^० 'उत्स्यन्' ।

उपस्य [वत् + रक्, सप्र०] 1 (प्रकाश की) क्रिय, गमि
—सर्वेकं समवेत्स्यसिन् नृपयुक्तीन्पिते तत्तर्थात्
—मासवि० २।३३, रघु० ५।६६ कि० ५।३१ 2 सौंड
3 वेवता,—आ 1 प्रजात काल, पी फटा 2 प्रकाश
3 गाय ।

उह् (स्या० पर०) (बोहगि, उहित) 1 शोट मारना,
पीडित करना 2 धार डालना, मट्ट करना—अप वा
अप के साथ—दे० ऊह् ।

उह्, उहह् (अव्यय०) बलाने या पुकारने के लिए प्रयुक्त
किया जाने वाला विस्मयार्थि श्लोक अव्यय ।

उह्णः [वह् + रक् सप्र०] सौंड ।

ऊ

ऊ [अवतीति—अव् + सिव्य् ऊट्] 1 शिव, 2 चन्द्रमा
—(अव्यय०) 1 आरम्भ-नृपक अव्यय 2 (क)
बुलावा (ख) कथना (घ) तथा करना की प्रकट
करने वाला विस्मयार्थि श्लोक अव्यय ।

ऊ (वि०) [वह् + क्त सप्र०] 1 दोषा गया, ले जाया गया
(बोसा) आदि 2 लिया गया 3 विवाहित,—ऊ
विवाहित पुरुष,—आ विवाहिता लड़की । सम०—कण्ट
(वि) कण्ठचारी,—आर्ष (वि०) बिलने विवाह कर
लिया है,—अक्षतः नभपुत्रक ।

ऊर्षिः (स्त्री०) [वह् + क्त] विवाह ।

ऊर्षिः (स्त्री०) [वह् + क्त] 1 दुनिया, सीना 2 सरला
3 उपवोष 4 शीशु, छेल ।

ऊर्षत् (नपु०) [उन्त् + अयुत्, ऊर्ष आवेश] गेन, जीर्दी
(बहुव्रीहि समास में बदल कर 'उर्षत्' हो जाता है) ।

ऊर्षन्त्, ऊर्षन्त् [ऊर्षन् (वृ + यत्) द्वय] द्वय (बौदी से
उत्पन्न) ऊर्षन्त्स्यन्ति तबोपभोगुम्—रघु० २।९६ ।

ऊर्ष (वि०) [ऊर्ष + अर्ष] 1 अभाषण, अर्षरा, कम-
किचिदुत्तमनुभव, शरत्तमयुत्तयमी—रघु० १०।१ अर्षुर्ष
अपर्षात् 2 (सक्या, आकार वा अंश में) अपेक्षाकृत
कम—ऊर्षदिवर्षं निरक्षनेत्—आश० ३।१, दो सर्व से
कम भाप का 3 अपेक्षाकृत दुर्बल, पटिया—ऊर्ष न
रापेक्ष्यधिको बभामे—रघु० २।४ 4. बटा कर
(सक्याओं के साथ द्वी अर्थ में) कुक्षीय = बूक बटा
कर,—विश्वसिः एक बटाकर शीघ्र = १९ ।

सम०—आसिन् (वि०) टल माकाजो से विभूयित
- (ए०) समुद्र ।
असिन्वा [अस् + क्त् + टाप्] 1 अहर 2 अघुठी (लहर
की प्राति धमकीनी) 3 सोद, बोई बस्तु के लिए
होक 4 बकरी का चिमाचिमाता 5 बरष में पडी
सिकन या चूनाट ।
अस्यं (वि०) [अस् + अ] विस्तृत, बडा, —की बडवानल ।
अस्यैर [उठ सत्यादिकमुष्कति— ऋ + अच् + टाप्] उपजाऊ
भूमि ।
अस्यिन् [दे० उलुपिन्] शिशुक, सूँस ।
अस्यक—दे० उलुक ।
अस्यं (म्वा० पर०) (अपति) कण होना, अस्वस्थ होना,
बोमार होना ।
अस्यः [अस् + क्] 1 रिहासी भरती 2 अमर 3 दरार,
तरैर 4 कर्वाबिबर 5 मलय पर्वत 6 प्रभात, पी फटना,
कुछ लोयो के मतानुसार (—बन्) भी ।
अस्यकम् [अस् + कम्] प्रभात, पी फटना ।
अस्यकम्-वा [अस् + ल्युट्, स्थिवा टाप् च] 1 काली मिर्च,
2 अदरक ।
अस्यर (वि०) [अस् + रा + क्] नमक या देहकमो से
पुस्त, — ए, — रच् बजर भूमि जो रिहात हो— शि०
१४।४६ ।
अस्यक—दे० (वि०) अयर ।
अस्यक [अस् + क्] 1 ताप 2 शीघ्र अस्तु ।
अस्यक, —श्च (वि०) [अस् + न] [अस् + यत्] गर्म,
भाप निकालने वाला ।
अस्यन् (ए०) [अस् + मनिन्] 1 ताप, गर्मी 2 शीघ्र-
अस्तु, निदास 3 भाप, वाष्प, उष्णवास 4 तरंगगर्मी
जोश, प्रचम्पता 5 (म्वा० में) घृ, घृ, स् और ह् की
ज्वनिर्वा । सम०—उष्णकः शीघ्र अस्तु का आगमन,

—ए 1 अग्नि 2 पितरों की (ब० ब० में) एक
बेनी ।
अस्तु (म्वा० उप०) (अहित—ते, अहित) 1 टाँकना,
अकित करना, अवेलाप करना 2 अटकल लगाना,
अदाज करना, अनुमान लगाना—अनुक्तमन्वृहति
परिचतो अत—एच० १।४३ 3 लम्पटाना, लोचनाना,
पहचानना, जाना करना—अज्ञान्यके जयं न च—मट्टि०
१।४।२ 4 तर्क करना, बिचार करना—(प्रेर०) तर्क
या चिन्तन करवाना, अनुमान या अटकल लगवाना
—कि० १६।१९, अच—, 1 हटाया, दूर करना—स
हि विभानपोहित—ए० ३।१ 2 तुलत अनुकरण
करना, अपरिष्—, रोकना, हटाना, बर्बा—, अटकल
लगाना अदाज लगाना 2 इकना, उच—, निकट जाना,
निधि—, समग्र करना, प्रकाशित करना (दे० निर्व्यक्ति)
परिस्त्रम्—, उधर-उधर छिडकना, इति—, 1 विरोध
करना, बाधा डालना, रोकना डालना 2 मुकरना
(दे० प्रत्यह) इतिथि—, सन् के विरुद्ध सैनिक मोर्चा
लगाना, वि—, युद्ध के अन्तर पर सेना की व्यवस्था
करना—मुष्वा बज्जेन वैवेतान् भूहेन भूक्ष्म योचयेत्
—मनु० ३।१११, सन्—, एकत्र करना, इकट्ठे होना ।
अस्तु [अस् + यत्] 1 अटकल, अदाज 2 परीक्षण,
निर्धारण 3 समग्र-बुद्ध 4 तर्कना, युक्ति देना 5
अप्याहार (न्यूनपद की पूर्ति) करना । सम०—अप्यैः
पुरी चर्चा, अनुक्त व प्रतिफल स्थितियों पर पूरा
सोच-विचार, — प्राप्ति २।७४ दे० 'अपोह' ।
अस्त्यन् [अस् + ल्युट्] अनुमान लगाना, अटकलबाजी ।
अस्तनी [अहत + अनी] शार, बुहारी ।
असिन् (वि०) [अस् + इनि] तर्क करने वाला, अनुमान
लगाने वाला, —भी 1 मचात, सचच 2 ऋच, ऋचवड
समुदाय (सु० 'असिह्मिणी')

अ

अ (अभ्य०) (क) बलाना (स) परिहात और (य)
निन्दा या अपशब्दव्यञ्जक विस्मयातिबोधक अभ्यय ।
अ (म्वा० पर०) (अच्छति अत—प्रेर० अर्गवति,
इच्छा० अरिरीयति) 1 जाना हिलना-डुलना—
न-छायायच्छामुष्कति—वि० ४।४४ 2 उठाना,
उत्पुञ्ज होना ।
11 (ए० पर०) (एपति, अत) (बहुधा वेद में प्रयुक्त)
1 जाना 2 हिलना-डुलना, डगमग होना 3 प्राप्त

करना, अवाप्त करना, अधिवत करना, जेट होना,
4 बलायवान करना, उत्तेजित करना ।
11 (म्वा० पर०) (अपोति, अय) 1 चोट पहुँचाना,
घायल करना 2 आक्रमण करना—प्रेर०—(अपयति,
अपति) 1 फेंकना, डालना, स्थिर करना या जानाना
—ए० ८।८ 2 रखना, स्थापित करना, स्थिर
करना, निर्देश देना या (असि आदि का) फेरना
3 रखना, सम्मिलित करना, देना, बैठक देना, जमा

देना 4. सीपना, दे देना, सुपुर्न कर देना, हुवाले कर देना—इति मूलस्यपरमाण्वप्येति वा० ११४, ११।

अक्षय (वि०) [अक्ष+यत्+सत्+पुनो० क्लोरि.] शायल, सत-विश्रुत, आहत।

अक्षयम् [अक्ष+यम्] 1 तन-नीलत 2 विशेषकर सर्पति, हुस्तयत सामग्री या सामान (मूल्य हो जाने पर छोटा हुआ), दे० 'रिख्' 3 सीमा। सम०—अक्षयम् प्राप्त करना या उत्तराधिकार में (सर्पति) पाना,—प्राहः उत्तराधिकारी या सर्पति का प्राप्तकर्ता,—अक्षयः 1 सर्पति का बँटवारा, विभाजन 2 अक्षय, दाय,—आशियम्,—इष्ट,—हारिम् (पु०) 1 उत्तराधिकारी 2 सह उत्तराधिकारी।

अक्षः [अक्ष+सक्चि] 1 रीछ—मनु० १२।१७ 2 पर्वत का नाम,—क्ष,—क्षम् 1 तारा, तारकपुत्र, नक्षत्र—मनु० २।१० १ 2 रागिमाता का पिह्न, राशि,—क्षोः (पु०-ब०-द०) कुनिका-मन्त्र के सात तारे, जो बाद में सर्पति कहलाये—रघु० १२।२५,—क्षा उत्तर दिशा,—क्षी रीछरी, माया मालु। सम०—अक्षम् ताराग्रह,—अक्ष,—ईशः 'तारों का स्वामी' बन्दना,—नेमिः विष्णु,—राक्ष,—राक्षः 1 चन्द्रमा 2 रीछों का स्वामी, पांचवान्,—सुरीश्वरः रीछों और मयूरो का स्वामी रघु० १३।०२।

अक्षर [अक्ष+स्तरन्] 1 अक्षिन् 2 कटा।
अक्षरक [अक्ष+मनुप-मन्+क्] नर्मदा के निकट स्थित एक पहाड,—अप्रक्रियामुसवनस्तटेष्—रघु० ५।४४, अक्षरन्त गिरिशेष्ठमध्यान्ते नर्मदा पिबन्—रामा०।
अक्ष (पुटा० पर०) (अक्षति) 1 प्रसासा करना, स्तुति यान करना 2 इकना, परां शकना 3. भयकना।

अक्ष (स्त्री०) [अक्ष+विप्] 1 मुक्त 2 अग्नेद का मन्, अक्षा (विप० अक्षम् और सामन्) 3 अक्षसंहिता (ब० ब०) 4 दीप्ति ('अक्ष' के लिए) 5 प्रशसा 6 पूजा। सम०- विद्यालय अग्नेद के मनों का पाठ करने कुछ संस्कारों का अनुष्ठान,—वेदः चारों वेदों में सबसे पुराना वेद, हिन्दुओं का अत्यन्त पवित्र और प्राचीन ग्रन्थ,—संहिता अग्नेद के सूक्तों का क्रमबद्ध संग्रह।

अक्षीक [अक्ष+ईक्ष्] घट्टी,— वन् कराही।
अक्षम् (पुटा० पर०) (अक्षति) 1 कृपा, या सत्क होना 2 वाला 3 समता का न रहना।

अक्षम्बा [अक्ष+म्ब+टाप्] कामना, इच्छा।
अक्ष्। (म्भा० भा०) (अक्षति, अक्षिज) 1 जाना 2 प्राप्त करना, हासिल करना 3 सहे होना या स्थिर होना 4 स्वस्थ या हृष्ट-मुष्ट होना।
ii (म्भा० पर०) अक्षाय करना, उपास्यन करना, दु० 'अर्च'।

अक्षीक—दे० 'अक्षीक'।

अक्षु, **अक्षुक्** (वि०) [अर्चयति मुनात्, अर्चुं+उ] (स्त्री०—अक्षु-अक्षी) (म० ब०—अक्षीयन्, उ० ब०—अक्षिष्य) 1. सीषा (आल० भी)—उमां उ पयम् अक्षुनीव अक्षुषा—कु० ५।३२ 2 बरा, ईमानदार, स्पष्टवादी—यच० १।४१५ 3 अनुक, अच्छा। सम०—यः 1 व्यवहार में ईमानदार 2 तीर,—रौहित्यम् इन्द्र का सीषा काल घनुष।

अक्षी [अक्षु+अक्षी] 1. सीषीतामी सरक स्त्री 2 तारों की विशेष गति।

अक्षम् [अक्ष+म्] 1 कर्जा (सीनों प्रकार का अक्ष, दे० अक्षुण), अर्चय अर्चय (पितृघम्) पितरों को दिया जाने वाला अन्तिम अक्ष—अर्चयन्—पुनोत्पादन 2 कर्तव्यता, दायित्व 3 (बीजय० में) नकारात्मक चिह्न या परिमाण, घटा-चिह्न (विप०-मन्) 4. किला, दुर्ग 5 पानी 6 भूमि। सम०—अक्षयः ययत् ब्रह्म,—अयनमन्,—अयनोदयम्,—अयनरथम्,—दामन्,—मुक्तिः,—शोकः,—शोचन् अक्षपरिचाय करना, अक्ष चुकाना,—आयनम् कर्जा बतूल करना, उधार दिया हुआ द्रव्य वापिस लेना,—अक्षयम् (अक्षयम्) एक कर्जे के लिए दूसरा कर्जे, एक अक्ष चुकाने के लिए दूसरा अक्ष ले लेना,—अक्ष 1 कर्जा उधार लेना 2 उधार लेने वाला,—अक्षु,—अक्षिन् (वि०) जो अक्ष दे देता है,—अक्षः बड़ कीट दास जिसका अक्ष परिशोध करके उसे मिटा गया है—अक्षमोचनेन शस्यत्वमभ्युपगत अक्षदास—मिता०,—अक्षुण्,—अक्षयः प्रतिभति, उमानत—मुक्त (वि०) अक्ष से मुक्त,—मुक्तिः आदि दे० 'अक्षायनयनम्'—नेम्यम् 'अक्ष-अक्षयम्' तमस्तुक् जिसमें अक्ष को स्वीकृति एवं हो (विधि में)।

अक्षिक [अक्ष+च्छ्] कर्जदार यात्र० २।५६, ९३।

अक्षिन् (वि०) [अक्ष+श्नि] कर्जदार, अक्षग्रस्त, अनुसूहीत (किसी भी बात से)।

अक्ष (वि०) [अक्ष+स्त] 1 उचिन् सही 2 ईमानदार, सच्चा—अग० १०।१४ 3 पुरित, प्रतिष्ठ प्राप्त—तन् (अप्य०) सही रूप से, उचित रीति से,—तन् (भौतिक साहित्य में इसका प्रयोग प्रायः नहीं मिलता) 1 स्थिर और निश्चित नियम, विधि (धार्मिक) 2 पावन प्रथा 3 दिव्य नियम, दिव्य सचार्ई 4 अक्ष 5 सचार्ई, अधिकार 6 सेतों में उच्छर्कित द्वारा औषधिका (विप० छवि), अक्षयच्छसित वृत्तम्—मनु० ४।४। सम०—आक्षुम् (वि०) सन्ने या पवित्र स्वभाव वाला,—(पु०) विष्णु।

अक्षीषा [अक्ष+ईषिह+टाप्] निन्दा, जर्तना।

अक्षु [अक्ष+पु, क्ति] 1. नीलम, बर्ब का एक नाम, अक्षुर्दे

सिन्धी में छः हैं—विशिरव वसन्तव घोषो वर्षा
शरद्विनः—कभी कभी ऋतुएं पांच लगती जाती हैं
(विशिर और हिव या ह्यवत् एक गिने जाने पर)
2 बुगारम, निविषत काल 3 शरद्व, ऋतुवान,
माह्वारी 4 वर्षाधान के लिए उपयुक्त काल—वर-
मनुषु नैवाविवानमन्—पद्य० १, मनु० ३।४६, याज्ञ०
१।११ 5 उपयुक्त मौसम या ठीक समय 6 प्रकाश,
आमा 7 छ की सख्या के लिए प्रतीकात्मक अभि-
व्यक्ति। सम०—काल,—समय,—बेला 1 वर्षाधान
के लिए अनुकूल समय अर्थात् ऋतुवान से लेकर १६
राते, २० उ० ऋतु 2 मौसम की अवधि,—काल-
ऋतुओं का समुदाय,—मासिक (वर्षाधान के लिए उप-
युक्त समय पर अर्थात् मासिकयम के पश्चात्) स्त्री से
सयोग करने वाला,—धर्म अधोपस्था के एक राजा का
नाम, अणुताप का पुत्र, इक्ष्वाकु की सत्तान, अपना
राज्य छिन जाने पर निषध देना का राजा नल जब भा-
द्वस्त हुआ तो बहू राजा ऋतुपर्ण की सेवा में आया।
सूतकीडा में बड़ा हुआ था। अतः उस राजा ने नल
से सूतकीडा लीधी तथा बदले में उसे अश्वसचालन का
काम सिखाया। फलत इन्हीं की बलीकत राजा ऋतुपर्ण,
इसके पूर्व कि दशघन्ती अपना दूसरा पति चुनने के
विचार की कार्य में परिणत करे, नल की कुशिनपुर
पहुँचाने में सफल हुआ।,—वर्षाधि,—वृत्ति ऋतुओं का
आना-जाना,—मुख्य ऋतु का आरम्भ या पहला दिन
—राजः बसन्त ऋतु—सिगम् 1 रजःश्राव का लक्षण या
चिह्न (जैसे की बसन्त ऋतु में आम के बीर आना)
2 मासिक साव का चिह्न,—सहिः दो ऋतुओं का
मिश्रण,—स्नाता रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करके
निवृत्त हुई, और इसीलिए सयोग के लिए उपयुक्त
स्त्री—धर्मशोभम ग्राह्योमुस्नातामिमा स्मरन्—रघु०
१।७६,—स्नातम् रजोदर्शन के पश्चात् स्नान करना।

ऋतुमती [ऋतु+मनुषु+डीपु] रजस्वला स्त्री।
ऋते (अध०) सिवाय, बिना (अथा० के साथ)—ऋते
कीर्त्यासनायात—अट्टि० ८।१०५ अवेहि मा प्रीतमृते
दुरङ्गमान्—रघु० ३।६३ पापास्ते—शं० ६।२२, कु०
१।५१, २।५७, (कभी-कभी कर्म० के साथ) ऋतेऽपि
त्वा न भविष्यन्ति सर्वे—मथ० १।१३२ (करल० के
साथ विरल प्रयोग)।

ऋत्विज् (पु०) [ऋत्+यज्+विज्] यज्ञ के पुरोहित के
रूप में कार्य करने वाला, चार मुख्य ऋत्विज—होता,
उद्गाता, अध्वर्युं और बह्वा हैं, बडे २ सत्कारों में
ऋत्विजों की सख्या १६ तक होती है।

ऋत्वि (पु० क० कृ०) [ऋत्+वि] 1 सम्पन्न, फलदा-
युक्त, धनवान्—रघु० १।४।०, २।५०, ५।४० 2
वृद्धि-आप्त, वर्षवान् 3 जमा किया हुआ (व्याधिक),

—ऋः विष्णु—ऋम् 1 वृद्धि, विकास 2 प्रशंसित
उपसहार, स्तुष्ट परिहार।

ऋद्धि (स्त्री०) [ऋद्+मित्] 1 विकास, वृद्धि
2 सफलता, संपत्तता, बहुनायण 3 विस्तार, विस्तृति,
विभूति 4 अतिप्राणतिक व्यक्ति, सर्वोपरिता
5 सम्पन्नता।

ऋद् (दिवा० स्वा० पर०) (ऋध्मिन्, ऋध्मोति, ऋद्ध) 1
सम्पन्न होना, मम्बद्ध होना, फलना-फूलना, सफल होना
2 विकसित होना, बढ़ना (आक० भी) 3 सन्तुष्ट
करना, तृप्त करना, प्रसन्न करना, मनाना—मा० ५।
२९, सम्—फलना-फूलना।

ऋद्भुः [ऋरि स्वर्गं अरितो वा भवति इति -ऋ+भू+द्भुः]
देवता, दिव्यता, देव।

ऋद्भुज् [ऋद्भुवो देवा सिपयति वसति अवेति—ऋद्भु
+सि+ङ] 1 इन्द्र 2 (इन्द्र का) स्वर्ग।

ऋद्भुजिन् (पु०) (कर्व०—ऋद्भुजा, कर्म० ब० ब०
—ऋद्भुज) [ऋद्भुज बह स्वर्गो वास्यति—इति]
इन्द्र।

ऋत्सकः [?] एक प्रकार के वाद्ययंत्र को बजाने वाला।

ऋत्थ [ऋत्+थपु] सकेः पैरो वाला बारहमिषा हृत्विज,
—ध्वम् हृत्वा। सम०—केतु, —केतवः 1 अनिष्ट,
प्रधान का पुत्र 2 कामदेव।

ऋत् (तुदा० पर०—ऋत्ति, ऋत्) 1 जाना, पहुँचाना
2 मार डालना बोट पहुँचाना।

॥ (स्वा० पर०—अर्पति) 1 बहना 2 किसकना।

ऋत्थमः [ऋत्+अवक] 1 सौर 2 अंध, सर्वभेद
(समास के अन्तिम पद के कर्म) तथा पुरुषवर्षम,
भरतवर्षम, आदि 3 संगीत के सात स्वरों में से दूसरा
—ऋत्थमोऽत्र गीयन् इति-आर्या० १।६१ 4 सुब्र की
पृष्ठ 5 मगरमच्छ की पृष्ठ,—भी 1 पुरुष के आकार-
प्रकार की स्त्री (जैसे कि दाढ़ी आदि का होना)
2 पाप 4 विषया। मम०—ऋत्थः एक पहाड़ का नाम,
—ध्वजः शिव।

ऋत्तिः [ऋत्+इत्, कित्] 1 एक अन्तःस्फूर्त कवि या
मूनि, मन् इत्या 2 पुण्यात्मा मूनि, सन्तानी, विरक्त
योनी 3 प्रकाश की किरण। सम०—कुम्भर पवित्र
नदी,—सर्वभन्म् ऋत्तियों की सेवा में प्रस्तुत किया गया
तर्पण—(अध्यादिक),—पंचमी भाद्रपदकृष्णा पंचमी की
होने वाला (मिथो का) एक पर्व,—लोकः
ऋत्तियों का सप्तर,—स्तोत्रः 1 ऋत्तियों का स्तुति-नाम,
2 एक दिन में समाप्त होने वाला एक विशेष यज्ञ।

ऋत्तिः (पु०—स्त्री०) [ऋत्+मित्] 1 दुबारी तल-
वार 2 (सामान्यत) तलवार, ह्वाण 3 छत्रम् (बर्ही,
माला आदि)।

ऋत्थः [ऋत्+थपु] सकेः पैरो वाला बारहमिषा

हरिज। सम०—अक्ष०—केलप०—केयुः अविदह—मूकः पत्नी
सरोवर के निकट स्थित एक पर्वत जहाँ कुछ दिनों तक
राम बाणराम सुवीर के साथ रहे थे—अध्वमुकस्तु
पन्पाया पुरस्तात्पुमितप्रथम—अध्वः एक मृत्तिका का
नाम (यह विनाशक का पुत्र था, इसके पिता ने
जंगल में ही इसका पालन-पोषण किया, जब तक वह
बचस्क न हुआ तब तक इसने किसी सुदरे मनुष्य को
नहीं देखा। जब अनादृष्टि के कारण अंगदेव बर्बाद
या हों गया तो उसके राजा कोमपाह ने, झाड़ुओं के
पराभवानुसार अध्वभृग को कुछ कन्पाओ द्वारा

बुलाया, और अपनी पुत्री साता (वह शतक पुत्री
की, इसके मातृत्विक पिता राजा हशरम में) का
विवाह इनसे कर दिया। अध्वभृग ने इस बात
से प्रसन्न होकर उसके राज्य में पर्वत बर्बाद
कराई। यही वह अध्वि था जिसने राजा हशरम
के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान किया—जिसके
फलस्वरूप राम और उनके तीन भाइयों का जन्म
हुआ)।

अध्वकः [अध्व+कम्] चितौदार लकेर पैरो बाणा
भारहृतिषा हरिज।

अ (अध्व०) (क) भास (ख) दुरवृता (ग) मर्त्या, मिन्दा
(घ) कला तथा (ङ) स्मृति का अर्थक विस्मयादि-

शोकक अध्वय (पु०—अ०) 1 मीर 2. एक रामस।
अ (क्या० पर०—अध्वानि, ईर्षं) ज्ञाना, हिलना-डुकना।

एः (पु०) [ए+विच्] विष्णु, (अध्व०) (क) स्वरण
(ख) ईर्ष्या (ग) कला (घ) आद्यन्वय और (ङ)
बुधा तथा मिन्दा अर्थक (विस्मयादि शोकक) अध्वय।
एक (सर्व० वि०) [ए+कम्] 1 एक, अकेला, एकाकी,
केवल मात्र 2 जिसके साथ कोई और न हो 3 बही,
विलुक्त बही, सन्नक्षय—मनस्वेक वचस्वेकं सर्वस्वेकं
महात्मनाम्—हि० १।१०१ 4 स्थिर, अपरिवर्तित
5 अपनी प्रकार का अकेला, अद्वितीय, एक वचन 6
मुन्ध, सर्वोपरि, प्रमुख, अनन्य—एकी रागिणु राजते
—अर्त्त० ३।१२१ 7 अनुपम, बेमोह 8 दो या बहुत
में से एक—मेघ० ३०।७८ 9 बहुधा अपेक्षी के अनि-
व्यथाशक निपात (a या an) की भाँति प्रयुक्त
—ग्योतिरेक—अ० ५।३०, एक, दूसरा, 'कुछ अर्थ
को प्रकट करने के लिए बहुवचनात प्रयोग, अन्य, अपरे
इसके सहसम्बन्धी शब्द हैं। सम०—अक्ष (वि०) 1
एक चूरी वाला 2 एक शक्ति वाला (—कः) 1
शौचा 2 स्थि,—अक्षर (वि०) एक अक्षर वाला
(—रन्) 1 एक अक्षर वाला 2 पावन अक्षर 'ओम्'
—अध (वि०) 1 केवल एक पदार्थ या किन्तु पुरा
स्थिर 2. एक ही और ध्यान में मन, एकाग्रचित्त,
पुला हुआ,—एदु० १५।६६, मनुमेकाशवासीनम्—मनु०
२९

१।१ 3. अध्वय, अचरक,—अध्व=अध (—मूकम्)
एकाग्रता,—अधः 1. शरीर गतक 2 मनसक वह मय
वह,—अनुविषदम् अन्वेष्टि तत्कार जो केवल एक ही
पूर्वव (नघो मृत) को उद्देश्य करके किया गया हो,
—अंत(वि०) 1. अकेला 2 एक और, पारस में 3.
जो केवल एक ही पदार्थ वा चिन्तु को और निश्चित हो
4 अत्यधिक, बहुत—दु० १।३६ 5 निरपेक्ष, अचरक,
सतत—स्वायत्तमेकान्तमुपमम्—अर्त्त० २।७, मेघ० १०९,
(—कः) एकमात्र आशय, निश्चित नियम—देव.
अमा वा नैकान्त कालमात्रय महीपते—सि० २।८३,
(—सम्,—सेव,—स्त,—से) (अध्व०) 1. केवल
मात्र, अवश्य, सदैव, निरत 2. अकन्त, विलुक्त,
सर्वथा—वयप्येकान्ततो निस्पृहा—अर्त्त० ३।२४,
दुःखमेकान्ततो वा—मेघ० १०९,—अक्षर (वि०)
अगना, जि—केवल एक का ही अन्तर रहे, एक के
बाद एक को जोड़ कर—अ० ७।२७,—अंतिक(वि०)
अनित्त निर्यायक,—अध्वय (वि०) 1 जहाँ से केवल
एक हो जा सके, (जैसे कि पयवही या अटिषा) 2.
नितान्त ध्यानमग्न, पुला हुआ दे० एकाग्र (—कम्)
1 एकान्त स्थल या विद्याय स्वकी 2. चित्तने का
स्थान, सकल-स्थल 3. नहीतनाव 4. केवलमात्र

उद्देश्य—सा स्नेहयुक्त एकावलीभूता—मालिन् २।१५,
 —अर्थः 1 वही वस्तु, वही पदार्थ या वही आशय
 2 वही भाव,—अहम् (हं) 1 एक दिन का समय
 2 एक दिन तक चलने वाला यज्ञ,—आत्मपत्र (वि०)
 एकच्छत्र से बिलिप्टीकृत (बिलिपत्र की प्रभृता की
 स्थानि वाला)—एकानपत्र जगत प्रभृत्यम्—रघु० २।
 ५७, सि० १२।३३ विक्रम० ३।१९,—अवेष्टः दो वा
 दो से अधिक अक्षरों का एक स्थानापत्र (या तो एक
 स्वर का लोप करके या दोनो की मिला कर प्राप्त
 किया गया) जैसे कि 'एकामन' में अ, —आशक्ति,
 —श्री (स्त्री०) मोतियों की या अन्य मनको की एक
 लड़,—एकावली कण्ठविभूषण व—विक्रमाक० १।३०,
 लतावितोपे एकावली लला—विश्वम० १।२, (अन्व०
 पा० में) ऐसी उक्तिवयो की पक्ति जिसमें कर्ता का
 विधेय और विधेय का कर्ता के रूप में नियमित
 सम्बन्ध पाया जाय—स्वाप्योपेयोक्तो वापि यथापूर्वं
 परम्परम्, विशेषणतय, एष वस्तु सैकावली द्विधा
 —आव्य० १०,—उदक (सम्बन्ध) जो एक ही
 मूल पूर्वज से जल के लक्षण द्वारा संबद्ध हो।
 —उदर,—रा मया (माँ या बहन),—उद्दिष्टम्
 श्राद्धकृत्य जो केवल एक ही मूल व्यक्तिको (दूसरे
 पूर्वजों को सम्मिलित न करके) उद्देश्य करने किया
 या हो,—ऊन (वि०) एक कम, एक घटाकर,
 एक (वि०) एक एक करने, व्यटिच्छप से, एक
 अकेला—रघु० १।७।३, (कम्)—एककक्ष
 (अव्य०) एकदर करने, व्यक्तित, पृथक्-पृथक्,
 —शोध एक सनन धार,—हर (वि०) (स्त्री०
 —रौ) 1 एक ही कार्य करने वाला 2 (-रा)
 एक ही हाथ वाली 3 एक किरण वाली,—कायं
 (वि०) मिलकर काम करने वाली, सहयोगी, सहकारी
 (—यम्) एक मात्र कार्य, वही कार्य,—काल 1 एक
 समय 2 उसी समय,—कालिक,—कालीन (वि०)
 1 केवल एक वाग हाने वाला 2 समयवस्तु, सम-
 सामयिक,—कुल्ल कुबेर, वल्लभ, शोचनाथ,—मुष्ट,
 —गुष्ट (वि०) एक ही गूठ वाला (—ह,—हृक्)
 गुणार्थ,—घक् (वि०) 1 एक ही पहिले वाला
 2 एक ही राजा द्वारा शासित, (—क्) मूर्ध का रथ,
 —ह्यकारिणात् (स्त्री०) इकनालीन,—हर (वि०)
 1 बनेला धूमने या रतने वाला—कि १।३, 2 एक
 ही अनुचर रखने वाला 3 लम्हाय रहने वाला
 —ह्यारिन् (वि०) अकेला, (—शो) पतिव्रता स्त्री,
 —हित (वि०) केवल एक ही वान को सोचने वाला
 (—सम्) 1 एक ही वस्तु पर चित्त की स्थित्ता
 2 एकमात्र—एकविशीभूय द्वि० १—एक मल से,
 —केतन्,—कनन् (वि०) एक मत, दे० चित्त,

—कनन् (पु०) 1. उर्या 2. वृद्ध, दे० नी०, १कालि
 —कल एक ही माता-पिता से उत्पन्न,—कालिः वृद्ध
 (विप० द्विकनन्) ब्राह्मण अथिबो वैश्वस्वयो कर्ता
 द्विजातय, कनुर्य एककालित्तु सुद्धो कालि तु पुत्रयः
 —कनू० १०।४, ८।२००,—कालीय (वि०) एक ही
 प्रकार का या एक ही परिवार का,—क्योतिन् (पु०)
 शिब,—साय (वि०) केवल एक पदार्थ पर शिब्र या
 केन्द्रित, नितान्त ध्यानमग्न—इन्द्रकृतानमनयो द्वि
 बलिष्ठमिथा—महावी० ३।११,—सायः सपति, नीती
 का यथार्थ समज, नृप, बाध यज्ञ (पु० तीर्थधिकम्)
 —सौचिन् (वि०) 1 उसी पावन जल में स्नान
 करने वाला 2 एक ही समसंघ से सबध रखने वाला—
 यात्र० २।१३७,—(पु०) महुपाठी, गुणार्थ,—विलान्
 (स्त्री०) इकलीस,—वेष्टः,—कनः 'एक दात बाका'
 गणेश का विशेषण,—इद्विन् (पु०) सन्ध्यासिधो या
 मिश्रुको का एक समुदाय, (जो 'हृम्' कहलाते हैं)
 उनके चार मण हैं—कुटीचको बहुदकी हसन्ध्व
 तुनीयक, कनुर्य परहमनव यो य परबाला उलम।
 हानिम्,—इवा,—इष्टि (वि०) एक अर्थ वाला,
 —(पु०) 1 कौश 2 शिव 3 शार्त्तनिक,—इवः परबद्ध,
 —इवः 1 एक स्थान या स्थल 2 (समय का) एक
 भाग या अंश,—एक पाठ्य—तय्यैकदेश—उत्तर ०।४,
 विभाषितैकदेशेण देय यद्विभूयते—विक्रम० ४।१७,
 जिम् अथ का दाया किना याता ही, यह उसी व्यक्ति
 के द्वारा दिया जाना चाहिए जो उनके एक अथ का
 प्राप्तकर्ता प्रमाणित हो जाय (इसी बात को कभी-कभी
 'एकदेशविभाषितव्याय' कहते हैं)।—अर्धम्,—अर्धिन्
 1 एक ही प्रकार के गुणों को रखने वाला, या एक
 ही प्रकार की सपत्नि को रखने वाला 2 एक ही ब्रह्म
 को मानने वाला,—अुर,—अुराचह,—अुरीच (वि०)
 1 जो एक ही प्रकार कर सके 2 जो एक ही प्रकार
 से जुग नके (जैसे कि किण्वण बोझ के लिए काँट पाण्डु)
 —पा० ४।४।७९,—अष्टः नाटक में प्रधान पात्र,
 मूत्रधार जो नाट्यपाठ करता है,—अवलिः (स्त्री०)
 ३वयान्त्रे,—अक्क एक पक्ष या दल ३अश्रय किल्लव-
 र्त्तान्—रघु० १।७।३४,—अली 1 पतिव्रता स्त्री
 (पुंनं मनी सार्थो) 2 सपत्नी, सौत
 —अर्वात्मिकपत्नीनायिका सेतुविषयी भवेत्—मनु०
 ९।१८३,—अवी पाण्डुरी, अवे (अव्य०) अकस्मान्,
 एकदम, अचानक—निश्लघरीनेकपदे य उदात्त स्वरा-
 न्दम्—सि० २।१५, रघु० ८।४८,—पाशः 1 एक या
 अकेला पैर 2 एक या वही धरण 3 विष्णु, शिब,
 —पिता, पिताल कुबेर,—पिष्ट (वि०) अन्वेषित
 पिष्ट-दान के द्वारा समुक्त,—अर्था एक परित्रता औ०
 सती स्त्री, (—कै) केवल एक पत्नी रखने वाला,

—वाच (वि०) कच्चा भस्म, ईमानदार,—बहिष्, अहिष्का मोतिपौ की एक कड़ी,—कोषि (वि०) 1. सङ्घोर 2. एक ही कुल वा जाति के—मनु० १।१४८, —रतः 1 उद्भव वा भावना की एकता 2 केवल मात्र रस वा भावना,—राज्,—राजः (पु०) निरंकुश वा स्वेच्छाकारी राजा,—राजः एक घुरी रात तक रहने वाला एवं,—विश्विन् (पु०) मह-उत्तराधिकारी,— रूप (वि०) 1. एक वा, इमान 2. समकर्म,—रिक्तः 1 एक ही लिंग रखने वाला सम्बन्ध 2 कुवेर—बन्धन एक कच्चा को प्रकट करने वाला सम्बन्ध,—बर्ष एक जाति,—बर्षिका एक वर्ष की बर्षिया—बाधकता वर्ष की समति, ऐकनस्य, विभिन्न उक्तिओं का सामञ्जस्य,—बारण्,—बारे (अव्य०) 1. केवल एक बार 2. गुरल, अकस्मात् 3. एक ही समय,—विहसिः (स्त्री०) इन्कील,—विशेषण (वि०) एक जोड़ वाला है० एकदन्ति,—विश्विन् (पु०) प्रतिप्रभो,—वीर प्रयुक्त घोड़ा वा हारवीर—महावीर० ५।४८,—वैधि,— वी (स्त्री०) बालों की एक मात्र बाँटी (जिसे स्त्री पति-विधाय के विह्व स्वक्य बारण करती है) —सम्बन्धोपात्तविभक्तिसामेक्येवी करण—वेध १२, स० ७।२१,—सक (वि०) सकल धुर वाला (—क) ऐसा पशु जिसके धुर वा मुख छटे हुए न हों जैसे घोड़ा तथा भादि,—सरीर (वि०) रक्तसम्बद्ध एक धूल का, —अव्ययः एक ही गोन की सम्पत्ति —अव्ययः एक रस के इत्यु-बोधन,—आक्ष एक ही भाषा वा विचार का आक्षान्त,—अक्षु (वि०) केवल एक तीर्थ वाली (—क) 1. अग्न्यासन, यज्ञ 2 चिकन,—सेवः एकसेवक इन्द्र समास का एक सेव जिसमें केवल एक ही पद ब्रह्मसिद्ध रहता है—उदा० 'पितरौ' याता और पिता (=मातापितरौ) इसी प्रकार 'व्यसुतौ' 'भ्रातरः', भादि,—मुल (वि०) एक ही बार सुना हुआ 'कर (वि०) एक बार सुनी हुई बात को ध्यान में रखने वाला,—कृतिः (स्त्री०) एकस्वरात्,—सम्पत्तिः (स्त्री०) इकहृत्तर,—सर्ग (वि०) नितात ध्यानमग्न,—सालिक (वि०) एक ध्वनि द्वारा देखा हुआ,—हास्य (वि०) एक वर्ष की आयु का—मा० ४।८, उत्तर० ३।२८, (—नी) एक वर्ष की बर्षिया ।

एकक (वि०) [एक+कन्] 1 इकहृत्तर, अकेला, एकाकी, बिना किसी सहायक के—उत्तर० ५।५ 2 बही, समकर्म ।

एकनय (वि०) (न्य०—समात्, स्त्री०—समा) [एक+नयन्] 1 बहुतों में से एक 2 एक (अविषयवाचक रूप में प्रयुक्त) ।

एकतर (न्य०—तरण्) [एक+तरण्] 1 दो में से एक, कोई सा 2. हुलत, निम्न 3. बहुतों में से एक ।

एकतः (अव्य०) [एक+तडिण्] 1. एक मोर से, एक मोर 2 एक एक करने, एक एक, एकता-अव्ययः एक मोर, हुलती मोर—रघु० ६।८५, वि० ५।२ ।

एकत (अव्य०) [एक+तन्] 1. एक स्वाम पर 2. इकट्ठे, सब इकट्ठे निक कर ।

एकवार (अव्य०) [एक+वा] 1. एक बार, एक बधा, एक समय 2 उची समय, सर्वथा एक बार, साथ ही साथ—हि० ४।६३ ।

एकवा (अव्य०) [एक+वा] 1. एक प्रकार के 2. अकेले 3. तुरन्त, उची समय 4. विश्वकर, साथ साथ ।

एकव्य (वि०) [एक+ता+क] अकेला, एकाकी—उत्तर० ४ ।

एकल (अव्य०) [एक+तल्] एक एक करने, अकेले ।

एकान्विन् (वि०) [एक+भाकिण्यन्] बकना, केवल एक ।

एकान्वसन् (स० वि०) [एकेन अन्धिका इव इति] व्याख्य ।

एकान्त (वि०) (स्त्री—स्त्री) व्याख्यार्थ,— स्त्री वाच्यमात्र के प्रत्येक पद का व्याख्यार्थ विन, विष्णु उर्ध्वी पुनीत-दिवस । सम—हारण् शरीर के स्थायु छिद्र है० 'क'—छाः (ब० व०) ११ छत्र—दे० छत्र ।

एकीभाक् [एक+भि+न्+चञ्] 1. संघि, साहचर्य 2 साध्यात्म स्वभाव या गुण ।

एकीय (वि०) [एक+य] एक का वा एक के-क तरङ्गदार, सहकारी ।

एक (न्या० भा०) (स० का० में वर०)—एकते, एठित 1 कागना 2 हितना-बुझना, 3. चमकना (पर०), अथ,— धुर होकर देना, उद्यु,— उठना, ऊपर की होना ।

एकक (वि०) [एक+कन्] कागना हुआ, हितता हुआ ।

एकनय [एक+नयन्] कागना, हितता ।

एक (न्या० भा०)—एठते, एठित छेवना, रोकना, विरोध करना ।

एक (वि०) [इन्+अण्, उच्चोत्तरेः] बहुता,—क एक प्रकार की बेंक । सव०—कुक (वि०) 1. बहुता और गुना—नु० अनेकनूक 2. कुच्छ, कुटिल ।

एककः [एक+कन्] 1. यज्ञा, 2 यंत्रकी बकरा,—का, मेडी ।

एकः एककः [एति दुर्ल गच्छति इति—इ+च, एक+कन् व] एक प्रकार का काजा याटाविका हरिण, किमो-कित स्त्रीक में अनेक प्रकार के हरिणों का उल्लेख है—अनुषो भागको सेव एक, इत्यन्याः स्मृतः, बर्षीर-मुक्तः प्रोक्त सखर योग उच्छेते । सम०—अधिकन् युगधर्म,—सिक्कः,—नूत् चप्रना, इसी प्रकार 'अंक', 'संज्ञन भादि,—बुद्ध (वि०) हरिण वंशी बर्षीं बाला,—(पु०) बकर राशि ।

एकी [एक+की] काकी हरिणी ।

एत (वि०) (स्त्री०—एता, एती) रंगविराग, चमकीला
—त. हरियण वा बारासिधा ।

एतत् (सर्व० वि०) (ए०—एत्, स्त्री०—एता, तत्०—एतत्) [ए+अधि, टुप्] 1. यह, यहाँ, सामने (बस्ता के निकटतम वस्तु का उल्लेख करना—समीपतराति वीतयो रूपम्), इस अर्थ में 'एतत्' शब्द कई बार पुनरावृत्त सर्वनाम पर बल देने के लिए प्रयुक्त होता है,—एतोऽहं कार्यवशादायोध्यिक्तस्तदानीन्तनपक्ष संसृज—उत्तर० १ 2. यह प्रायः अपने पूर्ववर्ती शब्द की ओर संकेत करता है, विशेषकर जबकि यह 'इदम्' वा किसी और सर्वनाम के साथ प्रयुक्त किया जाय—एव ई प्रथम रूपः—मनु० ३।१५७, इति वस्तुतः त्वेतिष्विन्वयम् 3 यह सर्वबोधक वाचकत्व में भी प्रायः प्रयुक्त होता है और उस अवस्था में—सर्वबोधक बल में आता है—मनु० १।२५७, (अव्य०) इस रीति से, इस प्रकार, अतः, ध्यान दो,—'एतत्' शब्द उन जगहों में प्रथम पक्ष के रूप में प्रयुक्त होता है—जो प्रायः नियमबन्धकाल या स्वतः स्पष्ट हो—उदा०—अन्तर्गच्छ सर्वके तुष्टत वाद, अन्त—इस प्रकार समाप्त करते हुए । सम०—द्वितीय (वि०) जो किसी कार्य को दोबारा करे,—प्रथम (वि०) जो किसी के पक्षों को बार करे ।

एतधीय (वि०) [एत्+धृ+छ] इसका, के, की ।
एतलः [आ+इ+तल] ब्यास, मोक्ष डोड़ना ।

एतद्भि (अव्य०) [इदम्+हित्, एत आदेश] अब, इस समय, वर्तमान समय में ।

एतापुत्रा—पुत्र,—पुत्र, (वि०) [स्त्री०—सी,—सी] 1. ऐसा, इस प्रकार का—सर्वत्रि नैतापुत्रा—मनु० २।५१ 2 इस प्रकार का ।

एतावत् (वि०) [एतत्+वत्पुप्] इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने अधिक, इतना बिलुत्, इतनी दूर, इस कृप का या ऐसे प्रकार का—एतावत्कृपा विरते नृपेभ्य—रघु० २।५१, कु० १।८९ एतावन्मे विभवो भवन्तं सेवितुम्—मार्तण्डि० २, (अव्य०) इतनी दूर, इतना अधिक, इतने अर्थ में, इस प्रकार ।

एव (स्त्री० आ०—एवते, एवित) 1. उगता, बढ़ना—पंच० २।११५ 2. फलना-फूलना, सुख में जीवन बिताना इत्यादी मुक्तवैदेते—पंच० १।३१८, वैर० उगधाना, बढ़ना, अधिकार करना, सम्मान करना—कु० १।९० ।

एव [इत्+वञ्, ति०] इवम्,—सुल्लिङ्गवस्थया बहिः-देवादेश इव स्थित—स० ७।१५, ति० २।१९१ ।

एवम् [एत्+वत्] 1. मनुष्य 2. अति ।

एवम् (मनु०) [इत्+अधि] इवम्—एवभासि समिद्धोऽ विभक्त्यसाकुरुतेऽनुन—मय० ५।३७ अनलायागु-वर्णनवैते—रघु० ८।७१ ।

एवा [एत्+व+टाप्] फलना-फूलना, हूँ ।
एवित (मू० क० इ०) [एत्+वित] 1 विकसित, बढ़ा हुआ 2. पाला पोसा—मृगशास्त्रे. समनेपिथो जनः—इ० २।१८ ।

एवम् (मनु०) [इ+अनुन्, नृवागम] 1. पाप, अपराध, दोष ति० १।५।२५ 2 कुपेच्छा, जुर्म 3. विघ्नता 4. निन्दा, कलक ।

एवस्वम्, एवस्विन् (वि०) [एत्+सुप्, व आदेशः, विनि आ] वृत्त, पापी ।

एरम्बः [आ+ई+अण्वच्] अरुंडी का पीचा (बहुत छोटे पत्तों वाला एक छोटा वृक्ष)—अत एव सो०—निरस्त-पाष्ये देवो एरम्बोपि दुःसायते ।

एरम्कः [इत्+अच्+कन्] मेढ़ा, दे० 'एरक' ।

एरम्बानु (मनु०), एरम्बालुक्च [एता+बल्ल+उन् ह्रस्व, कन् च] 1 केश वृक्ष की सुगन्धयुक्त छाल 2 एक रेशेदार या शानेदार द्रव्य (जो ओषधि या सुगन्ध के रूप में प्रयुक्त होता है) ।

एरम्बिलः [इलायिला+अण्] सुबेर, दे० 'एरबिल' ।

एला [इत्+अच्+टाप्] 1. इलायची का पीचा—एलाना फलरेणव, रघु० ४।२७, ६।१५ 2 इलायची (इलायची के बीज) । सम०—पत्नी लाजवन्ती जाति का एक पीचा ।

एलीका [आ+ईत्+ईकन्+टाप्] छोटी इलायची ।

एव (अव्य०) [इ+वत्] किसी शब्द द्वारा कहे गये विचार पर बल देने के लिए बहुधा इस अव्यय का प्रयोग होता है 1 टोक, विन्कुल, सही तौर पर—एवमेव—विन्कुल ऐसा ही, टोक इसी प्रकार का 2. वही, सही, समरूप—अर्थात्प्रा विगृहित पुष्य स एव—मनु० २।५० 3 केवल, अकेला, मात्र (बहिष्करण की भावना रखते हुए)—सा तथ्यमेवामिहितो भवेन—कु० ३।९२, केवलमात्र सचाई, सचाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं 4 पहले ही 5 कठिनार्थ से, उसी अर्थ, ज्योंही (मुक्तताया-कुरन्तो के साथ)—उपस्थितेय कक्षायो नाति कीर्तित एव यत्—रघु० १।८७ 6 की भांति, जैसे कि (समानता प्रकट करते हुए)—भोस्त एव येऽनु—मण० (=नच इव) और 7. सामान्यतः किसी उक्ति पर बल देने के लिए—मजिब-व्यमेद तेन—उत्तर० ५, यह बात निश्चित रूप से होगी, निम्नांकित अर्थ भी इस शब्द द्वारा प्रकट होते हैं 8 अवयवा 9 युक्तता 10. मात्रा 11. निवचन तथा 12 केवल प्रकट के लिए ।

एवम् (अव्य०) [इ+वत् (वा०)] 1. अतः, इसलिये, इस रीति से—अल्पवदन्—पंच० १, यह इस प्रकार है,—एवभासिने देवर्षी—कु० ६।८५; दृष्ट्वा एवम्—मैत्र० १०१ (जो कुछ बार में आता है)—एवम्पु—एता

ही हो—स्वप्ति, अक्षेप्य—यदि ऐसा है 2. विष्णुत्व
ऐसा ही (स्वीकृति रखते हुए)—एव यथात्थ भगवान्
—कु० २।३१। सवर्—अक्षय्य (वि०) इस प्रकार
स्वित, या ऐसी परिस्थितियों में फंसा हुआ,—आधि,
—आक्ष (वि०) ऐसा और इस प्रकार का,—कारम्
(अर्थ०) इस रीति से,—भुज्य (वि०) ऐसे पुणों वाला
—स० १।१२,—अकार,—अक्षय्य (वि०) इस प्रकार
का—उत्तर० ५।२९ स० ७।२४,—भूत (वि०) इस
प्रकार के पुणों का, ऐसा, इस इय का,—अक्ष (वि०)
(वि०) इन प्रकार का, ऐसे रूप का,—विद्य (वि०)
इस प्रकार का, ऐसा ।

ए (स्था० उभ०—एवति—ते, एवित) 1. जाना,
पहुँचना 2. बीडता से जाना, बीड कर जाना, परि—
हुँडना ।
एवक [एव्+एवद्] जोड़े का तीर,—अन्व 1. हुँडना 2.
कामना करना,—आ कामना, इच्छा ।
एविका [एव्+एवद्+क, टाप्, इत्यच्] सुगार का
कट्टा टोसने की तराजू ।
एवा [एव्+अ+टाप्] इच्छा, कामना ।
एवित् (वि०) [एव्+विभि] इच्छा करते हुए, कामना
करते हुए (समास के अन्त में),—धीमन् विधवेधिषाम्
एव० १।८ ।

ऐ

ऐ (ए०) [आ+इ+विच्] सिध, (अर्थ०) (क)
बुझने (अ) स्मरण करने, या (ग) कामचय की प्रकट
करने वाला विस्मयविधि शोचक शिङ्ग ।
ऐक्यम् (अर्थ०) मुरम् ।
ऐक्यम् [एकवा+ध्यञ्] (वास्तव्ये) समय या बटमा
की ऐकान्तिकता ।
ऐक्यत्वम् [एकपति+ध्यञ्] परम प्रभुता, सर्वोपरि-
शक्ति ।
ऐक्यविधि (वि०) (स्त्री०—की) [एकपव+ठञ्] एक
पव से संबंध रखने वाला ।
ऐक्यवद् [एक पव+ध्यञ्] 1. शब्दों की एकता
2 एक शब्द बनना ।
ऐक्यत्वम् [एकमत+ध्यञ्] एकमतता, सहस्रति—एव०
१।८।११ ।
ऐक्यारिक् [एकवार+ठञ्] खोर,—केनचित्पु हस्तवर्त-
क्यारिकेण—दश० १७, सि० ११।१११ 2 एक वर
का मासिक ।
ऐक्यम् [एकाव+ध्यञ्] एक ही पदार्थ पर जुट
जाना, एकाव्रता ।
ऐक्यम् [एकाङ्ग+अच्] शरीर रहक वक् का एक
तिपाही—रामत० ५।२४९ ।
ऐक्यत्वम् [एकत्वम्+ध्यञ्] 1 एकता, जाला की
एकता 2 समक्यता, समता 3 परमात्मा के साथ
एकता या तात्त्व्यम् ।
ऐक्यविकल्पम् [एकविकल्प+ध्यञ्] 1. संबंध की
एकता 2. एकही विषय में व्याप्ति, (सर्क० में)—सह
वित्पुति, साम्येन द्वैतैरेकविकल्पम् व्याप्तिवच्यते
—भाषा० १९ ।
ऐक्यत्वम् (वि०) (स्त्री०—की) 1. पूर्ण, समग्र, पूरा
2. विश्वस्त, विशिष्ट 3. अनाम्य ।

ऐक्यविकल्पः [एकत्वम्+ठञ्] बहु सिध्य जो वेध का
सत्वर पाठ करने में एक शब्दों को ।
ऐक्यत्वम् [एकत्वम्+ध्यञ्] 1. उद्देश्य या प्रयोजन की
समानता 2. शब्दों की सपति ।
ऐक्यविकल्प (वि०) (स्त्री०—की) [एकाह+ठञ्] 1.
मासिक 2 एक दिन का, उन्नी दिन का, दैनिक ।
ऐक्यम् [एक+ध्यञ्] 1. एकपता, एकता 2. एकमतता,
3. समक्यता, समता 4. विशेष कर मात्र बाला
की समक्यता, या विश्व की परमात्मा से एकक्यता ।
ऐक्य (स्त्री०—की) [इज्+अच्] पव से बना या उत्पन्न,
—अन्व 1. पीली 2. मायक कटाव ।
ऐक्य (वि०) [इज्+अच्] गन्ने से बना पदार्थ ।
ऐक्य (वि०) [इज्+ठञ्] 1. गन्ने से तिए उपजुप्त
2. गन्ने वाला,—कः गन्ने से जाने वाला ।
ऐक्यारिक् (वि०) [इज्+वार+ठञ्] गन्ने का बोझ
होने वाला ।
ऐक्यविकल्प (वि०) [इज्+अच्+अ] इज्वात्पु से संबंध रखने
वाला,—कः, कृः 1. इज्वात्पु की समान,—सायवीज्वाकः
सायवति—उत्तर० ५. २. इज्वात्पु बंस के लोगों द्वारा
साहित वेध ।
ऐक्यविकल्प (वि०) [स्त्री०—की] [इज्+अच्+अ] इज्वात्पु
वृक्ष से उत्पन्न,—अन्व इज्वात्पु वृक्ष का फल ।
ऐक्यविकल्प (वि०) (स्त्री०—की) 1. इच्छा पर निर्भर,
इच्छापरक 2. मनमाना ।
ऐक्य (वि०) (स्त्री०—की) वेड का,—कः वेड की एक
वाति ।
ऐव (अ) सिधः (अः) [इवविवा+अच्] पवो उभयोः-
मेवः] कुमेर ।
ऐव (वि०) (स्त्री०—की) बाएहात्वा हरिण की (त्वया,
अन भाधि) वाह० १।२५१ ।

द्वैवीय (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वी०+द्वय] बाली हरिणी वा तारुकी कीनी पक्षी से उत्पन्न,—कः काका हरिण,—अन् रतिवच, रतिविद्या का एक प्रकार ।

द्वैतवाच्यम् [द्वैतवाच्यम्+वाच्यम्] इस प्रकार के गुण वा विधिपद्धता को रखने की अवस्था ।

द्वैतैरिणम् [द्वैतैरिण+इति] द्वैतैरेव आक्षेपण का अर्थोत्तर ।

द्वैतहासिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वैतहास+इत्] 1 परम्परा श्रावण 2 द्वैतहास संबंधी,—कः 1 द्वैतहासकार 2 बहु व्यक्तिके को पौराणिक उपासनाओं को जानता है या उनका अभ्ययन करता है ।

द्वैतहास्यम् [द्वैतहास्य+वाच्य] परम्परा श्रावण विद्या, उपासना-कार्यक वर्णन,—द्वैतहास्यमत्तान च प्रथममर्षि वाग-मन्—रामा०, किलेश्वरिद्वयं (पौराणिक 'द्वैतहास्य' को प्रथम, अनुमान आदि के साथ प्रयोग का एक भेद मानते हैं—द० 'अनुभव' ।

द्वैतध्वजम् [द्वैतध्वज+अन्] आशय, ध्वज, सबब (शा०) इतपर होने की अवस्था अर्थात्, अर्थ, अशय वा क्षेत्र रक्षण) —इह स्वैरुपर्यन्त—भा० २।३ ।

द्वैतत्वम् [द्वैतत्व+अन्] पाप ।

द्वैतव्य (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वैतु+अन्] चंद्रमा संबंधी,—कः चांद्रमास ।

द्वैव्य (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वैव्य+अन्] इन्द्र संबंधी वा इन्द्र के लिए पवित्र,—रघु० २।५०,—इ अनुभू और बाली,—श्री 1 कुरवेद का मन्त्र जिसमें इन्द्र को संबोधित किया गया है—इत्यादिका काश्चिद्वैदी सामान्यता—श्री० म्या० 2 पूर्व विद्या (इस विद्या का अविष्कारपूर्वकता इन्द्र है) कि० ५।१८ 3 मुनीवन, सफट 4 दुर्गा की उपासि 5 छोटी इलायची ।

द्वैव्यचारिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वैव्यचार+इत्] 1 बोध में डालने वाला, 2 जादू-टोना विषयक 3 नायावी, प्रान्ति मतक 2 जादू-टोने वा जानकार,—कः बाजोवर—शा० १५।२५ ।

द्वैव्यकृतिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वैव्यकृत+इत्] संघट्ट से पीड़ित, गवा ।

द्वैव्यविदः [द्वैव्यविद+अन्] हाथियों की एक जाति ।

द्वैव्यिक [द्वैव्यव्याप्यम्—द्वैव्य+इत्] 1 अयन्त, अर्धन्त, बानरराज हाकि 2 कौवा—द्वैव्यिक किल नवीनम्या विवदार सती द्विज—रघु० १३।२२ ।

द्वैव्यिक, —व्यक (वि०) [द्वैव्यिक+अन्, वृत्त, वा] 1 द्विजियों के संबंध रखने वाला, विषयी 2 विद्यमान, ज्ञानेश्वरियों के लिए प्रत्यक्ष द्वैव्यिकोचर,—अन् ज्ञानेश्वरियों का विषय ।

द्वैव्य (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वैव्यन्+अन्] जिसमें इत्यन् विद्यमान हो,—कः सुदी ।

द्वैव्यम् [द्वैव्य+वाच्य] परिमाण, संख्या ।

द्वैव्यकः [द्वैव्य वाचः ताभिः बनति सम्भावते—द्वैव्य+अन्+अन् इराचन—तत अन्] इन्द्र का हाथी ।

द्वैव्यकः [द्वैव्य वाच्य तद्वान् इराचान् समुद्र, तत्प्राप्तुत्पन्न अन्] 1 इन्द्र का हाथी 2 श्रेष्ठ हाथी 3 पाताल निवासी नागमणि का एक मुखिया 4 पूर्व विद्या का विद्यार्थ 5 एक प्रकार का इन्द्रवन्तु,—श्री 1 इन्द्र की हथिनी 2 बिजली 3 पंचांग में बहने वाली नदी, राप्ती (हरावती) ।

द्वैव्यकः [द्वैव्यकम् अत्रे भवन्—द्वैव्य+अन्] मरिचा (जो भोज्य पदार्थ से तैयार की जाती) ।

द्वैकः [इलाया अर्थयम्—अन्] 1 पुकरवा (इला और बुध का पुत्र) 2 मंगलग्रह ।

द्वैकबाहुक [एकबाहुक+अन्] एक भुजा-द्वय ।

द्वैकविकः [द्वैकविक+अन्] 1 कुबेर—मि० ११।१८ 2 मंगलग्रह ।

द्वैक्यः [इला+इत्] 1 एक प्रकार का मंगल-ग्रह 2 मंगल ग्रह ।

द्वैत (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वैत+अन्] 1 शिव से सम्बन्ध रखने वाला—रघु० २।५२, 2 सर्वोपरि, राजकीय ।

द्वैतान (वि०) [द्वैतान+अन्] शिव से सम्बन्ध रखने वाला,—श्री 1 उलरपुत्री विद्या 2 बुधविद्या ।

द्वैव्यर (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वैव्यर+अन्] 1 शानदार 2 शक्तिशाली, ताकतवर 3 शिव से सम्बन्ध रखने वाला—रघु० ११।३५ 4 सर्वोपरि, राजकीय 5 विद्या,—श्री बुधविद्या ।

द्वैव्यवन्तु [द्वैव्यर+वाच्य] 1 सर्वोपरिता, प्रभुता—ए०श्वर्य-श्रित्वांश्रि—मालवि० १।१ 2 ताकत, शक्ति, आधिपत्य 3 उपनिवेश 4 विभव, बल, बलप्लव 5 सर्वशक्तिमत्ता तथा सर्वव्यापकता की दिव्य शक्तियाँ ।

द्वैव्यन्तु (अव्य०) [अस्मिन् नन्तरे इति नि० साधु] इम वर्ण में, बाधु वर्ण में ।

द्वैव्यलतन्, —लतन् (वि०) [द्वैव्यन्तु+तन्त्, लतन् वा] बाधु वर्ण से सम्बन्ध रखने वाला ।

द्वैव्यिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वैव्यिक+इत्] यत्रसम्बन्धी, सम्कार विषयकः सम०—द्वैव्यिक (वि०) इत्यादौर्न (यत्र अथवा अन्य धार्मिक कृत्य) से सम्बन्ध रखने वाला ।

द्वैव्यिकीक- (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [द्वैव्यिकीक+इत्] इस सत्ता से सम्बन्ध रखने वाला, या इस लोक में बसित होने वाला, द्वैव्यिक, बुधिवारी (वि०) शारदीयिक) ।

द्वैव्यिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) 1 इन्द्र लोक वा स्वान से सम्बन्ध रखने वाला, शारदारिक, बुधिवारी, लौकिक 2 स्वामीय,—अन् व्यवसाय (इह सत्ता का) ।

ओ

ओ (पुं०-मौ) [उ+विच्] ब्रह्मा (अब्य०) 1. सम्बोधनात्मक (मौ) अब्यय 2. (क) बुलावा (ख) स्मरण करना और (ग) कल्पना बोधक । अस्मन्वादि घोटक चिह्न ।

ओक्थः [उच्+क वि० क्यप् क] 1 घर 2. शरण, आश्रय 3 पत्नी 4 पुत्र ।

ओक्थः (गि) [ओ+कण् + अच्, इत् वा] सटमल, इनी प्रकार 'ओकीवनी' ।

ओक्त्व् (मपुं०) [उच्+असुन्] 1 अर, आवाग—जैसा कि विवीकस् या स्वर्षाकम् (कैवला) में 2 आश्रय, शरण ।

ओक्त्वा (म्बा० पर०) —ओक्ति, ओक्ति 1 सूत्र आना 2 योग्य होना, पर्याप्त होना 3 सजावा, सुशोभित करना 4 अस्वीकृत करना, 5 रोक लगाना ।

ओक्त्वा [उच्+कण्, पृषो०] 1 जलप्लावन, नदी, धारा —पुराणेन हि नृपत्ये नदी—कु० ४।४४ 2 जल की बाड़ 3 राशि, परिमाण, मनुदाय 4 सपथ 5 सातत्य 6 परम्परा, परम्पराप्राप्त उपदेश 7. एक प्रमुख नृत्य ।

ओकारः [ओम्+कार] दे० 'ओम्' के लीचे ।

ओम् (म्बा० चुरा० उम०) —ओक्ति, ओक्थति—ते, ओक्ति) सप्तम वा योग्य होना ।

ओम् (वि०) [ओय्+अच्] विषम, असम, —अम्—ओजस् ।

ओजस् (नपुं०) [उच्+असुन् बलोप, गुणवच] 1 शारीरिक सामर्थ्य, बल, शक्ति 2 वीर्य, जननात्मक शक्ति 3 आभा, प्रकाश (आल० शा० में) 4 शैली का चिह्न रूप, सपास की बहलता (दण्डों के अनन्तर घड़ी घण्टी की आभा है) —ओज सप्तमभूपस्त्वमेतद्-वचस्य जीवितम्—काव्या० १।८०, रसगोपाधर में इनके पाँच भेद बतलाये गये हैं 5 पानी 6 वायु की बलक ।

ओजस्वी, ओजस्व (वि०) [ओजस्+क्, भृत् वा] मज-बुत, शक्तिशाली ।

ओजस्वत्, ओजस्विन् [ओजस्+मनुप्, विनि वा] मजबूत, वीर्यवान्, तेजस्वी, शक्तिशाली ।

ओङ् (पुं० ब० व०) एक देव का तथा उसके निवासियों का नाम, (आधुनिक उड़ीसा)—मनु० १०।४४, —ङ्म् अवाकुमुम् ।

ओत (वि०) [ओ+थे+फत्] बुना हुआ, धागे से एक सिर से दूसरे तक मिला हुआ । सप० ओत (वि०) 1 लम्बाई और चौड़ाई के बराबर-पार मिला हुआ 2 सब दिशाओं में फैला हुआ ।

ओत्तुः [अच्+तुत्, ऊट्, गुण] विभाव (म्बो० भो) दिल्ली—वैसा कि 'स्वलो (की) तु' में ।

ओत्तुः—अम् [उच्+युच्] 1 ओज्ज, भात,—उदा० दम्भीयन् और वृत्? 2. दलिया बना कर दूध में पकाया हुआ अन्न ।

ओम् (अब्य०) [अच्+मन्, ऊट्, गुण] 1. पावन बरकर 'ओम्' वेद-पाठ के आरम्भ और समाप्ति पर किया गया पावन उच्चारण, या मन्त्र के आरम्भ में बोला जाने वाला 2 अब्यय के रूप में यह (क) औपचारिक पुष्टीकरण तथा सम्माननीय स्वीकृति (एवमस्तु, तथास्तु) (ख) स्वीकृति, अपीकरण (हौ, बहुत अच्छा)—ओमित्युच्यतामनाय—मा० १, ओमित्युक्त-कनोपशाङ्गिण इति शि० १।७५, द्वितीयस्थेदोमिति दूम—मा० ६० १ (ग) आदेश (ह) माणिकता (ह) दूर करना या रोक लगाना की भावना को प्रकट करने वाला अब्यय 3. ब्रह्म । सम०—कारः 1 पवित्र ध्वनि 'ओम्' 2 पवित्र उद्गार 'ओम्' ।

ओरम्भः [?] गहरी सरोच—मा० ७ ।

ओरु (वि०) [ओ+उच्+क पृषो०] आरं, गीला ।

ओरु (म्बा० पर०, चुरा० उम०) —ओरुइति, ओरुइयति, ओरुइति) ऊपर की ओर फेंकना, ऊपर उठाना ।

ओरु (वि०) [ओल-पृषो०] आरं, गीला,—रुः प्रतियु, आगत प्रतियु वा जातिन के रूप में आया हुआ (यह शब्द एक दो बार विद्वशालमञ्जिका में आया है) ।

ओषः [उच्+पञ्] जलन, सवाह ।

ओषः [उच्+स्पृच्] तिक्ता लोम्बता, तीखा रस ।

ओषधिः—धी (म्बो०) [ओप+धा+कि, स्त्रिया ङीष्]

1 जड़ीबूटी, बनस्पति 2 ओषधि का पौधा, ओषधि 3 फसली पौधा या जड़ी बूटी जोकि एक कर सूख जाती है । मम०—ईशः-वर्षः,—भाषः चन्द्रमा (बनस्पतियों का जपियेवता तथा पोषक)—अ (वि०)

बनस्पति से उत्पन्न,—अरः,—यतिः 1 ओषधि-विक्रेता 2 वेष 3 चन्द्रमा,—अन्वः हिमालय की राजधानी

—तरुयातोषधिप्रश्न स्थितये हिमवतपुरम्—कु० ६।

३३, ३५ ।

ओषः [उच्+पञ्] होठ (ऊपर का या नीचे का) । सम०

—अबरी-रुष, ऊपर और नीचे का होठ,—अ (वि०)

ओष्ठस्थानीय,—आहू होठकी अड़,—अन्वः,—अन्व किसलय वैया, कोमल ओष्ठ—पुष्टम होठों को लोलने पर बना हुआ गड़दा ।

ओष्ठ्य (वि०) [ओष्ठ+पत्] 1. होठों पर रहने वाला 2 ओष्ठ—स्थानीय (ध्वनि आदि) ।

ओष्ण (वि०) [ईच् उष्ण—प० स०] चोड़ा गरम, गुनगुना ।

औ [आ + अन् + चिच्, ऊठ] (क) आभय (स) सवोधन (स) विरोध तथा (घ) वाच्यवक्ति अथवा सकल्पबोधक अर्थय।
 औचित्यम् [उच्य + ठक् + ध्यञ्] उच्य का पाठ, सामर्थ्य।
 औचक्यम् [उच्य + अच्] पाठ करने की विशेष (उच्य अग से संबध रखने वाली) रीति।
 औचक्यम्,—औचक्यम् [उच्य सम्भू इत्यर्थे उलन् + अच्, टिकोप हुञ्, वा] बौद्धों का मुद्रा—श्लो० ५।६२।
 औद्यम् [उच् + ध्यञ्] दुन्दुवा, औद्यपना भयकरना, करता आदि।
 औक [औप + अच्] बाह, बलपदावन।
 औचित्यम्, औचिकी [उचिन + ध्यञ्, चिच्पा डीप्, यलो-पच] 1 उपपन्नता, योग्यता, उचितपना 2 सगति या योग्यता, वाच्य में शब्द के यथार्थ अर्थ का निर्धारण करने के लिए कवित्व परिस्थितियों में से एक—नामधेयौचित्यी देश कालो व्यक्ति स्वरादय—सा० ६० २।
 औचक्य-धत्तः [उच्ये धवम् + अच्] इन्द्र का घोडा।
 औचिक [औ (स्त्री०—की) [औच्य + ठक्] ऊर्मस्वी बलवान् । —कः नायक बुरबौर।
 औचक्य (वि०) [औच्य + ध्यञ्] बल और स्फूर्ति का संचारक,—स्वम् सामर्थ्ये, जीवनवक्ति, ऊर्जा, स्फूर्ति।
 औचक्यम् [उच्यञ्ज - ध्यञ्] उच्यकता, कानि।
 औचिक (वि०) (स्त्री०—की) [उच्य + ठक्] किलती में बैठ कर पार करने वाला,—कः किन्ती या लट्टे का बानी।
 औचम्बर [उच्यम् + अञ्] = दे० औचम्बर।
 औचु [औचु + अच्] आठु (वर्तमान उडीमा) देश का निवासी या राजा।
 औचक्यम् [उच्यञ्ज + ध्यञ्] 1 इच्छा लालसा 2 चिन्ता।
 औचक्यम् [उच्यम् + ध्यञ्] श्रेष्ठता, उत्कृष्टता।
 औचिकि [उचाम + इञ्] १६ अनुओ में से तीसरा।
 औचर (वि०) (स्त्री०—री,—रा) उतरी। सम०—पथिक उतर दिशा की ओर जाने वाला।
 औचरैर [उतरा + इच्] समिन्त्यु और उतरा का पुत्र परीक्षित।
 औचानपाद,—वाहिः [उचानपाद + अच्, इञ्, वा] 1 ध्रुव 2 उतर दिशा में बतमान तारा।
 औच्यतिक (वि०) (स्त्री—की) [उच्यति + ठक्] 1 समजात, सहव 2 एक ही समय पर उल्लन्।
 औच्यता (वि०) [उच्यत + अच्] अथवाकुलो का विशेषणक।

औच्यतिक (वि०) (स्त्री०—की) [उच्यत + ठक्] अमगलकारी, अलौकिक, सकटमय—रघु० ४४, ५३, —अच् अथाकुल या अमगल।
 औच्यतिक (वि०) (स्त्री०—की) [उच्यत + ठक्] कृन्हे पर नवा हुआ। या कृन्हे पर धारण किया हुआ।
 औच्यतिक (वि०) (स्त्री०—की) [उच्यत + ठक्] 1. सामान्य विधि (जैसे कि व्याकरण का नियम) को अपभार रूप में ही व्यक्तने के योग्य हो 2 सामान्य (वि० विशेष) प्रतिबन्धरहित, सहज 3 अत्युत्पन्न, योगिक।
 औच्यक्यम् [उच्युक् + ध्यञ्] 1 चिन्ता, बेबैनी 2 प्रबल इच्छा, उच्युक्ता। उल्हा—औच्यक्यमाचमकतापयति प्रशिष्ठा ५।६, औच्यक्येन कृतास्त्रा सहनुवा अ्यावर्तमाना ह्यिया—रत्न० १।२।
 औचक (वि०) (स्त्री०—की) [उचक + अच्] उचीय, पनीला, जल से संबध रखने वाला।
 औचक्य (वि०) (स्त्री०—नी) [उचक्य + अच्] उल या घड़े में रक्ता हुआ।
 औचिक (इञ्च) [औचन + इञ्] ग्नीहवा।
 औचरिक (वि०) (स्त्री०—की) [उचर + ठक्] बहुभोजी, पेट, याऊ मंत्रोपनिषदभ्यामवसहस्रसंघे विषय—विषय० ३, भास्वि० ६।
 औचर्ष (वि०) [उचरे भव यन्] 1 गर्मिन्वित, 2 गर्मालः प्रविष्ट।
 औचिक्यम् [उचिक्य + अच्] आधा पानी मिलाकर तैयार किया हुआ मट्टा।
 औचयम् [उचर + ध्यञ्] 1 उदारता, कुलोता, महता 2 वदपन्न, श्रेष्ठता 3 अर्थवाचीये (अर्थसंपत्ति)—स मीठमोदायविशेषज्ञानिनी विनिचिताचौचिकि वाचमादरे—कि० १।३, दे० कि० १।१६० पर बलिक० और उदार के नी० उदारता।
 औच्योत्पन्न, औच्यम् [उचामीन + ध्यञ्, उचाम + ध्यञ्] 1 उपेक्षा, निस्पृहता—पर्याप्तोक्ति प्रका. पानुमोदासोत्पन्ने बनिनुम्—रघु० १०।२५, इवानी-मोदास्य परि भवति भावीरथि—पद्मा० ४ 2 एकानिकता, अकेलपन 3 पूर्ण विराग (साधारिक विषयो में), वैराग्य।
 औचर (वि०) (स्त्री०—री) [उचम्बर + अच्] गूकर के वृक्ष म नवा या उमथे प्रात,—ए ऐसा प्रवृक्ष बहो गूकर के वृक्ष बहुतायत से हो, -री गूकर की छाया,—रम् 1 गूकर की लकड़ी 2 गूकर का फल 3 तारा।

बीकानाम् [उद्यात् + अञ्] उद्याता ध्वनिज का पर या काये ।

बीकालम् [उदात् + अञ्, उदात्तां कर्त्] मनु बंसा एक पत्नी जो तीका और कडवा होता है ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उक्ते + ठञ्] प्रकट करने वाला, निर्देशक, संकेतक ।

बीकेशम् [उदात् + ध्यञ्] 1 हूकड़ी, बीठपना 2 साहसिकता, बीकेशाले काशी में हिम्मत—बीकेशमायो-जितकामधुषय—मा० ११४ ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उदात् + ठञ्] शैतुक सम्पत्ति में से घटाया हुआ, विभक्त करने योग्य, दावयोग्य,—कम् (शैतुक सम्पत्ति में से घटाया गया) एक अश या दावभाग ।

बीकेशम् [उद्भिद् + अञ्] 1 अरने का पानी 2 सेंबा ममक ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उदात् + ठञ्] 1 विवाह में सवध रखने वाला 2 विवाह में प्राप्त—भा० २११८, मनु० ११२०६,—कम् विवाह के अवसर पर बहु को दिये गये उपहार, स्वीचन ।

बीकेशम् [उद्यत् + ध्यञ्] दूध (बीबी से प्राप्त) रघु० २१६६ अने० पा० ।

बीकेशम् [उद्यत् + ध्यञ्] ऊँचाई, ऊँचा उठना (नैतिक रूप से भी) ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपकर्ष + ठञ्] काज के निकट रहने वाला ।

बीकेशम्,—की [उपकार्य + अञ्, निपाया टाप् च] बाबास, मन्थु ।

बीकेशिक,—ग्रहिक [उपवस्त + ठञ्, उपग्रह + ठञ्] 1 ग्रहण 2 ग्रहण-वस्तु सूर्य या चन्द्रमा ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपचार + ठञ्] साक्ष-यिक, जालकारिक, गीच (विप० वृष्य),—कम् जाल-कारिक प्रयोग ।

बीकेशानुक (वि०) (स्त्री०—की) [उपबानु + ठञ्] बूटनों के पाम होने वाला ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपदेश + ठञ्] 1 अन्त्यापत या उपदेश द्वारा जीविका कमाने वाला 2 शिक्षण द्वारा प्राप्त (जैसे कि बच्चा) ।

बीकेशम् [उपकर्ष + ध्यञ्] 1 विषया विद्वान्त, धर्मोद्गोह 2 बटिया मृग या मृग का अपकृष्ट निचम ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाधि + ठञ्] वृत्, मोलेबाय ।

बीकेशम् [उपाधि + इञ्] रथ का पहिया, रथांच ।

बीकेशामिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपवचन + ठञ्] उपवचन सम्बन्धी, या उपवचन (अनेक के साथ बीका देने का संस्कार) के काम का—घृ० २१६८ ।

१०

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनिधि + ठञ्] बरो-हर से सम्बन्ध रखने वाला,—कम् बरोहर या अमानत जो मनु बरोहर या अमानत के रूप में रखी जाय यात्र०—२१६५ ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनिधद् + अञ्] 1. उपनिधदों में बताया हुआ या सिखाया हुआ, वेध विहित, आध्यायिक 2. उपनिधदों पर आधारित, स्थापित या उपनिधदों से गृहीत—बीकेशिक दर्शनम् (वेदा० ६० का दूसरा नाम)—बः 1. परमरसा, बह्य 2. उपनिधदों के सिद्धान्तों का अनुवायी ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपनीधि + ठञ्]—स्त्री या पुरुषों की धोती की गाँठ या नाबें के निकट रखना हुआ,—बीकेशिकमकट्ट किल स्त्री (कर्म)—वि० १०१६०, मट्टि० ४१२६ ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपपत्ति + ठञ्] 1. शैवार, निकट 2 योग, समचित 3 प्राक्कात्ययिक ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपमा + ठञ्] 1 तुलना या उपमान का काम देने वाला 2 उपमा द्वारा प्रदर्शित ।

बीकेशम् [उपमा + ध्यञ्] तुलना, समकृता, सादृश्य—आमोपम्येन मूलेषु दवां कुर्वन्ति साधकः—हि० ११२० ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाय + ठञ्] 1. मनु-चित, योग्य, यथार्थ 2. प्रयत्नों द्वारा प्राप्त,—कः,—कम् उपाय, तरकीब, युक्ति—शिवमीपयिक मरीचसीम्—कि० २१३५ ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपगति + अञ्] ऊपर होने वाला, ऊपर का ।

बीकेशिक (स्त्री०—की) [उपरोध + ठञ्] 1 अनुग्रह सम्कची, कृपा सम्बन्धी, अनुग्रह या कृपा के फलस्वरूप 2. विरोध करने वाला, बाधा डालने वाला—कः पौत्र वृष की लकड़ी का डंडा ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपल + अञ्] प्रस्तारण, पत्थर का ।

बीकेशिकम् [उपवस्त + अञ्] उपवास रखना, उपवास ।

बीकेशिकम् [उपवस्त्र + अञ्] 1 उपवास के उपपुस्त बीकेश, फलहार 2. उपवास करना ।

बीकेशिकम् [उपवास + ध्यञ्] उपवास रखना ।

बीकेशिक (वि०) [उपनाद्य + अञ्] 1 सवारी के काम जाने वाला,—घृ० १ राजा का हाथी 2. कोई राजकीय सवारी ।

बीकेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपवेश + ठञ्] पूरी लगन के साथ काम कर के अपनी आजीविका कमाने वाला ।

बीकेशिकामिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपवस्त्रयाम +

ठङ् । चित्तका परिशिष्ट में वर्णन किया गया हो
2 परिशिष्ट ।

बीषाणिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपसर्ग+ठङ्]

1 विषाण का सामना करने योग्य 2 अमज्जल सूचक ।

बीषणिक (वि०) [उपसर्ग+ठङ्] अग्निधार द्वारा अपनी
बीषिका चलाते वाला ।

बीषण्यम् [उपसर्ग+ध्वञ्] सहवास स्त्रीसभोग ।

बीषहारिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपहार+ठङ्] उप-
हार या आहुति के काम आने वाला,—कम् उपहार या
आहुति ।

बीषाणिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाधि+ठङ्]

1 विशेष परिस्थितियों में होने वाला 2 उपाधि या
विशेष गुणों से सम्बन्ध रखने वाला, फलित कार्य ।

बीषाध्यायक (वि०) (स्त्री०—की) [उपाध्याय+ध्वञ्]

अध्यायक से प्राप्त या आने वाला ।

बीषासन (वि०) (स्त्री०—नी) [उपासन+अण्] गुह्याग्नि
से सम्बन्ध रखने वाला,—मः वाह्यैस्त्व पूजा के लिए
प्रयुक्त अग्नि, गुह्याग्नि ।

**बीष् (अव्य०) शूद्रों के लिए पावनध्वनि (स्वोक्ति 'ओम्'
का उच्चारण शूद्रों के लिए वर्जित है) ।**

बीरप (वि०) (स्त्री०—की) [उरप्र+अण्] भेड़ से
सम्बन्ध रखने वाला, या भेड़ से उत्पन्न,—अम् 1. भेड़
या बकरे का मांस 2. ऊनी वस्त्र, भौटा ऊनी कम्बल
(अ भी) ।

बीरप्रकम् [उरप्रणा सन्हु—अण्] भेड़ों का दूध ।

बीरधिकः [उरप्र+ठङ्] गहरिया ।

बीरस (वि०) (स्त्री०—नी) [उरसा निमित्त—अण्] कोस
से उत्पन्न, विवाहिता पत्नी से उत्पन्न, वैष—गु० १६।
८८,—स,—नी वैष पुत्र या पुत्री—याज्ञ० २।१२८ ।

बीरस=बीरस ।

बीषं, बीषकं, बीषिक (वि०) (स्त्री०—की,—की)

[ऊर्णा+अण्, ध्वञ्, वा] ऊनी वस्त्र से बना हुआ ।

बीषकालिक (वि०) (स्त्री०—की) [अकाल+ठङ्]

सिद्धे समय से संबद्ध या बाद का ।

बीष्वेहेतुम् [ऊर्णवेहे+अण्] अन्त्येष्टि संस्कार, प्रेतकर्म ।

बीष्वेहे (हे) हेतु (वि०) (स्त्री०—की) [ऊर्णवेहेहाय
साधु—ठङ्] मृत व्यक्ति से संबद्ध, अन्त्येष्टि, किये
प्रेतकर्म, अन्त्येष्टि संस्कार,—कम् अन्त्येष्टि संस्कार,
प्रेतकर्म ।

बीष (वि०) (स्त्री०—की) [ऊर्ण+अण्] 1 धरती से
सम्बन्ध रखने वाला 2 अर्थात् से उत्पन्न,—कः एक
प्रसिद्ध ऋषि का नाम (यह भृगुवध में उत्पन्न हुआ था ।
महाभारत में वर्णन मिलता है कि भृगु के बहजों का
नाश करने की इच्छा से कार्तवीर्य के पुत्रों ने गर्भस्थित
बालकों को भी भौत के घाट उतार दिया । उस बच्चे

की एक स्त्री ने अपने गर्भ की रक्षा के लिए उसे अपनी
अर्धा में छिपा लिया—स्तोत्रिल्ल अर्धा से अन्न होने के
कारण वह जीवंत रहलाया । उसकी देख कर कार्तवीर्य
के पुत्र अर्धे हो गये, उसके क्रोध ने उठी ज्वाला ने
समस्त सत्तार को सन्न कर देना चाहा । परन्तु अपने
पितरों—भ्रातृवों—की इच्छा से उमने अपनी औषाणि
को समुद्र में फेंक दिया जहाँ वह बोंदे के रूप में मृत्त
पड़ा रहा—गु० बहवानि । बाद में जीवंत अयोध्या
के राजा मयूर का यह हुआ 2 बहवानि,—स्वयि
ज्वलत्वीर्य इषाम् राषो ष० ३।१, इसी प्रकार अन्नम् ।

बीषुकम् [उल्लूकाना समुह—अण्] उल्लूकों का झुंड ।

**बीषुक्यः [उल्लूकस्यापत्य—अण्] वैशेषिक दर्शन के निर्माता
कण्ठ मुनि (दे० सर्वे में औलूक्यदर्शन) ।**

बीषण्यम् [उत्पन्न+ध्वञ्] आधिक्य, बहुतायत, प्राबल्य ।

बीषण, बीषणस (वि०) (स्त्री०—नी,—नी) उगता अर्थात्
मुकाचार्य से सम्बन्ध रखने वाला, उगता ने उत्पन्न या
उगता ने पका हुआ,—कम् उगता का घमंशान्
(नागरिक शास्त्र व्यवस्था पर लिखा गया ग्रन्थ) ।

**बीषीमः [उशीनरत्सापत्यम्—अण्] ऊशीनर का पुत्र,— री
राजा पुकरवा की पत्नी ।**

बीषीरम् [उशीर+अण्] 1 पसे या बँबर की इडी

2 बिसरा—बीषीरे कामचार कृतोऽम्—दश० ७२

3 आसन (कुसी, मूक आदि) 4 लस का लेप 5 लस
की जड़ 6 पत्ता ।

**बीषणम् [उपघ्न+अण्] 1 तीक्ष्णता तीक्ष्ण 2 कानी
मिर्च ।**

**बीषघम् [बीषधि+अण्] 1 जड़ी-बूटी, जड़ी बूटियों का
समूह 2 दवादारु, सामान्य बीषधि 3 क्षत्रिज ।**

**बीषधि . धी (स्त्री०) [प्रा० सं०] 1 जड़ी-बूटी, वनस्पति
—दे० बीषधि 2 रोगनाशक जड़ी-बूटी—अचिन्तो हि**

मणिमन्त्रोपधीना प्रभाष—रस० २ 3 आय उगलने
वाली जड़ी—विरमन्ति न अचिन्तोमोषधय—कि० ५।

२५, (तृणज्योतीधि—मल्लि०) गु० कु० १।१०

4 वर्षमान रहने वाला या सालाना फलदाई वाला पौधा,
अचिन्तिः सोम, बीषधियों का स्वामी ।

**बीषधीय (वि०) [बीषधि+अण्] बीषधि सङ्गो रोगनाशक,
जड़ी-बूटियों से युक्त ।**

**बीषधम्,—रसम् [उत्प्रेरे प्रभम्—अण्, तन. कण्] लेंबा
नमक, पहारी नमक ।**

बीषल (वि०) (स्त्री०—नी) [उपसर्ग+अण्] उषा या
प्रयात से सम्बन्ध रखने वाला,—नी वी फलना, प्रयात
काल ।

बीषणिक, बीषिक (वि०) (स्त्री०—की) [उपसर्ग+ठङ्]
उषा+ठङ् वा] विद्यमान प्रयातकाल में जन्म किया है,
उच काल में उत्पन्न ।

भीष्म (वि०) (स्त्री०—कौ०) [उष्+भृन्] 1. ऊँट से उत्पन्न या ऊँट से सम्बन्ध रखने वाला 2. जहाँ ऊँटों की बहुतायत हो, —कृष् ऊँटों का वृक्ष ।
 भीष्मवन् [उष्+भृन्] ऊँटों का वृक्ष—वि० ५।१५ ।
 भीष्म (वि०) [भीष्+यन्] होठ से सम्बद्ध, भीष्म स्वा-
 दीय । सम०—कण्ः भीष्मस्वामीय मशर—अर्थात् उ

ऊ, पृष् वृष् और वृ, —स्वाम (हारा) होठों द्वारा
 उत्पन्नित, —स्वः भीष्मस्वामीय स्वर ।

भीष्मन् [उष्+भृन्] गर्मी, ठाण ।
 भीष्मन्, भीष्मन् [उष्+भृन्, उष्+भृन्] गर्मी
 --रघु० १७।३३ ।

कः [कन् + ङ] 1 बह्मा 2 विष्णु 3. कामदेव 4 अग्नि
 5 बापु 6 यम 7 सूर्य 8 आत्मा 9 राजा या
 राज कुमार 10 गाठ या जोड़ 11 मोर 12 पत्थियों
 का राजा 13 पत्नी 14 मन 15 शरीर 16 समय
 17 बादल 18 शब्द, ध्वनि 19 बाल,—कम्
 1 प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द (जैसा कि स्वर्ग में)
 2 पानी - सत्येन माधिरथ -व दशमेत्यभिशाप्य कम्
 -- याज्ञ० २।१०८ केचन पतित दृष्ट्वा पाण्डवा हर्ष-
 निर्भरा - मुना० (यहाँ 'केचन' में श्लेष है) 3 सिर
 -- जैसा कि 'कधरा' (=क गिरो धारयतीति) में ।

कस, -सम् [कन् + ज] 1 जल पीने का पात्र, प्याला,
 कटोरा 2 कामा, सफेद ताबा 3, 'आइक' नाम की
 एक विशेष माष, -शः मधुरा का राजा, उपरनेन का
 पुत्र, कृष्ण का भ्रातृ (कम की कालेनेमि नामक राक्षस
 में समता की जाती है, कृष्ण के प्रति शत्रुता का व्यव-
 हार करते करते यह कृष्ण का घोर शत्रु बना । जिन
 परिस्थितियों में हमने ऐसा किया वह निम्नांकित है,
 'देवकी का वधुदेव के साथ विवाह हो जाने के बाद
 जब कि कम अपना मुखमण्डल दाम्पत्यजीवन बिता
 रहा था, उसे आकाशवाणी सुनाई दी जिसने उसे
 सबेन किया कि देवकी का आठवा पुत्र उसका भारने-
 वाला होगा । फलतः उसने दोनों को कारागार में डाक
 दिया, मन्त्रदूत हथकड़ी और वेदियों से जकड़ दिया,
 और उनके ऊपर सख्त पहरा लगा दिया । जूही
 देवकी ने बच्चे को जन्म दिया तूही कम ने उसे छीन
 कर पीत के भाट उतार दिया, इस प्रकार उसने छ
 बच्चों का काम तमाम कर दिया । परन्तु मातर्वा और
 आठवाँ (बलराम और कृष्ण) बच्चा इतनी सावधानी
 रखते हुए भी मकुशल नन्द क घर पहुँचा दिया गया ।
 मन्थिप्याणी के अनुसार कसहता कृष्ण नन्द के यहाँ
 पलता रहा । जब कस ने सुना तो वह अत्यन्त क्रुद्ध
 हुआ, उसने कई राक्षस कृष्ण को भारने के लिए भेजे,
 परन्तु कृष्ण ने उन सबको आसानी से मार गिराया ।

कम्प में उसने उन बालकों को मधुरा किवा छाते के
 लिए अकूर की बेजा । फिर कस और कृष्ण में घोर
 मल्लयुद्ध हुआ जिसमें कृष्ण के हाथों कस मारा गया)
 सम०—अरिः,—अरातिः,—कित्,—कृष्,—क्षिष्,—हृष्
 (पु०) कस का मारने वाला अर्थात् कृष्ण—स्वयं
 सचिकारिणा क्षारिणा दूतेन—वेणी० १, निर्देविकान्
 कसकृष स विष्टरे—मि० १।१६,—अविष् (नपु०)
 कोसा,—कारः (स्त्री०—री) 1 एक वर्षसकर जाति,
 कसेरा—कसकार्यान्कारो हाहाणालसवभुवु,—वाच०
 2 जन्ता या सफेद पीतल के बर्तन बनाने वाला, कासे
 की टलाई का काम करने वाला ।

कसकम् [कम् + कन्] कासा, कमीम या फूल ।
 कम् (स्वा० प्रा०—ककते, ककित) 1. कामना करना
 2 अभिमान करना 3 अम्बिर ही जाना, दे० कक् ।

ककुब्जकः [क जल कुजयति याचते -क+कृष्+जलच्
 पुषो० नृन् ह्रस्वश्च] वातक, पपीहा ।

ककुब्ज (स्त्री०) [क सुप्त कौनि सूचयति—क+कृ+विष्पु,
 तुकागम, तम्प द] 1 चोट्टी, शिखर 2 मूख,
 प्रधान—दे० नी० 'ककुब्ज' 3 भारतीय बैल या सांड
 के कर्चे के ऊपर का कूबड़ या उमार 4. शीघ 5
 राजचिह्न (छत्र, चामर आदि) (पाणिनि सूत्र ५।
 ५।१४६-७ के अनुसार 'ककुब्ज' के स्थान में शतृषीहि
 समास में 'ककुब्ज' आदेश होता है—उदा० चिककुब्ज) ।
 सम०—कण्ः इक्ष्वाकुवश में उत्पन्न सूर्यवंशी राजा
 मघाद का पुत्र पुरजय,—इक्ष्वाकुवश ककुब्ज नृपाणा
 ककुत्स्य इक्ष्वाकुवशोऽभूत्—रघु० ६।७१ (पौरा-
 निक कथा के अनुसार राजसो के साथ देवों के युद्ध
 में जब देवों की मूँहकी सानी पत्नी ली बहु इन्द्र के
 नेतृत्व में पुरजय के पास गये और उनसे युद्ध में सहा
 देने के लिये प्रार्थना की । पुरजय ने इस शर्त पर
 स्वीकार किया कि इन्द्र उसे अपने कर्चे पर उठा कर
 धले । फलतः इन्द्र ने बैल का रूप धारण किया और
 पुरजय उसके कर्चे पर बैठा—इस प्रकार पुरजय ने

राजसो का सफाया कर दिया । इसीलिए पुरजय 'ककुब्ज'—कूबड़ पर बैठा हुआ कहलाता है ।

ककुब्ज—कम् [कस्य देहस्य सुखस्य वा कु भूमि इदानीं—वा + क] 1 पहाड़ का शिखर या चोटी 2 कूबड़ वा बिल्सा (भारतीय बेल के कच्चे का उभार) 3 मूत्र, सर्वोत्तम, प्रमुख—ककुब्ज वैदिकवा तपोवनस्य—मूच्छ० १५, इक्ष्वाकुवदय ककुब्ज नृपाणाम्—स्मृ० ६।७। 4. राजबिह्ल—नृपति ककुब्जं रघु० ३।७०, ३।७२० ।

ककुब्जत् (वि०) [ककुब्ज + मनुप्] 1 कूबड़ या हिल्ले से युक्त—(घ०) पहाड़ (जिसके शृंग हो) 2 भैंसा—महादेवा ककुब्जत्—रघु० ४।२२, कूबड़ वाला बेल १।३२७, कु० १।५६—नी कल्ला और नितब ।

ककुब्जित् (वि०) [ककुब्ज + मिति] शिखरधारी, कूबड़ युक्त (घ०) 1 कूबड़धारी बेल 2 पहाड़ 3 राजा देवतक का नाम,—कम्पा—गुप्त बलराम की पत्नी देवती—वि० २।२० ।

ककुब्जत् (घ०) [ककुब्ज + मनुप्—बल्म्] कूबड़धारी भैंसा ।

ककुब्जकम् [कस्य शरीरस्य कुम् अवयव दुपाति ककु + द् + कम्, म्] नितबो का यद्वा, जघनकूप—याज० ३।१६६ ।

ककुब्ज (स्त्री०) [क + स्कुम् + क्विप्] 1 दिवा, भूपरिमि का अनुभूत भाग—विपुला कान्तेन स्थित इव न राजति ककुब्ज मूच्छ० ५।२६, वि० १।२५ 2 आमा, संतुष्टि 3 चम्पक पुष्पो की माला 4 शास्त्र 5 शिखर, चोटी ।

ककुब्ज [कस्य बापो कु स्थान भानि अस्मात्—ककु + मा + कृ पृषो० वा क वात स्कुम्नाति विस्तरपरित्क + स्कुम् + क] 1 वीणा के सिरे पर मूरी हुई लकड़ी 2 जर्जुरवृक्ष—ककुभसुरभि बेल—उत्तर० १।३३,—अम् कुट्टव वृक्ष का कूल—मेघ० २२ ।

ककुब्जकः [ककुब्ज + उलङ्] दकुल वृक्ष ।

ककुब्जकः—कौ० [ककु + क्विप्, कुम् + य—कक् च कोल—वेषि कर्म० सं० विनया औप] फलदार वृक्ष—ककुब्जकोल फलजगि—मा० ६।११९ अने० पा०,—कम्,—लङ् 1 ककुब्ज का फल 2 इसके फलो से तैयार किया गया कण्डूव्य ।

ककुब्ज (वि०) [ककुम् + अट्] 1 कठोर, ठोस 2 हुपने वाला ।

ककुब्जटी [ककुब्ज + ट्रीप्] शक्तिवा

ककुब्ज [कक् + त] 1 छिपने का स्थान 2 नीचे पहने जाने वाले बरत का सिरा, कच्छे का सिरा 3 बेल, लता 4 घास, सूखी घास—यतस्तु ककुब्जत एव बह्नि—रघु० ७।५५, १।७५, मनु० ७।१०१ 5 मूले

सूखों का जल, सूखी लकड़ी 6 काल—प्रतिप्योर्वाचिक कच्छे खेरते देवमिमारतम्—वि० २।५२ 7 राजा का अन्तपुर 8 जंगल का भीतरी भाग—बाष्प निर्मित कक्षात्—श्रु० १।२७ कक्षातरणतो वाग्—रामा० 9. (किसी वस्तु का) पार्व 10 भैंसा 11 डार 12 इलकी भूमि,—आ 1 ककरावी या काल का फोका जिसमें पीडा होती है 2 हाथी की बचिने की पत्ती, हाथी का तग 3 स्त्री की तगड़ी, कटिबन्ध, करपनी, कटिसूत्र—वि० १।७२४ 4 चहारदीवारी की दीवार 5 कमर, मध्यभाग 6 आँगन, सहन 7 बाबा 8 भीतर का कमरा, निजी कमरा, सामान्य कमरा—कु० ७।७०, मनु० ७।२२४, गृहकलहमकाननसुरतु कक्षातरणव्यवित्त—मा० ६३, १।८२ 9 रजिबस 10. समानता 11 उत्तरीय वस्त्र 12 जाति, उतकं उत्तर (तर्क० में) 13 प्रतिस्पर्ध, प्रतिद्वन्द्विता 14 साग 15 साग बाधना 16 कलाई,—अम् 1 तारा 2 पाप । सम०—अग्निः जगलो जाग, दवाग्नि—रघु० १।१९२,—अन्तरम भीतर का या निजी कमरा,—अवेष्टक 1 अन्त पुर का अधीक्षक 2 राजोद्धानपाल 3 द्वारपाल 4 कवि 5. कण्ट 6 खिलाड़ी, चित्रकार 7 अजिनेता 8 प्रेमी 9 रस या भावना की गति,—अरम् कम्पो का जोड़,—ए कसुवा,—(आ) घट लगी,—गुडः कोष्ठ,—शाम्,—घुः कुला ।

कक्षा [कक्ष + यत् + टाप्] 1 घोड़े या हाथी का तग 2 स्त्री की तगड़ी या करपनी—वि० १।५२ 3 उत्तरीय वस्त्र 4 बरत की किनारी 5 महाल का भीतरी कमरा 6 दीवार, घेर या बाबा 7 समानता ।

कक्ष्या [कक् + यत् + टाप्] घेर या बाबा, विशाल भवन का प्रभाग या खण्ड ।

कक्षकः [कक्ष् + जक्] 1 जगला 2 जाग का एक प्रकार 3 यम 4 क्षयि 5 बनावटी बाण्डू 6 विराट के महल में युधिष्ठिर द्वारा रक्षता गया अपना नाम । मय०—एष बगले के पंगो में सुमजित्त (—कः) बगले के पत्तो से युक्त बाण—रघु० २।३१, उत्तर० ४।२० महावी० १।१८,—पश्चिम् (घ०) = कक्षपत्र,—सूत्रः चिमटा—वेपी० ५।१,—शाम्, कुला (बगले की भाँति होता हुआ) ।

कक्षकटः, **कक्षकटकः** [कक्ष् + अट्, कन् वापि] 1 कक्ष, रक्षात्मक चिरह बस्तर, सैनिक साज-सामान—वेपी० २।२६, ५।१, रघु० ७।५९ 2 अकुला ।

कक्षकणः—जम् [कक् इति कक्षति, कम् + कप् + क्वप्] 1 कक्षा—दानेन पापि यं तु कक्षकणेन विभानि भूत् ० २।७१, इव सुवर्णकक्षकणं नृसाम्—वि० १२ 2 विवाह-सूत्र, कम्पा (कलाई के चारो ओर बंधा हुआ)—उत्तर० १।१८, मा० ९।५, देव्य. कक्षुवनाशाया

भिक्षिता राजन् चर प्रेथ्वताम्—महावी० २।५०
3 सामान्य आभूषण 4 कन्या, —क-पानी की कुहा-
—नितम्बे हाराली नवन युगके कड्डुधरम्—उड्डट,—भी,
कड्डुधिका 1. दूध 2 दूध-जडा आभूषण ।
कड्डुधः,—सम्, कड्डुधली,—तिका [कड्डु+अतधु] कपी,
बाल बाहने की कपी गि० १।५३३ ।

कड्डुधः [कं सुलं किरित सिपति—कृ+अधु] मट्टा (पानी
मिला हुआ) ।

कड्डुधः—कम् [क सिर कालघटि सिपति—कम्+कम्
+मिधु+अधु] अस्मिन्मन्-या० ५।११५, 1 सम०
—कस्मिन् (पुं०) शिष,—शेष (वि०) कर्मयोग होकर
जो हृदयियों का डोषा रह गया हो—उत्तर० ३।५३ ।

कड्डुधः [कंकाल+या+क] शरीर ।

कड्डुधः,—ल्लि [कड्डु+एल्ल, एल्लि वा] अशोक वृक्ष ।

कड्डुधो [कंकु+ओलधु+ओपु]—दे० कनकोली ।

कड्डुधः [कम्+ता+धु] हाथ ।

कड्डु 1 (म्वा० पर०—कथित, कथित) चिल्लाता,
रोना ।

11 (म्वा० उभ०) 1 बाँधना, जकड़ना (आ-पूर्वक),
स्वयं बांधकर धरम्—मट्टि० १।१२५ 2 बमकना ।

कड्डु [कम्+अधु] 1, बाल (विशेषकर सिरके)—कथेषु
व निगृहीतान्—महा०, दे० नी० १४४;—अस्मिन्-
जिष्णु कचाना पथ भर्गु० १।५ 2 सुना या बारा
हुमा पाय, अतच्छिवा या किण 3 बचन, पट्टी
4 कपड़े का गोटा 5 बायल 6 बृहस्पति का एक पुत्र
(राजसो के नाथ लम्बे युद्ध में देवता बहुधा हार करते
थे और असहाय हो जाते थे, परन्तु जो राजस युद्ध में
मारे जाते थे, उनको फिर उनका गुरु शुक्राचार्य अपने
पुत्रमत्र (यह मंत्र केवल शुक्राचार्य के पास ही था)
द्वारा पुनर्जीवित कर देता था । देवों ने इस मन्त्र को,
यथा शक्ति, प्राप्त करने का सकल्प किया और कच को
शुक्राचार्य के पास उसका शिष्य बन कर मंत्र सीखने के
लिए फूसलाया । फलतः कच शुक्राचार्य के पास गया,
परन्तु राजसों ने उसकी दो बार इसलिए हत्या की कि
कहीं वह इस ज्ञान में परागत न हो जाय परन्तु दोनों
ही बार, शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री देवयानी के (जिसका
कि कच से प्रेम हो गया था) बीच में पड़ने से उसे
फिर जिला दिया । इस प्रकार परास्त हो राजसों ने
उसकी तीसरी बार हत्या करने, उसके सब को जला
दिया और उसकी राख शुक्राचार्य की मरिचा में मिला
दी । परन्तु देवयानी ने उस युद्ध की पुनर्जीवित
करने की अपने पिता से फिर प्रार्थना की । उसके
पिता ने उसे फिर जिला दिया । तब से लेकर देव-
यानी उसकी और भी अधिक प्रेम करने लगी, परन्तु
कच ने उसके प्रेम-प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कहा

कि तुव मेरी छोटी बहन हो । इस बात पर देवयानी
ने युद्ध को छान दे दिया कि वह मनामन को उसने
सीखा है उचितहीन हो जानावा । बचने में कच ने भी
उसे साध दिया कि उससे कोई ब्राह्मण विवाह नहीं
करेगा, और उसे शपथ की पत्नी बनना पड़ेगा ।
—वा हृषिनी । सम०—अधुम् दूधत, बलकं,—अस्मिन्
बिभरे बालों वाला—कि० १।३१६,—अधुः बाल पकड़ना,
बालों से पकड़ने वाला—रघु० १०।५७, ११।३१,
—अधुः,—आधुः—हस्तः शिषयिच या अर्धकृत
बाल (अधर कोश के अनुसार क c २ अन्व 'समुह'
को अन्वत करते हैं—आध. पञ्जाब हस्तध्व कमाचार्य
कथापर),—आधुः पुत्रा ।

कड्डुधम् [कचत्वं अनन्तत्वं कड्डुधम्—क० ट०, सक०
परकम्प] बहु यही यहाँ सामान्य पर किसी प्रकार का
कीई धूलक न देना पड़े ।

कड्डुधः [कथ्यते उच्यते वेद्यया—कम्+अड्डुधम्]
सम्पुत्र ।

कड्डुधः (अन्व०) [कथेषु कथेषु गृहीतव्ये युद्ध प्रवृत्तम् व०
स० इधु, पूर्वपरदीर्घे] बाल के बदले एक दूसरे के
बाल पकड़ कर (बीच कर, गीच कर) युद्ध करना ।

कड्डुधः [कचत्वं येष इव धृष्ये अटन्ति—कम्+अधु+
उरधु] बलकुम्भट ।

कड्डुधः (वि०) [कथितं चरति कृ+चर+अधु]
1 बुरा, मस्किन 2 दुष्ट, नीच, जवान ।

कड्डुधः (अन्व०) [कम्+विधु, पि+विधु पुत्रो० मन्व
दत्तम्—कम्प विधु इवो समाहार - इ० स०]
(क) प्रसन्नवाचकता ('मुझे माथा है') श्राय ऐसा अनु-
वाद)—कड्डुधु बहुमिव विस्मृतवानसि त्वं—ध० ६,
कड्डुधुवीधामनथा प्रसूति—रघु० ५।७, ५, ८
। ९ भी (ख) हव्यं तथा (य) माङ्गलिकता-मुष्क
अन्वय ।

कड्डुधः—कड्डुधु [केन जलेन क्षणानि दीप्यते छासते वा—क
+छो+क] 1 लट, किनारा, गोटा, सीमावर्ती प्रदेश
(बाहे पानी के निकट होया हुए)—यमुनाकण्ठमयतीर्थ
—पथ० १, यथामादन कथोऽप्यसित—विश्व० ५,
गि० ३।८० 2 हलद्वज, कीचड, पंकजम्बु 3 अशोषण
की गोटा या शालर जो जोग का काम दे—दे० कता
4 किल्ली का एक भाग 5 कड्डुधे का अर्थ विशेष (बैसा
कि 'कण्ठ' में)।—कड्डुधु वीधु । सम० अंतः शील
वा नदी का किनारा—क (स्त्री०—भी) 1 कड्डुवा,
कड्डुवी,—केसव पुत्रकण्ठरुप अथ अगदीश हरे—गीत०
१, मनु० १।५४, १२।५२ 2 बालयुद्ध में एक स्थिति
3 कुबेर की नौ विधियों में से एक (—भी) 1 कड्डुवी
2 एक प्रकार की बीजा सरस्वती की बीजा,—कू-
(स्त्री०) दम्बरकी धूमि, पड्डुधुमि ।

कच्छ (कच्छ) विद्या, कच्छासी (कच्छ+अ+अ+कन्, इत्स्व्, अक० परकस्व, परक्याभावे 'कच्छाटिका' शीघ्रि इति 'कच्छाटी') शीतो का जोर जो शरीर पर चारों ओर कपेटने के बाद इकट्ठा करके शीत की भाँति पीछे टाँग किया जाता है।

कच्छुः, कच्छुः (स्त्री०) [कच्छ+ञ, छ आदेशः, विकल्पेन ह्रस्वश्च] कुजली, आज।

कच्छुर (वि०) [कच्छु+र ह्रस्वश्च] 1 आज वाला, कुजली की बीमारी वाला 2 कामुक, लम्पट।

कच्छुलम् [कृत्स्न जलमस्याप्रवर्षति—को कपटोय] दीपक की कालिमा जो बोधप के रूप में आँसों में आँसी जाती है, काजल—ज्या यथा वेद्य चपला दीपते तथा तथा दीपशिखे च कञ्जमलिनमेव कमं केवलमुद्भवति—का० १०५, अथापि ता विघ्नकञ्जल-कोलेनेषाम्—चौर० १५, कालिमा—अमर ८८ 2 सुर्पा (जो अजन की भाँति प्रयुक्त किया जाता है) 3 स्वाही, मत्ती। सम०—ध्वज दीपक, लेम्प, —रोषकः,—कम् दीपट, (लकड़ी का बना दीपक का स्टीण्ड)।

कच्छुः (न्या० आ०) 1 शायता 2 चमकता।
कच्छुरः [कच्छु+र+णिच्+अच्] 1 सूर्य 2 मदार का पीषा।

कच्छुकाः [कच्छु+उक्तृ] 1 बस्तर, कुच 2 तीप की ल्वाका, केंचली—पञ० ११६२ 3 पाशाक, बन्ध, कपडा—धम० प्रवेष्टिता—शम० ५ 4 अग्रस्था, चोगा—अन्तः कच्छुकिकच्छुकस्य विद्यायि शालादयः वासन—रत्न० २३, पञ० २, ५४ 5 बोली, अगिया—वसिष्ठिदेवप्रजापतिनकच्छुका—शि० ५११, १२।२० अमर ८१, उभित—किदिति कच्छुककार प्राय पुष्कस्तनी नारी—नु० 'वाच न जाने आगन देवा'।

कच्छुकाः [कच्छुक+आलुच्] शीप।

कच्छुकित (वि०) [कच्छुक+इत्च्] 1 बस्तर में सुसज्जन, कुच व धारण किये हुए 2 पंशाक पहले हुए—कथा० भट्ट० ३११३०।

कच्छुकिन् (वि०) [कच्छुक+इति] कुच या जिरहबस्तर से सुसज्जित,—(पु०) 1 अन्त पुर का मेवक, जनानी इषाङ्गी का शरपाल (नाटक) में आवश्यक पात्र—अन्त पुरचुरी बुद्धो विशेष गुणधाम्निवत्, सर्वकार्या-संकुशल कच्छुकीर्णमधीयते 2 लम्पट, व्यभिचारी 3 शीप 4 शरपाल 5 जी।

कच्छुकिमा, कच्छुकी कच्छु+उल्लु+ओच्+कन्, ह्रस्व] बोली—त्व मृधासि विनैव कच्छुकिमया धत्से मनो-हारिणी लक्ष्मीम्—अमर २७।

कच्छः [कच्छु+जन्+ठ] 1 बाल 2 बह्ना,—अच्

1 कमल 2 अमृत, सुधा। सम०—कः बह्ना,—वाक-विष्णु।

कच्छकः,—की कच्छु केना इव कायति—कच्छु+कै+क] एक प्रकार का पत्ती।

कच्छकः [कच्छु+जन्+अच्] 1 कामदेव 2 एक प्रकार का पत्ती (कोयल)।

कच्छकः, कच्छकारः [कच्छु+दु+अच्, अच् वा] 1 सूर्य 2 हाथी 3 पेट 4 बह्ना की उपाधि।

कच्छकः [कच्छु+कलच्] एक प्रकार का पत्ती।

कच्छुः (न्या० पर०—कटति, कटित) 1 जाना 2 इकना।
प्र—1, प्रकट होता 2 चमकना (प्रेर०—कटयति) प्रकट करना, प्रदर्शित करना, विशालता, स्पष्ट करना—ओज्ज्वल्य परमागत प्रकटयत्याशौगमीम् तम—मा० ५।११, सुवृद्धि प्रकटय्य मुञ्जप्रथा प्रथममेव-रामानुकूलताम् उत्तर० ५।१५, रत्न० ५।१६,

कच्छुः [कच्छु+अच्] 1 चटाई—मनु० २।२०४ 2 कुल्हा 3 कुल्हा और कटिये, कुल्हे के ऊपर का गर्त 4 हाथी का मङ्गल कच्छुयमानेन कट कश्चात्—रघु० २।३७, ३।३७, ४।४७ 5, एक प्रकार का घास 6 शव 7 शववाहन, शरीर 8 पासे का विशेष प्रकार से केंकना—विन्दितवधितवार्णं कटनं विनि-पातितो वायि मुञ्च० २।८ 9 आभियन् (जैसा कि 'उलकट' में) 10 बाण 11. प्रथा 12 इत्यनानुभूति, कश्चित्तान। सम०—अक्षः मञ्जर, तिरछी निगाह, विशेष—गाड निगाह इव मे हृदये कटाक्ष—मा० १।२९, २५, २८, मेघ० ३५,—उपकृम् 1 (मृग पित्रो को) नर्पण के लिए जल 2 मद, (हाथी के मस्तक में बहने वाला तरल पदार्थ),—कारः 1 सकर जानि (निम्न सामाजिक अवस्था की) (बुद्ध्याः वैभ्य-तश्चोर्मान् कटकार इति स्मृत—उसना) 2 चटाई बनने वाला, कोल पीकदान,—कारक 1 पीदह 2 कोबा 3 शीसे का वर्तन, घोषः गोपालपुरी,—भूतकः,—ना एक प्रकार के प्रेतात्मा—अमेय्यकुण्ठापी च क्षत्रिय कटपूतन मन० १२।७१, उताला कटपूतना-प्रभृत्य साराधिष्य कुर्वते—मा० ५।१२, (पूतन—अने० पा०) २३ मी,—मूः 1. शिब 2 भूत वा, पिशाच 3 कीडा,—श्रीच.,—चम्पू नित्य, अंग. 1 हाथी में दाने एकन करना (शिलोच्छन) 2 राज-सकट,—वालिनी शरार।

कच्छुः—कम् [कच्छु+कन्] 1 कडा—शिवदहेमकटका रहसि स्मरामि—चौर० १५ 2 मेसला, कचरणी 3. रत्नी 4 भूतला की एक कड़ी 5 चटाई 6 क्षारी ममक 7 पर्वत पाषाण—प्रकूलवृक्षी कटकीरव स्त्री कु० ७।५२, रघु० १।५३ 8 अक्षियका—शि० ५।५५ 9 सेना, शिबिर—मुद्रा० ५।१० 10 राजधानी

11 घर का बाणध 12. बुल, पहिया ।

कटकम् (पु०) [कटक+इति] गृहम् ।

कटकद्वयः [कट+कट+अच् वा०, नृच्] 1. आग
2 सोना 3. गणेश—बाण० १२२८५ ।

कटकम् [कट+कट्] घर की छत वा छत्रम् ।

कटाक्षः [कट्+आ+हृन्+अ] 1 कड़ाई 2 कटुने की
कटी साल 3. कड़ाई 4. पहारी मिट्टी का टीला
5. टूटे बर्तन का खंड—वि० ५१३७, ५० २२१२२ ।

कटिः,—टी (स्त्री०) [कट+इत्, कटि+ङीप् वा] 1
कमर 2 नितम्ब (साहित्य शास्त्री इस बात को 'शाम्य'
समझते हैं, इसका उदाहरण सा० ६० ५७४ पृष्ठ पर
—कटिस्ते हुरते मन) 3 हाथों का गठम्बलः। सम०
—तटम् कूला—कटीटमिषेधितम्— अ० ११२७,
—अन् 1. घोसी 2 मेसला, करघनी, शोषः नितम्ब,
—मातुला स्त्री की तखड़ी या करघनी, - रोहकः
महाबल, वीलमान, - शोषकः कूला, - मृच्छला मूषरु
बढ़ी करघनी, - सुभ्रम् करघनी या मेसला ।

कटिका [कटि+कन्+टाप्] कूला, कमर ।

कटीरः,—रच् [कट+ईरच्] 1 गुफा, लोखर 2 कूला
का गर्तः,—रच् कूला ।

कटीरकम् [कटीर+कम्] नितम्ब, बृहत् ।

कटु (वि०) (स्त्री०)—टु वा टुही [कटु+उ] 1 तिकत,
कटुवा, चरपरा (रस का एक भेद माना जाता है, रस
उ त्रै—कटु, अम्ल, मधुर, तिक्त, कषाय और लवण)
—मन० १७९ 2. मधुमेक, तीक्ष्ण गंध वाला—रच्०
५१४३ 3 दुर्गन्धवत्, मधुमेका 4 (क) कटु, अम्लधा-
त्यक (सब्ज), यात्र० ३११२२ (क) अवधिकर, अग्निप
—मद्यकटु नृपाणामेकवाक्य विवक्षु रच्० ६८५
5 ईर्ष्यालु 6 गरम, प्रचण्ड,—टुः तीक्ष्णता, निस्सता,
कटुवापन, (६ रसों में से एक), -टु (नृच्०) 1 अनु-
चित कार्य 2 लोकापवाद, दुर्वचन, निन्दा। सम०
—कौटः—कौटकः दास, मच्छर, - क्वाच. टटिहिरी,
—अग्नि (नृच्०) सोड, इसी प्रकार 'अग्', 'मद्य'
सोड या अहरक,—निष्कलाचः अनार जो जन की बाढ़
में न आया हो,—शोषक एक सुगन्धित द्रव्य, रच-
मैत्रक ।

कटुक् (वि०) [कटु+कन्] 1 तीक्ष्ण, चरपरा 2 प्रचर,
गरम 3 अग्नि, अवधिकर,—क तीक्ष्णता, अटास
(६ रसों में से एक) रे० ऊ० 'कटु' ।

कटुकता [कटु+कता] अग्निप व्यवहार, अवलम्बना ।

कटुरम् [कटु+उरन्] पानी मिला हुआ मट्टा ।

कटोरम् [कटु+ओरम्] कटोरवादेय [मिट्टी का कटोरा ।

कटोराः [कटु+ओरम्] 3 चरपरा स्वाद 2 नीच जाति
का पुरुष, बैसा कि बाणधाल ।

कटु (स्त्री० पर०) कटिनाई से रूखा—रे० 'कटु' ।

कटः [कटु+अच्] एक मुनि का नाम, वैशम्पायन का पिता
यजुर्वेद की कठ शाखा का प्रवर्तक,—छाः कठ मुनि
के अनुयायी । सम०—वृत्तं, यजुर्वेद को कठ शाखा में
निष्णात ब्राह्मण,—शोषिकः यजुर्वेद की कठ शाखा में
पारंगत ब्राह्मण ।

कठम्बः [कठ+म्बु+अच्] शिव ।

कठर (वि०) [कटु+अच्] कडा, सक्त ।

कठिका [कटु+ङीप् वा०] खडिया ।

कठिन (वि०) [कटु+इत्] 1 कडा, सक्त कठिन
विषयामेकशेषो सारवलीम्—मेघ० १२, अमर ७२
इसी प्रकार १ तनी 2 कठोर-हृदय, कूर, निर्दय—न
विद्योयं कठिना अनु शिव्य—कु० ४१५ पृष् ११६५
अमर० ६, इसी प्रकार ३ कठोर, अनन्य 4
तीक्ष्ण, प्रचण्ड, उग्र (पीडा आदि)—नितान्तकठिना इव
मम न वेद सा मानसोयम्—विक्रम० २१११ 5 पीडा
देने वाला,—नः कूरमूट,—ना 1 साक की हुई साकर
के बनी मिठाई 2 खाना बनाने के लिए मिट्टी की हठीरी
(—इस अर्थ में नृच्० भी) ।

कठिनिका, कठिनी [कठिन+ङीप् कन्+टाप्, इत्यच्]

1 खडिया 2 कठो अनुती ।

कठोर (वि०) [कटु+ओरन्] 1 कडा, ठोस—कठोरास्थि-
पथि—मा० ५१३४ 2 कूर, कठोर-हृदय, निर्दय—अग्नि
कठोर यथा किल ते श्रियम्—उत्तर० ३१२७, इसी प्रकार
'हृदय', 'चिन 3. तीक्ष्ण, चुभने वाला, 'अकुशा—सा०
११२२ 4 पूर्ण विकसित पूर्ण, पूरा उगा हुआ,—कठोर-
गर्भा जानकी विमलम्—उत्तर० १११ ४९, इसी
प्रकार—कठोरात्तराधिपलाञ्छनच्छवि—वि० ११२०
5 (आल०) परिपक्व परिष्कृत—कलाकलापालोचन-
कठोरमतिभि—का० ७ ।

कटु=दे० कट ।

कट (वि०) [कटु+अच्] 1 गूना 2 कर्कश 3 अनजान,
मूर्ख ।

कटङ्ग (क)र [कट+ङ्ग(गु वा)+अच्, मुच्] तिनका ।

कटय (क)रौष(वि०) [कटय(क)र+छ] जिसको तिनका
शिलामा आद्य,—छः घात माने वाला पशु (गाय, भेस
आदि) रच्० ५१९ ।

कटवम् [गठयते सिच्यते जलादिकम् अथ—गट्+अच्, नृ-
गकारस्थ ककार] एक प्रकार का बर्तन ।

कटविका [कटविका] विज्ञान, गान्ध ।

कट (ल)म्ब. कटु+अम्बच्, टस्य ल] डठल, (साग भाजी
का) ।

कटार (वि०) [गट्+आरन् कटादेश] 1 भूरे रथ का
2, चमड़ी, नमिमान्नी, डीठ,—रः 1. मूरा रथ 2, सेवकः
कठिमुक्तः [कट्यां तीक्ष्ण ग्रहण मय्य, पृषो० टस्य ड] तल-
वार, खड्ग ।

कम् १ (म्भा० पर०—कणित, कणित) 1 बन्ध करना, विलकाना, (बुध में) कराहना 2 छोटा होना 3. जाना ।

ii (बुरा० पर० या जेर०) जीव क्षयना, पलक बन्ध करना ।

कम्बः [कम्+अम्] 1 अनाज का दाना—तच्छलकणाम्—हि० १, मनु० १११२ 2. अणु या (कित्ती)—वस्तु का) लव 3. बहुत ही बोधा परिणाम इविषं सा० १११९, ३१५ 4. घुल का जरां रघु० ११८५, पराग—विष्म० २१७ 5. (पानी की) बूँद या फुहार—कम्बाही मालिनोतरकणाम्—सा० ३१५, बबु०, अणु०—मेघ० २९, ४५, ६९, अमर ५४ 6. अनाज की बाल 7. (आय की) विधारी। सम०—अध,—अध, —मुष् (पु) वैशेषिक दर्शन के नियंता का नाम (जिसे अणुवाद का सिद्धांत कह सकते हैं)—औरकम् मण्डेय शीरा, —अलका: एक प्रकार का पत्ती, —आय: भबर, प्लावर्त्त ।

कम्पः [कम्+पा+क] लोहे का भाला या छद्म—लोहस्तम्भस्तु कणप वैज० चापचक्रकणपकर्षणम्—जादि० दश० ।

कम्पशः (कम्प०) [कम्+शस्] छोटे २ अगो में, दाना-दाना, घोडा-घोडा, बुर-बुद तदिव कणशो विकीयंते (मम्म) कु०—४२७ ।

कम्पिकः [कम्+कम्, इत्यम्] 1 अनाज का दाना 2. एक छोटा कण 3. अनाज की बाल 4. मुने हुए गेहूँ का भोजन ।

कम्पिका [कम्+कम्+टाप्] 1. अणु, एक छोटा अथवा सूक्ष्म जरां 2 (पानी की) बूँद—मेघ० ९८ 3. एक प्रकार का अणु या बावल ।

कम्पिकः -सम् [कम्पिन्+सी+इ] अनाज की बाल ।

कम्पिक (वि०) [कम्+ईकम्] छोटा, नन्हा ।

कम्पे (अब्ध०) [कम्+ए] इच्छा-संनृति का अभिधायक अन्वय (सद्भाप्रतीघात)—कर्मोद्देश्य पितृति—सिद्धा० 'बहू मन भर कर ब्रह्म पीता है' ।

कम्पेरा—कः (स्त्री०) [कम्पे+टाप्, कम्+ए] 1. हृदिनी 2. बेरया, रंजी ।

कम्पकः—कम् [कम्+अम्] 1 कौटा, —पादलग्न करस्वेन कम्पकेनैव कम्पकम् (उदरेत्)—चण० २२ 2. फास, डक—याज्ञ० ३१५३ 3. (आल०) ऐसा बुलढारी अक्षित ओ राज्य के लिए कौटा तथा अच्छे प्रसासन एव धान्त का सन् हो—उत्सातलीकनयकम्पकेऽपि—रघु० १५७३, त्रिविधमृदूतपावकम्पकम्—सा० ७१ ३, मनु० ९१२९० 4 (अत) छलाने या श्लेषा पहुँचाने का मूल-कारण, उत्पात—मनु० ९१२५३ 5 रोमांच होना, रोंगटे खड़े होना 6 अणुओं का माकुन

7 कम्प पहुँचाने वाला वाचक,—क. 1 बँस 2 कार-सावा, विधौषी । सम० अलमः,—अलकः—मुष् (पु०) अँट, —उद्वरण १ (शा०) कौटा निकालना, नलाई करता 2 (आय) जनसाधारण को लगाने वाले तथा शीर भावि उत्पलवाचियों को हूर करना,—कम्प-कौडरने नित्यमातितुष्टेयलमममम्—मनु० ९१२५२—मुष्क 1 कौटा, भाडी—भवति निवरा स्त्रीका मुष्के कम्पकद्रुमा—मुष्क० ९१७ 2 सेमल का बूँद,—कलः कम्पक, गोलक, रंज वा घतूरे का पेड़,—अर्धम् उत्पात वास्तु करना, —विशोचनम् तब प्रकार बलेसों-के श्रोतों का उन्मूलन करना,—राज्यकम्पकविद्योपनाद्यत—विष्मका० ५११ ।

कम्पकित (वि०) [कम्प+इत्] 1 कटोदार 2 खदे हुए रोंगटे वाला, पुककित, रोमांचित—श्रीतिकम्पकितत्वच—कु० ६११५, रघु० ७१२७ ।

कम्पकित् (वि०) (स्त्री०—की) [कम्प+इति] 1 कटो-दार, कटीला,—कम्पकित्नी बनन्ता—विष्मका० ११११६ 2. सताने वाला, कम्पशायक । सम०—कलः कम्पक ।

कम्पकितः [कम्प+इत्यम्] कटोदार बँस ।

कम्पु (म्भा०, बुरा० उभ०—कम्पति—ने, कम्पति-ने, कम्पित) 1 विलस्य करना, थोक करना 2 चुकना, आतुर होना, लालापित होना, शेर के साथ स्पर्श करना (सं अर्थ को प्रकट करने के लिए धानु के पुर्ब 'उद्' उपसर्ग लगा कर सभ०, अर्थ० या सम्भ० की सहा के साथ इस क्रिया का प्रयोग करते हैं)—परिव्रज्जम् वास्तव्यारममकम्पते जन—उत्तर० ६१२१, यथा स्वर्गांशु शोकम्पते—विष्मका० ३, मुरतव्यापारभोलाविभी चेत समकम्पते—काव्य० १ ।

कम्पु—ठम् कम्पु+अम्] 1. गला, —कम्पे निरीधयन् यार-यति—मुष्क० ८, कम्प स्तम्भितवायुवृत्तिकम्पु—सा० ४१५ कम्पु स्थलित गौरीय गिगिरे पुष्कोकजानां वतम् ६१३ 2. गदने—कम्पुश्लेष परिघटे विविधता—पृष० ५१६; कम्पुश्लेषप्रणयिनि अने कि पुनुरसस्ये—मेघ० ३१७ ११२, अमर ११५७, कु० ५१५७ ३ स्वर आवाज—मा मुक्तकम्प वक्रम्—रघु० १५६५, किङ्कर-कम्पि ८१६३, आयुषोपि प्रपुक्तकम्प रादिनि—उत्तर० ३ 4 बँस की गदने या किनारा 5 पदोस, अवि-च्छिन्न साभीय (यैसा कि 'उपकम्प' में) । सभ०—आवरणम् गले का आवरण—परीक्षितं काव्यसुवर्ण-येल्लोक्यम् कम्पामगवयमेतु—विष्मका० ११२५७ 6 सखती कम्पारण जैसे नाम—कम्पिका भारतीय बीजा, —कम्प (वि०) गले में रहने वाला, गले में आने वाला अर्थात् विपुक्त होने वाला, न बरेडावानी भावों प्राची कम्पतरैयि—मुभा०, सटः—टम्,—डी गले का पार्ले या चाप,—इव्य (वि०) गर्दन तक पहुँचने वाला,

—शोकाः नील,—नीलकः बड़ा नील या माला,—शोकाः 1 हाथी की शोका के चारो ओर बंधी हुई रस्सी 2 गोकने वाला,—भूषा छोटा हार—विदुषा कण्डूपा-त्वमेवु-विष्कामक० १८१०२,—कषिः 1 गले में पहनने का मणि 2 शिव बस्तु,—कषा 1 पट्टा 2 थोड़े की गोखने वाला,—कषिल (वि०) गले में होने वाला अर्धान् विदा होने वाला—घावे—रघु० १२१५४,—शोष (शा०) 1 गले का सूख जाना, सूख हो जाना 2 (आल०) निष्कल प्रतिवाद,—सञ्जनम् घर्दन के सहारे लटकना,—सूषम् एक प्रकार का आलियन—यकुर्वन्ते वज्रमि बल्लभस्य स्तनाभियान् निविहोपयुहाम्, परिश्रमार्थं जनकैर्विद्याभ्यान्कण्डूषु प्रवर्तत सत, कण्डू-सूत्रमर्दिस्य योषित—रघु० १९१२२ (‘स्तनाभियान्’ भी कहलता है) —स्व (वि०) 1 गले में होने वाला 2 कठम्यानीय ।

कण्डत (अभ०) [कण्ड + तन्निच्] 1 गले में 2 कण्ट रूप में स्फुट रूप से ।

कण्डाल [कण्ड + आलच्] 1 किलनी 2 काबडा, कुदानी 3 यद् 4 अँट, खा बरने जियमें दूध बिलासा जाय । कण्डिका [कण्ड + ठन् + टाप्, हत्वच्] एक लडका टार या माला ।

कण्ठी (स्त्री०) [कण्ड + ङीप्] 1 घर्दन, गला 2 हार, पट्टी 3 घाड़े की घर्दन के चारो ओर बंधी रस्सी । मम० रघु० 1 सिद्ध 2 भद्रमाला हाथी—कण्ठीरवो महा-घरेण मयनम्—दशा० ७ 3 कर्त्तर 4 स्पष्ट पापया या उल्लेख (इति कण्ठीरवेषोक्तम्) ।

कण्ठीक कण्ड + ईलच्] अँट । कण्ठीकाल [कण्डे कान्ठी विपयानजो नोक्तिमा यस्य अन्० म०] मिर ।

कण्ठ्य (वि०) [कण्ड + यन्] 1 गले से सम्बन्ध रखने वाला गले के उपायन या घरे में होने वाला 2 कठम्यानीय । मम० कषं, कण्ठम्यानीय अक्षर नामत, अ, आ, इ, ए, ऊ, ष, ह और ह, स्वरः कण्ठम्यानीय स्वर (अ और आ) ।

कण्ड (स्त्री० उभ०) 1 प्रमन्न होना, मनुष्य होना 2 वमड़ी होना 3 कूटकर भूमी अन्धा करना, (पुरा० उभ० कण्डयन्ति-ते, कणित्) 1 (अनाज), गाहना दाने अन्न करना 2 रक्षा करना, बचाना ।

कण्डनम् [कण्ड + न्यट्] 1 फटकना, दानों से भूसी अन्न करना अजातार्थं नत्सर्बं (अधमनम्) नुपाया कण्डन यथा 2 भूसी,—नी 1 जोखली 2 मूसल ।

कण्डरा कण्ड + अन् + नत् ।

कण्डिका [कण्ड + कण्डू + टाप्] छोटा अनुभाग, छोटे से छोटा अनुच्छेद (वैसा कि गुल्ल बज्रबंद में) ।

कण्डू (पु० स्त्री०), कण्डू (स्त्री०) [कण्डू + कु, कण्डू + ३]

यक + किवन्, अलोपः यलोपः] 1 मुरचना 2 मुराना—कपोलकण्डू कटिभित्तिनेयुक्—कु० २१९, शा० ४१७ ।

कण्डूतिः (स्त्री०) [कण्डू + यक + क्विन्] 1. मुरचना 2 लुखली, मुराना ।

कण्डूयति—ते (शा० शा०, उभ०) (पु० क० ह०—कण्डू-यित) 1 मुरचना, घर्ने २ मसलना—कण्डूयमानेन कण्डयति—रघु० २१२७, मगीमकण्डूयन् कण्डसार—कु० २१३६, श्रुते कण्डयमानस्य कामनयन कण्डय-माना मृगीम्—शा० ६१३६, मनु० ४१४२ ।

कण्डूयाम् [कण्डू + यक + त्यट्] लुखली, मसलना—कण्डू-यनेदंमनिवारयैश्च—रघु० २१५,—भी मसलने के लिए मुरा ।

कण्डूयनकः [कण्डूयन + कन्] लुखली पैदा करने वाला, मुरदूयी करने वाला—पच० १३७१ ।

कण्डूया [कण्डू + यक + ज + टाप्] 1 मुरचना 2 लुखलाना ।

कण्डूक (वि०) [कण्डू + लब्] [जिसे लुखली का विकार हो, जो लुखली अनुभव करना हो, या लुखलाहट पैदा करने वाला कण्डूकविपण्डपिषकपोलक्येन सपानिभि उमर० २१९ ।

कण्डोल [कण्ड + ओलच्] 1. (बेत या बौस की बनी) टोकरी जिसमें अनाज रखा जाय 2 डोली, भण्डार-गृह 3 अँट,— भी वाकाल की बीजा ।

कण्डोष [कण्डू + ओषन्] श्राप, एक तरह का फुलगा ।

कण्डू [कण्डू + क्वन्] एक ऋषि का नाम, वाकुलता का धर्मपिता, काष्ण श्रुतगणना का प्रवर्तक । मम०—दुहित्—मुला शकुनला, कण्ड की पुत्री ।

कण्ड, कण्डक [क जल गृह तनोति—नन् + इ—तारा०] निर्मली का पीछा (इसका फल मूदने पानी को स्वच्छ कर देने वाला बनलाया जाता है) रीठा—कण्ड कण्ड-वृक्षम् यद्व्ययुवप्रसादनम्, न नामाद्रत्नादेव तस्य वारि प्रसीधति । मनु० ६१६७, तण्ड-तण्डम् इस वृक्ष का फल, रीठा, दे० 'अवप्रसादन' भी ।

कलन (सर्व० वि०) (नपु०—मत्) [किम् + इतमच्] कौन या कौन सा—अपि ज्ञासे कतमेन विभावो न त स ज्ञाय इति-विष्कम् १, अथ कतम पुनर्हनुमधि-कृत्य मास्याभि सा १, कतमे दे नुपास्तव मनुदाहर-न्यार्यामिथा—मा० १, (कभी कभी 'किम्' के स्थान में बलप्राप्त प्रत्ययदेश के रूप में प्रयुक्त होता है) ।

कतर (सर्व० वि०) (नपु०—रम्) [किम् + इतरच्] कौन, दो में से कौन सा,—नैतद्विद्यः कतन्मो मदीयो यद्वा अयेम यदि वा नो जयेय—मग० २१६ ।

कलमासः [कस्य जसस्य तमाश योषणाय जलसि पर्याप्नोति अन् + अच्] जलिन, तु० सतमाल ।

कलित (सर्व० वि०) [किम् क्विन्] (सर्वैश्च व० व० में प्रयुक्त—कवि, कतिभिः) 1 किलने—कस्यभ्य, कति

सुखीक—खट् ० १०८८१८८ २ कुष्ठ (यस 'कति' के साथ चिद्, यन वा जनि जोड़ दिया जाता है, तो यन की प्रत्ययान्तकता नष्ट हो जाती है, और वह अन्विष्य-यार्थक बच जाता है—जब होता है— कुष्ठ, कर्ष, बोधे—के—तन्वी विष्वा कतिचिन्नेष पत्तानि मत्वा—स० २११२, कत्पि वासराणि—अनर २५, उद्विग्नान्नी कतिचिद्विष्वा-विप्रवृत्त. स कामी नीत्या मासान्—मेघ० २) ।

कतिपयः (अन्व०) [कति + क्तपयच्] कितनी बार ।
कतिषा (अन्व०) [कति + षा] १ कई बार २ कितने स्थानों पर, या कितने भागों में ।

कतिष्य (वि०) [कति + ष्यच्, पुष् च] कुष्ठ, कर्ष, कई एक—कतिष्यकुमुबोधयन कदम्ब—उत्तर० ३१२०, मेघ० २३—कतिष्यविष्वापयने—कुष्ठ विनो के बीत जाने पर—वर्षे कतिष्यैरेव इतिहास स्वरेरिच—सि० २१०२ ।

कतिषिच (वि०) [च० स०] कितने प्रकार का ।
कतिः (अन्व०) [कति + क्त] एक बार में कितना ।
कत् (जा०) जा०—कत्ते, कत्चित् १ सोची बघारना, इतरा कर चल्ना—कृत्वा कत्पिच्छते न क—अट्टि० १६५, कुर्वीतकर्मना कर्ष कम्पेवा—महा० २ प्रकला करना, प्रविष्ट करना ३ सोची देना, दुर्बल करना ।
चि— १ सोची मारना,—आ कम्बनेन प्रार्थयान्ना विकल्पते—विष्म० २ २ बाज पडाना, तुच्छ करना, ज्वेक्षित करना—तथा मवात् फाल्गुनस्य नृवीरस्मान् विकल्पते—महा० ।

कत्पयन्, —ना [कत् + प् + क्तुच् वा] हील मारना, सोची बघारना ।

कत्पयन् [कत् + प् + क्तुच्] कथा ।
कप् (चू०) उभ०—कपयति, कपित १ कहना, समाधार देना, (श्राव सञ्च० के साथ) —राजनिष्कल-नवर्धनोन्मुक मैथिलाय कपयाम्बुव स रघु० १११७ २ सोचना करना, उत्प्रेक्ष करना—मय० २१२५, रघु० १११५ ३ शान्तिप्राप करना, बाँटे करना, बाणधील करना—अध्विन्या सुमन्वेन सह—राधा० ४ संकेत करना, निर्देश करना, दिग्दर्शना—विष्म० ११७, आकारसदृश वेष्टितवेवाश्च कपयति—ज० ७ ५ बर्षन करना, बसाना करना,—कि कप्यते धीरमवस्य तस्य कु० ७ ।
७८ कपाच्छलेन बाणानां नीतिनसिदिह कप्यते—हि० १११, ६ मुचमा देना, सूचित करना, शिफायत करना—मुच्छ० ३ ।

कपक (वि०) [कप् + क्तुच्] कहानी कहने वाला, बर्षन करने वाला,—क १ मुख्य अजिनेता २ जनदण्ड ३ कहानी सुनाने वाला ।

कपयन् [कप् + प् + क्तुच्] कहानी कहना, बर्षन करना, बसाना करना ।

कपय् (अन्व०) [कित्-प्रकारार्थे वच् कविगम्यच्] १ कौंसे किस प्रकार, किस रीति से, कहाँ से—कप मारागमके स्वपि विष्वाच हि० १, सायबन्धा कप न स्य सपयो मे विरापय—रघु० १६४५, ३१४५, कपमाप्यानि विवेद्यानि कप माप्यापहार करामि—स० १ (यहाँ बोलने वाले को अपने कवन के भीषिय में समेटे है) २ यह बहुधा आदर्षर्ष प्रकट करता है—(अहो), कप मायेवोदितानि—स० ६ ३ यह प्राय 'इव, नाम, नु, वा, चिद्' के साथ जोड़ दिया जाता है जब कि इनका अर्थ होता है—'क्या, मन्मथ', 'क्या सम्भावना है' 'यूरे बलकाइए तो' (यहाँ प्रश्न का सामान्यीकरण कर दिया जाता है)—कर्म वा नम्यते उत्तर० ३, कप नामैतन्—उत्तर० ६ ४ अब यह 'चिद्, यन वा जनि' के साथ जोड़ दिया जाता है जो इसका अर्थ हा जाना है 'हर प्रकार से' 'किसी तरह से हो' 'किसी न किसी प्रकार' 'बड़ी कठिनाई से' वा 'बड़े प्रयत्नों से'—तस्य स्थित्वा कपयति पुर—मेघ० ३, कपयन्प्रभित न चुम्बित तु—स० ३१२५, न कौकप्यत यनं कृति-हेतो कपयन्—मनु० ५१११, ५११५३, कपयिदोसा मनात् बभूवु—३१३५, कप कपयति उचित—वच० १, विजुज्य कपयन्पुत्रान् कु० ६१३, मेघ० २२, अमर १२, ३९, ७३, ७३ ।
कपिचि विज्ञान्, पुष्ठ-नाष्ठ करने वाला,—अमरन् (अन्व०) किस रीति में, कौंसे कपयाकलापान्ना कीर्तिष्याधिरोहति—सि० २५२, कर्षकार भूक्षते—सिद्धा०, नै० १७१०६ ।
—अन्व० (वि०) किस माय तौर का,—भूत (वि०) किस स्वभाव का, किस प्रकार का (प्राय टोकाकारों द्वारा प्रयुक्त),—कष (वि०) किस गमल सुरत का ।

कपयता [कपय् + तल्] क्या प्रकार, क्या रीति ।

कपा [कप् + अञ् + टाप्] १ कथा, कहानी २ कल्पित या मनकृत कहानी कपाच्छलेन बाणानां नीतिनस-दिह कप्यते—हि० १११ ३ कृत्वात्, संदर्भ, उल्लेख—कपापि क्षन्तु पाणानामलमभ्येपते यत्—सि० २१५० ४ बातचीत, बातलाप, बहसता ५ पद्यप्रयोग रचना का एक नैद जो भाषायिका से मिले है—(प्रबन्धकल्पना स्तोत्रकल्पना प्राज्ञा कथा चिदु, परंपराश्रया वा स्वात् ता मताश्रयायिका नृषे) 'प्राष्यायिका' के भीचे भी देखें । का कथा, या प्रति पुंशक कथा (कथा कहता) 'कथा कहने की भाष्यकता है' 'कहना नहीं' 'कुछ नहीं कहना' 'और कितना अधिक' 'और कितना कम' 'जादि बर्षों को प्रकट करते हैं' का कथा वागमन्याने जयाज्येनेव दूरत, हुकारेव वृत्त त हि विष्वावि-पोहि—स० ३११, अजिनस्यमयोपि माधवं ब्रजते केष कथा शरीरिच—रघु० ८१५३, भाष्यवान्पुत्रानाम्नां साध्व स्वां प्रति का कथा—१०१२, वेणी० २१२५, ।

कदा (कथ् + वा) कथ, किस समय—कदा गति-
प्यसि—एष तस्मात्, कदा कथमप्यसि भावि, अवि
योक्ते पर बहु शब्द 'कधी-कधी' 'किसी समय' समय
निकास करे अर्थ प्रकट करता है; न कदापि कधी
भी, यदि 'अथ' आगे जोड़ दिया जाय तो इसका अर्थ
हो जाता है 'किसी समय' 'एक दिन' 'एक बार' 'एक
बारा'—आमन्त्रे इच्छाया विद्येति कथाचन—मनु०
२।५४, १४४, १।२५, १०; यदि 'चित्' आगे जोड़
दिया जाय तो इसका अर्थ हो जाता है—'एक बार'
'एक बारा' 'किसी समय' अथ कदाचित् = एक बार
—एव० २।१७, १।२।२, मांसी कीर्तिकाचित्— मनु०
४।७४, ६५, १।११—कथाचित्-कथाचित् 'अथ-अथ'
कधी-कधी कथाचित् कालत जगद्दे कथाचित् कथलवन्तु
देने-का० ५८, मनु० ।

कद् (वि०) (स्वी० इ वा इ) [कद् + र] भूरे रण का,
—इ, —इ (स्वी०) अथवा की पत्नी तथा माता की
माता । सम०—दुष्क, —सुलः सोप ।

कनकम् [कन् + कुन्] सोना—कनकवलय अस्त अस्त मया
प्रतिपाद्यते—स० १।१३, मेघ० २, ३७, ६७, —क.
1 डाक का बूत 2 यूपरे का बूत 3 पहाड़ी मानवसु ।
सम०—अंशवम् सोने का कड़ा, —अथक, —अंशः,
—सिद्धिः, —सौल सुनेष पहाड़ के विशेषण, —अभुना
बुधो ते स्वर्णं किल कनकाचलेन सार्धम्— मा० २।९
—आशुना सोने का कड़ा या पूलदान, —आशुना भूपरे
का पीसा, — इच्छु सोने की कुत्तारी-दम्बम्, —इच्छम्
(सोने के डहे वाला) राजच्छत्र, —वम्बु सोने का बना
काज का आभूषण— कीर्तिनि मालवच परिहृत्य कोणात्
अर्धं कृत कनकपत्रमनालपत्न्या— बौ० १०, —परायः
मुनहरी रत्न, —रत्न 1 हृद्यताय 2 विष्णो हृमा सोना,
—सुषम् सोने का हार, —काषदा कनकसूत्रेण हृत्पासोप
विभासित— पंच० १।२०७, —स्वस्वी स्वर्णभूमि, सोने
की धारा ।

कनकवय (वि०) [कनक + वयत्] सोने का बना हुआ,
मुनहरी ।

कनकवन् [?] एक तीर्थस्नान (हार्डार) का नाम तथा उसके
साथ लगी पहाड़ियाँ, (तीर्थ कनकवन् नाम पहाड़ादिभिः
पारयन्) —कनकावन्धरमुनकनक वीरराजाकतीर्थ
यज्ञो कथ्याम्—मेघ० ५० ।

कनक (वि०) [कन् + कुन्] एक जोस का तु० 'काण' ।
कनकित (मा० श० पर०) कन करना, कटाका, छोटा
करना, स्थूल करना—कीर्ति न कनकित च—मट्टि०
१।८।१५ ।

कनकित (वि०) [अतिशयने युवा लस्यो वा—कनादेश
—कन् + कण्ठ] 1 सबसे छोटा, कम से कम 2 आयु
में सबसे छोटा ।

कनकितका [कनकित + कन् + टाप्] अत्ये छोटी अथुकी
—कनकितकाकितितकालिदासा—मुष्मा० ।

कनीलिका, **कनीली** [कनीन + कन् + टाप्, इत्यम्—कन् +
इत् + डीप्] 1 छोटी अथुकी—कनी 2 अंस की
मुसली ।

कनीयत् (वि०) (स्वी०—ही) [अथनयोरतिशयने युवा
अस्यो वा कनादेश, कन् + दियसुन्, सिमाय डीप्] 1 ही
में से छोटा, अपेक्षाकृत कम 2 आयु में छोटा—कनी-
यान् भ्रता, कनीयसी भगिनो भावि ।

कनेटा [कन् + एरन् + टाप्] 1 केटा 2 हथिनी (तु०
कणैया) ।

कन्तु [कन् + तु] 1 कायदेश, 2 हृदय (विचार और भावना
का स्थान) 3 अनाज की लसी ।

कन्वा [कन् + वन् + टाप्] पेशली लगा कन्व, गुरडी, झोली
(जिसे सव्यासी धारण करते हैं)—कीर्ति कन्वा तत्
कित्—भर्तु० ३।७४, १९।८६, मा० शं०, १९, 1 सम०
—आरम्भ सेवनी लगे कपड़े पहनना जैसा कि कुछ
योधी करते हैं,— धारित् (द०) अर्थ-भिन्न, योगी ।

कन्व, —**कन्** [कन् + अच्] 1 गोद्वार अथ 2 गडि—भर्तु०
३।६९ (आल० भी)—आनकद 3 सहस्रम् 4 पत्ति,
—क 1 बाल 2 कपूर । सम०—सूक्ष्म मूली,
—आरम्भ नन्दन-कानन, इत का जवान ।

कन्वदम् [कन् + अट्] श्वेत कमल—तु० कन्दोत् ।

कन्वर, —**रन्** [कन् + व् + अच्] गुला, घाटी— कि कन्वा
कन्वरम् प्रमथयपुत्रता—भर्तु० ३।६९ वनुपाधरकन्व-
रामिलसो—विष्णु० १।१६, मेघ० ५६, —र, अशुका रा,
—रीगुफा घाटी, मोलमांम्यान । सम०—आकारः पहाड़ ।

कन्वः [क कुलितो यो पस्यत्—क० स०] 3 कायदेश
—प्रजनवर्धाम् करव—मग० १०।२८, कन्दर्प इव
कपेय—मर्हो 2 श्रेय । सम०—सूय योनि, —अवरः
काम अवर, वादेश, प्रबल इच्छा, —इच्छ, गिय, —सूक्ष्म
—सूक्ष्म पुरुष की जननेन्द्रिय, लिङ्, —सूक्ष्म 1
मेहन 2 रतिक्रिया का विशेष प्रकार, रतिकर्ष ।

कन्वतः, —**त्म्** [कन् + अलच्] 1 नया अक्षर या अक्षरा
उत्प० ३।५० 2 सिद्धकी, जिन्दा 3 शाल, माल और
कनयोप 4 अक्षरकुन 5 अक्षर स्वर 6 केले का पेड़
—कन्वतदपोस्तत्त्वा पयोविन्धव—अमट ४८, —कः ।
सोना 2 युद्ध, लड़ाई 3 (अत) वायुत्, वादविवाद,
—सम् कन्वत का दूल्—विदलकन्वतकम्पनमालित
—सि० ६।३०, रत्न० १।३।२९ ।

कन्वथी [कन्वत् + डीप्, 1 केले का पेड़ आरक्षतरविभि-
रियं कुमुदीनकन्वथी शालिकर्णं, कोपारत्नवर्धये स्मर-
पत्ति मा शीघ्रं तस्या । विष्णु० ४।५, मेघ० २४,
भर्तु० २।५ 2 एक प्रकार का मृत् 3 हवा 4 कनक-
लता या कनक का बीज । सम०—सुसुषुम्, सुसुसुत्ता ।

कन्वुः (पुं० स्त्री०) [कन्वु + उ, सलोपश्च] पत्नी, लहर ।
कन्वुकः—कन्वु [कन् + वा + इ + कन्] जेलने के लिए गेब,
—नातितीर्षि करभासीरसतयैव कन्वुक—मनु० २।८५,
हृ० १।२५, ५।११, १५, रघु० १६।१३। सम०—जीजा
गैद का सेक ।

कन्वोट (इदः) [कन् + ओटन्] 1 श्वेत कमल, 2 नील
कमल, (नीलोत्पल का प्रांतीय रूप) — मोहमुकुलाय-
माननेत्रकन्वोटयुगल — मा० ७ ।

कन्वरा [क शिरो अल वा धारयति—कन् + वृ + अच्] 1
गर्दन 2 'जलधर' धारक, —रा—गर्दन—कन्वरा ममपहाय
क बरा प्राप्य सपति जहास कल्पयित्— याज्ञ० २।
२२०, अमर १६, दे० 'उत्कन्व' जी ।

कन्विकः [क शिरो अल वा धारयति—कन् + वा + क्ति] मनुष्य,
(स्त्री०) गर्दन ।

कन्वम् [कन् + वत्] 1 पाप 2 मूर्छा, बेहोशो का दौरा ।

कन्विका [कन्वा + कन्, ह्रस्वता] 1 लडकी — सत्रद्वैतानस
कन्विकायि -रघु० १।४२८, १।५३ 2 अविवाहित
लडकी कुमारी, कुँजारी या (अपरिणीता) तपस्वी
—गृहे गृहे पुत्रया कुलकन्यका समुद्रहृत्ति - मा० ७,
याज्ञ० १।१०५ 3 दशवर्षीय कन्या (अष्टवर्षा प्रवे-
द्विती नववर्षा च रोहिणी, दशमे कन्यका प्रोक्ता अत
ऊर्ध्वं रजस्वला -शब्द० ४ (अष्ट० शा० में) अनेक
प्रकार की नायिकाओं में से एक, कुमारी कन्या (जो
किसी काव्यवृत्ति में मुख्य पात्र समझी जाती है) दे० 'अन्य
स्त्री' के नी० 5 कन्या राशि । सम०—छल, कुसलाना—
पैशाच कन्यकाश्छलात्—याज्ञ० १।६१, —अन कुमार्गिया,
—विदात्रमृग्य कुलकन्यकाश्च मा० ७।१, —व्रातः
कुमारी कन्या का पुत्र—याज्ञ० २।१२९ (= कानीन) ।

कन्वितः [कन्व + त्तो + क्] सबसे छोटा भाई—सा कानी
उंगली, — सौ मर के छोटी बहन ।

कन्वा [कन् + वक् + टाप्] 1 अविवाहित लडकी या पुत्री
रघु० १।५१, २।१०, ३।३३, मनु० १०।८ 2 दश-
वर्षीय कन्या 3 असमर्पिता, कुमारी मनु० ८।३६०,
३।३३ 4 (सामान्य) स्त्री 5 छठी राशि अर्थात्
कन्या राशि 6 दुर्गा 7 बही इलायची । सम०—
अन-पुत्रम् नववास, —मुरसिनेत्रिणि कन्यान्तपुत्रे
कन्विकप्रविद्याति—पंच० १, महावी० २।५०, —आह
(वि०) युवती लडकियों का पीछा करने वाला (—इः)
1 घर का भीतरी कमरा 2 जो तपस्वी कन्याओं के
पीछे फिरता रहता है, मुक्ता एक देश का नाम
(—कन्वु) भारत के उत्तर में एक प्राचीन नगर जो
कि गया की सहायक नदी के किनारे स्थित है, वर्तमान
कन्वौ, —गन्वु कन्या राशि में गया हुआ नक्षत्र,
—पहलम् विवाह में कन्या को स्वीकार करना, —बालम्
कन्या का विवाह करना, —पुत्रकम् कौमार्य भंग करना,

शेषः कन्या में दोष का होना, वन्याजी (बैदे कि
किसी रोग के कारण), —कन्वु वहेज, —वतिः पुत्री का
पति, दामाद, बामाता, —पुत्रः कुँजारी कन्या का पुत्र
('कानीन' कहलाता है), —पुत्रम् अमान-जाना, —भर्तुं
(पुं०) 1 जायाता 2 कातिकेय, —एतन्वु सत्यप
सूँदरी कन्या—कन्यारत्नमयीनिगम्य भ्रततामासे
—महावी० १।१०, —रातिः कन्याराति, —कैविल्यु
(पुं०) दामाद (जायाता)—याज्ञ० १।२६२, —कृष्णम्
कन्या के मूत्र के रूप में कन्या के पिता को दिया
गया धन, कन्या का क्यमन्य, —स्वर्ग्वरः किसी कुमारी
कन्या के द्वारा अपना पति चुनना, —हृदयम् कौमार्य-
भंग के विचार से किसी तपस्वी कन्या को चुसलाना
— मनु० ३।३३ ।

कन्वाया, कन्विका [कन्वा + कन् + टाप्, इत्थं वा] 1
तपस्वी लडकी 2 कुमारी (अपरिणीता लडकी) ।

कन्वाभय (वि०) [कन्वा + भयट्] कन्याओं वाला, कन्या-
स्वकप रघु० ६।११, १६।८९, —अन्वु अन्व पुर (जिसमें
अभिकांश लडकियों ही हों) ।

कन्वटः—इन्वु [के मूलिन पट इव आच्छादकः] जालसाजी,
धोकाधेही, धाकाकी, प्रबन्धना—कपटतमय शेषम-
प्रत्ययानाम्—पंच० १।१९१, कपटानुसारकुचाला
—मुष्क० २।५ । सम०—तापस पाश्चमी संन्यासी,
बनावटी साधु, —अन्वु (वि०) धोका देने में बहुत,
छलपूर्ण—छलन्यम् प्रजासत्त्वमनुतेन कपटपटन्वुवाकिकः
— शि० १।५।३५, प्रकल्पः छल से भरी हुई चाल
— हि० १, —कैवल्य जाली दस्तावेज, — बचनम् बोले
की बात, —वैद्य (वि०) बनावटी मेस वाला नकाब-
पोश (—इः) कपटवेशधारी ।

कन्विकः [कपट + कन्] बचनार्थ, छलिया ।

कन्विकः—कन्विकः [कन् + विक् + क्त, बलीय पर, कन्व वधा-
जलस्य परा पूरनेन वापयति सुभ्रति -क + पर + ईप्
क, कपट + कन् वा] 1 कौडी 2 जटा (विशेषतः
शिब का जटाजूट) —व्या० २२ ।

कन्विका [कन्विक + टाप्, इत्थम्] कौडी (जो सिक्के के
रूप में प्रयुक्त होती है) —विद्याभ्यसिचतो वासि
यस्य न स्तु कन्विक (ईं) का—पंच० २।१८ ।

कन्वित् (पुं०) [कन्व + इति] शिब की उपाधि ।

कन्वाटः—इन्वु [कं माल वादयति तद्वगति पण्डित—सारा०,
क + पट् + गिष् + अन्] 1 किबाड़ का फलक या चिन्ना
—कपाटवृक्षा परिवर्तकम्बर—रघु० ३।३५, स्वर्ग-
द्वारकापाटपाटनपटुर्बर्गोपि नोपाजित—भर्तुं ३।११
2 दरवाजा—शि० १।१।६० । सम०—उक्तात्मन्
दरवाजा कोलना, अः सेव लयने वाला, बौर,
—अग्निः कौमार्य के दिनों का बोज ।

कन्वातः—कन् [कं शिरो अलं वा धारयति—क + धाक्

• मन्च] 1. कोपड़ी, कोपड़ी की हड्डी—चूडापीठ
 कपालसङ्कुम्भलग्गन्ध्याकिनीवारय - सा० ११२, उद्यो
 वेन कपालपाणिपुष्टके विष्णुाटन कारित-सं० २१९५
 2. दूटे वर्तन का छंड, ठीकरा, कपालेन पिशाची
 -सं० ८१३३ 3. समुदाय, संघ 4. मिथुक का
 कटोरा—सं० १५४ 5 प्याला, वर्तन—पञ्चकपाल
 6. हकन । सम०—वाणि, - भू, -वाणि, -
 -धिरत् (पु०) शिव की उपाधि, -माकिनी
 रूपरिची ।

कपालिका [कपाल + कन् + टाप्, इत्थम्] ठीकरा—सं०
 ४१७८, ८१२५० ।

कपालिन् (वि०) [कपाल + इनि] 1 लोपरी रखने वाला,
 -- यात्र ० ३१२४३ 2 कोपड़ी पहने हुए—कपालि वा
 स्वाद्यपनेम्बुजम् (बपु) --सं० ५१७८, (पु०) 1.
 शिव का विशेषण, - कर कर्ण कुर्वत्पि किल कपालि-
 प्रभुयम्—गया० २८ 2 नाथ जति का पुत्र्य
 (ब्राह्मण माता तथा मछले पिता की स्तान) ।

कपिः [कम् + इ, नलोप] 1 समूर, बन्दर—कपेरत्रासि-
 पुनावात्—भट्टि० ११११२ हाथी । सम०—ब्राह्म्यः
 धूप, लोबान आदि, -इष्यः 1 राम का विशेषण, 2
 सुधीय का विशेषण, - इन्द्रः (बन्दरो का मुखिया) 1
 हनुमान का विशेषण—तदपति ददर्श वृत्तान् ५५०
 -भट्टि० १०११२ 2 सुधीय का विशेषण—अस्य
 वच कपोप्रसव्यमपि मे—उत्तर० ३५५ 3 जाबवान्
 का विशेषण, -कण्ठः (स्त्री०) एक प्रकार का पीपा,
 केबाँच, -केलन, -प्रवजः अर्जुन का नाम, भग० १।
 २०, -कः—लैलम्, -नामन् (सपु०) शिलाजीत,
 गुग्गुल, - प्रभुः राम का विशेषण, सोहृन् पीतल ।

कपिलम्बकः [क + पिच् + कल्च्] 1 पपीहा 2 टिटिहुरी ।

कपिलः [कपि + स्वा + क] केश का बूझ, -रथम् केश का
 फल । सम०—ब्राह्म्यः एक प्रकार का बन्दर ।

कपिल (वि०) [कम्प + इत्थच्, पाठेभ] 1 भूरे रंग का,
 भारत-बलाय कपिला विद्युत्—महा० 2 भूरे बालो
 का—सं० ३१८ (कुम्भ०—कपिलकेता), -कः 1
 एक ऋषि का नाम (सगर के साठ हजार पुत्र थे,
 अपने पिता के महीय बौड़े को बुद्धते हुए वे कपिलमूर्ति
 ले लक्ष वर्षों और उन पर शोभा बुराने का आरोप
 लगाया इच्छते मूढ ही कपिल ने इन सब को मरन
 कर दिया—वे० उत्तर० ११२३) यह साध्य वर्तन का
 प्रवर्तक मन्त्रा जाता है 2 कुला 3 लोबान 4 वृष
 5 अग्नि का एक रूप 6 भूरा रंग, -ला 1 भूरी गाय
 2 एक प्रकार का सुगन्धित इष्य 3 एक प्रकार का
 घाहुरी 4. कौक । सम०—अश्वः रथ की उपाधि,
 -शुक्तिः सुर्ग, -बारा गया की उपाधि, -स्मृतिः
 (स्त्री०) कपिल मूर्ति का साक्य-भूषण ।

कपिल (वि०) [कपि + ष] 1 भूरे रंग का, सुन्दरी 2.
 आरकत—(छाया) सध्यापमोरकपिया पिशितातानाम्
 - सा० ३१२७, तीर्थे काचनपधरेपुकपिष्ठे— ७११२,
 विष्णु० २१७, मेघ० २१, रघु० १२१२८, -कः 1
 भूरा रंग 2 शिलाजीत या लोबान, -सा 1 प्रायची
 खता 2 एक नदी का नाम ।

कपिशित (वि०) [कपि + शितच्] भूरे रंग का—शि०
 ६५ ।

कपुष्कलम्, कपुष्पिका [कस्य शिरस पुष्कलम् लाति—क
 + पुष्क + ला + क—कस्य शिरस पुष्कये पोषणाय
 कायति— क + पुष्क + क + क + टाप्] 1 मुखन-
 सस्कार 2 शिर के दोनों ओर रखे हुए केसरमूह ।

कपुय (वि०) [कुशितन पुषते—कु + पू + मच्, पूषो
 उलोप] अश्व, निकम्भा, कमानो, नीच ।

कपोतः [को वात पोत इव मस्य—ब० सं०] 1 पारायत,
 कबूतर 2 पक्षी । सम०—अर्द्धाक्ष एक प्रकार का सुग-
 धित इष्य, -अश्वजन्म सुर्ग, -अरि बाघ, शिकरा,
 -अरथ एक प्रकार का सुगन्धित इष्य, -बायिका,
 -वासी (स्त्री०) विडिवावर, कबूतरो का डबडा,
 कबूतरो की छतरी, -राजः कबूतरो का राजा, -सारम्
 सुर्ग, -हस्तः, इर वा अनुनय-विनय के अक्षर पर
 हाथ जोड़ने का इश ।

कपोतक [कपोत + कन्] छोटा कबूतर, -कम् सुर्ग ।

कपोलः [कपि + ओलच्] गाल—शामशामकपालमानम्
 - वा० ३१०, ५१६, रघु० ५१८ । सम० काच
 जिमसे गाल मसले जायें—कि० ५१६९, -कलक पीडे
 गाल, -मिति (स्त्री०) कनपटी और गाल, चौडा
 गन्धस्वल्प, -तु० गन्धभिति, -राम गालों की लाठी ।

कफ [केन जलेन फलति—कन् + इ तारा०] 1 अश्वजन्-
 कफ या इलेफा (शरीर के तीन रसों में से एक—सोप
 दो हैं—वात और पित्त) कफापचयाहारोर्षकमन्त्रभा-
 शायामिदीपित—दश० १६०, प्राणप्रयाणममये
 कफतापित्तं कफावरोधनविधौ स्मरण कुतसे—उद्भुट
 2 रसीला श्रावण, रस । सम०—अरि सौंड, -बुधिका
 मार, बुक, -अथ केकडे का शय रोग, -अम्, -मास्य,
 -हृद (वि०) कफ की दूर करने वाला, कफ नाशक,
 -अश्वरः बलम अधिक हो जाने से उत्पन्न बुधार ।

कफानि, कफोनिः (स्त्री० - बी) [केन कुशलेन फलति स्फु-
 रति—क + फन् + इन्, क + फन् (स्फुर्) + इन् पूषो०
 कफोणि + औष] कोहली ।

कफल (वि०) [कफ + लच्] बिसे कलमय अधिक बाता हो,
 कफप्रकृति ।

कफिन् (वि०) (स्त्री० - बी) [कफ + इनि] कफ की अधि-
 कता से पीड़ित, कफग्रस्त ।

कफव्यः—वच् [क मुचं वम्याति—क + वच् + वच्] शिर-

रहित बंध (विशेषतः जब कि उसमें प्राण बाकी हों) (स्व) नृत्यकर्मणं समरे दत्तं - रघु० ७।५१, १२।४२, -क० 1. पेट 2 बाइल 3 बूबकेतु 4 राहु 5 जल (इस अर्थ में यह लब्ध नरु० भी होता है) - जि० १६।१७ 6 रामायण में बणित बलदास राजस (अब राम और लक्ष्मण दण्डक वन में रहते थे तो एक बार कनक राजस ने इन पर आक्रमण किया परन्तु युद्ध में मारा गया कहते हैं कि इन्हें डारो ताप दिवें जाने से उमे राजस का रूप धारण करना पडा और जब तक कि राम और लक्ष्मण ने नहीं मारा वह राजस बना रहा) ।

कबर, -री (प्राय कबर, -री लिखे जाते हैं) ।

कवित्वः [कविपत्र पृषो० साधु] कौष का वृक्ष ।

कम् (चुरा० जा०-कामपते, कामित, कात्) 1 प्रेम करना, अनुरक्त होना, प्रेम करने लगना - कर्म्ये कामयमान मां न त्व कामपते कम् काव्या० १।६३, (प्राप्त्यना का एक उदाहरण)-कर्मण्यसौ मन्मारिकां कामपते -मा० १ 2 प्रबल लगाना करना, कामना करना, इच्छा करना -न शीरम् शब्दमकामयेताम् -रघु० १।४।४, विष्णुस्मृत्यं चकमे सुबैरात् ५।२६, ५।२८, १०।५३, अट्टि० १५।८२, अत्रि-1 प्रेम करना 2 बाहना, वि-इ-अ-अधिक बाहना, प्रबल इच्छा करना ।

कमठ [कम्+अठम्] 1 कठुवा -संप्राप्त कमठ स चापि नियत नाट्यनवादेशत -पञ० २।१८४ 2 बहि 3 जल का बहा, -डी कडकी वा छोटा कठुवा । सम० -पति कठुवा का स्वाभौ ।

कमच्छन् -लु [कस्य जलम् पश्य लाति क+मच्छ+ला+ङ्] (लकड़ों या मिट्टी का) बलराज भी सम्भावी रगते हैं, -कमच्छन्लुपुनोऽन्नात्यन्तुत्यागो बहुवचह -हि० २।९१, कमच्छलनीयक मिकरा०-अम्० २।६४, वाक० १।१३३ । सम० सक्षः बहु वृक्ष जिसके कण्डल जलते हैं, -अरः शिष का विशेषण ।

कमन (वि०) [कम्+त्यट्] 1 विपयी, लम्पट 2 मनोहर सुन्दर, मः 1 कामदेव 2 अशोक वृक्ष 3 बड़ा ।

कमनीय (वि०) [कम्+अनीयर्] 1 जो बाह्य आय, बाह्य के माध्य, -अन्यकारीकमनीयमकुम्-कु० १।३७ 2 मनोहर, सुहावना, सुन्दर-मात्स्यवचनकमनीयपरिच्छ-दानां-कि० ७।४०, तदपि कमनीयं वपुरिचम्-स० ३।९ अने० पा० ।

कमर (वि०) [कम्+अरच्] विपयी, इच्छुक ।

कमलम् [क जलमपति धृषयति कम्+अम्+अच्] 1. कमल -कमलमन्मसि कपले च कुबलये तापि कतक-लतिकायाम् -काव्य० १०, इती प्रकार हृत्, नेष चरन् बादि 2. लक 3. लीला 4. एवाचार, लीचवि

5 तारल यकी 6 चुपासव, -कः 1. भारत पत्ती 2 एक प्रकार का वृक्ष । लम्० -अली (स्त्री) कमल यैती अलिं बाली स्त्री, -आलः 1. कमलों का समूह 2. कमलों से बरा सरोवर, -मात्स्यना लफनी की उपाधि -मुद्रा० २, -मात्स्यः कमल पर विरत, बड़ा -मात्स्यनि पूर्व कमलाशनेन-कु० ७।७०, -ईक्ष्वा कमल जैसे नेत्रों वाली स्त्री, -जुषम् कुमुद का फल, -छिन्नम् कमलों का समूह, -कः 1. बड़ा का विशेषण 2 रोहिणी नाम का नक्षत्र, -अव्यम् (दु०)-अवः, -योगिः, -संक्षः कमल से उत्पन्न बड़ा की उपाधि ।

कमलकम् [कमल+कम्] छोटा कमल ।

कमला [कमल+अच्+टाप्] 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 श्रेष्ठ स्त्री । लम्० -अलिः, -सक्ष विष्णु की उपाधि ।

कमलिकी [कमल+दिग्+अनीप्] 1. कमल का पौधा; -साधुऽशुद्धि स्वकमलिकीं न प्रवृत्तां न सुताम् -नेष० ९०, रत्नानुर कमलिकीहृति सर्वाभि-मा० ४।१०, रघु० १।३०, ११।११ 2 कमलों का समूह 3. कमल-स्वकी (जहाँ कमल बहुतायत से हो) ।

कमा [कम्+मिक्+अ+टाप्] सौदर्य, मनोहरता ।

कमित् (वि०) (स्त्री०- सौ) [कम्+तृच्] विपयी, लम्पट ।

कम् (स्वा० मा०-कम्पते, कमित) हिलना-डुलना, कांपना, इधर-उधर जाना-जाना (आल० भी) -चकमे तीर्थलीहृते तस्मिन् प्राध्यायिषिवेधर -रघु० ५।८१ मृच्छ० ५।८, अट्टि० १५।३१, १५।७०, अम्-तरत जाना, कचना करना-नीचमाना भविष्यार्थ कम्पते नानुकम्पते मृच्छ० ५।८, कि बराकी नानुकम्पते मा० १०, (प्रेर०), तरत जाना-कु० ५।३९, आ-हिलना-डुलना, कांपना, (प्रेर०) हिलाना-डुलाना, कांपना -अनौकहाकम्पितपुष्पमन्वी-रघु० २।१३, अमु० ६।२२, अ-हिलना, कांपना -प्राकम्पत मृक्ष सव्य -रामा०, प्राकम्पत महाशैल-अहा०, (प्रे०) हिलाना, चलाना-अट्टि० १५।२३, वि-हिलना, कांपना, -कि वासि बालकवलीय विकम्पमाना-मृच्छ० १।२०, स्फुरति बलन नाभो बाहुर्मुह्यव विकम्पते-१।३० मय० २।३१, (प्रेर०) हिलाना-डुलाना-रघु० ११।१९, अमु० २।१७, लम्पु तरत जाना, कचना करना -रघु० १।१४ ।

कम्पः [कम्प+अच्] 1 हिल-डुल, धरधराहट-कम्पेन कपित्तरितमुद्रा मुग्धो-रघु० १।१४४ बरा हा तिर हिला कर वा मोड़ कर, १।३८, कु० ७।४६ अकम्पः, विष्णुकम्प बादि 2 स्वरित स्वर का क्वात्वर, -वा हिलाना, चलायमान करना, धरधराहटः । लम्० -अविस्त (वि०) कम्पायमान, लुम्प, -लम्पम् (दु०) वा ।

कम्पन (वि०) [कम्प + पुष्] कम्पायमान, हिलने वाला,
—नः शिदिर ऋतु (नवम्बर, दिसम्बर)—नम्

1. हिलना, कपकपी 2 लडखडाता उच्चारण ।

कम्पाक [कम्पाय चलनेने कायति—कम्पा + कै + क]
वायु ।

कम्पितम् = कापितल ।

कम्प (वि०) [कम्प + र] हिलने वाला, कम्पायमान,
चलायमान, हलचल पैदा करने वाला—विपाय
कम्प्राणि मुञ्चानि क प्रति - नै० १।१४२ कम्प्रा शाला
—सिद्धा० ।

कम्प (म्भा० पर०)—कम्पति, कम्पित) जाना, चलना—
फिरना ।

कम्पार (वि०) [कम्प + अरन्] रगविरला,—र. चिन्-
विधिच रग ।

कम्पलः [कम् + कम्प, बुकायम्] 1 (ऊनी) कवल—कम्पल-
कवल न बाधते शीतम् सुभा०, कम्पलावृत्तेन तेन - हि०
३ 2 सान्ना, माय बेल के गले में नीचे लटकने वाली
खाल 3 एक प्रकार का मूय 4 ऊपर से पहनने का
ऊनी बस्त्र 5 वीधार, - कम्प जल । सम० - बाह्यकम्प
बहली (पारो ओर मोटे कपड़े से ढकी हुई गाड़ी
जिसमें बेल जुते हो) ।

कम्पलिका [कम्पल + ई + कम्प + ह्रस्व, टाप्] 1 एक
छोटा कवल 2 एक प्रकार की मूगी ।

कम्पलित् (वि०) [कवल + इति] कम्पल से ढका हुआ,
—(पु०) बेल, बलीयर्द । सम० - बाह्यकम्प बहली
(मोटे कवल से ढकी गाड़ी जिसमें बेल जुते हो),
बेलगाड़ी ।

कम्पी (बी) (म्भी०) [कम् + विन् वा० क्रीप्] कपड़ी,
बन्धक ।

कम्पे (वि०) (म्भी०) बुया ह् चितकवरा, रगविरला,
—म्पे...व् (पु०, लपु०) धाल, शीपी रगररय
कम्प किमप चकासित दिवि तिलोकी जयवादीय
नै० २२।०२, - वृ. 1 हाथी 2 गर्दन 3 चित्रविचित्र
रग 4 सिरा, शरीर की नस 5 कडा 6 नलीनुमा
हुई। सम० - कंठी धाल वैनी गर्दन वाली म्भी,
—पीषा 1 लक्ष्मणा गर्दन (अर्थात् धाल की भांति
तीन देवाओं में युक्त—यह चिह्न सीमायामुषक
समझा जाता है) 2 म्भी जिसकी गर्दन धाल जैसी
हो ।

कम्पोजः [कम्प + ओज] 1 लय 2 एक प्रकार का हाथी 3
(ब० व०) एक देश तथा उसके निवासी—कम्पोजा समरे
सोपु लस्य बोधमनीयवरा - म्पु० ४।६९ अने० पा० ।

कम्प (वि०) [कम् + र] मनीहर, सुन्दर ।

कर (वि०) (म्भी०)—रा, री [प्राय समास के अन्त
में] [करति, कीर्यते अनेन इति, कृ (कृ) + अय]

जो करता है या कराता है, दुःख, सुख, भय, -रः
1 हाथ कर व्याधुन्वया विरसि रतिज्ञवन्मचरम्
—स० १।२४ 2 प्रकाश-किरण, रश्मिमाला—यमु-
द्धर्तु पूषा व्यवसित इवालम्बितकर—विक्रम० ४।३४,
प्रतिफलतामुपगते हि विषो विफलत्वमेति बहुधा-
नता, अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून् पतिष्यत कालेह-
मपि - सि० १।६ (यहाँ मन्त्र प्रथम अर्थ में भी
प्रयुक्त हुआ है) 3 हाथी की सूँड़,—सेक सीकारणा
करेण चित्ति - उत्तर० ३।१६ भर्तु० ३।२० 4
लगान, शूलक, भेंट—युवा करकान्तमहीभुजुषकरै-
सद्य मप्रति तेजसा रवि - सि० १।१० (यहाँ 'कर'
का अर्थ 'किरण' भी है) (दरौ) अपरान्तमहीषा-
व्याजेन रचये करम् रघु० ४।५८ मनु० ७।१२८
5 ओला 6 २४ अंगुठे की माप 7 हस्त नाम नक्षत्र ।
सम० अक्षम् 1 हाथ का अन्त भाग 2 हाथी के
सूँड़ की नोक आधातः हाथ से की गई बाँट,—आरोट-
अंगुठी,—आलम्ब हाथ में सहाय देना, महायक बनना
- आशुतोः 1 छाती 2 वपुः, -कटक, - कम् ताकुन,
—कमल,—पञ्चमम्, पञ्चम कमल जैसा हाथ, सुन्दर
हाथ—कर्ममन्त्रितोर्गम्बुनीवारजम्पे—उत्तर० ३।२५,
- कलसा, - शम्प हाथ की अर्जति (पानी लेने के
लिए), - किसलय,—यम् 1 कोपल जैसा हाथ,
कोमल हाथ - करकिसलयन(कैर्य)धया नर्यमानम्
—उत्तर० ३।१९, ऋतु० ६।३० 2 अंगुलि, कीचः
हथेली का गर्न इत्याजति येयम्—घट० २२,
पहः—पहणम् 1 लगान या शूलक लेना 2 बिबाह में
हाथ पकड़ना 3 विबाह, पहह 1 पनि 2 शूलक लेने
वाला, - ज नाम्बन - तीक्ष्णकरञ्जुष्णाल्—वेणो० ६।१,
इन्वी प्रकार अयम् ८४ (अम्) एक प्रकार का मुगविच
इव्य, - जालम् प्रनारा की धारा,—सह, हथेली -
बनदेवनाकरनर्त शं० ६।४, करननवतमपि नयति
यम्पु तु भवितव्यना नास्ति—पथ० ३।१२४, आषकलम्
(शा०) हथेली पर रक्ता हुआ अक्षिप—(आळ०)
प्रयोजन्य की भुगमता तथा स्पष्टता जैसा कि
हथेली पर रक्त कल के विषय में स्वाभाविक है—तु०
कल्पलामलकफलवदिविच जयदालोकपयता—का० ४३,
—स्व (वि०) हथेली पर रक्ता हुआ, - ताक्षः,—ताल-
कम् 1 तालियाँ बजाता म जहास दत्तकरताल-
मूचर्क सि० १।५।३९ 2 एक प्रकार का बाध-जप,
मभवत शीष,— तालिका, - ताली 1 तालियाँ बजाता
—उत्तराटनीय करतालिकादाभादिदानी भवदोभिरेष
—नै० ३।३ 2 तालियाँ बजा कर समय बिताना,
- तोषा एक नदी का नाम, इ (वि०) 1 लगान
या शूलक देनेवाला 2 महायक करदोहताविष्णुना
भेदिनीस—वेणो० ६।१८,—पञ्चम आरा,—पथिका न्मान

या बल-श्रीवा करते समय बल उछालना, -स्वल्पः
1 कोमल हाथ 2 अगुलि-तु० किस्तल, -बलः,
-पालिका, 1 तलवार 2 कुदासी, -वीर्यम् विबाह
तु० पाणिपीडन, -बुधः दोनों हाथ मिला कर (दोनों
की भाति) बनाई हुई अस्त्रि, -बुधम् हृत्पेली की
पीठ, -बालः, -बालः 1. तलवार - अचोरघट कर-
बाकपाणिभ्यांपादित -ना० ९, स्नेहनिबहनिचने कल-
यसि करबालम्-गीत० १ 2. नासून, -धारः लयाण
का मुक्त की भारी राशि, धूः नासून, -भूषणम् कडा
या ककण आदि कलाई में पहनने का पहना, -नास.
धुकी, धुक्लम् बडा हथियार-दे० आपुच, -बह. 1
नासून अनाघ्रात पुष्प किलकयमलून करवई -ग०
२१२०, मेघ० ९६ 2 तलवार, -बीरः, -बीरक-
1 तलवार या लक्षण 2 कब्रिस्तान 3 बाँद देवा का एक
नगर 4 कनेर, -शाखा अगुलि, -शोरकः हाथी की
सूड द्वारा फेंका हुआ पानी, धूकः नासून, सावः -
किरणो का मद पड़ जाना, -सुम्भ तदना या विबाह-
सुत्र जो कलाई में बांधा जाता है, -स्वाभिन् (५०)
निब, -स्वभः तालियाँ बजाना ।

करकः कम् [किरति करीति वा जलमत्र कृ (कृ) +
कृन्] (सन्वासी का) जलपात्र-बा० ६१, -क
अनार का वृक्ष, -क, कम्, -का ओला, -तान्कुर्वी-
धान्यमुलकाकावृष्टिपातावकीर्णान्-मेघ० ५४, भाति०
११२५, 1 सम० अम्भस् (५०) नारियल का पेड़,
-आशार ओला की बीछार, -जम् पानी, -पारिष्का
मन्यामियों का जलपात्र ।

करकः [कम्प रङ्ग इव प० त०] 1 अग्निपत्र 2 लोपडी
-प्रत-रङ्ग करकूट कृष्णादग्निस्तथ स्वपुटयतमपि
कथ्यमव्ययमति-मा० ५११६, ५११९ 3. (नारियल
का बना) छोटा पात्र, छोटा बरस या डिम्बा - जैसा
कि 'ताम्बलक' रङ्ग बाहिनी (कादम्बरी में प्रयुक्त) ।

करकः [क गिराजल वा रञ्जयति -ताग०] एक वृक्ष का
नाम (इससे औषधियाँ तैयार की जाती हैं) ।

करट [किरति मरम्-कृ + अटन्] 1 हाथी का गडस्थल
2 कुमुभ का फूल 3 कौवा ता० ५११९ 4
नास्तिक, ईश्वर और वेद में विद्वान् न रखने वाला
5 पतिन बाह्यण ।

करटक [करट + कन्] 1 कौवा मुच्छ० ७ 2 चौर्य
कला व विज्ञान का प्रयोगकर्त्तार 3 हि० और
पच० में गीदह का नाम ।

करटिन् (५०) [करटः + इनि] हाथी दिग्गले ध्रुयने मर-
कमिनागडा करटिन् भाति० ११२ ।

कर (रे) कृ [कृ, अट्, के अने वाणी वा देटति क +
टट् ; कृ] एक प्रकार का पक्षी, मारम ।

करकम् [कृ + कृत्] 1 करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न
३२

करना, कार्यान्वित करना, प० अहो, सख्यां, श्रियं
आदि 2 कृत्य, कार्य 3. पार्षिक कृत्य 4 अक्षयपत्र,
पत्रा 5 इन्द्रिय -बुधा करणोश्चितेन वा नियतस्यौ
पतिमप्युपातयत्-रघु० ८।३८, ६०, ६० करकरी प्रातिभि -
मेघ० ५, रघु० १४।५० 6 गरीर-उपमानममुद्रिकासिना
करण यथाव कातिमयाया-कु० ४।५ 7 कार्य का
माधन वा उपाय - उपमितिकरणमुपमानम् - तर्क सं०
8 (तर्क० में) साधनविषयक हेतु जिसकी परिभाषा
है व्यापारवदसाधारण कारण करकम् 9 कारण
या प्रयोजन 10 (व्या० में) करण कार्य द्वारा अनि-
व्यक्त अर्थ-साधकनम कारणम्-पा १।५४२ या
क्रियाया परिनिष्पत्तिर्गृहापाराधनतरम्, विवक्षयने
यथा वच करण ततदा स्मृतम् 11 (विधि में) दम्भा-
बेज, तमम्भुक, किलित प्रमाण-मनु० ८।५१, ५२, १५४
12 लयात्मक विगमविशेष, समय काटने के लिए
ताली बजाना-कु० ६।४० 13 (व्योपिध में) दिन का
एक भाग (यह करण मिनटों में ११ है) । सम०-अक्षि-
जान्मा, -शामः इन्द्रियो का समूह-शाम्य गिर ।

करकः [कृ + अकृन्] (बाग की धनी) छोटी इन्डिया या
टोकी करकृषोडिततयो मोर्गिन जर्न० २।८४,
मर्मभाषाकण्ठम् १।७३ 2 मधुमक्षिणो का छला
3 तलवार 4 एक प्रकार की बरस, कारकव ।

करकिका, करकरी (करी०) [करकृ + क्रीप्, टाप्, ह्य
वाम का बना छोटा मनुक, बाग की पिटारी ।

करक्यव (वि०) [कर + कृ + यच्, मुम्] हाथ धूमन
वाला ।

करकः [कृ + अकृन्] 1 हाथ की पीठ (कलाई से लेकर
नाखून तक) -मलहन्, जैसा कि 'करभोगमोर्क'
-रघु० ६।८३ में, दे० नी० कर्मोर्क 2 हाथी की
सूड 3 हाथी का वृन्वा 4 ऊँट का वृन्वा 5 ऊँट 6
एक मुपधित इवम् । सम०-कृक, (रभी०) वह स्त्री
जिसकी जघाएँ हाथ के अग्रभाग की पीठ से मिलती
जुलती हैं -अङ्गु निषाय करभोर यथामुक्त ते -ग०
३।२१, वि० १०।६९-अमह ६९, (हृत्सरी व्याख्या
के अनुसार) -जिसकी जघाएँ हाथी के सूड से मिलती
जुलती हैं ।

करकः [करम् + कन्] ऊँट ।

करदिन (५०) [करम् + इनि] हाथी ।

करम्ब, करम्बित (वि०) [कृ + अम्बच्, करम्ब + इन्च् च]
1 मिश्रित, मिला-जुला, चिपचिपिचिप, रघुविरया, -प्रकाय-
मादित्यवसाय कण्ठकी करम्बिता मोदभर विदुष्यती-
नी० १।११५, अट्टनग्येनकदम्बरकरम्बितमि वमनाजल-
पुरम् नीम० ११ 2 बेठाया हुआ बड़ा हुआ ।

करम्ब (क) [कृ + रम्ब + घञ्] 1 दही मिला बाटा
या लम्ब औषधपदार्थ 2 कौबड -करम्बबालकता-

पान्-यन्० १२७६, (यहाँ इस शब्द की अनेक व्याख्याएँ की गई हैं, परन्तु मेधातिथि इसका अर्थ 'कीचड़' ही मानते हैं) ।

करहाटः [कर + हट् + णिच् + अन्] 1 एक देश का नाम (सम्भवतः बनारस जिले का वर्तमान कर्हाट), -करहाट-पते पुत्री विजयनेत्रकामर्गम् विक्रमांक० ८१२ 2 कर्मल का डठल या रेहोदार बड़ा ।

करवाल (वि०) [कर + वा + ला + क] 1 अथानक, नीपक, डराबना, भयकर-उत्तर० ५१५, ६११, मा० ३, भय० १११३, २५, २७, रघु० १२१८, महावी० ३१४८ 2 जभाई लेता हुआ, पूर्णतया खोला हुआ -उत्तर० ५१६ 3 बड़ा, विस्तृत, जैसा, उत्तम 4 असम, जिसमें अटका या हुचकोला लगे, गोकचड़ -वेणी० ११६, मा० १३८, -सा दुर्गा का प्रचण्ड रूप, 'आयतनम्, न करालोपहारोऽप्य कलमन्वादिभाष्यते--मा० ५१३३, 1 सम०--बन्धु डरावने दैतों वाला, -ब्रह्मा दुर्गा की उपाधि ।

कराकिकः [करागा करसमुद्रसाखानाम् आलि श्रेणी यत्र -ब० सं० कर्] 1 वृक्ष 2 तलवार ।

करिका [कर + अच् + क्रीप् + क्त, टाप् ह्रस्व] श्लोक, नवावात से हुआ पात्र ।

करिणी (स्त्री०) [कर + इनि + क्रीप्] हृषिनी - कय-मेत्य मतिविपर्यय करिणी पञ्चमिवायमोदति-कि० २१६, भाषि० ११२ ।

करिम् (पु०) [कर + इनि] 1 हाथी 2 (गण०) आठ की संख्या । सम०--इन्द्र, -ईश्वर, -बर बड़ा हाथी, विशालकाय हाथी--सदायान् पश्चिमी तस्त एव करोत्स्वर -पत्र० २१७०, दूरीकृता करिम्बरेल मदान्मुदप्या नीनि २, -कुम्भ हाथी के मस्तक का अग्रभाग यामि० २१७७, यजित्स्व हाथी की चिथाइ, (बुद्धि करिगाजित्स्व-अमर०), -सैतः हाथी शक्ति-कः महाबल, -सौतः, -बाबः, -शास्त्रकः हाथी का बच्चा, -संभः स्तम्भ जिससे हाथी बाधा जाय -भाष्यः सिंह, -पुत्रः गणेश का विशेषण, -बरः--इन्द्र, -संभवली (पु०) बड़ा ओ हाथी के हाग ले जाया जा रहा हो, -रुक्मः हाथियों का समूह ।

करीरः [कृ + ईरन्] 1 बास का अक्षुर 2 अक्षुर-आनि-नियरे बसकरीरलोले -सि० ५१४३ काटदार वृक्ष जो अस्स्थल में पैदा होता है तथा जिते उठ जाते हैं, -पत्र नैत्र यथा करीरपिपेटे दोषो वसतस्य किम् -मर्तु० २१९३, पु०--कि पुष्पे कि फलैस्तस्य करी-रस्य दुरात्मन, येन बुद्धिं समासाध न कृत पत्रसहह । -दुर्मा०, 4 पानी का बड़ा ।

करीरकः-कम् [कृ + ईरन्] कृष्ण गोबर । सम०--अग्निः वृषे गोबर या शंभो की बाण ।

करीरकृष्णा [करीय + कृ + णच्, नृन्] भवत धाम्पु या श्वीय ।

करीरिणी [करीय + इनि + णीप्] सर्पिणी की अघिट्यागी देवी ।

करुण (वि०) [करोति मन आनुकूल्याय, कृ + उरन् --तारा०] कोमल, मासिक, रदनीय, करुणाजनक, शोचनीय--करुणध्वनि-उत्तर० १, सि० ११६७, विपलकचक्रैरायंचरिते--उत्तर० ११२८, -मः 1 दया, अनुकम्पा, दयालुता 2 करुण रस, शोक, रज (आठ या नौ रसों में से एक)--तुटपाकप्रतीकाधो रायस्य करुणो रस-उत्तर० ३११, १३, विलयन्... करुणाभिधायित शिवां प्रति-रघु० ८१००, 1 सम०--सन्तोषी मलिका का पीया, -विश्रमन्मन् (अस० शा० में) विद्युक्तावस्था में प्रेय-भावना ।

करुणा [करुण + टाप्] अनुकम्पा, दया, दयालुता--प्राय सर्वो भवति करुणावृत्तिरादान्तरात्मा मेष० ९३, इसी प्रकार 'मकरुण'--सत्यं तथा 'अकरुण'--निर्दयं । सम०--आइं (वि०) कोमल-दुःख, दया से पसीजा हुआ, सवेदनशील, -निधिः दया का भण्डार, -पत्र, -ज्व -वि०) अत्यन्त कृपालु, -विमूढ (वि०) निन्द्य, क्रूर--करुणाधिमुक्तेन मृत्युना-रघु० ८१६७ ।

करुटः [कर + अट् + अच्, अलृक् सं०] अगुली का मासुल ।

करुणः [कृ + णच्--अवशा के मानने रेवुरस्य नार०] 1 हाथी, -करुणारोहयते निषादिनम् सि० १२१५, ५१४८ 2 कर्णिकार वृक्ष, -कृ (स्त्री०) 1 हृषिनी -ददौ रसात्कजरेभृषणिवि गजाय मध्वयजल करेभु कु० ३१३७, रघु० १६१६ 2 पालकाय की माता । सम०--कृ, -मुस हस्तिविज्ञान का प्रवर्तक पालकाय ।

करीरटम्, करिदिः (स्त्री०) [कृ + अट् + अच्, इत वा] 1 शीपरी--महावी० ५१९२ कटोरा या पात्र ।

कर्कः [कृ + क] 1 कैंकड़ा 2 कर्क रासि, षतुर्बरासि 3 बाण 4 जलकुम्भ 5 दर्पण 6 मञ्जर बोझ ।

कर्कटः--टक् [कर्क + अट्, स्वार्थे कृच्] 1 कैंकड़ा 2 कर्करासि, षतुर्बरासि, 3 वृक्ष, बैरा ।

कर्कटिः, टी (स्त्री०) [कर + अट् + इत्, लक्० पर-ल्यप्, ङीप्] एक प्रकार की ककड़ी ।

कर्कटुः, कृ [कर्क कर्कट दधाति -वा + कृ] 1 उखाव का पैर-कर्कटुफलपाकविषयपचमात्रे परिस्तीयो वेत्त-५११, कर्कटुनामुपरि तुष्टिन् रज्जयत्स्रष्टभ्या -ब० ५, अने० शा० 2 इस वृक्ष का फल--वाङ्म० ११२५० ।

कर्कर, (वि०) [कर्क + रा + क] 1 कठोर, ठोस 2 वृक्ष, -रः 1 हृषीका 2 दर्पण 3 हृदी, (शोषणी का) वन टकड़ा, शंभु, -वा० ५११९ 4 फोला वा चमड़े की

पेटी । सप्त-—अक्षः द्विकृती पृष्ठ बाह्य (अक्षय)
पत्नी, —अक्षः सज्जन पत्नी, - संयुक्तः अथा कुत्री, पु०,
अथकथ ।

कर्कराजः [कर्कं हास रटति प्रकाशयति, कर्कं + रट् + कुञ्ज्]
तिरछी इष्टि, कनकी, कटाक्ष ।

कर्कराजः [कर्करं + अक्ष् + अक्ष्] बुधराजे राज, पूर्णकुन्तल ।
कर्करी [कर्करं + वीष्] ऐसा जलपात्र जिसकी तली में
चलनी की भाँति छिद्र हो ।

कर्कश (वि०) [कर्कं + श] 1 कठोर, कड़ा (विप० कोमल
या मृदु) सुरक्षितप्रकालनकर्कशाङ्गुली - रघु० ३।५५,
ऐरावतास्फालनकर्कशेन हस्तेन पर्याप्तं तदङ्गमित्य
—कु० ३।२२, १।३६, मि० १।५।० 2 निन्दुर, क्रूर,
निर्वय (सम्भ, आचरण आदि) 3. प्रवक्ष, प्रवक्ष अत्य-
धिक—तस्य कर्कशाविहारसम्भम्—रघु० १।६८
4 निराश 5 दुराचारी, दुष्चरित्र, स्वामिन्वित से हीन
(जैसा कि कोई स्त्री) 6 सपक्ष में न जाने योग्य,
दुर्बल—तर्क वा युक्तिकर्कशे मम सम लीलायते भारती
—प्रस० ४, —शः तलवार ।

कर्कशिका, कर्कशी [कर्कशं + कन् + टाप्, इत्यम्, ङीष् वा]
जङ्गली बंद, सबबंद ।

कर्कः [कर्कं + इत्] कर्क राशि, अतुर्ग राशि ।
कर्कशः,—दृक् [कर्कं + शो, स्वार्थे क्] आठ प्रधान तापो
में से एक (जब राजा नल को कर्क के दुष्प्रभाव से
नाना प्रकार की यातनाएँ सहन करती पत्नी तो उस
समय कर्कोट ने, जिसे नल ने एक बार जाग से बचाया
था, ऐसा विकृत कर दिया कि विपत्काल में भी उसे
कोई पहचान न सके) ।

कर्कुरः [कर्कं + ऊर, पृथो० च भावेऽ] एक प्रकार का
सुगन्धित वृक्ष, —रघु० 1 सोना 2 हुरताक ।

कर्कं (पुंग०) उग्र०—कर्कयति—ते, कणित) 1 छेद करना
सुरास करना 2. सुनना (आय 'भा' उपसर्ग के साथ)
भा—, सना, सुनना, ध्यान से सुनना - सर्वं सवि-
स्मयमाकर्णयन्ति - भा० १, आकर्णयन्तुमुकहसनादान्
—महि० १।१।७ ।

कर्कः [कर्कते आकर्ण्यते अनेन—कर्कं + अच्] 1 कान
—जहो सलज्जुज्जस्य विपटीतवचकम्, कर्कं लगति
चाप्यास्य प्रापरीत्यो विवृज्यते । वच० १।१००, ३०५,
कर्कं वा ध्यान से सुनना, कर्कशकम् कान तक जाना,
काठ होना—रघु० १।९, कर्कं छ कान में डालना,
- शीर० १०, कर्कं कर्कशति कान में कहुता है, दे०
वदकर्कं, अतुर्कर्कं 2 गाल का कड़ा 3 नाग की पत-
वार 4. विवृज के समकोण के सामने की रेखा 5.
महाभारत में बर्णित कौरव पक्ष का एक महारथी
(जब कुन्ती अपने पिता से घर रहती थी, उस समय
पूर्व देव के बचोप से कुन्ती की अविद्याहिंसावचना में

कर्कं का अर्थ हुआ । (दे० कुन्ती) बालक उत्पन्न होने
पर कुन्ती ने अपने कर्म-पापों की निन्दा तथा लोक-
सम्झा के कारण उसे गदी में फेंक दिया । वृत्राष्ट
के शारिप अश्विन ने उसे गदी से निकाल कर अपनी
पत्नी राजा को दे दिया । उसने उसे पालपोस कर
बड़ा किया, इसी लिए कर्कं को सुतपुत्र या रावेष कहते
हैं । बड़ा होने पर दुर्योधन ने कर्कं को बङ्ग देश का
राजा बना दिया । अपनी दानधीलता के कारण वह
दासवीर कर्कं कहलाया । एक बार इन्द्र (जो अपने
पुत्र अर्जुन पर अनुग्रह करने के लिए आतुर रहता था)
ने ब्राह्मण का वेष धारण किया और कर्कं का हाता
देकर उसके विषय कबच व कुलश हथिया लिये, बदले
में उसे एक शक्ति वा बली दे दी । युद्ध की कला
में अपने आप को दक्ष बनाने की इच्छा से कर्कं ब्राह्मण
बन कर परशुराम के पास गया, बहूँ उसने परशुराम
से अस्त्र-संभालन की शिक्षा प्राप्त की । परन्तु यह श्रेय
बहुत दिन तक छिपा न रहा । एक बार जब परशुराम
अपना सिर कर्कं की अथा पर रख कर ली रहे थे, तो
एक कौड़ा (कई जोड़ों के मत्तानसार इन्द्र ने कर्कं को
बिकल करने की दृष्टि से 'कीड़े' का रूप धारण किया
था) कर्कं की अथा की जाने लगा, उसने जवा में
गहरा श्वाभ कर दिया, परन्तु उस पीड़ा से भी कर्कं
टल से बच न हुआ । इस अनुपम सहन शक्ति से
परशुराम को कर्कं की अथाव्यति का पता लग गया,
फलत उदने कर्कं को साप दे दिया कि आश्वकता
के समय—उसकी विद्या—काम गही जायेगी । एक
दूसरे अवसर पर उसे एक ब्राह्मण ने (जिसकी गौर
अनधानों में पीछा करते हुए कर्कं द्वारा मारी गई थी)
साप दे दिया कि सकट आ पडने पर उसके रज का
पहिया पृथ्वी का लेगी । इस प्रकार की कठिनाइयों
के होते हुए भी कर्कं ने भीम और श्रेण के पतन के
पश्चात् कौरव सेना के सेनापति के रूप में कौरव-
पाण्डवों के युद्ध में अपना युद्ध कौशल बख्खाया ।
तीन दिन तक वह पाण्डवों के सामने रणक्षेत्र में डटा
रहा । परन्तु अन्तिम दिन जब कि उसके रज का
पहिया पृथ्वी में गिर गया था, वह अर्जुन के द्वारा मारा
गया । कर्कं, दुर्योधन का अत्यन्त बलिष्ठ मित्र था,
पाण्डवों का नाश करने के लिए सज्जित से मिल कर
को बौधनाएँ वा बदपत्र दुर्योधन ने किये, उन सब में
कर्कं उसके साथ था) । सम०—अंशलिः बहुरी कान
का अथक-धर्म, — अक्षुः सुविष्टि, — अक्षिण (वि०)
कान के निकट—स्वगति मृदु कर्कशितकण्ठः—श०
१।२४, —अक्षुः—दू (स्त्री०) कान का शीतुवन,
कान की बाकी, — अक्षुः, कान देना, ध्यान में सुनना,
—आश्वकता इषी के कानों की अक्षुः—उत्तम

कान का आभूषण या (कड़ियों के मतानुसार) केवल आभूषण, (मम्मट कहता है कि यहाँ 'कान' का अर्थ 'कान में स्थिति' है—तु० उमका प्ल० दिव्य—कर्ण-वतनादिपदे कर्णादिभ्यनिमित्त। सभिधानार्थोच्चार्य स्थित्येवैतत्समर्थनम् । काव्य० ७), — उपकणिका अफ-वाह (शा० 'एक कान से दूसरे कान तक'),—खेड (आयु० में) कान में लगादार गूज होना,—सोबर (वि०) जो कानो को सुनाई पड़े,—साहू कर्णधार, — जप (वि०) (कर्णजप भी) रहस्य की बात बतलाने वाला, पिसुन, मुखविर, —जप, ज्ञाप्यः झूठी निन्दा करना, चुगली करना, कलक लगाना, जाहू कान की जड़—अणि कर्णजहृषिनिवेशितानन—मा० ५८,—जित् (पु०) कर्णविज्ञता, जर्जुन, तृतीय पादव, —ताल. हाथी के कानो की कड़कड़ाहट, या उससे उत्पन्न आवाज—विस्तारित कुञ्जरकृताली—रघु० ७।३९, ९।७१, वि० १३।३७, धार मल्लाह, चालक—अकर्णधारा जलधौ विण्णवेतेह नीरिख वि० ३।२, इविनयनदीकर्णधारकर्ण—वेणी० ४,—धारिणी हृषिनी—पथ अथगपराम,—परम्परा एक कान से दूसरे कान, अनुयति—इति कर्णपरम्परया श्रुतम्—रत्न० १,—पालि (स्त्री०) कान की छी,—पाशः सुन्दर कान,—पूर १ (फूलों का बना) कान का आभूषण, कान की बाली—इव च कतल किमिति कर्णपूरतामारो-पिनम्—का० ६० २ अशोकवृक्ष—पूरक १ कान की बाली २ कदम्ब वृक्ष ३ अशोक वृक्ष ४ नील कमल,—प्राप्त. कान की पाली,—भूषणम्, बूबा कान का गहना,—मूकम् कान की जड़—रघु० १२।२,—पोटी दुर्गा का एक रूप,—बन्धः बालों से बना ऊँचा मचान,—बन्धित (वि०) विना कानो का, (—स) सप, —विचारम् कान का अधन-मार्ग,—विष् (स्त्री०) पून, कान का मूल,—बैधः (बालियाँ पहनने के लिए) कानो का दीपना,—बैधः,—बैधन्व कान की बाली,—बन्धुको (स्त्री०) कान का बाहरी भाग (अथग मार्ग पर के जाने वाला) नै० २।८,—मूकः,—कम् कानो में पीटा,—अध (वि०) जो सुनाई दे, ऊँचा (स्वर)—कर्णध्वजजले—मन० ४।०२,—आधः—साधः कानो का बहना, कान से मवाद निकलना,—धू (स्त्री०) कर्ण की माता, कुम्भी,—हीन (वि०) कर्णरहित (—न) सप ।

कर्णार्थि (वि०) [कर्णं कर्णे गृहीत्वा प्रवृत्त कथनम्—व्यतिहारे इत्, प्रथंस्व दीर्घस्य] कानो कान, एक कान से दूसरे कान ।

कर्णदिः [कर्ण+दि+अच्] भारत प्रायोज्य के दक्षिण में एक प्रदेश—(काव्य) कर्णदिशोर्वाति विदुषा कष्टमुखा-लयेतु—विष्णुका० १८।१०२,—दी (स्त्री०) उपयुक्त

वेदः श्री स्त्री—कर्णादी विदुराणां ताप्यवर—विदु-धा० १।२९ ।

कणिक (वि०) [कर्ण+इकन्] १ काना वाला २ पतवार धारी,—कः केवट,—का १ कानो की बाली २ गड, गोल गिल्टी ३ कमल का फल, कवलगट्टा ४ एक छोटी कूची या कलम ५ मध्यमा अंगुली ६ फल का डठक ७ हाथी के सूड की नोक ८ खडिया ।

कणिकार [कर्ण+इ+अच्] १ कनियार का फूल—निभि-छोपर कणिकारमुकुलान्यालीयते इत्पद—विष्णु० २।२३, श्रुनु० ६।६, २० २ कमल का फल, कवलगट्टा—रघु कनियार का फूल, अवलतास का फूल (यद्यपि यह फूल बड़े सुन्दर रंग का होता है, परन्तु सुगन्ध न होने के कारण इसे कोई पसन्द नहीं करता—तु० कु० ३।२८,—वर्णकर्मणं सति कणिकार दुर्गोनि निर्गन्धतया स्म चेत्, प्रायेण सामधधविधौ गुणाना पराङ्मुखी विरक्तसुख प्रवृत्ति ।

कर्णिक (वि०) [कर्ण+इति] १ कानो वाला २ सम्बे कानो वाला ३ फल लगा हुआ (जैसे तौर) — (पु०) १ तथा २ मल्लाह ३ गडों से सज्जब बाण ।

कर्णो (स्त्री०) [कर्ण+डीच्] १ पल्लवार या विशेष आकार का बाण २ बर्ष कला व विज्ञान के विना मूलदेव की माता । सम०—रघः इन्द शोभी, स्त्रियो की सवारी, पालकी—कर्णाद्यान्वा रक्षुवीरपत्नीम्—रघु० १४।१३,—सुतः बर्षकला व विज्ञान के जन्मदाता मूल-देव—कर्णोमुनकपेव मनिहितविपुलाञ्जना—रघु० १९, कर्णोमुनग्रहिते च पथि मतिमकरम्—इश० ।

कर्तनम् [कर्ण+त्पट्] १ काटना, कतरना—शा० २। २२९, २८६ २ कई काटना (तर्कुं कर्तन-साधनम्) ।

कर्तयो (स्त्री०) [कर्तन+डीच्] कैंची ।

कर्त्तरिका, कर्त्तरी (स्त्री०) १ कैंची २ चाकू ३. बह्म, छोटी तलवार ।

कर्तव्य (म० कृ०) [कृ+तव्यत्] १ जो कुछ उचित हो या होना चाहिए,—हीनसेवा न कर्तव्या कर्तव्यो महा-अथ—हि० ३।११, मया प्राप्तनि सत्त्वं नन कर्तव्यम्—पञ्च० १ २ जो काटना या कतरना चाहिए, नष्ट करने योग्य—पुत्र मत्सा वा भ्राता वा पिता वा यदि वा गृह, त्रिपुस्थानेषु कर्तन कर्तव्या भूमिमिच्छना—महा०,—अव्य, कर्तव्यता, जो होना चाहिए, धर्म, आभार—कर्तव्य बो न पश्यामि—कु० ६।२१, २।६२, शा० १।३० ।

कर्त्तुं [कृ+तृच्] १ करने वाला, कर्ता, निर्माता, सम्पादक—आकरजस्य कर्ता—रघुपिता, अक्षस्य कर्ता—कर्त्तुं करने वाला, कृतकर्ता—कला करने वाला, सुवर्णकर्ता—सुनार २ (आ० में) अधिकता (करन

कारक का अर्थ) 3. परब्रह्म 4. ब्रह्मा का विशेषण
विष्णु या शिव

कर्त्तृ (स्त्री०) [कर्त् + कृत्] 1 पाकू 2 क्रीषी ।

कर्त्तृ, कर्त्तव्यः [कर्त् + अच्, कर्त् + कर्त् + अच्, पर-अच्] कीचड़ ।

कर्त्तव्यः [कर्त् + अच्] 1 कीचड़, दलदल, एक—पादो नूतुर
समनकदेमधरी प्रज्ञालयन्ती स्थिता - मू० ५।३५,
पचन्वाध्यानकदेमान्—रघु० ५।२४ 2 कृषा, मल
3. [आल०] पाप, अच् माम । सम०—आदक,
मलपात्र, मलमार्ग आदि ।

कर्त्तव्यः—टक् [कृ + विच्] = कर स च पटरच कर्म० सं० ।
1 पुराया, जीर्ण-जीर्ण या बेगली लया कपडा 2 कपडे
का टुकड़ा, बज्जी 3 मटियाला या माल रग का
कपडा ।

कर्त्तव्यः—म् [वि०] [कर्त् + ट्, इति वा] जीर्ण शीर्ण
कपडों (विद्युदो) से डका हुना ।

कर्त्तव्यः [कृ + ल्यट्] एक प्रकार का हथियार—बापचक्र-
कणकपंगमप्रासपट्टिस आदि—दण० ३५ ।

कर्त्तव्यः [कृ + अच् वा०] 1 कडाह, कडाही 2 बर्तन
3 ठीकरा, दूटे बर्तन का टुकड़ा—जैसा कि षट् कर्पर मे
—जीयेत येन कविता यमके परेष तस्मै बहयमुदक
षट्कर्परेण—षट० २२ 4 सोपडी 5 एक प्रकार का
हथियार ।

कर्त्तव्यः—तम्, —त्ती [कृ + पास, स्थिया डीच्] कपास का
बल ।

कर्त्तव्यः—रच् [कृ + ऊर्] कपूर । सम०—छड 1 कपूर
का खेत 2 कपूर का टुकड़ा, सैलम् कपूर का तेल ।

कर्त्तव्यः [कृ + विच्] = कर, कर्त् + अच्, रय्य ल, कीर्णमात्र
फल प्रतिबिम्बो यथ ब० सं० दर्पण ।

कर्त्तव्यः [वि०] [कर्त् (र्त्) + उच्] रगबिरगा, चिलीदार
—पात्र० ३।१६६ ।

कर्त्तव्यः [वि०] [कर्त् (र्त्) + उरच्] 1 रगबिरगा, चित-
कबरा—स्वचिल्लसद्वननिकुरम्बकर्त्तव्य—वि० १।३।५६
2 कन्नूर के रग का, सगेद सा, भूरा—पवनैर्मय-
कपोतकर्त्तव्यम् कु० ५।२७. ९. चिचबिचित्र रग
2 पाप 3 मूल, पिशाच 4 बतूरे का पीषा,—रघु
1 सोना, 2 जल ।

कर्त्तव्यः [वि०] [कर्त्तव्य + इत्च्] रगबिरगा—उत्तर० ६।४ ।

कर्त्तव्यः [वि०] [कर्मन् + अट्] 1 कार्यप्रबोध, चतुर
2 परिश्रमी 3 केवल धार्मिक अनुष्ठानों में सलग्न,
—ः यत् निदेशक ।

कर्त्तव्यः [वि०] [कर्मन् + पत्] कुशल, चतुर,—ध्या मज्जरी,
—ध्मू सन्धियता ।

कर्त्तव्यः [वि०] [कृ + अग्निन्] 1 कृत्य, कार्य, कर्म 2 मार्ग-
न्ययन, सम्पादन 3 व्यवसाय, पद, कर्तव्य—सप्रति

विषयैश्चानां कर्म— आलवि० ४ 4 धार्मिक कृत्य (यह
बाहे, नित्य हो, नैमित्तिक हो या काय्य हो) 5 विधिपट
कृत्य, नैतिक कर्त्तव्य 6 धार्मिक कृत्यों का अनुष्ठान
(कर्मकाण्ड) जो ब्रह्मज्ञान या कल्याण प्रयत्न धर्म का
विरोधी है (विप० ज्ञान)—रघु० ८।१० 7 फल,
परिणाम 8. नैसर्गिक या सक्रिय सम्पत्ति (धरती के
आश्रय के रूप में) 9 भाग्य, पूर्वजन्म के किये हुए
कर्मों का फल—भर्तृ० २।४९ 10 (ध्या०) कर्म का
उद्देश्य—कर्त्तरीभिनतम् कर्म—पा० १।४।७९
11 (बैषो० ८० में) धनि या कर्म जो मान इन्धों में एक
माना जाता है, (परिभाषा इस प्रकार है—एकद्व्य-
मन्त्रण सयौविधाशेषध्वनपेसकारण कर्म—बैषो० मू०,
कर्म पाँच प्रकार का है—उत्सोपण तनोऽश्लेषणमाकुञ्चन
तथा, प्रसारणं च मयन कर्माभ्येनादि पञ्च च—भाषा०
६ । सम०—अक्षय (वि०) कार्य करते में असमर्थ,
—अज्ञम् कार्य का अन्त, अज्ञीय कृत्य का भाग (जैसा
कि दसं यज्ञ का प्रयाज)।—अधिकार धर्महृद्यों को
सम्पन्न करने का अधिकार,— अनुबन्ध (वि०) 1 किसी
विशेष कार्य या पद के अनुसार 2 पूर्व जन्म में किये
हुए कर्मों के अनुसार, —अन्तः 1 किसी कार्य या व्यव-
साय की समाप्ति 2 कार्य, व्यवसाय, कार्य सम्पादन
3 कोष्ठधार, धाम्याधार—मनु० ७।६२, (कर्मन्ति
इमूधाम्यादिसप्रहत्यानम्—कुल्ल०) 4 जूती हुई भूमि,
—अन्तरम् 1 कार्य में मिश्रता या विरोध 2 तन्प्राय,
श्रायचित्त 3 किसी धार्मिक कृत्य का म्ययन,—अनिष्क
(वि०) अनिम (क) मेवक, धार्मिक, आजीवः
किसी पेशे से (जैसे शिल्पकार का) अपनी
जीविका चलाने वाला,—आशम् (वि०) कार्य के
निधियों से युक्त, सक्रिय—मनु० १।२२, २३, (पु०)
आत्मा,—इन्द्रियम् काम करने वाली इन्द्रियों जो ज्ञाने-
न्द्रियों से भिन्न हैं (वे यह हैं—वाक्पाणिपादाहाम्य-
स्थानि—मनु० १।१।११, "इन्द्रियं शब्द के मी० भी
दे०) —उदारम् साहसिक या उदार कार्य, उच्चाश-
पता, शक्ति,—उद्युक्त (वि०) व्यग्न, सजान, अस्थि,
सोत्साह,—करः 1 भाद का मज्जूर (बह मेवक जो
दास न हो) —कर्मकण स्वपत्याद्य —पच १, शि०
१।४।१६ २ यम,—कर्त्तुं (पु०) (ध्या० में) कर्त्ता जो
साध ही साध कर्मों की है—उदा० पथ्यते ओद्वि,
इसकी परिभाषा यह है— क्रियमाण नृ यत्कर्म स्वयमेव
प्रतिष्थति, सुकरी स्वैर्गुणे कर्त्तुं कर्मैतरेति तद्विदु ।
—काष्कः,—अच् वेद का वह विभाग जो यजीय कृत्यों,
सत्कारों तथा उनके उचित अनुष्ठान में उत्पन्न फल
से सम्बन्ध रखता है,—कारः 1 जो किसी व्यवसाय
को करता है, कारीगर, शिल्पकार (जो भादे पर काम
करने वाला न हो) 2 कोई भी मज्जूर (बाहे भादे

का हो या बिना भाड़े का) 3 लुहार,—हरिजाति कटाक्षय आत्यात्मनसकोक्य, न हि सङ्गो विद्यायाति कर्मकार स्वकारणम् । उद्भूट 4 शीघ्र,—कर्मिन् (पु०) मञ्जूर कारीगर,—कर्मिक—कर्म एक मञ्जूर वपुः,—शैलकः शोभी,—सख (वि०) कोई कर्म या कर्तव्य सम्पादन करने के योग्य,—आत्मकर्मसंघं देह जात्रो धर्म इवाश्रित—रघु० १११३,—शेषम् धार्मिक कृत्यों की भूमि अर्थात् भारतवर्ष, तु० कर्मभूमि,—मूर्हीत (वि०) कार्य करते समय एकदा हुजा (बैठे कि खीर),—बातः कार्य की छोड़ बैठना या स्थगित कर देना,—वं (वा) इत्कः 1 काम करने में नीच, नीच या निष्कृष्ट कर्म करने वाला व्यक्ति, बहिष्कृत उनके प्रकारों का उल्लेख करता है—अनुपमक विष्णुनरक इत्यादी शीघ्ररोषक., पापार कर्मपात्राणा अन्ततस्पात्रि चक्रम् । 2 जो आधापार पूर्व कार्य करता है—उत्तर० ११४३ 3 राहु,—शोभना 1 यज्ञानुष्ठान में प्रेरित करने वाला प्रबोवन 2 धार्मिक कृत्य की विधि,—अः धार्मिक अनुष्ठानों से परिचित,—स्वयः सासारिक कर्तव्य और धर्मानुष्ठान की छोड़ देना,—बुद्ध (वि०) कार्य करने में प्रष्ट, बुद्ध, बुद्धाचारी अनादरणीय,—दोषः 1 पाप, दुर्वसन—मनु० ६१६१, ९५ 2 नृति, दोष, (कार्य करने में) भ्रान्ति भूल—मनु० ११०५ 3 मानवी कृत्यों के दुष्परिणाम 4 निष्ठ आचारण,—बाह्य समाज, तत्पुरुष का एक जेव (इसमें प्राय विरोधन व विधेय्य का समाज होता है), - तत्पुरुष कर्मचारम वेनाह स्या बहुवीहि—उद्भूट, अर्थः 1 धर्मानुष्ठानों से उत्पन्न फल का नाश 2 निराशा,—नामन् (व्या० में) कृदन्त सज्ञा,—माता काशी कीर विहार के मध्य बहने वाली एक नदी,—निष्क (वि०) धर्मानुष्ठान के सम्पादन में सकल,—बकः 1 कार्य की दिशा या शीत 2 धर्मानुष्ठान का (कर्म) मार्ग (विप० ज्ञान मार्ग),—बाकः काव्यो की परिपक्वतावस्था, पूर्वबन्ध में किये गये कर्मों का फल,—प्रवचनीय बुद्ध उपसर्ग तथा जन्म्य जो क्रियाओं के साथ सबद्ध न होकर केवल सज्ञाओं का शासन करते हैं उदा० 'जा मुक्ते सत्तार' में 'जा' कर्मप्रवचनीय है, इसी प्रकार 'अपत्य प्रावर्धत् में 'अप्य', तु० उपसर्ग, गति या निपात,—स्वयः धर्मानुष्ठानों के फलों का परित्याग, कर्म पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का फल या पारितोषिक (दुःख, सुख),—कर्मः, कर्मवत् जन्म-मरण का चक्रण, धर्मानुष्ठानों के फल बाहे शुभ हो या अशुभ (इसके कारण से) । सासारिक विषय-आनन्दानों में शिथल रहता है),—अः,—भूमिः (स्त्री०) 1 धर्मानुष्ठान की भूमि—अर्थात् भारतवर्ष 2 जूती हुई भूमि,—नीलता सत्काराधिक अनुष्ठानों का विचारविमये या मीमाणा,—भूकम् कुत

नामक पवित्र बात,—पुण्य् शीघा (वर्तमान) युग, अर्थात् कलियुग,—योग 1 सासारिक तथा धार्मिक अनुष्ठानों का सम्पादन 2 सक्रिय चेष्टा, उद्योग,—बकः भाग्य जो पूर्व जन्म में किये गये कर्मों का अनिर्णय परिणाम है,—विपाकः—कर्मपाक,—शाखा कारलाता,—शीक,—शूर (वि०) कर्मवीर, उद्योगी, परिश्रमी,—स्य सासारिक कर्तव्य तथा उनके फलों में आसक्ति ।—सखिः मयी,—संघासिक,—संघासिन् (पु०) 1 धर्मोत्सा पुष्ट्य जिसने प्रत्येक सासारिक, कार्य से विरक्ति पा ली है 2 बहु सत्यासी जो कर्म फल का ध्यान न करते हुए धर्मानुष्ठानों का सम्पादन करता है,—सासिन् (पु०) 1 शोभी देखा गयाह, प्रत्यक्षदर्शी सासी—कु० ७१८२ 2 जो मनुष्य के सुभाषण कर्मों को प्रत्यक्ष देखता रहता है (इस प्रकार के नौ देवता हैं जो मनुष्य के समस्त कर्मों को प्रत्यक्ष देखते हैं—तथाहि—मूर्धं सामो यद्य कामो महामुतानि पथ च, एते सुभाषमस्येह कर्मणो नव सासिण ।—सिद्धिः (स्त्री०) जर्मिष्ट कार्य की सिद्धि, सफलता—कु० ३१५७,—स्वाम्य् सार्वजनिक कार्यालय, काम करने का स्थान ।

कर्मविन् [कर्मन् + इनि] सन्धारी, धार्मिक मित्र ।

कर्मारः [कर्मन् + ऋ + ञच्] लुहार यात्र० १११३, मनु० ४१२१५ ।

कर्मिन् (वि०) [कर्मन् + इनि] 1 कार्य करने वाला, क्रियाशील, कार्यरत 2 किसी कार्य या व्यवसाय में व्याप्त 3 जो फल की इच्छा से धर्मानुष्ठान करता है—कर्मिन्धर्माधिको योगी तस्माद्योगी प्रभायुर्न—मनु० ६१५६, (पु०) कारीगर, गिन्याकार—यात्र० २१२५५ ।

कर्मिष्ठ (वि०) [कर्मिन् + इच्छन्, धतो लृङ्] व्यापार-सुखल, चतुर, परिश्रमी ।

कर्मट [कर्म + अटन्] बाजार, मयी या किसी जिले (जिसमें २०० से ५०० तक गाँव हों) का मुख्य नगर ।

कर्म [कृप् + अच् षच् वा] 1 रेखा लीचना, बचीटना, लीचना—यात्र० २१२७ 2 आकर्षण 3 हल जोतना 4 हल-रेखा, भाई ५ शरीर, - बं, - बन्—बायी या सोने का १६ भाषो का वजन । तम०—आचप्य = कार्षापण ।

कर्मक (वि०) [कृप् + कृत्] लीचने वाला,—कः किसान, सतिहर—यात्र० २१२६५ ।

कर्मवत् [कृप् + लृट्] 1 रेखा लीचना, बचीटना, लीचना, झुकावा, (बनुप का)—मज्यमानधतिधात्र-कर्मवत्—रघु० १११५६ ७१६२ 2 आकर्षण 3 हल जोतना, शीती करना 4 शक्ति पहुँचाना, कष्ट देना, पीड़ित करना—मनु० ७११२१ ।

कवित्री [ह्रस्व + गिति + औप] लगाम का दहना ।
कवुः (स्त्री०) [कृ + क] 1 कृत्-रक्षा, कृत् 2 ' नदी
 3 नहर (पू०) 1 कृत् कंधी की जाग 2 कृत्, भेती 3 वीथिका ।

कवित्वि (मध्य०) [क्वि + त्वि, कावेय, + त्वि]
 किसी समय, (प्राय ' त् ' के साथ प्रयोग) मन्० २।४,
 ४०, ९०; ४।३०, ६।५० ।

कव् 1 (भ्वा० भा०)—कलते, कलित 1 विनया, 2
 घट्ट करता ।

॥ (पुं० उभ०)—कवयति-ते, कवित्, 1. चारण करना,
 रक्षना, वे जाना, समझना, पहनना, करालकरकन्दली-
 कलितचारत्रजालैर्बली उभर० ५।५, स्वेच्छनियवह-
 नित्ततारकयति करवात्सम्-गीत० १, कलितकलिन-
 बनमाल, हल फलयेते-त०, कलमबलमयोर्षी पाषी
 पदे कुम् नुपुरी-१२, शा० ४।१८ 2 विनया,
 हिसाब लगाना—काक कलयतामहम्—मथ० १०।३०
 3 चारण करना, लेना, रक्षना, बचिकार में करना
 -कवयति हि हिनाशीनिकरुक्कृष्ण लक्ष्मीम्—मा०
 १।२२, शि० ६।२६, ९।५९ 4 जानना समझना,
 पर्यवेक्षण, प्यान देना, सोचना—कवयत्यपि सभयो-
 ऽन्तर्ये-शि० ९।८३, कोपितं विरहलोपिलिचिना कान्त-
 मेव कलयन्मनूयिन्वे-१०।२९, नै० २।६५, ३।२२
 मा० २।९ 5 सोचना, आदर करना, खयाल करना
 -कवयेदमानयस ममि माम् शि० ९।५८, ६।५६,
 शा० ६।१५, व्यालिनित्तमिलनेन गलमिष कवयति
 मलयसमीरम्—गीत० ४।३० 6' सतृप्त करना, प्रभा-
 वित होना - परकीलाकलितकामपाक -मा० ८, धय
 कोऽपि न विक्रिया कवयति प्राप्ते नवे वीथने—भर्गु०
 १।३० 7 करना, मग्यादन करना 8 जाना 9
 बालक होना, लेटवाना, मुत्तमिगत होना, 1 जा— 1
 पकड़ना, घट्टण करना शि० ७।२१, कुतूहलाकलित-
 हुदया—का० ५।९, 2 खयाल, करना, आदर करना,
 जानना, प्यान देना—स्वर्धयति पावनमारुचयति
 —का० १०८, किन्ममनूयया हुदय तवाकलयामि
 —गीत० ३ 3 बाधना, बचकना, बचन मुकृत होना,
 रोकना या इफट्टे पकड़ना शि० १।६, ९।४५, का०
 ८४, ९९ 4 प्रसार करना, रोकना-शि० ३।३३ 5
 हिलाना, परि—, 1. जानना, समझना, खयाल करना,
 आदर करना 2 जानकार होना, बाध करना शि-
 ; नपाय करना, बिकलाय करना बिकृत करना, लम्—,
 1 जोड़ना, एकत्र करना तु० संकलन 2 खयाल
 करना, आदर करना ।

॥ (पुं० उभ०)—कवयति-ते, कवित्) प्रोत्सा-
 हित करना, होकना, प्रेरणा देना ।

कव (शि०) [क्व् (क्व) + धन्व्, अर्द्धि, क्लबोर-

वेध] 1 मधुर, और अल्पष्ट (अल्पष्टमधुर)—कर्म कर्म
 किमपि रोति—हि० १।८३, सारसी कलनिहृदि—रघु०
 १।४१, ८।५९, मालवि० ५।१२ 2 मन्द मधुर (स्वर)
 3 कोलाहल करने वाला, सनसनाता हुवा, टटटन करता
 हुवा—मात्स्यकलनुपूरुधाम—रघु० १६।१२, कर्मकिपिगी-
 रवम्—शि० ९।३४, ८२, कलमेघलसकलक ६।१४,
 ४।५७ 4 दुबल 5 जपयना, कम्पा, - लः मन्द या
 मृदु और अल्पष्ट स्वर, - लम् वीर्यं । सम०—अञ्जुतः
 सारस पत्नी, अनुनादिम् (पू०) 1 विडिवा 2 मधु-
 मकनी 3 पातक पत्नी, - अतिकलाः विडा, - आलस्य
 1 मधुर गुजार 2 मधुर और क्विकर प्रयत्न—स्युत
 त्कालापविलासकोमला करोति राग हुवि कौतुका
 विकम्—का० २ 3 मधुमकनी, - उरसा (वि०)
 ऊँचा, तीव्रण,—कवठ (वि०) मधुर कठ बाला (—कः)
 (स्त्री०—की) 1 कोपय, 2 हल, राजहृत् 3 कव-
 तर, -कलः 1 मोठ की धर्मरश्मि या प्रनमनाहट 2
 अस्पष्ट या लघुम्ब ध्वनि - बलितया विदिवे कलमे-
 लाकलकोऽलकलोत्कलाव्याया - शि० ६।१४, मेघघ्ये
 कलकल (नाटकी में), धर्तु० १।२३ २७, बमक २८
 3 शिब,—कविकाः—कविका छिनाल स्त्री, शेष
 कोयल, - सुविष्का लम्पट या छिनाल स्त्री,—वीर्यम्
 1 चादी—शि० १३।५१ ४।५१ 2 सोना—विमलकल-
 धोतलम्पा मङ्गलन केषी० ३' कविः (स्त्री०)
 1 मुगडगी पट्टु निपि की जगमगाहट 2 स्वर्णशर
 -मङ्कनरनकल्पित कलधोतलिपेरि रतिवयनेकम्
 —गीत० ८, ध्वनि 1 मन्दमधुर ध्वनि 2 कवुतर
 3 गोर 4 कोयल, -नायः मन्द मधुर स्वर, -आश्चर्यम्
 मृत्काना, -आलकलम्ब=बचन की बहक, -रषः
 1 मन्द मधुर ध्वनि 2 कवुती 3 कोयल,—हुंत्
 1 हल, राबहत—वधुदुकल कलहमलसाम्—कु०
 ५।६० 2 बतल, पृकारणर, अट्टि० २।१८, रघु०
 ८।५९ 3 परयाता ।

कलकः [कल् + क्विप, कल् बाघी बहुवृत्त कर्म० ह०]
 1 पम्बा, पिङ्ग, काला पम्बा (शा०) रघु० १३।२५,
 2 (बाल०) दाग, बड़ा, गहरी, बदनामी—अपयत्तु
 कलक स्वस्वभावेन तैव मूच्छ० १०।३४, रघु०
 १।४३७, इषी प्रकार—कुल 3 अपराध, शेष—धर्तु०
 ३।४८ 4 लोहे का जग, मोर्चा ।

कलकूबः (स्त्री०—की) [करेण कवति हितलित—कल् +
 क्व् + लृप्, मम्] सिंह, गेर ।

कलकृत (वि०) [कलकृ + कृत्] 1 पम्बेदार, लक्षित,
 हयनाम ।

कलकृत् [क कल लघुपति प्रायवति, क + लृङ् + क्विप
 + उरृप्] जलापत्त, मधर ।

कलकः [क कवयति—क + लृङ् + क्व्] 1. पत्नी

2 विप्लवे वाक्त्र से आहत मृग आदि जन्तु,—अम् ऐसे जन्तु का नाम ।

कलत्रम् [कृत् + अत्रन्, गकारस्य ककार, हलसोरभेद]
1 पत्नी,—बसुभार्या हि नृपा कलत्रिण—रघु० ८।८३, १।३२, १२।३६, यद्भुवनेषु हितमिच्छति तत्कलत्रम् भर्तुं० २।१६८ 2 कल्ला या हितम्ब—इन्दुमतिविबोधा-ममम्बव विलासपुत्रोऽनृगकलत्राम्—का० १८९ (यहाँ 'कलत्रम्' के दोनो अर्थ हैं) कि० ८।९, १७ 3 राज-कीय दुर्ग ।

कलत्रम् [कृत् + ल्यट्] 1 पत्नी, चिह्न 2 विकार, अप-राध, दोष 3 अङ्ग करना, पकड़ना, धामना—कल-नात्मर्भूताना स काय परिकीर्ति 4 जानना, सम-झना, बोध पाना 5 ध्वनि करना, —ना 1 लेना, पक-ड़ना, धामना—काल करना—आन० २२ 2 करना, क्रियान्वयन 3 वदयता 4 समझ, समबोध 5 पढ़-ना, समन-धारण करना ।

कलत्रिका कल + दा + कृत् + टाप्, इत्यन्, पृषो० मृत्] बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा ।

कलत्र (स्त्री० श्री) [कृत् + अत्रच्, कर्णे षण्डया भाति भा + क म्य लत्वम्—नाग०] 1 हाथी का बच्चा, वन पदा-भावक—ननु कलत्रेन येषने ग्नुकृत्तम्—मालवि० ५, द्विपेन्द्रभाष कलत्र अयत्रिव—रघु० ३।३२, ११।३९, १८।३७ 2 नीस तर्प का हाथी 3 ऊँट का बच्चा जन्तु वाक्त्र ।

कलत्रम् [कृत् + अत्र्] 1 मई-जय में अंया हुआ चावल जो दिग्मन्त्र-जनवरी में एक जाना है—मृत्यु पाण्डो कल-मय गोपिकाम्—कि० ५।९, ३६, कु० ५।१७, रघु० ८।३७ 2 लेवनी, काने की कलम 3 चोर 4 दुष्ट, बदमाश ।

कलत्र [कृत् + अत्रच्] 1 तीर 2 कदम्ब वृक्ष ।

कलत्रदन्त [कृत् + अत्र् + उट्] (ताडा) मन्थन नवनीत ।

कलल, —सम् [कृत् + कलच्] धूण, गर्भाशय ।

कलत्रिकु, —ग [कृत् + वञ्च् + अच्, पृषो० इत्यम्] 1 पिडिया, मनु० ५।९२, याज्ञ० १।१७५ 2 पत्नी, दाग वा लालन ।

कलसा, —सा [केन जलेन लग (म) नि - तारा०] (— सम्, — सम्) घडा जलपात्र, करवा, लम्बी म्नी मास-पत्नी कनककलसावित्युपमितौ—भर्तुं० ३।२०, १।९७ स्तनकलस—अमर ५४ 'जन्तु', 'उज्जुव' अगत्य पुनि ।

कलसा (स्त्री) (स्त्री०) [कलस (स) + डीप्] घडा, करवा । सम०—सुत अगम्य ।

कलहा, —हृत् [कल काय हन्ति—हृत् + ह तारा०] 1 मागडा, लडाई-मिडाई—ईश्वरिलह—भा० १।२, लीला' भृगार० ८, इसी प्रकार लुककलह, प्रधय-

कलह आदि 2 संघाम, युद्ध, 3 दाँच, घोसा, मिष्ठा-पन 4 हिसा, ठोकर मारना, पीटना आदि—मनु० ५। १२१ (यहाँ मेधातिथि और कुल्लुक, कलह शब्द की व्याख्या क्रमस 'दशदिनेनेरेतरनाइवम्' और 'दश-दशपादि' करते हैं) । सम०—अस्तरिता अपने प्रेमी से शगडा हो जाने के कारण उससे बिपुल (जो कुछ भी है साथ ही अपने किये पर खिद्यमाना भी), सा० ६० इस प्रकार परिभाषा करता है—चाट्टकारमपि प्राण-नाश रोषादपास्य या, पश्चात्तापमवाप्नोति कलहन्त-रिता नु सा । १।१७,—अध्वरत (वि०) बलपूर्वक अपहरण किया गया, त्रिष (वि०) जो लडाई-सगडा कराने में प्रसन्न होता है—जन्तु कलहप्रियोऽसि—मालवि० १, (—व.) नाग्य की उपाधि ।

कला [कृत् + कृच् + टाप्] 1 किसी वस्तु का छोटा सख्त, टुकडा, लक्षमात्र,—कलाप्यकृतपरिचयम्—का० ३०४ सर्वे ते मित्रगात्रस्य कला नार्हति षोडशीम्—पञ्च० २।५९, मनु० २।८६, ८।३६ 2 चन्द्रमा की एक रेखा (यह १६ अंश है) जवनि जविसस्ते ते भावा मवेन्दु-कलादय—मा० १।३६ कु० ५।७२, मेघ० ८९ 3 मूलघन पर व्याज (सिद्धे नृप घन के उपयोग के विचार से)—घनवीथिपीथिमवतीणवनी निधिस्मभामामुपचयवा-कला—शि० ९।३२, (यहाँ कला का अर्थ रेखा भी है) 4 विविध प्रकार से आकलित समय का प्रभाग (एक मिनट, ४८ सैकण्ड वा ८ सैकण्ड) 5 गति के तीव्रते भाग का साठवाँ अंश, किसी कोटि का एक अंश 6 प्रयोगात्मक कला (मिष्पकला, ललित कला) इस प्रकार की ६५ कलाएँ हैं, जैसे कि गगीत, नृत्य आदि 7 कुगजना, मेधाविता 8 बालसाक्षी, घोसादेही 9 (छन्द शास्त्र में) माषा छर 10 किसी 11 रज-साय । सम०—अस्तरम् 1 दूसरी रेखा 2 व्याज, लाभ—माते मास्य यदि पञ्चकलाजन्व म्यान्—जीला०,—अवल. कलाबाज, नट, नलयार की तीक्ष्ण धार पर नाचने वाला,—आकुलम् भयकर विष,—केलि (वि०) छडीला, विलामी (—सि) काम का विंगेपन,—अधि (चन्द्रमा का) क्षीण होना—रघु० ५।१६,—धर,—अधि—पूर्व. चन्द्रमा,—अहो महत्स महामामुर्व विपतिकालेऽपि परीपकार, यथाप्यस्ये पतिरीऽपि राहो कलाविधि पुष्यय ददाति । उद्भट,—भृत् (पृ०) चन्द्रमा, इसी प्रकार कलावर्ष (पृ०)—शु० ५।७२ ।

कलाव, —वक [कला + वा + वा + कृ] मुनार ।

कलाप [कला + आप् + अण, षञ्] 1 जल्पा, गठरी—मुक्ताकलापस्य च मित्तवन्त्य—कु० १।८३, प्रीतियो का हार—रत्नाकलाप—पृथक्कार मेखला 2 वस्तुओं का समूह या सख्त—अलिलकलाकलापलोचन—का० ७ 3 चोर की वृद्ध—त मे चातकलाप प्रेषय मजिककण्ठ

विनिम्न- विकम् ५१३३, ५५० २१८० ऋतु० ११६६,
२१६४ इषी की सेवला या करवनी (प्राय 'कांवी'
और 'रामा' आदि के साथ) मर्त्तु० १५७, ६७, ऋतु०
३१२०, मू० ११२० ५ आभूषण ६ हाथी के गले
का रम्या ७ तरकम ८. बाण ९ चन्द्रमा १० चन्द्रा-
पुरजा, बुद्धिमान् ११ एक ही छद में लिनी गई
कविता, —वी पास का गदठर ।

कलापकम् [कलाप + कम्] एक ही विषय पर लिखे गये
चार श्लोको का समूह (जो व्याकरण की दृष्टि से
एक ही वाक्य हो) (चमुनिस्तु कलापकम्) उदाहरण
के लिए दे०, कि० २१६१, ६२, ६३ ४४२ बहु ऋष
जिनका परिशेष उन समय किया जाय जब मीर
आगे पहुँचें कलाप, —क १ एक जग या गदठर
२ मोतियों की लड़ी ३ हाथी की गर्दन के चारों ओर
लिपटने वाला रम्या ४ बेलगला या कल्पनी
(कलाप) पि० ११६५ ५ (मंत्रशास्त्रोक्त)
मन्त्रक पर लिप्यक्षिप्तोप ।

कलापित् (पु०) [कलाप + इति] १ मोर -कलापिकापि
कलापिकदम्बकम् पि० ६१३१, ५५० २१८०, रघु०
६१२ ३ बाण ३ अजीव का वृक्ष (जम्ब) ।

कलापिनी [कलापित् + डीप्] १ रत्न २ शीर ।

कलापः [कला + अप् + अण्] मटर, पि० १३१२१ ।

कलापकः [कलम् आकियायति विशेषेण रीति—कल
-जा + वि + कौ + क] मूर्त्तु ।

कलाहक [कलम् आहति—कल + आ + हन् + क् + कन्]
एक प्रकार का बाजा ।

कलि [कल् + इति] १ शगडा, लडाई-भिडाई, अमहमति,
मनभेद- पि० ३५५, कलिकायजित् रघु० ११३३,
अमर १९ २ मघाम, युद्ध ३ मृष्टि का चौथा युग,
कलियुग (इस युग को आयु ४१००० मानव वर्ष हैं
तथा ईसापूर्व ३१०२ वर्ष को १३ करवरी को इसका
आरम्भ हुआ था) मनु० ११८६, ११३०१, —कलियुगानि
इमानि आदि० ४ मूर्त्तरु कलियुग (इसमें मनु को
मानना दी थी) ५ किसी वस् को निकटतम व्यक्ति
६ विभीतक या बहेड़े का वृक्ष ७ पासे का पहलू जिस
पर एक का एक अंकित है ८ तायक ९ बाण
—(स्त्री०) बिना बिना कूल । सम० कार, —
क्षीरकः—कियः नारद का विशेषण, —दुष्कः,
—वृक्षः विभीतक या बहेड़े का वृक्ष, —पुण्य कलिकाल,
गोहृद्युग—मनु० ११८५ ।

कलिका, कलि (स्त्री०) [कलि + कन् + टाप्] १ जन्-
जिला कूल कली, —चूताना बिरिगिंतापि कलिका
बन्धाति न स्वं रज - स० ६१६, किमात्रकलिकामञ्ज-
नारभसे—स० ६, ऋतु० ६१७, रघु० ११३३ २ अक,
रेखा ।

कलिकुलः (ब० व०) [कलि + कन् + क्] एक देश और
उसके निवासियों का नाम; —उत्कलादासित्यः कलि कुल-
सिन्धुयो वयो— रघु० ५१२८, (सुभो में इसकी स्थिति
बहु प्रकार बताई गई है—जगन्नाथालमारम्भ कृष्णा-
तीरगन्ध. दिवे, कलि कुलेश सभ्रिको वायमार्यपरायम् ।

कलिम्बः [क + लम्ब + अण् वि० भाषु०] बटाई, परदा ।
कलित (वि०) [कल् + क्त] घामा हुआ, पकड़ा हुआ,
किया हुआ, दे० कल् ।

कलिम्बः [कलि + दा + कप्, म्] १ बहु पर्वत जिससे
यमुना नदी निकलती है २. नृत्य । सम०—कम्बा,
—जा, —सपथा, —मिन्नी यमुना नदी की उपाधियाँ
—कलिम्बकम्बा यमुना नतापि—रघु० ६१४८, कलिम्ब-
बाजीर—भावि० २१२०, गीत० ३, —मितिः कलिम्ब
नाम का पर्वत, —आ, —तम्बा, —मिन्नी यमुना नदी
की उपाधियाँ—भावि० ५१३, ४ ।

कलिल (वि०) [कल् + एण्] १ डका हुआ, परा हुआ
२ मिला, बुला-मिला—तन एवाकन्दकलिलः कलकल,—
महावी० १ ३ प्रभावित, बगल कि,—अकण्ठकलिल
पि० १११९८ ४ अनेक, अछेरा,—सम् १ बड़ा डेर,
अव्यवस्थित राशि—विशामि हृदय क्लेशकलिल—भर्तृ०
३१३४ २. एडबड, अश्वत्थमा—यदा ते शोहकलिलं
बुद्धिर्भसितिरिष्यन्—मग० २१५१ ।

कल्प (वि०) [कल् + उप्य्] मलिन, गन्दा, कीचड़ से
भरा हुआ, पैला—मया रोप फलनकल्पा सुख्शील
प्रसादम्—चिकम् ११८, कि० ८१२२, कण्ठ १३ २
वशाभावच्छ, वैशुग, भरीया हुआ, चट्ट स्तम्भिनवा-
प्यवृत्तिकल्प—स० ५६३ ३, बुधला, भरा हुआ
६५४ ४ कुट्ट, अश्वत्थ, उत्तेजित—आवायशेषकल्पा
दयितेव राशौ रथ० ५१६४ (मलिन) कल्प' का
अर्थ 'अवशेष' भी—इसमें मानता है) ५ दुष्ट, पापी,
बरा ६ क्रूर, निन्दनीय रघु० १५७३ ७ मन्थकार
युक्त, मन्थकारस्य ८ मिठला, डालसी, —कः शैला,
—सम् १. गन्धी, मील, कीचड़—विगतकल्पमन्थ
—ऋतु० ३१२२ २ पाप ३. कोष । सम०—दोषिण
हरामी, बन्धेभार—मनु० १०५५, ५८ ।

कलेश्वरः,—रम् [कले लुके वरं श्रेष्ठम्—असूत् स०]
माटीर,—वास्तव्यवर्षिर्ष कलेश्वरगृहम्—भर्तृ० ३१८८,
हि० ११५७, मम० ८५, भावि० ११३३, २५३३ ।

कल्पः—कल्प (कल् + क्) १ विपथिनी गाद जो लेक
आदि के नीचे जम जाता है, कीट २ एक प्रकार की
केई वा पेड़—वात० ११२७७ ३. (वत्) वधुी,
मिल ४. लीच, बिन्दा ५ नीचला, कपट, दम पि०
१११९८ ६ पाप ७. चुटा पिता पुत्र्य—तां लीचप्रक्षयेन
हृतामूर्त्तकाम्—सु० ७१९, सम०—कमः नवार का
पीला ।

कल्पकम् [कल् + क् + चिच् + ल्यट्] बीजा देना, प्रसारना, मिथ्यापना ।

कल्कि, कल्किम् (पुं०) [कल् + क् + चिच् + इत्, कल् + इति] विष्णु का अन्तिम और सबसे अवतार (ससार का उसके शत्रुओं से उद्धार करने वाला तथा दुष्टों का हनन करने वाला) [विष्णु के अवतारों का उल्लेख करते हुए अथर्ववेद कल्कि नामक अन्तिम अवतार का इस प्रकार निर्देश करता है—स्नेच्छनिबह-निघने कलयति करवालम्, धूमकेतुमिष किमपि करा-लम्, केशव भूतकल्किराशेरे अथ अगवीम हरे—गीत० १११० ।]

कल्प (वि०) [कृप् + अच्, कल्, वा] 1 व्यवहार में लाने योग्य, सफल समय 2 उचित, योग्य, सही 3 समय, सक्षम (सब०, अचित्तुमूलन के साथ अथवा समाप्त के अन्त में)—धर्मस्य, यदास कल्प—भाग० अपना कर्मस्य आदि करने में समय,—स्वधियायामकल्प त०, अपना कर्मस्य पूरा करने में असमर्थ, इसी प्रकार—स्वधरणाकल्प आदि,— ल्य० धार्मिक कर्मों का विधि-विधान, नियम, अध्यादेश 2 दिहित नियम, दिहित विकल्प, ऐच्छिक नियम—प्रभु प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते—मनु० १११० अर्थात् उस विहित विधि का अनुसरण करने में समय जिसको दूसरे सब नियमों की अपेक्षा अधिमान्यता दी जाती है, प्रथम कल्प—मालवि० १, अर्थात् बहुत अच्छा विकल्प,—एष ई प्रथम कल्प प्रदाने ह्यव्यकथ्योऽ- मनु० ३११४ 3. (अत) प्रस्ताव, मुद्राव, निश्चय, सकला—उदार कल्प—श० 4 कार्य करने की रीति, कार्य विधि, रूप, तरीका, पद्धति (वर्मानुष्ठानों में)—आयुष कल्पे-नोपनीय—उत्तर० २, कल्पविलकल्पमासास वन्या-मेवास्य सविधाम्—रघु० ११४, मनु० ७११८५ 5 सृष्टि का अन्त, प्रलय 6 ब्रह्मा का एक दिन या १००० युग, मनुष्यों का ४३२०००००० वर्ष का समय, तथा सृष्टि की अवधि का माप, श्रीश्वेतवाराह कल्पे (बहू कल्प विषयों अब हम रहते हैं)—कल्प चिन्त ननुभूता तनुभिस्तत किम्—शा० ५१२ 7 रोपी की बिक्रिता 8 छ वेदों में से एक—नामन—जियमें यज्ञ का विधि-विधान निहित है तथा जियमें क्लानुष्ठान एव धार्मिक संस्कारों के नियम बनलाये गये हैं, दे० 'वेदान' के मी० 9 सजा और विशेषणों के अंत में जुड़ कर निर्माकित अर्थ बनाने वाला शब्द—'अपेक्षाकृत कुछ कम' 'प्राय ऐसा ही' 'अगम्य बराबर' (हीनता की अवस्था के साथ २ समानता को प्रकट करना)—कुमारकल्प सुषुप्ते कुमारम्—रघु० ५१३६, उपपन्नमेतदस्मिन्विकल्पे राजति श० २, प्रमातकल्पा शशिनेव शर्वरी—रघु० ३१२, इसी प्रकार

मृतकल्प, प्रतिपन्नकल्प आदि । सब०—अन्तः सृष्टि की समाप्ति, प्रलय—अर्जु० २११९, °स्वाधित् (वि०) कल्प के अन्त तक ठहरते वाला,—आदिः सृष्टि में सभी वस्तुओं का पुनर्निर्वाकरण,—आरः कल्पान्त का रचयिता,— क्षय सृष्टि का नाश, प्रलय—उदा०—पुरा कल्पसत्ते वने जाते अन्तम जगत्—कथा० २११०,—तद्य,—दुष्य०—पाषण्ड,— बृह० 1 स्वर्गीय वृक्षों में से एक या इन्द्र का स्वर्ग, रघु० ११७५, १७१९, कु० २१३९, ६१६१ 2 इच्छानुकुल्य फल देने वाला काल्पनिक वृक्ष कायना पुरी करने वाला वृक्ष— नाबद्ध कल्प-द्रुमता विहाय जात तमात्मन्यमिषत्रयुषाम् रघु० १४४८, मी० ११५ 3 (आक०) अग्रत उदार पुरुष—सकलाधिसार्थकल्पद्रुम—पञ्च० १,—पाल साव्य बचने वाला, अन्तः—सतिका 1 इन्द्र की मन्वन्-कानन की लता—अर्जु० ११९०, 2 सब प्रकार की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली लता— नानाफल की लता बल्पन्तेव भूमि—अर्जु० २१४६, पु० ऊ० 'कल्पना' में,—सूक्तम् मूत्रा के रूप में यज्ञ-पशुनि ।

कल्पक [कल्प् + अच्] 1 मन्त्र 2 नाई ।
कल्पकम् [कल्प् + ल्यट्] 1 रूप देना, बनाना, क्रमबद्ध करना 2 सम्पादन करना, कराना, कार्यान्वित करना 3 छटाई करना, हाटना 4 स्थिर करना 5 मजबूत के लिए एक दूसरी पर रक्को हुई वस्तु, ता 1 अमाना, निश्च करना—अनेकविभूताणा तु पितृना भागकल्पना- वाङ् २११२०, २६३, मनु० १११६ 2 बनाना, अनुष्ठान करना, करना 3 रूप देना व्यवस्थित करना दृच्छ० ३१४ 4 मजाना, विभू-यित करना 5 मरचन 6 आधिकार 7 कल्पना,— विचार कल्पनापंडित— भिद्रा०—कल्पनाया अपर 8 विचार, उपेक्षा, प्रतिभा (मां में कल्पना की हुई) शा० २७ 9 मजबूत, मिथ्या रचना 10 ज्ञान-साजी 11 कष्ट-योजना, कृत्पूजित 12 (मीमा० द० में)—अर्थापनि ।

कल्पनी [कल्पन् + ट्रीप्] कैंपी ।

कल्पित (वि०) [कृप् + क् + चिच् + क्त] व्यवस्थित, निर्मित, मरचित, बना हुआ, दे० कल्प (प्र०) ।

कल्पस्य (वि०) [कर्म शब्दकर्म स्थिति तावयति—पृषो० साप्] 1 पार्षी, दुष्ट 2 मलिन, मैला,— ब, — वम् 1 लाक्षण, गन्दगी, उच्छिष्ट 2 पाप, म हि गगन-विहारी कल्पस्यधमकारो—हि० ११०१, भग० ५१२०, ५११६, मनु० ५१२६०, १०११८, ०० ।

कल्पस्य (वि०) (स्त्री०—बी) [कल्पयति, कल् + क् + चिच् + क्त] माययति अभिव्यक्ति, मां । जिच् + अच्, इत् चामी मायय कर्म० स०] 1 रसविराग, चिन्ती-वार, काला और मण्डे,—अः 1. चिन्तविचिच रत

2 काले और सकेर का मिश्रण 3. पिशाच, मृत, —बी यमुना नदी । सम०—कण्ड शिव की उपाधि ।

कव्य (वि०) [कल्+कृ] 1 स्वक्य, गीरीय, हनुदस्त (सर्व) कव्ये वनति वतते लघुपापलघुद्वयी-विक्रम० १, पात्र० १।२८, याचयेव भवेत्कव्यं तावच्छ्रेय समा-चरेत्—महा० 2 उपर, सुसज्जित—कवयस्य कवा-येता कस्याः स्वः अयने तव महा० 3. चतुर 4. यथिकर, यजूकमय (वैसा कि प्रयत्न) 5. बहुरा और गुणा 6 शिक्षाप्रय, —स्व्य 1 प्रभात, पी फटना 2 जाने वाला कल 3 याचक शराव 4 बवाई, मगल कामना 5. धूम समाचार । सम०—वाताः—वायिः (स्त्री०) सवैरे का भोजन, कलेवा, —वाकः, —वाक्यः कलवार, शराव लीचने वाला—वतः सवैरे का भोजन, कलेवा (सैम्) (अतः) कोई भी हल्की चीज, तुच्छ या महत्त्वहीन, भामुकी—ननु कव्यवर्ततेत—मुच्छ० २, धूम वस्तु—स्त्रीकव्यवर्तस्य कारणेन ४, स इदानी-मर्थकव्यवर्तस्य कारणादियमकार्यं करोति १ ।

कव्या [कलयति मायवति कल्+गिच्+यच्+टाप्] 1 याचक शराव 2 बवाई । सम०—वाकः, —वाक्यः शराव लीचने वाला, कलवार ।

कव्याय (वि०) (स्त्री०—वा, —वी) [कव्ये प्राठ. अय्यते शब्दते—अच्—यच्] 1 आनन्ददायक, सुखकर, लीभायशास्त्री, भाग्यदान्—त्वमेव कल्याणि तपोस्त-तीया—रघु० ६।२९, मेघ० १०९ 2 सुन्दर, लक्षिकर, मनीह्वर 3 श्रेष्ठ, गौरवयुक्त 4 धूम, अयस्कर, मंगल-प्रद, भद्र—कल्याणानां विमति महतां भाजन विचरमूर्ते—मा० १।३,—चम् 1 अच्छा भाग्य, आनन्द, भलाई समृद्धि—कल्याण कुशलां जनस्य भगवांचकन्द्रार्धचूडामणि—हि० १।१८५, तद्वज्र कल्याणपरम्परया भोक्तारमुज्ज्वलमात्मवेहम्—रघु० २।५०, १७।१, मनु० १।६० इसी प्रकार अभिनिवेती—का० १०४ 2 गुण 3 उत्सव 4 सोना 5 स्वर्ग । सम०—कृष् (वि०) 2 सुखकर, लाभदायक, हिनकर—भग० ६। ४० 2 मंगलप्रद, भाग्यशास्त्री 3 गुणी,—धर्मन् (वि०) गुणसम्पन्न,—चक्षन्म् मित्रवत् भाषण, धूम कामना ।

कव्यायक (वि०) (स्त्री०—विका) [कव्याय+कृ] धूम, समृद्धिवासी, आनन्ददायक ।

कव्यायिन् (वि०) (स्त्री०—वी) [कव्याय+इति] 1 प्रवच, समृद्धिवासी 2 लीभायशास्त्री, भाग्यदान्, आनन्ददायक 3 मंगलप्रद, धूम ।

कव्यायी [कव्याय+यीच्] गाय—रघु० १।८३ ।

कव्य (वि०) [कल्+अच्] बहुरा ।

कव्यलोकः [कल्+लोकच्] 1 बड़ी लहर, ऊँच, —आयु कव्यलोलालम्—मनु० ३।८२, कव्यलोलालाकुलम्—मायि० १।५९ 2 धनु 3 हृत्, प्रसन्नता ।

कव्यलोलाली [कव्यलोक+लुपि+लीच्] गद्दी—स्वर्गकाली-विनि र्थं पापं तिर्यग्भूता मय प्रख्यातामरीशालनः—गदा० ५३, इसी प्रकार—विद्युत्पुलिताः कव्यो-ल्लयः ।

कव्य (भा० भा०—कवते, कथित) 1. स्तुति करना 2. बर्णन करना, (कविता) रचना करना 3. विषय करना, विष बनाना ।

कव्यः [कृ+अच्+कृ] मूढीमर,—कम् कुतुरमुता—विद्वजानि कवकालि च—पात्र० १।१७१, मनु० ५। ५, ६।४ ।

कव्यः—कम् [कु+अच्] 1. सजाह, विरह बलर, धर्म, रसाकवच, ताबीज, रहस्यपूर्ण बलर (हुं, हुं) जो कि रसाकवच की भांति प्रत्येक समझे जाते हैं 3. बीसा, ताया । सम०—कवः भोजन का वेद्य, पाकर का वृक्ष,—तर (वि०) 1 कवचवारी 2 कवच वारण करने योग्य वा—कवचहर कुमार,—वा० ३।१२ १० पर सिद्धा०, तु० बर्षहर—रघु० ८।९४ ।

कव्यी [कु+अट्+वीच्] दरवाजे का रिक्रा वा पत्थान ।

कव (क) र (वि०) (स्त्री०—र, —री) [कु+अरच्] 1. मिथिन, अन्तमिथित—शि० ५।१९ 2 अटित, काचित, जड़ा हुआ 3 विश्वविषय रणविरता,—र, —रच् 1 नमक 2 लटल, अम्लता,—रः बोटी, बूझा ।
कव (क) टी [कव+टीच्] बोटी, बूझा—इतनी विभोक्त-कवरीकमाननम्—उत्तर० १।२, शि० १।२८ अमर ५।९ । सम०—भाः—भाः गुणी हुई बोटी—वद्य अयने कांशीमच सजा कवरीमरम्—गीत० १२ ।

कवकः—कम् [केन अनेन बलते चकति—कृ+अच्] शारा० 1 मूढीमर—आस्वावचिः कवकस्तुषामानम्—रघु० २।५, १।५९, कवकच्छेदेव सम्पादिताः—उत्तर० ३।१९ ।

कवकित (वि०) [कवक+इत्तच्] 1 जाया हुआ, भिन्नता हुआ (मूढीमर) 2 चबाया हुआ 3 (अतः) बिना हुआ, पकड़ा हुआ—वैसा कि 'मृत्युना कवकितः' ।

कवक [कल् अयम् अटति, कु+अच्, अट्+अच्] ३० 'कपाट' ।

कवि (वि०) [कु+इ] 1 सर्वज्ञ—भग० ८।९, मनु० ४।२४ 2 प्रतिभावासी, चतुर, बुद्धिमान् 3 विचारवान्, विचारशील 4 प्रशस्तीय,—विः 1 बुद्धिमान् पुत्र, विचारक ऋषि—कवीनामुसना कवि—भग० १०। ३०, मनु० ७।४९, २।१५१ 2 काव्यकार—मत् बुद्धि राजचरित आद्य कविरसि—उत्तर० २, मन्ः कविभक्तः—पार्थी—रघु० १।३, इव कविम्. पूर्वव्यो नवीनार्थं प्रधास्यदे—उत्तर० १।१ शि० २।८९ 3. चतुरी के आचार्य शुक की उपाधि 4 वाल्मीकि, वासिष्ठी 5. ब्रह्मा 6. सूर्य—(स्त्री०) लताम वा बहूना—३० कवि-

—का। शय०—श्लोक आदिकवि वाल्मीकि की उपाधि,
—सुकः सुकाचार्य की उपाधि,—राजः 1 महाकवि
—(कीर्ति कविराजपविमुकुटाङ्ककाशीरसुतम्—यह
बाणभैरवचरित के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में
पाया जाता है) 2. कवि का नाम, 'राजबपाण्यवीर'
नामक काव्य का रचयिता,—राज्यायनः वाल्मीकि की
उपाधि।

कविपत्र—का + कन्, रिचया टाप् च] लगाम का
दहाना।

कविता [कवि + तल् + टाप्] काव्य,—सुकविता यद्यस्त
राज्येन किम् अर्थ० २।२१।

कवि (बी) यम् [कवि + छ] लगाम का दहाना।

कवोच्य (वि०) [कुलितम् ईयत् उच्यम् कर्म० स०, को
कवोच्ये] कुञ्ज बोझा गर्भ, गुणगुना—रघु० १।६७,
८४।

कव्यम् [कवते हीयते पितृभ्य् यत् अभादिकम् - कु + यत्]
(वि०) ह्यम्] मृत पितरों के लिए अन्न की आहुति
—एष ई प्रथम. कल्प प्रदने ह्यकव्ययो—मनु०
३।१४७, ९७, १२८,—व्यः पितरों का समूह। सम०
—बाहू. (पु०)—बाहू,—बाहू. अग्नि।

कवः [कृ + अच्] कोडा (श्राय बहुवचनान्),—शा बाहुक
—द्वानी सुकुमारोऽस्मिन् नि सक् कर्कशा, कणा, तव
गात्रे पतिव्यान्ति सहास्माक मनोरथै । मूच्छ० ९।३५
(यहाँ कथा शब्द स्त्रीलिपि और पुल्लिपि दोनों में ही
सकता है) 2 कोडे लगाना 3 डोरी, रस्सी।

कविपु (पु० या नपु०) [कवाति दुःख कथयते वा, मुगध्या-
धित्वात् निपातनात् साच्] 1 चट्टाई 2 तर्किया 3
बिस्तरा,—दुः 1 भोजन 2 बन्ध 3 भोजन-बन्ध
(विषयकोश के अनुसार)।

कवे (के) व (पु०, नपु०) [के देहे हीयते, कः वरु वा
श्रुणाति, क + श् + उ, एरकायेवा, कस् + एरुन् वा]
1 रीझ की हड्डी 2 एक प्रकार का बांस।

कव्यम् (वि०) [कृ + अल्, मुट्] मिला, गन्वा, अकीर्तिकर,
कर्मकी—यास्तन्व्यात्कर्ममला-कि-वधनी स्यात्पेदस्मिन्मूल
भिन्न सामक्यम्—उत्तर० १।४२,—सम् मन की
सिद्धता, उदासी, अकसाय—कर्ममल महादिविभत्
—महा०, कुतस्त्वा कदमलमिद विधये समुपस्थिनम्
—अप० २।२ पाप 3 मूर्छा।

कवनीर (ब० ब) [कृ + ईरुन्, मुट्] एक देश का नाम,
वर्तमान कवनीर (तम्र बन्धों में इसकी रिचति इस
प्रकार बताई गई है—भारवामदभारम् कुकुमावितटा-
त्कः, तापकवनीरवेद्य स्यात् पचासघोजानाम्क.)
सम०—कः,—कम्,—कव्यम् (पु० नपु०) केसर,
काष्ठरज—कवनीरकव्य कट्टाति विताम्बरस्या—भावि०
१।७१।

कव्य (वि०) [कथामर्हति—कथा + य] कोड़े या बाहुक
लगाने जाने के बोध—इयम् मारक गाराव।

कव्यम् [कव्य + पा + क] 1 कवुका : एक कवि, अदिति और
विति के पति, अत देवता और राक्षस दोनों के पिता।
(इन्द्रा का पुत्र मरीचि था, मरीचि का पुत्र कव्यम् हुआ,
सृष्टि के कार्य में कव्यम् ने बड़ा योग दिया। महाभारत
तथा दूसरे ग्रन्थों के अनुसार उसका विवाह अदिति तथा
दक्ष की अन्य १३ पुत्रियों के साथ हुआ। अदिति से
उसके द्वारा १२ आदित्यों का जन्म हुआ—अपनी
दूसरी १२ पत्नियों से उसके अनन्त और विविध प्रकार
की सन्तान हुई— सौर्य, रोगने वाले जन्तु, पक्षी, राजस,
भद्रलोक का नक्षत्रजप तथा पशु। इस प्रकार
बहु देव, अशुर, मनुष्य, परि, पक्षी और सरीसृप
आदिकों का वन्तुन सभी जाँवधारी प्राणिमात्र का
पिता था। इसी लिए उसे बहुधा प्रजापति कहा
जाता है)।

कव् (म्भा० उभ०—कवति- ते, कवित) 1 मसलना,
सुरचना, कम्पा मन्त्रकाय कवति—सिद्धा०, मट्टि०
३।४९ 2 परीक्षा करना, ज्ञेय करना, कसौटी पर
कसना (सौना आदि)— छदहैम कवप्रियास्तक्य-
पाषाणनिभे नभन्मले—नै० २।६९ 3 चोट मारना,
नट्ट करना 4 मूर्खाना।

कव (वि०) [कृ + अच्] 1 रगड़ने वाला, कम्पने वाला,
— वा रगड़ कसना 2 कसौटी—छदहैम कवप्रियास्त-
स्तक्यपाषाणनिभे नभन्मले—नै० २।६९, मूच्छ०
३।७।

कव्यम् [कृ + म्यट्] रगड़ना, चिह्नित करना, सुरचना
—कण्डूलक्ष्मिपण्यपिण्डकषणोक्त्येन सपातिभि --
उत्तर० २।९, कव्यकम्पनिस्तमहाहिमि - कि० ५।४७
2 कसौटी पर कस कर पाने की परतना।

कवा—कवा।

कवाय (वि०) [कवति कच्छन् - कृ + प्राय] 1 कसैका
—श० २ 2 सुगन्धित— स्फुटितकमलामोरमैश्रीकवाय,
—मेघ० ३१, उत्तर० २।२१ महाश्री० ५।४१
3 लाल, गहरा लाल— भृगाकुरस्वायकवायकठ - कु०
३।३२ 4 (अत) मधुर-स्वर वाला—मा० ७
5 भूरा, 6 अनुपमूल, मिला—यः,—अथ 1. कसैका
स्वाद या रस (६ रसों में से एक) दे० कटु 2 लाल
रंग 3 एक भाग लौपाँव, चार भाग या १६ भाग
पानी में मिलाकर बनाया हुआ (सब को मिलाकर
उबालना जब तक कि पीयाँव न रह जाय), काढ़ा
—मनु १।११५ 4. लेप करना, पोतना—कु० ७।
१७, पुपफना 5 उबटन कसा कर घरीर की सुवासित
करना—अतु० १।४ 6 पोष, राल, बूझ का निःशुद्ध
7 मूल, अस्थच्छटा 8. मन्दा, कविता 9. श्वाकारिक

विषयों में आसक्ति,—कः 1 आदेश, सविन 2 कलि-
युग ।

कलाविति (वि०) कलाय + इत् + च । 1 हलके रत्न बाला,
शाल रत्न का, रंजीत—अनुनेय कलावितस्तनी—कु०
५१२४, सि० ७।११२. 2. पल ।

कलि (वि०) [कलि हितविति कल् + इ] । हानिकारक,
अनिष्टकर, पीडाकर ।

कले (से) कल् [कल् (स) + एरक, उत्थम्, कन् + टाप्]
रीठ की हृद्दी मेरुदण्ड ।

कण्ड (वि०) [कल् + क्त] 1 बुरा, अनिष्टकर, रोगी,
मलत्—रामहस्तमनुष्याय कण्डात् कण्डतरं गता—रघु०
१५।४३, अर्थात् अधिक बुरी अवस्था हो गई (दुर्घ-
शाशस्त हो गई) 2 पीडाग्रम, सतापकारी—मोहादनु-
कण्डतरं प्रबोध—रघु० १४।५६, कण्डोऽयं सन्
मृत्युमाय—रत्न० १, चिन्तामो से भरा हुआ—मनु०
७।५०, याज्ञ० ३।२६, कण्डा वृत्तिः पदाधीना कण्डो
बाहो निराश्रय, निर्धनो व्यवसायवत् सर्वकण्डा दरिद्रता ।
बाण० ५९३ कठिन—स्त्रीयु कण्डोऽधिकार—विष्णु०
३।१ 4. दुर्घर्ष (सन् की वृत्ति) मनु० ७।१८६,
२।३ 5 अविष्टकर, पीडाकर, हानिकर 6 गहिर,
—अधु 1 दुष्कर्म, कठिनाई, सफट, श्रया, यन्त्रया,
पीडा—कण्ट सन्मनस्तता—शं० ९, धिर्वा कण्ट-
संश्रया—पथ० १।१६६ 2 पाप, दुष्टता 3 कठिनाई,
प्रयास, कष्टमे किसी न किसी प्रकार,—अधु (अधु०)
हाय ।—हा विक् कण्ट, हा कण्ट बरयाभिमतपुत्र
पुत्रवत्तायते—पथ० ४।७८, सम०—आगत
(वि०) कठिनाई से आया हुआ, पहुँचा हुआ,—कर
(वि०) पीडा कर, दुष्कटायी—तथु (वि०) बौर
तपस्या करने वाला—शं० ७,—साम्य कठिनाई से
दूर किये जाने के योग्य—स्वाम्य बुरा स्वान,
अशुचिकर या कठिन जगह ।

कण्टि (स्त्री०) [कल् + क्तिन्] 1 परल, जाँच 2 पीडा,
कण्ट ।

कण् । (जन्० पर०—कसति, कसित) हिनना-दुलना,
जाना, पहुँचना, निम्न,— (प्रेर०) 1 निन्तालना, बाहर
सौचना 2 मोड़ना, बाहर हूक देना, निर्वासित करना,
निरासल करना—निरकासपत्रविनयेतवसु विनयाल-
नासपरिस्वागिका—सि० १।१० येनाह जीवलोका-
त्रिकासायिष्ये—मूढा० ९, प्र—, सोलना, प्रसार कर-
वाना—यनमुक्ताबुलबप्रकाशितौ (कुमुदी)—चट० १९,
पि—, बुलना, प्रसूत होना (आल० भी) किकसति हि
पतास्योदये पुण्ठीकम्—मा० १।२८, सि० १४।७, ८२
कु ७।५५, निजहृवि किकसन्—मत्तु० २।७८ (प्रेर०)
सोलना, प्रसार करवाना—अन्तो किकासपति कौरधक-
बालम्—मत्तु० २।७३, सि० १५। १२, अमय ८४ ।

ii (बवा० वा०—कस्ते, कंस्ते) 1 जाना 2 नष्ट
करना ।

कस्तु (सु) रिक, कस्तुरी [कसति कम्बोज्या—कन्
+ ऊरु + ईच्, तुद्, कन् + टाप् ह्रस्वः] मुक्क,
कस्तुरी—कस्तुरीकातिककनामि विषाय शायम्—आमि०
२।४, १।१२२, बीर० ७ । सम०—कुरा कस्तुरीयम्
—(बह हरिण जिसकी नाभि से कस्तुरी नामका
सुगन्धित द्रव्य निकलता है) ।

कङ्कारण [के कले झूझते—क + झ्झाप् + क्त् + पुषो० इत्य
र] श्वेत कमल—कङ्कारणपद्मकुमुदामि गुग्गुलिपुष्पम्
—अधु० ३।१५ ।

कङ्कः [के प्रले झूझति शब्दायते स्पर्धते वा—क + क्ङ् +
क] एक प्रकार का शारत ।

कांक्षीयम् [कसाय पानपाशाय हितम्—कंश् + छ + क्त् +
यत्ता ।

कांश्यः (वि०) [कसाय पानपाशाय हितं कंशीय तस्य विकार-
—यन्त्, उजोय] कति वा जस्त का बना हुआ
मनु० ४।५, —स्वम 1. कांसा, वा जस्ता—मनु०
५।११४, याज्ञ० १।१९० 2 कति का बना कङ्कियाल
—स्व, —स्वम् ब्रह्म पीने का बर्तन (पीतल का)
प्याला—हि० १५।८१। सम०—कार (स्त्री०—री)
कसेरा, ठेरा,—सत्तः शीस, कस्ताल,—वाङ्मन्
पीतल का बर्तन,—अलम् ताडयत्क, ताँडे का बर्त ।

काश् [क + कम्] 1 कौचा—काकोर्जि जीवति विराय
शील च मुक्कस्ते—पंच० १।२४ 2 (बाण०) वृष्टि
व्यविति, नीच और डोटेपुत्र 3 लयदा शायनी 4
केवल सिर को भिगाकर स्नान करना (जैसा कि
कोडे करते हैं),—की कौची,—कम् कौचों का वस्तु ।
सम०—अशितोत्काम्याय दे० 'न्याय' के नीचे,—अष्टि-
उत्तम्,—उदरः शीप,—काकोर्जो येन विनीतर्ष-
—किराय,—उत्किका,—उत्कौचम्, कौचे और
उत्त की नैतिक गजता (काकोर्जि—पंचतल
के तीसरे तल का नाम है),—विष्वा मूजा वा चुंजवी
का पीचा (रती), कष्ट,—अविः लज्जयती 2. अलर्ष-
—दे० भी० 'काकपत्र',—आतः कोयल,—सत्कीच
(वि०) जो बात अकस्मात् अजानावित रूप से हो
दुष्टटना—अहो नु कल भीः तथेत् काकतालीयं तत-
—मा० ५, काकतालीयवप्रायं दुष्टवापि विविधतः
—हि० प्र० १५, कवी कवी किमाविशेषण के रूप में
प्रयुक्त होकर 'सयोग में' अर्थ को प्रद करण है
—कसति काकतालीयं तस्य प्राज्ञः न विष्वाति—वेणी०
२।१४,—'न्याय' दे० 'न्याय' के नीचे,—सत्किल्मि-
(वि०) वृष्टि, निच,—कसः (सा०) कौचे का दंत,
(बाण०) अलमय बात वितका अविताय न हो,
'कौचकम् अलमय बातों की शीघ करना (अर्थ और

अनामकर काया क ख व म कहा जाता है),—**अक्षः** बाइबानल,—**विद्या** हल्की तीव्र या अरकी को आसानी के दूट आय,—**वक्षः**—**पक्षः** (विशेष कर क्षिप्यो के) बाक्यों और तरफों की कनपटियों के लंबे भाग या अक्षों—**काकपक्षरक्षेत्र** याचित—रघु० १११, ३१, ४२, ३१२८, उदार० ३,—**पक्ष्म** हस्तलिखित पुस्तक या लेखों में चिह्न (A) जो यह प्रकट करता है कि यहाँ कुछ छूट गया है,—**पक्षः** सभोग की एक विशेष रीति,—**पुष्प**—**पुष्प** कोयल,—**पेक्ष** (वि०) छिछला—**काकपया** नदी—**लिङ्ग**—**श्रीषः** उल्क,—**श्वपु** जलकुम्भकट,—**यक्ष** अन्न का वह पीया जिसकी बाल में बाल न हों—**यथा** काकपया प्रोसता यथाश्वभवास्तिला, नाममात्रा न 'पदो हि धनुर्गुणानस्तथा नरा । पंच० २।८६,—**तयैव** पाइबा तयै यथा काकपया इव—**महा०** (काकपया = निष हन्तृणामप्यम्),—**हस्तम्** कौबे की कर्कश ध्वनि (को' कौब) जिससे परिस्थिति के अनुसार भाषी गुणाम्ब का आग होता है—**शि०** ६।७६,—**अध्यासा** ऐसी स्त्री जिससे एक पुत्र होने के पश्चात् फिर कोई सन्तान न हू,—**स्वरः** कर्कश ध्वनि (जैसे कि कौबे की कौब कौब) ।

काकष (क) क (वि०) 1 बरपोक, काय 2 नगा 3 तीव्र, हरिउ,—**कः** 1 औरल का गुलान, पलीभक्त 2 (स्त्री०) —**की** 2 उल्क 3 आलसजी, घोला, दोंपेन ।
काक (का) कः [का इत्येव कलो मय्य- ब० सं०] पहाड़ी कौबा,—**कम्** कटमणि ।
काककि—**की** (स्त्री०) [कल + इन = कलि, कु इत्यत् कलि, की कायेष, निषयां कौप् च] 1 मन्व मधुर स्वर—**अनुबद्धमृगकाककीसहितम्**—उत्तर० ३, श्वनु० १।८ 2 एक प्रकार का मन्व स्वर का बाजा जिसके द्वारा शोर यह पता लगाते हैं कि लोग सोये हैं या नहीं—**कणियुक्काककीसदमक** ' प्रमुपनेकोपकरणम्—**दशा०** ४९ 3 कौबी 4 चुपकी का पीया । सव०—**रक्षः** कोयल ।

काकिकी, **काकिकिका** [कक् + गिनि + कौप् = काकिकी + कन् + टाप्, ह्रस्वः] 1 सिल्के के रूप में प्रयुक्त होने वाली कौबी 2 एक सिल्का जो २० कौबों या चौथाई पज के बराबर होता है 3 चौथाई मासे के बराबर पज 4 माप का एक अल 5 तराजू की डबी 6 ह्रस्व, (एक प्राचीन माप जिसकी कन्वाई एक हाथ के बराबर होती है) ।

काकिकी (स्त्री०) [कक् + गिनि + कौप्] 1 पज का चौथाई 2 माप का चौथाई 3 कौबी—**शि०** ३।१२३ ।
काकु (स्त्री०) [कक् + उप्] 1 भय शोक, कोष प्रादि संघर्षों के कारण स्वर में परिवर्तन—**विभक्तच्छन्दिनी** काकुस्वित्पिपीयते—**सा०** ८७, अलीककाकुकर-

गकुकारकां—**का०** २२२ (अल) 2 विधेवालयक शब्द जो इस रूप से प्रयुक्त किया जाय कि चिरड (स्वीकारालयक) अर्थ को प्रकट करे (इस प्रकार के अक्षरों पर स्वर की विकृति से ही अभीष्ट अर्थ प्रकट किया जाता है) 3 बुधबुडाना, गुणगुणाना 4 विद्या ।
काकुस्थः [ककुस्थ + अय] ककुस्थबन्धी, सुवन्धी राजाओं की उपाधि,—**काकुस्थमालीक्यता** गुणाम्ब—रघु० ६।२, १२।३०, ४६, वै० 'ककुस्थ' ।

काकुषम् [काकु ध्वनिभेद दधाति—काकु + दा + क] तादृ ।
काकोल [कक् + गिप् + ओल] 1 पहाड़ी कौबा याज० १।१७४ 2 तीव्र 3 सुभार 4 कुम्हार 5 नरक का एक भाग—**याज०** ३।२२३ ।

काक [कुत्स्विन् अथ यत्—को कादेश] तिरछी विलम्ब, कनकियों से देवता,—**अक्ष** स्त्री की चटुता, अग्रसत्ता की वृष्टि, अग्रपुंगु विगाह—**काकेश्यानावरेणित**—**भट्टि०** ५।२८ ।

कायः (पु०) कौबा, तु० 'काक' ।

काकम् (म्या० पर०) (महाकाव्यों में आ० भी) —**काकश्चिनि**, **काकश्चिनि** 1 कामना करना, चाहना, लालापित होना—**यत्काकश्चिनि तपोभिरन्यन्ययत्तमित्तस्यप्यन्यय**—**वा०** ७।१२, न होचित न काकश्चिनि भय० १२।७, न काकश्चे विजय कृत्वा—**१।३२**, रघु० १२।५८, मनु० २।०४२ 2 प्रत्याशा करना, प्रतीक्षा करना, अचिन्तालापित होना, कामना करना, आ—, 1 चाहना, लालसा करना, कामना करना,—**प्रत्याशयत रिपुराककश्च**—रघु० ७।४०, ५।३८, मनु० २।१६२, मेघ० ११, याज० १।१५३ 2 अपेक्षा करना आवश्यकता होना,—**प्रत्या**—**पात** में रहना, मेवा में उपस्थित रहना—**वि**—**कामना** करना, चाहना, लालसा करना, सत्वा—**कामना** करना, चाहता ।

काकशा [काकश् + अ + टाप्] 1 कामना, इच्छा 2 रुचि, अभिलाषा जैसा कि 'अककाक्षा' में ।

काकश्चिन् (वि०) (स्त्री०—**नी**) [काकश् + गिनि] कामना करने वाला, इच्छुक, दायन, जल आदि—**अग०** १।५२२ ।

काक [कक् + धञ्] 1 पीया, स्फटिक—**आकरे** पधरा-यायां जन्म काचमने कुत—**हि०** प्र० ४४, काच-मन्वेन चिकीतो इत चिन्तामनिर्मया—**शा०** १।१२ 2 फटा, मटकता हुआ (अलमारी का) तल्ला, जूए से बंधी हुई रस्सी को बोल को सहार के 3 आंख का एक रोग, आंख की नाड़ी का रोग जिससे वृष्टि घुबली हो जाय । सव०—**छदी** लीयो की झारि या जग,—**शोचन्म्** लीयो का पात्र,—**क्षथि** स्फटिक, बिलौर,—**मलम्**—**सद्वचम्**—**संवचम्** काका नमक का सोडा ।

काचनम्, काचनकम् [कच् + गिच् + ल्यट्, कच् वा] डोरी या पीता विपुले काचनों का बण्डल या हस्तलिखित पत्र बाँचे जाते हैं - तु० कचेल ।

काचनकम् (पु०) [काचनक + इति] हस्तलिखित धन्य, लेख ।

काचुकः [कच् + ऊकच्, वा०] 1 मर्वा 2 बकवा ।

काचुलम् [ईत्त्वं कुत्सित जलम् - को कादेश] 1 पाठा पानी 2 स्वादहीन पानी ।

काचुल्य (वि०) (स्त्री०- नी) [काच् + ल्यट्, स्त्रिया डीप्] मुनहरी, सोने का बना हुआ तन्मये च स्फटिकमयका काचुलनी वासवादि - मेघ० ७९, काचुलन बलयम् - श० ६१५, मनु० ५।११२, मनु 1 सोना - (काचुल्) अमेघ्यादिणि काचुल्यम् - मनु० २।२२९, 2 प्रभा, दीपि 3 मर्याति, घन-दीलन 4 कमल तन्तु, ५ 1 घतुरे वा पीया 2 चमक का पीया । मम० - अङ्गी मुनहरी रगक की स्त्री - भासि० २।७२, - कश्चर सोने की बान, चिरि मेभ नामक पट्टाह, - मू (स्त्री०) 1 मुनहरी (पीकी) भूमि 2 स्वर्ण-रत्न सन्धि समता के आधार पर दो दलों में हुई मुलह । तु० हि० ४।११३ ।

काचुलवार (स) [काचुल + वृ (अच्) + अण्] कचनार का पेड़ ।

काचुल्यः - (स्त्री०) [काच् + ल्यट्, कच् वा] स्त्री की (घाँटे २ धूप की घण्टा) मेकला या कचुलनी एतावता नन्दनयवसोभि काचुलीशुणधानमनिन्दिताया कु० १।३३, ३।५५, मेघ० २८ शि० १।३२, रघु० ६।६३ 2 दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर अा हिन्दुओं का एक गावन नगर समझा जाता है (माल नगर के नामों के लिए दे० 'अवलि') । मम० घुरी, बमरी 1 बोयी (नगर) 2 यक्ष कूट्टा, निनम्ब ।

काचुल्यकम्, काचुल्यका [कुम्भिका अञ्जिका प्रकाशो यन्म - कु + अञ्ज् । च्लुत् । टाप् इत्यम् को कादेश] अटास से युक्त एक प्रकार का पेय, कौडी ।

काचुकम् [चटुक्य भाव - अच्] लटास, अम्लता ।

काठ [कठ्, घञ्] चट्टान, पत्थर ।

काठिन्य, क्यम् [कठिन् + अण्, व्यञ् वा] 1 कठोरता, कठोरान् - काठिन्यमुक्तास्तनम् - श० ३।११ 2 निष्ठुरता, निर्देयता, कूटता ।

काण (वि०) [कच् + ङञ्] 1 एक बाल बाला - अक्षया काण - मित्रा०, काचैन चक्षुषा कि वा - हि० प्र० १२, मनु० ३।१५५ 2 छिन्नबाला, कटा हुआ (जैसे कि कौड़ी) - प्रायः काचबराटकीपि न मया तृष्णेऽभुवा मूच माम् - मनु० ३।४, फूटी कौड़ी ।

काण्येय, -र [काणा + ङच्, ङच् वा] कमी स्त्री का पुत्र ।

काण्येयी [काण + ङच् + ङीप्] 1 अस्ती या अविनि-चारिणी स्त्री 2 अविवाहिता स्त्री । मम० - मातृ (पु०) अविवाहिता माता का पुत्र, हरागो (तिरस्कार मूचक शब्द जो केवल सन्धीयम में प्रयुक्त होता है) - काण्येयीघात अस्ति किञ्चिच्चिह्नं यदुपलभ्यसि - मूषक० १ ।

काण्ड, -डम् [कच् + ड, दीर्घ] 1 अनुभाव, अघ, खड 2 पीछे का एक गठ से दूसरी गठ तक का भाग, घोरी 3 डठल, तुगा, शाला - लोकोत्पातमूलाकाम्बकवल-च्छेदेयु - उत्तर० ३।१६, अमक ९५, मनु० १।४६, ४८ 4 डम्ब का भाग, जैसे कि किसी पुस्तक का अध्याय, जैसे रमायण के मात काण्ड 5 एक पृथक् विभाग या विषय - उदा० ज्ञानं, कर्मं भादि 6 मूड, मूडर, मनुदाय 7 बाण 8 लम्बी हड्डी, भुजाओं या पैरों की हड्डी 9 बेट, मरकटदा 10 लकड़ी, लाठी 11 पानी 12 अक्षर, मोका 13 जिन्नी अण्ड 14 अविष्ट कर, बुरा, पापमय (केवल समाप्त के अन्त में) समय - काण्डः काणो का निर्माता, -शोषः मोहो का भाव, -षट्, -षटकः कलात, परदा शि० ५।२२, - शतः तीर की मार, बाण का परास, -वृषः 1 शस्त्रजीवी, मैत्रिक 2 बैल स्त्री का पति 3 सप्तक पुत्र, बीरत से मित्र कोई अन्य पुत्र 4 (तिरस्कार मूचक शब्द) अथम कुल, जाति-धर्म या अपने व्यवसाय की कृष्क लगाने वाला, कमीना, नमकहराम, महावीर० ३ में सतानन्द ने आमदम्य को 'काण्डपुष्ट' नाम से सम्बोधित किया है (स्वकुल पुष्टत कृष्ठा यो वै परकुल इजेत्, तेन तुष्करितेनामी काण्डपुष्ट इति स्मृत) - अंशः किसी अथ वा हड्डी का टूटना - शीषा चाण्डाल की बीषा, -सन्धिः इन्ध, जोड़ (जैसे कि पौधे को कलम लगाना), -स्पष्टः शस्त्रजीवी, बोझा, मैत्रिक ।

काण्डवत् (पु०) [वृ + मनुपु मस्य व] वनुघोरी ।

काण्डीरः [काण्ड + ईरल्] धनुषी (कई अवगणों पर वह शब्द 'काण्डपुष्ट' शब्द की तरह तिरस्कार मूचक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है तु० महावीर० ३)

काण्डील [काण्डील् + अण्] नरकुल की बनी टोकरी, दे० 'कण्डील' ।

कात् (अव्य०) [कुत्सितम् अतति अनेन कु + अत् + किवल् को कादेश] तिरस्कार मूचक उद्गार, प्रायः कु के साथ, काण्ड अथमानित करना, तिरस्कार करना - अन्यर्थस्वयन्तेन गुरु सखि काण्डत - भाष० ।

कातर (वि०) [ईत्त्वं तरति स्वकार्यसिद्धिं गच्छति - तु + अच् को कादेश - ताटा०] 1 कायर, डरपीक, हतोत्साह - कर्त्तव्यं च कातरात् - पंच० ४।४२, अमक ७, ३०, ७५, रघु० ११।७८ मेघ० ७७ 2 तुच्छी, शोकान्वित, प्रवर्षित - किञ्चैव कातराति श० ४

3. विभुष्य, विस्मिन, उद्विष्—अतु० ११६० 4. ब्रह्म के कारण कांपने वाला (बड़े बड़े का फरकना) रघु० २१५२, बभ्रव ७९ ।
- कातरम्** [कातर+अण्] कायरता,—कातरं केवला नीति शीघ्रं दशापदरेप्येतत्—रघु० १७५७ ।
- कात्यायन** [कात्य मोहापत्यम्, कात्+अण्+फल्] 1 एक प्रसिद्ध वैद्याकरण जिसने पाणिनि के सूत्रों पर अनुपूरक वार्तिक लिखे हैं 2 एक ऋषि जिसने श्रौतसूत्र व गृह्यसूत्र की रचना की है—याज्ञ० ११४ ।
- कात्यायनी** [कात्यायन+ङीप्] 1. एक प्रीक्षा या अपेक्ष विधवा (जिसने लाल वस्त्र पहने हुए हो) 2. पार्वती । सम०—पुत्र,—सुत कार्तिकेय ।
- काव्यचिन्ता** (वि०) (स्त्री—की) [कावचित्+ठञ्] किसी न किसी प्रकार (कठिनाइयों के साथ) सम्पन्न ।
- काविक** [काव्+ठक्] कहानी सुनाने वाला, कहानी-लेखक, कहानीकार ।
- कादम्ब** [कदम्ब+अण्] 1 कलहस,—रघु० १३१५, ऋतु० ४१९ 2 बाण—वि० १८१९ 3. ईश, यज्ञा 4 कदम्ब वृक्ष,—अन्व कदम्ब वृक्ष का फूल—रघु० १३१७ ।
- कादम्बरम्** [कादम्ब+ठा+क, लयर] कदम्ब के फूलों से लीची हुई वराह—निषेच्य मधु माधवा सरसमन कादम्बरम्—गि० ४१६६,—ती 1 कदम्ब वृक्ष के फूलों से लीची हुई वराह 2 वराह—कादम्बरीमासिक प्रथम सोमवृद्धिभ्यते—वा० ६ वा कादम्बरीमदविष्मिन्लालनस्य युक्त हि काङ्कलभूत पतन पृथिव्याम्—उद्भट 3 मद्राते हाथी की कनपटियों से बहने वाला मर 4 मरुवती की उपाधि, विद्यादेवी 5 माया कौयल ।
- कादम्बिनी** (स्त्री०) [कादम्ब+ङीप्] बादलों की पहिरी—पदोपनिषुम्भिनी अबनु काधि कादम्बिनी—रत्न० भाषि० ४१९ ।
- काव्यचिन्ता** (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कावचित्+ठञ्] साहित्यिक, आकस्मिक ।
- कादम्बेय** [कद्रो अपत्यम्—कद्रु+इक्] एक प्रकार का माप ।
- कान्तम्** [कन्+णित्+ल्यट्] 1 अञ्जल, धाम—रघु० १३२७, १३१८ मेघ० १८, ४२, काननाशिन—अञ्जल की भूमि 2 वर, सतान । सम०—अग्नि अंगली आय, दानाल,—अश्लक (पु०) 1 अञ्जलवासी 2 बन्दर ।
- कान्तिचक्रम्** [कान्तिचक्रा+अण्] हाथ की सबसे छोटी (कद्रो) अंगुली ।
- कान्तिशेखर**,—यो [कान्ति+अपत्यम्+ठक्, इनद व] सबसे छोटी लड़की की सतान ।
- कान्ति** [कन्याया आत—कन्या+अण्, कानोन् आदेश] अधिवाहिता स्त्री का पुत्र—कानोन् कन्यकाजातो

- मालामहमुरी मत—याज्ञ० २१२९, मनु० ९१७२ में वी गई परिभाषा भी देखिए 2 व्यास 3 कर्ण ।
- कान्त** (वि०) [कन्+णित्] 1 इत, धिय, अभीष्ट,—अभिमनकान्तं क्तुं बाण्य-मासवि० १, ४ 2 सुलकर, शक्तिर—भौतिकार्त्तनैरुपपु—रघु० ११६६ 3 मनोहर, सुन्दर—सर्वं कान्तमनोय पद्यनि—वा० २,—त 1 प्रेम 2 पति—कान्तोदित मुहुदुपगन सङ्गमार्गिणिकूल—मेघ० १००, गि० १०१३, २९ 3 प्रेमभाव 4 चन्द्रमा 5 बसन्त ऋतु 6 एक प्रकार का लोहा 7 रत्न (समान में सुवर्ण, चन्द्र और अयम् के माप) 8 कान्तिकेय की उपाधि,—अम् मेसर, जाकरान, सम०—आद्यसम्, पुरवक, अयन्कान्त ।
- कान्ता** [कम्+कत्+टाप्] 1 प्रेमिका या लावण्यमयी स्त्री 2 गृह स्वामिनी, पत्नी कान्त्यायस्य गयनीय-सिलातल ते उत्तर० ३०१, मेघ० १९, गि० १०, ७३ 3 पिपयट्टु क्ता 4 बन्दी इत्यादि 5 पृथ्वी । सम०—अश्लप्रदोहव अशोक वृक्ष दे० अशोक ।
- कान्तार**,—रम् [कान्त+रु+अण्] 1 विद्याल विद्याभान अङ्गल,—गृह तु गृहिणीहीन कान्तारारतिभ्यते—पद्य० ४१८, अर्ध० ११८६ याज्ञ० २१८ 2 अग्रय मद्रक 3 मूरत, छिद्र,—र १ लाल रंग की आदि का यज्ञ 2 पराङी आञ्जल ।
- कान्ति** (स्त्री०) [कन्+णित्] 1 मनोहरता, मोन्द्य—मेघ० १५, अश्लकान्ति—पा० ५, १९ 2 बभ्रव प्रभा, दीप्ति—मेघ० ८४ 3 अश्लक मन्दावट पशुङ्कार 4 कामना, इच्छा ५ (अक० शा० में) प्रेमादीन मोन्द्य [मा० इ०] क्षामा और दीप्ति से कान्ति का प्रेम प्रकार भिन्न बनाता है कपयोवन-लाक्य भोगाहैरङ्गमपणम्, जामा प्राक्ता मैव कान्ति मन्वयाप्यायिना सुनि, कान्तिरेवति निरनीर्णा दीप्तिरित्यादिषोचने—१३०, १३१ 6 मनोहर या कमनीय स्त्री 7 दुर्गा की उपाधि । सम० कर (वि०) मोन्द्य बहाने वाला, सोभा बढ़ाने वाला, इ (वि०) मोन्द्य देने वाला, अलङ्कृत करने वाला (इम्) 1 पित्त 2 धो, इ,—दायक,—अयिन् (वि०) अलङ्कृत करने वाला, भृत् (पु०) बन्धमा ।
- कान्तिवत्** (वि०) [कान्ति—मत्] मनोहर, सुन्दर, अश्लक ० ४१५, ५१७, मेघ० ३० (पु०) बन्धमा ।
- काव्यम्** [काव्+अण्] कौंठे की बढाई या वृद्धि में धुनी हुई कौंठ वस्तु ।
- कान्तिक** (वि०) [कादव्+ठक्] नामधारी, हलधारी ।
- कान्तिशोक** (वि०) [का दिया या शीतल वारिनी] अठ्, पु० ० मायु] 1 उड़ने वाला, मारने वाला, अशोहा—मृगन कान्तिशोक मत्त पद्य० ११२, (अत.) प्रत्न, अयधीन—भाषि० २१७८ ।

काम्यकुम्भ [काम्या कुम्भा यम्—काम्याकुम्भ + अण् पूर्वो •
साङ्] एक देश का नाम है • 'काम्याकुम्भ' ।

कापिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कपट + टक्] 1 आल-
साज, बेईमान 2 दुष्ट, कुटिल, —क चापलुग, चाटु-
कार, पिछलग्गु ।

कापटधन् [कपट + ध्यञ्] कुपटता, जालनाजी, धोला-
देही ।

कापच [कुत्सित पन्था] सराब सड़क (शा० और
जाल०) ।

कामास, कामासिक [कपाल + अण्, टक् वा] शीघ्र सम्प्र-
दाय के अन्तर्गत विसिष्ट सम्प्रदाय का अनुयायी
(वामानारी) जो मनुष्य की मोपदियों की माला
बाण्य करते हैं और उन्हीं में साते पीते हैं, पच०
११२१२ ।

कापालिन् (पु०) [कपाल + अण् + इनि] शिव ।

कापिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कपि + टक्] बन्दर
जैसा शकल मूल का या बन्दरों की भांति व्यवहार
करने वाला ।

कापिल (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कपिल + अण्] 1 कपिल
ने समग्रच रत्ने वाला या कपिल का 2 कपिल द्वारा
गिरिजिन या कपिल से स्वयम्भ्र, स कपिल मुनि द्वारा
प्रन्तुन सास्यदर्शन का अनुयायी 2 भूरा रंग ।

कापुष्य [कुत्सित पुष्य - कौ कदादेश] नीच धृति
शक्ति, कायर, नराधम, चामी - सुनन्तुत कापुष्य,
स्वल्पकेनापि तुष्यति पच० ११२५, ३६१ ।

कापेयम् [कपि + टक्] 1 बन्दर की जाति का 2 बन्दर
जैसा व्यवहार बन्दर जैसे दाब पेश ।

कापोत (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कापोत + अण्] भूरे रंग
का, घुमर रंग का, —सम् 1 कदरौ का समूह 2 मुर्दा,
त भूरा रंग । मय०—अकणम् आका में अजिने
का मुर्दा ।

काम् (अण्) आवाज देकर बुलाने के लिए प्रयुक्त होने
वाला अव्यय ।

कामः [कम् + घञ्] । कामना, इच्छा - मलानकामाय—
रघु० २१६५, २१६७, (प्राय तुमुन्तत् के साथ
प्रयुक्त) मनुकाम—जाने का इच्छुक भग० २१६२,
मनु० २१५४ 2 अनीष्ट पदार्थ सर्वाङ्ग कामानु सम-
न्तरे मनु० २१५ स्नेह, जन्मराग 4 प्रेम या
विषम भोग की इच्छा जो जीवन के चार उद्देश्यों
(पुरुषार्थ) में से एक है—मनु० अर्थ और अर्थ काम
5 विषयों से युक्ति की इच्छा, कामुकता मनु० २१२१५
6 कामदेव 7 प्रचुम्न 8 बलराम 9 एक प्रकार का
माय मन् 1 विषय, इच्छित पदार्थ 2 बीर्य, धातु
(हिन्दु) पीरामिकता के अनुसार काम ही कामदेव है
—यही इच्छा व शक्ति की का पुत्र है । उसकी पत्नी

रति है, जिम समय देवताओं को नारक के विरुद्ध युद्ध
करने के निमित्त अपनी सेनाओं के लिए सेनापति की
आवश्यकता हुई तो उन्होंने कामदेव से सहायता मांगी
जिससे कि शिव का ध्यान पार्वती की ओर जाकुट
हो, यही एक बात थी जो राक्षसों का काम उन्मत्त
कर सकती थी । कामदेव ने इस बात का बीड़ा
उठा लिया परन्तु शिव ने अपनी तपस्या के विरुद्ध से
क्रुद्ध हो अपने तृतीय नेत्र की अग्नि से काम को भस्म
कर दिया । उसके पश्चात् रति की प्रार्थना पर शिव
ने कामदेव को प्रचुम्न के रूप में जन्म लेने की अनुमति
दे दी । उसका धनिष्ठ मित्र वसन्त ऋतु और पुत्र
अनिरुद्ध है, बहु धनुराण से सुसज्जित है—प्रमार्गिका
ही उसके धनुष की शरीर है—और पाच विविध
पीलों के फूल ही उसके बाण हैं । मय०—अग्नि 1 प्रेम
की जाग, प्रवृत्त प्रेम 2 उन्कट इच्छा, कामोन्माद,
"संवीपणम् 1 कामार्गिक को प्रवृत्तिल करना 2 कोई
बामोद्दीपक पदार्थ,— अक्षुब्धताः 1 अगुली वा नाबून
2 पुष्य की जननेन्द्रिय, लिम—अक्षयः आम का वृक्ष,
—अक्षिकार प्रेम या इच्छा का प्रभाव,— अक्षिच्छित
(वि०) प्रेम के बशीभूत,—अनल देवों कामार्गिक,
—अक्ष (वि०) प्रेम या कामोन्माद के कारण अन्धा,
(-ष) 'कोण', अक्षा कस्तुरी,—अक्षिन् (वि०)
जब इच्छा हो तभी भोजन पाने वाला,— अक्षिकाम
(वि०) कामुक, कामासक्त,—अक्षय्य प्रमोद वन या
महाबन उद्यान,—अक्षि शिव की उपाधि, अक्षिन्
(वि०) भृगाव प्रिय, विषयी, कामामकल,—अक्षतार
प्रचुम्न,—अक्षसायः प्रणयोन्माद या काम क दमन,
वीर्याय,—अक्षयम् 1 जब चाहे तब भोजन करना,
इच्छानुकूल खाना 2 अनियन्त्रित सुभोपभोग,—अक्षुर
(वि०) प्रेम का रोगी, काम वेग के कारण रज्य
—कामानुरागा न प्रय न लज्जा—सुमा०,—आत्मकः
प्रचुम्न के पुत्र अनिरुद्ध का विशेषण—आत्मन् (वि०)
विषयी, कामुक, आसक्त—मनु० ७१२७,—अक्षुष्यम्
1 कामदेव का बाण 2 जननेन्द्रिय (शः) आम का
वृक्ष,—आक्षुः (पु०) 1 गिद्ध 2 गृह,—आत्तं (वि०)
प्रेम का रोगी, कामार्गिभूत—कामार्ता हि प्रकृति-
रूपणाश्चेतनाश्चेतनेषु—मेष० ५,—आत्तस्तं (वि०)
प्रेम या इच्छा के बशीभूत, कामोन्माद, कामासक्त;
—ईषु (वि०) अनीष्ट पदार्थ प्राप्त करने के लिए
तपेष्ट,—ईषुरः 1 कुबेर का विशेषण 2 परमात्मा,
—उबकम् 1 जल का ऐच्छिक तर्पण 2 विधि द्वारा
बहित अधिकारियों को छोड़ कर दिव्यत मित्रों का
जल से ऐच्छिक तर्पण—याज्ञ० ३१५,—उबकृत (वि०)
कामोन्माद के बशीभूत, या प्रचय रोगी,—कल्ल काम
की पत्नी रति,—काम—कामिन् (वि०) प्रेम या

कामोन्माद के अचिरेदो का अनुयायी, - **धार** (वि०) इच्छानुकूल काम करने वाला, अपनी कामनाओं में लिप्त रहने वाला (-र) 1 ऐच्छिक कार्य, स्वतः स्फूर्त कार्य - मनु० ११४१, ४५ 2. इच्छा, इच्छा का प्रभाव - मनु० ५११, - **कृत्** 1 वेद्या का प्रेमी 2. वेद्यावृत्ति, - **कृत्** (वि०) 1. इच्छानुसार समय पर कार्य करने वाला, इच्छानुकूल कार्य करने वाला 2. इच्छा को पूरी करने वाला, (ए०) परमात्मा, - **केशि** (वि०) कामात्मक (स्त्रि) 1 प्रेमी 2. मन्मथ - **कीडा** 1 प्रेम की एगरेली, श्रुमारी लाल 2. मन्मथ, - **ग** (वि०) इच्छानुकूल जाने वाला, इच्छानुसार जाने जाने या कार्य करने के योग्य (-या) अवती तथा कामुक स्त्री - याज्ञ० ३१६, - **गति** (वि०) अभीष्ट स्थान पर जाने के योग्य - मनु० १३१०६, - **गृह**, 1 प्रणयोल्लास का गृह, स्नेह 2. मनुष्य, भ्रमपूर सुलोचमोग 3. विषय, इन्द्रियो को आकृष्ट करने वाले पदार्थ, - **घर** - **घार** (वि०) बिना किसी प्रतिबन्ध के स्वतंत्र रूप से पुराने वाला, इच्छानुकूल भ्रमण करने वाला - कु० १५०, - **घार** (वि०) अनियमित, प्रतिबन्धरहित (-र) 1 अनियमित गति 2. स्वतंत्र वा स्वेच्छानुर्वक कार्य, स्वेच्छाधारिता - न कामचारो मयि न ह्यनीय - मनु० १६६२ 3. अपनी इच्छा या अभिलाषा, स्वतंत्र इच्छा, कामचालान्ता निद्रा०, मनु०, २१२० 4. विषयवाचि 5. स्वार्थ, - **घारिन्** (वि०) 1 बिना किसी प्रतिबन्ध के पुराने वाला - **वेध** ० ६३ 2 कामात्मक, विषयी 3. स्वेच्छाधारी (ए०) 1 गच्छ 2. चिदिया, **ज** (वि०) इच्छा या कामोन्माद से उत्पन्न - मनु० ७६६, ४७, ५०, - **जित्** (वि०) कामोन्माद या प्रेम को जीतने वाला - मनु० ९१३३, (ए०) 1 स्कर की उपाधि 2. गिब, - **जाल** कोचल, - **ब** (वि०) इच्छा पूरी करने वाला, प्रार्थना स्वीकार करने वाला, - **बा** - **बायधेनु**, - **बसंत** (वि०) मनोहर दिखार्ई देने वाला, **बुध** (वि०) अपनी इच्छाओं को दोहने वाला, अभीष्ट पदार्थों को देने वाला श्रोता कामदुषा हि सा - मनु० ११८०, २१६३, मा० ३१११, - **बुधा** **बुध** (स्त्री) मख इच्छाओं को पूरा करने वाली कार्यात्मिक गाय भग० १०१८, - **बुद्धि** माया कोचल, **बैध** प्रेम का देवता, - **धेनु** (स्त्री) धर्मार्थ की गौ, मख इच्छाओं को पूरा करने वाली स्वर्गीय गाय, - **धर्मिन्** (ए०) धार की उपाधि, - **धति**, - **धत्नी** (स्त्री) कामदेव की स्त्री रति, - **वाल** बलराय, - **धोबे** मख अपनी इच्छा, कामना या आशा को अभिव्यक्त करना - **धर्मिन्** कामप्रवेदन - **धर** ०, - **धरत** अनियंत्रित या मुक्त प्रल - **कल** आम के वृक्ष की एक जाति, - **मोषा**

(ब.ब.) विषययोगी में वृत्ति, - **मू** वैषणुगिमा की भयाया जाने वाला कामदेव का पद, - **मूह** - **मोहित** (वि०) प्रेमप्रभावित या प्रेमाकृष्ट - उत्तर० २१५, - **स्व**, वीर्यपात, - **रसिक** (वि०) कामात्मक, कामातं - **क्षणमपि** युवा कारात्मिक भर्तु० ३११२, - **रथ** (वि०) 1. इच्छानुकूल रूप धारण करने वाला, - **जानामि** स्वा प्रकृतियुक्त कामरूप मर्षातं वेध० ६ 2. सुन्दर, सुहावना (- मर) (ब० ब०) बराल के पूर्व में स्थित एक जिला (आसाम का पश्चिमी भाग) - **रथु** ० ५१८०, ८४, - **रेखा**, - **रेखा** बरया, रथी, - **रक्षा** पुरुष की जननेन्द्रिय, जिग, शोस (वि०) कामोन्मात, प्रेम का रोगी, - **र** इच्छानुकूल चुना हुआ उपहार, **रत्न** 1 रत्नत ऋतु 2 आम का वृक्ष (भा) उपोत्पन्ना चादनी, - **रत्न** (वि०) प्रेम-मृग, (श) प्रेम के बलीभूत होना, **रथ** (वि०) प्रभावक, **राह** (वि०) इच्छानुसार कुल भी बहना, मनमाना कहना, - **रिक्त** (वि०) इच्छाओं का इनन करने वाला, **रुल** (वि०) विषय वासना में लिप्त, स्वेच्छाधारि, **रुमनामक** मनु० ५१५४, - **रुति** (वि०) इच्छानुसार काम करने वाला, स्वेच्छाधारि, स्वल्प न कामवर्णितवनीयमोक्षने कु० ५१८२ (स्त्री) स्त्रि 1 मुक्त अनियमित कार्य 2 मन की मन्यवता, **रुति** (स्त्री) कामेच्छा में वृद्धि, **रुमन्** श्रुयवन्ती का फल, **र** 1 प्रेम का बाण 2 आम का वृक्ष, - **शाकम्** प्रेमविज्ञान रतिशास्त्र, **रथोय** अभीष्ट पदार्थों की प्राप्ति, **रथ** **रथन** ऋतु - **रु** (वि०) इच्छा का पूरा करने वाला मनु० ५१३३, **रुमन्** वासनायवमृन्मिदुन रतिशास्त्र, **रुतुक** (वि०) बिना सात्त्विक कारण के केवल इच्छामात्र से उत्पन्न भग० १६१८

कामत (अर्थ०) [काम + तमिन्] 1 स्वेच्छा से उच्छा-पूर्वक 2 अपनी इच्छा से, ज्ञानपूर्वक, इगदन्त, ज्ञानवृत्त कर मनु० ४१३०, - **रथाम्प** व कामत - **राश** ० ११६८ 3 प्रेमावेग से, भावनायुक्त, कामक-ताक - मनु० ३१७३ 4 इच्छापूर्वक, स्वतन्त्रता से, बिना किसी नियन्त्रण के ।

कामन (वि०) [कम् + णिङ् + वृत्] कामात्मक, कामा-वृत्, मख चाह, रायना, - **मा** कामना, इच्छा ।

कामनीयम् [कर्पनीयम् माव - अण्] मोनर्यं, आकर्ष-करा ।

कामन्तमिन् (ए०) [काम यथेष्ट धमति - काम + ध्मा + णिन्, धमादेश मृष्ट व नि०] रसेरा, उडेरा ।

कामम् (अर्थ०) [कम् + णिङ् + अम्] 1 कामना या रुचि के अनुसार, इच्छानुसार, कामज्ञानी 2 महमतिपूर्वक चाहना - **मुद्रा** ० ११२५ 3 मन भर कर - उत्तर०

२।१६ 4 इच्छापुर्वक, प्रसन्नता के साथ—शा० ४।४
5 अच्छा, बहुत अच्छा (स्वीकृतिरूपक अर्थय),
ऐसा हो सकता है कि—मानयनम्प्राप्त्या या काम
क्षाम्यन्तु य क्षमी—वि० २।४३ 6 मान लिया (कि)
यह सच है कि, निस्सन्देह (प्राय इसके पश्चात् 'तु'
'तवापि' का प्रयोग होता है) काम न लिप्यति मदा-
ननसम्पत्नी सा भूयिष्ठयन्विषया न तु दुष्टिरस्या य०
१।३१, २।१, रघु० ४।१३, ६।२२, १३।७५, मा०
२।३४ 7 बयक, सबसूत्र, वास्तव में—रघु० २।४३
(यथा अनिच्छा या विरोध निहित रहता है)
8 अधिक अच्छा, चाहे (प्राय 'त' के साथ)—काममा-
वरणातिच्छेदं गृहे कल्पन्तुमापि, न चैवैना प्रयच्छेत्
गृहहीत्य कर्हिचित्—मनु० ७।८९।

पाषयमान, } (वि०) [कम्+पिङ्ग+शानम्, पसें प्रक,
कावयान, } त्व् वा] कामासक्त, कामुक—रघु० १९।५०
कामयित् } छ० ३।

कामल (वि०) [कम्+पिङ्ग+काल्क्] कामासक्त, कामुक
-र 1 बसने श्चु 2 महत्त्वक।

कामलिता [कमल+कन्+टाप्, इयम्] मादक शराब।

कामवत् (वि०) [काम+मत्पु, मय्य वत्सम्] 1 इच्छुक,
बाहने वाला 2 कामासक्त।

कामिन् (वि०) (स्त्री०—की) [कम्+पिनि] 1 कामासक्त
2 इच्छुक 3 प्रेमी, प्रिय, (पु०) 1 प्रेम करने वाला
कामुक (पिषया की ओर विशेष ध्यान देने वाला)
—स्वया चन्द्रमया चातितमन्यीयेत कामिजनसार्थे—श०
३, न्या कामिनी मदनद्विनिमुद्राहरति विष्णु० ४।११,
अनर २, मालवि० ३।१४ 2 शोक का गुलाम,
3 बकबा 4 बिडिया 5 शिव की उपाधि 6 चक्रया
7 कद्वर, -शो 1 प्रेम करने वाली, स्नेहययी, प्रिय
स्त्री—मनु० ८।११२ 2 मनोहर और सुन्दर स्त्री
उदयति त्रिंशदाक कामिनीयष्टपाण्डु - मृच्छ० १।५०
मेवा तेषा कथय कविताकामिनी कीनुकाय—प्रस० १।
२२ 3 मामान्य स्त्री मृगया जहार चतुर्जेन कामिनी
-रघु० ९।६९, मेघ० ६३, ६७, श्चुनु० १।२८
4 शोक स्त्री 5 मादक शराब।

कामुक (वि०) (स्त्री०—का, -की) [कम्+उकञ्.]
1 कामना करता हुआ, इच्छुक 2 कामासक्त, कामातुर,
क 1 प्रमी, कामातुर—कामुकं कुम्भीलकीरश्च परि-
हर्तव्या चन्द्रिका—मालवि० ४, रघु० १९।३३, श्चुनु०
६।९ 2 बिडिया 3 अशोकवृक्ष - का) धन की
इच्छुक स्त्री—(की) कामातुर या कामासक्त स्त्री।

कामिन्स, काम्योक्त [कम्पिता नदी विशेष तस्या अद्वे
मद—कम्पिता+अम्=कम्पित+अम्+रम् नि० सायु
कम्पिता+अम् वि० दीर्घः] एक वृक्ष का नाम—मा०
९।३१।

काम्यल [कम्पलेन आवृतः—कम्पल+अम्] ऊनी कपडे
या कम्प से डही हुई गाड़ी।

काम्यविक [कम्+उक्] हल या सीपी के बने आभूषणों
का बिक्री, सल या सीपी का व्यापारी।

काम्योक्त [कम्पौक्त+अम्] 1 कम्पोज देश का निवासी
-मनु० १०।४४ 2 कम्पोज का राजा 3 पुत्राग वृक्ष
4 कम्पोज देश के बोझों की एक जाति।

काम्य (वि०) [कम्+पिङ्ग+यत्] शास्त्रीय, इच्छा के
उपयुक्त—गृथा पिच्छा च काम्याशनम्—श० २।८
2 ऐच्छिक, किसी विशेष उद्देश्य से किया गया (विप०
नित्य) -अन्ते काम्यस्य कर्मण—रघु० १०।५०, मनु०
२।२, १२।८९, मय० १८।२ 3 सुन्दर, मनोहर,
लाभप्रिय, सुबसूत—नासो न काम्य—रघु० ६।
३०, उत्तर० ५।१२, -न्या कामना, इच्छा, इरादा,
-प्रायना द्वाहाणकाम्या—मृच्छ० ३, रघु० १।३५, मय०
१०।१। सम० -अभिप्राय स्वार्थनिहित प्रयोजन,
कर्मन् (मपु०) किसी विशेष उद्देश्य तथा भावी
फल की दृष्टि से किया गया धर्मानुष्ठान, -विद्
(स्त्री०) शोध के अनुकूल भाषण, -इत्यम् 1 स्वी-
कार करने योग्य उपहार 2 स्वतंत्र इच्छा से दिया
गया उपहार, ऐच्छिक भेंट, -अरधम् स्वेच्छापुर्वकं
मग्ना, आरुहृया, -इत्यम् ऐच्छिक त्वे।

काम्य (वि०) [कु ईषत् अन्त—को कदेश] कुछ
पंजा सुद्रा, ईषदन्त।

काय, -यम् [वीयतेऽस्मिन् अस्म्यादिकनिमित्त काय, वि०
पञ्च, आदे ककर] 1 शरीर विभाति काय क-
मापराणा परोपकारार्थं तु चन्दनेन -मनु० २।७१,
कायेन मनसा बुद्ध्या—मय० ५।११ इसी प्रकार
कायेन, वाचा, मनसा आदि 2 वृक्ष का तना 3 बीणा
का शरीर (नारो को छोड़कर बीणा का डींवा)
4 सम्प्रदाय, जमघट, सचय 5 मूलस्य, पृथी 6 घर,
आवास, बस्ति 7 कुंदा, चिह्न 8 मैसूरिय स्वभाव
-यम् ('पीय' के साथ या 'तीर्थ' के बिना) अग्नी-
लोसे नीचे का हाथ का भाग, विशेषकर कर्णो
अगुली (यह अगुली प्रजापति के निम्न पावन मानी
जाती है -और 'प्रजापति तीर्थ' कहलाती है—नु०
मनु० २।५८, ५९), -क आठ प्रकार के विवाहों में से
एक जिसे 'प्राजापत्य' कहते हैं—याज्ञ० १।६०, मनु०
३।२८। सम०—अग्निः पावनशक्ति, श्लेषः शरीर
का कष्ट या पीडा, चिकित्सा कायवेदे के आठ
विभागों में से तीसरा, समस्त शरीर में व्याप्त रोगों
की चिकित्सा,—आयम् शरीर की माप,—कल्पम्
कवच,—स्व. 1 लेखक जाति (सचिपयिता और
धृष्ट साता की सतान) 2 इस जाति का पुरुष—कायस्य
इति सन्धी माथा—मृद्रा० १, याज्ञ० १।३३६ मृच्छ० ९,

(स्त्री०—स्त्री) 1 कायस्थ कायि की स्त्री
2 आन्ते का ब्रह्म (स्त्री०—स्त्री) कायस्थ की पत्नी,
—विभक्त (वि०) शरीरगत, शारीरिक ।

कायक (स्त्री०—स्त्री), कायिक (स्त्री०—स्त्री) (वि०)
[काय + कृत्, स्थिया टाप्, इत्थम्—काय + ठक्
स्थिया ङीप्] शरीर संबंधी, शारीरिक, शरीर विष-
यक—कायिकताप—मनु० १२।८, का ब्याज (घन
के उपयोग के बदले में जो कुछ दिया जाय) । सम०
—सुद्धि (स्त्री०) शरीर रहने हुए किसी पशु या
वर्तमान्य-सामग्रियों के उपयोग के बदले मूत्रदा दिया
गया ब्याज 2 एसा ब्याज जिसकी अदायगी से
मूलधन पर कोई प्रभाव न पड़े, शरीर रहने हुए पशु
की उपयोग म लाना ।

कार (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कृ + अण, घञ्, वा] (समास
के अन्त में) बनाने वाला, करने वाला, सम्पादन करने
वाला, कार्य करने वाला, निर्माता, कर्ता, रचयिता
—प्रचकार = रचयिता, कुम्हार, स्वर्णकार आदि,
—ः 1 कृष्य, कार्य जैसा कि 'पुरुषकार' में 2 किसी
एसी ध्वनि या शब्द को प्रकट करने वाला पद जो
विभक्ति चिह्न से युक्त न हो जैसा कि अकार,—मनु०
२।७६, १२६, ककार, फूकार आदि 3 प्रयास, चेष्टा
—दि० १६।२७ 4 धार्मिक तप 5 पति, स्वामी
हाकिम 6 मकल्य 7 शक्ति, सामर्थ्य 8 कर या दूगी
9 शिल्प का ढर 10 हिमालय जितम् । सम०—अक्षर
एक अभिज्ञ या नीचजाति का पुरुष जो निषाद पिता
न वेदेही माना से उत्पन्न हुआ—नु० मनु० १०।३६,
—कर (वि०) कार्य करने वाला, अभिकर्ता,—भू
चुनीचर ।

कारक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कृ + क्तृन्] (प्राय समास
के अन्त में) 1 बनाने वाला, अभिनय करने वाला,
करने वाला, सम्पादन करने वाला, रचने वाला, कर्ता
आदि—स्वप्नस्थ कारक—याज्ञ० ३।१५०, २।१५६,
सर्गसकरकारक—भग० १।४२, मनु० ७।२०४ पच०
५।३६ 2 अभिकर्ता—कम् । (श्या० में) सजा और
क्रिया के मध्य रहने वाला संबंध (या सजा और उससे
संबद्ध अन्य शब्द) इस प्रकार के कारक गिनती म
छ ह जो 'संबंधकारक' को छोड़कर सब विभक्तियों
से संबद्ध हैं १ कर्ता २ कर्म ३. कर्षण ४ सम्प्रदान
५ अग्रदान और ६ अधिकरण 2 व्याकरण का वह
भाग जो इनके व्यवहार को नतलाता है—अर्थात्
शाम्य रचना या कारक-प्रकरण । सम०—वीथकम्
(अलं० शा० म) एक अलंकार जिसमें एक ही
कारक द्रव्योत्तर अनेक क्रियाओं से संयुक्त हो—उदा०
—विधायि कृपाति वेत्सति विचलति निमित्ति विभोक्त-
यति तिर्यक्, अन्तर्नदति च्छिन्नुमिच्छति नवपरिणया

वष्पु क्षयने—काव्य० १०, हेतु क्रियात्मक या क्रिया-
परक कारण (वि०) भाषक हेतु ।

कारणम् [कृ + णिप् + स्युट्] 1 हेतु, तर्क—कारणकीया
कुटुम्बिक्य—मालवि० १।२८, रघु० १।७४, भग० १।३।
२१ 2 आधार, प्रयोजन, उत्पत्त्य—कि पुन कारणम्—
महा०, याज्ञ० २।२०३, मनु० ८।३४७, कारणमानुषी
तनुम्—रघु० १६।२२ 3 उपकरण, साधन—याज्ञ०
३।२० ६५ 4 (श्या० द० में) वह कारक जो निश्चित
रूप से किसी फल का पूर्ववर्ती कारण हो, या 'मिल' के
मतानुसार—पूर्ववर्ती कारण या उनका समूह जिन पर
कार्य निश्चित रूप से, बिना किसी कावलपेट के निर्भर
करता है, नैसर्गिकी के मतानुसार इसके तीन भेद
हैं—(क) समवायि (बनिष्ठ और अन्यतित्ति) जैसा
कि कराडे का कारण तनु, —घाये (ख) असमवायि
(ओ न तो बनिष्ठ हो न अन्यतित्ति) जैसा कि कपड़े
के लिए तनुओं का संयोग (ग) निमित्त (उपकरण-
त्मक) जैसा कि कपड़े के लिए बुलाहे की लक्ष्मी
5 जननात्मक कारण—सृष्टिकर्ता, पिता,—कु० ५।८१
6 तत्त्व, तत्त्व-सामग्रियों—याज्ञ० ३।१४८, भग० १।८।१३
7 किसी गटक या काव्य का मूल या कथावस्तु आदि
8 इन्द्रिय 9 शरीर 10 चिह्न, वस्तुत्व, प्रमाण या
अधिकार-पत्र—मनु० ११।४४ 11 जिसके ऊपर कोई
मत या व्यवस्था निर्भर करती है । सम०—अक्षरम्
विशेष तर्क, अभिप्राय के कारण को मुकरना (स्वीकार
न करना), शरीर को सामान्यत मान लेना परन्तु
वास्तविक (वैध) तथ्य को अस्वीकृत कर देना,—कार-
णम् प्रारम्भिक या प्राथमिक कारण, अणु,—अणु कारण
का गुण,—भूत (वि०) 1 जो कारण बना हो 2
कारण बनने वाला,—बाला एक अलंकार 'कारणो की
श्रुलला'—योत्तर चेत्युर्वस्य पूर्वस्यार्थस्य हेतुता, तदा
कारणमाला स्यात्—काव्य० १०—उदा० भग० २।६२,
६३, सा० द० ७२८,—वाचिन् (पु०) अभियोजना,
वादी,—धारि (मनु०) सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न मूल
जल,—बहोमि (वि०) विना कारण के,—शरीरम्
(वेदान्त द०) शरीर का ज्ञानात्मिक बीजारोपण, मूल-
भूत, या कारणों की रूपरेखा ।

कारणा [कृ + णिप् + कृप् + टाप्] 1 पीडा, वेदना
2 नरक में डालना ।

कारणिक (वि०) [कारण + ठक्] 1. परीक्षक, निर्णायक
2 कारण परक, नैमित्तिक ।

कारण्य [रम् + ङ = रण्य, ईत्त् रण्य = कारण्य, त
वाति—वा + क] एक प्रकार की बलत्त—उत्पत्
वादि विहाय तीरन्तलीनी कारण्य सेवेत्—विष्णु०
२।२३ ।

कारण्यविन् (पु०) [कर एव कार, तं वमति, कार + ष्या

+इति पु०] 1 कलेरा 2 अनिय विधा को मानने वाला ।

कारण [का इति रको यस्य व० स०] कौषा ।

कारस्कार [कार करोति—कार+ङ+ट, सुट्] किपाक वक्ष ।

कारा [कीर्तिते क्षिप्यते दण्डाहो वक्ष्याम्—ङ+बब, मृण, दीर्घ नि०] 1 कारावास, बन्दीकरण 2 जेलखाना, बन्दीगृह 3 बीणा का गर्वन के नीचे का भाग, तुंबी 4 बीडा, कष्ट 5 झूठी 6 सोने का काम करने वाली स्त्री । सम०—अवारण्, सुहृन्-वेष्मन् बन्दीघर, जेलखाना—कारागृहे निजितवासधेन लक्ष्मणरेषोचित-माप्रसारान्—रघ० ६।४०, शा० ४।१०, मय० ३।२१, —वृष्ट बन्दी, कौटी, —यास बन्दीगृह का रजवाला, काराघर का बन्दीसक ।

कारिः (स्त्री०) [ङ+इज्] कार्य, कर्म, (पु०—स्त्री०) कलाकार शिल्पकार ।

कारिका [ङ+ङ्खल्+टाप्, इत्यम्] 1 नर्तकी 2 व्यवसाय, पद्या 3 व्याकरण, दर्शन तथा विज्ञान से संबद्ध काव्य, या पद्य संग्रह—उदा०, (व्या० पर) अर्तुहरि की कारिका, साख्यकारिका 4 यन्त्रणा, यातना 5 व्याज ।

कारीचम् [करीष+जम्] सुल गोबर की करमियों का ढेर ।

काच (वि०) (स्त्री०—ङ) [ङ+अच्] 1 निर्मता, कर्ता, अभिकर्ता, नीकर 2 कारीगर, शिल्पकार, कलाकार—कारुणि कारित तेन कृषिम स्वप्नहेतवे—ब्रह्मसा० १।१३, इति स्व सा काष्ठरेण लेखित नलस्य च स्वस्य च सस्यमीशते—नै० १।३८, याज० २।२५, १।८७, मय० ५।१२८, १०।१२, (वे में है—तसा च तन्त्रबायश्च नापिते रजकस्तया, पचम-श्चमंकारश्च कारव सित्पिनो मता ।)—कः—देवताओं के शिल्पी विचरकरा 2 कला, विज्ञान । सम०—चौरः संच भारते बाला, डाकुं कः 1 शिल्प से बनी कोई वस्तु, शिल्पकर्म द्वारा निर्मित वस्तु 2 पूजा हाथी या हाथी का बच्चा 3 पहाड़ी, बनी 4 फल, माग ।

कारुणिक (वि०) (स्त्री०—की) [करुणा+ठक्] दयालु, कृपालु, शय्य—नागा० १।१ ।

कारुण्यम् [करुणा+ध्यञ्] दया, कृपा, रहम—कारुण्य-मात्स्यते—गीत० १, करिष्य कारुण्यत्परम्—जाभि० १।१ ।

कारुण्यम् [कर्कश+ध्यञ्] 1 कठोरता, कलापन 2 दुष्टता 3 दोषघ्न कलापन, शि० २।१७ पंच० १।९ 4 कठोरवृत्तता, लक्ष्मी, कूला—कारुण्य-वर्तितेऽपि चेतसि—अथर्व २४ ।

कारुणीयः [कृतवीर्यं+जम्] कृतवीर्य का पुत्र, हेतुम देस का राजा, जिसकी राजधानी माहिष्मती नगरी थी (पूजा के फलस्वरूप उसने दत्तात्रेय से कई वर प्राप्त किये जैसे कि हजार भुजायें, स्वर्णमय रथ आ इच्छानुसार बर्हा बाहे का सकता था, न्याय द्वारा अनिष्ट निवारण की शक्ति, विजयिजय, लक्ष्मी प्राप्त करवावेवता आदि (तु० रघु० ६।३२) । वायुपुराण के अनुसार धर्म तथा स्याय पूर्वक उसने ८५००० वर्ष तक राज्य किया तथा १०००० यज्ञ किए । वह रावण का समकालीन था, उसने रावण को अपनी नगरी के एक कोने में पशु की भांति बन्दीखाने में डाल दिया—तु० रघु० ६।४०, कारुणीयं की परमुराम ने मार डाला, क्योंकि वह परमुराम के पुत्र्य पिता जमदग्नि की कामधेनु को उठा कर ले गया था । कारुणीयं की सहस्रावुन भी कहते हैं) ।

कारुण्यम् [कृतस्वर+जम्] सोना, -म तत्पकारुण्य-मापुराम्बर—शि० १।२०, ईडेन—का० ८२ ।

कारुण्यिक [कृतान्त+ठक्] ज्योतिषी, मायवक्ता—कारुण्यिको नाम भूजा भुव ब्रह्मा—दश० १२० ।

कारुणिक (वि०) (स्त्री०—की) [कृतिका+जम्] कारुणिक मास से संबंध रखने वाला—रघु० १५।१५, —क 1 वह महीना जब कि पूरा चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र के निकट रहता है (अश्विन-नवम्बर महीना) 2 स्कन्द का विशेषण, (—की) कारुणिक मास की पूर्णिमा ।

कारुणिकेयः [कृतिकानामपत्य उक्] स्कन्द (क्योंकि उसका पालन-पोषण छ कृतिकाओं द्वारा हुआ था) भारतीय पौराणिकता के अनुसार कारुणिकेय युद्ध का देवता है, शिव जी का पुत्र है, (परन्तु उसके जन्म में किसी स्त्री का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं है) उसके जन्म के विषय में बहुत सी परिस्थितियों का उल्लेख मिलता है । शिव ने अपना वीर्य अग्नि में फेंका (जो कि कन्नूरी के रूप में शिव के पास गई जब कि वह पार्वती के साथ सहवास का मुक्तोपयोग कर रहे थे) जिसने इसे सतृण न करने के कारण गंगा में फेंक दिया (इसीलिए स्कन्द की अग्निम् या पद्मापुत्र भी कहते हैं) । उसके पदचाल यह छ कृतिकाओं (जब वह गंगा में स्नान करने गईं) में सकात कर दिया गया । फलस्वरूप वह सब गर्भवती हुईं और प्रत्येक ने एक-एक पुत्र को जन्म दिया परन्तु दाद में इन छ पुत्रों को बड़े चरुसमय इन से जोड़ कर एक कर दिया गया, इस प्रकार वह छ शिर, बारह हाथ तथा बारह-बीनों वाला वसाधारण रूप का व्यक्ति बना (इसीलिए उसे कारुणिकेय, पञ्चानन या सप्तभुज कहते हैं) । दूसरी कहानी के अनुसार गंगा में शिव के वीर्य को सतृणों में फेंक दिया, इसी कारण उसे छ

यनमय या शरजन्मा कहते हैं। कहते हैं कि उसने बीच पहाड़ को बिदीर्भ कर दिया इसीलिए यह बीच-धारण कहलाता है। एक शक्तिशाली राक्षस तारक के विचित्र युद्ध में यह देवताओं की सेना का नेतृपति था—जिसमें उसने राक्षसों को परास्त करके तारक को मार डाला, इसीलिए उसका नाम सेनानी और ताकजित् है, उसका चित्रण भयुरारोही के रूप में किया जाता है। सम०—अध्वु (स्त्री०) पार्वती, कार्तिकेय की माता ।

कास्वयंम् [कृत्स्न+ध्वञ्] पूर्णता, समग्रता, समूचापन—तामिसोषत कास्वयंम् द्विजाध्यात् पक्षिपायवान्—मनु० ३।१८३।

काश्च (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कश्च+ञच्] कोच से भरा हुआ, मिट्टी से बना हुआ या वारे से लथपथ ।
काषट [कषट+ञच्] 1 आवेदक, अभियोजता, अभ्यायी 2 चिचडा 3 लासा ।

काषटिक [कषट+ठक्] 1 तीर्थयात्री 2 तीर्थों के जलो को ढोकर अपनी आजीविका कमाने वाला 3 तीर्थ-यात्रियों का दल 4 अनुभवो पुरुष 5 पिछलागु ।

काष्यप्यन् [कृष्ण+ष्यञ्] 1 गरीबी, दरिद्रता, गरीबी-ध्वस्तकापण्या 2 दया, रहम 3 कजूसी, दुःखिदीर्घ्य—मय० २।७ 4 लघुता, हल्कापन ।

कापीति (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कापी+अच्] रुई का बना हुआ,--स,--सम् रुई की बनी हुई कोई वस्तु—मनु० ३।१३२६, १२।६४ 2 कागज,--सो रुई का पीथा, बाडी । सव०—मस्त्रिच (नपु०) कपास का बीज बिनीला,--वासिका तडुआ,--सौश्रिक (वि०) रुई के मूल से बना हुआ—दास० २।१७९ ।

कापीसिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कापी+ठक्] कपास का या रुई से बना हुआ ।

कापीसिका, **कापीसी** [कापीसी+कन्+टाप् ह्रस्व, कापीस+डीप्] रुई या कपास का पीथा, बाडी ।

कापीण (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कर्मन्+अच्] 1 काम को पूरा करने वाला 2 कार्य को पूर्ण रूप से प्रतीभाति करने वाला,--अध्वु जादू, अभिचार निखिलनयना-कर्षणे कामयज्ञा—भासि० २।७९, धिक्काक० २।१४, ८।१ ।

कापिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कर्मन्+ठक्] हस्तलि-पित, हाथ से बना हुआ 2 बेलबूटोसे युक्त, रघोच पागो से अन्धामिथित 3 रमाधिरण्या या बेलपूटेदार वस्त्र ।

कार्मुक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कर्मन्+उकञ्] काम करने योग्य, प्रतीभाति और पूर्णतः काम करने वाला,--कम् । धनुव—त्वयि चापिज्यकार्मुके—स० १।६ 2 बीस ।

कामे (स० कृ०) [कृ+ष्वत्] जो किया ज्ञता चाहिए,

बनना चाहिए, सम्पन्न होना चाहिए, कार्यान्वित किया जाना चाहिए आदि,—कार्यां सैकतमीनहमन्विभुना श्रोतो-वहा मालिनी—श० ६।१६, साक्षिण कार्या—मनु० ८।१६, दसो प्रकार रथ, विचार आदि,—अध्वु 1 काम, मामला, बात—कार्य त्वया न प्रतिपन्नकलाम्—कु० ३।१४, मनु० ५।१५ 2 कर्तव्य मि० २।१ 3 पेसा, जोखिम का काम, आकस्मिक कार्य 4 धार्मिककृत्य या अनुष्ठान 5 प्रयोजन, उद्देश्य, अभिप्राय—मि० २।३६, हि० ५।६१ 6 कमी, आह-व्यवता, प्रयोजन, मतलब (करण० के साथ) कि कार्य बनने हुतेन दयिताम्नेहृस्वहलेन मे विक्रम० २।२०, तुलने कार्य भवतीशरयागाम्—यच० १।७१, अमर ७१ 7 सचालन, विभाग 8 कानूनी अभियोग, व्यावहारिक मामला, शकडा आदि बहिर्हितकर्म ज्ञापता क क कार्यार्थिनि—मृच्छ० ९, मनु० ८।४३ 9 फल, किसी कारण का अनिवार्य परिणाम (वि० कारण) 10 (व्या० में) किवाशिधि, विभक्तिकार्य—रूपनिर्माण 11 नाटक का उपहार—कार्योपशेयमादौ तनुमधि रचयन्—मृदा० ५।३ 12 स्वास्त्र (आयु०) 13 मूल । सम०—अक्षम (वि०) अन्ना कार्य करने में असमर्थ अक्षम,—अक्षयविचार किसी वस्तु के अधिक्य से सबध रखने वाली चर्चा, किसी कार्यप्रणाली के अनुकूल या प्रतिकूल विचारविचारों,—अधिप 1 किसी कार्य या विषय को अत्यधिक 2 बहु प्रय या लक्ष्य जो अत्यन्त में किसी प्रय का निर्णायक होता है,—अर्थ किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य का उद्देश्य, प्रयोजन मनु० ७।१६७ 2 येनान्युक्ति के लिए आवेदनपत्र 3 उद्देश्य या प्रयोजन, अधिप (वि०) 1 प्रायाना करने वाला 2 अन्ता उद्देश्य या प्रयोजन निष्क करने वाला 3 सेवा नियुक्ति की आज करने वाला 4 न्यायालय में अपने पक्ष का समर्थन करना, न्यायालय में जाने वाला—मृच्छ० ९, आत्मन्म् किसी कार्य को संपन्न करने के लिए बंधने का स्वार्थ, गठी, ईश्वरम् सरकारोकार्यो की देवमाल—मनु० ७।१४१,—उद्धार कर्तव्य को पूरा करना,--कर (वि०) अन्वुक, गुण-कारी,—कारणे (हि० व०) कारण और कार्य, उद्देश्य और प्रयोजन, भाव कारण और कार्य का संबंध,—काल काम करने का समय, मौसम, उपयुक्त समय या अवसर,—पौरुषम् किसी कार्य की महत्ता, चित्तक (वि०) 1 दूरसी, मायवान, सतर्क, (क-) किसी व्यवसाय का प्रबन्धकर्ता, कार्यकारी अधिकारी यात्र० २।१९१, ध्वत् (वि०) कार्यरहित, बेकार, किसी पद से बर्हास्त,—बर्हास्तम् 1 किसी कार्य का निरीक्षण करना 2 सांवेदनिक मामले की पुछताछ—निष्पयः किसी बात का फैसला,—पुष्टः 1 निरर्थक

काम करने वाला भादमी 2 पागल, सबकी विधिपत्र 3 आलसी शक्ति, —अश्लेषः काम करने में अशक्ति, आत्मस्य, मुस्नी, —श्रेयः अधिकता, दूत, —बन्धु (न०) लक्ष्य और उद्देश्य, —विपत्तिः (स्त्री०) असफलता, प्रतिफलता, दुर्भाग्य, —श्लेषः 1 बचा हुआ कार्य—मनु० ७।१५३ 2 कार्य की प्रति 3 किसी कार्य का अण, —सिद्धि (स्त्री०) सफलता, —स्वात्म्य काम करने की जगह, कार्यालय, —हनु 1 दूसरे के कार्य में बाधा डालने वाला, —हि० १।७७ 2 दूसरे के हितों का विरोधी ।
—कार्यस्य (अव्य०) [कार्य + तसिच्] 1 किसी उद्देश्य या प्रयोजन के कारण 2 फलन, अनिर्वायत ।

कार्यम् [कृञ् + यञ्] 1 पतलापन, बुनकरता, दुबलापन —येषु २९ 2 छोटापना, अल्पता, कमी—रघु० ५।२१ ।

कार्यं [कृपि + ङ] किमान, बेतीहर ।
कार्योपण, णम् (या वचन) [कर्पे + ञ्ण = कार्यं, आ + ण्ण + घञ् = आपण, कार्यस्य आपण ब० म०]
मिश्र मित्र मूल्य का निकास या बट्टा—मनु० ८।१३६, १।२८२, (- कार्यं), णम् घन ।

कार्योपणिक (वि०) (स्त्री० - स्त्री) [कार्योपण + टिठञ्] एक कार्योपण के मूल्य का ।

कार्यिक - कार्योपण ।

कार्त्तं (वि०) (स्त्री० - स्त्री) [कृष्ण + ञ्ण] 1 कृष्ण या विष्णु से सम्बन्ध रखने वाला - रघु० १५।२४ 2 व्यास से सम्बन्ध रखने वाला 3 काले हरिण से सम्बन्ध रखने वाला - मनु० २।६१ 4 काला ।

कार्त्तव्यस्य (वि०) (स्त्री० - स्त्री) [कृष्णायम् + ञ्ण] काले लोहे से बना हुआ, —सम् लोहा ।

कार्त्तव्य [कृष्णस्य अपत्यम् - कृष्ण + ञ्ण] कामदेव की उपाधि वि० १९।१० ।

काल (वि०) (स्त्री० - स्त्री) [कु ईयत् कृष्णत् याति या + क, की कालेभ] 1 काला, काल या काले-नीचे गग का 2 समय - बिल्विलिफली काल निताय म मनोरथे रघु० १।३६, तस्मिन् काले-उस समय, कामयावत्किनीदेते कालो गच्छति धीमताम् हि० १।१, बुद्धिमान् अपना समय बिताने है 3 उपयुक्त या सम्पन्न समय (किसी कार्य को करने के लिए) उचित समय या अवसर (सब०, अर्थ०, मध्य० तथा नुम्-नन के मांय) रघु० ३।१२, ४।६, १२।६९, पर्वत्य कालवर्षी—सूक्त० १०, ६० 4 काल का अर्थ या अवधि (दिन के घण्टे या पहर) घण्टे काले दिवसस्य - ब्रह्म० २ । मनु० ५।१५३ ५ ऋतु 6 बेवो-पिकों के द्वारा नौ द्रव्यों से से 'काल' नामक एक द्रव्य 7 परमात्मा जो कि दिव्य का सङ्घट्ट है, क्योंकि वह सहायक नियम का मूर्तस्वरूप है काल बान्धा

मुबनफलके कीर्तित प्राणिवारं—भृगु० ३।३९
8 मृत्यु का देवता वन, —क. कालस्य न गोचरात्परगत
—वच० १।१५६ 9. श्राव्य, नियत 10. बलि की पुतली का काला भाग 11. कोयल 12. सनिधु 13. गिय 14. काल की माप (संगीत और छन्द शास्त्र में) 15. कलाक, साराबसीचन तथा बेचने वाला 16 अनुनाम, लण्ड, —सन्, लोहा 2 एक प्रकार का सुवर्णित द्रव्य । सम०—अक्षरिक साक्षर, पका लिता, —अनुब एक प्रकार का चन्दन का वृक्ष, काला अण—मामि० १।७०, रघु० ५।८१ (मृगु०) उस वृक्ष को लकड़ी, ऋतु० ४।५, ५।५, —अग्नि—अमल सृष्टि के अन्त में—अलयागि, —अंश (वि०) काले नीले शरीर वाला, (जैसे कि काली नीली धारवाली तलवार), —अग्निवम् काले हरिण की लाल, —अग्निवम् एक प्रकार का अजय या—सुर्यां कु० ७।२०, ८२, —अग्निव. कोयल, —अग्निरेक समय की हाति, बिलब, —अप्यथ 1 बिल्व 2 समय का बीतना 3 काल के बीत जाने के कारण हाति, —अप्यथः 1 'समय का प्रभावक' मृत्यु की उपाधि 2 परमात्मा, —अनुनामिन् (पु०) 1 मधुसक्ती 2 विद्विया 3 चातक पत्ती, —अन्तकः समय जो मृत्यु का देवता माना जाता है, सर्वसहायक, —अन्तरम् 1 अन्तराल 2 समय की अवधि 3 दूसरा समय या अवसर, 'आवृत्त (वि०) काल के गर्भ में छिपा हुआ, 'अन्त' (वि०) बिलम्ब को सहन करने के योग्य—अकालसमा देवता शरीरावस्था—का० २६२, य० ४, 'विद्यः चूहे की भाँति केवल फोड़ित किये जाने पर ही जहरीला जन्तु, —अण् काला जल से भरा हुआ बादल, —अणम् लोहा, —अवधिः नियत किया हुआ समय, —अवधिः (स्त्री०) शोक मानना, मृतक, पातक या जन्म-पराध से पैदा होने वाला अशोक, दे० अशोक, —अवसम् लोहा, —उत्प (वि०) ऋतु जाने पर बोया हुआ, —अकृष्ण नीलकमल, —कटम्, —कटं शिव की उपाधि, —कण्ठः 1 मोर 2 विद्विया 3 शिव की उपाधि —उत्तर० ६, —करणम्, समय का नियत करना —कणिका, —कणौ दुर्भाग्य, मुसीबत, —कर्मन् (न०) मृत्यु, —कोलः कोनाहल, —कृष्णः वन, —कृष्टः—टम् (क) हलाहल शिव (व्य) समुद्र मन्थन से प्राप्त तथा गिब द्वारा पिघा गया—अर्द्धायि नोज्जति हर किल कालकृटम्—चौर० ५०, —हृत् (पु०) 1 सूर्य 2 मोर 3 परमात्मा, —कम् समय का बीतना, समय का अनुक्रम—कालक्रमेण—समय वाकर, समय के अनुक्रम या प्रक्रिया में, कु० १।१९, —पाता 1 समय नियत करना 2 मृत्यु श्लेषः 1 बिलम्ब, समय की हाति —येषु २२, मरणे कालोपे मा कु०—वच० १ 2 समय बिताना, —अग्निवम्, —अणम् यकृत, जिर्जर,

—योग्यमुना नदी,—**अग्निः** एक धर्म,—**अक्षम्** 1 समय का चक्र (समय बदलने बुझने हुए पहिए के रूप में वर्णित किया जाता है) 2 चक्र 3. (अक्ष) (आल०) सपत्ति का चक्र, जीवन की परिवर्तितिया,—**अक्षिण्** मृत्यु के निकट आने का समय,—**अशित** (वि०) बन्-दूतों के द्वारा बुलाया हुआ—**अ** (वि०) किसी कार्य के) उचित समय या अवसर को जानने वाला—**अत्या-करो हि** नारीधामकालको मनोभव—**रघु०** १२।२३, शि० २।८३—**अ** 1 अतीति 2 भूषा,—**अवम्** तीन काल, मृत, अधिप्य और वर्तमान—**अर्धो**—**का०** ४६, —**अर्ध** मृत्यु—**अर्ध**,—**अर्धम्** (१०) 1 किसी विशेष समय के लिए उपयुक्त आधार रखता 2 निविष्ट काल, मृत्यु—न पुनर्जीवित कश्चित्कालधर्ममुपागत—**महा०**, उरीता कालधर्मणा—**आदि**,—**आरणा** समय-**वृद्धि**,—**अपिष्य** भाष्य या निवृत्ति का समादेश, भाग्य-निर्णय—**कि०** १।१३,—**अपिष्यम्** समय का निर्धारण करना, कार्यविज्ञान,—**नैमि** 1 समय चक्र का चक्र 2 एक राक्षस जो राक्षस का बाबा भा और जिसे हनुमान् को मारने का काम सौना गया था 3 नौ हाथों वाला राक्षस जिसे विष्णु ने मारा था,—**अपक्ष** (वि०) अर्धने समय पर चका हुआ—**अर्षत्** स्वतः स्फूर्त—**मनु०** ६।१७, २१, याज्ञ० ३।४९,—**परिहास** शोभे समय तक चढ़े रहने वाला जिससे कि बासी जाय,—**पसा** यय या मृत्यु का मान,—**पारिषि** जल्साद,—**पृच्छम्** 1 काने हरिण की जाति 2 बगला (**कम्**) 1 कर्ण का घनुष—**नेपी०** ४ 2 सामान्य घनुष,—**अभाम्** शरत्काल (बरसात के पहरात् आने वाले दो मास का समय सर्वांतम समय जाता है),—**अभ**, शिव की उपाधि,—**आत्म** समय का मापना,—**अभु** लघुरी की एक जाति,—**अभौ** बचिष्ठा पीषा,—**अभव** रवनों का राजा **अव्य** का धनु, यादवों के कृष्ण के लिए **अपराज्य** धनु, युद्ध क्षेत्र में उसका मारना अवग्रह समझ कर **अव्य** ने उसको कण्ठ से मूचकुन्द की गुफा में धकेल दिया जिसने उसको मरम् करके उसका काम तमाय कर दिया।—**आष**,—**आष-म्** टालमटोल करना, देर लगाना, स्थगित करना,—**आष** भाष्य, निवृत्ति,—**आषिन्** (१०) शिव की उपाधि,—**रात्रि**,—**रात्री** (स्त्री०) 1 अन्वरी रात 2 विश्व की स्यादियुक्त महाग्रहण की रात (दुर्गा के साथ समकृपा दिखाई गई है),—**आशुम्**—**स्टील**, **इस्पात**,—**आशुम्** काल की वृद्धि,—**वृद्धि** (स्त्री०) सामयिक व्याज (सामयिक वैमार्तिक या इंधे समय पर देय)—**मनु०** ८।१५३,—**आशु** शक्ति, अर्थात् दिन का निविष्ट समय (प्रतिष्ठित भाषा पहर) जब कि किसी भी प्रकार के बर्नकृत्य का करना उचित समझा

जाता है,—**संरोध** 1 बहुत देर तक काम में हाथ न डालना—**मनु०** ८।१४३ 2 किसी लक्ष्ये समय का लक्ष्य होना,—**सवृषा** (वि०)—**वयस्य**, सामयिक,—**सर्ष** काले और अल्पम विषये मीप की जाति,—**सार** काला हरिण,—**सूक्ष्म**, **सूक्ष्मम्** 1 समय या मृत्यु की छोटी 2 एक विशेष तरह का नाम—**वाज०** २।२२० मनु० ४।८८—**स्वल्प** तमाल का पेड़, **स्वल्प** (वि०) मृत्यु जैसा भयङ्कर,—**हर** शिव की उपाधि,—**हरणम्** समय की हानि, विलम्ब—**वा०** ३, उतर० ५,—**हृषि** (स्त्री०) विलम्ब—**रघु०** १३।१६।

कालकम् [काल+कम्] यकृत, जियर, **का**: 1 मरना, मारें 2 पनोला सौप 3 आरंभ की पुनर्जी काला भाग।

कालसंख्यरः [काल संख्यति-काल + ख्+णिच्+अच्] 1 एक पहाड़ तथा उसका मनोभवर्ती प्रदेश (वर्तमान कलियर 2 वार्षिक भिक्षुओं वा मृत्युओं की गना 3 शिव की उपाधि।

कालसोमम् [कल्पशि+इक्] छाछ, मट्ठा (मन्थन के द्वारा जो कलशों में उत्पन्न होता है)।

काला [काल+अच्+टाप्] दुर्गा की उपाधि।

कालापः [कालो मृत्यु अल्पने यन्मात्-काल + अच्+घञ्] 1 मिर के बाल 2 मात का फल 3 राक्षस, पिशाच, मृत 4 'कलाप' व्याकरण का विद्यालय 5 'कलाप' व्याकरण का वेला।

कालापकः [कालाप+कन्] 1 'कलाप' के विद्यालयों का मम्हू 2 कलाप की गिशा या उसके भिद्धान।

कालिक (वि०) (स्त्री०-की) [कान्+ठक्] 1 काल संबंधी 2 कालाश्रित विशेष कालिकोपस्था अमर० 3 नौसव के अनुकूल, सामयिक,—**क** 1 सारम्, 2 बगला,—**का** 1 कालापान, काला रग 2 शरी, स्थानी, काली मसी 3 कई किन्तों में दिया जाने वाला मृत्य 4. निविष्ट समय पर दिया जाने वाला सामयिक व्याज 5 बालों का समूह, घनघोर घटा जिसके बरतने का डर हो—**कालिकेय** निविद्या बलाकिनी—**रघु०** ११।१५ 6 सोम में मिलाया जाने वाला मोट 7 यकृत, जियर 8 कौषी 9 बिष्णु 10 मदिदा 11 दुर्गा,—**काम** काले चन्दन की लकड़ी।

कालिकुम् (वि०) (स्त्री०-की) [कलिङ्ग+अच्] कलिग देश में उत्पन्न या उस देश का,—**का**: कलिग देश का राजा—**प्रतिजप्राह** कालिकुम्समरसैवैवजसायान—**रघु०** ४।४० 2 कलिग देश का सौप 3 हाथी 4 एक प्रकार की कफकी,—**वा** (ब० व०) कलिग देश—**दे०** कलिग,—**नम्** तरबूज।

कालिन्ध (वि०) (स्त्री०-की) [कालिन्ध+अच्+कलिन्ध पहाड़ या यमुना नदी से प्राप्त या तबद्ध—**कालिन्ध्या**: पुलिन्धे कैलिङ्गुपिनाम्—**वेणी०** १।२, **रघु०** १५।२८

शा० ४।१३। सम०—**कवचम्**—**वेधः** कलराम का विमोक्षण,—**भूः** (स्त्री०) भूषं की पत्नी संज्ञा,—**सौरः** मृत्यु का देवता यम ।

कालिन् (पु०) [काल+इतिच्] कालापन—अमर ८८ वि० ४, ५७ ।

कालिय [क जने आकीयते -क+जा+ली+क] अत्यन्त विशालकाय सर्प जो कि यमुना नदी की तट्टी में रहता था । यह स्वाम सौरि ऋषि के शाप के कारण सर्पि के शत्रु गह्वर के लिए निर्दिष्ट था । कृष्ण ने जब कि अग्नी वह बालक ही था उस सर्प को कुचल दिया रघु० ६।१६९ । सम० **इवम्**—**धर्म** कृष्ण के विशेषण ।

काली [काल+डीच्] 1 कालिमा 2 मसी, काली मसी 3 शायती की उपाधि, शिव की पत्नी 4 काले बादलो की पक्षि 5 काले रण की स्त्री 6 व्यास की माता मन्वन्तो 7 रात,—**कथ** मीमा ।

कालोक [क जने अलनि पर्यायोनि -क+अल्+इकन् पुषो० दीर्घ] एक प्रकार का जगता, कौट्य पर्वो ।

कालीन (वि०) [काल+यच्] 1 किसी विशिष्ट समय से सम्बन्ध रखने वाला 2 ऋतु के अनुकूल ।

कालीयम्, **कम्** [काल—छ, कन् या] एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी ।

कालव्यम् [कालुप+व्यञ्] 1 मन्दिना, गन्दगी, गन्दलापन, पकिलता (आल० में भी) —**कालव्यमुपधाति** वृद्धि—**का०** १०३, गन्दगी या मन्दिन हो जाती है 2 मध्यापन 3 अयमरति ।

कालेय (वि०) [कलि+उक्] कलि-पुग में सम्बन्ध रखने वाला, यम् 1 जिरण 2 कालो चन्दन की लकड़ी—**कु०** ७।२, 3 केसर, जाफरान ।

कालेय (पु०) 1 कुला 2 चन्दन ।

काल्पनिक (वि०) [काल्प+निक] कः उक् 1 केवल विचारों की, कनावटी—**काल्पनिकी व्य-गति**—2 खोटा, बनावटी (किसी कला में) ।

काल्य (वि०) [काल्-यच्] 1 समय पर, ऋतु के अनुकूल, कबिकर, मुहायना, शुभ, -**स्व** पी पटना, प्रभातकाल होना ।

काल्याणकम् [कल्याण+कम्] माण्य, शुभ ।

कादिक (वि०) [काली० की] [कवच+उञ्] जिरह बन्धक मन्वन्धी कवचधारी,—**कम्** कवचधारी व्यक्तियों का मन्त्र ।

कादुक [कुससो वृक इव, वा ईपत् वृक इव, को कादेश] 1 मृग 2 चञ्चल पर्व ।

कादेशम् [कल्प्यं सुयंग्य इव, वा ईपत् तेरम् अङ्ग वस्य उयो-तिमंजस्तात्] केसर, जाफरान ।

काशेरी [क जलमेव वेर शरीरस्यवा—क+वेर+अण्+

डीच्] दक्षिणभारत में बहने वाली एक नदी—काशेरी सरितां पत्यु सङ्गुनीयानिवाकरीत्—**रघु०** ४।४५ 2. [कुलित वेण शरीरस्यवाः] बेया, रदी ।

काव्य (वि०) [कवि+व्यच्] 1 कवि या कवि के गुणों से युक्त 2 मन्त्रशुद्धाविषयक वा पैगम्बरी, प्रेरणा-प्राप्त, कर्त्तव्य,—**अः** राक्षसों के मृत मुकाबारे,—**अवा** 1 प्रजा 2 सक्ती,—**अव्यम्** 1 कविता, महाकाव्य,—**येषु** दूत नाम काव्यम् 2 काव्य, कविता, कवितामयी रचना (काव्य शास्त्र के रचयिताओं ने काव्य की निम्न निम्न परिभाषाएँ दी हैं—**तद्वदीयो वाक्यार्थो समुपायनलक्ष्णी पुन क्वापि—काव्य०** १, वाक्य रसात्मक काव्यम्—**सा०** ६० १, रमणीयार्थप्रतिपादक शब्द काव्यम्—**रम०**, शरीर तापविष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली—**काव्य०** १।१०, दे० चन्दा० १।१० भी 3 प्रसन्नार्थ, कल्याण 4. वृद्धिमता, अन्त. प्रेरणा । सम०—**अर्थः** कवितासम्बन्धी चिन्तन वा विचार, **और** दूसरे कवि के विचारों का चौर, काव्य चौर,—**यदस्य** दीप्या इव लुप्तनाय काव्यायंवीरा प्रयुगीभवति—**विक्रम०** १।११,—**और** दूसरे व्यक्तियों की कविताओं की चुराने वाला,—**मीमांसक** साहित्यशास्त्री, विवेचक,—**रसिक** (वि०) जो काव्य के सौन्दर्य को सराह सके वा काव्यरस रसता हो,—**लिप्यम्** एक अलंकार, इसकी परिभाषा—**काव्यलिपि** हेतोर्वाक्य पदायता—**काव्य०** १०, उदा०—**जितोऽसि मन्द कन्दर्प मन्थि-संतिनि चिन्तयन्—चन्दा०** ५।११९ ।

काङ् (स्वा०, दिवा० आ०—काङ—द्व—ते, कश्चित्) 1 चमकना, उज्ज्वल वा मुन्दर—**दिवा०** देना—**रघु०** १०।८६, ७।२४, **कु०** १।२४, **मट्टि०** २।२५, **शि०** ६।७४ 2 प्रकट होना **दिवा०** देना,—**नैवमृमिर्न च** दिवस प्रविशो वा चकाशिर महा० 3 प्रकट होना, की भाँति दिवा० देना, **निस्**, (प्रेर०) 1 निकास देना, निर्वासित करना, ठेक देना, अलायतन करना—**दे०** निस् पूर्वक कम्—**सा०** २।५ 2 प्रकाशित करना 3 वृष्टि के सामने प्रस्तुत करना, प्र—,चमकना, उज्ज्वल दिवा० देना 2. दिवा० देना, प्रकट होना—**एवु** सर्वेषु भूतेषु सुधात्मा न प्रकाशते—**कठ०** 3 की भाँति दिवा० देना वा प्रकट होना (प्रेर०) 1 दिवा०, प्रदशित करना, आविष्कार करना, उद्घाटित करना, अन्वेषण करना—**अवसरोऽप्यत्वात्मानं प्रकाशयितुम्—सा०** १, **सा०** का० ५९ 2 प्रकाश में लाना, प्रकाशित करना, उद्घोषणा करना—**काव्यिकुपित** मित्र सर्वदोष प्रकाशयते—**शाण०** २० 3. वृद्धि करवाना, प्रकाशित करना (पुस्तक बाँदि)—**प्रणीतः** न तु प्रकाशित—**उत्तर०** ४ 4 रोशनी करना, (दीपक) जलाना—**यथा** प्रकाशयत्येकं कृत्वांनं लोक-

कास् (म्बा० झा०—कासते, कासित) 1 चमकना, दे०
कास् 2 सासना, किसी रोग की प्रकट करने वाली
आवाज करना ।

कास्त-भा [कास् + भस्] 1 खासी, जुकाम 2 छीक
जाना, सम०—कुष्ठ (वि०) खासी से पीड़ित,—भन,
ह्वत् (वि०) खासी दूर करने वाला, कफ
निकालने वाला ।

कास्तर (स्त्री०—री) [के जले आसतित—क + आ + स्
+ अच्] मेला ।

कास्तर-रत्न [कास् + भारत्, कस्य जलम्य आसारो यत्र
ब० सं०] जोहड़, तालाब, सरोवर—भामि० ११४३,
मत्० १३२, वी० २ ।

कासू (शु) (स्त्री०) [कास् + ऊ] 1 एक प्रकार का
माला 2 अस्पष्ट भाषण 3 प्रकाश, प्रभा 4 रोग
५ प्रति ।

कासुति (स्त्री०) [कुसित्ता सरणि को कादेश]
पगडबो, गुल मारण ।

काहल (वि०) [कुसित हल वाच्य यत्र ब० सं०] 1 सुक,
मुश्रीया हुआ 2 शरारती 3. अत्यधिक, प्रशस्त
विद्याल,—सः 1 बिल्ला 2 मुर्गा 3 कोबा 4 सामान्य
व्यभि,—सम् अस्पष्ट भाषण,—सा बड़ा डोल (सैनिक),
—स्त्री (स्त्री०) तरुण स्त्री

काहत् (वि०) [किम् + मत्पु, मस्य व] निर्धन, दुग्ध,
नगण्य ।

कासाध. [किम् + गु + आण्] 1 अनाथ की बाल का
अप्रभाग, बाल का झूत, सत्ययुक्त 2 बगला,
३ तीर ।

काशुक [निचित्य सुक मुकावयविधोष इव—] ढाक का
पेड़ जिसके फूल बड़े सुन्दर परन्तु निर्गन्ध होते हैं
(विद्याश्रोता न शोभते निर्गन्धा इव काशुका—चाण० ७,
श्रुतु० ६१०, रघु० १३१,—कम् ढाक का फूल, टेट्ट,—कि
काशुकी मुकमुवच्छाभिर्निर्गन्धम्—श्रुतु० ६१२ ।
काशुक [किमुक नि० साधु] ढाक का वृक्ष, दे०
काशुक ।

काशुक [कच् + इन् प्र० इत्थम्] 1 नागियल का पेड़
2 नोलकष्ठ पक्षी 3 चातक, पपीहा (इस पक्षी का
किकिन्, किकिदिदि, और किकिदिदि भी कहते हैं) ।

काशुकी, काशुकीका, काशुकी, काशुकीका [काश्च
कगति कच् + इन् + शीप्, प्र० साधु—किकिणी +
कच् + टाप्, ह्रस्वश्च] बृषध्वार साभूषण, करघनी
—वचनकनककाशुकी शम्भुशायितस्मरद्वैते उत्तर०
५१५, ६११, शि० ११०५, कु० ७५५१ ।

काशुकर [किम् + क् + क] 1 घोड़ा 2 कोयल 3. मधु-
मन्थी, 4. कामदेव 5. लाल रंग,—रत्न यजुशुभ,
—रा चरित ।

काशुकर [किफिर + अन् + अण्] 1 तोता 2 कामक,
३ कामदेव 4 अशोक वृक्ष ।

काशुकर, —काशुकर [किश्च जलं यत्र ब० सं०, किश्च
जलम् अपवारयति—किम् + अल + क] कमल का सुत
या फूल या कोई दूसरा पीथा—आकर्मिण् पद्यकिम्ब-
ल्लगन्धान्—उत्तर० ३१२, रघु० १५५२ ।

काशुकि [किट् + इन् + किञ्च] सुनार ।

काशुकि [किटि + भा + क्] 1. वृ, लीक 2 लटमक ।

काशुकि, काशुकिम् [किट् + पत्, स्वार्थे कन् च] साब या
कीट, बिच्छा, गाढ़, मेल—अल्० ।

काशुकर [किट् + अन् + अण्] 1 ताबे का पात्र 2. लोहे
का जग या मुर्चा ।

काशु [कच् + अच् प्र० इत्थम्] 1 अनाथ, बट्टा, चकटा,
पाव का बिल्लू,—आस्पति कियप्रभुयो मे रक्षति शीर्षी-
किणाङ्क इति—श० ११३, मृच्छ० २१११, रघु० १५१
८५, १८५७, गीत० १ २ चर्मकील, तिल का अस्ता
३ घुण ।

काशु [कच् + अच् प्र० इत्थम्] पाप—अन्,—अन्ध भविरा
के निर्माण में खीर उड़ाने वाला बीज, वा शीपि
—मनु० ८३२६ ।

काशु [म्बा० पर०—केतति] 1 चाहुना 2. रज्जु
३ (चिकित्सित) स्वस्थ करना, चिकित्सा करना ।

काशु (स्त्री० बी) [कि + क्त = कि + क् + क्]
1 घृत, मूत्रा, कपटी—अर्हति किल कितव उपदधम्
—मालवि० ५, अमर १७, ५१, मेघ० १११ २. बजुरे
का पीथा ३ एक प्रकार का मन्थद्रव्य ।

काशु (पु०) [कि कुसित्ता शीर्षुद्विरस्य—किची
+ इति] घोड़ा ।

काशुकर = दे० 'किम्' के नीचे ।

काशु (अव्य०) [कु + शिम् बा०] 'बुराई', 'हास' 'बोध'
'कलक' और निन्दा के भाव को प्रकट करने के लिए
यह समस्त शब्द के आदि में केवल 'कु' के स्थान में
प्रयुक्त होता है—उदा०—कितसा बुरा मित्र, काशुकर
—बुरा या बिकृत पुरुष आदि, नीचे के समस्त पदों
को देखो । सम०—बास बुरा गुलाम या गौकर,
—नर बुरा या बिकृत पुरुष, पुराणोक्त पुरुष बितका
सिर बोध का हो तथा शेष शरीर मनुष्य का—ज्यो
दाहरण बाह्योर्गोप्यामास काशुकरान्—रघु० ५१७८—कु०
११८, ईस ईश्वर कुबेर का विशेषण (स्त्री०—री)
१ काशरी—मेघ० ५६ २ एक प्रकार की बीधा,
—पुरुष बुरा के योग्य नीच पुरुष, काशुकर—कु० १।
१५, ईश्वर कुबेर का विशेषण,—प्रभु बुरा स्वामी
या राजा—हितान्न य सभृगुते स काशुक्,—कि० १५,
—राजन् (वि०) बुरे राजा वाला, (पु०) बुरा राजा,
—सवि (पु०) (श्रु०, ए० ब०,—कितसा) बुरा

विभ.—इ किञ्चिन्ना साधु न शक्ति योजयिष्यम्—कि० १५।

किम् (अर्थ० वि०) (सर्व० ए० व०, ए०—का) [स्त्री०—का] [नपु०—किम्] 1 कौम, क्या, कीन्सा (प्रथमाशक्त के रूप में) —प्रवायु क केन पया प्रयातीत्यशेषतो वैश्विमुसितं शक्ति—श० ६।२६, कृपा-विमुक्षेन नृपुना हृता त्वा बह कि न मे तुवम्—रघु० ८।६७, का सत्वनेन प्रार्थ्यमानात्पना विकल्पते—विक्रम० २, क कौम भो; सर्वनाम के रूप में यह शब्द कभी कभी 'कार्य करने की शक्ति या अधिकार' को बताने के लिए प्रयुक्त होता है—उदा० के भाषां परिप्राप्तं बुध्यन्तमानस्य—श० १, 'हृव कीन है?' अर्थात् 'हृवमें क्या शक्ति है?' आदि 2 नपु० (किम्) सजा शक्तो के रूपण० के साथ प्रयुक्त होकर बहुधा अर्थ होता है, क्या लाभ है?—कि स्वामि-धैर्यात्कल्पयेन—हि० १, 'कौमर्षेदगुणेन किम्' आदि अर्थ० २।५५, 'किं ता दृष्ट्या' श० ३, 'किं कुलेनोपविष्टेन वीर्येवाय कारणम्—मू० १।७, प्रायः 'अतिशय' अर्थ को प्रकट करने के लिए, 'किम्' के साथ 'अपि' 'चित्' 'वन' 'चिदापि' या 'म्बित्' जोड़ दिया जाता है—विशेषा करिचञ्जलस्तपोवनम्—कु० ५।३० कोई तपस्वी ३, 'कापि तत एवागनकी—मा० १, कोई स्त्री, कस्यापि कोऽपि निवेदिता च—१।३३, किमपि किमपि ज्यतीरकमेव—उ १।२३, कस्मिन्विषयनि महाभागधेयजन्मनि मन्मथविकारम् पक्षितवामसि—मा० १, किमपि, किञ्चित् 'बोडा सा' 'कुछ'—पाठ० २।११६, उत्तर० ६।३५, 'किमपि' का अर्थ 'अवर्गनीय' भी है, ३० अपि, 'समावना' के अर्थ को बतलाने के लिए कभी कभी 'किम्' के साथ 'इव' भी जोड़ दिया जाता है (अधिक-तर काल के साथ बल और तीव्र को जोड़ने वाला)—विना सीतादेव्या किमिव हि न दुःख रघुपते—उत्तर० ६।३०, किमिव हि मरुत्पाना मण्डन माङ्गलीनाम्—शा० १।२०, 'इव' को भी ३०, (अव्य०) 1 प्रथमाशक्त निपाठ, —आदिमात्रेण किं करिचदन्त्यते पुज्यते स्वचित्—हि० १।५८, 'मारा जाता है या पूजा जाना है' आदि, सत किम्—श्री किरिषया 2 'क्यो' 'किमित्य' अर्थ को प्रकट करने वाला अव्यय—किमकारणमेव एवमेव विलम्बये तये न दीपते—कु० ५।७ 3 क्या, प्रथमाशक्त या ('या' को भावना को प्रकट करने वाले) बहुसंख्यी शब्द—किम्, उत, उताही, काहोस्वित्, वा, किवा, कचवा, इत शब्दों को देखो। सम०—अपि (अव्य०) 1 कुछ अथ तक, कुछ, बहुत अथो तक 2 सर्वनामोत्तर रूप से, अवर्गनीय रूप से (युष्म, परिप्राय व प्रकृति आदि) 3. आत्यधिक, कहीं अधिक,—किमपि

कामनीय वयुदितम्—श० ३, किमपि शीघ्र किमपि करामम्—आदि, —अर्थ (वि०) किञ् उद्देश्य या प्रयोजन वाला - किमर्थात् यत्, —अर्थम् (अव्य०) क्यो, किमित्य, —आव्य (वि०) किञ् नाम वाला —किमाव्यस्य राजर्षे ता पत्नी.—श० ७.—इति (अव्य०) क्यो निस्सन्देह, किम लिए निरुचयार्थ, किञ् प्रयोजन के लिए (प्रत्य पर कथ देने वाला), तत्कि-मित्यवास्ते भरता—मा० १, किमित्यवास्ताभरपानि यौवने भूत स्वया वार्धकशोभि वत्कलम्—कु० ५।१४, —इ, —इत 1 क्या, या (अन्वैह या अनिश्चय को प्रकट करने वाला), —किम् विधावितर्प किम् मद—उत्तर० १।३५, अमर ९ 2 क्यो (निस्सन्देह), प्रियमुहस्ताथं किम् त्यज्यते 3 और कितना अधिक, कितना कम,—यौवने वनसम्पत्ति प्रभुत्वमधिकिता, एकैकमप्यनर्थाय किम् यत्र चतुष्टयम्। हि० प्र० ११, सर्वानिनयातामेकैकमप्येवाभावात् किमुत्त समवाय—का० १०३, रघु० १।५६५, कु० ७।६५ —कर नीकर, सेवक, दास (अन्वैह या किञ्चरमद-मूर्ते—रघु० २।३५, (रा) सेविका, नीकरानी (श्री) मेवक की स्त्री,—कर्तव्यता—क्याता वह अवस्था जब कि मनुष्य अपन यत् में मोचता है कि अब क्या करना चाहिए, किन्तव्यनामूढ (यह समझने में अममर्थ या पबराया हुआ कि अब क्या करना चाहिए), —कारण (वि०) क्या कारण या क्या तर्क रखने वाला, —किल (अव्य०) कैसी दयनीय अवस्था (अमनीय या दुःख, को अभिव्यक्त करने वाला— पा० ३।३।१।५१), न महावयामि न मर्षयामि तत्रमवान् कि किल बृथल यात्रयिष्यति—सिद्धा०,—कण (वि०) जो कहना है कि 'एक निन्दत का है ही क्या', एक बालसी पुष्प को शम्भो की परवाह नहीं करता है—हि० २।११,—शोत्र (वि०) किञ् परिहार से सम्बन्ध रखने वाला,—च (अव्य०) इसके अतिरिक्त और फिर, आगे,—चन (अव्य०) कुछ दर्जे तक, बोडा सा,—चित् (अव्य०) कुछ दर्जे तक, कुछ, बोडा या—किञ्चित्कान्तपोसावो—रघु० १।५।३३, २।५६, १०।२१, 'च (वि०) बोडा सा जानने वाला, पलक-माही,—कर (वि०) कुछ करने वाला, उपयोगी,—काल—कुछ समय, बीड़ा या समय—प्राणः बोडा सा जीवन रखने वाला, 'बाध (वि०)—बोडा सा,—कष्यत् (वि०) किञ् बेद से अनिश्च,—तस्मि (अव्य०) दो फिर क्या, परन्तु, तथापि,—तु (अव्य०) परन्तु, तो भी, तथापि, इतना होते हुए भी—अर्थनि र्ना-मनर्थात् किन्तु लोकापवादो बलवाच्यतो ये—रघु० १।५।४०, १।६५,—वैकल्य (वि०) किञ् देवता से सम्बन्ध,—नाकथेय,—नामन् (वि०) किञ् नाम वाला,

—विभित (वि०) किस कारण या हेतु को रक्षने वाला, किस प्रयोजन वाला,—विभित्स्व (अव्य०) क्यो, किस किए,—नु (अव्य०) 1 क्या—किन्तु मे मरण भी परिस्थायो नमस्त वा —नल० १०।१० 2 और भी अधिक, और भी कम—अपि मैलोक्यराज्यस्य हेतो किन्तु सहीकृते—भग० १।३५ 3 क्या, निस्त-वेह—किन्तु मे राज्येनायं,—नु कलु (अव्य०) 1 किस प्रकार से, सम्भवत, कैसे है कि, क्या निस्त-वेह, क्यो, सचमुच—किन्तु कलु गीतापंथाकर्ष्य इष्टजन-विरहादुदेति बलबहुकपिष्ठाऽपि—सा० ५ 2 ऐसा न हो कि—किन्तु कलु यथा भयमस्यामेभिमियमप्य-स्यात् प्रति स्यात्—सा० १,—पच,—बचाव (वि०) कम्बुस, कृपण,—बराकम (वि०) किम गमित या स्फुति से युक्त,—पुनर् (अव्य०) कितना और अधिक या कितना और कम—स्वय रोपितेषु तरुपुत्रघते स्नेह कि पुनरङ्गसभेत्पेपयेषु—का० २९१, मेघ० ३, १७, विक्रम ३,—प्रकारम् (अव्य०) किस प्रकार से,—प्रवाह (वि०) किस गमित से सम्पन्न,—भूत (वि०) किस प्रकार का या किम स्वभाव का,—क्य (वि०) किस शकल का, किस रूप का,—ब्रह्मिन्,—ती (स्त्री०) जनश्रुति, अकबाह—मत्स्यम्बन्धात् कामला किबदन्ती—उत्तर० १।२४, उत्तर० १।४,—बराहक अमितभयमी,—उरल०,—वा (अव्य०) 1 प्रलवाचक अव्यय—कि वा सकुन्तलेत्यस्य मानुराक्या दा० ७ 2 या (किम्—(क्या) का सहसम्बन्धी) —राजपुत्रि सुप्ता कि वा जागति—पञ्च० १, तर्कि मारयामि कि वा विच प्रयच्छामि कि वा पशुचर्मय व्यापाहयामि—त०, भृङ्गार० ७,—विच (वि०) क्या जानने वाला,—व्यापार (वि०) किस कार्य को करने वाला,—शील (वि०) किस आदत का,—स्वित् (अव्य०) क्या, किस तरह—अद्रे भृङ्ग हरति पवन किस्विदित्यन्वुशीमि—मेघ० १४।

कियत् (वि०) [कि परिमाणम्य किम् + क्तृप्, च, किम कि आदेश] (कर्त्०, ए० व०, पु०—कियात्, स्त्री०—कियती, नप०—कियती 1 कितना बड़ा, कितनी दूर, कितना, कितने, कितने विस्तार का, किन गुणों का—(अनवशापकता का बल रखने वाला)—किया-कालस्तरेबभित्तत्य सजात—पञ्च० ५, मै० १।१३०, अथ भूतावासो विमृश किभतो कति न दत्ताम्—सा० १।२५, आस्यति किपद्गुप्तो मे रक्षति—दा० १।१३, किबदबभित्त रवन्वा—सा० ४ 2 किस गिनती का अर्थात् किसी अर्थ का नहीं, निकट्या—राजेति कियती माया—पञ्च० १।६०, मात कियन्तोऽरप, वेणी० ५।९ 3 कुछ, थोडा सा, थोडी सम्पत्, चन्द (अग्निदिबत बल रखने वाला)—निबहृदि विकसन्त

सति सप्तः कियन्तः—मनु० २।७८, लघुनिचरणम-लेन बलन्ती चतति पदानि कियति बलन्ती—गीत० ६। सम०—दक्षिणा प्रयात, सतितासीन वीर्यं क्ता वेष्ठा,—काल (अव्य०) 1 कितनी देर 2 कुछ थोडा समय,—किरम् (अव्य०) कितनी देर तक—किच-किचर आम्पसि गीरि—कु० ५।५०,—द्वेष (अव्य०) 1 कितनी दूर, कितनी दूरी पर, कितने फासले पर—कियत्पूरे स प्रसाधय—पञ्च० १, मै० १।१३७ 2 थोड़ी देर के लिए जरा सी दूर।

किर [कृ + क] सूजर

किरकः [कृ + क्तृ] 1 लिपिक 2 [किर + क्तृ] सूजर

किरव [कृ + क्तृ] 1 प्रकाश की किरम, सूर्य, चन्द्रमा या किसी शीघ्रपान श्रोति की किरम—रतिकिरम-सहितम्—सा० २।४, कु० हि दोषो गुणसन्धिप्रायो निमज्जतीन्दो किरपेक्षिबाहू—कु० १।३, हा० ४।६, रघु० ५।७४, शि० ४।५८, मय 1. कमकार, उज्ज्वल 2 रजकण। सम०,—भालिम् (दृ) सूर्य।

किरातः [किर पर्यन्तभूमिम् अतति मच्छतीति किरात] एक पतित पहाड़ी जति जो शिकार करते अपनी जीविका बनाती है, पहाड़ी,—वीजाकणकिरातावच्छब्द-मुगा क्व मानु सप्तला, यदि नटापकचिकित्सक-बैतालिकबदनकन्दरा न द्यु 1। सुभा०, कु० १।६, १५, रत्न० २।३ 2 बहुशो, अपली 3 बीता 4. साईल, अथवापाल 5 किरातबेशाधारी गिच,—ता (ब० ब०) एक देश का नाम,—सय०—भालिम् (दृ०) गदब की उपाधि।

किराती [किरात + शीप्] 1 किरात जाति की स्त्री, 2 चबुर हुलाने वाली स्त्री—रघु० १६।५७ 3 कुदरिनी, दूती 4 किरात के देश में पार्वती 5 स्वर्गीय।

किरि [कृ + इ] 1 सूजर, बराह 2 बावल।

किरीट, उष् [कृ + कीटन्] मुकुट, ताज, पूजा, शिरो-बेटन—किरीटबद्धाञ्जलय—कु० ७।९२ 2 आधारी। सम०—भालिम् (दृ०) राजा। —भालिम् (दृ०) अर्जुन का शिष्यपण।

किरीटिम् (वि०) [किरि + इति] ताज वा मुकुट पहनने वाला,—भग० १।११७, ४६, पञ्च० ३,—(दृ०) अर्जुन—अप० १।१३५, (महा० में इस सामकरण की व्याख्या इस प्रकार है—पुरा शकेण मे बद्ध दृष्यतो राजवर्षभे, किरीटं मूर्जि सुपायं देनाहुर्वा किरीटिनम्।

किरीर (वि०) [कृ + ईरन्, मुट्] बिचबिचक रग का, चितकबरा, शितीरार,—र 1. एक राक्षस जिसको नीम ने मारा था—वेणी० ६ 2 सबक या बहुरावी रग। सम०—किन्तु,—निवृत्तम्,—सूक्तः शीघ्र के विशेषण।

किलः [किल् + क] कौडा, मुच्छ, खेलेखल में हो जाने वाला । सम०—किलिबन्धम्, प्रेमो-मिलन के अवसर पर भ्रुवारी उल्लेखन, दहन, हास, रोष आदि भाव ।

किल (अप०) [किल् + क] गिल्चय हो, बेसाज, निस्सदेह, अवश्य—अर्हति किल किलच उपद्रवम्—मालवि० ४, इद किलाभ्याजमनीहुर वयु वा० ११८८ २ जैसा कि लोग कहते हैं, जैसा कि बतलाया जाता है (बिबरन या परंपरा दर्शाने वाला)—बभ्रुव योगी किल कार्त्तवीर्य—रघु० ६।३८, जषान कम किल बानुदेव—महा० ३ ब्रह्मरुद्र का कार्य, प्रसन्न सिंह किल तां चकप्यं रघु० २।२७, कि० ११।२ ४ आशा, प्रत्याशा, संभावना पार्थ० किल विजेष्यते कुकम्—मग० ५ अस्तोय, अश्वि,—एष किल केषिद्वदन्ति—मग० ६ घृणा—स्व किल यन्म्यसे—मग० ७ कारण, हेतु—(अप्यय विरल)—स। तल्लंयमुक्तवान्—मग० 'क्याकि उसने ऐसा कहा' ।

किलकिल, का [किल् + क, प्रकारे बीजाया वा द्विवम्, वयु टाप] किलकारी, हर्ष और प्रसन्नतासूचक बीज ।

किलकिलासते (गा० धा० आ०) किलकारी मारना, कला-हल करना—मद्रि० ७।१०२ ।

किलिबन्धु [किल् + बन् + ध] १ चट्टाई २ हरी लकड़ी का पतला तल्ला, फलक ।

किलिबन्धु (पु०) [किल् + बिन्धु, किल् + विनि] घोडा । किलिबन्धु [किल् + टियन्, युक्] १ पाप, मम० ४।२४३, १०।११८, मग० ३।१३, ६।४५ २ भृष्टि, अपराध, क्षति, दोष—मग० ८।२३५ ३ रोग, बीमारी ।

किलिबन्धु, —बन् [किल् + बन्धु] पल्लव, कोपल, अकुर, जलुआ—दे० किलस्य ।

किलिधोरः [किल् + धु + ओरन्] १ बछेरा, बन्ध पशु-शावक, किसी जानवर का बच्चा—केसिकिधोर—आ० २ तरुण, बालक, १५ वर्ष से कम आयु का, अवयस्क (विधि में) ३ सुप्यं—री एक नववृद्धी, तरुणी ।

किलिधन्वः, -धन्वः [कि कि दधाति—कि + कि + धा + क, पूर्वस्य कियो मन्थेय, मुट, वधम्,—किलिधन्व + पत्] एक देश का नाम २ उस प्रदेश में स्थित एक पहाड का नाम—धा,—स्वा एक नवरी, किलिधन्वा की राजधानी ।

किलिधु (वि०) [कौ + कु नि० साधु] दुष्ट, निन्ध, बुरा, —धुः (पु० स्त्री०) १ कौहनी से नीचे भूजा २ एक हस्त परिमाण, हाथ भर की लम्बाई, एक बलिष्ठ ।

किलिक, —कम्, } [किल्चिन्व अस्ति—किल् + चल् + क किलिक्च, —कम्, } [कम्प] वा०, पु० साधुः] पल्लव, कोमल अकुर या कोपल—अथर किलिधन्वरा,

धा० १।२१, किलस्यमल्लन करणौ—२।१०, किलस्यै सल्यैरिब पाणिभि—रघु० ९।३५ ।

कीकट (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [की जाने दूत वा कटति गच्छति—की + कट् + अच्] १ गरीब, बरिद २ कम्बूज, —ट घोडा, —टा (ब० व०) एक देश का (विहार) नाम ।

कीकस (वि०) [की हुस्मित यथा स्यात्तथा कसति—की + कस् + अच्] कठोर, दृढ़, सख् हृद्दी ।

कीचक [बीकयति शब्दायते—चीक् + वृन्, आह्वान्वाप-यव] १ खोपला बास २ हवा में खडखडाते या सीप सीप करते हुए बास—शब्दायते मधुरमनिर्ले कीचका पूर्वमाणा—मेघ० ५६, रघु० २।२२, ४।७२, कु० १।८ ३ एक जाति का नाम ४ चिरदत्त राज का सेनापति (जब द्रौपदी, सैरिगंधी के वेग में, भेस बढ़के हुए अपने पाँचों पतिमा के साथ राजा बिराट के दरबार में रह रही थी, उन समय एक बार कीचक ने उसे देखा, द्रौपदी के सौम्यता से उसके हृदय में कामाग्नि प्रज्वलित हुई, तब से लेकर उसकी पाप दुष्टि द्रौपदी पर लगी गयी और उसने अपनी बहुत (राजा बिराट की पत्नी) की महापाता मे उसके सतीत्व को भंग करने की चेष्टा की । द्रौपदी ने अपने प्रति उसके अनिष्ट व्यवहार की शिकायत राजा से की, परन्तु जब राजा ने इत्यन्त प्रकरण में जानाकारी की तो उसने भीम से सहायता मागी, और उसके सुझाव को मानकर उसने कीचक के प्रस्ताव के अन्तुक्लता दर्शाई । तब वह निश्चय किया गया कि वे दोनों आधी रात के समय महुल के नाच घर में मिले, फलन कीचक वहाँ गया और उसने द्रौपदी का आकि-कृत करने का प्रयत्न किया, परन्तु अन्धेरा हीम के कारण वह दुष्ट द्रौपदी के बचाव भीम के भूजपाश में फस गया और उसके बलवान् हाथों से बह गयी कुचलाप्यकार मोत का शिकार हुआ) । सम०—किल् (पु०) द्वितीय पाण्डवराज भीम का विशेषण ।

कीटः [कीट् + अच्] १ कीडा, कृमि—कीटोर्जिप सुयम् - मन्नासारोहमि यता शिर हि० प्र० ४५ २ तिर-स्कार व घृणा को व्यक्त करने वाला शब्द (बहुधा समास के अन्त में) डिपकीट—अथम हाथी, इती प्रकार पक्षिकीट आदि । सम०—क्यः—मथक,—कम् देशम्,—ज लाल,—वधिः जुयम् ।

कीटकः [कीट + कन्] १ कीडा २ ममथ जाति का प्राट । कीचक (स्त्री० स्त्री) } [किल् + वृन् + क्त, किल्, कीचुक्, कीचुक् (स्त्री—स्त्री) } कम्, वा, किल् की आदेश] किस प्रकार का, किस स्वभाव का,—तच्छो कीचुगधी विवेकविधयः कीचुक् प्रबोधोचय—प्रबो० १, नै० १।२३७ ।

कीर्त्तन (वि०) [क्लिप्त + कन्, ई + उपाधाया इत्यम्, कन्त्य
लोपा नामान्यस्य] 1 भूमिद्वर 2 गरीब, दण्डि
3 कुराण 4 लक्ष, तुच्छ, —कः मृत्यु के देवता यम की
उपाधि 2 एक प्रकार का मन्दार ।

कीर [की इति अव्ययस्य कर्त्तव्यम् ईर्याति -की + ईर +
अच्] 1 लोना-एव कीरवेर मनोरथमय वीर्यपमान्वा-
दयति—मानि० ११५८, —रा (ब० ब०) कामीर
देश तथा उसके निवासी, —एम् मान । सम०—इष्ट-
आम वा ब्रह्म (इसे तौते बहुत पसन्द करते हैं) ।
—बर्षकम् सुगन्धी का गिरीमणि ।

कीर्ण (वि०) [कृ + कर्ण] 1 छिनटाया हुआ, फैलाया
हुआ, फेका हुआ, बहका हुआ 2 डका हुआ, बग
हुआ 3 रक्खा हुआ, बरा हुआ 4 धन, घोट पहुँ-
चाया गया— दे० कृ ।

कीर्ण (स्त्री०) [कृ + कर्ण] 1 बखेराता 2 डकना,
छिपाना, गुल कर देना 3 धायल करना ।

कीर्त्तम् [कृत् + कर्त्तृ] 1 कथन, बर्षन 2 मन्दिर, —ना
1 कीर्त्तवर्णन 2 मन्दिर वाट 3 यश, कीर्ति ।

कीर्त्तय्—कृत् ।

कीर्ति (स्त्री०) [कृत् + कर्त्तृ] 1 यश, प्रतिष्ठा, कीर्ति
इह कीर्त्तिमवाप्नोति—मनु० २१९, ब्राह्म्य कर्त्तार-
मननकीर्त्तय्—रघु० २१६४, मेघ० ४५ 2 अनुग्रह,
अनुमोदन 3 मील, कीर्त्तव्य 4 विस्तृति, विस्तार
5 प्रकाश, प्रभा 6 ध्वनि । सम०—भाष् (वि०)
यशनी, विश्रयान, प्रतिष्ठ (पु०) द्रोण का विश्रयण
जो कि कीर्त्तवा और पाठको वा मैन्य-निष्काषायं वा,
शेष केवल यश के रूप में जीवित रहना, यश के
अतिरिक्त और कुछ नहीं छोडना अर्थात् मृत्यु—नु०
५, ममोय, आलेख्यशेष ।

कील् (स्त्री० पर०) 1 बावना 2 लम्बी करना 3 कील
गादना ।

कील [कील् + कल्] 1 काली, लुटी—कीलोत्पाटीय
बावर—पच० १११ 2 भाला 3 बल्लनी, लम्बा
हथियार, 5 कोहली 6 कोहली का प्रहार 7 ज्वाला
५ परमाणु 9 शिक का नाम ।

कीलक [कील् + कल्] 1 फनी या लुटी 2 लम्बा, स्तम्भ
—दे० कील् ।

कीलक [कील् + कल् + कल्] 1 अमृतोपम स्वर्गीय देय,
देवताओं का देय 2 मूत्र 3 रैबान, —कम् 1 सधिर
2 अन्न । सम०—किः समुद्र, —कः पिशाच, भूत ।

कीलिका [कील् + कल् + टाप्, इत्यम्] बुरे की कील ।

कीलित (वि०) [कील् + कल्] 1 बचा हुआ, बड़ 2 स्थिर
कील से बड़ा हुआ, कील ठोक कर जडा हुआ—तेन
मम् हुष्यमिदमसमात्कीलितम्—मीम० ७, ना नाने-
तसि कीलितेव—मा० ५११ ।

कील (वि०) [क + ईल् + क] बंगा, —कः 1 लैर्य, मन्दर
2. बुरं 3 पत्थी ।

कुः (स्त्री०) [कु + कृ] 1 पृथ्वी 2 निज्जु वा लघाट
वाक्त्रि की आभार-रेखा, तय०—पुनः बलनग्रह ।

कु (अप०) 'सरावी', ज्ञान, अमृतत्वम्, पाप, भर्त्सना,
भोत्रापन, अभाव, वृष्टि आदि भावों को लपेट करने
वाला उपसर्ग, इसके स्थानापन्न अनेक हैं, उदा० कृ
(कदम्ब), कृ (कबोला), का (कोष्ण), कि
(किप्रयु) —पच० ५११७ । सम०—कम्बु (मपु०)
बुरा कार्य, नीच कर्म, —ग्रहः अथवल-ग्रह, —वाक्यः
छोटा नाँव या पुरवा (बड़ो राजा का अधिकारी,
अग्निहोत्री, डाक्टर या नदी न हो), —केल (वि०)
फटे पुराने वस्त्र पहने हुए, —कर्मो वृष्टता, अधिकृष्टा-
चरण, अनीचिय, —कम्बु (वि०) नीच कुल में
उत्पन्न,—तम्बु (वि०) विकृतकाय, कुकृप (मृः)
कुबेर का विशेषण—कर्मो अराव कोष्ण,—तर्कः
1 कृतकालिक, हेत्वाभासरूप 2 धर्मविद्वद् सिद्धान्त
स्वतन्त्र चिन्तन—कुतर्कव्यास सततपरवैकुण्ठमन्त्रम्
—मया० ३१, 'एवः तर्कं कान्ते की भूटी रीति
—तोषम् सारा अध्यायक—दुष्टि (स्त्री०) 1
काम्योर नखर 2 पापदुष्टि, कुटिल भाव (भाल०)
3 वेदविद्वद् सिद्धान्त, धर्मविद्वद् सिद्धान्त—मनु०
१२१५, —वेलाः 1 बुरा देव वा बुरी अथवा 2 बहु
देव जहाँ जीवन की आवश्यक सामग्री उपलब्ध न हो,
या जो अत्याचार से पीडित हो, —बैह (वि०) कुकृप्य,
विकृतकाय (हः) कुबेर का विशेषण,—भी (वि०)
1 धर्म, बुद्ध, वैश्वकर्ष 2 दुष्ट, —मटः बुरा पाप,
—मक्षिका छोटी नदी, गङ्गा नदी, लघु खोत—सुपुरा
स्थात्कुनदिका—पच० ११२५,—भाष्ः बुरा स्वामी,
—काम्बु (पु०) कम्बु, —रक्षः 1 कुपार्थ, बुरा
रास्ता (भाल०) भी 2 धर्मविद्वद् सिद्धान्त,—कुष
बुरा या दुष्ट पुत्र, —पुष्कः नीच या दुष्ट पुत्र,—पुष
(वि०) नीच दुष्ट, तिष्करनीय,—पिष्क (वि०)
अधिकार, तिरस्करनीय, नीच, अधम,—कम्बुः बुरी
किशोरी—कुप्लवे सनत् जलम्—मनु० १११११,
—ब्रह्मः—ब्रह्मण पतित ब्राह्मण,—बन्धः 1 बुरा
उपदेश 2 बुरे कार्यों में सकलता प्राप्त करने के लिए
प्रयत्न मन्,—बोष्णः ब्रह्मण तर्पण (ब्रह्मो का), —रक्ष
(वि०) बुरे रम या स्वाव बाला, (हः) एक प्रकार
की मदिरा,—कम्बु (वि०) कुकृप, विकृत रूप, पच०
५११९,—कम्बु टिन, जस्ता,—बन्धः सीसा,—बन्धुत्वं,
बाष्ण्य (वि०) गाली देने वाला, अक्षणीय भावी,
दुर्बन्धन वा कुभावा बोलने वाला (मपु०) दुर्बन्धन,
दुर्भावा,—कर्मः आकस्मिक प्रथम शोच्य,—विधाहः
विधाह का अष्ट या अमृतित रूप—मनु० ३१६३,—कुत्तः

(स्त्री) बुरा व्यवहार, —बुरा सोटा बंध, कठबंध, नीम हकीम, —झीक (वि०) अक्कड़, कुट्ट, बघाट, कुट्ट स्वभाव, —व्यस्य बुरी जगह, —तरिस् (स्त्री०) क्षुम मही, छोटा साँस—उपिचयने क्रिया सर्वाः झीज्य कुमरितो वषा—पच० २।८५ सुवि (स्त्री०) 1. बुराचरण, कुट्टा 2 जाहू विद्याना 3 भूतता, —स्त्री सोटी स्त्री ।

- कु i (प्रा० आ० - कवठे) ध्वनि करना ।
- ii (बुदा० आ० - कुवठे) 1 बहवडाना, कराहना 2 चिल्लाना, क्रन्दन करना ।
- iii (अदा० पर०—कोवि) भिनभिनाना, कृत्रणा, वृजन करना (मधुमक्खनी की भांति) ।

कुसुमम् [कुसेन आदानेन पानेन भाति - कुक + मा + क] एक प्रकार की रसैय प्रविरा ।

कुशीलः [को पृषिय्या कोल इच्] पहाड ।

कुकु (क्) इ [कुकु वा कु इत्यव्ययम्—अलकृता कन्या ता सकृत्प पाशाय ददाति कुकु (क्) + दा + क] उपपुक्त श्रुतारो से सुभूषित (अलकृत) कन्या को विधिपूर्वक विवाह में देने वाला ।

कुकुम्भ (कु) र [कुकुणे कामिना अश्, नि० मापु] जघन-रूप, कुन्हे के दो वर्ण जो निगमक के ऊपरी भाग में होते हैं, वे० 'कुकुम्भ' ।

कुकुम्भः (ब० ब०) [कु + कु + क] एक देव का नाम, उसे 'व्याहृ' भी कहते हैं ।

कुकुम्भः - लम् [कु + कुम्भ, कुगाम] 1 पाकर, मूनी -कुकुम्भाना राशो वदन् हृदय पच्यत इव—अंतर० ६। ६० 2 भगी से वनी जाग, —लम् [को कुकुम्भ प० त०] 1 छिद्र, खाई (सदे स्यूगादिको में भरी हुई) 2 बचक, बखर ।

कुकुम्भः [कु + विवप, तेन कुटति, कुक् + कुट् + क] 1 मृग, जयकी मृगी 2 जे हृत् मूस को फिनाफिसाना, जयकी हुई लकड़ी 3 आम की चिगारी ।

कुकुटि, — डी (स्त्री०) [कुकुट + इन्, पठे छोपु] दम्भ, पाक्षव, धार्मिक अनुष्ठानों से स्वार्थमिदि ।

कुकुम्भः [कुकुम्भ गव्य भागते कुकुम्भ + भापु + ड बा०] 1 जयकी मृगी 2 मृगी 3 क्षामिण ।

कुकुम्भः (स्त्री० - स्त्री) [कोकने आवठे—कुक् + किवृत्, कुक् किविदपि वृज्जान जन् वृष्टया कुगति गव्ययते—कुक् + कुट् + क] कुला—अव्ययतपत्र न कुकुम्भरहरत्तं ह्युतार कथ्यते—मुच्छ० २।१२ । सम०— बाष् (पु०) हरिणी की एक जाति ।

कुम्भ [कुम् + न] वेद ।

कुम्भः [कुम् + णि] 1 वेद— ब्रह्मिजाध्यातपुषि (भृजग-पणि) -—मुच्छ० १।१२ 2 गर्भाशय, वेद का वह भाग जिसमें भृण रहता है—कुम्भीनस्याश्च कुम्भिव—रघु०

१।१५, शि० १३।४० 3 किसी चीज का भीतरी भाग—रघु० १०।६५ (यहाँ जल द्वितीय अर्थ को भी प्रकट करता है) 4. गने 5 मृगा, कन्दरा रघु० २। ३८, ६७ 6 तलवार का म्यान 7 लाड़ी । सम०—मुल वेद दर्द, उदरमुल ।

कुम्भिकरि (वि०) [कुम्भि + म् -रन्, मम्] अपना वेद भरने को चिन्ता करने वाला, मशी, वेद, वधुशी ।

कुम्भुमम् [कुम् + उमक्, नि० मम्] केसर जाफरान—लम्-कुम्भुमकेसरान् (स्वभावान्)—रघु० ४।६३, सु० ४।२, ५।९, भर्गु० १।१०, २५, 1 सम०—अग्निः एक पहाड का नाम ।

कुम्भ (बुदा० पर० - कुचति, कुचिन) 1 (पक्षी की भांति) कर्कम ध्वनि करना 2 जाना 3 चमकाना 4 मिथो-उना झुगना 5 मित्रुटना 6 बाधा उपस्थित करना 7 लिखना, जर्जिर करना, लम् , 1 टेड़ा होना, 2 मकुचिन करना, 3 मकुचिनटाना—यथा—गात्र सद्गु-वित, मृगार्णिरपि कागात् सद्गुक्चयुत्तरिण्यु - पथ० ३।४३ 3 बन्द करना मुहाना—कमयवर्जानि मम-कुम्भं—दण०, (धेर०) नन्द करना, मिथोइना, घटाना ।

ii (प्रा० पर०) [कुम्भु भी]—कोचति, कुम्भति, कुम्भित) 1 कुटित बनाना, मुहाना या टेड़ा करना 2 डी तरह से चमका 3 छोटा करना, घटाना 4 मित्रुटना, मकु-चिन होना 5 का भोर जाना, आ , मिथोइना, टेड़ा करना, झकाना (धेर० भी) कु० ३।२० रघु० ६।१५, भर्गु० १।३ -वि—, निकालना टेड़ा करना ।

कुम्भ [कुम् + क] स्नान, उरीड, वृषी—अपि कानालम्भत्य-कुम्भ मंग-पिक्कम० ४।२६ । सम अक्षय्—मुलम्, वृचक, —लम्, - लडी 1 (मिथवा के) स्नान का उतार, -कलः अतार का वक्ष ।

कुम्भर (वि०) [स्त्री० - र, -री] 1 मन नने जाने वाला, रंग हार जाने वाला 2 कुट्ट, नीक, कुम्भरिण 3. अप-मानित करने वाला, छिद्रान्धरी, र विदग्ग तारा ।

कुम्भम् [कु + उ + क] वजन की वज्र जर्जि, कुम्भ ।

कुम्भ [कु + उ + क] 1 वृक्ष 2 मगल ग्रह 3 एक राक्षस जिसे रूप में मार गिराया या ('तक' भी) हवी का नाम है), - आ सीता ।

कुम्भभलः कुम्भभलः [को पृषिया अम्भनमिष अ० ब० म०, का पृषियरा की पृषिय्या वा जमल - व० त० वा म० त०] सेंच लगाकर घर में भारी करने वाला चीर ।

कुम्भटिः, कुम्भटिकः, कुम्भटो [कुम् + विरृ, भट् + इन्, कुम् चामो भटिज्ज कर्म० म०, कुम्भटि-इन् + टाप्, कुम्भटि + इण्] कुम्भ, कुम्भ ।

कुम्भ २० कुम् ॥

कुञ्जम् कुञ्ज् + लृट् । टेडा करना, झुकाना, निकोबना ।

कुञ्जिकः [कुञ् + इत्] आठ मृद्धियों का अजकियों की धारिता का माप अष्टमृष्टिकैवकुञ्जिक ।

कुञ्जिका [कुञ् + लृट् + टाप्, इत्वम्] 1. कुजी, चाबी - मन्० १६३ 2 बस का अकुर ।

कुञ्जिता (वि०) [कुञ् + क्त] निकुरा हुआ, टेडा किया हुआ झुकाया हुआ ।

कुञ्ज - , अम् [कु + जन् + उ, पुष्योऽसाय] 1 लताओं तथा पौधों से आम्छादिन स्यान्, लताकिपान, पणशास्त्र, - बल सति कुञ्ज मनिविरपुञ्ज शोक्य नीलनिवालयम् - नील० ५, बज्जलकाकुञ्ज - १३, मेघ० १९, रघु० १६४ 2 हाथी का दाल । सम० कुटीर. लतामण्डप, लताओं तथा पौधों से परिबेष्टित स्यात् - गुञ्जकुञ्ज- कुटीरकोटिकपटा - उन्न० २१२, मा० ५१९, कोकिलम् जितकुञ्जकुटीरे - नील० १ ।

कुञ्जरः [कुञ्जो अग्निहृत्, मोऽप्याग्नि - कुञ्ज + र] 1 हाथी 2 (समय के अन्य में) कोई मर्वात्म या श्रेष्ठ बस्तु अमरकाल इय प्रकार के निम्नांकित प्रयोग यत्- यत्ना है - म्यमनपर आश्रय युगमपकुञ्जजग, सिंह नाङ्कनाशाष्ट एभि श्रेष्ठांयवाश्रयः । 3 पालक का वृक्ष (अश्वत्थ) इत्य नामक वृक्ष । मम० जनी- कम् मेना का गृह प्रमाण जिसमें १५पी ग, १६५-मेना, - अग्रत अश्वत्थ वृक्ष, - अशानि 1 शेर 2 गरुड (आठ पैर का एव कार्यानिन वस्तु), - घह हाथी एकजने वाता ।

कुट् । (स्वा० पर० - कुटनि, कुटित) 1 कुटिल या बक होना 2 टेडा करना या झुकाना 3 बेदमानी करना, छल करना, धोखा देना ।

॥ (दिवा० पर० - कुटपति) मोह कर टुकड़े टुकड़े करना, फाड़ देना, बिभ्रल करना, बिभ्रित करना ।

कुटः - टम् [कुट् - क्तम्] जलपात्र, करवा, कलश, - ३ः 1 किला, दुर्ग 2 हयाडा 3 वृक्ष 4 घर 5 पहाड । मम० - अः 1 एक वृक्ष का नाम - मेघ० ४, रघु० १९१३, श्रु० ३१३३, अर्जु० १४४ 2 अगस्त्य 3 द्राच हारिका सेविका, नीकगनी ।

कुटकम् [कुट् + क्त] विना छतण का हल ।

कुटक् [कु + टक् + चञ्] छल, छपर ।

कुटङ्गक [कुटस्य अङ्गक - प०त०] 1 वृक्ष के ऊपर फैली हुई लताओं से बना लतामण्डप 2 छाटा घर, झोपडी कुटिया ।

कुटप [कुट् + पा + क्] 1 अनाज की माप (= कुडव) 2 घर के निकट वाटिका 3 श्चि, मन्वासी, - यम् कनाल ।

कुटपः [कुट् + क्तन् वा०] बह पृथो जिसमें मथते समय रई की रस्सी लिपटी रहती है ।

कुटलम् [कुट् + कलच्] छत, छपर ।

कुटिः [कुट् + इत्] 1 गरीर 2 वृक्ष (ली०) 1. कुटिया, मापही 2 मांड, झुपका । मम० - अः सूल, शिशुक ।

कुटिरच् [कुट् + इन्च्] कुटिया, झोपडी ।

कुटिल (वि०) [कुट् + इलच्] 1 टेडा, झुका हुआ, मुडा हुआ, पृथरात - मेदात्त श्रुवो कुटिलयोः - ता० ५१३, रघु० ६१८२, १९११७ 2 पुमानदार, लक्ष्मणां दुर्ग - श्लोण कुटिला नदी - मिडा० 3. (आल०) काटी, जालमाज, बेईमान । सम० - अश्वत्थ (वि०) दुर्गमा, दुर्गनि, - यम्पम् (वि०) मूरी हुई पत्तकों वाष्प, - स्वभाष (वि०) कुटिल प्रकृति, बेईमान, दुर्गति ।

कुटिषिका [कुटिल + कन् + टाप्, इत्वम्] 1 बड़े पौध आना (जिम प्रकार कि विकारी अपने शिकार पर आते हैं) हुक कर बलना, 2 सुहार की भट्टी ।

कुटी [कुटि + डीप्] 1 मोह 2, कुटिया, झोपडी - प्रामादी- यति कुटयाम् - सिडा० - मनु० ११७२, पण०, अथर्व आदि 3 कुट्टिनी, दूती । मम० - अः किमी सधविशेष का सम्वासी - यतुविधा मिश्रवस्त्रे कुटीकच- बहदकी, ह्य परमहमचय यो य पञ्चाल् म उन्नय । - महा०, - अः एक सन्वासी वा अपने परिवार को अपने पुत्र की देव रेण में छोडकर अपन आपकी पूर्णतया यमनिदान एव उत्तरधर्मों में लता देता है ।

कुटीरः, रम् [कुटी + र, कुटीर + कन्] झोपडी, कुटिया, कुटीरकः - उन्न० २१२९, अमर ६८ ।

कुटीरो [कुट् + उन् + डीप्] कुट्टिनी, दूती - दे० कुट्टनी ।

कुट्टम्बम्, **कुट्टम्बकम्** [कुट्टम् + अच्, कुट्टम्ब + कन्]

1 गृहस्थों, परिवार - उत्तराचरिगताता तु मुमुक्षुव कुट्टम्ब- कम् रि० ११००, याज्ञ० १४४५ मनु० १११९२, २२, ८१२६६ 2 परिवार के कर्तव्य और चितार्थ - ननुपहित- कुट्टम्ब रघु० ७७१, - अः अम् 1 वधु, वधु या विवाह के पालनरूप सबब 2 बालकम्बे, सलोन 3 माय 4 वरा । सम० - कलकूट - कुम् परेणुं ह्यवे - अः परिवार का भार - अर्था तदपितकुट्टम्बभरेण सार्धम् - ग० ४११९, ध्यातुल (वि०) (वह पिता) जो पालन पोषण करता है, तथा परिवार की भलाई का ध्यान रखता है ।

कुट्टम्बिकः, **कुट्टम्बिन** (पु०) [कुट्टम्ब + उन्, इति वा] गृहस्थ, कुल पिता, जिसे परिवार का भरण पोषण करना पड़ता है, या जो देखभाल करता है - प्रायेण पृथिवीनेना कन्यापि कुट्टम्बिन - कु० ६१८५, विश्व० ३११, मनु० ३१८०, याज्ञ० २१४५ 2 परिवार का एक सदस्य, जो 1 गृहपती, पृथिवी (पृथे स्वामिनी), भवत कुट्टम्बिनीमाहूय पृथ्यामि - मूढा० १, प्रथमल्लोऽपि हि भर्तृयु कारणकोना कुट्टम्बिन्य - मालवि० १ । १७, रघु० ८१८६, अमर ४८ 3 स्त्री ।

बूढ़ (चुरा० उभ०—कुट्टयति, कुट्टित्) 1 काटना, बाटना 2 पीसना, चूर्ण करना 3 दोष देना, निन्दा करना 4 गुणा करना ।

बूढ़क [कुट्ट + ध्वल्] कटने वाला, पीसने वाला ।

बूढ़कम् [कुट्ट—स्वृट्] 1 काटना 2 कटना 3 चूर्णन करना, निन्दा करना ।

बूढ़ (हि) मी [कुट्टयति नाशयति स्वीया कुलम्—कुट्ट + पिच् + स्वृट् + शीप्, कुट्ट + इति वा] कुटनी, डूती, दल्ली ।

बूढ़मितम् [कुट्ट + यञ्, तेन निर्वृत इत्यर्थे कुट्ट + इमप् + इतच्] अियतम के प्यार का दिखावटी तिरस्कार (मूठमूठ ठुकराना) (नायिका के २८ हावभाव तथा अभिनय, मं से एक) सा० द० परिभाषा देता है—केवल-साधवरादीना यहे हर्षेपि सभ्रमाद, ग्राह् कुट्टमित नाम शिर करविघ्ननम्, १४२ ।

बूढ़क (वि०) (स्त्री०—की) [कुट्ट + पाकन्] जो विभक्त करता है या काटना है—सारङ्गमङ्गुरविधा-विभक्तमकटकुट्टापामिकुलिशस्य हरे प्रमाद—मा० ५।३२ ।

बूढ़ार [कुट्ट + आरन्] पहाड़,—रघु 1 मयून 2 ऊनी कंचल 3 एकाल ।

बूढ़िभः—मयू [कुट्ट + दम्प] 1 बहजा, छोटे-छोटे पत्थरों को जमा कर बनाया हुआ फर्स, पक्का फर्स—कालेयकाशोत्तरकुट्टिमेषु—शि० ३।४०, रघु० ११।९, 2 मचन बनाने के लिए तैयार की गई भूमि 3 रलो की खान 4 अनार 5 शीपरी, कुटिया, छोटा घर ।

इद्विहारिका—[कुट्टि मन्व्यमासायिक हरति इति—कुट्टि + ह + ध्वल् + टाप्, इत्वम्] सेविका, दासी ।

बूढ़मल—कुडमल ।

बूढ़ [कुडपते छिद्यते—कुड + क] वृक्ष ।

बूढ़र—दे० 'कुटर' ।

बूढ़ार (स्त्री०—री) [कुड + आरन्] कुन्हाडा (परशु), कुन्हाडी—मातु केवलमेव दीवन्वनच्छेदे कुडारा वयम्—अर्जु० ३।११ ।

बूढ़ारिक [कुडार + ङ्] लकड़हारा, लकड़ी काटने वाला ।

बूढ़ारिका [कुडार + शीप् + कन् + टाप्, ह्रस्वश्च] छोटा कुन्हाडा, फरसः ।

बूढ़ारः [कुड + आर] 1 वृक्ष 2 लघुर, बन्दर ।

बूढ़ि [कुड + इन् + क्तिन्] 1 वृक्ष 2 पहाड़ ।

बूढ़ङ्ग (पु०) कुड, सतागृह ।

बूढ़क (पु०) [कुड + कन्वन्, कन्वद् वा] एक चोपार्ई प्रत्ये के बराबर या बाह्य मूट्टी (अवर्जित) बनाज की होल ।

बूढ़क (वि०) [कुड + कन्, मूट्ट] मलता हुआ, पूरा खिला हुआ, खराता हुआ (जैसे खिला हुआ फूल)—रघु० १८।३७,—कः सुलना, कली—विजयमणो-द्वन्धिषु कुडमलेषु—रघु० १९।४७, उत्तर० ६।१७, शि० २।७,—कम् एक प्रकार का नरक—मनु० ५।८९, याज्ञ० ३।२२२ ।

बूढ़कलित (वि०) [कुडयन् + इतच्] 1 कलीघार, खिला हुआ 2 प्रसन्न, हसमुख ।

बूढ़कम् [कु + यक्, हुगामन्] 1 दीवार—भेदे कुडकवा-पातन—याज्ञ० २।२२३, शि० ३।४५ 2 (दीवार पर) पलस्तर करना, लीपना, पोतना 3 उल्लुखता, जिज्ञासा । धम०—छेदिन् (पु०) घर में सेष लगाने वाला, बोर,—छेदः सोदने वाला, (छम्) खाई, गड्ढा, (दीवार में) दरार ।

कम् (मुदा० पर०—कुणति, कुणित्) 1 महाग देना, महायाता देना 2 शब्द करना ।

कम्क [कुम् + क + कन्] किसी जानवर का अभी पैदा हुआ बच्चा ।

कम्ब (वि०) (स्त्री०—भी) [कुम् + कपन्] 1 मुँव जैसी नुनस देने वाला, बद्धदार—प,—यम् मुर्दा, शव—शासनीय कुणपभोजन—बिक्रम० ५ (गिद्ध),—अमघ् कुणपाशो च—मनु० १२। ७१, जौगिन जनुथा के प्रति घृणा व तिरस्कार का घोटक शब्द, - व 1 बर्छी 2 कुणस, बदन ।

कुणि [कुम् + इन्] लुजा, श्रिमकी एक बाँह मूष् गई हो ।
कुण्यक (वि०) (स्त्री०—की) [कुण्य + ध्वल्] मोटा, स्वल्प ।

कुण्य (म्बा० पर०—कुण्यति, कुण्यन्ति) 1 कुण्यन्त, टूट्टा या मन्द हो जाना 2 लगडा, जोर बिकलाग होना 3 मदबुद्धि या मूँब होना, मुस्त होना 4 होला करना (शेर० या चुरा० पर०) छिपाना ।

कुण्य (वि०) [कुण्य + अच्] 1 ठूठा, मुस्त, बख तपोवीर्य-बहन्तु कुण्यम्—कु० ३।१२, प्रभावरहित हो गया, कुण्यी-बन्धुपलायिषु धरा—शारी० 2 मन्द, मूर्ख, जड़ 3 आलसी, मुस्त 4 दुर्बल ।

कुण्यक [कुण्य + ध्वल्] मूर्ख ।

कुण्यित (पु० क० ङ०) [कुट्ट + क्त्] 1 ठूठा, मन्दीकृत (बाल० भी)—बिभ्रतोऽजयमचक्रेषु कुण्यितम्—रघु० १।१७४, भाषि० २।७८, कु० २।२०, शास्त्रेष्वकु-ठितावृद्धि—रघु० १।१९, निर्वाष रथी 2 जड़ 3 बिकलाग ।

कुण्य—कम् [कुण्य + ङ] 1 प्याले की गलक का बतैन, पिन्ड-यकी, कटोरा 2 हीज 3 कूड़, कुड—जगिन्कुण्यम् 4 पोखर या पत्थल—विशेषतः जो किसी देवता के नाम पर वर्माई समर्पित कर दिया गया हो 5 कमडलू या

विज्ञापण, -इ: (स्त्री०—औ) पति के जीवित रहते स्त्रीविचार द्वारा किसी दूसरे पुरुष के सहयोग से उत्पन्न सन्तान—पत्नी जीवित कुंड इत्यात्—मनु० ३।१७४, याज्ञ० १।२२२। सम०—आश्विन (पु०) महुवा, विट, मपनी जीविका के लिए जो कुण्ड पर निर्भर करता है अर्थात् वर्षाकर, बारज,—मनु० ३।१५८ याज्ञ० १।२२४—कृष्ण (कुण्डोष्णी) 1 वह गाय जिसका ऐन या बीड़ी भरो हुई हो 2 भरे पूरे स्तनो वाली स्त्री.—कीट: 1 रसकी सिपाया रखने वाला 2 चार्वाकमतानुवर्ती, नास्तिक, बारज शास्त्रण,—कीलनीच या पुश्चरिज ब्यापित,—गोमन्—गोशकम् 1 कांजी 2 कुण्ड और गोलक का समुदाय ।

कुण्डलः, लम् [कुण्ड+लत्थर् ल] 1 कान की बाली, कान का आभूषण—योग्य श्रुतेनेव न कुण्डलेन—मनु० २।७१, चोर० ११, श्रुत० २।२०, ३।१९, रव० १।१५ 2 कडा 3 रस्सी का गोला ।

कुण्डलना [कुण्डल+गिच्+युच्+टाप्] बेरा डालना (शब्द को गोल घरे में रखना) यह प्रकट करने के लिए कि यह भाग छोड़ देना या इन पर विचार नहीं करना है,—नवात्मन्पद्यस्य स्थिताविमो ध्वेनि चित्ते कुल्ले यदा यदा, ततोति भानो परिषेचकैतवास्तदा विधि कुण्डलना विधोरपि । नै० १।१६, तु० २।२५ से भी ।

कुण्डलिनी (वि०) (स्त्री०—औ) [कुण्डल+इनि] 1 कुण्डलो से विभूषित 2 गोलाकार, सपिल 3 पमावदार, कुण्डली मारे हुए (माप की भाँति)—पु० 1 साप 2 मोर 3 बहन की उपाधि ।

कुण्डिका [कुण्ड+कन्+टाप्, इत्थन्] 1 घडा 2 कमरल । कुण्डिन् (पु०) [कुण्ड+इनि] शिव की उपाधि ।

कुण्डिनम् [कुण्ड+इन्त्] एक नगर का नाम, विदर्भदेश की राजधानी ।

कुण्डि (बी) र (वि०) [कुण्ड+इ (ई) ण्] बलवान्,—र मनुष्य ।

कुल (अशु०) [किम्+तमिल्] 1 कहाँ से, किधर से—कस्य त्व वा कुत आयात्—मोक्ष० ३ 2 कहाँ, और कहाँ, और किस स्थान पर आदि—इद्विनोद कुल—सा० २।५ 3 क्यों, किस लिए किस कारण से, किस प्रयोजन से—कुल इदमुच्यते—श० ५ 4 कैसे, किस प्रकार—स्फुरति च बाहु कुल फल्गुमहास्य—सा० १।१५ 5 और अधिक, और कम—न खल्लमोस्वय्याधिक कुतोऽप्य—अशु० १।४३, ४।३१, न मे स्तेनो वनपरे न कस्यो न स्वैरी स्वैरिणी कुल—छा० 6 6 क्योंकि, कभी कभी कुल 'कैवल किम्' शब्द के अभाव के रूप में ही प्रयुक्त होता है—कुल कालात्, मृत्युवम्—वि० पु० (=कस्यत् कालात्), अथ कुत

के बारे 'किम्' 'अथ' या 'अपि' जोड़ दिया जाता है तो यह अनिश्चयबोधक बन जाता है ।

कुलस्य [कु+त्स्य+अच्] 1 शास्त्रण 2 द्विज 3 सूर्य 4 जलिन 5 अतिथि 6 दैन, साह 7 दोहता 8 भानवा 9 अनाज 10 दिन का आठवाँ मूर्त—अज्ञो मूर्तार्थं चिकवाता दस पञ्च च सर्वदा, तथाऽप्यो मूर्तार्थे सः स कुलस्य १—अम् 1 कुल धाम 2 एक प्रकार का कब्र ।

कुलस्य (वि०) [कुल+त्स्य] 1 कहाँ से जाया हुआ 2 कैसे हुआ ।

कुलुकम् [कुल+उकञ्] 1 इच्छा, रचि 2 जिज्ञासा (कीतुक) 3 उत्सुकता, उत्कण्ठा, उत्कटता—केलिकला-कुलुकन च काचिदम् यमुनाजलकुले, मज्जुलवकुलकुजगत, विषकर्ष करेण कुकुले—गीत० १ ।

कुलुपः कुलुः (स्त्री०) [कुलु+इत्थ पृ०, कु+त्स्य+क् टिलोप वा०] कुष्पी (तेल डालने के लिए चमड़े की बनी) ।

कुलुहल (वि०) [कुलु+हल्+अच्] 1 भावचर्यजनक 2 मोठ सवोनम 3 प्रसासाप्राप्त, प्रसिद्ध,—अम् 1 इच्छा, जिज्ञासा—उज्जिनसद्यनेन जगित न कुलुहलम्—सा० १, यदि विलासकलासु कुलुहलम्—गीत० १, (पपी) कुलुहलेनेव मनुष्योऽप्यचितम्—रघु० ३।५४, ३।३१२, १५।६५ 2 उत्सुकता 3 जिज्ञासा को उत्तेजित करने वाला, मुतावना, मनोरञ्जक, कीतुक या जिज्ञासा ।

कुल (अशु०) [किम्+अल्] 1 कहाँ, किस बात में,—कुल में शिशु—पच० १, प्रवृत्ति कुल कतेव्या—हि० १ 2 किस विषय में—तेजसा सह जाताना वय कुलोप-युज्यते—पच० १।३२८ (कभी कभी 'कुल' का प्रयोग 'किम्' शब्द अर्थ० एक० व० के लिए किया जाता है), जब 'कुल' के साथ चिद्, चन, या अपि, जोड़ दिया जाता है तो वह अर्थ को दृष्टि से अनिश्चयात्मक बन जाता है, कुलापि, कुलचित् किसी जगह, कही, न कुलापि—कही नहीं, कुलचित्—कुलचित्—एक स्थान पर—दूसरे स्थान पर, यहाँ-यहाँ—मनु० २।३५ ।

कुलस्य (वि०) [कुल+त्स्य] कहाँ रहने वाला या कहाँ वास करने वाला ।

कुल्य (चुरा० वा०—कुल्यते, कुल्यति) गायी देना, बुरा-भला कहना, निन्दा करना, कलक लगाना, मनु० २।३४, याज्ञ० १।३१, सा० २।२८ ।

कुलस्यम्, कुलसा [कुल्य+स्युट्, कुल्य+अ+टाप्] दुर्बचन, घृणा, भर्त्सना, शाकी देना—देवताना च कुलस्यम्—मनु० ४।१६३ ।

कुल्यति (वि०) [कुल्य+त्स] 1 धूँत, टिक्लरकीर्य 2 नीच, बचन, पुश्चरिज ।

कुल [कु+अच्] कुला नामक वास ।

कुम्भः, **कुम्भः**, **का** 1 छीट की बनी हाथी की शूल 2 दरी ।
कुम्भारः, **का**, **ककः** [कु + द् + शिप् + अच्, पुषो०, कु + दल् + शिप् + अच्, पुषो०, कुदाल + कन्] 1 कुम्भारी, मुर्दा 2 काचन वृक्ष ।

कुम्भलम् = कुम्भलम् ।
कुम्भकू-न [कुम् + कू + क नि० साध्, कु + उत् + रञ्ज + अच्] 1 चौकी 2 मचाल पर बना मकान ।

कुम्भक [?] कोवा ।
कुम्भः [कु + उन् + क्त, बा० शाक० पररूपम्] 1 भाला, पलदार बाण, बुरी—कुम्भा प्रविशति—भाव्य० २ (अथत्—कुम्भधारिणः पुष्ट्या), विरहिणिकुम्भतन्मुखाकृतिकेतकिदन्तुरितायो—गीत० १ 2 छोटा जन्तु, कीड़ा ।

कुम्भल [कुम्भ + ला + क] 1 तिर के बाल, बालों का गुच्छा, —अतनुविरलं प्रातोऽभीलम्ननोहरकुम्भलं—उत्तर० १२०, बीर० ४, ६, गीत० २ 2 कटरा 3 हल, —का (ब० ब०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम ।
कुम्भस्थः ('कुम्भ' का ब० ब०, पु०) एक देश और उसके निवासियों का नाम ।

कुम्भितः [कुम् + शिप्] एक राजा का नाम, क्रय का पुत्र ।
सम०—भौकः एक यादव राजकुमार, कुम्भितदेश का राजा, जिसने निस्सन्तान होने के कारण कुम्भी को गोद ले लिया था ।

कुम्भी [कुम्भित + डीप्] 'सूर' नामक यादव की पुत्री पृथा जिसकी कुम्भितोक्ष ने गोद लिया । (यह पाशु की पहली पत्नी थी, किसी बाण के कारण पाशु से सतान न हुई, उसने इसी लिए कुम्भी को अनुमति दे दी कि वह दुर्वासो ऋषि से प्राप्त अपने मन्त्र का प्रयोग करे जिसके द्वारा वह किसी भी देवता का आवाहन करके उसके पुत्र प्राप्त कर सकती है । फलतः उसने धर्म, बाप और इन्द्र का आवाहन किया और उनसे क्रमशः युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को प्राप्त किया । वह कर्ण की भी माता थी उसने अपनी कौमार्य—अवस्था में मन्त्र का परीक्षण करने के लिए सूर्य का आवाहन किया और उसके स्वयंसे उसने कर्ण को प्राप्त किया) ।

कुम्भ (म्भा०-व्या० पर०)—कुम्भित, कुम्भति, कुम्भित 1 कष्ट सहन करना 2 पिचकना 3 आलस्य करना 4 चोट पहुँचाना ।

कुम्भ, **बम्** [कु + दै (दो) + क, नि० मूम्, या कु + दल्, नुम्] चमेली का एक भेद, मोतिया (सर्पद और कोमल) कुम्भबदाता कलहसमाला—भट्टि० २१८, प्रातः कुम्भप्रसवशिषिल अतिवृत्त धारयेथा—मेघ० ११३, —अपु इत पीषे का फूल—अलके बालकुम्भानुविद्धम्—मेघ० ६५, ४०,—दः 1 विष्णु की उपाधि 2 सैराद । सम०—कष्ट सैरादी ।

कुम्भः [कुम्भ + मा + क] बिल्ली ।
कुम्भिनी [कुम्भ + शिप् + डीप्] कमलौ का समूह ।
कुम्भः [कु + द् + कु बा० मूम्] पृथा, मूसा ।
कुम्भ (दिवा० पर०)—कुम्भित, कुम्भित 1 कुम्भ होना (प्रायः उस ध्यनित के लिए सम्भ० जिस पर काय किया जाय, परन्तु कभी कभी कर्म० या सब० भी प्रयुक्त होते हैं) कुम्भित हितवाचिने—का० १०८, मारुति० ३। २१, उत्तर० ७, वृकोप तस्मै स भूयम्—रघु० २।५६ 2 उत्तेजित होना, सामर्थ्य ग्रहण करना प्रबल होना, जैसा कि—दोषा प्रकुम्भति—सुशु० अति—, कुम्भ होना, भट्टि० १५।५५, परि—, कुम्भ होना, प्र—, 1 कुम्भ होना,—निमित्तमृदिय हि य प्रकुम्भति ध्रुव स तस्यापगमे प्रसीदति—पञ्च० १२२३, 2 उत्तेजित होना, बल प्राप्त करना, बढ़ना (श्रेय०) उभातना, विद्याना सिद्धाना ।

कुम्भित = दे० कुम्भित ।
कुम्भिनी (पू०) [कुम्भिनी मत्स्यधानी अस्ति अयम्—कुम्भिनी + इन्] मछली ।
कुम्भिनी [कुम् + शिप् + डीप्] छोटी-छोटी मछलियाँ पकड़ने का एक प्रकार का जाल ।
कुम्भय (वि०) [कु + उप् + अच्] घृणित, नीच, अधम, तिरस्कृत्यगीय ।
कुम्भयम् [कुम् + क्यप्, कुम्भय्] 1 अपघातु 2 चोटि और सोने को छोट कर और कोई धातु—कि० १।३५, मन्० ७।१५, १०।११२ ।

कुम्भे (वे) र [कुम्भित वे (वे) र शरीर यस्य स] धन दौलत और कोष का स्वामी, उत्तरादिना का स्वामी—कुम्भेऽनुता दिशमण्डलस्य गन्तु प्रवृत्ते समय विवक्ष्य—कु० ३।२५ (इस पर मल्लि० को टीका के अनुसार) [कुम्भे इन्द्रविद्यो मं उत्पन्न विश्वा का पुत्र है, और इसीलिए यह रावण का आधा भाई है । धन और उत्तर विजाना का स्वामी होने के अतिरिक्त यह यज्ञ और किन्नरों का राजा तथा उग्र का मित्र है, इसका वर्णन विकृत शरीर के रूप में पाया जाता है, इसके तीन टोंगे और आठ दाँत थे, और एक आँख के स्थान में एक पीला चिह्न था], अचलः,—अत्रि कैलास पर्वत की उपाधि,—विष्णु (स्त्री०) उत्तर दिया ।

कुम्भ (वि०) [कुम्भत् उन्मभाजं यत्र दक० तारा०] कुम्भक, कुम्भिल, —कः 1 मुठी हुई तलवार 2 पीठ पर निकला हुआ कुम्भ, —अथा कस की एक सेविका, कहते हैं कि उसका शरीर तीन स्थानों पर विकृत था (कुम्भ और नलराम ने, जब वह मरुगा जा रहे थे राजवार्म पर कुम्भा को देखा, वह कस के लिए उबटन ले का रही थी । उन्होंने उसमें से कुछ उबटन लीया, कुम्भा ने जितना वे चाहते थे, उबटन उनको दे दिया, कुम्भ

कुम्भ (वि०) [कुम्भत् उन्मभाजं यत्र दक० तारा०] कुम्भक, कुम्भिल, —कः 1 मुठी हुई तलवार 2 पीठ पर निकला हुआ कुम्भ, —अथा कस की एक सेविका, कहते हैं कि उसका शरीर तीन स्थानों पर विकृत था (कुम्भ और नलराम ने, जब वह मरुगा जा रहे थे राजवार्म पर कुम्भा को देखा, वह कस के लिए उबटन ले का रही थी । उन्होंने उसमें से कुछ उबटन लीया, कुम्भा ने जितना वे चाहते थे, उबटन उनको दे दिया, कुम्भ

उसके इस अनुग्रह से अत्यन्त प्रसन्न हुआ, उसने उसका कुछ मिठाकर उसे पूरी तरह खींचा कर दिया, तब से वह अत्यन्त सुन्दरी स्त्री लगने लगी ।

कुम्भकः [कुम्भ + कन्] एक बड़ा का नाम + मन्० ८। २४७, ५१२।

कुम्भिका [कुम्भक + टाप्, इत्थम्] जाटवर्षी की अतिवाहिता लड़की ।

कुम्भ [कु + म् + क्विप्, तुकायम्] पहाड़ ।

कुमारः [कुम् + आरन्, उपधाया उत्थम्] 1 पुत्र, बालक, युवा-रघु० ३।४८ 2 पाँच वर्ष से कम आयु का बालक 3 राजकुमार, युवराज (विधोपेत नाटको में) -विश्वो-पिनकुमार नदाश्रमस्तानिनेश्वरम् रघु० १०।११, कुमारस्त्रायुषो वायु विक्रम० ५, उपवेष्टुमहेति कुमार मदा० ४ (मन्थकेतु ने गजस को कहा) 4 बूढ़ के देवना कातिकेय, -कुमारकल्प मुच्यते कुमारम् रघु० ५।३६, कुमारोऽपि कुमारविक्रम -३।५५ 5 अग्नि 6 ताता 7. सिन्धु नदी। सम०-वालज 1 बच्चों की देखरेख रखने वाला 2 राजा तानिवाहन, भृत्या 1. छोटे-छोटे बच्चों की देखरेख 2 गर्भावस्था में स्त्री की देखरेख, प्रसूति विद्या-रघु० ३।१२ -बाहिन्, -बाह्वज मोर, -ब्रू (स्त्री०) 1 पार्वती का विशेषण 2 गंगा का वि० ।

कुमारक [कुमार + कन्] 1 अन्धा, युवा 2 अग्नि का नाग ।

कुमारपति (ना० धा० पर०) खेलना, पीड़ा करना (बच्चे की तरह) ।

कुमारिक (वि०) (स्त्री० भी) } [कुमारी + ठन्, कुभारिक (वि०) (स्त्री० भी) } कुमारी + इति

'जन्मके लक्षकियाँ हो, जहाँ लड़कियों की बहुतायत हो ।

कुमारिका, कुमारी [कुमारी + ठन् + टाप्, कुमार + ङीप्] 1 दस से बराबर वर्ष के बीच की लड़की 2 अतिवाहिता लड़की, कन्या-त्रौणि वर्षाश्रुदीक्षेण कुमार्यनुमती सती मनु० ९।९०, ११।५८, व्यावर्त-नायोपगमान्पुत्री रघु० ६।६९ 3 लड़की, पुत्री 4 दुर्गा 5 कुछ पीसों के नाम । सम०-गुचः अतिवाहिता स्त्री का पुत्र, -स्वशुरः विवाह से पूर्व भ्रष्ट लड़की का स्वशुर ।

कुम्भ [कु०] [कु० + म् + क्विप्] 1 कृपाशून्य, अमित्र 2 लोभी (मनु०) 1. सफेद कुम्भिनी 2 लास कमल ।

कुम्भः-धम् [को मोदते इति कुम्भम्] 1 सफेद कुम्भिनी, जो कहते हैं कि चन्द्रोदय के समय खिलती है-नोष्व-सिति तपनाकरचौचन्द्रस्येशुभिश्च कुम्भम्-विक्रम० ३।१६, इसी प्रकार छ० ५।२८, श्रुतु० ३।२, २।१, २३, मेघ० ४० 2 लास कमल, -धम् चौकी, -धः 1. विष्णु का विशेषण 2. दक्षिण दिशा के विरुद्ध का

नाम 3. कपूर 4. बन्दरो की एक जाति 5 एक नाग जिसने अपनी छोटी बहन कुम्भिनी को राम के पुत्र कुप को प्रदान किया -दे० रघु० १६।७५-८६ । सम० -आकारः, चौरी, -आकरः, आशस-कमलो से भरा हुआ सरोवर, -ईश-चन्द्रमा, -स्वच्छम् कमलो का समूह, -माचः, -पति, -धम्, -द्वान्धकः, -गुह्य (५०) चन्द्रमा ।

कुम्भवती [कुम्भ + मनुप् + ङीप्, वत्वम्] कमल का पीसा

कुम्भिनी [कुम्भ + इति] 1 सफेद फूलों की कुम्भिनी यथेन्द्रायानन्द इति सम्पादे कुम्भिनी-उत्तर० ५ २६, गि० ९।३४ 2 कमलों का समूह 3 कमलस्थली । सम०-आयकः, -पतिः चन्द्रमा ।

कुम्भम् (वि०) [कुम्भ + मनुप्, वत्वम्] जहाँ कमलों की बहुतायत हो - कुम्भद्रुत्तु च गारिष्-रघु० ५।१९, -सौ 1 सफेद फूलों की कुम्भिनी (जो चन्द्रमा के उदय होने पर खिलती है) -अन्तहिते रात्रिनि सैव कुम्भद्वी में दृष्टि न नन्दयति सम्मरयोपयोमा-श० ४।२, कुम्भद्वी भानुमतीय भाव (न ब्रज्य) -रघु० ६।३६ 2 कमला का समूह 3 कमलस्थली, -ईशो चन्द्रमा ।

कुम्भिकः [कु + म् + क्विप् + क्वल्] विष्णु का विशेषण ।

कुम्भा [कुम्भ + अञ + टाप्] यमभूमि का अहाता ।

कुम्भः [कु म्भि कुम्भित वा उन्मति पूरयति - उम्भ + अञ् शक० तारा०] 1. बड़ा, जलपान, करना -इय मुस्तनी मन्थकम्पस्तकुम्भा जय०, बर्बायेताम्ब मिष विषकुम्भ पयोमुखम्-हि० १।७७, रघु० २।३४ इसी प्रकार 'कुच', स्तन' 2 हाथी के मस्तक का ललाट स्थल -इयकुम्भ-मा० ५।३२, मनेभकुम्भदलने भुवि सन्ति पुरा-भर्गु१।५९ 3 राशिचक्र में ग्यारहवीं राशि कुम्भ 4 २० राशिके बराबर अनाज की तोन-मनु० ८। ३२० 5 (योग दर्शन में) इवास की स्थापित करने के लिए नाक तथा मुखविवर को बन्द करना 6 देवता का प्रेमो । सम०-कृष्णः 'बड़े के सद्गुण काय बाला' एक महाकाय राक्षस जो रावण का भाई था तथा राम के हाथों मारा गया था (कहते हैं कि इस राक्षस न हजारी प्राणी, श्रुति तथा स्वर्गीय अफरारों को अपने नुह का शास बना लिया, देवता उन्मुकतापूर्वक उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे, जब कि इस शक्तिशाली राक्षस से मुक्ति मिले । हैत्रि और उसके हाथी ऐरावत के दैव्यभाव के कारण इन्द्रा ने इसे शाप दिया । तब से कुम्भकर्ण अत्यन्त घोर तपस्या करने लगा । इन्द्रा प्रसन्न हुआ, और उसे बरदान देने ही वाला था कि देवों ने बरस्वती से प्रार्थना की कि वह कुम्भकर्ण की जिह्वा पर बैठकर उसे बधले दे ; तदनुसार जब वह इन्द्रा के पास गया तो 'कुम्भपद' बालिने के बहाय उसके मुह से 'गिरावपद' निकला, जो लगी सम

स्वीकार कर लिया गया। कहते हैं कि वह छ महीने सोता था और फिर केवल एक दिन के लिए जागता था। जब लका को राम की खानखाना ने घेर लिया तो राक्षस ने बड़ी कठिनाई के साथ कुम्भकर्म को जगाया जिससे कि वह उसकी प्रबल शक्ति का उपयोग कर सके। २००० कला मुद्रा पीने के पश्चात् कुम्भकर्म ने हजारों बन्दों को अपना मुसवास बनाने के अतिरिक्त सुवीर को बन्दी बना लिया। अन्त में कुम्भकर्म राम के हाथों मारा गया।—कार: 1. कुम्हार—याज्ञ० ३।१५६ 2 वर्ष सकर जाति (वेधया विप्रतपश्वीर्षा-कुम्भकार स उच्यते—उशाना, या मालाकारात्कर्मकौ कुम्भकारो व्यजायत पराशर),—शौच: एक नगर का नाम,—ज:—जन्म (५),—शौचि:—सप्तम: 1 अगस्त्य मुनि के विशेषण—अससादोदयावन्त कुम्भपीनेर्महीयव—रघु० ४।२२, १५।५५ 2 कौरव और पांडवों के सन्धिशाखाचार्य गुरु द्रोण का विशेषण 3 बगिच का विशेषण,—बासी कुट्टिनी, दूती (कमी कमी यह गन्द गाली के रूप में प्रयुक्त होता है)—कल्पम् दिन का वह समय जब कि राशि चक्र अतिज के ऊपर उदय होता है,—अष्टक: 1 (शा०) चंद्र का मंडक 2 (आळ०) अनुभववयु मनुष्य—नु० कूपमंडक,—संधि हाथी के सिर पर ललाटस्थितियों के बीच का गर्त।

कुम्भक: [कुम्भ + कन् + क + क वा] 1 स्तम्भ का आधार 2 (योगदर्शन में) प्राणायाम का एक प्रकार जिसमें दाहिने हाथ की अंगुलियों से दोनों नड़ुने और मूल बंद करके साम रोक़ा जाता है।

कुम्भा [कुम्भितम् उन्नति पूरवति इति—उम्भ् + अच् + टाप् शक पररूपम्] वेध्या, शारागना।

कुम्भिका [कुम्भ + कन् + टाप्, इत्थम्] 1 छोटा बर्तन 2 वेध्या।

कुम्भित् [कुम्भ + इति] 1 हाथी भागि० १।५२ 2 मगरमच्छ। सम०—नरकः एक विशेष प्रकार का नरक,—अब हाथी के मस्तक में बहने वाला मद।

कुम्भिक [कुम्भ + इत्थम्] 1 सेंध लगा कर घर में घुसने वाला चोर 2 काब्य चोर, लेख चोर 3 साला, पत्नी का भाई 4 गर्म पुरा होने से पहले ही उत्पन्न बालक।

कुम्भी [कुम्भ + झीप्] पानी का छोटा पात्र, घडिया। सम०,—नसः एक प्रकार का विरला सौष—उत्तर० २।२९—पाक (ए० ब० या ब० ब०) एक विशेष प्रकार का नरक जिसमें पापी जब कुम्हार के बर्तनों को भाँति पकाने जाते हैं—याज्ञ० ३। ५, मनु० १२।७६।

कुम्भीक: [कुम्भी + क + क] पुत्रागव्ज। सम०—सक्षिका एक प्रकार की मन्थी।

कुम्भीर [कुम्भित् + ईर् + अण्] घडियाल,। **कुम्भीरक:**, **कुम्भील:**, **कुम्भीलक:** [कुम्भीर + कन्, रस्य ल, तत कन् च] चोर—लोप्येण गृहीतस्य कुम्भीरकस्यासि त वा प्रतिबन्धनम्—विश्व० २, कुम्भीलकं कायुर्बन्ध परिहृतंभ्या चन्द्रिका—मालवि० ४।

कुर् (तुदा० पर०—कुरति) शब्द करना, ध्वनि करना **कुरकार**, **कुरकुर** [कुरम् इति अव्यक्तवाच्य करोति—कुरम् + क् + ट, कुरम् + कुर + गच् च] सारस पक्षी।

कुरग, (स्त्री०—सी) [क् + अङ्गच्] 1 हरिय—तन्मे बहि कुरग कुत्र भवता कि नाम तथ तथ—शा० १।१४, ४।६ लवणी कुरगी युवगीकरोतु—अण० 2 हरिय की एक जाति (कुरग ईषनाश्र स्यादगिणा-हृत्तिका महान्)। सम०—अञ्जो,—नवना,—नेत्रा हरिय जैमी अञ्जो बानी स्त्री,— नाभि कम्पूरी।

कुरंगम [कुर + गम् + गच्, म्] दे० 'कुरग'।

कुरचित्त [कुर + चित् + अच्] कंकडा।

कुरट [कुर + अट् + क्त्] जूत बनाने वाला, मोची।

कुरटक, **कुरटिका** [कुर + अट् + क्त्] पीला मदाबहार, कटमर्या।

कुरड [कुर + अङ्गच्] अण्डका की वृद्धि, एक रोग जिसमें पीले बह जाते हैं।

कुरर: (ल) [कु + कृत्, गन्धोर्गभेद] कौच पक्षी समुद्री उकाव।

कुररी [कुर + शीप्] 1 मादा कौच, चकन्द विना कुर-रीव भूय—रघु० १४।६८ 2 मंड। सम०—एण कौच पक्षियों का झुंड।

कुरव, (ब) **कुरव** (ब) कम् [ईयत रवो यत्र इति, कुरव + कम्] मदाबहार वा कटमर्या की जाति, — कुरवकाः रवकारणता यद् यद् २।०९, मेघ० ७८, तुणु० ६।२८—ब (ब),—ब (ब) कम् सदाबहार का फूल—प्रापासे नवकुरवकम्—मेघ० ६।५, प्रयागस्थान विशेषकम् कुरवक इयामावदातारणम्—मालवि० ३।५।

कुरीरम् [क् + ईरन्, उकारादेश] स्त्रियों का एक प्रकार का सिर पर ओढ़ने का कपड़ा।

कुरु, (ब०ब०) [क् + कु उकारादेश] 1 वर्तमान दिल्ली के निकट भारत के उत्तर में स्थित एक देश—अथ कुरुगानधिपस्य पान्नीम्—कि० १।१, चिराय तस्मिन् कुरुबन्धकासते—१।१७ 2 इस देश के राजा—ब 1 पुरोहित 2 भात। सम०—शेखम् दिल्ली के निकट एक विस्तृत क्षेत्र जहाँ कौरव पाण्डवों का महायुद्ध हुआ था—धर्मोपे कुञ्जोने समवेता युधस्य—भग० १।१, मनु० २।१९,—आङ्गुलम्=कुण्डल—राज (ए०)—राजः युवायन का विशेषण,—विस्त. ७०० दाय एव के बराबर (४ तोले) सोने का तोल।—बुधः भीष्म का विशेषण।

कुण्डः (५०) लालरग का सदाबहार, -डी काठ की गुड़िया पुरालिका ।

कुण्ड (५०) बालो का गुच्छा, विशेषकर मांवे पर बिलरी हुई अलक ।

कुण्डक—कुण्डक ।

कुण्डिकः, -वम् [कुण् + विद् + श, वृत्] लालमणि—वम् 1 काला ममक 2 दर्पण ।

कुण्डितः [कुण् + कुट् + क] 1 मृदा 2 कूड़ा-करकट ।

कुण्डुर [कुण् + कुर् + क] कुला, + उपकर्णमि प्राप्य नि - म्ब मन्यति कुण्डुरम्—पच० २।९०, अने० पा० ।

कुण्डिका—कुण्डिका ।

कुण्डु, कुण्डन—दे० कुण्डं कान ।

कु (कु) धर. [कुर् + विभृ, कुर् + पु + अच् पहले वीर्धं नि०] 1 घटना 2 कोहनी ।

कु (कु) धरित. **कु** (कु) धरितक. [कुर्ण + अच् + घञ्, घृणो०, कुपास (कृपास) + कर्त्] क्रियो के पहनने के लिए पत्र प्रकार की अँधिया या धोली 1 मनोज्ञ-कृपासकपीडिनस्त्रना—अनु० ५।८, ४।१९ अने० पा० ।

कुण्डत् (घञन्त) [कु + णत्] करता हुआ—(५०) 1 नीकर 2 जूने बनाने वाला ।

कुलम्ब [कुल + क] 1 बग, परिवार निदानमिक्काकुलुम्ब्य मन्त्र—रघ० ३।९ 2 पारिवारिक आवास, आसन, घर, गृह-वसप्रथिकुलेय म—रघ० १।३।५ 3 उलम-कुल, उच्च वंश, भला घराना—कुले जन्म—पच० ५।२, कुलशीलममन्विन—मनु० ७।५४, ६२, इमी प्रकार कुलजा, कुलकन्यका आदि 4 नेबड़, दल, मूढ़, मग्न, ममूह—मृगकुल रोमन्धममन्व्यु—शं० २।५ अलकुलमकुल गीत० १, सि० १।३१, इसी प्रकार गो० इमि महिषी आदि 5 बट्टा, टोली, दल (बुरे अर्थ में) 6 शरीर 7 सामने का या अन्तर्भाग, —ल-किसी निगम या मन्त्र का अग्रज । सम०—अकुल (वि०) 1 मिश्र चरित्रबल का 2 मध्यम श्रेणी का,

तिथिः (५०—स्त्री०) चाद्रमास के पक्ष की द्वितीया, षष्ठी और दशमी, शारः बुधवार, -अकुला आदर्शणीय तथा उच्च वंश की स्त्री, -अकुलः जो अपन कुल को नष्ट करता है, -अकुलः—अद्वि, पर्वतः—शोकः मुख्य पहाड़, जो इम महाद्वीप के प्रत्येक मूठ में विद्यमान माने जाते हैं उन सत्त पहाड़ों में से एक, उनके नाम ये हैं—महेन्द्रो मलय सद्य शुक्तिमान् शूलपर्वत, विष्यद्वच पारियात्रच सन्तते कुलपर्वता ।—अन्वित (वि०) उच्चकुल में उत्पन्न,—अन्वितकः कुल का पीछा,—आचारः किसी परिवार या जाति का विशेष कर्तव्य या रिवाज,—आचार्यः 1 कुलपुराहित या कुलगुरु 2. बशावलीप्रणेता,—आलम्बित् (वि०) परिवार का पालन पोषण करने वाला,—ईश्वरः 1. परिवार का

मुखिया 2 शिव का नाम,—अलक्ष (वि०) उच्च-कुलोद्भव (द) अच्छी नसल का बाह्य—अप्य, -अप्यत्,—अप्युच (वि०) भले कुल में उत्पन्न, उच्च-

कुलोद्भव,—अहहः कुटुंब का मुखिया या उच्च अन्न बनाने वाला—दे० उहह,—अप्यैः सानदानी नाम,—अप्यैः कुलकलक,—अप्यैः जो अपने कुटुंब के लिए काटे की भांति कट्टाधिक हो,—अप्यैः,—अप्यै उच्चकुल में उत्पन्न लड़की—विशुद्धमुख कुलकन्यकाजन—सा० ७।१, गृहे-गृहे पुरुषा कुलकन्यका समुद्रहन्ति—सा० ७,

कारः कुलप्रवर्तक, कुल का आदिपुत्र,—कर्मन् (नपु०) अपने कुल की विशेष रीति,—कर्मन् जो अपने कुल के लिए अपना का कारण हो,—अप्यः 1 कुटुंब का माता 2 कुल की परिमार्ति,—गिरि,—भूमत् (५०)—पर्वत-दे० 'कुलावन्' उपर,—अप्य (वि०) कुल की बर्बाद करने वाला—दोषैरेतैः कुलजानाम्—मग० १।४२,—अ,—आत (वि०) 1 अच्छे कुल में उत्पन्न, उच्चकुलोद्भव 2 कुलकमागत, अनुभविक—कि० १।३१ (दोनों अर्थों में प्रयुक्त),—अन, उच्च-कुलोद्भव या समाननीय पुत्र,—तन्तुः जो अपने कुल को बनाये रखता है,—तिथिः (५० स्त्री०) महत्त्वपूर्ण

निधि, नामत चाद्र पक्ष की चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी और चतुर्दशी,—तिलक कुटुंब की कानि, जो अपने कुल की सम्मानित करती है, शेषः—शेषकः जिसने कुल का नाम उजागर हो,—बुधित् (स्त्री०) दे० कुलकन्या,—बैष्ठा अभिमानक देवता, कुल का सरसक देवता—कु० ७।२७—धर्मः कुल की रीति, अपने कुल का कर्तव्य या विशेष रीति—उन्नतकुलधर्माणा मनुष्याणा जनार्दन—मग० १।४३ मनु० १।११८ ८। १४,—धारक पुत्र, धर्म परिवार का भरणपोषण करने में समर्थ (पुत्र), धर्मक पुत्र—त इति कुल-धर्मं सूर्यवधया गृहाय—रघ० ७।३१,—मन्त्र (वि०) अपने कुल को प्रमत्त तथा सम्मानित करने वाला,—माधिका वाममायी शक्तो की तांत्रिकपूजा के उत्सव के अन्तर् पर जिस लड़की की पूजा की जाय,—नारी उच्चकुलोद्भव सती सच्ची स्त्री,—नाशः 1 कुल का नाश या बरबादी 2 विधवा, मायाहीन, बहिष्कृत 3 अँट,—परम्परा वंश की बनाने वाली पीढ़ियों की श्रेणी,—पतिः 1 कुटुंब का मुखिया 2 वह श्रुति जो वस् सहज विद्याधियो का पालनपोषण करता है तथा उन्हें शिक्षित करता है—परियाया—मुनीना दशाहाह योऽप्रदानादिपोषणात्, अथाप्यपति त्रिपरि-रत्नी कुलपति स्मृत ।—अपि नाम कुलपरिचरितसर्व-शेषसत्रमा स्मृत् शं० १, रघु० १।१५, उत्तर० ३।४८,—पोषुका कुलदा स्त्री जो अपने कुल को कर्मक कर्माये, ध्यानधारिणी स्त्री,—पतिः—पतिष्का,

—साकी (स्त्री०) उच्चकुलोद्भूत सती स्त्री, —बुध
अच्छे कुल में उत्पन्न होता—इह सर्वस्वफालिन कुल-
पुत्रमहादामा—बृ० ५११०,—बुधर्षा १ सम्मान के
साथ तथा उच्चकुल में उत्पन्न पुत्र्य—कवचम्बति
कुलपुत्रां वैश्याधरपत्न्यव मनीषामपि—भर्तृ० ११९२
२ पूर्वज,—बुधर्षण, पूर्व पुत्र्य,—आर्षा सती साध्वी पत्नी,
—भृश्या गर्भवती स्त्री की परिचर्या,—अर्षाया कुल
का सम्मान या प्रशिक्षा,—आर्षाः कुल की रीति, मनी-
षामरीति या ईमानदारी का व्यवहार, योग्यत्व,
—बध् (स्त्री०) अच्छे कुल की सदाचारिणी स्त्री,
—आटः मुख्य दिन (अर्थात् मयलकार और शुक्रवार)
—विद्या कुलक्रमागत प्राप्त ज्ञान, परंपराप्राप्त ज्ञान,
—विद्यः कुलपुरोहित,—बुधः परिवार का बड़ा तथा
अनुभवी पुत्र्य, ब्रह्मः—सम्बु कुल का धन या प्रशिक्षा
—मलितवयवामिधवाकुणामिव हि कुत्रत्रयम्—रघु०
३१००, विष्वस्मिन्ननुनाज्य कुलव्रतं पालयिष्यति न
—आमि० १११३,—घोषिष्णु (पु०) किसी कुटुंब या
यमिकसभ्य का मुखिया २ उच्चकुल में उत्पन्न गिल्प-
कार,—सख्या १ कुल की प्रशिक्षा २ सम्मानित परि-
चारी में गणना—भृ० ३१६६,—सन्तति. (स्त्री०)
सलान, वयाज, वशारम्परा—मनु ५११५९,—सभ्य
(वि०) प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न,—सेषक, श्रेष्ठ
नौकर,—स्त्री उच्च कुल की स्त्री, कुलसभ्य,—अधर्माभि-
यवाकृत्या प्रवृत्त्यानि कुलनिरय भग० ११४१,
—निषति (स्त्री०) कुटुंब की प्राचीनता या
सम्पत्ति ।

कुलक (वि०) [कुल + कन्] अच्छे कुल का, अच्छे कुल
में जन्मा हुआ,— क. १ गिल्पियों की श्रेणियों का मुखिया
२ उच्च कुल में उत्पन्न गिल्पकार ३ बाँबी,—कम्
१ सपह, समूह २ व्याकरण की दृष्टि में सम्बद्ध श्लोकों
का समूह, (पद्य में फेरहृत् न के अर्थोंको का समूह
जो एक वाक्य बनाते हों) उदा० दे० शि० १११-१०,
रघु० ११५-९, इसी प्रकार कु० ११११-६ ।

कुलहा [कुल + अद् + अच् + टाप् शक० परस्परम्] अग्नि
चारिणी स्त्री—मृदा० ६१५, याज्ञ० ११२१५ । सम०
—वति अर्थात् जगन्निगी स्त्री का स्वामी ।

कुलसः (अब्य०) कुल + तसिच् [जन्म से ।

कुलस्य [कुल + स्या + क् पृथो० नाधु] कुलधी, एक
प्रकार की दाल ।

कुलम्बर (वि०) [कुल + बृ + लच्, मृम्] अपने कुल का
सिलसिला चलाने वाला ।

कुलम्बरः,—क [कुल + बृ + लच्, मृम्] घोर ।

कुलवत् [कुल + मतुप्, मस्य बलवत्] कुलीन, अच्छे घराने
में उत्पन्न ।

कुलव्यः, अच् [कुल पशिसमूह अयोध्वज—कुल + अच्

+ घञ्] पशियों का घोसला,—कुलकालात्कपोल-
कुलकुटुकुला कृते कुलाद्दुमा उत्तर० २१५, मै० १।
१४१ २ शरीर ३ स्थान, जगह ४ बना हुआ वस्त्र,
जासा ५ वस्त्र या पात्र । सम०—जिलायः घासले
में बैठना, अडे सेना, अडो में से बच निकालने के लिए
अडो के ऊपर बैठना ।—एवः पक्षी ।

कुलायिका [कुलाय + अच् + टाप्] पशियों का पित्रजा,
चिडियाघर, कबूतरवाता, दरवा ।

कुलात् [कुल् + काल्त्] १ कुम्हार, ब्रह्मा येन कुलात्-
वश्रियमितो ब्रह्माष्टकभाण्डोदरे—भर्तृ० २१५५ २ जगली
मुर्गा ।

कुलि [कुल् + इत्, किल्] हाथ ।

कुलिक (वि०) [कुल + इत्] अच्छे कुल का, उत्तम कुल
में उत्पन्न, क० १ स्वजन—याज्ञ० २१२३३ २ शिल्पि-
नय का मुखिया ३ उच्चकुलोद्भूत कलाकार । सम०
—बेला दिन का वह समय जबकि कोई शुभ कार्य
आरम्भ नहीं करना चाहिए ।

कुलिङ्गः [कु + लिङ्ग + अच्] १ पक्षी २ चिडिया ।

कुलित् (वि०) (स्त्री०—औ) [कुल इति] कुलीन,
उच्चकुलोद्भूत, (पु०) पहाड़ ।

कुलित् (ब० ब०) [कुल् + इत्] एक देश तथा उसके
शासकों का नाम ।

कुलित्,—रक [कुल + इत्, किल्] १ केकड़ा २ राशि
चक्र में चौथी राशि, कर्कराशि ।

कुलि (स्त्री) स. शब्द [कुलि + सो + इ, गण० पयो०
शीघ्र] इन्द्र का वज्र—वृषस्य इन्दु कुलिग कुष्टिना
शिव लक्षणे—कु० २१००, अवेदनाज कुनिशसतानाम
—११०, रघु० ३१६८, ५१८८, अमर ६६ २ बन्तु
का सिगा या कानारा मेष० ६१ । सम०—घर,
—वाणि इन्द्र का विशेषण, नाथकः मेषुन की विशेष
रीति, रतिमवयव ।

कुली (स्त्री) पत्नी की बड़ी बहन, बड़ी साखी ।

कुलीन (वि०) [कुल + न] ऊँचे घर का, अच्छे कुल का,
उत्तम परिवार में जन्म हुआ, दिव्यवर्धितमिथ्याकुली-
नाम्—का० ११,—क अच्छी नमल का घोड़ा ।

कुलीनसम् [कुलीन भूमिलज इव स्थिति—कुलीन + सो
+ क] पानी ।

कुलीरः,—रक [कुल् + ईत्, किल्, कुलीर + कन्]
१ केकड़ा २ राशिचक्र में चौथी राशि, कर्क राशि ।

कुलकम्बुम्बा [कुली पृथिव्या लक्ष्मा, लक्ष्मायिता मृज्ज इह]
लकड़ी, जलती हुई लकड़ी ।

कुलूत (ब० ब०) एक देश और उसके शासकों का नाम ।

कुलुमाचम् [कुल् + चित्, कुल्, माधोऽस्तिम्, ब० स०]
काजो, कः एक प्रकार का जनावर । सम०—अभि
वत्सु काबी ।

कुम्भ (वि०) [कुम्भ + भृ] 1 कुट्टर, बरग या मिगम से मजबूत रखने वाला 2 संकुम्भाजुष, - लम्बः प्रतिष्ठित भन्व्य, - लम्बः 1 औद्योगिक विषयों में विद्यो की भाँति पूषणाङ्क (समवेदना, बर्बाद आदि) 2 हृद्दी-महावी० २।१६ 3 मीन 4 छात्र, - लम्बा 1. छात्रवी स्त्री 2 छोटी नदी, नहर, सरिता-कुम्भाम्नीय पद्मकमली-गाविनीं घातमूला- -म० ३।१५. कुम्भेषांघानपाव-पान्- -रघु० १२।३ ७।४९ 3 परिखा, बाई 4 आठ ट्रांश के बराबर अनाज की मात्रा ।

कुम्भ [कु + भा + भृ] 1 कूट 2 कमल ।

कुम्भर - दे० कुम्भर ।

कुम्भकम् [कु - वल् + अच्] 1 कुम्भ 2 मीनी 3 पानी ।

कुम्भकाम् [को पवित्र्या बलधमिब- -उ० सं०] 1 नीला कुम्भ 2 कुम्भकालमिर्ष्वर-कुम्भदी नयनोत्पन्नम्-उत्तर० ३।० 2 कुम्भ 3 पृथ्वी (पृ० मी) ।

कुम्भकामिनी [कुम्भकय + इनि + क्रीप्] 1 मीनी कुम्भरिनी का पौधा 2 कमलों का समूह 3 कमलरमणी 4 कमल का पौधा ।

कुम्भा (वि०) [कु + वद + अच्] 1. मान घटाने वाला, मान कम करने वाला, निन्दक 2 नीच, दुर्गत्या, अधम ।

कुम्भिक (ब० व०) एक देग का नाम ।

कुम्भि [वि० च [कु + विद् + भा, मुम्, कुप् + क्तिन्वच्] 1 बुनकर कुम्भरन्स्व तावत्पदानि गुणधामप्रभित - काव्य० ७ 2 अनाहा जालि का नाम ।

कुम्भेयी [कु + वेष् + इन् + क्रीप्] 1 मछलियाँ रमने की टोंगरा [कुत्सिता बेयी] 2 बुरी तरह बीबी हुई निर की चोटी ।

कुम्भेयम् [कुम्भेय जलत्रयुग्मेय ई शोभा लाति-कुम्भ + ई + ला + क] कमल ।

कुम्भः [कु + भी + ड] 1 एक प्रकार का भास (दर्भ) जो पवित्र माना जाता है और बहुत से धर्मानुष्ठानों में बिसका होना आवश्यक समझा जाता है, - पवित्रार्थ इमे कुम्भा - आद्यमन्त्र-कुम्भस्तु प्रव्रजस्तु विष्टरम्- -रघु० ८।१८, १।१६, ९५ 2 राम के बड़े पुत्र का नाम (बड़े राम के बड़े पुत्रों में से एक था, जब रामने सीता को निन्दुरतापुत्रक जल में छोड़ दिया था, उसके बाद भीष ही बड़ेवाँ पुत्रों का जन्म हुआ जिनमें कुम्भ बड़ा था क्योंकि उसने सत्कार को पहले देखा, कुम्भ और लक्ष्मण दोनों भाइयों का पालन जीवन् वास्यीकि ने किया, उन्हें आदिपति के महाकाव्य रामायण का पाठ करना सिखाया गया । राम ने कुम्भ को कुम्भावती का राधा बना दिया और वह अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय तक बड़ा रहा । पत्नी बर्बाया की पुतली राजधानी की अधिष्ठात्री-बेयी ने उसे स्वयं

में दर्शन दिए और कहा कि जैसे इस प्रकार देवी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए, तब कुम्भ बर्बाया को जीत गया- -दे० रघु १६।२-४२) - कुम्भ पानी जैसा कि 'कुम्भेश' में । सभ०- -बन्धु कुम्भवास के पते का तेज फिनार, इतीलिपु अथवा में बहु बन्धु प्राथ 'तीक्ष्ण' 'तेज' और 'तीक्ष्ण' अर्थ प्रकट करता है जैसा कि 'बुद्धि (वि०) तीक्ष्णबुद्धि, तेजबुद्धि वात्सा, तीक्ष्णबुद्धि, - (अपि) कुम्भाबद्धे कुम्भानी मुचस्ते- -रघु० ५।४, - असीय (वि०) तीक्ष्ण, तेज, -अक्षरुतीक्ष्ण कुम्भवास की बनी अपुटी जी धर्मानुष्ठान के ब्यस्य पर बहनी जाती है, - अक्षरुत्त कुम्भा का बना हुआ मांसन या बटाई, - स्वयम्भु उत्तर भारत में एक स्थान का नाम - बेयी० १ ।

कुम्भल (वि०) [कुम्भाल् सतीति-कुम्भ + ला + क] 1 सही, उचित, मयाल कुम्भ-वि० १६।४१, अथ० १८।१० 2 प्रसन्न, समृद्ध 3 योग्य, दक्ष, चतुर, प्रवीण, अमित्र (अवि० के साथ या समास में) -दण्डीनां च कुम्भलम् वाञ्छ० १।३।१३, २।१८१, मनु० ७।१९० रघु० ३।१२, -लम् 1 कल्याण, प्रसन्न तथा समृद्ध अवस्था, प्रमत्तता, -परब्रह्म कुम्भाल राज्ञे गजवाधममूनि मुनि -रघु० १।५८, बन्ध्यापत्र- कुम्भलमबले पुष्कळति स्वाय-मेध० १०१ अपि कुम्भाल मयात 'आय लक्ष्मीं तत्र के है ?' 2 मूज 3 चतुराई, योग्यता । सम० - काय (वि०) प्रमत्तता का इच्छक, - प्रसन्न किसी में कुम्भालमयाल पूषणा (मिथो की भाँति), - बुद्धि (वि०) बुद्धिमान्, समझदार, तीक्ष्णबुद्धि, तीक्ष्णबुद्धि ।

कुम्भलिम् (वि०) (स्त्री०- -भी) [कुम्भाल् + इनि] प्रसन्न, राखी सुधी, समृद्ध- -अथ अगनीलोकाजुषहाय कुम्भली काव्यप- -स० ५, रघु० ५।४, मेघ० १।१२ ।

कुम्भा [कुम्भ + टाप्] 1 रस्सी 2 लगाव ।

कुम्भावती [कुम्भ + मत्तुप्, मज्ज ब, दीर्घ] इत नाम की एक नगरी, राम के पुत्र कुम्भ की राजधानी, दे० 'कुम्भ' ।

कुम्भिक (वि०) [कुम्भ + उन्] मीनी मीन वाला, -कः 1 विद्यमानिष के द्वारा का नाम, (कुम्भ दूसरे वर्णनों के अनुसार- विद्यमानिष के पिता का नाम) 2 फाली (हल की) प्रक की मात्र ।

कुम्भी [कुम्भ + क्रीप्] हल की फाली ।

कुम्भीलका [कुम्भिल शीलमस्य-कुम्भील + थ] 1 भाट, मईबा- -सनु० ८।६५, १०२ 2 (भाटक का) पात्र, नर्तक- -तल्लक्ष कुम्भीलका सञ्जीवमयानेय मल्लवीहित- -संपादनाय प्रवर्तताम्- -सो० १, लक्ष्मिपति मारुत्थयथि कुम्भीलकं, सह सञ्जीवकम्- -बेयी० १ 3 सजाधार कैमाने वाला 4 वास्यीकि का विशेषण ।

कुम्भकः [कु + कुम्भ + अच्] संभाषी का बलवाच, कमलम् ।

कुकुलः [कुम् + ऊलच्, पुषो० सत्य कल्च्] 1. लक्ष्मणार (अर्थात्), कोठी, भंडार -को कर्णो बहुभिः पुनैः कुकुलपूरपाठकै - हि० प्र० २० 2. भूती से बनाई हुई जाय ।

कुपेयन्म् [कुपे + पी + क्च्, अलृक् सं०] कुम्द, कमल - भूयाकुपेयणरबोमुदुरेत्सः (क्या) - शा० ४११०, रघु० ६१८, -कः सारस पक्षी ।

कुप्य [कृषा० पर० - कुष्णाति, कुषित] 1. फाड़ना, निचोड़ना, लीचना, निकालना - निषा. कुषन्ति मावाति - मट्टि० १८१२, १७११०, ७१५ 2. जाँचना, परीक्षा लेना 3 चमकना, निल - निचोड़ना, फाड़ना, निकालना - उपान्तयोनिष्कृषित विहृङ्क्ते - रघु० ७५०, मट्टि० ११३०, ५१४२, इसी प्रकार - काकीनिष्कृषित इति क्वचित् गोमायभिलिङ्गितम् - गणान्टक ।

कुप्यक्तुः [कुप्य + क्तुच्] 1 सूर्य 2 अग्नि 3 लघूर, बदर ।

कुप्य-कम् [कुप्य + क्च्] कोड़ (कोड़ १८ प्रकार का होता है) - गलकुप्योऽभिभूताय च - भर्त० ११९० । सम० - अग्निः 1 गच्छ 2 कुञ्च पीषो के नाम ।

कुप्यित् (वि०) [कुप्य + इत्च्] कोड़ से पीड़ित, कोड़-प्रसूत ।

कुप्यिन् (वि०) (स्त्री० - नी) [कुप्य + इनि] कोड़ी ।

कुप्याण्डः [कु ईयत् उष्मा अण्डेषु बोधेषु यस्य - ङ० सं० षक् परक्यम्] एक प्रकार की लोकी, तूमडी, कुम्हड़ा ।

कुप्य (विभा० पर० - कुप्यति, कुषित) 1 आग्निमान करना 2 घेरना ।

कुषितः [कुप्य + क्त] 1 आवाह देण 2 जो मूद से जीविका चलाता है, दे० 'कुषीद' नी० ।

कुषी (सि) क् [कुप्य + ईद] (इसे 'कुषीद' या 'कुपीद' भी लिखने हैं) साहूकार, मूदखोर - बन्ध, 1 वह कर्ना या बन्दु को ब्याज सहित लौटाये जाय 2. उधार देना, मूदखोरी, मूदखोरी का ब्याजव्यय - कुसीदाद् शरिद्रथ परकरगतसन्धिचमनान् - पच० ११११, मनु० ११९०, ८१४१०, ब्राह्म० ११११९ । सम० - पच-मूदखोरी, सूखखोर (पड़ान) का ब्याज, ५ प्रतिशत से अधिक ब्याज - कुषिः (स्त्री०) धन पर मिलने वाला ब्याज, - कुसीदवृद्धिर्देय्य नात्येति सङ्घाहता - मनु० ८१५१ ।

कुषीषा [कुषी + षा] मूदखोर स्त्री ।

कुषीषन्मी [कुनीद + ङीप्, ऐ आदेश] मूदखोर की पत्नी ।

कुषीषिकः - कुषीषिन् (पु०) [कुनीद + क्त, इनि वा] मूदखोर ।

कुसुमम् [कुप्य + उम] 1 फूल, - उदेति पूर्वं कुसुम तत फलम्, - शा० ७३२ 2 ऋतु-साय 3 फल । सम० - अञ्जन्वत् पीतल की भस्म जो बज्र की भाँति

प्रयुक्त होती है, - अञ्जन्वित् मृट्टी भर फूल, - अञ्जित्, - अञ्जित् (पु०) चम्पक वृक्ष (इसके फूल पीले रंग के सुगन्धयुक्त होते हैं), - अञ्जनायः फूलों का पुनना - अन्वय मय कुसुमाववाय कुञ्जममाम् करामि सत्य - काव्य० ३, - अञ्ज.सकम् फूलों का गजरा, - अञ्जः, - आम्ब, - इप्, - बाणः, - सरः 1 पुष्प-भय बाण 2 कामदेव, - अञ्जित् कुसुमेपुष्पापार - मा० १ यहाँ कुसुमेपुष्पापार ' भी पडा जा सकता है) - तस्यै नमो भगवते कुसुमापुषाय - भर्त० १११, ऋतु० ६१३, खीर० २०, २३, रघु० ७५१, सि० ८१०, ३१० कुसुमगन्धबाणभवेन - गीत० १०, - अञ्जः 1 उद्यान 2 फूलों का गुच्छ 3 बमत ऋतु ऋतुना कुसुमाङ्क - भग० १०३५, इसी प्रकार मामि० ११४८, - अञ्जकम् केसर, जाफरान, - अञ्जकम् 1 शहद 2 एक प्रकार की मादक पदिका (फूलों से तैयार की गई), - अञ्जल (वि०) फूलों में चमकीला, कामुकः, - बापः, - बन्धु (पु०) कामदेव के विद्योपण कुसुम-चापमते बयदग्नि - रघु० ११३९, ऋतु० ६१०, - अञ्ज (वि०) पुष्पों का अन्वग हो गया है जहाँ - बुरम् पाटलीपुत्र (पटना) का नाम - कुसुमपुराभि-योग प्रत्ययवादीनो गणयन् मृदा० २, - कला तिली हुई लगा, - शायम्बु फूलों की गय्या - विक्रम० ३१२०, - स्तम्ब फूलों का गुच्छ, गुलदस्ता कुसुमस्तम्ब-स्येव द्वे मती स्तो मनस्विनाम् - भर्त० २१३३ ।

कुसुमवती [कुसुम + मनुप् + ङीप्, मस्य ङ] ऋतुमती या रजम्बला स्त्री ।

कुसुमित (वि०) [कुसुम + इत्च्] फूलों में युक्त, पुष्पों में मृगजित्त ।

कुसुमाल [कुसुमवत् लोभयोगिनि इत्यायि आजाति इति कुसुम - आ + ला : क] बौर ।

कुसुम्भ, - भम् [कुप्य + उम] 1 कुसुम्भ, - कुसुम्भाभ वाक केल वनाला - जग०, रघु० ६१६ 2 केसर 3 संघाषी का अणुपात्र, कमण्डलु, - भम् सीता, - अः वाह्य स्नेह (कुसुमी रग से पुनना की गई है) ।

कुसुल [कुप्य + ऊलच्] 1 अन्नापार (खनो), भण्डार, गृह (अनाज आदि के लिए) ।

कुसुलि (स्त्री०) [कुसिता मूनि] जानमाजो, ठगो, धोखा-देही ।

कुसुम् [कु + स्तुम् + क्] 1 विष्णु 2 ममूद ।

कुञ्जः [कुञ्ज + ङिच् + अच्] कुञ्ज, वनपति ।

कुञ्जकः [कुञ्ज + क्तुच्] छर्मा, टग, बालाक (मैत्रहालिक), - कम्, - का बालाकी, पोसा । भय० - कार (वि०) कपटी, छलिया, - क्वचित् (वि०) दीर्घपेच से उग हुआ, एक करने वाला, साक्षपात, मज्ज - हि० ५१०२, - स्वन्, - स्वर्. मुर्गा ।

कुल [कु + ह्य + अच्] 1 मुला 2 सपि-सम् 1 छोटा मिट्टी का बर्तन 2 बोरी का बर्तन ।

कुहा, कुहिका [कुह + उ, कुह + क + टाप्, इत्थच्] स्वार्थ की पूति के लिए धार्मिक कबी साधनाओं का अनुष्ठान, धर्म ।

कुहरच् [कुह + क - कुह राति, रा + क] 1. मुका, गड़ा - जैसा कि 'नामिकुहर' या 'जास्य' में 2 काग 3 पका 4. सामीप्य 5 वैभुन ।

कुहरितम् [कुहर + इत्थच्] 1 ध्वनि 2 कोयल की कुह 3 वैभुन के समय लो, सी का लक्ष ।

कुहू, कुहु (स्त्री०) [कुह + कु, कुह + ऊच्] 1 नया अरि-विषय अर्थात् चान्द्रमास का अन्तिम दिन- (अमावस्या) जब कि अन्धमा अन्तुय होता है- करतौष तथा यविय कुहू - नै० ४१५७ 2 इस दिन की अविष्टायी देवी-मनु० ३१८६ 3 कोयल की कुक - पिनेन रोषारणचक्षुषा मुहु कुहुरागृहयत चन्द्रवीरिणी-नै० ११००, उन्मीलति कुहु कुहुरिति कलोराला पिकाना गिर-गीत० १ । सम०-कण्ठः, बुधः, -रवः, -शब्दः, कोयल ।

कु (स्वा०-मुदा० वा०-कवते, कुवते) (क्या० उभ० -कु-कृनाति, कु-कृतीते) 1 ध्वनि करना, कन-रव करना 2 कृपावस्था में रुदन करना-सगराचकु-विश्वाम्-भट्टि० १४२०, ११२०, १४१४, १४१२६, १६१२९ ।

कः (स्त्री०) [कृ + निवच्] गिवाचिनी, कुडैल ।

कचः [कृ + चट] स्त्री का स्नान विधेय कर अथवा या अविवाहिता स्त्री का वै० कुच ।

कचिका, कुची [कृच + कृ + टाप्, इत्थच्, कृच + ङीप्] 1 बालों का बना छोटा बुझ, कुची 2 ताली ।

कृच् (स्वा० पर०-कृजति, कृजित) अस्पष्ट ध्वनि करना, गूना, कूना, कूना-कृजन्त राम रामेति मधुर मधुरावाचम्-रामा०, एत्कोकिलो यन्मधुर वृकृज -कु० ३१३२, ऋतु० ६, २२, रघु० २११२, नै० ११२२७ नि -, परि- , वि , कृना, कुकृ की अस्पष्ट ध्वनि करना ।

कृच्, कृचन्, कृजितम् [कृ + अच्, कृ + लृट्, कृ + स्त] 1 कृना, कुकृ की ध्वनि करना 2 पहियों की चरघराहट ।

कृट (वि०) [कृट + अच्] 1 मिथ्या, जैसा कि- 'कृटा स्युः पूर्वसाक्षिन' में याञ० ११८० 2 अचल, स्थिर, दृ-इत्थम् 1 आलमात्री, भ्रम, बोधा 2 दाँव, डाल लारी से भरी हुई योजना 3 अटिल प्रवृत्ति, पेशीदा या उलझनदार स्थल जैसा कि कृटलोक और कृटान्धोक्ति 4 मिथ्यात्व, असत्यता (भ्राम समास में विशेषण के रूप के साथ प्रयोग) 'अचलम्, कृटे या

बोले में डालने वाले लक्ष, 'कृक, 'मानम् आदि 5 पहाड़ का शिखर या चोटी-अवयवमिण लक्ष्मणमुहूर्ति-परिपुत्रि-रघु० ४१७१, मेघ० ११३ ६. उचार या उच्युता 7. अपने उचारों समेत माने की हृदी, शिर का पिशा 8 सीप 9 शिरा, किनारा-याञ० ३१९६ 10. प्रवाल, मुख्य 11 राशि, डेर, तनुहू; अत्रकृटम्-बाणों का समूह, इसी प्रकार अन्वष्टम्-अनाच का डेर 12. हवीश, वन 13 हक की फाली, कुची 14 हरिणों को पसाने का जाल 15. नृपी, जैसे ऊनी प्यान में बर्डी, या हाथ की यन्त्रिका में कृपाय 16. अलकला, -दः 1. चर, भाषा 2 अगस्त्य की उपाधि । सम०-अल सुता या कपट से भरा पासा (सीसा या पारा भर हुआ जिससे फँसने पर वह सास बल पर ही चित हो) -कृटाक्षोपविदे-पिण-याञ० २१२०२, अथारम् कृत पर बनी को-टी, -अर्थः अर्थों की संविध्याता 'आविता कहानी, उच्यन्ता, -अथाः आलसात्री से भरी योजना, कृटपाक, कृटपीति -कारः बोसेवाय, मुदा मवाह-कृन् (वि०) उच्यन्ताका, बोधा देने वाला 2 आरी इत्यादि बनायेवाला -याञ० २१७० 3 बल देने वाला (पु०) 1 कावस्य 2 शिव का विशेषण, कार्यायः कृटा कार्याय, -अङ्कः नृपी, -छन्नम् (पु०) उच, -सुता यास्य वाली तराव, -अर्थ (वि०) जहाँ कृट (मिथ्यात्व) कर्तव्य करने समझा जाय (ऐसा स्वान, चर, और देस आदि), -वाक्यः पितादोवयुक्त अत्र जिससे हावी वस्त होता है, हस्तियातअत्र-अपिरेण वैकृतचित्तदाकथः कलम कठोर हृद कृटपाकल (अभिहित)-या० ११३९, (कभी कभी इसी शब्द को 'कृटपाकल' भी लिख देते हैं) -वाक्यः कुम्हार, कुम्हार का भावा, -वाक्यः -कण्ठः आल, कदा, -रघु० १३१३९, -आयम् कृटी भाप या तोल, -बोहनः स्तम्भ का विशेषण, -अयम् हरिय एव पशियो को पसाने का जाल वा फटा, -मुहूर्त्त छल और धोखे की लड़ाई, अधर्मयुद्ध रघु० १७१९, -आत्मविकि (पु० स्त्री०) 1. सेमक मूध की एक जाति, 2 तेज काटो से युक्त मूध (एक उपकरण-नादा-जिससे यमराज पापियों को पच देता है) -रे० रघु० १२१ ९५ और इस पर मल्लि० की टीका, -आत्मम् जासी आशापथ या फरमान, -साक्षिन् (पु०) मुदा मवाह, -स्व (वि०) शिखर पर सड़ा हुआ, सर्वोच्च पद पर अधिष्ठित (अशासकीयोलक तात्पर्य में प्रधान पद पर अवस्थित), -स्वः परमार्था (अचल, अपरिवर्तनीय, तथा सायत) मय० ६१८, १२३, -स्वच्छम् कृटा सीमा ।

कृत्स्नम् [कृट - कृन्] 1 आलसात्री, बोधावही, पाषाणी 2. उत्तम, उत्तुलता 3. कुची, हक की फाली । सम० -आयचान्त्तु पौी हुई कहानी ।

सूक्तः (अव्य०) [कृत्+सम्] डेरों या समूहों में ।

सूक्त्यम्=सूक्त्य ।

सूक् (बुरा) उभ०—सूक्यति—वे, सूकित 1 बोलना, बातचीत करना 2. तिक्कीना, बंध करना (इस अर्थ में शा० माना जाता है) ।

सूकिका [सूक्+शुक्+टाप्, इत्थम्] 1. किसी पशु का सीम 2. बीजा की झुंडी ।

सूकिल (वि०) [सूक्+स्त] बन्ध, मुदा हुआ ।

सूक्यः [सु+इत्+अन्, पूषो] पहारी भावनसु ।

सूक्य [सुक्यति मयूका अस्मिन्—सु+इत् दीर्घश्च]

1. सूक्या—कूपे पश्य पशुनिधावपि षटो गृह्णाति तुल्य शकम्—अन्० २।४५, इसी प्रकार—नितरा नीचोऽस्वीति ख खेष कूप मा कदापि हृषाः, अत्यन्तरस-हृषवो यत् परयो गृह्यहीतसि—आमि० १।९
2. छिद्र, रध, गद्दा, पतं वैया कि 'जघनकूप' में
3. चमड़े की बनी तेल रखने की कुप्पी 4 मस्तूल—शोपीनीकूपयवः—व्य० १ । सम०—अकू,—अकूः रोमांच,—अकूच्यः,—अकूकः—की (शा०) कुरें का ककूडा या मेड़क, (आल०) अन्नवशय्य मनुष्य, जो साधारण अनुभव नहीं रखता, सीमित ज्ञानकारी रखने वाला मनुष्य जो केवल पास पड़सों को ही जानता है, (प्रायः 'तिरस्कारबोधक' शब्द),—अकूच्य रद्व, कुरें से पानी निकालने का यन्त्र—'अन्नघटिका, 'अकूचवती रद्व में पानी निकालने के लिए लगी बोल-चियाँ । 'अन्नघटिका म्याय=रे० 'प्याय' के नीचे ।

सूक्यः [सूक्+कन्] 1 कुज्रा (अस्वायी या कच्चा)

- 2 छिद्र, रध, पतं 3 कुल्ले के नीचे का पृष्ठ 4. झुंडा जिसके सहारे किसी का सगर बांध दिया जाता है 5 मस्तूल 6 चिता 7 चिता के नीचे का छिद्र 8. चमड़े की बनी तेल-कुप्पी 9 नदी के बीच की चट्टान या बंध ।

सूया (शा) र् [कुलित. पार तरणम् अस्मिन्—ब० स०] समुद्र, सागर ।

सूयीं [कृत्+शीप्] 1 छोटा कुज्रा, कुइया 2 पक्षि, बालक 3 गाँव ।

सूय (ब) र् (वि०) (स्त्री०—री) [सु+य (ब) र्च]

1. सुन्दर, शक्तिर 2 कुम्हड़ा,—र,—रन् गायी की बल्ली या स्थूल-भुजा जिसमें जूआ बोया जाता है,—री 1 कमल या किसी सुंदर कपड़े के परदे से बनी हुई गायी 2 गाड़ी की बल्ली जिससे जूआ बोया जाय—वेनी० ४ ।

सूय-रन् [वे+विभन्—अ, कौ भूमौ उच वयन लाति—सा+क, अरपोरवेर] भोजन, मान—इतयच सूयन्तुतैरिषिभं पिबद् हस्तौ प्रतिघ्राहते माधुपर्त्ये—मू० ४ ।

सूयः, संय [कुर+इत् नि० दीर्घः] 1. युष्का, पठो 2 मुट्ठीभर कुल बात 3 मोरपक्ष 4. हाड़ी—आयत-मनष्याकारंन लविशंभुतमद्य जीयंक्षुचिनाम्—उत्तर० ४, या पूरदतिव्ययनेन चिचकलक लंबक्षुचिनां तापसना कवने—स० ६ 5 बुटकी 6 नाक का ऊपर भाग, दोनो जीवों के बीच का भाग 7 सूँधी, घुस 8. पोखा, जालसाजी 9 शोकी बहारना, रींग मारना 10. दम्भ,—धं 1 सिर 2 अन्धार । सम०—शोकेः—सेकरः नारियल का पेड़ ।

सूयिका [सूयंक्+टाप्+इत्थम्] 1 चिचकारी करने की सूँधी, घुस या पैसिल 2 चाबी 3 कली, फूल 4 बजाया हुआ घुस 5 सुई ।

सूयै (म्बा० उभ०—कुरंति-क, क्तिदि) 1 छलना समाना, कुदना 2 लेलना, बालकेल करना—अथपूराजुपुपूष स्वयुक्कुरिरे तथा—मि० १।५७, ७९, १।४५, उब्—, कुदना, उछलना ।

सूयैन्म् [कुरं+स्तुट्] 1 उछलना 2 लेलना, खीडा करना, बी 1 बैच की पुँजिया को कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला पत्र 2 बैचमास की पुँजिया ।

सूयैः [कुर+पा+क्, दीर्घ] दोनो जीवों के बीच का भाग ।

सूयैः [कुर+विभन्, कुर-पु+अन्, दीर्घ नि०] 1 काँहनी—जि० २०।१९ 2 बुटना ।

सूयं. [कौ जले ऊमि सेवोऽप्य पूषो तार०] 1 ककूडा—पूशेकमं इवाङ्गाति रसश्चिचरमायव—अन्० ७। १०५, भग० २।५८ 2 विष्णु का वृमरा (क्याबतार) अबतार । सम०—अबतारः विष्णु का क्याबतार—तु० गीत० १—अतिरतिविष्णुतारे तव तिच्छति पृष्ठे धरणिधरणकियञ्जगरिष्ठे, केजय भूतकण्ठकण, जय जगदीम हरे ।—कूठम्,—पूठकम् 1 ककूड़े की समर या पीठ 2 तम्बरी का उकना,—राजः द्वितीय अबतार के समय ककूड़े के रूप में विष्णु ।

सूयम् [कृत्+अच्] 1 किनारा, तट—राधाभाचबयोर्-यनि यमुनाकले र्दु केजय—गीत० १, नदीबोधकक-माक्- र्च० १।२।५, ६८ 2 डाला, उतार 3 डोर, कोर, किनारी, सप्तिकटना कुलायकुलेषु विहृदय तेषु ते—ने० १।१८१ 4 ताकाब 5 सेना का पिछला भाग 6 डेर, टोला । सम०—अर (वि०) नदी के किनारे बरने वाला, या विचरने (कुपने) वाला,—अः (स्त्री०) तटपित्त भूजय,—हृष्यकः,—हृष्यकः भँवर ।

सूयकृष् (वि०) [कृत्+कृ+कृप्, मुय्] तट को काटने वाला, या अन्धर ही अन्धर अब खोजकी करने वाला—कृष्कणयेव प्रसभमस्तटवर्धं च—व० ५।११, ---वः नदी की बारा, या प्रवाह,—वा नदी ।

सूक्तान्य (वि०) [कूल+ये+अध्, मु०] चूचता हुमा
अर्थात् मही के टट को सीमा बनाने बाका ।

सूक्तानुबन्ध (वि०) [कूल+उद्+उद्+अध्, मु०]
किनारो को सोझने बाका (जैसे नदिवाँ, हाथी)—रघु०
५।२२ ।

सूक्तानुबन्ध (वि०) [कूल+उद्+उद्+अध्, मु०] किनारे
को फाड़ डालने तथा बहा कर ले जाने बाका—गा०
५।१९ ।

सूक्तानुबन्धः [कु ईषत् ऊमा अण्वेयु बीनेयु यस्व] वेडा,
कुम्हवा, दूमबी ।

सूहा [कु ईषत् उह्यतेऽण, कु + उह् + क] कुहरा, घूर ।

हृ (स्वादि० उभ०—हृणोति, कृमुते) प्रहार करना,
बाधल करना, मार डालना ॥ (तना० उभ०—करोति,
कुञ्जे, कृत) 1 करना—तात् कि करवाध्यहम्
2 बनाना—पणिकानवरीभमकरोत्—दश०, नृपेण बर्षे
युवराजसाम्राज्यम्—रघु० १।४५, युवराज कृत आदि
3 निर्माण करना, गडना, तैयार करना—कुम्भकारो
पट करोति, कटं करोति आदि 4 बनाना, रचना
करना—मुष्टं कृत, समो कृत यदर्थं सो 5 पैदा करना,
निर्मितान्मृत होना, उत्पन्न करना—रत्निमुमवप्रार्थना
कुञ्जे—भा० २।१ 6. बनाना, कमबद्ध करना, अञ्जलि
करोति कपोतहस्तक कृत्वा 7 लिखना, रचना करना
—बकार सुमनोहरं वास्तवम् पञ्च० १ 8 सम्पन्न
करना, ध्यस्त होना—पूर्वा करोति 9 कब्जा, धर्मन
करना,—इति बहुविधा कथा कुर्वन् आदि 10 पालन
करना, कार्यान्वित करना, आज्ञा मानना,—एव
क्रियते युष्मदादेश—भा० १, या करिष्यामि बचस्तत्र
या सासन मे कुञ्ज आदि 11 प्रकाशित करना, पूरा
करना, कार्य में परिणत करना—स्तसञ्जति कथय
कि न करोति पुसात्—भर्तु० २।२३ 12 फेंकना,
निकालना, उत्सर्ग करना, छोड़ना मृष कृ=मृषोत्सर्ग
करना, पेशाब करना, इसी प्रकार पुरीष हृ टट्टी
फिलना 13. धारण करना, पालना, बहण करना
—स्वीकृत्यं कृत्वा, नानारूपानि कुर्वाम—याज्ञ०
१।१२ 14. नृह से निकलना, उच्चारण करना
—यानुवी गिर कृत्वा, कलह कृत्वा आदि 15 रचना,
पहना (अधि० के साथ)—कन्ठे हास्यकरोत्—का०
२।२, पाणिमुरति कृत्वा आदि 16. सीपना (कोई
कर्म) , नियत करना—अध्वक्षान्विधिभानुपातिष
तष विपरिचित—मनु० ७।८ 17 पकाना (मोहन)
पैसा कि 'कृतात्म' में 18 लोभना, बाधर करना,
छाया करना—दृष्टिदस्तीकृतजयवधस्तत्परा
—उत्तर० १।१९ 19. बहण करना (हाथ में)—कुपे
करे नृपमेकमधोयमम्—श्री० ४।५९ 20 ध्वनि करना
—यथा सात्कृत्य, कृत्कृत्य मुञ्जते, इसी प्रकार बधत्

ह, स्वाहा ह आदि 21 युवाजा (सवय) विताना
—वर्षाणि दस वक्=विताने, धर्मं कुप—त्रा उह-
रिए 22. की ओर मुड़ना, ध्यान मोड़ना, मुड़ लिखल
करना (अधि० या सप्र० के साथ)—नाभयं कुञ्जे
मनः—मनु० १२।१८, नवरत्नमनाय वति न करोति
—शं० २ 23. सुदरे के लिए कोई काम करना (बाह्य
काम के लिए हो या हाथि पहुँचाने के लिए) ;—अपने
कृत मयि, अर्थात् कि मे करिष्यति आदि 24. उपयोग
करना, काम में लगाना, उपयोग में लाना—कि तथा
क्रियते चेन्वा—पञ्च० १ 25. विमल करना, टुकड़े
टुकड़े करना ('वा' पर समान्य होने बाके किया विशेष-
यथा के साथ) शिवा ह—दो टुकड़े करना, सतथा ह,
सहस्रथा ह आदि 26. अर्धन बनाना, ('षा' पर
समान्य होने बाके किया विशेषयथा के साथ) पूर्ण रूप
से किसी विशेष अदस्ता की प्राय कराना—आल-
साहक, अर्धन करना अपने में सीन करना—रघु०
८।२, भस्मसाहक रास बना देना, यह बाहु बहुधा
सजा, विशेषय और अर्धयों के साथ उनको किया
बनाने के लिए कुछ कुछ अर्धों के प्रत्यय 'en' या
'is' की भांति प्रयुक्त होता है और अर्ध होता है
'किसी व्यक्ति या वस्तु को बह बना देना को बह
पहले नहीं है' उभा० कृणीकृत उस वस्तु को जो पहले
से काली नहीं है काली करना अर्थात् Blacken,
इसी प्रकार खेतीकृत—सफे करना (whiten),
घनीकृत टोस बना देना (Solidify), बिरलीकृत
दूर दूर कही कही करना (Rarefy), आदि । कभी
कभी इस प्रकार की रूप रचना हुदरे अर्धों में भी
होती है—उदा० शोर्बक—छाती से लगाना, आकि-
जून करना, धरमीकृत—राज करदेना, प्रथमीकृत—रधि
पैदा करना, झुकना, तुषीकृत—तिन्ने की धांसि तुच्छ एव
हीन समझना, महीकृत—शिक्षित करना, बाल बीनी
करना, इसी प्रकार बूलाकृत—मोकार बोहो की लकाओं
के सिरे पर रस कर भुनना, मुजाकृत—प्रसन्न करना,
समवाकृत—समय विताना आदि । विशेष—यह बाहु
उभयपयी है, परन्तु लिम्बिभक्ति अर्धों में आत्मीने-
पयी ही रहती है—(क) अति पहुँचाना (क) लिखा
करना, कलकित करना (ग) काम देना और (घ)
बकाकार करना, हिंसात्मक कार्य करना (ङ) तैयारी
करना, दसा बरकना, मोड़ना (च) सस्वर वाद करना
(छ) काम में लगाना, प्रयोग में लाना—दे० पा०
१। १, ३२, विशेष० ह बाहु का संस्कृत साहित्य में
बहुत प्रयोग मिलता है, इसके अर्थ भी नाना प्रकार से
अचलते बचलते रहते हैं या सम्बद्ध सजा के अनुसार प्रायः
अनन्त अर्थ हो जाते हैं—उदा०—यह ह—कथन रचना
—आधने परं करिष्यति—शं० ४।१९, अर्धन कृत

मन धुपित नववीजनेन परम्—का० १५१, मनसाह—
 सोचना, मन्थन्यता करना, मगलित ह—सोचना—मुष्टबा
 मनस्वन्मनसकरोत्—का० १३९, दुष्ट निश्चय करना
 संकल्प करना,—सख्य, मैत्री ह विनता करना,
 सन्ध्याणि ह—सन्ध्यार्थों के प्रयोग का अभ्यास करना,
 दृष्ट ह—दृष्ट देना, हृदय ह—ध्यान देना, काल ह—सरना,
 मति, बुद्धि ह—सोचना, इरादा करना, अविश्राम होना
 —अवश ह—विश्रान्तों को अलसता तपन करना, चिरं ह—देर
 करना, हर्षुरं ह—बीषा बहाना, लक्षानि ह—नामून साफ
 करना, कर्मा ह—सतीत्यप्रष्ट करना, कौमार्यं मग
 करना, विना ह—अलग करना, छोड़ा जाना वीसा कि
 'मयनेन विनाकृति रति' कु० ४१२१ में, मध्य ह—
 बीच में रखना, संकेत करना—मध्यकृत्य स्थित कश्च-
 कैशिकान्—मासवि० ५१२, वसो ह—जीतना, वस में
 करना, दमन करना, चमत्क—आश्चर्य पैदा करना,
 प्रसूचन करना, सक्त—सम्मान करना, सत्कार करना,
 तिर्यक् ह—एक ओर रक्त देना,—द० २० (सारपति—ते)
 करवाना, सम्पन्न करवाना, बनवाना, कामान्वित कर-
 वाना —माशों काय्य रखीमि—भट्टि० ८८४, मृप्य
 नृत्येन वा कटं कारयति—सिद्धा०, इच्छा० (चिकी-
 र्षीति—ते) करने की इच्छा करना, अङ्गु—1 स्त्रीकार
 करना, अपनाना—कञ्जु की कुञ्जु की वृत्तौ करोत्—जग०,
 दक्षिणामाशामङ्गुलीत्य—का० १२१ 2 भान लेना,
 स्वीकृति देना, अपनाना मान लेना 3 करने की
 प्रतिज्ञा करना, जिम्मेवारी लेना—कि त्वङ्गीकृतमुत्सृज-
 न्कृपणवच्छलाभ्यो भनो सज्जते—मुद्रा० २११८
 4 दमन करना, अपना बनाना, अनुग्रह करना—अमह
 ५२, अति—बड़ जाना, पीछे छोड़ देना, अवि०,
 1 अधिकारी होना, हुकदार बनना, अधिकृत बनना,
 किमी कार्य के लिए पावीकरण,—नैवाभ्यकारिम्पहि
 वेदपुत्रो—भट्टि० २१२४, कि० ४१२५ 2 लक्ष्य बनाना,
 उल्लेख करना, ('विषय पर' 'के विषय में' 'के लिए'
 'संकेत करके' 'उल्लेख करते हुए' 'अर्थों के लिए' 'अधि-
 कृत्य' शब्द का प्रयोग होता है—वीथसमयमधिकृत्य
 गीमताम्—वा० १, साकुलामाधिकृत्य इवीमि—वा०
 २, रघु० १११२) 3 धारण करना—अधिकते नय
 हरि—भट्टि० ८१२ 4 अग्रिमत्त करना, दबा देना,
 अष्ट बनना 5 रोचना, रचना, हाथ लीचना। अनु—
 सुक्त शकल में मिलना, अनुमान करना, विरोधत
 नकल करना (कर्म व सब० के साथ)—शैलाधिपत्या-
 नृषकार लक्ष्मीम्—भट्टि० २१८, मनु० २११९९, त्याग-
 तथा हरेरिवातकुर्वतीम्—वा० १०, अनुकरोति भग-
 वतो नारायणस्य—९, अथ—1 शीघ्रकर दूर करना,
 हटाना, दूर शीघ्रकर अनावर करना, योऽथक्के बना-
 स्वीयाम्—भट्टि० ८१२ 2 प्रहार करना, जति पड़-

जाना, दूर करना, हानि पहुँचाना, हानि या क्षति
 पहुँचाना (सब० के साथ)—न क्षिन्मया तस्याप-
 क्तुं शक्यम्—बच० १, अया—1 दूर करना,
 त्याग देना, हटाना, मिटाना—तमेव क्षिन्मयात्परोति
 चन्द्र—श० ११२९, न पुत्रवात्सल्यमपाकल्प्यति
 —कु० ५११४ 2 पीक देना, अस्वीकार करना, एक
 ओर रक्त देना, छोड़ देना—विशा भूषकश्चरमयापकार
 —रघु० ७५०, अभ्यस्तरी—1 दीक्षित करना
 2 मित्र बनाना (अभ्यन्तर के नी० दे०) अलम्—,
 विभूषित करना, सजाना, शोभा बढ़ाना—उभावकम्बक-
 नुरिञ्चिताभ्या तपोवनानुत्तिपय गताभ्याम्—रघु० १११
 १८, कलमो बसोऽन्यकृतो मन्मना—श० १, का—,
 (प्रेर०) 1 पुकारना, बुझाना, निर्मित करना,
 —आकार्येनमत्र 2 निरुत्त लाना, आर्षिष्—
 प्रष्ट करना, दर्शनयि बनना, बाहिर करना, प्रदामं करना
 ('आर्षिष्' के नी० दे०) उप—, (वर्त०—उपकरोति)
 1 (क) मित्र बनाना, सेवा करना, सहायता करना,
 अनुग्रह करना, उपकृत करना (प्राय सब०, कभी-
 कभी अवि० के साथ)—ता लक्ष्मीरुपकृत्ये यथा परेशाम्
 —भट्टि० ८१८, आग्नयन्त्रोपकृतम्—मेघ० १०१,
 शि० २०७४, मनु० ८१२४ (क) 1 हावरी में कड़े
 रहना, मेवा करना 2 (वर्त०—उपकरोति) (क)
 विभूषित करना, शोभा बढ़ाना, सजाना (क) प्रथम
 करना (सब० के साथ)—भट्टि० ८११ ११९ (ग)
 तैयार करना, विस्तार से कार्य करना, दूर करना,
 निर्मल करना,—उषा—1 सौपना, देना 2 धारमिक
 सत्कार सम्पन्न करना —मनु० ४१९५—दे० उपकर्मन्
 3 उठा लाना, लाना 4 आरभ करना, उररी—,
 उररी—, उररी—, ऊरी—, वा ऊररी—स्वीकार करना,
 दे० अगीकु० अर—, रघु० १५७०—दे० उरी मी,
 तिरम्—1 अपवाद कहना, दूर भला कहना, अनादर
 करना, बुधा करना 2 पीछे छोड़ना, बाध बढ़ना,
 जीतना, दे० 'तिरम्' के नीचे०, त्वम्—नु, कोरि (तिर-
 स्कार भूषक) बलिषो—, या प्रवर्षिषो—, किमी वस्तु के
 बारे और दृष्टना (अपना दक्षिण पावर्ष उसकी ओर
 करके), प्रवर्षिषीकुवथ सवोऽतुत्तामीन्—श० ४,
 प्रवर्षिषीकृत्य हत हताभमननरत्तुर्वरकनी च, रघु०
 २१०१, हुम्—, दूरे दग से करना, चिक्—, शिक्कना,
 दूर मका कहना, अनादर करना—दे० चिक् के नी०,
 ममम्—, नमस्कार करना, पूजा करना—मुनिभय
 नमस्कार्य—सिद्धा०—दे० नमस् के नी०, नि—, क्षति
 पहुँचाना, दूर करना, निम्— 1 हटाना, हाक कर
 दूर कर देना—मनु० ११५१ 2 ठोक देना, निकम्मा
 कर देना—भट्टि० १५५४, निरा— 1 निकाल
 देना, परे कर देना, निकाल बाहर करना—भट्टि०

६।१००, रघु० १४।५७ 2 निराकरण करना (मत आदि का) 3 छोड़ना, त्यागना 4 पूर्ण रूप से नष्ट कर देना, ज्वल कराना 5 बुरा भला कहना, नीच समझना, तुच्छ समझना, श्मश्रु—अपमान करना, अनादर करना, बुरा—, (पर०) झस्कीकार करना, झबड़हलना करना, निरादर करना, लजला नही करना—ना हुनुमान पराकुर्वंशमयम् पुण्यकम् प्रति अट्टि० ८।५०, परि—(परिकरोति) 1 घेरना 2 (परिष्कारेति) विमृष्टि कराना, सजाना—रघो हेमपरिष्कृत—महा०, (जा०) निर्मल करना, चमकाना, शुद्ध करना (शब्दों का), बुरस्—, सम्मुख रखना राजा शकुन्तला पुरस्कृत्य बन्धन्य—स० ४, हते जरति गात्रेते पुरस्कृत्य शिलचिह्नम्—वेणो० २।१८—दे० पुरस् के नीचे, प्र— 1 करना, सपन्न करना आरम्भ करना (अधिकतर उसी अर्थ में प्रयुक्त होना है जिसमें 'कृ')—आमप्रति नरो देवात्प्रकरोति विवाहितम्—पञ्च० ४।३६, अट्टि० २।३६, श्मश्रु० १।६ मनु० ८।५४, ६०, ८।२३९, अमर १३ 2 बलात्कार करना, अत्याचार करना, अपमान करना,—अट्टि० ८।१९ 3 नमान करना, पूजा करना, प्रति— 1 बदला देना, क्षति देना, लौटाना—पूर्व कृतार्थो मित्राणां नार्थं पतिकरोति य—रामा० 2 उपचार करना, अ्याधि-पिच्छमि ते ज्ञानु प्रतिकुर्वी हि तत्र वै—महा०, 3 बापिस देना, ज्यो का ल्यो कर देना, पुन स्थापित करना—मनु० १।२८५ 4 प्रतिषोध करना रघु० १२।९४, प्रमाथी— 1 भरोमा करना, विडम्बन करना 2 प्रमाण पुरुष मानना, आज्ञा मानना—धामन तन्मिग्वि प्रमाथीह्नम् स० ६ 3 आंस गडाना, वितरण करना, बर्ताव करना या व्यवहार करना—देवेन प्रभुणा स्वय जगति यक्षस्य प्रमाथीकृतम्—मत्स० २।१२१, प्रावृत्—, प्रकट करना, प्रदर्शन करना, विलालना, जाहिर करना—दे० प्रावृत् के नी०, प्रावृत्— 1 प्रतिफल देना, (आहार) प्रत्यर्पण करना, बि—, बहसना, परिवर्तन करना, प्रभावित करना—विकारहेतुो सति विकल्पितो वेदा न वेदांसि त एव बीरा—कु० १।५९, रघु० १३।४२ 2 आहति विवाहना, विरूप करना—विकृताकृति—मनु० ९।५२ 3 उपवृत्त करना, पैदा करना, सम्पन्न करना—मनु० १।७५, नास्य विज्ज विकुर्वन्ति दानवा—महा० 4 विज्ज दान्ना, हानि पहुँचाना, क्षति पहुँचाना (आ०)—हीनामनुपकृत् प्रि प्रवृद्धामि विकुर्वते—रघु० १७। ५८ 5 उच्छोषण करना—विकुर्वीतः स्वानाद्य—अट्टि० ८।२० 6 (पत्नी की अति) विस्वास-घातक होना, धिनि—, प्रहार करना, क्षति पहुँचाना, विघ्न— 1 सताना, कष्ट देना, लग करना, हानि पहुँचाना

—कि वृत्तानि विप्रकरोषि—स० ७. कु० २।१ 2 बुरा करना, दुर्व्यवहार करना—स० ४, १७ 3 प्रभावित करना, परिवर्तन जाना,—कमपरममय न विप्रकुर्वुः—कु० ६।९५, व्या— 1 प्रकट करना, साफ करना—नामरूपे आचरत्वाणि—छा० 2 प्रति-पादन करना, आख्या करना 3 कृतना, बर्षण करना—तन्मे सर्वं भगवान् व्याकरोतु—महा०, श्मश्रु—, (नकुर्वते) (क) करना (पाप, अपराध)—ये पक्षा-पर्यक्षदोषसहिता पापानि सक्नुवन्ते—मृच्छ० ९।४ (ख) निर्माण करना, तैयार करना (ग) करना सपन्न करना 2. (सक्नुवते) (क) झलकल करना, लीमा बढ़ाना—ककुम्भ समस्कुष्ठत माचवनीम्—शि० ९।२५ (ख) निर्मल करना, चमकाना—वायुका ममल-कुरोति पुष्य वा सस्कृता चायन्ते—मत्स० २।१९, शि० १४।५० (ग) वेदमन्त्रों के उच्चारण से अभिप्रायित करना—मनु० ५।३६, (घ) वेदविहित सत्कारों से (किसीपुरुष को) पवित्र करना, शुद्ध करने वाले शास्त्रोक्त विधियों का अनुष्ठान करना,—संचस्कारो-मयप्रोत्या वैशिलेभ्यो यथाविधि रघु० १५।३१, याज्ञ० २।१२८, साधी—, एक ओर मुड़ना, परोक्ष रूप से मुड़ना—साधीकृता चाततरेण तस्वी—कु० ३।६८, रघु० ६।१४।

कृकः [कृ + कृ] यत् ।
 कृकः (र) [कृ + कृ + अच्, कृ + कृ + ट] एक प्रकार का तीतर ।
 कृक (कृ) सल [कृक + कृ + अच्] छिनकली, विरगिट ।
 कृकवाक्- [कृक + वच् + अच्, कृ वादेव] 1 मुर्गा 2 मोर 3 छिनकली सव—स्वक कालिकेय का विषेणण ।
 कृकादिका [कृक + अट् + अच् = कृकाट + कृ + टाप्, हृवच्] 1 सीमा का सीमा उठा हुआ भाग 2 सर्वन का पिछला भाग ।
 कृकृ (वि०) [कृती + र्कृ, कृ वादेव] 1 कष्ट देने वाला, पीडाकार—मनु० ९।७८ 2 बुरा, विपद्ब्रह्म, अनिष्टकर 3 लुट, पापी 4 सकटब्रह्म, पीडित,—श्व०,—श्वम्, 1 कठिनाई, कष्ट, कठोरता, विपद्, संकट, भय—कृच्छ्र महतीर्षं—रघु० १४।६, १३।७७ 2 सार्वीक तप, तपस्या, प्रायश्चित्त मनु० ४।२२२, ५।२१, ११।१०५—श्वम्, कृकृच्छ्र, कृकृच्छ्र इती कठिनाई के साथ, दुःख पूर्वक, बड़े कष्ट के साथ—तन्व कृकृच्छ्रेण रक्षते—हि० १।१८५, 1 सव—श्राव्य (वि०) 1. पिपका जीवन सतरे में है 2. कष्टपूर्वक सांस लेने वाला 3 कठिनाई से जीवन्-वापन करने वाले, श्राव्य (वि०) 1. कठिनाई से डीक हो सके, (रोपी वा रोय) 2. कष्टश्राव्य ।

कञ् (पुं० पर०—कृष्णति, कृत्) 1. काटना, काट कर फेंक देना, विचकत करना, फाड़ना, बहिष्कार उड़ाना, टुकड़े २ करना, नष्ट करना—अष्टदिशि विचिर्मन्च्छेदी न कृष्णति वीचिर्मन्—उत्तर० ३१३१, ३५ अष्टि० ९/४२ १५/१७ १६/१५, मनु० ८/१२, अथ—काट फेंकना, विचकत करना, फाड़ कर टुकड़े २ करना, कञ्—, 1. काटना या काट फेंकना, फाड़ना—रघु० १२/४९, मनु० ११/१०५ 2. अथ कञ्च करना, टुकड़े काटना—उत्कृष्योत्कृष्य कृष्ति—भा० ५/११९ वि— 1 काटना, फाड़ना, टुकड़े २ करना—विचवासाद्भयमुत्थं मुलात्स्थि निकृणति—पंच० २/३९, निष्कृतात्रिष मानसम्—मट्टि० ७/११ अल्लसिद्धकन्ठी—रघु० ७/५८।

ii (स्वा० पर०—कृष्णति, कृत्) 1. फाटना, 2. घेरना।

कञ् (वि०) [कृ+क्विप्] (प्रायः समास के अन्त में) निष्पादक, कर्ता, निमाता, अनुष्णता, उत्पादक, रचयिता आदि पापं, पुष्यं, प्रतिमां आदि, (पु०) 1 प्रत्ययों का समूह जिसकी बाध के साथ जोड़ने से (संज्ञा, विशेषण आदि) बनते हैं 2 इस प्रकार बना हुआ वाक्य।

कृत् (वि०) [कृ+क्त] किया हुआ, अनुष्ठित, निमित्त, क्रियान्वित, निष्पन्न, उत्पादित आदि (पु० क० क०—कृ+तना० उभ०)—सम् 1 कार्य, कृत्य, कर्म—मनु० ७/११७ 2 सेवा, लाभ 3. फल, परिणाम 4 लक्ष्य, उद्देश्य 5 पासे का वह पहलू जिस पर चार बिन्दु अंकित हैं 6 सप्ताह के चार युगों में पहला युग जो मनुष्यों के १७०८०० वर्षों के बराबर है—दे० मनु० १/७९, और इस पर कुन्दक की टोका, परशु महाभारत के अनुसार यह युग मनुष्यों के ४८०० वर्षों में अधिक वर्षों का है, चार की संख्या। सम०—अकृत (वि०) किया न किया अर्थात् कुछ भाग किया गया, पूरा नहीं किया गया,—अकृ (वि०) 1 विज्ञित, दागी—मनु० ८/२८१, 2 सम्पादित, (क) पाप का वह भाग जिस पर चार बिन्दु अंकित हों,—अञ्जलि (वि०) विनम्रता के कारण दोनों हाथ जोड़े हुए—मनु० ११/१४, मनु० ४/१५४, अनुकार (वि०) किये हुए कार्य का अनुकरण करने वाला, अनुसेवी,—अनुसारः प्रथा परिपारो,—अन्त (वि०) समाप्त करने वाला, अवसायी, (सः) 1 मृत्यु का वेवता मम—द्वितीय कृत्वात्—निवाट्य व्याधमपचयन्—हि० १ 2 भाग्य, प्रारम्भ—कूरत्स्मिन्प्रपि न सहते सज्जन् नौ कृत्वात् मेघ० १०५ 3 प्रवृत्त उपमहार, कृति, प्रभावित सिद्धान्त 4. पापकर्म, अधुम कर्म 5 धार्मिक हथ का विशेषण 6 अनिवार,—अनक मृत्यं,—अनन्म 1 पकाया हुआ भोजन,—कृत्वात्समृत्कं शिव्य—मनु० ४/२१९ ११/३ 2 पचा हुआ भोजन 3 मत्,—अचराम् (वि०) अचरारी

दोषी, मुञ्जान्य,—अचथ (वि०) भय या म्लते से मुक्तित,—अचिथक (वि०) राज्याभिषिक्त, यथा विधि पद पर प्रतिष्ठित किया हुआ,—अच्यस्त (वि०) अच्यस्त,—अचं (वि०) 1 जिसने अपना उद्देश्य मित्र कर लिया है, सकल 2. समुष्ट, प्रसन्न, पतिव्रत,—कृत कृताचौस्मि निर्वहिताहृता—सि० १/२९, रघु० ८/३, कि० ४/९ 3. चतुर, (कृताचौक) 1 मकल बनाया 2 भरपाई होना—काल प्रपुत्रचारतचतुरया कोप कृताचौकृत—अमर १५,—अचथान् (वि०) होशियार, सावधान,—अचथि (वि०) 1 निर्दिष्ट, नियत 2 हृदयन्वी किया हुआ सीमित,—अचथ (वि०) 1 बलाया हुआ, प्रसन्न बनाया हुआ 2 निर्दिष्ट, निर्धारित,—अचथ (वि०) 1 हृषियावाच्य 2 मन्त्र या अन्त्र विज्ञान में प्रकाशित—रघु० १७/६०,—अचथ (वि०) प्रसन्न, प्रबोध (पु०) परमाणु,—आयस् (वि०) दोषी, अपराधी, मुञ्जित, पापी,—आयस् (वि०) 1 सपथी, स्वस्थानित, स्थिरात्मा 2 पवित्र मन वाला,—आयस (वि०) १ शिष्टम करने वाला, सहन करने वाला,—आयस (वि०) लक्षणादयथा, उत्साह (वि०) परिश्रमी, प्रयत्नशील, उद्योगी,—उदाह (वि०) 1 विचारित 2 हाथ ऊपर उठा कर मन्त्रमा करने वाला,—उचकार (वि०) 1 अनुमोदीन, मित्रवत् आचरिन्, सहोपसा प्राण—कु० ३/७३ 2 मित्रवत्,—उचयोष (वि०) बर्णा हुआ, उपभुवन,—कर्मन् (वि०) 1 जिसने अपना काम कर लिया है—रघु० ९/३ 2 बल चतुर (पु०) 1 परमाणु 2 मन्थामी,—काम (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो गई हैं, काल (वि०) 1 समय की दृष्टि से जा स्थिर है, निश्चिन् 2 जिसने कुछ काम तक प्रतीक्षा की है (स) निराम समय यात्र० २/१८,—कृत्थ (वि) कृतार्थ,—भग० १५/१० 2 समुष्ट पतिव्रत—भा० ३/१९ 3 जिसने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है,—कथः शरीरार,—अथ (वि०) 1 निश्चिन् समय की वातुरतापूर्वक प्रतीक्षा करने वाला,—यद्य मर्षे मांमुक्ता कृतधनास्मिन्नाम—अथ० १ 2 जिसे कोई अवसर उपलब्ध हो गया है,—अथ (वि०) 1 अकृतक, मनु० ४/२१८, ८/१९, 2 जो पहले किये हुए उपाचारों को नहीं मानता है,—अथ 1 जिस बालक का मृष्टमनस्का हो गया है—मनु० ५/५८, ६/७,—अ (वि०) 1 उपकार मानने वाला, आभारी—मनु० ७/२०९, २/१०, याज्ञ० १/३०८ 2 गद्दार्थारी (कृ) कुला,—तीर्थ (वि०) 1 जिसने तीर्थों के र्मान किए हैं 2 जो (अध्यापनवर्ति के) अध्यापक से अध्यायन करता हो 3. जिसे नगकीये स्व्य भूमी हो 4 पथ प्रदर्शक,—वात्, किंती निर्दिष्ट समय के लिए रचना हुआ वैतनिक सेवक, वैतनिक

सेवक,—औ (वि०) 1. दूरदर्शी, विज्ञान रखने वाला (दूरदर्शी) 2. विद्वान् गिज्ञित, बुद्धिमान्—मुद्रा० ५।२०.—विश्वेक्षणः पश्चात्तारी,—विश्वव्य (वि०) कृत-सकल्प, दृढ़प्रतिज्ञ,—बुद्ध (वि०) अनुविद्या में विपुष्य,—बुद्ध (वि०) पहले किया हुआ,—अतिकृतम्, आरु-मण और प्रत्याकर्मण, बाबा बोनावा और प्रतिरोप करना—रघु० १२।९४,—प्रतिज्ञ (वि०) 1 जिसने किसी से कोई करार किया हुआ है 2 जिसने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर लिया है,—बुद्धि (वि०) विद्वान्, गिज्ञित, बुद्धिमान्—मनु० १।९७, ७।३०,—बुद्ध (वि०) विद्वान्, बुद्धिमान्,—सञ्जण (वि०) 1. मुद्राकिन, पिहित 2 दागी—मनु० ९।२३९ 3 श्रेष्ठ, सुशील परिभाषित, विवेचिन,—बर्मन् (पुं०) कौरवपुत्र का एक योद्धा भी कृप और अश्वत्थामा के साथ महाभारत के युद्ध में जीवित रहा, बाद में वह सात्यकि के हाथों मारा गया,—विज्ञ (वि०) विद्वान्, गिज्ञित—सुरोऽग्नि कृतविद्योऽग्नि—पञ्च० ४।४३, सुवर्णपुषिणा पृथ्वी विचित्रान्दि त्रयो जना, सूर्यश्च कृतविद्यश्च वरुच जानाति मेवित्तम्—पञ्च० १।४७,—वेत्त (वि०) वैतनिक, ननवादार (नौकर आदि)—याज्ञ० २।१६४,—वेविन् (वि०) आभारी दे० कृतञ,—वेत्त (वि०) मुद्रेणित, विन्वित्त—मानवति कृतवेदे वेदेवे कुञ्जद्वय्याम्—गीत० ११,—सौम (वि०) 1 मानदार 2 मुन्दर 3 पट, दल,—सौष (वि०) पक्षि किया हुआ,—धमः,—परिधमः अध्वेता, जियने अध्ययन कर लिया है—कृतपरिधमोऽग्नि ज्योति-शास्त्रे—मुद्रा० १, (मैंने अपना समय ज्योति शास्त्र के अध्ययन में लगाया है),—सकल्प (वि०) कृतानिश्चय, दृढ़सकल्प,—सकल (वि०) समय आदि का नियत करने वाला—तामसमेत कृतसकल वायते मृदु वेणुम्—गीत० ५,—संज्ञ (वि०) 1 पुन जेतना प्राप्त, होश में आया हुआ 2 उद्योषित,—संज्ञ (वि०) कश्चधारी,—सावर्णिका बहु स्त्री जिस के पति ने दूसरा विवाह कर लिया है, एक विवाहित स्त्री जिसकी सपत्नी भी विधमान हो,—हुत्स,—हुत्सक (वि०) 1 दल, चतुर, कुशल, पट 2 अनुविद्या में कुशल,—हुत्सता 1 कौशल, दस्ता 2 अनुविद्या या शास्त्रविद्या में कुशल—कौरव्ये कृतहुत्सता पुत्रिय देवे यथा सारिणी—वेणी० ९।१२, महावी० ९।४१।

कृतक (वि०) [कृत + कृन्] 1 किया हुआ, निमित्त, सज्जित (विप० नैसर्गिक)—यत्कृत तसवन्तिव्य-ग्यायुष 2 कृत्रिम, बनावटी ढंग से किया हुआ,—अकृतकवित्तवर्गीणीगमाल्यपत्र—रघु० १८।५२ 3 छाटा, अघाटित या बहुना किया हुआ, मिथ्या, दिखावटी, कल्पित—कृतककल्ह कृत्वा—मुद्रा० ३, कि०

८।४६ 4. दमक (पुत्र) (बहुधा समास के अन्त में भी)—यस्योपादे कृतकनलय, काम्पवा बहिवी मे (शाक मन्दाग्बुल) —मेघ० ७५, सोऽय न पुत्रकृतक परवीं मृगन्ते (जहाति)—वा० ४।१३।

कृतम् (अध्य०) [कृन् + कृन् बा०] पर्याप्त और अधिक नहीं, कम करी अथवा मत करो (कृत्वा० के साथ) अथवा कृत सन्नेहेन—ज० १, अथवा—गिरा कृतम्—रघु० ११।४१, कृतमस्वेन—उत्तर० ४।

कृति. (स्त्री०) [कृ + कृत्] 1 कर्म, उत्पादन, निर्माण, अनुष्ठान 2 कार्य, कृत्य, कर्म 3 रचना, काम, म-रचना—(सौ) स्वकृति गाययामा कविप्रथमपद्वित्तम्—रघु० १५।३३, ६४, ६९, नै० २२।१५५ 4 जादू, इन्द्रजाल 5 अति पर्वहाना, मार झकना 6 बीस की सख्या । सम०—हर, राघव का विशेषण ।

कृतिम् (वि०) [कृन्-द्वि] कृतकार्य, कृतार्थ, सतुष्ट, परि-तुष्ट, प्रसन्न, सफल—यस्य बीर्येण कृतिनी पय च नृचनानि च—उत्तर० १।३२, न सत्त्वनिर्जित्य रघुं कृती भवान्—रघु० ३।५१, १२।६४ 2. (अत) सीमाप्यभासी, अच्यो किस्वतबासा, भाष्यवान्—वा० १।२४, वा० ७।१९ 3. चतुर, सज्जम, योग्य, विशेषज्ञ, कुशल, बुद्धिमान्, विद्वान्,—त वृत्रप्रशकीकृत कृती—रघु० ११।२९, कु० २।१०, कि० २।९ 4 अज्ज्ञा, गृणी, पक्षि, पावन—सावेध कृतिनामपि स्फुरत्येध निर्मलविकेकदीपक—भर्तु० १।५६ 5. अनुवर्ती, आशाकारी, आदेशानुसार करने वाला ।

कृते, कृतेन (अध्य०) [सब० के साथ या समान में] के लिए, के निमित्त, के कारण—अमीया प्राणाना... कृते भर्तु० ३।३६, काव्य यस्तेज्ज्वलेते—काव्य० १ भग० १।३५, याज्ञ० १।२१६, वा० ६।

कृतिः (स्त्री०) [कृन् + कृत्] 1 चमड़ा, ताल 2 (विशे-वन) मृगचर्म जिसपर (धर्मशिक्षा का) विद्यार्थी बैठता है 3 (लिखने के लिए) भोजनपत्र 4 भोजवृत्त 5 कृतिका नक्षत्र, कृत्तिका मठल । सम०—ब्रह्मः—बासस् (पुं०) शिव का विशेषण—स कृतिबासा-प्तपते यतारामा—कु० १।५४, मालवि० १।१।

कृत्तिका (स्त्री० व०) [कृन् + कृत्] 1 २७ नक्षत्रों में से तीसरा कृतिका-नक्षत्र (६ तारों का पुंज) 2 ऊ-तारे की युद्ध के देवता कार्तिकेय की परिचारिका क कार्य करने वाली अप्सराओं के रूप में बणित है । सम०—सतयः,—पुत्रः,—सुतः कार्तिकेय का विशेषण,—अधः चादि ।

कृत्य (वि०) [कृ + कृत्] 1 मकी धाँति करने वाला, करने के योग्य शक्तिशाली 2 चतुर, कुशल,—लु-कारीगर, कलाकार ।

कृत्य (वि०) [कृ + कृत्, कृत्] 1 भी किया जाना चाहिए

सही, उचित, उपयुक्त 2. युक्तियुक्त, व्यवहार्य 3. जो राक्षसहित से पथभ्रष्ट किया जा सके, विश्वासघाती —राजत० ५।२४७, —रथम् 1. जो किया जाना चाहिए, कार्य, कार्य—मनु० २।२३७ ७।१७ 2 कार्य, व्यवसाय, करनी, कार्यभार—बन्धुकृत्यम् मेघ० ११४, अयोध्याकृत्यं—श० ७।३४ 3. प्रयोजन, उद्देश्य, लक्ष्य —कूर्जुरापावित्तंशकृत्यम्—रघु० २।१२, कु० ४। १५ 4 मथा, कारण,—रथः कर्मवाच्य के कृदन्त के समावर्तार्थक प्रत्ययो का समूह - नामत -रथ्य, अनीय य और एलिन,—रथा 1 कार्य, करनी 2 जादू 3 एक देवी जिसकी यज्ञादि के द्वारा पूजा इसलिए की जाती है कि विनाशकारी और जादू टोनी के कार्यों में निरिद्रि प्राप्त हो ।

कृत्रिम (वि०) [कृत्या निर्मितम्—कृ+मित+मप्] 1 बना बटी, काल्पनिक, जो स्वतः सृष्टीं या मनमाना न हो, अर्थात् 'मित्रम्, 'मनु' आदि, रघु० १३।७५, १५।३७ 2. गोप्य किया हुआ (बन्धन) —दे० नी०, —म, 'पुत्र' नकली या गोप्य किया हुआ पुत्र, हिन्दुधर्म में माने हुए १२ पुत्रों में से एक, गोप्य किया हुआ ऐसा बन्धक पुत्र जिसके पिता की स्वीकृति नोद लेते समय न ली गई हो, तु० कृत्रिम स्थातव्य वस —भाज० २।१३१, तु० मनु० १।१६९ से नी, —मम् 1 एक प्रकार का नमक 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य। स०—मृष, —बृषक, एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, पूष, —पुष' दे० कृत्रिम, —पुषक, वृद्धा, पुतालिका—कु० १।२९, —भूमि (नत्री) बनाया हुआ फल, —बन्धम् बाटिका, उद्यान । **कृत्रवम्** (अन्व०) एक प्रत्यय जो सम्बन्धाधिक शब्दों के साथ 'तह' और 'पुत्रा' द्वयों को प्रकट करने के लिए जोड़ा जाता है —उदा० अष्टकृत्रव आठपुत्रा, आठ तह का, इसी प्रकार दश', पच' आदि ।

कृत्रवम् [कृन्+स, कित्] 1 जल 2 समूह,—स्त पाप । **कृत्रव्य** (वि०) [कृत्+कृत्य] मारे, मरपुर्ण, समस्त एक —कृत्या नगरपरिषद्प्राशाहुर्भुनक्ति—स० २।१५ भग० ३।२९, मनु० १।१०५, ५।४२ । **कृत्रव्यम्** [कृन्+कृत्य, नुमागम्य] काल । **कृत्रव्यम्** [कृन्+कृत्य] काटना, हल कर कैंक देना, बिभक्त करना, फाड़ कर टुकड़े २ करना । **कृत्र** [कृन्+कृन्] अस्त्रनामा का मामा (कृप और कृपी दोनों भाई बहुत शत्रुत्व श्रुति की सन्तान से, इनकी माता जानपदी नाम की अम्बरवा थी । कृप का पालन पोषण अस्तुने से किया था । कृप करनेविद्या में बड़ा निपुण था, महाभारत के युद्ध में वह कीरव पक्ष की ओर से लड़ा और अन्त में मारा गया । पाण्डवों ने उसे मरण दी । वह सात चिरजीवियों में से एक है) **कृत्रव** (वि०) [कृन्+कृत्युन न त्यक्तव्य] 1. गरीब, दयनीय,

अमाना, असहाय—राजसूयस्य रामस्ते पात्यापच कृत्रवा प्रजा—उत्तर० ४।२५ 2. विवेकशून्य, किसी कार्य को करने या विवेचन करने के अयोग्य अथवा अनिच्छुक,—कायावर्ति हि प्रकृतिरूपपाश्चर्याचेतनानेव—मेघ० ५, इसी प्रकार —वराजीर्णवचमंमननगहनानोपकृपय भर्तु० ३।१७ 3 गीष, अधम, दुष्ट—भग० २।४९ मुद्रा० २। १८, भर्तु० २।४९ 4 मृग, कज्जु, —मन् दुर्वसा, — पाः मृग,—कृपणंन समो दाता भुक्ति कीर्तिप न विद्यते, अत- इत्यत्र चित्तानि य परेभ्य प्रयच्छन्नि—अ्यास । मम० —भी, —भुक्ति छोटे बिल का, गीष मग का,—कस्तल (वि०) दोनधयालु ।

कृत्रा [कृन्+धिता० अठ+टाप्, सप्र०] रहनु, बयालुता, कष्टता—पक्षवाक्यो पुरो दिव्यको मिथुने कृत्रावती —कु० ५।२६, शा० ४।१९, लक्ष्मणम् कृपा करने ।

कृत्रावः [कृपा नृदति—नृन्+त्र मत्तया लभ्यम्—तारा०] 1 तलवार, —स पातु व कसरिपो कृत्राण—बृहस्प० १।१, कृपामन्य कृपाणस्य व केवलनाकारतो भेद —मुद्रा० 2 चाकू ।

कृत्राधिक [कृपाण+कृन्+टाप्, इत्यम्] बर्छी, छुरी । **कृत्राकी** [कृपाण+कीप्] 1 सैनी 2 बर्छी ।

कृत्रादु (वि०) [कृपा लाति—कृपाः+ला आदाने मि० हु] दयालु, कृपायुर्ण, मदद ।

कृत्रो [कृन्+डीप्] कृप की बहन तथा श्रेण की पत्नी, । स०—यति श्रेण का विशेषण,—सुत अस्त्रनामा का विशेषण ।

कृत्रोदम् [कृन्+कीटम्] 1 तलकाशिया, ज्वाल की लकड़ी 2 वन, जंगल की लकड़ी 3 पानी 4 पेट । स०—पात्सः 1 पनवार 2 मद्द 3 बापु, हवा । मम० —शोभि बनिन ।

कृत्रि (वि०) [कृन्+इन्, अठ इत्यम् सप०] 1. कीटो से भरा हुआ, कीटयुक्त—कृत्रिकुञ्चिनम्—भर्तु० २।९ 2 कीड़े (रोष) 3 मथा 4 मकड़ी 5 लाख (रस) । स०—कोकः,—शौष, रेणम का कोपा, 'ज्यवम् रेणवी कपडा, —जम्, —ज्यवम् तगर की लकड़ी,—जा लाख कीटों द्वारा उत्पादित लाख रस,—ज्यवम्,—वारिष्णुः घोषा, सीपी में रहने वाला कीड़ा,—यवस्तः,—शैकः शबी, —कम् गुडर का पेट,—शङ्कु शव के भीतर रहने वाली मछली,—शुक्तिः (स्त्री०) 1 दोहरी पीठ वाला घोषा 2 सीपी में रहने वाला कीड़ा 3 घोषा । **कृत्रिय**, **कृत्रिय** (वि०) [कृमि+न, ल वा, कृत्यम्] कीटों से भरा हुआ, कीटयुक्त । **कृत्रिका** [कृत्रि+का+क+टाप्] बहुत सन्तान पैदा करने वाली स्त्री । **कृत्र** (वि०) पर०—कृत्रवति, कृत्र 1 दुर्बल या क्षीण होता 2 (कृत्रवा की नाति) उत्तरोत्तर ह्रास होता (वेर०) दुर्बल करना ।

कृष्ण (वि०) (मध्य० कृष्णीयस्, उत्त० कृष्णिष्ठ) [कृष् + क्त, नि०] 1 कृष्णका पतला, कृष्ण, कृष्णहीन, शीघ्र—कृष्णतनु कृष्णारो वारि 2 छोट्टा, मोड़ा, घुसम (आकार वा परिमाण में)—मुहुरूपि न याभ्य कृष्णचन.—अर्त्त० २।२८ 3 शक्ति, नगण्य—अण० ७।२०८ । सम०—अक्षः मकड़ी,—अङ्क (वि०) कृष्णका, पतला, (- शी) 2 तन्मयी 2 प्रियतु कता,—अबर (वि०) पतली कमर वाला—विक्रम० ५।१६ ।

कृष्णका [कृष् + का + क + टाप्] (सिर के) बाल ।
कृष्णानु [कृष् + आनुक्] आग—गुरो. कृष्णानुप्रतिमा-
द्विर्नेपि—रघु० २।४९, ७।२४, १०।७४, कु० १।५१
अर्त्त० २।१०३ । सम०—रेतस् (पु०) शिव की
उपाधि ।

कृष्णाधिक्य (पु०) [कृष्णाश्च + इनि] नाटक का पात्र ।

कृष् i (तुल०) उम०—कृष्ति—ने, कृष्ट) हल चलाना,
खुद बनाना ।

- 11 (आ० पर०—कर्मति, कृष्ट) 1 शीघ्रना, बसीटना, चीरना, शीघ्र देना, फाड़ना—अप्रहृ सिंह किल ता नकर्व—रघु० २।२७, विक्रम० १।१२ 2 किसी की ओर शीघ्रना, आकृष्ट करना—भट्टि० १५।४७, अण० १५।७ 3 (सेना आदि का) नेतृत्व या संचालन करना—सेनां महती कर्मन्—रघु० १४।३२ 4 झुकाना (धनुष आदि का)—नायायतकृष्टशार्ङ्ग—रघु० ५।५० 5 स्वामी होना, दमन करना, परास्त करना, अभिभूत करना—बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति—अण० २।२१५, नक स्वस्थानमासाद्य गजेन्द्रमपि कर्षति—अण० ३।४६ 6 हल चलाना, खेती करना—अनु-लौमकृष्ट श्रेष्ठ प्रतिलोम कर्षति—सिद्धा 7 प्राप्त करना, हासिल करना—कुलसभ्यां च गच्छन्ति कर्षति च महृषयः—महा० 8 किसी से ले लेना, किसी को बर्षित करना (विक्रम०) अण०—पीठे शीघ्रना, शीघ्र ले जाना, बसीट कर दूर करना, लबा करना, निचोड़ना—दन्ताश्रमिभ्रमणकृष्य गिरीशते च—अणु० ५।१४, रघु० १६।५६ 2 हटाना—उत्तर० १।८ 3 कम करना, बटाना, अण०—शीघ्रना, शीघ्र लेना, धा—शीघ्रना, धनीप यष्टुचना, धकेलना, शीघ्र लेना, निचोड़ना (आल०)—केतोष्णाकृष्य चूमति—हि० १।१०, धा० १।३३ दूरमयना सारङ्गेण वयमाकृष्टा—अण० १, अमर २।७२, कु० २।५३, रघु० १।२३ 2. (धनुष आदि का) झुकाना—अण० ३।५, सि० १।४ 3 निचोड़ना, उबार लेना—हि० अण० १।४, 4 खीनना, अल्पपूर्वक ग्रहण करना—भट्टि० १६।३० 5 किसी दूसरे नियम या वाक्य से शब्द का देना, उण०—, 1 ऊपर शीघ्रना, उठावना—अङ्गदकोटिलग्नं प्राक्कम्पयत्कृष्य—रघु० ६।१४, सि० १।३६ 2 बढ़ाना,

बढ़ि करना वि—, दुबोना, कम करना, घटाना विष्णु—, 1 बाहर शीघ्रना 2 शीघ्रतान कर निकालना, अल्पपूर्वक निकालना, खीनना या जबरजस्ती लेना—निष्कट्टनर्षकमे कुजेरात्—रघु० ५।२६, वरि—, शीघ्रना, निकालना, बसीटना, अण०—, 1 शीघ्र लेना, शीघ्रना, आकृष्ट करना 2. (सेना का) नेतृत्व करना 3 (धनुष का) झुकाना 4 बढ़ाना, वि—, 1 शीघ्रना 2 (धनुष का) झुकाना—सारात्म तेषु विष्णुयता-मितम् अ० ६।२८, विग्र—, हटाना, खीन—, निकट लाना ।

कृष्कः [कृष् + क्वन्] 1. हलबाहा, हाकी, किसान 2. फकी 3 बँस ।

कृष्वाचः, **कृष्किः** [कृष् + आनक्, किकन् वा] हलबाहा, किसान ।

कृषि (स्त्री०) [कृष् + इक्] 1. हल चलाना 2 खेती, फालतकारी—चीयते बालिशस्यापि सत्त्वोपपतिता कृषि—मुद्रा० ३, कृषिः किलष्टाऽनुष्टया—अण० १।११, अणु० १।१०, ३।६४, १०।७९, अण० १८।४४ । सम०—कर्मन् (नपु०) खेती का काम,—कृषिभिन् (वि०) खेती से निर्वाह करनेवाला किसान,—कृष्मन् खेती में होने वाली उपज, या लाभ—अण० १६,—सैवा खेती करना, किसानी ।

कृषीवलः [कृषि + वलक्, दीर्घ] जो खेती से अपनी जीविकार्जन करे, किसान,—कृषि यापि कृषीवल—वाङ्म० १।२७६, अणु० ५।३८ ।

कृष्करः [कृष् + कृ = टक् पृथो] शिव की उपाधि ।

कृष्ट (वि०) [कृष् + क्त] 1 शीघ्र हुआ, उखाड़ा हुआ, बसीटा हुआ, आकृष्ट 2. हल चलाना हुआ ।

कृष्टिः [कृष् + क्तिन्] विद्वान् पुरुष—(स्त्री) 1 शीघ्रना, आकर्षण 2 हल चलाना, युधि खेतना ।

कृष्ण (वि०) [कृष् + नक्] 1 काला, ध्याय, गहरा नीला 2 दुष्ट, अनिष्टकर,—अण० 1. काला रंग 2 काला हरण 3 कौबा 4 कोयल 5 चान्द्रमास का कृष्णपक्ष, 6 कर्मियुग 7 आठवां अष्टाचार्यी विष्णु (मारीचक पुराणआश्रय के अनुसार कृष्ण अत्यन्त प्रसिद्ध नामक है, देवताओं में सर्वप्रथम है ! वसुदेव और देवकी का पुत्र होने के कारण कृष्ण कत का नाम्ना है, पर अग्रहा-रत बहु नम्य और यथोदा का पुत्र है, उन्मत्ते ही इसका पालन-पोषण किया और वहीं कृष्ण ने अपना बचपन बिताया । जब उसने कत द्वारा उसकी हत्या के लिए भेजे गये प्रेतना और एक आदि कूर राक्षसों को मार गिराया तथा सूर-भीरता के अनेक वासुदेवजनक कर्तव्य किये तो फलतः उसका दिव्य लक्षण प्रकट होने लगा । दूधावस्था के उसके मूक शारीर से गोकुल के स्वामी की अमूर्त तथा शोषित विभवे राधा उनको चिन्ते

प्रिय थी (तु० जयदेव के गी० की) । कृष्ण ने कंस, नरक, केसि, अरिष्ट तथा अन्ध अन्ध राक्षसों को मार विराया । यह अर्जुन का धर्मिष्ठ मित्र था, महाभारत के युद्ध में उसने अर्जुन का रथ हँका, पांडवों के हितार्थ दी गई कृष्ण की सहायता ही कौरवों के नाश का मुख्य कारण थी । सकट के कई अवसर आये, परन्तु कृष्ण की सहायता और उनकी कल्पनाप्रबल मति ने पांडवों को कहीं आँध न जाने दी । यादवों का प्रभासलेख में सर्वनाश ही जाने के पश्चात् वह जरास नामक सिकारी के बाण का, मूष के घोले में, सिकार हो गये । कहते हैं कृष्ण के १६००० स्त्रियाँ थी, परन्तु कश्मिणी, सत्यभामा (राधा भी) उनको विशेष प्रिय थी । कहते हैं उसका रथ साँबला या बादल की भाँति काला था—तु० बहिरिच मलिनार तत्र कृष्ण मनोऽपि भविष्यति नृपम्—गीत० ८, उमका पुत्र प्रद्युम्न था । 8 महाभारत का विषयात प्रणेता व्यास 9 अर्जुन 10 अंगर की लकड़ी, अश्वम् 1 कालिमा, कालापन 2 सोहा 3 अजन 4 कालो पुतली 5 काली मिर्च 6 सीसा । मम०—अश्व (नप०) एक प्रकार के चदन की लकड़ी, अश्वकः रैवतक पत्र का विशेषण, अश्विन् काले हरिण का चर्म, अश्वत् (नप०) अश्वसम्, आश्विन् लोहा, कच्चा या काला लोहा, अश्वन्, अश्विन् (पु०) आग, अश्वमी भाद्रपद कृष्णपक्ष का आठवाँ दिन, यही कृष्ण का जन्म दिन है, इसे गोकुलाष्टमी भी कहते हैं, आशास. अवयव बृह, उषः एक प्रकार का सोप, कश्चम् काल कमल, कश्चम् (वि०) काली करतूत बासा, मूजरिच, कुष्ट, दुर्बरिच, दोषी, काकः पहाड़ी कौआ, काशः भँसा, काष्ठम् एक प्रकार की चदन की लकड़ी, काला अंगर, कौहलः बुआरी, गतिः आग, आयोधने कृष्णपति सहायम्—रघु० ६।४२, घोषः शिब का नाम, सार, काले हरिणों की एक जाति, वैहः सधुवकी, चणम् बुरे तरीको से कमाया हुआ धन, पाप की कमाई—ईषासनः व्यास का नाम, तमहमरागम्—कृष्ण कृष्णप्रपावन बन्दे—वेणी० १।३, वसः पादमास का अठेरा पक्ष, मृगः काला हरिण—शुद्धे कृष्णमृगस्य दामनस्य कच्छमाणा मृगीम्—शं० ६।१६, मूकः, बबन्ध, बबन्धः काले मूह का अन्धर, बबन्धैः तीक्ष्णरीय या कृष्ण यजुर्वेद, लोहः बहुलक पत्थर, बन्धी 1 कालाराय 2 राहु 3 राहु, बलम् (पु०) 1 आग, रघु० ११। ४२, मनु० २।१४ 2 राहु का नाम 3 नीच पुरुष, दुराचारी, लुच्चा, वेणा नदी का नाम, सक्तुभिः कौआ, सारः, सारः वितकबरा कालामृग—कृष्णसारै दबन्धन् स्वयि चाधिप्यकामुके—शं० १।६, मूकः भँसा, सक्, सारभिः अर्जुन का विशेषण ।

कृष्णकम् [कृष्ण + कन] काले मूष का चमड़ा ।

कृष्णकः [कृष्ण + का + क] बुँघी का पीसा, मुँचा-पीसा, —कम् बुँघी, चटकी ।

कृष्णा [कृष्ण + टाप्] 1 द्रौपदी का नाम, पांडवों की पत्नी—कि० १।२६ 2 क्षितिज भारत की एक नदी जो मसुलीपट्टम् में तम्रु में गिरती है ।

कृष्णिका [कृष्ण + टम् + टाप्] काली बरतों ।

कृष्णिकम् (पु०) [कृष्ण + इमनिष] कालिमा, कालापन । कृष्णी [कृष्ण + ङीप्] अँघेरी रात ।

कृ 1 (मुदा० पर०—किरति, कीर्ण) 1 बखेरना, इषर-उषर फेंकना, उडेलना, झालना, तितर-वितर करना —समरशिरसि चञ्चलतश्चञ्चलमनामुपरि सरलुघार कोऽप्यथ बोरघां, किरति—उत्तर० ५।२, ६।१, विशि विशि किरति सजलकणजालम्—गीत० ४, शं० १।७, अमर ११ 2 छितराना, डकना, भरना—मट्टि० ३।५, १७।४२ । अश्व—, 1 बखेरना, इषर-उषर झालना, —अपरिकरितु कुमुदम्—सिद्धा० 2 पैरो से शूरचना (भोजन या आवास आदि के लिए), पूरा हर्ष, (चौपावों और पक्षियों में) (इस अर्थ में क्रिया का रूप अपस्कारिते बनता है)—अपरिकरिते बुधो हृष्टः, कुक्कुटो भक्षार्थं वा आश्रयार्थं च—सिद्धा०, मना—, उत्तर फेंकना, अस्वीकार करना, निराकरण करना, अश्व—, बखेरना, फेंकना—अवाकिरन्नालसता प्रनूतै—रघु० २।१०, मा—, 1 चारों ओर फैलाना 2 सोदना, खूँ—, 1 ऊपर की बखेरना, ऊपर की फेंकना—रघु० १।४२ 2 खोदना, खोदकर खोजना करना 3 उलकीर्ण करना, खुदाई करना, मृति बनाना—उलकीर्णा इव वासमट्टियु निगानिहाससा बहिन—विष्णु० ३।२, रघु० ४।५६, उष—, (उपस्किरति) काटना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, परि—, 1 घेरना—परिकीर्णां परिबादिनी मुने—रघु० ८। ३५ 2 सोपना, देना, बाँटना—मही महेष्क परिकीर्णं सूनी—रघु० १।८।३, ३— 1 बखेरना, फेंकना उडेलना—प्रकीर्णं पुण्याणां हरिषरघुबोरञ्चकिरसम्—वेणी० १।२ (बीज बाँधे) बीजना, प्रति—, (प्रतिस्किरति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, काटना—उरोविदार प्रतिचकरे नखैः—शि० १।४७, वि—, बखेरना, इषर-उषर फेंकना, छितराना, फेंकना—कु० ३।६१, कि० २।५९, मट्टि० १३।१४, २५, विशि—, फकना, छोटाना, उत्तर फेंकना—कु० ४।६, सन्—, मिलाना, सम्मिथन करना, एक साथ पर गड़बड़ कराना, सन्धु—खेदना, बुरास करना, बीषना—रघु० १।४ ।

11 (क्या० उम०—कृपाति, कुपीते) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, मार डालना ।

कृत् (पूरा० उम०—कीर्तयति-ते, कीर्तित) 1. उल्लेख

करना, दोहराना, उच्चारण करना—नामि कीर्तित एव—रघु० १।८७, मनु० ७।१६७, २।१२४ 2 कहुना, हस्तर पाठ करना, घोषणा करना, समाचार देना—मनु० ३।३६, १।४२ 3 नाम देना, पुकार करना 4 स्तुति करना, यशोगान करना, स्वरुणार्थ उत्सव मनाना—अथशब्द सुभान् आतुरधिर्कीर्तयन् विक्रम—मट्टि० १।५७२, पञ्च० १।४।

कल्प (भा० मा०)—कल्पते, कल्पन्त 1 योग्य होना, यथेष्ट होना, फलना, प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, पैदा करना, बुरकना (सत्र० के साथ)—कल्पते रक्षायाम्—भा० ५।५, एतत्कालेनैवपुत्रोत्पत्तयः कल्पते विधवाय—विष्णु० ३।१, विभावरो यश्चमया कल्पते कु० ५।४४, ६।२९, ५।७९, मेघ० ५५, रघु० ५।१३, ८।४०, छं० ६।२३, मट्टि० २२।२१ 2 मनुष्य तथा विनियमित होना, सफल होना 3 होना, घटित होना, घटना—कल्पिष्यते हरे प्रीति—मट्टि० १।६।२, १।४४, ४५ 4 तैयार होना, सज्जित होना—अकल्पे वासवकुम्भरम्—मट्टि० १।४।८९ 5 अनुकूल होना, किसी के काम आना, अनुसेवन करना 6 भाग लेना, (प्रेर०) 1 तैयार करना, क्रम से रखना, सवारना 2 निश्चिन करना, स्थिर करना 3 बटना 4 सामान जुटाना, उपसृष्ट करना 5 विचार करना, अन्व—, फलना, झकना, सम्पन्न करना (सत्र० के साथ) जा—, (प्रेर०) अलकृत करना, सजाना, अन्व—, 1 फलना, परिणाम निकालना, (सत्र० के साथ) मनु० ३।२०८, ८।३३३, परि—, (प्रेर०) 1 फैसला करना, निर्धारण करना, निश्चित करना 2 तैयार करना, तैयार होना 3 गुणयुक्त करना—भा० २।९ अ—, होना, घटित होना 2 सफल होना (प्रेर०) 1 आविष्कार करना, उपाय निकालना, (योजनार्थ) बनाना 2 तैयार होना, तैयार करना, अन्व—, अन्व— करना, सज्जित होना (प्रेर०) अन्व— करना, अन्व—, (प्रेर०) 1 बुद्ध निष्पन्न करना, पुत्र सकल्प करना, निश्चित करना 2 इरादा करना, प्रस्ताव रखना, अन्व—, तैयार होना ।

कल्प (भू० क० छ०) [कल्प+कृत] 1 तैयार किया हुआ, किया हुआ, तैयार हुआ, सुसज्जित—अल्पविधाहोषा—रघु० १।१० विभाहोषेयं सुसुधित 2 काटा हुआ, चीला हुआ—अल्पकेशानसामयम्—मनु० ४।३५ 3 उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ 4 स्थिर किया हुआ, निश्चित 5 सोचा हुआ, आविष्कृत । छं०—कीला अधिकार पत्र, दस्तावेज—भूतः कोवाच ।

कल्पितः (श्री०) [कल्प+कृत] 1. निष्पत्ति, सफलता 2 आविष्कार, बनापट 3 अमरवद करना ।

कल्पितक (वि०) [कल्प+कृत] खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ ।

केकळः (ब० ब०) एक देश और उसके निवासी—मगध-कोसलकेकयामिना सुहितर—रघु० १।१७ ।

केकर (वि०) (श्री०—श्री) [के मृत्ति नम्रतारा कर्तुं धील-मस्य—कु+कृत् कल्प—तारा०] मंगी आल वाला, —रघु मंगी आल, तु० आकेकर । सम०—अन्न (वि०) कल्पन्ति, मंगी आल वाला ।

केका [के+क+ए+टाप्, अलृक् सं०] मोर की बोली—केकामिनीलकडन्तिरप्यति बन्धन ताण्डवाकुच्छिन्नष्ट—भा० १।३०, पद्मसवादिनी केका—रघु० १।३९, ७।६९, १।२।२, १।६।४, मेघ० २२, मत्तु० १।३५ । **केकापन्नः**, **केकिकः**, **केकिकुम्भ** [केका+अलृक्, केका+कृत, केका+इति] मोर—एत केकिकोडाकलकल-रवः पथमसुधां—मत्तु० १।३७ ।

केकिका [के मृत्ति कुतिल अणक+टाप्] तम्ब ।

केतः [किन्+पञ्च] 1 घर, आवास 2 रहना, बस्ती 3 सडा 4 इच्छा शक्ति, इरादा, चाह ।

केतकः [किन्+अलृक्] एक पीया—प्रतिभान्त्यथ भवानि केतकानाम्—घट० १५ 2 सडा,—अन्व केकके का फूल—केतकी सुषिभिर्भे—मेघ० २४, २३, रघु० १।१७, १।१९,—भी एक पीया—केकडा (=केतक)—हंसित-मिथ विचने सुषिभिर्भे केतकीनाम्—मनु० २।२३ 2 केतकी का फूल—मनु० २, २०, २४ ।

केतवम् [किन्+अलृक्] 1 घर, आवास—अकलितमहिमान केतव मङ्गलाना—भा० २।९, मम मरणमेव वरमति वित्तकेतना—गीत० ७ 2 निमग्न, बुलावा 3 स्थान, जगह 4 पताका, सडा—मान भीमेन मरुता मरुतो रथकेतवम्—वेणी० २।२३, वि० १।४।२८, रघु० १।३९ 5 विशुद्ध, प्रतीक जैसाकि मकरकेतन 6 अनिर्धार्य कर्म (धार्मिक भी)—निवायाञ्चलिदानेन केतने आडकर्मणि, तत्सोपकारे अस्तत्त्वं किं बीजम् किमुतान्यथा—वेणी० ३।१९ ।

केतिल (वि०) [केत+इत्थत्] 1 बुलाया गया, नामावित 2 आबाद, बसा हुआ ।

केतुः [चाप्+तु, की आपेक्ष] 1 पताका, सडा—पीनां-सुकनिव केतोः प्रतिवात नीयमानस्य—छं० १।३४ 2 मूक, प्रधान, नेता, प्रमुख, विशिष्ट व्यक्ति (बहुधा समास के अन्त में)—अनुष्वाशा मनुषाकेतुम्—रघु० २।३३, कुलस्य केतुः स्त्रीतस्य (राज्य)—दामा० 3 युष्कलतारा, मूककेतु—मनु० १।३८ 4 विशुद्ध, अंक 5 उज्ज्वलता, स्पष्टता 6 प्रकार की किरण 7 शीत-मंजु का नया रङ्ग ही पुराणों के अनुसार वैदिकय राजस का कर्मक है तथा विषका शिर रातु है—मूर-रङ्ग सकेतुपञ्चमसं पूर्वमेष्यन्निवादीम्—मुद्रा० १।६ ।

सम०—सहः अक्षरौही शिरोविन्दु (बहु) ग्रहणार्थं व रविनामं एक इत्येते को काटते हैं)।—कः बावल,—बधिः (स्त्री०) ध्वज का बंध—रघु० १२।१०३,—रत्नम् नीलम, वैभूर्यं, -बलनम् ध्वजा, पताका ।

केदारः [के शिरसि शारोत्र्य—ब० सं०] 1 पानी भरत हुआ स्रोत, शरापाह 2 बांबला, आलबाल 3 पहाड़ 4 केदार नामक पहाड़ जो हिमालय का एक भाग है 5 शिव का नाम । सम०—अष्टम् मिट्टी का बना एक छोटा सा बाघ जो पानी को रोके,—नाथः शिव का विशेष रूप ।

केदारः [के मूभि नार—असु० सं०] 1. शिर 2 शोपरो 3 गाल 4 जोड़ ।

केलिपातः [के जले निपात्यतेऽस्ती—के+नि+पत्+णिच्+अच्] पतवार, बाइ, धनु ।

केन्द्रम् (नपु०) 1 बल का मध्य बिन्दु 2 वृत्त का प्रमाण 3 अणुकुण्डली में मध्य से पहला, चौथा, सातवां और दसवां स्थान ।

केन्द्रः—रघु [के बाहो शिरसि वा याति, वा+ऊर किल्ब, अलु० सं०, तारा०] टाड, बिजायट, बाजूबध- केन्द्रा न विभूषयन्ति पुरुष ह्यार न चन्द्रोऽन्वयत्—भर्तु० २।१९, रघु० ६।६८, कु० ७।६९,—रः एक रतिवध ।

केरलः (ब० ब०) दक्षिण भारत का एक देश (वर्तमान मलाबार) और उसके निवासी—मा० ६।१९, रघु० ४।५४,—स्त्री (स्त्री०) 1 केरल देश की स्त्री 2 ज्योतिषिज्ञान ।

केल्य (म्बा० पर०)—केलित, केलित 1 हिलाना 2 खेलना, खिलायी होना, खीडा परायण या केलिप्रिय होना ।

केल्यः [केल्य+क्यल्] नर्तक, कलाबाजी करने वाला नट ।

केलासः [केला विलास-सीवत्यन्-केला+सद्+ड] स्फटिक ।

केला [पु०—स्त्री०] [केल्य+इन्] 1 खेल, खीडा 2 आरोग्य-प्रमोद, मनोविनोद—केलिकल-मणिकुण्डल आदि—गीत० १, हरिहरिह मुखबधूतिकरे विलासिनि विलासति केलिपरे—त०, राधासाधवर्जोऽसति इमुनाकृते रह केलय—त०, अमरु ७, मनु० ८।३५७, शतु० ४।१७ 3 परिहास, मस्तीक, हसोर्विलम्बी,—स्त्रिः (स्त्रि०) पृथ्वी 1 सम०—कला खीडा शिब कला विनासिता, श्रुतारप्रिय सरोधन 2 सत्सवती की बीधा, क्लिः नाटक में नायक का विवशत सहचर (एक प्रकार का विलोपक),—किलाबली रति, कामदेव की पत्नी,—कीर्णः ऊट,—कुण्डिका पत्नी की छोटी बहन,—कुण्डित (वि०) खेल में हथ—वेणी० १।२—कोषः नाटक का पात्र, नर्तक, नर्तिका,—मुहम्,—निकेतनम्—मन्थिरम्—सह-सम् आनन्दमथन, निजी कमरा, अमर ८,—नाथः कायासक्त,—वर (वि०) खीडापर, खिलासी, आनन्द

प्रिय,—सुकः परिहास, खीडा, मनोरजन,—सुकः कवच-वृक्ष की जाति,—सम्पन्न विलासताय्या, सुखसाय्या, कोष—केलिसाधनमनुयातम् पीठ० ११,—सुभिः (स्त्री०) पृथ्वी,—सत्विः आमोदप्रिय सत्वा, विद्यम्य मित्र ।

केलिकः [केलि+कन्] अशोक वृक्ष ।

केली [केलि+कीप] 1 खेल, खीडा 2 आनन्द-खीडा । सम०—विशः मनोविनोदार्थं रक्तो हृदं कोयल,—बनौ प्रमोद-बाटिका, केलिकानन, खीडोद्यान,—सुकः मनोरजनार्थं पाला हुआ तोता ।

केवल (वि०) [केव् सेवने द्वा०कल्] 1 विशिष्ट, एका-निक, असाधारण 2 अकेला, मात्र, एकल, एकमात्र, इच्छा-पुष्पा—महितस्य न केवला शिव प्रतिपद्ये सक्तान् गुणानपि—रघु० ८।५, न केवलानां पश्यां प्रभृति-मेवेहि वा कामपुत्रां प्रसन्नाम् २।६३, १५।१, कु० २।१४ 3 पूर्ण, समस्त, परम, पूरा 4 नम, अनामृत (भूमि० आदि) कु० ५।१२ 5 शालिस, सरल, अवि-श्रित, विमल—कालयं केवला नीति—रघु० १७।५७,—सम् (अव्य०) केवल, निर्क, एकमात्र, पूर्ण रूप से, नितान्त, सर्वथा—केवलमिदमेव पृथ्वाग्नि-का० १५५, न केवलम्—अपि न तिरिं' बलिः, वयु तस्य विमोर्ने केवल गुणवतापि परमोजनता—रघु० ८।३१, तु० ३।१९, २०।३१ । सम०—अव्यम् (वि०) परम एकता ही जिसका सार है कु० २।५७,—वैश्वानरिः तिरिं नाकिः (जो ज्ञान की किन्नी और शास्त्रा में प्रवीण न हो), इसी प्रकार 'वैवाकरण ।

केवलतः (अव्य०) [केवल+तसिल्] केवल, निरा, सर्वथा, निपट, निर्क ।

केवलिन (वि०) (स्त्री०) मी [केवल—इति] 1 अकेला एकमात्र 2 आत्मा की एकता के परम सिद्धान्त का पक्षपाती ।

केवा [क्लियते क्लियनाति वा—क्लिम्+अन्, लोओपचञ्] 1 बाल—विकीर्णकेवासु परेतभूमिपु—कु० ५।६८ 2 शिर के बाल—केवोय नृहीत्वा—या—केवाग्रह मध्यमे—सिद्धा०, मुलकेवा—मनु० ७।९१, केवाभ्यपरोष्पा-दिव—रघु० ३।५६, २।८ 3 बोधे या शेर की अवाल 4 प्रवरा की किरण 5 बरल का विशेषण 6 एक प्रकार का मुगन्ध द्रव्य । सम०—अन्तः 1 बाल का शिरा 2 नीचे लटकते हुए लम्बे बाल, बाली का गुच्छा 3 मुख्यतः सत्कार—मनु० २।६५,—उपचयः अधिक वा सुन्दर बाल,—कर्मन् (नपु०) (शिर के) बालों को समालना,—कलापः बालों का डेर,—कीडः ऊँ,—वर्गः बालों की मीठी,—मृहीत (वि०) बालों से पकड़ा हुआ,—घट्टः—ग्रहणम् बालों को पकड़ना, बालों से पकड़ना केवाग्रह बल तथा हुपतामयाया—वेणी० १।११, २९, मेघ० ५०, इसी प्रकार—यच्च रतेवु केवाग्रह—का० ८

—अन्वु द्रुवित गंवापन,—विष्णु (पुं०) माई, हृष्वाभ,
—बाहू: बालों की जड़,—बन्धु,—बाध,—हस्त: बहुत
अधिक बंधवा सवार्य हुए बाल—उं केलापस प्रदीपक
कुमुदीलजितरथ विमिल बन्धने—कुं ११४८, ७१५७,
तुं कथपस कथहस्त भादि—अन्वु ब्रूया,—भू:—भूमि:
सिर या शरीर का अन्य भाग अर्था बाल उमते हैं
—प्रसाधनी,—भार्गवम्,—भार्गवम् कंधी, —रचना
बालों को सवार्या,—बैश: कबरी-अन्वत ।

केसर [केस + अट + अण्, शकं परकम्] 1. बकरा
2. विष्णु का नाम 3 सटमल 4. चाई ।

केसव (वि०) [केसा: प्रजस्ता सन्ध्यास्य, केस + व] बहुत
या सुन्दर बालो वाला,—ब: विष्णु का विशेषण—केसव
जय जगदीश हरे - गीत० १, केसव प्रतिष्ठ वृष्ट्वा
पश्यथा हर्षमिभेरा—सुधा० । सम०—आयुध: आय
का वृक्ष (—अन्वु) विष्णु का सारथ,—आत्मन्,—आवाप्त:
अवगत्य वृक्ष ।

केसाकेसि (अभ्य०) [केषेष्, केषेष् गृहीत्वा प्रवृत्त युद्धम्
—तूपदस्य आकार इत्यम् व] एक दूसरे के बाल
नीच कर, नीच कर की जाने वाली लड़ाई—श्रीटा-
श्रीटी—केसाकेसयभवदुद्ध रजसां बानरी: सह—महा०,
याज्ञ० २।२८३ ।

केसिक (वि०) (स्त्री०—की) [केस + ठञ्] सुन्दर या अल-
कृत वाला वाला ।

केसिन् (पुं०) [केस + इनि] 1 सिंह 2 एक राक्षस जिसको
कृष्ण ने मार गिराया था 3 एक और राक्षस जो केम
सेना की उठा कर ले गया और बाद में इन्द्र द्वारा
मार गया था 4 कृष्ण का विशेषण 5 सुन्दर वाली
बाला । सम०—निष्कम्बन,—बन्धन: कृष्ण के विशेषण
—अण० १८।१ ।

केसिनी [केसिन् + ङीप्] सुन्दर जूड़े वाली स्त्री 2. विश्वा
की पत्नी, रावण और कुम्भकर्ण की माता ।

केस (श) १.—रन् [के + सन् (ङ) + अण्, अम्बु स०]
1 (सिंह आदि की) अवाल—न ह्यप्यद्वैदपि गेवाङ्गुवे-
स्वरी विलोलाजिह्वावधालिताकेसर—शुभ्र० १।१४,
श० ७।१४ 2 फूल का देसा या तन्तु—नीप दुष्ट्वा
हरितकपिस केसररथंष्टे—मेघ० २१, श० ६।१७,
मालिनी० २।११, राघ० ४।६७ शि० १।६७ 3 बकुल
का पेड़ 4 (आम आदि का) देसा या सूत्र,—रन्
बकुल वृक्ष का फूल—रन्० १।३६ । सम०—अच्छल:
मेरु पहाड़ का विशेषण,—हरन् केसर, आक्रान्त ।

केस (श) रिन् (पुं०) [केसर + इनि] 1 सिंह—अनुद्वु-
ष्टो धनधनि न हि गोमायुस्तानि केसरी - शि० १६ ।
२। धनुर्धन केसरिण दक्षे—रन्० २।२९, श० ७।३
2 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अपने बर्ण का प्रमुख (समास के
जन्त नै—नु० कुञ्जर, सिंह आदि) 3 घोड़ा 4 नीच

या समकल का देह 5. पुत्राय वृक्ष 6. हनुमान् के पिता
का नाम । सम०—सुत: हनुमान् का विशेषण ।

के (भ्या० पर०)—कायति) शक्य करना, ध्वनि करना ।

केसुकम् [किष्क + अण्] किष्क वृक्ष का फूल ।

केसव: [केसव + अण्] केसव देस का राजा, वृ० 'केसव' ।

केसक: [कीकस + अण्] राक्षस, पिशाच ।

केस्य: [केकप्याना राज्ञा—अण्] केसव देस का राजा या
राजकुमार,—भी केस्य देस के राजा की बेटा, राजा
दशरथ की सबसे छोटी पत्नी, भरत की माता (जब
राम की राजगद्दी मिलने वाली थी, तो केसियों की
कीछल्पा से कम प्रसन्नता न थी, परन्तु उसकी दासी
मन्धरा बड़ी दुष्ट थी, उसे राम से पुराना प्रेम था;
इस समय बदला लेने का अच्छा अवसर समझकर
मन्धरा ने केसियों का मन हड़ाना अधिक पलट दिया
कि वह मन्धरा के सुझाव के अनुसार राजा दशरथ से
बे दूी बरदान माँगने के लिए उद्यत हो, गई जो उन्होनें
पहले कभी देने की प्रतिज्ञा की थी । एक बर से
उसने अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी तथा दूसरे बर
से राम के लिए १४ बयं का निर्वासन माँगा । रोषान्ण
दशरथ ने केसियों को उसके द्रुवित प्रस्तावों के लिए
बहुत बुरा भला कहा परन्तु अन्तत उन्हें उसकी हठ
के बाग्य मुकना पडा । इस दुष्कृत्य के कारण केसियों
का नाम बदनाम हो गया) ।

केटव: [कीट + धा + ङ + अण्] राक्षस का नाम जिसे विष्णु
ने मार गिराया (बह बडा बलवान् राक्षस था, कहा
जाता है कि वह और मयू दोनों राक्षस विष्णु के काम
से निकले जब कि वे सोये हुए थे, परन्तु जब राक्षस
ब्रह्मा को खाने के लिए दौडा तो विष्णु ने उसको मार
गिराया) । सम०—अर्दि, शित् (पुं०)—रिपु—हन्
विष्णु के विशेषण ।

केतकम् [केनकी + अण्] केसव का फूल ।

केतवम् [कितव + अण्] 1 जूए में लगाया गया दीब
2 जूआ खेला 3 मूठ, घोला, बालबाजी, चालबाजी,
चालाकी—हृदये वसवीति मरिचिय यदवरोचस्तदवैमि
केतवम्—कु० ४।९, -ब 1 छली, बालबाज 2 जूआरी
3. धपूरे का पीवा । सम०—प्रघोस: चालाकी, दीब,
-बाज मूठ, चालबाजी ।

केदार: [केदार + अण्] चावल, अनाज,—रन् खेतो का
समूह, 'केदार' भी इसी अर्थ में ।

केतुतिक: [किमुत + ठञ्] (न्याय) 'और कितना अधिक'
न्याय, एक प्रकार का तर्क (किमुत 'और कितना
अधिक' से व्युत्पन्न) ।

केरव: [के जले रीति—केरव. इस तस्य त्रियं—केरव +
अण्] 1 जूआरी, घोला देने वाला, चालबाज 2. जन्तु,
—अण् श्वेत कुम्ह जो चन्द्रोदय के समय खिलता है

--चन्द्रो विक्रामपति कैरवचक्रवालयम्--मनु० ५:३२।

मय०--अन्वः चन्द्रमा का विशेषण ।

कैरविन् (प०) [कैरव+इति] चन्द्रमा ।

कैरविको [कैरविन्+कोप] 1 स्वयं फूल वाला कुबुर का पौधा 2 बट मराठवा जिगने स्थेन कमल विन हो 3 धेत कमलों का समूह ।

कैरवी [कैरव+वीप] चौदनी, ज्याम्ना ।

कैलासः [के अने लामो हीलिग्यम-केलाव+अन्] पहाड का नाम, हिमालय की एक पहाटी, शिव और कुबेर का निवास स्थान-मेष० ११, ५८ रघु० २:३५। नम० - भाषः 1 शिव का विशेषण 2 कुबेर का विशेषण -कैलासनाथ शरमा जिगीप --रघु० ५:७८, कैलास-नाथमण्डलम् निवर्तमाना--विक्रम० १:२ ।

कैवर्तः [के अने वर्तते-वृत्-अच्, केवर्त नत स्वार्थे अच् तारा०] मछला मनोमू कैवर्त क्षिपति परित-स्था प्रति मूह (तनुजाली जालम्) मा० ३:१६, मनु० ८:१००, (इसके जग के विषय मे दे० मनु० १:०:२४) ।

कैवल्यम् [केवल+व्यञ्] 1 पूर्ण पृथक्ता, अकेलापन, एकात्मिकता 2 स्वात्मत्व 3 प्रकृति से आत्मा का पार्ष्ण्य, परमात्मा के साथ आत्मा की लड़ना 4 मुक्ति, मोक्ष ।

कैशिक (वि०) (श्री०) श्री [केश+ठक्] बालों के समान, बालों की भांति सुन्दर, - कः शृंगार रस, विकसिता, - अन्व वातों का गुच्छ, -श्री नाट्य शैली का एक प्रकार (अधिक सुद्ध 'कौशिकी' शब्द है) ।

कैशोरम् [कियाः] अन्व] किशोरावस्था, बाल्यकाल, कैशार जाम् (पदह वरं से गीचे की)-कैशोरमापच-दशाम् ।

कैवयम् [केव+व्यञ्] तारे बाल, दाधों का गुच्छ ।

कोक [कुक्+आधने अच् तारा०] 1 भेंडिया-वनयुच-परिभ्रष्टा मृगी कौकैरिकादिता- रमा० 2 गुलाबी रंग का हंस (चक्रवाकः)--कोकाता कुरुगस्थरेण सद्गुर्वीर्षा मयम्भर्चना-गीत ५ 3 कोयल 4 मेंढक 5 विष्णु का नाम । मय०--देवः 1 कबूतर, 2 सूर्य का विशेषण ।

कोकमयम् [कोकान् चक्रवाकान् नवति नायपति न्+अच्] बाल कमल--किशिकोकेनदण्डदस्य सद्गुं नेत्रे स्वयं रम्यत--उत्तर० ५:३६, मोलमलिनानामपि तन्वि तव लोचनं धारयति कोकमयकम्पम्--गीत० १०, शि० ४:४६ ।

कोकशः [कोक+श+हृन्+श्] सफेद घोडा ।

कोकिका [कुक्+इत्यच्] 1 कोयल-मुसिकोकोको वन्यपूर बुद्ध-मु० ३:३२, ४:१६, रघु० १२:३९ 2 जलो की हुई लकड़ी । मय०--आलता,--उत्तरकः जाम का वृक्ष ।

कोक, कोकुवा (ब०ब०) एक देश का नाम, सहायि और समुद्र का मध्यमो भूखंड ।

कोकुवा [कोकुल+टाप्] ग्रेवा, जमदीन को पत्नी । मय०--सुत परमगन ता विशेषण ।

कोजागरः [का जागति इति यद्यथा त्रिकरात्र काने पुरी० तारा०] आश्विन म.म की पूर्णिमा को रात मे मत्तया जग्नेवाला आमादिपुण्य उत्पन्न ।

कोट [कुट्+घञ्] 1 किला 2 लोहाडा, छप्पर 3 कुटिलना 4 दाढ़ी ।

कोटर-रम् [कोट कोटिय गति रा+क ता०] वृक्ष की खोबर मीशारा भुवगभंकाटम्प्रदान्तरकणामभ-ग० १:१६, कोटरमकालभृष्टा प्रकल्पुताशानया मलिते-मालादि० ४:७ अन्व० १:२६ ।

कोटरी, कोटवी [काट्+रो(वी)+विणच्] 1 नगी स्त्री 2 दुग्दिगी का विशेषण (नम रूप म वर्णन) ।

कोटि-वी (श्री) [कुट्+इत्, काटि+वीप] 1 घनत्व का मुद्रा हुआ मिग-भूमिनिहितैककोटिकामकम्-रघु० १:१:८१ उत्तर० ४:२९ 2 चरमसीमा का किलाग, नोक या धार-सहचरी दन्तस्य कोटया निम्न-मा० १:३२, अङ्गुरकाटिकमम् रघु० ६:१६, ७:४६ ८:३६ 3 शस्त्र की धार या नोक 4 उच्चतम बिन्दु, अधिकतम परगकोटि, परगकाटा, परमोत्कर्ष-गरा कोटिमानन्त-स्थाव्यगच्छन्-मा० ३:६९, इसी प्रकार काटिकोटीमा-पत्ना-पच० ४, अत्यन्त कुपित 5 चन्द्रमा की कलाएँ -मु० २:२६ 6 एक करोड की संख्या-रघु० ५:१०१, १:२:८२, मनु० ६:६३ 7 (गणित) ९० कोटि के साथ की सम्पूरक देखा 8 मयकोण त्रिभुज की एक भुजा (गणित) 9 भोगी, विभाग, राज्य-अन्वय ०, प्राणि ० आदि 10 विवादाग्र पर प्रश्न का एक पहलू, विकल्प । मय०--ईश्वर करोडगति, -जित् (प०) कालियास का विशेषण, -अ्या (गणित) समकोण त्रिभुज मे एक कोण की कोजा, -इयम् दो विकल्प, -वाचम्, पठवार, -वाक, दुर्ष रसक, -बोधिन् (वि०) (शा०) निवृत्त बिन्दु पर प्रहार करने वाला, (जाल०) अत्यन्त कठिन कार्यों को सम्पन्न करने वाला ।

कोटिक (वि०) [कोटि+कै+क] किसी वस्तु का उच्च-तम सिरा ।

कोटिरः [कोटि राति रा+क ता०] सन्ध्यासियों द्वारा मलक पर बनी सींग के रूप की बालों की चौटी 2 नेबका 3 रन्ध्र का विशेषण ।

कोटि (श्री) श [कोटि(टी)+श्री+क] देवा, परेला ।

कोटिकः (अन्व०) [कोटि+अन्] करोडी, असम्ब ।

कोटीर [कोटिमीरपति ईर्+अच्] 1 मुकुट, ताज 2 शिवा 3 सन्ध्यासियों द्वारा मलक पर बांधी गई बालों की चौटी जो सींग शैली दिखाई देती है, जटा

—कोटीरक्षमनवनर्तुर्गुणोपपट्टध्यापारपासकम् मञ्ज
भूतमन्त्रं—० १११८।

कोट्ट [कुट्ट + घञ्, नि० गुणः] दुर्ग, किला ।

कोट्टद्वी [कुट्ट + द्वी वा + क, गोरा० द्वीपं तारा०]
1 नग्न स्त्री जिसके बाल बिल्वे हुए हों 2 कुचिकी
3 बाण की माता का नाम ।

कोट्टार [कुट्ट + आरु कृपो०] 1 किलेबन्दी वाला नगर,
दुर्ग 2 नालाबकी सीढ़िया 3 कुर्जा, तालाब 4 लम्पट,
दुराचारी ।

कोच [कुप् करणे घञ्, कर्मणि अच् वा तारा०] 1. किलाग,
कानि—अयेन कोणे स्वचन म्बिनस्य—विश्रमाक० ११९,
(मुकमेनन्तु नु पुन. कोण तयनपधरो—भाषि० २।
१७३ 2 मूल का अन्तर्वर्ती किन्तु 3 बीणा की कयानी,
सर्गवी ब्रह्मणे का यज्ञ 4 तलवार या शस्त्र की तीज
या घर 5 लकड़ी, लाठी, गदा 6 डाल बजाने की लकड़ी
7 मगल ग्रह 8 शनिग्रह । मम०—आघातः दीप, द्वयर्
बजाना (विभिन्न बाद्ययंत्रों की मिश्रित ध्वनि)—कोमा-
धानेयु गतेत्यलभयटवटाम्यायमयधट्टधः—वेधी०
११७३, (भरत द्वारा दी गई परिभाषा—उष्कासात-
मध्यांशं भेरीमातमानांश्च । एहदा यच्च हृत्पत्ने
कांमायात म उच्यते)।—कृष्. लटमल ।

कोचक: ६० कोणप ।

कोचाकोचि (अध०) एक कोण से दूसरे कोण तक, एक
किनारे से दूसरे किनारे तक, निरुद्ध, आरंभ ।

कोदधः—इयु [कु + धिच् = कौं, दु + अक् = इव, कर्म० स०]
घ०त०] घनप. - रे कन्दर्प करं कदपथमि कि कोदध-
ट्टुआरे—भर्तु० ३१९०, कोदधवागिनितदाप्रतिरोध-
कानाम्—मालवि० ५११०, —कः भी ।

कोदक: [कु + विच् = कौं, दु + अक् = इव, कर्म० स०]
कोदा वा अनाज जिसे गरीब लोग खाते हैं—छिन्धा
कर्पूरलघुधान् बुद्धिमिह कुप्ये कोदकानां समन्तात्—भर्तु०
२११०० ।

कोप: [कुप् + घञ्] 1 क्रोध, गुस्सा, रोष—कोप न
गच्छति नितान्तबर्णांश्चि नाय—पञ्च० ११२३, न स्वया
कोप कार्य—कोप मन करो 2 (आयुर्वेद) शारी-
क विदोय विकार—अधर्तुं पितकोप, वायुः प, कफ-
काय । मम०—आकल—आविष्ट [कुट्ट, प्रकृति, -कलः 1 कोधी वा दष्ट पुत्रव 2 क्रोध का
मार्ग—पञ्चम्, 1 क्रोध का कारण 2 बनापटी क्रोध,
बस, क्रोध की वधना, -वेक-क्रोध की प्रचण्डता,
तोषणता ।

कोपक (वि०) [कुप् + कृत्] 1 रोषवीक, विवर्धिका,
कोपी 2 क्रोध पैदा करने वाला 3 प्रकोपी, शरीर के
विदोयों में प्रयत्न विकार उत्पन्न करने वाला, जो
रायमील वा कोपी स्त्री—कपाति कामिन् मुरतापरा-

वात् पाधानत. कोमलवाचकः—कु० ३१८, अमय ६५१

कोविन् (वि०) [कोव + इति] 1 कोवी, विद्वान्
—अथवेदविदं यदि कुदित मयि कोविनी—चित्त० १०
2 कोव उत्पन्न करने वाला 3 विद्विधा, शरीर में
विदोय विकारों को उत्पन्न करने वाला ।

कोमल (वि०) [कु + कल्प, मूढ च नि० गुणः]
1 सुकुमार, मृदु, नासुक (बाल० से भी)—अन्धकोम-
लाङ्गुलि (करतु)—स० ६१२२, कोमलविटपानुकारिणी
बाहू—११२१, संस्तु महतीं विमं नवरयुत्वकोमलम्
—भर्तु० २१६६ 2 (क) मृदु, मन्द—कोमल गीतम्
(क) शक्तिार, सुहावना, मधुर—रे रे कोकिल कोमली
करुणे कि ल वृषा जल्पति—भर्तु० ३११०
3 मनोहर, सुन्दर ।

कोमलकम् [कोमल + कन्] 1 कमलझड़ी के रेशे ।

कोमलितः, कोमलितः [क मल वदित्तिरात्य इ० स०
पृथो० अकारस्य उकार—कोमलित + कन्] टिट्टिरी,
कुररी—कायसर्वा कृतमासमुद्गततलं कोमलितकट्टी-
कृते—मा० ९७७, मनु० ५११३, याज्ञ० ११७३ ।

कोरक-कन् [कुर + कृन्] 1 कली, अनखिला फूल,
-सदृश यद्यपि स्थित कुरबकं तत्कोरकवस्त्रया—स०
६१२ 2 (शाल०) कली के समान कोई वस्तु—अथहि
अथखिला फूल, अधिकतित फूल, —राधाया स्तनकोर-
कोपरि चलेयत्रो हरि पातु व—गीत० १२ 3 कमल-
झड़ी के रेशे 4 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य ।

कोरपुत्रः—कोदध ।

कोरित (वि०) [कोर + इत्] 1 कलीयुक्त, अक्षुण्णित
2 पिसा हुआ, चूरा किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े
किया हुआ ।

कोरक: [कुल् + अच्] 1. सूअर, बराह—जि० १४४३
2 लट्टो का बना बंदा, नाच 3 स्त्री की छाती
4 नितम्ब प्रदेश, कल्हा, योव 5 बालिकून 6 मणिग्रह
7 बहिष्कृत, प्रतिष्ठित जाति का व्यक्ति 8 उद्योगी
—सन् १ एक तोले का भार 2 काली निर्वर् 3 एक
प्रकार का बैर । स००—अन्धः कलिग देश का नाम
—कुम्भः बगला ।

कोरकक: [कुल् + अच् + कन्] बीणा का शाखा ।

कोरक-सि, -सी (स्त्री०) [कुल् + स + टाप्, कुल् + इत्,
कुल् + अच् + डीप् वा] ३० बढरी ।

कोरकलक, -कम् [कोर + का + हल् + अच्] एक पात्र
बहुत से लोगों के होने का मन्त्र, हवापाय ।

कोविद (वि०) [कु + विच्, तं वेति—विद् + क] कन्-
मयी, विद्वान्, कुशल, बुद्धिमान्, प्रवीण (स०० वा
अवि० के साथ, परन्तु बहुधा समास में)—गुणवोचको-
विदः—जि० १५५३, ६९ प्रायश्चित्तानुबन्धमकवा-
कोविदामन्धान्—मेघ० ३०, मनु० ७३२६ ।

कोविदार- [कु + वि + दा + क्] एक वृत्त का नाम, कृष्णदार - चित्त विचारवर्ति कथ्य न कोविदार - मनु० २१६ ।

कोशः (ब)- [कु + श् + क्] 1 नगर पदार्थों की रखने का स्थान, माली 2 दीर्घ बटोरा 3 पात्र 4 शकुल, बोझ, दण्ड, टुक 5 प्यान, अक्षरपत्र 6 पेटी, इकना, इकनन 7 भाष्यार, डेर-मनु० ११९, 8 भाष्यारम्भ 9 अत्रता, श्याप गैना रखने का स्थान -मनु० ८१२९, 10 विधि, धारा, दीर्घ विवेक-विशालकोषजालम् २५० ५११ (अण०) कोषल-पत्र -भा० २५, 11 योना चारी 12 मालकोश, शब्दाक्षरं मन्त्र, शब्दाक्षरी 13 अक्षरिका फल, कमी - मुद्राकोषी पत्रकोषोपमा विद्यम् - मनु० २०८, २३१२५, इत्य विचिन्त्यति कोषागते द्विकेन वा कृतं कृतं शक्तिनी यत् उन्महत्तर-मुभा० 34 किमी पत्र की चित्री 15 कली 16 आरमक, बटोरेपत्रा 17 रेषाक का कोशा वा० २११७७ 18 किन्की, मन्थिय 19 अन्ता 20 अक्षरकोश, फोले 21 शिख 22 गैर, गोपा 23 वेदान० में पात्र कोष जो मन्थिफर शरीर रचना करने के विधाने ज्ञाना विज्ञान करने हैं, अक्षरपत्र शास्त्रम आदि 24 [विधि में] एक प्रकार की अक्षरपत्रों की अक्षि पत्रीका गु० पात्र० २१२४४ । म०-- अक्षिपति - अक्षर 1 यज्ञावधि, केनशास्त्र (गु० आधुनिक विनमर्षी) 2 कुबेर, अक्षर लक्षण, भाष्यारकृत्, कार 1 स्थान यज्ञने वागा 2 मालकोष का निर्माण 3 कोष के रूप में वेदाय का कोशा 4 कोशाभाषी, कारक वेदाय का कोश, कृत् (गु०) एक प्रकार का ईश, -गृह्णन् यज्ञाना, भाष्यारगात्र मनु० ५१२९, कर्मन् गार्ग्य, भाष्यक नाम अक्षरकोषी, कोशावच्छेद, वेदक, कर्म रूप यज्ञ का मन्त्र, नित्रीरी शक्ति (गु०) मीरी में रहने वाला कोशा, कोशाभाषी, - वृद्धि 3 पत्र की वृद्धि 2 कोषों का बड़ जाग, - शाशिका म्याल में रखना हुआ वाक्, बन्द किया हुआ वाक्, -स्व (वि०) पेटी में बन्द, म्याल में बन्द (स्व) कोषकोट, कोष-भाषी, हीय (वि०) सल्लोह, विवेक ।

कोशलिम्ब [कुल + लम्ब] शिखर, धुम [अक्षि मूत्र का - कोशलिम्ब] ।

कोशावलिम्ब (गु०) [कोष + अन् + कल् + कोशावत् + इति] 1 वाणिज्य, अक्षर 2 व्यापारी, सौदाम्य 3 इन्द्रावलि ।

कोशिक (वि०) [(गु०) कोश (व) + इति] वाप का वृत्त ।

कोष् [कु + श्] 1 इत्य, केरका आदि शरीर के भीतनी अणु या भाग्य 2 पेट, उर्ध्व 3 आरमन्तर कस 4 अक्षरभाष्यार, अक्ष का कोशा - क्शम् 1, नगरदीवारी

2 किसी पत्र का कशा शिखर । म० अक्षरम भाष्यार, भाष्यारम्भ - पारंपर्यविशालाक्षरभाष्यार-शोधितनेन वा अक्षिपति मयो० ३, मनु० ९१२८०, अक्षि पात्रक शक्ति आभासाय का रम, यत्न- 1 कोषावच्छेद, अक्षरी 2 कोशावलि, पत्रभाष्य 3 विपरीती (आधुनिक-कारपारिकारिकारो मे मिलता-बुलता), -वृद्धि यज्ञोत्सर्ग ।

कोष्क [क्श + क्] 1 अक्षरभाष्यार 2 पहाड़ीभाषी, कम् उर वृत्त से बनाया गया पत्राक्षी में पानी पीने का म्याल (बाणनाल की भाषा में 'रवेत' कहते हैं) । **कोष्क** (वि०) [ईतुल्य की कार्य] 1 बोधा परम, मुद्राका मनु० ११८६, क्शम् गार्गी ।

कोश (श) [श + क्] एक देश और उसके निवासीयो का नाम - निरुत्तरमन्त्रकायलात् - मनु० २१२, २१५, ६०१२, प्रायकोशकेकयामिता सुविद्य ११७७ ।

कोश (श) का अर्थोपमा गतर ।

कोश [को इति मन्थी अन् + क्] 1 एक प्रकार का बटोपत्र 2 एक प्रकार की मरिदा ।

कोशक [कुल + क्] 1 मृग वानने वाला, वा मृगों का व्यवसाय करने वाला 2 बट मन्थ वा चलने समय अपना ध्यान नीचे जमीन पर रखता है जिसमें कि काटे कोरा आदि पंगे से नीचे न दब जाय 3 (अण०) दमी ।

कोश (वि०) (स्त्री० स्त्री) [कुल + अण] 1 कोष में रखा हुआ वा काष्ठ पर होने वाला 2 पेट में सम्बन्ध रखने वाला ।

कोशय (वि०) (स्त्री० स्त्री) [कुल + इत्] 1 पेट में होने वाला 2 म्याल में स्थित अक्षि कोशयमूत्राणु यज्ञाणुयन मयम् अक्षि० ४१३१ ।

कोशोपक [कुशी बटोपत्र - उपकम्] नवकार, नक्ष्त्र वाग-पाश्यावलिम्बिका कोशोपकन - का० ८, विक्रमाङ्क० ११ ९० ।

कोष्ठ, **कोष्ठक** (व० व०) [कुष्ठ + अन्, कोष्ठक + अन्] एक देश तथा उसके निवासी भागको का नाम (व०) शंकाय ।

कोष्ठ (वि०) (स्त्री० स्त्री) [कुट + क्त] 1 अपने निजी घर में रहने वाला, (अण०) स्वल्प, मुक्त 2 धारुत्, धारुत्, पर में पना हुआ 3 नालकाय, बेईमान 4 नाम में रखा हुआ, -ट 1 नालकाय, बेईमानी 2 धृती यवाही देने वाला ; म०-- न कुट्टज वृक्ष - लक्ष (वि०) धारणता ; स्वल्प बरदों को अपनी रक्षाकारण अणत कार्य करता है, गौर्य का कार्य नहीं, - लक्षिणम् (गु०) कडा गन्ध, भाष्य वृद्धी यवाही ।

कोष्ठिक, **कोष्ठिक** [कुट + क्त, कुट्टक + क्तम्, कुट + क्तम्] 1 बेईमिया, विकला व्यवसाय पक्षियों को पकड़ पियरे

में बन्ध कर देचना है 2 पक्षियों के मास का चिकेता, कसाई, गिकारबोर ।

कौटिलिक [कूटिलिकया हरति म्यान् अङ्गारान् वा—कूटिलिका+अण्] 1 गिकारी 2 लुहार ।

कौटिल्यम् [कूटिल+प्यञ्] 1 कूटिलपना (शा० तथा आल०) 2 दुष्टता 3 बेईमानी, जालसाजी,—प्यः 'आणव्य नीति' नामक नीतिशास्त्र का प्रख्यात प्रणेता चाणक्य, चन्द्रगुप्त का मित्र और मन्त्रकार, मद्रासराज्यस नाटक का एक महत्त्वपूर्ण पात्र—कौटिल्य कूटिलमति स एव येन कौशात्मो प्रसभमदाहि नन्दवस—मूढा० ११० स्पृशति मा मृत्यभावेन कौटिल्यमिष्य—मूढा० ७ ।

कौटुम्ब (वि०) (स्त्री०—बी) [कुटुम्ब तद्गुरुण भोजनमस्य कुटुम्ब+अण्] किसी परिवार या गृहस्थ के लिए आवश्यक,—बन्ध पारिवारिक सम्बन्ध ।

कौटुम्बिक (वि०) (स्त्री०—बी) [कुटुम्बे तद्गुरो प्रसुत—कुटुम्ब+ठक्] परिवार को बनाने वाला,—कः किसी परिवार का पिता या स्वामी ।

कौण्य [कुण्य+अण्] पिशाच, राजस । सम०—बन्धः भोग का विशेषण ।

कौतुकम् [कुतुक+अण्] 1 इच्छा, कुतूहल, कामना 2 उत्कृता, आवेग, आतुरता 3 आश्चर्यजनक वस्तु 4 वैवाहिक कगना—रघु० ८।१ 5 विवाह से पूर्व वैवाहिक कगना बर्तने को प्रथा 6 पर्व, उत्सव 7 विशेषकर विवाह आदि शुभ उत्सव—कु० ७।२५ 8 लक्ष्मी, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता—मनु० ३।१५० 9 खेल, मनोरिनाद 10 गीत, नृत्य, तमाशा 11 हँसी, मजाक 12 बधाई, अभिवादन । सम० आहार,—रम्—गृहम् आमावे-भवन—कौतुकागारमगान्—कु० ७।९५,—किया—मङ्गलम् 1 महान् उत्सव 2 विशेषतः विवाह-सस्कार—रघु० १।१५३,—सौरण—बन्ध् उत्सव के अवसरो पर बनाय गये मंगलमूषक विजय द्वार ।

कौतूहलम् (स्वम्) [कुतूहल+अण्, प्यञ्, वा] 1 इच्छा, जिज्ञासा, शक्ति-विषयगतकुतूहल—विक्रम० १।१९, शा० १ 2 उत्कृता, उत्कण्ठा 3 कुतूहलबन्धक, आश्चर्यजनक ।

कौतिलक [कुन्त प्रहरणमस्य—ठक्] भाला चलाने वाला, नेताबरदार ।

कौशेय [कुन्त्या अपत्य इक्] कुन्ती का पुत्र, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का विशेषण ।

कौष (वि०) (स्त्री०—बी) [कृष+अण्] कुएँ से सम्बन्ध रखने वाला या कुएँ से जाता हुआ (जल आदि) ।

कौपीनम् [कृप+अण्] 1 यौनि, उपस्य 2 गुप्ताङ्ग, गुह्यनिर्मय 3 लमोटी—कौपीन सतसम्भजर्जरतर कन्या पुनस्तापुषी—मनु० ३।१०१ 4 चिचड़ा 5 पाप, अनुचित कर्म ।

कौष्यम् [कुष्य+प्यञ्] 1 टैदापन, कुटिलता 2 कुषबापन ।

कौमार (वि०) (स्त्री०—री) [कुमार+अण्] 1 तनय, युवा, कन्या, कुंवारी (स्त्री और पुत्र्य दोनों) कौमार पति, कौमारी भार्या 2 मनु, कोमल,—रम् 1 बचपन (पंच बरं तक की अवस्था) कुंवारीपना (१६ वर्ष की आयु तक) कुमारीपन—पिता रक्षति कौमारो भ्राता रक्षति योवन—मनु० ९।३, देहिनीऽस्मिन् युवा देहे कौमार योवन जरा—भग० २।१३ । सम०—पुत्र्यम् बच्चो का पालनपोषण व चिकित्सा,—हूर (वि०) विवाह करने वाला, कन्या को पत्नी रूप में ग्रहण करने वाला, य कौमारहर स एव हि बर—काव्य १ । **कौमारकम्** [कौमार+कण्] बचपन, ताप्य, किशोरावस्था—कौमारकेऽपि गिरिबद्धगुह्यता दधान—उत्तर० ६।१९ ।

कौमारिक [कौमारी+ठक्] यह पिता जिसकी सन्तान लड़कियाँ ही हों ।

कौमारिकेय [कौमारिका+ठक्] अविवाहिता स्त्री का पुत्र ।

कौमुद [कुमुद+अण्] कातिक का महीना ।

कौमुदी [कौमुद+ङीप्] 1 चाँदनी—शशिना सह याति कौमुदी—कु० ५।३३, शशिनमुपगम्ये कौमुदी मेघ-मूषतम्—रघु० ६।८५, (शब्द की व्युत्पत्ति—की मोदने जना यस्या तेनासी कौमुदी मता) 2 चाँदनी का काम देने वाली कोई चीज अर्थात् प्रसन्नता देने वाली तथा ठण्डक पहुँचाने वाली—त्वमस्य लोकस्य च नेत्रकौमुदी कु० ५।७१, या कौमुदी नयनयोर्बन्धत मुजन्मा—मा० १।३४, तु०—चटिका 3 कातिक मास की पूर्णिमा 4 अनाविधन मास की पूर्णिमा 5 उत्सव 6 विशेषतः बहु उत्सव जब घरों में, मन्दिरों में सर्वत्र दीपावली होती है 7 (पुस्तकों के नामों के अन्त में) व्याख्या, स्पष्टीकरण, प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालने वाली—उदा० तर्ककौमुदी, तास्वतस्वकौमुदी, सिद्धान्त-कौमुदी आदि । सम०—पतिः चन्दमा—बृहत्ः दीपट ।

कौमुदीकी, कौमुदी [कौमुदीया मोदक—कुमुदीक+अण्+ङीप् कु पृथिवी मोदयति—कुमुदी+अण्+ङीप्] विष्णु की मदा ।

कौरव (वि०) (स्त्री० बी) [कुर+अण्] कुरुओं से सम्बन्ध रखने वाला—शेष सत्रयधनपिशाच कौरव तद्गुणेवाः—मेघ० ४८,—ब० 1 कुरु की सन्तान—अर्जुनादि कौरवसत समरे न कोपात्—वेणी० १।१५ 2 कुरुओं का राजा ।

कौरव्यः [कुर+प्य] 1 कुरु की सन्तान—कौरव्यवसदावे-ऽस्मिन् व एष मलभायते—वेणी० १।१९, २५, कौरव्यो हुतहस्तता पुनरिय देवे यथा सीरिणि—६।१२ 2 कुरुओं का शासक ।

कौरव्यैः [यीक भाषा का शब्द] नृपिक राशि ।

कील (वि०) (स्त्री०—की) [कुल+अण्] 1 परिवार से, सबच रखने वाली, पैतृक, आनुवंशिक 2 अच्छे बराने का, सुभास, -कः बायमार्गी सिद्धांतों के अनुसार 'शक्ति' की पुष्पा करने वाला, -अम् बायमार्गी शाक्तों के सिद्धांत और व्यवहार ।

कीलकेयः [कुल+इत्, कुल्] स्वामिचारिणी स्त्री का पुत्र, हुदामी, वर्णसंकर ।

कीलकिनेयः [कुलटा+इत्, इनकादेशः] 1 तवी निवारिणी का पुत्र 2 वर्णसंकर ।

कीलिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुल+इत्] 1 किसी वंश से सबच रखने वाला 2 कुल में प्रशंसित, पैतृक, बलपरंपरागत, -कः 1 कुलाहा—कीलिकी विष्णुकुण्ड राक्षस्य निषेधते पंच० ११२०२ 2 विघनी 3. बायमार्गी, शाक्त सिद्धांतों का अनुयायी ।

कीलीय (वि०) [कुल+अण्] सदानी, कुलीन, -कः 1 निवारिणी स्त्री का पुत्र 2 बायमार्गी शाक्त सिद्धांतों का अनुयायी, -अम् लोकापावद, कुत्सा मालिकापावद किमपि कीलीनं धृतते—मालवि० ३, तदेव कीलीन-मिव प्रतिभाति—विष्णु०, २, वैश० ११०, कीलीन-मान्नामयमाचक्षते—रघु० १४।३६, ८४ 2 अनुचित कर्म, दुराचरण—व्याते तस्मिन् वित्तमसि कुडे जन्म कीलीनमेतन्—वेणी० २।१० 3 पशुओं की लड़ाई 4 मूर्तों की लड़ाई 5 सयाम, वृद्ध 6 उच्च कुल में जन्म 7 गुणाव, योगि ।

कीलीयम् [कुलीन+ध्वञ्] 1 कुलीनता 2 वश की कुत्सा ।

कीलुत [कुल्लत+अण्] कुल्लो का राजा—कीलुतविचय-बर्वा—महा० १।२० ।

कीलेयकः [कुल+इत्] कुला, शिकारी कुला ।

कील्य (वि०) [कुल+ध्वञ्] उच्च कुल में उत्पन्न, सान्दानी ।

कीबे (बे) र (वि०) (स्त्री०—री) [कुबे (बे) र+अण्] कुबेर से सबच रखने वाला, कुबेर के पास से आने वाला—यान ससमार कीबरम् रघु० १५।४५, रो उत्तरदिशा, -तत प्रत्यये कीबरी भारतीय विष्णुदिग्म्—रघु० ४।६६ ।

कीषा (वि०) (स्त्री०—षी) [कुषा=अण्] 1 रेवती 2 कुषा पास का बना हुआ ।

कीषालम् (स्वम्) [कुषाल+अण् ध्वञ् वा] 1 कुषाल-क्षेत्र, प्रसन्नता, समृद्धि 2 कुषालता, दक्षता, चतुराई—किमकीषालापुराप्रयोजनार्थोसितया—महा० ३, हाव-हावि हसित बचनाना कीषलं दुमि विकारविशेषाया वि० १०।१२ ।

कीषालिकथ [कुषाल+इत्] वृत्त, शिवन ।

कीषालिका, कीषाली [कीषालिक+टाप्, कुषाल+अण्+

कीप्] 1 उपहार, बड़ाया 2 कुषल प्रल वृक्षना, अधिवादन ।

कीषलेय [कीषाल्या+इत्, लोप] राम का विशेषण, कीषाल्या का पुत्र ।

कीषल्य्या [कीषाल्येयो भवा—छप] दशरथ की ज्येष्ठ पत्नी तथा राम की माता ।

कीषल्य्यावामि [कीषल्य्या+किञ्] कीषाल्या का पुत्र राम, भट्टि० ७।९० ।

कीषाल्य्याम्बी [कुषाल्य्या+अण्+कीप्] बणा के किनारे स्थित एक प्राचीन नगर (जिसे कुषा के पुत्र कुषाब ने बताया था—यह नगर ही वल्ल देश की राजधानी थी) ।

कीषालिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुषिक+अण्] 1 इन्डे में वंश, म्यान में रचना हुआ 2 रेवती, -कः 1 विष्णामित्र का विशेषण 2 उत्कल—उत्तर० २।२९, 3 कीषकार 4 गृहा 5 गुणुल 6 नेवला 7 लपेग 8 गृहार रत्न 9 जो तुल्यवत को जानता है 10 इन्द्र का विशेषण—का प्याला, पानपात्र, -की 1 विहार प्रदेश में बहने वाली एक नदी का नाम 2 इगुदिनी का नाम 3 चार प्रकार की नाट्यशैलियों में एक—मुकुटारार्थमदर्भा कीषालिकी ताम् कथ्यते—दे० सा० २०, ४११, तथा अन्ये षोड्हे । सम०—अरशित, -अरि कोडा, -फल नागियल का वंश, -शिय राम का विशेषण ।

कीषो (बे) यम् [कीषाल्य विकार-इत्] 1 रेशम—पंच० १।०४ 2 रेशमी कपड़ा मनु० ५।१२० 3 रेशम का बना स्त्री का पटो कोट निर्नामि कीषोव-मुपानवापयाम्यङ्गनेपप्यमलञ्चकारं कु० ७।९, विद्यु-द्वाम कीषोव—मृच्छ० ५।३, ऋतु० ५।११ ।

कीषीक्षम् [कुषीर+ध्वञ्] 1 आज लेने का व्यवसाय 2 आत्मस, अर्धमन्थता ।

कीषुतिक [कुषुति+इत्] 1 ठग, बदमाश 2 बाजीगर ।

कीषुतुभ [कुषुतुभो जलमित्तव भव-अण्] एक विश्वात्म रत्न जो समुद्रमन्थन के फलस्वरूप १३ अन्य रत्नों के साथ समुद्र से प्राप्त हुआ तथा जिसका विष्णु ने अपने बलमन्थल पर धारण किया हुआ है—सकीषुतुभं द्वैष्य-नीव कृष्यम् रघु० ६।८९, १०।१० । सम० लक्ष्मण—वसन्त (पु०)—हृष्य विष्णु के विशेषण ।

क्यू [म्या० वा० क्यते] 1 चू चू शब्द करना 2 डुबना 3 गीला होना ।

ककच [क इति कथति शब्दायते क+कच्+अच्] आगा । सम० ककच केतक वृक्ष पत्र सागौन वृक्ष, -वाग् (पु०)—पात्र छिपकनी ।

ककर [क इति कश्च कर्तुं शीलमस्य-क+कृ+अच्] 1 एक प्रकार का वीतर 2 आग 3 निर्धन व्यक्तित 4 रोग ।

कतु [कृ+कतु] 1 यज्ञ प्रतीरोधेण कलेन बुध्यताम्—रघु० ३।६५ 2 न अनुनामपविनमास स—३।३८,

भालवि० १४५, मनु० ७।७९ 2 विष्णु का विशेषण
3 दस प्रजापतियों में एक—भालवि० १।३५ 4 प्रजा,
बुद्धि 5 शक्ति, योग्यता। सम०—उत्सव-राजसूय
यज्ञ,—शुद्ध,—शिव् (पु०) राजस, पिशाच,—पशुविष्णु
(पु०) शिव का विशेषण (शिव ने ही दस के यज्ञ को
मष्ट किया था),—पशु: यज्ञ का अनुष्ठान,—पशु:
यज्ञोप धोडा,—पुष्कः विष्णु का विशेषण,—भृष् (पु०)
देवता, देव,—राष् (पु०) 1 यज्ञो का स्वामी—यथा-
स्वमेव कनुराद्—मनु० १।२६० 2 राजसूय यज्ञ।

कम् (भ्रा० पर०—कथति, कथित) कति पहुँचाना, चोट
पहुँचाना, मार डालना।

कम्बकेशिक (ब० व०) एक देव का नाम—अथेयवरेण
कम्बकेशिकानाम्—रघु० ५।३९ मनु० ५।२।

कम्बन्व [कम् + स्तुट्] वध हत्या।

कम्बकः [कम्बन् + कन्] ऊँट।

कम्बु (भ्रा० पर०—कम्बति, कम्बित) 1 चिल्लाना, रोना,
आसू बहाना—कि कम्बति बुराकन्द स्वपसवकारक
—पृष० ४।२९, कन्द्यत कुरुमपनस्ता नभोऽग्रम्
—बिक्रम० १।२, कम्बद विष्वा कुरतीव भूय—रघु०
१।५६८, १।५४२, मट्टि० ३।२८, ५।५ 2 पुकारना,
बधा की पुकार करना (कर्म० के साथ) कम्बत्वाविरत
सोऽथ आत्मानुमुतामय—माकं० (चुरा० पर० या
प्रेर०) 1 लगातार चिल्लाना 2 हलाना। अ—,
चिल्लाना, चीखना, बरसडाना, चीखार करना—गुणा-
दलनैस्तुहिनै पतङ्गिराकन्दतीवोषधिशीतकाल—ऋतु०
४।७, मट्टि० १।५।० 2 पुकार करना (प्रेर०)—
एष्टोहीति विसिधित्वा पटुतरै केकाभिराकम्बित—मृच्छ०
५।२३।

कम्बन्तु, कम्बन्तु [कम्बु + स्तुट्, क्त वा] 1 आर्तनाद,
रोना, विनय करना—शान्तासैति कम्बितमाकर्ष्य विषयण
—रघु० ९।७५ 2 पारस्परिक सलकार, चुनौती।

कम्बु (भ्रा० उभ०, दिवा० पर०—कामति—कमते, कामयति,
कामत) 1 चलना, पदार्पण करना, जाना—कामत्यनुदिते
सूर्ये शालो व्यपगतकम्—रामा०, यम्बमान न तेनासीद-
गत कामता पुर—मट्टि० ८।२, २५ 2 चले जाना,
पहुँचना (कर्म० के साथ)—देवा इमान् लोकानकमन्त-
गत० 3 जाना, पार करना, भरना—आना—सुख योजन-
पञ्चाशकमेयम्—रामा० 4 करना, छलाना मारना—कम्ब
बन्वन् क्रमितु सकोष (हरि)—मट्टि० २।९, ५।५१,
5 ऊपर जाना, बढ़ना 6 अधिकार में रखना, बध में
करना, अधिकार में लेना, भरना—कान्ता यथा शैतिलि
विस्मयेण—रघु० १।५।७ 7 आगे बढ़ना, आगे निकल
जाना—स्थित सर्वोन्मत्तोर्षी कान्ता मेहरिबाधना
—रघु० १।१४ 8 उत्तराधायित्व लेना, सप्रयास करना,
योग्य या ससम होना, शक्ति रिल्लकाना (सप्र० या

सुसम्पन्न के साथ)—व्याकरणाध्ययनाय कमते—सिद्धा०,
धर्माय कमते साधु—बोध० अत्युत्तिरावित्तकोषिधाधि
न रञ्जनाय कमते जहानाम्—विक्रमाक० १।१६, हत्वा
रक्षासि लविनुयक्रमीन्माशति पुन, अशोकवर्षिणोमेव
—मट्टि० ९।२८ 9 बढ़ना या विकसित होना, पूरा
होना मिलना, स्वच्छ होना (अधि० के साथ)—कल्पेयु
कमन्ते—दश० १७०, कमन्तेऽस्मिञ्छास्मानि—या—ऋतु
कमते बुद्धि—सिद्धा०, कर्ममाण्डोरिससधि—मट्टि० ८।
२२ 10 पूरा करना, निष्पन्न करना 11 मैथुन
करना, (पा० १।३।३८ कम्—आ० में 'सातत्व' विष्णो
का अभाव 'शक्ति या प्रयोग' विकास, बुद्धि तथा
'जीतना, पार पहुँचना' आदि अर्थ को प्रकट करती है)
अस्ति—, 1 पार करना, पार जाना—सतकञ्जान्तराध्य-
तिक्रम्य—का० ९२ 2 परे जाना, लाचना—मेष० ५७,
४० 3 बढ़ जाना, आगे निकल जाना—मनु० ८।१५१
4 उत्लम्बन करना, अतिक्रमण करना, आगे कदम
रखना—अतिक्रम्य सदाचारम्—का० १६० 5 अवहैलना
करना, पृथक् करना, उपेक्षा करना—प्रथितयथासा
प्रबन्धानतिक्रम्य—मालवि० १, कि वा परिजनमतिक्रम्य
सवान्सन्दिधु—मालवि० ४, या कथ अयेष्ठानतिक्रम्य
यवीयान् राज्यमहंति—महा० 6 मुजरना, (समय का)
बीतना—अतिक्रान्ते दशाहे—मनु० ५।७६, यथा यथा योष-
नमतिक्रमाम—का० ५९, अर्चि—, चडना, अच—, अवि-
कार करना, भरना, पहुँच करना—अप्याकम्बता वमति-
रमुनाप्याश्रमे सर्वभोग्ये—वा० २।१४ अमु—, 1 अनु-
गमन करना 2 आरम्भ करना 3 अन्तर्वस्तु देना,
अच—, एक के पश्चात् दूसरे के दर्शन करना, अच—,
छोड़ जाना, चले जाना, अस्ति—, 1 जाना, पहुँचना
प्रविष्ट होना—अभिचक्राम कामुत्सव शरभञ्जाश्रमप्रति-
रामा० 2 घूमना, भ्रमण करना 3 आक्रमण करना
अच—, बापित हटना आ—, 1 पहुँचना, को ओर
जाना 2 आक्रमण करना, दमन करना, जीतना, परास्त
करना—पक्षिशाककानाकम्प्य—हि० १, पौरस्त्यानेवमा-
कामन्—रघु० ४।३४, मनु० १।७० 3 भरना, प्रविष्ट
होना, अधिकार में करना—अ केशवोऽपर इशाकमितु
प्रवृत्—मृच्छ० ५।२।९।१२ 4 आरम्भ करना, शुरू
करना 5 उन्नत होना, उदय होना (आ०) भावत-
तापनिधिवाक्येते न भानु—रघु० ५।७१ 6 चडना,
सवारी करना, अधिकार में करना, उच—, 1 ऊपर
होना, परे जाना, उपर जाना—ऊर्ध्व शान्ताद्युक्तकामिति
—मनु० २।१२० 2 अवहैलना करना, उपेक्षा करना
—आर्ष प्रमाणमुत्कम्य धर्म न प्रतिपालयन्—महा०, धर्म-
मुत्कम्य 3 परे कदम रखना—रघु० १।५।३३, उच—,
1 की ओर जाना, पहुँचना 2 उपावा बीतना, आक-
मण करना 3 बर्ताव करना, धावा करना, (द्वै

की भाँति) चिकित्सा करना, स्वस्थ करना, 4 प्रेम करना, प्रेम से जीत लेना—सर्वैश्यायैक्यम् सौताम्—रामा० 5 अनुष्ठान करना, प्रधान करना 6 (आ) आरम्भ करना, शुरु करना—प्रथम वस्तुमुपक्रमेत् क—वि० २।७८, रघु० १।७३३, निम्—, 1 चले जाना, चल देना, बिबा होना 2 निकलना, प्रकाशित होना—भट्टि० ७।७१, परा—, (आ०) 1 साहस प्रदर्शित करना, शक्ति या शूरवीरता दिखाना, बहादुरी के साथ करना—वक्रवर्धनलयेदवाम् निहवन्च पराक्रमेत्—मनु० ७।१०६, भट्टि० ८।२२, १३ 2 बापिस मुठना 3 थड़ाई करना, आक्रमण करना, परि—, 1 इधर उधर घूमना, चक्कर लगाना—परिभ्रम्यावलोक्य च (नाटक) में 2 पकड़ लेना, ध—(आ०) 1 आरम्भ करना, शुरु करना—प्रचक्रमे च वनिकन्तुमुत्तरम्—रघु० ३।४७, २।१५, कु० ३।२ 2 कुचलना, ऊपर वर रस कर चलना—भट्टि० १।५२३ 3 जाना, प्रधान करना, प्रति—, बापिस जाना वि—(आ०) 1 में से चलना, विष्णुस्त्रेष्वा विचक्रमे—नीत पग स्वमे—भट्टि० ८।२४ 2 छापा मारना, पराजित करना, जीतना 3 फाटना, बोलना(पर०), ध्वनि—, 1 उल्लस्य काना 2 समय बिगाना, व्युद्—दे० जन्—, सम्—, 1 आना या एकत्र होना 2 पार जाना, पार करना, में से जाना 3 पहुँचना, जाना 4 पार चले जाना, स्थानान्तरण होना 5 दालिज हाना, प्रविष्ट होना—कालो ह्यय मर्काम्नु द्वितीये सुशोपकाराश्वममाथम ते—रघु० ५।१०, सप्ता—, 1 अधिकार करना, कब्जे में लेना, भगना समसंब सवाकान्त द्वय द्विरदायिता, नेत्र सिंहासन पिश्वामिन चारिपडम्बम् रघु० ४।४ 2 छापा मारना, जीतना, दमन करना

क [कम् + क्त] 1 कर्म, पग—त्रिविक्रम, सागर—लवणद्रेण कमेर्षकेन लम्बित—महा० 2 पैर 3 गरि, प्रथम, मार्ग, कर्म, कमेय दौगन, कमा, काल—कमेय उत्तरोत्तर, समय शाकर, भाष्यक, भाष्य का उलट जाना—रघु० ३।७, ३०, ३२४ प्रदर्शन, आरम्भ—द्वयमत्र विततकमे क्तो—वि० १।५३ 5 नियमित मार्ग, कर्म, श्रेणी, उत्तराधिकारिता, निमित्तनिमित्तिकयोग्य कर्म—श० ७।३० मनु० ७।२४, १।८५, २।७३, ३।६९ 6 प्रजापती, रीति—नेत्रकमेणोपचरोप सुयम्—रघु० ७।३९ 7 पसना, पकड़—कमपता पशो कम्पका—मा० ३।१६ 8 (दूसरे जन्तु पर आक्रमण करने से पूर्व की जानवर की) स्थिति 9 तैयारी, तत्परता—भट्टि० २।९ 10 व्यवसाय, माहसिक कार्य 11 कर्म या कार्य, कार्यविधि—कोऽप्येय कान्त कम्—अथय ४।३३ 12 वेदमन्त्रो को स्वस्व उच्चारण करने की विशेष रीति—कमपाठ 13 शक्ति,

सामर्थ्य,—मम् गारा। सम० अनुसार, अन्वयः, नियमित क्रम, समुचित व्यवस्था,—आगत, आयात (वि०) बसापरम्पराप्राप्त, आनुवंशिक, अथा प्रह की लवरोक्षा, धाय,—भा अनियमितता।
कमक (वि०) [कम् + क्त] कमबद्ध, पगालो के अनुसार,—क वर विधायी जो किसी नियमित पाठ्यक्रम का अध्ययन करता है।

कमण [कम् + क्त] 1 वृत् 2 घोडा मम् 1 कदम 2 पग रखना 3 आगे बढ़ना 4 उल्लस्य
कमल (अव०) [कम् + क्त] कमल, उत्तरोत्तर ।
कमसा (अव०) [कम् + क्त] 1 ठीक कर्म में, नियमित रूप में उत्तरोत्तर, क्रमानुसार 2 क्रम से, मात्रा के अनुसार रघु० १।२५७, मनु० १।६८, ३।१२
कमिक (वि०) [कम् + क्त] 1 उत्तरोत्तर, सिद्धसिले वर 2 वसापरम्परागत, पैनुक, आनुवंशिक ।
कम्, कम्क, [कम् + क्त, कन् च] सुगरी को पैड—आन्वा—दिताईकमुक समुदात्—शि० ३।८१, विक्रमाक० १।१८८ ।

कमेल, कमेलक [कम् + क्त + अच्, कन् च] ऊँट—निरीक्षते केलियत प्रविश्य कमेलक कष्टक—जालमेव विक्रमाक० १।२९, वि० १।२।८, नै० ६।२०४ ।

क [क् + अच्] खरीदना, माठ लेना। सम०—आरोह मशी, मेल,—क्रेत (वि०) माल लिया हुआ,—लेख्य—वैनामा, विक्रानामा, दानपत्र (गृह क्षेत्रादिक कीवा तुल्यम्याश्रमन्वितम्, पत्र कारयते यत्तु क्य—लेख्य तदुच्यते—बृहस्पति)।—विक्रयो (डि० व०) व्यापार, व्यवसाय, खरीद—फरोकन मनु० ८।५ ७।२७,—विक्रयिक व्यापारी सोदाहर ।
क्यणम् [क् + क्त] खरीदना, माल लेना ।

कयिक [क्त + क्त] 1 व्यापारी, मीदागर 2 क्रेता, माल लेने वाला ।

कय (वि०) [क् + क्त, वि०] मशी में विक्रय के लिए रखी हुई वस्तु, विक्रात (वि०) 'कय', जिसका अर्थ है 'माल लिये जाने के उपयुक्त' ।

कयम् [कल् + यत्, रथ्य ल] कच्चा मांस, मुरदार (पशु वा लाश) —स्वपुटयानमपि कयमव्यग्रमति—मा० ५।१६ । सम०—अह—अह, भुङ् (वि०) कच्चा मांस खाने वाला, मनु० ५।१३१, (पु०) 1 खेर, पीता आदि मामभक्षी जन्तु, उत्तर० १।४९ 2 राक्षस, पिशाच—रघु० १।५३६ ।

कश्मिन् (पु०) [क् + इमनिच्] पतलापन, कृशता, दुबलापतलापन ।

काकाविक्र [क्कच + क्त] आराकत ।

काल (वि०) [नम + क्त] गया हुआ, आरपार गया हुआ

(प्र० क० क०), -तः 1 घोडा 2 पैर, पग । सम०
दक्षिण (वि०) संबंध ।

कान्ति (स्त्री०) [कम् + क्तिन्] 1 गति, प्रगमन
2 कदम, पग 3 आगे बढ़ने वाला 4 आक्रमण करने
वाला, अभिभूत करने वाला 5 नक्षत्र की कोणीय
दूरी 6 कानिबलय, सूर्य का भ्रमण मार्ग । सम०
कक्ष, मण्डलम्, भूतम्, सूर्य का भ्रमण
- पातः बहु विदुः ज्ञाते कानिबलय इत्युक्तं देखा से
मिलता है, बलय 1 सूर्य का भ्रमण मार्ग 2 उष्ण
कटिबंधीय क्षेत्र, उष्ण कटिबंध ।

काव (वि०) क. [का + वृन् क् + ठक्] 1 फेता,
खरोददार 2 व्यापारी, सौदागर ।

कवि [कम् + इन्, इवम्] 1 कौडा 2 कौट-दं० कृमि ।
सम० -अम् अंग की लकड़ी, शैल बाँधी ।

क्रिया [कृ - श. गिद् आदेश. इवद्] 1 करना, कार्या-
न्विति, कार्य-सम्पादन, निष्पादन करना, उपचार,
धर्म—प्रत्युक्त हि प्रणयितुं सनाभिमताधिक्यैव
मेष० ११४ 2 कर्म, कृत्य, व्यवसाय, जिम्मेदारी
प्रणयिक्रिया-विक्रम० ११५, मनु० २१४ 3 चेष्टा,
शास्त्रिक चेष्टा, धर्म 4 अध्यापन, शिक्षण क्रिया
हि वस्तुप्रतिज्ञा प्रसोदति रथ० ३१२ 5 (न्य
गायन आदि), किसी कर्मा पर आधिपत्य, ज्ञान
निष्ठा क्रिया कर्मचिदात्मसम्पत्ता मालवि० ११६
6 आचरण (विप० शास्त्र-सिद्धान्त) 7 साहित्यिक
रचना शुभल मनोभिरवर्तिते क्रियाभिना कालिदास-
स्य विक्रम० ११० कानिन्दामस्य क्रियाया कृप
पण्यदो बहुमान मालवि० १ 8 सुद्धि-सत्कार,
धार्मिक सम्कार 9 प्रायश्चित्तस्वरूप सत्कार,
प्रायश्चित्त 10 (क) श्राद्ध (स) और्ध्वदेहिक
सम्कार 11 पूजन 12 औषधोपचार, चिकित्सा-प्रयोग,
उन्माज -शांतिक्रिया मालवि० ६, शौचक उपचार
13 (आ० में) क्रिया के द्वारा अभिहित कर्म
14 चेष्टा या कर्म 15 विशेषतः वैयर्थिक दण्ड में
प्रतिपादित मात इत्यो में से एक दे० कर्मन्
16 (विधि में) साक्षादिक मानबसाधनो से तथा
अन्य परोक्षोद्देशो द्वारा अभियोग की छानबीन करना
17 प्रयाण-भार । सम० अन्वित (वि०) शास्त्रोक्त
संस्कारों को करने वाला, अर्थव्ययः 1 किसी कार्य की
संपूर्ति या इतिथी, कार्यसम्पन्नता—क्रियापर्यवेषुन्वीवि-
सत्तुं कृता कि० ११४ 2 कर्मकाण्ड से मन्त्रित,
छुटकारा, -अभ्युपगम विशेष प्रकार का करार या
प्रतिज्ञा-पत्र, - क्रियाभ्युपगमात्चेतन्वी चोर्वाचं यत्प्रदीयते
- मनु० ११५३, अर्थव्यय (वि०) यथाहो के यथान
के कारण मुकदमा हार जाने वाला व्यक्ति, - इन्द्रियवृ
दे० 'कर्मोद्भव', -कृत्याः 1 हिन्दु-धर्मशास्त्र द्वारा

बिहित समस्त कार्य 2 किसी व्यवसाय के समस्त
विवरण, -कारः 1 अभिकर्ता, कार्यकर्ता 2 शिक्षारथ
करने वाला, नौसिलिया, नवभ्रंशत्र 3 इकरारनामा,
प्रतिज्ञापत्र, - देहिन् (पु०) (पौष प्रकार के साधियों
में से एक) बहु मासों जिसका साक्ष्य परलगतपूर्ण हो,
- निवेश, गवाही, साक्ष्य, - षट् (वि०) कार्यवश,
यथाः औषधोपचार की रीति, यद्यत् क्रियावाचक
शब्द, पर (वि०) अपने कर्मव्य-मालन में परिश्रम
शाल, पादः अभियं. क्ता या पादो के द्वारा अपने दाँते
को पुष्टि में दिए गये प्रमाण, दस्तावेज तथा गवाहियों
आदि जो कानूनी अभियोग का तीमरा अंग हैं, - योगः
1 क्रिया के साथ सबब 2 तुल्योच और सामनो का
प्रयोग, लोष आवश्यक धार्मिक अनुष्ठानों का परि-
त्याग, त्रिशालापान् वृषल्लव गताः - मनु० १०४३,

बल आवश्यकता, क्रियाजो का अवश्यभावी प्रभाव,
बाधक, बाधित् (वि०) कर्म की प्रकट करने
वाला, क्रिया में बना सजा बाध, - बाधित् (पु०)
बादी, अभियं. क्ता, बिधि कार्य करने का नियम,
किसी धर्मकृत्य को सम्पन्न करने की रीति—मनु०
११२००, विशेषणम् 1 क्रिया की विशेषता प्रकट
करने वाला शब्द 2 विषय विशेषण, सकारिण
(स्त्री०) दूसरों को ज्ञान देना, अध्यापन— मालवि०
११९ सर्वाभिहार, किसी कार्य को आवृत्ति ।

क्रियावत् (वि०) [क्रिया + वृत्] कर्म में प्रवृत्त, किसी
कार्य के व्यवहार को जानने वाला—यस्तु क्रियावान्
पुरुष म विद्वान् हि० ११६ १ ।

क्रो (क्रया० उभ०) क्रोधाति, क्रोडोति, क्रोत । 1 खरोदना
मौल लेना, -महता पुण्यपथेन कतेय कायनीस्त्वया
शा० ३१९, क्रोणीय प्रज्जोविनेव पण्यम्यत्र
वेदस्ति तदस्तु पुण्यम्—नै० ३१०८ ८८, पच० ११३
मनु० ११७४ 2 विनिमय, बदल, बदलो—कृच्छ्रसह-
स्रैर्वर्णायायैक क्रोधाति पश्चित्- महा०, आ—
खरोदना, निष्, कुछ देकर पिड सुदाना, दास देकर
फिर से खरीद लेना, निस्तार करना, परि—, (आ०)
1 मौल लेना—सर्वांगाय परिक्रान् कर्तास्मि तव मात्रि-
यम् भट्टि० ८१०२ 2 किराये पर लेना, कुछ समय
के लिए मौल लेना (निर्धारित मूल्य में करण० तथा
सम्प्र० के साथ)—सतेन शताय वा परिक्रते सिद्धा०
3 वापिस करना, बदला देना, चुकाना—कृतेनोपकृत
वायो परिक्रानामन्वितम्—भट्टि० ८१८, वि—,
1 बेचना (इस अर्थ में आ०) गवां सतसहस्रेण
विक्रीणीषे सुत यधि—रामा०, विक्रीणीत तिलान् शुद्धान्
—मनु० १०१०, ८१९७, २२२, शा० ११२
2 विनिमय, बदलावदली—ताकस्माच्छिष्यलीभाता
विक्रीणाति तिलैस्तिक्तान्—यच० २१५५ ।

कीर् (म्भा० पर०) - कीर्ति, कीर्तित 1 खेलना, मनोरंजन करना -बानरा कीर्तियुगारम्भा -पृ० १, एव कीर्ति कृपयन्त्रघटिकाभाष्यप्रसक्तो विधि -मू० ७७ १०५१ 2 गुजा खेलना, पागो से खेलना -बहुविध पूत कीर्त -मू० ७७ २, गाले कीर्तेकदाधि -मनु० ४७४, याज्ञ० ११२८ 3 हँसो दिल्ली करना, मजाक करना, खिलो उडाना-सद्वृत्तस्तनमण्डलस्तव-कथ प्रार्थमं कीर्तित-गीत० ३, कीर्तियाम तावदेतया -विष्णु० ३, एवभाषापहल्ले कीर्तित पतिनोर्जयमि -हि० २१३, पृ० ११८७, मू० ३, अनु - (आ०) खेलना, किलो करना, जो बहलना -साधनुकीर्तयानानि पय कृ-दानि पसियाम् -भट्टि० ८१०, आ०, परि०, सन् (आ०) खेलना, कौमुक करना-सकीर्तने मनिविषय कया मेघ० ७०, परन्तु सन् पूर्वक कीर् (पर०) कोलाहल करने के लक्ष को प्रकट करना है-सकीर्तित शकटानि-महा-पात्रियां बू-युं करोमि है ।

कीड [कीड + क्त] 1 किलो, मनबहलान, खेल, आमोद 2 हसी किलना, मजाक ।

कीडनम् [कीड + क्त] 1 खेलना, किलो करना 2 खेलने की चीज, खिलोना ।

कीडक-कम्, **कीडनीयम्**-यकम् [कीडन + क्त, कीड + अनोयर्, कीडनीय + क्त] खेलने की चीज, खिलोना ।

कीडा [कीड + अ + टप्] 1 किलान, जो बहलाना, खेलना, आमोद-सोपकीर्तयानववनिम्नानिनिर्मेरुद्वि -मेष० ३३६१ 2 हसी, दिल्लो । मय० गृहम् आमोद भवन, शील आमोद निवाय का काम देने वाला एक बनावटी पहाड, आभादगिरि, -कीडाशाल कनकक-लौकेन्दनप्रलगीय -मेष० ७७, भारी डेया, -कीड शब्द का कीड -अमर १२, -यूर मनोरंजन के लिए वाला गया मोर -रघु० १६१६, -रत्नम् कामकमि, मेषु ।

कील (वि०) [की + क्त] मोल लिया हुआ -दे० की०, ल हिलुधुमंसायने प्रनियानि १२ प्रकार के पुषो मे से एक, अपने नैसर्गिक याना पित्त मे मोल लिया हुआ पुत्र -कीलय ताव्या विकीत याज्ञ० २१३३, मनु० १७४। मय० अयुषाय किमी बन्धु की माय लेकर पछलाना, किने का निराकरण करना, बगैरी हुई बन्धु को बापिन करना (कुछ सारी में धर्मयात्रा के अनुभवि) ।

कीञ्च (पु०) कञ्च [कञ्च + क्तिञ्च अच् वा] कलकुकुटो, बयला ।

कीच (दिवा० पर०) कचानि, कुट्ट गुस्से डाना (कोच के पास मे मय०) हृष्ये कृपयति, कमी कमी 'उपनि' प्रति

आदि शब्दों के जो साथ-बापायति स कृद्ध, न मा प्रति कुट्टो गृह, प्रति, बदल मे कुपित होना कृपयन्त न प्रतिक्रियेन् -मनु० ६४८, सम्, कुपित होना -सकृपयति म्या कि व दिक्षु मा मृषसये -भट्टि० ८१७ ।

कुम् (स्त्री०) [कुम् + क्तिञ्च] घोष, कोप ।

कुम् (म्भा० पर०) क्रोशानि, कुट्ट 1 बिल्लाना, रोना, बिलाप करना, शोक मनाना -काशयन्मन् कृपयिष्य भट्टि० ६१२४ 2 चीखना, किलकिलाना कृका देना बोलाप करना, पुकारना-अनीच सुकोम जीवनाय नयास च -भट्टि० १४३१, अनु, दया करना, कल्या करना, अमि, बिलाप करना, आ - 1 बिल्लाना, जोर मे पुकारना-अये गौरीनाथ निपुन-हृ प्रमोदो विषयत प्रमोदयाकायान् भृगु० २१२३ 2 लरोमोटो मुनाना, गालियां देना जन ब्राह्मणमा-कृष्य क्षत्रियो दृश्यमहेति मनु० ८१७७, भट्टि० ५१ ३२, परि, बिलाप करना, प्रत्या गाली के उत्तर मे गाली देना, बि, 1 चीखना बिल्लाना -आक्रोश विकोम लपायिष्यम् मू० १४१, भट्टि० १४४ ४२, १६३२ 2 उच्चारण करना (कर्म के साथ) 3 पुकारना (कर्म के साथ) 4 गबना, ध्या -बिलाप करना, शोक मनाना ।

कुट्ट (वि०) [कुम् + क्त] 1 बिल्लाना हुआ 2 पुकारा हुआ शब्द बिल्लाना, चीखना गना ।

कूर (वि०) [कृत + क्त घातो कृ] 1 निर्दय, निटुर, कठोर-हृदय, निष्कलण-नमशाभिकममशर कल्पिन कुरनिष्कया मू० १२४६, मेष० १०५, मनु० १०१९ 2 कठोर, कडा 3 दालण, भयकर, भीषण 4 नागकारी, अविष्ट-कर 5 पायल, चाट लाया हुआ 6 लुनी 7 कच्चा 8 मजबूत 9 मग, पत्र, अलिकर-मनु० २१३३, -र बाज, बयला, -रम् 1 घाव 2 हत्या, क्रुता 3 भीषण कृत्य । मय० आकृति (वि०) टगवनी सूत्र वाला (ति) रावण का विशेषण, -आधार (वि०) कूर और वरुण आचरण करने वाला, -आशय (वि०) 1 अमानक जीवजन्तुना मे भगा हुआ (जैसे कि कोई नदी) 2 कूर स्वभाव का, कम्प (नपु०) 1 रक्तरजित कान्त 2 बटोर थम, -कृत् (वि०) भीषण, कूर, निर्मेय, कीष्ट (वि०) कडे काठे वाला जिम पर मनु विरे-चन का अणर न हो, गत्य लक्ष्यक, कृष् (वि०) 1 बुरी दृष्टि वाला, कुदृष्टि डालने वाला 2 लल, कुट्ट, राषिन् (पु०) पहाड़ी कौवा, -लोकनः पानिपह का विशेषण ।

कुम् (पु०) [की + क्त] फेरा, लरोददार, -याज्ञ० २१६८ ।

कीञ्च [कृञ्च + अच्, वा० गुण] एक पहाड का नाम, दे० 'कीञ्च' ।

क्रोडः [क्रु + घञ्] 1 मुखर 2 वृक्ष की खाँडर, गडा -हाहा हल तथापि जन्मवित्तिकाँडे भनी थाबनि-उज्जुट 3 मोना, वक्ष स्थल, छाती, **क्रोडो** छाती म लगाना भर्तुं ० २१२५ 4 किमी वस्तु का मध्यभाग विक्र-माकं ११।७५-दे० 'क्रोड' (नपु०) 5 शनिग्रह का विशेषण, इमं-डा 1 छाती, मोना, कन्धो के बीच का भाग 2 किमी वस्तु का मध्यवर्ती भाग, गडा, कोटर । सम०-अडक, -अडमि, -पाव कछुवा, -पत्रम् 1 प्रान्तवर्ती लेख 2 पत्र का पत्रलेख 3 सम्पूर्ण 4 बसीयतनामे का परवर्ती उत्तराधिकार-पत्र ।

क्रोडोकरणम् [क्रोड् + कृ + लृट्] आलिंगन करना, छाती में लगाना ।

क्रोडीमुख [क्रोडया मुखमिव मुखमस्या व० म०] गेडा ।

क्रोध [क्रु + घञ्] 1 कोप, यस्मा वाचाक्रोपोऽभिजा-यते भग० २।६०, इसी प्रकार क्रोधाप्य, क्रोधानल 2 (सा० दा० मे) क्रोध एक प्रकार की भावना है जिससे रौद्ररूप का उदय होता है । सम० उखिलत (वि०) क्रोध में मग्न, शांत, स्वयं, **मूर्च्छित** (वि०) क्रोध में अभिभूत या काश्चनांत ।

क्रोधन (वि०) [क्रु + ण्यट्] गुस्से में भग्न हुआ क्रोधा-विट, बूढ़, चिडाँचडा यदागम कृत तदेव कुच्छे होनायति क्रोधन वेणी० ३।३१, नम् कुड होना, कोप ।

क्रोधात् (वि०) [क्रु + आन्] क्रोधावित्त, चिडचिडा, गुस्सेल ।

क्रोध [क्रु + घञ्] 1 चिल्लाना, चींग, चीन्कार, कृपा देना, कोनाहल 2 चौधारी पावन, एक कोप-क्रोशाधं प्रकृतिपुर मरण गन्वा रघु० १३।७९, समुद्रात्पुरी क्रोशो वा-चाशयो । सम०-सात्, ध्वनि एक बडा होल ।

क्रोशन (वि०) [क्रु + ण्यट्] चिल्लाने वाला, नम् चींग चिल्लाहाट ।

क्रोष्टु (पु०) (स्त्री०) **ष्ट्री** [क्रु + तुन्] गौरव (इन शब्द की रूप चना में यह शब्द सर्वनाम स्थान में अनिवाचन क्रोष्टु बन जाता है, तथा अव्यय क्रोष्टु, एवं शरादि' में द्वि० तथा पच्छी ब० व० को छोडकर सर्वत्र विकल्पे) ।

क्रोड्य [क्रु + अण्] बलकुशुटी, कुररी, बगला-मनोहर-क्रोडनिर्नादनानि सीमान्तगण्युक्तयनि वेत - ऋनु० ४।८, मनु० १२।६४ 2 एक पर्वत का नाम (कहते हैं कि यह पहाड हिमालय का पीठा है, तथा कार्तिकेय एव परशुराम ने इसे बीच दिया है) -हमदार भृगु-पतिपशोवर्गं यन्क्रोडरगधम् मेघ० ५७ । सम० **अध्वनम्** कमलडडो के रेते, **अराति**, -अरिः, -रिपुः 1 कार्तिकेय का विशेषण 2 परशुराम का विशेषण ४०

- **वारण**, **सुवन** 1 कार्तिकेय जी 2 परशुराम के विशेषण ।

क्रोधम् [क्रु + ष्यञ्] क्रूरता, कठोरहृदयता ।

बलम् (स्वा० पर०- क्लन्दति, क्लन्दित) 1 पुकारना, चिल्लाना 2 रोना, शिकाप करना, (स्वा० आ० - क्लन्दते या क्लन्दते) घबडा जाना ।

बलम् (स्वा०-दिवा०, पर०-कलामति, कलाम्यति, कलात्) एक जाना, एक कर चूर होना, अव्यग्र होना- न चकलाम न विव्यधे भट्टि० ५।१००, १।१०१, बि-, एक जाना ।

बलम्, **बलम्** [बलम् + घञ्, अथक् वा] बकावट, कलाति अवसाद विनादितदिनबलमा क्लृप्तवत्स्र जाम्बूनदं - सि० ६।६६, मनु० ७।१५१, प्र० ३।०१ ।

बलात् (वि०) [बलम् + क्त] 1 बका हुआ, एक कर चूर हुआ, -तमालचकलान्म-रघु० २।१३, मेघ० १८, ३६, विक्रम० २।२० 2 मुर्दाया हुआ, म्लान- कलान्तो मन्मथलेख एष नलिनीपत्रे नल्लंगमित -म० ३।३६, रघु० १।४८ 3 दुबला-पतला ।

बलान्ति (स्त्री०) [बलम् + क्तिन्] बकावट । सम०-**छिद** (वि०) बकावट दूर करने वाला, बलदायक ।

बिल्व (दिवा० पर०- बिल्वति, बिल्व) गीला होना, आर्द्र होना, तर होना-प्रे० तर करना, गीला करना न चैन क्लेदयन्त्याप - भग० २।०३, भट्टि० १८। ११ ।

बिल्व (वि०) [बिल्व् + क्त] गीला, तर । सम०- **अल** (वि०) चीपियाई जीवा वाला ।

बिल्वः (दिवा० आ० (बुष्ट के मत में) पर०, क्लिषयते क्लिष्ट, क्लिषित) 1 दुखी होना, पीडित होना, कष्ट उठाना-अप्यपदेशाग्रहण नानिक्लिषते व शिष्या मालवि० ? त्रय परार्थे बिल्वयति साक्षिण प्रणिभ कुलम् मनु० ८।१६९ 2 दुख देना, सताया, ॥ (क्रया० पर०-क्लिष्यति, क्लिष्ट, क्लिषित) दुःख देना, पीडित करना, सताना, कष्ट देना, -क्लिष्यति लब्धपरिपालनवृत्तिरेव -श० ५।६, एव-माराध्यमानोऽपि क्लिष्यति सुवनचषम्-कु० २।४०, रघु० ११।५८ ।

बिल्वित, बिल्वट (वि०) [बिल्व् + क्त] 1 दुखी, पीडित, सकट ग्रस्त 2 कष्टग्रस्त, सताया हुआ 3 मुर्दाया हुआ 4 असगत, विगोची उदा० माता मे बन्ध्या 5 परिष्कृत, कृत्रिम (रचना आदि) 6 लज्जित ।

बिल्वितः (स्त्री०) [बिल्व् + क्तिन्] 1 कष्ट बेदना, दुःख, पीडा 2 सेवा ।

बली (ब) (वि०) [बली (ब) + क्त] 1 हिनडा नपु-सक, बंधिया किया हुआ-मनु० ३।१५०, ४।२०५, याज्ञ० १।२२३ 2 पुत्रघाथीनि, गिर, दुबल, दुबलमना

- २५० ८८४, कबीरान् पालयिता मूच्छ० ९१५
- ३ कायर 4 तोच अथम 5 मुलन 6 नपुनक लिय का,
—ब, बन् (—ब, बन्) 1 नामद, हिजरा, न
मुच फेरिल मय विष्ठा चान्द्र नियमजति, मेरु चाल्माव-
शुक्राम्या हीन कबीर म उच्यते -दायभाग म उद्धृत
काव्यायन 2 नपुनक लिय ।

बनेद [विलम् + घञ्] गीलायन, आरंभना, तूरी, नमो
—सा० ११२९, २५० ७२१ 2 बहने वाला, घाब से
निकलने वाला मखाद 3 दुःख, कष्ट २५० १५१३०,
(= उपद्रव, मलिन०) ।

बनेश [विलम् + घञ्] पीडा, बेचना, कष्ट, दुःख तक-
लीष्ट—किमागमा कनेशस्य पदमुपनीत—सा० १, कनेश
कलेन हि पुनरुक्ता विधाने कु० ५८६, भग० १२५
2 मुस्ता, क्रोध 3 सामागिक कामकाज । नम० क्षम
(वि०) कष्ट सहने में समर्थ ।

बनस्यं (बन्ध) [क्लृब (ब) + घञ्] 1 नामदीं (सा०)
-बर बन्धस्य पद्म न व परकलत्रानियमनम् पच० १
2 पुरुषार्थहीनता, मोक्षा, कायना-कनीया मयम नम
पाच -मय० २१३ 3 अत्युपकृता, नामदीं, शक्ति-
हीनता २५० १२८६ ।

बनोषम् [बन् + मतिन] रोकेडे ।

बन् (बन्ध०) [किम् + अन्, कु आदेश] 1 विवर, कर्त
-बन् नेत्रोपयोग्य पन्ना बन् च नु पदना कौमुद्वग्या
—उत्तर० ६१३३, बन् -बन् (बन् किमी ममान वाक्य
वच में प्रयुक्त जाना है तो इसका अर्थ ? 'भारो
जन' 'अपगत' बन् मत्रा हृदयप्रमाथिनी बन् व ने
विश्वमनोपवायुधम्—मालवि० ३१२, बन् सुयंप्रभरो बज
बन् चाल्पविषया मति २५० ११२, कि० ११६, म०
२१८ 2 कभी कभी 'बन्' का प्रयोग किम् शब्द के
अर्थ का होता है बन् प्रदेसे अर्थात् बन्मिन प्रदेसे
(क) -अपि 1 बहो, किमी जगह 2 कभीकभी (स्), -चित्
1 कुठ म्वायो पर प्रसिन्ना क्वचिदिदमदोफलिपर
नूत्नल एकोपला सा० १११६, ऋतु० ११२, २५०
११४ 2 कुठ बातों में -बन्चित् वाचन् बन्चिन्
पाचरोत्थं, बन्चित् बन्चित् (क) एक जगह—दूसरी
जगह, यहाँ-वहाँ -बन्चिद्वीणावाच बन्चिदिप व हा
हेति हस्तिनम् -भट्ट० ३११०५ ११६, (ख) कभी-कभी
(समय सूत्रक) बन्चिदिपया मयनेते मुरगाम्, बन्चिन्
घनाना पलता बन्चिच्च २५० १३१९९ ।

बन्ध० (म्वा० पर० - स्वधनि, स्वगित) 1 अस्पष्ट वाक्य
करना, इनशान शब्द, टटन शब्द इति घोषपल्लोष
विशिष्ट करिषो हस्तिनपकाहूत बन्धन-हि० २१८६,
बन्धनमिपुनुरी -अथ २८, ऋतु० ३१३६, मेघ० ३६
2 भिनाभिनाता, (भारी का) पुजन, अस्पष्ट वाक्य
—कु० ११५४, उत्तर० ३१२४, मट्टि० ९८८४ ।

बन्धन०, स्वगणनम्, स्वगित, बन्धण [बन्ध + अन्, स्पृष्ट क्त,
घञ्, वा] 1 साधन्य शब्द 2 किमी भी वाद्ययन्त्र
को ध्वनि ।

बन्धन्य (वि०) [बन् + ल्यप्] किम् म्वात में मयध गन्धे
वाला, बड़ा पर हीन वाला ।

बन्धन्य (म्वा० पर० - स्वधनि, स्वगित) 1 उशालता, काडी
बनाना 2 पचाना ।

बन्धन्य [बन्ध + अच्, घञ्, वा] काडा, लगानार घदी अंच
में नैवार किया गया घोप ।

बन्धन्य (वि०) [म्वा० -रको] अकम्मान् घटित,
विरल, अमाचारण, इति बन्धन्यक पाठ ।

बन्ध [सि + ड] 1 नाथ 2 अल्पधनि, हानि 3 बिजली
4 खेन 5 किमान 6 विष्णु का नगमिशवतार
7 राक्षस ।

बन्धु (न्) (ना० उभ० - लघोति, लघुत्, क्त्वा) 1 चोट
पहुचाना, धनि पहुचाना दमा हृदि व्यापनयानमध-
पान्-कु० ५१५४ 2 ताडना, टुकटें ३ काना—(पुन)
व किमानमिन पूर्व म्वाणो—२५० १११०२, उच-
वि- उमो अर्थ में प्रयोग वा क्षण वा मृत् अर्थ है ।

बन्धु, बन्धु [बन्धु + अच्] 1 लमहा, निमय, एक बैंकड
म ४१५ भाग के बजाकर मयव को माप क्षणमात्र-
मृष्टिन्मम्मी मुपदीन इव हृद २५० ११७३, २१६०,
मेघ० २६, क्षणमर्निगन्धन् कुष्ठ देश उहगा 2 अ-
काय—अहमपि लब्धक्षण म्बेवह मन्त्रासि मालवि०
१, मृतीन क्षण सा० २, मेरा अवकाश आर्षके मुपुदे
है अर्थात् आपका वार्ग कर देने का मैं आपको वचन
देना है 3 उपयुक्त क्षण या अवसर नहीं माम्नि क्षणो
नाम्नि नाम्नि प्राथयिना नर—पच० ११२२८ मेघ०
६२, अचिनाक्षण—दशा० १६७ 4 उन्मय, हर्ष, लृशी
5 आश्रय, दामना 6 केन्द्र, मध्यमाना । मय० अन्तरे
(अव्य०) दूरमें क्षण, कुठ देश के परचान्, क्षण,
क्षणिक विलम्ब, इ ज्योतिषी (—क्ष्म) पानी (—वा)
1 रात—क्षणादयेष क्षणादापनिप्रम न० ११६७, २५०
८१०८, १६४५, मि० ३१५३ 2 हल्दी 'कर पति
चोद, मि० ९७०, 'बर रात में घूमने वाला, गहस,
—सायुल्लव प्रमुरपि क्षणादावराणां—२५० १३७५,
'आलम्ब्य राति में अंधान, रतोषी, —दृष्टि (म्वा०)
- प्रकाशा, -प्रभा विजर्ज, -निश्वासा शिवक, -अहमुर
(वि०) क्षणस्वारी, बन्ध, नन्दर हि० ४११३०
- मात्स्य (अव्य०) क्षणभर के लिय, राभिन् (पु०)
कन्नर - विष्वाहित् (वि०) क्षणभर में नष्ट होने
वाला (पु०) नास्तिक दार्शनिकों का सङ्गदाय जो यह
मानता है कि प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ प्रतिक्षण नष्ट
होकर नया बनता रहता है ।

बन्धु [बन्धु + बन्धु] घाब, कोडा ।

क्षणम् [क्षन् + ल्युट्] क्षति पशुना, मार डालना, क्षायक करना ।

क्षणिक (वि०) [क्षण + क्तन्] क्षणस्थायी, अचिरस्थायी
—क्षणेषु क्षणिकसमागमोत्पत्तिश्च—रघु० ८।१२, एक-
स्य क्षणिका प्रीतिः—हि० १।६६,—का विजली ।

क्षणिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [क्षण + इनि] १. अन्वकाश
रखने वाला २ क्षणस्थायी,—स्त्री विजली ।

क्षत (वि०) [क्षच् + क्त] घायक, चोट लगा हुआ, क्षति-
ग्रस्त, काटा हुआ, फाटा हुआ, खीरा हुआ, तोड़ा हुआ,
—वे० अच्—रक्तप्रसाधितमुख क्षतविषहायच—वेणी०
१।७, रघु० १।२८, २।५६, ३।५३,—सम् १ क्षतोच
२ घाय, चोट, क्षति—क्षते क्षारमिवासाह जात तत्सर्वं
दर्शनम्—उत्तर० ४।७, क्षार क्षते प्रक्षिपन्—मण्ड०
५।१८ ३ भय, बिनाश, क्षतरा—क्षतात् किल शयत
हृद्यद्वय—रघु० २।५३। सम०—अरि (वि०)
विजयी, उबरम् पेशिषा,—कास. आघात से उत्पन्न
क्षती,—अम् १ अरि—स हिंस्रमूल क्षतजेने रेणु
—रघु० ७।५३, वेणी० २।२७ २ पीप, मवाद,—योनि-
(स्त्री०) अष्ट स्त्री, बहु स्त्री जिसका कीर्मान् भय
हो चुका हो,—विश्वत (वि०) विश्वताप, जिसका
गरीर बहुत अग्रह से कट गया हो, तथा पाशो से
भरा हो,—पुत्रि (स्त्री०) दरिद्रता, जीविका के
साधनों से अचिन्,—अतः बहु विचार्यो जिसने अपनी
धार्मिक प्रतिज्ञा या व्रत भंग कर दिया हो ।

क्षति (स्त्री०) [क्षच् + क्तित्] १ चोट, घाय २ नाम,
काट, फाड़—विश्वस्य क्षित्या बराहृत्ततिम् भूस्ताक्षति
पत्सन्ने—शं० २।६ ३ (आल०) बर्बादी, हानि,
नुकसान—मुख सजायते तेभ्य सर्वेभ्योऽपीति का
क्षति सां० ६० १७ ४ हास, शय, न्यूनता—प्रताप-
क्षतिशीतला कु० २।२४, हि० १।११४ ।

क्षत् (पु०) [क्षद् + क्तृच्] १ जो कान्ठे और कपरेका छोड़ने
का काम करता है—(मूर्तिकार या सभतराश) २ परि-
चारक, द्वाग्पाल ३ कीचवान, सारथि ४ शूद्रपिता
तथा क्षत्रिय माता से उत्पन्न भतान—भृ० मनु० १०।९
५ दासी का पुत्र (उदा० विदुर ६ बहूया, ७ मच्छली ।

क्षत्र, यच् [क्षन् + क्तिच् = अत्, तत् प्रायते षे + क]
१ क्षत्रिय, क्षत्रिय, प्रभुता, सामर्थ्य २ क्षत्रिय जाति
का पुत्र्य—क्षतात्किल प्रायत ह्यव्युद्वर क्षत्रस्य शब्दो
मुबनेय ऋद्—रघु० २।५३, १।६६, ७।१—अपशय
क्षत्रपरिग्रहसमा शं० १।२१, मनु० १।३२२२। सम०
—अन्वकाः परशुराम का विशेषण,—अर्धः १ बहादुरी,
सैनिक शूरवीरता २ क्षत्रिय के कर्तव्य,—यः राज्यपाल,
उपशासक,—अन्वः १ क्षत्रिय जाति का पुत्र्य—मनु०
२।३८ २ क्षत्रिय भाव, अपक्षत्रिय, वृणित या निकम्मा
क्षत्रिय, तु० अह्वयं ।

क्षत्रियः [क्षत्रे राष्ट्रं क्षाप्त् तस्यापत्य जातो वा य तारा०]
दूसरे वर्ण या सैनिक जाति का पुत्र्य—ब्राह्मण क्षत्रियो
वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातय - मनु० १०।४। सम०
—हृषः परशुराम का विशेषण ।

क्षत्रियका, क्षत्रिया, क्षत्रियिका [क्षत्रिया + कन् + टाप्,
ह्रस्व -क्षत्रिय + टाप् -क्षत्रिया + कन् + टाप् इत्यम्
वा] क्षत्रिय जाति की स्त्री ।

क्षत्रियाणी [क्षत्रिय + ङीप्, जानुक्] १ क्षत्रिय जाति की
स्त्री २ क्षत्रिय की पत्नी ।

क्षत्रियो [क्षत्रिय + ङीप्] क्षत्रिय की पत्नी ।

क्षन्तु (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [क्षम् + क्तृच्] प्रधान,
सहिष्णु, विनम्र ।

क्षप् (म्वा०—अपति—ते, क्षपित) उपवास करना, मन्त्री
होना—मनु० ५।६९, (प्रेर० या चुरा० उभ०—अप-
यति ते, क्षपित) १ कंकना, भोजना, डालना
२ चूक जाना ।

क्षपण [क्षप् + ल्युट्] बौद्धविष्णु,—अम् १ अपवित्रता, अशौच
२ नाश करना, दबाना, निकाल देना ।

क्षपणक [क्षपण + कन्] बौद्ध या जैनसाधु—तन्मक्षपणके
देशे रजक कि करिष्यति—चाण० १।१०, कश्च प्रथम-
मेव क्षपणक—मुद्रा० ४ ।

क्षपणी [क्षप् + ल्युट् + ङीप्] १ चण्डू २ जाल ।

क्षपण्यु [क्षप् + अण्यु, ण्यल्] अपराध ।

क्षपा [क्षप् + अच् + टाप्] १ रात—विगममत्युद्भिद एव
क्षपा—शं० ६।४, रघु० २।२०, मेघ० १।१०
२ हल्दी। सम०—अटः १ रात में घूमने वाला २ राजस,
पिशाच—तत क्षपाटं पृथुपिगाक्षो—मट्टि० २।३०
—अरः,—आशः १ चन्द्रमा २ कपूर—अनः काला
बादल,—अरः राजस, पिशाच ।

क्षम् (म्वा०, आ०—अपते, क्षाम्यति, क्षान्त या क्षमित)
१ अनुमति देना, इजाजत देना, चलने देना—अतो
नुपाश्चक्षमिरे समेता स्त्रीरत्नलाभ न तदात्मजस्य
—रघु० ७।१४, २।१५६ २ क्षमा करना, माफ कर
देना (अपराध आदि)—क्षान्त न क्षमया अर्तु० ३।१३,
क्षमस्व परमेश्वर, निष्पत्य मे अर्तुनिदेशरीक्ष्य देवि
क्षमस्वेति बभूव नम्र—रघु० १।४।८ ३ धैर्यवान्
होना, चूप होना, प्रतीक्षा करना—रघु० १।५।४,
४ सहन करना, गम सा जाना, भुगतना—अपि
क्षमन्तेऽन्यदुपनाप प्रकृतय—मुद्रा० २, नाशायकृकरान्
राजा क्षमते स्वसुतानपि—हि० २।१।७ ५ बिरोध
करना, रोकना ६ सज्ज या योग्य होना—अहते रवे
क्षालयितु क्षमते क क्षपातमस्काश्चमलीमस नम—सि०
१।३८, १।६५ ।

क्षम (वि०) [क्षम् + अच्] १ धैर्यवान् २ सहनशील,
विनम्र ३ पर्याप्त सज्ज, योग्य (समास में वा संब०,

अधि० अथवा तुमुभ्रत के साथ) —मलिनो हि यथादसौ
 कपालोक्त्यय न अम —याज्ञ० १४१, सा हि रक्ष-
 विधौ तयो अम —रघु० ११५, हृदय न लवलावितु
 क्षमा —रघु० ८१५९ —यमनक्षम, निर्मूलनक्षम आदि
 ४ समपुष्क, योग्य, उचित, उपयुक्त —उभो यदुक्ता-
 मशिव न हि तत्क्षम ते —उत्तर० ११४, आर्यकर्म
 अम देह आशो धर्म इवाश्रित —रघु० ११३, प्र०
 ५१२६ ५ योग्य, समर्थ, अनुकूल —उपयोगक्षमे देहो
 —विष्णु० २, तप क्षम साधयितुं व इच्छति —शं०
 ११८ ६ सहते योग्य, सहा ७ अनुकूल, मित्रवत् ।
क्षमा [क्षम् + अक्ष + टाप्] १ धैर्य, सहिष्णुता, माफी
 क्षमा पाषो च मित्र व यतीनामेव भूषणम् —हि०
 २, रघु० ११२२, १८१९, तेज क्षमा वा नैकान्त
 कालक्षम्य महीपते —शि० २१८३ २ पृथ्वी ३ दुर्गा का
 विशेषण । सम० —अ महालङ्घ, —युष् —युष् राजा ।
क्षमितु (वि०) (स्त्री० —ञी), क्षमिन् (वि०) (स्त्री०
 —नी) [क्षम् + नृच्, क्षम् + पितृच्, स्त्रियां ङीप्
 च] धैर्यवान्, सहनशील, क्षमा करने के स्वभाव
 वाला —काम शायत्यु व क्षमी —शि० २४३, याज्ञ०
 २१२००, ११२३३ ।
क्षय [क्षि + अच्] १ घट, निशान, नाश —यातनायच
 यमक्षये —मनु० ६६१, निर्जलाय पुनस्तस्मात्स्वाभा-
 गमस्य ह —महा०, २ हाति, ह्रास, छीजन, घटाव,
 पतन, मूलना —आयु क्षय —रघु० ३६९, धनक्षये वर्धति
 जाटारामि —पथ० २१७८ इमी प्रकार चन्द्रक्षय,
 क्षयपक्ष आदि ३ विनाश, अत, समाप्ति —निशाक्ये
 याति ह्रियेव पाण्डुताम् —शतु० ११९, अमर ६०
 ४ आर्थिक क्षति —मनु० ८४०१ ५ (मूल्य क्षति
 का) गिरना ६ हटाना ७ प्रलय ८ तपेदिक ९ रोग
 १० निर्मुखाता, (बीजगणित में) कृच । सम० —कर
 (क्षयकर भी) (वि०) नाश या तबाही करने वाला,
 बर्बादी करने वाला, —काल १ प्रलयकाल २ अवनति
 का समय, —काल तपेदिक की क्षासी, —यस कृष्णपक्ष,
 अंधेरापक्ष, —युक्ति (स्त्री०), —योग नाश करने का
 अवसर, —रोग तपेदिक, राजयक्ष्मा, —भाग प्रलयकाल
 की हवा, —सञ्च (स्त्री०) सर्वनाश, बर्बादी ।
क्षय्यु [क्षि + अयच्] तपेदिक के रोगी की क्षासी,
 तपेदिक ।
क्षयिन् (वि०) (स्त्री० —ञी) [क्षय + इनि] १ ह्रास-
 मान, मुझाने वाला —आरम्भपूर्वी क्षयिणी कल्पे
 —मनु० २६०, ह्रासोन्मुख, क्षयमान —न चामूलाविष
 क्षयो—रघु० १५७१, मनु० ११२४२ क्षयरोगग्रस्त
 ३ नखर, मयूर —(पु०) चन्द्रमा ।
क्षयिष्णु (वि०) [क्षि + इष्णुच्] १ बरखाद करने वाला,
 नाश कारी २ नखर, मयूर ।

क्षर (म्वा० पर० —अरति, अरति) (इसका प्रयोग अकर्मक
 नवा सकर्मक दोनों प्रकार से होता है) १ बहना,
 सरकना २ भेज देना, नदी की भांति बहना, उठेलना,
 निकालना —रघु० १३७४, मट्टि० १८८ ३ बूँद-बूँद
 करके गिरना, टपकना, रिसना ४ नष्ट होना, घटना,
 मिटना ५ अर्थ होना, प्रभाव न होना—यज्ञोपवीतेन
 क्षरति तप अरति विस्मयात्—मनु० ४१२३७
 ६ सिलकना, बञ्चित होना (अर्थात् के साथ) (प्रेर०
 —आरवाति) आरोप लगाता, बरनाम करना (प्राय
 'आ' उपसर्ग के साथ), बि —, विधलना, घुल जाना ।
क्षर (वि०) [क्षर + अच्] १ पिचलने वाला २ जन्म
 ३ नखर —क्षर सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते
 —मण० १५१६, —र बापक, —रघु १ पानी
 २ धरती ।
क्षरन् [क्षर + लृट्] १ बहने, टपकने, बूँद-बूँद गिले
 और रिसने की क्रिया २ पतीना आ जाना —अङ्गु-
 लिभारणलभ्रवति —रघु० १५१८ ।
क्षरिन् (पु०) [क्षर + इनि] बरसात का यौगम ।
क्षरत् (पु०) उभ० —आरवाति —ते, आलित) १ घना,
 धो देना, पवित्र करना, साफ करना —श्रुते रते
 क्षरयितुं अमेत क अयातमस्काष्णमलीमस नञ
 —शि० ११३८, हि० ४६० २ मिटा देना —(अवत)
 तेषामनुग्रहेणाद्य राजन् प्रक्षालयात्पन —महा०, बि—
 बोरकर साफ करना —रघु० —५४४ ।
क्षरक्षय्यु [क्षु + अय्, अय्यच् वा] १ जीक २ क्षासी ।
क्षार (वि०) (स्त्री० —ञी) [क्षा + अच्] मैमिक
 जाति से नमक रखने वाला —क्षाशो धर्म धित इव
 तनु ब्रह्मधोषस्य मुच्यते —उत्तर० ६१९, रघु० ११३,
 —अम् १ क्षयिण जाति २ क्षयिण के गुण —गीता
 इस प्रकार बतलाती है 'शौर्य तेजो वृत्तिर्दक्ष्य युद्धे
 पाप्यनपायनम्, क्षान्तीव्यरभाक्क्षार क्षार कर्म स्वभावा-
 जम् —भग० १८४३ ।
क्षारत (पु० क० क०) [क्षम् + क्त] १ धैर्यवान्, सहन-
 शील, सहिष्णु २ क्षमा किया गया, —ता पृथ्वी ।
क्षारिण (स्त्री०) [क्षम् + णिन्] १ धैर्य, सहनशीलता,
 क्षमा —क्षारिणश्चैवनेन किम् —मत्त० २२१, अय०
 १८४२ ।
क्षार्यु (वि०) [क्षम् + युत्, मृडि] धैर्यवान्, सहनशील,
 —यु पित्त ।
क्षार्य (वि०) [क्षी + क्त] १ दारु, झूलसा हुआ २ क्षीप,
 पतला, वरिणीय, कृच, दुबका-पतला क्षामक्षाव
 कपोलमाननम् —शं० ३११०, यम्ये क्षामा —मेघ० ८२,
 क्षामिच्छाय भवनमधुना मन्त्रियोनेन नूनम् —८०, ८९
 ३ सुद, तुच्छ, अल्प ४ दुर्बल, निष्कल ।
क्षार (वि०) [क्षर + वा०] क्षाररूपशील, क्षारक वा

दाहक, तिक्त, चरपरा, कटु, खारी,—रः १ रस, अर्क २ खीरा, राख ३ कोरि खारीय वा छट्टा पदार्थ—सते क्षारिक्वासस्य ज्ञानं तत्स्यैव रक्षनम्—उत्तर० ४१७, क्षार सते शिप्—एक लोकोक्ति बन गया है—इसका अर्थ है 'पीडा को जो पहले से ही असह्य है और बड़ा देना' 'बुरे को और अधिक बुरा कर देना' 'जले पर नमक छिड़कना' ४ खीशा ५ बदमाश, ठग, -रच् १ काला नमक २ पानी। सम०—अच्छम् समुद्री नमक, —अच्छपम् सखी का लेप,—अम्बु खारी रस या खारा पानी,—अच,—अचक,—अचधि,—समुद्रः खारा समुद्र,—अर्थ,—शिलाम्, सखी, शोरा, मुहागा, नदी नरक में खारे पानी की नदी,—भूमिः (स्त्री०), —मृत्तिका रिहाली भूमि—किमात्तर्चं क्षारभूमौ प्राचदा यमुर्मुक्तिका—उद्भूट,—मेलकः खारा पदार्थ,—रसः क्षार रस ।

क्षारकः [क्षार + कन्] १ खार, रेहू २ रस, अर्क ३ पित्रा, पक्षियो के रहने की टोकरी वा जाल ४ शोबी ५ मजरी, कलिका ।

क्षारचम्,—भा [क्षर + चिच् + च्चट्, युच् वा] दोषारोपण, विशेषकर अग्निचार का ।

क्षारिष्ठा [क्षर + च्चुल् + टाप्, इत्वम्] भूल ।

क्षारित (वि०) १ खारे पानी में से टपकाया हुआ २ जिस पर (अग्निचार) का मिथ्या अपवाद लगाया गया हो ।

क्षालनम् [क्षल् + चिच् + च्चट्] १ धोना, (पानी से धोकर) साफ करना २ छिड़कना ।

क्षालित (वि०) [क्षल् + चिच् + क्त] १ धोया हुआ, साफ किया हुआ, पवित्र किया हुआ २ पोछा हुआ, प्रतिदन (बदला चुकाया हुआ)—उत्तर० ११८८ ।

क्षि १ (स्वा० पर०—) क्षयति, क्षित या क्षीण १ मुहाना, क्षीयना २ राज्य करना, शासन करना, न्वामी होना ।

॥ (स्वा०, स्वा०, क्वा०—) पर०—क्षयति, क्षिणोति, क्षियाति १ नष्ट करना प्रस्त कर लेना, बर्बाद करना, अष्ट करना - न नश्व शस्त्रमृता क्षिणोति—रच् ० २४० २ न्यून करना, बर्बाद करना—रच् ० १९१४८ ३ मार डालना, सति पहुँचाना—(कर्मभाव्य—क्षीयते) १ बर्बाद होना, घटना, नष्ट होना, न्यून होना (आल० स्त्री)—प्रतिक्षणमय काय क्षीयमानो न लक्ष्यते—हि० ६१६६, प्रत्यासन्न—विपत्तिमुद्भयनसा प्रायो मति क्षीयते—पच० २४, अमह ९३, मत्सू० २१९९, (प्रेर०—) क्षययति या क्षययति १ नष्ट करना, बुर होना देना, समाप्त कर देना—ममापि च क्षयपन्तु नीललोहित समुत्तैव परिपत-शक्तिरामम्—श० ७३३५, रच् ० ८४७, मेघ० ५३

२ समय बिताना, अथ—, घटना, क्षीण होना, न्यून होना, परि—, प्र०, सख्—, १ कम होना, क्षीण होना २ कृश होना, दुबला-पतला होना ।

क्षितिः (स्त्री०) [क्षि + क्तिन्] १ पृथ्वी २ निवास, आवास, घर ३ हानि, विनाश ४ प्रलय। सम०—ईसा, —ईश्वरः राजा—रच् ० ११५, ३३३, ११११, कचः पुल,—कम्पः मूचाल,—क्षि (पु०) राजा, राजकुमार,—कः १ वृक्ष २ गडोबा, कंचुवा ३ ममल गड ४ विष्णु के द्वारा मार्ग गया नरक नाम का राक्षस—(अम्) जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए प्रतीत होते हैं,—(आ) सोता का विशेषण,—सम्पु पृथ्वी को सतह,—देवः शाह्यण,—घर पहाड़ कु० ७१४ —नाचः,—घः,—पतिः, घरः,—भृच् (पु०) —रक्षिन् (पु०) राजा, प्रभु—रच् ० २१५१, ५१७६, ६१८६, ७३३, ९१७५,—मुष मगल ग्रह,—प्रतिष्ठ (वि०) पृथ्वी पर रहने वाला,—भूत (पु०) १ पहाड़—सर्व-क्षितिमुना माप विष्णु० ४१२७ (यहाँ इस शब्द का अर्थ 'राजा' भी है) कि० ५१२०, श्चुनु० ६१२६ २ राजा,—सम्बलम् भूमफल,—रघुश्च सार्व, सोरर, र्हू, (पु०) वृक्ष,—बभनं (पु०) शब, मुदां शरीर,—वृत्ति (स्त्री०) पृथ्वी की गति, पंचैवैक्यव्यवहार, च्च्यवसत गुफा, जिल ।

क्षिर् [क्षिद् + रक्] १ रोग २ सूर्य ३ सींग ।

क्षिप् (तुदा० उभ०—) अग्नि, प्रति या अति पूर्व होने पर पर०—, दिवा० पर० क्षिपति—ते, क्षिप्यति, क्षिप्ये १ फेंकना, डालना, भेजना, प्रेषित करना, विस्तर्जन, जानें देना (अधि० या कर्मो कर्मो सप्र० के साथ)—मरुद्गुप इति तु द्वानि क्षिपेदप्यन्यत्र इत्यपि—मनु० ३१८८, शिला वा लोप्यते मयि—महा०, का० १२, ९५, प्रतिपूर्वक भी भन्तु० ३१६७ २ रम्बना, पहनना, लगाना अत्रमपि विरन्ध्य सिप्ता धनोर्वाहिसङ्ख्या—श० ७१७, वाश० ११२३०, भग० १६११० ३ आरोपित करना, लगाना (कलक जादि)—भृत्पुं दोषात् क्षिपति—हि० २ ४ फेंक देना, डाल देना, उतार देना, मुक्त होना—किं कार्यस्य भरव्यथा न वपुषि क्षा न क्षिपयेय यत् मुद्रा० २१४८ ५ दूर करना, नष्ट करना—मा० १११७ ६ अस्वीकार करना, घृणा करना ७ अपमान करना, भर्त्सना करना, दुर्वचन कहना, धमकाना—मनु० ८३२२, २७०, शा० ३११०, अधि—, १ निन्दा करना, कलक लगाना २ नाराज करना, अपवाद करना ३ आगे बढ़ जाना, अथ—, १ उतार फेंकना, छोड़ना, त्यागना २ तिरस्कार करना, भर्त्सना करना, भा—, १ फेंकना, डाल देना, प्रहार करना २ सिकोडना ३ बाणिस लेना, क्षीयना, क्षीयना, ले लेना—अपवादमाक्षिप्य—रच् ० ७३७,

मनुं १।४३, मेघ ६८४ लकेज करना, इगारा करना 5 परिचरिबिगो मे अनुमान लगाना -आथा अगिनागशिष्यते 6 (तर्क के रूप में) आक्षेप करना 7 अवहेलना करना, उपेक्षा करना 8 तिन्स्कार करना, उद्- उछलाना १२नुं १।२२, उष- 1 दक्षना, फेंकना वसुधि वधाय तथ तथ साधमु- शिष्यत -मां ५।३१ 2 लकेज करना, इगारा करना निष्कर्ष निकालना छत्र कार्यमुपशिष्यति-मुच्यते १।२ 3 आरम्भ करना, शुरू करना 4 अपमान करना, झोटना-कटकारना, नि, 1 नीचे रलना, स्थापित करना, धर देना वासं १।१०३, अमर ८० 2 सीपना, देम देस में सुपुंई करना, - मनुं ६। ३, ३।१०२, १८० 3 गिबिर मे रलना 4 फेंक देना अन्वीकार करना 5 प्रदान करना, परि, - 1 धरना, वक्ष्णोत्तर परिशिष्यम् कुं ६।३८ 2 आलिंगन करना, पर्षा, बांधना, (बांलो को) एकत्र करना (केमान) पराशिष्यत् काचिदुदारकम्भम्-कुं ७।१४, प्र- 1 रलना, झलना -नाम्येष प्रशिष्येवन्ती -मनुं ५।५३, आर श्लो प्रशिष्यन्-मचउं ५।१८ 2 बाँच में रलाना, अन्वहित करना-दगि सूचे कैचि- रशिष्य-कैवट, वि- 1 फेंकना, डालना 2 मन बोधना 3 ध्यान हलाना, लम्- 1 मचय करना, डेर लगाना आतपावसशिष्यनीवारामु निषादिभि -रपुं १।५२, मडिं ५।८६ 2 पीछे हटना, नष्ट करना 3 छोटा करना, कमो करना, सक्षिपत करना सक्षिपत शम इव कथ दोषधायमा विद्याना-मेघ १०८, मनुं ७।२४।

शपथम् [शिप्+थन् बा०] 1 शपथना, फेंकना डालना 2 शिष्यना, दुनै बन कहना ।
 शिष्यि, शो (स्त्री०) [शिप्+थि, शिपयि+शोप्] 1 शपु 2 आल 3 शिष्यापर, - चि प्रहार ।
 शिष्यम् [शिप्+कन्वृत्] 1 शरीर 2 बसत श्चतुः
 शिष्या [शिप्+अर+टाप्] 1 शपथना, फेंकना, डालना 2 रात्रि ।
 शिष्य (मू० क० क०) [शिप्+क] 1 फेंकना हुआ, बिखेरा हुआ, उछलाना हुआ, डाला हुआ 2 त्यागा हुआ 3 अवकाश, उपेक्षा, अनवृत्त 4 स्थापित 5 ध्यान हटाया हुआ, पागल (दे० शिप्)। -वत्स गौली लगने से बना शाय । सम०-कृष्णर पगल कुला, -वित (वि०) उषार मन, विद्याना, -देह (वि०) प्रभुतशरीर, केटा हुआ ।
 शिष्यि, (स्त्री०) [शिप्+कान्] 1 फेंकना, भेज देना 2 (पहिली आदि के) कृट अर्थ को प्रकट करना ।
 शिष्य (वि०) [शिप्+रृत्] (म० अ०-लपीयन्, उ० अ०-सिष्यत्) शबीव, आधुनामी, -प्रम् (अव्य०) जादी,

कुर्ी से, तुरल-विनाश अजति शिष्यनामप्राथमिकामिति -मनुं ३।१७२, मां ३।६, मडिं २।४४ । सम० -कारिन् (वि०) जासुकारी, अचिन्तवी ।

शिष्या [शि+अर+टाप्] 1 हानि, विनाश, बर्बादी, ह्रास 2 अनौचित्य, सर्वसम्भन आवाका का उल्लंघन-उदा० मन्महर्षयेन याति उपाध्याय इवाति गमयति -मिड्रां ।

शौचनम् [शौच्+स्युट्] शौचे नरकुलो मे मे निक्की हुई सरसगहट की ध्वनि ।

शौच (वि०) [शि+क्त, दोषं] 1, पतला, कृच, क्षय- प्राप्न, निबेल, घटा हुआ, पका हुआ या समाप्त, लभे कर डाला हुआ-भायी शौचेव वितेषु (जानीयत्)-दि० १।२२, इसी प्रकार शौच शशी, शौचे पुष्य मयवेके विद्यान्ति 2 सुकुमार, नायक 3 पोडा अल्प 4 निषेध, मकटघल 5 पक्षितहीन, दुर्बल । सम० -कृष्ण पटला हुआ अर्थात् कृष्णस का चट्टना -अल (वि०) जिसके वास पैसा न रहा हो निषेध चाप (वि०) जो अपने पाप कर्मों का फल भुगत कर निष्पाप हो गया हो, पुष्य (वि०) जो अपने सब पुष्य कर्मों ना फल भोग चुका हो, तथा कणके जन्म के लिए जिसे और पुष्य पाने काजे चाहिये, -मध्य (वि०) जिसकी कमा जाय ही हो, -शक्तिन् (वि०) बरहूर में रहने वाला, -विषयल (वि०) महासहीन, शौचहीन -वृत्ति (वि०) जीविका के साधनों से शक्तिव, बेरोजदार ।

शौच, शौच दे० शौच, शौच ।

शौर रम् [धस्यते अजते धम्+ईरन्, उपधाशोष, धस्य ककार पर च] 1 दूध, -हसी हि शौरमादये तमिथा वर्षवत्सप -सं ६।२७ 2 वृषी का दूधिया रस-मं तक्षीरस्तिसुरभयो दक्षिणेन प्रवृत्ता --मेघ० १०७, कुं १।९ 3 कल । सम०-अश विवृ, दूध-पोडा बचना, -श्वि दुग्धसागर 'अ 1 कट्टया 2 मोती, 'अम् समुद्री नयक, 'जा तनया लक्ष्मी का विशेषण, -आह्ल सनीवर का वृक्ष, -उष दुग्धसागर -शरीरवेलेव सकेतपुञ्जा-कुं ७।२६, 'तनय कन्दया, 'तनया, 'कुला लक्ष्मी का विशेषण, -अश्वि शीरीर, -ऋषि दुग्धसागर की लहर -रपुं ५।२७, -अश्विन दूध में उबाले हुए चावल, -कृष्ण दुग्धपोडा वस्त्रा (कृष्ट मे दूध रलने वाला) तथा तक्षीर-कण्ठेन शायवाग्यक वतम्-महावी० ५।२२, ५।११, -अम् जया हुआ दूध, -दुग्धः अक्षयवत्स, -शारी दूध पिलाने वाली वीकरनी, धाय, -वि, -विधि दुग्धसागर-इन् दुग्धशौरिणाविच-रपुं १।१२, -वेनुः (स्त्री०) दूध देने वाली गाय, -शौरम् 1 पानी और दूध 2 दूध नैसा पानी 3 गाकाशिलन, - वः कृष्ण

—हारि, —हारिचिः, दुग्ध सागर, - विकृतिः जमा हुआ दूध, - बृक्ष 1 बर, मूलर, पीपल और मधुक नाम के वृक्ष 2 अजीर, सार मलाई, दूध की मलाई, — समुद्र दुग्धसागर, - सार मक्खन, हिबीर दूध के प्राण या फेन ।

शोरिका [शीर + ठन् + टाप्] दूध से बना भोज्य पदार्थ ।
शोरिन् (वि०) [शीर + शनि] दूधिया दुधान् दूध देने वाला ।

श्रीश् (म्वा०) दिवा०, पर०—श्रीवति, श्रीव्यति 1 मन-वाला होना, मदीमन होना, नशे में होना 2 युक्तता, मूत्र से निकालना ।

श्रीव (वि०) [श्रीश् + क्त नि०] उमेजित, मनवाला, मदीमन द्रव जसे यद्य जयामनेन श्रीव जयामभर्तुरभू-त्कृपाण विक्रमाक० ११२६, श्रीवो दुःशान्तानुजा -वेत्तो० ५१२७ ।

शु (अदा० पर०) शोनि, शत) 1 छीकना अवयाति सरोपया निगस्ते कृतक कार्मिनि चक्षुषे मृगाशया वि० १८३, शीर० १०, भट्टि० १५१७५ 2 शोयना ।

शुण्य (प्र० क० क्त०) [शुष् + क्त] 1 कृटा हुआ कुचला हुआ—रघु० १११७ 2 (आन०) अन्वस्त, अनुगत—शुद्रजनसूयण एष मार्गं, —का० १८६ 3 पीसा हुआ—दे० सुद्र। सम०—अनसु (वि०) परचानापी, पछ-नाने वाला ।

शुत् (स्त्री०) शोतम्, ता [शु + निष्प, तुगागम, शु + क्त, श्लु + टाप्] छीकने वाली, छीक ।

शुव (श्या०, उभ०) शुणति, श्वते, शुण्य 1 कुचलना, घिसना, (पैरो से) कुचल डालना, रगड़ना, पीस देना शुणधि मपांन पाताञ् भट्टि० ६१३६, ते न व्या-धिपताश्रीत्सु वाईदन्नीस्नयाच्छिद्रन्—१५१४३, १६१६६ 2 उत्तजित करना, शुष्य होना (आ०), प्र- , कुच-लना खरीबना, पीसना मिश्रणस्व प्रबुद्धोद गद्यवोय विभीषण—भट्टि० १५१४३ ।

शुव (वि) [शुद्र + क्त] (म० अ०—शोदीयस्, उ० अ०—शोदिष्ट) 1 सुसभ, अन्व, छोटा सा, नुच्छ, हलका 2 कमीना, नीच, दुष्ट, अधम—शुद्रेज्य नूत शरण्य प्रपञ्चे—दु० ११२३ 3 सुष्ट 4 कूर 5 गरीब, दरिद्र 6 कृपण, कञ्च मेघ० १७, —डा 1 मधुमक्खली 2 अगङ्गा स्त्री 3 अगाह्व या विकलाग स्त्री 4 वेध्या—उपमृटा इव शुद्राधिष्ठितभवना—का० १०७ । सम०—अश्वत्थम् सुष्ठु रागो में आसो में लगाया जाने वाला अन्न या लेप,—अश्व हृदय के भीतर का छोटा सार रश्म, —कम्बु छोटा शव, कुच्छम् एक प्रकार का हल्का कोड,—घण्टिका 1 धूपक 2 धूपन वाली कर्-पनी,—कश्मलम् नाल चदन की लकड़ी, कम्बु कोई भी छोटा जीव, दक्षिका शस, या मन्मो, बुद्धि

(वि०) मोठे मन का, कमीना,—रत्न महद,—रोग माली बीमारों (मुष्टुत में ४४ रोगों का उल्लेख है),—शश छोटा शव या धाँवा (मीपी),—सुषुषम् हल्का या खाटा सोना अर्थात् पीतल ।

शुवल् (वि०) [शुद्र + लच्] मूख, हल्का (विशेष कर रागो व जतुओ के लिए प्रयुक्त) ।

शुव् (दिवा०) पर०—शुव्यति, श्वति) भूवा होना, भूल लगना—भट्टि० ५१६६, ६१४४, ९१३९ ।

शुष् (स्त्री०) शुषा [शुष् + क्विप्, शुष् + टाप्] भूल, —सोदति शुषा—मनु० ७१३४, ५१९८७ । मम०—आत, आचिष्ट शुषापोदित,—शाम (वि०) भूला होने से दुर्बल—भट्टि० २१२९,—पिपासित (वि०) भूला व्यासा, निवृत्ति (स्त्री०) भूष मान होना ।

शुषाल् (वि०) [शुष् + आल्च्] भूवा शुषित (वि०) [शुष् + क्त] भूवा

शुष् [शुष् + क्त] छोटी जडा के वृक्ष, श्राद, श्रादी ।

शुष् (म्वा० आ०) दिवा०, क्वा० पर०—शोभते, शुष्म्यति, श्मनानि, शुभिन, शुष्य 1 हिलाना, कपित करना, शुष्य करना, आदीनित करना, —महाह्वद इव शुष्म्यन् भट्टि० ११११८, रघु० ५१२७, —मी ८१२४ 2 अन्विर होना 3 लक्ष्यदान (आन०) भी, प्र—वि,—सम् कापना, शुष्य होना, आदीनित होना ।

शुमित (वि०) [शुष् + क्त] 1 हिलया हुआ, आदीनित आदि महाप्रलयमास्तभुतिपुष्करावतं—वेणी० ३१२ 2 डग हुआ 3 कूट ।

शुष्य (वि०) [शुष् + क्त] 1 आदीनित, चचल, अविशर 2 उधाडाल 3 डग हुआ,—अ० मन्थन करने का उष्ण- शोभेव मन्दरशुष्यशुमितम्भोधिघर्षणा- शि० २११०७ 2 रति क्रिया का विशेष आसन, रतिवन्ध ।

शुषा [शु + मक्] अलसी, एक प्रकार का मम ।

शूर् (नुदा० पर०) शूरति, शूरित 1 काटना, शूरचना 2 रेनाते लीचना, हल से खेने में सूड बनाना ।

शूर [शूर् + क्त] 1 उस्तार रघु० ७५६६, मनु० ९१ ७६२ 2 उस्तरे जैसी नोक जो तीर में लगाई जाय 3 गाय या घोड़े का सुम 4 बाण । सम०—कर्मन् (नपु०)—क्रिया हुआमत बनाना,—कतुष्यथम् हुआमत करने को आवश्यक धार चीजें,—धानम्,—अश्वम् उस्तरे का शोल,—धार (वि०) उस्तरे जैसा तेज,—प्र बाण जिसकी नोक घोड़े की नाल जैसी हो—त शूरप्रशकलीकृत कृती रघु० ११२९, ९१६२ 2 शूर्पी, घास सोदने का सुपी,—श्विन्, श्विष्न् (ए०) नार्ई ।

शूरिका, शूरी [शूर् + शीष् + क्तन् + टाप् ह्रस्व, शूर् + शीष्] 1 शार्क, शूरी 2 छोटा उस्तार ।

शूरिणी [शूर् + शिन् + शीष्] नार्ई की पत्नी ।

भूरिम् (पु०) [भूर + इति] गर्द ।

भुक्त (वि०) [भुज् क्तिन् भुङ्क्ते भुज् क्त्वा क्तिन्] छाटा, मन्थन । मम० तात पिता का छाटा भाट —तु० मन्थन ।

भुक्तक (वि०) [भुक्त + क्त] 1 म्बल, मू० 2 नाथ, दुष्ट 3 मयण 4 निरन 5 दुष्ट ड्रेपयुक्त 6 वल्का ।

भुषम् [भि + भृत्] 1 खेव, मीदान, भूमि चापन चापि-
व्यापित मन्त्रेण नितना क्रुपि—मुद्रा० १:२ 2 भूमिनि
भूमि 3 म्बान, आवाय, भूषण, राक्षस-नाटगानमय
श्रेयमश्रय्यानाम्—प० १:१०१, भृ० १:१३७,
म० १:६ 4 पुण्यमान, नान्यमान-श्रेय श्रेयप्रवर्धन-
पितृन् काय नृपुत्रेषां—म० ६६, भ० १:१,
६ कथा 6 उवाच भूमि 7 जन्ममान 8 पत्नी अपि
नाम कुतारोपियमयवर्धनमभवा म्यात—म० १,
म० ३:११/५ 9 कावसेन प्रगो (अनाम ता कर्म
श्रेय) यामिनी य विचिन्वन्ति साक्षाभ्यन्तरवर्तिनम्
कु० ६:३३, भ० १:३१, २:३ 10 मन 11 घर,
नगर 12 मयाट आहुति नैव वि विद्मूत्र 13 रेखा-
चित्र । म०—अधिदेवता द्विती पुष्य भूम्बल की
अविष्ठाती देवा, —आशेष, कर, कृक खरिहर,
- यणितम् उग्रमिति, रेखायणित, यत् (वि०)
व्यामिनीय उपकृति (स्त्री०) व्यामिनीय प्रमाण,
- ज्ञ (वि०) 1 खेन मे उपग्र 2 प्रगो के उपग्र
(ज्ञ) विद्मूत्रमश्रय क अन्वारा १० प्रगो के पुत्रों
मे य एक, अने पति के निर्मित नवतलपति करने
के लिए विरारिन् विपन किए गए द्विती मयकी द्वारा
उपकी पत्नी मे उपादित मताम—म० १:१६३,
१:८० वाङ् १:६८, ६६, २:१०८, ज्ञात (वि०)
दुमरे पुष्य की पत्नी मे उपादित मताम, ज्ञ (वि०)
1 स्वामीपता की जानने वाला 2 चतुर, दक्ष (ज्ञ)
1 आत्मा तु० भ० १:३१-३, म० १:०:१०
2 परमात्मा 3 अविचारी 4 किमान, -पति भूम्बामी
भूमिधर, धवम् देवता के लिए पवित्र स्थान, वाल
1 खेन का म्बबाला 2 श्रेय की रक्षा करने वाला
देवता 3 गिव का विभाण, - फलम् (गणित मे)
आकृति की लम्बाई चौडाई का गुणनफल, भूमि
(स्त्री०) खेन का देवता, - भूमि (स्त्री०) भूमि
जिसमे खेनी की जाय, - राशि व्यामिनीय आकृतियों
द्वारा प्रकट किया गया परिमाण, भिद (वि०)
—शेषज (पु०) 1 किमान 2 भूमि, जिमे आध्या-
त्मिक ज्ञान हो—कु० ३:५० 3 आत्मा, - रथ (वि०)
पुष्य भूमि मे रहने वाला ।

भुषम् [भि + भृत्] 1 खेव, मीदान, भूमि चापन चापि-
व्यापित मन्त्रेण नितना क्रुपि—मुद्रा० १:२ 2 भूमिनि
भूमि 3 म्बान, आवाय, भूषण, राक्षस-नाटगानमय
श्रेयमश्रय्यानाम्—प० १:१०१, भृ० १:१३७,
म० १:६ 4 पुण्यमान, नान्यमान-श्रेय श्रेयप्रवर्धन-
पितृन् काय नृपुत्रेषां—म० ६६, भ० १:१,
६ कथा 6 उवाच भूमि 7 जन्ममान 8 पत्नी अपि
नाम कुतारोपियमयवर्धनमभवा म्यात—म० १,
म० ३:११/५ 9 कावसेन प्रगो (अनाम ता कर्म
श्रेय) यामिनी य विचिन्वन्ति साक्षाभ्यन्तरवर्तिनम्
कु० ६:३३, भ० १:३१, २:३ 10 मन 11 घर,
नगर 12 मयाट आहुति नैव वि विद्मूत्र 13 रेखा-
चित्र । म०—अधिदेवता द्विती पुष्य भूम्बल की
अविष्ठाती देवा, —आशेष, कर, कृक खरिहर,
- यणितम् उग्रमिति, रेखायणित, यत् (वि०)
व्यामिनीय उपकृति (स्त्री०) व्यामिनीय प्रमाण,
- ज्ञ (वि०) 1 खेन मे उपग्र 2 प्रगो के उपग्र
(ज्ञ) विद्मूत्रमश्रय क अन्वारा १० प्रगो के पुत्रों
मे य एक, अने पति के निर्मित नवतलपति करने
के लिए विरारिन् विपन किए गए द्विती मयकी द्वारा
उपकी पत्नी मे उपादित मताम—म० १:१६३,
१:८० वाङ् १:६८, ६६, २:१०८, ज्ञात (वि०)
दुमरे पुष्य की पत्नी मे उपादित मताम, ज्ञ (वि०)
1 स्वामीपता की जानने वाला 2 चतुर, दक्ष (ज्ञ)
1 आत्मा तु० भ० १:३१-३, म० १:०:१०
2 परमात्मा 3 अविचारी 4 किमान, -पति भूम्बामी
भूमिधर, धवम् देवता के लिए पवित्र स्थान, वाल
1 खेन का म्बबाला 2 श्रेय की रक्षा करने वाला
देवता 3 गिव का विभाण, - फलम् (गणित मे)
आकृति की लम्बाई चौडाई का गुणनफल, भूमि
(स्त्री०) खेन का देवता, - भूमि (स्त्री०) भूमि
जिसमे खेनी की जाय, - राशि व्यामिनीय आकृतियों
द्वारा प्रकट किया गया परिमाण, भिद (वि०)
—शेषज (पु०) 1 किमान 2 भूमि, जिमे आध्या-
त्मिक ज्ञान हो—कु० ३:५० 3 आत्मा, - रथ (वि०)
पुष्य भूमि मे रहने वाला ।

भुषम् [भि + भृत्] 1 खेव, मीदान, भूमि चापन चापि-
व्यापित मन्त्रेण नितना क्रुपि—मुद्रा० १:२ 2 भूमिनि
भूमि 3 म्बान, आवाय, भूषण, राक्षस-नाटगानमय
श्रेयमश्रय्यानाम्—प० १:१०१, भृ० १:१३७,
म० १:६ 4 पुण्यमान, नान्यमान-श्रेय श्रेयप्रवर्धन-
पितृन् काय नृपुत्रेषां—म० ६६, भ० १:१,
६ कथा 6 उवाच भूमि 7 जन्ममान 8 पत्नी अपि
नाम कुतारोपियमयवर्धनमभवा म्यात—म० १,
म० ३:११/५ 9 कावसेन प्रगो (अनाम ता कर्म
श्रेय) यामिनी य विचिन्वन्ति साक्षाभ्यन्तरवर्तिनम्
कु० ६:३३, भ० १:३१, २:३ 10 मन 11 घर,
नगर 12 मयाट आहुति नैव वि विद्मूत्र 13 रेखा-
चित्र । म०—अधिदेवता द्विती पुष्य भूम्बल की
अविष्ठाती देवा, —आशेष, कर, कृक खरिहर,
- यणितम् उग्रमिति, रेखायणित, यत् (वि०)
व्यामिनीय उपकृति (स्त्री०) व्यामिनीय प्रमाण,
- ज्ञ (वि०) 1 खेन मे उपग्र 2 प्रगो के उपग्र
(ज्ञ) विद्मूत्रमश्रय क अन्वारा १० प्रगो के पुत्रों
मे य एक, अने पति के निर्मित नवतलपति करने
के लिए विरारिन् विपन किए गए द्विती मयकी द्वारा
उपकी पत्नी मे उपादित मताम—म० १:१६३,
१:८० वाङ् १:६८, ६६, २:१०८, ज्ञात (वि०)
दुमरे पुष्य की पत्नी मे उपादित मताम, ज्ञ (वि०)
1 स्वामीपता की जानने वाला 2 चतुर, दक्ष (ज्ञ)
1 आत्मा तु० भ० १:३१-३, म० १:०:१०
2 परमात्मा 3 अविचारी 4 किमान, -पति भूम्बामी
भूमिधर, धवम् देवता के लिए पवित्र स्थान, वाल
1 खेन का म्बबाला 2 श्रेय की रक्षा करने वाला
देवता 3 गिव का विभाण, - फलम् (गणित मे)
आकृति की लम्बाई चौडाई का गुणनफल, भूमि
(स्त्री०) खेन का देवता, - भूमि (स्त्री०) भूमि
जिसमे खेनी की जाय, - राशि व्यामिनीय आकृतियों
द्वारा प्रकट किया गया परिमाण, भिद (वि०)
—शेषज (पु०) 1 किमान 2 भूमि, जिमे आध्या-
त्मिक ज्ञान हो—कु० ३:५० 3 आत्मा, - रथ (वि०)
पुष्य भूमि मे रहने वाला ।

भुषिक (वि०) (स्त्री०) (की) [श्रेय + क्त] खेन से
सम्बन्ध रखने वाला, क 1 एक किमान—म०
६:२४६, १:५३ 2 वरि—म० १:१६५ ।

भुषिन् (पु०) [श्रेय + इति] कृपक, कामकार, भविह
वाङ् २:१६६ 2 नाममात्र का वरि ३० ५
3 आत्मा 4 परमात्मा भ० १:३१३ ।

भुषिन् (वि०) [श्रेय + इति] 1 खेन मे सबस रखने वाला
2 जसाय राव, जिमाका उपचार देहाल्लर प्रापित पर
ही हा अन्वया तुम खीचने मे जिमाका उपचार न हो
मने देहाय श्रेयिवा पेने मथ्यापानि साज्जवै-
मिदि ६:१२०, म० 1 अधिक रोग 2 चगगाह,
गावर्नाम, य श्वभिचारी, परदारग्न ।

भुष [श्रेय + घञ्] 1 फेकना, उछालना, डालना, धर
उग्र शिलाना (अना की) गति करकेवानुमम
म० ६७, अनागामानुममप्रवेणाम् कु० ३:६०
2 फेकना, डालना 3 भेजना, प्रेषित करना 4 आना
5 उल्लखन 6 मयप विनाता, बालक्षेप 7 विलम्ब,
देवी 8 अपमान, दुर्वचन श्रेय करोनि षट्द्वय
—वाङ् २:१०६, शिखेप 9 अनादर, धृता 10 घमड,
अहकार 11 फूलों का गच्छा, तुमुपमन्त्रक ।

भुषक (वि०) [श्रेय + कृत्] 1 फेकने वाला, भेजने
वाला 2 मिलाया हुआ, वीच मे धुमाया हुआ
3 गाँविया मे युक्त अनादरग्न, —क बनावटी वा
वाच मे मिलाया हुआ ।

भुषणम् [श्रेय + णट्] 1 फेकना, डालना, भेजना,
निदम आदि देना 2 (मयय) विनाता 3 भूलना
4 गाली देना 5 गाफन लि, —णी (स्त्री०)
1 चप 2 मछली फसाने का जाल 3 गाफन या
देना उपकरण जिसमे रखकर ककड फेके जाय ।

भुष (वि०) [श्रेय + मन्] 1 प्रमप्रता मुव और आराम
रने वाला, शन, उदार, गरीबपत्नी जनेगण्टा रणे
रुपमन्मे श्रेयन भवत् भ० १:६५ 2 समूह,
आगम मे, सुवी 3 मुर्खता, प्रमत्र, म, म०
1 शानि, प्रमप्रता, आराम करणा, कुपलना वि-
न्वनि श्रेयमदेवामुकाश्चराय तिमन् कुपवचकावसे-
कि० १:१३, वैद्य श्रेय मशामम् (पुच्छेत्) म०
२:१००, अना गवजलपराणा श्रेय भविष्यति—प०
१:१० 2 मुखा, वचाव—श्रेयम ब्रज वाचवान—मूकठ
७:३, मकुणल—प० १:१६६ 3 मश्रय करने वाला,
प्रश्ला करन वाला म० १:५६ 4 अवाण की
मुर्खता रखना—तु० वापशम 5 मुक्ति प्राप्त
वान्त, —म एक प्रगो का मगन डव्य । म०
कर । श्रेयकर' मे] (वि०) मनप्रद शानि और
मुखा करने वाला ।

भुषिन् (वि०) (की) [श्रेय + इति] मुर्खता, आक्रमण
मे रहित प्रमत्र ।

भु (अ०) प० १० शायनि क्षाम, क्षीण शान, लज्ज होना
हुय शान, ह्राय शान म्बल ।

शंभुम् [शंभु + अम्] 1 विनास 2 बुद्धकायन,
सुसुमारता ।

शंभुम् [शंभु + अम्] 1 शेतो का समूह 2 शेत ।

शंभेय (वि०) (स्त्री०—श्री) [शीर + इञ्] इषिया,
दूध जैसा ।

शोड [शोड + घञ्] हाथी बाधने का क्रम ।

शोभि, शोभी (स्त्री) [शो + शोभि, शोभि + शीप्]
1 पत्नी 2 एक (गणित में) ।

शोत् (पु०) [शूट् + तृच्] नृत्य, बट्टा ।

शोड [शूट् + घञ्] 1 बुरा करना, पीसना 2 सिल
(जिस पर रत्नकर कोई चीज पीसी जाती है)
2 घल, कण कोई छोटा या सूक्ष्मकण—उत्तर० ३१२ ।
सम० --(वि०) जो जाच पकताल या अनुसन्धान
में डहर सके ।

शोदिसम् (पु०) [शोद + इमनिच्] सुदमता ।

शोभ [शुम् + घञ्] 1 डोलना, हिलना, लोटपोट होना
मेघ० २८, ९५, इसी प्रकार काननशोभ 2 हच-
कोले जाना—रघु० १५८, विक्रम० ३१११ 3 (क)
आन्दोलन, डीवाडोल होना, उल्लेखना, सुबेध—स्वयंवर
शोभकृतममात्र—रघु० ७३३, अर्थेन्द्रियशोभमयम्य-
नेत्र पुनर्वसिताद्व्यङ्ग्योन्मृष्ट—कु० ३१६९, (ख) उक-
माहट, चिड़ प्राय स्वमहिमान शोभात्रतिपद्यते वन;
ज० ६३१

शोभनम् [शुम् + णिच् + म्युट्] शुभ्य करना, श्वाकुल
करना—अ कामदेव के पाँच बाणों में से एक ।

शोभ, सम् [शू + मन्] धर की छत पर बसा कमरा,
चौबारा ।

शोभि, शो (स्त्री०) दे० शोभि । सम०—प्राचीर समूह,
—भुम् (पु०) राजा, —भुत् (पु०) पहाड़ ।

शोड [शूट् + अच्] चम्पक बुध, इष्य 1 हल्कापन
2 कमीतापन, शोछापन 3 गहद—समीक्षपटलैरिष
—रघु० ४६३ 4 जल 5 घूलकण । सम०—अच् शोम ।

शोडयम् [शोड + इञ्] शोम ।

शोभ, सम् [शू + मन् + अच्] 1 रेखायी कपडा, ऊनी
कपडा—शोम केनचिदिन्दुभाभूतवशा माङ्गल्यमाधिकृतम्
—अ० ४ । ५—शोमात्तरितमेकले (यच्छे) रघु०
१०८ 2 चौबारा 3 मकान का पिछला भाग,— सम्
1. अस्तर 2 अलसी,—श्री सन ।

शोभय् [शूर + अच्] हजामत ।

शोरिक [शीर + इञ्] गार्ड ।

शम् (अथा० पर०—स्त्रीति, ध्नुत्) पैना करना, तेज करना ।
सम्—(जा०) तेज करना (बाल० भी) मट्टि० ८१४ ।

श्या [शय + अच् उपधालोप] 1 पृथ्वी, (पुत्र) इमा
कम्पयित्वा समसोपपन्नम्—रघु० १८१९, कि शोचस्व
अरव्याभा न सपुत्रि इमा न क्षिपामेष यत् मुद्गा० २१८
2. (गणित में) एक की संख्या । सम०—अ प्रगलग्रह,
—ष, —पति, —भुम् (पु०) राजा,— कविध्यापति
—गीत० १, देवानामुपरि श्याया—यच० ११५५,
—भुत् (पु०) राजा या पहाड़ ।

श्याम् [श्या० जा०—श्यायते, श्यायित] हिलाना, कापना
—चवमाये च मही—मट्टि० १५२१, १७२३ ।

शिवद् [श्वा० उभ०—स्वेहति—ते, स्वेष्ट वा स्वेष्टित] भिन-
मिनाना, दहाडना, बहुबहाना, मुराना, बुद्धदुदाना,
अस्पष्ट ध्वनि करना—अनु० ४१६५ ।

शिवद् [श्वा० जा०] शिवद् (श्विवा० पर०—शिवहति, स्वे-
षित, शिवष्ण), 1 गीला होना, चिन्चिना होना
2 (बुल का दूध या) रस निकलना, रस छोडना,
बबाद रहना, पसीजना, प्र—, बुद्धदुदाना भिनभिनाना
—मट्टि० ७१९३ ।

श्वेड [श्विद् + घञ्, अच् वा] 1 अन्न, फौर, कोलाहल
2 विष, जहर—गुणदोषो बुधो गृह्णन्निन्दुस्वेडाश्विषेपर,
शिरसा श्लाघते पूर्वं पर कठे नियच्छति—सुभा०
3 जाई या तर करना 4 त्याग,—डा 1 शेर की
बहाड़ 2 मूठ के लिए ललकार, रणगुहार 3 बस ।

श्वेडित् [श्विड + क्त] तिह गबना ।

श्वेला [श्वेल् + अ + टाप्] शेल, हसी, मजाक ।

ख

ख [ख् + ड] सुयं,—अम् 1 आकाश—अ केसवोऽपर
इशान्मिनु प्रपुत्र—मृच्छ० ५१ २, याचद्द्विर खे मस्ता
चरन्ति कु० ३१०२, मेघ० ९ 2 स्वयं, 3 ज्ञानेन्द्रिय
4 एक नगर 5 शेत 6 शून्य 7 एक विन्दु, अनुस्वार
8. गह्वर, शारक, बिबर, पत्र—अनु० ९४३३ 9 शरीर
४१

के शारक (जो गिनती में ९ है अर्थात् मूठ, दो कान,
दो आँसें, दो भासुनें, मुदा तथा चतुर्नेन्द्रिय)—शानि शैव
स्फुषोदग्नि—अनु० २१६०, ५३, ५११४४, वाङ्म० ११२०
तु० कु० ३१५० १० पाव ११ प्रसन्नता, मानन्द
१२. अन्नक १३. कर्म १४ ज्ञान १५ बह्मा । सम०

-अट (सेट) 1 बह, 2 राहु, आर्योही शिरोबिन्दु
 -अलगा गया का विशेषण, -उत्क 1 धूपकेतु 2 बह,
 -अनुक मंगल इह, -आमिनी दुर्गा, -कृत्तल शिव,
 व 1 पक्षी -अधुनीत क्षय स नैकरा तनुम् -नी०
 २।२, मनु० १२।६३ 2 बापु, हवा तमातोष यथा
 मूषो वृक्षावनिर्वातान्धस-महा० 3 सूर्य 4 इह
 उदा० आपोविलये यदि सगा म किलेनुवार -तारा०
 5 टिहू, 6 देवता 7 बाण, ०अधिप मण्ड का विशेषण
 ०अंतक बाज ध्वज, ०अभिराम शिव का विशेषण,
 ०असल 1 उदयाचल 2 विष्णु का विशेषण, 'इष्ट',
 'इष्टर' वसि मण्ड के विशेषण, 'बली (स्व०) पृथ्वी,
 ०अस्वाम् 1 बृह की सोदर 2 पक्षी का पोसका,
 -आसा आक श-या, -असि (स्त्री०) हवा में उडान,
 -आस पक्षी, - (है) वन्य एक प्रकार का अलकुकुट,
 -आस आकाशमंडल, 'विद्या ज्योतिष विद्या, -असल
 चौर, -अर (अचर भी) 1 पक्षी 2 बादल 3 सूर्य
 4 हवा 5 रासल (री अर्थात् अचरी) 1 उडने
 वाली अस्त्रा 2 दुर्गा की उपाधि, -असल आकाशीय
 जल' ओस, वर्षा, कोहरा आदि, ज्योतिष (ध०)
 जनुम्, तमाल 1 बादल 2 पक्षी, -छोत 1 जुगल
 लघोनालो विनसि निभा विदुत्तुमेवदष्टिम् -मेघ०
 ८१ 2 सूर्य-सोमल सूर्य, -बृष अग्निबाण-मुषुच
 सधुपान् अष्टि० ३।५, -बराण अघकार, -बुधम्
 आकाश का धून, असम्भवता की प्रकट करने की शक्ति
 अविमर्षित -इस प्रकार की व असमानवापु इस श्लोक
 में बतलाई गई है) मृगनुष्णाम्भसि म्नात मशशुग्-
 धनुर्धत, एष कथ्यासुतो वासि सवुष्णकृतशेखर -सुभा०,
 -अम् पश, -आति ध्वज, -अधि 'व.काश की मणि'
 सूर्य, -मोलनम् विद्रासुता, पकाचट, -अति शिव का
 विशेषण -आरि (नपु०) वर्षा का पानी होस आदि,
 -आसव बर्फ, पासा, -आय (सेवय भी) (वि०)
 आकाश में विद्यमान करने वाला या रहने वाला, -अरी-
 रम् आकाशीय शरीर, -अस्वत हवा, वायु, -असुत्य,
 -असव (वि०) आकाश में उडने, 'सिष्णु चौर,
 -असनी पृथ्वी, स्वधिकम् सूर्यकान्त या चन्द्रकान्त
 अणि -हर (वि०) जिस (राशि) का हर धृष्य ही।

आसचट (वि०) [सप्त अटम्] कठोर, ठोस, ट सदिया।
 आहुर [अ+ह+अच्, मुच्] अलक, शालो की ङट्।
 अच् [म्भा०+अच्] पर० -अचति-अचानति, अचिद)
 1 जाने आना, प्रकट होना 2 पुनर्वसन होना 3 दक्षिण
 करना, (धुरा० उच० -अचयति, अचित) अकडना,
 बाधना, अडना, -अच् -मिलाना, मडमड करना, अडना
 -रम् ८।५३, १३।५५, मूत्रा० ५।१२।

अचित (वि०) [अच्+त] 1 कडका हुआ, सघुनक, मरा
 हुआ, अनामिषित, -अकुतनीडमिषित विप्रभवटा-

मण्डकम्-स० ७।११ 2 निरिषत, सम्मिषित 3 जडा
 हुआ, अटित, मरा हुआ (तमातगत) 'अणि, 'रल।
 अच् [म्भा० पर० -अचति, अचित] मथन करना, बिगोना,
 आरोगित करना।

अच, -अक [अच्+अच्, कन् च] मथानी, रई का
 डडा।

अचपम् [अच्+अच्] भी।
 अचानक [अच्+अक] पक्षी।

अचानिका [अच्+अ+टाप्=अचा, अच्+अच्,
 अचायं आओ यथा व० सं०, अचाय+अीप्+कन्
 +टाप्, ह्रस्व] कडकी चम्पच।

अच् [म्भा० पर० -अचति] लंगडाना, ठहर-ठहर कर
 चलना -अचञ्चन् अमञ्चनजन पथिक पिपासु -नी०
 १।११०७।

अच (वि०) [अच्+अच्] लंगडा, विकलाय, पणु
 -पादेन अचञ्च -सिद्धा०, मनु० ८।२५२, मनु० १।
 ६५। सय०-छोट, -सेल लजनपक्षी।

अचञ्चनः [अच्+अच्+ट्] लजन पक्षी- स्फुटकमलोदर
 सेवितलञ्चञ्चयम्, अच शरदितडागम्- गीत० ११, नैत्रै
 अचञ्चनञ्चन-सा० ६०, एको हि अचञ्चनवरो नलिनी-
 दलम्ब -शुभ्रा० ५,७ नम् लगडा कर जाने वाला,
 सय० -रत्नम् सन्ध्यासिधो का मृदा पर्वत।

अचञ्चना, अचञ्चनिका [अचञ्चन का टाप्, अचञ्चनं+अन्+
 टाप्] अचञ्चन पक्षियो की जाति।

अचञ्चरीट, -हक, अचञ्चकेल, [अचञ्च+रू। कीटम् कन्
 च, अचञ्च+सिच्+अच्] लजन पक्षी-भ्रांमि०
 २।७८, चौर० ८, मनु० ५।१५, वाङ्म० १।१७५ अमश,
 ११।

अट [अट्+अच्] 1 कप 2 अन्धा भूजा 3 कुल्हाडी
 4 हक 5 धास तम० कडकूक पीकदान, आसक
 1 शीदर 2 कौवा 3 जालर 4 घोसे का वर्तन।

अटक [अट्+अच्] 1 सगाई-विवाह तय करने का व्यव-
 साय करने वाला-दु० अटक 2 अग्रमूला हाथ।

अटकानुचम् बाण चकते समय हाथ की विशेष अवस्थिति।
 अटिका [अट्+अच्+कन्+टाप्, ह्रस्व] 1 सडिया
 2 कान का बाहरी विवर।

अट (ड) विकला-पायकटार, सिडकी।
 अटिनी, अटी [अट्+इनि+अीप्, अट्+अच्+अीप्]
 सडिया।

अट्टन (वि०) [अट्ट्+अच्] ठिगना, --न ठिगना बाधपी।
 अट्टा [अट्ट्+अच्+टाप्] 1 साट 2 एक प्रकार का
 घास।

अट्टि (वि०, स्त्री०) [अट्ट्+अच्] मर्षी।

अट्टिक [अट्ट्+अच्+अच्] 1 कताई 2 गिफारी, बहु-
 लिका।

कुट्टेरक (वि०) [स्रट्+एरक] डिनना ।

कटवा [स्रट्+वन्+टाप्] 1 साट, सोका, लटोला
2 मुका, पालना । सम०—अग सोटा या लकड़ी जिसके
सिरे पर ओपरी जड़ी हो (यह शिव की का हथियार
नमसा जाता है तथा सप्यासी और योगी इसे धारण
करते हैं) — मा० ५१४, २३ 2 विलीय, ंबर, ंभूत्
(पु०) शिव की उपासिणी, अङ्गिण्यु (पु०) शिव का
विशेषण, —आल्लुत् —आच्छ (वि०) 1 नीच, दुष्ट
2 परिपक्व, ब्रह्मास 3 मूल, वेवकृफ ।

कटवाका, कट्टिका [कट्वा+कन्-टाप्, इयम् वा]
लटोला, छोटी साट ।

कट्टे० कट्ट ।

कट्ट [कट्+अक्] तोडना, टुकड़े टुकड़े करना ।

कट्टिका, कट्टी [कट्+अक्+कीच्, कन्, लृप्, कट्+
कीच्] लटियाँ ।

कट्टः [कट्+गन्] 1 तलवार—न हि कट्टो विजानाति
कर्मकार स्कारणम्—उद्भट, कट्ट परामुख आदि
2 गैरे के मींग 3 गैरा—रपु० ११६२, मनु० ३।२७२,
५।१८, —कृन् लोहा । सम०—आवाला: तलवार का
धाव, आवाार म्यान, कोष—आविष्यन् मूस का
मात, आल्लु गैरा,—कोष्क म्यान,—बर लडगधारी
योडा,—धनु,—भेगुका 1 छोटी तलवार 2 गैरे की
मादा, पक्क तलवार की धार, वाधि (वि०) हाथ
में तलवार लिये हुए,—कट्टम् मूस के मींगो का बना
पाव, —पिधानम्—पिधानकम् म्यान,—मुक्किका धाव,
छोटी तलवार,—अधार तलवार का बाधात,—कट्टम्
तलवार का फलक (गुठ को छोड़ कर शेष तलवार) ।

कट्टगवत् (वि०) [कट्+गवत्] तलवार से मुसज्जित ।

कट्टगिक [कट्ट+गन्] 1 कट्टधारी योडा 2 कसाई ।

कट्टगिन् (वि०) (स्त्री०—मी) [कट्ट्या+इनि] तलवार से
मुसज्जित (पु०) गैरा ।

कट्टीकम् [कट्ट+ईक वा०] धराती ।

कट्ट [प्रा० पर०—कट्टयति, लथिन्] 1 तोडना, काटना
टुकड़े २ करना, कुचलना—मट्टि० १५५४ 2 पूरी
तट्टु हराणा, नष्ट करना, मिटाना—रत्नीधरनाथेन
लथिधते तिगिरे निधि—हि० ३।१११ 3 निरास करना
मनासा करना, (प्रथय में) हतास करना—स्त्रीमि
कय न लथित भूवि म—पथ० १।१४५ 4 बिभ्र
बालना 5 बोसा देना ।

कट्ट, —कम् [कट्ट्+कम्] 1 धरात, कार्र, बिच्छेव,
काटा, अस्त्रभय 2 टुकड़ा, याग, बर, बल—दिब
कान्तिमल्लदेक—वेध० ३० काष्ठ, मासं आदि
3 बर का अनुभाव, अज्याय 4 लवुन्मय, लथात,
समुह—तच्छकष्य—का० २३,—क 1 बीनी, खीर
2 रत्न का एक दोष,—कम् 1 एक प्रकार का नमक

2 एक प्रकार का ईल, गन्ना । सम०—अध्वन् 1 बिबाड़े
हुए बावळ 2 कामकेति में दौतो का चिह्न,—आकि
(स्त्री०) 1 तेल की एक नाव 2 सरोवर या झील
3 बहु स्त्री जिसका पति व्यभिचारी हो,—कवा छोटी
कहानी,—कट्टम् मेघवृत्त जैसा छोटा काव्य—परि-
भाषा—कट्टकाव्य भवेत्काव्यस्वेकदेशान्तारि च
—सा० ८० ५६४,—क एक प्रकार की खीर,—कटा
कीची,—बरलु शिव का विशेषण—महूर्त्तवर् कीलाव-
नितजगत लच्छपरधो—गया० १, येनानेन जगतु
लच्छपरधुर्दो हुर क्वाच्यते—महावी० २।३३
2 जमदीन का पुत्र, परचुराम का विशेषण,—कम्
1 शिव 2 परचुराम 3 राहु 4 टूटे दंत बाका हाथी,
—बाक हलवाई,—कम् विषय का भाषिक प्रत्य
जिसमें स्वयं से नीचे के सब लोको का नाम हो जाता
है,—कट्टकम् वृत्त का नाम,—कीषक धार के लट्टु,
—कट्टका एक प्रकार का नमक,—किटार: बीनी,
—कट्टीरा गिसरी,—कौला कलती, व्यभिचारिणी
स्त्री ।

कट्टक,—कम् [कट्ट्+कन्] टुकड़ा, याग, बल,—क 1
बीनी, खीर 2 जिसके नालून न हो ।

कट्टक (वि०) [कट्ट्+कट्ट] 1 तोडने वाला, काटने
वाला, टुकड़े २ करने वाला 2 नष्ट करने वाला,
मारने वाला—स्मरणलक्ष्येन भय शिरसि मध्यनम्
—गीत० १०, अस्मरकक्ष्येन—१२,—कम् 1 तोडना
काटना 2 काट देना, क्षति पहुँचाना, भोट पहुँचाना
—अधरोष्ठलक्ष्येनम्—पथ० १, मट्ट मुबलम्यन
जनय रत्नकष्येन—गीत० १०, बीर० १३ 3 हतास
करना, (प्रथय में) निरासा करना 4 बिभ्र बालना
रत्नलक्ष्येनशिरसम्—रपु० १।३६ 5 ठगना, बोसा देना
6 (तर्क का) निराकरण करना—नी० १।१३०
7 बिद्रोह, विरोध 8 बसलित्यी ।

कट्टक, —कम् [कट्ट्+कत् वि०] टुकड़ा ।

कट्टक (अर्थ०) [कट्ट्+कत्] 1 बसो में, टुकड़ों में, ऊँ
काट कर टुकड़े २ करना 2 बोसा २ करके, टुकड़ा २
कर के, टुकड़े २ कर के ।

कट्टक (पु० क० क०) [कट्ट्+कत्] 1 काटा हुआ,
तोड़ कर टुकड़े २ किया हुआ 2 नष्ट किया हुआ,
ध्वस किया हुआ 3 (तर्क का) निराकरण किया हुआ
4 बिद्रोह किया हुआ 5 निरास किया हुआ, बोसा
दिया हुआ, परिपक्व—कट्टकतपुंशितिलिनाम्—गीत०
८,—सा बहु स्त्री जिसका पति अपनी पत्नी के प्रति
अविश्वास का अपराधो रहा हो, और इसलिये उसकी
पत्नी उससे फूट हो, लसकत शिरसि में कथित १०
प्रकार की नासिकाओं में से एक—रपु० ५।१७, वेध०
३९, परिभाषा इत प्रकार की है—वास्येति विधो

यस्या अन्वयसभोग्यनिष्ठित, सा सन्धिदोषि कथिता मोर-
रीत्याकथाविना- सा० व० ११४) मम०- विषह
(ब०) अगहन, विकलाग-भूष (वि०) आचार-
हीन, दुःखरिच ।

सन्धिभो (सन्ध्+धनि+धीप्) पृथ्वी ।
सन्धिका (ब० व०) सोह, लाजा, तला हुआ या मुना
हुआ अनाज ।

सन्धिर [सन्ध्+किरन्] 1 खर का पेड़, -पात्र० १३०२
2 इनर का विशेषण 3 पौध ।

सन्ध् (धा० उभ०-सन्धि-ते, मान, कर्म० अन्वये-आपते)
सोचना, जानना, सोखना करना -समन्त्राखिल मिह
-पञ्च० ३११७, मनु० २:२१८ ऋट्टि० ११७,
दशि -, सोचना, उब-, खुदाई करना, उह निकालना
उन्मूलन करना, उखाड़ना (आम. भी)-बहुलानुनाय
हरना-रघु० ४:२६, ३३, १:१७३, मेघ० ५२,
ऋट्टि० १२५, १५५५, मा० ९:३६, नि- 3 जानना,
सोचना 2 हरना, माहना -अनद्विषयं निजनेते
-पात्र० ३११, बभ्रुवाया निबन्धन् - वृ० १:२३०,
ऋट्टि० ४३३, १९२२ 3 (नगर के रूप में) उठाना
-निबन्धान् अयन्मन्त्रान्-रघु० ४:२६ 4 जानना,
स्मिर करना, धुसेहना-निबन्धान् शर भूवे-रघु० ३:५५,
१:२५७, ऋट्टि० ३१८, शि० ४:७७, परि- (, सार्य
आदि) सोचना ।

सन्धक [सन्ध्+कल्] 1 सन्धिक 2 संध अगाने वाला
3 बूढ़ा 4 शान ।

सन्धम [सन्ध्+स्यट्] 1 सोचना, सोखना करना, पोखा
करना 2 माहना ।

सन्धि, -नी (स्त्री०) [सन्ध्+इ, विकया ढीप] 1 शान
-रघु० १:७६६, १:८१२, मुहा० ७:३१ 2 गुफा ।

सन्धिचम [सन्ध्+च] कुशा, लुपति, गैरी ।
सन्धुर [सन्धिपति उन्मत्तया-स+पु+क] सुपारी का
पेड़ ।

सन्धर (वि०) [सन्ध्+विभक्तिमतिशयेन अस्ति अन्व-स+र
अपवा सन्धिप्रिय गति-स+रा+क] (विच०
मुद्र०, बभ्रुक, इव) 1 कठोर, खुरदरा, ठोस
2 अमृदु, पेड़, सक्ता-रघु० ८:१२, स्वर मर सत
कात् -काव्य० १:५७ 3 तीखा चरपरा 4 घना,
सघन 5 पीडाकर, हृदिकट, कर्षण 6 तेज धार वाला
-वेहि शानवनसाराधाम्-गीत० 7 चरम-सराधु
-अदि 8 कूर, निष्ठुर, १ 1 तथा-मनु० २:
२०१, ३:११५, १२०, ८:३७०, पात्र० २:१६०
2 सन्धर 3 अनाज 4 बोधा 5 एक राक्षस का नाम
जो रावण का सीतेला भाई था और जो राम के द्वारा
मारा गया था-रघु० १:१४२२ । सप-०-अधु,
-हर, रथिच सुवे-हुदी 1 यद्यो का अस्तवत्

2 नाई की दुकान, कोष- ब्यापक चकोर, तीतर,
-कोमल ज्येष्ठ मास, -सूक्ष्म- रोहम् यद्यो का
अस्तवत्, -सन्ध- सन्ध (वि०) मुकीनी माक बाना,
-इष्यम् अमल, इष्यतिन् (पु०) सगुना राम का
विशेषण, -माह गये का रेकना-अल काल, -पात्रम्
सोहे का शयन- रास लकड़ी का बर्तन, -प्रिय
कवत्, -यावम् यद्यो से बोनी जाने वाली गाथी,
-शब्द 1 गये का रेकना 2 सुगुनी बाज, आला
यद्यो का अस्तवत्, -स्वरा अतलो बमदी ।

सन्धिका [सन्ध्+कन्] टाग इनम । मिथी हुई कम्पुरी ।
सन्धिन्यम् - य (वि०) [सन्धि+धा (धमादेश)] पक्षे पं
+सम्, म्] यद्यो का रूप गीने वाला ।

सन्धि [सन्ध्+धीप्] यद्यो । मम०- अह्नु शिव का
विशेषण, -बृष तथा ।

सन्धि (वि०) [सन्ध्+ठु, ररचातादेश] 1 खेत 2 मूल,
मुठ 3 कूर 4 निषिद्ध दम्पुजा का इन्धुक ५
1 घोड़ा 2 दान 3 घमड 4 कामदेव 5 गिर, ६
(स्त्री०) लकड़ी की अपना पति स्वयं पुत्रे ।

सन्धि (धा० पर०-सन्धिन्, सन्धिन्) 1 पीडा देना,
वेधन करना 2 कष्टकर शब्द करना ।

सन्धिचम् [सन्ध्+चम्] सन्धिचय ।
सन्धिका [सन्ध्+धन्+टाप, दासम्] 1 उपदेश गम
2 गनक ।

सन्धि (स्त्री०) [सन्ध्+उत्] 1 सन्धि 2 सन्धि का
वृत्त 3 सन्धि का पेड़ ।

सन्धिचम् [सन्ध्+उत्] सन्धि ।
सन्धि (स्त्री०) [सन्ध्+ऊ] मान ग् जीवी ।

सन्धिच [सन्ध्+ऊ] 1 सन्धि का पट 2 चिन्तु, रम्
बोले 2 हरना, -री सन्धि का पट- रघु० ४:५७ ।

सन्धिर [-सन्ध्+पुं० क्ययत्] 1 चोर 2 बदमाश,
ठग 3 भिखारी का कटोरा 4 मोपरी 5 मिट्टी का
पूटा हुआ बनें डीकरा 6 छाता ।

सन्धिरिका, सन्धिरौ [सन्ध्+रिच+धीप्, +कन्-टाप्,
ह्रस्व, सन्ध्+कौप्] एक प्रकार का मुमरी ।

सन्धि (धा० पर०-सन्धिन्, सन्धिन्) 1 जाना,
फिरना चलना 2 घमड करना ।

सन्धि (वि०) [सन्धि (वि०)] अन्ध (वि०) अन्ध । विकलाग,
अपाह्न, अपुण्य (अगहीन) 2 टिपना, ओझा, कद में
छोटा, धे -सन्धि दस अर्थ की सभ्या । मम०
- आक्ष (वि०) टिपना, आछा, छोटा ।

सन्धिच, -टम् [सन्ध्+अटम्] 1 नगर निजमे पेट भगुनी
हो, यद्यो 2 पहाड की चर्गाई का गाँव ।

सन्धि (धा० पर०-सन्धिन्, सन्धिन्) 1 चलना-फिरना,
डिलना-जुलना 2 एकत्र करना, सपह करना ।
सन्धि-सम् [सन्ध्+अम्] 1 सन्धिहान-मनु० १:११७, १:१४

गात्र० २।२८२ २ पृथ्वी, भूमि ३ स्थान, जगह
 ४ घूल का डेर ५ तलछट, गाद, तेल आदि के नीचे
 'रमा हुआ मैल,—क दुष्ट या गारागी आदमी—सं-
 कूर खल कूर सर्पाई कूरर खल, मन्वीषविषया
 खल, खल केन निवारते—पान० २६, विषघरतोऽ
 प्यनिविषय खल इति न मया बर्दात्म विज्ञास, यदय
 मकुलद्वेषी मकुलद्वेषी पुन पिपुन - वासव० [खलीकृ
 १ कुचलना २ धायल करना या क्षति पहुँचाना
 ३ दुष्यबहार करना, धूना करना—परोक्षे खलीकृतोऽय
 वृत्ताना—मच्छ० ७] मम०—उचित (स्त्री०) दुर्बचन
 दुर्वाचन,—घान्ण्यम् मूलिहाम,—पू (प० म्त्री०) शाड
 देन बाला, माफ करने वाला,—भूमि पाग,—ससर्ग
 दुष्टा की संगति ।

खलक [ख+सा+क+कन्] घडा ।

खलति (वि०) [खलन्तिनेशा अच्चात्—खल+अतच्
 ति० साच् | एजे सिग् बाला, गजा—भुवखलति ।
 खलतिक् [खलन्ति+क+क] पहाड ।

खलि, —स्त्री (स्त्री०) [खल+इन् | तेल की तलछट, खनी
 खाल्या वेदुर्बमर्या पचति निलम्कीमिन्पनीचन्द-
 नार्थ भर्त० २।१०० ।

खलि (स्त्री) न. नच् [य अथमन्तिउदे लोचनम्—पृथा०
 वा लृप्च | ल्याय का ददला, जगाम की राम ।

खलिनी [गल्+इनि] डीप् [खलिहानो का समूह ।

खलोकार, कृषि (स्त्री०) [खल+क्यि+कृ+घन्,
 क्लिन वा] १ खोर पहुँचाना, क्षति पहुँचाना २ दुर्व्य-
 वहार शा० १।२५ ३ प्रतिष्ट उच्यत ।

खलु (अव्य०) [खल्] उन या० | यह अव्यय निम्नांकित
 अर्थों का एकट करना १ निम्नन्देष्ट, निष्पद्य ही,
 अवश्य सचमुच मार्गो पदानि खलु ते विषयोभवन्ति
 शा० ४।१६, अनुत्तम खलु विक्रमालङ्कार—विक्रम०
 १, न खलन्तिजित्य रथ् इतो भवान् रथ् ३।५१
 २ अनुशेष, अनुनय-विनय प्रार्थना - न खलु न खलु
 बाण सशियायोऽयमिम्भुत् शा० १।१०, न खलु न
 खलु मध्ये माहस कार्ययेतन् - निगा० ३ ३ पुछलाछ
 -न खलु तामिभ्रुद्धो मृत् - विक्रम० ३, (=विमभि-
 रुद्धो मृत्) न खलु विदिताम्ते नश्च निश्चमन्त्रबाणकयहन-
 केन मृदा० ५, न खलुप्रस्थानिनाकिना गमित सोऽपि
 मुहद्वगता गतिन् कु० ४।२० ४ प्रतिषेध (क्रियात्मक
 सजाओ के साथ) निषाग्निऽस्तेमेन खलुबन्धा खलु
 वाचिकम्—गि० २।७० ५ तर्क - न विदोर्व कठिना
 खलु सिष्य - कु० ४।५, (एण० कार इते विषाद के
 निवर्धन के रूप में उद्धृत करता है) विधिना जन एष
 बन्धितम्यदमीन खलु देहिता सुखम् - ४।१० ६ कभी
 कभी 'खलु' पूरक की भाँति भर्ती कर दिया जाता है
 ७ कभी कभी वाक्यालकार की तरह प्रयुक्त होता है ।

खलुच् (प०) [खन् इन्द्रिय लुञ्जति हति इति—ख+लुञ्च्
 +क्विप्] अन्वकार ।

खलुरिका पेरुड का मैदान जहाँ सैनिक लोग कवाचद करे ।

खलु [खल+यत्—टाप्] अतिहानो का समूह ।
 खलु [खल+क्विप्, त लालि—खलु+ला+क] १ खल
 - जिसमें डाल कर अधिचर्या पीयी जावे, चक्की
 २ गडा ३ चमडा ४ वातक पत्थी ५ मसक ।

खलिका [खलु+कान्+टाप्, इत्वप्] कडाई ।

खलि (स्त्री) इ (वि०) [खलु+इन्+टल्+इ, खलि+
 डोष्+टल्+इ] गजे सिग् बाला ।

खल्लाट (दि०) [खल्+वाट उप० म०] गजा, गजे निर
 वाला—खल्लाटो दिवसेदवरस्य किरणौ सन्नापितो
 मन्मके—भर्त० २।९०, विक्रमा० १८।९९ ।

खल (इ० व०) भारत के उत्तर में स्थित एक पहाडी प्रदेश
 तथा उसके अधिवासी - भर्त० १०।४४ ।

खलार (इ० व०) एक देश तथा उसके अधिवासियों का
 नाम ।

खल्व [खन्+प नि० नस्य व] १ काष २ हिसा, निष्पु-
 रता ।

खल [खानि इन्द्रियाणि स्थिति निवचलोकरोति—ख+सो
 +क] १ खान, लुजनों २ एक देश का नाम दे०
 'खल' ।

खलुषि (प०, स्त्री०) [ख+लुष्+इ] १ अपमानसूचक
 अभिव्यक्ति (समास के अन्त में)—वैयाकरण खलुषि
 -जो म्याकरण अच्छी तरह न जानता हो या भूल
 गया हो ।

खल्लस [खन प्रकारे दिव्यम्, पृथा० अकारलोप] पोस्त ।
 मम० रस अफ्रीम ।

खलिक [खान्+टल्] तला हुआ या चूना हुआ अनाज ।

खल्ट (न्) (अव्य०) गला साफ करते समय होने वाली
 ध्वनि, झालूक खलारना ।

खल्ट, -डा, -टिका, -टी (स्त्री०) [ख+अत्+घञ्
 क्त्रिया टाप्—खल्ट+कन्+टाप्, इत्वप्, खाट+डोष्]
 अर्धी, टिकटो जिस पर सूँवे की रस कर चिता तक ले
 जाते हैं ।

खल्वच्च [खण्ड+अण्+वा+क] खड, मिथी,—ख्च कुक-
 लेश प्रदेश में बिछ्मान इन्द्र का शिष्य बन जिते अर्जुन
 और कृष्ण की सहयता से अग्नि ने जला दिया था ।

खल्व—प्रख एक नगर का नाम ।

खल्वधिक, खल्विकः [खण्डव+टल्, खण्ड+टल्]
 हलवाई ।

खल (वि०) [खन्+कान्] १ खुदा हुआ, खोला किया
 हुआ २ फाटा हुआ, खोटा हुआ,—तम् १ खुदाई
 २ खुराक ३ खाई, परिखा ४ आयताकार ताकाव ।
 मम०—पू (स्त्री०) खाई, परिखा ।

को प्रकट करता है जो 'अभावा' या 'अव्यक्त' भावि सम्बो-
ले पुकारा जा सकता है, नगरखंडम् अभावा नगर)
'अष्ट' के लिए देखें अ के नीचे ।

शेतिताम्, -कः [शिद् + इन् = शेटि, शेटि तानोऽयम्,
तानोऽयम् वा] बैतालिक, स्तुतिपाठक को बृहस्पानी को
ना बधा कर जगाता है ।

शेतिन् (पुं०) [शिद् + शिति] बुराचारी, दुष्टचरित्र ।
शेद [शिद् + शन्] 1 जवसाद, आत्मन्, उदासी
2 बकान, शान्ति-अलसकृतितमृग्यन्वम्बसवातसेदात्
—उत्तर० १।२५, अथशेद मधेवा - शेष० ३२, रघु०
१।८।५५, 3 पीडा, यमना --अमर ३ 4. बुझ, शोक
—गृह शेद शिल्प मयि भजति नाशापि कुम्बु -शेपी०
१।११, अमर ५३ ।

शेव्य [शन् + श्यप्, इकारादेश] लार्ड, परिष्ठा, - क पुल ।
शेन् (महा० पर०) - शेलति, शेलति 1 हिलाना, इधर-
उधर जाना जाना 2 कायना 3 खेलना ।

शेल (वि०) [शेल + शच्] शिलाही, रसिया, श्रीदापूतं
—रघु० ५।२२, विक्रम० ५।१६, ५३ ।

शेलन् [शेल + श्युट्] 1 हिलाना 2 खेल, मनोरं-न
3 तमाश ।

शेला [शेल + श + टाप्] श्रीडा, खेल ।
शेलि (स्त्री०) [से आकारसे अलति पर्याप्नोति से +
जल् + इन्] 1 श्रीडा, खेल 2 तीर ।

शोदि (स्त्री०) [शोद् + इन्] बालाक और बतुर स्त्री ।
शोडि (वि०) [शोड + शच्] विकलाग, लयडा, पनु ।

शोर (स्त्री०) [शोर् (ल) + शच्] पंख, लमडा ।
शोरक [शोर + कन्] 1 पुरवा 2 बावो 3 तुपारी का
छिन्नका 4 डेगवो ।

शोसि [शोन् + इन्] तरकस ।

श्या (अद० पर०) - (आर्षयानुक लकारो मे आ० भी)
- श्याति, श्यात कहना, घोषणा करना, समाचार
देना (सप्र० के साथ) - कर्म० - श्यायते 1 कहुसाना
—भट्ट० ६।१७ 2 प्रतिष्ठ या परिचित होना, - प्रेर०
- श्यायति - ते 1 ज्ञान करना, प्रकचन करना
—मनु० ७।२०१ 2 कहना, घोषणा करना, बर्षन

करना - मनु० २।५९, मनु० ११।१९ 3 स्तुति करना,
प्रख्यात करना, प्रशंसा करना । श्यि - (कर्म०)
ज्ञात होना, प्रेर० घोषणा करना, प्रकचन करना, ज्ञा-
1 कहना, घोषणा करना, समाचार देना (प्रायः प्र०
के साथ), - ते राभाय बधोपायमाशम्बुविद्वृषि -
रघु० १५।५, ५१, ७१, ९३; १२।५२, ९१, मय०
११।३१, १८।१३, (कभी कभी सब० के साथ - आख्याहि
महे शियदर्शनस्य) पच० ५।१५ 2 घोषणा करना,
श्वस्त करना 3 पुकारना, नाम लेना - रघु० १०।५१,
मनु० ५।६ परि - सुपरिचित, होना, परिचित - विनती
करना, प्र - सुपरिचित होना, प्रख्या - 1 मुकर जाना
2 इकार करना, मना करना, अस्वीकार करना - मना
करना, प्रतिषेध करना 4 बजित करना 5 पीछे छोड़
देना, जाने बड़ जाना - मालवि० ३।५, वि - सुपरि-
चित या प्रतिष्ठ होना, श्या - 1 कहना, समाचार देना,
घोषणा करना - भट्टि० १।५।१३ 2 श्लाघना करना,
बर्षन करना - राधणस्यापि ते अन्य श्यास्यास्यामि
— महा० 3 नाम लेना, पुकारना - विद्वद्दर्वीणावापो
श्याभ्याता सा विद्युन्माता श्रुत० १५, सन् - विनता,
यमना करना, हुस्नाह लगाना, जोडना - तावन्वेद च
तस्थानि साहस्ये सख्यपायन्ते - शारी० ।

श्यात (पुं० क० इ०) [श्या + क्त] 1 ज्ञान रघु०
१।८।६ 2 नाम लिया गया, पुकारा गया 3 कहा गया
4 विधुत, प्रतिष्ठ, बदनाम । सप्र० - श्यात् (वि०)
कुस्वात, दुष्ट, बदनाम ।

श्याति [श्या + शित्] विधुति, प्रतिष्ठि, वज, कोति,
प्रतिष्ठा - मनु० १२।३६, पच० १।३७१ 2 नाम,
शौर्यक, अधिधान 3 बर्षन 4 प्रशंसा 5 (दमन० में)
ज्ञान, उपयुक्त पर द्वारा बलुओ का विवेचन करने की
वधित - सि० ५।५५ ।

श्यायन् [श्या + शिच् + श्युट्] 1 घोषणा करना, (रहस्य
का) उद्घाटन करना 2 अरतय श्लोकार करना,
मान लेना, सांख्यिक घोषणा करना - मनु० ११।२२०
3. शिखात करना, प्रतिष्ठ करना ।

श

श (वि०) [श + क] (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त)
जो जाता है, जाने वाला, गतिमान् होने वाला, छह-
रने वाला, शेष रहने वाला, शेषन करने वाला, - बः
1. गन्धर्व 2 मधेवा का विशेषण 3 शौर्य वाला ('शुद'

शब्द का सश्लिप्त रूप, छन्द मात्स्य में), - मन्
शासन ।

शक्यम् - शक्य [शक्यन्त्वस्मिन् - मन् + श्युट्, ग भादेश]
(कुछ लोग 'शक्य' को शक्युत समझते हैं) जैसा कि एक

लेखक का कथन है—फाल्गुने गगने कने मलमिच्छन्ति
बर्णा १ आकाश, अन्तरिक्ष—अर्वाच्येन गगन-
म्यूशा रभु स्वर्गेण—रघु० ३।६३, गगनमिभ मन्थतारम्
—एक० ५।६, सोम्य चन्द्र पतति मगगात्—स० ४,
अने० पा०, शि० ९।७० २ (गण० में) कृत्वा
३ स्वर्गः मम० अक्षम् उच्यन्तम आकाश,—अङ्गना
स्वर्गीय परी, अयरा, अक्षय्य, १ मूर्धं २ ग्रह ३ स्व-
र्गीय प्राणी,—अम्बु (मृ०) वर्षा का पानी,—उन्मुक्त
मणलपह,—कुमुदम्,—पुष्पम् आकाश का फूल अर्वात्
अवस्तविक कम्बु, अवभावना, दे० 'मपुष्प',—गति
१ देवता २ स्वर्गीय प्राणी—मघ० ४६ ३ ग्रह, चर
('गगनेचर' भी) (वि०) आकाश म घूमने वाला
(र.) १ गती २ ग्रह ३ स्वर्गीय जलदा, —अक्ष
१ मूर्धं २ बादल, तत् (वि०) अन्तरिक्ष में रहने
वाला (पु०) स्वर्गीय जोर, शि० ९।५३, सिन्धु
(स्त्री०) गंगा की नगार्थ, स्व, स्थित (वि०)
आकाश में विद्यमान, स्वर्गान् १ वाम्, द्रवा २ आठ
मस्तों में से एक ।

गङ्गा [गङ्+गङ्+टाप्] १ गंगा नदी, भारत की पवित्र-
तम नदी, अप्रीत्यो गङ्गेषु पद्मपुष्पता स्तीकमजवा
मनु० ३।१०, मघ० २।२५, १२।५७, (इसका
उत्पत्तम् अर्थ० १०।५।१५ में दूसरी नदियों के साथ
२ मिलता है) (इसके अतिरिक्त और दूसरी नदियों
के लिए भी जो भारत में पावन समझी जाती है, यह
शब्द कभी २ प्रयुक्त किया जाता है) २ गंगा बेनी के
रूप में मृत गंगा (हिमवान् पर्वत की श्रेण्ड पुत्री गंगा
है, कहते हैं ब्रह्मा के किसी शपथ के कारण गंगा को
इन चरनी पर जाता पड़ा जहाँ यह शतनु गजा की
पत्नी बनी, गंगा के आठ पुत्र हुए, जिनमें भीष्म सब
से छोटा था, भीष्म अपने ब्राह्मिन् प्रह्लयर्ष तथा शौर्य
के कारण विख्यात हो गया था । दूसरे मतानुसार
बह गौरव्य की आराधना पर इस पुत्री पर आर्, दे०
'मगीर्ष' और 'जहनु' और तु० अर्त् ३।१०)
सम०—अम्बु—अम्बु (मृ०) १ गंगाजल २ वर्षा
का विद्युत् जल (जैसा कि आधुनिक मास में बरसता
है)—अम्बतर १ गंगा का इस पुत्री पर पदार्पण—प्रगी-
र्य इव वृत्त्यङ्गावतर—स० ३२, (यहाँ इस शब्द का
अर्थ—स्नान के लिए गंगा में उतरना भी है) २ पुत्र्य
स्नान का नाम,—अङ्गरे गंगा का उत्तम स्नान,
—अेषम् गंग तथा उसके दाना किनारों का दो २
काष्ठ एक क अंश,—स्थिती एक जलपत्नी,—अ
१ भीष्म २ कानिकेय,—इत्त भीष्म का विशेषण,—द्वारम्
मन्तल भूमि का वह स्थान जहाँ गंगा प्रविष्ट होती है
('द्वार' भी उन्नी स्थान को कहते हैं),—चर
१ शिव का विशेषण, २ समुद्र, 'पुत्रम् एक नगर का

नाम,—पुत्र १ भीष्म २ कानिकेय ३ एक सकर जाति
जिसका व्यवसाय मूर्धं होना है ४ गंगा के घाट पर
देवोंे वाला पड़ा जो शौर्यप्राप्तियों का पथप्रदर्शन
करता है, भृशु (पु०) १ शिव २ समुद्र,—अम्बम्
गंगा का तल भाग,—यात्रा १ गंगा नदी पर जाना
२ शौरी को मगाट पर इम्बिए के जाना कि वही
उसकी मृत्यु हो, सागर वह स्थान जहाँ गंगा समुद्र
से मिलती है, मुत्त १ भीष्म का विशेषण २ कानि-
केय का विशेषण,—हृद् एक शौर्य स्थान का नाम ।

गङ्गाक, गङ्गाका, गङ्गाका [गङ्गा+कन्+टाप् इह्वा
का, एषे इत्यम अर्पि] गंगा ।

गङ्गोल एक गल जिसे गोंदिय भी कहत है ।

गङ्ग [गङ्+ग] १ वृक्ष २ (गण० में) प्रथम का सम्य
(अर्थात् शशिरो की सम्बन्ध) ।

गङ् (मार्० पर० गजति गजिन) १ पचाहना दहाहना
—अजयवंदा—मौट्ट० १।५।५ २ मंडरा वाक्य मस्त
होना व्याकुल होना मर्दिमन हाना ।

गङ् [गङ्+अच्] १ हाथी—कन्याभिनी विद्युत्गिवायजी
गजा कि० १।२५ २ आठ का मन्त्र ३ नन्दाई की
माप, गज (पांभाया-सायागनराक्या विषदमुत्तका
गज) ४ एक गजस जिन शिव में माया था । मघ०

अधमो (पु०) १ नवभ्रम हाथी २ छन्द के हाथों
पेगलक का विशेषण—अधपति हाथिया का
स्वामी, उत्तम हाथी, अधपक्ष हाथिया का अधोपक्ष,
अपक्ष दुष्ट या बदमाश हाथी नामान्य या नीच
मसल की जड़, और १ म्रि २ शिव त्रिगने गज
नामक राक्षस को माया था, आजीव्य हाथियों में आ
अपनी जीविकाप्राप्ति करता ह, महावन, आमन
—आप्य गणेश का विशेषण आप्येव हाथिया का
चिकित्सा का विज्ञान, आरोग्य महावन, आह्वम
—आह्वयम् हस्तिनापुर, इव १ उत्तम हाथी, गज
राज—कि छटासि गजेन्द्रमन्दमने—भृङ्गा० ०

२ इन्द्र का हाथी ऐरावत, 'कर्म' शिव का विशेषण
कर्म शाने के योग्य एक बड़ी जड़,—कर्मशिन
(पु०) यरुद,—गति (स्त्री०) १ हाथी जैसे मद
पाल, हाथी की सी चाल वाली स्त्री, शानिनी हाथी
की सी मन्द तथा शौर्यमयी चालवाली स्त्री, इव,
—इवत्त (वि०) हाथी जसा ऊँचा,—इवत्त १ हाथी
का दात २ गणेश का विशेषण ३ हाथोंदात ४ मुठी
या डिकेट जो दोवार में लगा हो, 'मघ (वि०) हाथी-
दात में बना हुआ, शानम् १ हाथी के मण्डम्बल में
बहने वाला मद २ हाथी का दात,—नस्त हाथी का
युक्स्थल,—वति १ हाथियों का स्वामी २ विज्ञान-
काय हाथी—शि० ६।५५ ३ सर्वश्रेष्ठ हाथी,—पुङ्गव

एक विद्यालयका भेष्ट हाथी—गवपुञ्जवस्तु, घोर विलासकयति बाटुगरीरुच नृपते—भर्तुं० २३१, —गुण्णु हस्तिनापुर, —अवधनी, —बोधिनी, हाथियों का अनादल, —भक्षक अवलम्ब वृक्ष, —अवधम् हाथी को सजाने का आनुभव, विशेषकर हाथी के मस्तक की रचीन देखाई, —अवधिका, —अवधनी हाथियों की भडकी, —बाबल सिंह, —सूक्ष्मा, —बोहितकम् मोती जो हाथी के मस्तक से निकला हुआ माना जाता है, सूक्ष्म, —बचन, —बचन गणेश का विशेषण, —सोहन सिंह, —सूक्ष्म हाथियों का झुंड रघु० १। ०१, बोधिन (वि०) हाथी पर बैठकर युद्ध करने वाला, —राज उलम या श्रेष्ठ हाथी, बच हाथियों का दल, —शिक्षा हस्तिविज्ञान, साङ्ख्यम् हस्तिनापुर, स्थानम् (शा०) हाथी का स्थान करना, (आल०) हाथी के ज्ञान के समान और निरफल प्रयत्न (हाथी स्वयं करके अपने ऊपर धूल डाल लेता है) तु० —अवधोन्निवचिनाना हस्तिनामिव क्रिया हि० १।१८।

गञ्जना [गञ्ज + तन्] हाथियों का समूह ।
गञ्जवन् (वि०) । गञ्ज + मनुष्य । शायियों की रचने वाला रघु० ५।९।

गञ्ज (इशा० पर० गञ्जनि) विशेष दग में ध्वनि करना, शब्द करना ।

गञ्ज [गञ्ज + गञ्] 1 मान 2 सजाना 3 गोगाला 4 भडकी, अनादल को मडकी 5 अनादर, निरकार, —आ 1 शोषही पर्याशादः 2 मधुशाला 3 मदिरापात्र ।

गञ्जवन् (वि०) [गञ्ज + मनु०] शूद्र मधुशाला, लज्जित करना प्राण बड़ जाना, सर्वश्रेष्ठ होने स्थलभ्रमण-गञ्जन मम तूटवराञ्जन (चर्याद्वयम्) गी० १०, अलिकुलगञ्जनमञ्जनकम् १०—नेत्रे लञ्जनमञ्जने सा० ८० 2 पराजित करना, जीतना कालिय-विषपरगञ्जन—गी० १।

गञ्जिका [गञ्जा + कन् + टाप्, इवम्] मधुशाला, मदिरालय ।

गञ् (इशा० पर० गञ्जित, गञ्जित) 1 शीचना, निकालना 2 (नरल पदार्थ की भाँति) बहना ।

गञ् [गञ् + अच्] १ पदो 2 बाइ 3 साई, परिखा 4 स्काइट 5 एक प्रकार की सुनहरी मछली । सम० —उत्पत्, —देवाजम्, —सवभष् पट्टाई नामक, विशेषत बड़ आ गठ प्रदेश में पाया जाता है ।

गञ्जवन्, गञ्जवित् [गञ् + गिञ् + शान्, इलुच् वा] बावल ।

हि [गञ् + इत्] 1 बछड़ा 2 मट्टा बेल —गुणानामेव शीराग्न्यादिरि नृप्यो निवृज्यते, असजातकिणरकञ्ज सुख स्वर्पति गीर्गडि — काव्य० १० ।

गञ् (वि०) [गञ् + उन्] बेडौल, कुबवा, — इ 1 गीठ पर कुबड़ 2 नेवा ३ अलगाच 4 केचुवा 5 गलनष्च निरलंक वस्तु—दे० अलनरु ।

गञ्जु [गञ् + क + क] अलपात्र २ अंगुठी ।
गञ्ज, —क (वि०) [गञ् + क वा० र] कुबवा, बेडौल, मट्टा हुआ ।

गञ्जेर [गञ् + एरच्] बावल ।
गञ्जोल [गञ् + ओलच्] १ मूँहभर २ कच्ची साइ ।
गञ्जर, —क [गञ् + डर, इल वा] नेद ।

गञ्जरिका [गञ्जर नेवमनूवावति + उन्] १ मेढों की पकित २ अंबलिष्ठक पकित, नदी, धारा, प्रवाह 'नेडिया-भसान' इलका तालपयं हैं, मेढों के रेवड़ की भाँति अधानुसर्षण करना—तु० इति गञ्जरिकाप्रवाहेणैषा नेद —काव्य० ८ ।

गञ्जुक [गञ्जु कृष्ण०] सोने का जर्जन ।
गञ् (चुरा० उभ० गञ्जयति- न, गीतत्) १ गिनना, गिनती करना, गणना करना—लोलाकमलयथापि गणयामान पावैती—कु० ६।८४, नामाक्षर गणय गञ्जनि वाचवन्तम्—शा० ६।११ २ हिसाब लगाना, समजना या सख्या करना ३ जोड़ना, संपूर्ण जोड़ लगाना ४ अन्दाज लगाना, मूल्या निर्धारण करना (करण० के साथ)—न त तुषोऽपि गणयामि ५ खेपी में रखना, बोटि में गिनना—अव्ययतामरेव—दश० १५४ ६ त्रिगुण्यं में लगाना, विचारना—बाष्पी काण-भूजीवजीगण्यत् मल्लि० ७ ध्यान देना, विचार करना, सोचना—त्वया विना सुखमेतावदवजय गण्यताम्—रघु० ८।६९, ५।२०, ११।७५, ज्ञातस्तु गण्यते सोऽत्र य-स्फुरन्त्वयाधिकम्—पच० १।२७, किसलयतल्प गणयति विहिनहुतायाधिकल्पम्—गी० ४ ८ लगाना, आरोपण करना, मत्थे मड़ना (अधि० के साथ) जाइय ह्रीमिति गण्यते—भर्तुं० २।५४ ९ ध्यान देना, सवाल करना, मन लगाना—प्रथममगणयित्वा यथमापवृगतस्य-विष्णु० ४।१३ १०. (निषेधात्मक अव्यय के साथ) उपेक्षा करना, ध्यान न देना—न महुतामपि क्लेशाम-जीगण्यत्—का० ६४, मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःख न च सुखम्—भर्तुं० २।८१, ९, शा० १।१०, भद्रटि० २।५३, १५।५ ४५, हि० २।५२, अधि—

१ प्रधासा करना २ गणना करना, गिनना, बच, अर्बहेलना करना, धरि—, १ गणना करना, गिनना २ विचार करना, ध्यान देना, सोचना—अपरिगणयन्—नेष० ५, प्र—, हिसाब लगाना, वि—, १ गणना करना, मात्र० ३।१०४ २ अयाल करना, विचार करना—नेष० १०९, रघु० १।८७ ३. अर्बहेलना करना—ध्यान न देना ४ विचार विमर्श करना, चिंतन करना—पच० ३।४३ ।

गण [गण् + अच्] 1 देव, मूक, समूह, दल, समूह
—गणितगणनाक्रमे, प्रगण—आदि 2 आला, श्रेणी
3 अनुयायी या अनुचर वगै 4 विशेषतः अर्थदोषी का
गण जो निज के सेवक माने जाते हैं और गणेश के
अधीनस्थ में रहते हैं, इस गण का कोई अर्थदेव—गणाना
तथा गणपति हवामहे कवि कवीनाम्—आदि गणा
नयेप्रसन्नवाचिता—कु० १५५, ५४०, ७१, मेघ०
३३, ५५, कि० ५१३ 5 समान उद्देश्य की प्राप्ति
करने के लिए बना अनुष्ठानों का समूह या समूह 6 सम्प्र-
दाय (दर्शन या धर्म में) 7 २७ रथ, २७ हाथी, ८१
बोटे और १३५ पदाति हैनिको की छोटी टोली
(‘असीहिणी’ का उपग्राम) 8 (गण०) अङ्क 9 पाद,
चरण (ऊपर शास्त्र में) 10 (आ० में) धातुओं या
सम्बन्धों का समूह जो एक ही नियम के अधीन हो—तथा
उस श्रेणी के पहले शब्द पर विलम्बता नाम रखता गया
हो उदा० आदिगण अर्थात् ‘गु’ से आरम्भ होने
वाली धातुओं की श्रेणी 11 गणेश का विशेषण । सम०
—अध्वनी (पु०) गणेश, —अध्वक कैलास पहाड़ जिस
पर शिव के गण रहते हैं, —अधिच—अधिचिन्ति
1 शिव—शि० १२७ 2 गणेश 3 सेव्य दल का मुखिया
सेनापति, सिन्धुओं के समूह का मुखिया, पृथ, मनुष्यों
या जानवरों की टोली का मुखिया, युवापति, —अध्वम्
सहस्रोत्रवाला, भोग्यपदार्थों को बहुत से समान
अभितयों के लिए बनाया जाय—मनु० ४२०९, २१९,
—अध्वत्तर (वि०) दल या टोली का एक अर्थित
(र) किसी धार्मिक मन्त्रा का सदस्य या नेता मनु०
३१५५, —ईश शिव का पुत्र गणपति (२० नो० गण-
पति), “अध्वनी पार्वती का विशेषण, “भूषणम् सिन्दूर,
—ईशान्, —ईश्वर 1 गणेश का विशेषण 2 शिव
का विशेषण, उल्लाह गैदा, —अर 1 अर्पण
करने वाला 2 भीमसेन का विशेषण, —अध्वत् (अध्व०)
सब कामों में, कई बार, —अति एक विशेष ऊँची सत्त्वा,
—अध्वत्सु सुधीगण का सहयोग, अनोचर, —अध्वत्
(गण०) पादों द्वारा सहा गया तथा विनियमित ऊँच,
—तिष्ठ (वि०) दल या टोली बनाने वाला, —वीक्षा
1 बहुतों की एक साथ वीक्षा, सामूहिक वीक्षा 2 बहुत
से अर्थितयों का एक साथ वीक्षा—अध्वत्, —ईशता
(इ० ००) उन देवताओं का समूह जो प्राय टोली
या श्रेणियों में प्रकट होते हैं—अध्वत् परिभाषा देता
है—आदित्यविश्ववसवस्तुधिया आश्वरानिता, महा-
रथिकताभ्याश्च द्वाश्व च गणधेता ।—अध्वत् सार्व-
जनिक सपति, पंचायती माल, —अर 1 किसी वंश या
समूह का मुखिया 2 विद्यालय का अध्यापक, —अध्वत्,
—अध्वत् 1 शिव की उपाधि 2 गणेश का विशेषण,
—अध्वत् दुर्गा की उपाधि, —अ, —अति 1 शिव

2 गणेश (गणेश, शिव और पार्वती का पुत्र हैं, एक
आख्यायिका के अनुसार वह केवल पार्वती का ही पुत्र
हैं क्योंकि उसका जन्म पार्वती के शरीर के मूल से
हुआ । यह ब्रह्मिन्ना का देवता और बाधाओं को
हटाने वाला है, और इसीलिए प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य
के आरम्भ होने पर उसकी पूजा होती है तथा
आवाहन किया जाता है उसका निमण प्राय वैदी हुई
अवस्था में किया जाता है, उसकी नाद निकली हुई
है, चार हाथ हैं, चूहे पर सवार है तथा शिव हाथी का
है, इसके शिर में दात केवल एक है, दूसरा दात—शिव
जो के अन्तर्गु में प्रविष्ट होते हुए परशुराम को
रोकने के लिए युद्ध करने समय टट गया (इसी लिए
गणेश की कदल या एकदशन भी कहते हैं, उसका
हाथी का शिर है—इस बात पर प्रकाश डालने वाली
अनेक कहानियाँ हैं। कहते हैं कि गणेश ने स्वाम से
मनुकर महाभारत लिखा स्वाम ने ब्रह्मा से निष्कार
के रूप में गणेश की सेवाएँ प्राप्त कर ली थीं)।—पर्वत
दे० गणाचल, —वीक्षकम् छात्रों, कक्षराल पात्र किमी
बग या जाति का मुखिया (ब० ब०), पूर्ण किसी
जाति या वंश का नेता, अर्त्त (पु०) 1 शिव का
विशेषण गणभद्रका कि० ५१५, 2 गणेश का
विशेषण 3 किसी वंश का नेता, भोग्यम् सहस्रोत्र
मिलकर भोजन करना एक सामूहिक मस्कार,
—राध्वत् दक्षिण का एक साम्राज्य, राध्वत् रातो
का समूह, —भृषण दे० गणध्वत्स, —हस्त, —हस्तक
सुगन्ध द्रव्य की एक जाति ।

गणक (वि०) (एकी०—गिष्ठा) [गण् + क्वल्] बहुत
धन देकर खरीदा हुआ, क 1 अङ्कगणित का ज्ञाता
2 ज्योतिषी दे पात्र पुस्तकघर अंगमत्र तिष्ठ वैदो-
र्जस कि गणकशास्त्रविद्यार्दादिभि, कैनीषधेन मय
पथति अतृग्न्ना कि शायमिष्यति पति मुचिरप्रवासी
—गुभा०, की ज्योतिषी की पत्नी ।

गणपत् [गण् + गिष् + भृष्ट] 1 गिनना, गिमाक लगाना
2 जोड़ना, गणना करना 3 विचार करना, खयाल
करना, ध्यान रखना 4 विचारण करना, चिन्तन
करना ।

गणना [गण् + गिष् + भृष्] गिमाक लगाना, विचार करना
अपान करना, गिनती करना—का वा गणना गणनेषु
अगतचेतनाभ्यदि सष्टटविभुमक (मदन) —का०
१५७, (हमें तथा आश्वकयता है तु० कथा)
मेघ० १०, ८७, रघु० ११६५, शि० १६५९, अमर
६४ । सम०—अति (एकी०) = गणपति, —अति अङ्क-
गणित की बानने वाला, —अध्वत्स विगनती ।

गणनम् (अध्व०) [गण् + गण्] दलों में, लोगों में, श्रेणियों
के क्रम में ।

गवि (स्त्री०) [गव् + इन्] गिनना ।

गविका [गण + ठञ् + टाप्] 1. रबी, बैसावा — गृधानु-
रक्ता गविका च यस्य बसन्तशीमेव बरुणसेना
— गृच्छ० ११६, गविका नाम पाटुकांतरप्रविष्टेऽ
लेच्छका तु खेन पुनर्निराकियते — गृच्छ० ५, निरकायाव-
द्विभयेन बहू विद्याकायावपदयोगिका — शि० १११०
2 हयिनी 3 एक प्रकार का फूल ।

गवित (वि०) [गव् + क्त] 1 गिना हुआ, सम्पात,
हिसाब लगाया हुआ 2 सवाल किया हुआ, देखाभाल
किया हुआ — रे० गव्, — लम् 1 गिनना, हिसाब लगाना
2 गनना विज्ञान, गणित (इसमें अकण्णित [पाटीगणित
या व्यक्तगणित] बीजगणित और रेखागणित सम्मि-
लित है) — गणितमय कला वैशिकी हस्तशिक्षा शाला
— गृच्छ० ११४ 3 श्रेणी का जोड़ 4 जोड़ ।

गवित्त्विन् (पुं०) [गणित + इति] 1 जिसने हिसाब
लगाया है 2 गणितज्ञ ।

गविज (वि०) (स्त्री० भी) [गण + इति] (किन्हीं
वस्तुओं की) टोनी या खंड को रखने वाला, व्यव-
धिज, कुनो के झूठ को रखने वाला, — र० १५३,
(पुं०) अध्यापक (शिक्षकों की श्रेणी को रखने वाला) ।

गवेष (वि०) [गण + एष] गिनती किये जाने के योग्य,
जो गिना जा सके ।

गवेष [गण् + एष] कविकार वृक्ष (स्त्री०) 1 रबी
2 हयिनी ।

गवेषका [गवेष + कै + क] 1 कुटनी, बूती 2 सेबिका ।

गव्य [गव् + अच्] 1 गाल, कनपटी समेत मूत्र का
समस्त पार्श्व—गव्याभोगे पुलकपटल—मा० २१५, तदीय-
मार्द्रावगण्डलेखम्—कु० ७३८२, मेघ० २६, ९२,
ब्रह्म ८१, ऋतु० ४६, ६१०, य० ६११७, शि०
१२५४ 2 हाथी की कनपटी—मा० १११ 3 बृ-
हन्ना 4 फोडा, रसोली, बृजन्, पुत्नी—अथमपरो गव्य-
स्वोपरि विस्फोट—मुद्रा० ५, तथा गव्यस्वोपरि पिटका
सवृत्ता—श० २ 5 गव्याला या गवने के अन्य फोडा
फुली 6 जोड़, गाठ 7 बिच्छ, अन्ना 8 गैडा 9 मूत्रा-
सव 10 नायक, बोटा 11 बोड़े के साज का एक
भाग, आमूषण के रूप में बोड़े के जीन पर लगा
हुआ बदन । सम०—अङ्ग गैडा, उषामाम् तक्रिया
—मुद्रगण्डोपधानानि धयनानि सुसानि च—सुपु०,
—सुपुजम् हाथी की कनपटी से हरने वाला मद्, — कृष
पहाड की षोटी पर बना कुर्मी, —बाबू बड़ा घोष,
देहा — प्रवेश गाल, —कलकम् घोडा गाल—वृत्तमय-
गव्यफलकैश्चैव भविकसाम्नि रास्यकर्मणै प्रमदा—शि०
१५५७—वित्त (स्त्री०) 1 हाथी के गव्यफल का छिद्र
जिससे मद् सरता है 2 प्रित्त की भाँति गाल
अर्थात् घोड़े, श्वेत् और प्रसस्त गाल—निर्णोत्तरामा-

मलयम्बभित्ति (गव्) रघु० ५१४३, (बहो मलि-
नाथ कहता है—बसन्ती बहो बभित्ती) १२१०२,
—वाल—वाला कठमाला रोग (जिसमें गवने की
गिट्टियों में सूजन हो जाती है),—मूर्च्छ (वि०)
अप्यत मूर्च्छ, विस्कुल मूत्र,—शिक्षा बड़े चट्टान,
—श्लेष्म 1 मूत्राल या बोधी से नीचे गिराई गई
बिसाल चट्टान—कि० ७३७ 2 मस्तक,—साङ्गुवा
नदी का नाम, (इसे 'बडकी' भी कहते हैं),—स्वकम्,
—स्वकी 1 गाल—गव्यस्मलेष्म मद्यारिणु—पथ०
११२३ मृद्गार० ७, गव्यस्वली प्रोषितपचनेष्वा
—रघु० ११७२ अमर ७७ 2 हाथी की कनपटियाँ ।

गव्यक [गव्य + कन्] 1 गैडा 2 रुकावट, बाधा 3 जोड़,
गाठ 4 बिच्छ, धब्बा 5 फोडा, रसोली, फुली
6 बियोनन, बियोग 7 बार कौड़ी के मूत्र का
सिक्का । सम०—वृत्ती दे० गव्यकी ।

गव्यका [गव्य + टाप्] लौधा, पिच्छ या डली ।

गव्यकी [गव्यक + क्रीप्] 1 एक नदी का नाम जो गवा
में मिल जाती है 2 मादा गैडा । सम०—बुध,
—शिक्षा शालिग्राम (पत्थर) ।

गव्यलिन् (पुं०) [गव्यल + इति] सिब ।

गव्यि [गव्य + इति] वृक्ष का तना, जड़ से लेकर उस
स्थान तक जहाँ से शाखाएँ बाहरन होती हैं ।

गव्यिका [गव्यक + टाप्, इत्यम्] 1 एक प्रकार का ककड
2 एक प्रकार का पेय ।

गव्यी [गव्य + इत्] नायक, बूचरी ।

गव्य (पुं०, स्त्री०) [गव्य + इ + ऊङ्] 1 तक्रिया
2 जोड़, गाँठ ।

गव्य (स्त्री०) 1 जोड़, गाँठ 2 हड्डी 3 तक्रिया 4 ठेक ।
सम०—बह एक प्रकार का फोडा, केंचुआ, 'जन्म'
सोसा,—बही छोटा केंचुआ ।

गव्यवृ — वा [गव्य + वृजन्] (पानी का) मुहानर, मूट्टी
पर गवाय गव्यवृजल करेण (बरी)—कु० ३१३७,
उत्तर० ३११६, मा० ११३४, गव्यवृजलमानेन सफरी-
पकरामते उद्भूट 2 हाथी के लूंड की गोफ ।

गव्योल् [गव्य + ओल्] 1 कृष्ण खोड 2 मुहानर ।

गत (पुं० क० ङ्) [गम् + क्त] 1 गया हुआ, अतीत,
सदा के लिए गया हुआ—मुद्रा० ११२५ 2 गुजर
हुआ, बीता हुआ, पिछला—गताया राधी 3 मृत, मूर्त,
दिग्गत—कु० ४३० 4 गया हुआ, पहुँचा हुआ, पहुँचने
वाला 5 अन्तर्गत, अन्त स्थित, बँटा हुआ बिभान
करता हुआ, सम्मिलित (बहुधा समासों में—प्राकार-
प्रान्तगत—पथ० १, बँटा हुआ; संबोगत—रघु०
३१६, समा में बँटा हुआ; इती प्रकार भाव् संब-
न्त संबंध बिभान 6 फँसा हुआ, चटाना क्या
बाधवन्त 7 सकत करते हुए, सचच—रखते हुए, के

विषय में, की शक्ति, विषयक, मरुद (बहुधा समाज में) — राजा शकुन्तलामतये चिन्तयति - शं० ५, भर्तृवृत्तया चिन्तया—शं० ४, यद्यपि भक्त्या सबी-
 मत किमपि पुच्छाम शं० १, इसी प्रकार 'पुत्रगत स्नेह' आदि, —सम्० । गति, जाना- -ननुपरि धनाना
 वारिणमोदगाम्—शं० ७३, गि० १२० २ चाल, चलने की रीति—कु० ११२४, विक्रम० ४१२६
 ३ घटना ४ यदि समय में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त हो तो इसका 'मूलक' 'विरहित' 'वचित' और 'विना' शब्दों में अनुवाद करते हैं। सम०—अक्ष (वि०) दृष्टिहीन, अन्या, —अक्षम् (वि०) १ त्रिमने अपनी यात्रा समाप्त कर ली है २ अभिज्ञ, परिचित, (स्त्री०) चतुर्थी से युक्त अमानसा, —अनुलम् पूर्वोदाहरण या प्रथा का अनुयायी जाना, —अनुगतिक (वि०) दूसरा की नकल करने वाला, अनुयायी —सतानुगतिका लोको न जाक पारमाधिक -पच० ११२४२, लाय भेडा बाल चलने वाले वा केवल अधा-
 नुकरण करने वाले होने है - मूढा० ६१५, —अन्य (वि०) जिसका जना समय भा गया है, -अर्ध (वि०) १ निवन २ अर्ध हीन (वर्षाक अर्ध का विधान पहले ही किया जा चुका है) - अमु, —औचित, - प्राण (वि०) मरान्त, मृत -भग० २१११, —औपगत १ जाना जाना, बार २ मिलना भग० ३१५, भग० ११२१, मुद्रा० ४११ २ (अर्थात् में) नारी का अनिर्दिष्ट मार्ग, -आधि (वि०) चित्तार्थों से मुक्त, प्रमत्त, आपुम् (वि०) जग, निर्दल अतिवृद्ध, —आतंका या पुत्रकी होने की भाव को पार कर चुकी हो, बुद्धिवा -उत्साह वि० उत्साहहीन, उदास, शोक्त् (वि०) शक्ति या सामर्थ्य से विरहित, -कामध (वि०) पार या जूम से मुक्त, पविशोक, -कलम (वि०) पुत्र नरोनाया, —चेतन (वि०) बेहोश मूछित, बेतनाहीन, विनम् (अव्य०) बोला हुआ कल, प्रत्यागत (वि०) जाकर वापिस आया हुआ मनु० ७१४६६, —प्रभ (वि०) दीप्तिरहित, घुघुला, पलिन, भद्रम या म्लान, प्राण (वि०) जावरहित मृत, -प्राय (वि०) लगभग यथा हुआ, लकीवन बोला हुआ- -गनशया रजनी, भन्तुका १ विषया स्त्री २ (धिरल प्रयोग) बहु स्त्री जिसका पति पश्यत यथा है। (-प्रापितभन्तुका), —सशोक (वि०) १ कानि हीन, दीप्ति से रहित, म्लान २ घन से अचिन्त निर्धनोक्त, घाटे को यन्त्रणा से पीड़ित, बध्पक (वि०) बहुत जायु का, वृद्ध, बूडा, बर्ब, - बंस बोला हुआ बध, -बैर (वि०) मेल मिलान न रहने वाला, पुनर्मिलित, —व्यव (वि०) धोडा में युक्त, —वैषम्य (वि०) जिसका बचपन बोन गया है —सख

(वि०) १ मत, ध्वस्त, जीवरहित २ ओछा, —सम्पक हाथों जिसका मद न सगटा हो, —स्पृह (वि०) मातारिक विषयवासनाओं में उदासीन ।
 गति (स्त्री०) [गम् + गित्] १ गति, गमन जाना, चाल गतिविमलिता पच० ६७७८, अभिन्नगतय -छ० १११६, (न) भिदति मन्दा गतिमदवचमुच्च कु० ११११, नत्की बीपी चाल को मत सुधारो, इसी प्रकार गनगति पच० १, लक्ष्मिनि मेघ० १६, १०, ४६, उत्तर० ६१०३ २ पहुँच, प्रवेश-मर्षी बखसमन्तोर्ण मूत्रायोरानि मे गति - रघु० ११४ ३ कार्यक्षेत्र, गुजायवा-अन्नगति कु० ३११९, मनो-स्थानामगनिम विद्यते- कु० ५१६६, नाम्यगनिमंनार-धानम् विक्रम० २ ४ माह, चर्षा देवगतिहि चिन्ता ५ जाना, पहुँचना, प्राप्त करना बँकुच्छीया गति पच० १, स्वर्ण प्राणि ६ भाग्य फल भर्न-गतिगनन्या दश० १०३ ७ अवस्था, दशा दान भाषी जागलित्या गतया भवतिन विन्यय-भन्० २१६२, पच० १११०६ ८ पश्यापना, मन्थान, स्थिति, अवस्थिति -राज्यगत पितृ रघु० ८१२३ कुमुमस्तवकरण्य है गती म्ना मनोस्वना नर्ण० २११०४ पच० ११६१, १२० ९ साधन, तारीख, प्रणाली दूसरा उपाय - अनुचितये इसी गति मद्रा० ३, का गति क्या हो सकता है ? कुछ नहीं हो सकता (प्राय नाटको में प्रयुक्त हाता है) पच० ११३१९, अन्या गतिर्गतिन को १० १० आश्रय श्वास्थल, दारण शयना गार अलम्ब विद्यमाना गतिवर्णम् पच० ११३२०, २२०, आमयत मन्त्रिये पश्वो य म न श्रोत्रिर्गति विद्रा० ११ सान उदम प्रातिग्यत भग० २४६, मनु० १११० १२ माघ पच १३ प्रवाण, प्रवाण (अनुम) १४ घटना फल, परिणाम १५ घटनाकम, भाग्य, किमन १६ नक्षत्र पच १७ सह को अनेन हो कक्ष में दैनिक गति १८ त्रिमने वाला घाव, नासूर १९ शाय, बहिनमा २० पुत्रजन्य आवसामन मनु० ६७३ २१ जीवन की अवस्थान (प्रीत्य, मोचन, बाध-व्य आदि) २२ (व्या० म) उपमग या क्रियाविशेष-गाम्यक अवयव (आह, तिग्म आदि) अब कि वह किसी क्रिया या कुदन्तक से पुत्र लगाये जाय । सम० —अनुसार दूसरे के साथ का अनुगमन करने वाला, बहू उल्लेख, -होष (वि०) अशान्य निरसहाय, परिच्यक ।
 गत्वर (वि०) (स्त्री०) रो [गम् + वत् + वृ, अनुनासिक लोप, मुह्] १ गतिगति, चर, जगम २ अरथायी, विनयक - गत्वरैरमुनि कि० २११२, गत्वर्यौ वीवन-व्यय - ११११२ ।
 गद् (व्या०) पठ् -पठति, गति १ स्पष्ट कहना, कथन

करना, बोलना, बर्नन करना—अगादाये गदाप्रभम्
—वि० २।६*, बहु अगाध पुरस्तात्स्य मत्ता किलाहम्
—१।१२६, बुद्धान्तरत्वा अग्ने कुमारी—रघु० ६।५५
2 गचना करना, वि—, घोषणा करना, बोलना,
कहना—रघु० २।२३ ।

गवः [गद् + अच्] 1 बोलना, भाषण 2 वाच्य 3 रोग,
बीमारी—असाध्य कुत्से कीप प्राप्ते काले गदो यथा
—वि० २।८४, जनपदे न गद परमाश्रयो—रघु०
१।४, १।७।८ 4 गर्जन, गडगडाहट, हम् एक प्रकार
का शिष्य । सम० अगर्ही (वि० व०) दो अश्विनी
कुमार, देवताओं के बंध,—अधर्षी, सब रोगों का राजा
अर्षात् तपेदिक,—अन्धरः नादल, अरति भौषधि,
दवा ।

गवस्विन् (वि०) [गद् + णिच् + इन्च्] 1 मूख,
बाबाल, बातूनी 2 कामुक, विषयी, लुः कामदेव ।

गवा [गद् + अच् + टाप्] 1 क्रीडामण्डि या गदा, मुद्रा
—सचर्षवर्गि गदया न मुषोषनोश्च—वेणी० १।१५ ।
सम०—अध्वजः कृष्ण—वि० २।८४, अध्वर्याधि(वि०)
टाहिन हाथ में गदा लिए हुए,—अध्वर विष्णु की उपाधि,
—भृत् (वि०) गदाधारि, गदा से युद्ध करने वाला
(पु०) विष्णु की उपाधि, युद्धम् गदा से लडा जाने
वाला युद्ध,—हस्त (वि०) गदा से मुसज्जित ।

गदिन (वि०) (स्त्री०) मी [गदा + इनि] 1 गदा-
धारि भग० १।१।७ 2 रोगप्रस्त, रुग्ण (पु०)
विष्णु की उपाधि ।

गद्वद (वि०) [गद् इत्यव्यक्त वदति—गद् + गद् + अच्]
हकलान वाला, हकला कर बोलने वाला—तत्कि
गदिषि गद्वदेन वचना अमर ५३, गद्वदगलस्त्र्यु-
द्वधिनीनाशर का देशोक्ति वदत् भृ० ३।८ सानन्द-
गद्वदपद हरिर्गणयुवाच—गीत० १०,—इम् (अभ्य०)
अटक-अटक कर बोलने या हकलाने का स्वर विल-
लाप स वाच्यगद्वदम्—रघु० ८।४३, व, वम
हकलान, अस्पष्ट या उलट-मुलट भाषण । सम०
ध्वनि हर्ष या शाक मुचक मन्द अस्पष्ट ध्वनि
—वाच् (स्त्री०) मुचकी आदि से अलंघित, अस्पष्ट या
उलट-मुलट वाणी,—स्वर (वि०) हकलाने वाले स्वर
से उच्चारण करने वाला (र) 1 अस्पष्ट तथा हक-
लाने का उच्चारण 2 भेदा ।

गघ (स० कृ०) [गद् + यत्] बोले जाने या उच्चारण
लिए जाने के योग्य—गघमेतत्त्वया मन—अट्टि० ६।७
—अम् नसर, गघ रचना, छन्दबिरहितरचना, तीन
प्रकार (गघ, पघ, चम्) की रचनाओं में से एक
—दे० काव्या० १।११ ।

गघाच (न०—) क ४१ धृषिचियों के समान भार, ४१
रतियों का वजन ।

गघ् (वि०) (स्त्री०—घी) [गघ् + गघ्] 1 जो जाता
है, घूमता है 2 किसी स्त्री से मैथुन करने वाला ।

गघी [गघ् + घृन् + ङीप्] बेलगाड़ी । सम०—रघः
बेलगाड़ी ।

गघ् (घ्रा०) जा०—गन्धवते) 1 क्षति पहुँचाना, भोट पहुँ-
चाना 2 घुछना, माँगना 3 चलना-फिरना, जाना ।

गन्धः [गन्ध् + अच्] 1 बु, वास्य—गन्धमाश्राय चोर्ष्या
—मेघ० २१, अपधन्तो दुरित हृद्यन्तर्व—श०
५।७, रघु० १।२।७, (व० व० के उत्तरपद के रूप
में प्रयुक्त होने पर यह शब्द बदलकर 'गन्धि' हो
जाता है यदि इससे पूर्व उद्, पुनि, सु या मुरभि में हे
कुछ जोड़ दिया गया है, या समस्त तुलनायें के हैं
अथवा 'गन्ध' का अर्थ 'जरा सा', 'थोडा सा' है—उदा०
—मुगन्धि, मुरभिगन्धि, कवलगन्धि मूलम् 2 बेजे-
विक दर्शन में प्रतिपादित २४ गुणों में से एक गुण,
बहो यह पृथ्वी का गुणरस लक्षण है, पृथ्वी को 'गन्ध-
वती' कहा गया है तर्क० स० 3 वस्तु की केवल
गन्धमात्र, जरा सा, बहुत ही थोड़े परिमाण में धन-
गन्धि भोजनम्—विज्ञा० 4 सुगन्ध, कोई सुगन्धित
सामग्री—एषा मया सेवित्ता गन्धवृत्ति—मूच्छ० ८,
याज्ञ० १।२।१५ गन्धक 6 पिशा हुआ चन्दन ८,
7 समय, सम्बन्ध, पदवी 8 चमत्क, अहङ्कार—जैसा
कि 'आलगन्ध' में,—ध्व 1 गन्ध, वृ 2 कान्ठी अवर-
लकड़ी । सम०—अधिकम् एक प्रकार का सुगन्ध
द्रव्य,—अध्वकर्मण्य गन्ध दूर करना,—अध्व (पु०)
मुवासित जल,—अध्वना जगनी नीरू का पत्र, अध्वन्
(पु०) गन्धक,—अध्वकम् आठ सुगन्ध द्रव्यों का
मिश्रण जो देवताओं पर चढ़ाया जाय, देवताओं की
प्रकृति के अनुसार यह मिश्र-मिश्र प्रकार का होता है,
—आध्वः सङ्कन्दर,—आधीयः सुतन्त्रों का विधेता,
आध्व (वि०) गन्धसम्बद्ध, बहुत सुगन्धित—अध-
ध्वतामगन्धावृषा—महा०, (हृक्) नारंगी का पेड़
(हृषम्) चन्दन की लकड़ी,—इन्द्रियम् नाक, प्राणोन्द्रिय,
—अध,—अध्व,—इन्द्र,—हृस्तिम् (पु०) 'मुवासि—
हाथों' सर्वोत्तम हाथों—सम्पति गवानन्यान्वाध्विप
कलभीर्षि सन्-विक्रम० ५।१८, रघु० ६।७, १७।७,
वि० १।७।७,—अध्वना मदिता, शराध,—अध्वम् सुग-
न्धित जल,—अध्वधीन्धि (पु०) गन्धद्रव्यों में काञ्ची-
विका कमाने वाला, सम्पत्,—ओतु (गन्धोतु या
गधोतु गन्धबिलास,—कारिका 1 सुगन्ध द्रव्य बनाने
वाली सेविका, शिल्पकार स्त्री जो दूसरे के घर उसके
नियन्त्रण में रहती है,—कालिका—काञ्ची (स्त्री०)
ध्यास की माता सत्यवती,—काष्ठम् अवर की लकड़ी
—कूटी एक प्रकार का गन्धद्रव्य, कैलिका,—कैलिका
कस्तूरी,—गुच (वि०) गन्धगुण वाला, उच्यन्त,—आध्वम्

बंध का सूचना, —अलम् सुवासित, सुगन्धित जल, —आ
नामिका, — सुवर्ण विमल तथा दुर्गुमि जादिर रणघात
—संक्षम सुवाद्दार तेल, सुगन्धित द्रव्यों से तैयार किया
गया तेल, —बाध (मपु०) अणु की लकड़ी, इन्धम्
सुगन्धित द्रव्य, —शुक्ति (स्त्री०) कस्तूरी, नक्तक
छद्मद्वर, —नामिका, — शाली नामिका, — निम्ब्या एक
प्रकार की चनेली, —वः एक पितृवर्ग, —पलासिका हल्दी,
—पलासी आमा हस्दी की जाति, —पलाशः रजक,
—पिशाचिका चने का घुआ, (अपनी गंध से पिशाचों
की बाहृष्ट करने के कारण तथा कार्सेरग का होने के
कारण सम्भवत इसका यह नाम पडा है), पुष्प.
1 नेत्र का पोषा 2 केश्मेरे का पोषा, (अम्) अणुद्दार
फूल पुष्पा नोल का पोषा, — पुष्पा मृत्तगी, प्रेतनी,
—पलासी 1 श्रियवृद्धता 2 धम्पककर्म, —अणुः आम का
बूझ, —वाल (स्त्री०) पृथ्वी, —वाहन 1 भीरा
2 गन्धक (न, - नम्) मेघ पहाड़ के पर्व में स्थित
एक पहाड़ जिनमें चंदन के अनेक जंगल हैं, —वाहनी
मरिचा, शराव, —वाधिवी आल, — वाध्याटः गन्धबलाय
- मुष्क, मुष्किल, —वृषी (स्त्री०) छन्दर, —वृष
1 गन्धबिलांब 2 कस्तूरीमृग, —वैष्णु साँब, —वोधन
गन्धक, —बोहिनी धम्पक का कर्म, —वृष्ति (स्त्री०)
सुगन्धद्रव्यों के तैयार करने की कला, —राजः एक प्रकार
की चनेली (जम्) 1 एक प्रकार का गन्धद्रव्य
2 चंदन की लकड़ी, —सता श्रियवृद्धता, — सौकुपा मपु
बन्धी, —बहः बायु-राशिन्दिर गन्धबह प्रपति —ग०
५४, दिग्दशिया गन्धबह मुखेन—कु० १:२५, —बहा
नामिका, —बाहृक 1 वायु 2 कस्तूरीमृग, —बाही
नामिका, —बाहृक येहूँ, —बृक्ष साल का पत्र, व्या-
कुम्भ ककोल का पत्र, —बाहिष्नी छन्दर, —बोहर
कस्तूरी, —सार चन्दन, सोधम् सपदं कुम्भिनी,
—हारिका गन्धकारिका, स्वाभिने के पीछे-पीछे सुगंध
लेकर चलने वाली सेविका ।

गन्धकः [गन्ध + कन्] गन्धक ।
गन्धकम् [गन्ध + कन्] 1 अथर्वशास्त्र, अश्विनाम प्रथम
2 चोट पर्वणता, सति पर्वणता, भार डालना
3 प्रकाशान 4 सूचना, ससूचन, सकेत ।
गन्धकली [गन्ध + मनुषु + क्ली, मन्थ कर्त्तव्य] 1 पृथ्वी,
2 वायु 3 व्यास की माता सत्यवती 4 चनेली का
एक भेद ।
गन्धकः [गन्ध + जर् + अच्] स्वर्गीय गन्धक, अर्ध देवो का
वर्ष जो देवताओं के गर्भों तथा सरोज्य माने जाते
हैं, कहते हैं कि वह कन्याओं के स्वर को अश्रु बना
देते हैं—गोध गौध ददावासां गन्धर्वेष सुभा गिरम्
वाङ् १।१० १ सर्वया 3 बोधा 4 कस्तूरीमृग
5 नन्द के बाध तथा पुनर्वन्ध से पूर्व की ज्ञाना

6 कौयल । सम०—गन्धर्म्, —गुरम् गन्धों का
नगर, आकाश में एक काल्पनिक नगर, समस्त भरी-
पिका आदि किसी नैसर्गिक घटना का परिणाम,
—राजः चित्रगय, गन्धों का स्वामी, — विद्या सगीन
कला, विवाह मनु० ३:२७ में वर्णित आठ प्रकार के
विवाहों में से एक, इस प्रकार का विवाह युवक और
युवती की पारस्परिक रूचि और पूर्ण प्रेम का परि-
णाम है, इसमें न किसी प्रकार की रीतिरस्म की
आवश्यकता है और न किसी सगे संबंधियों की अनु-
मति की, कालिदास के कृपानानुसार यह है
कथमप्यवान्यवकृता स्नेहप्रवृत्ति - ग० ४:१६, बेह
चार उपवेदों में से एक, जिसमें सगीन कला का
विवेचन है, —हस्त, —हस्तक एरठ का पीवा ।

गन्धारः (व० व०) [गन्ध + धृ + अण] एक देश और
उसके शासकों का नाम ।

गन्धाली (स्त्री०) 1 मित्र 2 सतत सुगन्ध । सम०—वर्ष
छोटी इलाइची ।

गन्धालः (वि०) [गन्ध + आलन्] सुगन्धित, सुवासित,
सुवाद्दार ।

गन्धिकः (वि०) [गन्ध + ठन्] (केवल समास के अन्त में
प्रयोग) 1 गन्धवाला जैसा कि 'उत्पलगन्धिक' 2 लज्ज
भात्र गन्धने वाला—आगुगन्धिक (नाममात्र का भाई),
- क 1 सुगन्धी का विकृता 2 गन्धक ।

गन्धस्ति (पु०, स्त्री०) [गन्धने ज्ञायते गन्ध + इ = ग
विधय न विद्यन्ति, भन् + क्तिच्] प्रकाश की किरण,
सर्पकिरण या चन्द्रकिरण, —सिन्, (पु०) सुय (स्त्री०)
अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण । सम०—करः
- पाणि, — हस्त सुयं ।

गन्धस्तिमत् (पु०) [गन्धस्ति + मत्पुं] सुयं—चनव्यपादन
गन्धस्तिमानिभ रघु० ३:३७, (नपु०) पाताल के
मात प्रभाओं में से एक ।

गन्धीरः (वि०) [गच्छति जलमथ, गन्ध + ईर्गन्, नि०
भुगागम्] = [गन्धीर] 1 गृहट उतालासत इमे
गन्धीरपथस पुष्पा हरित्यङ्गमा—उत्तर० २:३०,
भासि० २:१०५ 2 गहरी आवाज वाला (डोल की
भाँति) 3 धना, सटा हुआ, (जंगल की भाँति) दुर्गम
4 अगाध, मेघाधी 5 सगीन, सजीदा, महत्त्वपूर्ण,
उच्च 6 गुप्त, रहस्यपूर्ण 7 गहन, दुर्बोध, दुर्ग्राह्य ।
सम०—आत्मन् परमात्मा, —बेध (वि०) अत्यन्त
भेदक या अल्प प्रवेशी ।

गन्धीरिका [गन्धीर + कन् + टाप्, डवम्] गहरी आवाज
वाला बड़ा डोल ।

गन्धीरिकः [?] छोटा गावटम् तकिया ।
गन्धु (स्त्री०) पर०—गन्धति, गत—प्रेर० गन्धस्ति, सन्नन्त
—त्रिगन्धति, जिगासते—भा०) जाना, चरना-

फिरना—गच्छतु आर्था पुनर्दशनाय—विष्णव ५,
 गच्छति पुर गतीर आर्थात् पश्चात्कस्मिन् काले —अ०
 ११३४, स्वाध्याना गच्छते—अथ आप कही जा रहे हैं ?
 2 विद्या होना, चले जाना, दूर जाना, जाना होना,
 प्रस्थान करना—उत्सिन्धेना ज्योतिरेक ज्ञानम्—पा०
 ५१३० 3 जाना, पहुँचना, सहारा लेना, जा जाना,
 मसीप जाना—यदगम्योऽपि गच्छते—पंच० ११७, एनो
 गच्छति कर्त्तारम्—मनु० ८११९, पाप पापी पर मर-
 नाता है ५११९, इसी प्रकार—चरति मूर्च्छा गम्
 -आदि 4 गुजरना, बीतना, (मरब का) स्थनीत
 होना—काम्यगाम्यविनादेन कालो गच्छति भीमताम्
 हि० १११ गच्छता कालेन—अनन्त 5 अबस्था
 या दशा का प्राप्न होना, होना, अनुभव करना, भू-
 नना, भोगना (प्राय तान्त और त्वान्त तन्नाओं के
 साथ अथवा कर्म० की सजा के साथ जुड़ता है)
 - गमिष्याम्युपहास्याना—रघु० ११३, पश्चाद्युमाव्यां
 मुमुक्षो जगाम—कु० ११२६, उमा ताम्बालो हृष्टः
 इमां प्रकार—तुषि गच्छति-मुष्ट हो जाता है, विषा-
 यत—उदास हो गया, कोप न गच्छति—कूट नहीं
 होता है, आनुष्य गन्—दृष्ट से मुक्त हो गया 6 सह-
 वास करना, मँचन करना—गुरो मुतां नो मच्छति
 पुमान्—पंच० २११०३, यात्र० ११८०, श्रे०—1 विज-
 वाना, पहुँचाना, (दशा को) प्राप्त होना 2 उपयोग
 करना, (समय की भाँति) बिताना 3 स्पष्ट करना,
 व्याख्या करना, विवरण देना 4 अर्थ बतलाना, संकेत
 करना, विचार व्यक्त करना—द्वी नञी प्रकृतार्थं वच-
 यत—दो नकार एक सकारात्मक अर्थ को प्रकट
 करते हैं—अस्ति—, दूर जाना, बीत जाना, अस्ति—, 1 अग्नि-
 प्रह्वन करना, अजाप्य करना, ले लेना—अधियच्छति
 महिमान् चन्द्रोऽपि निशापरिवृष्टौ—मालवि० ११२३,
 सनन्दाधियच्छति—मनु० २१२१८, ७१३३ अथ०
 २१६४, रघु० २१६९, ५१३४ 2 निष्पन्न करना, सुर-
 क्षित करना, पूरा करना—अर्थ सप्रतिबन्धं प्रमुनविगतम्
 महावादानेन—मालवि० ११९ 3 क्षणीय जाना, की
 ओर जाना, पहुँचना, पैठ रखना—गुणाकरोऽयमसम्बन्धी
 नृपतिर्नाधियच्छते—पंच० ११८८ 4 जानना, सीखना,
 अध्ययन करना, समझना,—तेष्वेभ्योऽधियन्तु निगमान्त
 विद्याम्—उत्तर० २१३, कि० २५४१, मनु० ७३३९,
 याज्ञ० ११९९ 5 विद्या करना, (पति के रूप में)
 बहान करना—मनु० ११९१, अष्वा—, प्राप्त करना,
 होना, षटित होना, अणु—, 1 मिलना-जुड़ना, पीछे
 चलना, साथ चलना—शोधकात्तात् सिन्धो जनीजुमन्त-
 य—पा० ४, मार्गं अनुषेव्यस्वस्वर्गपत्नी क्षुत्तिरिषावै
 स्मृतिरन्वाच्छत्—रघु० २१२, ६, कि० ५१२, मनु०
 १२११५, पंच० १७३ 2 लकन करना, लकन होना,

उत्तर देना—आस्थासितं यत्रयमदाकारंमृदुदङ्गुपीर्य-
 निष्पन्नमपच्छत्—रघु० ११११३, कि० ५१३६, अन्तर०
 शीघ्रं नं जाना, सम्मिलित होना, अन्तर्हित होना,
 दे० अन्तर्गत, अच—, 1 दूर चले जाना, जुदा हो जाना,
 (समय बाँधि की भाँति) बीत जाना—पंच० ३१८
 2 जोड़क होना, अन्तर्धान होना, से चले जाना,
 अस्ति—, निकट जाना, लनीप होना, दर्शन करना—एन-
 मविषयमुमेश्वर्य—रघु० १५५९, कि० १०१२१,
 —मनुकेकाशवासीनमभिगम्य महर्षय—मनु० १११
 2 मिलना, (अफस्मात् या सयोग से) षटित होना
 3 सहवास करना, मँचन करना—याज्ञ० २१२०५,
 अष्वा—, 1 सयोग जाना, पहुँचना, निकट जाना—सर्व-
 धाम्वागतो युव-हि० १११०८ 2 प्राप्त करना, हासि उ
 करना, अणु—, 1 उठना, ऊपर जाना 2 की ओर
 जाना, निष्पन्न के लिए जाने बटना, अणु—, सहमत
 होना, स्वीकार करना, जिम्मेदारी लेना, मानना, मजूर
 करना, अथवा जाना, अणु—, 1 जानना, सीखना, विचा-
 रना, समझना, विस्वास करना—परस्तादवयम्यत एव
 —पा० १, कथं क्षान्तिरितिर्बहिर्हि क्षान्त इत्यवयमच्छति
 मुञ्जः—मुञ्ज० १, मनु० १०५११, रघु० ८१८८, श्रेष्ठि
 ५१८१ 2 विचार करना, मानना, समझना (श्रे०)
 बह्वन करना, प्रकट करना, संकेत करना, बाहिर करना,
 कहना—श्रेष्ठि० १०१६२, आ—, 1 जाना, पहुँचना
 2 जा जाना, प्राप्त करना, (विशेष दशा को) पहुँच
 जाना (श्रे०) 1 ले जाना, लाना, बह्वन करना—जाग-
 यितापि विधूरम्—श्रीत० १२ 2 सोचना, अध्ययन
 करना—रघु० १०७१, 3 प्रतीक्षा करना (जा०),
 जू—, उठना, ऊपर जाना—अस्तह्वातोऽन्तरेणुमच्छता
 —रघु० १११० अने० पा० 2 अङ्कुर फूटना, दिसाई
 देना विष्णव० ५१२३ 3 उदय होना, निकलना, पैदा
 होना, अणु लेना इत्युद्यता पीरवचमुल्लेख्यं मृच्छन्
 कषा—रघु० ७११६, अमक ११ 4 प्रतिष्ठ या विख्यात
 होना—रघु० १८१२०, उच—, 1 जाना, निकट जाना,
 प्राप्त करना, पहुँचना—रघु० ६१८५ 2 पैठना, अन्वर
 मुत्तना हि० ११३९ 3 अनुभव करना, नुगतना
 —शरी वोरमुच्यवत्—रामा० 4 अबस्था को प्राप्त
 होना, प्राप्त करना, अविबह्वय करना—प्रतिद्वकताम्-
 पत्तते हि विभी—हि० ११६, तान्मार्थास्तन्मिषीयनपुनु-
 कु० ११८ 5 जान लेना, स्वीकृति देना, सहमत होना
 6 सयोग के लिए स्वी के निकट जाना—पुत्रां मतां
 प्रमत्तां वा रदो सयोगच्छति—मनु० ३१३४, ५४४०,
 उच—, 1 जा जाना, पहुँचना (स्थान पर या स्थिति
 के साथ) 2 पहुँच जाना, अथवा की चले जाना,
 प्राप्त करना—तुषिमुत्तना, अणु—, 1 पहुँच
 3 लेना, प्राप्त करना—याज्ञ० ३११४३, वि—, 1 पहुँच

बाणा, प्राप्त करना, अर्धग्रहण करना, हासिल करना
 —यत्र तु बाणत व निष्कन्धि—अथ० १८३६, १८३१
 2 बाण प्राप्त करना, सोचना, विष् (विष्) —, 1 बाहर
 जाना, अथा होना—प्रकाश निर्वात—भा० ४, हुल्लहपरि-
 मोदावायु निर्वात कलात्—रघु० १२७, मनु० १८३८,
 वा० ६१३, अथर्व ६१ 2 टटाना, बैसा कि—निर्जन-
 विद्यात् में 3 (किमी रोग से चिकित्सा द्वारा) मुक्त
 होना बरत, 1 बाधित जाना, तथय परगत एवायिन
 —उत्तर० ५, 2 घेरना, लपेटना, व्याप्त करना—स्फुट-
 परामपरगतपङ्कजम्—सि० ६१२, हरि—, 1 जाना,
 बन्धक लगाना, —त ह्य तत्र परिगम्य—रामा० यथा
 हि मेघ मूल्यं नित्यथा परिगम्यते—महा० 2 घेरना,
 सि० ११२६, मट्टि० १०१, वेतालनिघन्त—आदि 3 सर्वत्र
 घेरना, सब दिशाओं में व्याप्त होना 4 प्राप्त करना
 —बृहत्साम् आदि 5 जानना, समझना, सोचना
 रघु० ७।१७ 6 घेरना, (इस सत्कार से) घेरने जाना
 —अथ येष्वा जलाधिभरपरिगमना एष लम् तु—भर्तुं-
 ३।२८ 7 प्रभावित करना, प्रसन्न करना, बैसा कि
 —सुभया परित्त—में, वर्षा—, 1 निकट जाना, की
 ओर जाना 2 वृत्त करना, समाप्त करना 3 बीतना,
 अभिभूत करना, रति—, 1 बाधित जाना 2 बहना,
 की ओर जाना बहना—, बाधित जाना, लीट जाना
 प्रत्यम्—, (मत्कार करने के लिए) काम जाना, बहना
 या मित्रता प्रत्युज्ज्यायातिविभाषिते—रघु० ५१२,
 प्रत्युज्ज्यायाति विभक्तम् पुञ्जे निरुञ्जे त्रिय
 —गीत० ११, भाषि० ३१३, कि, (समय आदि का)
 1 बीत जाना—सन्त्ययायि सपदि व्ययमि—सि० १।१७
 2 जोखल होना, अन्तर्धान होना—सलज्जाया सज्जायि
 व्ययपरमिध दुर युगदुःख—गीत० ११, अथ० ११११,
 मनु० ३।२, ५२, (ब्रह्म०) व्यतीत करना, मिलाना
 —विगमयव्युक्ति एव लपा—सं० ६१५, विभिसु—,
 1 बाहर जानना 2 अन्तर्धान होना, जोखल होना बिच
 अलग होना लम्—, (आ० में इयुक्त) 1 मिल जाना,
 इकट्ठे चलना, मिलना, मुकाबला करना—असपूर्णे
 समायि—रथ०, एते अथवयो कनिन्दकन्नाम्याकिन्तो
 सयच्छेती—अथर्व० ७ 2 सहवास करना, सभोग करना
 —सार्थ व परसता—अथ० १।२०८, मनु० ८।३७८,
 (ब्रह्म०) इकट्ठा करना, मिलाना या एकत्र करना
 —रघु० ७।१७, लक्ष्मि—, 1 निकट पहुंचना 2 अन्व-
 यन करना 3 प्राप्त करना, अर्धग्रहण करना यत्ते
 सर्वाधिगच्छति सर्वते तथ्य तद्वन्म—मनु० ८।४१६,
 लम्ब—, पूरी तरह से जान लेना, खनुषा—, 1 पास
 पहुंचना 2 जा पडना ।
 गव (वि०) [गम् + ग्] (समास के अन्त में) जाने
 वाला, हिलने-चुलने वाला, घात जान वाला, पहुंचाने

बाणा, प्राप्त करने वाला, हासिल करने वाला आदि
 अथ, दुरागम, हृदयगम आदि, — भा 1 जाना,
 हिलना-चुलना 2 प्रयाण करना—अथवस्यैकाग्रम
 3 आक्रमणकारी का कृच करना 4 मरक 5 अविचा-
 रित्ता विचारानुपगत 6 ऊपरपान, अटकलपयन्तु निरी-
 क्षण 7 मन्त्र-सभोग, सहवास—सुब्रह्मनायक—मनु०
 ११।५५, याज्ञ० २।२१३ 8 पाले आदि का लेने ।
 गम०—बाणम आना-जाना ।
 गमक (वि०) (गम् + ग्) [गम् + भ्युल्] 1 सके-
 तक, सुहाव देने वाला, प्रयास, अनुक्रमणो—तदेव
 गमक पाण्डित्यवेदव्ययो- भा० १।७ 2 विरहासो-
 त्यादक ।
 गमनम् [गम् + ग्] 1 जाना, गति, चाल—श्लोपो-
 भारालसपयना— मेघ० ८२, इसी प्रकार—गजेन्द्र-
 गमने—भृगुवा० ७ 2 जाना, गति (वैज्ञानिक इसे
 गीच कर्मों में से एक कर्म समझते हैं) 3 निकट पहुँ-
 चना, पहुंचना 4 अभिप्राय 5 अनुभव करना, भूग-
 तना 6 प्राप्त करना, पहुंचना 7 सहवास ।
 गमिन् (वि०) [गम् + इति] जाने के विचार वाग्ना
 —बैसा कि धामगमो (पु०) गामी ।
 गमनीय, गम्य (सं० कृ०) [गम् + अन्याय यत् वा]
 1 सुगम, उपलब्ध बिकारगम्य गमतोषोष्म मन्वा—
 वा० १ 2 सुबोधि, आसानी से सप्तम में जानें योग्य
 3 अभिप्रेत, निहित, अर्धवृत्त 4 उपयुक्त, बाधित,
 योग्य—याज्ञ० १।६४ 5 महाराज के योग्य, दुर्जन-
 गम्या सार्थ—अथ० १।२०८, अर्थकामा शिष्य यश्च
 गम्या रहसि शचित तोषीति महा० 6 (बीचदि
 आदि से) उपचार योग्य—अथवा मन्वाणात्—भर्तुं०
 १।८९ ।
 गम्भीरिका, गम्भीरो [गम् + विच + गम्, त गम् = निम्नगति
 विभक्ति - गम् + म् + भ्युल् + टाप्, इत्वं, गम् + म्
 + अण् ङीष्] एक वृक्ष का नाम ।
 गम्भीर (वि०) [= गम्भीर]—रघु० १।१६ मेघ० ६४,
 ६६,—र 1 कर्मज 2 जमीर जीव । सम०—वेदिम्
 (वि०) (हृत्वा की भाँति) दुर्दान्त, अडिगल ।
 गम्भीरा, गम्भीरिका [गम्भीर + टाप्, गम्भीर + क्त + टाप्,
 इत्वंम्] एक नदी का नाम- गम्भीरगा पवति
 —मेघ० ४० ।
 गम् 1 गया प्रदेश तथा उसके आस पास रहने वाले लोग
 2 एक राक्षस का नाम,—भा बिहार में एक नगर जो
 एक तीर्थ स्थान है ।
 गम् (वि०) (गम् + ग्) [गीचने - ग् + अच्] निग-
 लने वाला,— र 1 देव, लज्जल 2 बीमारी, भोग
 3 निलम्बा ('गर्ग' का भी यही अर्थ है,— र,— रम्
 1 अग्र 2 विघनाशक बीचदि,—रम् छिद्रकना, तर

करना । सम०—अधिका 1 लासा नामक कीडा
2 इस कीडे से प्राप्त साल रग, —झी एक प्रकार की
मछली, —इ (वि०) बिच देने वाला, अहर देने वाला
(—इम्) बिच, —झातः मोर ।

गरलम् [गृ + ल्यट्] 1 निगलने की क्रिया 2 छिडकना
3 बिच ।

गरभः [गृ + अभच्] भ्रूण, गर्भस्थ बच्चा, दे० गर्भ ।
गरसः,—सम् [गिरति जीवनम्—गृ + अलच् तारा०]
बिच, अहर,—कुवलयदलश्रेणी कण्ठे न सा गरलघुति
—गीत० ३, गरलनिच कलयति मलयसमीरम्—४,
स्मरारललघडन मम शिगसि मण्डनम्—१० 2 साँप का
बिच,—सम् चास का गटठड । सम०—अरिः पन्ना,
मरकतमणि ।

गरित (वि०) [गर + इत्च्] बिचयुक्त, जिसे अहर दिया
गया हो ।

गरिचम् (पु०) [गृ + इचिन्च्, गरादेश] 1 बौद्ध, भारी-
पन,—शि० १।४९, 2 महत्त्व, बहूपन, महिमा—पञ०
१।३० 3 उत्तमता, श्रेष्ठता 4 षाठ सिद्धियों में से
एक सिद्धि जिसके द्वारा अपने आपको इच्छानुसार
भारो या हल्का कर सकता है—दे० 'गिद्धि' ।

गरिष्ठ (वि०) [गृ + इष्ठन् गरादेश] 1 सबसे भारी
2 अत्यन्त महत्त्वपूर्ण (गृह शब्द की उत्तमावस्था)
गरीबस्त् (वि०) [गृ + ईयन्तु, गरादेश] अधिक भारी,
अपेक्षाकृत वजनदार, अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण (गृह की
मध्यमावस्था)—महिदेश बलाद्गरीपत्नी—हि० २।८६,
वृद्धय तन्वा भार्या प्राणेश्वोऽपि गरीबसी—हि० १।
११२, ति० २।२४, ३७ ।

गृह [गृह् + इत्ये—झी + इ प्रथ० तलोप—गृ +
उङच्] 1 पत्नियों का राजा (यह 'विनता' नाम की
पत्नी से उत्पन्न कथप का पुत्र है, यह पत्नियों का
राजा, साँपों का नैमित्तिक शत्रु और अरुण का बड़ा
भाई है, एक बार इसकी माता और उसकी सीत कदु
में 'उष्ण' अर्थात् के रात के विषय में झगडा हुआ,
विनता हार गई और जन्म के अनुसार उसे कदु की
दासिनी बनना पडा। गृह, माता की स्वतन्त्रता
प्राप्त करने के लिए स्वर्ग में इन्द्र के पाम गया, वहाँ
से साँपों के लिए अमृत का पडा। स्वर्ग में गृह की
उसके साथ गुजना पडा। जन्म में वह अमृत प्राप्त
करने में सफल हुआ, फलतः विनता की स्वतन्त्रता
प्राप्त हो गई। परन्तु इन्द्र अमृत का पडा साँपों के
पाम से ले गया 1 गृह को विष्णु की सवारी चिचित
किया गया है। इसका चेहरा स्वर्ण, नाक ताँते जैसी
पर लाक और गरीर मनुहरी है) 2 गृह की शक्त
का बना भवन 3 विशेष्यैकिक ब्रह्म गृहणात् । सम०
—अग्रज सूर्य के सारथि अरुण का विशेषण,—अङ्क
४३

विष्णु का विशेषण,—अङ्कितम्—अवन्तम् (पु०)
—इसीर्थम् पत्रा,—अग्रज विष्णु की उपाधि,—अङ्क
एक प्रकार की विशेष सैनिक व्यवस्था दे० (३)
ऊपर ।

गृह्य (पु०) [गृ (गृ) + उति] 1 पत्नी के घर, बाबू
2 खाना, निगलना । सम०—ग्रीष्म्य (पु०) घटेर ।

गृह्यन्तु (वि०) [गृह् + मनुप्] पत्नी—गृहमदाधीविच-
भीमदर्शन—रघु० ३।५७, (पु०) 1 गृह 2 पत्नी ।
गृह्य [= गृह्य, इत्ये ल] गृह्य, पत्नियों का राजा ।

गर्भ [गृ + ग] 1 एक प्राचीन ऋषि, ब्रह्मा का एक पुत्र
2 शीड 3 केचूवा (ब० व०) गर्भ की सतान । सम०
—श्लोत (नपु०) एक तीर्थ ।

गर्भर [गर्भ इति शब्द राति—गर्भ + रा + क] 1 भँवर,
बलावर्त 2 एक प्रकार का माद्ययत्र 3 एक प्रकार की
मछली, 4 मधानी, दही बिलोने का मटका,—री
मधानी, पानी की गागर ।

गर्भडि [गर्भ इति शब्देन अटति—गर्भ + अट् + अच्] एक
प्रकार की मछली ।

गर्भ (स्वा० पर०—गृ + उभ०—गर्भति, गर्भवति—ते,
गर्भति) 1 दहाइना, गुरना—गर्जेन्—गर्जे हरि साम्भसि
शैलकुञ्ज्ये—महि० २।९, १।१२१, रणे न गर्भति वृषा
हि गुरा—राम०, हुष्टो गर्भति चातिरपितबलो
दुषोचनो वा शिवो—मृच्छ० ५।६ 2 एक गहरी और
गहनहाठी हुई गर्जना करना—अदि गर्भति वाग्धरो
गर्जेतु तत्राम निद्रा गृह्या—मृच्छ० ५।३२, (और
इस अंक के दूसरे कई श्लोकों में) गर्भति शरदि न
वर्षति वर्षति वर्षां नि स्वनो मेघ उद्भूट, वसु—,
बदले में गडगडाना, गुजना—कु० ६।५, ब्रह्मि,
1 बिचाइना, दहाइना (आल०) 2 मुकाबला करना
विरोध करना—अयोध्याय प्रतिवर्जताम्—रघु० १।९ ।

गर्भ [गर्भ + घञ्] 1 शायियों की बिचाइ 2 बादलों
की गरज या गडगडाहट ।

गर्भन्व्य [गर्भ + न्यट्] 1 दहाइना, बिचाइना, गुरना,
गडगडाना 2 (अत) आवाज, कोलाहल 3 आवेश,
कोध 4 सहाय, युद्ध 5 शिकरी ।

गर्भा, गर्भिः [गर्भ—टाप्, गर्भ—इज्] बादलों की गडगडा-
हट, गरज ।

गर्भस्त (वि०) [गर्भ—+स्त] गर्जा हुआ, बिचाडा हुआ,
—सम् बादलों की गरज, या गडगडाहट,—स्त बिचाइना
हुआ, जिसके प्रत्येक से मद भरता है ।

गर्भे,—सम् [गृ + तन्] कोटर, छिद्र, गुफा—सप्तश्लेष
गर्भे—मनु० ४।५७, २०३, (इस अर्थ में गर्भा भी),
—स्त 1, कटिबान 2 एक प्रकार का रोग 3 एक
देव का नाम, विगर्भ का एक भाग । सम०—आध्व
चूहे की भाँति बिल में रहने वाला जानवर ।

वहिका [गर्त अत्यस्या—गर्त+अन्,] जुलाहे का कार-
खाना, लहड़ी, (कच्ची जुलाहा अपने लहड़ी पर
बैठते समय पैर भूमि के नीचे गड़े में रलता है) ।

गर्भ (स्त्री० गर्०), **गर्भा**० उम०—गर्दिनि, गर्दयनि,—ते
शब्द करना, दशावधि ।

गर्भा (स्त्री०—भौ) [गर्भ+अभम्] 1 गवा—न
गर्भा वाजिघर बहनि—मूच्छ० ४११७, प्राग्ने तु घोषवी
वर्षं गर्दभी ह्यप्तरायते—सुभा०, गर्भे की तीन बड़ी
विशेषताएँ हैं—अविधात बहुद्वार तोतोल्य च न
विदति, ससतोपस्तथा नित्यं शौणि मिश्रेण गर्दभात्
—घाण० ७० 2 गध, ब०—भम् महेद कुमुदिनी ।
सम०—अच्छ, —इक 1 एक वृषविषे 2 वृष,
—आह्वयम् महेद कमल,—गध चतुरोगविषे ३

गर्भ [गृ+घञ्, अच् वा] 1 इच्छा, उत्कठा
2 सोलच ।

गर्भण, **गर्भित** (वि०) [गृ+त्पट्, क्त वा] लोभी,
लालची ।

गर्भिन् (वि०) (स्त्री० भी) [गर्भ+नि] 1 इच्छुक,
लालची, लोभी—नवाप्रार्थिवगर्भिन्—मन्० ४२८
2 उत्पुङ्गनापूर्वक किसी कार्य का पीछा करने वाला ।

गर्भ [गृ+अन्] 1 गर्भाशय, पेट—गर्भेयु क्वति—पथ०
१, पुनर्वर्षे च समवन्—मन्० ६१३ 2 भ्रूण, गर्भ-
स्थ बच्चा, गर्भाधान—नरगतिकुलभूर्य गर्भमाघत
रशी—रघु० २०, ७५, गर्भोऽव्यदाज्जन्त्या कु०
१११९ ३ गर्भाशय काल-गर्भाशयेऽप्ये कुरीति ब्राह्मण-
स्वीयनवनम्—मन्० २१३६ 4 (गर्भस्थ) बच्चा शं०
६ 5 बच्चा, अष्टलावक 6 किसी वस्तु का अन्त्यन्तर,
मध्य या भीतरभाग (इस अर्थ में समस्त पद)—हिम-
गर्भमंयुर्न—शं० ३१३, अग्निगर्भो गर्भोमिव ४११,
रघु० ३१९, ५११७, ९५५, शि० ९६८, मा० ३१२८,
मुद्रा० ११२७ आकाश-प्रभृति अर्थात् सूर्ये किरणो द्वाग्
अठ मानस शोचिन और आकाश में स्थित बाधराशि
जो ब्रह्मात में फिर इस धरती पर बसनी है, तु० मन्०
९१३०५ 8 भीतरी कमरा, प्रसूतिकान्त, जच्चा लागा
9 अग्रमन्तैग प्रतीठ 10 छिद्र 11 अग्नि 12 आहार
13 कटहल का कोला छिलका 14 नदी का पाट, वि-
शेषत भाउपद बनुदंभी को गंगा का जब कि वर्षादि
अपने यौवन पर होतो है तथा उमड़ कर चलते है ।
सम०—अच्छ (गर्भेच्छु भी) अक के बीच में विष्कभक
जैसा कि उतर गवर्चान के सालमें अक में कुण और लव
के अम का दूध, या बालगवाशय में सोलासवयव, सा०
द० परिभाषा देना है—अच्छादर प्रकियो या—हृद्रामुखा-
दिमान् अहोऽपर स गर्भाच्छु सबीर फलवान्पि ।
२०९—अबकान्ति (स्त्री०) आत्मा का गर्भ में प्रविष्ट
होना, आचारम् 1 बन्धुवानी 2 भीतरी कमरा,

निजी कमरा, अन्त पुर 3 प्रसूतिकान्त 4 मन्दिर
का पूजाकक्ष जहाँ देवता की मूर्ति स्थापित रहती है,
—आषाढम् 1 गर्भं रहना गर्भधारण गर्भाधानसं-
परिचयान्तमावबद्धमात्मा (बलाका) 1-मघ० ९ 2 एक
संस्कार, ऋतु-स्नान के पश्चात् एक शक्ति संस्कार
(यह संस्कार ही पांचिक पत्र में विवाह की पूर्णता का
वैध उद्धरता है) पाण्ड० ११११, आशय योनि, बन्धे-
दानी,—आषाढ गर्भं का कच्चा गिरना, गर्भपात ।

ईश्वर जन्म से ही घनी, जन्मजात घनी, पैदाइशी
राजा या ईश्वर,—उपस्थि भ्रूण की रचना, उपघात
रुग्णे गर्भं का गिर जाना, उपघातिनी वह नाय या
स्त्री जिसे बिना ऋतु के गर्भ का साथ हो जाय,—कर
(वि०) गर्भ धारण करने वाला, काल ऋतु काल,
गर्भधारण का समय, कोश,—ब गर्भाशय, बन्धेदानी
—बलेण गर्भधारण करने का कष्ट प्रसव को पीडा,
अथ गर्भं की कच्ची अवस्था में गिर जाना—गृह्यम्,
—भवन्म्, वेद्यमन् (नृप०) 1 घर के भीतर वा
कमरा, घर का मध्यभाग 2 प्रसूतिकान्त 3 शक्ति
का वह कक्ष जिसमें देवता की प्रतिमा स्थापित हो

निवेश्य गर्भभवनात् मा० १, प्रहणम् गर्भधारण,
गर्भं होना, धारिन्ति (वि०) गर्भगण करने वाला,
—चलन्म्, गर्भस्पर्शन, गर्भाशय में बच्चा का हिलना-
टोलना,—ध्वलि (स्त्री०) 1 जन्म, प्रसूति 2 गर्भस्थ,
दास; ती जन्म से ही गुलाम (तिरस्कार मुनक
शब्द),—दुह (वि०) (कर्म० ए० व० द्रुक०) गर्भपात
करने वाला,—घरा गर्भवती, धारण—धारणा गर्भ-
रिचति, गर्भ में स्नान को रखना,—ध्वस गर्भपात,
—पारिन्म् (पु०) गाठ दिन में पकन वाला घान,
साठो चावल,—पाल चौथे महिने के बाद गर्भं का गिर
जाना,—पोषणम्,—भ्रमन् (नृप०) गर्भस्थ बालक का
पालन-पोषण—अनुचिते भिर्वाग्भिरापरैश्च गर्भभ्रमं
रघु० ३१२२—अच्छव अवनावार, प्रसूतिकान्त,
—वास वह महीना जिस में गर्भ रहे,—भोवनम् प्रसव,
बच्चे का जन्म,—योषा गर्भवती स्त्री (आल०) चतु
हुई गंगा जब कि उसका पानी किनारों से बाहर बहता
हो,—रक्षणम् गर्भस्थ बालक की रक्षा करना,—रूप,
—रूपक बच्चा, शिशु, ललन, ललणम् गर्भ हो जाने
का चिह्न—सम्भ्रमणम् गर्भ की रक्षा और उसके विकास
के लिए किया जाने वाला एक संस्कार,—बसति
(स्त्री०)—वास 1 गर्भाशय—मन्० १२७८ 2 गर्भ-
शय में रहना,—विध्वलि (स्त्री०) गर्भाधान के
आरम्भ ही में गर्भसाव हो जाना,—वेदना प्रसवपीडा,
—व्याकरणम् गर्भ की उपपत्ति और वृद्धि,—श्लोक एक
प्रकार का जोहार जिससे मरे हुए बच्चे को पेट से
निकास जाता है,—साम्या गर्भाशय,—समव—संभृति

(स्त्री०) गर्भवती होना, — बन्धिका (वि०) 1 गर्भाशय में विद्यमान 2 अग्न्युत्तर, आन्तरिक, ब्रह्म गर्भ गिर जाना, गर्भ का कच्चा अवस्था में बह जाना—बर गर्भ-मात्र पच० १, यात्र० ३१२० मनु० ५१६६।

गर्भक [गर्भ + कृन्] बालों के बीच धारण की हुई पुष्प-माला, —कम् दो रातो और उनके बीच के दिन का समय।

गर्भक [गर्भस्य अष्ट इव प० त०] नाभि का बड़ जाना।
गर्भवती [गर्भ + मनुष्य + क्रीप्, बन्धकम्] गर्भिणी स्त्री।

गर्भिणी [गर्भ + इति + क्रीप्] गर्भवती स्त्री (बाहे मनुष्य की हो या पशु की) —योगिनीश्रीप्रियदनबोलपमालभारि-सेयोग्यकष्टविनिनाबलयो भवन्ति—या० ११२, यात्र० ११०५, मनु० ३११२५। सम०—अबोलसम् दादिना, गर्भवती स्त्री और नवजात बच्चे की सेवा और परि-चर्या,—दोहकम् गर्भवती स्त्री को प्रबल इच्छाएँ या म्बि, —व्याकरणम्,—व्याकृति (स्त्री०) (आयुर्वेद शास्त्र का एक विशेष अङ्ग) गर्भ के विकास का विज्ञान।

गर्भित (वि०) | गर्भ + टप् + कृन्] गर्भवत, भग हुआ।
गर्भित (वि०) [अलक न० त०] 1 बालक की भाँति गर्भ में ही मनुष्य 2 आहार और सन्तान के विषय में मनुष्य 3 आत्मों।

गर्भित (स्त्री०) [ग उति, मृत्] 1 एक प्रकार का घास 2 एक प्रकार का नरकुल 3 माता।

गर्भ (भ्वा० पर०— गर्भति, गर्भित) घमड़ी या अहंकारी होना, (केवल म० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त, जो कि विशेषण हो मगमा जाता है और गर्भ से बना है) कोऽप्यग्राप्य न गर्भिन—पच० ११४६।

गर्भ [गृह + षज्] 1 बघड़, बहकार—मा कुक्ष घनजन-योगनगर्भ हरति निसेषाकालः सन्धुं बोह० ५, मुषे-दानो योगनगर्भ बहमि; मालवि० ५ 2 अल० शान्त्र म ३३ गनिषागिमावो मे से एक—कृषनविषादि-प्रवृत्ततासोत्कर्षजानाथंनिषागिबहोलेन गर्भे—रस०, या सा० ६० के जनुमा—गर्भो मद प्रभाषोर्विषासकु-न्नादित्र, अन्नान्नाविषासाङ्गुत्तोनविनयादिहन्।

गर्भो [गर्भ + अट् + अच्] बौकीदार, श्रावण।

गर्भ (भ्वा०, धुरा० आ०) (कभी कभी पर० भी) —गर्भते, गर्भयते, गर्भित 1 कलक लगाना, निन्दा करना, झिड़की देना विषया हि दशा प्राप्य देव गर्भवते नर—हि० ६१३, मनु० ६११९ 2 दण्डो ठहराना, आरोप लगाना 3 अंद प्रकट करना, बि—, कलकित करना निन्दा करना, झिड़की देना—त विवर्हन्ति साधव—मनु० ११६८, ३१६६, ११५२।

गर्भकम्, —ष्वा [गर्भ + कृन्ट्, गर्भ + युच् + टाप्] निन्दा, कलक, झिड़की, दुर्बचन।

गर्भो [गर्भ + अ + टाप्] दुर्बचन, निन्दा।

गर्भ (वि०) [गर्भ + ष्यत्] निन्दनीय, निन्दा के योग्य, कलक दिव्य जने के योग्य—गर्भो कुर्वाणुने कुले—मनु० ५११४९। सम०—बाधिन् (वि०) अपायक कहने वाला, दुर्बचन बोलने वाला।

गर्भ (भ्वा० पर०— गलति, गलित) 1 टपकाना, चुकाता, पसीजना,—चूना—अलमिब गलत्पपदिष्टम्—का० १०३, अञ्जकपोलमूलगलिते (अधुनि)—अमर० २६१९१, भावि० २१२१, रघु० १११२२ 2 टपकना, या गिरना—शरदमञ्जलादसनापमा—शि० ६१४२, १७७, प्रतोदा जगत्—अट्टि० १५१९, १७७८, गलद्विभक्त - गीत० २, रघु० ७११०, मेघ० ४४ 3 ओझल होना, अन्तर्धान होना, गुजर जाना, हट जाना—दोषघने सह गलति गुञ्जननेह—का० २८९, विद्या प्रमादगलि-तामिब विन्त्यामि—चौर०, भर्त० २१४४, अट्टि० ५१४३, रघु० ३१० 4 लाना, निगलना (ग से सबड़)—पैर० या धुरा० उष० (मू० क० कृ०—गलित)—1 उठलाना 2 निगारना, निचोड़ना 3 बहना (आ०), निष्—, टपकना, रिसना, चूना—रघु० ५११७ वर्षा—, टपकाना, अट्टि० २१६, बि—, 1 टपकाना विक्रम० ५११० 2 टपकाना, चूना 3 ओझल होना, अन्तर्धान होना।

गर्भ [गन् + अच्] 1 कठ, गर्दन—न गरल गले कस्तूरीय तु० अजागलमन—भर्त० ११६६, अमर ८८ 2 साल बूझ की मात्रा 3 एक प्रकार का बाधघन। सम०—अक्षर गले का एक विशेष रोग (सूजन), —उद्बुध बोधे की गर्दन के बाल, अयाल,—बोधः गले की रसीली,—कम्बल गाय बेल की गर्दन का नीचे लटकने वाला चमड़ा, मानर,—पक्कः गडमाला, गले का एक रोग जिममें गाँठ सी निकल आती है,—कृष्ण,—घृहणम् 1 गला पकड़ना, गला घोटना, बसासाधरोध करना 2 एक प्रकार का रोग 3 मास में कृष्णपक्ष के कुछ दिन—अर्थात् चौब, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी और गीन इमसे बाध के,—कर्मन् (नृप०) अन्ननासी, गला, द्वारम् मूह,—केसला हार,—बर्त (वि०) 1 गले की किन्ना में निपुण, लूब लागे और हृत्रम करने वाला, तनुदुस्त, स्वस्व-दुस्वले चैव तीर्थेषु गलबान्तिपस्विन—पच० ३, अने० पा० 2 पिछलग्नु, धाटुकार,—असः मार,—दुष्चिन्ता उर्जविह्वा,—दुष्चिन्ता गर्दन की शिथिली की सूजन,—स्त्री (गले-मन्त्री भी) बकरी,—हृत्स 1 गले से पकड़ना गला घोटना, अर्धचन्द्र या मरदनिया 2 अर्धचन्द्राकार बाण, तु० अर्धचन्द्र,—हृत्सित (वि०) गले से पकड़ा हुआ, गर्दनिया देकर निकाला हुआ, गला घोटा हुआ।

गर्भक [गर्भ + कृन्] 1 कठ, गर्दन 2 एक प्रकार की मछली।

पलकम् [गल् + प्लुट्] 1 रिखा, बुना, टपकना 2 चूना, पिचक आना ।

पलकितका, पलक्यती [गल् - गतु + होप्, तुम्, + कन् + टाप् इत्यम् - गल् + क्तु + होप्, तुम्] 1 छाटा चडा 2 छाटा चडा विपकी पीरो में छेद करके देव मूर्ति पर टांग देते हैं, जिससे कि उस छेद से बरतार जल टपकता रहता है ।

पलिक [पलि, इत्य ल, गल् + इन वा] हृष्ट पुष्ट परलु मट्टा बँक । दे० पलि ।

पलित (म० क० क०) [गल् + क्त] 1 टपका हुआ, नीचे गिरा हुआ 2 पिचला हुआ 3 रिखा हुआ, बहना हुआ 4 नष्ट, ओझल, चरिन्न 5 बयन-रहित, डोला 6 खाली हुआ, बू-बू-कर जो खाली हो गया हो 7 खाना हुआ 8 क्षीय, निर्बल किया हुआ । सम० - कृच्छम् बडा हुआ या अस्थि नाश जब कि हाथ पैर की अङ्गुलियाँ भी गाय कर गिर जाती हैं, - इत्त (वि०) इत्तलोत्त, -अथत्त जिसकी आँधों में इत्तने की शक्ति न रहे, अथा ।

पलितकः [पलित इव कार्यात् कं + क] एक प्रकार का नृत्य ।

पलितकम् [अन्क स० त०] एक पक्षी जिनके गले में मांस की रीली ली लटकनी रहती है ।

पलम् (म्वा० जा० - गल्भते, गल्भिन) साह्यो या विदकत होना, प्र - साह्यो या आत्म विख्याती होना - या कृषकत्त सखीचनेन प्राग्निप्रिययत्त प्रजग्भते - सि० १०।१८, न सौतककण्डिकरी गालात्त प्रजग्भते कर्माणि टिकुकाया - विक्रमाक १।१६, टाकी का काम करने में सक्षम या साह्यो नहीं हो सकता ।

पलम् (वि०) [गल् + अन्] साह्यो आत्मविश्यामी, जीष्ट का ।

पलया [गालना कृच्छाया समृह - गल् + यत् + टाप्] कृच्छो का समृह ।

पल्य [गल् + ल] गाल, विशेषकर मूय के दोनों किनारों का पाश्चैतिकी गाल (अन्० गालयो इत्त गाल को 'दाम्य' अर्थात् गलाक मानते हैं तु०, काव्य० ७ न दिए गए उदाहरण का नामूलमगालाज्ज गाल जल्पति मानुष, इत्यु तु० प्रथमूर्ति के प्रथम की - पातालप्राप्तमन्मगालाज्जव-प्रक्षिप्तमनपाणवम् - मा० १।२२। सम० - चातुरी गाल के नीचे रखा जाने वाला छोटा गोल लकिया ।

पल्यक [गल् + क्विप्, - गल् + लानि ला + क, लत् म्वाये कन्] 1 पागब का गिलास 2 पुष्पगज नीलमणि, दे० नी० 'पायक' ।

पल्यकी शक्तिग पीने का प्याला ।

पल्यकी [गल् + क्विप् + इत्त] दीपनरिह - २० म० ।

1 शक्तिग 2 वैदुग्मया 3 कटोरा, प्रगाथ पीने का गिलास ।

पल्य (म्वा० - जा० - गल्भते, गल्भिन) कृत्क अगला, निरदा करना ।

पल्य [कुञ्ज ममाना, विद्योष का म्बरो में आरम्भ होने वाले अंश के आरम्भ में 'पो' शब्द का स्थानान्तरण पर्याय] सम० - अक्ष रामानदान इत्याया विद्यालयेन जम्प-संवासा मत्पश्चात्तभया वभूव - २५० ७।११, कुव-लक्षणवासा लोचनेन-तूनाला ७।१३, कु० ७।१८, मध० १८, जालम् जानी, शिन्निमिया, अक्षित (वि०) सिद्धिकियो बाल्य, - अल्पु गोमा का सुष्ट (गोऽपम्, मोक्षपम् या गवापम् लिखा जाता है), - अक्षयम् चरागात्, मोक्षरमणि, अक्षमी 1 चरागात् 2 लोर, नाद जिसमें पशुओं के साने के लिए धाम रक्खा जाता है, - अक्षिका नाय, - अह् (वि०) गाय के मूय का, - अक्षिकम् गाय और भट्टे, अक्षान 1 गोकी 2 जाति में बहुलता, - अक्षय् बेल और चाँदे, - आक्षति (वि०) गाय की शक्ति बाला, आक्षिकम् प्रतिदिन गाय को चारा देने को नाय, - इत्त 1 गोओ का म्बामी 2 बडिया बँल, - ईश, - ईश्वर गोश का म्बामी उच्च सर्वोत्तम गाय वा बँल ।

पल्य [गो + अन् + अक्ष] बँल की जाति - गाम्दो गवत - नकं० - इत्त कर्षणद्वयवैविकिने - कु० १।१६, आतु० १।२३ ।

पल्यक [यथाय शब्दाय अर्थात् गल् + अन् + उक्त्वा] - गवय ।

पल्यी [वा + इति + होप्] गोओ वा सुष्ट वा लक्ष्य ।

पल्ये, - घु, घुका [?] पल्यका का पिलाने का चारा, धार ।

पल्यकम् मेह ।

पल्ये (म्वा० जा० - च्वा० पर० - गयेपते, गयेषयति, गयेषति) 1 ईदना, गाजना, तलाय करना, पूछ ताछ करना - तन्मायेष यत् प्राज्यन्तरेवायो गयेषयताम् - मथा० २५, १०६ 2 प्रलय करना, उलट इच्छा करना, प्रयत्न उद्योग करना गयेषयाय महिषीकुल जल्प - आतु० १।२३ ।

पल्ये [गल् + अक्ष] खाने के बाला, च नाज, पुत्राण्ड ।

पल्येयम्, या [गवय + यत्, यन् - टाप् वा] किमी बन्दु की म्वाज, या तुल्य ।

पल्येति (वि०) [गयेष + क्त] खाना हुआ, ईदना हुआ, तलाय किया हुआ ।

पल्य (वि०) [गो + यत्] 1 गो शक्ति पशुओं से पकत 2 गोश म प्राज्य कुष, दली आदि 3 पशुओं के लिए उपयुक्त - इत्त 1 गोओ की देह, मयकी 2 गोचर-

भूमि 3 गाय का दूध 4 धनुष की डोरी 5 रगीन बनाने की सामग्री, पीला रंग, ध्या 1 गौश्री को हेड़ 2 दो कोंस के बराबर दूरी 3 धनुष की डोरी 4 रा देने की सामग्री, पीला रंग ।

गन्धुलम्, निसि (स्त्री०) [गो पृति पृथो०] 1 एक कोंस या दो मील की दूरी की माप 2 दो कोंस के बराबर दूरी का माप ।

गह् (चुरा० उभ०--गहयति-ते) 1. (जगल की भाति) सघन या साद्र होना 2 गहराई तक पहुँचना ।

गहन (वि०) [गह् + लृट्] 1 गहरा, मूत्रन, साद्र 2 अमध, अप्रवेक्ष्य, अलघ्य, दुर्गम 3. दुर्बोध, अव्याख्येय, रहस्यपूर्ण--सेवाधर्म परमगहनो यौगिनामप्य-गम्य -- पृ० ११२८५, अर्तु० २५८, गहना कर्मणो गति -- धन० ५११७, शा० ११८ 4. कठोर, कठिन पीडाकर, कष्टकर--गहन ससार -- शा० ३११५ 5 गहरा किया हुआ, तीक्ष्ण किया हुआ--मा० ११३०, --मन् 1 गह्वर, गहराई 2 जगल, झाड़ी या झुरमुट, घोर या अप्रवेक्ष्य जगल--यदनुभवमनाय निधि गहनमपि शीलितम्--गीत० ७, भाषि० ११२५ 3 छिपने का स्थान 4 गुफा 5 पीडा, दुःख ।

गह्वर (वि०) (स्त्री०--रा, री) [गह् + वरच्] गहरा, दुस्तर,--रन् 1 रसातल, जगह बाई 2 झाड़ी या झुरमुट, जगल 3 गुफा, कन्दरा गौरीगुरोगंह्वरमा-विशेष--रघु० २१२६, ५६, ऋतु० ११२१ 4 दुर्गम स्थान 5 छिपने की जगह 6 वहेली 7 पाखंड 8 राता, चिल्लाता,--र लतामण्डप, निवृद्ध,--री 1 गुफा, कन्दरा, लोह ।

गा [गै + डा] गाना, हलोक ।

गाङ्गा (वि०) (स्त्री०--गी) [गङ्गा + ङञ्] गंगा में या गंगा पर होने वाला 2 गंगा से प्राप्त या गंगा से आया हुआ--गाङ्गामन्व सितमन्व यामुप कण्वजाम्मुभयत्र मज्जत--काव्य० १०, कु० ५१३७,--ग 1 भीष्म का विशेषण 2 कातिकेय की उपाधि,--मन् 1 विशेष प्रकार का बर्षा का जल (जो स्वर्णीय गंगा से आने वाला माना जाता है) 2 सोना ।

गाङ्गाद,--द्वेषः [गाङ्गा + अट् --अच्, सक० परस्म, पृथो०] शीघ्रा मछली, या जलवृद्धिक ।

गाङ्गायति [गङ्गा + फिज्] भीष्म या कातिकेय का नाम ।

गाङ्गीय (वि०) (स्त्री०--गी) [गङ्गा + ङञ्] गंगा पर या गंगा में होने वाला,--अ भीष्म या कातिकेय का नाम,--मन् सोमा ।

गाङ्गयन् [गाङ्ग मवं राति, गाङ्ग + रा + क] गाङ्ग ।

गाङ्गिकाय--दत्तक ।

गाङ्ग (धू० क० इ०) [गाङ् + लृट्] 1 डुबकी लगाया हुआ, मोता लगाया हुआ, लगान किया हुआ, गहरा

घुसा हुआ 2 बार 2 डुबकी लगाया हुआ, माशित, सघन या घना बसा हुआ--तपस्विगाढा तमसा प्राप नदी तुरागेण--रघु० ११७२ 3 अत्यंत खोया हुआ, कस कर लीया हुआ, पक्का, मुदा हुआ, कसा हुआ --गाङ्गाङ्गद्वैतं दुर्गि--रघु० ११६०,--गाङ्गालिङ्गन --अमर ३६, घुट कर छाती से लगाया--घोर० ६ 4 सघन, साद्र 5 गहरा, दुस्तर 6 अलघ्य, प्रवेक्ष्य, अत्यधिक, तीक्ष्ण--गाङ्गाकण्ठालितलुलितरङ्गकंस्ताम्य-तीति--मा० १११५, शेष० ८३, प्राभगाङ्गप्रकम्पाम् --भृगार० १२, अमर ७२, गार्हस्पतेन तपत्--शेष० १०२,--इम् (अभ्य०) ध्यानपूर्वक, घोर से, अव्यधिकता के साथ, भरपूर, प्रवेक्ष्यता से, बलपूर्वक । सम०--मृष्टि (वि०) बन्द मुट्ठी वाला, लालच, कटूस, (ष्टि) तलवार ।

गाणपत (वि०) (स्त्री०--ती) [गणपति + ङञ्] 1 किसी दल के नेता से सब रत्नने वाला 2 गणेश से सब रत्नने वाला ।

गाणपत्य [गणपति + यक्] गणेश की पूजा करने वाला --रघु० 1 गणेश की पूजा 2 किसी दल का नेतृत्व, बोधगत, नेतृत्व ।

गाणिक्यम् [गणिकाना समूह -- यञ्] रक्षियों का समूह ।

गाणेश [गणेश + ङञ्] गणेश की पूजा करने वाला ।

गाण्डि (श्री) ष, --बन् [गाण्डिरस्वस्य सजाया--ब पूर्वपद-दीर्घो विकल्पेण] अर्जुन का बाण (यह बाण सोम ने वरुण को दिया, वरुण ने अग्नि को और अग्नि ने अर्जुन को, जबकि नाहव वन को जलाने में उसने अग्नि की सहायता की) गाण्डिव बसते हस्ताद्--मग० ११२९ 2 धनुष । सम०--दन्वन् (पृ०) अर्जुन का विशेषण--शेष० ५८ ।

गाण्डीविम् (पृ०) [गाण्डीव + इति] अर्जुन का विशेषण, तृतीय पांडव रावकुमार--शेषो० ५ ।

गातागतिक (वि०) (स्त्री०--की) [गतागत + ठक्] जाने आने के कारण उत्पन्न ।

गातानुगतिक (वि०) (स्त्री०--की) [गतानुगत + ठक्] अथानुकरण से जयवा पुराणी लकीर का फकीर बनने से उत्पन्न ।

गातु [गै + तुप्] 1 गीत 2 गाने वाला 3. बर्ष 4 कोयल 5 शीरा ।

गातु (पृ०) (स्त्री०--गौ) 1 वर्षवा 2 गर्भव ।

गात्रम् [गै + वन्, गातुरिद वा, ङञ्] 1 शरीर,--अपभ्रित-मपि गात्र ध्यातारवातलस्य--शा० २१४, तपति तनुमानि मदन--३१७ 2 शरीर का अंग या अवयव--गुरुपरिपाणि न ते गात्राभ्युपचारमर्हन्ति शा० ३१८, मनु० ३१२०९, ५११०९ 3 हाथी के अंगले पैर का ऊपर की भाग । सम०--अनुकेष्ठी

उबटन,—आवरणम् बाल,—उल्लासम् सुगन्धित पदाधी
के शरीर को शांत करना,—कण्ठ (वि०) शरीर का
कुक्ष या दुर्बल बनाने वाला—कालीनी लीलिया,—यष्टि
बुझा बतला शरीर—रघु० ६।८१,—पद्म रणटे,
शक,—कला सुकला-पतला और सुकुमार शरीर,
इकहुरा बरन,—सुकोचिन् (पू०) शकू चहा. साही
(उल्लासे या उल्लास लगाने समय इह अपने शरीर को
सिकोड़ लेता है—इकोलिप यह नाम पडा)—सफ़ल
छोटा पत्ती, योताओर ।

वाच [वी + चत्] गीत, भजन ।

वाचक,—विश्व [वी + चकत्, वाच + ठन्] 1 सयोगवेत्ता,
सहीबा 2 पुराणी अथवा धार्मिक काम्यो का लय के
साथ वाचन करने वाला ।

वाचा [वाच + टाप्] 1 छन्द 2 धार्मिक श्लोक या छन्द
को बेदो से संबन्ध न रखना हो 3 श्लोक, गीत 4 एक
प्राकृत बीजी । सम० कार प्राकृत वाच्यकार ।

वाचिक [वाचा + कन् + टाप्, इत्थम्] गीत, श्लोक
—वाङ् १।१४५ ।

वाचु (च्वा० आ०—वाचने, गातिज) 1 नया होना
उठरना, रहना 2 कृत्र करना, गांठा लगाना, दुबकी
लगाना—गाथिवाले नमो भूय मट्टि० २२।०
८।१ 3 बोझना, लताश करना, उप-नाछ करना
4 सकलित करना, गुथना या धारो में पिराना ।

वाच (वि०) [वाच + चत्] तरणोय, ज बहुत उदग
न हो, उपचा—मगिन कुन्नी गाथा एवश्चदानवर्क-
मान्—रघु० ४।२४, तु० अराध, चम् 1 उधलो या
छिछली जगह, घाट 2 स्थान, अराह 3 जालना,
अतिपुष्पा 4 पेंदी ।

वाचि,—वाचिन् (पू०) [वाच् + इत्, वाच + इति] विश्वा-
मिष के पिता का नाम (यह इन्द्र का अवनार तथा
राजा कीधाम्ब के पुत्र के रूप में उत्पन्न माना जाता
है) — ज,—जन्म—पुत्र विश्वामिष का विसाषण,
—सवरत्—पुत्रम् कायन्कुञ्ज (वर्तमान नरोज) का
विशेषण ।

वाचक [वाचि + ठक्] विश्वामिष की उपाधि ।

वाचम् [वी + चत्] गाना, भजन, गीत ।

वाचमी [वन्वी + अच् + होच्] बैसराही ।

वाचिनी [वा + चि + गिनि, वृत्त०] 1 गाना का विशेषण
2 काशी की एक राजकुमारी, स्वकम् की पत्नी
तथा अकूर की माता । सम०—सुत 1 भीष्म
2 कानिकेय तथा 3 अकूर का विशेषण ।

वाच्य (वि०) (स्त्री०—नी) [वच्यते + क्तम् अच्] गद्यों
से संबन्ध रखनेवाला,—नी 1 गायक, दिग्ध तवेवा
2 भाट प्रकार के विवाहो में से एक—गायत्र समया-
निष—वाङ् १।१६१, (व्याख्या के लिए दे०

‘गद्यविवाह) 3 सामवेद का उपवेद जो मगीत से
सम्बन्ध रखता है 4 घोषा—अच् गद्यों की कला अर्थात्
गाना-बजाना,—कायि बेलो चादरतम् गान्यर्बे श्वात्
गान्य—मूळ० ३ । सम०—चित्त (वि०) जिसमें
मन पर गद्यों से अधिकार कर लिया है,—बाला
मगीतसंबन्ध, गायनालय ।

वाच्य (वि०) क [वाच्यं + क्त, गान्य + ठक्] गर्वया ।

वाच्यार [वाच्य + अच्—गाव्य + च्] अच्] भारतीय सर-
गम के मात प्रधान स्वरों में तीसरा (यवीत के संकेतो
में बहूधा ‘य’ से प्रकट किया जाता है) 2 सिद्ध
3 भारत और पिंगा के बीच का देश, वर्तमान कथा
4 उस देश का नागरिक या शासक ।

वाच्यारि [वाच्य + च् + इत्] शकुनि का विशेषण, दुर्वोधन
का मामा ।

वाच्यारो [वाच्यारोप्यत्वम्—इत्] वाच्यार के राजा मुचल
की पुत्री तथा धनराष्ट्र की पत्नी (वाच्यारो के १००
पुत्र—एक दुर्वोधन तथा ९९ उसके भाई—हृत्)
उसके पति धनराष्ट्र अथ वं इगान्त् वह सर्व्व अपनी
अधिको पर पट्टी बांधे रखनी थी (सम्बन्ध अपने आप
का अपने पति की स्थिति में अपने के लिए), जब
कीय मरव सब मर गये ना गानारो और धनराष्ट्र
अपने भ्रात्रोसे पुर्विष्ठार क माघ रहे ।

वाच्यारोय [वाच्यारो अर्थव्यम्—इत्] दुर्वोधन का विशेषण ।

वाच्यिक [वाच्य + ठक्] 1 सुगन्धित इव्या (इतर तेल कुलेक
आदि) का विक्रो, दूधो 2 लिपिकार, करणिक,
—कम् सुगन्धित इव्य (इतर तेल कुलेक आदि)
—ग्याना वाच्यिक पण्य विमान्ये काञ्चनदिकी—पच०
१।१२ ।

वाचिन् (वि०) [वच् + गिनि] (केवल ममान के अर्थ में
प्रयुक्त) 1 जाने वाला, धूमने वाला, भेग करने वाला
—वैदिश्यामी—वाचिदि० ५, मृगन्द्यामी—रघु०
२।३०, गेग की जाल चलने वाला—कुञ्ज—पच०
२।५, अलम अमर ५१ 2 सबारी करने वाला
—द्विन्द—रघु० ४।४ 3 जाने वाला, पहुँचने उला,
लागू करने वाला, सबन्ध रखने वाला—वन् सबीगामी
दाय—म० ४, हिमीगामी न हि उब्ध एष न
—रघु० ३।६० 4 नेत्रुष करने वाला, पहुँचने वाला,
पटने वाला—चित्रकृटगामो मार्ग, कन्गामि क्रिया-
कल्प 5 मयुक्त मद्यमर्तगामिनी—मालवि० ५
6 दनेवाला, भोगने वाला—म० ६, वाङ् २।१४५ ।
वाच्योप्य [वाच्यो + पयत्] 1 गहराई, घाह (जल या
प्विनि आदि की) 2 गहराई, अगाधता (अर्थ या
परिण आदि की)—मयुह इव वाच्योप्य—गमा०, सि०
१।५५, रघु० ३।३१ ।

वाच [वी + चत्] गाना, भजन, गीत—वाङ् ३।१२१ ।

गायक [गै + श्वल्] गर्वया, सतीसवेता—न नटा न विटा न गायका—अर्तु० ३।२७ ।

गायत्र [गायत्री + अण्] गीत, सूक्त ।

गायत्री [गायन्त शयते—गायत् + वा + क + ङीप्] 1 २४ मात्राओं का एक वैदिक छंद—गायत्री छन्दसामहम्—भग० १०।३५ 2 सध्या (प्रत और सायम्) के समय प्रत्येक ब्राह्मण के द्वारा बोला जाने वाला गुरु-मन्त्र, इसके जप से बहुत से पापों का प्रायश्चित्त होता है, यह मन्त्र यह है—तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात्—ऋक्० ३।६२।१०, ब्रह्म गायत्री छंद में रचित नवा सप्तर उचरित सूक्त ।

गायत्रिन् (वि०) (स्त्री०-भौ) [गायत्र + इति] वेद सूक्तों का गायक, विशेष कर सामवेद के मंत्रों का गायन करने वाला ।

गायत्र (स्त्री०-भौ) [गै + श्वल्] गर्वया—तथैव तत्प्रीहय-गायत्रीकृता—ने० १।१०३, भर्ग० ३।२७, अने० पा०, —तम् 1 गाना, गीत 2 गायन विद्या से अपनी आज्ञा-विद्या चलाते वाला ।

गायत्र (वि०) (स्त्री०-भौ) [गुरुहृदयेत्—अण्] 1 गुरु की शक्ति का बना हुआ 2 गुरु से प्राप्त या गुरु के सन्ध रखने वाला—इ,—इम् 1 पत्रा रघु० १२. ५२ 2 सोपों के विप को उतारने का मन्त्र—सगृहीत-गारुते—का० ५।१ 3 गुरु द्वारा अधिष्ठित अस्त्र 4 शाना ।

गायत्रिक [गारुड + ठक्] जादू मन्त्र करने वाला, ऐन्द्र-जालिक, जहर्मोगा या विषनाशक औषधियों का विक्रेता ।

गायत्रित (वि०) (स्त्री०-भौ) [गुरुत्मान् अस्त्यस्य—अण्] 1 गुरु को आकृति का बना हुआ 2 (अस्त्र की भांति)—गुम्हाधिष्ठित रघु० १।७७, —तम् पत्रा ।

गार्ध्र (वि०) (स्त्री०-भौ) [गर्ध्रस्येदम्—अण्] गर्ध्र से प्राप्त या गर्ध्र से संबद्ध, गर्ध्रसम्बन्धी ।

गार्ध्रम् [गर्ध्र + ष्यञ्] लाकड़, —ति० ३।७३ ।

गार्ध्र (वि०) (स्त्री०-भौ) [गृध्रस्यायम्—अण्] गिद्ध से उलाह, —ध्र 1 लाकड़ (प्राय 'गार्ध्र' का अर्थ) 2 बाण । सम०—पक्ष, —वास्तु (पु०) गिद्ध के पंखों से युक्त बाण ।

गार्ध्र (वि०) (स्त्री०-भौ) [गर्ध्र सायु—अण् ठक् वा] गार्ध्रिक (स्त्री०-भौ) (वि०) 1 गर्ध्रायसम्बन्धी, भ्रूणवि-पयक 2 गर्भावेद्यासम्बन्धी—मन्० २।२७ ।

गार्ध्रिकम्—भयम् [गार्ध्रिणीना समूह मिस्रां अण्] गर्ध्रवती स्त्रियों का समूह ।

गार्ध्रितम् [गृध्रपतेरिदम्—अण्] गृध्रपति का पद व प्रतिष्ठा ।

गार्ध्रित्यम् [गृध्रपतिना नित्य सयुक्त, सत्वायं ष्य] 1 गृध्रपति

के द्वारा स्थायी रूप से रखी जाने वाली तीन यज्ञ-नियों में से एक, यह जिन पिता से प्राप्त की जाती है तथा सत्यान की सीप से जाती है, इसी से यज्ञ में अन्वयाधान किया जाता है, तु० मनु० २।२३१ 2 वह स्थान जहाँ यह अग्नि रखी जाती है,—स्वम् एक परिवार का प्रभाव, गृहपति का पद और प्रतिष्ठा ।

गार्ध्रित्ये (वि०) (स्त्री०-भौ) [गृध्रित्येदम्—अण्] गृह-पति के लिए योग्य या समुचित, —व पांच यज्ञ जिनका अनुष्ठान गृहपति को नित्य करना होता है ।

गार्ध्रित्यम् [गृध्रित्य + ष्यञ्] 1 गृहस्थ पुरुष के जीवन की अवस्था या कर्म, धरल काम काज, गृहस्थी 2 गृहपति के द्वारा नित्य अनुष्ठेय पंचयज्ञ ।

गालनम् [गल् + णिच् + ल्यट्] 1 (तरल पदार्थ का) छन कर रिसना 2 प्रबल ताप से गल जाना, गलना, पिघलना ।

गालत्र [गल् + घञ्, त भाति—वा + क] 1 लोभ्र बूझ 2 एक प्रकार का आवनुस 3 एक ऋषि, विश्वामित्र का गिष्य (हनुवता पुराण में उसे विश्वामित्र का पुत्र बतलाया गया है) ।

गालि [गल् + दत्] अपगात्र, दुर्बल, गाली—ददतु ददतु गालीगालिमन्तो मन्वो वयमपि तदभावाद्यालितानि—ऽमर्षा—अने० ३।१३३ ।

गालित (वि०) [गल् + णिच् + क्त] 1 छाना हुआ 2 (अर्क की भांति) खींचा हुआ 3 पिघलाया हुआ, ताप से लगाया हुआ ।

गालोद्घम् [गालोद्घ + अण्] कमल का बीज ।

गालोत्थि [गल् + णिच् + इञ्] मजबूत, का विशेषण, गव-स्त्यण का पुत्र ।

गाल् (ध्वा० धा०) गाहते, गाड या गाहित) दुबकी लगाना, मोता लगाना, स्नान करना, (पानी जैसे पदार्थ में) डूबाना—गाहना महिला निषानसलिल भूङ्गुंमुहस्ताहितम्—शं० २।६, गाहितोत्थि पुण्यस्य गङ्गास्तीतिभिर्हृताम्—भट्टि० २२।११, १।४।६७ (आल० भी), मनस्तु मे सशयमेव गाहते—कु० ५।४६, सवायों में डूबा हुआ या समाया 2 गह्राई में घुसना, बैठना, घुसना-फिरना—कदाचित्कान् जगाहे—का० ५८, ऊन न सत्येष्वधिको ब्रह्मणे तस्मिन्मन् गोपतरि गाह-माने रघु० २।१४, मेघ० ४८, हि० १।१७१, कि० १।३।२४ 3 आलोचित करना, झुञ्च करना, हिकोने देना, झिलोना 4 सोन होना (अधि० के साथ) 5 अपने आपको छिपाना 6 नष्ट करना, अन्—('अ' को प्राय मुल्य करके) 1 दुबकी लगाना, स्नान करना, मोता लगाना—समीपवृत्तीं तमसा बगाह्य—रघु० १।४।६, स्वनेज्जगाहतेऽप्यर्थे जलम्—वाज० १।२७२ 2 घुसना, बैठना, घूरी तरह ब्याप्त होना—घुर्वापरी

तोयनिची बगाह्य स्थित पृथिव्या इव मानदह—हु०
१११, ७१४०, इव—, बुधना, प्रविष्ट होता, वि—,
1 बोता लगाना, बुधकी लगाना, स्नान करना—
(बीषिका) स ब्याहृत विनाममन्थ—रघु० १९।९
2 प्रविष्ट होता, पैठना, व्याप्त होता (आल० भी)
—विषकीर्षि विनाहृतये नय हृत्तोर्षि-पयसाविवासाय
—कि० २।३, रघु० १३।१ 3 आन्वोलित करना,
विभुष्य करना—विनाहृत्याना सरपू व नीमि—रघु०
१४।३०, समु—, बुधना, अन्दर जाना, पैठना—सम-
याहित्वा सम्भरम्—मट्टि० १५।६९।

वाह् [वाह् + वञ्] 1 डुकी लगाना, पोता लगाना,
स्नान करना 2 गहराई, जाम्पन्तर प्रदेश।

वाह्यम् [वाह् + ह्यट्] डुकी लगाना, पोता लगाना,
स्नान करना—आवि।

वाहित् (वि०) [वाह् + क्त] 1 स्नान किया हुआ,
पोता लगाना 2 पैठा हुआ, बुसा हुआ—दे० वाह्।

विभुक् [= गेनुक पृषो०] 1 गैर 2 एक वृत्त का नाम
दे० गेनुक।

विर् (स्त्री०) [वृ + क्तिष्] (कृत्०, ए० व०—गी,
करण० द्वि० व०—गीर्वाय् आदि) 1 नाथन, सम्ब,
भावा—वचस्वभाविते तस्मिन् ससर्ग निरमात्मन्—हु०
२।५३, भक्तनोवा सूनूतद्वैव विरा कृतमालिष्यन्—गो०
१, प्रकृतिसारा ललु मायुषां गिर—कि० १।२५,
शि० २।१५ वाङ् ० १।७१ 2 सरस्वती का आवाहन,
स्तुति, गीत 3 विद्या और बाणी की देवी सरस्वती।
सम० बेबी (गोर्दनी) बाणी की देवी सरस्वती,
—वसि (गी पति, गोवसि, गोपति) 1 देव-
तामो के नृप बृहस्पति 2 विद्वान् पुरुष, —रघु
(गौरव) बृहस्पति, —आ (आ) का (बीषाँष) देव,
देवता—परिमलो गीर्वाणवेतोहर—आवि० १।६३, ८४।

गिरा [गिर + क्तिष् + टाप्] बाणी, बोलना, भाषा,
भाषान।

गिरि (वि०) [गृ + इ क्तिष्] अद्वैय, आदरणीय, पूज-
नीय, —रि 1 पहाड़, पर्वत, उत्पन्न—पस्याथ
क्षत्रमे मूड गिरयो न पतन्ति किन्—भृगुार०—१९,
ननु प्रजातेर्षि निष्कम्पा गिरय—गो० ६ 2 विशाल
पट्टान 3 आँक का रोव 4 सन्ध्यासियो की सम्मान-
सूचक उपाधि—उदा० आनन्दगिरि 5 (गण० में)
भाठ की सख्या 6 गैद (जिससे बच्चे खेलते हैं),
—रि (स्त्री०) 1 निलना 2 बूहा, मूसा (इस
वर्ष में गिरी जी लिखा जाता है)। सम०—इन्द्र
1 उँचा पहाड़ 2 शिव का विशेषण 3 हिमालय
पहाड़, —ईश 1 हिमालय पर्वत का विशेषण 2 शिव
का विशेषण—सुता गिरीरूपप्रतिक्कलनासाम्—हु०
५।३, —कच्छप पहाड़ी कच्छुका,—कच्छप इन्द्र का

वज्र,—कच्छप,—कच्छ कच्छ वृक्ष की जाति—कच्छर
मुका कच्छरा,—कक्षिका पृथ्वी,—काच एक आँक से
जन्मा या एक आँक वाला व्यक्तित्व,—कामन्म् पहाड़ी
निकुञ्ज,—कृत्स्न पहाड़ की चोटी,—वरा एक नदी का
नाम,—वृष गैद,—गृहा पहाड़ की मुका,—धर (वि०)
पहाड़ पर धूमने वाला—गिरिधर इव नाम प्राणनार
पहाड़ पर उत्पन्न (अम्) 1 अवरक 2 गेरू 3 गुग्गुलु
4 चिलाजोत 5 सोहा (—जा) 1 (हिमालय की
पुत्री) पार्वती 2 पहाड़ी केजा 3 मल्लिका सुता
4 वना का विशेषण,—तनय,—नवय—सुत
1 कालिकेय का विशेषण 2 गणेश का विशेषण, —वसि
शिव का विशेषण, —मलम् अवरक,—काचम् पर्वतमाला,
—कच्छ इन्द्र का वज्र,—गुग्गुम् पहाड़ी किला, पहाड़
पर विद्यमान दुर्ग—गुग्गुं गिरिदुर्ग या समाश्रित्य
बेतोपुरम्—मनु० ७।७०, ७१,—धारम् पहाड़ी मार्ग,
—बाहु गेरू—कच्छम् इन्द्र का वज्र,—नगरम्
दक्षिणापथ में विद्यमान एक जिला,—नवी (नवी)
पहाड़ी नदी, छोटा बच्चा या नदी,—नवड (नव)
(वि०) पहाड़ी से घिरा हुआ, —नविली 1 पार्वती
2 गगानदी 3 दरिया (पहाड़ से निकलकर बहने
वाला)—कलन्दिगिरिगिरीनदीतटमुद्रुमालिङ्गिनी—मामि०
५।३,—चितम्ब (चितम्ब) पहाड़ का इतान,—वीष्
एक फलदार वृक्ष, फालसा,—गुग्गुम्कम् शिलाजीत,
—गृह पहाड़ की चोटी,—प्रयात पहाड़ का इतान,
—प्रस्थ पहाड़ की समतल भूमि,—प्रिया सुरा, गाय,
—श्वि (प०) इन्द्र का विशेषण—भू (वि०) पहाड़
पर उत्पन्न (भू—स्त्री) 1 गंगा का विशेषण
2 पार्वती का विशेषण,—मल्लिका कुटज वृक्ष,—आम
हाथी एक विशालकाय हाथी,—कृष्,—गृष्मचम् गेरू
—राम (प०) 1 उँचा पहाड़ 2 हिमालय का
विशेषण,—राज हिमालय पहाड़,—ब्रह्मम् मगध में
विद्यमान (राजगृह) एक नगर का नाम,—आलः एक
प्रकार का पत्थी,—भृङ्गः गणेश का विशेषण,—(गम्)
पहाड़ की चोटी,—वृष् (सम्) (प०) शिव का विशेष-
ण,—सामु (नप०) पठार, अधिव्यका,—सार 1 सोहा
2 टीज 3 मलय पहाड़ का विशेषण—सुत मैतक
पहाड़,—सुता पार्वती का विशेषण,—सुता पहाड़ी नदी।

गिरिक, गिरिवक्, गिरिवक् [गिरि + क् + क, गिरि
+ या + क + कन्, गिरि + या + क्तिष् + कन्] गैद।
गिरिका [गिरि + कन् + टाप्] छोटा बूहा।

गिरिक [गिरी कँशासपर्वते घोरे—गिरि + शी + इ वा]
शिव का विशेषण—प्रत्याहृतास्त्रो गिरिजप्रभावात्
—रघु० २।४१, गिरिजामुपचचार प्रत्यह सा सुकेही
—हु० १।६०, ३७।

विष् (गुहा० पर—गिकति, गिकित) निगलना (कस्तुरः
यह कोई स्वतंत्र धातु नहीं, बल्कि 'वृ' से सम्बद्ध है ।

विष् (वि०) [विष्+क] जो निगलता है, उदरस्थ कर
लेता है—उदा० तिर्निष्कृण्विषोऽस्ति तद्गिलोऽस्ति
राज्य—दे० तिर्निष्कृण्व, —क नीबू का वृक्ष । सम०
—विष्—बाहू मगरमच्छ, ब्रह्मिण्ड ।

विष्कम्, गिकि (स्त्री०) [विष्+स्पृट्, गिष्+इत्]
निगलना, का लेना ।

विष्कम्, गले के भीतर एक कड़ी गाँठ या रसोली ।

गिकि (रि) त (वि०) [गिष्+क] जामा हुआ,
नितला हुआ ।

गि (गे) क्म्, [गि+इष्+क्म् आद्यनुत्.] 1. वर्षाया
2 विशेषकर वह बाढ़गण जो सामवेद के मन्त्रों का
गायन करने में अग्र हो, वाग्गायक ।

गीत (गु० क० वृ०) [गि+त] 1. गायता हुआ, अलापा
हुआ (शा०)—गायं शाप्य गीतम्—स० १, चारणवन्-
गीत शब्द—ग० २।१४२ घोषणा किया हुआ,
बतलाया हुआ, कहा हुआ—गीतध्यायमर्षोऽङ्गसा—भा०
२, ('गी' के नीचे भी दे०)—सम् गाना, भजन,
—तवास्मि गीतरागेण हरिणा प्रसन्न हृत—स० १।५,
गीतमुन्नादकारि मृगाणाम्—का० ३२ । सम०
—अबन्धु गाने का साधन या उपकरण अर्थात् वीणा
बसरी आदि,—कम् गीत का गायकम्,—इ (वि०)
गायकता में प्रवीण,—श्रिय (वि०) गाने बजाने का
शौकीन (य) गिष् का विशेषण,—बोधिन् (पु०)
किष्कर,—आस्त्रम् संगीत विद्या ।

गीतकम् [गीत+कन्] स्तोत्र, भजन ।

गीता [गी+त+टाप्] (बहुधा गृह-विष्णु सवाय के रूप
में) मस्कृत पद्य में लिखे गये कुछ धार्मिकग्रन्थ जो
विशेष रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का
प्रतिपादन करते हैं—उदा० शिवगीता, रामगीता, भगवद्-
गीता आदि, परब्रह्म नाम केवल अन्विम शब्द (भगवद्-
गीता) तक ही सीमित प्रतीत होता है—गीता सुगीता
कर्तव्या किमप्ये सास्त्रमिन्दरे, या स्वयं पद्यनामस्य
मूलपदाङ्गिनि लता—भोधर श्यामी द्वारा उद्धृत ।

गीति (स्त्री०) [गि+कितन्] 1. गीत, गाना—अहो राग-
परिवाहिनो गीति स० ५, भूतान्तरोमीतिरपि सन्नेऽ
स्मिन् हर प्रसङ्गान्तरो बभूव—कु० ३।४० 2 एक
छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट ।

गीतिकी [गीति+कन्+टाप्] 1. छोटा गीत 2 गाना ।

गीतिन् (वि०) (स्त्री०—भौ) [गीत+इनि] जो गायकर
सम्बर पाठ करता है—गीती वीथी शिरःकम्पी तथा
मिञ्जितपाठक—शिक्षा ३१ ।

गीष् (वि०) [गृ+क] 1 निगलता हुआ, लाया हुआ
2 वर्षान किया गया, स्तुति किया गया (दे० गृ) ।

गीष् (स्त्री०) [गृ+कितन्] 1 प्रशंसा 2 यज्ञ
3 का लेना, निगल जाना ।

गृ (गुहा० पर०)—गृवति, गृन् विष्ठा उत्सर्ग करना,
मनोत्सर्ग करना, वाक्याना करना ।

गृन्वन्, —गृ [गृ+विष्+क्म्] रोम ततो गृवति
रक्षति—गृन्+गृव्+क (ङु) इत्य लकार । एक
प्रकार का मुपाहित गोद, राल, गुण्यम् ।

गृच्छ [गृ+विष्+क्म्] त ध्याति—गृन्+शो+क]
1. बडल, कुच्छा 2 फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, (गुहों
का) गुच्छ—अश्वोर्निक्षिपदञ्जन श्रवणोस्तापिच्छगुच्छा-
बलिम्—गीत० ११, मनु० १।४८ शि० ६।५०
3 मधुरपंच 4 मोतियों का हार 5 बनीत लडियों
का गुच्छा हार (कुच्छ के मतानुसार ७० लडियों)
सम०—अर्धं शोभति लडियों का मोतियों का हार
(र्ध, र्धम्) आधा गुच्छा,—कश्चित एक प्रकार का
अनाज,—पद्मः तास का पत्र,—कल 1 अग्र की बेल
2 केले का वृक्ष ।

गृच्छक [गृच्छ+कन्] दे० 'गृच्छ' ।

गृञ् (म्बा० पर०)—गृञति, बहूधा म्बा० पर० गृञ्
—गृञ्जति, गृञ्जित या गृञ्जित) गृ गृ गच्छ करना,
गुजार करना, गूँजना, भगमगाना,—न घट्योऽजी न
जगृञ्ज म कलम्—मट्टि० २।१९, ६।१४३, १४।२,
उत्तर० २।२९—अपि इत्यद्वैतविन्द तस्यप्राग भवन्स तस्य
किमपि सिद्ध्यन्ते गृञ्जन्तु मृञ्जा—भावि० १।५ ।

गृञ् [गृञ्+क] 1 जिनगीना, गूँजना 2 कुमुदस्तवक,
फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता—तु० गृञ्च । सम०
—कृत मौरा ।

गृञ्चन् [गृञ्च+स्पृट्] मन्द-मन्द शब्द करना, भिन्-
भिनामा, गूँजना ।

गृञ्चा [गृञ्च+ञ्+टाप्] गुवा नाम की एक छोटी झाड़ी
जिसके लाल बर जैसे फल लगते हैं, घृषुषी—अन्तविष्-
मया श्लोता बहिवर्षेण मनोरमा, गुञ्जाफलसमाकारा
योषित केज निमित्ता—यज० १।१६९, कि जातु गुञ्जा-
फलमृषयाना सुषर्माकारेण वनेचराणाम्—त्रिकमाक०
१।२५ 2 इस झाड़ी का फल, गुवा जो १२२ सेन के
बराबर भजन की होती है, या कृत्रिम रूप से जिसका
तोल २१ सेन की माप का लगता जाता है 3 गुजार
मद-मद गूँजना का शब्द 4 बरका, ताथा,—मट्टि०
१।४२ 5 मधुशाला 6 चित्तन, भजन ।

गृञ्चका [गृञ्चा+कन्+टाप्, इत्यम्] घृषुषी ।

गृञ्चिस्तम् [गृञ्च+स्त] भनमनामा, मुनमुनामा—स्वच्छन्द
दलहरत्विन्द ते मरन् विदन्ते विदधन्तु गृञ्जित मिमिन्धा
—भावि० १।१५, न गृञ्जित तत्र जहार यमन
—मट्टि० २।१९ ।

गृषिका [गृ+टिक्=गृटि+कन्+टाप्] 1 गोली 2 गोल

कंकड, कोई छोटा गोला या पिंड—मोष्टमृदिका
विषयित—मूष० ५ 3 रेखाय के कीरे का कीचा
4 मोली—निर्मलित हारमुष्टिकाविषयत हिषाम्भ १५०
५।१०। सम०—अकम्पय एक प्रकार का सुग्ग।

गुठी [गुठि + गुण] दे० 'गुठिका'।
गुड [गुठ + क] 1 शीरा, राख, ईल के रस से तैयार किया
हुआ गुड—गुडधाना—सिद्धा०, सुधीरल—वात०
१।१०३, गुडद्वितीयया हरीतकी भक्षयेत्—सुपु०
2 मोली, पिण्ड 3 खेलने की गेद 4 गुडहर, घास
5 हाथी का चिरहृवक्षर, कजब। सम०—उदकम्
गुड का चरवत्—उदुका चरकर, ओषधन् गुड शल
कर उबाले हुए पीठ पाषाण, लोहम्, चाप, —
(नपु०) यथा ईल, धेनु (स्त्री०) दूध देने वाली
गाय, ओ प्रतीक रूप से गुड को बना कर बाह्यायी की
उपहार में दी जाय,—पिण्डम्, गुड के लड्डू,—कल
पीठ का पेड़,—शर्करा भाइ,—पुङ्गुम्—गुड-दावणी
कलसा,—हरीतकी गुड में रक्मी हुई हरे, मुरम्बे
की हरे।

गुडक [गुठ + कन्] 1 पिण्ड, भोली 2 घास 3 गुड से
तैयार की हुई औषधि।
गुडकम् [गुठ + का + क] गुड से तैयार की हुई शराब।
गुडा [गुठ + टाए] 1 कपल का पीछा 2 बटो, मोली।
गुडावति [गुडवति सकीचयति देहेन्द्रियादीनि इति गुड तमा-
कति प्रकाशयति गुठ + आ + क + टाए] 1 लडा
2 निडा। सम०—ईल 1 अर्जुन का विशेषण,
—मय देहे गुडाकेषा यथात्वाद् इष्टम्हर्षि—भग०
१।१०, (गीता में और कई स्थानों पर) 2 शिव का
विशेषण।

गुडगुडावन्तम् [गुडगुड इत्येवमन्त यस्य—ब० सं०] सासी
आदि के कारण कष्ठ से गुडगुड की आवाज निकलना।
गुडेर [गुठ + एरक] 1 पिण्ड, भोली 2 कीर, दुकडा।
गुण (बुरा० उभ०)—गुणयति-ने, गुणित 1 गुणा करना
2 उपदेश देना 3 निर्मापित करना।

गुण [गुण + अण] 1 धर्म, स्वभाव (बुरा या अच्छा)
दुर्गुण, गुण 2 (क) अच्छी विशेषता, विशिष्टता
उत्कर्ष, धण्डता—अन्तमे ते गुणा—वा० १, १५०
१।९, २२, साधुत्वे तस्य को गुण—यच० ५।१०८,
(क) गौरव 3 उपदेश, लाभ, भलाई (करण० के
साथ) गुणा० १।१५ 4 प्रभाव, परिणाम फल, धुप
परिणाम 5 धारा, डोरी, रस्ती, डोर—मेखलागुणै
—कु० ५।८, ५।१०, यत् परेषा गुणह्यतीति—भावि०
१।९ (यहाँ 'गुण' का अर्थ विशिष्टता भी है)
6 धनुष की डोरी—गुणहृये धनुषो नियोजिता—कु०
५।१५, २९, कलकीर्णतुडिदगुणस्युपगम्—रघु० ९।५४
7 बाद्ययंत्र के तार जि० ५।५७ 8 स्नायु 9 धुवी,

विशेषण धर्म मनु० १।२२ 10 विशेषता, सब
पदार्थों का धर्म या सत्ता, वैशेषिक के सत्त पदार्थों
में से एक (गुणों की संख्या २४ है) 11 बहुति का
अवयव या उदाहरण, समस्त रचित वस्तुओं से सबड
तीन गुणों में से कोई एक (यह है—सत्व, रजस् और
तमस्)—गुणव्यविभागाय—कु० २।४, भव० १।५५,
१५० ३।२७ 12 बन्नी, सूत का धारा 13 इन्द्रियजन्य
विषय (यह पाँच हैं रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और
शब्द) 14 आवृत्ति, गुणा (सख्याओं के बाद समास के
अन्त में अगकर प्राप्त 'तह' या 'गुणा वा वार' को
प्रकट करता है)—आहारो द्विगुण शीघ्राया वृद्धिस्ताया
चतुर्गुणा, षडगुणो व्यवसायव्यव कामव्यवहृत्तगुण स्मृत
—वाण० ७८, इतो प्रका विगुणम्,—शतगुणी भवति
—मौनुना हो आला है 15 गीण मन्त्र, आश्रित अश
(विप० मुख्य) 16 आश्रित, बहोपाय, बहुला
17 विशेषण, शक्य में अन्याश्रित शब्द 18 इ, उ, ऋ
तथा ऌ के स्थान में ए, ओ, अर और अल, अथवा
अ, ए, ओ, अर और अल स्वर का आदेश
19 (अल० धा० में) रस का अन्तर्निहितगुण, मममट के
अनुसार—ये रसस्वाङ्गुनो वर्मा श्रीपाय इवात्मन,
उत्कर्षहेतवन्ते स्वरचलस्मिन्तयो गुणा—काव्य० ८,
(अल० गा० के प्रणता वामन, पहिल जलप्राथ, षष्ठी
तया अन्य विद्वान् गुणों को शब्द और अर्थ दोनों का
धर्म समझते हैं तथा प्रत्येक के दस दस प्रकार बताते
हैं। परन्तु मममट केवल तीन गुण मानता है और
दूसरों के विचारों को समालोचना करने के परचात्
कहता है—मायार्थोज प्रसादात्मकस्यपले न पुनर्देश
—काव्य० ८) 20 (भ्या० और भ० में) शब्द समूह
का अर्थ, धर्म या गुण माना जाता है, उदा० वैवाकरण
शब्दार्थ के चार प्रकार मानते हैं—जाति, गुण, क्रिया
और इन्द्र, इन अर्थों को समझाने के लिए क्रमशः प्रत्येक
का यो, सुकल, चल और स्थिर—उदाहरण देते हैं
21 (राजनीतिशास्त्र में) कार्य करने का समुचित
प्रक्रम, सही रीति (विदेशराजनीति विषयक छ उतीतया
गयाओं के द्वारा व्यवहारमें बतलाई गई है—1 सवि,
शान्ति, सुलह 2 विग्रह, युद्ध 3 यान, युद्ध—उदाहरण देते हैं
4 स्थान या आमन अर्थात् पहाच 5 सहाय अर्थात्
शरणस्थल इत्यादि 6 ईश या ईश्वीभाव मर्धना विग्रहों
यानमासन ईश्वरान्तर अमर०, दे० गा० १।३४६
मनु० ७।१६०, जि० २।२६, रघु० ८।२१ 22 तीन
गुणा से व्युत्पन्न तीन की संख्या 23 (ज्या० में) मयर्क
जोडा 24 ज्ञानेन्द्रिय 25 विषयके रत्न का विशिष्ट
भोजन—यम० ३।२२४, २३३ 26 रसोद्भवा
27 भीम का विशेषण 28 परिणाम, उत्तरमं। सम०
अतीत (वि०) सब प्रकार के गुणों से मुक्त, गुणो

से परे.—**अभिधानकम्** बहुसंख्य का बहु प्रयोग जहाँ वही बोधी जाती है। **अनुपमः** दूसरो के समुच्चो की सराहना करना—**कि०** १११, **अनुपमैव** अच्छे मुचो की अनुकम्पता या उपमुक्तता।—**अभिहित** (वि०) अच्छे मुचो से युक्त, श्रेष्ठ, मुख्यबान, अच्छा, सर्वोत्तम, अथवा मुचो का तिरस्कार, मुचो का अपकर्षण, गुणनिन्दा, **आकर** 'मुचो की आत्' सर्वगुणसंपन्न, **आह्वय** (वि०) मुचो से सम्बन्ध, **आत्मन्** (वि०) मुचो—**आधार** मुचो का धार, सत्त्वुचो, मुख्यबान् व्यक्तित्, **आध्व** (वि०) मुचो श्रेष्ठ, **अकर्ण** गुण की श्रेष्ठता, उत्तम मुचो का स्वाभाव, **अकीर्तनम्** मुचो का कीर्तन, स्तुति, प्रशस्ति, **अकृष्ट** (वि०) मुचो में श्रेष्ठ, **अर्थात्** (नपु०) 1 अभावकथक या गौण कार्य 2 (आ० में) गौण या कार्य का व्यवधानसहित (अर्थात् अप्रत्यक्ष) कर्म, उदा०—नेताअपत्यं भुञ्जन् भुञ्जस्य वा, में भुञ्जन् भुञ्जस्य हैं, **आर** (वि०) अच्छे मुचो का उत्पादक, साधवायक, हितकर (र) 1 वह रत्नोद्घमा की अनिश्चित विशिष्ट भोजन तैयार करता है 2 भोजन का विशेषण, **आत्मन्** मुचो का मान करना, स्तुति, प्रशंसा, **आत्मन्** (वि०) 1 अच्छे मुचो का इच्छुक 2 अच्छे मुचो वाला, **आह्व** (वि०) मुचो की सराहना करने वाला, मुचो से सम्मान, मुचो का प्रशंसक—**गन्** वक्तु-विद्यमानि लुहा मुचमुखा बन्धे विपक्षित—**कि०** २१५, **आह्व**, **आह्वक**, **आह्वन्** (वि०) दूसरो के) मुचो का प्रशंसक—**रत्न** ११६, **आमि** ११६, **आम्य** मुचो का समूह—**गुणतरंगुणधामाम्भोजस्तुटोऽम्बलचन्द्रिका**—**मत्** ३१११६, **गणपति** गुणधामन्—**गीत** २, **आमि** ११२३, **अ** (वि०) मुचो की सराहना जानने वाला, प्रशंसक, **अवर्षति** कर्मकाण्डे मगमगुणग्रामि—**मुग** २, **गुणपुत्रश्रेय** गुणा भवन्ति—**हि०** प्र० ४७, **अवन्**, **वित्तवन्** प्रकृति के तीन शटक धर्म अर्थात् सत्त्व, रजस् और तमम्,—**अव** कुछ मुचो पर आधिपत्य करने में आनुभविक गुण या धर्म, **विधि** प्रयुक्त का अष्टार, **अवर्ष** मुचो की श्रेष्ठता, बड़ा गुण, **अवर्षन्** आन्तरिक गुण का साकेतिक चिह्न, **अवर्ष**, **अवर्षी**, **अवर्षी** तदु, **अवर्षन्**, **आवर्ष** विशेषण, गुण बतकाने वाला शब्द, सजा शब्द में विशेषण की आत्ति प्रयुक्त हो जैसे 'श्रेष्ठोऽवर्ष' में 'श्रेष्ठ' शब्द, विशेष्यता दूसरो के मुचो की सराहना करने में विवेकवृद्धि, **अवर्ष**, **अवर्षक** एक मनुष्य या तम जिससे लोका या बहान् भाषा जाय, **वृत्ति** गौण वा अप्रधान सत्वध (विप० मुख्यवृत्ति), **वैशेष्यम्** गुण की प्रथमता, **अवर्ष** विशेषण, **अवर्षानम्** तीन अनिर्णय मुचो की सम्यक्ता, साध्यदर्शन (योगदर्शन सहित), **अवर्ष** 1 मुचो का साहचर्य 2 सांसारिक विषयवाचनानाम्रो में

आसक्ति, **अवर्ष** (स्त्री०) मुचो की श्रेष्ठता या सप्रति, बड़ा गुण, पूर्वता, **अवर्ष**, 1 मुचो का समूह, एक बहुत मुचो युक्त 2 श्रुता का विशेषण ।
गुणक [गुण् + क्त] 1 हिसाब करने वाला, या हिसाब लगाने वाला 2 (गणित में) बहु अक्ष जिससे गुणा किया जाय ।
गुणनम् [गुण् + ल्यट्] 1 गुणा करना 2 सम्यक्ता 3 मुचो का वर्णन करना, मुचो की बतलाना या गिनना—इह रत्नमपने कृतहरिगुणने मधुरिपुपदमेकमे—**गीत** ७, **अ**—**मी** पुस्तको को परोसा करना, अध्ययन करना, विभिन्न पाठो के मूल्य को निर्धारण करने के लिए पाठ्यलिपियो का मिलान करना ।
गुणनिका [गुण् + गुण् + कन्, इत्यम्] 1. अध्ययन, बार-बार पढ़ना, आभूति—विशेषविद्युय सात्व मत्तबोदुयाहते पर, हेतु परिचयस्वर्थे अस्तुगुणनिकैव सा—**शिशु** २१७५, (आश्रितिकम्—**मलिक**) 2 ताब, नाचने का व्यवसाय या नृत्यकला 3 नाटक की प्रस्तावना 4 माला, हार—**दरिद्राणां चित्तामिगुणनिका**,—**आम** ३ 5 **गुण्य**, अकण्ठित में विशेष चिह्न को शून्यता को प्रकट करता है ।
गुणनीय (वि०) [गुण् + जीरीत्] 1. वह राशि जिसे गुणा किया जाय 2 जिसको गिना जाय 3. जिसे उप-देण दिया जाय, **अ** अध्ययन, अध्याप ।
गुणवत् (वि०) [गुण् + मत्तुत्] मुचो से युक्त, मुची, श्रेष्ठ ।
गुणिका [गुण् + इन् + कन् + टाप्] रसोषी, गिस्टी, मुचन ।
गुणित (मू० क० क०) [गुण् + क्त] 1 गुणा किया हुआ 2 एक स्थान पर डेर लगाया हुआ, संगृहीत 3 गिना हुआ ।
गुणित (वि०) [गुण् + इति] 1 मुचो से युक्त, मुचबाला, गुणी—**गुणी** गुण वेति न वेति निर्गुण—**मनु** ८१७३, **मात्र** २१७८ 2 मला, गुण—**गुणित्यहनि**—**दश** ६१ 3 किसी के मुचो से परिचित 4 मुचो को धारण करने वाला (कर्म) 5 (अप्रधान) अज्ञां वाला, मुख्य (विप० गुण)—**गुणगुणितोरेव सवन्** ।
गुणीभूत (वि०) [अगुणी गुणीभूत—गुण् + भू + क्त] 1 मूल महत्त्वपूर्ण अर्थ से वञ्चित 2 गौण वा अप्रधान बनाया हुआ 3. विशेषणों से आवेष्टित । **सम**—**अवर्ष** (अल० सा० में) काव्य के तीन प्रेदो में से दूसरा—**मध्यम** जिसमें अधिक अर्थ की अपेक्षा व्ययना द्वारा अभिव्यक्त अर्थ अधिक वाक्यक नहीं होता है, सा० द० परिभाषा देता है, **अपर** तु गुणीभूतव्यङ्ग्य वाच्यानुपाने व्यङ्ग्ये, २६५, काव्य का यह भेद इसके आगे आठ भागो में विभक्त किया गया है—**१०** सा० द० २६६, काव्य ० ५ ।

गुच्छ (चूरा० उभ०—गुच्छयति-ते, गुच्छित्) 1 परिवृत्त करना, घेरना, लपेटना, परिवेष्टित करना 2 छिपाना; उक लेना, अन्न—, उकना, परदा डालना छिपाना, अन्न-गुच्छित करना ।

गुच्छन्म् [गुच्छ् + श्चुट्] 1 छिपाना, उकना, गोपन 2 चलना—यथा भस्वगुच्छन्म् ।

गुच्छित (वि०) [गुच्छ् + क्त] 1 घिग हुआ, उका हुआ 2 चूर्ण किया हुआ, पीसा हुआ, चरा किया हुआ ।

गुच्छ् (चूरा० उभ०—गुच्छयति, गुच्छित्) 1 उकना, छिपना पीसना, चरा करना ।

गुच्छक [गुच्छ् + क्श् + क्त] 1 घन, चूर्ण 2 तेल वा बर्तन 3 मन्द मद्य स्वर ।

गुच्छक [गुच्छ् + क्त] घाटा, भोजन, चूर्ण ।

गुच्छित (वि०) [गुच्छ् + क्त] 1 चूर्ण किया हुआ, पीसा हुआ 2 घूल से उका हुआ ।

गुच्छ् (वि०) [गुच्छ् + यत्] 1 गुणो न चकत् 2 पिने जाने के योग्य 3 वर्जने क्रिये जाने के योग्य, प्रशम्य 4 गुणा करने के योग्य, बहु राशि जिसे गुणा किया जाय ।

गुच्छ = गुच्छ ।

गुच्छक [गुच्छ् + क्त + क्त] 1 गुठ्टर, गुच्छ 2 गुलटना 3 चंकर 4 गुलक का अन्नभाग या अध्याय ।

गुच् (म्भा० आ०—गोचते, गुचिन्) क्रीडा करना, खेलना ।

गुचम् [गुच् + क्त] गुदा—याज्ञ० १३१९ मनु० ५११३६, ८१८२१ मम०—अङ्कुर ब्रह्मीर,—आखरें काष्ठ बडना,—उज्ज्वल ब्रह्मीर,—ओष्ठ गुदा का मूत्र,—कौल,—कौलक ब्रह्मीर,—छह कब्ज, मलाबरोध—बाक गुदा की मूत्रन, (मलद्वार का पक जाना),—अस काच निकलना,—कर्म्यं (नपु०) गुदा, मल-द्वार,—सत्प्रय कब्ज ।

गुच् । (विभा० पर०—गुच्छति, गुचित्) लपेटना, उकना, आवेष्टित करना, डारना, ॥ (म्भा० पर०—गुचानि) कुड़ होना, ॥ (म्भा० आ०—गोचते) क्रीडा करना, खेलना ।

गुचल [गुच् इति शब्देन दन्पतेःसौ—गुच् + दल् + चिच् + अच् एक छोटे आयतकार डोल का शब्द ।

गुचा (इ) क्तः [गुच्] चातक फल ।

गुच् । (म्भा० पर०—गोपायति, गोपायित् या गुप्) 1 रक्षा करना, बचाना, आत्मरक्षा करना रखवाली करना—गोपायति कुनस्त्रिय आत्मानम्—महा०, जुगोपायमानवश्चत् रघु० ११२१, जुगोप मोक्षधरा-मिवोर्वीम्—२१३ भट्टि० १७८० 2 छिपाना, उकना—कि बसवचरत्नानि व्यनक्तिरत्नान्येन गोपायते—अमर २२, ते गुप्त् ॥ (म्भा० आ०—जुप्सते—गुप् का सन्नत रूप) 1 गुच्छ समझना, कतराना, बिन करना,

अर्घि करना, निन्दा करना (अपा० के साथ, कमी कमी कर्म० के साथ भी) पापाज्जुगुप्से—लिङ्ग०, कि न्व मामज्जुग्मिहात् भट्टि० १५११९, याञ् ३१०२६ 2 छिपाना, उकना (इत् अर्थ में—गोपते) ॥ (दिवा० पर०—गुच्छति) घबराना, बिह्वल हो जाना १५ (चूरा० उभ०—गोपायति—ते) १. चम-कना 2 बालना 3 छिपाना (किञ्चिद्गुच्छे से उद्भूयन् निम्नांकित श्लोक वातु के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालता है—गोपायति क्षितिमिवा चतुरम्बितीमा, पापाज्जुगुप्सत उदारमति सर्वे, बिल न गोपयति यन्तु बधोयकम्प्यो धीरो न गुपति महत्पयि काव्योते ।

गुचित् [गुच् + इलच्] 1 गरा 2 रक्षक ।

गुत् (गु० क० कृ०) [गुच् + क्त] 1 प्रश्रित, सञ्चुत्, रसित—रघु० १०१९० 2 छिपाना हुआ, उका हुआ, रहस्यमय—मनु० २११६०, ७७७६ ८१७४ 3 अद्भुत, आँस से ओझल 4 सचकन, प्ल वैद्यों के नाम के साथ जुड़ने वाली बर्ण सूचक उपधि—चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त आदि (शास्त्रियों के नामों के साथ प्रायः 'देव' वा 'शर्मन्' आदि) के नामों के साथ 'बर्धन्' वा 'पान्' वैद्यों के नामों के साथ 'गुप्त', 'गुति' अथवा 'एत' और गुप्तों के नामों के साथ 'दास' जोड़ा जाता है तु०, वामो वैद्यश्च विप्रस्य, वर्मा बाला च भूमिज्, भूतिवर्तश्च वैद्यस्य दास सुहृदश्च कायेतुः,—काल् (अध०) गुप्त रूप से, निजी तौर पर, अपने हज पर,—एता काश्यपयो मे वयिन्त मुख्य स्त्रीपात्रो मे ते एक, परकीया नायिका, भुरति छिपाने वाली नायिका—मूल-मूलनगोपना बलिष्ममाथनुरतगोपना और कर्तमान-मूलनगोपना दे० रसम०—२५। मम०—कथा गुप्त वा गोपनीय समाचार, रहस्य,—कति गुप्तचर, जानसु,—चर जानसु, छिप कर घुमने वाला (र) 1. इल-राम का विशेषण 2 गुप्तचर, जानसु,—इलम् छिपा कर दिया जाने वाला दान, गुप्त उपहार,—वेङ्कः बरला हुआ भेत ।

गुप्तक [गुप् + क्त] सधाकर, प्ररक्षक ।

गुप्ति (म्भा०) [गुप् + चिन्] 1 सधारण, प्ररक्षा,—मर्मयोग्यस्य तु मर्मस्य गुप्त्यर्थम्—मनु० ११८७, ९४, ९९, याज्ञ० १११८ 2 छिपाना, लुकाता 3 उकना, म्यान में रखना—असिवागामु कोचगुप्ति—का० ११ 4 बिल, कन्दरा, गुफा, गुफागुह 5 गुप्ति में बिल कोचना 6 प्ररक्षा का उपाय, हुगं, दुषप्राचीर 7. कारागार, जेल—सत्रमस इव गुप्तिस्फोटयर्क करोमि—नि० ११६० 8 नाव का निचला तल 9 रोक, बाधा ।

गुप्, गुप्त् (गुदा० पर०—गुप्ति, गुप्सति, गुप्सित्) गुचन, गुचन करना, बचाना, लपेटना—भट्टि० ७१०५ 2 (आल०) लिखना, रचना करना ।

गु (गुं) किल (गुं कं कुं) [गु (गुम्) फु+कल]
 इकट्ठा गुंथा हुआ, बाधा हुआ, हुना हुआ ।

गुच्छ [गुच्छ+घञ्] 1 बाधना, गुंथना, -गुच्छो
 बाधनाम्—डालरा० ११२ 2 एक स्थान पर रहना,
 रचना, करना, क्रम पूर्वक रहना 3 ककज 4 गल-
 गुच्छ, गुंछ ।

गुच्छना [गुच्छ+गुच्+टाप्] 1 एक अगह गुंथना, जल्दी
 करना 2 क्रम पूर्वक रहना, रचना करना 3 सुसा-
 मवस्व (शब्द और अर्थ का), अच्छी रचना—बाकये
 शब्दार्थयो सम्यग्रचना गुच्छना मता ।

गुद् (गुदा० आ०—गुरते, गुते, गुथं) प्रयत्न करना, बेगटा
 करना, १) (विधा० आ०—गुं क० कुं—गुणे)
 1 बोट पहुँचाना, मार डालना, खति पहुँचाना
 2 जाना ।

गुद्वन् [गुर्+द्वद्] प्रयत्न, वयं ।

गुध (वि० घ, र्थी) [गु+कु, उत्पत्य] (म० अ०
 -गदीयन्, उ० अ० गरिष्ट्) 1 भारी, बोझिल
 (विप० लघु०) (आल० ने भी)—तेन पूर्वगतो गुर्वी
 सचिवेषु विचिक्षिपे—रघु० १।३४, ३।३५, १२।१०२,
 अठ्ठ० १।७ 2 प्रसन्न, बड़ा, लज्जा, विन्तु 3 लज्जा
 (काक भाषा या लज्जादि) जादरमगुर्वी—भर्तृ०
 २।६०, गुद्वु दिवसेध्वेव गच्छसु—मेघ० ८३४ महत्त्व-
 पूर्व, आश्चर्यक, बड़ा—विमलवर्णो हृदये—श० ४।१८,
 स्वाधीनता गुद्वरा प्रभाविर्करीव विजय० ४।१५
 5 दुःसाध्य, अजस्र—कान्ताविरहगुद्वरा ज्ञापेन—मेघ०
 १६ बड़ा, अत्यधिक, प्रचंड, तीव्र—गुध प्रहयं
 प्रबभूव नारमिन्—रघु० ३।१७, गुर्वपि विरहदुःखम्
 श० ४।१५, भग० ६।२२ 7 अद्वेष, आदरणीय
 8 भारी, गुल्माध्य 9 अमीष्ट, प्रिय 10 अहकारी,
 धमरी, दर्पवर्ति 11 (छन्द शास्त्रम्) दीर्घभाषा, (या ती
 स्वयं दीर्घ, अथवा लघुत आद्यन से पूर्व होने के कारण
 दीर्घ) उदा० 'ईदं' में 'ई', तथा 'तत्कर' में 'त', (यह
 छ० में प्राय 'व' लिखा जाता है)—भाष्यो यो केचज-
 मिनी वेदलोके—आदि),—इ पिता—न केवल तद्गु-
 दरेकपायिषु शिवावन्देकचतुर्धरोर्मिषु स—रघु० ३।३२,
 ४८, ४।१, ८।२९ 2 कोई भी अद्वेष या आदरणीय
 पुरुष, वृद्ध पुरुष या सबंधी, बुजुर्ग (ब० ००) बुध्-
 वस्व गुद्वन्—श० ४।१४, भग० २।५, भाषि० २।७,
 ८।१९, ४९, आज्ञा गुच्छा ह्यविचारणीया—रघु०
 १।४६ 3 अध्यापक, शिक्षक—गुरुशिक्ष्यौ 4 विवेच-
 तथा धार्मिकगृह, आध्यात्मिक गुद्व—ती गुद्वर्धपत्नी
 व प्रीत्या प्रतिननन्तु—रघु० १।५७, (गार्ज्याधिक
 रूप से गुद्व बहु हे) जो गावर्षी भक्ष का उपदेश करे
 और शिष्य को वेदाध्ययन करे—स गुम्यं क्रिया
 हुन्वा वेदमस्यं प्रवच्छति—वाङ्म० १।३४) 5 स्वाभो,

प्रधान, अभीक्षक, भावक—वर्षाधिवासां गुद्वे स वर्षी
 -रघु० ५।१९, वर्षं और आश्रयो का प्रधान—गुद्व-
 नृणांवा गुद्वे विवेधे २।६८ ६ बृहस्पति, देवगुरु
 -गुद्वेनेसहस्रेण चोदयामास वासव—कु० २।२९
 7 बृहस्पति नक्षत्र—वृक्षाभ्यानुगो विभ्रच्छात्रीमभि-
 नम शिवम्—शि० २।२ 8 नये मिठान्ते का
 व्याख्याता 9 पुत्र्य नक्षत्र 10 कीरव और पात्रयो के
 गुरु 11 मोमांसको के एक संप्रदाय का नेता प्रभाकर
 (उसके नाम पर 'प्रभाकर' या 'प्रभाकराय' कहलाता
 है), -अर्थ—विद्ये को शिक्षा देने के उपलक्ष्य में
 गुरुदक्षिणा—गुरुबंधमार्तुसह सम्पत्तये—रघु० ५।७,
 -उत्तम (वि०) अथत्त मत्तमनीय (—स) पर-
 मारता,—कार पुत्रा, उपामना, -क्रम उपदेश, पर-
 म्पराप्राप्त शिक्षा,—कन अद्वेष पुरुष, बृद्धसबंधी
 बुजुर्ग—नार्यसितो गुरुजन—का० १।५८, भाषि०
 २।७, तत्त्व 1 अध्यापक की शय्या (भाष्यो) 2 अध्या-
 पक की शय्या का उल्लेखन अर्थात् गुरुपत्नी के साथ
 अनुचित संबंध, तत्पण,—तस्मिन् गुरुपत्नी के अनु-
 चित संबंध रहने वाला (हित्पुत्रयं शास्त्र के अनुसार
 ऐसा व्यक्ति महापातकियो में गिना जाता है)—अति-
 पातकी, तु०, मनु० ११।१०३ 2 जो अपनी सौतेली
 माता के साथ शर्मिचार करता है,—दक्षिणा आध्या-
 त्मिक गुरु की दी जाने वाली दक्षिणा—रघु० ५।१,
 -ईकलं पुत्र्य नक्षत्र, -पाक (वि०) पचने में कठिन,
 -अन्व 1 पुष्पनक्षत्र 2 धनुष, -सर्वत्र एक प्रकार
 की शोक या मृदंग, रत्नम् पुत्रराज, -लाघवम्
 माणेशिक मद्दह्य या मूल्य,—बलिन्, -बाहिन् (पु०)
 गुरु के घर रह कर पढ़ने वाला ब्रह्मचारी,—बालर
 गुरुस्मति वार, वृत्ति (स्त्री०) ब्रह्मचारी का अपने
 गुरु के प्रति आचरण ।

गुच्छ (वि०) (स्त्री०—की) [गुह+कन्] 1 जरा भारी
 2 (छन्द० में) दीर्घ ।

गु (गुं) सं. [गुह+गु+गिच्+अच्+पुषो०] 1 गुजरात
 का प्रदेश या जिला—तेषां मार्गं परिचयबसादवित
 गुर्बराजा य सताप विधिभ्रमकरोत् सोमनाथ बिलोक्य
 -विक्रमाक० १।८।९७ ।

गुक्षिणी, गुर्वी [गुह+क्षि+कीन्, गुह+क्षि+कीन्] वर्षभंती
 स्त्री—उदा० गुर्विणी नानुगच्छति न ज्ञ-
 स्वत्साम् ।

गुल [=गुह, इत्य स] गुह तु० गुह ।

गुलुच्छ, -गुलुच्छ [=गुच्छ पुषो० गुह+विबुध्, इत्य स,
 गुलु+उज्झ+अच्] गुच्छ, गुह ई० गुच्छ ।

गुल्क [गल्+कल्] अकारस्य उकारे] उत्थना—आगुल्क-
 कीधपनमार्गपुत्र कु० ७।५५, गुल्कवर्षादिना
 -का० १० ।

मुष्कम्,—इष्कम् [मुष्+कम्, इष्क ल - तारा०] 1 वृत्ता का मुष्क, इष्कमुष्क, वन, शारी—मनु० १।४८, ७।१९२, १२।५८, वाङ्म० २।२२९ 2 विद्याविद्यो का दाल, संख्य बह विद्यमं ४५ पदाति, २७ अस्वाराही, ९ रषाराही और ९ अकाराही होते हैं 3 दुर्ग 4 तिल्ली 5 तिल्ली का बड़ जामा 6 नाक की गुल्लिख चौकी 7 घाट ।

मुष्कम् (वि०) (स्त्री०—तो) [मुष्+इति] इष्कमुष्क वा शाकमुष्क में उगनेवाला, बड़ी हुई तिल्ली वाला, तिल्ली के रोग से उत्पन्न ।

मुष्की [मुष्+क्य+ङीप्] तब ।

मु (मृ) बाष्क [मु+भाक] सुपारी का पेड़ ।

मुह्, (म्वा० उभ०—गृहति-ने) इकना, छिपाना, परदा धालना, गुल्ल रचना—मुह्वा च गृहति मुह्वात् प्रकटी-करोति -मनु० २।७२, गृह्णकम् इवाङ्गानि -मनु० ७।१०५, रघु० १४।४९, मट्टि० १६।४९, उष , आत्मिन चरना, तरङ्गहस्तैरुपमुह्वात्—रघु० १३।६३, १८।४७, मट्टि० १५।५२, सि० १।३८, नि , छिपाना, गुल्ल रचना ।

मुह् [मुह्+क] 1 कार्तिकेय का विशेषण - मुह इवाप्रति-हृतान्ति का० ८, कु० ५।१४ 2 बोझा 3 निगाद या चीनाल का नाम जा भुवनेर का राजा तथा भववान् नाम का मित्र वा ।

मुहा [मुह्+टाप्] 1 मुह्य, कडरा, छिपने वा स्थान, - मुहानिबद्धानिषददीर्घम्—रघु० २।२८, २९, धर्मसं पत्न्य निजि मुहायाम्—महा० 2 छिपाना इकना 3 गदा, विज 4 हृदय । गम० आहित (वि०) हृदय में रचना हुआ चरम् ब्रह्म मुह्य (वि०) गुफा जैसे मुह का, चाहे मुह का मुखे मुह का, - शश 1 चूहा 2 जेर 3 परमात्मा ।

मुहिनम् [मुह्+इन्] बन, जगल ।

मुहिर [मुह्+घरक] 1 अग्निभाक, प्ररक्षक 2 मुहार

मुह्य (म० इ०) [मुह्+क्यप्] 1 छिपाने क गमय, गोपनीय, गुल्ल रचने के वाच्य, निजो—मुह्य च गृहति -मनु० २।७२ 2 गुल्ल, गराग्लशामी, विरञ्ज (संशानित) 3 रहस्यगुण भय० १८।६३ छ 1 गालउ 2 कडुवा, छुम् 1 भेद, रहस्य गल चैवात्मि मुहायाम् भय० १०।३८, ११०, मन० १२।११० 2 गुल्ल इन्द्रिय, गुल्ल वा स्त्री की जनेन्द्रिय । मम० मुह्य शिव का विशेषण, शेषक गुल्ल,—निष्कम् गुल्ल,—माहितम् 1 गुल्लवादा 2 भेद, रहस्य को बात, -मय वानिकेय का विशेषण ।

मुह्यक [मुह्य वागनीय क मुख सेवान् क० म०] यज्ञ जैसे एक वर्षदेका की श्रेणी जा कुबेर के मेवक तथा उनके काप के मन्त्रक हैं—गुह्यकम्न यथापि मेष० ५, मनु० १२।५० ।

मु (स्त्री०) [गम्+कृ टिलोप] 1 कुडा करकट 2 मल, निष्ठा ।

मुष् (म० क० इ०) [गृह्+क्त] 1 छिया हुआ, गुल्ल, गुल्ल रचना हुआ 2 इका हुआ । मम०—अङ्कः कम्पवा, -अङ्कश्च माय-आत्मन् (समाप्त होकर 'गुह्योत्पन्न' बनता ह, सिद्धा० ने इस प्रकार समाधान किया है—यद्येद् वगणमाद् ह्य सिद्धो वर्णविपर्ययात्, गुह्योत्पन्ना चर्च-विहृतेर्वर्णोपात्तौदर) , परमात्मा,—अल्पा—कृ द्विदुषमं शास्त्रो मे वार्षित १२ प्रकार के गुप्तो में से एक, यह उस स्त्री का गुल्ल पुष है जिसका पति परदेय गया हुआ है, तथा वास्तविक पिता मजात है—गृहे प्रच्छन्न उत्पन्नो गृहजन्तु मुत् स्मृतः - वाङ्म० २।१२९, १७०, - नोड लज्जतपक्षी, पच. 1 गुप्तनामं 2 पच-डरी 3 मल, बुद्धि, - पाद्,—वात् साप,—गुल्ल वासुल, गुल्लचर, भेदिया,— गुल्लक बहुलुल्ल, - मारीः भुवर्चं मां,—सेधुल चौका,—बर्चन् (प०) मेवक,— लालिम् (प०) गुल्ल गवाह, ऐसा साक्षी जिसने प्रतिवादी की बातों का चुपचाप सुना है ।

मुष्,—यम् [गु+यक्] मल, निष्ठा ।

मुत् (वि०) [गु+क्त] उत्सृष्ट मल ।

मुत्तम्—दे० गुत्तम् ।

मुत्थवा? मां कं पम मे बनी हुई आस की वाहति ।

मु (भा० पर० गति) छिडकना, तर करना मौला करना ।

मुत्, मुत्ञ् (म्वा० पर० गजति, मुत्ञ्चति) गजद करना, डगारना, गरांवा आदि ।

मुत्ञ्जन् [मुत्ञ्+ल्यट] 1 गाजर 2 मलजम 3 बाजा (गाजे की पलियों का बचाना जिसमें कि साफ़ता पैदा हो) । मम् विरले नीर मे मारे हुए पद्म का मास ।

मुष्चि (स्त्री) च [?] गीदड़ों की एक जाति ।

मुष् (दिवा० पर० गुच्यति, मुष्) अलचाना इच्छा करना, मोहबद्ध प्रयत्नशील होना, लालाशिव हुला, अधिमारी हुला ।

मुष् (वि०) [गुष्+टु] कामानुत्, लम्पट,—चु, कायदेव ।

मुष्न् (वि०) [गुष्+क्त्] 1 लोभी, लालची—अधुष्नुवादे साज्यम् रघु० १।२१ 2 उम्पुक, इम्पुक ।

मुष्म्य,—ध्या [गुष्+क्यप्] इच्छा, मोह ।

मुष्त्र (वि०) [गुष्+क्त] 1 लोभी लालची इत्,— इत्त सिद्ध, माजोरस्य हि दामेण हतो मुढो जरदुर्गम् त्रि० १।५९, रघु० १०।५०, ५९ । मम०—कुडः गजगुह के निकट विद्यमान एक पहाड, पक्षिः—राज गिदां का राजा ब्रटाप—अधुष्वात्सोन्महति शिवने भद्रगजम्प बास -उत्तर० २।२५, बाष्क—वर्षाजल (वि०) गिडक परी में मुष्क (शाप आदि) ।

मुष्तिः (स्त्री०) [गुष्कति सकृन् भञ्च्—भह,+क्लिप्

पुष्य० तारा०] 1 एक बार ब्याई हुई गौ, पहलौठी गाय (सकलप्रसूता गौ) —आपीनमारीदहप्रपयलादगुष्टि
—२५०० २१२८, स्त्री तावत्सकृत पठनी दत्तनवनस्या
इव गुष्टि सुनुसद्व करोति मूच्छ० १ 2 (दूसरे पशुओं के नामों के साथ जुड़कर) किसी भी पशु का (मादा, बच्चा, बालिसालगुष्टि : हयिनी का/मादा, बच्चा ।

गृहम् [ग्रह + क] 1 घर, निवास, आवास भवन—न गृह
गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते—पद्य० ४८८१, पद्य बानर
मूषेण सुगृही निर्गृहकृता० पद्य० १३१० 2 पत्नी
(उपयुक्त उद्वरण कई बार निदर्शन के रूप में प्रयुक्त
होता है) 3 गृहम्य-जीवन 4 मेधादि राशि 5 नाम
या अभिधान. हा (पु०, व० व०) 1 घर निवास
- इमे नो गृहाः—गृहा० १, स्फटिकापलविग्रहा गृहा,
धासभुःशुक्लानिर्गुहमितय नो २१७६, तन्नामार
धनयतिगृहानुरेणाम्मदीवम् मेघ० ७५ 2 पत्नी
3 घर के निवासी, कुटुम्ब । सम०- अक्षः शरीराया,
माया, गोल या आयताकार लिङ्गकी, —अधिपः—ईश,
—ईश्वर 1 गृहस्य 2 किसी राशि का स्वामी,
अधिका गृहस्य, - अर्थ धरेल मामला, धरेल बातें
—गृहार्थोऽग्निपरिच्छिन्ना—मनु० २१६७, —अध्वन्
एक प्रकार की काजी, —अध्वन्वो देहलो, —अध्वन्
(पु०) तिल, (एक आयताकार पत्थर जिस
पर मसाने पीसे जाते हैं), आराधन गृहवाटिका,
—अध्वन् गृहस्यो का आश्रम, ब्राह्मण के धार्मिक
जीवन की दूसरी अवस्था -दे० आश्रम, उत्पत्त
कोई धरेल बाधा, —उपकरणम् धरेल बरतन, गृहस्य
के उपयोग की सामग्री, - कच्छप = गृहधामन् दे०,
—कपोत, -तक पालतु कबूतर, - करधम् 1 धरेल
मामला 2 घर की इमारत—कर्मन् (न०) गृहस्य
के लिए विहित कर्म, 'दास चाकर, धरेल नौकर
गाम्भ्वयभूहरयो हरिणोक्षपाला येनाश्रित्यन्त सतत
गृहकर्मदाता—मत्त० १११, कलह, धरेल झगडा भाई
भाई की लडाई, —कारक घर बनाने वाला, राज,
याज्ञ० ३११५६, —कुक्कुड पालतु मुर्गी, - कार्यम् घर
का कामकाज—मनु० ५११५०, —बस्ती साथ लगे
हुए दो कमरों का घर जिनमें से एक का मुख पूर्व
और दूसरे का पश्चिम की ओर हो, - छिद्रम् 1 घर
की गुप्त बातें या कमजोरियाँ 2 कौटुम्बिक अनबन,
—अत-बात घर में ही पैदा हुआ नौकर, - आशिका
पोला, कपटमेघ, आग्निम् (गृहेशानिन् भी) 'घर
में ही तीसमारत्ता', अनुभवमयु, जड, मूक, - तटो
घर के सामने बना चबूतरा, —दास धरेल सेवक,
—देवता घर की अधिष्ठात्री देवता, (व० व०)
कुल देवताओं का समूह, —द्वैतकी घरकी दफ्तरीज-भाई
बलि सपरि मद्गृहहलीनाम् मूच्छ० ११९, भव-

म्बु हवा, —नाशनः अगली कबूतर, —नीच. विडिया,
चोरेया, —पति 1 गृहस्य, ब्रह्मण्यं आश्रम के पश्चात्
विवाहित बौध्न विताने वाला घर का मालिक
2 पञ्चमान 3. गृहस्य के उपयुक्त कर्म अर्थात् आतिथ्य
आदि, —पत्न्यः 1 घर का सरलक 2 घर का कुला,
—पौत्रक घर की जगह, वह भूभाग जिस पर घर
की इमारत बनी हुई है और जो घर की घेरीती है,
—प्रवेश नये घर में विधिपूर्वक प्रवेश करना, —बधु
पालतु नैकला, —वर्ति वैश्वदेव यज्ञ में दी जाने वाली
आहुति, अवशिष्ट वस्त्र सब जीवजन्तुओं को वितरण
करना, मनु० ३१२६५, 'भुञ्ज (पु०) 1 कौशा
2 विडिया - नौशरन्मर्गहबलिम्जाताकुलशायर्षया
—मेघ० २३, 'वैश्या घर का देवता जिसे आहुति दी जाती
है, - बहू 1 घर से निर्वाणित व्यक्ति, प्रवासी 2 घर
का नाश करना 3 घर में संच लयामा 4 असफलता
किसी बुकान या घर की बर्बादी या नाश, —भूमि
(स्त्री०) वास्तु स्थान, वह जमीन जिन पर कोई
मकान बना हो, —मेघिन् (वि०) 1 घर के कामों
में टाक झाक करने वाला 2 घर में कलह कराने
वाला, अर्थ दीपक, - बाधिका यमगांदिह, —मृग
कुता, - मेघ 1 गृहस्य 2 पञ्चयज्ञ, —मेघिन् (पु०)
गृहस्य—गृहीदरिभेदन्ते सगच्छन्ते—मत्स्य०) प्रजायं गृह-
मेघिनाम्—रघु० १७, दे० 'गृहपति', —घम्वन् उत्सव
आदि के अवसर पर श्राद्ध चोराने का डडा या कोई
और उपकरण—गृहयन्त्रनाकाशोपरीदारनिर्मिता-कु-
६४१, —वाटिका—बाड़ी घर से मिली हुई बनीची,
—विपत् घर का स्वामी, —शुक पालतु तोता, आश्रीद
के लिए पाला हुआ तोता—अमर १३, - शरेसक
व्यावसायिक भवननिर्माता, स्वपति, —स्व गृहो, दूसरे
आश्रम में प्रवेश करके रहने वाला सकटा ब्राह्मिना-
न्वीनां प्रत्येकार्येगृहस्यता—उत्तर० ११९, दे० 'गृहपति'
और मनु० ३१३८, ६१०, 'आश्रम गृहस्य का जीवन
दे० गृहश्रम, 'अभं गृहस्य के कर्तव्य'

गृहधाम्य [गृह + धिच् + आद्य] 1 गृहस्य, घरबार वाला
(तारा० के अनुसार 'शब्दकल्पद्रुम' में दिया गया
'गृहधाम्य' रूप गूढ़ नहीं है) ।

गृहधाम् (वि०) [गृह + धिच् + आद्य] पकड़ने वाला,
ग्रहण करने वाला ।

गृहिणी [गृह + शिन् + ङीष्] गृहस्वामिनी, पत्नी, गृहपत्नी,
(घर का कार्यभार सभालने वाली स्त्री) —न गृह
गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते, गृह तु गृहिणीहीन
कान्तारादतिरिच्यते—पद्य० ४८८१ । सम०—पद्यम्
गृहस्वामिनी का पद या प्रतिष्ठा—यारवेण गृहिणीपद
युक्तयो कामा कुलम्बाधव—स० ४१७, निष्ठा
गृहिणीपदे १८ ।

गृह्णित् (वि०) [गृह्+इति] घर का स्वामी, गृहस्व, घरद्वारी - पौडपत्ते गृह्णित रूप नू तनयाविकल्पेक्यु सं- नैर्दे स० ४१५, उत्तर० २१२२, शा० २१२४।

गृहीत (भु० क० क०) [ग्रह्+क्त] 1 लिया हुआ, पकड़ा हुआ केषाय गृहीत 2 स्वीकृत 3 प्राप्त, अर्थात् 4 परिहित, पहना हुआ 5 लुटा हुआ 6 अधिगत, प्राप्त --दे० प्र०, 1 सम० गर्मा गर्मबतो स्त्री, --विष्णु (वि०) 1 भागा हुआ, प्रयोडा, तितरवितर हुआ 2 तिरोभूत, लापता।

गृहीतन (वि०) (स्त्री०-नी) [गृहीत+इति] जिसने कोई बात समझ ली है (अधि० के साथ) -गृहीतो पदस्वङ्गेषु दृष्ट० १२०।

गृह्य (वि०) [ग्रह्+घृयत्] 1 आकृष्ट या प्रसन्न होने के योग्य जैसा कि 'गृयगृह्य' 2 बरने 3 जी अपना स्वामी न हो, परन्तु 4 पालतु घर में मध्या हुआ 5 बाहर स्थित -पामनृक्षा मेना (गौष के बाहर स्थित सेना), --ह्य 1 घर में रहने वाला 2 पालतु जानवर, --ह्य नू दुदा। सम०-अग्नि-अग्निहोत्र को आग जिसको स्थापित करने प्रत्येक श्राद्धग का विहित कर्म है।

गृह्या [गृह्+टाप्] नगर के निष्कट बना हुआ गाँव।

गृ० 1 (कथा० पर०-गृपाति, गृणं) 1 शब्द करना, पुकारना, आवाहन करना 2 घोषणा करना, बोलना, उच्चारण करना, प्रकटन करना -रघु० १०।१३ 3 बयान करना, प्रचारित करना 4 प्रशंसा करना, स्तुति करना -केचिद्गुणा प्राञ्जल्यो गृणन्ति - प्रय० १।१२१, मट्टि० ८।७७, अनु०-दीक्षाहित करना, मट्टि० ८।७७, 11 (गुदा० पर०-गिरति या गिरति) 1 निगलना, हृष्य करना, खा जाना 2 तिकात्मक, उड्डेलना, धुक देना, मुह से फेंकना, अब --(आ०) खाना, निगलना -तथावतिरत्नमोषेष पिशाचयोर्वि-द्योनिमत् मट्टि० ८।३०, उब्-1 फेंकना, धुक देना समन करना -उद्गमितां यद् गरल फणित पुण्याति परिबल्लोद्धारै - भाषि० १।१११, सि० १।४१ 2 उत्सर्जन करना, निकाल बाहर करना, उगल देना -कु० १।३३, रघु० १।५।३ बेगी० ५।१४, पञ्च० ५।६७, वि - निगलना, खा जाना -भाषि० १।३८, सप्त - 1 निगलना 2 प्रतिज्ञा करना, छत करना, (आ०) समझ - 1 बाहर फेंक देना, निकाल देना 2 बरने से चिल्लाना, 11 (पुरा० आ०-गारयने) 1 चलाना, बर्षन करना 2 अध्यापन करना।

गृह्ण (कु) क [गृह्णरोति ग इन्द्रिण, गेयु+क्त, गेहृक पृथो०] बोलने के लिए गैर, (गैरुक्त) मो।

गेष (वि०) [गै+घृ] 1 वाचक माने वाला -गेयो भाग-वक साम्याम् -श० ३।४।६८, सिद्धा० 2 शाये जाने

के योग्य, -ख 1 गीत, गायन माने की कला -गेये केन विनोती वाग्-रघु० १।५।६९, मेघ० ८६, अरुणा वाङ्मयपम्प्राहो गेयस्येव विधिपता -सि० २।७२।

गेय (स्त्री० आ०- गेयते, गेय्) दुंदना, खोजना, तलाश करना--नु० 'गेयते'।

गेह्य [गो गर्भो गेयर्षो वा ईह ईप्सितो यत्र तारा०] घर, आवास सा नारी विषया जाता गेहे रोदिति तल्पति - (सुभा०, वि०) इस शब्द का अधि० का रूप अलक तं स० बनाने के लिए कई शब्दों के साथ प्रयोग होता है, उदा० गेहेष्वेभिन् (वि०) 'घर पर तोसमारका' अर्थात् कायर, मोह, गेहेवाहिन् (वि०) 'घर घर ही तेज' अर्थात् कायर, गेहेविन् (वि०) 'घर पर ही ललकारने वाला' अर्थात् कायर 'घरे का नुर्ग या कम्पोक', गेहेष्वेहिन् (वि०) 'घर में ही मृतने वाला' अर्थात् आलसी, गेहेष्वार, डीग मारनेवाला, आत्मश्लाघी, घोलीसार, गेहेभूर 'अपने मोहले में कुत्ता भी योग होता है' चटारदोबारी के मूरमा, कालीन के शार, डीग मारनेवाला कायर।

गेहिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [गैह्+इति] = गृहिन् । गेहिनी [गेहिन्+ङीप्] पत्नी, घर की स्वामिनी - धर्म यस्य पिता स्या च जननी धामिनिचर गेहिनी -शा० ४।९, मद्गेहिन्या प्रिय इति मन्वे चेतना कातरणे -मेघ० ७७।

गे (स्त्री० पर०-गायति, गीत) 1 गाना, गीत गाना -अहो माध रेभिलेन गीतम्-मुञ्च० ३, श्रीमत्समय-मधिहृत्य गीयताम्-स० १, मनु० ४।६४, ९।४२ 2 गाने के स्वर में बोलना या गाठ करना 3 बर्षन करना, घोषणा करना, कहना - (छन्दोमयी भाषा में) गीतधायमर्षोङ्करमा-सा० २ 4 गाने के स्वर में बर्षन करना, बयान करना या प्रवृत्त करना - चारम-द्वन्द्वगीत - स० २।१४, प्रभवस्तस्य गीयते-कु० २।५, अनु- , गाने में अनुकरण करना-अनुगायति काचिदुद्भिन्वतपञ्चमरागम्-गीत० १, कि० ३।६०, अब- , निन्दा करना, कलंकित करना उब्- , उब् स्वर में गाना, उच्च स्वर में गायन -उद्गायत्यत-मिच्छति किन्नरागाम्-कु० १।८, गेयम्भृथात्कामा -मेघ० ८६, उद्गीयमान बलवदेवाभि-रघु० २।१२, उब्- , गाना, निकट गाना -शिल्पप्रशिष्यैश्चपीयसा-नेषवेहि तमभवतनिबन्धान-उद्भूट, कि० ८।४७, परि- , गाना, बयान करना, बर्षन करना, वि - 1 बदनाम करना, छिद्रकना, कलंकित करना-बिगी-यसे मन्मथदेहेहाहिला -नी० १।७९ 2 विषम स्वर (नेमल स्वर) में गाना।

गेर (वि०) ('गी०-सी) [गिरि+अण] पहाड़ से आया हुआ, पहाड़ी, पहाड़ पर उत्पन्न।

दंष्ट्रिक (वि०) (स्त्री०-की) [गिरि+उज्ज] पहाड़ पर
उत्पन्न, -क-कम् गेह, -कम् चीना ।

दरेयम् [गिरि+इक्] शिलाजीत ।

दा (पु०, स्त्री०) दूर्त० गौ [यच्छव्यनेम, नम् करने की
 तारा०] 1 मवेशी, गाय (ब० ब०) 2 गौ से उप-
 जन्म बन्तु—दूध, मास चमड़ा आदि 3. ताजे 4 आकाश
 5 इन्द्र का बख 6 पकाश की किरण 7 हीरा 8 स्वर्ग
 9 नाथ, (स्त्री०) 1 नाथ -जुगोप गोरूपधराविबा-
 र्दीम् -रघु० २३, शोरिण्य समु नाथ -मृच्छ०
 १०६० 2 पृथ्वी दुःसोह गा स पञ्चाय रघु० ११२६,
 गामान्तारा ग्धर्य्यक्य ५१२६, ११३६, जय०
 १५१३, मेव० ३० 3 बामी, शब्द --रथोत्तरापरि
 या निताम्य -रघु० ५१२०, २५१९, कि० ५१२०
 4 वाणो की देवता --मरुक्ती 5 माता 6 विद्या
 7 जल (ब० व०) 8 जीव (पु०) 1 सोड, बेल
 -जय०-बालकिष्काण्य मुख स्थापित गौर्गण्डि-काण्ड०
 १०, मन० ६१००, तु० अणुव 2 जरी के बाल,
 गाण्डे 3 इन्द्रिव 4 वृषगात्रि 5 मूर्ध 6 (गणित में)
 नो की मन्था 7 चन्द्रमा 8 चोडा। मम० -कृष्णक,
 कम् वैशं ड्राग खुदा हुआ फलत जाने के अयोध्य
 ग्दान या मउर 2 गाय के मूर 3 गाय के मूर की
 नाथ -कर्म 1 गाय का कान 2 लम्बर 3 साप
 4 बालिदन (जगुडे के तिर से कज्रो की अगुलो तक
 ना दूरी) 5 दक्षिण में स्थित एक नौर्यस्थान का नाम,
 विव का त्रियस्थान भिनगोकोर्गभिकेनगोवन्म-रघु०
 ८३८ 6 एक प्रकार का बाण, किराडा, -किराटिका
 मेना पत्नी, - किल -कील 1 हल 2 ममल, -कुल्लम्
 1 गौरी का नरडा दृष्टिवाकुकुलावन्मनाहु-
 श्नुव नावर्षेनम्-गीत० ४, माकुलम् नृपान्त्य-महा०
 2 गोशला 3 हाकुल एक गाँव (जहाँ कृष्ण का
 गानन पोषण हुआ), कुलिष्क (वि०) 1 दलदल में
 लगी गाय का उद्धार करने में सहायता न देने वाला
 2 मेवा, बरदृष्टि, कृतम् गाय का गोबर, शीरम्
 गाय का दूध, छा नाथन, गृष्टिः मरुप्रवृत्ता गाय,
 पटनौठी, गोयम्प देना की जाती, -गोष्कम् गोशला,
 पनुशला, गौषि, 1 कने, सूया गाबर 2 गोशला,
 पृष्ठ, पम्भा की पकड़ना शाल, प्रावृजित के रूप
 म गाय की पास का कीर देना वा भोजन का वह
 भाग जो गाय को देने क लिए अलग कर दिया जाय,
 वृत्तम् 1 बारिमा नर पाना 2 गाय का भी कम्-
 नम् एक प्रकार की चरदत की लकड़ी, बर (वि०)
 1 चागायाह 2 बर-बार जाने वाला, आश्रय
 देने वाला बारबार मड़ाने वाला -पितृपधगोबर
 १० ५१०३ 3 क्षेत्र, गर्भित वा पगम के अन्त-
 गत अवाक्रमनगोबरम् रघु० १०१५, इती

प्रकार बुद्धि, दृष्टि, धरण आदि 4 पृथ्वी पर
 चुपने वाला (रः) 1 पशुओं का क्षेत्र चरागाह
 उपारताः पवित्रमराधिनोचराह-कि० ४१०
 2 मबल, विशाव, प्रात, क्षेत्र 3 इन्द्रियों का पगम,
 इन्द्रियों का विषय--श्ववधगोबरे लिष्ट (जहाँ तक
 कामो से मुना या लके - वही ठहरो) नयन गोबर या
 दिखाई देना 4 क्षेत्र, परास, गृह्य- हर्तयानि न
 गोबरम्-भर्त० २११६ 5 (बाल०) पकड़, दवाव
 शक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण- ६ कालस्थ न गोबरान्तर-
 नत -यच० ११५६, जपि नाम मनायवनीर्गोभि रति-
 रमणवाणगोबरम्-मा० १ 6 गतिज, -कर्मन्
 (नपु०) 1 गोषमं 2 विशेष भाग (4नह नापने को)
 -बधिष्ट के अनुसार परिभाषा- दशस्तेन बवेन
 दशववाण समतत, पच बाम्बधिकान् दशादेतद्गोचर्म
 बोधते । कल्पः शिव का विशेषण, - चारकः वाता,
 चरबाह, - चरः बुद्धा बेल या सोड, क्लम् गोमूत्र,
 - क्षारिकम् योगलिका, आनय, -सलकः खेट
 बेल या सोड, -सौषम् गोशला - जम् 1 गोशला
 2 पशुशाका 3 परिवार, बल, कुल परम्परा नापेण
 माठगोत्रिम्-सिद्धा०, २ती प्रकार कौशिकगोत्रा
 वमिष्टगोत्रा -आवि-मन० ३१०९, ११४६
 4 नाथ, अभिधान--आदा गोत्रम्भित्ते च का न तय
 -ने० ११३०, देवो स्मलिन गो०, महगोत्राद्
 विगन्धितपद सेपुद्गुतातुकासा- मेघ० ८५
 5 ममृचव 6 बुद्धि 7 बल 8 शेत 9 मदन
 10 सति, दौलम् 11 छतरी, छाया 12 बहिष्ण न।
 ज्ञान 13 जाति, अंगी, वयं, (ऋ) पहाड़, क्लेष
 पृथ्वी ञ (वि) समान कुल में उत्पन्न, एक ही जाति
 का, सबधो वज० २१२५, पेशः वधा विवरण,
 वसनालिका, वशवृक्ष, वशावली, 'सि' (पु) इन्द्र का
 विशेषण--हृदि शतो गोत्रभिव्ययमवश रघु०
 ३५३, ६१३३, कु० २५२९, इञ्जकम् स्वलितम्
 नाम लेकर पुकारना, गलन नाम वे पुकारना--मगरि
 स्वर मेवलापृषैत गोत्रस्वलितेषु वन्यमम्-कु० ६८
 (-वा) 1 गोशो का समूह 2 पृथ्वी, -कल्ल हरनाल
 -वा गोदावरी नामक नदी,--बाम्ब 1. बाल काटन
 की दक्षिण -नवायम् गोदावतिविचरन्तरम् रघु०
 ३१३३ 2 केयान्त सस्वार (दे० मल्लि० की व्याख्या)
 कुनगोदानमंगला --उपर० १ (राधा० में भिन्न प्रकार
 की व्याख्या है), चारवम् 1 हल 2 पाववा, नृपा,
 शारदी दक्षिण देश की एक नदी का नाम,--बुह,
 (पु) -बुह, ग्यावा, - बौहः 1 गौ का दूध निकालना
 2 गाय का दूध 3 गौरी को दौड़ने का समय
 बौहमम् 1 गौरी को दौड़ने का समय 2 गोश। कं
 दाहना, शोहनी वह नदीन विजयें दूध दूता नाथ, इहः

गोमूत्र, -अणुम् गोश्री का समूह, मेषी, - चरः पहाड
 -बुधः, - बुधः 1 गोश्री 2 सतरा, -बलिः पृथ्वी की
 बल, सध्या का समय (सध्या समय ही गोश्री बनती
 से चर लौटती है, उनके चलने से बल के बादल एकत्र
 हो जाते हैं, इसी लिए इस काल का नाम 'गोश्री'
 पहाड), -धेनुः दूध देने वाली गाय जिसके नोचे बछड़ा
 हो, -अ. पहाड, -अण्वी माया सारस (पक्षी), -नई
 1 सारस पक्षी 2 एक देव का नाम, -नवीय महा-
 भाय्य के कर्ता पतञ्जलि मुनि, -नस, - नाल 1 एक
 प्रकार का साप 2 एक प्रकार का रत्न, -माष
 1 मांड 2 भूमिचर 3 खाला 4 गोश्री का स्वामी,
 -माषः खाला, -लिष्पणम् गोमूत्र, ५ खाला (एक
 बसंतकर जाती) -गोपवेगश्य विष्णो -मेष ० १५
 2 गोश्रीका का प्रधान 3 गोश्री का अधोक्षक 4 रात्रा
 5 प्ररक्षक, अभिभावक, (गो) 1 खाले की पत्नी
 -गोपीपीतपयाचरभद्वचलकरपुमाश्री -गीत ० ५,
 -अधयल, इन्द्र, ईश खालो का मृगिया, कृष्ण का
 विशेषण, 'इस मुग्री का पैर' 'अधु' (स्त्री०) खाले
 की पत्नी 'बछड़ी गोपी, खाले की तरुण पत्नी - गोप-
 बधुटीमुकुलपीतय -भाषा ० १, -पति 1 गोश्री का
 स्वामी 2 मांड 3 नेता, मुखिया 4 दूध 5 इन्द्र
 6 कृष्ण का नाम 7 शिव का नाम 8 वज्र का नाम
 9 राजा, -धनु यज्ञोपवीत, -पालश्री छप्पर की सभा-
 नने के लिए उनके नोचे लगी टेढ़ी बन्नी, बलश्री,
 पाल, 1 खाला 2 रात्रा 3 कृष्ण का विशेषण
 धारी गोशाला, गोचर, -पालक 1 खाला 2 शिव
 का विशेषण, -पालिका -पाली खाले की पत्नी,
 गापी, पीत सज्जन पक्षी का एक प्रकार, पुच्छम्
 गाय की पूंछ (छट) 1 एक प्रकार का बन्दर 2 दो,
 चार या बीसम लकी का एक टावर, -मुदिकम् शिव के
 देव (नादिया) का मिर, -पुत्र जवान बछड़ा, पुरम्
 1 मगरदार 2 मुख्य दरवाजा -कि० ११५
 3 मन्दिर का सजा हुआ तारणदार, -पुरीशम् गाय का
 गावर -प्रकाशम् बहिया गाय का मांड, -प्रचार
 गावरमुनि, पशुश्री का चरगाह-पात्र ० २१२६ः
 प्रवेश गोश्री का जगन में लौटने का समय, माघ
 काल या मध्या समय, भूत (पु०) पहाड, बलिह
 (वि०) डाल, कुतामायी, मखलम् 1 भुगाड
 2 गोश्री का समूह, मखम्-२० गन्धि, -सर्तलिका
 गोश्री गाय, श्रेष्ठ गो, -अध खाला, मासम् गो का
 मास, -मायु 1 एक प्रकार का मछक 2 गोदड-अन-
 कुदने घनधनि न हि मायायन्तानि केयगे शि०
 १६०५ 3 गाय का पितृदोष 4 एक सन्धने का
 नाम -सूक्ष्म -सूक्ष्म एक प्रकार का वाद्ययन्त्र
 अण० १११ः (क) 1 मगरमच्छ धरियाल

2 एक तरह की (चोर के द्वारा लगाई गई) लथ
 (लम्) टेढागडा बना हुआ मकान, (-अणु-
 -श्री) जमाला खने की छायाशकु के आकार की
 खेनी जिसमें हाथ डाल कर माला के डालने की गिनते
 रहते हैं, मूढ (वि०) ईल की भांति बूढ़, मूषम्
 गाय का मूत्र, -मूष मोलगाय, यवय, एक प्रकार
 का देव, मेव 'गोमद' नाम का एक रत्न (यह
 रत्न हिमालय पहाड और सिन्धु नदी से प्राप्य
 है तथा श्वेत, गोला, लाल और गहरे नीले रंग का
 होता है), धानम् बेलगाड़ी, रल 1 खाला
 2 गोपाल 3 मलगा, रल्लु 1 मुगशी 2 बन्दी
 3 नमपुत्र्य, दिगवर मायु, रल 1 गाय का दूध
 2 दही 3 छाछ, 'अम् मट्टा-राज बहिया सांड, -रल्लम्
 दा कास के बगवर दूरों का माघ, -रल्लिका, रल्लो
 नेता पक्षी रोबला एक मुगणित पदार्थ जिसकी
 उपति गोमूत्र, गापित से मानी जाती है अथवा जो गाय
 के मिर में उपलब्ध होता है, लबणम् नमक की मात्रा
 जो गाय का दी जाती है -लाम् (पु०) ल. लम्वर, एक
 तरह का बन्दर-मा० ११३०, -लोभी बेंचवा, बल
 बछड़ा, आदिम् (पु०) भंडिया, बंधन, मयुरा का
 निकट बन्दावन प्रदेश में स्थित एक विष्णायत पहाड
 'चर', 'धारिम् (पु०) कृष्ण का विशेषण बड़ा
 बाल गाय, घाटम्, बास गौमाता, बिब 1 गो-
 पालक, गोशाला का अध्यक्ष 2 कृष्ण 3 बुधमनि
 -बिष् (स्त्री०) बिच्छा गोवर, बिसर्ग भार
 तर्के (जब गौर्ज जगन में चरने के लिए खाली जाती
 है) वीर्यम् दूध का मूत्र, -बुधम् गोश्री का लहडा,
 बुधारक बहिया मांड या गाय, -बुध बहिया सांड,
 ध्वज शिव का विशेषण ध्वज 1 गोशाला 2 गोश्री
 का यमद, गोचर मुनि, -शकल (नपु०) गोवर,
 शालम् -सा गोश्री की रखने का स्थान, बङ्गवय
 गोश्री की गीन जोड़ी, छट गोश्री का स्थान, गोट
 सध्व खाला -सद्वृक्ष, नीलगाय, गवय की ल
 जानि, सध् भीर, तर्के (वह मधय जब गोश्री
 प्रात काल चरने के लिए लौट दी जाती है), सुत्रिका
 गाय राधने की रत्नी, स्तम् 1 गाय का
 गेन शीघी 2 फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता आदि
 3 चार लड़की गोपियों की माला, स्तपत्र, नी
 भगा का गुच्छा, स्थानम् गोशाला, स्वामिन्
 (पु०) गोश्री का स्वामी 2 धारिक साधु 3
 यशोश्री के माघ लगाने वाली सम्मानमूषक पदवी
 (उदा० बापदेव गोम्बामिन), -हृष्या गोबध, -हृष्य
 हानम् गोवर हित (वि०) गोश्री की रक्षा करने
 वाला।

गोदम् [?] नयुत्र।

गोभी [गुण् + भञ् + ङीप्] 1 गुण, बोरा 2 'होम' के बराबर माप 3 चीयरे, कटेपुराने कपड़े।

गोष्ठाः [गो अण्ड इच्] 1 मासक मासि 2 निम्न जति का पुरुष, पहाड़ी नर्मदा तथा कृष्णा नदी के मध्यवर्ती विष्णु प्रदेश के पूर्वी भाग का निवासी।

गोतक [गोभि ध्वस्त सभो मय्य व० स० पृ०] अङ्गिराकुल से सबन्ध रखने वाला एक ऋषि, यतानन्द का पिता तथा अहल्या का पति।

गोतसो [गोलमः + ङीप्] गोतम की पत्नी अहल्या। सम० - बुध-यतानन्द का विशेषण।

गोषा [गुण्यते, वेदपत्रे वाहुरनया - गुण् + धञ् + टाप्] 1 धनुष के चिल्ले की बाँट से बचने के लिए बाएँ हाथ में बांधी जाने वाली चमड़े की पट्टी 2 पशुपाल, मगरमच्छ 3 स्नायु, हात।

गोषिः (पु०) [गोत्रेण पीयतेऽस्मिन् आशारे इन्] 1 मरुतक 2 गंगा में रहने वाला पशुपाल।

गोषिका [गुञ्जाति - गुण् + ष्युप् + टाप्] एक प्रकार की छिपकिली, गंहा।

गोष्य (स्त्री० - वी) [गुण् + अच्, घञ् वा] 1 रख, रखा करने वाला - शास्त्रियों अथवा - रघु० ४।१० 2 छिपाना, गुप्त रखना 3 दुबंघन, वाली 4 हृदयबी, शोभ 5 प्रकार, प्रभा, दीपि।

गोष्यन्तम् [गुण् + जाय + स्युट्] प्ररक्षण, सखान, बचाव। गोष्याति (वि०) [गुण् + आच् + क्त] प्ररक्षित, बचाया हुआ।

गोष्ण (स्त्री० - स्त्री) [गुण् + तुच्] 1 प्ररक्षक, सहायक, अभिभावक - तस्मान्न गोष्णो गार्हमाने - रघु० २।१४, १।५५, मारुति० ५।१० अम० १।१।१ 2 छिपाने वाला, गुप्त रखने वाला - (पु०) विष्णु का विशेषण।

गोष्णत् (वि०) [गो + मनुच्] 1 गोओं से सपन्न, - ती एक नदी का नाम।

गोष्यन् - यम् [गो + मयट्] गोबर, छत्रम् - त्रियम् कुकुर-मुसा, सौप की छतरी नुभी।

गोषिन् (पु०) [गो + षिनि] 1 मवेशियों का स्वामी 2 गोदड़ 3 पूजा करने वाला 4 बुद्धदेव का सेवक।

गोरक्षम् [गुर + ल्युट्] स्थिति, अभ्यवसाय, धर्म।

गोर्षम् [गुर + ददन्, नि०] ('गोर्ष' भी) मत्स्यिक, दिग्धा।

गोर्षः [गुर + अच् इत्य ल] 1 पिण्ड, भूगोल 2 दिग्ध लोक, जतरिश 3 आकाश मण्डल 4 विषया का आरज पुत्र, गु० कुड 5 एक राशि पर कई वहाँ का समागम, - सा 1 काठ की गैर (इससे लड़के खोलते हैं) 2 गाल, पानी भरने का बड़ा बरदा 3 साल सखिया, सैनसिल 4 मती, स्थाही 5 लक्ष्मी, लहेरी 6 तुर्ग देवी 7 गोधारती नदी।

गोर्षकः [गुर + ष्युक्, इत्य ल] 1 पिण्ड, भूगोल 2 बच्चो

के खोलने के लिए काठ की गैर 3 पानी का मटका 4 विषया का आरज पुत्र 5 पाँच या पाँच से अधिक पशु का सम्मिलन 6 गुर की पिण्डों 7 बुद्धदेव पर गोर्ष।

गोष्ण् (व्या० आ० - गोष्णते) एकत्र होना, इकट्ठ होना, ठेर लगना।

गोष्णः, ष्णम् [गोष्ण + अच्] (प्राय 'गोष्णम्') 1 बच्चा, गोशाला, गो-बर 2 ग्राहो का स्थान, - ष्णः सभा वा समाज 'ष्यः प्रज का कुला जो हुरेक की पीकता है, (आल०) बहु आलसी पुरुष जो अपने पशुवियों की निंदा करता है, गोष्णेष्णितः 'बज में निगुण' सेवी-भोग, निष्ठा हीय होने वाला।

गोष्णित, ष्ठी (स्त्री०) [गोष्ण + इन्, गोष्ण + ङीप्] 1 सभा, सम्मेलन 2 जनसमुदाय, समाज 3 सत्ताप, बात-बीत, प्रबचन - गोष्ठी सत्कविभि सभम् - अरु० १।१८ - मा० १०।२५, तेनैव सह सर्वदा गोष्ठीमनु-भक्ति - पच० २ 4 समुदाय, जमाव 5 पारिवारिक मन्थ, रिस्तेदार, (विशेषतः बहु जिससे सबब बनावे रखने की आवश्यकता है) 6 एक प्रकार का एकाकी नाटक, 'ष्यितः सभा का प्रचार, सभापति।

गोष्ण्यम् [गो पदम्, प० त० - गो + प० + अच्, नि० सुट् पत्य व] 1 गाय का पैर 2 धरती पर बना गाय के पैर का चिह्न 3 पैर के चिह्न में सभा जाने वाले जल की मात्रा, अर्थात् बहुत ही छोटा गड्ढा 4 गाय के मूत्र-चिह्न में समाने के योग्य मात्रा 5 वह स्थान जहाँ गौओं का जाना-जाना बहुतायत से हो।

गोष्ण्य (वि०) [गुर + ष्युक्] गोष्णीय, छिपाने के योग्य।

गोष्ण्यकः [गुञ्जा + ठक्] मुनार।

गोर्षः (पु) एक देश का नाम - स्कन्दपुराण इसकी स्थिति इस प्रकार बतलाता है - बङ्गदेश ममारम्य मुबनेशानस्य गिरे, गोर्षदेश समाख्यात सर्वविद्याविशारद। 2 बाह्यगो का एक नद, - वाः (ब० व०) गोर्ष देश के निवासी, - ङी 1 गुर से बनाई हुई सराब - गोर्षी पेट्टी च माथी च विद्वेया विविद्या मुरा - मनु० १।१।५ 2 एक रागिनी 3 (अल० शा० में) रीति, वृत्ति या काव्य रचना की एक शैली - सा० द० कार बार रीतियों का वर्णन करता है, काव्य० में केचक तोम का ही उल्लेख है, बहो 'पलवा' का ही इतरा नाम 'गोर्षी' है - ओज प्रकाशकर्म (वर्ण) तु पलवा (अर्थात् गोर्षी) काव्य० ७, ओज प्रकाशकर्म - ब्रह्म आठम्वर पुत्र, सत्तासबहुला गौरी - सा० द० ६२७।

गोर्षिकः [गुर + ठक्] ईल, शत्रा।

गोर्ष (वि०) (स्त्री० - वी) [गुण् + अच्] 1 मातहत, द्वितीय कोटि का, अनावश्यक 2. (व्या० में) अग्रत्यज

वा व्यवधान-महित (विष० मुख्य वा प्रधान)---गोषे कसेपि दुष्टादे प्रदाने नौहृङ्कङ्कहृङ्मु मिट्टा० 3 आल-कारिक, कृपक, अप्रधान अर्थ मे प्रयुक्त (दाघ वा अर्थ अर्थ) 4 प्रधान और अप्रधान अर्थ की समानता पर स्थापित जैसा कि 'गोषी' लक्षणा मे 5 गुणा की गणना मे सबद्ध 6 विशेषण ।

गोष्यम् [पुं० + व्यञ्ज] मानहती निचली या पटिया अब-स्थिति ।

गोतम [संज्ञक + अण्] 1 भाग्यत्रय ऋषि का नाम 2 गोतम का पुत्र, भगवान् 3 अण का माता, कुशाचाप 4 बुद्ध 5. व्यावहारिक का प्रणेता । मम०---सभवा मातावती गदी ।

गोतमी [गोतम + ङोप्] 1 द्राघ का पत्नी, ऋषी 2 माता-वती का विशेषण 3 बुद्ध की शिष्या 4 गोतम द्वारा प्रणीत व्यावहारिक 5 हस्ती 6 योग्यवन ।

गोषुषीष्यम् [शापम + मन्त्र] गेट का मंत्र ।

गोषदे. [गोर्दे + अण्] महाभाव्य क प्रणेता पत्ररत्न मनि का विशेषण ।

गोषिक. [गोषिका, अण्] गोषी या गोषे की स्त्री का पुत्र ।

गोष्येय [गुणा, इत्] ईश्वर स्त्री का पुत्र ।

गौर (वि०) [स्त्री० गौ, गौ] ग, र, वि०] -वेन -कौशमाया वृषामाया क रथ० ५३५, द्विगुण-अन०उदाहरण तस्य मय० ५५९ ५, 'हृष्टो ११६ 2 गान्धा मा, पाल वन-माग्यवारासेपनि-नान्धमायम -हृ० ५१७ २५० ६६९, गोर्गाङ्ग यम न वशपि दुर्वा - रथ० 3 लालेय का ४ चमटा/आ, उ-ज्वल ६ विनाइ, स्वच्छ, सुन्दर, ४ 1 मय० रथ 2 गीला रथ 3 लाल रथ 4 मय० मयना 5 पद-मा 6 गूढ प्रकार का बैला 7 पद प्रकार का रथिण रथ 1 पथकेम 2 जाहंगन 3 सोता । मम० आशय एक प्रकार का काना बदन शिमरा मय गौरी हो -सर्वत्र मय, न-मा ।

गोष्यम् [शापमा व्यञ्ज] गोषे का कथ गोष्यमण ।

गोष्यम् [गुं० + अण्] 1 चाल भाग (मा०) मुग्धमा शारिपारंगोश्याम् रण० ३११ 2 मय०, उवा मय० वा मुग्धमय स्वर्धकमे गोष्यमय-गनम्-रथ० १०११, १०१२, कार्योरेण्य मुट्टा० ५ गुणा मा मय० 3 सम्मान, आदर, विचार नवापि यम रथि त मुग्धमयनि गोष्यम्-सि० ५१०, प्रथमना-गोष्यमा प्रथमा प्रायश्चल गोष्यमाश्रिया पु० ३११, अमर १५ ४ सम्मान, मयता, अट्टा कोर्गी लो गोष्यम् १५० ११६९, मनु० ५११५, 5 हुकनता 6 (छ० मे) दीवता (जैन का अर्थ की) 7 (अर्था-रिक्त की) गृहगर्त---यचचारंता गोष्यम मा० ११७ ।

मम०---अत्यन्त सम्मान का पद--द्विरित (वि०) प्रयत्न, यशस्वी, विन्याय ।

गौरचित्त [वि०] [गौरव + इत्यञ्] अत्यन्त सम्मानित, गौरव युक्त ।

गौरिका [गौरी + कन्] टाप उचम | कुमारी कन्या, अर्ध-वाहिता लक्षकी ।

गौरिक [गौर + इत्यञ्] 1 गौरी मयती 2 हृत्पात वा लोहे का चक्र ।

गौरी [गौर ङोप्] 1 पार्वती जैसा कि 'गौरीनाथ' मे 2 आठवप की आश की कन्या - आठवारी भवेद्गौरी 3 बहु लडकी वा अमी रजस्वला लोरी हुई कुमारी कन्या 4 गार या पीले रंग की स्त्री 5 पृथ्वी 6 हृत्पदी 7 योग्यवन 8 वरुण की पत्नी 9 मल्लिका लता 10 तुलसी का पीषा 11 मयती का पीषा । मम० -कान्त, -ताप शिव का विशेषण,--मुष्ट शिवालय पहाड ---गोर्गाङ्गमाङ्गमविषय-रथ० ५१-६ कि० ५१२१, -ज कारितेय (जम्) अमरक, पट्ट गोर्गिणी अर्था श्रिममे शिवोत्तम (की मति) स्थापित किया जाना है, -पुत्र कारितेय,--ललितम इत्यन्त-मुत्त 1 कारिकेय 2 गुणैय ३ ऐमा स्त्री का पुत्र जिम्मा विवाह आर-वा की अवस्था मे हुआ वा ।

गौरित्तिक [गुणवन् + टक] गुणवती मे साथ व्यभिचार करने वाला ।

गौरित्तिक [गौरित्तक + टक] जा वाय के पुत्र वा अशुभ चिह्न का पहचानना है ।

गौरित्तिक [गुणम् + टक] शिमी लता को टोली का एक विधाहो ।

गौरित्तिक [वि०] (स्त्री० वी) [गौरित्त + इत्यञ्] मी वीषा वा स्वामी ।

गौ [गम + या टित, टित्वा] अथवा लान [पृथ्वी] ।

पट्ट, पन्थ [म्भा० आ० प्रयत्न गण्ये] 1 देवा हुआ 2 दृष्ट हुआ 3 झरना ।

पथम् [पन्थ + ल्यट] नवाप | 1 जमाना, गाढ़ा करना, आम हा जाना 2 एक जगह लुथी करना 3 रचना करना, लिखना (इम अर्थ ग-पथना शब्द भी है) ।

पथ [पन्थ + नट] जग, गच्छा, लक्षता ।

पथित [पुं० क० इ०] [पथ + क, ल्यट] 1 एक जगह लुथी किया हुआ वा वाधा हुआ 2 रचित कर्मी कनिभयवृष्टि-कान्य स्वर्गिण्य सि० ५१० 3 अम-वड, श्रेयोवड 4 गाढ़ा किया हुआ 5 गाढ़ावाला ।

पथ्य [म्भा०, कथा० पठ०, पृग० उभ०, म्भा० आ०] ---अवर्ति, अमानि, अवर्ति न, प्रथति, पथते 1 गुणता, वाचना, लुथी करना--अट्टि० ३११०५ यथा प्रयत्न 2 अम म रचना, श्रेयोवड करना, नियमित नियन्त्रण मे जाइना 3 बटना, बटा बहाना

4 लिप्यन्ता, रचना करना - प्रणामि काव्यगणित
विनयाद्यैर्यमम् काव्य० १० 5 बनाना, निर्माण
करना, पैदा करना प्रणालि बाण्डविमुनिकर पक्ष-
पक्षकन्या का० ६०, भट्टि० १०१६९, खू- , बाधना,
नशी करना, मुद्रा० ११४, अन्तर्जित करना - अता-
प्रतानेहृषाधने स केसे - रघू० २८ 2 खालना,
टीला करना ।

प्रन्व [प्रन्व-+धन्] 1 बाधना, गूथना (आल० से भी)
2 कृति, प्रबन्ध, रचना, साहित्यिक कृति, पुस्तक
ध्वारगन्धे, प्रन्वहन्, प्रन्वसमानि भादि 3 दोस्त,
सम्पत्ति 4 ३२ माताओं का लोक, अनुष्टुप् छन्द ।
मम० कार, कृत् (पु०) लेक, रचयिता प्रन्वा-
रभे ममन्वितोदेवता प्रन्वङ्कपरासुधति - काव्य० १,
-कृत्, कृत् 1 पुस्तकालय 2 कलाभन्दिर,
विस्तार, - विस्तारः प्रन्व का कई भागों में विभा-
जन, विस्तारगयी होती, - सन्धि किसी पुस्तक का
अनुभाग या अध्याय (संस्कृत में 'अनुभाग' आदि के
पर्याय 'अध्याय' शब्द के अन्तर्गत हयें) ।

प्रन्वत्-ना [प्रन्व-+न्त्] दे० 'प्रन्व' ।

प्रन्वि [प्रन्व-+इत्] 1 गीठ, मूच्छा, उभार मनी प्राम-
प्रन्वी बनकवनशास्त्रियुपनिने- भर्त० ३१०, इभी
प्रकार 'मंदाप्रि-व' 2 रूनी का बनल या गीठ, वस्त्र
की गीठ - इममृहितमूलकपिना स्मन्वदेशे वा ११८,
मन्व० १११, मनु० २१२३, भर्त० ११५७ 3 लया-
पेया मन्व के लिए कण्डके के अन्त में गीठ, अणुएव
वृथा, पुन, सम्पत्ति कुसांदाहृङ्गध पङ्कमयतधन्वि-
प्रमन्तान पच० १११ 4 तन्कूल की गीठ, गये
आदि का पात्र की गीठ या जाड 5 शरीर के अवयवों
का जाड 6 देहावन, संज्ञाना-मराठना, विप्यात्व, नवाई
म उलट फेर 7 शरीर की बाहिकाओं में मूलन
बढागता । मम० - छेक, - खेब - मोक्षकः गिरहकट
अवकतना अङ्गीवीधन्विप्रदय छेदेवन् प्रथमे श्रे-
-मनु० ११०७७, याज्ञ० २१२७५, -धर्मे, पर्वम्
1 एक मूलयुक्त वृक्ष - विष्वाक० १११३ 2 एक
प्रकार का मृगय द्रव्य, - अथमन् 1 विवाह के अवसर
पर दूध आंग हुयहित का गठनाइ करना 2 नयन,
हर मन्यो ।

प्रन्विक [प्रन्वि+कं] 1 ज्योतिषी, दैवज्ञ 2 राजा
विगत के यहाँ अज्ञानताम के अवसर पर तहुल का
नाम ।

प्रन्वित - दे० प्रवित ।

प्रन्वित् (पु०) [प्रन्व+इति] 1 जो बहुतों को पुस्तकें पढ़ना
है, कताबी - अज्ञेयों प्रन्वित श्रेयः प्रन्वित्म्यो
पारिणो बग-अन० १२११०३ 2 विद्वान्, पण्डित ।

प्रन्विल (वि०) [प्रन्विष्यतेऽन्व-+क्य] गीठवाला, जटिल ।

प्रत् । (म्हा० जा० -यनेने, यल्ल) 1 निगलना, बसफना,
खा खाना, समाप्त कर देना म इमो पृथिवी कृत्ना
सक्षिप्य प्रसते पुन-महा०, अम० १११३० 2 पक-
डना 3 ग्रहण करना हावेव प्रसते विनेधरनिना-
प्रायेषवरी भास्वरो भर्त० २१३४, हिमालुनासु प्रसते
तन्प्रथिन स्पृष्ट कल्म- नि० २१४९ 4. धरतो का
मिला-जुला कर अस्पष्ट लिखना 5 नष्ट करना,
सम्-नष्ट करना भट्टि० १२१४, ११ (म्हा० प००,
परा० उभ०) -प्रसति, प्रसपति-ने) खाना निगलना ।
प्रसत्तम् [प्रस्-+स्प्] 1 निगलना, खा लेना 2 पकडना
मृयं या चन्द्रमा वा खण्डयत्स ।

प्रस्त (पु० क० इ०) [प्रस्+त] 1 खाना हुआ, निगला
हुआ 2 पकडा हुआ पीडित, प्रस, अस्किन्त, -प्रह ,
विष्व- आदि 3 ग्रहण-यन, -सम्प्र अर्थोन्धारित मय
या वाक्य । सम० - अस्तम् ग्रहणप्रसत्तं मृयं वा चन्द्रमा
का अस्त होना, -उदयः ग्रहण-यन मृयं वा चन्द्रमा
का उगना ।

प्रह् [कृष्ठा० उभ० (वेद में 'प्रम्')] -गृह्णाति, गृहीत,
प्र० ग्राहयति, सप्तम-विष्पु ति) 1 पकडना, लेना, ग्रहण
करना, पकड लेना, धामे, त, लपक लेना, कस कर
पकडना- तयोर्गोहृणु पायन् राजा राजी च माधवी
-रघू० ११५७ - आलाने मुह्यते हली बाबी बलागु
गृह्णाते - मूच्छ० ११५०, त कच्छे जघाह - का० ३६३
गाणि गृहीत्वा, चण गृहीत्वा 2' प्राप्त करना, लेना,
लेनाका करना, बलपूर्वक कथुं करना- प्रजातानेव
भूत्यर्थं त तास्यो बलिमघरीते-रै० १११८, मनु०
७१२७, ९११६२ 3 हिरसत में लेना गिरफ्तार
करना बन्दी बगाला- बन्दिघाह गृह्णात्वा विक्रम०
१, धारनव चारण गृह्णीयात्- मनु० ८१३४ 4 गिर-
फ्तार करना, रोकना, पकडना - नग० ६१२५ 5 मोह
लेना, आकृष्ट करना-महाराजगृहीतहृदयथा मया
-विक्रम० ४, हुषये गृह्णाते नारी-मूच्छ० ११५०,
माधयंमोपे हरिचान् गृहीतुम्-रघू० १८१३३
6 जीत लेना उपमाना, अपनी जीत करने के लिए कुल-
लाना मन्वमर्षेन गृह्णीयात् चाण० ३३ 7 प्रसन्न
करना, मसृष्ट करना, तृप्त करना, अनुकूल करना
-प्रज्ञोनुयायिन् परिचयया मुहमेहानुभाषा हि निता-
तमपिन-नि० १११७, ३३ 8 प्रसन्न करना, पकडना,
चिपटना (अत प्रतादिक का) जैसे कि 'पिशाचगृहीत'
या 'वेतात्मगृहीत' में 9 धारण करना, लेना- वृत्तिव-
गृहीत् ग्रहणण-नि० ९१२३, भट्टि० १११२९
१० सोचना, जानना, गृह्णातना, बसलना- कि०
१०८ ११ ध्यान देना, विचार करना, विस्वास
करना, मान लेना - बयापि मृत्पिच्छमुदिना तथैव गृही
तम्-श० ६, परिहासमिच्छन्ति तमे परमात्मन न

वेद्य, -आत्मब्रह्मणम् अपने शिकार पर अपटना, और उसे फाड़ डालना पर्यन्त ब्रह्मात्मब्रह्मणे-मूच्छ० ३।२०
 -सूर्य, -कर्मोक्तः राहू का विशेषण, -वसिः ग्रहों को चाल कियेकः ज्योतिषी, -ब्रह्मा जन्मराशि की दृष्टि से ग्रहों की स्थिति, बहु समय जब कि उनका गुणानुसू फल होता है, -बेधता बहु विशेष का अभिप्राय देवता, -माघक 1 सूर्यं 2 वसि का विशेषण, -नेतिः चन्द्रमा, -वसि 1 सूर्यं 2 चन्द्रमा, **वीर्यम्** - **वीरा** 1 अह्वनित पीडा, बाधा 2 अह्वण लगना - सावित्रिवाकरयोर्बहुपीडनम् - भर्तुं० २।११, - **वधकम्**, ली ग्रहों का वृत्त, -वृत्तिः (स्त्री०) एक ही राशि पर ग्रहों का संयोग, -सूक्ष्मं ग्रहों का परस्पर विशेष या संचय, -राजः 1 सूर्यं 2 चन्द्रमा 3 बृहस्पति, -श्वं ग्रहों की चाल के अनुसार माना जाने वाला श्वं, -विश्वः ज्योतिषी, शास्त्रि (स्त्री०) गृह, जप, पुनरादि के द्वारा ग्रहोंपि की निवृत्ति का उपाय किया जाना, ग्रहों को प्रसन्न करना, सत्यम् करं ग्रहों का इच्छा हो जाना ।

धरुणम् [ग्रह + स्मृत्] 1 पकड़ना, फासना, अभिग्रहण - ब्रह्मा मृगश्रमेणवृत्ति - मनु० ५।१३० 2 प्राप्त करना, स्वीकार करना, के नेता आचार्यमृगश्रमात् - रघु० ७।१७ 3 उल्लेख करना, उच्छ्वासन करना - नामग्रहणम् 4 पहचाना, धारण करना - सोलरस्पष्टरश्मिवास्त नेप-व्यग्रहणाय स - रघु० १७।२१ 5 ग्रहण लगना - याज्ञ० १।२।८ 6 अन्वेषण, समझ, ज्ञान न परेया ग्रहणम् गोचराम् - नै० २।१५ 7 अधिगम, अवाप्ति, मन से समझ लेना, पारगत होना लिपेर्यथावदग्रहणेन शास्त्रमय नदीमूलेनेव समुद्रमाविशत् रघु० ३।२८ 8 गन्ध पकड़ना, प्रतिव्यञ्जि - आदिग्रहणमूर्धमर्गजितैर्नर्तयेथा - मेघ० ४४ 9 हाथ 10 इन्द्रिय ।

ग्रहण - **ग्री** (स्त्री०) [ग्रह + णि] अति-धार, वेचिषा ।

ग्रहिल (वि०) [ग्रह + ङल्] 1 लेनेवाला, स्वीकार करने वाला 2 न दबने वाला, अटल, कठोर - न विशालि-लयापि बापिका प्रसभाद ग्रहिलेव मानिनी नै० २।७७ ।

ग्रहीन् (वि०) (स्त्री० - **ग्री**) [ग्रह + तृच्, इटो दीर्घ] 1 प्राप्तकर्ता, जैसा कि 'गुणग्रहीन्' में 2 प्रत्यक्षज्ञाता, निरीक्षक 3 कर्मधार ।

ग्राम [ग्रम् + ग्रन्, आङ्गन्तादेश] 1 गाँव, पुरवा - पत्नने विद्यादानेऽपि ग्रामे स्तनगरीश्या मालकि० १, ग्रन्थेदेक कुलम्याथं ग्रामग्रामां कुल त्रयजेत्, ग्राम जनपदम्याथं स्वात्सार्थं पृथिवी त्यजेत् त्रि० १।१४९, रघु० १।४४, मेघ० ३० 2 बस, जाति 3 मनुष्यव्य, सग्रह (किन्ती वस्तुओं का) उदा० गुणग्राम, इन्द्रियग्राम

मय० ८।१९, ९।८ 4 सगम, (मतीत में) स्वर-धाम या सुरक्रम । सम० - **अधिकृतः**, -अध्वय - **ईशः**, -**ईश्वरः** ग्राम का अधीशक, मुखिया या प्रधान, -**जन्तः** गाँव की सोना, गाँव की मनीषवर्मी जगह - मनु० ४।११६, १।१०९, - **अनारम्भ** दूसरा गाँव, - **अनिकम्पम्** गाँव का परोक्ष, - **आचारः** गाँव के रम्भ-रिवाज, - **आवागन्तु** शिकार, - **उपाध्यायः** गाँव का पुरोहित, - **अध्वकः** 1 'गाँव के लिए काटा' जो गाँव की कष्ट देने वाला हो 2 चुवलखोर, कुक्कुटः पालनू मुर्गा, कुषारः 1 ग्राम का सुन्दर बालक 2 देहाती लडका, - **कूटः** 1 गाँव का श्रेष्ठ पुत्र्य 2 लड़, - **गृह्य** (वि०) गाँव के बाहर होने वाला, - **गोहृ** गाँव का म्बाला, - **घातः** गाँव की लूटना, - **घोषिन्** (पु०) इन्द्र का विशेषण, शर्मा स्त्री सम्बोध, - **श्लेष**, गाँव का पवित्र 'गुल' का वृक्ष मेघ० २३, - **शासक** गाँव का समूह, शासक, - **शामडल**, **शौः** 1 गाँव वा जाति का नेता या मुखिया 2 नेता, प्रधान 3 नाई 4 विषया-कृत पुत्र्य (स्त्री०) 1 बाराजना, देवता 2 नीलक का पीछा, - **सख** गाँव का बड़ई, - **बेधता** गाँव का अभिरक्षक देवता, श्वं स्त्री-सम्बोध, - **श्रेय** किसी गाँव वा जाति का दूत या सेवक, - **मन्वृषिका** सगडा, 'श्याय, हुषामा, हल्लागुल्ला, - **मुख** बाजार, मंडी, - **मुषः** कुला, - **याज्ञकः**, - **याज्ञिन्** (पु०) 1 ग्राम-पुरोहित, बहु पुरोहित जो सभी जातियों के धार्मिक संस्कार कराता है, फलतः पतित ब्राह्मण ममज्ञा जाना है 2 पुजारी, - **सूक्ष्मम्** गाँव की लूटना - **बास** (ग्रामे बास श्री) गाँव में रहना - **बन्ध**, नपसक स्त्रीव, - **संधः** ग्राम-निगम, - **सिंह** कुला, - **स्य** (वि०) 1 गाँव में रहने वाला, ग्रामोप 2 गाँव का सहवासी, एक ही गाँव का रहनेवाला साथी, - **हासक** बहनेई, जीजा ।

पान्थिका [?] गाँवडी, अग्रामा गाँव, दरिद्र गाँव - कति-पवशाभटिकाश्वंटेनद्विदपथ - प्रस० १ ।

पान्थिक (वि०) (स्त्री० - **न्थी**) [ग्राम + ठञ्] 1 देहाती, संवार 2 अन्ध, - **क** - गाँव का चौपरो या मुखिया मनु० ७।११६, १।८ ।

पान्थोकः [ग्राम + मञ्] 1 ग्रामवासी, गाँव का रहने वाला - ग्रामीणकचरत्नमभक्षिता जनीचिर वृत्तानाम्-परि व्यलोकयन् - शि० १२।३७ अमर ११ 2 कुला मनु० ७।११६, १।८ ।

पान्थेव (वि०) (स्त्री० - **न्थी**) [ग्राम + इच्] गाँव में उल्लस, सुवार, - **न्थी** रही, देवता ।

पान्थ्य (वि०) [ग्राम + यत्] 1 गाँव से सबक रखने वाला गाँव में रहने का अभ्यस्त - मनु० ६।३ ७।१२० 2 गाँव में रहने वाला देहाती गवार अल्पव्ययव स्वप्ति, ग्राम्यजने विष्टमस्नाति - छ० १।३ ३ घरेन्,

घ

घ (वि०) [हन् + ट्, टिर्नाय, धरव च] (यह केवल समास में उत्तर पद के अन्त में प्रयुक्त होता है) प्रहारा करने वाला, मारने वाला, नाश करने वाला—बैसा कि पाणिप और राजघ आदि में.—अः 1. घण्टी 2. नक्षत्राणां, रात्र्याणां, टिर्नाटना।

घट् । (स्वा० आ० घटे, घटित) अस्त्र होना, प्रखल करना, प्रखल करना, खानबूझ कर किसी काम में लपना (मुमुक्षु, अर्थि० या सप्र० क माच) —रविना चाबुलक घटदर मट्टि० १०१६०, अगदैन सम खेड्डमघटिष्ट १५११७, १०१२६, १६१२३, २०१२६, २२१२१ 2 होना घटित होना, सम्भव होना—प्रायस्त्वपौत्रिष्यवाप्रियमत मदीयै कृष्य घटेन मुदुदा यदि तत्कृण स्वात् मा० ११९, क्वा यद् सम्भव द्वे, क्वापयम्बोडमये प्रसूने यादिभृन्मिष्टिदंत भटाय ने० २०१०२ 3 अना, पहुंचना। प्रे०—घटवति 1 एकत्र करना, मिलाना, एकत्र कर करना इत्ये नारायणविभुसल नागमिभि.—वि० १०१७, अनेन मेमो घट्टीवदतन्मन्वा—ने० ११४६, क्वा नधि भोमो विषटवति युव चपयन वेथो० १११०, मट्टि० १११११ 2 निरट जाना या रमना सम्पर्क में आना, धारण करना घटवति च कण्ठान्नेषे रमात्र १२३१—मन्० ३१९ घटय अथने काचोम्—गोत० १२३ 3 निरट करना, प्र, लिन करना, कार्यान्वित करना लटाय स्वािकर्षान घटवति च मीय च मजने—ना० ११७४, (अभिमानम्) आनीय मट्टित घटवति—मन्० ११६ 4 क्वा देना, लड़ना, आकार देना, निर्माण करना, बनाना—ए०मिभषाद्य वैनेनेयम अघटयत् पच १, काने कथ घटितवानुपयेन चेन भूषार० 3, घटय भूषवन्त्यनय गीत० १० 5 प्रथोदित करना, उकमाना स्नेहोषो घटवति मा तथापि वक्तुम्—मट्टि० १०१७३ 6 मलना, स्पष्ट करना, प्र., 1 अस्त्र होना, काम में लगना—मट्टि० २१११७ 2 आरम्भ करना, सुरू करना—मट्टि० १४१७७ वि-1 विमुक्त होना, अलग होना 2 विघटना, बर्बाद होना, एक जाना, टूट कर जाना अर्थ कर देना—प्रे० अलग २ करना, तोड़ना, लम्बू मिलाना 11 (चुरा० उभ० घाटवति, घाटित) 1 चोट मारना, क्षति पहुंचाना मार डालना 2 मिलाना, जोड़ना, इकट्ठा—करना, मधुर करना, खूब—, लोडना, तोड़ कर लोडना कपाटमद्घाटवति मच्छ० 3, निर्ययधरिडारमुद्घाटवन्ती—मन्० ११६३

घट [घट् + अच्] 1 मिट्टी का मटका, घडा, मर्तबन, पानी देने का पात्र की पदय पयोनिषाकपि घटो गड्ढानि तुल्य जलम भवे० २१४ 2 कुम्भ राशि 3 हाथी का मन्थक 4 कुम्भक प्राणायाम 5. २० जोय के ४६

घरावर तोस 6. लम्ब का एक अक्ष। सम० प्रहोय रथ वा कुम्भी आदि का पूरा इकठ्ठा का कथना,—बहुवच., —अ., —धोमिः— सम्भव अत्रत्य मृत्ति के विघपण—अथव (शो०) वाय जिसकी बीसों दूध में बरी हो—मा कोटिय स्थायता घटोन्नी—रघु० २१६९, —कर्मैः 1 कवि का नाम 2 टोकरा, उतैन का टुकड़ा—सोयेव येन कविना धमकी परेण तन्मि वरेय—मूदक घटकर्परेण—घट० २२,—आर.,—कृत् (पु०) कुम्हार,—घट् पातो भरते बाला, बालो कुटनो तु० कुम्भवासी,—पर्यसन्म पतित वरकिन का अयर्वाटि सत्कार करना (जो अपने इस जीवन में जतनी जानि में फिर समिगित होना न चाहता हो),—भेषककम बर्तन बनाने का एक उपकरण,—राज., पत्नी मिट्टी का जलपात्र,—स्वस्वसम्बु दुर्गा के रूप में जल-जलन की स्थापना।

घटक (वि०) [घट् + णिच् + घट्] 1 प्रयास करने वाला प्रदलक्षील—एते मत्पुत्राः परःघटका स्वायं परि-स्वयय वे-भर्तु० २१७ 2 प्रकाशित करने वाला, निरारत्र करने वाला 3 साग्रभूत अक्ष बनाने वाला, अवयव, उपादान, —कः 1 बहु वृक्ष जिसके फूल दिव्य, न देकर फल ही लगे 2 मगर्त, विवाह नहीं कराने वाला, एक अधिकारी जो ब्याजकी विना क ब्रिवाश-सम्बन्ध नहीं कराये 3 दशावली का जानने वाला।

घटपत् म् [घट् + पत्] 1 प्रयास, प्रखल 2 होना घटित होना 3 निरपन्नता, प्रकाशन, कार्यान्वयन अर्था कि 'अघटितघटना में 4 मिलाना, एकता, क म्थान पर मिलाना, जोड़—तपेन तपतमयसा घटनाय सोयम् विकम० २११६, देहद्वयार्घघटनाञ्जितम्—का० २३९ 5 बनाना, रूप देना, आकार देना।

घटा [घट् + अच् + टाप्] 1 घेष्ठा, प्रखल, प्रयास 2 मन्था, टोली, अमाव—प्रलयघटा—का० १११, कीमिक-घटा—उत्तर० २१२९, ५१६, मातगघटा - सि० ११६६ 3 सैनिक कार्य के लिए एकत्र हुई हाथियों की टोली 4 सभा।

घटिका [घट् + ट्] घडनई के सहारे नदी पार करने वाला कम्बु निरन्ध, बूडड।

घटिका [घटी + कन् + टाप्, ह्रस्व] 1 एक छोटा घडा, करवा, छोटा मिट्टी का बर्तन—नायं एममानघटिका इव बर्तनीया पच० १११२ ७४ ष्वीरति कपयत्र घटिकायाप्रसक्तो विवि मूच्छ० १०१५२ २४ मिनट का समय, एक घडी 3 एक जल घट जिससे दिन की घडियाँ मिली जाती थी 4 टकने के ऊपर का तथा पिण्डको से नीचे का पतला भाग।

घटिम् (पु०) [घट् + णि] कंभ राशि।

घटोत्कच (वि०) | घटो+उत्का+कच+मुच्, धयादेश |
बलन में फूंक मारने वाला, कः कुम्हार ।

घटोत्कच (वि०) | घटो+उत्+कच, मुच्, ह्रस्व | जो
पहा भर (पानी) पीता है ।

घटो | घट+डोए | 1 छोटा घटा 2 २४ विनट के बराबर
कमय की माप 3 छोटा बल-बटा जिससे दिन की
घड़ियाँ गिनने का कार्य लिया जाय । सम०—आर
कुम्हार, षट्—आहू (वि०) दे० अटवह, कम्प
1 पानी ऊपर उठाने वाली रूहट की घड़िया, कुएँ पर
पहा डुबा रखी-डोख दे० अरघट्ट 2 दिन का समय
जानने का एक साधन ।

घटोत्कच | ? | हिंदिवा नाम की पाशतो ने उलपन भीम
का एक पुत्र (यह बहुत बलवान् पुत्र था, शीरव और
पाशकों के युद्ध में यह बहुत शीरवपुत्रोंक पाशकों की
शीर से लड़ा पग्न्यु इन्ह में प्राप्त शक्ति द्वारा कर्म के
हाथी मारा गया—तु० मुद्रा० २।१५) ।

घट्ट (घ्या० जा०—घट्टने- बहुधा घुरा० उभ० घट्ट-
गति से, घट्टिन) 1 हिलाना, हलकल देना जैसे
'बायबट्टिया लता' में 2 स्पष्ट करना, मलना, हाथी
से मलना टिजलनवघट्टिनसे मीमा मूष्क० १।२५,
अट्टि० १।२० 3 चिकनाना, सहलाना 4 ईर्वा-
को भावना से बोलना 5 बाधा पहुँचाना, बाध-
, लालना, परि- बहार करना सि० १।६५, वि
1 हलना० कर देना, तिनर-तिनर करना, बसेरवा,
उठा देना सि० १।६५, अट्टि० ३।५५ 2 बलना,
पिनना, गगना काग्धवाचनविघट्टिनसे विघनामा
अनु० ३।८, ५।९, तु० १।९, कि० ८।४५, सि० ८।२५,
१।४१, अन् 1 घबघाना 2 इकट्ठा करना,
पिलाना 3 एकत्र करना, लय्य करवा 4 रचदना,
पिनना, रवाना रघु० १।१०३ ।

घट्ट [घट्ट+घञ्] 1 घाट नदी के तट से पानी तक
वनी मोड़नी 2 हिलाना-बलना, आन्दोलन 3 चुपी
घर । सम० कुटी घुगी घर, 'अधसलव्यव-न्याय के
नी० दे०, मोड़िन (घु०) घाट से प्राप्त मट्टमूल से
अपना विवाह करने वाला 2 वर्षसकर (विद्याया रज-
काव्यात्) ।

घट्टना | घट्ट+घञ्+टाप् | 1 हिलाना, दुलाना, हल-
कल देना, आन्दोलन करना 2 रचदना 3 बीबिया
वृत्ति, अन्त्यास, व्यवसाय देना ।

घट्ट | घट्ट+घञ् | एक प्रकार का ध्वजन, घटनी ।

घटा | घट्ट+अट्ट+टाप् | 1 घटी, 2 लोहे का या लोहे
का गोल घट्ट जिसे समय की सूचना के लिए घुबने में
पीट कर बजाते हैं । सम० अवारण् घटा घर,
—कलक, कल घट्टियों से युक्त घेद, कलक घटा
बजाने वाला, कल घट्टे की जावान, कलक लीप

की मुष्क सबर, राजमार्ग, मुष्क मार्ग (दशमवन्तरो
राजमार्गो घट्टाप्य स्मृत कीटि०),—अन्क 1 काला
2 घटे की जावान ।

घट्टिका | घट्टा+डोए+कन्, ह्रस्व | छोटी घटियाँ,
घुषर ।

घट्ट | घट्ट+उच् | 1 हाथी की छाती पर बनी एक घट्टी
जिसमें घुषर लगे होते हैं 2 ताप, प्रकाश ।

घट्ट | घट्ट इति शब्द कुबेन् डोयने घट्ट+डो-+ह्र |
मयप्रसारी ।

घन (वि०) | घन् घनी अच् घनादेशश्च तागा० |

1 सहन, दुःख, कठार, टोम-सजानवच घनाघन - मा०
१।३९, माया घनाम्बिका—वाङ्म० ३।२९, रघु० १।११८
2 सजान, घनिष्ठ, घिनका घनीविलम्बाय 'उत०'
२।२०, रघु० ८।८१, लक्ष्म० ५० 3 गटा हुआ, पूर्ण,
पूर्णविकसित (जैसे कि कुच) घटयति मुषने कुच-
वृत्तयने मुषयदर्थिकरहिते गीत० ७, अमुकवपुष्पक
अवति मुष्क इति घनकुचयमे परिबदनात्मी अन्० ८,
अन्० १।८, अमर २८४ (शब्द की भांति) गभीर
- मा० २।२५ विलग्न रघावी 6 अनेध 7 बडा,
अर्थविक, अचर 8 पूर्ण 9 सृष्ट, भाव्यजाल, न,
बाहल—घनीपय प्राक् नदनवरण पय गा० ७।३०,
घनीविकरलायो विमयायज्ज आ-विकम० ६।१०
2 लोहे का मुद्गर, गदा 3 शरीर 4 (गणित में)
लघुशून्यक घन (किसी एक को उभो अक से दो
बार गुणा करने में उलकथ गुणफल) 5 विस्तार,
प्रसार 6 लयह, समुच्चय, परिमाण, गति, जमाव
या सजवान 7 अवरक, - अन् 1 आन्न, घट्टी, घट्टा
2 लोहा 3 टोम 4 कपडो लधा, बालक । सम०
—अन्क—अन्क शोदना का लोप वर्षाच्छुतु के
पर्वशात् जाने वाली श्चुतु, शरदु, अन्क (न्यु०) वर्षा,
—आकरः वर्षा श्चुतु, आन्कः बादला का आगमन,
वर्षाच्छुतु—कालागम कालिजन्मरिय श्रिये—अनु० २।१,
अन्कः सुहो का वज, आन्क्य परावरण, अन्क-
रिष, —अन्कः शोने,—शोष बादलो का एकत्र होना,
अन्क-ओडे, काल वर्षाच्छुतु, शरदुच्छुतु 1 मेघ-
पतन, बादलो की वरषयच्छुतु या गरग, बिजली की
कड़क 2 शमीर और ऊँची दहावा गरज, शोलक
घावो सोने की मिलावट - अन्काले शरीर दलदल,
सल एक प्रकार का लोहा, शोष, शारव, शोलक,
शानक पत्ती,—शानि मूला (यह बादलो का मुष्क
बदवच समझा जाता है) मघ० ५), शीशार, गाडा
कोटार, लख तुशार, पखो बादलो का मार्ग अन्क-
रिष, शोकाम कागादुपवतरीयनेअन्करी - वि०
५।१४, पल्लव, मोर फलम (उदा० में) किसी
वस्तु की नवार्थ-नीडाँ और माटाई का गुणफल

अथवा डोसन, मूलम् (गणित में) घन-गणित का मूल अंक, एकः १ गांथा रस २ अर्क गांथा ३ कपूर ४ जल, - अर्थः घन का अर्थ, (गणित में) छटा घात, - अर्थः (नपु०) आकाश घनवर्ष महद्यवैव कुर्वन् कि० ५।१०, - कलिका, - अर्थः विजयो, वास एक प्रकार का कपूर, कुम्हडा, बाह्यः १ शिव २ उग्र, - अर्थः (वि०) 'बायल की भांति काला' महारा काला, पक्का रंग, (-मः) १ गम और कृप्य का विशेषण, समयः वर्षा ऋतु-सार १ कपूर-यन-साग्नीह्वारहार दण० १, (स्वैत पदार्थों में उल्लेख) २ पारा ३ जल, - स्वयं मेघमयन, - हस्तसंज्ञा (गणित में) मुदाई की विट्टी आदि मानने की भाष (एक हाथ लंबा, एक हाथ मोटा या चौड़ा और एक हाथ ऊँचा डेर) ।

घनवर्षः [हृन् + अच्, हनेर्षन्त्वम् दिवमव्यासस्य आक च] १ इन्द्र २ चिद्विद्या, या मदनसन् हाथो ३ पानी से भरा हुआ या बरसाने वाला बादल ।

घट्टट्ट [घर सेकम् अट्टति अतिशयति घर + अट्ट + अच्, शर० परकृपम्] अश्लक्ष, घराट, बबकी ।

घघर (वि०) [घघं + ग + क] १ अस्पष्ट, घघराट करने वाला, गगन गडद करने वाला - घघरगवा पाण्डम-नात सरित मा० ५।१०, २ कलकल ध्वनि करने वाला, (बादल की भांति) गडगड शब्द करने वाला, ३ १ अस्पष्ट कलकल ध्वनि, मन्द बड़बड़ या गरगर की ध्वनि २ कोनाहल, शोर ३ दरवाजा, डेर ४ हसी, अट्टहास ५ उल्लू ६ तुषारिनि ।

घघरा-शो [घघर + टाप्, ङोष् वा] १ घुंघरू का आभूषण की भांति काम आने २ घुंघरूओं की गंभीर ध्वनि ३ गंगा ४ एक प्रकार की बीणा ।

घघरिका [घघर + टन् + टाप्] १ आभूषण की भांति प्रदूत होन वाले पंचक २ एक प्रकार का वाद्ययंत्र । घघरितम् [घघर + इत् + लृच्] सूअर के घुरघुराने का शब्द ।

घमं [घग्नि अङ्गात्-घ् + मक् वि० घुण] १ ताप, गर्मी - हि० १।२७ २ गर्मी को षट्, निशव नि स्वाम-हर्षोऽनुकामाजनाम घमं श्रियावेधिविषोपदेष्टुम् नपु० १।५।३ ३ स्वेद, पसीना- - सि० १।५८ ४ कडाह, उबालने का पात्र । मम० अन्न सूर्यं ज० ५।१६, अन्न वर्षाऽनु अमृत्, - अमृत्स्य (नपु०) स्वेद, पसीना, म० १।३०, मा० १।३७, - अमृत्का घाम, घित, घमीरी, (वर्षे ह्यु पमोने और गर्मी में शरीर पर पैदा होने वाले छोटे-छोटे दाने), कीर्तिः सूर्यं नपु० १।१।६६, कृतिः सूर्यं-कि० ५।४१, - अमृत् (नपु०) स्वेद, पसीना सि० १।३५ ।

घम, घमन्म् [घम् + घञ्, ल्युट् वा] १ रगट, विमर २ पोमना, घृग करना ।

घम् (म्वा० ङदा०- पर०- -दमति, घस्ति, घलति) नाना, निगमना, (बहु अणुने धातु है - अद् धातु के कुछ लकारों में ही इसके रूप बनते हैं) ।

घम्वर (वि०) [घम् + म्वरच्] १ बाक, पैटू दावानको घम्वर - भाषि० १।३४ २ निगल जाने वाला, हृष्य करने वाला - सुपदसुतबमुघम्वरः शीघिरदिम वेणी० ५।३६ ।

घञ् (वि०) [घञ् + रच्] पीडाकर, क्षतिकर, ऋ १ दिन - घञो गमिष्वन्ति भविष्यन्ति मुप्रदोषम्- मुभा० २ सूर्यं महावी० ५।८, - अच् केसर, जाफरान ।

घटा, टा [घट् + अच्, श्रियया टाप्] गदने का पिछला भाग ।

घाटिक [घटा + ठक्] १ घटी बजाने वाला २ भाट या चारण ३ बल्लू का पीछा ।

घात [हृन् + घिच् + घञ्] १ प्रहार, आघात, बरौच, चोट आघात- न० ३।१३, नयनघरात गीत० १०, इषी प्रकार पारिषाण, विरोधात् भाति २ मार डालना, चोट पहुँचाना, महार करना, बध करना - विद्योऽनु मुधाव्या स लक्ष गिपुषात्कविरभूत्-उत्तर० ३।४४, पशुघात - गीत० १, घात० २।१५९, ३।२५० ३ बाण ४ घुषणफल । मम०- - अमृत्ः अमृत्स्य राशि पर स्थित चन्द्रमा, - तिथि अमृत्स्य चान्द्र दिन, मम-मम अमृत्स्य नक्षत्र, चान्द्र- अमृत्स्य दिन, - अमृत्स्य अमृत्-जाना, बधस्थान ।

घातक (वि०) [हृन् + ल्युट्] मारनेवाला, संहार करने वाला, हत्यारा, संहारक, कानिल, दम करने वाला ।

घातन (वि०) [हृन् + घिच् + ल्युट्] हत्यारा, कानिल, मम १ प्रहार करना, मार डालना, हत्या करना, बध करना, (यज्ञ में) पशु बलि देना ।

घातन् (वि०) (स्त्री०- - नी) [हृन् + घिच् + घिनि] १ प्रहार करने वाला, मारने वाला २ (पक्षियों को) पकड़ने वाला या मारने वाला ३ धिनासकारी । मम० - अमृत्स्य, - अमृत्स्यः बाध, घनेन ।

घातुक (वि०) (स्त्री०- - की) [हृन् + घिच् + उकञ्] १ मारने वाला, संहारकारी, अग्निष्टकर, चोट पहुँचाने वाला २ क्रूर, नृशंस, हिंस्र ।

घात्थ (वि०) [हृन् + घिच् + थत्] मारे जाने के बोध, बह अर्थित जिसे मार देना चाहिए ।

घार [घ् + घञ्] छिड़कना, तर करना ।

घातक [घृतेन निर्वृतं ठञ्] घों में तले हुए पूरे (विशेषतः चिनमं छिड़ होते हैं) (इन्ही को देखकर पक्षत में मूर्ख पहिनीं ने कहा था- - तिष्ठेष्वनर्था बहुलौभयन्ति) ।

घास [घम् + घञ्] १ आहार २ गोचरमूत्रि या बरमाह का घास-शासामाघात् पच० ५, वासमृष्टि परमने

दद्यात् सवस्वर तु य मन्त्रो० । सम० कुन्डम्,
-स्वामन्त्रं चरायति ।

पु (म्भा० आ०) श्वयन्, पुन०) प्रवृत्त करना, गल्ला मचाना ।

पुः | पु० किरण् | कृत्वर को मुट्टर मू ।

पुट्टः । (मुदा० पर०) पुट्टित, पुट्टित । 1 फिर प्रहारा करना, बदना लेने के लिए प्रहारा करना, मुकाबला करना
2 विगाथ करना, ॥ (म्भा० आ०) घाटन
3 वापिस आना लोटना 2 वस्तु विनिमय करना, अदला-बदली करना ।

पुट्ट, पुट्टि, टो, (म्भा०) पुट्टिक, -का | पुट्ट+अच्, टन वा, पुट्टि-टोप, कन् स्थिया टाप् वा ट्यना ।

पुष्पः । (म्भा० आ०, मुदा० पर०- घोषणे, पुष्पति, पुष्पित) मुकुटना, चक्कर खाना, लज्जना, अटेगना, ॥ (म्भा० आ०) मना, प्राण करना ।

पुष्पः [पुष्प+प] लकड़ी से पापा जाने वाला विभो; प्रकार का कीड़ा । सम० अक्षरम्- लिपि (म्भा०) लकड़ी या पुस्तक के पन्नों में कीड़ा क द्वारा बनाई हुई ग्वाएँ या कुछ कुछ अक्षरों जैसी प्रतीत होती है । ग्वाएँ दे० ग्वाय क अन्वयत ।

पुष्प, पुष्पक, पुष्पिका | पुष्प, क, पुष्प । कन्, पुष्पन टाप् इत्यच् ट्यना ।

पुष्पकः | पुष्प | उ नि० | भोग ।

पुर् (मुदा० पर०) पुर्गति, पुर्गित) 1 गहर करना, काबाहल करना, गुरांटे भरना, कुफकारना, (सूअर कुल आदि का) पुर्गुगना क क कुन न पुष्पगति-पुर्गोघारो घुरेकडकर -का० उ 2 हजबना बनना, अचकर हाना 3 दुःख में चिन्तना ।

पुर्गो पुर्गः | कि+इत् | नाघना, (विशेषकर गूअर की सुघन) पुष्पगतिपुर्गोघारो घुरेकडकर काय० उ ।

पुर्गुरी, पुर्ग इत्यभ्यन्त वृत्ति पुर्ग+पुर्गः क । 1 चोकर, चिन्तन (एक प्रकार का बाढा) 2 अर्गटे अर्गन, गुरांता, गूअर आदि जालघर के यंत्रों में निकलने वाली आवाज ।

पुर्गुर (पुर्गुर) अच् | टोप | मुअर की आवाज ।
पुल्लुकारक [पुल्लुन् इत्यभ्यन्तमारीति पुल्लुत्+आ+क+अच्] एक प्रकार का कव्चर ।

पुष्पः । (म्भा० पर०, चुरा० उअ०) घोषित घोषयति ने, पापित, पुट्ट, घोषित) 1 अट करना कालाजुल करना 2 ऊँच स्वर से बिल्लाया, मावत्रनेक ह्वा दे घोषण करना म म ग्वाएँने नाम, ग्वाएँने इति ग्वाएँनाम्, म० ६१०, घोषयन् म-मघोषान्-६३५- वीज० 2, इति घोषयतीति निर्दिश कश्चिदात्-एकान्तत् अण् द्वि० २१६६ १पु० १११०, आ- ट्यन् स्वर हे राना मावत्रनेक ह्वा से घोषणा करना १६०

३२० उद् । उच्च स्वर न घोषणा करना, माव-त्रनेक ह्वा से घोषणा करना ॥ (म्भा० आ०-१२१) मुट्टर या उअर उद्ना ।

पुष्पगम [पुष्प+गमक+पान] केशर आफगन यन म्नायो ममघघुनपान-पानाणा मुक्था विधम० १/१२१ ।

पुष्प [पुष्प+अच्] केशर का वृत्त । सम० अरि कावा ।

पुष्प (म्भा० आ०) मुदा० पर०- पुष्पन पुष्पति, पापित) उअर-उअर लुट्टना, उअर-उअर घमना, लनर कायना मुडना, हिलना, लिपटना उअरना ग्वायनामनिपदेन उअरविभ्रमाविमकपयि वृषी -ति० १०१-०, अघादीचदघाणु मट्टि० १५१-१११ मि० ११११/ अघादि ता मुअरनाम घमनाला चौर० ५, उअर-पुष्पति-न हिलना अटेगना वा लपटना नवनापरप्यायि घषयन् कु- ११६ मि० ११६, मनु० ११६० (आ नरा वि उपमय क लय जाने पर या धातु का वही अब रहन, १) ।

पुष्प (वि०) | पुष्प+अच् | हिलाने वाला, उअर-उअर घमने-फिरने वाला । सम० बाष्प वषपट्ट ।

पुष्पनम्, मा | पुष्प | स्वयं । हिलाना मुडना गपेन, चकार खाना, मुडना, घमना गौलपुणन-नलत् गान० ५, घमनामावपन-अमपारउगनाईःउच् मा० २० ।

पुष्प । (म्भा० पर०) घर्गित, पुन० छिडटना ।
॥ (नरा० उअ०) घाएपति-ने, घाएति, डिपान-रना गाला करना, लर करना, अरि । डिपना आ छिडकार करना ।

पुष्प (नरा० पर०) घमोति, पुष्प) घमकना, जलना ।

पुष्पा | पु+अच् | टाप् | दया, नरम, मुकुमारना ता विनीक्या वनितायेषु पुष्पा पथिना मह ममान राघव- १५० १५१३, १६१८, कि० १५१० 2 उअर अर्गन घिन ल्वात्र तोप पण्णटपुटे धपा य वाणावर्गिन विनेने नै० ३६६०, १६००, १५० १५६५ 3 लिटकी, निदा ।

पुष्पात् (वि०) | पुष्पा+आलुच् | सरकम दयापुण मुद्-इत्यच् ।

पुष्पि | पु, नि, नि० | 1 यमी, पुष्प 2 प्रकार का दिग्घा 3 सुयं 4 लहर (नरु०) जल । सम०- निधि मुप ।

पुष्पम [पु+अच्] 1 घी, ताया हुआ मखन - (सोपनिषोम-भाय ग्वात् घनीभूत पुत भवेत् सा०) 2 मखन 3 जल । सम०-अण-निधि (पु०) दहकती ६ पाण, आहुति (म्भा०) घी की आहुति, आहु

मन्थ नामक वृक्षाविष्टेर - उच्यते 'षो का ममुद' सात ममुदा में से एक, सोमय घी से युक्त उबले हुए दालन, कुन्दा घी की नदी, वीथिलि अमि, -आरा घी की अविच्छिन्न धारा, घृत, -अरः एक प्रकार की मिठाई, लेखनी घी का चमच।

पूताघी [पूत + अच् + घी] 1 रात 2 मन्थनी 3 एक अण्डा (इष्ट के स्वयं की मूत्र्य अण्डागा) निम्नांकित है पूताघी मेनका रम्भा उषधी च नवीनीयता, मुकेयी मञ्जुघोषाया कथ्यतेऽनन्तरयो ४३] 1 मम० मर्मसंभवा वडो उलाययो ।

पूष् (भा० पर० घयति, घृष्ट) 1 ग्यतना, घियना अत्रापि नरकनककुम्हकृष्टमात्रम् बीर० ११, पथ० ११४४ 2 कुन्दा करना, पणिकून करना (माजना), यशदाना 3 कुचलना, घीमना, धृग करना हीयस्य ननु मन्थयोगमभवने घृष्ट न कि चन्दायम् पथ० ३११७५ 4 हाड करना, प्रतिदन्धी होना (जैसा कि मधु' में) उच्च, नृच्यता, वृशार्थगमिषदृष्टपादपोडम् मरी-सिनाम रघु० १३१८८, सधु प्रतिदन्दिता करना, दाहादायी करना, प्रतिस्पर्धी करना स प्रयोगनिपुणै पञ्चानभि मज्जयथं यत् द्विकनविद्यो रघु० १९१३६ 2 ग्यतना, नृच्यता ।

पूष्ति [पू + कित् + भूज, स्त्रो०] 1 घीमना, चुरा करना, पृच्यता 2 होनाशा प्रतिदन्दिता, प्रतियोगिता ।

घोट घोटक [घृ + अच्, घृत् + वा] घाडा। सप० अत्रि भेमा ।

घोटी घोटीका [घाट + टी, घृ + घृत् + टाप्, दावम्] घाटी, माता-ग अथ आटाकनेः कृ करिघोटी पदाति-रपि घाटिमुनि सिनिभूजाम अथ० ५५ ।

घोण (ज) स [घानय, घ्रा०] एक प्रकार रोगने बाला जन्तु ।

घोषा [घृ + अच् + टाप्] 1 नाक पोषोन्नत मुखम् मन्थ० ११६६ 2 घोंडे की गठना, (भूजर् की) भूजन रूंगदमालावोरघोषेने सा० ७८ ।

घोषिन् (घ०) [घोषा + इति] भूजर् ।

घोष्ठा [घृ + टाप्] उन्माद का वृक्ष ।

घोर (वि०) [घृ + अच्] 1 भयकर, डरावना, भोग्य, भयानक - विनापायकता पदचदुर्बलथं विकृतेति नाम् रघु० १२१३९, तर्किक कर्माणि घोरि मां निया-जयति वेजय महा०, घोर लोके दिनतमपद्य - उरु० ७१८, मनु० ११० १२०५४ 2 श्लि, प्रचक्र, -र. शिव, हा रात, -रम् 1 सन्धाय, पोषयता 2 श्लि मम० प्राकृति, वशन (वि०) देखने में उगावना, भयकर विर गाल, घुष्यम् कामा, -रातल, रातिन्, -शाल, वासिन् (घ०) गौरव, क्यः शिव का विशेषण ।

घोत, लम् [घृ + घञ, ग्य ल] मरुटा, घुत्ना हुम्हा वडो तिममे घानी न त्रो (मनु म्देऽमज्जय मयित घाल-मचयने मुकु०)

घोषः [घृ + घञ] 1 कोनाहल, तन्ना, रवामा- म घापी घाणंगटाणा हुट्टयानि व्यदागम्पु भग० १११९, २यो प्रकार रथ, नृष, धाम् आदि 2 वादना की मन्थ स्त्रिययमशीघारम् मेघ० ६४ 3 घायता 4 अफराह, अनयुनि 5 ग्याता हेपङ्गुबीनमाथाय घायवदानुपस्थितान् रघु० ११६५ 6 श्रापडो, ग्याता की कचो- मङ्गाया घोष काव्य० २, घोषादातोय मन्थ० ७ 7 (व्या० म) घायव्यजनों के उच्यारग म प्रयुक्त घोषयन्ति 8 काव्यम्, मम् कामा ।

घोषणम् [घृ + घृत् + टाप्] प्रन्धान, प्रकथन, उच्च म्त्र मे बोधन, मार्तत्रयिक एतान- व्यापानी ज्य-घावगादिपु बलादम्भद्वयाना कून मृष्टा० ३१२६, रघु० १२१७२ ।

घोषिष्णु [घृ + गिष् + इन्त्] 1 द्विदोषयो, घाट, तरकाग 2 श्राद्धम् 3 कायल ।

घ्न (वि०) (स्त्री०) स्त्री [कल मयान के अन्त में प्रयोग] [हृ + क, स्त्रिया औन्] वध करने वाला विनाशक, हूट करने वाला, विक्रमिक श्राद्धोपन, बालघ्न, बातेघ्न, पिताघ्न, वधिका करने वाला, हूर करने वाला, घुष्पघ्न, धर्मघ्न आदि ।

घ्रा (भा० पर० विप्रति, घ्रात - घ्राय) 1 मुँबना, पना नगाना लूष का प्रत्यक्ष ज्ञान करना स्पशन्मि गजो इति विप्रान्मि भूजङ्गन - हि० ३१४४, शामि० ११९९, कुवन करना घ्रे० - (घ्रायति) मूषवामा-भट्टि० १५१०९, (अथ, आ, उर, वि, मम् आदि उपसर्ग लगने पर भी इन घातु के - रों में विशेष अन्तर नहीं आता मन्थमाघ्राय बाध्यां मेघ० २१, आशोदमुप-विघ्राता रघु० १४४३, वै० मट्टि० २१०१ १६१२०, रघु० ३३२, १३१७०, मनु० ४१२०९ बी) ।

घ्राण (भू० क० कु०) [घ्रा + ण] 1 मूषा - मम् मूषने की क्रिया, घ्राणन सुकरो इति मनु० ३१२४१ 2 मघ, व 3 नाक - बुद्धोदिकायि चतुःप्राणघ्राणरघनाव-नामयानि सा० का० २६, ऋ० ६१२०, मनु० ५१ १२५५। मम० - इति मूष मूषने की इष्टिय, नाक नामा-घ्रातिं घ्रायम् - तर्क स०, चक्षुम् (वि०) 'ओ शीतो का काम नाक से लेता है अर्थात् अंधा (जो मूष कर अपने मार्ग का ज्ञान प्राप्त करता है), सर्वेष (वि०) नाक को सुहावन, या मुषकर मूषावदार, मुषमूषुक (... मम्) मूषु, मुषाय । घ्रातिः (स्त्री०) [घ्रा + क्तिन्] मूषण की क्रिया घ्राति-प्रयनचयो - मनु० १११६८ 2 नाक ।

कः क्व (वि) - 1-7 1 चन्द्रमा 2 कडुआ 3 चार (अथवा) निम्नांकित अर्थों का बलवान् वाक्ता अथवा - 1 मवाहन (आर, भो, तथा, इच्छे अन्वित्रिय) - क्व या उक्तियां कां आशने के लिए प्रयुक्त किया जाता है, (इन अर्थ में यह उक्त प्रत्येक शब्द या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है जिन निम्नांता है या इन प्रकार विभे हुए अन्वित्रिय शब्द या उक्ति के पश्चात् रक्ता जाता है, परन्तु यह वाचक के आशय में कभी प्रयुक्त नहीं किया जाना है) मनां निष्ठास्य भ्रमणि च किमप्यास्ति किं च मां ११३१, मां मुमुक्षुपत्नी च - रघु० १५७, मनु० १६६, ३५ कुल्ल कात्यायनयना नवेन मुमुक्षु नैर्नविनयप्रधाने - रघु० १७९, मनु० ११०५, ३११६ 2 विद्योन्नत (परन्तु तथापि, ता भी) - जलनिर्दमार्थमायं नृगतिं च यहु - ज० ११६ 3 निन्दय, निवारण (निन्दयेह, निन्दय ही, ठीक, बिलकुल, सर्वथा) अतीत पश्चात् तब च यहिमा बाह्यमसमाया यण०, ते तु यावत् एवासी तावत्तव दग्धे मने रघु० १५६५ 4 जनें (वि - वेत्) अविभु वेद्यते मृत हनु में मदन श्रुत् - मत्ता०, लाभयचाम्नि (अस्ति वेत्) स्पृष्टेन किं मर्ते २१६५, अने० पा० 5 बहु प्राय पादपुत्रि के लिए भी प्रयुक्त जाता है भीम पार्वत्येव च - १०० (कीर्तिका उर्युक्त अर्थों के साथ 'च' के निम्नांकित अर्थ और बलवान् है जो कि मवाहन या समुच्चय के सामान्य अर्थों के अन्वय में है - अत्राचय - अर्थात् समुच्चय तव्य का किंसां योग नख्य मे मिलाना - भी मिलामट वा चानय, २० अत्राचय 2 ममाहार अर्थात् समुच्चयार्थक मवाच यथा पाणी न पदो न पाणिपादय 3 इतरैतरांग अर्थात् पारस्परिक संयोग - यथा प्लक्षारव स्वशापवच प्लक्षनवायो 4 समुच्चय - अर्थात् सब मिलकर यथा पचति च पठति च), दो उक्तियो के साथ च की कारण प्राप्ति होती है 1 एक और दूसरी और 'अर्थात् - तथापि' अर्थ विशेष का प्रकट करने के लिए न मुमुक्षु मकलेदुमुक्षु च मा किन्दि वेदमरङ्ग विवेचिदम विक्रम० २१९, ४३, रघु० १६१० या 2 दो वाक्यों का एक साथ होना मा अटवर्जित पटना की प्रकट करने के लिए (यथाहो वाही) ते च प्रमुक्षुन्वत् उद्धे चतिसुख्य - रघु० १०६, ३६०, कु० ३५८, ६६, म० ६१७, मा० १३९।

चर (भा० उ०) चरति ते, चरति 1 तप्त होता, सन्नुष्ट होता 2 शक्तिय का, मुकुटा का 3 चरति (अ०) चर० (विगत अ०) चरामि स्ने, चरामि 1 चमकना, उज्वल होना यण्यचरि

चरामि बालनलिनश्रीवाचन छात्रवन् - गीत० १०, चरामन चारवन् चरवणा गी० ११८, भट्टि० ३१३ 2 (आय०) चरत होता, मन्त्र होता चिकन्ति क्षेमदाभातुर्काश्रयाय तस्मिन् कुम्भपचकासते किं ११३ ३ चराना, प्रकाशित चरमा वि० ३५, वि० चमकना, उज्वल होना।

चक्रि (वि०) चरः क, इर के बाग्य, 1 चरगता हुआ, काना हुआ, भव, पाचय - येष० २७ 2 उगया हुआ, प्रकमिच, मोचका व्याधातुगारचक्रिता हस्तिवो यानि मच्छ० ११७ अम ६६ यष० १३ 3 चरभोग भोग, ममक - चक्रिचक्रितममक विद्या० गान० २, धीमन्मचक्रितध्वरा (विद्या) रघु० १०१७, तम् (अथवा) भय म, मोचका होकर, सन्नत होकर, विनय के साथ चक्रितमूर्ति नयापि पाठ्यमय मालवि० १११, ममचक्रितम गान० ५, जा० ६६।

चक्रो (च०) चरन् विद्याविषय, गीतर् को जानि नं पत्नी (इति है कि चन्द्रमा को किमो ही इमहा आहार है) - जलान्ना (पालमदालमेन वपुषा मन्नाम्यकार्य - मना विद्वान्, १११, उर्युक्तकाराशि विमोक्षयति रघु० ६५९, ३७५, रघु० चक्रोचक्रे नव चरत - चन्द्रमा गचयति लावनचक्राम् गान० १०।

चक्रम 'किमेत अनेन, कृ पाशव च नि० द्विचम तागा०, गादी का पहिरा चक्रान्त्रिचक्रते दुश्मनि च मुवाचि च शि० ११७ 2 कुप्टार का चक्र 3 एक तालन बोल प्रथ चक्र (शिल्प वा) 4 तेल घर्तने का कान्ति 5 चक्र, मण्डल कलापचक्रम् निवेशनानम रघु० २१६ 6 दल समुच्चय, ममक वि० २०१६ 7 गण्ड, गण्डालिय 8 शान, जिला, ग्राम, ममक 9 चक्राकार मैनिक व्युष्ट 10 देह के भीतर के पदचक्र, मनाधार आदि 11 कालचक्र, अर्थ ममक 12 त्रिजि 13 मना, ममक 14 चक्र का अर्थात् या अनुभाग 15 अक्षर 16 नदी का मोड़, - कः 1 हल चक्रा 2 ममक, दल, अर्थ। सम० - अङ्गः 1 देशी गठन वाग ह्रम 2 गाडो 3 चक्रवा, अह 1 वाच्येय, मनेरा 2 दुष्ट, मने, ठम 3 मण्डमडा दानव, आकार - आकृति (वि०) चक्राकार माल, आदय विष्णु का विशेषण, आर्त भवर् गन्तो वा चक्राकार गति, - आङ्गः आङ्ग्य चरता - चक्राङ्ग शनकुम्भटम् - मनु० ५। १०, ईश्वर 1 'चक्रशमी' विष्णु का नाम 2 त्रिने का सर्वोच्च अधिकांश, उपशोभिन् (पु०) तेजी, कारकम् 1 नामन, 2 एक प्रकार का मुवाच श्रम, मच्छु वायुवम नक्षिा, गतिः (स्त्री०) चक्र।

कार पति, मोलाई में भूमय, - कुम्हः खलीक कुम्ह, - प्रहसम्, - की (स्त्री०) कुम्हियाचोर, चरकीडा, सार्ड, - चर (वि०) वृत्त में प्रथमे वाला, - कुम्हान्धिः मुकुट में लगी सोलसधि, - बीककः, - बीकिय् (पु०) कुम्हार, - तीर्थेन् - एक पुत्र स्थान का नाम, - चम्पुः सुदूर, - चर 1 विष्णु का विशेषण चक्रवर्तनमयः - रघु० १६।५५ 2 प्रभु, प्रालय का राज्य पाक या मालक 3 शीघ्र का कलावाच या बाघोत्तर, - चारा पहिर का घेरा - भाषि पहिरा का नाल, - नालम् (पु०) 1 चक्रवा 2 कोहो को मासिक धाम, - चक्रक 1 दल का नेता 2 एक प्रकार का सुवच-द्रव्य, - लेखि पहिर को परिधि या घेरा तीर्थेन्चक्रयुर्परि च दशा चक्रनेत्रिक्रमण मेघ० १०९, - शाभि विष्णु का विशेषण, - पाव, - पावक 1 गाड़ी 2 हाथी, - चक्र 1 राज्यपाल 2 सेना के एक प्रकार का अधिकारी 3 जितिव, - चक्रम्, चक्रवत् मूर्ध, - बालः - क, - बालः - लम्, - डम् 1 वृत्त, मन्त्र 2 तथह, वध, समुच्चय, रागि - कैव्यचक्रवालयम् - भर्तु० २।७४ 3 जितिव, (क) 1 पुराणों में वर्णित एक पर्वत-शृङ्खला जो भूमण्डल को दौंवार को भूमि घेरे हुए तथा प्रकाश य अवकार को शोभा समझा जात है 2 चक्रवा, - भूत् (पु०) 1 चक्रवा 2 विष्णु का नाम, - भेदिवी रात, - चक्र, - चक्रि (स्त्री०) लगद सान आगेय्य चक्रभ्रमिन्पुष्पलेजान्पुष्पदेव यत्नोस्त्विक्रिन् विभक्ति रघु० ६।३०, अश्वत्थिन् (पु०) सार्ध को एक जाति, - मुषः सुदूर, यानम् पहिर से चकने वाला बाहन, रवः सुदूर, - बर्तित् (पु०) 1 नम्राट्, चक्रवर्ती राजा, ससार का प्रभु, समुद्र तक फैले राज्य का स्वामी (आसमुद्रतिलनीय अमर०) पुत्रमेव गुणयैत चक्रवर्तिनमाप्नुहि - शं० १।१२, तब तन्वि कुचावेतो नियत चक्रवर्तिनी, आसमुद्रतिलनीयोऽपि भवान् वन करप्रद - उ. कुट, (वही 'चक्रवर्तिन्' शब्द में श्लेष है, वही दूसरा अर्थ है 'आकार प्रकार में चक्रवर्ते मिलता जुलता' गोल'), - बाल (स्त्री० - की) चक्रवा - दूरीयूते मयि सहचरे चक्रवाकोमि-सैकम् - मेघ० ८३, - बाटः 1 सीमा, इद 2 दीबट 3 कार्य में प्रयुक्त होनेवा, धातु, चक्रवर्त, नृपान्त-जोषो, बुद्धि-ग्यान पर आभाव, चक्रवृद्धि व्याज मनु० ८। १५३, १५६, - म्बुहःसैवदल का मडलाकार स्थापना, - सलम् राय, (क) चक्रवा, - साह्वयः चक्रवा, - हस्तः विष्णु का विशेषण ।

चक्रक (वि०) [चक्रयिञ् क्यप्ति- क् + क] पहिर के आकार का, मडलाकार, कः (तर्क०) मडल में तर्क करना ।

चक्रवत् (वि०) [चक्र + वत्, मय्य व] 1. पहियों

वाला 2 मडलाकार, (पु०) 1 तेजी 2 प्रभु, सभ्राट् 3 विष्णु का नाम ।

चक्रकी, चक्रकीर्ण [व० सं०] हस्तिनी ।

चक्रिण [चक्र + णिन् - टाप् 1 डेर, दल 2 दुरभिसंधि 3. मुत्तल ।

चक्रिन् (पु०) [चक्र + इति] 1 विष्णु का विशेषण - शि० १३।२० 2 कुम्हार 3 तेजी 4 सभ्राट्, चक्रवर्ती राजा, निरकुल शासक 5 राज्यपाल 6 यथा 7 चक्रवा 8 समुच्चय, मुखावर 9 तीप १० राजा 11 एक प्रकार का कलावाच या बाघोत्तर ।

चक्रिय (वि०) [चक्र + य] गाड़ी में बैठ कर जाने वाला, यात्रा करने वाला ।

चक्रियत् (पु०) [चक्र + मत्तुप्, मय्य व, जि० चक्रय्य चक्रोवाच] यथा - शि० ५।८ ।

चक्र (अटा० आ० - चष्टे) [आर्यधानुक लकारों में अनियमित] 1 देवता, पर्यवेक्षणा करना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2 बोलना, करना, बतलाना (सं० के साथ), आ - , बोलना, घोषणा करना, पर्जन्य करना, बसान करना, बतलाना, पढाना, नमाधार देना (सं० के साथ) - रघु० ५।१९, १२।५६, मनु० ४।५९, ८०, इत्याख्यानविद आचक्षते मां० २।२, कडना, संबोधित करना भाषि० १।६३ 3 नाम केना, पुकारना, चरि , 1 घोषणा करना, बर्णन करना 2 गिनना 3 उल्लेख करना 4 नागकेना, पुकारना - वेदप्रदान-दाचार्य पितर परिचक्षते मनु० २।१७१, भग० ३।३३, १७, प्र . 1 करना, बोलना, नियम बनाना - कडनायु चिन्तितसतन इहति प्रगमिति प्रचक्षते - रघु० ८।८६ 2 नाम केना, पुकारना योग्याराम कार-विता त क्षेपत्र प्रचक्षते मनु० १२।१२, २।१७, ३।२८, १०।१६, प्राया - त्याग देना, छोड़ देना, पीछे हटा देना, व्या - , व्याख्या करना, टोका टिप्पण करना ।

चक्षत् (पु०) [चक्ष + अति] 1 अध्यापक, धर्म-विज्ञान का शिक्षक, दोषाग्रह, आध्यात्मिक गुरु 2 वृहस्पति का विशेषण ।

चक्षुष्य (वि०) [चक्षुर्वे हित स्यात् चक्षुन् + यन्] 1 मनोहर, शिवदर्शन, नुहावना, सुन्दर 2 औषधी के लिए हितकर, व्या शिवदर्शन या सुन्दरी स्त्री ।

चक्षुम् (नपु०) [चक्ष + उत्ति] 1 शीघ्र, दृश्य तमसि न पश्यति दीपेन विना सचक्षुरपि - मात्वि० १।९, कृष्ण-सारे ददचक्षुन् शं० १।६, तु० प्राणचक्षुम्, ज्ञानचक्षुम्, नवचक्षुम्, चारचक्षुम् आदि शब्दों को 2 दृष्टि, दर्शन, नजर, देखने की शक्ति - चक्षुरायुष्येव प्रहो-यते मनु० ४।४१, ४२। सम० - सोषार (वि०) दृश्य, दृष्टिचोचर, दृष्टि-व्यरास के अन्तर्गत होने वाला,

—आयु, दूर्य—ईश्वर: त्रिषु का एकरूप, —सुंदा सुयां का ही एक रूप (= शान्दा), —सुन: बन्वली शान्दवर
—विष्णु (वि०) तीक्ष्ण शक्ति का, अपनी शक्ति में भीषण ।

चषा,—डी (स्त्री०) 1 दुर्गा का विशेषण 2 आशिसपुत्र, या कौपी स्त्री—चषी चष्य हनुमन्मुखाता माम्—मालवि० ३।२१, चषी नामचष्य पापवसितं मातामुतापेव सा—विष्णु० ४।२८, रघु० ११।५, मेघ० १०५। सम०—ईश्वर:—वसि: त्रिषु का विशेषण—पुष्य यामा-स्त्रिभुवनपुरोर्ध्वं चषीश्वरस्य—मेघ० ३३।

चष्यात [चष्य+अत्+अप्] सुयचयुक्त करवीर ।
चष्यातक,—कम् [चष्य+अत्+अप्] लक्ष्मा, साया ।

चष्याल (वि०) [चष्य+आलच्] दुष्कर्मा, क्रूर कर्मा, तु० कर्मचाडाल,—अ 1 अत्यंत नोष और मृजित वर्णसंकर आति जिसको उत्पत्ति धृष्ट पिता व ब्राह्मण माता से हुई मानी जाती है 2 इस जाति का पुरुष, आतिबहिष्कृत—चष्याल कियं द्विजातिरथवा—भर्तृ० ३।५६, मनु० ५।१३१, १०।१२, १६, ११।१७५। सम०—अस्त्रको चष्याल की बीणा, एक सामान्य या देहाती बीणा ।

चष्यालिका [चष्याल+ठन्+टाप्] चष्याल की बीणा ।
चष्यिका [चषी+कन्+टाप्, ह्रस्व] दुर्गा देवी ।

चष्यिभन् (पु०) [चष्य+इभ्यिच्] 1 आवेश, उग्रता, तीक्ष्णता, क्रोध, 2 गर्मी, ताप ।

चष्यल [चष+अल्+च्] नाई ।

चतुर (सं० वि०) [चत्+उरन्] (नित्य बहुवचनात्, पु० चत्वार, स्त्री० चतस्र, नपु० चत्वारि) चार—चत्वारो वयमत्विज—वेणी० १।२२, चतस्रोऽस्य आत्य कौमार यौवन कार्यं केति, चत्वारिभ्युक्ता बयो-ज्य पादा आदि—क्षेपान् भासान् गमय चतुरो लोचने मीलवित्वा—मेघ० ११०, समाप्त में चतुर का र् विसर्ग बन जाता है और जिसमें कई स्थानो पर स् या च् में परिणत हो जाता है अथवा अपरिचित रहता है । नम०—अथ चतुर्यं भाग, अङ्क (वि०) चार मत्स्यीय, चार दल युक्त, (—नाम्) 1 हाथी, गध, घोड़े और पदाति इन चार जनों से सुसज्जित सेना—एको हि लज्जवरो नलिनीदलस्यो दृष्ट करोति चतुरङ्गन-लिपयस्यम् मृगाय० ४, चतुरङ्गको राट जयती वसमानयेत्, अह पञ्च-ङ्गबलवानाकास वसमानये—तुमा० 2 एक प्रकार को शतरज, —अस्त्र (वि०) चारो और सीमायुक्त भूमा चिपय चतुरस्रमहीसपत्नी—श० ५।११,—अस्त्रा पुत्री,—अश्वीत (वि०) चौरसिद्धि,—अश्वीति (वि० स्त्री०) चौरासी,—अथ, —अस्त्र (वि०) (अभि,—सि के स्थान पर) 1 चार किनारो वाला, चतुष्कोण—रघु० ६।१० 2 सममित, निर्वासित

या सुन्दर, सुशील—इषुय उत्साहपुरुषसोभि मनु, —कु० १।३२, (अ,—अः) वसिष्ठार,—अङ्क चार दिन का समय—अस्त्र ब्रह्मा का विशेषण—इतरता-हापसादानि यथेच्छया वितर तानिहृते चतुरात्मन्—उद्भट, —आत्मन् ब्राह्मण के शक्ति शक्ति की चार अस्-स्वारि,—उत्तर (वि०) चार बड़ा कर,—अर्ध (चतु-ष्कर्ध) (वि०) केवल दो व्यक्तियों द्वारा ही मुना गया,—शेष (चतुष्कोण) (वि०) वर्ग, चार कोनों वाला, (अः) वर्ग, चतुर्भुज, चार पाखें वाली आकृति—यति 1 परमात्मा 2 कछुवा,—अथ (वि०) चार-गुणा, चौहुरा, चौलडा,—अर्थात्सत् (चतुरस्रत्वा-रिस्तु) (वि०) बहालीस, 'पिच्छ बहालितर्षा,—अस्त (चतुर्भुज) (वि०) चौरासकेवां या चौरासके चोष कर—चतुर्भुजं छतम्—एक ही चौरासके,—उत् इन के हाथो ऐरावत का विशेषण,—अथ (वि०) चौबहल—अथ (वि०) चौहल, 'एलापि (सं० व०) समुद्र मन्थन के परिणामस्वरूप समुद्र से प्राप्त १४ दल (इनके नाम निम्नांकित संकल्पक में लिनाये गये हैं)—लक्ष्मी कीस्तुम्पारिवातकचतुरा पन्थन्तरिचष्यमा गाव कामदुषा सुरेश्वरसो रम्भादिदेवाङ्गना, अथ-सप्तमसो विष हरिचतु गच्छोऽमृत शाम्भवे रत्नाग्रीह चतुर्दश प्रतिदिन कुर्वन् सदा मङ्गलम्, 'विद्या: (सं० व०) चौहल विचार (ने यह है—अवगमिभिना वदा परमेशान् पुराणकम्, मोमासा तर्कमयं च एता विद्या-सकुरुर्गम्),—चषी चाटपथ का चौबहल दिन,—विष्णु सामूहिक रूप से चारो दिशाएँ,—विष्णु (अथ०) चारो दिशाओं में, अथ दिशाओं में,—शेष,—सम्पु राजकीय पालकी,—द्वारम् 1 चारो दिशाओं में चार द्वारो वाला मकान 2 सामूहिक रूप से चारों द्वार, —नचति (वि०-स्त्री०) चौरासके,—पञ्च (वि०) (चतु एव या चतुष्पथ) चार या पांच,—पञ्चाम् (स्त्री०) (चतु पञ्चामात्, चतुष्पत्+अस्य) अथवा,—अथ (चतु एव, चतुष्पथ) (अथ—जो) वह स्थान जहाँ चार सड़के मिलें, चौराहा,— मनु० ४।३९, ९।२६४, (य) ब्राह्मण,—अथ (वि०) (चतुष्पथ) 1 चार पैरो वाला 2 चार बगों वाला (च.) चौपाया (दी) चार चरण का श्लोक—पथ चतुष्पदी तथ च्च नातिरिति द्विषा—छ० १,—चषी (चतुष्पाठी) ब्राह्मणो का विद्यालय जिसमें चारो वेदो का पठन-पाठन होता हो। शक्ति, (चतुष्पाति) विष्णु का विशेषण, अथ—इ (चतुष्पात्-इ) (वि०) 1, चौपाया 2 पौष सदस्वीय या पौष भागो वाला, (पु०) 1 चौपाया 2 (विधि में) न्यायण की एक कार्यविधि (अभिधाओ की अथ पड़ताल) जिसमें चार प्रकार की प्रविध्याएँ हीं अर्थात् तर्क, पक्षसमर्थन

प्रत्यक्ष, निर्लभ, — बन्धु विष्णु की उपाधि (ह्रन्पु०) बंधु, — बन्धु चारो पुरुषाणो (धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष) की समष्टि, — बाल चौपायाय चौपाई, — बन्धु (वि०) 1. बन्धुकोष 2. चार मुखायो वाला— बन्धु ११४१, (पु०) विष्णु की उपाधि— रघु० १६१३, (सपु०) बंधु, — बन्धु चतुर्गण्य, चौपाया (आपाय सुदी सुकारयो से कालिक सुदी दशमी तक), — बन्धु (वि०) चार गृह वाला (ब) ब्रह्मा का विशेषण स्वत सर्व चतुर्मुखत्वं—रघु० १०१२२, (सम्) 1 चार गृह—कु० २११० 2 चार द्वार वाला मकान, — बन्धु चार युगो की समष्टि, — राधम् (चतुराशम् चार राशियो का समूह, — बन्धु ब्रह्मा का विशेषण, — बन्धु मानव जीवन के चार पुरुषाणो (धर्म, अर्थ काम और मोक्ष) का समूह—रघु० १०१२२, — बन्धु हिन्दुओं की चार भेषिया या जातियाँ अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र—चतुर्धर्मयो लोकाः रघु० १०१२२, — बन्धु चार वर्ष की आयु की माय, चित्त (वि०) 1 चौबीस 2 चौबीस जोड़कर जैसे कि चतुर्विधसत्त्वम्—१२४), — विशति (वि० या स्त्री०) चौबीस, — विशासिक (वि०) २४ से युक्त, — विश्व (वि०) जिसने चारो वेदो का अध्ययन किया है— विश्व (वि०) चार प्रकार का, चौही, देव (वि०) चारो वेदो से परिचित (ब) परमात्मा, — बन्धु विष्णु का नाम (हम्) आयुर्वेदविज्ञान — शास्त्रम्— शत्रु शास्त्रम्, चतुष्पात्यम्, चतु शक्ति, चतुष्पात्यो) चार मकानो का वर्ग, चारो ओर चार मकानो से घिरा हुआ चतुष्कोण, — चष्टि (वि० या स्त्री०) चौबिस (ब० व०) चौबिस कलायें, — सप्तति (वि० या स्त्री०) चौहत्तर, हाथ्य, ब (वि०) चार बर्ष की आयु का (इय मन्त्र का स्त्री-लिङ्गरूप आकाशत्व है यदि निर्जीव पदार्थो का ही उल्लेख है; और यदि सजीव जन्तुओ से अभिप्राय है तो यह सब 'ईकारान्त' बन जाय है), होयकम् चारो ऋषियो (पुत्रोहितो) का समूह।

चतुर (वि०) [चत् + उत्तर] 1 होशियार, कुशल, मेधावी, गीस्वदुद्धि—सर्वविद्या इति कथाचतुरेव दुर्ता—मुद्रा० ३१९ अथ १५४४, मृगया बहान् चतुरेव कामिनी—रघु० ११६९, १८११५ 2 फूर्तिला, दुन-गामी या तेज 3 मनोज, सुन्दर, त्रिय, सकिर न पुनरेति यत् चतुर वय रघु० ११४७, कु० ११६७, ३१५, ५१८९, — रम् 1 होशियारी, मेधाविना 2 हुसलागला।

चतुर्षु (वि०) (स्त्री०—बी) [चतुर्षु पूरण इट् षुच् च] चौपा, — गन्ध चौपाई, चौपा भाग। मम०—आश्विन ब्राह्मण के धार्मिक जीवन की चौपी अवस्था

सन्वात, जाम् (वि०) अपनी प्रजा से आय का चतुर्धातु ग्रहण करने वाला, राजा, (अर्थ मन्त्र के अक्षर पर ही चतुर्धातु लेना विहित है अन्वया प्रचलित केवल छठा भाग है)।

चतुर्षु (वि०) [चतुर्षु + कन्] चौपा, क. चौपेया अत्र (जो हर चार दिन के बाद आता है) चौपिया। चतुर्षु [चतुर्षु + ङीप्] 1 चार पक्ष का चौथा दिन 2. (ध्या० वि०) सप्रधान काङ्क। मम० इयं चतुर्षु (सपु०) विवाह के चौथे दिन किया जाने वाला मस्कार।

चतुर्षा (अव्य०) [चतुर + णा] चार प्रकार से, चारुत्था।

चतुष्क (वि०) [चतुरवचन अन्वाराज्यया मय्य वा कन्] 1 चार से युक्त 2. चार बड़ा कर द्विक विभ चतुष्क च पञ्चक च छन सप्तम् मन्० ८१४० (अर्थान् १००, १०३, १०४, या १०५ या दो से पाँच प्रतिशत का व्याज), — कम् 1 चार का समूह 2 चौपाया 3 चौकोर आयत 4 चार स्तभो पर अद्विष्ट भवन, कमरा या तुकस—कु० ५१६९, ७१९, स्त्री 1 एक चौकोर बड़ा तालाब 2 मच्छरदानी, मसहरो।

चतुष्पथ (वि०) (स्त्री० बी) [चत्वारोऽज्यया विधा-अस्य तस्य] चारगुला, चार से युक्त पुराणस्य चत्वे-सस्य चतुर्मुखमार्गानां प्रवृत्तिगमोच्छ्रयानां चरि-तार्था चतुष्टयो। कु० २११७, — यम् चार का समूह—एकैकमप्यनर्थाय किम् यत्र चतुष्टयम् हि० ५०११, कु० ७६२, भासचतुष्टयम् भोजनम्—हि० १ 2 वर्ग।

चत्वर्य [चत् + चत्वर्य] 1 चौकोर जगह या आगत 2 चौगाहा (जहाँ कई गडके मिले) स खलु श्रेष्ठि-चत्वर्ये निवसति मच्छ० २ 3 धज के लिए तैयार की गई ममनल भूमि।

चत्वारिंशत् (स्त्री०) [च-चारो दशत परिमाणस्य ब० म०, नि०] चालीस।

चत्वाल [चत् + चाल्] 1 यशस्वि मन्त्रे के लिए या आशुति देने के लिए माँग मोद कर बनाया गया हुबन-कुत्र 2 कुनधात 3 गर्भाशय।

चत् (म्भा० उभ० चर्दति—ते) कहना, प्रायश्चा करता।

चर्चिर [चत् + किरच्, नि०] 1 चन्द्रमा 2 कपूर 3 हाथो 4 साप।

चन (अव्य०) नहीं, न केवल, भी नहीं (अकेला कमी प्रयुक्त नहीं होता, बल्कि सर्वनाम 'किम्' तथा इससे व्युत्पन्न शब्दो (कन्, कथम्, क्व, कदा, कुन आदि) के साथ प्रयुक्त होकर अनिश्चयात्मक व्यर्थ को व्यक्त करता है—दे० 'किम्' के नी०) [कई विद्वांसु 'चन' को पृथक् शब्द न मान कर केवल (च) और (न) का संयोग मानते हैं]।

शब्द [च्वा० पर०—चन्द्रति, चन्द्रित] 1. चन्द्रमा, प्रखल होना, बुरा होना ।

शब्द [चन् + गिच् + अच्] 1. चन्द्रमा, कपूर ।

चन्द्रमन्, -मन् [चन् + गिच् + ल्यट्] चन्द्रं (चन्द्र का ब्रह्म, इसकी लकड़ी या इससे तैयार किया गया कोई सिद्ध पदार्थ—सुंघने और चोतलता की दृष्टि से अत्युत्तम समझा जाता है) । अन्नलायागुचन्द्रनेमसे—रघु० ८७१ मणिप्रकारां सरस च चन्द्रं सुधी प्रिये यान्ति जनस्य सेभ्यताम्—शकुन् ११२, एव च भाषते लोकचन्द्रम किंल शीतलम्, पुत्रपापस्य सत्पर्यारचन्द्र-नादतिरिच्यते—पंच० ५१२०, बिना प्रलयमन्थन चन्द्रन प्ररोहति—१४४१। सम०—अक्षत—अग्नि, मलय पर्वत, -उषकम् चन्द्रम का पानी, सुषुम् लीग, -सार अत्यत श्रेष्ठ चन्द्रन की लकड़ी ।

चन्द्रि [चन् + किरिच्] 1 हृषी 2 चन्द्रमा—अपि च भाग्यसम्भृन्निर्घण्टी बिमलशारदचन्द्रिचन्द्रिका—नामि० ११११३, मुकुन्दमूलचन्द्रिरे चिरमिद चको-रायताम्—४, १ ।

चन्द्र [चन् + गिच् + र्क्] 1 चन्द्रमा, यथा प्रह्लाद-नाम्नश्च—रघु० ४११२, हृतचन्द्रा तनसेव कीर्तुवी—८३७, न हि सहते ग्योत्सना चन्द्रचण्डालवेदमनि—हि० ११६१, मूल, 'चन्द्र' भादि; पर्यायचन्द्रेव गार्त्सियामा—कु० ७१२६ (वीराणिकमूल के लिए दे० श्लोम) 2 चन्द्र वह 3 कपूर—विक्रमनद्याधिकचन्द्र-भाग्यताबिभाजनाचक्रायणाय पाण्डुराम्—ने० ११५१ 4 मूर् पखो मे 'अक्ष' का चिह्न 5 जल 6 सीना (जब 'चन्द्र' शब्द समास के अन्त में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता है—श्रेष्ठ, प्रमुख, श्रीमान् यथा पुण्यचन्द्र, 'मनुष्यों में चन्द्रमा' अर्थात् एक श्रेष्ठ या महानुभाव व्यक्तित),—श्री 1 इलायची 2 मूला कमरा (जिस पर केवल छत ही हो) । सम०—अंशुः चन्द्रमा की किरण, अक्ष आवा चन्द्रमा, 'बृहस्पति, 'शैलिसि' 'शेखर सिव के विशेषण,—आतप 1 चांदनी 2 चंद्रोमा 3 प्रखल कक्ष (जिसकी केवल छत ही हो),—आश्वकः,—औरतः—अ—आत,—समय,—कल्प,—पुत्र द्रव्य-ग्रह,—आनन (वि०) चन्द्रमा जैसे मूल बाला (वि०) कविकेय का विशेषण,—आशीष सिव का विशेषण,—आभास 'शुद्धा चन्द्रमा' नास्तिक चन्द्रमा से मिलती जुलती माकाग में दिखाई देने वाली भाङ्गलि,—माङ्गुप कपूर,—इच्छा कमल का पीछा, कमलों का समूह, रात की झुमिनी का खिलना,—उदयः चन्द्रमा का उदय,—उषकः चन्द्रकांतमणि—कालः चन्द्रकांतमणि (चन्द्रमा के प्रभाव से कल्ले हैं इस मणि से रस भरता है) —द्रवति च हिमरसवृष्टयते चन्द्रकाल—उत्तर० १११२, सि० ४५८, अमह ५७, अर्जु० ११२१, मा०

११२४ (सं,—सम्) रात को खिलने वाला खेत कुम्भ (सम्) चन्द्रन की लकड़ी—कला चन्द्रमा की रस—राश्ट्रचन्द्रकलमिवागानचरी वैवास्तवाशास ने—भा० ५१२८,—काला 1 रात 2 चांदनी,—कालिः चांदनी (नपु०) चांदी,—अक्ष चाँदायक का अंतिम विव (अमावस्या) या नूतनचन्द्रविकस चक्र कि चन्द्रमा दिखाई नहीं देता,—भृशुम् कर्करागि, रात्रिचक्र में चाँदी रागि,—शैलः चन्द्रलोक, चन्द्रमंडल,—शैलिका चांदनी,—भृशुम् चन्द्रमा का राहुग्रस्त होना,—अश्वत्था छोटी मछली,—बृह—बृहस्पति—शैलिसि,—शेखर—शिव के विशेषण—रहस्युपात्म्यत चन्द्रचोत्—कु० ५१५८, ८५, रघु० ६१३४,—आर। (पु०, व० व०) 'चन्द्रमा की पलियाँ' २७ तलाव (पुराणों की दृष्टि से यह वृक्ष की पुत्रियाँ थी और चन्द्रमा को व्याही गई थी),—शुक्ति चन्द्रन की लकड़ी (स्त्री०) चांदनी,—अक्षम् (पु०) कपूर,—आव. चन्द्रकिरण—मेघ० ७०, मा० ३११२,—प्रभा चन्द्रमा का प्रकाश,—आक्षर 1 बड़ी इलायची 2 चांदनी,—चिन्नु अनुत्वार (०) का चिह्न—अक्षम् (नपु०) कपूर,—भाषा दक्षिणभारत की एक नदी,—अक्ष तलवार दे० चन्द्रहास,—शुक्ति(नपु०) चाँदी,—अपि चन्द्रकांत मणि,—रेखा,—लेखा चन्द्रमा को कला,—रेणु साहित्यचोर,—लोक चन्द्रमार—सोहकम्,—सोहम्,—सोहकम् चाँदी,—चंभू राजाओं का चन्द्रवध, भारत के राजवंश में दूसरी बड़ी पर्वत,—चषम (वि०) चन्द्रमा जैसे मूल बाला,—कलम् एक प्रकार की प्रतिज्ञा या तपस्या—आदायण,—आत्म 1 चाँदारा (घर में सबसे ऊपर की प्रतिक का कमरा) —रघु० १३१४, २ चांदनी,—आलिका चाँदारा,—शिक्षा चन्द्रकांतमणि—अग्नि० १११५,—सक्ष कपूर,—संभूच बुध (वा) छोटी इलायची,—आलो-ष्यम् चाद्र स्वर्ण की प्राप्ति,—हृन् (नपु०) राहु का विशेषण,—हस्त 1 चमकीली तलवार 2 रावण की तलवार—हे पाणव. किमिति चन्द्रच्छत्र चन्द्रहाम्—बालरा० ११५६, ६१ 3 केरल का एक राजा, सुधाधिक का पुत्र (यह मूलनक्षत्र में पैदा हुआ था, और इसके साथ पैर में छ अनुकियाँ थी, इसी कारण इसका पिता शत्रुओं द्वारा मारा गया और यह अनाथ और दरिद्र हो गया) । बहुत प्रयत्न करने के परचात् उसका राज्य उसे फिर मिल गया । जिस समय अश्वमेध के घोड़े के साथ धूमते हुए कृष्ण और अर्जुन दक्षिण में आये तो इसने उनसे मित्रता कर ली ।

चन्द्रक [चन् + कन्] 1 बीह 2 मोर के पत्तों में अक्ष का चिह्न 3. नाभूत 4 चन्द्रमा के आकार का दूत (यानी में तेल की बूँद गिरने से बन जाता है) ।

चन्द्रकिन् (पु०) [चन्द्रक + इनि] मोर,—वि० ३१५९ ।

अन्यन्तम् (पुं०) [अन् + ति + अन्तुन्, भावेः] शब्द-नाश-कारणस्य कृत्वापि ज्योतिष्मती अन्वयस्येव राशिः—रघु० १।२२।

अनिका [अन् + इन् + टाप्] 1 बौद्धी, ज्योत्स्ना—इत कुट्टिः का अन् अनिकाया यद्विषमप्युत्तरीकरोति—सं० ३।११६, रघु० १९।१९, कान्दके कुम्भीलकीव परिपूर्णा अनिका—मासि० ४ 2 (समाप्त के अन्त में) विस्वीकरण, प्रस्तुत विषय पर प्रकाश डालना। अन्तकारणिका, काव्यचरिका—पुं०—कीर्त्तनी 3. अन्तयाह 4. बड़ी इलायची 5 अन्तयाया नामक नदी 6 अन्तिका कला। सम०—अन्तुजम् चन्दोदय होने पर शिल्पके शाला कुम्भ—श्रावः अन्तकातमणि, —वामिम् (पुं०) अन्तोर पत्नी।

अनिका: [अन् + इलच्] 1 शिव का विशेषण।

अन् i (म्बा० पर०—अपति) सोलना देना, डाढस देना।

ii (बुरा० उभ०—अपयति—ते) पीलना, बुरा करना, सोलना।

अन्तः—अन्त

अन्त (वि०) [अन् + क्त, उपधोकात्साकार] 1 हिलने-डुलने वाला, कपमान, बरबराने वाला—कुल्याम्भोमि-पञ्चमचरणी—शक्तिनी शोतमुला—सं० १।१५, अन्तला-यतासी—चौर० ८ 2 अन्तर, अन्त, अन्तित, शोलायमान—सां० ३।११, अन्तमति आदि 3 अन्तर, अन्तित, अन्तिक—नकिनीदलगतवलयमतितरल तटउज्जी-वितमतिमायअन्तम्—मोह० ५ 4 फूर्तिला, अन्त, अन्त—(गतम्) शैवाचारान्तममयोवन्ते—का० १।१८ 5 विचारान्त, अन्तिकी—पुं० बाण, -कः 1 मछली 2. पारा 3 चातक पत्ती 4 शय 5 सुगन्ध द्रव्य।

अन्तला [अन्त + टाप्] 1 बिजली—कुलककुमुम् अन्तला-सुवस रतिपतिमृत्कामने—गीत० ७ 2 अन्तिकारिणी स्त्री 3 मदिता 4 अन्त की देवी लक्ष्मी 5 जिह्वा। सम०—अन्तः अन्त तथा अन्तिकरमन स्त्री। सि० ९।१६।

अन्तः [अन् + इत् + अच्] 1 अन्त 2 बाटा।

अन्तिका, **अन्तिकिका** [अन्त + टाप्, अन्त + कन् + टाप्, इलच्म्] बाटा—अन्तिकोताध्याय शिष्याय अन्तिकिका ददाति—महा०।

अन् (म्बा० पर०—अपति, चान्त) 1 पीना, आचमन करना, बडा जाना,—अचमन अन् माथोकम्—अट्टि० १।५।४ 2 जाना, जा—(आ—आपति) 1 आचमन करना, एक साल में पी जाना, बाटना नाचने दिनचरिण आदि शारंगेन—कि० ७।१४, भासि० ४।३८, उभर० ४।१ 2 बाट लेना, पी जाना, सोल लेना—आचामति स्वेदतवाच्यमे ते—रघु० १३।०, ९।६८।

अन्तकारणम्, **अन्तकारः**, **अन्तकृतिः** (स्त्री०) 1. विस्मय, आश्चर्य 2. शोक, तलाशा 3. काव्य लेखन (विशेषी काव्यरस की अनुभूति होती है)—वेतलचमकतिपयं अन्तिकेन रम्या—भासि० ३।१, तदपेक्षया वाच्यस्वीय अन्तकारित्वात्—काव्य० १।

अन्तरः [अन् + अन्तरच्] एक प्रकार का हरिण,—रघु०—अन्तरी (शाय. अन्तर अन्त की वृद्ध से बनी),—री, अन्तर की माया—यत्वार्यन्त गिरिराजशब्द कुर्वन्ति अन्त-अन्तरेणमयं कुं० १।१, ४८, सि० ४।६०, मेघ० ५३। सम०—अन्तुजम् अन्तर की पूछ जो पत्ने का काय देती है, (—अन्तः) गिलहरी।

अन्तरिकः [अन्तर + इन्] कोविदार मूढ, कचनार का पेड़।

अन्तला,—अन्त [अन्तयित्वन् अन् + अन्तुन् टाठ०] सोयपात्र करने का लकड़ी का अन्तके के आकार का अन्त पात्र,—याज्ञ० १।१८३, (अन्तसी भी)।

अन्त (स्त्री०) [अन् + क्त] सेना—अन्तिकेता पाण्डुपुत्राधामा-धार्य महती अन्तम्—अग० १।३, बासवीना अन्तान्—मेघ० ४३, गजवती अन्तिकेताया अन्तम्—रघु० ९।१० 2 सेना का एक भाग जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार तथा ३६५५ पैदाति हो। सम०—अन्तः सैनिक, योद्धा,—नाच०, पः,—पति सेनापति, कमांडर, सेना नायक—रघु० १३।७४,—हृदः शिव की उपाधि।

अन्तक [अन् + क्त, उलच्] एक प्रकार का हरिण—अन्तकत पाचममृशचमंशा—सि० १।८।

अन्तम् (बुरा० उभ०—अपयति—ते) जाना, चलना-फिरना।

अन्तक [अन्त + क्त] 1 अन्त नामक पीथा जिसके पीले, सुगन्धकृत फूल लगते हैं 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य,—अन्त इम अन्त का फूल—अन्तिकेता कनकअन्तक-शामगीरीम्—चौर० १।१ सम०—अन्तला अन्तकाली, लिपियों का एक आभूषण जो नले में पहना जाता है 2 अन्त के फूलों की माला 3 एक प्रकार का छद, दे० परिशिष्ट,— अन्तला केले की एक जाति।

अन्तकाम [अन्तकेन पतसावयवविशेषेण अलति, अन्तक + अन्त + उण्] कटहल का पेड़।

अन्तकावती, **अन्त**, **अन्तवती** [अन्तक + अन्तु + क्रीप्, क्वत् दीर्घच्, अन्त + अच् + टाप्, अन्त + अन्तु + क्रीप् वल्] तथा के किनारे एक प्राचीन नगर, अजमेर की राजधानी, वर्तमान भागलपुर।

अन्तला—अन्तकाल।

अन्त (स्त्री०) [अन्त + क्त] एक प्रकार का काव्य जो गद्य और पद्य दोनों रचनाओं में एकल होता है तथा जिसमें एक ही विषय की चर्चा होती है—अन्तकामय

काव्यं चन्द्ररिपमिनीयते—शा० ४० ५६९, उदा०
भोजनम्, नक्षत्रं भोजं भास्त्रं च्छु आदि ।

चञ्चु (श्चञ्चु) आ०—चयते) किसी जगह जाना, हिलना-
चलना ।

चव [चि+ञ्च] १ संघात, संघर्ष, समुच्चय, डेर, राशि
—चवस्तिवचामित्यवधारितं पुरा—शिव० ११३, मुदा
चव—उत्तर० २१९, मिट्टी का डेर, कचारा चव
—मनु० ११५, बालों का मोही (मुच्छा), इसी प्रकार
चमरोच्य—शिव० ५१६, कुसुमचय तुषारचय आदि
२ किसी भवन की नीच की मिट्टी का टीका ३ किले
की खाई की मिट्टी का टीका ४ तुर्ग्राचीर ५ किले
का द्वार ६ तिनाई, चौकी ७ चबनी का समूह, विद्यालय
मयन ८ लकड़ियों का चट्टा ।

चवनम् [चि+स्वट्] १ चुनना, बीनना (फूल आदि का)
२ डेर लगाना, चट्टा लगाना ।

चर् (श्चञ्चु) पर०—चरति, चरित्) १ चलना, घूमना, इधर-
उधर जाना, चक्कर काटना, भ्रमण करना—नष्टा-
शक्यं हरिणमित्येवो मन्व्यमन्वं चरति—शा० ११५,
(यहाँ 'चर्' का अर्थ 'बास करना' भी है)—इन्द्रियाणां
हि चरताम्—अथ० २१६७, कवचैश्चरतांस्व रामस्वैश्च
नरोधरा—रघु० १२५९, मनु० २१२३, ११६८,
८१२३६, ११३०६, १०१५६ २ अन्वेषण करना, अनु-
ष्ठान करना, पर्यवेक्षण करना—चरत किञ्च सुखं
तत्र—रघु० ८१७९, शां० ११६०, मनु० ३१३०,
३ करना, व्यवहार करना, आचरण करना (प्रायः
'अधि' के साथ)—चरन्तीना च कामत—मनु० ५१९०
११२८७, आचरणस्यैवमूलेनू अचरयेत्—महा०, तस्यां च
साधु नाचर—रघु० ११७६, (यहाँ पर वात् 'आचर'
भी हो सकती है) ४ बास करना—सुचिरं हि चरन्
मास्य—हि० ३१९ ५ खाना, उद्योग करना ६ काम
में लगाना, ध्वस्त होना ७ जोना, चरने रहना, किसी
न किसी अवस्था में विद्यमान रहना । प्रेर०—चारयति
१ चलाना, हिलाना—चुलाना २ भोजना, निवेश देना,
हिलाना ३ डूर करना ४ अनुष्ठान करना, अन्वेषण
करना ५ समीप करना,—अज्ञे १. अतिभ्रमण करना
उल्लसन करना, अथवा करना २ अत्याचार करना,
मनु—, अनुकरण करना, झगडा—नकल करना, पीछे
चलना, मच—, १ अतिक्रमण करना, अत्याचार करना
२ अथवा करना, अवि—, १ अत्याचार करना, उल्लसन
करना २ (पति के रूप में) विद्वत्स लो देना, घोषा
देना—मनु० ५११६२, १११०२ ३ जाहू करना, मच
फूंकना—तथाविधिचरयि—शां० ११२९५, ३१२८९,
शा—, १ कर्म करना, प्रभ्रमण करना, करना, अनु-
ष्ठान करना—तथाविधिचरयि—शिव० ११२५,
११२५, एवं च तस्येष्टमाचरे—विक्रम० ५१२०, रघु०

११८९, मनु० ५११५६, न चाप्याचरित. पूर्वैर्धर्मैः
—महा०—२ अर्थात् करना, व्यवहार करना, आचरण
करना—युगविधाचरेत् विष्णुम्—विद्या०, पुनं विष्णु-
वधाचरेत्—शान्० ११३, इधर-उधर फिलाना
४ काम में लेना, अनुकरण करना—रघु० ५१५४, उचु—,
१ ऊपर जाना, उठना, निकलना, भागे बढ़ना - शिव०
१७५२, २ उठना, प्रकट होना, (सद्यः) निकलना
—उष्णचार नियमोऽप्यस्ति तस्याः—रघु० ९१७३, १५
४६, १६१८७, कोडाहकम्बनियचरत्—का० २७
३ बीनना, उष्णारण करना—वाय्व उष्णरित एव
माचवात्—रघु० १११७३ ४ मनोस्त्वम् करना,
पुरीचोत्सर्गं करना—तिरस्कृत्योष्णैश्चोष्णोष्णव-
पुपायिना—मनु० ५१५९ ५ (जा० में प्रयोग) (क)
उत्क्रमण करना, विचलित होना—महि० ८१३,
(स) उठना, चढ़ना—मै० ५१५८, प्रेर० चुकवाना,
उष्णारण करवाना, उचु—, १ सेवा करना, हाथपी
देना, सेवा में प्रस्तुत रहना—गिरितस्युष्णारण प्रत्यहं सा
सुकेशी—कु० ११६०, समनुष्णर भरे सुविष्य चरिष्यं
च—मूळ० ११३१, रघु० ५१६२, मनु० ३११९३
२ (रोगी को) सेवा करना, पिकला करना, परि-
चर्या करना ३ व्यवहार करना ४ निष्ठ जाना, बुन्-
ठाना, घोसा देना, परि—, १ जाना, इधर उधर
घूमना २ सेवा-सुसूत्रा करना, सेवा करना या सेवा में
उपस्थित रहना—मनु० २१२४३, मनु० ३१४० ३. देश
भाल करना, परिचर्या करना, सेवा करना, प्र—, १ इधर
उधर चलना, एँठ कर चलना २ ऊँठना, प्रचलित
होना, वर्तमान होना ३ (प्रथा का) प्रचलन होना
४ कार्य भारत करना, कार्य अथाना, कार्य करने
लगना—मनु० ११२८४, (प्रेर०) इधर उधर फिलाना,
वि—, १ इधर उधर घूमना, भ्रमण करना—रघु०
२१८, मेघ० ११५ २ करना, अनुष्ठान करना, अन्वेषण
करना ३ कर्म करना, अर्थात् करना, व्यवहार करना,
(प्रेर०) १ सोचना, विचारना, मनन करना २ चर्चा
करना, वादविवाद करना—रघु० १४५६ ३ हिलाव
लगाना, अनुष्ठान लगाना, हिलाव में गिनना, विचार
करना—परेषामासनस्यैव यो विचार्यं बलाबलम्—मै०
१, सुविचार्यं यत्कृतम्—हि० ११२२, अवि—, १ पध-
विष्ट होना, विचलित होना २ उल्लसन करना,
अध्यास वात करना ३ कण्ठपूर्वम् व्यवहार करना,
सम्—(जा० अब कि करण० के साथ प्रयोग हो)
१ चलना, घूमना, जाना, घूमना, इधर उधर फिलाना
—यानं समचरताम्ये—महि० ८१३२, कश्चित्पथा
सचरते सुराणाम्—रघु० १३१९९, मै० ६१५७, संक-
रता०चरानां—शिव० ११६ २ अन्वेषण करना, अन्वेषण
करना ३ वे देना, हस्तातिरिक्त होना । (प्रेर०) १. इधर

उत्तर भोजना, मेसूख करना, सचालन करना,—म० ५/५
 2. फैलाना, इधर उधर घूमना 3 घूँघुआना,
 समाचार देना, दे देना, सौंप देना 4 चलने के लिए
 मुकना ।

चर (वि०) (स्त्री०—री) [चर् + अच्] 1 हिलने-जुलने
 जाना, जाने वाला, चलने वाला (समान के अन्त में)
 2 कौपता हुआ, हिलता हुआ 3 जगम दे० 'चराचर'
 —मनु० ३।२०१, भग० १३।१५ 4 समीप—मनु०
 ५।२९, ७।१५ 5 (प्रत्यय की भाँति प्रयुक्त) पूर्व-
 कालीन, भूतपूर्व आद्यचर—जो पहले जनवान् या,
 इसी प्रकार देवचरकर, अध्यापकचर (भूतपूर्व अध्या-
 पक)—एः 1 ब्रूत 2 खजन पत्नी 3 ज्ञा सेलना
 4 कौडी 5 मंगलधर 6 मंगलवार । सम०—अचर
 (वि०) जगम और स्वाध्याय—चराचराना भूताना
 कुशिराचारतां मत—कु० ६।६७, २।५ मय० १।१४३,
 (रत्न) 1 सृष्टि की समस्त रचना, मसार—मनु०
 १।५७, ६३, ३।७५, भग० १।१७, ९।११ 2 आकाश,
 अन्तःस्थित,—इष्यम् जगम वस्तु,—भूति वह मूर्ति
 जितका जन्म या सवारी निकाली जाय ।

चरक [चर् + कन्] 1 ब्रूत 2 रमता साधु, अग्रज्य ।

चरद [चर् + अटच्] जगम पत्नी ।

चरन्—घम् [चर् + ल्यट्] 1 पैर—चिरसि चरण एष
 मरत्यते वार्येनम्—वेणी० ३।३८, जाल्या कामयवध्मो-
 ऽसि चरण विदग्धदुःखत—३९ 2 सहारा, स्तम्भ, घूर्णी
 3 बल की जड़ 4 प्लोक की एक पंक्ति या पाद
 5 चौपाई 6 वेद की शाखा या सम्प्रदाय 7 वधा,
 —घम् 1 हिलना-जुलना, भ्रमण करना, घूमना
 2 अनुष्ठान, अभ्यास मनु० ६।७५ 3 जीवनचर्या,
 चालचलन, (सैनिक) व्यवहार 4 निष्पन्नता 5 जाना,
 उपभोग करना । सम०—अभूतम्,—उचकम् वह पानी
 जिसमें किसी अद्वेष बाह्यण या आध्यात्मिक उपदेष्टा
 के पैर घोये जा चुके हैं,—अरविन्द,—कलधम्,
 —रघुम् कनक जैसे पैर,—आयुः मुग्धा,—असकम्बलम्
 पैरों के नीचे रीतान, कुचलना, पद दलित करना
 —पविष (प०)—पर्वम् (प०) टलना,—व्यास पय,
 क्रयम्,—व. वृत्त,—वसन्तम् [दुखरे के चरणों में] गिरना,
 साध्या प्रथम करान—अमर १७,—पतित (वि०)
 चरणों में दण्डवत् प्रणाम करना—मेघ० १०५,
 —शुभ्रवा, सेवा 1 दण्डप्रणाम 2 सेवा, भक्ति ।

चरम (वि०) [चर् + अमच्] 1 अन्तिम, अन्त्य, आखरी
 —चरमा क्रिया 'अन्येष्टिक्रिया या अन्येष्टीत् सस्कार'
 2 पचवर्ती, बाक का—पृष्ठ तु चरम-तनो—अमर०
 3 (आयु की दृष्टि से) बूढ़ा 4 बिल्कुल बाहर का
 5 परिष्करी, पच्छमी 6 सबसे नीच, तपते कम,—अम्
 (अर्थ०) आधिकार, अन्त में । सम०—अक्षतः

—अग्निः—इषाम्भू (प०) पवित्रची पर्यंत (पूर्व
 और चन्द्रमा इसके पीछे ही अस्त हो जाने वाले माने
 जाते हैं),—अवस्था अन्तिम दशा (बुढ़ापा),—कालः
 मृत्यु की घड़ी ।

चरि [चर् + इत्] जीव, जन्तु ।

चरित (पू० क० क०) [चर् + क्त] 1 घूमा हुआ या
 फिरा हुआ, गया हुआ 2 अनुष्ठित, अभ्यास 3 अवाप्त
 4 ज्ञान 5 प्रस्तुत,—तम् 1 जाना, हिलना-जुलना,
 मार्ग, कर्म करना, करना, अभ्यास, व्यवहार, कृत्य, कर्म
 —उदारचरिताना—हि० १।७०, सर्वं खलस्य चरित
 मयक करोति—१।८१ 3. जीवनी, आत्मजीवनी,
 माहसकथाएँ, इतिहास, कहानी—उत्तर रामचरित
 तमघोषत प्रयुज्यते—उत्तर० १।२, इसी प्रकार 'वपकुमार-
 चरितम्' आदि । सम०—अर्थ (वि०) 1 जिसने अपना
 अधोष्ट ध्येय पूरा कर लिया है, सफल रामराजपथो-
 र्द्वय चरिताधीनमानवत्—रघु० १२।८७, १०।३९,
 २।१७, कि० १३।६२ 2 सतुष्ट, तुष्ट 3 काथान्वित,
 सवन्म ।

चरिसम् [चर् + इच्] 1 व्यवहार, आदत, चालचलन,
 अभ्यास, कृत्य, कर्म 2 अनुष्ठान, पर्यवेक्षण 3 इतिहास,
 जीवनचरित, आत्मकथा, वृत्तान्त, माहसकथा 4 प्रकृति,
 स्वभाव 5 कर्तव्य, अनुभोवित नियमों का पालन
 —मनु० २।२०, ९।७ ।

चरिष्णु (वि०) [चर् + इष्णुच्] जगम, सक्रिय, इधर
 उधर घूमने वाला ।

चर [चर् + उन्] उबले चावल, लाँद दे, देस्ताबो
 तथा पितरो की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए
 तैयार की गई आहुति—रघु० १०।५२, ५४, ५६ ।
 सम० स्वास्ती देस्ताबो तथा पितरो की सेवा में
 प्रस्तुत करने के लिए चावलों की उबालने का ढलन ।

चर्च । (चूरा० उच०—चर्चयति ते, चर्चित) पढ़ना,
 ध्यान पूर्वक पढ़ना, अनुशीलन करना, अध्ययन करना ।
 ॥ (मुद्रा० प००—चर्चति, चर्चित) 1 शाली देना,
 बिकाराना, निन्दा करना, बुराबला कहना, चर्चा
 करना, बिचार करना ।

चर्चनम् [चर्च + ल्यट्] 1 अध्ययन, आवाँत, बार२ पढ़ना
 2 शरीर में उबटन लगाना ।

चर्चरिका, **चर्चरी** [चर्चरी + कन् + टाप्, ह्रस्व, चर्चं
 + अर्न् + झोप्] 1 एक प्रकार का गान 2 (सगी०
 में) तालियाँ बजाना 3 विद्वानों का सस्वर पाठ
 4 आमोद प्रमोद, हर्षध्वनि 5 उत्सव 6 लुधाभय
 7 घुसराले बाल ।

चर्चा, **चर्चिका** [चर्च + अच् + टाप्, चर्चा + कन् + टाप्,
 इत् + वम्] 1 सम्प्रति, स्वर पाठ, अध्ययन, बार२ पढ़ना
 2. बहल, पूछ-ताछ, अनुसंधान 3 विचार विमर्श

4 शरीर में उबटन का लेप करना—अकूषचर्माश्चयम्
-का० १५७, श्रीलङ्कचर्माश्चयम्—गीत० ९ ।

चर्चितयम् [चर्चिका+यत्] 1 शरीर में लेप (माषिच)
करना 2 उबटन ।

चर्चित (मू० क० कृ०) [चर्च+क्त] 1. माषिच किया
हुआ, लेप किया हुआ, सुगन्धित, सुवासित आदि
—चन्दनचर्चितनौलकलेदरपोतबलनवनमालो—गीत०
१, मदन० २।२१ 2 चर्चा किया गया, विचार किया
गया, बोझ किया गया ।

चर्चतः [चर्च+प्रत्यन्त] चर्चे, चर्चेत हु० 'चर्चेत' ।

चर्चटी [चर्च+टी] चपातो, विस्कुट ।

चर्चतः [चर्च+विष्प्, भट्+अच्, तत् कर्म० सं०] एक
प्रकार की ककड़ी ।

चर्चटी [चर्च+टी] 1 हर्ष का कोलाहल 2 ककड़ी ।

चर्चम् [चर्च+अच्, टिलोप] ढाल ।

चर्चमन्तो [चर्च+मन्त्+ङोष्, मन्त्र व] गंगा में जाकर
मिलने वाली एक नदी, वर्तमान चम्बल नदी ।

चर्चम् (नपु०) [चर्+चर्चिन्] 1 (शरीर की) लम्बा
2 चमड़ा, बाल—मनु० २।११, १७४ 3 रविन्द्रिय
4 ढाल—लि० १०।२१ । **चर्चम्**—अम्बल (नपु०)
रसोका,—अञ्जकर्मण्य् चर्चदे का काम करना,
—अञ्जकर्मिन्-अञ्जकम् (पुं) मोषी,—कार, —कारिन्
(पुं) मोषी, चमड़ा कमाने या रखने वाला,—कीलक,
—कीलक्य मत्स्रा, अधिमान, —चिञ्चक्य मञ्जेड कोड,
—अन् 1 बाल 2 शिबर, तन्त्रज्ञ् शूरी,—अन्व,
—मालिका हष्टर, —द्रुमः, बुधः भूर्व नाम का पेट,
—पट्टिका चर्चदे का चौरस टुकड़ा जिस पर पाखे ढाल
कर बोला जाय, —पत्रा चमगादर, छोटा चरो में पाया
जाने वाला चमगादर,—वायुका चर्चदे का नृतां, —प्रने-
विका मोषी की रापी, —प्रलेकः,—प्रलेक्विष्ठा शीफनी,
—क्षत्र चर्चदे का फोता,—मुष्ठा दुर्गा का विशेषण,
—शिकः (स्त्री०) हृदय,—अज्ञः 'चर्चवृत्त' गिब,
—बाह्यम् डाल, तबला,—संभवा बही इलायची,—साः
सचिका, रक्तौषक ।

चर्चमय (हि०) [चर्च+मयट्] चर्चदे का, चर्चदे का बना
हुआ ।

चर्चकः,—**चर्चार्कः** [चर्च+ग+कु, चर्च+ञ्+अच्]
मोषी, शीर, चमड़ा रखने वाला ।

चर्चिक (वि०) [चर्च+ञ्] ढाल से सुलभित ।

चर्चिन् (वि०) (स्त्री०—जी) [चर्च+इनि, टिलोप]
1. ढाल से सुलभित 2. चर्चदे का, (पुं०) 1. ढाल-
धारी सैनिक 2. केला 3. भूर्व वृक्ष ।

चर्चा [चर्+यत्+टाप्] 1. इश्-उश्चर जाना, हिलाना-
चलना, इश्-उश्चर सैर करना 2. मार्ग, चाल (जैसा
कि 'राहुचर्चा' में) 3. व्यवहार, व्यवचरण, वाचर-

विधि 4. अन्वय, अनुष्ठान, चालन—मनु० १।१११,
कृतचर्चा, तपचर्चा 5. सब प्रकार के रीति-रिवाज व
सत्कारों का निर्वाहित अनुष्ठान 6. ज्ञाना 7. प्रथा,
रिवाज—मनु० ६।१२ ।

चर्च (च्चा० पर०—चूरा० उप०—चर्चति, चर्चयति—ते,
चर्चति) 1 चवाना, कुतरना, खाना, फोपल करना,
काटना—साक्ष्यूल माखतर चर्चितुमारम्ब्यन्वा—पंच ४,
एवेत्तच्छ न कुम्भुरेःरहुरहर्ब्रह्मान्तर चर्च्यते—मूष्क०
२।११ 2 चूस लेना 3 स्वाद लेना, चखना ।

चर्चयन्म्,—चा [चर्च+त्यूट्, टिष्वा टाप्] 1 चवाना,
खाना 2 आचमन करना 3 (आल०) चखना, स्वाद
लेना, आनन्द लेना—प्रयाग चर्चयैवात्र स्वामिणे
बिभृषा मतम्—सा० २० ५७, (टी०) चर्चया आन्वायनं
तच्छ स्वाद काश्चायंसमेवात्मानन्दयत्तुञ्ज इत्युक्त-
प्रकारम्), इसी प्रकार 'तिष्पत्या चर्चयत्यात्य
निष्पतिर्यथाचरत' ५८ ।

चर्च [चर्च+अच्] तयाना, चर्चण का प्रहार (चर्चं (पुं०)
मो) ।

चर्चित (मू० क० कृ०) [चर्च+क्त] 1 चवाना गया,
काटा हुआ, खाया हुआ 2 चखा गया । **चर्म**
—चर्चयन् (आ०) चवाने हुए को चवाना, (आल०)
पुनश्चित, निरसक जावति,—आश्रम्य पीकदान ।

चल 1 (च्चा० पर०—चलति, (विरल प्रयोग—चलते)
चरन्ति) 1 हिलाना, कोपना, चर्चकना, चरनराना,
स्पष्टित होना,—छिन्नात्येक सध भूजा—मट्टि०
१४।४०, सपसोद्विरिवाचालोत्—१५।२४, ६।८४
2 (क) जाना, चलते रहना, सैर करना, स्पष्टित होना,
हिलाना—चलना (एक स्वान ले) —पदात्परमपि चलितुं
न संस्योति—पंच० ४, चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन
वृद्धिमान्—चाप० ३२, चाला बाला स्तनभिन्नस्तकला
—कु० ५।८४, मूष्क० १।५६ । (ख) (अपने मार्ग
—कुं) जाने बढ़ना, बिदा होना, फूट कराना, चल देना
—वेत्सुर्चोत्परिबद्वा—कु० ६।१२ 3 प्रस्त होना, सवाय
होना, चर्चवाया हुआ या अन्वयस्थितचित होना, अनुभव
होना, व्याकुल होना—मुनेरपि यत्प्रत्यक्ष दर्शनाच्छलते
मन—पंच० १।४०, सोमं बुद्धिचलति—हि० १।१४०
4 विचलित होना या घटकना (अपान० के अर्थ)
—चलति नयान् जियोयता हि चेत—कि० १०।२९, अलन
होना, छोड़ देना—मनु० ७।१५, पाठ० १।३६०,
(त्रे०)—च (आ) लयति, च (आ) निश्च
1 हिलाना—जुलाना इलाना, हलकत देना 2 दूर करना
हुटाना, निकाल देना 3 दूर से जाना 4 आनन्द लेना
पालना—पोतना (केवल—चालयति), अच्—1. चल
देना, प्रस्थान करना,—स्थित स्थितान्मूष्कविरलः
प्रवातात्—रपु० २।५, उच्चचाल बर्चमिलतो बरी

—११५१, नगरयोधचलम्—इशं २ चले जाना, चल देना, (किसी के स्थान को) छोड़ चलना—अभ्या-
नादनुभवप्रति—शं० १२९, पुष्पाचलिनवदपदम्
—रघु० १२।२७, प्र.—१ हिलाना, जाना, कोपना
—अर्जु० २।४ २ जाना, सँच करना, चल्ने जाना,
प्रस्थान करना, कूच करना ३ प्रस्त होना, बायायकत
या शुक्य होना ४ भटकना, बिखलित होना, बि
१ हिलाना-बुलना, चलना पतति पतने बिचलति
पते शकित्तमवदुपयामम्—गीत० ५ २ जाना, जाने
बढ़ना, चल देना ३ शुक्य होना, बायायकत होना,
(समुद्र की गति) क्लृप्ता होना—अभ्यानादनुभवमा पनि
—मट्टि० १५।७० ४ बिचलित होना, भटकना
—याज्ञ० १।२६८, ॥ (गुरा० पर०—चलति चरित्त)
खेलना, क्रीडा करना, कैस करना ।

चल (वि०) [चल् + अच्] १ (क) हिलने-बुलने वाला
कोपने वाला, डोलने वाला, धरपरागने वाला, (जीव
आदि को) घुमाने वाला चलपाङ्गा दृष्टि स्पृशानि
—शं० १।२४, चलकाकण्डकैपामगपुत्रे - रघु० ३।
२८, लहराने वाले—अर्जु० १।६, (ख) जगम (विप०
स्विर) —चञ्चलचने लभे—शं० २।५ २ अस्विर,
चञ्चल, धरिबर्तनशील, शिथिल, शोभाशाल-दयितास्वन-
वस्थित नृपा न लल प्रेय चल सुहृदवने—कु० ४।२८,
पामचल गौरवमाधिनेवु—३।१ ३ अस्पायो, अस्थिर,
नगर—चला लक्ष्मीपञ्चला प्राणचञ्चल जीवितवीचन
४ जगमवस्थित, —स. १ कृपकोपी, हेपयु, शोभ २ वायु
३ पार- का १ धन की देवी लक्ष्मी २ एक प्रकार
का मुण्ड इत्यं । मम०—अति चलायमान (—अति-
चल), चलाचने व ससारे धर्म एका हि निश्चल
—अर्जु० ३।१२८, लक्ष्मीमिव चलायमानम् कि०
१।१३० (चलाचला-चञ्चला-मल्लि०) नै० १।६०,
(ल) कोवा,—आतङ्कु शट्टिया वाय, वात रोग,
—आलम्ब (वि०) चलचित्त, चञ्चलमना, इन्द्रिय
(वि०) १ भावुक २ विषयी,—इषु वह पनुर्वर
जिमका तोर लक्ष्यधन्नु हो इषर उषर मित्र जातौ है,
अयोध धनुर्वर,—कर्म० पृथ्वी से इह तक की वाल-
विक दूरी,—चञ्चु चकार पशो,—इल, चञ्च
अन्वय वृक्ष ।

चलन (वि०) [चल् + अच्] गतिशील, धरपरागने वाला,
कपमान, शोभाशाल, —न १ पैर २ हरिण, मम्
१ कोपना हिलाना, शोभाशाल होना चलनात्मक कर्म
—नर्क स०, हस्त, जानू आदि—तरल दृग्चञ्चल-
चलनमनोहरवदनअतिरश्मिरामम् - गीत० ११
२ घुमना, भ्रमना,—श्री १ मामाम्ब रिपयो के पहलने
के लिये लईया, पेटीकोट २ हाथी को बाँधने
की रस्सी ।

चलनकम् [चलन + कम्] एक छोटा बर्तुजा या पेटीकोट
जिसे नीच जालि को सिन्धा पहनती है ।

चलि [चल् + इच्] आरगण, वादर ।

चलित (भु० क० इ०) [चल् + क्त] १ हिला हुआ,
चला हुआ, आन्दोलित, शुक्य २ गया हुआ, बिखरित
—एवमुक्त्वा स चलित ३ अवाप्य ४ जात, अधिगत
(दे० चल्),—तम् १ हिलाना, स्पष्टित करना
२ जाना, चलना ३ एक प्रकार का नृत्य—चलित
नाम गटयमनारेण -मालवि० १ ।

चलु [चल् + उच्] (पानी का) एक घूँट, चल्बुभर ।

चलुक [चल् + क्त] १ चल्बुभर (पानी) २ अञ्जलिभर
या एक घूँट (पानी) नु० 'चलुक' ।

चलु १ (इवा० उभ०—चयति—ने) बाला, ॥ (इवा०
पर०—चयति) मार डालना, क्षति पहुँचाना, चोट
पहुँचाना ।

चवक—कम् [चय + चवृत्] सुरापान, प्याला, मदिरा
पीने का गिलास अने शिम्भरेश्वरकोत्तरेव—रघु०
७।४९, मूव लालाभिलत्र पिचति चवक मासवमिब-
शा० १।२९, कि० २।५६, ५७,—कम् १ एक प्रकार
की मदिरा २ मय, शहद ।

चयति [चच् + अति] १ बाला २ मार डालना ३ ह्वास,
निर्वंलना, क्षय ।

चवाल [चप् + आलच्] १ यज्ञ के सम्ये में लगी लकड़ी
की फिरकी २ छना ।

चह (इवा० पर०, चुरा उभ०—चहति, चहपति—ते)
१ दुष्ट होना २ छाना, घोसा देना ३ अहकार
करना, धमडौ बताना ।

चाकचक्यम् [चक + अच्, शिन्वम्, चकचक—उत्प भाव
—पाश्] जगमाना, प्रभा, चमक-दमक ।

चाक (वि०) (स्त्री०—की) [चक + अच्] १ चक से
किया जाने वाला (दुष्ट) २ भङ्गलाकार ३ चक या
पट्टा में मक्ख रबने वाला ।

चाकिक (वि०) (स्त्री०—की) [चक + टक्] दे० ऊ०
चाक,—क १ कुम्हार २ लोही—याज्ञ० १।१६५,
(तैलक—मिना०, इमरों के मत में शाकटिक—याज्ञी-
वान ३ कोचवान, चालक) ।

चाकिक [चकिन् + अच्] कुम्हार या लेकी का पुत्र ।

चाक्य (वि० स्त्री०—की) [चक्युत् + अच्] १ दृष्टि पर
निभर, दृष्टि में उत्पन्न २ और से शब्द रबने वाला,
आल का विषय, दार्ष्टिक ३ दुष्टय, जो दिखाई दे,
कम् दृष्टि पर निभर जात । मम०—चाक्य औषो
देवी नवाही, या प्रमाण ।

चाक्य [चि + इच्—चम् अङ्गम् पय्य ब० स०] १ अन्व-
लोपिका चाक २ दातो की मकड़ी या सौदम्य ।

चाञ्चल्यम् [चञ्चल + प्यच्] १ अस्थिरता, हुतगति,

विशोला, (आँस आदि का) कम्पन, फरकना—भामि०
२।६० २ चकला ३ नखरता ।

चाट: [चट्+ञच्] बदाना, ठग (जो पहले उसमें पूरा विश्वास बना लेता है जिसे वह ठगना चाहता है)
—वाङ्म० १।३३६—[चाटा = प्रतारका विश्वासे पर धनपवहरति—विश्व०] ।

चाटु—दु (नपु०) [चट्+उञ्] १ मयूर तथा प्रिय वचन, मोठी बात, चापलूसी, ठकुरमुहावा (विशेषकर किसी प्रेमी के द्वारा अपनी प्रेमिका के प्रति)—प्रिय शिवाया प्रकरोति चाटुम्—ऋतु० ६।२४, विरचितचाटुवचनरचन पराजचितश्रीगपातम्—गीत० ११, अमर ८३, पंच० १, शा० ८।१६, नीर० २० (गीतगोविन्द के दसवें सर्ग का अधिकांश भाग इसी प्रकार की चाटुकारिता से भरा हुआ है) २ स्पष्ट भाषण । सम०—उत्प्लि (स्त्री०) लक्ष्मण और झूठी प्रससा के वचन,—उत्प्लोत्,—कार (वि०) प्रिय तथा मयूर बोल्ने वाला, चापलूस—सिखाचित प्रियतम इव प्राञ्चनाचाटुकार—मेघ० ३१,—चटु (वि०) झूठी प्रससा करने में कुशल, पूरा चापलूस,—चटु ममस्वरा, भाड,—भोक्त (वि०) सुरतापुत्रक हिलने वाला,—शतम् मकडो अनुरोध, बार-बार की जाने वाली लक्ष्मण—पटु-चाटुमनैरनुकूलम्—गीत० २, गजपुत्रवस्तु घोर विलोकयति चाटुमनैश्च भुङ्कते—भर्तृ० २।३१ ।

चाणक्य [चगन्+यञ्] नाम्न राजनीति के प्रख्यात प्रलेता बिष्णुगुप्त, 'कीटिल्य' भी इन्हीं का नाम है दे० कीटिल्य ।

चाणर (पु०) कस का सेक ज़ा प्रसिद्ध मन्त्रयोद्धा था, जिन समय अक्षर कृष्ण की मयरा ले गया तो इस युद्धीन योद्धा को कृष्ण ने लड़ने के लिए भेजा गया । मालयुद्ध में कृष्ण ने इसे पछाड़ दिया और पृथ्वी पर रोद डाला तथा इसके सिर को बूँद कर दिया ।

चाण्डाल (स्त्री०—की) [चण्डाल+अञ्] पतित, अधम—दे० चण्डाल, चाण्डाल कियेय द्विजातिरथवा—भर्तृ० ३।५६ मनु० १।२३९, ४।२९, याज्ञ० १।९३ ।

चाण्डालिका = चण्डालिका ।

चातक (स्त्री०—की) [चच्+शुल्] चातक, पपीहा, (कवि समय के अनुसार यह केवल वपाञ्चतु में ही रहता है)—सूषणा एव पतन्ति चातकमुले द्विधा पयो-निन्व—भर्तृ० २।१२१, दे० २।५१ और रघु० ५।१७ । सम० आनन्धन. १ वर्षाञ्चतु २ बादर ।

चातनम् [चत्+चिच्+शुट्] १ हटाना २ क्षति पहुँचाना ।

चातु (वि०) (स्त्री०—री) १ चार की संख्या से सबद्ध २ होशियार, योग्य, बुद्धिमान् ३ मयूरभायी, चाप-सूत्र ४ दृष्टिविषयक, प्रत्यक्षज्ञानात्मक—रघु चार ४८

पहियों की गाड़ी,—री कुशलता, दसता, योग्यता तदुद्धचातुरीतुरी—नै० १।१२ ।

चातुरक्षम् [चतुरक्ष+अञ्] चौपट या चार पासो के खेल में चार का दाँव,—कः छोटा गोल तकिया ।

चातुरधिक: [चतुर्षु अर्थेषु विहित,—ठक्] (व्या० में) एक ऐसा प्रत्यय जो चार भिन्न-भिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए शब्द में जोड़ा जाता है ।

चातुरार्थमिक (वि०) (स्त्री०—की), चातुरार्थमिन् (वि०) (स्त्री०—की) ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनवर्षा के चार कालों में से किसी एक में रहने वाला । दे० 'आश्रम' ।

चातुराधम्यम् [चतुराधम+प्यञ्] ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनवर्षा के चार काल । दे० 'आश्रम' ।

चातुरिक, **चातुर्यक**, **चातुरिक** (वि०) (स्त्री०—की) [चातुर+ठक्, चतुर्षु+अञ्, ठक् वा] १ चौबे या, हर चौबे दिन होने वाला,—कः चौबेया दुसारा, जूकीनाप ।

चातुरार्थीहिक (वि०) (स्त्री०—की) [चतुर्षु+ठक्] चौबे दिन होने वाला ।

चातुर्यक्षम् [चतुर्दश्या दृश्यते इति] राक्षस-सिद्धा० ।

चातुर्यशिक [चतुर्दशी+ठक्] जो चातुर्य की चतुर्दशी के दिन भी पड़ता है (यह 'अनघ्याय' का दिन है) ।

चातुर्यसिक (वि०) (स्त्री०—सिका) [चतुर्षु मामेषु भव—अण्+कन्, चतुर्यसि+ठक्+टाप्, ह्रस्वच] जो चातुर्यस्य यज्ञ का अनुष्ठान करता है ।

चातुर्यस्यम् [चतुर्यसि+प्य] हर चार महाने के परचात् अनुष्ठेय यज्ञ अर्थात् कान्तिक, फाल्गुन और आपाढ़ के आरम्भ में ।

चातुर्यम् [चतुर+प्यञ्] १ कुशलता, होशियारी, दसता, बुद्धिमता २ लावण्य, रमणीयता, सौन्दर्य—भूचातुर्यम्—भर्तृ० १।३ ।

चातुर्यर्ष्यम् [चतुर्यर्ष+प्यञ्] १ हिन्दुजाति के मूल चार वर्णों की समष्टि—एव सामाजिक धर्म चातुर्यर्ष्यज्वी-ग्नन—मनु० १०।६३, ऋक् ६।१२ २ इन चार वर्णों का धर्म या कर्तव्य ।

चातुर्यध्वम् [चतुर्यध+प्यञ्] चार प्रकार (सामूहिक रूप में), चार प्रकार का प्रभाग ।

चात्वात्: [चत्+वाल्थ=चत्वाल्+अण्] १ भूमि में खोद कर बनाया हुआ हवनकुण्ड २ कुशा, दर्भ ।

चान्दनिक (वि०) (स्त्री०—की) [चन्दन+ठक्] १ चन्दन से बनाया हुआ, या उत्पन्न २ चन्दनरस से सुगन्धित ।

चन्द्र (वि०) (स्त्री०—ह्री) [चन्द्र+अण्] चन्द्रमा से सबध रखने वाला, चन्द्रसवधी—मुक्ताभ्यामुनां विभ्र-क्यान्दीमभिनम श्रियम्—सि० २।२,—। चन्द्रमास

2 शुक्लपत्र 3 चन्द्रकान्तमणि,—इत् 1 चाद्रायण नामक व्रत 2 तारा अरक 3 मृगशीर्ष नक्षत्र,—श्री चादनी। मय० भाषा चन्द्रभागा नाम नदी,—चास चन्द्रमा की तिथियों क अनुसार चिना जाने वाला महीना, अतिक चाद्रायण व्रत रखने वाला।

चन्द्रकम् [चाद्र् + कं + क] सुभा अरक, मोड।
चाद्रमस (वि०) (स्त्री स्त्री) चन्द्रमस् + अच् चन्द्रमा से संबन्ध रखने वाला, चन्द्र-मन्त्रों-लक्ष्मीदेया चन्द्रमन्त्रोंब लेखा-कु० ११२५, चन्द्र वना पद्मगुणान् भुङ्क्ते पचा-श्रिता चन्द्रममोर्भविष्याम्—११४३, ग्यु० २३२९, भग० ८१२५, सत् समाशिरा नक्षत्रवृज्।

चाद्रमसाधनम्, - नि [चन्द्रमसाधनम्] किञ्च। शुभप्रह।

चाद्रायणम् [चन्द्रमापयमिवायणमत्र, पूर्वपदात् मत्राया पात्र, मत्राया दीर्घ, म्वायँ अच् क- ताग०] एक धार्मिक व्रत वा श्राद्धविधानात्मक गणधर्मों जो चन्द्रमा की वृद्धि व क्षय में विनियमित है। इस व्रत में दैनिक आहार (जो १५ ग्राम या कौर का डोसा है) पूर्णिमा से प्रतिदिन एकत्र ग्राम घटना रहता है यहाँ तक कि अमावस्या के दिन निजात निराहार व्रत रक्खा जाता है, उसके परचात्र फिर शुक्लपक्ष में एक कौर में आरम्भ करके पूर्णिमा तक अक्षरक किए १५ ग्राम तक लाया जाता है। तु० यात्र० ३१३२४, मनु० ११०१७।

चाद्रायणीक (वि०) (स्त्री-स्त्री) [चाद्रायण + ङञ्] चाद्रायण व्रत का पालन करने वाला।

चापम् (प० अच्) 1 धनुष,—राजे चापद्वितीयं वहति ग्गुवरा को भवस्यावकाश—वेणी० ३५, इसी प्रकार 'चापपाणि' 2 हाथ में धनुष लिये हुए 3 इन्द्र धनुष 4 (ज्यामिनि) वृत् की तोरणकार रेखा 5 धनु गति।

चापसम्, - रच् [चापन + अच्, ध्वञ् वा] 1 दूतगति, स्फुटि 2 चपलता, अस्थिरता, सकम्पशीलता कि० २४१ 3 विचारराम्य वा आवेशपूर्ण आचरण, उतावतापन, उद्वेग कृत चिक् चापलम्—उत्तर ४, तदुपुणे कन्यानाम् चालकाम्य प्रकाशित, रघु० ११९, स्वीचनवृत्तिरिच चापलेभ्यो निवारणीया—कौ० १०१ 4 (धोरे आदि का) अविद्यमान-पुन पुन वृत्तिविचिद-चापलम्—रघु० ३४२२।

चापः, - रच् [चमयां विकार तलुच्छनिमित्तत्वात् चमरी + अच्] (कभीर-रा, -री) बीरी, चवर या चमरी की वृद्धि, (यह मोरछल या पत्ते की भांति प्रयुक्त की जाती है, और एक राजकीय चिह्न समझा जाता है—कभी-कभी यह कैलाश की भांति धोरे के निर पर फहराया जाता है)।—व्यापयन्ते निवृत्ततमि मञ्जरीचामराणि—विक्रम० ४४, अवेध्यासीत् क्षयमेव मूढे शशिपत्र छत्रमूढे च चापरे—रघु० ३११९, कु०

७४२, डि० ३१२९, मेघ० ३५, चित्रमन्मसिवाचल हयमिष्यायामवन्वामरम्—विक्रम० ११४, ग० ११८। मय० चाह,—प्राहित् (पु०) चवर इलाने वाला, चवर कदार—प्राहिमी चवर इलाने वाली गजरा की सेविका पृष्टे लोलाचलपरगिन चामरग्राहिणाना यत्न० ३१६१, पुष्य, पुष्यक 1 मुपारी का पेड 2 केतकी का पौधा 3 आम का वृक्ष।

चापरीन् (पु०) [चापर + ङि] घोंडा।
चापरीकरम् [चमीकर + अच्] 1 माना-नपचामीकरा द्वन्द्व—विक्रम० ११४६, रघु० ७५, गि० ४१२४, कु० ७२४ 2 धतुरे का पौधा। मय०—प्रथम (वि०) मीने की तरह का।

चापुष्पा [चप् + ला + क पृथो० साप्] दुर्गा का रोडरूप मा० ५१२५।

चापिका [चप् + अञ् + टाप् - चम्पा + अच् + इलच्] चपा नाम की नदी (सम्बन्ध वामान् 'चपल' गते)।

चाप्येध [चपा + इच्] 1 चम्पक वृक्ष 2 नागकेसर का पेड, यत् 1 ननु, विशेषकर कमल फूल का 2 माना 3 धतुरे का पौधा (अभिषेक से अर्थात् में पु० भी)।

चाप्यु (म्या० उभ० चायति ते) 1 निरीक्षण करना, अच्छा बना पहचानना, देख लेना—शि० १२५१ 2 बुझा करना।

चार [चर् + घञ्] 1 जाना, घूमना, चाल, भ्रमण—महालक्ष्मणोद्य विक्रम० ५५, श्रीधारीसे यदि च विचरेत् पादचारेण गोरी—मेघ० ६०, पैरल चलना 2 गति, माग, प्रवृत्ति पगम्भार, तनिवार आदि 3 भेदिया, चर गुल्चर, दूत मनु० ७१८४, १२६१, ६० चारचलुम् ती० 4 अनुष्ठान करना, अभ्यास करना 5 बर्दा 6 वधन, वेदो,—रच् कृत्रिम विप। मय०—अन्तरित भेदिया ईक्षण—चक्षुम् (पु०) 'गुल्चरो को अत्रि क स्थान में प्रयुक्त करने वाला' गदा (या गदानीक) जो गुल्चर या भेदिया रहता है और उन्ही के माध्यम में देवता है, चार-चक्षुर्महीपति—मनु० १२५६, तु० कामन्दक—गाव परधनि गन्धन, वेदं पशुलि च द्विजा, चारं पशयन्ति गजान चक्षुर्महीपतिरे जना। गमा० भी—यस्मात्ता-यन्ति दृग्भ्या सर्वावधाराधिपा, चारेण यस्माद्युष्यन्ते राजानश्चावचक्षुः। चच,—चक्षुम् (वि०) ललित चान् वाना, सर्वाला। - पव. चौराहा,—मडः बौर घोडा, चापु, श्रीमकालीन मनु मन्द पवन, वसन्त चाप।

चारक [चर् + गिच् + क्षुच्] 1 भेदिया 2 खाल 3 नेता चालक 4 साथी 5 अस्वारोही, सवार 6 कारागार निगडितचरगा चारके निरोदध्या—यश० ३२।

चारच, [चर् + गिच् + ल्यट्] 1 भ्रमणशील, तीर्थयात्री

2 धूमने-फिरने वाला गट या गर्बवा, गंतक, गौड़, ग्राट—मनु० १२।१४ 3. स्वर्गिय गर्बवा, गर्ब—शं० २।१४ 4 वेद या ज्योतिष शास्त्रिक धर्म का पाठ करने वाला 5 मेरिदा ।

चारिका [चर् + चिच् + ध्वल् + टाप्, इत्वम्] लेखिका, दासी ।

चारिताम्बम् [चरितार्थं + प्यम्] उद्देश्यसिद्धि, सफलता ।

चारित्र्यम्—च्यम् [चरित्र + अण्, ध्यञ् वा] 1 शील, व्यवहार, काम करने की रीति 2 नेकनामी, सच्चरित्रता, स्याति, सचार्थ, ईमानदारी, अच्छा चालचलन—अनुत् नामिधास्यामि चरित्रभ्रष्टकारणम्—मू० ३।२५, २६, चरित्र्यविहीन—आइदोपि च दुर्गो भवति—१।४३ 3. सतीत्य, (सिख्यो का) सदाचरण 4 स्वभाव, तबीयत 5 विशिष्ट आचार या ज्ञान्यमान 6 कुलकमाना आचार । सम०—**कवच** (वि०) छतील रूपी कवच से सुरक्षित ।

चाप (वि०) (स्त्री० च, -र्षी) [चरति विते—चर् + उण्] 1 रुचिकर, सज्जत, प्रिय, प्रतिष्ठित, अनोष्ठ (सत्र० या अनु० के साथ)—वर्णाय वा बहने चाप 2 सुन्दर, रमणीय, सुन्दर, कान्त, मनोहर - प्रिये चापूषीले मूञ्च मयि मानमनिदानम् - गीत० १०, सर्वं प्रिये चापुनरमन्ते—ऋतु० ६।२, चकासन चापचमूचमर्षा - शि० १।२, ४।४९, च ब्रह्मस्यति का विशेषण, —इ (सु०) ३०८, आचरति । सम०—**अर्षी** सुन्दर अर्षो बानी स्त्री० - **घोष** (वि०) सुन्दर नाक वाला पुष्प, - ब्रह्मण (वि०) प्रियदर्शन, लाबध्यमय, - **बारा** शक्ती, इन्द्राणी, इन्द्र की पत्नी, **मेघ**, - **सोचन** (वि०) सुन्दर आँसो वाला, (च, न) हरिण, - **फला**, अगुरो की बेल, अगुर, - **सोचला** सुन्दर आँसो बानी, - **बध्द** (वि०) सुन्दर मुख वाला, - **बर्षमा** स्त्री, - **सता** एक मास तक उपवास करने वाली स्त्री, - **शिला** 1 जवाहर, रत्न 2 पत्थर की सुन्दर शिला, - **शील** (वि०) कान्त-स्वभाव या चरित्र, - **ह्रासिन्** (वि०) मयूर मुस्कान वाला ।

चारिचक्षुषम् [चरिचकां + ध्यञ्] 1 शरीर को सुगांधित करना, चन्दन आदि लगाना 2 उबटन ।

चार्म (वि०) (स्त्री० - र्मी) [चर्मन् + अण्, टिलोप] 1. चमड़ का बना हुआ 2 (गाड़ी आदि) चमड़े से ढका हुआ 3 डाल धारी, डाल से युक्त ।

चार्मण (वि०) (स्त्री० - णी) [चर्मन् + अण्, टिञ् या ङीप् च] चमड़े या खाल से ढका हुआ, - **णम्** खान्दो या डालो का ढेर ।

चारिक (वि०) (स्त्री०—की) [चर्मन् + ठक्] चमड़े का बना हुआ—मनु० ८।२८९ ।

चारिकम् [चर्मन् + ञक्] डालधारी मनुष्यो का समूह ।

चारिकः [चाप लोकसभ्यतो वाको वाच्य वस्य—इ० सं०]

कुतर्को दार्शनिक को ब्रह्मस्यति का सिध्यं बताया जाता है और जिसने श्रौतिकवाद एवं नास्तिकता के स्मूल रूप का प्रवर्तन किया (चारिकमत के सिद्धांतों के साराग के लिए दे० सर्व० १) 2. महाभारत में बर्णित एक राक्षस जो दुर्वाचन का निम्न और पाषण्डो का सन्तु या [ज्व युधिष्ठिर अपनी विजयपताका के साथ हस्तिनापुर में प्रविष्ट हुआ तो उस राक्षस ने एक बाह्य रूप धारण कर लिया तथा उसने युधिष्ठिर, एवं एकचित्त बाह्यको को बुरा-बला कहा । परन्तु शीघ्र ही उसका पता लग गया, और क्रोध में भर कर उसकी बाह्यको ने उसका वही काम तमाम कर दिया । उस राक्षस ने महाभारत युद्ध की समाप्ति पर भी युधिष्ठिर को यह कहकर ठगने का प्रयत्न किया था कि भीम को तो दुर्वाचन ने मार डाला—दे० वेधो० ६] ।

चार्षी [चाप + ङीप्] 1 सुन्दर स्त्री 2 चारदो 3 बुद्धि, प्रज्ञा 4 प्रभा, कान्ति, दीप्ति 5 कुबेर की पत्नी ।

चार्ल [चल् + ण] 1 घर का छप्पर या छत, 2 नीलकण्ठ पक्षी 3 हिलना-गुलना, चलना-फिरना 4 जयम होना ।

चार्लक [चल् + ध्वल्] दुर्दाष्टि हाथी ।

चार्लनम् [चल् + चिच् + ल्युट्] 1. चलाना-फिराना, हिलाना गुलाना, (पृष्ठ की भांति) हिलाना 2 छनवाना, छानना, छलनी, - **चौ** छलनी, झरना ।

चाप [चर् + चिच् + अण्, षो० सत्वम्] नीलकण्ठ पक्षी—मां० ६।५ यात्र० १।१७५ ।

चि (स्वा० उभ०—विनोति, विन्दते, पित, प्रेर०—चापयति, चापयति, चपयति, अपयति भी, सम्मल-चिचीयति, चिकीयति) 1 चुनना, बीनना, इकट्ठा करना (द्विकर्मक धातु होने के कारण दो कर्मों के साथ अन्यत्र परन्तु लौकिकसाहित्य में इसका प्रयोग बिरल) - **बस** पुण्याणि चिन्वती 2 डेर लगाना, टाल लगा देना, अवार लगा देना—**पर्वनामि** च भूमावचंपुर्वादिरोत्तमान्—**भट्टि**० १।५७६ 3 जड़ना, सचिप्त करना, मड़ना, भरना—**दे०** चित—**कर्म** बा०, फल उत्पन्न होना, उगना, बढ़ना, फलना-फूलना, समृद्ध होना—**सिध्यते** चीयते चैव सता पुष्पफलप्रदा—**पच०** १।२२, फल लगता है, - **चीयते** बालिन्यास्यापि सत्त्वोपपत्तित्वा—**कृषि** मुद्रा० १।३, राजहस तव सेव शुभ्रता चीयते न च न चापचीयते—**काव्य०** १०, अध—**कर्म** होना, बिहीन होना, वञ्चित होना, (मुस्यत कर्मवा० में—**1** घटना, क्षीण होना, कम होना—**राजहस** तव सेव शुभ्रता चीयते न च न चापचीयते—**काव्य०** १० 2 शरीर में घटना, क्षीण होना, क्षा—, 1. एकत्र करना, डेर लगाना 2 भरना, ढकना, मड़ना—**भट्टि**० १।७।६९, १।४।६, ४७, उच्—, एकत्र करना, बीनना—**भट्टि**० ३।३७, उच्—, बीनना, मड़ाना—**उपचिन्व**प्रथमं तर्षी

प्रत्याह परमेस्वरः—कु० ६१२५ (कर्मबा०) उगना, बहना—अथोऽयं पथवत् कथं यद्विद्या नोपचोषते—हि० २१२ ऋट्टि० ६१३३ सि० ४११०, वि—, उकना भवना, फौलाना, बिहोरना (युष्मत् काल प्रयोग) —निश्चित समुपेत्य नीरदै—षट्० १, याकुतनीभनिश्चित विभ्रज्जटाग्रमण्डलम्—श० ७१११, ऋट्टि० १०१४२, गित्—, निर्धारण करना, सकल्प करना, निरूपण करना बरि—, १ अग्रास करना २. प्राप्त करना, लेना (कर्मबा०) बहना—रमु० ३१२४ प्र—, १ इकट्ठा करना, चुनना २ जोड़ना ३ बढ़ाना, विकसित करना—प्राचीयमानावयवा रराज सा—रघु० ३१७, वि—, १ एकत्र करना, चुनना २ सोजना, दूँडना—विचित-रथेय समनात् समनाववाट—सा० ५, बिनित्—, निर्धारण करना, सकल्प करना, निरूपण करना—विनिश्चेतुं शक्यो न सुखमिति वा दुःखमिति वा—उत्तर० ११३५, सम्—, १ एकत्र करना, सग्रह करना, सचय करना—रक्षायोगावयवमि तप प्रत्यह सचिनोनि श० २११४, रघु० ११३२, मनु० ६११५ २ क्रमबद्ध करना, व्यवस्थित करना, ठीक से रखना ऋट्टि० ३१३५, लघु—, सग्रह करना, जोड़ना ।

चिकित्सा [चिन् + सन् + ध्वल्] वैद्य, हकीम, डाक्टर—उचितवेलातिक्रमे चिकित्साका दापमुद्राहरन्ति—माल-वि० २, भर्तृ० ११८७, याज्ञ० १११२२ ।

चिकित्सा [चिन् + सन् + ब + टाप्] औषध मेवन करना, औपवायचार, दलाज करना, स्वस्थ करना ।

चिकित्स [चि + इक्ष्, कुक्] कीचड़, महापक, कटंम, दलदल ।

चिकीर्षा [कृ + सन् + ब + टाप्, द्वित्वम्] (कोई काम) करने की इच्छा, कामना, अभिलाषा, इच्छा ।

चिकीर्षित (वि०) [कृ + सन् + क्त, द्वित्वम्] अभिलषित, इच्छित, साधिप्राय, सम् अधिकल्प, आगम, अधि-प्राय ।

चिकीर्षु (वि०) [कृ + सन् + उ, धातोर्द्वित्वम्] कुल करने की इच्छा वाला, इच्छुक,—भग० ११२३, ३१२५ ।

चिकुर (वि०) [चि इत्यप्यन्त शब्द करोति - चि + कुर + क] १ हिलने-जुलने वाला, कम्पमान, चपल, अस्थिर २ अविचार पूर्ण, आवेशयुक्त—, र. १ सिर के बाल—मम शशिरे चिकुरे कुह मानद “ कुमुमानि—गीत० १०, इसी प्रकार—वनपरशशिरे रथयति चिकुरे तरुलिप्तकपानने—७ २ पहाड़ ३ रेगने वाला, साप सम०—उच्चयः,—सलापः,—निकरः,—पसः,—पामुः,—भाटः—हस्तः बालों का गुच्छा या डेर—यस्यापरोचिचिकुरानिकर कर्णपुरी मयूर—प्रस० ११२२ ।

चिकुरः [चिकुर वि० दीर्घ] बाल ।

चिकुः [चिक् इति अन्त्यत शब्देन कायति स्याद्यते—चिक् + कै + क] छुड़कर ।

चिकुल (वि०) (स्त्री०—वा,—वी) [चिक्, चिक् + चिक् त कणति—कण धादे + जक् + टारा०]

१ चिकना, चमकदार २ फिसलनी ३ निरुध ४ मसृष, बर्बात—सम् परित्रायतामेना भवान् मा कस्यापि तपस्विन इमुदीतीलचिकुणशीघ्रस्य हस्ते पतिष्यति—श० २,—चः सुपारी का पेड़,—यम् चिकुणवृत्त का फल, सुपारी ।

चिकुणा—वी १ सुपारी का पेड़ २ सुपारी ।

चिकुणः [चिक् + असच्] जी का आटा ।

चिकुणः—चिकुणा ।

चिकुर [चिक् + इरच्, शा०] बूहा, मूसा ।

चिकुरम् [चिक् + च + अच्, धातोर्द्वित्व यको लुक् च] तुरी, तरवट, ताजगी ।

चिकित् [?] एक प्रकार का कट्टू ।

चिकित्ता [चि + क + व + क] एक देश तथा उसके निवासी ।

चिकुता [चिम् + चि + टाप्] १ इमली का पेड़, या उसका फल २ बुंधची का पोषा ।

चिट् (म्बा० पर०—चुरा० उभ०—वेटति, बेटयति—ते) भोजना, वाहर भोजना (जैसे कि किसी सेवक को भेजा जाता है) ।

चित् (म्बा० पर०, चुरा० आ०—चर्ति, चेतयते, चेलिन)

१ प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, देखना, नजर डालना, बुद्धिगोचर करना—नेपुनबेतप्रत्ययम्—ऋट्टि० १७११६, चिचेत रायस्तकृच्छ्रम्—१४६२ १५१३८, २१२९

२ जानना, समझना, चोखन होना, सतर्क होना—परै-रप्यारुद्धामाधमात्मान न चेतयते—इशा० १५४ चेतय प्राप्त करना ४ प्रकट होना, चमकना ।

चित् (स्त्री०) [चित् + चिक् + व] १ विचार, प्रत्यक्ष ज्ञान

२ प्रज्ञा, बुद्धि, समझ—भर्तृ० २११, ३११ ३ हृदय, मन ४ आत्मा, जीव, जीवन में सजीवता-सिद्धांत

५ ब्रह्म । सम०—आत्मन् (पु०) १ चित्तनसिद्धांत या गति २ केवल प्रज्ञा, परमात्मा,—आत्मकम्

चेतय,—आत्मस जीव (जो सांसारिक बान्धनाओं में लिप्त है),—उल्लास जीवों के हृदय का हृष,—धनः परमात्मा या ब्रह्म,—प्रवृत्ति (स्त्री०) विचारविमर्श,

चिन्तन,—शक्ति (स्त्री०) मानसिक शक्ति, बौद्धिक शक्ति,—स्वरूपम् परमात्मा, (अव्य०) १ 'किम्' और 'किम्' से व्युत्पन्न अन्य शब्दों के साथ जुड़नेवाला अव्यय (जैसे कि—कद्, कथम्, क्व, कदा, कुत्र, कुत

आदि) जिससे कि शब्दों में अनिश्चयता/यकता आती है—'कचित्'—कही, केचित्—कोई २ 'चित्' ध्वनि ।

चित् (मू० क० क०) [चि + क्त] १ सग्रह किया हुआ,

देर कमाना हुआ, बीरार कमाना हुआ, इकट्ठा किया हुआ 2 झुटा किया हुआ, छिपता 3 भास, गूहीत 4 झूठा हुआ—कृत्रिमवित्तम्—मनु० २।१११ 5 अमाया हुआ, षट्ठा हुआ,—अन्व भवन ।

विस्त [चित्त+टाप्] मूर्ख को धकाने के लिए चुनकर रखी हुई ककड़ियों का ढेर, चितिका—कुच सप्रति टाम्-वायु में प्रणिपाताम्बलिधातिलिखताम्—कु० ४।३५, चितामस्यम्—कु० ५।६९। सव०—अग्निः षव को जकाने वाली भाग,—वृकम् चिता ।

चितिः (स्त्री०) [चि+चित्] 1 सग्रह करना, इकट्ठा करना 2 डेर, समुच्चय, पूज 3 अन्वारा, टाक, षट्ठा 4 चिता 5 चौकीर आद्यताकार स्थान 6 सवन्न ।

चितिका [चिता+क+टाप्, इत्थम्] 1 टाक, षट्ठा 2 चिता 3 ककड़ियां ।

चित्त (वि०) [चित्त+क्त्] 1 देखा हुआ, प्रत्यक्षज्ञात 2 बोधा हुआ, विचारविषयों किया हुआ, मनन किया हुआ 3 सकल्प किया हुआ 4 अपिप्रेत, अभिलषित, इच्छित,—सम् 1. देखना, ध्यान देना 2 विचार, चिन्तन, अवधान, इच्छा, अभिप्राय, उद्देश्य—मन्थित सनर्थं भव—मय० १।८।५७, अनेकचित्तविभ्रान्त १६।१६ 3 मन—मदासी दुर्धर प्रसरति मदाचित्तकरिण—मा० १।२२, इती प्रकार 'चतचित्त' भावि समस्त गन्ध 4 हृदय (बुद्धि का स्थान माना जाता है) 5 नर्क, बुद्धि, तर्कशास्त्र । सम०—अनुवर्तिन् (वि०) मन के अनुकूल कार्य करने वाला, अनुरजनकारी,—अपहारक,—अपहर्तिन् (वि०) मनोहर, आकर्षक, मोहक,—आश्रीय भावनाओं के प्रति मन की आसक्ति, किसी एक वस्तु में अनन्य अनुराग, आसक्त, आसक्ति अनुराग, उन्नेक, पमड, गर्व,—ऐक्यम् सहस्रति, यतैक्य,—उन्नति,—सम्पन्नति। (स्त्री०) 1 महानुभावात् 2 पमड, दर्प, चारिन् (वि०) दूसरे की इच्छा के अनुसार काम करने वाला, अ - अन्वन् (पु०) 1 भूः—धीनी 1 प्रेम, आवेश 2 प्रेम का देवता काम देव—चित्तयोनिरभवत्युनर्त य - रघु० १९। ६६, सोप्य प्रसिद्धविषय सल चित्तान्मा—मा० १।२०,—अ (वि०) दूसरे के मन की बात जानने वाला,—वाश, बेहोशी,—निर्वृतिः (स्त्री०) सती, प्रसन्नता, प्रथन (वि०) स्वस्थ, गान्त, (—न) मन की भांति, प्रसन्नता हर्ष, लुपी,—शेकः 1 विचारभेद 2 असंगति, अविधरता,—शेकः मनोमुग्धता,—विश्लेषः मन का उचाटपन—विश्लेष—विश्लेषः चित्तप्रश, बुद्धिप्रश, उन्मत्तता पागलपन,—विश्लेषः मैत्री-मय,—कुलः (स्त्री०) 1 मन की अवस्था या स्वभाव, रचि, भावना—एववात्माभि-प्रायसभाश्लेष्यनचित्तवृत्ति प्राणिविंता विमन्थते—स० २ 2 आन्तरिक अभिप्राय, संवेद्य 3 (योग)—इ०

में) मन की आन्तरिक किया, मानसिक दृष्टि—योग-श्चित्तवृत्तिनिरोध—योग०—देखना कष्ट, चिन्ता—सैकस्यम् मन को व्यथता, परेशानी—हृष्टिन् (वि०) मनोहर, आकर्षक शक्ति ।

चित्तवत् (वि०) [चिन्ता+वत्पु, मस्य व] 1 तर्कसंगत, तर्कयुक्त 2 सकल्प, मनुष्य ।

चित्तवत् [चि+वत्पु] शव-दाह करने का स्थान,—स्था 1 चिता 2 काष्ठचयन, (वेदी का) निर्माण ।

चित्र (वि०) [चिन्+ञ्च्, चि+ष्टन् वा] 1 उज्ज्वल, स्पष्ट 2 चितकबरा, चम्बेदार, शबलीकृत 3 दिलचस्प, शक्तिर श्वा०—१।४ 4. चित्रित, चित्रित प्रकार का, भाति २ का—पच० १।१३६, मनु० ९।२४८, याज्ञ० १।२८८ 5 आश्चर्यजनक, अद्भुत, अवीच,—नः 1 रग-विरगा नर्ण रय 2 अशोक वृक्ष,—अम् 1. तसबीर, चित्रकारी, आलेखन—चित्रे निवेश्य परिकल्पितस्तत्प-योगा—श० २।९, पुनरपि चित्रोक्ता कांता—श० ६।२०, १३, २१ आदि 2 चमकीला आभूषण 3 अमा-धारण छवि, आश्चर्य 4 सांप्रदायिक तिलक 5 आकाश, गगन 6 घन्टा 7 सफेद कोंड, फुलबहरी 8 (सां-शा० में) काव्य के तीन भेदों में अन्तिम काव्यभेद (यह 'सन्दर्भ' और 'अर्थवाच्यचित्र' दो प्रकार का है, काव्योन्मत्तं मुहुरकर से अलकारी के प्रयोग पर निर्भर करता है, जो शब्दों की ध्वनि और अर्थ पर आश्रित है, मर्मट परिभाषा देता है)—सन्दर्भचित्र काव्यचित्र-व्याख्य त्वर स्थापितम्—काव्य० १) 'सन्दर्भ' का उदाहरण स्वयंसाधर से उद्धृत किया जाता है—'मिश्रा-निपुत्रनेत्राय त्रयीशासनवशत्रये, गोशारितोत्रजेत्राय गोशारे ते नमो नम ।—अम् (अव्य०) अहा ! कैंसा विस्मय है ! क्या अद्भुत बात है—चित्र शिरो नाम व्याकरणप्रयोगेभ्ये— सिद्धा० । .य० अक्षी,—नेत्रा,—लोचना एक पक्षिविशेष, मैना,—अङ्गु (वि०) बारी दाढ़, चितोदार, छरीछारी (यम्) सिद्धर,—अन्वन् रगदार मसालो से प्रसाधित चावल—याज्ञ० १।३०४, —अणुः एक प्रकार का पुड़ा,—अर्चित (वि०) नस्वीर में उतारा हुआ, चित्रित, 'आरम्भ (वि०) चित्रित रघु० २।३३, कु० ३।४२—आकृति (स्त्री०) चित्रित प्रतिकृति, आलोचित्र,—आयवम् इत्यत—आरम्भ चित्रित वृक्ष, चित्र की रूपरेखा—चित्रण० १।४,—उक्तिः (स्त्री०) 1 शक्तिर या वाक्चतुर्ण्ये से पूर्ण प्रवचन—अप्यति ते पश्चमनादभिप्रचिञ्चोक्ति-सदभिविभूषणेषु—विक्रम० १।१० 2 आकाशवाणी 3 अद्भुतकहानी,—शोचनः हृष्टो से रया पीसा मात—कष्टः कष्टतर,—कथाकथः रोचक तथा मनोरञ्जक कहानियां सुनाना,—कथकः 1 छोट की बनी हृष्टी की झल 2 रय विरगा कालीन,—करः 1 चित्रकार

2 नाटक का पात्र या अभिनेता, -कर्मन् (नपु०) 1 असाधारण कार्य 2 विभूषित करना, सजाना 3 तस्वीर 4 बाहु, (पु०) 1 आश्चर्यजनक करण करने वाला जादूगर 2 चित्रकार, 'बिम्ब' (पु०) 1 चित्रकार 2 आहुतार, -काय साधारण शेर 2 बीता, -कार, 1 चित्रकारी करने वाला 2 एक बर्तनकर जाति (स्वपतेरपि गान्धिवया चित्रकारी श्याजावन-परधार०), -कूटः एक पहाड़ का नाम, इलाहाबाद के निकट एक जिले का नाम रघु० १२।१५, १३।४० उत्तर० १, कृन् (पु०) चित्रकार, -क्रिया चित्रकारी, -ग, -गत (वि०) चित्रित किया हुआ, -सम्पन् हरलाळ, -मुस्तः यमराज के कार्यालय में मनुष्यों के गुण तथा अस्वभावों को लिखने वाला—मुद्रा० १।२०, -गृह्ण् चित्रित पर, -कल्प अटकलपत्र और असबद बात, विभिन्न विषयों पर बात-चोर, -स्वप्न (पु०) भ्रूँ बस, -स्वप्नक, कनास का पौधा, -स्वस्त (वि०) चित्रित, नम्बीर में उतारा हुआ कु० २।२४, पक्ष, बकीर-सदृश नीलर, -षट्, -ष्ट 1 आलेख, तस्वीर 2 रवीन या चारामन्दार कपड़ा, -षड्, (वि०) 1 भिन्न २ भागों में विभक्त 2 ललित पदावली से युक्त, बाबा मंगा, सारिका, -विषम्बक मोर, -षष् एक प्रकार का बाघ, पृष्ठ चित्रिया, फलकम् चित्र-गटल, चित्र रखने का कला, बहूँ मोर, -भाम् 1 आग 2 सूर्य (चित्र भानुचिन्मातीति दिने रवौ रवौ बह्वी-काव्य० २, अत्र दिवि का निदर्शन दिया गया है) 3 शेर 4 मदार का पौधा, -मष्वल एक प्रकार का नाँव, -मृग चित्तीदार हरिण, -मैखल मोर, -घोषिन् (पु०) अर्जुन का विशेषण, -रथः 1 सूर्ये 2 गवशों के एक राजा का नाम, मृनि नामक पत्नी से कश्यप के १६ पुत्र हुए चित्ररथ उनमें से एक है—अत्र मूनेस्त-नयचित्रसेनादीना पञ्चदशाना भ्रातृणांमधिका सुपुं पीठचित्ररथो नाम ममुप्यन्त-काव्य० १३६, चित्र० १, लेख (वि०) सुन्दर रूपरेखा वाला, अत्यन्त मशहूर-कार-प्रतिष्ठित कलाकवी रचितचित्रलेखे भूवो-गीत० १०, (श्र) बाबासुर की पुत्री, उषा की एक सहेली (जब उषा ने अपना स्वयं अपनी सहेली चित्रलेखा की सुनाया, तो उसने यह सुनाव दिया कि इस चित्र की असा-याग के राज्यों में धुमाया जाय, इस प्रकार जब उषा ने अनिरुद्ध का पहचान लिया तो चित्रलेखा ने अपने बाहु के द्वारा अनिरुद्ध को उषा के गहन में बतवा दिया), -लेखक चित्रकार-लेखिका चित्रकार की तुलिका, कुची, -चित्रि (वि०) 1 रगविरगा, चितकबरा 2 बेलगुदेदार, -विद्या चित्रकला-भाला चित्रकार का कार्यालय, -विश्वविष्णु (पु०) सात ऋषियों (मरीचि, अगिरस्, ब्रवि, पुलस्त्य, पुम्ह, कृन्,

और वसिष्ठ) का विशेषण, 'मः बृहस्पति का विशेषण—संख (वि०) चित्रित,—हस्ता युद्ध के अक्षर पर हाथों की विषय अवस्थिति।

चित्रक [चित्र + कन्] 1 चित्रकार 2 सामान्य शेर 3 छोटा चिकारी चोता 4 एक वृक्ष का नाम, -कम् मस्तक पर साम्प्रदायिक तिलक।

चित्रक (वि०) [चित्र् + कल] चितकबरा, चित्तीदार, स रगविरगा रग।

चित्रा [चित्र् + अच् + टाप्] बाइर माम का बौद्धर्षी नक्षत्र, द्विगनिमुक्तयोयोगे चित्रावदयसोरिव—रघु० १।४६। सम०—अटीर, ईशः धीर।

चित्रिक [चित्र + क पृषो० साप्] चित्र का महीना।
चित्रिणी [चित्र् + णिनि, चित्र अस्त्वयं द्विनि वा] भाति २ के बृद्धिवैभव और श्रेष्ठताओं से युक्त स्त्री, रतिशास्त्र में वर्णित चार प्रकार (चिनी, चित्रिणी, शक्तिनी और हस्तिनी वा करिणी) की स्त्रियों में एक। रतिमञ्जरी में 'चित्रिणी' की परिभाषा इस प्रकार दी गई है—भवति रतिरसज्ञा नातिस्त्रिं न दीर्घा तिलकुतुममुनासा स्त्रिण्यनीलोत्पलाकी-यत्र कठिन-कुचात्रया सुदरी बद्धगीला, सकलगुणाविचित्रा चित्रिणी चित्रवक्रता ॥ ३ ॥

चित्रित (वि०) [चित्र् + क्त] 1 रगविरगा, चित्तीदार 2 चित्रकारी से युक्त।

चित्रिन् (वि०) (स्त्री०—व्री) [चि + इनि] 1 आश्चर्य-कारी 2 रगविरगा।

चित्रोपले (ना० या० आ०—) 1 आश्चर्य पैदा करना, आश्चर्यजनक होना—एवमुत्तगेतरभावाचिचित्रोपले ओष-लोक—महावी० ५, महि० १७।६४, १८।२३ 2 आश्चय करना।

चिन्त (चुरा० उभ० चिन्तवति-न्ते, चिन्तित) 1 सोचना, विचारना, विमर्श करना, चिन्तन करना—तच्छ्रुत्वा पित्रूलकचिन्तनाधामान-पच० 1 चिन्तय तावकेनापदे-शेन पुनराश्रमपद गच्छाम—स० 2 सोचना, विचार करना, मन में लाना—तस्मादेतत् (चित्त) न चिन्तयेत् - हि० १, तस्मादस्य बध राजा मनसापि न चिन्तयेत् मयु० ८।३८१, ४।२५८, पच० १।२३५, चौर० १ 3 ध्यान करना, देशभाल करना, देखरेख रखना—रघु० १।६४ 4 प्रत्यात्मरण करना, याद करना, 5 माहूम करना, उपाय करना, शोक करना, शोक कर उपाय निकालना की-युपायचिन्तवताम्—हि० १ 6 ख्याल रखना, सम्मान करना 7 होलना, विशेषता बताना 8 बर्षा करना, निरूपण करना, प्रतिपादन करना, अनु०, बार बार चिन्तन करना, निष्ठा याद करना, मन में होलना—स० २।९, मय० ८।८, परि० 1 सोचना, विचारना, कृतना- स्वयं

लाघवपरिच्छेदप एव्य कदाचिदेते यदि योगमहंत—कु०
५।६७, प्रथ० १०।१७ २. चिन्तन करना, याद करना,
ध्यान में लाना ३ तदकोच निकालना, मालूम करना,
बि० १ सोचना, विचारना २ चिन्तन करना,
आकल्प करना, ध्यानमग्न होना—श० ६।१
३ विचारक्रीड में रचना, ध्यान रचना, संपाद करना
—अभ्यान्माधु विविन्त्य नयमनमानुषैः कुल चाराम
—श० ४।१६ ४ इरादा करना, स्थिर करना, निश्चय
करना—५ उपाय ढूँढना, मालूम करना, सोच
निकालना, सम् - १ सोचना, विचारना, विमर्श
करना, चिन्तनरत होना - याज्ञ० १।२५९, चौर० ३२
२ (मन में) तोलना, विधेयता बनाना ।

चिन्तनम्,—चा [चिन् + स्पृष्ट] १ सोचना, विचारना,
चिन्तनरत होना—मनसाऽनिष्टचिन्तनम् मनु० १२।५
२ आतुर चिन्तन ।

चिन्ता [चिन् + णिच् + भृ + टाप्] १ चिन्तन, विचार
२ दुःखद या शोकपूर्ण विचार, परवाह, फिर
चिन्ताउदय दर्शनम्—ज० ६।५, इसी प्रकार 'चौत-
चिन्त' १० ३ विचारविमर्श, विचारण ४ (अल०
शा० में) चिन्ता—२ सचाशे भावों में से एक-
ध्यान चिन्ता श्रितानाथे शक्यता दवानतापकृन्
—सा० २० २०१। सम० आकुल (वि०) चिन्ता-
मान आकुल, आतुर—कर्मन् (वि०) चिन्ता करना
—पर (वि०) चिन्तन करना, चिन्तनरत, —मणिः
कालनिक गन् - (यः क्रियते गाम हाहा है, कहते
हैं, उसकी सब कामनाएं पूरा कर देना हैं) दार्शनिकों
को प्राणि - इ-नवस्थेने चिकोरा हन् चिन्तामणिर्षया
—या० १।१२, नई-नये हृदि मेऽस्मिन् लभ्यु चिन्ता न
निन्तामणिकान्तवन्त् नै० ३।८१, १।१८५—वेदवन्,
। १७०) पारंपर भवन, प्रयोगागृह ।

चिन्ताश्री [निन्दिश्री, पृषो० नय चन्व्] दमनी का
पट ।

चिन्तित (वि०) [चिन्त् + क्त] १ सोचा हुआ, चिन्मृष्ट
२ उपन, विचार किया हुआ ।

चिन्तित (स्त्री०) **चिन्तितया** [चिन्त् + क्तन्, च वा] सोच,
विमर्श, विचार ।

चिन्त्य (म० क०) [चिन् + यन्] १ सोचने-विचारने के
योग्य २ सोचने के योग्य, मालूम किये जाने या
उपाय ढूँढ लिये जाने के योग्य ३ विचारसमर्थ,
सक्षिप्त, प्रष्टव्य यन्व बर्षाभिरद्वन्द्वकालात्वे उदा-
हृतम् (प कोभाग्रह) । एतच्चिन्त्यम्—सा० २० १ ।

चिन्त्य (वि०) [चिन् + यन्] विद्युत् वीर्यकता से युक्त,
आत्मिक (जैसे कि परमात्मा), यम् १ विद्युत् ज्ञान-
मय २ परमात्मा ।

चिप्ट (वि०) [नि नता नासिक चिप्टेज्य नि + पट्,]

वि आदेश] चटो नाक बाधा,—ः चिउडा, चपटा
किया हुआ नाक वा अनाज, चोले ।

चिप्टि [नि । पिट् चि आदेश] दे० चिपट । सम०
—शीव (वि०) छोटी इर्दन वाला, —नास,—नासिक
(वि०) चटो नाक वाला ।

चिप्टिक, **चिप्टुः** [चिपिट + क्त, =चिपिट पृषो० षाय्]
चिउडा, चोले ।

चिप्टु (शु) कम् [चिप् (च) + उ + क्तन्, पृषो० ङ्ङ्व]
ठोस, चिप्टुक मुद्रा स्यादपि यावत्—आदि० २।३४
याज्ञ० ३।९८ ।

चिपिः [चि + चिक् + षा०] तोता ।

चिर (वि०) [चि + रट्] दीर्घ, दीर्घकाल तक रहने वाला,
दीर्घकाल से चला आया, पुराना—चिरविरह, चिर-
काल, चिरविषयम्—आदि, —रम् दीर्घकाल (विषे०
'चिर' शब्द का अप्रमान कारणों में एक उचन क्रिया
विशेषण को शक्ति प्रयुक्त होना है और निम्नादि
अर्थ प्रकट करता है—'दीर्घकाल' 'दीर्घकाल तक'
'दीर्घकाल के पश्चात्' 'दीर्घकाल में' 'आखिर कार'
'अन्त में' आदि—न चिर पर्वने बनेत् मनु० ४।६०,
तत प्रजाता चिरमात्मना वृत्ताम्—रघु० ३।३५, ६२,
अमद ७९, किपिचिरेपार्ययुक् प्रानिपति वार्यति श०
६, रघु० ५।६५, शीतानिमे से मोक्ष चिराय जीव
—रघु० १।५९९, कु० ५।८७, अमर ३, चिरासुत-
स्पर्शसन्नता यवो—रघु० ३।२६, १।१६३, १।२।६३,
चिरस्य वाच्य न गन प्रजापति श० ५।१५, चिरे
कुर्वन्—शान० । सम०—आयुश्च (वि०) दीर्घ आयु
वाला (पु०) देवता, आरोग्य, विलम्बित चेरा, मणि-
कदी, —उरुव (वि०) दीर्घ काल तक रहने वाला,
कार, कारिक, कारिन् क्रिय (वि०) मन्वर,
विलम्बी, ढीला, दीर्घसूत्री, काल दीर्घकाल,—कारिक,
—कालीन (वि०) दीर्घकाल में चला आता हुआ,
पुराना, दीर्घकाल से चालू, (रोग के विषय में) दीर्घ
या दीर्घकालानुबन्धी, ज्ञात (वि०) बहुत समय पहले
उत्पन्न, पुराना,—शीविन् (वि०) दीर्घजीवी (पु०)
उन ज्ञात चिरजीवियों का विशेषण जो 'अमर' समझे
जाते हैं (अवस्थाया बलिष्यासो हनुमाय चिभीषण,
कृप परशुरामस्य सन्तैरे चिरवीचिन) —वाकिन् (वि०)
देर से पकने वाला,—पुष्प बहुक वृक्ष,—विषम् पुराना
मित्र,—मेहिन् (पु०) गधा,—रात्रम् बहुत गतें, दीर्घ-
काल, उचित (वि०) जो दीर्घकाल तक रह चुका हो,
—चिप्रोचित (वि०) दीर्घकाल से निर्वाचित, प्रवासी,
—सुता,—सुतिष्ठा बहु गाय को कई बच्चे दे चुकी हो
लेखक पुराना नौकर,—रुच, स्वादिन्—चित्त
(वि०) टिकाइ, देर तक चलने वाला, चानू रहने
वाला, पायेवा ।

चिरम्बोव (वि०) [चिरम् + बौ + अच्] दोषाय वा कमी उक्त वाक्य, —क काम का विशेषण ।

चिरम्बो, चिरिम्बो [चिरे अटित चित्तुम्बुत्तुम्बु भर्तुम्बुम् — अट + अच्, पृ० ० तारा०] 1 विवाहित या अविवाहित लड़की जो सगानी होने पर भी अपने पिता के घर ही रहे 2 लचकी, जवान स्त्री ।

चिरम् (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [चिरे भ्रम चिर + ल] चिरकालीन, पुराना, प्राचीन ।

चिरम्पत्त (वि०) (स्त्री०—मौ) [चिरम् + टप्प, मुट्ट, च] चिरागत, पुराना, प्राचीन, —स्वहस्तवत्ते मुनिभासन मुनिश्चिरम्पत्तलावबन्धिम्यबीविष्णुत् - -वि० १११५, चिरम्पत्तः सुहृद् —वादि ।

चिरामति (मा० वा० पर०) (चिरायते भी) विलम्ब करना, धीस देना —कच चिरयति पाञ्चाली—वेणी० १, कि चिरायति भवता, सकेतके चिरयति प्रवरो विनीत —मू० ३१३ ।

चिरि [चिनोति मनाध्ययत् वाचयानि - चि + र्छ] तोता ।
चिच [चि + च्छ] कपे का छेद ।

चिरम्बो [चिर + भट्ट + अच् + डीप्, पृ० ०] एक प्रकार की कफडी ।

चिल (तुदा० पर०—) चिलति कपडे पहनना, बस्त्र नारण करना ।

चिलनी (वि) चिला [चिल् + नी (वि) ल् + च्ल + टाप्, इवम्] 1 एक प्रकार का हार 2 जुगनु 3 चिलनी ।
चिल्ल (म्भा० पर०—) चिल्लति, चिल्लति 1 डोला होना, गिचिल होना चिलचिला होना 2 आराम ने काम करना, सोडानपत होना ।

चिल्ल, - हला [चिल्ल् + अच्, चिषया टाप्] चील । सम० —आशः गडकतरा, जेबकतरा ।

चिल्लिका, चिली [चिल्ल् + इन् + कन् + टाप्, चिल्लि + डीप्] मीसुर तु० चिल्लिका ।

चिचि [चोच् + इन् पृ० ०] ठोड़ी ।

चिङ्गम् [चिङ्ग + अच्] 1 मिशान, धम्मा, छाप, प्रतीक, कुलचिङ्ग, चिल्ला, लक्षण —आमेय् यपिचिङ्गेत् रघु० १४४, ३१५५, सतिपात्तस्य चिङ्गानि —पञ्च० १११७३ 2 संकेत, इमित —प्रसादचिङ्गानि पुर फलानि रघु० २२२, प्रहर्षचिङ्ग २१६० 3 राधिचिङ्ग 4 लय विधा । सम० चोचिन् (वि) 1 चिङ्ग लगाने वाला, दाम लगाने वाला 2 प्रहार करने वाला, धागल करने वाला, हत्या करने वाला 3 डरावना, विकराल ।

चिङ्गित (व०) [चिङ्ग + क्त] 1 मिशान लगा हुआ, संकेतित, मुद्रांकित, किसी पर का चिल्ला लगाने हुए—वाङ्० २१८६, २१३१८, दिवा चरेय् कार्वाय चिङ्गिता राजशासने—मनु० १०५५, २११७० 2 डायी 3 झाल, अविहित ।

चोक्कार [चोत् + क्त + च्छ] अनुकरणमूलक शब्द, कुछ आमबरो को ऊन्दन विशेषकर गधे की रोक या हाकी को पिछाड, —चिरीदति चोक्कारात्पूर्वमस्ताडिती एषा —हि० २१३२, चोक्कारात्पूर्वमस्ताडिती एषा चोक्कारवाय मा० १११ ।

चोच [चि + च्छ, चीच] 1 एक देश का नाम, वर्तमान चीनदेश 2 हरिण का एक प्रकार 3 एक प्रकार का कपडा ना (पृ० ब० व०) चीन देश के निवासी या शासक,—नम् 1 अडा 2 अलो के किनारो पर बांधने के लिए पट्टी 3 मोना । सम०—अंशुकम्,—वासल् (नप०) चोच का कपडा, रेशम, रेशमी कपडा — चोचामुकाभिय केतो प्रतिघात नीयमानस्य—वा० ११३४, कु० ७३२, अमर ७५, —कर्मरः एक प्रकार का कपूर, कच् इत्यान, चि-म् 1 सितूर 2 सीसा, — बङ्गम् सीसा ।

चोनाक [चान + अच् + अच्] एक प्रकार का कपूर ।

चोरम् [चि + क्त्वं दोषयञ्च] 1 चिपडा, फटा पुराना कपडा, धक्की, मनु० ६१६ 2 बल्कल 3 बस्त्र वा पोशाक 4 चार लडियों का मोतियों का हार 5 चौड़ी धारी, देवा, लकीर 6 देसाएँ बनाकर लिखना 7 सीसा । सम० परिष्ण, —वासल् (वि०) 1 बल्कलधारी कु० ६१९२ मनु० १११११ 2 चिबडे या फटे पुराने कपडे पहने हुए ।

चोरि (स्त्री०) [चि + क्त्वं दोषयञ्च] 1 अलो को ढकने का पर्दा 2 मीसुर 3 नीचे पहनने वाले कपडे की झालर या गाट ।

चोरि (क) का [चोरि + कं + क + टाप्] [:- चीरिका पृ० ० साय] धोहमुर ।

चोच (वि) [च + अच्, पृ० ० अत इवम्] 1 किया हुआ, अनुष्ठित, पालित 2 अधीत, दोहराया हुआ 3 विदोषे किया हुआ, विभाजित, 1 सम० च्छः लज्जर का पेट ।

चोचिका [चो + का + क + टाप् इवम्] मीसुर ।

चोच (म्भा० उभ०—चोचतिने) 1 पहनना, ओढ़ना 2 लेना गन्तव्य करना 3 फकडना ।

चोचरम् [चि + च्छरच् नि० दोषं, चोच् + अरच् वा] 1 चोमान, फटा-पुराना, पिपडा प्रेचचीवरसला मन्तोपया रघु० १११६ 2 मिशुक का परिष्कार, विशेषकर दौड मिशुक के नम्ब, चौचरानि परिचने— मिट्टा०, चोचचीवरपरिष्कटा—मा० १, प्रशासित मेलम्प्या चौचरालम्बु—मू० ८ ।

चोचरिन् (पृ०) [चोचर + इनि] 1 दौड या जैज मिशुक 2 मिशुक ।

चुक्कार [चुक्त् + अच् = चुक्क + आ + रा + क] मिह की गर्जन या दहाड ।

बृक्ष [बृक् + रक्, अत उत्पत्तय] १ एक प्रकार की बसन्तकाल या अश्विनशुक्लिका २ वटवृक्ष, -कम् लटात, अम्भता ।
सम० फलव इमली का फल, -वास्तूकम् अटदिच्छा
वांसा, अम्भतागिका ।

बृक्षा [बृक् + टाप्] इमली का पेड़ ।

बृक्षिन् (पुं०) [बृक् + इमनिच्] खटास, खटापन ।

बृक्षक, -कम्, **बृक्षकम्** [बृक् इति अल्पस्तस्य कावति
-कं + क, पृषां दीर्घ] बृक्षों का बितकना या बूटी ।

बृक्षन् (वि०) [कुल समामो के अन्त में प्रयुक्त] प्रख्यात,
प्रसिद्ध, विभूत, कुशल -अभरं, धारं आदि ।

बृष्टा, डा [बृट् (इ) + अच् + टाप्] छोटा कुआँ या
जसापाय ।

बृत् (म्हा० पर०) -चोतति] बृत्ता, टपकना, दे० ब्यूत् ।

बृत् [बृत् + क्] बृत्ता ।

बृत् (बृत्ता० उभ० चोदयति -ते, चोदित) १ भेजना,
निदेश देना, आगे फेंकना, प्रेरित करना, हाँकना,
घकेलना -चोदयामवान् -ज० १ २ प्रभावित करना
स्फुटित देना, डेलना, तबीब बनाना, उकसाना -रघु०
४।२४, मार्गप्रदर्शन करना, फुलसाना -रघु० १०।६७
३ धीराना करना, त्वरित करना ४ प्रदान करना,
पूछना ५ साग्रह निवेदन करना ६ प्रमत्त करना,
तर्क या आक्षेप के रूप में सामने लाना, परि -
१ घकेलना, निदेश देना, भेजना २ उकसाना, प्रोत्सा-
हित करना, प्र- १ डेलना, प्रभावित करना, स्फुटित देना
उकसाना -वायनाय चोदित -रघु० १।९ २ हाँकना,
हाँकना, स्फुटित देना, घकेलना ३ निदेश देना
सम् १ निदेश देना, उकसाना, डेलना २ फेंकना,
आगे बढ़ाना ।

बृत्वी [बृट् + अच् नि० डीप्] दूनी, कुटनी ।

बृत् (म्हा० पर० चोवति) वानं वानं चलना, दबे पाँव
चलना, चुपचाप बितकना ।

बृत्तक [-बिबृक्, पृषो०] ठोड़ी ।

बृत्तव (म्हा०) -बृत्ता० उभ० -बृत्तति -ते, बृत्तयति -ते,
बृत्तयति १ बृत्तन करना, (आळ० से जी) दिलप्यति
बृत्तति जलधरकल्प हरिरूपगत इति तिमिरमनस्यम् -
गी० ६, त्रियामुक् किमुल्लयबृत्तवै -कु० ३।३८ अमर
१६, हि० ४।१३२ २ मुकुमारता पूर्वक स्वयं करना,
छुने हुए चलना -उत्तर० ४।१५, परि - १, भूमना -अनु०
६।१७, अमर ७७ ।

बृत्तव, -वा [बृत् + अक्, घञ् वा, स्थिता टाप्] बृत्तन,
भूमना ।

बृत्तवः [बृत् + अक्] १ भूमने वाला २ कामी, कामासक्त,
कामुक ३ बदमाश, ठग ४ जिसने बृत्त किया, जिसने
अनेक विषयों को छु लिया, पल्लववाही विद्याम् ५ बृत्तक
पत्थर (चकमक) ।

बृत्तवम् [बृत् + अक्] बृत्तना, बृत्तन -बृत्तन देहि मे भाव
कामबाधाकमुत्पत्तये -रत्न० ।

बृत् (बृत्ता० उभ० -चोरयति -ते, चोरित) १ बृत्तना,
बृत्तना -मनु० ८।३३३ विक्रम० ३।७ २ (आळ०)
बहान करना, रखना, बयिचार में कलना, लेना, धारण
करना -अनु० बृत्तवमनसोऽभिरामताम् -मि० १।१६।
बरा [बृत् + अ + टाप्] चोरी ।

बृत्ति -री (स्त्री०) [बृत् + क्ति, बृत् + डीप्] छोटा
कुआँ ।

बृत्तुक [बृत् + उक्त्] १ गहरा कीचड़ २ एक बूट या
हथेली भर पानी, बूत्तुक, -ममी स भर बूत्तुके समुद्र
-ने० ८।१५, आत्मा विधातुरबलुकात् प्रवृत्तित् -विक्र-
माङ्ग० १।३७ ३ छोटा बरतन ।

बृत्तुकिन् (पुं०) [बृत्तुक + इति] सूँस, उलूगी ।

बृत्तुम् (म्हा० पर०) -बृत्तुप्यति] १ झूलना, डोलना,
इधर उधर हिलना दोलायमान होना, उब् - १ छोटे
लेना २ आन्दोलित होना -अभ्योपनीलिकेस्तीरतमि
बृत्तुम्बन्तुमुत्पत्तये ये -महावी० ५।८ ।

बृत्तुम् [बृत्तुम् + घञ्] बन्तो को लाठ प्यार करना ।

बृत्तुम् [बृत्तुम् + टाप्] बकरी ।

बृत्तु (म्हा० पर०) -बृत्तति] खेलना, शीड़ा करना,
प्रभावना में प्रीतिमूकक संकेत करना ।

बृत्तिलि [बृत्तु + इत्] बृत्ती ।

बृत्तिली [बृत्तिल + डीप्] १ बृत्ती २ चित्ता ।

बृत्तुकम्, **बृत्तुकम्** [बृत् + उक्त्, पकारस्य बकार, बृत्तुक
पृषो०] बृत्तु का बितकना या बूटी मि० ७।१९ ।

बृत्तक [बृत्ता + क्त, ह्रस्व] कुआँ ।

बृत्ता [बृत् + अह, लस्य इ, दीर्घ० नि०] १ शालों की चोटी
बृत्तिया (मुष्कन सस्कार के अन्तर पर रखी हुई
थिला) रघु० १८।५१ २ मुष्कन सस्कार ३ मुष्क की
या मोर की कलगी ४ ताव, मुकुट, उष्णीष ५ सिर
६ सिक्कर, चोटी ७ चौबारा, अटारी ८ कुआँ
९ (कलाई में गूना जाने वाला) आभूषण । सम०
-करवम्, -कर्मन् (नपुं०) मुष्कन सस्कार -मनु०
२।३५, -वासाः बालो का गुच्छा, केवा सम्भू -पूरा-
पासे नवकुवरवक् - मेघ० ६५ -बधिः -रत्नम्
१ सिर पर धारण किया जाने वाला आभूषण,
बृत्ताधि, धीर्घकूल (आळ० से जी) २ बड़िया थोछ
(प्रायः समास के अन्त में) ।

बृत्तार, -क (वि०) [बृत्ता + अच् + अच्, बृत्ता + अच्]
१ सिर पर बृत्तिया रखने वाला, सिन्धायुवत २ कल-
गीदार ।

बृत्तः [बृत् + क्त पृषो०] २ आम का पेड़, -चिह्नद्वारं
कपाडकपिपासा बृत्ते नवा मञ्जरी -विक्रम० २।७,
पुगाङ्कुरास्वाकपायकण्डः -कु० ३।३२ २ कामपेठ

के पाँच बागों में से एक, दे० पंचबाग,—सम् पूजा, मन्दाार ।

चूर्ण (चूरा० उभ० चूर्णयति-ने, चूर्णित) चूरा० करना, कुचलना, पीस देना २ चूकनाचूर करना, कुचल देना, —सम्,—रघु० देना, कुचल देना - सचूर्णयामि मर्यादा न मुषोषयोश्च बेनी० १११५ ।

चूर्ण— चूर्ण [चूर्ण + अच्] १ चूरा २ आटा ३ चूक ४ मुगधिन चूरा, पिस्ता हुआ जलन, कपूर आदि —भवति विकल्पप्रकारे चूर्णमुष्टि मेघ० ६८ वीं १ लडिया २ चूना । सम०—कार चूना चूकने वाला,—कुल्ला; घूघर, घूघराले वाल, जलमें—सम के-लकान्दना चूर्णकुल्लालवन्तिभि—विक्रमाङ्क० ६१२,—सखम् कङ्कड, बजरी,—वारर गिगारफ, सिन्दूर,—योग मन्त्र द्रव्यो का चूर्ण ।

चूर्णक [चूर्ण + क्तृ] भून कर पीसा हुआ अनाज, सत्—कम् १ मुगधिन चूरा २ गह रचना की एक शैली ओ कर्णकट मन्थी से रक्षित तथा आप मसाम वाली हो—अरटोगोक्षर स्वल्पममाक चूर्णक विदु—उ० ६ ।

चूर्णम् [चूर्ण + सम्] कुचलना, पीसना ।

चूर्ण— चूर्ण [चूर्ण + क्तृ] चूर्ण [चूर्ण + डोष्] १ पीसा हुआ, चूरा २ सौ कीर्तियों का समूह ।

चूर्णिका [चूर्ण + अन् + टाप्] १ भूना हुआ और पिस्ता हुआ अनाज, सत् २ सगल मरुचला की एक मीठी ।

चूर्णित (वि०) [चूर्ण + क्त] १ पीसा हुआ, चूरा किया हुआ २ कुचलना हुआ, गूदा हुआ, चूर-चूर किया हुआ, टुकड़ २ किया हुआ—कु० ५१२४ ।

चूर्ण [चूर्ण + कर्ण + टाप्] शाय, केय,—ला १ ऊपर का कस २ गिगार ३ पंचकेतु की गिपा ।

चूर्णिका [चूर्ण + अन् + टाप्] १ मर्त की कलनो २ हाथी की कनपटी ३ (नाटक में) नेपथ्य में पायां द्वारा किमी घटना का संकेत—अन्यजन्तिकामन्थं सूचनार्थं चूर्णिका म० २० २००, उदा० महावीर-चरित के चौथे अंक के आरम्भ में ।

चूर्ण (भा० पर०—चूर्णित, चूर्णित) पीसा, चूना, चम लेना ।

चूर्णा [चूर्ण + कर्ण + टाप्] १ (हाथी का) चमड़े का तग २ चूना ३ चोखला ।

चूर्णम् [चूर्ण + अन् + टाप्] चूर्ण जाने वाले भोज्य पदार्थ ।

चूर्ण १ (मुदा० पर०—चूर्णित) १ छोट पहुँचाना, भार हलना २ बाधना, एक जगह जोड़ना, ॥ (भा० पर०, चूरा० उभ०—चूर्णित, चूर्णयति—) जलाना, प्रखलित करना ।

चेकितक [चिन्त + क्तृ + शान्तम्, यद्यो लुक्, धातोर्हित्वम्] १ चिन्त का विशेषण २ युक्तियोंका जो पाठ्यों की ओर से महाभारत के युद्ध में लगा ।

चेद— [चिद + अच्, वा टस्य ड] १ गौर २ चिट उपाति ।

चेदि (चि) का, चेदि (दी) (डी) [चिद + अच्] टाप्, टप्, पहले डकम्, डीप्, डकम् वा] सोहरा, दासो ।

चेदन (वि०) (सिध०—नी) [चिन् + अच्] १ सजीव, जीवित, जीवचारी, मरण, मवेदनयोश्च चेतनाचेतनेषु मेघ० ५, सजीव और निर्जीव २ दुखमान,— न १ नचेत प्राणी, मनुष्य २ जन्मा, मन ३ परमात्मा,—ना १ ज्ञान, मज्ञा, प्रतिबोध—चतुश्चयति मदीया चेतना चञ्चनेक—रम०, रघु० १०१६६, जेतना प्रती-पक्षने मज्ञा चिन्त प्राप्त कर लेना है २ ममज्ञ, प्रज्ञा—परिचयाभाभिनीयात्प्रमादमिच चेतना—रघु० १०१६३ जीवन, प्राण, सजीवता भग० १३६६ ४ बुद्धिमत्ता, विद्याविषय ।

चेतम् (मपु०) [चिन् + अमुन्] १ चेतना, ज्ञान २ चिन्त-शील आत्मा, नर्कना शक्ति ३ मन, हृदय, आत्मा—चेत प्रगादयति अर्जु० २००१, मचउति पुत्र शरीर वाचनि गन्धदयममून चत श० १३६६ मम० ज-मन्तु—भय—भू (प०) १ प्रेम, आवेश २ कायेदेव,—बिकार मन को विकृति, मयत्र क्षाभ ।

चेतोमत् (वि०) [चेतन् + मत्तु] चिन्ता, जीवित ।

चेद (अण०) चर्द, यद्यपि कि, यद्यपि (वाक्य के आरम्भ में कभी भी प्रयोग नहीं होता) अथ रामपुरीकर्णोपि गोपेकिमति स्त प्रविशन्ति बराम—भासि० ११६६, कु० ६१९ अणिचद न, पदि मेमा क्ता गया (हम उतर देने हैं) तो मेमा नहीं (विवादास्पद विचारों में कदा प्रयोग होता है) मनि-वानमात्रेण गानप्रभुनीना दट कचुवमिचि केन ग००, अथ चेद-परन्तु वीर ।

चेदि (पु० ध० वे०) एक देव का नाम तदीगिगार बेदीना मथान्मवमन्त मा वि० २१५ ६३ । मम०—यति, भूषुत् (प०) राज (प०)—राज गिगु-पाल, दमघोष का पुत्र, चेदिद का गोत्र—वि० २१६, दे० 'गिगुपाल' ।

चेद (वि०) [चि + अच्] १ देर गेमाने के योग्य २ एकत्र करने योग्य, मयह किचे जाने के योग्य ।

चेद (भा० पर०—चेदित) १ जला, हिलना-जुलना २ शिष्टता, क्षुण्य होना, क्षयना ।

चेदम् [चिन्त + अच्] १ चम्प, पीसा—मुमुग्भायण बाद चेल बनाना—जग० २ (मथाम के अन्त में) बुरा, दुष्ट, कमीना भावविशेषम्—चुनी पत्नी । मम०—प्रस्तालक धात्री ।

चेदिका [चेंद + क्तृ + टाप्, टाप्] चोली, अगिया ।

चेद (भा० आ०—चेदते, चेदित) १ हिलना-जुलना,

हिलना-डुलना, मकिय होना, जीवन के चिह्न दिखलाना
—बदा स देकी जार्पति नदेद चेष्टते जगत्-मनु०
१।५२ 2 प्रयत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना,
सर्पक करना 3 अनुष्ठान करना, (कुछ कार्य) करना
4 व्यवहार करना—बि—, 1 हिलना-डुलना, चलना-
फिरना, गतिशील होना, इधर-उधर फिरना 2 कार्य
करना, व्यवहार करना ।

चेष्टक [चेष्ट् + क्त] सभोग का आसन विशेष, रतिवध ।
चेष्टनम् [चेष्ट् + क्त] 1 गति 2 प्रयत्न, प्रयास ।

चेष्टा [चेष्ट् + क्त + टाप्] 1 चाल, गति—किमस्माक
स्वामिचेष्टानिरूपणेन - हि० ३ 2 सकेन, कर्म—चेष्टया
भावेनेन च नेत्रवक्त्रविकारेण लक्ष्यतेऽर्जुन गत मन—मनु०
८।२६ 3 प्रयत्न, प्रयास 4 व्यवहार । मम०—नाश
सृष्टि का नाश, प्रलय, —निरूपणम् किसी व्यक्ति की
गतिविधि पर और जगत् ।

चेष्टित (भू० क० कृ०) [चेष्ट् + क्त] हिंसा, बला,
हिलना-डुलना, - तम् 1 बाल, अग्रभंगिमा, कर्म 2 क्रिया,
कर्म, व्यवहार—कपोलायतलादीनि बभूव रथचेष्टितम्
—रघु० ४।६८, नतकामस्य चेष्टितम्—मनु० २।४,
काम करना ।

चैतन्यम् [चैन + न्यञ्] 1 जीव, जीवन, प्रज्ञा, प्राण,
सवेदन 2 (वेदान्त द० में) परमात्मा जो सभी प्रकार
को सवेदनाओं का स्रोत और नव प्राणियों का मूल-
तत्त्व समझा जाता है ।

चैतिक (वि०) [चित् + क्त] मानसिक, बौद्धिक ।
चैत्य, —त्यम् [चित् + क्त] 1 सीमा चिह्न बनानेवाला
पत्थरों का ढेर 2 स्मारक, समाधि-स्तूप 3 यज्ञ
मण्डप 4 धार्मिक पूजा का स्थान, वेदी, वह स्थान
जहाँ देवमूर्ति प्रस्थापित रहती है 5 देवालय 6 बौद्ध
और जैन मन्दिर 7 गुलर का वृक्ष, या सड़क के
किनारे उगने वाले गुलर का पेड़—मेघ० २३ (रघ्वा-
वृक्ष - मल्ल०) । मम०—सक, —हृष, —वृक्ष किसी
पवित्र स्थान पर उगा हुआ उदुम्बर अर्थात् गुलर का
पेड़, - शालः देवालय का सरसक—मुक्तः साधु-सन्त्यागी
का शलपात्र या कमण्डलु ।

चैत्र [चित्रा + अण्] एक चांद्र मास का नाम जिसमें कि
चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र—पूज में स्थित रहता है, (यह
महीना मार्ग और अश्लेख के अष्टमी महीनों में आता
है) 2 बौद्ध भिक्षु, —भम् मन्दिर, मृतक की ममाधि ।
मम०—आवलि (स्वी०) चैत्र की पूजिमा, लक्षः
कामदेव का विशेषण ।

चैत्रवधम्, —वधम् [चित्रवध + अण्, घञ् वा] कुतरे के
उद्यान का नाम—एकी यथी चैत्रवधप्रदेशान् सीराज्य-
रम्भानपरो विवर्धन्—रघु० ५।६०, ५० ।

चैत्रिः, चैत्रिकः, चैत्रिन् (पु०) [चैत्री विद्यतेऽस्मिन्—चैत्री

+ इत्, चित्रा + क्त, इति वा] चैत्रमास, चैत्र का
महीना ।

चैत्री [चित्रा + अण् + ङीप्] चैत्र मास की पूजिमा ।

चैत्र [चैत्रि + घञ्] शिशुपाल,—अभिर्चैत्र प्रतिष्ठासु
सि० २।१ ।

चैत्रम् [चैत्र + अण्] कपड़े का टुकड़ा, बस्त्र । मम०
—वाचः घोषी ।

चोक्ष (वि०) [चक्ष् + घञ्, पृषो० साप्] 1 पवित्र,
स्वच्छ 2 ईमानदार 3 हाथियार, दस्त, कुशल
4 सुखकर, रुचिकर, प्रसन्नता देने वाला ।

चोक्षम् [कोचति आचोति—कुष् + अण् पृषो०]
1 बस्त्रक, छाल 2 चमड़ा, जाल 3 नारियल ।

चोटी [चूट् + अण् + ङीप्] छोटा लट्हा, साया पेटी-
काँट ।

चोड [चोडति सम्चोति शरीरम्—चूड् + अण् + ङीप्]
चोली अंगिया ।

चोचना [चूट् + क्त, स्त्रिया टाप् च] 1 भेजना, निर्देश
देना, कंकना 2 स्फुटि देना, आगे हांकना 3 प्रोत्सा-
हन देना, उकसाना, उत्साह बढ़ाना, उत्तेजना प्रदान
करना 4 उपदेश, पुनीत आदेश, वेदबहिर्हित विधि ।
मम०—मुष्ट, खेलेने के लिय मँड ।

चोदित (भू० क० कृ०) [चूट् + क्त] 1 भेजा,
निर्दिष्ट 2 स्फुटि दिया गया, हाँका गया 3 उकसाया
गया, प्रोत्साहित किया गया, उत्तेजित किया गया
4 तर्क के रूप में सामने प्रस्तुत किया गया ।

चोद्यम् [चूट् + क्त] 1 आक्षेप करना, प्रत्यन पूछना
2 आक्षेप 3 आश्चर्य ।

चो(चौ)र [चूर् + क्त + अण्, चुरा + क्त] चोर, लुटेरा
—सकल चोर गत स्वया गृहीतम्—बिक्रम० ४।१६,
इन्दोबरदलप्रभाचोर चक्षु—मत्त० ३।६७ ।

चो(चौ)रिका [चोर + क्त + टाप्] चोरी, लूट ।

चोरित (वि०) [चूर् + क्त + क्त] चुराया गया, लूटा
गया ।

चोरितकम् [चोरित + क्त] 1 चोरी, चौर्य, स्तेय
2 चुराई हुई वस्तु ।

चोल (पु०, ब० व०) [चूल् + घञ्] दक्षिण भारत में
एक देश का नाम, वर्तमान तमिल, —कः,—ली,
अंगिया चोली ।

चोलकः [चोल + क्त + क्त] 1 वक्षस्त्रण 2 छाल वा
बस्त्रक 3 चोली ।

चोलकिन् (पु०) [चोलक + इति] 1 वक्षस्त्रण से सुस-
ज्जित सैनिक 2 सतरे का पेड़ 3 कलाई ।

चोल(ली)वृक्षः [चोलस्य अ (उ) पृक् इव, व० त०,
शक० पर०] साका, पगडी, किरिट, मुकुट ।

चोच [चू + घञ्] 1. चूटना, (आप० में) सूजन ।

बीज्यम्—**बीज्यम्** ।
बीज (क) (वि०) (स्त्री—डी (बी)) [बूजा + ज्य
 —इत्योरभेद] 1 शिक्षायुक्त, कलमीदार 2 मुग्धन
 सम्बन्धी—**बीज्य**,—**बीज्य** मुग्धन सम्कार ।
बीज्यम् [बीज + ज्यम्] 1 बोरी, लट 2 रहस्य, छिपाव
 सम०—**रत्नम्** छिपे छिपे स्त्री सभोग,—**वृत्ति** (स्त्री०)
 लटने की भावत ।
बीज्यम् [बी + ज्यम्] 1 चलना-फिरना, गति 2 वञ्चित
 होना, हानि, बञ्चना 3 मरना, मष्ट होना 4 बहना
 टपकना ।
बी (धा० आ०—**बी**वते, **व्युत्**) 1 गिरना, नीचे गिर
 पड़ना, फिसलना, बूबना (आल० भी)—**श०** २१८
 2 बाहर निकलना, बहना, बूट २ करके टपकना,
 धार निकालना—स्वनरुप्यत् **बि**ल्लिमिवाङ्गिरमुद—**रपु०**
 ३१५८, **मट्टि०** ११७५ 3 विचलित होना, भटकना,
 अलग हो जाना, (कर्मण्य आदि) छोड़ देना (अधा०
 के साथ), अस्माद्बर्णान् **बी**वेत्—**मनु०** ७।९८, १२।
 ७१, ७२ 4 खो देना, वञ्चित होना—**अच्चाष्ट** सत्वा
 म्पुवति—**मट्टि०** ३।२०, ७।९२ 5 अदृश्य होना,
 ओझस होना, मष्ट होना, याचक होना—**रपु०** ८।६५
मनु० १२।९६ 6 बटना, कम होना, परि—, 1 बले

जाना, उड़ जाना, बच जाना 2 प्रगमन करना
 3 भटकना, अलग हो जाना, छोड़ देना 4 खोना,
 वञ्चित होना 5 गिर पड़ना, नीचे गिरना, प्र—अलग
 हो जाना, नीचे गिर पड़ना आदि (लगभग बह सब
 अर्थ जो परि पूर्वक 'व्यु' के होते हैं) ।
व्युत् (धा० पर०—**व्यु**त्ति 1 बूट २ गिर कर बहना,
 गिरना, बूना, झरना—इव वाणितमम्प्यत्र समहारेऽ-
 व्युत्तयो—**मट्टि०** ६।२८ 2 गिरपड़ना, नीचे
 गिरना, फिसलना—इद कवचमभ्योतीत्—**मट्टि०**
 ६।२९ 3 गिरना, बहना ।
व्युत् (भू० क० कृ०) [व्यु + क्त, व्युत् + क वा] 1 नीचे
 गिरा हुआ मिसका हुआ, गिरा हुआ 2 बूर किया
 गया, बाहर निकाला गया 3 विचलित, मुला हुआ
 4 खोया गया । सम०—**अधिकार** (वि०) पदव्युत्
 किया गया,—**अस्वन्** (वि०) वृषित आत्मा बाला,
 दुष्टार्थां कृ० ५।८१ ।
व्युत्ति (स्त्री०) [व्यु + वित्त] 1 अप पतन, अवपतन
 2 विचलन 3 बूट २ गिरना, रिसना 4 खोना,
 वञ्चित होना—**अर्थव्युत्ति** कुयाम्—**शे।०** 5 अदृश्य
 होना, मष्ट होना 6 पानिच्छद, 7 युवा ।
व्युत् [= व्युत् पृथो० उकारम्ब दीर्घ] आम का वृक्ष ।

छ [छो + ङ, क वा], अथा, षड् ।
छा: (स्त्री०—गी) [छ यज्ञाती छदन सच्छदि—छ + ग्
 + ङ] बकरा ।
छाया: (स्त्री० भी) [छो + कल, मुक, ह्रस्व] बकरा,
अम्—नीला रुपड़ा ।
छायाक: [छाया + कन्] बकरा ।
छाया [छो + अट् + टाप्] 1 डेर, पूज, राशि, सघान
 —सटाच्छटा निमघनेन—**मि०** १।४७ 2 प्रज्ञाया
 किरण-समुह, कानि, दीपि, प्रकाश—**शि०** ८।३८
 3 अविच्छिन्न रेखा, लकीर-छातेतराम्च्छटा—**काव्य०** ।
 सम०—**आभा** बिजली,—**फल**: सुपारी का नुस ।
छा [छाद्यति अनेन इति—छद् + णिच् + धन्, ह्रस्व]
 कुकुरमुत्ता, लुम्बी,—**अम्** छाता, छनरी—**अर्थव्युत्ति**
 मयमेव भूपते । **छाद्यमेव** छत्रमेव च चामरे—**रपु०**
 ३।१६ **मनु०** ७।९६ **सम०**—**बद**,—**धार** छत्र पत्र
 कर चलने वाला,—**आरथम्** 1 छाता लेकर चलना
 या छाता रखना—**मनु०** २।१७८ 2 राजकीय

अधिकार के रूप में छत्र धारण करना,—**पति**: 1 राजा
 जिसके ऊपर राज्य की भर्षाया के चिह्नस्वरूप छत्र
 किया जाय, प्रभूसत्ताप्राप्त सम्राट् 2 जड़द्वीप के
 प्राचीन राजा का नाम,—**अङ्ग**: 1 राजकीय छत्र का
 विनाश, राज्य का नाश, राजबन्दी से उतारा जाना,
 सिंहासनव्युत्ति 2 पराभयता 3 रक्षाभन्दी 4 परिवर्तक
 अवस्था, वैधव्य ।
छत्रक [छत्र + क + क] शिव की पूजा के लिए मन्दिर,
 —**कम्** कुकुरमुत्ता, लुम्बी ।
छत्रा, **छत्राक** [छद् + ट् + टाप्, छत्रा + कन्] कुकुरमुत्ता,
 लुम्बी—**मनु०** ५।१९—**याङ्** १।१७६ ।
छत्रिक [छत्र + टन्] छाता लेकर चलने वाला ।
छत्रिन् (वि०) (स्त्री०—भी) [छत्र + णि] छाता रखने
 वाला या लेकर चलने वाला,—(पु०) नाई ।
छत्रक: [छद् + ण्वर्ण] 1 घर 2 कुञ्ज, पर्वण्याला ।
छद् (धा०—**वृ**रा० उभ०—**छद्यति**—**ते**, **छाद्यति**—**ते**,
छत्र, **छाद्यति**) 1 डकना, ऊपर से ढोप देना, पर्दा करना

—हृमैरछत्रा—मेघ० ७९, बभ्रु खेदास्तलिलगुम्बि
पद्मभ्रिदछादयत्नीम्—मेघ० ९०, छत्रोपांत ...
काननाई—१८ २ (बाबर की माति) विद्याना,
डापना ३ छिपाना, इक लेना, इहुग लपना (आल०),
गुप्त रखना—शानपूर्व छत कर्म छादयन्ते ह्युसाधय
—महा०, छन्न दोषनुवाहरन्ती—मू०छ० ९१४,—अथ,
छिपाना, इकना, डापना, जा—, १ डापना—
नाच्छादयति कौपीनम्—पत्र० ३१९७ २ छिपाना,
इकना—भानीराच्छादयन्मभाम्—महा० ३ वरुण
धारण करना, कपडे पहनना—मनु० ३१२७, वरुण-
माच्छादयति, उच्च—उचायना, कपडे उतारना, उप—,
१ आच्छादित करना २ छिपाना, इकना, परि—
१ डापना, पहनना—दर्मज्ञ परिच्छाद्य—पत्र० २,
द्वीपिचरन्परिच्छन्न (वर्दम) हि० ३१९ २ छिपाना,
डापना, प्र—, १ डापना, लपटना, पर्दा डालना, अ-
वगुहित करना—(वन) प्राच्छादयत्येवात्मा नीहारे-
व्य चन्द्रमा—महा० २ छिपाना, इकना, मेस बद-
लना—प्रच्छादय स्वान् ग्यान्—मनु० २१७७ प्रदान
प्रच्छन्नम् २१६४, मनु० ४११९८, १०१४०, चौर० ४
३ कपडे पहनना, वरुण धारण करना ४ इकावट
डालना, रोडा अटकाना, प्रति—, १ छिपाना, इकना
२ डापना, लपटना सम्—, १ छिपाना २ अवगुहित
करना, लपटना ।

छवः, छदनम् [छद् + अच्, ल्युट् वा] १ आवरण, बाबर,
अपच्छद, उतरच्छद आदि २ स्कन्ध, पत्र—छवहेम
कपनिबालस्त—नी० २१६९ ३ पत्र, पर्ण ४ म्यान,
खाल, गिलाफ, पेटी, बक्सा ।

छवि (स्त्री०) छदिस् (नपु०) [छद् + कि, इत् वा]
१ नाडी की छत २ चर की छत या छप्पर ।

छधन् (नपु०) [छद् + धनिन्] १ घोषा देने वाले वरुण,
कपटवेश २ दलील, बहाना, भ्राम्य—इहाछधया सामर्थ्य-
सार—महाबी० २१२५ पलितछधना जरा—रघु०
१२२, सि० २१२१ ३ जालसाजी, बेईमानी, चालाकी—
छधना परिददाति मृत्यवे—उत्तर० ११४५, मनु०
४११९९, ९१७२ । सम्०—तामसः कपा हुवा तपस्वी,
पावडी,—अपेण (अपण) अज्ञात रूप से, भेस बदल
कर,—बेसिन् (पु०) खिलाडी, ठग, भेस बदले हुए ।

छधिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [छधन् + इति] १ जाल-
साज, धोखेबाज २ भेस बदलते हुए (समस्त के अन्त
में) उरु०—बाह्यण छधिन्—बाह्यण का रूप धारण
किये हुए ।

छद् (बुरा० उभ०)—छदयति ते, छदित) १ प्रमत्त
करना, लुप्त करना २ फुसलाना, बहुकाना ३ डापना
४ प्रसन्न होना, उप—१ चापलूसी करना, फुसलाना,
आमन्त्रित करना—रथगोपछन्वित उदकेन—श० ५,

पानी पीने के लिए फुसलाना गया २ प्रार्थना करना,
निवेदन करना ३ अनुनय करना ४ कुछ देना ।

छद्मः [छद् + धञ्] १ कानना, इच्छा, कल्पना, बाह,
अभिलाषा,—विज्ञायता देवि यस्ते छद्म इति—विष्णु०
३, मैसा अप चाहे २ स्वतन्त्र इच्छा, अपनी छीट,
मन की मीज, कामचार, स्वतन्त्र या इच्छानुसृत
आचरण—बष्टे काले त्वमपि दिवसस्यत्वान्छद्मवर्ती
—विष्णु० २११, गीत० १, याज्ञ० २११९५, स्वच्छन्म्
अपनी स्वतन्त्र इच्छा के अनुसार, निरपेक्ष रूप से
३ (अत) बधयता, नियन्त्रण ४ मतलब, इरादा
आशय ५ छहर ।

छद्मस् (नपु०) [छद् + जघुन्] १ कामना, बाह, कल्पना,
इच्छा, मरजी—(गुह्योपात्) मूर्ख छन्दोऽनुसृष्टान या
पातयन्ते पश्चितम्—वाण० ३३२ स्वतन्त्र इच्छा,
स्वेच्छाचारण ३ मतलब, इरादा ४ आकांक्षी,
चालाकी, घोषा ५ वेद, वैदिक सूक्तों का पाठन पाठ
—स च कुलपतिराद्यच्छन्दसा य प्रयोक्ता—उत्तर०
३१४८, बहुल छन्दसि—पाणिनि के द्वारा बहुधा प्रयुक्त,
प्रथमच्छन्दसामि—रघु० ११११, याज्ञ० ११४३, मनु०
४१९५ ६ वृत्त, छन्द—अक्षु छन्दसा आवास्ते—श० ४,
गायत्री छन्दसामहम्—मण० १०३३५, १३१४४ ७ छन्दो
का ज्ञान, छन्द शास्त्र (छः वेदाङ्गों में से छन्द शास्त्र
भी एक वेदाङ्ग माना जाता है—अथ वेदाङ्ग है—
शिखा, ध्याकरण, कल्प, निरुक्त और अयोग्यिण) सम्०
—छतम् वेद का पद्यात्मक भाग या कोई इतरी पाठन
रचना—यद्योदितेन विधिना नित्य छन्दस्कृत पठेत्
—मनु० ४११००,—गः (छन्दो) १ स्कोकों का
संस्वर पाठ करने वाला २ सामयायक या सामगान
का विद्यार्थी—मनु० ३११४५, (छन्दोग सामवेदाध्यायी)
—भङ्गः छन्द शास्त्र के नियमों का उल्लंघन,—विधिभिः
(स्त्री०) 'छन्द परीक्षा' छन्द शास्त्र का एक ग्रन्थ
—कभी कभी इसे द्विचरचित माना जाता है—छन्दो-
विधित्वा सकलस्तत्रपञ्चो निर्दिशत—कात्या० १११२ ।

छन्द (वि०) [छद् + क्त] १ इका हुवा २ छिपा हुआ,
गुप्त, रहस्य आदि, दे० 'छद्' ।

छन्दम् [छद् + अञ्] अनाथ, मातृपितृहीन, जिसका कोई
सम्बन्धी न हो ।

छर्त् (बुरा० उभ०)—छर्त्तयति, छर्त्तित) वमन करना, कैं
करना ।

छर्त्, छर्त्त छर्त्तिः (स्त्री०), छर्त्तिका छर्त्तित् (स्त्री०)
[छर्त् + धञ्, ल्युट्, इत्, छर्त्ति + क्त + टाप्, छर्त् +
इति वा] वमन, कैं करना, अस्वस्थता ।

छसः,—सम् [छल्ल + अच्] १ जालसाजी, चालाकी, घोषा,
दगाबाजी—विधौ शोषलायनच्छसिनि—रघु० ११३३,
छलमन न गुह्यते—मू०छ० ९११८, याज्ञ० ११६१,

मनु० ८।४९, १८७, अमर १६, शि० १३।११२ बद-
मासी, धर्मता ३ दलील, बहुधा, ब्याज, बाह्यरूप,
(इस अर्थ में बहुधा 'उपरोक्त' बतलाने के लिए इसका
प्रयोग किया जाता है), परिखाबलयच्छलेन या म परेषा
बहुपत्य गांधरा—श्ल० २।९५, प्रत्यर्थ्य पूजाभूषदाच्छ-
लेन—रघु० ७।३०, ५४, १६।२८, अट्टि० १।१, अमर
१५, मा० १।१४ ४ इरादा ५ दुष्टता ६ हेत्वाभास
७ योजना, उपाय, तरकीब ।

छन्नम्—[छल + ल्यट्, शिष्या टाप् च] घोषा देना,
उगाना, बुद्धि में दूसरे को पराजित करना ।

छन्नयति (ना० घा० पर०) अपनी चतुर्धा से बुद्धि में दूसरे
को पराजित करना, घोषा देना, उगाना—बलि छन्नयते
गीत० १, वीरबाललाहछन्नयति—योग्य—रघु० १६।
६१, अम० १०।३६, अमर ४१ ।

छन्निकम् [छल + ठन्] एक प्रकार का नटक या नृत्य—
छन्निक दुष्प्रवाच्यमूदाहरणित—मानवि० २ ।

छलित् (पु०) [छल + ङित्] उग, उचरना, घट ।

छलित्—स्त्री (स्त्री) [छद् + क्विप्, सौ लालि—ला + क
गीरा' ङीप्] १ बलकल, छाल २ कौलने शाली लता
३ मन्तान, प्रजा, मन्तान, औकाद ।

छात्रिः (स्त्री०) [छपति असार छिति तमा वा—ट्। वि
किञ्च वा ङीप्] १ आमा, बेहरे की सुन्नी, चेष्टा का
रत्नक—शुभकरीययाष्टमूलच्छत्रि—रघु० १।३८,
छात्रि पाण्डुरा—श्ल० १।१०, मेघ० १३ २ सामान्य
रत्नक ३ शौच्य, आमा, कान्ति—छत्रिकर मुञ्चर्ण-
मुञ्चिभ्य—रघु० १।४५ ४ प्रकाश, दीप्ति ५ त्वचा,
खास ।

छाय (वि०) (स्त्री०—सी) [छा + गन्] बकरे या बकरी
से सम्बन्ध रखने वाला—वाङ्म० १।२५८,—प. (स्त्री०
सी) १ बकरा बकरी, ब्राह्मणसञ्जागने ववा (वचित)
—हि० ४।५३, मनु० ३।२६९ २ भेष राशि,—भम्
बकरी का दूध । मम०—भोजन (पु०) भेडिया,—मुक्त.
कान्तिकेय का विशेषण,—रथ— बहल आग की देवता
अग्नि की उपाधि ।

छायाम् [छाय + अण्] मूले कण्डो की आग ।

छायक (वि०) (स्त्री०—सी) [छगल + अण्] बकरी से
प्राप्त होने वाला या उससे सम्बन्ध,—ल बकरा ।

छाल (वि०) [छा + क्त] १ काटा गया, बिचकल २ निचल
दुबलापनला, छाल ।

छात्रः [छत्र गुरोर्बेग्यावरण शीलमस्य सिद्धा० छत्र + ङ
विद्यार्थी, शिष्य,—भ्रम् एक प्रकार का मधु । मम०
—गच्छ. काण्ड का अन्त्यमन्त्रक विद्यार्थी जिस श्लोको
का केवल आरम्भिक पद याद हो, श्लोचम् एक दिन
रकने हुए दूध से निकाला हुआ मक्खन,—असक
मन्दबुद्धि या शूर्त विद्यार्थी ।

छाद्यम् [छद् + णिच् + घञ्] छपर, छत्र ।

छाद्यमन् [अण् + णिच् + ल्यट्] १ आवरण, पर्दा (बाक०
भी) विनिर्दिष्ट छाद्यमन्त्राया—मनु० २।७ २ छिपाना
३ पत्र ४ परिधान ।

छाद्यित (वि०) दे० छत्र ।

छाद्यिक [छपन् + ठन्] शूर्त, बपटी मनु० ४।१९५ ।

छान्दस (वि०) (स्त्री०—सी) [छन्दस् + अण्] १ वैदिक,
वेदा के लिए विशेष शब्द जैसा कि "छान्दस् प्रयोग",
२ वेदाध्यायी, वेदस ३ पद्यमय, छन्दोबद्ध,—स. वेद-
ज्ञाना ब्राह्मण ।

छाया [छा + ष + टाप्] १ छाँह, छाँव (त० समास के अन्त
में 'छाव' हो जाना है जब कि छाँह की सधनता का
बाध अपक्षित है) उदा० दक्षुच्छायानियन्त्र रघु०
४।२०, इसी प्रकार ७।४, ५०, मुद्रा० ४।२१, छाया-
मय मानुगता नियन्त्र—कु० १।५, ९।४६, अनुभवति
हि मुञ्चो पादपस्तीव्रमृणु शमयति परिताप छायाया
मन्त्रिणा—श्ल० ५।७, रघु० १।७५, २।६, ३।७०,
मेघ० ६७ २ प्रतिबिम्बित प्रति, अक्स—छाया न
मूर्छति मलापह्लप्रसादे गुड्दे तु दण्डजले मूलशयकासा
—श्ल० ७।३० ३ मन्त्रकृता, मन्तान ४ अन्वय
कल्पना, बुद्धिभ्रम ५ रत्ना का समाधिधन ६ दीप्ति,
प्रकाश—छायापञ्चलनक्षेत्र रघु० ४।५, रत्नच्छाया-
व्यतिकर—मघ० १५।३६ ७ रत्न—मा० १।५ ८ चेतु
की रत्न, स्वाभाविक रत्नरूप, केवल लावण्यमयी
छाया त्वा न मूर्च्छति—श्ल० ३ मेघे रत्नानि त्रिभे तव
मूलच्छायानुकारो शयी—सा० ८ ९ गीतन्द—छाय-
च्छाय भवनम्—मेघ० ८।१० ४ १० रत्ना ११ पक्ति,
रेखा १२ अथकार १३ रिखन १४ दुर्गा १५ सूर्य की
पत्नी (यह सूर्य की पत्नी तथा की प्रवृत्ति—या छाया
ही थी, फलतः दिन समय सञ्जा आने पति को बिना
बनाये अपने पिता क घर चलीग ई ती छाया से सूर्य के
तीन मन्तान हुए दो पुत्र—सावर्णि और छनि, एक
कन्या तृती) । मम०—अङ्क चन्द्रमा,—कर छाता
लेकर चलने वाला,—ग्रह शोभा, दर्पण,—सत्य,—सुत
सूर्यपुत्र छनि,—सथ वह मूढ जिमकी छाया घनी है,
उपायदार वेद मेघ० १ द्वितीय (वि०) वह जिसका
माथ एक मात्र छाया हो, अकेला,—यथ पर्यावरण
—रघु० १।३१, —सूत्र (पु०) चन्द्रमा,—मान चन्द्रमा,
—नम् छाया का भागना,—चित्रम् छात्री,—भूषाधर
चन्द्रमा,—कर्मम् छाया द्वारा काल का ज्ञान करने
वाला यन्त्र, घूषधरी ।

छायावय (वि०) [छाया + वयट्] प्रतिबिम्बित, छायाधार ।

छि (स्त्री) [छा + कि बा०] गाली, अपनब्ध ।

छिष्या [छिच् + क + टाप्] शीकाना, छोक ।

छित्त (वि०) दे० 'छात' ।

छिति (स्त्री०) [छिद् + चित्] काटना, टुकड़े-टुकड़े करना ।

छित्तर (वि०) (स्त्री० स्त्री) [छिद् + श्वर्य प्र०] दम्यत] 1 काटना, काट देना, चीरना, कटाई करना, फाटना छेदना, टुकड़े २ करना, विदीर्ण करना, लच्छ-लच्छ करना, विभक्त करना—नेन छिदिति अत्राणि-भग० २।२३, रघु० १।२।८०, मनु० ४।६१, ७० याज्ञ० २।३०२ 2 बाधा डालना, बिपन डालना 3 हटाना, दूर करना, नष्ट करना, घालना करना, मारना—तृष्णा छिन्धि- भर्तृ० २।७७, एतन्मे मजय छिन्धि मतिर्मे मप्रमुद्रति—महा०, गणधो रथमप्राप्या तामाशा च मुरद्धियाम्, अर्धं चन्द्रमुखैर्दार्णयिच्छेद कदलीमुखम्-रघु० १२।१६, कु० ७।१६, अश्व- काट डालना, टुकड़े २ कर देना, अलग २ करना, विभक्त करना 2 भेद बनाना, विवेचन करना 3 सुधारना, परिभाषा देना, सीमित करना (इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग व्यास में बहुमत में होता है), दे० अवच्छिन्न आ, — 1 काट डालना, फाड़ना, टुकड़े २ करना 2 छीनना, लोभोटना, ले लेना कु० २।६६, मा० ५।२८ 3 काट डालना, अलग कर देना—मनु० ८।२११, 4 हटाना, लींचकर दूर करना 5 लींचना, लींचकर दूर करना, उद्घन करना, निकालना 6 अवहोचना करना, ध्यान न देना, उद्- .1 काट डालना, नष्ट करना, उन्मूलन करना, उखाड़ देना नीलच्छिदादारमनो मूल कृपा चानितुष्ण्या- महा०, किं वा रिपुस्त्वव घन स्वयमुच्छिन्नमनि - रघु० ५।७१, २।७३, पच० १।६७ 2 हस्तक्षेप करना, बिपन डालना, गोकना अर्धेन नु विहोतमय पुख्यस्मात्पथेभ्यः, उच्छिद्यन्ते क्रिया सर्वा घोमे कुमरिणो यथा—रघु० २।८५, मनु० ३।१०१ परि 1 फाड़ना, काट डालना, टुकड़े-टुकड़े करना 2 घायल करना, अग-भय करना 3 अलग करना, विभक्त करना, जुदा करना—रातेन परिच्छिद्य-सिद्धा० 4 सही-सही निश्चिन करना, सीमा बनाना, परिभाषा करना, निश्चय करना, भेद बनाना विवेचन करना, —माध्यस्था भगवती नो गुणदोषत परिच्छेत्तुमर्हति—सात्वि० १. (न) यथा परिच्छेत्तुमिषणघालम्-रघु० ६।७७, १।७।५९, कु० २।५।८ प्र- , 1 काट डालना, टुकड़े २ करना 2 ले जाना, वापिस लेना वि 1 1 काट डालना, तोड़ना, फोड़ना, विभक्त करना—यदर्थं विच्छिद्य भवति क्लमन्धातमिव तत् -श० १।९, रघु० १।६२०, भर्तृ० १।१६ 2 बाधा डालना, तोड़ देना, समाप्त करना लयन करना, नष्ट करना, (कुल का दीपक) वृथा देना—विच्छिद्यमानेऽपि कुले परत्य-भट्टि० ३।५८, अमर ७४, शब्द- 1 काटना, काट डालना, विभक्त करना 2 दूर करना,

साफ कर देना, निवारण करना, हटाना (सबेह आदि) ।

छिद् (वि०) [छिद् + चिक्] (समास के अन्त में) काटने वाला, विभक्त करने वाला, नष्ट करने वाला हटाने वाला, लच्छ-लच्छ करने वाला—अर्धच्छिदात्तामप्राप्या-पानाम्- रघु० ५।६ पक्षुच्छिद्य फलस्य—मालाव० २।८ ।

छिद्यकम् [छिद् + क्वन्] 1 इन्द्र का वक्त्र, 2 होग ।

छिदा [छिद् + अद् + टाप्] काटना विभाजन ।

छिदिः (स्त्री०) [छिद् + इत्] 1 कुल्हाड़ा 2 हस्त का वक्त्र ।

छिदिरः [छिद् + किरच्] 1 कुल्हाड़ा 2 मध्य 3 अग्नि 4 रम्सा डारी ।

छिदुर (वि०) [छिद् + कुरच्] 1 काटने वाला, विभक्त करने वाला 2 आसानी से टूटने वाला 3 टूटा हुआ, अव्यवस्थित अन्वयान्त—सलज्यते न च्छिदुराऽपि हार-—रघु० १६।६२ 4 शत्रु 5 घूर्न, बदमाश, शठ ।

छिद्र (वि०) [छिद् + रच्, छिद्र + अच् वा] छिदा हुआ, छिद्रो से युक्त—इम् 1 छिद्र, दरार, फट, कटाव, रगड़, गर्न, बिबर, दरज—तत्रविच्छिद्राणि ताव्येव प्राच-स्यावन्तानि नु—याज्ञ० ३।१९, मनु० ८।२३९ अथ पटविच्छिद्रावैर्यज्जहान-मुच्छेत् ०।९, इमी प्रकाश काश् घृमि 2 दाप, वृत्ति, द्रवण—न हि सर्वपमात्राणि पर-च्छिद्राणि पश्यसि, आत्मनो विलसमात्राणि पश्यप्रपि न परदमि—महा० 3 भेद्य या क्षीण अग, दुर्बल पक्ष, दौष, मूलना—तास्य छिद्र परो विद्याविच्छिद्राच्छिद्र मूल नु, मूलन कर्म इवाह्वानि रसेद्विद्यग्मात्मन-मनु० ७।१०५, १०२, छिद्र निरूप्य महसा प्रविशत्यथक्—हि० १।८१ (यहा छिद्र का अर्थ 'सूराव' भी है), पञ्च० ३।३९ सम०- अनुर्वीचिन्, - अनुसम्भानिन्, - अनुसारिन्,—अन्वेषिन् (वि०) 1 दाप या मुटियाँ डूबने वाला 2 दूसरो की दूषित बातों को मोजने वाला, दूसरो में दोष निकालने वाला, छिद्रान्वेषी—सर्पणा दुर्बलाना च परच्छिद्रानुर्वीचिना—पञ्च० १,—अन्तरः बेन, नर-कुल, सरकपडा, - आत्मन् ।) ओ अपनी शर्तियाँ दूसरो पर प्रकट कर देता है, कर्ण (वि०) जिसने कान बिधवा लिये है, श्रान्त (वि०) 1 दोषों का प्रदर्शन करने वाला 2 दोषवर्ती ।

छिद्रित (वि०) [छिद्र + इतच्] 1 छिद्रो से युक्त 2 जिधा हुआ, छिद्रा हुआ ।

छिद्य (भू० क० क०) [छिद् + क्त] 1 कटा हुआ, विभक्त किया हुआ, विदीर्ण, कटा हुआ, लच्छित, फाड़ा हुआ, टूटा हुआ 2 नष्ट हुआ, दूर किया हुआ— दे० छिद्र, —सा बाराङ्गना, वेष्णा । सम०—केस (वि०) जिसके बाल काट लिये गये हैं, जिसका शीर या मुच्छन हो

बुका है,—कुकः भाच्छत बल,—ईभ (वि०) जिसका सन्देश मिट गया है,—मालिक (वि०) जिसकी नाक काट गई है,—विभ्र (वि०) जो पूरी तरह काट दिया गया है, जिसका अंग अंग ही गया है, क्षलविभ्रत, काटा हुआ,—मस्त,—मस्तक (वि०) कटे हुए सिर वाला,—मूष (वि०) जिसे काट ले काट दिया गया है—रघु० ७।५३,—इवाकः एक प्रकार का दमा,—सख्य (वि०) जिसके सन्देश हुए हो गये हैं, सन्देशमुक्त, पुष्ट ।

सुखम्बर (स्त्री०—री) [सुखम् इत्यन्वयन्तस्यो दीयते निगच्छति अस्मात् सुखम्+प्+अप्] सुखम्बर नाम का जन्तु, गन्धालु—याज्ञ० ३।२१३, मनु० १२।६५ ।

सुप (पुं० पर०—छपति) स्वर्ण करना, धुना ।

सुप [सुप+क] 1 स्वयं 2 माही, सवाड 3 स्वर्ण, युद्ध ।

सुर 1 (म्बा० पर०—छोरति, छुरित) 1 काटना, विभक्त करना 2 उत्कीर्ण करना, 11 (गुहा० पर०—सुरति, छुरित) 1 डोपना, मानना, सोपना, जड़ना, पीतना, अवगुणित करना 2 मिथाना,—वि -, मानना, लीपना, इकरा, पीतना—मन विनाविच्छुरिता नियेदु कु० १।५५, चौर० ११, निष्क० ४।४५ ।

सुरधम् [सुर+धम्] मानना, लीपना—ज्योत्सनाभ्रम्छुरधमबला रात्रिकापालकीयम्—काव्य० १० ।

सुरा [सुर+क+टाप्] वना ।

सुरिका [सुर+क+टाप्, इवम्] वाक्, सुरी ।

सुरित (पुं० क० कू०) [सुर+स्त] 1 लचित, उचित 2 ऊपर उलाना हुआ, पीता हुआ, भाष्कारित किया हुआ—अनेकानुसुरिताश्मराश—सि० ३।४, ७ इन्-किरणच्छुरितमसौम्—काव्य० १० 3 समाभिधिन, अन्तमिधिन—परस्परस्य सुरितामलच्छवी—सि० १।२२ ।

सुरी, सुरिका, सुरी [सुर+कीप्, सुरी+क+टाप्, ह्रस्व, सुरी प्यां० दीर्घ] वाक्, सुरी ।

सुर 1 (म्बा० पर०, पुं० उ०—छपति, छर्दपति-ते) खलना 11 (वधा० उ०—छुरति, धून) 1 लेकना 2 चमकना 3 चमन करना ।

सुक (वि०) [छो+हेकन् वा० टारा०] 1 पालतु, धरेल (जैसे कि हिलजन्तु) 2 नागरिक, गहरो 3 बुद्धिमान्, नागर । सम०—अनुशास अनुशास के पाँच अंशों में से

एक, 'एक वाग वर्णावृत्ति' जो कि ज्यज्जन् समूहों में अनेक प्रकार से तथा एक ही वाग घटने वाली समाजना है—उदा०—आदाय वसुतान्मनयोक्तुबन्धे परे भ्रमरात्, अयमेति मन्मन्त्र कावरीवागिपावन पवन—सा० ६३४,—अपह्नुति (स्त्री०) अपह्नुति अल-कार का एक भेद चन्द्रालोक सोदाहरण निरूपण करना है—संकापह्नुतिरन्वयम् धङ्गान्मन्मन्त्र निह्वये, प्रजल्प-न्मन्त्रे सम काले कि न हि तूय ५।१७,—उक्ति (स्त्री०) वक्त्रिण, श्याम्यवक्त्र वक्त्रिण, इषयंक मुहाविरा ।

सुख [छिद्+चञ्] 1 काटना, गिराना, ताड़ डालना, लच्छ-लच्छ करना—अभिहारच्छेदपातना क्रियन्ते नन्दन-हुमा—कु० २।४१, छेदो दशम्य दाहो वा—मालवि० ४।४, रघु० १।४१, मनु० ८।२७०, ३७०, याज्ञ० २।२२१ २० 2 निरक्षण करना, हटाना, छिन्न-मिन्न करना, नाफ करना, जैसा कि 'शस्यच्छेद' में 3 नाश, बाधा—निद्राच्छेदाभितासा—मुद्रा० ३।२१ 4 बिराम, अवसान, समाप्ति, लोप हुना जैसा कि 'शस्यच्छेद' में 5 टुकड़ा, धाम, कटोती, लच्छ, अनुभाग—विमकिमलयच्छेदपाथेयवन्न मेघ० ११, ५९, अभिनवकरिद्रन्च्छेदपाथु वपाल- मा० १।२२, कु० १।४ म० ३।७, रघु० १२।१००, 6 (पणिर्न में) भाजक, हर (भिलराणि का) ।

सुखम् [छिद्+चञ्] 1 काटना, फाटना, काट डालना, टुकड़े २ करना, लच्छ-लच्छ विभक्त करना—मनु० ८।२७०, २९२, ३२२ 2 अनुभाग, अंश, टुकड़ा, भाग 3 नाश, हटाना ।

सुखि [छिद्+ङ्] नई ।

सुख्य [छम्+अणन्, एवम्] मातृगिन्तुहोत, अन.थ ।

सुखक [छो+हेकक] बकरा ।

सुखिक [छेद+उत्] बेत ।

सु (दिवा० पर०—छपति, छान या छित-धेर० छापयति) काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना, कटाई करना, लबनी करना,—भाट्टि० १।४।११, १५।६० ।

सुटिका [छुट्+श्ल+टाप्, इवम्] चुटकी ।

सुतरम् [सुट्+न्यट्] त्याग करना, छोड़ देना ।

अ

अ (वि०) [अि-अप्-ज्+अ] (समास के अन्त में) से या में उलप, पैसा हुआ, बसान, अकतोर्ण, उद्भूत, आदि—अभिनेत्रव, कुलव, जलव, क्षयिवव, अक्षव,

उद्भूत आदि,—अ 1 पिता 2 उन्पति, अन्व 3 विप 4 भूतना, धेर या पिशाच 5 विनेना 6 कान्ति, प्रभा 7 विष्णु ।

का पुत्र, अर्ध विधवा पत्नी [यहू दशम्य का अनिष्ट मित्र था, जब रावण सीता का अपहरण करने के जा रहा था तो जटायु ने सीता का रक्षण और कल्प-कण्ठ से मुक्त करने में रावण के हाथों से मृत्यु का कारण बना]
 १. राम, धर्मात्मा युद्ध हुआ, परन्तु वह सीता को रावण के हाथों से न छोड़ा सका और स्वयं धायक हो प्राणान्तक पीडा में लक्ष्मण गया। अन्त में सीता को मोक्ष करने हुए राम उनके पास में निकलें तो उस दयालु जटायु ने राम को यह वनला कर कि सीता का रावण उठा कर ल गया है, अन्तिम प्रणाम किया। राम और लक्ष्मण ने उसका विधिपूर्वक अन्त्येष्टि सम्कार किया।

जटाक (वि०) [जटा+क] 1 जटाजटधारी 2 (विषके हुए बालों को भाँति) एक स्थान पर एकट्ठे किये हुए —भाषि० १३६, —स. कवर का पेड़।

जटि. (टी) (स्त्री०) [जट+इत् जटि+हीप्] 1 गूलर का पेड़ 2 उपर्युक्त कर विषके हुए 3 मधान, सम्यन्ध।

जटिन् (वि०) (स्त्री०-भौ) [जटा+इनि] जटाधारी, (पु०) 1 विष का विशेषण 2 लक्ष का वृक्ष, पाकट का पेड़।

जटिल (वि०) [जटा, उल्लख] 1 (मन्यामया टी भाँति) जटाधारी,—विशेष कठिनजटिलस्तपोमन्त्र—कु० ५३०, (यहाँ 'जटिल' पद 'मन्त्रा भी हैं और इसका अर्थ है 'मन्यामंत्र') 2 पत्नीवा, अन्तरिक्ष, अन्तर्निधि, गडगड किया हुआ—विज्ञानमन्त्रपत्रे वषट्ति विपत्तिलज्जितान्, न मुञ्चाम कामानन्त गहनं मोहमहिमा भून्० १३१ 3 गहन, अन्धेय, —ल 1 निद्र 2 शरणा।

जट्टर (वि०) [जावने अनुर्वर्णो वाग्मिन् जन्+अर डाल दया नारा०] कठोर मन्त्र दूद, -र, —रम् वेद, उदर -जट्टर को न विपत्ति डेवलम् पत्र० १५२ 2 गर्भाक्षर 3 विमो बन्तु का भीरवी भाग। सम० —अग्नि वेद में विषय श्रेय का आहार को पचाने का काम करती है, आशानव की गिल्टियाँ से निकलने वाला रस,—आषय जलादर रोग,—ज्वाल, —व्यथा उदर-ज्वाल, भूय का कष्ट बाल—वैश्या, —घातना मन्त्रवाक का कष्ट।

जट्ट (वि०) [ज्वलि पत्नीभक्ति जन्+अच्, लक्ष्य ड] 1 शोच, जमा हुआ या ठाठा, शील वा टिटुर देते वाला 2 मन्द लुभा-लुभा, गनिहोन, थडोकून —चिन्तात्र दशनम्—सं० ६५, परामुत्तु हर्षवेदेन पाणिता रपु० ३१६ ३ निश्चेन, चेतनारहित विशेषकृत्य, मन्दबुद्धि—मदान्त्यान् पदगान् वापुम्—मग० १५, इसी प्रकार जट्टी, जट्टमति

—पात्र० २१०५, मनु० २११० 4 मदीकृत, उदासीन वा नेचनाम्युय किया हुआ, गुणविचनम्युय अरसिक वाम्यामजट कथं तु विषयवाक्सकोमुद्रुल —शिकम० ११० 5 हृष्टया देने वाला, जट बना देने वाला, महाशुभ्य करने वाला 6 गुणा 7 वेद (दायभागे) पदने के अभाव, इम् 1 गुणा 2 सीसा। सम० क्रिय (वि०) मन्त्र, दास्यमृषी।

जट्टता, स्वम् [जट+तल्+टाप्, जट+त्+व वा] 1 मन्दता, कार्य में अक्षि, आलस्य 2 अज्ञान, बुद्धयन 3 (अल० शा० में) ३३ मन्त्री भासा में मन्—मन्दता, मा० २० १५५।

जट्टिन् (पु०) [जट+इमनिच्] 1 टण्डक 2 जट्टता 3 मन्दता, उदासीनता 4 मूर्छा, नशाहीनता।

जट्टु (पु०) [ज्वलन वधादिभ्यं जन्+उ त आदेश] लाभ। सम० अक्षयम् शिवाजीन, पुत्रक धारण का योग्य, रस लाच महावन।

जट्टुकम् [जट्टु+कम्] लाय, महावन।

जट्टुका [जट्टुक, टाप्] 1 नाथ 2 चमत्कार।

जट्टुकी, जट्टुका [जट्टुक; रीप्, जट्टुका नि० दीर्घ] चमत्कार।

जट्टु (पु०) [जट्टु+क सोऽन्तादेस] शोवाग्नि, हुमली।

जन् (वि०) [जा० जायते जन् व० वा० जयते वा जायते] पैदा होना, उत्पन्न होना [जा० के साथ], अर्जित ने वै पुत्र ऐव० मनु० ११०, ३३२, ४१, प्राणदायुज्जायते—रुद्र० १०१०१२, मनु० १००८, ३१५, १०५ 2 उटना फटना (पौधे को भाँति) उधना 3 होना, नन होना, प्राप्ति होना, पटना—अनिदादिद्विज्जायते न गतिर्जायते शुभा—जि० ११६, स्वनेत्राऽरिं क्षायान् भट्टि० ६३०, पात्र० ३१०५ मनु० ११००, प्रे० जनयति जग्म देना, पैदा करना, उत्पन्न करना—अन्—३ वाद में पैदा होना—पुत्रिकाया कुलाया नु पदि पुत्रान्ज्जायते—मनु० ११३८ 2 सम्यक् पैदा होना—अनी कुषामन्-मनोज्ञान—रुद्र० ६१०८ तन्माज्जात—मल्लि०, अभि—, 1 पैदा होना, उत्पन्न होना, उदय होना फटना—नामात्क्रोधादिभिरावते भग० २१६२० हि० ११०५ 2 होना, घटित होना 3 पश्चित होना 4 उत्पन्न होने के जन्म होना 5 उत्पन्न होना—मग० १५३, उप- 1 पैदा होना, उत्पन्न होना, निकलना, उगलना—अमघरक्षोपजायते—मनु० ११६२ 2 फिर जन्म लेना, पात्र० ३१५५, भग० १६०, 3 होना, घटित होना। प्र- वि- सम्- 2 उधना, निकलना, फटना 2 पैदा होना, उत्पन्न होना।

जन्. [जन्+जन्] 1 जीवन्तु, जीवित प्राणी, मनुष्य

2 व्यक्ति, पुरुष (बाहे मनुष्य ही या स्त्री) — बच बच बच परीक्षामन्मथो मृगयायै समयेधितो जन - शा० २।१८, तत्सत्य किमपि इव्य यो हि यस्य प्रियो जन — उत्तर० २।१९, इसी प्रकार 'सखीजन' सहेली, 'दासजन' सेवक, 'अकलाजन' आदि (इस अर्थ में 'जन' या 'अयजन' का प्रयोग बहुधा बचना के द्वारा स्त्री या पुरुष दोनों के लिए एकवचन या बहुवचन में किया जाता है और उतम पुरुष भी प्रथम पुरुष के रूप में प्रयुक्त होता है) — अय जन प्रष्टमनाम्नपाचने — कु० ५।४० (मनुष्य), भयवन्वराजय जन प्रतिकलाचरित क्षमस्व मे — रघु० ८।८१ (स्त्री) गम्यान्नु सगन्तुर् अन्विमि भ्रातापि ना रक्षामि — तागा० १।१ (स्त्री, ब० व०) 2 सामूहिक रूप में मनुष्य, लोग, समार (ए० व० या ब० व० में) — एव जना गृह्णामि — मातृका० १, सतीमपि शक्तिकुलेसश्रया जनाज्यया भद्रमती विद्याचूते — शा० ५।१७ 3 वय गट्ट, कबीला 4 'मह' लोक से परे का समार देवत्व को प्राप्त मनुष्यों का स्वर्ग। सम० अतिथि (वि०) असाधारण, असाधारण, अनिमानव, अतिथि, अतिथिवच राजा, — अस्त 1 वह स्थान जहाँ मनुष्य नहीं रहने, वह स्थान जो बना हुआ नहीं है 2 प्रदेश 3 यम का विशेषण, — अस्तिसम्पु 1 मही सबाद, कान मे कहना या एक ओर होकर कहना (अव्य०) एक ओर की (नाटको में) — शा० ८० रमभव के निदेश को परिभाषा इस प्रकार बतलाता है — विपत्ताकाकर्मणात्यानपवायानिगकषाम्, अन्वेषाममत्र यन् स्वाज्जानान्ते नत्रजानानिकम्, ४०५, अर्धेन विराम या कृष्ण का विशेषण, — अज्ञान भ्रैडिया, आकीर्ण (वि०) लोगों मे ठगानस भरा हुआ, जनमकुल, आचार लोकाचार, लोकीरिति, — आश्वथ धर्मशास्त्र, सगय, पयिफायम, — आश्वयः मण्डप, शर्मियाना, इन्द्र, — ईश, — ईश्वर राजा, — इष्ट (वि०) लोकप्रिय (ष्ट) एक प्रकार की चमेली, — उवाहुरणम् यथा, कीर्ति, — ओष जनममद, मोद, जमघट, — कारित् (पु०) अलकनक, — चक्षुस् (नपु०) 'लोकलोचन' सूर्य, — ब्रा छात्रा, छनरी, — श्रेव गजा, — श्व 1 जनसमुदाय, वश, राट्ट — यज्ञ० १।३६० 2 राजधानी, शास्त्राय, बसा हुआ देश — जनपदे न गद पदमादधो — रघु० ९।४, दाक्षिणात्ये जनपदे — पथ० १, मेघ० ४।८ 3 देश (विप०) पुर, नगर) — जनपदबहुलोचने पीयमानः मेघ० १६ 4 जनसाधारण, प्रजा (विप०) प्रभु) 5 मनुष्यजाति, — पबिन् (पु०) किसी जनसमुदाय या देश का राजा, — प्रधावः 1 अफवाह, किवदन्ती, जनश्रुति 2 लाका-पवार, बदनामी, — विध (वि०) 1 लोक हितेच्छु 2 सर्वप्रिय, — अर्थात् सर्वसम्पत् प्रया, — रञ्जन्म् लोगों

को मुक्त देना, लोकप्रियता का प्रसाद प्राप्त करना, — अ 1 किवदन्ती 2 बदनामी, लोकपावाद, — लोक ऊपर के सात लोकों में से पंचम, महर्लोक के ऊपर स्थित लोक, — वाद ('जनवाद' भी) 1 समाचार, जनश्रुति 2 लोकपावाद, — ब्यबहार लोकप्रिय चलन, — धृत (वि०) विख्यात, प्रसिद्ध, — धृति. (स्त्री०) किवदन्ती, जनरव, — सबाध वि० घना बना हुआ, — स्थानम् दण्डक वन के एक भाग का नाम — रघु० १०।४२, १३।०२, उत्तर० १।०८, २।१७।

जनक (वि०) (स्त्री० — निका) [जन् + णिच् + क्तुल] क्रम देने वाला, पैदा करने वाला, कारण बनने वाला या उत्पन्न करने वाला, कलेशजनक, दुष्पजनक आदि, — कः 1 पिता, जन्म देने वाला 2 विद्वह या निविला के प्रसिद्ध राजा, सीता का धर्मपिता। वह अपने प्रभुत ज्ञान, अच्छे कार्य और पवित्रता के कारण प्रसिद्ध था। राम के द्वारा सीता का परित्रायण किये जाने पर उन्होने वैराग्य ले लिया, मुच और दुःख के प्रति उदासीन हो गये और अपना सभय दार्शनिक चर्चा में बिनाया। याज्ञवल्क्य मुनि जनक के पुत्रांगित और परामर्श दाला थे। सम० — आत्मजा, तथा, — नन्विन्, — सुता जनक की पुत्री सीता के विशेषण। जनञ्जम् [जनेमया गच्छति बहि, जन + गम् + षच्, शुभगम] चाणाल।

जनता [जनाना समूह तन्] 1 जन्म 2 लोगों का समूह, मनुष्य जाति, समुदाय — पर्यायि स्म जनता दिनात्यये पावणे शक्ति दिवाकराविव रघु० १।८२, १।५६७, शि० ९।१६।

जनन (वि०) [जन् + ल्य ट्] पैदा करने वाला, उत्पन्न करने वाला आदि, — नम् 1 जन्म, पैदा होना, — यावज्जननम् तावन्मरणम् — मंह० १३ 2 पैदा करना, उत्पादन करना, मृज्ज करना — सोभाजननात् — कु० १।६२ 3 साक्षात्कार, प्रत्यक्षीकरण, उदय 4 जीवन, अस्तित्व — यदैव पूर्वं जन्मे शरीर मा क्षत्रापात्मनुदीति समर्थ — कु० १।५३, शं० ५।२, गात्र, कुल, वक्षरपरा। जननि. (स्त्री०) [जन् + अनि] 1 माता 2 जन्म।

जननी [जन् + णिच् + अनि + ङीप्] 1 माता 2 दया, दयालुता, कल्याण 3 बचनवादि 4 लाय।

जनमेजय [जनान् एश्वयि इति जन् + एज् + णिच् + षच्, मुमामम्] हस्तिनपुर का एक प्रसिद्ध राजा, परीक्षित का पुत्र और अर्जुन का पिता (जनमेजय का पिता सपि के कोटे जाने से मरा, इसलिए जनमेजय ने उस क्षति का प्रतिबोध करने के लिए समार के सर्वप्रति का समूल विनाश करने के लिए दूध सकल्प किया। तदनुसार एक सर्पिण का आरभ किया गया जिसमें तसक को छोड़ कर और सब सर्प जला दिये गये।

आस्तिक ऋषि के बीच में पकने से लक्षक के प्राण बचे और सर्पवध बन्द कर दिया गया। इस यज्ञ के कारण ही वैशम्पायन ने राजा को महाभारत की कथा सुनाई, राजा ने भी श्रद्धाहत्या के पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए उस कथा को ध्यानापूर्वक सुना।

जलपितृ (वि०) (स्त्री—भौ) [जन् + पितृ + तृच्] पैदा करने वाला, जन्म देने वाला, सृष्टिकर्ता—(प०) पिता।

जनपित्री [जनपितृ + ङीप्] माता।

जन्म् (नप०) [जन् + पितृ + अन्तुन्] दे० जन ३।

जनि, **जनिका**, **जनी** (स्त्री०) [जन् + इत्, जनि + न्तृ + टाप्, जनि + ङीप्] 1 जन्म, सुजन, उत्पादन 2 स्त्री 3 माता 4 पत्नी 5 स्तुवा, पुत्रवधू।

जनिता (वि०) [जन् + पितृ + क्त] 1 जिसे जन्म दिया गया है 2 पैदा किया हुआ, सुजन किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ।

जनिता (प०) [जन् + पितृ + तृच्] पिता।

जनिभो [जनिन् + ङीप्] माता।

जन् (न्) (स्त्री०) [जन् + उ, जन् + ऊङ्] जन्म, उत्पत्ति।

जन्तु (नप०) [जन् + उत्ति] 1 जन्म - विम्भादिभ्यो जन् + भासि ० ११६ 2 मृष्टि, उत्पादन 3 जीवन, अस्तित्व- जन् सर्वस्वाद्य जन्मि क्विनीत्स भवन् —भासि० २१५५। सम०—**जन्वाद्यम्** जन्म से अन्धा, जन्वाद्य।

जन्तु [जन् + तृच्] 1 जानवर, जीवित प्राणी, मनुष्य —या० ५१२, मनु० ३१७१ 2 आत्मा, व्यक्तित्व 3 निम्न जाति का जानवर। सम०—**कन्तु** 1 पोषे की सीधी 2 पोष, - फल गुलर का वृक्ष।

जन्तुका [जन्तु + क + क + टाप्] गाय।

जन्तुपत्नी [जन्तु + मत् + ङीप्] पत्नी।

जन्मम् [जन् + मन्] उत्पत्ति।

जन्मन् [जन् + मनिन्] 1 जन्म—या जन्मने शक्यव्यू प्रवेदे—कु० ११२१ 2 मूल, उद्गम, उत्पत्ति, सृष्टि—आकरे पथरागाना जन्म कावमणे कुल -हि० प्र० ४४, कु० ५१६० (सवाल के अन्त में) से उत्पन्न या उदय—सग्लस्करवसधदुजन्मा दवानि—मेघ० ५३ 3 जीवन, अस्तित्व—पुत्रवधि हि जन्मन्—मनु० १११००, ५१३८, भग० ४१५ 4 जन्म-स्थान 5 उत्पत्ति। सम०—**अधिप** 1 निव का विशेषण 2 (जीवित्व में) जन्म लज्ज का स्वामी,—अन्तरम् दूसरा जन्म,—**अन्तरीय** (वि०) दूसरे जन्म से सम्बद्ध या किसी दूसरे जन्म में किया हुआ,—**अन्व** (वि०) जन्म से ही अन्धा,—**अन्धयो** भाद्रपद कृष्णपक्ष की अष्टमी, षोडश्या का जन्म दिन,—**कील** विष्णु का विशेषण,—**कुष्माक्षी** जन्म-पत्निका में बनाया गया चक्र जिसमें जन्म के समय की ग्रहों की स्थिति दर्शायी गई हो,

—**कृत्** (प०) पिता,—**क्षेत्रम्** जन्म स्थान,—**तिथिः**

(प०, स्त्री०)—**विलम्**—**विवस** जन्मदिन,—**व** (वि०)

—**नक्षत्रम्**—**भम्** जन्म के समय का नक्षत्र,

पिता,—**नामम्** (नप०) जन्म से वास्तव्य दिन रक्ता गया

—**पत्रम्**—**पत्रिका** वह पत्र या पत्रिका जिसमें नाम,—**पत्रम्**—**पत्रिका** वह पत्र या पत्रिका जिसमें

जन्म लेने वाले वालक के जन्म काल के नक्षत्र या ग्रह

आदि बतलाये गये हों, **प्रतिष्ठा** 1 जन्म स्थान

2 माता—या० ६,—**भास्व** (प०) जानवर, जीवित प्राणी

—**मादना** जन्मभाज सन्तन—**मृष्टं** १०१६०,

—**भाषा** मातृभाषा- यत्र स्वीयार्थानि किमप्य जन्म-

भाषावदेव प्रत्याकम् विवमति वच सस्मृत प्राकृत

च विक्रम० १८१६,—**भूमि** (स्त्री०) जन्म स्थान,

स्वदेव,—**द्यौ** जन्मपत्र,—**रोहिण** (वि०) जन्म का

रोमी, जिसे जन्मने ही राग लया हो, **सन्मम्** वह कर्म

जो जन्म के समय हो,—**सर्पन्** (नप०) योगि,—**शोधनम्**

जन्म में प्राप्त कर्मों का परिपालन,—**साफल्यम्** जीवन

के उद्देश्यों की सिद्धि,—**स्थालम्** 1 जन्मभूमि, स्वदेव,

वह पर जहाँ जन्म लिया है 2 गर्भाशय।

जन्मिन् (प०) [जन्मन् + इनि] जानवर, जीवधारी प्राणी।

जन्म (वि०) [जन् + ष्यन्, जन् + पितृ + यन् वा]

1 जन्म लेने वाला, पैदा होने वाला 2 जात, उत्पन्न,

3 (ममास के अन्त में) से उत्पन्न, जन्मिता 4 किसी वृक्ष

या कुल में सबद्ध 5 वस्त्र, सामान्य 6 राष्ट्रीय,—**स्य**,

1 पिता 2 मित्र, इन्हे का सम्बन्धी या सेवक

3 साधारण जन 4 जनभूमि, किंवदन्ती,—**न्यम्** 1 जन्म,

उत्पत्ति, सृष्टि 2 जात, मूल, उत्पादित वस्तु, (विप०

जनक)—अन्याता जनक काल—भाषा० ४५, जनकस्य

स्वभावा हि जन्मे तिष्ठति निश्चितम्—**शब्द०**,

3 शरीर 4 जन्म के समय होने वाला अपराधकुल

5 बन्धन, मंश्री, मेधा 6 सप्राप्त, युद्ध—**नत्र** जन्म रक्षा-

धीर पार्वतीदेवैर्गैरभून्—**न्य०** ४१७७ 7 निन्दा,

अपवाद,—**न्या** 1 माता की सहैत्री 2 बच्चा का सम्बन्धी

वधु की सेविका—**याहीनि** जन्मवन्द्यकुमारो—**रप०**

६३३० 3 मुल, आनन्द 4 स्नेह।

जन् [जन् + युच् वा० न अनदेशे] 1 जन्म 2 जानवर

जीवधारी, प्राणी 3 आग 4 सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा।

जप् (श्वा० पर०—उपनि, जपित वा जप) 1 मन्द स्वर में

उच्चारण करना, मन ही मन में बार २ कहना, गुन-

गुनाना—जपश्रीय सर्वैवाकापमन्नावलिम्—**गीत०** ५,

हरिरिति ह्यंगरिति जपनि सकामम्—**य**, ने० १११२६

2 मन्त्रों का गुणगुनाना, मन ही मन प्रार्थना करना

—**मनु०** १११२४, २५१, २५६, उष—, कात में कहना

कावाप्तुस्तु करके अपने अनुकूल कर लेना, विद्वान्हे के

लिए भडकाना या उकसाना—उपन्यासपुत्रवन्—**मनु०**

७११९७।

जपः [जप + जप्] 1 मन ही मन प्रार्थना करना, धीमे स्वर से किसी मन्त्र की बार २ दुहराना 2 वेदपाठ करना, देवताओं के नाम बार २ दुहराना—मनु० ३।७४, गण्ड० १।२२ 3 मन्त्र स्वर से उच्चरित प्रार्थना। सम०—**वाराधनः** (वि०) प्रार्थना मन्त्रों को धीमे स्वर में उच्चारण करने में व्यस्त,—**मात्रा** जप करने की मात्रा।

जप्यः—**जप्यम्** [जप + यत्] 1 मन्त्र स्वर से या मन ही मन में बोली जाने वाली प्रार्थना 2 जपने योग्य प्रार्थना 3 जपी हुई प्रार्थना।

जम्, जम्भुः [(म्भा० पर०—जम्भति, जम्भति) समोच करता, तु० यम् ॥ (म्भा० भा०—जम्भते, जम्भते) जम्हाई लेना, उवासी लेना।

जम् (म्भा० पर० जम्भति) शाना।

जम्भद्विजि (पु०) भृगुवश में उत्पन्न एक ब्राह्मण, परशुराम का पिता, (जम्भद्विजि, सत्यवती और ऋषीक का पुत्र था, वह बड़ा हो पुष्पात्म्या ऋषि था, कहते हैं कि उसने वेदों का पूर्ण स्वाध्याय किया था, उसकी पत्नी रेणुका थी जिससे पाँच पुत्र हुए। एक दिन रेणुका स्नान करने के लिए नदी पर गई तो वहाँ उसने किसी गधवंदस्पती (कुछ के मतानुसार वह चित्ररथ और उसकी पत्नी थी) को जल में क्रीडा करते देखा। उस मनोहर दृश्य को देखकर उसके मन में ईर्ष्या जागी और वह उन दूषित विचारों से कल्पित हो गई, नदी में स्नान करने पर भी वह पवित्र न हो सकी जब वह वापिस घर आई तो क्रोध के अंततः जम्भद्विजि ने उसे सतीत्व की कान्ति से हीन देखकर बड़ा घमकाया और अपने पुत्रों को उसका सिर काट देने को आज्ञा दी। परन्तु पहले चारों पुत्रों ने ऐसा क्रूर दुष्कृत्य करने में वानाकान्ती की। परशुराम उनका सबसे छोटा पुत्र था। उसने तुरंत पिता की आज्ञा का पालन किया फलतः एक कुल्हाड़े से अपनी माता का सिर काट डाला। इससे जम्भद्विजि का क्रोध शांत हो गया और उसने परशुराम से बरदान मागने के लिए कहा। दयालु परशुराम ने अपनी माता को पुनर्जीवित करने की प्रार्थना की जो तुरंत ही स्वीकार की गई।

जम्भन्तु जम्भन्तु।

जम्भती (पु० द्वि० व०) [जाया च पतिरथ] पति और पत्नी—**मु०** दम्पती और जायापती।

जम्भालः [जम्भ + जम्भ् नि० मध्य व २० जम्भ + आ + ला + क] 1 गारा कीचड़ 2 काँई, सेवार 3 केवड़े का पेड़ा।

जम्भालिकी [जम्भाल + इति + ङीप्] एक नदी।

जम्भोरः [जम्भ + ईरत्, व आदेश] चकोतरे का (नीबू की जाति का) पेड़,—**रम्** चकोतरा।

जम्भुः—**जु** (स्त्री०) [जम् + जु पृ०० बुकागम, जम्भु + ऊह] जामुन का पेड़, जामुन (सम०—**जम्भुः**—**द्वीपः** मेघ पहाड़ के चारों ओर फैले हुए सात द्वीपों में से एक।

जम्भु (म्) क. (स्त्री०—की) [जम्भु (व्) + क + क] 1 गीयड़ 2 नीच मनुष्य।

जम्भूलः [जम्भु (व्) तन्नाम फल लाति ला + क] एक प्रकार का वृक्ष, केवड़ा,—**लम्** इन्हें के मित्रों एव दुःख की सखियों द्वारा किया गया परिहास या परिहासात्मक अभिनन्दन।

जम्भ [जम्भ + घञ्] 1 जवाड़ा (प्राय २० व०) 2 दान 3 ज्ञाना 4 कुतर-कुतर कर टुकड़े करना 5 पण्ड, अथ 6 नरकस 7 टोरी 8 जम्हाई, उबासी 9 एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था 10 चकोतरे का पेड़। सम०—**अराति**,—**द्विपु**,—**भेविष्**—**रिपु** इन्द्र का विशेषण,—**अरि**: 1 आग 2 इन्द्र का वज्र 3 इन्द्र।

जम्भका, जम्भा, जम्भिका [जम्भ + कन् + टाप्, जम्भु + गिन् + अ + टाप्, जम्भा + कन् + टाप्, इत्यम्] जम्हाई, उबासी।

जम्भ (श्री) रः [जम्भ भक्षणार्थं गति ददाति - जम्भ + रा + क, जम्भ + ईरत्] नीबू या चकोतरे का पेड़।

जय [जि + जप्] 1 जीत, विजयोत्सव, विजय, मफलता, जीतना (युद्ध में लेने या मुकदमे में) 2 मयम दमन, जीतना—**जैसा** कि "इन्द्रियजय" में 3 भूय का नाम 4 इन्द्र का पुत्र जयन्त 5 पाण्डव राजकुमार युधिष्ठिर 6 विष्णु का सेवक 7 अर्जुन का विशेषण,—**था** 1 दुर्गा 2 दुर्गा का सेवक 3. एक प्रकार का मृच्छा। सम०—**मावह** (वि०) विजय दिलाए वाला,—**जयुर** (वि०) विजयोत्सव मनाने वाला,—**जीलाहल**.

1. जयबोध 2 पासो से खेलना,—**बोध**,—**बोधयम्**,—**वा** विजय का डिंडोरा,—**इष्का** जीत का इका, एक प्रकार का डोल जिसे विजय की सूचना देने के लिए बजाया जाता है,—**यज्जम्** विजय का अभिलेख,—**पास** 1 राजा 2 बड़ा का विशेषण 3 विष्णु का विशेषण,—**युष्क**. एक प्रकार का पास,—**यज्जम्**: 1 राजकीय हाथी 2 अन्ननाशक उपचार,—**जाहिमी** शची (इन्द्राणी) का विशेषण,—**सम्भ** 1 जयभक्ति 2 चारणों द्वारा उच्चरित जयजयकार,—**स्तम्भ** विजय मनाने के लिए बनाया गया स्तम्भ, विजयसूचक स्तम्भ—**निचलान** जयस्तम्भानु गङ्गाज्योतीन्द्रतेज् स—**रम्** ० ४।३६, ६९,

जयवध्वः [जयत् रपो यस्य - व० स०] सिन्धु प्रदेश का राजा, युधिष्ठन का बहनोई, (स्वीकृत धृतराष्ट्र की पुत्री सुशला का अय्यवध्व की व्याही की) [एक बार अय्यवध्व विकार के लिए गया—**वहाँ** यज्जम् में उसे द्रौपदी दिखाई दी। उसने द्रौपदी से अपने लिए और अपने

साधियों के लिए भोजन माँगा। अपनी जाड़ू की बाली से द्रौपदी ने उनको पर्याप्त मात्रा में प्रानरास परोस दिया। उसके इस कार्य से तथा उसके सौम्य से वह इतना अधिक मूग्ध हुआ कि उसने द्रौपदी का अपने साथ भाग चलने के लिए कहा। अपने क्रोध के साथ उसकी बात को अस्वीकार कर दिया परन्तु वह उसे बलपूर्वक उठा कर के जाने में सफल हो गया—क्योंकि द्रौपदी के पति उस समय बाहर शिकार के लिए गये हुए थे। जब वह वापस आये तो उन्होंने उस अपहृत का पीछा किया, उसे पकड़ कर द्रौपदी को मुक्त करवाया—तथा बहुत निरन्ध्र हो जाने पर उसे भी छोड़ दिया। अपने अभिमन्यु का मारने के उपाय ढूँढने में बड़ा भाग लेना। अन्त में वह अर्जुन के द्वारा महाभाग्य की लडाई में मारा गया।

अचलत् | जि + अचट् | 1 जोतना, दमन करना 2 हाथी और घोड़ा आदि का कदब। मय०—युञ्ज् (वि०) 1 जोतनीया से गुणार्जन 2 विजयी।

अचलत् | जि + अच, अनादेश 1 दमन के पुत्र का नाम, —पोलामीयमन्वेनेत् जयनेत् पुरन्दर—विक्रम० ५११६, म० अ२, रघु० ३१२३ ६। ८ 2 निच का नाम 3 कदवा, ली 1 अन्धा या स्तका 2 इन्द्र की पुत्री 3 दुर्गा। सम०—पत्रम् (विधि में) म्यायाधीय द्वाग दीर्घ लिखित व्यवस्था (दोनों दलों में से किसी एक के पक्ष में) 2 अन्वयव्यय के लिए छोड़े हुए धारे के मन्त्र पर लगा नामगट्ट।

अचिन्त् (वि०) | हेतु शीलमन्त्र—जि + इति 1 विजेता, पराजिता—विक्रपाश्र्वस्व अचिनोम्या सुवे वामलाचना—विद्वदा० 2 सकृन् (सुकदवा) जोतने वाला—याम० २।३९ 3 मनोहर, आकर्षक हृदय का दमन करने वाला—जगति जयिमन्ते त भावा नवेनुकलादय—मा० ११२६, (पु०) विजेता अयथील—पौरस्त्या-नेवमाक्रमन्तास्ताञ्जनपदाश्चब्रवी रघु० ५१३४।

अच्य (वि०) | जि + च्त् | जीवन के योग्य, प्रहार्य, जो जीता जा सके (विप० जेय)।

अचट् (वि०) | ज् + अचट् | 1 कठोर, डोम 2 पुराना, अधिक आयु का—अचमनिराडा प्रकामपूर्वी परिणत-विकरिकास्त्वितोर्मिनि जि० ५१२९ (यही 'जट्ट' का अर्थ 'कठोर' भी है) 3 सीध, जोग, निर्बल 4 पूर्वविक्रिय, पक्का, परिष्कार, जट्टकमन—वि० ११११६ 5 कठोर हृदय, क्रूर, ठ पारण, पाँचो पाण्डवों के पिता।

अचरत् (वि०) | ज् + अचट् | बड़ा, अजी, निर्बल।

अचरत् (वि०) | ज् + चरत् | 1 बड़ा अधिक आयु का 2 निर्बल जोग। सम०—काश् एक ऋषि जिसने वायु। सप की बहूने से विवाह किया था [एक दिन वह अपना

सिर अपनी पत्नी की गोद में रखने लगे रहे थे, सूर्य उदने को था। पत्नी ने यह देख कर कि सत्पाकासीन प्रायश्चा का समय बीता जा रहा है, आहिस्ता से जवा दिया। परन्तु गीद में बाधा पहुँचने के कारण जट्टकार का क्रोध आ गया और वह अपनी पत्नी को छोड़ कर गया के लिए वहाँ से चल दिया। जाते समय वह अपनी पत्नी का बना गया कि तुम गर्भवन्ती हो और तुम्हारा पुत्र ही मुझे सम्भालने वाला होगा—साथ ही साथ वह मय वस के साथ को बचावेगा। यह पुत्र ही 'अचरत्' था।—मन्त्र नृदा वेल—दारिद्र्यस्य पग मूनि यन्मातरिबिपालला, जट्टस्यवचन सर्वस्तथापि परमेश्वर पत्र० २।१५९।

अरती | ज् + चत् + डोप् | एक बूढ़ी नारी।

अरत् | ज् + अच्, अन्ताराग | 1 बूढ़ा आदमी 2 भैया।

अरत् | ज् + अट् + टाप् | ('जग' शब्द के स्वान पर कर्म० द्वि० व० के अर्थ अर्थात् विभक्ति पर होने पर विकल्प के 'अरत्' अर्थ हो जाता है) 1 बुढ़ापा—कैकेयो-शङ्खुवेवाह पतिनशुभम जरा—रघु० १२।२, तम्य पमस्तेगामोद् बुद्धय जराया (जस्ता) विना—१।२३ 2 क्षीणता, निर्बलता, बुढ़ापे के कारण दुर्बलता 3 पावनशक्ति 4 एक राजसौ का नाम—दे० 'जगतस्य नो०। सम०—अस्वया क्षोगना,—श्रीयो (वि) वयोबुद्ध, निर्बलीकृत, दुर्बल—अर्थ० ३।१७,—सम्भ एक प्रसिद्ध राजा और योद्धा, बुद्धय का पुत्र (एक शैलिक कथा के अनुसार यह अलग-अलग दो दुर्बलों के मय में पैदा हुआ, 'जग' नामक राजसौ ने इन दोनों दुर्बलों का जोड़ दिया—इसीलिए यह 'जगामय' के नाम से प्रख्यात हुआ। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् यह मगध और चेदि देश का राजा बना। जब इनमें युवा कि कृष्ण ने भेरे जायाता कस को मार डाला तो दमन बड़ी भारी सेना लेकर १८ बार मद्रुग की वेग—परन्तु हर बार मुँहकी पानी पड़ी। जब युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया तो अर्जुन, कृष्ण और भीम ब्राह्मण का रूप धारण करके केवल अपने धनु को मार कर बन्दी राजसौ को कैद से छुड़ाने के लिए जरासन्ध की राजधानी में गये परन्तु जरासन्ध ने बन्दी राजसौ को छात्रों से इकार किया, जब भीम ने उसे हृद्ध युद्ध के लिए ललकाग। जगामय बाहर निकल कर आया—दोनों में पार युद्ध हुआ—पर अन्त में जरासन्ध भीम के हाथों मारा गया।

अरार्थिण | जराया अरार्थ्य—फिज् | जरासन्ध का नाम।

अरार्थ्य (नपु०) | जरायति—र + अच् | 1 सौध की कंचुली 2 धूम की ऊपरी शिल्लो 3 योनि, गर्भाशय।

सम०—अ (वि०) गर्भाशय से उत्पन्न, पिण्डवत्—मनु० १।४३, कु० ३।४२ पर मलिन० ।

अरित (वि०) [अरा + रित्] 1 बुढ़ा, वयोवृद्ध 2 क्षीण, निर्बल ।

अरित् (वि०) (स्त्री०—श्री) [अरा + इति] बुढ़ा, वयोवृद्ध ।

अरषम् [अ + ऋत्] मांस ।

अर्जर (वि०) [अर्ज + ऋत्] 1 बुढ़ा, निर्बल, क्षीण 2 जीर्ण, फटा पुराना, टूटा-फूटा, नोचकर टुकड़े २ किया हुआ, पण्ड-गण्ड किया हुआ, छोटे २ टुकड़ों में विभक्त जगज्जरीणिविषाणकाटयो मूत्रा—का० २१, मात्र जगज्जरीणि विषाण महाबी० ७।१८, विषयन् पुराण-भिर्नडति घग्गी जर्जरकण—उत्तर० १।२९, शि० ८।२३ 3 पायल, क्षान्बिधत् 4 झोसरा, खोखला (जैसे कि टूटे घड़े की आवाज)।—रम् इन्द्र का शब्दा ।

अर्जरित (वि०) [अर्जर + णिच् + क्त] 1 बुढ़ा, क्षीण, निर्बल 2 पिशा-पिशा, शीर-शीर, फटा-पुराना, चिपड़े चिपड़े हुआ 3 पूरी तरह परामूर्त, अयोग्य स्वर-जगज्जरीणापि मा प्रभावे—गीत० ८ ।

अर्जरीक (वि०) [अर्ज + ईक णि० साधु] 1 बुढ़ा, क्षीण 2 गीण-गीण-छेदो से भरा हुआ, सछिद्र ।

अर्जु [अ + तु, र आदेश] 1, पानि, 2 हाथी ।

अरु (वि०) [अरु + अक्] रफूनिहीन, टूटा शीतल, जड़ ।
 अरु पानी—नामय कृपाऽप्रकृति ब्रह्मणा सार जल कापुष्पा पिबन्ति पृथ्व० १।३२२ 2 एक गुणमय अरुपि का पौधा, सम 3 शीललता 4 पुरीया नक्षत्र । सम०—अरुचलम् 1 अरुणा 2 निर्जर 3 काई,—अरुचलित 1 चूल्ह भर पानी 2 मूत्रक के विषयों को जल तथा कुपुत्रमासाद्य कुनो जगज्जरीणि चाण० ९५, मानम्यापि जलाऽरुचलित म० भय लार न दना यथा अमर ९० (यही जला-ज्जरीट दां सा ४२ है आइ देना, त्यागना)।—अरुच मारुत,—अरुची शरक,—अरुचक परिवाल मगरमच्छ, अत्यय मरुद्, पतझड,—अधिर्वक्षत तम् वरुण का विशेषण, (तम्) पुरीयादा नक्षत्र पुञ्ज,—अधिष वरुण का विशेषण,—अम्बिका कृष्णी,—अर्क जल में पड़ने वाला मूयं का प्रतिविम्ब,—अर्णवः 1 बर्षा ऋतु 2 मोठे पानी का समुद्र,—अर्षित् (वि०) प्यासा,—अधतारः नदी के किनारे नाव पर उतारने का घाट,—अच्छीला बड़ा चौकीर तालाब,—अमुक्ता जोक,—आकर शरना, फावना, कृष्णी, आकाशः,—काक्षत,—काक्षितम् (पु०) हाथी,—आयु ऊदबिवाह,—आम्बिका जोक,—आधार, तालाब, शीत या मंगेवर जलाजय,—आयुका जोक,—आइ (वि०) गीला (इंम्) गीले कपड़े (ईं) पानी से तर पड़ा,—आलीका जोक,—आषतः भँवर, जल-

मूलम्—आशयः 1 तालाब, सरोवर, जलाशय 2 मछली 3 समुद्र,—आशयः 1 तालाब, जलाशय,—आशु-यम् कमल,—इन्द्र 1 वरुण का विशेषण 2 समुद्र,—इषधः वादवाग्नि,—इभः जलहन्ती, ईसा,—ईषधर 1 वरुण का विशेषण 2 समुद्र,—उष्णवृक्षतः नानी, परीबाहू 2 छलक कर वहना,—उवरम् जलोदर नाम का रोग जिसमें पेट की त्वचा के नीचे पानी इकट्ठा हो जाता है,—उज्ज्व (वि०) जलधर, उरगा,—ओक्त् (पु०)—ओक्त्त जोक,—कच्छक मगरमच्छ,—कषि मूत्र,—कषोत्त जलकवृत्त,—कण्डूः 1 एक साल 2 नारियल 3 बादल 4 तरङ्ग, कमल,—कलक कीचड,—कालक जलकौआ,—कालत हवा,—कालार वरुण का विशेषण,—किराट मगरमच्छ, परिवाल,—कृष्कुकट, जलमर्ग, मुगासी,—कुसल,—कील काई, सेवारज,—कृपी 1 अरुणा, कजा 2 तालाब, 3 भवर,—कर्म—कर्म—कर्म—केल (पु०)—कीडा (स्त्री०) जल में विरार करना, एक दूसरे पर पानी उछालना,—किष्वा मूत्रको का पितरों को जल-नर्षण देना,—कृष्म 1 कछुवा 2 चौकीर तालाब 3 भवर,—कर (वि०) (‘जलेचर’ भी) जल में रहने वाले जीव-जन्तु आशीषः शीघ्र मछला,—चारित् 1 जलजन्तु 2 मछली—अ वि० जल में उत्पन्न या पैदा, (अ) 1 जलजन्तु 2 मछली 3 काई 4 कदमा (अ,—अम) 1 बाल 2 शङ्ख—अधरीठे निवेश दग्धी जलज कुमार—रघु० ७।९३, ११।९०, (अम) कमल,—आशीषः मछला,—आशनः बह्मि का विशेषण—नाचम्पतिरुकाचेद प्राञ्जनिर्जल-जासवम्—तु० २।३०,—जन्तु 1 मछली 2 कौट जल का जन्तु,—जन्तुका जोक जन्तु कमल,—जिह्व मगर-मच्छ,—जीविन् (पु०) मछलारा—तरङ्ग 1 लहर 2 एक बाघ विशेष—त्रिममे जल मे भरा हुआ कटोरा (छड़ी के आधात से) मम म्वर पैदा करता है।—साधनम् (शा०) पानी पीटना (आश०) वर्षा काम,—सा छाता,—सातः जलातङ्क रोग, पायल कुले के काटने में हड़कायापान,—इ 1 बादल—जायन्ते विरलासोके जलदा इव मज्जता—मच्छ १।२९ कपूर,—आशन साल का वृक्ष,—आशम वर्षाऋतु,—कालः वर्षाऋतु,—अक्ष मरुद्, पतझड,—बर्दुर एक प्रकार का बाघ यन्त्र,—देवता जलदेवी, जलपरी,—दोषी डोलची,—धर 1 बादल 2 समुद्र,—धारा पानी की धार,—धि 1 समुद्र 2 दलनील 3 धार की सख्या,—धा नदी, ज धार, आ लक्ष्मी, धन की देवी—रसाना पृथ्वी,—नकुल ऊदबिवाह,—नर जलपुत्र्य (इसके अंगेर का निचला भाग मछली के आकार का होता है)।—निषि 1 समुद्र 2 धार की सख्या,—निर्गमः 1 नाली, पानी का निकास 2 जलप्रपात, धरने के

पानी का नदी में गिरना,—भीषिकः कार्य, सेवार,—**पद-**
सम्प बादल,—**पति** 1 समुद्र 2 पशु का विशेषण,
 —**पथ** जलपथो—**रपु** १७८१, धारावतः जल-
 स्रोत,—**पितृ** भाग,—**पुष्प** पानी में होने वाला
 फूल, कमल आदि,—**पुः** 1 जल की दाह 2 पानी की
 नदी,—**पुच्छ** कार्य, सेवार,—**प्रवाल** मूलक पिनरो
 की जल गर्भ,—**प्रलय** जल के द्वारा विनाश,—**प्रमल**
 नदी का किनारा,—**प्रारम्भ** जलबहुलप्रदेश—**जलप्रायम-**
नूप स्वान्—**अमर**—**जिय** 1 चातक पक्षी 2 मछली,
 —**ज्य** ऊदबिलास,—**ज्य** जलप्रलय, बाढ़,—**ज्य**
 मछली,—**ज्यालक**—**ज्यालक** विष्य पहाड़—**ज्यालिका**
 विजयी,—**ज्यालिक** ऊदबिलास,—**ज्यालिक**—**ज्यालिक** बुल-
 बुला,—**ज्यालिक** 1 एक (बीर) तासाव, सरोवर
 2 कछुआ 3 कैंचरी,—**ज्य** (वि०) जल में उत्पन्न,—**ज्य**
 (पु०) 1 बादल 2 पानी जमा करके रखने का
 स्थान 3 एक प्रकार का कपूर,—**ज्यालिका** पानी में रहने
 वाला एक बीजा,—**ज्यालिक**—**ज्यालिक** एक प्रकार का वाद्य
 यंत्र, जल दण्ड,—**ज्याल** नानी, जलप्रपाती,—**ज्य**
 (पु०) बादल—**ज्य** ११ 2 एक प्रकार का कपूर,
 —**ज्य** शिव का विशेषण,—**ज्यालिका** ज्योका,—**ज्याल**
 1 पानी निकालने का यन्त्र—**ज्य** 2 कव्याय 'गृह्य',
 'नित्यव्यय', 'संस्कार' जल के मध्य बना भवन (घोष
 भवन) या भवन जिसके आस पास कुदारे हों—**ज्याल**
 द्विचित्र जलप्रयत्नम्—**ज्य** ११५,—**ज्याल** जल
 धर्म में नाव आदि के द्वारा धारा,—**ज्याल** पानी की
 संधारो—**ज्याल**—**ज्याल** जलकुण्ड,—**ज्याल**—**ज्याल**
 1 भवन 2 पानी की बुँद, बुँदावाँ, जलकण 3 गाँव,
 —**ज्याल** समुद्रों या समर नद्यक,—**ज्याल** समुद्र,—**ज्याल**
 —**ज्याल** कन्द,—**ज्याल** मगरमच्छ,—**ज्याल** लहर, झाल
 झाल कोहिला पक्षी,—**ज्याल** जल में जमा
 —**ज्याल** बादल,—**ज्याल** पानी की घोरि,—**ज्याल**
 भारतीय विषय (२२ वा २३ सितम्बर) —**ज्याल**
 शीया मछली,—**ज्याल** निचल सप,—**ज्याल**—**ज्याल**,
 —**ज्याल** (पु०) विषय का विशेषण,—**ज्याल** कार्य,
 सेवार,—**ज्याल** मगरमच्छ,—**ज्याल** शीया, जनावृष्टि
 —**ज्याल** योक,—**ज्याल**—**ज्याल** (स्त्री०) 1 सघाई तूल
 2 एक प्रकार की मछली 3 कौवा 4 योक,—**ज्याल**,
 —**ज्याल** तासाव, सरोवर, जलप्राय,—**ज्याल** छोटा
 जलमन्दिर (घोष भवन) जो पानी के मध्य बना हो
 या जिसमें फोवारे नगे हों।—**ज्याल** (पु०) जल-
 हाथी,—**ज्याल** नानी,—**ज्याल** 1 क्षाय 2 समुद्रके
 (मसीछेरी नामक जलचर का बीर) कचर)।

ज्याल [जल + ज्य + लृट्, मुदाय] चाय्याल ।

ज्याल [जलेन मस्थति परिणमति—जल + म् + हृत्]
 1 बादल 2 एक प्रकार का कपूर ।

ज्याल, **ज्याल**, **ज्याल**, **ज्याल**, **ज्याल** [जले जाका-
 वति प्रकाशने—जल + भा + क + क + टाप्, जले
 अस्ति गच्छति—जल + जम् + उक + टाप्, जल + हृत्
 टाप्, जलम् + लोको प्रस्य पुषो] योक ।
ज्याल, **ज्याल** [जले + ज्य + लृट्, क्त वा सप्तम्या -
 जलकु] कमत ।

ज्याल [जले + शो + ज्य, सप्तम्या जलकु] 1 मछली
 2 विषय का नाम ।

ज्याल (म्हा० पर० जलपति, जलिन) बोलना, बातें करना,
 सहाय करना—**ज्याल** जलपति जलपति—उत्तर०
 ११२१, एकेन जलान्यनराशम्—पद्य० ११११६,
 भर्तुं ११८० 2 मुन्यमाना अरत उन्माराय करना
 3 प्रयाय करना, किञ्चिद्विचरना वाक्यकारय करना,
 कलकलपति करना, अभि ; बोलना, बातें करना,
 प्र , 1 बोलना करना, बाने करना—**ज्याल** १११५,
 2 मुखाग्रा—**ज्याल** ; बोलना, सहाय करना ।

ज्याल [जल + पञ्] 1 बकाना, भाषण 2 प्रवचन,
 बालकाल 3 बालकाल, प्रलाप, यत्-यत् 4 वादविवाद,
 वाग्मुद्र ।

ज्याल (पा० क (वि०) (स्त्री—ल्यका) [ज्य + श्वुल,
 पाक्य का,] कपुतो, गणी ।

ज्याल (वि०) [ज्य + श्वु] कुर्त्ता, च्च, —**ज्याल** (क) वेग,
 कुर्त्ता, त्रुता, दुःखता—**ज्याल** शि सजे पद्य विषयणम्
 —भर्तुं ३१२१, यं ११८, (य) स्वग, शिप्रता
 —**ज्याल** पीडादुःखदधुत—वि० १११० 2 वेग ।
 सम—**ज्याल** वेगवान् घोडा, दुनयामो घोडा,—**ज्याल**
 तेज हवा, भाषा ।

ज्याल (वि०) (स्त्री० नी) [ज्य + श्वुट] तेज, कुर्त्ता,
 वेगवान् यम् ११५५,—**ज्याल** दुनयामो घोडा, तेज घोडा,
 —**ज्याल** चाते, दुनयानि, वेग ।

ज्याल, **ज्याल** [जयेन आच्छायेन जनया—ज्य + श्वुट
 + शेष—**ज्याल** + क्त + टाप्, हृत्स्व—**ज्याल**]
 1 कनाल 2 बिक, पदों—**ज्याल** सहायने विगति
 यथापनीजवनिकाम्—भर्तुं ३११२ ।

ज्याल [ज्य + अण्] यथापनी के चरने शोभ्य थात ।

ज्याल [ज्य + टाप्] अबहुल, जया ।

ज्याल (म्हा० उच० ज्यति—ते) क्षति पहुँचाना, चोट
 पहुँचाना, मारना ।

ज्याल [दिवा० पर०—**ज्याल**] स्वल्प करना, मुक्त करना,
 1 (म्हा० पर० पर०—**ज्याल**—**ज्याल**, जागवति) 1 चोट
 पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, प्रहार करना 2 अवज्ञा करना,
 अपमान करना—**ज्याल**—**ज्याल**—**ज्याल**—**ज्याल**
 यिन् जगद्गुहाय—वि० ११३७, भट्टि० ८१ १२० ।

ज्याल, (श्री + क्त, द्वित्वम्) 1 समय 2 बालक 3 शोष
 की केषुली ।

अह्व (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [ह्वा + ह्वन्] छोड़ने वाला, न्यागने वाला । सम०—लक्षणा, —स्वर्णा लक्षणा का एक प्रकार (इने लक्षणलक्षणा' भी कहते हैं) जिसमें शब्द अपने मूल्यार्थ को छोड़ देना है परन्तु एक ऐसे अर्थ में प्रयुक्त होता है जो किसी न किसी प्रकार उस मूल्यार्थ में सम्बद्ध है, उदा० 'यथाया चोष' (यथा में धर) में 'यथा' शब्द अपने मूल्यार्थ को छोड़ कर 'यथागत' को प्रकट करता है—नु० 'अह्वत्स्वार्था' की भी ।

जहानक [ज्ञा + ज्ञान् + कन्] महाप्रलय ।

जहु [ज्ञा + उञ्, द्वित्वम्] पशु का बचना ।

जहु [ज्ञा + नु, द्वित्वमाकारलोपश्च] मुहोष का पुत्र, एक प्राचीन राजा जिसने यथा को अपनी पुत्री के रूप में गोद लिया था । (जब यगानदी भगीरथ की तपस्वा के द्वारा स्वर्ग में इस धरा पर लाई गई तो मैदान में आकर उसने राजा जहु की यज्ञभूमि को पानी में डुबो दिया । जहु ने क्रुद्ध हो कर यथा को पी डाला । देवता, ऋषि और विशेष कर भगीरथ ने उनके क्रोध को मान्य किया । जहु ने प्रसन्न होकर यथा को अपने काना के द्वारा बाहर निकालने की स्वीकृति दी । इसलिए यथा जहु की पुत्री समझी गई और उसे आह्वी, जहुकन्या, जहुतनया, जहुतन्दिनी या जहु-मुना आदि नामों से पुकारा गया—नु० १५० ६८५५, ८१२५ ।)

जागर [जागृ + घञ्, गुण] जागरण, जागना, जागते रहना, रात्रिजाग्रतपरो दिवाशय — २५० १३४ २ जाग्रत अवस्था की मन वृष्टि ३ कवच, जिरह-बहण ।

जागरणम् [जागृ + लृप्, ट्] १ जागना, प्रबुद्ध रहना २. खबर-दारी, सतर्कता ।

जागरा [जागृ + अ + टाप्] दे० जागरण ।

जागरित (वि०) [जागृ + क्त] जागा हुआ, —तम् जागना ।

जागरित् (वि०) (स्त्री०—स्त्री) **आगहक** (वि०) [जागृ + नृच, भिन्ना उपोच, जागृ + ऊङ्] १ जागरणशील, जागना हुआ, निद्राशय स्वप्नो जागृकस्य याथाय्य वेद कन्वव—२५० १०१३४ २ खबरदार, सतर्क—वर्णाश्रमाशयजागहक—२५० १०१३५, सि० २० ३६ ।

जागति, **जागर्था**, **जाग्रिया** [जागृ + क्तिन्, गाप् + थ + यक् + टाप्, गुण, जागृ + थ्, रिडादेश] जागरण, जागते रहना ।

जागृम् [जागृ + अण्] केसर, जाफरात ।

जागृ (अदा० पर०—आगति, जागरित) जागते रहना,

खबरदार या सावधान रहना (आल० भी)—सोपसर्ग-वजागरा यथाकाल स्वपद्यि—२५० १७५१, गुरो पादगुण्यधित्यायामावो बायं च जाग्रति—मू३० ७११३, रात को बैठ रहना—या निद्रा सर्वभूताना तस्या जागति समयी—अभ० २१६९ २ निद्रा से जागना जाना, जागते रहना, जागे का देवना, दूरदर्शी होना । **जागृणी** [जागृ + अण् + ट्री] १ पूँट २ जघा ।

जाह्नुक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [जाह्नू + अण्] १ देहाती, चित्रोपम २ जाह्नवी ३. बरबर असम्य ४ बजर, ऊसर—कः चकोर, तीतर, —लम् १ मास २ हरिण का मास ।

जाह्नुकम् [जाह्नुक + अण्] जहर विष ।

जाह्नुकि, **जाह्नुकि** [जाह्नुक + इच्, ठक् वा] सोप के काटे का बिकिसक, विषमेष ।

जाह्नुकि: [जाह्ना + ठञ्] १ हरकारा, दूत २ ऊँट ।

जाह्निक (पू०) [जाह् + गिति] योडा, लहने वाला—जजो-बीजाजिजजाजो—सि० ११३ ।

जाडर (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [जाडर + अण्] पेट से संबंध रखने वाला या पेट में होने वाला, उदरवर्ती, औरद, —पः पावनशक्ति, जाडर रस ।

जाडधम् [जाड + धञ्] १ ठंडक, शीतलता २ अनामिक, आलस्य, निष्कृता ३ बुद्धि की मन्दता, बेवकूफी, बड़ता—पञ्चाडध वयुधाविषय—अर्त्त० २११५, जाडध विद्यो हरति—२१२३, जाडध ह्यपति गण्यते—५४ ४ जिह्वा की नीरसता ।

जास (पू० क० इ०) [जाप् + क्त] १ अतिरस में लाया गया, जन्म दिया गया, पैदा किया गया २ उगा हुआ, निकला हुआ ३ उद्भूत, उत्पन्न ४ अनुभूत, प्रसन्न (प्राय समास में) दे० 'जन्',—त. पुष, बेटा (माटफो में प्राय 'स्नेह या प्रेम शोक्त' के अर्थ में प्रयुक्त—अपि जात कथयितव्य कथय—उत्तर० ४, 'प्यारे बच्चे' 'मेरे लाल, दुलारे'),—लम् १ जन्म, जीवधारो,

प्राप्ती २ उत्पादन, उद्गम ३ भेद, प्रकार, श्रेणी, जाति ४ श्रेणी बनाने वाली वस्तुओ का समूह - नि-शेषविभागितकोषजासम्—२५० ५११, सपत्ति का समूह अर्थात् हर प्रकार की सम्पत्ति, इसी प्रकार कर्मजासम् (सब कर्मों का समूह)—सुष' बहु सब कुछ जो मुझ में सम्मिलित है ५ बालक, बच्चा । सम०—अपत्या माता, अमर्ष (वि०) नाराज, क्रुद्ध, —अध् (वि०) आसु बहाने वाला—दृष्टि (स्त्री०) आनकर्मसंस्कार,—उक्त. बोरी आसु का रस, कर्मन् बच्चे के जन्मते ही अनुष्ठेय संस्कार—२५० ३११८ ।

जासव (वि०) (सौर की भांति) पृष्ठ बाया,—**कास** (वि०) आमस्त, -पक्ष (वि०) जिसके डंठे या पक्ष निकल जाये हो, अजातपक्ष, अनुदितपक्ष,—पक्ष (वि०)

अन्धन यस्त, बेदी यथा हुवा, - अन्धय (वि०) जिसके मन में विषयाम उत्पन्न हो गया हो, -अन्धय (वि०) प्रेम में आसक्त, -माध (वि०) दुरल का उत्पन्न, सद्योज्ञात्, -अन्ध (वि०) सुन्दर, उज्ज्वल, (वम्) सोना - अन्ध्याकरसमुत्पन्ना मणिजातिरसस्कृता, जातकूपेण कल्याणि न हि सयोगमर्हति - मालिका० ५।१८, नै० १।१२९, -बैर (व०) अग्नि का विशेषण - कु० २।४६, सि० २।५१, रघु० १२।१०४, १५।७२।

जातक (वि०) [जात + कन्] जन्मा हुआ, उत्पन्न, -क 1 नवजात शिशु 2 भिक्षु, - कम् 1 जातकर्म संस्कार 2 जन्म विषयक फलित ज्योतिष की गणना 3 एक जैसी वस्तुओं का समूह।

जाति. (स्त्री०) [जन् + क्तित्] 1 जन्म, उत्पत्ति - मनु० २।१४८ 2 जन्म के अनुसार अस्तित्व का रूप 3 मोक्ष, परिहार, ब्रह्म 4 जाति, कबीला या वर्ग (जनसमुदाय) - अरे मूढ जात्या चेत्तन्मोक्षम्, एषा सा जाति परिग्रहना - वैश्वी० ३, (हिन्दुओं की प्राथमिक जातियाँ केवल चार - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र - हैं) 5 श्रेणी, वर्ग, प्रकार, नस्ल - पशुजाति, पुष्पजाति आदि 6 किसी एक वर्ग के विशेष गुण जो उसे और दूसरे वर्गों से पृथक् करें, किसी एक नस्ल के लक्षण जो मूल नस्लों को बतलाएँ, जैसे कि पाष और घोड़े का 'गोवं' 'अश्ववं' - दे० गुण किया और द्रव्य - सि० २।६७, तु० काव्य २ 7 अमीठी 8 जायफल 9 चमेले का फूल या पीया पुष्पाया प्रकार स्मिटेन रचितो नो कुन्दजात्यादिभि - अमर १०, (इन दो अर्थों में 'जली' ऐसा भी लिखा जाता है) 10 (न्या० में) व्यर्थ उत्तर 11 (सगीत में) भारतीय स्वरधाम के सात स्वर 12 छन्दों की एक श्रेणी दे० परिशिष्ट। सम० - अन्ध (वि०) जन्मान्ध - अर्ध० १।९०, ऋषि०, ४ - बन्धु, जायफल, - कौशी, - की जातिवो, - धर्म 1 किसी जाति के कर्तव्य, आचार 2 किसी जाति की सामान्य संपत्ति, - अन्ध जाति या उसके विशेषाधिकारों की हानि, - बन्धी जातिवो, जायफल का ऊपर लिखना, - ब्राह्मण केवल जन्म से ब्राह्मण, गुण कर्म, तप और स्वाध्याय से हीन, अज्ञानी ब्राह्मण (तप धृत च योनिरथ तप ब्राह्मणकारणम्, तप धृताग्नो यो हीनो जातिब्राह्मण एव स - गण्डर्वोपनिषत्सामि, - अत्रा जातिच्युति - मनु० १।६७, - अष्ट (वि०) जातिव्युत्, जाति - यहिष्कृत्, - मात्रण 1 'केवल जन्म' केवल जन्म के कारण जीवन में प्राप्त पर 2 केवल जाति (जन्मरन्ध्रों कर्तव्यों के प्राप्त का अभाव) - मनु० ८।२०, १२।१४४, सञ्जय जातिवृक्षक भेद, जाति - वृक्षक विशेषणार्थ, बाष्क (वि०) नस्ल को बतलाने

वाला (शब्द) - गौरव्य पुश्वो हस्तौ, बैरम् जातिगण द्वय, स्वामाविक मनुष्य, बैरिन् (व०) स्वामाविक मनु, - अन्ध नस्ल या जाति बतलाने वाला नाम, जातिबोधक शब्द, जातिवाचक सजा गौ, अन्ध, पुश्व, हस्तौ आदि, - सक्तर दो जानियों का मिश्रण, वागलापन, - सन्ध (वि०) अष्टे घराने का, कुलीन, - सारम् जायफल, - स्मर (वि०) जिसे अपने पूर्व जन्म का बन्धान् बाद हो जातिन्मरौ मृतिररिम जात्या का० ३५५, - स्वभाव जातिगण स्वभाव या लक्षण, हीन (वि०) नीच जाति का, जाति - यहिष्कृत।

जातिमत् (वि०) [जाति + मत्] उत्तम कुल में उत्पन्न, ऊँचे घराने में जन्मा।

जातु (अन्ध०) [जन् + क्तुन्] साधु [निम्नांकित अर्थों की प्रकृत करने वाला अन्धय 1 कमी, सर्वथा, किसी समय, सम्भवत - कि तेन जातु जातेन मानु - यो वनहारिणा पच० १।२६, न जातु काम कामानामुपभोगेन साम्प्रति मनु० २।९४, कु० ५।५५ 2 कदाचित्, कभी - रघु० १५।७ 3 एकतर, एक समय, किसी, दिन 4 विधिबिध्द में प्रयुक्त गेने पर इसका अर्थ हा जाता है "अनुमति न देना, मद्रन न कर सकना" - जातु तत्र भगवन्पल गार्जनेनावकल्पयामि (न मर्षयामि) मिश्रा० 5 लट लठार में प्रयुक्त हाकर यह 'निन्दा (गद्दी)' प्रकृत करता है - जातु नत्र भवान् वृषल याजयति - तदेव।

जातुगाम [जातु गहित धान गनिनधान यस्य व० म०] गक्षस, पिशाच।

जातुष (वि०) (स्त्री० - षी) [जन् + अण, एक] 1 त्याग से बना हुआ, या त्याग से ढका टूथा 2 चारकिरा, चिपकने वाला।

जात्य (वि०) [जाति + यत्] 1 एक ही परिवार का, सम्बन्धी 2 उत्तम, उत्तमकुलाद्भव मत्कुलापन्न, - जात्यवेलाभिजातेन दूय मीयवना कुश रघु० १।७४ 3 मनोहर, सुन्दर सुन्दर।

जातकी [जन्क + जण् + क्रीप्] जन्क की पुष्पी मीता, राम की भार्या।

जातवद [जन्तव् + जण्] 1 देहाती, गवार, घामोण, किसान (विष० पीर) 2 देश 3 विषय, हा सर्वत्र उक्ति।

जाति [यश्वेति मगमय मे 'जाया शब्द' के स्थान में आदेय] जातु (नृ०) [जन् + क्तु] घृटना - जातुभ्यामवनि सन्धा, पृथ्वीपर घृटनों को बल चल कर या घटने देक कर। मम० - इन्ध (वि०) घृटनों तक ऊँचा, घृटनों तक गहरा, - कलकम्, मण्डलम् घृटने की पानी, - सन्धि घृटने का जोड़।

जायः [जप् + चञ्] 1 प्रायता जयना, काल में कहना, गुनगुनाता 2 जप की हुई प्रायता या जप ।

जायालः [जयाल + अञ्] रथ, बकरो का समूह ।

जायस्यन्तः [जयसिन् + यञ्] परशुराम, जयसिन् का पुत्र ।

जाया [जम् + भण् वा० स्त्रीभण्] 1 पुत्री 2 स्त्रिया, पुत्रवधु ।

जायात् (पु०) [जायां माति भिनोति भिमोति वा नि०]
1 दामाद-जामातुवशेन वच निरुद्धा—उत्तर० १।११, जामाता वशयो वृह—सुधा० 2 स्वामी, मातृक 3 सूरजमुक्ती फूल ।

जायि (स्त्री०) [जम् + इन् नि० वृद्धिः] 1 बहन, पुत्री 3 पुत्रवधु 4 मजदूरीकी श्रमिकी (सहिहित-सपिठ स्त्री—कुल्लूक) मनु० ३।५७, ५८ 5 तुणवती सती साध्वी स्त्री ।

जायिन्त्रम् [= जायामिन्त्रम्] जम्बुकुडली में लन से सातबा घर,—विषी च जायिन्त्रमामिन्त्रायाम्—कु० ७।१, (जायिन्त्र लनात्सप्तम स्थानम्—मल्लि०) वि०—कुछ लोग इस शब्द को 'जाया' से श्रुत्यन्त मानते हैं क्योंकि फलिन ज्योतिष में 'जायिन्त्र' का चिह्न पत्नी के भात्री सोभाय का मूत्रक [जायामिन्त्रम्] है परन्तु इस शब्द का स्पष्ट मन्त्रच शीक शब्द (Jhametron) से है ।

जायेय [जाय्या मयिन्या व्यपयम्—इञ्] भानजा, बहुत का पुत्र ।

जाम्बवम् [जम्बा फलम् अण् तत्प वा० न लृप्-त्वारो०]
1 सोना 2 जम्बूवृक्ष का फल, जायन ।

जाम्बवत् (पु०) [जाम्ब + भण्] रीछी का राजा जिनने लका पर आक्रमण के समय राम को महुयायी की । यह अपनी चिकित्सासकम्भी कुशलता के लिए भी प्रसिद्ध था (यह जांबवान् मभवत् कृष्ण के समय तक जीवित रहा क्योंकि उस समय स्वमन्त्रक मणि के लिए कृष्ण और जाम्बवान् में युद्ध हुआ । इस स्वमन्त्रक मणि को जांबवान् ने सभाजित् के माई प्रसेन से प्राप्त किया था । युद्ध में कृष्ण ने जांबवान् को पछाड़ दिया । परास्त होकर जांबवान् ने स्वमन्त्रक मणि के साथ अपनी पुत्री जांबवती का भी कृष्ण के अर्पण कर दिया)

जाम्बीरम् (लम्) [जबीर + अण्, पञ्जे रलयोरभेद] चकोतरा ।

जाम्बूनवम् [जम्बूनव + अण्] 1 सोना—रघु० १८।४४ 2 एक सोने का आभूषण—कुल्लूकचक्र जाम्बूनवे—सि० ५।६६ 3 सुतेर का पीषा ।

जाम्बा [जम् + भक् + टाप्, आरभ्] पत्नी, (गम्ब की श्रु-त्यति मनु० १।८ के अनुसार—पनिर्भायां सप्रथिय)

गर्भों मूत्रेह जायते, जायावास्तुद्धि जायतत्वे यदस्मां जायते पुनः—वे० रघु० २।१ पर मल्लि०) बहुश्रीहि के उत्तर पर में 'जाया' का बहलकर 'जानि' ही जाता है यथा 'कीटाजानि' सीता जिसकी पत्नी है, इसी प्रकार युवजानि, बामाश्रजानि । सम०—अभुवीविन् (पु०)—आधीकः 1 अधिनेता, नट 2 बेधना का पति 3 मोहताज, दरिद्र,—पत्नी (हि० व०) पति और पत्नी (इसके दूसरे रूप हैं—दपती, जपती)

जायिन् (वि०) (स्त्री०—श्री) [जि + जिनि] शीतले बाला, दमन करने वाला (पु०) (सपीत में) धूपव जाति की एक टाल ।

जायुः [जि + उण्] 1 औषधि 2 वंश ।

जायुः [शीर्यति जयन् विषया सतीत्यम् जु + चञ् बरव-तीति जार—निव०] उपपति, प्रेमी, आशिक—रव-कार स्वका भायां सजाया शिरसाबहूत्—पञ्च० ५।५४ । सम०—ज,—जम्बु,—जात-दोगला, हरामी,—घरा व्यभिचारिणी स्त्री ।

जायिणी [जार + इनि + ङीप्] व्यभिचारिणी स्त्री ।

जालम् [जल् + ञ] 1 कदा, पाश 2 जाला, मकड़ी का जाला 3 कम्ब, मार की आँखियों का बना शिरस्त्राण 4 अक्षिकारध, गवाश, शिखमिली, विडकी—जालान्तरप्रैक्षितवृष्टिर्ग्या—रघु० ७।१, धर्मेजालविनि-सूत्रेणलभय सधिषपाशाला—विष्णु० ३।२, कु० ७।६० 5 सड़ह, सघात, राशि, डेर—चिदास्ततित-तनुजालनिबिडस्युतेह—मा० ५।१०, कु० ७।८९, सि० ५।५६, अमर ५८ 6 जाणू 7 अम, पोसा 8 अनशिला फूल । सम०—अशः शरोका, शिडकी,—कम्ब (नपु०) मछली पकड़ने का बधा, मछली पकड़ना,—कारक 1 जाल निर्माता 2 मकड़ी,—बीषिका एक प्रकार की मयानी,—पाद्—पाद कलहल,—प्रायः कम्ब, जिन्हूबस्तार ।

जालकम् [जालकिय कायति + कं + क] 1 फन्दा 2 समु-न्धय, सड़ह—अट्ट कर्णशिरयोधि बधने धर्माभसां जालकम्—श० १।३०, रघु० १।६८ 3 गवाश, शिडकी 4 काली, अनशिला फूल—अभिनवैरिणिकर्म-लतीनाम्—मेघ० ९८, इसी प्रकार—मृषिकाजालकानि—२६ 5 (बालों में दहना जाने बालों) एक प्रकार का आभूषण—तिलकजालकजालकनीतिके—रघु० १।४४ (आभरणविशेष) 6 घोसला 7 अम, पोसा । सम०—जायिन् (वि०) अवपुंशत ।

जालकिन् (पु०) [जालक + इनि] बादल ।

जालकिनी [जालकिन् + ङीप्] मेघ ।

जालिक [जाल + ङन्] 1 मछवाहा 2 बहेलिया, चिडी-मार 3 मकड़ी 4 प्रात का राज्यपाल वा मुख्य-पालक 5 बहामा, टंग,—श्री 1. जाली 2 जम्बीरो का बना

कच 3 मकड़ी 4 जोक 5 बिबवा 6 लोहा
 7 बूषट, मूक पर डालने का ऊनी कपड़ा ।
बाबिली [बाब + इनि + डीप] बिबो के समुचित कपड़ा ।
बाबल्य (बि०) (स्त्री०—स्त्री) [जल + लिय + शा० म]
 1 कुर, मिष्टान, कठोर 2 उतावला, अविबेकी, —स्मः
 (स्त्री—स्त्री) 1 बरमास, घाट, लुक्का, पात्री, कुकर्म
 —अपि ज्ञासते कलयेन विभावने यत स जाल्य इति
 —विक्रम० १ 2 निर्घन आदमी, नीच, अधम ।
बाबल्यक (बि०) (स्त्री०—स्त्रियका) [बाबल्य + कन्]
 भूषित, नीच, कमोना, तिरस्करीय ।
बाबल्यम् [बाबल्य + ल्यञ्] 1 बाल, तेजो 2 शोधता,
 स्वर ।
बाह्य एक प्रत्यय जो शरीर के अङ्गो के अभिधायक सहा
 शब्दों के अन्त में 'पूर्व' को प्रकट करने के लिए जोड़ा
 जाता है—कर्मबाह्यम्—नाम की जड़, इसी प्रकार अङ्गि
 ओष्ठ आदि ।
बाह्यवी [जह्यु + अन् + डीप] गङ्गा नदी का विशेषण ।
बा (धा० पर०) (पटा और वि पूर्व आने पर—आ०)
 जयति, जित) 1 जीतना, हराना, विजय प्राप्त करना,
 दमन करना—जयति तुलामिच्छते भास्वानपि जयन्-
 पटलाति—पञ्च० ११३० अट्टि० १५१७६, १६१२
 2 मात कर देना, आगे बढ़ जाना—गजितानन्तरा
 सुटि सौभाग्येन जियाय सा—हु० २१२३, रघु० ३१०४
 षट० २२, शि० ११९३, जीतना (दिविजय करना
 बा जूए में जीतना), दिविजय करके हस्तगत करना
 —पाणजीयत पूया ततो मही—रघु० १११६५, (यही
 जि का अर्थ विजय प्राप्त करना भी है)—मनु०
 ७१९६ 4 दमन करना, दबाना, निदमन रखना
 (कामावेग आदि पर) विजय प्राप्त करना 5 विजयी
 होना, प्रमुख या सर्वोत्तम बनना (प्राय मान्दी हलकों
 या अभिधान आदि में प्रयुक्त)—येयतु जयतु महाराज
 (नाटको में), स अयति पौरण्ड शक्तिभि शक्तिनाथ
 —मा० ५११, जितमुद्रपतिना नम सुरेभ्य—रत्न०
 १४, अर्तु० २१२ गीत० १११, मे० वापयति, जित-
 वाना, विजय विलाना, सप्रत्य—जिपीयति जीतने की,
 हस्तगत करने की, आगे बढ़ जाने की, रोस करने की,
 हींड लगाने की इच्छा करना, अधि—जीतना, हराना,
 पञ्चदशना—मनु० १९१२, शिष्—1 जीतना, हराना
 —रघु० ३१५१, अट्टि० २१२२, ७९५४ याज्ञ० ३१२९२
 2 जीत लेना, दिविजय द्वारा हस्तगत करना—मनु०
 ८१९४, घरा—(आ०) 1 हराना, जीतना, विजय
 प्राप्त करना, दमन करना—घ पराजयसे म्या—याज्ञ०
 २१७५, अट्टि० ८१९ 2 लीना, बन्धित होना 3 जीत
 लिया जाना या बशीभूत किया जाना, (कुछ) असह्य
 लगाना—अध्ययनात्पराजयते—सिद्धा०, अध्ययन करना

कठिन या असह्य लगता है—अट्टि० ८१७१, बि—(आ०)
 1 जीतना 2 हराना, बशीभूत करना, दमन करना
 —अयजेष्ट परहर्षम्—अट्टि० ११२, प्रायस्कम्पुसंसेवया
 विजयते विजय स पुण्यायध—गीत० १०, अट्टि० २१३९
 १५१३९ 3 मात कर देना, आगे बढ़ जाना—चतुर्भ-
 वकमन्वज विजयते—विद्वशा० ११३३ 4 जीत लेना,
 दिविजय करके हस्तगत करना—भूजयजितविमान-
 म्नु० १२११०४, ११५९, शा० २१३३ 5 विजयी होना,
 ओष्ठ या सर्वोत्तम होना—विजयता देव—श० ५,

जि [जि + डि] पिटाप ।

जिगल्यु [गम् + ल्यु सन्ध्याप्रवृत्तात् द्विष्यन्] प्राण,
 जीवन ।

जिपीया [जि + सन् + अ + टाप्] 1 जीतने की, दमन
 करने की, या बशीभूत करने की इच्छा—यान सस्मार
 किवेर वैवस्वतजिपीया—रघु० १५१४५ 2 स्वर्ण प्रति-
 इतिता 3 प्रमुलता 4 वेष्टा, ध्ववनाय, जीवनधर्या ।

जिपीयु (बि०) [जि + सन् + उ] जीतने का इच्छुक ।

जिष्यता [अद् + सन् + अ, पसादेय 1 जाने की इच्छा
 बुद्ध्या 2 हाथपाव मारना 3 प्रबल उद्योग करना ।

जिष्यतु (बि०) [अद् + सन् + उ पसादेय [बुभुज,
 मूला ।

जिष्यता [अद् + सन् + अ + टाप्] मार डालने की इच्छा
 —रघु० १५१९१ ।

जिष्यतु [ह्यु + सन् + उ] मार डालने का इच्छुक, घातक,
 —तु सानु, बैरी ।

जिष्यका [पह + सन् + अ + टाप्] अहण करने की या
 देने की इच्छा ।

जिघ्र (दि०) [घ्रा + घ जिघ्रादेय] 1 सूचने वाला
 2 अटकलबाज, अनुमान लगाने वाला, निरौलाच करने
 वाला—उद्या० मनोविद्य सपत्नोजन—सा० द० ।

जिघ्राता [घ्रा + सन् + अ + टाप्] जानने की इच्छा, सुनु-
 हल, कौतुक या ज्ञानेप्सा ।

जिघ्रातु (बि०) [घ्रा + सन् + उ] 1 जानने का इच्छुक,
 ज्ञानेप्यु, प्रश्नशील—मग० ६५४ 2 समझ ।

जिह् (बि०) [जि + विवृत्] (समास के अन्त में प्रयुक्त)
 जीतने वाला, परास्त करने वाला, विजय प्राप्त करने
 वाला—सारकजित, कमजित, सख्जित् आदि ।

जित (मू० क० कू०) [जि + क्त] जीता हुआ, अभिभूत,
 दमन किया हुआ, (सख या आयेग आदि) सयत,

2 हस्तगत, हासिल, (दिविजय द्वारा) प्राप्त 3 मात
 दिया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4 बशीभूत, दासीकृत या
 प्रभावित—कामजित श्रीजित आदि। सन्—अध्वर

(बि०) अलीभाति या हुरत पढ़ने वाला,—अभिन्न
 (बि०) जिमने अपने सखजो को जीत लिया है, जेता
 विजयी,—अरि (बि०) जिसने अपने शत्रुजो पर विजय

प्राप्त कर ली है (वि०) बुद्ध का विशेषण,—अस्त्वम् (वि०) जितेन्द्रिय, आर्षेणान्य,—आहूष (वि०) विजयी,—इन्द्रिय (वि०) जिगने अपनी वासना पर विजय प्राप्त कर ली है या जिसने अपनी ज्ञानेन्द्रियो-रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द—को बंध में कर लिया है—अथवा स्पृष्टबाह्य दृष्ट्वा च भुक्त्वा धारवा च यो नर, न हृद्यति कदाचित् वा स विजयेयो जितेन्द्रिय—मनु० २।१८,—वाशिष् (वि०) विजयी दिखाई देने वाला, विजय का महकार करने वाला, अपनी विजय की पान दिवाने शान्का—चाणक्योपि जित-कावितया मुद्रा० २, जितकाशी राजसेवक—तदेव—कोष,—कोष (वि०) स्थिरता, शान्तचित्तता, अनुत्प्रेरणीयता,—बैभिव पीपल के बूझ की लाठी,—अथ—परिश्रम करने का अण्वस्त, कठोर,—स्वर्णः जिसने स्वयं प्राप्त कर लिया है ।

जितिः (स्त्री०) [जि + क्तिन्] विजय, दिविजय ।

जितुमः, जितुमः [जित् + मन्, जितम् = जितुम् पृथो० साधु] मिथुन राशि, राशिचक्र में तीसरी राशि (‘घोक’ शब्द) ।

जित्वर (वि०) (स्त्री०—री) [जि + वरपृ] विजयी, जीतने वाला, विजेता—शास्त्राभ्यासपथत जित्वराणि—मट्टि० १।१६, कदलीकृतभूराणी आत्तुमिजित्वरदि-नाम्—शि० २।१ ।

जित् (वि०) [जि + क्] 1 विजयी, विजेता 2 अतिबुद्ध,—न 1 किमी बगे का प्रमुख, बौद्ध या जैनसाधु, जैनी अर्हत या तीर्थंकर 3 विष्णु का विशेषण । सम०—इन्द्र,—इन्द्वर 1 प्रमुख बौद्ध मन्त्र 2 जैन तीर्थंकर,—सधम् (पृ०) जैनमन्दिर या विहार ।

जिवाजिबः [= जीवञ्जीव, पृथो० साधु] बकौर पक्षी ।

जिष्णु (वि०) [जि + मृन्] 1 विजयी, विजेता,—रघु० ४।८५, १०।१८ 2 विजय लाभ करने वाला, लाभ उठाने वाला 3 (समास के अन्त में) जीतने वाला, आपे बढ जाने वाला—अलिनीजिष्णु कचाना चय—मट्टि० १।५, शि० १।३।२१,—अणुः 1 मूर्धं 2 इन्द्र 3 विष्णु 4 अर्जुन ।

जिह्व (वि०) [जहति मरुत्सर्ग, हा + मन् सन्वत् आलो-पच] 1 उलवा, कुटिल, निररुछा 2 टेढ़ा, बाका, वक्रवृष्टि ऋतु० १।१२ 3 घुमावदार, वक्र, टेढ़ा-मेढ़ा 4 नैतिकता की दृष्टि से कुटिल, बोधेबाध, बेईमान, दुष्ट, अनैतिकपूर्ण—घतहोतिभ्यश्चतुर्जिह्वमति—कि० ६।२४ मुहुदर्थमीहितमजिह्वविषाम्—शि० १।६२ 5 घुबला, निधम, फीका—विधिसममनिदो-गाहीवित्तहारजिह्वम्—कि० १।४५ 6 मन्दर, आलसो—इधम्—बेईदानी, झुठ अथवाहार । सम०—अथ (वि०) मेगा, एवाचाना,—कः क्षीप,—अति (वि०)

टेढ़ामेढ़ा चलने वाला, तिर्यग्गति से चलने वाला ऋतु० १।१३,—मेहुकः मेहुक,—दोषिन् (वि०) अर्थनी योद्धा,—अस्यः सैर का वृक्ष ।

जिह्वः [ज् + इ [हवाचि] जीभ]
जिह्वक (वि०) [जिह्व + क्त + क] जिमला, बटोरा ।

जिह्वा [जिह्वति अनया—लिह + वन् नि०] 1 जीभ 2 आण की जीभ अर्थात् की । सम०—आत्मायः घाटना, लपलपाना,— उल्लेखनी,—उल्लेखनिका,—निलेखनम् जीभ खुरचने वाला,—घः 1. कुला 2 विल्ली 3 व्याध 4 चोता 5 रीठ,—मूलम् जिह्वा की जड़,—मूषीष (वि०) क् जीर ल् से पूर्व विलसं की ध्वनि, तथा कष्टप व्यञ्जनी की ध्वनि का शीतक शब्द (व्या० में),—रघः पक्षी,—विह्व (पृ०) कुला,—कौष्यम् लालच,—हायः सैर का पेड़ ।

जीन (वि०) [ज्या + क्त] बुद्धा, बयोबुद्ध, क्षीण,—नः चमड़े का बेल्ला—जीनकार्यकवस्तारोन् पृथक्प्राद्विपुदय—मनु० १।१।३१ ।

जीमूत [जयति नम, जीयते जितिलेन जीवनस्योदकस्य मृत बन्धो यत्र, जीवन जल मृत बद्धम अनेन, जीवन मुञ्चतीति वा पृथो० तारा०] 1 बालक—जीमूतेन स्वकुशलमयी हारविधन् प्रवृत्ति—नेष० ४ 2 इन्द्र का विशेषण । सम०—कूट,—एक पहाड़,—बह्वः 1 इन्द्र 2 तामान्य नाटक में नायक, विद्याधरो का राजा (कथा सरित्सागर में भी उल्लेख [जीमूतबाहन, जीमूतकेतु का पुत्र था, अपनी दानशीलता तथा धर्मावृत्ति के कारण प्रख्यात था । जब उसके बन्धुबान्धवों ने ही उसके पिता की राबधानी पर आक्रमण किया तो उसने अपने पिता जी को कहा कि इस राज्य की अपने आक्रमणकारी बन्धुबान्धवों के लिए छोड़ दो तथा स्वयं मलयपरबत पर रह कर अपना पवित्र जीवन बिताओ । एक दिन कहा जाता है कि जीमूतबाहन ने उस साँप का स्थान ग्रहण किया जो कि अपने सम्भोगों के अनुसार गन्ध की उसके दैनिक भोजन के रूप में प्रस्तुत किया जाता था । अन्त में अपने उदार तथा हृदयस्पर्शी व्यवहार के द्वारा जीमूत बाहन ने गन्ध को इस बात के लिए अभिप्रेरित किया कि वह साँपों को जाने की आज्ञात छोड़ दे । नाटक में इस कहानी को बड़े ही काव्यपूर्ण ढंग से कहा गया है,—बाहिम् (पृ०) पूर्वा ।

जीरः [ज्या + क्त, सम्प्रसारणं दीर्घच] 1 लक्ष्मण 2 जीरा ।

जीरकः, जीरकः [जीर + क्त, पृथो० कस्य न] जीरा ।

जीर्ष (वि०) [ज् + षत्] 1 घुराना, प्राचीन 2 विस्-पिसा, क्षीण, बरबाद, अस्त, फटा-घुराना (कन्याधिक) —वासाति जीर्षति यथा विहाय—अथ० १।२२,

3 पचा हुआ,—मुजीर्णमत्र सुवचसन सुत—हि० १।२२,—धी: 1. बुद्धा आरभी 2. बुद्ध,—अथ 1. मनुष्य 2. बुद्धाया, क्षीणता। सम०—उद्धार: पुराने की नया बनाता, मरम्मत, विधेयकर किसी मन्दिर धर्माधि सत्त्वा या धार्मिक, स्थान की,—उद्धानम् उजड़ा हुआ तथा उपेक्षित बात,—अथ: पुराना बुद्धार, अधिक चितने से रहने वाला मन्त्र अथ,—अथ: कवचम् बुद्ध,—आधिका उजड़ी हुई अर्थात्,—अथम् वैशालायाधि।

जीर्णक: (वि०) [जीर्ण+कन्] करीब-करीब सूखा या मुरसाया हुआ।

जीर्ण: (स्त्री०) [ज+क्तिन्] 1 बुद्धाया, क्षीणता, उदात्ता, दुर्बलता 2 पाचन-क्षमिता।

जीव् (अभा० पर०—जीवति, जीविन्) 1 जीना, जीवित रहना—अभिञ्जीवति, जीवति वच्व सोऽप जीवति—अथ० १।२३, मा जीवन् व परावसाः (अथ०) जीवति—अथ० २।४५, मनु० २।२३५ 2 पुनर्जीवित करना, जीवित होना 3 (किसी वृत्ति के परार्थ) रहना, निर्वाह करना, आजीविका करना (करण० से साथ)—मत्याननु बुद्वागिय तेन वैवापि जीवन्ते—मनु० ४।६, विपणन व जीवन्त २।१२२, १६२, ११।२, कभी कभी सत्ताधीय कर्म के साथ इसी अर्थ में प्रयुक्त—अजिह्वा-मलता बुद्धा जीवेत् बुद्वागियजीविकात्—मनु० ४।११ 4 (आल०) आश्रित रहना, जीवित रहने के लिए किसी पर निर्भर करना (अधि० के साथ)—चौर प्रमसे जीवन्ति व्याधितेषु चिकित्सका, प्रमदा काम-वानेषु यजमानेषु याचका, राजा विभ्रमानेषु नित्य मूर्खेषु पण्डिता महा०, प्रेर०—1 फिर जान डालना, 2 पाचन पीषण करना, (भोजन द्वारा) पालना, शिक्षित करना, सिखाना पढ़ाना, इति—, 1 जीवित रहना 2 जीवन प्रणाली में दूसरो से आगे बढ़ जाना (अधिक धान से रहना)—अथजीवदमारल-केवरी—रघु० १।१५, अनु०—1 लटकना, सहारे निर्भर रहना, जीवित रहना, सेवा करना,—मनु तस्या पाणिप्राहकमुजीविव्यति—अथा० १२२ 2 बिना ईर्ष्या-के देखना—या तां धियमसूयाय पुरा बुद्ध्वा अधि-च्छिरे, अथ तानमुजीवाय महा० 3 किसी के लिए जीवित रहना 4 जीवनधर्मा में दूसरो के पीछे चलना—रघु० ११।१५, अने० पा० (अथजीवत् या अथ-जीवत्) 5 जीवित रहना, बचा रहना, उच्च,—पुनर्जी-वित करना, फिर जीवित होना—उदजीवत् सुमिषाम्—अष्टि० १।३।१५, उच०—, 1 किसी आचार पर जीवित रहना, निर्वाह करना, आजीविका करना—का वृत्ति-मूपजीवत्यार्थं, सवाहकवृत्तिमूपजीवामि—मृच्छ० २, संवास्तमूपजीवेयुषैव पितर तथा—मनु० १।१०५,

याञ्च० २।३०१ 2 सेवा करना, आश्रित रहना—धि० १।२२।

जीव (वि०) [जीव्+क] जीवित, विद्यमान,—व 1 जीवन का सिद्धांत, स्वात, प्राण, आत्मा—गतजीव, जीवत्याय, जीवात्मा आदि 2 वैयक्तिक या व्यक्तिगत रूप से मानव शरीर में रहने वाला आत्मा जो कि इस शरीर को जीवन, गति तथा सेवेना देता है (जीवा-त्मम् कहलाता है, विच० 'परमात्मम्' शब्द है) याञ्च० ३।१३१, मनु० १२।२०, २३ 3 जीवन, अस्तित्व 4 आनन्द, जीवधारी प्राणी 5 आजीविका, व्यवसाय 6 कर्ण का नाम, 7 एक मरुत् का नाम 8 'पुष्प' मक्षत्रपञ्च। सम०—आत्मक 1 चिह्नोत्तर, बहुलिया 2 कालिक, हृत्पारा,—आधानम् (पु०) मानव शरीर में रहने वाला आत्मा (विच० परमात्मन्)—आधानम् स्वस्थ शरीर निकालना, (आपु० में) शरीर निकलना,—आधानम् जीवन का प्ररक्षण—आधार हृत्प—अथ-मम् दहकती हुई लकड़ी, जलता हुआ काठ,—उत्सर्ग प्राणोत्सर्ग करना, ऐच्छिक मृत्यु, आत्महत्या,—ऊर्णा जीवित पशु की ऊन गृहम् मन्दिम् आत्मा का वासगृह, शरीर,—आहू जीवित पकड़ा हुआ कंदो—जीव (जीवञ्जीव भी) बहोर पक्षी,—व 1 वंश 2 गणु,—ब्रह्मा मन्वर अस्तित्व,—अथम् 'जीवित दौलत' जीव-धारी प्राणियों के रूप में सरति, पशुपन्,—आनी पृष्ठी,—पति (स्त्री०)—पत्नी बहु स्त्री जिसका पुत्र जीवित है,—मुषा,—अस्ता बहु स्त्री जिसका पुत्र जीवित है,—मातुका सात माताएँ या देवियाँ जो प्राणियों का पालन पोषण करने वाली माजी जाती हैं (कुमारः धन दानाना विमना मगता बला पथा येति व विकराताः सपैला जीवमातुका) —रक्षम् स्त्री का रज आनन्द,—लोक जीवधारी प्राणियों का समग्र मन्वैलोक, प्राणिवग्त्—स्वत्प्रमाण दानालोक सर्वना चि-लोक—मा० १।३०, जीवलोकार्तिवक प्रलोपते—२१, इसी प्रकार—स्वनेत्रालससुक् सत् जीवलाक—आ० २।१०, अण० १।१० उत्तर० ४।१०, 2 जीवधारी प्राणी, मन्वत्—दिवस इवाभ्रवायमत्तवाप्ये जीवलाकत्—पा० ३।१०, आर्लोकार्तिवक जीवलाक—रघु० ५।१५।

जीवित (स्त्री०) पशुपालन, पोषण आदि पोषण का रोजगार, जीव (वि०) जिसका केवल जान वही हो, जो सब कुछ छोड़ कर केवल जान लेकर भाग आया हो,—संक्षममम् जीव का एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में आना,—साधनम् पोषण, आनन्द,—साधनम् जीवनधारण करने के मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति,—जो जीव-धारी प्राणियों की माता, बहु स्त्री जिसके बच्चे जीवित हो,—स्वात्मन् 1 जीव, अस्तित्व 2 मर्म, हृदय।

जीवक [जीव्+क्तिन्+कन्] 1 जीवधारी प्राणी

2 सेवक 3 वीर्यमिश्र, भिक्षा के सहारे ही जीवित रहने वाला भिलारी 4 सुवधोर 5 सपेरा 6 वृक्ष ।

जीवित (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [जीव् + क्त] जीवित सजीव । सम० लोका वह स्त्री जिसके बच्चे जिन्दा हो,—पति (स्त्री०)—पत्नी (स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित है,—मृत (वि०) जीवन्मृत, जिसने परमात्मा के संयोजन से पवित्र होकर भावी जीवन में पुनर्जित पाओ है, सांसारिक बंधनों से मुक्त,—मृष्टि (स्त्री०) इसी जीवन में परममोक्ष की प्राप्ति,—मृत (वि०) जीता हुआ हो मृतक, जो जीता हुआ हो मृत के समान बेकार है, (पागल आदमी या अश्रद्धाचरित्र व्यक्ति) ।

जीव्य [जीव् + अय] 1 जीवन, अस्तित्व 2 कछुवा 3 मोर 4 बादल ।

जीवन (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [जीव् + ह्यङ्] जीवनप्रद, जीवनदाता, प्राणप्रद,—न 1 जीवित आधारी 2 वायु 3 पुत्र,—नम् जिन्दा रहना, अस्तित्व (आल०) त्व-मसि मम भूषण त्वमसि मम जीवनम्—गीत० १० 2 जीवन का सिद्धान्त, सजीवनीसक्ति—भग० ७।१ 3 जन्म—बीजागत प्रथम नमोऽस्तु जीवनाय—कि० १।३१, या जीवन-जीवन ह्यसि प्राणान् हन्ति समीरय-उद्भूट 4 आजीविका, वृत्ति, अस्तित्व के साधन (आल० में भी) मनु० ११।३६, हि० ३।३१ 5 पिछले दिन के रुपये दूध से बनाया गया मक्खन 6 मज्जा । सम०—अन्त मृत्यु, आघातम् विप,—आघात 1 जल में रहना; बहण का विशेषण, जल की अधिष्ठात्री देवता 2 शरीर,—उपाय आजीविका,—भोक्ता 1 अमृत 2 सजीवनी जीव्य ।

जीवनकम् [जीवन + कम्] आहार, भोजन ।

जीवनीयम् [जीव् + अनौद्यत्] 1 अल, 2 ताजा दूध ।

जीवन् [जीव् + प्रव्] 1 जीवित, अस्तित्व 2 दवाई, औषधि ।

जीवनिक [—जीवानिक, पदो०] बहुलिया, चिड़ीमार ।

जीवा [जीव् + अय् + टाप्] 1 जल 2 पृथ्वी 3 घनप की टाटी—मनुजिवाचोपदेशिपरयति—महावी० ६।३० 4 चाप के दो मिरी की मिलाने वाली रेखा 5 जीवन के साधन 6 धातु से बने आभूषणों की झकोर 7 एक पौधा, वृक्ष ।

जीवातु (पु०, नपु०) [जीवयनेन—जीव् + तात्] 1 भोजन, आहार 2 प्राण, अस्तित्व 3 पुनर्जीवन, फिर जीवित करना—हे हस्त दक्षिण मृतस्य शिशोर्द्विजस्य जीवातये विमृज मृदुमनो हृणायम्—उत्तर० २।१०, पुनर्जीवन दाता जीवधि ।

जीविका [जीव् + अकन्, अत इत्थम्] जीने का साधन, रोजगार ।

जीवित (वि०) [जीव् + क्त] 1 जीता हुआ, विद्यमान, सजीव—रघु० १२।७५ 2 पुन जीवन्प्राप्त 3 जीवन मुक्त, अनुप्रापित 4 (काम) जिसमें रहा वा भुका है,—सम् 1 जीवित, अस्तित्व—त्व जीवित त्वमसि मे हृदय द्वितीयम्—उत्तर० ३।२६, कन्येय कुक्कजीवितम् कु० ६।६३, मेघ० ८३, नागिनन्देय वरण नागिनन्देय जीवितम्—मनु० ६।४५, ७।१११ 2 जीवन की अवधि 3 आजीविका 4 जीवधारी प्राणी । सम०—अन्तक शिव का विशेषण,—आस्था जीने की उन्मील, जीवन से प्रेम,—ईश 1 प्रेमी, पति 2 यम का विशेषण—जीवि-तेसवसति जगाम सा—रघु० ११।२० (यहाँ शब्द प्रथम अर्थ में भी प्रयुक्त हुआ है) 3 सुयं 4 चन्द्रमा,

—काल जीवन की अवधि,—सा बमनी,—व्ययः प्राणों का त्याग,—सद्यः जीवन की जीवित, प्राणसकट, जीवन को छतारा—स आतुरो जीवितसद्यो बतते—वह बुरी तरह से लगे हैं, उसके प्राण सकट में हैं—भार्गव २।२० ।

जीविम् (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [जीव् + ह्यङ्] (सामान्यतः सदास के अन्त में) 1 जिन्दा, सजीव, विद्यमान—रघु० १।६३ 2 किसी के सहारे जिन्दा रहने वाला—शश्व जीविन्, आयुधजीविन्—(पु०) जीवधारी प्राणी ।

जीव्या [जीव् + यत् + टाप्] आजीविका के साधन ।

जीव्यकम्, **जीव्यका** [जीव् + क्त + ल्युट, अ + टाप् का] 1 जिन्दा, सिद्धी 2 नापसन्दगी, अशिष्टि, धृष्टा, बीभत्सा 3 (अल० शा०) बीभत्स रम का स्थायीभाव परिभाषा इस प्रकार है—दोषैतत्पारिधिर्गर्हा जुगुप्सा विषयोऽज्ञा—सा० ६० २०७ ।

जीव्य 1 (तुदा० आ०—जुषते, जुष्ट) 1 प्रसन्न होना, सतुष्ट होना 2 अनुकूल होना, मञ्जुकप्रद होना 3 पसन्द करना, अत्यन्त चाहना, प्रसन्नता वा लुप्ती मनाना, मुसलोपभोग करना—सत्त्व जुषामस्य भवाय देहिनाम्—भाष० 4 अस्त होना, अनुरक्त होना, अत्यस्त करना, भुगतना, भोगना—पीलम्पुत्रोऽनुवृत्त शुच विपन्न-बन्धु—भट्टि० १७।११२ 5 प्राय जाना रहने करना, बसना—जुषन्ते पर्वतश्रेष्ठमुराय पर्वतशिष्यु महा० 6 प्रविष्ट होना, बिडाना, आश्रय लेना—रघु व जुषुषे सुभम्—भट्टि० १५।५५ 7 बुनना ।

॥ (स्त्री० पर०—चुरा० उन्न०—जीयति, जायति—ते) 1 नर्क करना, चिन्तन करना 2 जीवपिडनाल करना, परीक्षा करना 3 चोट पहुँचाना 4 सतुष्ट होना ।

जीव्य (वि०) [जीव् + विषय्] (समान के अन्त में) पसन्द करने वाला, उपभोग करने वाला, आनन्द लेने वाला—मनु० ३।१०३ 2 दर्शन करने वाला, निरुक्त जाने वाला, पहुँचने वाला, लेने वाला धारण करने वाला

आशय देने वाला आदि—परलोकबुद्धि—रघु० ८।
 ८५, राज्ञेय्ये कम्पनि का० १।

मुष्ट (मू० क० कु०) [जृष्ट + क्त] 1 प्रसन्न, तनुष्ट
 2 अम्पस्त, आशित, देखा हुआ, भुगता हुआ—अप०
 २।२ ३ सज्जित, सम्पन्न, युक्त।

मूर्ध्नि (स्त्री०) [मूर्ध् + क्त] 1 त्वत्त्वं दीर्घश्च तारा०]
 अग्नि में धी की आहुति देने के लिए काठ का बना
 अर्धवत्ताकार कम्पत्र, मूर्ध्ना।

मूर्ध्नि [मूर्ध् + क्त] 'मूर्ध्नि' क्रिया से सम्पन्न होने वाले
 यज्ञानुष्ठानों का परिभाषिक नाम, इससे भिन्न अनुष्ठानों
 के लिए हुम्नर नाम 'यजति' हे—अग्नि से सर्वा देवियों को
 मूर्ध्नायजति क्रिया—मनु० २।८४ (दे० मेधातिलि
 तथा हुम्ने भाष्यकार, सर्वत्र तारायण—मूर्ध्नि यज्ञा-
 नुष्ठानों को 'यजतिष्ठ होम' तथा यजति—यज्ञानुष्ठानों
 को 'लिट्टोम' का नाम देते हैं—दे० आश्वलायन
 —१।२।५ मी)।

मू (स्त्री०) [मू + क्त] 1 बाल 2 गर्वावरण 3 रासमी
 4 सत्यनी का विशेषण।

मूक [मूक शब्द] तुम्हा रागि।

मूट [मूट + क्त] नि० क्तम् [चित्ते हृष्टं तथा मीढी
 बनाय हृष्टं कर्त्तुं का समुद्र—भृगुशब्द मूज्जुबल्लि-
 क्तव्यस्यत्तद्वत्ता जटा—मा० १।२।

मूटकम् [मूट + क्त] बट कर मीढी बनाय हृष्टं बाल, जटा।
 अति, स्त्री० [मू + क्त] चाल, वेध।

मूर (दिवा० आ०—मूर्ध्वे, मूर्ध्ने) 1 चोट पहुँचाना, क्षति
 पहुँचाना, मारना 2 कुष्ठ होना (सर्प के साथ)—अर्थ
 नम्बरायन बिर जुद्धे—भट्टि० १।१८ 3 घुराना
 होना।

मूर्ति (स्त्री०) [मूर् + क्त] बुद्धि, जुडी।

मूर् (धा० पर० जर्गि) 1 मन्न बनाना, नीचा दिखाना
 2 आये क, जाना।

मूर्ध्, **मूर्ध्म** (धा० आ०—मूर्ध्वे, मूर्ध्वे, मूर्ध्वन्, मूर्ध्व)]
 1 उबानी लेना, जमहाई लेना—मनु० ४।४३
 2 मोलना, बिन्दार करना, मिलना (कूल आदि का)
 परवर्द्धनमाया पञ्च मूर्ध्वे—मनु० ३।२२
 3 उबाना, फैलाना, सर्वत्र प्रसार करना—मूर्ध्वता
 मूर्ध्वतामयनिहन्प्रमर कोषम्योति—वेणी० १, तुष्ये
 मूर्ध्वनि (पर० अविद्यमान)—भर्तृ० ३।५ भाग कोषि
 म एक एक मूर्ध्वो निर्व्योदिता मूर्ध्वे—३।८० 4 प्रकट
 होना, उदय होना, अपनी शान दिखाना, दर्शनीय होना
 यवन होना—सकलशयनेरधिमानभूतमात्मानमाशय
 मन्त्रमूर्ध्वे—मू० ३।२८ 5 आराम में होना 6. (धनुष
 की भाँति) पीछे मुड़ना, पन्टा लाना प्रेर० जमहाई
 दिखाना, प्रसार करवाना, उद् , प्रकट होना, उदय
 होना, फूटना—नं० २।१०५, वि—, जमहाई लेना,

उबानी लेना, मूढ खोलना—व्यज्जिमयत भापरे—भट्टि०
 १।५।२०८ विज्जिमनमिवात्तरिज्ञेण—मूक० ५

2 मोलना मिलना (कूल आदि का) 3 सर्वत्र फैल
 जाना, व्यापन करना, मर देना मूलध्वना मतल्लतुपेनि
 स्वता न कवल मयधि मायधिपेनि पथि व्यज्जमभन
 दिशीरुमायि—रघु० ३।१९, १।३२, रजोत्थकारय
 विज्जिमित्तय ७।६२ 4 उदय होना प्रकट होना,
 समुद्र , प्रयत्न करना, हाथपाव मारना, कानिप्त
 करना—अथाल बालमूणालनन्तुभिग्मी रोद्धं ममुज्जमभने
 —भर्तृ० २।६।

मूर्ध्म,— **मूर्ध्**, **मूर्ध्वमन्**, **मूर्ध्वन्**, **मूर्ध्वि** [मूर्ध् + क्त]
 ल्यट् वा, जर्गन् + अ + गण, मूर्ध्ना + क्त, इत्थम्]
 1 जमहाई लेना, उबानी लेना 2 मोलना मिलना,
 विस्तृत होना वरिवाथयो मूर्ध्ना प्रथमि—वा०
 २।५०, मूर्ध्वारम्भप्रवित्तदलायान्मालप्रकट्टे—वेणी०
 २।७, मालती शिग्गी मूर्ध्वभाणमुनी भर्तृ० १।२५
 3 अगहाई लेना (अगानि) मूर्ध्वमूर्ध्वमभगतपरगणि
 —भर्तृ० ६।१०।

मूर् (धा० दिवा० क्वा० पर० चर० उभ० जर्गि, जीर्ण, जीर्ण, जीर्ण, जीर्ण)
 1 बुढ़ा होना, अर्द्ध होना मृगना, मरजाना—जीर्णन् जीर्णन् वेधा
 दन्ता जीर्णन् जीर्णन्, जीर्णन्चक्षुषी पोषे पथेका
 तन्पायते पच० ५।२३, भट्टि० ५।६२ 2 मल होना,
 नापी जाना (आल०) मूर्ध्वानि च प्रजा कल शोका-
 तथाज्जगत् भट्टि० ६।३० जेराणा दग्गम्वय
 - १।१११ 3 घल जाना पच जाना—जीर्णमन्
 प्रथमीयात्—पाण० ३९ उदरे वाजग्गन्धे—भट्टि०
 १।५५०।

मूर् (प०) [मूर् + क्त] 1 जीनेने वाला, विज्ञेता 2 विष्णु
 का विशेषण।

मूर्त्ताक (प०) गरम कपरा जिसमें बँटने पर शरीर में
 पसीना बहे, मुल उष्ण म्यान।

मूर्त्तवन् [मूर्त् + क्त] 1 जाना 2 भोजन।

मूर्त्त (वि०) (स्त्री०) [मूर्त् + अण, म्निषया ङीप च]
 1 चित्रयो, सफ्त, विज्ञे प्रकट करने वाला—इदमिह
 मदनय जेपमन्त्र विफलमुष्णतितय भविष्यन्ति—मा०
 २।५ धनुर्जेन रघुर्दधौ—रघु० ४।५६, १।६।२
 2 चित्रया, म् 1 चित्रयो, विज्ञेता 2 शारा, भ्रम्
 1 बिजय, जीत 2 विदियमान।

मूर्त्त [मूर्त् + अण] जैन सिद्धान्तों का अनुयायी, जैन मत
 को मानने वाला।

मूर्त्तित्ति (प०) प्रख्यात ऋषि और दार्शनिक जिन्होंने वर्मान
 मप्रदाय में 'पूथंमामाया' का प्रणय किया—मीमांसा-
 हुनमुच्यमाय सहमा इन्तो मुनि वैभित्तिम्—पच०
 २।३३।

जैवानुक (वि०) (स्त्री०-की) [जीव् + णिच् + आत् + कन्] 1 दीर्घशोको, जिसके लिए शोचार्थ की इच्छा की जाय—जैशक्त ननु श्रूयते पतिरग्न्या—दश० २, दुःखता-पतला, कुमकाय - क 1 चन्द्रमा - राजान जनयाम्बभूव सद्यसा जैगान्तु क्त्वा नु य - भावि० २।७८ 2 कपूर 3 पुत्र 4 एकादं, औषधि 5 किसान ।
श्लेषः [जैवस्य पुरा अर्थस्य जीव + इच्] बृहस्पति के पुत्र कच की उपाधि ।

जैह्वाम् [जिह्व + ण्यच्] टेंडान, घोषा, मूठा व्यवहार ।

जोङ्गट् [जुङ्गति अशोचत्य परिपञ्चति अनेन—जुङ्ग + ञट् + णि० मृग । घर्मवती स्त्री की प्रबल शक्ति, दीह्वय ।
जोडिङ्ग, [जुद् + ण्, जोडि + ग् + ट्, रिक्ततायत् मृग] शिव की उपाधि ।

जोष [जुष् + षञ्] 1 सलोच, सुशोचयोग, प्रसन्नता, जानन्द 2 चुप्पी—बम् (अव०) 1 इच्छानुसार, आराम से 2 चुपचाप—किमिति जोषमास्यते—श० ५, भावि० २।१७ ।

जोषा, जोषित् (स्त्री०) [जुष्यते उपभुज्यते—जुष् + षञ् + टाप् जुष्ट + णि०] स्त्री, नारी—मु० योषा, योषित् ।

जोषिका [जुष् + षुन् + टाप्, ण्यञ्] 1 नई कविशो का मन्त्र 2 स्त्री, नारी ।

ज (वि०) [जा + क्] (सयाम के अन्त में) 1 जानने वाला, परिचित कापण, निमित्तज्ञ, शास्त्रज्ञ, सर्वज्ञ 2 बुद्धिमान्—जैसा कि 'अमन्त्र' में (अपने आपको बुद्धिमान् समझना हुआ) - ज 1 बुद्धिमान् और विद्वान् पु० २ चैत्य विशिष्ट आत्मा 3 बुध नक्षत्र 4 मंगल नक्षत्र 5 ब्रह्मा का विशेषण ।

जहित, जप्त (वि०) [जा + णिच् + क्त,] जताया गया, सम्पूजित, गट्ट किया गया, निजाया गया ।

जति (स्त्री०) [जा + णिच् + णिन्] 1 समझ, 2 बुद्धि 3 प्रायणा ।

जा (इपा० उ०) जानति, जानीते, जात) 1 जानना (मय अर्थों में) सीखना, परिचित होना—सा ज्ञासी-रुच मुनी गमो यदकार्षीत् स रक्षसाय्—मट्टि० १५।९, 2 जानना, ज्ञानकार होना, परिचित या विज्ञ होना जाने तपसा योग्यम्—श० ३।९, जानन्ति हि वेदावी जडवल्गो क प्राचरन्—मनु० २।११०, १२३, ७।१५८ 3 मालूम करना, निश्चय करना, खोज करना—जायता क क कार्यासीति—मुच्छ० ९ 4 समझना, जानना, अवबोध करना समझ करना, अनुभव करना—जैसा कि बुज्ज, मुल्ल आदि में 5 परीक्षण करना, जाच करना, वास्तविक परिष्क जानना—आपलु भिन्न जानी-यान्—हि० १।७२, षाच० २१ 6 पट्ट्याजना—ज त इच्छा न पुत्ररत्ना प्राप्तये कामचारिन्—मेघ०

६३ 7 लिहाज करना, खयाल करना, मान करना—जानामि त्वा प्रकृतिपुत्र कामरूप भवते—मेघ०

६ 8 काम करना, व्यस्त करना (षच० के साथ) सर्पको जानीते—सिद्धा०—बह धी से अपने आपको घर में व्यस्त करता है (सर्पिषा-सर्पिष) - प्रेर०—(आप-यति, जपयति) 1 धोषणा करना, सूचित करना, जल-पाना, ज्ञान करना, अधिपुष्टि करना 2 निवेशन करना, कठना (आ०) - सन्नन्—जिज्ञासते, जानने की इच्छा करना, सोचना, निश्चय करना—रघु० २।२६, मट्टि० ८।३३, ४।९१, अन्—अनुपति देना, इजाजत देना, स्वीकृति देना, 'हाँ' कग्ना सहमत होना, स्वीकार कर लेना—अनुजानीहि वा यत्नाय—उत्तर० ३ 2 समझाई करना, विवाह में बचनबद्ध होना, बचन देना (विवाह में)—आ जतामा धनमिधमास्तेज-जानाङ्कार्या मे पिता—दश० ५० 3 समझ करना, माफ करना 4 प्रार्थना करना 5 अपमाना क्षय—

छिपाना, गुप्त रखना, इनकार करना, मुकरना (आ०) यतमपजानीते—सिद्धा०, आत्मानमपजानान गजमाशोऽपयद्दिनम्—मट्टि० ८।२६, अक्षि० 1 पह-चानना—नायकजानन्त्य नृपम्—महा० 2 जानना, समझना, परिचित होना, जानकार होना—भग० ५।१४, ७।१३, १८, ५५ ३ ख्याल रखना, खयाल रखना, मानना 4 मान लेना, स्वीकार कर लेना, अब-नुच्छ समझना, घुषा करना, तिरस्कार करना, अपेक्षा करना—अजजानीति सा यस्मात्—रघु० १।१०, मट्टि० ३।८, मय० ९।११, आ—जानता, समझना, सोचना, निश्चय करना (प्रेर०) जाजा देना, आदेश देना, निदेश देना 2 विश्वास दिलाना 3 विस्मृत करना, जाने के लिए छुट्टी देना, धरि—जानकार होना, जानना, परिचित होना—बृषभोऽग्रमिति परिज्ञाय—वच० १,

मनु० ८।१२६ 2 सोचना निश्चय करना—सायक परिज्ञाय—वच० १ 3 पहचानना—नपस्विभि कैचित् परिज्ञातोऽग्नि—श० २, प्रति—(आ०) 1 प्रतिज्ञा करना—हृरचापारोपणे कृत्वात्त प्रतिजानीते—प्रस० ४, मट्टि० ८।२६, ६४, मनु० ९।९९ 2 पुष्ट करना, 3 बलाता, अधिपुष्टि करना, दाषा करना, धि—, 1 जानना, ज्ञानकार होना मनु० ३।२१ 2 मौखिक, समझना, जान लेना 3 निश्चय करना मालूम करना 4 लिहाज करना, मान लेना, खयाल करना (प्रेर०) 1 निवेदन करना, प्रार्थना करना (विप०—आज्ञापयति)—आयंपुत्र अस्ति मे विज्ञाप्यम्—(राम) ननु आज्ञापय—उत्तर० १, रघु० ५।२० 2 समझाये देना, सूचना देना 3 कठना, बलाता, सप्—(आ०) जानना, समझना, जानकार होना 2 पहचानना 3 मेलबोध से रहना, परस्पर सहमत

होना (कर्म० वा करण० के साथ) — पिना पितर वा सज्जानीते—विद्वां० 4 रत्नवाली करना, खबरदार रहना - भट्टि० ८१३० 5 राखी होना, महमन होना 6 (पर०) माद करना, सोचना—मानु मातर वा सज्जानामि - विद्वां० (प्रेर०) सूचना देना ।

जात (वि०) [जा+क्त] जाना हुआ, निश्चय किया हुआ, समझा हुआ, सीखा हुआ, सम्बन्धित रहने का ऊपर । सम० - सिद्धान्त पूर्णरूप से शास्त्रों में निष्पात ।

जाति [जा+क्तिन्] 1 पतक सबब, पिना, भाई आदि, एक ही मोह के व्यक्ति (समष्टि रूप में) 2 बन्धु, बाधक 3 पिता । सम० भाव सबब, रिस्तेदारी, —बेद. सर्वार्थों में वृद्ध, बिष् (वि०) जो निकटस्थ व्यक्तियों में सयक होता है ।

जातेषु [जाति+इष्] सबब, रिस्तेदारी ।

जातु (प०) [जा+तृच्] 1 बुद्धिमान् पुरुष 2 परिचित व्यक्ति 3 अमान्य, प्रथिम् ।

ज्ञानम् [ज्ञा+त्पूर्] 1 जानना, समझना, परिचित होना, प्रतीक्षण आत्यम्ब योग्यम् च ज्ञानम् - मा० ११३ 2 विद्या, शिक्षा-बुद्धिनिर्णय बुध्द्यति-मनु० ५११०९, ज्ञाने मोन क्षमा धरौ -रघु० ११२२ 3 वेदना, ज्ञान, जानकारी -ज्ञानताज्ञानतो वापि मनु० ८१०८८, जाने अनजाने, जानबूझकर, अनजाने में 4 परम ज्ञान, विशेषकर उस धर्म और दर्शन की ऊँची सचाइयों पर मनन में उत्पन्न ज्ञान जो मनुष्य को अपनी प्रकृति वा वास्तविकता को जानने, तथा आत्मसाक्षात्कार या परमात्मा से मिलने को बात सिखलाता है (विष० कर्म) नु० ज्ञानयोग और कर्मयोग भग० ३१३ 5 बुद्धि ज्ञान और प्रज्ञा को इन्द्रिय । सम०—अनुस्वाद अज्ञान, मूर्खता,—आत्मम् (वि०) सर्वविद्, बुद्धिमान्,—इन्द्रियम् प्रत्यक्षीकरण की इन्द्रिय (यह पारि है स्वचा, रसना, श्रुत्, कर्ण, और प्राण, 'बुद्धीन्द्रिय' शब्द को देखो 'इन्द्रिय' के श्लोके)।—आत्मम् वेद का आंतरिक वा रहस्यवाद विषयक भाग जिसमें वास्तविक आत्मज्ञान वा ब्रह्मज्ञान का उन्मेष है इसके विपरीत सत्कारो का ज्ञान (कर्मकांड) भी वेद में निहित है,—क्षम (वि०) जानबूझ कर वा इरादतन किया हुआ,—धम्म (वि०) समस्त के द्वारा जानने योग्य,—चक्षुष् (नपु०) बुद्धि की शक्ति, मन की शक्ति, भौतिक स्वप्न (विप० धर्म चक्षुष्)—सर्व तु समवेक्ष्ये निष्किल ज्ञानचक्षुषा -मनु० २१८, ४१६४, (पु०) बुद्धिमान् और विद्वान् पुरुष,—तत्त्वम् वास्तविक ज्ञान, ब्रह्मज्ञान,—तत्त्व (नपु०) सत्यज्ञान की प्राणिक रूप तत्त्वा, इ गुण, वा सत्त्वती का विषयण,—दुर्बल (वि०) जिसमें ज्ञान की कमी है,— निश्चय,

निश्चिति, निश्चयीकरण, निष्ठा(वि०)सत्य आत्मज्ञान को प्राप्त करने पर लुभा हुआ,—यज्ञ आत्मज्ञाने, दार्शनिक—धोष सच्चा आत्मज्ञान प्राप्त करने वा परमात्मानुभूति प्राप्त करने का मुख्यसाधन,—चिन्तन, विधारणा,—शास्त्रम् भविष्य कथन का शास्त्र,—साधनम् 1 सच्चा आत्म ज्ञान प्राप्त करने का साधन 2 प्रत्यक्ष ज्ञान की इन्द्रिय ।

ज्ञानत (अध्य०) [ज्ञान+तसिन्] ज्ञान पूर्वक, जानबूझकर, इरादतन ।

ज्ञानमय (वि०) [ज्ञान+मयट्] 1 ज्ञानयुक्त, चिन्त्यम् —इतरो दहते स्वकर्मणा बन्ते ज्ञानमयेन बह्निना —रघु० ८१२० 2 ज्ञान से भरा हुआ,—अ 1 परमात्मा 2 ज्ञान की उपाधि ।

ज्ञानिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [ज्ञान+इनि] 1 प्रतिभाशाली, बुद्धिमान् (पु०) 1 ज्योतिषी, भविष्यवक्ता 2 ऋषि, आत्मज्ञानी ।

ज्ञापक (वि०) [ज्ञा+णिच्+ण्वल्] अनजाने वाला, सिखाने वाला, सूचना देने वाला, संकेतक, क 1 अध्यापक 2 समादेशक, स्वामी, कम् (दर्शन० में) मार्थक उक्ति, व्यननात्मक नियम, (यहां उन शब्दों से अभिप्राय है जो अपने शाब्दिक अर्थ को अपेक्षा भी नियमों के संबंध में कुछ अधिक व्यक्त करते हैं) ।

ज्ञापन् [ज्ञा+णिच्+ण्वट्] अज्ञानता, सूचना देना, सिखलाना, घोषणा करना, संकेत देना ।

ज्ञापित (वि०) [ज्ञा+णिच्+क्त] अनजाना गया, सूचना किया गया, घोषित किया गया, प्रकाशित ।

ज्ञोषा [ज्ञा+भृ+अ+टाप्] जानने की इच्छा ।

ज्या [ज्या+अहृ+टाप्] 1 वधुष की डोरी—विश्राम सभ्रतामिद च सिधिलज्जाबन्धम्ममन्दु —अ० २१६, रघु० ३१६९, १११९९, १२१०४ 2 शपथ के सिरो को मिलाने वाली सीधी रेखा 3 पृथ्वी 4 माता ।

ज्यानि (स्त्री०) [ज्या+नि] 1 बुढ़ापा, अय 2 छाडना, त्यागना 3 दरिया, नदी ।

ज्यायस् (स्त्री०—री) [अयनयोरतिशयेन प्रशस्य वृद्धो वा +ईयमुन्, ज्यायश्] 1 आयु में बड़ा, अधिकतर वयस्क—प्रसवक्रमेण स किल ज्यायान्—उत्तर० ६ 2 दो में बड़िया श्रेष्ठतर, योग्यतर—मनु० ४१८, ३१२०७, भग० ३११, ८ 3 महत्तर, बृहत्तर 4 (विधि में) जो अवयस्क न हो अर्थात् वयस्क वा अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी ।

ज्येष्ठ (वि०) [अयमेवामतिशयेन वृद्ध प्रशस्यो वा+एष्टन्, ज्यादेश] 1 आयु में सब से बड़ा, ठोडा 2 श्रेष्ठतर, सर्वोत्तम 3 प्रमुख, प्रथम, मुख्य, उच्चतरम्,—छ 1 बड़ा भाई, रघु० १२११९, ३५ 2 चान्द्रमास (ज्येष्ठ का महीना), —छा 1 सबसे बड़ी बहन 2 १८

वां गवक्ष पुंल (तीन तारो वाला) 3 बिचली अगुली 4 छोटी छिपकली 5 गगा नदी का विशेषण ।
 सन०—अंशः 1 सबसे बड़े भाई का भाग 2 सबसे बड़े भाई का पैतृक संपत्ति में वह भाग जो सबसे बड़ा होने के कारण उसे मिले 3 सर्वोत्तम भाग, —अम्बु (नपु०) 1 अनाथ का पोषण 2 माइ (बाबली का), — आश्रम 1 ब्राह्मण अथवा गृहस्थ के धार्मिक जीवन में उच्चतम या सर्वोत्तम आश्रम 2 गृहस्थ, —तातः पिता का बड़ा भाई, ताऊ, —बर्णः सर्वोच्च जाति, ब्राह्मण जाति, —दुःखिः बड़ो का कर्तव्य, —इषभूः (स्त्री०) बड़ी साली ।

ज्येष्ठः [ज्येष्ठा + अ] बहु चाद्रमास जिसमें पूर्ण चन्द्रमा ज्येष्ठा नक्षत्रपूज में स्थित होता है, जेठ का महीना (मई-जून), — ष्ठी 1 ज्येष्ठ मास की युगिमा 2 छिपकली ।

ज्यो (ज्या० आ०—उपवर्ते) 1 परामर्श देना, नसीहत देना 2 (बत आदि) धार्मिक कर्तव्य का पालन करना ।

ज्योतिर्मय (वि०) [ज्योतिस् + मयट्] तारो से युक्त, ज्योति से भरा हुआ, सुनिमय - रघु० १५।५९, कु० ६।३ ।

ज्योतिष (वि०) (स्त्री० - षी) [ज्योतिस् + अच्] 1 गणित या फलित ज्योतिष, — ष 1 गणक, देवज्ञ 2 छ वेदाङ्गो में से एक (गणित ज्योतिष पर एक ग्रन्थ) । सन०—विद्या यन्त्रित अथवा फलित ज्योतिर्विज्ञान ।

ज्योतिषी, ज्योतिष्कः [ज्योतिस् + ङीप्, ज्याति इव बायति — कृ + क] ब्रह्म, तारा नक्षत्र ।

ज्योतिष्मत् (वि०) [ज्योतिस् + मत्पु] 1 आलोकमय, तेजस्वी देतोपमान, ज्योतिर्मय —नक्षत्रताराग्रहमकुलापि ज्यातिष्मन् चन्द्रमसैव राशि - रघु० ६।२२ 2 स्वर्गीय — (पु०) सूर्य, — ती 1 रात्रि (तारो से प्रकाशमान) 2 (दर्शन० में) मन की सात्त्विक अवस्था अर्थात् शांति अवस्था ।

ज्योतिस् (नपु०) [ज्योतिस् दुप्यते वा— द्युत् + इसुन् इय्य जादेज] प्रकाश, प्रभा, चमक, दीप्ति ज्योतिरेक जगाम— स० ५।३०, रघु० २।७५, मघ० ५ 2 ब्रह्म-ज्योति, बत ज्याति जो ब्रह्म का रूप है— भग० ५।२६, १३।१७ 3 चित्रली 4 स्वर्गीय पिण्ड, ज्याति (ब्रह्म, नक्षत्र आदि) - ज्यातिमरुष्टिः पुत्रिच विद्याया— कु० ७।२१, भग० १०।२१, हिं० १।२१ 5 समने की शक्ति 6 आकाशीय सप्तरा— (पु०) 1 सूर्य 2 अग्नि । सन०— इङ्ग, —इङ्गल जूगन्, —कणः अग्नि की चित्रकारी, गण समष्टिरूप से कर्माकीय पिण्ड, —ब्रह्म राशिचक्र, ज गणक, देवज्ञ, — ब्रह्मलम् तात्कीय मण्डल, — रथ (ज्योतीरथ) ध्रुव तारा, — विद् (पु०) गणक या देवज्ञ, —विद्या, —शास्त्रम् (ज्योतिरशास्त्रम्) गणः ज्योतिष या नक्षत्रविद्या, फलितज्योतिष ।

ज्योत्स्ना [ज्योतिरस्ति अस्याम्—ज्योतिस् + न, उपधासोप] 1 चन्द्रमा का प्रकाश—स्तुरस्फोरज्योत्स्नायचलित-तले क्वापि युजिने—भर्तृ० १।१२, ज्योत्स्नावता निवि-धाति प्रदोषान्—रघु० ६।३६ 2 प्रकाश । सन०—ईशः चाँद, —प्रियाः चकोर पक्षी, — बुध दीपक बीपाधार ।

ज्योत्स्नी [ज्योत्स्ना अस्ति अस्य—ज्योत्स्ना + जन् + ङीप्] चंदनी रात ।

ज्यो. [शोक शब्द] बहुस्वति नक्षत्र ।

ज्योतिष्क [ज्योतिष + ठक्] खगोलवेत्ता, गणक, देवज्ञ या ज्योतिषी ।

ज्योत्स्ना [ज्योत्स्ना + अण्] शुक्ल पक्ष ।

ज्वर् (ज्या० पू० ज्वरति, ज्वं) बुखार या आवेश से गर्म होना, ज्वरग्रस्त होना 2 रोग होना ।

ज्वर [ज्वर् + घञ्] 1 बुखार, ताप, (आयु० में) बुखार की गर्मी—स्वेद्यमानज्वर प्राज्ञ कोऽभ्रमता परिगृह्यन्वति शि० २।५६ (आल० भी) दर्पज्वर, मदनज्वर, मदज्वर आदि 2 आत्मा का बुखार, भासनिक पीडा, कष्ट, दुःख, रज, शोक—ज्येतु ते मनसा ज्वर— रामा०, मनमस्तनुपस्थिते ज्वरे—रघु० ८।८६, भग० ३।३० । सन०—अग्नि बुखार का वेग या तेजी, —अहङ्कार, ज्वरप्रणामक, बुखार कम करने वाला, —प्रतोकार, बुखार का इलाज, ज्वर प्रणामक अर्थपरिच ।

ज्वरित, ज्वरित् (वि०) (स्त्री०—शी) [ज्वर + इतप्, इति वा] ज्वररुक्ता उषरग्रस्त ।

ज्वल (ज्या० पर० ज्वलति, ज्वलति) 1 तेजी से जलना, दहनना, दीप्य होना, चमकना, —ज्वलति चलिन्तेष्वनो-र्जिनि स० ६।३० कु० ५।३० 2 जल माना, जल कर भस्म हो जाना, (आग में) कष्टग्रस्त होना अमृतमधुग्मदुतग्वचनेन ज्वरति न मा मलयज-पवनेन—गीत० ७ 3 उमक होना, —ज्ज्वाल लोक-स्थितये स राजा—भर्तृ० १।४, प्रेर० ज्वलयति—ते, ज्वालयति—ते 1 आग लगाना, आग जलाना 2 देवीपू-यापन करना, रोगानी करना, प्रकाश करना—ककुभा मृगानि सहस्रोज्ज्वलयन्—शि० ९।४२, त्वदधरकम्बन-लम्बितकज्जलमज्ज्वलय प्रियलोचने गीन० १२, प्र—, तेजी से जलना, जाज्वलमान होना—रणाङ्गानि प्रज्ज्वल—भट्टि० १।४।९८, (प्रेर०)—1 जलाना, आग मलगाना 2 बमकाना, रोगानी करना ।

ज्वलन (वि०) [ज्वल + ल्युट्] 1 दहकता हुआ, चमकता हुआ 2 ज्वलनाहै, दहनशील, —नः 1 आग—तदनु ज्वलन मर्दति त्वःपेदेक्षिणवातवीर्ये—कु० ४।३६, ३२, भग० १।१।२९ 2 तीन की सहाय, —जन् जलना, दहनना, चमकना । सन० अहम्बन् (पु०) सूर्यकान्त मणि ।

व्यक्तित्व (वि०) [ज्वल + क्त] 1 दग्ध, जला हुआ, प्रका-
शित 2 प्रदीप्त, प्रज्वलित ।
ज्वलः [ज्वल + ण] 1 प्रकाश, दीप्ति 2 मशाल ।
ज्वला [ज्वल + टाप्] 1 अग्निधिया, लौ, लपट - रपु०

१५।१६ मत्तु० १।१५। सम०-विष्णुः,—ध्वजः आग
—सुभी लावा निकलने का स्थान,—ध्वजः शिव का
विशेषण ।
ज्वालिन् (पु०) ज्वल + गिनि] शिव का विशेषण ।

झ

झ [झट् + ड] 1 समय का बिताना 2 झन झन, धनधन
या डनी प्रकार की कोई और ध्वनि 3 सहावात
4 बृहस्पति ।

झासनायति (मा० पा० पर०) चमक उठना, दमकना,
जगमगाना, चमकमाना ।

झम (गि) ति (अव्य०) [= झटिति] जल्दी से, तुरन्त
—सायंप्रभारा झगियासोत्तमूपाकृष्टलोचना—महा० ।

झङ्कार, झङ्कृतम् [झगिति अव्ययनादव्यय कार - ङ +
घञ्, कृ + क्त वा] झनझनाहट, भिनभिनाना—(अप)
दिग्भानानाने मधुपकुल्लङ्कारभारतान्—भासि० १।३३,
५।२९, मत्तु० १।९, अमर ४८, पच० ५।५३ ।

झङ्कारिणी [झङ्कार + इति + ङीप्] बङ्गा नदी ।
झङ्कति [झम + कृ + क्तिन्] झनझनाहट या झनझनाहट,
(घानु) के बने आभूषणों की ध्वनि जैसी ध्वनि ।
झञ्जन्तु [झञ्ज + ण्ट] 1 आभूषणों की झनझन या
ज नधन 2 सहावाहट या टनटन की ध्वनि ।

झम्भा [झगिति अव्ययनादव्यय कृत्वा झटिति वेगेन बहति
—झम + झट् + ड + टाप्] 1 हवा के चलने या वर्षा
के होने का शब्द 2 हवा और पानी, तूफान, आंधी
3 धनधन की ध्वनि, झनझन । सम०- अजिल,
- मरुतु, - झल वर्षा के साथ आंधी, तूफान, प्रमजक,
अन्ध- -झन्नावाग मरुटिक-अन्ध० हिमन्नुजझा-
निमज्जिलम्य (पचस्य) - भासि० २।६९, अमर ४८
मा० १।२७ ।

झटिति (अव्य०) [झट् + क्तिन्, इ + क्तिन्] जल्दी से
तुरन्त -मुक्ताञ्जलिमिव प्रयाति झटिति भश्यद्दुःखो-
द्भवनाम् मत्तु० १।१९, ७० ।

झमझमन्-या [प्रणत् + झप्, झिच्, पूर्वपठितलोप] झन-
झनहाट ।

झमझमायित (वि०) [झमझन + घञ् + क्त] टनटन,
झनझन, टनटन करना—उत्तर० ५।१५ ।

झम(न)कार [झग(न)न् + कृ + घञ्] झनझन, टनटन,
(घानु) से बने आभूषण आदि का झनझनाना,
झनझनाना, -झमकारकृत्स्वगिन्नुगुणुञ्जदगुणुञ्जधनुयुञ्ज-
प्रेमा शङ्क - उत्तर० ५।२६, उद्देश्यति दरिद्र परमूना-
गणनझमकार—उद्भूट ।

झम्प, झम्पा [झम् + प्त + ड, शिष्या टाप् च] उछल, कूद
छलाप—महावी० ५।६२ ।

झम्पाक, झम्पाच, झम्पिन् (पु०) [झम्पेन अकतिगच्छति
—झम्प + अच् + अणु, झम्प + आ + रा + ङु, झम्पा +
इति वा] बन्दर, लड्डुमूर ।

झर [झरा, झरी [झ + अच्, शिष्या टाप्, ङीप् च]
प्रपातिका, झरना, निर्झर, नदी—प्रत्ययसतजझरी-
निवृत्तपाठ - महावी० ६।१६, भासि० ५।३७ ।

झर्झरः [झर्झ + अरन्] 1 एक प्रकार का डोल 2 कलिंग
3 बेंत की छड़ी 4 झाडा, मजीरा,—रा वैपया
वारागता ।

झर्झरिन् (पु०) [झर्झर + इति] शिव का विशेषण ।
झञ्जला [झनज्जल इत्यव्ययत् शब्द अव्ययच—अच् +
टाप्] बूधो के गिरने का शब्द, झड़ी, हाथी के कान
की फड़फड़ाहट ।

झला [= झरा पृथो०] 1 लडकी, पुष्पी 2 घूप, चिल-
चिलाली घूप, चमक ।

झल [झर्झ + क्तिन्, त् लाति - ला + क्] 1 मल्लबोझा
2 एक नीच जाति—मत्तु० १०।२२, १२।४५,—सी डोलकी ।
झलज्जल,—की [झल्ल + क्त्, शिष्या ङीप् च] झाडा,
मजीरा ।

झल्लकटः [झ० स०] कबूतर ।
झल्लरी [झर्झ + अरन् + ङीप् पृथो०] झाडा, मजीरा ।
झल्लिका [झल्लो + क् + क, पृथो०] 1 उबटन आदि के
लगाने से शरीर से छूटा हुआ बौल 2 प्रकाश, चमक,
दमक ।

झष [झष् + अच्] 1 मछली-झषाया मकरश्यामि
—भग० १०।३१, तु० नी० दिसे गवे 'झषकेतन' आदि
शब्दों से 2 बड़ी मछली, मगरमच्छ 3 मीन राशि
4-गर्भी, ताप,—झष मरुत्पल, मुनसान जङ्गल । सम०
—अङ्क, -केतन,—केपु०,—ध्वजः कामदेव—रवी-
मुद्रा शेषकेतनस्य—पच० ५।३४,—अज्ञानः सुँत,—उबरी
व्याल की माता सत्यवती का विशेषण ।

झङ्कृतम् [झङ्कृत + अच्] 1 झानन, पावजेब 2 (अल
के गिरने की) आवाज, छपछप का शब्द—स्वार्थे स्थाने
मूलरककुभो माङ्करीनिर्झरायाम्—उत्तर० २।१४ ।

सातः [सद् + घञ्] 1 वर्षाशाका, सतामण्डप 2 कान्ता, वृषो का मुरमुट ।
 सिद्धि-बी (स्त्री०) [सिद् + ण् + अच् + ङीप् + घञ्] एक प्रकार की शाकी ।
 सिद्धिका [सिद्धि + क + क + टाप्] सींगुर ।
 सिद्धिः (स्त्री०) [सिद्धिर्ति अन्वयत्त नाम्ब लक्षणि - सिद् + लिच् + ङि] 1 सींगुर 2 एक प्रकार का वाद्ययंत्र ।

सिद्धिका [सिद्धि + कन् + टाप्] 1 सींगुर 2 घृण का प्रकाश, चमक, दीप्ति ।
 सिद्धी (स्त्री०) [सिद्धि + ङीप्] 1 सींगुर 2 दीये की बत्ती 3 प्रकाश, चमक । सम०—कच्छ पालतू कन्नूर ।
 सीयका (स्त्री०) सींगुर ।
 सुष [सुष्ट + अच्, घञ्] 1 वृक्ष, बिना तने का पेठ 2 शाडी, झाड़-शाशाड ।
 शोड (पु०) सुपारी का पेठ ।

८

दङ् (पु०) उभ०—दङ्गति - ते, दङ्गित 1 बाधना, कलना, ककडना 2 दकना, उब् - 1 छोलना, कु-चना 2 छिद्र करना, मृगल करना ।
 दङ्क, —कम् [दङ्क + घञ्, अच वा] 1 कुल्हाड़ी, कुटार, टाकी (पत्थर काटने या चबने के छेनी) --दङ्कयंन - शिलामुह्वेव विदार्यमाणा - मूच्छ० १।२०, रघु० १।२।० 2 तलवार 3 ध्यान 4 कुल्हाड़ी की धार के आकार की थोटी, पहाड़ी की ढाल या लकाव -- भट्टि० १।८ 5 शोध 6 धमक 7 पैर, --का पैर, लाल ।
 दङ्कक [दङ्क + कन्] बाँधो का निष्कार । सम०—वति टकसाल का अर्थक, --शाका टकसाल ।
 दङ्कनम् (नम्) [दङ्क + घञ्] मोहावा, --व (न) 1 धोखे की एक जाति 2 एक देश विशेष के निवासी । सम०—साट मोहावा ।
 दङ्कार [दङ् + क् + अच्] 1 चमूच की डोर खींचने से होने वाली ध्वनि 2 गुराँदा, चिल्लाना, चोत्कार, चीय ।
 दङ्कारिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [दङ्कार + इति] टकार करने वाला, फूटकार या लोत्कार करने वाला, झकार करने वाला -- दङ्कारिवापयन् कङ्कासरसतजपङ्काव-रुपितारम् -- अस्व० १ ।
 दङ्का [दङ्क + कन् + टाप्, इत्थम्] टाकी, कुल्हाड़ी निष्कारक० १।१५ ।
 दङ्ग, --यन् [--दङ्क घञ्] कुटाल, कुर्पा, कुल्हाड़ी ।
 दङ्गण, --णम् [--दङ्क घञ्] सोहावा ।
 दङ्गा [दङ्ग + टाप्] टांग, लाल, पैर ।

दहरी [दहेति शब्द राति - रा + क + ङीप्] 1 एक प्रकार का वाद्ययंत्र 2 परिहास, ठट्टा ।
 दाङ्गुर, [दङ्गुर + अच्] झकार, टङ्गुर ।
 टिक् (स्त्री०—आ०) टेकते जाना, चलना-फिरना ।
 टिटि (द्वि) षः (स्त्री०—नी) [टिटि (द्वि) इत्यव्ययनञ्च भवति - टिटि (द्वि) + अच् + ङ] टिटिहिरा पत्ती, --उत्सिप्य टिटिम पावावास्ते भङ्गमयादिव पच० १।३।४, मनु० ५।११, याज्ञ० १।१७२, ('टिटिमक' भी) ।
 टिप्पनी (नी) [टिप् + क्विप्, टिपा पन्थते स्तूयते टिप् + वन् + अच् + ङीप् घञ्] पाल वा भाष्य, टीका । (कभी कभी 'भाष्य' पर लिखी गई 'व्याख्या' के लिए भी—उदा० महाभाष्य पर कैवट की व्याख्या या टीका या कैवट के भाष्य पर मतोजी भट्ट की टीका या भाष्य) ।
 टीक् (स्त्री०—आ०—टीकते) चलना-फिरना, जाना, सहारा, देना—कचयर्षा कृतमालम्दुगलदल कोवष्टिकण्ठीकते मा० १।७, --आ, --आना, चलना-फिरना, इधर-उधर घूमना—जाटीकसेऽङ्ग करिषोटीपवातिजुषि वाटीभुषि श्रितिमुत्राम् -- अस्व० ५ ।
 टीका [टीकयते धम्यते, धन्वाद्योऽजया—टीक + क + टाप्] व्याख्या, भाष्य --काव्यप्रकाशस्य कृता गृहे गृहे टीका तथायैव सर्वैव दुर्गा ।
 टुङ्क (वि०) [टुङ्क इति अव्ययसम्बन्ध काथति-टुङ्क + क + क] 1 छोटो, पोडा 2 दुष्ट, चूर, नुशर 3 कठोर ।

८

ठ (पु०) (धातु के बने बर्तन के सीढ़ियों में से गिरते हुए ध्वनि जैसे) अनुकरणात्मक ध्वनि—रामाभिवेके मदनिह्लाया कशाच्छब्दो हेवचटस्तकथा, सोपान-मार्गे प्रकरोति शब्द ठठ ठठ ठठ ठठ ठठ --सुभा० ।

ठक्कुरः (पु०) 1 मूर्ति, देवमूर्ति 2 पूज्य व्यक्ति के नाम के साथ लगने वाली सम्मानसूचक उपाधि—उदा० योगिन्द ठक्कुर (काव्य प्रयोग के रचयिता) ।
 ठाकिनी (स्त्री०) तगड़ी, करवनी ।

डम्ब [ड + मा + क] एक घृषित और मिश्रित जाति, डोम ।
डम्बर [ड + डम्ब = डम्बरम्, डेन शोभन मर पलायनम्, तु०
त०] १ झण्डा, फसाद, दगा २ भावप्रतिमा और
लक्ष्मणरी से डम्ब की भयभीत करना, -रम् डर के
कारण भाग जाना, भयदट ।

डम्बः [इभित्यभ्यन्तस्य डम्बुच्छति डम् + ड + कु] एक
प्रकार का राजा, हनुडुमी (इस वाद्ययन्त्र का प्राय
कापालिक साथ बजाया करते हैं) । कभी कभी नपु०
भी माना जाता है ।

डम्ब (बुरा० उग्र० - डम्बयति-ते) १ फेंकना, भेजना
२ आदेश देना ३ देवना, वि- , अनुकरण करना,
नकल करना, तुलना करना- (त) ऋषुविरम्बयाभास
न पुन प्राय तच्छिवम् -रम्० ४।१७। वपु प्रकल्पेन
विदम्बितेवचर-३।१२, १३।२९, १६।११, कि० ५।४६
१२।३८, सि० १।६, १२।५ २ हेतु उडाना, अवहास
करना, शिल्पी उडाना-सम्मोहयन्ति, मदयन्ति
विदम्बयन्ति निरन्तरानि रमयन्ति विपारयन्ति-भर्तु०
१।२२, क्या न विदम्ब्यसे जने-का० १०९ ३ उडाना,
घोषा देना-एवमाध्यामिप्रायणम्-शिशोप्यजनचित्तवृत्ति
प्राथम्येति विदम्ब्यते-र० २ ४ कट्ट देना, पीडा देना।

डम्बर (वि०) [डम्ब + डम्ब] प्रसिद्ध, विश्वात, र.
१ समग्र, सभ्र, डेन-ना० ५।१६ २ विलास, टिम
टाम ३ साधुत्व, समानता, आभास ४ घमण्ड, बहकाव ।

डम्ब (बुरा० उग्र० - डम्बयति-ते) इच्छुता करना ।
डम्बनम् [डी + डम्ब] १ उडान २ शोले, पालकी ।

डम्बिषः (पु०) काठ का बाहुरहित ।
डम्बिणी [डम्ब भयदानम् अकृति वज्रति र + डम् +
इनि + डम्ब] विद्याधिनी, भूतनी ।

डम्बकृति (स्त्री०) [डम्ब + कृ + कृ + कृति] गण्टी के बनने की
ध्वनि, डिङ्ग-डाङ्ग आदि ।

डम्बर (वि०) [डम्बर + डम्ब] १ डगमगा, भयावह,
भयानक पर्याप्त मति रमण-रडामरम्ब मचले मलन-
तलशयणवेच मा० ५।३२ २ दगा करने वाला,
हुडदड्डी ३ मूरत पाकल में मिकता-रकता, अनुरूप
(अध्यां, मनाहार, मुन्दर) -निगमिते न्यैन्ते कुमुदामि
शिल्पडकडामरे (चिह्ने) -गीत० १२, -र. १ हाहना,
हाम्या, दगा, फसाद २ उल्लर के अवसर पर चढ़ने-
पहल, लडाई घण्टे के अमर पर लडकल, हलचल ।

डम्बिषः [- डम्बिषः, पुवा०] अवार ।

डम्बक (३० व०) एक देव तथा उसके अधिपति -कीर्ति
समाहित्यन्ति डम्बक्याम् विक्रमाड० १।१०३ ।

डम्बुर (पु०) १ सेवक २ बदमाश, टम, धूर्त ३ पतिन
या नीच आदमी ।

डम्बिषः [डम्बिषीण्य डम्बिष + मा + क] एक
प्रकार का छोटा ढाल (आल० भी) इति शोषपतीच
डम्बिषम् --हि० २।८६ मूलरपत्य यथो ववडिषिषम्
--ने० ४।५३, अमठ २८, अथि रणिरसनाग्निडिषिष-
ममिनार सरसमलज्ज गीत० ११, आरंभाकचित्त-
प्रस्तावनाडिषिषम् - महावी० १।५४ ।

डम्बि (वि०) र. [डम्बिष + र पक्षे दोषः] १ मसीखीपी का
भीतरी कवच, जो समुद्रफेन की प्रतिम काम में लाया
जाता है २ डम्ब - उच्छातेन डम्बिरी पिषडकितार-
दुष्यत विक्रमाक - ४।६४, २।४ ।

डिम् [डिम् + क] दस प्रकार के नाटकों में से एक -मायेन-
बालसप्राप्तकाधाम् आन्तादिचेष्टित, उपरावदृषि मूषिष्ठी
डिम् क्वातीर्षिचलक सा० र० ५।१७ ।

डिम्ब [डिम् + डम्ब] १ दगा, फसाद २ कोलाहल, भय के
कारण धोका ३ छोटा बच्चा या छोटा जानवर
४ अडा ५ मोला, मेद, पिषड १ सम -अहूच,
-- युद्धम् धामली लडाई, (विना शस्त्र प्रयोग के)
सडप, लटपट, मूडभेड, लूटमूठ की लडाई - मनु०
५।१५ ।

डिम्बिका [डिम्ब + क्वल् + टाप्, इत्यम्] १ कामुकी स्त्री,
२ बुरतना ।

डिम्ब [डिम्ब + अच्] १ छाटा बच्चा २ कोई छोटा
जानवर जैसे शेर का बच्चा - न्युभ्रम्बे र डिम्ब दन्तास्ये
नगमिष्यामि - मा० ७ ३ मूयं बुद्ध ।

डिम्बक (स्त्री० - बिका) [डिम्ब + क्वल् + क्विप् + टाप् इत्य
च्] १ एक छोटा बच्चा २ जानवर का छोटा बच्चा ।

डी (न्या० दिवा० भा० - डयेने, डीपते, डीन) १ उडाना,
हवा में से गुजरना २ जाना, उड- , हवा में उडना,
ऊपर उडना - सर्वेन्द्रडीपताम् - हि० १ (हसें)
उदडीपत वेङ्गनाकण्डज्जारम्ब विक्रमवम्बर - ने०
२।५, प्र- , उपर उडना इमें प्रडीनेरिष - मूष्य०
१।५, प्रोड- , ऊपर उड जाना प्राडीयेव डलाक्या
मरम्ब शोकच्छमालिङ्गुत - २३ ।

डीन (पु० क० कृ०) [डी + कृ] उडा हुआ, - नम् पक्षी
की उडान, पक्षिया की उडान १०१ प्रकार की बडाई
मई है, किसी भी विशेष उडान का प्रकट करने के
लिए 'डीन' में पूर उपयुक्त उपसर्ग लगा दिया जाता
है - उदा० अवडीनम्, उडीनम्, प्रडीनम्, अमिडीनम्,
विडीनम्, परिडीनम्, पराडीनम् आदि ।

डुडम्ब [डुडम्ब + भा + क] माया का एक प्रकार जिनमें बहर
नदी होता (निविद्या उच्छ्रमा स्मृता) ।

डुलि (स्त्री०) [- डुलि पुषा०] एक छोटी कछुबी ।

डोम (पु०) अल्पत नीच जाति का पुरुष ।

इ

इकसा [इक् इति ष्यन्ते कायति—इक् + कं + क + टाप्]
बड़ा डोल - न ते हुटुक्केन न सोपि इकस्या न मर्दले
मापि न तेऽपि इकस्या - नै० १५।१७।
इक्षारा (स्त्री०) हुमनी।
इक्षम् [नृ०] म्यात।
इक्षिन् (प०) [इक्ष् + इति] डालघारी योडा।
इक्षि- [हुष् + इन्] गणेश का विशेषण।
इक्ष (प०) बड़ा डोल, मूढ़, डपली।

डोक् (भ्वा० आ०—डोक्ते, डोक्ति) जाना, पढ़वाना
—मान्त वने रात्रिचरी डोक्ते—भट्टि० २।२३, १४।
७१, १५।७९—प्रेर० डोक्यति—ते 1 निकट जाना,
पढ़वाना—तन्मानस वैष गोमापोस्ते क्षणायासु डोकि-
तम्—महा०, भट्टि० १७।१०३ 2 उपस्थित करना,
प्रस्तुत करना।
डोक्कम् [डोक् + क् + म्युट्] 1 भेट 2 उपहार, रिश्वत।

ण

[मरुह्न मे 'ण' मे आरम्भ होने वा श कोरें शब्द नहीं,
'ण' मे आरम्भ होने वाले वहुन से धातु है वस्तुतः
सब 'ण' मे आरम्भ होने हैं, धातुकोश मे उन्हें 'ण' से

केवल इसलिये आरम्भ किया गया है जिससे कि यह
प्रकट हो जाय कि यहाँ 'ण', प्र, परि तथा अन्तर आदि
उपसर्ग पूर्व होने पर 'ण' मे परिचित हो जाय।]

त

तकिल (वि०) [तक् + इलक्] जानमाज, बालाक घर्त।
तकम् [तक् + रक्] छाछ, मूँटा। यम०—अट रई का
इडा,—सारम् ताडा मकयन।
तक्ष् (भ्वा० म्वा० पर०) तुक्षति, नक्ष्याति, तप्ट) चीरना,
काटना छीलना, छेनी में काटना टुकड़े-टुकड़े करना,
नष्ट करना आत्मान तक्षति श्रेय वन परशुना
यथा—महा०, निघाण तक्षते यक्ष काण्डे काण्डे स उद्धन
अमर० 2 गढ़ना, बनाना, निर्माण करना (लकड़ी
में से) 3 बनाना, रचना करना 4 घायल करना, चोट
पहुँचाना 5 आविष्कार करना, मत में बनाना,—निष्-
टुकड़े-टुकड़े करना, सम्- - छीलना, छेनी से काटना,
चीरना 2 घायल करना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना
—निम्बिशाम्ना मुनीशान्पामन्थोन्थ सततशतु—महा०,
बराह० ४०।२९।

तक्षन् [तक् + ष्युट्] 1 बड़ई, लकड़ी का काम करने
वाला (जाति मे अथवा लकड़ी का घघा करने के
कारण) 2 मूत्रघार 3 देवताओं का वास्तुकार, विरच-
कर्ता 4 पानाल के मुख्य तामो अर्थात् सर्पों में से एक,
कश्यप और कटु का पुत्र (शास्त्रीक ऋषि के बीच में
पड़ने से जनमेजय के सर्पयज्ञ में जलजाने मे बचा हुआ,
इसी सर्पयज्ञ में अनेक सर्प जल कर भस्म हो गये थे)

तक्षणम् [तक् + ष्युट्] छीलना, काटना दारवाणा च
तक्षणम्—मनु० ५।११५, याज्ञ० १।१८५।

तक्षन् (प०) [तक् + कनिन्] 1 बड़ई, लकड़ी काटने
वाला (जाति से अथवा लकड़ी का काम करने के
कारण) अतक्षा तक्षा—काण०, जो जाति से तक्षा नहीं
है, वह तक्षा कहलाता है जब कि वह तक्षा की भाँति
तक्षा के काम को करने लगता है, बड़ई—गि० १२।२५
2 देवताओं का शिल्पो-विश्वकर्मा।

तक्षः [तस्य ऋद्धस्य शर, प० त] एक प्रकार का पौधा।

तक्ष्क् (भ्वा० पर०—नक्षकति, तक्ष्कत) 1 सहन करना,
बर्दाश्त करना 2 हँसना 3 कष्टग्रस्त रहना।

तक्षु [तक्ष्क् + षञ् अच् वा] 1 कष्टमय जीवन, आपद्-
ग्रस्त जीवन 2 किसी श्रेय वस्तु के विद्योय मे उत्पन्न
शोक 3 भय, डर 4 मयतराज को छेनी।

तक्षुणम् [तक्ष्क् + ष्युट्] कष्टमय जीवन, आपद्ग्रस्त जिदगी।
तक्ष्ण (भ्वा० पर०—तक्ष्णति, तक्ष्णत) 1 जाना, चलना-फिरना
2 हिलाना-खलाना, कष्ट देना 3 लक्ष्यवाना।

तक्ष्ण् (ध्वा० पर०—तनस्ति, तक्ष्णत) सिक्कीटना, सिक्कीटना
—तनन्थि श्योम विस्तुतम्—भट्टि० ६।३८।

तट् [तट् + अच्] 1 ढाला, उतार, कगार 2 आकाश वा
सिञ्चित,—ट्, -टा,—डी,—टम् 1 किनारा, कूल,

उत्तर, डाल -शोल ऐकलटापतनु मनुं--२३१,
 प्रोत्तुगिन्नातटी ३ ६५, सिधोस्तटापोष द्व प्रवड
 -कु० ३१६, उच-रकात्तिकावास्तोतिसम् जि०
 ५११८२ धरोर के अक्षय (निर्मन् स्वभाव तुड
 डाल है) -पपपोषरटोपरिस्मलम् -वीत० १,
 तो कृष्ण लक्षि नवम् स्तनतटे--भृगुवार० ७ इनी
 प्रकार बचनतट, कटितट, शोषीतट, कुचनट, कृष्णट,
 कलकटट आदि,--टम् शैत । सम०--बाघल
 शीगो की टक्कर से मिट्टी उखाडना, तट या दलान
 पर खिर के टक्कर मारना--अम्स्पत्ति नटाघात
 निमित्तराहना वजा--कु० २१५०,--म्ष (वि०)
 (शा०) कितारे पर विद्यमान, कूलस्थित 2 (बाल०)
 अलग लडा हुआ, अलग-अलग, उदासीन, पराया,
 निष्काम--तटव स्वानर्थात् षटपति शीव च नवते
 --मा० ११२४, तटम् नैराध्यात्--उत्तर० ३११३,
 मरा तटम्स्वल्गमुपुतोति--नै० ३१५५, (यहाँ 'तटम्'
 का अर्थ 'कूलस्थित' भी है) ।

तटाक,--कम् [तट्+आकन्] ताकाब (को कमल तथाअत्र
 अजीव पीधो के लिए पर्याप्त महारा हो) दे० 'तडाग'
 तटिकी [तटमस्यस्या इति शेषः] नदी-कटा वाराणस्यामम-
 रत्तिनीरोधसि वसन्-मनु० ३१२३, भाषि० ११२३ ।
 तट् (बुरा० उच०)--ताडगात्--ने, ताडित 1 पीटना,
 मारना, टकराना- वाक्यता महिना निगलसकल
 भुङ्क्तेहस्ताडितम्--ग० २१५, (नौ) ताडिता माकु-
 र्तयथा--राधा०, रघु० ३१६१, कु० ५१२४, मनु० १।
 ५० 2 पीटना, मारना, बध्नास्वपीटना, आघात
 पट्टेधाना--लास्येयत्प्रबर्णाणि -इसबर्णाणि ताडयेत्
 --भाग० १११२, न ताडयेत्पुणेनापि--मनु० ४।
 १६९, ताडेन यस्ताडयते--अमर ५२ 3 प्रहार करना,
 (शोल आदि का) पीटना ताडयमानानु नैरीषु यहा०,
 अताडयत् मूढज्ञानम्--अट्टि० १७७ वेणी० ११२२
 4 बजाना, (बोगा के तारों का) बाह्वन करना
 -श्रोतुचित-शौरिच ताडयधामा--कु० ११५५ 5 चम-
 कना 6 बोलना ।

तडागः दे० तडाग ।

तडागः [तट्+आग] ताकाब, गहरा जोहड़, जलाशय
 --स्तुतकमपीररत्तिलज्जन्तुपुनविच शरदि तडागम्
 --गीत० ११, मनु० ४१२०३, वाङ्म० २१२३७ ।

तडाघातः दे० घटाघात (उच्चैः करिकराज्ञेये तडाघात
 विदुर्बुधा शैव) ।

तडित् (म्ये०) [ताडयति बध्म--तट्+इति] बिबली,
 चन बनाने तडिता गुर्भरिष--वि० ११७, मैथ० ७६,
 रघु० ६१५ । सम०--कशः ताडल,--कला बिबली
 की कौष जिममें लहरें हों,--रेखा बिबली की रेखा ।
 तडित्स्व (वि०) [तडित्+अनुत्, बध्म] बिबली वाला

अवगोहति दीर्घाय तडित्स्वित् तौघ्य -दिक्म०
 १११० कि० ५१८, (गु०) २२२ ११० ११२१ ।

तडित्स्वय (वि०) [तडित्, मरट्] बिबली में घुल-कु०
 ५१२५ ।

तट्ट (म्या० आ०) तण्डे, तडित्ठ प्रहार करना ।

तट्टक. [तट्ट+अनुत्] मरट्टन पत्थी ।

तट्टक [तट्ट+अनुत्] टूटने, उड़ने और पिडाडने के
 पड़नात् प्राण अन्न (विषयन चावक)] मन्व, मान्य,
 तट्टक और अन्न यह चार प्रकार एव दुन्दे में मिल
 है--सत्य क्षेत्रण प्राणा अनुत् धाम्यमुचते, निम्बुत्
 तट्टक प्रोक्त त्विन्नत्रमराहनुम् ।

तत्त (यु० क० कु०) [तत्+कत्] केंडावा हुआ, विन्नासित
 बरा हुआ--(दे० तत्) --न ममी नमोभारिममय ननाम्
 --शि० ११२३, ६५०, कि० ५१११,--तम् तारो
 वाला बाजा ।

तत्तम् (तन) [अव०--तत्+तमित्] 1 (उस स्थान या
 स्थिति) से, वहाँ से,--न च विन्नासित हृदय निवर्तने
 मे ततो हृदयम्-ग० ५११, मा० २१०, मनु० ६१७,
 १२०८५ 2 वहाँ, उधर 3 तब, तो, उसके बाद -नन
 कतिपयदिवसापत्तने-का० ११०, अमर ६६, कि०
 ११२७, मनु० २१२३, ७५५९ 4 टपकना, कटन, दुनी
 कारण 5 तब, उस अवस्था में, तो [तत्] का यह
 सम्बन्धी यदि गृहीतमिद नन किम् का० १००,
 अमोक्षसदय यदि मन्मथे प्रथो मन समाने ऋ०
 ३१५५ 6 उससे वरे उसके आगे, और आने, इसके
 बतिरिक्त तब वरती निमानुपगन्धम्--का० १२१
 7 उससे, उसकी ओसा, उसके अतिरिक्त--य ल० ४
 चापर लाभ मन्थने नाधिक तन, अम० ६१२०, २।
 ३६ 8 कई बार 'तत्' शब्द के मन्म० के रूप को
 भाति प्रयुक्त होता है--यथा तन्मात्, तन्पा, नतोऽप्य
 यापि द्युपते-सिद्धा० । यत तत (क) वहाँ-वहाँ
 --यत कृष्णस्तत सर्वे वत कृष्णस्ततो जय--महा०,
 मनु० ७११८८ (ख) क्योंकि--इदमित् यतो यत-
 --ततस्तत जहाँ कहीं-वही यतो यत पत्नरगादिनि-
 बर्तते ततस्तत प्रेरितवामोषना--ग० ११२३, ततः
 किम् तो फिर क्या, इसके क्या लाभ, क्या काय-प्राप्ता
 थिय भकलकाममुधामन किम्--मनु० ३१७३, ७४,
 गा० ४१२, ततस्तत (क) यहाँ-वहाँ, इधर-उधर--ततो
 दिव्यानि मान्यानि प्रादुर्गमनतन्तम्--महा० (ख)
 'फिर क्या' 'इसके आगे' 'अच्छा तो फिर' (ताडकी में
 प्रयुक्त) ९५ प्रभृति तब से लेकर 'यत प्रभृति' का
 यह सम्बन्धी)--तुष्पा तत प्रभृति मे किणुक्कभवेति
 -अमर ६८, मनु० २१६८ ।

ततस्य (वि०) [ततस्+स्य] वहाँ से आने वाला, वहाँ
 से चलने वाला--कि० ११२७ ।

तति (अर्थ० वि०) (विण्य बहुवचनान्, कर्म० सर्व० तति) | तत् + तति | इति अक्षिप, उदा०—तति पुण्या मति आदि,—ति (स्त्री०)—तत् + क्तिन् | 1 श्रेणी, पक्ति, रेखा - विवक्ष्य क्विप्ता वाग्रात्रनिभिर्मुस्ताति। पत्नय १० २५५, बन्वाहकनीय० ४५५४, १५५ 2 गण, धन, समूह 3 अक्षरः ।

तत्त्वम् | तत् + विण्य, तुक्, पूर्ण० तत् + त्व | (कमी कमी 'तत्त्वम्' भी लिखा जाता है) 1 वास्तविक स्थिति या दशा 2 तत्त्व,—इयं तत्त्वान्वेषणप्रकार इत्यास्तव तत्त्व कुनी—सा० १२५४ 3 तथ्याय या मूल प्रकृति—सन्ध्यामस्य महावागो मन्त्रभिक्षानि वेदिनुम्—अय० १८१, ३२८, मनु० ११३, २०५६, ५५८ 4 मानव आत्मा की वास्तविक प्रकृति या विद्वत्सारी परमात्मा के समनुकण विराट् सृष्टि या भौतिक संसार 5 प्रथम या अर्थायें सिद्धान्त 6 मूलतत्त्व या प्रकृति 7 मन 8 सूर्य 9 बाह्य का भेद विज्ञान, विलम्बित 10 एक प्रकार का नृत्य ।

सम०—अभिव्यक्ति अर्थात्तय विचारण या धारणा, —अर्थः सभार्थ, वास्तविकता, तथ्यायता, वास्तविक प्रकृति, —अ,—सिद्ध (वि०) वास्तविक अज्ञान का नेता, व्यास शिष्य की तत्त्वज्ञ प्रज्ञा में यिद्वित एक अथायसा (अर्थमें शरीर के विभिन्न अंगों पर मुख्य अक्षर या अन्य किन्तु बनाने के साथ कुछ प्रायंतारों बोधी जाती है)।

तत्त्वतः (अर्थ०) [तत्त्व + तत्] बस्तुतः, सचमुच, ठीक ठीक तत्त्वत एतामुपलभ्ये—सा० १, मनु० ७।१० ।

तत्र (अर्थ०) [तत् + त्र] 1 उस स्थान पर, वहाँ, सामने, उस ओर 2 उस अवसर पर उन परिस्थितियों में, तब, उस अवस्था में 3 उसके लिए, इसके—निरोधय यमदीया प्रजापतय हेतुस्तव्यं ब्रह्मवचनम् १४० १५२ 4 प्राय 'तत्र' के अर्थों के रूप के अर्थ में प्रयुक्त—मनु० २।११२, ३।६०, ५।१८६, वाज० १।२६३, तथापि 'तत्र भी' 'तो भी' (यद्यपि का तद् अर्थों) तत्र तत्र 'बहुत न स्थाना पर या विभिन्न विषयों में' यहाँ-वहाँ 'प्रत्येक स्थान पर' अथवा अन्विक-विधान्कुर्यात् तत्र तत्र विपरिचित - मनु० ७।८१ ।

सम०—अक्षत् (वि०) (स्त्री०—त्वी) शोभा, महोदय, श्रेष्ठ, आदरणीय, महानुभाव, (सम्मानपूर्वक) उपाधि जो नाटकों में उन व्यक्तियों को दी जाती है जो बर्षा के कवीय उर्ताम्बत न हों) —पूज्ये तत्रभवानत्रप्रवादच भयवानपरि, आदिष्टोऽस्मि तत्रभवता कायधनेन -ग० ४, तत्रभवान् काण्वय १० १, आदि,—इव (वि०) उस स्थान पर लक्ष्य हुआ या बतमान, उस स्थान से संबद्ध ।

तत्रम् (वि०) [तत्र + त्वत्] वहाँ उत्पन्न या जन्मा हुआ, उस स्थान से संबद्ध ।

तथा (अर्थ०) [तद् प्रकारे वात् विचक्षित्वात्] 1 जैसे, इन प्रकार, उस रीति से—तथा या तुच्छविद्या—सा० ५, नृत्तस्था करीति—विचक्ष० १ 2 और भी, इस प्रकार भी, भी—अनागत विद्याया प्रत्युत्पन्नमति-स्तथा—पच० १।३१५, १४० ३।२१ 3 तब, ठीक इसी प्रकार, सचमुच वंसा ही—यदाय राजस्यकुमार तत्तथा—रघु० ३।५८, मनु० १।४२ 4 (अनुरोध के रूप में) ऐसी निश्चित जैसा कि ('यथा' को वृत्ते रख कर) १० यथा ('यथा' के सहस्यपी के रूप में 'तथा' के कुछ अर्थों के लिए 'यथा' के भी २०) तथापि (प्राय 'यद्यपि' का सहस्यपी) 'तो भी' 'तब भी' 'फिर भी' 'तब पर भी'—प्रथिन दुःखतस्य चरित मत्पापी न लभते—सा० ५, वर महत्वाद्यित्ये विषायाय तथापि नाम्यस्य करोय्यासनाय—वात० २।३, वृत्-प्रकारिदप्रयदुक्तु र्मुत्तपोपि नीचैर्विनयादुत्पद्यत—रघु० ३।३४, ६२, तथेति 'सहस्यपी', 'प्रतिज्ञा' को प्रकट करता है,—तथेति योग्यमिह भर्तृप्रासादाद्यय मूर्ध्नि मदन प्रत्ये—कु० ३।२२, १४० १।५२, ३।६०, तथेति निष्कान्त (नाटकों में) तथेन 'उसी प्रकार' ठीक उसी भाँति 'तथेन च 'उसी अर्थ में' 'तथा' 'और इसी प्रकार', 'इसी अर्थ में', 'इसी प्रकार' कहा गया है कि 'तथापि 'इसी लिए' 'उदाहरणार्थ', इसी कारण (यह कहा गया है कि)—त तथा विदधे नृत्त महाभूतसमाधिना, तथापि तत्र तथ्यास्तु परायेककला गुणा—रघु० १।२२, सा० १।३१ । सम०—कुल (वि०) इस प्रकार किया गया, मूल (वि०) 1 ऐसी स्थिति या दशा में होने वाला—तथागतया परिहास-पूर्वम्—रघु० ६।८२ 2 इस गुण का, (सः) 1 बुद्ध—काले मित क्षम्यमृदकंयय नयागतस्येव जन सुचेता—सि० २०।८१ 2 जिन,—गुण (वि०) 1 ऐसे गुणों में युक्त या संपन्न 2 ऐसी अवस्था की प्राप्ति, ऐसी अवस्था में—तथाभूता दुष्ट्या नृत्तदमि पाञ्चालान-याम्—वेणी० १।११,—राज. बुद्ध का विशेषण, —रूप, —अर्थम् (वि०) इस आकार प्रकार का, इस प्रकार दिखाई देने वाला,—विच (वि०) इस प्रकार का, ऐसे गुणों का, इस स्वरूप का—तथाविधनाप्रसोपमस्तु स—कु० ५।८२, रघु० ३।६,—विषयम् (अर्थ०) 1 इस प्रकार, इस रीति से 2 इसी भाँति, समान रूप से ।

तथात्त्वम् [तथा + त्व] 1 ऐसी अवस्था, एवा हीना 2 बस्तु स्थिति या मूल बात, सभार्थ ।

तथ्य (वि०) [तथा + यत्] तथ्याय, वास्तविक, असली—प्रियमपि तथ्यमाह विचक्षया—सा० १—अस्य तथार्थ, वास्तविकता,—सा तथ्यमेवाभिरुता भवेन—कु० ३।६३, मनु० ८।२७४ ।

तद् (सर्वं वि०) [कर्त्तुं ए० व०—स (ए०), मा (स्त्री०), तत् (नपुं०)] 1 वह, अविद्यमान वस्तु का उल्लेख (तदिति परीक्षा विधानीयान्) 2 वर (प्राय 'यद्' का सहसम्बन्धी)—अन्वय वृद्धिबल तस्य—पञ० १ 3 वह अर्थात् प्रख्यात—सा रम्या नगरी महात्म्य नृपति सामन्तचक्र च तत्—अर्त्त० ३१३७, कु० ५१७१ 4 वह (किसी वेषे हुए या अनुभवायं का उल्लेख) उल्लम्पनी भयपरिस्फुरितानुक्तानां त लाञ्छने प्रतिदिश विद्युते क्षिपन्ती—काव्य० ७, भाषि० २५ 5 वही, समरूप, वह, बिल्कुल वही, (प्राय 'तव' के साथ)—सानीरिद्रियाणि सकलानि तदेव नाम—अर्त्त०—१४० ६ वही कभी 'तद्' के रूप उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होता है, साथ ही बल देने के लिए निर्दोषक तथा सम्बन्धबोधक सर्वनामों के साथ भी (इसका अनुवाद प्राय 'इसका' 'जा' करने है)—सौहृदिग्रथाविशुद्धात्मा—रघु० ११७८ (मे वही व्यक्ति, अत मे, मे अरुह व्यक्तित्वे) न त्व निर्वर्त्य विष्णु लज्जाम् २५०, 'अत नुम्हें बर्तान् उग जाना चाहिए', जब 'तद्' की आयुक्ति की जाए तो इसका अर्थ होता है "कई" 'भिन्न २"—तेषु तेषु म्यात्—का० ३६९, भग० ७३२०, मा० १३३६—तेन—पद का कारण० रूप, किया विशेषण केवल के साथ २मं प्रा 'इस कारण' 'इस विषय में' 'इसी कारण अर्थ को प्रकट करता है,—तेन हि यदि ऐसा है ता फिर (अव्य०) 1 वहाँ, उधर 2 तब, उध अवस्था में, उस समय 3 इसी कारण, इसीलिए, फलस्वरूप—तदति विमर्शना भूमिमवतराव—उत्तर० ५, मेघ० ७१११०, रघु० ३१४६ 4 तब ('यदि' का सहसम्बन्धी) तथापि—यदि महत्कुतुहल तत्कथयामि—का० १३६, भग० १४५५ 1 सम०—अनन्तरम् (अव्य०) उनक पश्चात् मुरन्त, तो फिर,—अन्व (अव्य०) उनके पश्चात्, बाद में—सन्देश मे तदनु जलद आयायिन् आशयेपम् मेघ० १३, रघु० १६८७, मा० १२०६—अन्त (वि०) उसी में सन्ध होने वाला, इस प्रकार समाप्त होने वाला—अर्ष—अर्षीय (वि०) 1 उनके निमित्त अभिप्रेत 2 उन अर्थ में युक्त, अर्ह (वि०) उन योग्यता से युक्त,—अर्षीय (अव्य०) 1 वहाँ तक, उस समय तक, तब तक—तदवधि कुसली पुराणशास्त्रमूर्ति शतउरुहविचारणो विवेक—भाषि० २११४ 2 उस समय से लेकर, तब से—इसमें दीघस्वरदर्शक मने पाषिण्डमा—भाषि० २१६९,—एकचित्त (वि०) उस पर ही मन को स्थिर करने वाला,—काल विद्यमान धाग, वर्तमान समय, 'भी (वि०) समाहित, प्रत्युत्पन्नमति,—कान्म् (अव्य०) अकिलम्, मुरन्त, क्षण 1 इन क्षण, फिलहाल 2 विद्यमान या वर्तमान समय रघु०

१५१,—अक्षम्, क्षमात् (अव्य०) मुरन्त, प्रत्यक्षत, कीर्त—रघु० २११४, वि० ९५५, पाठ० २११४, अरुह ८३, क्रिया (वि०) विना मजदूरी के काम करने वाला, मत्त (वि०) उस बार गया हुआ या निरादिन, मुला हुआ, उमका भक्षण, तत्सम्बन्धी,—गुण एक अलक्ष्य—अव्य०) स्वभावतः गुण यापादपुञ्जवल्-गुणम्प यन्, वस्तु तदनुगतमिति भव्यते म तु तदुप्यु —भाव्य० १०, दे० चन्द्रा० ५११६१, -अ (वि०) व्यवधानमूल्य तात्कालिक, -अ, जानने वाला, प्रतिभा-शाली, वृद्धिमान्, दार्शनिक, तृतीय (वि०) उम्मी काय की नौगरी बार करने वाला,—घन (वि०) कज्जल, दरिद्र, पर (वि०) 1 उमका अनुसरण करने वाला, परचवर्ती, घटिया 2 उम्मी की सर्वोत्तम पदार्थ मानने वाला, बिल्कुल तुला हुआ, निरान मलय, उम्मुक्तानुक्तं अन्त (प्राय समास में प्रयोग) —मद्भ्रातृ नमारापनतलगेऽभुं रघु० २५५, ११६६, मेघ० १०, वाज० ११८३, मनु० ३२६२, -परायण (वि०) पूर्ण मलय या आसक्त,—पुरुष 1 मूल पुरुष, परमात्मा 2 एक समास का नाम त्रिनमें प्रथम पद प्रधान होता है, या जिसका उत्तरपद पूर्वपद द्वारा परिभाषित या विदित कर दिया जाता है, शब्द की मूल भावना भी स्थिर रहती है यथा, तत्पुरुष, तत्पुरुष कर्मधारय येनात् स्या बहुव्रीहि—उद्भृ, -पूर्व (वि०) पहली बार घटने वाला, या होने वाला, -अकारि तत्पूर्वनिघट्टया तथा कु० ५११०, ७३०, रघु० २१८२, १६३८ 2 पूर्व का, पहला,—प्रथम (वि०) पहली बार ही उस कार्य का करने वाला, -बल एक प्रकार का बाण, भाव्य उमके अनुसरण, मात्रम् 1 केवल वह, सिर्फ मामूली, अत्यन्त तुच्छ मात्रा युक्त 2 (दर्शन०) मुख्य तथा मूलतत्त्व (उदा० शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गन्ध), -बाधक (वि०) उसी को मकेतित या प्रकट करने वाला, -विद् (वि०) 1 उनका जानने वाला 2 मचाई को जानने वाला, -विध (वि०) उस प्रकार का, रघु० २१२२, कु० ५१७३, मनु० २१११२, -हित (वि०) उमके लिए अच्छा, (त) एक प्रत्यय जो प्रातिपदिक शब्दों के आगे व्युत्पन्न घट्ट बनाने के लिए लगाया जाता है 1 तदा (अव्य०) | तस्मिन् काले तद्+तदा 1 तब, उस समय 2 फिर, उस मामले में ('यदा' का सहसम्बन्धी) भग० २१५२, ५३, मेघ० ११५२, ५४-५६, यथा यदा—तथा तथा 'जब कभी' तथा प्रभृति तब से, उस समय में लेकर—कु० ११५३ 1 सम०—बुद्ध (वि०) आर-व्य, उपक्रान्त या शुक किया हुआ, (क्षम्) आरम्भ । तदाशब्दम् | तदा | त्व | मीदुया समय, सर्वनाम काल । तदानीम् (अव्य०) | तद्+दानीम् | तब, उस समय ।

तथातीत्य (वि०) [तशानीम् + टधुक्, तुट्] उस समय से यत्न रखने वाला, उस समय का समकालीन, एषो-र्यम कायबधादायोष्यकस्तशानीत्यनश्च सबूत — उत० १ ।

तथीय (वि०) [त् + छ] उससे सबंध रखने वाला, उसका, उसकी, उसके, उनकी—रघु० १८१, २१८, ३१८, २५ ।

तद्धत् (वि०) [त् + मनुप्] उससे युक्त, उसको रखने वाला, जैसा कि तद्दानपाहं मे—कथ्य० २ (अथ्य०) 1 उससे समान, उस रीति से 2 समान रूप से, समान रीति से, इसलिये माध ही ।

तन् 1 (तना० उभ०—तनीति, तन्ते, तत—क० वा०—नायते, नायते, मन्तव-तितमौन, तितासति, तितनि-यति) 1 फैलाना, विस्तार करना, लडा करना, नानना—बाह्यां नकरयोस्तनयो—अमर० 2 फैलाना, बिछाना, पसारना—भट्टि० २३०, १०३२, १५११ 3 डकना, भरना—स तमी नमोभिरभिगम्य तनाम्—शि० १२३, कि० ५११ 4 उपन्यन करना, पैदा करना, रूप देना, देना, भेंट देना, प्रदान करना, स्वयि विभूने भयि सार्दि मुषानिधिरयि तन्ते तनुदाहम्—भात० ४, पितुर्मद तेन तनाम योऽमक—रघु० ३२५ ७३, यो दुर्जेन वर्यायित् तन्ते यनीया—भावि० ११५, १० 5 अनुष्ठान करना, पूरा करना, संपन्न करना—(यज्ञादिक)—इति छिनोयो नवीं नवाधिक्रा महाभूना महनोयसाम्न, समारहभुविदमायाय क्षये तनाम सांयान परपग्मिभ—रघु० ३६९, मनु० ४२०५ 6 रचना, करना, (अध्यादिक) लिखना, यथा—नाम्ना धाला तनोम्यह, या—तन्ते टीकाम् 7 फैलाना, झुकाना (धनुट् आदि का) 8 कानना, बुनना 9 प्रचार करना, प्रचारित होना 10 चाल रहना, टिका रहना। सम०—अथ—, 1 डकना, फैलाना 2 उतरना आ—, विस्तृत करना, बिछाना, डकना, ऊपर फैलाना कि० १६१५ 2 फैलाना, पसारना 3 उपन्यन करना पैदा करना, सृजन करना, बनाना कि० ६१८ 4 (धनुष या धनुष की डोरी) तानना—मौर्वी धनुषि चातता—रघु० १११९, १११४५, उद्, फैलाना प्र, 1 फैलाना पसारना स्थितम्ब विमनेयसासि कदयो दिक्षु प्रत्यन्तित न—भन्ते० ३२४ 2 डकना 3 उपन्यन करना, पैदा करना, सृजन करना दिवावा करना, प्रदर्शन करना, प्रस्तुत करना तद्गुरो-हृष्य कृतिभिराचस्पत्य प्रतापते—शि० २३० 5 अनु-ष्ठान करना (यज्ञादिक का), बि—, 1 फैलाना, बिछाना—स्फुरितचित्तविद्ध—मृच्छ० ११२२ 2 डकना, भरना—प्रसेदबिभुवित्त वदन प्रियाया चौर० ९, यो बिलत्य स्थित यम्—मेघ० ५८ 3 रूप देना, बनाना श्रेणीस्थाद्वितन्यत्तस्मा तोषणञ्जम्—रघु० ११४१

4. (धनुष का) तानना—धनुषित्य किरतो करना—उतर० ६१, भट्टि० ३१४७ 5 उपन्यन करना, पैदा करना, सृजन करना, देना, प्रदान करना 6 (धनुष का) रचना या लिखना—विराटपत्रप्रद्योती भाषदोपो विलप्यते 7 करना, अनुष्ठान करना (यज्ञादिक वा किसी कस्कार का) कु० २१६ 8 दिवावा करना, प्रस्तुत करना, सज्—, चाल करना, 11 (म्ना० पर०—चुरा० उभ०—तनति, तानयति ते) 1 भरोसा करना, विश्वास करना, विश्वास रखना 2 सहायता करना, हाथ बँटाना, मदद करना 3 पीड़ित करना, रोगग्रस्त करना 4 हाविष्यून होना ।

तन्वः [तनाति विस्तारयति कुलम्—तन्—कयन्] 1 पुत्र 2 मन्तान लडा का पुत्री, धिरि, कल्पि आदि ।

तन्विन् (पु०) [तन् + इमनिच्] पतलापन, सुकुमारता, सुधमता ।

तन् (वि०) (स्त्री० नु, न्वी) [तन् + उ] 1 पत्नी, दुबला, कम 2 मुकुमार, नाजूक, मृदु (अज्ञादिक, सौम्य के बिल्लखरूप—रघु० ६३२, तु० तन्वन्ती 3 बढ़िया, कीमत (अज्ञादिक) ऋतु० १३० 4 छोटा, थोडा, नन्हा, कम, कुछ, सीमित—तनुषान्भिभवीयि सन्—रघु० ११९, ३१२, तनुषापो धृष्टग्रह—हि० २१९, बाडा देने वाला 5 तुच्छ, महत्वहीन, छोटा—अमर २७ 6 (नदी की भांति) उथला हुआ, (स्त्री०) 1 शरीर, व्यक्ति 2 (बाहरो) रूप प्रकटीकरण—प्रत्यक्षाभि प्रपम्पन्निभ्रवतु वलाभिरटाट-भिरोष—श० १११, मार्कावि० १११, मेघ० १९ 3 प्रकृति, किसी वस्तु का रूप और चरित्र 4 लाल । सम०—अङ्ग (वि०) मुकुमार अङ्ग वाला, कीमलागी (—यी) कीमलाङ्गिनी स्त्री,—कल्प रोमकूप,—छद्म कवच, रघु० २१५१, १२१८९,—अ. पुत्र,—आ पुत्री,—स्वन्न (वि०) 1 अपने जीवन को जोखिम में डालने वाला 2 अपने व्यक्तित्व को छोड़ने वाला, मरने वाला,—स्थान (वि०) बाँटा व्यय करने वाला, बचा देने वाला, दरिद्र, अन्न,—प्राणम् कवच,—अथ. पुत्र (वा) पुत्री—अज्ञाना—नाक भृत् (पु०) शरीरधारी जीव, जीवधारी अणु, विशेष कर मनुष्य—कल्प स्थित तनु-भूता तनुभिस्तन किम् भन्ते० ३१७३,—मृच्छ(वि०) पतली कमर, कमर वाला,—रस पमीना,—एह,—एह् शरीर का बाल,—भारम् कवच,—अण. कुम्भी,—सञ्चारिणी छोटी स्त्री, या दस बंध का लडाका,—सर-, पमीना,—हृद गुदा, मण्डार ।

तनुक् (धि०) [तन् + टधुक्] फैलाना हुआ, विस्तारित ।

तनुस् (नपु०) [तन् + उणि] शरीर ।

तनु (स्त्री०) [तन् + ऊ] शरीर । सम०—उज्ज्व, —अ. पुत्र, —उज्जवा— या पुत्री,—नपम् यो,—नपात् (पु०)

आय—तनुनपाद्भवितानमाधिभे—शि० ११६२, अय-
कृतस्यापि तनुनपातो नाथ सिवा याति कदाचिदेव
—हि० २१६७, —सहस्रम् १ शर पर उमे हुए बाल
(पु० भी) २ पत्नी के पल, बाहु (हु) पुत्र ।

तस्मिः (स्त्री०) [तन् + क्तिच्] १ स्त्री, डोर, सूत्र
२ पक्ति, धोबी । सम०—बाहू १ योग्यक २ विगट
के घर रहते समय का सहदेव का नाम ।

तन्तुः [तन् + तुन्] १ धागा, रस्मी, तार, डोर, सूत्र—चिता
सम्पानित्तु—मा० ५११०, मेघ० ७० २ मकड़ी का
जाला—रघु० १६१२० ३ रत्ना जियननुपुण्य
कारितम्—कु० ४०२९ ४ मन्त्र, बन्धा, मन्त्रति
५ मगरमच्छ ६ परमान्ना । सम०—काष्ठम् जुलाहो
का एक औदार जियमे ताना साफ किया जाता है
—कीटः देशम का कीडा, नाम बडा मगरमच्छ,
—निर्घात नाड का वृक्ष, नाथ मकडा,—अ. १ सरयो
२ बछडा,—बाह्यम् ऐसा धाना जिसमें तार बने हुए
हो,—बाह्यम् बुनना,—बाप १ बुनाहा २ करवा
३ बुनाई,—विग्रहा केने का वृक्ष,—शाखा जुलाहे का
कारखाना,—सन्तत (वि०) बुना हुआ, सिना हुआ,
—सार सुपारी का पेड ।

तन्तुका [तन्तु + कन्] मर्या के दाने ।
तन्तुका,—ण [तन् + तुन्], पसे नि० पत्तम्] पडिवाल ।
तन्तुकर,—सम् [तन्तु + र, लृच् वा] मृगाल, कमल की
नाल ।

तन्त्रम् (पुं०) उभ० तन्त्रयति—ले, मन्त्रिन) १ हस्तन
करना, नियन्त्रण करना, प्रशासन करना प्रजा प्रजा
स्था इव तन्त्रयित्वा—श० ५१५ २ (श्री०) पालन-
पोषण करना, निर्वाह करना ।

तन्त्रम् [तन् + अच्] १ कथा २ धागा ३ ताना ४ बसत्र
५ अविच्छिन्न वस्त्र परम्परा ६ कर्मकाण्ड पद्धति, कण-
रेखा, मन्कार—कर्मणा युगपद्भ्रमन्त्रम्—कात्या०
७ मूत्र विषय ८ मूत्र मिश्रण, निरम, वाद, धाम्त्र
—नियमनिक्रान्तविधानम्—गीत० २ ९ पराधीनता,
पराधीनता—तैसा कि 'पत्तत्र' 'परन्त्र', दैवतत्र
दुःखम्—दश० ५ १० वैज्ञानिक कृति ११ अध्याय,
अनुभाव (किमी शब्दाधिक के)—तन्त्रे पञ्चभिरेतन्त्र-
कार भाष्यम् पच० १ १२ तन्त्र-सहिता (जिसमें
देवनाओ की पूजा के लिए अथवा अनिमायण धार्मिक
श्रावण करने के लिए जादू-टाना या मन्त्रतन्त्र का पद्य
है) १३ एक से अधिक कार्यों का कारण १४ जादू-
टाना १५ मूर्धन्याकार, गण्डा, ताकोत्र १६ दवाई,
औषधि १७ कर्म, धर्म १८ वेदामुपा, १९ कार्य
करने की यही नीति २० नाचकीय परिव्रत, अनुचर-
व्रत, भूष्यवर्ग २१ राग्य, देव, प्रभुता २२ मन्कार,
तन्त्रत, प्रशासन—लोकतन्त्राधिकार—श० ५ २३ वेना

२४ डेर, जमाव २५ धर २६ मन्त्रावट २७ दोलत
२८ प्रसन्नता । सम० काष्ठम्—तनुकाष्ठ बाप,
बापम् १ बुनाई २ कथा,—बाप १ मकड़ी
२ जाला ।

तन्त्रक [तन्त्र + कन्] नई वेशभूषा (कोरा कपडा) ।

तन्त्रयाम् [तन् + यद्] धानि ज्ञान्ये ग्लता, अनुपामन,
व्यवस्था, प्रशासन रखना ।

तन्त्रि, श्री (स्त्री०) [तन्त्र + ट, तन्त्रि + ङीप्] १ डोरी,
रस्मी—मन० ४१३८ २ धन्य की डोरी ३ बीणा का
तार नर्तकीमार्दी मयतमालिने भारविता कथाचत्
—मेघ० ८६ ४ स्नायु तान ५ पूछ ।

तन्त्रा [तद् + धञ् + टाप्] १ आन्वय, पकावट, पकान,
कलाति २ उप दीक्षित्य नदालम्बविवर्जनम्—याज्ञ०
३१५८, महाभो० ७१६२, हि० १३२६ ।

तन्त्रालु (वि०) [तन्त्र + आलुच्] १ घका हुआ, परि-
भात २ निहाल आयनी ।

तन्त्रि, —श्री (स्त्री०) [तन् + क्तिन्, तन्त्रि + ङीप्] निहा-
लुता, ऊप ।

तन्त्रय (वि०) (स्त्री०) यी [तन् + मयट्] १ उसका
बना हुआ २ तन्त्रोत मा० ११८२, श० ६१-२
३ तनुप, तदकथ्य ।

तन्त्रो [तन् + ङाप्] मुकुमार वा कोमलगी स्त्री इयम-
धिकमनाशा करत्येनाति तन्त्रो श० ११००, तत्र तन्त्रि
कुचावेनी नियत चक्रवर्तिनी उद्भूत ।

तन्त्र (शब्द०) पर० (श्री०) विगल) कर्पिन, तन्त्र) (अश०
प्रयोग) (क) चक्रमना, (आय वा मूर्ध की भांति)
प्रवर्तित होना—नमस्तपति धर्मोशा कथमाधिभिव्यधि
—श० ५११६ रघु० ५११३, उत्तर० ६११६, भव०
९११९ (ख) गम होना, उष्ण होना, गर्मी फैलना
(ग) पीडा सहन करना तपति न ना किमलमयाय-
नेन—गीत० ७ (घ) शरीर को हल करना, तपस्या
करना—अर्थात्तनुनाथ तपत्या तपति प्रभोश्च
उत्तर० ११०३ २ (मक०) प्रयोग) (क) गर्म करना,
उष्ण करना, तपाना भट्टि० १०३ भग० ११११९
(ख) जलाना, दाय करना, जल कर समायण कर देना
—तपति तनुगार्थि यदन्तमागर्भाना मा पुनर्देहयन्
श० ३१२३, अर्जुनरुद्राण्ये ३१३, ग) बोट पहुँचाना,
मुकमान पहुँचाना, खराब करना वाष्पमूलतत्पथति
वा समन्तु—भट्टि० ११२३, तप्यते, (कुछ लोग इसे
दिवा० की धानु मानते हैं) १ गर्म किया जाना, पीडा
सहन करना २ धार तपस्या करना, (प्राय 'तपस्' के
साथ) प्रेर०—नापयति नै, तापित, १ गर्म करना,
तापना, गगन नापितपायितासिलस्मी—शि० २०७५५,
न हि तापयितुं शक्य मातराम्भन्तुप्लका—हि० ११८६,

2 यन्त्रा देवा, पीठित करना, सताना—भूष तापित कर्त्तर्य—श्लो० ११, अष्टि० ८।१३, अन्तु 1 पश्चात्ताप करना, अकमास करना, विष्णु होना 2 पछताना उद्भू—1 तापना, गर्म करना, मूलसाना, (सोना आदि) पिघलाना (जिस समय अक० के रूप में 'चक्र' कला' अर्थ प्रकट करने के लिये यह पानु प्रयुक्त की जाती है, या जब इसका कर्म स्वयं शरीर का ही कोई अंग होता है, तो उस समय 'आत्मनेपद' में प्रयुक्त होती है) - उतपत्ति मुखर्ण मुखर्णकार - महा०, परन्तु उदात्तमान आत्प - अष्टि० ८।१, शि० २०।४०, उदात्तपते-पाणी - महा० 2 सा पी जाना, यन्त्रा देवा, पीठित करना, तपाना शि० १।६७, उप—, 1 गर्म करना, तपाना 2 पीठित करना; दुष देना - शि० १।६५, लिम्बु, -1 गर्म करना 2 पवित्र करना 3 परिष्कार करना, परि, 1 गर्म करना, जलाना, नष्ट करना 2 प्रसन्नित करना, आग लगाना पश्चात्, - पछताना, मेर प्रकट करना, शि—, 1 चक्रना ('उत्पुर्वक' की भांति आत्प०) रविबिन्दुपत्र-र्थ—अन्तु० ८।१४ 2 तपाना, गर्म करना, सख -1 गर्म करना, तपाना—सम्पन्नचामीकर - अष्टि० ३।३, मन्त्रपदादि सम्पि-तस्य पयनो नामापि न ज्ञानेयं अन्तु० २।६७ 2 दुष्को शाना, पीडा सहन करना, क्षिप्र होना—सतपाना न्वनमि शर्यम्—मेघ० ७, 'दु विद्या का'—दिवापि यदि निष्कल्पे सन्तपेते गुरु मन - महा०, अन्तु० २। ८७ 3 पछताना ।

तप (शि०) [तप् + अच्] 1 जलाने वाला, तपाने वाला तपा कर समाप्त करने वाला 2 पीडाकर, कष्टकर, दुःखर -प 1 गर्मी, आग, आँध 2 सूर्य 3 शीघ्र श्चतु शि० १।६६ 4 तरया, धार्मिक कड़ी साधना। सम०—अवध, अन्न शीघ्र श्चतु का अन्न और वर्षा श्चतु का आरम्भ—रविपीठबला तपान्यये पुनरुपेन शि युज्यते नदी - कु० ४।४४, ५।२३ ।

तपसी [तप् + श्च + शीप्] ताप्ती नदी ।

तपन [तप् + श्चट्] 1 सूर्य - प्रनागतपनो यथा - रघु० ४।१२, सलाह-नरनर्पति तपन - उदर० ६, मा० १ 2 शीघ्रश्चतु 3 सूर्यकान्तमणि 4 एक नरक का नाम 5 शिव का विशेषण 6 मदार का पौधा । सम०—आयसज, -तनय - तप, कर्ण और शूचीन का विशेषण, - बालकथा, - यमया, धमना और गोदावरी का विशेषण, - इष्टम् तावा, जपल, -सर्षि सूर्यकान्त मणि, -छब, सूर्यमुखी फूल ।

तपनी [तपन + शीप्] गोदावरी नदी या ताप्ती नदी ।

तपनीधम् [तप् + अनीधर] नदी, विशेषतः वह जो आग में तपाना आ चुका है—तपनीयाधक - मालवि० ३,

तपनीयोपानसुलभाय प्रमादीकरोतु—महावी० ४, असम्पन्तौ तपनीयोपौठम्—रघु० १८।८१ ।

तपस् [तप्] [तप् + अनुत्] 1 ताप, गर्मी, आग 2 पीडा कष्ट 3 तपचर्या, धार्मिक, कड़ी साधना, आत्म-नियन्त्रण—तप क्लेश तदवधिमाधनम्-कु० ५।६४ 4 आत्मदमन, और आत्मोत्सर्ग के अन्त्येस से सम्बद्ध ध्यान 5 नैतिक गुण, सूर्य 6 किसी विशेष वर्ण का विशेष कर्तव्यपालन 7 सात लोकों में से एक लोक अर्थात् 'जल-लोक' के ऊपर का लोक (-पु०) माघ का महोत्सव—तपमि मन्त्रगर्भस्तिरभीद्यमान्-शि० ६।६३, (पु०, तपु०) 1 गिभिर श्चतु 2 हेमन्त 3 शीघ्र श्चतु । सम०—अनुभाष धार्मिक तपचर्या का प्रभाव, -अकट, यद्वाचनो देव, - क्लेश, धार्मिक कड़ी साधना का कष्ट, -चरणम्, -चर्या कठोर साधना, -तलः इन्द्र का विशेषण, -धम साधना का धर्मो तपस्वी, जकन -रम्यास्तपीयताना क्रिया श० १।१३, राम-प्रधानेषु तपोधनेषु -२।६, ४।१, शि० १।१३, रघु० १४।१९ मनु० १।१२४०, -निधि धर्मप्राण शक्ति, सन्यासी-रघु० १।५६, -अभाष, -अलम् कड़ी साधनाओं के फलस्वरूप प्राप्त शक्ति, तप द्वारा प्राप्त मातृधर्म या अजीयता, -राशि सन्यासी, -लोक जनलोक के ऊपर का लोक, -अलम् तपोभूमि पवित्र वन जहाँ सन्यासी कठोर साधना में लीन हो कृत तपोधन तपोधनपति प्रेते - श० १, रघु० १।१०, २।१८ ३।८,

-शुद्ध (वि०) जो बहुत तप कर चुका हो, -विशेष शक्ति की श्रेष्ठता, धर्म सम्बन्ध अत्यन्त कठोर साधन, -स्थली 1. धार्मिक कठोर साधना की भूमि 2 वनारस ।

तपस [तप् + अमच्] 1 सूर्य 2 चन्द्रमा 3 पत्नी ।

तपस्य [तपस् + यत्] 1 कालानु का महोत्सव 2 अर्जुन का विशेषण, -स्था धार्मिक कड़ी साधना, तपश्चरण ।

तपस्यति (ना० वा० पर०) तपस्या करना—मुरामुरगुह सोऽत्र मयलीकस्तपस्यति—श० ७।९, १२, रघु० १३।४१, १५।४९, अष्टि० १८।२१ ।

तपस्विन् (वि०) [तपस् + विन्] 1 तपस्वी, भक्तिनिष्ठ 2 गरीब, दयनीय, असहाय, दीन—सा तपस्विनी निर्बला भक्तु - श० ४, मा० ३, म० १।१३५, (पु०) सन्यासी—तपस्विसामान्यमेतर्णाया-रघु० १।५६७ । सम० - पत्रम् सूर्यमुखी फूल ।

तप्त (भू० क० कृ०) [तप् + क्त] 1 गर्म किया हुआ, जला हुआ 2 रक्तोष्ण, गरम 3 पिघला हुआ, लला हुआ 4 दुष्को, पीठित, कष्टयन्त 5 (तप का) किया गया अनुष्ठान । सम०—काश्चकम् आग में तपाना हुआ सोना, -कृष्णम् एक प्रकार की कठोरसाधना, -कृष्णम् साक की हुई चाँदी ।

तम् (विधा० पर०) —ताम्यति, तान्ति 1 वम घटना, घट-
दास्य होता 2 परि जान होता, धक जानो —ल्यजत-
शिरोरपुष्पहतवेर्गपि ताम्यति यत्—मा० ५।३१ 3 (मम
या क्षणी से) दुष्टी होता, बेचन या घोड़ित होता,
पौधा देना, बर्बाद करना—प्रविशति मूढ कुञ्ज
गुरुकमुदुवेत्ता नागनि—गीत० ५, गार्डोन्कळा लालन-
लुम्पिनेर कुञ्जनाम्पवीति—मा० १।१५, १।३३, अन्व
७, उद्—, उताम्पना होता—हृदय किमिवनुताम्यति
श० १।

तमम् [तम् + ध] 1 अन्धकार 2 पैर को नाक,—म 1 गड़
का विशेषण 2 तमाल वृक्ष ।

तमम् (मपु०) [तम् + अमुन्] अन्धकार—नि वान्धविष्य-
दरुणममसा विभेना त तन्मन्त्रकृष्णा घृति नाक-
रिप्यत्—श० ३।६, विष्णु० १।७, मय० ३० 2 तमक
का अन्धकार—मनु० ६।२८२ 3 मानसिक अन्धेरा,
अम, आनि—मनिमुनाप्रयवम्भितरंधिना मम च
मूकमिद तमसा मेल—ग० ६।६ 4 (मा० ६० में)
अन्धकार या अज्ञान, प्रकृति के लघटक ३ गुणा में म
एक (दुमरे दा हे—मन्त्र, रजम्) कु० ६।६१, मनु०
१२।२६ 5 रत, ताक 6 पाप (पु० तम्) गड़
का विशेषण । म० अण्ड (वि०) अज्ञान या
अन्धकार का दूर करने वाला, ज्ञान देने वाला,
प्रकाशित करने वाला कि० ५।०, (हे) 1 मूय
2 चन्द्रमा 3 आण—काण्ड, इम् पाण अन्धकार
—मूय दे० 'तमम्' ऊपर (८)।—अन् 1 मूय 2 चन्द्र
3 आण 4 विन् 5 शिब 6 ज्ञान 7 बुद्धदेव
—श्वीतिम् (प०) जगत् तति व्यापक अन्धकार,
—मूय (प०) 1 उच्छल गरीर 2 मूय 3 नदि
4 आण 5 वैष्ण प्रकाश, नृ 1 मूय 2 अन्धमा
—निद्,—मणि बुद्धन्,—बिकार राम, वीमारी ह्म्,
—हृर (वि०) अन्धकार का दूर करने वाला (पु०)
1 मूय 2 चन्द्रमा ।

तमस [तम् + अमच्] 1 अन्धकार 2 कृत्री ।
तमसिबन्तो, नशा [तमन् + विनि + डीप्, तम + टाप्] रात ।
तमाल [तम् + कालन्] 1 ठक वृक्ष का नाम (इमका
ऊपर कर्त्री होता है) —तमालनामलोचनवदलानमम-
मूयना मा० १।११, १२० १३।१५, ६९, गीत० ६१
2 मानक पर बनन का सांसारिक निवृत्त (चिह्न)
3 तदवा, तद्गु । म० पञ्चम् 1 मन्त्रक पर
सांसारिक चिह्न 2 तमाल का पत्ता ।
तमि, मा (स्त्री) [तम् + टन्, तमि + गीप्] 1 रात
विशेषण, काका शिबेवारा रात—म तमो तमसि-
निगणर तमाम् जि० १।२३ 2 मूर्ती, बेहानो
1 इन्दी ।

तमिस (वि०) [तमिन्] अन्ध [काक],—अम् 1 अन्ध-

कार, —एतसामालदशनीलम तमिसम्—गीत० ११,
कर-वर्णारसि पद्मिनामभूरणकिरणीविभन्नतमिसम्
—२, कि० ५।२ 2 मानसिक अन्धकार (अज्ञान)
अम 3 श्राप, कोप । तम०—पञ्च कृष्णपक्ष (चाह-
मास का) म्पु० ६।३४ ।

तमिसा [तमिन् + टाप्] 1 (अपिपारो) रात—मूय तप-
व्यावस्थाप्य दृष्टे कल्पेन साकस्य कथं तमिसा—म्पु०
५।१३, जि० ६।४३ 2 व्यापक अन्धकार ।

तमोमय [तमम् + मयट्] गड़ ।
तम्या, तमिन्का [तम्यति वचछति तम्व् + अच् + टाप्,
तम्व् + ष्णुन् + टाप्, इष्यम्] गाय, गी ।

तप (भा० वा०—तपते) 1 जाना, हिलता-कुलता—अभ्यु-
काम नव तेये पुरान् भट्टि० १।०५, १०८ 2 रस्म-
वाली करना, रक्षा करना ।

तर [तृ + अच्] 1 पार जाना, पार करना, मार्ग—भट्टि०
७।५५ 2 भाड़ा—दीर्घाध्वनि यथादेश यथाकाल तदा
भवेत्—मनु० ८।६०६ 3 सहज 4 घाटवाली नाव ।
म०—पञ्चम् नाव का भाड़ा, —स्थानम् घाट, वह
स्थान जहा नाव आकर ठहरती है ।

तरक्ष, तरक्षु [तर वच मार्ग का धिर्गोति—तर + क्षि
+ ट्, लोके पुषो उताप] विम्बु, लक्षडववा ।

तरङ्ग [तृ, अङ्गच्] 1 लहर—उत्तर० ३।६७, भर्तु०
१।८१, म्पु० १३।६३, श० ३।३ 2 किमी क्रय का
अव्याप या अनुभाग (जैसे कपासपरिष्कार का) 3 हृद,
छलाव मगट बीबी, (पौडे आदि का) छलाव
लगाने का क्रिया 4 कराश, वम्भ ।

तरङ्गिणी [तरङ्ग + इनि] डीर् [नदी] ।

तरङ्गित (वि०) [तरङ्ग + क्तच्] 1 लहराता हुआ, लहरो
के साथ उल्लसने वाला 2 छलकता हुआ 3 धरन्धरा
हुआ,—तम् कपासमान—अपान्ततरङ्गितानि बाधा
—गीत० ३ ।

तरण [तृ + ल्यट्] 1 नाव, वेडा 2 स्वर्ग,—चम् 1 पार
करना 2 जानना, पारगति करना 3 चल्ना, डाढ़ ।

तरणि [तृ + ङिनि] 1 मूय 2 प्रकाश-किरण, चि,—चो
(स्त्री०) वेडा, घडनई, नाव । म०—रत्नम् लाल ।

तरण्य, —इम् [तृ + अणच्] 1 सामान्य नाव 2 घडनई
(जा उल्टे हुए कच्चे या घडो को बाणो में बांध कर
नगाई जाना है) 3 चल्ना या डाढ़ । तम०—बाधा एक
प्रकार की नाव ।

तरण्यो, तरण्य, तरण्यी (स्त्री०) [तरण्य + डीप्, तृ + ङिनि,
तरन्म + डीप्] नाव, वेडा, घडनई ।

तरत्त [तृ + षच्] 1 समुद्र 2 पचड बीजार 3 मेहक
4 राक्षस ।

तरल (वि०) [तृ + षल्च्] 1 कपमान, लहराता हुआ,
हिलता हुआ, धरन्धराता हुआ—तरापतिलरत्तलविष्णु-

दिवः भ्रूवन्दम् - रघु० १३।७६ घन इव तरलबलाके
—योग० ५, वि० १०।८०, य० १।२६ 2 चपल,
अभिरव, चपल—वैद्यविदारस्वरत्ना स्वयं मत्सरित्
पर-वि० २।११५, अमर २७ 3 ज्ञानदार, चमक-
दार, चटकीला 4 इवकण 5 कामुक, स्वेच्छाचारी,
—स 1 हार की मध्यवर्ती मणि—मकनामयीऽप्यनग्ल-
मघ्न—शामर० ३५, श्रायस्त्राग्लग्लमुद्रिकान् (मन्त्रि-
नाथ के अनामनाथ यत्र मेघदूत का प्रक्षेपक है) 2 शर
3 समतल मन्त्र 4 लकी, यज्जर्गट 5 शीरा 6 लोहा
—ला माट ।

तरलवृत्ति (ना० घा० पर०) कण उन्मूल्य कम्पा, लहंगना,
इषर-उषर हिलना-जलना—अमर ८७ ।

तरलवायुते (ना० घा० आ०) कापना, श्लिपना, इषर-उषर
चलना-किरना ।

तरलापित [तरल + अपिच् + क्त] बड़ी लहर, कलंगोल ।
तरलित (वि०) [तरल + इतच्] श्लिपना हुआ, धरबराता
हुआ, आदोलित हुआ हुआ - तुङ्गतरङ्ग - गीत० ११,
हाग ७ ।

तरलारि [तर समाधान विप्लवक वार्ययति -तर + क् +
रिच् + इत] तलवार ।

तरल (नपु०) [त् + अमुच्] 1 बाल, वेग 2 वीर्य,
शक्ति ऊर्जा—कैलाशनाथ तरला जगोपु—रघु० ५।२८,
११।७७, वि० ९।७२ 3 नट, पार करने का स्थान
4 घटनई, बेडा ।

तरलम् [त् + अलच्] आधिप, माय ।

तरलान् [त् + आतच्] सुट, नाव ।

तरलित् (वि०) (स्त्री०-नी) 1 तल, कुर्तीला 2 मङ्ग-
ल, प्रसन्नशाली, साहसी, ताकतवर—रघु० ५।२३,
११।८९, १६।७७, (पु०) ललकार, आशुगामी दूत
2 शूरीर 3 हवा, वायु 4 गहक का विशेषण ।

तराय, तरालु [तराय तराया अन्धुरिच, तराय अलनि
प्राप्तोति तर + अल + उण्] एक बड़ी चपटी लती
की नाव ।

तरि, —री (स्त्री०) [तरति अनया ङ + इ, तरि +
ङीप्] 1 नाव जोरती तरि मरिचनीकामभोगनीरा
उद्भूट, वि० ३।७६ 2 कपड़े रचने का लपटूक 3 कपड़े
का छोर या मगड़ी (किनारा) 1 सम०—रच-चपू
डाइ ।

तरिक, तरिकिन् (पु०) [तर + इत्, तरिक + इति]
मल्लाह ।

तरिका, तरिणी, तरिचम्, तरिणी, [तरिक + टाप्, तर
+ इति + ङीप्, तु + ष्ट् + टाप् + ङीप्] नाव
चिलनी ।

तरीष [तु + षिच्] 1 बेडा, नाव 2 ममूद्र 3 ससम
आवित 4 स्वर्ग 5 कार्य, धन, धनमाय, पेशा ।

तर, [तु + उन्] वृक्ष—जबमरोहणमिधिसम्नरगिष मुकर
समुद्भूतम्—मालवि० १।८। सम० लच्छ, —इम्,
—कच्छ, —इम् वृक्षों का झुण्ड या मगड़,—बीचनम्
वृक्ष की जड़,—तलम् वृक्ष के तने के पाग का स्थान,
वृक्ष की जड़,—मक, काटा,—कूष कन्दर,—राग,
1 कली या फूल 2 कोमल अक्षुर अलुबा,—राग:
नाल का पेड़,—कूहा पेड़ पर ही उपग्रह होने वाला
पीषा - बिलसिनी नव मल्लिका लता,—शापिन्
(पु०) पत्ती ।

तरप (वि०) [तु + उन्] 1 चढ़ती बरानी वाला, जबान
पुष्प पुष्पक 2 (क) लच्छा, नवजात, मुकुमार, कोमल
भ्रू० ३।६९ (ष) नवोदित, (सूय की भांति)
जो आशय में ऊँचा न हो, कु० ३।५५ 3 नूनन,
ताड़ा—तरुण दधि—चाण० ६४, तरुण संप्रसाक
नवीदन पिच्छलानि च दधोनि, अल्पव्ययेन मुदरि
शम्यज्जनी मिष्टमग्नानि । छ० १ 4 जिन्दादिल
विगद,—थ युवा पुण्य, जवान-पञ्च० १।११, भासि०
२।६२,—कौ युवती या जवान स्त्री—वृद्धस्य तरुणी
विपम्—चाण० ९८। सम०—ज्वर एक मरताह
रहने वाला इमार,—दधि (नपु०) पीच दिन का
जमाया हुआ दूध—वीरिका विनयिल ।

तरुण (वि०) [तर + ङ] वृद्धा से भरा हुआ ।

तर्क (बुग०) उ५०—तर्कयति—ते, तर्तिव) 1 कल्पना
करना, अटकल करना, प्रका करना विधावत करना,
अन्दाज लगाना, अनुमान करना—रह ताकतकत्ता
तर्कयति—श० ६, मेघ० २ तर्क करना, विचा-
रना, विमर्श करना 3 लवाल करना, मान लेना
(दिकमंक) 4 सोचना, इगडा करना, अभिप्राय
रखना, विचार में रहना—(पानु) स्व वेदच्छरफटिक-
विशद तर्कयन्मिचयम्—मेघ० ५३ 5 निश्चय करना,
6 चमकना 7 सोलना, प्र- , 1 तर्क करना, विचार-
विमर्श करना 2 सोचना, विज्ञान करना, लवाल
करना, कल्पना करना—भट्टि० २।५, वि०—, 1 अट-
कल करना, अन्दाज करना 2 सोचना, कल्पना,
विधावत करना 3 विचार विमर्श करना, तर्क
करना ।

तर्क [तर्क + अच्] 1 कल्पना, अन्दाज, अटकल—प्रमप्रसे
तर्क, विमर्श २ 2 तर्कना, अटकलबाजी, चर्चा,
दुकह लकना—कृत पुनर्गमिचयधरिते आगमार्ये तर्क
निमित्तस्याक्षेपस्यावकाश, इदानीं तर्कनिमित्त आक्षेप
परिहृत्यते—शारी०, तर्कौप्रतिष्ठ स्मृतयो विधिशा
—महा०, मनु० १२।१०६ 3 मन्त्रे 4 म्याय, तर्कशास्त्र
—नकाय्य मन्त्रार्थ परिपत्रगल्पन्त् यवोक्तव्य—ने०
२२।१५५, तर्कशास्त्रम्, तर्क दीपिका 5 (म्याय० में)
उपहासास्पद हाना बहु रिशाम जो पूर्व कथित लब्धो

(पक्ष) के विपरीत हो 6 कामना, इच्छा 7 कारण, प्रयोजन । मय०—विद्या न्यायशास्त्र ।
तर्कः [तर्क + क्तृ] 1 भावी, प्रस्तावित करने वाला, प्राची 2 तर्कशास्त्री ।
तर्कः [तर्क + क्तृ] [कृत् + उ ति०] तर्कवा शब्दों की तर्कनी क्रम पर सूत्र लिखता जाता है - तर्क कलन-साधनम् । मय०—पिण्ड - बीडी: बीचनी (तर्क के किनारे पर लिखता हुआ मूल का गीला ।
तर्कः [—तर्क्य पृथो०] लकड़वाणा, विच्छ ।
तर्क्यः [तर्क + क्तृ] यवक्षार, जवाक्षार, दाग ।
तर्क [म्या० पर०, चुरा० आ० प्राय पर० भी]—नर्जन, तर्जयति—ते, नर्जित 1 घमकाना, घृष्टकाना, उराना — घमकीकृत्या तर्जयति श० १, अहितान्तिनोद्भूते-स्तर्जयति कन्तुभि २ रघु० ६।२८, ११।०८, १२।६१, अट्टि० १६।८० 2 शिष्टकाना, घुरा-भला कहना, लिखा करना, कलक लगाना—अट्टि० ६।३, ८।१०१, १७।१०३ 3 पिण्डों उराना, अपहास करना ।
तर्जयन्, जा [तर्क + क्तृ] 1 घमकाना, उराना 2 लिखा करना - रघु० ११।१७, कु० ६।४५ ।
तर्जनी [तर्ज + क्तृ] अगठ के पास वाली अंगुली ।
तर्ज, **तर्जक** [तर्ज + क्तृ, तर्ज + क्तृ] बछडा - शि० १२।४१ ।
तर्जि [तर्ज + क्तृ] 1 वेडा 2 मूर्त ।
तर्ज [म्या० पर० नर्जति] 1 क्षीन पहुँचाना, चोट पहुँचाना 2 मार डालना, काट डालना—अट्टि० १६।१०८, 'तर्ज' भी दे० ।
तर्पणम् [तर्प + क्तृ] 1 प्रणम करना, नमन करना 2 तृण प्रयत्ना 3 (अन्येक व्यक्ति द्वारा रिमे जाने वागे) पौष दानों से मे एक, विनय (विशेषतः पूर्वजा के शिरों के निमित्त अल तर्पण) 4 समिधा (पत्नीय श्विन के लिए इधम) । मय०— इच्छु भीम का विनोपण ।
तर्पण [तर्प + क्तृ] [तर्प + क्तृ] पत्नीय तलम का शिखर ।
तर्प [तर्प + क्तृ] 1 प्यास 2 कामना, इच्छा 3 नमन 4 नल 5 मूर्त ।
तर्पणम् [तर्प + क्तृ] 'पाम, विप्रासा ।
तर्पित, तर्पित [वि०] [तर्प + क्तृ] 1 प्यासा 2 अर्जिताधी, इच्छक ।
तर्हि [अभ्य०] [तर्हि + शि०] 1 उम समय, तब 2 उम विषय में, यथा—तर्हि 'अव-तव' 'वहि-तर्हि 'अगर-ना' कथ-तर्हि 'को किन् किम प्रका' ।
तर्क, **तर्कम्** [तर्क + क्तृ] 1 तर्क - भूकम्पलमिह श्लोम कुर्वन् श्वासेव भतर्कम्—रघु० श००, (कभी कभी अर्थों में चूट परिचयन न च, ममास के अला से प्रयोग)—महीनम् भूमि की सख अर्थात् पृथ्वी

—सुदं नु अर्धगण० मुनभावाकाया—श० ७।३२ नमनलम् 2 हाथ की तबनी रघु० ६।१८ 3 पैर का तन्ना 4 बाहु 5 बाण्ड 6 नीचपन, पैर का बहि-पावन 7 निम्न भाग, नीच का भाग, आधार, पैर, पैदी—रेबाराधमि वेनवीतमाले वेन समकण्ठो—काव्य० १ 8 (अन) पक्ष या किमो दुपयो वन्तु की नीचे की भूमि, किसी भी वस्तु में प्राण धरय—कर्मो मयस्य तले निपदिनि—रघु० १।१२ 9 छिद्र गडा,—ल 1 तलवार की मट 2 गालवृक्ष, —लम् 1 तालाव 2 जत्रुन वन 3 काण्य मय, प्रयोजन 4 बायो काट पर पत्ता जामे वाला नमूने का कीला (इमो अब मे लला' भी) । मय०—अड्गुलि (श्री०) पैर की उगली, -अतलम् मात अगालका मे पीथा - ईक्षण मूजा - उडा मदी, - घाल अण्य, -ताल एक प्रकार का वाद्ययन्त्र - अण्य, -आण्य, -आण्यम् धनुष का चमड़े का पन्ना, -प्रहार अण्य, -सारक्य अण्ययन्त्र, त्रु ।
तलकम् [तल + क्तृ] वडा तालाव ।
तलल [अण०] [तल नञि] पैदी मे ।
तलाको [तल + क्तृ] किम + टोप] बटाई ।
तलिका [तल + क्तृ] तल, अण्ययन्त्र ।
तलियम् [तल + क्तृ] तला हुआ मास ।
तलिन [वि०] [तल + क्तृ] 1 पत्ता, पूर्वक, कुण 2 घोडा कम 3 मण्डक स्वच्छ 4 निम्न भाग मे या निचली सख पर स्थित 5 पूर्व नम् विन्मरा, महीदार कम्बी बाकी ।
तलियम् [तल + क्तृ] 1 फसी लोहे टुई भूमि सखडा 2 विन्मरा, मण्डिका पात्र 3 बदाया 4 बंदी तलहा या चाक ।
तलुनः [तल + क्तृ] टका ।
तलकम् [तल + क्तृ] त्रु ।
तल्य, **तल्यम्** [तल + क्तृ] 1 गेदार कम्बी चौकी, विन्मरा मको मण्ड विगतनिम्नतल्यम् मजायकार—रघु० ५।७५, 'विन्मरा छात्र' उडा 2 (आल०) पलो (बीया कि मूलव्याय मे) 3 गाडी मे बैठने का स्थान 4 अण की मण्डिल, बूने, कगुरा, अटारी ।
तल्यक [तल + क्तृ] [नीच आदि] जिमका कार्य विन्मे विज्ञान या तेषा करने का है ।
तल्यक [तल + क्तृ] 1 अण्डना सर्वात्मना, प्रस-दना 2 नमाल क मय य) श्रेष्ठ (एव अर्थ मे यह शब्द सर्वत्र पा० जाता है) मयम के पूर्व पर का बाहे कोई विक्र ही) - वेणमन्त्र श्रेष्ठ अण्डना इना प्रहार 'कुमारो तल्यक' गेठ बनाया ।
तल्लिका [तल्लि लीयते - ल] [ली + क्तृ] तब, टयम्, ताकी, कुत्री ।

तल्लो [तन् लघति -तन् + ल् + ष + डीप्] तल्लो,
जवान लो ।

तल्ल [वि०] [तन् + ल्] 1 बीरा हुआ, काटा हुआ,
तराशा हुआ, लपट-बपट किया हुआ 2 गदा हुआ,
दे० 'तल्ल' ।

तल्ल [पु०] [तन् + ल्] 1 बहई 2 विभवकर्मी ।

तल्लकः [तन् + क् + अच्, मुट्, डलोप] 1 चोर, लुटेरा
—या सञ्चर कर पाव्य तलासे स्वरतल्लकः—भर्तुं
१।८६, मनु० ४।१३५, ८।६७ 2 (समास के अन्त
में), अवन्त्य, वृणित, रो कामुक लो ।

तल्ल [वि०] [स्था + कु, द्विवच्] स्थावर, अचर, स्थिर ।
ताल्ल [तल्ल + ल्] तल्लन् + ल्, तल्लन् + अच्] बहई का
पुत्र ।

ताल्लोलिकः [तल्लोल + डल्] विशेष प्रवृत्ति, आदत
या लीच को प्रकट करने वाला प्रत्यय ।

ताल्ल [ताल्ल + ल्] 1 ताल्ल २ उदासीनता,
अनवधानता, पर्याप्तसूच्यता—दे० 'ताल्ल' ।

ताल्ल [तद् + घञ्] 1 प्रहार, टोक, घुसा या घण्ट
2 कोशाहल 3 पूजा, गदर 4 पहाड़ ।

ताल्ल [तद् + गिच् + घञ् + टाप्] एक राक्षसो, मुकेनु
की पुत्री, मुन्द की पत्नी और भारोच की माता
[अन्य की समाधि भंग करने के कारण बहु राक्षसी
बना दी गई] । जब उसने विश्वामित्र के यज्ञ में विघ्न
झासा तो राम के द्वारा बहु मारी गई । राम पहले
तो लो की लिए वनूष नानने के विरुद्ध थे, परन्तु
श्रुति में उसकी शकाओं को दूर कर दिया था । दे०
रघु० १।१४-२० ।

ताल्ल [ताडका + टक्] ताडका के पुत्र मारीच राक्षस
का विशेषण ।

ताल्ल, ताल्ल [ताडम् अक्षयते लघते—अडल् + घञ्,
कण्ड डक्, डक्० परकणम्—ताडम्य पश्मिभ
प० त० लप्य ड्] दे० 'ताल्ल' ।

ताल्लन् [तद् + गिच् + ल्यट्] मार्गना-नीटना, हष्टर
लगाना, बेंत लगाना,—आलने बहरो दीपास्थाडने बहरो
घुसा—आण० १२, अवनसोपकण्डानानि वा—कु०
४।८, शृङ्गार० ९,—नौ हष्टर ।

ताड [डी (स्त्री०)] [तद् + गिच् + टन्, ताडि + डीप्]
1 एक प्रकार का ताड 2 एक प्रकार का आभूषण ।

ताडधान [वि०] [तद् + गिच् + गानच्] पीटा जाता
हुआ, प्रहार किया जाता हुआ, न (रोक आदि)
वाद्यगण्ड (जो किसी गिटिका में बजाया जाय) ।

ताड्य [—यच् + तड् + अच्] 1 नाच, नृत्य—मदनाड-
कोल्लाम्ने—उत्तर० ३।१८ 2 विशेष कर शिव का

उन्माद-नृत्य या ब्रह्मण्ड नाच—श्याम्बकान्दि वस्ताण्डक
देवि भूषावनीन्द्यै च हृष्ट्यै च न—मा० ५।१३, १।१
3 नृत्यकला 4 एक प्रकार का धास । सम०—प्रिय
शिव जी ।

ताड [तनोति विस्तारयति गोधादिकम्—तन् + ल्, दीर्घ]

1 पिता,—मध्यन्तु लवस्य बालिघता ताडपासा—उत्तर०
६, हा तातेति क्रन्दिताकार्थं विषण्णः—रघु० ९।७५

2 स्नेह दया या प्रेम को प्रकट करने वाला शब्द
(प्रायः अपने से आयु में छोटा के प्रति, विद्याधियो के
प्रति या बन्धों के प्रति प्रयुक्त),—तात चन्द्रापीड—का०

रक्षसा प्रसितस्तात तव तातो वनान्तर—महा०
3 सम्मान धोतक शब्द (जो अपने से बड़े और श्रेष्ठ
व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है)—हेपिता हि बहुवा

नरेस्वरास्तेन तात वनुषा धनुर्भूत—रघु० १।१८०
तस्मान्मुष्ये यथा तात सविधातु तवाह्वि—१।७२।

यम०—मू (वि०) पिता के अनुकूल,—(शुः) ताक ।

ताड [तात + नृत् + ल् + ङ] अवन पत्नी ।

ताडल [ताप + ला + क् + घृषो० पथ्य ल] 1 एक रंग
2 लोहे का इन्धन, या सलाख 3 पकाना, परिपक्व
करना 4 रमी ।

ताडि [नाप + क्तिच्] सन्तान,— ति (स्त्री०) सानय
उत्तराधिकार—जैसा कि 'अरिष्टताति या शिव-
ताति' में ।

ताडकालिक [वि०] (स्त्री०—की) [तकाळ + डल्]
1 उसी समय में होने वाला 2 अल्पकालित ।

ताड्य [तल्ल + व्यञ्] 1 आशय, अर्थ, अभिप्राय
—अथेद ताड्यम्—आदि 2 प्रत्युत याचना का
आशय—काव्य० २ 3 सुदेश्य, अभिप्रेत पदार्थ, किसी
पदार्थ का उल्लेख प्रयोजन इत्यादि (अभि० के साथ)

—इह वधाथेकथने ताड्यम्—पा० २।३।४३, भाष्य
4 अन्ता का आशय (आशय में कितने शब्दों के प्रयो-
गायं)—वनरुचिष्ठा तु ताड्यं परिकीर्तितम्—भावा०

८४, ताड्यनिर्गुपति—८२ ।

ताडिक [वि०] [तल्ल + टक्] यथायं, वास्तविक, परमा-
वश्यक—कि चासीदयत्तय्य भेदविगम्य ताडिकपुत्रे

ताडिक—आमि० २।८१, ताडिक सबच—आदि ।

ताडल्ल [तदाधन् + व्यञ्] प्रकृति की अभिव्यक्ता,
ममरूपता, एकता—नयनयोस्तादात्म्यमनोऽह्मा-

आमि० २।८१, भवतत्वात्मनस्तादात्म्यम्—आदि ।

ताडल [वि०] (स्त्री०—की) ताडल्य, ताडल्य [वि०]
(स्त्री०—की) जैसा, उस जैसा, उसकी भांति—ताड-

मुषा—मनु० ९।२२, ३२, अमर० ४६, दादुपस्तादुष
—कोर्द, जो कोई, सामान्य मनुष्य—उपदेशो न दादुषो

यादो तादुषो जने पच० १।३९० ।

ताड [तन् + घञ्] 1 धारा, रेखा 2. (सगीत० में)

विकसित स्वर प्रथम टेक—यथा तान विना राग
—भाषि० ११११९, तानप्रशयिर्विबोधयन्—कु०
१८, —नम् १ विस्तार, प्रसार २ ज्ञानेन्द्रियो का
विषय ।

तानवम् [तनु + अण्] पतलापन, छोटापन - हास्यप्रभा
तानवधाससाद—विक्रमांक० १११०९ ।

तानुरः [तनु + ऊरण्] भँवर, जलावतं ।

तान्त (वि०) [तम् + षत्] १ यथा हुआ, निहाल, क्लान्त
२ परेशान, कष्टग्रस्त ३ म्लान, मुर्झाया हुआ दे०
'तम्' ।

तान्तवम् [तन्तु + अण्] १ कातना, बुनना २ जाला ३ बुना
हुआ कपड़ा ।

तान्त्रिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [तन्त्र + ठक्] किसी शास्त्र
या सिद्धान्त में सुविज्ञ २ तन्त्रों में सम्बद्ध ३ तन्त्रों से
प्राप्त जिला, क तन्त्र सिद्धान्त का अनुयायी ।

तान्त्र [तन् + षञ्] १ यमीं, चमक-दमक—अर्कमयूनताय
—ग० ४१०, मा० २११३, मनु० १२१७६, कु० ७।
८४ २ सताना, पीठिन करना, कष्ट, मत्ताप, वेदना
—इतरनाशप्रदानि तवेच्छया वितरितानि सहे चनु-
रानम उद्भूट, समस्तपण काम मनमित्रिदाधप्रस-
रयो—ग० ३१८, भर्तृ० ११२६ ३ खेद, दुःख । मम०
—ब्रह्म तीन प्रकार के मत्ताप जा मनुष्य को इस
मत्ताप में मूढन करने पड़ते हैं—अर्थात् आध्यात्मिक,
आधिभौतिक और आधिभौतिक, —हृर (वि०) शीतलता
देने वाला, यमीं दूर करने वाला ।

तान्त्र [त् + णिच् + स्तुट्] १ सूर्य २ धीम्य ऋतु
३ सूर्यकान्तमणि, कामदेव के बालों में से एक, नम्
१ जलाना २ कष्ट देना ३ डोकला-पीटना ।

तान्त (वि०) (स्त्री०—स्त्री) १ मन्थनी से सम्बद्ध कठी
साधना से सम्बन्ध रखने वाला २ अकन, —स (स्त्री०
—स्त्री) वानप्रस्थ, अकन, सन्यासी । मम०—इष्टा
अग्र, —सक, —बुध, हिशोब का बुध, इगुदी ।

तान्तवम् [तान्त + षञ्] तन्त्रव्या ।

तान्त्रिष्ठ [तान्तिन उदयति—तान्तिन्] उद् + उ प्रथोः]
तमाल का वृक्ष या फूल (न्यु०) प्रफुल्लताण्डि-
निरेरधीपृथिं—वि० ११२२, श्यामलतापिच्छन्नु-
विक्रिभिरिव तमोवल्लीरधीभिषियते मा० ५१६, (इसी
अर्थ में 'तान्तिन्' शब्द भी प्रयुक्त होता है) ।

तानी [तम् + णिच् + अच् + ङीप्] १ तापी नदी जो मृत
के निकट समुद्र में गिर जाती है २ यमुना नदी ।

तान् [तम् + षञ्] १ भय का विषय २ दार कमा,
३ चिन्ता, दुःख ४ इच्छा ।

तान्तरम् [ताम् + ए + क] १ पानी २ घी ।

तान्तरसम् [तामरे अके मन्त्रि—सम् + ङ्] १ लाल कमल
—वच० ११९४, रघु० ६१२७, ११२२, ३७, अमर

७०, ८८ २ सोना, ताँबा, —सौ कमलौ बाला
मरावर ।

तान्त (वि०) (स्त्री० स्त्री) [तमोऽन्यस्य अण्] १ काला,
अन्धकाररहित, अन्यकार सम्बन्धी, अंधेरा २ प्रकृति के
तीन मणों में से एक—अम० ७११२, १७१२,
मालवि० १११, मनु० १२३३-४ ३ अज्ञानी ४ दुर्बल-
मनो, —स १ दुष्ट, डाहक, दुर्जन २ गीर्ष ३ उल्लू,
सम् अन्धेरा सौ १ रात, कार्यान्तम २ नीद
३ दुर्गों का विशेषण ।

तान्तिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [तमम् + ठञ्] १ काला,
अन्धकारयुक्त २ तम में सम्बन्ध रखने वाला, तम में
उत्पन्न या तमोमय ।

तान्तिक [तिमिन्ता + अण्] तन्क का एक प्रभाग ।

तान्तुलम् [तम् + उल्लव्, वृक्, दीर्घ] १ सुपारी २ पान
(जिममें कच्चा बना ल्याकर सुपारी के साथ लोण
भोजन के पचाने चबाते हैं) तान्तुलभूतपत्तोज्य
भल्ल जलानि मानुष काश्च० ७, गार्गो म गगानि-
न्वपाधमपुटे ताध्वलसर्वाधत—पृथुगार० ७, १ मम०
हरबु, —पेटिका पानदान, ब—धर बाहुक
पान-दान लेकर अमीरों के पीछे चलने वाला नौकर,
बस्ती पान की बेल रघु० १६६६ ।

तान्तुलिक [तान्तुल + ठक्] तमाली, पान बेचने वाला ।

तान्तुली [ताम् + ङीप्] पान की बेल ताम्बूलोना दले-
स्तत्र रचिनी पानभूमय रघु० ४१६० ।

तान्त्र (वि०) [तम् + रक्, दीर्घ] तान्त्रि के रङ्ग का, लाल
—उदेति यविना तान्त्रस्ताम एवास्तमेति च,—अण्
तावा । मम० अक्ष १ कौवा २ कौयल, अर्ध
कामा, अश्मन (प०) पदरागमणि, उपजीविन
(प०) कमेरा, तान्त्रि की बीज बनाकर जीवन-निर्वाह
करने वाला शौछ (तान्त्रोष्ठ या तान्त्रोष्ठ) लाल
हाठ कु० १४६६, कार कमेरा, तान्त्रि का कार्य
करने वाला, कुम्भि उद्वहपुटी, एक प्रकार का लाल
तीडा,—पृथु सुग्री, —पुषुञ्ज पीतल,—डू लाल चन्दन
की लकड़ी,—पट्ट,—यवस तान्त्रपट्टिका जिम पर प्राय
भूदान के दाना तथा प्रतीता के नाम खुदे रहते थे
—प.ट० १११९,—पर्वी मलय पर्वत में निकलने
वाली एक नदी का नाम, (कहते हैं कि यह नदी
सोपाना के कारण प्रसिद्ध है), रघु० ४१५२,—फल्गु
अधोकवृक्ष—लिप्प एक देश का नाम (परा—ब०
व०) इन देश की प्रजा या पामक, वृक्ष चन्दन के
वृक्षों का एक भेद ।

तान्त्रिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [तान्त्र + ठक्] तान्त्रि का
बना हुआ तान्त्रमय,—क कमेरा, तान्त्रि का कार्य
करने वाला ।

तान् [त्वा० आ०—ताणो, तान्तिन्] १ किसी ममान

देता मे प्रवर्ति करना, फैलाना, विस्तार करना 2 रक्षा करना, सुरक्षा में रचना.—वि फैलाना, रचना करना
—मट्टि० १५१०५।

तार (वि०) [तृ + णिच् + अच्] 1 (स्वरादिक) ऊँचा 2 (सम्बन्धिक) उलाह, कर्कश—मा० ५१२० 3 वन-कीला, उज्ज्वल, सपत्न—हारास्तारास्तारलम्बुटिकाम् (मल्लि० इसकी मेवदूत का प्रक्षेपक मानते हैं), उर्गति निहितस्तारो हार—अमर २८ 4 अच्छा, श्रेष्ठ, सुगम, —र 1 नदी का किनारा 2 मोती की वनक 3, सुन्दर और बड़ा मोती—हारममल्लतनारामुर्गमिदधनम्—गा० ११ 4 उच्चस्वर, —र—रम् 1 तारा या यह 2 कपूर, —रम्। चांदी 2 आँध की पुतली (पुं० भी माना जाता है)। सम०—अश्च कपूर, —अरिः लोहभ्रम—पतम्बु तार का घिराना या उलकापतन, —पुष्प कुण्ड या चमेली की बेल, —बाष्प, सार्य सार्य कर्ती हुई या सनसकारी हुई हवा, —सुष्टिकारम्—सौमा, —स्वर (वि०) ऊँचे स्वर का या उलाह ध्वनि का, —हार 1 सुन्दर मोतियों की माला 2 एक वन-कीला हार।

तारक (वि०) (स्त्री० - रिका) [तृ + णिच् + धृल्] 1 आगे ले जाने वाला 2 रक्षा करने वाला उवाचर रम्बे वाला, बचाने वाला, —क 1 नावक, विधेवा, कर्मचार 2 छड़ाने वाला, बचाने वाला 3 एक राक्षस जिनके कार्तिकेय ने मार गिराया था (यह वज्रवाम और बरगो का पुत्र था, पारिव्राज पहुँच पर तस्या कर्क के इमने शङ्खदेव का प्रणय किया और बरदान मागा कि मुझे समार में, ७ दिन के बच्चे को छोड़ कर, और कोई न मार सके। इस बरदात की बदौलत वह देवताओं को सताने लगा। दुखी हृषीकेश देवता ब्रह्मा के पास गये और इस राक्षस को मारने के लिए उनकी सहायता मागी (वे० कु० २) ब्रह्मा ने उन देवताओं को उत्तर दिया कि केवल राव का पुत्र ही उन्हें परास्त कर सकता है, उसके पश्चात् कार्तिकेय का जन्म हुआ, और उसने अपने जन्म से मानव दिन उर राक्षस का काय तमाय कर दिया)।—क, —रम् घडनई, बेडा, —रम् 1 आँध की पुतली 2 जोख। सम०—अरि—अज्ञम् (पुं०) कार्तिकेय का विशेषण।

तारका [तारक + टाप्] 1 तारा 2 उल्का, धूमकेतु 3 आँध की पुतली—सदर्थं दृश्यामृतारकाम्—रघु० ११। ६९, और० ५, भर्तृ० ११११।

तारकीणी [तारक + टाप् + ङीप्] तारो भरी रात, वह रात जिसमें तारे झिले हुए हों।

तारकीण (वि०) [तारक + इतच्] [तारो वाला, सिताने भरा, ताराश्रित।

तारक [तृ + णिच् + त्पुट्] नाव, गडनई,—बम् 1 पार उतारना 2 बचाना, छुड़ाना, मुक्त करना।

तारवि, —वी (स्त्री०) [तृ + णिच् + अति, तारवि + ङीप्] घडनई, बेडा।

तारतम्यम् [तारतम + ध्यञ्] 1 क्रमाकन, अनुपात, सापेक्ष गहरक, तुलनात्मक मूल्य 2 अन्तर, भेद—निर्घने नियतमेतयोर्द्वयोस्तात्पर्यविधिमन्वन्वेषता, बोधनाय विविता विनिर्मिता रेफ एव जयद्वैक्यनिका—उद्भट्ट।
तारल [तार + अच्] कामुक, लम्पट, विषयी।

तारा [तार + टाप्] 1 तारा या यह—इसश्रेणीपु तारामु—रघु० ५११९, भर्तृ० १११५ 2 शिखर तारा—रघु० ६१२२ 3 आँध की पुतली, आँध का डेला—कालता-मन्त्र प्रमोदादतिमरति मधुभ्रान्ताराश्वकोर—मा० ९१३०, विश्वामयनेनार—११२८, कु० ३१४७ 4 मोती 5 (क) वानरराज वाली की पत्नी, अगद की माता, इमने अपने पति को गम और सुश्रीव के साथ युद्ध न करने के लिए बहुत समझाया। राम हाग वाली के माने जाने पर इमने सुश्रीव से विवाह कर लिया (क) देवगुरु वृहस्पति की पत्नी, एक बार कश्यप इमको उठा कर ले गया और पावनी करने पर भी वापिस नहीं किया। चोर युद्ध हुआ, अन्त में ब्रह्मा ने सोम को इस झाल के लिए विवश कर दिया कि तारा वृहस्पति को वारिण्य दे दी जाय। तारा से बुध नामक एक पुत्र का जन्म हुआ। यह बुध ही कश्यपजी गजाओं का पुत्रन कहलाया (ग) राजा हरिश्चन्द्र की पत्नी तथा रोहिताम की माता—इसीको तारापती भी कहते हैं)। सम०—अधिप, —अपीड, —यति चाँद—रघु० १३१३६, कु० ३१४८, भर्तृ० ११३१, —बम्, पर्यावरण वातावरण, —प्रसाधम्—नक्षत्रमान नक्षत्रकाल, —भूषा रात, —मन्त्रकम् 1 ताराश्लोक, राशिचक्र 2 जोख की पुतली, —भूष, म्वाविरा नाम का नक्षत्र।

तारिकम् [तार + टाप्] किगया, भाडा।

ताशध्वम् [तण + ध्यञ्] 1 युवावस्था, जबानी 2 नाखरी (आल०)।

तारेव, [तारा + उच्] 1 बुधग्रह 2 बालि के पुत्र अगद का विशेषण।

तारिक [तर्क + ठक्] 1 नैवायिक, तार्किक 2 शार्दूलिक।

तार्यम्: [तृ + अच् + तार्श + ध्यञ्] 1 गुरु का विशेषण—मस्तेन तार्यार्थं किल कार्तियेन—रघु० ६१४९ 2 गुरु का बड़ा भाई अर्णव 3 गाही 4 चाँडा 5 साँप 6 पक्षी। सम० चक्र विष्णु का विशेषण, —माधकः गुरु का विशेषण।

तार्तीय (वि०) [तृतीय + अच्] तीसरा।

तार्तीयक (वि०) [तृतीय + ईकच्] 1 तीसरा—तार्तीयो-

कथा मिनी-उपमनसस्य प्रबन्धे—वै० ३१३६, तात्पी-
थीक पुगारेस्त-पनु मदनलोपय लोचन व—ता० १,
जने० पा० ।

तात् [तल + अण्] 1 ताड का वृक्ष भूमे० २१०, रघु०
१५१२ 2 ताड का वना हुआ लण्डा 3 ताडिया
बजाना 4 फटकडाना 5 हाथी के काना का फटकडाना
6 (सर्पि० में) टोक देना, नियत भाषाओं पर ताडी
बजाना—उरकिसलनालैर्मन्था मयंमानम्—उत्तर०
१५१९, मेघ० ७९ 7 कामे का डना एक बाधयन्त्र
—रघु० ९७१ 8 हथेली 9 ताका कुण्डो 10 तलवार
का मूठ, —सम् 1 ताड वृक्ष का फल 2 हत्याद ।
सम०—**अक्षु**, 1 बलगम 2 ताड का पत्ता या लिप्यने
क काम आना है 3 ताड का आभूषण विशेष, बह-
वाल, नट,—केतु भीम आभूषण, क्षीरदम्,
—सर्भ ताड आभूषण, ध्वज—भूत (पु०)
बलगम का विवपण,—पद्म 1 ताड का पत्ता त्रिम पर
लगा जाता है 2 ताड का आभूषण विशेष, बह-
मुद्र (वि०) नामा क ड्राग माथा वया, लघात्मक,
सर्वाल में माता पाद व विनिर्दिष्ट, —बदल एक प्रकार
का बाधयन्त्र, सार कर्माड,—धनवत् उरही वा एक
उपकरण,—रेवणक नरक, अभिषेका,—लक्षणा, बलगम
का विशेषण,—धनम् वशी का समूह,—द्वलम् पत्ता—प०
३१२९, कु० २३५ ।

तात्कम् [तात् + कन्] 1 तत्ताड 2 कुण्डो, चटखनी ।
सम०—**आध** (वि०) हाण, (—भ) हाण्ण ।

तात्क [—ताड + कान्] कान का आभूषण विशेष ।

तात्कथ (वि०) [तात् + कथ] तात् से सम्बन्ध रखनेवाला,
तात्क स्थानाथ । मन०—यथे तात्क स्थानीय अक्षर,
अर्थात् द, ड, नू, छ, जू, जू और य तथा भू, स्वर
तात्क स्थानीय स्वर अर्थात् इ ई ।

तात्किक [तल + ठक्] 1 सुखी हथेली 2 ताली बजाना
—उपेकेल न हन्नेन तात्किका सप्रपत्ते—सच० २११७,
उच्चवाटोप कर्णात्मिका दायादिदानी भवतीभिरेष
—मै० १७७ ।

तात्कितम् [तत् + कित्] 1 गिण्—कल, डम्प + लवम्] 1 रगदार
कपडा 2 रस्मी, दोरी ।

तात्की [तन् + कित्] अण् + डोप] 1 पटाडी ताड का
पेड, ताड का वृक्ष 2 ताडी 3 सुगण युक्त मिट्टी
4 एक प्रकार की कुडी । सम०—**बन्म** ताड के वृक्षों
का भूमे० रघु० ४१३६, ६५७ ।

तात्की (सु०) [सम्बन्धित वर्णान् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुर [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरम् [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तात्कुरी [तल + कित्] अण् + उच् + ल + ल] अण् + ल
अण् के दातो और कीचे के बीच का गूदा,—तथा
महत्या परिशुक्ततात्क—कतु० ११११ । सम०
—**बिहू** मगरमच्छ,—**स्वाङ्ग** (वि०) तात्क स्थानीय
—(सम्) तात् ।

तिष्ठ । भ्वा० आ० (तिष्ठ् का निनास -- इच्छार्थक) तिष्ठित्त, तिष्ठित्त । सतन करना बहान करना, माथ निवार्ह करना, माह्रम के साथ भुगतना -- तिष्ठित्तमाणस्य परेश तिष्ठाम -- मालवि० १।१७, माम्निनिधस्य भाग्न -- भव० २।११, महावी० २।१२, कि० १३।६८, मनु० ६।४७, । (पुरा० उभ० वा प्र० -- तेजयति - ते, तेजस्त) 1 पैसा करना, पनाना -- कुमुदवापय-तेजयद्विभ - रघु० १।३७, 2 उक्ताना, उमेजित करना, महकाना ।

तिष्ठ । भव० इट्, द्विप्रम, इ-वम् । चरनी (नर्प०) छाना ।

तिष्ठिषा [तिष्ठ् + षन + अ + णप्, द्विष्यम्] महनयति, माहणयता, -वाप, धना ।

तिष्ठिषु (वि०) [तिष्ठ् + षन् + उ द्विष्यम्] महिष्यु, महन करने वाला, महनयिता ।

तिष्ठिषु [तिष्ठिषु + षन् + उ द्विष्यम्] 1 दूयन् 2 एक प्रकार का कोरा, इन्द्रकपूटी, बीर-बहोटा ।

तिष्ठिर, **तिष्ठिरः** [तिष्ठि इति शब्द गति ददाति रा + क] चकोर, मोहर ।

तिष्ठिरि [तिष्ठि + इति शब्द रीति क बा० इ तारा०] 1 नीलर 2 एक ऋषि जो कृष्णयजुर्वेद का प्रथम अध्यायक था ।

तिष्ठ [तिष्ठ् + षन्, इत्येव] 1 अग्नि 2 प्रेम 3 ममय 4 वर्षा ऋतु या शरद ।

तिष्ठि (पु० वा स्त्री०) [अत् + इषिन्, पृषो० वा डीप्] 1 चतुर शिष्य -- तिष्ठिरव गाधर शूर्यति -- पुरा० ५, कु० ६।१३, ७।२ 2 १५ की मन्था । मम० -- अथ ' अभावस्या 2 वह तिष्ठि जो आग्नेय हाकर मूर्धोऽथ म पूर्व हो वा वा मूर्धोदिया के बीच में ही समाप्त हो जाती है पश्चो पञ्चाङ्ग -- प्रथो चोद -- बुद्धि-वह दिन जिसमें तिष्ठि दो सूर्योदया के अन्दर पूरी होती है ।

तिष्ठिष (पु०) एक वृक्ष विशेष - दाल्यूहैस्तिनिधस्य कोटर-वति स्तम्भे तिष्ठोय तिष्ठाम् -- मा० १।७ ।

तिष्ठि - बी, तिष्ठिषिका, तिष्ठिषिक [= तिष्ठि + षो०, तिष्ठिटी + कन् । टाप्, ह्रस्व, तिष्ठ् + ईकन् वि०] इमली का रक्ष ।

तिष्ठु, **तिष्ठुक** - **तिष्ठुक** [तिष्ठ् + कु० नि०, तिष्ठु + कन्, पठे कथ्य ल] तिष्ठु का पेट ।

तिष्ठ (भ्वा० पर०) नेषति, तिष्ठित्त आड़े करना, मोला करना, नर करना ।

तिष्ठि [तिष्ठ् + इत्] 1 समुद्र 2 एक बड़ी विशालकाय मछली, ब्रह्म मछली -- रघु० १३।१० । मम० -- कोष समुद्र, -- अथ एक गणत जिते इन्द्र ने ददात्य की

सहायता से मारा था (इसी युद्ध में कैकेयो ने मृच्छि-ददात्य के प्राणों को रक्षा की, और उनमें दो वर प्राप्त किये, इन्ही वरों से कैकेयो ने बाद में राम को १४ वर्ष का वनवास देवाता ।

तिष्ठिङ्गल [तिष्ठि + ङिङ् + मत्, म्] एक प्रकार की मछली जो ' तिष्ठि ' मछली को निपात जाती है -- भावि० १।५५, ' अजान, ' गिल एक ऐसी बड़ी मछली जो तिष्ठिङ्गल नामी निपात जाती है -- तिष्ठिङ्गलगिना-ऽप्यन्ति तद्गिलोऽप्यन्ति गद्यव ।

तिष्ठित (वि०) [तिष्ठ् + क्त] 1 गतिहीन, स्थित, निश्चल 2 आड़े, मोला, नर ।

तिष्ठिर (वि०) [तिष्ठ् + किरिच्] अन्धकारयय, विन्व-स्थानी प्रदीप तिष्ठिरि पथि - गीत० ५, बभूवृत्तिरिगर-दिश - महा० -- र - रम् अन्धकार तत्रेण तिष्ठिर-मपाकरोति कद्र -- श० ६।११, कु० ८।११, शि० ४।५७ 2 अन्धापन 3 जय, मुक्ति । मः० -- अरि, -- नृद् (पु०) - तिष्ठु मूर्ध ।

तिष्ठिषी [तिष्ठि + षीति] तिष्ठ्या डीप्] जानवर, पशु या पत्नी (स्त्री०) ।

तिष्ठिषीन (वि०) [तिष्ठि + षीन्] 1 टेढा, पाशवंस्य, तिष्ठिषा - क्त तिष्ठिषीनयन्तुल्लार्ये शि० १।७, - यथा तिष्ठिषीनमलालकल्पम् - उत्तर० ३।३५ 2 अनियमित ।

तिष्ठस (अथ०) [तसति दृष्टिपथ - न् + अमृन्] बाकेपन में, टेढेपन से, तिष्ठेयन से, - म तिष्ठेयं यस्तिरोऽर्चानि -- अमर० 2 के बिना, के अनिश्चित 3 चन्धाप, प्रच्छन्न रूप में, बिना दिखाई दिये (अथ माह्रिय में ' तिष्ठ' शब्द का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं मिलता -- यद् मृष्यत प्रयुक्त होता है (क) ' क' के साथ -- इकना, घृणा करना, आगे बढ़ जाना -- (रघु० ३।८, १६।२०, मनु० ४।४९, अमर ८१, अट्टि० १।६२, हि० ३।८) (ल) ' धा' के साथ -- इकना, छिपाना, अविभूत करना, अन्तर्धान होना (रघु० १०।८८, ११।११) और (ग) ' भू' के साथ -- अन्तर्धान होना (रघु० १६।२०, अट्टि० ६।७१, १४।४४) । मम० -- कारिणी -- कारिणी 1 परदा, घूषट -- निरस्कारिणी जलदा भवति कु० १।१४, मातवि० २।१ 2 कलान, कपड़े का परा, - कार -- किया 1 छिपाना, अन्तर्धान करना, घृणा, - क्त (वि०) 1 जिसकी अवहेलना की गई हो, अपमानित, निरादृत 2 गहित 3 गुप्त, दका हुआ, -- धामम् 1 अन्तर्धान होना, दूर हटाना अथ क्षुद्र निरोधान-मधियाम् -- गङ्गा० १८ 2 आच्छादन, अवगुच्छन, स्थान, -- अथ आशय हुआ, - हित (वि०) 1 मोलल हुआ, अतहित 2 दका हुआ, छिगा हुआ, गुप्त ।

तिष्ठति (वा० धा० पर०) 1 छिपाना, गुप्त रखना

2 बाबा डालना, रोकना, रुकावट डालना, दृष्टि से ओझल करना - निरयति बाबांना वाहकत्व प्रमाह
—मा० ११६० बागवतार निगान् दूशोदुसम बाध-
पूर - २५ 3 जीतना -

निर्यक् (अ०) [निर्य् + अञ्च् + क्विप्, निरस निरि
आदेश, अञ्चनेल्लोप] टेरेपन स, निरछान से, निरछा
या टेरी दिशा में - बिलावयति निर्यक्—बाध्य० १०,
मेप० ५१, कु० ५१०६।

निर्यञ् (वि०) (स्त्री०)—निर्यञ्, बिर्यञ्—निर्यञ्चो
[निर्य् + अञ्च् + क्विप्, निरस निरि आदेश,
अञ्चनेल्लोप] 1 टेरा, आडा, अनुग्रह, निरछा
2 मुडा हुआ, बफ (प० नप०) जालवर (जी मनुष्य
की भाँति मीया न चर कर, टेडा चलता है) निम्न
जाति का वा बड़िहोन जानवर - बन्धाय दिव्ये न
निर्यञ्च रुचिन गंगारिगमाविनवीरुव म्यात् मै०
३१००, कु० ११८८। मम० अन्तरम् आध्या मापा
हुआ मन्वर्गी म्बान, चोडाई, -अयनम् मूर्ध द्वारा
वायिक पारकवप, -ईस् (वि०) निरछा दलने बाना,
जाति (स्त्री०) पदा-पदा की जाति (विप० मनुष्य
जाति), -प्रमाणम् चोडाई, -अशयम् निर्यञ्चो औप
करके देवता, योनि (स्त्री०) पशु-पशु की मृष्टि
या बस निर्यञ्चो च जयने—मन्० ६१०००, -सोलेस्
(प०) जालबरा की दुनिया, पशु मृष्टि।

तिल [तिल् + क] 1 तिल का पौधा - नामाभ्येति तिल-
प्रमुनपरबोम् गंत० १० 2 तिल के पीछे का बीज
—नाक्ष्मापछाडिल्लमाना विकोपाति निर्यमित्तान्,
मुचिनातिनर्येन शायंमत्र भविव्याति। पञ्च० २१५५
3 मन्मा, बन्वा 4 छाटा कण, इतना बड़ा जितना
किल तिल -। मम० अम्बु, -उरकम् तिल और जल
(दानो को मिला कर मृतकों का तपण किया जाता
है) श० ३, मनु० ३१२२३, -उत्तमा एक अक्षरा
का नाम, -ओवन्, -वम् तिल और दूध मिश्रित भात,
-कक्क तिल को पीम कर बनाई गई पीठी, 'ज
तिलो को मन्वी, -कालक मन्मा, तिल के बगवार
शरीर पर होने बाना काला दाग—किट्टम्, -खलि
(स्त्री०) -खली, -वृषम् तिल के निकालने के पचवात्
बची हुई तिलो को मेल—तपदुलकम् आलिङ्गन (जिम
प्रकार नित्र चावल भल्लते है, इसी प्रकार आलिङ्गन
में दो शरीर मिलते है), - सैस्म तिलो का तेल, -पणं
तारपीन, (-मंम्) बन्दन की लकड़ी, - पर्षी 1 बन्दन
का पेड़ 2 धूप देना 3 तारपीन, - रस तिलो का
तेल, - स्नेह तिला का तेल, - होम् बहु होम जिसमें
तिलो को आहोम दी जाय।

तिलक [तिल् + क] 1 सूत्रर कुलो का एक ब्राह्म, -आकाशना
तिलककपाति तिलकेनींहीरेकाञ्जने -मालवि० ३१५,

न लाल शोभयति मम बन्धवो न तिलकस्मिन्नक
प्रमदासिन् -रघु० १५४१ 2 जगज पर पटो चितो
या लाल पर हुआ कोई नैसर्गिक चिह्न, -क, -कम्
1 बन्दन की लकड़ी या उवटन आदि में किया गया
चिह्न पुरे मधुवीर्यस्मिन्नक प्रकाशय—कु० ३३०
कम्पुगिकानिलकमालि विषाद माय भासि० २१४,
११२२१ 2 किमी वस्तु का जलद्वार ('पुष्य' प्रसूष'
'श्रेष्ठ अर्थ में ममान के अन्त में प्रयुक्त), -का एक
प्रकार का शाग—कम् 1 मृषाशय 2 फेरेडे 3 एग
प्रकार का नमक। मम० आशय भन्वक।

तिलानुव [तिल + गुप्] मध, मम्, तेलो।

तिलक्ष (अव्य०) [तिल् + श्च्] तिल मिल करके, कण
कण करके, अत्यन्त आलू परिमाण में।

तिलसि (प०) एग बड़ा माप।

तिल्व [तिल् + वल्] लोण का पेड़।

तिष्ठन् (अव्य०) [तिष्ठन्त्या गावा वाग्मन्त् काले, तिष्ठन्
+ गा नि०] गौश्रा के दाहने का समय (अर्थात्
मायकाल का समय डेड घण्टा बाने में) -अतिष्ठन्
जान् सन्ध्याम् भट्टि० ६११६, (तिष्ठन् - राग
प्रबन्धानादिका)।

तिष्य [तुप् + क्विप् नि०] 1 २० नाकों में आठवाँ नक्षत्र,
दम पुष्य भी कहते है 2 गौर माय (चान्द), -व्यम्
कवियुय।

तोक् (भा० आ०—नीचने) बाना, हिलना-जुलना, तु०
'टोक'।

तोषण (वि०) [तिष् + सन्, दोषे] 1 पैना (ममी अर्धों
में), तोषा, सि० २१२०९ 2 तग्म, उण्य (किग्गो
की भाँति) ऋतु० १११८ 3 उलेउक, जोशीला
4 कडाग, प्रवल, मजबूत (उपाय आदि), 5 रुष्या,
चिडचिडा 6 कठोर, बटु कडा, मल्ल, मनु० ७१४०
7 अलिष्टकर, अहितकर, अशुभ 8 उन्मुक 9 इडि-
मान, चतुर 10 उन्माही, उल्लट, ऊर्जन्वी 11 भक्त,
आत्मगमन करने वाला, - षण 1 जवापार 2 लम्बी
मिचं 3 काली मिचं 4 काली मरुतो या गई, - षण्य
1 लोहा 2 इन्पात 3 गर्बी, तीक्ष्णन 4 यद्द, लडाई
5 विध 6 मन्थ 7 दाख 8 मन्त्रो नमक 9 भिप्रना।
मम० -अशु 1 मृषं 2 शाय, आयसम् इस्पात,
- उपाय प्रवल मायन, मज्जूल तरकीय, -कन्व प्याड,
- कर्मन् (वि०) उद्योग, उन्माही ऊर्जन्वी, -
व्याड, -भार तन्वाग, पुष्यम् लीण, -पुष्या 1 लोण
का पीधा 2 केवडे का पीधा, - वृष्टि (वि०) तीव-
रुष्ट, तेज, चतुर, शाय, कुशाधुवृष्टि, रश्मि मृषं,
रस 1 जवापार 2 जहर का पानो, जहर शम्-
प्रयुक्ताना तीक्ष्णमदायिनाम्—मुद्रा० ११२, - लोहम्
इस्पात, - शुक जी।

तोम् (दिवा० पर० तीर्थानि) घोडा होना, तर होना ।

तोम् [तोर + भ्] 1 तट, किनारा—नदीतीर, सागर-
तीर आदि 2 उगल, कगर, कार या धार, —रः 1 एक
प्रकार का बाज 2 सोमा 3 टोल ।

तोमिन् (वि०) [तोर + क्त] सुलभाया हुआ, समजित, साव्य
के अनुसार निर्णीत,—सम् किसी बात का मोक्ष विचार ।

तोष (वि०) [तु + क्त] 1 पार किया हुआ, पार पहुँचा
हुआ 2 फेलाया हुआ, प्रसारित 3 पीछे छोड़ा हुआ,
आगे बढ़ा हुआ ।

तोषम् [तु + षक्] 1 मार्ग, मडक, रास्ता, घाट 2 नदी
में उतरने का स्थान, घाट (नदी के किनारे बनी हुई
सोझियाँ) —विषमोद्यति विगाहते नम कुनतोषं पयसा-
मिवाशय—कि० २।३, (यहाँ 'तोषं' का अर्थ 'उपचार
या शासन' भी है) —तीर्थं सर्वविधावतारगणान्—का०
४४ 3 जलस्थान 4 पवित्रस्थान तीर्थयात्रा का उप-
युक्त स्थान, मन्दिर आदि जो किसी पुण्यकार्य के लिए
अर्पित कर दिया गया हो (विशेष कर वह जो किसी
पावननदी के किनारे स्थित हो) —शुचि मनी वहाति
तोषं किन्—मनु० २।५५ ऋ० १।८५ 5 मार्ग,
माध्यम, साधन—तदनेन तीर्थेन ष्टेते—आदि—मा०
१ 6 उपचार, तरकीब 7 पृथ्वात्मा, योग्यशक्ति,
श्रेया का पाप, उपयुक्त आदान—एव पुनस्तद्वाध्य
तोषेयं साधो सव्य उत्तर० १, मनु० ३।१०३
8 धर्मोपदेश, अध्यात्म का यथा तोषोर्दधनपरिहा
सिद्धता—मानविक० १ 9 स्नान, मूल 10 यज्ञ
11 मन्त्री 12 उपदेश, शिक्षा 13 उपयुक्त स्थान या
क्षण 14 उपयुक्त या यथापूर्वं रीति 15 हाथ के कुछ
भाग जो देवताओं और पितरों के लिए पवित्र होते हैं
16 दमनशास्त्र के विशिष्ट सिद्धान्त वादी 17 त्रिपयो-
चिन लज्जा 18 म्शीरज 19 ब्राह्मण 20 अग्नि,— धं
सम्मान सूचक प्रणय जो मन्त्रा और सन्धानिया के नामों
के साथ जोड़ा जाय—उदा० प्रातःशौचं आदि । सम०
—उत्तरकम् पवित्र जल—तोषोर्दधे च ब्राह्मणस्य तान्यत्र
वृद्धिर्भवेत् उग्न० १।१३,—कर 1 जैन अर्हन्,
धर्मशास्त्रोपदेश, जैन सत्त (इस अर्थ में 'तोषकर'
भी) 2 साम्राज्यी 3 अधिपति दार्शनिक सिद्धान्त या
धर्मशास्त्र का प्रवर्तक 4 विष्णु,—काक,—ज्वाल, —
बाह्य तोषं का कौश अर्थात् लोच्युष तोषोपजीवी
—भूत (वि०) पावन, पवित्र, मात्रा किसी पवित्र
स्थान के दर्शनार्थ जाता, पावनस्थानों की यात्रा,
राज प्रयाग, दशहरावार, रात्रिः श्री (स्त्री०)
अनग्न का विशेषण,—बाक, मिर के नाव,—बिधि-
(क्षीर आदि) मन्कार जो किसी तोषं स्थान पर किये
जाय,—सिषिम् (वि०) तीर्थ में वाग करने वाला
(पु०) साय ।

तोषिकः [तोष + क्त] तीर्थं गामी, वह सन्धानी ब्राह्मण जो
तोषों के दर्शनार्थ निकला हो, यन्त्रा ।

तोषकः [तु + ष्वत्] 1 मन्त्र 2 शिकारी 3 राजपुत्री को
किसा क्षयिष्य (वर्णसकर) के संयोग से उत्पन्न वर्ण-
सकर सन्तान ।

तोष (वि०) [तोष + क्त] 1 कठोर, गहन, पैना, तेज,
प्रचण्ड, कड़वा, तीखा, उग्र—विलम्बिताघोरणतीव्रमला
—रघु० ५।४८, धीर या प्रचण्ड प्रयत्न—उत्तर० ३।
३५ 2 गरम, उष्ण 3 चमकोला 4 व्यपन्न 5 अनल,
असीम 6 अयानक डराना,—अम् 1 पारमी, तीक्ष्णान
2 किनारा 3 अंश, इत्यत 4 टोल, रागा,—अम्
(अम्) प्रचण्ड रूप से, तेजी से, आवन्त । सम०
—आत्मन् सिव का विशेषण,—पति (वि०) शीघ्र-
गामी, कुशीला—बौध्दम् 1 साहसपूर्ण शौर्य 2 धूर-
वीरता,—सव्ये (वि०) 1 दृढ़-आवेगयुक्त, दुर्गतिरप्यपी
2 अत्युग्र, अत्यन्त तेज ।

तु (अम्) [तु + ट्] (बाच्य के आरम्भ में विनाम
प्रयोगमात्र, प्रायः प्रथम शब्द के पश्चात् प्रयोग)
1 विरोध सूचक अव्यय अर्थ—'परन्तु' 'इसके विप-
रीत' 'दूसरी ओर' 'तो भी'—स संयोगे सुभाषात्त
ययो, एक तु मुनमुनवसनमुनज लेभे का० १९,
विशयेषु तु पितृत्वा मयीत्यन्तमर्थव्ययमेव—शं
५, (इस अर्थ में 'तु' बहुधा 'कि' और 'पर' के साथ
जोड़ दिया जाता है और 'किन्तु' तथा 'परन्तु' तु के
विपरीत वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होते हैं) 2 और
अब, तो, और—एकदा तु पतिहारी सम्युपत्यवर्षान्
—का० ८, राजा तु तामासी श्रुत्वाऽब्रवीत्—१२
3 के सम्बन्ध में, के विषय में, को बाबत—प्रथयंता
ब्राह्मणानुद्दिश्य एक, चन्द्रापराम प्रति तु केनापि विप्र-
लब्ध्यापि—मृदा० १ 4 कभी कभी इसके 'भेद' या
'श्रेष्ठ गुण' का पता लगाता है—मृट पयो मृष्टतर तु
दुष्णम्—पथ० 5 कभी कभी यह 'व्यस्तम्ब' अव्यय के
रूप में प्रयुक्त होता है—मीमस्तु पाण्डवाना रौर,
मग० 6 कभी कभी केवल यह पद प्रुति के लिए ही
प्रयुक्त होता है—निरर्थक तुतीत्यादि प्रार्थकप्रयोजनम्
—चण्डा० २।६ ।

तुष्कार, तुषार, तुषार (पु०) किन्ध्याचल पर रहने वाली
एक जाति के लोण—तु० विष्णुभाक० १।८३ ।

तुङ्ग (वि०) [तुङ्ग + षञ्, कृष्णम्] 1 ऊँचा, उन्नत,
लम्बा, उन्नत, प्रबल—अन्तिविमिश्र विधुमण्डलदर्शनदर-
लिततुङ्गतरङ्गम्—गीत० ११, तुङ्ग नगोत्सर्गमिवाक-
रौह—रघु० ६।३ ४।१०, शि० २।४८, मेघ० १२।६४
2 दीर्घ 3 सुबलवान् 4 मध्य, प्रथम 5 उग्र,
जोषीला,—ध 1 ऊँचाई, उन्नतता 2 पहाड़ 3 चँटी,
शिखर 4 बुधबह 5 वैद्य 6 नाट्यल का वेद्य । सम०

—कील पाग, —भद्र दुर्दान्त हाथी, मदमल हाथी,
—भद्रा एक नदी जो कृष्णा नदी में मिलती है, — बेगा
एक नदी का नाम, —सोहर पहाड़ ।

तुङ्गी [तुङ्ग + डीप] 1 रात 2 हृदी । सम०— ईज
1 चन्द्रमा 2 मुर्य 3 शिव की उपाधि 4 कृष्ण की
एक उपाधि, — पति चन्द्रमा ।

तुम्ब (वि०) [तुम् + विवर - तुम् + छो + क] 1 सानी, गुप्त,
अधार, मन्द 2 अल्प, धुट, नगण्य 3 पत्निकन्, सम्प-
त्निकन् 4 नीच, कमीना, मरुष्य, निरम्करणीय, निर-
म्मा 5 गरीब, वीन दुखी, — चम्ब तुम् भूमि । सम०
— तुम् एरुष्य का वृक्ष, — धाम्य, — धाम्यक भूमि, वृत् ।

तुम्ब [तुम् + अच्] इन्द्र का वक्त्र ।

तुम्ब [तुम् + उच्] मूला, वृक्षा ।

तुम् (तुम् + पर०— तुम्) 1 देखा करना, मोदना,
झुंझना 2 पालनाजी करना, ठगना, धापा देना ।

तुम्बम् [तुम् + अच्] 1 मूँह, बेहतर, चोच (मुअर की)
— धननगुरीगनास्रकुटिले (शुका) — काष्ठा० २।९
2 हाथी की तुम् 3 उपकरण की नीक ।

तुम्भि [तुम् + इन्] 1 बेहतर, मूँह 2 चोच - डि (स्त्री०)
नाभि, भुधरी ।

तुम्बन् (प०) [तुम् + इनि] शिव के वैद्य का नाम ।

तुम्बन् (वि०) [तुम् + भ] दे० 'तुम्बिन्' ।

तुम्बिल (वि०) [तुम् + म लिप्ता० लच् वा] 1 बान्सी,
बावाल 2 उमरी हुई नाभि बावो 3 गणा— तुम्
'तुम्बिल' ।

तुम् [तुम् + घर्] 1 आग 2 पत्थर, स्वम् एक प्रकार
का नोपा धाया या तुम्बिया जो मुँह की भाँति जीप
में टाँचा जाय, — स्वा 1 छठी इलायची 2 नील का
तेरा (मम०) — अश्त्रमम् तुम्बिया या कालोम, जो आवा
ने ग्या की भाँति लगाया जाय ।

तुम् (तुम् + पर०— तुम्) 1 प्रहार करना, धावक
करना, आघात करना तुम्बोद गहाड वाग्म् — भट्टि०
१६।१७, १५।३७, वि० २०।७७ 2 चूँभोना, अनुभ
चूँभोना 3 परीक्षना, चोट पहुँचाना 4 पीडा देना,
नप करना, मनामा, कष्ट देना — सुवीक्षणचारणनरुप-
मायकैनुदनि चेत प्रसन्न प्रकानिनाम् — खण्ड० २।६,
६।२, आ—, प्रहार करना, ताड़ना देना, मत० ४।
६८, प्र—, धारना, चोट पहुँचाना, धावल करना
(१२०) प्रेमिण करना, आने इकेनवा (शाल०), जोर
डालना, धार २ आघत करना (कितो कान को करने
के लिए) प्रथिव मृत्पिनि प्रवीणमाना न चालि
भागकृता इमानवदय नष्ट० १।२६ ।

तुम्बम् [तुम् + इन् प्रथ०] [पेट, मोर । सम०— कृषिका,
कूपी नाभि का गर — परिभाषा, परिम्बम्— मूज
(वि०) मुत्त, भातल ।

तुम्बन्तु (वि०) [तुम् + मनुप मस्य मत्वम्] तोड़वाना
मोटा ।

तुम्बिक, **तुम्बिन्**, **तुम्बिभ**, **तुम्बिल** (वि०) [तुम् + ठन्, तुम्
— इनि, तुम्बि + भ, तुम् ६०६] 1 माटे पेट बाला
2 निमकी तोड़ बड़ पद है 3 भरा हुआ, मटा हुआ
— मकरन्दनुत्पलानामरीच्यदानामय महाभाष्य— भाषि०
१।६ ।

तुम् (वि०) [तुम् + इन्] 1 प्रहृत, चाट किया हुआ, धावल
2 मनाया हुआ । सम०— बाय दर्बी ।

तुम् (वि०) कना० पर०— तुम्बानि, तुम्बानि चोट
मान्ना धनि पृथाना, प्रहार करना— भट्टि० १।७
७९, ९० ।

तुम्बल (वि०) [तुम् + मलक] 1 जहाँ पर शीरयुल मच रहा
है, कालाहलमय भग० १।१३, १९ 2 भोजन, क्राधा
रु० ३।५७ 3 उनेकिल 4 उडिग्न, चबडाया
हुआ अ्याकुल, अयवन्धित — रण० ५।६९, (पु० नपु०)
1 हाहलवा, हागमा 2 अयवन्धित इन्ड मूत्र, रण-
सकुल ।

तुम्ब [तुम् + अच्] एक प्रकार की लीकी ।

तुम्बर [तुम् + श + क] एक वृषभ का नाम, दे० तुम्बर
रुम् एक प्रकार का बाह वक्र नान पूरा ।

तुम्बा [तुम् + टा] 1 एक प्रकार का लम्बी लीकी
दुपार गाय ।

तुम्भि, **भो** (म्या०) [तुम् + इन्, तुम्बि + डीप] एक
प्रकार की लीकी बड़का तुम्बी, — न हि तुम्बीकलाविनो
कीणादश्च प्रयाति मडिभानम्— भाषि० १।८० ।

तुम्ब (बु) च [तुम् + उन्] एक वृषभ का नाम ।

तुम्ब [तुम् + वेगेन गच्छन् — तुम् + गम् + ड] 1 धारा
— तुम्बवर्णनमया हि रेणु— म० १।३१, म्पु०
१।४२, ३।५१ 2 मन, बिचार — ली धारी । म०
— आगोह पृथमवार, — उचचारक माइप, — त्रिय,
— यम्, जो — कल्पयन्म् बलान्कृत या अविवायं
इडाचय, स्वीयन के अभाव में निवृत्त हो कल्पय-
जीवन विमाना ।

तुम्बिन् (पु) [तुम् + इनि] पुष्पानवार ।

तुम्ब [तुम् + यम् + लच्, मुम् वा दिष्] घोडा— भातु
मकुपुनतुम्ब मव— म० ५।५, म्पु० ३।३८, १३।३,
— यम् मन विचार, ली धारी । म०— अरि मैमा,
— द्विषयी भेन, — त्रिय, यम् जो, — मेव अववयेप
यम् — यम् १३।६१, — यामिन्, तामिन् (पु०)
वक्त्रा, — यमन वित्रर, — शाला, — स्वायम् अस्तबल,
अयवन्धित, — कृष्ण घोडा का दल ।

तुम्बन् [तुम् + मन्, मच्, मुम्] घोडा, म्पु० ३।६३,
५।७१ ।

तुम्बन्तु [तुम् + क] 1 अनात्मिक 2 एक प्रकार का वज्र ।

सुरसाह (पुं०) [सुर + सह + शिच् + शिष्प] (कतुं० ए० ब०—सुरसाह-ह्) इन्द्र, कु० २११, रघु० १५।१०।

सुरी [सुर + हृन्-] शीप] 1 एक रेलेदार उपकरण जिसमें जुलाई बाने के धातों को साथ करके जलग जलग करते हैं 2 नली, जुलाई की नाल -तड़कटासुरीसुरी -न० १११२ 3 बिचकार की कृ०।

सुरीय (वि०) [सुर + छ, अ.उलोप] चौथा, -यच् चौथारि, चौथा भाग, चौथा (वेदा० द० में) 2 आत्मा की चतुर्थ अवस्था जिसमें वह बड़ा अर्थात् परमात्मा -म.य तदाकार हो जाती है। सम०—बर्ष. चौथे वर्ष का मनुष्य, युव।

सुर्यक [ब० ब०] सुर के लोच।

सुर्य (वि०) [सुर + यत्, आछलोप] चौथा, तै० ५।१०३, -यच् 1 एक चौथारि, चौथा भाग 2 (वेदा० द० में) आत्मा की चौथी अवस्था जिसमें आर्या बड़ा के साथ तदाकार हो जाती है।

सुर्य (इवा० ए०, च०) उभ—नोलनि, नोक्यति - ते, (सुर्ययतिने 'भो जिसे कुछ लोच 'सुर' को नामधातु मलने है) 1 नोलना, मापना 2 मन में नोलना, बिचार करना, सोचना 3 उठाना, ऊपर करना -कौलसे मुलिते—सूत्रा० ५।३७, पील्यमनुस्मिह्पा-द्वेराधधान इव हिव्यम्—रघु० ५।८०, १२।८९, गि० १५।३० 4 सम्भालना, पकड़ना सहाय देना -पृथिवी-तले मुलितमनुभुक्तये—गि० १५।३०, ६१ 5 तुलना करना, उपमा देना (करण० के साथ)—मुल इलेप्यापार तदपि च समानान् तुलितम् -भृशु० ३।२०, गि० ८।१२ 6 तुल्य होना, समकक्ष होना (कर्म० के साथ) प्राणादात्मत्वा तुल्यतुलम् यच्च तैस्तेविशोय—मेघ० ६४ 7 हल्का करना, मर्दन, करना, विरस्कार करना -अन साय पन तुलयितुं नाविल अधर्षति त्वाम् मेघ० २०, (यहाँ 'तु' का अर्थ है 'सम्भालना या बहा ले जाना') गि० १५।३० 8 त्वेह कराना, अविश्वास पूर्वक परीक्षण करना -क श्रद्धास्थिति भूतार्थ सर्वो मा तुल्यिष्यात—मृच्छ० २।२५, ५।४३ (यहाँ कुछ संस्कारों में 'तुल्ययिष्यात' भी पाठ है) 9 जांच करना, परीक्षण करना, दुर्दसा करना -ह्रा अवस्ये। तुलयमि—मृच्छ० १, (तुलयति), -उड्, -सम्भालना, सहाय देना, यामे रहना।

सुर्यम् [सुर + हृत्] 1 तोलना 2 उठाना 3 तुलना करना उपमा देना आदि, -ना 1 तुलना 2 तोलना 3 उठाना उपमन 4 निर्धारण करना, आकाना, प्राक्कनन करना 5 परीक्षा करना।

सुर्यो [सुर्या सावृष्य स्थिति नासवति—सुर्या + सो। क + शीप] एक पवित्र पीथा जिसकी हिन्दु 'शेयकर

विष्णु के उपासक पूजा करते हैं। सम०—यश्च (शां०) तुलसी का पत्ता, (आल०) बहुत तुच्छ उपहार,—बिबाह, कालिक सुपुत्रा द्वादसी की, बालकृष्ण की प्रीतिमा के साथ तुलसी का बिवाह।

सुर्या [नोत्यतेऽजया—सुर्य-अङ्+टाप्] तराजू, तराजू की डडी।

सुर्या च 1 तराजू में गन्ना, तोलना 2 माप तोल 3. तोलना 4 पिलाना—सुलता, समानता, समकक्षता, समता (सर्व०, कृष्ण० या समास में प्रयोग) -किं चूर्णैरिच तुलामुपयानि सङ्गम्ये—वेणी० ३।८, तुला यथाराहनि दन्तवासना—कु० ५।५४, रघु० ८।१५, सद्य परस्पर—तुलामधिरोहना हे—रघु० ५।६८, ११।८, ५० 5 तुला गानि गानती गानि—अयति तुलामधिक्रुडो भास्वानपि जलदपटनानि—यच० १।३३० 6 घर की छत पर लता, डालू शर्तरी 7 मंदा चाणी तोलने का १०० पल बट्टा। सम०—कूट कम तोलना, -कौटिः, -दी नूपुर (पैरो में पहनने का शिश्यो का आभूषण) -कीला चकम्बी च पात्थोत्पल्ल इलमुलाकोटिनिनादकोमल -गि० १२।४४,—कौश-च' ताल द्वारा कठिन परिश्रमा, -इत्यम् शर्तरी के बराबर ताल कर सोने या चाँदी का किसी बाह्यण के लिए दान, -घट तराजू का पलया, -घर 1 स्यापारी व्यवसायी, सौदागर 2 रात्रि-चक्र में नुनागानि, -घार व्यापारी, व्यवसायी, सौदागर, -रगेष्ठा तुला द्वारा तोलने की कठिन परीक्षा, -सुख सोना, जवाहरान तथा अन्य मूल्यवान् वस्तुओं को एक मद्गा के भार के बराबर हो (तथा दान में किसी बाह्यण के लिए दी जायें) तु० तुलादान, -प्रबह, -प्रब्राह तराजू की डडी या डोर, -मान्यम्,—यष्टिः तराजू की डडी, -बीजम् घृषकी, गुजा, -सुखम् तराजू की डोर।

सुर्यित (म० क० क्त०) [सुर्य-कत] 1 तोला हुआ, प्रतिलिप्त 2 तुलना किया हुआ, उपमिन, बराबर किया हुआ भट्ट० ३।३६, दे० 'सुर्य'।

सुर्य (वि०) [सुर्या सपित यन्] 1 ममान प्रकार या श्रेणी का, सन्तुलित, समान, सव्या, अनुकूल (सर्व० या करण० के साथ अथवा समान में) मनु० ५।८६, याज्ञ० २।७७, ऋ० २।३५, १२।८०, १८।३२ 2 योग्य 3 समरूप, वही 4 समदर्शी। सम०—इत्येन समदर्शी, मयको समदर्ष्टि ये देवतेन बाला, -पानम् मिलकर मद्यगान करना, सत्पाय, -योगिना (अल० शां० में) एक अलकार, एक ही विशेषण रखने वाले कई पर्यायों का एकत्र संयोग, पर्याय चाहे प्रसंगानुद्ध हो अथवा असंबद्ध-नियताना सङ्गठन सा पुनस्तुल्ययोमिता -हाथ० १०, तु० चन्द्र० ५।४१, क्य (वि०) अनार, सव्यरूप, समान, सव्य।

सुकर (वि०) [सु + क्वरच्] 1 कषाय, कसोला 2 बिना दाढ़ी का (सुकर मी) ।

सु (विबा० पर०—तुष्यति, तुष्ट), प्रसन्न होगा, समुष्ट होगा, परितुल्य होगा, खुश होना (प्राय कर्म० के साथ) —रत्नमेहाहिनितुषुर्न देहा—अर्ण० २।८० मनु० ३।२०७, भग० २।५५, अष्टि० २।१३, १५।८, ग्यु० ३।६२, प्रेर०—शोषयति तै, प्रसन्न करता, परितुष्ट करना, समुष्ट करन, धरि—, परितुल्य होना, प्रसन्न होना, समुष्ट होगा—बर्षमिह परितुष्टा बलकलेन्त्य च कल्प्या—मर्ण० ३।५०, अस्मकृते च परितुष्टयति काचिकन्या २।२, सम्, प्रसन्न होना, परितुष्ट होना समुष्ट होना—समुष्टो भार्या भर्ता भर्ता भार्या तपश्च च मनु० ३।१०, मर्ण० ३।५, भग० ३।१७ ।

सुक [तुप् + क] अजाय की भूमि, - अजानताय नलसर्व (अभयजनम) तुष्याण कषत्रन यथा मनु० ५।७८ ।
सम०—अति—अनकः अजाय की अमी या वर की आय,—अम्बु (मनु०)।—उचकम् चावल या औ की काँची,—ग्रह, सारः ज्ञाप ।

सुचार (वि०) [तुप् + आरच्] ठण्डा, शीतल, तुषाराच्छन्न (पाले के कारण शीतल), ओस से युक्त - सि० १।७, अपा हि मूलाय न शरिराणा म्बाहु मूषांय स्वदने तुषारा ने० ३।१३, र- 1 कोहरा, पाला 2 बर्फ, हिम—कु० १।५, खुनु० ५।१३ ओस—ग्यु० १५।८४ श० ५।१९५ धुद, शीगवर्षा, कुहरा, ठण्डे पानी की कोछार,—पुनस्तुषारिगिरिनिर्झराम् ग्यु० २।१३, १।६८५ एक प्रकार का कपूर । सम०—अग्नि,—गिरि,—पर्वतः हिमालय पहाड़—तुषाराश्रयात,
—मेघ० १०७, कनः ओस के बग, हिमकण, कुहरा पाला,—काक, सररी का पौसम,—किरण, रविश्च चन्द्रमा,—अमर ५९, सि० १।२७,—सौर (वि०) 1 हिम की भाँति श्वेत 2 हिम के कारण श्वेत,—र कपूर ।

सुक्षिता (ब० व०) [तुप् + क्लिन्च्] उपदेवनाशी का मनुष्य जो गिनती में १२ या ३६ कहे जाते हैं ।

सुक्ष (क० क० क०) [तुप् + क्त] 1 प्रसन्न, तुष्ट, सुख, परितुल्य, परितुष्ट 2 जो कुछ अपने पाम हैं उसी में समुष्ट, तथा अन्य के प्रति उदासीन ।

सुक्षि (स्त्री०) [तुप् + क्लिन्च्] 1 सन्तोष, परिशुद्धि, प्रमदता, परितोष 2 (सा० व० में) शीत स्वीकृति, प्राण्य वस्तु से अधिक की लालसा न होना ।

सुक्ष्म [तुप् + तुक्] कर्मयोग का तो में पहचने की क्षिति सुक्ष=तुष् ।

सुक्षिन् (वि०) [तुप् + इन्च्, ह्रस्वश्च] ठण्डा, शीत ३,—अम्बु 1 हिम, बर्फ 2 ओस, कुहरा तुषापननं-सुक्षिन् पत्रिङ्—अनु० ५।७, ३।१५ 3 शीतनी

4 कपूर । सम०—अम्बु,—धर,—किरण,—सुक्षि,—रविश्च 1 चन्द्रमा,—वि० १।३० 2 कपूर, अमरः—अग्नि,—सोकः हिमालय पहाड़,—रघु० ८।५४,—कणः ओष को बुद—अमर ५४,—सर्करा बर्फ ।

सु 1 (बुरा० उभ०—तुषयति-तै) सिकोका, 11 (बुरा० जा० तुषयते) भरना, भर देना ।

सुष [तुष् + घञ्] तरकस—मिथिलशिलोमूषपाटकि-पटलकृतस्मरतुषविलासे—गीत० १, रघु० ७।५७ । सम०—धार धनुषर ।

सुषी, सुषीर [तुष् + शीच्, तुष् + ईरन्] तरकस—रघु० १।५६ ।

सुषर [तुष् + क्वच्, तुष् + घृ प्यो०] 1 बिना दाढ़ी का मनुष्य 2 बिना सीप का बेंक 3 कषाय, कसोला 4 हजरा ।

सुर (विबा० आ०—तुषते, तुष्) 1 जल्दी से जाना, शीघ्रता करना 2 चोट पहुँचाना, मारना ।

सुरम् [तूर + घञ्] एक प्रकार का वाद्ययन्त्र ।

सुर्य (वि०) [त्वर + क्त, ऊट, त्वय भावम्] कुर्त्तुना, तेज, शीघ्रकारी 2 इतपामी, बेडा, भं कुर्त्तु, शीघ्रता, —संघ (अब्ज०) कुर्त्तु से जल्दी से चुपमानीयता तुष्णं तुष्णं चन्द्रनिर्मानने—मुभाष० ।

सुर्य [तुषते लाघयते तूर + घञ्] एक प्रकार का वाद्य यन्त्र, तुङ्गी—मनु० ७।२७५, कु० ७।१०। सम०—शोष उपकण्ठा का समूह ।

सुस,—सम् [तुल + क] रुई,—सम् 1 पर्यावरण, आकाश, वायु 2 घास का बून्डा 3 शहजुन का पेड़,—सा 1 कपास का पेड़ 2 लैम्प की बत्ती, लो 1 रुई 2 दीबे की बत्ती 3 जूनाहे का घुस या कुची 4 चित्रकार की कुची या तुलिय 5 तीन का पौधा । सम०—कार्यकम्—धनुस धनुकी, अर्पान् रुई पीनने की धनुही,—विष्णु रुई,—शकरा विनोला रुई के पीचे का बीज ।

सुसकम् [तुल + कन्] रुई ।

सुसि (स्त्री०) [तुप् + इन्] विदेर की कुची ।

सुसिका [तुल्लि + कन् + टाप्] चित्रकार की कुची, लेखनी,—उन्मीलित सुसिकये चित्रम्—कु० १।५१ 2 रुई की बत्ती (दीपक के लिए अंधका उडतन आदि लगाने के लिए) 3 रुई भरा सड़ा 4 बर्मा, छेद करने की सलाक ।

सुसुलीक (वि०) [तुष्योम् + क्त, मलोप] चुप रहने वाला, शीथी, स्वल्पभाषी ।

सुसुलीम् (अभ्य०) [तुष् + लीम् बा०] नीरवता में चुपचाप, चुपके में, बिना बोले या बिना किसी शोरबुल के—कि भवस्तुष्णीमानसे—चित्रक० २, न बोलेय इति योचिन्ध मूकता तुष्णी वच्च् ह—अम० २।१ । सम०—भाभ—नीरवता, निम्नव्यथा—शील सामोस, मन्वयायी या मीठी ।

तुल्यम् [तुल्य + तन्, दीर्घ] 1 जटा 2 धूल 3 पाप 4 कण, सूक्ष्म जटा ।

तुह, (तुहा० पर०—तुहति) मारना, बोट पहुँचाना—दे० तुह ।

तुम्बा [तुह, + तुन, ह्रस्वोपसर्ग] 1 घास—कि जीर्ण तुग-मति मानमहतामयेसर केसरी - भर्तु० २।२९ 2 घास की पत्ती, सरकण्डा, तिनका 3 तिनको की नवी कोई चीज (जैसे बँडने की चटाई), तुच्छता के प्रतीक रूप में प्रयुक्त—तुममिव लक्ष्मिनीवैव तान्मरणदि—भर्तु० २।१७, दे० 'तुषोह' भी । सम०—अग्निक 1 भूष या तिनको को आग—मनु० ३।१६८ 2 जल्दी भूष जाने वाली आग, - अम्बलनः गिरिगिट, - अटवी ऐसा जङ्गल जियमें घास की बहुतायत हो, -आशतं ह्वा का बरगबर, ममूल, कतुषु (मनु०), -कुडकुडन, - गौरम् एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, -इन्द्रः ताड़ का वृक्ष, -उल्का तिनको की मशाल, फूस की भाग की लो, -ओक्स (मनु०) फूस की ओपदी, - काष्ण, - इष् घास का डेर, - कुटी - कुटीरकम् घास फूस की कुटिया -केतुः ताड़ का वृक्ष, - बोधा एक प्रकार की गिर-गिट, बाह, प्राहिन् (पु०) नीलम, नीलकण्ठ मणि, - चर. गोमेद, एक प्रकार का रत्न, - जलायुषा, - जलका तिनकी का लार्वा, - दुम, 1 ताड़ का वृक्ष, सत्रु 2 नारियल का पेड़ 3 सुपारी का पेड़ 4 केनकी का पीछा 5 छुहारे का वृक्ष, - धामयम जङ्गली अनाज जो बिना बोये उगे, - एष्य, 1 ताड़ का वृक्ष 2 बास, बीडम् इस्त-ब-इस्त लडाई, - पूली बटाई, सरकण्डो का बना मुका—प्राय (वि०) तिनके के मूष्य का, निकम्भ, नगण्य, बिम्बु एक मृषि का नाम—रघु० ८।७९, -मणि. एक प्रकार का रत्न (अम्बर, रात), - मल्लुच, जमानत या जामिन प्रतिभु (सम्भवत 'अधमल्लुच' का अनुद्ध पाठ), राज, 1 नारियल का पेड़ 2 बास 3 ईश, यन्त्रा 4 ताड़ का पेड़—बुसः 1 ताड़ का पेड़, कजूर का वृक्ष 2 छुहारे का वृक्ष 3 नारियल का पेड़ 4 सुपारी का पेड़, - शीतर्ष एक प्रकार का सुगन्धित घास, - सारा केले का पेड़, - सिंह कुहवाडा, - हर्म्य घास फूस का बना घर ।

तुम्बा [तुण + य + टाप्] घास का डेर ।

तुषीय (वि०) [वि + तीय, सप्र०] तीसरा, - अष् तीसरा भाग । सम०—प्रकृतिः (पु०, स्त्री०) होजडा ।

तुषीयक (वि०) [तुषीय + कन्] प्रति तीसरे दिन होने वाला, (बुझार) तैया ।

तुषीया [तुषीय + टाप्] 1 चार पक्ष का तीसरा दिन, तीज 2 (स्त्री० में) करण कारक या उसके विभक्ति-पिच्छ । सम०—कृत (वि०) (शेठ जादि) तीन बार जाता

या, -सन्तुष्यः करणकारक का समास, -प्रकृतिः (पु० स्त्री०) होजडा ।

तुषीयिन् (वि०) [तुषीय + इनि] तीसरे अक्ष का अधिकारी (घाय का) ।

तुष्य (स्त्री० पर०, द्वा० उभ०) तर्पति, तुष्यति, तुष्पे, तुष्य 1 काटना, लच्छया करना, चीरना 2 मार डालना, नष्ट करना, संहार करना—भट्टि० ६।३८, १४।३३, १०८, १५।३६ ४४ 3 मुक्त करना 4 अन्नदा करना ।

तुप् 1 (दिवा०, स्त्री०, तुदा० पर०) तुष्यति, तुष्योति, तुष्यति, तुष्य 1 सतुष्ट होना, प्रसन्न होना, परिनुष्ट होना -अथ तप्यन्ति मासादा -भट्टि० १६।२९, प्राचीन वानुपत् क्रूर—१५।२९, (प्राय. करण० के साथ, परन्तु कभी-कभी सब०या अर्थि० के साथ भी)—को न तुष्यति विनेन -हि० २।१७४, तुष्यस्तपियथितेन—भर्तु० २।३४, नाभिसुष्यति काष्णाना नापमाना महोदधि, नातकू सर्वभूताना न पूसा वासलोचना—पञ्च० १।१३७, तस्मिन्नि तपुपुत्रोवास्तते यजे -महा० २ प्रसन्न करना, परितुष्य करना, -श्रे० परितुष्य करना, प्रसन्न करना -इच्छा० तितुष्यति, नितपियति, ॥ (स्त्री० पर०) तुदा० उभ०—तर्पति, तर्पयति—ते 1 जलाना, प्रज्वलित करना 2 (श्री०) सन्तुष्ट होना ।

तुप्त (वि०) [तुप् + क्त] सन्तुष्ट, सतुष्ट, परितुष्ट ।

तुप्ति (स्त्री०) [तुप् + क्तिन्] सतोष, परितोष, रघु० २।३९, ७३, ३।३ मनु० ३।२७१, भय० १०।१८ 2 अतितुप्त, उन्न 3 प्रसन्नता, परितुष्टि ।

तुष् (दिवा० पर०) तुष्यति, तुष्यति 1 प्यासा होना, -भट्टि० ७।१०६, १४।३०, १५।५१ 2 कामना करना, काला-यित होना, उन्मुक्त या उत्कण्ठित होना ।

तुष् (स्त्री०) [तुष् + क्तिन्] (कर्त्तु० ए० व०—तुष्ट-इ) 1 प्यास—तुषा तुष्यत्प्यास्य पिबति सलिल स्वाहु नुरभि—भर्तु० ३।९२, ऋतु० १।११ 2 कालसा उन्मुक्तता ।

तुषा—दे० तुष् । सम०—आसं (वि०) प्यास से आकुल प्यासा, - ह्नु पानी ।

तुषित (म० क० क०) [तुष् + क्त] 1 प्यासा— षटः ९, ऋतु० १।१८ 2 कालशी, प्यासा, लाभ क इच्छुक ।

तुषयश्च (वि०) [तुष् + मश्चिङ्] लोभी, लालची, प्यासा

तुष्या [तुष् + त + टाप् किच्च्] 1 प्यास (श्री० श्री आश०)—तुष्या छिनस्त्यायनः हि० १।१७१, ऋतु १।१५ 2 इच्छा, लालसा, लालच, लोभ, लिप्—तुष्यां छिन्ति भर्तु० २।७७, ३।५, रघु० ८।२ सम०—अशः इच्छा का नाप, मन की शान्ति, सतोष तुष्याम् (वि०) [तुष्या + आम्] बहुत प्यासा ।

सूत्र (स्था० पर०, चुरा० उभ०—तुण्डे, तर्ह्यति—ते, तुड, इच्छा० सित्तुषति, सित्तुहिति) क्षति पहुँचाना, आघात पहुँचाना, मार डालना, अहार करना—नू तुण्डोति क्राकोम्य विने वा निष्पराकाम्य—मट्टि० ११३९ (तामि) तुण्डे राम-सह लक्षणेन ११११ ।

वृ (न्वा० पर०—उरति, तीर्णं) 1 पार पहुँच जाना, पार करना—केतोद्भयेन परलोकदती तरित्ये—मूच्छ० ८१२३, स तीर्णा कपियाम्—रघु० ४।३८, मनु० १।७।२ पार पहुँचाना, (भागं) तप करना, कु० ७।४८ मेष० १८ 3 बहना, वैरना—क्षिता तरिष्यत्युदके त एवेम्—मट्टि० १२।७।७ 4. पुर्ण करना, जीत लेना, पार करना, विजयी हो जाना धीरा—हि तल्लयापदम्—का० १७५, कृच्छ्रम् महतीर्णं—रघु० १।४६, भग० १८।५८, मनु० ११।३४ 5 किलारे तक जाना, पारलत होना—रघु० ३।३० 6 पूरा करना, सम्पन्न करना (प्रतिष्ठा का) पालन करना—दैवातीर्थप्रतिष्ठा—मुद्रा० ४।१२ 7 वचाया जाना, बच निकलना,—गाथो बर्णभयातीर्णो बय तीर्णो महाभयात्—सुरि०, कर्मवा०—तीर्थे, पार किया जाना, (प्रेर०) तापयति—ते 1 ले जाना, भाग्य बढ़ाना 2 पहुँचाना 3 बचाना, उद्धार करना, मुक्त करना, इच्छा०—सिनीर्षति, सिनिर्षति, निरतीर्षति) पार करने की इच्छा करना—दोर्म्यां निनीर्षति तरङ्गबतीमुग्वङ्गन—काव्य० १०, अति—1 पार पहुँचाना, जीत लेना, विजयी होना—भग० १३।२५, हि० ४, अक्ष—1 उन्नयना, अवतरित होना—रथादवतार च—रघु० १।५४, १३।६८, मेष० ५० 2 बहना, मे गिरना—यावत् बर्षद्विधा ब्रुव का महानघवर्णनि—शं० ३ 3 प्रविष्ट होना, घुसना, जाना—मालवि० १।२२, सि० १।३२ 4 पुर्ण करना, दमन करना, पार करना 5 (किसी देवता का) मन्त्र के रूप में इस घटती पर अवनार लेना—तु० अवतार, प्रेर०—साया, जाकर जाना, समाना—रघु० १।३४, उद्—1 (पानी में में) बाहर निकलना, (जहाज से) उतरना, निकलना—रघु० २।१७, सि० ८।३ 2 पार जाना, पार पहुँचना उदतात्पुष्पप्रसिद्धिम्—मट्टि० १५।३३, १०, रघु० १२।७१, १६।३३, मेष० ४० 3 दमन करना, जीतना, पार करना—अमनमहापावत्तीर्णम्—मूच्छ० १०।६९ इमा प्रकार—रोगान्तीर्णं, निम्—, 1 पार पहुँचना—भर्त० ३।४ 2 पूरा करना, सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 3 पार करना, पूरा करना, जीतना—रघु० ३।७ 4 पूरा करना, अन्त तक जाना रघु० १६।२१, प्र—पार पहुँचना, प्रेर० छानना, धाया देना—म तथा प्रतापे शं० ५, किन्चे कविनि प्रदाग्निमना-मन्त्र विज्ञाननि-भर्त० १।७८, छि—1 पार जाना, पार करना, परे जाना—रघु० ६।७७ 2 देना,

स्वीकृत करना, प्रदान करना, अनिदान करना, अर्पित करना, रुपा करना, अनुग्रह करना—भगवान्-नारोचते दसो वितर्गति शं० ७, वितर्गति नृक प्राप्ते विधा यथैव तथा जडे—उत्तर० २।४, निवामिहोत्तरितेक—रघु० १४।८१, मा० १।३ 3 पैदा करना, उत्पादन करना—ज्योत्स्नाद्युक्तामिह वितर्गति हयशेपी—कि० ५।३१, गीत० १ 4 ले जाना, स्थिति—, पार करना, पूरा करना, जीत लेना, सम्—1 पार करना 2 तरना, बहना 3 पूरा करना, जीत लेना, अन्त तक जाना ।

तेजसम् [निज् + ल्यट्] 1 बस 2 पैना करना, लेज करना 3 अलाना 4 प्रदीप्त करना 5 चमकाना 6 सरकडा, नरकुड 7 दास की मोक, शम्भ की पार ।

तेजसः [निज् + गिच् + कलच्] एक प्रकार का तीतर ।

तेजस् (नपु०) [निज् + बसुन्] 1 तेजी 2 (बाहु की) पैवी पार 3 अग्नि शिवा की चोटी, आग की लपट की मोक 4 गर्मी, चमक, दीप्ति 5 प्रभा, प्रकाश, ज्योति, क्षति—रघु० ४।१, भग० ७।९, १०।३० 6 गर्मी का प्रकाश, सृष्टि के पांच मूलतत्त्वों में से एक—अग्नि (अन्य पार से है) पृथिवी, अणु, वायु और आकाश 7 शरीर की कापि सौन्दर्य—रघु० ३।५ 8 तेजस्विता—शं० २।१४, उन्न० ६।४४१ नाकन, पत्तिन, मायव्यं, सासु, बन्, शीर्षं तेज—तेजस्तेजसि धाम्यनु—उन्न० ५ 10 तेजस्वी तेजसा हि त पय समीधवेन—रघु० ११।१ 11 आनन्दक, ओज या ऊर्जा 12 चरित्रकल, ओजस्विता 13 तेजायुक्त कापि, महिमा प्रतिष्ठा, प्रभुता, गौरव—तेजोविद्योपानुमिता (राजलक्ष्मी) दशम—रघु० २।७ 14 शीर्षं, शीर्ष, शुक—स्वाश्लेष्य यदि मे त तेज—रघु० १।६५, रघु० २।७५, पुष्पलेवाहित तेजो रधाना भूतये भुव—शं० ४।१ 15 वस्तु की मूक-प्रकृति 16 अर्क, सन 17 आग्निवर्णक, नैतिक धार्मिक, शत्रु की पक्षित 18 पात्र 19 मज्जा 20 पित्त 21 पेट का वेग 22 ताजा मन्त्र 23 सावा । मन्त्र—कर (वि०) 1 पानिवधक 2 शीर्षवधक, शक्तिप्रद—अक्षु 1 उपमान प्रतिष्ठा का नाम 2 अवसाद, सुतोमसा-हना,—मण्डलम् प्रभाव का परिधेय,—भूति सूर्य,—रूप परमात्मा ब्रह्म ।

तेजसवत् तेजोवत् (व०) [तेजस् + मत्सु, मत्स्य ब.] 1 उज्वल, चमकीला, सातदार 2 तेज, तीखा 3 शीर, शीर्षियाली 4 उर्ध्वमूर्ति ।

तेजस्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) [तेजस् + विनि] 1 चमकदार, उज्वल 2 प्रकृतिशाली, शीर्षमयत्र, बलवान्—कि० १६।१६ 3 शीरचाली, महानुभाव 4 प्रतिष्ठ, विक्रम 5 प्रचड 6 अभिमान 7 विधिमन्मत ।

तेजित (वि०) [तिज्+विष्+क] 1 पनाया हुआ, तेज किया हुआ 2 उत्तेजित, उद्दीप्त, प्रगोषित ।

तेजोवत् (ब०) [तेजस्+वत्] 1 यशस्वी 2 उज्ज्वल, धमकदार प्रकाशमान—भण० ११४७ ।

तेजः [तिज्+घञ्] पीला या तर होना, आर्द्रता ।

तेजन्म् [तिज्+ङ्यट्] 1 पीना करना, तर करना 2 आर्द्रता 3 कटना, मिचं मसाला (जो नांजल को रुबिकर बनाये) ।

तेजन्म् [तेज्+ङ्यट्] 1 खेल, मनोरंजन, आमोद-प्रमोद 2 विहारलुभ, खीटास्थक ।

तेजस (वि०) (स्त्री०-सी) [तेजन्+ङ्य] 1 उज्ज्वल, शानदार, प्रकाशमान 2 प्रकाशयुक्त—नेत्रमन्मथ धनुष प्रसूत्ये—रघु० ११४३ 3 शानुयव 4 खोशोला 5 ओजस्वी, ऊर्ध्वस्वी 6 शोकाशानो, प्रबल, -सम् धी । मम०—आवर्तनो कुडाली ।

तेजिल (व्या०) (स्त्री०-झो) [तिजिल+ङ] महुनशील, महिल्ल ।

तेजिर [तेजिर पृषा०] नीतर ।

तेजिल (पु०) 1 गीटा 2 देवता ।

तेजित् [तेजित्+ङ्य] 1 नीतर 2 गीटा, -रम् तीतरो का मन्त्र ।

तेजित्तीय (पु० ब० य०) [तिजित्तिष्णा प्राक्चम् अपीयते-तिजित्+ङ] यजुर्वेद की तेजित्तीय दाण्या के अनुयायी, -य यजुर्वेद की तीसरीय शाखा (कृष्ण यजुर्वेद) ।

तेजित् [तिजित्+ङ्य] आँसों का, एक शेष पृथक्पान ।

तेजिक (वि०) [तेजि+ङ्य] पवित्र, पानन, -क 1 एक सम्पत्ती 2 किन्तु नवीन धार्मिक या दार्शनिक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाला, -कम् पवित्र जल (जैसा कि किसी पुण्यनीचे से लाया हुआ है) ।

तेजम् [तेजस्य तमदृशम् वा बिकारं जन्] 1 तेल-लभेल सिक्तानाम् तैलमर्षि यमल वीङ्यट् भन् २१५, याङ् ११०८३, रघु० ८१८८ 2 वृष । सम० अटी निर्द बरिया, -अभ्यङ्ग दारोय में तेल की मालिश करना -कालक लव्ना, पणिका, पार्सी 1 अन्दन 2 वृष 3 तापीन, विज्ज भफेद तिल, विपीलिका छोटो साल रज की चिड़टा कल, हिवाट का वृक्ष, -भाषिकी चमेरी, माली दाँबे की बनी, उन्नम् तेलों का कोल्ह, -स्पष्टिक एक प्रकार की मणि ।

तेजम् एक देश का नाम, वर्तमान कर्नाटक प्रदेश, वाः (ब० ब०) हम देश के कोण ।

तेजिक, तेजिकम् (पु०) [तेज+ङ्य, तैल+ङ्य] तेली, तेल पेरने वाला ।

तेजिली [तेजिल्+ङ्य] दाँबे की बनी ।

तेजिलम् [तेजिली प्रथम क्षेत्रम्—सञ्] तिलो का खेत ।

तेजः [तिज्येण नक्षत्रेण वृक्षा पौर्णमासी—तिज्य+ङ्य+

ङ्ये—तेवी, सा अलि बरिस्म् मासे—तेवी+ङ्य] पीय का महीना ।

तेजम् [तेज+ङ्य] सन्तान, बच्चा ।

तेजक [तेज+क] चाक पत्ती ।

तेजन्म् [तेज्+ङ्यट्] 1 टुकड़े २ करना, -सम्पन्न करना 2 फाटना 3 चोट पहुँचाना, छति पहुँचाना ।

तेजन्म् [तेज्+ङ्यट्] पशुओं को या हाथी को हकाने का अङ्क ।

तेजः [तेज्+ङ्य] पीडा, वेदना, सताप ।

तेजन्म् [तेज्+ङ्यट्] 1 पीडा, वेदना 2 अकुश 3 वेहरा, मूँह ।

तेजिर, -रम् [तेजयति हिनस्ति तुम्+ङ्य, वि०] 1 लोहे का डण्डा 2 भागा, नेत्रा । सम०—बः अग्निदेव ।

तेज्यम् [तेज्+विष्, तजे पुर्वं याति—या+क वि० साङ्] पानी—म० ७१२२ । म०—अधिवासीनी पाटना वृक्ष, -आम्हार, आशय सरोवर, कूश, जमायय नायावारपथाञ्च वल्कलसिन्धुनन्दरेसाङ्कना—श० ११४, -आलय-समुद्र, सागर, -ईश, वरुण का विशेषण (-शम्) पूर्वापाठ नक्षत्रपुञ्ज, -उत्सव, जलाम्भोजन, वर्षा-मेघ० ३७, -कर्मन् (नु०) 1 ब्रह्मर्षी 2 दिवमान पितरो को जलप्रेषण, -कुच्छ, -च्छम्, एक प्रकार की नवचर्चा जिसमें कुछ निरिचत समय तक जल पोरण ही रहना पता है, -कीडा जलविहार-मेघ० ३३, -गर्भं नारिकल, भर एक जलजनु, -डिक्क, -धः ओला, -ह बादल—रघु० ११५५, विक्रम० ११४, अत्ययः शन्द् ह्नु, भर, बादल -धि, -निधि, समुद्र, -नीची पृथ्वी, -प्रसाधनम् कनकफल, निर्मली, -बलम् समुद्रफेन, -मुष् (पु०) बादल, -सम्भन् 1 जल-पट्टी 2 फौजारा, -राष्, -राशिः समुद्र, -बेला जल का किनारा, समुद्रतट, व्यतिकरः (नदियों का) संगम -रघु० ८१५५, -शुक्लका तीर्थ, -सपिका, -सूचकः मेटक ।

तेजयः यम् [तेज्+ङ्य आचारे स्मृत् वा तारा०] 1 महाराजदार बनाया हुआ डार, सिंह डार 2 बहिर्दार, प्रवेश द्वार—नर्णोपाधामप नौरणाद् बहि—मि० १२१, दुरालभ्य मुर्षणयनुकारणा तोष्येन—मेघ० ७५ 3. अम्पायी रूप से बनाया हुआ शोभाहार—कु० ७३, रघु० ११४७, ७१५, ११५५ 4 स्तानागार के निकट का चतुरता, -णम् गर्दन, कण्ड ।

तेल -सम् [तेज्+ङ्य] 1 तेल या भार जो तराजू में तौल लिया गया हो 2 मोने चाँदी का एक तौल्य या १२ भागों का भार ।

तेजः [तेज्+ङ्य] सन्तोष, परिशोष, प्रसन्नता, लुभी ।

तेजन्म् [तेज्+ङ्यट्] 1 सन्तोष, परिशोष 2 सन्तोषप्रद परिशुषि ।

शौचकम् [शौच + क् + ङ] मुसल, सोटा ।

शौचिकः (शौच शब्द) तुला टाण्ड ।

शौचिकः (पुं०) बहु शौची जितमें से मोती निकलती है, —कम् मोती ।

शौचिकम् [शौच + अम्] तुरही का शब्द । सम०—त्रिकम् नृत्य, गान और वाद्य की समेकना, तेहरी श्वरमयति—तीर्थनिक ब्याट्या व कायनो दसको गग—मनु० ७।४७, उदार० ४ ।

शौचिकम् [तुला + अम्] तराजू ।

शौचिकः, शौचिकिकः [तुलिका + ठक्, तुलिका + ठक्] चित्रकार ।

श्वस्त (पुं० क० कृ०) [श्वस् + क्त] 1 छोटा हुआ, त्यागा हुआ, परिव्यस्त, उन्मुक्त 2 उन्मुक्त, जिसने आप्तसमर्पण कर दिया है 3 कतराया हुआ, टाला हुआ—वे० त्यज् । सम०—अग्निः बहु शास्त्रण जिसने अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है,—शौचित्,—प्राय (वि०) प्राण देने के लिए तैयार, कोई भी जोशिम उठाने को तैयार—मदर्व स्वकर्मजीविना—भय० १।९, लख (वि०) निर्लेख, बेधर्म ।

श्वस् (म्वा० पर० त्यजति, त्यक्त) 1 छोड़ना (सब अर्थात् में) त्यागना उत्सर्ग करना, चले जाना—वर्षं भानां-त्यजामु—मेघ० ३९, मनु० ६।७७, ९।१७७, व० ५।२६ 2 जाने देना, बर्खास्त करना, मेवाभुक्त करना,—भट्टि० ६।१२२ 3 छोड़ देना, त्यागना, उत्सर्ग करना, आत्मसमर्पण करना—मूर्त् ३।१६, मनु० २।९५, ६।३३, भय० ६।२४, १६।११ 4 कतराना, टालना 5 छुटकारा पाना, मुक्त करना—भय० १।३ 6 अचहेलना करना, उपसा करना त इमेऽक-स्थिता युद्धे प्राणास्त्यक्त्वा धनानि च—भय० १।३३ 7 उद्धृत करना 8 वितरण करना, प्रदान कर देना, हृत (मृचय) आप्तपुत्रे त्यजेत्—भाष० १।४७, मनु० ६।१५, प्र०—छुड़वाना, इच्छा०—नित्यशक्ति छोड़ने को इच्छा करना, परि 1 छोड़ना, उत्सर्ग करना, त्याग करना 2 पर त्याग करना, छाड़ देना, रद्द कर देना, तिलाञ्जलि देना—प्रायश्चित्तप्रामुखा न परिव्य-ञ्जिन मुद्रा० २।१७ 3 उद्धृत करना—नृपनयपरिव-रण मनुष्य, सभ 1 त्यागना, जायामवोपायान् मन्यजानि रघु० १।६३६ 2 टालना, कनगना—भर्त् १।८१ 3 छोड़ देना तिलाञ्जलि देना मनु० ४।१८१ 4 उद्धृत करना—उवा०—सत्यव्य चिक्रमादिव धर्मनयत्र नुत्तभम्—राजत० ३।३४३ ।

श्वान् [श्वन् + श्वान्] 1 छोड़ना, परिव्यग, छाड़ देना, छाड़ कर चले जाना, बियाग न माता न पिता न स्त्री न पुत्रमन्यायमर्हति—मनु० ८।३१९, ९।७८ 2 छोड़ देना, परत्याग कर देना, तिलाञ्जलि देना

—मनु० १।११२, भय० १२।४१ 3 उपहार, दान, धर्मार्थ दान,—करे श्लाघ्यस्याय—भर्त् ० २।६५, हि० १।१५४, त्यागाय सम्प्रदायानाम्—रघु० १।१७ 4 मुकुलहस्तना, उदारता—रघु० १।२२ 5 साव, मनीसर्ग । सम०—दुल,—श्रील (वि०) मुक्त हस्त, उदार, दानशील ।

श्वानिन् (वि०) [त्यज् + चिनुण्] 1 छोड़ने वाला, परिव्यग करने वाला, छोड़ देने वाला 2 प्रदत्ता, दाता 3 धर्मिशास्त्री, शूरवीर 4 बहु जो धार्मिक अनुष्ठानों के फलस्वरूप किसी पारितोषिक या पुस्तकार की भेषा नहीं करता; है—यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्य भिधीयते—भय० १।७।११ ।

श्व (म्वा० आ०—श्वते, श्वति) धर्मिना, सजाना, कष्ट में फँस जाना—श्वते तीर्थानि त्वरितमिह यस्या-द्वितिनयो गङ्गा० २८, अय—, मुद्रना, धर्म के कारण कार्यनिवृत्त होना—तस्मात्त्वत्कल्पये—भट्टि० १।६८४, येनापत्रते साधुरसाधुनेन तुष्यति—महा० । श्व [श्व् + अङ् + टाप्] 1 धर्म, लाज—मन्वन्नाभर—गीत० १२ 2 हवा, धर्म (अच्छे और बुरे अर्थ में) 3 कायुक या व्यभिचारिणी म्बो 4 प्रसिद्ध, स्थिति । सम० निरस्त,—हीम (वि०) निर्लेख, बेधर्म,—रश्वा वेद्या ।

श्विच्छ (वि०) [अयम् एवाम् अनिवायेन त्प्र - त्प्र + इष्टन्, त्प्रशान्दस्य श्वादेश] अथत्त सन्नुष्ट ।

श्वीयस् (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [श्व् + ईययुन्, त्प्र श्वरस्य श्वादेश] अपेक्षाकृत अधिक सन्नुष्ट ।

श्वु (नपु०) [अति दृष्ट्वा श्वते लज्जते इव - श्व् + उन् + टाप्] टीन, रागा—यदि मणिस्रुणुषु प्रतिबन्धते—पच० १।७५ ।

श्वुलस्, श्वम्, श्वुस् (नपु०),—नाम् [श्व् + उल, श्व् + उय, श्व् + उम्, श्व् + उस] टीन, रागा ।

श्वस्यस् (नपु०) मृदा, धोला हुआ दही ।

श्व (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [श्वि + अयच्] तेहर, तिगना, तीन भागों में विभक्त, तीन प्रकार का— श्वी व श्विा कृचो यजूषि मानानि—शत०, मनु० १।२३,—यस् तिगदा, तीन का समूह—अदेयमासोश्च श्वमेव भूपते शशिप्रम छत्रमुने च चामरे—रघु० ३।६, लोकत्रयम्—भय० १।१२०, ४३, मनु० २।७६ ।

श्वस्य (त्रिजल्ल्) पु०, कर्त्त० व० व०, समास में प्रयोग, अथवा मन्थावाचक शब्दों के साथ) तीन । सम०—श्वकारिश्च (वि०) तैलालीसर्वा,—श्वकारिश्चत (वि०) या स्त्री०) तैलालीस,—श्विच (वि०) तैतीसर्वा—श्विस्तु (वि०) या स्त्री०) तैतीस,—श्व (वि०) 1 तेरहवाँ 2 तेरह जोड़ कर—श्वीस शतम् एक सौ तेरह,—श्वान (वि०, व० व०) तेरह,—श्वान (वि०)

तेरहवाँ, -बन्धी बान्ध पक्ष की तेरहवीं तिथि, -बन्धति (स्त्री०) तिरागने, -पञ्चमासत् (स्त्री०) उपरेण, -बिषह (स्त्री०) 1 तेरहवीं 2 तेरह वे तुल्य, -बिषहति: (स्त्री०) तेरह, बन्धितः (स्त्री०) तरसठ, -सन्धति: (स्त्री०) तिहत्तर ।

बन्धी [बन्ध + ङीष्] 1 तीनों वेदों की समष्टि (ऋग्वेद-सामानि) -बन्धीमयाय विवृणतरमने नम - का० १, ती प्रथीवर्धमितरा विद्या परिपाठितो उत्तर० २, मनु० ४।१२५ 2 तिवृद्ध, विक, विममूह व्यसोतिष्ट सभावेद्यामसो नृत्सविभयो - वि० २।३ 3 बृहिकी या विवाहिला नारी जिसका पति तथा बालबन्धे जीविन हो 4 बुद्धि, समझ। सम०-सन् 1 मूर्ध का विशेषण, इसी प्रकार 'बन्धीमय' 2 शिब का एक विशेषण, - धर्म: तीनों वेदों में वर्णित धर्म- भग० ९। २१, -मुञ्च ब्राह्मण ।

बन्धु । (श्रा०, वि०) पर० - बन्धनि, नश्यति, बन्ध 1 बराना, कौपिना, हिलना, भय के कारण विचलित होना 2 डरना, भयभीत होना, डर जाना (अपा० के साथ, कभी-कभी सम्ब० या करण० के साथ) -प्रमद-वन्तम् नश्यति - का० २५५, क्वेरवासिपुनरीदात् - मट्टि० १।११, ५।३५, १।४४८, १५।५८, वि० ८। २५, कि० ८।३, वे००-डरना, भयभीत करना, -वि०, -भयभीत या बन्धु होता । विन्धन्मुधरिष्ठीन्मुदुसे कटालै - मर्त्त० १।९, सम् - उरना, भयभीत होना, बन्धु होना - मट्टि० १।६।३९ ।

॥ (चुग० उभ० प्रासयनि - ने) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 धामना 3 लेना, पकडना 4 विरोध करना, राकना ।

बन्धु (वि०) [बन्ध् + क्] बन्ध, जगम, - स. हृदय, -सम् 1 वन जगल 2 जानवर । सम० - रेणु, अन्, धन् का कव या अन् जो मूर्धाकरण में हिलता हुआ दिखाई देता है -तु० आकान्तरगते भान्ती सूक्ष्म यद्दृश्यते रज, प्रथम नम्रमाणाया नश्येणु प्रथमते मनु० ८।१३२, याज्ञ० १।३६१ ।

बन्धु [बन्ध् + अल् वा०] डरकी (जुलाहो का एक उपकरण जिसमें धागों को नली रज कर बुनते हैं) ।

बन्धु, **बन्धु** (वि०) [बन्ध् + उष्, बन्ध् + क्] भीरु, कापन वाला, डरपोक -अबन्धुभिर्मुक्तधुरं तुरङ्गं एषु० १।६।७, सीता सीमिनिषा त्यक्ता सप्रौजी बन्धुमेकिकाम् मट्टि० ६।७ ।

बन्धु (भू० क० कृ०) [बन्ध् + क्त] 1 भयभीत, डरा हुआ, आतंकित -त्रन्नेकहायनकुरङ्गुनिलोदुष्टि -मा० ४।८ 2 डरपोक, भीरु 3 फुटीना, चपल ।

बन्धु (भू० क० कृ०) [बन्ध् + क्त तस्य नान्दम्] रखा किया गया, जमिंदारित, प्ररक्षित, बचाया गया, - बन्ध् 1. रखा

प्रतिरक्षा, बरखा --आर्वांवापाय ब् दान्य न प्रहर्षेनना-यसि -मा० १।११ रभु० १५।३ 2 धरण, सहारा, बाधय - मट्टि० ३।३० ।

बन्धु (भू० क० कृ०) [बन्ध् + क्त] 1 प्ररक्षित, बचाया गया, रखा किया गया ।

बन्धुषु (वि०) (स्त्री०-बौ) [बन्धुषु + ङष्] रींग का बना हुआ ।

बन्धु (वि०) [बन्ध् + षष्] 1 चर, चलनशील 2 डराने वाला, -स डर, भय, अलक्ष-अल्ल कञ्चुकिकञ्चुक-कल्प विषति प्रासादय क्षाम्न रत्ना० २।३, एषु० २।३८, १।५८ 2 चौकड़ा करने वाला, भयभीत करने वाला 3 मगिनय बोध ।

बन्धु (वि०) [बन्ध् + णिष् + स्पृट्] क्षीफनाक, डरावना, भयकुर, -नम् डराने को फिदा, डराना ।

बन्धु (वि०) [बन्ध् + णिष् + क्त] डराया हुआ, आतंकित भयभीत ।

बन्धु (स० वि०) केवल व० व०, कर्त्त० प० बन्ध, स्त्री० निष्ठ, मनु० भीषि) तीन-त एव द्वि त्रयो लोकास्त एव त्रय आध्या - मनु० २।२९९, प्रियतमाभिरमो नित्-विबन्धो एषु० १।१८, भीषि बन्धोऽतीक्षेत् कुवायंनु-मती सती मनु० १।९०। सम० अश्वः 1 तिहाई भाग 2 तीसरा अश्व, -अश्वः -अश्वकः शिव का एक विशेषण, -अश्वर 1 ईश्वर श्लोक अश्वर 'ओम्' जो तीन अश्वरों में मिल कर बना है --दे०'अ' में 2 जोडी मियाने वाला, घटक (यह शब्द तीन मूल्यों से मिल कर बना है), -अश्वदम्, -अश्वगदम् 1 वह तीन रस्सियाँ जिनके सहारे बहेरी के दोषी पलङ्क दोनो किनारों पर लटकने रहते हैं 2 एक प्रकार का अजय, सुमर्, -अश्वजलम्-निम्न तीन अजलि (मिला कर), -अभि-ष्ठान. आत्मा, -अश्वया, -भाग्या, - बन्ध्या गंगा नदी (तीनों लोकों में बहने वाली) के विशेषण, -अश्वकः ('त्रियम्बक' भी, यद्यपि लौकिक साहित्य में प्रयोग विरल है) तीन आशुं बाला, शिन् त्रियम्बक सर्वान् ददर्श- कु० ३।४६, जडुकृतश्वम्बकवीक्षणेन -रघु० २।४२, ३।४९, शम्भुः कुबेर का विशेषण, -अश्वका पावती का विशेषण, -अश्व (वि०) तीन वर्ष पुराना (- अश्व) तीन वर्ष, -अश्वित (वि०) तिरासिवा, -अश्वीति. (स्त्री०) तिरामो, -अश्वत् (वि०) बौधिस, अश्व -अश्व तिकोण, त्रिभुजाकार (-अश्व) तिकोण, त्रिभुज, अश्व तीन दिन का काल, -अश्वित (वि०) 1 तीन दिन में उत्पन्नित या अनुष्ठित 2 हर तीसरे दिन चटने वाला - (यथा बुवार) तैषा, -अश्वत् (तुल्यम्) भी) तीन ऋचाओं की समष्टि - मनु० ८।१०६, -अश्वत् (पु०) 1 त्रिकट पत्ता 2 विष्णु या कृष्ण, -अश्वत् (पु०) ब्राह्मण के तीन मुख्य कर्त्तव्य

अर्थात् यज्ञ करना, वेद का अध्ययन करना, तथा दान देना (—पु०) जो इन तीन कर्मों को सम्पन्न करने में व्यस्त हो, ब्राह्मण. —काय बृद्ध का नाम. —कायम् तीन काल अर्थात् भूत, वर्तमान और भविष्यत् या तीन समय प्राप्त, मध्याह्न तथा सायम् 2 क्रिया के तीन काल (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) । ज, 'दक्षिण (वि०) सर्वज्ञ. —कूट सीमों का एक पहाड़ जिस पर रावण की राजधानी लका स्थित थी - जि० २५५. —कूर्बकम् तीन फलों का नाम. —कोय (वि०) त्रिभुजाकार, त्रिकोण बनाने वाला (—पु०) 1 तीन कोन वाली आकृति 2 योनि. —कूटबन्ध, कूटबी तीन छाटों का समूह, यथा सामाजिक जीवन के तीन पदार्थों की समष्टि अर्थात् धर्म, अर्थ और काम न वाधेयज्य विषय परस्परम् कि० ११११. दे० नी० 'त्रिकर्ण',—गत (वि०) 1 तिगना 2 तीन दिन में सम्पन्न. —वर्तः (ब० व०) 1 भाग के उत्तरपश्चिम में एक देश, इनका नाम जलधर' भी है 2 इन देश के निवासी या शासक.—वर्तः कामकमन् श्री. स्वर्णिनी - गृध्र (वि०) 1 तीन डोंगों में युक्त नगरी वनाब भोजी त्रिभुजा बमार या - कु० ५१० 2 तीन बार आवृत्ति किया हुआ, तीन बार त्रिविध, तेहरा, त्रिभुजा —सप्त श्वेतीपुस्तिकापाति तस्य (विनास) रघु० २१२५ 3 सख, रजस तथा तमस नाम क तीन गुणों से युक्त. (—घम्) (सा० द० में) प्रवाल (पा) (वेदा० द० में) 1 प्रायः 2 दुर्यो का विशेषण —चक्षुस् (पु०) शिव का एक विशेषण. —चतुर (वि०) (ब० व०) तीन या चार गुणा जवान् 'चित्रचतुराणि परानि मोता बालरा० ६१३४. चत्वारिण्य (वि०) तेनालोमर्षी.—चत्वारिण्य (स्त्री०) तेनालोय, अगत् (नपु०) जगती तीन लोक 1 स्वर्गलोक, अनाग्निभ्यक्त तथा भूलोक या (-) स्वर्गलोक, भूलोक, पताललोक.—जट शिव का एक विशेषण. —जटा एक राक्षसी, जिसको रावण ने अशोकवृक्षादि का लता की देवदेव के लिए विषय किया था जब नीला बर्षी बन्दी के रूप में रक्षी गई। उस समय विजटा ने स्वयं नीला के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया, तथा अपनी दुरग्री महारथियों को भी प्रेरित किया कि वह भी ऐसा ही करे. —जीवा, ज्या तीन चित्तों की शिखा, या ९० कोटि, अर्धव्याय - घता, धनुष, - पशु, - पशवन् (वि० ब० व०) ३ × ९, ती का तिगना अर्थात् मनाशय, तजम्, —तजी तीन बरइया का समूह. —बण्डम् 1 (समार में विरक्त) गन्धायी के तीन डडों को बांधकर एक किया हुआ 2 तिगना मद्यम् —अर्थात् मन, वाणी और कर्म का, (—इ) एक धर्मनिष्ठ सन्यासी की अवस्था.—दक्षिन् (पु०) यम

निष्ठ साधु या सन्यासी जिसने सामारिक विषय वासनाओं का त्याग कर दिया है, और जो अपने दहिने हाथ में तीन-दंड (एक जगह भिन्ना कर वर्षे हुए) रखता है 2 जिसने अपने मन, वाणी और शरीर को बन्ध में कर लिया है—तु० वादण्डोऽथ मनीषन् काय-दण्डस्तयैव व. पस्वैने निहिता बुद्धौ धिरण्डीति स उच्यते—मन० १२१०.—वशा (ब० व०) 1 तीस 2 तेनीस देवता. (—श) देवता, अमर—कु० ३११. अक्षुण्णः 'आयुषम् इन्द्र का वस्त्र -रघु० १५४. अशिरः, 'ईश्वर' 'पति इन्द्र के विशेषण, अथवा: विष्णु का एक विशेषण, अशिर-राक्षस, 'आचार्ये बृहस्पति का विशेषण, 'आलय, 'आवास 1 स्वर्ग 2 मेरु पर्वत, 'आहार देवताओं का भोजन, 'बुध बृहस्पति का विशेषण, 'शेष एक प्रकार का कौटा, बोरवृटी (इन्द्रगोप) —श्वर्ये त्रिदशगोपमात्रके दाहगन्धिविब हृष्यवर्त्मनि रघु० ११४४. 'मज्जरी तुलसी का पीछा. 'वष्, 'बनितता अस्त्र या स्वर्ग की रथी - कैलासम् त्रिदशदशिनदर्पणस्यातिथि स्या मेघ० ५८. वसन्तु जाकाल, विनास तीन दिलों की समष्टि. —विश्वम् 1 स्वर्ग, विमार्गदेव प्रिदिवस्य मार्ग—कु० ११०८, म० ३१ 2 ज्ञानका पर्यायण 3 प्रकल्पना, 'अशोक' 'ईश 1 उद्भवा का विशेषण 2 देवता. 'चक्षुषा गणा, 'ओकस् (पु०) देवता- दुष्ट (पु०) निब का एक विशेषण दोषम् शरीर में होने वाले तीनों दोष अर्थात् वात, पित्त और कफ.—धार गता. —पशव (नपु०)—नेत्र लोचन शिव के विशेषण रघु० ३१६६. कु० ३१६६, ५१०. —नवत (वि०) निगनवेर्षा. नवत (स्त्री०) निगनवे, पञ्च (वि०) निगनवा पांच अर्थात् पन्द्रह, पञ्चपञ्च (वि०) तर्पणवा. पञ्चपञ्च (म०) तर्पण पटु, काच, —पताक 1 शय जिसकी तीन अगुलिर्षा फेला हुई हो 2 त्रिचुर निकल गया तथा यमक, —पत्रकम् डाक, —पशम् विराहा, अर्थात् जुलोक, अनगिध तथा भूलोक, या आशान, भुक्तान् तपो पानाल 2 वर स्थान जहाँ तीन सहकें मित्रता हो. 'सा गगा का विशेषण पुनस्तपय-स्त्रियधामनिभ स तमाकराह पुरुहन्तु— जि० ६११. अमर ०९. पशम्, पशिका तीन पैर वाला.—पश्वी 1 हाथों का तम नासत्कृष्णा द्वैव निपदीच्छेदितामपि—रघु० ६४४ 2 गाथवी छंद 3 निपाई 4 गाथापद्यो नाम का पीछा, पशं. डाक का पैठ —पाव (वि०) 1 तीन पैरों वाला 2 तीन सहकों से युक्त, तीन चौथाई.—रघु० १५१६ 3 त्रिनाम (पु०) कामनायान् अभवान् विष्णु का विशेषण.—पुष्ट (वि०) त्रिभुजाकार (—दः) 1 युवा 2 हृष्येनी 3 एक हाथ परिमाण 4 तट या किनारा.—पुष्टक. त्रिकोण, त्रिभुज,

—पुद्दा ३५॥ का विशेषण, —पुष्पकुम्भ, —पुष्पकम्प जन्मन, राज या गोबर से बनाई हुई तीन देवार्ण, —पुंर 1 तीन नगरों का समूह 2 पृथ्वी, अन्तरिक्ष और भूलोक में मय राक्षस द्वारा बनाये गये सोने, चाँदी और लौहे के ३ नगर (देवताओं की प्रार्थना पर वह तीनो नगर — उनमें रहने वाले राक्षसों समेत शिव जी द्वारा जला दिये गये) —कु० ७५४८, अमर २, मेघ० ५६ भर्तृ० २।१२३, (२) इन नगरों का अधिपति राक्षस अमरकः अरिः, अन्, रहन चिन्म, (पु०) हृष्टः शिव के विशेषण —भर्तृ० २।१२३, रघु० १७।१५, बाहू तीन नगरों का जलाया जाना —कि० ५।१५, (-री) जवल्पुर के निकट एक नगर जो पहले बेरिदिस के राजाओं की राजधानी था 2 एक देश का नाम, —वीर्य (वि०) तीन पोटियों से सम्बन्ध रखने वाला, या तीन पोटियों तक जरा वाला, —अज्ञत, बहु हाथी जिससे भद्र का सावटा रहा हो, —फला तीन फलों (हृष्ट, बड़ेडा और अश्वत्था) का मद्यत, —बलि, —बली, —बलि, —बली म्बो की मणि के ऊपर पड़ने वाले तीन बड़ (त्रा) सौन्दर्य का चिह्न समझे जाते हैं) —शामारो ईश्वरमूर्ति श्मशानात्ताम् —भर्तृ० १।१३, ८।१, तु० कु० १।३०, —भद्रम् स्त्रीमहत्त्वम्, मयून, लीनसंयोग, —भृङ्ग विहोण, —भृङ्गम् तीन लीन —पुष्प या वर्तिमयनमुरोद्योम कश्चिद्विषयम् —मेघ० ३३, भर्तृ० १।१०, —भृङ्ग निमग्निला महल, —भार्ता गया —कु० १।१८ —भृङ्ग विकट पहाड़, —भृङ्ग बृद्ध का एक विशेषण भृङ्गि हिन्दुओं के विदेव बड़ा, विष्णु और गणेश का समस्त रूप कु० २।६, —घण्टि तीन लहरों का द्वार —यामा मणि (तीन पहर वाली आरम्भ और अन्त का आधा आधा पहर इससे एक है) —महापते अण इव कथ दीर्घायामा विद्यामा —मेघ० १०८ कु० ७।२१, रघु० १।३०, विक्रम० ३।२५, —घोषि तीन कारणों (क्रोध, लोभ, और मोह) में होने वाला अभिप्राय, —रात्रम् तीन रातों (तथा दिनों) का मयूर, —रेख, छत्र, —सिग (वि०) तीनों सिगों में प्रवेश अर्थात् विजय (ग.) एक देश जिसे नेत्रम कल्पे ३ (घो) ताता लियो का समष्टि, —लोकम् तीनों माया, ईश मूर्त नाथ तीनों लोकों का स्वामी, इन्द्र का विशेषण रघु० ३।४५ 2 शिव का विशेषण —कु० ५।३० (—) लोको लोको की समाधि, इन्द्र —मयामिद त्रिलोको मणिगि हृशिश्वम्बिनी विकटायाम् —भर्तृ० ३।१५, शा० ४।२२, —अर्ष 1 सामाजिक जीवन के तीन पदार्थ— अर्षात् धर्म, अर्ष ही नाम तु० ५।२३ तीन स्थितियों और, स्थिगता और मृदु अथ स्थान च बुद्धिच चित्रयो नोतिवेदिनाम् —अमर०, —अर्षकम् पहले तीन वर्णों

(बाह्य, शक्ति और वैश्व) का समाहार, —बाह्य (अर्थ०) तीन बार, तीन मंदा, —चिकमः यामना-वतार विष्णु, —चिकः तीनों देवों में व्युत्पन्न बाह्यण, —चिन्म (वि०) तीन प्रकार का, तेहरा, —चिन्मयम्, —चिन्मयम् इन्द्रलोक, स्वर्ग, —चिन्मिष्टस्वैव पति अमरत —रघु० ६।७८, सख (पु०) देवता—वेदिः, —श्री (स्त्री) प्रयाग के निकट त्रिपेयी सयम जहाँ गया यमुना और सरस्वती मिलती हैं, —वेदः तीनों वेदों में विष्णवात् बाह्यण, —बाह्यः यपोध्या का विष्णवात् पूर्व यषी राजा, हरिश्चन्द्र का पिता (विश्वकु बुद्धिमान् बभरिमा और न्याय-नरायण राजा था, परन्तु उसमें यह एक बड़ा दोष था कि वह अपने व्यक्तित्व को बहुत प्रेम करता था। उसने इसी शरीर से स्वर्ग जाने की इच्छा से यज्ञ करना चाहा, फलत उसने अपने कुन्पुत्र बलिष्ठ से यज्ञ कराने की प्रार्थना की, परन्तु जब उन्होंने इस प्रार्थना की स्वीकार न किया तो उसने उनके १०० पुत्रों से प्रार्थना की, परन्तु उन्होंने भी इसके प्रस्ताव को बहिष्कार कर टुकरा दिया। विश्वकु ने उन सबको कायर और नग्नसक कहा, और इसके बदले उन्होंने उसे 'बाह्यकाल बनने' का नाप दे दिया। जब विश्वकु की ऐसी दुर्दशा हुई तो विश्वामित्र ने जिसका परिवार एक दुष्टिष्ठ के समय विश्वकु का आभारग्रस्त हो गया था—उसका यज्ञ समाप्त कराना स्वीकार कर लिया। उसने यज्ञ में देवताओं का आवाहन किया जब देवता यज्ञ में न आये तो विश्वामित्र ने क्रुद्ध हो अपनी शक्ति से विश्वकु को इसी शरीर से ऊपर स्वर्ग में भेजा। विश्वकु ऊपर ही ऊपर उभरा चला गया और आकाशमण्डल से जा टकराया। वहाँ इन्द्र तथा दूसरे देवताओं ने उसे तिर के बल धकेल दिया। तो भी तेजस्वी विश्वामित्र ने नीचे आते हुए विश्वकु को नीच ही में 'विश्वकु वही टहरो' कह कर रोक दिया। फलत भाग्यहीन राजा तिर के बल बड़ी दक्षिणमोलाध में नक्षत्रपुंज के रूप में अटक गया। इसीलिए यह लोकोक्ति (विश्व-इन्द्रविजयान्तर तिष्ठ) श० २ प्रसिद्ध हो गई) 2 यज्ञक पत्नी 3 विल्ली 4 टिड्डा 5 जगन्म, अ. हरिश्चन्द्र का विशेषण, —चिन्म (पु०) विश्वामित्र का विशेषण, —शत (वि०) तीन सौ (सम्) 1 एक सौ तीन 2 तीन सौ, सिन्म 1 सिन्म 2 (विशाल) टिरीट या मुकुट, शिरम् (पु०) एक राक्षस जिसकी राय ने मारा था, —सख्य तिरसुल, अंकः शारिन् (पु०) शिव का विशेषण, —शुक्तिन् (पु०) शिव का विशेषण, —शुद्धः विकट नाम का पहाड़, घण्टिः (स्त्री) तरेमड, —सम्बन्धी दिन के तीन काल अर्थात् प्रातः, मध्याह्न और सायम्, —सम्बन्धम् (अर्थ०) तीनों

संध्याओं के समय,—अक्षय वि०) तिहुतराही,—अक्षयिः
 तिहुतरा,—सप्तम्—अक्ष (वि० व० व०) तीन बार सात
 बरात् २१—सप्तम् तीनों (गुणों) का सप्तम्,—अक्षी
 तीन पवित्र स्थान—अक्षयि काशी, प्रयाग और गया,
 —अक्षयि (स्त्री०) यथा का विशेषण—विशेषण बहुति
 यो यवनप्रतिष्ठायां—अ० अ० ४१६, रघु० १०१६३, कु० अ० १६
 —सौम्य,—सुख्य (वि०) (केतु आदि) तीन बार
 जाता हुआ,—सुख्य (वि०) तीन वर्ष का ।
विश्व (वि०) (स्त्री०—की) [विश्वत् + इट्] 1 तीसवां
 2 तीस से जुड़ा हुआ, उदा० विश्व सत्—एक ही तीस
 3 तीस से युक्त ।
विश्व (वि०) [विश्व + कन्] 1 तीस से युक्त 2 तीस के
 मूल्य का या तीस में खरीदा हुआ ।
विश्वत् (स्त्री०) [प्रबोधयत परिभाषणस्य नि०] तीस,
 —यस्य सुप्रीदय के साथ मिलने वाला कमल ।
विश्वकम् [विश्वत् + कन्] तीस की समष्टि, तं हा
 समाहार ।
विश्व (वि०) [प्रयाणा सध—कन्] 1 तिपुना, सेहरा
 2 तिपुना बनाने वाला 3 तीन प्रतिपत्,—अम्
 1 तिपुना 2 तिराहा 3 रीठ की हूदी का निचला
 भाग, कूले के पास का भाग—वि के स्थूलता—पञ्च
 १११९०, कविचन्द्रित्तिकनिबन्धहार रघु० ६१२६
 4, कन्पे की हूदियों के बीच का भाग 5 तीन
 मराले (चिकना, चिकट, चिमट),—का रस्ती के
 आने जाने के लिए कुर्प पर लगाई हुई ककड़ी की
 गिरी ।
वितय (वि०) (स्त्री०—की) [वनोजयया वयस्य—वि +
 तयत्] तीन भागों वाला, तिपुना, तीन तह का,—यम्
 निपुना, तीन का समूह—अथा विनिश्चयेति वितय
 सत्समागतम्—अ० अ० ३१२९, रघु० ८७८, याज्ञ०
 ३१२६६ ।
विषा (अव्य०) [वि + पाच्] तीन प्रकार से-या तीन आगों
 में, कु० अ० ७४४, अग० १८१९९ ।
विष् (अव्य०) [वि + मुच्] तीसरी बार, तीन बार ।
वृद् (विधा०) वृदा० पर० वृदधति, वृदति, वृदति। फाटना,
 तोड़ना, टुकड़े २ करना, उड़कना, फिसल जाना
 (आलो०)—वृदधयन्वृदधतितीनाक्षरम्—आलो०
 ३१८, ११९६, अथ ते वाष्पान्मृदित इव मुक्तामिपि-
 सर—उत्तर० ११२९ ।
वृदि,—दी (स्त्री०) [वृद् + इन् क्ति, वृदि + डीप्]
 1 फाटना, तोड़ना, फाटना 2 छोटा हिस्सा, अणु
 3 समय का अत्यंत सूक्ष्म अन्तर, १/४ सण या २
 लव 4 सन्देश, अनिश्चितता 5 हानि, नाश 6 छोटी
 इलायची (पीसा) ।
व्री [व्रीन् भवन् एति प्राप्नोति—गुण० साध] 1 तिकड़ी

विक् 2 तीन ब्रह्मिणियों का समाहार—अणु० २१२३१,
 रघु० १३१३७ 3 पासे को विशेष रूप से फेंकना, तीन
 का दौर फेंकना—मेताहुतसर्वस्व मूच्छ० २१८
 4 हिन्दुओं के चार गुणों में दूसरा—वे० 'युष्' ।
व्रीषा (अव्य०) [वि + एषाच्] तिगुनेप से, तीन प्रकार
 से, तीन भागों में—तदेक तत्प्रैषात्प्रयते—अतः,
 (नम) तुभ्य व्रीषा स्वितारयने—रघु० १०१६६ ।
व्री (अव्य०) आ० भावते, पात या प्राण रखा करना, प्रर-
 क्षित रखना, बचाना, प्रतिरक्षा करना (प्राय अपा०
 के साथ) अतःकालि पायत इत्युद्व लक्ष्य सन्धो
 भुवनेषु स्व—रघु० २४५३, अग० २४४०, अणु० ९१
 १३८, मट्टि० ५४५४, १५१२०, परि०, बचाना, परि-
 भाष्यस्य परिप्रायस्य (नाटक) में ।
व्रीषात्कि (वि०) (स्त्री०—की) [विकाल + ठञ्] तीन
 कालों से (मृत, वर्तमान और भविष्यत्) सम्बद्ध ।
व्रीषात्प्य [विकाल + प्यञ्] तीन काल अर्थात्—मृत, वर्त-
 मान तथा भविष्यत् ।
व्रीणिक (वि०) [व्रीणु + ठञ्] तिपुना, सेहरा ।
व्रीण्यम् [व्रीणु + प्यञ्] 1 तिपुनापत्र, तीन घावों या
 गुणों का एकत्र होने का भाग 2 तीन गुणों का समा-
 हार 3 तीन गुणों (मरु, रजस, तमस) की समष्टि
 —व्रीण्योद्भवस्य लोकचरित्र नानागम दृश्यते—मानवि०
 १४४ ।
व्रीपुर [व्रीपुर + अच्] 1 व्रीपुर नाम का देश 2 उस देश
 का निवासी या शासक ।
व्रीषातुर [व्रीषात् + अच्, उच्यम्] लक्षण का विशेषण ।
व्रीषात्कि (वि०) (स्त्री०—की) [व्रीषात् + ठञ्]
 1 तीन मास पुराना 2 तीन महीने तक ठहरने वाला,
 या हर तीन महीने में आने वाला 3 निमाही ।
व्रीषात्किम् [व्रीषात् + ठञ्] (वर्णित) तीन ज्ञान राशियों
 के द्वारा चौथी अज्ञान राशि मिटा देने की रीति ।
व्रीषोक्तम् [व्रीषोकी + प्यञ्] तीन व्रीषों का समाहार
 —रघु० १०१५३ ।
व्रीषोक्त (वि०) (स्त्री०—की) [व्रीषोक्त + ठञ्] पहले
 तीन वर्षों से सबंध रखने वाला ।
व्रीषोक्तम् (वि०) [व्रीषोक्त + अण्] व्रीषोक्त या व्रीषोक्त
 से सम्बन्ध रखने वाला ।—रघु० अ० ३३५ ।
व्रीषोक्तम् [व्रीषोक्त + अण्] 1 तीनों वेद 2 तीनों वेदों
 का अध्ययन 3 तीन शास्त्र—अथ तीनों वेदों में विष्वात
 ब्राह्मण—अग० ९१०० ।
व्रीषोक्त, व्रीषोक्त्येष [व्रीषोक्त्य + अण्, उक् वा] देवता ।
व्रीषोक्त्य [व्रीषोक्त्य + अण्] व्रीषोक्त के पुत्र हरिश्चन्द्र का
 विशेषण ।
व्रीषोक्तम् [व्रीषोक्त + अण्] नाटक का एक भेद—सप्तार्ष्ट
 नवपञ्चाङ्ग विष्णुमानुषसधयम्, व्रीषोक्त नाम तत्प्राह

प्रत्येक सविभूषणम्—सा० व० ५४०, उदा० कालिदास का विक्रमोपनी ।

भोषिः (स्त्री०) [वृत् + इ] भोष, वच् । सम०—हस्तः पयो ।

भोषम् [भू + उभ] पशुओं को हकने की छडी ।

त्वञ् (स्त्री० पर०) त्वञ्जति, त्वञ्ज्) कतरना, बबकल उतारना, छीलना ।

त्वङ्कुरः [त्वम् + कृ + अच्] निरादर सूचक 'तु' शब्द से संबोधन करना ।

त्वङ्म् (स्त्री० पर०) त्वङ्कृति) 1 जाना, हिलना-भुलना 2 कदना, सरपट दीडना 3 कापना ।

त्वञ् (स्त्री०) [त्वच् + विभ्] 1 बाल (मनुष्य, सौंप आदि की) 2 (सौ, हरिण आदि का) चमड़ा—रघु० ३।३१ 3 छाल, बत्कल—कु० १।७, रघु० २।३७, १७।१२४ इकना, आवरण 5 स्पर्शाना । सम०—अङ्कुरः रोमाच होना,—इन्द्रियम् स्पर्शद्रिय,—कृष्णः फोडा,—गन्धः सन्धरा,—श्लेषः चमड़ी में धाव, खरोच, रगड,—अम् 1. शंघिर 2. बाल (शरीर पर के),—तरङ्गक. शूर्ती,—अम् कवच, त्वक्त्र चापकचे बरम्—भट्टि० १४।४,—शौच. चन्दरीग, कोड,—वाक्छम् चमड़ी का कमान,—गुण्य रोमाच,—सारः (त्वञ्चि सार) बास, त्वक्सारः प्रपरितुरणलक्ष्यगीति—सि० ४।६१,—सुगन्ध सतरा ।

त्वञ् [त्वच् + टाप्] दे० त्वच् ।

त्ववीथ (वि०) [युष्मद् + छ, त्वन् आवेश] तैरा, तुम्हारा—रघु० ३।५० ।

त्वद् [युष्मद् + वद् आवेश सनाते] (मध्यम पुल्य का रूप जो कि बहुधा समास में प्रथम पद के रूप में पाया जाता है—उदा० त्वदयोः, त्वत्साद्भवम्—आदि ।

त्वङ्घ्रि (वि०) [त्व इव विद्या प्रकारो यस्य] तेरी तरह, तुम्हारी भाति ।

त्वर् (स्त्री०) आ० त्वरते, त्वरित्) शीघ्रता करना, जल्दी करना, वेग से चलना, फूर्ती से कार्य करना—भवान्मुहूर्त्तं त्वरताम्—भालवि० २, नाननेतुमबला स त्वरं—रघु० ११।३८,—प्रेर० त्वरयति—अन्दा कराना,

शीघ्रता करना, जागे बढ़ने के लिए प्रेरित करना ।

त्वरा, त्वरिः (स्त्री०) [त्वर् + अद् + टाप्, त्वर् + इन्] शीघ्रता, शिघ्रता, वेग—वीत्युक्थेन कृतत्वा सहृष्या भ्यावर्तमाना ह्यिया—रत्ना० १।२ ।

त्वरित् (वि०) [त्वर् + क्त] शीघ्रगामी, फूर्तीला, वेगवान्,—सम् शीघ्रता करना, जल्दी करना (अर्थ०) जल्दी से, तेजी से, वेग से, शीघ्रता से ।

त्वष्टु (पु०) [त्वञ् + तुच्] 1 बड़ई, निर्माता, कारीगर 2 देवताओं का शिल्पी विश्वकर्मा [पौराणिक कथा के अनुसार त्वष्टु अग्निदेवता माना जाता है, उसके विश्विरा नाम का पुत्र तथा सज्ञा नाम की पुत्री थी । सज्ञा का विवाह सूर्य के साथ हो गया—परन्तु सज्ञा अपने पति के दाएण टेक को सहन न कर सकी, फलत त्वष्टा ने सूर्य को तैराव पर रख कर उसके प्रभा-मंडल को सावधानों से काट-छाट कर परिष्कृत कर दिया (तु० रघु० ६।३२—आरोप्य चक्रमिमृण्यतेजास्त्वष्टुं यत्नोत्तिलसितो विभाति—उस बची हुई कतरन से विष्णु का चक्र तथा शिव जी का त्रिशूल एव देवताओं के अंग शस्त्र बनाये गये) ।

त्वष्टुश्च, त्वष्टुश्च (स्त्री०—श्री) [त्वमिभ् दुश्चते—युष्मद् + दुश् + विभन्, कच् वा, स्विधा जीप्] तुझ सतीक्षा, तेरी तरह का—मेष० ६९ ।

त्विव् (स्त्री०) उभ० त्वेवति—ते) चमकाना, जगमगाना, दमकना, दहकना ।

त्विव् (स्त्री०) [त्विभ् + विभ्] 1 प्रकाश, प्रभा, दीप्ति, चमक-दमक चयस्त्विवामित्यवधारित पुरा—सि० १।३, ९।१३, रघु० ४।७५ रत्ना० १।१८ 2 मोन्दर्भ 3 अवि-कार, भार 4 अभिलाष, इच्छा 5 प्रया, प्रचलन 6 हिंसा 7 वक्तृता । सम०—ईशः (त्विषा पति) सूर्य ।

त्विविः [त्विप् + इन्] प्रकाश की किरण ।

त्वस्तः [त्वर् + उ] 1 रंगने वाला जानवर 2 तलवार या किसी अन्य हथियार की मूठ—सुप्रसहृषिमलकलौत-त्सकणा सहृगेन—शेषी० ३, त्वस्तदेवायपवजिताङ्ग—कि० १७।५८, रघु० १८।४८ ।

वः [वृद् + इ] पहाड,—अम् 1 रक्षा, प्ररक्षा 2 जास, भय 3 मायलिकता ।

वृद् (तुदा० पर०—वृद्धति) 1 इकना, पर्दा डालना 2 छिपाना गुप्त रखना ।

वृद्धम् [वृद् + ल्यट्] इकना, लपेटना ।

वृद्धारः [वृत् + कृ + अच्] 'वृत्' ध्वनि जो बूकने की

क्रिया करते समय होती है ।

वृद्धं (स्त्री० पर०) वृद्धति) षोड षड्विंशाना, अति षड्विंशाना । वृद्धारः, वृद्धारम् [वृत् + कृ + अच्, क्त वा] 'वृत्' की ध्वनि जो बूकने की क्रिया करते समय होती है ।

वृद्धं (अर्थ०) किसी सगीत-वाद्य-यन्त्र की अनुकरणात्मक ध्वनि ।

ब (वि०) [बै—दो या दा+क] (प्रायः समासगत प्रयोग) देने वाला, स्वीकार करने वाला, उत्पादन करने वाला, पैदा करने वाला, काट कर फेंकने वाला, नष्ट करने वाला, दूर करने वाला—घषा बन्द, अन्नद, गरद, नोयद, अन्नद आदि. - ब. 1 उपहार, दान 2 गहा, - बम् पली, - बा 1 गर्मी 2 परनात्ताप ।

बम् [बम्+पर० -दधाति, दष्ट-इच्छा० विदधति] काटना, ठक मारना—भट्टि० १५।६, १६।१९, मणालिका अबसन् का० ३२, का लिया, कुतर लिया, उष - , बटनी, अचार आदि भाना मूलबन्धोपदेश्य भूदक्षते-विट्ठान्, सन् - 1 काटना, ठक मारना सट्टाचरपल्लवा अमक ३० 2 चिपटना, सलन रहना, बा चिपके रहना उज्जा सट्टाचरणपल्लवा ग० ७।११, ११।८, सट्टाचरपल्लवानिनाम्बेन् र्णु० १६।६५, ४८ ।

बझ [बझ+घञ्] 1 काटना, ठक मारना - मूये विघेह् प्रति निर्देयवन्दयम् गा० १० 2 साप या उक 3 काटना, काटा हुआ स्थान छेदी दपाय दाही वा -मालवि० ६।८ 4 काटना, फाटना 5 डाम, एक प्रकार की बड़ी मक्खी र्णु० २।५, मनु० १।६०, याज्ञ० ३।२१५ 6 वृद्धि, दीप, कमी (मणि आदि की) 7 दान 8 तीक्ष्णपत्र 9 बच 10 जोड़, जय । मम० भीष. भैसा ।

बझक [बझ+क] 1 कुत्ता 2 बड़ी मक्खी 3 मक्खी ।
बझमम् [बझ+मन्] 1 काटने या ठक मारने की क्रिया - उदा० दष्टावध दमने काम्ना दासीकुर्वन्ति योधित -सा० ८० 2 कवच, जिह्वबन्धन - नि० १।७२१ ।

बझित (वि०) [बझ+क] 1 काटा हुआ 2 घृतकवच, कवच से मुक्तविकृत ।

बझिन् (पु०) [बझ+णिन्] दे० 'बझक' ।

बझी [बझ+ङीप्] छाटा उस या बन्माखी ।

बझ्दा [बझ+ङ्+दाप्] बजा दात, हाथी का दात, बिबीना दात, प्रसङ्ग भण्डिमुदरेमकरवकनददाहकुरान् - अर्त्त० २।५, र्णु० २।६६, दृष्टामय मृगणाभिमिपतय इव श्वकतमानाकिलोपा, नात्राभङ्ग सत्ते नुवर नृपतयस्त्राष्ट्रा सावभ्रोभा—मुद्रा० ३।२२ । मम० अक्षर, -आपुष. जगली सूत्र, - कराल (वि०) भयकर दानी वाला, - बिष एक प्रकार का साँप ।

बझ्दाल (वि०) [बझ्दा+ल] बड़े बड़े दाती वाला ।

बझ्दिन् (पु०) [बझ्दा+दिन्] 1 जगली सूत्र 2 साँप 3 लकड़बग्गा ।

बझ (वि०) [बझ+अच्] योग्य, सलम, विशेषज्ञ, चतुर, कुशल, -नाटके च बझा बयम्—रत्ना० १।६, मेरी स्थिते योग्यरि दोहवसे—कु० १।२, र्णु० १।२।११ 2 उचित

उपयुक्त 3 तैयार, खबरदार सावधान, उचित—याज्ञ० १।७६ 4 बरा ईमानदार, -अ 1 विश्वास्त प्रजापति का नाम [दक्ष प्रजापति ब्रह्मा के उन दस पुत्रों में से एक का जो उसके दाहिने अंगुठे से पैदा हुआ था । मानव समाज के पितृवरक कुलो का वह प्रधान था, कहते हैं उनके बहुत ही कन्याएँ थीं, जिनमें से २७ ती गवशो के रूप में चन्द्रमा की पत्नी थीं और १३ कश्यप की पत्नियाँ थीं । एक बार दक्ष ने एक महायज्ञ का आयोजन किया, परन्तु उसने उसने अपनी पुत्री सती को आमन्त्रण किया और न अपने जामाता शिव को बुलाया । फिर भी सती यज्ञ में गई, परन्तु वहाँ अपमानित होने के कारण वह अलती आग में कूद कर भस्म हो गई । जब शिव ने यह सुना तो वह बड़े उत्तेजित हाकर उसके यज्ञ में गए, और यज्ञ का पूर्णतः विनाश कर दिया । कहते हैं, कि फिर भी शिव ने दक्ष (जिसने मृग का रूप धारण कर लिया था) का पीछा किया और उसका सिर काट डाला । बाद में शिव ने उसे पुनः जिना दिया । तब से लेकर दक्ष देवताओं की प्रभुता स्वीकार करने लगा । दूसरे मतानुसार जब शिव बहुत उत्तेजित हुए तो उन्होंने अपनी जटा में से एक बाल तोड़ा और बलपूर्वक उसे जमीन पर पटक दिया, वहाँ में तुलने एक राक्षस निकला और शिव के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा । उसे दक्ष के यज्ञ में जाकर उसके यज्ञ की नष्ट करने की कहा गया तब वह बलवान् राक्षस कुछ गधों को (उपवेशों को) गाय लेकर यज्ञ में गया और वहाँ उपस्थित देवों तथा पुराहितों का काम तमाम कर दिया । एक और मतानुसार दक्ष का सिर स्वयं शिव ने कटा था] 2 मृगा 3 आग 4 शिव का बेल 5 बहुत सौ प्रेमिकाओं में आसक्त प्रेमी 6 शिव का विशेषध 7 सामाजिक यक्ति, योग्यता, धारिता । मम० -अध्वरव्यसक - कमुधमिन् (पु०) शिव के विशेषध, - कन्या, - जा, -तपसा 1 दुर्गा का विशेषध 2 अश्विनी आदि नक्षत्र, - सुन. देवता ।

बझाम्य [बझ+आय्] 1 गिद्ध 2 गण्ड का विशेषध ।
बझिण (वि०) [बझ+ङिन्] 1 बोंध, कुशल, निपुण, सधाम, चतुर 2 दायाँ, दाहिना (विप० बायाँ) 3 दक्षिण पाश्वर्क में स्थित 4 दक्षिण, दक्षिणी जैसा कि दक्षिणवायु दक्षिणदिक् में 5 दक्षिण में स्थित 6 निष्कपट, बरा, ईमानदार, निष्पक्ष 7 सुहावना मुसकर, साँचकर 8 शिष्ट, नागर 9 आजानुबर्ती, बखर्ती 10 पराश्रित, - अ 1 दायाँ हाथ या बाजू 2 शिष्ट ध्याक्त, एसा प्रेमी (नायक) जिसका मन अन्य नायिका द्वारा हर लिया गया है परन्तु फिर भी

बहु केवल एक ही प्रेसि में अनुक्त ह ३ शिव या विष्णु का विशेषण । सम०—अग्निः दक्षिण की ओर स्थापित अग्नि, इसकी 'अग्नीहोत्रायणम्' भी कहते हैं,—अध (वि०) दक्षिण की ओर सेकत करता हुआ,—अधक दक्षिणी पहाड़ अर्थात् मलयपर्वत,—अग्निमुख (वि०) दक्षिण की ओर मुँह किये हुए, दक्षिणोन्मुख,—अधमन् भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर सूर्य की प्रगति, बहु आधानर्ष जब कि सूर्य उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता है, शरद की दक्षिणी अवन सीमा,—अर्ध १ दायाँ हाथ २ दाहिना या दक्षिणी पाद,—आधार (वि०) १ ईमानदार, आचरणशील २ पावन अनुष्ठान के अनुसार अर्पित का उपासक,—आशा दक्षिण दिशा, अर्थात् यम का विशेषण, इतर (वि०) १ बायीं (हाथ या पैर) कु० ५११९ २ उत्तरी (—रा) उत्तर दिशा,—उत्तर (वि०) दक्षिण उत्तरी की ओर मुँहा हुआ,—बुधम् मध्यरात्रि रेखा,—पश्चात् (अव्य०) दक्षिण पश्चिम की ओर,—पश्चिम (वि०) दक्षिण पश्चिमी, (—सा) दक्षिण पश्चिम दिशा,—पूर्व,—प्राग् (वि०) दक्षिण पूर्वी,—पूर्व,—प्रायो दक्षिण पूर्व दिशा,—सधुः दक्षिणी सागर,—स्य सारथि ।

दक्षिणत (अव्य०) [दक्षिण + तसिन्] १ दाईं ओर से या दक्षिण दिशा से २ दाईं ओर की ३ दक्षिण दिशा की ओर (सम्ब० के साथ) ।

दक्षिणा (अव्य०) [दक्षिण + आच्] १ दाईं ओर, दक्षिण की ओर २ दक्षिण दिशा में (अपा० के साथ) [दक्षिण + टाप्]—या १ (यज्ञादिक धार्मिक क्रमों की पूर्णाहुति पर) ब्राह्मणों की उपहार २ दक्षिणा (औ प्रजापति की पुत्री तथा मूर्तरूप यज्ञ की पत्नी समझी जाती हैं—सती सुदक्षिणेत्यासीदन्व्यस्ये दक्षिणा—रघु० १। ३१ ३ भेट, उपहार, दान, धनक, पार्श्वधर्मिक—प्राण-दक्षिणा, गृहदक्षिणा आदि ४ अच्छी दुधार गाय, बहु प्रसवी माय ५ दक्षिण दिशा ६ दक्षिण देश अर्थात् दक्षिणभारत । सम०—अर्ध (वि०) उपहार प्राप्त करने के योग्य या अधिकारी,—आवर्त (वि०) १ दाईं ओर मुँहा हुआ २ दक्षिण की ओर मुँहा हुआ,—काल-दक्षिणा प्राप्त करने का समय,—यम. भारत का दक्षिणी प्रदेश—अस्मि दक्षिणायमे विदमेषु पधपुर नाम नगरम्—मा० १,—अधक (वि०) दक्षिणोन्मुख ।

दक्षिणाहि (अव्य०) [दक्षिण + आहि] १ दूर दाईं ओर २ दूर दक्षिण में, के दक्षिण की ओर (अपा० के साथ) दक्षिणाहि ब्राम्हत्—सिद्ध० ।

दक्षिणीध, **दक्षिण्य** (वि०) [दक्षिणा + मर्हति—दक्षिणा- + छ, यत् वा] यज्ञीय उपहार को ग्रहण करने के योग्य या अधिकारी जैसा कि ब्राह्मण ।

दक्षिणेन (अव्य०) [दक्षिण + एत्प्] को दाईं ओर (कर्म०

या सम्ब० के साथ)—दक्षिणेन ब्रह्मवाटिकामाहाय इव श्रूयते—श० १, दक्षिणेन ब्राम्हस्य ।

दग्ध (पु० ण० क्त०) [दह् + क्त] १ जला हुआ, आग में भस्म हुआ २ (आल०) शोकसतप, सताया हुआ, हुआ ३ दुःखिग्रस्त ४ अजुम ५ बुद्ध, नीरस, स्वादहीन ६ दुर्वृत, अधिष्ठान, दुष्ट ('दुर्वचन' बुद्धक शब्द, समास का प्रथम पद) नाचापि मे दग्धदेह पतति—उत्तर० ४, अस्व दग्धोदरस्याथ क कुवात्पातक महत्—हि० १।६८, इमी प्रकार 'दग्धजठरस्याथ' भू० ३१८ ।

दक्षिणा [दग्ध + क्त + टाप्, इत्वम्] मूर्चरे, भूने हुए चावल ।

दहन (वि०) (स्त्री०—ञ्जी) ऊँचाई, गहराई या पहुँच की भावना को प्रकट करने के लिए सजा शब्दों के साथ लगने वाला प्रत्यय—उत्कथनेन पयोमतीर्ष—का० ३१०, कौशालव्यतिकरपुष्कलपद्म (मार्ग)—मा० ३।१७, ५।१४, याज्ञ० २।१०८ ।

दग्ध (चुरा० उच्य० दग्धयति—ने, दक्षिण) सजा देना, जुमाना करना, मरम्मत करना, (१६ विकर्मक धातुओं में से एक धातु)—तान् महसू च ददध्वेत—मनु० १।२३४, ८।१२३, याज्ञ० २।२६९, सिन्धुयै दग्धयती दग्धयान्—रघु० १।२५ ।

दध—दध् [दध् + अच्] १ मण्टिका, डडा, छड़ी, गदा, मूसर, सोटा—धनुतु निरस्यकाण्ड वयदध् दध्वे भूज—मा० ५।३१, काण्डदध् २ राजचिह्न, राजसत्ता का प्रतीकरूप दध्—आलदध्—मा० ५।८ ३ उपनयन संस्कार के समय द्विज को दिया गया डड्डा—नु० मनु० २।४५-४७ ४ तपासी का डड्डा ५ हाथी की सूड ६ (कमल आदि का) डड्डल या धुल (अनरी आदि की) मूड—ब्रह्मण्डच्छन्ददध्—दश०१ (आरभिक श्लोक), राज्य स्वहस्तधृतदध्विवातपधम्—श० ५।६, कु० ७।८९, इसी प्रकार 'कमल दध, आदि ७ पतवार, डाड ८ रई का डडा ९ जुमाना मनु० ८।३४१, १।२२९, याज्ञ० २।२३७ १० लाइन, शारीरिक दध्, सामान्य दध्—यथापराधदग्धानाम्—रघु० १।६, एक राजाध्यकारिण्यु तीक्ष्णदग्धो राजा—मृदा० १, दध् दध्वेषु पातयेत्—मनु० ८।१२६, कृतदग्ध स्वच राजा लेभे धूड सता यतिम्—रघु० १५।५३ ११ कैं १२ आक्रमण, हमला, हिंसा, दध्—वर्णित चार उपायों में से अन्तिम—दे० 'उपाय' मनु० ७।१०९, सि० २।५४ १३ सेना—तस्य दग्धवती दध् स्वदेहान् व्य-शिष्यत—रघु० १७।६२, मनु० ७।६५, १।२१४, कि० २।१२ १४ सैन्यव्यवस्था का एक रूप, गृह १५ वजीकरण, नियंत्रण, प्रतिबन्ध—वायव्यीज्य मनोदध् कायदध्वस्तयेव च, यस्त्येति निहिता बुद्धी विदग्धीति स

उष्णते—मनु० १२।१० 16 चार हाथ के परिमाण का नाप 17 लिंग 18 घमड 19 शरीर 20 यम का विशेषण 21 विष्णु का नाम 22 गिव का नाम 23 मृग का सेवक 24 चोडा (अनिम पाँच अर्थों में 'पुलिनम' है) । सम०—अस्तिन् 1 (भक्ति के बाह्य-सूचक) दण्डा और मृगछाळा 2 (आल०) पामण्ड, छल, -अधिय मुख्य दण्डाधिकरण, अनीकम् सेना की एक टुकड़ी, -नक हूनवनी दण्डानोक्तैर्विदमंयते ध्रुवम् मालि० ५।२, -अधुपन्थाय 'न्याय' के अन्तर्गत दे०, -अर्ह (वि०) दण्ड दिये जाने के योग्य, उच्य हा धामी, -अलसिका द्वैजा, -आज्ञा दण्डित कर देने के लिए न्यायाधीश का नायक, -आहतम् मट्टा, छाछ, -कर्मन् (न०) दण्ड देना, ताड़ना करना, -काक, -काही कीवा, -काण्ड लकड़ी का दण्ड या सोटा, -कह्लम् नन्यायो का दण्ड प्रत्यय करना, तीर्थयात्री का दण्ड अना, गा-रु हो जाना, छवन्त् बरानन रखने का क्रमण, -दण्डा एक प्रकार का डोल हास ऋजु-परिग्रह न चर्म के कारण बना हुआ सेवक, -देव-कुलम् न्यायप्रत्यय, -धर, -धार (वि०) 1 दण्डा रखने वाला, दण्ड-धारी 2 दण्ड देने वाला, ताड़ना करने वाला—उत्तर० २।१०, (-र) 1 राजा -यमनृप मन्वदण्डप्रशयम् रघु० २।३ 2 यम 3 न्यायाधीश, सर्वोच्च दण्डाधिकरण, -नायक 1 न्यायाधीश, पुलिस का मुख्य अधिकारी, दण्डाधिकरण 2 संत का मुनिया, सेनापति, नीति (स्त्री०) 1 न्याय प्रशासन, न्याय-करण 2 नागरिक तथा सैनिक प्रशमन—वद्वति, राध्वनामनादिनि, राजवचन रघु० १।८।४६ नेनु (पु०) गजा, -व गजा पाशुल दन्धाम, इारपाल, -पानि यम का विशेषण, -पत 1 उच्ये का गिरना 2 दण्ड देना, शासनम् दण्ड देना, ताड़ना करना -पाकध्वम् 1 सप्रहार, प्रयात 2 कठोर तथा दारुण दण्ड देना—पाल, -पाकम् 1 मुख्य दण्डाधिकरण 2 इारपाल, उषोदिग्न, -पोष्य मूठदार चलनी, -प्रणाम् 1 शरीर, बिना मुकामे नमस्कार करना (दण्डे को भानि सीधे खड़े रह कर) 2 मूमि पर लेट कर प्रणाम करना, -पालयि, हाथी, -अङ्ग दण्डाज्ञा पर अमल न करना, -भृत् (पु०) 1 कुम्हार 2 यम का विशेषण, भ्रम (म) व 1 दण्डधारी 2 दण्डधारी सन्यासी, -भार्य गजभार्य, मूक्यभार्य, -भाजा 1 बरात का जलूस 2 युद्ध के लिए कूस, दिग्विजय के लिए प्रस्थान, -भार्य 1 यम का विशेषण 2 अवस्थ मुनि की उपाधि 3 दिन, -बाविन्, -बासिन् इारपाल सनारी, पहरेदार, -बासिन् (पु०) पुलिस अधिकारी, -धिधि 1 दण्ड देने का नियम 2 दण्डविधान, -विकम्भः मथानी की रस्ती बाणने का लबा, -व्यूह,

एक प्रकार की व्यूह-रचना जिसमें सैनिक पात २ कतारों में खड़े किये जाते हैं, -आस्त्रम् दण्ड निर्णय का शास्त्र, दण्डविधान, -हस्तः 1 इारपाल, पहरेदार, सतरी 2 यम का विशेषण ।

दण्डकः [दण्ड + कन्] 1 छड़ी, दण्डा आदि 2 पङ्क्ति, कतार 3 एक छद्म—दे० परिशिष्ट, -कः, -का, -कम् दण्डि में एक विख्यात प्रदेश जो नर्मदा और गोदावरी के बीच में स्थित है (यह एक बड़ा प्रदेश है, कहते हैं राम के समय यहाँ बङ्गल था) —प्राप्तानि द्वाभ्यान्वि दण्डकेवपि—रघु० १।४।२५, कि नाम दण्डकेयम्—उत्तर० २, ननामोप्याया पुनरुपगमो दण्डकाया बने थ—उत्तर० २।१३-१५ ।

दण्डनम् [दण्ड + न्युट्] दण्ड देना, ताड़ना करना, धूमना करना ।

दण्डादधि (अभ्य०) [दण्डेदध दण्डेदध प्रहृत्य प्रवृत्ता युद्धम्—इष्, द्वित्, पूर्वपददीर्घ] लाठीयो की लाठी, बहू मारपीट जिसमें रौन्ने और से लाठी चलती हो, दण्डो की सोटी की लाठी ।

दण्डार [दण्ड + ऋ + अण्] 1 गाडी 2 कुम्हार का बाक 3 बंधा, नाव 4 मदमत्त हाथी ।

दण्डिक [दण्ड + टन] दण्डधारी, लकड़ीवरदार ।

दण्डिका [दण्डिक + टाप्] 1 लकड़ी 2 पङ्क्ति, कतार, धेकी 3 मोतियों की लड़ी, हार 4 रस्ती ।

दण्डिन् (पु०) [दण्ड + डनि] 1 चौपे आधम में स्थित बाह्यण, सन्यासी 2 इारपाल, 'इयोदीवान 3 डीठ चलाने वाला 4 जैन सन्यासी 5 यम का विशेषण 6 राजा 7 दण्डकुमार बरित और काव्यादर्श का रचयिता, दण्डी कवि—जाते जगति कामीके कवित्स्थ-मिधाऽअकत्, कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्विति दण्डिनि—उद्भूट ।

दत् (पु०) [सर्वनाम स्थान को छोड़ कर सर्वत्र 'दत्त' के स्थान में 'दत्' आदेश विकल्प से] दत्त । सम०—द्वः (दण्डव) होट्ट, ओष्ठ ।

दत्त (म० क० कृ०) [दा + क्त] 1 दिया हुआ, प्रदत्त, प्रस्तुत किया हुआ 2 सीपा हुआ, वितरित, समर्पित 3 रक्सा हुआ, फैलाया हुआ—दे० 'दा', -क्त 1 हिन्दू धर्मशास्त्र में बणिता १२ प्रकार के पुत्रों में से एक ('दत्तित्त' भी कहते हैं)—माता पिता वा दद्याता यमद्वि पुत्रमापति, सदृश प्रीतिसंयुक्त स ज्ञेयो दत्तित्त सुत 1 मनु० १।१।६८ 2 वैश्यों के नामों के साथ लगाने वाली उपाधि तु० 'गुप्त' के अन्तर्गत उद्बरण से 3 अग्नि और अन्नभूया का पुत्र—दे० 'दत्तामेय' भी०, -स्तम् उपहार, दान । सम०—अन्यकर्मन्—अप्रधानिकम् वी हुई वस्तु को न देना, वा दान की हुई वस्तु को वापिस लेना, हिन्दू धर्मशास्त्र में बनिता १८ स्वाधि-

कारों में से एक—अवधान (वि०) साधवान,—आवेधः एक ऋषि, अथि और जनपद का पुत्र, जो ब्रह्मा विष्णु और महेश का अवतार माना जाता है,—आवर (वि०) 1 आवर प्रदर्शित करने वाला, सम्मानपूर्वक 2 सम्मान प्राप्त,—आका दुर्लभित विषयों वहेज दिया गया है 1,—हस्त (वि०) जिसने दूसरे की सहायता के लिए हाथ बढ़ाया है, हाथ का सहारा पाये हुए —अम्भुना दत्ताहस्ता—मेघ० ६०, अम्भु की भूजा पर टेक लगाये हुए—नामकपेधवरदत्ताहस्ता—रघु० ७।१७, (आल०) साहाय्यवान्, समर्थित, साहाय्यित, सहायता-प्राप्त—द्विनेत्य दत्ताहस्ताबलम्—रत्ना० १।८, वारायण सेव इथाक्रया सुचिरत्वमथर्वैतहस्ता करोति—वेणी० २।२१।

बलक [दत्त+कृन्] वीर लिया हुआ पुत्र—याज्ञ० २। १३०, दे० 'दत्त' ऊपर ।

बद्ध (भ्या० आ० दधने) देता, प्रदान करता ।

बद्ध (वि०) [दा०+] श [देने वाला, प्रदान करने वाला ।

बधन्म् [दद्+भृष्ट] उपहार, दान ।

बध् (भ्या० आ० दधन्) 1 पकड़ना 2 धारण करना, पास रखना 3 उपहार देना ।

दधि (नपु०) [दध्+दन्] 1 अना हुआ दूध, दही,—धीर दधिभावेन पणिगमने—शारी० दध्पोहन भादि 2 तार-पीन 3 वस्त्र । सम०—अधकम्,—अधकम् दही मिला हुआ भात,—उत्तरम्,—उत्तरकम्,—अम्—दही की मलाई, तोड़,—अद्,—अधक, जमे हुए दूध का सागर,—कृषिका जमे हुए और उबले हुए दूध का मिश्रण,—आर रई, जम् ताजा मक्खन,—कलः कंच,—मध्वः, धारि (नपु०) दही का तोड़,—मन्थनम् दही का मथना,—शोष वन्दर,—सक्तु (पु० ब० व०) दही मिला हुआ सक्तु,—सारः,—स्नेहः ताजा मक्खन,—स्वेद अधारिडका दही ।

दधिवध् [दधि+स्था+] कृप्यो०] कंच, कपित्थ ।

दधीवः (पु०) एक विक्रान्त ऋषि, जिसने अपने शरीर की हड्डियों देवताओं को दे दी थी और स्वयं बरने के लिए उद्यत हो गया था । इन हड्डियों से देवताओं के शिल्पी ने एक बज्र बनाया और इन्द्र ने इसी बज्र के द्वारा बुध तथा अश्विन्य राक्षसों को परास्त किया । सम०—अस्थि (नपु०) 1 इन्द्र का बज्र 2 हीरा ।

दधुः (स्त्री०) दस की एक कन्या जो कल्प्यो को ब्याही गई थी । यही दानवों की माता थी । सम०—अः,—पुत्रः,—सम्वहः,—सुनु, एक राक्षस, 'अरि'—'द्विष्' (पु०) देवता ।

दन्त [दन्+तन्] 1 दात हाथी का दात, विषदन् (नीप या अन्य विषैने जन्तुओं का) ।—बदसि यदि किंचदसि दन्तार्थिकोमृदी हृदति दरविमिरमतिचोरम्

—वीर०-१०, कर्णवत्, वराह' भादि 2 हाथी का दात, बबबत 'पांचालिका—मा० १०।५ 3 दात की शोक 4 पर्वत की चोटी 5. अनासुक्, पर्णवाला । सम०—अधम् दंत की शोक,—अधरं दंतों के बीच का स्थान,—अधुव दंतों का निकलना,—अनुकलिक—अस्थि (पु०) को अपने दंतों को अधक की भांति प्रयुक्त करते हैं, (इसने वाले धान्य को अपने दंतों के बीच में रखकर पीछने वाले), एक प्रकार के साथ सत्यासी, तु० मनु० ६।१७,—अध्वेय नीवू का वृक्ष,—आर हाथीदात का काव करने वाला कलाकार,—आधम् दंतों—अध्वेय-अर्थात्,—दधिम् (वि०) दंतों को क्षति पहुँचाने वाला, दंतों को क्षारण करने वाला,—अध्वे दंतों का किच-किचाना, दंत पीछन, आल दंतों का टीलापन,—अध्व होत,—वारवाररुवारपीकृतकृतो दन्तच्छदान् पीबन्—मत्० १।५३, अतु० ५।१२,—जात (वि०) (अध्व बन्धा) जिसके दंत निकल जाये ही, दंत निकलने का समय,—अध्वम् दंत की जड़—आधनम् 1. दंतों को पीना, साफ करना 2 दंतों (—कः) बंद का वृक्ष, मोलविरी का पेड़, धन्वम् एक प्रकार का कर्णमिषण—रघु० ६।१७, कु० ७।२३, (प्राय कदाम्बरी में प्रयुक्त) ।—अधकम् 1 कान का आभूषण 2 कुन्द फूल,—अधिका 1 कान का आभूषण—सि० १।६०—2 कुन्द,—अधकम् 1 दंतों का पीना 2 दंतों का साफ करना,—अधः दंतों का गिरना,—पाली 1 दंत की शोक 2 मनुष्य,—अधुवम् 1 कुन्द फूल 2 कतक फल, निर्मलो,—अध्वेयसम् दंतों का पीना,—आय हाथी के तिर का बनना भाग (जहाँ दात बाहर निकले होते हैं) ।—अधम् दंतों का मेल,—आस,—अधुवम्—अधकम् मसूदा, सूजीवा (ब० व०) दन्व्य वर्ण अर्थात् लृ व् लृ व् लृ व् लृ व् और स्,—रोग दोग की पीडा,—अध्वम्—अध्व (नपु०) होठ तुला यदारोहति दन्तवाहता—कु० ५।२५, सि० १०।८६,—धीवः,—धीवः,—धीवः,—धीवः अनार का पेड़,—धीवा 1 एक प्रकार का बाबा, सारपी 2 दंत कटकटाना—दन्तवीणां वाद्यम्—पथ० १,—बैरभं वाद्यसहित के द्वारा दंतों का टूटना,—अध्वसम् दंत का टूटना—अध (वि०) सट्टा, बरपरा (—अ) नीवू का पेड़,—अध्वरं दंतों के ऊपर मेल की पपटी, आध दंतों पर लगाने का दन्तमज्ज, दन्तशोभन मिस्सी,—आल,—अध्व दंत की पीडा,—अध्वेयि (स्त्री०) दंत कुरेकनी,—अध्वे मसूदों की सूजन, अध्वे दंतों का लज्जना,—अध्वे दंतों में (ठंडा पानी) लगना,—अध्वे नीवू का पेड़ ।

दन्तक [दन्त+कृन्] 1 चोटी, सिंघर 2 मूँटी, पलहण्यो । अध्वेयसि (अध्वे०) [अध्वेय दन्तवत् प्रहृत्य प्रयुक्त युद्धम्

समासात्: इन्, पूर्वपदोच्। ऐसी सजाई विनये एक
कुरारे को दाँतो से काटा बाव ।

कलाकल, इलित् (पु०) [अलिपायिनी दनी मय्य-दन्
+ कल्प, कौषं, दन्त + इनि] हाथो, - भाषि० १।६०
तुल्यवृत्तमापत्रप्रबंधयोरे महादम्बिन - हि० १।३५,
रघु० १।७१, कु० १६।२।

दन्तुर (वि०) [दन्त + उरन्] बड़े २ या ज्ञान निकले हुए
दाँतो वाला - सुकरे निटले चैब दन्तुरा जाधने नर
- सारा०, मि० ५।५४ २ दाँतेदार, दन्तुगिन दगर-
वार, ददानेदार, उन्नतानत विषम (आल०) कलकं-
गर्भस्मितदन्तुरेण - विक्रमा० १।५० ३ उमिल
४ उठना (बाँतो का) लडा होना । सम०-कृष् नीच
का पेट ।

दन्तुरित (वि०) [दन्तुर + इत्] बड़े या आगे निकले हुए
दाँतो वाला २ दाँतेदार, उन्नतानत, लडे रोमटा
वाला - केतकिदन्तुरिताले - गीत० १, मुक्कचर* ११,
का० २८६ ।

दन्त्य (वि०) [दन्त + यन्] दाँतो से सम्बद्ध, स्व (अर्थात्
वर्ष) दन्तभ्यामीय वर्ष, दे० 'दन्तमूलोय' ऊपर ।

दन्त्या (पु०) दाँत ।

दन्त्याक (वि०) [दन्त + यञ् + अक] १ कटने वाला,
विपंडा २ उपासी, - क १ लोण, सपं २ रंगने वाला
जंतु ३ रासस - इष्टयति रघुविंशे दन्त्याकश्चिवासी
मट्टि० १।२६ ।

दम्, दम्भ । (शं० स्था० पर०) दम्भि, दम्भोनि दम्भ
- दृष्ट्या० पिप्यति, भीष्मनि, दिदम्भिपति) १ छति
पट्टाना, चोट पहुँधाना २ बाधा देना, ठगना ३ जाना,
॥ (चुग० उभ० दम्भयति ते) ठेगना, उकसाना,
डकेलना ।

दम्भ (वि०) [दम्भ + रक्] बाँझ, स्वना, अदम्भदम्भमिधि-
गय्य स स्वामीन् हि० १।३८, दे० अदम्भ, - ध्व मम्भट,
- धम् (अव्य०) बाँझ, धरा, किसी बडा तक ।

दम्भ (वि०) पर० - दम्भयति, दमित, दान्त - धेर० दम्भयति,
१ पाला जाना २ जान्त होना मनु० ५।३५, ६।८,
७।८१ ३ पालना, बस में करना, जीलना, दीकता
- यमो दम्भयति राससात् - मट्टि० १।८२०, दमित्वा-
प्यतिपातात् - १।४२, १९, १।५३७ ४ जान्त करना ।

दम्भ [दम् + भञ्] १ पालना, दमन करना (बस में करना)
२ आत्मनिग्रहण, अपने उष भावनाओ का बस में
करना, आत्मसंयम - बस० १०।४, - (निबन्हा बाध-
वृत्तौ दम इत्यभिधीयते) ३ बुराई की ओर से नर
की हटाना, बुरों वृत्तियों का दमन करना (कुस्तिता-
लकर्मो विप्र वप्स वित्तनिवारण, म कीलितो दम) ४
मन की दृढ़ता ५ दहक, जुयाना मनु० १।२८४,
२९०, याज्ञ० २।४ ६ दहकल, कीचर ।

दम्भ, दम्भ [दम् + अभञ्, अष्टच् वा] १ अपनी उष
वृत्तियों का रोकना, या बस में करना आत्मनिग्रहण
२ दहक ।

दम्भ (वि०) (न्यो०-न्यो) [दम् + भृट्] १ पालने वाला,
दवाने वाला, बस में करने वाला जानने वाला हरान
वाला-शामदाम्भय्य दम्भने नैव निवक्तुमर्हसि-उत्तर०
५।३७, मनु० ३।८० दसो प्रकार मकरदमन 'अभि-
दम्भ' २ जान्त, निग्रहण, - मम् १ पाठना, बस में
करना, दबाना, निग्रहण करना २ दहक देना, ताड़ना
करना दुरन्ताना दमनविषये धर्मवेद्यापनते
- महावी० ५।३६ ३ आत्मसंयम ।

दम्भयन्ती [दम्भयति भागवति अमद्भुतादिभ्यश्च दम्भ-यिच्
+ यन्तु] ईप्सु] विदग्ध के राजा भीम की पुत्री इसका
नाम 'दम्भयन्ती' इस लिए पडा था कि इसने अपने
अनुपम मान्दं से सभी सुन्दर मण्डिआओ का दर्प चूर
चूर कर दिया था नै० २।१८ भूवनशयमुभूनामसौ
दम्भयन्ती कमनीयतामदम्भ उचियाय वनस्तन्मिथ्या दम्भ
मन्थोनि तपोमिथ्या दधौ । एक मन्थ० ग ने पहले
दम्भयन्ती के मानने नल के गव और मोन्दव की प्रशसा
की फिर उसी के द्वारा दम्भयन्ती ने अपन प्रेम का
समाचार उसको भिजवाया । उसके पश्चात स्ववचन
में दम्भयन्ती ने नल को उन बहुत म प्रतिपादियों मे स,
विनये कि इष्ट, अमि, यम और उष्ण यह चारो देव
भी स्वप्न उपास्थित थे पति के रूप में चुन लिया और
फिर दोनो प्रसन्नता पूर्वक जाना सम्प्रत्यक्षोक्त विनाये
लगे । परन्तु उनको यह सुनकर जीवन अधिक देर
तक नहीं रहना था । नल के मोभाग्य से ईर्ष्या के दये
बाधा कति नल क जरीर में प्रविष्ट हो गया और
उपने नल को अपने भाई पुत्रक के साथ ब्रूजा खेलेने
के लिए उकसाया । खेल को गर्मी में ही मूढ राजा
ने अपना सबकुछ दाव पर लगा । ता और स्वय तथा
पत्नी को छाड़ सब कुछ हार गया । फलत नल
और दम्भयन्ती को केवल एक बच्चा लगे राजधानी से
निकाल दिया गया । दम्भयन्ती का बहुत से कष्ट
उठाने पड़े । परन्तु उनकी पति-मनिक में कोई अन्तर
न आया । एक दिन जब दम्भयन्ती गढी मो रही थी,
हत्याम गच्छ नल उमे छोड़ कर चल दिया । तब
दम्भयन्ती को विवश होकर अपने पिता के घर जाना
पडा । कुछ समय के पश्चात् वट फिर अपने पति से
मिली और फिर शेष जीवन उन्हीने निवर्धिसुख में
बिताया दे० 'नल' और 'शकुन्तल' ।

दम्भयित् (वि०) [दम् + यिच् + नृच्] १ पालने वाला,
दमन करने वाला २ दहक देने वाला, ताड़ना करने
वाला ३ विष्णु का विशेषण ।

दम्भित (वि०) [दम् + क्त] १ पाला हुआ, जान्त, दान्त

क्रिया हुआ 2 विविध, दमन किया हुआ, बलीभूत, परास्त ।

धम् (धु) क्त् (धु) [दम् + उन्त्, पक्षे दीर्घ] अण् ।
धम्तो [ज्ञाया च पत्नियश्च इ० सं० जायापदस्य दमादिभ्यश्चिचन] पति और पत्नी, १धु० ११२५, २।७०, मधु० ३।११६ ।

धम्भ [दम्भ + धञ्] 1 धोखा, जानमारी, दावपत्र 2 धार्मिक, पाण्ड्य—भग० १६।८ 3 अज्ञकार, धम्भश्च, आत्मदलाया 4 पात्र, दुष्टता 5 इन्द्र का बज्र ।

धम्भन् [दम्भ् + ल्यट्] ठगना, धोखा देना, छल ।

धम्मिन् (धु०) [दम्भ् + णिन्] पाण्ड्योः, धुन्ं याज० १।१३०, अण० १३।७ ।

धम्मोक्ति [दम्भ् + अन्त् = दम्भम्, तन्मिन् प्रेग्ने अकलि पर्वोन्नादि—अल्ल + इन्त्] इन्द्रका बज्र ।

धम्प्य (वि०) [दम् + यन्] 1 पालने के योग्य, सपाये जाने के लायक 2 दण्ड दिये जाने योग्य, —अथ 1 नया बखड़ा (जिसे प्रतिश्रवण तथा अनुभव की अपेक्षा है) —नार्त्तलि तात् पुङ्गवधारिणाया धूर्त दम्प्य निवाजयितुम् विक्रम० ५, तुर्वी धूर्त यो भवन्त्य पित्रा धुर्यण दम्प्य सद्गुण विभर्ति १धु० ६।७८, मद्रा० २।२ 2 वह बखड़ा जिसे अपमाना है ।

धप् (भा०) जा०—दयते, दायित्) दना आना, बरुणा का भवत होता, धन्स लाना, महान्मन्त्रि प्रदायन करना (यज्ञ० के साथ)—रामस्य दयमानाऽप्यव्ययति तत्कलकमस्य—भट्टि० ८।११९, तेया दयसे न कम्मान—१।२३, १५।६३ 2 प्यार करना, अच्छा लगना, रचिकर जाना दयमाना प्रमदा—श० १।३ भट्टि० १०।९ 3 रक्षा करना नगजा न यज्ञा दायिता दयिता भट्टि० १०।९ 4 जाना, हिलना—जूलना 5 स्वीकार करना, देना, बितरण करना, नियन्त्रण करना 6 पाठ पहुँचाना ।

धवा [दय् + अद् + टाप्] नरस, मुकुमारना, कम्पा, अनुकम्पा, सहानुभूति—निगुण्यवपि सत्वेयु दवा कुञ्चि ताचद—हि० १।६०, दधु० २।११, इमी प्रकार 'मूढदवा' । सम०—**द्वृ, कर्ष** वृद्ध के विशेषण, —**धीर** (अल० या०) योग्यतापूर्ण करुणा की भावना, कम्पा के फलस्वरूप उदय होने वाला वीररस—उदा० योभूतवाहन (नावाहन मे) गहड मे फरना है—शिखाम्बुले स्थान्त एव रक्तमध्यापि दहे मम मासमिच्छे, तुञ्जि न पश्यामि तवापि तावत् कि भलप्राप्त्य विरतो यन्मन्त्र, तु० 'दयावीर' के अन्तगत १स० मे ।

धवाल् (वि०) [दय् + आल्] हवाल्, मुकुमार, सत्य, कर्णापूर्ण—यद्य सरोरे भव मे धवाल्—१धु० २।५७, ३।५२ ।

धमित (धु० क० कृ०) [दय् + क्त] प्रिय, वाहा हुआ, इष्ट—भट्टि० १०।९,—स पति, प्रेमी, प्रिय व्यक्ति विक्रम० ३।५, भासि० २।१८२,—सा पत्नी, देवसी—दशिनोर्जायनालम्बनापी—मेघ० ४, दधु० २।२, भासि० २।१८२, कि० ६।२३, दक्षिणाक्षितः शोक का गुणाय, पत्नीभक्त धनि ।

धर (वि०) [द् + अण्] फाड़ने वाला, चीरने वाला (दाय समासान्त में),—र, —रम् 1 गुफा, कन्दरा, छिद्र 2 गङ्गा, —र 1 भय, त्रास, डर,—सा धर पुत्रता नियमे हीयमाना रसाधरम्—शि० १९।२३, न जात-हादेन न विद्विषाधरम् कि० १।२३,—रम् (अभ्य०) धोडा, डरा (ममाम में) —दग्नीलघ्नयना निरीक्षिते—भासि० २।१८२, ७, दरविशक्तिनम्भीवस्त्रिभृत्च-गगना—भारि०—गीत० १, इमी प्रकार—दरदलित—विकसित—उत्तर० ४, मा० ३ । सम०—**तिभिरम्** भय का अन्धकार, हरति दरतीनिरमतिषाग्म्—गीत० १० ।

धरयम् [द् + ल्यट्] तोड़ना, टुकड़े २ करना ।

धरणि (धु० स्त्री०) दरणी [द् + णि, दरणि + ङीप्] 1 नवर 2 धारा 3 हिलार ।

धरद् (स्त्री०) [द् + अदि] 1 हृदय 2 त्रास, भय 3 पलाय 4 चतुर्न, किनारा, टीला ।

धरदा (धु० व० व०) [द् + ई + क्] कश्मीर की सीमा को छटा हुआ एक देश,—इ भय, त्रास,—इम् विवरक ।

धरि री (स्त्री०) [द् + इन्, धरि + ङीप्] गुफा, कन्दरा, घाटी, दरोड़ कु० १।१०, एका भार्या मन्दरी वा धरी वा—अर्ज० २।१२० ।

धरिद्रा (अदा० पर०) दन्दिद्रा, दरिद्रित—ध्र०० दन्दि-यति इच्छा विदरिद्रासति, विदन्दिद्रिपति) 1 निर्धन राजा गर्वित होता,—अधोऽथ पश्यत कस्य महिमा तोपन्वीयने उपययति पश्यन्त सर्व एव दरिद्रिनि—हि० १।० भट्टि० १।७।१ 2 कष्टग्रस्त होता,—युक्त ममेव कि वक्त्र दरिद्राति यथा हारि—भट्टि० ५।८६ 3 दुःखता पतला होता,—दरिद्रिनि विद्वद्भ्यः कुमुम-कान्तायनारका—विक्रमार्क० ११।७४ ।

धरिद्र (वि०) [धरिद्रा + क्] निर्धन, गरीब, अभावग्रस्त, दुर्भाग्यवान् स तु अबन्तु दरिद्रो यस्य तुल्य विद्याला, मनसि च परिमुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्र—मद्र० २।५०,—सा गरीबी—जङ्गलीया हि लोकेऽस्मिन्निष्प्रतापा धरिद्रता—मुक्छ० ३।२४ ।

धरोदर [धरो भय तज्जन्तकमुदर यस्य] 1 जूझारी 2 जूए पर जया गीव,—रम् 1 जूझा खेलना 2 पीना, अन्न, दे० 'दुरिदर' ।

धरोरः [द् + यद् + अण्] 1 पहाड 2 कुछ टूटा हुआ मत्त-वात ।

बंदरीक [दु+गृ+ईकन्] 1 भेदक 2 दादल 3 एक प्रकार का वाद्ययन्त्र - कम् एक वाद्ययन्त्र ।

बंदुर [दु+बृ+उरन्] 1 भेदक-पञ्चकिन्तनमुष्णा पिबन्ति सलिलं पाराहता दर्शन - मृच्छ ० ५।१५ 2 वादल 3 बन्दरी बैसा एक वाद्ययन्त्र 4 पहाड़ 5 दक्षिण में स्थित एक पहाड़ का नाम ('मलय' में स्थित) मन्दाविष दिग्मन्थ्या शैवी मलयदंदरी - मृच्छ ० ६।५१ ।

बर्ध : (कू) (स्त्री०) [वर्गिडा+उ वि० गाणु] शाप, एक प्रकार का चर्मरोग ।

बर्ष [वृ+षञ्, अच् वा] 1 घमण्ड, अष्टद्वार, घटना, अभिमान - मनु० ८।२१३, मय० १६।१० 2 उपाय-यज्ञ 3 वर्ष, दम्भ 4 रोग, विषम 5 गर्मी 6 कस्तूरी । सय० - भाष्यगत (वि०) अभिमान से कृता हुआ, -सिद्, -हृर (वि०) घमण्ड मोड़ने वाला, नीचा दिखाने वाला ।

बर्षक [वृ+गिच्+वृन्] प्रम के देवता, बागदेव ।

बर्षक [वृ+गिच्+वृन्] मूढ देवने का शोभा, आघना - लाघताम्भा विहीनस्य दर्पण १क करिष्यति ३० १०९, कु० ७।२६, मृच्छ० १०।१०, १६।३७, पद्य 1 आँसू 2 जलना, प्रवृत्तिन करना ।

बर्षित, **बर्षित्** (वि०) (स्त्री०-भी) [दृ+षन्, दृ+गिन्] घमण्डी, अहंकारी, अभिमान ।

बर्ष [दु+भ] एक प्रकार का पवित्र (कुशा) घाग जल यज्ञानुष्ठानों के अन्तर पर प्रयुक्त किया जाता है - म० १।७, मृच्छ० १९।३१, मनु० २।६३, ३।२०/ ५।३६ । सय० - अक्षर कुश घाग का तुलाया गया - म० २।१२, अनुप दभ घाग से परिपूर्ण मन्त्रके भूमि - आशुय मय घाग ।

बर्षतम् [दु+अटन्] निर्जी कर्मण, आराम करने का एकान्त कर्मण ।

बर्ष [दु+भ] 1 एक उत्थानकारी अनिष्टकर जन्तु 2 राक्षस, पिनाक 3 चमचा ।

बर्षत [दु+भ+अट्+अच् शक० परकाम्] 1 गाँव का पहरेदार, सुविन अधिकारी 2 हाथगाल ।

बर्षरीक : [दु+ईकन्, नि० साणु] 1 द्रष्ट का विशेषण 2 एक प्रकार का वाद्य यन्त्र 3 हवा, वायु ।

बर्षिका [बर्ष+कृ+टाप्] कड़की, चमचा ।

बर्षी (वि०) (स्त्री०) [दु+विन्, वा डीप्] 1 कड़की, चमच 2 माँप का कलावा हुआ फण-नि० २०।४२ । सय० - कृ माप, बर्ष ।

बर्षी : [दु+षञ्] 1 दृष्टि, दृश्य, दशन (प्राय समाप्त में) दुर्दम, पिपयर्ष 2 अमाख्या 3 पाँधक यज्ञ, अमाख्या के दिन होने वाला यज्ञीय कृष्ण । सय० - क देवता, -शामिको अमाख्या की रात्रि, विषद् (पु०) बौद ।

बर्षक (वि०) [दु+वृन्] 1 देवने वाला, अनुष्ठान करने वाला 2 विरगने वाला, बन जाने वाला कु० ६।५२, क 1 प्रदर्शन करने वाला 2 हाथगाल, पहरेदार 3 कुलाय शक्ति, किसी कला में विशेष व्यक्त ।

बर्षोत्तम [दु+वृत्+अट्] देवता, दर्शन करना, विशेषण करना मृच्छ० ३।५, 4 जानना, समझना, प्रत्यक्ष जानना, परिदर्शन करना मृच्छ० ८।२२ 3 दृष्टि, दर्शन - किलाज्वर दशनम् - म० ६।५ 4 आँसू 5 निरीक्षण, परीक्षा 6 दिग्गाना, प्रदर्शन करना, प्रदर्शनी 7 दिग्गाना देना 8 भेद करना, दर्शन करना, बधन - देवदर्शनम् 9 (अन) रिगों के सम्मूल जानना, शोभा मारीचने दशन विनरति म० ३ राजदर्शन मे कार्य-आदि 10 मय, मन्त्र, दर्शन-भण० १।१०, मृच्छ० ३।५७ 11 दर्शन देना (न्यायशास्त्र में) उपस्थित होना - मनु० ८।१५/ १६०, 12 स्थान, न्याय 13 विवेक समझ, वृद्धि 14 निर्णय, अवस्थाप 15 पाँधक जान 16 आश्रम व्याख्यात कोई विवय या गिटान्त 17 दर्शनवाच्य - वैसा कि 'मन्त्र' दर्शनमप्रद मे 18 र्पण 19 गण व्यवहार की मन्त्री 20 मज । सय० - ईप्सु (वि०) दशन करने वा अधिकारी, -पद्य र्पित वा दर्शन वा पराम शोचिन् - प्रतिभु उपस्थित १।६ के विन जगानत वा ज्ञान ।

बर्षोत्तम (वि०) [दु+अनीवर] 1 उत्तमे के, वास्य, निरीक्षण के कारण प्रपञ्चजन श्राद्ध करने के योग्य 2 देशके दे रिपि ज्ञान मृच्छाया, मनाहर, सुन्दर 3 न्यायालय में उपस्थित होने के योग्य ।

बर्षोत्तम (पु०) [दु+गिच्+अच्] 1 दोषाधिक, प्रबन्धक, हाथगाल 2 माँस प्रदर्शन ।

बर्षित (वि०) [दु+षिच्+अच्] 1 निष्ठाया गया, प्रदर्शित, प्रदर्शक, प्रदर्शित की गई देवता गया, समझ किया गया 3 व्याख्यात, सिद्ध 4 प्रतीयमान ।

बर्ष (स्त्री०) पर० - दलति, दर्शिता 1 फट पड़ना, टुकड़े होना, फट जाना, गिरने आबाना - दलति हृदय गाढाङ्गे द्वि, - तु भिषान् - उत्तर० ३।३१, अपि दवा रोदिनि अपि - तति बसस्य हृदयम् - शत०, मा० १२, २०, दलति न सा हृदि विरहभोगे शील० ७, अमर ३८ 2 प्रसार करना, विस्तारित होना, (वृष्ण की भाँति) निष्काना - दलन्तव १० - माल - उत्तर० १, स्वच्छन्द दलदरिन् ते मन्त्रे पिन्ता विदधतु सुञ्जित मिलिन्त - भाषि० १।१५, नि० ६।२३, कि० १०।३९, - ब्रे० ६ (वा) लयति 1 पीडना, पाहना 2 काटना, वाटना, दृष्ट २ करना, - उच्, - (ब्रे०) काट शक्यता, (वि) 1 काटना, सृष्ट-मष्ट करना, नष्ट जा जाना २ विद-पुमिन् ३ विषयवशाति नै ६।८८ 2 मोदना ।

बर्ष, - लम् [दु+अच्] 1 टुकड़ा, अन्न, भाग, सण्ड

—वि० ४४४ २ उपाधि ३ दो जालीं में से एक जैसे दाउ, आधा माप ४ म्यान, कीप ५ छोटा अक्षर या कीपन, फूज की पकड़ी, पता—रघु० ४४२, शं० ३१२, २२ ६ रास का फलक ७ पुत्र, राशि, डेर ८ सेना की टुकड़ी, सैनिकों की टोली । सम०—आश्वक १ श्राप २ मनीषीय मास्य का भीतरी कवच ३ सार्ध, पहिना ४ बबडर, ओषो ५ गेह, —कोष कुण्डलता, —निर्मोक भोवपत्र या बल, —पुष्पा केवड़े का पीषा, —सूचि, —की (स्त्री०) काटा, क्लसा पने का रेशा या नस ।

दलन् [दल् + स्यट्] फट पकना, तोड़ना, काटना, बाटना, कुचलना, पीसना, टुकड़े २ करना मत्स्यकुम्भः लने सूत्रे सति सूत्रा—अर्थ० १५५ ।

दलनी (स्त्री०) दलिक. (पु०) [दलन् + ङीप्, दल् + इन्] मिट्टी का डेला, मिट्टी का लौटा ।

दलप [दल् + कपन्] १ धारण २ सोना ३ धारण ।

दलश [दल् + शस्] टुकड़े-टुकड़े करके, लच्छ लच्छ करके ।

दलित [दू० क० कृ०] [दल् + क्त] १ टूटा हुआ, चौरा हुआ, फाटा हुआ, फटा हुआ, टुकड़े २ हुआ २ बला हुआ, फोलाया हुआ ।

दलत्र [दल् + त्र] १ पहिया २ जालसाजी, बेईगानी ३ पाप ।

दल [दु + अच्] १ वन, जंगल २ जंगल की आग, दावाग्नि—वितर दाग्नि दादि दवातुरे—मुभा० ३ जाग, गर्मी ४ बुझार, पीडा । तम०—अग्नि, —बहन जंगल की आग, दावाग्नि—यस्य न सविधे दयिता दकदहनस्तुहितदीपिनस्तस्य, दस्य ष सविधे दयिता दकदहनस्तुहितदीपिनस्तस्य—आश्व० ९ भागि० १३६, मेघ० ५३, सप्तम नृपटपापि चिन्ता दवाग्नि—रघु० २।१५ ।

दलपु [दु + अच्] १ आग, गर्मी २ पीडा, चिन्ता, दुःख ३ आँसू की मूजन ।

दलपुष (वि०) [दूर + इत्थन्, दवादेश] १ अत्यंत दूर का, के, की ।

दलीपुम् (वि०) [दूर + ईयमुन्, दवादेश] १ अपेक्षाकृत दूर का २ कहीं परे कहीं दूर—विद्यायना सकलमेव गिरा दलीपु—भासि० १६९ ।

दलक (वि०) [दलन् + कन्] दस से पुन, दशगुना, —कामजो दसको गण—मनु० ७।५७, —कम् दस का समाहार ।

दलत्, दलति (स्त्री०) [दलन् + क्ति] दस का समाहार, दसक ।

दलान् [दस० वि० ब० व०] [दल् + कनिन्] दस,—स भूमि विश्वतो भूत्वाऽपत्यिच्छन्ऽशुभम्—श्रृणु १०।९, १ । सम०—अङ्गुल (वि०) दस अङ्गुल लम्बा,—अर्थ

(वि०) पाँच (बँ) बूढ़ का विशेषण,—अवतारा (पु०, ब० व०) विष्णु के दस अवतार, दे० 'अवतार' के अन्तर्गत,—अश्व चण्डा,—जावन,—आस रावण के विशेषण—रघु० २।७५,—आश्व षड का विशेषण,—इस दस ग्रामों का अव्ययक, एकादशिक (वि०) जो दस रुपये देकर म्यारुड लेता है, अर्थात् जो १० प्रतिशत पर उधार देता है, —कच्छ,—कान्हर रावण के विशेषण—सप्तलोकैकीरत्य दमकच्छकुलद्विष—उत्तर० ४१२७, अरि, कित् (पु०) 'रिषु राम के विशेषण—रघु० ८।२९,—गुण (वि०) दस गुना, दस गुणा बड़ा,—धामिन् (पु०)—य दस ग्रामों का अव्ययक,—दौष—दशकच्छ,—वारिस्ताध्वर 'दस सिद्धियों का स्वामी' बूढ़ का विशेषण,—पुर एक प्राचीन नगर का नाम, राजा रत्नदेव की राजधानी—मेघ० ४७,—अन,—भूमि बूढ़ के विशेषण,—मालिका (ब० व०) १ एक देश का नाम २ इस देश के

निवासी या शासक,—मास्य (वि०) १ दस महीनों का २ गर्म में दस मास (जन्म से पूर्व का बच्चा), —मुष रावण का विशेषण, 'रिषु राम का विशेषण—रघु० १५।८७,—रष अव्ययों का एक प्रसिद्ध राजा, अज का पुत्र, राम और उनके तीन भाइयों का पिता, (दशरथ के तीन पत्नियों की, कीमात्या, सुमित्रा, और कौक्यी, परन्तु कोई वपों तक उनके कोई संनान न हुई । बशिष्ठ ने दशरथ को पुनेष्टि यज्ञ करने के लिए कहा, ऋषभशृङ्ग की सहायता से वह यज्ञ संपन्न हुआ । इस यज्ञके पुरा होने पर कीमात्या से राम का, सुमित्रा से लक्ष्मण और शशुञ्ज का गधा कौक्यी से भरत का जन्म हुआ । दशरथ को अपने सभी पुत्र बड़े प्यारे थे परन्तु राम तो उनका 'प्राण' था । इसके पश्चात् जब कौक्यी ने मन्त्रवा के द्वारा उसकायें जाने पर अपने दो पूर्व प्रतिजाल वर माये तो दशरथ ने उनके गृहित प्रस्तावों से उसका मन हटाने के लिए कौक्यी को बसकाया, जब वह न मानी तो खुगामर, अनृत्य विनय के द्वारा उसे समझाने का प्रयत्न किया । परन्तु कौक्यी बराबर निरधर बनी रही । फलतः वेकारे श्राबा को अपने पुत्र राम को निर्वासित करने के लिए बाध्य होना पड़ा । और उसके पश्चात् उन्होंने इसी दुःख में अपने प्राण त्याग दिये),—रौषि शत वर्ष—रघु० ८।२९,—रात्रम् दस रातों (बीच के दिनों मनेत) का समय (त्र) दस दिन तक चलने वाला एक विशेष यज्ञ,—रषभम् (पु०) विष्णु का विशेषण,—रषभ,—रषभ दे० 'दशमूक, बाबिन् (पु०) पशुमा,—बाबिन् (वि०) हर दस वर्ष के पश्चात् होने वाला या दस वर्ष तक टिकने वाला ।

विष (वि०) दस प्रकार का,—शतम् १ एक हजार

2. एक ही दत्त, "रत्निक सूर्य-शशी एक हजारा,—साह-
अम् वस हजारा,—हूरा 1 गज्जा का विशेषण 2 गज्जा
के सम्मान के उपलक्ष्य में ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को
मनाया जाने वाला पर्व 3 दुर्गा के सम्मान में जागियन
शुक्ल दशमी को मनाया जाने वाला पर्व (विजया
दशमी)।

दशमथ (वि०) (स्त्री०-मी) [दशन् + तथ्य्] दस भागों
से युक्त, दस गुना।

दशधा (अभ्य०) [दशन् + धा] 1 दस प्रकार में 2 दस
भागों में।

दशान्, - नम् [दशन् + श्चट् नि० नलोप] 1 दान, बहु-
सुहृद्दानविलिखितोच्छ्वा - शि० १७२, शिलारिदधाना
—मेष० ९०, भग० १०१२० 2 काटना, - न पहाड
की चोटी, - नम् कवच। सम०—अशु दातों की चमक
—कु० ६१२५, —अक्षु दातों के काटने का चिह्न
काटना, —उच्छिष्ट 1 होठ 2 चूबने 3 आठ, —छत्र,
—बासु (नप०) 1 होठ 2 चूबने, —वधम् वृद्धका
भरण, दात का चिह्न—दशनपद भवदधरगत मम
जनायति चेतसि श्रेयम्—गीत० ८, — बौद्ध अनाम का
पेड़।

दशान् (वि०) (स्त्री०-मी) [दशन् + श्चट् - मट्] दशान।

दशानिन् (वि०) (स्त्री०-मी) [दशमी + शनि] दहन
पुराना।

दशमी (स्त्री०) 1 बाण्ड मान के पत्र का दसवाँ दिन
2 मानव जीवन की दसवीं दशाब्दी 3 महाब्दी के
अंतिम दस वर्ष। सम०—व्य, (दशमी गत) (वि०)
९० वर्ष में अधिक आयु।

दश्ट (वि०) [दश + क्त] काटा गया, डकू मारा गया
आदि।

दशा [दश् + श्चट् नि० टाप्] बरत के छान पर रहने वाल
आने, कपड़े पर लगी गाँठ, आलन, मगजी, - रक्ता-
शुक्ल (रक्तगोलदशा बहनी)—मृच्छ० ११००, छिन्ना
दशाम्बरपट्टस्य दशा पत्तनि—या० 2 वेधे की बनी
—भर्तृ० ३११२९ कु० ५१३० 3 आयु, या जीवन
की अवस्था - वे० नी० 'पमान' 4 जीवन की एक
अवस्था या काल—जैना कि शान्य, जीवन आदि—रघ०
५१६० 5 काल 6 स्थिति, अवस्था, परिस्थिति—नेत्रे-
मैच्छन्वादि च दशा चक्रांगमन्त्र—मेष० १००
विषया हि दशा प्राप्य देव गच्छेत् नर—हि० ६१२
7 मन की स्थिति या अवस्था 8 कर्मी का फल
— भाप्य 9 प्रहो की स्थिति (राम के समय) 10 मन
समज, सम०—प्रवृत्त 1 बर्ना का छात्र 2 जीवन का
रूप—निवृत्तिविषयकनेत्र म दशान्मूर्धनिवान् न्य०
१२११ (यहाँ शरद दातों अर्थात् प्रयुक्त हुआ है),
इच्छने नैव, दीपक, कर्ष 1 शत्रु का किारा

2 नैव, दीपक,—वाक - विषाक 1 भाग्य की वि-
पक्वतावस्था - भाग्य के अनुसार फल प्राप्ति 2 जीवन
की परिवर्तित दशा।

दशार्ध (ब० व०) [दश० ऋषानि दुर्गभूमयो वा यव
ब० म०] 1 एक देश का नाम महात्स्यने कतिप्य-
दिनम्भावित्वा दशार्धा—मेष० २३ 2 इस देश के
निवासी।

दशिन (वि०) (स्त्री०-मी) [दशन् + शिन्] दश रखने
वाला - (पु०) दश श्रावो का अर्धांशक।

दशेर (वि०) [दश् + परक्] काठेब लडा, उपद्रवी, अनिष्ट
कर, पीडाकर र शगरती या विप्रेला जतु।

दशो (से) रक [दशेर + कन्] उँट का बच्चा।

दस्यु [दम् + द्युन्] 1 दुर्लभियों या राक्षसों का समूह,
जो कि देवताओं के विद्रोही तथा मानव जाति के शत्रु
थे और इन्द्र के द्वारा मारे गये (इस अर्थ में प्राय
वैदिक) 2 जानिबलिभूत, अपने कर्तव्यकर्मों से श्रुत
हो जाने के कारण जाति में बहिष्कृत—तु० मनु०
५११३१, १०१६५ 3 सोर मुटुंगा, उचबका-पाशो-
कुनो दस्युगिवासि वेन - छ० ५१२०, रघु० ९५५३, मनु०
७११६३ 4 दुष्ट, उत्पातशील - मा० ५१२८ 5 आत-
नामी, उद्धत भण्डाचारी।

दश (वि०) [दस्यति वामुन् दम् + रक्] बरत, भीषण,
विनाशकारी शौ (पु० द्वि० व०) दोनो अश्विनो-
कुमार, दशा के बंध, - क 1 पावा 2 अश्विनो नक्षत्र।
सम० सू (स्त्री०) सूर्य की पत्नी और अश्विनो-
कुमारा की माता मन्त्रा।

दश, (स्त्री०) पर० दशति, दश्व - इच्छा० दिव्यभक्ति
जलाना, झलमाना (आल० में भी) - दश्व विष्व दहन-
किरकीर्तित्वा दशशार्का - वेणी० ३१६, ५१२०, मरुदि
मदनजला दशति मम मानस देहि मुखकमलमधुपानम्
गीत० १०, मा० ३११३ 2 उडा देना, पूर्ण रूप से
नष्ट कर देना 3 पीडा देना सताना कष्ट देना, दु खी
करना - इवमारामकृतमयविहत चाण्ड दहति - म० ५,
नम्बिर्भावम गत्य दहति माम् - ६१ गुण्य मा दहति
यद्गुह्यममदीय शीणार्पित्तिपय्य परिवर्त्तयति
—मृच्छ० १११२, रघु० ८१८६ 4 (आपु० में) गर्म
गहने या कार्मिक तंत्राव से जला देना, निम्—
1 जलाना जलाकर समाप्त कर देना 2 सताना,
दुख देना, परिक्षित करना, परिर, जलाना, झुठमाना
द्विषि द्विषि परिदश्या भुमय पावकेन—श्रुतु० ११२४
भग० ११३०, प्र 1 जलाना 2 पूर्ण नश्व में जला
देना 3 पीडा देना, सताना 4 कष्ट देना, पिडाडाना,
सम्—जलाना—अभिजन्त मदनाना बहिनाना - भर्तृ०
२३९।

दशम (वि०) (स्त्री०-मी) [दश् + श्चट्] 1 जलाना,

आय में जलाकर समाप्त कर देना—मत्तुं० १।०१
 2 विनाशकारी, अनिकर, -न 1 आय 2 कबूतर
 3 'दीन' की सख्या 4 बुरा आदमी 5 'मल्लातक'
 का बीजा,—मत्तुं० 1 ज्ञाना, आय में जलाकर समाप्त
 कर देना (आल० से भी)—रघु० ८।२० 2 गर्म लहें
 या कार्टिक वैशाख से जला देना । मम०—अराति
 पानी,—उपल सुयंकातमणि,—उत्का, जती हुई लकड़ी,
 -केतन पूर्वा, त्रिया अग्नि की पत्ती स्वाहा,
 सारथि हवा ।

बहुर (वि०) [दह् + अरु] 1 रवमात्र, नूदन, बारोक,
 लघु 2 छांटा, -र 1 बच्चा, सिमु 2 जानवर का
 बच्चा 3 छोटा भाई 4 हृदयरुध, हृदय 5 चूहा,
 मूषा ।

बह्व [दह् + रुक्] 1 आय 2 दावानि, जगल की आय ।

बा : (स्वा० पर०—यच्छति, दत्त) देना, स्वीकार करना,
 प्रति—विनिमय करना—तिलेभ्य प्रतिवच्छति माघान्
 —मिद्धा०, 11 (अश० पर० दानि) काटना,—ददाति
 द्रविष भृगि दानि दारिद्र्यमयिनाम् कवि०,
 111 (बृहा० उम०—ददाति, उम० दत्त—परन्तु 'आ'
 पूर्व हान पर 'आम' उप पूर्व होने पर उपाल, नि
 पूर्व होने पर निवत्त या नीत्त तथा प्र पूर्व होने पर
 प्रवत्त या प्रान्) 1 देना, स्वीकार करना, प्रदान करना,
 प्रस्तुत करना, शौचन, समर्पण करना, भेंट देना
 (प्राय कर्म० के माध वस्तु के पक्ष में, व्यक्ति के
 पक्ष में सध०, कर्मों सब० अथवा अधि० नी) अवकाश
 किलादन्वान् रामायाम्भितो ददी—रघु० ४।५८,
 सेवनघट्टे बालपादावयम पयो दानुमित एवाभिवर्तते
 —म० १ मनु० ३।३१, १।२७१, कथमस्य सप्त
 दारये—हरि० 2 (रूप, सुर्मांता आदि) देना
 3 शौचना, दे देना 4 लौटाना, वार्पित करना 5 छोड़
 देना, त्यागना, उत्सर्ग करना,—प्राणान् हा प्राण दे
 देना, इमी प्रकार आत्मानं हा प्राण त्याग देना
 6 रखना रख देना लगाना, जमना—कर्म कर ददानि
 —आदि 7 विवाह में देना—यन्म दद्यात् पिता त्वेनाम्
 —मनु० ५।१५१, याज्ञ० २।१४६, ३।२४४ अनुमति
 देना, अनुज्ञा देना (प्राय 'नुमुद्वत्त' के माध)—आप्यन्तु
 न ददात्यना ब्रह्म विप्रयतामि म० ६।११, (इम
 घातु के अर्थ उस मन्त्र के अनुगाय जस्येन जाये प्राय
 माना प्रकार से अदलबल्ल किये जा सकते हैं या
 केशपये जा सकते हैं, उदा०, अग्नि (धातुक) हा
 आग लगाना, अग्नि हा उड़ाने लगाना, घटखनी
 लगाना, अवकाश हा स्थान देना, जगद देना दे०
 'अवकाश', आशा (निवेश) हा आज्ञा देना, आदेश
 देना, आत्मे हा धृप में रहना, अस्थान सेवाय हा,
 अपने आपको कष्ट में फसाना, आशिष हा आशीर्वाद

देना, कर्म हा कान देना, ध्यान से सुनना, चक्षु
 (वृष्टि) हा नजर डालना, देवना, साथ हा तालियाँ
 बजाना, बर्षान हा अपने हाथको दिवलयना, दूसरी
 को बात सुनना, मित्राहा हा धकड़ी बालना, भूलना
 में बंधना, प्रतिबन्ध (बन्धन)—वा—प्रत्युत्तर हा
 उत्तर देना, मनो हा किसी बात में मन लगाना,
 मार्ग हा रास्ता देना, जाने की अनुमति देना, रास्ते
 से अलग हो जाना, बर हा बर देना, बाध हा बाधण
 देना, ब्रुति हा घेरना, बाइ लगाना, अन्ध हा
 शोर मचाना, आर्ष हा गाय देना, शोक हा, रज पैदा
 करना, धाड्य हा धाड्य का अनुष्ठान करना,
 संकेत हा निमुक्ति करना, सप्राप्त हा लड़ना,
 आदि। प्रेर०—दायपति—ते दिव्यवाना, स्वीकार करवाना
 आदि—इच्छा० दिसति—ने, देने की इच्छा करना,
 आ—(आ०) लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना,
 महारा देना श्वभक्षारासनमावदे युवा—रघु० ८।१८,
 १०।४०, ३।४६ प्रदभिर्गावर्हिर्गान्निरावदे—३।४१,
 १।४५ 2 शब्दोच्चारण करना—कि० १।३, सि०
 २।१३ 3 पकड़ना, धामना—कु० ७।१४ 4 उगाहना
 बसूल करना (कर आदि)—अज्ञानुगददे सोऽपान्
 —रघु० १।२१, मनु० ८।३४१ 5 ले जाना, लेना,
 बहन करना—नायनादाय चच्छे मेघ० २०, ४६,
 कुमानादाय—श० ३ 6 प्रायश्चित्त प्राय्त करना,
 समझना—प्रायेणं रुमादस्त्व रसानादस्त्व बहुषा
 आदि—महा० 7 खन्दी बनाना, कैद करना—उषा(आ)
 1 ग्रहण करना, स्वीकार करना 2 अवाप्त करना,
 प्राप्त करना—उपानविद्यो गुहदसिधार्थी—रघु० ५।१,
 भूर्वा पिनामहोयाना—याज्ञ० २।१२१ 3 लेना, चारण
 करना, ले जाना 4 अनुभव करना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त
 करना 5 पकड़ना, आक्रमण करना, धरि—,शौचना,
 समर्पण करना, दे देना—छपाना परिदशमि मृत्यवे
 —उत्तर० १।४५, मनु० १।२२० प्र—स्वीकार करना,
 देना, प्रस्तुत करना स्व प्रागृह प्रादिनि नामराय कि
 नाम तस्यं मनसा गगय—ने० ६।१५ मनु० ३।१९,
 १०८, २७३, याज्ञ० २।१० 2 गिरा देना, मिथाना,
 भर्त्स० १।१५, प्रोक्त, अदलाबदली करना, विनिमय
 करना 2 लौटाना, वार्पित देना—चौर० ५३ 3 बदला
 देना, क्षतिपूर्ति करना, स्या—(पर० आ०) क्षोभना,
 नोड कर खोलना—न गारदत्त—यानममममन्—कि०
 १।११६, नदी कूल व्याददाति, वा—व्याददेते पिपी-
 ठिका पतङ्कस्य मुखम्—महा० सप्र- 1 देना, स्वीकार
 करना प्रदान करना,—न तेज्ज सप्रदास्यामि 2 परम्परा
 से प्राप्त होना—दे० सप्रदाय 3 दानवत् क्रियना,
 उत्तराधिकार में शौचना ।

बासायणी [दह + किञ् + षीप्] 1 २० नशवा में (नी

कि पुराणानुसार दश की पुष्टियां मानी जाती हैं) से कोई सा एक नक्ष 2 दिति, कश्यप की पत्नी, देवताओं की माता 3 पार्वती 4 रेवती नक्षत्र 5 कटु, या विनाश 6 दन्ती का पीषा। सम०-पति 1 पित्र का एक विशेषण 2 बन्धु,--पुत्र देवता।

दासनाय [दश + अय + अच्] गिञ् ।

दाक्षिण (वि०) (स्त्री-पौ) [दक्षिणा + अच्] 1 यज्ञीय दक्षिणा से सम्बन्ध अथवा उपहार से सम्बन्ध 2 दक्षिण दिशा से सम्बन्ध रखने वाला,--अन् यज्ञीय दक्षिणाया का समूह या सञ्चय।

दाक्षिणात्य (वि०) [दक्षिणा + त्यच्] दक्षिण से सम्बन्ध रखने वाला या दक्षिण में रहने वाला, दक्षिणी- अर्थात् दक्षिणात्यसे प्रथमदे महिषारोप्य शम नगरम्--पञ्च० १,--त्य 1 दक्षिण देश का निवासी,--आरम्भपूर्वा न्यून दक्षिणात्या 2 नारियल।

दाक्षिणिक (वि०) (स्त्री०-की) [दक्षि + ठक्] यज्ञीय दक्षिणा सम्बन्धी।

दाक्षिण्यम् [दक्षिण + ष्यञ्] 1 (क) नक्षत्रा, जित्पता, सुजनना-नक्षत्र दक्षिण्यक्येन नाम्ना मणयवशावा-रघु० १।३१ (ख) कुशावृता--विक्रम० १।२, भर्तृ० २।२३ मा० १।८ 2 किसी प्रेमी का (अपनी प्रेमिका के प्रति) बनाबटी तथा अतिवालीन शिष्टाचार-ग० ६।५ 3 दक्षिण में जाने की या सम्बन्ध रखने की स्थिति--स्नेहदाक्षिण्यदायांघां च कामीय प्रतिभ्रानि मे--विक्रम० २।४, (यहाँ इम शब्द के दोना ही अर्थ है -प्रथम तथा द्वितीय) 4 तालमेल, सामञ्जस्य, सहमति 5 नेपथ्य, चतुराई।

दाक्षी [दक्ष + इत् + क्रीष्] 1 दक्ष की पुत्री 2 पार्ष्णिनी की माता। सम०-पुत्र पार्ष्णिनी।

दाक्षेय [दाक्षी + इच्] पार्ष्णिनी का मातृसौम्य नाम।

दाक्ष्यम् [दक्ष + ष्यञ्] 1 चतुराई, कुशलता, उपयुक्तता दर्शना, योग्यता भग० १।८।३ 2 सच्चाई, अव्ययता, ईमानदारी।

दाक्ष [दक्ष + घञ् कुलम्] जलाना, जलन।

दाक्षक [दक्ष + क्विच् + धञ्, ल्यप् ङ] दक्षि, हाथी या दक्षि।

दाक्षि (लि) क, --मा [दक्ष + घञ् + इत् + इत्, इत्योऽभेद] अनार का पेट --पाशाक्षयम्कुटुर्दाक्षिमकानि वचनम्--मा० १।३१, अमर १।३ 2 छाटी इलायची, सम अनार का कट। सम०-शिय, धक्षण जाना।

दाक्षिण्य [दा + द्धिन्व दा०] अनार का पेट।

दाक्षा [दा + क्विच् = दा + क्रीष् ङ + टाङ्] 1 बड़ा दील, दाढ़ 2 समृद्धय 3 कामना, इच्छा।

दाक्षिका [दा + क्विच् + टाप्, इत्यम्] दाक्षी, मनु० ८।२।३, (कुलम् सम्यु)।

दाक्ष्याधिक (वि०) (स्त्री०-की) [दक्ष्याञि + टञ्] (धर्म भक्ति के बाह्य चिह्न) छप्पा और मृगछला। लिए हुए,--क ठग, पासवर्षी, घूत।

दाक्षिक [दक्ष + टञ्] ताड़ना देने वाला, दण्ड देने वाला।

दाक्ष (वि०) [दा + क्त] 1 बौद्धा हुआ, काटा हुआ 2 घोषा हुआ, परिशीलित 3 काटी हुई (फल)।

दाक्षि (स्त्री०) [दा + क्तिन्] 1 देना 2 काटना, नष्ट करना 3 वितरण।

दाक्षु (वि०) (स्त्री०-त्री) [दा + णच्] 1 देने वाला स्वीकार करने वाला, 2 उदार (पु०-त्ता) 1 दाता - कु० ६।१ 2 दानी भागि० १।६६ 3 महाजन, उच्चार देने वाला 4 अध्यापक।

दाक्ष्युह [दाक्षि + ऊह् + अच्] जलकुम्भकट- दान्युहिति- निशम्य काटनवति मन्थे निर्नीय स्थितम्-मा० १।१४ 2 चातक पक्षी 3 ब्राह्म 4 जल-कीटा 'दाक्ष्योह' भी लिखा जाता है)।

दाक्ष्य [दा + ष्ट्यन्] काटने का एक उपकरण, एक प्रकार की दानी या चाकू।

दाक्ष [दक्ष + ष्यञ्] उपहार, दान। सम० ४ दानी।

दाक्षु [दा० उभ०-दानिन्-ने] काटना, बाटना - दृष्ट्या० दीर्घानि न मोषा करना (यहाँ नक्षत्र केवल रूप की दृष्टि से है अर्थ की दृष्टि से नहीं)।

दाक्ष्यु [दा + ष्ट्यन्] 1 देना स्वीकार करना, अध्यापन 2 मोचना, मनवण करना 3 उपहार, दान, पुरस्कार -मनु० २।१५८, भग० १।३।०, वाङ्म० ३।२७८ 4 उपरान्त, धर्मार्थ, धर्मार्थ पुरस्कार, दानशीलता मनु० १।६१, भर्तृ० १।४६ 5 भरतमत्ता का मन्त्रक में बने वाला रस, भर, -सदान्तायेन विष्णोर्नि शय -शि० ८।६३, कि० ५।० विक्रम० १।२५, पञ्च० २।३५ (यहाँ शब्द का चतुर्थ अर्थ भी धरता है) मनु० २।३ ४।८५ ५।६३ 6 रिदान धूम अपन धानु के ऊपर विजय प्राप्त करने के बाद उगाया में से एक, दे० 'उगाय' 7 काटना, बाटना 8 परिवर्तकरण, स्वरच्छ करना 9 रक्षा 10 अज्ञान, अज्ञानिधि। सम०-कुष्ठा हाथी की घुटपूरी से बहने वाले मद जल का प्रवाह -धर्म दान देने का धर्म दानकी धर्म-पति 1 अल्पम उदार गुण 2 अक्षर, कृपा का एक मित्र, -पञ्चम दान-लेय वाच्यम् दान लेने के योग्य व्यक्ति, शत्रुण-प्रतिनिधायक्य ह्यण परिचाय करने की जमान, -मित्र (वि०) निश्चय दकर काश हुआ, -कीर 1 बहुत पाना व्यर्थिन 2 दान शीलता के फलस्वरूप शीरम, वाग्नायुज दान शीलता का रस, उदा० परशुराम विजयने मान हीरो वाली इम पृष्ठी का दान कर दिया-मु० २म० में दो गई ('दानवीर' के अन्तर्गत) उचित--किपदिदमधिक मे यद् द्विजायाधर्मिणे कश्चम-

रमणीय कुण्डल चाप्यामि, अरुणमवहृण्य द्राक्कृपा-
नेन निवेष्टं बहुकविरवार मोलिधन्वेयामि, —श्लोक,
-अर, —श्लेष (वि०) अत्यन्त उदार या दानशील ।

राषिकम् [रा + क्त् + श्च] मुष्ट दान ।

रासकः [दनो आसकम् - दन् + क्त्] रासक, पिपाच
—विदिवम्भुदनाशनवदप्यक्तम् य० ७३१ । सम०
अरि १ देवता २ विष्णु का विशेषण, गुरु शुक
का विशेषण ।

रासिकेयः [दन् + ऊद् + उक्] = दानव ।

रासल (भू० क० कृ०) [दम् + ल्] १ पालतु, वस में
किया हुआ, दमन किया हुआ, नियन्त्रित, लगाम द्वारा
रोका हुआ, दे० दम् २ पालतु, मृदु ३ त्यक्त ४ उदार,
—स्त १ पालतु बेल २ दाना ३ दमन का वृक्ष ।

रासिन् (स्त्री०) [दन् + सिन्] आस मयम, वस मे
करना, आसानीकरण ।

रासिक (वि०) [दन् + टप्] शायी दात का बना
हुआ ।

राषित (वि०) [रा + षि + क्त्] १ दिलाया गया
२ जा देने के लिए बाध्य किया गया था, जिस पर
अर्थ दण्ड लगाया गया था ३ हिमका नियम किया
गया था ४ अतिमध्यम, प्रदम ।

रासम् (नपु०) [दा + सन्] १ होरी, धारा, कीटा,
रस्मी, २ कुली का यंत्रण, हार आदि वृद्धा विरह-
दिवसे या शिल्पा दास इत्या मय० २२, कनकचम्पक-
दासवोरी—चौर० १, सि० ४१५० २ लकीर, धारी
(जैसे बिजली की) बिजुराम्ना हेमगरीव किर्यम्य
—मालवि० ३१२०, मय० २० ४ वडी गुड़ी । सम०

अञ्जलम्, अञ्जलम् घोटे की डिछारी बाधने की
रस्मी सि० ५१६१, —उबर कृष्ण का विशेषण ।

रासनी [दानन् + ष्च] वर रस्मी जिसके सहारे
पशुओं के पैर बांध दिये जाते हैं ।

रासिनी [दाम् + इनि + ष्च] बिजली ।

रासिक्यम् [दम्पती + यक्] विवाह, स्त्री पुरुष का पति-
पत्नी सम्बन्ध ।

रासिक (वि०) (स्त्री०—की) [दम् + ठक्] १ धोमे-
बाज, पालण्डी २ धमण्डी, अभिमानी ३ आडम्बर
प्रिय, डोगी ।

राषः [दा + षच्] १ उपहार, पुरस्कार, दान रहित
रमते प्रीत्या दाय ददात्यनुवर्तते—मा० ३१२, प्रीतिगय
या० ४, भासवि० ८११९९ २ बैबाहित् उपहार (जो
वर या बन्धु को दिया जाय ३ भाग, अन्न, उत्तराधिकार,
पैतृक संपत्ति,—अनपत्यम् पुत्रस्य माता दायसदा-
प्यायन्—मनु० ११२१० ७७, २०३, १६४४ भाग,
हिस्ता ५ सौभाग्य, समर्थ करना ६ बाटना, निवारण
करना ७ हानि, विनाश ८ देवतुष्टिपाक ९ स्थान,

जगह । सम० अथर्ववेदम् उत्तराधिकार में प्राप्त
सम्पत्ति का वञ्चन करना मनु० १७७, —अह्ने (वि०)
पैतृकसम्पत्ति का पाने का दावेदार अह्ने १ जा पैतृक
सम्पत्ति के एत भाग का अधिकारी हो, उत्तराधिकारी
—गुमान् दायादाऽदायादा स्त्री-निष्०, यज्ञ० २१११८,
मनु० ८११६० २ पुत्र ३ बन्धु, बाण्यव, निकट या दूर
का सम्बन्धी ४ दावेदार या दावेदार होने का वहना
करने वाला गया गोपु का दाय्यद—निष्ठा०—आशा,
—आदी १ उत्तराधिकारिणी २ पुत्री,—आशम्
१ उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति २ उत्तराधिकारी
बनने की स्थिति,—काल पैतृक सम्पत्ति को हाटने
का समय, बन्धु १ पैतृक सम्पत्ति का प्रापीदार
२ भाई,—आय उत्तराधिकारिण्य में सम्पत्ति की बाँट
(सम्पत्ति का विभाजन) ।

रायक (वि०) (स्त्री० यिका) [दा + ष्च + क्त्, मुक्]
देने वाला, स्वीकार करने वाला (समाप्त के अन्त में
प्रवृत्त) उत्तर, पिण्ड आदि ।

राट [द + घञ्] १ दराट, रिचिन, कटन, छिद्र २ बुता
हुआ गेह,—रा (वि० व०) पत्नी,—एने वयमयी दारा
कन्ये कुन्दरीनितम्—कु० ५१६३, दमरवदानानिष्ठाप
वीर्यद प्राप्त—उत्तर० ८, पच० १११००, मनु०
११११२, २०२१३, ज० ४११६, ५०२११ । सम०—
अधोल (वि०) भाग्य पर आश्रित, उपसहह,
—उत्तर, परिग्रह, प्रहमप विवाह,—ने दार्याश्रह
—उत्तर० १११५, —कर्मम् (नपु०) किया विवाह
रघु० ५१४० ।

दारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [द् + षिच् + ष्वल्] तोड़ने
वाला फाड़न वाला टुकड़े करने वाला—दारिका
हृदयदारिका पितु, क १ लड़का, पुत्र २ बच्चा,
पितृ ३ जानवर का बच्चा ४ माँ ।

दारणम् [द् + षिच् + ष्यट्] टुकड़े करने, फाड़ना,
चौरना, फालना, दा कर देना ।

दारवः [दग् + अच्] १ पारा २ समुद्र, ड, —व्य
सिद्ध ।

दारिका [दारक + टाप्, ट्यम्] १ पुत्री २ देव्या ।

दारित (वि०) [द् + षिच् + ष्च] फासा हुआ, विभक्त
किया हुआ लपट ० किया हुआ, चौरा हुआ ।

दारिद्र्यम् [दारि + द्यञ्] गरीबी, निषेधना—दारिद्र्य-
दायी गणराजिनाथी—मुभा० ।

दारी [द् + षिच् + इत्] ढोप । १ दराट २ एक प्रकार
का रोग ।

दाह (वि०) [दीयते द् + उच्] धाड़ने वाला, चौरने वाला,
—ह १ उदार या दानशील व्यक्ति २ कलाकार,—ह
(नपु०) (पु० भी) १ लठ्ठी, लकड़ी का टुकड़ा,
लठ्ठी २ गुटका ३ उत्तोलन दण्ड ४ बटखनी

5 देवदारु वृक्ष 6 कृष्ण कौश 7 पीतक । म०
-अम्ब मीर, -आषाढ 'पुत्रार्थ' -नर्मी काष्ठ का
पुनर्को, -ज एक पत्रक का डाक पाक्ष्म कडवा,
काष्ठ का वर्तन, पुत्रिका, -पुत्री लकड़ी की गुटिया
-पुष्पाङ्गुषा, -पुष्पाङ्गुषा छिन्निको, -पाम्ब 1 कट-
पुनरी 2 लकड़ी का जपन, बम्बू लकड़ी की गुटिया,
सारा चन्दन, -हृत्पत्र लकड़ी का चम्पक ।

दासक [दास+कन्] 1 देवदास का पेश 2 कृष्ण के सारथि
का नाम--उत्कम्पेर दासक इन्द्रदास-वि० ६११८,-का
1 कठपुतली 2 लकड़ी की मुति ।

दास्य (वि०) [दु+गिन्+उत्] 1 कडा, मन्त्र-उत्तर०
३।३४ 2 कठोर, कठ, निर्देय, निष्ठुर, -मयवेर
विष्णुस्यदास्यनिवृत्ती--श० ५।२३, पद्मपुराण-
कर्महास्या ६।१, मनु० ८।२०० 3 भीषण, भयानक,
भयकर '० ६।२९ ५ योग, प्रबन्ध, उप नात्र,
अत्यन्त पीडाकर (योग, पीडा आदि) -हृदयकुमुभ-
गोपी दास्यो दास्यभोक्त-उत्तर० ५ 5 बहुर त्त
कर्त्तव्य (मन्त्र आदि) 6 न्याय, गमाज्यकारि, ज
भयानक म्, -अण्य उदवा, निर्देयता, बौध्म्या आदि ।

दास्यम् [दु+घञ्] 1 कापन, सन्धी, दुटना 2 पुष्टि
सम्बन्ध ।

दास्युर, -रम् [दस्+र] 1 दक्षिणावर्ती (दाई ओर मुड़ने
वाला) नाम 2 जल ।

दास्ये (स्त्री०-बी) [दस+अच्] कुश घास का
बना हुआ-दास्य अञ्चलवृत्तजपटल वीरविद्या मयूर-उत्०
५, (अने० पा०) ।

दास्ये (वि०) (स्त्री०-बी) [दास+अच्] काष्ठ का बना
हुआ ।

दास्येडम् [पण्डित शब्द दासि+अच्+क] मन्त्रसामूह,
न्याय, उप ।

दास्यिक [दास्य+ठञ्] दसान दास्यो में परिचित ।

दास्ये (वि०) (स्त्री०-बी) [दास्य्+अच्] 1 पत्थर का
बना हुआ, लज्जित 2 मिन पर पिघा हुआ (मन
आदि) ।

दास्ये (वि०) (स्त्री०-बी) [दुष्टान्+अच्] ददात्त
देकर समझाया गया या शास्त्रा क्रिया गया, मानक
वर्णन का विपर अर्थात् उल्लेख्य श्रावण्य दास्येनि-
कन्दने विवक्षित-शकर ।

दास्ये [दास्येनि अमुदात्त दु+गिन्+वि] दम् ।
दास्ये [दुनाति दु+गि]--दव । म०--अग्नि, -अनल
-बहुल, बहुर की आग दास्येनि अलन्दन-
दास्येनि भीरुदास्येनि-दि । अलरोपमहाबायुष्य एक
नमायम-भावि० १।१२०, ३४ ।

दास्ये [दसाति द्वित्विन मस्यत्-दम्+ट, नम्य आत्वम्]
मधुवा, मनु० ८।४०८, ४०९ १०।२४ । म०--घास

मधुको का गाँव, -नमिनी भाग को माता सप्यवती
का विवरण ।

दास्ये, -दास्ये [दस्य+अच् इच् वा]-दस्य का
पु. म्पु० १०।६४ 2 गम और उमके नीचे भाई,
विरोधकर गम --मपु० १०।६५ ।

दास्ये (ब० व०) [दास्ये+अच्] दसाई के बगल,
पारव गि० २।६८ ।

दास्ये [दासी-दुह] 1 मछुवे का बेटा 2 मछुवा
3 ऊँट ।

दास्ये [दास्ये+कन्] मालव देस, -का (ब० व०)
मालव देस के निवासा या सामक, दे० 'दास्ये' भी ।

दास्ये [दास्ये+अच्] 1 गुणाम, मेवक-गृहकर्मदासा
मनु० १।१, 'गृह' कर्म, आदि 2 मछुवा 3 नूद,
कीड़े कर्म का पुण्य, तु० 'पुण्य' । म०--अनुदास
गुणाम का मवह (अथवा शिन्न मेवक) (कभी
कभी कवचा के दास्य पद शब्द 'विनश्रता' का लुप्तक
ममता जाता है) -जल मेवक या गुणाम-कमपण्यकव
मयि पश्यति या हयि मानिनि दामजन वन --विक्रम०
६।२९ (सीडमान या मयाव्या जनमयूह के किम
दास्यकुदम' मममन्दर प्रयुक्त किया जाता है) ।

दास्ये [दास्ये+र] 1 मेविका लीकानी 2 मछुवे की
पत्नी 3 घट का पत्नी 1 कवचा । म०--पुष,
-सुत सविका या गुणाम स्त्री का पुत्र, -ससम् दासियो
का मवह, (त्रिग सिय 'सरो' ए० व० दास्यो
मय्य समाम मे प्रयुक्त होता है ना उमका आदििक
अव नष्ट हो जाता है, १।१० दास्यो पुत्र, -सुत
शिनल का बेटा (रगम का कवचा--एक प्रकार का
अशब्द) दास्यो पुत्र शकुनिपुत्रकी--श० २,
परम्प दास्यो मन्वी सविका के ममान ।

दास्ये, -रक [दास्ये, ए, दस्य+कन्] 1 दासी या
सविका का पुत्र 2 नूर 3 मछुवा 4 ऊँट -वि०
१।२।२, ५।६६, (दस अर्थ में 'दास्ये' शब्द भी है) ।

दास्ये [दास+घञ्] [दासता गुणामी, वेदा, अजीवता
गिनुके तव दास्येभिधमम्-ग० ५।२७, मनु०
८।६१० ।

दास्ये [दु+घञ्] 1 अन्न दास्येनि, दास्येनिभिध
कृ पा०-मनि-मपु० १०।६०, छेरो दस्ये दस्यो वा
मास्ये० ६।६ कि० ५।१० 2 (आकाश की
भाति) दस्येनी हुई लकड़ी 3 जलन को उनेजना
४ तप, म०, १। म० अणुद (मनु०)--काल्प
मय प्रारण का मुष्मन्, जगत्-आत्मक (वि०) अट
उठने वाला, -अण्व जलन वाला नृमार, -स्रर,
सरण (मनु०), स्थलम् पदों के उठाने का स्वान,
दमदानभूमि, -नूर (वि०) मर्मी को दूर हटाने वाला
(रम्) उशीर पीया, वस ।

रचना, शर्मा लम्बाना 7. देवना, व्यापार करना (सम्बन्ध० के साथ) —अधेरीबुध्वांगोलानाम्— मट्टि० ८।१२२, (उपसर्ग पूर्व होने पर कर्म० वा सम्बन्ध० के साथ,—वात कलत्र वा परिशीलति—छिद्रा०) 8 उदाना, अपव्यय करना 9 प्रस्ता करना 10 प्रसन्न होना, हर्ष मनाना 11 पावन होना, पीकर मस्त होना 12 नीद आना 13 कामना करना, ii (आ० पर०, चुरा० उच० देवति, देवयति-ते) विलाप करना, पीडा दिखाना, प्रकुपित कराना, सताना, iii (चुरा० आ०—देवयते) पीडा सहन करना, विलाप करना, आर्तनाद करना, धरि,—विलाप करना, क्रन्दन करना, पीडा सहन करना । अट्टि० ५।३४।

दिच् (स्त्री०) [दीव्यन्वय दिच् + वा आधारे दिच् + तारा०] (कन्० ए० व०—औ) 1 स्वर्ग, ३।४, १२, मेघ० ३० 2 आकाश 3 दिन 4 प्रकाश, उजाला—विद्ये० बहु समस्त सद्य दिनका पूर्वपद दिच् है, अचिकास अनियमित है—उदा० विचस्पति इष्ट का विशेषण,—अनतिक्रमणीया दिवस्पतिराजा—श० ९, —विचस्पतिव्यो स्वर्ग और पृथिवी,—विचिञ्च,—विचिष्ट, —विचिष्य,—विचिप्त(व)दृ(पु०) विचोक्त्यु (पु०) विचोक्त्यु,—स. स्वर्ग का रहने वाला, देवता—श० ७, रघु० ३।१९, ४७, दिचिषुक्वदे—गीत० ७।

दिवम् (नपु०) [दिच् + क] 1 स्वर्ग 2 आकाश 3 दिन 4 वन, जङ्गल, अरण्य ।

दिवसः,—सम् [दीव्यतेऽन दिव् + असत् दिवच्] दिन—दिवस इवाभ्रप्रशामस्तपाल्यमे जीवन्नोक्त्य—श० ३।१०। सम०—ईश्वरः, हरः सूर्य, अट्टि० ३।२२,—मृगम् प्रातः-काल, प्रभाल,—विषयः सामकाल, भूयानि—मेघ० ९९।

दिवान् (अव्य०) [दिव् + का] दिन में, दिन के समय, दिवान् दिन निकलना। सम०—अट्टि० कौवा, अण्य उल्ल० अण्यकी,—अण्यिका लङ्घन,—हर 1 सूर्य कु० १।१२, ४।४८ 2 कौवा 3 मूरजम्भी कुल,—कीर्ति 1 चाण्डाल, मोच जाति का पुत्र 2 नारद 3 उल्लु,—निवस्यु (अव्य०) दिन रात, प्रबोधिः दिन का दीपक वा लैण्य, अण्यिदु बुध्वा,—गीत०, कीर्ति 1 उल्लु,—दिवकाशस्तति यो मुहुमुहू लीन दिवाभीत-मिवाचकाररघु—कु० १।१२ 2 कु०, संध लणानेवाका,—अण्यम् अण्यान्,—रात्रम् (अव्य०) दिनरात,—अणु, सूर्य,—सय (वि०) दिन में सोने वाला—रघु० १।१३४, स्वयम्,—स्वायः दिन के समय सोना ।

दिवान्तम (वि०) (स्त्री०—नी) [दिवान् + ट्यु, नुच्] दिन का या दिन के सम्बन्ध रखने वाला—कु० ४।४६, मट्टि० ५।६५।

दिविः [दिव् + इच्] वायु पत्नी, नीलकण्ठ (दिव' जी) ।

दिव्य (वि०) [दिव् + यत्] 1 दैवी, स्वर्गीय, आकाशीय 2 अतिप्राकृतिक, अलौकिक—परतप्रेक्षणदिव्यचक्षुषु—शि० १६।२९, अण० १।१।८ 3 उज्ज्वल, शानदार 4 भगोहर, सुन्दर,—अण् 1 अलौकिक वा स्वर्गीय प्राणी—दिव्यानामपि कृतास्मया पुरस्तात्—शि० ८।६४ 2 जी 3 यम का विशेषण 4 दार्शनिक,—अण् 1 दैवी प्रकृति, दिव्यता 2 आकाश 3 दैवी परीक्षा (बहु दस प्रकार की निगदां वर्तं है), तु० याज्ञ० २।२२, १५ 4 वायु, सत्यार्थिन 5 लौग 6 एक प्रकार का चन्दन। सम०—अणु सूर्य,—अङ्गना—नारी, स्त्री स्वर्गीय अक्षरा, दिव्य कन्या, अपमरा,—अविष्य (वि०) कुछ लौकिक तथा कुछ अलौकिक (जैसा कि अर्जुन)।—उचकम् शर्वा का जल,—कारिन् (वि०)

1 सपथ उठाने वाला 2 अग्नि पराक्षा देने वाला, —पावन गन्धर्व, चक्षुस्त्व (वि०) 1 अलौकिक दृष्टि रखने वाला, दिव्य आँखों से युक्त रघु० ३।४५, 2 अन्धा (पु०) कन्दर (नपु०) अर्धाय अग्नि, अलौकिक दृष्टि, मानव आँखों द्वारा अदृष्ट पदार्थों का देखने की शक्ति, ज्ञानम् अलौकिक जानकारी,—पुष्ट (पु०) ज्योतिषी, प्रथम दिव्यज्योतिमान् तथा की पुष्टताय, भावी घटना कर्म की पुष्टताय, सकुन विचार,—मानुष, उपदेवता, स्वम् नारायण रत्न जा स्वाधो की मंत्र दन्ताओं की पूजा करने वाला कहा जाता है, दार्शनिकों की मणि—तु० चिन्तामणि, रथ स्वर्गीय रथ जो आकाश में चलता है—रथ गारा, कश्च (वि०) दिव्य वस्त्र का आरण्य करने वाला (स्त्री) 1 भूप 2 मूरजम्भी का फल, स्मृत् (स्त्री०) आकाशमङ्गल, सार माल का वृक्ष ।

दिव्य (तुया० उभ०—दिवादि-न रिष्ट प्र० उभयार्थ-ते, इच्छा० दिविसति-ते) 1 तनेर रचना दिव्यलाना प्रदर्शन करना, (आज्ञा के रूप में) धम्पुत् करना—मालिण सन्ति मेत्युक्त्या दिव्यपत्ता दिवोश्च य—मनु० ८।५७, ५३ 2 अविश्वस्य करना, नियत करना इष्टा यति तस्य सुता दिव्यान्—महा० 3 देना, स्वीकार करना, प्रदान करना, अर्पण करना, सोपना—बाधमान भक्ते निज दिव्यु कि० १।१६८, रघु० ५।३०, १।१२, १।७२ 4 (कर क रूप में) देना 5 स्वीकृति देना रघु० १।१६९ 6 निदेश देना, आदेश देना, हुक्म देना 7 अनुज्ञा देना इजाजत देना—स्मर्तु दिविसति न दिव्य मूरजुवारीम्—वि० ५।२८, अति—, 1 अधिगमन करना, सोपना 2 प्रयोग का विस्तार करना, सादृश्य के आधार पर घटाना—इति ये प्रत्यया उपसार्तेऽतिरिच्यते—विद्वा०, वा प्रधान-मल्लनिर्वहणन्यायेनातिरिच्यति—साध०, अण्—, 1 लकेत करना, इशारा करना, दिव्यलाना 2 प्रकषन करना,

रस्तुत करना, कहना, बोधना करना, बतलाना, बतलाना देना—मनु० ८।५४ ३ डोग रचना, बहाना करना—मित्रहृदयमपदिश्य—रघु० ११।३१, ३२, ५६, शिर शूलस्पर्शनमपदिशन्—रघु० ५०, सिरदर्द के बहाने को युक्ति बेटे हुए ४ उल्लेख करना, निर्देश करना—रहस्य भर्षा मद्गोत्रापदिष्टा—रघु० १०२, आ—, १ करना, दिल्लीलाना २ आवेश देना, आज्ञा देना, निर्देश देना—पुनरप्यादिश तावदुचिषत्—कु० ५।१६, आदिशदस्याभिगम वनाय—भट्टि० ३।९, ७।२८, रघु० १।५४, २।६५, मनु० १।१।९३ ३ उद्दिष्ट करना, अलग करना, अधिगम्यस्त करना—भट्टि० ३।३४ अद्यापन करना, उपदेश देना, शिक्षा देना, अधिग्न करना, निश्चित करना—रघु० १।२।६८ ५ निश्चित करना, ६ आगे होने वाली बात बतलाना, उद्—, १ सकेत करना श्रापन करना, बोधित करना, उल्लेख करना—प्रथमोद्दिष्टमासनम्—कु० ६।३५, यथोद्दिष्टव्यापारा—शं० ३, अनेकमुक्त उद्दिष्ट शब्दे—भट्टि० २ उल्लेख करना, निर्देश करना, सकेत करना—स्मरनुद्दिष्ट्य—कु० ५।३८ ३ अधिगम्य रचना, उद्देश्य रचना, निर्देश करना, अधिगम्यस्त करना, अधिग्न करना—फलमुद्दिश्य—भग० १।७।२९, उद्दिष्टामुनिहिता भजस्य पुत्राय—मा० ५।२५, मध्यमिनामुद्दिश्य प्रस्थित—गच० १४ सिलाना, उपदेश देना—सता केनोद्दिष्ट विपनर्माविधारावतामिमम्—भर्तृ० २।२८, उच—, १ अध्यापन करना, उपदेश देना, सिलाना—सुखमुप-दिश्यते परस्य—का० १।५६, मालवि० १।५, १रघु० १६।४३, भग० ५।३४ २ सकेत करना, इशारा करना, उल्लेख करना—गुणशयामुपदिश्य—रघु० ८।७३ ३ कथन करना, बतलाना, बोधना करना—कि कुलेनो-पदिष्टेन शीलमेवात्र काग्यम्—मुच्छ० ९।७ ४ निर्दिष्ट करना, अधिग्न करना, स्वीकृत देना, निश्चित करना—न द्वितीयस्य सविधोना स्वचिद्रतोपदिश्यते—मनु० ५।१६२, २।१९० ५ नाम लेना, पुकारना, जित्—, १ सकेत करना, इशारा करना, दिल्लीलाना एकैक निश्चिन्त-ग० ७, अङ्गुल्या निश्चिन्त—आदि २ अधिगम्यस्त कर-ना, व देना निर्दिष्टा कुलपतिना म पणशालामध्यास्य—रघु० १।९५ ३ सुज्ञाना, निर्देश करना, सकेत करना ४ अधिगम्यभाषी करना ५ उपदेश देना ६ बतलाना, सवाचार देना, प्र—, १ सकेत करना, इशारा करना, दिल्लीलाना, निर्देश करना—तस्याधिकार-पुष्ये प्रवर्तते प्रदिष्टायम् रघु० ५।६३, २।३९ २ बतलाना, कथन करना—भग० ८।२८, भट्टि० ५।५ ३ देना, स्वीकार करना, उपहार देना, प्रदान करना—विश्वयो पक्षिभिर्प्रविष्टयो—रघु० १।१९, ७।३५, नि शब्दोऽपि प्रविशसि जल याचितव्यातकेभ्य

—मेघ० १।१४, मनु० ८।२६५, प्रत्या—, (क) अ-स्वीकार करना, दूर पकाना, कत करना—प्रत्याविशविशेष-मन्धनविधि—शं० ६।५, (ख) पीछे डकेलना,—रघु० ६।२५ २ पछाड़ देना; प्रत्याख्यान करना (स्वार्थ का)—काम प्रत्यापिष्टा स्मरामि न परिग्रहं मुनेस्तनवाम्—शं० ५।३१ ३ दुच्छु बतलाना, निश्चेष करना, परास्त करना, पृष्ठभूमि में सँक देना—रघु० १।६१, १०।६८ ४ बिपरीत आज्ञा देना, वापिस बुलाना, ब्याप—, १ नाम लेना, पुकारना,—अपदिश्यते जगति विक्रमीत्यत—शं० १।५।२८ २ मिथ्या नाम लेना, मिथ्या पुकारना—मित्र च मा व्यपदिशस्यपर च यासि—मुच्छ० ५।९ ३ बोलना, एवं से कहना—जन्मेष्टोवि-मले कुले व्यपदिशसि—बेनी० ६।७ ४ बहाना करना, डोग रचना—महावी० २।११, लघु—, १ देना, स्वीकृत देना, अधिगम्यस्त करना, सौपना—भट्टि० ६।१४१, याज्ञ० २।२३२ २ आज्ञा देना, निर्देश देना, शिक्षा देना, उपदेश देना, सन्देश भेजना—किन्तु मलु दुष्यन्त-स्य वृकतकृपमन्मार्गि मग्देष्टव्यम्—शं० ४, शं० ९।५६, ६१ ३ सन्देश के रूप में भेजना, सन्देश सौपना—अथ विश्वामने गौरी सन्दिदेशे मिथ सनोम्—कु० ६।१ ।

विन् (स्त्री०) [दिशति ददात्यवकाशम् दिशु + विक्त्वा] (कतुं० ए० व०—दिक्—न्) १ दिशा, दिगिन्द्र, चार दिशाएँ, परिधि का बिन्दु, आकाश का चौधौं—दिश प्रतेदुर्मन्तो बभु सुखा—रघु० ३।१४ दिशि दिशि किरति सजलकणजालम्—गीत० ४ २ (क) बस्तु का केवल निर्देश, इंगित, (सामान्य रूप देखा का) सकेत, इतिदिक (भाष्यकारों द्वारा बहल प्रयोग, (ख) (अत) रीति, रूप, प्रणाली—युने पाठोक्तदिशा—सा० ८०, दिगिय सूत्रकृता प्रदाशिता, दासीसम नृप-सम रत्न सभमिया दिश—अमर० ३ प्रदेश, अन्त-राल, स्थान ४ विदेश या दूरस्थ प्रदेश ५ दृष्टिकोण, विषय को सोचने की रीति ६ उपदेश, आदेश ७ 'दत्त' की सम्पत्ता ८ पक्ष, दल ९ काटने का चिह्न (विश्वे-समास में स्वारदि, सधोष तथा ऊष्म व्यञ्जनादि शब्दा से पूर्व 'दिग्' तथा अघोष व्यञ्जनादि शब्दों से पूर्व 'दिक्' हो जाता है उदा० दिग्म्बर, दिग्गज दिक्पथ, दिक्करिन् आदि) । सम०—अन्त दिशाओं का किनारा या अन्तिम, दूर का अंतर, दूरस्थ स्थान—भामि० १।२, रघु० ३।५, ५।६७, १६।८७ नागा-दिगन्तायता राजान आदि,—अन्तरम् १ दूसरी दिशा २ मध्यवर्ती स्थान, अन्तरिक्ष, अन्तारम् ३ दूरवर्ती दिशा, अन्य प्रदेश, विदेश,—अन्तर (वि०) दिशाएँ ही जिसका कस्त हो, बिम्बुल मन्, विश्वस्—विमन्तर-त्वेन निवेदित वसु—कु० ५।७२, (—ः) १ मन्त्र मिश्र (जैन वा बौद्ध संप्रदाय का) २ साधु, सत्यासौ

3 शिव का विशेषण 4 अवेरा, —ईसा, —ईश्वर दिशा का अधिष्ठात्री देवता कु० ५५१३, दे० अष्टदिक्पाल, —करः 1 पूजा, जवान आदमी 2 शिव का विशेषण, — कारिका—करी, जवान लडकी या स्त्री, —करिण, —कर, —रतिन्—भारण (पु०) बहु हाथी जो पृथ्वी को समालने के लिए किमी दिशा में स्थित कटा जाता है (यह बाढी दिशाओं में स्थित होने के कारण अष्ट दिग्गज कहलाते हैं) दिग्गजोंसे ककु-भस्वकार—विष्णु० ७११, —ग्रहणम् पृथ्वी की दिशाओं का अवलोकन, — चक्रम् 1 शक्ति 2 समस्त विष्णु

—जयः, विजय दिविजय, सब दिशाओं में भिन्न २ देवों को जीतना, विजय का विजय करना म दिग्गजमन्त्राजकीर स्मर इवाकरात्, विष्णुभा० ४११, — हस्तान् केवल दिशाएँ दिखाना, केवल सामान्य रूप, देना की ओर मकन करना, —नाम 1 पृथ्वी की दिशा का हाथी, २० दिग्गज २ कारिण्यम् ३ समामासिक एक कवि (यह बात मध० २४ में मन्त्रिका का आशय पर जो वही मन्त्रिक है, आचार्य ११), मण्डलम्

= दिक्चक्रम्, — भाषण केवल दिशा या मकन, —मुखम् आकाश की कोई भी दिशा या भाग हस्ति में त्रि-वाहनः, उन्मुखम्—विष्णु० ३१६, अमर ५, — मोह भाग या दिशा भूल जाना, चक्र (वि०) चिह्नकुल तगा, चित्रम्, (मन्०) 1 दिग्मन्त्र मन्त्रदाय का जैन या बौद्ध भिक्षु 2 शिव का विशेषण, विभाषित (वि०) विवृत, विख्यात या सब दिशाओं में प्रसिद्ध ।

दिशा [दिग् + श + टाप्] पृथ्वी का चौपार, ओग, तरफ, प्रदेश; मन्०—एज, वाल, दे० दिग्गज, दिक्पाल ।

दिश्व (वि०) | दिशि भव + दिन् + यत् | पृथ्वी की किसी दिशा से सम्बन्ध रखने वाला, या किसी दिशा में स्थित ।

दिष्ट (वि०) | दिग् + क्त | 1 दिग्गजाया हुआ, संकेतित निर्देश किया हुआ, इधारे से बनाया हुआ 2 कथित, उल्लिखित 3 नियत, निश्चित 4 निर्देशित, आदेश दिया हुआ, —ष्टम् 1 अधिग्राह्य, नियंत्रीकरण 2 भाग निर्णय, मोभाव्य या दुर्भाव्य भा दिष्टम् ३० ५ १ आदेश, निर्देश ४ उद्देश्य, नियत मन्०—अमर, नियत कथ्य हुए समय की समाप्ति, मन्वु—दिष्टान्त-माध्यति भवत्यति पुत्रसोकान्—रघु० १७९ ।

दिष्टि. (स्त्री०) | दिग् + क्तिन् | 1 अधिग्राह्य नियत्रीकरण 2 निर्देश, आज्ञा, शिक्षा, नियम उपदेश 3 भाग्य, किस्मत, नियति ४ अच्छी किस्मत, प्रसवना, पुत्र कार्य (अंसा कि पुत्रजन्य)—दिष्टिपुट्टिमिष शुश्रूषा—हा० ५५, दिष्टिपुट्टिमिषमो महानभूत्—हा० ७१ ।

दिष्ट्या (अव्य०) | दिष्टि का करण० ए० व० भाग्य से, मोभाव्य से, शिव का धर्मवाद, में कितना प्रमत्त हैं, किना मोभाव्याती, जाका (एव या बचाई का उद्गार)—दिष्ट्या प्रतिहत दुर्जानम्—मा० ५, दिष्ट्या मोय महाबाहून्जानन्त्वथन—उत्तर० ११३७, वेणी० २१२, दिष्ट्या च बचाई देता, —दिष्ट्या धर्मपत्नी समाधामत पुत्रमुत्पन्ननेन चापुत्राम्बन्धने—हा० ७ ।

दिह् (अदा० उभ० द्विवि, दिव्ये, दिव्ये—इच्छा० दिशिगति) 1 लीयना मानना, पोलना, बिछाना—मं० ३१० १ ७५६ 2 मंजा करना, अष्ट करना, अपविष्ट करना—रघु० १६१५, मन् १ मन्वेह करना, अनिश्चित रहना याज्ञ० २१६, सदिविधो विजययो विष पच० ३१२ २ भूल करना, हनुवृद्धि होना (कमवा०)—पान्थु स्वाम्कोरुचनकाशिवानविष-मन्वेद्येव (जटा)—मा० ११२, या—धृपुर्जालविनि-मन्वेद्येव मन्विषयागतया—विष्णु० ३१२, कु० २६० ३ आक्षेप आगम करना ।

दी (दिवा० आ०) दीयते, दीयं) नष्ट होना मरना ।

दीक्ष् (धा० आ०) दीक्षते दीक्षित 1 किसी धर्म-सरकार के अवलोकन के लिए अपने आपको तैयार करना २ नौ० 'दीक्षित' २ अपने आपको समर्पित करना ३ शिष्ट बनाना ४ उपनयन सम्कार करना ५ यज्ञ करना ६ आगम मयम करना ।

दीक्षक [दीक्ष् + क्त] आध्यात्मिक मार्ग-दर्शक ।

दीक्षन्त [दीक्ष् + क्त] दीक्षा देना, धर्मार्थ ।

दीक्षा [दीक्ष् + श + टाप्] 1 किसी धर्म-सरकार के लिए समर्पण, पवित्रीकरण रघु० ३१६, २५ २ यज्ञ से पूर्व किया जाने वाला शारंगिक सरकार ३ धर्मसम्कार—विश्व दीक्षा रघु० ३१३३, कु० ७११, ८१२ ४ यज्ञापूर्वीन सम्कार करना, किसी विशेष उद्देश्य के लिए अपने आपको समर्पण करना । सम० अन्त पुत्रहन् यज्ञार्थि कर्म की श्रुति का शान्ति के लिए किया जाने वाला पुत्र-यज्ञ ।

दीक्षित (पु० क० कृ०) [दीक्ष् + क्त] सम्कारित, (किसी धर्म-सम्कार के अनुष्ठान के लिए) दीक्षा-प्राप्त—एते विवाहदीक्षिता यत्—उत्तर० १, आपदाभयमन्वेपु दीक्षिता यत् पौरवा—मा० २१६ रघु० ८१७ ११२६, वेणी० १२५ २ यज्ञ के लिए तैयार ३ धन लेकर (किसी पुत्र कार्य के लिए) तैयार—रघु० ११६७ ४ अधिभक्त—रघु० ४१५, —क्त १ दीक्षा-कार्य में व्यस्त दुरागि २ शिष्य ३ बहु पुत्र्य जिसने या जिसके पुत्र-पुत्र्या ने उद्योगिष्टोम जैसे बृहद् यज्ञों का अनुष्ठान किया था ।

दीक्षिन् [दिग् + क्तिन्] दिव्य, दिव्य, दीक्षक] उल्लेह हुए चावल २ न्याय ।

दीक्षित. (स्त्री०) [दीधी + क्तिन्, इट्, ईकारलोपच]
1 प्रकाश की किरण - रघु० ३।२२, १०।४८, नं०
२।६९ 2 आभा, उजाला 3 शारीरिक कान्ति, स्फूर्ति
-भर्तृ० २।२९ ।

दीक्षितम् (वि०) [दीक्षित + मनुप्] उज्ज्वल (घु०)
सूर्य-कु० २।२, ७।७० ।

दीधी (अदा० आ० दीधीते) 1 चमकना 2 दिखाई देना,
प्रदीप होना ।

दीध (वि०) [दी + क्त, तस्य न] 1 गरीब, दरिद्र 2 दुःखी
नष्ट-भ्रष्ट, कष्टग्रस्त, दयनीय, अभागा 3 लिख,
उदास, विषय, शोकग्रस्त -सा विरहे तव दीना
-गीत० ४ 4 भीष, डरा हुआ 5 क्षुब्ध, शाल्बनीय
-अर्ज० २।५१, -अ गरीब आदमी, दुःखी या विपत्-
ग्रस्त -दीनाना कल्पवृक्ष -मृच्छ० १।४८, विनाश
दीनाद्वर्याक्षितन्य रघु० २।२५ । सम० - बबाल
-बलस्य (वि०) दीन-दुःखियों के प्रति ऊँचायु बन्धु
दीन-दुःखिया का मित्र ।

दीनार (दी - आरू, नृट्) 1 एक मने का विशेष सिक्का,
-त्रिनद्वारासा मया पाठयामहस्वामि दीनारगणाम्-इज०
2 सिक्का 3 माने का आभरण ।

दीप (दीका० आ० दीप्यते दीप -आरम्भ० -ददीप्यते)
1 चमकना, जगमगाना (आल० भी०)-सर्वशैली समी-
स्वभाव ननुगुणैर्दीप्यते नपसन्धि -मालवि० २।१३,
ननुगुणान्न इव दीप्यते मणिहागर्भकसि रामशोषकम्
- नं० २।६६ अट्टि० २।२, रघु० १।६६, हि० प्र०
४६ 2 जलना, प्रकाशित होना-प्रया प्रया चय चपला
दीप्यते -का० १०५ 3 दहकना, प्रज्वलित होना,
बलना - (आल० भी०) रघु० ५।६७, अट्टि० १।६८८
नि० ५।७७ 4 कृष्ण से आभूबद्धा होना -कि०
२।५५ 5 प्रकलित होना -प्रेर० दीपयति-ने, आग
मुलमाना प्रज्वलित करमा, राशनी करना, प्रकाश
करना वगैरानामरमदीपयदशुत्रार्थे (दन्तु) -गीत०
७ उद्-प्रेर० 1 आग मुलमाना, 2 उद्वाहित करना
उत्तेजित करना, उद्दीपित करना, प्र-, सम्- चमकना
जगमगाना ।

दीप [दीप् + गिष् + अच्], लैट्, दीवा, प्रकाश -नपदीपा
घननेह प्रजापि महप्रति, अस्तरत्प्रेमसौ क्षुर्धैर्येभ्ये
नैव कर्तवित्-युव० १।२२१, न हि दीपी परस्पर-
स्वायकुलन -शारी०, इमो प्रकाश जातदीप । सम०
-अन्विता 1 अवाक्यता 2 उद्दीपयत्वा, -आराधनम्
दीप धाल में रख कर देखभूति की आरती उतारना,
-अस्ति, -स्त्री, -आबली -उत्सव 1 दीपयति,
रात के समय राशनी करना 2 विशेषरूप से दिवाली
का उत्सव में कातिक की अवाक्यता में मनाया जाता
है, -कालिका दीपक की ली, -सिद्धम् दीपक का फूल,

दीपे का गुण-स्त्री, -स्त्री दीपे की बली-स्वयं
काजल, -पावप, ब्रह्म दीपाधार, दीपद, पुष्प
चमपा का मधु -भाजनम् दीपक, रघु० १९।५१,
-मासा प्रकाश करना, राशनी करना, -सङ्ग, पण्य,
-शिक्षा दीपक की ली, -शुद्धता दीपों की पक्ति,
राशनी ।

दीपक (वि०) (स्त्री०-पिका) [दीप् + गिष् + भ्णुल्]

1 आग मुलमाने वाला, प्रज्वलित करने वाला
2 रोशनी करने वाला, उज्ज्वल बनाने वाला 3 मित्र
बनाने वाला, सुन्दर बनाने वाला, विक्रयान करने वाला
4 उत्तेजक, प्रेरक करने वाला -शि० २।५५
5 पीपिक, पाचन पक्ति को उद्दीपन करने वाला,
पाचनशील, -क 1 प्रदीप-आवेदेव कुलनामपि म्कुर्ययेप
निर्मल विवेकदीपक -अनु० १।५६ 2 वाज 3 कामदेव
का विशेषण ('दीप्यक' भी) -कर्म 1 जाफरान, केसर
2 (अण० शा०) एक अलकार जिसमें ममान विशेषण
रखने वाले दो या दो से अधिक पदार्थ (प्रकृत और
अप्रकृत) एक जगह मिला दिये जाय, या जिसमें
कुछ विशेषण (प्रकृत और अप्रकृत) एक ही कर्म के
विषय बना दिये जाय, -सकृदापित्यु धमस्य प्रकृता-
प्रकृतानामना, मेष क्रियायु बद्धाणु काररम्भेदीपकम्,
-काय० १०, तु० अडा० -व-विन उपार्थविधाना
धर्मस्य दीपक बुधा, मदेन भाति कलभ प्रतयेन
महोपति ५।६५ ।

दीपक (वि०) [दीप् + गिष्, नृट्] 1 आग मुलमाने
वाला, प्रकाश करने वाला 2 पीपिकारक पाचनकारक
का उद्दीपक करने वाला 3 उत्तेजक उद्दीपक 4 केसर,
जाफरान ।

दीपिका [दीप् + गिष् + भ्णुल् + टाण इत्यम्] 1 प्रकाश
मयल -रघु० ६।६५, ९।३० 2 (समय के अन्त
में) मित्र बनाने करने वाला स्पष्टकर्ता, नर्क-
दीपिका ।

दीपित (वि०) [दीप् + गिष् + क्त] 1 जिसका आग लगा
दो गई हो 2 प्रज्वलित 3 राशनीबाला, प्रकाशयय
4 प्रज्वल, प्रकाशित ।

दीप्य (य० क० कृ०) [दीप् + क्त] 1 जलाया हुआ,
प्रज्वलित, मुलगाया हुआ 2 दहकना हुआ, गरम,
प्रकाश उज्ज्वलने वाला, चकाचौध करने वाला 3 प्रकाश-
मय 4 उत्तेजित, उद्दीपित, -प्ल 1 सिद्ध 2 नीच का
पेड़, -सम् माना । सम० अणु सूर्य, -अक्ष विन्तो,
-अस्ति (वि०) (आग की पक्ति) मुलगाया हुआ
(-निम्) 1 घषकती हुई आग 2 अणस्य का नाम,
-अङ्गु मोर-आयन्त् (वि०) जोशोके स्वभाव का,
--उपल सूर्यकान्तमसि, किरण, सूर्य, -नीति
कालिकेय का विशेषण, -बिह्वल लोमहो (आलकारिक

रूप से अग्रदाल और दृष्टस्वभाव वाली स्त्री के लिए प्रयुक्त होता है),—तपस् (वि०) उज्ज्वल धर्म-निष्ठा से युक्त, उत्कट भक्ति वाला, पित्रुक्त विह, -रक्तः कंबुदा,—सोचन. बिल्ली,—सोहम् पीतल, कांठा ।

दीप्ति (स्त्री०) [दीप्+क्तिन्] 1 उजाला, चमक, प्रभा, आभा 2 नौरस की उज्ज्वलता, अत्यन्त मनोरमता (दीप्ति और कान्ति के अन्तर के लिए दे० कान्ति) 3 लाज 4 पीतल ।

दीर्घ (वि०) [दीर्घ +र] चमकीला, अग्रमगता हुआ चमकदार,— प्र आवा ।

दीर्घ (वि०) [दृ+घञ्] (म० अ०—द्राघीयस्, उ० अ०—द्राघिष्) 1 (मन्य और स्थान की दृष्टि में) लम्बा, दूर तक पहुँचने वाला,—दीर्घात् शरदिन्दु-कान्तिवदनम्—मालवि० २१२, दीर्घान् कटाक्षान्—मेघ० ३५, दीर्घांग आदि 2 लम्बी अक्षयि का टिकाक्ष, उग्रा देने वाला—दीर्घायामा श्रवामा—मेघ० १०८, विष्णु० ३४४, शं० ३११५ ३ (आह की भाँति) गहगा—अमर ११, दीर्घमाल व निश्चय 4 (स्वर्ण की भाँति) लम्बा, जेमा वि 'फाम' में 'आ' 5 उन्मुग, ऊँचा, अग्रल,—घञ् (अन्त्य०) 1 चिर चिरकाक तक 2 अग्रल 3 अर्धिका,—घं 1 ऊट, 2 दीर्घन्वर । मम० अक्षय दूत हरकाग, -अहम् (पु०) प्रोम,—आकार (वि०) वने पाकार का,—आयु—आयुस् (वि०) दीर्घजीवी, लम्बा आयु वाला,—आयुष 1 भाला 2 काई लम्बा हृषिगार 3 सुवार, आर्य हाथी कण्ठ, कण्ठक,—कण्ठर सारस,—काय (वि०) (कद में) लम्बा चेदा पीठ, पति,—पीथ,—घाटिक,—अज्जु, ऊँट,—विहृ मीप, मर्प,—तपस् (पु०) अहसा के पति सोम का विशेषण रघु० ११३४,—तप—दृष्ट, -दृ ताड वृक्ष,—तुष्टी छछुन्दर,—दक्षिन् (वि०) विवेकी, मरुज-दार, दूरदर्शी, दूर तक को जान संचने वाला—पच० ३११८२ मेवाकी, बुद्धिमान्, (पु०) 1 रीछ 2 उल्ल—नाथ (वि०) सयागार देर तक गार मचाने वाला, (-ब) 1 कुवा 2 मूर्ता 3 शल,—निद्रा 1 लम्बी नोद 2 चिरजान, मय्—रघु० १२१११,—पत्र ताड का वृक्ष,—नाद वलुका,—वाद्य 1 नारियल का पेड 2 सुपाओ का पेड 3 ताड का वृक्ष,—पृष्ठ साँप,—बासा एक प्रकार का हरि० इमरी, (इसकी पृष्ठ से बीटी बनती है)—मासत हाथी,—रत कुना,—रत सुन्दर,—रत साँप,—रोमन् (पु०) भालू,—बबक हाथी,—सकृष (वि०) लम्बी जयाओ बाणा,—सकम् चिरकाल तक चलने वाला सोमयज्ञ (त्र) सोमयाओ—रघु० ११८०,—सूष,—सुषिन् (वि०) शनै २

काय करने वाला, मन्वर, प्रत्येक काय की देर में करने वाला, टालने वाला, देर लगाने वाला—दीर्घसूत्री विनश्यति—पच० ४ ।

दीर्घिका [दीर्घ+कन्+टाप्, इत्वम्] 1 एक लम्बा सरो-वर, जसाशय—मालवि० २११३, रघु० १६१३३ २ कूड़ा या बाबरी ।

दीर्घ (वि०) [दृ+कन्] 1 धीरा हुआ, फाटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2 टगा हुआ, भयभीत ।

दु (स्वा० पर०—दुनोति, दूत, या दून) 1 जलाना, आग में भस्म करना—भट्टि० १४८५ २ सताना, कष्ट देना, दुःख देना—उद्भ्रामोनि जलेजानि दुःखन्यपरमिति जगन्—भट्टि० ५१०४ ५१२८, १७१९९, (मुल) तव विशालकष दुनाति धाम्—रघु० ८१५५ ३ पीडा देना, शाक पैदा करना अथप्रकषे सति कषिकार दुनोति निर्गन्धना म्म केत—कु० ३१२८ ४ (अक०) काटप्रस्त होना, पीडित होना—वैहि सुन्दरि दशेन मम सम्भवेन दुतापि—गीत० ३,—कर्मवा० (या दिवा० आ०) काटप्रस्त होना, पीडित होना—नासात सनि निर्दोषो यदि दृष्टमव दूनि कि दूकमे—गीत० ७, कु० ५१२२, ४८, रघु० ११००, १०१११ ।

दुःख (वि०) [दुष्+खिन्ति] 1 दुष् खनति—खन् । २, दुष्+अब वा मान०) पीडाकर, अक्षिकर, दुःखय—मिहाना निपदा हुआ श्रांत दुःखमती वनम्—गमा० २ कठिन, बचन—खम् १ शेर, रज, विषाद दुःख, पीडा, वेदना—मुष हि दुःखान्तरमयुष वाभते—मूख० २१० परेयोपनन दुःखान्तरम् तत्र-मवतरम् विष्णु० ३१२२, इमी प्रकार 'दुःखसुख' 'ममदुःखसुख' २ वत् रडिमाई भुष्कर० १२ ('कनी कडिनाइ से 'मुदिकल से' 'कष्ट से' अथ वा प्रकट करने के लिए 'दुःख' नया 'दुःखेन' गन्ध किया विषो-पय के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं—शं० ७११३, भग० १२१५, रघु० १२१४२, हि० १११५८) । सम०—अतीत (वि०) दुःखो से मुक्त,—अस्त मोक्ष,—कर (वि०) पीडाकर काटदायक,—घाम् 'दुःखो का दुःख' सामागिक अन्वित यमार,—छिन्न (वि०) १ स्रष्ट, कठोर २ पीडित दुःखी,—प्राय,—बहुल (वि०) कष्ट और दुःखो से युक्त,—घाम् (वि०) दुःखी, अग्रलय,—सोक सामागिक जीवन, सतत यातना का दुःख, ससार,—शील,वि०) जो दूसरी को प्रसन्न न कर सके, बड़े स्वभाव का, बिहचिडा—रघु० ३१६ ।

दुःखित—दुःखिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [दुख+इत्थ, इति का] दुःखी, कष्टप्रस्त, पीडित २ बेचारा, विषण्ण, दयनीय ।

दुःखलम् [दु+ऊलच्, कुक्] दूना हुआ रेजम, रेसमीबस्त्र, अत्यन्त महीन वस्त्र—श्यामलम् दुःखकलेवरमवधनमदि-

गनयोगवुकूलम्—गीत० ११, कु० ५१६०, ७८, अष्टि० ३३३४, १०११, रघु० १७२५ ।

दूष (वि०) [दुह्, + क्त] 1. दुहा हुआ 2. जिसका दूष दुहा लिया गया है, चूस लिया गया है या निकाल लिया गया है दे० 'दूष', - क्तम् 1. दूष, 2. दूषों का दूषिया रस । सम०—अपम—तालोक्तम् दूष का फेन, मलाई, —पाचनम् बहु वर्तन जिसमें दूष डाल कर जीटाया जाय, पोष्य (वि०) अपनी माँ के दूष पर रहने वाला बच्चा, दूष पीना (बच्चा) स्तनपायी, —ससृष्ट दूष का मांगर, सात समुद्रों में से एक ।

दुष (वि०) [दुष्, + क्त] (प्राय समास के अन्त में) 1. दुष् देने वाला 2. मानें शत्रु, देने वाला, जैसा कि 'कामदुष्' में ।

दुषा [दुष् + टाप्] दूष देने वाली माय, दुषार गौ ।
दुष्क (वि०) [दुष् + क्त] 1. दुष्प्रवृत्त 2. दुष्प्रवृत्तों का प्रवृत्त ।

दुष्प्र—दुष्प्र ।
दुष्प्र [दुष् + प्रत्यय] 1. दुष्प्रवृत्तों का प्रवृत्त ।
दुष्प्र [दुष् + प्रत्यय] 1. दुष्प्रवृत्तों का प्रवृत्त ।

दुष्प्र [दुष् + प्रत्यय] 1. दुष्प्रवृत्तों का प्रवृत्त ।
दुष्प्र [दुष् + प्रत्यय] 1. दुष्प्रवृत्तों का प्रवृत्त ।

दुष्प्र [दुष् + प्रत्यय] 1. दुष्प्रवृत्तों का प्रवृत्त ।
दुष्प्र [दुष् + प्रत्यय] 1. दुष्प्रवृत्तों का प्रवृत्त ।

दुर् (अण०) [दुर्, हृच्] ('दुर्' के स्थान में प्रयुक्त किया जाने वाला उपसर्ग है 'दुर्गाई' कठिनाई' का अर्थ प्रदत्त करने के लिए स्वरादि तथा बोधवर्णों से आरम्भ होने वाले शब्दों में पूर्व लगाया जाता है, दुष्-पुष्क परमाणा के लिए दे० 'दुष्' । सम०—अक्ष (वि०) 1. दुर्बल आँख वाला 2. कौटौ दुष्टि वाला (-अ) कष्ट का पाशा, - अतिशय (वि०) 1. दुर्बल दुर्ग, अनेक-संज्ञाविशेषण-वच० १ 2. दुर्बल 3. अनिवाय, अत्यय (वि०) 1. जो कठिनाई से होता जा सके, रघु० १११८ 2. दुर्बल, अगाध—अदृष्टम् दुर्भाग्य, शिथिल-अधिष, -अधिषय (वि०) 1. दुष्प्राय, जिसे प्राप्त करना कठिन हो, पच०

११३० 2. दुस्तर 3. दुर्बल, जिसे अध्ययन करना बहुत कठिन हो—वि० ५११८,—अतिशय (वि०) बुरी उरद से बचन, प्रवृत्त या क्रियान्वित किया गया—अक्षय (वि०) 1. दुर्बल 2. दुर्बल, -अध्ययताय, सुबोधपूर्ण अध्ययन,—अक्षयः कुसामं, -अक्षय (वि०) 1. जिसके किनारे पर पहुँचना कठिन हो, अनल, अक्षयिनी-अक्षयिनी सुभ्याय दुर्लभायायाकाय च—भाग० 2. परिश्रम में दुष्प्राय, विपण्य-अद्वैत दुर्लभा अक्षयिनी-वि० ११२३, न्यूनतम युवतिजनन मय सति विरहिजनस्य दुर्लभे (अनन्ते)—गीत० १,—अक्षय (वि०) 1. दुर्बल 2. जिसका पालन करना, या अनुसरण करना कठिन हो 3. दुष्प्राय, दुर्बल (अ) अक्षय-निष्कम्ब, जिसे हुए तथ्यों का गहन अनुमान, -अक्षय-निष्कम्ब (वि०) विद्या अक्षर कर्म वाला, अक्षय-वधु, -अक्षय (वि०) दुर्बल,—अक्षय (वि०) जिसे रोकना या काटने में कठिन हो, जिसका नियंत्रण कष्ट-साध्य हो, -अक्षय (वि०) दुर्दशावन्त, बुरी दशा में पड़ा हुआ,—अक्षय दुर्दशा, दयनीय स्थिति,—अक्षय (वि०) कुसय, वदमुर, -आक्षय (वि०) 1. अक्षय, जो होता न जा सके 2. दुर्बल,—आक्षयम् 1. अनुचित हुम्न 2. कठिन पहुँच,—आक्षयः अक्षयम् वा अक्षय-अक्षयम्, आक्षय-सुबोधपूर्ण हृत्, जिद, अनुचित आक्षय, आक्षय (वि०) कष्टसाध्य,—आक्षय (वि०) 1. बुरे चालचलन का, कदाचारी 2. कुलित आचरण वाला, दुर्बल, दुष्चरित्र-अक्षय २३०, (१) दुर्बल आचरण, कदाचारी, दुष्चरित्र-अक्षय,—आक्षय (वि०) दुर्बल, दुष्का, लफटा,—आक्षय (वि०) 1. जिस पर आक्रमण करना कठिन है 2. जिसका नियंत्रण भी परामर्श न हो सके 3. उद्धत,—आक्षय (वि०) जिसे अज्ञाना बहुत कठिन हो, -रघु० ११३८,—आक्षय (वि०) दुर्बल-अक्षय दुर्गम अक्षयिनी भवेत्—वि० ३११४, रघु० ११०२ ६१६२,—आक्षय (वि०) जिसे प्रयत्न करना बहुत कठिन हो, जिसको जीत लेना कष्टसाध्य है,—आक्षय (वि०) जिस पर चढ़ना कठिन हो, (हृ) 1. नान्यत्र का पेड़ 2. ताड़ का पेड़ 3. छुटार का पेड़ आलायः 1. दुर्बल, जो 2. नृगे मानवोत्, अपाणन्दयुक्त भाषा - आक्षय (वि०) 1. जो कठिनाई में देखा जा सके 2. जिसकी ओर देखने आँखें लग जाय, चकानोच करते वाला प्रकार—दुरालोक स समर निदाघाम्बरजलवत्—आक्षय १०, (- अ) चकानोच पेड़ा करने वाली चक, -आक्षय (वि०) 1. जिसे उठाना कठिन हो 2. जिसे रोकना, बन्द करना, या ठहराना कठिन हो, -आक्षय (वि०) दुर्बल, कुलित विचारों वाला अक्षय, जिसकी नीयत शरारत हो, नीच हृदय का,

—बाला 1. बुरी इच्छा 2. ऐसी बाधा करना जो पूरी न हो सके,—आसन्न (वि०) 1. जिसके पास पहुंचना कठिन हो, दुर्गम, दुर्बल, दुर्बल रघु० ३१६६, ८१४, महावी० २१५, ५१२५ 2. दुर्लभ, दुष्प्राप्य 3. अतिथी, अनुपम, -इत्त (वि०) 1. कठिन 2. पापी (तम्) 1. कुमार्थ, बुराई, पाप-विराशा वैद्य वृत्तिसम्य दुर्वासन्नहृवा इत्त दूरीकुर्बन्-मया० २, रघु० ८१२, अमर २, महावी० ३१४३ 2. कठिनार्थ, मय 3. सकट, इष्टम् दुर्बन्धन, गाली 2. दूसरे व्यक्ति को धरित पहुंचाने के लिए किया जाने वाला आडुटोना वा यज्ञानुष्ठान,—ईश बुरा स्वामी, कियम्,—ईश्या,—कृष्णा अधिप्राय, दुर्बन्धन,—उत्पत्त्य,—उत्पत्ति दुर्बन्धन, शिष्टकी, गाली, बुरा-मत्ता कहना, उत्तर (वि०) जिसका उत्तर न दिया जा सके,—उदाहर (वि०) जिसका उच्चारण किया जाना कठिन हो—अनुष्णितार्थसम्बन्ध प्रबन्धो दुर्बन्धन—मि० २१०३,—उद्ग्रह (वि०) बोलिल, असन्न,—उद्ग्रह (वि०) बहुत माया पत्नी करने पर भी जन्म समझ में न आने वाला, कठिन,—भ (वि०) 1 जहाँ पहुंचना कठिन हो, अमयम्, दुर्गम 2. अत्राप्य 3. दुर्बोध (- म, मय्) कठिन या नम रास्ता, (अजल में मे, मदी या पहाड़ों में मे) सन्धी घाटी, भीडा दर्रा 2 गड, किला, कोट 3. उजड़-साबर जमेल 4 कठिनार्थ, विपत्ति, सकट, दुःख, मय—निस्तारयति दुर्वासन्न-मन्० ३१८९, ११४३, मय० १८१५८, अथ्यस पति—पाल किले का समावेष्टा या प्रशासक 'कम्पन्' (म०) किलाबन्दी, 'आमन्' घाटी का मार्ग यज्ञो घाटी 'सघनम्' कठिनाइयों को पार करना (न) ऊँट, सत्तर 1 (घाटी के ऊपर से, पुल पर से, या किले का) कठिन मार्ग,—आ मि० की पत्नी पावनी को उपाधि - घत्त (वि०) 1 दुर्गमप्रस्त दुर्दशाप्रस्त -भट्टि० १८१० 2 दरिद्र, गरीब 3 दुर्भी कष्ट-घन,—घत्त (ग्री०) 1 दुर्गम, गरीबी, कमी, कष्ट, परिश्रम भा० ६१८० 2 कठिन स्थिति या मार्ग 3 नरक,—गन्ध (वि०) बुरी गन्ध वाला (-घ) 1 बुरी गन्ध, सत्तर 2. दुर्गन्धयुक्त पदार्थ 3 पात्र 4 आम का वृक्ष, मन्थि, मन्थिन् (वि०) जिसमें से बुरी गन्ध आवे मय (वि०) जिसमें से ज्ञान न जा सके, जहाँ पहुंचना कठिन हो, अप्रवेश्य कामिनीकायकारा कुचावन्तदुर्गमे मन्० ११८६, मि० १२१४९ 2 अत्राप्य, दुष्प्राप्य 3. दुर्बोध,—गाह्य, पाद्य,—गाह्य जिसका अवभाजन करना वा अनुसंधान करना कठिन हो, जनवगाह्य, घहू (वि०) 1 कष्टमाप्य 2. जिसको जीतना वा बध में करना कठिन हो—रघु० १०१५२ 3 दुर्बोध (ह) धरोट, गैल घट (वि०) 1 कठिन 2 असमर्थ,—घोष 1 कर्कश-

ध्वनि 2 रोड, जन (वि०) 1 दुष्ट, बुरा, सल 2 बदनाम, द्वेषपूर्ण उपाधी, (- म) बुरा या दुष्ट आदमी, द्वेष रखने वाला या उपद्रव करने वाला व्यक्ति, दुर्बल, दुर्बल प्रियवारी व नैतद्विषयाम-कारणम्—चाप० ७४ ७५, प्राग्भेदप्रत्ययकारण गोप-कारण दुर्बल—कु० २१८०, जय (वि०) अजेय, जिसको जीतना न जा सके, अर (वि०) 1 चिरगया 2. (भोजनार्थ) जो कठिनार्थ में पच, आननगाल 3 जिसका उपभोग करना कठिन हो, जाल (वि०)

1 दुष्टी, अभागा 2 वृत्त स्वभाव का बुरा, दुष्ट 3 मिथ्या, अवार्त्तविव, (- तम्) दुर्भाष्य, सकट, कठिनार्थ, रघु० १३१०२—जाति (वि०) 1 वृत्त स्वभाव का, दुष्ट, दृष्ट अमर ५२२ जाति में वृष्टिप्लुत (ग्री०-ति) 1 दुर्गम, दुर्दगा,—जान—श्रेय (वि०) जो कठिनार्थ में जाना जा सके दुर्बोध—मय 1 दुर्गचरण 2 अनौचित्य 3 अन्वय,—शास्त्र—शास्त्र (वि०) बदनाम—द्वेष,—द्वेष्य,—द्वेष्य (वि०) जिसे बदनाम या बध में करना कठिन हो, जो सीधा न गया जा सके, प्रवर्ग, वसं (वि०) 1 जो कठिनार्थ में दिवादा 2 उकाचीय करने वाला—मय० १११५०—दान (वि०) 1 जिसका वध में करना कठिन हो, जो पत्तन न हो सके जो सीधा न किया जा सक मि० १५०२ 2 उच्छूलय घमण्डी,—घाट, दुर्गन्तात्त रत्नात्तथ्य श्रितियेपायनते मयावी० ३१३० १ १ 1 वरशा 2. प्रगडा कलह—विमम् 1 युग दिन 2 वेधाकर्म दिन शीघ्र, मुफ्त का योग्य वृष्टिकाल उपभोग्यकानुद्विन्दम् मू० ५—कु० १८६२, मयावी० ८१५० 3 वीक्षण—रघु० ४१४९ ८० ५१६० उपरम् ५५५ 4 पौर अघकार, इष्ट (वि०) जिस पर यज्ञ गरीबों में विचार किया गया हो, जिसका मय न टाक न हुआ हो, वैकम् बुरे किमन दुर्गम—वृत्तम् वेदवार्त्ता का श्रेय, इय पात्र, धर (वि०) 1 जन्माका मुक्त-कला न किया जा सके, जो राका न न, मय 2 दुर्मन्त्र दुर्गम मन्त्रेन माह्य घट० ११ मन्० १०८०, (-र) पाग धर्ष (वि०) 1 अननुपपन्नय, अनवि-कष 2 अमम-मि० प्र० ३ अमर उपजना 4 उदत, धी (वि०) मय वेदवार्त्ता, शास्त्र, उदा-नीर, -विधु (वि०) जिसका वेदवार्त्ता न जा सके, जिस पर शास्त्र न किया जा सके जिसका प्रतिपद्य न किया जा सके उच्छूलय मया दुर्निग्रह चलम् मय० ६१३५, निर्मित (वि०) जमावधानी—रघु० ७११०, निर्मितम् 1 आयुक्त रघु० १८१५० 2 बुरा बहाना,—विचार,—निवायं (वि०) जिसको

हटाया या दूर करना कठिन हो, जिसका मुकाबला करना कठिन हो, अथवा,—नीलम् कटाचरण, दुर्गति, दुर्व्यवहार,—नीलि (स्त्री) बुरा प्रवृत्त—मायि० ५।३९,—बल (वि०) 1. कमजोर, बलहीन 2. ओष-काय, अक्षिहीन—उत्तर० १।२० 3. म्हात, घोडा, कम—य० ५।१२,— बाल (वि०) गजे मिर बाला,—बुद्धि (वि०) 1. बेवकूफ, मूर्ख, बुद्ध 2. कुमार्गी, दुष्ट मन का, दुष्ट-भग० १।२३,—बोध (वि०) जो योग्य समझ में न आये, जिसकी तह तक न पहुँचा जाय, दुर्गोष्ठ—निमगदुर्बोधमबोधबिबलबा बब भूप-तोना करिन बब जगत-०-कि० १।६,—भम (वि०) भाव्यहीन अभागा,—भमा 1 वह पत्नी जिसे उसका पति न चाहता हो 2. बरे स्वभाव की स्त्री, कलहाप्रिय स्त्री,—भर (वि०) जिसे निभाना कठिन हो, बोझा, भार,—भाष्य (वि०) भाव्यहीन, अभागा (—यवम्) बुरी किम्मत,—भक्षम् 1 खाद्य सामग्री की कमी, अभाव, अक्षम—याज्ञ० २।१४०, मनु० ८।२२, हि० १।०३ 2 कमी भक्ष्य बुरा सेवक,—भ्रान्त (पु०) बुरा धार,—भति (वि०) 1. मूर्ख, दुर्बुद्धि, बेवकूफ, अज्ञानी, 2 दुष्ट, मोटे हृदय का—मनु० ११।३०,—भब (वि०) शराबखार, लूकार या हिंस, मदान्धत, दीवाना,—भनत् (वि०) शिवमनस्क, हतात्म्याट, दुःखी उदात्त,—भनुष्क, दुःख, दुष्ट पुरुष,—भन्वः, भन्धितम् बुरी नमीहल, बुरा परामर्श, भनक्षम् बुरी मोत, अश्रावणिक मृत्यु,—भर्षाब (वि०) तिलज्ज, अष्टिष्ट,—भल्लिका,—भल्ली एक प्रकार का उपरुपक, मुक्तान्त प्रहसन—शा० द० ५५३, शिवः 1 बरा दान्त 2 मन्, मूक (वि०) बुरे चेहरे वाला, विकराल, बदनूरत—भत्० १।९० 2 कटुभाषी, अरलोलाभायी बद्बवान—भर्तु० २।६९,—भृष्य (वि०) बहुत अधिक मृत्यु का महंगा,—भृष्य (वि०) मूर्ख, बेवकूफ, मन्द-बुद्धि, बूढ़ (पु०) मूढ़मति, मन्दबुद्धि मनुष्य, बूढ़—पद्मानवीथ्य ध्याकर्तुमिति दुर्गवसात्पलम्—वि० २।२९,—बोध—बोधन (वि०) अज्ञेय, जो ज्ञान न हो सके,—(न) बृतराष्ट्र और मात्स्यारी का ज्येष्ठ पुत्र (दुर्योधन बचपन से ही अपने चचेरे भाई, पाण्डवों से घृणा करता था, विशेष कर भीम से। इसलिए पाण्डवों का विवाहा करने के लिए उनमें यथासक्ति प्रयत्न किये। जब उनके पिता बृतराष्ट्र ने दुर्योधन को युवराज बनाने का प्रस्ताव रक्खा, तो दुर्योधन को अच्छा न लगा, क्योंकि बृतराष्ट्र ही उस समय राजा थे, इसलिए दुर्योधन ने अपने अन्धे पिता को इस बात पर राजी कर लिया कि पाण्डवों का निर्वासन कर दिया जाय) बारपावन उसका भागी निवासस्थल बना गया—और उनके रखने के लिए एक विशाल

महल बनवाने के बहाने दुर्योधन ने मास, बेर्वा आदि दहनशील सामग्री से एक भवन इस आला से बनवाया कि पाण्डव सब उसमें जल कर मर जायेंगे। परन्तु पाण्डवों को दुर्योधन की इस चाल का पता लग गया था, जब वह सुरक्षित उस भवन से निकल भागे। फिर पाण्डव इन्द्रप्रस्थ में रहने लगे—यहाँ रहते हुए उन्होंने बड़े ठाट बाट के साथ एक गाजमूय यज्ञ का आयोजन किया। इस घटना ने दुर्योधन को ईर्ष्या और क्रोधान्ति को और भी अधिक बढ़ाका दिया— क्योंकि दुर्योधन का पाण्डवों का बारपावन में जला कर मारने का षडयन्त्र पहले ही निष्फल हो चुका था। फलतः दुर्योधन ने अपने पिता को उन्मत्ताया कि पाण्डवों को हस्तिनापुर में आकर ज्वा खेल्ने के लिए निमन्त्रण दिया जाय क्योंकि दुर्योधन विशेष रूप से जूए का दीवाना था। इन जूए के खेल में दुर्योधन को अपने माना शकुनि की सहायता प्राप्त थी। दुर्योधन ने जो कुछ भी दौध पर लगाया—वही हार गया, यहाँ तक कि इस हार से अन्धे होकर उसने अपने आप को, अपने भाइयों को और अन्त में हीरोही को भी दौध पर लगा दिया। और इस प्रकार जूए में सब कुछ हार जाने पर, दाँत के अनुसार दुर्योधन को १२ वर्ष का बनवास तथा एक वर्ष का अज्ञातवास बिताने के लिए अपनी पत्नी तथा भाइयों सहित बनल की ओर जाना पडा। परन्तु यह दौधकाल भी समाप्त हो गया। बनवास से आकर पाण्डव और कौरवों ने 'भारती' नाम के महायुद्ध की तैयारी की। यह युद्ध १८ दिन रहा और नारे कौरव अपने अधिकांश बन्धुबान्धवों सहित इसी युद्ध में मारे गये। युद्ध के अन्तिम दिन भीम का दुर्योधन से द्वन्द्व युद्ध हुआ और भीम ने अपनी गदा से दुर्योधन को जघा लाठ कर उसे पीत के साथ पहुँचाया,— बोलि (वि०) नीध जाति में उत्पन्न, अचम कुल का,—लक्ष्य (वि०) जो कठिनाई से देखा जा सके, जो दिखाई न दे,—लभ (वि०) 1 जिसका प्राप्त करना कठिन हो, दुष्प्राप्य, दुस्ताप्य—रघु० १। ६७, १।७।७०, कु० ५।४०, ५।४६, ६१ 2 जिसका बुझना कठिन हो, जिसका मिलना दुष्कर हो, विरल गुद्धान्तदुर्लभम्—शा० १।१६ 3 सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, प्रमुख 4 शिव, प्यारा 5 मृत्युबान्,—कलित (वि०) काष्ठ प्यार से बिछाया हुआ, अत्यधिक लाठ प्यार में पका हुआ, जिसे प्रसन्न करना कठिन है,—हा मधु-बुल्लिल—बेणी०—४, विक्रम० २।८, मा० ९ 2 (जत) स्वेच्छाचारी, मटमट, अष्टिष्ट, उच्छूलन—स्पृह्यामि सन् दुर्ल्लितायास्ते—शा० ७, (—सम्) स्वेच्छाचारी, अन्धदुःख,—केवल्य जाली हस्तायोज,—बब (वि०) 1 जिसका बर्षन करना कठिन हो,

अवर्तनीय 2 बहु बाह जिसका बतलाना उचित न हो
 3 अनुचित बोलने वाला, गाली देने वाला, (—अन)
 गाली, फटकार, दुर्वचन, —बहसू(नपुं०) गाली, झिडक,
 —बर्ष (स्त्री०) बुरे रूप का, (—बर्ष) बारी, —वसति:
 (स्त्री०) पौडाजनक विवासस्थान—रघु० ८।१५, —बह
 (स्त्री०) भारी, जिसे डोला कहते हैं—उत्तर० २।१०,
 कु० १।१०, —वाच्य (वि०) 1 जिसका कहना या
 उच्चारण करना कठिन हो 2 कुभाषी, बहबहान
 3 कठोर, क्रूर, (अव्य०) झिडकी, दुर्वचन 2 अ-
 नारी, लोकापवाद,—बाह अपवाद, अपयण, कुम्भ्याति,
 —बार,—बारण (वि०) जिसका मुकाबला न किया
 जा सके, अक्षय—रघु० १४।८७, कु० २।२१, —बासना
 1 ओछी कामना, बुरी इच्छा—भामि० १।८६
 2 कर्मात्मक्यता,—बासत् (वि०) 1 बुरा कर्म
 चारण किये हुए 2 तथा (पुं०) 3 एक बड़ा क्रोधो
 क्षुब्धि, अग्नि और अमसूया का पुत्र देने प्रसन्न करना
 क्षयना कठिन वा, बहुत से स्त्री पुत्रयो को उसने
 अपमान तथा ममोहन सहन करने के लिए पाप दिया।
 अनमन्य के क्रोध को भाति, इसका क्रोध भी प्राय
 एक नाशकामि बन गया, विवाह विवाह्य (वि०)
 जिसमें प्रवेश करना कठिन हो, जिसका अङ्गान्तर
 मुश्किल हो, अगाध, विचित्र (वि०) अचिन्तनीय,
 अयकल,—विदग्ध अनुगत, नौसिंधव, बेबकूक, मन्द-
 बुद्धि, मूर्ख 2 विन्-कुत्र अनाशी 3 चोरी से ज्ञान से हो
 फुला हुआ, गवित, मद्रा घण्ट कराने वाला—वृषाघटन
 प्रदणतुविरघ—वेणो० ३, ज्ञानलक्षदुविरघ चन्द्रायि
 तर न रजपति - भर्तु० २।३,—विध (वि०) 1 कर्मोत्ता,
 अवयव, नीच 2 दुष्ट, दुश्चरित्र 3 गरोर, दग्ध
 —विदधानि कविगर्भदुविय—ने० २।३३ 4 मन्दबुद्धि,
 मूर्ख, बेबकूक, —विदध श्रीद्वय, उद्वहना, विनीत
 (वि०) 1 (क) बुरी तरह से विधिन, अशिष्ट,
 अग्रभ्य दुष्ट गार्होनिरि दुर्विनीतानाम् ज० १।२५,
 (ख) अस्वस्थ, नटवट, उपद्रवो 2 हठीला, घुराघठी
 —विषाक. 1 दुष्परिणाम, बुरा नतीजा—उत्तर०
 १।४०, महावी० ६।७ 2 पूर्व जन्म के या इस जन्म
 के सिधे हुए कर्म का बुरा परिणाम, बिलसितम्
 म्बेकप्रहार, अक्षयधन, नटखटपना, ब्रुत (वि०)
 1 दुष्परिण, दुष्ट, अमन्त्र 2 बदमास, (सम्) दुरा-
 चरण, अशिष्ट व्यवहार,—कृष्टिः (स्त्री०) घाटी
 दार्गिण, अनाष्टि, —व्यष्टा गन्त निर्णय (विधि में)
 —अन (वि०) निरमो को पालन न करने वाला, जो
 भाजाकारी न हो, हुतम् बहु यज्ञ जो बुरी रीति से
 किया गया है,—हृद (वि०) दुष्ट हृदय का, तुष्ट
 विचारो वाला, सम् (पुं०) वैरी,—हृष्य (वि०)
 दुरात्मा, दिक का छोटा, दुष्ट ।

दुरीवर [दुष्टमासमन्तात् उदर यस्य व० सं०] 1 बूझारी,
 बलकार 2 पासा, बूझा 3 बाजी, दाव,—रघु बूझा
 खेलना, पासे से खेलना—दुरीदरच्छाजिता समोहते
 नयेन जेनु अगवी मुयोधन—कि० १।७, रघु० १।७ ।
 दुग् (पुंग०) उभ्र—दोषयति—ते, दोलित) झुलना इपर-
 उपर झिलना-जुलना, इपर उपर घुमाना, झुलाना
 —कटि वेहोलवेहास—रति०, दोलयन् हाविबाक्षी—भर्तु०
 ३।३९ 2 हिलाकर ऊपर को करना, ऊपर फेंकना
 —दोलयति धूलि वायु गच्छ० ।
 दुलि (स्त्री०) [दुल्+कि] छोटा कछुवा, या कछुवी ।
 दुष् (दिव्) पर०—दुष्पति, दुष्ट) 1 बुरा या अष्ट हो
 जाना, दुषित होना, घाटा उठाना 2 मलिन होना,
 असली होना (स्त्री० का), कलकल होना, अपवित्र होना,
 विगडना, पच० १।६६, मनु० ७।२४, १।३१८, १०।
 १०२ 3 पाप करना, गलती करना, गलती होना
 4 असली होना, अभक्त या श्रद्धाहीन होना—प्रे००
 —दुष्गति (परन्तु—दुष्पति दोषयति यदि अर्थ है
 'दुषित करना, अष्ट करना) 1 अष्ट करना, विगा-
 डना, नष्ट करना, क्षतिग्रस्त करना, चिमट कराना,
 दुषित करना, घब्बा लगाना, कलकल करना, विधावन
 करना, अपवित्र करना—(शा० तथा आल० से)—न
 मोनो मरणादिभि वेदल दुषित यज—मच्छ० १०।
 २७, पुरा दूषयति स्वलोम्-रघु० १२।३०, ८।६८,
 १०।४३, १२।८, मनु० ५।११, १०।४, ७।२५, याज्ञ०
 १।१८९, अथ६ ७०—न श्वेत दूषयिष्यामि श्वेषध-
 महापानम् महापयो० ३।२८,—दुषित मही कर्मणा
 उल्लखन नदी कर्मणा, ताडना नदी जादि 2 चरित्र
 अष्ट करना, उन्नाह भय करना 3 उल्लपन करना,
 अक्का करना—मनु० ८।३६६, ३६८ 4 निगकरण
 करना, हटा देना, रद्द कर देना 5 दाप लगाना, निन्दा
 करना, दोष निकालना, किसी के विषय में बुरा कहना
 दोषारोपण करना—दुषित सर्वदेवेभ्यु निघादन् गति-
 प्यति—रामा०, याज्ञ० १।६६ 6 बिलाबट करना
 7 मिथ्या या बनावटी करना 8 निगकरण करना,
 लपटन करना, प्र १ 1 अष्ट हाता, विगडना,
 निपातन हाता याज्ञ० ३।१९ 2 पाप करना, वडना
 करना, श्रद्धाहीन या अयनी (अभान्) हाता—भय०
 १।४०, मनु० १।७४ (प्रे००) 1 विगाडना, अष्ट करना,
 गल्ला करना, घब्बा लगाना 2 दाप लगाना, निन्दा
 करना, दाप निकालना सम् दुषित या कलकल होना
 —(प्रे००) 1 दुषित करना अष्ट करना, गल्ला
 करना, घब्बा लगाना 2 उल्लपन करना 3 दापारोपण
 करना, निन्दा करना, दोष निकालना ।
 दुष् (मू० क० कू०) [दुष्+क] 1 बिल्ला हुआ, खराब
 हुआ, क्षतिग्रस्त, बारी 2 दुषित, घब्बा लगा हुआ,

उत्सवचन किया हुआ, कल्पित ३. भक्ति, प्रपञ्च
४. वायासका, बरवासा—दुष्टवृष ५ दोषी, अपराधी
६ नीच, भयम ७ दोषयुक्त, सर्वोद्य—जैसा कि तर्क
में हेतु ८. पौडाकर, निष्पन्ना । सम०—आत्मन्,
—आशय (वि०) सोते मन वाला, दुष्ट हुयव वाला,
—राज. बरवासा हाथी, —केसल, —धी, —दुष्टि (वि०)
सोते मन का, दुर्भीक्ष्णपूर्णा, दुःखील, —वृक्षः मयदूत
परन्तु अर्थिक बेल, (जो गाड़ी में सीधे) बरवासा
बैल ।

दुष्टि. (स्त्री०) [दुष् + क्तित्] अष्टाचार, सोत ।
दुष्ट (अभ्य०) [दुर् + ष्वा + क्ति] १ खराब, बुरा २ अन्-
वित रूप से, अशुद्ध रूप से, गलती से ।

दुष्प्रिया: (पुं०) बन्धवरा में उत्पन्न एक राजा, पुत्र की
मत्तान, शकुन्तला का पति, भारत का पिता (जंगल में
सिकार सेलता हुआ, एक बार दुष्प्रिया, हरिण का
पीछा करता हुआ कश्यप के आश्रम की ओर निकल गया।
वहाँ कश्यप की गीत की हुई पुत्री शकुन्तला ने उसका
स्वागत-सत्कार किया। शकुन्तला के भौतिक सोचधर्म
से राजा दुष्प्रिया उस पर मोहित हो गया—उसने
उसका अपनी रानी बनाने के लिए राजी कर लिया
और फलतः मानस विवाह कर लिया। कुछ समय
शकुन्तला के साथ बिना कर राजा अपनी राजधानी
का लौटा। कुछ महीनों के पश्चात् शकुन्तला ने
एक पुत्र को जन्म दिया। कश्यप ने यह उचित
समझा कि शकुन्तला का उसके पति के घर भेज दिया
जाय। जब शकुन्तला दुष्प्रिया के पास गई और उसके
सामने लड़ी हुई तो दुष्प्रिया ने—सौजन्यदा के हर
से—कहा कि विवाह करने की बात तो दूर रही मैंने तो
तुम्हें अपनी देखा तक नहीं, परन्तु उसी समय उसे स्वर्गीय
बाबा ने बतलाया कि शकुन्तला उसकी वैध पत्नी है।
फलतः उसने शकुन्तला की पुत्र समेत स्वीकार कर
उसे अपनी पटरानी बनाया। बहु राजा रानी दुष्ट-
नया तक सुखपूर्वक रहे, और फिर अपने पुत्र भरत
की राज्य देकर जंगल की ओर चल दिवें। दुष्प्रिया
और शकुन्तला का उपमृत बर्षन महाभारत में दिया
हुआ है, काशिकास द्वार बर्षित कहानी कई महत्त्व-
पूर्ण बातों में इससे भिन्न है—दे० 'शकुन्तला' ।

दुष् [दुष् + दुर्] 'बुरा, खराब, दुष्ट, पटिया, कठिन या
मुश्किल आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए समा-
सन्तो से पूर्व (कभी २ धातुओं के पूर्व भी) लगाया
जाने वाला उपसर्ग । (विश्व० स्वर और ध्वजनों से
पूर्व दुष् का स् बद्ध कर र् ही जाता है, उदा० बपों
के पूर्व नियम, व् और ख् से पूर्व व् तथा क् और प् से
पूर्व व् हो जाता है) । सम०—कश् (वि०) १. दुष्ट,
बुरी तरह से करने वाला २. करने में कठिन, कठोर

या मुश्किल—बन्तु सुकरं कर्तुं दुष्करम्—करने की
असंथा कहना आसान है,—अमर ४१, मुष्क ३११,
मनु० ३१५५, (—रप्) १. कठिन या शोकाकर कार्य,
कठिनार्थ २ पर्यावरण, अन्तारिक्ष,—कर्मन् (पुं०) कोई
भी बुरा काम, पाप, पुनः, —कासः १. बुरा समय
—ग्रा० ७१५ २. प्रत्येकाल ३. विष का विशेषण,
—दुष्कम् बुरा या नीच धराना—(आश्रयित) स्त्रीलत
दुष्कृताद्यि—मनु० १२३८,—कुमीन (वि०) नीच
जाति में उत्पन्न,—हम् (पुं०) दुष्टपुरुष,—कृत्य—कृतिः
(स्त्री०) पाप, दुष्कृत्य—उत्ते दुष्कृत्यकृते—पा० २।
५०,—कम् (वि०) क्रमहीन, अस्तव्यजन, उद्वेगवित्त,
—क्षर (वि०) १ जिसका पूरा करना कठिन हो, मुश्किल
—रप् ० ८१७९, कु० ७१५२ २ अगम्य, दुर्गम ३ बुरा
करने वाला, दुष्प्रबन्धार करने वाला, (—र) १. राउ
२ द्विकोषोपेय शत्रु या सौपी, "शारिन् (वि०) कठोर
तपस्या करने वाला,—शरित (वि०) दुष्ट, बुराचरण
करने वाला, परिश्रमक (मम्) बुराचरण, बुरा बाल-
बलन,—शिकिन्ध (वि०) जिसका इजाज करना कठिन
हो, असाध्य,—श्वन्नः इय का विशेषण, श्वन्न
शिव का विशेषण,—क्षर (वि०) (दुष्ट या दुस्तर)
१ जिसका पार करना कठिन हो—रप् ० १२२, मनु०
५१५२, वच० १११११ २ जिसका दमन करना
कठिन हो, अपराधेव, अनेव,—तर्क मिथ्या तर्कना
—वक्ष (दुश्चर) (वि०) जिसका तुष्टन होना कठिन
है,—पातम् १ बुरी तरह से दिग्गना २ दुर्बलन, अय-
शब्द,—परिष्ण (वि०) जिसका पकड़ना, रहण करना
या लेना कठिन हो, (—र) बुरी पत्नी,—दूर (वि०)
त्रिमका पूरा करना, या जिसको सन्तुष्ट करना कठिन
हो,—प्रकाश (वि०) अशुद्ध, अशुकरमय, धूमिल,
—प्रकृति (वि०) बुरे स्वभाव का, नीच प्रकृति का,
—प्रजम् (वि०) बुरी मत्तान वाला,—प्रत्त (दुष्प्रज)
(वि०) कमबोर मन का, दुर्बुद्धि,—अवर्ष,—अपुष्य
(वि०) जिस पर प्रहार न किया जा सके, दे० 'दुर्वर्ष'
—रप् ० २१२७,—प्रवाशः बदनामी, कलक, अन्कारित,
—अप्रुति. (स्त्री०) बुरा समाचार, कुख्याति—रप् ०
१२१११,—असह (दुष्प्रसह) (वि०) १. जिसका
प्रतिरोध न किया जा सके, अमानक २ अगम्य—मालवि०
५११०,—अथ,—प्राप्य (वि०) प्राप्य, दुष्प्राप्य
—रप् ० ११४८, पा० ६१३६,—शकुन्तम् बुरा समुद्र,
अपराधुन,—शला भूतराष्ट्र की इकलौती पुत्री की
अमश्रु की स्थाई गर्भ की,—शासन (वि०) जिसका
प्रकष करना या शासन करना कठिन हो, अविनेय,
(क) भूतराष्ट्र के १०० पुत्रों में से एक (यह बहादुर
योद्धा था, परन्तु दुष्ट और दुर्बल)। खर मुश्किल
हीरी की धीरे पर कमा कर हार गया तो दुःशासन

सतकी षोडी पकड़ कर इसे भरी सभा में बीच लाया, वही उसने उसे बिखरने देकरा बाहा, परन्तु बीच बुझियों के सहयोग कीकृष्ण ने उसका पीर बढ़ा कर उसकी कज्जा की रक्षा की। बुशासन के इत जघन्य कृत्य से भीम इतना उतेजित हो गया कि उसने भरी सभा में प्रतिज्ञा की कि मैं तब तक बुझ की नींद न सोऊँगा जब तक इस दुष्ट बुशासन का खून न पी लूँ। महाभारत बुद्ध के १९ वें दिन भीम का बुशासन से सामना हुआ। भीम ने एक ही पकाड़ में बुशासन का काम लामा कर दिया—और उसका खून पीकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की,—शोक (दुःखीक) (वि०) गुप्ता, बुशाचारी, बधमाश,—सम्ब (दुःख या दुस्सम्ब) (वि०) 1. असय, असलान, अक्षया 2 प्रतिफल, बुधापूर्व 3. अतिपटकर, अनुचित, बुरा,—सम्ब (अभ्य०) दूरी तरह से, दुष्टतापूर्वक,—सम्बम् दुष्ट प्राणी,—सम्बान,—सम्बेय (वि०) जिसका मिलना या विनय में मुलह कराना कठिन हो,—सह (दुस्सह) (वि०) असह, अमतिरोध्य, असमर्थोप, —साधिव् (दु०) बुद्धा गयाह,—साध,—साध (वि०) 1. जिसका पूरा होना कठिन हो 2. जिसका इलाज करना कठिन हो 3. जिसपर विजय न प्राप्त की जा सके,—स्थ,—स्थित (वि०) (दुस्स) या 'दुस्सित' भी लिखा जाता है। 1. दुर्बलाप्य, गरीब, दयनीय 2 पोषित, विषण्ण, दुःखी 3. असह्य, सय 4 अस्विर, अलाल 5 मूर्ख, बुद्धिहीन, अज्ञानी, (अभ्य०—सम्ब) दूरी तरह से, अदूरे दूरी से, अपूर्ण रूप से,—स्थितः (स्वी०) 1 बुर्धवा, विषण्णा, दयनीयता 2. अस्थिरता,—स्थुम्बम् (दुस्सु-प्यम्) 1. ईदत्तार्थं या सम्पर्क 2. जिज्ञा का ईदत्त स्वार्थ या प्रपल जिससे प, द, ल् तथा व् की स्थिति निकलती है,—स्वर (वि०) जिसका मात्र रक्षना कठिन या पीड़ा कर ही—उत्तर० ११२४,—स्थवाः बुरा स्थान।

दुष्ट (अभा० उभ०—दोषिक, दुष्टे, दुष्प) दोहना, निषोडना, उद्वेग करना (द्विक० के साथ)—आत्मलित एतानि मनुष्यबीषक पुपुषुषिद्वि० पुपुषुषिरीयोम्—कु० ११२, य एवो दोषिक पापान् स रामानुभूतिमानुयात्—भट्टि० ८८२, यवो घटोनीरपि गांशु हानि—११०३, रघु० ५१३१ 2. किसी वस्तु में से कोई दुष्टरी बीज निकालना,—(द्विक० के साथ)—आगामुनिधिवामानं लोक चित्तमदारवधम्—भट्टि० ८१९ 3. छान कर निकाल लेना, काम उठाना—दुष्टीह गां स ब्रह्मण सत्याय मन्वा विवम्—रघु० ११२४ 4. (अपेक्षित पदार्थ) प्रदाय करना—आमानुषे विप्रकथेत्सत्समीम्—उत्तर० ५१३१ 5. उपनीय करना—प्रेर० दोहवति—बुहागा, इच्छा०—दुपुषति, दुष्टो ही इच्छा करना—राजन् 1. दुपुषति यत्र कितिबुधुनाम्—भट्टि० २५६।

दुहितु (स्वी०) [दुह+पुप्] बेटी, पुत्री। सम०—पति, 'दुहितु पति' भी) बामाना, दामाद।

दु (द्विबा० आ० द्रवते, दूत) 1 कष्ट 1 होना, पीड़ित होना, क्लिप्त होना—न दूये साल्वीसुयुयम्पहामपरार्थ्यति—वि० २११, कथमय बन्धते जनमनुगतमसम-वारम्बरवृत्त—गीत० ८, कष्टप्रस, दुःखी—दे० 'दु' (कर्मबा०) 2 पीड़ा देना।

दूतः, दूतकः [दु+कृत, दीर्घश्च, दूत+कन्] सन्देशहर, संदेशवाहक, राजदूत—चाण० १०६। सम०—दूत (वि०) राजदूत के द्वारा बात करने वाला।

दूतिका, दूती [दु+ति+कन्+टाप्, दूति+कीप्] 1 संदेशवाहिका रहस्य की (पुत्र) माते जानने वाली 2 प्रेमी और प्रेमिका से बातचीत करने वाली, कुटनी (विशे० दूती का 'ती' कभी कभी ह्रस्व हो जाता है दे० रघु० ८८५३, १९१८, कु० ५११६, और इसके ऊपर मिले०)।

दूतस्य [दूतस्य भाव—दूत (ती)+यत्] 1 किसी दूत का नियुक्त करार 2. दूतालय 3 संदेश।

दुन (वि०) [दु+भ्त, नत्वम्] पीड़ित, कष्टप्रस,—आदि, दे० 'दु' और 'दू' के नीचे।

दूर (वि०) [दु खेन ईपते—दूर+इण्+रक्, बातो लोप] (म० अ० दबीपय्, उ० अ० दबिष्ठ) दूरत्व, दूरवर्ती, फामले पर, दूरस्थित, विप्रकृष्ट—कि दूर भ्यवसायिनाम्—चाण० ७३, न योजनघट दूर वाहा-मानस्य तुण्णा—हि० ११४६, ४९,—रघु दूरी, वासला (दूर) गन्ध के अग्रभाग कारक के कुछ रूप निम्नलिखित रूप से किया विशेषण की भांति प्रयुक्त होते हैं—(क) दूरम् 1 कासले पर, विप्रकृष्ट, दूरी पर (अपा० या सब० के साथ)—आमात् वा बामस्य दूर—सिद्धा० 2 ऊपर ऊँचाई पर 3 नीचे गहराई में 4 अत्यंत, अत्यधिक, बहुत व्याह—नेने दूरमन्त्रने—सा० द० 5 पूर्णरूप से, पूरीतरह से,—जिमम्ना दूर-मन्मसि—कथा० १०१२९, दूरमुदुत्तापा—मेघ० ५५, (ख) दूरेण 1 दूर, दूरवर्ती स्थान से, दूर से,—कल कापटधर्षणेन दूरेणैव विसृज्यते—भाशि० १७८ 2 कहीं अधिक, अत्यधिक ऊँचाई पर—दूरेण सुखं कर्त्तुं बुद्धिविग्राहजन्यय—भग० २५९, रघु० १०१३ 3 अने० पा० (ग) दूरत् 1 कासले से, दूरी से,—प्रज्ञा-लनादि पक्ष्मस्य दूरावस्थांनं बरम्, दूरावागत—दूर से आया हुआ (यह समस्त-पद्य समझा जाता है)—नवीय-ममिता 'दूरात्परित्यज्यताम्—भट्टि० १८१, रघु० ११६१ 2. दूरम दृष्टि से 3. सुदूर पूर्व कास से (ख) दूरे, दूर, कासले पर, दूरवर्ती स्थान पर—न मे दूरे किंचित्प्रमथति न पावर्त्त रजजात्—सा० ११९, भो वेदिन् विरति भयमतिदूरे तपयोदी—मुद्रा०

१. मर्त्य ० ३।८८, हुरीक—३. फासले पर हटा देना, हटाना हूर करना, —आजमे हुरीकलअजे—दवा ० ५, मासि ० १।१२२ २ बंधित करना अलग करना—मूच्छ ० १।४ ३. रोकना, परे करना ४ आगे बढ़ाना, पीछे छोड़ जाना, हूर रखना—श ० १।१७, इसी प्रकार हुरीक—हूर रहना, परे रहना, अलग रहना, फासले पर रहना—हुरीकते मयि सखरे बकवाकीमिबकाम । सम ०—अमरित्त (बि०) लम्बी हुरी होने से विद्युत्—आवाप्तः हूर से गिराना लगाना—आफ्फाब (बि०) हूर तक करने वाला, लम्बी छलांग लगाने वाला,—आफ्फ (बि०) १ ऊँचाई पर चढ़ा हुआ, हूर तक आगे बढ़ा हुआ २ गहरा, उत्कट—हुराकक मरु प्रयागोअहन—विभक्त ० ४,—ईरैतेलख (बि०) भैगी वृष्टि वाला,—गत (बि०) हूर हटा हुआ, हूरत्व, हूर गया हुआ, आगे तक बढ़ा हुआ, गहराई तक गया हुआ—हुरगतमन्महाअमेय काल-हरणत्व—श ० ३,—प्रहाम् हुरतिथन पदाशौ की भी देखने की दिव्य शक्ति,—शान् १ गिट्ट २. बिडान् पुरुष, परिश्रत,—बिंशम् (बि०) हूर की देखने वाला, अष्टवृष्टि, वृष्टिमान् (—म्) १. गिट्ट २ बिडान् पुरुष ३ प्रत्या, पंगम्बर अवि,—बुधि हूर तक देखने की शक्ति २ बुद्धिमत्ता, अष्टवृष्टि,—वातः १ हूर तक गिरना २ हूर की उड़ान ३ बहुत ऊँचाई से गिरना,—वाभ (बि०) विसृत पाट वाला (नव आदि)—वार (बि०) १. बहुत चौड़ा (दरिया) २. बी कठिनाई से पार किया जा सके,—बम् (बि०) पत्नी तथा अन्य माई बम्बो से निर्वासित—मेघ ० ६,—भाम् (बि०) हूरबती, फासले पर बिद्यमान,—बतिम् (बि०) हुरी पर बिद्यमान, हूर हटाना हुआ, हूरत्व, फासले पर,—अस्त्रक (बि०) नगा,—बिभान्मन् (बि०) नीचे हूर तक लटकने वाला,—बैविम् (बि०) हूर से ही बीचने वाला,—संख्य (बि०) हुरी पर बिद्यमान फासले पर, हूरबती—कथास्तेषप्रययिभि जने कि पुनर्दरस्ते—मेघ ० ३ ।

हूरतः (अव्य०) [हूर+तत्] १ हूर से, फासले से—तत्राय हूरतस्त्वमेव—पञ्च ० ५।१६, बहुति च पीताशयं वीथ विन्मुञ्चति हूरतः—गीत ० २ २ हूर, फासले पर—पञ्च ० १।९ ।

हूरत्व (बि०) [हुरे भव—हूर+एत्व] हुरी पर मौजूद, हूर से आया हुआ ।

हूर्यम् [हुरे उल्लासम्—हूर+यन्] बिष्ठा, मीना ।

हूर्य [हुर्ये +अ+टाप्, दीर्घ] भूमि पर कौनसे वाली एक भास, हूर (यह भास देव पूजा के लिए पवित्र समझी जाती है) । सम ०—अकुर हूर के कोमल पत्ते—बिष्म ३।१२ ।

हुरिका, हुरी [हुरी+कम्+टाप्, हूरत्व, हूर+अप्+डीप्, रस्व क] नील का पीना ।

हूर (बि०) [हूर+गिप्+अप्] (समासात् न प्रवृत्त) वृष्टित करने वाला, अपवित्र करने वाला—उवा ० 'भक्तिवृष' ।

हूरक (बि०) (स्त्री०—बिका) [हूर+गिप्+अप्] १. अन्धकार करने वाला, अपवित्र करने वाला, विधास्त करने वाला, वृष्टित करने वाला, बिगाड़ने वाला २. उत्संघन करने वाला, बधना करने वाला, गुराह करने वाला ३. अघराव करने वाला, अतिअमन करने वाला, अघराधी ४. अहाकित बिगाड़ने वाला ५. पापी, दुष्कृत,—कः नृपच पर चलाने वाला, अन्ध करने वाला, बधनाम वा दुष्ट पुरुष ।

हूरवन् [हूर+वृप्] १. बिगाड़ना, अन्ध करना, विधास्त करना, बधोद करना, अपवित्र करना आदि २. उत्संघन करना, तीक्ष्णता (समझौता आदि) ३. पञ्चअन्ध करना, बलाकार करना, सतीत्व नष्ट करना ४. वाली देना, निन्दा करना, कलंकित करना—रघु ० १२।५६ ५ बधनामी, अमतिष्ठा ६ विपरित्त आलोचना, भासोप ७ निराकरण ८. वीथ, अघराव, वृष्टि, पाप, कुनै—मौलकोऽप्यबकोले यदि विधा वृत्त्ये कि हूरवन्—मर्त्य ० २।२३, हा हा विक परतुहवासवृषवर्ण—उत्तर ० १।४०, मर्त्य ० २।२१३, हिं ० १९८, १९५, २।१८०,—मः एक दोकल, रावण की सेना का एक नायक जिसे अघवान् राम ने मार गिराया था । सम ०—अपि राम का विधोषण,—आवह (बि०) कलंक में किसी को फँसाने वाला ।

हुरी,—बी (स्त्री०) [हूर+गिप्+इप्, वृष्टि+डीप्] डीठ, भाँक का बीचड़ ।

हुरिका [हुरि+कम्+टाप्] १. लेशनी, बिचकार की कुंभी २. एक प्रकार का बावक ३. डीठ, भाँकों का बीचड़ ।

हुरित (बि०) [हूर+गिप्+स्त] १. अन्ध, वृष्टित, बिडित २. बोदिक, अतिअन्त ३ अगहल, हुरोत्साहित ४ कलंकित, बधनाम ५. मिथ्याबोधारोपित, बधनाम, भिषित ।

हूर्य (बि०) [हूर+गिप्+यत्] १. अन्ध होने के योग्य २. गहूनीय, दखनीय, हुरनीय—अव्य १ अघरा, राव २. बिच ३. कपास ४. पोशाक, बस्त्र ५. तम्बू—शि ० १२।६५,—ज्या हुरी का बनने का तंग ।

हुर (गुण ० मा०—द्विपटे, त्रिप,—इष्ठा० विदरिषते) (इसका स्वतन्त्र प्रयोग किरल है—प्रायः भा उपसर्ग लग कर प्रवृत्त होता है) आघर करना, सम्मान करना, पूजा करना, प्रतिष्ठा करना—द्वितीयाद्विपते सदा—हिं ० प्र ० ७, मुद्रा ० ७।१, अहिं ० १।५५ २. रक्-बाली करना, मन लगाना (प्राय—न के साथ) ३. अचने भाप के अण्ठी तारू लगाना, संलग्न करना,

ध्यान रखना—भूरि श्रुतं शापवतमाश्रित्ये—भा० १।
५ ४ इच्छा करना ।

वृद्धि 1 (म्भा० पर०—दृष्टि, दृष्टित) 1 पुष्ट करना,
2. समर्थन करना ।

ii (म्भा० भा०) 1 दृढ़ होना 2 विकसित होना या
बढ़ना ।

वृष्टि (भू० क० इ०) [वृह्, + क्त] 1 पुष्ट किया गया,
समाधित, 2 विकसित, वधित ।

वृक्षम् [वृ + क्त्] छिद्र, सूत्राक्ष ।

वृक्ष (वि०) [वृह्, + क्त] 1 स्थिर वृक्ष, मखवृत्, जषल,
अषक—अग० १५।१, हि० ३।६५, रघु० १३।७८

2 डोम, पिष्पकार 3 सपुष्ट, स्थापित 4 स्थिर,
केशशास्त्री—भग० ७।२८ 5 वृता पूर्वक बोधा हुआ,

कस कर बन्द किया हुआ 6 मुसृष्ट 7 कमा हुआ,
अनिष्ट, सधन 8 मखवृत्, गहन, बडा, अत्यधिक,

ताकतवर, कठोर, दामिनशास्त्री—तस्या कश्चिदामि
वृक्षानुपामम् कु० ३।८, रघु० ११।५९ 9 कषा

10 (पशुव को भाति) शुकाने या तानने में कठिन
11 टिकाऊ 12 विषवासना 13 निर्धन, अशुक्,

—अशु 1 लोहा 2 गड, किला 3 अधिकता, बहुतायत,
ऊँचा दर्जा, —अशु (अशु) 1 दृढ़तापूर्वक, कस कर

2 आर्थिक, अत्यन्त, तेजी से 3 पुरी तरह से । सम०
—अशु (वि०) मखवृत् अगो बाला, हृष्टपुष्ट (वत्)

होरा—इषुधि (वि०) मखवृत् तरकस रखने वाला,
—कण्ठ—अग्नि, धास, —अशु (वि०) मखवृत्ती से

पकड़ने वाला अर्थात् हाथ बाँकर काम के पीछे पड़ने
वाला, —इषक, मगरमच्छ, —इषर (वि०) बिल्कुल

सुरक्षित दरवाजा वाला, —अशु बृद्ध का विशेषण,
—अशु, —अशु (पु०) अशु मनुष्यो, —निषण्य

(वि०) 1 दृढ़ सकल्प वाला, अग्नि, अटल 2 पुष्ट,
—मौर, —कल, नारियल का पेड़, —अशु (वि०)

प्रय का पक्का, धान का बनी, सहजति पर निरवल,
—अशु, पुनर का पेड़, —अशु (वि०) 1 कषा

प्रहार करने वाला 2 कस कर मारने वाला, अशुक
सहस्रवेध करने वाला, —अशु (वि०) निष्ठावान्,

अशु, —अशु (वि०) कृतकल्प, स्थिरदृष्टि, अशु,
—अशु (वि०) अशुदृष्टी वाला, हृष्य, कशु, (शुः)

मलवार, —अशु नारियल का पेड़, —अशु (पु०)
अगो मुरार, —अशु (पु०) निर्दय शत्रु, निष्कण्य

दुःख, —अशु (वि०) 1 धर्म शाचना में अटल 2 अशु
मक्ष 3 धर्मवान्, आशु, —अशु (वि०) 1 कस

कर जुडा हुआ, सधनता पूर्वक मिला हुआ 2 सधन,
सहज 3 सटा हुआ, —अशु (वि०) अटल धिक्ता

वाला ।
वृत्ति (पु० स्त्री०) [वृ + ति, ह्रस्व] मक्षक, —अशु २।

१९, यात्रा ३।२६८ 2. मछली 3. साल, चनका
4. शौकीनी । सम०—वृत्ति कृता ।

वृत्तः (स्त्री०) [वृत् + कृ नि०] सोप, बख ।

वृत्तः [वृत् + कृ नि०] 1 हृद का बख 2 सूर्य 3. राजा
यम, मृत्यु का देवता, अलक ।

वृत् 1 (म्भा० पर०, चू० उभ०—व्यति, व्ययति—ते)
प्रकाशित करना, प्रखलित करना, सुलगाना ।

ii (दिवा० पर०—व्यति, वृत्) 1 धमधम करना,
अहकार करना, डीठ होना, —स किल नात्मना व्यपति

—उत्तर०, व्यपदानवद्रुपमानदिधिपद्रुवार्दुत्तापदान्
—गीत० ९ 2 अत्यन्त प्रसन्न होना, 3 असम्भ या

दुर्दान्त होना ।
वृत्त (वि०) [वृत् + क्त] 1 धमधमी, अहकारी 2 मदीन्यस

असम्भ, पायल ।
वृत्त (वि०) [वृत् + क्त] धमधमी, अहकारी, बलवान्

वधितशास्त्री ।
वृत् (म्भा० पर०—पययति, वृष्ट) 1 देखना, नजर डालना

अवलोकन करना, समीक्षा करना, निहारना, दृष्टि-
गोचर करना—इष्यति भ्रातृजायाम्—मेष० १।१०,

१९, रघु० ३।४२ 2 निरीक्षण करना, सम्मान करना,
बिचार करना—आर्यवत्सवंभूतेषु य पययति स पश्चि-
—वाण० ५ 3 दर्शन करना, प्रतीक्षा करना, दर्शनार्थ

जाना—अर्युद्ययो मुनि इष्टु ब्रह्माण्डविव वासव
—रामा० 4 धन से दृष्टिगोचर करना, सीखना,

जानना, सम्मानना—मनु० १।११०, १।२।३ 5 निरी-
क्षण करना, खोज करना 6 बूझना, अनुसन्धान करना,

परीक्षा करना, निश्चय करना—याज्ञ० १।३२७, २।
३०५ 7 अत्यन्त को दिव्य दृष्टि से देखना—५-वि-

दर्शनस्तोत्रोमान् वदस्य—नि० 8 विषय होकर देखने
रहना—कर्म० ५ देखने 1 दिखलाई देना, दृष्टिगोचर

होना, दर्शनीय होना, प्रकट होना—तव तत्प्राथ वपुर्न
दृश्यते—कु० ४।११ ३, रघु० ३।४०, अशु० ३।१९,

मेष० १।२ 2 प्रतीत होना, दृश्यमान होना, दिखाई
देना, मामूिम होना—रघु० ३।३५ 3 मिलना, दिखाई

देना, घटित होना (पुस्तक आदि में)—द्वितीयाभेदिता-
न्तेषु तत्रोप्यथापि दृश्यते—सिद्धा०—इति प्रयोगो भाष्ये

दृश्यते 4 खयाल किया जाना, धाना जाना,—सामान्य-
प्रतिगतिपूर्वकमिय शरद्रे दृष्या लवा—शं० ४।१६,

दृश्य—दर्शयति—ते 1 किसी को (कर्म०), सद्र० या
सब०) कोई चीज (कर्म०) देखने के लिए प्रेरित

करना, धिक्खलाना, सकेत करना—दर्शय त चौरसिद्धम्
—पच० १, दर्शयति भक्तान् हरिम्—सिद्धा० प्रस-

भिज्ञानरत्न च रामायणादर्शयत्कृती—रघु० १।२।६५, १।
४७, १।३।४, मनु० ४।५७ 2 सिद्ध करना, करके

दिखलाना,—अशु० १।५।१२ 3. दिखलाना, प्रदर्शने

करना, दर्शनीय बनना—तदेव मे दर्शय देव रूपम्
—अम० ११४५ ४ (न्यायालय आदि में) प्रस्तुत
करना—मनु० ८१५८ ५ (साक्षी के रूप में) उप-
स्थित करना—अथ धूर्ति दर्शयति ६ (आ०) अपने
माप को दिखलाना, प्रकट होना, अपनी कोई वस्तु
दिखलाना भवो भवतान् दर्शयते—सिद्धा० (अर्थात्
स्वयमेव), स्वा गृह्णीषि क्षिता कथमास्य ह्यनिमीलि
खलु दर्शयिताह—मै० ५।७१, स सतत दर्शयते तत-
स्मयं कृताधिपत्यामिव माधु कम्पताम्—कि० १।१०,
इच्छा०—दिक्षते देयने को इच्छा करना, अम्—
भाइद्वय के रूप में देलना—प्रेर० १ दिखलाना,
प्रदर्शन करना २ स्पष्ट करना, व्याख्या करना, आ—,
प्रेर० दिखलाना, संकेत करना—उत्कलायतिपथ
कलिभाषिमुखो यदौ—रघु० ५।३८, उद्घ—, प्र-याथा
करना, मूँह ताकना, आगे का देखना, मनोगत भाव
देखना—उत्पद्यत मिहनिपातमुद्यम—रघु० २।६०,
उत्पद्यामि दूतमपि समं मंत्रियार्थं पितृवो कालक्षेप
ककुभसुगुभी पवंते पवंते ते—मेघ० २२, उष—, देखना,
अवलोकन करना—प्रेर० सामने रखना, समाधार
देना, परिचित करना—राज पुरो मामुपवर्ष्य—हि०
३, नवाभिद्वन्द्वे गति सदमच्छपर्यायितम्—रघु० ५।
१०, मि—, प्रेर० १ दिखलाना, संकेत करना—रघु०
५।१२ २ सिद्ध करना, करके दिखलाना ३ विचार
करना, बातचीत करना, चर्चा करना (जैसे पुस्तकादिक
में) ४ अध्ययन करना ५ उदाहरण देकर समझाना दे०
निदर्शना, प्र—, प्रेर० १ दिखलाना, संकेत करना लोच
लेना, प्रदर्शित करना २ सिद्ध करना, करके दिखलाना,
सम्—, १ देखना, अवलोकन करना—भट्टि० १।६।९
२ भलीभाँति देखना, समीक्षा करना—प्रेर० दिखलाना,
प्रदर्शित करना, लोच निकालना—आत्मानं मृतवत्सदस्यं
—हि० १, भट्टि० ५।३३, मालवि० ५।९।

दृशु (वि०) [दृश् + शिष्य] (समासान्त में) १ देखने वाला,
अधीक्षण करने वाला, सर्वेक्षण करने वाला, समीक्षा
करने वाला २ विवेचन करने वाला, जानने वाला
३ (के सामान) दिखलाई देने वाला, प्रतीत होने वाला
(स्त्री०) १. देखना, समीक्षा, दृष्टिगोचर करना,
२ अर्थ, दृष्टि—सदयं दृशमुदयतारकाम्—रघु० १।१।
६९ ३ जान ४ 'वो' की संख्या ५ प्रहृष्टा। सम०
—अभ्यक्षः सूर्यं,—कर्म साप,—अव्यः दृष्टि की शीघ्रता
या हाँसि, प्रथला दिखलाई देना,—वोचर दृष्टि-पराग,
—अस्मन् आम्,—लेशः स्वा पराकोटि की दूरी की
सम्बन्धना,—वचः दृष्टिपरास,—पात दृष्टि, झलक,
—प्रिया सौन्दर्यं, प्रमा,—अस्तिः (स्त्री०) प्रेमदृष्टि,
अनुरागधरी चितवन,—लम्बनम् ऊर्ध्वपर दिग्भेद,
—विचः साप,—धृतिः सर्प, साप।

दृशु (स्त्री०) [दृश् + शिष्य] पत्थर, दे० दृश्य।

दृशा [दृश् + टाप्] अक्षि। सम०—आकाशकम्—कमल,
—उपवन् स्वेत कमल।

दृशानः [दृश् + आनच्] १ आध्यात्मिक गुरु २ ब्राह्मण
३ लोकपाल,—सम् प्रकाश, उजाला।

दृशितः,—शी (स्त्री०) [दृश् + इत्, दृशि + शीप्] १ अक्ष
शास्त्र।

दृश्य (स० क० क०) १ देखे जाने योग्य, दर्शनीय २ देखने के
३ सुन्दर, दृष्टिसुखद, प्रिय—रघु० ६।२१, कु० ७।६५,
—अथ दृशाई देन बाला पदाथ—मालवि० १।९।

दृश्यन् (वि०) [दृश् + श्यनिप्] (समासान्त में) १ देखने
वाला, दृष्टिगोचर करने वाला २ (अस्मन्) परिचित,
जानकार जैसा कि 'श्रुतिपारदर्शना—रघु० ५।२४ तथा
विद्याना पारदृश्यन्—१।२३ में।

दृश्य (स्त्री०) [दृ + श्चि, दृक्, ह्रस्वपथ] १ चट्टान, बड़ा
पत्थर—मेघ० ५५, रघु० ५।७४, भर्तृ० १।३८
२ चक्की का पत्थर, शिला (जिस पर मसाला आदि
पीसा जाय)।—अव्यः मसाला आदि पीसने के लिए
सिल—(दृशदिल्यावकः चकिर्को से लिया जाने वाला
कर)।

दृश्वत (वि०) [दृश् + श्वत्] पथरीला, चट्टान से बना
हुआ,—शी एक नदी का नाम जो आर्यावर्त की पूर्वी
सीमा बनाती है तथा सरस्वती नदी में मिलती है।
तु० मनु० २।१७।

दृष्ट (सु० क० क०) [दृश् + क्त] १ देखा हुआ, अव-
लोकन किया हुआ, दृष्टिगोचर किया हुआ, पर्यवेक्षित
निहारा हुआ २ दर्शनीय, पर्यवेक्षणीय ३ जाना गया,
खयाल किया गया ४ घटित होने वाला, मिला हुआ
५ प्रकट होने वाला व्यक्त ६ जाना हुआ, मास्य
किया हुआ ७ निर्धारित, निर्णीत, निश्चित ८ ईश्वर
९ नियत किया गया—दे० दृष्ट,—ष्टम् डाकुजो से
हर। सम०—अव्यः,—सम् १ उदाहरण, निदर्शन,
दृष्टान्त-कथा-मूर्धन्यद्वयोकाक्षी दृष्टान्ताःऽत्र महाशयं
—सि० २।३१ २ (अस्मन् शा० में) एक अवलोकन
क्रिये में कोई उक्ति उदाहरण देकर समझाई जाय
(उपमा जो प्रतिबन्धूपमा से भिन्न—दे० काथ्य०
१०, वीर रस०) ३ शास्त्र या विज्ञान ४ मनुष्य (तु०
दृष्टान्त),—अर्थ (वि०) १ जिसका अर्थ विजुल स्पष्ट
तथा व्यक्त हो २ व्यावहारिक,—कष्ट,—दृष्ट जिसने
मूर्खीवत झेली हो, कष्ट सहन करने का अभ्यस्त हो
गया हो,—कृष्टम् पहेली, गूढ़ प्रश्न,—दोष (वि०)
१ जिसमें दोष देखा गया हो, जिसे अपराधी समझा
गया हो २ दुर्भाग्यनी ३ जिसका भ्रमकोष्ठ हो गया
हो, जिसका पता लगा लिया गया हो,—प्रत्यय (वि०)
१. विषवास रखने वाला २. विष्वस्त,—अव्यत् (स्त्री०)

बहु कन्या जो रजस्वला हो गई हो, —**विष्कर** (वि०)
1 जितने कष्ट और मनोदोषे सेली हो 2 जो जाने
बाधे अतिष्ठ को पहले हो से भाग लेता है ।

दृष्टि (स्त्री०) [दृ- + क्तिन्] 1 देखना, समीक्षण
2 मन को आँस से देखना 3 जानना, ज्ञान 4 आँस,
देखने की शक्ति, नजर - केनेदानी दृष्टि विलोभनामि
—विष्कम ०, चक्र, पाङ्गा दृष्टि स्पृशमि—ग० १११६,
—दृष्टिस्त्वर्माक्षुण्णशृणुष्वमस्वकारा —उत्तर० ६११९
१५० २१८ ग० ४१०, देव दृष्टिप्रसाद कुप—हि० १
5 नजर, चितवन 6 विचार, भाव क्षुद्रदृष्टिरेया
—का० १३३, एता दृष्टिमबद्धम्—भग० १६१,
7 विचार, आदर 8 बुद्धि, वृद्धिमता, ज्ञान । सम०
—कृत, —कृतम् स्वल्पप, कुमुद, —जेक निगाह डालना,
जबला-जन करना, —शुष, तीर का निगलना, चाँदमारी,
लक्ष्य, —शोषर (वि०) दृष्टि-पराय के अन्तर्गत जो
दिखाई दे, दुष्प्र, —पक्षः दृष्टि-गम, —पाल 1 निहा-
रना, निगाह डालना—मायं मयनेतिभि दृष्टिपात कुपय
—रघु० १३१८, मनु० ११११, १४, ३६६, 2 देखने
की क्रिया, आँस का कार्य—रज कर्मोविक्किन्दृष्टिपाला
—कु० ३३११, (मति०) 'पाम' का अर्थ 'प्रभा' दशति
है जो हमारी समझ में अनावश्यक है)। पूत (वि०)
दृष्टिमात्र से पवित्र किया हुआ अर्थात् देस किमा कि
कितो प्रकार की अशुद्धि नहीं है। —दृष्टिपूत न्यतेत्याचम्
—मनु० ६४४, —बन्धु, यज्ञ, —विशेष, कनकियो से
देखना, कटाक्ष, निरछो नजर, —विद्या नेप-विज्ञान,
—विषम अनुप्रास भरी दृष्टि, हाव-भाव से युक्त
नजर, —विष मीप ।

दृष्ट, **दृष्ट**, (स्त्री०) पर०—दंष्टति, दृष्टति 1 स्थिर या दृष्ट
होना 2 विकसित होना, बढ़ाना 3 मज्जु होना
4 कसना ।

दृ (दिवा०) कपा० पर०—दीर्घति, दृषति, दीर्घ) 1 फट
जाना, टूट जाना, टूटने 2 होना 2 फाटना, चीरना,
विभक्त करना, विदीप्य करना, लख २ करना, टुकड़े २
करना । कर्मदा०—दीर्घते 1 फटना, टूटना, लख २
होना, —कथमेव प्रलयया २ अथलक्षणा न दीर्घमनया
विह्वरा—वणी०—३ 1 टुकड़े २ करना, चीर
—दा—रयति—ते 1 टुकड़े २ करना, चीर डालना,
भोदकर विभक्त करना 2 वितर-वितर करना,
बनरना, बि, टुकड़े २ करना, फाट डालना, विभक्त
करना, काट कर टुकड़े २ करना—तीन्द्रि भिज नर्मे-
स्तया विचदार सानी द्विज—रघु० १२१२, न
विदीप्य कठिना सल स्थिज—कु० ४५५, रघु० १४१३३
2 फाटना (आल०)—चित विदारयति कथं न कोवि-
दार—धनु० ३१६, भग० १११९, (अव, आ तथा प्र
आदि उपसर्ग त्याग पर धातु का अर्थ नहीं बचला है)।

द्रे (स्त्री०) आ० दयते, दान -इन्द्रा० दिस्तते) रखा करना,
पालना, पोसना ।

द्रेवीप्याम (वि०) [द्रे + यन्] अन्वय चमक
ने वाला, उद्योतमान्, जगमगाता हुआ ।

द्रेष (वि०) [दा + यन्] 1 दिने जाने के लिए, उपहृत
क्रिये जाने के लिए -रघु० ३१६ 2 दिने जाने के
योग्य, भेंट के लिए उपयुक्त 3 वस्तु जो वापिस करने
के लिए है, विभाजितकरनेत देय महारभियुजते—विष्क-
माक० ६१३, मनु० ८१३०, १४५ ।

द्रेष् (स्त्री०) आ०—द्रेषते) 1 छोड़ा करना, नैलना, नृश
नैलना 2 बिलाप करना 3 पनापना, परि - , विद्याप
करना, शोक मतानः ।

द्रेष् (वि०) (स्त्री०) —श्री) [द्रि + अच्] दिव्य, स्वर्गीय
—भग० ११११, मनु० १२११३, —ब 1 देव, देवता
—एको देव केवाश वा शिवो वा - भर्तु० ३११०
2 नर्पा का देवता, इन्द्र का विशेषण यथा 'ब्राह्म
वर्षाणि देवो न वर्ष्य' मे 3 दिव्य पुरुष, ब्राह्मण
4 गन्ना भासक, जैनाकि 'मनुष्यदेव' मे 5 ब्राह्मणो
के नामों के साथ लगने वाले उपाधि—'मेमा कि
मोविन्द देव, दुष्पालमदेव' मे 6 (भाटको मे) गन्ना
को मबोपिन करने के लिए सम्मान सूचक उपाधि
—तनपच देव—वेणी० ४, यथासाध्यति देव आदि
7 (सयात्मान में) अपने देवता के रूप में—यथा
मान्, यान्, 1 सम०—अक्ष भगवान् का अशासनार
—आहार, —रघु मन्दिर, —अगता स्वर्गीय देवी, अम्परा,
—अतिवेश, —अधिवेश 1 उच्चतम देवता 2 शिव
का विशेषण, —अधिष इन्द्र का विशेषण, —अधम् (मनु०)
—अधम् 1. देवताओं का आहार, दिव्य भोजन,
अमृत 2 बहु भोजन जा पहले भगवान् की मूर्ति के
आगे प्रस्तुत किया गया है -दे० मनु० ५१३ तथा इस
पर हुल्लू० प्राप्ति, —अधीष् (वि०) 1 देवताओं का
शिव 2 देवता पर चढ़ाया हुआ, (प्टा) तावली,
पान-मुचारी, —अधम्प्य वाग -रघु० १०८०, अदि
राक्षस, —अधम्प्य, —ना देवप्रा, —अधम्प्य मन्दिर,
—अधम्, उच्च पदा का विशेषण, इन्द्र का घोडा,
—आधीष्. देवोद्यान, नन्दन वन, —आधीष्, - आजी-
भिन् (पु०) 1. भगवान् की मूर्ति का सेवक 2 एक
नीचकोटि का ब्राह्मण जो मूर्ति की सेवा द्वारा, तथा
मूर्ति पर आये हुए चढ़ावे से अपना जीवन-निर्वाह
करता है, —अधम्प्य (पु०) गल्ल का बूटा—आधम्प्य
मन्दिर—मनु० ४५६, आधम्प्य 1 दिव्य हृदयार
2 इन्द्रवस्तु, —आलम्, 1 स्वर्ग 2 मन्दिर, —आवासा-
1 स्वर्ग 2 अश्वत्थवृक्ष 3. मन्दिर 4 मुनेरु पहाड,
—आहारः अमृत, पीम्प, —इम्प (वि०) (कर्त्तु०) ग०
१० देवेंद ४) देवताओं की पूजा करने वाला इक्ष्य

देवराज बहुस्पति का विशेषण, —**इन्द्रः**, —**ईशः** 1. इन्द्र का विशेषण 2 शिव का विशेषण, —**अक्षयम्** 1. दिव्य वायु 2 नन्दन वन 3. मन्दिर का निकटवर्ती बाग, —**शुक्ति** (देववि) 1. सन्त विसन्त देवत्व प्राप्त कर लिया है, दिव्य श्रुति, यथा, अग्नि, भूयु, युक्तस्य, अवि-रुध आदि—एव वादिनि देवयो—कु० ६।८४ (अर्थात् अविरोत्) 2 नाट्य का विशेषण—भग० १०।१३, २६, —**श्रीकाम्** (नपु०) सुमेरु पर्वत, —**कम्पा** स्वर्गीय देवी, अम्बरा, —**कर्मन्** (नपु०) —**कार्यम्** 1. धार्मिक कृत्य या मन्कार 2 देवों को पूजा, —**काष्ठम्** देवदारु का वृक्ष, —**कुण्डम्** प्राकृतिक झरना, —**कुलम्** 1. मन्दिर 2. देवों का समूह, —**कुलया** स्वर्गीय यथा, —**कुलुषम्** लीन, —**कालम्**, —**कालचक्रम्** 1 पर्वतो में बनी एक प्राकृतिक गुफा 2 एक प्राकृतिक तालाब या अलगवय—मनु० ४।२०३ 3 मन्दिर का निकटवर्ती तालाब, ^०चिलम् एक गुफा, कन्दरा, —**नाभः** देवों की एक श्रेणी, —**नभिका** अम्बरा, —**नर्जनम्** बादल की गहराइयाँ, —**नाथम्** स्वर्गीय नायक मन्थर, —**नारिः** एक वृद्ध का नाम—मेघ० १० गृह 1 (देवों के पिता) कश्यप का विशेषण 2 (देवों के गुरु) बहुस्पति का विशेषण, —**नारी** सरस्वती या उसके किनारे पर स्थित स्थान का विशेषण, —**नृहम्** 1 मन्दिर 2 राज-प्रासाद, —**नर्वा** देवों की उजा या सेवा, —**निशितम्** (द्रि० ब०) देवों के वैद्य अधिवीरुद्गार, —**श्रवः** १०० लक्ष की मोतियों की माला, —**तरु** 1 गुह्य का वृक्ष 2 स्वर्गीय वृक्षों (वदार, पाणिजान, मगान कल्प और हरिचन्दन) में से एक, —**तारा** 1 आग 2 राहु का विशेषण, —**वस** 1 अर्जुन के मय का नाम—भग० १।१५ 2 कोई व्यक्ति (अनिश्चित रूप में किसी भी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त) देवदत्त पत्नी, पोतो देवदत्त पिता न मुक्ते—आदि, **वास** (पु०, नपु०) देवदारु की जाति का पेड़—कु० १।५४, २५० २।२६, —**वासः** मन्दिर का सेवक (—सी)

1. मन्दिर या देवों की सेविका 2. बेश्या (जिसे मन्दिर में नाचने के लिए लमाया गया हो), —**वीथ** जल, —**वृत्**, दिव्य संदेशवाहक, देववृत्, —**वृषुषि**: 1. दिव्य शोक 2 शोक फूलों वाला तुलसी का पौधा, —**वेक**: 1. ब्रह्मा का विशेषण 2 शिव—कु० १।५२ 3 विष्णु, —**वैष्णो** वैष्णव का जन्म, —**वर्ष** धार्मिक कर्तव्य या पर, —**वसी** 1 सगा 2 कोई भी पावन नदी—मनु० २।१४, नन्दिन (पु०) इन्द्र के द्वारपाल का नाम, —**नारयो** एक निधि का नाम जिसमें प्राय मस्कृत भाषा लिखी जाती है, —**निकाष**, देवावास, स्वर्ग, —**निन्दक** देवताओं को निन्दा करने वाला, नास्तिक, निमित्त (वि०) देवता द्वारा रचित, प्राकृतिक, —**पितृ** इन्द्र का विशेषण, —**पशु**: 1. स्वर्गीय मायं

आकाश, अन्तरिक्ष 2 छायापथ, —**पशु**: देवता के नाम पर स्वच्छन्द छोड़ा हुआ पशु, —**पुर**, —**पुरी** (स्त्री०) अमरावती का विशेषण, इन्द्र की नगरी, —**पुष्प**: बहुस्पति का विशेषण, —**प्रतिकृति**: (स्त्री०) —**प्रतिभा** देवमूर्ति, देवता की प्रतिमा, —**प्रवृत्तः** ब्रह्मादिस्वर्गीय जिज्ञासा, भविष्य सम्बन्धी प्रश्न, भविष्य की बातें बतलाना, —**प्रियः** देवों को प्रिय, शिव का विशेषण (**देवताप्रियः**) एक अनियमित समय, इसका अर्थ है 1 अकरा 2 मृद (पशु की भांति जड़—जैसाकि श्रेष्ठतामयंवा देवता प्रिया काव्य०), —**शक्ति**: देवताओं को दी जाने वाली आहुति, —**शङ्खम्** (पु०) नारद का विशेषण, —**शाह्यम्** 1 वह शाह्य जो अपना निर्वाह मन्दिर से प्राप्त आय से कर लेता है 2 आदरणीय शाह्य, —**शयनम्** 1 स्वर्ग 2 मन्दिर 3 मूलर का वृक्ष, —**शुभिः** (स्त्री०) स्वर्ग, —**भूति** (स्त्री०) यथा का विशेषण, —**शुभम्** देवत्व, दिव्यप्रकृति, —**भृत्** (पु०) 1 विष्णु का विशेषण 2. इन्द्र का विशेषण, —**शक्ति**: 1. विष्णु की मणि, कौस्तुभ 2 मृग, —**मातृक** (वि०) वृष्टि के देवता तथा बादल ही जिसकी प्रतिपालिका माता हो, जिसे केवल वर्षा का जल ही लम्ब्य हो, जो मिचार्दे को छोड़कर केवल वर्षा के जल पर ही निर्भर हो, (वह देव) जो और प्रकार की जलशयन्या में बधित हो—देवों नक्षत्रवृत्त-धनुसपन्थनीहोयाहित, स्थानवीमान्ताको देवमातृकत्व यथाकामम्—अमर०, पु० —**विनाशति** श्रेयमदेवमातृका (अर्थात् नवीमातृका) विराय तस्मिन् कुत्रवचकासते—कि० १।१७, —**वायक** विष्णु की मणि जिसे कौस्तुभ कहते हैं, —**वृषिः** दिव्य श्रुति, —**वज्रभूमि** यज्ञभूमि, यज्ञ-स्थली—देवयजनसभसे सीते—उत्तर० ४, —**वर्षा**: (वि०) देवताओं के आहुति देने वाला, —**वस**: वह हवन जिसमें परिष्ट देवताओं के निमित्त अग्नि में आहुति दी जाती है, (गृहस्थों के पाँच नैतिक वयों में से एक—मनु० २।८१, ८५—दे० पण्यत्र), —**वाजा** किसी देवप्रतिमा का जलस, या सबारी निकालने का उत्सव, —**वायम्**, —**रषः** दिव्यपथ, —**युष्मत्** चार युगों में से एक, कृत-युग, सतयुग, —**योनिः** अतिमानव प्राणी, उपदेव 2 दिव्य उत्पत्ति वाला, —**योषा** अम्बरा —**रहस्यम्** देवी रज या रहस्य—**राज**, —**राज** इन्द्र का विशेषण, —**सता** नवमलिका लता, नेवारी—**सिञ्जन्** देवता की मूर्ति या प्रतिमा, —**लोक**, स्वर्गलोक, दिव्यलोक मनु० ४।१८२, —**वज्रम्** आग का विशेषण, —**वर्त्मन्** (नपु०) आकाश, —**वर्धन्वि**, **शित्पितृन्** (पु०) विष्वक्कर्मा, देवताओं का शिल्पी —**वाषी** दिव्य वाणों, आकाशवाणी, —**बाहन** अग्नि का विशेषण, —**सतम्** धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक यत्न (स) 1 भीष्म का विशेषण 2. कानिकेय का विशेषण, —**साः** राजस, —**शुनी** देवों की कुतिया सरमा

का विशेषण,—श्लेषम् देवनिमित्त किये गये यज्ञ का बधा हुआ अथ,—श्रुतः 1 दिव्य का विशेषण 2 नारद का विशेषण 3 पावन साक्षर 4 देव,—सभा 1 देव-ताओं की सभा, मुनियों 2, जूए का धर,—सम्प- 1. जुआरी 2. जूएधरो में प्रायः जाने वाला 3 देव-सेवक,—सायुज्यम् किमी देवता से मिलकर एक हो जाना, देवसंयोजन, देवत्वप्राप्ति,—सेना 1 देवों की सेना 2 स्कन्द की पत्नी,—स्कन्देन साक्षादिव देवसेनाम्-रघु० ७।१ (मल्लि०—देवसेना—स्कन्दपत्नी—मन्वन् यहाँ देवों की सेना का ही मूल रूप में बर्णन है) पति-कान्तिकेय का विशेषण,—स्वम् देवों की सपत्नि, (धर्म-कार्यों के निमित्त) देवापित्त मंगति—यद्वध यज्ञीलाना देवस्वत द्विदुर्वाहा -मनु० १।१०, २६—हविष् (नपु०) बलिगम् ।

देवकी [देवक+डीप] देवककी एक पुत्री, बसुदेव की पत्नी, कृष्ण की माता। सम०—नम्ब—पुत्र—मातृ (पु०)—सुनु शीकृष्ण के विशेषण ।

देवदत्त [दिव्+अटन्] कारीगर, दलकार ।

देवता [देव+तात्+टाप्] 1 दिव्य प्रतिष्ठा या शक्ति, देवत्व 2 देव, मुर—कु० १।३ देव की प्रतिमा 4 मूर्ति 5 श्राव स्थल। सम०—आहार, रत्न,—आहार,—रत्न—यहूम् मन्दिर, अचिन् इन्द्र का विशेषण,—अध्वर्यवम् देव पूजन,—आयतनम्,—आसय,—वेदमन् (नपु०) मन्दिर देवालय,—प्रतिमा देवमूर्ति प्रतिमा स्थापन देवमूर्ति का स्तन ।

देवद्वयम् (वि०) देवम् अर्थात् पूजयति—देव+अच्+किन्व अदि आदेश देवोपामक ।

देवन् (पु०) [दिव्+अनि] पति का छोटा भाई, देवर ।

देवन् [दिव्+स्यद्] पामा,—नम् 1 मीनद्वय, दीपित, कान्ति 2 जूआ खेलना, पैसे का खेल 3 खेल, खोडा, किनोड 4 प्रमोद-स्थल, प्रमोद-वाटिका 5 कमल 6 स्थान, आगे बढ़ जाने की इच्छा 7 सामन्ता, व्यव-माय 8 प्रशसा,—ना जूआ खेलना, पैसे का खेल ।

देवयानी (स्त्री०) अनुग्रहम् मुक्ताचार्या की पुत्री [एक बार देवयानी अपने पिता के सिन्धु कच पर मोहित हो गई परन्तु कच ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया] देवयानी ने उसे शाप दे दिया, बदले में कच ने भी देवयानी को शाप देवा कि वह एक क्षत्रिय की पत्नी बनेगी । दे० 'कच' । एक बार देवयानी दैत्यो के राजा वृषपर्वा की पुत्री अपनी ममी शर्मिष्ठा के साथ स्नान करने गई, अपने वस्त्र उतार कर तट पर रख दिया । हवा ने उनके वस्त्र बदल गये, जब उन्होंने बदले हुए वस्त्र पहने तो दोनों आपस में झगडने लगी, यहाँ तक कि क्रोध में आकर शर्मिष्ठा ने देवयानी के रूढ़ पर तमाचा मारा और उसे एक कूर्प में फेंक दिया । मीमांसा से

ययाति ने उसे कूर्प से निकाल कर उसने प्राणों की रक्षा की । उसके पश्चात् देवयानी के पिता की स्वीकृति से ययाति का देवयानी के साथ विवाह हो गया, और शर्मिष्ठा की देवयानी के प्रति अपने दुष्प्र-हार के कारण उसकी दाम्नी बनना पड़ा । देवयानी ने ययाति के साथ कई बच्चे सुपुत्रवन्त जिनसे, यदु और तुवंगु नामक उसके दो पुत्र हुए । उनके पश्चात् ययाति शर्मिष्ठा पर आसक्त हो गया । इस बात से दुःखी होकर देवयानी ने अपने पति को छोड़ दिया तथा अपने पिता के घर चली आई । शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री के कहने पर ययाति को बुझाये की अशक्तता का शाप दिया । दे० 'ययाति' ।

देवदत्त, देव् (पु०) [देव्+अट, दिव्+अट] पति का भाई (चाहू छोटा ही या बड़ा) -मनु० ३।५५, ९।५९, याज्ञ० १।६८ ।

देवकः [देव+क+क] देवमूर्ति का सेवक, एक नीच कीटि का बाह्यण जिम्मा अपना निर्वाह देव-प्रतिमा पर प्राप्त चढावे के ऊपर निर्भर है ।

देवसात् (अव्य०) [देव+सात्] देवताओं की प्रकृति के समान, भू बदल कर देवता बनना ।

देविक (वि०) (स्त्री० की), देविक (वि०) [देव्+अट, दिव्+इलच्] 1 दिव्य, देवगुणों से युक्त 2 देव से प्राप्त ।

देवी [दिव्+अच्+डीप] 1 देवता, देवी 2 दुर्गा 3 मर-स्वती 4 रात्री—विशेषण गज्याभिषिक्त रात्री, [अध-महिषी—जिम्मे गज्याभिषेक के अक्षर पर रात्री के साथ सब राज-मन्त्राओं में पत्नी के नाते भाग लिया हो]—प्रेतभावेन नामेय दवी शम्भुजमा मनी, स्तानी-यवन्कियया पर रोषं वापयन्ते—मालवि० ५।१० देवीभाव गमिना परिवाग्ध कथ भङ्गवेया—काठ० १० 5 मम्मामसूत्रक उपार्थि जो मवेष्ट्रेठ मन्त्रिनाजी के साथ प्रवृत्त होती है ।

देश [दिव्+अच्] 1 स्थान, जगह—देश कोनु जलावसेक-सिन्धिल—मृच्छ० ३।१० इसी प्रकार 'स्कन्धदेशी'—श० १।१९, इन्द्रेदेश, कण्ठदेश आदि 2 प्रदेश, मुक्त, प्रान्त—य देश ध्रुवते तमेव कुलते बाहुप्रताप-जितम्—हि० १।१७१ 3 विभाग, भाग, पक्ष, अथा (किसी 'पूर्ण' के) जैसा कि एक देश, एकदेशीय 4 सस्या, अन्धदेश। मय०—अतिथि (पु०) विदेशी, अन्तरम् दूरा देश, विदेशी भाग मनु० ५।७८,—अन्तरिन् (पु०) विदेशी,—आचारः,—वर्ष स्वामीय कानून या प्रथा, किसी देश के रीति-रिवाज—मनु० १।१८८, कालम् (वि०) उपयुक्त स्थान और समय को जानने वाला—ज, जाल (वि०) 1 स्वदेशीय, स्वदेशोत्पन्न 2 ठीक देश में उत्पन्न 3 अक्षी, खरा,

निर्मलवसोद्भूय,—भावा । कसा देश की बोली,—कृष्ण्
जीवित्य, उपयुक्तता ध्वजहार स्थानीय, प्रचलन,
देशविदेश की प्रथा ।

देशक [दिष् + क्तुल्] 1 शासक, राज्यपाल 2 निष्कक, गुरु
3 पथ-प्रदर्शक ।

देशना [दिष् + णिच् + युच् + टाप्] निर्देशन, अनूदेश ।

देशिक (वि०) [देश् + ठञ्] स्थानीय, किसी विशेष स्थान
से सम्बन्ध रखने वाला, देशी -क 1, आध्यात्मिक
गुरु 2 यारी 3 पथ-दर्शक 4 स्वामी से परिचित ।

देशिनी [दिष् + णिच् + ङोप्] तर्कनी, अगूठे के पास वाली
अगूठनी ।

देशी [देश् + ङीप्] किसी देशविशेष की बोली, प्राकृत का
एक भेद—देश० काव्या० १।३३ ।

देशीय (वि०) [देश् + छ] 1 किसी प्रांत से सम्बन्ध रखने
वाला, प्रांतोद्य 2 स्वदेशीय, स्वामीय 3 किसी देश
का निवासी (समागमन में) जैसा कि समापदेशीय,
तद्देशीय, वगदेशीय आदि में 4 अदूर, लगभग, सामान्य-
वर्ती (शब्दों के अर्थ में प्रयोग की भाँति प्रयुक्त)
—अष्टादशशतदेशीया कव्या दर्शक—का० १३१, लगभग
१८ वर्ष की लड़की (जिसकी आयुमीमा १८ हो)
रघु० १८।३९, इसी प्रकार 'परदेशीय' आदि ।

देश्य (वि०) [दिष् + ष्यत्] 1 जिसकी ओर संकेत करना
हो, या जिसे प्रमाणित करना हो 2 स्थानीय, प्रांतीय
3 देशी, स्वदेशी 4 असुली, खरा, निर्मल वसोद्भूय
5 अदूर, लगभग—देश० उपर 'देशीय', -इय 1 चदम-
पीठ गवाह, अभियोजना विशेष्यम् - मनु० ८।५२,
५३, किसी देशविशेष का निवासी,— इयम् प्रशोक्ति,
तर्कादि, पूर्वपक्ष ।

देश्—हृम् [दिष् + घञ्] शरीर, देश दहति बहना इव
गन्धवाहा—भाषि० १।१०६, देश० नी० समस्त वाद्य ।
मम०—अन्तरम् अन्य (हृमरे का) शरीर, 'प्राप्ति
(स्त्री०) हृमरा वयम लेना, -आत्मवाद, भौतिकता,
चार्वाक के सिद्धान्त,—आवरणम् लवच, पोशाक,—ईश्वर
आत्मा, जीव,—उद्भूय,—उद्भूत (वि०) शरीररज,
सहज, जन्मजात कर्त् (पुं०) 1 मृग 2 परमात्मा
3 पिता, कोष 1 शरीर का आवरण 2 पर, बान्
3 त्वचा, चमड़ा अथ 1 शरीर का ह्रास 2 रोग,
बीमारी,—घत (वि०) शरीर में प्राप्त, मूर्तरूप,—अ
पुत्र,—जा पुत्री,—स्थान 1 मयु 2 इच्छामयु, शरीर
की छोड़ना,—तीर्थ तोषणनिकरमव जहन्कन्यामरव्यो-
दहव्यागात्—रघु० ८।९५, -इ पात्र,— कोष औष,
-घरम् शरीर के अंगों की क्रिया,—दाहकम् हठी,
-धाषणम्, जीना, जीवन,— विः वाङ्, कर्त,—घृष्
(पुं०) वायु, हवा,—बद्ध (वि०) मूर्त, शरीर—रघु०
११।३५,—नाम् (पुं०) शरीरधारी, जीवधारी, विशेष-

पत मनुष्य,—भृष् (पुं०) 1 जीव, आत्मा 2 सुर्म,
-भृष् (पुं०) जीवधारी, मनुष्य—विगमा देहभृता-
मसाराम्—रघु० ८।५१, भग० ८।५, १४।१५
2 शिव का विशेषण 3 जीवन, जीवनसक्ति,—आत्मा
1 मरुत्, मयु 2 पीषक पदार्थ, आहार,—सङ्घणम्
मत्सा, त्वचा के ऊपर काला तिल,—हायुः पाँच जीवन-
वायु में से एक, प्राणवायु,—सार मज्जा,—स्वभावः
शरीर का स्वभाव या गुण ।

देहधर (वि०) [देह् + धृ + लच्, मुञ्] पेट, उदरमणि ।

देहहृत् [दह् + मनुत्] शरीरधारी, (पुं०) 1 मनुष्य 2 जीव ।

देहला [देह् + ला + क] मदिरा, तराब ।

देहलि,— स्त्री (स्त्री०) [देह् + ला + कि, देहलि + ङीप्]
दन्वासे की चौखट में नीचे वाली लकड़ी जिसे लाघ
कर घर में घुसते निकलते हैं,—विनयवन्ती भुवि
पणनया देहलोदनपुर्व—मेघ० ८७, मूच्छ० १।९ ।
सम०—नीषः देहलोपर रक्ता हुआ दीपक,—म्याध, देश०
न्याय के अन्तर्गत ।

देहिन (वि०) (स्त्री०—नी) [देह् + इति] शरीरधारी,
शरीरी (पुं०) 1, जीवधारी प्राणी—विशेषतः मनुष्य
—त्वदधीन सखु देहिला सुवम्—कु० ४।१०, सि०
२।४६ भा० २।१३, १।७२, मनु० १।३० ५।४१
2 आत्मा, जीव (शरीर में प्रतिष्ठापित)—नया शरी-
रणि विहाय जीर्णोपन्यासि सपानि नवानि देही
-भग० २।२२, १३, ५।१४,—नी पृथ्वी ।

दे (म्वा०—पर०) दायति, दान 1 पवित्र करना, शूद्र
करना 2 पवित्र होना, 3 रक्षा करना, अक्ष,— 1 घवल
करना, उज्ज्वल करना 2 पवित्र करना ।

दंतेय [दिति + इक्] दिति का पुत्र, गक्षस, दैत्य, । सम०
—इयम्, -गृह,—पुरोधस् (पुं०)—पुत्र्य, अमुरो के
गुरु दक्षप्रार्थय के विशेषण,—निष्पद्वज विष्णु का विशेष-
ण,— भात् (स्त्री०) दिति देव्या की माता,—मेघवा
पृथ्वी ।

दंतेय [दिति + ष्य] देश 'दंतेय' । मम०—अरिः 1 देवता
2 विष्णु का विशेषण,— देव 1 विष्णु का विशेषण
2 वायु,—पतिः हिष्णुकाशु का विशेषण ।

दंतेया [दंतेय + टाप्] 1 औषधि 2 मदिरा ।

दैन (स्त्री—नी), दैनचिन् (स्त्री—नी), दैनिक (स्त्री०
—स्त्री) (वि०) [दिन + अण्, दिन दिन भव दिन-
दिन + अण्, दिन + ठञ्] आहुतक, प्रति दिन का,
—भाषि० १।१०३ ।

दैनम्—श्वम् [दिन + अण्, प्यञ् वा] 1 शरीरी, दग्दिवा-
वस्था, दयनीय अवस्था, दुर्दशा—दरिद्राणा दैन्यम्
—गा० २, इतीत्य त्वद्वत्सरकिलटकान्ते विप्रति
—मेघ० ७५ 2 कष्ट, श्रेय, विषाद, शोक, उल्हाह-
हीनता 3 दुर्बलता 4 कमीनापन ।

दैनिकी [दैनिक+की] प्रतिदिन की मजदूरी, दिनभर की
७ मरल, ध्याही ।

दैन्य, -द्वयं [दीयं+अण्, ध्यञ्, वा] लम्बाई, लम्बापन ।

देव (वि०) (स्त्री—की) [देव+अण्] देवों से सम्बन्ध
रखने वाला, दिव्य, स्वामी - सस्कृत नाम देवी वाय-
न्वाख्याता महर्षिभिः—काव्या० ११३३, रघु० ११६०
याज्ञ० २।२३५, भग० ४।२५, १।१३, १६।३, मनु०
३।७५ 2 राजकीय,—ब (अर्थात् विवाह) अष्ट
प्रकार के विवाहों में से एक, (इनमें कन्या यज्ञ कराने
वाले ऋत्विज् की ही वे दो जातों हैं)—यजुष्य ऋत्विजे
देव—याज्ञ० १।५९, (विवाह के जाठ प्रयोग के
लिए दे० 'उद्गाह' या मनु० ३।०१), बम् 1 भाष्य,
निर्वाण, भविष्यपुराण, किमन - देवमन्त्रितान् प्रमाण्यनि
—मुद्रा० ३, विना पुरुषकारिव देवमन्त्र न निश्चयि
—'भगवान्' उन्नी की महायज्ञा करते हैं जो अपनी
महायज्ञा आण करते हैं,—देव विहृत्य कुक् पीयूषमात्म-
शकृपा—यज० १।३६१, देवता 1 मयोग से, भाग्यवश,
अकस्मात् 2 देव, देवता 3 धार्मिक सत्कार, देवों को
आहुति । मम०—अप्यथ देवी उपात, आकस्मिक
अथ,—अधीन,—आपन्न (वि०) भाष्य पर निर्भर,
—देवायत कुले जन्म भवदायत तु पीरुषम्,—वेणी० ३।३३,
—अहोरात्र - देवताओं का एक दिन अर्थात् मनुष्यों
का एक वर्ष,—उपहृत (वि०) दुर्भाग्यवस्त, अभागा
—मुद्रा० ६।८,—कर्मन् (मनु०) देवताओं की आहुति
देना,—कोषिद, चित्तक,—ज्ञ ज्योतिषी, भविष्य-
वक्ता, याज्ञ० १।३१३, काम० १।२५,—गति. (स्त्री०)
भाष्य का फेर—मुक्ताजात्र चिर्गर्तकितन स्याजितो
देवगत्या—मेघ० ९६,—तत्र (वि०) भाष्य पर
आश्रित,—दीप अक्ष,—बुधियाक भाष्य की निष्ठरता
भाष्य का बुरा फेर या प्रतिकूलता—उत्तर० १।४०,
—दोषः भाष्य की कठोरता,—पर (वि०) 1 भाष्य
पर भरोसा करने वाला, भाष्यकारी 2 भाष्य में लिखा
हुआ, प्रारब्ध—अज्ञ भविष्यकथन, ज्योतिष,—युष्मद्
देवों का एक युग् (१२००० देववर्षों का एक युग
माना जाता है, इस विषय में दे० मनु० १।७१ पर
कुल्ल०),—दीप मयोग, दलिकाक भाष्य, मौका
—देवयोगेन देवयोगात् भाष्य से, अकस्मात्,—लेखकः
भविष्यवक्ता, ज्योतिषी,—बध,—शम् निषिधत का
बल, भाष्य की अधीनता,—वाणी 1 आकाशवाणी
2 सस्कृत भाषा—गु० काव्या० १।३३ ऊपर उद्धृत,
—हीन (वि०) भाष्यहीन, किस्मत का माग,
अभागा ।

देवक [देव+कन्] देवता ।

देवल (वि०) (स्त्री—की) [देवता+अण्] दिव्य,—सम्
देव, देवता, दिव्यता—मृद का देवत विप्र कृत मधु

चतुष्पद, प्रदक्षिणानि कुर्वन्—मनु० ४।३९, १।५३
अमर ३ 2 देवों का समूह, देवताओं का पूरा समूह
3 देवमूर्ति (यह शब्द पु० भी बलनामा जाता है परन्तु
विश्व प्रयोग है, मम्मट इन बातों को शब्द का 'अप्रयु-
क्त' दोष बतलाते हैं—दे० 'अप्रयुक्त') ।

देवतस् (अण्०) [देव+तम्] मयागवध, किस्मत से,
भाग्य में ।

देवतस् (वि०) [देवता+ध्वञ्] किसी देवता को संबो-
धित, या मान्य—याज्ञ० १।१९, मनु० २।१८९, ४।२४४ ।

देवल, -लक [देव+ला+क, देवल+अण् देवल+कन्]
प्रेमपूजक, किसी दुष्ट आत्मा (भूत प्रेतारिक) का
उपासक ।

देवारीष [देवारीन् अनुसृत् पानि आश्रयदानेन देवार्णिग
समुद्र, नम भव - देवारीष अण्] नल ।

देवार्णुम् [देवार्णुम् वरुम्—अण्] देवताओं और गक्षकों
के मध्य रहने वाली स्वाभाविक जगुना ।

देविक (वि०) (स्त्री—की) [देव+ठक्] देवताओं से
सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य, मनु० १।६५, ८।१०९,
—कम् अवश्यभावी घटना ।

देविन् (पु०) [देव+इति] ज्योतिषी ।

देव्य (वि०) (स्त्री०—व्या. —व्यी) [देव+यञ्] दिव्य,
—व्यम् किम्मत, भाष्य 2. दिव्य शक्ति ।

देविक (वि०) (स्त्री०—की) [देव+ठक्] 1 स्थानीय,
प्रातीय 2 राष्ट्रीय समस्त देश में सम्बन्ध रखने वाला
3 स्थान सम्बन्धी 4 किसी स्थान से परिचित
5 अल्पमान करने वाला सकेतक, निदेशक । देवलाने
वाला, क 1 अष्पापक, गृह 2 पथ दर्शक ।

देविक (वि०) (स्त्री०—की) [रिष्ट+ठक्] भाष्य में
लिखा हुआ, प्रारब्ध,—क भाष्यकारी ।

देविक (वि०) (स्त्री०—की) [देह+ठक्] शारीरिक,
देहसम्बन्धी ।

देह्य (वि०) [देहे भव—ध्वञ्] शारीरिक,—ह्य आत्मा
(शरीरगत) ।

दो (दिवा० पर०)—घति, वित—प्रेग्-दायरति, इच्छा०
दिल्यानि 1 काटना, बाटना 2. कमल काटना, अनाज
काटना, अन्न,—काट उड़ाना—यदनास्मयज्ञे सुच्य-
वघति—घात० ।

दोष् (पु०) दुह+तृच् 1. माल, दूध दोहने वाला,
दूधिया मरी स्थिते दोष्परि दोहदने—कु० १।२
2 बछड़ा 3. चागल या भाट (बहु भाटों का कर्तव्य जो
पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कविता की रचना करता
है) 4 जो स्वार्थबच कोई कार्य करता है (अपने भाप
को लाभ पहुंचाने के लिए) ।

दोष्म्री [दोष्प+श्रीप्] 1 दुष्पराय 2 दूष पिलाने वाली
माय ।

दोष [दुष् + धृच्, नि०] बछड़ा ।

दोर. [= डोर, नि० इत्य द] रस्सी, रज्जू ।

दोस्त [दुष् + पञ्च्] 1 झुलना, डोलना, (घड़ी के लगर की भांति इधर-उधर) झिलना 2 हिंडोला, डोली 3. फाल्गुनपूर्णिमा के दिन होने वाला उत्सव जब कि बालकृष्ण की मूर्तियों को हिंडोले में झुलाया जाता है ।

दोला, दोलक [दोल + टाप्, दोल + कन् + टाप्, इत्वम्] 1. डोली, पालकी 2 हिंडोला, पालना (आल० भी) —आसीस्य दोलाफलचिन्तनवृत्ति रघु० १४:३४, १/४६, ११/४६, सदेहदोलामारोपयते का० २०७, २६३ 3 झुलना, घट-बड़ होना 4 सदेह अनिश्चलता । सम०—अधिच्छद,—आच्छद (वि०) (शा०) झुले पर मवार (आल०) अनिश्चिन, अस्मिन्, चञ्चल—पुष्टम् सकलता की अनिश्चिनता बहु पुष्ट जितमें हार-बीत का कुछ निरवयव न हो ।

दोलापले (ना० या० जा०) 1. झुलना, इधर-उधर डोलना, इधर-उधर झिलना, घटबड़ होना, आगे-पीछे होना (आल० भी) 2. चञ्चल वा बेचैन होना ।

दोष. [दुष् + पञ्च्] (क) मृत्ति, चञ्चल, त्रिन्दा, कमी लाछन, लचर इलील—पत्र नैव यदा करोरविट्पे दोषो बलनस्य किम्—अर्जु० २/१३, नात्र कुलातिदोषं प्रही-
र्यति—शा० ३, कुलपति इव शौरी को दोष नहीं मानेगे—
सा पुनस्ततोपा—रघु० १४:१९ (ख) मूल (अनुक्ति, गलती 2. अर्थ, पाप, कलुष अत्राय—आयामदोषामुन सत्यजामि—रघु० १४:३६, मनु० ८/२४५, याज्ञ० ३/१७९ 3. अनिष्टकारी गुण, बुराई अतिकारक प्रकृति या गुण—जैसा कि 'आहार दोष' में 4 हाति, अनिष्ट, भय, क्षति—बुरोदोष हि शर्वरी—मृच्छ० १/५८, को दोष—(इयमें क्या, हाति है) 5 बुरा फल, अनिष्टकारी फल, बाधक प्रभाव, —तत्किमयमातपदोष स्यात्—
—शा० ३, अदाता वशदोषेण कर्मदोषात् दरिद्रता—
—चाण० ४८, मनु० १०/१४६ विकृत ब्याधि, रोग 7 शरीर के नीचों दोषो का मुचित होना, शिष्यकोण 8 (म्या० में) परिभाषा का दोष (अव्याप्ति, अति-
व्याप्ति और असम्बन्ध) 9. (अल० में) रचना का एक दोष (पददोष, पदाशदोष, वाक्यदोष, रमदोष, और अशुद्धोप विनका बर्णन काव्यप्रकाश के सातवें उल्लास में किया गया है) 10. बछड़ा 11 निगकरण । सम०—
आरौप्य दोष लगाना, इलजाम लगाना, —एकद्वस् (वि०) दोष हुड़ने वाला, दोषदर्शी छिद्रान्वेपी, —कर, —कृत् (वि०) बुराई करने वाला, अनिष्टकर, —सल्ल (वि०) 1. सिद्धदोष, अपराधी 2. दोषपूर्ण, मृटिपूर्ण, —घातित् (वि०) 1. बिदेही, दुर्भावनापूर्ण 2. छिद्रान्वेपी, —अ (वि०) दोषो का भाता (अ) 1. मूर्खमान वा विद्वान् पुण्य—रघु० १/६३ 2. बंध, प्रबन्ध शरीर

के तीन दोष (अर्थात् वात, पित्त और कफ),—दुष्टि (वि०) दोषदर्शी,—प्रसङ्गः कलक लगाना, बदनामी, निन्दा,—आक्ष (वि०) दोषी, अपराधी, सदोष ।

दोषधम् [दुष्] शिष् (—रुट्) इलजाम लगाना, दोष मरना ।

दोषन् (पु०, मपु०) (इत शब्द के सर्वनामस्थान (पहले पांच वचन, में रूप नहीं होते) भुवा, बाय् ।

दोषक (वि०) [दोष + कच्] दोषी, मदीप, अष्ट ।

दोषस् (स्त्री०) [दुष् + अयुच्] रात (मपु०) अथवा ।

दोषा (अव्य०) [दुष्पते अल्पकारणे—दुष् + पञ्च् + टाप्] रात का, —दोषार्जप नूनमहिमाशुरतो किलेति—वि० ४/४६ ६२, (स्त्री०) 1 मुजा 2 रात्रि का अर्थेन, रात—धर्मकालपिचय इव क्षणितदोष का० ३७ (यहाँ शब्द का अर्थ 'दोष या पाप' भी है) । सम०—आस्थ, —लितक, दोषक, कैम्प, कर: बाँद ।

दोषालय (वि०) (स्त्री०—नी) [दोषा + टप्, नृट्] रात को होने वाला, रात्रि विषयक—रघु० १३/७६ ।

दोषिक (वि०) (स्त्री०—नी) [दोष + इच्] दोषी, बुरा, मदीप, —क: कण्ठना, रोग ।

दोषिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [दुष् + यिनि] 1 नाप-विष, दुष्टित, कलुषित 2 अपराधी, सदोष, मुजरिम, दुष्ट, बुरा ।

दोस् (पु०, मपु०) [दम्पते अनेन दम् + शोसि] (कर्म० डि० व० के पश्चात् इस शब्द को विलुप्त से 'दोषन्' आदेश हो जाता है) 1 अशुभका, भूजा—तन्मुद्राश्व-
दुष्पथ्य दक्षिण दोनिषाचर—रघु० १५/२३, हेमपात्र-
गत दोम्प्यादपधान पवनचक्र—१०/५१, कु० ३/७६ 2 चाप का वह भाग जो बिज्या का निर्माण करता है । सम०—
—गद्दु (वि०) (दोषंद्) टेढ़ी भूजाओं वाला, —ग्रह् (दोषंद्) (वि०) सबल, शक्तिशाली, (ह्) भूजा में रहने वाली पींठा, —क्या (दोष्यां) आधार की लबरेखा, --दृषद् (दोषंद्): इडे जैसी भूजा, मज्जक भूजा—महावी० ७/८, भावि० १/१२८, —मूलम् (दोमूलम्) काल, बवाल, —पुष्टम् (दो-
यंद्म्) इन्द्रपुष्ट, कुमरी—महावी० ५/३७, —शास्त्रिन् (वि०) (दो शास्त्रिन्) प्रबल भूजाओं वाला, रथोत्सुक, वीर, —नेपी० ३/३२, —सिक्कम् (दो शिवरम्) कथा, —सहस्रभृत् (दो सहस्रभृत्) (वि०) 1 बाणा-
शूर का विशेषण 2 सहस्राब्देन का विशेषण, —स्य: (दोस्य) 1 सेवक 2 सेवा 3 सिलारो 4 सेल, फोडा ।

दोह: [दुह् + पञ्च्] 1 रोहना—आश्चर्यं गया दोहोऽ-
गोपेन—सिद्धा०, कु० १/२, रघु० २/२२, ७/१९ 2 दूध 3 दूध की बाटोटी । सम०—अपचय, —अय् रुध ।

दोहकः, -- दम् [दोहमाकर्षं वयाति--दा+क] गर्भवती स्त्री की प्रबल स्त्रिय प्रशान्ती दोहदस्यिनी ति--रघु० १४।४५, ज्येष्ठ का दोहददु खसोलता यदेव बने तद-पयस्यहाहृतम्--३।६, ७ 2 गर्भावस्था 3 कनो आने के समय पीधो की इच्छा (उदाहरणत अयोक्त बाहता है कि तक्षिणी उसे ठोकर मारे, बहुल बाहता है कि उसके ऊपर मरिचा के कुल्ले किये जायें)--महीषहा दोहदमेकश्लेरकात्मिक कोरकम्द्विरन्ति-नै० ३।२१, रघु० ८।६२, मेघ० ७८ २० प्रियम् 4 उल्कट अभिलष--प्रबलितमहासमरदोहदा नरपतय-वेणी० ४ 5 मामान्यत कामना, इच्छा। सम०--स्यस्यम् 1 भूय, गर्भं (दोहदलक्षण) 2 जीवन की एक अवस्था से दूसरी में प्रवेश।
दोहकवती | दोहद+स्युप+ङीप्, वचम् | गर्भवती स्त्री जिसे किसी वस्तु की इच्छा हो।
दोहन (वि०) [दुह+ल्यट्] 1 दोहन बाला 2 अमीष्ट पदार्थों की देवताला, --मन् 1 दोहना२ दूध की बाल्टी, मी दूध की बाल्टी।
दोहकः [दोह+ला+क] २० दोहद, न्या वहसि दोह-लम् (अने० पा०) ललितकामिसाधारणम्--मालवि० ३।१६।
दोहली | दोहल+ङीप् | अशोकवृक्ष।
दोहा (वि०) [दुह+थत्] दुहने योग्य, दुहै जाने योग्य,--द्वम् दूध।
दो. शोथम् | दु शील+ष्यञ् | बुग स्वभाव, दुष्टता, दुर्भावना।
दो. साधिक [दु साध+ठक्] 1 डारपाल, उपोवीवान 2 गाँव का अधीक्षक।
दोक् (गु) क् [दुकूल+अण्] रेखायी आवरण से ढका हुआ रथ, --कम् ब्रह्मिवा रेखायी वस्त्र।
दोल्घम् | दूत+घञ् | मदेश, दूत का कार्य।
दोरात्मन् | दुरात्मन्+घञ् | 1 दुष्टता, दुष्ट स्वभाव, दुर्भावना रघु० १५।७२ 2 दुर्नता-गुणानामेव दोरात्मन् धरि धूर्त्तं नियुयते--काव्य० १०।
दोर्गन्धम् | दुर्गन्ध+घञ् | 1 गरीबी, कमी, अभाव--पञ्च० २।१२ 2 दरिद्रता, दुःख।
दोर्गन्धम् | दुर्गन्ध+घञ् | बुरी या अस्वच्छ गंध।
दोर्गन्धम् | दुर्गन्ध+घञ् | दुष्टता, दुर्भावना
दोर्गन्धम् | दुर्गन्ध+घञ् | कष्टमय जावन, विपद्-यस्त जीवन।
दोर्गन्धम् | दुर्गन्ध+घञ् | नृमकता, दुर्बलता, कमजोरी, निर्बलता--मनु० ८।१७१, भग० २।३।
दोर्गन्धिनः | दुर्गन्ध+ठक्, इन्द्रङ् | अभावी स्त्री (जिसे उसका पति न चाहे) का पुत्र।
दोर्गन्धम् | दुर्गन्ध+घञ्, उभयपदवृद्धि | दुर्भाष, बर-

किसती,--याञ्च० १।२८३।
दोर्गन्धम् [दुर्गन्ध+अण्] भाइयो का आपसी कलह।
दोर्गन्धम् | दुर्गन्ध+घञ् | 1 बुग स्वभाव, 2 मान-सिक पीडा, कष्ट, श्ले, विषाद 3 निराशा।
दोर्गन्धम् [दुर्गन्ध+घञ्] अनिष्टकारी उपदेश, बुरी मलाह--दोर्गन्धानुपतिविन्दयति--अभू० २।४०।
दोर्गन्धम् | दुर्गन्ध+घञ् | दुर्गन्धन, अपभाषण।
दोह्वयम्, दोह्वयम् [दुह्वे+अण्] 1 मन की दुरवस्था, जन्ता (इस अर्थ में 'दोह्वे' मी) 2 गर्भावस्था --सुदक्षिणा दोह्वेदलक्षण दधौ--रघु० ३।१ 3 गर्भ-वती की प्रबल लालसा 4 इच्छा।
दोह्वयम् [दुह्वे+अण्] मन की दुरवस्था, दास्यता।
दोह्वि [दुह्वे+ङ्] इन्द्र का विशेषण।
दोहारिक (स्त्री०-की) | डार+ठक्, औ आयम् | डारपाल, पहरेदार--रघु० ६।१९।
दोषवर्धम् [दुषेवर्ध+घञ्] 1 दुराचरण, दुष्टता, दुष्कृत्य।
दोष्कृत्य (वि०) (स्त्री०-ली), दोष्कृत्येय (वि०) (स्त्री०-धौ) | दुष्कृत अर्थ व० सं०, स्वार्थ अण्, दुष्ट कुत्रम् प्रा० म०--दुष्कृत+ठक् | नीच कुल में उत्पन्न, नीच घराने में उत्पन्न।
दोष्कृत्यम् [दु+स्था; कु--दुष् तस्य भाव--अण्] बुराई, दुष्टता।
दोष्य (क्य) ति [दुष्य (य) ल्य--द्वम्] दुष्यत का पुत्र-दोष्यन्मिप्रतिरथ मन्य निवेश-श० ४।०।
दोहित [दुहित+अञ्] दाहता, पुत्री का पुत्र--मनु० ३।१८८ १।१३१, ऋम् निल।
दोहित्रापण [दोहित+कच्] दाहते वा पुत्र।
दोहितो | दोहित+ङीप् | दाहती, पुत्री की पुत्री।
दोहित्विनी | दोहित्+ङीप् | गर्भवती स्त्री।
दु (अदा० पर०--द्यौति) अवसर होना, म्याबला करना हमला करना, आक्रमण करना भट्टि० ६।११८, १४।०४।
दु (नपु०) | दिष्+उन्, कित् | 1 दिन 2 आकाश 3 उजाळा 4 स्वप्न (पु०) आग (पद अर्थात् व्यक्त्यादि विभक्तिना के आने पर 'दिष्' (स्त्री०) के स्थान में 'ध' आदेश होता है, या समासो में घु वा प्रयोग होता है)। मम० न पत्नी, --धर 1 ग्रह, 2 पत्नी, --जय स्वप्न प्राप्त करना, --द्युति (स्त्री०), --मही स्वर्गना, --निष्ठास देवता, --सुर शोकगिन्यागान् द्युतिवामयुयम्--भट्टि० २।२१, --पति 1 सूर्य 2 इन्द्र का विशेषण, --मणि सूर्य, --लोक स्वर्ग, --बध्, --सद् (पं०) 1 सुर, देवता, --सि० १।४३ 2 ग्रह, --सर्तिस् (स्त्री०) मया।

बुक् [बु+क] उल्क। सम०—बरि कीवा।
बुन् [म्भा० भा०—घोलते, घुलित या घोलित—इच्छा०
 दिव्युलितये, दिव्योतितये] चमकना, उजला होना,
 जमगवाना—विद्युते च यवा रवि -भट्टि० १४।१०४,
 ६।२६, ७।१०७, ८।८९, प्र० घोलयति १ प्रकाश
 करना, देदीप्यमान करना—भट्टि० ८।४६ कु० ६।४
 २ स्पष्ट करना, व्याख्या करना, समझाना ३ अवि-
 व्यक्त करना, अर्थ प्रकट करना, ब्रह्मि—, प्रेर०—
 प्रकाश करना—रघु० ६।३४, उच्च—, प्रकाश करना,
 दीपक जलाना, सजाना, सुभूषित करना—रघु० १०।
 ८०, वि—चमकना, उज्वल होना—व्यघोतित्य
 महावेद्यामसौ नरादिभिः प्रथी—सि० २।३, १।२०।

बुत्ति (स्त्री०) [बुत्+इत्] १ दीर्घित, उजाला, कान्ति,
 तीक्ष्ण—काच काञ्चनसमगीद्विते मारकती घुत्तिम्—हि०
 प्र० ४१, भा० २।१०, रघु० ३।६४ २ प्रकाश, प्रकाश
 की किरण—भर्तृ० १।६१ ३ महिमा, गौरव वन्०
 १।८०।

बुलित (वि०) [बुत्+बृत्] प्रकाशित, चमकदार, उजाला।
बुलम् [बु+म्भा+क] १ आभा, यश, कान्ति २ बल,
 सामर्थ्य, पारिज ३ वैभव, सम्पत्ति ४ प्रोत्साहन।

बुवन् (पु०) [बु+वन्ति] मूर्ख।

बुव—तम् [दिव+क्त, ऊ०] १ लेलना, जूआ लेलना,
 पाने में लेलना २ उच्च लक्ष्य घुलनेव, दारा मित्र
 घुलनेव, दान भुक्त् घुलनेव, सर्व नष्ट घुलनेव—२।७,
 अयागिभिर्यन्त्रियते तन्त्रोके बुवम्बुधते—मनु० १।
 ७७ २ जीता हुआ घुम्कार। सम०—अधिकारिन्
 (पु०) घुनघुन का स्त्रीमा, जूआ खिलाने वाला, - कर
 - कृत जूआ खेलने वाला, जूआरी -अय घुतकर
 मभिनेन ललीकियते -मुच्छ० २, -कार, -कारक
 १ जूआघर का रखने वाला २ जूआरी, -कीड़ा पालने
 में अवनता, जूआ लेलना, -पुणिमा, पौणिमा आदिपन
 मास की पूर्णिमा, (इम समय जन साधारण लक्ष्मी
 देवी के सम्मान में लेला का उत्सव मनाते हैं), -बौध्
 गौरी (खिलने के काम आने वाली), बुलितः १ पेशे-
 वर जूआरी २ जूआघर का रखवाला, -सभा, -सभाज
 १ जूआखाना २ जूआगिरी का समूह।
बुं (म्भा० पर० घायति) १ घृणा करना, निरस्कार युक्त
 व्यवहार करना २ विस्मय करना।

बुी (स्त्री०) [कृ० ए० य० बुी] [बुत्+बुी] स्वयं,
 वैकुण्ठ, आकाश - बौर्भमिरापी हृदय यमरथ—पञ्च०
 १।१८०, भा० २।१४, (इन्द्र समाम में 'बुी' की बदल
 कर 'जावा' हुआ जाता है—उदा० वावापुष्पिणी धावा
 भमी(युवाक और भूलाक)। सम० भूमि पत्नी,
 -सद् (घोषद्) देवता।

बोल [बुत्+बल्] १ प्रकाश, ज्योति, उजाला जैसा कि
 'बघोल' में २ घृष ३ गर्मी।

बोलक (पि०) [बुत्+ब्लु] १ चमकने वाला २ प्रकाश-
 मय ३ व्याख्या करने वाला, व्यक्त करने वाला, बत-
 लाने वाला।

बोतिष् (नपु०) [बुत्+इत्] १ प्रकाश, उजाला, चमक
 २ तारा। सम०—इक्षण (घोतिरिक्कण) जुगन्।

इक्षलणम् [शास्त्रिण अनेन—इक्षल्-स्युट् घृषो ह्रस्व] भार
 का माप या ष्टा, एक तोला।

इडयति (ना० भा० पर०) १ वृद्ध करना, जकड़ना, कसना
 (शा०) यथा—अटाजूट ग्रन्थि इडयति २ समर्पण
 करना, पुष्ट करना, अनुमोदन करना—निवेशे वीरानां
 तदिदमिति बुद्धि इडयति—उत्तर० २।२७, विशुद्धेक-
 ल्यंस्त्वयि तु मम अस्ति इडयति—४।११।

इडिमन् (पु०) [वृत्+इडनिष्] ३ कलाश दुइता—बधान
 इनेव इडिमरमपीय परिकरम्—गवा० ४७ २ पुष्टि,
 समर्पण—उक्तवार्थस्य इडिमन्—एकर ३ प्रकथन,
 पुष्टीकरण ४ गुहना।

इष्टम् (अप्पघवम्) [दृष्यति अनेन इत्+स, र् आदेश]।
 जमे हुए दूध का घोल, पतला दही।

इम् (म्भा० पर० इमति) इधर-उधर जाना, दौडना,
 इधर उधर भागना—भट्टि० १४।७०।

इम्मम् [प्रीक शब्द से व्युत्पन्न] 'इम' नाम एक प्रकार का
 सिकका।

इव (वि०) [दु+अर्] १ (पंखे की भांति) दौडने
 वाला २ जूने वाला, रिनने वाला, गीला, टपकने वाला
 —आक्षिप्यं कानिच् इवरायनेव (पादम्)—रघु०
 ७।७ ३ बहने वाला, पनीला ४ तरल (विप० कठिन)
 कु० २।११ ५ पिचला हुआ, तरल बनाया हुआ,
 —ब १ आना, इधर-उधर घूमना, समन २ गिरना,
 टपकना, रिनना, नि खरप ३ भगदर, प्रत्यावर्तन
 ४ खेल, बिनोड, खीडा ५ तरलना, इवीकरण ६ तरल
 पदार्थ, प्रवाही ७ रस, सत ८ काड़ा ९ चाल, वेग
 (इवीकृत्—पिचलाना, तरल करना, इवीकृत्—पिचलाना,
 पत्तोचना जैसे दया से— इवीभरति मे मन, महावी०)
 ७।३४, इवीभूत प्रेम्णा तव हृदयमस्मिन्नाण इव—उत्तर०
 ३।१३, इवीभूत मन्ये पतति जलरूपेण वगनम्—मुच्छ०
 ५।२५, १। सम०—आधारः १ छोटा बर्तन या पात्र
 २ चुल्हू, —जो राव, इव्यम् तरल पदार्थ, —रसा
 १ लाव २ दीप।

इवन्ती [दु+शत्+वीप्] नदी, दरिया।

इविडः (पु०) १ दक्षिण के घाट पर स्थित एक देश—अस्ति
 इविडेयु काञ्चो नाम नगरी—दल० १२० २ उस देश का
 निवासी -अःदुद्विधार्थमिच्छयेन्धया निमुष्टीः—का०
 २०९ ३ एक नौक जालि - नु० मनु० १०।२२।

इधियम् [इ + धनन्] 1 दीलतमन्दी, धन, सपत्ति, इव्य
—वेणी० ३१२०, भासि० ४१२९ 2 सोना रघु०
५।७० 3 सामर्थ्य, पत्तिन 4 बीरता, विक्रम 5 वात
सामथी सांगना । सम०—अधिपति, —इवर कुंदर
का विशेषण ।

इध्वम् [इ + यत्] 1 वस्तु, सामग्रियों, पदार्थ, सामान
2 अवयव, उत्पादन 3 सामग्री 4 उपयुक्त पात्र
(शिखरि ब्रह्म करने के लिए) मुद्रा० ७।१४ दे०
'अध्व' भी 5 मूल तत्व, गुणों का आधार, वैदिकियों
के सात प्रवर्गों में से एक (इव्य नो हे —पृथिव्यग्नेजो-
वायवाकाशकालदिधाममनासि) 6 म्पायतीकृत
कोई पदार्थ, दौलत, सामग्री सपत्ति, धन तनस्य
निम्नलि इव्य यो हि यस्य त्रियो जद उत्त० २।१९
7 अधिधि, दवाई 8 लज्जा, शान्तिनता 9 नामा
10 मदिरा 11 जर्द, दाब । सम० अर्जन्, —बुद्धि,
—सिद्धि (स्त्री०) धन की अवधि, अध्व सम्प-
त्ति, धन की बट्टायात, —परिध्व सपत्ति या धन वा
सचय, —प्रकृति. (स्त्री०) माया का स्वभाव, —संस्कार
यज्ञ के पदार्थों का गुड़ीकरण, —वाचकम् महा, मता-
मुचक ।

इध्वत् (वि०) [इध्व + मत्] 1 पानी दौलतमद
2 सामग्री में अन्तर्निहित ।

इध्व्य (सं० क०, वि०) 1 देखे जाने के योग्य, जो दिक्-
लाई दे सके 2 प्रथमज्ञानयोग्य 3 देखने, अनुसंधान
करने या परीक्षा करने के योग्य 4 प्रिय, दर्शनीय,
मुन्दर न्याय इध्वयाना पर दृष्टम्—सं० २,
भर्त० १।८ ।

इष्ट (प०) [इष्ट + त्त] 1 दर्शन, मार्मिक रूप में
देखने वाला, जैभासि 'क्षुपा मन्त्रइष्ट' में
2 म्पाययोग ।

इह [—इह प्र०] मात्] गहरी झील ।

इ [अद० दिवा०—इति, इति] 1 साता 2 दीडना,
सीधता करना 3 उठना, भाग जाना, नि—नीद
आना, मोत, सो जाना—अयावलय लामेकायादिका
तथा निदरावृत्तल अग—ने० १।२१, नाय से ममयो
रन्ध्रमयना निद्राति नाच—अर्ज० ३।९७, भासि०
१।४१, मट्टि० १०।७४, धा० ४।१९, वि०—प्रयावर्तन
करना, भाग जाना, उठना ।

इह (अव्य०) [इ + हु] जन्वी से, तुल्य, उसी समय
तकाल । सम०—इसकम् कुर्ये से अभी २ निकाला
हुआ जल ।

इहा [इह + अ + टाप्, नि० नलोप] अत्र, धान्य
(अत्र की बेंच या फल) इहा इध्वयि के म्पात्
—गीत० १२, रघु० ४।६५, भासि० १।१४, ४।३९ ।
सम०—इहा अत्र का रस, बाँदरी ।

इध्वयति (ना० धा० पर०) 1 लम्बा करना, फैलाना,
विस्तार करना 2 बढ़ाना, माडा करना—इध्वयति हि
मे शोक स्मरंमाणा गपामन्न—मट्टि० १।८।३३ 3 ठह-
रना, देर करना ।

इध्वयन् (प०) [दीधे + इध्वयन्, इध्व आदेश]
1 लम्बाटे 2 अलग देना का दर्जा ।

इध्वयि (वि०) [अतिवायेन दीधे दीधे + इध्वन्, इध्व
आदेश] 1 सबसे अधिक लम्बा 2 अत्यन्त लम्बा,
(दीधे की उ० अ०) ।

इध्वयिम् (वि०) (स्त्री०—सौ) [दीधे + इध्वन्, इध्व,
आदेश] अतिशय लम्बा, बहुत लम्बा (दीधे का
म० अ०) ।

इध्व (वि०) [इ + क्त, नाच, पाठम्] 1 उडा हुआ,
भागा हुआ, 2 माना हुआ निद्रात, —अम् 1 दौड
जाना, भयद, प्रयावर्तन 2 निद्रा ।

इध्व [इ + गिञ् + अच्, पुक्] 1 कीचट, दलदल
2 म्बर्, आकाल 3 म्बर्, जद 4 शिव का विचं-
पण, छटा गज ।

इध्वति [इति + अच्] बालक्य ।

इध्व [इ + घञ्] 1 भयद, प्रयावर्तन 2 चाल,
3 दीडना, बढ़ाव 4 गर्वी 5 नग्नीकरण, पिचलना ।

इध्व [इ + घञ्] 1 पिचलाने वाला पदार्थ 2 अय
रकाल मणि धूमक 3 चन्द्रकाल मणि 4 चौर
5 बुद्धिमान् पुण्य, पन्थिम चतुर, ठिठालिया, विद्वेषक
6 लम्पट, शक्तिचारी, —कम् मीम ।

इध्वयन् [इ + गिञ् + अच्] 1 भाग जाना 2 पिचलना,
गलना 3 अर्क निकालना 4 रोना ।

इध्वि [इति + अच्] 1 इति देख निबामी, इतिर का
2 पञ्च इतिर (इतिर, कर्णट, गुर्जर, महाशय, और
नेलग) इतिरों में एक, —इ (सं० व०) इतिर देन
तथा उसके निबामी, —डी इलायची ।

इध्वि [इतिर + क्त] आयाहृदी, —कम् काला
नमक ।

इ [अ० पर० इति, इत्, इच्छा० तुष्टपति] 1 दीडना,
बहुना, भाग जाना, प्रयावर्तन करना (इय कर्त्त० के
साथ) —यवा नदीना बहुशोप्रबन्धेना समुद्रमेवाभिमुख
इतिर—अग० १।१२८, रक्षासि भीमति दिवो
इतिरि ३९, इत् इत्त कीरवा—महा० 2 धावा
बोलना, हलवा करना, सवर आक्रमण करना—
मट्टि० १।५९ 3 नग्न होना, घुलना, पिचलना,
रिसना (जाल० भी) —इतिरि च हिमरमभावद्वयते च-
काला—मा० १।२८, इतिरि इदयमेतन्—वेणी०
५।२१, नि० १।९, मट्टि० २।१२ 4 जाना,
हिलना-गुलना । प्रे० इध्वयति—ते 1 अपा देना,
उकटे पाँच मया देना 2 पिचलना, गलना,—अम्—

1 पीछे भागना, अनुसरण करना, साथ जाना—रघु० ३१३८, १२१६७, १६१२५, शि० ११५२ 2 पीछा करना, पैरों की करना, अभि—1 हमला करना, धावा बोलना, (संघ के सामने) जाना—जना इत्यान्वयप्रति-इवन्त—मुच्छ० ५१२१ 2 जा पठना 3 ऊपर से चने जाना, उच , 1 हमला करना, आक्रमण करना—रघु० १५१२३ 2 की ओर भागना, प्र—, भाग जाना, प्रत्यावर्तन, दौड़ जाना (कर्म० या अपा० के साथ)—रक्षाप्रवर्तित वनानि—वेणी० ४, भट्टि० १५१०९, प्रति—, भागना, उड़ना, चले जाना—भट्टि० ५११७, शि—, भागना, भाग जाना, प्रत्यावर्तन, प्रेर०—प्रया देना, विदवा देना, तितर कितर कर देना—आमि० ११५२ मा० ३ ।

11 (स्वा० पर० हुपोति) 1 क्षति पहुँचाना, अनिष्ट करना—त दुद्रावादिषा कपि—भट्टि० १४८१, ८५ 2 जाना 3 पछानना ।

दु (पु० मनु०) [दु+दृ] लक्ष्मी 2 लक्ष्मी का बना उपकरण (पु०) 1 वक्ष मनु० ७१३१ 2 साक्षा । सम०—कलितम वेवदास वक्ष, वष 1 मोगरी, गदा या घायी 2 बड़ई की हथौड़ी जैसा लोहे का उपकरण 3 कुंजार, कुल्हाड़ी 4 ब्रह्मा का विशेषण, स्त्री कुन्दाही, —नक्ष काटा, —नक्ष (पक्ष) (वि०) बड़ी नाक वाला, —भ(ष)हः म्यान, —सल्लक्ष एक वृक्ष—शिवान्न ।

दुम [दुम्+क] 1 बिच्छू 2 मधुमक्खी 3 बदमाश—धम् 1 धनुष 2 तलवार । सम०—हः अति-कोप, म्यान ।

दुमा [दुण+टाप्] धनुष की डोरी ।

दुमि, —भी (स्त्री०) [दुम्+धन्, दुमि+ङीष्] 1 एक छोटा कछुवा या कछुवी 2 डोंग 3 कान-खजूरा ।

दुम (भू० क० क०) [दु+स्त] 1 आशुगामी, कुर्नीला, दूतगामी 2 बहा हुआ, भागा हुआ, पलायित 3 पिचला हुआ, तरल, फुला हुआ, दे० दुं, त 1 बिच्छू 2 वृक्ष 3 बिल्ली, —सम् (प्रत्य०) जल्दी से, कुर्नी से, वेग से, तरल । सम०—पक्ष (वि०) आशुगामी, —विलिखितम् एक उद का नाम, दे० पारिषाट ।

दुमि (स्त्री०) [दु+मित्] 1 पिचलना, घुलना, 2 चले जाना, भाग जाना ।

दुमपः (पु०) पाचाल देश के एक राजा का नाम (दुपद के पिता का नाम पृथत था, दुपध और द्रोण दोनों ने द्रोण के पिता ब्रह्मा से धनुर्विद्या सीधी । जब दुपद को राजगद्दी मिल गई तो एक बार आधिक कठिनाइयों में बसल होने के कारण द्रोण अपनी छाया-

बन्धा की मित्रता के आधार पर दुपद के पाम गया, परन्तु उसने धनुष के कारण द्रोण का अपमान किया । इस कारण द्रोण ने उसे अपने लिचो (पाण्डव) द्वारा पकड़वा कर बन्धी बनाया—फिर उसका छाया नाम उसे वापस कर दिया । परन्तु वह हार दुपद के मन में सर्वत्र करकेती रही, और एक ऐसा पुत्र पाने की इच्छा से जो उस हार का बदला ले सके, उसने एक यज्ञ किया । उस यज्ञानि से घट्टशुम्भ नामक पुत्र तथा द्रौघी नाम की पुत्री ने जन्म लिया । बाद में इसी पुत्र ने वीरसे से द्रोण का तिर काट लिया, दे० 'द्रौघी' भी) ।

दुमः [दुः वाशाऽस्त्यय-म] 1 वृक्ष, —यत्र दुमा अपि मृगा अपि बन्धको मे—उत्तर० ३१८ 2 परिजात वृक्ष । सम०—अरि हाथी, —आशय जाग, गोद, —आशय छिपकली, ईश्वर 1 नाड का वृक्ष 2 चन्द्रमा 3 परिजात वृक्ष, —उत्पल, कर्णिकार वृक्ष, —नक्षः,—मरः कांटा,—ध्याषि लाय, गोद,—धेष, ताह का वृक्ष,—वषधम् वक्षोष्ठान, पेड़ों का समूह ।

दुमिष्ठी [दुम+इति+ङीष्] वृक्षों का समूह ।

दुमपः [दु+प्राप्] माप, मान ।

दुम, (वि०) पर०—दुह्यति, दुम्ब 1 ईर्ष्या द्वेष करना, क्षति या द्वेष पहुँचाने की चेष्टा करना, द्वेषपूर्वक बहवा लेने की इच्छा से पदग्रहण रचना (सम्प्र०)—यान्वेति मा दुह्यति मङ्गलमेव शान्तेत्युपलब्धि तयातिजगं—न० ३१७, भट्टि० ५१२३, अभि—, क्षति पहुँचाना, हमला करने का प्रयत्न करना, पदग्रहण रचना (कर्म० के साथ)—मच्छरीरमभिद्रोषु पतते—मद्रा० १ ।

दुम, (वि०) [दुह्+क्विप्] (हमाम के अन्त में प्रयोग) (कर्म० ए० व०—भ्रूक्-गु, प्रुट,—ड) क्षति पहुँचाने वाला, चोट पहुँचाने वाला, बर्धनकारी, सम्पत् व्यवहार करने वाली—शि० २१३५, मनु० ४१९०, (स्त्री०)—क्षति, हानि ।

दुम, [दुह्+क] 1 पुत्र 2 सरोवर, झील ।

दुमप, दुमिषः [दु समारगति हन्ति—दु+हन्+ञप्, दुह्यति दुष्टेभ्य, दुह्+इन्द्रन्, गतम्] ब्रह्मा या शिव का नाम ।

दु [दु+क्विप् दीर्घ] सोना ।

दुमप, [—दुमप, पृषो० साधु] हथौडा, लोहे का हथौडा, दे० 'दुपध' ।

दुप [—दुप, पृषो० साधु०] बिच्छू ।

द्रौघ [दुप+अच्, या दु+न] 1 बार ली बंस लम्बी झील, या सरोवर 2 बावल (विशेष प्रकार का बावल) बल से बरा बावल (जिसमें से वर्षा इन प्रकार निकले जिनमें से पानी)—काश्यायविधि काले काले-पासस्थिते यवि, बनादुष्टिहते सस्ये द्रोणमेव इवोचित ।

मूच्छ० १०१२६ ३ पहाड़ी कौबा, मुरदारखोर कौबा
 4. बिच्छू० 5 बूझ 6 सफेद फूलों वाला बूझ 7 कौरव
 पाण्डवों का बूझ (द्रोण भरद्वाज ऋषि का पुत्र था,
 इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि बुनाची नामक
 अन्नरग की देखते ही जब उनका शीशपात हुआ तो
 उन्होंने उसको एक द्रोण में सुरक्षित रक्खा। जन्म से
 ब्राह्मण होने पर भी द्रोण ने परशुराम से शस्त्रास्त्र
 विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की। बाद में धनुर्विद्या और
 ज्ञस्य चान्नन द्रोण ने कौरव पाण्डवों को सिलसालाया।
 जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ तो वह कौरव
 पक्ष की ओर से लड़ा, और जब भीष्म धायल होकर
 'मरुत्सया पर' जेट मरे तो कीर्त्तमेना की बाणबोर
 द्रोण ने सभाली तथा चार दिन तक युद्ध करके पाण्डव
 पक्ष के हथोरा घोड़ाओं को मील के घाट उतारा।
 युद्ध के पन्द्रहवें दिन रात को भी मशाम होता रहा
 और फिर सोलहवें दिन प्रातःकाल कृष्ण के सुप्ताव पर
 भीष्म ने द्रोण को मुना कर कहा कि अत्यन्तमा माग
 गया (नश्य यद् वा कि अत्यन्तमा नाम का हामी-
 युद्ध में काम आता था) इस पर बिस्वास न कर इस
 मन्थ की यथायथा जानने के लिए उसने सत्यवादी
 युधिष्ठिर से पूछा। युधिष्ठिर ने भी, कृष्ण के पर-
 मर्शानुसार, बाल का छलपूर्वक टाल दिया। उन्होंने
 'अवध-वामा' शब्द की ऊँच स्वर से उच्चारण किया
 तथा 'मत्र' शब्द की घीमे स्वर ने—दे० वेणी० ३१९,
 अनेक कमाज पुत्र की मृत्यु का समाचार मंत्र समझ
 कर अथस्त शोकग्रस्त हो बड़ा पिता मूर्छित हो गया।
 उसी समय बध्दशुम्भ ने (जिसने द्रोण की मारने की
 प्रवृत्ति को भी) उस अवसर से लाभ उठाकर द्रोण
 का निर काट डाला।—ब.,—अश्व एक विशेष मोल
 का बटुा, या तो एक आडक या चार आडक, अथवा
 चारों का १/१६ भाग, या ३० अथवा ६४ मेर,—बम्
 1. काण्ड पात्र, प्याना, कटौती 2 लकड़ी की कूट या
 थोर। सम०—आवासी दे० ऊ० द्रोण, —काक पहाड़ी
 कौबा,—खौरा, —धा,—हुवा, हुवा एक द्रोण बूझ
 देने वाली गाय,—मुज्ज ४०० गाँव की राजधानी,
 मुख्य नगर।

द्रोणि,—को (स्त्री०) [द्रु+नि, द्रोणि+ड्रीम्] 1 लकड़ी
 का बना एक अडाकार पात्र जिसमें पानी रक्ते हैं,
 अथवा पानी जिसने बाहर निकालते हैं, डाल, बिलमची
 कुपी 2 जलाधार 3 काठ की गोर 4 दो शूर्प या
 १२६ मेर के बगबर धारिनी की माप 5 दो पहाड़ों
 के बीच की घाटी, बूझ—द्रोणीसैलकान्ताग्रदेशमधिधि-
 ट्ठना मायवस्थापिके प्रथमि—मा० ९, हिमवत्
 शोणी। म०—इस केतक का पीया।

द्रोह [द्रुह+घञ्] किमी के विरुद्ध पश्यन् रचना,

आघात या आक्रमण करने की चेष्टा, क्षति, उपद्रव,
 ईर्ष्या—अद्रोहशपथ कृत्वा—पञ्च० २।३५, म० १।३७,
 मनु० २।१६१ ७।४८, ९।१० 2. घोला, विधवाशपात
 3 अन्वय, शपथ 4 विद्रोह। सम०—अट 1 पाखरी,
 घुन, छपवेपी 2 शिकारी 3 झूठा मनुष्य,—बिलसम्
 ईर्ष्यायुक्त विचार, अपकार विन्सा, हाजि पहुँचाने का
 इगदा,—बुद्धि (वि०) उपद्रव करने पर उताऊ या
 दूषित व्यवहार पर तुला हुआ (स्त्री०—द्रि) दुष्ट
 प्रयोजन, दुरागम।

द्रोणायन, नि,—द्रोणि: [द्रोण+फल्, फिञ् वा, द्रोण
 +इञ्] अत्यन्तमा का विशेषण—यद्रोणेण कृत
 तदेव कुर्वते द्रोणायनि शोधन—वेणी० ३।३१।

द्रोणवती [द्रुव+अण्+ड्रीम्] पाञ्चालराज द्रुपद की पुत्री
 का नाम (म्वयम्बर में अर्जुन ने इसे प्राप्त किया।
 जब उन्होंने घर आकर अपनी माता कुन्ती को कहा
 कि आज हमने बड़ी अच्छी वस्तु प्राप्त की है। तब
 माता ने कहा कि सब आपस में बाँट लो। क्योंकि
 कुन्ती के मुख से निकली बात कभी झूठी नहीं है।
 सकी अतः वह पाँचों भाइयों को पत्नी बनी। जब
 युधिष्ठिर जूए में अपने राज्य का हाज गया, द्रोणवी
 का हाज गया, यहाँ तक कि अपने आप को भी हाज
 गया ता दुःसन्तन ने जीर दुर्वाचन को पत्नी ने उनका
 बड़ा अपमान किया। परन्तु इस प्रकार के अपमान
 को द्रोणवी ने अनापारण मरिचिगुता के साथ सहन
 किया। और जब कभी, कई अवसरों पर उनको
 तथा उनके पतिवों को परीक्षा ली गई तो उन्होने उनके
 मान की रक्षा की (जैसा कि उस समय जन दुर्वाचा
 ऋषि ने अपने माउ इखार शिष्यों के लिए रात को
 भाजल मीठा)। अन्त में एक दिन उसकी मरिचिगुता
 समाप्त हो गई और उनमें अपने पतिवों का बड़े ताने
 के साथ उसी लक्ष्य में कहा जिसमें कि वह अपने
 शत्रुओं में प्राप्त क्षति और अपमान का कड़वा घूट पी
 गये थे दे० कि० १।१०९-६६, इमी के फलस्वरूप
 पाण्डवों ने युद्ध करने का दृढ़ संकल्प किया। यह उन
 पतिवों की म्रियों में से है जो प्रातः स्मरणीय समझी
 जाती है दे० अहत्या)।

द्रोणवेप [द्रोणवी+वल्] द्रोणवी का पुत्र—मग० १।६।१८।

द्रुम्ब [द्रु डो महाभयवकी—द्रि शकट्यम् द्रिक्म्, पूर्वपद-
 स्म अम्भाव, उदारपदस्य त्पुसकत्वम्, नि०] घडियाल
 जिस पर प्रहार करने घटों की सूचना दी जाती है,
 —द्रुम्ब 1 जोधा, जन्तु युगल, मनुष्ययुगल 2 स्त्री-
 पुत्र्य, नर-मादा इन्द्राणि भाव क्रियया विबुधु—कु०
 ३।३५, मेघ० ४६, न रेविर इन्द्रयोत्रयिच्छत्—कु०
 ७।६९, रघु० १।४०, ज० २।१९, ७।२७ ३ दो
 वस्तुओं का जोड़ा, दो विरोधी अवस्थाओं या वृत्तों का

कोडा, (जैसे कि मुल-मुल, शीत और उष्ण) —इन्दूर-
कोजयन्त्रेना मुखदुःखादिभि प्रजा —मनु० ११२६,
६०८१, सर्वनीलितिकरे निबसन्तर्पित इन्द्रदुःखमिह
किचिद्विकचनोर्ग्रयं—शिव० ४१५४ ४ श्रयडा, लडाई,
कलह, टाण्डा, मुद्ग ५ कुस्ती ६ सदेह, अनिश्चित
७ किला, मूत्र ८ रस्य, —इ. (ध्या० में) समास के
चार मुख्य भेदों में से एक जिसमें दो या दो से अधिक
शब्द एक साथ जोड़े दिये जाते हैं, जो कि असमस्त
होने की अवस्था में एक ही विभक्ति के रूप 'और'
(समुच्चय बोधक अर्थ) अर्थय से जोड़े जाते —चापं
इन्द्रम्—पा० २।२।२९, इन्द्र सामासिकस्य च —भग०
१०।३३। सम०—चर, —चारिन् (वि०) जोड़े के
रूप में रहने वाले (पु०) चक्रवा—दयिता इन्द्रचर
पतिव्रतम् रघु० ८।५५, १६।६३, —आकाः देपरोत्य,
अनबन, —भिल्लम् स्त्री और पुरय (नर या मादा) का
विद्योग, —भूत (वि०) १ एक जोड़ा बनाते हुए
२ सदिय, अनिश्चित, —मुद्गम् मल्लमुद्ग, अकेला
(दो) की लडाई।

इन्द्राय (अर्थ०) [इन्द्र + आयम्] दो दो करके जोड़े में।

इय (वि०) (स्त्री०—औ) [इ + अयट्] दोहरा, दुगुना,
दो प्रकार का, दो तरह का,—अनुपशब्द इयों गण
मुद्रा० ३, भर्तु० २।१०४, अने० पा०, कभी कभी
ब० व० में भी प्रयुक्त, दे० शिव० ३।५०,—यम्
१ जादो, युगल, युग (श्राप समास के अन्त में प्रयुक्त)
—द्वितयेन द्वयमेव सगत—रघु० ८।६, १।१९, ३।८,
४।६२ दो प्रकार की प्रकृति, द्वयता ३ मिथ्यात्व,—यो
जोड़ी, युगल। सम०—अस्तिय (वि०) जिसका मत
रजसु और तमसु इन दो गुणों के प्रभाव से मूल्य हो
गया है, मल, महामा, —आत्मक द्वयप्रकृति से युक्त,
—चाथिन्, द्विजिह्व, कपटी।

इयत् (वि०) (स्त्री०—सी) 'जहाँ तक हो सके' 'इतना
जैसा जितना कि' 'इतना गहरा जितना कि' 'पहुँचने
वाला' अर्थ का बतलाने वाला प्रत्यय जो मजा शब्दों
के साथ लग-मुल्कड़यते मर्यादीस—का० ११४,
नारोहितवद्वयस बभूव (अभ) रघु० १६।४६, शिव०
६।५५।

इयत्;—रघु [इय्यात् सवनेत्यायुगाम् पर पुषो०—नारा०]
१ विषय का तृतीय युग—मनु० १।२०१ २ पासे का
वह पारस जिस पर 'दो' की मर्यादा अधिक है ३ गदेह,
गशापय, अनिश्चितता।

इयुष्यायण (वि०) [अयसु + कृत् = आशुष्यायण ष०
त०] दे० 'इषाशुष्यायण'।

इय् (स्त्री०) [इ + यिच् + चिच्] १ दरवाजा, फाटक
—शिव० ३।१२, मनु० ३।३८ २ उपाय, तरकीब,
इय्या के उपाय से को मार्ग। सम०—स्वः,—स्थितः

(इा स्व, इास्व, इा स्थित, इास्थित) : इा
इषोडीवान्।

इयम् [इ + यिच् + अच्] १ दरवाजा, तोरण, प्रवेशद्वार,
फाटक २ मार्ग, प्रवेश, घुसना, मुह, —अथवा कुन-
वाग्वारे यषोऽस्मिन्—रघु० १।४, १।१८ ३ गरीर
के द्वार या छिद्र (यै गिनती में नौ हैं दे० कम्)
कु० ३।५०, भग० ८।१२, मनु० ६।४८ ४ मार्ग,
माध्यम, साधन या उपाय द्वारेण 'मे से' के साधन से।
सम०—अधिषे इषोडीवान्, इारपाल, —कृष्कः दरवाजे
की कुडी, —कपाट, —इम् दरवाजे का पत्ता या दिला,
—गोप—भायकः—घः,—पालः, पालकः, इारपाल,
इषोडीवान्, पहरेदार, —इषः सागवान की लकड़ी,
—पट्टः १ दरवाजे का दिला २ दरवाजे का परा,
—पिडी दरवाजे की देखी, —स्थितः दरवाजे की कुडी
—बलिभूम् (पु०) १ कीटा २ चिड़िया, —बाहुः दर-
वाजे की बाजू, द्वार का पाखा, —यन्त्रम् ताल, कुडी
—स्व इारपाल।

इार (रि) का [इार + क्त + क] गुजरात के पश्चिमी
किनारे पर स्थित कृष्ण की राजधानी ('इारका' के
के वर्णन के लिए दे० शिव० ३।३२-६०)। सम०—ईकाः
कृष्ण का विशेषण।

इारवती, इारवती = इारका।

इारिक इारिन् (पु०) इषोडीवान्, इारपाल।

इि (सकृदा० वि०) (कृत्० डि० व०—पु० डी, स्त्री०,
नपु०—इे) दो, दोनों—सद्य परस्परमुलामधिरोहता
इे—रघु० ५।६८, (विशेष) दान् चिदाति और चिसत्
से पूर्व इि को 'इा' हो जाता है, चत्वारिणात्, पञ्चा-
णात्, षष्टि, सप्तति और नवति से पूर्व इि को इा
होता है परन्तु विकल्प से, और अधोति से इि में कोई
परिवर्तन नहीं होता। सम०—अज (वि०) दो जोड़ों
वाला, —अक्षर (वि०) द्वयधरो, दो अक्षरों से
सबद्ध, —अङ्गुल (वि०) दो अंगुल लम्बा, —अङ्गु
दा अङ्गुली की लम्बाई, —अङ्गुलम् दो अङ्गुली का
मपात, —अर्ध (वि०) १ दो अर्ध रखने वाला
२ सदिय, अल्पत्वा इयपथेक ३ दो बाणों का
ध्यान रखने वाला, —असीत (वि०) बयासीवाँ,
—असीतिः (स्त्री०) बयासी, —अष्टयु तावा, —अष्टुः
दो दिन का समय, —आत्मक (वि०) १ दो प्रकार के
स्वभाव वाला २ दो होने वाला, —आशुष्यायणः
दो पिताओं का पुत्र, गोद लिया हुआ बेटा, जो अपने
मूल पिता की सम्पत्ति का भी साथ ही साथ उत्तरा-
धिकारी हो। —आशुष्य (द्वयुष्य, द्वयपथम्) आशुष्यो
का सवह, —कः,—ककारः १ कीटा (यषोऽस्मिन्
'काक' शब्द में दो 'क' होते हैं) २ चक्रवा (यषोऽस्मिन्
कोक शब्द में भी दो 'क' हैं), —कङ्कुम् (पु०) ऊँट,

—यु (वि०) दो गौजो से विनिमय किया हुआ, (युः) तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमें पूर्वपद मर्यादाबधक होना है—इन्द्रो द्विपुरुषि बाहुम्—उद्भट, —युम् (वि०) दुनुना, दोहरा, (द्विपुरुषीक)—दो बार हल चलाना, दुनुना कलना, बढ़ाना), —युमित (वि०) 1 दुनुना किया हुआ, —कि० ५।४६ 2 दो तह किया हुआ 3 लपेटा हुआ 4 दुनुना बढ़ाया हुआ, —चरण (वि०) दो टांगो वाला, दो पैरों वाला—द्विचरणपशुना स्निग्धमुजाम्—गा० ४।१५, —स्वार्थिषा (वि०) [द्वि-स्वार्थिषा] ब्यालीसवाँ, —स्वार्थिषात् (स्त्री०) [द्वि-स्वार्थिषात्] ब्यालीस, अ दुजन्मा, 1 हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्षों में (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) कोई एक, दे० वाज० १।३९ 2 ब्राह्मण (जिसपर पवित्रीकारक कृत्य या सस्कारों का अनुष्ठान किया जा चुका है)—जन्माना जायते वृद्ध सस्कारोद्दिष्ट उच्यते 3 गण्ड बहु जैसे कि पक्षी, साँप, मछली आदि—स तमानदमविवद द्विज—नै० २।१, अ० ५।२१, रघु० १२।२२, मुद्रा० १।११, मन० २।१७ 4 दंत—कोई द्विजाना वर्ण—भर्तु० १।१३ (यहाँ 'द्विज' शब्द का अर्थ ब्राह्मण भी है) ५ अथवा ब्राह्मण, 'अथनी यज्ञोपवीतं जित्ने हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्ष धारण करते हैं, 'आलय' द्विज का घर 'द्विजः', 'ईश' 1 चन्द्रमा सि० १२।३ 2 गण्ड का विशेषण 3 कपूर, 'वास. वृद्ध', 'पति', 'राज' 1 चन्द्रमा का विशेषण—रघु० ५।२३ 2 गण्ड, 3 कपूर, 'प्रथा' 1 आलयाज, यावला 2 चूबच्चा (जहाँ पशु पक्षी पानी पीयें), 'बन्धु', 'बुध' 1 जो ब्राह्मण बनने का बहाना करता है 2 जो जन्म से ब्राह्मण हो, कर्म से न हो, तु० ब्रह्मव्युत्, 'सिद्धिन्तु' (पु०) 1 क्षत्रिय 2 ब्रह्म ब्राह्मण, ब्राह्मण वेणुपारो, 'बाहून् विष्णु की उमाति (पलशारोही), 'सेवक वृद्ध',—अन्वय, —जाति (पु०) 1 हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्षों में से किसी एक वर्ण का मनु० २।२४ 2 ब्राह्मण—कि० १।३९, कु० ५।६ 3 पक्षी पछी 4 दाँत,—आनीय (वि०) हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्षों में से किसी एक वर्ण का, —बिह्व 1 साँप—सि० १।६३, रघु० १।१५४, १५।६१, भावि० १।२० 2 अनुष्कक, मिथ्यानिन्दक, युगन्त्यार 3 कपटी पुरुष,—अ (वि०) (ब० ब०) दा तीन—रघु० ५।२५, भर्तु० २।२१, —विश (द्राविड) 1 बनीसवाँ 2 बनीस से युक्त, —विशत् (द्राविड) वर्नास, 'सकल ३२ धृत्तन्त्रणा से युक्त, —दधि (अव्य०) 1 दूध से बना,—बत् (वि०) दो दंत रखने वाला,—इस (वि०) (ब० ब०) बीस,—इस (वि०) (द्राव्य) 1 बीसवाँ, मनु० २।३६

2 बारह से युक्त,—इक्षन् (द्राव्य) (वि०, ब० ब०) बारह, 'अक्षुः 1 बहुस्पति बहु तथा 2 देवों के युद्ध बहुस्पति का विशेषण, 'अक्षः' कर्कः 'लोभकः कानिकय का विशेषण, 'अक्षुः १२ अक्षुः का माप, 'अक्ष 1 बारह दिन का समय—मनु० ५।६३, ११।६८ 2 १२ दिन तक चलने वाला या १२ दिन में पूर्ण होने वाला यज्ञ, 'आत्सन् (पु०) सूयं, 'आविस्थाः (ब० ब०) बारह सूयं दे० आदित्य, 'आयुस् (पु०) कृता, 'सहस्र (वि०) १२००० से युक्त, —इषी (द्राव्य) बौद्ध मास के पक्ष की १२वीं तिथि—इषेतम् विशालानाम नक्षत्र,—इहः गणेश का विशेषण,—घातु गणेश का विशेषण,—अन्तक बहु मनुष्य जिसकी मृत्यु हो चुकी हो,—नवस (द्वि-द्राव्य) बानवेवाँ,—नवसति (द्वि-द्राव्य) बानवे,—न हाथी, 'आत्य गणेश का विशेषण,—पशः 1 पक्षी 2 महीना,—पश्यात् (द्वि-द्राव्य) बानवे, 'आवनवाँ,—पश्यात् (द्वि-द्राव्य) बानवे, 'आवन,—पशु दो मार्ग,—पशु, दुपारा, मनुष्य,—पविक्र, —पवी 1 दुपारा मनुष्य 2 पक्षी, देवता,—पाद्य,—पाद्यम् दुग्धा जमाना,—पारिम् (पु०) हाथी,—विदु विमल (क), —भुज, कोप,—भुम् (वि०) (मल की भाँति) दो मलिका,—मातु,—मातृज 1 गणेश तथा 2 जगन्मय का विशेषण,—मात्र दीर्घ स्वर (दो मात्राओं वाला), —मागो पण्डितों,—मुवा जाँक,—र 1 शौरा—तु० द्विरेक 2 बंबर,—रहा हाथी—रघु० ४।४, मेघ० ५९, 'अन्तक, 'अराति, 'अशन मिह,—रसनः साँप,—रात्रम् दो रातें,—रथ (वि०) 1 दो रथों का, 2 दो गय का, द्विदलीय,—रेतस् (पु०) मच्छर,—रेक भोग ('अमर' इसमें दो 'रे' हैं) कु० १।२७, ३।२७, ३६,—रचनम् (व्या० में) द्विवचन,—रथक १६ कोपों का मोला या पाखों का घर,—राहिका बहोपों,—रिषा (द्राविड) (वि०) बाइसवाँ,—रिषति (द्राविड) (स्त्री०) बाईस,—रिष (वि०) दो प्रकार का, दो तरह का, मनु० ७।१६२,—रेशरा मडमडा, मच्छरों से लीची जाने वाली हल्की गाड़ी,—रतम् 1 दो ली 2 एक ली दो,—रात्य (वि०) दो ली में लरीदा हुआ या दो ली के मूल्य का,—राक (वि०) दो फटे लुग बाना (क) कोई भी फटे दो लुग वाला जानवर,—शीर्षः बलि का विशेषण,—शष् (वि०) (ब० ब०) दो बार छ, बारह,—शष् (द्विष्य, द्राव्य) बाइसवाँ, शष्तिः (स्त्री०) (द्विषटि, द्राविड) बाइस,—शष्त (द्वि-द्राव्य) (वि०) बहुतरावों,—शष्तिः (स्त्री०) (द्वि-द्राव्य) बहुतर,—शष्तः

- पक्ष, पक्षवादा, —सहस्र, साहस्र (वि०) २००० से युक्त (—सम्) दो हजार, —सीत्य, —हस्य (वि०) दोनों ओर से हल चला हुआ अर्थात् पहले सम्बाई की ओर से और फिर चौड़ाई की ओर से, —सुवर्ण (वि०) दो सोने की मोहरों से लकीरा हुआ या दो स्वर्ण मुद्राओं के मूल्य का, —हृन् (पु०) हाथी, —हृन् (वि०) —वर्ष (वि०) दो वर्ष का आयु का, —ह्रीन् (वि०) नरुक्त लिंग, —हृन्वत् प्रभंजनी स्त्री, —ह्रीन् (पु०) अग्नि का विशेषण ।
- द्विक** (वि०) [द्विभ्या कार्यात् -द्वि + क + क] 1 दोहारा, जोड़ी बनाने वाला, दो से युक्त 2 दूसरा 3 दोबारा होने वाला 4 दो अधिक बढ़ा हुआ, दो प्रतियोग —द्विक सान वृद्धि —मनु० ८।१४१-० ।
- द्वित्य** (वि०) (स्त्री० यी) [द्वौ अवयवो यस्य -द्वि + नवप्] दो से युक्त, दो में विभक्त, दुपुना दोहारा (कई बार ब० व० में प्रयुक्त) दुपुनानुसारा किमन्तर यदि वायो द्वित्येति ते चत्वार रघु० ८।१०, —यन् जोड़ी, युगल रघु० ८।६,
- द्वितीय** (वि०) [द्वयो पूरणम् -द्वि + तीय] दूसरा -त्व जीवित स्वमित मे हृदय द्वितीयम् -उत्तर० ३।२६, मेघ० ८३, रघु० ३।४९, -य 1 परिवार में दूसरा, पुत्र 2 साथी, मासोदार, मित्र, (प्राय समाज के अन्त में) प्रयत्नपरिष्कृतद्वितीय —रघु० १।१५, इसी प्रकार ज्ञाना, दुर्लभ, या चाद्रमास के पक्ष की दोग्य, पत्नी, साथी, मासोदार । सम०—आश्रम ब्राह्मण या गृहस्थ के जीवन की दूसरी अवस्था अर्थात् गृहस्थ्य ।
- द्वितीयक** (वि०) [द्वितीय + कन्] दूसरा ।
- द्वितीयकृत** (वि०) [द्वितीय + कृ + क्त] (केत आदि) जिसमें दो बार हल चलाया जा चुका हो ।
- द्वितीयम्** (वि०) (स्त्री० -नी) [द्वितीय + इनि] दूसरे स्थान पर अधिकार किये हुए ।
- द्विच** (वि०) [द्विधा + क] दो भागों में विभक्त, दो टुकड़ों में कटा हुआ ।
- द्विधा** (अध०) [द्वि + धाच्] । दो भागों में—द्विधाभिप्रायि लक्ष्मिभूमि -रघु० १।३९, मनु० १।१२, ३२, द्विधेव हृदय तस्य दुर्मितस्याभवत्पदा—महा० 2. दो प्रकार में । सम०—कारणम् दो भागों में विभाजन, टुकड़े-टुकड़े करना,—गति 1 उभयधर जन्तु, जल-स्थल-धर 2 केंद्रक 3 मयूरचक्र ।
- द्विसत्** (अध०) [द्वि + सत्] दो दो करके दो के हिसाब से, जोड़े में ।
- द्विच** (कदा० उभ०—द्वेषि, द्विष्टे, द्विष्ट) बूना करना, पसंद न करना, विरोधी होना—न द्वेषि यज्जन्मत-स्त्वमकातयान्—वेणी० ३।१५, मग० २।५७, १८।१०,

- भट्टि० १७।६१, १८।९, रम्य द्वेषि—वा० ६।५, (प्र. वि. सम् आदि उपसर्ग लैगने पर इस धातु के अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता) ।
- द्विच** (वि०) [द्विच + क्तिप्] विरोधी, बूना करने वाला, अनुवन्—(पु०) यन्,—रघ्यान्वेयवत्पलाणा द्विषाम-मिषता ययो—रघु० १२।११, ३।४५, पच० १।७० ।
- द्विच** [द्विच + क] यन् [द्विचलत्] वि० यन् को सतप करने वाला, परिशोध लेने वाला ।
- द्विचत्** (पु०) [द्विच + यत्] यन् (कर्म० या सब० के साथ)—तत्. पर दुष्यन्त द्विचत्—रघु० ६।३१, सि० २।१, भट्टि० ५।१७ ।
- द्विष्ट** (वि०) [द्विच + क्त] । विरोधी 2 वृत्त, अभिय,—ष्टम् तावा ।
- द्विच** (अध०) [द्वि + मुच्] दो बार—द्विच प्रतिघाभेन स्यात्तहार हिमालय -कु० ६।६४, मनु० २।६० । सम०—अशयमन् [द्विरशयमन्] गौना, मुकलावा, दुल्हन का अपने पति के घर दूसरी बार आना, —आय [द्विराय] हाथी, उक्त [द्विस्त] (वि०) 1. आवृत्ति, पुनरुक्ति 2 अनिरेक, अनुपयोग,—द्विधा [द्विष्ठा] पुनर्बिवाहित स्त्री,—पाच,—यज्जन्तु द्विरावृत्ति ।
- द्वीप**,—यम् [द्विगंता द्वयोर्दशोर्वा गता जापो यश्च द्वि + अप्, अग ईप्] 1 टापू 2 सारणस्थान, आशयगृह उत्पादन स्थान 3 भूलाक का एक भाग (मिश्र २ मतानुसार इन भागों को सख्या भी मिश्र २ है, चार, सात, नौ या तेरह, कमल की पल्लवियों की भांति सब के सब मेरु के चारों ओर स्थित हैं, इनमें से प्रत्येक को समुद्र एक दूसरे से विभूक्त करता है । न० १।५ में अठारह द्वीपों का वर्णन है, परन्तु मात की सख्या सामान्य प्रतीत होती है—तु० रघु० १।६५, और म० ७।३३, केन्द्रीय मान जम्बूद्वीप का है जिसमें भारतवर्ष विद्यमान है) । सम०—कर्पूर चनि से प्राप्त कपूर ।
- द्वीपम्** (वि०) [द्वीप + मनुप्] टापुओं से भरा हुआ, —(पु०) समुद्र,—नी पुष्पी ।
- द्वीपिन्** (पु०) [द्वीप + इनि] 1 चोर—चर्वाणि द्वीपिनं हन्ति—सिद्धा० 2 बीता, व्याघ्र । सम०—यज्जन्तु 1 चोर की वृत्त 2 एक प्रकार का सुपन्न इन्ध ।
- द्वेषा** (अध०) [द्वि + धा], दो भागों में, दो तरह से, दो बार ।
- द्वेष** [द्विच + धच्] 1 बूना, अपवि, बीभत्सा, यजिष्का, युष्का—म० ५।१८, मग० ३।३४, ७।२७, इसी प्रकार अज्जेष, अकतेश्व 2 क्षुब्धा, विरोध, ईर्ष्या—मनु० ८।२२५ ।
- द्वेष** (वि०) [द्विच + स्तृच्] बूना करने वाला, नापसन्द

करने वाला,—**व** शब्द,—**वम्** वृणा, वृणुष्वा, वृणुता, वृषधि ।

द्वेषिन् (वि) [द्वेष + द्वि, द्विप् + लृप्] वृणा करने वाला, (पु०) शब्द ।

द्वेष्य (स० कृ०) [द्विप् + ध्यञ्] 1 वृणा के योग्य, 2 विनीता, वृषित, जलचकर—रघु० १।२८,—**व्य** शब्द भग० ६।१९, १।२९, मनु० ९।३०७ ।

द्वेषुषिकः [द्विगुण + ठक्] सूदसोरों को मत्-प्रतिघत व्याज नेता है ।

द्वेष्यम् [द्विगुण + ध्यञ्] 1 दुगुनी गति मूल्य या माप 2 द्वित्व, द्वैतावस्था 3 तीन गुणों (अर्थात् तत्त्व, रजस् और तमस्) में से दो पर अधिहार रखना ।

द्वेष [द्विधा इतम् द्वितम्, तस्य भाव स्वार्थे अण्] 1 द्वित्व 2 द्वैतावस्था (दर्श०) दो विशद नियमों का प्रकथन, जैसे कि जीव और प्रकृति, ब्रह्म और विश्व, आत्मा और परमात्मा एक दूसरे से भिन्न हैं—तु० 'अद्वैत'—कि शास्त्र श्रवणेन यस्य गलति द्वैतावधारोत्कर—भाषि० १।८६ 3 एक जगल का नाम । तम०—**व** शब्द एक जगल का नाम कि० १।११,—**वार्धिन्** (पु०) वह दार्शनिक जो द्वैतासद्वान्त को मानता है ।

द्वैतिम् (पु०) [द्वैत + द्वि] द्वैतावधि दार्शनिक ।

द्वैतीयक (वि०) (स्त्री०—की) [द्वितीय + ईकृ] दूसरा—द्वैतीयकतया मित्रोपग्रमनसस्य प्रबन्धे महाकाव्ये चारुषि नैषधीयपरिगते सगौ निसगौज्ज्वल—मै० २।११०, तु० तार्तीयक ।

द्वेष (वि०) (स्त्री०—पी) [द्वि + वम्ञ्] दोहा, दुगुना (द्वैधीम्—दो भागों में विभक्त होना, लघ्व २ होना, द्विविधा में पडना, मन में अनिश्चित होना),—**वम्** 1 द्वैतावस्था, दोहरी प्रकृति या अवस्था 2 दो भागों में विभुक्त् 3 दुगुने साधन, गौण आरक्षण 4 विविधता, भिन्नता, सचर्च, विवाद, विभेद—**धृतिद्वेष** तु वच स्यात् तत्र धर्मात्तुयो स्मृते—मनु० २।१४, १।३२, याज्ञ० २।७८ 5 सदेह, अनिश्चितता—भग० ५।२५, वेणो० ६।४४ 6 दो प्रकार का व्यवहार, दुरभीर्नीति, विदेशनीति के छ प्रकारों में से एक, २० नो० द्वैधीभाव और गुण ।

द्वैधीभाव [द्वैध + ध्वि + भू + घञ्] 1 द्वैतता, दो प्रकार

की अवस्था या प्रकृति 2 दो लघ्व, द्विविधता, द्विधाभाव 3 सदेह, अनिश्चितता, उपाहास्य होना निलम्बन्,—**पुण्ड्रिधीभावकातर** में मन—अ० १।४ दुविधा 5 विदेश नीति के छ गुणों में से एक (कुछ के मतानुसार इसका अर्थ है—दो तरह का व्यवहार, दुरभाग्य, बाहर ने शत्रु के साथ मित्र जैसे सबध रचना—बलि-नोद्विधतोमध्य वाचात्मान समर्पणम्, द्वैधीभावेन तिष्ठेन् काकाश्रवदलक्षित, दूसरों के मतानुसार शत्रु की सेना में फूट डालना और अपने से बलवान् शत्रु का छोटीर दुकवियों में मुकाबला करना तथा आक्रमण द्वारा उसे दुली करना—द्वैधीभाव स्वबलस्य द्विधा करणम्—याज्ञ० १।३४७ पर मिता०, तु० मनु० ७।१७३, व १६० से ।

द्वैधम् [द्विधा + ध्यञ्] 1. दुरगी बाल 2 विविधता, विभिन्नता ।

द्वेष (वि०) (स्त्री०—पी) [द्विध + अण्] 1 टापू से सबध या टापू पर रहने वाला 2 घेर से सबध रखने वाला, घेर की झाल का बना हुआ या व्याघ्र की झाल से ढका हुआ,—**व** घेर की झाल में ढकी हुई गाड़ी ।

द्वेषम् [द्विध + अण्] दो दल, दो टोलियाँ ।

द्वैपायन [द्वैपायन + अण्] टापू में उत्पन्न, वेदव्यास ।

द्विष् (वि०) (स्त्री०—व्या,--व्यी) [द्विध + यञ्] टापू निवासी या टापू से सबन्ध—शि० ३।७६ ।

द्वैपातुर (वि०) [द्विपातु + अण्] दो माताओं वाला, अर्थात् जन्मदात्री माता तथा सौतेली माता,—**र** 1 मणेश का नाम 2 अरासध का नाम—हृते हिचिबिरि-पुया राजि द्वैपातुरे वृधि—शि० २।६० ।

द्वैमातृक (वि०) (स्त्री०—की) [द्विमातृक + अण्] (वृ षेण) जहाँ बर्षा तथा नदी दोनों का जल खेती के काम आता हो (तु० 'द्वैमातृक') ।

द्वैरथम् [द्विरथ + अण्] 1 दो रथारोहियों का एककी युद्ध 2 एकल युद्ध,—**व** शब्द ।

द्वैराज्यम् [द्विराज्य + ध्यञ्] दो राजाओं में बँटा हुआ उपनिवेश ।

द्वैराषिक (वि०) [द्विवर्ष + ठक्] प्रति दूधरे वर्ष होने वाला ।

द्वैविधम् [द्विविध + ध्यञ्] 1 द्वैतता, दुरगी प्रकृति, 2 विभिन्नता, विविधता, भिन्नता ।

ध (वि०) [धा + ड] (समास के अन्त में), रखने वाला, पनालने वाला, —ध 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 कुबेर 3 मलाई, नेकी, आचार, गुण, —धम् धन दौलत, संपत्ति ।

धक् क्रोशोद्गार—उत्तर० ४।२४ ।

धक् (चुरा० उभ०) धकधयति—ते) ध्वस्त करना, नष्ट करना ।

धटः [ध + अट् + अच्, लृक्० परस्परम्] 1 तरावू, तरावू के पलड़े 2 तरावू द्वारा कटोर परीक्षा 3 तुला राशि ।

धटक [धट + कं + क] ४२ गुजा या रनियां के समान एक प्रकार का ताल विशेष ।

धटिका, धटी [धटो + कन् + टाप्, ह्रस्व, धन् + अच् + टोप्, नि० नस्य ट] 1 पुराना कपड़ा या बिचडा 2 लुगटो

धटिन् (पु०) [धट + इनि] 1 शिव का विशेषण 2 मुल राशि, —नी = धटी ।

धष् (म्भा० पर०) धशति शब्द करना ।

धशूर, धशूरक, —आ [धयति धातून् धे + उरच् पूवो०, धन् + कन्, स्त्रिया टाप् च] धशूरे का पीवा ।

धन् (म्भा० पर०) धनति शब्द करना ।

धनम् [धन् + अच्] 1 संपत्ति, दौलत, धन, निधि, रूपया (सोना, आदि बल संपत्ति) —धन तावदमुलधम्— हि० १. (आल० भी) जैसा कि तपोधन, विद्याधन आदि में 2 (क) मूल्यवान् संपत्ति, कोई प्रियतम या स्निहधनम पदार्थ, प्रियतम निधि—कष्ट जन कुलधनेनुरञ्जनीय—उत्तर० १।१४, गुरंगरोषिध धन-महाहिताभे—रघु० २।४४, मानधनम्, अभिमान० आदि (च) मूल्यवान् वस्तु धनु० ८।२०१, २०२ 3 पूंजी (विप० वृद्धि या व्याज) 4 लूट का माल अपहृत वस्तु, ऊपरो आद्य 5 मूल्यवृद्ध में बिचैना को प्राप्ति होने वाला पुरस्कार नैले में जीना हुआ पारितोषिक 6 पुरस्कार प्राप्ति करने के लिए कौत्स-योगिता, प्रतिबन्धिता 7 धनिष्ठा नक्षत्र 8 फाल्गु अर्वाक्षिण्ट 9 (गण० में) जोड़ की राशि (विप० ऋग्य) 1 सम०—अधिकार, संपत्ति में अधिकार, उत्तराधिकार में संपत्ति पाने का हक, —अधिकारिन्, —अधिकृत 1 कोषाध्यक्ष 2 उत्तराधिकारी—अधि-योष्य, —अधिष्य—अधिपति, अध्यक्ष 1 कुबेर का विशेषण—कि ०५।१६ 2 कोषाध्यक्ष, —अपहारः 1 अपहरण 2 लूट लोभोत्त का माल, —अधित (वि०) धन के उपहारों में सम्मानित, मूल्यवान् उपहारों से सेतुष्ट किया गया, —मानधना धनार्थिना—कि०

१।१९ 2 मालदार, धनाइय, —अधिन् (वि०) धन-ल्लुक्, लालची, कजूस, आक्षुष (वि०) मालदार, धनी, दौलत मंद, —आधार, खजाना, —ईश, ईश्वर 1 कोषाध्यक्ष 2 कुबेर का विशेषण, —उत्तमन् (पु०) धन की धर्मी—तु० अर्थात्तन्, —एधिन् (पु०) साहू-कार जो अपना रुपया मानी, —केलिः कुबेर का विशेषण,

अधः धन की हानि धनसमे वधति जाडरानि—पच० २।१७८, —धर्ष, —धवित (वि०) रुपये का धमकी, धातम् तब प्रकार की मूल्यवान् संपत्ति समस्त द्रव्य, —इ 1 उदार या हलवोल व्यक्ति 2 कुबेर का विशेषण—रघु० १।२५, १।७।८ 3 अग्नि का नाम, 'अनुज रावण का विशेषण—रघु० १।२।५२, ८८, —इड अपहरण, जर्मना, —हामिन् (पु०) आण, —वति कुबेर का विशेषण—उत्तरागार धनपनिगुहानुत्तरेवासमदीयम्—मेघ० ७५, ७—वाल, 1 कोषाध्यक्ष 2 कुबेर का विशेषण—विश्राधिकार, पिशाची धन का राक्षस, धन की लूट्या, लालच, लोलुपता, प्रयोग नृद गरी, —मह (वि) धन का धमकी, —मूलम् मूलधन, पूंजी, —लोभः लूट्या, निष्ठा, —ध्वय 1 लूट 2 अपव्यय, —स्थानम् खजाना, हूर 1 उत्तराधिकारी 2 चौर 3 एक प्रकार का मुग्ध-द्रव्य ।

धनकः, धनाया [धनस्य काम—धन + कन्] लूट्या, लालच, लालसा ।

धनञ्जयः [धन + जि + लच्, मुम्] 1 अर्जुन का नाम (नाम की व्युत्पत्ति—सर्वाञ्जनपदान् जिष्या विशामा-दाय केवलम् मध्ये धनस्य निष्ठाभि तेनाहुर्मा धनञ्जयम्—महा० 2 अग्नि का विशेषण ।

धनवत् (वि०) [धन + मनुप्] धनी, दौलतमंद ।

धनिकः [धनमादेयत्वेनास्ति अस्थ-ठन्] 1 धनवान् या दौलतमंद पुरुष 2 महाजन, साहूकार—दापयेडिन-कथार्यम्—तनु० ८।५१ याज्ञ० २।५५, 3 पति 4 ईमानदार व्यापारी 5 'प्रियम्' वृक्ष ।

धनिम् (वि०) (स्त्री०-नी) [धन + इनि] धनी, मालदार, दौलतमंद (पु०) 1 दौलतमंद 2 साहूकार—याज्ञ० २।१८, ६१, तनु० ८।६१ ।

धनिक (वि०) [धन + इडन्, धान्त् की उ० अ०] अत्यन्त धनी, —आ तेहसरो नक्षत्र, (इसमें चार नक्षत्रों का धन है) ।

धनी धनीता [धनमस्ति अस्य—धन् + अच् + टोप्] तरुणी, जवान स्त्री ।

धनु [धन् + उ] धनुष, (सम्बन्ध 'धनुन्' का ही रूप)

धनुत् (वि०) [धन् + उत्ति] 1 धनुष से सुसज्जित (नपु०) ।

धनुष, —धनुष्यमोष तस्यस्य चाणम् कु० ३१६६, इसी प्रकार इन्द्रधनुः अत्रि (बहुव्रीहि समास के अन्त में धनुष् के स्थान में धन्वन् आदेश हो जाता है — २५० २८८) 2 चार हाथ के बराबर लंबाई की माप —आज्ञा० ०११६७, मनु० ८१२७३ 3 वृत् की माप 4 यम राशि 5 मन्थल सु० धन्वन् । मम० - कर (वि०) —धनुष्कर धनुष से सुसज्जित (र) धनुष बनाने वाला, —काष्णम् (धनु, काष्ठम्) धनुष और बाण - लघ्वम् (धनु लक्ष्मन्) धनुष का भाग—मय० १५, —गुण. (धनुषेणः) धनुष की डोरी,—बह (धनुषेह) धनुषारी,—ध्या (धनुष्यां) धनुष की डोरी —अनवरतधनुष्याम्पालनकुर्यात्—आ० ०१४,—द्वय (धनुर्द्वय) बाँस —घर, —भूत (धु०) (धनुषर आदि) धनुषारी—रघु० ०१११, २१९, ३१३१, ३८, ३९, ११११, १२११०, १५१००,—वालि (वि०) धनुष्वालि धनुष से सुसज्जित, हाथ में धनुष लिये हुए,—बाण (धनुर्बाणः) धनुष की भाँति टेढ़ी रेखा, बक,—बिद्या (धनुर्विद्या) धनुर्विज्ञान,—बुध, (धनुर्वलः) 1 बाँस, 2 अथर्व का वृक्ष,—वेध (धनुर्वेद) चार उपवेदों में से एक—धनुर्वेद, धनुर्विज्ञान ।

धनु (स्त्री०) [धनु + ऊ] धनुष, कमान ।
 धन्य (वि०) [धन् + यत्] 1 धन प्रदान करने वाला, —मनु० ३१६०९, ६११ 2 दीनत्वमय, धनी, मालदार 3 सौभाग्यशाली, भाग्यवान् महाभाग, ऐश्वर्यवाली—धन्य जीवनमय्य मार्गसम्यग्—भाषि० १११६, धन्य वेपु म्बिना ते शिरसि—मुद्रा० १११ 4 श्रेष्ठ, उत्तम, सुखवान्,—स्य भाग्यवान् या सौभाग्यशाली, हिम्पन् बाळा स्वधिव्—अशास्त्रद्वयजसा मलिनी भवति—रा० ७११७, मनु० ११८१, धन्य कोशिक य विनिधा कश्यते प्राप्ते नवे धीवने—११०० 2 काफिर, नास्तिक 3 जादू,—स्या 1 चाक्री 2 पनिया,—स्यधु शोषन्, बाणः धम०—बाह 1 माधुबाह देने के लिए वाला जाने वाला गध, साधुबाह 2 प्रसन्न, स्तुति, वाहवाह ।

धन्यधन्य (वि०) [धन्य + मन् + धन्व्, मुम्] अपने आपको भाग्यशाली मानने वाला ।

धन्याकम् [धन्य -आकन्, ति०] 1 धनिये का पौधा 2 धनिया ।

धन्वन् [धन् + वन्] धनुष (श्रेय साहाय्य में विरल प्रयोग) । मम०—वि धनुष ग्वने की पेटी ।

धन्वन् (धु०, धनु०) [धन्व् -कनिन्] 1 सूखी जमीन, मरुभूमि, पतन की भूमि—एव धन्वनि चपकस्य सुकने मतांगेनादधि—भाषि० १३३२ 2 ममद्रव, कठोर भूमि । मम० कुम्भं मद (आ चारों ओर फैली मरुभूमि के कारण अत्यन्त ही)—मनु० ७१० ।

धन्वन्तरम् (धनु०) चार हाथ के बराबर दूरी की माप, सु० पठ' ।

धन्वन्तरि [धनु चिकित्साशास्त्र तप्यानाम्नन्तरि—धनु + अन्त + ऋ + इ] देवताओं के बीच का नाम, (कहते हैं कि धन्वन्तरि, समुद्रमयन के फलस्वरूप, अमृत हाथ में लिए हुए समुद्र से निकले थे सु० ननुदंशरत्न ।

धन्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) [धन्व् वापोऽस्त्यस्य इति] धनुष से सुसज्जित, (धु०) 1 धनुषारी के मय परिव्रजान्त्ये - कु० ३११०, उत्कर्म म च धन्विना यनिधव सिप्यान्ति लक्ष्ये धते—आ० २१४ 2 अर्जुन 3 शिव और 4 विष्णु का विशेषण 5 धनु राशि ।

धन्विन् [धन्व् + इन्त्] नुहार ।
 धम (वि०) (स्त्री० धा, मो) [धम् + अच्] (प्राय ममान के अन्त में) 1 चीकने वाला—अग्निधम, नाडिधम 2 पिचलाने वाला, गलाने वाला,— म 1 चन्द्रमा 2 कृष्ण की उपाधि 3 मनु के देवता धम, और ३, ब्रह्मा का विशेषण ।

धमक [धम + ष्वल्] नुहार ।
 धमधमा (स्त्री०) अनुकण्ठमूलक शब्द जो चीकनी या ड्रिगुल की ध्वनि का ध्वनन करता है ।

धमन (वि०) [धम् + ल्युट्] 1 चीकने वाला 2 क्रूर, - न एक प्रकार का तरकुल ।

धमनि, नी [धम् + अनि, धमनि + डोष्] 1 नरकुल, नै 2 रागेर की नाडी, शिर 3 गला, यदन ।

धमि [धम् + इ] फुफ मारना ।

धम्मल, धम्मिल, धम्मिल्ल [धम् + विच्, मिल् + क्, प०] स्त्री के निर का मीठीदार अलकृत जूड़ा जिसमें मोती और फूल लगे हों—आकुलाकुलमल्ल-धम्मल—गीत० उरसि निपतिताना अस्तधम्मि-न्नकानाम् (बसुनाम्) मने० ११४९, शृशाण० १ ।

धय (वि०) [धे + ष] (प्राय ममान के अन्त में) पीने वाला धूमने वाला जैसा कि 'स्तनधय' में ।

धर (नि०) (स्त्री०—रा,—री) [धृ + अच्] (प्राय समास के अन्त में) एकटने वाला, ले जाने वाला, यमालने वाला, पहनने वाला, रखने वाला, कब्जे में करने वाला, सपन, प्रदक्ष करके वाला, निरीक्षण करने वाला जैसा कि अशधर, अशुधर, गदाधर, गयाधर, महोचर, अमृधर, दिव्याधर आदि,— र 1 पहाड़ उत्कण्ठर द्रष्टुमवेव्य शीरम्- लक्ष्मर शारुक धन्यबाह -शि० ६११८ 2 रुई का डेर 3 आछा, छिछोरा 4 कच्छपराज अर्थात् कुर्मा- बतार भगवान् विष्णु 5 एक वस्तु का नाम ।

धरप (वि०) (स्त्री० धौ) [धृ + ल्युट्] ग्वन वाला, प्रदक्ष करने वाला, सभामने वाला आदि, क. 1 टीला (जो पुल का काम दे रहा हो), पर्वतपाश्च

2 सतार 3 सुर्य 4 स्त्री की छाती 5 चावल, अनाज हिमाचल (पहाड़ों का राजा), अन् 1 सहारा देना, निर्बाह करना, ममालना - सारधारी धरणसम व - कु० १११७, धरणिगणकणिकचक्ररिच्छे—गीत० १ 2 कब्रों में करना, लाता, उपलब्ध करना 3 ध्वनी, टेक, सहारा 4 सुरक्षा 5 दस पल के वजन का बट्टा ।

परणि, - जो (स्त्री) [वृ + णि, धरणि + ङीष्]
पृथ्वी—लुठति धरणिशयमे बहु विलपति तत्र नाम—गीत० ५ 2 भूमि, मिट्टी 3 छत का सहतार 4 नाडी, शिरा। सम०—ईश्वर 1 राजा 2 विष्णु का या 3 शिव का विशेषण, - कौलक, पहाड़, - ब्र, - पुत्र, सुत 1 मंगल के विशेषण 2 'नरक' राजस के विशेषण, - जा, - पुत्री—सुता जनक की पुत्री सीता (पृथ्वी में उत्पन्न होने के कारण) का विशेषण - धरः 1 शेष या 2 विष्णु का विशेषण 3 पहाड़ 4 कछवा 5 राजा 6 हाथी (जो, कहते हैं, कि पृथ्वी की ममालें हुए हैं)।—धृत् (पु०) 1 पहाड़ 2 विष्णु या 3 शिव का विशेषण ।

धरा [वृ + भव + टाप्] 1 पृथ्वी- धरा धारापार्लमं- णिवराशरीभिजान इव—मूच्छ० ५१२२ 2 गिरा 3 मृदा 4 गर्भाशय या योनि। सम०—अधिषः - राजा, - अधर, - देव - सुर- बाह्य, - आत्मक, - पुत्र - मृत्यु 1 मंगल ग्रह के विशेषण 2 नरक रासस के विशेषण, अष्टमजा मीता का विशेषण, - उद्धार पृथ्वी का छुटकारा, - धर 1 पहाड़ 2 विष्णु या कृष्ण का विशेषण 3 शेष का विशेषण, - पति 1 राजा 2 विष्णु का विशेषण, - भृत् (पु०) राजा, - भृत् (पु०) पहाड़ ।

परित्री [वृ + इत् + ङीष्] 1 पृथ्वी, शं० २११५, रघु० १५१५ कु० ११२, १७ 2 भूमि, मिट्टी ।

परिष्णु (पु०) [वृ + इमिष्] तराजू, तराजू के पल्ले ।

पधूर [- धन्धुर पृथो साधु] पधूरे का पौधा ।

पध्रम् [वृ + ऋ] 1 धर 2 ध्वनी, टेक 3 यज्ञ, 4 सद्-गुण, भयार्ड, नैतिक गुण ।

धर्म [धिस्ते लोकोज्जेन, धरति लोक वा वृ + मन्]
1 कर्तव्य, जानि, ममप्रदाय आदि के प्रचलित आचार का पालन 2 कानून, प्रचलन, दस्तूर, प्रथा, अध्यादेश, अनुश्रुति 3 धार्मिक या नैतिक गुण, मलाई, नैकी, अच्छे काम (मानव अस्तित्व के चार पुरुषार्थों में से एक) कु० ५१३८, दे० 'विद्यार्थ' श्री, एक एक मुहूर्तमो निघर्नेत्यनुयानि व - हि० ११६५ 4 कर्तव्य शास्त्र शिक्षित आत्म क्रम, - पदशास्त्रुतेति धर्म एष शं० ५१५, मनु० १११५ 5 अधिकार, न्याय,

धीचित्व वा न्यायसाम्य, निष्पक्षता, 6 पवित्रता, धीचित्व, आनोदना 7 नैतिकता, मोतिशास्त्र, 8 प्रकृति, स्वभाव, चरित्र—शं० ११६, प्राणि०, जोष० 9 मूल गुण, विशेषता, साक्षात्क गुण (विशिष्ट) विशेषता -वदति बध्यव्यथाना धर्मव्य दीपक बुधा - बन्धा० ५१४५ 10 रीति, समरूपता, समानता 11 यज्ञ 12 सत्य, भद्रपुरुषों की संपत्ति 13 नित्य, धार्मिक धारमनता 14 रीति प्रचाली 15 उप-निषद् 16 ज्येष्ठ पाठक युधिष्ठिर 17 मृत्यु का देवता वय । सम०—अङ्ग, - गा सास्य, अर्थव्यो (पु० हि० व०) सत्य और असत्य, कर्तव्य और अकर्तव्य, 'धिष्' (पु०) मोमासक जो कम के सही या गलत धर्म को जानता है, - अधिकारमन् 1 विधि का प्रशासन 2 न्यायालय, - अधिकारिणम् (पु०) न्यायाधीश, दण्डनायक, - अधिकार 1 धार्मिक कृत्यों का अभीक्षण—शं० १ 2 न्याय-प्रशासन 3 न्यायाधीश का पद, - अधिकारिणम् न्यायालय, - अध्वक्ष 1 न्यायाधीश 2 विष्णु का विशेषण, - अनुष्ठानम् धर्म के अनुसार आचरण, अच्छा आचरण, नैतिक बालचलन, - अथेत (वि०) जो धर्म विरुद्ध हो, दुराचारा, अनैतिक, अधार्मिक (सम्) दुष्मसन, अनैतिकता, अन्याय, - अरथम् तपोवन, वन जिसमें सत्याची रहते हो—धर्मोत्थ प्रविर्गति वज—शं० ११३३, - असीक (वि०) शूद्रे चरित्र बाला - आचरः धर्मशास्त्र, विधि-ग्रन्थ, - आचार्य 1 धर्मशास्त्रक 2 धर्मशास्त्र या कानून का अध्यापक, - आचरन्त युधिष्ठिर का विशेषण, आत्मन् (वि०) न्यायधीश, भूका, पुष्पात्मा, सद्गुणी, - आत्मन् न्याय का सिद्धान्त, न्याय की गद्दी, न्यायाधिकरण - न समाहितवध धर्मानमध्यामितुम्—शं० ९, धर्मसि-वादिगति वासपृह नरेन्द्र—उत्तर० ११७, - इन्द्र युधिष्ठिर का विशेषण, - ईत धर्म का विशेषण - उत्तर (वि०) अतिधार्मिक, जो न्याय धर्म का प्रधान पक्षपाती हो, निष्पक्ष और न्यायपरायण— धर्मोत्तर मध्यमाध्वयानो—रघु० १३७, - उपदेश 1 धर्म वा कर्तव्य की शिक्षा, धार्मिक या नैतिक शिक्षण 2 धर्मशास्त्र, - कर्मन् (नपु०) - कर्मन्, विद्या, कर्तव्य कर्म, नैतिक की आचरण, धर्मपालन, धार्मिक-कृत्य या सतार 2 सदाचरण, - कथाविद्व कसियुय, - काव नृद्ध का विशेषण, - कौल अनुदान, राजकीय लेख या शासन, - केतु नृद्ध का विशेषण, - कौल - व धर्मसहिता, धर्मशास्त्र—धर्मकोषप्य गुण्य— मनु० ११९९—कोषम् 1 भारतवर्ष (धर्म की भूमि) 2 दिल्ली के निकट का मैदान, कुलोष (यहा ही कौरव पाण्डवों का महायुद्ध हुआ था)—धर्मशेने कु-

धेने समवेना वृत्तस्य—यग० १११, - षट् ईशान् ।
 के महीने में ब्राह्मण की प्रतिदिन दिये जाने वाले
 सुपथित जल का बड़ा, —**बकभृत्** (पु०) बौद्ध का
 जैन, —**बरणम्**, —**बर्षा** कानून का पालन, धार्मिक
 कर्तव्यों का सम्पादन—कु० ७८८१, —**चारिन्** (वि०)
 भद्रव्यवहार करने वाला, कानून का पालन करने
 वाला, सद्गुणी, नेक—रघु० ३१४५, (पु०) मन्थानी
चारिणी 1 पत्नी 2 पवित्रता सती साध्वी
 पत्नी, —**चिन्तनम्**, —**चिन्ता** भलाई या सद्गुणों का
 अध्ययन, नैतिक कर्तव्यों का विचार, नीति-विचार,
 —**च** 1 धर्म से उत्पन्न, ईश, पुत्र, भतनी बेटा—
 तु० मनु० १११०७ 2 यच्चिठिर का नाम, —**चण्डन्**
 (पु०) यच्चिठिर का नाम, —**जिज्ञासा** धर्म सम्बन्धी
 पूछताछ, सहायण विषयक पत्रिका—अपयोगधर्मविज्ञासा
 —**जै०**, —**श्लेष** (वि०) जो अपने वर्ण के नियमानुसार
 निश्चित कर्तव्यों का पालन करता है, (न) वह ब्राह्मण जो दूसरों के धर्मनिष्ठान में साहाय्य
 प्रदान कर अपनी जीविका चलाता है, —**ज** (वि०)
 सती बात को जानने वाला, नागरिक तथा धार्मिक
 कानूनों का ज्ञानकार—मनु० ७११११, ८११७९,
 १०१२७ 2 न्यायशील, नेक, पुण्यात्मा, —**ज्वाल**
 अपने धर्म का त्याग करने वाला, धर्मव्युत्, —**हार**
 (पु०, व० व०) वैध पत्नी - स्त्रीमा भर्ता धर्मदाराश्च
 पुत्राः—मा० ६११८, **होत्रिन्** (पु०) राजस्य, —**कानू**
 बुद्ध का विशेषण, —**कवच**, **कवचिन्** (पु०) धर्म के
 नाम पर पावत्र रचने वाला, छद्मधर्मशी, **कवच**
 यच्चिठिर का विशेषण—नाथ कानूनी जनिधावक,
 वैध स्वामी, नाथ विष्णु का विशेषण, —**कवच**
 धार्मिक भक्ति, निष्पत्ति: (स्त्री०) कर्तव्य का
 पालन, नीति-पालन, धार्मिक अनुष्ठान, —**कली** वैधपत्नी,
 धर्मपत्नी—रघु० २१२, २०, ७२, ८१७, वाज० २११२८,
 —**क** भलाई का मार्ग, चाल चलन का सम्भार,
 —**पर** (वि०) धर्मपरायण, पुण्यात्मा, नेक, भला,
 —**पाठक** नागरिक या धार्मिक कानूनों का अध्ययनकार,
 —**पाल**, कानून का रक्षक (बाल० से इले 'पद'
 कहेते हैं), दण्ड, सजा, तलवार, —**पीडा** कानून का
 उल्लंघन करना, कानून के प्रति अपराध, —**पुत्र**
 1 धर्मसम्मत पुत्र, (जो कर्तव्य ज्ञान की दृष्टि से
 उत्पन्न किया या माना गया हो केवल कामधेनवता का
 परिणाम न हो) 2 यच्चिठिर का विशेषण, **प्रबन्ध**
 (पु०) 1 धर्म का व्याख्याता, कानूनी सहायकार, 2
 धार्मिक शिक्षक, धर्म-प्रचारक, —**प्रबन्धनम्** 1 कर्तव्य-
 विज्ञान—उत्तर० ५१२३ 2 धर्म की व्याख्या करना,
 (न) बुद्ध का विशेषण, —**बा** (वा) **बिष्णिक** 1 जो अपने
 सद्गुणों से व्यापारी की भाँति लाभ उठाने का प्रयत्न

करता है 2 लाभदायक व्यवसाय को करने वाले
 व्यापारी की भाँति जो पुस्तकार पाने की दृष्टि से
 धार्मिक हृत्यों का सम्पादन करता है, —**भगिनी** 1
 वैधभगिनी 2 धर्मगुरु की पुत्री 3 धर्मबहन,
 अनुकूल धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने हुए जिनको
 बहन मान लिया जाता है, भगिनी साध्वी पत्नी,
 —**भागकः** व्याख्यानदाता जो महाभारत तथा भागवत
 आदि ग्रन्थों की व्याख्या यावर्जिनिक रूप से अपने
 श्रोताओं के सामने रखता है, **भाजू** (पु०) 1 धर्म-
 शिक्षा का मर्यादा, धर्म का भाई 2 वह व्यक्ति
 जिसको अनुकूल धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने हुए,
 भाई मान लिया जाता है, **महाभासः** धर्मधर्मो, धार्मिक
 मामलों का यथो, —**मूलम्** नागरिक या धार्मिक
 कानूनों की नींव, वेद, —**युग** अतयुग, कृतयुग, —**युष**
 विष्णु का विशेषण, —**रति** (वि०) भलाई और न्याय
 में प्रसन्नता प्राप्त करने वाला, नेक, पुण्यात्मा, न्याय-
 शील रघु० ११२३, —**राजू** (पु०) धर्म का विशेषण,
 —**राज** 1 यम 2 जिन 3 यच्चिठिर, और
 4 राजा का विशेषण, **रोभिन्** (वि०) 1 कानून
 के विरुद्ध, अवैध, अन्याय 2 अर्थिक, —**सख्यम्**
 1 धर्म का मूल चिह्न 2 वेद, (वा) शीघ्रमा
 धर्म, —**श्लेष** 1 धर्मभाव, अनैतिकता, कर्तव्य का
 उल्लंघन—रघु० ११७६, —**बल्ल** (वि०) कर्तव्यशील,
 धर्माला, —**बलिन्** (वि०) न्याय परायण, नेक,
 —**बालरः** पूर्णमा का दिन, **बाहल** 1 शिव का
 विशेषण 2 भेसा (धर्म की सकारिता), —**विद्** (वि०)
 (नागरिक तथा धर्म विषयक) कर्तव्य का ज्ञान,
 —**विधिः** वैध उपदेश, या आदेश, **विष्णव** कर्तव्य
 का उल्लंघन, अनैतिकता, धीर (अल० शा० म०)
 भलाई या पवित्रता के कारण उत्पन्न धीर रस,
 धीरसहित पवित्रता का रस, रस० में निम्नांकित
 उदाहरण दिया गया है—सपदि विषयमेतु राव-
 लम्भीरुपरि पतन्वयवा कृपायधारा, अपहरतुत्तग
 सिर कृतालो यम तु मतिर्न मनायर्ननु धर्मात् ।
 —**बुद्ध** (वि०) सद्गुण व पवित्रता की दृष्टि से
 जागे बड़ा हुआ (बुद्धा)—कु० ५११६, **वर्तसिक**
 वह जो अपने ज्ञानको उदार प्रकट करने की जाया
 में, अवैधरूप से क्रमायें हुए धन को दान कर देता है,
 —**बाह्य** 1 न्यायालय, न्यायाधिकरण 2 धर्मार्थ-
 सत्या, **बाह्यम्**, —**शोचन्** धर्मसहिता न्यायशास्त्र
 हि० १११७, वाज० ११५, —**शौक** (वि०) न्यायशील,
 पुण्यात्मा, सदाचारी या सद्गुणी, —**सहिता** धर्मशास्त्र
 (विशेष रूप से धनु, पात्रकल्प आदि ऋषियों द्वारा
 प्रणीत स्मृतियाँ), —**सङ्ग**, 1 सद्गुण या न्याय से
 अनुप्राणित या आसक्ति 2 पालन, —**सत्ता** न्यायालय,

—सहायः धार्मिक कर्तव्यों के पालन करने में सहायक, साथी या साक्षीदार।

धर्मतः (अध्०) [धर्म + तसिच्] 1 धर्म के अनुहार, नियमानुसार, सही तरीके से, धर्म पूर्वक, न्याय के अनुसार 2 भलाई से, नेकी के साथ 3 भलाई या नेका के उद्देश्य से।

धर्मयु (वि०) [धर्म + यु] 1. सद्गुणसम्पन्न, न्यायशील, पुण्यात्मा, नरक।

धर्मियु (वि०) [धर्म + इनि] 1 सद्गुणों से युक्त, न्यायशील, पुण्यात्मा 2 अपने कर्तव्य को जानने वाला 3 कानून का पालन करने वाला 4 (धर्माल के अर्थ में) किसी वस्तु के गुणों से युक्त, प्रकृति का, विशिष्ट गुणों से युक्त, —पटमुता विजयधर्मियु - मनु० १०। १४, कल्पवृक्षफलधर्मियु कांतिवत् - रघु० ११।५०, (पु०) विद्वान् का विशेषण।

धर्मोपज (पु०) अधिनेता, नाटक वा पात्र, मिलादी।

धर्म्य (वि०) [धर्म + यत्] 1 धर्मसम्मत, कर्तव्यसंगत कानूनी रूप में सही, वैध - मनु० ३।२२, २५, २६ 2 धर्मयुक्त (कार्य) - कु० ६।२३ 3 न्यायोचित, भला, उपयुक्त धर्मोद्दिष्टद्वन्द्वेषु योज्यत् लक्षित्वस्य न विद्यते - मनु० २।३१, ५।२, नाटक ३।४४ 4 वैध, यथारोनी 5 विशेष गुणों से युक्त यथा 'तदधर्म्यम्'।

धर्म [धृ + धञ्] 1 मृष्टता, अधिनय अहकार, कठोरता 2 समझ, अभिमान 3 अधीनता 4 मयम 5 बलात्कार, (स्त्री का) मर्तात्व हरण 6 सति, बुराई, अवज्ञा 7 हीनता। मयम—कारिणी बलात्कार इत्यादि मयका मनीषाहरण हो चुका हो।

धर्मक (वि०) [धृ + क्तृ] 1 हूमला करने वाला, आक्रमणकारी, प्रहार करने वाला 2 बलात्कार करने वाला, सतीष्वहरण करने वाला 3 अधीर, क 1 सतीष्वहर्ता, व्यभिचारी, बलात्कारी 2 अधिनेता, नरक।

धर्मकम्, धा [धृ + क्तृ] 1 मृष्टता, अधिनय 2 अवज्ञा, मानहानि 3 आक्रमण, अस्वाचार, सतीष्वहरण, बलात्कार नारी 4 स्त्रीसभोग 5 तिरस्कार, निरादर 6 दुर्बलन।

धर्मणि, षो [धृ + णि, धर्मणि + ङीप्] असती, स्मरिणी, कुलटा स्त्री।

धर्मित (वि०) [धृ + षत्] 1 जिसका वरिष्ठ अर्थात् किसी गया है, अपाचार पीड़ित, जिसके साथ बलात्कार हो चुका है 2 विजित, पराभूत, परास्त—ने० २।१।५ 3 जिसके अर्थात् दुर्बलहार किया गया है, जिसे गाली दी गई है, तिरस्कृत, —सम् 1 अौदित्य, धर्मद 2 सहवास, संघन, — हा कुलटा, असती स्त्री।

धर्मियु (वि०) [धृ + णि] 1 धर्मही, उदल, उद्द 2 आक्रमण करने वाला, सतीष्वहरण करने वाला,

बलात्कार करने वाला 3 तिरस्कार करने वाला, दुर्बलहार करने वाला 4 'बेधक, विकर 5 स्त्री सहवास करने वाला, —श्री कुलटा, या असती नारी।

धर्म [धृ + अर्] 1 हिल-जुक, कम्पन 2 मनुष्य 3 पति-यथा 'विधवा' में 4 मालिक, स्वामी 5 धर्मात्मा, टय 6 एक प्रकार का वृक्ष 'धौ'।

धर्मकः [धर्म कम्प काति—ला + क तारा०] 1 स्वेत, —धर्मलातपत्रम् धर्मक गृहम् 2 सुन्दर 3 स्वच्छ, विभूषित, —क 1 स्वेत रंग 2 अत्युत्तम बेल 3 चीन, कपूर 4 'धर्म' नाम का वृक्ष, —सम् सफेद कागज —ला सफेद गाय, धौली गाय। मयम—उज्वलम् स्वेत कुमुद (चन्द्रोदय होने पर इस का चिल्ला प्रसिद्ध है)—मिर्चि हिमालय पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी, —गृहम् चूने से पुता घर, महल, —पत्त. 1 हय 2 चान्दमास का शुक्लपक्ष, मुक्तिका वाक—मिट्टी।

धर्मलिल (वि०) [धर्मल + इत्] सफेद किया हुआ, स्वेत बना हुआ।

धर्मलिसम् (नपु०) [धर्मल + इमनिच्] 1 सफेदी, सफेद रंग 2 पादुका पीलापन - इय भूतिनाङ्गे प्रियविह-जना धर्मलिसा—मुमा०।

धर्मिष् [धृ + इष] मृगधर्म से बना पत्ता।

धा (बृहो० उच०) रक्षति, वत्ते, हित, कर्मबा० धीयते, प्रे० धाययति-ते, इच्छा० चित्तलि—ने) 1 रखना, धरना, ब्रह्मना, लिटा देना, भर्ती करना, लह जमाना - विज्ञातदोषेषु दधाति दधम्—महा०, नि शक धीयते (अने० पा० 'धीयते' के स्थान पर) लोके एष्य प्रथमचये पदम्—हि० २।१७३ 2 जमाना, (मन और विचारों को) लपाना, (सम्प्र० या अधि० के साथ) —घत्ते चतुर्मुकुलिन रमात्कोकिले बालचूते—मा० ३।१२, दधु कुमारानुषये मनासि—मट्टि० ३।११, २।७ मनु० १२।२३ 3 प्रदान करना, अर्पण देना, देना, अर्पित करना, उपहार देना, (सम्प्र० धर्म० या अधि० के साथ) धृषी लक्ष्मीमथ धर्मि भूष धेहि देव प्रवीद—मा० १।३, बहस्य सोऽज्वालसर्गं तत्तस्य स्वध-मायिषान्—मनु० १।२९, 4 पकड़ना, रखना—तामसि दधासि मात—मायि० १।६०, धा० ४।१ 5. पकड़ना, हस्तगत करना—अट्टि० १।२६, ४।२६, कि० १।३।५ 6 पहनना, धारणा करना, बहन करना—सुकथि वासासि विहाय तूर्णं तनुमि—'घत्ते जन काममदाल-साङ्ग—अनु० ६।१३, १६, घत्ते भर कुमुदपत्र फलावलीनाम्—मायि० १।९५, दधतो मङ्गलधर्मि—रघु० १।२०, १।४०, अट्टि० १।५४ 7 धारण करना, लेना, रखना, बिल्लावना, प्रदर्शन करना, कब्जे में करना (श्राय मा०)—काच काञ्चनसमर्गाद्वत्ते भारकटीं घटितम्—हि० प्र० ४१, शिरसि मसीपटल

दयाति दीपः—मानि० १७४, रघु० २७, अमर २३१६७, शेष० ३६, अर्ध० ३४६, रघु० ३१, अट्टि० २११, ४१६-१८, सि० १३, १०१८६, कि० ५५६ क. समानता, निबन्धना, धारि रचना,—नाम-पास्तक्य नामो मूलमनुविधि फर्म—कु० ११६८ १. सङ्हरा देना, स्थापित रचना—अपठितनयेनो दपनुर्मुकनइव—रघु० ११२६ १० पैदा करना, रचना करना, उत्पादन करना, उत्पन्न करना, बनाना—मुग्धा कुट्टमलिताननेन दयती वायु स्थिता तस्य सा—अमर ७० ११ सङ्हरा, भोगना, बलत होना—शि० ११२, ३२, २६ १२. सम्पन्न करना, 'दा' की भांति इस धातु के अर्थ भी दूसरे शब्दों के साथ जुड़ने से विविध प्रकार के हो जाते हैं, उदा० मन्मथाः, मन्तिथा, म्पिं था, मन को लगाना, बिचारी को लगाना दृढ सकल्प करना, कर्म था पन रखना, प्रविष्ट होना, कर्म बर् था, कान पर हाथ रखना] अस्तिस्व—ठगना, घोसा देना भगवन् कुमुदायुष त्वा चन्द्रमसा च विम्बसोयोभ्याम्यसिधयोर्वि कामि-जनसाधं—श० ३, विक्रम० २, अमर—, १ मन में रखना, मानना, सहण रचना—तथा विवस्मरे देवि मातवर्षानुषर्ति—रघु० १५१८२, २ अपने आपको छिपाना, गुप्त रखना, ओझल होना (मय० के साथ) —अट्टि० ५३२, ८७१, ३ डकना, छिपाना, दृष्टि से ओझल करना, लपेटना, टाकना (आल० में) धितु-रत्नदर्शं कोटि शीलवनसमाधिभि—महा० अनुसम्,— १ दूटना, पूछछाछ करना, अन्वेषण करना, जाच-पडताल करना २ खेत होना, अपने आपको शांत करना ३ उल्लेख करना, संकेत करना, लक्ष्य बनाना ४ योजना बनाना, क्रमबद्ध करना, क्रम में रखना, अर्थ—(कनो कनो 'अपि' का 'अ' लुप्त हो जाता है) १ (क) अन्व करना, भोजना ध्वनित मधुप-मग्धे भवणमपिदधाति—गीत० ५, इसी प्रकार—कनो नयने-पिदधाति (स) डकना, छिपाना, गुप्त रखना,—श्रायो मूर्धं परिभन्विधो नाग्मिमान विषते—शृंगार० १७, प्रभापपिहिता विक्रम० ४१२, सि० १७६, अट्टि० ७६९ २. रोकना, बाधा डालना, प्रतिबंध लगाना—भुजङ्गपिहितद्वार पततात्मचिति-च्छति—रघु० ११८० अमि—, (क) कूटना, ओझल, बनाना—कु० ३१६३, मनु० १४२, अट्टि० ७७७८, अम० १८१८, (ख) १. संकेत करना, स्फुट करना, सूक्ष्म बतलाना प्रस्तुत करना—साक्षात्संकेतित योऽर्थमभिपद्यते स वाचक काव्ये २ तत्प्राय वेनाभि-दधाति सचम् २ अभिधान होना, पुकारना, अभिसम्,— १ किसी पर फेंकना, निखाना लुगाना, (तीर आदि का) लक्ष्य बनाना २ ध्यान में रखना, (मन में)

निधाना बर्नाना, सोचना—दृष्यमृकमभिसथाय—महावी० ५, अभिसथाय तु फलम्—भग० १७१२, २५, विक्रम० ४१२८ ३. बोझा देना, उगना—अन विद्यानेक सकलमभिसथाय—मा० ११६४ ४ अपने पक्ष में का लेना, मित्र बना लेना, दूसरों का मित्र बन जाना गान्धर्वानभिमदध्यात् सामांशभित्वाकर्म मनु० ७१५९ (वर्षोक्तुर्मात्) ५ प्रतिज्ञा करना, प्रकथन करना ६ जोड़ना, अम्या नीचे रखना, नीचे फेंकना, अश्—सायधान होना, ध्यान देना, कान देना इतोऽप्यपता देवराज—महावी० ६, आ. (प्राय 'आ०' में) १ रखना, धरना, उठरना—अनपदे न गद पदमादयो—रघु० १५४, भग० ५४४० श० ४३ २ प्रयोग करना, जमाना, किसी की जोर संकेत करना प्रतिपाद्यमाधोपता मल—श० १, मध्येव मन आचलव—भग० १२१८, आचीयता सर्वे धर्मं च धी—क७० ६३, ३ लेना, अधिकार में करना, बहूत रखना-वर्धमायत गतो रघु० २७५, (वर्ध बहूत किया) आधते कमकमपातपत्रलक्ष्मी-कि० ५४७२, (लेती है या चारण करती है) कु० ७३२६, ४ बोझा उठाना, धारना, महाराग देना शेष सर्वेदाहित-भूमिभार—श० ५४ ५ पैदा करना, उत्पादन करना, सर्वेज करना, उत्तेजित करना (त्रय या आदर्श) छायाश्चरन्ति बहुधा भवमादधाना—ग० ३१७७, कि० ८१२६ ६ देना, समर्पित करना रघु० ११८५ ७ नियुक्त करना स्थिर करना तमेव चाधाय विवाहसाधये—रघु० ७१२० ८ संकृत करना—कु० १४४० ९ अनुष्ठान करना. (अन आदिका) पालन करना, आश्रित, भेद गालना, प्रवट करना (श्रेष्ठा-साहित्य में बहुत प्रयोग नहीं) उप, १ रखना, उठाना, नीचे रखना, अन्दर रखना अधिजातु बाह्य-मुपधाय सि० १५४, हृदि बंनानुपधानुर्हति—रघु० ८७७, (हृदयस्थित करने के लिए) उपहित शिवांगणमभिधवा मुकुलजालमयोभन किशुके—रघु० १३११, कु० १४४२ निकट रखना,—(घोड़े आदि को) ब्रतना, महावी० ४५६३ ३ पैदा करना, निर्माण करना, उत्पादन करना मूच्छ० १५३ ४. उपर डालना, सौपना, समालना, देख देख में करना—तदुपहितकुट्टम्,—रघु० ७७१, ५ तकिये के स्थान में प्रयुक्त करना—वाममूर्धमुपधाय—दश० १११ ६ काम में लगाना, अन्वर्थना करना, प्रधान करना—क्रिया हि वस्तुपहिता प्रसीदति—रघु० ३१२९ ७. डकना, छिपाना ८ देना, जताना, समाचार देना, उपा,— १ निकट रखना, ऊपर रखना २ पहनना ३ पैदा करना, सर्वेज करना, उत्पादन करना—अर्ध० ३१८५, तिरस्,— १ छिपाना, गुप्त रखना,

2 (आ०) लुप्त होना, ओझल होना—अभिव्यक्त-
 बलसम्पन्न इच्छामैत्रिलेदेव—रघु० १०।४८, ११।९१,
 तिरस्कृते नी० नी देखिये मि०, 1 रत्नना, बरना,
 षड देना—चिरसि निदधानोऽञ्जलिपुटम्—भर्तृ०
 ३।१२१, रघु० ३।५०, ६२, १२।५२ मि० १।१३
 2 बरोसा करना, सीपना, डूब-रेख में रखना—निदधे
 विजयासंज्ञा चापे सीता च लक्ष्मणे—रघु० १२।४४,
 १४।३६ 3 देना, समर्पित करना, जमा कर देना—दिनांते
 निहित तेज सचिन्नेष हुताशन—रघु० ४।१ 4 दबा
 देना, धान्त करना, रोक देना—सङ्कलै निहित रज
 क्षितौ—षट्० १ 5 दफन करना, (भूमि के अन्दर)
 गाड़ देना, छिपाना—मनु० ५।६८, परि०, 1 (बन्धना-
 दिक) पहनना, धारण करना—स्वयं स मेधां परिधाय
 रोमी—रघु० ३।३१ 2 अहता बना लेना, बेरा
 डाल लेना 3, किसी की ओर मकेत करना, घुस्-
 मिर पर रखना या धारण करना तुरासाह पुरोधाय
 धाम स्वायमुत्र मयु—कु० २।१, रघु० १२।४३
 2 कुलपुरोहित बनाना, प्रथि,—रखना, नीचे बरना
 या भिन्ना देना, साध्य्य प्रणत होना—प्रतिहितचिरस
 वा बान्तभाशोरारामम्—मालवि० ३।१०, तस्मात्प्रणम्य
 प्रणिधाय कायम् भग० ११।४४ 2 खडना, अन्दर
 रखना, अन्दर लिटाना, पेटो में बन्द करना—यदि
 परिस्त्रयुणि प्रणिधीयते—पच० १।७५, अने० पा०
 3 प्रयोग करना, स्थिर करना, किसी की ओर मकेत
 करना—भर्तृ० प्रणिहितसामम्—मनु० १५।८४, अट्टि०
 ६।१८२ 4 फँसाना, विस्तार करना—मामाकाय-
 प्रतिहितमूत्र निर्दयाप्लेयहेतो मेघ० १०६, नीवी
 प्रति प्रणिहिते तु कर्त्तुं प्रियेण सन्ध्यापि यदि
 किञ्चिदपि स्मरामि—काव्य० ४ 5 (चर के रूप में)
 बाहर भेजना, प्रतिधि, 1 प्रतीकार करना, सघोधन
 करना, मरम्मत करना, बदला लेना, उपाय करना,
 विद्वत् पण उठाना—अर्थात् एष, दीध तु मे कचि-
 त्कथय येन स प्रतिविधोयेत्—उत्तर० १, सिप्रमय
 कस्मात्प्रतिविहितमार्येण मुद्रां ३ 2 अर्थस्था
 करना, क्रम से रखना, नजाना 3 प्रेषित करना,
 भेजना, प्रथि—, 1 बोटना 2 कूरना, बनाना, वि—,
 1 करता, बनाना, घटित करना, प्रभावित करना,
 सम्पन्न करना, अनुष्ठान करना, पैदा करना, उत्पादन
 करना, उत्पन्न करना यथाक्रम पुनवनादिका क्रिया
 प्रोत्सव धीर सद्बोधिष्यत् स.—रघु० ३।१०—तत्रो-
 देवा विधेयासुः—अट्टि० ११।२, विधेयासुर्वेवा
 परमत्समीया परिष्पतिम्—मा० ६।७, प्राय वृष
 च विधेयासुम् च जन्तो सर्वं कृष्या मयवती प्रकित-
 म्पतैव १।२३, ये हे काल विधास- श० १।१, पैदा
 करना, उत्पादन करना, समय का विनियमित करना

—तस्य तस्यापचां बद्धां तामेव विदधाम्यहम्—भग०
 ७।२१, रघु० २।३८, ३।६९, (सह बन्धे विधा के
 साथ जुड़ने वाले शब्द के अनुसार और भी अधिक
 बदल-बदल किम् जा सकते हैं, तु० 'ह') 2 निर्धा-
 रित करना, विधान बनाना, निर्दिष्ट करना, नियत
 करना, स्थिर करना, बाध देना, आधा देना—प्रा-
 नाभिवर्धनतपुत्रो वातकर्म विधीयते—मनु० २।२९,
 ३।१९, वाङ्० १।७२, धुप्रत्य तु सर्वेष्वेवा नाम्ना भार्या
 विधीयते—९।१५७, ३।११८ 3 रूप बनाना, शकल
 देना, सज्जन करना, निर्माण करना—त वेधा विदधे
 नून महाभूतसमाधिना—रघु० १।२९, ब्रह्मानि चम्प-
 दलैः स विधास नून कालो कथं घटितवान्मुपलेन वेन
 —शुभार० ३ 4 नियत करना, प्रतिनियुक्त करना
 (मन्त्री आदि को) 5 पहनना, धारण करना—पच०
 १।२९ 6 स्थिर करना, (मन बादि को) लगाना
 —मय० २।४४, भर्तृ० ३।५४ 7 कम्बड करना,
 व्यवस्थित करना 8 तैयार करना, तयार करना,
 व्यव—, 1 बीच में रखना, बीच में डालना, हस्तक्षेप
 करना प्रेष्य स्थिता सहस्रवी व्युत्थाय देहम्—रघु०
 ९।५७ 2 छिपाना, ढकना, पर्दा शालना—तापव्यव-
 हितस्मत्—श० ५.—व्य—, बरोसा करना,
 विस्थास रखना (कर्म के साथ)—क यद्वाप्ययति
 भूतार्थम्—मुञ्ज० ३।२४, बह्वेष विदशानोपमात्रके दाहज-
 क्तमति इच्छन्त्ययि—रघु० १।१२४, मधु—, 1 मिलाना,
 एकत्र लाना, संयुक्त करना, मिला देना,—यानि
 उदकेन सधीयते तानि भक्षणीयानि—कुल्लुक०
 2 बतवि करना, मिश्रता करना, सचि करना—अनुना
 न हि सध्यासुच्छिष्टेनापि सधिना—हि० १।८८,
 चाप० १९, काम० ९।४१ 3 स्थिर करना, सजेक
 करना—सद्वेष द्वाभूदधत्तारकाम्—रघु० ११।६९
 4 (किसी कर्म या तीर आदि को) बनुष पर ठीक-
 ठीक बैठाना, या ठीक से बनाना—अनुष्ययोष समघल
 बाणम्—कु० ३।६६, रघु० ३।५३, १२।१७ 5 उत्पादन
 करना, पैदा करना—पर्याप्त मयि रमणीयचमरास
 सयते मगनतप्रयागधेव—मा० ५।३, सयते मूश-
 मरति हि सङ्घिषोष—कि० ५।५१ 6 मुकाबला
 करना, मुकाबले में सामने जाना, झतमेकोप्रहि सघरो
 प्राकारस्थो बनुधर—मधु० १।२२९ 7 सुधोरना,
 मरम्मत करना, स्वस्थ करना 8 कष्ट देना 9 ग्रहण
 करना, स्वीकार देना, बागबोर उभालना 10 अनुदान
 देना, क्षति—, 1 रखना, एकत्र रखना,—मनु० २।१८६
 2 निकट रखना—श० ३।१९, 3 स्थिर करना,
 निर्दिष्ट करना—रघु० १३।१४४ 4 निकट जाना
 पहुँचना—प्रेर० निकट लाना, एकत्र सङ्गठ करना,
 लम्बा—, 1. एकत्र रखना या बरना, मिलाना, संयुक्त

करना 2 रखना, बरना, स्थापित करना, लानु करना
 —यवं भूमि समाधत्ते केसरी महादन्तिव पञ्च० १।
 ३२७ 3 जमाना, अभियेक करना, राजगद्दी पर
 बिठाना—रघु० १७।८ 4 समाधत्त होता, (मन
 को) धान्त करा—मन समाधाव निवृत्ताद्यो
 —राभा०, न शशाक समाधत्तु मनो यदनेवेतिनम्
 —भा० 5 सकेन्द्रित करना, (अन्त वा मन आदि
 को) एकाग्र करना,—म० १२।९, अर्तु० ३।४८
 6 सनुष्ट करना, (शका का) समाधान करना, आसेप
 का उद्धार देना—इति समाधत्ते (टीकाओं में)
 7 मरम्मत करना, सुधारना, ठीक करना, हटा देना
 —न ते शक्या समाधातुम् हि० ३।३७, उत्पन्ना-
 मापद यस्तु समाधत्ते स बुद्धिमान्—५।७ 8 विचार
 करना—अर्तु० १२।६ 9 सीपता, अर्थप करना,
 हस्तान्तरित करना 10 पैदा करना, कार्यान्वित करना,
 सम्पन्न करना (निम्नांकित श्लोक में सोपसर्ग वा
 धातु के प्रयोगों का चित्रण किया गया है अचिन्
 कापि मुले लसिल सन्धी व्यथित कापि सरोजदले स्तनी,
 व्यथित कापि हृदि व्यजनातिल न्यथित कापि भुतनी
 स्तनी नै० ५।१११, इनसे भी अच्छा निम्नांकित
 जगन्नाथ का श्लोक—निधान धर्माणां विमपि न
 विधान नभमुदा प्रवान तीर्थनिगमन्यनिधान चिन्तन,
 समाधान दुर्गम सलु निरोधानमधिषा धियामाधान
 न परिहरतु ताप तत्र वपु—भा० १८)।

धाकः [धा + क उच्चा०—तस्य नेत्रम्] 1 बेल
 2 आहार, आनय 3 आहार, मान 4 स्थूना, सभा,
 स्तम्भ।

धादौ [धट् + धञ् + डीप्] धावा, जाक्रमण।

धाणकः [धा + ञाणक] एक सोने का सिक्का (दीनार का
 अण)

धातुः [धा + तुन्] संपटक या मूल भाग, अवयव 2 मूल
 तत्व, मूलन या तत्व मूलक सामग्री—अधत्तु पृथिवी,
 आप्, तेजस्, वायु और आकाश, 3 रस, मुख्य द्रव्य
 या रस, शरीर का अधिकांश उपादान (यह मिलती
 नै सात माने जाते हैं—रसातुप्रभासमेदोऽस्त्रिभज्जा-
 शुष्काणि धातव कई बार कंड, लव् और स्नायु
 को मिला कर दस मान लिये जाते हैं) 4 शरीर के
 स्थितिबिधायक तत्त्व (अर्थात् वात, पित्त, कफ—
 त्रिदोष) 5 सन्निक पदार्थ, धातु, कच्ची धातु—न्य-
 स्ताश्वरा धातुयेन यश्च—कु० १।७, त्वामारुह्य
 प्रयज्युपिता धातुराने सिलवा—मेघ० १०५,—रघु०
 ५।७१, कु० ६।५१ 6 किरा का मूल, भूवादयो
 धातव—पा० १।३।१, पञ्चादयवयवार्थस्य धातो-
 रधिरिनामबन्तु—रघु० १।५।९ 7 आत्मा, 8 पर-
 मात्मा 9 ज्ञानेन्द्रिय 10 पात्र महाभूतो का मुण -

अर्थात् रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द 11 इहदी।
 सम० उपलब्धः सद्यथा, वाचम्—काशीयम्, कालीसम्—
 कसौल, कुसल—(वि०) धातु के कार्यों में दश—किमा
 धातुकार्यिकी, धातुकर्म, खानिकी, धातुविज्ञान—अथ-
 शरीर के तत्त्वों का मान, क्षयरोग,—अन् शिलाजीत,
 शैलज तेल,—आयक मुद्राणा,—पः साध, पीठिक २म,
 शरीर के सात मूल उपादानों में मुख्य उपादान
 —धातः पाणिनि को व्याकरण पद्धति के अनुसार बनी
 धातुओं की सूची (पाणिनि के सूत्रों के परिशिष्ट के
 रूप में धातु पाठ, पाणिनि निमित्त एक आवश्यक
 सूची है), भूत् (पु०) पहाड़,—असम् 1 शरीररम्य
 धातुओं के मूल के अपविष्ट रूपान्तर 2 मांसा,—भाशि-
 कम् 1 एक उपाधातु सोनामन्थनी 2 सन्निक पदार्थ,
 सारित् (पु०) गधक,—राजक, वीर्य,—असम्
 मुद्राणा,—आध खनिज विज्ञान, धातुविज्ञान,—धातिन्
 (पु०) सन्निक विज्ञाना—अर्तुत् (पु०) गधक,—शेखरम्
 काशील, गधक का तेजाव,—शोधनम्,—सभञ्ज-
 तीना,—सात्मन् अथवा स्वारम्य (विद्योष-समता)।

धातुवत् (वि०) [धातु + वत्] धातुओं से भरा हुआ, धातु
 सपन्न। सम०—ता धातुओं का बाहुल्य,—कु० १।६।
 धातु (पु०) [धा + तुच्] 1 निमज्जा, रचयिता, उपपदक,
 प्रणेत 2 धारण करने वाला, मधारक, सहान् देने
 वाला 3 सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा का विशेषण
 अथ दुर्जनचित्तबुद्धिहृन्ने धातार्ता भन्तोऽथम्—हि०
 २।१६५, रघु० १२।६, शि० १।१३, कु० ७।४४
 कि० १२।३३ 4 विष्णु का विशेषण 5 आत्मा
 6 ब्रह्मा की प्रथम सृष्टि होने के कारण स्रष्टावियों
 के नाम, तु० कु० ६।९ 7 विवाहित स्त्री का प्रेमी
 व्यथिका-।

धातम् [धा + टल्] बर्तन, पात्र,।

धात्रो [धात्र + डीप्] 1 दाईं, धाय, उपमाता उवाच
 धात्रा प्रथमादित वच—रघु० ३।२५, कु० ७।२५
 2 माता—वाङ् ३।८२, 3 पृथ्वी 4 आँसुओं का वृत्त।
 सम० पुत्र धाय का पुत्र, धर्म भाई 2 अभिनेता,
 —कलम् औबला।

धात्रेयिका, धात्रेयी [धात्रेयो + कन् + टाप्, ह्रस्व, धात्रो
 उक् डीप्] धात्रेयुष्त्री—धात्रेयिकापात्रतुर वचरच
 —मा० १।२२, कर्णिकेय नो मात्स्योधात्रेय्या लव-
 ङ्गिका—मा० १ 2 धाय, दूध पिलाने वाली धाय।

धातम्,—नी [धा + टल्, धात + डीप्] आहार, पात्र,
 गद्दी, स्थान, जैसा कि मत्स्यधानी, राजधानी, यश-
 धानी।

धाता. (स्त्री० वी० व०) [धात + टाप्] मुने हुए जो या
 चालक, शीर 2 सत् 3 जनाव, अन्न 4 कमी,
 अक्षुर।

घानुईषिकः, घानुकः [घनुईष + ठक्, घनु + ठक् + क]
 तीखाज, (घनुष के द्वारा अपनी जीविका कमाने)
 वाला घनुषर—निमित्तदारराइवोघनुषिकत्वेव बलि-
 तम्—सि० २१२७ ।
घामुष्य ! घनु + ष्वञ् । द्रोस ।
घाम्या (स्त्री०) इलायची ।

गण्यम् [घान् + यन्] 1 अनाज, अन्न, चावल 2 घनिया
 (सत्य और धान्य, तथा तट्टल और अन्न की भिन्नता
 के लिए दे० तट्टल) । सम०—अण्यम् माइ से
 सैवार की हुई काजी, अर्थ चावल या अनाज के रूप
 में घन, अस्मिन् (नपु०) नुस या भली, बुर या
 चोकर,—उत्तम वहिया अन्न अर्थात् चावल,—अण्यम्
 1 छिलका (अन्न का), धान्यत्वधा 2 भूखी, चोकर,
 पुआल,—कोशा,—कोष्ठाकम् अनाज की खनी,—अण्यम्
 अनाज का खेत, चमत्त चोला, चिडवा,—अण्य
 (स्त्री०) अनाज का छिलका,—भाष्यः अनाज का
 व्यपारो,—राज जो,—अर्थनम् व्याज के लिए
 अनाज उधार देना, अनाज की सूदखोरी,
 —बौद्धम् (बौद्धम्) घनिया,—घोर उडव (माष) की
 दाज, श्रीषकम् अनाज की बाल,—बुद्धम् अनाज
 का मिठाई, ट्ठ, सार, कूट पीट कर निकाला
 हुआ अन्न ।

घान्या, घान्याकम् [घान्य + टाप्, स्वार्थे कन् च] घनिया ।
घान्यन् (वि०) (स्त्री०—नी) [घान्यन् + ञ्] मर-
 भूमि का, मरस्थल में विद्यमान ।

घामकः [—घानक पृथो०] एक मासे की तोल ।
घामन् (नपु०) [घा + मनिच्] 1 आवास—स्वान,
 गृह, निवासस्थान, घर—नुरासाह पुरोधाय घाम स्वाव-
 भूव ययु कु० २११, पुष्य यायास्त्रिभुवनपुरोधाय
 चण्डोपवाम्य—मेघ० ३३, भय० ८१२१, भर्तु० ११३३
 2 जगह, स्थान, आश्रय—विद्योषाम 3 घर के
 निवासी, परिवार के सदस्य 4 प्रकाश किरण, सहस्र-
 धामन्—मुद्रा० ३११७, हियमाम्य—सि० ११५३
 5 प्रकाश, कानि, दीप्ति—मुद्रा० ३११७, कि०
 २१२०, ५४, ५९, १०१६, अमक ८९, रघु० ९१९, १८१
 २२, 6 राजयोग्य कानि, यश, प्रतिष्ठा—रघु० १११
 ८५ 7 शक्ति, सामर्थ्य, प्रताप—कि० २१४७
 8 जन्म 9 शरीर 10 टोली, दल 11 अबस्था,
 दशा । सम०—भेसिन्,—निष्ि तूर्य ।

घामनिका, घामनी [घामनी + कन् + टाप् ह्रस्व, घमनी
 + ञ् + ङीप्] दे० घमनी ।

घार (वि०) [घ् + णिच् + अच्] 1 सभालने वाला,
 सामने वाला, सहारा देने वाला, 2 नवी को बाँध
 प्रवाहित होने वाला, टाकने वाला, बहने वाला,—ः
 1 विष्णु का विशेषण 2 चर्वा की आकस्मिक तथा

तीक्ष्ण बीजार, तेजी से उभा ले जाने वाली सड़ी
 3 हिय, ओला 4 गहरी जगह 5 ऋण 6 हर, सीमा ।

घारकः [घ् + ष् + क्] 1 किसी प्रकार का अर्धन (बस
 टुक बाँध), जलपात्र 2 कर्जदार ।

घारण (वि०) (स्त्री०—नी) [घ् + णिच् + ष्ट्]
 सभालने वाला, घामने वाला, ले जाने वाला सघा-
 रण करने वाला, निडाहने वाला, रखा करने वाला,
 रखने वाला, घारण करने वाला,—अण् 1 सभालने,
 घामने, सहारा देने, सधारण करने या सुरक्षित रखने
 की क्रिया 2 कर्ज में करना, सपति 3 पालन करना,
 दुकता पूर्वक पकड़ना, 4 याद रखना—ग्रहणघारण
 पट्टवालक 5 (किसी का) कर्जदार होना,—नी
 1 पत्नी या रखा 2 शिरा, नन्दाकार बाहिका ।

घारणकः [घारण + कन्] कर्जदार ।

घारणा [घारण + टाप्] 1 सभालने, घामने, सहारा देने
 या सुरक्षित रखने की क्रिया 2 मन में घारण करने
 की शक्ति, अचञ्जी घारणात्मवस्मरण शक्ति
 —घोषारणावती मेघा अमर 3 स्मरण शक्ति 4 मन
 की शान्त रखना, स्वास को धामे रखना, मन की दुः
 भावमनता—परिवेनुपुष्पाय १—गा—रघु० ८१२८,
 मनु० ६१७२, याज्ञ० ३१२०१, (घारणैव्युच्यते येव
 धार्यते यम्यतन्मया) 5 धर्म, दुकता, स्थिरता
 6 निश्चित विधि या नियम, निश्चित नियम, उप-
 सहार, इति धर्मस्य घारणा—मनु० ८१२८४, ४३८,
 ९१२४ 7 समझ, बुद्धि 8 ग्यायना, औचित्य,
 शालीनता 9 आस्था, विश्वास । सम०—घोषा
 गहरी शक्ति, मनोयोग,—शक्ति (स्त्री०) घारणात्मक
 स्मरण शक्ति ।

घारणिकी [घ् + णिच् + तृच् + ङीप्] पृथ्वी ।

घारा [घार + टाप्] 1 पानी की सरिता या धार, गिरने
 हुए जल की रेखा, सरिता, धार—भर्तु० २१२३,
 मेघ० ५५, रघु० १६१६६, आबद्धधारमथु प्रार्लत—
 सप्त० ७५ 2 बीछार, वर्षा की तेज धड़ी 3 अन-
 बरत रेखा—भासि० २२० 4 घड़े का छिद्र 5 घड़े
 का कदम—घारा प्रसायितुमव्यतिकोरंरुपा—सि०
 ५१६ 6 हाथिया, किनारा, किसी वस्तु की किनारी
 या सीमा—ध्रुव स नीलोत्पलपत्रधारया गमीलता
 छेत्सुधिविषयवसति—गा० ११९८ 7 तलवार, कुल्हाड़ा
 या किसी काटने वाले उपकरण का तेज किनारा या
 धार—तजित परसुधारया मम—रघु० ११७८,
 ६५२, १०८६, ४१, भर्तु० २१२८ 8. किसी पहाड़
 या बट्टान का किनारा 9 पहिया या पहिये का
 परिवाह या परिधि रघु० १३१२५ 10. उद्यान
 की दीवार, बाड़, छाड़बडी 11 सेना की अधिम
 पक्ति 12 उच्छ्वज बिन्दु, सवौरिता 13 समुच्छ्व

14 घम, 15 रात 16 हल्दी 17 सवाना, 18 कान का उपद्राव । तब—अधुम् बाण का चौड़ा फलका, —अधुम् 1 वर्षा की बूँद 2 भोला 3 धनु का मुकाबला करने के लिए) सेना के आगे २ बढ़ते जाना, —अधुम्: तलवार, —अधु: 1. चातक पक्षी 2 घोड़ा 3 बालक 4 मरधाटा हाथी, —अधिविष्णु (वि०) उच्चतम स्वर तक उठाया हुआ —अध्वनि: (स्त्री०) हवा, —अधु (नपु०) अधु प्रवाह—अधर १०—आसार: भारी वर्षा, मुसलाधार वर्षा धारा-सारमेंहली वृष्टिबंभूत—हि० ३, विक्रम० ४११, —अध्व (वि०) (गो के स्तन से निकला हुआ) घम (दूध), गृहम् स्नानागार जिसमें कौबारा लगा हो, घर जिसमें कौबारे से मुसञ्जित स्नानागार हो—रघु० १६४९, रत्न० १११३, भर: 1 बालक 2 तलवार, निपात, —पात 1 बारिन का होना, बोलार का उपद्रव गिरना मेघ० ४८ 2 जल की धारा सरिता, अन्धम् कौबारा, धरना (पानी का) अमर ५९, रत्न० १११२, —अध्व-अध्व-संपात: लवातार धोर ममलाधार वृष्टि—रघु० ४१८२, —आधिम् (वि०) अनवरत, लगातार—उत्तर० ४१२, —विष: टेंडी तलवार ।

धारिणी [धृ-+निनि+शीष्] पृथ्वी ।

धारिन् (वि०) (स्त्री०-की) [धृ-+निनि] 1. ले जाने वाला, बहन करने वाला, निवाहने वाला, सुरक्षित रखने वाला, रखने वाला, समालने वाला, सहाय देने वाला पादाभोगधारि—गीत० १२, कर आदि 2 स्मृति में रखने वाला, धारणात्मक स्मरण शक्ति रखने वाला, अनेक्यो ग्रन्थिभ्यो श्रेष्ठा ग्रन्थिभ्यो धारिणी वग मनु० १२११०३ ।

धातंरधु [धृ+रधु+अध्] 1 धृतराष्ट्र का पुत्र 2 एक प्रकार का हस्त जिसके पैर और चोंच काली होती है निष्पत्ति धातंरधुा कालवक्रान्तेदिनीपृष्ठे - वेणी० ११६, (यहाँ शब्द उपर्युक्त दोनों अर्थों में प्रयुक्त है) ।

धाधिक (वि०) (स्त्री०-की) [धम+ठक्] 1 नेक, पुष्यारमा, न्यायशील, सद्गुणसम्पन्न 2 सत्याधित, न्याय, न्यायोचित 3 धर्म से युक्त ।

धाविणम् [धाविन्+अण्] सद्गुणियो का समाज ।

धाव्यधम् [धृट्+प्यञ्] अहंकार, अविनय, औदर्य, द्विद्वैर्, अकृत्यजन ।

धाक् (स्त्री०-पर०) —धावति, धावति 1 दौडना, भागे बढ़ना—अद्यापि धावति मन—चौर० ३६, धावन्त्यधी मृगवक्राशयवे रघु० ध० ११८, अन्वति पुर. धारोर धावति परदारसंतुत वेत० ११३५, 2. किसी की ओर दौडना, किसी के मुकाबले में आगे बढ़ना,

आक्रमण करना, मुकाबला करना भट्टि० १६१६७ 3 बहना, नदी की भाँति प्रवाहित होना—धावन्-मति तैलशब्द—सुशु० 4 दौडना, उड़ जाना ॥ (स्त्री० उप०) —धावति-ते, धीत, धावति 1 धोना, साफ करना, धाजना, निर्मल करना, रगड़ना दद्याधाङ्गि-स्तनरधु सुप्रोषस्य विभीषण, विदाघकार धीताश म ग्नु खे ननदं च भट्टि० १४१५० श० ६२५, शि० १७१८ उग्रमल करना, चमकाना 3 किसी व्यक्ति से टकराना (आ०) निम्न. धो डालना—निर्घोतं सति हरिचन्द्रने जन्वीर्षे—शि० ३१५१, निर्घोत-दाना मलयटभिरा रघु० ५४३२, ७० ।

धाक्क: [धाक्+कृत्] 1 घोषी, 2 एक कवि (कहा जाता है कि इसने श्रीरंग गजा के लिए स्नानवली की रचना की थी—श्रीहृषदिर्भिकादीनामिव यश—काव्य० १, अने० पा० प्रथितयशसा धावकवीमिल्ल-कविपुत्रादीना प्रबन्धानिर्गम्य—मालवि० १, अने० पा० ।

धावन्म् [धाक्+ल्यट्] 1 शोडना, मरपट भागना 2 बहना, 3 आक्रमण करना 4 धाजना, पवित्र करना रगड़ना, बहा देना 5 किसी चीज में रगड़ना ।

धावत्यम् [धवल+प्यञ्] 1 सफेदी 2 पाहुना ।

धि । (सुदा० पर० विधिति) सामलान, रखना, अधि-कार में करना, सम्—, मुलङ्ग करना तु० संधा० ११ (या पिन्म् स्था० पर० धिनोति) प्रमत्त करता, खूब करना, मनुष्ट करना पश्चतो चारुमरुष तदपि विलुनितस्वाधरेय धिनोति—गीत० १२, धिनोति नाम्नाञ्जलजेन पूजा स्ववान्ध गन्धि विगन्धमाना—नै० ८१७, उत्तर० ५१२७, कि० ११२२ ।

धि. (समास के अन्त में प्रयुक्त) आचार, भंडार, आयाज आदि उरधि, उपधि, धानधि, अलधि आदि ।

धिक् (अध्व) [धा+ठिकन्] मित्रा, बुराई, विवाद की भावना को प्रकट करने वाला विस्मयादिद्योतक अर्थव्य—(पिष्कार, फटे मुँह, धर्म, दुःख, दरस—कर्म० ., ध) —धिक् ता च त च मयन च दमा च मा—ब, अने० २१२, धिगमा देहभुजासारात्ताम्—रघु० ८१५ धिक्ताम् धिक्ताम् धियेताम् ऋषयति मतेत कीर्तस्थो मृदङ्ग, धिक् सानुज कुपति धियजाल—धानु वेगी० ३१११, कर्म-कर्मो कर्तुं सबो और सब० के साथ धिपर्धा कष्टसंध्या पच० १, विह-मूर्ख, धियस्तु हृदयस्यास्य (धिक्क निरस्कार करना) अन्धा करना, रूढ़ करना, बुरा भला कहना । सम०—कार:—किमा धिडकना, फटकारना, निरस्कार करना अवज्ञा करना, —इष्य: डाटफटकार बनाना, निदा—मनु० ८११२९, —धाक्क्यम् अपमान, डाट फटकार, भर्त्सना ।

विष्णु (वि०) [वृष् + षन् + त् + उ] घोषा देने का इच्छुक, घोषा देने वाला—भट्टि० १३३३ ।

विष्णु दे० वि० ॥

विष्णवः [वृष् + षन्, विष् अण्डेण] देवों के गुरु बृहस्पति का नाम,—णष् निवासस्थान, आवास, घर,—या 1 भाषण, 2 स्तुति, सूक्त 3 बुद्धि, समस्त महावी० ६१७ 4 पृथ्वी 5 प्याला, कटोरा ।

विष्णव्यः [वृष् + ष्य नि० ङकारस्य ङकार] 1 यज्ञानि के लिए स्थान, हवनकुण्ड, अमीर्षदि परिल कृतधिया—श० ४१७ 2 असुरों के गुरु शुक्राचार्य का नाम 3 शुक षड् 4 शक्ति, सामर्थ्य,—लक्ष्मण 1 अज्ञान, अविद्या, स्थान, जगद्, घर—न भीमान्वेष विष्णव्यानि हिरण्य अंतिमयोग्यपि—रघु० १५१३९, 2 केलु, उल्का 3 अग्नि 4 तारा, नक्षत्र ।

वी (स्त्री०) [वी + षिवन्, सप्रसारण] 1 (क) बुद्धि, समस्त—धिय समर्पे म गुणैरदारणी—रघु० २१३०—क० कुची, मुषी आदि (ख) मन, **वृष्णी** दुष्ट बुद्धि वाला—मम० २१५४, रघु० ३१३० 2 विचार कल्पना, उत्प्रेक्षा, प्रत्यय—न धिया पथि वल्ले—क० ६१२२ 3 विचार, आगव, प्रयोजन, नैसर्गिक प्रवृत्ति, कि० ११३७ 4 भक्ति, श्रवण 5 यज्ञ । सम०—इन्द्रियम् प्रत्यक्षज्ञान का अण (ज्ञानेन्द्रिय), मन कर्मस्थला नैत्र गसना च त्वका सद्, नासिका वेति पट-तानि भीमिदवाणि प्रचक्षते,—मृगा (ब० ४०) बौद्धिक गुण, (शुश्रूषा) यत्क चैव षट्प धारण तथा, उच्छास्त्रोर्षीविज्ञान तत्त्वज्ञान च पीमृणा—कामन्दक,—पति (धिया पनि) देवा के गुरु बृहस्पति—मन्विन् (पु०)—सत्त्व 1 सत्कारहार मनी (वि०) कर्ममंचिद—कार्यान्वीयवी 2 बुद्धिमान् और दूरदर्शी सत्कारहार,—अस्ति (स्त्री०) बौद्धिक शक्ति,—सत्क सत्कारहार, परमप्रशंसाता, मनी ।

वीत (वि०) [वी + क्त] 1 चूसा गया, पीया गया, दे० प ।

वीति (स्त्री०) [वी + क्तिन्] 1 वी०, चूसना, 2 प्यास ।

वीम्बन् (वि०) [वी + म्बन्] बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, विद्वान् (पु०) बृहस्पति का विशेषण ।

वीर (वि०) [वी + र + क] 1 महादुर, उद्भूत साहसी—धीरोद्भूता गति—उत्तर० ६११९ 2 स्थिर, सुदृढ़, अटल, टिकाऊ, बलाऊ, म्यादी—रघु० २१६ 3 दृढ़-मनस्क, धैर्यवान्, स्वस्वचिन्त, अडिग, युद्ध निश्चय वाला,—वीर एव रत्नयावयव—का० १७५, विकार-हेती गति विकल्पने येवा न वेतासि त एव वीरा—कु० ११५२ 4 स्वस्थचित, शान्त, माधवता 5 सीस्य, स्थिरबुद्धि, प्रशान्त, यन्वीर—रघु० १८१४ 6 मज-बूत, बलवान् 7 बुद्धिमान्, दूरदर्शी, प्रतिभाशाली,

समझदार, विद्वान् धतुर—पृथिव्य वीर सद्योऽभ्यंयत स—रघु० ३११०, ५१३८, १६१७४, उत्तर० ५१३१ 8 गह्वर, यन्वीर, ऊँचा स्वर, खोललाखर स्वरेण धीरेण निरन्तरेष्विबन्—रघु० २११४३, ५२, उत्तर० ६११७ 9 आचरन्शील, आचारवान् 10 (वायु आदि) मन्द, युद्ध, सुहावना, सुलभ—वीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाळी—गीत० ५ ११ सुत, मालती 12 साहसी 13 हेरक,—४ 1 समुद्र 2 राजा बलि का विशेषण,—रम् केशर, जाफरान,—रम् (अध्व०) साहसपूर्वक, दुइता के साथ, अडिग होकर धीरज के साथ—मर्तु० २१३१, अमर १११। सम०—उद्भासः अष्टे विचारो का दूरवीर व्यक्ति (काव्य नाटक में) नायक,—अविकल्पन क्षमावानतिगम्भीरो महासत्त्व, स्थेयाभिमुखमानो धीरोदातो दुइवत कथित—सा० २० ६६,—उद्भूतः दूरवीर परन्तु अभिमानी (काव्य-नाटक में) नायक—आपापर प्रचण्डवचनोद्भूतार-रूपभूयिष्ठ, आरमश्लापानिरतो धारैवीरोद्भूत कथित—सा० २० ६७,—वेत्सु (वि०) दृढ, अडिग, युद्ध मन वाला, साहसी,—प्रखान्तः (काव्य नाटक में) नायक जो दूरवीर और शान्त व्यक्ति हो—सामान्य-गुणभूयान् द्विजातिको धीरप्रशान्त स्थान्—सा० २० ६९, सक्ति (काव्य नाटक में) नायक जो दृढ़ और दूरवीर होने के साथ-साथ क्रोधाग्नि और असावधान हो निश्चिन्तो मृदुर्नसि कलापरो धीर-ललित स्थातु सा० २० ६८,—स्वक-प्रेसा ।

वीरता [वीर + तल् + टाप्] । धैर्य, साहस, मनोबल—विपत्तौ च महाल्लोकं धीरतामनुयच्छति—हि० ३१४४ 2 ईर्ष्या का दमन 3 धीरगीता, शान्तचिन्तता—प्रत्यादेशात् श्ल भवती धीरता कल्प्यामि—मेघ० १४४, (दूसरे अर्थों के लिए दे० 'वीर्य') ।

वीरा [वीर + टाप्] काव्य नाटक में कथित नायिका जो अपने पति वा प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई भी, उसकी उपस्थिति में अपनी बाह्य भावमुद्रा से अपना रोष प्रकट नहीं होने देती—रसमञ्जरी को उक्ति—व्यङ्ग्य-कोप प्रकाशिका धीरा—दे० सा० २० १०२-५, भी । सम०—अधीरा काव्य नाटक में कथित नायिका जो अपने पति वा प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई अपने रोष को अभिव्यक्त भी कर देती है, और अपनी ईर्ष्या को छिपा भी लेती है—व्यङ्ग्याव्यङ्ग्यकोप प्रकाशिका धीरा-धीरा—रसमञ्जरी ।

वीरलटिः—टी (स्त्री०) [वी + लट् + इत्, धीलटि + लीट्] पुनी, बेटी ।

वीरघः [वधाति मत्स्यान्—घा + ष्वरञ्] मधुना—मृग-मीनसञ्जनानी तुषजलसतोषाहितवृत्तीना, लक्ष्मक-बीररिषुना निष्कारयवीरियो जगति—मर्तु० २१६१,

१८५, -रम् लोहा, -री 1. मछुंके की स्त्री
2 मछलियाँ रखने की टोकरी ।

बु (स्त्री० उभ०) - बुनीति, बुनुते, बुत दे० 'बु' ।

बुध (स्त्री० आ०) - बुधते, बुधति 1 मुलगना 2 जीना
3 कष्ट भोगना - प्रेर० बुधयति - मुलगाना,
प्रज्वलित करना, सम - मुलगाना, उत्तेजित होना
(आल० भी) सद्युधे तपो कोप - भट्टि० १४१०९,
प्रेर० मुलगाना, प्रज्वलित करना, उत्तेजित करना
- तिबाणिभूयिष्ठनधास्य शीयं सद्युधकनतोऽप्युपुषेन
- कु० ३१५२ ।

बुध (वि०) [बु + क्त] 1. हिला हुआ, - रघु० ११११६
2 छोटा हुआ, परित्यक्त ।

बुधि, - नी (स्त्री०) [बु + नि, बुधि + ङीष्] नदी,
दरिया - पुराणां सहस्रु सुरभिः कपर्दीर्जिषस्ते - गणा०
२२ । सम० - नावः समुद्र ।

बुध् [बुध् + क्विप्] (कर्त्त० ए० व० - ष) 1 (आ०)
जुआ, न गदेना वासिधुर वहति - मुच्य० ४१७
अजस्नीर्ब्रह्मभूरं तुरङ्गे - रघु० १४१४७, 2 जूए
का बहु भाग जो कथो पर रक्ता रहता है, 3 पहिए
की नाभि को घूरी के साथ स्थिर करने के लिए घूरी
के दोनों किनारों पर लगी कोल 4 गाड़ी का बम
5 बोझा, भार (आल० भी) उत्तरदायित्व, कर्त्तव्य,
कार्य - तेन बुधमेतो गृहीं सचिबेयु निचिचिपे - रघु०
११३४, २१०४, ३१२५, ६६, कु० ६१३० आर्त्तव्यन-
वातपौलवकले कार्यस्युध्कस्तिना - मुद्रा० ६५,
४६, कि० ३१५०, १४६६ 6 प्रमुखतम या उच्चतम
स्थान, हरावल, अग्रभाव, सिलर, निर अपामुलाना
धुरि कीर्त्तनीया - रघु० २१३, धुरि त्रियता त्व पति-
देवतानाम्, १४१७४, अविध्नमसु ते स्वेया पितेव धुरि
पुत्रिणाम् - ११९१, धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव - मालवि०
१११६, ५११६, (धुरि ह् निरे पर रतना वा आगे
रतना - शं० ७७४) । सम० - सत् (बुधति) (वि०)
1 रथ के बग पर लडा हुआ 2 सिर पर लडा हुआ
मुख्य, प्रधान, प्रमुख, - अदिः शिब का विशेषण,
- बर (बुध्बर, 'पुरवर' भी) (वि०) 1 जुआ
संभालने वाला 2 जीते जाने के योग्य 3 अच्छे गुणों
से युक्त या महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्यो से लडा हुआ 4 मुख्य,
प्रधान, अग्रगण्य प्रमुख, - कुलधुरधरो वध - विष्णु०
५, (र), 1 बोझा डोने वाला जानवर 2 जिसके
अपर किमी कार्य का भार हो 3 मुख्य, प्रधान,
अग्रणी, - बहु (बुध्बह) (वि०) भार वहन करने
वाला 2 काम का प्रबन्धक, (ह्) बोझा डोने वाला
पशु, इसी प्रकार 'बुध्बह' ।

बुध् (स्त्री०) बोझा, भार - रघुवृत्ता देगी० ३१५ ।

बुधीय, बुधीय (वि०) [बुध् + हि, अर्हति वा, बुध् + क्त,

छ वा] 1 बोझा डोने या संभालने के योग्य 2 जीते
जाने के योग्य 3 महत्त्वपूर्ण कार्यों में नियुक्त (क,
- क) 1 बोझा डोने वाला पशु 2 आवश्यक कार्यों
में नियुक्त ३ मुख्य, प्रधान, अग्रणी ।

बुध् (वि०) [बुध् + यत्] 1 बोझा संभालने के योग्य
2 महत्त्वपूर्ण कार्य सीपे जाने के योग्य 3 चोटी पर
स्थित, मुख्य, प्रमुख, - वृ० 1 बोझा डोने का पशु
2 घोडा या बैल जो गाड़ी में जुटा हुआ हो - नादि-
नीर्तरेजेत् बुध् - मनु० ४१६७, येनेद धियते विश्व
बुध्मेनिमिवाश्चनि - कु० ६१७९, बुध्नि विद्यामयेनि
- रघु० ११५४, ६१७८, १७१२२, ३ (उत्तरदायित्व
के) भार को संभालने वाला रघु० ५१६६, 4 मुख्य
अग्रणी, प्रधान - ह् सिंहासि कुण्डये सुपुत्रया बुध्नाय
- रघु० ७७७१ 5. मंत्री, महत्त्वपूर्ण कार्यों पर
नियुक्त व्यक्ति ।

बुध् (स्त्री०) रः [बुध् + उर, लुट्] धतुरे का पीषा ।

बु (तुवा० पर०, स्वा०, स्वा०, कथा०, बुरा० + उभ०)
धुवति, धुवति - ते, धुनीति, धुनुते, धुनाति, धुनीते
धनयति - ते) 1 झिल्ला, धुल्ल करना, कथना
धुवति धनयते नं नना धनता - ऋतु० ३१२२,
धुवन्तु कल्पद्रुमि मर्यादा - मेघ० ६२, कु० ७७४९,
रघु० ४१६७, भट्टि० ५१२०१ १७७, २०१२२ उता
देना हटाना, रोक देना - अजयति शिरस्यन्व जिजा
धुनायपक्षिभ्युना - शं० ७७२४ ३ फूक मार कर उडा
देना नष्ट करना 4 मुलगाना, उत्तेजित करना (आगे
का) पन्था करना बायना घुममानी हिं वन वहीत
पावक - महा०, धनयति अग्नि ऋतु० १२२६
5 अशिष्ट व्यवहार करना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँ-
चाना - मा तथावीररि र्णे - भट्टि० २१५०, १५१६१
6 अपने ऊपर से उतार फेंकना, अपने अपेको मुक्त
करना - (सेवका) आरोगिनि गते पन्थादुन्वन्वसोप
पायिबन् - पच० ११३६, (कवि गृह्य के निर्धनमित्तित
श्लोक में इस धातु के विभिन्न गुणों के रूप में दिए
गये हैं) - धुनीति चण्डकनानि धुनीतेयशोक चत
धुनाति धुवति स्फुटिनामिभुजम्, बायुविधुनयति
चम्पकपुण्डरिगुत्पन्नाने धरति चन्दनमञ्जरीरच) ।
अ - झिल्ला, इधर-उधर करना, कथना, लहना,
- रघु० धनवाधन रघु० ७७४३, लोलावधुनै-
रुधामर - मेघ० ३१५, कि० ६१३, कि० ११३६
2 उतार फेंकना, हटाना, परामुत् करना, - राजसत्त्व-
गवधुय मानुक्म् - रघु० १११५०, सुरधधुवन्तुभवा
परै १११९, ३१६१, कि० ११४२ ३ अवहेलना
करना, अस्वीकृति करना, उपेक्षा करना, तिष्कार-
युक्त व्यवहार करना चण्डी मामभधुय पादपतित
- विष्णु० ४११८, पादान्त कोपनयाजयुत - कु०

३।८, विक्रम० ३।५, उद्—हिला डालना, उठाना, ऊपर को उछालना, लहराना—कैनोंडुतानि चामरागि—का० ११३, रघु० १।८५, १।५०, उद्घुनीयात सत्केतुन्—भट्टि० ११।८, कि० ५।३९, मासतभरो-डुतापिपुलिप्रव ४२० २. उतार फेंकना, हटाना, हूर करना, नष्ट करना (आल० भी) - उद्घुतपावा—मेघ० ५५, शि० १।८८ ३ बाधा पहुँचाना, उत्तेजित करना, भड़काना, निम्—, १ उतार फेंकना, हटाना, हूर करना, निकाल देना, नष्ट करना—निर्घुनीः धरशोणिमा गीत० १२, ज्ञाननिर्घुतकल्पमा—भय० ५।१६, रघु० १२।५३ २ उपेक्षा करना, निरस्कार-युक्त व्यवहार करना, अज्ञा करना ३ त्याग देना, छोड़ देना, फेंक देना, बि—, १ हिलाना, इधर-उधर करना, कपाना, मुहुसुवर्तविघ्नान्—ऋतु० ६।२९, ३।१० दीर्घा वेणी विघ्नाना-भट्टा० २ उतार देना, नष्ट करना, निकाल देना, हूर भगा देना कपेविच-विनु द्युतिम्—भट्टि० १।२८, रघु० ९.३२, अन० पा० उपेक्षा करना, घृणा करना, निरस्कारयुक्त व्यवहार करना रघु० ११।१० ४ छोड़ना, छोड़ देना, ग्याग देना नै० १।३५।

धू. (स्त्री०) [धू + क्विप्] हिलाना, रापना, धरष हाना।
 धूत (भू० क० कृ०) [धू + क्त] १ हिला हुआ २ उतार फेंका हुआ, हटया हुआ ३ भड़काया हुआ ४ परिश्रम, उतका हुआ ५ फटकारा हुआ ६ परीक्षित ७ अवज्ञान, निरस्कारयुक्त व्यवहार किया गया ८ अनुमानित। नम०—कल्पव, वाप (वि०) जिसने अपने पाप उतार फेंके हैं, पापमुक्त।
 धूति (स्त्री०) [धू + क्तिन्] १ हिलाना, इधर उधर करना २ भड़काना।

धूम (भू० क० कृ०) [धू + क्त, नम्य न] हिला हुआ, लुब्ध।

धूनि (स्त्री०) हिलाना, धुंभ करना।

धूप १ (भ्रा० पर०) धूपायति, धूपायति गरम करना, गरम होना, ॥ (धुरा० उभ०) धूपयति-ने १ धूनी देना, सुगन्धित करना, धूपाना, सुगन्धित करना २ चमकना ३ बोलना।

धूप [धूप + अच्] १ धूप, मोवाज, गन्धद्रव्य, कोई सुगन्धयुक्त पदार्थ २ (गाद विरोधा आदि सुगन्धित पदार्थों से उठने वाला) बाण, सुगन्धित बाण या नुआँ—धूपाध्यायः त्वाजिनमाध्याधिवम्—कु० ७।१६, मेघ० ३३, विक्रम० ३।२, रघु० १६।५० ३ सुगन्धित चीजें। सम०—अमृद (नपु०) एक प्रकार की गुग्गुलु औ धूपाने के काम आती है,—अङ्ग १ तापीन २ नरल वृक्ष,—अहंम् गुग्गुलु,—पात्रम् धूपदान अग-दान, धूप जलाने का पात्र,—वास्त. गन्धद्रव्य के धूपों से

वासना, धूपाना,—धूप एक पेड़ जिससे गुग्गुलु निकलता है, सरल वृक्ष।

धूम [धू + मक्] १ धुआँ, बाण—धूमयति मलिकमलतां सन्निपात न्व मेघः—मेघ० ५ २ धूप, कौहरा ३ उल्हा, केतु ४ बाहल ५ (नम्य, छीक जाने वाला) धुआँ ६ इकार, उद्गार। सम०—आभ (वि०) धूपें जैसा प्रतीत होने वाला, धूमिल रंगका,—आशक्ति, धूपें का आदल या धूममाला,—उत्पन्न नीमादर,—उद्गारा १ धुआँ या बाण उठना,—उर्ध्वायम की पानी का नाम, 'पति' यम का विशेषण,—केलम,—केतुः १ आग—कोपय नदकुलकाननधूम-केतो—मुद्रा० १।१०, रघु० ११।८१ २ उल्हा, पुच्छल तारा, गिरना हुआ तारा—धूमकेतुविद्युत्किमपि करालम्—गीत० १, धूमकेतुविद्युत्पित—कु० २।३२ ३ केतु,—जः बाहल,—ध्वजः अग्नि,—पात्रम् धुआँ या बाण पीना,—सहिष्णी कौहरा, धूप,—वीथिः बाहल तु० मेघ० ५।

धूमल (वि०) [धूम + ल + क] धुमका, भूरा-ग्याल, मटमैला।

धूमापति-ने (ना० घा० पर०) धूपें से भर देना, बाण से डक देना अंधेरा करना—धूमापिता वज्रिणो दक्षिणारन्विदा—आमि० १।१०४, मुच्छ० ५।५३।

धूमिका [धूम + ठन् + टा] बाण, कौहरा धूप।

धूमित (वि०) [धूम + इत् + क्व] धूपें से डका हुआ, अंधकार-युक्त—कु० ४।३०।

धूम्या [धूम + यन् + टाप्] धूपें का बाहल, प्रगाव धुआँ।

धूम (वि०) [धूम + रा + क] १ धुमैला, धूपें वाला, भूरा भूने० ३।५५ रघु० १५।१६ २ गहुरा लाल ३ काला, अंधकारयुक्त ४ मटमैला,—अ १ काले और लाल रंग का मिश्रण २ लोहान,—अम् पाप, दुर्धमस, दुष्टता। सम०—अः एक प्रकार की गिकारी चिटियाँ,—धृच् (वि०) मटमैले रंग का,—लोहान नक्षत्र,—कोहिल (वि०) गहुरा लाल, गाढ़ा मटमैला, (क) शिप का विशेषण,—शूकः ऊँट।

धूमक [धूम + क + क] ऊँट।

धूम (वि०) [धूम (धूर) + क्त] १ बालक, शठ, बदमाश, गूबकार, जालसाज, २ उपद्रवी, अति पतुषाने वाला,—सं १ टा, बदमाश, उक्कना, २ जूझारी ३ प्रेमी, रमिया, बिजोप्रिय धूर्त—तत्ते धूर्तं हृदि स्थिता प्रिय-तमा क्रांशिममेवापरा—पद्य० ४।६, धूर्तोपरां धूर्तति—अरि० १६, इसी प्रकार—धूर्ततामिसारमन्त्र-हृदाम्—गीत० ११ ४ धनुरा। सम०—कृत् (वि०) मन्त्रकार बेदमात, (पु०) धनुरे का पीवा,—कण्डु-मनुष्य,—रक्षता धूर्त विद्या, बदमाशी।
 धूर्तकः [धूर्त + क्त] १ गीदह २ बदमाश।

पूर्वी [वृत् + अन् + क्विप्, अन् शब्दस्य बी आदेश] गाङ्गी का बन्, या अगस्ता भाग ।

मुक्कम् [वृ + क्क + बा०] विष्, खहर ।

भूमिः, भूमि (पुं०, स्त्री०) [वृ + मि बा०, भूमि + भूमि]

1. भूय, भूमीत्यारम्भकता भूमिमुदक नासिधिते—सि०

२।३४ 2 पूर्वा । सम०—कुडिक्कम्,—केधारः

1. टीला, प्राचीर 2 योता हुआ खेत, -श्वकः वापु,

—श्वकः धूल का ढेर,—पुष्पिका,—पुष्पी केतकी का पौधा ।

भूमिका [वृ + क्क + टाप्] कोहर, घृष ।

भूतर (वि०) [वृ + तर, क्क्त्त्वं न पत्वम्] धूल के रग का,

भूरा सा, धूमला—संकोर रग का, मटमैला—भारी

विषसमूह—भग० २।५६, कु० ४।४, ४६, रघु०

५।४२, ११।१७, सि० १७।४१,—शः 1. भूराय 2

गया 3 अँट 4. क्यूतर 5. तेवी ।

धृ 1 (धृवा० आ०—सद्यो के मतानुसार धृ का कर्मवा०

रूप—प्रियते, धृत) 1 हाना, विद्यमान होना, रहना

रखते रहना, जीवित रहना—आर्यपुत्र प्रिये एषा

प्रिये—उत्तर० ३, प्रियते यावदेकीर्ण्यिपुस्तावत्कृत

मुक्कम्—सि० २।३५, १५।८९ 2 स्थापित या सुर-

क्षित रहना, रहना, बसते रहना—मुरलभमसभूतो

मुक्के प्रियते श्वेदलक्षोऽयमप्येते—रघु० ८।५१,

कु० ४।१८ 3 सकल्प करना, 11 (स्वा० चुरा०

उभ० धरति-ते, धारयति-ते, धृत, धारिण) 1 धामना,

समालना, ले जाना—भूजङ्घमपि कोपित धारसि

पुष्पङ्गुधारयेत्—भर्तृ० २।४, वैषवी धारयेच्छटिम्

सोदकं च कमण्डलम्—मनु० ४।३६, मट्टि० १७।५४,

बिम्ब० ४।३६ 2 धामना, समालना, स्थापित

रखना, सहारा देना, जीवित रखना धृतमहर—गीत०

१, यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयेत् समम् मनु०

१।३११, पञ्च० १।११६, प्रात कुन्दप्रमर्वायिक

जीवित धारयेथा - मेघ० ११३, चिकित्सायना धृनाम्

—रघु० ३।३५ 3. अपने अधिकार में धामे रखना,

अधिकार में करना, रास रखना, रखना—या सङ्कता

धारयेत्—भर्तृ० २।१९ 4 धारण करना, (रूप,

छादयेण), लेना—कथञ्च वृत्सुकुररूप—गीत० १,

धारयति शोकमदकम्—१०, 5 पहनना, धारण

करना, (बन्धकाराधिक) उपयोग में लाना, धिन-

कमसाङ्गुचमण्डल धृत कुण्डल ए—गीत० १ 6 रोकना,

दमन करना, नियंत्रण करना, ठहराना, स्थगित

करना 7 जमाना, संकेत करना (सप्र० वा अधि०

के साथ)—आह्वये धृतमानस, मनो रये राजसुवाय

आदि 8. भुगतना, भोगना 9 किमी व्यक्ति के लिए

कोई बस्तु निर्धारित करना, निश्चित करना, विधिष्ट

करना 10. किसी का श्रेणी होना (सप्र०, सच०

विरल०),—वृक्षनेचने डे धारया० मे, धा० १, तस्मै

तस्य वा धन धारयति जदि 11 धामना, रखना

12 पालन करना, अन्नास करना 13 हवाला देना,

उद्धृत करना (इस धातु के अर्थ उन ससा शब्दों के

अनुसार, जिनसे यह जुड़े, विविध प्रकार के ही जाते

हैं—उदा० कनसा धृ मन मे धारण करना, याद

रखना, धिरता धृ, भूमि धृ।सर पर रखना, अत्यंत

आत्नर करना, संतरे धृ घणोहर रखना, जमानत के

रूप में जमा करना, सवये धृ सहमत करना, श्वक धृ

दण्ड देना, सजा देना, बल का उपयोग करना, जीवित,

प्राधान्य धरीर, पात्र बेहम् धृ जीवित रहना, आरना

को स्थापित रखना, प्राणों का सुरक्षित रखना, श्रत धृ

श्रत का पालन करना, सुखया धृ तराजु मे रखना,

गोलना, बन्, सतिम्, चित्तम्, दृष्टिम् धृ किसी वस्तु

में मन लगाना, मन जमाना, सोचना, दृष्ट सकल्प

करना शर्भ धृ, गंधवती होना, धारणा धृ (एकाग्रता

सयम का) पालन करना, 1 अश्,—1 स्थिर करना,

निर्धारित करना, निश्चिन्त करना, सि० १।३

2 जानना, निश्चय करना, समझना, सही सही

जानना, न विवेकमूर्त-रथायंते धृ—कु० ५।७८,

रघु० १३।५, उर्धु—1 अग्र उठाना, उन्नत करना

2 बचाना, परिचाण करना 3 बाहर निकालना,

उद्धृत करना 4 उन्मूलन करना, उखाड़ना, (उद्

पूर्वक धृ के वही है रूप जो उद् पूर्वक धृ के है) निम्,—

निर्धारण करना, निश्चित करना, निश्चय करना,

—निर्धारितोऽल्लेने लक्षुस्ता लक्षु नाधिकम्—सि०

२।७०, १।२०, सि०—1 धर पकड़ना, पकड़ लेना,

ग्रहण करना, धारण कर लेना—अशुक पल्लवेन

विधृत, अमर ७९, ५५ 2 पहनना, धारण करना,

उपयोग में लाना—रघु० १२।६० 3 स्थापित रखना,

बहन करना, सहारा देना, धामलेना, पञ्च० १।८२,

भर्तृ० ३।२३ 4 टकटकी लगाना, निवेद्य देना,

सम्,— 1 धामना, समझना, ले जाना 2 धाम लेना,

सहारा देना—अरे सधायंते नात्रि—पञ्च० १।८१

3 बचाना, नियंत्रण में रखना, रोकना 4 मन में

रखना, याद रखना, समूह,—1 जड़ से उखाड़ लेना,

उन्मूलन करना दे० उद् पूर्वक 'हृ' 2 बचाना, परि-

चाण करना, सप्र०—1 जानना, निर्धारण करना,

निश्चय करना सि० १।६० 2 विचार विमर्श करना,

चिन्तन करना, सोचना, विचार करना—मनु० १०।७३,

एष सप्रधार्य पञ्च० १ ।

धृत (धृ० क० हृ०) [धृ + क्त] 1 धामा गया, ले

जाया गया, बहन किया गया, सहारा दिया गया

2 अधिकृत किया गया 3 रक्ता गया, सभारित, धारण

किया गया 4 पकड़ा गया, आग्रहसात् किया गया,

सभासा गया, पहला गया, उपयोग में लाया गया 6. रण दिया गया, जमा किया गया 7 अन्धास किया गया, पालन किया गया 8 तोला गया 9 (कतुबां) धारण किया हुआ, मनाला हुआ 10 तुला हुआ दे० ऊपर 'यु'। सम०—आत्मन् (वि०) पुष्क मन बाका, म्बिर, शान्त, स्वभावचिन्—बंठ (वि०) 1 दण्ड देने वाला 2 वह जिसको दण्ड दिया जाता है—बट (वि०) कपड़े से उका हुआ—राजम् (वि०) (रेशा भादि) अच्छे राजा द्वारा प्राप्तित,—राज्यः विचित्र वीर्य की विषया पत्नी से उत्पन्न व्यास का अष्टपुत्र (अष्ट पुत्र होने के कारण घृतराष्ट्र राज्य का अधिकारी था, परन्तु अन्धास होने के कारण उसने प्रभु-सत्ता पाहु की सोप दी। जिस समय पाण्डु बानप्रस्थ लेकर जंगल की ओर गया, तो राज्य की बागडोर फिर घृतराष्ट्र ने स्वयं सभाल ली, और अपने अष्ट पुत्र दुर्वाचन को युवराज बनाया। जब युद्ध में भीम ने दुर्वाचन का काम समाप्त कर दिया तो घृतराष्ट्र को बदला लेने की इच्छा हुई, फलत उसने युधिष्ठिर और भीम को आलिंगन करना चाहा। श्रीकृष्ण उसकी इस बात को तुरन्त ताग गये, उन्हें विवश हो गया कि घृतराष्ट्र ने भीम को अपना शिकार समझ लिया है। इस लिए श्रीकृष्ण ने लोहे की एक भीम की मूर्ति बनवाई। जिस समय घृतराष्ट्र भीम का आलिंगन करने के लिए आये बड़ा तो श्रीकृष्ण ने भीम की लोहेमूर्ति आये करावा दी जिसको कि बदला लेने के प्रबल इच्छुक घृतराष्ट्र ने इस प्रकार इतना बल लगा कर दबाया कि वह लोह मूर्ति टुकड़े २ हो गई। इस प्रकार असफल प्रयत्न ही घृतराष्ट्र अपनी पत्नी गांधारी समेत हिमालय पर्वत की ओर चला गया जहाँ कुछ वर्षों के पश्चात् वह स्वयं विचार गया),—बध्मन् (वि०) कवच पहने हुए, कवचित।

भृतिः (स्त्री०) [भृ + क्तिन्] 1 रक्षा, पकड़ना, हस्तगत करना 2 रक्षना, अधिकृत करना 3 स्थापित रखना, सहाय देना 4 बुझना, स्थिरता, स्वयं 5 धर्म, स्फूर्ति, बुद्धमकल्प, साहस, आत्म-सयम—भज धृति त्यज भोजिमसेतुकाम्—नै० ४।१०४, वि० ६।११, रघु० ८।६६ 6 सन्तोष, भृति, मुक्त, प्रमत्तता, क्षुधी, हर्ष भृतेष्व—धीर सद्गोर्ध्ववत् स—रघु० ३।१०, १६।८२, ऋधुर्वध्नाति न धृतिम्—किष्कि० २।८, शि० ७।१० १४७ साहित्यशास्त्र में वर्णित ३३ व्यभिचारीजाको में 'सन्तोष' की गिनती की गई है—आना-भीष्टागमार्थेस्तु सपुण्येषुहताभृति, साहित्यबचनोल्लास सहास प्रतिभादिक्त—सा० ३० ११८, १६८ 8 यज्ञ।

भृतिम् (वि०) [भृति + मत्तु] 1 पक्का, स्थिर, बुद्ध,

भविष्य 2 संतुष्ट, प्रसन्न, प्रहृष्ट, तुष्य—रघु० १३।७७।

भृत्स्व (पुं०) [भृ + क्त्विन्] 1. विष्णु का विशेषण, 2. ब्रह्मा की उपाधि 3. सद्गुण, नैतिकता 4. भाकाश 5 समुद्र 6 चतुर व्यक्तित्व।

भृत् 1 (स्त्री० पर०) ध्वंति, ध्वित 1. एकच होना, सहत होना, चोट पहुचाना, क्षति पहुचाना, ii (स्त्री० पर०) भृत्ता० उन्न० ध्वंति, ध्वंयति-ने)। माराड करना, चोट पहुचाना, क्षति पहुचाना 2 अपमानित करना, ध्वंयता से हीन व्यवहार करना 3 बाधा बोलना, पीतना, परामृत् करना, विषय प्राप्त करना, मृत् करना 4 आक्रमण करने का साहस करना, सत्कारणा, ध्वनीती देना 5. (किती स्त्री के साथ) बलाकार करना, सतीत्य हरण करना, iii (स्त्री० पर०) ध्वंतीति, ध्वत् 1. धिक्कर या साहसी होना 2 विरहस्त होना 3 बमबी होना, उन्नत होना, 4 डीठ होना, उतावला होना 5 साहस करना, निरर होना (न्युन्नत के साथ) 6. सत्कारणा, ध्वनीती देना—भृत् १४।१०२ 7 (पुं०) भा०—ध्वंयते) हयला करना, आक्रमण करना, बलाकार करना।

भृत् (वि०) [भृ + क्त] 1 धिक्कर, साहसी, विरहस्त, 2 डीठ, अक्वड, निर्लेख, उच्छसल, अधिनीत—धृत् पावर्षे बसति—हि० २।२६ 3 प्रगल्भ, हुआहसी 4 दुश्चरित्र, लुब्धा,—धृत् विरहसहायक पति या प्रेमी—कृतागा अधि निःसङ्कलजितोऽधि न लजितः, धृत्तोयोऽधि निष्पापाक् कथितो धृत्त-नायकः। सा० ६० ७२। सम०—धृत्तः दुश्चर या पुत्र और शीघरी का भाई (धृत्तधृत्त और उसका पिता दुश्चर दोनों महाभारत के युद्ध में पांडवों की ओर से लड़े। धृत्तधृत्त ने कई दिन तक पांडवों की सेना के मुख्य सेनापतिर का पर सभाला। जब शीघर ने और सचर्ष के पश्चात् दुश्चर को मार डाला, तो धृत्तधृत्त ने प्रतिभा की कि मैं अपने पिता की मृत्यु का बदला लूंगा। आशिर युद्ध के सोलहवें दिन प्राप्त काल धृत्तधृत्त की अपनी प्रतिभा पूरा करने का वृत्तसर मिला जब कि उसने अत्याप्युर्षक शीघर का निर काट डाला, दे० शीघर। उसके पश्चात् एक दिन वह पाण्डवसिधिर में तो रहा बा कि अनामक अशक्त्यामा ने आ बचाया और मौत के घाट उतार दिया गया)।

भृत्त्वम् (वि०) [भृत् + मत्ति] 1 साहसी, विरहस्त 2 डीठ, निर्लेख।

भृत्विः [भृत् + वि] प्रकाश की किरण।

भृत्वि (वि०) [भृत् + क्त] 1 धिक्कर, विरहस्त, साहसी, बहादुर, सत्कारणी (अच्छे वर्ण में) 2 निर्लेख, डीठ।

बे (म्भा० पर० धपति, धीत—प्रेर० धापयति, इच्छा० धिल्यति) 1 चूतना, पीना, घूट भरना, निगड जाना (आल० भी) अयाइसायासोक्च हयिर बनवासि-नाम् अट्टि० १५१२९, ६१८, देना० ४५५९, याज० ११२४० 2 घूमना—धर्मयो धवत्ताननम्—गीत० १२ 3 घूस लेना, लीच लेना, ले लेता ।

धेनः [धे+नम्] 1 समूह 2 नद, धेनुः (स्त्री०) [धपति सुवान्, धीयते वन्मर्धा—धे+तु इच्छ् वा०] गाय, दुधार गाय—धेनु धीरा सुनुता वाचमाहु - उत्तर० ५१३१ 2 किसानों जाति की स्त्री (इस अर्थ में किसी भी पुरुषवाचक नाम के आगे लग कर इसे स्त्रीवाचक शब्द बना देता है यथा लक्ष्मणेनु, ब्रह्मधेनु आदि 3, पृथ्वी (उ० वार मयाम के अन्त में लग कर इससे अलयावाचा शब्द बनता है, जैसे कर्मिधेनु, लक्ष्मणेनु) ।

धेनुक [धेनु+कन्] एक गजसत का नाम जिसकी बलराम ने मार गिराया था । सम०--६३४ बलराम का विशेषण ।

धेनुका [धेनुक+टाप्] 1 हथिनी 2 दूध देने वाली गाय ।

धेनुध्या [धेनु+धन्, युक्] बहु गाय जिनका दूध बंधक रूप में सुरक्षित हो ।

धेनुकम् [धेनु+ठक्] 1 गौधी का समूह 2 रजिबध ।

धेयम् [धेय+व्यञ्] दुकान, टिकाऊपन, सामर्थ्य, रोमांचन, स्थिरता, स्वाधिया, धीरज, माहुर—धेयवदत्तम्—पद्य० १, विपदि धेयम्—अर्थ० २१६३, इमी प्रकार 'धेयंभूति' शि० १५५९ 2 शान्ति, रचम्यता 3 गुरुवाचकण्य शक्ति, सहिष्णुता 4 अनम्यता 5 हिम्मत, दिलेरी मेघ० ४० ।

धेयतः [धेयम्+अण् वृषो० मस्य बलम्] भारतीय मरगम स्वप्नाम के सात स्वरों में छठा स्वर ।

धेयव्यम् [धेयत्+व्यञ्] चतुर्गर्ह ।

धेय = दुष्ट ।

धोर् (म्भा० पर० धोरति) 1 जल्दी जाना, अच्छे कदम रखना, बीबना, तुल्की चलना 2 कुशल होना ।

धोरव्यम् [धोर्+व्युट्] 1 (घोडा, हाथी आदि) वाहन, सवारो 2 जल्दी जाना 3 घोड़े की तुल्की चाल ।

धोरणि, धी (स्त्री०) [धोर्+अनि, धोरणि+ङीप्] 1, ब्रह्मवर्षिष्ठम् श्रेणी या नैरनयं यैर्माकन्दयने मनोहायकते सद्य स्वल्पमाधुरीधाराधोरणिधौतधामति बराधौकालमाकम्भ्यते, सेवा नित्यविनोदिना मुकुटिना माध्वीकपालान् पुन काकः किं न करोति कतकि यदम्ब धामि केकिस्वकी—उज्जट, परम्परा ।

धोरितम् [धोर्+इत्] 1 क्षति पहुँचाना, घोट पहुँचाना, प्रहार करना, 2 गमन, गति 3 घोड़े की तुल्की चाल ।

धौत (यू० क० हू०) [धाप्+क्त] 1 धोया हुआ,

बहाया गया, साफ किया गया, पवित्र किया गया, प्रशालन किया गया—कुस्वाभ्योभि एबलचपले गान्धिनी धौतमूला—शं० ११५५, घाडा० ५८, कु० ११६, ६१५७, रघु० १६१९, १९११० 2 चमकाया हुआ, उजला किया हुआ 3 उजला, सफेद, चमकदार, चमकीला, चमकमाना हुआ,—हर्गारिश्चण्डिका-धौतहर्म्या—मेघ० ७१४४, विक्रमदत्ताधौताधौतार्थम्—गीत० १२,—तम् बाँदो, मय० कट मोटे कपड़े का थंका,—कोबजम्—कोबेधम् घुली हुई रेगान,—शिल्पम् स्फटिक ।

धौम् [धुञ्+अण्] 1 भ्रमण 2 (विशेष रूप में नैवार किया गया) भ्रमण वनाम के लिए स्थान ।

धौरितकम् [धौरित्+अण्+कन्] घोड़े की तुल्की चाल ।

धोरैय (वि०) (स्त्री०—याँ) [धुर् वहति इक्] घोडा के जाने के बोध,—य 1 घोडा होने का पशु 2 पाहा ।

धौतकम्, धौतस्वम् [धनस्य भाव कर्म वा—धुने+कृञ्, ठञ्, ण्यञ्, वा] जालसाजी, बेईमानी, बदमाशी ।

ध्मा (म्भा० पर० धमति, ध्मात, प्रेर० ध्मायति) 1 फूक मारना, श्वास बाहर निकालना, निश्वासन 2 (हवा के उपकरण की भाँति) धौकना, फूक मार कर बजाना—शब्द धर्मो प्रनापयान् अग० ११२०, १८, रघु० ७६२, अट्टि० २१२४, १७७३ 3 आग को फूकना, फूक मारकर आग को उठाना करना, चिचारादि उठाना—को धमेच्छात च धावकम् महा० 4 फूक द्वारा निर्माण करना 5 फेकना, फेंक से उठाना, फेंक देना, आ—, 1 हवा मरना, फुलना 2 फूक मारना या हवा में भरना, (शब्द आदि को), उण्—, फूक मारकर तेज करना, पक्का करना—नामि धुमेनोपधमन् मनु० ४५३ निम्, फूक मारकर बाहर निकालना, प्र—, (शब्द आदि) बजाना—गह्वी प्रदध्नुम्—अग० ११४४, वि—, बलेरना तिनर वितर करना, नष्ट करना ।

ध्माकार [ध्मा+ह्+अण्] झुहार, झोका ।

ध्माक्ष. अने० पा०—व्याक्ष ।

ध्मात् (यू० क० हू०) [ध्मा+क्त] 1 (वायुवायव्य की भाँति) बजाया हुआ, पला किया हुआ, भड़काया हुआ 2 हवा भर हुआ, फूला हुआ, फुलाया हुआ ।

ध्मात् (वि०) [ध्ये+क्त] सोचा हुआ, विचार किया हुआ दे० ध्ये ।

ध्मानत् [ध्ये+व्युट्] 1 मनन, विचार, चिन्तन ज्ञानाद् व्यान विधिपद्ये-विम० १२१२, मनु० ११ १२, ६१७२ 2 विशेष रूप से सुकमचितन, धार्मिक मनन—तदैव ध्यानादबगतोऽग्निम्—शं० ७, रघु० १।

७३ 3. दिव्य अन्तर्ज्ञान या अन्तर्विबेक 4 किसी देवता की अविनाशित उपाचरियों का मानसिक चिन्तन—इति ध्यानम् । सम०—गम्य (वि०) केवल मनन द्वारा प्राप्य,—तत्पर,—निष्ठ पर (वि०) विचारों में सोया हुआ, मनन में सोय, विष्णुयोग,—स्व (वि०) मनन में सोय, विचारों में सोया हुआ ।
ध्यानिक (वि०) [ध्यान+ठक्] सूक्ष्म मनन और पवित्र चिन्तन के द्वारा अनुसहित या प्राप्त ।

ध्याय (वि०) [ध्ये+भक्] अव्यच्छ, मैला, काला, मलिन—भट्टि० ८।७१,—सम् एक प्रकार का धास ।

ध्यायन् (पु०) [ध्ये+यानिन्] माप, प्रकाश (न्यु०) मनन ('ध्यायन्' कम शब्द) ।

ध्या (म्) पर० ध्यायति, ध्यान, इच्छा० दिव्यासृति, कर्मवा० ध्यायते) सोचना, मनन करना, विचार करना, चिन्तन करना, विचार विमर्श करना, कल्पना करना, याद करना—ध्यायनो विषयान् पुन सगस्तेषुप-जायते—भग० २।६३, न ध्यात पदमोश्वरस्य—अनु० ३।११, विन्तु ध्यायन् मन० ३।२२४, ध्यायन्ति चान्य धिया—पद्य० १।१३६, मेध० ३, मनु० ५।४७, ९।२१, अनु० १, 1 सोचना, ध्यान लगाना 2 याद करना 3 मंगलकामना करना, आशीर्वाद देना, अनुग्रह करना, रघु० १५।६, १७।३६, अथ—, बृग सोचना, मन से शाप देना, अत्रि—, 1 कामना करना, इच्छा करना, सालक करना—याज्ञ० ३।१३४ 2 सोचना अब—, अश्वहेलना करना, निष् सोचना, मनन करना, वि—, 1 सोचना, मनन करना, याद करना—भट्टि० १।४।६ 2 गहन मनन करना, टकटकी लगाकर देवना—अपुलोकिक निध्यायन्ती—मानवि० १, वि० ८।६९, १२।४, कि० १०।४६ ।

प्रधि [धाद्+इन्] फल चुनना ।

ध्रुव (वि०) [ध्रु+क] (क) स्थिर, दृढ़, अचल, स्थावर, स्थायी, अटल, अपरिवर्तनीय—इति ध्रुवेच्छामनुयायिनी सुताम्—कु० ५।५, (ख) शाश्वत, सदैव रहने वाला, नित्य—ध्रुवैव भर्मा—कु० ७।८५, मनु० ७।२०८ 2 स्थिर (ज्योतिष में) 3 निश्चित, अपूर्व, अनिर्वायं—जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुव जन्म मृतस्य च—अथ० २।२७ यो ध्रुवाणि पश्यत्यज्य अर्धुवाणि निषेवते—चाण० ६३ 4 मेधावी, धारणशील—अज्ञा कि 'ध्रुवा स्मृति' में 5 मजबूत, स्थिर, (दिन की भांति) निश्चित,—च 1 ध्रुव तारा, रघु० १७।३५, १८।२४, कु० ७।८५ 2 किसी बड़े वृत्त के दोनों विन्दु 3 नाक्षत्र राशिचक्र के आरंभ में यह की दूरी, ध्रुवीय देशांतर रेखा 4 अटवत् 5 स्थाय, सुटा 6 (कटे हुए वृक्ष का) तारा 7 गीत का आरंभिक पाद, टेक (समवेत गान की भांति दोहराया

गया दे० गीत०) 8 समय, काक, युग 9 ब्रह्मा का विशेषण, 10 विष्णु और 11 शिव की उपाधि 12 उत्तानपाद के पुत्र और मनु के पौत्र का नाम [ध्रुव उतर दिया में स्थित एक क्षात्र है, परन्तु पुराणों में उत्तानपाद के पुत्र के रूप में इसका वर्णन उपलब्ध है । सामान्य मर्त्य का ध्रुव तारे के उच्च पद को प्राप्त करने का वर्णन इस प्रकार है—उत्तानपाद के मुखवि और मुनीति नाम की दो पत्नियों थी, मुखवि के पुत्र का नाम उत्तान था, तथा ध्रुव का जन्म मुनीति से हुआ था । एक दिन ध्रुव ने अपने बड़े भाई उत्तान की भांति पिता की गोद में बैठना चाहा, परन्तु उसे राजा और मुखवि दोनों ने विरुद्ध दिया । 1 ध्रुव सुबकता हुआ अपनी माता मुनीति के पास गया, उसने बच्चे की सात्वता दी और सम्भाषा, कि सपति और सम्मान कठोर परिश्रम के बिना नहीं मिलते । इन बचनो की सुन कर ध्रुव ने अपने पिता के घर की छोड़ कर जगल की राह की । यद्यपि वह जमी बच्चाही था, तो भी उसने घोर तपस्या की जिसके फल-स्वरूप विष्णु ने उसको ध्रुव तारे का पद प्रदान किया),—बम् 1 आकाश, अन्तरिक्ष 2 स्वर्ग,—बा 1 (लकड़ो का बना) यज्ञ का ध्रुवा 2 साधु की स्त्री,—बम् (अर्थ०) अव्यय, निश्चित रूप से, यकीन —रघु० ८।४९, शं० १।१८। सम०—अक्षर- विष्णु की उपाधि,—आवर्तः तिर पर रखे मुकुट का वह स्थान जहाँ से बाल चमकते हैं,—तारकम्,—तारा ध्रुव तारा ।

ध्रुवक [ध्रुव+कन्] 1 गीत का आरंभिक पद (जो समवेत गान की भांति दोहराया जाय, टेक 2 तना, भूत 3 स्फुण्ड ।

ध्रुव्यम् [ध्रुव+ध्याञ्] 1 स्थिरता, दृढ़ता, स्थावरता 2 अवधि 3 निरन्धय ।

ध्रुव्य (म्) आ० ध्रुवसे, ध्रुवसे) 1 नीचे गिरना, गिर कर टुकड़े २ होना, चूर २ हो जाना—भट्टि० १५। १३, १५।५५ 2 गिरना, डूबना, हलाश होना - भा० ९।४४ 3 नष्ट होना, बर्बाद होना 4 इतल होना—मुद्रा० ३।८, प्रेर०—नष्ट करना, प्र—, नष्ट होना, मिट जाना, वि—, 1 गिरकर टुकड़ २ होना 2 तितर-बितर हो जाना, विचर जाना 3 नष्ट होना, मिट जाना बर्बाद होना ।

ध्रुवत, ध्रुवतम् [ध्रुव्+धञ्, ह्युट् वा] 1 नीचे गिर जाना, डूबना, गिर कर टुकड़े २ हो जाना 2 हासि, नाश, बर्बादी,—सी सूर्य की किरण में धूमिकण ।

ध्रुवतिः [ध्रुव्+इन्] मुहूर्त का शतौष ।

ध्रुवज् [ध्रुव्+ज्] 1 ध्रुव, इच्छा, पताका, वैजयन्ती, रघु० ७।४०, १७।३२, पद्य० १।२६ 2 पूज्य वा

प्रमुख व्यक्ति, ज्ञाता या भूषण (समाप्त के अन्त में) जैसा कि 'कुलध्वज' (कुल का भूषण या पूज्य व्यक्ति) में 3 वह बात जिसमें अष्टा लहराता है, 4 चिह्न, निधान, लक्षण, प्रतीक—युग्म, मक—आदि 5 देवता की उपाधि 6 पथिकाश्रम का चिह्न 7 श्ययाय का चिह्न—श्वनशाय लक्षण 8 जननेन्द्रिय (किसी जानवर की, चाहे नर हो या मादा) 9 कलाल 10 किमी वस्तु से पूर्व की ओर स्थित घर 11 घनद 12 पाखंड, (ध्वजीकृ शब्दा लहराना, आल० बहाने के रूप में प्रयुक्त करना) । सम०—अशुकम्—घट, —पटम् शब्दा—रघु० १२।८५, —आशुत (वि०) यद्भूमि में पकड़े हुए, —पूम् वह कमरा जहाँ सड़े रने वे आते हैं, —दुम ताड़ का वृक्ष, —ग्रहण वायु, हवा, —ग्रहम् शब्दा लडा करने की कूटवृत्ति, —पथिक (स्त्री०) सड़े का डडा या वास सम० १२।८५ ।

ध्वजवत् (वि०) [ध्वज + मनुप् + मस्य व] 1 शब्दों से बना हुआ 2 चिह्न से युक्त 3 अपराधी के लक्षण से मुक्त, दागी, (पु०) 1 शब्दा-वाहक 2 मद्य विक्रेता, कलाल ।

ध्वजिन् (वि०) (स्त्री० नौ) [ध्वज + इति] 1 अष्टा-बरदार, अष्टा के जाने वाला 2 चिह्नपारी 3 मुरा-पाय के चिह्न वाला—मनु० ११।१३, (पु०) 1 पताका वाहक 2 कलाल, मद्य विक्रेता—याज्ञ० १।१४१ 3 गाड़ी, जकट, रथ 4 पहलू 5 साप 6 मोर 7 घोडा 8 बाहाण, —नी सेना—रघु० ७।४०, शि० १२।६६, कि० १३।९ ।

ध्वजीकरणम् [ध्वज + ध्वि + कृ + ल्यट्] 1 शब्दोत्तोलन, शब्दों को फहराना 2 दावा स्थापित करना, किसी बात को हेतु बनाने वाला ।

ध्वज् (म्बा० पर०) ध्वजति, ध्वजित) ध्वज करना, ध्वजित वेदा करना, गुनगुनाता, भिन्नभिन्नाता, गूजना, प्रति-ध्वजित करना, गरजना, दहाना—विभिन्नमाना इव दधनुदिश—कि० १।४६, अथ धीर धीर ध्वजति नवनीलो जलधर—भाषि० १।६०, करिदध्वान मेघ-वत्—भट्टि० १।५, १।१३, ध्वजति मधुपनमूहं श्वण-मशिशयानि—गीत० ५, प्रे०—ध्वनयति, शब्द करवाना, (घटो की भांति) बजवाना, परन्तु 'ध्वानयति' अल्पष्ट उच्चारण करवाना ।

ध्वज्, [ध्वज् + अप्] 1 शब्द, स्वर 2 भिन्नभिन्नाता, गुनगुनाता ।

ध्वजवन्तम् [ध्वज् + ल्यट्] 1 ध्वजि निकाशना 2 मकेत करना, मुहाव्रत बना, या (अर्थ) लगाना 3 (सा० शा० में) ध्वजना गकित, शब्द या वाक्य की वह शक्ति जिसके कारण यह मूल्याय में भिन्न किसी और ही अर्थ को प्रयट करे, मुहाव्रत-गकित—नु० 'अजन' भी ।

ध्वजि, [ध्वज् ; इ] 1 शब्द, प्रतिध्वजि, कोलाहल या शोर—मृदङ्गपौर ध्वजिमन्वाक्यान्—रघु० १६।१३, २।७२, उत्तर १ ६।७ 2 उद्य, नाद, स्वर शि० ६।८८ 3 वाद्ययन्त्र की ध्वजि रघु० १।७१ 4 वाद्ययन्त्र या गद्यगद्यहाट 5 केवल श्विनध्वजि 6 शब्द 7. (सा० शा० में) काव्य के तीन मूय्य भेदों में से सर्वोत्तम काव्य जिसमें कि सदरम का ध्वन्यर्थ, अभिहित अर्थ की अपेक्षा अधिक चमत्कारक हो, या जहाँ मूकधार्य, ध्वन्यर्थ के अर्थों ही इरमूयममतिशयिनि व्ययमे वाच्याद्भवनिर्वर्गे स्थित—काव्य० १, (रम-सगाधर में ध्वजि के पाँच भेद बताये गये हैं, दे० 'ध्वजि' के नीचे) । सम० प्रह 1. काल 2. प्रवण, या श्रुति 3 श्वणोन्द्रिय—नाम्ना 1 एक प्रकार का विद्युत् 2 वायुरी 3 मूर्खी वशी—विकारः भय या शोक के कारण वाणी का विकार दे० वाकु ।

ध्वजित (भू० क० कृ०) [ध्वज् + क्त] 1 निनादित 2 निहित, ध्वजित, मकेतित,—तम् 1 शब्द 2 बादल की गरज या गद्यगद्यहाट—कि० ५।१२ ।

ध्वजिति (स्त्री०) [ध्वज् + क्त] नाद, बर्बादी ।

ध्वजि [ध्वज् + अच्] 1 काञ्जा (कमी-कमी 'निगम्कार' प्रकट करने के लिए समाय के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है उदा० दीर्घध्वाश) 2 मिथुक 3 डीठ ध्वजि 4 मूर्खी, मारम । सम०—अरति उल्कृ, —पुष्ट कायक ।

ध्वज्, [ध्वज् + अच्] 1 शब्द 2 गुनगुनाता, भिन्न-भिन्नाता, बुडबुडाना ।

ध्वजस्तम् [ध्वज् + स्तम्] अघकार—ध्वजस्त नीलजिबोलकाश मुदुना प्ररङ्गमालिङ्गति—गीत० ११, नै० १९।४२, शि० ४।१२ । सम०—उज्जेष, —वित्त युगन्, —घाघष 1 मूयं 2 चोर 3 आग 4 श्वेनवर्ष ।

ध्व (म्बा० पर०)—ध्वरति) 1 मुकाना 2 हया करना ।

न (वि०) [नह्, (नञ्) + ह] 1 पतला, फाल्गु 2. लावी, रिक्त 3 बही, समक्य 4 अविनक्त, —न 1 मोती, 2. मोष्या का नाम, 3 दौलत, सम्पन्नता 4 मडल, 5. गड्ढा—(अथ०) (क) निवेद्यात्मक अन्वय, 'नही' 'न तो' 'न का मतानार्थक, छोड़ लकार में प्रति-वेद्यार्थक न होकर, आज्ञा, प्रार्थना या कामना के लिए प्रयुक्त, (ख) विधिलिङ की विभा के साथ प्रयुक्त किये जाने पर कई बार इसका अर्थ होता है—'ऐसा न हो कि' इस डर से कि 'कहीं ऐसा न हो'—अतिपर्यायिने वास्तु नार्तकशब्दो मवेदिति—रामा० (ग) लक्ष्मण लसो में 'न' शब्द 'इतिचेत्' के पश्चात् रक्ता जाता है और इसका अर्थ होता है 'ऐसा नहीं' (घ) जब भिन्न-भिन्न वाक्यों में या एक ही वाक्य के क्रमबद्ध वाक्यशब्दों में निवेद्य की पुनरावृत्ति करती होती है तो केवल 'न' की आवृत्ति की जा सकती है, अथवा उच, च, अंगि, चापि और वा आदि अन्वयो के साथ 'न' को रक्ता जा सकता है—नाभीवीतापच-माकडो न वृक्ष न च हस्तिनम्, न नाव न खर नोष्टु नैंगिनस्यो न क्षान्तः । मनु० ४।१२०, प्रविशन्त न मा कश्चिदप्यपन्नाप्यवारयत्—महा०, मनु० २।१९५, ३।८. ९, ४।१५, म० ६।१७, कई बार 'न' द्वितीय तथा अन्य वाक्यशब्दों में न रक्ता जाकर केवल च, वा, अपिवा से स्थानापत्ति करता है—सर्वदि द्युत् न ह्यो विधि विधादा रणे च धीरत्वम्—हि० १।३३, (इ) किसी उक्ति पर बल देने के लिए बहुधा 'न' का एक और 'न' के साथ अथवा किसी अन्य निवेद्यात्मक अन्वय के साथ जोड़ दिया जाता है—अस्पृशान नृपुगिर्न नस्त्वन्स्त्वा न वेधि पुरुष पुरातनम्—रघु० १।१८५, न च न चरिगिर्न न चाप्यगम्य—मालवि० १।११, न पुनरनाररंधिय न पुप्यति—शं० १, नादठया नाम राजास्मि—मनु० ८।३३५, मेघ० ६३, १०५, नामो, न कामनो न च वेद सम्यग् द्रष्टु न सा रघु० ६।३०, गि० १।५५, विक्रम० २।१०, (च) कुछ शब्दों में नञ्, तत्पुरुष के अपरम्भ में 'न' को ऐसा का ऐसा ही रख लिया जाता है यथा नाक, नामस्य, नकुल, आदि पा० ६।३।७५, (छ) 'न' को बहुधा द्वन्द्व अन्वया के साथ भी जोड़ दिया जाता है—नच, नवा, नैव, ननु, नचेत्, नकल आदि । सम०—असतो (पु० टि० ६०) अधिपती कुमार, देवों के वैद्यगुरुक.—एक (वि०) 'एक नहीं' अर्थात् एक से अधिक, कुठ, कर्त, आत्मन् (वि०) विविध भाग न का विभिन्न प्रकृति का, 'चर (वि०) 'न रहने वाला' यवचारी, महात्तारी, समाज में रहने वाला, सामाजिक 'भेद, 'क्य (वि०) विविध प्रकार का,

नामा प्रकार के रूपों का 'नञ्' (अथ०) बार २, बहुधा,—किञ्चन (वि०)—अत्यंत गरीब, निजारी के समान ।

नकुलम् [कुट् + क, न शब्देन समासः] नाक, नासिका ।

नकुलः [नासि कुल यस्य, नञो न लोप प्रकृतिभावात्] नेवला, आलेटी नकुल—यद्य नकुलश्रेयी मकुलश्रेयी पुन पिपुन—वास० २. चौथा पाण्डव राजकुमार—अह तस्य अतिप्रकृतिविश्वरूपिणो नकुलस्य दर्शन-मोक्षुका जाता—मेघी० २, (बही) नकुल का प्रथम अर्थ है, परन्तु दुर्वाचन में दूसरा अर्थ ग्रहण किया ।

नस्तक [नञ् + क्त] 1 रात 2 केवल राति के समय मात्रा, एक प्रकार का धार्मिक व्रत या तपश्चर्या । सम०—अथ (वि०) राध्व्य, जिते रात में दिखाई नहीं देता,—चर्या रात को भूमना,—चारिन् (पु०) 1. उल्लू 2 बिलाव 3 चोर 4 राक्षस, पिशाच, नृत प्रेत,—भोजनम् रात का भोजन, व्याज,—मासः एक वृक्ष का नाम—रघु० ५।५२,—मुला सध्या, साप-कृतम्—कृतम् 1 दिन भर खल रहना तथा रात को भोजन करना 2 कोई भी साधना या धार्मिक व्रत जो रात में किया जाय ।

नस्तम् (अथ०) रात के समय, रात को गच्छन्तीना रमणसति योगिता तत्र नस्तम्—मेघ० ३७, मनु० ६।१९ । मम०—चरः रात को भूमने वाला प्राणी 2 चोर,—चारिन् (पु०)—नस्तचारिन्,—दिनम् रात दिन,—दिनम्—दिनम् (अत्य०) रात और दिन ।

नस्तक [नक्त + क + क] गया, मैला कल घुराना कपडा मक्क [न फामतीति न + कृम् + क, राजे न लोप] यहियाल, मगरमच्छ, नक्ष स्वन्ध्यागमासाद्य गवेन्द्रमपि कर्पति—पच० ३।४६ रच० ७।३०, १६।५५,—कम् 1 दरवाजे की नीलट की ऊपर की लकड़ी २. नाक,—का 1 नाक, 2 भविष्यो या भिदो का छला ।

नक्षत्रम् [नञ् + अत्रन्] 1 तारा 2 तारक पुत्र, चन्द्रपथ में ताराबली, नक्षत्र—नक्षत्रताराग्रहसकुलापि—रघु० ६।२२ । सम०—ईशः,—ईश्वरः,—नाथः,—परम्—पति.—राजः चन्द्रमा,—रघु० ६।६६, चक्रम् 1 स्थिर तारा-मंडल २ नक्षत्रों का समूह,—इशो ज्योतिषत्, ज्योतिषी,—नेसिः 1 चन्द्रमा २ ध्रुवतारा ३ विष्णु की उपाधि (वि.—म्होः) अन्तिम नक्षत्र, सेनी,—पथ आकाश जिसमें तारे जिले हो,—पाठक ज्योतिषी,—शाला 1 तारापुत्र २ ७७ मीनियों की माला ३ चन्द्रपथ में तारामंडल ४ हाथियों के बन्ध का आभूषण—अनङ्कारण विगोत्रजनमालागमनेन मेवलाशान्ता—का० ११,—पीः चन्द्रमा न नक्षत्रों से मिलन,—बन्धेन् (पु०) आकाश,—विद्या गणित,

उद्योगिय - वृष्टि (स्त्री०) टूटने वाले तारे, - सुखकः
अयोग्य उद्योगियी-लिधुय्यति न जानति धराया
नीच साधनम्, परवाचयेन बतते ते वै नक्षत्रसूचका ।
या-अविदिग्धैव य दास्य देवस्यैव प्रपद्यते, स
पत्न्य-सूचक पापों जेयो नक्षत्रसूचक, बराह०
२।१७, १८ ।

नक्षत्रिन् (पु०) [नक्षत्र+इति] 1 चन्द्रमा 2 विष्णु
का विशेषण ।

नक्षः, नक्षम् [नक्ष + ष, हुकारस्यलोप] हाथ या पैर की
अंगुली का नामून, पत्रा, नखर-नखाना पाण्डित्य
प्रकटयतु कस्मिन्मृगपति-भासि० १।२, ३१, १२।
१२ 2 बीन की सख्या, -ह भाग, अश। सम०
-अक्षु-खरोच, नखचिह्न-भासि० २।३२, -३, ३।
खरोच, नख ड्राग किया गया प्राव-मा० ५।२२,
-आयुष 1 व्याघ्र 2 सिंह 3 मृगा, भासिन्
(पु०) उल्लू, -कुट्ट नाई, -बाह्य नखून की जड़
-वारुष बाइ, श्यन (गम्) नखुनी, नाखून काटने
की कैंची निकृन्तवम्-रजनी नाखून काटने की
कैंची, नखरना, -पदम्, -व्रण नखचिह्न, खरोच, नख-
पदसुखान् प्राप्य वर्षाद्यवित्-मेघ० ३५, -सूच-धनुय
-सैन्धा 1 नखचिह्न, 2 नाखून रगता, -विष्किर
(अपने पत्रों में काटने वाला) सिकारी पक्षी, -ग्रह
छोटा शल ।

नक्षत्रम् (वि०) [नख + पञ्च + लप्, मुम्] नाखून झू-
साने वाला, शि० १।८५ ।

नखर, -रम् [नख + रा + क] अंगुली का नामून, पत्रा,
नख । सम० आयुष 1 व्याघ्र 2 सिंह 3 मृगा
-आह्व करवीर ।

नखापत्नि (अभ्य०) [नखैश्च नखैश्च प्रहाय प्रवृत्त युद्धम्,
ब० सं०] परस्पर नखाघात द्वारा होने वाला युद्ध,
नाम्नों की लड़ाई ।

नाखिन् (वि०) [नख + इति] 1 बड़े 2 नाखूनो वाला,
तेज पत्रो वाला 2 कटीला, कटेदार (पु०) व्याघ्र
या शेर जैसा नखधारी जन्तु ।

नगः [न सञ्छति-न + नम् + ङ] 1 पहाड़-कु० १।
१७, ७२ शि० ६।७९ 2 वृक्ष 3 पौधा 4 सूर्य
5 सौर 6 सात की सख्या । सम०-अटन बंदर
-अधिप, -अधिराज, -इन्द्र 1 (पहाड़ो का
स्वामी) हिमालय पर्वत 2 सुमेरु पर्वत, -अरि इन्द्र
का विशेषण, -उच्छ्रय पहाड़ की ऊँचाई, -ओक्त्
(पु०) 1 पक्षी 2 कौता 3 सह्य 4 गरभ नाम का
काल्पनिक पक्षी, -ज (वि०) पहाड़ पर उतरान, पहाड़ी
-अट्टि० १०।९, (अ) हाथी, जा, -नखिनी पर्वतों
का विशेषण, -पति 1 हिमालय पहाड़ 2 (कनस्पतियों
का स्वामी) चन्द्रमा, -भिद् (पु०) 1 कुल्हाड़ा

2 इन्द्र का विशेषण, -धूर्धन् (पु०) पहाड़ की चोटी
-रुद्रश्च कान्तिकेय का विशेषण-रपु० ९।२ ।

नगरम् [नग इव प्रासादा सन्त्यत्र वा० र] कस्वा, गहर
(विप० प्राय)-नगरसमवाय मति न करोति-श०
२ । सम०-अधिकृत, -अधिप, -अभ्यक्ष नगर
का मुख्य दखतायक, मुख्य आगशाधिकारी 2 नगर
पाल, नगर का अधीक्षक, -उपना उपनगर नगर के
आसपास की बाबादी, -ओक्त् (पु०) नागरिक,
-काक 'गहरका' कौवा' एक निरस्कारयुक्त उक्ति
-घात हाथी, -जन् 1 नगर के लोग, नागर
2 नागरिक, -प्रवक्षिण जलम में मृत्ति को नग्न के
चारों ओर घुमाना, -प्रान्त उपनगर, -सार्ध प्रधान
सदक, राजपथ, -रक्षा नगर का अधीक्षण वा शासन,
-स्थ नगरवासी, नागरिक ।

नगरी [नगर + हीप्] -नगर, । सम०- काक सागर,
-बक कौवा ।

नग्न (वि०) [नत् + ष, तप्थ न] नगा, विवस्त्र, बस्त्र-
हीन-नग्न म्नायमाचरेत्-मनु० ४।४५, नग्न-
क्षपणके देशे गृहक कि कश्चिदिति-वाच० १।१०
2 बिना जोड़ा हुआ, बिना बसा, सुनमान-सः
1 नगा भिक्षु 2 क्षपणक 3 पातकी 4 सेना के साथ
रहने वाला भाट, घुमला हुआ भाट-न्ना 1 नगी०
निलंबज, (या स्वेच्छाचारिणी) स्त्री 2 रजस्रवा
होने के पूर्व की आयु वाली लड़की, दस आर्य सपें
की आयु से कम की (अधोत्तं जा इधर उधर नहीं
आ जा सके) । सम० अट, -अटक 1 जो इधर
उधर नगा घूम सके 2 विशेष रूप में (दिग्बर
सम्प्रदाय का) जैन या बौद्ध भिक्षु ।

नग्नक (वि०) (स्त्री-लिंगका) । नग्न + कन् । नगा,
विवस्त्र, क 1 नगा भिक्षु 2 दिग्बर सम्प्रदाय
का) जैन या बौद्ध भिक्षु 3 भाट ।

नग्नका, नग्निका [नग्नक + टाप्, पूर्व इत्वम्] 1 नगी,
निलंबज, (या स्वेच्छाचारिणी) स्त्री 2 रजोधर्म
होने से पूर्व की अवस्था की लड़की ।

नग्नकरणम् [अनग्न नग्न क्रियते-नग्न + षिञ् + कृ-
+ ष्यु, मुम्] नगा करना ।

नग्न भविष्णु, -भाक्त् (वि०) [नग्न + भू = इष्णुच्,
उवाञ्] नगा होने वाला ।

नग्न [न नाँ सञ्छति न + नम् + ङ] प्रेमी, आर ।

नखिकेतस्य (पु०) अग्नि का विशेषण ।

नखिर (वि०) [न खिरन्, न सञ्चेन समास] दे० अखिर,
भाग० ५।६, १२।७ ।

नञ् (अभ्य०) निषेधात्मक अभ्यय 'न' के लिए पारि-
भाषिक शब्द ।

नट । (भा० पर० नटति 'नोट पढ़वाने' के अर्थ में

'अ' के पश्चात् 'व' को 'ण' हो जाता है) 1 नाचना, यदि मनमा नटनीयम् गीत० ४ 2 अभिनय करना 3 (बोले से चालाकी से) क्षति पहुँचाना, प्रेर०—नाटयति-ते 1 अभिनय करना, हाव भाव व्यक्त करना, (नाटक में) नाटक के रूप में वर्णन करना, शरत्पान नाटयति-श० १ 2 अनुकरण करना, नकल करना—स्फटिककटकभूमिनाटयत्येष नील अविगतधबलिन्म नृकपायोरसिम्बधाम्—श० ४६५, (विशे० 'नचाना' अर्थ को प्रकट करने के लिए 'नट' धातु का 'नाटयति' रूप बनता है—भर्तृ० ३१२६), 11 (चूरा० उभ० नाटयति-ते 1 गिर पड़ना, गिरना 2 चमकना 3 क्षति पहुँचाना ।

नट [नट्+अच्] 1 नाचने वाला—न नटा न विटा न पायका—भर्तृ० ३१२७ 2 अभिनेता कुर्वन्त्य प्रहसन्त्य नट कुतोऽसि-भर्तृ० ३१२६, ११२, 3 पतिव्रत अश्वि का पुत्र 4 अशोक वृक्ष 5 एक प्रकार का नर कुल । सम०—अस्तिका लज्जा, ह्री, ईश्वरः शिव का विशेषण—अथ नाटक के पात्र का अभिनय, भूषण, —यज्ञस्य हस्ताल—रग नाट्य रवन्-बर्-प्रधान नट' सूत्रधार—सत्तकम् हस्ताल (क) अभिनेता, नट ।

नटम् [नट्+न्टुट्] 1 नाचना, नाच 2 अभिनय करना, हावभाव प्रकट करना, नाटकीय चित्रण ।

नदी [नट्+नीप्] 1 अभिनेत्री 2 मुख्य नदी (सूत्रधार की पत्नी) 3 शेषया, रङ्गी । सम०—भुत नदीकी का पुत्र ।

नटथा [नट्+य+टाप्] अभिनेताओं की मंडली ।

नट्,—**अच्** [नट्+अच्, लस्य डत्वम्] नरकुल का एक भेद । सम०—अगारम्, आगारम् नरकुलो का बना शोधना—श्राव (वि०) जहाँ नरकुल बहुत होने हो बनम् नरकुलो का जगल—सहस्रि. (स्त्री०) नरकुला का समूह ।

नटश्च (वि०) (स्त्री०-यो) [नट्+श] सरकड़ों से ढका हुआ ।

नटिनी [नट्+दिनि+डीप्] 1 सरकड़ों का डेर 1 सरकड़ों का बना हुआ मूँदा या शय्या, वह नदी जहाँ सरकड़ों के पीछे बहुतायत से हो ।

नटिल (वि०), **नटवत्** (वि०) (स्त्री०-सी) [नट्+इलच्, डवत्पु बा] सरकड़ें जहाँ पत्र बहुतायत से हो, या जो सरकड़ों से ढका हुआ हो, सरकड़ों से युक्त स्थान ।

नटथा [नट्+य+टाप्] सरकड़ों का डेर ।

नटवत् (वि०) [नट्+इलच्] सरकड़ों से ढाया—सम् सरकड़ों का डेर या शय्या, यो नटवत्मानो नट परेश बलायम्नान्निनामभवत्ता—रघु० १८५१

नत् (भू०क०क०) [नम्+क्त] झुका हुआ, प्रणत, झुकने वाला, रमाने वाला 2 दबा हुआ, अवसन्न 3 कुटिल, टेढ़ा—सम् वायोसार रेवा (मध्य दिन रेवा) से किसी बह की दूरी । सम०—अज्ञः शिरोविन्दु की दूरी—अथ (वि०) 1 झुके हुए शरीर—वाला 2 झुकने वाला 3 प्रणत (श्री) 1 झुके हुए अंगों वाली स्त्री 2 स्त्री—मास्तिक (वि०) चपटी ताले वाला, —शू टेटो भीड़ो वाली स्त्री ।

नति (स्त्री०) [नम्+क्तिन्] 1 झुकाव, झुकना, प्रणमन 2 चपला, कुटिलता 3 अविवादान करने के लिए शरीर का झुकाना, प्रणति, शालोभता 4 (ज्यो० में) भोगम में स्थानभ्रम ।

नट् (म्वा० पर० नदति, नदति) 1 शब्द करना, कलकल ध्वनि करना, (बाजल को गानि) घरजना—वायम्वाच नदति मधुर चातकस्ते सगय—मेघ० ९, नदत्याकाशवाया श्रोतान्मुहामदिगाये—रघु० १७७८, शि० ५१६१, अट्टि० २१४ 2 बोलना, चिल्लाना, पुकारना, दहाड़ना (प्राय शब्द, स्वन ग्राह कर्म के साथ) ननाद बलवन्नाद, शब्द घोरेतर नदति—महा० 3 बरषरता—प्रेर० नाटयति—ते 1 कौलाहल से भर देना, कौलाहलमय करना 2 शब्द करवाना, उच्—दहाड़ना, जोर से पुकारना, (बैल की भांति) गभना, कु० ११६, मि—, शब्द करना, चिल्लाना—रघु० ५१७५, मालवि० ५११०, अट्टि० ६११७, प्र (प्रणदति) ध्वनि करना, गूजना, प्रतिध्वनि करना—कम्पादा प्राणदन् घोरा महा० शिवा प्रणदति आदि प्रति—, गूजना, प्रतिध्वनि करना, श्रा०—कौलाहल से भरना, गुंजायमान करना—प्रेर० २१२६, अट्टि० ३११४, वि—, ध्वनि करना, गूजना—अय० ११२२, प्रेर०—कहन करवाना या गीत गवाता—अच्दौ शिविगयो विनाद्यते—पट० १० ।

नट् [नट्+अच्] 1 दरिया, बड़ी नदी (जैसी कि सिन्धु) शि० ६९, (यहाँ मलिक० की टिप्पण—श्राकसोसो नद्य प्रायस्कान्तो नदा नयदा विनेवाडु) 2 नदी, प्रवहणी, जाला—कि० ५१२७ 3 समुद्र । सम०—राज समुद्र ।

नटवत् [नट्+अवच्] 1 शोर, दहाड़ 2 बैल की दहाड़ ।

नदी [नट्+नीप्] दरिया, प्रवहणी, सरिता—रश्मिनीयला तपात्यये पुनरोधेन हि युयुते नदी—कु० ४१४४। सम०—ईश-ईश, क्षात् समुद्र, —कुलधियः एक प्रकार का नरकुल—अ (वि०) कलात्पन्न (अ) भीष्म का विशेषण (अम्) कमल—सरस्वामन् उत्तरने का स्थान, पाट—बौह-भाडा, उत्तराई, किराया, —अट्टः शिव का विशेषण, पति 1 समुद्र 2 बहल का विशेषण, —पूरः उमड़ा हुआ दरिया, —अवच्

नदीलक्षण, — बालुक (वि०) (देहा आदि) जहां नदी के घाटी से सिंचाई होती हो, सिंचित, नदी या नहर द्वारा सिंचाई पर जो निर्भर करता हो, न० ३३२८, तु० देवमालुक, — रघु नदी की धार, — बक नदी का मोड़, — क्व (वि०) (स्त) 1 नदी में स्नान करने वाला 2 नदियों के भयानक स्थानों, उनकी महाराइयों और प्रवाहों को जानने वाला — तत समाज्ञापयदाया सर्वांगानामिनन्तद्विचये नदीप्यात् रघु० १६७५, अन 3 अनुभवी, चतुर, — सज्जं अर्जुन वृज ।

नड (भू० क० कु०) [नह + क्त] 1 बघा हुआ, बीधा हुआ, जकड़ा हुआ, चारों ओर से बड़, धारण किया हुआ 2 डका हुआ, जडा हुआ, अन्तर्ग्रथिन 3 सयुक्त, मयोजित दे० 'नह', — ड्मु गाठ, बघन, बघ, गिरह ।

नबधो [नह + धृन् + डीप्] चमड़े का फोला ।
नवद्, नवाद् (स्त्री०) [ननन्दति मेवयापि न तुष्यति न + नन् + क्तृन्] पति की बहन, ननानु पर्याय च देव्या सन्धिदमृष्यभूषणे — उत्तर० १ । सम० नवानुपति (ननात्पति) नवदाई, पति की बहन का पति ।

ननु (अव्य०) (मूल रूप से न और नु का सयुक्त रूप, जिसे आज कल पृथक् शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है) यह अव्यय निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है — 1 पुच्छाछ प्रदन, ननु समाप्तकार्यो गीतम् — मालवि० ४ 2 तिन्चय ही, अवश्य, निस्संदेह, क्या यह असंदिग्ध नहीं (प्रश्न सूचक बल के साथ) पदाभेदाबिनी शिष्यापदेशे मलिनवति सदाचारैरथ दोषा ननु — मालवि० १ 3 निस्सन्देह, बेसक, अवश्य — उपमन ननु शिष सदास्वये० — रघु० १६०, त्रिलोकनाथेन मदा मलद्विप्रस्तव्या नियम्ना ननु दिव्यचक्षुषा — ३१५ 4 मसोधन सूचक अव्यय ('ओ' 'अहां') ननु मासव — दश०, ननु मूर्त्ता पठितमेव युष्माभिस्तकार्क — उत्तर० ४ 5 'कृपा करके' 'अनुग्रह करके' अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रतिवेशात्मक कथन के रूप में प्रयुक्त होता है — ननु मा प्रापय पयुरन्तिकम् — कु० ४३२ 6 कर्माकर्मी मसाधनशब्द के रूप में प्रयुक्त होता है — ननु वदे परिवृष्य भष — मू० ५, ननु भवानग्रतो मे वतने — श० २, ननु विचिन्तो भवान् — विक्रम० २ 7 तर्कानुबन्ध चर्चों के समय आक्षेप करने या विरोधी प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त होता है (इसके पश्चात् प्रायः 'उच्यते' आता है) ननु केनान्येव द्विचकादिपरीराणि अचेतनात् च गोमपादीना कार्यानि उच्यते — पारी० ।

नम् (भा० पर०) नरनि, नवित) प्रसन्न होना, हसित होना, मुस होना सन्नुष्ट होना, (किमी वान पर) हर्ष प्रकट करना, — तनयुस्तस्युपेन तसमी — रघु० ३१२३, ११, २१२२, ४३, भट्टि० १५१२८, येर०

— नदयति — दे — प्रसन्न करना, मुस करना, हसित करना, आनन्दित करना — अर्नाहिते शशिनि सेव कुमुद्वती मे दृष्टि न नदयति सम्भारणीयसोभा — श० ५१२, भट्टि० २११६, रघु० १५१२ अभि — 1 हर्ष प्रकट करना, प्रसन्न होना, सन्नुष्ट होना — आर्याभिडवनामभिनदति — का० १०८, नाभिनदति न दृष्टि — भग० २१५७ 2 बघाई देना, जय जयकार करना, स्वागत करना, नमस्कार करना — तापसीरिभिनदमाना तिष्ठति — श० ४, तममथवदप्रथम प्रबोधित रघु० ३१६८, २१७४, ७१६२, १११३०, १६६५ ३ प्रयाग करना, तारीफ करना, प्रशंसा करना, अच्छा समझना — ताप यम्याभिनदति द्विषोर्दपि स पुमान् — कि० ११७३, श० ३१२४, रघु० १२३५, न ते वचोऽस्मिन्दासि — श० २ ४ कामना करना, चाहना, पसन्द करना, अपेक्षा करना (प्रायः 'न' के साथ) नाभिनदति केलिकला — श० ३, नाभिनदेत मरण नाभिनदेत जीवितम् — ननु० ६१५५, हि० ४१४, आ — प्रसन्न होना, मुस होना — आनवितास्त्वा वृद्धवा — भट्टि० २२१४, येर० — प्रमन करना, मुस करना — उत्तर० ३१४४, याज्ञ० ११२५६, अभि —, 1 आशीर्वाद देना — रघु० १५७, मनु० ७१४६, कु० ७८७ 2 स्वागत करना, बघाई देना, जयजयकार करना, हर्षपूर्वक सत्कार करना — प्रतिवश स त पुमान् — मनु० २१५४ ।

नव [नन् + अच्] 1 आनन्द, मुस, हर्ष 2 (११ इच लम्बी) एक प्रकार की बाणुरी 3 मँदक 4 विष्णु 5 एक स्थान का नाम जो यशोदा का पति तथा कृष्ण का पालकपिता (जिसकी देल रोम में कृष्ण को रक्ता गया था जब कि उस उमे मारना चाहता था) 6 नर बदा का प्रतिष्ठाता (यह कही नरवश था जिसके नौ भाई पाटलिपुत्र में राज्य करते थे तथा जिनमें ब्रह्मपुत्र के मंत्री चाणक्य की नीति के द्वारा यमलोक मेंज दिया गया था) — सम्प्लवाता नदा नव हृदयरोमा इव नृव — मुद्रा० ११३३, अणुहीते राक्षसे किमुस्तात नन्दवसन्ध — मुद्रा० ११३, २७, २८ । सम० — आत्मनः, — नवत कृष्ण का विशेषण — बाल वरुण का विशेषण ।

नन्दक (वि०) [नन् + णिच् + क्तृल्] 1 हसित करने वाला, आनन्दित करने वाला, प्रसन्न करने वाला 2 मुस होने वाला, हर्ष मनाने वाला 3 परिभाषा का प्रसन्न करने वाला — क. 1 मँदक 2 कृष्ण की उलवार 3 तलवार 4 प्रानन्द ।

नन्दकिन् (पु०) [नन्दक + णि] विष्णु का विशेषण ।
नन्दधु [नन् + अच्] आनन्द, प्रसन्नता, सुखी ।

नन्दन (वि०) [नन् + णिच् + ल्यट्] 1 मुस करने वाला, मुसहाना, प्रसन्न करने वाला, — क. 1 पुत्र — याज्ञ० ११२७४, रघु० ३१४१ 2 मँदक 3 विष्णु

का विशेषण 4 शिव—नम् इन्द्र का उधान, जानन्द-
धाम—अभिहारखेदपाताला क्रियते नन्दनदुमा कु०
२।४१, रघु० ८।१५ 2 हर्ष मनाने वाला, प्रसन्न होने
वाला, 3 हर्ष, सम०—अन् पीले चदन की लकड़ी,
हरिचन्दन ।

नन्दत् [नन् + इत्, अन्त आदेश, नन् + गिच्
+ लृच् (अन्त)] पुत्र, बेटा ।

नन्वा [नन् + टाप्] 1 सुधी, हर्ष, जानन्द 2 सम्पन्नता,
धनाढ्यता, समृद्धि 3 छोटा विट्ठी का जल-पात्र
4 नन्द, पति की बहन 5 प्रतिपदा, षष्ठी और एका-
दशी, चाद्रमास की तीन तिथियाँ, (यह शुभ तिथियाँ
ममक्षी जाती हैं) ।

नन्वि (पु०, स्त्री०) [नन् + इन्] हर्ष, प्रसन्नता, सुधी
—कौशल्यान्दिवचन वि (पु०) 1 विष्णु का
विशेषण 2 शिव 3 शिव का अनुचर 4 ज्ञान धरणा,
क्रोधा (इस अर्थ में नपु० भी) । सम०—ईश्वर,
—ईश्वर 1 शिव का विशेषण 2 शिव का प्रधान
अनुचर—शाम्बू बहु गाँव जहाँ राम के बनवासकाल
में भरत रहा—रघु० १२।१८,—घोष अर्जुन का
रथ—अर्जुनः 1 शिव का विशेषण 2 मित्र 3 चाद
पत्र का जल वर्षात् अमावस्या या पूर्णिमा ।

नन्विक [नन्वि + कन्] 1 हर्ष, प्रसन्नता 2 छोटा जल-
पात्र 3 शिव का अनुचर । सम०—ईश्वर, —ईश्वर
1 शिव का एक मुख्य अनुचर 2 शिव ।

नन्विन् (वि०) [नन् + गिन्, नन् + गिच् + गिन् वा]
1 जानन्दित, हृष्ट, प्रसन्न, लूषा 2 जानन्दित करने
वाला, प्रसन्न करने वाला—(पु०) 1 पुत्र, 2 नाटक
में नान्दीपाठ या आशीर्षचन करने वाला व्यक्ति
पर शिव सवारी करता है—स्तामुह्यदारणतोऽथ नदी
—कु० ३।४३, मा० १।१, भी 1 पुत्री उन्न०
१।९ 2 नन्द, पति की बहन 3 काव्यनि गाय, काम-
धेनु—(श्री सब दृष्ट्याओं को पूरा करती है तथा जिस
का स्वामी कुसुमरु वसिष्ठ है)।—अग्निद्या नन्दिनी नाम
धेनु रावकुते बनात्—रघु० १।८२, २।९६ 4 गया का
विशेषण 5 पवित्र काली तुलसी ।

नन्वात् (पु०) [पाती इति—पा + वात्, तथा नञा समासे
प्रकृतिभाव] (प्राय वेद में प्रयुक्त) पीता, यथा
तनुत्पात् ।

नन्वत् (पु०) नन्वत् [नञा समासे प्रकृतिभाव] जो
पुष्ट न हो, हिजबा ।

नन्वत्क,—कम् [न पुमान् न स्त्री, जि० स्त्रीपुंसयो पुंसक
आदेश] 1 उभयलिङ्गी (न स्त्री न पुंस) 2
नामर्ष, हिजबा 3 भीरु, डरपोक,—कम् 1 नन्वत्क
लिङ्ग का सन्ध 2 नन्वत्क लिङ्ग ।

नन्व (पु०) [न पतन्ति पितरो येन—न + पत् + त्व्
नि०] पीता माती, (लडके का पुत्र या लडकी का
पुत्र) ।

नन्व [नम् + अच्] थावण मास,—अन् आकाश अन्त-
रिक्ष ।

नन्वत् (नपु०) [नद्यते मेर्ष सह—नह् + अमुन्, भ्रष्टा-
नादेश] 1 आकाश, अन्तरिक्ष—रघु० ५।२९,
भग० १।१९, ऋतु० १।११ 2 बादल 3 कोहरा,
वाण्य 4 पानी 5 जीवण की अवधि, साम् (पु०) 1
वर्षा ऋतु 2 नासिका, प्राण 3 (जुलाई—अगस्त के
अनुकूल, इस अर्थ में नपु० भी) थावण मास—प्रत्या-
सन्ने नभसि दयिताजीवितान्मनवर्षा—मेघ० ४, रघु०
१२।२९, १०।११, १।५ 4. पीकदान । सम०
अन्वत् चातक पक्षी,—कान्तिन् (पु०) सिंह—नन्वः
बादल,—अन्वत् (पु०) सूर्य, अन्वत् 1 चन्द्रमा 2
आहू—अर (वि०) गगन विहारी—कु० ५।२३,
(—र.) 1 देवता, उपदेवता रघु० १।६ 2 पक्षी
—अहः बादल, अन्वत् (वि०) 1 अथा 2 आकाश
की ओर देखने वाला,—द्वीपः,—अन्वत् बादल,—अन्वी
आकाश गया—प्राण, हवा,—अन्वि सूर्य,—अन्वत्कम्
आमामन, अन्तरिक्ष, नेद नभोमहलमवगति—सा०
६० १०, द्वीपः चन्द्रमा,—अन्वत् (पु०) अथकार,
—रेणु (स्त्री०) कोहरा, मूष,—अन्वत् पूर्या,—अन्वत्
(वि०) आकाश को चाटने वाला, उन्नत, बहुत
ऊँचा पु० अन्वत्कि,—अन्वत् (पु०) देवता—शि० १।११,
—अन्वत् (स्त्री०) 1 छायापट 2 आकाशगगा
—स्वस्ती आकाश,—अन्वत् (वि०) गगनचुम्बी, उन्नत ।

नन्वत् [नम् + असच्] 1 आकाश 2 वर्षा ऋतु
3 समुद्र ।

नन्वत्पथ [नभस् + गम् + लृच् + युम्] पक्षी ।

नन्वत्प [नन्वत् + पत्] (अगस्त—मित्रवर के अनुकूल)
भाद्रपद का महौना—रघु० ९।५६, १२।२९,
१०।४१ ।

नन्वत्कत् (वि०) [नभस् + मत्पु, मत्प व] बाण्यकत्,
पुषवाला, मेषाच्छलन्,—(पु०) हवा, वायु नै०
१।९७, रघु० ४।८, १०।७३, शि० १।१० ।

नन्वत्क [नम् + अक्] 1 अथकार 2 राहु का विशेषण
नन्वत्क (पु०) [अन्वत् + विवत्, तथा समासे प्रकृति-
भाव] कला बादल, काली घटा ।

नन्व (नञा० पर०)—कबी कभी अ०—नमति—ते, नत,
प्र०० ममयति—ते, परन्तु उपसर्ग पूर्व होने पर केवल
‘नमयति’, दृष्ट्या० निनसति) 1 झुकना, नमस्कार
करना, अभिवादन करना (सम्मान सूचक लक्षण)
(कर्म० या सप्र० के साथ) इस नमति व सबन्
बिलोचनवधूरिति—कु० ६।८९, भग० ११।१७,

मट्टि० १५११, १०३३१, १२३२९, शि० २५५७, अर्धोन होना, पराभव स्वीकार करना, झुक जाना —अणक सार्थमान् नमेत्—काम० ८५५५ ३ झुकना, उबाना, नोच होना—अनसीद्भूधरेणाम् —अट्टि० १५१२५ नेम् सर्वदिया—का० ५५, उन्न- वति नमति वर्षति मेघ-मूच्छ० ५१२६ ४ उन्न- वना, झुकाव होना ५ झुका हुआ होना, वक्र होना ६ वनि निकालना । अम्मूद् —, उठाना, उन्नत होना अञ्—, १ झुकना, नञ् होना, नोचे को उलटना —शि० १७७५ २ झुकाना, लटकाना—स्वव्यादात् जन्मवन्ते—मेघ० ४५, उद्—, १ (क) उदय होना, प्रकट होना, उगना—उल्लस्योल्लस्य लीयते दरिद्राणां मनोरथा—पद्य० २१९१, (ख) १ लट- कना, लमीय होना—उल्लस्यकालुदुदितम्—मूच्छ० ५ २ उदय होना, चढ़ना, ऊपर उठना (आल० भी) उन्नमति नमति वर्धति गर्वति मेघ—मूच्छ० ५१२६, नञ्चतेनोन्नमन्—अर्ध० २१६९, ११२४, शि० १७७५ ३ उठाना, उन्नति करना—शि० १६३५, प्र० ३ ऊपर उठाना, सीधा खड़ा करना—उच—, जाना आ जाना, पहुँचना २ होना, भाग में होना, बटित होना, नाममें आना (मृ० के माघ वा अंकला) कस्यायत्तं युष्मभ्युपेत दुःखमेकान्तनी वा—मेघ० १०९, मास- भाग कथमप्यनयेत् स्वप्नजीवि—मेघ० ९१, यद्वैष- पयत दुःखान्मुष् तत्रसवगन्—विक्रम० ३१२१, अर्ध० २११२१, मघ० १० रघु० १०३२९ ३ उप- निषत् करना, देना, प्रस्तुत करना—परलोकोपगत जगज्जनिम्—रघु० ८१६८, परि—, १ नोच का उगना, झुकना (जैसे कि कोई हाथी अपने दानो से प्रहार करने के लिए) वप्रभीशपरिणतगवजेजनीय दर्दम्—मेघ० ५, विष्के नाम पयंगनीत् स्व एव —शि० १८७७ २ झुकना, नमस्कार करना, झुकाव होना—सञ्ज्ञापरिणते (बधनकमले)—मट्टि० ११४, ३ परिवर्तित होना, रूपांतरित होना, रूप धारण करना (करण० के साथ) लताभावेन परिणतमस्या रूपम्—विक्रम० ४१२८, क्षीर जल वा स्वयमेव दधिहिममात्रेण परिणमते —शारी०, मेघ० ४५ ४ विकसित वा परिपक्व होना, पकना, परिणतप्रवृत्त्य बाणोय-उत्तर० ७१२०, मेघ० १८, कि० ५३७७, भास्ववि० ३१८, ऋतु० ११२९ ५ (आय में) बढ़ना, बड़ा होना, बड़ा होना क्षीण होना, परिणत वाच्यनिकामु क्षयान्—मेघ ११०, इसी प्रकार 'उत्तरपरिणत' आदि ६ बड़ना, (मूर्धं आदि का) पश्चिम में छिन्नान् जनने समयेन परिपतो दिवत्—का० ४७ ७ पच जाना, प्रस्त परिपमेचक यत्—महा०, प्र (प्रथमति) नमस्कार

करना, अभिवादन करना, विनम्र प्रणति करना (कर्म० या म० के साथ) व प्रथमति देवताय —का० १०८, ना प्रणनाम-का० २१९, भा० ११४४, रघु० २१२१, (साष्टाण्य प्रथम् आठ अंगों से झुक कर प्रणाम करना दे० साष्टाण्य, बध्ववत् प्रथम् उठ को भानि पूर्ण रूप से भूमि पर डेट कर नमस्कार करना, मन अंगों से भूमि को स्पृशे करने हुए तु० दृष्टप्रणाम)। वि० १ अपने आपको झुकाना, नञ् करना, विनीत होना विनमति चार्य तत्र प्रचये - वि० ११३४ अर्ध० ११६७, मट्टि० ७५२, दे० विनयं विपरि—१ बदलना २ बदल कर खराब होना सप्त- १ झुकना नोचे को होना, झुकाव होना—सन्तारी कु० ११२४, मट्टि० २०३१, पूर्वम् ममता—विक्रम० ४१२६ २ नञ् होना, विनीत होना मनमतामरीणाम्—रघु० १८३४।

नमत् (वि०) [नम्+अत्] झुका हुआ, विनीत, कुटिल, वक्र-त- १ अभिनेता २ युजी ३ स्वामी, प्रभु ४ बादल।

नमनम् [नम्+स्पर्] १ विनीत होना, झुकना, नञ् होना २ बड़ना ३ विनति, नमस्कार, अभिवादन।

नमस् (अव्य०) [नम्+अप्] प्रामति, अभिवादन, प्रणाम, पूजा (यह शब्द स्वयं सर्वत्र म० के साथ प्रयुक्त होता है, तन्म्यं वदात्प्राचुरे तन्मे नमोज्जु —भा० ११५७, नमश्चिन्मनये तुभ्यम् कु० २०४, परन्तु 'कु' के पाँच में कर्म० के साथ 'नमिष्यन् नमस्कृत्य—सिद्धा०, परन्तु कर्मो-कर्मो म० के साथ भी—नमस्कृतौ नृनिहाय—सिद्धा०, यह शब्द सजा शब्द का अर्थ रखता परन्तु ममता जाता है अव्य०)। मम०—कार,—कृति (स्त्री०)—कारणम् प्रणति, भावर प्रणाम, सादर अभिवादन (नमस् शब्द के उच्चारण के साथ)।—ह्रत् (वि०) १ जिसे प्रणति दी गई है, जिसको प्रणाम किया गया है २ सम्मानित, अर्चित, पूजित,—मुष्, आध्यात्मिक मुष्,—बाकम् (अव्य०) 'नमस्' शब्द का उच्चारण करना, अर्थात् विनम्र अभिवादन करना—इद कविभ्य पूर्वम्यो नमो- वाक प्रशाम्हे—उत्तर० १११।

नमस (वि०) [नय+अमच्] अनुकूल, मानुष्य व्यवास्थित।

नमस्तित, नमस्तित (वि०) [नयम्+नयच्, नमस्य+त, विकल्पेन यलोप] त्रिद नमस्कार किया गया हो, सम्मानित, जिसे प्रणाम किया गया है।

नमस्त्यति (ना० पा० प०) नमस्कार करना, अर्द्धार्थि अर्पित करना, पूजा करना—अर्ध० २१५४।

नमस्त्य (वि०) [नयम्+यत्] १ अभिवादन प्राप्त करने का अधिकारी, सम्मानित, आदरणीय, वन्दनीय २ आचर- युक्त, विनीत,—स्वा पूजा, अर्चना, श्रद्धा, भक्ति।

नमुषि: [न+मुष्+इन्] 1 एक ईश्वर जिसे इन्द्र ने मार विरचाया था। वतमुषे नमुषेरग्ये शिर—रघु० १।२२, (जब इन्द्र ने असुरों पर विजय प्राप्त की तो नमुषि नामक एक असुर ने इन्द्र का उटकर मुकाबला किया और अन्त में इन्द्र को बन्दी बना लिया। उस ईश्वर ने इन्द्र से कहा कि यदि तुम यह प्रतिज्ञा करो कि 'मैं न तुम्हें दिन में मारूँगा न रात को, न पानी में न सूखे में' तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। इन्द्र ने प्रतिज्ञा की और फलन उमने छाड़ दिया गया। फिर इन्द्र ने सध्या समय पानी के झरने के साथ (जो न पानी था न सूक्ष्मपन नमुषि का शिर काट डाला। दूसरे एक कथन के अनुसार नमुषि इन्द्र का मित्र था उमने एक बार इन्द्र की शक्ति को भी लिया और उसे निबंले एव अशक्त बना दिया, फिर अश्विनीकुमारों (सरस्वती ने भी) ने इन्द्र को बन्ध दिया जिसमे उमने नमुषि का शिर काट डाला) 2 कामदेव।

नमेध [नम+एक] एक नृप का नाम, यदाश या सुरपुत्राग गणा नमेधप्रमदाशनामा—कु० १।५५, ३।५३, रघु० ५।७८।

नम्र (वि०) [नम+र] 1 विनीत, प्रणतिशील, मुका हुआ, विनय, नीचे कटकरे वाला मरति प्रकान्तरव फलागर्भ में घ० ५।१० स्त्रीकान्त्रा स्तनाभ्या—मेघ० ८२, पञ्च० १।१०६, रत्न० १।१९ 2 प्रणतिशील, सादर अभिवादनशील, अमच्च नम्र प्रणितया शिष्टया रघु० ३।२५ इत्युच्यते नामिष्ठा म्म नम्रा—कु० ७।७८ 3 मृगीक, विनयी, विष्णुगोल, यदाशु—मेघ० ५५ 4 कुटिल, बक 5 पूजा करने वाला 6 मन्त्र, उपासक।

मय (म्हा० आ०-नपते) 1 जाना 2 रक्षा करना।

मय [मो+अच्] 1. निर्देशन मार्गदर्श, प्रबन्धन 2 व्यवहार, निष्पत्तय, आचरण, दिनचर्या—जैसा कि इत्यर्थ में 3 दृग्दर्शिता, अग्रदृष्टि 4 नीति, ज्ञानन विषयक बुद्धिमत्ता, राजनीतिज्ञता नायकिक प्रणामन राज्य की नीति नयप्रचार व्यवहार दुष्टनाम्—मृच्छ० १।७, नयगुणोपकारादिषु भूयते सदुपकार पला भियमर्षिन—रघु० १।२७ 5 नैतिकता, न्याय, न्यायप्रदान, न्यायता—अपति नयान् विनीचरतां हि वेत् कि० १०।२९, २।३, ६।३८, १६।४२ 6 रूप-रेखा, दाया, योजना—मुद्रा० ६।११, ७।९ 7 सिद्धांत वाक्य, नियम 8 कम, प्रणाली, रीति 9 पद्धति, बन्ध, सम्पत्ति 10 दार्शनिक पद्धति—बैबोतिके नये—भाषा०, १०५। मय०—सौबिष्—अ (वि०) नीति कुशल, दूरदर्शी चक्षुः (वि०) स मनीय अग्रदृष्टि रखने वाला, बुद्धिमान, दूरदर्शी—रघु० १।५५—नेतृ

(पु०) राज नातिशास्त्र पारयत—विष् (पु०) --विशास्त्रकः राजनयिक, राजनीतिज्ञ—शास्त्रम् 1 राजनीतिशास्त्र, 2 राजनीति का या राजनीतिक अर्थशास्त्र का कोई इत्य 3 नीतिशास्त्र—शास्त्रम् (वि०) न्यायपूर्ण, न्यायपरायण कु० ५।२४।

मयनम् [नी+म्युट] 1 मयं दर्शन, निर्देशन, संचालन, प्रबन्धन 2 लेना, निकट लाना, लीचना 3 हृकृत्यन करना, शासन करना 4 प्रापण 5 आँसू। सम०—अभिराम (वि०) आँसू को प्रसन्न करने वाला, प्रियदर्शन (—म.) चाँद, उल्लस 1 दीपक, लैप 2 आँसू को प्रमनना 3 कोई प्रिय वस्तु—उपनिषत् आँसू का कोना—कु० ४।७३, मोक्षर (वि०) दृश्यमान, दृष्टि-प्राप्त के अनर्गत,—छद्म पलक,—पञ्च दृष्टि-प्राप्त—कुठल अशिलोक,—चिचयः 1 कोई दृश्यमान पदार्थ 2 अतिव,—सहितम् आँसू मेघ० ३९।

मर [मृ+अच्] 1 मनुष्य, पुमान् पुरुष—सयोजयति विद्येव नोजयति नर मरिन् ममदृशिव तुर्वायै नृप-भाय्यमन परम्—हि० प्र० ५, मनु० १।१६, २।२३ 2 शतरज का मोहरण 3 धृष्यश्री की क्रील, मनु 4 परमात्मा, निष्पुत्रव्य 5 दोनों शब्दों की दांती और मोधा फेलाकर, हाथ के एक मिने में दूसरे हाथ के मिने तक की लम्बाई 6 एक शशीन ऋषि का नाम 7 अर्जुन का नाम दे० नी० नरनागयण। सम०—अपिषत्,—अपिषत्, ईश, इन्धरः देव,—पति पाल राजा भग० १०।२७, मनु० ७।१३, रघु० २।२५, ३।६२, ७।६२, मेघ० ३७, याज्ञ० १।२१०,—अतक मृत्यु,—अपण विष्णु का विशेषण,—अस राक्षस, विमान, इन्द्र 1 राजा—रघु० २।१८, ३।३३, ६।८०, मनु० १।२५३ 2 वैद्य, विधनायक औपधिषो का हिकता, तनायक—नेतृ-कविचरनेन्द्राभिमानो या निरुपयं दण० ५१, मुनिपदा नरेन्द्रेण फर्वादा इव जयव—शि० २।८८, (यही शब्द दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है),—उत्सव विष्णु का विशेषण, अश्रम—मन्थो में श्रेष्ठ राज-कुमार, राजा,—कयाल मनुष्य की शोपरी, —कीलक आध्यात्मिक मनु की रूप्या करने वाला, —केशरिन् (पु०) विष्णु का शोधा अवतार, मु० 'मृसिह' की ना०,—शिव् (पु०) विशेषण, अश्रम—मन्थो में श्रेष्ठ १।५१४,—भारारयण कृष्ण का नाम (हि० व०—श्री) मूल-रूप से दोनों एक ही माने जाते थे, परन्तु पुराणों और महाकाव्यों में दा स्वतंत्र माने जाने लगे—नर की अर्जुन का समक तथा कृष्ण का नारायण का रूप (कुछ स्थानों पर इन्हें 'देवो' 'पूर्वदेवो' 'ऋषी' या 'ऋषिसलमो' कहते हैं, कहा जाता है कि यह दोनों हिमालय पर्वत कड़ी साधना और तपस्या किना

कर दे, इनकी इस तपस्या से इन्द्र भयभीत हुआ, फलतः उसने इनकी तपस्या में विघ्न डालने के लिए कई देव कन्याओं को भेजा। परन्तु नारायण ने अपनी जवा पर रखे एक फूल से सोम्य में इनसे बड़ बड़कर 'उदंसी' नाम की एक अम्बरा को उत्पन्न करके इन स्वर्णदेवियों को लज्जित कर दिया, तुं स्थाने शत्रु नारायणर्षिप विलोभयत्स्वस्तदुग्धमभामिमा दृष्ट्वा शैशिन्या सर्वा आसत्स इति—विष्णु० १), —पुण्य परु जैसा मनुष्य, मानव रूप में परु—पुण्य मनुष्यो मे श्रेष्ठ, उत्तमपुरुष, —भाषिका, —भाषिनी, —भाषिको मनुष्य जैसी स्त्री जिसके दाढ़ी हो, मर्यादी औरत, —मेघ नरयज्ञ, —यंघम् भूपघटी, —घालम् —रघ, —बाह्यम् मनुष्य द्वारा सीधी जाने वाली गली—शौक. 1 मनुष्यो का सत्कार, पृथ्वी, पाथिव सत्कार 2 मानवता, —बाह्य, कुबेर का विशेषण —रघु० १।११, —शौर पराक्रमी मनुष्य शूरवीर, —बाह्य—आर्षिक प्रमुख पुरुष, —भुषम् 'मनुष्य का सींग, असमानता, शौर के मूँह, बकरे के घंटे और लोप की पूंछ वाला बकरा अर्थात् बल्पपुत्र, सनादीनता, —सर्षम् मानव-सहाय, —सिंह, —हरि 'नरमह' विष्णु का चौथा अवतार, —तुं तबकरकमलवरे तप-मन्मूतशुभ्र दमितहिरण्यकशिपुवनभूमम्, केसव घृत्-नरहृररूप जय जगदीश हरे—गीतो. १, —स्वध, मनुष्यो की टोली।

नरक, —कम् [नृपाति क्लेश प्रापयति—नृ+कृत्] दोड़ल, धुंध प्रदेश, (जुटो के राज्य के अनुकूप स्थान, नरक गिनतियो में ३१ माने जाते हैं जहाँ पापियो को विविध प्रकार की यातनायें दी जाती हैं), —क एक राक्षस का नाम, श्राव्योपनिष का, राजा (एक वृत् के अनुसार नरक एक बार अदिति के कर्मा-भूषण उठाकर भाग गया, तब देवताओं की प्रार्थना सुनकर कृष्ण ने उसको एक ही पछाड़ में मार गिराया और वह आभूषण प्राप्त किया। एक दूसरे वृत् के अनुसार नरक ने हाथों का रूप धारण किया और वह विषकर्मों की पुष्पी की उठा कर ले गया तथा उसके साथ बलात्कार किया। उसने गंधर्वों, देवों, और मनुष्यों को लड़कियाँ तथा अम्बराओं को उठाया और इस प्रकार मोक्ष द्वार से अधिक युवतियों को अपने अन्न पुर में रक्वा। कृष्ण ने जब नरक को मार दिया तो यह सब ब्रह्मवर्ति कृष्ण के अन्न पुर में हस्त-लक्षित कर दी गई। यह राक्षस भूमि में उत्पन्न होने के कारण शीघ्र कालगाम है।) मम०—अतक, —अरि, —अिन् (पु०) कृष्ण के विशेषण, —आमय 1 मनुष्य के पश्चात् आत्मा 2 भूत, प्रेत—कुबम् नरक का गडा जहाँ दुष्टों को ताना प्रकार की यातनायें दी

जाती हैं—इस प्रकार के ८६ स्थान गिनाये गये हैं), —स्था बंजरणी नदी।

नरयम्, नराम्, [नृ+अयम्, नृ+ अय्+अण्] पुरुष की जलनेन्द्रिय, लिङ्ग।

नरैकि [नरा धीयन्ते+सिन्—नृ-त्+धा+कि, पृषो० म्] नासांरिक जीवन या अस्तित्व।

नरी [नृ+डीर्] नारी, स्त्री—भाषि० ३।१६।

नरकुटम् [नरम्प कुटशमिव पृषो०] नाक, नासिका।
मत्तं [नृ+अच्] नाचना नाच।

नरत्क [नृ+त्कृन्] 1 नाचने वाला, नृत्यशास्त्रक 2 अभिनेता, नट, मुकनाटक का पात्र 3 भाट, चारण 4 हाथी 5 राजा 6 मोर, —की 1 नाचने वाली स्त्री, नटी, अभिनेत्री रगम्य स्वर्णित्वा निकरने नरको यथा नृत्यान्—मा० का० ५९, कि० १०।४१, रघु० १९।१४, १९ 2 हृषिनी 3 मोरली।

नरत्न [नृ+त्नृत्] नाचने वाला, —नम् हावभाव प्रद-दित करना, नाचना, नाच। मय०—नृहृन्, —शाळा नाचघर, —श्रिध शिव का विशेषण।

नरति (वि०) [नृ+तिन्+क्ति] नाचा हुआ, तचाया हुआ।

नर् (म्भा० पर०—उदंति, नदिन) गरजना, दहाड़ना, गन्ध करना—अर्वादिपु कणिव्याघ्रा—मट्टि० १५।३५, १४।४०, १५।२८, १७।४० 2 जाना, गतिशील होना।

नर् (वि०) [नर्द+अच्] गरज, दहाड़।

नर्नम् [नर्द+न्पृट्] 1 गरजना, दहाड़ना 2 प्रशंसा का प्रचार करना, ऊँचे स्वर में कीर्तियान करना।

नरित [नर्द+क्त्] एक प्रकार का पासा, पामे का हाव—नदिनदमित्यार्थ कटन विनिपातियो पाणि—मृच्छ० २।८, —सम् आवाज, दहाड़, गरज।

नर्मट [नर्मन्+अटन्, पृषो०] 1 टोकना, बर्तन का टुकड़ा 2 मूर्त।

नर्मठ [नर्मन्+अठन्] 1 माठ 2 लम्पट, दुश्चरित्र, स्वच्छाचारी 3 श्रोडा, मनोरञ्जन, विनोद 4 मंयुन, सभोग 5 टोडी 6 मुचक।

नर्मन् (नपु०) [नृ+मनिन्] 1 श्रोडा, विनोद, खिलास आभोग, प्रमोद, कामकौशल, कौशलविहार—जितमले विमले परिकर्मय नर्मन्जनकमलक मूले—गीतो. १० (कीकुञ्जक), १५० १९।२८ 2 परिहास, हँसी दिल्लगी, उद्दा, रसिकोक्ति—नर्मन्प्रायासि कथायि का० ७०, परिहासपूर्व, सरस। सय०—कील, पति, —नर्म (वि०) रसिक, ठिठोसिया, विनादी (मं) गुनत्रेमी इ (वि०) श्राद्धारकारी, आनन्द दायक (—) विपुल (—नर्मसाधक), —हा वि०-ध-पवंत से निकलने वाली एक नदी जो अरावली की भाडी

में आकर विरती है, -कृति (वि०) हर्षोत्फुल्ल, हुसमुख, प्रमत्तवदन (स्त्री० -ति) परिहास का मजा लेना -साधिव, -मुहूर्त् (पु०) विद्वपक, राजा या किसी रईस का मनोविनोद करने वाला साथी -इद त्वैवपर्यं यदुत नृपतेर्नैमैमिषिव सुनाडातामिष भवतु - मा० २१७, त. याचते नृपतेर्नैमैमैतुल्लन्दनो नृप-मुनेन - १११२, मि० ११५९ ।

तमरा [तमरं + टाप्] 1 पाटो, कदवा 2 धौकरी 3 बूढ़ी स्त्री जिसे अब न्योयमं न होता हो 4 मक्का नाम का पोषा ।

तस [तद् + अच्] 1 एक प्रकार का तरकुल 2 निषघ-देव का पृथ विमलान राजा, 'नीरा बनि' काव्य का नायक । (तस अ-क्या उदार और मद्गुण मयन राजा था । देवताओं का विशेष सङ्कर जो दमपती उस आना पनि चुना था, किन्तु वे कुछ वर्षों तक मानवर रहने लगे 1 परन्तु दमपती का प्रान कर्म में निरास होकर कलिके तस पर तुल्य रावे बन न के लीने में प्रकट हो गया) इस प्रकार कल्पिता हा तस ने अपने मादे दुस्तर के माव नृवा भेडा, उसमें मत्र कुछ शर जाने पर उसे मरतीर मरतानी में निवासित कर दिया गया । एक दिन जब कि वः जगद में मागा २ विर रहा था, तनाप हीछ जरी स्त्री को अर्ध नारायणमें छोट कर चर दिया । उसके पश्चात् कसोटत मार के काटने में उसका शरीर बिकृत हो गया । इस प्रकार बिकृत शरीर हो वह जयापथा के राजा ऋतुार्ण के पदा गया और वहा वह चाहुक नाप व नीरर हा गया और उधे पाडा के मायम हा राम करने लगा । उरर पन्नात् मजा हनुार्ण की मशायना मे अपने अनी एनी दमययी का फिर मे प्राय किया और वे आनन्द पुषक रहने लगे २० "हनुार्ण और 'दमययी' 3 एर प्रम्व याने नै विरकमर्षी का पुत्र था तथा जिमने नलमेतु मायम एर पथरी का पुत्र बनाया, जिमके ऊपर मे होकर राम ने अपने नैपयदल ममन लका मे प्रवेश किया, लम्प कमल । मम० - कौल पट्टना - हृब (ब) र पुषे के एक पुत्र का नाम - बम्प एक सुर्गा एन हड, एम, उलीर कि० १२१५० नै० ४१११६ - पट्टिका नरकुला को बनी हुई एक प्रकार की चट्टाई, मौषः जल वृषिषक, क्षीया मछली ।

तलकम् [तल + कै + क्] 1 शरीर की कोई भी नवी हड्डी महावीर० ११२५ 2 कुहनी की हड्डी ।

तलकितो [तलक + इति + क्तौ] 1 पट्टने को कपाळी 2 टाप ।

तलिकम् [तल् + इतच्] सारत - बम्प 1 कमल, कुन्द

2 जल 3 नील का पोषा, तलिकेशयः विष्णु का विशेषण ।

तलिकी [तल + इति + क्तौप] 1 कमल का पोषा - न पर्वगाथे तलिकी प्रगोहति - मृच्छ० ४११७, तलिकी-दलगतत्रकमतिरतलम् - मोह० ५, कु० ४१६ 2 कमलों का समूह 3 कमलों से भरा हुआ सरोवर । मय० - लक्ष्म, - बम्प कमलपुत्र, - बह, बड्या का विशेषण (- - हम्प) कमलइडो, कमल का टोपा ।

तल्य [तल् + च] दूरी मापने का नाप जा ६०० टाप लम्बा हो ।

तथ (वि०) [तु + अप्] 1 तथा, ताजा, वीरी आयु का, नवीन चित्तपोषितप्रवृत्तुननव - रघु० १९१४६, कलेज फलेन हि पुननेवता विधने - कु० ५१८६, पारा० १११९, म्पु० ११८३, २१६०, ३१५०, ११, मि० ११६, ३१३१, कि० २१६३ 2 आवाकिक, - ब कौवा - बम्प (अप्य०) आकक में, हाक में, अमी अमी, वटुन दिन हुए ।

1 मय० - अग्रम् नये बावक या नया न्याह, - अद् (तपु०) ताजा पानी, - अह पश का : ११ दिन - इतर (वि०) तुनाता १०१२० - उद्धतन ताजा मकन, ऊडा, - पालिषहृवा, अमी की विवाहित स्त्री कुवतिन - ० ११०१०, अर्पु० ११४, म्पु० ८१७, - कारिका, - कालिका, - कालिका 1 नवविवा-हित स्त्री 2 नूतन रत्नव्या स्त्री, - छात्र नया शिष्या, नीमिषिया, तवविष्य - ली (स्त्री०) - नीतम् ताजा मकन - अहो नवीनकल्पहृदय आर्ये पुत्र - मार्यवि० ३, नीतकम् 1 परिष्कृत मकन 2 ताजा मकन, पाठक नया अल्पपक, मल्लिका - मालिका बनेलो का एक भेद - यत्र नये अग्र या नये फलो मे आहुति देना, योवकम् नई जवानी, योवक का नया विकास, - रजत् (स्त्री०) लडकी जिसे जल्न हो में रकीदशेन हुआ हो, - बम्प, - बरिका नवविवाहिता लडकी, - बल्लभम् एक प्रकार का चन्दन, - बल्लभम् नया कपडा, - शाशिमत् (पु०) निव का विशेषण - मेघ० ४३, - कृति (स्त्री०), कृतिका 1 नई हुई हुई या तुषार टाप 2 जन्मा स्त्री ।

तथकम् [तथ + कम् लोपो] 1 नौ चन्दुली का समूह, नौ का गुच्छा ।

तथल (वि०) (स्त्री-लौ) [तपति + इट्] नयेवा - त 1 छोट की बनी हाथी की मूल 2 ऊनी कपडा, कबल 3 चादर, आवरण ।

तथतिः (स्त्री०) [वि०] 1 नये नवनवनिस्ताग्रव्य-कीटीश्वरासे - मुद्रा० ३१२१, रघु० ३१६९ ।

तथलिका [तथति + कम् + टाप्] 1 नये 2 बिचकार की कूची (कहा जाता है कि इस कूची में नये बाल होते हैं) ।

नक्ष् (स० वि०) [नृ + कनिन् बा० वृत्] (निजबहु०)
 नौ—नवति नवार्थिका—रघु० ३।६९, दे० नीचे
 लिए गये समाना शब्द (आरभ में प्रयुक्त होनेपर 'नवन्'
 के 'व' का लोप हो जाता है) । मय०—अशोति
 (स्त्री०) नवासी,—अक्षिम् (पु०), शोषितिस मगल-
 शब्द,—अक्षम् (अब्ध०) नौ गुणा,—ग्रहा' (पु०, ३०००)
 नौ ग्रह, दे० 'ग्रह' के अलम्बन,—क्षत्रारिस् (वि०)
 उनचासवा,—क्षत्रारिस्त् (स्त्री०) उनचास,
 —क्षिप्रम्,—क्षारम् घटीर (नौ दरवाजो वाला, दे०
 'ख'),—क्षिस् (वि०) उतालीसवा,—क्षिस् (स्त्री०)
 उतालीस—क्षस् (वि०) उतालीसवा,—क्षस् (अब्ध०)
 उतालीस,—क्षतिः (स्त्री०) निग्यानसे,—क्षिप् (पु०,
 ३०००) कुबेर के नौ सखाने—अर्धात्—महाण्यध्वज
 पद्यपद्यसो मकरकच्छरी, मुकुटकुटीलध्वज सर्वद्वय विधि-
 योनिष,—क्षेपास् (वि०) उनगठवा—क्षेपास्त् (स्त्री०)
 उनगठ,—क्षस्त् १ नौ अमृत्य रत्न—अर्धात्—मुक्ता
 माणिक्यवैदूर्योमेरुदा वक्षविद्रुमी, पद्यराय मरकत
 नील वेति यथाक्रमम् २ राजा विक्रमादित्य के
 दरबार के नौ कवि, कविरत्न—क्षन्तरिक्षणकामर-
 सिहासुकु बेतालभट्ट घटकर्परकालिदासा कृतो नो वराह-
 भिरौ नृपते समायो रत्नाति ई वरश्चिन्दव
 विक्रमस्य,—क्षस् (पु०, ३०००) काज के नौ रस
 दे० 'अष्टरस' और 'रस',—क्षस्म् १ नौ दिन का
 समय २ आश्विन मास के प्रथम नौ दिन जो हुवां
 पूजा के दिन माने जाते हैं,—क्षिस् (वि०) उतासीसवा,
 —क्षिस्ति (स्त्री०) उतासीस,—क्षिस् (वि०) नौ नरह
 का, नौ प्रकार का,—क्षस्म् १ एक सौ नौ २ नौ
 सौ,—क्षिस् (स्त्री०) उनदत्तर,—क्षपति उतासी ।
नक्ष्वा (अग्र०) [नक्ष + वा] नौ प्रकार से, नौगुणा ।
नक्षत्र (वि०) (स्त्री०—मी) [नवन् + डट्, उट्स्थाने
 मट्] नवा—नौ बाण्ड्यास के पक्ष का नवां दिन ।
नक्षत्र (अब्ध०) [नवन् + नस्] नौ नौ करके ।
नक्षत्र, नक्षत्र (वि०) [नक्ष + न्, यत् या] १ नक्षत्र,
 ताका, हाल का २ आधुनिक ।
नक्ष् (दिवा० पर०—नक्षति, नष्ट, प्रेर०—नाशघनि
 —इच्छा० निजसति, निजसिद्धि) १ योग्य जाना,
 अन्तर्धान होना, लुप्त होना, अदृश्य होना—ध्रुवादि
 तस्य नक्षति—हि० १, तथा सीमा न नक्षति—मनु०
 ८।२५७, धात्र० २।५८,—क्षपतष्टदृष्टनिमित्तम्
 मुच्छ १।५४ २ नष्ट होना, व्यस्त होना, मरना,
 बर्बाद होना—जीवनाश ननाश च—मट्टि० १।१३१,
 मनु० ८।१६ ७।५७, मृत्त० ७।८ ३ नाश जाना, उद
 जाना, बच निकलना नक्षति बुन्दानि बदनं कपीड
 —मट्टि० १।१३२, नक्षत्रिचका निशाचरा—१।४।१२,
 रत्न० २।३ ४ मनास होना, अतफल होना—प्रेर०

१ अन्तर्धान करना २ नष्ट करना, हटा देना, मिटा
 देना, भया देना, उडा देना, प्र—, (प्रक्षम्पति)
 वि—, अक्षत होता, मरना—मट्टि० ३।१५, भग०
 ८।२० ।
नक्ष् (स्त्री०) नक्ष, नक्षनम् [नक्ष् + विवृत्, क, स्पुट
 वा] नाश, प्वस हाति, अन्तर्धान ।
नक्षत्र (वि०) (स्त्री०—री) [नक्ष् + क्वत्] १ नष्ट
 होने वाला, क्षणभंग्यो, क्षणभंगुर, जलिय, अस्थायी
 —निश्चिन् जगद्वेद नक्षत्रम्—रत्न० २ विनाशकारी,
 उत्पातकारी ।
नष्ट (भू० क० कृ०) [नक्ष् + क्व] १ योग्य हुआ,
 अनाहित, लुप्त, अदृश्य २ मृत, ध्वंस, उच्छिन्न ३
 अष्ट, क्षीण ४ भागा हुआ ५ बर्धन, मूकत (समान
 में) । मय०—अर्थ (वि०) निरुपेनीकृत (विमर्का पत
 नष्ट हो गया ही)।—आसकम् (अब्ध०) निश्चितता
 के साथ, निभय होकर नष्टानक हरिणशिशो मय-
 मय चरन्ति—श० १।१३, अने० पा०—आम्नम्
 (वि०) जान मे बर्धन, वेहास,—आप्तिस्तुवम् कृत
 का मान, कृत-यमोट,—आशक (वि०) निडर, मुर-
 क्षित, भय-रहित,—इदुकला पृथिमा का दिन,—इक्षिप्
 (वि०) उच्छिन्नस्थ, वेतन,—क्षेत्,—स्त (वि०)
 जिनकी शंका जाती गयी है, अचेतन, बेहोश, मूर्छित,
 —क्षेपता विवर्धनाद्य ।
नक्ष् (स्त्री०) [नक्ष्- विवृत्] (दुर्गरी विप्रमित के हि०
 व० के पश्चात् 'नामिका' के स्थान में होने वाला
 आदेश) नाक नामिका । मय० क्षुद्र (वि०) छोटी
 नाक वाला ।
नक्ष्स् (अग्र०) [नक्ष् + न'मत्] नाक से—वाज०
 ३।१२७ ।
नक्ष् [नक्ष् + टाप्] नाक, नामिका ।
नक्ष् [नक्ष् + क्व] ना',—स्वम् नक्ष्, सूचनी—स्ता
 नाक के नपुंने में किया गया छिद्र । मय०—उत्त
 नक्षेत् द्वारं चलाया गया बल ।
नक्षित (वि०) [नक्ष् + इत्] नाथा हुआ (नाक में
 गम्भी डालकर) ।
नक्ष् (वि०) [नामिक + यत् नसादेश] अनुनासिक,
 —स्वम् १ नाक का बाल २ सूचनी,—स्वा १ नाड
 २ एणु के नाक में से निकली हुई रस्सी, नक्षेत्
 —जि० १२।१० ।
नक्ष्, (दिवा० उभ०—नक्षति—ने, नक्ष, इच्छा० निजसति
 —ने) शायना, वधनयुक्त करना, ऊपर से चारो
 ओर से या एक जगह शायना, कमार कसना—शैलेय-
 नदानि मिलातकानि—कु० १।५६, रघु० ४।५७,
 १।५८ २ पहनना, वस्त्र धारण करना, मुष्मिजन
 करना (आ०), प्रेर०—पहनना, अय—सोलना अयि

—(कभी-कभी बदलकर केवल 'पि' रह जाता है) 1 बाधना, कम्प कलना, बधन में डालना—अतिगिनद्वेन बन्कनेन—श० १, मदारमाका हरिणा पिनडा—श० ७१२ 2 पहनना, कपड़े धारण करना—मट्टि० ३१४७ 3 ढकना, (लिफाफे में) बंद करना—श० १११९, उर्ध् बाधना, जकडना, मूधना—रघु० १७३०, १८१५, परि—बेरना, अन्तर्बद्धित करना, परिवृत्त करना—सजयति परिण्ड शक्तिभि पक्षितनाथ—मा० ५११, रघु० ६१६४, मालवि० ५११०, ऋतु० ६१२५, सप्त—1 कलना, बाधना, जकडना 2 बन्ध पहनना, धारण करना, शस्त्रात्म से सुसज्जित होना, सवारना, किबास पहनना—समनालोत्त सैन्यम्—मट्टि० १५११११—२, १४७७, १७७४ 4 (किसी कार्य के लिए) अपने आपकी तैयार करना, (जा० इस अर्थ में) मूढाण सङ्घते—महा०, छेपु बज्जमणीञ्ज्, सिरोपकुमुपप्रानेन सनङ्घते—मत्तु० २१६, दे० सगड० भी ।

बहि (अव्य०) निरव्यय ही नहीं, निरिच्छत रूप से नहीं, किसी भी अवस्था में नहीं, बिल्कुल नहीं—आशसा न हि न प्रेते जीवेन दशमूर्धनि—मट्टि० १९१५ ।

नहुष [नहृ + उपध्] एक चन्द्रवर्षी राजा, ययाति का पिता, पुरुरवा का पीता और आयुष् का पुत्र, यह बहुत बुद्धिमान्, और बलवान् राजा था । जब इन्द्र ने वृत्र का मार दिया, और उस बहुहृद्यका का प्रायश्चित्त करने के लिए बहु एक मरौवर में जा छिपा, ता उस समय नहुष राजा को इन्द्र के आभन पर बिठाया गया । वहाँ रहते हुए नहुष इराणी के प्रेम को जीने के विचार से मत्प्रिया का पालकी में जेत कर उसके भवन की ओर चला । मार्ग में उसने मत्प्रिया को 'सर्प' 'सर्प' (नेह बन्ने, तेह बन्ने) कह कर फुली से बलने के लिए कहा । उस समय अणस्य मुनि ने नहुष को सीप बन जाने का शाप दिया । वह झाकावा से इस पृथ्वी पर गिरा और जब तक इसी दुःखस्था में पडा रहा जब तक कि युधिष्ठिर ने आकर उद्धार न किया हो ।

ना [नहृ + डा] नहीं, न (=न) ।

नाकः [न कम् अकम् दुखम्, तत् नास्ति अथ इति नि० प्रकृतिभावः] 1 स्वर्ग—आनाकरवधर्मनाम् रघु० ११५, १५१९६ 2 आकाश मण्डल, ऊर्ध्वतर गगन, अन्तरिक्ष । सम०—धर 1 देव 2 उपदेव—नाक, —नाककः इन्द्र का विशेषण, —बलिता अन्तरा—सम् (५०) देव,—मट्टि० ११४ ।

नाकिम् (५०) [नाक+इति] देवता, सुर—सि० ११४५ ।

नाङ्गु [नम् + ङ नाङ्ग आवेण] 1 बन्धीक 2 पहाड़ ।

नाक्षत्र (वि०) (स्त्री०—भी) [नक्षत्र + अञ्] तादा-

सम्बन्धी, नक्षत्रविषयक,—अप २७ नक्षत्रों में से चन्द्रमा की गति के आधार पर गिना गया महीना, ६० षष्ठी वाले तीस दिनों का एक मास—नाडीपण्टया तु नाक्षत्र-महीरात्र प्रकीर्तितम्—सूर्य०

नाक्षत्रिकः [नक्षत्र + ठञ्] २७ दिनों का महीना (जिसमें प्रत्येक दिन—चन्द्रमा की नक्षत्रान्तर्गति पर आधारित है) ।

नासः [नाय + अञ्] 1 साँप, विशेष कर काफ़ा साँप 2 एक काष्पनिक नागवैद्य जिसका मूल मनुष्य जैसा और पूछ साँप जैसा होना है तथा जो पानाल में रहता है—मग० १०१२९, रघु० १५१८३ 3 हाथी—मेष० ११, ३६, शि० ४१६३ विश्वम् ४१२५ 4 मगर-मन्त्र 5 क्रूर, अत्याचारी व्यक्ति 6. (सनात के अन्त में), गन्धमान्य और वृज्य व्यक्ति—उदा० पुरुवनाय 7 बाल 8 कुटी (दीवार में गयी हुई) 9 नागकेशर, नागरसोधा 10. शरीरस्थ पक्ष प्राणी में बहु हाथ जो उठार के द्वारा बाहर निकलती है 11 सात को सख्या—नाम् 1 राग 2 सीसा । सम०—अगना 1 हृथिनी 2 हाथों की सूइ—अञ्जना हृथिनी, —अधिः शेष का विशेषण, अलकः,—धरतः, —अरिः 1 गडक का विशेषण 2 मोर 3 सिंह, —अज्ञान 1 मोर—पञ्च० ११५९ 2 गडक का विशेषण,—आत्मन-गणेश का विशेषण, —आङ्गुः हस्तिनापुर, —इन्द्रः 1 मय्य या शंफट हाथी—कु० १३६ 2 इन्द्र का हाथी ऐरावत 3 शेष का विशेषण,—ईशः 1 शेष की उपाधि 2 परिभाषणमुद्रेशर तथा कई अन्य पुस्तकों का प्रणेता 3 पतञ्जलि,—उदरम् 1 लोहे का तथा (जो सैनिक छाती के बाधते हैं), बलस्थाण 2 गर्भावस्था का एक रोग विशेष, गर्भापद्रवभेद,—केलरः सुगन्धित फूलों का एक बूझ,—गर्भम् सिन्धुर,—बृहः शिव की उपाधि,—अम् 1 सिन्धुर 2 राग,—शिल्पिका मन्तिल, —जीवनम् रांगा—बल,— बलकः 1 हाथी दाँत 2 दीवार में लगी कुटी या दीवारगोरी,—बली 1 एक प्रकार का मूरजम्बुकी फूल 2 बेघा, —नक्षत्रम्,—नायकम् आस्तेषा नक्षत्र,— कः हाथों का स्वामी,—नासा हाथों की सूइ,—विर्गुहः दीवार में लगी कुटी या दीवारगोरी,—पंचमी श्रावणशुक्ला पंचमी को मनाया जाने वाला उत्सव,—पञ्चः एक प्रकार का रतिबंध, —पासः 1 युद्ध में शत्रुओं को फसाने के लिए प्रयुक्त एक प्रकार का जाल का जाल 2 बहण का सम्प का जाल,—पुण्ड्र 1 चम्पक का पीठा 2 पुलाग बूझ,—बलकः हाथों पकडने वाला,—बन्धुः मूलर का पेड़, पीपल का पेड़,—अलः भीम की उपाधि—मूषकः शिव की उपाधि—मंडलिकः 1 सपेरा 2 तपि पकडने वाला,—मलकः ऐरावत का विशेषण,—अधिः (स्त्री०)

नासः [नाय + अञ्] 1 साँप, विशेष कर काफ़ा साँप

2 एक काष्पनिक नागवैद्य जिसका मूल मनुष्य जैसा

और पूछ साँप जैसा होना है तथा जो पानाल में रहता

है—मग० १०१२९, रघु० १५१८३ 3 हाथी—मेष०

११, ३६, शि० ४१६३ विश्वम् ४१२५ 4 मगर-

मन्त्र 5 क्रूर, अत्याचारी व्यक्ति 6. (सनात के

अन्त में), गन्धमान्य और वृज्य व्यक्ति—उदा०

पुरुवनाय 7 बाल 8 कुटी (दीवार में गयी हुई)

9 नागकेशर, नागरसोधा 10. शरीरस्थ पक्ष प्राणी

में बहु हाथ जो उठार के द्वारा बाहर निकलती है

11 सात को सख्या—नाम् 1 राग 2 सीसा । सम०

—अगना 1 हृथिनी 2 हाथों की सूइ—अञ्जना हृथिनी,

—अधिः शेष का विशेषण, अलकः,—धरतः,

—अरिः 1 गडक का विशेषण 2 मोर 3 सिंह,

—अज्ञान 1 मोर—पञ्च० ११५९ 2 गडक का विशेष-

ण,—आत्मन-गणेश का विशेषण, —आङ्गुः हस्तिनापुर,

—इन्द्रः 1 मय्य या शंफट हाथी—कु० १३६ 2 इन्द्र

का हाथी ऐरावत 3 शेष का विशेषण,—ईशः 1 शेष की

उपाधि 2 परिभाषणमुद्रेशर तथा कई अन्य पुस्तकों का

प्रणेता 3 पतञ्जलि,—उदरम् 1 लोहे का तथा (जो

सैनिक छाती के बाधते हैं), बलस्थाण 2 गर्भावस्था

का एक रोग विशेष, गर्भापद्रवभेद,—केलरः सुगन्धित

फूलों का एक बूझ,—गर्भम् सिन्धुर,—बृहः शिव की

उपाधि,—अम् 1 सिन्धुर 2 राग,—शिल्पिका मन्तिल,

—जीवनम् रांगा—बल,— बलकः 1 हाथी दाँत

2 दीवार में लगी कुटी या दीवारगोरी,—बली 1 एक

प्रकार का मूरजम्बुकी फूल 2 बेघा, —नक्षत्रम्,—नाय-

कम् आस्तेषा नक्षत्र,— कः हाथों का स्वामी,—नासा

—घण्टिका 1 मधे कृपे तालाब में पानी की गहराई नापने के लिए अंशांकित बांस विशेष 2 बरतों में छेद करने का बर्तन,—रत्नम्, रेषु सितूर,—रंग सतरा
—राजः शेष की उपाधि,—रत्ना,—बल्लरी,—बल्ली भागकेसर, पान की बेल,—कोकः सापो की दुनिया, मापो का कुल, भूलोक के भीषे अवस्थित पाताल लोक,
—कारिकाः 1 राजकील हाथी 2 महाजन 3 मोर
4 गहड़ की उपाधि 5 हाथियों का मूषपति 6 किमी ममान का प्रधान ध्वजि,—सभबम्, सभूतम् मिन्द्र

1.—साङ्ख्यम् इतिहासपुर ।
नगर (वि०) (स्त्री० - री) [नगरः-अण्] 1 नगर में उत्पन्न, नगर में पला 2 नगर से संबध रखने वाला, नगुरीय 3 नगर में बोला जाने वाला 4 नम्र, शिष्ट 5 अक्षयुर, चालाक 6 बुरा, दुष्ट, दुरासंजने (जिसने नगर की बुरावर्षा ग्रहण करली है),—रः 1 नागरिक—मेघ० २५, शा० ४।१९ 2 देवर, पति का भाई 3 व्याख्यान 4 नारंगी 5 खकाबट, कठिमाई, श्रम 6 मुकरत, जानकारी का सङ्गन.—घी 1 क्षिपि, बर्षामाला जिसमें प्रायः सखन लिखी जाती है—तु० देवनागरी 2, चालाक और बुद्धिमती स्था—हस्ता-भोरी स्वरानु मक्ष मन्वृती नागरीणि उ० इ० १६ 3 म्नुही नाम का पौधा ।

नागरक, नागरिक (वि०) नागरेव वृज्, नगर-ठक] 1 नगर में पला नगर में उत्पन्न 2 नम्र, शिष्ट, शाकील—नागरिकवृत्त्या मन्वापर्यमाय—शा० ५ 3 चतुर, बुद्धिमान्, चालाक,—कः 1 नागरिक 2 नम्र वा शिष्ट व्यक्ति, बौर महादुर, बहु प्रेमी जो अपनी पहली प्रेमिका को अलिप्त प्रेम प्रदर्शित करता है, परन्तु किमी अन्य से अपनी प्रपथ प्रार्थना करता है 3 ज्ञा नगर के पुष्पसतो में फैल गया है 4 खोर 5 कलाकार 6 पुष्पि का मुख्य अधिकारी - विक्रम० ५, शा० ६ ।

नागरीकः, नागरी [नागरी + क्त + क, नाग इव भ्येटीण नाम—वि + क्त + क] 1 सन्पट, दुर्बलचित्त 2 जार 3 लक्ष्य भिन्नाने वाला ।

नागरेकः [नाय + क्त + क] सतरा, नारंगी ।

नागरेयम् [नाय + व्यञ्ज] बुद्धिमत्ता, चतुराई ।

नागरेकेतः [नागरेकेता + अण्] अग्नि ।

नाडः [नाट + धञ्] 1 नाचना, अभिनय करना 2 कर्णाटक प्रदेश ।

नाटकम् [नाट + धञ्] 1 स्वाद्य, रूपक 2 रूपक के दस मुख्य भेदों में से पहला, परिभाषा आदि के लिए ६० मा० ६० २७७,—क अभिनेता, नाचने वाला ।

नाटकीय (वि०) [नाटक + छ] नाटकसंबन्धी, नाटक-विषयक—पूर्वरंग प्रथमया नाटकीयस्य वस्तुन - वि० २।८ ।

नाटार [नाटया अपत्यम् आरक] अभिनेत्री का पुत्र ।

नाटिका [नाट + क्त + काप्, इत्थम्] एक छोटा वा लघु प्रहसन, एक रूपक, उदा० रत्नावली, प्रियदर्शिका, या विद्वत्शालाविका, मा० ६० परिभाषित करता है
—नाटिका कल्पवृक्षात् स्यात् स्त्रीप्राया वतुर्गुहिका, प्रख्यातो धौगलिनस्तत्र स्वाद्यारकां नृप, स्वादन्त पुरमबद्या समीपव्याप्त्याज्यवा, कन्यामुरगा कन्याज्ज नायिका नृपवशा, मप्रवसेन नैताज्या देव्यास्थासेन साङ्गित, देवी पुनर्भवेज्जैला प्रगन्था नृपवशा, पदे पदे मानवतो तद्व्य मगमो द्वयो वृत्ति स्यात्कीयिकी स्वल्पविमर्शा सपथ पुन ५३९ ।

नाटिककम् [नाट + शिञ् + क्त + कण्] अनुकृति, किसी की चेष्टादि का अनुकरण, सकेत, हावभाव प्रदर्शन—भीतिनाटिकेन—शा० ५ ।

नाट्येय -र- [नटी + टक् टुक वा] किसी अभिनेत्री वा नर्तकी का पुत्र ।

नाट्यम् [नाट + व्यञ्ज] 1 नाचना 2 अनुकरणत्मक चित्रण, स्वाद्य, हावभाव प्रदर्शन, अभिनय करना नाट्ये च दक्षा वचम्—रत्न० १।६, नून नाट्ये भवति च चिर नात्रांशोर्गवेषोला—विक्रमा० १।८।२० 3 नृत्यकला अभिनय कला, नाट्यकला नाट्य भिन्नस्वैरेन्या वृध्वापरेष ममानाचनम्—मालवि० १।४, टप, अभिनेता। मम०—आचार्य नायकला वा गुर, -उक्ति (स्त्री०) नाटकीय वाक्यरचन्याम्,—धर्मिका - धर्मो अभिनयसंबन्धी नियमावली—विद्य-निव की उपाधि शाळा 1 नाट्यधर 2 नाटक मेलेने का घर या स्थान, शास्त्रम् 1 नाट्य विज्ञान नृप गीण तथा अभिनय संबंधी विद्या 2 नाट्यशास्त्र पर लिखा गया ग्रन्थ ।

नाटि-डो (स्त्री०) [नाट + शिञ् + इत्, नाटि + डीप्] 1 किमी पांशे का पला डटल 2 कमल की शोणली डई 3 (धमनी या निगर की भांति) नलियों के आकार का धारी का अय—वडनिकयदानाडीचक्रम व्यवस्थितामा—मा० ५।१.२ 4 बंसुटी, मुरली 5 नामूर वाला घास, नामूर, नाडीघण 6 हाथ या पैर की मूख 7 चौराई मिनट के समय के बरगवर माप, घडी 8 अने मूहन का कालमान 9 ऐन्द्रजालिक जान्। सम० चरण एक पंथी, चौरम् एक छोटा मरकुल, लक्ष कौश,—परीक्षा मन्त्र देवता,—मन्त्रलम् आकाशीय विद्युत्त देवा,—सधम् नली के आकार का एक उपकरण,—ब्रह्म नायूर, नृयज्ञ, रिसने वाला फोडा ।

नाटिका [नाटि + क्त + टाप्] 1 नली के आकार का अंग 2 २४ मिनट का समय, घडी—नाटिका विच्छेद पट्टह—मा० ७, का० १३,७० ।

नाडि (डी) घम (बि०) [नाडी घमति—नाडी+घ्मा+लघ्, घमादेश, ह्रस्व, मुम् च, प्रत्ये ह्रस्वाभाव] (अथ आदि) नलिकाकार अथो को गति देने वाला, नाडिघमने स्वामिने—का० ३५३,—अ मुनार ।

नाणकम् [न आयकम्, इति] निष्का, मोह्ण लयी हुई कोई वस्तु, एवा नाणकमोयिका महायिका—मूचठ० १।२३, यात्र० २।०४० ।

नातिचर (बि०) [न अतिचर] जो बहुत लयी अत्यय का न हो, जो दीर्घकालीन न हो ।

नातिदूर (बि०) [न अतिदूर] जो बहुत दूर न हो, अधिक दूरी पर न स्थित हो ।

नातिबाध [न अतिबाध] दुर्बलन तथा अयशब्दों का परिहार करना ।

नाथ (भा०) पर० नाथनि—करी-करी भा० भी) 1 निवेदन करना, प्रार्थना करना, किसी बात की याचना करना (सप्र० अथवा द्विकर्म० के साथ), मोहाय नाथते मुनि—वां०, नाथते फियु पति न भूमन—कि० ३।५९, सनुटमिटाडिन तमिपटदेव नाथनि के माय न लाकनाथम् नै० ३।२५ 2 प्राक्नि ग्यना, ग्यामी होना, छा जाना 3 नग करना कष्ट देना 4 आशीर्वाद देना, मंगल कामना करना, शुभाशीष देना (केवल ह्य अर्थ में आ०), नाथिनघमे—महाबी० १।११, (अमष्ट विमनाकिन पकिन में बतलाना है कि यहाँ 'नाथते' स्थान पर 'नाथनि' होना चाहिए, क्योंकि यहाँ अर्थ केवल 'निवेदन या प्रार्थना करना' है—जीन स्वामिनाथते कुचयुग पत्रावृत्त मा ह्या), नाथिषो नाथते—सिद्धा० ।

नाथ [नाथ्+अच्] 1 प्रभु, स्वामी, रजक, नेत्र- नाथे कुनस्ववयम्भ प्रमानाम्—रघु० ५।१३, ३।४५, त्रिकोक, केलाम् आदि 2 पति 3 भारवाही बेल की नाक में डाला हुआ रज्जु । सम० हरि पयु ।

नाथचर (बि०) [नाथ्+चरि, चरच्] 1 सनाथ, जिसका कोई स्वामी या रजक हो—नाथबलस्तया नाकास्वयमनाथा विपत्त्यमे उत्तर० १।४३ 2 परा-अथी, पराधीन ।

नाथ [नत्+घञ्] 1 ऊँची दहाड़, चित्साहट, चील, गारजना, दहाड़ना—विह्वार, घन० आदि 2 ध्वनि—मा० ५।२० 3 (योगशास्त्र में) अनुनासिक ध्वनि जिसे ह्य उन्नतबिन्दु (०) के द्वारा प्रकट करते हैं ।

नाथिन् (बि०) [नत्+गिनि] ध्वनि या शब्द करने वाला, अनुनाथो—अबुदबुवनाथी रथ—रघु० ३।५९, १।५५ 2 रांभने बाणा, गरजने वाला—सर०, सिंह० आदि ।

नाथेय (बि०) (स्त्री—यी) [नथी+इक्] नदी में उपवन, जलीय, समुद्रीय,—अन्व सैधाजयक ।

नाथ (अध्य०) [न+नाञ्] 1 अनेक स्वामी पर, विभिन्न रीति से, विविध प्रकार से, तरह तरह से 2 स्पष्ट रूप से, अलग, पृथक् रूप से, 3 बिना (कर्म० करण० वा अथा के साथ) नाता नारी विधकला लोक वात्रा—बी०, (विषय) न नाता शंभुना रामात्तु बर्षणाथोअजो बर—तदेव 4 (समास के आरम्भ में विशेषण के रूप में प्रयोग) विविध प्रकार का, तरह तरह का, नाता प्रकार का, विभिन्न, विविध—नाता फलति कल्पलोक भूनि भर्तु० २।४६, भग० १।९, मन्० १।१४८ । सम० अत्यय (बि०) विभिन्न प्रकार का, बहुपत्नी—अर्थ (बि०) 1 विविध उद्देश्य या लक्ष्यों वाला 2 विविध अर्थों वाला, (शब्द के रूप में) अनेकार्थक—कारम् (अध्य०) विविध प्रकार से करने,—एत (बि०) विविध वधि से युक्त—मानवि० १।४, रूप (बि०) विभिन्न रूपों वाला, विविध प्रकार का, बहुरूपी, नाता प्रकार का,—अर्थ (बि०) भिन्न २ रती का,—विध (बि०) विविध प्रकार का, तरह तरह का, बहुविध,—विषय (अध्य०) विविध रीति से ।

नाथीः [ननाथ्+अच्] ननर का पुत्र ।

नात (बि०) [न० इ०] अन्तरहित, अन्तः ।

नातरीयक (बि०) [न अन्तराधिनाथ—अन्तरा+उ, —कन्] जो अलग न किया जा सके, अनिवार्य रूप में जुड़ा हुआ ।

नात्रम् [नत्+टन्] प्रशंसा, स्तुति ।

नाथिकर, नाथिन् (पु०) [नाथी करोति—कृ+ट, ह्रस्व, नन्+गिनि] नाथी पाठ करने वाला, (नाटक के आरम्भ में मांगलिक बचन बोलने वाला) ।

नाथी [नन्धनि देवा अथ नन्ध्+अच्, पूर्वो० वृद्धि, डीप] 1 हर्ष, लोचन, झुकी— 2 समृद्धि 3 ध्यानायुक्त के आरम्भ में देवस्तुति 4 विशेषकर, नाटक के आरम्भ में मंगलाचरण के रूप में आशीर्वादात्मक श्लोक या श्लोकों का पाठ, स्वस्वयन—आशीर्बचनसंघना नियत यन्मात्रकण्ठते, देवद्विजनुपाधीना तस्मान्नाधीति सतिता या—देवद्विजनुपाधीनामाशीर्बचनपूर्विका, नथति देवता ग्यां तस्मान्नाधीति कीर्तिता । सम०—कर दे० 'नाथिन्'—विषाह हर्षचार—महाबी० २।४,—एव कुर्य का इफलन—बुध (बि०) (विषयत पूर्वव या पितर) जिसके लिए नाथामुल श्राद्ध किया जाय (—अच्) 'श्राद्धम् पितरों की पुण्यस्तुति में किया जाने वाला श्राद्ध, बिनाह नाथि तुय उत्सवों से पूर्व की जाने वाली आरंभिक स्तुति (क) कर्मों का इफलन,—नाथिन् (पु०) 1. नाटक में मंगलाचरण के रूप में नाथी पाठ करने वाला 2. डोल बजाने वाला,—श्राद्ध दे० अन्तर 'नाथीयुज्य' ।

नामितः [न आनोति सरलताम्—न+आप्+तन्, इट्]
नाई, हुआमत बनाने वाला—पंच० ५११। सम०
—बाळा नाई की दुकान, खीरगृह, वह स्थान जहाँ
हुआमत होती ही।

नापित्यम् [नापित+प्यम्] नाई का व्यवसाय।

नाभि (पु०, स्त्री०) [तह्+इत्, प्रचान्तदेश] सूत्री
—नगावतंसनाभिर्नाभि—रसा० २, निम्ननाभि—मेष०
८३, रघु० ६१५२, मेष० २८२ नाभि के समान गर्त
—(पु०) १ परिपु की नाह पत्र० १८१२ केन्द्र,
किरणबिन्दु, मुख्य बिन्दु ३ मुख्य, अग्रणी, प्रधान
—कल्पनाभिर्नूपमबलस्य—रघु० १८१२० ४ निकट
की रिशेदारी, बिरादरी, (जाति आदि) का समुदाय
जैसा कि 'सनाभि' में ५ सर्वोपरि प्र०—रघु० ९११६
६ निकटसंबन्धी ७ शक्ति ८ अम्यभूमि,—भि. (स्त्री०)
कस्तूरी (अर्थात् युगनाभि) (विश०) इत० समाप्त के
बल में प्रयुक्त 'नाभि' शब्द बदल कर 'नाभ' बन
जाता है) जैसा कि 'पद्मनाभ' में। मय०—आवर्त
नाभि का गर्त, —अः—अणम् (पु०)—म् इट्मा के
विधोपण,—नाडी,—नालम् १ नाभिर्गजु, उन्मर्गजु,
नाल २ नाभि का बिदारण।

नाभिन् (वि०) [नाभिर्लस्यस्—लच्] नाभि में पड़,
या नाभि से आने वाला।

नाभीलम् [नाभि+ल्यप्+ल+क] १ नाभि का गर्त
२ पीडा, ३ विधीय नाभि।

नाभ्य (वि०) [नाभि+यत्] नाभि से सबंध रखने वाला,
नाभि से आने वाला, नाभि में रहने वाला, नाल से
जुड़ा हुआ,—भ्य विभ का विशेषण।

नाभ (अभ्य०) [नम्+निच्+ङ] निम्नांकित अर्थों में
प्रयुक्त होने वाला अव्यय—१ नामधारी, नामक, नाम
से—हिमालयो नाम नगाधिराज—कु० १, तन्मन्दिनी
मुकुता नाम—दश० ७ २ निस्सन्देह, निश्चय ही,
सचमुच, वास्तव में, पथार्थ में, अवश्य, वस्तुतः—मया
नाम जिनम्—बेणी० २११०, विनीतवेषेण प्रवृत्त्यानि
तपोवनानि नाम—शं० १, आण्डासिनस्य मम नाम
—विष्णु० ५११६, अब कि मैं जरा आश्चर्य हुआ
३ सम्भवत, कदाचित्—प्राय 'मा' के साथ अये
पदशब्द द्वय भा नाम रणिय—मूष्ण० ३, कदाचित्
(परन्तु मुझे आशा नहीं) रक्षकों का—मा नाम
अकार्यं कुप्यते—मूष्ण० ५ ४ सभावना—तर्वि
नामात्मगाति कु० ३११९, तथा नाम मूनि विमान्य
—शं० ५११९, क्या यह सम्भव है (निश्चायक दृष्ट से),
इसका प्रयोग 'अपि' के साथ बहुधा निम्नांकित अर्थ
में होता है—'मेरी इच्छा है' 'क्या ही अच्छा हो'
'क्या यह सम्भव है कि' आदि, दे० 'अपि' के अन्तर्गत
५ श्रुतमुट का कार्य, बहाना (अलोक), कार्यातिक्र

नाम भूत्वा—दश० १३०, इसी प्रकार 'भीतो नामाव-
ल्यत्' १०५, मानो भयभीत होकर—परिधम नाम
विनीय च अणम्—कु० ५१३२ ६ (लोट् लकार के
साथ) माना कि, यथापि, हो सकता है, अच्छा—
तद्गुरुतु नाम घोकावेगाय—का० ३०८ करोतु नाम
नीतिज्ञो व्यवसायमिततत—हि० २१४, यथापि
वह स्वयं प्रयत्न कर सकता है, इसी प्रकार—मा०
१०१७, शं० ५१८ ७ आश्चर्य—अथो नाम पर्वत-
मारोहति—गण० ८ रोप या निदा—ममापि नाम
दशाननस्य परे परिभव—गण०, (यह बावच निदा-
भूचक भी हो सकता है), कि नाम बिक्रुर सरनापि—
उत्तर० ४, ममापि नाम सत्वरिभूयते गृहा—शं०
६, नाम शब्द प्रायः प्रथम बावच सर्वनाम तथा उससे
भूत्पन् 'कथम्' 'कदा' आदि अन्य शब्दों के साथ
प्रयुक्त होकर निम्नलिखित अर्थ प्रकट करता है—
'सम्भवत' 'निस्सन्देह', 'मैं जानना चाहूँगा'—अपि
कथ नामन्त्—उत्तर० ६, को नाम राज्ञा भिय—
पंच० ११४६, का नाम पाकाभिमुखस्य जनुर्दाराणि
देवस्य पिशातुमापते—उत्तर० ७४४।

नाभम् (नपु०) [नापते अम्यप्यने नम्यते अर्थधीयते
अर्थोर्जन वा म्नाः मनिन् नि० साधु] १ नाम,
अभिधान, वैयक्तिक नाम (विप० गोशब्द) कि न्
नामैतदस्या—मुद्रा० १, नाम ग्रह सर्वोचित करना
या नाम लेकर बुलाना, नामाग्रहमरीचोत्सा अट्टि०
५१५, नाम कृ या वा, नाम्ना या नामत कृ नाम
रचना, पुकारना, नाम लेकर बुलाना—चकार नाम्ना
रघुमान्मसम्बन्धम् रघु० ३१२१, ५१३६, ती कुसलबी
चकार किल नामन् १५१२२ चद्रापीड इति नाम
पत्रे—ना० ७४, मानर नामत पृच्छेयम् शं० ७
२ केवल नाम सत्यवाच्यि मन्थितस्य पयसो
नामापि न श्रयने—भर्तु० २१६०, 'नाम मी नहीं'
अर्थात् 'काई चिन्त दिमाई नहीं देता है' आदि
३ (श्या० में) सज्ञा, नाम (विप० आश्चर्य) तत्राम
येनाभिदधानि सन्ध—या—मन्त्रप्रधानानि नामानि
निष्० ४ शब्द, नाम, समानार्थक शब्द—इति वृत्
नामानि ५ सामग्री (विप० गुण)। सम०—अक
(वि०) नाम से विज्ञित—रघु० १२१०३,—अनु-
शासनम्,—अभिधानम् १ किसी के नाम की घोषणा
करना २ शब्द सङ्घ, शब्दकोष,—अधराध (किसी
प्रतिष्ठित व्यक्ति को) नाम लेकर गांभी देना, नाम
लेकर बुलाना अर्थात् तिरस्कार करना,—आश्लो
किसी देवता को) नाम-सूची,—करणम्,—कर्मन्
(नपु०) १ नाम रचना, जन्म होने के पश्चात्
बालक का नामकरण करना २ नाम मातृ का अनु-
बध,—अनु नामोल्लेख करना, नाम लेकर सर्वोचित

कृत्वा, नाम, स्वरूप, नाम दाद कृत्वा—पुष्पाणि
 नामधेयानां यथा महासूक्तानाम्—४३, मनु० ८१२७७,
 २४० ३१८१, १४मा नाम छान्दोग्य, स्वनामधेयानां
 ३००० पत्र० १, 'मे' अपना नाम छोड़ देता,—घातु
 नाथ किरा, नाम घातु (जैसे पादार्थ, वृषभ्यादि
 आदि), धारक,—धातिन् (वि०) नाम मात्र रूपसे
 चान्दा, नाम मात्र का, नाममात्र पत्र० २१८८,—
 पेशम् नाम, अभिधान,—इन्द्रप्रधानेति हुननामधेया
 शू० १, रि नामधेया मा—मालविके ६, १५० ११५५,
 १०१६०, १११८, मनु० २१२०,—निर्देश नाम मे
 महेन्द्र—मात्र (वि०) कवल नामधेयी, नाममात्र
 का, नाम के लिये, पत्र० ११३३, ११८६, माला,
 सखह नामो की मूवा, (महाभा की) मन्दावली,
 —मुक्ता मात्र कलम की अमृती, नामाविति अमृती—
 उने नाममूलाशान्दनावाच परम्परमवलोकयन्
 पा० १, विषय मन्त्राओं का विष अमृशासनम मन्त्रा
 मन्त्रा के लिये की विदनावली,—भक्ति (वि०)
 १ नाम रक्षण २ मात्र, संबन्धक,—वाचक (वि०)
 नाम यददाने वाला (कम्) अर्थात् वाचक मन्त्रा
 शेष (वि०) जिसका केवल नाम ही बाकी रह गया हो,
 जिसका नाम ही अर्थात् है, स्वर्गीय उपन० २१६।
 नामि [नम्] इच्छा [विण] की उपाधि।
 नामित (वि०) [नम् + णिच् + क्त] श्रुता हुआ, विनम्र,
 निर्दोष।
 नाम्य (वि०) [नम् + णिच् + क्त] लचकरदार, लचीला,
 लचकीला।
 माघ [मा + घञ्] १ मेरा, माघ दर्शक २ माघ दिव-
 नाने वाला, निर्देशक ३ नीति ४ उपाय, तर्कीव।
 माघक [मा + घञ्] १ माघदर्शक, अक्षयी, महाहक २
 मूष्य, स्वाधी, प्रथम, प्रभु ३ गणधाम्य या प्रथम
 पुण्य, पुण्य स्थिति—सनातन्यक आदि ४ सेनानायक,
 सेनापति ५ (अल० पा० में) नाटक या क०३ का
 नायक, (सा० २० के अनुसार नायक चार प्रकार के
 हैं धीरोदात्त, धीरोदत्त, धीरललित और धीर-
 प्रशान्त, इन चारों के कुछ अन्तर्भेद होने के
 कारण नायक के भेद सङ्ख्या में ४० होने हैं, सा० २०
 ६४१५, गणमन्त्री केवल तीन भेदों का (पति, उप-
 पति और वैशिक १५११० उल्लेख करने हैं) ६
 हाज के बीच का मुख्य भण ७ निर्दोष या शुभ
 उदाहरण—दोषिते स्त्रीषु नायका । सम०—अभिष-
 रत्ना, प्रभु।

माघिका [नायक + टाप्, इत्थम्] १ स्वभावितो २ पत्नी
 ३ किसी काव्य या नाटक की नायिका (या० २०
 के अनुसार नायिका के तीन भेद हैं—महा या स्त्रीया,
 अर्थात् या परकीया तथा साधारण स्त्री आये बर्गीकरण

के लिये दे० सा० २० ९७—११२, और रमय०
 ३—९४, मु० 'अमरगर्भ' भी)
 मार [नर + अण्] जल (स्त्री०) भी—तु० मनु० १।
 १०)—रम् मनुष्यों की नीच या समदं । सम०
 जीवन्म मीमा ।
 मारक (वि०) (स्त्री०) को [नरक + अण्] नारकीय,
 नरकमन्त्री, दोखनी, -क १ नारकीय प्रदेश, दोखल
 नरकवासी।
 मारकिक, मारकिकम्, नारकीय (वि०) [नरक + ठक्,
 इति, छ वा] १ नरक का, दोखनी २ नरक या
 दोजख से रहने वाला।
 मारय [नृ + अण्, घृष्टि] १ सने का पेश २ लुप्ता,
 लुपट ३ जीवित प्राणी ४ मनुष्य,—सम्, सक्म्
 १ सने, सद्योपतिन प्रसङ्गादिभक्त्यापि नारयकम्
 २ मात्र।
 मारय [नरस्य घर्मा नाप, तत् इदानी दा + क]
 प्रसिद्ध देववि का वा नाम, दिव्य ऋषि, मन्त्र मन्त्रा
 जियने देवत्व प्राप्त किया [देववि नागद ब्रह्मा के दम
 मानस पुत्रों में मे मर है जो उसकी जया म उगल
 हृग, यह वेदों के संदेशवाहक के रूप में चित्रित किया
 गया है जा मनुष्यों का देवा का संदेश देते तथा
 मनुष्यों का संदेश देवा तक पहुंचाते थे। यह देवता
 और मनुष्यों में कलह के बीच होने के कारण 'कलि-
 प्रिय' कहलाते थे, कहा जाता है कि 'बीणा' का
 आविष्कार इन्होंने ही किया था, यह एक जाचार-
 संहिता के भी प्रणेता हैं जिसका नाम इन्हीं के नाम
 पर 'मारद-मूर्ति' है]।
 मारसिह (वि०) [नरसिह + अण्] नरसिह से संबन्ध
 रखने वाला, हू किम् का विशेषण।
 माराच [नरन् अचमति—आ + चम् + र् स्वाधे अण्,
 नाग्य आचमति वा तारा०] १ लोहे का बाण,
 तप नागचतुर्दिने—रम्० ४५१ २ बाण—कनक-
 नाराचपररगर्भविज का० ५७ ३ अल इषी।
 माराचिका, माराची माराच + हुन् + टाप्, माराच +
 अच् + डीप्] सुतार की तराजू, (कसौटी रूपी
 तराजू)।
 माराचक [नरा अतन पत्य व० सं०] १ विलु की
 उपाधि (मनु० १११० में इसको व्युत्पत्ति यह दी है
 आधी मारा इति प्रोक्ता आपां नै नरसूतव, ता यव-
 म्पायन पूर्व तेन नारायण स्मृत २ एष प्राचीन
 ऋषि का नाम जो 'नर' के साथी थे तथा जिन्होंने
 अपनी जया मे उर्वशी को पैरा किया—मु० उदङ्गवा
 नरमन्वय मने सुररत्नी विक्रम० १२२, दे० 'नर-
 नारायण 'नर' के अन्तर्गत भी १ घन की देवी
 लक्ष्मी का विशेषण २ दुर्गा का विशेषण।

नारीकेर,—सः [किल् + कञ् = केल, नारी केल - ० त०, पृथो० ह्रस्व, अथवा नल् + इन् लस्य - ० नारि, केन जलेन इलति इल् + क् कर्म० श०] नारियक—नारिकेलसमाकारा दृश्यते हि मुहुञ्जना—हि० १।१६ (यह शब्द इन प्रकार [नारिकेलि— ली, नारिके— ल, नाडि (डी) केर, नारिकेर, नारिकेलि— ली] भी लिया जाता है।

नारी [नू—नर वा जाती स्त्री वि०] 1 स्त्री, अर्थात् पुरुषी नारी वा नारी शब्दों में प्रायः—मू० ३।२७। सम०—संस्कृतः 1 जार, उपनि 2 ज्यट,—कृष्णम् स्त्री का दुष्प्रसन्न (बेहूँ)—पान दुर्जनसमं पया च विरहोऽनम, स्वप्नोऽप्यगृहवासश्च नारीया रूपानि षट्—सन्० १।१३,—प्रसन्न कामासक्ति, लम्पटा, —रत्नम् स्त्रीरत्न, श्रेष्ठ स्त्री।

नारीयः [नारीयामञ्जिवि शोभनमय पम्ब] मन्त्रे का षट्।

नाल (वि०) [नलयेवम्—अण्] नरकुल का बना हुआ—लम् 1 पोला डडल, विशेष कर कमल की डडी, विकचकमलं म्निगधवंदुर्वनालं—मेघ० ७६, मू० ७।१३, कु० ७।८९, (पू० भी इस अर्थ में) 2 शरीर की नलिकाद्वारा बाहिरी, धमनी 3 हृत्नाल 4 मूत्र, दन्का ल नहर, नाभी।

नालबी (स्त्री०) शिव की बीणा।
नाला [नल् + ण + टाप्] पोला डडल, विशेषकर कमल नाल।

नालि, —नी (स्त्री०) [नल् + णिच् + इन्, नालि + षोष्] शरीर की नलिकाकार बाहिरी, धमनी 2 पोलाडडल, विशेषकर कमलनाल, 3 रूख घटे का सवय, घड़ी 4 हाथों के कानों को बीचने का उपकरण 5 नहर, नाभी 6 कमलफूल।

नालिक [नलमेव नालमन्त्यस्य ङन्] मेमा—का 1 बसल की डडी 2 नली 3 हाथों का कान बीचने वा उपकरण, —कम् 1 कमल का फूल 2 एक प्रकार का फूल से बजने वाला वाद्ययंत्र, बासुरी।

नालिकेर, नालिकेलि—ल्ले रे० नारिकेर बाडि।

नालीक [नात्या कायति—कं + क् तागा०] 1 बाण 2 माला, नेत्रा 3 कमल 4 कमल की रोजदार डडी 5 कमल के फूलों का रोजदार डडल।

नालीकिनी [नालीक + इनि + षोष्] 1 कमल फूल का गुच्छा, समूह 2 कमलों का सरोवर।

नालिक [नावा तरति—ङन्] बहाइ का कर्णधार बालक—अथवातिरिति ते कृष्ण मन्वा नोनाधिके त्र्यवि, नालिकपुत्रे न विद्याम—महा० 2 पीतबाहक, मल्लाह 3 नौयात्री।

नालिम् (पु०) [नी + इनि] केवल, मल्लाह।

नाथ (वि०) [नावा तामं नो] यन् 1 जहाँ किसी या जहाँ से जाया जा सके, (नदी आदि) जिसमें जहाँ जल बगाया जा सके—नाथा मुद्रनाग नदी मू० ८।३१, नाथ पर केविदनामिपुंजी— वि० १।२।७६ 2 प्रसास के योग्य स्वयं नारायण, नृत्तना।

नाथ [नत् + षञ्] 1 अश्ल लोभा मना नाथ ताग उपरुननमाथाविव जने—मू० ५।२५ 2 भ्रमणा, ध्वम, बर्बारी, हासि—मं० २।४० मू० ८।८८, १२।६७, इसी प्रकार विल' बडि' 3 मू० 4 मृगीकन, सकट 5 पन्डित, पन्डित्याव 6 नगदड, पन्थापन।

नाथक (वि०) [नत् + णिच् + ष्वल्] विव्यमक, नाम करने वाला।

नाथन (वि०) (स्त्री०—नी) [नत् + णिच् + ष्वल्] नष्ट करने वाला, नाश करने वाला हटाने वाला (नपाम में)—नम् 1 विषयम्, बर्बारी 2 दूर हटाना, दूर कर देना, शहर निकाल देना 4 नष्ट होना, मू० ५।

नाथिम् (वि०) (स्त्री०—नी) [नत् + णिच्] 1 विषयक, नाम करने वाला, हटाने वाला 2 नष्ट करने वाला, नष्ट होने वाला मं० ३।१८ मू० ८।१५।

नाथिक [नत् + ङन्] खोपे हूटे वस्तु का म्वासी।

नाथा [नाम् अ + टाप्] 1 नाक म्फुग्दधननासापुटमया उन्ग० ५।२९, मं० ५।२६ 2 हाथों की मूट 3 उन्थाजे की धारण की उन्ग की लकड़ी। सम० अक्षम् नाथ वा अथभाग, मा० १।१, छिद्रम्, गन्धम्, त्रिवग्म नवना, —शाह (नप०) दरवाजे की बीट्ट की उन्ग बायो लकड़ी,—पन्डित्याव नाथ का बहना, मर्दी उन्गा, —पुट,—पुटम् नवना, बग नाक की इट्टी, ब्रायः मर्दी से नाक का बहना।

नाथिकार (वि०) [नाथिक + णे + षञ्, धुय, ह्रस्वच्] नाक से उन्ग पीने वाला।

नाथिका [नाथ् + ष्वल् + टाप्, उच्यम्] नाथ दे० धामा। मं० अत्र, नाक से निकलने वाला उन्गमा।

नाथिष्य (वि०) [नाथिका + णच्] 1 अनुनासिक 2 नाक से होने वाला, —बध अनासिक खनि—बधम् वाट।

नाथोग् [नाथार म् + ट् + क् तागा०] नेत्रा के सामने आगे उठना वा उठाना—र 1 (नेत्रा का) अथभाग—नाथोग्चरपोभंठया महावी० ६, नै० १।६८ 2 नेत्रा की दाँत के आगे चलने वाला थोड़ा।

नाथि (अश०) [न् अन्] 'उत् नहीं है' समन्वित, जैसा कि नाथिभांग में। सम०—बाह 'भयो'ति नाथक या नपाम्या का अनुनासिक' मिद्रान, नाथि-कना, अणगा—बीट्टीव मर्दी नाथिनादरनेव—का० ४९।

नास्तिक (वि०) [नास्ति परलोकः तत्साक्षीश्वरो वा इति मतिरस्य—उन्] वा—कः अनौपचारिकी, अविश्वामी, जो देवों की प्रामाणिकता, पुनर्जन्म और परमात्मा या विषय के विघाता के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता है— शि० १६७ मनु० २११, १२२ ।

नास्तिक्यम् [नास्तिक+पञ्च] नास्तिकता, अनास्था, पापद्वयम् ।

नास्तिकः (पु०) आम का बन्ध ।

नास्त्वम् [नामा+यत्] नाकें की रस्मी, चालू बेल की नकल ।

नाह् [नह्+घञ्] 1 बचन, निग्रह 2 फटा, जाल 3 मलाशय, कोष्ठवद्धता ।

नाह्व, —धि [नह्वस्वापर्यम् नह्व+अण, इन् वा] यथाति राजा की उपाधि ।

नि (अव्य०) [नी+ङि] (प्राय मज्ञा वा क्रिया के पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है, क्रिया विशेष या स्वयंशेषक अव्यय के रूप में विरल प्रयोग), गण० के अनुसार, इस शब्द के निम्नांकित अर्थ हैं—1 निवारण, नीचे की आर गति—निपत् निवद् 2 सन्तुह, या स्रह, निकर, निकाम 3 तीव्रता—निकाम, निगहीन 4 हुबह, आदेश, निदेश 5 सान्त्व, स्थायित्व—निर्विना 6 कुलकनाविपुण 7 विपन्नगण, निग्रह, निवध 8 यमिदलन (यै, अनर्शन) निपीतमुदकम् 9 मात्रिष्य, मामोष्य—निकट 10 अपमान, दुर्गाई, ज्ञानि—निकृति, निकार 11 शिष्यतावा, निदर्शन 12 विश्राम, निवृत्ति 13 आश्रय, शरण 14 सन्देश 15 निवचन 16 पुष्टीकरण 17 (दुर्गदास के अनुसार) केंकना, देना आदि ।

नि शेषे [निर+क्षिप्+घञ्] 1 केंकना, भेज देना 2 व्यय करना ।

नि शेषणी नि शेषिण (स्त्री०) [नि, निश्चिन शेषयते आ रो-यन् अन्वा निर+क्षि+भ्यट्+ङोप् निश्चिना शेषिण मात्तलपत्ति यन् ङ० म०] मोडी, डीना—रघु० १५, १०० ।

नि श्वास, निश्वासात् [निर+श्वम्+घञ्] 1 सांस बाहर निकालना, बहिर्श्वसन 2 आह मन्ता, लम्बा सोम देना श्वास लेना ।

नि श्चरणम् [निर+म्+भ्यट्] 1 बाहर जाना बहिर्गमन 2 निकाम, डार, दरवाजा 3 महाप्रयाण मृत्यु 4 उपाय, नयकीच, उपचार 5 मोक्ष ।

नि सह (वि०) [निर+सह्+ङल्] सहन करने या रोकने के अवाग, अवस्य 2 नि सकल, अक्षहीन, हर्नामाह, मदान, धान, अथि क्षिप्र नि सहानि जाता—मा० २, दसो प्रकार मा० २, ७, उत्तर० ३ 3 अमहतीय, जो सहन न जा सके, अनिर्वाय ।

नि.साराणम् [निर+म्+गिष्+भ्यट्] 1 निष्कासन, निकाल बाहर करना 2 घर से निकलने का मार्ग, डार, दरवाजा ।

नि.श्व [निर+श्व+अप्] शेष, बचत, फालतु ।

नि.श्वाय [निर+श्वु] 1 श्वय, लक्ष करना, अर्थव्यय 2 चाबलो का माट ।

निकट (वि०) [नि समीपे कटति नि+कट्+अच्] नजदीकी, समीपम्, अदूरम्, आसन्न, ट,—टम् समीप्य (नजदीकी पास 'समीप' अर्थों को क्रिया विशेषण के रूप में प्रकट करने के लिए 'निकट' प्रयुक्त होता है—वहति निकटे कालस्रोत समस्तभया बहुम्—शा० ३।२)

निकर [नि+कृ+अच्, अप् वा] 1 डेर, चट्टा 2 सुष, समुच्चय, सग्रह—पयान स्वैदाग्रसर इव हृषीकनिकर—गीत० ११, शि० ४।५८, ऋतु० ६।१८ 3 मटरी 4 रस, सार, मल 5 उपयुक्त उपहार, दक्षिण 6 निधि, खजाना ।

निकलनम् [नि+कृत्+भ्यट्] काट डालना ।

निकलनम् [नि+कृप्+भ्यट्] विश्राम वा विहार के लिए मूला स्थान, नगर में या नगर के निकट खेल का मैदान 2 दालान 3 पथरी 4 जमीन का टुकड़ा जो अभी जोता न गया हो ।

निकष [नि+कृप्+घ, अच् वा] 1 कमीटी, निकप-प्रस्तर, निकषे हेमरेवेव—रघु० १७।५६, मत्तगी० १।४ 2 (आल०) कसौटी का काम देने वाली कोई वस्तु, पतीक्षण—नन्वेध दर्शनिकषस्तव शब्दकेतु—उत्तर० ५।१०, आदर्श शिक्षितानां सुचरितनिकष—मृच्छ० १।४८, दश० १, का० ४४ 3 कमीटी पर बनी सीने की देखा—कनकनिकषश्चित्त्वमनेन स्वसिति न सा हरिजनहमनेन—गीत० ७, कनकनिकषस्तिष्ठा विद्यु-रिप्रा न समोर्वेची—विक्रम० ४।१, ५।११। सम० उपल. शाबम् (पु०),—बाष्पण कमीटी निकष-प्रस्तर—तरप्रेमहेमनिकषोपलता तनोति—गीत० ११, तत्पनिकषशशा भुतेषा विपद्—हि० १।२०, २।८० ।

निकषा [नि+कृप्+अच्+टाप्] 1 रावण आदि राक्षसी की माता, (अव्य०) 2 निकट, अदूर, समीप, पास (कर्म० के साथ—निकषा मोक्षनितम्—दश०, विलघ्य लका निकषा हनिष्यति—शि० १।६८)। सम०—आत्मज्ञ राक्षम ।

निकाम (वि०) [नि+कम्+घञ्] 1 पुकल, विपुल, बहुल—निकामत्रला स्रोतोवहा—श० ६।१६, 2 इच्छुक म, शम् कामना, चाह, शम् (अव्य०) 1 यच्छेत्, इच्छा के अनुसार 2 आत्मयतोषायां, मन-प्र कर, राक्षी निहाम प्रथितश्रमि नास्ति—श० २, 'यं राशि को भी आराम से नहीं सी पाता' 3 अत्यंत, अत्यधिक—निकाम कामाणी—मा० २।३, (इच्छे

अन्तिम 'य' का लोप करके, इस समास के प्रथमस्य के रूप में भी बहुधा प्रयुक्त किया जाता है। विकाम-निरकृष्ण—गीत० ७, कु० ५१२३, शि० ४१६६।

विकामः [नि + चि + पञ्, कुन्वम्] १ डेर, मघटन, श्रेणी, समुच्चय, अण्ड, समूह, महाबी० १५०
 २ मन्मथ या विदलनमा, विद्यालय धार्मिक परिपन्
 ३ घर, आवास, निवास स्थल-कशीनिकाय आदि
 ४ शरीर ५ उद्वेग, चादमारी, निमाना ६ परमात्मा।

विकाम्यः [नि + चि + पञ्, ति०] निवास, आवास, घर—न प्रगाथो जन कश्चिन्निकाय्ये नेऽप्रियत्तिष्ठति-मट्टि० ६१६६।

विकारः [नि + कृ + पञ्, १] अनाज पट्टना २ ऊपर उठाना ३ बध, हत्या ४ अनाद, ताविशारी ५ अन्नदा, धानि, अनिष्ट, अनाज, लोपो निवर्ण-शब्द बेणी० ६१४३, ४४६६ ६ गाली बुरा भला कहना, अवमान ७ दुष्टता, श्रेय ८ विनाश, बचन विरोध।

विकारव्यम् [नि + कृ + पञ्च + व्यट्] बध, हत्या।

विकाराय, -स [नि + काय् (सु) + पञ्, १] दवान, वृष्टि २ अतिव्र ३ मार्गीय पदोत्त ४ समानता, समरूपता (समास के अन्त में) मा० ५१२३।

विकार्य [नि + कृ + पञ्, १] कृष्यता, रगतता—कि० ७६६।

विकुञ्चन [नि + कुञ् + ल्यट्] एक मोल वा ११४ कुञ्च के बराबर है (आठ मोल के बराबर नास)।

विकुञ्च, -ञ्च [नि + कु + अन् + ट्, पृषो०] लतामण्डप, लतागूह, कुञ्च पशुमांस—यमुनातीरबालीरविकुञ्चै महामानिभम्—गीत० ६२, ११, श्व० ११२३।

विकुञ्च [नि + कुञ् + अच्] १ गिब के एक अनुचर का नाम—रघु० २३५ २ मृद और उपमृद के पिता का नाम।

विकुञ्च (र) वम् [नि + कुञ् + अच् + क्त, उच्च्व वा] शूद्र, मघट, पूर, समुच्चय—सनातिकुञ्चम्—गीत० ११, किरण आन० २०, विकुञ्च ४३।

विकुशीनिका [नि + कुशीन + क्त + टाप्, डत्वम्] अपने कुल की विशेष कला, न्यायाधीश हुनर, जो क्रम से मनुष्य का उत्तराधिकार में प्राप्त होती है, किसी धराने की परंपरागत विशेष कला या दलकारि।

विकृत (मू० क० कू०) [नि + कृ + क्त] १ विजित, निकृताङ्ग, दान २ निस्कृत, क्षुब्ध—उत्तर० ६१६६ ३ प्रबलित, घोसा लाया हुआ ४ हटाया हुआ ५ कष्टग्रस्त, क्षतिग्रस्त ६ दुष्ट, बेईमान ७ अचम, नीच, कमीना।

विकृति (वि०) [नि + कृ + क्त + क्त, बेईमान, दुष्ट (स्त्री)—ति] १ अपमपता, दुष्टता २ बेईमानी,

जालसाजी, धोखा—अतिवृत्तिनिपुण ३ बेचिटेन मान-श्रीष्ट - बेणी० ५१२१, कि० ११६५ ३ निस्कृत, अपराध, अवमान—मुद्रा० ५१११ ४ गाली, शिको ५ अम्बोक्ति निगकण ६ शरीबी, दरिद्रता।

नम० प्रव (वि०) दुष्ट, दुर्मना।

विकृतन (वि०) नी। [नि + कृ + ल्यट्] काट टाटना, काट करना विग्रहिनिकृतन कृतमुष्ठाटितकर्तारपदुक्ति-नाम (बयने)—गीत० ११—नम् राटना, काट टाटना काट करना २ काटने का उपकरण एकैना ननकृतेन नक कर्णामस विद्याय म्यान्— शारी०।

विकृष्ट (वि०) [नि + कृ + क्त] १ नीच अचम, कमीना २ आतिवृत्त घटित ३ नकार देवनी।

विक्षेप [विकेनित विद्यमान अस्मिन्—नि + चि + क्त] घर, आवास भवन, अल्प—विश्वीकणविकेनसी-ध्वम्—रघु० ६१३३, १६१५८, अम० १२११२, कु० ५१०५, मनु० ६१२३, शि० ५१२६।

विकेतव्य [नि + कृ + ल्यट्] व्याज—नम् भवन घर आलय, मित्राना मनुष्योपर प्रविश्या विकेतव्य गीत० ११, मनु० ६१२६, १११२०८ कि० ११२८।

विकोचवम् [नि + कुञ् + ल्यट्] विकृष्टन, विमटन।

विक्षेप, **विक्षेपण** [नि + चि + क्त + अच् + क्त, वा] १ नीचस्वर २ चीन स्वर।

विश [नि + श + टाप्] न का अना, लोभ (विश्या वा अशुभ रूप)।

विशिन (मू० क० कू०) [नि + शि + क्त] १ चला हुआ डांटा हुआ खबला हुआ २ जमा किया हुआ स्थल, घराना के रूप में रक्खा हुआ ३ भेजा हुआ, पहुंचाया हुआ ४ अस्वाकृत परिष्करण।

विशेष [वि + शि + पञ्] १ पैकना, डांटा (कर्म० के माथ), अक्ष मानथान भागवताने वटाक्षनिशेषेण—मा० द० २ २ धराशर ग्याम् अमान—पञ्च० १११६, मनु० ६१६ ३ किमी के अन्त में घर या क्षिप्रपूति के विधान, बिना संशय लगाये रखी हुई जमा, खूबी धराशर मयस तु विशेषण विशेषे यात्र० २१६६ पर मिता० ६ भजता ५ फोक देना, परिष्कार करना ६ मिटाना, मुखाता।

विशेषणम् [नि + शि + ल्यट्] १ डांटा, पैरो के नीचे रखना कु० ११३३ २ किमी बन्धु की रखने का उपाय।

विश्वनम् [नि + श्वन् + ल्यट्] खोदना, याचना जैना कि स्वणानिखनन्याय।

विश्व (वि०) [नि + श्वन् + क्त] ठियना—बन्धु दल श्वार करोट।

विश्वत (मू० क० कू०) [नि + श्वन् + क्त] १ मोटा हुआ, खोदकर निकाला हुआ २ जमाया हुआ, (शुट

की भाँति) खोदकर गाढा हुआ, अन्तर गढाया हुआ—
वाक्य निश्चालमुपहारयतामुरस्त - रघु० ११७८
अष्टादशद्वीपनिश्चालमुप ६१३८, गाढ निश्चाल इव मे
हुदये कटास—मा० ११२९ ३ गाढा हुआ, दफनाया
हुआ ।

निश्चल (वि०) [निवृत्त च्लि लोपो वस्यत् व० सं०]
सपूर्ण, पूरा, समस्त, सब—प्रत्यक्ष ते निश्चलमचिराद्
भ्रात गन्त मया यद् - मेघ० १५ ।

निगद्य (वि०) [नि + गद् + अच् सस्य ट्] बेटी से बचा
हुआ, भ्रूललित, वृद्धस्य निगद्यस्य च—मनु० ५।२१०,
-इ, -इम १ हाथी के पैरों के लिए लोहे की
जबोर, बद्धपरामि पणितो निगद्यान्वलाबोत्—सि०
५।८८, भासि० ५।२० २ हथकड़ी, बेटी ।

निगमिन्त (वि०) [निगद् + इत् + क्त] हथकड़ी से बचा हुआ,
बेटी से जकड़ा हुआ, भ्रूललित, बाधा हुआ ।

निगम्य [निगम, पुवा० साधु] यज्ञानि का पूजा ।
निगद्यः, निगद्यः [नि + गद् + अच्, घञ वा] १ सस्वर
पाठ, स्मृति पाठ २ ऊँचे स्वर से बोली गई प्रार्थना
३ प्रायेण, प्रबचन ४ अर्थ सीखना यदधीतमविज्ञात
निगदेनेव शब्धाते—निघ० ५ उन्मेष, उन्मेषीकरण -
इति निगदेनेव व्याख्यातम् ।

निगमितम् [नि + गद् + क्त] प्रबचन, प्रायेण ।

निगम्य [नि + गद् + घञ्] बेद, बेद का मूल पाठ—सावर्ष
साधना साडेति निगमे पा० ६।३।११३, ७।१।६५
बैदिक उद्धरण, बेद का वाक्य तथापि च निगमो
मयति (निष्कृत में बहुधा प्रयुक्त) ३ महायक घष,
उपबेद, बेद भाष्य, मनु० ४।१९ तथा उमका कुल्ल०
भाष्य ४ बेद का विधि वाक्य, ऋषियों के वचन
५ (शब्द का मूल स्रोत) यातु ६ निष्कय, विश्वास
७ तर्क ८ व्यवसाय, व्यापार ९ मन्त्री, मेला
१० चलने फिरने सीढागटो की मण्डली ११ मार्ग,
मन्त्री का मार्ग १२ नगर ।

निगमयन्म् [नि + गद् + ल्युट्] १ बेद का उद्धरण, या
उद्धृत शब्द २ (तर्क० में) अनुमान-प्रक्रिया में
उपसंहार, (पञ्चावधौ भारतीय अनुमान-प्रक्रिया
में पाँचवाँ अवयव), घटाना ।

निगार, निगार [नि + ग् + अच्, घञ् वा] निगलना,
टकारना ।

निगारयन्म् [नि + ग् + ल्युट्] १ निगलना, टकारना
२ (आल०) ग्रहण कर लेना, पूर्ण रूप से लय कर
देना—च १ गला २ यज्ञानि का पूजा ।

निग (वा) ल [= निगार, निगार, रलघोरवेद] १ निग-
लना, टकारना २ छोटे का गला या गढ़ने वत्
(प०) ढोडा ।

निगीर्ष (पू०क०क०) [नि + ग् + क्त] १ निगला हुआ,

टकारा हुआ २ पूर्ण रूप से निगला हुआ, या लय
किया हुआ, छिपा हुआ, मूढ, अप्रब आपुरणीय -
उपमानेनानिगीर्षोपमेयस्य यदध्यवसानं सैका--
काव्य० १० ।

निगृह (वि०) [नि + गृह् + क्त] १ छिपाना हुआ, मूढ
—सि० १३।५०, १ रहस्य, निजी—इम् (अव्य०)
चुपचाप, निजी ढग से ।

निगृहयन्म् [नि + गृह् + ल्युट्] दुराना, छिपाना ।

निगृहयन्म् [नि + गृह् + ल्युट्] बध, हत्या ।

निग्रह [नि + ग्रह् + अच्] १ रोक रखना, नियंत्रित
करना, दमन करना, बध में करना—वैसा कि
'द्विन्द्रयनिग्रह' में—मनु० ६।१२, याज्ञ० १।२२२
मनु० १।६६, मनु० ६।३५ २ दबावना, रोकना,
कुचलना—मनु० ६।७१ ३ दौड़ कर पकड़ लेना,
अधिकार में कर लेना, विरप्नार करना—स्वनिग्रहे
नु वरगापि न मे प्रयत्न—मूच्छ० १।२२, सि० २।८८
४ झूठ करना, कारागार में डालना ५ पराजय,
पछाड़ देना, परास्त करना ६ हटा देना, नष्ट करना,
दूर करना—रघु० १।२५, १।५६, कु० ५।५३
७ रंगों की रोकथाम, चिकित्सा ८ दण्ड, सजा
(विष० अनुग्रह) निग्रहानुग्रहस्य कर्ता—पञ्च० १,
निग्रहोऽप्ययमनुग्रहीकृत—रघु० १।१९०, ५५, १।२।
५२, ६३९ डाट, फटकार, गहा १० अर्धच, नाप-
सदधी, जगलना ११ (प्रा० में) नर्कयत दोष, बुद्धि,
अनुमान-प्रक्रिया में मूल (जिसके कारण हेतुवादी
प्रास्त हो जाता है) तु० मुद्रा० ५।१० १२ मूठ
१३ सीमा, हट ।

निग्रह्य (वि०) [नि + ग्रह् + ल्युट्] पीछे कर
देने वाला, दबाने वाला—अच् १ दमन करना,
दबाना २ पक- डना, बंद करना ३ सजा, दण्ड
४ पराजय ।

निग्रह्य [नि + ग्रह् + घञ्] १ दण्ड २ कोसना—वैसा
कि 'निग्राहस्ते भूयात्' (अगवान्, तुम्हें बापवस्त करे)
प्रति० ७।५३ में ।

निग (वि०) [नि + हन्, नि०] जितना चौड़ा उतना ही
तन्वा,—च १ वेद २ पाप ।

निग्रह [नि + ग्रह् + क्त] १ शब्दावली २ विशेष रूप
से वैदिक शब्दावली जिसकी व्याख्या यास्क ने अपने
निरुक्त में की है ।

निग्रहः निग्रहयन्म् [नि + ग् + घञ्, ल्युट् वा] रगडना
घर्षण करना, कि० २।५१ ।

निष्कलः [नि + अद् + अच्, घञादेशः] १ शाना, भोबन
करना २ भोबन ।

निष्कल [नि + हन् + घञ्] १ अभिवात, गृहार—रघु०
१।१०८ २ स्वर का दमन करना या बधाव ।

निघाति (स्त्री०) [नि+हृत्+इच्, कुत्वम्] लोहे की वटा ।

निघृण्यकम् [नि+घृण्+क] ध्वनि, शब्द ।

निघ्न (वि०) [नि+हृत्+क] 1 आश्रित, अनुसेवी, आमातकारी (नीकर की भाँति), तथापि निघ्न नृप तावकीने प्रदूरीकृत मे हृदय गुणोपे—कि० ३११३, निघ्नस्य मे भर्तृनिदेशरीक्ष्य देवि क्षमस्वेति वचन नम्र—रघु० १४।५८ 2 शिष्य, शिष्येय 3 पराश्रित (अर्थात् शिष्येय के लिमादि का अनुसरण करने वाला)—इति शिष्योपनिघ्नवर्ग 4 (सक्या वाचक शब्द के पश्चात्) गुणित ।

निघ्नः [नि+घि+ञ्] 1 सग्रह, डेर, समुच्चय—कि० ४।३७ 2 अवयव का सघातजितने युग्वात आजाय—जैसा 'शरीरनिघ्न' में 3 निदिप्यता ।

निघ्नः [नि+घि+घञ्] डेर ।

निघ्निक दे० नैतिकी ।

निघ्नित (भू० क० कृ०) [नि+घि+क] 1 ढका हुआ, आच्छादित, फेला हुआ, निघ्नित समुपेय नीरर्द—घट० १ शि० ७७।४ 2 भरा हुआ, पूरित 3 उदाया हुआ ।

निघ्नक [नि+घृत्+क] 1 एक प्रकार का नरकुल 2 एक कवि, कालिदास का मित्र—स्थानादस्मात् सरसाचिचुलाहुरापोरहस्युष क्षम्—मेष० १४, (यहाँ मल्लि०—निघ्नको नाम महाकवि कालिदासस्य सहाय्य, परन्तु यह व्याख्या बड़ी सदिग्ध है) 3 ऊपर से शरीर ढकने का कपडा, चादर, तु० निघोल ।

निघ्नकम् [निघ्न+कम्] वस्त्राण, चोली, अगिया ।

निघ्नोल [नि+घृत्+घञ्] 1 अवयुष्यन, घूघट, पर्दा ध्वात नीलनीचोलचार—गीत० ११, शीलव नील-निघ्नोलम्—५ 2 फिलारे की चादर 3 डोली का आवरण ।

निघ्नोलक [निघ्नोल+क+क] 1 बनिपान, चोली 2 विपाही की जाकट जो उरस्थाप का काम दे ।

निघ्नोलि [प्रा० व०] एक प्रदेश जिसे आज कल तिरहुत कहते हैं ।

निघ्नोलि (पु०) एक ब्राह्म्य जाति, पतित जाति (ब्राह्म्य लक्षिय की संज्ञा) दे० मनु० १०।२२ ।

निघ्न (बुद्धि० उभ०—नेनेक्ति, नैतिके, प्रणनेक्ति, निक्त) धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना—सत्यं पयः पपुरेतिनिकुरबराणि—शि० ५।२८ 2 अपने आपकी धोना, निर्मल करना, स्वच्छ होना (आ०) 3 पोषण करना, अन्न—, प्रखालन करना, पानी छिड़कना, सिन्धु—, धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना—रघु० १७।२२, याज्ञ० १।१११, मनु० ५।१२७ ।

निघ्न (वि०) [नि+घृत्+इ] 1 अन्तर्जाति, स्वदेशीय,

सहन, अन्तर्भव, जन्मजात 2 अपना, स्वकीय, जातीय अपने दल का या अपने देश का—निघ्न वयु पुनरनय-निन्ना रुचिम्—शि० १७।४, रघु० ३।१५, १८, मनु० २।५० 3 विशिष्ट 4 निन्द्य रहने वाला, विरस्थायी ।

निघ्न (अदा० आ०—निके) धोना, प्र—, धोना प्रणिके ।

निघ्नलम् ('निघ्नल' भी लिखा जाता है) [नि+घृत्+ञ्] मन्थक, निघ्नलघुचित—दश० ४, १५ । मम०—अस शिव का नाम ।

निघ्नोन्म [घोके शीन पतनमस्ति] पक्षियों का गोचे की ओर उड़ना, या झपट्टा मारना, दे० 'घोन्' ।

निघ्न [निघ्नत तन्मते क्षामुके, तमु काश्याम्] 1 चूना, (स्त्री का) पिछला उभरा हुआ भाग, आंगि प्रदेश, कुला,—यात्र यच्च शिखरवर्गुल्लया धर विलासादिव—श० २।१, रघु० ४।५२, ६।१७, मेष० ४१, भर्त० १।५, मालवि० २।७ 2 (पर्वत का) उल्लान, पर्वतश्रेणी, पार्वर या पहलू—सनाकमनिल नितवर्धचिर (गिरम्) कि० ५।२७, शैब्या निघ्नवा किम् मूषराणा कि वा स्मरस्मेरिनाशिवीनाम् भर्त० १।११, विक्रम० ४।२६, शि० २।८, ७।५८ 3, सड़ी बट्टान 4 नदी का इलाका किनारा 5 कषा । मम०—विघ्नम् गोलाकार कुला, ऋतु० १।६ ।

निघ्नवत् (वि०) [निघ्न+वत्] सुन्दर कुल्लो वाला—तो स्त्री चार वृक्ष निघ्नवती दवितम्—गीत० १, विक्रम० ४।२६ ।

निघ्नविन् (वि०) [तितव+इवि] सुन्दर कुल्लो वाला, सुदृढ वृक्ष वाला (बहुधा 'उपवन' के लिए प्रयुक्त) तु० मालवि० २।३, कि० ८।२६, रघु० १०।२६, 2 अच्छे पाखण्डों वाला (पहाड़ आदि)—तो 1 बड़े और सुन्दर कुल्लो वाली स्त्री—कि० ८।३, शि० ७।६८, कु० ३।७ 2 स्त्री ।

नितराम् (अञ्ज०) [नि+तर+अम्] 1 पूर्णरूप से, सर्वथा, पूरी तरह से—प्राणास्त्यजामि किनरा तद-वापिहेतो—चौर० ४१, मर्त्य० १।१६ 2 अन्ध, अत्यधिक, बहुत ज्यादा—सुवति चेतो नितरा प्रका-सिना—ऋतु० ७।४, अमर १०, गोपितमरमि निदाधे नितरामेवोद्धेति सिधु—पञ्च० १।१०४, नितरा वीचोऽस्मीति—आमि० १।९ 3 नितर, मदा, लगा-उार 4 सर्वथा 5 निश्चय ही ।

नितरम् [नितरा तलम् अचोभाय यस्मिन्] पाताल के सात प्रागो में से एक, दे० पाताल ।

नितार (वि०) [नि+तम्+का+दीर्घ] असाधारण, अत्यधिक, बहुत अधिक, तीव्र—नितारकठिन ह्य भ्रम न वेद सा मानसोम्—विक्रम० २।२,—तम् (अभ्य०)

अत्यधिक, बहुत ज्यादा, अत्यंत, अतिशय ।

नित्य (वि०) [नियमेन नियत वा प्रथ-नि+त्पच्] 1 निरंतर रहने वाला, चिरस्थायी, लगातार, बंद टूट टिकने वाला, शाश्वत, निरवधि - यदि नित्यमनिरत्येन लभ्येत - हि० १।५८, नित्यव्योत्सना प्रतिहस्तमो-क्षितिरन्या प्रदोषा - मेघ० (ललित०) इत्से प्रक्षिप्त मानना है) मनु० २।२०६ 2 अटल, नियमित, निश्चित, अनिच्छक, नियमित रूप से नियत (विप० काम्य) 3 आवश्यक, अवश्यकरणीय, अपरिहार्य 4 सामान्य, प्रचलित (विप० नैमित्तिक) : (समाम के अन्त में) निरंतर निवास करने वाला, लगातार किसी काम में लगा हुआ या व्यस्त, जाह्नवीतीर्थ, अरण्या, आशाम, ध्यान आदि - स्व समुद्र, त्वम् (अव्य०) प्रतिदिन, लगातार, सदा, हमेशा, निरन्तर सर्वे । मम० अनध्याय - ऐसा अवसर जब वेद पठन-पाठन सर्वथा त्याग दिया जाय, मनु० १।१०३, अतित्व (वि०) शाश्वत तथा नरकर, ऋतु (वि०) ऋतु के आने पर नियमित रूप से होने वाला, -कर्मन् (वपु०), हृत्पयम्, किया प्रतिदिन किया जाने वाला आच-र्यक कार्य लगातार किया जाने वाला कर्मव्य, जैसे कि दैनिक पशुपज, - शशि, वायु, इजा - वासम् प्रति-दिन दान देने का कर्म, -नियम अटल मित्रान, -नैमि-त्तिसम् किसी निमित्त विशेष से नियमित रूप से होना वाला या किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निरन्तर किया जाने वाला अनुष्ठान (उदा० पर्वश्राद्ध), -प्रलय मुपार्जन, मुक्त परमात्मा, -यौक्ता (यदा यवरो वनी रहते वाली) द्रोपदी का विशेषण, - शक्ति (वि०) सर्वे वीरक्रा, सर्वे गराह, - समास अनि-वाय ममाम मेगा ममास तिमके अर्थों को पृथक् २ गन्दी हाग अभिव्यक्त न किया जा सके उदा० जमदग्नि, त्रयदय आदि, रवेन नित्यममाम आदि ।

नित्यतो, त्वम् [नित्य+त्त्वं+टाप्,त्व वा] 1. स्थि-रता, अनवरतता, निरन्तर्य, शाश्वतता, निरन्तरता 2 आवश्यकता ।

नित्यता (अव्य०) [नित्य+दाच्] लगातार, हमेशा, प्रतिदिन सर्वे ।

नित्यताम् (अव्य०) [नियत+काम्] लगातार, हमेशा, सर्वे - भग० ८।१६, मनु० २।२६, ४।१५० ।

निरतु [निदान् विधात् इति पलायते - निद+डा+कु] मनुष्य ।

निरतोक (वि०) [नि+दृश्+पठल्] 1 देखने वाला 2 अन्तर देखने वाला, प्रत्यक्ष करने वाला 3 सकेत करने वाला, प्रकथन करने वाला, इंगित करने वाला ।

निरतोकम् [नि+दृश्+त्पठ्] 1. दृश्य, अन्तर्दृष्टि, अन्त-रीक्षण, नजर, दर्शनशक्ति 2 इतारा करना, बत-

लाना 3. प्रमाण, साक्ष्य - बलिना सह योऽव्यभिचि-नारित विदसेवम् - पञ्च० ३।२३ 4 दुष्टान, उदा-हरण, मिसाल - ननु प्रभुरेव निरखेनम् - पा० २, निद-खनमसाराणा लघुर्वहृत्पण नर - शि० २।५०, रघु० ८। ४५ 5 अग्रसूचक 6. चिह्न, संकेत 7. योजना, पद्धति 8 विधि, वेदबिहित प्रमाण, निषेध, - ना अलकार प्राप्ति में एक अलकार - निदर्शना, अभवव्यस्तुनवध उपमापरिकल्पक काव्य० १०, उदा० रघु० १।२ ।

निवाह [नितरा दहते अत्र नि+दह-+घङ्] 1 ताप, गर्मी 2. शीघ्र ऋतु, गर्मी का समय (ज्येष्ठ और आषाढ के महीने) निदाधमिहिरज्वालाशत - भासि० १।१६, निदाधकाल मनुपागन शिषे - कुतु० १।१, पञ्च० १।१०५, कु० ७।८४ 3 स्वेद, पसीना । मम० कर गृह्य, -काल गर्मी की ऋतु ।

निदानम् [नियत्य दीयतेऽनेन नि+दा+त्पठ्] 1 पट्टी, तम्बा, रस्सी, डारी 2 बछड़े का बाघने का रस्सा 3 प्राथमिक कारण, प्रथम या आवश्यक कारण निदानमिक्षाकुकुलस्य मत्ते - रघु० २।१ अथवा बलमारमो निदान क्षयसपर - शि० २।१४ 4 सामान्य कारण - मूत्र मयि मानमनिदानम् - गीत० ५ 5 (आय० ने) राग का कारण जानना, राग-विज्ञान 6 किसी राग का निरूपण 7 अन्त समाप्ति 8 पवित्रता, निर्मलता, मुद्रता ।

निदिध (पु० क० कृ०) [नि+दि+कृत्] 1 लेप किया हुआ, चुपड़ा हुआ 2 बड़ाया हुआ, मथिन म्हा कौली इलायची ।

निदिध्यास, निदिध्यासनम् [नि+घृ+सन्+घञ्, व्यट् वा] बारबार ध्यान में लाना, निरंतर चिंतन ।

निदेश [नि+दिग्+पञ्च्] 1 आज्ञा, हुक्म, हिदायत, अनुदेश - वाक्यनेय म्हापिता स्वे निदेशे - मत्पवि० ३।१४, स्थित निदेशे पृथगादि देश रपु० १।६।१ 2 भाषण, बर्णन, मयालाप 3 निदेश, पढोम 4 पात्र, वर्तन ।

निदेशिन् (वि०) [निदेश+इति] मकेल करने वाला, - नी 1 दिशा, पृथ्वी का एक बिन्दु 2 प्रदेश ।

निद्रा [निन्+रुक्+टाप्, तनोप] 1 सुषाप्तस्था, नींद - प्रच्छाद्यसुकर्मादिना दिवसा म० १।३ 2 शिथि-लता 3 आँखें मूढ़ता, कली को अवस्था 1 मम० - भम जागरण, नींद टूट जाना, - बृक्ष अचकार - संअममम् देहण्या, कषात्मक वृत्ति ।

निद्राव (वि०) [नि+द्रा+क्त्, तस्य न, ततो गत्वञ्] सोता हुआ, शयान, ।

निद्राव (वि०) [नि+द्रा+आलुञ्] शयान, निद्रित, -सु विष्णु की उपाधि ।

निद्रित (वि०) [निद्रा+इत्] सोया हुआ, सुप्त ।

निघन (वि०) [निघत् घन स्यत्—घ० घ०] ग्रीव, दरिद्र—अही नियनना सर्वापदासादारम्—मूच्छ० १।१५, —न—नम् १ ध्वन, सर्वनाश, मरण, हानि—स्वधर्मं निघन श्रेय—अग० ३।३५, म्लेच्छनिवहं निघने कलपति करवाणम्—गीत० १, कस्यातेष्वपि न प्रवाति निघन विद्याभ्यमतर्षनम् भर्त० २।१६ २ उपमहार, अन, परिचर्यानि—नम् परिवार, वरा। **निघाणम्** [नि+घा+ण्यट्] १ नीचे रखना, निर्यातित करना, जमा करना २ समाल कर रखना, सुरक्षित रखना ३ मोदाम, आशार, आशय—निघान धर्मागाम्—गमा० १८ ४ सज्जाना—निघानगर्भाभिव मातरा-वरायम्—रघु० ३।९, अग० १।१८, विद्येन लोकस्य पर निघानम् ५ कोष, भंडार, सज्जित, डीलत। **निधि** [नि+धा+कि] १ घर, आशार, आशय-जम्, लाव, तपानिधि आदि २ भंडारगृह, काषागार ३ सज्जाना, भंडार, सचय (कुबेर के नौ सज्जानों के के लिए दे० 'नवनिधि') २ मद्रु ५ विष्णु का विशेषण ६ सद्युष्यमग्न्यं व्यक्तित्। सम०—ईसा, —नाथ कुबेर का विशेषण। **निघृतम्** [नितरा घृतन ह्यनपादादि चालनमत्र] १ शोभ, कल्पन २ समोच, मूचन—अतिशयमधुरिपुनिघृत-शीलम्—गीत० ३ शि० १।१।१८, चौर० ४, ९, २५ ३ जानत, उपभोग, केहि। **निघ्राणम्** [नि+घ्र+ण्यट्] दर्शन, अवलोकन, दृष्टि। **निघ्राण** [नि+घ्रन्+घञ्] ध्वनि, शब्द। **निनक्षु** (वि०) [नष्ट्मिष्यु—नष्ट्+मन्+ङ] १ मरने को इच्छा वाला २ भाग जानने या बच निकलने का इच्छुक—मद्रि० ४।३३। **नन** (मा) द [नि+नद्+ङ्, घञ्, वा] १ ध्वनि, शोर-उत्थनार निनदोमसि तस्यां—रघु० १।७३, १।१५, ऋतु० १, १५ २ (यकिलयो का) चिन-भिताना, गुञ्ज करना। **नघनम्** [नि+नी+ण्यट्] १ अनुष्ठान २ किसी वार्थ को पूरा करना, सम्पन्न करना ३ उडेलना। **वृ** (आ० पर०) [वृत्ति, निवृत्ति, प्रविष्टि] दोष देना, निंदा करना, छिद्रान्वेषण करना, बुरा भला कहना, डाटना, फटकारना, धिक्कारना—निविद रूप हृदयेन पार्यती—कु० ५।१, सः निदती स्वानि भ्राय्यानि बाला—श० ५।३०, अग० २।६, मन् ३।४२। **क्व** (वि०) [निद्+क्वल्] कलक लगाने वाला, निंदा करने वाला, गाली देने वाला, बर्तनाम करने वा०। **म्**, निदा [निद्+ण्यट्, निद+अ+टाप् व.] १ कलक, दोषारोप, डाट, फटकार, गाली, बुरा-भला कहना, बर्तनामी-व्यवस्तुविर्भजे निदा—काव्य० १०, पर०, वेद० २ क्षति, बुद्धता। लघ०—स्तुति

(स्त्री०) १ व्याजस्तुति, स्तुति के रूप में निदा २ प्रच्छन्नस्तुति। **निवित** (भू० क० कृ०) [निद+क्त्] कलकित, दोषारोपित, गाली दिया हुआ, बर्तनाम किया हुआ। **निवृ** (स्त्री०) [निवृ+उ] मरा अच्छा पैदा करने वाली स्त्री, मृतवत्ता। **निर्वि** (वि०) [निद+व्याप्] १ कलक के योग्य, दोषारोपण के लायक, निर्भत्स्य, गहित, जघन्य २ बवित, प्रविष्टि। **निष**, पम् [नियत पिबति अनेन -नि+पा+क] जल का घड़ा -प कदम्बक का पेठ। **निष** (पा) ठ [नि+पद्+अप्, घञ्, वा] पडना, मस्कर पाठ करना अध्ययन करना। **निषतनम्** [नि+पत्+ण्यट्] १ नीचे गिरना, नीचे उतरना, उतरना २ नीचे की ओर उडना। **निषत्या** [निपतति अस्याम्—नि+पत्+ण्यट्+टाप्] १ किसलन वाली भूमि २ गणेश। **निषाक** [नि+पत्+घञ्] अग्निष्क करना, पकाना। **निषात** [नि+पत्+घञ्] १ नीचे गिरना, नीचे आना, नीचे उतरना—पयोधरोत्प्रेथनिषातवृत्ता—कु० ५।२४, ऋतु० ५।४ २ आक्रमण करना, टूट पडना, झपटना, कुदना—रघु० २।६० ३ फेंकना, फेंक कर मारना, दागना कु० ३।१५ ४ उतार, प्रपान, निषातनिषाता शरा—ल० १।७ ५ मग्ग, भृशु-मन् ० ६।३१ ६ आकस्मिक घटना ७ अनियमित करने, अनियमितता, अनियमित या अपवाद मानना, ऐसे निषाना, निषानोऽयम् आदि ८ अवयव, बहु शब्द जिसके और रूप न हने पा० १।४।५६। **निषातनम्** [नि+पत्+ण्यट्] १ नीचे फेंक देना, पछाड़ देना, मारना—मन् ० १।१२०८, २ परास्त करना, बर्बाद करना, बर्ष करना ३ मर्म स्पर्श करना ४ अनियमित या अपवाद मानना ५ शब्द का अनियमित रूप, अनियमितता, अपवाद। **निषालम्** [नि+पा+ण्यट्] १ पीना २ जलाशय, जोरह, पोखर, गाहना महिला निषालसलिल भृशु-मूहस्ताडितम्—श० २।६, हि० १।१७२, रघु० ९। ५३ ३ चौबच्चा, कुएँ के समीप पानी का होइ जिसमें पशुओं के पीने का पावो भरा हो ४ कृषी ५ दूध की बाट्टी। **निषीक्यम्** [नि+पीच्+ण्यट्] १ निचोडना, दबाना, भीषना—शि० १।७४, १।११२ २ चोट पहुँचाना, धायाल करना, —आ अत्याचार करना, धायाल करना, क्षति पहुँचाना। **निपुण** (वि०) [नि+पुण+क] १ चतुर, बालाक, बुद्धियान्, कुशल वयस्य निसर्वनिपुणा निषय—

मालवि० ३ 2. प्रबोध, कुशल, जानकीर, परिचित (अवि० या कर्म० के साथ) बाधि निपुण, बाधा निपुण 3 अनुभवशाल 4 कृपाशु, मिथमन्वृष 5. मुक्क, यशिया, मोमन 6. सम्पूर्ण, पूरा, सही—बन् (अव्य०), निपुणैव, 1 शोशल से, चतुराई से 2. पूरा तरह से, गुणरूप से, संबंध 3 ठीक, सावधानी से, यथावत, सूक्ष्मरूप से—निपुणमन्विष्यन्पुलक्यवान्--दश० ५९, 4. मनुना के साथ ।

निबद्ध [भू० क० कृ०] [नि+बद्ध+क्त] 1 बांधा हुआ, कसा हुआ, हथकड़ी पहनाया हुआ, रोका हुआ, बंद किया हुआ 2 हुआ, संबद्ध 3 निर्मित 4 लखिन, जडा हुआ 5 गवाह के रूप में बुलाया हुआ ।

निबध् [नि+बद्ध+भञ्] 1 बाधना, कसना, जकड़ना 2 आसक्ति मलानना भय० १६।५ 3 रचना करना, लिखना 4 साहित्यिक रचना या कृति,—प्रत्यक्षरूपेणमवप्रवर्धित्य(सर्वैरग्यनिविधिवध् चके—वाग० 5 यद्गृह्णन् 6 नियन्त्रण, अवरोध, बधन 7 म्नावरण 8 बध, रचयत्री 9 मर्पति का अनुदान, पशु, स्त्रिया आदि महायना के रूप में देना भूयो पितानमहायाना निबध्नां द्रव्यमेव वा—वाङ्० २।१०१, स्थिर मर्पति 10 वृत्तिवाद, मूल 11 हेतु कारण ।

निबधनम् [नि+बध्+न्ट] 1 एक-बगद जकड़ना, मिलाकर बाधना 2 मरचना करना, निर्माण करना 3 नियन्त्रण करना, रोकना, बंद करना 4 बध, हथकड़ी 5 गठ, बन्, महाराज, टेक आशानिबधन जाना जीबलाक्य उलर० ३, यन्वविध मामशीलम्य मनमो द्वितीय निबधनम्—मा० ३ 6 पराध्वना, मबध—पच० १।७९, अग्योन्वाधित 7 कारण, मूल, हेतु प्रयोजन, आधार, वृत्तिवाद—वाकप्रतिष्ठाविबधनानि देहिना व्यबशरन्त्राणि—मा० ४, आधारित मर्दि, पन्नागा ३ अविबधन निष्कारण, आकम्भिक—उत्तर० ५।७ 8 आचार, मही, आधार—मा० २।६ 9 रचना करना, कर्मबद्ध करना—कु० ७।९० 10 साहित्यिक रचना या कृति, पुस्तक 11 (भूमि का) अनुदान नियोजन या हस्तान्तरण—प्रलेख-मद्वनि, मन्निबधना—शि० २।११२, (यहाँ) निबधन का अर्थ 'पुस्तक' भी है 12 बोधी की वृत्ति 13 (व्या० में) कारक प्रकरण 14 भाव्य ।

निबधनी [निबधन+डीप्] बध, हथकड़ी, डारी या रस्सी ।

निब (ब) हींण (वि०) [नि+ब (ब) ह्+न्ट] नष्ट करने वाला, विनाशक (समान में) मनु—कि० २।६३, महावी० ३।३५,—बन् रूप, पद्म, विनाश, हत्या—नै० १।१११ ।

निबिड (वि०) [नि+विड्+क] सघन, निनका, दे० 'निविड' ।

निब (ब०) [न+भा+क] (केवल सयास के अन्त में) सद्म, ममान, अनुका उद्बुद्धमवकनकामनिन बहुति मा० १।६० इसी प्रकार 'बध्निमानना' आदि,—भ.,—भम् 1 दर्शन, प्रकाश, प्रकटीकरण 2 बहाना, छपवेश, व्याज 3 बाल, जालसाजी ।

निभालनम् [नि+भाल+निप्+न्ट] देखना, दृष्टि, प्रायश्चोकरण ।

निभूत (वि०) [नि+भू+क्त] 1 अत्यन्त भीत 2 गया हुआ, बीता हुआ ।

निभूत (वि०) [नि+भू+क्त] 1 रक्सा हुआ, जमा किया हुआ, नीचा किया हुआ 2 भग हुआ, आगुणित—चित या निभूत—भाग० 3 छिपाया हुआ, गुप्त, दृष्टि से ओझल, अनीशित, अनवलोकित—निभूतो मूत्वा पच० १, नभसा निभूतदुना—रघु० ८।१५, चन्द्रमा के अन्तहित होने पर, जब चाँद अस्त होने को था शि० ६।३० 4 गुप्त, प्रच्छन्न, शि० १३।४२ 5 (क) धूप घालन—निभूतद्विरेक (कानन) कु० ३।४०, ६।२, (ख) स्थिर, नियत, अचल, यतिहीन श० १।८ 6 मृदु, सौम्य—अतिभूता वायव—कि० १३।६६ जो कोमल न हो, प्रचंड, दृढ—मा० २।१२ 7 वीरान, नम्र अनिभूतकेषु प्रियेण—मेष० ६८, प्रणामनिभूता कुलवर्णिय—मुद्रा० १ १ दृढ़, अटल 9 एकाकी, अकेला—निभूतकुजगृह यन्त्रा—गीत० २ 10 बर, (दरवाजा) मुद्रा हुआ,—तम् (अव्य०) 1, गुप्त रूप में, प्रच्छन्न रूप में, निजी क्षेत्र पर, बिना किसी के देखे—श० ३, शि० ३।७४, मनु० ९।०६३ 2 चुपचाप, गालि में—शि० १३४ ।

निबन्ध (भू० क० कृ०) [नि+मन्+क्त] 1 हुआ हुआ, दुबोया हुआ, बोग हुआ, आल्लाशित, जलमान हुआ (आल० भी) निमन्मन्व पयारायो, चितानिमन्व आदि 2 नीचे गया हुआ (सूरे की भाँति) अस्त 3 अभिल्लत, आच्छादित 4 अवमन्, अप्रमन् ।

निबन्धन् [नि+मन्+अध्] 1 दुबकी लगाना, गोता लगाना 2 विन्ने में डुबना, शयन करना, सो जाना—तल्पे कालान् साधं मनेद्द चिद् निबन्धन्नुम्—प्रट्टि० ५।२० ।

निबन्धनम् [नि+मन्+न्ट] स्वात करना, दुबकी लगाना, गोता लगाना, डुबना (शा० और आल०) दृढ़ निबन्धनमूर्ति मुद्यायाम्—नै० ५।९४, एव समार-महने उन्मज्जननिमज्जने—महा० ।

निबन्धनी [नि+मन्+न्ट] 1 म्योता 2 आमन्त्रण, बुलावा 3 आह्वान, तलवी ।

निबध [नि+मि+अध्] वस्तु-विनिमय बदला-बदली ।

निमानम् [नि + मा + म् + ट्] 1 माप 2 मूल्य (निमानम् = मूल्यम्-निदानम्) ।

निमि (पु०) 1 अक्ष का प्रपकना, निमेष 2 ईश्वराकु की एक सत्ता, मिथिला मे राज्य करने वाले राजाओं के कुल का पुत्र ।

निमित्तम् [नि + मिद् + क्त] 1. कारण, प्रयोजन, आधार हेतु - निमित्तानि निमित्तकारणेषु कथं - शं० ७।३० 2 कर-पात्रक या कौशलदर्शी करण (विप० उपादान) 3 प्रतीयमान कारण, व्याज, निमित्तमात्र अथ मूल्य-मापिन - भग० ११।३३, निमित्तमात्रेण पाउवक्रोपेन भवितव्यम् - वेणी० १ 4 चिह्न, संकेत, निदानो 5 दूत, लक्ष्य, निशाना - निमित्तादपरदोषोर्ध्वानु-कस्येव बलितम् शि० २।२७ 6 भविष्यभूषक (गुभा-युग्म) शकुन, - निमित्त सूचयित्वा, शं० १, निमित्तानि च पर्यायि विपरीतानि केदाव - भग० १।३०, रघु० १।२६, मनु० ६।५०, याज्ञ० १।२०३, ३।१७१, 'निमित्तं शब्द समास के अन्त में 'कारण या उत्पत्ति' अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है - किनिमित्तोऽप्यनासक - शं० ३, निमित्तम्, निमित्तेन, निमित्ताल के कारण, क्योंकि, इस कारण कि' । मम० - अर्थ (शा० में) अकर्तृक किया को अवस्था, गुण-लक्ष प्रयोग, -आवृत्ति (स्त्री०) किन्ही विशेष कारण पर आश्रय, कारणम्, - हेतु करपात्रक या कील-दर्शी कारण, -कृत (पु०) कौवा, - धर्म 1 प्रायश्चित्त 2 सामयिक सम्मान, -विद् (वि०) अच्छे और गहुरों का ज्ञान - (पु०) उपाधिपति ।

निमिष [नि + निप् + क] 1 आँध झपकना, आँध बन्द करना पलक झपकाना 2 पलकमात्र समय, पलभ्र 3 फुंटा का बन्द होना 4 आँध की पलक का शब्द होना 5 विणु । सम० - अतरम् क्षण भ्र का अन्तराल ।

निमीलनम् [नि + मील + न् + ट्] 1 पलक बन्द करना, झपकना, नयननिमीलनविनियमा यथा ते - शीत० ६, अथ ३३ 2 मरणसमय आँसू मुदना, मृत्पु 3 (उपा० में) पुण्यधाम ।

निमीलन, **निमीलना** [नि + मील + अ + टाप् निमित्त + ण + टाप्, इत्थम्] 1 आँसू बन्द करना 2 आँसू झपकाना, पलक झपकना, किन्ही की आँसू आँसू झपकाना 3 आलसारी, बहाना, बालाकी ।

निमूलम् (अन्त्य०) [निक्त्वा मूलम्, शा० म०] नीचे जड़ तक - निमूलकाय कथति ।

निमेष [नि + मिप + घञ्] आँसू का झपकना, क्षण, दे० निमिष - इति निमेषात् काल सर्वम् - मोह० ४, अनिमेषेण वसूया - टकटकी लगाकर, एकटक दृष्टि से - रघु० २।१९, ३।४३, ६१ । सम० - कूल (स्त्री०) विजली - वृत् (पु०) जुगत ।

निम्न (वि०) [नि + म्ना + क्] गहरा (शा० और आल०) चक्रमहर्षिर्वाग्भियमा निम्ननाभि - मेघ० ८०, ऋतु० ५।१०, शि० १।०।५ 2 नीच, अवमल, म्मम् 1 गहराई, नीचो नृमि, निम्न देश (क) पश्यन् निम्नाभिमान प्रदीपयन् - कु० ५।५, न च निम्नादिषु सन्निव निवर्तते मत्तया ह्युराम् वा० ३।५, याज्ञ० २।१५१, ऋतु० ३।१३ 2 उदात्त, उच्च 3 अवसान, भङ्ग 4 अवसाद, निम्ना भाग - जलनिर्वाहिन्यवस्यन्निम्नाननाभि - मा० ४।१० । मम० - उन्नत (वि०) ऊँचा नीचा, अवगत उन्नत, ऊच्यन्नावरुड, यत्न निम्नस्वान, - या नदी, पठारी नदी - रघु० ८।८ ।

निम्ब [निम्ब - अच्] नीम का पत्र, आसू छिन्ना कुटारेण निम्ब परिचरेत् व, यच्छन् पयसा मिश्रन्निवाम्य मयरा भवेत् यामा० ।

निम्बोष्ण [नि + म्बुन् + अच्] युवान् ।
नियत (म० क० क०) [नि + य + क्त] 1 यमन किया हुआ, नियमित 2 अभिभूत, नियंत्रण मे किया हुआ, मारुच स्वयंसेवित 3 मन्त्री, मिनाजारी ४ माधवान 5 जमा हुआ, स्वारी, अवसरन, स्थिर 6 अवश्यभावा, निश्चित अन्त 7 अनिवादी ८ धुर निश्चित 9 विचारणीय विषय (यमवानकन जो चाहे अवबद्ध) १० युद्धयोगिता, तम (अव्य०) । हमारा लगा-तार 2 निश्चयवत्यक रूप में, अवगत, अनिवायेत, निश्चय ही ।

नियति (स्त्री०) [नि + त् + क्तिन्] 1 नियंत्रण, प्रतिबन्ध 2 भाव्य प्रारम्भ, प्रतिबन्धना, किम्बन्त (जरी हो या अच्छी हो) नियतिबाल्य - दश०, निवर्तेनियमान् शि० ४।६६, कि० ५।२०, ५।२९ 3 धार्मिक कृत्य ४ आत्म नियंत्रण, आत्म मयम् ।

नियन् (पु०) [नि + यन् + णच्] 1 मार्गव, चालक शि० १।०।२ 2 राजपाल, शासक स्वामी, विनि-यता - रघु० १।१३, १।५१ ३ दण्ड देने वाला, मन्ना देने वाला ।

नियन्त्रणम्, **नियन्त्रण** [नि + यन् + णच् । नित्रया टाप् न] 1 शक, आश्रय, प्रतिबन्ध, अनियंत्रणानुवांशो दाम तपस्विजन - शं० १ 2 प्रतिबन्ध लगाना, सीमित करना (किन्ही विषय अर्थ में) अनेकार्थन्य शब्दार्थ-कार्यनियन्त्रण मा० द० २ 3 निर्देशन, शासन 4 परिभाषा बनाना ।

नियन्त्रित (भू० क० क०) [नि + यन् + क्त] 1 दमन किया हुआ, रोक हुआ 2 प्रतिबन्ध सीमित (किन्ही विषय अर्थ में, पबद के रूप में) ।

नियन्त्र [नि + यन् + णच्] 1 नियंत्रण, रोक 2 रक्षाना, बंधोभूत करना 3 सीमित करना, रोक लगाना

4 निग्रह, निरोध—मनु० ८।१२२ 5. सीमावचन, हृदयद्वी 6 नियम वा विधि कानून, प्रवचन—नाय भङ्गान्तो नियम—शारो० 7 नियमितता—रत्न० १।२० 8 निविचलता, विषय 9 सविदा, प्रतिज्ञा, वन, वाया 10 आश्चर्यकता, अनिवाच्यता, 11 कोई ऐच्छिक या स्वेच्छक से मूर्च्छित धार्मिक अनुष्ठान (बाह्य अवस्थाओं पर निर्भर)—रघु० १।१५, (दे० मल्लि०, सि० १३।३३ तथा कि० ५।४२ पर) 12 कोई छोटा अनुष्ठान या छोटा श्लोक, विहित कर्मव्यंजो यम की भांति अनिवाच्यं न हो—शौच-मित्र्या तपो दान स्वाध्यायोपस्थनिग्रह व्रतयोगोपास च स्नान च नियमा दम—अभि 13 तपस्या, भक्ति, धार्मिक साधना—नियम बिज्जकारिणी श० १, रघु० १।१०५ 14 (सीमा० में) दम प्रकार का नियम या विधि जिसमें उस बात का विधान किया जाता है, जा, यदि यह नियम न होना तो ऐच्छिक होती—विधिच्यवनसप्राप्ती नियम पार्थिवके सति 15 (योग० में) मन वा निग्रह, याग में यमाधि के आठ मुख्य अंगों में दूसरा 16 (अन्त० में) कविममय, अंगो कि व्रतन श्चतुर्षु में कांयल का वर्णन, वर्षा श्चतुर्षु में मोरो का वर्णन, निवर्षेण-नियम पूर्वक, अनिवाच्यं । नम० निष्ठा विहित सन्कारो का दृढ़ता पूर्वक पाठन, -वचन लिखित सविदा पर—विचिन्ति (स्त्री०) धार्मिक कर्मव्यो का दृढ़तापूर्वक पालन, साधना ।

नियमवन् [नि + यम् + ष्टृत्] 1 अवरोध करना, शासन में रचना, नियन्त्रण करना, दमन करना—नियमना-दमना च नगधिप -रघु० १।६ 2 प्रतिबन्ध, सीमा-नियमन 3 दीनता, 4 विधि विवर नियम ।

नियमवती [नियम + मत्तुप् -क्रीप्] स्त्री जिसे धार्मिक धर्म निरामित रूप में होना हो ।

नियमित (न० क० कृ०) [नि + यम् + ष्टृत्] 1 अव-युद्ध, दमन किया निरन्तर 2 ज्ञानित, निर्देशित 3 विनियमित, विहित, निर्धारित 3 स्थिर मरवेदिन प्रतिज्ञात ।

नियमन [नि + यम् + ष्टृत्] 1 नियन्त्रण 2 धार्मिक व्रत नियमक (वि०) (स्त्री—मिका) [नि + यम् + ष्टृत् + ष्टृत्] 1 नियन्त्रण करने वाला, अवयुद्ध करने वाला 2 दमन करने वाला, पछाड़ने वाला 3 सीमित करने वाला, प्रतिबन्धन लगाने वाला, ध्यानपूर्वक परि-भाषा बनाने वाला 4 निर्देश करने वाला, दासन करने वाला,—कः 1 स्वामी, शासक 2 मार्गधि 3 केवट, मल्लाह 4 कर्णधार, विमानचालक ।

नियुक्त (पू० क० कृ०) [नि + युज् + क्त] 1 निवे-दित, आक्षेप, अनुदिष्ट, आदिष्ट 2 अधिकृत,

निर्धारित 3 विवादास्पद विषय को उठाने के लिए अनुज्ञात 4 सलम 5 उपबद्ध 6 निर्णीत ।

नियुक्तिः (स्त्री०) [नि + युज् + क्त] 1 निवेचना, आदेश, हुक्म 2 नियोगन, आयोग, पद, कार्यभार ।

नियुक्त [नि + युज् + क्त] 1 रस लास 2 सी हुजार 3 रस हुजार करीड़ या रू० अयुत ।

नियुक्त [नि + युज् + क्त] पैदल युद्ध करना, घमासान युद्ध, व्यक्तियुद्ध लड़ाई ।

नियोग [नि + युज् + ष्टृत्] 1 किसी काम में लगाना, उपयोग, प्रयोग 2 निवेचना, आदेश, हुक्म, निवेदन, आयोग, कार्यभार, निर्धारित कर्मव्यं, किसी की देख रेख में आवृत्त कार्य-य साजसो माजस श्रीनियोगे—मालवि० ५।८, मनोनियोगकियवोत्पुत्रक मे—रघु० ५।११ अथवा नियोग अन्वीक्षो मदमाग्यस्य—उत्तर० १, आजापयकु को नियोगोऽनुष्ठीयतामिति

स० १, स्वमपि स्वनियोगवन्वयु कुत्र (अपना काम करो—अपने निर्धारित कार्य में लगा) (नौकरो को दूर हट जाने के लिए कहने की एक शिष्ट रीति जिसका प्राय नाटकों में अधिक प्रचलन है) 3 किसी के साथ सलम करना 4 आवृत्तकता, अनिवाच्यता

तत्सिधये नियोगेन स विकल्पपराङ्मुख - रघु० १।५।९ 5 प्रचलन श्रेष्ठा 6, निविचलता, निश्चयन 7 प्राचीन काल की एक प्रथा जिसके अनुसार निस्त-

लान विचारा को अपने देख या और किसी निकट सम्बन्धी के द्वारा सतान पैदा करने की अनुमति है, इस प्रकार पैदा होने वाला पुत्र 'शौचक' कहलाता है, तु० मनु० १।५९ देवराज्ञा सपिण्डा स्थिया सम्बन्धनियु-

क्तया, प्रवेक्षितापिपतव्या सतानस्य पत्न्यै—दे० १०, ६५ भी । (व्यास ने इसी रीति से विचित्रवीर्य की विचाराओं से पाटु और धृतराष्ट्र को पैदा किया) ।

नियोगिन् (पु०) [नियोग + इनि] अधिकारी, अधिकृत, यत्री, कार्यनिर्वाहक ।

नियोगः [नि + युज् + ष्टृत्] प्रथ, स्वामी ।

नियोजनम् [नि + युज् + ष्टृत्] 1 जबरना, सलम करना 2 आदेश देना, विधान करना 3 उरुसाना, प्रेरित करना 4 नियत करना ।

नियोज्यः [नि + युज् + यत्] किसी कर्मव्य का कार्यभार सभालने वाला, कार्यनिर्वाहक, अधिकारी, सेवक, नौकर—सिध्दन्ति कर्मसु महस्वपि यनिवोभ्या—श० ७।५ ।

नियोज्यु (पु०) [नि + युज् + तुच्] 1 योद्धा, पहल-वान 2 युवा ।

निर् (अण्) [न् + ि + क्त्विप्, ह्रस्वम्] ('से मुक्त' 'विना' 'से रहित' 'से दूर' 'से बाहर' आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए सषोच भ्यञ्जो और स्वरो से पूर्व 'निष्'

का स्वानात्म्य, सत्ता से पूर्व 'अ' या 'अन्' लगा कर भी इस अर्थ को प्रायः व्यक्त किया जा सकता है, दे० नी० वि० गये समस्त पाठ, दे० 'निस्' और तु० 'अ' से। सत्ता०—अंश (वि०) 1 पूर्ण, समस्त 2 पूर्वजो से प्राप्त सम्पत्ति में भाग लेने का अनधिकारी—अस (अयो० में) भोगाश से मुक्त स्थान—अस्मि (वि०) जिसने अग्निहोत्र करना त्याग दिया हो—अकुञ्ज (वि०) 'विस्त पर किसी प्रकार का धवाव न हो', कोई रोक टोक न हो, नियंत्रण से मुक्त, उदक, स्वतंत्र स्वेच्छा-चारी, उच्चल—निरक्षुञ्ज इत्र द्विप—माग०, कामो निकामनिरक्षुञ्ज—गीत० ७, निरक्षुञ्ज कवच सिद्धा०, भर्ग० ३।१०६, महावी० ३।३९, —अथ (वि०) 1 अग्रहीन 2 साधनहीन, अस्मि (वि०) स्वप्नारहित, अंश (वि०) 1 'विना आजक का' 2 निष्कलक, निदोष 3 मिथ्यात्व से रहित 4 सोपा-सादा, विषय वनावट न हो (न) शिव का विशेषण (मा) रूग्णमा, —अस्तिशय (वि०) जिससे बढ़कर कर दूसरा न हो, अतिशय, —अस्त्वय (वि०) 1 निर्भय, निरापद, सुरक्षित—रघु० १७।५३ 2 निरपराध, निष्कलक, निदोष, मि स्मृह—कि० १।१२, १।३।१, पूर्णतः सकल, —अथ (वि०) जो रास्ता भूल गया हो, —अनुषोक्त (वि०) निर्वच, निर्दय कठोरहृदय, (शः) निर्दयता, निरुत्तरता—अनुय (वि०) जिसका कोई अनुयायी न हो, —अनुनासिक (वि०) अनुनासिक से भिन्न, जिसके उच्चारण में नाक का योग न हो, —अनुरोध (वि०) 1 अनुकूल, अर्धोपार्ण 2 निष्करण, मन्त्रावगुण्य—मा १०—अंतर (वि०) 1 सदा बना रहने वाला, लगातार होने वाला, अव्यवहित, अविच्छिन्न—निरतराधिपतल—भा० १।१६, निर-तराम्भतन्वान्तुष्टिषु—कु० ५।२५ 2 व्यवधानरहित, निरतराल; टा हुआ—मुझे निरतराधोधर्या मयेव मूच्छ० ५।१५, हृद्य निरतरबहुकर्मिनमनमहलाव-रधमधमिदन्—शि० १।६६ 3 अवध, सधन—शि० १६।७६ 4 मोटा, स्थूल 5 विषयवनीय, (मिन्न की भाँति) ईमानदार, सत्त्वा 6 सदा आशो के सामने रहने वाला 7 अभिन्न, समान, समरूप (अथ०—रम्) 1 निर्बाध, लगातार, मनात, अनवरत 2 बिना किसी मध्यवर्ती अन्तराल के 3 पक्की तरह से, कसकर, दृढ-तत्पूर्वक—(परिवृत्तस्य) कामोर्गिष मम निरतरमग-मर्ग—वेणी० ३।२७, परिवृत्ते जयने निरतरम्—धनु० २।११ 4 तुल्य, —अन्वयान् अनवरत अन्व-यन्, मपरिग्रह्य अन्वयान्, —अन्तराल (वि०) जिसके बीच में स्थान न हो, गटा हुआ 2 तप, भीमा, —अन्वय (वि०) 1 निम्नमान, मनाङ्गरहित 2 असद्वद, सबधरहित (वाक्य में शब्द की भाँति) 3.

अप्रासंगिक 4 अमगन, सगतिरहित, अव्यवस्थित 5 अदृश्य, आथ ओझल—मनु० ८।३३२ 6 बिना नोकर-चाकरो के, अनुचरवर्गों जिसके साथ न हो—दे० 'अवयव', —अपवध (वि०) 1 निर्लेज, ढीठ 2 साहसी, —अपराध (वि०) निदोष, निरीह, दोषरहित, कल-करहित (-य) भोलापन, —अपाध (वि०) 1 दुष्टता से रहित 2 क्षयरहित, अनवरत 3 अपाध, अपुत्र, अपेक्ष (वि०) 1 जा किसी दूसरे पर निर्भर न हो, स्वतंत्र, किसी और की अपेक्षा न रखने वाला (अधि० के साथ) न्यायनिर्णयकारत्वाभिरपेक्षविधा-गमे—कि० १।३९ 2 अवहेलना करने वाला ध्यान न देने वाला 3 तुच्छता से मुक्त, निर्भय—हि० १।८३ 4 लापरवाह, अनावधान, उदासीन 5 सामाजिक विषयवासनाओं से विरक्त—मनु० ६।४१ 6 निस्पृह, दूसरे में किसी गुरस्कार की इच्छा न रखने वाला—भा० १।५ 7 निष्प्रयोजन, (शा) उदासीलता, अवहेलना, —अभिषय (वि०) जो बीनता या तिर-स्कार का पात्र न हो, —अभिधान (वि०) 1 जो अहमम्यता से मुक्त हो, धमद या अहंकार रहित 2 स्वाभिमानव्युत्, —अभिप्राय (वि०) जिसे किसी वस्तु को चाह न हो, उदासीन—स्वमुक्तिरभिप्राय विच्छे-दोकोहेतो—श० ५।५, —अभि (वि०) मेघरहित, —अर्ध (वि०) 1 ऋष्यवृत्त, धर्मवान् 2 निर्गह, अन्तु (वि०) 1 जल से परतेज करने वाला 2 निर्जल, जलरहित, —अर्ण (वि०) अर्णारहित, प्रतिबधरहित, निर्बाध, अनियंत्रित, निविष्ट, पूर्णतः मुक्त—मालवी० ५ (अथ०—सम्) मुक्त रूप से, —अर्थ (वि०) 1 निषेध, गरीब, दण्ड 2 अर्थहीन, (शब्द या वाक्य) निरर्थक 3 अनर्थक 4 व्यर्थ बेकार निष्प्रयोजन—अर्थक (वि०) 1 बेकार व्यर्थ, अलाभकर 2 अर्थहीन, अनर्थक, जिसका कोई तर्क-युक्त अर्थ न हो (कम्) पूरक—निरर्थक तु हीवादि पूर्णकप्रयोजनम्—कण्ठा० २।६, —अर्थकासा (वि०) 1 मुक्त स्थान से रहित 2 जिसके पास कुसंत का समय न हो, —अर्थहृत् (वि०) 1 नियंत्रण से मुक्त, अनि-यंत्रित, अनवरत, नियंत्रणरहित, दुर्निवार 2 मुक्त, स्वतंत्र 3 स्वेच्छाचारी, दुर्गाहोत्, —अर्थ (वि०) निष्कलक, निदोष, अकलकनीय, जिसमें कोई अपाधि न हो सके—हृद्यनिरवधरूपो भूषा भवन्—दश० १, —अर्थवि (वि०) जिसका कोई अर्थ न हो, असीम—उत्तर० ३।४८, —अर्थवध (वि०) 1 सङ्घट्टित 2 अविभाज्य 3 अगर्हित, —अर्थवत् (वि०) 1 अग्रहाय, विराधय—श० ६ 2 जो महाना न द—अर्थवत् (वि०) पूर्ण, पूरा, ममस्त, —अर्थवत् (वि०) पूरी तरह से, सर्वथा, पूर्णरूप से, विन्तुत्

—अग्रज (वि०) भोजन से परहेज करने वाला (वन्) उपवास, —अग्रज (वि०) जिनके पास हृषिकार न हो, निरुत्था, —अस्थि (वि०) बिना हड्डी का, —अर्धकार, —अर्धकृति (वि०) धमहरहित, अधिमालधूम्य, किरीत नभ्र, —अर्धवृ (वि०) अर्धम्यता से मुक्त, —आकाश (वि०) 1 जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो, इच्छा से मुक्त 2 बाधक या शब्द के अर्थ आदि को) पूरा करने के लिए जिसे किसी की अपेक्षा न हो, —आकार (वि०) 1 आकृतिधूम्य, आकाररहित, बिना रूप का 2. कुरूप, विकृत 3 कृपावेदी 4 विनभ्र, कृशाल (रः) 1 परमात्मा, संबंधितमान् 2 शिब की उपाधि 3 बिल्गु का विशेषण, —आकृष्य (वि०) 1 जो बचवाया न हो, अनुग्रह, जो हनुवृद्धि न हुआ हो 2 स्थिर, शांत 3 स्वच्छ, निर्मल, —आकृति—(वि०) 1 आकाररहित, रूपरहित 2 विकृत (ति) 1 बर ब्रह्मचारी जिनमें विधिपूर्वक वेदाध्ययन न किया हो 2 विशेषकर वह ब्राह्मण जिनमें अपने वर्ण के लिए नियोगित वेदाध्ययन के कृत्य को पूरा न किया हो, —आम्बोश (वि०) जिन पर दाधारोपण न किया गया हो, जिसका निरस्कार न हुआ हो, —आभ्यु (वि०) निर्बाध, निरीह, निष्पाप —रघु० ८।४८, —आश्वर (वि०) आचाररहीन, धमभ्रष्ट, —आश्वर (वि०) बिना शोष का, शोषरहित, —आलक (वि०) 1 भय से मुक्त—रघु० १।६३, 2 नाराग, सुखद, स्वप्न, —आलष (वि०) जिसमें वृष या गर्मी न हो, छायादार, (या) गन, आश्वर (वि०) अपमानजनक, —आधार (वि०) 1 आधाररहित 2 निगमध्व, आश्वरहीन (आल० भो) निराधारों हा रोदिधि कथ्य केवामिहू पूर—मया० ४।३९, —आधि (वि०) निर्भय, चिन्तामुक्त, —आध्व (वि०) आपतिरहित, मकटमुक्त, —आधाध (वि०) अपमानाहित, उपाधिगर्हित, बाधार्हित, बाधामुक्त, 2 निर्बाध 3 जो बाधक न हो, जो पीडा न पहुँचाया हो 4 (विधि में) (मुकदमा या अधियोग का कारण आदि) मुक्तापूर्वक प्रवाची—उदा० अश्वत्थहृषटीप्रकाशनाय स्वर्गदे स्वधररति-मिता०, —आधय (वि०) 1 रोगमुक्त, स्वस्थ, नीरोग, भला-चया 2 निष्कलक, विशुद्ध 3 निष्कण्ट 4 दोषों से मुक्त, निर्बाध 5 भरा हुआ, सपूर्ण 6 अमाध (य-यम्) नीरोगता, स्वास्थ्य, कन्याध, मगन, जानन्द (य) 1 प्रगली बकरी 2 सुअर, —आधिय (वि०) 1 बिना मांस का, मांस न खाने वाला 2 शासनारहित, कालक से मुक्त 3 पारिधमिक आदि न पाने वाला, —आध (वि०) जिससे कोई आमदनी या राजस्व प्राप्त न हो, लाभरहित,

—आवाल (वि०) जिसमें परिध्वन न लगे, सुकर, आमाम, —आयुष (वि०) जिसके पास हृषिकार न हो, निररुध, निरुत्था, —आलष (वि०) जिसे कोई सहाय न हो, (आल० भो) महाभो० ४।५३ 2 जो दूसरे पर आश्रित न हो, स्वल्प 3 जो अपना आश्रय आप ही हो, असहाय, अकेला—निरालसो लसोदरजननि कं यामि शरपम्—वग०, —आशीष (वि०) 1 इधर उधर न देखने वाला 2 वृष्टिहीन 3 प्रकाशरहित, अंधकारयुक्त मा० ५।३०, —आश (वि०) आशाधूम्य, निराश, नाउत्थीध—मनो बन्धुबहुमती-निराधाम्—रघु० ६।२, —आलक (वि०) निर्भय, —आशिय (वि०) 1 आशीर्वाद या बरदान से वञ्चित 2 निरुच्छ, इच्छारहित, निराग, उदासीन —व्यच्छरध्वस्य निराशिय सत—कु० ५।७५, —आश्वय (वि०) 1 आश्रयहीन, जिसे कोई सहाय न हो, आश्रयरहित 2 शिबहीन, वरिद, अकेला, गर्ग्यहित —निराश्रयाभूना बन्मलता—आश्वबाध (वि०) स्वाधरहित, कीका, वेगडा, —आहार (वि०) जिसे भोजन न मिले उपवास करने वाला, भोजन से परहेज करने वाला (—र) उपवास करना, —अच्छ (वि०) बिना इच्छा के, बाहरहित, उदासीन, —इक्षिष्य (वि०) 1 जिसका शीर्ष अग नष्ट हो गया हो या काम न दे 2 विकलांग, अंगव 3 दुर्बल, अशक्त, कमजोर 4 ज्ञान के साधन में हीन, जिसकी कोई इन्द्रिय बेकाम हो गई हो—मनु० ९।१८, —इक्ष्व (वि०) इक्ष्वररहित, —ईति श्रुतों के संकट (अति-वृष्टि, अनापृष्टि आदि) से मुक्त—रघु० १।६३, दे० इति, —ईश्वर (वि०) ईश्वर की न मानने वाला नास्तिक, —ईष्य हल का फाल, —ईह (वि०) 1 नृणा से रहित, उदासीन, —रघु० १०।२१ 2 उधमहीन, —उच्छवास (वि०) 1 जो श्वास न लेता हो, श्वासरहित (—उ) श्वास-शिक्षा का अभाव, —उत्तर (वि०) 1 उत्तर रहित, बिना उत्तर के 2 जो कुछ उत्तर न दे सके, बूढ़ 3 जिससे बड़ा कोई और न हो, —उत्सव (वि०) बिना उत्सव का—विरत गेव-मुनिगलसव—रघु० ८।६६, —उत्साह (वि०) जिसमें उत्साह न हो, उत्साह रहित, स्फूर्ति धूम्य (ह) उत्साह का अभाव, आलस्य—उत्सुक (वि०) 1 उदासीन 2 शान्त, श्वपाय, —उत्क (वि०) उत्तररहित, —उत्कल, —उत्कथे (वि०) निरुच्छेद, निकम्मा, आलसी, मुस्त, —उत्थे (वि०) उभेजना रहित, जिसमें बचराहट न हो, गम्भीर, शांत, —उपकम्य (वि०) जिसका आरम्भ न हुआ हो, —उपकथ (वि०) 1 संकट या कष्ट से मुक्त, जिसमें या जहाँ कोई भय या उत्पात न हो, भाग्यशाली, सुखद, निर्बाध,

संज्ञाप-विपरिणतों के आक्रमण से सुरक्षित 2. राष्ट्रीय प्रकारों या अस्वाचारों से मुक्त 3 जो किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचावे 4. सुरक्षित, चातुर्य, —अपधि (वि०) निष्कपट, ईमानदार—उत्तर० २।२, —अपधति (वि०) अनुपयुक्त, —अपध (वि०) 1. जिसकी कोई उपाधि या पद न हो—मुद्रा० ३ 2. पीना शब्द से असंबद्ध, —अपध्व (वि०) बाध-रहित, जहाँ कोई सकाट या सकट न हो, जहाँ किसी प्रकार की हानि न हो—निष्पञ्चानि न कर्माणि सवृत्तानि—भा० ३, —अपध (वि०) अनुपम, बेजोड़, अनुकमीय, —अपधत् (वि०) जहाँ उत्पात न होते हो, उपद्रव से रहित, —अपाध (वि०) 1 अवास्तविक, मिथ्या, (बंध्यापुत्र की भाँति) जिसका कोई अस्तित्व न हो 2 अनौतिक 3 नीरूप, —उपाध (वि०) उपाध-रहित, असहाय, —उपेक्ष (वि०) 1. जालसाजी या शालाकी से मुक्त 2. जिसकी उपेक्षा न की गई हो, —उपध्नु (वि०) तापयुक्त, शीतल, —गध (वि०) गधशुद्ध, गधरहित, जिसमें गंध न हो, बिना गध के —निर्गधा इव किमुका, 'पुच्छिः (वि०) सेमर का पेश, —गंध (वि०) अभिमत-हित, —गधाक्ष (वि०) जहाँ कोई निष्ठकी न हो, —गुण (वि०) 1 (धन्य की भाँति) बिना शंरी का 2 संपत्तिशून्य 3 गुण-रहित, बुरा, निकम्मा—निर्गुण घोभते नैव विपुला-इवोऽपि ना—भाग० १।११५ 4 जिसका कोई विशेषण न हो 5 जिसकी कोई उपाधि न हो (कः), परमात्मा, —गुह्य (वि०) जिसका कोई धर न हो, धररहित - गुह्यही निर्गुही कृता-प४० १।३१०, —शीरघ (वि०) 1 जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो, प्रतिष्ठा-रहित, —गंध (वि०) 1 बधनमुक्त, बाधा-रहित 2 गरीब, संपत्तिरहित, भिखारी 3 अकेला, असहाय (कः) 1 जड़, मूर्ख 2 जुबारी 3 सन्त महाराना जो सब प्रकार की सांसारिक विषय वासनाओं को त्याग कर नरन होकर विचरता है, और विरक्त सन्ध्याही की भाँति रहता है, —प्रथक (वि०) 1 निपुण, विशेषज्ञ 2 असहाय, अकेला 3 छोटा हुमा, परिष्कृत 4 निष्कल (क) धार्मिक साधु, क्षणरुक्त 2 विगंबर साधु 3 जुबारी, —प्रथिक नगा रहने वाला साधु, विगंबर सप्रथाय का जैन-साधु, क्षणरुक्त, —अध्नु 1. बहु बाजार जहाँ कुकलशारी से किसी प्रकार का कर न लिया जाता हो 2 बड़ा बाजार जहाँ बहुत मीठ भड़कता हो, —धुण (वि०) 1 क्रूर, निष्कूर, निर्दय 2 निर्लेख्य, बहाया, —जण (वि०) जहाँ कोई न रहता हो, जो आबाद न हो, जहाँ कोई भाषा-जाता न हो, एकांत, सुनसान (नम्) मरभूमि, एकांत सुनसान जगह, —अर (वि०)

1 जो कमी बढ़ा न हो, सदा युवा रहने वाला 2 अनवरत, जिसकी कमी मरु न हो, (ए) देवता, धुर (कां०) ४० ४०—निर्वरा—निर्वरत (एम्) अमृत, युवा, —अल (वि०) 1 कलरहित, मरभूमि, जलशून्य 2 जिसमें पानी न मिला हो (कः) अर, अवर, वीरान उजाड़, —अल्लु मंडक, —बीध (वि०) 1 प्राणरहित 2 मृतक, —अर (वि०) जिसे बहार न हो, स्वल्प, —अरः धृष्ट, —अर (वि०) 1 निर्दय, क्रूर, निर्मम, बेरहम, कथनारहित 2 उग्र 3 भविष्य युद्ध, मजबूत, अत्यधिक, प्रचंड—मृग्ये विदेहि मयि निर्देयतदशम्—गीत० १०, निर्देयरतिश्रमालसा—रघु० १९।३२, निर्देयारकेयहेतो—मेघ० १०६, —अरुण (अम्) 1 निष्कूरता के साथ, कृतपूर्वक 2 प्रचंडता के साथ, कठोरतापूर्वक—रघु० ११।८४, —अर (वि०) दस से अधिक दिनों का, —अरुण (वि०) बिना दातो का, —अरुण (वि०) 1 पीडा से मुक्त, पीडा-रहित 2 जो पीडा न दे, शोक (वि०) 1 निरपराध, दोषरहित—न निर्धोष न निर्गुणम् 2 अपराधशून्य, निरीह, —अरुण (वि०) संपत्तिरहित, गरीब, —अरुह 2 जो शत्रु न हो, मित्रवत्, कृपापूर्ण, जो देवपूर्ण न हो, —अरुण (वि०) जो सुक-दुःख के द्वंद्वों से रहित हो, हृदय और विचार से परे हो, —निर्द्वंद्वो नित्यसत्त्वयो निर्गोभेभ आरमवान्—भाग० १।४५ 2 जो औरो पर आश्रित न हो, स्वल्प 3 ईर्ष्या द्वेष से मुक्त हो 4 जो दो से परे हो 5 जिसमें मुकाबला न हो, जिसमें किसी प्रकार का झगडा न हो 6 जो दो सिद्धांतों को न मानता हो, —अर (वि०) संपत्तिहीन, गरीब, दरिद्र—शार्गन-स्तुत्यवसोऽपि निर्वनं पग्भूयते—भाग० ८२, (न) युवा बैल, —अरुण (वि०) अरुणीन, अपरिणी, —युग (वि०) जहाँ घुड़ी न हो—अर (वि०) मनुष्यों द्वारा परिष्कृत, उजाड़, —अरुण (वि०) जिसका कोई अभिभावक या स्वामी न हो, —अरुण (वि०) जिसने नीद न आई हो, जागरूक, —निर्विण (वि०) अकारण बिना कारण का, —निर्विण (वि०) बिना फलक हा-काये टकटकी लगाने वाला, —अरुण (वि०) बहुराश्रित, मित्रहीन, —अरुण (वि०) संपत्तिरहित, कमजोर, बलहीन, —अरुण (वि०) 1 बाधरहित 2 जहाँ प्राय माना-माना न हो, एकांत, निर्जन 3 निष्पद्रव, —अरुण (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, बेवृत्तक, —अरुण, —अरुण (वि०) जिसकी भस्ती न निकाली गई हो, जिसमें से दूर निकाल दिया गया है, —अरुण (वि०) 1 निष्ठर, निष्कार 2 मय से मुक्त, सुरक्षित निरापद—अनु० १।२५५, —अर (वि०) अत्यधिक, शीघ्र, उग्र, बहुत मजबूत—अरुणर निर्देय स्मरार—गीत० १२,

बन्ध ४२ 2. उत्सुक 3 वृद्ध, प्रयाग (आत्मिय
 आदि) - कुञ्जभूमिभरपरिभ्रमणं वाञ्छति - गीत०
 ५, नीरव्य निर्मलम् - गीत० १ 4 गाढ़, गहरा
 (नीर आदि) 5, (समाप्त के अन्त में) भरा हुआ,
 आनन्द०, गर्व० आदि (रज्जु) अधिकता (अध्म० -
 रज्जु) 1 अत्यधिक, अत्यंत, बहुत 2 लज्ज, शैल से -
 भाव्य (वि०) भाव्यहीन, दुर्भाग्यपूर्ण - भृति (वि०)
 बेगार में काम करने वाला, - मलिक (वि०)
 मलिकयो से मुक्त निर्बाध, निर्जन, एकांत (अध्म० -
 नाम्) बिना मलिकयो के अर्थात् एकान्त, निर्जन -
 कृत भवतेवागी निर्मलिकम् - सा० २।६, - मलार
 (वि०) ईर्ष्यारहित, ईर्ष्या न करने वाला, - मलय
 (वि०) जहाँ मलिनियाँ न हों, - मर (वि०) 1 जो
 नशे में न हो, सजीवा, गमीर, शान्त 2 अभिमान-
 रहित, विनीत 3 (हाकी की पॉलि) मद्यजल से
 रहित, - मयूक, - मयूक्य (वि०) मनुष्यो से रहित,
 रीर-आवाह, मनुष्यो द्वारा परिचयन, - मयू (वि०)
 बाह्य सत्कार के सब प्रकार के सबको से मुक्त, जिसने
 सब सांसारिक बन्धो को तिलाजलि दे दी है, सत्कार
 निवर्तनः (तत्कार) रज्जु० १२।६०, जग० २।७१,
 ३।३०, 2 उदासीन (अधि० के मात्) - निर्ममे
 वि०) मोक्षेण मधुरा मधुराकृति - रज्जु० १५।७८,
 प्राप्तेष्वर्धेण निर्ममा - महा०, - मर्बा (वि०) 1. सीमा-
 रहित, अपरिमित 2 औचित्य को सीमा का उल्लंघन
 करने वाला, अनियमित, उद्भ्र, पापमय, अपराधी -
 मनुष्यपुत्रिनिर्गमर्बिर्भक्तिक्रदायुर्ध्व - श्रेणी० ३।२२, -
 मस (वि०) 1 मेल और गन्धो से मुक्त 2 स्वच्छ
 शुद्ध, अकण्ड, निष्कलकित (आल० मो) बीरान्निर्मलतो
 बनि - भाषि० १।६३ 3 निष्पाप, सङ्गुणसपन्न,
 मनु० ८।११८ (अम्) 1 कहानी 2 बेवता के
 चढ़ाये का अवशेष, उपकः स्फटिक, भासक (वि०)
 मच्छरो से मुक्त, - मास (वि०) मांसाहित - भायुध
 (वि०) जो बसा हुआ न हो, निर्जन, भाव्य (वि०)
 मार्ग रहित, पशुध्व, - मूढः 1 सुव्य 2 बधमात्र
 (अम्) बहु बाजार या मेला जहाँ कर वा चुकी न
 ल्या, - मूल 1 (बुध आदि) बिना जड़ का 2 निरा-
 धार, आचारहीन (बकल्य या शोषारोप आदि)
 3 उन्मत्त, - मैध (वि०) निरधर, बाधलो से रहित,
 - मैध (वि०) जिस समय में हो, निर्बुद्धि, बध,
 मुर्ख, मधवृद्धि, - मोह (वि०) मोहा या छल से
 मुक्त, - मल (वि०) निष्चेष्ट, उद्यमहीन शून्य
 (वि०) 1 जहाँ कोई नियम न हो, निर्बाध,
 निबन्धरहित, प्रतिबन्धरहित, 2 उद्भ्र, श्लेषाधारी,
 स्वतन्त्र (अम्) प्रतिबन्धरहित, स्वतन्त्रता, - मल्ल
 (वि०) जिसकी क्षीति न हो, अकीर्तिकर, कञ्जा-

जनक - मूक (वि०) जो अपने बल से विद्वान् गया
 हो, (हाकी की पॉलि) मूकप्रवृत्त, - रत्न (मीरव्य)
 (वि०) बिना रत्न का, फीका, - रज्जु, - रज्जुक (वि०)
 (मीरव्य, मीरवक) 1. बल से मुक्त, 2. रागव्य
 अन्धकार शून्य, - रज्जु (वि०) (मीरव्य) रं०
 'नीरव' (स्त्री०) रज्जुका न होने वाली स्त्री,
 तन्मत्ता राग या अन्धकार का अभाव, - रज्जु (वि०)
 (मीरव्य) 1 जिसमें छिद्र न हों, अत्यन्त सदा हुआ,
 नसक्त, साधु कला हुआ - उत्तर० २।३ 2 निर्बाध,
 सधन 3 मोटा, स्वच्छ, - रज (वि०) (मीरव्य) सम्-
 रहित, ध्वनिशून्य - रज्जु० ८।५८, - रत्न (वि०)
 (निरत्न) 1. स्वाधरहित, बेमजा, रजहीन 2. (अर्ज०)
 फीका, काव्य शीघ्रसे से विहीन - नीरसातो यद्यत्तान्म
 - सा० २० १ 3 सुखा, कञ्जा, शून्य - मृगार० ९
 4 व्यर्थ, बेकार, निष्फल, कलकलपरिभ्रमण यम
 विषय तस्मिन् जने - विक्रम० २।११ 5 अक्षिकर,
 6. मूर निष्पूर (अ०) अवार, - रत्न (वि०) (नीर-
 सन) बिना मेकला या कटिचुप के (रत्नता) - कि०
 ५।११, - रज्जु (वि०) (मीरव्य) कान्तिहीन, म्लान,
 धूमिल, - रज्जु, - रज्जु (वि०) (मीरव्य, मीरव्य)
 से मुक्त, स्वस्थ, अरोगी - नीरजन्म किमोषधी - हि० १,
 - रज्जु (वि०) (मीरव्य) कपटित, निराकार - रोग
 (वि०) (मीरव्य) रोग या बीमारी से मुक्त, स्वस्थ,
 अरोगी, - रत्न (वि०) 1 अक्षय चिह्नो से मुक्त,
 अमयातकारी (अनहृत) सुरासकलधावा 2. जिसकी
 प्रतिष्ठि न हो 3 अनाथक, निरर्थक 4 बेवारा,
 - रज्जु (वि०) बेवारी, बेहुया, डीठ, - रत्न (वि०)
 जिसमें कोई परिचायक चिह्न न हो, - रज्जु (वि०)
 1. जो लिपा हुआ न हो, जिस पर मासिक न
 को गई हो - मनु० ५।११२ 2 निष्कलक, निष्पाप,
 - रज्जु (वि०) लालच से मुक्त, कोमर्हित,
 - रज्जु (वि०) जिसके बाल न हो, बाधो से
 शून्य, - रज्जु (वि०) जिसका बध उच्छिन्न हो गया
 हो, निस्मान, - रज्जु, - रज्जु (वि०) 1 बल से बाहर
 2. बल से रहित, नगा, जुगा हुआ, - रज्जु (वि०)
 बनहीन, गरीब, - बास (वि०) बायु से सुरहित या
 मुक्त, शान्त, शून्य, - रज्जु० १५।६६, (त) कामु के
 प्रकोप से मुक्त स्वान्त, - बाधक (वि०) बरदो से मुक्त,
 - बाधक (वि०) कीमों से सुरहित, - विकल्प, - विकल्प
 (वि०) 1 विकल्प से रहित 2. जिसमें कुछ
 सकल्प या निश्चय का अभाव है 3. पारस्परिक संबंध
 से विहीन 4 प्रतिबन्धमुक्त 5. कर्ता, कर्म या बाधा
 तथा श्रेय के बिबेक से रहित एक प्रकार का प्रत्यक्ष
 ज्ञान जिसमें किसी विषय का केवल इतनी कल्प में जान
 होता है कि यह कुछ है; जिस प्रकार सामग्री की

अवस्था में केवल एक ही अग्रिम तट्ट (ब्रह्म) पर एकमात्र ध्यान केन्द्रित होता है, और जाता, ज्ञेय, तथा ज्ञान के विभेद का बोध नहीं रहता यहाँ तक कि आत्मचेतना का भी भाव नहीं होता—निर्विकल्पक आनुमानाधिकल्पमेवकयापेक्षा, नोचेत चेत प्रविष्टा महता निर्विकल्पे समाधी—अनु० ३।६१, वेणी० १।२३, (अव्य०—रम्) बिना किसी सकोष वा द्विक के,—विचार (वि०) 1 अपरिचित, अपरिचय, निरवल 2 विचार रहित—मालवि० ५।१४ 3 उदासीन स्वभाव—अनु० २।२८,—विचार (वि०) जो खिला न हो, अचिकित्त,—विष्णु (वि०) बिना किम् प्रकार के हस्तक्षेप के, जिसमें कोई बाधा न हो, विष्णु-बाधाओं से मुक्त (अव्य०) विष्णु का अभाव,—विचार (वि०) अविमर्शी, विचार शुद्ध, अविचेकी—२२ स्वीरिण निर्विचारकविते भ्रमप्रकाशोभव—चन्द्रा० १ 2. (अव्य०—रम्) बिना विचारे, निम्न बोध,—विचि-कित्त (वि०) सम्येह या सका से गलत,—विशेष (वि०) वतिहीन, समाहीन,—वितर्क (वि०) जिय पर तर्क वा सोच विचार न किया जा सके,—विनोद (वि०) आनन्द प्रसन्न से रहित, मनोरजनयुः—मेघ० ८६—विध्या विध्वं प्रहाडिमी मे वहेने काली एक नदी—मेघ० २८,—विषयी (वि०) विचाररूप, अवि-चेकी, सोचविचार न करने वाला,—विचर (वि०) 1 बिना किसी विचार या मूह के 2 जिसमें कोई उद या अन्तःकाल न हो, सदा हुआ, शि० १।४५,—विचार (वि०) 1 विचार रहित 2 जिसमें कोई अज्ञान न हो, कोई विरोध न हो, विरहसम्मत,—विचेक (वि०) ना समझ, विवेकपूर्ण, अनुपलब्धी, मूल्य,—विज्ञाक (वि०) निष्ठर, निष्ठक, विषयन्त—अनु० ७।१७६, पन० १।८५,—विशेष (वि०) कोई अन्तर न मानने वाला, बिना भेद-भाव के, किसी प्रकार का भेदभाव न रखने वाला—निर्विशेषा बय स्थिय—महा०, निर्विशेषो विशेष—अनु० ३।५०, भेद-भावका अभाव ही अन्तर 2 अर्ह भिन्नता का अभाव हो, समान, मूल्य (प्राय समास में) अभिन्न—प्रधानीकोत्पलनिर्विशेषम्—कु० १।४६, स प्रतिपत्तिनिर्विशेषप्रतिपत्तिरासीत्—रम्० १।२२३ 3 अनेकारी, गच्छ-महद (क) अन्तर का अभाव (निर्विशेष्य और निर्विशेष्येण शब्द बिना किसी भेद-भाव के), अमान रूप से 'बिना किसी अन्तर के' अर्थों को प्रकट करने के लिए किया विशेषण के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं, स्वगृहनिर्विशेषमत्र स्थीयताम्—हि० १, रम्० ५।६,—विशेष्य (वि०) बिना किसी विशेषण के,—विष (वि०) (साप आदि) जिसमें अहर न हो—निष्ठा दृष्ट्या स्तुता—विषय (वि०) 1 अपनी जन्मभूमि या निवास स्थान से

निर्वासित किया हुआ—मनो निर्विषयार्थकामया—कु० ५।३८, रम्० १।२८ 2 जिसे कार्य-लेश का अभाव हो—किंच एव काय प्रविरलविषय निर्विषय वा स्यात् —सा० ५० १ 3 (मन की भाँति) विषय-वासनाओं में अनासक्त बाध (वि०) बिना सीमा का—विहार (वि०) जिसके लिए आनन्द का अभाव हो,—बीज (बीज) (वि०) 1 बिना बीज का 2 मनुष्य 3 निष्कारण,—बीर (वि०) बीर विहीन—निर्बीर-मवीतलम्—प्रस० १।३१ 2 कायर—बीरा वह स्त्री जिनका पति व पुत्र मर गये हो—बीर्य (वि०) शास्त्रहीन, निर्बल, पुरुषार्थहीन, मनुष्यक—निर्वीर्य गुरुशापभाषितवशात् कि मे तवेवापुषम्—वेणी० ३।३४,—बुध (वि०) जहाँ पैर न हो,—बुध (वि०) जहाँ अक्षे पैर न हो, वेध (वि०) निरुच्य, पति-हीन, शान्त, वेगरहित,—वेतन (वि०) अवैतनिक, बिना वेतन का,—वेष्टयम् जुलाहे की नगी, डरकी,—वेर (वि०) वेरभाव से रहित, स्नेही शान्तिप्रिय (रम्) शत्रुता का अभाव, श्वजन (वि०) सीधा सादा, वरा 2 बिना भसाले का (अव्य०—ने) सीधा-सादे डग में, वेलाग, ईमानदारी में,—व्य (वि०) 1 वीर्य में मूकन 2 शान्त, स्वस्थ,—व्यपेक्ष (वि०) उदासीन, निरपेक्ष रम्० १।३२५, १।३२९,—व्यतीक (वि०) जो किसी प्रकार की बात न पकूचाये 3 पीडारहित 3 प्रमत्त, जो से कार्य करने वाला 4 निष्कपट, मन्चा, पाण्डहीन,—व्याघ्र (वि०) जहाँ बाँतो का उत्पादन न हो,—व्याज (वि०) 1 स्पष्ट का, खरा, ईमानदार, मरल 2 पाण्डुरहित—अनु० २।८२, (अव्य०—अव) मरगता से, ईमानदारी से, स्पष्ट रूप में, अवह ३९,—व्यापार (वि०) जिसे कोई काम न हो, बेकार, रम्० १।५।५६, वण (वि०) 1 जिले बाँट न लगी हो, अपरहित 2 जिसमें दारार न पड़ी हो,—वत (वि०) जो अपनी की हुई प्रतिज्ञा का पालन न करे,—हितम् जाडे की समाप्ति, हितमूल्य,—हेतु (वि०) निरन्तर, जिसके पास कोई हथियार न हो,—हेतु (वि०) निष्कारण, बिना किसी तर्क, या कारण के,—ह्योक (वि०) 1. निलम्ब, बेहवा, पीठ 2 माहसी, निर्भीक । विरत (वि०) [नि + र् + क्त] 1 किसी कार्य में लगा हुआ या रुचि रखने वाला 2 अस्त अनुप्लव, मालन, आसक्त—वनवासविरत का० १५७ 3. प्रमत्त, वरा 4 विभ्रान्त, विरत । विरति (स्त्री०) [नि + र् + क्त] दृढ़ आसक्ति, अनुरक्ति, भक्ति । विरयः [नि + इ + अ + क्त] मरक—निरयनखारमुडा-टयती—अनु० १।६२, मनु० ६।६१ ।

निरवहानि (लि) का [निर् + अव + हन् (ङ) + ब्हुल् + टाप्, इष्वम्] बाह्य, बाह्यरहीवारी ।

निरस्त (वि०) [निवृत्तो रस्तो यस्मात् प्रा० व०] स्वाद-रहित, फीका, सूखा—सः 1 राश की कमी, फीकापन, स्वादहीनता 2 रसहीनता, सूखापन 3 उत्कण्ठा का अभाव, भावना की कमी ।

निरस्तन (वि०) (स्त्री०—नी०) [निर् + अस् + ह्यट्] निकालने वाला, हटाने वाला, दूर भगाने वाला, —णि० ६।४७ 2 उद्गमन या कैं करने वाला—रन् 1 निकालना, प्रक्षेपण, निष्कासन, हटाना 2 मुकाना, बचन-विरोध, अस्वीकृति, इकार 3 कैं करना, धुक देना 4 रोकना, दवाना 5 विनाश, बध, उन्मूलन ।

निरस्त (भू० क० हू०) [निर् + अस् + क्त] 1 दूर राना हुआ, दूर फेका हुआ, प्रत्याख्यात, हाका हुआ, निष्कासित, निर्वापित—कौशोन्नवीतिन मुशानिरम्मा र्भू० १४८८ 2 दूर भगाना गया, नष्ट किया गया, अज्ञाय तावदन्धेन नमो निरस्तम्—रभ० ५।७१ ३ छोड़ा हुआ, परित्यक्त 4 दूर हटाया गया, मंचित, शुष्य—निरस्तपारधे देवे एरडाप्रिद्रभायते हि० १।६९ 5 (बाग आदि) चलाया हुआ 6 निराकृत 7 उगला हुआ, धका हुआ 8 शीघ्रतापूर्वक उन्मूलित 9 फाड़ा हुआ, विर्यट 10 दवाया हुआ, राका हुआ 11 (कग्य, प्रतिज्ञा आदि) तोड़ा हुआ, —स्तम् 1 अस्वीकृति, इकार 2 छोड़ देना, हतो-क्वाण्य । मम०—भेद (वि०) सब प्रकार के भेद-भाव हटायें हुए, वही, गमक्य,—राम (वि०) जियने ममन सामाजिक अनुशासना का त्याग कर दिया है ।

निराक [निर् + अक् + घञ्] 1 पकाना 2 म्वेद, पर्याप्त 3 टुकड़ों का मिश्रण ('निराक भी) ।

निराकरणम् [निर् + आ + कृ + ह्यट्] 1 प्रत्याख्यान करना, निकाल बाहर करना, रद्द कर देना निरा करणाविस्तबा छ० ६, 2 निर्वासन 3 अवभाषा, विराध, प्रतिरोध, अस्वीकृति 4 खण्डन, उत्तर 5 तिरस्कार 6 यज्ञ के मुख्य कर्तव्यों की उपेक्षा 7 चिन्मति ।

निराकरिण्य (वि०) [निर् + आ + कृ + इण्यप्] 1 प्रत्या-ख्यान करने वाला, बाहर निकालने वाला, निकाल बाहर करने वाला—रभ० १४।५७ 2 चिन्म डालने वाला, बाधक 3 ठुकराने वाला, तिरस्कर्ता 4 किसी की किसी वस्तु से बचित करने की चेष्टा करने वाला ।

निराकुल (वि०) [निर् + आ + कुल् + क] 1 भरा हुआ, व्याप्त, डका हुआ अस्ति कुलम कुल कुमुलसमृति-राकुलकुलकलापे—पीठ० १ 2 दुखी—रे० 'निर' के अन्तगत भी ।

निराकृतिः (स्त्री०) निराकिया [निर् + आ + कृ + क्तिन्, निर् + आ + कृ + क्त + टाप्] 1 प्रत्याख्यान, निष्का-सन, अस्वीकरण 2 इकार 3 अवभाषा, चिन्म, रुका-वट, हस्तक्षेप विरोध, प्रतिरोध ।

निराध (वि०) [निवृत्त राधो यस्मात् प्रा० व०] उत्कण्ठा-रहित, जिसमें बोध न रहे ।

निराधिष्ठ (वि०) [निर् + आ + धिष् + क्त] जो ऋण वापिस कर दिया गया हो ।

निरामाद्युः [मि + रम् + आद्युः] कैं का वृत्त ।

निरासः [निर् + अस् + घञ्] 1 प्रक्षेपण, निर्वासन बाहर फैंक देना, हटाना 2 उगलना 3 निराकरण 4 विरोध ।

निरिगिधी, भी [नि निम्न जनमिज्जान प्राप्नोति—

निर् + इप् + इति + डीप्] परस, वृष्ट ।

निरीक्षणम्, निरीक्षा [निर् + ईक्ष् + ह्यट्, अ + टाप् वा] 1 दृष्टि 2 देखना, ध्यान देना, नजर डालना, अवलोकन करना 3 हुंनना, खोजना 4 विचार, खयाल,—निरीक्षता की शायन, कें विषय 5 आशा, प्रत्याशा 6 ग्रहधारा ।

निरीध, धम् [निर् + ईध् + (प्) + क] हल का फाल ।

निश्चल (वि०) [निर् + चल् + क्त] 1 अभिहित, उन्मूलित, बचित्यक, परिभाषित 2 उन्मूलन से बोला हुआ, स्पष्ट,—कम् 1 व्याख्या, निर्बंधन, व्युत्पत्ति-महित व्याख्या 2 छ वेदोंमें में एक जियमें बचित्यक शब्दों की व्याख्या की गई है, विशेषकर वैदिक शब्दों को—नाम च धातु जमाह निश्चले—वि० 3 चालक द्वारा निश्चल्य पर किया गया भाष्य ।

निर्वापित (स्त्री०) [निर् + वप् + क्तिन्] 1 व्युत्पत्ति, शब्दों की व्युत्पत्तिरहित व्याख्या 2 (जल० शा० में) एक काव्यालकार जियमें शब्द की व्युत्पत्ति की मनमानी व्याख्या की जाय, परिभाषा इन प्रकार है—निर्वापितर्वापितो नाम्नामन्यायैर्यकल्पयन्, ईद्वैर्यरि-तैर्जने भव्य दोषाकरो भवान्—चन्द्रा० ५।१६८, (दोषाकार = दोषाणामाकार) ।

निश्चल्य (वि०) [निर् + उच् + ल् + क्तिन् + कन्, ह्रस्व] 1 अत्यंत आतुर, 2 उल्लुक्तारहित, उदासीन ।

निश्च (भू० क० हू०) [नि + च् + क्त] 1 अवभाषित, प्रतिरुद्ध, अबरुद्ध, नियमित, दमन किया गया—उत्तर० १।२७ 2 संसीमित, बदीकृत । मम०—कट (वि०) जिसका सात रुक गया हो, दम घुट गया हो,—युषः मलद्धार का अवरोध ।

निश्च (वि०) [नि + च् + क्त] परंपरागत, प्रचलित, कृद् (शब्द का अर्थ वि०) पौरिक अर्थों व्युत्प-त्यर्थ) शीर्ष काचित्तवास्तित निश्चः संभ सा चलति यच्च हि चित्तम्—नै० ५।५७ 2 अविवाहित,—ः

1. अन्तर्निधान, न्यास (जैसा कि "काल" में 'कालिमा') । सम०—सकलता शब्द का बहु गीण प्रयोग जो कलता के विशेष सास्य या विवक्षा पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसके स्वीकृत या लोककृत प्रचलन पर आधारित है ।

निकृष्टिः (स्त्री०) [नि + कृ + क्तित्] 1 प्रतिष्ठि, स्थापि 2 आनकारी, परिचय, प्रवीणता—नृपविद्यासु निकृष्टिमागता—कि० २।६ 2 सपुष्टि ।

निकृषणम्, -वा [नि + कृ + णिच् + क्तुट्, क्तिया टाच्] 1. रूप, आकृति 2 दृष्टि, दर्शन 3 बुद्धता, सोचना 4. निरचयन, अन्वेषण, निर्धारण 5 परिभाषा।

निकृषित (मू० क० कृ०) [नि + कृ + णिच् + क्त] 1. देखा गया, सोचा गया, चिह्नित, अवलोकित 2 नियत, चुना हुआ, निर्धारित 3 विवेचन किया गया, विचार किया गया 4 निरचय किया गया, निर्धारित ।

निकृष्टः [नि + कृ + घञ्] 1 बलिकर्म का एक प्रकार 2. तर्क, युक्ति 3 निरिचयता, निरचय 4 शक्य जिसमें न्यूनपद न हो, सपूर्ण वाक्य ।

निकृष्टिः [नि + कृ + क्तित्] 1 क्षय, नाश, विघटन 2 सकट, अनिष्ट, विपदा, विपत्ति—सा हि लोकस्य निकृष्टिः—उत्तर० ५।३० 3 कविभाव, आक्षेप 4. मृत्यु, मृतिमान् विनाश, मृत्यु या विनाश की देवी, दक्षिण-पश्चिम कोण की अधिष्ठात्री देवी—मनु० ११।१११ ।

निरोधः, निरोधनम् [नि + धृ + घञ्, स्पृट् वा] 1 केंद्र करना; रोधागार में रखना, हृत्काल में रचना—मनु० ८।२१०, ३७५ 2 घेरना, डक देना—अमर ८७ 3 प्रतिबन्ध, रोक, दमन, निरन्धन—योगविजयनृपि-निरोध—योग०, कु० ३।४८ 4 अकावट, अवबाधा, विरोध 5 घोट पहुँचाना, दण्ड देना, सति पहुँचाना 6 ध्वन, विनाश 7 अर्बन्ध, नापसदगी 8 निराशा, भ्रमनामा ।

निर्व, [नि + र् + घञ् + उ] देण, प्रदेय, स्थान ।

निर्वणम् [नि + र् + घञ् + क्तुट्] बन्, हत्या ।

निर्वणः [नि + र् + घञ् + अच्] 1 बाहर जाना, चले जाना—रघु० १।३२ विद्यापयी, ओझल होना—रघु० १९।४६ 3 डान, मार्ग, निकाल—कथमयवादाननिर्वण प्रपयी—का० १५९ 4 निरुक्षण, बाहर जाने का डार ।

निर्वणम् [नि + र् + घञ् + क्तुट्] बाहर निकलना या चले जाना ।

निर्वृ [नि + र् + घञ् + क्त] वृक्ष का कोटर ।

निर्वचनम् [नि + र् + घञ् + क्तुट्] बन्, हत्या ।

निर्वचनः, -वच् [नि + र् + घञ् + घञ्] 1 शब्दावली, सन्देह 2 सूचीपत्र ।

निर्वचनम् [नि + र् + घञ् + क्तुट्] रग, टक्कर ।

निर्वचत, [नि + र् + हन् + घञ्] 1 विनाश 2 बहडर, हवा का प्रचड होना, औषी 3 हवा की सनसाहट, आकाश में हवा के सोंकी के टकराने का शब्द निशातोषं कुजलानाम् जिषामुग्यानिर्घोषं लोभयामान सिहान्—रघु० ९।६४, मनु० १।३८, ४।१०५, ७ वाङ् १।१४५, (बायना निहतो वायुमयनाम्ब पनरय, प्रचडधोरनिर्घोषो निर्वचत इति कथ्यते) 4 भूकण 5 वज्रपात—अहह दारुणो वैवर्निर्घात—उत्तर० २ ।

निर्वचनम् [नि + र् + हन् + णिच् + क्तुट्] बलपूर्वक बाहर निकालना, प्रकाशित करना ।

निर्वोष [नि + र् + घञ् + घञ्] 1 ध्वनि—वेणी० ४, रघु० १।३६ 2 विनाश, सडकडाहट, टनक—उज्यानिर्घोषं लोभयामास सिहान्—रघु० ९।६४, भारतीय-निर्घोष—उत्तर० ३ ।

निर्वच्य, निर्वचित (स्त्री०) [नि + र् + षि + अच्, कित् वा] 1) वृत्ति बिनय, शशीकरण, परास्त करना ।

निर्वच, -रच् [नि + र् + म् + अच्] 1) सत्ता, जल प्रपात, घनघोरघटित, बाष्पिवाह, पहाडी झरना—शीत निर्वचनारिणाम्—नामा० ४, रघु० २।१३, शा० २।१७, २।१, ४।६—र 1 भूसी जलाना 2 हाथी 8 सुयं का घोडा ।

निर्वचिन् (प०) निर्वच + इति] पहाड ।

निर्वचिन्को, निर्वचिनी [निर्वचिन् + ङीप्, निर्वच + ङीप्] नदी, पहाडी झरना—स्वल्पनमुत्तरभूरिचोत्तसो निर्वचिन्चि—उत्तर० २।२० ।

निर्वच [नि + र् + नी + अच्] 1 दूरीकरण, हटाना 2 गुप्त निरन्धन, केंद्रता, प्रकथन, निर्धारण स्थिरीकरण—मद्वेनिर्घयो जात - ज० १।२७, मनु० ८।३०१, ८०९, ९।२५०, वाङ् ० २।१० हृदय निर्णयमेव चावति—कि० २।२९ 3 घटना, अटक, उपमहार, (तर्क० में) प्रदलन 4 विचारविमर्श, मन्वेधना, विचारण 5 किसी विचारपति द्वारा किसी विचार के विषय में विचार किया गया मत, व्यवस्था, केंद्रता—सर्वज्ञस्याप्येकाकिनो निर्णयाम्पणामो दोषाय—मालवि० १ । सम०—वाङ्: निर्णय की वाञ्छति, करमान, व्यवस्था (विधि में) ।

निर्वचक (वि०) [नि + र् = नी + अच्] निर्णय देने वाला, अन्तिम फैसला करने वाला ।

निर्घायनम् [नि + र् + नी + क्तुट्] 1. निरचय करना 2 हाथी के कान का बाहरी कोण ।

निर्विष (मू० क० कृ०) [नि + र् + विच् + क्त] 1) गुला हुआ, सडक किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ - रघु० १।७२२ ।

निर्घणितः (स्त्री०) [निर् + निञ् + क्तिन्] 1. बुलाई 2. प्रायश्चित्त, परिशोधन महावी० ५।२१।

निर्घोकः [निर् + निञ् + घञ्] 1. बुलाई, लफाई 2. सत्सालन 3. परिशोधन, प्रायश्चित्त।

निर्घोषकः [निर् + निञ् + ष्वल्] बोधी।

निर्घोषमञ् [निर् + निञ् + स्युट्] 1. सत्सालन 3. प्रायश्चित्त, परिशोधन (किसी अपराध के लिए)।

निर्घोषः [निर् + निञ् + घञ्] बुर करण, निर्वासन।

निर्घट्टः—ड (वि०) [= निर्घट्ट पृथो० साध्] 1. निष्कम्प, नृशय, निर्भय 2. दूसरी की बूटियों पर हथे मनाने वाला 3. ईर्ष्यालु 4. पालीगलौज करने वाला, पिगुन 5. अर्थ, अनायस्यक 6. प्रबंध 7. पागल, उन्मत्त।

निर्घट्टः—रिः [निर् + ट् + अच्, इत् + वा] कन्धरा गुफा।

निर्घन्तम् [निर् + दन् + स्युट्] टुकड़े २ करना, तोड़ना, नष्ट करना।

निर्घ्ननम् [निर् + दह् + स्यु] जलाना, दह्य करना।

निर्घन्तु (पु०) [निर् + दां (दो) + तुच्] 1. निराने वाला 2. दाता 3. किसान, खेती काटने वाला।

निर्घारित (वि०) [निर् + ह् + निच् + क्त] 1. फाड़ा हुआ, विदीर्ण 2. जोला हुआ, काट कर सोखा हुआ — वि० १।१२८।

निर्घाष्य (भू० क० कृ०) [निर् + दिह् + क्त] 1. लेप किया हुआ, मालिश की हुई 2. सुपोषित, स्व्मूलकाय, हृष्ट पृष्ठ।

निर्घिष्ट (भू० क० कृ०) [निर् + दिश् + क्त] 1. इसारे से बनाया हुआ, दिखाया हुआ, संकेतित 2. विनिष्ट, विनिष्टीकृत 3. बणित 4. अविन्यस्त, निवृत्त 5. दुर्गापूर्वक कहा हुआ, प्रकथित 6. निवच्य किया हुआ निर्धारित 7. आच्छिन्न।

निर्घेशः [निर् + दिश् + घञ्] 1. इसारा करना, विलालना, संकेत करना 2. आदेश, हुकम, निवेश — रघु० १।२।७ 3. उपदेश, अनुदेश 4. बललाना, कहना, बोधना करना 5. निर्वापना करना, विधिपीकरण, विनिष्टता, विनिष्टोत्प्रेष्य — अयुक्तोय निर्घेश — महा०, भग० १।३।३६ 6. निवच्य 7. पडोस, सामीप्य।

निर्घार, निर्घारणम् [निर् + ह् + निच् + घञ् स्युट् वा] 1. बहुतो में से एक को चिनिष्ट करना, या पृथक् करना — यत्पत्र निर्घारणम् — पा० २।३।५१, विक्रम० ३।१२ 2. निवच्य करना, फैसला करना, निर्णय करना 3. निर्घन्तना, निवच्य।

निर्घारित (भू० क० कृ०) [निर् + ह् + निच् + क्त] निर्धारण किया गया, निवच्य किया गया, स्थिर किया गया, निश्चित किया गया, दे० 'निश्' पूर्वक बु।

निर्घृत (भू० क० कृ०) [निर् + घृ + क्त] 1. हिलाया गया, हटाया गया रघु० १।२।५७ 2. परित्यक्त, अस्वीकृत 3. बणित, रहित 4. टाला गया ५. निराकृत 6. नष्ट किया गया, (दे० 'निश्' पूर्वक 'घृ')।

निर्घृत (भू० क० कृ०) [निर् + घृ + क्त] 1. धो दिया गया, रघु० ५।४३ 2. चमकाया गया, उज्ज्वल।

निर्घवः [निर् + घञ् + घञ्] 1. जाग्रह, हठ, विद, दुःसाह — निवच्यजातकथा (गुरुणा) — रघु० ५।२१, कृ० ५।६६ 2. दृढाग्रह, भारी मांग, अत्यावकता [निर्घवपृष्ठ स जावद — रघु० १।४।३२, अत एव ललु निवच्य — भा० ३ 3. डिडोई 4. दोषारोपण 5. कलह, झगडा।

निर्घव्हं—दे० निर्घव्हं।

निर्घट्ट (वि०) [निर् + भट् + अच्] कठोर, दृढ़।

निर्घस्तंभम्,—ना [निर् + भस्तं + स्युट्, मित्रया टाप् वा] 1. चमकी, चूड़की, — वि० ६।६२ 2. गाली, सिद्धकी, बुरा-बला कहना, दोषारोपण 3. दुर्भावना 4. लाल रंग, लाल।

निर्घोषः [निर् + निञ् + घञ्] 1. फट जाना, विभक्त करना, टुकड़े २ करना 2. फटन, दरार 3. स्पष्ट उल्लेख या बोधना — मानवि० ४ 4. नदी का तल 5. किसी बात का निर्धारण।

निर्घोष, निर्घन्त, निर्घय, निर्घन्त [निर् + मर्ष + घञ्, स्युट् वा, निर् + मृष् + घञ्, स्युट् वा] रगडना, मर्षना, हिलाया 2. दो अरगियो (लकड़ी के टुकड़ों) को आग पैदा करने के लिए आपस में रगडना, अरगि।

निर्घोष्य (वि०) [निर् + मर्ष + ष्यल्] 1. हिलाये जाने या मर्षे जाने के योग्य 2. (आग की भांति) रगड से पैदा करने के योग्य — ष्यम् अरगि (बहु लकड़ी जिसे गगड कर आग पैदा की जाती है)।

निर्घारणम् [निर् + घा + स्युट्] 1. मापना, नाप — यत्पत्रा-ध्वकालनिर्घारणम् — पा० २।३।२८ वाति 2. माप, फैलाव, विस्तार अव्यमप्राप्तनिर्घारण (वाल) — रामा० 'पूर्ण विकास को अभी प्राप्त नहीं हुआ' 3. उत्पादन, रचना, निर्मिति, ईदुशो निर्माणभाग परिणत — उत्तर० ४ 4. सृष्टि, रचित वस्तु रूप — निर्माणमेवहि तदादर-लालनीयम् — भा० १।४।५ 5. रूप, वनावट, आकृति — क्षीरनिर्माणसदृशा नवस्थानुभाव — महावी० १ 6. रचना, कृति भवन — वा उत्पादकता, औचित्य, सुरोति।

निर्घारण्यम् [निर् + मल् + ष्यल्] 1. शुद्धता, स्वच्छता, निष्कलकता 2. किंसे देवता के चढ़ाये का अवशेष, फूल आदि — निर्घारण्यमित्ततपुष्पादामनिकरे का पद-पदाना रति — मृगार० १० 3. देवता पर समर्पित

करने के पश्चात् मुझीं हुए फूल—निर्मात्स्यरथ
मनुकेऽन्वयोरितानाम्—सि० ८१६० ४ अवयव ।

निर्मितिः (स्त्री०) [निर्+मा+क्तिन्] उत्पादन, मूलन,
निर्माण, कलात्मक रचना की रचना—नवरत्नमणि
निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति ।

निर्मूलक (भू० क० कृ०) [निर्+मूल्+क्त] 1 छोटा
हुआ, मुक्त किया हुआ, स्वतंत्र किया हुआ—रघु०
१।४६ 2 मासारिक अनुरागो से मुक्त 3 विद्यमान,
अलग किया हुआ, —कत् साथ जिसने हाल ही में
अपनी कंचुकी छोड़ी हो ।

निर्मूलनम् [निर्+मूल+णिच्+त्यट्] उच्छेदन, जड़ से
उत्पाड़ करना, उन्मूलन (आल० भी) कर्मनिर्मूलन-
शाम—भर्त० ३।७२ ।

निर्मूल्य (भू० क० कृ०) [निर्+मूल्+क्त] पोछा गया,
धोया गया, रगड़ा गया—निर्मूल्यगोधर—सा०
२० १ ।

निर्मोक [निर्+मूल्+घञ्] 1 मुक्त करना, स्वतंत्र
करना 2 माल, दमघी, विशेष रूप से कंचुकी रघु०
१६१७, सि० २०।७७ 3 कचक जिग्हृबन्त 4
आकाश, अन्तरिक्ष ।

निर्मोक्ष [निर्+मोक्ष+घञ्] मुक्ति, लूटकारा—रघु०
१०।२ ।

निर्मोक्षनम् [निर्+मूल्+त्यट्] मुक्ति, छुटकारा ।

निर्माणम् [निर्+मा+त्यट्] 1 निरूपण, बाहर जाना,
प्रस्थान करना, विदायाग 2 अन्तर्धान, भोजन 3
मरण, मृत्यु 4 चिन्तन मुक्ति, परमानन्द 5 हाथी की
औंस का बाहरी किनारा—वारण निर्माणमायेर्भिषजन्
—उश० १७, निर्माणनिर्येदसूत्र चलिन् निर्वादी सि०
५।४१ 6 पशुओं के पैर बाधने की रस्सी, पैकड़ा
—निर्माणहस्तस्य पुरो हुचक्षन्—सि० १२।४१ ।

निर्वातनम् [निर्+वात्+णिच्+त्यट्] 1 वापिस
करना, लौटाना, अर्पण करना, (धरोहर) प्रत्यर्पण
करना 2 श्रृंगपरिशोध 3 उपहार, दान 4 प्रतिहिंसा,
बदला (वैसा कि 'धैर निर्वातन' 5 बध, हत्या ।

निर्वतिः (स्त्री०) [निर्+वात्+क्तिन्] 1 निकलना,
प्रस्थान 2 इस जीवन से बिदा लेना, मरण, मृत्यु ।

निर्वासः [निर्+वस्+णिच्+घञ्] मन्त्राह, कर्णधार
या बालक, नाविक, नाव खेनै वाला ।

निर्वासः—सम् [निर्+वस्+णिच्+घञ्] वृक्षो या पौधो
का निश्चयन, मोद, रस, राल—शालनिर्वासिगधिभि
—रघु० १।३८, मनु० ५।६ 2 अर्क, सार, काढ़ा
3 कोई गाढ़ा तरल पदार्थ ।

निर्वृह [निर्+उह+क्त, पयो० मायु] 1 कपूर,
मीनार, वृज या कलत्र (जो स्तम्भ या दरवाजो पर
बनाया जाता है) वितर्दिनिर्वृहविकनीड—सि० ३।

५५, (यहा मन्दिनाथ इसका अर्थ लिखते हैं—“मल
कारणव्यय उपलभ्य” और बैजयती का उद्धरण
देते हैं, सप्रसन्न इतना नाम इसके हाथी के रूप की
मयानना के कारण पड़ा है) चाल्कोरणिर्मूहा
—रामा० 2 शिशोभूषण, चूडामणि, मुकुट 3 दीवार
में लगी लूटी 4 दरवाजा, फाटक ५ मन्त्र, काढ़ा ।

निर्वृञ्चनम् [निर्+लुञ्च्+त्यट्] उताड़ना, फाड़ना,
छीलना ।

निर्वृटनम् [निर्+लुण्ट्+त्यट्] 1 लूटना, लूटखसोट
2 फाड़ डालना ।

निर्वृञ्चनम् [निर्+लिञ्च्+त्यट्] 1 लुचबना, लरोचना,
गोचना 2 लुचबनी, रापी ।

निर्वृञ्चनी [निर्+नी+त्यट् पयो० मायु] साप की
कंचुकी ।

निर्वृञ्चनम् [निर्+वृच्+त्यट्] 1 उकिन, उच्चारण
2 लोकप्रसिद्ध उक्ति लोकादिन 3 अत्युत्साहित,
ध्वरणि 4 शब्दावली, शब्दसूची ।

निर्वृणम् [निर्+वृप्+त्यट्] 1 उडेल देना, भेंट करना
2 विशेष रूप से पितरग को पिबदान, तपन—मनु०
३।०८८, २६० 3 उपहार प्रदान करना—पुरम्कार,
दान ।

निर्वृणम् [निर्+वृण्+त्यट्] 1 नजर डालना, देखना
दृष्टि 2 चिह्न लगाना, ध्यान पूर्वक अवलोकन करना ।

निर्वृत्तक (वि०) (स्त्री०—टिका) [निर्+वृत्+णिच्
+त्यट्] पूरा करने वाला, निरपन्न करने वाला,
समाप्त करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, सम्पन्न
करने वाला ।

निर्वृत्तनम् [निर्+वृत्+णिच्+त्यट्] निष्पत्ति, पूर्ति,
कार्यान्वित ।

निर्वृहणम् [निर्+वृह्+त्यट्] 1 अन्न, पूर्ति—सि०
१।६३ 2 निर्वाह करना, अन्न तक निवाहना,
जीवित रखना—मानस्य निर्वृहणम्—अमर 3 च्चस,
सर्वनाथ 4 (नाटक) में) उपकाति, वह अन्तिम
अवस्था जब कि महान् परिवर्तन का अन्तिम लक्षण हो,
नाटक या उपवास आदि का उपसंहार—तत्कि
निमित्त कुह—विहृतनाटकस्येव अन्त्येऽन्वयनिर्वृहणे
—मूहा० ६ ।

निर्वास (भू० क० कृ०) [निर्+वा+क्त] 1 फुक
मार कर बूझाया हुआ, (आज या दीपक की भाँति)
बुझाया गया—निर्वास—वैरहना, प्रगमादरोणाम्
—वेणी० १।७, कु० २।२३ 2 सोया हुआ, लुप्त
3 मृत, मरग हुआ 4 जीवन से मुक्त 5 (मृत्यु की
भाँति) अस्त 6 शान्त, बुधपात्र 7 डूबा हुआ, —घञ्
1 बुझाना—(१।२३१, धर्मनिर्वाणाम्नीति निर्वास
इवानस—मूहा० 2 दृष्टि से ओझल होना, लोप

होना 3 विषटन, मृत्यु 4 भावा या प्रकृति से मुक्ति पाकर परमात्मा से मिलन, शाश्वत आनन्द—निर्वाण-रूपि मन्वेष्टमन्तराया अवधिष्य—कि० ११६९, मयि १२११ 5 (बौद्ध-विषयक) मासासिक जीवन से व्यक्त का पूर्ण निर्वाण, बौद्धों की मोक्षप्राप्ति 6 पूर्ण और शाश्वत शान्ति, सदा के लिए विश्राम—कि० १८३९ 7 पूर्ण सतोप या आमन्द, ब्रह्मानन्द, परमानन्द—अथे लभ्य नेत्रनिर्वाणम्—श० ३, मालवि० ३११, शि० ४०२३, विक्रम० ३१२१ 8 विश्राम, विराम 9. सुम्यता 10 सम्मिलन, साहचर्य, सगम 11 हृत्स्नान—दे० 'अनिर्वाण' रत्न० १७१ में 12 विज्ञान में शिक्षण। मम०—**निर्विष्य** (वि०) प्राय आत्मो से ओझल या लुप्त—निर्वाणभूयिष्ठमयास्य वीर्यं सधुसयातीव वपुर्गुणेन—कु० ३१५२,—**मस्तक** मुक्ति, मोक्ष।

निर्वाणः [नि० + वृ + घञ्] 1 दोषा रोपण, दुर्बलन 2 ब्रह्मामी, लोकापवाद, परिवाद—रघु० १४३४ 3 शास्त्रार्थ का निर्णय 4 वाद का अभाव।

निर्वाण [नि० + वृ + घञ्] दे० 'निर्वाणम्'।

निर्वाणम् [नि० + वृ + णिच् + ल्युट्] 1 चढ़ावा, आहुति, पिठदान या श्राद्ध 2 भेट, दान 3 बुझाना, मूल करना 4 उड़ेलना, बल्लेगना, (बीज) बोना 5 पुरस्करण, प्रदान 6 निराकरण, उपद्रमन, शान्ति—कूर्त्तभ्यानि इ विन्दुं लनिर्वाणपाणि—उत्तर० ३ 7 विनाश 8 बध, हत्या 9 ठप्पा करना, विध्वानि करना—शरीरनिर्वाणाय—ज० ३ 10 प्रशोतल और ठप्पा उपचार।

निर्वास, **निर्वासनम्** [नि० + वृ + घञ्, नि० + वृ + णिच् + ल्युट्] 1 निकालना, निर्वासन करना, देश-निकाश देना 2 बध, हत्या।

निर्वाह [नि० + वह + घञ्] 1 निर्वाहना, निष्पन्न करना, सपन्न करना 2 सम्पूर्ति, अन्त 3 अन्ततक निर्वाहना, सहारा देना, दृढतापूर्वक बटे रहना, धैर्य—निर्वाहं प्रतिपन्नवस्तुषु संतापेतिष्ठ गोषुव्रतम्—मुद्रा० २११८ 4 जीवित रहना 5 पर्याप्त, यथेष्ट व्यवस्था, अधनता 6 बर्णन करना, बयान करना।

निर्वाहणम् [नि० + वह + णिच् + ल्युट्] दे० 'निर्वाहण'।
निर्विष्य (भू० क० कृ०) [नि० + वि + क्त] 1 निर्वेद-युक्त, सिन्न, मूच्छ० ११४४ 2 भय या शोक से अभिभूत 3 शोक से ह्रास 4 दुःखत, पतित 5 किसी वस्तु से घृणा—मत्स्याशनस्य निर्विष्य—पद्म० १ 6 क्रोध, मुद्राया हुमा 7 विनम्र, विनीत।

निर्विष्य (भू० क० कृ०) [नि० + वि + क्त] 1 उपभुक्त, खापा, अनुभूत 2 पूर्णत उप-भुक्त—रघु० १२११, 3 धारिद्र्यकि के रूप में

प्राप्त—निर्विष्य वैश्वयुद्धो—गो० 4 विवाहित 5 व्यस्त।

निर्मुक्त (भू० क० कृ०) [नि० + मु + क्त] 1 सत्पुत्र, सन्पुत्र, प्रसन्न, निकृती स्व—श० २१४ 2 निर्मित, वैकिकर, आराम में 3 विश्रान्त, समाप्त।

निर्मुक्तिः (स्त्री०) [नि० + मु + क्त] 1 सत्पुत्र, प्रसन्नता, सुख, आनन्द, व्रजति निर्मुक्तिमेकपदे मन—विक्रम० २१९, रघु० १३८, १२६५, श० ७११९ शि० ४१६४, १०१८, कि० ३१८ 2 शान्ति, विश्राम, विध्वान्ति 3 मुक्ति, निर्वाण—द्वार निर्मुक्तिसधनी विजयते कृत्स्नविकण्डयम्—भासि० ४१४४ 4 संपूर्ति, निष्पत्ति 5 स्वतन्त्रता 6 अन्तर्धान होना, मृत्यु, विनाश।

निर्मुक्त (भू० क० कृ०) [नि० + वृ + क्त] निष्पन्न, अवाप्त, सम्पन्न।

निर्मुक्तिः (स्त्री०) [नि० + वृ + क्त] निष्पन्नता, पूर्णता, सम्पन्नता—मन० १२११।

निर्वै [नि० + वि + घञ्] 1 घृणा, जघृन्त्या 2 अति-नृत्ति, छक जाना 3 विषाद, निराश, अवसाद—परिभ्रान्तिर्बेदमापद्यते—मूच्छ० ११४४ 4 दीपता 5 शोक 6 विरक्ति—भग० २१५२, (एक प्रकार की भावना जिससे शान्तरस का उदय होता है—काव्य०—निर्वेदस्याविभावास्ति शातोऽपि नवतो रस 7 स्वाभावान, दीनता (नेतेस मन्त्रिभाषां में मे एक), भू० रस० में दी गई परिभाषा से, निष्पन्नकित दृष्टान दिया गया है—यदि लक्ष्मण सा मृगंक्षया न मदीक्षामरणं समेष्यति, अमुना जडजीवितेन मे जगता वा विकलेन कि फलम्।

निर्वसः [नि० + वि + घञ्] 1 लाभ, प्राप्ति 2 मङ्ग-दूरी, भासा, नौकरी 3 भाजन, उपभोग, सेवन 4 भुगतान की अदायगी 5 प्रामादिकन, परिशोधन 6 विवाह 7 मूर्च्छित होना, बेहोश होना 8 छिद्र, रक्ष।

निर्व्यूड (भू० क० कृ०) [नि० + वि + वह + क्त] 1 पुरा किया गया, समाप्त किया गया 2 उद्यतता उदित, बधित, विकसित-मुहूर्तनिर्व्यूडविश्वय—मा० ७, निर्व्यूडवीह्वरभरति—६१७, (उपचित—जगद्गुर) 3 प्रतिशमभित, पूर्णत प्रसन्नत, सत्यप्रमादित, अदापूर्वक या अन्त तक पालन किया गया—हृत् तात जटायो निर्व्यूडस्तेऽप्यस्नेह—उत्तर० 3 निर्व्यूड समाधानाभारो बुद्धराक्षताया—मा० ८, निर्व्यूड तातस्य कायसिकत्वम्—मा० ४१९, १०, महावी० ७१८ 4 परिवस्यत, छोटा हुआ।

निर्व्यूधिः (स्त्री०) [नि० + वि + वह + क्त] 1 अन्त, पूर्ति 2 शिखर, उच्चतम बिन्दु।

निर्वृहः [निर्+वि+वृह+घञ्] दे० 'निर्वृह' 1. कगुरा
2 शिरस्त्राण, कलमी 3 दरवाजा, फाटक 4 दीवार
में लगी झूटी या बँकेट 5. काड़ा ।

निर्वृषणम् [निर्+हृ+स्पृट्] 1 शत्रु का बाह्यस्कार के
लिए ले जाना, शत्रु को चिता पर रखना 2 ले जाना,
बाहर निकालना, निष्कोटना, हटाना 3 जड़ से
उखाड़ना, उन्मूलन करना ।

निर्वृषिः [निर्+हृ+घञ्] मलोत्सर्ग, मलत्याग ।

निर्वृष्टः [निर्+हृ+घञ्] 1 ले जाना, दूर करना,
हटाना 2. बाहर लीचना, उखाड़ना 3 जड़ से उखा-
ड़ना, बिनाश 4 मृतक शरीर को दाह स्कार के
लिए ले जाना 5 निजी धन सचय, निजी जमा
—मनु० १।१९९ 6 मलत्याग, (वि० आहार) ।

निर्वृष्टिन् (वि०) [निर्+हृ+गिति] पालन करने
वाला 2 म्याप्य, (गथादिक) विस्तारशील 3
गणपति ।

निर्वृष्टि (स्त्री०) [निर्+हृ+क्तिन्] मार्ग से, हटाना,
दूर करना ।

निर्वृष्टिः [निर्+हृ+घञ्] ध्वनि,—रघु० १।०१ ।

निर्वृष्यः [निर्+लो+अच्] 1 छिपने का स्थान, (जादूबरो
का) भट या भाद, (पक्षियों का) घोंसला—वि०
१।४ 2 आवास, निवास, घर, गृह (श्राय समास के
अन्त में) रहने वाला, बास करने वाला 3 अस्त होना,
छिपना—दिनाते निकलाय यतुम्—रघु० २।१५, (यहाँ
यह शब्द 'प्रथम अर्थ' को भी प्रकट करता है ।

निर्वृष्यन् [निर्+लो+स्पृट्] 1 किसी स्थान पर बसना,
उतरना 2 घरगृह, घर, गृह, आवास ।

निर्वृष्यन् [निर्+लिप्+च्, नृम्] 1 देवता 'निलिपे'मुक्ता-
नयि च निरयान्तिनिर्गतिनाम्—गवा० १५ 2 मन्त्रो
का दल । सम०—निर्गरी स्वर्गीय गगा ।

निर्वृष्या, **निर्वृषिका** [निर्वृष्य+टाप्, कन्+टाप्, इत्
च्] गाय ।

निर्वृष्या (भू० क० ङ०) [निर्+ली+क्ता] 1 पिपला
हुआ या गला हुआ 2 बन्द या लिपटा हुआ, गुप्त
3 अन्तर्प्रेक्ष्य, छिपा हुआ, परिवर्णित 4 ध्वस्त,
नष्ट 5 परिवर्णित, रूपान्तरित (दे० नि पूर्वक ली) ।

निर्वृष्यन्ते (अव्य०) [प्रा० सं०] न बोलना, बोलना बन्द
करके, जिह्वा को रोक कर ('ङ' के साथ प्रयुक्त
होने पर 'यति' के रूप में या उपसर्ग के रूप में
अथवा स्वतन्त्र शब्द समास जाता है—उदा० निर्वृष्यन्ते-
कृत्य, निर्वृष्यन्ते कृत्वा—पा० १।४।७६) ।

निर्वृष्यन् [निर्+वृ+स्पृट्] 1 बिखेरना, उड़ेलना,
नीचे फेंकना 2 बोना 3 पितरों के नाम पर चढ़ावा,
मृतपुत्रों को लक्ष्य करके दी गई आहुति—को न
कुले निर्वृष्यन्ति नियञ्जतीति—पा० ६।२४ ।

निर्वृष्य [निर्+वृ+अप्+टाप्] अस्तयौनि, अविवाहित
कन्या ।

निर्वृष्यत् (वि०) [निर्+वृत्+ध्वल्] 1 वापिस देने
वाला, जाने वाला या पीछे मुड़ने वाला 2 ठहरने
वाला, पकड़ने वाला 3 उन्मूलक, निष्कासित करने
वाला, मिटाने वाला 4 वापिस लाने वाला ।

निर्वृष्यन् (वि०) [निर्+वृत्+स्पृट्] 1 लौटाने वाला
2 पीछे मुड़ने वाला, ठहरने वाला—मनु वापिस
होना, मुड़ना, या वापिस जाना, लौटना—इह हि
पतता नास्त्याल्लो न चापि निर्वृष्यन्—शा० ३।२
2 न घटने वाला, बन्द होने वाला 3 रुकने वाला,
परहेज करने वाला (अपा० के साथ) 4 काम से
हाथ लीचना, निष्कृता (वि०) प्रवर्तन—काण०
१।२८ 5 वापिस लाना—अमर ८४ 6 परचात्ताप
करना, सुधार करने की इच्छा 7 बीस बास लम्बी
भूमि ।

निर्वृष्यति (स्त्री०) [निर्+वृत्+अतिच्] धर, आवास,
आवासस्थान, वासगृह, निवासस्थान ।

निर्वृष्यत् [निर्+वृत्+अचच्] गाँव, ग्राम ।

निर्वृष्यन् [निर्+वृत्+स्पृट्] 1 गृह, आवास, निवास-
स्थान 2 परिधान, वस्त्र, अन्तर्वस्त्र—शि० १०।६०,
रघु० ११।४१ ।

निर्वृष्यः—अर्त्त० ३।३७, इसी प्रकार भन० ईश्व० 'कपोते'
आदि 2 साल पवने में एक पवन का नाम ।

निर्वृष्या (वि०) [निर्वृत् वातो यस्मिन् इ० सं०] 1
से सुरक्षित, जहाँ बायु न हो, शान्त—रघु० ११।४२
2 जिसे चोट न लगी हो, अति न पहुँची हो, बाधा
रहित 3 सुरक्षित, अभय 4 सुरक्षित, दृढ़ कवच
धारण किए हुए,—त. 1 शरणाग्र, निवासस्थान,
आश्रयगार 2 अकाट्य कवच,—तम् 1 बायु से
सुरक्षित स्थान—निर्वातनिष्कपमिच प्रधीपम्—कु०
३।४८, कि० १४।३७, रघु० १३।५२, ३।१८, मग०
६।१९ 2 बायु का अभाव, शान्त, निस्तम्भता—रघु०
१२।३६ 3 निष्कटक स्थान 4 दृढ़ कवच ।

निर्वृष्या [निर्+वृ+घञ्] 1 बीज, अनाज, बीज के
रक्षक हुए दाने 2 मूलक पूर्वजों के पितरों को या
दूसरे बन्धुओं को भेंट, अस्तर्पण (श्राद्ध के अन्तर
पर) एको निवापसलिल पिबसीय युक्तम्—भा०
१।४०, निवापसलिलि—रघु० ८।८६, निवापाजलज
पितृणाम्—पा८, १५।११, मुद्रा० ४।५ 3 भेंट या
उपहार ।

निर्वृष्या, **निर्वृष्यन्** [निर्+वृ+गिच्+अच्, स्पृट् वा]
1 दूर रखना, रोकना, हटाना—देवनिर्वृष्याय
—रघु० ०।५ 2 प्रतिषेध, बाधा ।

निर्वृष्या: [निर्+वृ+घञ्] 1 रहना, बसना, निवास

करना 2 घर, आवास, वासगृह, विधाम-स्थान
—निवासस्थिताया—मू० १।१५, सि० ५।६३,
५।२१, भग० १।२८, मू० ३।२३ 3 रात विताना
4 पोशाक, वस्त्र ।

निवासस्थानम् [नि + वस + स्थि + स्थृट्] 1 निवासस्थान
2 पड़ाव, बेरा 3 समय विताना ।

निवासिन् (वि०) [नि + वस + णिनि] 1. निवास करने
वाला, रहने वाला 2 पहनने वाला, वस्त्रों से ढका
हुआ—कु० ७।२६, (प०) निवासी, आवासी ।

निवि (वि) व (वि०) [नि + वि + क] 1 निरस्त-
राल, गधन, सटा हुआ 2 दूद, फसा हुआ, पक्का,
निविडो मुट्टि—रघु० १।५८, ११।४४ 3 मोटा,
अप्रवेद्य, घना, जखम—रघु० ११।११ 4 स्थूल,
मोटा 5 महाकाय, विशाल 6 ठेड़ी नाक वाला ।

निविशेष (वि०) [निवृत्तो विशेषो ब्रह्मात् व० सं०]
—अभिन, समान, - ब, अन्तर का अभाव ।

निविष्ट (मू० क० कृ०) [नि + विष् + क्त] 1
स्थित, ऊपर बैठा हुआ 3 पड़ाव डाला हुआ—रघु०
१०।६८ 3 स्थिर, तुला हुआ 4 मकोत्रित, दगन
किया हुआ, निर्यात—कु० ५।३१ 5 दीक्षित 6
व्यवस्थित ।

निवीतम् [नि + वी + क्त, सम्प्रसारणम्] 1 यज्ञोपवीत
पहनना (माला की भाँति गले में धारण करना)
निवीत मनुष्याणां प्राचीनवीतं पितृणांयुपवीतं देवानाम्
—वे० न्या० 2 धारण किया हुआ जनेऊ, -स, -तम्
परदा, अवयुजन, आवरण रुपट्टा ।

निवृत्त (मू० क० कृ०) [नि + वृ + क्त] चिरा हुआ,
लपेटा हुआ, -स, -तम्- अवयुजन, परदा, आव-
रण ।

निवृत्ति (स्त्री०) [नि + वृ + क्तिन्] आवरण, पेरा ।

निवृत्त (मू० क० कृ०) [नि + वृत् + क्त] 1 लौटा
हुआ, वापिस आया हुआ 2 गया हुआ, बिदा हुआ 3
फका हुआ, परहेजगार, ठहरा हुआ, बिरत 4 सासा-
निक कार्यों से परहेज करने वाला, इस सत्कार से
बिरक्त, शान्त 5 असदाचरण के लिए पश्चात्ताप 6
समाप्त पुरा, समस्त, दे० नि पूर्वक वृत्, -तम्
लौटना । सम०—आत्मन् (पु०) 1 ऋषि २ विष्णु
की उपाधि, -कारण (वि०) बिना किसी अन्य कारण
या प्रयोजन के (—बः) धर्मशास्त्र मनुष्य, सासारिक
इच्छाओं से अप्रभावित, -बाँध (वि०) जो मति
स्थान से परहेज करता है, निवृत्तमांसस्तु जनक
—उत्तर० ४,—रत्न (वि०) त्रिदेविय—वृत्ति
(वि०) किसी व्यवसाय से उपरल होनेवाला, - हृष्य
(वि०) हृष्य में पकड़ाने वाला ।

निवृत्तिः (स्त्री०) [नि + वृत् + क्तिन्] 1 लौटना,

वापिस आना, लौट जाना सि० १।५६४, रघु० ५।८७
2 अन्तर्धान, विराम, उपरति स्थान—सायनिवृत्तो
—स० ७ रघु० ८।८२ 3 काम से दूर रहना,
निष्क्रियता (विप० प्रवृत्ति) 4 परहेज करना, अर्थात्
—प्राणाघातनिवृत्ति—यज्ञ० ३।३३ 5 छोड़ना,
इकना 6 बेराप, सांसारिक कार्यों से उपराग, पान्ति,
सत्कार से विमुक्ति 7 विश्राम, आराम 8 आनन्द,
कंसत्व 9 मुकुरता, अस्वीकार करना 10 उन्मुलन,
प्रतिरोध ।

निवेशनम् [नि + वि + स्थृट्] 1 बतलाना, कटना, प्र-
थन करना समाचार, उद्घोषणा 2 अर्पण करना,
सोपना 3 समर्पण 4 प्रतिनिधान 5 चढ़ावा या
माहृति ।

निवेशम् [नि + वि + स्थृट्] किसी देवमूर्ति का भोग
लगाना—तु० 'निवेश' ।

निवेशः [नि + वि + स्थृट्] 1 प्रवेद, दासला 2 पड़ाव
डालना, उहरना 3 उहरने का स्थान, शिविर, जेमा
सेनानिवेश तुमूल चकार—रघु० ५।४९, ७।२, सि०
१७।४०, सि० ७।२७ 4 घर, आवास, निवास—कि०
५।१९ 5 विस्तार, (छाती को) मुड़ोलपना—कि०
४।८ 6 अमा करना, अर्पण करना 7 विवाह करना,
विवाह, जीवन में स्थिर होना 8 छाप, नहल 9
सन्वन्धवस्था : 10 आभूषण, सजावट ।

निवेशनम् [नि + वि + स्थि + स्थृट्] 1 प्रवेद, दासला
2 उहरना, पड़ाव डालना 3 विवाह करना, विवाह
4 लेखबद्ध करना, गिला-लेखन 5 आवास, निवास,
घर, आवास-स्थान 6 शिविर 7 कम्बा या नगर
8 घोसला ।

निवेशः [नि + वेष् + पञ्] आवरण, शिफाफा ।

निवेशनम् [नि + वेष् + स्थृट्] इकना, शिफाफे में कन्द
करना ।

निष् (स्त्री०) (यह शब्द, कायक की दूसरी विभक्ति के
हि० व० के पश्चात् सारी विभक्तियों में 'निष्ठा' शब्द
के स्थान में विकल्प में आदेश हो जाता है, पहले
पाच वचनों में इसका कोई का नहीं होता) 1 रात
2 हल्दी ।

निष्ठासनम् [नि + णम् + स्थि + स्थृट्] 1 देखना, अव-
लोकन करना 2 देखन, दृष्टि 3 सुनना 4 जानकार
होना ।

निष्ठा (शा) रणम् [नि + ष्ट + (निष् + स्थृट्)] बध,
हत्या ।

निष्ठा [निष्ठा इति तन्कुरोति व्यापारान्—सो + क
तारा०] 1 रात—आ निष्ठा सर्वभूतानां तस्या जागति
सयमी—मय० २।६९ २ हल्दी । सम०—अबः,
—अबलः 1 उत्सू २ राक्षस, मृत, पिशाच,—अति-

कनः,—कप्यः,—अनाः,—अवसानम्, 1 रात विताना
 2 पौ फटना—अह—निषाद,—अंध (वि०)
 जिसे लतीया अला हो, रात का अथा,—अधोऽहः,
 —इक्ष,—वाचः,—पतिः,—अधिः,—रत्नम् चन्द्रमा,
 नौद—अर्धकालः रात का पूर्वा भाग,—आस्था,
 —आह्ला हल्दी,—आधि सायंकालीन प्रकार,
 —उत्सर्गः रात्रि का अवसान, पौ फटना—कर 1
 चौद—कु० ५।१३ 2 मुर्गा 3 कपूर, वृहस्प साय-
 नावार,—चर (वि०) (स्त्री० - रा, -री) रात में
 बूझने फिरने वाला, रात को चुपचाप पीछा करने
 वाला (- र) 1 राक्षस पिशाच, भूत, प्रेत—रघु०
 १२।६९ 2 शिव का विशेषण 3 गौडद, 4 उल्लू
 5 शीप 6 चक्रवाक 7 चौर पतिः 1 शिव और
 2 रावण का विशेषण (स्त्री) 1 राक्षसी 2 रात को
 निश्चित किये हुए समय पर अपने प्रेमी से मिलने के
 लिए जाने वाली स्त्री—राममन्मथशरेण नाहिना दुःस-
 हेन हृदये निष्ठाचरी—रघु० ११।२० (यहां पर यह
 शब्द 'प्रथम अर्थ' के लिए भी प्रयुक्त है) 3 बेव्या,
 —अर्धम् (पु०) अंधकार,—अलम् ओस, कोहरा,
 —अक्षिम् (पु०) उल्लू,—निशाम् (अर्थ०) पर रात,
 सदैव—पुष्पम्, सफेद कमलिनी (रात को खिलने
 वाली) 2 वाला, ओस,—सूक्ष्म रात्रि का आरम्भ,
 —मृग गौडद—बन क्षण,—बिहार पिशाच, राक्षस
 —प्रचक्रतु रामनिवाहिहारी—अष्टि० २।३६,—वेदिम्
 (पु०) मुर्गा,—हृषा स्वेत कमल, कुमुद (रात - को
 खिलने वाला) ।
 निशात (भू० क० कृ०) [नि + शो + त] 1 पहनाया
 हुआ, धान पर चढ़ा कर तेज किया हुआ, तेज - कि०
 १४।३० 2 चमकाया हुआ, झलकाया हुआ उज्ज्वल ।
 निशामम् [नि + शो + स्पृट्] पहनाया, धान पर चढ़ाकर
 तेज करना ।
 निशात (भू० क० कृ०) [नि + शम् + त] शांतियुक्त,
 शांत, चुपचाप, महंतबोल, - तम् घर, आवास, निवास
 —रघु० १६।४० ।
 निशाम [नि + शम् + घञ्] निरीक्षण करना, प्रत्यक्ष
 ज्ञान प्राप्त करना, दर्शन करना ।
 निशामनम् [नि + शम् + णिच् + क्त्वर] 1 दर्शन करना,
 अवलोकन करना 2 इष्टि 3 सुनना 4 बार २ निरी
 क्षण करना 5 छाया, प्रतिबिम्ब ।
 निशात (वि०) [नि + शो + क्त] पेना किया हुआ, धान
 पर तेज किया हुआ—निशातनिशाता सरा—सः ।
 १० 2 उदीपित,—तम् लोहा ।
 निशीघ्रः [निशोरते जना अहिम्न—निशी अघारे धक
 —तारा०] 1 आधीरात—निशीघ्रीषा सहसा हत-
 त्विष—रघु० ३।१५, मेघ० ८८ 2 सोने का समय,

रात -सुबो निशीघ्रं भवति कामिनः—शतु० १।३,
 अमर० ११ ।
 निशीघिनी, निशीघ्या [निशीघ + इनि + ङीप्, निशीघ
 + यत् + टाप्] रात ।
 निशुज [नि + शुज् + घञ्] 1 बध, हत्या—मा०
 ५।२२ 2 ठांडना, (धनुष आदि का) मुफाना
 —महावी० ०।३३ 3 एक राक्षस का नाम जिसकी
 दुर्गा ने मार दिया था । सम०—अधनी,—अर्धनी
 दुर्गा का विशेषण ।
 निशुभनाम् [नि + शुभ् + स्पृट्] बध करना, हत्या करना ।
 निश्चय [निश् + चि + अच्] 1 जाचपडताल, सोच,
 पुस्तताछ 2 स्थिर मत, दृढ़ विश्वास, पक्का भरोसा
 3 निर्धारण, दृढ़ सकल्प, दृढ़ता—एष मे स्थिरो
 निश्चय—मुद्रा० १ 4 निश्चित, स्पष्टता, अस्-
 दिम्ब, परिणाम 5 पक्का इरादा, योजना, प्रयोजन,
 उद्देश्य—कैकेयो कूरनिश्चया—रघु० १२।४, कु० ५।५ ।
 निश्चल (वि०) [निश् + चल + अच्] 1 अचर, स्थिर,
 अटल, अडिग 2 अपरिचल्य, अपरिवर्तनीय—अम०
 २।५३,—ला पृथ्वी । सम०—अथ (वि०) दृढ़
 शरीरवाला, मजबूत (ग) 1 मायूस की एक
 जाति 2 चट्टान, पहाड़ ।
 निश्चयात्मक (वि०) [निश् + चि + अच् + लृट्] निर्धारक
 निर्णयात्मक, अन्तिम या निश्चयात्मक ।
 निश्चयारम्भ [निश् + चर् + अच् + लृट्] 1 मलात्संगं करना
 2 हवा, वायु ३ हठ, स्वेच्छाधारिता ।
 निश्चित (भू० क० कृ०) [निश् + चि + क्त] निश्चिन
 किया हुआ, निर्धारित किया हुआ, फेमला किया, तय
 किया हुआ, समापन किया हुआ (कर्तृवा० मे भी
 प्रयुक्त) अरावणग्राम का जगदरथि निश्चित—रघु०
 १२।८३,—तम् निश्चय, निर्णय,—तम् (अर्थ०)
 नि मन्द्हे निश्चिन रूप मे, अवशयमेक ।
 निश्चिति (स्त्री०) [निश् + चि + क्तिन्] 1 निश्चय
 करना, निर्णय करना 2 निर्धारण, दृढ़ सकल्प ।
 निश्चम [नि + शम् + घञ्] किसी कार्य पर किया गया
 परिश्रम, अथवासाय, अनवरण परिश्रम ।
 निश्चययो, निश्चेषि, निश्चेषी [नि + शि + स्पृट् + ङीप्
 नि + शि + नि, ङीप् वा] सीधी, जीना, तु० 'नि-
 श्रयणी' ।
 निश्चास [नि + श्वत् + घञ्] सोच भीचना, सोस
 लेना, आह भरना—तु० 'निश्चास' ।
 निश्चय [नि + श्वत् + घञ्] 1 आसक्ति, सलजता 2
 सम्मिलन माहृचयं ३ तरकस—सि० १०।३४, कि०
 १।३३६, रघु० २।३०, ३।३४ ।
 निश्चयि [नि + श्वत् + घञिन्] 1 आसिजन 2 धनु-
 शर ३ सारथि 4 रथ, पादौ ।

निर्वाण (अव०) [निष् + इति] 1 वासक, सलम
—सि० १२।२६ 2 तरकमधारी—मु० 1 धानुक,
धनुषं 2 तरकस 3 खड्गधारी ।

निष्ण (भू० क० कृ०) [नि + सद् + क्त] 1 बंटा
हुआ, भांगी, विधाल, अश्वित, —रघु० १।७६,
१३।७५ 2 सहारा दिया हुआ 3 गया हुआ 4
खिन्न कष्टग्रस्त. लज्जामूल—मु० 'विष्णम्' ।

निष्णयकम् [निष्णय + क्त] धासन ।

निष्ठा [नि + सद् + ष्यप् + टाप्] 1 खटोला, पीला
2 खापारी का कार्यालय, दुकान 3 मंडी, हाट
—सि० १८।१५ ।

निष्ठा [नि + सद् + ष्यत्] 1 गारा, दलदल 2
कागदेव, —री गान ।

निष्ठ (ब० ष०) [नि + सद् + ष्, पृथो०] नल
द्वारा शासित एक देश तथा उसके निवासियों का
नाम, —षः 1 निष्ठ देश का वासक 2 पहाड़ का
नाम ।

निष्ठा [नि + सद् + ष्यत्] 1 भारत की एक जगली
आदिम जाति, जैसे शिकारी, मछुवे आदि, पहाड़ी
—मा निष्ठा प्रतिष्ठा स्वयंसेवक धारकती समा
—राधा० रघु० १।५५२, ७० 2 पतिन जाति का
मूल्य, चाण्डाल, एक वर्णसंकर जाति 3 विशेषकर
जुदा स्त्री से बाह्याय का पुत्र—मनु० १०।८४
(सर्गो में) हिन्दूधर्मग्रन्थ का पुरुष (यदि उपयु-
क्तता के अधिक निकट ही तो)—अग्निम या सप्तम)
स्वर—गीतकलाविद्यासंभव निष्ठाशान्तिम्—का०
२१, (यही यह प्रथम भी रखती है) ।

निष्ठावित [नि + सद् + षिच् + क्त] 1 बैठाया हुआ 2
कष्टग्रस्त हुला ।

निष्ठावित् (वि०) (स्त्री०—नी) [निष्ठा + इति]
बैठने वाला या लटने वाला, विधाम करने वाला,
आराम करने वाला—रघु० १।५२, ४।२, (पु०)
महावत, —सि० ५।४१ ।

निष्ठि (वि०) [नि + षिच् + क्त] 1 मना किया हुआ,
प्रतिष्ठि, दूर हटाया हुआ, रोका हुआ—दे० नि पूर्वक
सिच् ।

निष्ठित (भू० क० कृ०) [नि + षिच् + क्त] 1 छिड़का
हुआ 2 भरा हुआ, टपकाया हुआ, उँडला हुआ,
न्याप्त किया हुआ ।

निष्ठित् [नि + षिच् + क्त] 1 प्रतिषेध, दूर रखना,
दूर हटाना 2 प्रतिरक्षा ।

निष्ठितम् [नि + षिच् + क्त] बच करना, हत्या
करना—न. अधिक जैसा कि 'अन्वर्थनिष्ठित' में ।

निष्ठेक [नि + षिच् + क्त] 1 छिड़कना, नष्ट करना -
मुखसंनिष्ठिक—शु० १।२८ 2 दूर २ टपकना,

रिगना, भरना, रीकानिकोविद्युना—रघु० ८।३८,
टपकते हुए तेल की एक दूध 3 आव, प्रभाव
4 बोधदान, बोधसिन्धु, गर्भवती कला, बीज—
कु० २।१६, रघु० १।४६० 5 सिचाई, 6 प्रखालन
के लिए बल 7 बीज की अपविष्टता 8 मिला गयी ।

निष्ठेक [नि + षिच् + क्त] 1 प्रतिषेध, दूर रखना,
दूर हटाना, रोकना, प्रतिरोध 2 प्रत्याख्यान, मुकरना
3 नकारात्मक अंगण—द्वौ निष्ठेको प्रकृतार्थं समयत
4 प्रतिषेधक नियम (वि० विधि) 5 नियम से
अधिकम करना, अपवाद ।

निष्ठेक [नि + सेव् + ष्यत्] 1 अग्र्याम करने वाला,
अनुग्रहण करने वाला, भ्रूना, अनुरक्त 2 बार २
माने वाला, बसने वाला, आश्रयग्रहण करने वाला
3 उपयोग करने वाला ।

निष्ठेकम्, निष्ठेका [नि + सेव् + ष्यत्, ऋ + टाप् वा]
1 सेवा करना, नौकरी, हाबंदी में लगे रहना
2 पूजा, आराधना 3 अग्र्याम, अनुग्रहण 4 आसक्ति,
लगाव 5 रहना, बसना उपयोग करना, उपयोग में
लाना 6 परिचय, उपयोग ।

निष्ठु (चुरा० आ०—निष्ठुवते) सोलना, भापना ।

निष्ठु, —कथ [निष् + ष्यत्] 1 स्वर्णमुद्रा (मिथ-मिथ
मूल्य की, परन्तु मामान्यरूप १६ गांधी या एक कर्ब
के तोल के सोने के बराबर) 2 १०८ से १५० कर्ब
के तोल का सोना 3 छातो या कण्ठ में पकने का
स्वर्णामूषण 4 सोना, —कथ बाडाल ।

निष्ठुः [निष् + क्त + ष्यत्] 1 बाहर निकालना,
निचोड़ना 2 सत्, सारभूत अर्थ, तत्त्व—इति निष्ठुः
(भाष्यकारो) डाग बहुधा प्रयुक्त—मनु० ५।१२५,
भाषा० १३८ 3 मापना 4 निष्ठु, बीचपडाल ।

निष्ठुर्णम् [निष् + क्त + ष्यत्] 1 बाहर निकालना,
निचोड़ना, खींचना—रघु० १२।७० 2 घटाना ।

निष्ठुर्णम् [निष् + क्त + षिच् + ष्यत्] (नाय प्रसो
को) हाक कर दूर करना 2 बच, हत्या ।

निष्ठुः (स) [निष् + काश् (सु) + ष्यत्] 1 बाहर
निकालना, निर्गम, निकाल 2 प्राप्त आदि का द्वार-
मध्य 3 प्रमात 4 अन्तर्धान ।

निष्ठुः [भू० क० कृ०] [निष् + क्त + षिच् + क्त]
1 निर्वासित, बाहर निकाला हुआ, हाक कर बाहर
किया हुआ 2 बाहर गया हुआ, बाहर निकाला हुआ,
3 रक्सा हुआ, जमा किया हुआ 4 उहाराया हुआ,
नियत किया हुआ, 5 सोना हुआ, मिला हुआ,
फैलाया हुआ 6 बुराभला कहा हुआ, छिड़का हुआ ।

निष्ठुः [निष् + क्त + षिच् + ष्यत्] वह शामी जो
आने स्वामी के नियंत्रण में न हो ।

निष्ठुः [निष् + क्त + ष्यत्] 1 घर से लगा हुआ प्रसव-

वन, कीडोधान 2 खेत 3 स्थियों का रतवास, गया का अन्त पुर 4 दरवाजा 5 बख की कोंटर ।
निष्कुटि- (स्त्री) [निम् + कुट् + इत्, स्थिर्वा ङीप्]
 बड़ी इलायची ।
निष्कुसित (भू० क० कृ०) [निम् + कुप् + क्त] 1 फाड़ा हुआ, बलान् वाहर लीचा हुआ, विदीर्ण—रघु० ७।५० 2 निकाला हुआ, निर्वासित—दे० निम् पूर्वक 'कुप्' ।
निष्कुह [निम् + कुह् + अच्] बख की कोंटर—तु० 'निष्कुट' ।
निष्कृत (भू० क० कृ०) [निम् + कृ + क्त] 1 ले जाना गया, हटाया गया 2 जिनसे प्रायश्चित्त कर लिया है, दीर्घमुक्त, लसा किया गया,—तन्म् प्रायश्चित्त या परिशोधन ।
निष्कृति. (स्त्री०) [निम् + कृ + क्तित्] 1 प्रायश्चित्त, परिशोधन पत्र० ३।१५७ 2 निम्नार, प्रनिदाल, क्षणशोधन, कर्मव्यसम्पादनेन तस्य निष्कृति शब्धा कर्तुं धर्म शान्तिरपि—मनु० २।२२७, ३।१२, ८।१०५, ९। १९, ११।२७ 3 हटाना 4 आरोग्यलाभ, चिकित्सा, प्रनोकार 5 टालना, बचना 6 अवेक्षा करना 7 युग बालचलन, प्रदमाधी ।
निष्कृष्ट (भू० क० कृ०) [निम् + कृप् + क्त] 1 उखाड़ा हुआ, खींच कर बाहर निकाला हुआ उड़ल 2 सक्षिप्यति ।
निष्कोष, **निष्कोषणम्** [निम् + कुप् + क्त ल्यट् व.] 1 फाड़ना, खींचकर बाहर निकालना, उखाड़ना, उम्मुलन करना 2 भूसी निकालना, छिन्का उठारना ।
निष्कोषणकम् [निष्कोषण + कन्] रात पुरचनी पत्र० १।७१ ।
निष्क्रम [निम् + प्रम् + घञ्] 1 बाहर जाना, निकलना 2 बिदा होना निर्गमन करना 3 एक सस्कार (बोधे मास में पितृ को) पत्नी वार सुनी हवा में निकालना चतुर्थे मासि निष्क्रम—याज्ञ० १।१२ तु० 'उपनिष्क्रम' से भी 4 पतित होना, जाति भ्रष्टता जाति-शीलता 5 बोधिक क्षिति ।
निष्क्रमणम् [निम् + क्रम् + ल्यट्] 1 जाये या बाहर जाना 2 एक सस्कार (इममे नवजात बालक को बोधे मास में पत्नी वार सुनी हवा में निकाला जाता है) चतुर्थे मासि कर्तव्य शिशोनिष्क्रमण गृहान्—मनु० २।२४ ।
निष्क्रमणिका [निष्क्रमण + कन् + टाप् इबम्] दे० निष्क्रम (३) ।
निष्कम्प [निम् + क्री + अच्] निस्तार छुटकारा बन्दी का उडा—मनु०—इदी वत् समुद्रेण पीनितेवामनिष्कम्पम्—रघु० १।५।५, २।५५, ५।२२, मुद्रा० ६।२० 2

पुरस्कार 3 भाडा, मजदूरी 4 अदायगी, बुनोनी
 —सि० १।५० 5 अदला-बदली, विनिमय ।
निष्कम्पणम् [निम् + क्री + ल्यट्] निस्तार छुटकारा बन्दी का उडा—मनु० ।
निष्कम्प [निम् + स्वप् + घञ्] 1 काटा 2 रगा घोरबा ।
निष्कणम् [निम् + तप् + ल्यट्] जलन ।
निष्कालक [निम् + तालक] घन-रति, कलकल ध्वनि, भरबरध्वनि ।
निष्क (वि०) [निरा निष्कति नि + स्था + क] (शाय समान क अत न्) 1 अन्दर रहने वाला, स्थित —तन्निष्ठे फले 2 निर्भर, भाषित, सकल करने वाला या सब्ब रखने वाला -तमोनिष्ठा मनु० १२।९५ 3 भक्त, अनुरक्त, अन्त्या करने वाला, इरादा —सत्यनिष्ठ 4 कुशल 5 आस्था रखने वाला—धर्म-निष्ठ, —च्छा 1 अकम्पा, दया 2 स्वयं, देहा, नियन्ता -नमो निष्ठा-शून्य भ्रमति च किमप्यात्मिन्वति च—मा० १।११ 3 भक्ति, श्रद्धा शनिष्ठ अनुगाय 4 विद्यास, दुःख भक्ति, भास्वा-शान्तेषु निष्ठा मा० ३।११. मम० ३।२ 5 श्रेयान्त, कुशलता, प्रबोधना, पूर्वता 6 उपसङ्गार, अन्त, खनाना अत्याकृष्टिभक्ति परतामप्यप्रसन्नानि - इ० ४ 7 उत्कान्ति या नाटक का अन्त 8 निष्पत्ति, सृष्टि—मनु० ८।२७ 9 चरम विन्दु 10 मनुष्य, विनाश, प्रलय 11 निरार वा निश्चिन्त ज्ञान, निश्चिन्ति 12 विश्वा मायना 13 भोगना, कष्ट उठाना, दुःख, चिन्ता 14 (श्या०) क्व, कलभु (न और त्वम्) के लिए पारिभाषिक शब्द ।
निष्कालम् [नि + स्था + ल्यट्] चटनी, मगला ।
निष्ठी (स्त्री) व, —वम्, निष्ठी (स्त्री) वनम् निष्ठीवितम् [नि + ष्टिप् + घञ्, दीर्घ, दीर्घाभावे गुण, ल्यट् वा, दीर्घे नुगे गुण] बूक देना, धकना—मनु० १।१२ ।
निष्ठुर (वि०) [नि + स्था + उरच्] 1 कठोर, कर्कश, उबहु, कृषा 2 कडा, तेज, (हवा के झोके की भांति) तीक्ष्ण—सि० ५।४२ 3 क्रूर, कठोर, पाषाणहृदय (पुरुषा के विषय में) श्वक्याय प्रतिपत्तिनिष्ठुर रघु० ८।६५, ३।६२ 4 उड़ल ।
निष्ठुल (भू० क० कृ०) [नि + ष्टिप् + क्त, ऊट्] हुआ, हुआ हुआ, फेला हुआ—निष्ठुलचरणोपयोगमुक्तयो लाक्षणस केनचित्—श० ४।५, रघु० २।७५, सि० ३।१० ।
निष्ठुति. (स्त्री०) [नि + ष्टिप् + क्तित्, ऊट्] बूक, झकार ।
निष्ठा, निष्ठात (वि०) [नि + स्था + क, वा वा] बहुत, कुशल, विश्व, दख, सुपरिचित, विश्वेषज—निष्ठात-श्रेय च वेदाते साधुत्व नीति दुर्जन—भाषि० १।८०,

भट्टि० २।२६, जि० ८।६३, मनु० २।६६, ६।३० 2
प्रकाशित, स-पत्र, निष्पन्न—आ० १०।०४ (निष्क
विहित -अपठ 3 बहिष्मा, पुष्प)

निष्कम्ब (वि०) [निष् + पम् + क्त] 1 कड़ा बनाया
हुआ, बल में थियोया हुआ 2 अली प्रकार पकाया
हुआ।

निष्कम्बम् [निष् + पम् + क्त] 1 अपट कर निकलना,
धीप्रता से बाहर जाना।

निष्कम्पिः (स्त्री०) [निष् + पम् + क्तिन्] 1 जन्म,
उत्पादन—अपठनिष्पत्ति 2 परिपक्वावस्था, परि-
पक्व—कु० २।३७ 3 पूर्वता, समापन 4 संपूर्ति,
संपन्नता, समाप्ति।

निष्कम्प (न० क० कृ०) [निष् + पम् + क्त] 1 जन्मा
हुआ, उदित, उदयित, पैदा हुआ 2 कार्यान्वित हुआ,
पूरा हुआ, संपन्न 3 तयार।

निष्कम्बम् [निष् + पम् + क्त] फटकना।

निष्कम्बम् [निष् + पम् + क्त] 1 कार्यान्वि-
तन, निष्पत्ति 2 उत्पन्नजन 3 उत्पादन, पैदा करना।

निष्कम्प [निष् + पम् + क्त] 1 फटकना, अनाज मार
करना 2 छत्र में उलझ होने वाली शाय 3 दवा।

निष्पीडित (न० क० कृ०) [निष् + पीड + क्त] 1
निबाधा हुआ, भीखा हुआ, -निष्पीडितेदुःकरकदकदवा
नू मेक—उत्तर० २।११।

निष्पेय, निष्पेयम् [निष् + पिप + क्त, ह्यट्] 1
निष्पन्न रसकना, पोसना, बूर-बूर करना, कुचलना—
भुक्तात्निष्पेय-वेणी० ३ 2 फोटना या कटना,
आधान करना, रस देना—रघु० ४।७३, मत्तरी०
१।२६, का० ५६।

निष्पेयार्थम्-नि (न००) [निष् + प्र + क्त + ह्यट्, निष् +
प्रवाही तन्भुवाप पलाका अन्वाम् अरुप या नि-
माप्] तथा कारा कडा, 'यपन्म्—उग०।

निष् (जन्म०) [निष् + क्तिन्] 1 उत्सर्ग के रूप,
म वह धातुओं के पूर्व लज कर विभंग (मे पूर के
अहर), निश्चिन्त, वर्णना, उपभोग, पार करना
अतिक्रम आदि अर्था का बलवाना है, उदाहरण २०
पीछे 'निष्' के अन्वय 2 महा लब्धा के पूर्व उपसर्ग
के रूप म प्रयुक्त होकर चहुन म नाम और विशेषण
बनाना है तथा निष्पत्ति अर्थ प्रकट करना (र)
'मे म' 'मे दूर' हैसा कि 'निष्कम्ब', निष्काम 'मे पा
(प) अधिक प्रचलित नहीं 'के बिना' 'मे लज
(अभावावस्थता पर वर देने वाला), निष्पेय - बिना
शप के, निष्कम्ब, निष्कम्ब अर्दि (वि०) मनमा म
निष् का म् स्वर क, अवका वों के योगे, बोध या
पाचने वर्ण या प्र क व हू मे मे कोई वर्ण, परे होने
पर, बदल कर ही जाता है, दे० निष्, ऊष्म वशी

के परे होने पर विसर्ग च् सू से पूर म् तथा न् जोर
प से पूर व् हो जाता है, दे० दुष् । मम० कटक
(निष्कटक) (वि०) 1 बिना काटो का 2 काटो मे
रा मज्जुबी मे युक्त, मय तथा उत्पल्लो मे मुक्त, -कंठ
(निष्कट) (वि०) प्रथम मूलो के बिना, कपट
(निष्कट) (वि०) निश्चिन्त, शुद्ध हृदय, -कंठ
(निष्कट) (वि०) गतिहीन, स्थिर, अपर-निष्कट-
वामर्गि वा—श० १।८, कु० ३।६८, -कण (निष्क-
ण्य (वि०) निर्दय, निर्दम, क्रूर, -काल (निष्काल)
(वि०) 1 अलक्ष, अविभक्त, समन्त 2 प्राप्तशय,
शीघ्र, न्यून 3 पुनर्हीन, उमर 4 विकलाग—(क)
1 आगार 2 गोवि, भय 3 ब्रह्मा (- का, ली)
एक बूढ़ी स्त्री जिसके बच्चे होने कन्म हो गये हो, या
जिमे प्रव र्मोपमं न होना हो—कलक (निष्कलक)
(वि०) निर्दोष, कलक मे रहित, -कषाय (निष्क-
षाय) (वि०) मूल तथा दुर्घमनाओं से मुक्त, -कण
(निष्काम) (वि०) 1 कामता या अधिनापरहित,
निष्कम्ब, निष्कार्य, स्वाधरहित 2 ममार की सब
प्रकार रा दुष्कारों मे मुक्त (अव०—बम्) 1
विना इच्छा के 2 अनिच्छा पूर्वक, -कारण (निष्का-
रण) (वि०) 1 बिना कारण के, अनास्यक 2
निष्पन्न, निष्प्रवाजन—निष्कारणो बपु 3 निष्कार,
देवप्रति (अव० कम्) बिना किसी कारण या हेतु
व कारण के अनाय मे, अनास्यक का से, -कालक
(निष्कालक) पञ्चानाम मे रत्न (अगम्यो) जिसके
बाल गण मर मूड कर धी नमाया गया है, -कालिक
(निष्कालिक) (वि०) 1 जिसकी जीवनचर्या समाप्त
रा ना जिसके दिन उने गिने हो 2 जिमे कोई जीन
न मने अरे। -क्लिन्न (निष्कलन) (वि०) जिसके
पल मर मिना भी न हो। पनहीन दग्धि, -कुल
(निष्कुल) (वि०) जिसका काट करनाशय व रहा
है, ममार मे अकेला रह गया है। (निष्कुल कृ पूर
का म मवय विकलेट करना, निष्कम्ब कर देना,
निष्कुला कृ 1 किसी के परिवार को नष्ट-नष्ट कर
दाः 2 निकल उत्तरना, भसा अन्वय करना—निष्कु-
कारणनि रहितम निष्क०), कुलीन (निष्कु-
लीन) (वि०) नीच कुल का, -कट (निष्कट)
(वि०) छत्ररहित, उमातर, निर्दोष, -कृष
(निष्कृष) (वि०) निर्दम निन्द, क्रूर, -कंस्य
(निष्कंस्य) (वि०) 1 वैर, विरुद्ध, निरोध
2 पौरव से बन्धन, मोक्षनेव, -कीर्त्तित (निष्की-
र्त्तित) (वि०) जो कीर्त्तित मे बाहर चला गया
है, क्पि (निष्कपि) (वि०) 1 चियाहीन 2 जो
परिधि मरनागे का अनुष्ठान न करता हो, कष
(निष्कष), - क्लिप्त (निष्कलिप्त) (वि०) संयोजित

से रहित, -**श्लेषः** (नि श्लेष) = निश्लेष, -**शक्य** (निश्च-
क्य) (अन्त्य०) पूर्ण रूप से, -**शक्युत्** (निश्चक्युत्)
(वि०) अथवा, बिना शक्यो का, -**शक्यारि** (निश्च-
त्यारि) (वि०) जिसने शक्यो पार लिये हों,
-**शक्त** (निश्चित) (वि०) 1 चिन्ताओं से मुक्त,
अक्षय, सुरक्षित 2 विचारहीन, चिन्तन शून्य,
-**शैतन** (निश्चेतन) शैतनरहित, -**शैतल** (नश्चेतल)
(वि०) जो अपने ठीक होश में न हो, -**शैष्ट**
(निश्शैष्ट) (वि०) गतिहीन, नि शक्त, -**शेष्यकारण**
(निश्शेष्यकारण) (वि०) किसी को गति से बञ्चित
करना, गतिहीनता का उत्पादक (कामदेव के एक
भाग का विशेषण), -**शंसत्** (निश्चरत्) (वि०)
जो शेषों का अध्ययन न करता हो, -**शिख** (निश्छिद्य)
(वि०) 1 जिसमें मूत्रास न हो 2 निर्दोष
3 निर्दोष, क्षतिरहित, -**शमु** (वि०) जिसके कोई
क्षान्त न हो, निस्सन्तान, -**तन्त्र** (वि०) जो बालसी
न हो, कुर्ताना, स्वल्प, -**तन्त्रक**, -**तिमिर** (वि०)
अधकार मुक्त, प्रकाशमान 2 पाप और नैतिक
मनित्ताओं से मुक्त, -**तर्क** (वि०) कल्पनातीत,
अविचलनीय, -**तक** (वि०) 1 शोक, बर्तुलाकार -
मुस्ताकलापस्थ च निस्तलान्त-कु० १४२ 2 हिलने
वाला, कापने वाला, डोलने वाले ३ तलीरहित,
-**तृष** (वि०) 1 मूसी में विपुल 2 विशद, स्वच्छ
सखीकृत, शौर, गेहूँ, शल्लुम् स्फटिक, -**नेज्ज** (वि०)
निर्मल, ताप या शक्ति रहित, नि शक्त पुत्र-
हीन 2 उन्माहित, मन्द ३ गूढ, -**त्रष** (वि०)
हीट, निर्लेख, -**त्रि** (वि०) 1 तीस में अधिक
-**त्रि** (वि०) 2 निर्दय, निर्दय, क्रूर -**अम** ५ (-**ञ**)
तकवा-भूत् (पु०) कृपागचारी, -**त्रेमुष्य** (वि०)
तीन गुणों सत्य, वरम तथा समस्त) में शून्य -**पक**
(निष्पक) (वि०) कीचड से मुक्त, स्वच्छ गूढ
-**पताक** (निष्पताक) (वि०) बिना किसी छत्र
के, -**पतिपुत्रा** (निष्पतिपुत्रा) वह स्त्री जिसके न कोई
पुत्र हो, न पति, -**पत्र** (निष्पत्र) (वि०) 1 जिसमें
कोई पत्रा न हो 2 जिसके पत्रे न हो,
बिना पत्रों का (निष्पत्रा ह्य भाष से इस प्रकार
बीषना जिससे कि पत्र विद् अन्तु के भार पार निकल
वाय, अत्यन्त पीडा पहुँचाना (आल०) निष्पत्राकरोति
(मृग व्याघ्र) (नपुंसक शक्य अत्रापार्ष्वे निर्दय-
मात्रेण्यत्र करोति -सिद्धा०), एकत्र मृग सपत्ना-
कृतोऽप्यथ निष्पत्राकृतोऽपत् -दस० १६५, इसी
प्रकार -पातो गुरुर्न साक स्वयमानन्नाब्जा,
पिपरीषीथ यदाशोचन्निष्पत्राकरोऽत्रयत् -भाषि०
२।१६२, -**पथ** (निष्पथ) (वि०) बिना पैरों का

(इम्) एक गाड़ी जो बिना पैरों या बिना पहिरी के
चले, -**परिकर** (निष्परिकर) (वि०) बिना तैयारी
के, -**परिग्रह** (निष्परिग्रह) जिसके पास किसी प्रकार
की संपत्ति न हो, -**पुद्रा** २ (ह) वह सन्तानी
जिसने न तो विवाह किया हो, न जिसका कोई
आश्रित हो और न जिसके पास कुछ सामान हो,
-**परिच्छद** (निष्परिच्छद) (वि०) जिसका कोई
अनुचर या पिछलग्गना न हो, -**परोक्ष** (निष्परोक्ष)
(वि०) जो यथार्थ या महो महो पर्यव न करे,
-**परीहार** (निष्परीहार) (वि०) जो मावधानी न
रखे, -**पर्यत** (निष्पर्यत), -**पार** (निष्पार) (वि०)
सोमा रहित, असीमित, -**पाप** (निष्पाप) (वि०)
पापरहित, निर्दोष, पवित्र, -**पुत्र** (निष्पुत्र) (वि०)
पुत्र रहित, निस्सन्तान, -**पुष्य** (निष्पुष्य) (वि०)
1 निर्जन, बिना किसी अमामो के, उजाड़
2 पुनःप्राप्त हीन ३ जो पुत्रिन न हो, स्त्रीहीन, नपुंसक
लिंग ((**ष**) 1 हीनता 2 कायर, पुलाक (निष्पु-
लाक) बिना पुलाकी का, बिना भूमि का, -**पीक्ष**
(निष्पीक्ष्य) (वि०) पीछाहीन, -**प्रक्ष** (निष्प्रक्ष)
(वि०) म्बिर, अचर, गतिहीन, -**प्रकारक** (निष्प्र-
कारक) (वि०) कानिभेदरहित, वैगुण्यरहित, पुत्र
निष्प्रकारक ज्ञान निर्विकल्पम् -नकं०, -**प्रकाज**
(निष्प्रकाज) (वि०) पात्ररहित, अस्पष्ट, अशकार-
मय -**प्रचार** (निष्प्रचार) (वि०) 1 न हिनने
दुखने वाला 2 एक ही स्थान पर स्थिर नष्टे वाला
2 मकेन्द्रित अथवा हुआ, स्थिर किया हुआ, -**प्रति**
(सौ) कार (निष्प्रति) (सौ) कार, -**प्रतिक्रिय**
(निष्प्रतिक्रिय) (वि०) जिसकी चिकित्सा न हो मके,
जिसका कोई प्रतिकार न हो मके, -**प्रवसा** (निष्प्र-
वसेयभाषदुपस्थित-का० १५१ 2 निर्दोष, बाधाग्रहित
(अश्व०रम्) बिना किसी विघ्न के, -**प्रतिष्ठ** (निष्प्र-
वि०) विध्वनित, निर्दोष, बाधाग्रह-रूप० ८।३१,
-**प्रतिष्ठ** (निष्प्रतिष्ठ) (वि०) 1 शत्रुहित,
निर्दोष 2 बेजोड, व्यर्थता, अनुपम, -**प्रतिभ**
(निष्प्रतिभ) (वि०) 1 कानिच्युत् 2 प्रतिभहीन
जा प्रत्यक्षममति न हो, मन्द बुद्धि, जड़ 3 उदासीन,
-**प्रतिभा** (निष्प्रतिभा) (वि०) कायर, भीष,
-**प्रतीष** (निष्प्रतीष) (वि०) 1 सीधा सामने देखने
वाला, पीछे मुड़कर न देखने वाला 2 (पुष्टि)
अवबद्ध, -**प्रसूह** (निष्प्रसूह) (वि०) निश्चिन्त,
अबाध, -**प्रषथ** (निष्प्रषथ) 1 विस्तारहीन 2 छत्र
कापट से रहित, ईमानदार, -**प्रभ** (निष्प्रभ या
निष्प्रभ) (वि०) 1 कानिचिहीन, निर्दोष विषाट
देने वाला -रूप० ११।८१ 2 शक्तिरहित ३ निस्तेज,
प्रतिहीन, अधकारमय, -**प्रभाषक** (निष्प्रभाषक)

(वि०) बिना अधिकार का,—प्रयोजन (निष्प्रयोजन)
 (वि०) 1 निष्प्रेष्य, जो किसी प्रयोजन से प्रभावित न हो 2 निष्कारण, विराधार 3 अर्थ 4 अनुपयोगी, अनावश्यक (अभ्य०—भम्) बिना कारण या हेतु के, बिना किसी मतलब के—प्रज्ञा० ३,—श्राप (निष्श्राप) (वि०) प्राणहीन, निर्जीव, मृतक,—कष (निष्कष) (वि०) 1 जिसका कोई फल न निकले, फलहीन, (आल० भी) असफल—निष्फलारभयत्ना—मेघ० ५८ 2 अनुपयोगी, बिना लाभ का, निरर्थक—कु० ४।१३ 3 बाह्य, ऊपर 4 (शब्द) निरर्थक 5 बिना बीज का, निर्बीज (—काली) स्त्री जिसके सन्तान होना बन्द हो गया हो,—फन (निष्फन) (वि०) बिना ज्ञानो का,—शब्द (निशब्द) (वि०) जो शब्दों में व्यक्त न किया गया हो, अस्वरहित—निशब्द रोदिनुमारोमे—का० १५३,—सलक (निशलाक) (वि०) अकेला, एकान्तवर्ती, निवृत्त—कम्) निर्जन स्थान, एकान्तस्थान—अरण्ये निशलाके वा मधुपेदविभाषित—मनु० ७।१५७,—शेष (निशेष) (वि०) बिना कुछ शेष रहे, पूर्ण, समस्त, पूरा,—निशेषविश्रायितकाशजानम् रघु० ५।१,—शोष्य (निशोष्य) (वि०) घोषा हुआ, स्यक्त,—सशय (निमशय) (वि०) 1 अमतिष्ठ, निश्चित 2 मन्देह—रहित, आशकांग्रहित, महेशुभम्—रघु० १५।७९ (अ० १०) शम्) निस्तपेह, अतिमिथ रूप से, निश्चिन्त रूप से, अवश्य,—स्य (निमस्य) (वि०) 1 अनासक्त, भक्तिरहित, अनप्रेम, उदासीन—यदिन सगत्त्व फलस्थानतेम्य—कि० १८।२४ 2 सामाजिक आम-किन्धो से मुक्त 3 निर्लिप्त, विमुक्त अनुप्रासपूर्व्य 4 अज्ञाय (अग्य—शम्) निम्नवर्त्य भाव से—सक (निमस) (वि०) बेहोया,—सत्त्व (निमत्त्व) (वि०) 1 मत्वरहित, दुर्बल, पुम्बहीन 2 नीच, नगण्य, अधम 3 सत्तारीन, असार 4 जीवित प्राणियों से वंचित (—सम्) 1 शक्ति या ऊर्जा का अभाव 2 नसत्तारिना 3 मगधना,—सतति (निस्सतति), सतता (निस्सतान) (वि०) जिसके कोई सन्तान न हो, सन्ततिरहित,—संविद्य (निस्सन्दिग्ध),—संवेह (निस्सन्वेह) (वि०) दे० नि सपय,—सन्धि (निस्सन्धि, नि सन्धि) (वि०) जिसमें खिलाई देने वाली कोई पाठ न हो, सहज, सफल, सटा हुआ,—सपल (नि सपल) (वि०) 1 जिसका कोई शत्रु न हो—वन-श्विरकलापो नि सपनोऽप्य जात—विक्रम० ४।१० 2 जिसका कोई और दावेदार न हो, जो सबैसा एक ही का हो 3 अजातघ्न,—सपम् (निस्सपम्) (अभ्य०) 1 बिना शत्रु के, अनुचित समय पर 2 दुष्टता के साथ,—संपात (नि सपात) (वि०)

वही मार्ग उपलब्ध न हो, वही मार्ग अव्यक्त ही (—सः) आधीरात का अँधेरा, गुप अँधेरा, भना अवकार,—संशाच (नि संशाच) (वि०) जो लकीरों न हो, प्रशस्त, विस्तृत,—संसार (नि ससार) (वि०) 1 नीरस, सारहीन, बिना गूदे का 2 निकम्बा, असार,—सौभ (नि सौभ),—सौभम्—(नि सौभम्) (वि०) अपरिप्रेय, मीमाहित—अहह महतां नि सौभानपरिचरिचिभूयम्—मनु० २।३५, नि सौभार्थ-पदम्—३।९७,—स्नेह (नि स्नेह) (वि०) जो चिकना न हो, बिना चिकनाई का, सूष्ण 2 स्नेह-रहित, भावनाशून्य, झुपाहीन, उदासीन 3 जिससे कोई प्यार न करता हो, जिसकी कोई देखभाल न करता हो—पच० १।८२,—स्वय (नि स्वय या निस्स्वय) (वि०) गतिहीन, स्थिर—रघु० ६।५०,—स्युह (नि स्युह) (वि०) 1 कामनाशून्य 2 लापरवाह, उदासीन—ननु यक्तुवितोपनि स्युहा—कि० २।५, रघु० ८।१० 3 सन्तुष्ट, हाह न करने वाला 4 सांसारिक इच्छाओं से मुक्त—स्व (नि स्व) (वि०) निर्धन, दरिद्र—नि स्वो शक्ति सन्म—सा० २।६,—स्वाह (नि स्वाह) (वि०) स्वादरहित, बिना स्वाद का, बंदमवा ।

निर्घपात दे० नि सपात ।

निसर्गः [नि + सृज् + चञ्] 1 प्रदान करना, अनुदान देना, उपहार देना, पुरस्कार देना—मनु० ८।१४ 2 अनुदान 3 मन्त्रोक्त, सुयोग्य, मन्त्राण्य 4 त्याग, शिलाजल देना 5. सृष्टि—निसर्गदुर्बोधम्—कि० १।६, १।८।३१, रघु० ३।३५, कु० ४।१६,—निसर्गः, निसर्गप्रकृति से, स्वभावत 7 बदला-बदली, विनि-मय । मम०—अ,—सिद्ध (वि०) सहज, अन्तर्जात, स्वाभाविक,—निस (वि०) स्वभावतः और प्रकार का—निसर्ग भिन्नान्पदेकनस्यम्—रघु० ६।२९,—विभोत (वि०) 1 स्वभावत विवेको 2 स्वभावत विनम्र ।

निसारः [नि + सु + कञ्] समुच्चय, समूह ।

निसुवन (वि०) [नि + सु + सुट्] मानने वाला, गूढ करने वाला,—सम् बध, हत्या ।

निसृष्ट (भू० क० क०) [नि + सृज् + ष्ट] 1 सौपा गया, दिया गया, अर्पित 2 छोड़ा गया, त्यक्त 3 विसर्जित 4 अनुज्ञात, अनुमन 5 केन्द्रवर्ती, मध्यस्थ । मम०—अर्ध (वि०) जिसे किसी कार्य का प्रबन्ध तोड़ा गया हो 2 दूत, यमिकर्ता—दे० सा० द० ८६, ८७, 'बूझो वह स्त्री जो नायक और नायिका के प्रेम को जान कर स्वयं उनको बिकारी है—तपिपुत्र निस्सृष्टार्थवृत्तकस्य सुधुषितस्य—मा० १ (यहाँ अनादर-निसृष्टार्थवृत्तौ) शब्द की व्याख्या इस प्रकार करता है

—नायिकाया नायकस्य वा मनोरथं ज्ञात्वा स्वभया
कार्यं साधयति वा ।

निस्तरणम् [निम् + तु + स्तुट्] 1 बाहर जाना, बाहर
आना 2 पार करना 3 बचाना, मुक्ति, छुटकारा
नरकीच, उपाय, योजना ।

निस्तारणम् [निम् + तु + स्तुट्] बध, हत्या ।
निस्तार [निम् + तु + घञ्] 1 पार करना—समार
तव निस्तारयद्वा न शक्यसी—भट्टि० ११६९ 2
छुटकारा पाना, छुटी, बचाव, उद्धार 3 मोक्ष 4
बुधशिक्षाधन, चुकोती, अदायगी—वेतनस्य निस्तार
कृत - हि० ३० ३० उपाय, तरकीब ।

निस्तोष [निम् + तु + घञ्] 1 उद्धार
किया हुआ, मुक्त किया हुआ, बचाया हुआ 2 पार
किया हुआ (आल०) मेसी० ६१३६ ।

निस्तोष [निम् + तु + घञ्] चुभना, डक मारना ।
निस्त्य [नि + स्तुट् + घञ्] कपकपी, धक्कन,
घृति ।

नित्य (न) द [नि + त्यन् + घञ्] पत्र विकल्पेन]
1 आगे या पीछे की ओर बढ़ना, घुमा, टपकना,
बढ़ २ हल्के निम्ना, झरना, सिन्धवा—बलकशिपाया
नित्यरंखाणिना—शा० १११४ 2 अरण्य, साव,
मोलापराव, रम—उत्तर० २१२४, भा० ११६ 3
प्रवाह, झंझ, पानी की धारा—हिमाद्रिनित्यव इवाव-
नीर्ष—रघु० १६३, ६१, ६६१०, मदनित्यदेरेवयो
—१०१८, मे० ४२ ।

नित्यदिन (वि०) [नि + त्यन् + घञि] टपकने वाला,
बहने वाला, गिरने वाला ।

नित्यव, **नित्याव** [नि + तु + अच्, घञ् वा] 1 गणित,
पारा 2 बाचना का माध ।

नित्यन, **नित्यान** [नि + त्यन् + अच्, घञ् वा] घड़,
आवाज, रघु० २१२९, ऋतु० १८८, कि० ५१६ ।

निहन् (भू० क० इ०) [नि + हन् + क्त] 1 पट्टी
दिना हुआ, आगा किया हुआ, बध किया हुआ,
भाग हुआ 2 प्रहार किया हुआ, चोट मचाया हुआ
3 अवरक्त, भक्त ।

निहननम् [नि + हन् + स्तुट्] बध, हत्या ।
निहव [नि + ह्वे + अच्, मप्रसाग] आवाहन, बुलावा ।

निह्व [नि + ह्वे + घञ्] दे० 'नीहार' ।
निहननस्य [नि + हन् + स्तुट्] बध, हत्या ।

निर्वि (भू० क० इ०) [नि + वि + क्त] 1 रक्ता
हुआ, घरा हुआ, टिकावा हुआ, स्थापित, जमा किया
हुआ 2 सीसा हुआ, मर्यापित 3 प्रदत्त, प्रयुक्त 4
अपेक्षित, अदर रक्ता हुआ 5 कोषप्रद किया हुआ
6 सभाया हुआ 7 (भूल आदि) परो हुई 8 मनोर
थ मे उच्चरित ।

निह्व (वि०) [नि + ह्वे + अच्] 1 मुकर जाना, झानकारी
का छिपाना—काय स्वमतिनिह्व—भा० १११२,
बन्दा० ५१२७ 2 पोपनीयता, छिपाव—याज्ञ० २१११
२९७ 3 रहस्य 4 अविष्कार, मन्वेह, हाका 5 दुपट्टा
6 परिष्कार, प्रायश्चित्त 7 बहाना ।

निह्वति (स्त्री०) [नि + ह्वे + क्तिन्] 1 मकरना,
झानकारी का छिपाव, अमह ८ 3 पाहड़, सवरण,
मनोवृत्ति 3 पोपनीयता, छिपाना, गुप्त रचना ।

नी (आ० उभ० नयति-से, नीत) [द्विकर्मक धातु, उदा-
हरण नी० दे०] 1 ने जाना नेतृत्व करना, पाना,
पहुँचाना, लेना, मचालन करना—अज्ञा धाम नयति
—मिड्रा०, नय मा तनेन बसति पयोमुवा—बिष्म०
४१४३ 2 निवेश करना, निदेश देना, वासन करना
—मालि० ११२ 3 दूर ले जाना, बहा ले जाना—
सीता लका नीता मुरागिना—भट्टि० ६४९९, रघु०
१२११०३, मनु० ६१८८ 4 उठा ले जाना—शा० ३१
५ 5 किसी के लिए ले जाना (आ०) 6 व्यय करना,
(सबव) बिनाना—वेनामानन्ददे देवदरबिदे दिनात्प-
नाधिषन—ब्राहि० १११०, नीत्वा मासाम् कनिचित्
—मेघ० २, सविष्ट कुशात्ते निता निनाय-रघु०
११९५ 7 किसी अवस्था तक हल करना—तस्यै
नरत्नामर्षमनयन—का० १६१, नीत्वात्पवा पचताम्
रत्न० ३१३, रघु० ८११९ (इस अर्थ में यह धातु नामों
के साथ उभो प्रकार प्रयुक्त होती है जिस प्रकार कृ
—उदा० 1 अन्न नी छिपाना 2 वध् नी दण देना,
नवा देना 3 शालत्व नी डाय बनाना 4 बुझ नी
मकटघ्नन करना 5 परितोष नी तुल करना,
प्रमत्त करना 6 पुनश्चलता नी फालतु करना 7
भस्मता नी 8 भस्मसात् नी जलाकर राख करना
9 बश नी अधीन करना, जीत लेना 10 विषय नी
11 बिनास नी नष्ट करना 12 क्षुडता नी खुर
बनाना 13 सक्षय नी एवाही मानना 8 निश्चय
करना, गयेपया करना, पुष्ट हाड करना, निर्णय करना,
पैसा करना—अज निरस्य भूनेन व्यवहाराप्रयेष
—याज्ञ० २१२९, एक पास्त्रेपु भूनेपु बहूषा नीयेते
क्रिया—महा० 9 पता लगाना, लोक के सहारे पीछा
करना, खोज निकालना—एतैर्निर्णयेत् सीमा—मनु०
८१२५२, २५६, यवा नवयस्यस्यार्थैर्गमस्य मयुष पदम्
—८१६४, याज्ञ० २१२५१ 10 बिनाह करना 11
बहिष्कृत करना 12 (आ०) शिक्षा देना, अनुदेश
देना—शास्त्रे नयते—मिड्रा०, प्रे०—नायवति—मै,
मार्गदर्शन करना, पहुँचाना (करण के साथ) लेन
या सरस्तीरमनायत्—का० ३८, इच्छा० निनीचति

—ले, ले जाने की कामना करना, मनु—मानना, अपने पक्ष का बना लेना, प्रकृत करना, फुलवाना, प्रार्थना करना, राखी करना, बहुलाना, (कोषाधिक) गान करना, प्रसन्न करना, लुभाना—स चानुनीत प्रयत्नेन परबन्धु—रघु० ५१५४, विग्रहाण्य घयने परा-
 क्कमकीनितुनेतुमबला स तरवरे—१९३८, कि० १३१
 ६७, भट्टि० ५१५६, ६१३७ २ स्नेह करना अर्जु०
 २७७ ३ साधना, अनुमानन मे रचना, अर्थ—, १ दूर
 ले जाना, दूर बहा ले जाना, निवृत्त करना—मनु०
 ३२४२ २ (क) हटाना, नाष्ट करना, ले जाना
 —श० ६१२६, मनुनपेण्यमि—भट्टि० १६३०,
 (ख) कूटना, चुगाना, लूटमार करना, छीनना, ले
 लेना—रघु० १३१४ २ उद्धृत, निचात्र करना
 —गल्प हृदयापयोगिभू—विष्क० ५, दूर करना,
 (बर्शादिक) उतारना, लौकिक उतारना—वर्णामि-
 गदमपनय—मूळ० ९, अपनयतु अवयवो मृगपावेधम्
 —श० २, रघु० ४६६, अर्थ—, १ निकट लाना,
 मचालन करना, नेतृत्व करना, ले जाना—कि० ८१२
 मूत्रा० १६, १५ २ अभिनय करना, नाटकीय रूप से
 प्रतिनिधान या प्रदर्शन करना, श्लेष-नाथ (बहुधा रम-
 भूमि के निदेशो मे प्रयुक्त) प्रदर्शित करना—भूतिमभि-
 नीय—श० ३, कुनमावचनपरिमलवयो मवयो—श०
 ६, मूत्रा० १२, ३३१ ३ उद्धृत करना, घटाना,
 अर्थात् अध्यापन करना, शिक्षा देना, लक्षणा,
 भा—, १ लाना, जाकर लाना—मूषक मत्याइमंमानीयते
 —श० ७८, मनु० ८१२१० २ प्रकाशित करना,
 पैदा करना, उत्पादन करना—अग्निनाथ भूष रूप
 रघु० १५, २४ ३ किसी अवस्था मे पहुँचाना आनी-
 यता नम्रता—रत्न० ११ ४ निकट ले जाना, पहुँ-
 चाना उच्च—, १ जाने बहाना गालनपापण करना २
 उठाना, उन्नत करना, सीधा बसा बनना (आ) दह-
 मधयते सिद्धा० ३ एक ओर ले जाना, एवात्त-
 मुधोय—महा० ४ अनुमान लगाना, निषेध करना,
 अटक लगाना अन्दाज लगाना उत्तर० ११२९,
 ३२२, अर्थ—, १ निकट लाना, जाकर लाना विधि-
 नैवीयतातरवम्—मूळ० ७६, मनु० ३२२५,
 गालवि० २५, कु० ७७२ २ उठाना, उन्नत करना,
 ले जाना शि० ९१२ ३ प्रस्तुत करना, उपस्थित
 करना—रघु० २५९, कु० ३१६९ ४ प्रकाशित
 करना, पैदा करना, उत्पादन करना—उपनय-
 प्रथानि—यश० ३१८०, उपनयप्रयैरनमोस्तवम्
 —गी० १ ५ किसी अवस्था में लाना, अवस्थावि-
 शेष तर्क पहुँचाना—पुराणीय नृप रामणीयकम्
 —कि० १३९ ६ मूर्त्तियवैत वारण कराना (आ०)
 मायवामुपनयते—सिद्धा०, भट्टि० ११५, रघु० ३१

२९, मनु० २५९ ७ भाडे पर रचना, भाडे के
 नीकर रखना—कर्मकरानुपनयते—सिद्धा०, अर्थ—,
 अवस्था विशेष में लाना, घटाना, नि—, १ निकट
 ले जाना, समीप पहुँचाना यात्रा० ३२२५ २ मुकना,
 बिनन होना, —वधन निनीय—३ उठेना ४ परित
 करना, निष्पन्न करना, निष्—, १ ले उठना
 २ विषयम करना, तय करना, फैलना करना मन्व-
 कय करना, दृढ़ करना—कथमप्युपायमाग्यनेव निर्णीय
 दश०, कि० ११३९, परि—, १ (अग्नि वी) प्रद-
 क्षिणा करना—तो वपती वि परिणीय वक्त्रि(पुरोषा)
 —कु० ७८०—अग्नि पर्यणय व मनु—रामा०
 २ बिबाह करना, ब्याहना—परिणोप्यनि पार्वती यदा
 तपसा तत्प्रवर्णोक्तो ह्य—कु० ४४२ २ निष्प-
 क्य करना, स्वाज करना—मनु० ७१२२, प्र—, १ (सेना
 आदि का) नेतृत्व करना—वानरेद्रेण प्रयोनेव (बलेन)
 रामा० २ प्रस्तुत करना, देना, उपस्थित करना—
 अर्घ्य प्रणीय जनकामजा—भट्टि० ५१७६ ३ वेताना,
 (आय) मुलमाना, पथ० ३११ ४ बंदमो के प्राद
 मे अग्निमयित करना, पूजना, अर्चना करना—त्रिधा-
 प्रणीतो ज्वलन—हरि० ५ (दृष्ट आदि) देना—मनु०
 ७२०, ८१२८ ६ निर्धारित करना शिक्षा-अदान
 करना, प्रस्थापन करना, प्रतिष्ठापित करना, बहिष्क
 करना—स एव चर्मा मनुना प्रणीत—रघु० १४३७,
 भूकप्रणीयथाशास्त्रामनति हि साधव कु० ६३१
 ७ लिखना, रचना करना—प्रणीत न नु प्रकाशित
 —उत्तर० ४ उत्तर रामचरित तत्प्रणीत प्रयुज्यते
 उत्तर० १३ ८ निष्पन्न करना, कायस्थित करना,
 अन्तःपान करना, प्रकाशित करना—नै० ११५, १९,
 मनु० ३१८२ ९ (अवस्था विशेष तक) पहुँचाना,
 निम्न अवस्था में ले जाना, प्रति—, भागिण ले जाना,
 वि—, १ हटाना, ले जाना, नष्ट करना (आ०)
 उस स्थान को छोड़कर वहाँ कर्म के स्थान में 'शरीर
 का कोई भाग हो) पदुपदहृष्वभिभिचिनीतनिद्र -
 रघु० ९१२, ९७५, १३१५, ४६, १५४८, कु०
 ११९, बिनयते स्थ तद्योय मयुर्भिविजयधमम्—रघु०
 ४६५, ६७ २ अध्यापन करना, शिक्षण देना, शिक्षा
 देना, प्रशिक्षित करना—विनिमुरेनै नृयो नृप्रियम्
 —रघु० ३१२९, १५९९, १८५१, यात्रा० ३३११
 ३ पालना, बसीभूत करना, प्रकाशित करना, निर्वाचित
 करना—अप्यान् विनोप्यनिव दृष्टयत्सन्—रघु० २८,
 १४७५, कि० २४४ ४ प्रस्तुत करना, (कोष आदि)
 गान करना (आ०) ५ स्थित हो जाना, (सवय
 का) शिक्षा—कथमपि यामिनीं विनीय—गीत० ८
 ६. पार ले जाना, सम्पन्न करना, पूरा करना ७ व्यय
 करना, प्रयुक्त करना, उपयोग में (आ०) लाना,

सतं चिन्तयते—सिद्धां ८ देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, (सद्भावनि) अपित करना (जा०), कर चिन्तयते—सिद्धां ९ नेतृत्व करना, संचालन करना—कु० ७१९, सम्—, १ एकत्र करना २ हकूमत करना, प्रशासन करना, पद्यप्रदर्शन करना ३ वापिस प्राप्त, लौटाना ४ निकट जाना, लम्बा—, १ मिलाना, एकता में आच्छेद करना, एकत्र करना—रघु० २।६४, शं० ५।१५ २. आ कर लाना लाना—रघु० १२।७८।
मी (पु०) [नी+विभृ] संभास के अन्त में प्रयुक्त। नेता, पद्यप्रदर्शक, जैसा कि ग्रामणी, सेनानी और अग्रणी में।
मीचा (स्त्री०) कुम्पा, बूल, खेत की सिंचाई के लिए बनी महुर।
मीकार दे० 'निकार'।
मीकास (वि०) [नि+कास्+अच्, दीर्घ] दे० 'निकार'—सि० ५।३५।
मीच (वि०) [निष्कृतमी घोभा चिन्तेति—चि+ठ, तारा०] १ नीच, छोटा, स्वल्प, दाढ़ा, बीता २ निम्नस्थित, निकट—भय० ६।११, मनु० २।१९८, याज्ञ० १।१३१ ३ नीची, गहरी (आवाज) ४ नीच, कमीना, अयम, लुप्त, अत्यंत छोटा—शारम्भते न क्लृप्त विध्वयतेन नीचे—भृत्० २।२७, नीचस्य गीचर-गते मूलमास्थते कं-५९, भास्मि० १।४८ ५ निकम्मा, निरर्थक,—वा श्रेयसाय। सम०—ना नदी,—श्रीकृष्ण प्याड,—घोनिन् (वि०) नीच कुलोत्पन्न, नीच घराने में जन्मा हुआ, इसी प्रकार 'नीचजाति',—बख्श,—बख्शम्, वैकान्तमणि।
मीच (चि) का [नीच+कन्, टाप्, पक्षे इत् वा] बड़िया या श्रेष्ठ गाय, (नीचिकी भी)।
मीचकिल (पु०) [नीचक+ङिनि] १ किसी वस्तु का गिन्नर २ बेल का सिर ३ अच्छी गाय का स्वामी।
मीचकी (अव०) [नीचैश्च इत्यस्य ट प्रत्ययच्] (प्राय विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त) १ नीचा, नीचे, अध, के नीचे, तले, नीचे की ओर (विप० उपरि)—नीचैर्वाभ्युपरि च दत्ता चक्रनेतिकमेय—मेघ० १०९ २ नीचे झुककर, विनम्र हा कर, झिन्कपूर्वक—रघु० ५।६२ ३. आहिस्ता ४, कोमलता से—नीचैर्वास्ति—मेघ० ४२ ४ मन्द स्वर से—पीमी आवाज से—नीचैश्च हृदिस्थितो मनु स मे प्राणेश्वर ध्यायति—अमर ६७, नीचैर्नृदात्—पा० १।२।३०, ५ छोटा, मुटका, बीता—नथापि नीचैर्बिनयाददपत्—रघु० ३।२४, (पु०) पहाड़ का नाम—नीचैर्वात्प गिरिमाधिवसेत्यत्र विद्यामहती—मेघ० २६। सम०—पतिः (स्त्री०) तिथिसम्पत्ति,—बुध (वि०) नीचे की भूहि किये हुए।
मीचः—इम् [निरतर विरुद्धि लता अत्र—नि+इत्,

+क, लस्य इ तारा०] १ पत्नी का घोंसला—स० ७।११ २ विस्तार, गद्दा ३ भाँद, भट ४ रथ का भीतरी भाग ५ स्थान, आवास, विद्यामन्थल। सम०—उद्भवः,—अ पत्नी।

मीचक [नीच+कन्] १ पत्नी २ घोंसला।

मीस (पु० क० कु०) [नी+सत्] १ ले जाया गया, संचालित नेतृत्व किया गया २ लम्ब, प्राप्त ३ विभ्रम अवस्था को पहुँचाया हुआ ४ व्यतीत, बिताया गया ५ भली भाँति स्पष्टज्ञ, सही—दे० 'मी',—सम् १ घन २ घान्य, अनाज।

मीति (स्त्री०) [नी+चित्] १ निर्देशन, दिग्दर्शन, प्रबंध २ आचरण, चालचलन, व्यवहार, कार्यक्रम ३ औचित्य, शान्तिनाता ४ नीतिकौशल, नीतिज्ञता, बुद्धिमत्ता, व्यवहारकुशलता—आजैव हि कुटिलेषु न नीति—ने० ५।१०३, रघु० १२।६९, कु० १।२२ ५ योजना, उपाय, कूटयुक्ति—मा० ६।३ ६ राजन्य, राजनीति विज्ञान, राजनीतिज्ञता, राजनीतिक बुद्धिमत्ता—आत्मोदय परम्परानिर्देश नीतिरिरीपती—शं० २।३०, भय० १०।३८ ७ आचारग्राम्य आचार, नीतिग्राम्य, आचारदर्शन ८ अवापित, अधिग्रहण ९ देना, प्रदान करना, प्रस्तुत करना १० मन्थ, महारा। सम०—कुशल,—अ,—निष्प, विद् (दि०) १ राजनीतिविचार, राजनीतिज्ञ, नीतिज्ञ २ दूरदर्शी, बुद्धिमान,—श्रीध—वृहस्पति की गाड़ी,— दोषः आचार, नीतिविषयक भूल,—श्रीकृष्ण वरहय का खान,— निर्वापण कृतम् पंच० १,—विषय नैतिकता या दूरदर्शी व्यापार का क्षेत्र,—व्यतिक्रम १ नीतिशास्त्र या राजनीति-विज्ञान के नियमों का उल्लंघन २ चालचलन को वृद्धि, नीतिविषयक भूल,—शास्त्रम् नीतिशास्त्र या राजन्य, नैतिकता।

मीध्रम् (अ०) [नितरा ध्रियते ष् मन्वि क दीर्घ—तारा०] १ छत का किनारा २ जगत् ३ पहिरु की परिधि या धेरा ३ चन्द्रमा ५ रेखनी नक्षत्र।

मीप [नी+प बा० गुणाभाव] १ पहाड़ की तलहटी २ कदब वृक्ष (बरसात में फूल देने वाला) नीप प्रदीपायते—मृच्छ० ५।१४, सीमन्ते च त्वदुपपन्नम यत्र नीप अधूनाम्—मेघ० ६५, ६ ३ अज्ञात जाति का वृक्ष ४ राजाओं का एक कुल—रघु० ६।४५,—पम् कदब वृक्ष का फूल—मेघ० २१, रघु० १९।३७।

मीरम् [नी+रम्] १ पानी—नीराभिर्भयतो जनि भस्मि० १।६३ २ रस, आसव। सम० अम् १ कमल २ मोती,—इः बावल—वीरध्वनिभिरसं ते नीरद मे मासिकी गर्भ—आमि० १।६१, शि० ५।५२, —धि,—निधि, समुद्र,—वृष्म् कमल।
मीराजम्,—ना [निर+गञ्+इष्ट, स्थियां टाप्] १

शास्त्रास्था को चमकाना, एक प्रकार का सैनिक व धार्मिक एवं ब्रह्मको राजा या सेनापति आश्विन मास में मगध क्षेत्र में जाने से पूर्व मगतते थे (अर्थात् राजा के पुराहिण, मन्त्री, तथा सेना के अधिकारी अपने-अपने-अपने विविध यन्त्रास्तो सहित बेद यंत्रों द्वारा) ४४५, १५१२, नं० ४१४४ २ अर्चना के रूप में देवमूर्ति के सामने प्रस्तुतित शीपक घुमाना ।

नील (वि०) (स्त्री०—सा (वैश्वदिक)—की (जीव जन्तु आदि) [नील + अच्] १ नीला, गहूरा नीला—नीलमिनस श्रमिण शिवर नूतनमोयवाह—उत्तर० ११३३ २ नील में रंगा हुआ,—सः १ गहूरा नीला या काला रंग २ नीलमणि ३ मूलर का पेड़, बड़ का पेड़ ४ राम की नना में एक बानर मूष ५ नीलगिरि, पर्वत की एक मूष ७ गंगा,—सम् १ काला नमक २ नीला घावा या नुनिया ३ मुग्धा ४ विप । सम्०

—अम मास पक्षा,—अजन्म मुरपा,—अंजना,—अजना,—अजना चिन्ती,—अजन्म—अजन्म, अजन्मन् (नपु०)—उत्पन्न नील कमल,—अज काजा वादन, अजर (वि०) गहूरे नीले वर्णों में सुसज्जित (४) १ राक्षस, पिशाच २ गनि व्रह्म ३ प्रलयाग का विशेषण,—अजन्म प्रभारक, पी घटना अजन्म (पु०) नीलमणि—कः १ मार, मा० ५१.०, मेघ० ७९ २ शिव का विशेषण ३ एक प्रकार का जलकुण्ड ४ नीलकण्ठ पक्षी ५ मज्ज पत्ती ६ चिटिया ७ मृगमक्षी,—कैसी नील का पौधा,—शिव शिव का विशेषण—छव १ छुहारे का पत्र २ मण्ड का विशेषण,—तत्र. नाग्यल का वृक्ष,—साल तमाल का वृक्ष,—पक्ष,—कम् अवेरा,—वृक्षम् १ काला आवरण काली तह २ अर्धे आदमी की आँख का राना—पञ० ५,—पिच्छ बाज पत्ती,—मुष्का १ नील का पौधा २ अलसी—अः

१ चौर २ बावल ३ मृगमक्षी,—मग्निरत्नम् नीलम नीलकान्तमणि—नेपथ्याचितनीलरत्नम्—नील० ५, भाषि० २१४७,—मौलिक, जगन्, —मौलिका १ लोह-मासिक २ काली मिट्टी,—राजिः (स्त्री०) अक्षरकार की रेखा, मृग अवेरा, चौर अक्षरकार—निशाधपाक-अतनीनराज्य—जगन् ११२,—मौलितः शिव का विशेषण, मा० ७३३७ कु० २१५७ ।

नीलकम् [नील+कम्] १ काला नमक २ नीला इस्पत ३ मुलिया,—क काले रंग का घोंघा ।

नील (सा) नु [नि+लङ्+कृ, पूर्वदीर्घ] एक प्रकार का कौड़ा ।

नीला दे० नीली ।

नीलिका [नील+क+टाप्, इत्यम्] नील का पौधा (नीलिकी) की ।

नीलिकम् (पु०) [नील+इमनिच्] नीलारग, कालाः नीलायन ।

नीली [नील+अच्+शीच्] १ नील का पौधा—तत्र नीलोत्स पर्वपूर्व महाभारतसौत्—पञ० १ एको वृक्षस्तु भीमानो नीलीमद्ययोंयथा—पञ० ११२६० २ नीलमणिस्यो की एक जाति ३ एक प्रकार का रोग । सम्०—राम (वि०) अनुराग में दुःख (गः) १ नील के रंग की भाँति अपरिवर्तनीय स्नेह, पुरानु-रक्ति २ पक्का मित्र,—संघातम् नील का लमीर भाँसम् नील का बर्तन ।

नीलरः [नी+ध्वरक्] १ व्यावसाय, व्यापार २ व्याव-सायिक ३ धर्ममित्र, सत्यासी ४ कौबड़,—रप् जल ।

नीलरकः [नि+रक्+घञ्, कृत्, दीर्घ] १ कमी के समय अनाथ की बड़ी योग २ दुमिल, अकाल ।

नीलारः [नि+रु+घञ्, दीर्घ] जगली बावल जो जिना जेतें बाँये उत्पन्न हो—नीलार मुकमर्चकोटरमुल-भ्रष्टान्तरुणामय—श० १११४, रघु० ११५०, ५१९, १५१

नीविः,—की (स्त्री०) [निष्पद्यति निर्वीयते वा नि+अच्+इत्, नीवि+शीच्] कमर में—लम्बेटी हुई धोती, धोती के दोनों किनारों की गाँठ जो सामने पेट पर बांधी जाय, धोती की गाँठ, नाडा, कमरबन्द—सम्मान-मिन्ना न अरधनीविम्—रघु० ७३९, नीवीरधोखस-तम्—मा० २१५, कु० ११३८, नीवि प्रति प्रणिहिते तु करे प्रियेण—काव्य० ४, मेघ० ९८, शि० १०१५ २ पूजी, मलयन ३ दाँव, बाजी, शर्त ।

नीवृत् (पु०) [नि+वृ+स्विच्, पूर्वदीर्घ] कोई भी आबाद देश, राज्य, राजधानी ।

नीव दे० नीध ।

नीधारः [नि+धृ+घञ्, पूर्वदीर्घ] १ गरम कपड़ा, कबल २ मसहूरी, मच्छरानी ३ कनात ।

नीहारः [नि+हृ+घञ्, पूर्वदीर्घ] १, कुहुरा, बुध—रघु० ७३६०, याज्ञ० १११५०, मनु० ४११३३ २ पाला, भारी अंस ३ मलमूत्र त्याग ।

नु (अव्य०) [नु+इ] प्रदन्वाचकता का बोधक तथा 'सन्देश' एवं 'अनिश्चयारम्भकता' प्रकट करने वाला अव्य०—स्वतो नु माया नु मतिभ्रमो नु—श०, अस्त-वैलमहन् नु विवस्वानाविशेष जलधि नु महानु—कं० ९१७, ५११, ८१५३, ९१५६, ५४, १३१४, कु० १४४७, शि० १०११५, श० २१८ २ 'सत्वावर्ण' और 'अवयव' के अर्थों को बतलाने के लिए इसे प्रस-वाचक सर्वनाम तथा उससे व्युत्पन्न अव्य० से संघ जोड़ दिया जाता है—कि श्वेतस्याक्लिमपदितीजवा मा० १११७, कच नु नुचपदिविषे कचकम्—श००, दे० किन्तु की ।

मु (अदा) १८० नीति, प्रणोति, नृत्-प्र० नावधति, इच्छा० नृनुपति । प्रथमा करना, स्तुति करना, स्थापना करना-सरस्वती तन्मिथुन नुवाव- कु० ३१९०, मट्टि० १४।११२, दे० नु० ।

मुत्ति. (स्त्री०) [नु + क्तिन्] । प्रथमा, सम्पुति, प्रथमि पशुपन्मुत्तिभि (अने० पा०) स्वामी मृषान् न्य.पवना मनु० २।६९ २ पूषा, समादर ।

मुत् (पु०) उत्तम० नृदति-ते, नृत् या नृत्, प्रथुदति । १) बकेलना, बकका देना, हाकना, डेलना, प्रारम्भाहिन करना-मद मद नृदति पवनपशुनुकलो यथा त्वाम्-मेघ० ९२ प्रारम्भाहिन करना, उकसाना, आगे बढ़ाना-शि० ११।२६ ३ हटाना, भगा देना, फेंक देना, भिटाना-अदस्तवया नृत्तम् नृत्तम् तम-शि० १।२३, केन्द्रबध्यान्तर्वासित्त्वीद-रघु० ६।६८, ८।४०, १६।८९, कि० ३।३३, ५।२० । फेंकना, डालना, भेजना-प्रेर० । हटाना, दूर करना २ प्रोत्साहित करना, उकसाना, टकेलाने डेलना, आगे बढ़ाना-अप्-भगाना, हटाना मनु० १०।१३, उच, -बकेलना, आगे चलाना-शि० ६।६१, निम्- । बस्त्रोकार करना, टकार करना- राजा मन्वान्ययो माय साक वा ४ निष्पदि-मनु० ४।२५० २ हटाना, भिटाना, ब भिटाना दूर करना, हटाना-शि० १।३१ बि- । १) आवाहन करना कीवना २ (सोना आदि) वाचयत्र बनाना प्र० १ हटाना, दूर करना, भिगाना, फेंक देना-गण विवाद वृत्तिभि-गोत्र० १० शि० ६।६६ २ आगे बढ़ना, (काल) बिगाना ३ मोटाना बहुलाना मनोरञ्जन करना-लक्ष्मण दृष्टि विनाशार्थम् १० ६, मधु० १।४३० ४ दिव वतलना मनु० १।६३ लम्- । १) उकच करना, महल बनाना २) प्रा ४ करना मिलना ।

मृत्त, मृत्त (वि०) [मृ + क्तव्य (लट्) + आदेश] । १) नया-मृत्तना राजा महाजागरा, अतर० १, रघु० ८।१६ २) ताजा, बच्चा ३) नर उम्हार ४) तालकालिक ३) हाक का, भाष्यनि (मृत्तल पूर्ण असीव ।

मृत्तम् (अन्त्य०) [मृ + क्तम्] अग्रदिग्य रूप म विध्वंसन रूप म, निश्चय ही अन्त्य, निस्सन्देह-अधोपि नृत्त हृत्तोर्योर्बहुवचनार्थे अन्त्यार्थे इत्वा बुदाद्यो ल० ३।२, मेघ० १।१८ ६५ मनु० १।१०, कु० १।१२, ५।३५, रघु० १।२९, २) अग्रदिग्य महावना के साथ, पुरी महावना है कि-उत्तर० ४।२० ।

मृत्तु-रम् [मृ + क्तव्य-न् + तु] । का, वाचक, वेग का आभूषण-नहि बुद्धामणि परं मृत्तु मूल्य धावन-दि० २।७१ ।

नृ (पु०) [नृ + क्तन् द्विव्च] (कर्ण० पृ० ३०-ना, लवण०, ३० ब०, नृषा या नृषाण) । मनुष्य, एक व्यक्ति स्त्री हो, चाहे वृक्ष मनु० ३।८१, ४।६१, ७।६१, १०।३३ २ मनुष्यकी । १) शास्त्र का माहुर ४ मूत्रप्रपटी की काल ६) पत्निका मरु-यधिनो विज्ञानो राजम् प्रथम० । १) म० अन्वि-भालिन् (पु०) शिव का विशेषण, कपालम् मनुष्य की शोषण, केसिन् (पु०) भू-शेर, नृमिहाश्वत्थ मे विशेषणवान्-पु० नृनाय० जलम् मनुष्य का मन्, देव एक राजा धर्मन् (पु०) कुम्भ का विशेषण, व मनुष्यो का राजा, राजा प्रथम अन्वितः राजसूय यज्ञ क्रिये मन्त्राट्ट गणपत करना है और जिसमे सभी पदा का कार्य महाराज राजाश्रा द्वारा किया जाता है, अन्वितः गत कुम्भ पुरगत् आसी-रम्, मानव राजधानि में जाने का मन्वी

आमयः त्रिदिक, सप्त-आमयन् राजगण, अहत्याय राजा की कुम्भो-नृत्तम् राजमन्त्र, शोति (स्त्री०) राजमन्त्र, राजा का शोति राजनीति अन्वयार्थे राजनीति मन्त्रा-मनु० २।४७-प्रिय, शत्रु का पर लक्ष्यन् (नृप०), निषम राजकीय राजन्व का लक्षण राजकीय अधिकार बिद्ध, विशेष कर श्वेत रुद्र, शासनम् राजा-राजिन् मयम् सभा राजा का मन्त्र, पति-पाल राजा पत्नी मन्त्र की मन्त्र का जालन्, तिमन् पत्नी नृत्तम् सिधुम् सिधुन राशि, मेघ, मन्त्रमे पत, अन्न मन्त्रणा के लिए किया जाने वाला यज्ञ, आशिष्य, अनिधियों का मन्त्रा (दिकि एक यज्ञ म हा एक यज्ञ दे० पत्रयज्ञ),-सोच मन्त्र-धर्मो राजा का मन्त्रा, मन्त्रीक ब्रह्मन् नृत्तम् क अन्तर में शिष्य भवतात्, -बाह्य कुम्भ का विशेषण केवल शिव का मान-मृत्तम् मनुष्य का सोप अग्रा अथवाका, -सिह् १) सिंह नैमा मनुष्य, गेरुत, प्रपुव मनुष्य, पुत्र्य-यन्कि २) शिष्य भवतात् का शोषा अन्वय नृमिहाश्वत्थ, नृनायिह ३) एक प्रकार का मन्त्रा-सेवम्, सेना मनुष्यो की फौज, -सोच वैभव-राजी मन्त्रय इहा श्राद्धी-रघु० ५।५० ।

नृत् (पु०) वेदरत्न मनु का पुत्र, जो एक ब्राह्मण के पात्रता शिष्यका बना ।

नृत् (पु०) [नृ + क्तन् प्रथम्यति, नृत्] नाचना, उद्यम उद्यम शिल्पना मनुष्यि परनिश्चयन सय मन्वि गीत् १) चतुर्वि, पवनि महोत्पल लवर्-शि० ८।३ अर्थात् २।८ ३) रणमच पर अविश्वर बन ४) राजा नाय (पुत्रा), नाटक करना, प्र० नन गिन-१) नचवाना स्वभायो पाषाणो किदारमना नचयि धाम्-मनु० ३।६, तान् शिवायन्युपुषो

मानन का तथा से—वेच ७९, उत्तर ३११९
2 हिलकूल पैदा करना,—आ (, (वेर) 1 नाक
करना 2 नचवाना, फूली के साथ हिलाना—म-
त्रिउत्तमतिनवननाले—रघु० ५१४२, अमर ३२, अतु०
३१००, उच—, 1 नाचना 2 किसी दूसरे के आगे
नाचना—उपानुवच देवेनाम्, अ—, नाचना, प्रति—,
मान की नकल करके हसी उठाना ।

नृत्ति (स्त्री०) [नृत् + इत्] नाचना, नाच ।
नृत्यम्, नृत्यम् [नृत् + क्त, क्त्यप् वा] नाचना, अभिनय
करना नाच, मूक अभिनय, हास्यनाच—नृत्तादस्था
मिश्रमतिनरा कान्तम् मालवि० २१७, नृत्य मयूरा
निद्रा—रघु० १५६९, मेघ० ३२, ३९, रघु० ३११९।
मन० प्रिये, जिव का विशेषण,—शास्त्रा नाचघर,
—स्थानम् रगमञ्च, नाचने क० कमरा ।

न्य, नृपति, नृपाल, [नरान् पाति रक्षति—नृ + पा + क,
नृशः पतिं प० न०, नृ + पात् + दे० 'नृ' के नीचे ।
णि । ऋण ।

नयन (न०) [नृ + शस् + अण्] दृष्ट, देखपूर्वक, कून, उपद्रवी,
कमाना,—मण्ड० ३१२५, मण० ३१८१, शां० ११६४ ।
नयन [निद्र] धनम्] धानी ।

नयन [निद्र] धनम्] धानी ।

नृ [नृ] [नी + नृ] 1 जो नेतृत्व या पथप्रदर्शन करे,
प्रदेशर मन्त्रालय, प्रबंधक, (हाथिया तथा और जान-
पराय) नयनप्रदेश रघु० ६०५४, १६१२२, १६१
२०, अथ० २९, नेताध्वज्य अथ सुधाम्य वा—
विज० मुग्गः ३१८ 2 निर्देशक, गृह-भर्ता ३१८८
३ नरः नरायो, प्रधान 4 (दण्ड आदि) देने वाला
मनः ७५५ 5 मालिक 6 नाटक का नायक ।

नयन [नृपा० नीयने वा अनेन—नी + इत्] 1 नेतृत्व
करना 2 आचलन 3 अथ—प्रारंभ गृहिणीनेना
क-वार्थे दृष्टवित कु० ६१८५, २१२९, ३०, ७१३
३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०
२१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
३३२, (परी) कुछ आटाकार 'नेत्र' शब्द का सामान्य
अर्थ 'आँव ही मानत है) 5 दृष्ट की दृष्ट 6 बलि-
क्रिया की तली 7 गाड़ी, वाहन 8 दो की सम्पत्ता
9 नेता अनुक्रा 10 नयन पुत्र, नारा (इन दो अर्थों
में पूर्ण) । मण० अन्नम् आँवों के लिए मुरमा-
गुणार्थ ७, -अत आँव का बाहरी किनारा,
-अन्न, अन्नम् [नृ] आँव, -आँव्यः आँव का
पार्थ, नेत्र-प्रदाय, -उत्सव मुग्ध तथा मुरद प्रदाय,
-उत्सवम् बादाम, -कर्मोन्मत्ता आँव की कुतली, -कोष
1 आँवगोचर 2 कुल की कला, बोधर (वि०)
दृष्टि-गाम के भीतर, प्रयत्नजैव, दृश्य,—उच. पलक,
-अम्, -अलम्,—आदि आँव,—वर्णनः आँव का

बाहरी किनारा,—विष्णु 1 बलिगोलक 2 बिल्ली,
-बलम् बीड, आँव का नेत्र,—बोधि, 1 दृष्ट का
विशेषण (विश्वके शरीर पर, मोनम द्वारा दिये गये
शाप के फलरूप, स्त्री-बोधि से मिलने जुलने हजार
पिच्छ हो) 2 बदमा,—रंभम् अन्न, मुरपा,—दोषम्
(ननु०) आँव की बरानी,—अन्नम् आँव का परा,
पलक—स्तम्, आँवों का पथर आना ।

नेत्रिकम् [नेत्र + क्त] 1 नवी 2 चम्पक ।
नेत्री [नेत्र + ट्री] 1. नवी 2 चमवी 3 स्त्री नेता
4 लक्ष्मी का विशेषण ।

नेत्रिष्ठ [अप्य एषाम् अतिशयेन अन्तिक— + इष्टन्,
अन्तिकस्य नेदादेश] निकटतम, दूसरा, अत्यंत निकट
(अतिक' की उपमावस्था) ।

नेत्रीयम् (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [अनयोः अतिशयेन
अन्तिक + ईदयन्तु अन्तिकस्य नेदादेश] निकटतर,
अधिक पास (अतिक की मध्यमावस्था)—नेत्रीयस्त्री
भ्रया—मा० १, निकट आकर, पहुँचकर ।

नेत्रे [नी + स, गुण] कुल-पुरोहित ।

नेत्रव्यम् [नी + विन्, ने नेता तस्य व्ययम्] 1 सजावर,
आभूषण 2 परिधान, पोशाक, वेग, वा, वन—उत्तर
नेत्रव्यम्—रघु० ६१६, राजेन्द्रनेत्रव्यविधानतोया—
१६१९, उज्ज्वलनेत्रव्यपरिचरणा—ती० १, कु० ७७७,
विक्रम० ५ 3 विशेषकर नाटक के पात्र की वेद-
भया विग्लेनेत्रव्यो पात्रयो प्रवेशोऽस्तु—मालवि०
४ 4 परिधान कला (बहुते नाटक के पात्र अपनी
व्यवस्था धारण करते हैं, यह सर्वत्र परदे के पीछे
होता) रगमच पृष्ठ, नेत्रव्य परदे के पीछे । सम०—
विद्याम् परिधान-कला की व्यवस्था—उ० १ ।

नेपालः (पु०) भारत के उत्तर में स्थित एक देश का नाम
सः—(४० ४०) इस देश के निवासी,—स्त्व ताबा,
-स्त्री जवली छहारे का वृक्ष या इसका फल । सम०
-आ,—आत्ता मैनिस्सि ।

नेपालिका [नेपाल + ङीप् + कन् = टाप्, ह्रस्व] मैनिस्सि ।
नेत्र (वि०) [कन्] ४० ४०—नेत्रे—नेत्रा [नी + इत्]
आवा,—क 1 भाग 2 समय, काल, अनु 3. हृद,
मोमा 4 वेरा, बाबा 5 हीरा की नीव 6 काल-
मात्री, बोला 7 शायकाल 8 बिबर, साई 9 जह ।

नेत्रि, -स्त्री (स्त्री०) [नी + मि, नेत्रि + ङीप्] 1 परिधि,
परिधि का पंरा, उपोद्गम्य न रमाणेयम्—सा०
७१०, चर्चनेमिक्केच—मेघ० १०९, रघु० ११७,
३९ 2 किनारा, घेरा 3 हस्तचबंदी, बरारी 4 बुध,
पनिवि—उदधिनेत्रि—रघु० १११० 5 बस 6 पृथ्वी,
वि' तिनिषा का वृक्ष ।

नेष्ट (पु०) [ने + तृप्] सोमवाग के प्रधान अश्विषो
(जिनकी सम्पत्ता १६ होती है) में से एक ।

शेष्यः [विश + भृन्] मिथी का लैटा ।
शेष्य (वि०) (स्त्री०-की) , नै शेष्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [नि शेषय + अण्, ठक् वा] मोक्ष या शानन्द की ओर ले जाने वाला ।
शेष्यम्, **शेष्यम्** [विश्व + अण्, ध्वञ् वा] घनहीनता, गरीबी, दरिद्रता ।
शेष (वि०) [न + एक] जो अकेला न हो (प्राय सभाय में प्रयुक्त) **शेषान्** (पु०) **शेषः** शेष्यः परमपुरुष परमात्मा के विशेषण ।
शेषिक (वि०) (स्त्री०-की) [निकट + ठक्] पाववंती, निकट का, सटा हुआ, —क सन्वासी या मिथु—भट्टि० १४।१२ ।
शेषिकम् [निकट + ध्वञ्] सामीप्य, पड़ोस ।
शेषिके [निकटा + ठक्] रासम (निकटा की सन्तान) ।
शेषिका (वि०) (स्त्री०-की) [निष्कृता पराधकारेण यीचिनि—निष्कृति - ठक्] 1 बेईमान, झूठा, फूर—मनु० ४।१०, ६ 2 नीच, कुट, दुरात्मा 3 दुशूल, कृष् मित्राच का ।
शेषम (वि०) (स्त्री०-यो) [नियम - अण्] वेद से सबद्ध, वेद में पाया जाने वाला, दे० काठम्, —म 1 वेद का व्याख्याता—इति नैषम 2 उपनिषद् 3 उपाय, तरकीब 4 विषेकपूर्ण आचरण 5 नाम-कि, 6 व्यापारी, सौदागर—चारार्द्धारोपनयनपरा नैषमा जानुमत —विक्रम० ४।४ ।
शेषकम् [निषट् + ठक्] वैदिक शब्दों का संग्रहग्रन्थ (पांच अध्यायों में) जिसकी व्याख्या शास्त्रने अपने निष्कन में की है ।
शेषिकम् [शेषा + ठक्] बेल का सिर ।
शेषिकी [निचि + योर्कर्मिणोदेश, तत स्वार्थे कन्—निचिक + अण् + ङीप्] बड़िया शाय ।
शेषम् [निमल + अण्] पाताल, नरक । **सम**—सद्यम् (पु०) यम, —महावी० ५।१८ ।
शेष्य [नित्य + अण्] नियता, शास्त्रवता ।
शेष्य (वि०) (स्त्री० की) , नैष्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [न त्य + कन्, नित्य + ठक्] 1 निर्वाचन रूप में पटने वाला, बार २ दोहराया गया 2 नियमित रूप से अनुष्ठेय (विशेष अवसरों पर नहीं) 3 अपरिहार्य, अनवरत, अवश्यकर्मणीय ।
शेषाय [निदाय + अण्] शीघ्र श्रुत ।
शेषान् [निदान + अण्] शब्दभ्युत्पत्तिशास्त्र का वेत्ता ।
शेषानिक [निदान + ठक्] निदानशास्त्र का ज्ञाता, व्याधिकोविद ।
शेषिक [निदेश + ठक्] आदेशों और निदेशों का पालन करने वाला, सेवक ।

शेषालिक (वि०) (स्त्री०-की) [निपाल + ठक्] अकस्मात् या देवदाय से होने वाला उल्लेख ।
शेषुष्यम् [निपुय + अण्, ध्वञ् वा] 1 दक्षता, कौशल, चतुर्गई, प्रवीणता **शेषुष्यन्त्यमस्ति** उत्तर० ६।२६, शि० १६।३० 3 काई काई जिसमें कौशल की आवश्यकता हो, मूढम बाल 4 ममवता, पूर्णता— मनु० १०।८५ ।
शेषुष्यम् [निभूत + ध्वञ्] 1 लज्जाशीलता, विनम्रता 2 गोपनीयता—नैभूष्यमकलवितम मार्तण्डि० ५ ।
शेषुष्यकम् [नियमण + अण् + कन्] भोज, दावत ।
शेष्य, [नियम + अण्] व्यापारी, मोदागार ।
शेषिक (वि०) (स्त्री०-की) [नियम + ठक्] 1 किसी विशेष कारण के फलस्वरूप उत्पन्न, मवद्ध या निर्भर 2 अनाचारण, कमी बन्नी होने वाला, सांयोगिक, किमी विशेष निर्मित से किया गया (विप०—नित्य), —क ज्योतिषी, भविव्यवक्ता, —कम् 1 कार्य (विप०—कारण) नियमनैमित्तिककारण रूप—श० ७।३० 2 किसी विशेष अवसर पर होने वाला सम्कार, आवर्ती पर्व ।
शेषि (वि०) (स्त्री०-यो) [नियम + अण्] नियम-मात्र या सभार रहने वाला, क्षणिक भ्रष्टाचारी—कम् पवित्र बनस्पती जहाँ कुछ क्षुधि मुनि रहते थे जिनको कि शीनि ने महाभारत मुनाया था—रघु० ११।७ (नाम करण इस प्रकार हुआ—वत्सु नियमेषुमेद निहत शाय बलम, अरण्येऽस्मिन् लक्ष्मणे नैषिचार-प्यसजितम्) ।
शेषे [नि + मि + यन् + अण्] विनियम, अदलाबदली ।
शेषोषम् [न्यापोष + अण्] बट या वरगद का कब्ज, वरगद का पेट ।
शेष्यम् [नियत + ध्वञ्] नियमण, आत्मसयम ।
शेष्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [नियम + ठक्] नियम या विधि के अनुकूल, नियमित, —कम् नियमितता ।
शेषायिक [न्याय + ठक्] ताकिक, न्यायदण्ड के सिद्धान्तों का अनुयायी ।
शेषरथ [निरतर + ध्वञ्] 1 निर्वाचता, निरतर होने का शब्द, अर्थाच्छलता 2 सान्निध्य, ससक्ति ।
शेषेकम् [निरपेक्ष + ध्वञ्] बबहेनता, निरपेक्षता, उदासीनता ।
शेषिक [निरत + ठक्] नरकवासी, नरक भोगने वाला ।
शेष्यम् [निरय + ध्वञ्] निरपेक्षता, बेदुही, बकवास ।
शेष्यम् [निराय + ध्वञ्] 1 आशा का अभाव, नाउत्सर्गी, निराशा—तटस्थ नैराश्यात्—उत्तर० ११।३ 2 कामना का प्रत्याशा का अभाव—येनाशा पुष्पट कृत्वा नैराश्यमवर्त्तितम्—हि० १, १४४, शान्ति० ४ ।

नैऋतः [निरुक्त + अण्] जो अग्नी की व्युत्पत्ति जानता है, सद्यन्व्युत्पत्तिशास्त्रविद् ।

नैऋतव्यम् [निरुक्त + व्यञ्] स्वात्म्य, आरोग्य ।

नैऋतः [निरुक्ति + अण्] एक राक्षस-मयमप्रलयद्विधा-दाहरण्युर्नैऋतीयेषु - रघु० १०३९, ११२१, १२१४३, १४१४, १५१२० ।

नैऋती [नैऋत + ङीष्] १ दुर्गा का विशेषण २ दक्षिण पश्चिमी दिशा ।

नैऋतव्यम् [निरुक्त + व्यञ्] मुषो या घनों का अभाव, २ खेतीया की कमी, अर्घ्य मुषो का अभाव-नैऋतव्य-मेव साधोषो विषयस्तु मुषयोरिव-भाषि० ११८८ ।

नैऋतव्यम् [निरुक्त + व्यञ्] निर्यमता, कृता-नैऋत-नैऋतव्यं न सायंकात्वात् तथा हि दशैयति-अष्ट० २११३४ ।

नैऋतव्यम् [निर्यम + व्यञ्] स्वच्छता, शुद्धता, निष्कलशुद्धता ।

नैऋतव्यम् [निर्लज्ज + व्यञ्] निर्लज्जता, बेहयाई, डोढपना ।

नैऋतव्यम् [नील + व्यञ्] नीलापन, गहरा नीला रंग ।

नैऋि (वि) द्यम् [निभि (वि) ड + व्यञ्] सजाकता, सटा हुआ होने का भाव, धनापन, सजलता ।

नैऋतम् [निवेद + व्यञ्] किसी देवता या देवमूर्ति को भेंट देने के लिए भोग्य पदार्थ ।

नैऋ (वि०) (स्त्री०-स्री०) नैऋक (वि०) (स्त्री०-की) [निरा + अण्, ठञ्, वा] रात से सवध रहने वाला, रात्रि विषयक, रात को होने वाला-नैऋयं निमिर-मयाकरोति चन्द्र-श० ६१२९, नैऋत्याचिह्नं मूत्र इवच्छिनममृषिच्छुभम्-विष्णु० ११८, कि० ५१२ २ रात कब मनाया जाने वाला ।

नैऋतव्यम् [निरुक्त + व्यञ्] विचरता, अचलता, दृढता ।

नैऋतव्यम् [निरुक्त + व्यञ्] १ निर्धारण, निरुचित २ निरुचित समय पर होने वाला संस्कार ।

नैऋचः [निरुक्त + अण्] १ निरुक्त देश का राजा २ विशेषतः, राजा नल का विशेषण ३ निरुक्त देश का वासी, या जो निरुक्त देश में उत्पन्न हुआ है ।

नैऋकम् [निष्कर्म + व्यञ्] १ अकर्मण्याता, क्रियाहीनता २ कर्म और उनके फलों से मुक्ति-मग० ३१४, १८१५९ ३ वह मुक्ति जो कर्म न कर केवल भाव, ध्यान आदि से प्राप्त की जाय (विष्णु० कर्म मार्ग द्वारा प्राप्त मुक्ति) ।

नैऋक (वि०) (स्त्री०-की) [निष्क + ठक्] निष्क देकर मोक्ष लिया हुआ, या निष्क से बना हुआ-कः टकडाल का अर्थव्यय ।

नैऋक (वि०) (स्त्री०-की) [निष्ठा + ठक्] १ अतिथ, आक्षीर का, उपसहाराक-विदग्धे विधिभयस्य

नैऋकम्-रघु० ८१२५ २ निर्णीत, निरुपायक, निर्णायक (उत्तर भाषि) ३ विचर, वृष्ट, सलज्ज ४ उच्चतम, पूरा ५ पूर्ण रूप से जानकार, या जिन ६ निरुत्तर स्वायम्भु बुद्ध पवित्र जीवन बिताये की प्रतिज्ञा करने वाला, -कः यह वाच्यत साधु की आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए निर्धारित काल के पश्चात् भी सदैव गुरु की सेवा में रहे, और जिनसे आत्म्य ब्रह्मचारी तथा जितेन्द्रिय रहने की प्रतिज्ञा कर की है-कु० ५१६२, नु० याज्ञ० १४५९ ।

नैऋतव्यम् [निष्कुर + व्यञ्] कुरता, कर्मण्याता, कठोरता ।

नैऋतव्यम् [निष्ठा + व्यञ्] स्वायत्त, दृढता ।

नैऋतिक (वि०) (स्त्री० की) [निर्यम + ठक्] स्वामा-विक, अलज्जित, सहाय, अनाहिन-नैऋतिकी मुद्रापिण कुमुदस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिनं सुसंनैऋतवताडनानि

-भा० १४५९, रघु० ५१३७, ६४५६ ।

नैऋतिकः [निरुक्त + ठक्] कृपाचारी, लज्जवार रमने वाला ।

नैऋतिकः [निरुक्त + ठक्] कृपाचारी, लज्जवार रमने वाला ।

नैऋ (अव्य०) [न + उ] नहीं, न, यत (प्राय 'न' की नाति प्रयुक्त) अथ० १७१८, पथ० ५१२४, अथ० ५, ७, १०, १२ ।

नैऋत् (अव्य०) [नी + चेत + इ० सं०] अन्याथा, बरता ।

नैऋतम् [नृ + ष्टुट्] १ ठेलना, हाकना, भागे बढ़ाना २ हटाना, दूर करना, घिटाना ।

नैऋा (अव्य०) [नी + धा] नी प्रकार, नी गुणा ।

नैऋ (स्त्री०) [नृते अया - नृ + ङी] अहाय, नोका, पोत महता पुष्पपथ्येन क्रोतेय कापनीत्यया-शा० ३१

१ २ एक नवमपुत्र का नाम । सम०-आरोहः (नाबारोह) १ अहाय का घासी २ मल्लाह-कषे

बार, नाविक, पोतचालक, -कर्मणं (नपु०) मल्लाह की वृत्ति-मनु० १०३३४, -अरः-औऋकः मल्लाह

घासी-रघु० १०१८१, -साम्यं (वि०) जिसमें नाव चल सके, जो नाव से पार किया जा सके-बंशः शरद,

चण्डू-आलयं पोत-कीदाल, नौकायन्-आत्मिन् (वि०) नाव या अहाय से जाने वाला, नौवासी-मनु० ८।

४०९, -आहः कर्मचार, कर्म, पोतबाहक, केवट, -अ-सव्यं पोतघर, नौका का टूट जाना-नीष्यसने

विषय-श० ६, -आलयम् अहायी बंधा, नीसम्, पोतवासी-बनानुत्साय तरसा नेता नौवाचनोवातात्

-रघु० ४१३६ ।

नौका [नी + कृ + टाप्] एक छोटी नाव, किछी-अथ मिहं सज्जनसवतिरेका प्रवति प्रवाचंवरत्ने नौका

-मोह० ६ । अय०-बंशः चण्डू, पलवार ।

नैऋ (अव्य०) [नि + अण् + चित्] किनारिवेचन, घुना अथवा एव दीनता को छोड़ कर देने के लिए 'हुं' और 'मू' से पूर्व लगने वाला उपसर्ग । अय०-करव्यम्

—कार: 1. दीनात, अवधानना 2. अनाहर, घृणा, अप-
मान—न्यक्कारो हृदि बन्धकील इव मे शीघ्र परिस्म-
यते—महाशी० ५।२२, ३।४०, गणा० ३२, - भाषः
1 दीनात, अवधानना 2. बधिया करने वाला, मात-
हारी, अधीनता, —आशित (वि०) 1 दीन, अध
—पठित, अपमानित 2 आगे बढ़ा हुआ, श्रेष्ठता को
प्राप्त, अपमाननीकृत—न्याभविताभ्यभ्यव्ययन
क्षमस्य तद्धाबंधगलस्य—काव्य० १।

न्यक्त (वि०) [निघण्टे निरुक्ते वा जसिषो यस्य—ब० सं०,
यच् प्रत्यय] नीच, अधम, दुष्ट, कमीना, —ब० 1
अंस 2 परचुराम का विशेषण, —सम्पु गुराण, छि।

न्यस्योप : [न्यक् एतद्धि—न्यक् + ष् + अच्] 1 बरबर
का पेट 2 पुरन, लबाई का एक भाग जिसकी लबाई
उपनी होती है जितनी कि दोनों हाथों को फैलाने से
होने। सम०—परिचंचेत्ता श्रेष्ठ स्त्री (श्रेष्ठ स्त्री की
विश्राया यह है—स्वनी मुकटिनी यस्या नित्ये च
पिशालता, मध्ये खीणा भवेत्ता ता न्यस्योपपरिमदना
(शब्द०), दुर्वाकांश्चमिव यस्या न्यस्योपपरिमदना
—भट्टि० ४।१८।

न्यङ्कु : [नि + अच् + कु] एक प्रकार का ब्राह्मिणा
—रूप० १।३१५।

न्यञ्च् (वि०) (स्त्री०—नीची) [नि + अच् + चिवन्]
नीचे की ओर मुड़ा या झुका हुआ, या नीचे की ओर
जाना हुआ 2 गूह के बाल लेटा हुआ 3 नीच, पला
के योग्य, अधम, कमीना, दुष्ट - वि० १।५।२१, ४।
इनका अर्थ 'निम्न' या 'नीचे की ओर' भी है।
अन्धर, आलसी 5 पूर्ण, समतल।

न्यञ्चन्म् [नि + अच् + ल्यट्] 1 चक 2 छिपने का
म्हान 3 कोटर।

न्यच : [नि + अच्] 1 हाथ, नाथ 2 बन्धारी लक्ष।
न्यचन्म् [नि + अच् + ल्यट्] 1 अमा करना लक्षना 2
सोचना, छाटना।

न्यस्त (य० ष० कृ०) [नि + अस् + क्त] 1 डाला गया,
फेंका हुआ, निद्राया हुआ, अमा किया हुआ 2
अन्धर गन्धा हुआ, अन्तर्हित, प्रयुक्त—न्यन्ताश्रय
—कु० १।७ 3 शोषित, चिपित - चित्रन्यस्त 4
सुपुष्ट किया हुआ, सीपा हुआ, स्वानामागित विप्र०
५।१७ रल० १।१० 5 रहना, टिकना 6 सोटा हुआ,
एक ओर डाला हुआ, उत्सृष्ट। सय-बद्ध (वि०) २०
ओजने वाला, -बद्ध (वि०) मरा हुआ, मृत, शरणा
(वि०) 1 शिराने हथियार डाल दिये हो—आधायंश्च
विमुच्यन्तु रोच्यन्तमश्रयन् शोकात् - बर्णा० ३।१८
2, निश्च, अशक्ति 3. जो हानि काफ न हो।

न्यचन्म् [नि + अच् + ल्यट्] लगे हुए पावल, मुमुंरे।
न्यच [नि + अच् + क्त] आना, लिखाना।

न्यस्य : [नियन्ति अनेन -नि + इ + षच्] 1 प्रयाजी,
नरीका, रीति, नियम, पद्धति, योजना—अध्यायिक
विधिपर्यायंनियुद्धीयात् प्रयुक्त—सु० ८।३१० 2.
उपयुक्तता, प्रोक्ति, सुरोति—कि० १।१।३ 3.
कानून, न्याय या दशाप, नैतिक विशालता, न्यायता,
सचाई, ईमानदारी - याति न्यायप्रवृत्तस्य निर्बन्धोऽपि
महान्याम् - अर्ण० १।४ 4 कानूनी मुकदमा,
कानूनी कार्रवाई 5 कानून के अनुसार दण्ड, निर्णय
6 राजवीर्य, अच्छा शासन 7 समानता, सादृश्य 8.
नोककड नीतिवाक्य, उपयुक्त दृष्टान्त, निदर्शन जैसे
कि 'दशपुत्र न्याय' 'काकाश्लेष न्याय' 'भृषाधर
न्याय' आदि दे० नो० 9 वैदिक स्वर—न्यामैश्चिभिः-
दोरणम् - कु० २।२२ (मल्लि० 'न्याय' शब्द का
अर्थ 'स्वर' करते हैं, परन्तु हमारी सम्मति में यहाँ
'पद्धति' 'रिति' हैं जो कि तीन 'पद्धतियों' अर्थात्
ऋक्, यजुस् और सामन् में प्रकट किया गया है)
अर्ण० ३।१५ 10 (ब्रा० में) विश्वनाथी नियम
11 शीतम ऋषि प्रणीत न्यायशास्त्र 12 तर्क शास्त्र,
न्यायदर्शन 13 अनुमान की पुरी प्रक्रिया (जिसमें
पौचा अथ अर्थात् प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय
अथ नियमन सम्मिलित हैं)। स०—स्य सोमासा
दर्शन, -शतित् (वि०) आचरणमोल, न्यायानुसार
आचरण करने वाला, -वाचिन् (वि०) न्याय और
धर्मनियमोदित बात करनेवाला, शास्त्रम् चर्च विज्ञान,
तर्कशास्त्र शास्त्रीको उचित तथा उपयुक्त व्यवहार,
भूषण शीतम प्रणीत न्यायदर्शन के सूत्र।

नियम : कुठ निद्रान्त-नाच या लसककड नीतिवाक्यो को
गणका में उपनय के लिए महत् करने नीचे अकगदि-
कन म १।१।२।

1 अचककन्याय [अचके के हाथ बटेर लगना] अर्थ में
'पशाधर' गाय ६ मवान।

2 अधचरणन्याय [अचानुकरण - अच लोच बिना बिचारे
दुयग का अचानुकरण करते हैं और यह नहीं
कि इस प्रकार का अनुकरण उन्हें अचकार में
फँसा देता]।

3 अचनी बर्णन्याय [अचनी तारास्थेन का मिद्रात,
जिन में अचान वः पत्ता लक्षाना, छककाचानों की
निम्नानि च अचाना वः एकका प्रयोग स्पष्ट हो जायगा
अचनी दिदलनिम्नतममोष्मका स्पर्का तारा-
मन्मथा प्रथमचकनीनी ब्राह्मिनिया ता प्रथमन्याय
गन्तारं न्यायेव च वर्तति।

4 अचनं चिन्मन्याय [अचानुकरण के उदाहन का न्याय]
अचान न गौडी में अचानुकारिका में रक्षता था,
परन्तु उनमें और 'तना का छोड़ कर इसी वाटिका
में गया रक्षता इसका कोई विशेष कारण नहीं बताया

- जा सकता। साराथ यह हुआ कि जब मनुष्य के पास किसी कार्य को सफल करने के अनेक साधन प्राप्त हों, तो वह उसकी अपनी इच्छा है कि वह चाहे किसी साधन को अपना ले। ऐसी अवस्था में किसी भी साधन को अपनाये का कोई विशेष कारण नहीं दिया जा सकता।
- 5 **अव्ययबोधन्यायः** [पत्थर और मिट्टी के लौहे का न्याय] मिट्टी का इलाक़ा रूई की अपेक्षा कठोर है परन्तु वहीं कठोरता मनुष्य में बदल जाती है जब हम उसकी तुलना पत्थर में करते हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति बड़ा महत्त्वपूर्ण समझा जाता है जब उसकी तुलना उसकी अपेक्षा निचले दर्जे के व्यक्तियों से की जाती है, परन्तु यदि उनकी अपेक्षा श्रेष्ठतर व्यक्तियों से तुलना की जाय तो वही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति मगध्व बन जाता है। 'पाषाणेषु कन्याय' भी उनी प्रकार प्रयुक्त किया जाता है।
- 6 **कर्मकोरक (मोलक) न्यायः** [कर्म वृक्ष का काल का न्याय] कर्म वृक्ष की कलियाँ साथ ही विकल जाती हैं, अतः जहाँ उदय के साथ ही कार्य भी होने लगे, वहाँ इस न्याय का उपयोग करते हैं।
- 7 **कर्म कालोच्य न्यायः** [कर्म और काल के फल का न्याय] एक कौश एक वृक्ष की छाया पर अंकुर बैठता ही था। अचानक ऊपर से एक फल गिरा और कौश के प्राण बखेक उड़ गये—अतः जब कभी कोई घटना घटती है, तब इसका उपयोग करना है—तु० चन्द्रा०—पलात मलय तप लामो यं यत्स्य मुभूव, तदेतन्काक-तालापगनिकानिमयकम्। कुशलवानन्द मे भी पन्तु नालपत्त यथा काकेनापमुक्त्वावैव ग्रीह-नि-मुनिनद्वयया तन्वो मया नृना। दे० 'काकनालोच्य' भी।
- 8 **कालरतनपेषणन्यायः** [काल के दाँत कुँटना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति व्यर्थ, अत्याचारी या असमर्थ कार्य करता है।
- 9 **काकाशिवोलन्याय** [कौशे की आत्म मोलक का न्याय] एकद्विष्ट, एकदाश आदि शत्रुओं से यह कल्पना की जाती है कि शत्रु की आत्म तो एक ही होती है, परन्तु यह भ्रान्तप्रकृता के अनुसार उसे एक मोलक से दूसरे मोलक में ले जा सकता है। इसका उपयोग उस समय होता है जब शत्रुधर्म में किसी दाँव या पक्षोत्पन्न का जो केवल एक ही बार प्रयुक्त हुआ है, प्राकरप्रकृता होने पर दूसरे स्थान पर भी अर्थात् द्वार कर ले—अर्थात्—श्रीपादत्रिभुवतरीय इत्यय अति-याक्तिव्यस्य काकाशिवोलकन्यायेन अतरित्वाभ्येनाप-न्यः।

- 10 **कूप्यप्रवर्धिका न्यायः** [रूढ़टिडर न्याय] इसका उपयोग सांसारिक अस्तित्व की विभिन्न अवस्थाओं को प्रकट करने के लिए किया जाता है जैसे रूढ़ट के चलते समय कुछ टिडर तो पानी से भरे हुए ऊपर की जाते हैं, कुछ लाली हो रहे हैं, और कुछ बिल्कुल सारक। होकर नीचे की जा रहे हैं—काश्चित्कूप्यवर्धित प्रपूरयति वा काश्चिन्नवरायुन्यति काश्चित्पातविवधौ करोति च पुनः काश्चिन्नवत्साकुलान्, अन्त्यापप्रति-पसमन्तिमिया कांक्षित्यति बोधयन्नेव कौशति कूप-यवर्धिकास्यावप्रमस्तो विधि। मूच्छ० १०५५।
- 11 **घट्टकुटीप्रभातन्यायः** [घुगी घर के निकट पीकटी का न्याय] कल्पे हैं एक बाड़ीवान घुगी देना नहीं चाहता था, अतः वह ऊबट-नाबड गस्तने मे रात को ही चल दिया, परन्तु दुर्भाग्यवश रात भर दूधर-उधर घूमता रहा, जब पीकटी तो देखाता बना है कि वह ठीक घुगीघर के पास ही आया है, विवश हो उसे घुगी देने परी इसलिए जब कोई किसी कार्य की आवश्यकता कर टालना चाहता है, परन्तु उसी को करने के लिए विवश होना पड़ता है तो उस समय इस न्याय का प्रयोग होता है दे० धीधर - तदिद घट्टकुटीप्रभातन्याय मनुवर्धति।
- 12 **घुषाभर न्याय** [लकड़ी में घुषाकोटी द्वारा निर्मित अक्षर का न्याय] किसी लकड़ी में घुषा लग जाने से अथवा किसी पुस्तक में दीमक लग जाने से कुछ अक्षरों की आकृति से मिलते-जुलते चिह्न अपने आप बन जाते हैं, अतः जब कोई कार्य अन्यायमय अकस्मात् हो जाता है तब इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।
- 13 **दूधरूपन्यायः** [दूधे और घृहे का न्याय] जब दूध और घृहा एक ही स्थान पर रहने लगे—और एक व्यक्ति ने कहा कि दूध को तो बूँटे बसोड कर ले गये और भा लिया, तो दूसरा व्यक्ति स्मभावत यह समझ नेता है कि घृहा तो भा ही लिया गया होगा—क्योंकि वह उसके पास ही रहना था। इसलिए जब कोई बन्तु घृसरी के साथ विधेय रूप से अत्यन्त संबद्ध होती है और एक बन्तु के संबंध में हम कुछ कहते हैं तो वही बात घृसरी के साथ भी अपने आप लागू हो जाती है, तु० सूचिकेण ददो भक्षित इत्य-नेन तत्सहचरितनपूपक्षयमर्थादायात मवतीति नियत-मानन्यायाद्यधर्षोरसापततीत्येव न्यायो ददात्सूचिका-सा० इ० १०।
- 14 **देहलोवीपन्यायः** [देहलो पर स्थापित दीपक का न्याय] जब दीपक को देहलो पर रख दिया जाता है तो इसका प्रकाश देहलो के दोनो ओर होता है अतः यह न्याय उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब एक ही बन्तु दो स्थानों पर काम आये।

15. **नृपनामिलपुत्रन्यायः** [राजा और नारी के पुत्र का न्याय] कहते हैं कि एक नारी किसी राजा के यहाँ नौकर बा, एक बार राजा ने उसे कहा कि मेरे राज्य में जो लड़का सब से सुन्दर हो उसे लाओ। नारी बहुत दिनों तक इधर उधर भटकता रहा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक न मिला जैसा राजा चाहता था। अन्त में एकदर और निराश होकर वह घर लौट आया—तब उसे अपना काला-कड़वा लड़का ही अत्यंत सुन्दर लगा। वह उसी को लेकर राजा के पास गया पहले तो उस काले कन्दे बालक को देख कर राजा को बड़ा क्रोध आया परन्तु यह विचार कर कि मानव मांष अपनी बस्तु को ही सर्वोत्तम समझता है, उसे छोड़ दिया—१० सर्वं कातमात्मीय पश्यति—द्विन्द्वी—अपनी छात्र को कौन लट्टा बघाता है।
16. **पंचप्रक्षालनन्यायः** [कौचड़ धोकर उतारने का न्याय] कौचड़ लगने पर उसे धो डालने की अपेक्षा यह अधिक अच्छा है कि मनुष्य कौचड़ लगने ही न देवे। इसी प्रकार भयस्त स्थिति में घँस कर उससे निकलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा यह ज्यादा अच्छा है कि उस भयस्त स्थिति में कदम ही न रखने—१०—प्रक्षालनादि पकस्य दूरादस्पर्शन वरम्—'नो देवा से एक पाहेड़ अच्छा।
17. **विष्णुपेक्षन्यायः** [पिले को पीसना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई किये हुए कार्य को ही दुबारा करने लगता है, क्योंकि पिले को पीसना फालतू और व्यर्थ कार्य है—१०—कृतस्य करणं वृथा।
18. **बीजाङ्कुरन्यायः** [बीज और अङ्कुर का न्याय] कार्य कारण जहाँ अन्योन्यायित होने हैं वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है (बीज से अङ्कुर निकला, और फिर समय पाकर अङ्कुर से हो बीज को उत्पत्ति हुई) अतः न बीज के बिना अङ्कुर हो सकता है और न अङ्कुर के बिना बीज।
19. **लोहाबुबकन्यायः** [लोहे और बुबक का आकर्षण न्याय] यह प्रकृति सिद्ध बात है कि लोहा बुबक की ओर आकृष्ट होता है, इसी प्रकार प्राकृतिक चरित्र सब वय निसर्गवृत्ति की बढीलत सभी वस्तुएँ एक दूसरे की ओर आकृष्ट होती हैं।
20. **बलिब्रह्मन्यायः** [धूर्त से अग्नि का अनुमान] धूर्त और अग्नि की अवस्थाओं सहस्रतया नैसर्गिक हैं, अतः (वहाँ) पूर्वा होना वहाँ अंग अवश्य होगी। यह न्याय उन्नी समय प्रयुक्त होता है जहाँ दो पदार्थ कारण-कार्य या दो व्यक्तिवत्ता का बनिबायं सबब बताया जाय।
21. **बृद्धकुमारीन्यायः (बर)न्यायः** [बूढ़ी कुमारी को बरदान न्याय] इस प्रकार का बरदान मानना जिसमें

वह सभी बातें या श्रेय जो एक व्यक्ति चाहता है। महाभाग्य में कथा आती है कि एक बृद्धिया कुमारी को दूध ने कहा कि एक ही भाग्य में जो बरदान चाहो मागो, तब बृद्धिया बोली—पूषा मे बहुजीर-पूतमोदन काचनपात्रा सुधीरन् (अर्थात् मेरे पुत्र सोने की बाली में भी दूध युक्त मात मायें)। इस एक ही बरदान में बृद्धिया ने पति, पुत्र, धन-पात्र्य, पशु, सोना चाँदी सब कुछ माँग लिया। अतः जहाँ एक की प्राप्ति से सब कुछ प्राप्त हो वहाँ इत न्याय का प्रयोग होता है।

22. **शास्त्राचरन्यायः** [शास्त्रा पर वर्तमान चन्द्रमा का न्याय] जब किसी को चन्द्रमा का दर्शन कराते हैं तो चन्द्रमा के दूर स्थित होने पर भी हम यही कहते हैं 'देखो सामने वृक्ष की शाखा के उपर बँध दिखाई देता है'। अतः वह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई वस्तु चाहे दूर ही हो, निकटवर्ती किसी पदार्थ से ससक्त होती है।
23. **सिंहासनीकन्यायः** [सिंहा का पीछे मुड़ कर देखना] यह उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति आगे चलने के साथ २ अपने पूर्वकृतकार्य पर भी दृष्टि डालता रहता है—जिस प्रकार सिंहा सिंकार की तलाश में जाये भी बढ़ता जाता है परन्तु मांष ही पीछे मुड़कर भी देखता रहता है।
24. **सूचीकटाहुन्यायः** [सूई और कटाही का न्याय] यह उस समय प्रयुक्त किया जाता है, जब दो बातें एक कठिन और एक अपेक्षाकृत आसान करने की हो, तो उस समय आसान कार्य को पहले किया जाता है, जैसे कि जब किसी व्यक्ति को सुई और कटाही दो वस्तुएँ बनानी हैं तो वह सुई को पहले बनावेगा—क्योंकि कटाही की अपेक्षा सुई का बनाना आसान या अल्पथमसाध्य है।
25. **स्यूनामिकनन्यायः** [गडा मोदकर उममे पूर्णा जमाना] जब किसी मनुष्य को कोई पूर्णा अपने पर में लगानी होगी तब मिट्टी ककड़ आदि बार बार डाल कर और कूटकर वह उस पूर्णा को दूढ़ बनाता है, इसी प्रकार वादी भी अपने अभिप्राय की पुष्टि में नाना प्रकार के तर्क, और दृष्टान्त उपस्थित करके अपनी बात का और भी अधिक समर्थन करता है।
26. **स्वामिभूषणन्यायः** [स्वामी और सेवक का न्याय] इसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब पात्र्य और पात्र्य, पोषक और पोष्य के संबंध को बतलाना होता है या ऐसे ही किसी दो पदार्थों का सबब बतलाया जाता है।
- न्याय्य (वि०)** [न्याय+यत्] 1 ठीक, उचित, सही, न्यायसंगत, उपयुक्त, योग्य—न्यायात्पथ प्रविचलति

पद न घोरा—भ्रू० २८३, भग० १८१५, मनु० २११५, ११२०२, रघु० २१५५, कि० १५७, कु० ६१८७ २ सामान्य, प्रचलित ।
 प्यास [नि+अप्+घञ्] १ रक्तना, स्थापित करना, आरोपण करना—तस्यां क्षुरन्यासपवित्रयासु—रघु० २१२, कु० ६१५०, चरणन्यास, अग्रन्यास आदि २ अत कोई भी छाप, चिह्न, मोहर, छपा, अतिगम्पननन्यास—रघु० १२१७३, 'जहाँ नलचिह्न, शम्प-चिह्नो से भी बड़ गये, इतम्यास ३ अमा करना ४ बराहर, अमानत प्रत्यपितम्यास इवान्तरामा—श० ५१२१, रघु० १२१८, याज्ञ० २१७७ ५ सोपना, बचन-बढ़ होना, मियुर्न करना, इवान्तर करना ६ चिबित करना, लिख रखना ७ छोड़ना, उत्सर्ग करना, ग्यालना, पिलाऊनि देना—शम्प०, भग० १८१२ ८ समन्य रखना, घटाना ९ खोद कर निकालना, (पत्र आदि में) पकटना १० शरीर के भिन्न भिन्न अंश में भिन्न भिन्न रक्तान्श का ध्यान जो सामान्य का से मय पाठ के साथ ० पदनुकूप हावभाव सहित सम्मन किया जाता है । सम०—अपह्नुषः किमो घराह्य का प्राणशुभान करना,—प्राप्ति (पु०) घरो-हर रखने वाला, रहने रखने वाला ।

न्यासिन् (पुं०) [न्यास+इनि] जिसने अपने समस्त साधारिक बर्णों को काट डाला है, मध्यासी ।

न्यु (न्यु) ल (वि०) [नि+उञ्ज्+घञ्] १ मनोहर, सुन्दर, शिव २ उचित, ठीक ।

न्युष्य (वि०) [नि+उञ्ज्+अच्] १ नीचे की ओर झुका हुआ, या मुड़ा हुआ, मुँह के बल नेटा हुआ—ऊर्ध्वोपित न्युष्यकटाहकल्पे (व्योम्नि)—नी० २२१२२ २ झुका हुआ, टेढ़ा ३ उन्मत्तोदर ४ कुबड़ा,—अः बड़ या बरगद का पेट । सम०—अङ्गुः लाडा, बक लक्ष्य ।

न्यून (वि०) [नि+ऊन्+अच्] १ कम किया हुआ, घटाया हुआ, छोटा किया हुआ २ सदाश, घटिया, हीन, अभावपल्ल, रहित या विहीन—जमा कि अर्थ-न्यून में ३ कम (विप० अधिक) याज्ञ० २११६ ४ सदाश (किसी अंग में) पाद० ५ नीच, दुष्ट, दुर्बल, निच,—नन् (अव्य०) कम, कम माना में । सम०—अंश (वि०) अपाग, विकलाग,—अधिक (वि०) कम या उपादर, असमान,—भी निर्बुद्धि, अज्ञानी, मूर्ख ।

न्यूनयति (ना० घा० पर०) घटाना, कम करना ।

प

प (वि०) [पा+क] (समाग के अन्त में प्रयुक्त) १ पीने वाला, जैसा कि 'द्वि' 'अनेक' में २ चौकनी करने वाला, रखा करने वाला, हकमत करने वाला जैसा कि 'पाप' 'नृप' और 'सिधिर' में प- १ १ बापु हवा २ पता ३ अडा ।
 पक्कम् [पक्वि पश्चिमिदिक्कृष्टनासामिति पच्+पिक्च्-अच्-अबर्ग-तन्प कच् कोलाहलस्यो यञ्] १ चाडाल का घर बरंग या जगली आदमी का घर ।
 पक्वित (म्बो०) [पच्+पिक्च्] १ पकाना २ पचना, हावभाव या पावन उचित ३ पक जाना, परिपक्व होना, परिपक्वान्तम्या विक्रम ४ प्रमिष्टि, प्रतिष्ठा । सम०—सुसम्प अर्थों के कारण पेट में होने वाला दर्द, उदर पीडा ।
 पक्वु (वि०) [पच्+तृच्] १ रसोद्भवा पाक्व २ पकाने वाला ३ उद्दीपक, पकाने वाला—(पु०) अठरागि ।
 पक्वुम् [पच्+पृच्] १ यज्ञानि की स्थापित रखने वाले गृहस्थ की दशा २ इन प्रकार स्थापित यज्ञानि ।
 पक्विसुम् (वि०) [पच्+किर्+मम्] १ पक्का, पका हुआ २ परिलम्ब, ३ पकाया हुआ ।
 पक्व (वि०) [पच्+कन्, तन्प व] १ पकाया हुआ,

भूना हुआ, उबाला हुआ—जैसा कि 'पक्वान्' में २ पका हुआ ३ सेका हुआ, वरम किया हुआ, तपाया हुआ (विप० आम) पक्वेष्टकानामाकषम्—मुच्य० ३ ४ परिपक्व, पक्का, पक्वविम्बापरोष्ठी—मेघ० ८२ ५ सुविकसित, सुपूरित, परिपक्व जैसा कि 'पक्ववो' में ६ अनुभवशील, बुद्धिमान् ? (फोडे की) भाति) पका हुआ चिममें पोप पड़ने वाली हो ८ सफेद (बाल) ९ नष्ट, शीथमाद्य विनाश के अन्त पर, अपनी मृत्यु का स्वागत करने के लिए पक्का । सम०—अतिपारः पुरानी पैचिया,—अन्नम् मसाला आदि डालकर बनाया गया भोजन,—आशय. पेट, उदर,—दृष्टका पकी हुई दूद,—दृष्टकचित्तम् पक्की दंठो से निर्मित भवन,—हृत् (वि०) १. पकाने वाला, २ परिपक्व होने वाला,—रक्तः पाराब, मदिरा—वारि (नपु०) काजी का पानी ।

पक्ववः (पु०) एक बरंग भाति का नाम, चाण्डाल ।
 पक्व (म्बो० पर०, चुरा० उच, प. त, पक्षपति-से) १ लम्बा, ब्रह्म कल २ स्वीकृण करना ३ पक्ष लेना, तरकरारी करना ।

पक्ष. [पच्+अच्] बापु, भुजा, अवापि पलावपि नोङ्क-

येते—दा० ३४०, इसी प्रकार 'उद्भिन्नपक्षः' निकल आये हैं पक्ष जिसके, पक्षयुक्त, पक्षच्छेदोद्यत शकम्—रघु० ४।१०, ३।४० 2 बाध के दोना और लगे पक्ष 3 किसी मनुष्य का जन्म का पावन, कथा—स्व-देवता उभयपक्षमिनीतिना—रघु० ५।७२ 4 किसी भी वस्तु का पावन, बयल 5 सेना का एक कक्ष या पावन 6 किसी वस्तु का अर्धभाग 7 चाँद मास का अर्धभाग, पक्षवारा (१५ दिनों का) (उन प्रकार के दो पक्ष होने हैं—शुक्लपक्ष—जिन दिनों चन्द्रमा निकला रहता है, कृष्ण या तमिस्रपक्ष अधिवारा पावे) तमिस्रपक्षोपरी सह शिवाभिर्भोग्याः क्वी निविशति प्रदोषान्—रघु० ६।३४, अन् १।६६, पात्र० ३।५०, नीमा वृद्धि समायाति युगपक्ष इयो-द्वारु—रघु० १।१९ 8 दल, गूट, पहलू, प्रमुदित-वर्णक रघु० ६।८६, सि० २।११०, अन् १।४२५, रघु० ६।५३, १।८ 9 किसी एक दल से सबद, अनु-यायी, साक्षीदार—शत्रुपक्षोभवान्—हि० १ 10 श्रेयो, समुदाय समूह, अनुयायियों को सम्बन्ध मनु, मित्र 11 किसी नरक का एक पदलू, विकल्प, दा में से कोई सा एक पक्ष, —पक्षे दूगार पहलू, इसके विपरीत पूर्व एवाभनपक्षम्यामिभ्राभयदुलर—रघु० ४।१०, १।४३४, तु० पूर्वपक्ष अत्र उत्तरपक्ष 12 एक सामान्य बिचार जैसा कि 'पक्षयोरर्थे' में 13 चर्चा का विषय, प्रस्ताव 14 अनुमान-प्रक्रिया का विषय (वह वस्तु जिसमें माय की स्थिति परिवर्तन है) मदिपय-साध्यवान् पक्ष—तर्क०, दयन लुटिभूता गृहीतपक्षा—सि० २०।११ (यहा इसका अर्थ 'पक्षयोरर्थे' भी है) 15 दो को सब्धा की प्रतीकान्मक रक्ति 16 पत्नी 17 अर्धभा, दशा 18 शरीर 19 मंगल का अण 20 राजा का हाथी 21 मेना 22 दोवार 23 विवाह 24 प्रति-पक्ष, उत्तर 25 गणित, मनुष्य (सामान्य 'वाल'का अर्थ देने वाले शब्दों के साथ), केषपक्ष, तु० हल। यम०—अंत कोई से भी पक्ष का पन्द्रहवा दिन अर्थात् अमावस्या या पूर्णिमा का दिन—अक्षरम् 1, दूयग पाद 2 किसी नरक का दूतरा पदलू 3 और बिचार या कस्ता, —आपक्ष 1 शरीर के एक अंग का मारर जाना, अपक्षरुधा—आभासः 1 आभरु नरक 2 मिथ्या परिवाद या किरियाद, —आहार पक्षवारे में देवल एक बार भोजन करना, —अक्षम् किसी भी पक्ष का ही जानु, —अर 1 युधच्छट हाथी 2 चन्द्रमा, —छिन् (पु०) डर का विवेचन (पहलू के पत्ता या भुजाओं या काटने वाला), कु० १।२०, —अ. चाँद इक्ष्म! किसी विषय के दोनो पहलू 2. रा पक्षवारे अर्थात् एक मास, द्वारम् चाँदरवाजा, निजी द्वार, —अर (वि०) 1 पक्षवारी 2 एक का

पक्ष लेने वाला, किसी एक की तरफदारी करने वाला (र) 1. पक्षो 2. चन्द्रमा 3. हियापत्नी 4. युधच्छट हाथी, साक्षी पक्षो का मोटा पर जिससे कलमवी प्राणि प्रयुक्त करते हैं, —पातः 1. किसी एक की तरफदारी करना 2. (किसी वस्तु के लिए) स्नेह, प्रेम, माह, सज्जि अवति भव्येषु हि पक्षपाता कि० ३।१२५, वेणी० ३।१०, उत्तर० ५।१७, निपुणे बद्ध पक्षपात मुद्रा० १।३ 3 किसी इल विवाह की ओर अनु-राग, हियापन, तरफदारी पक्षपातमत्र देवी मन्यते—मालवि० १ सत्य अना कर्मा न पक्षपातान्—भनु० १।४४ 4 पक्षो का विरथा, पक्षमोचन 5 हियापनो—पानिम् (वि०) 1 पक्षपात करने वाला, किसी एक दल का अनुयायी, (जिसे एक विशिष्ट बात का) तरफदारी-पक्षपातिना दवा अथि पाहवा नाम् वेणी० ३ 2 सहायक करने वाला वेणी० ३ 3 अनुयायी, हिमापनी, मित्र-य मुरपक्षपाता विष्णु० १, (ने० २।५२ में 'पक्षपातिना' शब्द का अर्थ 'पक्षो की गति' भी), पानि. चोर दग्वाजा—विष्णु कक्ष पक्षी, भाग 1. पाद, दण्ड 2 विमोचन हाथी का पावन, मुक्ति उनरी दूरी जितनी मूर्ख एक एककारे में तर करता है, मूलम् पक्ष की जट, बाध 1 एकनरका बयन 2 एक पक्ष की उक्ति, म्याभिर्भक्ति, बाह्य, पक्षी, हस्त (वि०) जिसका एक पावन लकड़े में वेकाम हो गया हो, —अर पक्षी, होष 1 पन्द्रह दिन तक होने वाला पक्ष 2 पक्षिक पक्ष ।

पक्षक [पक्ष + कर्त्] 1 चार दग्वाजा 2 पक्ष, पावन 3. मायो, हिमापनी (यामा के अन्त में प्रयुक्त) ।

पक्षता [पक्ष + तन् + टाप्] 1. मित्रता, हिमापन 2 इल-विशेष का अनुगमन 3. किसी एक पक्ष का होना ।

पक्षति (प्रा०) [पक्षस्य मूलम्-पक्ष + ति] 1. पक्ष की जट अलिखन्मचतुडेन पक्षनी—ने० २।२, मद्रु निष्ठ जटायुपक्षति—उत्तर० ३।६३, सि० १।१-६ 2 मूलपक्ष को प्रतिपादा ।

पक्षल [पक्ष + लच्] पक्षी ।

पक्षिर्वा [पक्ष + शनि + डोप्] 1 मादा पक्षी 2 दो दिना के बीच को रात (शत्रुज्ञावक रात्रिच पक्षिणीत्य-भिधीयते) 3 पूर्णिमा ।

पक्षिन् (वि०) (रती-पक्षी) [पक्ष + टनि] 1. पक्षयुक्त 2 वाजुवाला 3 तरफदार, दल विवाह का अनुयायी (पु०) 1 पक्षी 2 शीर 3. शिक का विशेषण । मय०—इन्द्र-अरर, राज् (पु०) राज, सिंह स्वामिन् (पु०) गहक का विशेषण, —कौटः छटी चिहिया, —माला 1. घोसला 2. चिहियाधार ।

पक्षन् (नपु०) [पक्ष् + मनिन्] 1. बरौनी—सकिसमुपनि पक्षनि—मेष० १०।१७, रघु० २।१९, १।१३६, 2 पूल की पलड़ी 3. धाने का छिरा, पल्ला धाना 4. धाऊ।

पक्षन् (वि०) [पक्षन् + लृच्] 1. दुष्ट, लम्बी और सुन्दर बरौनी वाला—पक्षन्नाक्ष्या—ज० ३।२५ 2. बालों वाला, लीमस, रोएदार मृदितपक्ष्मलरक्षकाय—सि० ४।६१।

पक्ष [पक्ष + पत्] 1. पक्षबारे में होने वाला, पक्षिक 2. नरफदार 3. पक्षपाती, —क्षः हिमावती, अनुयायी मित्र, सला—ननु पक्षिण एष बोधैर्नद्विजयते द्विपतो यदयं पक्ष्या—विष्णु० १।१६।

पक्ष, —कम् [पक्ष् विलसारे कर्मणि करणे वा वज्, कुलवम्] गारा, लसदार सिद्धी, दलदल अनीला पक्षतां पुल्ल-मुदक नाशनिपठने सि० २।३४, कि० २।६, रघु० १६।३० 2 अत मोटी राशि, स्तूय डेर कृष्णा-गुणक—का० ३० 3. दलदल, कीचद, घसन 4 पाप। सम०—कीर. टिट्टिगे, —कीरः सुन्दर,—डाहू, मगरमच्छ, पक्षियाल,—छिच् (पु०) पीठे का वृक्ष (कटक, जिनके फल से गदले पानी को स्वच्छ किया जाता है) मालवि० २।८,—अम् कमल, 'अम्' अम्बन् (पु०) बड़ा का विशेषण, 'नाशः विष्णु का विशेषण रघु० १८।२०,—अम्बन् (नपु०) कमल (पु०) माग्य पक्षी,—मधुक्, द्विकोष दास,—पह्, (नपु०)—बहम् कमल,—बास कंकडा।

पक्षिणी [पक्षज + इनि] 1 कमल का पीचा—कि० १०।३३ 2 कमलो का समूह 3. कमली से भगा हुआ स्थान 4. कुम्हड़ डरो।

पक्षन् [पु० वा ना०] बाडाल की शोपरी दे० 'पक्षण'।
पंकारः [पङ्क + ऋ + अच्] 1. सिवार 2 बाँध, नेंड 3 जीना, सोड़ी, पींडिया।

पक्षित (वि०) [पक्ष् + इलच्] गारे से भरा हुआ, गदला, मैला, मलिन सि० १।७।८।

पक्षेज [पक्षे जायते—पक्षे + जन् + ङ] कमल।

पक्षेह् (नपु०), हम् [पक्षे + ह् + षिच्, क वा] कमल, ह्. शारत्त पक्षी।

पक्षेहाय (वि०) [पक्षे + ही + अच्] दलदल में रहने वाला।

पक्षित (म्बो०) [पक्ष्-किन्नु] 1. लाइन, कलार, खेर्ना, तिल-मिठा—द्वयत बाणपदपतिरलक्षसकाया—विष्णु० ४।६, पक्ष पक्षि—रघु० २।१९, अलिपक्षि—कु० ४।१५, रघु० ६।५ 2 समूह समूह, रेवड, दस 3. (एक ही जाति के) लोंगो को लाइन जो जाने पर बँधी हो, एक ही जाति के लम्बोखियों का समूदाय तु० पक्षिपावन 4. जीवित पीड़ी 5. पृथ्वी 6. यक्ष, प्रसिद्ध

7. पक्ष का समूह, पक्ष की सख्या 8 दस की सख्या बीसा कि 'पक्षितरत्न' और 'पक्षितश्रीम' में है। सम०—कीरः टावन का विशेषण,—चट समुद्री उकाव, सुरार पक्षी,—बुक्क, जितके साथ बैठकर भोजन करने में हुयग लगे, ऐसा समूह को बुधित करने वाला व्यक्ति,—वाचनः आदर्शनीय वा सम्मानित व्यक्ति, एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण जो विद्वान् होने के साथ २ अपनी उपस्थिति से भोज की पक्षि को पवित्र कर देता है,—पक्षिपावना वषाम्बः—मा० १,—यहाँ जगद्वर कहता है—पक्षिपावना पक्षी भोजनाविशेषता पावना, अग्निर्भोजिन पक्षिपावा, यथा, यजुषा पारगो यस्तु ताम्ना यथापि पारग, अथर्वशिरसीश्र्वेता ब्राह्मण. पक्षि पावन। वा—अथा सर्वेषु देवेषु सर्वं प्रबन्धेषु च, यारते प्रबन्धति पक्षपा तास्तनुजति च। ततो हि पावनात्स्वल्पा उच्यते पक्षिपावना। मनु इत शब्द की व्याख्या इस प्रकार करते हैं—अपाक्तपोषहता. पक्षि. पावते पक्षिबीतमं, तानिभोजन कार्त्स्न्येन द्विजाह्वान् पक्षि-पावनात्। मनु० ३।१८४—इ० ३।१८३, १८६ भी,—रघुः दशरथ का नाम—रघु० १।७।४।

पक्षु (वि०) (रिषी०—ग्री) [कञ् + क्तु, कस्य पले जस्य वादेथ, नृम्] लगडा, लखनाला, विकलाय—गुः 1. लगडा, बादमी,—भूक करोति वाक्ल पक्षु लघवते गिन्ति 2. ललिन का विशेषण।—सम० धाह 1 मगरमच्छ 2. लखी राशि, मकरराशि।

पंख (वि०) [पङ्क + लृच्] कङ्कडा, विकलाय।

पक्ष 1 (म्बो०) उभ० पक्षित-ते, पक्ष] 1. पक्षाना, कुलना, भोजन बनाना (यह चाते द्विकर्मक अतलाई जाती है)—उदा० तच्छालानोयन पक्षति परन्तु इस प्रकार का प्रयोग लौकिक सम्कृत में बिरल है), व पक्षवारन-कारवात् मनु० ३।११८, कृते मत्स्यानिष्ठापक्षन् सुंलान् बलवतरा—०।२०, मनु० १।८५ 2. पक्षाना, (ईद आदि) पक्षाना, दे० पक्ष 3. (भोजन आदिक) पक्षाना—वषाम्बन् चतुर्विधम्—मय० १५।१४ 4 पक्षाना, परिपक्व होता 5. पूर्णता की पहुँचाना, (समस्त आदि का) विकान करना 6 (वातु आदि का) पक्षाना 7. (अपने मित्र) पक्षाना (आ०।—कर्मबा०—यच्छते, 1. पक्षाया जाता 2. पक्षा होना, परिपक्व या विकसित होता, पक्षाना (आ००) चल देना, पूर्णता की प्राप्त करना—रघु० १।१५०,—गाव-यति-ते पक्षाना, पक्षता कराना, विकसित कराना पूर्णता की पहुँचाना—अन्नत पिपक्षति—पक्षाने की इच्छा करना—विरि—पक्षाना, परिपक्व होता, विकसित होता, वि०—1 परिपक्व होता, विकसित होता पक्षाना, फल देना—रघु० १।७।५३ 2 पक्षाना 3. भलीभाँति पक्षाना।

ii) (आ० भा०-पक्षे) स्पष्ट करना, विचार करना ।

पक्षतः [पक्ष+तल्] 1. अग्नि 2. सूर्य 3. इन्द्र का नाय ।

पक्षम (वि०) [पक्ष+स्पृष्ट्] पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना—कः अग्नि—अन् 1. पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना 2. पकाने के उपकरण, बर्तन, इन्जन आदि ।

पक्षपक्वः [प्रकारे पक्ष इत्यस्य द्वित्वम्] शिव जी को उपायी ।

पक्षा [पक्ष+षड्+टाप्] पकाने की क्रिया ।

पक्षिः [पक्ष+इन्] अग्नि ।

पक्षेलिम्ब (वि०) [पक्ष+एलिम्ब्] 1. शीघ्र ही पकने वाला 2. परिपक्व होने के योग्य 3. इतल या नैसर्गिक रूप से पकने वाला—ददयो मालूरफल पक्षेलिम्ब—ने० ११९४,—कः 1 अग्नि 2 सूर्य ।

पक्षेयुक्ताः [पक्ष+एलुक] रसोद्घवा ।

पक्षोदिका (स्त्री०) एक छोटी घटी ।

पंचक (वि०) [पच+कन्] 1. पाँच से युक्त 2. पाँच से सबद्ध 3. पाँच से निर्मित 4. पाच से खरीदा हुआ 5. पाँच प्रतिशत लेने वाला,—कः,—कम् पाँच वस्तुओं का सङ्घ, 'अम्लपचक' ।

पंचल (स्त्री०) पच, पचसमुदाय, पचायत ।

पंचला, **पंचल्** [पचन्+तल्+टाप्, ल् वा ङ्] 1. पाँचलना स्थिति 2. पाँच का सङ्घ 3. पाँच तत्वों की समष्टि—अतः पच-तां-सङ्घ-म्—आ उन पाँच तत्वों में घुलमिल जाना जिन्हें शरीर बना है, मरना, नष्ट होना, **पंचलां-श्च** भी मार डालना, नष्ट करना—पचभिनितिते देहे पचन् च पुनर्वते, स्वा स्वा योनि-मनुप्राप्ते तत्र का परिदेवना । रत्न० ३१३ ।

पंचवृ [पञ्चन्+अपुच्] 1. समय 2. कोषल ।

पचक्षा (अध्य०) [पचन्+या] 1. पाँच भागों में 2. पाँच प्रकार में ।

पचन् (स० वि०) [पच+कनिन्] (सर्वत्र बहुवचनान्, कर्तुं कर्म०-पच) पाँच (समाम में पूर्वपद होने के स्थिति में पचन् कच्) का कौण ह्रा जाता है) । सम० अक्ष. पाँचवाँ भाग, पाँचवाँ अक्षिः 1. पाँच यज्ञानियों का समूह (अर्थात्-अन्वाहार्य पचन वा दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और जाचसध्व) 2. पचानियों को स्थापित रखने वाला गृहस्थ—पचानयो वृत्तता—मा० १, मन्० ३११८५—अग (वि०) पाँच सदस्यीय, पाँच अंगों वाला, जैसा कि पंचाय प्रथम (अर्थात् चाहुम्मा चैव जामुम्मा गिस्ता बल्ला वुवा), कृत्तपचापरिधिणयो पच—किं० २११२, (दे० मल्लि० और कादवक) (ग) 1 कलुषा 2. एक प्रकार का पौष्टि जिसके शरीर के विभिन्न भागों पर पाँच चिह्न होते (श्री) लगाम का दहना, मुसहरी (गम्) 1 पाँच भागों का सङ्घ या

समष्टि 2. अक्षि के पाँच प्रकार 3. पचाग, तिथिपत्र, जन्मी—तिथिर्वास्तव नक्षत्र योग करणमेव च, चतु-रखलो राजा जगती वसमानवेत्, अह पचागं वरु-बानाकाश वसनायमे—सुभा० 'पच' एक प्रकार का समूहो कलुषा 'मुष्टि' (स्त्री०) तिथि, बार, नक्षत्र, योग, और करण (ज्योतिष्), इन पाँच आधारभूत अंगों की अनुकूल स्थिति, अनुसू (वि०) (स्त्री०—स्वा,—सौ) पाँच अनुसू को प्राय, अ (आ) अन् इकरी में प्राय होने वाले पाँच पदार्थ,—अम्लरस (नपु०) अडकणी श्लथि द्वारा निर्मित कहा जाने वाला सरोवर—तु० १३१८, अमृतम् देवपूजा के लिए पाँच मिष्ट पदार्थों का सङ्घ (दुग्ध च शर्करा चैव घृत दधि तथा मधु),—अम्लत् (पु०) बुधग्रह,—अम्लघ्न (वि०) पाँच अंगों वाला (जैत कि अनुमान प्रक्रिया इसके प्रतिष्ठा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन, यह पाँच अंग हैं), अम्लघ्न दान, (क्याकि यह पाँचों तत्वों से घुल मिल जाता है) तु० 'पचत्' ते,—अकिम्भ भेद में प्राप्त पाँच प्रकार के पदार्थ—असोति (स्त्री०) पचामी, अह पाँच दिन का समय, आसत् (वि०) पचानियों (चारों ओर चार अग्नि, तथा उत्तर सूर्य) में तपस्या करने वाला तु० ग्पु० १३४१,—अजन्म,—आप्त्य, मुक्त-पचत्, 1 शिव का विशेषण 2 मित्र (क्याकि इस मुक्त प्राय सब युवा होता है, बार वसे भी मुक्त जैसा काम करते हैं—पचम् आनन यस्मि) (अर्थधिक विद्वान्) तथा प्रसिद्धा की प्रकट के लिए प्राय विद्वानों के नामों के अन्त में लगाया जाता है 'न्याय', नर्क० आदि उदा० जगप्राण नर्कपचानन,—इतिवच्य पाँच अंगों की समष्टि (जानेन्द्रिय या कर्मेन्द्रिय दे० इन्डि-पय्),—इच्च बाध शर कामदेव का विशेषण (क्याकि इनके पाँच बाण हैं—अर्जविदमशाक च वृत्त च नवमल्लिका, नीलांगल च पर्वते पचबाणम्य मायका),—उत्कम् (पु०, व० व०) शरीर में रहने वाली पाँच अक्षिवाँ,—कर्कत् (नपु०—आपु०) में पाँच प्रकार की चिकित्साएँ अवैतल 1 बमन, 'उट्टी' करने वाला औषधियाँ देना' 2 रेचन—शौच लगाने वाली औषधियों का मेखन 3 नस्य—छीक करने वाली औषधियाँ—नसवार—देना 4 अनुवासन—नैतयकन अम्बिकर्म 5 तिष्ठ—विना लेल का अम्बिकर्म, कृत्कम् (अध्य०) पाँच बाण,—कोषम् पाँच कौण की आहुति,—कोषम् पाँच मन्त्रों (पौषल, पितराम्ल, चर्द, चित्रकमूल और मोठ) का घृण,—कोषा (पु०, व० व०) पाँच प्रकार का परिधान 1 अनुमय कोष या स्मृत्युत्तर 2 प्राणमय कोष 3 मनमय कोष 4 विद्वानमय कोष (२, ३, च ४ से

मिल कर, सिंग शरीर बनता है 5 ज्ञानस्वयम कोष
—अर्थात् कोष) जिनमे आत्मा लिप्य समझा जाता
है,—**श्रोणी** पाँच कोस की दूरी,—**कूटबन्धु**—**कूटबो**
पाँच हाटो का समूह,—**पञ्च** पाँच गोशो का समूह,—
गन्धर्व गौ से प्राप्त होने वाले पाँच पदार्थों
(अर्थात् बुध, बही, भी मूत्र और गोबर—धीर दधि
तथा चाण्य मूत्र गोमयमेष च) का समूह,—**गु**
(वि०) पाँच गोशो के बदले खरीशा हुआ,—**गुध**
(वि०) पाँच गुणा,—**गुप्त** 1 कछुआ 2 दर्शनपास्त्र
में अर्धाल भौतिकवाद को पद्धति, चार्वाको का सिद्धान्त,
—**चत्वारिंशत्** (वि०) पँतालीसवाँ,—**चत्वारिंशत्**
पँतालीस,—**जन्** 1 मनुष्य, मनुष्य जाति 2 एक
राक्षस जिसने सक्षयुक्ति का रूप धारण कर लिया
था तथा जिसको श्रीकृष्ण ने मार गिराया था 3
आत्मा 4 प्राणियों की पाँच श्रेणियाँ अर्थात् देवना,
मनुष्य, पशुवं, नाग, और पितर 5. हिन्दुओं की चार
मुख्य जातियाँ (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा
पाँचवें निषाद या असत्य जाति (इन दो अर्थों में ४०
४०) [पूरे विवरण के लिए दे० ब्रह्म० १।४।११-१३
पर शारीरभाष्य]—**जनीव** (वि०) पञ्चजनी का
अर्थ (४) अग्निमेता, बहुवचन, विद्वेषक,—**जान**,
1 बुद्ध का विशेषण क्योंकि वह पाँच प्रकार के ज्ञान से
युक्त है 2 पाशुत सिद्धांतों से परिचित मनुष्य,
—**तज्जन्**,—**श्री** पाँच रथकारों का समूह . **तत्पञ्च** 1
पाँच तरवों की समष्टि अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि,
वायु और आकाश 2 (नक्षत्रों में) तारिकों के पाँच
तन्त्रों को पञ्चकार—अर्थात् मध, मास, मन्थ, मुद्रा
और मैथुन—भी कहलाते हैं,—**तत्पञ्च** (५०) एक
सन्ध्याओं की श्रेष्ठा ऋतु में सूर्य को प्रवेश कराने के
नीचे चारों ओर आग जला कर बैठा हुआ तपस्या
करता है—**तु०**—**हृदिभुंजायमधवता चतुर्णां मध्य**
कलाटनस्यपतमपि—**रघु०** १३।११, कु० ५।२३,
मनु० ६।२३, और शि० २।५।१ भी,—**तथ** (वि०)
पाँच गुणा (—थ) पचास,—**त्रि** (वि०) पँती-
सवाँ,—**त्रिंशत्**—**त्रिंशति** (स्त्री०) पँतीस,—**वज्र**
(वि०) 1 पन्द्रहवाँ 2 जिसमें पन्द्रह बड़े हुए हैं
—यथा पञ्चशततम्—एक सौ पन्द्रह—**वज्रम्** (वि०,
४० ४० पन्द्रह, अहं पन्द्रह दिन की अवधि—**वक्षिन्**
(वि०) पन्द्रह से युक्त या निर्मित,—**वक्षी** पूर्विका,
—**वक्षिन्** शरीर के पाँच लम्बे अंग—बाहू नेत्रद्वय
कुक्षिभूगु नासे तर्षे च, स्तनयोततर चैव पञ्चवीर्यं
प्रचक्षते,—**वज्र** 1 पाँच पको से युक्त कोई जानवर
—पच पञ्चकला अथवा ये प्रोक्ता कृतवीर्यिनं—**वह्नि०**
६।१३१, मनु० ५।१७, १८, याज्ञ० १।१७७ 2 हाथी
3 कछुआ 4 सिंह या व्याघ्र,—**वहः** पाँच नदियों

का देश, वर्तमान पञ्जाब (पाँच नदियों के नाम—घाटु,
बियासा, इरावती, चन्द्रभागा और बितस्ता
या जमल सतलज, व्यास, रावी, बेनास,
और सेलम) (—व०—४० ४०) इस देश के निवासी—
पञ्जाबी,—**वर्षति** (स्त्री०) पिघाने,—**वीर्यकनम्**
देवमूर्ति के सामने पाँच पदार्थों की हिलाता और फिर
उसके सामने लंबा लेट जाना (पाँच पदार्थों के नाम
— दीपक, कमल, वाण्य, आम और पान का पत्ता),
— **पंचास** (वि०) पचपनवाँ,— **पंचासत्** पचपन,— **षष्ठी**
पाँच कदम **पञ०** २।११५,—**षाडम्** 1 पाँच पावों
का समूह 2 एक षाड जिसमें पाँच पावों में रलकर
भेद दी जाती है,—**षाशा**: (प्र० ४० ४०) पाँच बीज
प्रदवायु—प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान,
—**षाशावः** विशिष्ट आकार का मन्दिर (जिसमें चार
कनुरे और एक मीनार या विशर हो),—**षाशः**
—**षाशः**—**षाशः** कामदेव के विशेषण—**दे०** 'पंचेष्ट',
—**षुभ** (वि०) पाच भूशुभों का (अ): पचभुव
या पचकोला—**तु०** पचकोण,—**भूतम्** पाँच मूलतत्व
—**पृथ्वी**, जल, अग्नि, वायु और आकाश—**भकारम्**
बामभार्गी तन्त्राचार के पाँच मूलतत्व जिनके नाम का
प्रथम अक्षर 'भ' है (मध, मास, मन्थ, मुद्रा और
मैथुन) दे० 'पचनत्व' (2),—**महापातकम्** पाँच बड़े
पाप—**दे०** महापातक,—**महापयः** (पु०, ४० ४०)
पाँच दैनिक वज्र जो एक ब्राह्मण के लिए अनुष्ठेय है
—**दे०** महापय,—**यामः** पिन,—**रत्नम्** पाँच रत्नों का
समूह, (ये कई प्रकार से गिने जाते हैं—(१) नीलक
बन्धक चैति पधारायच मौक्तिकम्, प्रवाल चैति
विश्वेय पचरत्न मनीषिणि), (२) सुवर्ण रत्न मुक्ता
राजावतं प्रवालकम्, रत्नपंचकारस्यातम्, (३)
कनक हीरक नील पधारायच मौक्तिकम्, पचरत्नमिद
प्रोक्तमृषिभिः पुषंदंशभिः,—**राष्ट्रम्** पाँच राष्ट्रियों का
समूह,—**राक्षिकम्** (पणि० में) मणित की एक
क्रिया जिससे चार ज्ञात राष्ट्रियों के द्वारा पाँचवीं
राशि निकाली जाती है,—**रक्षकम्** एक पुराण (भवी
कि इसमें पाँच महत्त्वपूर्ण विषयों का उल्लेख है—**सर्प-**
द्व शतसर्पेश चक्षो मन्वन्तराणि च, बशानुचरित चैव
पुराण पञ्चलक्षणम्, दे० 'पुराण' भी,—**रक्षकम्** नयक
के पाँच प्रकार—अर्थात् काचक, सेन्यन, साम्य, बिडे
और सोवर्षल,—**षष्ठी** 1 अर्धरी की जाति के पाँच
बुल—अर्थात् पीपल, बेस, बड़, हूड और अशोक 2
दण्डकारण्य का एक भाग जहाँ से गोदावरी निकलती
है और जहाँ राम ने सीता कोले बहुत दिन बिताये
हैं, बहु स्थान नासिक से दो मील की दूरी पर है
—**उत्तर०** २।२८, रघु० १३।३१,—**षष्ठीशोच** (वि०)
लगभग पाँच वर्षों की आयु का,—**षष्ठी** (वि०) पाँच

बर्ष का,—**बन्धनम्** पाँच प्रकार के बन्धों (अर्थात् बन्ध, मुचर, पीपल, प्लक्ष और बेतस) की छाल,—**बिस** (वि०) पन्चोसवा,—**बिसति**, (स्त्री०) पन्चोस,—**बिस्रतिका** पन्चोस का सवह जैसा कि 'वेतालपच-बिस्रतिका' में,—**बिष** (वि०) पाँच गुणा या पाँच प्रकार का,—**शत** (वि०) 1 बिसका जोड़ पाच सौ हो 2. पाँच सौ (सम्) 1 एक सौ पाच 2 पाच सौ,—**श्रावः** 1 हाथ 2 हाथी,—**शिक्षः** सिंह—**श** (वि०) (ब० ब०) पाच छ, सन्त्ययेति बहुस्पतिप्रभृतय गभाविता पञ्चवा—**भृत्**० २।३४,—**शब्द** (वि०) पंचशब्दा,—**शधिः** (स्त्री०) पंचश,—**सप्तत** पचहतरवा,—**सप्तति** (स्त्री०) पचहतर,—**भूनाः** (स्त्री०) घर में रहने वाले पाच बस्तुएँ जिनके द्वारा छोटे २ बोंबों की हिंसा हो जाया करती है—**वे पे है**—**पच** भूना गृहस्वस्व बुल्लोपेपभुपस्कर कइनी चोदकुपच—**मनु०** ३।६८ (चूहा, बकरी या सिलबड़ा, साँड़, ओखला और पानी का मछा),—**हायन** (वि०) पाच बर्ष की आयु का ।

पचवी [पचत् + ल्यट् + ङीप्] शतरज जैसे खेल को कपड़े की बनी हुई बिसत ।

पचम (वि०) (स्त्री०—मी) [पचत् + मट्] 1 पाँचवाँ 2 पाचवाँ भाग बनानेवाला 3 रत्न, चतुर 4. सुन्दर, उज्ज्वल,—**म**: 1. भारतीय स्वराग्राम का पाँचवाँ (बाद के समय में सततवा) स्वर, कश्मिर्न कोकिलरव (कोकिला) रौनि पचमम्—**नारद** शरीर के पाँच अंगों से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम 'पचम' है—**वायु** सम्-**दानो** नामैसरोद्भूक्तमर्षसु, **चिचरत्** पचमन्यानप्रापया पचम उच्यते 2 मगीत स्वर वा राम का नाम—**अथर्वनि** द्वावा मोन त्विच प्रपचद पचमम्—**गीत०** १०, इसी प्रकार उदचित पचम रामम्—**गीत०** १, **मम्** 1 पाँचवाँ 2 मयन, तानिकी का पाँचवाँ सार,—**मी** 1 चाण्डाल के पक्ष की पाँचवी तिथि 2 (अ० मे) अवादान कारक, द्रौपदी का विशेषण 4 शतरज की कपड़े की बिसत । **सम०**—**आय्य** कोयल ।

पंचासः (प०, ब० ब०) [पच् + कालन्] एक देव तथा उसके निवासियों का नाम,—**स** पचासी का राजा ।

पंचालिका [पचाय प्रपचाय अलति—अल + क्वल् + टाप्, इवम्] गुडिया, पुतली—**पु०** 'पंचालिका' ।

पचासी [पचाल + ङीप्] 1 गुडिया, पुतली 2 एक प्रकार का 3 शतरज आदि खेल की कपड़े की बनी बिसत ।

पचास (वि०) (स्त्री० ङी) [पचायत् + ङट्] पचासवाँ ।

पचासत्, **पचासति** (स्त्री०) पचास ।

पचासिका [पचास + क + टाप् इवम्] पचास श्लोकों का सवह—**अर्थात्** 'चौर पचासिका' ।

पञ्जरम् [पच् + जरत्] पिञ्जरा, चिडियाघर—**पञ्जरसूक**, भुजपञ्जर—**र.**,—**रम्** 1 पसलिया 2 कपाल, ठठरी २: 1 शरीर 2 कलिमुग । **सम०**—**आश्वेदः** मछलियाँ पकड़ने का जाल या टोकरी,—**सूक** चिचरे का तौता, पिञ्जे में बंद तोता चिकम० २।२३ ।

पञ्जिः,—**ञी** (स्त्री०) [पच् + इत्, पञ्जि + ङीप्] 1 रुई का गहना जिससे धागा काता जाय, पूती 2. अर्धिलेख, पत्रिका, बड़ी पत्रिका 3 तिथि-पत्र, अर्धो, पत्रा या पत्राय । **मम०**—**कार**,—**कारक**, लेखक, लिपिकार ।

पद् : (स्त्री० पर०—पटति) जाना, हिलना-डुलना—**ज्रे०** या **चुरा०** उभ०—**पाटयति**—**ते** 1 टुकड़े करना, बिरोगी करना, फाड़ना, फाड़ कर अलग २ करना, बिना कर खोलना, बिभक्त करना 'कश्मिर्न्यात्पाटयामास, दती शि० १८।५१, दत्तर्ष पाटयेल्लेखम्—**याज्ञ०** २।१४ मूच्छ० ९ 2 तोड़ना, तोड़ कर खोलना—**अग्न्यायु** भिनित् मया निशि पाटितसम्—**मूच्छ०** ३।१४ 3 छेदना, चुभोना, घुसेटना—**द**र्भ-**पाटितलेन** पाणिना—**रघु०** ११।३१ 4 डूर करना, हटाना 5 तोड़ डालना उद् . 1 फाड़ डालना, निकाल लेना—**दत्तेनोत्पाटयेन्न्याम्**—**मनु०** ४।६९, **कालमुत्पाटयितुमार्षे**—**पच०** १ 2 अड़ से उखाड़ना, उन्मुलन करना—**कु०** २।३२, **रघु०** १५।४९ 3. उद्धृत करना **वि०**—1 फाड़ डालना (केनकवर्ह) विपाटयामास युवा नवाग्ने—**रघु०** ६।१७ 2. लीचन, बाहर निकालना, उद्धृत करना ।

ii (चुरा० उभ०—पटयति—**ते**) 1 गुचना, बुनना—**कुविदस्व** तावत्पटयति गुणशामभमित—**काव्य०** ७ 2. बहल पहनाना, लपेटना 2 घेना, घेरना बनाना ।

पट,—**टम्** [पट् क्छन्दे कण्ठे घञात् कः] 1 बहल, पहनाना, कपडा, बिचडा—**अथ** पट मूषदरिद्रता यतो ह्यप पटविछद्रसर्तैरलकृन्—**मूच्छ०** २।१९, **मेधा** मदीति बलदेवपट प्रकाशा—**५।६५** 2 महीन कपडा 3 घुसट, पन्दा 4. कपड़े का टुकड़ा जिस पर बिच बनाये जायँ—**टम्** छप्यर, छत । **मम०**—**उदबन्ध** मृदु,—**कार** 1 जूलाहा 2 चिककार,—**कुटी** (स्त्री०),—**मद्वपः**,—**बाप**, **बेठमन्** (मप०) तद्—**शि०** १२।६३,—**बासः** 1 तद् 2 पैट्रीकोट 3 सुभाषित पूर्ण—**रत्न०** १, **बासक**, सुभाषित बर्ण ।

पटकः [पट् + क + क] 1 शिक्ति, पडाव 2 रुई का कपडा **पटचर**, [पटत् इति अन्वयनाशब्द चरति—पटत् + चर् + अच्] चौर, मु० पाटचर,—**रम्** बिचडा, फटे पुराना कपडा ।

पटकः [पटत् + क + क] चार ।

पटपटा (अन्व०) अनुकरण मूलक ध्वनि ।

पटलम् [पट् + कल्प्] 1. छल, छप्यर—**बिभ्रितपटलान्त**

दुबयले जीर्णोद्धारणम्—मुद्रा० ३।१५ 2. इकाना, आचरण, अन्नपचन, लेपन—शिरसि प्रसोपटल दद्याति दीप—मार्गि० १।७४ ३ आसो का जाला 4 देर, समुच्चय, राशि, परिधाया रथायवाणे पटलेन रोचिषाम्—शि० १।२१, जलपटलानि पच० १।३६१, औद्विपटले रघु० ४।६३, मुक्तापटलम्—१।३।१७ तारकपटलम्—गीत० ७ 5 टोकेरी 6 अनुचरवर्ग, नोकर चाकर, —ल, —ली 1 वृक्ष 2 वंछल, लः, —लम् पुस्तक का अर्थात्। सम०—प्रातः छत का किमारा।

पट्ट [पट्टेन हयने—पट+हृन्+ड] 1 धौसा, नपासा, डोल, तबला, कुर्वन् सध्याभक्तिपट्टहतां धूमिलं श्लाघनीयम्—मेघ० ३४, पट्टपट्टहृत्पनिर्भिनितानिद्र—रघु० १।७१ 2 आरम्भ, उपक्रम 3 धाबल करना, मारना। सम०—धोषक दिवोरचो (जो डोल पीटना जाता है और घोषणा करना जाता है) डोही पीटने वाला, —अध्वयम् ओगो को एक करण के लिए डोल पीटने हुए इधर उधर घूमना।

पट्टालका [पट+अल्+उक+टाप्] बीक।

पट्टि,—टो (म्हो) [पट्+इन्, पटि+डोष्] 1 रमशाला का पर्व 2 कपडा 3 मोटा कपडा, कैनवस 4 कनाल। सम०—अेष (रमशाला) के पर्व को एक और गिराना, यह एक प्रकार का रममच का निर्देशन है जो किमी पात्र के शीघ्रता पूर्वक रममच पर आने को प्रकट करना है, मु० 'अपटो धेव'।

पट्टिमन् (पु०) [पट्+इमनिच्] 1 दक्षता, चतुराई 2 निपुणता 3 लोकता 4 नेत्रुष 5 प्रकटता तीव्रता आदि।

पटोर [पट्+ईरन्] 1 खेलने को गेर चन्दन को लकड़ो 3 कामदेव—रघु० 1 कन्या 2 चन्दनी 3 पेट 4 लेन 5 बादल 6 ऊँचाई। सम०—अम्भन् (पु०) चन्दन का पेट वहनि विषयवत् पटोरजन्मा—मार्गि० १।७४।

पट्ट (वि०) (म्हो) —ट्टो म० अ०—पट्टोवम्, उ० अ० पट्टिष्ठ [पट्+णिच्+उ, पट्टोश्] 1 चतुर, कुशल, दक्ष, प्रबोध (प्राय अधि० के साथ) भावि पट्ट 2 तीक्ष्ण, तीक्ष्ण, चतुरा 3 प्रखर, काहवी 4 प्रच०, मञ्जुल, तीक्ष्ण, महान—अग्रमपि पट्टधारसारो न बाणपरवरत—बिक्रम० ४।१, उत्तर० ४।३ 5 कर्कश, सुखाध्य, तेजःपनिपुक्त—किमिह पट्टपट्टहृत्सामिधो नादीनाद—मुद्रा० ६, पट्टपट्टहृत्पनिर्भिनितानिद्र—रघु० १।७१, ७३ 6 प्रवण, स्वयम्—शि० १।४३ 7 कठोर, क्रूर, पापाग्रहृदय 8 अक्कार, कुत, बालाक, मठ 9 तीरोण, स्वस्थ 10 साहिक, व्यस्त 11 बाक्पट्ट, धामी 12 बिला हुआ, कुलाया हुआ—दुः, दुः (नपु०)

कुतुरमुत्ता, साप को छनरी—दु (नपु०) नयक। सम०—कल्प, —बेसौष (वि०) कासा चतुर, तीक्ष्णवृष्टि।

पटोल [पट्+ओल्] परलक, ककड़ी की जाति का, —सम् एक प्रकार का कपडा।

पटोलकः [पटोल+क+क] युक्ति, घोषा।

पट्ट—ट्टम् [पट्+क, इडभाब] 1. शिला, तल्ली (लिखने के लिए) पट्टिका—शिलापट्टमधिषायामा—शि० ३, इसी प्रकार भालपट्टादि 2 राजकीय अनुदान, राजाज्ञा—याज्ञ० १।३।१७ 3 किरिट, मुकुट—रघु० १।८।४ 4 बन्धी—निर्भोकपट्टा फणिर्भिविपुक्ता—रघु० १६।१७ 5 रेशम—पट्टोपधानम् का० १७, भर्तु० ३।७४, इसी प्रकार 'पट्टासुक' 6 महीन या रंगीन कपडा, वस्त्र 7 ओढ़ने का वस्त्र—अट्टि० १०।६० 8 शिरोवेष्टन, पगड़ी, रानी रेशमी साफा—रत्न० १।४ 9 विहासन 10 सुती, तिपाई 11 डाल 12 चक्की का पाट 13 चौराहा 14 नवर, कस्बा 15 पट्टी, तनी या बघनी। सम०—अर्हा पटरानी—उडा-ध्यायः राजाज्ञा तथा अन्य प्रलेखो या दस्तवेजो के लिखने वाला, —अम् एक प्रकार का कपडा—बेसो, —पट्टिषो, —रानी पटरानी, —बन्ध, —बासल् (वि०) रेशमी या रंगीन बन्धो से मुसलजित।

पट्टनम्,—मो [पट्+तनप्, पट्टन्+डोष्] नगर।

पट्टिका [पट्टो+कन्+टाप्, लृप्] 1 तल्ली, फलक जैसा कि 'हृत्पट्टिका' में 2 प्रलेख या दस्तावेज 3 धरती कपड़े का टुकड़ा—बल्लककदेसादिपाठप पट्टिका—का० १।४९ 4 रेशमी कपड़े का टुकड़ा 5 बन्धनी या तनी, पट्टी। सम०—बायकः रेशम की बुनावट।

पट्टि (ट्टी) वा (स) [पट्ट्+टिष् (स) च्, पत्ते पट्टो+पो (मो)+क] एक तेज धार की बर्छी, कण्ठ-प्रासपट्टिष् जाति दश० (पट्टिषो लीहृदो वस्ती०णधार क्षुरोपम—बन्धनी)

पट्टोलिका [पट्ट्+उल्+व्वल्+टाप्, इत्वम्] एक प्रकार का बंध या पट्टा (भूमिकग्रहणव्यवस्थापक पत्रवेद—तारा०)।

पट्ट (म्हो) पर०—पट्टित, पट्टित 1 जोर से पहना या पहिराना, सस्त्र पाठ करना, पूर्वाभ्यास करना—य-पठेच्छुभुगार्षे 2 पाठ करना, अध्ययन करना, अनु-शीलन करना—इत्येतन्मानव शस्त्रं अनुशिक्षन् वदन् द्विज मनु० १।१।२६, ४।९८ 3 (देवता का) आवाहन करना 4. हुवाला देना, उद्धृत करना, (किसी पुस्तक का) उल्लेख करना—एतोदिच्छाम्यह धौषु पुराणे यदि पठथते—महा० 5. शोषणा करना, अभि-व्यक्त करना—आर्यां च परतो ह्यर्थं पुत्रकर्म्येह पठथते महा० 6. (अपा० के साथ)... से पहना, प्रेर०—

पाठयति-ले 1. जोर से पढ़वाना 2 अध्यापन करना, शिक्षा देना—सन्तत—विपठयति—पाठ करने की इच्छा करना,—विर—उत्सलेख करना, घोषणा करना (प्रेरं) शिक्षा देना—ती सर्व शिक्षा परिपाठितौ—उत्तरं २, सन्—, पढ़ना, सीखना—मनु० ४।१८।

पठकः [पठ्+कृत्] पढ़ने वाला ।

पठयन् [पठ्+पठ्] 1. पढ़ना, पाठ करना 2 उत्सलेख करना 3 अध्यापन करना, अनुशीलन करना ।

पठिः (पठि०) [पठ्+इत्] पढ़ना, अध्यापन करना, अनुशीलन करना ।

पठ् 1 (म्वा० आ०—पठते, पठति) 1 व्यापार करना, लेन-देन करना, खरीदना, मोल लेना - नै० २।११ 2. बौद्धा करना, बाणिज्य करना 3 शर्त लगाना या शर्ष पर लगाना (शर्त की वस्तु में प्राय सब०, परन्तु कभी कर्म० भी)—प्राणानामपलिप्यत्सौ—मटि० ८।११, पणस्य कृष्णा पाचालोम्—महा० 4 जीनिम उठाना, 11 (म्वा० आ०, चुरा० उभ०—पणते, पचायति-ते) 1 प्रवसा करना 2 धम्मान करना, चि—, बेचना, बदल बदल करना—आभीरदेसे किल चक्रकार्तं चिचिर्वंरटंविपणयति गोषा—मुभाः ।

पणः [पण्+अन्] 1 पासो से या शीष लगार कर खेला 2 नूआ, जो दीप या शर्त लगा कर खेला जाय—यात्र० २।१८, दमयत्या पण साधर्वतंताम्—महा० 3 शीष पर लगाई हुई वस्तु 4. शर्त, सविदा, समझौता—सधि करोतु भ्रष्टा नृपति पणोन्—वेणी० १।१५, ठहराय, सुलह हि० ४।११८, ११२ 5 मज-दूरी, भाडा 6. पारितोषिक 7 रकम जो या तो पासकों में हो या कौड़ियों में 8 ८० कौडी के मूल्य का सिक्का—अधोतिपिर्वंरटं पण इत्यभिधीयते 8 मूल्य 10 धन दौलत, संपत्ति 11 विक्रयवस्तु 12 व्यापार, लेनदेन 13 दुकान 14 विफेना, बेचन वाला 15 धराब खोचने वाला 16. मकान । सम०—अणना—स्त्री बेचपा, रडी,—बंधि मंडी, मेला या पैठ,—बधः 1 सधि या सुलह करना—पणबध्मजान् गुणानत्र चट्टयामुक्त समीप्य नत्सलम्—रघु० ८।११, १०।८६ 2. समझौता, ठहराय (यदि नवानिद कुर्वान्हीचनह भयते शास्त्राभीति समयकरण पणबध्—मनोरथा) ।

पणयन् [पण्+पठ्] 1 बदल-बदल करना, खरीदना 2. शर्त लगाना 3 बिक्री ।

पणयकः [पण स्तुतिं वाति—पण+वा+क] एक प्रकार का वाद्ययंत्र—मग० १।१३, शि० १३।५ ।

पणसाय [पण्+साय+अप्+टाप्] 1 लेनदेन, व्यवसाय, व्यापार 2 बड़ी 3 बाणिज्य से प्राप्त होने वाला काम 4 नूआ खेला 8. प्रवसा ।

पणिः (पणो०) [पण्+इत्] बाजार (पु०) 1. कंबूज, लोभी 2 अपानन मनुष्य या पानी ।

पणित (पु० क० कृ०) [पण्+फत्] 1 (व्यापार में) किया गया लेन-देन 2 शर्त पर रक्सा हुआ, दे० 'पण्' ।

पठ् 1 (म्वा० आ०—पठते, पठति) बाना, हिलना-बुलना, 11 (चुरा० उभ०—पठयति-ते) महह करना, चट्टा लगाना, डेर लगाना ।

पठ [पठ्+अन्, व या] हिलना, तपुसक ।

पठ [पठ्+टाप्] 1 बुद्धिमता, समझ 2 ज्ञान, विज्ञान ।

पठयत् (पु०) [पठ्+मनुप्] बुद्धिमान्, विद्वान् ।

पठित (वि०) [पठ्+इत्] 1 विद्वान्, बुद्धिमान्—स्वस्थ को हान न पठित 2 मूढमूर्खि, चतुर 3 दस्त, प्रवीण, कुशल (प्राय अवि० के साथ या समास में)—मधुरालापनिमगं पठिताम् कु० ४।१६, इसी प्रकार 'पठितपठित'—४।१८, 'नवपठित' आदि,—त 1 शास्त्रज्ञ, विद्वान् 2 गद्यद्वय । सम०—आतोष (वि०) कुछ चतुर,—मानिक,—मानिन्, पठितमण्य (वि०) अपने आप को विद्वान् समझने वाला, धमकी आदमी, अपने आपका शास्त्रज्ञ या पठित मानने वाला ।

पठितिमन् (पु०) [पठित्+इन्निच्] ज्ञान, विद्वाना, बुद्धिमता ।

पथ (वि०) [पण्+यत्] 1 निकाड, विक्रमार्थ 2 लेन-देन के वांय च्च । 1 अर्धन, इस्तु, विक्रयवस्तु—पूराबभासे निपणियमपथ्या—रघु० १६।११, पथ्याना माधिक पथयद्—पच० १।१६, मनु० ५।१२९, यात्र० २।२६५, मालवि० १।९६ 2 बाणिज्य, व्यवसाय 3 मूल्य—महना पुण पथोन् क्रीतेय कायनोस्त्वया शा० ३।१ । मम०—अणना, आतोष (स्त्री०),—विलासिनी,—स्त्री (स्त्री०) बेचना, रडी—पथ्यस्त्रीपु विवेककल्पलतिकाशरयोपु रज्यतक—अर्जु० १।९०, मेघ० २५, अजिरम मंडो,—आतोष व्यापारी,—आतोषकम मंडो, पैठ या मेला—पतिः बड़ा व्यापारी—भूमिः (स्त्री०) मालनोदाय,—बोधिकार,—बीची,—झाला 1 मंडो 2 विक्रमार्थ, दुकान ।

पथ् (म्वा० पर० पठति, पठित) 1 गिनता, गिर पचना, नीचे आना, उतरना—अवाङ्मूलस्त्वोपरि पुण्युपिठि पथात् विद्याधःहस्तमुकता—रघु० २।६०, बुद्धिमेवने वास्य पेतुवी—१०।७७, (रेणु) पठति परिगताम्य प्रकाश सलमसमूह इवाधमद्रुमेणु—भा० १।३१, मेघ० १०५, अट्टि० ७।९, २।१६ 2 उठना, बायु में आना जाना, उठान भरना इतु कलहकारोऽसौ शब्दकार पथात् अम्—अट्टि० ५।१०० दे० नी० 'पतत्' 3 छिपाना, डूबना (सिद्धि के नीचे) सोऽय कथ पठति मथनादल्पलोभेयुम्—श० ४, अने० ४।१०

पतन्पदप्रतिमस्तपोनिधि—शि० ११२२ 4 अपने
 आप को झलना, नीचे केंकना—अपि से पादपतिते
 किकःकम्पावते—पच० ५७, इसी प्रकार 'अरुणपति-
 तम्' मेघ० १०५ 5 (नैतिक दृष्टि से) गिरना,
 जाति से पतल होना प्रसिद्ध का गूढ होना, अष्ट
 होना—पद्ममंजरी जौबन् हि मद्य पतित जाति
 मनु० १०१७, ३११६, ५११९, ९१२००, वाङ्म० ११३८
 6 (स्वर्ग से) नीचे जाना—पतति पितरो श्रेया
 सुपतिशोदकक्रिया—अम० १५४१ 7 घटना, आपद्-
 घन्त या सकटापन्न होना—प्राय कुरुकपालेनोत्पन्नयायं
 पतनपि—भर्तु० २१२३ 8 नरक में जाना, नारकीय
 यातना सहन करना—मनु० १११३७, अम० १६११६
 9 पडना, पटित होना, हो जाना, सपन्न होना—
 ऋग्वेदीयं पतति तत्र विवृणोद्गात्र इव श्यापद—सुभा०
 १० निर्दिष्ट होना, उतरना या पडना (अधि० के
 साथ)—प्रमादसौम्यानि मना मुहुञ्जने पतति चक्षुषि
 न दारुणा शरा—शं० ६१२८ 11 भाग्य में होना
 12 घन्न होना, फँसना— प्रेर०—(वातपति—से—पतयति
 बिरल प्रबोध) 1 नीचे गिराना, उतारना, बुझाना
 -- निपतनी पतिमप्यपातवत्—रघु० ८३८, ९१६१,
 ११७६ 2 गिरने देना, नीचे को केंकना, गिराना,
 (बुझ आदि का) गिराना 3 बर्बाद करना, परास्त
 करना 4 (आदि) गिराना 5 केंकना, (दृष्टि)
 डालना, समनना—पिपतिवति-पित्तति, गिरने को
 इच्छ, करना—अम०— 1 उड़ना 2 पीछे बौधना,
 अनुसरण करना, पीछे सगे रहना, पीछा करना
 --मुहुन्पतति स्पन्दे इत्यदृष्टि—शं० ११७, मा०
 ९१८, शि० १११४०, अमि०— 1 निकट उठना,
 नजदीक जाना, पास पहुँचना, अधिरोद्धमस्तगिरि-
 मम्यस्तन्—शि० ९११, कि० १२३६ 2 आक्रमण
 करना, धावा बोलना, दूट पडना—रघु० ७३३७
 3 उठ कर पकड लेना 4 वापिस आना, लौट पडना
 पीछे हटना, अन्वृत्—, दूट पडना, आक्रमण करना,
 आ—, 1 दूट पडना, आक्रमण करना, धावा बोलना
 --रघु० १२१४४, ५१५० 2 उठना, मिल पडना,
 झपटना 3 निकट जाना 4 होना, घटित होना, आ
 पडना—कथमिदमापतितम्—उत्तर० २, अहो न
 शोभनयापतितम्—पच० २५ सूचना, (मन में) जाना,
 इति हृदये नापतित—का० २८८, उच्—, उछलना
 कूटना—मञ्जूदपाति पतित पदलैग्लोनाम्—शि० ५१
 ३७, (प्राय कर्म० वा सप्र० के साथ) उरगोदहमूल
 सन्—मेघ० १४, ऋट्टि० ५१३७, स्वर्गयोपतिता
 मरुत—विष्णु० ५१२, कु० ६१३९ 2 सूचना, बिचार
 में जाना—रघु० १११११ 3 (गैद को आदि) उछल
 कर जाना—भर्तु० २१८५ 4 उध्व होना, अम्य लेना,

कूटना, उत्पन्न होना—निष्कोषोपतितास्तान्—रघु०
 ५७७, रसातस्माद्गररिभय उत्येत् राम०, नि—,
 1 नीचे गिरना या जाना, अन्वृत्ति करना, उतरना,
 डबना—निपतती पतिमप्यपातवत्—रघु० ८३८, ऋट्टि०
 १५१२७ 2 केंका जाना, निष्पट होना—रघु० ६१११
 3 (पैरो में) झलना, साष्टाय लेटना—देवास्तवते
 हृत्पद्मनायं किरौटद्वाञ्जलयो विपत्य—कु० ७१२२,
 भर्तु० २३११ 4 गिरना, उतरना, मिल जाना—रघु०
 १०१२६ 5 टूट पडना, आक्रमण करना, पिलप डना—
 सिंह शिशुरपि निपतति मदमलिनकपोलमितिषु गजेषु
 --भर्तु० २३१८ 6 होना, घटित होना, आ पडना, भाग्य
 में होना—सकृदेषु निपतति मनु० ९१५७ 7 कला
 जाना, स्थान पर अधिकार करना—अभ्यहितं पूर्वं
 निपतति—प्रेर०—1 नीचे गिराना, केंकना, पटक देना
 2 मार डालना, गूढ करना, बर्बाद करना किन्तु—
 निकलना, कूट पडना, फल निकलना, निकल पडना—
 अरविबरेभ्यश्चातर्कनिष्पत्ति—शं० ७३७, एषा
 बिदूरोभयत समुद्रात्सकानना निष्पततीव भूमि—
 रघु० ११११८, मनु० ८१५५, वाङ्म० २११६, कु० ३१
 ७१, मेघ० ६९, शरा—, 1 फुंकना, निकट आना,
 पास जाना 2 वापिस आना, बरि, इधर उधर
 उठना, बबकर काटना, छा जाना—बिदूलेषाम्
 पिपासु परिपतति विषी भ्रमिनिद्वारिदयम—मालवि०
 २१११, अमर ४८ 2 झपट्टा मारना, आक्रमण करना,
 दूट पडना (युद्ध में) 3 सब दिशाओं में डौटना—
 (हवा) परिपेतुदिको दल—अहा० 4 चले जाना,
 गिर पडना—शि० ११५११, प्र—, 1 नीचे जाना,
 नीचे गिरना, उतरना 2 गिरकर अलग या दूर हो
 जाना 3 उठना, इधर उधर झपटना, प्रमि—, प्रभाव
 करना, अमिवादन करना (कर्म० मा सप्र० के साथ)
 प्रणिपत्य सुगस्तस्मै—रघु० १०११५, शानीस वाग्भिर-
 र्ध्याभि प्रणिपरोपतस्विरे—कु० २१३, श्रेष्ठ—ऊपर
 उठना, उठान भरना, विधि—, उठना, गिरना, उतरना
 --भर्तु० ५११८ (प्रेर०) गिराना, बर्बाद करना,
 गूढ करना—मुष्ण० २१८, सन्—, 1 मिल कर
 उठना, एकत्र होना 2 इधर उधर जाना या घूमना
 3 आक्रमण करना, दूट पडना, धावा बोलना 4 होना,
 घटित होना, (प्रेर०) गिराना, बर्बाद करना,
 एकत्र करना मिलाना,— रघु० १५३६, १५७५)
 षः [पत् + अच्] 1 उठना, उठान 2 जाना, गिरना,
 उतरना, 1 सम०—सः पक्षी, मनु० ७३२३ ।
 पतः [पत् + अच्] 1 उठना, उठान 2 जाना, गिरना,
 उतरना, 1 सम०—सः पक्षी, मनु० ७३२३ ।
 पतः [पत् + अच्] 1 उठना, उठान 2 जाना, गिरना,
 उतरना, 1 सम०—सः पक्षी, मनु० ७३२३ ।
 पतः [पत् + अच्] 1 उठना, उठान 2 जाना, गिरना,
 उतरना, 1 सम०—सः पक्षी, मनु० ७३२३ ।
 पतः [पत् + अच्] 1 उठना, उठान 2 जाना, गिरना,
 उतरना, 1 सम०—सः पक्षी, मनु० ७३२३ ।

१५ ३. छलन, टिङ्गी-बल, टिङ्गा—पतनवद्विभक्त
विभक्त्यु—कु० ३।१५, ५।१०, एष ३।१२५ ४ मधु-
मक्की,—बन् १. पाटा २. एक प्रकार की बदन की
लकड़ी ।

पतयाम् [पत् + यम् + लप्, मृम्] १. पत्नी २ छलन ।
पतयिष्वा [पतय + क्त् + दाप्, इत्यम्] १ छोटी चिटिया
२ एक छोटी मधुमक्की ।

पतयिन् (पु०) [पतय + इनि] पत्नी ।

पतयिष्वा [पत यम् चिकमयति पीडयति-पृ०] मधु
की डोरी ।

पतयिष्वाः (पु०) पाणिनि के सूत्रों पर लिखे गये—महा-
भाष्य के प्रसिद्ध निघांता, दार्शनिक, योगदर्शन के
प्रसंगे क ।

पतन् (वि०) (स्त्री०-त्वी) [पत् + षत्] उठने वाला,
अधरोहण करने वाला, उतरने वाला, नीचे जाने
वाला (पु०) पत्नी—परम पुमानिष पति पतताम्
—कि० ६।१, स्वस्वित्वा संघटने सुराणा स्वस्वित्-
नाना पतता स्वस्वित्त्व—रघु० १३।१९, शि० १।१५ ।
सम०—बहू १. भारक्षित सेना २. बूढ़ने का बतन,
पोकदान—तमकनाथिष्यभय महोन्नत पतद्बद्ध प्राहित-
बालनेन व—नै० १६।२७,—शेषे बाह्, वपेन ।

पतयन् [पत् + कर्णे अजन्] १ बाजू, ईना २ पर, पल
३. सवारो ।

पतयिष्वाः [पत् + अशिन्] पत्नी ।

पतयिष्वा (पु०) [पतय + इनि] ? पत्नी,—दयितादृष्ट-
चर पतयिष्वा (दुर्गति) रघु० ८।५६, ९।२७, ११।११,
१२।४८, कु० ५।४ २. बाण ३ घोडा । सम०
—केतन. विष्णु का विशेषण ।

पतयाम् [पत् + षत्] १. उठने या नीचे जाने की क्रिया,
उतरना, अधरोहण करना. अपने आणकी नीचे पटकना
२. (सूर्यादिका) अस्त होना ३ नरक में जाना ४ धर्म-
पथ ५. मर्यादा या शक्तिशून्य से गिरना ६ अवागन,
ह्रास, नाश, विपत्ति (विप०) उदय या उच्छ्राय—
ब्रह्मयोगी नरेन्द्राचार्यच्छाया पतयामि च—याज्ञ०
१।१०७ ७ मृग्य ८. नीचे लटकना, (छाती का)
डरकना ९. गमनाच होना ।

पतनीय (वि०) [पत् + अनोवृत्] गिराने वाला, जानि-
भ्रष्ट करने वाला,—बन् पतित करने वाला पाप या
जुर्म—याज्ञ० ३।४०, २९८ ।

पतनः, पतसः [पत् + अज, असक् वा] १. नाद २. पत्नी
३ टिङ्गा ।

पतयाम् (वि०) [पत् + यिच् + आनुच्] पतनोत्पन्न,
पतनशाल ।

पताका [पतयते भाषते कस्यचिद्भोजया—पत् + आक +
दाप्] झण्डा, झन्ड (बाल० से भी) य कामयजरी

कामयते य हृत्पु सुमयपताकाम्—दृष्ट० ४७, (सर्वो-
परि सौम्ये या सौभाग्य का आनंद लेने दो उसे)
२. ध्वजदण्ड ३ मकेत, लक्षण, चिह्न प्रतीक ४. उपा-
ख्यान या नाटको में भारी हुई प्रासंगिक कथा, दे०
नी०—पताकाख्यानक ५ नागलिकता, सौभाग्य ।
सम०—अनुकम्—झडा—ख्यानकम् (नाटय० में)
प्रासंगिक कथा की सूचना अब कि अप्रत्याशित रूप
से, किसी परिस्थितिबध उसी लक्षण वाली कोई
दूसरी आकस्मिक अक्षिपारित वस्तु प्रदायित की जाती
है (यथाचै चितितेज्यमिममन्मिष्योऽप्य प्रवृज्यते,
आगन्तुकैव भावेन पताकाख्यानक तु तनु, सा० २०
२९९ (इसके अन्य प्रकारों की जानकारी के लिए
दे० ३००—३०४ तक) ।

पताकि (वि०) [पताका + ठन्] झडा उठाने वाला,
ध्वजदण्डधारी ।

पताकिन् (वि०) [पताका + इनि] झडा ले जाने वाला,
पताकाओं से अलङ्कृत (पु०) १ झडाधारी, झडाधर-
दार २ ध्वजा,—श्री सेना (न प्रसेहे) रथधर्मरथो-
ऽप्यस्य कुत एव पताकिनोम्—रघु० ५।८२, कि०
१।५२७ ।

पतिः [पति यति—या + इनि] १ स्वामी, प्रथम जैसा कि
पूतृपति में २ शालिक, अधिपति, स्वामी—अनपति ३
राज्यपाल, शासक, प्रधानता करने वाला, औपवीपति,
बनस्वति कुलपति आदि ४ भर्ता प्रभवा पतिवर्जया
इति प्रतिपन्न हि विभेननैरिति—कु० ६।३३। सम—अतिनी,
—अनी वह स्त्री जो अपने पति का बध कर देती है,
—बैधवा,—बैधा बहू स्त्री में अपने पति की देवता
समझती है, पतिव्रता, मनी स्त्री—क पतिदेवतानाम्य
परिमाष्टुमन्मतेन—अ० ८ तपस्यत पति पतिदेवता
शिष्यगिर्वायव मागर्मापया—रघु० ९।१७, परि मिथता
स्व पतिदेवतानाम्—१।१०४,—धर्म अपने पति के
प्रति (पत्नी का) कर्तव्य,—प्राजा सती स्त्री—सोक
वह लोक जहाँ मृग्य हो जाने के पश्चात् पति पहुंचता
है,—ब्रता भक्त, अंशुद, निष्ठावती स्त्री, सती स्त्री
त्वम् पति के प्रति निष्ठा. म्यामिषवित्त,—केवा पति के
प्रति भक्ति ।

पतिवरा [पति + वृ + लप्, मृम्] अपना बर चुनने के
लिए तयार स्त्री—रघु० ६।१०, ६७ ।

पतित (पु० क० कृ०) [पत् + क] १ गिरा हुआ,
अबहूडा, उतरा हुआ २ मोचे गिरा हुआ ३ (नैतिक
दृष्टि से) पतित, भ्रष्ट, दुष्कर्मी ४ स्वधर्मभ्रष्ट ५
अपमानित, शानिबहिरुक्त ६ युद्ध में हारा हुआ,
पराजित, पराग्त ७ ब्रह्म, फना हुआ जैसा कि
अवगपतित में ।

पतिर [पत् + एरक्] १ पत्नी २ छिद्र वा विषय ।

पसवन् [पतति गच्छति वना बसिन्, पत् + सन्] कश्चा, मयूर (विप० प्राय०) —पसने विद्यमानःप्रियं प्राप्ते रत्न परीक्षा—मालादि० १ ।

पतिः [पत् + ति] 1 पंदल, पंदल सैनिक—रघु० ७।३७ 2 पंदल चलने वाला यात्री 3 वीर—(स्त्री०) 1 सेना का छोटे से छोटा वक्ता जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घुड़सवार और पाँच पंदल सैनिक हो 2 जाने वाला, चलने वाला । सम०—आश्वः पंदल सेना,—मथक. सेना का अधिकारी जिसका काम पंदल सेना की गिनती करता है,—संहतिः (स्त्री०) पंदल सिपाहियों की टुकड़ी, पंदल सेना ।

पतिन् (पु०) [पदभ्या तेलति, पाद + तिन् + टिन्, पदादेश] पंदल सिपाही ।

पत्नी [पति + ङीप्, नृक्] सहपत्नि, भार्या । सम०—आश्वः रनिबाग, अंतपुर,—सन्तहपम् चर्मपत्नी का कटिभूषण या कजरी ।

पथम् [पत् + पृन्] 1 (पथ का) पत्ता—पते भर कुतु-मपथफलावलीनाम्—आमि० १।१४ 2 कूल की पत्नी, कमल का पत्ता—नीलोत्पलपत्रधार्या—शं० १।१७ 3 पत्ता जिसके ऊपर लिखा जाय, कामज. लिखा हुआ पत्र—पत्रमारोप्य दीयताम्—शं० ६ 'पत्र पर लिख कर' विक्रम० २।१४ 4 पत्र, दस्तावेज 5 किसी धातु का पत्ता पत्रा, स्वर्ण-पत्र 6 पत्ती का धातु, पत्र, पर 7 बाग का पत्त—रघु० २।३१ 8 सामान्य सवारी (रथ, घोड़ा, ऊँट आदि)—विश्वः पयात पत्रेण वेगनिष्कपकेतुना—रघु० १।५।४८ नै० ३।१६ 9 शरीर पर (विशेष कर मुँह पर) चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्य का लेप करना—रथय सुचयो पत्र चित्र कुक्षय कपोलयो—मीन० १२, रघु० १।३।५५ 10 तलवार या चाकू का फल 11 चाकू, छुरी । सम०—अमम् 1 मूत्रं वृक्ष 2 साल चलने—अंशुकिः शरीर (गर्दन, मस्तक आदि) पर अशुक्तियों से केंसर मिश्रित चदन या अन्य किसी सुगन्धित पदार्थ से चित्रण करना,—अंशुमन् मनी,—आश्विनः (स्त्री०) 1 गेठ 2 पत्ती का कतार 3 शरीर पर सजावट की दृष्टि से चदनादि से रेखाचित्रण करना,—आश्वती 1. पत्ती की पक्ति 2—'आवली (3),—आहारः पत्ते साकर निबंध करना—ऊर्ध्वं बनेने वाली देशम, देशमी वन्य-म्यानीयकर्मक्रियया पत्रोर्ध्वं बोधयुज्यते—मालादि० ५।१२,—काह्लाका पत्ती की फटफटाहट, पत्ती की खड-खडाहट—आरक आग,—माषिका पत्ते के रेशे,—बरजू रेती,—बासः लकी छुरी, बड़ा चाकू (श्री) 1 बाग का पलवाना भाग 2 कैंची,—पथका। इत्येक का मोने का भागपथ, टीका,—बुद्धम् पत्ती से बना पात्र, दोना—रघु० २।६५,—आ (बा) कः चपू—अपः,

—अभिः,—श्री (स्त्री०) शरीर को बलकृत करने के लिए चवन, केसर, गहरी या किसी अन्य सुगन्धित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना कस्तुरीबोरपत्रमालिकरी मूद्यो न गदस्वामे भृगार० ७ (कायबरी में बहुलता से प्रयुक्त)—जीवनम् नया पत्ता या कोपल,—रथः पत्ती-अर्धकृत पत्रपत्रेण तेन—नै० ३।६, 'इन्द्रः गरुड का नाम, 'इन्द्रकेतु विष्णु का नाम रघु० १।१३०,—रे (ति) का,—बल्करी,—बलिः,—बस्ती (वि०) २० ऊ० 'पत्र भय'—रघु० ६।७२, १६।१७, ऋतु० १।७, वि० ८। ५६, ५९—बाज (वि०) (बाण आदि) पत्ती से युक्त,—बाहुः 1 पत्ती वि० १।८।७१ 2 बाण 3 शक्तिवा, किट्टीरना, विशेषकः चित्रकारी की रेखाएँ—२० 'पत्रभय'—हु० ३।३३, रघु० ३।५५, १।२९,—वेष्कः एक प्रकार का कानो का आभूषण,—बासः बासभाजी जिसमें मुख्यक से पत्ते हो,—शेषकः बेल का पत्र,—शुचिः (स्त्री०) काटा,—हिमन् जाड़े की जंतु जब पत्ता या बर्फ पड़े ।

पत्रकम् [पत्र + कन्] 1 पत्ता 2 सौन्दर्य बढ़ाने की दृष्टि से शरीर पर बनाई गई रेखाएँ या चित्रकारी ।

पत्रका [पत्र + निच् + कन् + टाप्] 1 सौन्दर्यवृद्धि के लिए शरीर पर बनाई गई रेखाएँ और चित्रकारी 2 बाण में पत्त लवाना ।

पत्रिका [पत्ती + कन् + टाप्, ह्रस्व] 1 किन्ने के लिए कागज 2 बिट्टी, फेस, प्रलेख ।

पत्रिन् (वि०) (स्त्री०—श्री) [पत्रम् अल्पवर्षं इति] 1 पत्ती से युक्त, पत्ती वाला—मयूर—रघु० ३।५६ 2 जिसमें पत्ते वा पृष्ठ हो (पु०) 1 बाण—ता विलोक्य बनिताकवे ध्वा पत्रिका सह मुमोष राधव—रघु० १।१।७, ३।५३, १।६१ 2 पत्ती—रघु० १।२।२९ 3 बाज 4 पहाड़ 5 रथ 6 वृक्ष । सम०—बाहः पत्ती ।

पत्तकः [पत् + सन्, रथ्य क] रास्ता, मार्ग ।

पथः [पथ + क (चकार्थे)] रास्ता, मार्ग, प्रसार, (सम्राज के अंत में) किनारा । सम०—अल्पव्या जाडू के श्रेण,—धर्मीकः मार्ग बतलाने वाला ।

पथिकः [पथिन् + कन्] 1 यात्री, मुसाफिर, बटोही—पथिकवनिता मेघ० ८, अमक १३ 2 पथप्रद-पांक । सम०—संश्लिः,—संहतिः (स्त्री०),—सायंः यात्रियों का समूह, काफला ।

पथिन् (पु०) [प्थ आचारे इति] (कतुं) पंथा, पथानी, पथान, कर्म० इ० इ०—पथः करम० इ० इ०—पथिनि. आदि, ममास के अन्त में यह शब्द बदल कर 'पथ' हो जाता है—श्रीमाचार्यव्याः, दृष्टिपथ, मध्यपथ, सत्यपथ, प्रतिपथम् आदि] 1 मार्ग, रास्ता,

पत्र श्रेयसात्मक पत्रा—भर्तृ० २।२६, बन्ध. पत्रा—
—वेद्य० २७ 2 यात्रा, राहणीरी या पत्रं—जैसा
कि 'विवाहमे सतु पत्रान्' में (में आपकी मुसद यात्रा
की कामना करना हू, भयवान् आपकी यात्रा सफल
करें) 3 परास, पशुच बैसा कि—कर्मपत्र, धृति, 3
और दानं में 4 कार्यपत्र, आचरण की रक्षा,
व्यवहारकर्म—पत्र. सुचेदंशयितार ईदबरा मलीमसा-
मादवते न पत्रतिम्—रघु० ३।४६ 5 सप्रदाय,
सिद्धांत 6 तरक का प्रभाग। सम०—हेमच सांख्यिक
भाषी पर लयाया गया राजकर,—दूधः लेर का पत्र,
—मस्र (वि०), भागों का जानकार—बाहक (वि०)
भूर (का), 1 शिकारी, विद्योभार 2 बीसा डोने
बाला, कुली।

पत्रिकः [पत्र + इलच्] यामी, राहणीर, बटोही।

पत्र (वि०) [पत्रिन् + यत् + लो लोप] 1 स्वास्थ्य
प्रद, स्वास्थ्यवर्धक, कल्याणकारी, उपयोगी (औषधि
माहार, सम्मति आदि) अग्रिमत्त्व तु पत्रस्य वसता
श्रोता क तुल्यं—राजा०, याज्ञ० ३।६५, पत्र्यमत्रम्
2 योग्य उचित; उपयुक्त,—अन्व० 1 स्वास्थ्यवर्धक
या पीष्टिक माहार अंश कि 'पत्र्याशो स्वामी वर्तते' में
2 कल्याण, मुखाश्लेष—उत्पिच्छमानस्तु परो मोषेष्
पत्र्याभिच्छता—हि० २।१०। सम०—अपत्र्यन् उन
पत्र्यां का समूह जो किसी दो में स्वास्थ्यवर्धक या
हानिकर समझे जाते हैं।

पत्र 1 (पुरा० आ० पदवते) जाना, हिलना—जुलना।

ii (विवा० आ० पद्यते, पत्र—प्रेर०—पादयति-ने, पत्र्णा०
निल्यते) 1 जाना, चलना—फिरना 2 पास जाना,
पहुँचना (कर्म के साथ) 3 हासिल करना, प्राप्त
करना, उपलब्ध करना—उद्योगिधामाश्रितस्य च प्रभाव
शाप्यपद्यत—महा० 4 पालन करना, अनुसरण करना
—स्वर्गं पद्यमानास्वे—महा० अन्व०—1 पीछे चलना,
अनुपमन करना, सेवा करना 2 स्नहणील होना, अनु-
पत्त होना 3 प्रविष्ट होना, अन्दर जाना 4 अपनाया
5 माहूम करना, देखना, निरीक्षण करना, समझना,
ब्रवि—पात जाना, नबंदीक होना, पहुँचना—रावना-
बर्त्सा तत्र राघव मघनातुरा, अभिपेदे निदाघाता
आलीव मलयदुग्धम्—रघु० १।३३२, १।१११ 2 सभि-
निलित होना—हि० ३।२५, 4 अवलोकन करना,
विचार करना, खबर करना, समझना—अपयाम्य-
पद्यत अनेनं मुवा गयन गवाश्रिति मृतिरिति—हि०
१।२७ 4. सहायता करना, मदद करना, गवाश्रितम्
तम्—महा० 5 पकड़ना, परास्त करना, आक्रमणकरना,
दबाव लेना, अधिकार में कर लेना, प्रस्त करना—
सर्गतपत्राभिपन्नां आरं राध्नी महापम्, नबकाताभि-
पन्नानापुत्रादीनामिव स्वन्—महा०, दे० 'अभिपन्'

6. लेना, धारण करना—मनु० १।३३ 7. स्वीकार
करना, प्राप्त करना, अग्र्यम्—, 1. दया करना,
सात्त्वना देना, आराम पहुँचाना, तरस जाना, अनुग्रह
करना (कष्ट से) मुक्त करना—कु० ५।२५, ५।६१
2. सहायता मागना, दीनता प्रकट करना 3 सहभूत
होना, स्वीकृत देना आ—, 1. निकट जाना, की ओर
चलना, पहुँचना—मटि० १।५।८९ 2. प्रविष्ट होना,
(किसी स्थान वा स्थिति की) जसे जाना या प्राप्त
करना—निबंदभाष्यते—मृच्छ० १।१४, (अत्र जाता
है) अयोधिरंज्वरपथ परिते पतया—भार्मि० १।१७,
इसी प्रकार 'वीर दीर्घभावमापद्यते—शारी० 3. कष्ट
फैलना, दुर्भाग्यप्रस्त होना—अर्थवर्षा परिवर्त्यय च
काममनुवर्तते, एवमापद्य तेषाम गता दशरथो यथा --
गता० 4. होना, घटित होना—भटि० ६।३१,
प्रेर०—1. प्रकाशित करना, मानने लाना, कार्यान्वित
करना, निष्पन्न करना—रघु० २।१२ 2. निकालना,
जम देना, पैदा करना—लक्ष्मणमानमापादयति—का०
१०५ 3. घटाना, कष्टप्रस्त करना, ले जाना—रघु०
५।५ 4 बदलना 5. नियंत्रण में लाना, उच्च—, 1. अम
लेना, पैदा होना, उदय होना, उत्पन्न होना, उपजा—
उत्पत्त्यतेऽस्ति भय कांश्चि समानवर्मा—मा० १।६,
मनु० 1।७७ 2 होना, घटित होना—प्रेर०—1 पैदा
करना, अनेन करना, जन्म देना, उत्पन्न करना, का र्श-
नित करना, प्रकाशित करना—ब्रह्मण्यत्परायति—पत्र०
२ 2. सामने लाना, उच्च—, 1 पहुँचना निकट जाना, पास
जाना, पत्रागना—यमुनातटमुपपेदे पत्र० १ 2 हासिल
होना, प्राप्त होना, हिंसमें जाना—भग० ६।३६, १।३।८
3 होना, घटित होना, आ पडना, पैदा हो जाना—
दीर्घ एवमुपपद्यते—मालवि० १, उपनया हि दारैरु
प्रभुता सधेनोमृषी—वा० ५।२६—रघु० १।६०
4. समझ होना, साभ्य होना—नेबरो आन कारण-
मुपपद्यते—शारी० कु० ६।६१, ३।२२ 5. उपयुक्त
होना, योग्य होना, पर्याप्त होना, अनुकूल समुचित—
(अधि० के साथ) या क्लेशंय गच्छ कान्तेय नैतत्त्वद्म-
पद्यते—मग० २।३, १।८। 6. आक्रमण करना,
प्रेर०—1. किसी स्थिति में लाना, पहुँचाना, प्राप्त
करना— विद्यासमुपपादयति 2. नेतृत्व करना, में
जाना 3. तैयार होना—रघुमुपपादयति—वेजी० २
4. किसी को कोई वस्तु प्रदान करना, प्रस्तुत करना,
उपहार देना—रघु० १।४।८, १।५।८, १।५।२२, बाह्य०
१।३।५ 5. प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, उपासीव
करना, कार्यान्वित करना, काम में लाना, अग्र्युद्ध
करना—दाशतु मातृष्यके सपथमुपपादयितुम्—का०
६२, देवकार्यमुपपादयिष्यत—रघु० १।१९१, १।७।५
6. स्वाभ्य उद्वहना, तर्क देना, प्रदक्षित करना, प्रवा-

चित्त करना 7. सपना करना, मुक्त करना, विमुक्त—
 1. निकलना, उगना 2. पैदा होना, प्रकाशित होना,
 उदय होना, कार्यान्वित होना, निष्पन्नते व सत्यानि-
 मनु० १।२५७, प्रेर०—देना करना, प्रकाशित करना,
 जन्म देना, कार्यान्वित करना, तैयार करना—त्वं
 नित्यमेकमेव पठ निष्पादयिष्य—पथ०, ब्र—, 1 (क)
 की ओर जाना, पहुँचना, आशय लेना, चले जाना,
 पहुँच जाना—ता अन्वये वीलबन्धु प्रपेदे—कु० १।२१,
 (सितीष) कौस्त प्रपेदे बरतदुक्तिष्य—रघु० ५।१,
 मट्टि० ५।१, कि० १।९, १।१६, रघु० ८।११ (ख)
 आशय ग्रहण करना—शरणाग्रमया कथ प्रपत्ये त्वयि
 दीप्यमाने—रघु० १।५६५ 2. किसी विशिष्ट अवस्था
 को जाना, पहुँचना या किसी विशिष्ट जगह में होना—
 रेणु प्रपेदे पयि पंकभाबम्—रघु० १।३३०, बहुलं
 कर्मापलता प्रपेदे—कु० ७।८१, इदृशीमवस्था प्रपन्नो-
 ष्मि—भा० ५, अशिनिकरैरिति संशय प्रपेदे—भासि०
 ५।३३, अमर २७ 3. प्राप्त करना, बोज लेना, हस्त-
 कर करना, प्राप्त करना, हासिल करना, सहकार न
 प्रपेदे मधुपने भवत्सम उपति—भासि० १।२१, रघु०
 ५।५१ 4. व्यवहार करना, बर्ताव करना,—कि
 प्रपद्यते बंदधे—मालवि० १, (बह करने के लिए
 क्या मुझसे प्रस्तुत करता हूँ), पयामो मयि कि प्रप-
 द्यते—अमर २० 5. प्रविष्ट करना, अनुमति देना,
 महत्त्व होना, स्वीकार करना—याज्ञ० २।४०,
 6. निकट विसक्तता, आना, (समय आदि का)
 पहुँचना 7. चले चलना, प्रगति करना 8. प्रत्यक्षज्ञान
 प्राप्त करना, प्रति—, 1. कदम रखना, जाना,
 पहुँचना, सहारा लेना (किसी व्यक्ति का) आशय
 लेना—उभामुख नु प्रतिपद्य लोका द्विस्रयो प्रीतिम-
 वाप लक्ष्मी—कु० १।४३ 2. ग्रहण करना, कदम रखना,
 लेना, अनुमरण करना, (मायं आदि) इत पन्थान प्रति
 पद्यन्—भा० ४, प्रतिपत्ये पदबीमह तव—कु० ५।१०
 3. पधारना, पहुँचना, प्राप्त करना—शि० ६।१६ 4
 हासिल करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, भोग
 लेना, हिस्सा लेना—स हि तस्य न केवाक धिय
 प्रतिपेदे मकलान् गुणानपि—रघु० ८।५, १३, ५।१,
 ४४, १।१३४, १।२७, १।५५, अम० १।४।४, शि०
 १।०६३ 5 स्वीकार करना, भोग लेना,—शि०
 १।५।२२, १।५।२४, 6. बसूल करना, फिर प्राप्त करना,
 पुन उपलब्ध करना, ग्रहण करना—भा० ६।३१, कु०
 ५।१६, ७।१२ 7 जान लेना, स्वीकार करना—न
 मासे प्रतिपत्तासे मां वेपयसांशि मेधिलि—भट्टि०
 ८।७५, भा० ५।२२, प्रमदा पतिवर्त्यया इति प्रतिपत्त
 हि विभेतेनरपि—कु० ५।३३ 8. घातना, ग्रहण
 करना, पकड़ना—सुमथप्रतिपत्तरक्षिभि—रघु० १।५।

५७ 9. विचार करना, छायांक करना, सोचना,
 अवलोकन करना—तदनुसंधेहृदयेव राष्व प्रत्यप्यत
 समर्थम् सरम्—रघु० १।१७९ 10. अपने विषये
 लेना, करने की प्रतिष्ठा करना, हाथ में लेना—निर्वाहः
 प्रतिपन्नवस्तुषु सतामेतद्धि गोचरतन्—मुद्रा० २।१८,
 कार्यं त्वया न प्रतिपन्नकल्पम्—कु० ३।१४, रघु०
 १०।४० 11 हाजी भरना, सहमत होना स्वीकृत
 देना—तथेति प्रतिपन्नाय—रघु० १।५।९३ 12. करना,
 अनुष्ठान करना, अन्माल करना, पालन करना
 —आचार प्रतिपद्यन्—भा० ४, विक्रम० २, 'शौच-
 चारिक आचार (अभिवादन आदि) का पालन करो',
 शासनमूर्हता प्रतिपद्यन्मुद्रा० ५।१८, ज्ञाना पालन
 करो 13 व्यवहार करना, बर्तन करना, किसी का
 कोई कार्य करना (सब या अधिक के साथ), काल-
 यवनवधापि कि कृणुते प्रत्यपद्यत—हरि०, ४ अमान्
 मानुषितुवदस्मानु प्रतिपद्यताम्—महा०, कथमह प्रति-
 पत्ये—भा० ५, न युक्त ममतास्मानु प्रतिपत्तुनसातानम्
 —महा० 14 (उत्तर) देना, (प्रत्युत्तर) देना—कथ
 प्रतिबन्धनमपि न प्रपद्यसे—मुद्रा० ६ 15 प्रत्यक्षज्ञान
 प्राप्त करना, जानकार होना 16 जानना, समझना,
 परिचित होना, सोचना, मामूम करना 17. बुनना,
 भ्रमण करना 18 होना, घटित होना, (प्रेर०)—1
 देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, अभिदान करना,
 समाप्त करना—अधिभ्य प्रतिपद्यमानमिष्य प्राप्नोति
 बुद्धि पराम्—अनु० २।१८, अनु० १।१५ गुणक्ये
 कन्या प्रतिपादनीया—भा० ४ 2 सिद्ध करना, प्रमाणित
 करना, प्रमाण देकर पक्का करना उक्तनेवाधंमुद्रा-
 हरणेन प्रतिपादयति 3 व्याख्या करना, स्पष्ट करना
 4 जाना या वापिस सोचना, (किसी स्थान पर) ले
 जाना 5. स्याप करवा, विचार करना 6 उपस्थिति
 की घोषणा करना, पुन प्रस्तुत करना 7. उत्पन्न
 करना 8. कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना, वि-
 त्तुही तरह विकल होना, अलकल होना, (अवस्था आदि),
 का विकल होना 2 दुर्भाग्यवस्तु या दुर्भाग्य होना
 —स बहुवर्ती विपयानामापुद्गलसम्भ—हि० १।३१
 3 विकलांग होना, अक्षत होना 4. प्रत्या, नष्ट होना
 —नाशवस्तव्या लोकास्तव्यनाया विपत्यसे—उत्तर०
 १।५४, मुच्य० १।३८, आ- 1 (पृथ्वी पर)
 उतरना, नीचे जाना 2 मरना, नष्ट होना—दे०
 व्यापन्न—(प्रेर०)—मारता, कलक करना,—अ- 1
 (तैयार होना) बाहर निकालना, लफ्फता प्राप्त
 करना, कम्बुड होना, सम्पन्न होना, दूर होना,
 —सपत्यते वः कामोद्य कामः कृषिचलतीकस्यान्
 —कु० २।५४, रघु० १।५७९, अनु० १।२५४, ६।६९
 2. दूर होना, (संख्या आदि) कुछ कर होना

व्याहृतः। मंत्र पद्यस्य संपद्यते ३ वन जाना, होना।
 वापस्यते नमस्ति भवतो राजहसा सहाया—मेष०
 ११, २३, संपदे श्रमसलिलोद्गमो विभ्रुधाम्—कि०
 ७।५ ४ उदय होना, जन्म लेना, पैदा होना ५ एक
 जगह पचना, एकन होना ६ मुक्तजित होना, लपक
 होना, स्वामी होना—अथोक्त यदि तद्य एव कुमुमैर्न
 सपस्यते—मालवि० ३।१६, दे० 'सपस्य' ७ (किंसी
 ओर) प्रदत्त होना, करवाना, पैदा करना (सप्र० के
 साथ)—साधो शिक्षा गुणाय लपद्यते नासाधो
 —पञ० १, मुद्रा० ३।२२ ४ प्राप्त करना, उपलब्ध
 करना, अधिग्रहण करना, हासिल करना ९ सलज्ज
 होना, लीज होना (अधि० के साथ)—(प्रेर०)—१
 करवाना, होना, पैदा करना, सप्यस्य करना, पूरा
 करना, कायान्वित करना—इति स्वमुनेजकुलप्रदीप
 सपाद्य पाणिग्रहण स राजा—रघु० ७।२९ २ उपायन
 करना, प्राप्त करना, संजित करना, तैयार करना
 अधिग्रहण करना, हासिल करना ४ संजित करना,
 सपय करना युक्त करना ५ बदलना, स्थानांतरित करना,
 ६ करार या वादा करना, सप्रति—१ की ओर जाना,
 पहुँचना २ विचार करना, छानना करना—कु० ५।३९,
 स्रवा १ षटित होना, होना पटना होना २ हासिल
 करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना ।

पव् (प०) [पद् + क्विप्] (इस शब्द का पहले पाँच बचनो
 में कोई रूप नहीं होता, कर्म० हि० व०, के पद्यत्
 विकल्प से यह पद के स्थान में आदेश हो जाता है)
 १ पैर २ चरण, चौपाई भाग (किंसी कविता या
 श्लोक का) । सम०—काशिम्व् (प०) पैदल चलने
 वाला,—हृत्तिः, शी(स्वी०) (पद्यति, —नी) रास्ता,
 पय, मार्ग, बटिया (आल० भी) इव हि रघु सिंहाना
 वीरवारिप्रपद्यति—उत्तर० ५।२२, रघु० ५।४६,
 ६।५५, ११।८०, कविप्रथम पद्यतिम्—१।३३, 'कवियो
 की दिक्षाया गया पहला मार्ग' २ रेखा, पंक्ति, शृङ्खला
 ३ उपनाम, बचानाम, उपाधि या विशेषण, व्यक्ति-
 वाचक सजा शब्दों के समाल में प्रयुक्त होने वाला
 शब्द जो जाति या व्यवसाय का बोधक हो—उदा०
 गुज, दास, दत्त आदि ४ विद्याहृदि विधि की सूचित
 करने वालो पुलक,—हिमम् (पद्यिम्) पैरो का
 टकणम ।

पवम् [पद् + अक्] १ पैर (इस अर्थ में प० भी होता है)
 पवम् पैदल—सिखरिप् पद म्यस्य—मेष० १३, अयथे
 पदमप्येति हि—रघु० ९।७४, 'कुमारों पर कदम रखना'
 ३।५०, १२।५२, पव हि सर्वत्र सुनिश्चीयते—३।६२,
 'पूषो के द्वारा सर्वत्र कदम रक्सा जाता है—अर्थात्
 गुणो की ही कद्र होती है, अन्यथा न पद पदमाधो
 —१।४ 'पैश में किसी भी दोग ने कदम नहीं रक्सा'

यदवधि न पद दधाति चिले—भासि० २।१४, पर्व ३
 (क) कदम रखना (शा०)—धाते कर्त्तव्यति पद
 पुनराश्रयेऽस्मिन्—श० ५।२५, (ख) प्रवृत्त होना, अधि-
 कार करना, कब्जा करना, (आल०) कृत वपुषि नव-
 यौवनेन पदम्—का० १३७, इत हि मे कुपुहलेन
 प्रस्तासकासथा हृदि पदम्—१३३, इसी प्रकार कु०
 ५।२१, पच० २४०, कृत्वा पद नो गते—मुद्रा० ३।२६,
 'हमारे बिरुद्ध' (सा०)—अपना कदम हमारी गर्दन पर
 रखकर), मूषिष्य वक् कु किसी के बिर पर चढ़ना, दीन
 बनाना—पञ० १।३२७, आकृति विशेष्यवादार पद
 करोति—मालवि० १, मुन्दर रूप प्यात आकृत्य करना
 है (आदर प्राप्त करता है)—जने मवीपद कारिणा
 —श० ४, (मिथ्या वा विश्वास का) बर्ताव कराना
 गया, धर्मण शर्वे पार्वती प्रति पद कारिते—कु० ६।१४
 २ कदम, पय, इम—तन्वी स्थिता कर्त्तव्यदेव पद्यानि
 गत्वा श० २।१२, पर्वे वहे हर कदम पर—असमाना-
 मदत्वा पदापदमपि न गदभ्यम्—या चरितव्यम्
 'एक कदम भी मत चलो' पितृ वद मध्यममूल्यतती
 —विक्रम० १।१९, 'विष्णु का विश्वास कदम' अर्थात्
 अन्तरीक्ष (पौराणिक मतानुसार पृथ्वी, अन्तर्गिष्ठ और
 पाताल यह तीनों लोक ही वामानाकार (पचम अव-
 तार) विष्णु के तीन कदम माने जाते हैं) इसी प्रकार
 —अथात्मन शब्दगुण गुणैर्न पद विमानेन विगाहमान
 —रघु० १३।१ ३ पदविष्णु पद—छाप, पदांक—पद-
 पक्ति—श० ३।८, या पदावली—पगछाप, पदमनु-
 विधेय च महता—भर्तु० २।२८, 'महाजनो के पदविष्णु
 पर ही चलना चाहिए' ४ विष्णु, अक, छाप, निमान
 —रतिवलमपदाके चापमामग्य कटे—कु० २।६४,
 मेष० ३५, ९६, मालवि० ३ ५ स्थान, अवस्था,
 स्थिति—अथोऽप पदम् भर्तु० २।१०, आत्मा परि-
 श्रमस्य पदमपनीत—श० १, 'कठ की अवस्था तक
 पहुँचाना'—नदलम्बपद हृदिसोकवने—रघु० ८।९१,
 'हृदय में स्थान न पाया' (अर्थात् हृदय पर छाप न
 छोटी),—अपदे शकितोऽस्मि—मालवि० १, 'मेरे सम्यह
 स्थान से बाहर थे' अर्थात् निगाहना—कृष्णकुटुंबेयु
 लोम पदममल—दश० १६२, कु० ६।७२, ३।४, रघु०
 २।५०, ९।८२, कृतपद स्तनयुगलम्—उत्तर० ६।३५,
 'स्तनयुगल विकासोन्मुख था' ६ मर्षादा, दर्जा, पद,
 स्थिति या अवस्था—भवत्वा प्रासिकपदमवसाहित-
 अम्—मालवि० १, याम्येव मुदिशीपदं युवतय—श०
 ५।१८, 'पदवी को प्राप्त करती है' सचिबे, राजे
 आदि ७ कारण, विषय, अवसर, वस्तु, मामला या
 बात—अयवहारपद हितत्—याज्ञ० २।५, इगद्रे की
 बात या अवसर, कानूनी दृष्टि से स्थानिक अधिकार,
 अदालती कार्यवाई—अता हि सदेहापदेय वस्तु प्रमाण-

2. पीछर, पल्लव 3. कमलों का समूह—सू० २।७३,
—आलम्बः जगत्प्रथा ब्रह्मा का विशेषण, (—वा)
लक्ष्मी का विशेषण, —आलम्बन् 1. कमल पीठ—कु०
७।८६, 2. एक प्रकार का योवासन—उत्कम्बे बामपाय
पुनस्तु दक्षिण पद, बामोटी स्वायम्बिवा नु पद्मासनमित
स्मृतम्, (मः) जगत्प्रथा ब्रह्मा का विशेषण, —आलम्ब
नीम्, —उद्बन्धः ब्रह्मा का विशेषण—आर, —हस्त विष्णु का
विशेषण (रा, — स्ता) लक्ष्मी का नाम, —कणिका पद्म
का बीजकोष, —कलिका कमल का अनलिता फूल, कली,
—केशरः—कम्बु कमलफूल का रेशा—कोष्, —कोषः
1 कमल का समुद्र 2 समुद्रित कमल के आकार की
उपलियों को एक मुद्रा, —संज्ञम्, —सम्बन्धम् कमलों
का समूह, —संघ, —सौष, (वि०) कमल की गणवाला
या कमल की सी गणवाला, —सार्ध 1 ब्रह्मा का
विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3 सूर्य का विशेषण,
—सुधा—सुधा पन की देवी लक्ष्मी का विशेषण,
—आल, —आल, —अम्ब, —नू, —सौमि, —सौभम् कमल
से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण, —समु कमल का रेशदार
डठल—माभ, —भि विष्णु का विशेषण—मालम्ब
कमल का डठल, —बाधि 1 ब्रह्मा का विशेषण
2 विष्णु का विशेषण, —पुष्प कनिकार का पौधा,
—संघ. एक प्रकार की कृत्रिम रचना जिसमें शब्दों को
कमल-फूल के रूप में व्यवस्थित किया हो—दे० काव्य०
१, —संघः 1 सूर्य 2 मधुमक्खी—राज, —सम्बु लाल,
सावित्र्य, रघु० १३।५३, १७।२३, कु० ३।५३, —रेखा
हृषेणो में (कमल फूल के आकार की) रेखायें जो
अव्यक्त धनधान् होने का लक्षण है, —संज्ञम् 1 ब्रह्मा
का विशेषण 2 कुबेर का विशेषण 3 सूर्य और
4 राजा का विशेषण (मा) 1 जन की देवी लक्ष्मी
का विशेषण 2 या विद्या की देवी सरस्वती का
विशेषण—बाता लक्ष्मी का विशेषण ।

पचकम् [पच + कन्] 1 कमलफूल के आकार की व्युत्-
रचना में स्थित सेना 2 हाथों की सूँड और चेहरे पर
रहीन स्थान 3 बँटों को विशेष्य मुद्रा ।

पचकित् (पु०) [पचक + इति] 1 हाथी 2 भोजपत्र
का वृक्ष ।

पचावती [पच + मसुप, चत्वम्, दीर्घश्च] 1 लक्ष्मी का
विशेषण 2 एक नदी का नाम— मा० १।१ ।

पचिम् (वि०) [पच + इति] 1 कमल रखने वाला
2 चित्तकवरा (पु०) हाथी—नी 1 कमल का पौधा
—दुरापच इव भिन्नत् पचिनी दत्तलम्बाम्—कु० ३।
७१, रघु० १५।८८, मेघ० ३३, मालवि० २।१३
2 कमलफूलों का समूह 3 सरोवर या झील जिसमें
कमल लगे हुए हों 4 कमल का रेशदार डठल
5 इतिनी 6 रतिपात्य के लेखकों ने लिखों के चार

शेद किये हैं उसमें प्रथम प्रकार की स्त्री, इनका लक्षण
रतिमञ्जरी में इस प्रकार दिया है—भवति कमलनेत्रा
नासिकासुन्दर्या अचिरलकुचयुग्मा चारुकेशी कृदायी
मृदुचनमुशीला पीतवाद्यानुरक्ता सकलतनुधुवेगा
पचिनी पद्यगाथा ।

पचोशब् [पचो गेते—गी +ञ्च्, अल० सं०] विष्णु का
विशेषण ।

पद्य (वि०) [पद् + यत्] 1 पद या पक्षियों वाला
2 चरण या पद को मापने वाला, —छ 1 गूढ़
2 शब्द का एक भाग, —छा पद्यही, पद्य, चटिया,
—छम्ब (चार चरणों से युक्त) श्लोक, कविता
—मदीपद्यारत्नाना भञ्जवीषा भया कृता—भाभि०
५।५५, पद्य अनुपदी तन्त्रे दूत जातिरिति द्विवा
—छ० २ प्रशस्ता, स्तुति ।

पद्य [पद्यतेऽस्मिन् पद् + रक्] गीर्ष ।

पद्य [पद् + यन्] 1 मूलोक, मयं लोक 2 रथ 3 मार्ग ।

पद् (स्वा० उभ०—पनापति—ने, पनायित या पनित)
प्रशस्ता करना, स्तुति करना—तु० 'पण' ।

पद्मसः [पनाप्यते स्तुयतेऽनेन देव—पद् + अत्च्] 1 कट-
हूल का श्व 2 कौटा, —सम्ब कटहल का फल ।

पद्मक (वि०) [पति जात—पतिपद् + कन्, पन्थादेश]
मार्ग में उत्पन्न ।

पद्म (भू० क० क०) [पद् + क्त] 1 गिरा हुआ, डूबा
हुआ, गीचे गया हुआ, अवतरित 2 बीना हुआ—दे०
पद् । सम०—सः मीप, सयं—विपकृत फलंग
फणा कुक्ले—शा० ६।३० (—सम्ब) सोसा, अचिर,
अश्रम, भासकः पद्य के विशेषण ।

पदि [पाति लोकम्—पदिति वा, वा + कि, द्विष्यम्]
चन्द्रमा ।

पदी. [वा + ई, द्विष्य किल्च] 1 चन्द्रमा 2 सूर्य ।

पदु (वि०) [वा + कु, द्विष्यम्] पालन-पोषण करने
वाला, रक्षा करने वाला, —दु (स्त्री०) धातों माता,
प्रतिपालिका ।

पंथा [पाति रक्षति महद्युधीन्—पा० शिवम् मुद्रायाम्बन्,
नि०] दहकारण्य का एक सरोवर—इद च पपामिधान
सर—उत्तर० १, रघु० १३।३०, अट्टि० ३।७३
2 भारत के दक्षिण में एक नदी का नाम ।

पपम्बु (पु०) [पच् + अमुप, वा + अमुप, इकारदेश्च]
1 पानी 2 दूध पय पान भूजगामा केवल विषयार्थेनम्
—हि० ३।४, रघु० २।३६, ६३, १५।७८, (यहाँ दोनों
अर्थ अभिप्रेत हैं) 3 शीय (हवा वर्षों से पूर्व पपम्बु
को बदल कर 'पयो' हो जाता है) । सम०—माल,
—इ 1 ओला 2 टापु, —कमम् ओला, —श्वः जलाशय
या सरोवर, —अलम्बु (पु०) बादल—इः बादल
—मेघ० ७, रघु० १५।२७, —सुदुम्बु (पु०) मीर

—हरः 1 बादल 2 स्त्री की छाती—पद्मपयोधरती
—गोल० १, विषादनिर्माकलया पयोधर—कि०
४१२३, (सर्प शब्द का अर्थ 'बादल' भी है)—रघु०
४१२२ 3 एत औषी—रघु० २।३ 4 नारिकेल का
पेड़ 5 रीठ की हड्डी,—बन्धु (पु०) 1 समुद्र
2 ताताब, सरोवर, जलाशय,—वि०,—विचः समुद्र,
रघु० २।७, नै० ४।५०,—बन्धु (पु०) बादल-रघु०
३।३, ६।५,—बाहू बादल,—रघु० १।३६, 1

पयस्य (वि०) [पयसो विकार पयस इधं वा-ययस
+पत्] 1 दूध से युक्त, दूध से बना हुआ 2 पानी
से युक्त,—स्वा० बिल्वो,—स्वा० दही।

पयस्कल (वि०) [पयस्+कलम्] दूध से भरा हुआ,
संपेठ दूध देने वाला,—स. बकरी।

पयस्कन्ध (वि०) [पयस्+श्विनि] दुधिया, जल से युक्त,
—औ० 1 दूध देने वाली गाय—रघु० २।२१, ५४, ६५
2 नदी 3 बकरी 4 गाय।

पयोधिकम् [पयोधि + धि + क] समुद्रनाम।

पयोष्णी (स्त्री०) विन्ध्यपर्वत से निकलने वाली एक नदी
(कुछ विद्वान् इसे वर्तमान 'ताप्ती' मानते हैं, परन्तु
'ताप्ती' को एक महायक नदी 'पुष्पा' ही जिसकी
'पयोष्णी' के साथ अभिज्ञता अधिक सम्भव प्रतीत
होती है)।

पर (वि०) [प०+अप, कर्त्तृणि अथ वा] (जब सापेक्ष
स्थिति बतलाई जाती है) इस शब्द के रूप विकल्प से
कर्त्त० मन्त्रो० अपा० और अधि० में सर्वनाम की
भाति होती है। 1 दूसरा, भिन्न, अन्य—दे० 'पर'
पु० भी 2 दूरस्थित, हटाया हुआ, दूर का 3 परे,
आगे, के दूसरी ओर—इलेम्बदेशस्तत् पर—मनु०
२।२३, ७।१५८ 4 बाद का, पीछे का, आगे का
(प्राय अपा० के साथ) बाम्पादादिभिर् दशो मदनो-
ऽप्युवास—रघु० ५।६३, कु० १।३१ 5 उच्चतर,
श्रेष्ठ, सिकताबादीपर परा प्रवेदे परमात्मताम्—रघु०
१।५२२, इन्द्रियाणि पराष्वाह—रिग्वेदेव पर मन,
मनस्तनु परा बुद्धिर्बुद्धे परतस्तु स—भग० २।४३,
6 उच्चतम, महत्तम, पूज्यतम, प्रमुख, मुख्य, सर्वोत्तम,
प्रधान—न त्वया इष्टव्याता परे दुष्टम्—म० २,
कि० ५।२८ 7 (समास में) आगे का वर्ण या स्मृति
रखने वाला, पीछे का 8 विदेशी, अपरिचित, अज-
ननी 9 विरोधी, मनुनापुत्रं, प्रतिकूल 10 अधिक,
अतिरिक्त, बचा हुआ जैसा कि पर शतम्—एक
सौ में अधिक 11 अतिव, आसौर का 12 (समास
के अन्त में) किसी वस्तु की उच्चतम पदार्थ समझने
वाला, कोन, तुला हुआ, अनन्यभक्त, पूर्णतः श्यत
—परिचरणीय—रघु० १।१९, इमी प्रकार 'ध्यातपर'
शोकपर, वैषपर, चिन्तापर आदि—रः 1 दूसरा,

व्यक्ति, अपरिचित, विदेशी (इस अर्थ में बहुधा ब०
ब०) जत परेषा गुणग्रहीतासि—आमि० १।९, सि०
२०।७४, दे० एक 'अप' भी 2 अनु, दुष्मन, रिपु
उत्तिष्ठमानस्तु परी मोक्षेय परपयिच्छता—शि० २।
१०, पञ्च० २।१५८, रघु० ३।२६,—रघु उच्चतम
स्वर या विन्दु, चरम विन्दु 2 परमात्मा 3 मोक्ष
विधो०—कर्म०, करण०, और अधि० के एक
वचन के 'पर' शब्द के रूप किया विशेषण की भांति
प्रयुक्त किये जाते हैं—अपत्ति (क) शरत् 1 परे,
अधिक, में से (अपा०), बार्धन परम् रघु० १।१७,
2 के पश्चात् (अपा०) अस्मात् पर—म० ४।१६,
तन परम् 3 उस पर, उसके बाद 4 परतु, सोभी
5 अन्यथा 6 अन्धी मात्रा में, अधिकता के साथ,
अवधिक, पूरी तरह से, सर्वथा—पर दुश्चिंतोर्ज्ञेय
—आदि 7 अव्यत (क) परेषा 1 आगे, परे, अपेक्षा-
कृत अधिक किया वृथो परेण विद्यास्थिति—म०
२।२ 2 इनके पश्चात्—सर्व तु कृतनिधाने कि विद-
ध्या परेष-महाभो० २।४९ 3 के बाद (अपा० के
साथ) स्तस्य त्यागत्परेण—उत्तर० २।७, (न) परे
1 बाद में, उसके पश्चात्—अथ ते दवाहते परे
—रघु० ८।७३ 2 अधिक्य में। सन्—अंशम्
शरीर का पिच्छला,—अवशः शिव का विशेषण,—अवश-
ज्वर या पणिया के देसों में पाया जाने वाला बीबा,
—अश्वीन (वि०) पराधीन, अपरिचित, परबल, मनु०
१०।५४, ५३,—अस्ता (पु०, ब० ब०) एक राक्षस का
नाम,—अस्तकः शिव का विशेषण—अस्त
(वि०) दूसरे के भोजन पर निर्वाह करने वाला (अन्व)
दूसरे का भोजन 'परिपुच्छता दूसरों के भोजन में
पालन-पोषण यात्र० ३।२४ 'भोक्षिन् (वि०)
दूसरों के भोजन पर निर्वाह करने वाला
हि० १।१३९,—अवर (वि०) 1. दूर और किकट,
दूर और समीप 2. पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती 3. पहले
और बाद में, पहले और पीछे 4. ऊपरी और नीचा,
सबसे उत्तम और सबसे खराब—(रघु०) (तर्क० में)
महत्तम और कल्पितम सत्पात्रों के बीच की वस्तु,
जाति (जो भौषी और व्यक्तित दोनों के मध्य बिद्यमान
हो)।—अनुत्पन्न बुद्धि,—अव्यय (अयत्न) (वि०)
1 अनुत्पन्न, अन्न, ससक्त 2. आप्तित, कसीभूत
3. तुला हुआ, अनन्यभक्त, सर्वथा कोन (समास के
अन्त में)।—अग्रभूतपरगायत्र—मनु० २।५६, इमी
प्रकार—शोक" कु० ४।१, अग्निहोत्र आदि—(अन्व)
प्रधान या चरम उद्देश्य, मुख्य ध्येय, सर्वोत्तम या
अन्तिम साहाय—अर्थ (वि०) दूसरा हो उद्देश्य वा
अर्थ रखने वाला, 2. दूसरे के लिए अभिप्रेत, अन्य
के लिए किया हुआ—(अन्व) 1. सर्वोच्च हित या

साय 2. किती दूसरे का हित (वि० स्वार्थं) —
 'स्वार्थो यस्य परार्थ एव तं पुनरेकः सतामसीथी —
 बुधा०, रघु० ११२९ 3. मूक्य अर्थ 4 सर्वोच्च
 उपेय (अर्थात् मंडन) — (अर्थ, अर्थ) दूसरे
 के लिए — अर्थ 1. दूसरा भाग (वि० पूर्वार्थं)
 उत्तरार्थं—विनत्य पूर्वार्थपरार्थभिन्ना छायेव मेनी
 कलसम्बन्धात्—मत्त० २१६ 2. विशेष रूप से
 बड़ी सख्या अर्थात् १००,०००,०००,०००,०००,०००,
 एकत्वादि परार्थपर्यन्ता सख्या—सर्क०, —अर्थ (वि०)
 दूसरे किनारे पर होने वाला 2. सख्या में अत्यंत दूर
 का—हेमता कलन्दात्परार्थं—सूत० 3. अत्यंत श्रेष्ठ,
 सर्वोत्तम, परम श्रेष्ठ, अत्यंत मूल्यवान्, सर्वोच्च,
 परम—रघु० ३१२७, ८१२७, १०३१४, १६३१९ सि०
 ८१४५ 4. अत्यंत कीमती—सि० ४११९ 5 अत्यंत
 कुत्तर, शिवतम, मनोज्ञतम—रघु० ६१४, सि० ३१५८,
 —अर्थ (वि०) 1. दूसरे और निकट 2. संवेरी और
 संवेरी 3. पहले का और बाद का या आगामी 4
 उच्चतर और निम्नतर 5 परंपराप्राप्त—मनु०
 ११०५ 6 सर्वसम्मिलित, —अर्थ: दूसरे दिन,—
 अर्थ: तीसरा पहलू, दिन का उत्तरार्ध भाग,—आश्वि
 (वि०) दूसरे द्वारा पाला-पोसा हुआ (स) दाल,—
 भाष्य (प०) परमात्मा,—आश्वि (वि०) दूसरे के
 अधीन, पराधीन, पराधीन—पराधीन श्रेष्ठ कर्षादि
 रस देतु पुरुष—मद्रा० ३१४, आश्वि (प०) बह्ना
 का विशेषण,—आश्वि: 1 कुत्तर का विशेषण
 2 विष्णु की उपाधि,—आश्वि: आश्वि परावलम्बन
 दूसरे की अधीनता,—आश्विन् (प०) चीर, लुट्टा,
 —इतर (वि०) 1 शत्रुता से विन्य अर्थात् मंत्रो
 पूर्ण, कुपल 2 अपना, निर्भो—कि० १११४,—ईश
 ब्रह्मा का विशेषण,—अर्थ: दूसरे की मूर्द्धि,—अप-
 काट: दूसरो को भलाई करना अनर्हित्विता, उदारता,
 धर्मात्—सरोपकार पुण्या पापम परपीडनम्,—अप-
 काय: शत्रुओं में कूट डालना,—अपकाय: (वि०) मनु
 के द्वारा बेरा हुआ,—अपका दूसरे की पत्नी,—एविल
 (वि०) दूसरे द्वारा पाकित-योचित (स) 1 सेबक
 2. कोयल,—कलकम्प दूसरे की पत्नी,—अभिमानम्
 स्वभिचार—हि० ११३५,—काम्य दूसरे का व्यवसाय
 या काम,—काम्य 1 दूसरे का शरीर 2. दूसरे का
 श्रेय—मनु० ९१४९ 3. दूसरे की पत्नी—मनु० ३१
 १७५,—नायिन् (वि०) 1 दूसरे के साथ रहने
 वाला 2 दूसरे से सबक रखने वाला, 3 दूसरे के
 लिए लाभदायक,—अधि: (अंगुली आदि का) जाट,
 गांठ,—अध्व 1 मनु की सेना, 2. मनु के द्वारा
 आक्रमण ६ ईतियों में से एक,—अध्व: दूसरे की इच्छा,

—अनुमानम् दूसरे की इच्छा का अनुमान करना,
 —अध्वम् दूसरे की हथभोरी, दूसरे की मूर्द्धि—जात
 (वि०) 1. दूसरे से उपज्ज 2. अधिक के लिए
 दूसरे पर आश्रित (स) सेबक,—अध्वित (वि०) दूसरे
 से जैता हुआ (स) कोयल,—अध्व (वि०) दूसरे पर
 आश्रित, पराधीन, अनुसेवी,—आरा. (प०, प० व०)
 दूसरे की पत्नी,—आरिन् (प०) स्वभिचारी, परस्त्री-
 गामी,—अश्वम् दूसरे का कूट या दुग्ध—विरल
 परदुःखुचितो जन, महर्षिण परदुग्ध शीलसम्प-
 गाहू—विक्रम० ४११३,—अश्व विदेश,—अश्विन् (प०)
 विदेशी,—अश्विन्—अश्विन् (वि०) दूसरो से पूजा
 करने वाला, विरोधी, शत्रुतापूर्ण,—अश्वम् दूसरे की
 सर्पिन,—अश्व 1 दूसरे का धर्म—स्वधर्म विधान श्रेय
 परधर्म भगावत—अश्व० ३१३५ 2. दूसरे का कर्मण्य
 या कार्य 3 दूसरी जाति का कर्तव्य—मनु० १०

९७, निपात समास में शब्द की अनियमित पद-
 र्थिता अर्थात् भूलपुत्र यहाँ जय है 'पूर्व भूत' इसी
 प्रकार राजपत, अर्थात् अश्वि आदि,—अश्व: अश्व का
 दल या पक्ष,—अश्वम् 1 उच्चतम स्थिति, प्रमुखता
 2 मोक्ष—अश्व दूसरा का भोजन, दूसरो से दिया गया
 भोजन अर्द्ध (वि०) वह जो दूसरो का भोजन करे या
 जो दूसरे के श्वं पर भोजन निर्वाह करे (प०) सेबक,
 रत (वि०) दूसरे के भोजन पर पकने वाला,—अश्वम्.
 1. दूसरा मनुष्य, अपरिचित 2. परमात्मा, विष्णु
 3. दूसरी स्त्री का पति, बुध (वि०) दूसरे के द्वारा
 पाला पोसा हुआ (—अश्व) कायल—अश्विस्त्व. आम का
 मूल,—अश्व 1 कोयल 2 वेदगा, रडी, —पूर्वा वह
 स्त्री जिसका दूसरा पति है,—अश्व मेवक, श्रेष्ठ
 नोकर,—अश्वम् (मनु०) परमात्मा, —आम. 1 दूसरे
 का हिन्सा, 2 श्रेष्ठ मृग 3 मोक्षार्थ, सम्पत्ति 4

(क) सर्वोत्तमता, श्रेष्ठता, सर्वोत्तमता—दुर्गधम्य
 परभागे वास्तुव्यवस्था पीठम न क्लमम्—पच० ११३३०,
 ५१३४, (स) अधिकता, बाहुल्य, ऊँचाई—अश्वकमन्-
 गजन मम दुदधश्चन—अनिरतरित्करभगम्—वित०
 १०, आभाति लक्ष्यभारभारतवाशरोप्ये—रघु० ५१७९,
 कु० ७११७, कि० ५१३०, ८१४२, सि० ७३३३, ८१४१,
 १०८६,—आभा विदेशी भाषा,—अश्वत् (वि०) दूसरे
 के द्वारा भोगा हुआ,—अश्वत् (प०) कौषा (क्याकि
 यह दूसरे का)—अश्वत् कोयल का पालन-योग्य
 करना है)।—अश्वत्—सा कोयल (शयोक्ति यह दूसरे
 के द्वारा अर्थात् कौषे से पाली पोसी जाती है) तु०
 सं० ५१२७, कु० ६१७, रघु० ९१४३ म० ४१६,
 —अश्वत् कौषा,—अश्वत् विवाहित स्त्री का याग या
 आरा—पच० ११८०,—अश्वत् दूसरा (आगामी)
 दुनिया—कु० ४११०—कु० ४११०—अश्वि: अश्वेष्टि

सम्कार, -वश -वश्य (वि०) दूसरे के अधीन, परा-
धिन्, -बाधयम् दीय या वृत्ति, -बाधि 1 न्यायकता
2 परं 3 कर्ताकेव के मार का नाम, -बाधः 1
अपराध, जनश्रुति 2 आपत्ति, विचार -बाधिम् (पु०)
मगडाल विवादी, -वत, धनराष्ट्र का विगणन,
-वसम् (अथश०) परमो (प्राणामी), -सत्त्व आत्मा
-स्वर्ण (वि०) (अण० में) अपवर्णों वर्ण का
मन्त्राण्य, -सेवा दूसरे को मन्त्रा, -स्वी दूसरे को पत्नी,
-स्वम् दूसरे का मन्त्रिन् -रघु० १।२०, मन०
७।१२३ हरणम् दूसरे को सर्पात् इर केना, हन्
(वि०) मन्त्रा का मारने वाला -हितम् दूसरे का
प्रता।

परकीय (वि०) [परम् इदम् -पर + क्, कुर्] 1 दूसरे
के मन्त्रण करने वाला -अर्थो द्वि कृत्वा परकीय एक
-श० ६।२१, मा० ६।२०१ -वा दूसरे की पत्नी,
वा अरवी वटा नासिकामो के तोल मुक्क प्रकारो में
मे एक -द० 'अभ्यर्थो' और मा० द० १०८।

परज (पु०) 1 नेत्र बान्ध 2 लक्ष्मण का फल।

परजन, परजा [परया परिजनमया दिवाजन स्वामी
नि०, पर + जि + अच्, मज्] बन्ध का विशेषण।

परत्त (अथश०) [पर + त्तम्] 1 दूसरे से -भक्ति
१।२० 2 गन्ध मे रघु० १।१८ 3 आगे, अपेक्षाकृत
अधिक, पर वाद, ऊपर (प्राय अरा० क. नाव)
-वृद्ध परतत्तु म -भग० १।१८ 4 अन्यथा 5
मित्र प्रकार म।

परत्र (अथश०) [पर + त्र] 1 दूसरे लोक में भावी जन्म
से -पञ्चम व शर्मणे रघु० १।६९, कु० ६।३७, मनु०
१।२३५, ५।१६६ ८।१२३, उत्तर भाग मे आगे या
बाद मे : जाने बाद गमय मे, भविष्य मे। मम०
-भीह परत्रार के अर म रिश्तम है, घषट्ना
पुस्य।

परतप (वि०) [परान् उपन्त् ताः पर + तप + पिच्
+ वच्, हृत्, मृच् व] दूसरा वा मन्त्रा के वाला,
अपने मन्त्रा का इमन करने वाला भग० ६।२,
रघु० १।५३, प. पुत्रवांग, विज्ञेता।

परम (वि०) [पर परम् मानिक ना०] 1 कूटतम,
अन्तिम 2 उच्चतम सर्वोत्तम, अग्रत श्रेष्ठ, महत्तम
-प्राप्तोनि परमा तन्मि मनु० ५।११, अ१,
२।१३ 3 मुख्य प्रधान, प्राथमिक, सर्वोपरि मत०
८।३०२, ९।३११ 4 अन्त्यधिक अन्तिम 5 श्रेष्ठ,
परोप, -सम् सर्वोच्च या उच्चतम मुख्य या प्रमुख
भाग (समाय के अन्तरे), प्रधानतया युक्त, पूर्णत
मन्त्र -नामोभोकारमा एतद्विद्वि निरिपना
भग० १।६११, मनु० ६।१६, -सम् (अथश०) 1
स्वीकृतिबोधक, अस्वीकार या सहृपति बोधक, अन्ध

(अच्छा, बहुत अच्छा, ही, ऐसा ही) 1 त परम्
सित्युक्ता प्रमथ्ये मुनिमदलम् -कु० ६।३५ 2 अत्य-
धिक, अत्यन्त परम्कुड् आरि०। सय० -अग्रता
श्रेष्ठो -अनु अत्यन्त, अत्यन्तता का अर्थ -रघु०
१५।२२, परम्ण परमाणुं परतीकृत्य निर्ययम् -भर्तु०
२।३८, पृथ्वी निधा परमाणुक्ता -तक० (परमाणा
की परिभाषा - जालातरगत रेखी यस्मिन् दृश्यते
रज, तस्य विशतमो भाग परमाणु स उच्यते।)

-अद्वैतम् 1 परमात्मा 2 विद्वद् एकेस्वरवाद,
-अग्रम् चीर, दूध में पके हुए बादल, -अर्थ 1
सर्वोच्च या तितान अलौकिक सत्य, वास्तविक आत्म-
ज्ञान, ब्रह्म वा परमात्मसंबंधी ज्ञान -रघु० ८।२२,
महावी० ७।२ 2 सचाई, वास्तविकता, आन्तरिकता
-परिहासविज्ञलित सत्त्व परमाणुं न बुद्धता
वच -श० २।१८, (प्राय समास में प्रयुक्त
हूकर 'पर्य' 'वास्तविक' अर्थ प्रकट करता है)
'मन्त्रा -रघु० ७।१८, महावी० ५।३०
3 कोई श्रेष्ठ या महत्त्वपूर्ण पदार्थ 4 सर्वोत्तम अर्थ,
-अर्थत (अत्य०) सचमुच, वस्तुतः, पथापंत,
मन्यत -विकार रवतु परमाणुतोऽज्ञानाज्ञारभ
प्रतीकास्य -श० ४, उवाच चैत परमायती इर
न येमि नून घन एवमाथ माम् -कु० ५।३५, पच०
१।१३६ -ब्रह्म श्रेष्ठ दिन, -आत्मन (पु०) सर्वोपरि
आत्मा या ब्रह्म, -आपव (स्त्री०) अथवा भारी मकट
या दुर्भाग्य ईश विष्णु का विशेषण, 2 इष्ट की
उपाधि 3 शिवका विशेषण 'सवगन्निमान् पर-
मात्मा का विशेषण, -कृषि उन्चाकोटिका कृषि,

ऐश्वर्यम् सर्वशक्तिमता, सर्वोत्तरता, -मति (स्त्री०)
मोक्ष, निर्वाण, -गवः श्रेष्ठजाति का बैल या गाय,
-परम् 1 सर्वोत्तम स्थिति, उच्चतम दर्जा 2 मोक्ष,
-पुस्य, -पुष्य परमात्मा, प्रस्य (वि०) प्रसिद्ध
विख्यात, ब्रह्मन् (पु०) परमात्मा, -हृत्, उच्चतम
कोटि का सत्यम्, वह जिससे भावात्मक समाधि
के द्वारा अपनी इन्द्रिया का दमन करके उनको बन्ध
मे कर लिया है -तु० कुटीरक।

परमेष्ठ [परम इष्टम्] ब्रह्मा का विशेषण।

परमेष्ठिन (पु०) [परमेष्ठ + इति] 1 ब्रह्मा की 2 शिव
की 3 विष्णु की 4 ब्रह्म की 5 श्री अग्नि की
उपाधि 6 कोई भी आध्यात्मिक गुरु।

परपर (वि०) [परपिपति पु + अच्, अल० म०] 1 एक
के बाद दूसरा 2 पूर्वोत्तर, उदाहरण -र प्रपीत्र,
-रा 1, अर्धचिह्न, शृंखला, निर्दिष्ट मिलमिला
आनुपूर्व, महत्त्व मुख्यसंबंधपरमा -का० १०२,
कर्णपरपरवा एक कान से दूसरे कान में मुन मुना
कर, परपरवा आणम् 'निर्दिष्ट परपरवा के क्रम से

प्राप्त होना' 2 (नियमित बस्तुओं की) पक्ति, कार, सग्रह समूह-तोषागतभारिकारोव रेजे म्नि परपर-कु० ६१५, रघु० ६१५, ३५, ४०, १२१५०
3. प्रयागी, कम, मुख्यवस्था 4 वषा, कुटुब, कुल 5 क्षति, बोट, मार्ग डालना।

परंपराक (वि०) [परंपरया कयेन प्रकाशने- कं + क]
वक्ष में पद्य का वक्ष करना।

परंपरीय (वि०) [परंपर + य] उत्तराधिकार में प्राप्त, आनुवंशिक लक्ष्मी परंपरीया स्व पुत्रवर्षीयता नय-भट्टि० ५११५ 2 परंपराप्राप्त।

परम्पु (वि०) [पर + मनुष्य मय्य व] 1 पराधीन, दुम्ने के वक्ष में, आशापालन के म्नि तम्पु-सा बाबा परखनीति में बिलिन्-शा० ३१२, भगवन्तग्वानय जन-रघु० ६१६१, २१२६, (प्राय कण्ठ० या अचि० के साथ) आशा यदियत् परवानमि न्व रघु० १६१५ 2 क्षिन्ति मे वदिति नि शक्य परवानित्त शरीरोपलायेन-मा० ३ 3 पूर्वोक्त में (दुम्ने के) अधीन या स्वय अपना स्वामी न हो, विजित, परामुत्-विम्वयेन परवानस्मि-उत्तर० ५, भावदेन परवानस्मि-उत्तर० ३, साधवेदेन-मा० ९।

परभक्ता [परभत् + तल् + टात्] दूसरे की अधीनता, पराधीनता, विक्रम० ५११३।

परसा [स्पर्शनि इति पुरा०] गार्ग्यमणि जियके म्णा न्ने, कहा जाता है कि लाडा जाति दूसरी धानुर्गे सोना वन जाने है, मखवन यह दाशनिवा का पा-म-कथर है।

परशु [पर शृणति-शु + कु डिञ्च] कुहाडा, कुहाडी, कुटार फरमा-भूजित परशुवाग्वा मम-रघु० ११।

७८ 2 गम्भ, हयिपार ३ वक्ष। मम०-धर 1 परशुराम वा कियोप 2 गणेश की उपाधि 3. कुटाग्यारी मीनर.- राक्ष कुटाग्यारी गम' एक विख्यात शास्त्राग्यादा जो जमदग्नि का पुत्र और विष्णु का छोटा अन्तराध या (दुम्ने अपनी बालन-कम्पा में ही अपने पिता की आजा से जब कि उनके भाइया में से कोई भी निवार न हुआ, अपनी नाना रेणुका का शिर काट डाला-२० जमदग्नि। उनके परशु एक बार गजा हातवोयें, जम्दग्नि के आश्रम में आये और उसकी की की मालकर ले गये। परशु धर आने पर जित समय परशुराम को पता लगा तो वह बानेवीय से लडा और उसे मय-उक्त पर्वदा दिया। जब कार्वावीय के पुत्रा न मृना तों वह डटे कूट हुए-कवन मे आश्रम में आये और आ-मि की अकेला पाकर उसे मार लडा। अब परशुराम को कि इस पटना के समय आश्रम में नृत्ता था, शपिष आया, तो अपने पिता के वक्ष का मयावार

मुन आयेन क्षुब्ध हुआ उसी समय उसने समस्त क्षत्रिय जाति का उन्मूलन करने की योजना प्रतिष्ठा की। वह अपनी इस प्रतिष्ठा की पूरा करने में सफल हुआ, करते हैं कि उसने इस पृथ्वी का इकोस बार क्षत्रिय जाति से सफल किया। बहु क्षत्रिय जाति का नाशकर्ता बाद में दशरथ के पुत्र राम के द्वारा जब कि वह केवल मोल्ह ही बा के ये (२० रघु० ११। १८, ११) परास्त किया गया। कवन है कि क्षत्रियके की क्षति मे ईर्ष्या होने के कारण उसने श्रीव पूर्वन को भी एक बार तौरों में बीच दिया-तु० मध० ५७, मात विराडीविषी में इनकी भी गिनती है, विव्काम किया जाता है कि परशुराम अब भी महेन्द्र-पूर्वत पर बैठ लपस्था कर रहे है-तु० गीत० १, क्षत्रियक्षत्रियमये जगदशमताप म्पयमि यमिनि भयिनि-भवनापम, केवध धनभृगुपतिव्य जय जयवीरा इरे ॥

परश्व (स्व) ध [पर + शिव + उ परश्व, तदध्यानि-धा + क, नि० अथ सवम्भुं कुहाडी, कुटार, फरमा-धारा गिता रामप-इवयय म्भाविययत्पल-पदसागरम-रघु० ६१४०।

परशु (अव्य०) [पर + अग्नि] (श्रेण्य मन्मूल में इसका म्मूल्य प्रयोग विवल् १) परे, अग्नि भी 2 दुम्ने के दुम्ने की ओर 3 दूर, दुरी पर 4 अपवाद रूप मे। मम०-कुण्ठ (वि०) अग्नित ताया, -तुषण (वि०) मनुष्य ने लडा या ऊँचा-शात (वि०) सौ मे शिक-कि० १३१२६ मि० १२१५०-शम्भु (अव्य०) आगामी परसा, सहाक्ष (वि०) एक हजार में अक्षि-पर मन्मः लम्पुनर्गनि ल-व-उत्तर० १११५, वर मन्मः विचारने-मन्मः ० ५११३।

परशुतत् (अव्य०) [पर-+ अग्नि] 1 परे, के दूरपर आर, और आगे (स्व० के साथ)-आदिपदवर्ण नमम परम्मान्-भग० ८१ 2 दुम्ने के लच्छानु, वाः बाट में 3 अपेक्षाकृत ऊँचा।

परश्वर (वि०) [पर पर इति विषये समासवद्भुवे पुव-पदस्य मु] आश्रम मे- परश्वरा विम्वयर्त्ति १२मी-मानाक्यायकृत्रिवादरेण भट्टि०-१५, (सर्व० वि०) अयोध्या, एक दूसरा (बबल ०० व०, में प्रथमत-प्राय मवास में) परश्वरम्भापर परश्वरित-२७० २१०६, ३१३५, विज्जापपरश्वर-अधमर् २७५५१, परम्पराशिसाव-धम- ११४०, २१०६, वि०० एक दूसरे के विरुद्ध आश्रम में एक दूसरे में पर दूसरे के द्वारा उन्मूलन के रूप में आश्रम में जादि रवा की प्रकट करने के लिए उस प्रकट के मम० म्मण० भी-आ० के म ववन र म्म किमाविशाय की भांति प्रयात होते हैं द० मम० ३१११, १०१९, रघु० ६१७२, ६१६६, ३११७, ५१, १२११४।

परस्मैपदम्, परस्मैनाथा [परस्मै पराम् पद भाषा वा]
दूसरे के लिए प्रयुक्त वाच्य, किया के दो रूपों में से
(परस्मै तथा आत्मने) एक जिसमें कि सस्कृत की
धातुओं के रूप चलते हैं ।

परा (अथ०) [पृ + अच् + टाप्] 'दूर' 'पीछे' 'उल्टे कम
से' एक ओर 'की ओर' अर्थात् को प्रकट करने के
लिए धातु या मन्त्र में पूर्व लगने वाला उपसर्ग ।
गण० के अनुसार 'परा' के अर्थ निम्नलिखित हैं
—1 मार डालना, आघात करना आदि (पराहत)
2 जाना (परागत) 3 देना, मामना करना (परा-
वृट्) 4 पराक्रम (पराक्रान्त) 5 की ओर निदेश,
(परायण) 6 आधिक्य (पराजित) 7 पराधीनता
(पराधीन) 8 उदार, मुक्ति (पराकृत) 9 प्रतीपक्रम
पीछे की ओर (पराङ्मुख) 10 एक ओर रज देना,
अवहेलना करना ।

पराकरणम् [परा + कृ + क्त्वं] एक ओर रज देने की
किया अस्वीकार करना, अवहेलना करना, निरस्कृत
करना ।

पराक्रम [परा + क्रम + घञ्] 1 शूरीयता, बहादुरी,
साहस, शीघ्र पराक्रम परिशेषे-वि० २१६६ 2 खिरोधी
अभिमान करना, आक्रमण करना 3 प्रयत्न, कोशिश
उद्योग 4 विघ्न ५ नाम ।

पराग [परा + गम + ङ] कुपराग, —स्फुटपरागप-
रागपरागतम् वि० ६१० अमर ५६ २ वृत्ति-रघु०
८३० ३ स्नात के पदवात् मेवम किया जाने वाला
मुगधित वृत्त ४ ऋतन ५ मृगं वा चन्द्रमा का घटण
६ घण, प्रसिद्धि ७ स्वाधीनता ।

पराशब् [पराग प्रचरगोर् वाति प्राप्नोति—वा + क]
ममूद्र ।

परा(रा)च् (वि०) (स्त्री० चै) [परा + अच्
+ क्त्वं] १ परे या दूसरी ओर गित, ये चामुण्डा-
पराशो लाका छा० २ मूह मोड कर (पराङ्मुख)
वि० १८१८ ३ ओ अनुकूल न हो प्रतिकूल-देवे
पराधि आर्मि० १११०५ या—३३३ परावदनशास्त्रिनि
हृत जाते-३१७ ४ दूरस्थ ५ बाहरकी ओर निदेशिता
सम०—मुख (वि०) (पराङ्मुखीनन्दनेनुमबला
मनावरे—रघु० १९१३६, अमर ९० मन्० २१९५,
१०१११९ २ (क) विमुख, उलट-मानुने केवल
स्वभावा शिषोऽशासोन् पराङ्मुख—रघु० १०१३३,
(ख) उदासीन, कनगने वाला, टाल जाने वाला
—प्रवृत्तिपराङ्मुखो माव—विक्रम० ४१०, वा०
५१०८ ३ प्रतिकूल, अनुकूल—ननुगवि म ने दासोऽ-
स्माक विधिस्तु पराङ्मुख—अमर ७७ ४ उपेक्षा
करने वाला—मण्डव्याप्यापराङ्मुख—रघु० १०१४३ ।
पराधीन (वि०) [पराच् + ल] विक्रय दिसा में मुद्रा

हुआ, विमुख २ पराङ्मुख, अक्षि रखने वाला ३
पराङ्मुख न करने वाला, उपेक्षा करने वाला ४ बाय
में होने वाला, उत्तरकालप्रव ५ दूसरी ओर स्थित,
परे होने वाला ।

पराशब् [परा + जि + अच्] १ परास्त करना, विजय,
जीतना, अधीनीकरण, हार—रघु० १११९, मनु०
३११९२ परास्त होना, सहन करने के योग्य न
होना (अपा० के साथ) अध्ययनात्पराशब् ३ हारना,
हार, असफलता (मुकदमे आदि में) अन्वधावादिनी
(साक्षिण) यन्म धूषणस्य पराशब्—याज्ञ० २।७९
४ पदचयान्, बचना ५ परित्याग ।

पराजित (भू० क० कु०) [परा + जि + क्त] जीता
हुआ, बय में किया हुआ, हराया हुआ २ कानून
द्वारा दक्षिण, (मुकदमे में) हारा हुआ, पछाड़ा हुआ ।

पराज (घ) सा [वरा + अच्] + अस + टाप्] अधि-
धीय विकसिता, बैठ, हकीम या डाक्टर द्वारा इलाज,
बैठ का व्यवसाय ।

पराशब् [परा + भू + अच्] १ (क) हार, असफलता,
पराजय—पराभोज्युत्सव एव मानितान्—कि० ११४१
(ख) मानभंग, मानघटन, प्रतिष्ठाभंग—कुबेरस्य
यत् शस्य प्रसमीय पराशब्म् कु० २।२२, तत्
पदपल्लववैपिपराशब्मिदयन् भवतु सुवेदम्—गीत०
१२ २ धृता, अवहेलना, तिरस्कार ३ विनाश ४
लाप, धियाण (कभी-कभी 'पराशब्' भी किया
जाता है) ।

पराभूति (स्त्री०) [परा + भू + क्त्वं] दे० 'पराशब् ।

पराभर्ग [परा + भृ + ञच्] १ पकड़ लेना, लीजना
जैसा कि केशपराभर्ग में २ झुकाया या (धनुष)
का गानका ३ हिंस, आक्रमण, हमला—याज्ञस्य
पराभर्ग महा० ४ बाधा विघ्न-तत् पराभर्गकि-
वृद्धमयो कु० ३।७१ ५ घृान करना, प्रत्याभरण
६ विचार, विमर्श, चिन्तन ७ निर्णय ८ (नर्क० में
पठाना, निषेध करना कि अपना पक्ष वा विषय सहे
तुक है—व्याप्तिविहित पक्षधर्मज्ञान पराभर्ग—नर्क०
या-व्याप्तस्य पक्षधर्मत्वधी पराभर्ग उच्यते
भाषा० ६६ ।

पराभृष्ट (भू० क० कु०) [परा + भृ + क्त] १ छुड़ा
गया, हाथ लगाया गया, दबोचा गया, पकड़ा गया
२ कृपा व्यवहार किया गया, दुर्ब्यवहार किया गया
३ लोभा गया, बिचार किया गया, कृता गया ४
सहन किया गया ५ सबड ६ (रोग से) प्रसूत—दे०
परा पूर्वक 'मश' ।

परारि (अथ०) [पूर्वतरे बन्धने इत्यर्थे परभाष आदि च
सवत्सरे] पूर्वतरे अर्थ में, विगतवर्ष में, परिहार माल ।
पराशब् दे० 'परा' (परा + अच्) के नीचे ।

परावर्तः, परावृत्ति [परा + वृत् + घञ्, क्तिन् वा] 1 पीछे मुड़ना, वापसी, प्रत्यावर्तन 2 अदल-बदल, विनि-मय 3 पुनः प्राप्ति 4 (कानून में) दण्ड या सजा की उलट-मलट ।

परावारः, [परान् + आशुवादिन्] वृ + अच्] एक प्रसिद्ध धृति का नाम जो व्यास के पिता तथा एक स्मृति-कार थे ।

परासम् [परा + अस् + घञ्] रागा, टील ।

परासनम् [परा + अस् + स्फुट्] वध, हत्या ।

परासु [बि०] [परागता असमां वस्त् प्रा० व० सं०] निर्जीव, मृतक, प्राक् परासुविशामय न्यु० १५। ५६, ११३८ ।

परास (पू० क० कृ०) [परा + अस् + क्त] 1 फेका हुआ, डाला हुआ 2 निकाला, निकाला हुआ 3 अन्वीकृत 4 निराकृत, शून्य 5 डरवाया हुआ ।

परास्त (पू० क० कृ०) [परा + हृन् + क्त] 1 पटका हुआ, पछाड़ा हुआ 2 पीछे हटाया हुआ, पीछे डकेला हुआ, सम् प्रहार, आघात ।

परि (अभ०) [पृ + हृन्] (कभी-कभी बदलकर 'परी' भी हो जाता है, जैसे कि 'परिवाह' या 'परीवाह', परिहास या परिहास में) यह उपसर्ग के रूप में जाना या समझा जा सकता है जो पूर्व लयकार निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है 1 (क) चारों तरफ, इधर उधर, इतिवृत्ति (ख) बहुत, अत्यन्त 2 पर्यावरणों अथवा (सब० बाध०) के रूप में निर्माणात् अर्थ है (क) की आग की विधा में, की लम्ब, के सामने (कर्म० के साथ) वृत्त परि विशेषणिते विद्युत् (ख) क्रमशः, अलग-अलग (कर्म० के साथ) वृत्त वृत्त परि मिश्रित, 'कर एक वृत्त से दूसरे वृत्त का योजना है' (ग) हिम्मे में, भाग्य में (कर्म० के साथ) यद्यपि या परि व्याप्त 'जो मेरे भाग्य में रहा हो', लक्ष्मीहोत्र-परि—विद्वान् (घ) मेरे में से (ङ) विधाया (अप० के साथ) परि शिवरत्नयो बृहती दय या—पयनशान् ब्रह्मस्थाप—बाण० (च) बोल जाने के बाद (छ) उल्लंघनक 3 क्रिया विशेषण उपसर्ग के रूप में समझा जा सकता है यह कर जब कि क्रिया से सीधा संबंध न हो, 'यहून्' अति' आत्यधिक' अत्यन्त' आदि अर्थ प्रकट करता है जैसा कि पर्ययु (असु बरकता) में इसी प्रकार परिचरुद्वैतान् परिद्वैतैव्य 4 अत्यधिकभाव 'समाप्तो मे पूर्व परि' का निम्नांकित अर्थ होता है (क) बिना विधाया के बाहर, इसको छोड़ कर जैसा कि परिश्रितयो बृहती देव—पा० १।१।१२, १।२।३३, पा० २।१।१० के अनुसार परि' अस्त, धाकाया या सत्या शायक ऋषे के पश्चात् अत्यधिकभाव समाप्त के अन्त में प्रयुक्त होता है यदि पास उलट

जान के कारण या दुर्भाग्यवशात् हार या पराजय हो जाय (वृत्तव्यवहार पराजये एवाय समास) —उदा० अक्षपरि शलाकापरि एकपरि—तु० अक्षपरि (स) इदं विदं, चारा आर, धिग्न हुआ जैसा कि 'पर्याप्त' में । ज्वालाओ के बीच में । 5 कर्मधारय समास के रूप में परि' का अर्थ है 'धाम', 'कलात' 'उदा हुआ' जैसा कि 'पय ध्ययत—परिलानोऽप्यपयाय मे ।

परिकथा [प्रा० सं०] आश्चर्याप्रिय व्यक्ति के इतिवृत्त तथा उनके सांख्यिक कार्यों का बतलाने वाली रचना, काल्पनिक कथा ।

परिकथ [प्रा० म०] 1 भारी घाम 2 प्रचंड कपकपी, या बन्धराष्ट महावी० २।२३ ।

परिकर [प्रा० म०] 1 परिजन, अनुपम वर्ण, नीकर-चाकर, अनुपादिवन 2 समुच्चय मण्ड, समूह—रत्न० ३।५ 3 आरम्भ, उपक्रम भृ० १।६ 4 परिधि कटिबंध कटिबन्ध—अहिपरिकरभाज—शि० ६।६५, परिकर बंध (कृ) बन्धन कर्मना, नैवार्य होना, किसी कार्य के लिए अपने आपका संज्ञित करना—बध्नन्मन्वेण परिकर—का० १।३० कृतपरिकरकण्ड नवाद्युक्तयन्त्रैस्त्वैक्यपरि न श्रम परिपुष्पीभवितुम्—वेणी० २, गणा० ६३, अमर० १० 5 मोफा 6 [सा० शा० में०] एक अक्षरान् जिसके माधक विशेषणों का उपयोग होता है—विशेषणयन्त्रावर्तनिक परिक्कम्पु स वाश्व० १० उदा० सुपायस्त्रिपातसस्ताप हरणु व गिव—चन्द्रा० ५।५९ 7 (नाट्य० में) नाटक को बन्दु कथा में आने वाली घटनाओं का पराश्रयपूर्ण, 'बीज' का मूलजन्म दे० मा० द० ३८० 8 निर्णय ।

परिकल्पं (पु०) [प्रा० सं०] वह पुराहित जा बड़े भारी के अतिवाङ्मि करने हुए छोटे भारी का विवाह सम्कार करना है—परिकल्पा यात्रक—शारंग, तु० परिवेत् ।

परिकल्पेत् (पु०) [परि + क्त् + क्तिन्] संबन्ध—न्यु० —शारंग को बिचित्र या मुगधित करना, वैयक्तिक मनावट, अलङ्कृत करना, प्रभावय—कृताधार परि-कर्मोपयम्—मा० २ 2 परा में महावर मगाना—कु० ६।१ 3 मज्जा, 'पारो 4 पूजा, अर्चना 5 योग्य में) शूद्र करना, पवित्रीकरण, मन को शूद्र करने के साधन—शि० ६।५५, (इयंके उतर दे० मल्लि०) 6 गणित की प्रक्रिया (इसके आठ भेद हैं) ।

परिकल्पे,—कर्मणम् [परि + कृप् + घञ्, स्फुट् वा] लीच कर बाहर निकालना, उन्माहना ।

परिकल्पन् [परि + क्त् + क् + स्फुट्] घोसा, उगी, छल-कपट ।

परिकल्पन्—ना [परि + कृप् + स्फुट्] 1 निर्णय करना, स्थिर करना, फैसला करना, निर्धारण करना 2 उपाय निकालना, आविष्कार करना, रूप देना, क्रम-

बढ़ करना—मुद्रा० ७।१५ ३ मुद्राना, सम्पन्न करना
४ वितरण करना ।

परिकल्पित. [परि + कल्प + क्त] धर्म परायेण साधु वा
सत्यायां, भक्त ।

परिकीर्ण (भू० क० कृ०) [परि + कृ + क्त] १ फेलाया
हुआ, प्रसृत, इधर उधर क्लेश हुआ २ विग हुआ,
भीड़भिडकना मे युक्त भरा हुआ—शि० १६।१०,
रघु० ८।४५ ।

परिकृतम् [प्रा० म०] अवरोध, आड, नगर के फाटक के
सामने की सड़ि ।

परिकोष [परि + कुप् + घञ्] अमल्य क्रोध, भीषणता ।

परिक्रम [परि + क्रम + घञ्] * इधर उधर भ्रमण
करना, डनडन घूमना—कि० १०।२ २ भ्रमण
घूमना, टहलना ३ प्रदर्शना करना ४ इच्छानुसार
टहलना ५ मिलमिला, कम ६ उपाकृष्या, उन्नतगत
७ घूमना । म०—सहू बकरी ।

परिक्रम, -कमणम् [परि + क्रो + घञ्, ह्यट् वा] १
* नदरी, जाड़ा २ मजदूरी पर काम में लगाना ३
जाल मना, खरीद डालना ४ विनिमय बदल-बदल
५ हयया देकर की गई सधि नु० शि० ४।१२२ ।

परिक्रम [परि + क्रिया प्रा० म०] १ वाद लगाना,
बाग आर सार्ई खेदना २ घेरना ३ (नाट्य० मे)
-परिकर (७) ।

परिक्रान्त (भू० क० कृ०) [परि + क्लम् + क्त] बका
हुआ परिभ्रान्त, उकताया हुआ ।

परिक्लेश [परि + क्लिज् + घञ्] भीषणता, नमी, आर्दना ।

परिक्लेश [परि + क्लिज् + घञ्] कठिनाई, धकाबट
कट ।

परिक्रम [परि + क्रि + अच्] १ ज्ञान, बर्बादी, विनाश,
परिस्वयादीर अधिकतर रमणीय मूच्छ० १, किरण-
३० ६।८६ २ अनिधान हुआ, समाप्त होना
३ बर्बादी, नाश, असफलता कि० १६।५७, मनु०
१।५५ ।

परिक्रम [परि + क्रो + क्त, मकारा देस] कृषा, शीघ्र,
तुबल ।

परिक्रान्तम् [परि + क्ल + क्त] १ घाना,
माजना २ घाने के लिए घाना ।

परिक्रान्त (भू० क० कृ०) [परि + क्लि + क्त] १ बन्धेग
हुआ, प्रसृत २ परिभ्रान्त, घेरा हुआ—वेनसपरि-
क्रान्ते मरुपे -श० ३, कु० ६।०८ ३. सार्ई से घेरा
हुआ ४ ऊपर में फेलाया हुआ, ऊपर डाला हुआ
५ छाटा हुआ, परि-वक्रन ।

परिकीर्ण (भू० क० कृ०) [परि + क्ति + क्त] १ अन्तर्हित,
मृत, २ बर्बाद हुआ, ह्रासित ३ कृषा, घिसा हुआ,
बका हुआ ४ बर्बाद किया हुआ, सर्वथा दर्बाद किया

हुआ—मनु० २।४५ ५. खोया हुआ, नाश किया
हुआ ६. कम किया हुआ, घटाया हुआ ७. (कानून
में) विहासिया ।

परिकीर्ण (वि०) [परि + क्ति + क्त, तस्य लोप] विस्तृत
नसे में घूर ।

परिक्रम [परि + क्लि + घञ्] १ इधर उधर घूमना,
टहलना २. बन्धेगना, फेलाता ३. घेरना, परिभ्रान्त,
घारा ओर बहना ४ घेरे की सोना, हूय जिससे कोई
कीज घेरी जाय रघु० १२।६६ ।

परिक्रम [परि + क्लि + घञ्] प्रतिकृष्य, सार्ई,
नगर या किले के चारो ओर बनी नाली या खात—
रघु० १।३०, १२।६६ ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

परिक्रम [परि + क्ल + क्त] १. प्रतिकृष्य, सार्ई २. लोक,
सूड ३ चारो ओर से खेदना ।

बन्ध करना, (बंदी और से बेरा बाधना, बाध बनाना)
 3 पहलना, (पारोन्ना की भाँति) लपेटना पीठि-
 परिच्छद्—रघु० १८।३८ 4. धारण करना, लेना—
 मातपरिच्छद्—अमर १२, विद्याहस्तसमी उत्तर० ४
 5. प्राप्त करना, लेना, स्वीकार करना, अंगीकार
 करना—भीमो मुने. स्वामपरिग्रहोऽयम्—रघु० १३।
 ३६, अर्घ्यपरिग्रहो—शु० १२।३६, कु० ६।५३,
 विद्यापरिग्रहाय वा० १, इषी प्रकार—आमनपरि-
 ग्रह करोतु देव—उत्तर० ३, आमन-ग्रहण कीजिए
 महाराजाधिराज० 6. लेना, मगान, सामान—एक-
 लक्षपरिच्छद्—अम० ४।२१, रघु० १।५।५, विक्रम०
 ४।२६ 7 आबाह, विद्याह—ज. डारपरिच्छे—
 उत्तर० १।११,—वा० ५।२७, वा० १।२२ 8 पत्नी,
 रानी—प्रयापरिच्छेदश्रितो—रघु० १।१५, १२,
 १।१४, १।१३, १।६८, वा० ५।२७, ३०, परिच्छद्
 बहुवचि—वा० ३।२१, 9 अपने गन्ध में लेना,
 अनुग्रह करना—उत्तर० ७।११, मालवि० १।१३
 10. अनुकर, अनुसेवी, नौकर-चाकर, परिचर, सेवक
 मनु० 11. मनुष्य, परिचर, परिचार के सदस्य
 12. राजा का अन्त दुर, रजिबान 13. जड़ मूल
 14. सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहण 15. गणप 12 मेला
 का पिछला भाग 17. विष्णु का नाम 18. मक्षेण,
 उपसहार ।

परिग्रहीतु (रु०) [परि+ग्रह+तुच्] पति—वा० ४।२२ ।
 परिष्णाल (मू० क० क०) [परि+स्न+क] 1 गिथिल,
 घका हुआ 2 विनय, पराक्रमल ।

परिच [परि+हृ+अच्, प्रादेश] 1 बाहे की छत्र या
 लक्ष्मी का घूमन जो द्वार की बर रहने के लिए
 प्रयुक्त की जाय, अंगोष्ठा—एक कृत्या नगरपरिच
 प्राणुवाहुमुनिमित्त—वा० २।१५, रघु० १६।८४, सि०
 ३२, मालवि० ५।२ 2 (अत) रोक, अवरोध,
 विघ्न, बाधा—प्राथम्यप मुक्तोऽपि सोऽभवत्तन्व्यमारो-
 परिचो दुःखाय—रघु० ११।८८ 3 बाहे की स्थाप
 कर्मी हुई लक्ष्मी, मुद्राय जिसमें बाहे की स्थाप बर
 की गई हो रघु० १२।३४ 4 लोके की गवा 5 अल-
 पना, बन्ना 6 छोटे की क्षारी 7 बर 8 मारना,
 मट्ट करना 9 प्रहार करना—आधात या घषट ।

परिच्छद् [परि+च्छद्+ञ्च्ट] बाधना, कड़छी चलाना ।

परिच्छाल—धानवद् [परि+हृ+ञिच् पञ्च्, नस्य न,
 ह्युट्ठका] 1 मानना, प्रहार करना, हटाना, छुटकारा
 पाना 2 मुद्रय, मोटे तिर्रे की छत्री ।

परिचोच [परि+चू+पञ्च्] 1 कोकाहल 2 अनुचित
 भावण 3 गर्वन ।

परिचमुर्गसम् (कि०) [श० सं०] पूरे चौदह ।

परिचय [परि+चि+अच्] 1 तैर लगाना, एकत्र करना

2 जान पहचान, परिचयि, धनिष्ठता, सरकारी
 कराल—पुरयपरिचयने—मुष्क० १।५६, अतिपरि-
 चयानवज्ञा 'अतिपरिचय से होता है, अर्थात् जन्मापर
 भाय' परिचय चलस्यमिपातेन रघु० १।४९,
 सकलकलापरिचय—वा० ७६ 3 जांच, अध्ययन,
 अभ्यास, मुहुर्महु—आवृत्ति, हेतुपरिचयपूर्वकं बन्तुपु-
 निकेव वा सि० २।७५, १।१५, वर्षपरिचय करोति
 —श० ५ 4 जान महावीर ५।२० 5 पहचान,
 —मेघ० १ ।

परिचर [परि+चर+अच्] 1 सेवक, अनुचर, टहलवा
 2 लोकर गन्धक 3 रत्नक, पहरेदार 4 अज्ञानजाल,
 मेवा ।

परिचरण [परि+चर+लृट्] सेवक, टहलवा, सहायक,
 —अम 1 सेवा, टहल 2 इतर उचर जाला ।

परिचर्या [परि+चर+अच्+टाप्] 1 सेवा, टहल
 —रघु० १।११, अम० १८।४४ 2 अर्थना, पूजा
 —सि० १।१७ ।

परिचर्याय [परि+चि+अच्] यशानि (कुण्ड में स्था-
 पित) ।

परिचरः [परि+चर+पञ्च्] 1 सेवा, टहल 2 सेवक
 3 टहलने का स्थान ।

परिचारक, परिचारिक [परि+चर+ञ्च्लुत्, परिचार
 +ठन्] सेवक, टहलवा ।

परिचित (मू० क० क०) [परि+चि+कल] 1 डेर
 लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ 2 जानकार,
 धनिष्ठ, जान पहचान का 3 मौला गदा, अभ्यन्त ।

परिचिति (स्त्री०) [परि+चि+किलत्] जान पहचान,
 परिचय, धनिष्ठता ।

परिच्छद् (स्त्री०) [परि+छद्+क्विप्] 1 परिजन,
 अनुचरवर्ग 2 साज-मासाज ।

परिच्छर [परि+छर+ञिच्+घ] 1 आचरण, चारन,
 पोसाक 2 बन्ध, वेगमपा—दाहायकसकलधनीय
 परिच्छदानाय—कि० ३।४० 3 नौकर-चाकर, परिजन,
 टहलवा, आधिपमशर्ला—रघु० १।७० 4 साज-
 मामान, (छत्र, धामर आदि) ऊपरि सामान—लेना
 परिच्छदस्तस्य—रघु० १।१७ 5 सामान, अस्त्रबाध,
 धानिगत सामान, निमी चीन्हे व सामान (कर्मभाडे,
 तथा अन्य उपकरण आदि) विवाहयो वा भवेद्वापु-
 म्नादस्य मपरिच्छर—मनु० १।२४१, ७।४०, ८।४०५,
 २।७८, १।१७६ 6 यात्रा का आवश्यक सामान ।

परिच्छय [परि+छद्+क] नौकर-चाकर, परिजन ।

परिच्छत्र (मू० क० क०) [परि+छद्+कल] 1 बेधित,
 इका हुआ, बरनाच्छादित, जिसमें बन्ध पहने हुए हो
 2 ऊपर फैलाया हुआ, या बिछाया हुआ 3 चिरा
 हुआ (परिजनो से) 4 छिपा हुआ ।

परिचरितः (स्त्री०) [परि + छिद् + क्तिन्] 1 यथार्थ परिभाषा, सीमिन करना 2 विभाजन, अलग अलग करना ।

परिच्छिन्न (पुं० क० कृ०) [परि + छिद् + क्त] 1 काटा हुआ, विभक्त 2 यथार्थ परिभाषा में युक्त, निर्धारित, निश्चयीकृत, कु० २५८ 3 सीमिन, सीमाबद्ध, परिमीमित दे० 'परिपूर्वक छिद्' ।

परिच्छेदः [परि + छिद् + घञ्] 1 काटना, विभक्त करना, विभक्त करना, (उचिन ओर अनुचित में) विवेचन 2 यथार्थ परिभाषा, फंक्त्वा, यथार्थ निर्धारण, निश्चय करना परिच्छेदव्यक्तिर्भवति न पुरस्तेषु विषये—मा० १३१, परिच्छेदातीतं मकलबचनानाम विषय ११०, सर्व प्रश्नो को परिभाषा ओर निर्धारण न दोष्यत हीना इत्याकृष्टबहुप्रश्नकं परिच्छेदाकुल म मन मा० ५१९ 3 विवेक, निर्णय, सूक्ष्म-वृत्ति परिच्छेदा हि परिष्प यदाप्रा विपनय, अगच्छेदवर्णना विषय एव एते हि ११६८, कि परिष्प परिच्छेद १८७ न सीमा, एव, सीमा हि, करना, इदमन्दी—अत्यन्त परिच्छेदेन मालवि० २ अनुभाग या पुष्कक का काट (अनु-भाग के अन्य नामों के लिए दे० 'अध्याय' के अन्वयेन) ।

परिच्छेद (वि०) [परि + छिद् + क्त] 1 यथार्थरूप से परिभाषा के योग्य, परिभाषणीय, मनु० ४१९, रघु० १०२८ 2 तोलने या अनुमान लगाने के योग्य ।

परिच्छन्न [प्रा० स०] 1 मद्यो साध करने वाले नीकर-शाकर, अनुपायिकर्त, अनुचरत्वं—परिचरतो राजानु-वर्तमान स्थित—मालवि० १ 2 अरधनी लोग, सेवकमह, मेविकाओ का समूह, बार्दिया, दामिनी—रघु० ११, १२ 3 सेवक, दास ।

परिचालितम् [परि + चल् + क्त] (नीकर या सेवक का) गुप्त सकेन जिससे अपनी कुशलता भेजना तथा स्वामी की कृपा एवं सज्जा तथा और दूसरे इसी प्रकार के शय प्रकट हो, उक्तवलीकर्मणि इस प्रकार परिभाषा बनाते हैं—प्रभोनिर्देशनासाधयथापलापुप-रत्नान्, स्वविक्रमणनाथविक्रमया स्वात्परिचालि-त्म् । (विस्मय के अनुसार अपने प्रिय से उपेक्षित किसी रमणी के द्वारा प्रयुक्त गुप्त जिह्विका ही 'परिचालित' है) ।

परिचालय [परि + चल् + क्तिन्] 1 सलाय, सबाद 2 पहचान ।

परिचालम् [परि + चल् + क्त] पूरा ज्ञान, पूरी जानकारी ।

परिचोचम् [परि + चो + क्त] परिचो का गान बना कर उठना या पक्षियों के गोल की उड़ान—दे० डीन ।

परिचय (पुं० क० कृ०) [परि + च् + क्त] 1 झुका

हुआ, किनल, झुलना हुआ—मेघ० २ 2. (बायु में) झुड़, झुलता हुआ—परिणति वयसि—का० ३५, ६२, ६३ 3. पक्का, परिपक्व, पका हुआ, पूर्णविकसित—शब्दशुद्धिद कवे परिणतव्रजस्य बाणीमियाम् उत्तर—७२१, मेघ० २३—परिणतमकरदामिकास्तो—आमि० १८८, सि० ११५९ 4. पूर्णरूप से बड़ा हुआ, प्रौढ़, पूर्णविकसित—परिणतशरणाश्रयकरिण्यं—अनु० ३५९, मेघ० १०० 5 (भोजन आदि) पका हुआ 6 रूपान्तरित या परिवर्तित (करण० के साथ) विक्रम० ८१८ 7. समाप्त, पर्यवसित, अचसायी, अनेन समयेन परिणतो दिवस—का० ४७ 8 (सूर्य आदि) अस्त—स अपने दात से ग्रहण करने के लिए झुका हुआ या पाचबंधागत देने वाला हाथी (तिर्यग्गत-ग्रहाराश्च वा परिणतो मत—हृत्सा०) सि० २१९, कि० ६७ ।

परिणतिः (स्त्री०) [परि + नप् + क्तिन्] 1 झुका, झुलना, नन होना 2 पक्कान, परिपक्वता, विकास—महाबी० २१७ 3. परिवर्तन, रूपान्तरण, कृपापकट 4 पूर्णता 5 नवीना, परिणाम, फल—परिणतिर-वधायो यन्त पडितेन—अनु० २१६, १२०, ३१७, महाबी० ६१८ 6 अस्त, उपसहार समाप्त, अव-मान—परिणतिरयोग्या प्रीत्यस्ववदिधाना मा० ६१ ७, १६, सि० १११ 7 जीवन की अन्तिम भागी, वृद्धा—सेवाकारा परिणतिरन्त—विक्रम० ३११, अमबद्गत परिणति शिथिल परिमदयुंयनयो दिवस—सि० ९३, (यही प० का अर्थ है 'अन्त या उपसहार' भी) 8 (भोजन का) पचना ।

परिपङ्क (पुं० क० कृ०) [परि + नह् + क्त] 1 बँधा हुआ, लिपटा हुआ 2 विस्तृत, विशाल—परिणद-कथ—रघु० ३३६ ।

परिपथः—पथम् [परि + प्थि + अप्, ल्युट् वा] विवाह—नवपरिणया बध् शयने—काव्य० १० ।

परिपह्वलम् [परि + नह् + ल्युट्] कयर कस्तना, कयर पर कपडा लपेटना ।

परि (स्त्री) चाय [परि + नप् + घञ्, पठे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 बदलना, परिवर्तन, रूपान्तरण 2 पाचन—अन् न सम्यक् परिणामनेति—मुमुक्षु, भूकसाय परि-णामहेतुरोदयंम्—तर्क० 3 नवीना, निर्णयित, फल, प्रभाव—अत्रियम्यापि पठस्य परिणाम सुबाहव—हि० २१३५, मूच्छ० ३११, परिणामयुक्ते गरीपसि वयसि शीघ्रमे—कि० २१४, भग० १८३७, ३८ । पक्का, परिपक्वता, पूर्णविकाग—उपेक्षितस्य परि-णामरम्यताम्—कि० ४१२, कथमपरिणामवधाम-जड्—उत्तर० २१२, मा० ११४४ 5. अस्त, समाप्त, उपसहार, अवसान, ब्राम—विक्रम० परिणामपथा-

—श० ११३, वय परिणामपाइरिखरस—का० १०, परिणामपैरि विषय—का० २५४, 'दिन मनाप्त होने वाला है' 6 बुझाया—परिणामे हि दिखीय-बनया—रघु० ८११ 7 (समय का) बीतना 8 (अल० शा० में) रूपक से मिलता जुलता एक अलंकार जिसमें उपमेय के गुण उपमान में परिवर्तित कर दिये जाते हैं (चन्द्रालोक में दो वरि परिणामा और उदाहरण—परिणाम किमार्थवैद्विषयो विषयात्मना, प्रसन्नोऽप्यब्जेन वीक्षते मरिचिलता—५१८, दे० रसमगाधर में 'परिणाम' के नीचे)। सम०—बुध्नि (वि०) बुद्धिमान्, दूरदर्शी, बुद्धि (वि०) बुद्धिमान् (चिह्नः—स्त्री०) बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, —बन्ध (वि०) जिसका कल स्वात्म्यमय हो शुल्क पीडापुक्त अनिर्णय या मन्थानि, उदरपीडा, पीडा के साथ उदरवायु, वायुयोगे का दर्द ।

परि (री) गाय [परि+नी+घञ् पक्षे उपसर्गस्य शीर्षं] 1 शतरज की गोट का चलना 2 (शतरज की) बाल ।

परिणामकः [परि+नी+प्बुज्] 1 नेता 2 पति—शि० १७३ ।

परि (री) गाह् [परि+गह+घञ्, पक्षे उपसर्गस्य शीर्षं] 1 परिधि, वृत्त, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, अर्ध—स्तनयुगपरिगाहोऽन्धार्दिना बन्कलेन—श० ११ १९, स्तनपरिगाह विनामर्जवती—मा० ३१५, विद्यान् बद्धम्बल—ककुदे बुध्म कृतवाहुमहाव परिगाह गालिनी कि० १२०२, मूच्छ० ३१९, रत्न० २१३, महावी० ७२४ 2 वृत्त की परिधि ।

परिणहृषत् (वि०) [परिगाह+मनुप्, मध्य कठम्] विशाल, बड़ा, विस्तृत ।

परिणहृम् (वि०) [परिगाह+इनि] विशाल, बड़ा—कु० १२६ ।

परिणामक (वि०) परि+निम्+प्बुज् [स्वाद चबने वाला, खाने वाला-फलान् परिणिसक—भट्टि० ९, १०६ 2 बुझाने ।

परिणिष्ठा [परि+निष्ठा प्रा० सं०] पूरा कौशल ।

परिणीत (भू० क० कृ०) [परि+नी+क्त] विवाहित—सा विवाहित स्त्री ।

परिणेतु (पु०) [परि+नी+तृच्] पति—श० ५११७, रघु० ११२५, १४२६, कु० ७३११ ।

परिणेतवम् [परि+तृच्+ल्युट्] तुष्ट करना, सन्तुष्ट करना ।

परितप्त (अभ्य०) [परि+तृच्] (सजा के साथ प्रायः सम० में, कभी-कभी स्वतन्त्र रूप से प्रयोग, । इदंविदं, सब ओर, घुमा फिराकर, सब दिशाओं में, सर्वत्र, चारों ओर—रक्षासि वेदि परितो निरास्यत्—भट्टि०

११२२, शि० ५१२६, ९३६, कि० ११२४, गार्हित-मन्त्रिण गहन परिणो दुष्टास्त्र विटपिन सर्वे भासि० १२१, २९ 2 की ओर, की दिशा में अपेक्षितेन्द्र-रूप परित पतना भासि० १११७, रघु० ११६६ ।

परितप्य [परि+तृच्+घञ्] 1 अत्यंत या शूलसा देने वाली गर्मी—(पादप) शमयति परिताप छायाया सन्निपातम्—श० ५१७ गुल्फनिपातानि गात्राणि—३१८, ऋट्० १२२ १ पीडा, वेदना, व्यथा शोक—प्रमथो निषागो हृदयपरिताप बहुसि किम्—मालवि० ३१ 3 बिलाप, मानस, शोक विर-चितविधिविलाप सा परिताप चकारोर्ध्वं—गीत० ७ 4 कापना, भय ।

परितुष्ट (भू० क० कृ०) [परि+तृच्+क्त] 1 पूर्ण रूप से सन्तुष्ट—वयमिह परितुष्टा वल्कलैश्च च लब्ध्या—भतु० ३१५, इसी प्रकार—मनसि च परि-तुष्टे कौश्लवान् को दष्टि—भतु० ३१५ 2 प्रसन्न, मुक्त ।

परितुष्टिः (स्त्री०) [परि+तृच्+क्तिन्] 1 सन्धि, पूर्ण सतीव 2 सुधी, हर्ष ।

परितोष [परि+तृच्+घञ्] 1 सन्तोष, इच्छा का अभाव (वि० लाम्) सब इह परितोषो नि बन्धो विशेष भर्तु० ३१५ 2 पूर्ण सतीव, तुष्टि अप-रितोषाद्विदुषा न साधु मये प्रयोनिज्ञानम्—श० १२ 3 प्रसन्नता, सुधी, हर्ष, पवनदग्गी (अधि० के साथ) कु० ६१९९, रघु० ११९२, रघु० तुंगिल परितोष ।

परितोषण (वि०) [परि+तृच्+णिच्+ल्युट्] सन्तुष्ट करने वाला, तुष्ट करने वाला, —कम् सन्तुष्ट करना ।

परित्यक्त (भू० क० कृ०) [परि+त्यज्+क्त] 1 छोड़ा हुआ, उन्मत्त, सर्वथा त्यागा हुआ 2 निश्चल, रहित (करण० के साथ) 3 (नौर आदि) छोड़ा हुआ 4 अभावग्रस्त ।

परित्याग [परि+त्यज्+घञ्] 1 छोड़ना, उत्सर्ग करना, सर्वथा त्यागना, छोड़कर भाग जाना, (पत्नी आदि का) सम्बन्ध विच्छेद—अपरित्यागमयाचदात्मन—रम० १२, कृतमोक्षपरित्याग—१५१ 2 छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना, विरक्त होना, गद्दी छोड़ देना, —स्वनाम परित्याग करीमि पच० १, 'मे अपना नाम छोड़ दुगा'—भतु० २१२५ 3 अर्धहोना, भूल-भूक—माहात्म्य (कर्मण) परित्यागस्तामस परिकी-र्णित भग० १८७ 4 बदाम्यता, उदारता 5 हानि, कर्णान् ।

परित्याग्यम् [परि+तृच्+ल्युट्] सहायण, सन्क्षण, बचाना प्रशिक्षण, मुक्ति, छुटकारा—परित्याग्य साधुता विनासाय च दुष्टताम्—भग० ४१८, रामायणार्थाय विहृतयोध सेनानिवेश तुमुल कर्णा—रघु० ५४९१ ।

परिचालः [परि + चल् + घञ्] चाल, चय, हट ।

परिचालित (वि०) [परि + चल् + क्त] कच से उका हुआ, आचारमत्तक क्षमों से सुसज्जित (पूर्णतया अग्रहणकर से युक्त) ।

परिचालनम् [परि + चल् + ल्यट्] 1 विनियम, बदला-बदली 2 शक्ति 3 धरोहर का वापिस मिलना ।

परिचालिन् (पुं०) [परि + चल् + णिन्] वह पिता जो अपनी पुत्री का विवाह ऐसे पुरुष से करता है जिसका बड़ा भाई अभी तक अविवाहित है—पुं० 'परिचै' ।

परि (री) शब्दः [परि + र् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य दोष] 1 जलन 2 व्यथा, पीडा, दुःख, शोक ।

परिदेवः [परि + दिव् + घञ्] शोक मनाना, मानम, बिलाप ।

परिदेवनम्,—ता, परिदेविन् [परि + दिव् + ल्यट्, परि + दिव् + क्त] 1 बिलाप, बिलसना, रोना-धोना-अथ तैः परिदेविताभरै—कु० ४२५, रघु० १५।८३, भग० २।२८, तत्र का परिदेवना—भा० ३।९, हि० ५।६१ 2 पश्चान्ताप, खेद ।

परिदेवन (वि०) [परि + दिव् + ल्यट्] शोकसतप, खेदजनक, दुःखी ।

परिद्वेष (पुं०) [परि + द्वेष् + घञ्] तमाशबीन, दसोक । परिद्वेषणम् [परि + द्वेष् + ल्यट्] 1 हमला, आक्रमण, बलात्कार 2 अपमान, निरादर, निरकार 3 दुर्व्यवहार, कृपा व्यवहार ।

परि (री) आनम् [परि + चल् + ल्यट्, पक्षे उपसर्गस्य दोष] 1 काष्ठ पहनना, वस्त्र धारण करना 2 पोशाक, अथोवस्त्र, कपड़े आतबिचपरिधानविभूषा कि० १।१, शि० १।१५, ६१, ५।६१ ।

परिधानीयम् [परि + धा + अनौघर्] अथोवस्त्र, नाभि मे नीचे का पहनावा ।

परिधाव [परि + धा + घञ्] 1. नौकर-नाकर, अनुचर दहलूए 2 आचार, आसय 3 निज, जूतब ।

परिधि [परि + धा + णि] 1 दीवार, मेंढ, बाड, घेरा 2 मर्द या बन्दना का परिधेस परिधेयुक्त इलाण-दीर्घलि रघु० ८।३०, शशिपरिधिरिचोच्छेयं डलस्तेन तेने—मै० २।१०८ 3 प्रकाशमहल 4 सिद्धि 5 परिधि या बूल 6 बूल की परिधि 7 पहिये का घेरा 8 'पलाय' आदि पवित्र वृक्षकी समिधा या लकड़ी जो पशुवृक्ष के चारो ओर रखी रहती है मत्तास्वान् परिधयः त्रि भक्त समिधः कृता—ऋ० १०।१०।१५ । मय०—वसिष्ठोचर-शिव का विशेषण स्त्र 1. पीकीदाग 2 किमी गजा या मेनापी। का मृदायक अधिकारने) ।

परिधुषित (वि०) [परि + धूष + क्त] धूष द्वारा सुवासित या सुगन्धित किया हुआ ।

परिधुसर (वि०) [पठित सर्वतो भावेन धूसर—भा० सं०] बिल्कुल धूसर—बसने परिधुसर बसाना—भा० ७।२१, रघु० ११।६० ।

परिधेयम् [परि + धा + यत्] अथोवस्त्र, नीचे पहनने का कपड़ा ।

परिधेयः [परि + ध्वस् + घञ्] 1. दुःख, विनाग, बग-बादी, काष्ठ 2 अक्षफलता, विषम, सहार 4. जाति-ज्यति ।

परिध्वंसित् (वि०) [परि + ध्वस् + णिनि] 1 गिर कर अलग होने वाला 2 बर्बाद होने वाला, नष्ट हो जाने वाला—हि० २।१३५ ।

परिनिर्वाण (वि०) [प्रा० सं०] बिल्कुल बसः हुआ, —जम् (व्यक्ति की) अन्तिम विलुप्ति, परिमृति ।

परिनिर्मुक्ति (स्त्री०) [परि + निर् + मुत् + क्तिन्] आत्मा की शरीर मे पूर्णमुक्ति, पुनर्जन्म से छुटकारा, पूर्ण मोक्ष ।

परिनिष्ठा [प्रा० सं०] 1 (किमी बसतु का) पूरा जान वा परिचय, 2 पूर्ण निष्पत्ति 3 जन्म सीमा ।

परिनिष्ठित (पुं० क० क०) [परि + णि + क्त] 1 पूर्ण कुशल 2 सुनिश्चित—अपरिनिष्ठितस्वोपदेवा-स्वान्याय प्रकाशनम्—तालबि० १ ।

परिपक्व (पुं० क० क०) [परि + पक् + क्त] 1. पूरी तरह पका हुआ, 2 अतीव्रति नेका हुआ, 3 बिल्कुल पक्का, श्रेष्ठ, सिद्ध, पूर्णता को प्राप्त (आल० भी) —प्रफुल्लोद्य परिपक्वपालि—शु० ५।१, इसी प्रकार—परिपक्ववृद्धि 4 सुसंघटित, समझदार, काइयों 5 पूरी तरह पका हुआ 6 मूर्खने वाला, मूय के निकट ।

परिपण (नम्) [परि + पण् + घ प्रा० सं०] पूजी, मूल-धन, धान्दाना ।

परिपणनम् [परि + पण् + ल्यट्] वादा करना, प्रतिज्ञा करना ।

परिपणित (पुं० क० क०) [परि + पण् + क्त] वादा किया हुआ, वचन दिया हुआ, प्रतिज्ञा की हुई—शि० ७।९ ।

परिपणय परि + पण् + ल्यट् शत्रु विरोधी, दुश्मन ।

परिपणित् (वि०) [परि + पण् + णिनि] गस्ता रोक्ने वाला, रोधा अटकाने वाला, विरोध करने वाला, विघ्न डालने वाला (पाणिनि के मतानुसार केवल वेद में मात्र, परन्तु पुं० नीचे दिए हुए उद्धरणों से)—अर्धपरिपणिते महामरगति—मुद्गा० ५, नामविषयकह तत्र यदि नत्परिपणितो मां १।५०, इसी प्रकार भागि० १।६० भग० ३।२५, मनु० ७।१०८, ११० (पुं०) रिपु, शत्रु, प्रतिद्वयी, दुश्मन 2 कूटारा, चोर डाक ।

परि (री) वाकः [परि + पण् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य

सीमः] 1. पुरी तरह से पकाना जाना या सवार
जाना 2. पचना, बैसा कि 'अन्नपरिपाक' में 3 एक
जाना, परिपक्व, बिकार, पूर्णता शि० ४१८८, कु०
३११० 4. फल, नतीजा, परिचाय प्रपन्नाना मते
सुकुनपरिपाकी जनिमताम् महाश्री० ७३१, भर्तृ०
२:१३२, ३:१३५ 5. बतुहार, हृदयविला, कुपानता ।
परिपाठ (वि०) [प्रा०स०] पीला लाल रणु० १९।
१०, चित् १:३४२ ।

परिपाटिः—टी (स्त्री०) [परि भागेन पाटि पाटन गति
यस्या प्रा०ब०स०, परिपाटि+टीम्] 1. प्रणाली,
रीति, प्रकृत पाटीर तब पटीयान् परिपाटीमिमा-
मूरीकृतम्—भासि० १:१२, कचवाना वाटी रसिक
परिपाटी स्फुटपति हस० २४ 2. व्यवस्था, क्रम,
उत्तराधिकार ।

परिपाठः [प्रा०स०] परिपणना, पूर्ण निवेदन, पूरा विवरण ।
परिपाठ्यं (वि०) [अपा०स०] निकट, पास में, पास,
नजदीक होना ।

परिपालनम् [परि+पल्+निष्+स्यट्] 1 भली-भाति
पालना, रखा करना, सधारण करना, सभाले रखना,
जोचित रखना—किलञ्जानिलव्यपरिपालनवृत्तिरेव
शं० ५६६ 2 भरण पोषण, चरधेन—जातम्य परि-
पालनम्—मनु० १:२७ ।

परिपिच्छकम् [परि+पिच्छ+क्त+कन्] सोमा ।
परिपीडनम् [परि+पीड्+स्यट्] 1 निचोड़ना, भीचना
3 क्षति पहुँचाना, बौद लथाना, नुकसान पहुँचाना ।

परिपुटनम् [परि+पुट्+स्यट्] 1 हटाकर अलग करना
2 बल्कल या छाल उतारना ।

परिपूजनम्, परिपूजा [परि+पूज्+स्यट्, प्रा०स०] सम्मान
करना, पूजा करना, अचना करना ।

परिपुत्र (भू०क०क०) [परि+पू+क्त] 1 विपुत्र किया
गया, विपुत्र उत्पत्तिपरिपुत्राया किमस्या पाकानानरे
उत्तर० १:१३, शि० २:१६६ 2 पुरी तरह फटका
हुआ, पिछोड़ा हुआ, भूमी से पृथक् किया हुआ ।

परिपुत्रम् [परि+पुत्र्+स्यट्] 1 भरना शि० ४६१
2. पूर्णता को पहुँचाना, पूरा करना ।

परिपुत्र्यं (भू०क०क०) [परि+पुत्र्+क्त] 1 पुरी तरह
भरा हुआ, -इतु पूरा धरि, समस्त, मारा, भली
भाति भरा हुआ 2 स्वतन्त्र, मन्तव्य ।

परिपूति (स्त्री०) [परि+पू+क्तिन्] पूर्णता, पर्याप्तता ।

परिपुच्छा [परि+पुच्छ्—अड्+टाप्] पूछ-नाछ, प्रश्न ।

परिप्लव (वि०) [प्रा०स०] प्रति कोमल, मृदम, अत्यन्त
मृदु ।

परिपोटः—पोटकः [परि+पुट्+घञ्, परिपाटि+कन्]
(आयु० में) एक प्रकार कर्म रोग (जिसमें काल
की काल मलने लयती है) ।

परिपोषणम् [परि+पुष्+स्यट्] 1 विलाना-निपाना,
भरण-पोषण 2 आगे बढ़ाना, उन्नति करना ।

परिप्रथन [प्रा०स०] पूछछाड़, प्रश्नबाचकना, सवाल,
कनकलती जाति परिप्रथने-पा० २:१६३, ३:३११०
तद्विधिं प्रतिपातेन परिप्रथने सेवया—भस० ४:३६ ।

परिप्राप्ति (स्त्री०) [प्रा०स०] अधिग्रहण, उपलब्धि ।

परिप्रेष्य [प्रा०स०] सेवक ।

परिप्लव (वि०) [परि+प्लु+अच्] 1 बहना हुआ
2 बन्दरता, हुआ, कापता हुआ, डौलता हुआ,
हिलोरे नेता हुआ, कम्पायमान 3 अस्थिर, चंचल—
शि० १:४६८,—ब. 1 जलप्लवान 2 जल में
दुबाना, घोसा करना 3 किरती, नाव 4 उन्पीड़न,
अत्याचार ।

परिप्लुत (भू०क०क०) [परि+प्लु+क्त] 1 बाइरग्न,
जलप्लावित 2 धबकाया हुआ, व्याकुल जैसा वि,
शोक म 3 आदिक्ल, बिलम्ब, स्वान, तम् उड़न
छलाय,—सा शराव ।

परिप्लुष्ट (भू०क०क०) [परि+प्लुष्+क्त] जला हुआ
झुलना हुआ, भनभनाया हुआ ।

परिष (व) हँ [परि+व (व) हँ+अच्] अनुप-
नोकर-वाकर, टहलुर इय प्रचुरपरिषहंया भवत्या
सबभ्यताम् दम० १०८ 2 उपनगर, घर के अन्तः
का सामान—परिषंभानि वेदमानि—रघु० १:८५०
"उपयुक्त सामान से सुसज्जित कमरे" 3 राज निव-
3 तपति, बनदीलन ।

परिष (व) हँ [परि+व (व) हँ+स्यट्] 1
अनुचर, नोकर-वाकर 2 बनाव-सिमार, काट-छाट 3
बुद्धि 4 पूजा ।

परिषाधा [प्रा०स०] 1 कष्ट, पीडा, मतापन 2. यका
बट, उप व्यथा ।

परिषु (व) हँ [परि+वु (वु) हँ+स्यट्] 1
सम्झि, कल्याण 2 परिशिष्ट, सम्पूरक ।

परिषु (वु) हित (भू०क०क०) 1 बड़ा हुआ, आर्वापित
2 फलाफूला, समृद्ध हुआ 3 से युक्त, सपन्न,—सम्
हाथी की विषाड ।

परिभग [प्रा०स०] छिन्नभिन्न होना टूट कर टुकड़े
होना ।

परिभल्लंभम् [परि+भल्लं+स्यट्] धमकाना, घुड़कना ।

परि (री) अबः [परि+भू+अच्, पक्षे उपसर्गस्य दीर्घ] 1
अपमान क्षति पहुँचाना, प्रतिष्ठा भग, निम्नकार-
निराधर, मानहानि पराक्रम परिभले वैवाण्य मृत-
विव (भूपयाम्)—शि० २:४४, रघु० १:२३७, वेणी०
१:२५, महावी० १:४०, ३:११७ 2 हार, पराजय ।

सम०—आस्वहम्—वधम् 1. घुषा का पाश, शि०
३:५१ 2. अपमान, अपमानपूर्ण स्थिति,—विधि

प्रतिष्ठाप्यं—प्रायो पूर्व परित्यज्येति नामिनामं
तमोनि—भूमा १६।

परिभाषित् (वि०) (स्त्री०—नी) [परि + भू + धि 1.
मानह, नुच, अनादर वा भूषायुक्त ब्यवहार करने
वाला 2 उपमानयुक्त, तिरस्कार, प्रीणित ।

परिभाषा [परि + भू + धञ्] वै० 'परिवच' ।

परिभाषित् (वि०) (स्त्री०—नी) [परि + भू + धि]
1. मानमर्दन करने वाला, भूषा करने वाला, तिरस्कार-
युक्त ब्यवहार करने वाला— श० ५ 2 लज्जन
करने वाला, आगे बढ़ जाने वाला, श्रेष्ठ होने वाला
3 नुच समझने वाला, उपेक्षा करने वाला वैद्यवली
परिभाषित यद्गु० रघु० ११।५३, 'भीषधोपचार की
उपेक्षा करने वाला' ।

परिभाषय [परि + भाष् + ल्युट्] 1 बतलाय, प्रवचन,
बातचीत करना, गपपटा लगाना, गुप्ते हलका 2
निन्दाप्रिभ्यक्ति, चिककारना, झिड़की, अपशब्द 3
नियम, विधि ।

परिभाषा [परि + भाष् + अ + टाप्] 1 व्याख्यान, प्रव-
चन 2 निन्दा, झिड़की, कलङ्क, गाली 3 पारिभाषिक
पदवाचनी, पारिभाषिक पदावली, (किसी वच में
प्रयुक्त) तकनीकी शब्दावली—इति परिभाषा प्रकर-
णम् मिट्टा०, टको नुचञ्चोटीयादिका परिभाषा
महा० 4 (अत) कोई सामान्य नियम, विधि या
परिभाषा जा सर्वत्र घट सके (अनियमनिवारको
न्याय विशेष), परित प्रतितासरायि सर्वं विषय
प्राप्तवती गता प्रसिद्धान्, न सख प्रतिहृष्यते कदाचित्
परिभाषेत् गरीगसी यदाशा—शि० १६।८० 5 किसी
भी वृत्ततः मे प्रयुक्त सकेत या संक्षेपको की सूची 6
(आ० में) पार्श्वानि के अन्य सूत्रों में मिला हुआ
व्याख्यातात्मक सूत्र जो उन सूत्रों के प्रयोग की रीति
बतलाना है ।

परिभुक्त (भू० क० कृ०) [परि + भुज् + क्त] 1
खाया हुआ, प्रयोग में लाया हुआ 2 उपभुक्त 3
अधिकृत ।

परिभुज् (वि०) [परि + भुज् + क्त] विगत, बन्धीकृत,
भुका हुआ ।

परिभूति (स्त्री०) [परि + भू + क्तिन्] तिरस्कार,
अपमान, अनादर, अवमानना—महा० ५।११ ।

परिभूषणः [परि + भूष् + ल्युट्] किसी भूमि का समस्त
राजस्व छोड़ कर जो सधि की गई हो ।

परिभोगः [परि + भुज् + घञ्] 1 उपभोग—रघु०
४।५ 2 विशेष कर वैचुन,—रघु० ११।५२, ११।
२१, २।३० 3 हुलारे के सामान का अवैध प्रयोग ।

परिभ्रज् [परि + भ्रजू + घञ्] 1 बच निकलना 2
गिरना ।

परिभ्रजः [परि + भ्रजू + घञ्] 1 भ्रमना, इधर उधर
टहलना 2 भ्रमा-किरा कर बात कहना, बम्बाल,
बकौपित 3 भूल, भ्रम ।

परिभ्रमणम् [परि + भ्रजू + ल्युट्] 1 भ्रमना, इधर उधर
टहलना, पर्यटन 2 बारी मोर भ्रमना, बचकर काटना,
परिधि ।

परिभ्रष्ट (भू० क० कृ०) [परि + भ्रजू + क्त] 1 गिरा
हुवा, स्थगित 2 बच कर निकला हुआ 3 फेंका हुआ,
अधःपतित 4 बन्धित, मृत्यु (अपा० या करण० के
माप) 5 अवहेलना करने वाला ।

परिभ्रंश (वि०) [प्रा० श० सं०] गोलकार, गोल,
बतलाकार,—लम् पिड, गोलक 2 घेंद 3 पत्त ।

परिचर (वि०) [प्रा० सं०] अत्यन्त मद, शि० १।७।८ ।

परिचर (वि०) [प्रा० सं०] 1. अत्यन्त मद, घबला, बिभुसुल
पीका परिचर मुन्यनयो दिवस—शि० १।३ 2
अत्यन्त मंद 3 बहुत थका हुआ—शि० १।३२ 4
बहुत बोझा—शि० १।२७ ।

परिचरः [परि + च् + अच्] विनास—विरात् सप्तस्यास्तु
प्रलय इव चौर परिचर—महावी० ३।५१ ।

परिचर्ये, **परिचर्येणम्** [परि + च् + घञ्, ल्युट् वा]
1 गहनता, पीसना 2 कुचलना, पैरो के नीचे रीसना
3 विनास 4 चोट पहुँचाना, सति पहुँचाना
5 आक्षिप्त, परिचरण ।

परिचर्ये: [परि + च् + घञ्] 1 ईर्ष्या, अहंश्चि 2 क्रोध ।

परिचरः [परि + च् + अच्] 1 सुगय, सुवास, सीरध,
सहक—परिमलो गोविण्णेतो हर माणि० १।६३,
१६,७०,७१, मेघ० २५ 2 नुचयुक्त पदाचों का
पीसना 3 सुगयस्य 4 सहवास अवपरिचरज्जय-
नायकत्वोम् कि० १०।१ 5 विद्वत्सभा 6 कलक,
धम्बा ।

परिचरित्त (वि०) [परि + च् + क्त] 1. सुगंधित
2 कल्पित, सीरधयं भ्रष्ट ।

परि(री)भाषणम् [परि + भा + ल्युट्, पक्षे उपसर्गस्यदीर्घं]
1 मापना, (सक्ति या ताकत की) माप—सद्य
परात्परिभाष विवेकभूट—महा० १।१०, कृ० २।८,
मनु० ८।१३३ 2 तोल, सच्चा, मूल्य—मात्र० २।६२,
१।३११ ।

परिचार्थः, **परिचार्थणम्** [परि + मार्ग + घञ्, ल्युट् वा]
1. ठूठना, खोज करना, तलाश करना, पता लगाना,
पदाधिक देखते हुए खोज निकालना 2 स्वार्थ, सम्पर्क
—शि० ७।७५ 3 माक करना, पोछना ।

परिचार्थणम् [परि + च् + ल्युट् + ल्युट्] 1. माजना,
ताक करना, झाड़-पोछ करना 2 भी और साह्य से
कनी मिटाई ।

परिचिन्त (भू० क० कृ०) [परि + चा + क्त] 1 मध्यय,

मित्यप्ये 2. सीमित 3. माया हुआ, नपानुला
4 विनिर्मित, समजित। सम०—**ब्राह्मण** (वि०)
घोड़े आपसपन धारण करने वाला, मध्यमरूप में
बलबहुत, —**ब्राह्मण** (वि०) अल्पानु, घोड़ी उग्र बीने
वाला, —**बाह्यार**, —**बीजन** (वि०) परहेजगार, मिला-
हारी, कमभोजन करने वाला, —**कष** (वि०) घोषा
बोलने वाला, मितभाषी, नष्ट तुल्य प्रदत्त बोलने वाला
—**मेघ** ० ८३।

परिमिति (स्त्री०) [परि + मा + क्तिन्] 1. माप, परि-
माण 2. सीमाबंधन।

परिमिलनम् [परि + मिल + ल्यट्] 1. मर्ग, मपकं,
रत्न० २।१२ 2. सम्मिश्रण, मेल।

परिमृक्षम् (अध्व०) [अमृ० न०] मूह के मामले, (किर्म्यं
के) इदं विदं, चरगे ओर।

परिमृश (वि०) [परि + मृश + क्त] 1. मोला माला,
प्रिय, मरल, मनोहर 2. आर्यक परगु मूषं।

परिमृषित (प्र० क० कृ०) [परि + मृ + क्त] 1. परो
नले रोदा हुआ, कुचला हुआ, पददलित, दुष्यं बहारा-
प्रल—परिमृषितमृषालीम्पानममम्—मा० १।२२,
उत्तर० १।२४ 2. आलिंगित, परिभ्रमण किया हुआ
3. मसला हुआ, पीसा हुआ।

परिमृष्ट (भू० क० कृ०) [परि + मृ + क्त] 1. घोषा
हुआ, मना हुआ, बुझा किया हुआ 2. मसला हुआ,
गर्भ किया हुआ, वषषपाया हुआ—वेपी० ३
3 आलिंगन 4 फेंका हुआ, ध्यात, बरा हुआ—कि०
६।२३।

परिमेष (वि०) [परि + मेष + क्त] 1. घोड़े, सीमित—
परिमेषपुर—सटी—रघु० १।३७ 2 जो माया जा
मके, मिला जा मके 3 माल, जिसकी सीमा हो,
समापका।

परिमेष [परि + मेष + घञ्] 1. हटाया, मुक्त
बन्ना—प्रायो विषयपरिमेषोक्षनधूतमागान् कृत्वाण-
कार नृपतिनिधिनि क्षुर्ये—रघु० १।६२, सीमा की
हटाना—अर्थनि सीमा तोड़ डालना 2 मुक्त करना,
स्वत्व करना, छुटकारा 3 खाली करना, मल्लयाय
4 वच निकलना 5 मोक्ष, निर्वाण।

परिमोक्षणम् [परि + मोक्ष + ल्यट्] 1. मुक्ति, छुटकारा
2. लाल देना।

परिमोष [परि + मृ + घञ्] चुराना, छुटाना, चारो।

परिमोषिन् (पुं०) [परि + मृ + णिनि] चोर, छुटेरा।

परिमोहणम् [प्रा० सं०] 1. बहकाना, प्रलोभन देना,
फुसलाना, मन्त्रमुष करना 2. आभोहित करना, प्रेम
में अन्धा करना।

परिम्लान (भू० क० कृ०) [परि + म्ला + क्त] 1. मुसोया
हुआ, मूँछित, कुहलाया हुआ, कृ० २।२ 2. आन,

शिशिल 3 क्षीण, निस्तेज, हृदय 4 मलिन,
कमकित।

परिरक्षक [परि + रक्ष + क्तुन्] रक्षा करनेवाला, अभि-
भावक।

परिरक्षणम्, **परिरक्षा** [परि + रक्ष + ल्यट्, अङ् + टाप्
ञ] 1 रक्षा, मयागण, देखभाल करना—मनु० ९।
५४, ७।२ 2 ध्यान रखना, रनाये रखना, पालन-
पोषण—न सममपरिरक्षण सम ते—कि० १।४५,
3 छुटकारा, बचाव।

परिरथ्या [प्रा० म०] गली, सड़क।

परि(रो)रथ, **परिरथनम्** [परि + रथ् + घञ्, पक्षे उप-
सर्गस्यदीर्घः परि + रथ् + ल्यट्] आलिंगन करना,
अक में भर लेना द्रुतपरिरथोन्नयोनक्षमत्वम् शि०
१।७६, १०।५२, उत्तर० १।२६, २७, कि पुरेज मस-
भ्रम परिरथन न ददासि—गीत० ३।

परिरथिन् (वि०) [परि + रथ् + णिन्] ओर में
चिल्लाने वाला, चोखने वाला, गट लयाने वाला।

परिलुप्त (वि०) [प्रा० सं०] 1 बहुत हल्का (शा०),
(कपडा आदि) 2 बहुत हल्का या जल्दी पचने
वाला—क्षीय क्षीय परिलुप्त पय क्रोतसा बोधमृज्य
—मेघ० १।३ 3 बहुत छाटा—उत्तर० ४।२१।

परिलुप्त (भू० क० कृ०) [परि + लुप् + क्त] 1 अल-
बोहित, सबाध, घटाया हुआ 2 नष्ट, लुप्त।

परिलेख [परि + लिख् + पञ्] 1 रूपरेखा, आलेखन
चित्रण गारा 2 चित्र।

परिलोष [परि + लुप् + घञ्] 1 क्षति 2 उपेक्षा
भूयवक।

परिधत्तर [प्रा० सं०] वर्ष, एक मनुष्य वर्ष, वर्ष क
आवर्तन—देव्या सुव्यम्प जगनी द्वादश परिकामर
—उत्तर० ३।२३।

परिवर्जनम् [परि + वृत् + क्यट्] 1 छोड़ना, त्यागना
नजना 2 छोड़ देना, तिलाकिल देना 3 बध, हत्या।

परि(री)कल [परि + वृत् + घञ्, पक्षे उपसर्गस्य
दीर्घः] 1 परिक्रमण, (ग्रह आदि का), घूमना 2
कालक्रम, कालक्रम, कालमिति—द्वयगतपरिवर्तनं
—श० ७।३४ 3 घुम का अंत शि० १।७।१२ 4

आकृति, पुनरावर्तन ५ परिवर्तन, बदल-बदल तदी-
दशा जीवलोकस्य परिवर्तते उत्तर० ३, 'बीजन की
परिवर्तन अवरथा' 'परिन्वितियो में अदग-बदल, इसी
प्रकार जीवलोकेपरिवर्तनमनुभवामि—मा० ७, स्वर

परिवत मूच्छ० १६ प्रत्यावर्तन, पलायन, अपक्रमण
7 वर्ष 8 पुनर्गम्य, आवागमन 9 विनिमय, बदला-
बदली—शि० ५।३९, 10 पुनरागमन, वापसी 11

आवाप्त 12 किसी पुस्तक का अन्वय या परिच्छेद
13 कर्मावतार, विद्यु का दूसरा अवतार।

परिवर्तक (वि०) [परि+वृत्+णिवृत्+ण्वल्] 1 घुमाने वाला, चक्कर देने वाला 2 बदला घुमाने वाला, बापिस करने वाला ।

परिवर्तनम् [परि+वृत्+ण्वल्] 1 इधर उधर घुमाना, इधर उधर मुड़ना (विस्तर आदि वि०) कण्ठके बदलना—कु० ५।१२, रघु० १।१३, वि० ४।४७ 2 इधर उधर मुँह फिराना, चक्कर काटना, भकराना 3 कालिकाल, चक्र का अन्त 4 बदलना- वेपपरिवर्तन विधाय-पञ० ३ 5 अदला-बदली, विनिमय 6. पलटना, उलटना ।

परिवर्तिका [परि+वृत्+ण्वल्+टाप्, इत्वम्] (आयु०) लिंग की अक्षयता का सिद्धि वाला ।

परिवर्तिन् (वि०) [परि+वृत्+णिवृत्] 1 इधर उधर मुड़ने वाला, घूमने वाला 2 मदा-प्रत्यावर्ती, बार २ आने वाला, परिवर्तिनि समारो मूल. को वा न जायने—पञ० १।२७ 3 बदलने वाला 4 निकट रहने वाला, इधर उधर घूमने वाला 5 प्रत्यावर्ती, पलायन शील 6 विनिमयशील 7 क्षतिपूर्ति करने वाला, बदला देने वाला ।

परिवर्धनम् [परि+वृत्+ण्वल्] 1 बढ़ना, विस्तृत होना 2 संवर्धन, पालन-पोषण करना 4 उदा होना, वृद्धि ।

परिवर्धय [परि+वृत्+णिवृत्] अत्र-परि+वृत् अय] गीष् ।

परिवर्ह [परि+वृत्+अच्] बापु के सात मागों में एक—छटा माग, इसी माग से सप्तयि धूमते हैं तथा आकाश गया बहती है,—सर्वाधिक स्वर्गना षष्ट परिवर्हस्तया बापु के दूसरे मागों के लिए दे० 'बापु' के नीचे, तु० कालिदास द्वारा दिये गये परि वर्ह का वचन । चण्डोग्य बहनि यो गगनप्रतिष्ठा ज्योतीधि बतंयति च प्रविभक्तारश्मि, तस्य द्वितीय हरिविभक्तानिलम्बक वायोत्रिभ परिवर्हस्य वर्दानि मागंम्—श० ७।६ ।

परि (री) बाहः [परि+वृत्+घञ्, पञ्जे उपसर्गस्य दीर्घ] कण्ठक, निन्दा, बदनामी, गाली अयमेव सवि प्रथम परिवारदत्त—मालवि० १, याज्ञ० १।१३३ 2 लोक-पवाद, कलक, हूण, अपकीर्ति—आ भूपरीवादन-वाचनम्—रघु० ५।२४, १४।८६, महावी० ५।२८ 3 दांभी डेहराना, दोषारोपण करना—मूळ ३।३० 4 शारीरी बजाने का उपकरण ।

परिबाहकः [परि+वृत्+णिवृत्+ण्वल्] 1 वादी, अभि-प्रास्ता, दोषारोपक 2 मांगी बजाने वाला ।

परिबाहिन् (वि०) [परि+वृत्+णिवृत्] शरीरघटी मुनाने वाला, निन्दा करने वाला, गाली देने वाला, बुरा-प्रस्ता कहने वाला 2 दोषारोपण करने वाला 3 पीछने-बाजा, चित्ताने वाला 4 निवृत्त, कलकित—(पु)

दोषारोपण करने वाला, दांभी, अभिप्रास्ता,—श्री सात तारों की धीणा, वि० ६।९, रघु० ८।३५ ।

परि (री) बाहः [परि+वृत्+घञ्, पञ्जे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 मुड़न या हलामत करना, मुड़ना या बाक काटना 2 बोना 3 जलाशय, पत्तल, पोसर, जोगह 4 मानान (घरका) 5 नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग ।

परिबाधित (वि०) [परि+वृत्+णिवृत्+क्त] मुड़ा हुआ जिसके बाल कटे हुए हों या जिसने हजामत करा ली हो ।

परि (री) बाहः [परिबाधिते अनेन परि+वृत्+घञ्, पञ्जे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 नौकर-चाकर, अनुचर वर्ग, टहलपु, अनुवादी (यान) अन्धस्य कन्या परिवार क्षीभि—रघु० ६।१०, १२।१६, ब्रह्मणपरिवारो राजमायं प्रदोष—मूळ १।५७ 2. डनकन, चादर 3. म्यान, कोष ।

परिवारणम् [परि+वृत्+णिवृत्+ण्वल्] 1 ढकन, लिफाफा 2 नौकर चाकर, अनुचर 3. दूर ढटाना ।

परिवारित (भू० क०कृ०) [परि+वृत्+णिवृत्+क्त] 1 परिवेष्टित, लपेटा हुआ, घेरा हुआ 2 व्याप्त, फैलाया हुआ वि० ३।३४ कि० ५।५२, -तच्च ब्रह्मा का वनुष ।

परिवाल [परि+वृत्+घञ्] आवास स्थान, ठहरना, टिकना, प्रवास, बसेरा ।

परि (री) बाहः [परि+वृत्+घञ्, पञ्जे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 (हालाश का) ।

परिबाहिन् (वि०) [परि+वृत्+णिवृत्] छलकता हुआ, जैसा कि—आनन्दपरिबाहिना चतुपा—श० ४ ।

परिविष्णु (ज्ञ०), **परिविस्त**, **परिवर्तिनि**: [परि+विद्+ण्वल्+क्त] पञ्जे नत्वधत्तयोगभाव, परि+विद्+क्विप् अविवाहित बहा भाई जिसके छोटे भाई का विवाह हो गया हो दे० मनु० ३।१७१, 'परिविस्त' भी ।

परिविष्ट [परि+व्यप्, वन] कुदरे का विशेषण ।

परिविबक, **परिविबत्** (पु०) [परि+विद्+ण्वल्, शतु वा] विवाहित छोटा भाई जिसका बहा भाई अवि-वाहित हो ।

परिविहारः [परितो विहार प्रा०स०] इधर उधर सैर करना, घूमना, टहलना ।

परिविह्वल (वि०) [प्रा०स०] अत्यन्त व्याकुल, क्षुब्ध या घबहाया हुआ ।

परिवृत्: [परि+वृत्+क्त] स्वामी, प्रभु, मालिक, प्रधान, मुख्य (विशेषण) की भाँति भी प्रयुक्त कि भूय परिवृत्ता न चिन्तं तु तन्नामुपनता विचरते—नै० ५।५२, कु० १२।५८, महावी० ६।२५, ३१, ४८ ।

परिवृत् (भू०क०कृ०) [परि+वृत्+क्त] 1 घिरा हुआ, परिवेष्टित, सेजित 2 प्रच्छन्न, गुप्त 3. व्याप्त, फैला हुआ 4 मात ।

परिवृत्त (पू० क० ड०) [परि+वृत्+क्त] 1. घुमा हुआ, मोड़ा हुआ अर्थसूची विषय ० ११७ 2. प्रत्यावर्तित पीछे घुमा हुआ 3. अबला-बदली किया हुआ, विनि-मय किया हुआ 4. समायत्त किया हुआ, अन्त किया हुआ, सम् अन्तिगान ।

परिवर्तितः (स्त्री०) [परि+वृत्+क्तिन्] 1. क्रांति - शि० १०११ 2. बापनी, लौटना 3. विनियम, अबला-बदली 4. अन्त, समाप्ति 5. घेरा 6 किसी स्थान पर टिकना, बसना 7. (अल० शा०) एक बालकार जिसमें किसी मयल, कम वा बड़ी वस्तु से विनियम हो -परिवर्तितविनियमो योऽर्थाना स्यात्समा-सर्गै -भाष्य० १०-उदा०-दत्त्वा कटासमेणाशी जग्राह हृद्यं मम, सया तु हृद्यं दत्त्वा गृहीतो मदन उवर । शा० प० ७३६ 8. अर्थ को बिना बदले एक शब्द के स्थान में दूसरा शब्द रखना, जैसा कि शब्दपरि-वृत्तिग्रहत्वम् काव्य० १० उदा० 'युवध्वज' में 'ध्वज' के स्थान में लोछन वा बाहन लनाया जा सकता है ।

परिवर्द्धिः (स्त्री०) [श्रा० सं०] सवर्धन, बढ़ती, उन्नति ।

परिवेत् (पु०) **परिवेत्तः** [प्रा० सं०] विवाहित छोटा भाई जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो रघु० १२-१६, श्रेष्ठे अनिश्चिते कनीयान् निविद्यान् परिवेत्ता भवति, परिवेत्तौ श्रेष्ठे, परिवेत्तनीया कन्या, परि-दायी दाता, परिकर्ता यावत्, सर्वे ते पतिता हारोत् ।

परिवेत्तम् [परि+विद्+ल्युट्] 1 बड़े भाई के अविवाहित रहते छोटे भाई का विवाह 2 विवाह 3 पूरा या सही ज्ञान 4 उपाश्रय, अधिपश्य 5 अम्प्राधान, - ११६० 6 सर्ववर्मान्, विषयव्यापी या विषय-मत्ता, भा 1. समसदारी, बुद्धिमत्ता 2 बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता ।

परिवेत्तनीया, **परिवेत्तनी** [परि+विद्+अनीयर+डाप परि+विद्+निगि+डोप्] उन छोटे भाई को पत्नी जिसका बड़ा भाई अविवाहित हो ।

परि (री) **वेषा** (प) [परि+विष् (पु)+क्ञ्] पक्षे उपसर्गस्य दीर्घे 1 भोजन के समय सेवा करना, भोजन बाटना, भोजन परोसना 2 वृत्त, चक्र, (दीर्घि) बल रघु० ५१७४, ११२३, शि० ५१५०, १७१९ 3. (विशेषण) सूर्यमण्डल या चन्द्रमण्डल लक्षणे स्म तदनन्तर परिवर्द्धनीय परिवेषमण्डल रघु० ११५९ 4. वृत्त की परिधि 5 सूर्यविष, चन्द्रविष 6 कोई वस्तु जो घेरती है या रखा करती है ।

परिवेषकः [परि+विष्+क्ञ्] भोजन परोसने वाला ।

परिवेषणम् [परि+विष्+ल्युट्] 1 भोजन परोसना, (सेवा के लिए) प्रस्तुत रहना, भोजन वितरण करना 2 लपेटना, घेरना 3 सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल 4 परिधि ।

परिवेषणम् [परि+वेष्+ल्युट्] 1 घेरना, लपेटना 2 परिधि 3 ढक्कन, आवरण ।

परिवेष्यत् (पु०) [परि+वेष्+तृच्] भोजन के समय सेवा करने वाला, भोजन परोसने वाला—मस्त परि-वेष्यटारो मन्मत्स्यावसन् गृहे—ऐत० ।

परिवेष्यः [प्रा० सं०] 1 लायन, मृत्यु 2 विवर्धमाना ।

परिवेष्याथ [परि+व्यप्+थच्] नरकुल या मरगडे की एक जाति ।

परिवेष्या [परि+वृत्+व्यप्+टाप्] पहलकदमी करना, जगह जगह घूमते फिरना 2 सन्तानो होना, सार्व महात्माओं को जीवन बिताना 3 सामाजिक मोहमाया का त्याग, ब्रह्मण्यं अनुराग, धार्मिक साधना ।

परिव्याज् (पु०) **परिव्याज**, **व्याज्** [परिव्याज्य सर्वज्ञ विप-यभोगान् व्रजति परि+वृत्+विभृत्, घञ्, वृत्तु वा] भ्रमणशील साधु, अव्यूल, तपस्वी, सन्तानो (चौधे आश्रम में) जिसने सांसारिक मायामोह का त्याग कर दिया हो ।

परिव्याजस्त (वि०) (स्त्री० ती) [प्रा० सं०] सदा के लिए उसी रूप में बना रहने वाला ।

परिव्याष्ट (वि०) [परि+व्याप्+क्त] छाटा हुआ, बचा हुआ, श्लथ् सम्पूरक, अतिरिक्त जैसा कि 'वृद्ध परिव्याष्ट' ।

परिव्याप्तम् [परि+व्याप्+ल्युट्] 1 वर्षा, सम्पर्क (शा०)—लक्षितलबलानापरिव्याप्तकामयमन्यसमीरे शीत १, इसी प्रकार अन्तकमन्परिव्याप्तक-मिहितः १११ 2 अनवरत सम्पर्क, आगामीमेल-जोन, पत्र व्यवहार 3 लक्ष्यण, (किन्ती यस्तु मे) आसक्ति, स्थिर या निश्चित वृत्ति साधारणं सा० द० ।

परिव्याप्तिः (स्त्री०) [प्रा० सं०] 1 पूर्ण वृत्ति, अनि^१ उन्नत ४ 2 दोग-वृद्धि, गृहार्थ ।

परिव्याप्त (पु० क० ड०) [परि+व्याप्+क्त] 1 पूरी तरह सूखा हुआ, मुखाया हुआ, तपाया हुआ, तथा महत्वा परिशुक्लनात् रघु० ११११ 2 मुखाया हुआ, कुम्हलाया हुआ, (पानी की भाँति) चिपका हुआ, एक एक प्रकार का तला हुआ मास ।

परिव्याप्त (वि०) [प्रा० सं०] विशुद्ध खाली, रघु० ८१६६ 2 सर्वथा स्वतन्त्र, गितान्त शून्य ११६६ ।

परिव्याप्त [परि+वृत्+क्त] तीक्ष्ण प्रतिगः ।

परि (री) **वेष** [परि+विष्+घञ्], पक्षे उपसर्गस्य दीर्घे 1 बचा हुआ, बाकी 2 परिधि 3 समाप्ति उपसहार, सपुत्ति ।

परिव्याप्त, **परिव्याप्तम्** [परि+वृत्, घञ्, ल्युट्] 1 धुड़ करना, माजना 2 छुटकारा, भागवतरण, (शून्य आदि का) मुक्ताना ।

आसपास, पड़ोस, पर्वोत्सव (किन्नी नदी, पहाड या नगर का) — मोरारपुरपरिवारस्थ विरस्तटानि — उग्र० ३१८, परिवारविषयेषु लोडमुक्ता कि० ५३८, २ विहित, स्थान ३ चौधरी, अजे ४ मृत्यु ५ नियम, विधि ।

परिसरणम् [परि + सृ + ल्यट्] इधर-उधर दौडना ।

परिसरपे [परि + सृ + घञ्] १ इधर-उधर घूमना, २ शोक में निकलना, पीछा करना, अनुसरण करना ३ घेरना, मण्डलाकार करना ।

परिसर्पणम् [परि + सर् + ल्यट्] १ चलना, रेतना २ इधर-उधर दौडना, उड़ना, भागना — पनपते परिसर्पणे च तुल्य — मुच्छ० ३१२१ ।

परि (री) सर्वा, परि (री) सारः [परि + सृ + ञ + यच् + टाप् घञ् वा एते उपसर्गस्य दीर्घे] इधर उधर घूमना करना प्रदर्शना, फेरों ।

परिस्तरणम् [परि + स्तृ + ल्यट्] १ बिछाना, फैलाना, इधर उधर बसेरना २ आरक्षण, उक्कन ।

परिस्फुट (वि०) [प्रा० सं०] १. सर्वथा समतल, व्यक्त, स्पष्टसोचर २ पूर्वविकसित, फूला हुआ, बहा हुआ ।

परिसफुरणम् [परि + स्फुट् + ल्यट्] १ कपकपी, धग्धगी २ क्लीं का मिलना ।

परिस्वः [परि + स्वृ + घञ्] १ रमना, वृत् ० टप-कना, चुना २ बहाव, पारा ३ अनुचरवर्ग — दे० 'परिस्वरे' ।

परिस्वः [परि + स्वृ + अच्] १ बहना, बहाव २ नीचे सरकना ३ नदी, निरंग्र ।

परिस्वाव [परि + स्वृ + णिच् + अच्] निकाम, निस्वाव ।

परिस्तुत् (स्त्री०) [परि + स्तृ + विभय + तुक्] १ एक प्रकार की मशीनी धराव २ रिसना, टपकना, बहना ।

परिस्तुता [परिस्तुत् + टाप्] १ एक प्रकार की मादक धाराव २ रिसना, टपकना, बहना ।

परिस्तव (वि०) [परि + हृ + क्त] डीला किया हुआ ।

परिस्तरणम् [परि + हृ + ल्यट्] १ छोड़ना, तजना, निला-अजि देना २ टालना, कतराना ३ निराकरण करना ४ पकड़ना, ले जतना ।

परि (री) हार [परि + हृ + घञ्, एते उपसर्गस्य दीर्घे] १ छोड़ना, तजना, निलाअजि देना, त्याग देना २ हटाना, दूर करना जैसा कि 'विरोधपरिहार' में ४ निराकरण करना, निवारण करना ५ उम्मेद न करना, भ्रूण, बूक ६ आरक्षण, गुन रखना ७ गांव या नगर के चारों ओर सामान्य भूखण्ड — घट्ट दार परिहारो धामस्य म्पलममनुन — मनु० ८१२३७ ८ विशेष अनुदान, छूट, विशेषाधिकार, शुल्क के माफी या छुटकारा मनु० ७२०१ ९ तिरस्कार, अनादर १० आपत्ति ।

परिहासिः (नि) (स्त्री०) [प्रा० सं०] १ पटो, कमी, नुकसान २ मुर्झाना, सीप होना — रघु० १९१५० ।

परिहास्यं (वि०) [परि + हृ + घञ्] कतराये जाने के योग्य, टाले जाने के योग्य, जिनमें क्या जाय, जिनमें ले जाया जाय वा दूर किया जाय ककण ।

परि (री) हासः [परि + हृ + घञ्] १ मशोक, मजाह, हँसी, ठट्टा — स्वर्गाप्रस्तावाऽऽद न क्वत् परि, गान् विभय — मा० ६१४, परिहास्यवम् — मशोक में, हँसी दिम्बगी में — रघु० ६१८२ — परिहासविजल्पिणम् — मा० २१४८, मशोक में कहा हुआ — परीहासादिचया सततमभवत् येन भवत्, वेणी० ३१४४, कु० ७११९, रघु० ११८, मि० १०१२२ २ हँसी उठाना, उपहास करना । सम० — वेदिन् (पु०) विदुषक, हंसांकडा, रसिक व्यक्ति ।

परिहृत (भु० क० ह्र०) [परि + हृ० क्त] । कतराया हुआ टाला हुआ २ छोड़ा हुआ, परिस्पन्न ३ निराकृत, अपास्त (आरोग्य या आपत्ति आदि) ४ लिया हुआ, पकड़ा हुआ दे० परिपूर्वक 'हृ' ।

परीक्षक [परि + ईक्ष् + ल्यट्] परीक्षा लेने वाला, जांच करने वाला, म्याज करने वाला ।

परीक्षणम् [परि + ईक्ष् + ल्यट्] जांच पड़ताल करना, परखना, इन्तहाल लेना — मनु० ११११७ ।

परीक्षा [परि + ईक्ष् + अ + टाप्] १ इन्तहाल, जांच, परख-परीने विद्यमानेऽपि प्राये रम्यपरीक्षा — मालाव० १, मनु० १११९ २ (विधि में) जांच-पड़ताल के विविध प्रकार ।

परीक्षित् (पु०) [परि + शि + क्तिप्, तुक्, उपमगस्य दीर्घे] अज्ञेय का पौष, अभिमन्यु का पुत्र, बुधिरिठ के परपत्नी पत्नी हस्तिनापुर की गृही पर बैठा, शीघ्र डाग काटे जाने पर इसकी मृत्यु हुई । कहते हैं, इसी के गज्य से कल्पियुग का आरम्भ हुआ ।

परीक्षित (भु० क० ह्र०) [परि + ईक्ष् + क्त] परखा किया, जांच पड़ताल की गई — परीक्षित काव्यमुवर्ग-मेतत् — विक्रम० १२४४ ।

परीत (भु० क० ह्र०) [परि + ई + क्त] १ चिरा हुआ, पर्याप्त २ मरान हुआ, बीना हुआ ३ बिपत, व्यनित ४ पकटा हुआ, अधिकार में किया हुआ, भग हुआ — कोषपरीतमानसम् — कि० २१२५, मुद्रा० ३१३० ।

परीताप, परीपाक, परीषाद, परीषाह, परीहास आदि — दे० 'परिजात' आदि ।

परीपा [परि + आप् + सन् + अ + टाप्] १ प्राप्त करने की इच्छा २ अन्वी, शीघ्रता ।

परीरम् [पृ + ईरन्] एक फल ।

परीरणम् [परि + ईर + ल्यट्] १ कछुवा २ छड़ी ३. पोषाक, वेष्टाभूषा ।

परोक्षिः (स्त्री०) [परि+इप्+कित्] 1 अनुसन्धान, पृच्छाद्य, गन्धेयता 2 सेवा, परिचर्या 3 आवरण, पूजा, श्रद्धाजलि ।

पथः [पृ+उ] 1 जंङ्ग, गीठ 2 अवयव, अंग 3 समूह ४. स्वर्ग, बेंकुछ, 5 पहाड़ ।

पथम् (अध०) [पृथक्स्मिन् वस्तु-इति पूर्वस्य परभाषः उत्पद्यते] यत् सर्वं, पिच्छमा साह ।

पथ्यार [ब० सं०] घोडा ।

पथ्य (वि०) [पृ+उपन्] 1 कटांग, कथा, सल्ल, कडा (विष्) मृदु या श्लक्ष्ण) पथ्य चर्म, पथया माला-आदि 2 (शब्द आदि) कट, अपभाषित, निच्छट, निष्कल्प, कृत्, निर्मम, (बाक्) अपथया पथ्यासार-मीनिता—रघु० १८, पथ० ११५०, (अपथि श्री) गीत० ९, याज्ञ० १३०९, 3 (शब्द) कर्णकट, लक्ष्मिण-नेत्र बल्लारुपस्वनं घन्त् रघु० ११५६, मेघ० 4 कथा, म्भून्, भृदरा, (बाष्) मैला-कुचैला गुदम्यानात्पथ्यजनकं—मेघ० १९ 5 नीक्ष्य, प्रथय, मज्जन्, उन्मुक्, (वायु आदि) शेषक—एतपपत्रशेषे-गणित्यनमाकथयं—ऋगु० ११२२, २१८ 6 टोस, याज्ञा 7 मोहन, मैला,—अथ कठीर वा दुर्बचनमुक्त भाग्य अपभाषण । सम०—इतर (वि०) जो क्त्वा न हा, कोमल, मृदु—रघु० ५१८,—उत्थिः—अथ-न्म अपभाषित ।

पथ्य (नपु०) [पृ+उम्] 1 मन्थि, ध्रुविय, जंङ्ग, गीठ 2 अवयव, परोक्ष का अत्र ।

पथेत् (भू० क० कृ०) [पृ+इ+त्] निवसत, मृत्युप्राप्त, मृत—त प्रेत्, भूत् । सम०—अत्,—रथ् [पृ०] मृत्यु का देवता, वसगात्र शि० ११५७,—भूक्तिः (स्त्री०)—वस्तु कश्चिन्मात्रं कु० ९८ ।

पथेक्षि, पथेक्षु (अध०) [परस्मिन् अहनि, जि० मापु०] दूसरे दिन, और दिन ।

पथेष्ट (स्त्री०), पथेष्टका [पर+इप्+तु, पथेष्ट+कन्+टाप्] कय याव जो कई बार गया चुकी हो ।

पथेक्ष (वि०) [अक्ष] परम—अ० सं०] 1 दृष्टिपराम में परे, या बाहर, जो दिखट न दे, अवीच 2 अनुपस्थित—स्वाते वृत्ता भूगतिभिः परोक्षे—रघु० अ१३ 3 मृत्, अज्ञान, अपरिचित परोक्षमन्थयो अत्र—श० २१९८, काम के प्रभाव से अपरिचित—हि० प्र० १०,—जः मयामी—अथ 1 अनुपस्थिति अपावृत्ता 2 (आ० में) भूतकाल (जो बक्ता ने न देना हो) परोक्षे लिट्—या० ३१२११५, 'परोक्ष' के कर्म०, तथा अर्थ० के ए० व०—(अर्थात् परोक्षम्, परोक्षे) 'अनुपस्थिति में' 'दृष्टि में परे' 'पीठ पीछे' अर्थ को प्रकट करने के लिए 'किपाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं (सर्व० के बिना, या साथ)—परोक्षे

मलोक्तं शक्यते न समाप्तं—मालवि० २, परोक्षे कामहृत्कार प्रत्यये प्रियवादिन्म—अथ० १८, गोदा-हरेदस्य नाम परोक्षमर्थि केवलम्—मनु० २१११९ । सम०—जोगः स्वामी की अनुपस्थिति में किसी वस्तु का उपभोग,—कृत्ति (वि०) अज्ञानों ने दूर रहने वाला (सिः—स्त्री०) अदृष्ट और अज्ञात जीवन ।

परोक्षि, परोक्षी [पर+उप्+कित्] परः समु उत्पौ वस्था व० सं०] लेखच्छटा (श्रीपुर परः समु उत्पौ रय का एक कोडा) ।

पथ्य [पृ+उप्य, वि०] पकारयत् जकार] 1 बरतने वाला मेष, गज्जने वाला बादल, बादल या शेष—प्रमृद्ध इव पथ्येत् सारौर्यनिमित्तं—रघु० १०११५, यत् नदयो बधुत् पथ्येत्वा—तै० सं०, मृच्छ० १०१६ 2 बागिया,—अज्ञातपति भूतानि पथ्येत्वात्समभव-मम० ३१४ 3 दृष्टि का देवता अर्थात् इन्द्र ।

पथ्यं (पुंग० उभ०)—पथ्येति-ने) हागभग कर्त्ता—वसत पथ्येति अथकम् ।

पथ्यम् [पथ्यं+अच्] 1 पथ, बाज जैसा कि 'मुपथं' में 2 बाण का पक्ष 3 पत्ता 4 पान का पत्ता,—कैः डाक का पेट । मय०—आत्मन् पते आकर जीना (क.) बादर,—अति, काली मुपथी, आहार (वि०) पते आकर निर्वाह करने वाला, उद्वेग पत्तो की कुटिया, मापुओं की झोपड़ी, आश्रम,—कार पथवाडी, तमोली, पान बेचने वाला,—कुटिका,—कुटो पत्तो की बनी कुटिया,—कृष्ण, प्रायश्चित्त सबधी साधना जिसमें प्रायश्चित्तकार को पीछे दिन तक पते और कुशाओ का काड़ा पीकर रहना पड़ता है, दे० याज्ञ० ३३१७, इसके ऊपर मिताशरा भी,—अथः फूलपत्तो के बिना बस (—इम्) पत्तो का डेर,—शौरपथः शिव का किमेषण, शौरक एक प्रकार का सुगंध द्रव्य,—नर-पत्तो में बनाया गया पुतला जो अघ्राण सब की जगह रखकर जलाया जाता है,—पैथिनी प्रियमुक्ता,—भोजनः बकरी,—पथ्य (पु०) बाधे की मोसम, गिशिर श्नुत्,—भृश बूझों की आलाओ पर रहने वाला जगली जानवर, क्वं (पु०) बसात श्नुत्,—लता पान की बेल,—शौचिका पान का बीजा,—अथ्या पत्तो की लेज, आला पत्तो की बनी कुटिया, मापुओं का—आश्रमनिविष्टा कुलपतिना स पथ्यालाभध्यास्व—रघु० ११५५, १२१५० ।

पथ्यत् (वि०) [पथ्यं+लच्] पत्तो में भरा हुआ, पत्तो वाला—मट्टि० ६११४३ ।

पथ्यति [पृ+अक्षि, कृष्] 1 पानी के मध्य लडा भयन, शीघ्र भयन 2 कमल 3 शाक तन्वी 4 तवाबट, प्रतापन, भृगुवार ।

पथ्यि (पु०) [पथ्यं+इति] वृक्ष ।

पवित्त (वि०) [पर्व + इत् + क्] दे० 'पर्वत' ।

पर्व (प्रा०) भा०-पर्वते) पार भारता, अपानभाव्यु छोडना ।

पर्वे [पर्व + अच्] 1. केस समूह, घना बाल 2 पाद, अपान भाव्य ।

पर्वे [पृ + प] 1 मया उगा घाम 2 पनु-पीठ, पनुगाडी—येन पीठेन पयवचरति न पर्वे—पा० ४।४।१० पर सिद्धा० 3 पर ।

पर्वरीकः [पृ + ईकन्] 1 सूयं 2 आग 3 जलाघय, तालाव ।

पर्वक (अव्य०) [परि + अच् + क्विप्] चारो ओर, सब दिशाओ में ।

पर्वक [परिगत अङ्गम्-ज्या० म०] 1 खाट, पलग, सोका 2 अकला 3 समाधि-अवस्था में योगी के बैठने की विशेष अवस्थिति—योगालन 4 बीरासन—बसिष्ठ द्वारा दी गई परिभाषा—एक पादमर्दकस्मिन् विन्यम्योटी तु सस्यतम्, इतरस्मिस्तथैवोद्य बीरगमनमुदाहृतम् । पर्वकश्चिबच आदि—मू० १।१। सम०—बच जाच के सहारे बैठने की स्थिति जिसे 'पर्वक' कहते हैं, पर्वकश्चिबचरपुर्वकायम्—कु० ३।४५.५६,—मोतिम् (पु०) एक प्रकार का सोप ।

पर्वदण्य, पर्वदित्तम् [परि + अट् + ल्युट्, क्त वा] घूमना, इधर उधर भ्रमण करना, दाखा करना ।

पर्वेनुजोत [परि + अन् + भृञ् + भञ्] किसी उक्ति का अर्थन करने के उद्देश्य में पुरुताछ (दुषकार्य जिज्ञासा—दुला०) एतेनास्थापि पर्वेनुजोतस्थानवकाश—दाय० ।

पर्वत (वि०) [प्रा० स०] से सीमा बद्ध, तक फैला हुआ—समद्रपर्वता पृथिवी—समुद्र की सीमा से आरम्भ पृथ्वी, -त. 1 अर्द्धत, परिधि ८ गोटे, किनारा, झगजी, चरमसीमा, हृद—उद्वपर्वेनचारिणी—श० ४,

पर्वेन्तवनम्—रघु० १३।२८ ऋतु० ३।३ 3 पार्वत, कञ् -रत्न० २।३, रघु० १८।४३ 4 अन्न, उपसहार, समाप्ति—पच० १।१२५। सम०-वेश—भू,—भूमिः मिला हुआ या जुड़ा हुआ प्रदेश,—पर्वत सलग्न पहाड़ ।

पर्वतिका [प्रा० स०] अच्छे गुणों की हानि, अष्टाचार, नैतिक पतन ।

पर्वतः [परि + इ + अच्] कान्ति, पवन, निदवान—काट-पुर्वयान्—गा० ३।२१७, मनु० १।३०, १।१२७ 2 (समय की) बर्बादी, या लोना 3 परिवर्तन, अदल-बदल 4 उद्वट पुनट, अव्यवस्था, अनियमितता 5 शास्त्रीय मर्यादा का अतिक्रमण, कर्तव्य की अवहेलना 6 विरोध ।

पर्वयणम् [परि + अच् + ल्युट्] 1 चारों ओर घूमना, प्रदक्षिण 2 पीठे की जीम ।

पर्वयशात (वि०) [प्रा० स०] पुरी तरह मुद्ध और पवित्र ।

पर्वयशोप [प्रा० स०] बाधा, विघ्न ।

पर्वयशालम् [प्रा० स०] 1 अन्न, समाप्ति, उपसहार 2 निर्वाण, निश्चयन ।

पर्वयशित (भू० क० कृ०) [परि + अच् + तो + क्त] 1 समाप्त किया गया, अन्न तक किया हुआ, पूरा किया हुआ 2 नष्ट, लुप्त 3 निर्धारित ।

पर्वयस्था, पर्वयस्थानम् [परि + अच् + स्था + अङ् + टाप्, ल्युट् वा] 1 विरोध, मुकाबला, भाषा 2 वैपरीत्य ।

पर्वयधु (वि०) [प्रा० व० स०] औसुको से भरा हुआ, अधुपरिप्लावित, जौम् बहाने वाला, अधुयुक्त—पर्वयधुको मयलभगवीरनं लोचने मोलपित्तं विषेहे—कि० ३।३६, पर्वयधुस्त्रजल मूर्धनि चोपजघ्नो—रघु० १३।७० ।

पर्वयत्नम् [परि + अत् + ल्युट्] 1 फेरना, इधर उधर डालना 2 भोजना, फकेलना 3 भेज देना, 4 स्थगित करना ।

पर्वयत्त (भू० क० कृ०) [परि + अत् + क्त] 1 इधर उधर फेंका गया, चमेरा गया पर्वयत्तो धनजयम्यपरि गिलीमूवानार वेणी० ४, वि० १०।११ 2 घेरा हुआ, मण्डलाकृत 3 उलटाया गया, उलथा हुआ 4 पदबन्धन, एक ओर रक्ता हुआ 5 प्रहार किया हुआ, पीट पट्टाया हुआ, मारा हुआ ।

पर्वयति (स्त्री०) पर्वयित्वा [परि + अत् + क्तिन्, पर्वयति + कन् - टाप्] बीरासन, पलग ।

पर्वयिक्तुल (वि०) [प्रा० म०] 1 मिला, गदा (पानी आदि) 2 अव्यवस्थित, उद्विग्न, भयभीत—श० १ 3. क्रमहीन, अव्यवस्थित, उपल-पुपल—श० १।३० 4 उन्मत्त, मूर्ख, ध्वंशना हुआ—पर्वयिक्तुलोऽस्मि म० ६, ऋतु० ६।२२ 5. भरा हुआ, पूरा—स्नेह०, क्रोध० आदि ।

पर्वयिगम् [परि + या + ल्युट्, पृथो०] जीन, काठी—दत्त-पर्वयिगम्—का० १२६, जीन कसा हुआ ।

पर्वयित्त (भू० क० कृ०) [परि + अच् + क्त] 1 प्राप्त किया हुआ, हासिल किया हुआ, उपलब्ध 2. समाप्त किया हुआ, पूरा किया हुआ 3 भरा हुआ, पूर्ण, समान, मारा, समझ-पर्वयित्तं चनेन धरत्विषामा—कु० ७।७६, रघु० ६।४४ 4 योग्य, मसाम, यथेष्ट रघु० १०।५५ 5. काफी, यथोचित—रघु० १५।१८, १७।१७ मनु० १।१७,—पतम (अव्य०) 1. स्वेच्छा-पूर्वक, तापगता के साथ 2. समन्वय, काफी, यथेष्ट रूप से पर्वयित्माचामति उत्तर० ४।१, यथेच्छ पी लेता है 3 पुरी तरह, तो, योग्यतापूर्वक, समानता के साथ ।

पर्याप्तः (स्त्री०) [परि+आप्+कित्] 1. प्राप्य करना, अभिप्रेक्षण 2. अन्त, उपसंहार, समाप्ति 3. काफ़ी, पूर्णता, बखेदता 4. तृप्ति, संतोष 5. साधारण, प्रहार को रोकना 6. उपयुक्तता, समानता ।

पर्याप्तः [परि+इ+अच्] 1. बन्द कर लाना, अन्ति 2 (समय को) समाप्ति, ख़त्मती होना, बीतना 3. नियमित परावर्तन, या आवृत्ति 4. बारी, उत्तराधिकार, उचित या नियमित क्रम -पर्याप्त सेवानुसूच्य -कृ० २।३६, मनु० ४।८७, मुद्रा० ३।२७ 5. प्रवाली, व्यवस्था 6. तरीका, रीति, प्रक्रिया की प्रवाली 7. समानार्थक, पर्यायात्मी - पर्याप्तो निघनस्याव निघनत्व शरीरीनाम्—पञ्च० २।१९, पर्यस्तस्य पर्याप्त इमे—आदि 8. सृष्टि, निर्माण, तैयारी, रचना 9. धर्म, गुण 10. (अक्ष० में) एक अक्षर—दे० काव्य० १०, चन्दा० ५।१०८, १०९, सा० द० ७२३ (विश्वे० पर्याप्तं किमा विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ बनाता है 1 बारी बारी से, उत्तरोत्तर, नबर्बार, नियमित क्रम से 2. यथावसर, कभी कभी -पर्याप्तं हि द्युतेते स्वप्नाः काम मुनामुना—बेभो० २।१३ । सम० - उन्नत एक अक्षर, बुधकिरा कर कहुना, बक्रोक्ति या बाक्प्रपञ्च से कहुने की रीति, जब बात को बुधा किरा कर या वाग्जाल के साथ कहा जाय - उदा० दे० चन्दा० ५।६५, या सा० द० ७०३, -व्युत् (वि०) गुप्त रूप से उजाड़ा हुआ, जितका स्थान छलपूर्वक ले लिया गया है, -बध्मन् -शब्दः समानार्थक, -शयन् बारी २ सोना और चौकरी रखना ।

पर्याप्तो (अव्य०) [परि+आ+अल्+ई] हाति या क्षति को (हिसन) अभिव्यक्त करने वाला अव्यय जो प्राय कृ, भू या अस् से पूर्व लगाया जाता है वथा पर्याप्तोक्त्य—हितित्वा ।

पर्याप्तोक्त्यन्त - ना [परि+आ+लोप्+स्युट्] 1 साध-यानता, समीक्षा, बिचार, परिपक्व विमर्श 2. ज्ञानता, पहचानना ।

पर्याप्तः, पर्याप्तंन्तम् [परि+आ+भृत्+अच्, स्युट् वा] वापित आना, प्रत्यागमन ।

पर्याप्तिक (वि०) [प्रा० सं०] बड़ा दबका, पैसा, मिट्टी में भरा हुआ रत्न० ७।४० ।

पर्यस्तः [परि+अस्+अच्] 1 अन्त, उपसंहार, समाप्ति 2 परावर्तन, अन्ति 3. उलटा क्रम या स्थिति ।

पर्यहारः [परि+आ+हृ+अच्] 1 बीसा बोने के लिए कंधे पर रखना वथा जुआ 2 ले जाना 3. बोझा, भार 4. धरा 5 अनाज को नबार में रखना ।

पर्युक्तम् [परि+उच्+स्युट्] विना किसी मन्तोच्चारण के चारों ओर घुमपाव जल के छीटि देना ।

पर्युक्तम् [परि+उच्+स्था+स्युट्] बसा होना ।

पर्युक्त (वि०) [प्रा० सं०] 1 लोक-पूर्ण, सेव युक्त, सिद्ध, दुःख स्वप्न को, रत्न० ५।६७ 2 अत्यन्त दृग्भूत, बाधुर, सोलुक्त, प्रबल दृग्भा रखने वाला—स्मर पर्युक्त एव माधव—कृ० ४।२८, विष्णु० २।१६ ।

पर्युक्तम् [परि+उच्+अच्+स्युट्] 1. श्च, उच्चार 2. उच्चार लेना, उठाना, उद्धार करना ।

पर्युक्त (पू० क० कृ०) [परि+उच्+अल्+स्युट्] 1. बाह्यकृत किया हुआ, निकाला हुआ 2 रोकना (नियमित) बाधाएँ उठाई गईं ।

पर्युक्तः [परि+उच्+अस्+अच्] अपवाह, निषेध युक्त नियम वा विधि ।

पर्युक्तान्तम् [परि+उप+स्था+स्युट्] सेवा, टहल, उपस्थिति ।

पर्युक्तान्तम् [परि+उप+आप्+स्युट्] 1 पूजा, सम्मान, सेवा 2 निघता, शिष्टता 3 पाठ पाठ डेंडाना ।

पर्याप्तः (स्त्री०) [परि+अप्+कित्] बीना, बीजना ।

पर्युक्तम् [परि+उच्+स्युट्] पूजा, अर्घा, सेवा ।

पर्युक्त (वि०) [परि+अप्+स्युट्] बाकी, जो उराना न हो १० 'अपर्युक्त' 2 फोका 3. मुर्ख 4. बमही ।

पर्युक्तम्, -ना [परि+अप्+स्युट्] 1 सर्व द्वारा परेषना 2 लोक, सामान्य पूज-पाठ 3 भद्राञ्जलि, पूजा ।

पर्याप्तः (स्त्री०) [परि+इप्+कित्] शीघ्र, पूजताड ।

पर्युक्तम् [पर्येना अन्विता कार्यात्—पर्यन्+कै+क] चूटने का जोड़ ।

पर्येनी [पर्ये+स्युट्, सिन्धवां कीप्] 1. पुणिया, या युक्त-प्रतिपदा 2 रत्न 3 (आयु० में) जल की क्षति का विशेष रोप ।

पर्यतः [पर्ये+अच्] 1 पहाड़, गिरि—परबुधवर-मानुषवर्तीकृत्य निरधन्—भर्तु० २।७८, व पर्येतावे नमिनी प्रदीहति 2. बट्टान 3 इतिव पहाड़ का ढेर 4. 'तात' की लकवा 5. दूत । लव०—अदिः इन्द्र का विशेषण, -आश्वकः मंगल का विशेषण, -आश्वकः पार्ष्णी का विशेषण, -आश्वकः बाबल, -आश्वकः सरय तानक काव्यगत यतु, -ककः पहाड़ी कोना, -आ नदी, -पतिः हिमालय पहाड़ का विशेषण, -मोक्षय हाड़ी केना, -रत्न (पु०), -राजः 1. विशाल पहाड़, 2. पर्येता का स्थायी हिमालय, -श्व (वि०) पहाड़ी, पर्यत पर स्थित ।

पर्यन् (नपु०) [पृ+अन्ति] 1. पाठ, चोड़ (पहूवीहि समस्त के अन्त में कभी कभी बतल कर 'पर्य' हो जाता है बीना कि 'अन्तानुविपर्येना—रत्न० १२।११' में 2. अक्षय, संय 3. अर्थ' माय, लक्ष 4. युक्त, 5.

अभ्यास (बैसा कि महाभारत में 5. जीने की लड़ी
—रघु० १६।४६ 6. अर्थात्, निश्चित समय 7. विद्य-
कर, अन्धकार के कारण परिवर्तन अर्थात् दोनों पक्ष की
अच्छी वृत्ति तथा अभावस्था 8. अन्धकार के परि-
वर्तन काल के अक्षर पर अनुचित धर 9. वृत्ति
या अभावस्था, —अर्थात् बहुकलपेन्दुवक्रता विभावरी
कथय कथ अभिव्यक्ति - कालवि० ४।१५, रघु० ७।३३
भनु० ४।१५०, मनु० २।३४ 10. सूर्य या अन्धकार
का प्रकृत 11. उत्सव, त्योहार, हर्ष का अवसर
12. सामान्य अवसर । सम०—काल. 1. अन्धकार
का आध्यात्मिक परिवर्तन 2. बहु काल जब अन्धकार
पूर्वस्थिति में से गुजरता है (मिलते या निकलते समय),
—कालवि० (पु०) बहु बाह्यत्व की अभावस्था आदि
के आध्यात्मिक अन्धकार या उत्कारों की अपने लाभ के
कारण सामान्य विनों में करता है, —गामिन् (पु०)
पर्व आदि साम्य निषिद्ध अवसरों पर भी अपनी
पत्नी से संबंध करने वाला स्थिति, - चि चन्द्रमा, —
शोभिः देव, नरकुल, —रघु० ५।१० अन्धकार का ब्रह्म,
—स्थितिः वृत्ति या अभावस्था (पु०) प्रतिपदा के अर्थ
का सत्य, अर्थात् वृत्ति या अभावस्था की समाप्ति
पर प्रतिपदा आरम्भ ।

पर्वः [पर शान् मृषालि—पर+शु+कु स व इत् वा
स्युषति शान्—स्युष+शान्, व आदेश] 1. कुडार,
कुलहाडी—पु० पररघु० 2. सख, हृदिदार । सम०—
पारिः 1. गणेश का विशेषण 2. परशुराम का
विशेषण ।

पर्वका [पर्व=कन् + टाप् +] पत्नी ।
पर्ववच. [= परवच + वा + क, पुं०] दे० 'परवच' ।
पर्व्व (स्त्री०) [पृष् + अदि] 1. तथा, सम्मिलन, सम्मर्द
2. विशेषकर धर्मसभा—वाङ्० १।९ ।

पत्नः [पत् + अच्] पुत्राल, भूमी, — लम् 1. मात, आदिप
2. कर्ष का ताल 3. तरल पदार्थों को मापने का मान
4. सबब मापने का मान । सम०—अवि. पित,
—अंश कछुआ, —अदः, —अज्ञान पिशाच, राक्षस,
—आर शक्ति, —अथ पत्न्यर करने वाला, राज
—प्रियः 1. राक्षस 2. पहाड़ी कीवा, —भा मप्याङ्ग
की विपुलीय छाया—अर्थात् मप्याङ्ग के समय घृष्यही
के जील की तलकालीन छाया ।

पत्नकट (वि०) [पत् मांस कटति—पत् + कट् + कच्, मुन्]
शिक, घृष्यविल ।

पत्नकरः [पत् नाम करोति—पत् + कृ + अच्, द्वितीया
या अल्लक] पित ।

पत्नकमः [पत् कपति—पत् + कच् + अच्, द्वितीयाया
अल्लक] 1. राक्षस, पिशाच, दानव, — लम् 1. मांस
2. कौचद, रत्नक 3. पिसे हुए तिल व पीसी मिला-

कर बनाई गई मिठाई, गवक । सम०—अन्धः पित,
—प्रियः 1. पहाड़ी कीवा 2. राक्षस ।

पत्नः [पत् + वा + क] मछलियाँ पकड़ने का जाल या
टोकरा ।

पत्नकृ (पु०, मनु०) [पत्स्य मासस्य अदभिव—पत्
+ अच् + कृ] व्याज—मनु० ५।५, वाङ्० १।१७६ ।

पत्नकथः [पत् मासम् आच्यते बाहुल्येन अच—पत् + अच्
+ कथ्] 1. हाथी की घुटपुडी 2. पम्हा, रस्सी ।

पत्नकथम् [परा + अच् + स्मृट् रस्य ल] भागना, लौटना
उठान, बच निकलना मय० १।८।४३, रघु० १५।३३

पत्नकथि (पु० क० क०) [परा + अच् + कथ्] भागना
हुआ, लौटा हुआ, बीड़ा हुआ, बच निकला हुआ ।

पत्नकः—लम् [पत् + कालम्] गुडाल, भूमी—नै० ८।२
सम०—दोहवा आम का वृक्ष ।

पत्नकः [पत् + अच् + इन्] मांस का डेर ।

पत्नकाश. [पत् + अच् + अच्] एक वृक्ष, डाक का पेड़—
किशुकनवालापलायनवाचनम् पुर—सि० ६।२, —अम्

1 इस वृक्ष का फूल—बाहुल्यमाध्यिकायाभावाच्च
पत्नकाशान्तिलोहितानि—कु० ३।२९ 2 पत्ता, पत्तड़ी
—अल्लकालायातयोचरास्तरो—सि० १।२३, ६।२
3 हरा रस ।

पत्नकामिन् (पु०) [पत्नाग + इन्] डाक का पेड़ ।

पत्नकामि [पत्ति + अच्, तस्य क, दोष] 1. भूडी स्त्री जिसके
बाल सफेद हो गये हों 2. पहली बार ही ब्याई हुई
श्री, बालगमिणी ।

पत्नकः [परि + हन् + अच्, वादेश, रस्य ल] 1. शीघ्र
का बर्तन, घड़ा 2. फसल, परकोटा 3. लोहे की बटा
—मु० परिच 4. गोधाला, गोगूह ।

पत्नित (वि०) [पत् + क्त] भूरा, धबल, सफेद बालों
वाला, बुढ़ा, बुढ़ा, तातस्य मे पत्नितमौलिनिरस्तकाशे
(शिरसि)—वेणी० ३।१९—कल्प 1 सफेद बाल या
बालों की सफेदी जो बुढ़ापे के कारण हुई हो—अंशेयो-
शक्येवाह पत्नितच्छदना जरा रघु० १२।२, मनु०
६।२ 2 अधिक या अलकृत फेस ।

पत्नितकरण (वि०) [अपत्नित पत्नित क्रियतेऽनेन पत्नित
+ कृ + क्यन्, मुम्] सफेद करने वाला ।

पत्नितपत्नित्यु (वि०) [अपत्नित पत्नितो भवति—पत्नित
+ अच् + पत्नित्युच्, मुम्] सफेद होने वाला ।

पत्निक [पत्नित अर्थात्पत्नित, परि + अच् + कच्, रस्य ल]
पत्नक, जाट—दे० पर्वक ।

पत्निकम् [परि + अच् + स्मृट्, रस्य ल] 1. बीन, काठी
2. रास, लवाम ।

पत्निकः [पत् + अच्] अनाज का बड़ा भण्डार, खली ।

पत्निकः—अच् [पत् + विष् + पत्, कृ + अच् = लच्, पत्
धातो लवच कर्म० ल०] 1 अक्षर, कौषल, दहली

—करपल्लव, ललेप सनडमनोत्तमपल्लवा—रघु० १।७
 2. कली, मन्त्री 3 विलार, फलाष, अभिलसुति
 4. कालरय, महाहार, अमलत 5 सामर्थ्य, शक्ति
 6. घाल की पत्ती 7 ककच, बाबूबर 8 प्रेम, केलि
 9 चम्पलता, वः स्वेच्छाचारी। सम०—अंगूर,
 —आचारः शाका, —अस्वः कामदेव का विशेषण,
 —इः अशोक वृक्ष।
पल्लवकः [पल्लव + क + क] 1 स्वेच्छाचारी 2 लीला,
 वाहु 3. रंजी का प्रेमी 4 अशोक वृक्ष 5 एक प्रकार
 की मछली 6 अकुर।
पल्लविकः [पल्लव, भूयारो रश् अस्ति अल्प—पल्लव +
 ट्] 1 स्वेच्छाचारी, रसिया 2 लीला, बांका,
 छेक।
पल्लविक (वि०) [पल्लव + इत्] 1 अकुरित होने
 वाला, गई २ कोपको से युक्त 2 फला हुआ, 'अस्तुत'
 —अल पल्लवितेन 'बस रहने दो और शौचिक विस्तार'
 3. साक्ष से लास रत्न हुआ—तः साक्षका रत्न।
पल्लवित् (वि०) (स्त्री०—नी) [पल्लव + इति] 1 गई २
 कोपको से युक्त, नये किलकयो वाला—कु० ३।५४,
 - (पु०) वृक्ष।
पल्लि, पल्लि (स्त्री०) [पल्ल + इत्, पल्लि + डीच्]
 1. छोटा गाँव, 2 झोंपडी 3 घर, पडाव 4. एक
 नगर या कस्बा (नगरो के नामो के अन्त में प्रयुक्त
 जैसे कि पितारपल्लि) 5 छिपकली।
पल्लिका [पल्लि + क्त + टाप्] 1 छोटा गाँव, पडाव
 2. छिपकली।
पल्लकम् [पल्ल + क्वच्] छोटा तालाब, छप्पड, ओहड़,
 तडाव (अल्प हर) त पल्लवजलेऽमुना रूप
 वर्तताम्—भावि० १।२, रघु० २।१७, ३।२, । सम०
 —आवृत्तः कछुवा—पवः छप्पड का गाटा, कीचड।
पवः [प + अप्] 1 बायु 2 पवित्रोकरण 3 अनाज फट-
 कना—अम् गोबर।
पवनः [पृ + स्पृट्] हुआ, बायु सर्वां पिवन्ति पवन न च
 दुर्बलास्ते—मुमा०, पवनपद्मी, पवनसुत भादि—मनु
 1 पवित्रीकरण 2 फटना 3 चलनी, हरना
 4 पानी 5 कुम्हार का आवा (पु० भी) —नी लाड।
 सम०—अवहन—मृत् (पु०) सप, —अवहनः 1 हनुमान
 का विशेषण 2 भीम का, विशेषण 3 आग, —आसः
 सप, सप, —मासः 1 गडह का विशेषण 2 मोर,
 —तमक, —हुतः 1 हनुमान् का 2 भीम का विशेषण,
 —आधिः 1 कृष्ण के सहाहकार और मित्र उदब
 का विशेषण 2 गटिया।
पवमानः [पृ + मान्, मृत्] 1 हुआ, बायु—पवमान
 पवित्रीकरण—रघु० ८।९, 2. एक प्रकार की
 यज्ञानि जिसे गार्हपत्य कहते हैं।

पवसा [पृ + आप्, नि० सायु] बबबर, भीषी, मत्तावाण।
पविः [पृ + इ] रश् का वज्र।
पवित (वि०) [पृ + त्] पवित्र किया हुआ, छाना
 हुआ—सम् काली निवर्।
पवित्र (वि०) [पृ + इत्] 1 पुनीत, पावन, निव्याप,
 पवित्रीकृत (अस्ति वा अस्तुर्) —वीणि आटे पवित्रानि
 दीहिमः सुतपस्तिला—मनु० ३।२३६, पवित्रो नर,
 पवित्र स्थानम् भादि २ सुद. छाना हुआ 3. यज्ञादि
 के अनुष्ठानों द्वारा पवित्र किया गया 4 पवित्र
 करना, पाप धोना, —अम् 1. छानने वा सुद करने का
 उपकरण, चलनी, हरना 2. कुल की दो पत्नियां जो
 यज्ञ में भी को पवित्र करने तथा छीटे देने के काम
 आती हैं 3. कुशा की बनी अंगूठी जो कई यामिक
 अवसरों पर भीषी जेलनी में पहनी जाती है 4. जनेऊ
 जो क्षिणुजाति के प्रथम तीन वर्ष पहनने में 3 तीसा
 6 ऋष्टि 7. अल 8. रयकना, माजना 9 अर्थ देने
 का पात्र 10. भी 11. बहुर, मपु। सम०—आरौप्यम्,
 —आरौहणम् यज्ञोपवीत धारण करने का संस्कार,
 उपनयन संस्कार, —धाणि (वि०) दर्भपात्र की टाप
 से धानने वाला, —वाण्यम् भी।
पवित्रकम् [पवित्र + क + क] तन या सुतलो का बना
 आल या रस्ता।
पविव्य (वि०) [पवृ + यन्] 1 मवेशियो (गाय भेसों
 आदि) के लिए उचित या उपयुक्त—याज्ञ० १।२२१
 2 पशुओं से या रेवड वा लहड़े से संबंध रखने वाला
 3 पशुओं का स्वामी 4. पशुनायक।
पशुः [संबंधविशेषण स्वयति—पृ + क्त, पशवित]
 1 मवेशी, (एक या समष्टि) मनु० ३२७, ३३१
 2 अजिबर 3. बलिपशु जैसे कि बकरा 4. नृपंत,
 जगली, तिरस्कार प्रकट करने के लिए नर बाबक
 शब्दों के साथ जोडा जाता है—पुण्यपशोवपशोव
 को विशेष - हि० १. पु० नृपशु, नरपशु 5 एक उप-
 देवता, शिव का एक अनुचर। सम०—अवशाम्य पशुवति
 —किष्वा 1 बलिपशु की प्रकृति 2. स्त्रीप्रसंग, —अश्वी
 बहु मण की कि बलि के पशु के कान में बोला जाता
 है, यह प्रसिद्ध वाचमीमत्र हास्यमय अनुकृति है—
 पशुप्राणाय विष्णु तिरस्छेदाय (विश्वकर्मा) कीर्ति,
 तन्नी शीव प्रशोदयान्, —आसः यज्ञ के लिए पशुओं
 का वच, —अर्वा सहवास, स्त्री प्रसंग, —अर्वाः 1 पशुओं
 की प्रकृति या लक्षण 2. पशुओं की चिकित्सा 3
 स्वच्छन्द मनु—मनु० १।६६ । विषवाविवाह,
 —वायः शिव का विशेषण, —वः स्वाला—वृत्तिः 1
 शिव का विशेषण देव० ३६, ५६, कु० ६।१५ 2
 स्वाला, पशुओं का स्वामी 3 'पशुपत' नामक धार्मि-
 निक सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाला सर्वज्ञ साधन

—३० कर्ण, —वाक्य—सामक्यः भाषा, पशुओं का भाषण करने वाला, —सामक्य, —सामक्य पशुओं को भाषण, उच्यते, —वाक्यः एक प्रकार का उचितवाच्य या वैदिक प्रकार—अथवा पशुओं को हुंकारना, —वाच्य (अर्थ) वाच्य की रीति के अनुसार—इष्टिपशु-कारण भाषितः शं० १, —वाक्य—वाच्य, —इष्टिपशु-कारण, —उच्यते (स्वी०) पशुओं को संबोधन के लिए रखी, —उच्यते किं, केतरी ।

पश्चात् (अर्थ) [अवर+मति, पश्चमाव] 1 पीछे से, पिछली ओर से पश्चाद्दृष्टपुत्रनाशाय—शं० १, पश्चाद्दृष्टीर्भवति हरिम् स्वांगमायच्छमान—शं० ५, (पाठान्तर) 2 पीछे, पीछे की ओर, पीछे की तरफ (विष० दुर) लच्छति दुर शरीर भावति पश्चादस-त्सुर्ल भेषः—शं० १३३, ३३० ? (समय और स्थान की दृष्टि से) बाद में, तब, इसके बाद, उसके अनंतर—लक्ष्मीपुत्रा बुद्धिनी च पश्चात्—मत्० २१६०, तत्र पश्चात्—उसके बाद—रघु० ४३०, १२३०, १०३१, १६१९, मेघ० ३६, ४४४ आखिरकार, अन्त में, अन्तोगत्या 5 पश्चिम से 6 पश्चिम की ओर, पश्चिम दिशा की तरफ । सम०—कूल (वि०) पीछे छोड़ा हुआ, भागे बड़ा हुआ, पृष्ठभूमि में फँका हुआ—पश्चात्कृता स्निग्धजनानिधीयते—कु० ७१८, रघु० १७१८, तत्रः पछताया, ग्लानि, पछताया च पछताया ।

पश्चाम् [अवरपश्चो अर्थ, कु० शं०, अवरत्य पश्च-माव] (शरीर का) पिछला भाग, या पार्श्व—पश्चा-त्तं द्रष्टव्यं शरपतनमत्राप्युपसा पूर्वकावम्—शं० १२० 2 (अथवा शरीर के दृष्टि के) अन्तिम—पश्चिमे कश्चि कर्तमानस्य का० २५ रघु० १९११, ५६, —पश्चिमाशानिनीनामात् प्रकाशयिष्येत्तना—रघु १७१८, स्वरात् पश्चिमाशाना—१७७८, वल पश्चि-मोः किमुः पारशी—मृग० ७३ 3 पश्चिमी, पश्चिमो अर्थ का—मनु० २१२२, ५१२२ (पश्चिमेन) किमाविशेषण के रूप में “पश्चिम में” बाद में “पीछे” कर्णों को प्रकट करने लिए, कर्ण० या संबंध के साथ प्रकृत, इकी अन्तर—पश्चिम में । तत्र०—अर्वाः 1 उत्तरार्ध 2 रात का पिछला पहर 3 रात्रि का पिछला भाग उच्यते पश्चिमरात्रोच्यते—कि० ४१०, (पाठान्तर) ।

पश्चिमा [पश्चिम+टाप्] पश्चिम दिशा । सम०—उच्यते उत्तरपश्चिम ।

पश्च्य (वि०) (स्वी०-दी) [द्यु+शतृ, पश्चादेच] देखने वाला, श्रवण मान करने वाला, अवलोकन करने वाला, दृष्टिगत करने वाला, निरीक्षण करने वाला अर्थात् ।

पश्च्योदरः [पश्च्य अन्तु अनाद्युत् हरति-दु+अच्, व० शं० अकृत् समास] चौर, कुटेरा, डाकू (वह व्यक्ति जो दूसरों की भाँचो के सामने ही या स्वामी के देखते रहने पर भी चोरी कर लेता है, जैसे मुनार) । **पश्च्यो** [द्यु+शतृ, पश्चादेच, नुम्] 1 बेरपा, रबी 2 विशेष—प्रकार की ध्वनि ।

पश्च्यम् [अपस्ययति सगीयुत् तिष्ठति यत्र—अप+स्य+कृत् नि० अकारलोप] घर, निवास, आवास पत्स्य प्रयानुमथ त प्रभुरापपुच्छे कीर्ति० ९१७५ ।

पश्च्य (पु०) पतत्रलिप्रचोत महाभाष्य के प्रथम अध्याय का प्रथम आश्रितक—शब्दविच्छेद नो भाति राजनीति-रत्नस्यवा—गि० २११२, (यहां ‘अपस्य्य’ का अर्थ है ‘विना मूल चरो के’) 2 प्रत्ययान्ता, उपाठोक्ति ।

पशु (ह्रस्व) वा, पशुकः (पु० व० व०) एक जाति का नाम, समस्त पशिया देखावती ।

पशु 1 (स्वा० पर० पिवति, पति, कर्मना० पीयते) 1 पीना, एक तास में चढ़ा जाना निव स्तय्य पीत—भाषि० ११६०, दुशासनस्य सधिर न पिबाद्भ्युरस्त—वेणी० १११५, रघु० ३१५४, कु० ३३६, मट्टि० १४१२, १५६२ चूडना पिबत्यमी पाययते च सिचू—रघु० १३१९, शं० ११२५ चित्तन कर्त्तना (आस और कान से पीना), उत्सव मनाना, ध्यान पूर्वक सुनना—निवातपरपस्तिमितेन पशुषुवा नृप-स्य कांत पवत सुनानम् रघु० ३११७, २११९, ७३२, ११३६, १३३०, मेघ० १६, कु० ७१६४ 5 अव-शोषण करना, पी जाना (बापे) आर्येहातिर्ग्रे पीत सधिर नु पतभिनि—रघु० १२१४८, श्रे०—‘गयवति—ते, 1 पिलाना, पीने के लिए देना,—रघु० १३१९, मट्टि० ८१४१, ६२२ सीधना,—इच्छा० पिपासति, पीने की इच्छा करना—ह्लाहल कलु पिपासति कीनु-केन—भाषि० ११५५ अन्तु—, बार में पीना, अनुसरण करना—अनुपास्यति बाध्यवृषित परलोकनत अभा-वलिम—रघु० ८६८, भा—, 1 पीना—रघु० १४१ २२ 2 पी जाना, अवशोषण करना, चूस लेना—भाषीतुर्ग्रे मन—मृच्छ० ५१२० उपेति सखिता ह्यस्त रत्नमापीय पाविष्यम्—मृग०, 3 (आँसू, कान से) पीने का उत्सव मनाना,—ता राचव बुद्धिनिग-पिषाय रघु० ७११२, नि—, 1 पीना, चूसना—अत-एव निपीयतेऽपर—पञ्च० १११८९, दतच्छद त्रिवलमेन निरीतारम्—मनु० ४११३ 2 (आँसू या कान से) पीना, सौन्दर्यबिलोकन करना, धरि—आरत्नसात्-कर्त्तना—उपनिषद परिपीता—राम० २१४०, ११ (अर्थात् पर०—पाति, पात) 1 पीना करना, देख-माक करना, चौकसी रखना, बचाना, सवारण करना—(शाय अया० के साथ) पर्याप्तोऽसि अर्थात् पातुम्

—रघु० १०२५, पांशु स्त्रीं—मृतेत्यस्य अर्धवचनिक-
वचनसङ्गच्छ—जुडाजुडा—मा० ११२, जीवन् पुर-
सत्त्वदुपलब्धेय, प्रजा, प्रजापालक विद्येभ्यो—रघु०
२१४८ 2 हुकूमत करना, शासन करना—पाशु
पुष्पीन् मृषा—मृच्छ० १०१६०, वेद०—पालयति
—ते 1 रक्षा करना, देखभाल करना, चौकसी रखना,
संभारण करना—रघु० दुष्टः स्वधर्मं प्रजास्त्व
पालयिष्यसि—अट्टि० ६१११२, मनु० १११०८ रघु०
११२ 2 हुकूमत करना, शासन करना—तां पुरी
पालयामास—रामा० 3 पालन करना, स्थिर रखना,
अनुपालन करना, पूरा करना (प्रतिष्ठा, धर्म आदि),
पालननगराय—रघु० १३१६५ 4. पालन पोषण
करना, संवर्धन करना, स्थापित रखना 5 प्रतीक्षा
करना—अत्रोपविश्य मूर्ध्निर्मायं. पालयतु कृष्णायमनम्
—वेणी० 1 अनु—1 बचाना, संभारण करना,
देखभाल करना, रक्षा करना मनु० ८१२७, परि-
1. बचाना, संभारण करना, देखभाल करना, रक्षा
करना—याज्ञ० ११३३४ मनु० ११२५१ 2 हुकूमत
करना, शासन करना,—मा० १०१२५ 3. पालन-
पोषण करना, संवर्धन करना, सहारा देना 4 स्थिर
रखना, पालन करना, जमे रहना, धैर्य रखना—अगीकृत
मुहूर्तानं परिपालयति—बीर० ५० 5. प्रतीक्षा करना,
इंतजार करना—अथ मदनबधूपरस्त्वसि अयनकृष्णा
परिपालयांबधूव—कु० ४५५६, प्रति—, 1 बचाना,
संभारण करना 2 प्रतीक्षा करना, इंतजार करना,
3 जमल करना, आशा मानना ।

पा (दि०) (समाप्त के अन्त में) [पा+विच्] 1 पीने
वाला, चढ़ा जाने वाला—जैसा कि सीमपा, अर्धपा
में 2 बचाने वाला, देखभाल करने वाला, स्थिर रखने
वाला—पोषा ।

पास (स) न (वि०) (स्त्री०—ना,—नी) [प्राय समाप्त
के अन्त में] [पत् (ष्) +स्त्वृट्, पुषो० दीर्घः]
कलकित करने वाला, अपमानित करने वाला, दूषित
करने वाला—पीत्यस्त्वयुष्पाशन—भार्गवी० ५ 2
विवाह करने वाला, अष्ट करने वाला 3 दुष्ट,
तिरस्कारणीय 4 बचाना, कुख्यात ।

पास (स) न (वि०) [पाशु (ष्) +अच्] बूध से मरा
हुवा ।

पाशु (शु) [पत् (ष्) +ङ्, दीर्घः] 1 बूल, गर्द, चूरा
(जीर्ण होकर गिरने वाला)—रघु० २१२, ऋगु०
१११३, याज्ञ० १११५० 2 बूलकण 3 पोषण, खाप
4 एक प्रकार का कपूर । सम०—कसीत्सु कसीत,
—कृषी प्रवसत पत्, रावधार्म,—बुधन् 1. बूल का
डेर 2. ऐसा कामूनी वस्त्रायेव जो किसी व्यक्ति
विशेष के नाम न हो, निरवयवशासन,—कुल (वि०)

बूल से मरा हुआ,—सारण,—अन् एक प्रकार का
नमक,—आवरण ओला,—अर्थः शिव का विशेषण,
—आवरः 1 बूल का डेर 2 शब्द 3 बूल से ढका
नदीतट 4. प्रधातु,—आत्मिकः शिव्यु का विशेषण,
—अस्त्वु बूल की परत या तह,—मर्धनः वेद की
बद्धों के पास चारों ओर से लोह कर पानी सींचने
का स्थान, आलवाल, बाँसला ।

पाशु (शु) रः [पाशु (ष्) +रा+क] १ डाल, मोमकनी
2 विकलाग, लुजा जो घाड़ी में बैठकर इधर उधर
बूधे ।

पाशु (शु) ल (वि०) [पाशु (ष्) +लच्] 1. बूल से
मरा हुआ धूलिधूसरित—मा० २१४ 2 अपवित्र,
दूषित, कलकित, कलकित—दारदधारी अत्रायाम्ही
परस्त्रीस्त्वसंपाशुल श० ५१२८ 3 दूषित करने
वाला, कलकित करने वाला, अपमानित करने वाला
—जैसा कि 'कुलपाशुल' में,—कः 1 दूषयित, स्वेच्छा-
चारी, लम्पट 2 शिव का विशेषण,—का 1. रवक्याला
स्त्री 2 असती या अग्निचारिणी स्त्री, अ० सती स्त्री
—रघु० २१२ 3 पुष्पी ।

पाशु [पच् + धञ्] 1 पकाना, प्रसाधन, सेकना, उखा-
रना 2 (ईह आदि) अर्ध लगाना, सेकना—मनु०
५१२२२, याज्ञ० ११८७ 3 (मोहन का) पचना
4. पका होना—ओषध्य फलपाकांता—मनु० ११५६
फलमिममूलापाक राजबद्धुपरस्त्व—विक्रम० ५१३३, मा०
११३१ 5 परिपक्वता, पूर्ण विकास—धो०, मति०
6 सम्पत्ति, निष्पन्नता, पूरा करना—मुषोत्र पाकाणि
मूकैर्मृत्यान् विनापना फले—रघु० १०४४ 7. मतीया
परिणाम, फल, परिणतन, (आत्म० भी) आशीर्षिरे-
षवामाशु पुर पाकाभिरविकाम्—कु० ६१९० पाका-
नियुक्तस्य देवस्य—अनर० ७७५, १५ कृत कार्यों
के फलों का विकास 9 अनाज, अन्न—नीवारपाकादि-
रघु० ५१९ (पचन्ते इति पाक. धान्यम्) 10 पकने
की क्रिया, (कोड़े आदि का) पकना, पीप पड़ना
11. बुझाने के कारण बालों का सफेद हो जाना
12 गांठपेशाबिनि 13 उन्मत् 14 बच्चा, शिशु
19. एक राक्षस जिसे इन्द्र ने मारा था । सम०—
आवारः, रघु—आवारः,—रघु—आला,—आव्यन्त
रत्तीई,—अतीसारः पुरानी पेशाब,—अभिवृक्ष (वि०)
1 पकने के लिए तैयार, विकामोन्मत् 2 हृत्पापरा-
यच,—अन् 1 काला नमक 2 उदरवायु,—आचन्
पकाने का बर्तन,—बुद्धी कृष्णार का भावा,—अः
मुष्ठावज, (इसके भेदों के लिए दे० मनु० २१४४ पर
उन्मत्) मुष्ठाका कटिया—आशमः इन्द्र का विशेषण
—कु० २१६३,—आत्मनिः 1. इन्द्र के पुत्र अचमत् का
विशेषण 2. मति तथा 3 अचमत् का विशेषण ।

पाककः [पाक+क] 1. जाग 2. हुवा 3. हाथी का खर—मु० कृत्पाकल ।

पाकित (वि०) [पाकेन निर्घृतम्—पाक+इभृत्] 1. पका हुआ, प्रसाधित 2 (प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से) पका हुआ 3. नमक आदि उबाल कर प्राप्त किया हुआ ।

पाक्, पाकुकः [पक्+उक्, क आदेशः] रसोद्घा ।

पाक्व (वि०) [पक्+धत्, क आदेशः] पकाने के योग्य प्रसाधित होने के लिये, परिपक्व होने के योग्य, —कः उदाहार घोरः ।

पास (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [पस+अण्] 1 (कृष्ण या शुक्ल) पस से सबंध रखने वाला, पासिक 2. किसी दल या पार्टी से संबद्ध ।

पासिक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [पस+ठक्] 1. पस से सबद्ध, अर्धपासिक 2. पसी से सबद्ध 3. किसी दल या पार्टी का पस लेने वाला 4. तक विषयक 5 ऐच्छिक, वैकल्पिक, अनुमत परन्तु विद्येय रूप से निर्धारित न हो—नियम पासिके मति,—कः बहेलिया, बिडीमार ।

पासक [पासीति—पा+क्वप्, वा प्रथीभर्म, त भङ्ग-मति -पा+कच्+अच्] विषयी, नामिक—पासक-बाल्यो, पासारभकयोर्मौलौ मुकयोर्भीकस्ता योचम्—मा० ५।२४, दुरासम् पासक चडाल—मा० ५ ।

पासक (वि०) [पासक्य, तस्मात् मल्लि विभक्तौ भवति -पा+गल्+अच्] विशिष्ट, जिसका दिमाग सराब हो ।

पास्येय, पास्य (वि०) [पसिन्+ठक्, यत् वा] 1 भोजन पसिने में एक साथ बैठने के योग्य 2 साहचर्य के उपयुक्त ।

पासक (वि०) [पक्+कृल्] 1 पकाना, सेकना 2 पकाने वाला, पोट्टक कः 1 रसोद्घा 2 आग, कम्पिल । मय० स्त्री महाराजिन, रसोई बनाने वाली स्त्री ।

पासक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [पक्+णिच्+स्वट्] 1 पकाने वाला 2 पकाने वाला 3 पकाने वाला, हाजिम्, न 1. आग 2. खदान, अमलता, मक् 1 पकाने की क्रिया 2 पकाने की क्रिया 3 घुसन-मोल, भोजन पकाने वालो औषधि 4 घाब करना 5 तपस्या, प्रायश्चित्त ।

पासक [पक्+णिच्+कलन्] 1 रमाइया 2. आग 3 हवा, कम्पकाना, परिपक्व करना ।

पासा [पक्+णिच्+अट्+टाप्] पकाना ।

पासकपाल (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [पसकपाल+अण्] पंच कपालों में भर कर दी गई बाहुनि से सबंध रखने वाला ।

पांचजन्य [पांचजन+ज्य] कृष्ण क शक का नाम—(दधानो) निष्ठाजानमभूत पांचजन्य मि ३।२१, भय० १।१५ । मय०—धर कृष्ण का विशेषण ।

पांचदश (वि०) (स्त्री०-श्री) [पांचदशो+अण्] मास की पन्द्रहवीं तिथि से सबंध रखने वाला ।

पांचदश्यम् [पांचदशन्+ध्वञ्] पन्द्रह का समुच्चय ।

पांचदश (वि०) [पांचदश+अण्] पांचदश या पचास में प्रचलित ।

पांचभौतिक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [पांचभूत+ठक्, द्विपद-वृद्धि] पांच तत्वों के समूह से बना हुआ, या पांच तत्वों वाला, पांच भौतिकी मूढि—महाकी० ९, शास्त्र० ३।१७५ ।

पांचवर्षिक (वि०) [पांचवर्ष+ठक्] पांच वर्ष का ।

पांचसहस्रिकम् [पांचसह+ठक्] 1 पांच प्रकार का सगीत 2 पाचन गवधो बाधयप ।

पांचाल (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [पंचाल+अण्] पंचाल से संबद्ध या पंचाल के शासक, कः 1 पांचाली का देश 2 पंचाला का राजकुमार, -कः (५०५०) पंचाल देश के लोग ।

पांचालिका [पांचाली+कन्+टाप्, हन्] गुरिया, पुतली-स्तव स्वागाप्रभृति सुसुप्ती दत्त पांचालिकेन क्रोडा-योग तदनु विनय प्राणिना सपिना च—मा० १०।५ ।

पांचाली [पांचाल] अण्, ङीप् 1 पंचाल देश की राज कुमारी या स्त्री 2. पण्डित की पत्नी, द्रौपदी 3. गुरिया, पुतली 4 (ब्रह्म०) रचना की चार व्रीहिया में से एक सा० द० द्वारा दी गई परिभाषा—वर्षे शेषे (अर्थात् माघशुभ्यजकौज प्रकामाभ्या भिन्नी) पुनर्द्वीप, मयम्न पंचपदी बंध पांचालिको मत ६२८ ।

पाट (अभ्य०) [पट+णिच्+क्विवर्] एक अभ्यय जो ब्रह्मने के लिए—अर्थात् संबोधन के रूप में प्रवृत्त हो जाना है ।

पाटक [पट+णिच्+कृल्] 1 विदारक, विभाजक 2 गण का एक भाग 3 गण का आधा हिस्सा 4 एक प्रकार का सगीत-उपकरण 5 तक, किताब 6 घाट की नौदिया 7 मूलधन या पत्नी की हाति 8 बिना या बालिध 9 पामे कटना ।

पाटपत्र [पाटयत् क्रिदन् चगति च+अच्, पुषो०] बौर, लुटेरा, पाट लगाने वाला, कुमुनरपाटपत्र—मा० ९, पंचनीपरिमालिपाटपत्र—भार्ग० २।७५ ।

पाटनम् [पट+णिच्+स्वट्] विदीर्ष्य करना, तोड़ना, फाड़ना, मट्ट करना ।

पाटल (वि०) [पट+णिच्+कृल्] पीतकल वर्ण, गुलाबी रंग, अथे स्त्री नलपाटलम् कुरवकम्—चिक्र०

२।३. पाटलपाणिना किलमूर—गीत० १२. कः
पीतरक्त, प्यात्रो वा गुलाबी रंग—करोलपाटलादेवि
बभूव ऋषेष्टितम्—रघु० ४।६८ ३ पाटल का फूल
पाटल समस्त सुरविबनवाता—म० १।३, -सम् १
पाटल वृक्ष का फूल रघु० ११।५९, १२।४६ २
एक प्रकार का चावल जो बरसात में तैयार होता है
३ केसर, जाफरान । सम०—उत्तम लाल, -भुवः
पाटल वृक्ष ।

पाटला [पाटल + अच् + टाप्] १ लाल लोख २. पाटल
का वृक्ष तथा उसका फूल ३ दुर्गा का विशेषण ।

पाटलिः (स्त्री०) [पाटल + इति] पाटल का फूल ।
सम०—भुवम् एक प्राचीन नगर, मगध की राजधानी,
जो आज भी नया के समान पर स्थित है, जिसे कुछ
समय वर्तमान 'पटना' मानते हैं, इनकी 'पुष्पपुर' वा
'कुसुमपुर' भी कहते हैं दे० मुद्रा० २।३, ४।१६,
रघु० ४।२६ ।

पाटलिक [पाटलि + कन्] छात्र, विद्यार्थी ।
पाटलिकम् (पु०) [पाटल + इमनिच्] पीतरक्त वर्ण ।
पाटला [पाटल + यत् + टाप्] पाटल के फूलों का गुच्छा ।
पाटलम् [पट् + अच्] १ तीरगता, पैनानप २ बनुराई,
दीवान, दसना, प्रवीणता—पाटव सक्तींकिन्धु हि०
१, कि० १।५६ ३ ऊर्जा ४ कुर्षी, उतावलापना ।

पाटलिक (वि०) (स्त्री०—की) [पाटव + टन्] १
बनुर तीरग, कुशल २ बूनें, चालबाज, मक्कार ।

पाटित (मं० क० कृ०) [पट् + णिच् + क्त] १ फाटा
हुआ चीरा हुआ, टुकड़े किया हुआ, तोड़ा हुआ २
विड, छिद्रित—रघु० ११।३१ ।

पाटो [पट् + णिच् + इन् + ङीप्] अकामित । सम०
गमितम् अकामित ।

पाटोर [पटोर + अण्] १ चन्दन—पाटोर लव पटोयान्
क परिपाटीमिमाश्रीकर्मन्—आमि० १।१२ २ सेत
३ रीता ४ बादल ५ बलनी ।

पाठः [पठ् + घञ्] १ प्रपठन, सस्वर पाठ, आवृत्ति
करना २ पठना, वाचन, अध्ययन ३ वेदाध्ययन, वेद-
पाठ, ब्रह्मयज्ञ, ब्राह्मणों के द्वारा पाँच वैदिक यज्ञों में
से एक ४ पुराण का मूलपाठ, व्याख्या, पाठभेद—
अथ गणवद्वयप्रभासन इति आगतुक पाठ, प्राचीनपा-
ठास्तु सुपरिचयभावन इति पुरिणभात मल्लि०
कु० ६।७ पृ० । सम०—अनतरम् द्वयग पाठ, पाठभेद,
—छेद विग्रह, यथे,—दोष द्विवि पाठ, पाठ की
अच्छाईयाँ, निश्चय, बिनी सदर्थ का पाठ निर्धारित
करना,—संशरी, शास्त्रिणी मैना, मारिका,—ज्ञाता
विद्यालय, मन्त्रीवकायक, त्रिधापरि ।

पाठक [पट् + णिच् + क्त] १ व्यापारक, श्राध्यायक,
मुद्र २ पुराण वा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का सार्वजनिक

पाठ करने वाला ३ आध्यात्मिक मुद्र ४ छात्र,
विद्यार्थी, विद्वान् ।

पाठनम् [पठ् + णिच् + ल्युट्] अध्यापन, व्याख्यान देना ।
पाठित (मं० क० कृ०) [पट् + णिच् + क्त] पढ़ाया
हुआ, पढ़ाया गया हुआ ।

पाठिन् (वि०) [पट् + णिच्, पाठ् + इति वा] १.
जिसने किसी विषय का अध्ययन किया हो २ जान-
कार, परिचित ।

पाठीन [पट् + ईनम्] १ नुरागा वा अन्य धार्मिक ग्रन्थों
की कथा करने वाला २. एक प्रकार की मछली
—विभूत पाठीन पराहन पव, कि० ४।५ ।

पाथः [पण् + घञ्] १. व्यापार, व्यवसाय २ व्यापारी
३. लेख ४. लेख पर लया वा गया दोष ५. करार,
६ प्रस्ताव ७. हाथ ।

पाथिः [पण् + इच्] हाथ—दानेन पाथिन् तु कुरुषेन
(विभाति)—मूल० २।७१,—णि (स्त्री०) मदी
(पाथी कृ हाथ में बामना, विवाह करना,—पाथी-
करणम् विवाह) । सम०—झूठी, हाथ से रहन
की गई, झूठी गई, पत्नी,—छः—बहुवचम् विवाह
करना, धारी, रघु० ७।२९, ८।७, कु० ७।४,—बहीन
(पु०)—बाहः झूठा, पति—व्यायत्यनिष्ट धरिक्विन्
पाणिषाहस्य सेतसा—अनु० १।२२, बाल्ये पितृवो-
तिष्ठेत् पाणिषाहस्य योषवे—५।१४८,—घः ३ टोल
बजाने वाला २. कारीगर, शिल्पकार,—घातः हाथ
का प्रहार, र्षसा, कः तावन्—तस्मा पाटलपाणि-
नाङ्कितम्—गीत० १२,—सक्म् हषेती,—घमः
विवाह की विधि—वीथनम् विवाह,—पाणिपीठनम्
दमयन्त्या कायवेमहि महीमिदिकषाघो—नं० ५।१९

पाणिपीठनविचरननरम्—कु० ८।१, प्रथमिणी
पत्नी बंधः 'हाथों का मिलना' विवाह,—भुव्
(पु०) बट का वृक्ष, गुलर का वृक्ष,—मुक्त्म् हाथ
के फेंक कर मारा जाने वाला जोरुप, अल्प, बहू
(पु०), श्वः अनुली का नाम,—बाघः १. तालियाँ
बजाना २ टोल बजाना, लक्ष्मी रस्ती ।

पाणिनि (पु०) एक प्रसिद्ध वैयकरण का नाम, यह
अन्य स्कृत मुनि समझे जाते हैं, कहते हैं कि व्याकरण
का ज्ञान इन्होंने शिव से प्राप्त किया था । 'अष्टा-
ध्यायी' नाम का व्याकरण इन्होंने ही रचा ।

पाणिनीय (वि०) [पाणिनि + छ] पाणिनि से सबंध
रखने वाला, या उनके द्वारा बनाया गया—वि०
१९।७५, कः पाणिनि का अनुयायी—अहृतभ्यूहा
पाणिनीया, यच् पाणिनि द्वारा प्रणीत व्याकरण ।

पाणिनय-य (वि०) [पाणि + घ्या (ये) + षच्, भृच्]
राथ से पीरने वाला, हाथ से फेरने वाला, हाथ से
पीने वाला ।

पांशर (वि०) [पांशर + अन्] 1 बबल, पीतबबल, सफेद 2. मेरु 3. चनेकी का फूल ।

पांशु [पांशु अपत्यम् पांशु + अन्] पांशु का पुत्र वा सन्तान, पांशु के पौत्रो पुत्रो में से कोई ना एक युधिष्ठिर, भीम, बर्जुन, नकुल और सहदेव—इसा मरुति-पांडवो ह्य बनायन्नातपची गता—पृष्ठ० ५।६। सम०—**ब्राह्मिकः** कृष्ण का नाम, **श्लेषः** युधिष्ठिर का नाम ।

पांडवीय (वि०) [पांडव + छ] पांडवों से संबंध रखने वाला ।

पांडवेय = पांडव ।

पांडित्यम् [पठित + प्यञ्] 1 विद्वाना, गहन अभिगम-विद्या लक्ष्य मयक पांडित्यबंदरूपयो—मा० १।७ 2 चतु-राष्ट्रं कुशलता, यशता, नोदता नखाना पांडित्य प्रकटयतु कस्मिन् मंगपति भाषि० १।२ ।

पांडु (वि०) [पण्ड + कु, नि० दोषं] पीत-बबल, सफेद सा, पीला पीताम्रकालकरण पांडुश्चाय शूचा परिचुंबक—उत्तर० ३।२२, इ 1 पीत-बबल, या पीताम्र स्वेत रस 2 पीतलया, यरकान 3 सफेद हाथी 4 पांडवों के पिता का नाम । विचित्रवीर्य की विधवा बहिका से व्यास के द्वारा पांडु का जन्म हुआ था । पांडु रस का पीना होने के कारण उसका नाम पांडु पड़ा, क्योंकि व्यास के माघ महत्वात् के अवतर पर उसकी माता पांडु रस की हो गई थी—(यस्मात्पांडु-त्वनाम्ना विक्रमं प्रेष्य मासिह, तस्मादेव सुतस्ते नै पाण्डुरेव भविष्यति- महा०)।—किसी नाप के कारण पाण्डु की स्त्रय सन्तानोत्पत्ति करने से रोक दिया गया था । इसीलिए उसने कुन्ती को दुर्वासामुचि से प्राप्त मंत्र का उपयोग करने से सन्तान प्राप्त करने की अनुमति दे दी थी, फलतः कुन्ती ने युधिष्ठिर, भीम और बर्जुन को जन्म दिया, इसी मंत्र के उपयोग से माद्री ने नकुल और सहदेव को जन्म दिया । एक दिन पाण्डु अपने नाप को मूलकर बित्तके कारण बहु सावधान था, उसने माद्री का आश्रयन करने का हुलास किया, परन्तु बहु उसके भुजपास में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया । सम०—**ब्राह्मणः** पीलिया यरकान, **कंसकः** 1 सफेद कबल 2 गरम चादर 3 राजकीय हाथी की मूल-पुत्र-पांडु का पुत्र, पौत्रों में से कोई एक, **कृत्सिका**, सफेद या पीली मिट्टी, **रसः** सफेदी, पीलापन, **श्लेषः** बहिया से बनाई करेला, भूमि या किसी फलक पर बहिया से बनाई गई कोई कुरेला—पाण्डुकेलेन फलके भूयो वा प्रथम किलेत्, न्यूनाधिक तु सौधेय परदारान्ने निवेद्यतेत्—भारत०, **समिका** दोपदी का विशेषण—**सौम्यः** एक वर्ष मकर जाति—चांगलापांडु-सोपाकस्त्वक्सास्त्वहारात्—मनु० १०।३७ ।

पांडुर (वि०) [पाण्डुवर्णोऽयस्ति पाण्डु + र] सफेद सा, पीत-बबल, पीताम्र-स्वेत, पीला—**छवि** पांडुर—म० ३।१०, रघु० १।४।२६, कु० ३।३३,—रघु स्वेन कुण्ड । नम० इषु—एक प्रकार की ईस, पोथा ।

पांडुरिक्तम् (पु०) [पांडुर + इमनिच्] पीलापन, सफेदी या पीला रस ।

पांडुषा (पु०, ब० व०) [पांडु देव, अग्निजनीऽस्य राजा वा—पाण्डु + इपान्] एक देश का नाम, देश के निवासियों का नाम—तस्मादेव न्थो पांडुषा प्रताप न विवेहिरे—रघु० ४।५९, **इष** उम देवा का राजा रघु० ६।६० ।

पात (वि०) [पा + क्त] रजित, देवभाव किया गया, मद्यगिन—त [पत् + पञ्] 1. उड़ना, उड़ान 2 उतरना, अवतरण करना, उतार 3 नीचे गिरना, पतन, पराजय (आल० भी) दुम०, मृ०, **बरणपात** पैने में गिरना—रघु० ११।२२, **पातोत्पातो** उदय और अस्त 4 नाश, विघटन, बर्बादी—कु० ३।४४ 5 आघात प्रहार जैसा कि 'बहुपात' में 6 बरन, कुटना, निकलना—अमरुताने मनु० ८।४४ 7 डालना फेंकना, निशाना बनाना—दृष्टि० रघु० १३।१८, 8 आक्रमण, हमला 9 पटना, होना, घटित होना 10 दाब, कुट्टि 11 राहु का विशेषण ।

पातक—कम् [पत् + पिच् + क्त] पाप, जमं (त्रिपु-बर्मेवास्त्र में पीथ महापातक गिनाने मये है—ब्रह्मज्ञया बुगपातन स्त्रेय सुर्बंगनाम, महाज्ञित पातकान्पाहु मयर्षिचपि तैस्मह—मनु० ११।५४ ।

पातङ्गि [पतङ्ग + इञ्] 1 जति 2 यम 3 कर्ष और सुधीय का विशेषण ।

पातञ्जल (वि०) (स्त्री० ली) [पतञ्जलि + अन्] पत-जलि द्वारा रचित, **पातञ्जल महाभाष्ये** कृतभूरि परिषय—परिभाषेन्दुशेखर, **सम्** पतञ्जलि द्वारा प्रथोत योगदर्शन, (ऐसा विश्वास किया जाता है कि महाभाष्यकार पतञ्जलि ही योगदर्शन के प्रणेता थे, परन्तु बहु विचार संदेह से परे नहीं है) ।

पातनम् [पत् + पिच् + क्त] 1 गिरने का कारण बनना, गिराना, नीचे लाना या फेंक देना, पछाड़ देना, नीचे पटक देना 2 फेंकना, डालना 3 शीघ्र करना, नीचा बिल्काना । (विश्ले०—उन मजा शब्दों के अनुसार बिनके साथ 'पातन' शब्द प्रयुक्त होता है, 'पातन' के विनन्द अर्थ हैं—उत्ता० दंस्व पातनम्—इहा गिराना' दृष्ट देना, मन्त्रेय पातनम्—मर्म का गिराना, मर्मपात कराना) ।

पातान्तम् [पतत्यास्मिन्मन्त्रेय—पत् + आलञ्] 1. पृथ्वी के नीचे स्थित सात कोशों में से अन्तिम कोश—नागकोश,

वह सात कोट वे हैं—अटक, बितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल 2. निम्नप्रदेश, या नोचे का लोक—रघु० १५।८४, १।८० 3. यज्ञ, छिद्र 4. ब्रह्मानल । सम०—सैश नोचे के लोक में बहने वाली गंगा,—भोजम् (पु०)—विस्मयः, -निष्कलः—बासिन् (पु०) 1 रासल 2 भाग या सर्वदेव ।

पासिकः [पात+ञ्] गवा में रहन वाला सूँस, गिघु मार ।

पासिल (पु० क० ङ०) [पत्+गिघु+क्त] 1. डाल गया, फेंका गया नोचे गिराया गया, पटक दिया गया 2. परालन किया गया, नोचा दिखाया गया 3 नोचा किया गया ।

पासिस्त्वम् [पतित+ध्वञ्] पर या ज्ञाति का पतन, पदभ्रूलि, जातिभ्रयाता ।

पासिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पत्+गिघि] 1. जाने वाला, अवतरण करनेवाला, उतरने वाला 2 पतनशील, डबनेवाला 3 पड़ने वाला 4. गिरने वाला, फेंकने वाला 5 उडेलने वाला, छोड़ने वाला, निकालने वाला ।

पासिन्ने [पाति सपाति पासिपूष कोयतेऽञ्—पाति+की+ङ+ङीष्] 1 जाल, फटा 2 छोटा मिट्टी का बर्तन, हाथी ।

पासुक (वि०) (स्त्री०—की) [पत्+उक्ञ्] 1 पतन-शील, 2 गिरने की भावत वाला,—कः पहाड़ का ढलान, चट्टान 2 गिघुमार, सूँस ।

पासम् [पाति रज्ञति, पिबिन् अनेन वा—पा+पुन्] 1 पीने का बर्तन, प्याला, गिलास 2. कोई भी बर्तन—पात्रे निचायाभ्यम्—रघु० ५।२, १२ 3. किसी बस्तु का आभार, प्राप्तकर्ता—पच० २।१७ 4 जलाशय 5 योग्य व्यक्ति, दान देने के योग्य, दानपात्र—वितस्य पात्रे न्यव—भृ० २।८२, मग० १७।२२, बाह्र० १।२०१, रघु० ११।८६ 6 अभिनेता, नाटक का पात्र—तदप्रतिपात्रमाधीयता यत्न—वा० १, उभयता पात्रवर्त—विश्व० १, नाटक का पात्र 7. राजा का मंत्री 8 नहर या नदी का पाट 9 योग्यता, जीवित्य 10. बोधेय, हुस्म । सम०—उष्करचम् बटिया प्रकार की सजावट—पात्रः 1. चपू, डाढ़ 2 तपजू की डही—संस्कार 1 बर्तनों की मात्रा धोकर साफ करना 2. नदी का प्रवाह ।

पात्रिक (वि०) (स्त्री०—की) [पात्र+ञ्] 1. किसी बर्तन की नाप, मापक 2. योग्य, पधोचित, समुचित,—कम् बर्तन, प्याला, तस्तरी ।

पात्रिय, **पात्र्य** (वि०) [पात्रमर्हेति—पात्र+थ, यत् वा] भोजन में भाग लेने के योग्य ।

पात्रीयम् [पात्र+ञ्] यज्ञीय पात्र—झुवा आदि ।

पात्रीर-, **रत्** [पास्येति—पात्री+अ+क] आहुति ६

पात्रे शुकः, **पात्रेसतिता** [पात्रे भोजनसमये एव बहुल-सपत्नी वा न तु कार्ये—अलुक समास] 1 केवल भोजन का साथी, पराश्रमिनी 2 घोसेबाज, कपट-पासरी ।

पात्रः [पीयतेऽञ्, पा+थ] 1. बर्तन 2. सुयं—कम् जल । **पात्रम्** (नपु०) [पा+अनुपुन्, मुक् च] 1 जल, गंगा—२६ 2. हवा, वायु 3 आहार । सम०—कम् 1. कयल 2 मख, हः,—वट बावल, विः,—गिरिः,—पत्तिः समुद्र, वै० १३।२० ।

पात्रेयम् [पत्रिय+इञ्] भोज्य सामग्री जिसे यात्री राह में खाने के लिए साथ ले जाता है, मार्गभ्यय अर्थात् पात्रेयमिन्द्रमुन्—कि० ३।३७, वित्तकिसलयच्छे-दपात्रेयवन्त—मेघ० ११, विक्रम० ४।१५ 2 कन्या-राशि ।

पात्रः [पत्+पञ्] 1. पैर (बाहे मनुष्य का हो या किसी जानवर का) तयोर्जगद्गतु पादान्—रघु० १।५७, पादयोनिस्त्वय, पादपतित (समास के अन्त में 'पाद' को बदल कर 'पाद्' हो जाता है, यदि इससे पूर्व 'यु' हो या सक्त्वाचक सञ्, उदा० सुपाद्, द्विपाद् त्रिपाद् आदि, जिस समय पूर्वपद तुलना-यान के रूप में प्रयुक्त किया गया, उस समय भी 'पाद्' हो जाता है यदि पूर्वपद 'हस्ति' से भिन्न हो—दे० पा० ५।४।३८-४०, उदा० व्याघ्रपाद्, अतिघाय बाधर तथा सम्मान व्यक्त करने के लिए, कर्त्त० का बहुवचनान्त रूप व्यक्ति को उपाधियों की उपाधियों या नामों के साथ जोड़ दिया जाता है मनुष्य लवस्य बालि-यता तातपादा—उत्तर० ६, १।२९ देवपादाया नाम्नाभि प्रयोजनम्—पच० १, इसी प्रकार—एवमा-राध्यपादा आत्रापवति—प्रबो० १, एव—कुमारि-पादा—आदि 2 प्रकाश की किरण—बालस्यापि ज्ञे पादा पतरुपरि भूमताम्—पच० १।३२८, छि० १।३४, रघु० १६।५३, (यहाँ सञ्च का अर्थ 'पैर' भी है) 3. पैर या पावा (जड़ वटाधों का, साट आदि का) 4 बूल की जड़ या पैर जैसा कि 'पादय' में 5 गिरिपार, तलहटी (पादा प्रयतपकेताः मेघ० १९, ह० १।१६ 6. चौथार्य, चौथामाल, जैसा कि 'सपाशो रूपकः' में (सवा सपाश)—मनु० ८।२४१, पात्र० २।१७४ 7 श्लोक का एक चरण, पंक्ति 8 किसी पुस्तक के अन्वय का चौथा भाग जैसा कि बहुवचन का—या पाणिनि की अष्टाध्यायी का 9 भाग 10 स्तम्भ, लम्बा । सम०—असम् पैर का भारे का भाग—रत्न० १।१. शंभः पात्रिष्णु,—अंशजम्,—ही पैर का आशुषण, नुपुर, पावक,—अंशुषः पैर का बंधुआ,—अंतः पैरों का अन्तिम भाग,—अंशुषम् एक पयं के बीच का अन्तराल, एक पय की दूरी

(अव्य०-रे) 1. एक पद की दूरी के बाद 2. निकट, तटा हुआ, -अन्व (नपु०) छात्र जिसमें एक चौथाई पानी हो, -अंशम् (नपु०) जल जिसमें अर्धेय व्यक्तिषो के चरण घोये हों, -अरविन्म्, -कमलम्, -पंकजम्, -मधुम् कमल जैसा पैर, कमलचरण, -अश्विनी किरती, नाव, -अश्वसेचनम् 1 चरण घोना 2 पैर घोने के लिए पानी, -आधातः टोकर, -आहत (वि०) भूषापी, पैरो में पड़ा हुआ -कु० ३१८, -आहतं कुएँ से जल निकालने के लिए पैरो से बलाया जाने वाला यंत्र, रहट, -आत्मन्म् पैर रखने का पीडा, -आश्वत्थालम् पैरो से रीटना, कुचलना, एक २ कर माने बहने की चेष्टा, आहत (वि०) टोकर लाया हुआ, टुकराया हुआ, -उचकम् -जलम् 1 पैर घोने के लिए पानी 2 बहु पानी जिसमें पुष्पात्मा, तथा सम्मानित व्यक्तिषो ने पैर घोये हैं और इसीलिए जो पवित्र समझा जाता है, -उबर सौप, -ऊदक, -कम्, -कीर्तिका नूपुर, पायल, शेषः कदम, पय -ग्रथिः टलना, -ग्रहम् (आदग्युक्त अग्निवादन के रूप में) पैर पकड़ना, कु० ७२७, -चतुर, -क्ष्वर 1 विध्यानिन्दक २ बकरा 3 रेतीला तट 4 शोला, -चारः पैदल चलना, टहलना -वदि व विचरेत् पादचारेण गौरी-मेघ० ६०, 'यदि गौरी पैदल चले' रघु० ११११० -चारिन्म् (वि०) पैदल चलने वाला, पैदल योद्धा, (पु०) 1 करी वाला 2 पैदल सैनिक, -चः शूद्र, -आहम् पपोटा, टलने की हड़डी, -तलम् पैर का तलवा, -त्र, -त्रा, -त्राचम् जूता, बूट, -प. वृक्ष -निरस्तपादये देवो एरखीरिपि हुमासते -हि० ११६९, अनुभवति हि मूर्धां पाद-पस्तोत्रमृग्याम्-ग० ५१५, -खड्ग -इम् भाग, वृषो का भ्रूमट, -पाक्षिन् नूपुर, पाजेब, -पाक्षः पंखड़ा, पक्षों के पैरों को बाँधने की रस्सी (श्री) 1 हथकड़ी 2 चटाई 3 लता -दीड, -ठम् पैर रखने का पीडा, -रघु० १७२८, कु० ३१११, धूरणम् 1 पक्षि घुरी करना 2 पादपूरक -नु पादपूरणे भेदे तन्मन्त्रये-ज्वरारणे -विश्व०, -प्रक्षालनम् पैर धोना, -प्रतिष्ठा-यम् पैर रखने का पीडा, -प्रहार टोकर, -बचनम् बेंबो -भृश पदचिह्न, -भुलम् 1 पपोटा 2 पैर का तलवा 3 एडा 4 पहाड़ की तलहटी 5 किसी से बात करने को विनाश रीति -देवपादमृग्यामाहात्म्य-का० ८, -स्तम् (नपु०) पैरो की मूल, -रम्भु (स्त्री०) हाथों के पैर बाँधने की चमड़े की रस्सी, -रपी जूता, बूट, -रीह, -रीहकः बड़ का पेश, -बबनम् बरना-धरना, चरणों में प्रगाम, -बिरम्भु (नपु०) जूता, बूटा (पु०) देवता, -घ्राणा पैर की अग्रणी, -शैल-गिरिपाद, पहाड़ की तलहटी में विद्यमान पहाड़ों,

-शोषः पैर की सूजन, -शौचम् पैर धोकर साफ करना, पैर धोना, -सेधनम्, -सेवा 1 पैर सुकर सम्मान प्रदर्शित करना 2 सेवा, -स्कोटः 'बवाई फटना' विपदिता, सखी में पैर फटना, -हल (वि०) टुकराया हुआ ।

पारथिक (पदयो + ठक्) यात्री, पथिक ।

पाशात् (पु०) [पाशाभ्यामतति-पाद + अत + क्विप्] पैदल सिपाही, प्यादा ।

पाशात, [पदातीना समूह - पदाति + अक्] पैदल-सिपाही - लि० १८४, -तम् पैदल-सेना ।

पाशति, पाशाधिक, [पाद + अत् + धृत्, पादेन अय म्भ-गम् - पादाय + ठक्] पैदल सिपाही ।

पथिक (वि०) (स्त्री० - की) [पाद + ठक्] चतुर्थांश, चौथा भाग - पादिक सतम् - २५ प्रतिशत ।

पथिन् (वि०) [पाद + धृत्] 1 सपाद, पैरो वाला 2 श्लोक की भाति चार चरणों से युक्त 4 चौथे भाग को लेने वाला, या चतुर्थांश का अधिकारी ।

पथिन (पु०) चौथा भाग, चतुर्थांश ।

पादुक (वि०) (स्त्री० - का - की) [पद् + उक् + क्व] पैदल चलने वाला, - का लडाऊँ, जूता - ब्रज भरत मूहीत्वा पादुके त्व मदीये भद्रि० ३१५६, -रघु० १२१७७ । सम० - कार मोची, जूता बनाने वाला ।

पादु (स्त्री०) [पद् + ऊ, गित] जूता, -कृत् (पु०) जूता बनाने वाला ।

पाद्य (वि०) [पाद + घत्] पैरो में सजधर रखने वाला, -इम् पैर धोने के लिए जल - पादयो पाद्य समर्पयामि ।

पादम् [पा + स्युट्] 1 पीना, चढ़ा जाना, (जोष्ट का) चुम्बन, पय पान देहि मुलकमलमधुपानम् - शीत० १० 2 सुरापान करना - मनु० ७५०, ९११३, १२४५ 3 पान के योग्य, पय पदायं - मनु० ३१२२७ 4. पान-पात्र 5 ठेज करना, पानना 6 बचाना, रक्षा, -न शराय शीचने वाला, कलहार । सम० - अहार -आहार, -रम् मदिरालय, -अत्यथः अत्यधिक पीना, - मोक्षिका, - मोछी 1 शराबियों की मडकी 2 शराय की दुकान, मदिरालय, -प (वि०) सुरापान करने वाला, -पात्रम् -भाजनम्, -आम्भम् पान-पात्र, प्याला, -भू, -भूमि, -भूमि (स्त्री०) शराय पीने का स्थान -रघु० ७४४९, १९१११, -मन्थकम् शरा-वियों की मडकी, -रत (वि०) सुरापान की लतवाला, -वधिज (पु०) शराय-विक्रेता, -विश्रवः नशा, -शौच पिपकद, अत्यधिक पीने वाला ।

पानकम् [पाय + कन्] पानीय, पेय, बूट ।

पानिक [पाय + ठक्] शराय-विक्रेता, काला ।

पानिकम् [पाय + इलच्] पान-पात्र, प्याला ।

पानीयम् [पा+अनीयद्] 1 जल 2 वेद्य, वृष्ट, पानीय-
पानि के योग्य वास्तव आदि । सम०—मनुष्यः अ-
विलास्य—वर्षिका देव, बाहु, —शाखा, —शालिका प्याऊ,
जहाँ वाशिये को पानी पिलाया जाय तु० प्रया ।
पाप्यः [पाप्यान्ति पाप्यति—पथिन्+अन्, पंपादेश]।
—पापी, बटोही रे पाप्य चिह्नलक्षणा न मनागपि स्या-
—भावि० १।३।७ ।

पाप्य (वि०) [पाति रक्षति आ-पाप्यन् अस्मात् पा+प]।
1 अनिष्टकर, पापमय, दुष्ट, दुर्गुण पाप कर्म व
यत् परैरपि कृत तत्तस्य सभास्यते मूच्छ० १।३६,
भम० ६।१२ 2 उपद्रवकारी, विनाशक, अभिघ्न
—पापेन मृत्यूना गृहोतोर्विभ्य मालवि० ४ 3
नीच, अधम, पतित मनु० ३।५२, ४।१७१ 4
अधुव, प्रदेवी, अनिष्ट सूचक (पाप ग्रह आदि)—अन्
बुराई, बुरी अवस्था, दुर्भाग्य—पाप पापा कथय
कथीराराधेः पितृभ्यं वेपी० ३।५, शातम् पापम्
—पाप से बचाये भगवान् (प्राय नाटक में प्रयुक्त)
2 बुराई, जुर्म, दुर्व्यसन, दोष अपापाना कुले जाते
मयि पाप न विदन्ते—मूच्छ० १।३७, मनु० १।१२३१,
५।१८१, रघु० १२।१९, —प पापी, पापो, दुष्ट, दुः-
खारी । सम०—अधम (वि०) अयत दुष्ट, अधम,
अपमूर्ति (स्त्री०) प्रायश्चित्त, —अह दुर्भाग्यपूर्ण
दिवस,—आहार (वि०) पापमय आचरण वाला,
पापपूर्ण जीवन विधान वाला, दुर्व्यसनी, दुष्ट,
—आत्मन् दुष्टमना, पापपूर्ण, दुष्ट—(पु) पापो,
—आशय,—अस्त्र (वि०) दुष्ट इरादे वाला, दुष्ट-
हृदय, कर,—कारिन्,—कृन् (वि०) पापपूर्ण, पापी,
अधम,—अधः पाप का दूर करना, पाप का नाश,
—ग्रहः दुष्ट ग्रह, प्रदेवी (जैसे मयल, मनि, राहु या
केतु), ध्व (वि०) पाप को दूर करने वाला,
प्रायश्चित्त कारी,—ध्वः 1 पापी, 2 राक्षस, बुद्धि
(वि०) बुरी निहाह वाला, खोटी आँख वाला, बी
(वि०) दुष्ट हृदय, दुर्बुद्धि,—वाफित्त, बालाक या दुष्ट
नार्द,—नाशक (वि०) पापनाशक या प्रायश्चित्तकारी,
—पतिः जाग, उपपति, पुष्पः दुष्ट प्रकृति वाला
मनुष्य,—फल (वि०) अनिष्टकर, अधुव,—बुद्धि
—भाष—मति (वि०) दुष्टहृदय, दुष्ट, दुष्चरित्र,
—भाष (वि०) पापपूर्ण, पापी—कु० ५।८३,—भुक्त
(वि०) पाप से छुटा हुआ, पवित्र,—भोक्षकम्,
विनाशकम् पाप का नाश, भोवि (वि०) नीच
जाति में उत्पन्न (स्त्री—विः) नीच कुल में जन्म,
—रोगः 1 कोई बुरा रोग 2 शोचना, वैषक,—सील
(वि०) दुष्ट कार्य में प्रवृत्त होने वाला, दुष्टप्रकृति,
दुष्टहृदय,—सौम्य (वि०) दुष्टहृदय, दुःखाला (भ्यः)
दुष्ट विचार ।

पाप्यः [पापानामुद्भिर्बन्ध—भ० सं०] विकार, आघात ।
पाप्यल (वि०) [पाप+ल+क] पाप कमाले वाला, पाप
कर ।

पापिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पाप+इनि] पापपूर्ण
दुष्ट, बुरा—(पु०) पाप करने वाला ।
पापिष्ठ (वि०) [अतिशयेन पापी—पाप+इष्टन्] अत्यन्त
पापपूर्ण, अधम, दुष्टतम ('पाप' की अतिशयवाक्यत्वात्) ।
पापीयस् (वि०) (स्त्री०—सी) [पाप+इयसुन्, अयमनयो
रतिशयेन पापी, तुलना-अवस्था] अपेक्षाकृत पापी
अपेक्षाकृत दुष्ट या अनिष्टकर ।

पाप्यन् (पु०) [पा+मानिन्, युवागम्] पाप, जुर्म, दुष्टता
अपगच्छ—मया वृहीतनामान इत्यत इव पापमता
उत्तर० १।४८-७।२०, मा० ५।२६, मनु० ६।८५ ।

पाप्यन् (पु०) [पा+मानिन्] एक प्रकार का धर्मरोग
सूत्रलो । सम०—ध्वः गधक ।

पाप्यन् (वि०) [पाप्यन्+त, नलोप] सूत्रलो रोग से घटत

पाप्यन् (वि०) (स्त्री०—रा,—री) [पाप्यन्+र
1 सूत्रलो रोग से घटत, मकच्छ, सूत्रलो बाल
अनिष्टकर, दुष्ट 3 नीच, गबाह, अधम ० धर्म, अ
5. निषेध, अवहृत्वा—उ० ०० ५, रः मूढ, जहद्वि
—व्यपाति चेत्यामरा—भावि० १।६२ 2 दुष्ट व
नीच पुष्ट 3 अत्यन्त नीच कर्म में प्रवृत्त व्यक्ति ।
पाप्मा [पाप्यन्+ओपनिषेध, नलोप, दोष] १० ऊपर
'पाप्यन्' । सम०—अधिः गधक ।

पाप्यन् [पा+पिच+युच्+टाप्] 1 पीनाना 2 सीधना
तर करना 3 तेज करना, पीनाना ।

पाप्यल (वि०) (स्त्री० सी) [पयस+अन्] दूध या
पानी से बना हुआ ल, —सम् 1 खीर, दूध में उके
हुए चाबल मनु० ३।२७१, ५।७, याज्ञ० १।१७३
2 सारपीन,—सम् दूध ।

पापिकः (पु) पैदल सिपाही ।

पापुः [पा+उष्, युक्] घुटा, मलद्वाग—पापुगम् मनु०
२।९०, ११, याज्ञ० ३।१२ ।

पाप्यम् [मा+प्यन्, नि० पय्यन्, युवागम्] 1. जल 2 वेद्य
पदार्थ 3 प्ररक्षण 4 परिधान ।

पाप्य-रश्म [पर तीर परमेव अन्, पु+पञ् वा] 1
या नदी का परला-सामने वाला दूसरा किनार
—पार दू सोचवर्गेस्तु तर वाक्यत मिथते—शा० ३।१
विरह्वलक्षे पारमासादयिष्ये पदा० १३, हि० १।
२०४ 2. किरी भी वस्तु का विरोधी पक्ष—कु०
२।५८ 3. किसी वस्तु का अन्तिम किनारा, अन्तिम
सीमा—वेपी० ३।३५ 4 किसी वस्तु का अधिकतम
परिमाण, समष्टि—त पूर्वकनांतरदुष्टपाता स्मरन्निव
—रघु० १८।५०, (पारं वम्, इ, —वा 1 पा
जाना, ऊपर चढ़ना 2 निष्पन्न करना, पूरा करना

जैसा कि 'प्रतिज्ञायाः पार गल्', पूर्ण रूप से आत्मसात् करना, प्रवीण होना—सकलकार्य पारपठ,—र. पारा (पार 'दुसरी ओर' 'परे' कई बार समास में प्रयुक्त होता है—उदा० पारपठम्, पारसमुद्रम्—परा के पार या समुद्र के पार) । सम०—अधारम्—अधारम् दोनों तट, पास का और दूर का (रः) समुद्र, सागर—सौक्यपारावारमुत्तर्गुमयापत्नवती—यस० ४, भासि० ४।११.—अध्वान् १ पार जाना २ पूरा पढ़ना, अनुशीलन, आद्योपान्त लक्ष्यपठन ३ समथता, सम्पूर्णता, या किसी वस्तु की समष्टि—जैसा कि 'ब्रह्मपारायण या मन्त्रपारायण' में,—अध्वनी १ सरस्वती देवी २ चिन्तन, मनन ३ कृत्य, कम ४ प्रकाश,—काम (वि०) दूसरे किनारे तक जाने का इच्छुक,—य (वि०) १ पार जाने वाला, नाव से पार उतरने वाला २ जो पार पढ़ चुका है, जिसने किसी ग्रन्थ का पूरा अध्ययन कर लिया है, पूर्णपरिचित, पूरा ज्ञाता (सब० के साथ, या समास में)—मनु० २।१५८, याज्ञ० १।१११ ३ प्रकाश विद्वान्,—यत्, यामिन् (वि०) जो तट के दूसरी ओर पढ़ चुका है,—बोधक (वि०) १ सामने के तट को दिखलाने वाला २ जिसके ओर पार दिखाई दे,—बुधन् (वि०) १ दूरदर्शी, बुद्धिमान्, समझदार २ जिसने किसी वस्तु का दूसरा किनारा देख लिया है, जिसने किसी बात का पूर्ण रूप से ज्ञान लिया है—भृतिपारुडवा रघु० ५।२४ ।

पारक (वि०) (स्त्री०-की) [पु+कृत्] १ पार करने की योग्यता रखने वाला २ आगे ले जाने वाला, बचाने वाला, सीपने वाला ३ प्रसन्न करने वाला, समुष्ट करने वाला ।

पारक्य (वि०) [परक्यं लोकाय हितम्—पर+क्यञ्, उक्] १ पराया, दूसरे का २ दूसरे के लिए उद्दिष्ट ३ विरोधी, शत्रुतापूर्ण,—अन्व० परलोक साधन, पवित्र आचरण ।

पारघामिक (वि०) (स्त्री०-की) [परघाम+ठक्] पराया, विरोधी, शत्रुतापूर्ण ।

पारम् (पु०) [पार्+पिच्+अवि] सोना, स्वर्ण ।

पारघामिक [परजाया गच्छति—परजाया+ठक्] व्यविचारी पुद्गल ।

पारट्टीहः—नः (पु०) पत्थर, बट्टाट ।

पारण (वि०) [पु+स्फुट्] १ पार ले जाने वाला, उबारने वाला २ बचाने वाला, उद्धार करने वाला,—ण १ बादल २ सतोष,—णम् १ निष्पन्न करना, पूरा करना २ पाठ करना, बाचना ३ व्रत (उपवास) के पश्चात् भोजन करना, इत खोलना—कारय चक्षुषी पारणम् विद्व० १, २।३९, ५५, ७०, भोजन करना—कु० ५।२२, (अन्यसंहारकम्—मल्लि०) ।

पारतः [पार तनोति पार+तन्+ठ] पारा ।

पारतन्व्यम् [परतन्+घञ्] पराध्यता, अधीनता, अनुसेवा ।

पारत्रिक (वि०) (स्त्री०-की) [परत्र+ठक्] १ परलोक सबन्धी २ भावी जीवन के लिए उपयोगी ।

पारत्र्यम् [परत्र+घञ्] भावी जीवन में प्राप्य फल, परलोक फल मनु० २।२३६ ।

पारत्र [पार ददाति—पार+दा+क] पारा—निदसंन पारदोत्र रम भासि० १।८२ ।

पारदारिक [परदारा+ठक्] व्यविचारी, परदारवासी—याज्ञ० २।२९५ ।

परदार्यम् [परदार+घञ्] व्यविचार, परदारधामन—मनु० ११।५९, याज्ञ० ३।२३५ ।

पारदेशिक (वि०) (स्त्री०-की) [परदेश+ठक्] विदेशी, बाहर के देश का, क १ विदेश का रहने वाला २ यात्री ।

पारदेश्य (वि०) (स्त्री०-रवी) [परदेश+घञ्] १ विदेश से संबंध रखने वाला, विदेशी, श्व १ अन्य देश का रहने वाला २ यात्री ।

पारमृतम् [इसका शुद्ध रूप समवत 'शामृत' है] जपहार, भेट ।

पारमहृष्यम् [परमहस+घञ्] सर्वोत्कृष्ट तन्वासवृत्ति, मनन । सम० परि (अन्व०) इस प्रकार के तन्वासी से सम्बन्ध रखने वाला ।

पारमार्थिक (वि०) (स्त्री०-की) [परमार्थ+ठक्] १ 'परमार्थ' अर्थात् सर्वोपरि सत्य अथवा अध्यात्म ज्ञान से सम्बन्ध रखने वाला २ वास्तविक, वाच्यक, यथार्थ में विद्यमान सत्ता विधिशास्त्र पारमार्थिकी, व्याख्या-रिची पाठोत्तरीके च वेदान्त ३ सत्य का ध्यान रखने वाला, सत्यप्रयत्न लक्षक पारमार्थिक पच० १।३।२ ३ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम ।

पारमिक (वि०) (स्त्री०-की) [परम+ठक्] सर्वोपरि, सर्वोत्तम, मुख्य, प्रधान ।

पारमित (वि०) [पारमित प्राप्त—अलुक् स०] १ दूसरे तट या किनारे पर गया हुआ २ पार पहुँचा हुआ, आर-पार गया गया हुआ ३ परमोत्कृष्ट ।

पारमेष्ठ्यम् [परमेष्ठिन्+घञ्] १ सर्वोपरिता, उत्तमत्तम पर २ राजचिह्न ।

पारपरीज (वि०) (स्त्री०-णी) [परपरा+ञ्] परपरा प्राप्त, आनुवंशिक, वंशकामागत ।

पारपरीज (वि०) [परम्परा+ञ्] परम्पराप्राप्त, आनुवंशिक ।

पारपथम् [परम्परा+घञ्] १ आनुवंशिक ऋषि, अविच्छिन्न क्रम २ परम्परा से प्राप्त शिक्षा, परम्परा ३ अन्तर्वर्तिता, मध्यस्थता । तत्र०—उपलक्ष्य परपरा

प्राप्त शिक्षा, परम्परा (इस परम्परा को पौराणिक लोग 'प्रमाण' मानते हैं) ।

पारमिन्नु (वि०) [पार + मिन् + इन्नुच्] 1 मुहाबना, मुक्तिकारक 2. किसी कार्य को पूरा करने के योग्य, पार जाने के लिए समर्थ ।

पारमौलिक (वि०) (स्त्री०-की) [परलोकाय हितम् पर लोक + ठक् द्विपदविधि] परलोक से संबंध रखने वाला या परलोकोपयोगी, - धर्म एको मनुष्याणां सहाय पारमार्थिक - महा०, मै ५।१२ ।

पारभतः [= पारपत (पार + भा + पत् + अच्)] कन्नूर ।

पारबन्धम् [परवेश + ध्वञ्] पराबलवन, पराशयता, अधीनता ।

पारशब् (वि०) (स्त्री०-बी) [परशु + अण्] 1 लोहे का बना हुआ 2 कुठार में मबध रखने वाला, -क 1 लोहा 2 शूद्र स्त्री में उत्पन्न शङ्खण का पुत्र य शङ्खणस्तु शूद्राया कामादुत्पादयेत्युतम्, य पार यन्नेव श्वस्तस्मात्पारशब् स्मृत - मनु० १।१७८ या पर शब्दात् शङ्खणस्यैव पुत्र, शूद्रापुत्र पारशब् तमाहुः - महा० 3 दौलता, हरामी ।

पारशब्धः, **पारशब्धिकः** [परशब्ध प्रहरणमस्य - अण्, पारशब्ध + ठक्] फरसा शास्त्र करने वाला, कुठार धारी ।

पारस (वि०) (स्त्री०-नी) [पारस्यदेशे भव अच् वा० यन्प्रोप] पारसी फारस देश का रहने वाला ।

पारसिक 1 फारस देश 2. फारस देश का, पारसीक ।

पारसी (स्त्री०) फारसी भाषा ।

पारसीक {पुं० साधु} 1. फारस देश 2. फारस देश का घोडा, - का (पुं० साधु) फारस देश के रहने वाले - पारसीकालताते जेतु प्रत्यस्य स्थलवर्धना - रघु० ४।६ ।

पारस्यैव [परस्त्री + ठक्, इन्द्र, उभय पदवृद्धि] दोपला, हरामी ('परस्त्री' में उत्पन्न) ।

पारस्य (वि०) [परहस्य + ध्वञ्] उस सन्यासी से संबंध रखने वाला जिसमें सब इन्द्रियो का हनन कर लिया है ।

पारत [पार + अच् + टाप्] एक नदी का नाम - तदुत्तिष्ठ पारसिद्युतमेवमववाहा नगरोमेव प्रविशाय - मा० ४।१।१ ।

पारपत [पार + भा + पत् + अच्] कन्नूर ।

पारशब्धिक [पारशब्ध + ठक्] 1 व्याख्यानवाता, पुराण तथा अन्य शास्त्रिक ग्रन्थों का पाठ करने वाला 2 शिष्य, विद्यार्थी ।

पारशब्क [पार + श् + उक् + अण्] पर्यट, बट्टाल ।

पारशब्कः [- पारपत, पुं० पत्य व] 1 कन्नूर, फारका, पेंडुकी-पारशब्क, कश्मिकाकनसात्रमोडो कामी

अव्ययनिदिन बह कोऽनहेतु - मनु० ३।१५५, मेघ० ३८ 2 अन्तर 3 पहाड। मम० - अग्निः, - विष्णुः एक प्रकार का कन्नूर ।

पाराशारीक (वि०) [पाराशार + रश्] 1 दोनों छोर तक जाने वाला 2 पुण्य रूप से जानकार ।

पाराशरः, **पाराशर्य** [पाराशर + अण्, यञ्, वा] पराशर के पुत्र व्यास का विशेषण ।

पाराशरिन् [पाराशर + इन्] 1. शुकदेव का विशेषण 2 व्यास का नाम ।

पाराशरिन् (पुं०) [पाराशर + इति] 1 साधु, मन्वासी 2 विशेषकर बहु जो व्यास के शारीर सूत्रों के अध्याता हो ।

पारिकल्पिन् (पुं०) [पारिकल्पि ममारत् पारि ब्रह्मज्ञानम् तत्काक्षति - पारि + काञ् + णिनि] ध्यानमग्न या चिन्तामग्न सन्न, मन्वासी जो भावार्थक समाधि का भक्त हो ।

पारिकल्पित [पारिकल्प + अण्] अनभेद्य का कुल लूचक नाम, अर्जुन का प्रपौत्र और परीक्षित का पुत्र ।

पारिक्षेय (वि०) (स्त्री०-बी) [परिक्षा + ष्] पारो और परिषा या सार्ई से चिरा हुआ ।

पारिजातः, **पारिजातक** [पारिजातस्य अस्ति इतिपारो समुद्र तस्माज्जात - पारिजात + कन्] 1 स्वर्ण के पौध बृक्षों में से एक (कहते हैं कि समुद्र मंथन से 'पारिजात' की उपलब्धि हुई, जिसे इन्द्र ने अपने मन्दन-कानन में लगाया, कृष्ण ने इन्द्र से छीन कर इसे अपनी प्रिया सत्यभामा के बाग में लगाया) - कल्पद्रु-माणमिष पारिजात - रघु० ६।६, १०।११, १७।७, 2 मृग का पेड 3 सुगन्ध ।

पारिजात्य (वि०) (स्त्री०-जी) [परिजाय + ध्वञ्] 1 विवाह से संबन्ध रखने वाला 2. विवाह के अवसर पर प्राप्त किया हुआ, - ध्वञ् 1. विवाह के अवसर पर स्त्री की मिली हुई सम्पत्ति - मातु परिषाध्य स्त्रियो विभवेत् - बसिष्ठ 2. विवाह व्यवस्था ।

परितप्या [परितप्य + ध्वञ्] बालों को बाधने के लिए मोतियों की लड़ी ।

पारितोषिक (वि०) (स्त्री०-की) [परितोष + ठक्] मुसकर, मुत्तिकर, शाल्वनाप्रद, - कन् उपहार, पुरस्कार - गृह्यता पारितोषिकमिदम् कृत्वायकम् - मुच० ५।

पारिष्वक्तिकः [परित ष्ववा - परिष्वक्ता + ठक्] मडा बरदार, मडा के चलने वाला ।

पारिण्डः [= पारिण्ड, पुं० हृत्वा] सिंह, केसरी ।

पारिष्वक्तिकः [परिष्वक् + ठक्] लुटेरा, डाकू ।

पारिषाद्य [परिषादी + ध्वञ्] 1 हथ, प्रवासी, रीति (परिषादी) 2. निषिद्धता ।

पारिषात्कर्म [पारिषात् + कर्म] अनुचरकर्म, सेवक अनुदायी ।

पारिषात्कर्मक, **पारिषात्कर्मिक** [पारिषात् + कर्म, परिषात् + क्त] 1 सेवक, दूतद्वारा 2 नाटक में नृपचार का सहायक, नाट्यपाठ के अक्षर एक अन्तर्बन्धी प्रथिय पारिषात्कर्मक, तत्कालिनि पारिषात्कर्मकारभयसि कुशीलर्षे सह सर्गीतम्—वेणी० १ ।

पारिषात्कर्मिका [पारिषात्कर्मिका + टाप्] दासी, मेविका, नित्री नौकरानी ।

पारिषत्क (वि०) [पारिषत् + क्त] 1 इक्षर उचर घुसने वाला, डाकाबोल, चकल, अम्बिर, कम्पायमान—नन्द पारिषत्कबनेत्रया नृप—रघु० ३।११ 2 तैरगा, वहुला रघु० १३।२०, १६।६१ 3 सुख, उद्विग्न, परेशान, अक्षरता हुआ—उत्तर० ४।०२,—म. नाव, क्व बेचैनी विकल्पन ।

पारिषत्क्या [पारिषत्क + क्त] हस्त ध्वज 1 परेशानी, बेचैनी, क्षोभ 2 कपकपी, परबराहट ।

पारिषत्: [परिषत् + अच्] बैषाहिक उपहार ।

पारिषदा: [परिषद् + अच्] 1 मूषे का वृक्ष 2 देवदारु वृक्ष 3 सगल वृक्ष 4 तीस का पेड़ ।

पारिषदाय्य [परिषु + व्यञ्] जमानत, प्रतिभूति, अमानत के रूप में रखी गई वस्तु ।

पारिषदाधिक (वि०) (स्त्री०—की) [परिषदा + अच्] 1 बाण, मायाय्य प्रचलित 2 (शब्द आदि) तकनीकी, किसी विशेषार्थ का संकेतक ।

पारिषदास्यम् [परिषदात् + अच्] अनु, मूर्ध की किरण में विद्यमान स्वकण भाषा० १५ ।

पारिषुत्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [परिषुत् + अच्] मूत्र के सामने का, निकटवर्ती, पास का ।

पारिषुत्तयम् [परिषुत् + व्यञ्] उपस्थिति, समीप होना ।

पारिषा (शा) ऋ. (पु०) माल मुष्म पर्वने सूक्ष्मात्मा में से एक रघु० १८।१६, दे० 'कुम्भचल' ।

पारिषा (शा) ऋिक [पारिषात् + अच्] 1 पारिषात्र पहाड़ का निवासी 2 पारिषात्र पहाड़ ।

पारिषात्क [पारिषात् + अच्] माथा पर जाने के लिए घाड़ी ।

पारिषत्क: [परिषत्कानि आत्मान परि + क्त + अच्] साधु, सन्नासी ।

पारिषत्क्यम्, **पारिषत्क्यम्** [परिषत् + व्यञ्, परिषत् + व्यञ्] छोटे भाई का विवाह हुआ जाने पर जो बड़े भाई का अविवाहित रहना ।

पारिषात्क्यम्, **पारिषात्क्यम्** [परिषात्क + अच्, परिषात्क + व्यञ्] नाथु सन्नासी का प्रथमशील जीवन, सन्नास ।

पारिषीक [परिषीक + अच्] रोटी, पूषा, मालपुआ (दे० अपूर्ण) ।

पारिषत्क्यम् [परिषत् + व्यञ्] बचा हुआ, दीप, दाकी ।

पारिषत् (वि०) (स्त्री०—की) [परिषत् + अच्] सभा या परिषद् में मन्त्र रखने वाला,—इ 1 मन्त्रों उपस्थित व्यक्ति, सभा का मन्त्र्य, परामर्शक 2 राजा का सहचर,—हा (पु०, व० व०) देव का अनुचरकर्म ।

पारिषत् [परिषत् + व्यञ्] सभा में विद्यमान व्यक्ति, दर्शक ।

पारिहारिकी [पारिहार + अच् + क्रीप्] एक प्रकार की कुशील, पहेंली ।

पारिहार्य [परि + हृ + व्यञ् + अच्] कड़ा, कंभय, बँध लेना, छपण करना ।

पारिहास्यम् [परिहास + व्यञ्] हृमी-दिग्दर्शी, उदासी, हृमी-यज्ञक ।

पारी [प + रिच् + घञ्] टोपू] 1 हाथी के पैरों की वाधने का रज्ज 2 जल का परिमाण 3 पानपात्र, मुराही, पाला 4 मूष की वाष्ठी णि० १२।६० ।

पारीक्षितः = पारिषत्क ।

पारीक (वि०) [पारि + क्त] 1 दूसरी पार रहने या जाने वाला 2 (समान के अन्त में) मुक्ति, मुपगिन्त—विश्वयोगीश्वरजी प्रकल्पमहात्मनानाममकमिन्द --- अष्टि० २।६५ ।

पारीकहृत् [परिषद् + व्यञ्, उपमर्शक दीर्घ] घर का मालिक, या बन्धन आदि ।

पारीक [परिषद् + अच्] 1 मिह, 2 अक्षर, बेंडा माप ।

पारीक [पाया जलपूरे रज मन्त्र] 1 मधुना 2 छडी, लाठी ।

पाक [पिबन्ति र्यात्—आ + क्] 1. मूर्ध 2 अग्नि ।

पाक्यम् [पक्व + व्यञ्] 1 क्षुब्धपात्र, ऊबड़वाबड़पात्र, कड़ापत्र 2 कठोरता, कृपता, (स्वभाव की) निर्दयता 3 अपभाषा, भाषा देना, बुजबुला कृपता, अश्लील भाषा, अपमान—अम० १६।६ पात्र० २।१०, ७० ४ (बाणी में शा कर्म में) हिमा मन्० ८।६, ७२, ७।६८, ५१ 5 उच्च का उचान 6 अक्षर, ध्व बुद्धि का विशेषण ।

पारीक्यम् [पारिक्व + व्यञ्] परपरा ।

पाक्यम् [पादे घटते कनि अच्, पुषो० माधु] फूल, गन्ध ।

पार्यम् (वि०) [पार्य + अच्] बृष्टि से सबंध रखने वाला ।

पार्य (वि०) (स्त्री०—की) [पार्य + अच्] 1 पत्नी से संबंध रखने वाला या पता का बना हुआ 2 पत्नी से उठाया हुआ (जैसे कि कर) ।

पार्षः [पृषा + अण्] 1 युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन का मातृकुलसूचक नाम, परन्तु अर्जुन का विशेषरूप से—अण्० ११२५, और दूसरे अनेक स्थल 2 राजा ।

सम०—सारथिः कृष्ण का विशेषण ।

पार्षकण्ड [पृषक् + ण्यञ्] पृषकता, अलहृदयी, अलग २ होने का भाव, अकेलापन, अनेकता ।

पार्षक्य [पृष + अण्] विद्यालया, विस्तार, फैलाव, बौझाई ।
पार्षक (वि०) (स्त्री०—की) [पृषिकी + अण्] 1 पिट्टी का बना हुआ, पृथ्वी सबंधी, भूमिसंबंधी, चरती से संबंध रखने वाला—पनोरत्र पार्षकमृचित्रहीते—रघु० १३१६४ 2 चरती पर शासन करने वाला 3 राजकी, राजकीय,—कः 1. पृथ्वी पर रहने वाला 2 राजा, प्रभु—रघु० ८१३ 3 पिट्टी का वर्तन । सम०—पार्षक्य—सुत राजकुमार, राजपुत्र,—कथा—पशुपती,—सुता राजा की पुत्री, राजकुमारी ।

पार्षिकी [पार्षिड + ङीप्] 1 मोटा का विशेषण, चरती की पुत्री—पार्षिकीमुद्रहृदप्रद्वर—रघु० ११४५ 2 लक्ष्मी का विशेषण ।

पार्षर (पु०) 1 मृदु तो भग चावल 2 अयरोम, तपेदिक ।

पार्षतिक (वि०) (स्त्री०—की) [पार्षन् + टक्] अस्तिम, आश्रयो, निर्वाणिक ।

पार्षण (वि०) (स्त्री०—णी) [पार्षन् + अण्] 1 पर्व-संधी, रघु० १११८० 2 वृद्धि की प्राप्त होना, बढ़ना (जैसे कि चन्द्रमा का),—अण् पर्व के अवसर पर (अभावस्थया के दिन) सभी पिता की निमित्त आहुति देने का सामान्य सम्कार ।

पार्षत (वि०) (स्त्री०—नी) [पार्षन् + अण्] 1 पहाड़ पर होने या रहने वाला 2 पहाड़ पर उभने वाला, पहाड़ से प्राप्त होने वाला 3 पहाड़ी ।

पार्षतिकम् [पार्षन् + टक्] पहाड़ों का समूहचय, पार्षत-मूलका ।

पार्षती [पार्षन् + ङीप्] 1 दुर्गा का नाम, हिमालय की पुत्री के रूप में उपपन्न (अपने पहले जन्म में वह ही थी—नु० कु० ११२१) या पार्षतीत्याभिजनेन नाम्ना बभूविषा बभूवन्तो जुहाव—कु० ११२६ 2 स्वामिन 3 दीपवी का विशेषण 4 पहाड़ी नदी 5 एक प्रकार की मृगचयुक्त मिट्टी । सम० लक्ष्मः 1 कार्तिकेय की उपाधि 2 लक्ष्मण का विशेषण ।

पार्षतीय (वि०) (स्त्री०—नी) [पार्षन् + ङ] पहाड़ में रहने वाला,—अः 1 पहाड़ी 2 एक विशेष पहाड़ी जानि का नाम (ब० ब०)—तत्र अय रचोर्षोर पार्षतीयेनैरभूत्—रघु० ४१७७ ।

पार्षतेय (वि०) (स्त्री०—णी) [पार्षन्ती + टक्] पहाड़ पर उत्पन्न,—अण् अजत, सुधा ।

पार्षक [पृष + अण्] कुआर से सुसज्जित घोड़ा ।

पार्षक्य—सर्वम् [पृषुता समूह] 1. कौष से नीचे का धारीर का भाव, स्थान जहाँ पसलियाँ हैं—अपने सन्निप-सर्षकाण्यम्—मेघ० ८९ 2 पाण्डु, कोल, (सभीय और निर्बीर पदायो का) पार्षकीय पिटरं कबचदिति-मान निजपाश्वरिणिव दृष्टितराम्—पञ्च० ११३२४ 3 आस-पास,—अर्ष विनका विशेषण,—अर्षेण 1 पस-लियों का समूह 2 आलसाजी ने भरो हुई तरकीब, असम्मानजनक उपाय (पार्षक्यं क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो इसका-अर्ष है—'ने निकट' के पास में 'की ओर'—श० ७१८, इसी प्रकार पार्षक्यं 'की ओर से' 'से दूर' पार्षक्यं 'निकट' 'नजदीक' 'पास में' न मे दूरे किचित्प्रमयपि पार्षक्यं रचयन्नात्—श० ११९, अर्षेण २१७७) । सम०—अणुचरः टहलुजा, सेवक—रघु० २१९,—अस्ति (नपु०) पसली,—अस्ति (वि०) जो बहुत निकट आ गया है,—आलस्य (वि०) पास ही विद्यमान,—अवरिप्रियः केकडा,—अः टहलुजा, सेवक—रघु० १११४३,—अत (वि०) पार्षक्यती, पास ही स्थित, सेवा करने वाला 2 धरणागत,—अः सेवक, टहलुजा—रघु० ९१७२, १११२२,—अ टहलुजा, सेवक,—द्वैका (धारीर की) कोष, पाण्डु,—परिचरन्तु 1 विस्तर पर करवट बदलना 2 भाद्रपदसुकल ११ में होने वाला पर्व (आज के दिन सम्पन्न जाता है कि विष्णु करवट बदलते हैं), ज्ञायः कौष, पाण्डु,—अस्ति (वि०) 1 पास होने वाला, उपस्थित, सेवा में खड़ा हुआ 2 साथ ही नगा हुआ,—अथ (वि०) पास ही होने वाला बगल में होने वाला,—दूक,—अण् कोल से मोटा पर्व, दूककः एक प्रकार का आभूषण—अथ (वि०) पार्षक्यती, नजदीकी, निकटवर्ती, समीपस्थ (स्वः) 1 सहृदय 2 सूत्रधार का सहायक—नु० पारिपार्षक्य ।

पार्षक्यः (स्त्री०—की) [पार्षन् + कण्] ठग, प्रवचक, चोर ।

पार्षक्यः (अभ्य०) [पार्षन् + लट्] निकट, नजदीक, समीप, पास रघु० १९१३१ ।

पार्षिक्य (वि०) (स्त्री०—की) [पार्षन् + ङ] पार्ष से संबंध रखने वाला,—कः 1 पर्व सेने वाला आरवनी, साश्रीदार 2 साधी, सहृदय 3. जाणुगर ।

पार्षत (वि०) (स्त्री०—नी) [पृषन् + अण्] चितकबरे हरिण से संबंध रखने वाला—अणु० ३१२६९, पार्ष० ११२५७,—तः राजा हुपद और उसके पुत्र मृष्टयुज्ज का पितृकुलसूचक नाम ।

पार्षती [पार्षन् + ङीप्] 1 दीपवी का विशेषण 2. दुर्गा की उपाधि ।

पार्षत् (स्त्री०) [परिषद्, पुत्री०] रक्षा ।

पार्षदः [पार्षदं गृहीति अच्] 1 साधो, सहचर 2 टहलजा अनुचरवर्ग 3 सभा में उपस्थित, रसिक, सभासद ।

पार्षद [पार्षद + ण्य] सभासद, सदस्य ।

पाणि [पू०, स्त्री०] [पृष् + नि, नि० वृद्धि] 1 एड़ी —अर्धप्रत्ययवृत्ति पाणिभाषान्— कु० ११११, पाणि प्रहार—का० १११२ सेना की पिछाड़ी 3 पिछाड़ी, पिछला भाग—बृहत्पाणिग्रयान्वित रघु० ४।२६, 'जिसकी पिछाड़ी घबराहित हो गई है' 4 ठोकर (स्त्री०) 1. अग्निचारणी स्त्री 2 कुन्ती का विशेषण । सम०—बहू अनुयायी, —बहूषम् शत्रु की पीठ पर आक्रमण करना, —ब्राह्मः पृथ्वतीं शत्रु 2 पृथ्वतीं सेना का सेनापति 3. निचराजा जो किसी राजा की सहायता करे—मनु० ७।२०७, —घातः ठोकर—कि० १७।५०, —अम् पृथक्लक, पीछे रहने वाली सेना की टुकड़ी, प्रारक्षित, —बहू बाहूवर्ती घोड़ा ।

पातः [पाल् + अच्] 1 प्ररक्षक, अधिभावक, सरक्षक—यथा गोपाल, वृत्तपाल आदि 2 माला—बिबाद स्वामिपालयो मनु० ८।५, २२९, २४० 3 राजा 4 पीकदान । सम०—ध्वः कुतुम्भता, सौष की छतरी ।

पालक [पाल् + क्तृ] 1 अधिभावक, प्ररक्षक 2 राज कुमार, राजा, शासक, प्रभु 3 बाँस, घोड़े का रस बाला 4 घोड़ा 5 चित्रक वृक्ष 6 पालक पिता ।

पालकाय्य (पु०) 1 एक ऋषि कर्णका पुत्र, (इन्होंने ही सर्वप्रथम हस्तविज्ञान की शिक्षा दी) 2 हस्तविज्ञान ।

पालक [पाल् + क्तृ = पाल् + अच् + क्तृ] 1 पालक का साथ 2 बायबसो, —की एक गधद्वय ।

पालकध्व, —ध्या [पालक + ध्वञ्, निघांटां टाप् च] एक सुगंध इन्ध ।

पालन (वि०) [पाल् + ल्यट्] रखा करने वाला, सरक्षण देने वाला, कि० १।५, —मम् 1 प्ररक्षण, सरक्षण, पालना, पोसना, जालन-पालन करना—कण्व० रघु० १९।३, इसी प्रकार प्रजां जितिं आदि 2 बनाने रखना, अनुपालन करना, (व्रत, प्रतिज्ञा, आदि को) पूरा करना 3 ठाकी ब्याई हुई गौ का दूध, लीस ।

पालकित्तु (पु०) [पाल् + क्तृ + क्तृ] प्ररक्षक, सरक्षक, पररक्षक करने वाला—रघु० २।६१ ।

पालास (वि०) (स्त्री०—त्री) [पालास + अच्] 1 बाक का, बाक से उत्पन्न 2 बाक की लकड़ी का बना हुआ, मनु० २।४५ 3 हरा, श हरा रंग । सम०—शङ्कः, —वष्कः मगध देश का विशेषण ।

पालि, —की (स्त्री०) [पाल् + इन्] कान का सिरा ।

पालिक, —की (स्त्री०) [पाल् + इन्] 1 कान का सिरा —अथवापालि—गीत० ३ 2 किनारा, मोट, मगजी—भर्तृ० ३।५५ 3. ठेक सिरा, बार वा नोक

—आदि० २।३ 4 हड, सीमा 5 खेपी, पलित, —विपुल पुलकपाली—गीत० ६, शि० ३।५ 6 धम्मा, चित्त 7 बाघ, पुत्र 8 घोटा, अक 9 मायता-कार ताकाव 10. अर्धयनकाल में बुध द्वारा छात्र का भरण-पोषण 11 नूँ १२ प्रसत्ता, स्तुति 1३ वह स्त्री जिसके दाढ़ी-मुँहे हो ।

पालिका [पालि + क्तृ + टाप्] 1 कान का सिरा 2 तल-बार वा किसी छुरी आदि काटने वाले उपकरण की टेंज बार 3 पत्नी वा मन्थन आदि काटने की छुरी ।

पालित (भू० क० क्तृ०) [पाल् + क्तृ] 1 प्ररक्षित, मर्राक्षित, आरक्षित 2 पालन किया हुआ, पूरा किया हुआ ।

पालित्यम् [पलित + ध्यञ्] वृद्धावस्था के कारण बालों की सफेदी, धबलता ।

पालक (वि०) (स्त्री—ली) [पलक + अच्] पोखर में उत्पन्न, तलैया से प्रालत ।

पावक [पृ + क्तृ] 1 आग—पावकस्य महिमा स गण्यते कश्चिज्ज्वलति सागरजिपि य—रघु० ११।७५, २।९, ११।८७ 2 अग्नि देवता 3 विवस्वी की आग 4. चित्रक वृक्ष 5 तीन की सख्या । सम०—आत्यक कालिकेय का विशेषण 2 मुद्रघांत नामक ऋषि ।

पावकि [पावक + इन्] कालिकेय का विशेषण ।

पावन (वि०) (स्त्री०—नी) [पू + णिच् + ल्यट्] 1 निर्मल करने वाला, पाप से मुक्त करने वाला, शुद्ध करने वाला, पवित्र बनाने वाला—पादास्तामनियानो निषण्णहरिणा मीरीमुरो पावना—शं० ६।१७, रघु० १५।१०१ १५।५३, भग० १।८।५, मनु० २।२६, पाशं० २।३०७ 2 पवित्र, पुनीत, विद्युत्, परिष्कृत—कु० ५।१७, —न 1 बाप 2 गध इन्ध 3 सिद्ध 4 व्यास कवि, —1 मम् पवित्री करण, विद्युद्दीकरण—पदानव-नीरजनिबनपावन—गीत० १ 2 तप 3 अल 4 घोबर 5 सप्रदायभूचक तिलक । सम०—ध्वनि शम्भनाद ।

पावनी [पावन + ङीप्] 1 पवित्र तुलसी 2 माय 3 गंगा नदी ।

पावमानी [पवमानम् अधिभूय प्रकृतम्-पवमान + अच् + ङीप्] विशिष्ट वैदिक ऋचाओं का विशेषण ।

पावर (पु०) पासे का वह पहलु जिस पर 'दे' की सख्या अंकित हो, पासे को विशेषण द्य से फेंकना, —पावर-पतनाञ्च घोषित शरीर—मूच्छ० २।८ ।

पाव [पपथे इन्धतेनेन, पल् कर्णेण धञ्] 1. डोरी, भूधला, बेडी कदा—पादाङ्कितव्रतित्वकलातपसजान-पाव—शं० १।३२, बाहूपारोम व्यापारिता मूच्छ० १, रघु० ६।८४ 2 जान, लटकेदार पिंजड़ा, वा कदा 3. कथन जो (बरण के द्वारा) सम्पत् की भाँति प्रयुक्त होता है—कु० २।२१ 4. पौसा—रघु०

६१८ पर मलिक० 5. किसी स्त्री हुई वस्तु की किगारी 6. (समाप्त के अन्त में) 'पाष' का अर्थ होता है—(क) तिरस्कार, अमान्य—यथा 'आषपाष' (निकम्मा विद्यापी) में, वैपाकरण०, निष्क० आदि (ख) सौन्दर्य, सपहुला—यथा—सौन्दर्यपुत्रा स त् कर्णपाश—उत्तर० ६१२७, (ग) बहुतायत, डेर, राशि ('केस' अर्थ शोथक शब्द के पश्चात्) केसपाश (केसकलाप) । सम०—अंतः कपड़े का पृष्ठभाग, —कीड़ा जुवा सेलना, दाते के साथ सेलना, —घर, —बाधिः वरुण का विशेषण, —अष्ट (वि०) पित्रुने में फंसा हुआ, जाल में पकड़ा हुआ, फंसे में पड़ा हुआ, —अंकः बचन, जाल, फाँसी की डोरी, —अंककः अनेकिया, पत्नी पकड़ने वाला, बंधनमय जाल, —कृत् (पु०) वरुण का विशेषण—रघु० २।९, —रज्जुः (स्त्री०) बेड़ी रासी, —हस्तः 'हाथ में जाल पकड़े हुए' वरुण का विशेषण ।

पाशकः [पाश्याति पाशयति—पश्+पिच्+ञ्जुल] मञ्ज, पोसा । सम०—बीठम् जुवा सेलने की बीठी ।

पाशकम् [पश्+पिच्+त्पट्] 1 बचन, फटा, जाल, मुल्ल या गोफिया 2 डोरी, चाकुय या सोटे में लगी बुरे की डोरी का तस्मा 3 जाल में फंसाया, पित्रने में बन्द करना ।

पाशक (वि०) (स्त्री०-बी) [पशु+अच्] जानवरों से प्राप्त, या सबंध रखने वाला, —अन्व रेवम्, लघुहा । अम०—पाशकम् पशुचरण या चरपाश, गोचरप्रति

पाशित (वि०) [पशु+पिच्+क्त] बँध, जाल में फंसा, बेहिचों से जकड़ा हुआ ।

पाशित् (पु०) [पाश+इति] 1 वरुण का विशेषण 2 यम का विशेषण 3 हिरणों को पकड़ने वाला, बहुकिया, जाल में फंसाया वाला ।

पाशुना (वि०) (स्त्री०-नी) [पशुपति+अच्] 1 पशुपति से प्राप्त, या पशुपति से सम्बद्ध अथवा पशुपति के लिये पावन, त् 1. शिव का अनुयायी और पुजक 2 पशुपति के सिद्धान्तों का पालन करने वाला, —तन् पाशुपत सिद्धान्त (हे० सर्व०) । सम०—अस्त्रम् पशुपति या शिव द्वारा अविच्छिन्न एक अस्त्र का नाम (जिसे अर्जुन ने शिव से प्राप्त किया था) ।

पाशुपाकम् [पशुपाश+अच्] पशुओं का पालना, प्याले की पूर्ति या पचा ।

पाशुपाक्य (वि०) [पशुपाश+त्यक्] 1 पिच्छला 2 परिषदी—रघु० ७।६२ 3. पशुपती, बाद का 4. बाघ में होने वाला, —स्वम् पिच्छला प्रायः ।

पाशका [पाश+अ+टाप्] 1. जाल 2. रस्सियों का पीचियों का समुह ।

पाशकः [पा पशोर्धः सं संभक्ति-ना+पशु+अच्]—पाशकं—मनु० ५।९०, ५।२८५ ।

पाशकम्, पाशकित् (पु०) [पाशक+अच्, पा+अच्+मिनि] वास्तिक, कर्मभट्ट, बर्ष के नाम पर ब्रह्म आडंबर रखने वाला पूर्ण अश्वित, —याज्ञ० १।१३०, २।६० ।

पाशकाः [पिपिष्टि पित् संपूर्ण ने जालम् पुषो० तारा०] पत्वर, —बी राट का काम देने वाला छोटा पत्वर । सम०—हारक, —हारणः टांकी, —अग्निः यद्गान के अन्वर वृषभ या वराह, —हृषय (वि०) पत्वर की भाँति कडोरहृषय, कुर, निष्टुर ।

पि (तुदा० पर० पिपिति) जाला, हिल्ला-मुकना ।

पिकः [अति कायति छद्माद्ये—अपि+अं+क, अकार-लोप] कौशल—कुमुदस्यराजमहात्मनवति पिकनिकटे अत्र शबभम्—नीत० ११ या—उपनीसति कुः कुडुरिति कसोतालाः पिक्कानां पिर—नीत० १ । सम०—आनम्, —अंककः मण्डपद्यु, —अंठु, —रज्जु, —अनकः जाल का पेड़ ।

पिककः [पिक इत्यप्यस्तस्येव कायति—पिक+अं+क] 1 २० वर्ष की आयु का हाथी का वस्त्रा ।

पिक (वि०) [पिञ्च् सर्वो अच् कुत्तम्] लाभिका लिये पूरा रण, शाकी, पीला-कास रण, —अतनिपिष्टा-मलपितारम् (विशेषणम्) कु० ७।३३, —क 1. शाकी या पूरा रण 2. पीला 3. पुष्ट, —आ 1 हल्की 2. केदार 3 एक प्रकार का पीला रोगन 4. बंकिना की उपाधि । सम०—अन (वि०) अलाई लिये पूरे रण की बंकिों वाला, कास बंकिों वाला (अ) 1. कर्पूर 2. शिव का विशेषण, —ईश्वर शिव की उपाधि, —ईश्वर अग्नि का विशेषण, —कविता ऐक चूटा, —अन्वु (पु०) केकड़ा, —अन्व शिव का विशेषण, —आर हराणक, —अन्विक पीला शिल्पी, गोमेद रण ।

पिकस (वि०) [पिञ्च्—पिष्ठा० कच्, पिष्ताति सा +क व तारा०] सलाई लिये पूरे रण का, पीलाय, पूरा, शाकी—रघु० १२।७९, मनु० १।८—क 1. शाकी रण 2. अग्नि 3. अर 4. एक प्रकार का नेला 5. छोटा उल्लु 6. एक प्रकार का हीर 7. सूर्य के एक अनुचर का नाम 8. कुबेर के एक कौब का नाम 9. एक प्रसिद्ध शूद्रि का नाम, संस्कृत के अन्वः काव्य का प्रयोता, उसकी कृति का नाम—पिष्ककः काव्य है—इन्द्रोपासनादिषु अज्ञान यदुरो केलायते पिष्कम्—पञ्च० २।३३, —अन्व 1. पीला 2. पीले रंग की हराणक, —आ 1. एक प्रकार का अन्व 2. शीघ्र का वृक्ष 3. एक प्रकार की वायु 4. अरि की विशेष बाहिष्क 4. अरिच देव की हृदिकी 5. एक

बधिका को अपनी पवित्रता तथा पावन जीवन के कारण प्रसिद्ध है (सायबत में उल्लेख है कि किस प्रकार उस बधिका ने तथा अज्ञानि ने इस लोक के बंधनों से मुक्ति पाई)। सम०—अज्ञा शिव का विशेषण।

विपलिका [विपल्+ऊन्+टाप्] एक प्रकार का सारस 2 एक प्रकार का उल्लू।

विषाखा [विष+अप्+अप्] 1 गाँव का मुखिया या नायक 2 एक प्रकार की मछली,—अप् प्राकृत स्वर्ण,—की मील का बीया।

विषाख,—अप्, विषिषा,—अप् [अपि+अप्+अप्, अकालोप, पृषो०] बेट, उदर।

विषाखक [विषाख+क] वेद, ओदरिक्।

विषिषिका [विषिष+अप्+टाप्] विडली, टाग की विडली।

विषिषिस (वि०) [विषिष+इलच्] मोटे बेट वाला, मूलकाय।

विष्णु पच्+उ पृषो० तारा० 1 रुई 2 एक प्रकार का ढाट, (दाँ ठीले के बराबर) कर्ष 3 एक प्रकार का कोढ़। सम०—तलम् रुई,—अच्,—अई बीम का बेट—वि० ५।६६।

विष्णुक [विष्णु+क+क] 1 रुई 2 एक प्रकार का जल-काक या समुद्री कोबा।

विष्णुट (वि०) [विष्णु+अटन्] दबकर चपटा किया हुआ,—ः अलो की पूजन, नम-अवाह,—टम् 1 रागा, जस्ता 2 बीया।

विष्णु [विष्णु+अप्+टाप्] १६ मोतियों की एक लड़ जिसका बदन एक धरण (मोतियों की विशेष तोल) हो।

विष्णुम् [विष्णु+अप्] 1 पृष्ठ का पर (जैसे मोर का) 2 मोर की पृष्ठ—वि० ४।५० 3 बाण के पर, 4 बाजू 5 कलगी, डिम्बा,—अप् पृष्ठ,—अप् 1 म्यान, गिलाफ, कोष 2 चावल का मांड 3 पक्ति, श्रेणी 4 डेर, समुच्चय 5 रेखनीकाम के पोषे का मोर या रस 6 कला 7 कवच 8 टाँग की पिडली 9 सीप की विषमय लार 10 सुपारी। सम०—बाण, बाज, अवन।

विष्णुल (वि०) [विष्णु+लच्] 1 चिपचिपा, चिकना, फिलानवाला, लसलसा—तव्य सर्वप्रमाक नवीदन्त् पिच्छलानि च धीनि—अटन्० १ 2 पृष्ठवाला—अप्, अप्,—अप्, 1 चाबलो का मांड, भूकोमंड 2 चाबल की कारी से युक्त बटनी 3 ललाई समेत वही। सम०—अप् (पृ०) सतरे का बेट या छिन्ना।

विष्णु 1 (अटा० आ०—पिप्ते) 1 हल्के रंग की, पुट देना, रचना 2 स्पर्श करना 3 सत्राना ॥ (चूग० उच०)

विष्णुति—ते) 1 देना 2 लेना 3 चनकना 4 शक्ति-धानी होना 5 रहना, बसना 6 चोट पहुँचाना, शक्ति पहुँचाना, मार डालना।

विष्णु [विष्णु+अप्, अप् वा] 1 चन्द्रमा 2 कपूर 3 हवा, वय 4 डेर,—अप् सामर्थ्य, शक्ति,—आ 1 शक्ति, चोट 2 हवा 3 कपास।

विष्णु [विष्णु+अटन्] वीद, बाँध की कीच।

विष्णुम् [विष्णु+अटन्] धुनकी, रुई धुनने का धनुवाकार उपकरण।

विष्णु (वि०) [विष्णु+अरच्] ललाई लिये पीले रंग का लोकी, सुनहरी रंग का,—अप्मा प्रदीपय सुवर्णविष्णु —अप् ० ३।१७, रपु० १८।४०,—ः ललाई लिये पीला या लोकी भूरा रंग 2 पीला रंग—रम् 1 सोना 2 हस्ताल 3 अस्तिपजर 4 विष्णु।

विष्णुकम् [विष्णु+अप्] अस्ताल।

विष्णुल (वि०) [विष्णु+अरच्] पीले रंग का, हल्के भूरे रंग का।

विष्णुल (वि०) [विष्णु+अरच्] 1 शोकसतत, प्रथमतः, व्याकुल, विस्मित 2 (सेना आदि) जातकित,—अप् 1 हस्ताल 2 बुझा की पत्ती।

विष्णुलम् [विष्णु+अरच्] सोना, सुवर्ण।

विष्णुल [विष्णु+अरच्+टाप्, अरच्] पूरी, रुई का गोल गल्ला जिससे कानेन पर मूल निकलता है।

विष्णु, [विष्णु+अरच्] कान का मेल।

विष्णु [=विष्णु, पृषो०] बाँधों की कीच, वीद।

विष्णुला [विष्णु+अल+टाप्] पत्ती को सड़कड़ाहट, पत्ती का लड़-लड़ शब्द करना।

विष्णु [विष्णु+क] समूक, टाकरी—अप् 1 धर, कुटीर 2 छप्पर, छत।

विष्णु,—अप् [विष्णु+अप्] 1 समूक, टाकरी 2 जखी 3 फुली फफाला, छाटा फंडा, नामूर (इस अर्थ में 'विष्णु' तथा 'विष्णु' भी)—तत गवत्सोपरि विष्णु मवृत्ता—अप् ० २ ४ इन्द्र के सने पर एक प्रकार का नामयण।

विष्णु [विष्णु+अप्+टाप्] समूक को का डेर।

विष्णु [विष्णु+क+क] विष्णु, समूक।

विष्णु [—किट्टक, पृषो० कन्थ प.] दाँतो का जमा हुआ मेल।

विष्णु,—रम् [विष्णु+अरच्] बर्तन, तलका, बटखोई ('पिटरी' भी इसी अर्थ में)—विष्णु स्वयंश्रिमात्र निजप्रार्थनेन दहतितराम्—पच् ० १।३२४, अटन्-विष्णु इण्डुरेय करोति विष्णुनाम्—अप् ० ३।११६,—रम् रुई का डहा।

विष्णु,—अप् [विष्णु+अप्] बर्तन, तलका। सम०—कपाल,—अप् टाकरी, सपरी, सप्पर।

पिडकः—का [पीड्+प्पुन्, नि० साधु] छोटा सोडा, चुन्नी, फलोला ।

पिड् (धा० आ०, घृ० उभ०—पिडते, पिडयति-ते, पिडित) 1 इकट्ठा करके पिन्नी या गोला बनाना 2 जोड़ना, मिलाना 3 ढेर लगाना, इकट्ठा करना ।

पिड (वि०) (स्त्री०—डी) [पिण्ड्+अप्] 1 टोस, धन 2 मिला हुआ, सचन, सटा हुआ, -इ, -इम् 1 पिन्नी, गोला, गोलक (अथ पिड, नेत्र पिड चादि) 2 लौटा, देना (मिट्टी का) 3 कौर, घास, मूहमर कचल -रघु० २।५९ 4 आठ में पितरो को दिया जाने वाला चाबलो का पिड रघु० १।६६, १।२६, मनु० ३।२१६, ९।१३२, १३६, १४०, याज्ञ० १।१५९ 5 भोजन सफलीकृतमर्तुपिड. भालबि० ५, 'वमक-हलाल' 6 जोबिका, नृति, निर्वाह 7 दान - पिडपातिला मा० २ 8 मास, आभिष 9 गर्भ-धारण की आरम्भिक अवस्था का गर्भ 10 शरीर, शारीरिक ढांचा—एकानविज्जसिषु मड्डिधानां पिडेव्य-नाम्न्या मलु भीनिकेषु—रघु २।५७ 11 ढेर, सङ्घ, समुच्चय 12 टाग की पिडली—मा० ५।१६ 13 हाथी का कुचरथल 14 कमान के आगे का निकाला हुआ छत्रा 15 घुष, या गध इव्य 16. (अक ग० में) जोड़, कुलयोग 17 (आ० में) घनत्व, -इम् 1 शक्ति, सामर्थ्य, ताकत 2 लौहा 3 ताबा मसलन 4 सेना [पिड इ गोले बनाना, निष्पीडित करना, ढेर लगाना, पिडोम् गोले या लौहे बनाना] । सम० अन्वाहार्यं पितरो की पिड दान के पश्चात् खाने के योग्य -मनु० ३।१२३.—अन्वाहार्यं कम् पितरो

के उद्देश्य से दिया हुआ भोजन, -अश्मन् ओला, -अपसम् इत्यात्.—अलसत्कः महावर, लाल रंग, -अशनः,—आश,—आसक,—आशिन (घृ०) भिक्षुक,—उदकाश्या यतभ्यक्तियो के निमित्त पिण्डदान तथा जलदान, -आड और तप्य, -उद्धरणम् पिडदान में भाग लेना,—मौल रसगंध, लोबन की तरह का सुगंधित गौड,—सैलम्,—सैलकः गधइव्य विशेष, नोबान,—इ (वि०) 1 जो भोजन देता है, जीवन निर्वाह के लिए आहार देने वाला द्वा पिडवस्य कुल्ले गजपुगवनतु धोर विलोकयन्ति वाटशरत्तच भुक्ते मनु० २।३१ 2 मृत पितरो को पिण्ड देने का अधिकारी याज्ञ० २।१३२ (ब.) पिडदान करने वाला निकटतम सबकी पुत्र्य 2 स्वामी, अभिरसक, -दानम् 1. अन्वैर्येति श्रिया के समय पिड देना 2 अमावस्या की मध्या के समय पितरो को पिडदान देना,—निर्घणम् पितरो को पिडदान देना,—वालाः भिक्षा देना, मा० १,—धातिकः भिक्षा से जीविका चमाने वाला,—पापः—पापः हाथी,—पुण्यः 1. अशोक

वृक्ष 2 चीन का नुलाब 3. अनार (अणु) 1. अशोक वृक्ष पर फूल आना, संघरी 2 चीनी नुलाब का फूल 3. कमल फूल,—वाष् (वि०) पिड प्राप्त करने का अधिकारी (घृ०, व० व०) स्वर्गीय मृत पुत्र्य या पितर—स० ६।२५,—श्रुतिः (स्त्री०) जोबिका, भोजन निर्वाह का साधन, पुण्यम्,—पुण्यम् गायर,—यज्ञः आड करके पितरो को पिडदान देना—याज्ञ० ३।१६,—लेपः पिड का बहु अर्थ जो हाथ में बिपका रह जाता है (यह जब प्रसितामह से ठीक पूर्ववर्ती तीन पितरो को दिया जाता है),—श्लेषः (सत्यान न होने के कारण) पिडदान का अभाव,—सर्वः जीवित तथा मृत व्यक्ति के बीच का सबब जिससे कि पिड-दाता को पिडभोक्ता के प्रति पात्रता का निर्धारण किया जाय ।

पिडकः—कम् [पिण्ड्+कं+क] 1 लौटा, गोला, गोलक 2 मूढा या मूजन 3. भोजन का ढाल 4 टाग की पिडली 5 गधइव्य, लोबान 6 गाजर—कः बैताल, पिशाच ।

पिडनम् [पिड्+स्तुट्] गोले या पिण्ड बनाना ।
पिडकः [पिड्+कलप्] 1 पुल, बाँध 2 टीला, ऊर्ध्वनृमि या शीलशिला ।

पिडतः [पिड्+तन्+ट] निदाक, भिक्षा पर जीवन यापन करने वाला साधु ।

पिडातः [पिड्+अत्+अप्] लोहान, गधइव्य ।
पिडातः [पिड्+च्छ+अप्] 1 साधु, भिक्षुक 2. ग्वाला 3 भैंसों को चराने वाला 4 चिककत वृक्ष 5 निन्दा की अभिव्यक्ति ।

पिडिः—डी (स्त्री०) [पिड्+इन्, पिडि+डीप्] 1. पिन्नी, गोला 2 पहिण की नाभि 3 टाग की [पिडनी 5 लौकी, बीया 6 घर 7 ताड़ की जाति का वृक्ष । सम०—पुण्यः अशोक, वृक्ष,—लेपः एक प्रकार का लेप या उबटन,—धुरः गेहेधुर' पेट, डींग हाकने वाला, कायर, आधरालापी, भीड, बेहरा—तु० गेहेर्निदन् आदि ।

पिडिका [पिण्ड्+अणुन्, इवम्] 1 घन, गोलाकार मूजन 2 टाग की पिडली—दे० ऊ० 'पिडि' ।

पिडित (वि०) [पिण्ड्+स्त] 1 दबा २ कर बनाया गया गोला या पिण्डा 2 पिडाकार बकाया हुआ, लीडे जैसा 3. ढेर किया हुआ, बटोड़ा 4 निमित्त 5 जोड़ा हुआ, गुना किया हुआ 6 गिना हुआ, सम्पात ।

पिडिन् (वि०) [पिड्+इति] 1 पिड प्राप्त करने वाला (पितर) (घृ०) भिक्षारी 2 पितरो को पिण्डदान देने वाला ।

पिडितः [पिण्ड्+इलच्] 1 पुल, बाँध २. ज्योतिषी, गणक ।

विहीर (वि०) [पिष्क + ईर + चिच्] फीका, रसहीन, नीला, सूखा, —र: 1. मजार का कुण्ड 2. मसीखी का खीसरी कुण्ड 3. समुद्रकेन—दे० 'विहीर'।

विहीरि: (स्त्री०) [पिष्क + वीरि] जाते समय मुँह से बिरा कच, रुदन, उच्छ्वस ।

विनायक: कम् [चिच् + नाक, नि० साधु] 1 बल (तिरु) या शरती की 2. गन्ध इन्ध, मोहान 3 केयर 4. हीन ।

विनायक: (स्त्री०-ही) [चिच् + नायक] 1 दादा, बाबा 2. बह्ना का विशेषण ।

विष्णु (पुं०) [वासि रसति - वा + तुच्] पिता, —तेनाथ लोक, पितृवान् विनेषा—रपु० १४१२३, १४२४, १११६७, —री (हि०) ४००] पिता-माता, माता-पिता-जगत: पितरौ बदे पार्वतीपरमेश्वरी—रपु० १११, याज्ञ० २१११७, —र: (ब०) ४०० 1 पुत्रपुत्र, पुत्र, पिता, —ख० ६१२४ 2 पितृकुल के पितर, पितृवर्ग—मनु० २११५१ 3 पितर—रपु० २११६, ४१२०, मनु० १०१२९, मनु० ३१८१, ११२१ । सम०—वसति (वि०) पिता द्वारा कर्माई हुई पैतृक (सर्पति), —कर्मन् (म०), कार्यम्,—कृत्यम्,—किया मृत पूर्व पुत्रियों को के निमित्त किया जाने वाला गान या यादकर्म,—कर्मन् कश्मिस्तान, —रपु० ११११६,—कुण्ड मलय पर्वत से निकलने वाली नदी,—गन्धः 1 पूर्वपुत्रियों के समस्त बर्ष 2. पितर, वस प्रवर्तक जो प्रजापति के पुत्र थे—दे० मनु० ३-११४-५,—बृहत् 1 पिता का घर 2 कश्मिस्तान, जहाँ रक्षक किं जायें,—वात्कः,—वासिन् (पुं०) पिता की हत्या करने वाला,—सर्वणम् 1 पितरों की दी जाने वाली वाहुति या बलवान 2 (सर्वेण ये अवसर पर) पितर तथा अन्य दिग्गत पूर्वजों के निमित्त दाने हाथ से नल छोड़ना—मनु० २११७६ 3 तिरु,—तिरिचि: (स्त्री०) ब्रह्मवत्सा,—सौर्षेण या तीर्थ जहाँ जाकर पितरों के निमित्त बाढ़ करना विशेष रूप से उदात्तक विहित है 2 अंगुठे और तर्बनी के मध्य का भाग (हस्तके द्वारा तर्बन जादि करना पवित्र माना जाता है),—दानम् पितरों के निमित्त किया जाने वाला दान, दानम् पिता से प्राप्त सर्पति,—दिग्मन् ब्रह्मवत्सा,—वेव (वि०) 1 पिता की पुजा करने वाला 2 पितरों की पुजा से सबद (वा) अग्निष्वात्त जादि दिव्य पितर,—वैवत (वि०) पितरों द्वारा अधिकृत (सम्) दसवाँ (महा) नक्षत्र,—इन्धम् पिता से प्राप्त सर्पति, याज्ञ० २१११८,—पूजः 1 पितृकुल, पैतृक सबक 2. पितृकुल के सबकी 3 पितृ वस—आश्विन मास का कृष्ण पक्ष जिसमें पितृकुल्य करना प्रवृत्त माना गया है,—वसि: यम

का विशेषण,—वस्य पितरों का लोक,—विष्णु (पुं०) दादा, बाबा, पितामह,—पुत्री (हि०) ४००—विष्णुपति पिता और पुत्र, (विष्णु: कुम: प्रसिद्ध और लोक विष्णु पिता का पुत्र,—बृहन्नम् पितरों की पुजा,—वेनायक (वि०) (स्त्री० ही) पूर्व पुत्रियों से प्राप्त, पैतृक, आनुवंशिक (ब०) ४००—ह्रा पूर्व पुत्र, —मनु (स्त्री०) 1 दादी 2 साध्यकालीन श्रुतपुत्रा,—प्रायः (वि०) 1 पिता से प्राप्त 2 पितृकुल कर्मन्; से प्राप्त,—बंभु पितृकुल के नातेदार (नपु०-बंभु) पिता के सबक से रिपतेदारी,—वसत (वि०) पिता का कर्तव्य परामर्श भक्त,—वसति (स्त्री०) पिता के प्रति कर्तव्य,—बोधवम् पितरों को पिया गया भोजन,—भानु (पुं०) पिता का माई, चाचा या ताऊ,—वसिरम् 1 पितृपुत्र 2 कश्मिस्तान,—वैष पितरों के निमित्त किया जाने वाला, यज्ञ, याद,—वस 1 मृत पूर्व पुत्रियों को प्रतिदिन तर्बन या जलदान, श्राद्ध द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पत्र यज्ञों में से एक । पितृ यज्ञस्तु तर्बनम् मनु० ३१७०, १२२, २८३,—रम् (पुं०),—राव,—रावम् (पुं०) यम का विशेषण,—व्य शिव का विशेषण, लोक पितरों का लोक,—वस पिता का कुल,—वस्य स्वयान, कश्मिस्तान (विष्णु-वनेवर 1 दास्य, पिता, शिव का विशेषण),—वसति (स्त्री०),—सधम् (नपुं०) ममदान, कश्मिस्तान—कु० ५१७०, वत आद, पितृकर्म,—बादम् पिता या मृत पूर्व पुत्रों के निमित्त किया जाने वाला याद, स्वस्य (स्त्री०) (पितृवत्) पितृ स्वस्तु-नी) मुखा, फुकी—मनु० २१३३१, स्वश्रीकः कुकरा माई,—कर्मिन् (वि०) पितृकुल्य, पितृवत्,—कु: 1 पितामह, दादा, बाबा 2 साध्यकालीन श्रुतपुत्रा—स्वात्,—स्वाजीकः अभिभावक (जो पिता के स्थान में है),—हत्या पिता का वध,—हृत् (पुं०) पिता की हत्या करने वाला ।

पितृक (वि०) [पितृ भागतम्—पितृ + कन्] 1 पैतृक, कुलकर्मन्, आनुवंशिक 2 और्वधैरिक ।

पितृव्य: [पितृ + व्यत्] 1 पिता का माई, चाचा 2 कोई भी बयोवृद्ध पुत्र-नातेदार—मनु० २१३३० ।

पितृम्: [अचि + दी + क्त अये अकारलोप] पितृदोष, शरीर में स्थित तीन दोषों में एक (बेष दो हैं) वात और कफ) पितृ यदि शर्करा साम्यति कोर्म पटोलन—प० १३७८। सम०—वसिस्तार: पितृ के प्रकीर्ण से उत्पन्न दंतों का रोग,—उष्णत: (वि०) पितृ से प्रस्त—वसति पितृपहृत शशियुञ्ज संवर्ष पितृम्—काव्य० १०,—कोष: पितास्य,—कोष: पितृ दोष की अधिकता, पितृप्रकीर्ण,—अवर: पितृ के प्रकीर्ण से होने वाला अवर या बुधार,—अवृत्ति (वि०)

विसर्ग के लिये में पित्त की प्रधानता हो, वा भी जोकी स्वभाव का हो, - प्रकोपः पित्त का आधिक्य वा पित्त का कुपित हो जाना, - रक्तवृ रक्तपित्त नामक रोग, - बन्धुः पित्त के प्रकोप से पेट में बन्धु का वैद्य होना, जकारा, - विषयः (वि०) पित्त के प्रकोप से आर्शस, - श्लेष्म, - हृर (वि०) पित्त के प्रकोप को शांत करने वाला ।

वित्तस (वि०) [पित्त + ता + क] पित्त बहुल, वित्तने पित्त की अधिकता हो, - कम् १. पीतल २ भोजन्य का वृक्ष विशेष ।

विष्य (वि०) [विन् इदम् - पित् + यत्, रीङ्ग आदेशः] १ वैनूक, बपीतो का, पुस्तोनी २ (क) मूल पित्तों से सम्बन्ध रखने वाला - मन् ० २१५९ (ख) औषधीय-क्रियासमयी, - म् १ अण्डे भाई २ माघमास, - म् १ मया मयात्रयुज २ पुणिया और ब्रह्मावस्था का दिन, - म् १ मया नाम का नखन २ अण्डे और तर्जनी के बीच का हथेली का भाग (पित्तों के लिए प्रयुज) ।

वित्तन् (पु०) [पत् + सन्, इत् अन्त्यास्यलोपः, पित्त + सन्] पत्नी ।

वित्तल [पत् + तल, इत्] मार्ग, पथ ।

विषान्न [अग्नि + वा + स्तुट् अये अकारलोपः] १ इकना, छिपाना २ म्यान ३ चादर, बोना ४ इकन, षोटी ।

विषायक (वि०) [अग्नि + वा + ष्यत्, अयेः अकारलोपः] इकने वाला, छिपाने वाला, प्रच्छन्न रखने वाला ।

विषद (पु० क० ड०) [अग्नि + तद् + ष, अयेः अकारलोपः] १ बकड़ा हुआ, बघा हुआ या धारण किया हुआ २ सुसज्जित ३ छिपाया हुआ, प्रच्छन्न ४ घुमाया हुआ, छिद्रा हुआ ५ अण्डे का हुआ, इका हुआ, आविष्टित ।

विषाक, - कम् [पा रक्षणो आकान् नृत् कातोरात् इष्यत्] १ शिव का बन्धु २. विषाक ३ सामान्य बन्धु ४ लाठी या छड़ी ५ बुर की बीछार । सम० - बौध्, - बृह, - बृह, - वाधिः (पु०) शिव की उपाधि ० ३११० ।

विषाकिन् (पु०) [विषाक + इनि] शिव का विशेषण - कृ० ५१७७, शं० ११६ ।

विषातिवत् (दु०) [पत् + सन् + शतृ] पत्नी ।

विषतिव् (वि०) [पत् + सन् + उ] विरने की इच्छा वाला, पतनशील, - वृ, पत्नी ।

विषासा [पा + सन् + अ + टाप्] व्यास ।

विषासित, विषासित्, विषासु (वि०) [पा + सन् + क्त, विषासा + इति, पा + सन् + उ] व्यासा ।

विषीक, विषीकी [अग्नि + पील + ञ्, अये अकारलोपः, विपील + षीप्] षोटी, षोटी ।

विषीकः [विपील + क्] मकौड़ा ।

विषीकः [अग्नि + पील + इकम्, अये अकारलोपः] षोटी, - कम् एक प्रकार का सोना (षोटों द्वारा एकत्र किया हुआ माना जाता है) ।

विषीकः [विपील + टाप्, इत्] षोटी । सम०

- अरिखर्षक षोटीयों का इतर उचर दीकना ।

विष्यः [पा + ष्यत्, पुषो०] १. पील का वेद-बाइ ० ११३० २. चुचुक ३ जाकेट या कोट की जास्तीन - सन् १. बरबटा २ पील का बरबटा ३. सम्जोय ४. जल ।

विष्यति, - ली (स्त्री०) [प् + ष्यत् + षीप् पुषो० पले ह्रस्वाभावः] विषयमूल, पील नाम की बीष ।

विष्यन्ता (स्त्री०) शरीर पर जमी हुई मेल की पत्नी ।

विष्णुः [अग्नि + ऋ + इ अये मकारलोपः] विज्ञान, तिल, बसता, विस्ती ।

विषातः [पीम् + कालन्, ह्रस्वः] एक वृक्षविशेष (चिरीवी) - कु० ३१३१, - सन् इत् वृक्ष (चिरीवी) का फल ।

विष् (पु०) उभ० - वेदवर्ति-ते १ केंकना, डालना २ अंबना, चलता करना ३ उत्तेजित करना, उकसाना ।

विष् (पु०) दे० 'पीलः' ।

विष्क (वि०) [क्लिभे बहुषी यस्य, क्लिभ + अच्, विष्कादेशः] नीबियाई ओंभी वाला, - सन् षुवि-या' वाली अंस ।

विष्कः [पिल + क + क + टाप्] हृषिनी ।

विष् (तुदा० उभ०) विषाति-ते १ रूप देना, बनाना, निर्माण करना २ सञ्चित होना ३ प्रकाश करना, उजाला करना ।

विषंघ (वि०) [विष् + अयच् विष्क] सलाई लिये घुरे रग का, लाल सा लाली रग का - मथ्ये समुद्रं ककुम् विषञ्जी - शि० ३१३३, ११६, कि० ४१३६, - वः लाली रग ।

विषंघकः [विषंघ + कन्] विष्णु अपना उसके अनुचर का विशेषण ।

विषाषः [पिधितमाचमति-वा + चम्, वा० इ पुषो०] भूत, बैताल, शैतान, प्रेत, दुष्ट प्राणी मन्थित विषाषोऽपि भोजनेन - विक्रम० २, मन् ० ११३७, १२१४४ । सम० - आत्मः बहु त्वान् बहु फल्कोर-रत्न के कारण अंबेरे में प्रकाश होता हो, - इः एक प्रकार का वृक्ष (सिहोर), - बाष, - संघारः विषाष द्वारा आविष्ट होना, - म् १ 'सैतानों की भाषा' पेशाची प्राकृत जिसका प्रयोग मठकों में मिलता है, संस्कृत का अपभ्रंश, - सभम् १ शैतानों की सभा २ भूतो का घर, प्रेतवास ।

विषाषकिन् (पु०) [विषाष + इनि, कुक्] धन के स्वामी कुंजर का विशेषण ।

विद्याचिका [पिशाच + कीर्ष + कन् + टाप्, ह्रस्व]

1. पिशाचिनी, भूतनी, स्त्री पिशाच 2 (समाप्त के अर्थ में) किसी पदार्थ के लिए शैलीनी या वैशाचिकी वाशाचि—किमनया आमुषपिशाचिकया—महृषी० ३, पृष्ठ के लिए घोर अनुपिशा, पिशाची भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है,—उत्सव लक्ष्मिय यावज्जीव-मायपिशाची न ह्यव्यापनप्रामिति—बालरा० ४ वा—किपिचिचरियमतिनाटपिध्याति अवतमायुषपि-शाची—अनर्थ० ४ ।

विलिखन् [पिप् + क्त] मास कुषापि नापि सखु हा पिशितस्य लेन—भासि० ११२०५, रघु० ७५० । सम०—अखलः,—आकाः,—असिन्,—भूम् (पु०) 1 मांसमश्री, पिशाच, बैताल—(छाया) सध्यापयो-रकापिशा विलिखाननाया चरति—शं० ३१२७ 2 मनुष्यमश्री, नरपशु० ।

विघ्नन् (वि०) [पिप् + उनच्, क्चिच्] (क) बनेत करने वाला, बतलाने वाला, प्रकट करने वाला, प्र-शन करने वाला, परिष्कारक—अनुषामनिश विनाश-पिघ्नन् सि० ११७५, तुल्यानुरागपिघ्नन् चिक्र० २१४४ रघु० ११५३, अमर १७ (स) स्वरपीय, स्मारक, शैल क्षयप्रथनविघ्नन् कौरव नङ्कजेया येष ४८ 2 मिथ्यानिन्दक, चुगलखोर, चुगली बाने वाला—पिघ्नन्वन सखु विप्रति शिनीश्रा मासि० ११७४ 3 दुष्ट, भूत, प्रदोषी 4 अयम, कपीना, तिरस्करोपीय 5 मूर्ख, मन्दबुद्धि,—क 1 मिथ्या निन्दा करने वाला, चुगलखोर, विदोषण, अयम, भेदिना, दोही, कलाकित करने वाला हि० ११२३५, एष० ११३०४, मनु० ३११११ 2 कई 3 नारद का विशेषण 4 कौवा । सम०—बचनम्,—बाधम् चुगली, गुणनिन्दा, बदनामी ।

पिप् (छा० पर०—विभक्ति, पिष्ट) 1 कूटना, पीसना, चूरा करना, कुचलना—अथवा भक्त प्रवर्तना न कप पिष्टमित पिष्टित न नै० २६१, १२११, माघ-पेठ विशेष महावी० ६४५, अट्टि० ६१३७, १२१४८ मासि० १११२ 2 चोट पहुँचाना, सति पहुँचाना, नष्ट करना, धार डालना (सब० के मात्व) क्रमेण वेष्टु भूतनडिषामति सि० ११४०, उच्—कुचलना, पीस डालना, विष्—कूटना, चर्प करना, कस कस करना, (त) निष्पन्न शक्ति शिष्ट पुण्यशुभिविधानि—महा०, शिलाविष्पष्टमुद्गर म्पु० १२१७३ 2 चोट पहुँचाना, छति पहुँचाना, खरोर मारना—अट्टि० ६१२० ।

पिष्ट (पु० क० ह०) [पिप् + क्त] पिना हुआ, चूर्ण किया हुआ, कुचला हुआ भासि० ११२७३ 2 रखा हुआ, पीचा हुआ, (हाय) विलासा हुआ,—ष्टम् पिनी

हुई कोई चीज, पिना हुआ मसाला 2 आटा, बेसन—पिष्टं पिमिष्टं पिते ह्ये को पीसता है अर्थात् व्यर्थ काम करता है, या बिना किसी लाभ के दोहा-रता है 3 सीसा । सम० उषकम् आटे में पिला हुआ अन्न, एषकम् आटा भूतने के लिए कड़ाही, पतीली आदि, पशु आटे का बना या हुआ किसी पशु का तुलना पिष्टम् आटे की बाटी या पकी दूरः दे० 'पृतपूर', येष, वैषकम् पिते को पीसना, व्यर्थ काम करना, बिना किसी लाभ के दोहराना—श्यामः दे० 'श्याम' के अन्वयण, मेह एक प्रकार का बध्मेह,—अति एक प्रकार का लहसू जो घी, दाल या चावल से बनाया जाता है,—शौरभम् (चिन्ता हुआ) चन्दन ।

पिष्टकः—कम् [पिष्ट + कन्] 1 बाटी जो किसी अनाज के आटे से बनाई गई हो 2 सिक्की हुई बाटी, रोटी, पूरी,—कम् तिलकुट, तिल के लहसू ।
पिष्टपः—पम् [विशान्ति अत्र मुकुतिन—विष् + क्प नि०] विष्ट का एक भाग—तु० 'विष्टप' ।
पिष्टात् [पिष्ट + अत् + अम्] मुषययुक्त या लुब्धद्वारा चूर्ण ।

पिष्टिक [पिष्ट + टन्] चाबलो के आटे की बनी टिकिया ।
पिष् । (आ० पर०—पेयति) जाना, चलना ॥ (बुरा० उम०—पेयति—ने) 1 जाना 2 प्रकृत बनना 3 रहना 4 चोट पहुँचाना, छति पहुँचाना 5 देना या लेना ।
पिहित (पु० क० ह०) [अपि + धा + क्त, अपे आकार-लोप] 1 बन्द, अवगुह, रुका हुआ, रुका हुआ—दे० अपि पूर्वक धा 2 रुका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त—दे० शर्मिहत 3 भगा हुआ, रुका हुआ ।

पी (दिवा० आ० पीयते) पीना—तत्र बदनभ्रामासूत निपीय मुच्छ० १०१३, नै० १११ ।

पीचम् (मनु०) ठोकी ।
पीठम् [पेटनि उपविशति अत्र—पि + घन्, वा० दोष पीयते अत्र पी०-उक्] 1 आसन (तिपाई, चौकी, कुर्सी पलंग आदि) जेबे पीठतुरतिष्ठरथ्यत—सि० ११२०, म्पु० ४८४, ६११५ 2 ब्रह्मपूजा के बैठन के लिए हुआसन 3 देवालय, बेदी 4 पादपीठ, आचार 5 बैठने का विशेष मुद्रा । मम०—केलि विध्याग-पात्र मुष्प परीपजीवी,—घर्ष-भूनि के आधार में वह मडका जियमें वह बसाई जाती है, नाचिका बहु चौदह वर्ष की कन्या जो दुर्गा-पूजा के अवसर पर दुर्गा मान कर पूजी जाती है,—भूः आधाट, नीच, भूगुह, तरश्याना,—बर्द 1 महार, परीपजीवी, जो नारक में बड़े कायों म नायक की सहायता करता है जैसे कि नायिका की श्रांति में, इसी प्रकार 'पीठ-

संज्ञिकां बहु लोकीं चो मायिका के प्रेमी नायक को प्राप्त कराने में उसकी सहायता करती है 2 नृत्य शिक्षक को वेदवाणी को नृत्यरुपा को विद्या देता है, —सर्वे (वि०) कवचा, विकलाय ।

पीठिका [पीठ + शीर्ष + क + टाप्, ह्रस्व] 1. भाजन (श्रीको, तिपार्थ) 2 पीठा, भाषार 3 पुस्तक का अनुमाय या प्रमाण जैसा कि दशकुमार चरित की पूर्व पीठिका और उत्तमपीठिका ।

पीठ (चूरा० उभ०—पीठयति—ते, पीठिन) पीठित करना, सताना, नुकसान पहुँचाना, धायल करना, प्रति पहुँचाना, तंग करना, छेड़ना, परेशान करना नील बालोपिठच्छरं अङ्गि० १५।८२, मनु० ४।६७, २३८, ७।२९ 2. विरोध करना, सामना करना 3 (नगर आदि को) घेरना 4 दवाना, भीचना, निबोड़ना, बूटको काटना कठे पीठयन्—मुच्छ० ८, मन्त्रेति मितरात् तैलमपि यत्न पीठयन् भर्तुं० २।५, दशमपीठिकाधरा रघु० १९।३५ 5 दवाना, लपट करना—मनु० १।५१ 6 अवहेलना करना 7 किसी वस्तु से डकना 8 बहान-यत्न होना, —अभि, —अब, दवाना, निबोड़ना, पीठित करना, भा—, दवाना, भाट से डकना देना पयोधारेपापीठिन गीत० १२, उद्—, मसलना, घिसना, रगड़ना —अयोपयन्पीठयदुत्तमभाषा स्तम्भय पाठु तथा प्रवृद्धम्—रघु० १।१०, वि० ३।६६ 2 पिबकाना, ऊपर को फेरना, बकेलना, घेरना—रघु० ५।४६, १६।६६, उब—, 1 बाँट पहुँचाना, जनि पहुँचाना, बुझी करना, तंग करना, परेशान करना—स्तनोपपीठ परित्रयुकाभा—कि० ३।५४, शि० १०।४७ 2 अन्वेषण करना, बरखान करना मनु० ८।६७, ७।११५, वि—, 1 तंग करना, पीठित करना, परेशान करना, दब देना, कपट देना मनु० ७।२३ 2 निबोड़ना, दवाना, काम कर पकड़ना, हथिया लेना, धामना—नारो सदारस्य निरीडय पाठो—रघु० २।३५, ५।६५, विष्णु—, निबोड़ना—वे० निष्पीडित, परि—, 1 पीठा देना, कपट देना, परेशान करना 2 दवाना, भीचना इ—, अर्थपिक पीठित करना, घातना देना, मनाना 2 दवाना, भीचना, सम्—, भीचना, चुड़की काटना कठे जीर्णलताप्रान-नवप्रवेशापर्यवपीठित सं० अ।११, बीर० ३ ।

पीठक [पीठ + क्तृ] प्रत्याचारी ।

पीठकम् [पीठ + क्तृ] 1 पीठित करना, कपट देना, अन्वेषण करना, पीठा पहुँचाना—मनु० १।२९९ 2 भीचना, दवाना—श्रीशिल्लिकप्र-निबिडस्तन पीठ-मानि—गीत० १०, स्तोत्रपीठक नमस्तनमनसिभक्तान्—चौर० ४८ 3 दवाने का उपकरण 4 लेना, बाचना, पकड़ना जैसा कि 'करपीठक' और 'पाणि-

पीठक' में 5 बर्बाद करना, उबाड़ना 6 मनाना पहुँचना 7 कपट—जैसा कि 'बहुः' में 8 ध्वनि निरोध, स्वरोच्चारण का एक दोष ।

पीठा [पीठ + शर् + टाप्] 1 दब, कपट, योचना, सताना, परेशानी, घेरना—आधमपीठा—रघु० १।१७, बाधा, ७१, मदन, साहित्य" भाषि 2 प्रति पहुँचाना, हानि पहुँचाना, नुकसान पहुँचाना भग० ७।१।९, मनु० ७।१६९ 3 उबाड़ना, बर्बाद करना 4 उत्स-वन, प्रतिफल 5 प्रतिबन्ध 6 दबा, कपटा 7 बहान 8 सुधिरनी, चितोपात्य 9. बरखान। सम० कर (वि०) कपटकर, पीठामय ।

पीठित (पू० क० क०) [पीठ + क्त] 1. पीठा से दक, तंग किया हुआ, सताना हुआ, अन्वेषणरस्त, नोचा गया 2 निबोड़ा हुआ, दबाया हुआ 3 विबाहित, पाप्मिपूहीत 4. कतिकान्त, तोड़ा हुआ 5. उबाड़ा हुआ, बर्बाद किया हुआ 6 बहानयत्न 7 बोधा हुआ, बधनरस्त, लम् 1 रदं करना, कति पहुँचाना, तंग करना 2 मँचन का विशेष प्रकार, रतिबंध,—तम् (अव्य०) मन्चुली से, सटा कर, बुटा पूर्वक ।

पीत (वि०) [पा + क्त] 1 पीठा हुआ, चढ़ाया हुआ 2 परिस्थान, सिद्ध, मरा हुआ, समुत्त 3 पीला—विश्वामरारचित-पीतपटोत्तरपी—मुच्छ० ५।२, —कः 1. पीला रंग 2. पुष्पराज 3 कुसुम,—तम् 1 सोना 2 हरताल। सम०—अभिः आसुर्य का विशेषण,—अवटः विष्णु का विशेषण—इति निगदित. प्रीत पीताबरोपि तथाकरोत्-पीत० १२ 2. अमि-नेता 3. पीले बन्ध पहने हुए साधु सम्प्राप्ती, —अवध (वि०) पीनाभरक, पीलेपन से युक्त लाल,—ब्रह्मन् (पू०) पुष्पराज, सोनली केले का एक भेद, सुगहरी केला,—अवध गाबर, —कावेन्म् 1 केसर 2 पीतल—अवधम् पीला बदन,—अवधम् पीला बदन, चंदनम् 1 एक प्रकार का चंदन 2 केसर 3. इन्दी,—अवधकः दीपक,—तुंडः कारडव पत्नी,—हाथ (नपु०) एक प्रकार का चीड़ का पेड़, या सरल वृक्ष,—बुधा दुधाह गाध,—हुः सरल वृक्ष,—शाशा एक प्रकार का पक्षी, यैना,—अभिः पुष्पराज,—आशिकम् एक प्रकार का अतिवृद्ध, सोनामाली,—मूलकम् गाजर,—रस्त (वि०) पीलेपन से युक्त लाल रंग का, सतरे के रंग का (कालम्) एक प्रकार का पीले रंग का रत्न, पुष्पराज,—रत्नः 1 पीला रंग 2 योम 3 पधकेसर,—कालका हत्ती, बालम् (पु०) काल का विशेषण,—साः 1 पुष्पराज 2 चन्दन का वृक्ष (रम्) पीली चंदन की लकड़ी,—सारि (नपु) अजन, सुर्मा—रन्ध्र मूजर,—रन्ध्रिकः पुष्पराज,—हरित (वि०) पीलापन निम्ने हुए हरा ।

वीरकम् [वीर+कम्] 1. हुरताल 2. वीरक 3. केसर 4. बहुर 5. बरार की लकड़ी 6. चंचल की लकड़ी।

वीरक [वीर+करीति इति—वीर+विन्+कृत्+वा वीरं भवति इति वीर+नी+ङ्] बुरार की जाति का वृक्ष—कम् 1. हुरताल 2. केसर।

वीरक (वि०) [वीर+का+क] वीरके रंग का,—कः पीला रंग,—कम् वीरक।

वीरिः [वा+क्तिञ्] बौद्ध—(स्त्री०) 1. बूट, पीना 2. भद्रिवालम् 3. हाथी की सूँड।

वीरिष्वा [वीर+ञ्+टाप्, इत्थम्] 1. केसर 2. हल्दी 3. पीली चनेकी, या सोनबूही।

वीरुः [वा+रुणु] 1. सूर्य 2. अग्नि 3. हाथियों के बूँड का मुख्य हाथी, वृषपति।

वीर्यः [वा+र्यञ्] 1. सूर्य 2. काल 3. अग्नि 4. वेद 5. ब्रह्म।

वीर्यिः [=वीरि, वृषो तस्य च] बौद्ध।

वीर्य (वि०) [व्याय+र्य, सप्रसारणे वीर्यं] 1. स्मृत्, मांसल, हृष्टपुष्ट 2. बरपुरा, विद्याल, मोटा—वीर्या कि शीतस्तनी में 3 पूर्य, गोलमटोल 4 प्रभूत्, अधिक। सम०—कम्प्य वृषी (वीरोष्मो) भरे पूरे ऐल (बौद्ध) बाली माय, -वसाम् (वि०) विद्याल-वसाम्पल बाला, भरी पूरी छाती बाला।

वीर्यतः [वीर्य स्मृत्प्रति नन स्वति नागत्यति—वीर्य+तो+क] 1. नाक पर बुध्पनाव डालने वाला अकाम 2. मासी, अकाम।

वीर्युः [वा+रुडि] 1. सुक, इत्थम् 1. कौवा 2. सूर्य 3. अग्नि 4. उस्म 5. काल 6. सोमा।

वीर्युः—कम् [वीर्य+ऊर्यञ्] 1. सुधा, जम्बू-मनसि बसति कार्ये पुष्ट्यवीर्यपूर्णा—अर्तु० २।६८, इमां वीर्युवहरीन्—वशा० ५३ 2. वृष 3. ध्याने के बाद पहले सात दिन का राय का वृष। सम० बह्लु (पु०), र्विकः 1. वन्द्या 2. कपूर,—कम् 1. अवृतवर्णा 2. वन्द्या 3. कपूर।

वीर्यकः [वीर्य+कृत्] र्वकीडा।

वीर्युः [वीर्य+उ] 1. बाण 2. जम्बू 3. कौवा 4. हाथी 5. हाथ का त्वा 6. फूल 7. ताड़ के बूँडों का समूह 8. 'वीर्यु' नाम का एक वृक्ष।

वीर्यकः [वीर्य+कम्] बीटा।

वीर्यु [व्या० वर०—वीर्यति] मोटा-ताजा या हृष्ट पुष्ट होता।

वीर्यु (वि०) (स्त्री०—वीररी) [व्यं+र्यनिप्, सप्र० वीर्यं] 1. बरा पूरा, स्मृत्, मोटा 2. हृष्ट पुष्ट, बलवान्—(पु०) पवन।

वीरर (वि०) (स्त्री०—रा, री) [व्यं+र्यरञ्, सप्र० वीर्यं] 1. स्मृत्, विद्याल, हृष्टपुष्ट, मांसल, मोटा-

ताजा—र्यु० ३।८, ५।६५ १५।३२ 2. फूला हुआ मोटा,—रु कृष्णा, री 1. लक्ष्मी 2. बाय।

वीर्या [वीर्ये तो वी+र+टाप्] वृ 1।

वीर्यु [व्या० उग्र०—वृषयति—वे] 1. कुचलना, पीसना 2. पीडा देना, कष्ट देना, दण्ड देना।

वृ (पु०) [वा+इवञ्] (कृत्०—वृषाम्, वृषासी, वृषाम्, करण द्वि० व०—वृषाम्, संको० ए० व०—वृषम्) 1. वृष 2. नर—वृषि विषयसिद्धि कुच कुमारो—ने० ५।११० 2 इत्यान, मानव—वृषापी-स पुष्यल्लोके हि० १ 3 मनुष्य, मनुष्य जाति, कौम, राष्ट्र—वृषी वृषा रघुपतिर्ष्व—मेघ० १२ 4 टह-लगा, लेवक 5 पुष्पिण शब्द 6 पुष्पिण—वृषि वा हरिःपवनम्—अमर० 7 मातया। सम०—अनुवृ

(वि०) [वृषान्] [वृषा अनुवृ, समाले तृतीयया अनुवृ] बहु विलका ब्या भाई भी हो, अनुवृ (वृषान्) लडका होने के बाद जन्म लेने वाली लडकी अर्थात् बड़े भाई वाली लडकी, अन्वयम् (वृषयस्यम्) लडका, अर्थः (प्रमथं) 1. वृष या मनुष्य का उद्देश्य 2. मानव-जीवन के चार ध्येयों में से कोई सा एक, अर्थात् धर्म, अर्थ, काम या मोक्ष, दे० वृषधर्म,—आख्या (प्रमाख्या) नर की सहा, आचारः (वृषाचार) वृष का आचार, बालकलन, -कतिः (स्त्री०) वृष की कतिर,—काया (वृषकाय)

पति की कायना करने वाली स्त्री,—कौकिलः (वृषको-किल) नर-कौवल- कु० ३।३२,—क्रेतः (वृषैट) नर-बहू,—नयः (वृषव) 1. बेल, साइ 2 (समाप्त के अन्त में) मुख्य, सर्वोत्तम, श्रेष्ठतम, पूज्य या किसी भी क्षेत्र का प्रमुख व्यक्ति—वाल्मीकिर्षुनिपुणव—रामा०, इसी प्रकार गजपुणव अर्तु० २।३१, नर पुणव—आदि,—केतुः शिव का विशेषण— कु० ७।७७,

कम् (वृषचलय) रवी का बेटा,—धिहृत् (वृषिहृत्) विल, वृष के जननेन्द्रिय,—अन्वयम् (वृषमन्) (नपु) लडके का पैदा होना, नर-सन्तान का जन्म लेना, वीर्यः बहु नक्षत्रपुत्र जिनमें कि लडकी या नरसन्तान का जन्म होता है, बालः (वृषास) वृषव-वास,—व्यवः (वृषव्य) 1 प्राथिमाय में किसी भी जाति का नर 2 वृद्धा,—नक्षत्रम् (वृषाक्षत्रम्) नर जाति का नक्षत्र,—नायः (वृषनाय) 1 वृषों में हाथी, पूज्य या आदरणीय वृष 2 सकेद हाथी 3 सफ़ेद कमल 4 जायकल 5 नाग केसर नाम का वृक्ष र्यु० ६।५७, नाट—वः (वृषाट—व) इस नाम का वृक्ष,—नामधेय. (वृषनामधेय) नर, वृषवर्षापी,—नामन् (वृषानमन्) (वि०) वृषिण नामधारी, (पु) वृषाण नामक वृक्ष,—पुत्रः नर-सन्तान, लडका,—प्रजननम् वृषय की जननेन्द्रिय, विज्ञ.—वृष्यम् (वृष्यम्) (पु)

यह शब्द को केवल पुल्लिङ्ग बहुवचनगत ही होता है—कारा पुल्लिङ्ग शब्दताः—अन्यत्—शोकः (पुंल्लिङ्ग) पुंस्य के साथ बहुवचन वा संज्ञक २. किसी पुंस्य वा पति का संकेत—पुंसोने क्षत्रियोः,—रत्नम् (पुंल्लिङ्ग) केष्ठ राक्षिः (पुंल्लिङ्ग) नर-राक्षिः,—कर्मण्य (पुंल्लिङ्ग) नर का रूप,—लिङ्ग (पुंल्लिङ्ग) (वि०) पुंस्यवाचक (शब्द), पुंस्य वाचक (शब्) १. पुंस्य वाचक विद्वत् २. वीर्य, वीर्य ३. पुंस्य की बनलज्जिव,—कल्लः (पुंल्लिङ्ग) बलहा,—कृष्णः (पुंल्लिङ्ग) कर्पूरर,—केष (पुंस्य) (वि०) पुंस्य की वैश भूषा में, मर्यादी घोषाक पहले हुए,—सम्य (पुंस्य) (वि०) पुंसोत्पत्ति करने वाला (शब्) सर्व प्रथम परिष्कारात्मक या सुद्वीकरण सबकी संस्कार, स्त्री के मर्यादात्मक के प्रथम विद्वत् प्रकट होने पर पुंसोत्पत्ति के उद्देश्य से यह संस्कार किया जाता है—रत्न० ३।१० २. भूष, गर्भ ३. पुंस्य ।

पुंस्यम् [पुं+ल्य] १. पुंस्य का लक्षण, वीर्य, पुंस्यत्व, मर्यादी—यलात् पुंस्ये परीक्षित—याज्ञ० १।५५, २. लूक, वीर्य ३. पुल्लिङ्ग ।

पुंस्य (अव्य०) [पुं+स्य] १. पुंस्य की मति—रत्न० ६।२० २. पुल्लिङ्ग में ।

पुंसक (वि०) (स्त्री-श्री), पुंसक (वि०) (स्त्री०-श्री) [पुं कुत्सित कथति मच्छति—पुं+कम्(शु) + कथ्] अथम, नीच, -कः,—कः एक पतित बन्धककर भाति, सुदृश्य स्त्री में उत्पन्न निषाद की सत्ता—जातो निषादाच्छुद्राया ज्ञात्या भवति पुंसक—मनु० १०।१८,—श्री,—श्री १. कली मील का पीषा ३. पुंसक भाति की स्त्री ।

पुंसक, कम् [पुंसात् क्वति—पुं+कम्+इ] १. बाण का पल वाला भाव—रत्न० २।२१, ३।६४, ९।६१ २. बाण, श्वेन ।

पुंसितः (वि०) [पुं+इत्] पंखों से युक्त (यवा—बाण) ।

पुंसः, नम् [=पुंस्य, पुंसो] डेर, लज्ज, समुच्चय ।

पुंसकः [पुं+क+क] जायाया ।

पुंसक, कम् [पुंस्य+कम्] १. पुंस्य—परधातुपुंस्ये बहुति विभुले—उत्तर० ४।२७ २. बाकी वाली पुंस्य ३. मोर को पुंस्य ४. पिच्छला भाग ५. किसी वस्तु का किनारा । मय०—अथम्,—मूकम् पुंस्य का डिरा,—कंठकः विच्छ्, —मूकम् पुंस्य को जड़ ।

पुंस्यतिः—श्री (स्त्री०) [पुंस्य+इत्+इत्, पुंस्यत्+इत्] अनुलिता बटकाया ।

पुंस्यन् (पुं०) [पुंस्य+इत्] युवा ।

पुंस्य [पुं+स्य+इत्] डेर, समुच्चय, भाषा, राक्षि, संसह—श्रीराक्षेभ्य बधेतेपुंस्य—कू० ७।२६, प्रत्ययपुंस्यति मूर्धति स्थितः पुंस्ये निक्षुब्धे विभः—गीत० ११ ।

पुंसि (स्त्री०) [पुंस्य+इत्, पुंसो] डेर, भाषा, राक्षि ।

पुंसिकः [पुंसि+कम्] बोका ।

पुंसिक (वि०) [पुं+इत्] १. डेरी, संसृष्टी, एक बयह बनाया हुआ डेर २. मिठाकर नीचा हुआ, बनावी हुआ ।

पुं i (पुंसा० पर०—पुंत्ति) १. भाषित्व करता, शिवलता २. कन्ठवेदित करता, बटना, मूषना ii (पुंसा० उन० पुंत्तति—ते) १. मिथाना २. बाचना, अकटना ३. पीठ-बसि—ते (क) पीठना, पूर्ण करना (ख) बोसना (ग) बनकना iii (म्या० पर०—पुंत्ति) १. पीठना २. मलना ।

पुंस्य,—रम् [पुंस्य] १. तह २. बोधकी बयह, निवर, लोचका पन—विभ्रपलकवपुटी बनानिः—रत्न० ९।६८, ११।२३, १७।१२, मासवि० ३।९, बंजनिपुट, कर्मपुट भादि ३. दोना, पत्तों की तहकरके बनाया गया, पुंस्य—पुंस्या पय, पनपुंटी मदीयम्—रत्न० २।६५, मनु० ६।२८ ४. कोई उपका पात्र ५. कली, छोटी ६. म्याल, डकना, भाषादान ७. पलक (पुंटी) श्री इन्दी बर्षों में ८. बोधे की सुय,—कः रत्नेपटी,—रम् बायकम् । मय०—उत्पन्न्य संकेत कटरी,—उत्पन्न्य नारिकेल,—श्रीकः १. बर्तन, कलसा, बका २. तबे का पात्र,—उत्पन्न्यः नौबधियाँ तैयार करने की विशेष पद्धति, [इसमें नौबधियाँ को पत्तों में क्लेद कर ऊपर से मुलादि पत्र डेले हैं और फिर भाग में मूना जाता है—] बनि-मिन्नो मधीरत्कादतपुंस्यमव्यम्, पुंत्ताकजतीकाको रामस्य कवषो रस—उत्तर० ३।१,—कैः १. पुं, नवर २. एक प्रकार का भावनन, भातोष ३. जला-वर्त वा शवर,—कैःकम् कला या नवर—वि० १३।२६ ।

पुंस्यम् [पुं+कम्] १. तह २. उपला या कम गहट प्याला ३. दोना या पुंस्यवा ४. कमल ५. बायकम् ।

पुंस्यिणी [पुंस्य+इत्+इत्] १. कनक २. कनक समुह ।

पुंसिक [पुं+कम्+इत्, इत्] इकायणी ।

पुंसित (वि०) [पुं+इत्] १. रजसा हुआ, पीसा हुआ २. सिद्धता हुआ ३. टीका लगाया हुआ, सीसा हुआ ४. क्षिब्धत ।

पुंटी [पुं+इत्] रे०—पुंत् ।

पुं (पुंसा० पर०) १. जोड़ना, त्याग देना, तिकाबंधि दे देना २. परम्पूत करना ३. तिकाकना, बिदा करना, धोखना ।

पुं (म्या० पर०—पुंसति) पीठना, चूट करना, पूर्ण बना देना या पीस डालना ।

पुंस्यः [पुंस्य+कम्] विद्वत्, निधान ।

पुंस्यिकम् [पुंस्य+इत्+इत्] १. स्वेतकमक,—उत्तर० ६।२७, मा० ९।७ २. शक्रे जाता,—कः १. कञ्जे

रूप 2 दक्षिणपूर्व या आग्नेयी दिशा का अधिष्ठा-
विष्णाल - रूप १ ८८८ 3 व्याघ्र 4 एक प्रकार का
साँप 5 एक प्रकार का बाबल 6 एक प्रकार का
कोड़ा 7 हाथी का बुझार 8. एक प्रकार का आम
का बूझ 9. बड़ा, जलपात्र 10 आम 11 मस्तक पर
सम्प्रदाय चोतक तिलक । सम० - अक्षः विष्णु का
विशेषण - रूप १ ८८८, - अक्षः एक तरह का पत्थी,
- मुक्ती एक तरह की बोक ।

पुं: [पुं + र्क] 1 एक प्रकार का गला (लाल रंग
का) पीड़ा 2 कमल 3 श्वेत कमल 4 (मस्तक पर)
सम्प्रदायचोतक तिलक (चन्दनादिक का) 5 कीड़ा
- कुः (व० व०) एक देश तथा उसके निवासियो
का नाम । सम० - केलिः हाथी ।

पुंशुकः [पुंशु + क्] 1 एक प्रकार का ईल (लाल रंग
का) पीड़ा 2 सम्प्रदाय चोतक तिलक ।

पुष्य (वि०) [पु० + यन्, पुष्, ह्रस्व] 1 पवित्र,
पुनीत, शुचि अनकतनपासनायुष्योत्सव आश्रमेषु
- नेष० १, पुष्य धाम बहोश्वरस्य ३३, रूप०
३५१, श० २११४, मनु० २१६८ 2 अच्छा, भला,
गुणी, सच्चा, न्याय 3 शुभ, कल्याणकारी, भाग्य-
शाली, अनुकूल (दिन आदि) - मनु० २१२०, २६
4 शक्तिकर, सुहावना, प्रिय, सुन्दर प्रकृत्या पुष्य-
लक्ष्मीकी-महावी० ११६६, २४, उलर० ४१६९, इसी
प्रकार 'पुष्यदर्शन' 5 मधुर, मधुयुक्त (जैसे सुगन्ध,
परिमल) 6 औपचारिक, उल्लव या सत्कार सबधी
- अर्थम् 1 सद्गुण, धार्मिक या नैतिक गुण अन्व-
ल्लर्त पापपुष्पनिर्हण फलमन्वते - हि० ११८३, महता
पुष्यपथेन श्रोतव्य कायनीस्त्वया - शा० ३११, रूप०
११६९, नै० ३१८७ 2 सद्गुणसंपन्न ह्रस्व, प्राम्थ्य
कार्ये 3 पवित्रता, पवित्रोत्कर्ष 4 पशुओं को पानी
पिलाने के लिए कूँडे, - अर्था पवित्र तुलसी । सम०

- अहम् मगतमय या शुभ दिवस पुष्याह्र भवतो
बुधतु, अस्तु पुष्याह्रम् - गुणाह्र ब्रज मंगल सुदिवस प्राप्त
प्रयात्स्य मे - अमर ६१, "वाचस्पत्यु बहुल से धार्मिक
सत्कारों के आरम्भ में तीन बार उच्चारण करना
'यह शुभदिवस है', - उच्यते, सौभाग्य का प्रभाव, - उद्यान
(वि०) सुन्दर उद्यान रमने वाला, कर्तुं (पु०)
स्तुत्य या गुणवान् पुण्य, - कर्मन् (वि०) स्तुत्य कार्यो
के करने वाला, सरा, ईमानदार (नपु०) स्तुत्य कार्य,
- काव्यः ब्रुव समय, कौटिलि (वि०) अच्छे नाम
वाला, यशस्वी, विख्यात - मर्दि० ११५, - क्लृ (वि०)
सद्गुणमपन्न, प्रशंसनीय, स्तुत्य, - क्लृया धर्मकार्य,
ऐसा काम जिसके करने से पुण्य हो, - शेषम् 1 पवित्र-
स्थान तीर्थस्थान 2 पुष्यमूर्ति अर्थात् आर्यावर्त,
- अथ (वि०) मधुर गन्ध से युक्त, - बृहम् 1 वह

स्थान जहाँ अन्न आदि खुराक बाँटी जाय, 2 देवालय,
- अन्नः 1 सद्गुणी 2 रासस, पिशाच 3 बस
रूप० १३१६०, र- शिखरः कुबेर का विशेषण - अनुययी
यमपुष्यबनेश्वरी - रूप० ११६, - क्लि (वि०) पुष्य-
द्वारा प्राप्त किया हुआ, तीर्थम् तीर्थयात्रा का पुन-
स्थान, - श्रवण (वि०) सुन्दर (न) नीलकण्ठी
(नम्) पवित्रस्थान, मन्दिर आदि का दर्शन, - पुष्य
धर्मिणा या पुष्पिणा, प्रतापः अच्छे गुणों या नैतिक
कार्यों का प्रभाव, क्लृम् सत्कर्मों का पुरस्कार, (क)
वह उद्यान जहाँ पुष्यरूपों फलों की प्राप्ति होती है,
भाज् (वि०) सौभाग्यशाली, धर्मिणा, अच्छे गुणों
वाला पुष्यभाज स्वल्पी मनुमः का० ४३, - मू,
भूमि (स्त्री) पुष्यमूर्ति अर्थात् आर्यावर्त, रात्र-
शुभरात्रि, लोक स्वर्ग, वैकुण्ठ, - अस्तुनम् शुभशकुन
(न) शुभशकुनसूचक पशु, - शील (वि०) अच्छे
स्वभाव वाला, सत्कर्मों में रुचि रखने वाला, धर्म-
परायण, ईमानदार, - श्लोक (वि०) मुनिवचन,
जिसका नामोच्चारण ही शुभ समझा जाय, उत्तम
यशवाला, पावनपरिचर शाला (क) (निषध देश के
राजा) नल का विशेषण, बुधिष्ठिर और जगदानंद का
विशेषण - पुष्यस्थलीकी मन्वा राजा पुष्यस्थलीकी बुधि-
ष्ठिर, पुष्यल्लोका के वैदेही, पुष्यल्लोकी जगदानंद ।
- (का) गीता और श्रौतों का विशेषण, - स्थानम्
पुष्यमूर्ति, पवित्रस्थान, तीर्थस्थान ।

पुष्यवत् (वि०) [पुष्य + मनुष्य, मत्वन्] 1 सत्कर्म करन
वाला, सद्गुणी 2 भाग्यशाली, मंगलमय, अच्छी
किस्मत वाला 3 मुक्ती, भाग्यवान् ।

पुत् (नपु०) [पु + ट्णि - पथो] नरक का एक विशेष
प्रभाग जहाँ पुत्रहोने व्यक्ति डाले जाते हैं, दे० 'पुत्र'
नोबे । सम० - भाष्यम् (वि०) 'पुत्' नाम वाला ।

पुत्तल, - लो [पुत् + तल् = पुत्त मयम आति - पुत्त + ल
+ क, स्त्रियां ङीष्] 1 प्रतिभा, मूर्ति, बुत, पुत्तला
2 गुटिया कठपुतली । सम० - बृहस्पत्यु - विधि
विदेश में जिसका प्राणात हुआ हो अथवा अत्रापन शत्रु
के बदले उसका पुत्तला बना कर बलागा ।

पुत्तलक, पुत्तलिका [पुत्तल + कन्, पुत्तली + कन् । टाप्,
ह्रस्व । स्त्रिया, मूर्ति आदि ।

पुत्तिका [पुत् + टल् + टाप्] 1 एक प्रकार की मधुमक्खली,
2 दीमक ।

पुत्र [पुत् + र् + क्] बेटा (इस शब्द की व्युत्पत्ति - पुत्राग्ना
नरकात्मन्मात् प्रायते पित्रर भुव, उत्तराश्विन इति
श्लोक स्वयमेव स्वधर्म्या - मनु० ११३६, इस
लिग इस शब्द का बृह् रूप 'पुत्र' है) 2 अच्छा,
किमी जानवर का बच्चा 3 प्रिय बस्त (छोटे बच्चों
को प्यार से संबोधित करने का शब्द) 4. (समाज के

जन्त में) कोई भी छोटी वस्तु—यथा अग्निपुत्र, शिलापुत्र आदि, - औ (द्वि० व०) पुत्र और पुत्री (पुत्रीकृ पुत्र के रूप में गोद लेना—रघु० २।३६)। सम०—अप्राप्तः 1 जो पुत्र की कमाई पर निर्वाह करता है, या जिसके निर्वाह को व्ययस्था पुत्र द्वारा की जाय 2 एक विशेष प्रकार का साधु २० कुटीचकः—अग्निन् (वि०) पुत्र चाहने वाला,—इच्छिन्,—इच्छिका (स्त्री०) पुत्र लाभ को इच्छा से किया जाने वाला वज्र विशेष, काम (वि०) पुत्र की कामना करने वाला, काम्य पुत्र सखी सम्कारादि, -कृतकः जो पुत्र की भाँति माना गया हो, गोद लिया हुआ पुत्र—स्वाम्याकमुष्टिपरिवर्तितको जहाति मोक्ष न पुत्र कृतक पदवी बसन्ते—स० ५।१३, -जाल (वि०) जिसे पुत्र उलट्ट हुआ हो, -शरत् पुत्र और पत्नी, -यमः पुत्र का पिता के प्रति अपेक्षित कर्तव्य—वीर्यम्,—आः बेटे और पोते, -सौमित्र (वि०) पुत्र से पीत्र को प्राप्त होने वाला, जानुवशिक -भट्टि० ५।१५,—प्रतिनिधिः पुत्र के स्थान पर अपनाया हुआ, (उदा०—दत्तक पुत्र), -आध पुत्र की प्राप्ति,—अधू—(स्त्री०) पुत्र की पत्नी, लूना,—सखः बच्चों में प्रेम करने वाला, बच्चों का प्रेमी,—हीन (वि०) जिसके पुत्र न हो, निस्सन्तान।

पुत्रक [पुत्र + कन्] 1 छोटा पुत्र, बालक, बच्चा, तान, बाल (बालत्व को प्रकट करने वाला शब्द) 2 गृहिया, कठपुतली कु० १।२९ 3 बत, ठग 4 टिड्डी, टिड्डी 5 धरम या परवाना, पतंग, 6 बाल।

पुत्रका, पुत्रिका, -पुत्री [पुत्रकः टाप्, पुत्री + कन्] टाप्, ह्रस्व, पुत्र + क्रीप्] 1 बेटा 2 गृहिया, पुतली 3 (समाप्त के अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु—यथा अग्निपुत्रिका, सङ्ग पुत्रिका आदि। सम० पुत्र,—मुक्तः 1 बेटों का बेटा, दीहित्र, नाना के द्वारा पुत्र के स्थान पर माना हुआ—मनु० १।१२७ 2, बेटों को पुत्रवत् मानी जाती हैं, तथा पिता के घर रहती हैं (गुत्रिकं पुत्र अथवा पुत्रिकं सुत पुत्रिका सुत मी०पी०सम एव—वाङ्म० २।१२८ पर मित्ता०) 3 पीत्र,—अधूः बहु माता जिसके कन्याएँ ही हों, पुत्र न हो,—अतुं (पु०) 'बेटों का पति' जामाता, दामाद। पुत्रिन् (वि०) (स्त्री०) पी [पुत्र + इनि] बेटे वाला, बेटों वाला—रघु० १।९१, विक्रम० ५।१४, (पुत्र) पुत्र का पिता।

पुत्रिय, पुत्रीय, पुत्र्य (वि०) [पुत्र + य, छ, यत् वा] पुत्रसंबंधी, पुत्रविषयक।

पुत्रीया [पुत्र + यत् + य + टाप्] पुत्र प्राप्ति की इच्छा। पुत्र्यक (वि०) [पुत्र कुत्तित—पत्नी यस्मात् ब० सं०] सुन्दर, प्रिय, मनोहर,—कः परमायु—पुत्र्यकः

परमायव—बीबर 2 शरीर, मूत्रद्रव्य 3 आत्मा 4 शिव का विशेषण।

पुत्र (अभ्य०) [पत् + बर् + उत्त्वम्] 1 फिर, एक बार फिर, नये खिरे से न पुनरेष प्रवर्तितव्यम्—वा० ६, किमप्यव बहु पुनर्विबलु स्फुरितोत्तरावर—कु० ५।८२, इसी प्रकार पुनर्भू फिर पत्नी बनना 2 वापिस, विपरीत दिशा में (अधिकतर क्रियाओं के साथ), -पुनर्वा वापिस देना, लौटाना, पुनर्वा—इ—एम् आदि वापिस जाना, लौटाना आदि 3 इसके विपरीत, उलट, परन्तु, तोनी, तथापि इतना हीते दूर भी (विरोध सूचक बल के साथ)—प्रसाद इव मूर्तेस्तै स्पशं स्नेहाश्रुतीतल, अथाप्यामन्दवति मा एव पुन स्वस्ति गदिनि—उत्तर० ३।१४, मम पुत्र सर्वमेव तत्रास्ति—उत्तर० ३ पुनः पुनः 'फिर—फिर' बार बार 'बहुधा'—पुन पुन मृतिनिश्चयापल—रघु० ३।४२, किं पुनः कितना अधिक, कितना कम—२० किं के नीचे, पुनरपि फिर, एक बार और, इसके विपरीत। सम०—अश्लिषा बार बार की हुई श्रापना, -आगत (वि०) फिर आया हुआ, लौटा हुआ, -अस्मीभूतस्य देहेत्य पुनरागमन कुत—सर्व०, आचामम्,—आश्वेत्म् अभिमतिं शक्तिं का पुन स्थापन, आगतः 1 वापसी 2 बार २ अभ्य होना, आश्विन् (वि०) फिर से सत्सारा में जन्म लेने वाला, आश्विन् (स्त्री०), आश्विन् (स्त्री०) 1 दोहराना 2 फिर से सत्सारा में जाना, बार बार जन्म लेना याज्ञ० ३।१९४ 3 दोहराना, (पुस्तक आदि का) दूसरा संस्करण, उक्त (वि०) 1 फिर कहा हुआ, दोहराया गया, दुबारा कहा गया 2 फालतु, अनावश्यक—सशप्त वाचा पुनश्चतस्रव २५० २।३८, यि० १।६४, (अन्त्य) पुनश्चतस्र 1 दोहराना 2 बाहुत्व, आश्विष्य, निरपेक्षता, द्विशक्ति या पुनश्चित्त—उत्तर० ५।१५, मर्तु० ३।७८, 'अभ्यन्' (पु०) द्विजन्मा, ब्राह्मण, पुनश्चतस्रवासास प्रतीयमान पुनश्चित्त, पुनश्चित्त का आभास होना, एक अलंकार—उदा० नृगजकुडलीभ्यक्तशशिभ्राशु—शित्तुं, जयत्यपि सदा पाशाभ्याम्भेत्तोहर शिव। सा० २० ५२२, (यहाँ पुनश्चित्त की प्रतीति तुरन्त दूर हो जाती है जब कि सदर्भ का सही अर्थ समझ लिया जाता है, पु० काव्य० ९ में 'पुनश्चतस्रवासास' के नीचे),—अश्लिषः (स्त्री०) 1 दोहराना 2 बाहुत्व, निरपेक्षता, द्विशक्ति, अचामम् फिर उठना, पुनर्विन्त करना,—अश्विन्तः (स्त्री०) 1 पुनरुत्पादन 2 फिर जन्म होना, दोहरानागमन, अश्वयः वापसी—स्वायोप्यावा. पुनरुत्पन्नो वरकाया बने व—उत्तर० २५।३,—अश्वेत्ता, उवा दुबारा ब्याही हुई स्त्री,

—वधवन् वापसी, फिर जाना,—कल्पन् (नपुं) बार २ जन्म होना, देहांतरागमन,—जात (वि०) फिर उत्पन्न हुआ,—वधः—वधः 'बार २ उगना, मासून्,—बारोपमा पुनर्निवाह करना (पुष्य का), दूसरी पत्नी लेना, प्रत्युपकार, किसी के उपकार का बदला चुकाना, बार २ जन्म होना, देहांतरागमन—ममापि च क्षययन्तु बोललोगहित पुनर्भवे परिगतधितरात्मन् म० अ३५, कु० ३५ २ नासून्,—आशः नया जन्म, पुनर्जन्म, भूः १ विषया जिसका पुनर्निवाह हो गया हो २ पुनर्जन्म, यात्रा १ फिर जाना २ बार २ प्रवृत्ति करना (जल्ल निकलना),—वधवन् फिर कहना, वधुः (प्राय द्वि० व०) १ सातवां नवम (दो या तीन तारों का पुत्र) या सातविव दिव पुनर्बन्—रघु० ११३६ २ विष्णु और ३ शिव का विशेषण,—विवाह फिर विवाह होना,—संस्कारः (पुन संस्कार) किसी संस्कार या धार्मिकारक रूप का दोहराना, सप्तकः, सप्तानम् (पुन सप्तानम्) फिर से मिलना,—संभवः (पुन—संभव) (संसार में) फिर जन्म लेना, देहांतरागमन ।

पुष्पकः [=पुष्प, पृ०] सत्य लवम् उदरवायु, अक्षरा ।

पुष्पकः [पुष्प+क] १ फेरहा २ कमल का बीज कोष ।
पुर (स्त्री०) (कर्म०, ए० व०—नू, करण०, द्वि० व० पुण्याम्) [पु+स्विच्] १ नगर, शहर जिसके चारों ओर सुरक्षादीवार हो पूर्याभ्यक्तमनुभवसादा—रघु० १६२३ २ दुर्ग, किला, गढ़ ३ दीवार दुर्गमापीर ४ शरीर ५ बुद्धि। सम०—इर् (स्त्री०),—इरम् नगर का फाटक ।

पुरम् [पु+क] १ नगर, शहर (बड़े विद्याल भवनों से युक्त, चारों ओर परिष्ठा से घिरा हुआ, तथा विस्तार में जो एक कोस से कम न हो)—पुर तावत-मेवास्य तनोति रविरातयम् कु० २३, रघु० १५९ २ किला, दुर्ग, गढ़ ३ घर, निवास, आवास ४ शरीर ५ अन्त पुर, रनिवास ६ पाटलिपुत्र ७ पुष्यकोश, पत्तो की बनी फुलकटोरी ८ चमड़ा १० मृगुक ।
सम०—अट्टः नगरभित पर बना कपूरा या मीनार,—अधिपः—अध्यक्षः नगरपाल,—अरासिः,—अरिः,—असुहृद (पुं०),—रिपुः शिव के विशेषण—पुरा-रातिभ्राण्या कुमुपसार कि ना प्रहरति सुना०, रे० निपुर्,—अलक्षः नगर में मनाया जाने वाला उत्सव,—अज्ञानम् नगरोद्यान, जवन,—भीष्म् (पुं०) नगर में रहने वाला,—ओट्टम् नगररत्न कुर्- न (वि०) १ नगर को जाने वाला २ अनुकूल,—स्मिन् द्विप,—निष् (पुं०) शिव के विशेषण,—अतीतिष् (पुं०) १ अग्नि का विशेषण २ अग्निलोक,—तदी सोटी

पेंड, छोटा शिव जहाँ पेंड लगती हो,—तोरणम् नगर का बाहरी फाटक, इरम् नगर का फाटक,—विधेः नगर की नीव डालना,—वासः नगरवासक, दुर्ग का सेनापति,—वधनः शिव का विशेषण,—वासः नगर की गली, कु० ५११, रघु० ११३,—रख,—रक्षक, रक्षिन् (पुं०) कास्ट्रल, सिपाही, पुलिस-अधिकारी,—रौष दुर्ग का बेरा,—वासिन् (पुं०) नागरिक, नगर का रहने वाला,—शासनः १ विष्णु का विशेषण २ शिव की उपाधि ।

पुरटम् [पुर+अटन्] शोला, स्वर्ण ।

पुरम् [पु+स्व, उत्पन्न, रपर] समुद्र, महासागर ।

पुरत (अव्य०) [पुर+त्] सामने, आगे (विप० पश्चान्), पर्यायि तावित इत पुरतश्च पश्चात्—मा० १५०, की उपस्थिति में—य य पर्यायि तस्य तस्य पुरतो ना बुद्धि दीमन् वः—भर्तु० २५१ २ बाद में—इय च तेज्या पुरतो विद्वन्ना—कु० ५१०, अमर ५३ ।

पुरतः [पुर दारयति—इति द+धिच्+सच्, म्] १ इन्द्र—रघु० २१७ २ शिव का विशेषण ३ अग्नि की उपाधि ४ चोर, सेंध लगाने वाला,—रा गया का विशेषण ।

पुरात्रि०—घ्नी (स्त्री०) [पुर गेहस्थवन धारयति पु+सच् +घ्नी, पृ०] वा हस्तः—तारा०] १ प्रौढ विवाह-हिता स्त्री, मातृका, विवाहिता स्त्री—पुरघ्नीणा चित कुमुमकुमार हि भवति—उत्तर० ६१२, मद्रा० २५, कु० ५१२, ज२ २ वह स्त्री जिसका पति व बन्धे जीवित हो ।

पुरता [पुर+ता+क+टाच्] दुर्गा का विशेषण ।

पुरत् (अव्य०) [पुर्+अधि, पुर आदेश] १ सामने, आगे, उपस्थिति में, आँसों के सामने (स्वतन् रूप से या सब के साथ) अमु पुर पर्यायि देव दासम्—रघु० २३६, तस्य स्थिता कथमपि पुर—मेघ० ३, कु० ५१३, अमर ५३, प्राय क, म् या और भू सातुओं के साथ प्रयोग (दे० धातु०) २ पूर्व में, पूर्व से ३ पूर्व की ओर । सम०—करणम्,—आरः १ सामने वा आगे रक्षना २ अधिमान ३ सम्मान बतवि, बादर-प्रदघ्न, अनुरोध ४ पूजा ५ सहचरिता, हाजरी देना ६ तैवारी ७ म्यनस्थापन ८ पूर्ण करना ९ आक्रमण करना १० दोषारोपण करना,—कूल (वि०) १ सामने रक्षता हुआ—रघु० २१८० २ सम्मानित, बादर से बचाव किया गया, पूज्य ३ छाटा गया, माना गया, अनुभवन किया—पुरस्कृतमध्यमकम्—रघु० ८१५ ४ आराधित, पूजित ५ सेवा में प्रस्तुत, ललन, सवृक्त ६ तैवारी, तत्पर ७ अधिमनित ८ दोषारोपित, कलकित ९ पूरा

किया हुआ 10 प्रत्यागत,—**क्रिया** 1 आदर प्रदमित करना, सम्मानित करना, 2 आरम्भिक या दीक्षासंबन्धी कृत्य,—**ग**—**गण** (पुरोग, -गम) (वि०) 1 मुख्य, अग्रणी, सर्व प्रथम, प्रमुख, प्राय सत्ता के बल सहित—**स** किंबदन्ती बताना पुरोग रघु० १४३, ६१५५, कु० ७१४० 2 समाप्त में प्रयुक्त) अधिष्ठित—**इन्द्र**—पुरोगमा देवा 'इन्द्र के नेतृत्व में देवता',—**गति** (स्त्री०) 1 पूर्ववर्तिता, (ति) कुला, -**गण**—**माभिम्** (वि०) 1 पहले या आगे जाने वाला 2, मुख्य, नेतृत्व करने वाला, नेता (पु०) कुला, -**घरषम्** 1, आरम्भिक या दीक्षा विषयक कृत्य 2 तैयारी, दीक्षा 3 किसी देवता के नाम का अथ तथा हवन में आहुति,—**छन्द**—**पुनूक**—**अन्नम्** (प्राञ्जल्यम्) (वि०) पहले पेंदा हुआ,—**डास** (पु०)—**डास** (पुरोडास,—**डास**) चाबलो को पीस कर बनाई गई तथा कपाल में रख कर प्रस्तुत की गई यज्ञ की आहुति—**मनु०** ७२१, —**धत्** (पुरोषत्) (पु०) कुलपुरोहित, विशेषकर किसी राजा का, **धाम्त्** (पुरोधानम्) 1 सामने रखना, पुरोहित द्वारा कराया गया उपकार,—**धिका** (पुरोधिका) (और धक अन्य स्त्रियों की अपेक्षा) मनबहेती यानी, धाक (वि०) पूरा होने के निकट, पूरा होने वाला—**कु०** ६१९०,—**प्रहृत्** (पु०) पहली पक्षि में आकर लड़ने वाला सैनिक रघु० ११७२,—**फल** (वि०) त्रिमका फल निकट ही हो, (निकट भविष्य में) फल देने वाला रघु० २१२२,—**भाग** (पुरोभाग) (वि०) 1 बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी 2 छिद्रान्वेषण करने वाला 3 स्पृहाशील, ईर्ष्यालु प्राय समानविद्या परस्परयश पुरोभागा मालवि० ११२० (यहाँ 'पुरोभाग' शब्द का अर्थ 'रूप' भी है) (ग) 1 आगे का भाग, अगला भाग, गाड़ी 2 बलात् प्रवेश, अनधिकार प्रवेश 3 शत्रु, स्वर्ण,—**भाभिम्** (वि०) आगे रहने वाला, स्नेहछा-वाना, नटघट—**श०** ५ 2 बलात् प्रवेशी, अनधिकार प्रवेशी **विष्णु** ० ३३, छिद्रान्वेषी, भाक्ता, **बास**: (पुरोभास्त, बास) आगे की हवा, सामने चलने वाली हवा मालवि० ४३, रघु० १८३८, सर (वि०) अप्रेसर, (र) आगे चलने वाला, अग्रदूत **श०** ५१२ 2 अनुचर, टहलका, सेवक—**परिषे** पुर नरी रघु० १३७ 3 नेता, जो नेतृत्व करे, सर्वप्रथम, प्रमुख कु० ६४९९ 4 (समाप्त के अन्त में) अनुचरो सहित, परिचरो सहित, के साथ—**मान**—**पुर** सम्, प्रमाणपुर सरम्, बृहपुर सरा—**आदि**—**स्वाधिम्** (वि०) सामने खड़े रहने वाला,—**हित** (वि०) 1 सामने रखना हुआ 2 नियुक्त, दूत, आयुक्त (—**त्**) 1 कार्यभार संभालने वाला, अधिकारी,

दूत 2 कुलपुरोहित, जो कुल में होने वाले सभी कर्म-कार्य या सकारो का संचालन करता है ।

पुरस्तात् (अव्य०) [पूर्व + अस्तात्, पुर जायेस] 1 अगले, सामन (शब्द सव० या अगो के साथ) —**रघु०** २४४, कु० ७३३०, मेघ० १५, या स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त—**अभ्युत्पत्ता** पुरस्तात्—**श०** ३१८ 2 तिर पर, सर्व प्रथम—**मालवि०** ११३ 3 पहले स्थान पर, आरम्भ में 4 पहले, पूर्व 5 पूर्व की ओर, पूर्व में, या पूर्व की तरफ 6 बाद में, आगे, अन्त में ।

पुरा (अव्य०) [पुर + का] 1 पूर्व काल में, पहले, प्राचीन काल में—**पुरा** शकुन्पुत्राय—**रघु०** १७५, **पुरा** सरति मानसे यत्स यात बच—**भाभि०** १३, **मनु०** ११११, ५१२२ 2 पहले अव तक, इस समय तक 3 पहले पहले, सबसे पहले 4 बोधे समय में, बीघ्न, अधिरात् बोधी देर में (इस अर्थ में प्राय वर्तमान काल के साथ, जहाँ कि भविष्यत् काल का अर्थ प्रकट हो) —**पुरा** सप्तद्वीपा जयति बभुषामप्रति-रघु—**श०** ७३३, **पुरा** वृषयति स्वलोम्—**रघु०** १२३०, आलोके ते निपतति पुरा वा बलिब्राह्मणो वा—**मेघ** ८५, **नै०** ११८, **शिशु०** १५१६, **कि०** १०५०, ११३६ 1 सम० उपचरित (वि०) जिस पर पहले अधिकार किया हुआ था, जो पहले जाधि-पत्य में था,—**कथा** पुराना उपाख्यान,—**कल्प** 1 पूर्व सृष्टि 2 अतीत की कहानी 3 पहला युग—**शतमेत**—**पुरा** कल्पे दृष्ट वैरकर हृष्ट—**मनु०** २१२७,—**कृत** (वि०) पहले किया हुआ,—**धीनि** (वि०) प्राचीन मूल (उत्पत्ति)—**बभु**: भीष्म का विशेषण,—**बिद्** (वि०) अतीत से परिचित, पूर्व काल की घटनाओं का ज्ञाता, पहले जमाने या पूर्व घटित बातों का जानकार **बदन्यपर्वेति** च ता पुराविद—**कु०** ५१२८, ६१९, रघु० १११०,—**वृष** (वि०) प्राचीन काल में होने वाला या उसके सत्त्व 2 पुराना, प्राचीन **कथा** पुराना उपाख्यान (—**सम्**) 1 इतिहास 2 पुरानी या काल्पनिक—**कटाना**—**पुरा** यन्त्रोद्धारपरिच च कथिता कार्य पदको—**मा०** २१३३ ।

पुरा [पुर + टाप्] 1 तथा का विशेषण 2 एक प्रकार का सद्यश्च 3 पूर्व दिशा 4 किला ।

पुराण (स्त्री०—**वा**, **पौ**) [पुरा नवम्—**निद०**] 1 पुराना, प्राचीन, पूर्वकाल संबंधी—**पुराणमित्येव** न साधु सर्वं न चापि काम्य नवमित्येवम्—**मालवि०** ११२, **पुराणपत्रापनमादनतरम्**—**रघु०** ३१७ 2 बयोद्ध, पुरातन—**अजो** नित्यं वास्तवोऽथ पुराण—**अथ०** २१२० 3 शील, विज्ञातिसाया,—**अथ** 1 अतीत घटना, या कृतान्त 2 अतीत की कहानी, उपाख्यान, प्राचीन वा पौराणिक इतिहास 3 कुछ विष्णुत

धार्मिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं तथा व्यास द्वारा प्रणीत मानी जाती हैं, यह पुस्तकें ही हिन्दु-पुराण कथा शास्त्र का भंडार हैं, पुराणों में पंच विषयों का वर्णन है और इसी लिए 'पुराण' को 'पञ्चमण्डल' भी कहते हैं—सर्वप्रथम प्रतिसमयत्रयी भ्रमन्तराष्ट्रि च, यथानुवर्गित चैव प्रतिसमयत्रयी च । पुराण के अठारह नामों के लिए दे० अष्टादशन् के नीचे,—कः ८० कौटिल्यो के बराबर मूल्य का एक सिक्का । सम०—अन्तः यम का विशेषण,—उत्तम (वि०) पुराणों में निर्दिष्ट या विहित,—गः १ श्राद्धम् का विशेषण २ पुराण पाठक, पुराण की कथा करने वाला,—पुष्प विष्णु का विशेषण ।

पुरातन (वि०) (स्त्री०—नी) [पुरा+तन्, मुट्] १ पुरातन, प्राचीन, शि० १२१६०, यम० ८१३ २ नवोद्भूत, प्राक्कालीन,—रघु० ११८५, कु० ६१९ ३ विमाथिसाया, क्षीण,—अः विष्णु का विशेषण ।

पुरि (स्त्री०) [पुर+इ] १ नगर, बहर २ नदी ।

पुरिस्य (वि०) [पुरि+स्य+अच्] शरीर में विश्राम करने वाला ।

पुरी [पुरि+डीच्] १ नहर, नगर—शालवंकपुरीशंभु—रघु० ११३० २ गड ३ शरीर । सम० मोह धनुर् को पोषा ।

पुरीतम् (पु०, नपु०) [पुरी देह नतीति—तन्+विष्प] १ हृदय के पास की एक विशेष अस्ती २ अतिथि—(‘पुरितम्’ भी, परन्तु यह रूप असुद्ध प्रतीत होता है) ।

पुरीषम् [प+ईषन्, क्त्विञ्] मल, विच्छा, घृष (गोंबर), मनु० ३१२५० ५१२३, ६१७९, ४१५६ २ कुशा-करकट, गदपी । सम०—उत्तमः मलत्याग,—निग्रह-धम् कोष्ठवद्गत ।

पुरीषव [पुरी+इष+एट्] मल, विच्छा,—धम् मलान्तर्य कराना, मलत्याग कराना ।

पुरीषव [पुरीष विभोते—पुरीष+मा+क्] उग्रद, मल ।

पुत्र (वि०) (स्त्री०—इ,—बी) [पु वालोपधयो—कु] अति, प्रचुर, अधिक, बहुत से (लौकिकसाहित्य में 'पुत्र' शब्द प्रायः व्यक्तिवाचक सत्त्वों के आरम्भ में प्रयुक्त होता है),—ब १ 'कुलो का परम २ स्वर्ग, देवलोक ३ एक राजकुमार का नाम, चन्द्रवशी राजाओं में छठा राजा (यह समिच्छा और यथाति का सब से छोटा पुत्र था । जब यथाति न अपने पत्नी पुत्रों से पूछा कि क्या कोई जनमें से ऐसा है जो मेरे बुरापी और दुर्नृत्ता के बदले मुझे अपना यौवन व सौंदर्य दे दे, तो वह केवल पुत्र ही था जिसमें पितृमय स्वीकार किया, एक हजार वर्ष के पश्चात् यथाति ने पुत्र का यौवन और सौंदर्य उसे छोटा दिया तथा उसे

जपने राज्ञ का उभराधिकारी बताया । कौरव और पांडवों का पुत्र पुत्रप एव ही था) । सम०—विष्णु (पु०) १ विष्णु का विशेषण २ गदा कुन्तीशोत्र या उसके भाई का नाम,—धम् सोना, स्वर्ण,—वशकः हन,—सप्तद (वि०) बहुत विषयी, या कामापुर,—हु,—हु बहुत, बहुत में,—हृत (वि०) बहुलो से आवाहन किया गया (न) इन्द्र का विशेषण—रघु० ४१३, १६५, कु० ७४५, मनु० ११२२, इषि (पु०) उग्र भित्तु का विशेषण ।

पुत्रक [पुत्रि देहे गेते—छी+इ प्या० तारा०, पुट्+कुपन्] १ नर, मनुष्य, मर्द अर्थात् पुत्रयो नारी या नारी मार्येन पुमान्—मच्छ० ३१२७ मनु० ११२२, ७१०, ९१२, रघु० २४११ २ मनुष्य, मनुष्य जाति ३ किसी पीढ़ी का प्रतिनिधि या सदस्य ४ अधिकारी, कार्यकर्ता, अधिकर्ता, अनुचर, सेवक ५ मनुष्य को ऊँचाई या माप, दोनो हाथ फैला कर लम्बाई की माप)—इं पुरुषी प्रमाणमस्या, ता द्वि पुत्र्या-नी पत्र्या—मिद्वा० ६ आत्मा—द्विषयी पुरुषी लोके क्षत्रञ्चाक्षर एव च—मनु० १५११५ आदि० ७ परमात्मा, ईश्वर (विष्णु की आत्मा) शि० ११३३, रघु० १३१६ ८ पुत्र्य (प्या० में) प्रथम पुत्र्य, मायम् पुत्र्यु और उत्तम पुत्र्य (मिद्वा० में यही क्रम है) ९ शक्ति की पुत्र्या १० (साक्ष्य० में), आत्मा (विप्र० प्रकृति) मानवमानुसार यह न उत्पन्न होता है, न उत्पादक है, वह निर्लक्षण है, तथा प्रकृति का रक्षक है—पु० कु० २१३३, 'मात्स्य' शब्द की भी,—धम् मेघ पर्वत का विशेषण । सम०—अग्रम् पुत्र्य को जननेन्द्रिय, लिङ्ग, अन्तः नरप्रक्षक, मनुष्य का मान माने वाला, पितापुत्र, अधम अन्तर्ग नौव पुत्र्य, बहुत ही जघन्य और पूर्णतः अति, अधिकारी १ पुत्र्य का पद या कर्तव्य २ मनुष्य का मृत्याकन या प्राक्कलन—कि० ३१५१,—अन्तरम् दुर्गा मनुष्य,—अर्ध १ मानव-जीवन के चार मूल्य पदार्थों (अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) में से एक २ मानवप्रयत्न या श्रेष्ठता, पुण्यकार, हि० प्र० ३५, अस्मिन्वास्ति (पु०) शिव का विशेषण, आद्य विष्णु का विशेषण, आद्यधम्, आद्यम्, मानव-जीवन की अवधि अक्षयमति काम जीव्याञ्जन पुत्र्यापुत्रम्—रघु० ६१६६, पुत्र्यापुत्र्यौकियो निरातका निरीतय—रघु० ११६२, आस्ति (पु०) नरप्रथी, शासन, पितापुत्र,—इन्द्र राजा—उत्तमः १ श्रेष्ठ पुत्र्य २ परमात्मा, विष्णु या कृष्ण का विशेषण—अस्यात् क्षत्रभनीशोऽय मत्तगदपि चोत्तम, अतोऽस्मि लोके वेदे न प्रथित-पुत्र्यापुत्रम्—अग० १५१८,—काटः १ मानवप्रयत्न, मनुष्यचेष्टा, मर्दाना काम, मर्दानी,

पराक्रम (वि० देव) — एष पुत्रकारेण विना देव न सिध्यति हि० प्र० १२, देवे पुत्रकारे ष कर्मसिद्धिर्भवतिस्मिता—याज्ञ० १।३४९, तु० 'भगवान् उनकी महायता करता है जो अपनी महायता आप करते हैं' पंच० ५।३०, कि० ५।५२ २ वीर्य, वीर्य,

—कुम्भः,—यम् मानवताव—केसरिम् (पु०) 'नर-सिद्धिं विष्णु का बीजा जवतार—पुरुषकेसरिवचन पुरा नरै—श० ७।३, आत्मं मानवजाति का ज्ञान

—व्यस्य,—इत्यस्य (वि०) मनुष्य की ऊँचाई के बराबर लंबा द्विम् (पु०) विष्णु का सन्, —नाम्नः १ चम्पनि, मेनापति २ राजा, यक्ष नरपशु, कुर-व्यक्ति—तु० नरपशु,—पुष्यः, पुंश्रीकः श्रेष्ठपुत्र, प्रमुख व्यक्ति,—बहुधातः मनुष्यजाति की प्रतिष्ठा

—मनु० ३।९, —वेषः नरवेष, पुत्रवज्र,—भरः विष्णु का विशेषण,—बाहूः १ वरुह का विशेषण २ २ कुबेर की उपाधि,—व्याघ्रः, शार्ङ्गकः,—विष्णुः १ 'मनुष्यो मे वीर' पूत्र्य या प्रमुख व्यक्ति २ चूर-वीर, बहादुर आदयो,—सम्पन्नः मनुष्यो का समूह,

—मृतम्—मृत्यु के दस्तवे मण्डल का १०वाँ सूक्त (यह बहुत ही पावन माना जाता है) ।

पुरुषक, —कम् [पुत्र्य + कन्] मनुष्य की भाँति दो पैरों पर सड़ा होने वाला, घोड़े का पालना—वीर्यकी पुरुषकोप्रतिपादकायम्—वि० ५।५९ ।

पुद्बला, —व्यम् [पुत्र्य + तल् + टाप्, ल्य बा] १ पुरुषत्व, मर्दानगी, पराक्रम २ वीर्य ।

पुद्बलिय (वि०) [पुद्बल + बल + क्त] मनुष्य की भाँति आचरण करने वाला, —तस्य १ मनुष्य का अभिनय करना, मनुष्यवाच का अभिनय, सवालन २ एक प्रकार का स्वीमेयन जिसमें स्त्री पुरुषवत् आचरण करती है—साङ्गितिकलोचन कर्णाट विद्वत्कृत पुद्बलिय अभिनयपालेचनेन वैदिकवादिभिरभितमूपनीतम्—काव्य १० ।

पुद्बल्य (पु०) [पुत्र्य + बलात्प्राप्त रीति—पुद्ब + ल् + अङि नि० भाव] बुध और इन्द्र का पुत्र, चन्द्र-वर्षी गणकुल का प्रबन्धक, (विश्व और वरुण के शाप के कारण इस पुत्री पर उतरनी हुई उर्वशी की पुस्तका में देखा और उस पर आसक्त हो गया। उर्वशी भी उन राजा की देख कर उस के लोकविभूत सौन्दर्य तथा सखाई, भक्ति, उदारता आदि गुणों के कारण उस पर मूक हो गई, फलतः उसकी पत्नी बन गई। बहुत दिनों तक वह मूक पूर्वक रहे, एक पुत्र को जन्म देने के पश्चात् उर्वशी फिर स्वर्ग चली गई। राजा ने उसके विधेय के लोक में सड़ा बिलस्य किया। उर्वशी प्रसन्न हो दोबारा उसके पास आकर फिर रहने लगी और एक पुत्र को जन्म देकर फिर स्वर्ग

चली गई। इस प्रकार उर्वशी ने कथस पाच पुत्रों को जन्म दिया। परन्तु पुस्तका उसे अपनी जीवन-मगिनी बनाता चाहता था अतः उसने यशवी के निर्देशानुसार यज्ञ का अनुष्ठान किया जिसके फल-स्वरूप उसका मनोरथ पूरा हुआ। विक्रमोर्वशीय में दो गई कहानी कई जगहों में भिन्न प्रकार से बताई गई है इसी प्रकार ऋग्वेद के आधार पर हस्तपत्र शाङ्गण में दिया गया बृहान्त भी भिन्न प्रकार का है, जहाँ कि यह बतलाया गया है कि उर्वशी ने दो शतों पर पुस्तका के साथ रहना स्वीकार किया। पहली शत यह कि उसके दो में से जिनकी वह पुत्रवत् प्यार करती है, उसके पलन के पास ही बसे तथा उनसे कभी दूर नहीं ले जाय जायें, और दूसरे यह कि वह उर्वशी की कभी भी तथा दिखाई न दे। उसके पश्चात् एक बार मन्वन्तों को उठा कर ले गये, अतः उर्वशी भी अन्तर्धान हो गई।

पुरोहि [पुरस् + अट् + इत्] १ नदी का प्रवाह २ पत्नी की मरसराहट या मर्मरस्वनि, पत्र शब्द ।

पुरोडास, पुरोडास् आदि—दे० 'पुरस्' के अन्तर्गत ।

पुं० (स्वा० पर०—पुं०ति) १ मरना २ बसना, रहना ३ निमित्त करना (अन्तिम दो अर्थों में चूरा० पर० भावी जाती है) ।

पुन (वि०) [पुन + क] महान् विद्याल, व्यापक विस्तृत, —ल' रोमाञ्च होता ।

पुनकः [पुन + कन्] १ शरीर के बालों का सीधा लंबा होता, (अथ या हर्ष से) जिह्वान्त, रोमाञ्च—बाह्य बुद्ध नितबवती दक्षित पुनकैरनुकृते—गीत० १, मृगमद तिलक लिखति सपुनकं मृगमिद ७अनीकरे—७, अमर ५७,७७ २ एक प्रकार का पत्थर या रत्न ३ रत्न में दोष ४ एक प्रकार का लज्जित पदार्थ ५ अप्रिय जिससे हाथी पलते हैं ६ हज्जाल ७ शराब पीने का शिलास ८ एक प्रकार की मरसी, राई । सम०—अगः बस्य का जाल,—आलय कुबेर का विशेषण, उच्चमः शरीर के रोगटो का लला होता, रोमाञ्च होता ।

पुनक्ति (वि०) [पुनक + इत्च्] जिसके रोगटो लड़े हो गये हैं, रोमाञ्चित, मृगमद, आनन्दित, हृष्टोत्फुल्ल ।

पुनक्तिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [पुनक + इत्] रोमाञ्चित, जिसके शरीर के रोगटो लड़े हो गये हैं,—पु० कलम्ब बुध का एक प्रकार ।

पुनक्तिः, पुनक्तिः [पुन + क्विप् = पुन + क्व + ति, पुन-स्ति + यत्] एक ऋषि का नाम, बह्ना का एक मानस पुत्र—मनु० १।३५ ।

पुन [पुन + टाप्] मृदु ताल, गले का कौम्बा, तालु बिह्ला ।

पुलाकः—कम् [पुल्+कान् नि०] 1 बोधा या मुखाया हुजा-अक्ष, कदम्ब 2 मात कः पित्र 3 सधोप, सवह 4. उल्लिखता, सहृदि 5 बापलों का मात 6 क्षिप्रता, हुताता, त्वरा ।

पुलाकिन् (पुं०) [पुलाक+इति] वृक्ष ।

पुलाकिलम् [=पलायित, पृथो०] बोधे की सरपट बाल ।

पुष्पिकः—नम् [पुष्+इत्य् क्त्विप्] 1 देवीला किनारा, रेलीला समुद्रतट—रजते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारि-रघुना—गीत० ७, रघु० १४५२, कभी-कभी ४० ब० में प्रयुक्त—कालिका पुष्पिनेषु केलिकुपितामस्वम् रामे रसम्—वेणी० ११२ 2 नवी का प्रवाह हट जाने से तट पर बना छोटा टापु, लघुद्वीप 3 नदीतट ।

पुष्पिली [पुष्पिन्+मत्सु, बल्वम्, ङीप्] नदी ।

पुष्पिकः [पुष्+किट्, क्त्विप्] 1 (शाय ४० ४० में) एक असम्ब जाति का नाम 2 इस जाति का एक मन्थ्य, बन्ध, अक्षिप्त, जगली, पहाड़ी—रघु० १६१, १९, ३२ ।

पुष्पिरिषी (पुं०) साप ।

पुष्पोष्प (पुं०) एक राक्षस का नाम, दृष्ट का श्वसुर । मय०—अरि,—जित्,—भिष्,—द्विष् (पुं०) दृष्ट के विशेषण, —आ, —पुषी शक्ती, पुषीला की पुषी तथा दृष्ट की पत्नी ।

पुष् (स्वा०, रिवा० कृपा०—पर०—पोषिणि पुष्पति, पुष्पाति), 1 पोषण करना, (छात्री से लवाकर) दूध पिनाता, पालना, पोषना, पालित करना—तेनाय बलसिब शोकमम् पुषाय—भर्त० २१४६, भग० १५। १३, भद्रि० ३१३, १७३२ 2 सहारा देना, भरण पोषण करना, परवरित करना 3 बढ़ने देना, बिलना, विकसित होना, राहत मिलना—पुषोष लाबन्धमया विनेवान्—कु० ११२५, रघु० ३१३२, न तित्रोषोयते स्वाधो तैरसौ पुष्यते परम्—सा० ३० ३ 4 बढ़ना वृद्धि करना, आगे बढ़ाना, धरन (मुत्पादि)—पना-आनापि पुतानामुत्सर्ष पुषुपुष्पा—रघु० ४११, १५५ 5 प्रारंभ करना, अधिकार में करना, रचना उपभोग करना भर्त० ३१३४ 6 बतलाना, दिखलाना, धारण करना, प्रदर्शन करना—अपुरिभिनवमया पुष्पति स्वा न राजा—म० १११९, कु० ७।१८, ७८, रघु० ६।५८, ८।३२, न हीश्वरव्याहृतव कदाचिपुष्पाति-लोकै विपरीतमवम्—कु० ३।६३, मेघ० ८० 7 बढ़ना, पुष्ट होना, कलना-कलना, समृद्ध होना 8 प्रशंसा करना, स्तुति करना,—त्रे० ५ वा चुरा० उभ० पाष्यति—ने 1 पालन-पोषण करना, परवरित करना, भरणपोषण करना आदि 2 बढ़ाना, उन्नति करना ।

पुष्करम् [पुष्क पुष्टि रति-रा+क] 1 नीला कमल 2 हृषी

की जिह्वा की नोक—शि० ५।३० 3 शील का चमड़ा अर्थात् वह स्थान जहाँ उस पर चोट मारी जाती है—पुष्करेव्याहृतेषु—मेघ० ६६, रघु० १७।११ 4 तलवार का फल 5 तलवार का म्यान 6 बाप 7 बापु, आकाश, अन्तर्लिख 8 विमर्श 9 अल 10 मातृकता 11 नृत्यकला 12 यज्ञ, सद्यम 13 एकता 14 अजमेर के निकट एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान,—रः 1 सरोवर, नालाब 2 एक प्रकार का शूल, घोषा, ताछा 4 सूर्य 5 अनावृष्टि या दुर्मिष पैदा करने वाले बादलों का समूह—मेघ० ६, कु० २।५० 6 शिव का विशेषण,—रः,—रघु शिव के मात विद्याल प्रभावो म से एक । सम०—अक्ष. विष्णु का विशेषण,—आद्य,—आद्य,—आद्य—तीर्थ-स्थान करने का एक प्रसिद्ध स्थान ६० ङ० पुष्कर,—पत्रम् कमल का पत्ता, मिष, मोम,—बीजम् कमलवृद्धा, —व्याघ्र पट्टियाल,—शिखा कमल की तट,—स्वपति शिव का विशेषण,—सुम् (स्त्री०) कमलों की माला ।

पुष्करिणी [पुष्करिन्+ङीप्] 1 हृषीनी 2 कमलसरोवर 3 सरोवर, जलाशय 4 कमल का घोषा ।

पुष्करिन् (वि०) (स्त्री०)—पौ० [पुष्कर-इति] कमलों में भरी स्वर्ण, (पुं०) हृषी ।

पुष्कल (वि०) [पुष्+कलप्, क्त्विप्, पुष्कलित्वा० लृच् वा—तारा०] 1 बहुत, काफी, प्रचुर—प्रक्षितेनापि भवता नाहारी मम पुष्कल हिं० १।८४, मनु० ३।२७७ 2 पूरा, सम्पूर्ण भग० ११।२ 3 समृद्ध, उज्ज्वल, शानदार 4 श्रेष्ठ, श्रेष्ठोत्तम, प्रमुख 5 निकट-वर्ती 6 विपरीतमय, सूँघने वाला, प्रतिध्वनि करने वाला, स. 1 एक प्रकार का शील २ भेद पर्वन का विशेषण,—सम् 1 ६४ मुष्टिष्ठा के बराबर एक विशेष ताल या माप 2 चार शाल की मिसा ।

पुष्कलकः [पुष्कल+कन्] 1 कन्नूरी-मृग सीमिन् पुष्क-नकी हज-मिदा० 2 कुड़ी, घटपत्ती, कपड़ी ।

पुष्ट (पुं० क० कृ०) [पुष्+क्त्विप्] 1 पाला-पीसा, खिलाया-पिनाया, परवरित किया गया, शिक्षित किया गया 2 कलता-फुलता हुआ, बढ़ता हुआ, बलवान, हृष्टपुष्ट 3 टहल किया गया, देखभाल किया हुआ 4 समृद्ध, पूर्ण तन्त्र मन्त्र 5 पुष्प, पूरा 6 पुरीष्पति वाला, ऊँची आवाज वाला 7 प्रमुख ।

पुष्टि (स्त्री०) [पुष्ट+क्त्विप्] 1 पालन-पोषण बला, पालना परवरित करना, 2 पालन पोषण, सम्बंध, वृद्धि, प्रवृत्ति यन्त्रियतामपि नृणा पिष्टोऽपि तयोपि परिमले पुष्टिम्—भामि० १।१२ 3 पराक्रम शालिना, न्यूलता अन्धम् वृष्टिर्निव पुष्टिरितारुण्य मुष्ठा० १।४९, 4 धन-सौलत, सम्पत्ति, सुख का साधन,—रघु० १८।१२ 5 समृद्धि, समृद्धता 6.

विकल्प, पूर्णता । सम०—कर (वि०) पीष्टिक, पुष्टि कारक,—कर्मन् (नपुं) सांसारिक सपत्नता प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला धार्मिक अनुष्ठान,—ब (वि०) सर्वसंनकारी, समष्टिकर,—बर्षन् (वि०) कल्याणकारी, समष्टि कारक (नः) मुर्गा ।

पुष्प (दिवा०) पर० पुष्पयति कुलना, पीकना या कृत्वा, विस्तार करना, खिलना पुष्पयुक्तराशितत्त्व पवस उत्तर० ३।१६ ।

पुष्पम् [पुष्प + अच्] । फूल, कुसुम 2 रज साव, रमोपमं यथा 'पुष्पवती' में 3 पुष्कराज 4 आषो का रोग विशेष, स्नेतक 5 कुबेर का रथ—दे० 'पुष्पक' 6 शीर्ष, (प्रेमकी माली में) नम्रता 7 विस्तार होना, खिलना, प्रकुल्ल होना (इस अर्थ में पू० भी) । सम० अञ्जलम् पीलक की भस्म जो अजल को माति प्रयुक्त होती है,—अजस्तिः फूलों की अजलि,—अभिवेकः—स्नान,—अञ्जलम् पुष्प रस या मकरन्द,—अध्वयः फूलों का चुनना, फूल एकत्र करना, अस्त्रः कामदेव का विशेषण,—आसार (वि०) फूलों से समृद्ध, मामो नु पुष्पाकर—विक्रम० १।९, अगम-वसन्त ऋतु, आञ्जिब माली, मान्यकार, मायीब-फूलों का गजरा,—आयुधः—इयुः कामदेव, आसकम् मनु,—आसार फूलों की बौछार—मनु० ४३,—उद्यम फूलों का निकलना,—उच्छलम् पुष्प बाटिका, उपवीर्यिन् (पुं०) माली, भाववान्, मालाकार, कालः 1 फूलों का समय, वसन्त ऋतु 2 मासिक

रजोधर्म का समय, काशीसम् एक प्रकार का कसीस,—कौट मीरा, केतव, का मधेव,—केतुः कामदेव (नपुं) 1 पुष्परस, मकरन्द 2 पुष्पात्रन,—मूहम् फूलों का घर, पुष्प सधारक,—घातक बीज,—अयः 1 फूल चुनना 2 फूलों का सङ्ग,—आयुः कामदेव,—आयुर एक प्रकार की बीज,—अयु फूलों का रस,—ब. वृष, —दत्त 1 निबर्क के एक गण का नाम 2 महिम्नलाभ के अतिथिना का नाम बायव्य कौश में अधिष्ठित दिग्गज,—दामन (नपुं) फूलमाला,—इब 1 फूलों का रस मकरन्द 2 फूलों का आसव,—इयु पुष्पप्रधान वल,—ध बायव्य बायव्य की मन्तान—तु० मनु० १।०२१,—अयुम्,—अयुम् (पुं०) कामदेव—सि० १।४१, कु० २।६४,—धारण विष्णु का विशेषण,—ध्वज कामदेव,—निश मीरा,—निर्वास,—निर्वासक पुष्परस, मकरन्द, फूलों का रस,—नेत्रम् फूलमाली, पत्रिन् (पुं०) कामदेव,—पव पौनि—पुरम् फाल्गुण—रपु० ६।२४,—प्रध्वय,—प्रध्वयः फूल तोड़ना, फूल चुनना,—प्रध्वयिका फूलों का चुनना,—प्रस्तारः पुष्पवाद्या, फूलों का बिछाना,—बलि फूलों की भेंट या चढावा,—बाण,—बाण कामदेव,—भ्रमः पुष्परस, मकरन्द,

—बंजरिका नीला कमल,—बासा फूलमाला,—बासः 1 चैत्र का महीना 2 वसन्त ऋतु,—रक्ष्य (नपुं) पराज,—रथः हवा सौरी के काम जानेवाला रथ (जो बृद्ध के लिए न हो,—रसः फूलों का रस, मकरन्द,—आयुष्कम् मनु—रायः,—राजः पुष्कराज,—देवुः पराज—बायु-विद्युन्वयति चम्पकपुष्परज्जु—कवि०, रपु० १।३८,—रोधकः नागकेसर का वृक्ष,—सायः फूल चुनने वाला, (वी) फूल चुनने वाली, मालिन—मेघ० २६,—निशः,—निहू (पुं) मीरा,—अयुः रसिया, बाका, छैल-छबीला,—बधे,—बर्षन्म् फूलों की बौछार,—रपु० १।२।०२,—बाटिका,—बाटी फूलबाटी,—युक्तः पुष्पप्रधान वृक्ष—रपु० १।२।१४,—बेची बाटी में लगाया हुआ फूलों का गजरा, फूलों की माला,—शकटी जाकासबाणी,—शम्पा, फूलों की सेव, फूलों का बिछाना,—शर,—शरस्वन,—सायकः कामदेव,—सयसः वसन्त,—सारः,—स्विकेः फूलों का रस, मकरन्द,—हाता रजस्वला स्त्री,—हीना गतात्वा स्त्री, जिसकी बच्चे पैदा करने को आयु बीत चुकी हो ।

पुष्पकम् [पुष्प + कन्] 1 फूल 2 पीलक की भस्म 3 लोहे का प्याला 4 कुबेर का रथ (जिसे कुबेर से रावण ने छोन लिया था, तथा जो फिर राम ने ले लिया था)—रपु० १।२।४०, १।६।४६ 5 कण 6 एक प्रकार का पुष्पात्रन 7 मालों का एक विशेष रोग ।

पुष्पधयः [पुष्प + धे + ल्य, मनु] मीरा । पुष्पलकः [पुष्प + लक् + अच्] स्थाणु, भूटा, फनी, कील । पुष्पकन् (वि०) [पुष्प + मनुपु, कल्म्] 1. प्रकुल्ल, फूलों से युक्त 2 फूलों से जडा हुआ (पुं—दि० ब०) सूर्य जीर चन्द्रमा,—सौ रजस्वला स्त्री—पुष्पवत्यपि पित्रा—का० २० ।

पुष्पा [पुष्प + अच् + टाप्] चम्पा नाम की नगरी । पुष्पिका [पुष्प + श्लुट् + टाप्, इत्वम्] 1 दातों पर जमी हुई मूल 2 लिगच्छद में जमी मूल 3 अर्ध्याय के अन्तिम शब्द जिनमें वक्षित विषय की सूचना दी जाती है—इति श्री महाभारते शतसाहस्र्या सहितयायान-पर्वणि .. अथकीर्ध्याय ।

पुष्पिणी [पुष्पिन् + ङीप्] रजस्वला स्त्री । पुष्पित (वि०) [पुष्प + क्त] 1 फूलों से युक्त, विकसित फूलों से भरा हुआ, खिला हुआ—चिराचरहेण विनी-क्य पुष्पिताधाम—गीत० ४, यदा 'पुष्पिताया' एक छद का जो नाम है 2 फूलों से अलंकृत, (माचण) भद्रकीला 3 फूलों से लदा हुआ, फूलों से सम्पन्न—यथा—सुवर्णपुष्पिता पुष्पी पच० १।४५, 4 पुष्प विकसित, पूरी तरह खिला हुआ, सा रजस्वला स्त्री । पुष्पिन् (वि०) [पुष्प + इति] 1 फूल धारण करने वाला, प्रकुल्ल 2 फूलों से भरा हुआ, फूलों से समृद्ध ।

पुष्पः [पुष् + श्वच्] 1 कलियुग 2 पीप का महीना 3. जाठवां नक्षत्र (तीन तारों का पुष्प), इसे 'तिष्प' नाम से भी पुकारा जाता है। सम०—रथः—पुष्प रथ ।

पुष्पकः [पुष् + लृक् + कच्] २ 'पुष्पक' ।
पुस्तक [पुस्त + कच्] 1 पलस्तर करना, लेप करना, रेखाचित्र बनाना 2 मिट्टी का शिल्पकार्य, मिट्टी के बिल्लीना बनाना 3 मिट्टी, काष्ठ या किसी धातु की बनी कोई वस्तु 4 पुस्तक, हाथ से लिखी पुस्तक । सम०—कर्मन् (कर्म) लोपना-मोलना, चित्रकारी करना ।

पुस्तक—कर्म, पुस्तो [पुस्त + कन्, ङीप् वा] पोषी, हाथ की लिखी पुस्तक ।

पू (म्वा० दिवा०,—जा०, म्वा० उभ०—पवते, पुनाति, पुनीते पूत, भ्रेर०—पावयति—इच्छा० पुष्यति, पिपयिषते) 1 पवित्र करना, छानना, शुद्ध करना (शा० और बाल०) अवधवाप्य पचम भट्टि० ६१६४, ३११८, —पुष्याधमदशनेन तावदात्मानं पुनीमहे—ग० १, मनु० १११०५, २१६२, याज्ञ० ११५८, रघु० ११५३ मग० १०३१ 2 निवारना 3 सूखी माफ करना, फटका 4 प्रायश्चित्त करना, परिमार्जन करना 5 महत्तानना, विवेक करना 6 मोचना, उपाय दूटना, आविष्कार करना ।

पूक [पू + कच्, क्ति०] 1 समुच्चय, वेर, सङ्घ, माषा—वि० ११६४ 2 सजान, निगम, मघ—याज्ञ० २१३०, मनु० ३११५ 3 सुधारी, पूरी—रघु० ४१५० ६१६३, १३१७ 4 प्रकृति, गुण, स्वभाव,—सम् सुधारी । सम०—पात्रम् । युक्तं का बर्तन, पीकदान 2 पान-दान, पीठम्, पीठम् युक्तं का बर्तन, —कर्मम् सुधारी—बैरम् अनेक लोभो से ध्वंशता ।

पूज (चुरा० उभ०—पूजयति—ते, पूजित) 1 आराधना करना, पूजा करना, अर्चना करना, सम्मान करना, आदर स्थापन करना—यदपुजन्मविभुं पायं मुञ्जितम-पूजितं सताम्—वि० १५१४, मनु० ६१३१, भट्टि० २१२६, याज्ञ० २११४ 2 उपहार देना, भेंट चढ़ाना,—मनु० ७१२०३, सम्—पूजना, अर्चना करना, सम्मान करना 2 उपहार देना, (दक्षिणार्थि से) सम्मानित करना ।

पूजक (वि०) (स्त्री०—जिका) [पूज् + कच्] सम्मान करने वाला, आराधक, पूजा करने वाला, आदर करने वाला—आदि ।

पूजनम् [पूज् + श्वच्] पूजना, सम्मान करना, आराधना करना—अथ० १७३१४ ।

पूजा [पूज् + कच् + टाप्] पूजा, सम्मान, आराधना, आदर, श्रद्धाञ्जलि—रघु० ११०९ । सम०—मह् (वि०) श्रद्धेय, आदरणीय, पूज्य, श्रद्धालय ।

पूजित (भू० क० कृ०) [पूज् + क्त] 1 सम्मानित, आदृत 2 आराधित, प्रनिष्ठित 3 स्वीकृत 4 संपन्न 5 अनुश्रुत, सिफारिश किया हुआ ।

पूजित (वि०) [पूज् + इलच्] श्रद्धेय, आदरणीय,—कः देव ।

पूज्य (वि०) [पूज् + श्वच्] आदर का अधिकारी, सम्मान के योग्य, आदरणीय, श्रद्धेय,—कः 1. स्वसुर । पूज् (नृग० उभ० पूजयति ते) एक जगह डेर लगाना, मचय करना, राशि लगाना ।

पूज् (अव्य०) फूक मारने की अनुकृति का सूचक शब्द ।

पूत (भू० क० कृ०) [पू + क्त] 1 शुद्ध किया हुआ, छाना हुआ, अमृत हुआ (बाल० भी)—दुष्टिपूत न्यसेत्याद वम्यपूत जल विषेत्, सपथमुश बदेहाच मन पूत ममाचरेत्—मनु० ६१४६ 2 पिछोड़ा हुआ, फटका हुआ 3 प्रायश्चित्त किया हुआ 4 मोचनावृत्त, आविष्कृत 5 सहने वाला, गुला-सडा, दुर्गंधमय, बदनूदार,—तः 1 सल 2 सफेद कुश पात, तम् मचाई । सम० आत्मन् (वि०) पवित्र मन वाला (पू०) विष्णु का विशेषण. ऋतापी इन्द्र की पत्नी शची, ऋतु इन्द्र का विशेषण भट्टि० ८१२९. नृषाम् सफेद कुश पात, इ पत्याश्च वृक्ष, बालम् तिल पाप,— पापम् नित्याय, पाप से रहित,— कलः कटल का वृक्ष ।

पूतना [पू + शिच् + मुच् + टाप्] एक राक्षसी जो कृष्ण को जब वह अर्वाच बालक था, मारने का प्रयत्न करती हुई, स्वयं उनके द्वारा मृत्यु की प्राप्ति हुई 2 राक्षसी मा पूतनात्वमुपमा शिवनातिरेधि मा० १५४५ । सम० अरि, सूदन, हत् (पू०) कृष्ण के विशेषण ।

पूति (वि०) [पूज् + क्तिन्] बदबूदार, सडा हुआ, दुर्गंध-युक्त, दुर्गंध देनेवाला अथ० १०१०, ति. (स्त्री०) 1 पवित्रीकरण 2 दुर्गंध सडाव 3 बदनू—नृपू 1 गदा पानी 2 पीप, मवाद। सम० बह कस्तूरी मूत्र,—काष्ठम् देव दाह वृक्ष,—काष्ठक सरल वृक्ष, —गघ (वि०) बदबूदार, दुर्गंधयुक्त, दुर्गंध देने वाला, सडा हुआ (घ) 1 सडाव, दुर्गंध, बदनू 2 गधक (धम) 1 जस्ता, रागा 2. गधक.—कधि (वि०) बदबूदार, दुर्गंध देनेवाला,—नासिक (वि०) दुर्गंधमय नाक वाला,—बस्तु (वि०) जिससे मूत्र से बदनू बारी हो,— बणम् दूषित फोडा (जिसमें से पीप निकले) ।

पूतिक (वि०) [पूति + क् + क] सडा हुआ, बदबूदार, सडावारा,—कम् लोह, मल, विहा ।

पूतिका [पूतिक + टाप्] एक प्रकार की जड़ी । सम०—सूक्ष्, दो कोष वाला शूल ।

पूष (वि०) [पू + क्त तस्य न] नष्ट किया गया ।

पूक [पू+किप्, पा+क] पूजा, दे 'अपूप' ।

पूकना, की, पूजाकिक, पूजाकी, पूजाका [पू+का+क+टाप्, कीप् या, पूया अलात—पू+अल्+अन्+कीप्+कन्+टाप्, ह्रस्व, पू+अल्+पन्, कीप् पू+अन्+टाप्] एक प्रकार का भीठा पूजा, माण्ड्युवा ।

पूक-अन् [पू+अन्] पीप, फाट या घाव से निकलने वाला मवाद, पीप आना, मवाद निकलना—मनु० ३:१८०, ४:२२०, १२:७२ । सम०—रक्त नाक का एक रोग विशेष (इसमें पीप से युक्त रक्त, या मवाद नाक से बहता है) (कम्प) १ कचणोह, मवाद २ नयनो से मवाद का बहना ।

पूकन्त् [पू+कन्ट्]=दे० 'पूप' ।

पूर । (दिवा० आ-पूर्यते, पूर्ण) १ भरना, पूर्ण करना २ प्रसन्न करना, समुत्पन्न करना ॥ (चूग० उभ०—पूरयति ते, पूरति—पू० का प्रेर० रूप) १ भरना—का न याति वल लोकं मुषे पिडेन पूरति भर्तु० २:११८, शि० १:६४ २ हवा से भर जाना, (सत्व आदि में) फूक मारना ३ बहना, घेरना भट्टि० ७:३० ४ पूरा करना, समुत्पन्न करना—पूर यतु कुमुदह वन उत्तर० ४, इमो प्रकार भाशा, प्रतीरथ आदि ५ तीर करना, (स्वनि आदि) सजल करना ६ गुंजायमान करना ७ बोझ लाटना, समुद्ध करना, आ- , १ भरना, पूर्ण करना, पूरा करना, ऊपर तक भरना (आल० भी) - रघु० १६:६५, अग० ११:३०, भट्टि० ६:११८ २ हवा से भरना, (सत्व आदि) बजाना—कर्मशास्त्र में प्रयुक्त ३ अन्नप्रतिपत्ति करना, पितरो का ऋतु० ३:१८, पति, भरना, पूरी तरह से भर लेना, प्र , १ भरना, उपहार से भरना, समुद्ध करना मू० १:५९, (यहाँ यह दोनों अर्थ देता है), सन् , पूरा करना, भरना ।

पूर [पूर+क] १ भरना, पूरा करना २ तलाश देना, प्रसन्न करना, तुल्य करना ३ उद्देशना, प्रति करना—अर्धलपूरा सुतप्रदीपा—कु० १:१० ४ नदी का बहना, समुद्र में पानी का बहना, बाढ़ रघु० ३:१७ ५ बाढ़ या नदी का रूप होना, बाढ़ आना अद्भु० बान्धु० धीमि० आदि ६ अलक्ष्ण, सरोवर, तालाब ७ बाव का साङ्ग होना या भरना ८ एक प्रकार की रोटी या पूरी,—एन् एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—उत्पीकः बाव वा बलाधिक्य ।

पूरक (वि०) [पूर+कृत्] १ भरने वाला, पूरा करने वाला २ समुत्पन्न करने वाला, तुल्य करने वाला, -कः १. गीष् का पीषा २. आङ् की सम्पत्ति पर पितरो को दिया जाने वाला पिंड ३ (अकथित में) गुणक ।

पूरक (वि०) (स्त्री०—की) [पूर+कृट्] १ भरना,

पूरा करना २ कम सूचक (अंकों के साथ प्रयुक्त) - जैसे द्वितीय, तृतीय आदि न पुरणी त समुत्पत्ति सख्या—कि० ३:५१ ३ समुत्पन्न करने वाला—कः १ पुल, बाव, सेतु २ समुद्र, - लम् १ मरना २ ऊपर तक भरना, पूरा करना रघु० १:७३ ३ फूलना, सूजना ४ पूरा करना, सम्पन्न करना ५ एक प्रकार की पूरी या रोटी ६ मृतक काय में प्रयुक्त रोटी ७ वृष्टि, बरसना ८ ऐलन, परोक्ष ९ (गणि० में) गुणा । सम०—प्रत्यय कम सूचक सख्या बनाने वाला प्रत्यय ।

पूरिका [पूर+कीप्+कन्+टाप्, ह्रस्व] पूरी, कपौरी।

पूरित (पू० क० कृ०) [पूर+क] १ भरा हुआ, पूरा

२. विछाया हुआ, आच्छादित ३ गुंथा किया हुआ ।

पूरक : [पूर+कृत्, वि० दीर्घ] =दे० 'पूरक'—भावि० १:७५ ।

पूर्य (पू० क० कृ०) [पूर+कृ, वि०] १ भरा हुआ,

आपूरित, पूरा किया हुआ, अद्भु० साकं आदि २

संपूर्ण, अलङ्, समग्र, सम्पूजा रघु० ३:३८ ३ पूरा

किया हुआ, सम्पन्न ४ समाप्त, पूरा ५ अतीत, बीता

हुआ ६ समुत्पन्न, तुल्य ७ भोज पूर्ण, गुंजायमान, ८

बलवान्, पवित्रशाली ९ स्वर्णी, स्वर्णीन । सम०

—अक. पूर्ण सख्या, —अभिलक्ष्य (वि०) समुत्पन्न, तुल्य,

—अलक्ष्य १ दोल २ दोल की आवाज ३ बर्तन ४

चक्रिकरप ५ दे० पूर्ण पात्र (कभी कभी पूर्णालोक) भी

पडा जाता है,—इन्कु पूरा चाँद,—उपमा ४ पर्याय

या समूची उपमा अर्थात् जिसमें उपमान 'उपमेय'

'साधारणधर्म' और 'उपमाप्रतिपादक शब्द' यह चारों

अपेक्षित बातें अभिव्यक्त की गईं हो (विप० न्युप०

पमा)—उदा० अमोहमिवातात्र मुषे करतल तव—

दे० काव्य० १०, 'उपमा' के अन्तर्गत भी, कृष्ण

(वि०) पूरे कोटान से युक्त,—काल (वि०) जिसकी

इच्छार्ण पूरी हो गई है, समुत्पन्न, तुल्य, -कृष्णः १ पूरा

कलश २ पानी से भरा बड़ा ३ युद्ध करने की विशेष

रोनि ४ (शंभार में) कलश के आकार का घँट

—तदत्र पक्षेष्टके पूर्णकुम्भ एव शोभते—मू० ३,

—शान्ध्व १ बल से भरी गाधर २ कलशादूर, गाधर

भर ३ २५६ मट्टी भर (अनाज का) तोल ४

(बलनामकार आदि) मूल्यवान् बस्तुओं से भरा हुआ

(सूक्त, टोकरा आदि) बर्तन जो बहुवाक्यों द्वारा

किसी उत्सवादि के अवसर पर उपहार के रूप में

बाँटा जाय, अतः इसका सामान्य अर्थ है वह उपहार

जो किसी सुख सहायार के लाने का व्यक्तित्व को

दिया जाता है—कदा मे तनयवामपहोत्सवाभ्यन्वि-

र्षरो हरिष्यति पूर्णपात्र परित्रज.—का० ६२, ७०,

७३, १६५, सतीजनेनापिह्रवामाभ्यर्णाम्—२१९,

लक्ष्मणं प्रथमवति पूर्वपात्रवृत्त्या स्वीकर्तुं मम हृदय
 च वीक्षित च - मा० ४११, (पूर्वपात्र की परिभाषा
 - पूर्वपात्रवृत्तकाले मयलकारोऽनुकालिकम्, आकृत्य
 गृह्यते पूर्वपात्र स्थाप्युपकं च तत् । या-वर्षाधिक
 नवानुशासककारादिक पुन, आकृत्य गृह्यते पूर्वपात्र
 पुराणिकं च तत् - हाराज्यो, - बी (बी) कः मीढ,
 - माली पूर्विया, पुनो ।

पूर्वकः [पूर्व + कन्] 1 एक प्रकार का वृक्ष 2 रसोद्भव
 3 नीलकण्ठ ।

पूर्विका, पूर्विकास्ती [वृ + निङ् - पूर्विका, मा + क + टाप्,
 पूर्विका + मास + क्रीप्] बहु दिन जब चन्द्रमा पूर्ण हो
 जाता है, पुनो - मं० २१७६ ।

पूर्व (वि०) [वृ + क्त वि०] 1 पूर्ण, पुरा 2 छिपाया
 हुआ, इका हुआ 3 पालन-वोधन किया गया, रखा
 किया गया, संक्ष 1 पुरित 2 पोषण, पालन 3 पुर-
 स्कार, पाश्चात् 4 पालन, उदारता का कृत्य - परिभाषा-
 बापोऽप्यतन्नागादिदेवतायतनानि च अन्नप्रदानमाराम
 पूर्वमित्यधीयते - मन्० ४१२२६, (विप० इष्ट)
 - अग्नि द्वारा इस्की परिभाषा - अग्निहोत्र तप सत्य
 वेदाना चैव पालनम्, अग्नियै वैश्वदेवश्च इष्टमित्य-
 धीधीयते - तु० इष्टापुरं ।

पूर्ति (स्त्री०) [वृ + क्तित्] 1 भरना 2 पूरा करना,
 पूर्णता, सम्पन्नता 3 तृप्ति, सतुष्टि ।

पूर्व (वि०) [पूर्व + अच्] (जब काल और दिशा की
 दृष्टि से सापेक्ष स्थिति प्रकट की जाती है तो इस
 शब्द के रूप सर्वनाम की भांति होते हैं, परन्तु यह भी
 कर्त्त० व० व०, तथा अपादान० व अधिकरण० एक,
 व० में विकल्प से) 1 सामने होने वाला, प्रथम,
 प्रमुख 2 पूर्वी, पूर्व दिशा में स्थित, के पूर्व में ग्रामा-
 त्पत्तये पूर्व 3 पहले क, से पहला 4 पुराना, प्राचीन
 - पूर्ववृत्ति - रघु० ११४ 5 पूर्वोक्त, विगत, पिछला,
 पहला, पूर्वपाली (विप० उत्तर), इस अर्थ में प्राय
 समास के अन्त में प्रयुक्त यथा 'श्रुतपूर्व' 6 उपर्युक्त,
 पूर्वोक्ता 7 (समास के अन्त में) पूर्ववर्ती, से युक्त,
 अनुसृतित सबंधमात्राप्यपूर्वमाह - रघु० २१५८,
 पुष्य शब्दो मुनिरिति मूढ केवल राजपूर्व - शं०
 २११४, तान् स्मितपूर्वमाह - कु० ७१५७ ५१३१,
 दशपूर्वेषु यमाभया दशकल्पारिषु विद्युन्मया - रघु०
 ८१२९ - इसी प्रकार 'भविष्य' - मन्० १११४७
 'दरपतन' 'जानमृगकर्त' - १२३२२, - अशोकपूर्वम् अन-
 जाने शं० ५१३, - कं० पूर्ववत्, पूर्व वरुणा, बाप बादा
 - पूर्व किलाय परिश्रितो न - रघु० १३३३, पय
 पूर्वं तनिषावर्षी कर्वाण्यम्भुज्यते ११६७, ५११४,
 - संक्ष् अगता भाग, - संक्ष् अगता (अन्व०) 1 से पहले
 (अप० के साथ) मासापूर्वम् 2 विगत काल में,

पहले, प्रारंभ में, पूर्वत, पहले ही तं पूर्वमभिधादयेत्
 - मनु० २१११७, ३१९४, ८१२०५, रघु० १२१
 ३५, पूर्वण - से पूर्व में (सब० या कर्म० के साथ)
 अथ पूर्वम् 'अब तक' 'इससे पहले' पूर्व - तत - परश्चात्
 - उपरि पहले तक, पहले बाद में, विगत काल में
 - पूर्वम् - अपना या अथ पहले आब । सम०
 - अथत्, - अग्निः उदयात्त (पूर्व दिशा का पहाड़
 जिसके पीछे से सूर्य और चन्द्रमा का उदय होता है),
 - अतः पूर्ववर्ती शब्द की समाप्ति, - अपर (वि०)

1 पूर्वी और पश्चिमी - पूर्ववर्ती तोयनिधी बनाइ
 - कु० १११ 2 पहला और अन्तिम 3 पहले का
 और बाद का, पूर्ववर्ती और परवर्ती 4 किसी वृत्त
 से युक्त, (रम्) 1 जो पहले और बाद में हो
 2 सबस 3 प्रमाण और प्रमेय - 'किरोशः अस्यति,
 असमद्वयता, - अविमुक्च (वि०) (वि०) पूर्व दिशा की
 ओर मुख किए हुए, या मुखे हुए, - अश्वकुचिः पूर्वी
 समुद्र, - अजित (वि०) पूर्वकर्मी द्वारा प्राप्त (सम्)
 पैतृक संपत्ति चं० - संक्ष् 1 पहला आधा भाग

- दिवस पूर्वार्धपर्यायिभ्यां छायेव भूमी जलसञ्ज-
 नानाम् - मन्० २१६०, समाप्त पूर्वार्धम् आदि
 2 (शरीर का) ऊपर का भाग - शं० ३, रघु० १९१
 ५, 3 श्लोकार्थ का प्रथम भाग, अक्षः मध्याह्न से
 पूर्व, दोपहर से पूर्व - मनु० ४१९६, ७१८७ (पूर्वार्धतन,
 पूर्वार्धतेन (वि०) मध्याह्न से पूर्वकाल सबधी),
 - आश्विनः रादी, मुद्गं, - आषाढा बीसवां नक्षत्र,
 (२) नक्षत्रों का पुत्र, - इतर (वि०) पश्चिमी,
 - उत्तर, उचित (वि०) पहले कहा हुआ, उपर्युक्त,
 - उत्तर (वि०) उत्तरपूर्वी (वि० व० - १) पूर्ववर्ती

पहले का और बाद का, - कर्मन् (मनु०) 1 पहला
 काम या कार्य 2 प्रथम कार्य, पहले किया जाने वाला
 कार्य 3 पूर्व जन्म में किया गया कार्य, - कर्मन् विगत
 काल, कायः 2 जानवरों के शरीर का अगला भाग
 परचायने प्रविष्ट शरपतनभवाद् भूयसा पूर्वकायम्
 शं० ११७ 2 मनुष्यों के शरीर का ऊपरी भाग
 - स्पृशन् करोणानतपूर्वकायम् - रघु० ५१३२, पूर्वक-
 र्भरिषत् पूर्वकायम् - कु० ३१५५, कालः विगत
 काल, प्राचीन समय, - कालिक, - कालीन (वि०)
 प्राचीन, - काष्ठा पूर्व, पूर्व दिशा, इत्यम् पूर्वजन्म में
 किया हुआ कार्य, - कोटिः (स्त्री०) बाकप्रतियोगिता
 की आरम्भिक उत्ति, विवाहविषय, पूर्वपत्र, - संभा
 नमदा मदी, - खोलित (वि०) उपर्युक्त, ऊपर बताया
 हुआ 2 पहले से कहा हुआ, या पूर्व प्रस्तुत (आशेष
 आदि) - अ (वि०) 1 जिसकी उत्पत्ति पहले हुई
 ही, पहले जन्मा हुआ 2 प्राचीन, पुराना 3. पूर्वी
 (कः) 1 बड़ा भाई शि० १६१४४, रघु० १५१३६

2 बड़ी पत्नी का लवका 3 पूर्वपुत्र, बापदादा, -अन्वम् (अनु०) पहला जन्म, (पु०) बड़ा भाई -रघु० १५।४४, १५।१५, -आ बड़ी बहन, कालिः (स्त्री०) पूर्वजन्म, -आन्वम् पूर्वजन्म का ज्ञान, दक्षिण (वि०) दक्षिणपूर्वी (- भा) दक्षिण पूर्व दिशा, विष्णुपतिः पूर्वदिशा का अधिपति इन्द्र, -विष्णु दिन का पूर्वभाग, दोपहर से पूर्व का समय, -विष्णु (स्त्री०) पूर्व दिशा, विष्णु भाग्य में लिखा, देवः 1. प्राचीन देवता 2 राक्षस या असुर 3 प्रजनक, पिता, -देवः पूर्वी प्रदेश, भारत का पूर्वी भाग, - निवासः समास में शब्द को अनियमित प्राथमिकता तु० परनिपात, पक्ष 1 अगला हिस्सा या पार्श्व 2 कृष्णपक्ष (आश्विन) का प्रथमपक्ष 3 विवाह का पूर्वपक्ष, प्रथमदर्शनाधारित तर्क या प्रश्न का दृष्टिकोण 3 किसी तर्क का प्रथम आक्षेप 4 बादी की प्रतिज्ञा 5 अधिपत्य, नालिख, पक्ष्म किसी समास या नाम्य का प्रथम पद, पक्षत् उदयाचल जिसके पीछे सूर्य का उदय होना माना जाता है बांछालक (वि०) पूर्वी पहाड़ों से संबन्ध रखने वाला - बाणिनीयः (पु०, ब० ब०) पूर्व देश के रहनेवाले पाणिनि के शिष्य, पिता-मह बापदादा, पूर्वज, -बुधकः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 पिता, पितामह या प्रपितामह में से कोई एक 3 पूर्वपुरखा, -पूर्व (वि०) प्रत्येक पूर्ववर्ती -फाल्गुनी ध्यारद्वयी नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं -पक्ष बहुवचन ग्रह का विशेषण, भावः अगला हिस्सा, -माध्यम्य पक्षोत्तरार्ध नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं, -भुक्ति (स्त्री०) पहले से किया हुआ अधिकार, भूत (वि०) पूर्ववर्ती, पहले का, -बीर्वासा प्रथम मीनासा, वेद के अतर्गत कर्मकाण्डविषयक पृथक् (वि०) उत्तरमीमांसा या वेदान्त - दे० मीमांसा, -रथ नाटक का उपक्रम या आरम्भ, आरम्भ या प्रस्तावना, -सूर्यरथ विचार्यैव सूर्यराशौ निवर्तते - सा० द० २८३, पूर्वरथ प्रथमय नाटकीयत्व बल्लुन -शि० २।८ (द० इत्य पर मलिन०), रथः आरम्भक प्रेम, दो व्यक्तियों के मित्त से -पूर्व (अथवा वरान् जादि के कारण) उनमें उत्पन्न होनेवाला प्रेम, -राजः 1 रात का पहला भाग, -रक्षन् 1 होने वाले परिवर्तन का संकेत 2 रोग होने का लक्षण 3 दो सहवर्ती स्वर या व्यंजनो में से पहला जो स्थिर रहे, -रक्षन् (वि०) रक्षणा -रक्षित् (वि०) पहले से विद्यमान, पहले का, पहले होने वाला, -बावः बादी द्वारा प्रस्तुत अनियोज्य, मुद्दे द्वारा की गई नाबिधि, -बाधिन् (पु०) अधि-बोला या मुद्दे, -बुधन् 1 पहली घटना, -रघु० ११।१० 2 पहला आचरण, आरम्भ (वि०) आरम्भ्यन्तु के पूर्वार्ध से संबन्ध रखने वाला, -कैलः दे० पूर्व-

पक्ष, -रक्षन् जन्म का ऊपरी भाग, -संख्या प्रधातकाल, पी फटना, -शि० ११।४०, -सर (वि०) अक्षर, साधारः पूर्वी समुद्र -रघु० ४।३२, -साहसः पहला या सबसे भारी अर्थरथ, स्थितिः (स्त्री०) पहली या प्रथम अर्थरथा ।
पूर्वक (वि०) [पूर्व+कन्] (समास के अन्त में) 1. पूर्ववर्ती, अनुसृतित-अनामयप्रथमपूर्वकमाह-श० ५ 2 पूर्ववर्ती, पिछला, कः पूर्वज, बापदादा ।
पूर्वपक्ष (वि०) [पूर्व+पक्ष+लच्] पहले जाने वाला, पूर्ववर्ती ।
पूर्वतः (अव्य०) [पूर्व+तत्] 1 पूर्व में, पूर्व की ओर, -रघु० ३।४२ 2 पहले, सामने ।
पूर्वभा (अव्य०) [पूर्व+भाच्] पूर्ववर्ती भाग में, पहली जगह ।
पूर्ववत् (अव्य०) [पूर्व+वत्] पहले की भाँति ।
पूर्व्वि (वि०) (स्त्री०-जी) पूर्व्वीण (वि०) [पूर्व+इति, पूर्व+ङ्] 1 प्राचीन 2 पतुक् ।
पूर्व्वे (अव्य०) [पूर्व्वस्मिन् अहनि-पूर्व+एभ्यस् वि० साध्] 1 पहले दिन 2 गत दिवस, गीते हुए काल -मनु० ३।१८७ 3. दिन के प्रथम भाग में, पी फटने पर 4 मोर में, तबेरे ।
पूर्व्व (भा० पर०, चूरा० उभ०-पुलवि, पुलवति-ते) डेर लगाना, सचप करना, एकत्र करना ।
पूर्व्वक, पूर्व्वकः [पूर्व+क, अन्वु वा] गडरी, पुली ।
पूर्व्वकः=पुलाक-दे० ।
पूर्व्विका [=पूर्विका, रत्न ल] एक प्रकार की रोटी, पूरी ।
पूर्व्वक, पूर्व्वक [पूर्व+क, पूर्व+कन्] सहजूल का दूज ।
पूर्व्वन् (पु०) (कन्०-पुया, -पनी, -पन) [पूर्व+कन्तिन्] सुयं, -सदा पांच पुया गमनपरिमाण कलयति -अर्तु० २।११४, इन्द्रनीचगम्यनिमित्तत्वात् आर्येति पूर्व्वन्-शि० २।३। सम०-असुहृत् (पु०) शिव का विशेषण, -आलम्बः 1 बायल 2 इन्द्र का विशेषण, -आल्ला इन्द्र का शर (अमरावती) ।
पु (पुया० वा०-प्रियते, पू) -व्यस्त होना, सक्रिय होना (बहुधा 'ष्वा' उपसर्ग के साथ) -कार्यं व्याप्रियते -दे० व्यापृत-अ० (पाठवति-ते) 1. काम कराना, काम पर लगाना, सँपाना, नियत करना (बहुधा अधि० के साथ) व्यापारित शूलभृता विधासि सिंहल्यकालगतसर्वभृति-रघु० २।३८ 2 रखना, बँध देना, निरिच्छत करना, निवेश देना, हाथमा-व्यापारव्यामास करं किरौटे-रघु० ६।१९ अमापुत्रे .. व्यापारव्यामास विलोकयानि-बु० ३।१७, व्यापारित धिरस्ति अक्षयव्यस्यपाने -वेणी० ३।१९, रघु० १३।२५ ।
 ii (बुहो० पर०-पिपति, पूर्व) 1. जाने के आका 2

से मुक्त करना, प्रकाशित करना 3. भरना 4 रखा करना, जीवित रखना, जीवित रहना 5 उपरति करना, प्रयति करना ।

iii (स्वा० पर० -प्राणित) रखा करना ।

iv (चुरा० उभ०—पारयति-ने, कयी-कयी 'पार' स्वर्ग्य धातु मानी जाती है) 1 पार ले जाना, नाक से पार उतारना 2 किसी वस्तु के दूधरे पार्श्व पर पहुँचना, निष्पन्न करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, (हत का) पूरा करना 3 योग्य या समर्थ होना—अधिक न हि पारयामि वस्तुम्—भ्रामि० २।५९, स० ४ 4 सीपना, बचावना, उद्धार करना, निस्तार करना ।

v (स्वा० पर० -पुणति) 1 प्रसन्न करना, खुश करना, तृप्त करना 2 प्रसन्न होना, खुश होना ।

पुक्त (भू० क० क०) [पू०+क्त] 1 मिथित, संपुक्त—रघु० २।१२ 2 स्पृष्ट, सपर्क में लाया गया, स्पर्श करने वाला, मयुक्त,—अस्त्यु संपत्ति, दीलत ।

पुक्तिः (स्त्री०) [पू०+क्तिन्] स्पर्श, सपर्क, सयोग ।

पुक्चम् [पू०+चन्] संपत्ति, धन-दीलत, वैभव ।

पुक्चः (अदा० आ०) पुक्ते, पुक्चन् सपर्क में आना ।

ii (स्वा० पर० -प्राणित, पूक्त) सपर्क में लाया, सम्मिलित होना, मिल जाना—एव बद्ध दाक्षरिचिर-पुण्यनुधा सारम्—मट्टि० ६।३९ 2 मिथण करना, मिलाना 3 सपर्क में होना, स्पर्श करना 4 सतुष्ट करना, भरना, सतृप्त करना 5 बढाना, वृद्धि करना, सम्, मिथण करना, बोलना, मिलना, मिलाना-बागधार्मिक संपत्तो—रघु० १।१, मट्टि० १।७।१६, दे० सपुन ।। (स्वा० पर०, चुरा० उभ० पर्चति, पर्चयति-ने) 1 स्पर्श करना, सपर्क में आना 2 रोकना, विरोध करण ।

पुक्चत् [प्रचु०+चुत्] पूछनाछ करने वाला, पूरेवचा करने वाला—पुक्चकेन सदा भाव्य पुष्टये विज्ञानया—पद्य० ५।९३, बाण० २।२६८ ।

पुक्चन्म् [प्रचु०+चुन्] पूछना, पूछ-नाछ करना ।

पुक्छा [प्रचु०+अक्ष+टाप्] 1 प्रश्न करना, पूछना, पूछ-ताछ करना 2 प्रविष्ट विषयक पूछ-ताछ ।

पुक् (अदा० आ०) पुक्ते सपर्क में आना, स्पर्श करना ।

पुक् (स्त्री०) [पू०+क्विप्, तुक्] सेना—(पहले गीच बचनी में इस छन्द का कोई नाम नहीं होता, छि० वि०, छि० ब० के परचता 'पुक्ता' के स्थान में विकल्प से 'पुक्' आदेश हो जाता है) ।

पुक्ता [पू०+तन्+टाप्] 1 सेना 2 सेना का एक प्रमाण जिधमें २४३ हाथी, २४३ रत्, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल होते हैं 3 युद्ध, सभान, मुठभेड़ । सम०—साहूः इन्द्र का विशेषण ।

पुक् (चुरा० उभ०—पर्चयति-ति) 1 विस्तार करना 2 कंकना, हालना 3 भेजना, निवेद देना ।

पुक्च (अव्य०) [प्रचु०+चुक्, कित्, सप्रसारण] 1 अलग-अलग, जुदा-जुदा, एक एक करके—अज्ञानदग्ध पुक्च पुक्च—भग० १।१८, मनु० १।२६, ७।५७ 2 भिन्न, अलग, भिन्नतापूर्वक मट्टि० ५।४, १३।४, रचितता पूर्वयर्थता विगम् कि० २।२७ 3 जुदा, एक एक, एकाकी—विष्णु० ४।२० 4 छोड़ कर, सिबाय, अपवाद के साथ, बिना (कर्म० करण० या ज्ञया० के साथ) पुष्टभागेण, रामात्, राम वा—गिद्धा०, मट्टि० १।१०९ (पुक्च कृ—अलग २ करना, कटाना, जुदा-जुदा करना, विश्लेषण करना) । सम०—आश्रयता 1 अलग-अलग होना, पुक्चता 2 भेद, भिन्नता 3 विवेक, निर्णय,—आत्म्यु (वि०) भिन्न, अलग—आत्मिका व्यक्तित्व सत्ता, वैवर्त्मिकता—करणम्, पिया 1 अलग-अलग करना, भेद करना 2 विश्लेषण करना कूल (वि०) भिन्न कुल से सबध रखने वाला, -क्षेत्र (पु० ब० ब०) एक पिता की विभिन्न पत्नियों से सन्तान, या भिन्न-भिन्न जातियों की पत्नियों से सन्तान, -चर (वि०) एकाकी जाने वाला, अलग जाने वाला,—अन गीच पुक्च, जान-रहित, गँवार आदमी, प्राकृत जन, गीच लोग—न पुक्चजनवच्छुचो वस्य वशिनात्मस्य गनुमहनि—रघु० ८।९०, कि० १।४२६ 2 मूर्ख, बुद्ध, अज्ञानी—वि० १६।३९ 3 कुष्ट आदमी, पापी,—भास्व. पुक्चता, वैवर्त्मिकता (इसी प्रकार 'पुक्चत्वम्'),—कृष् (वि०) भिन्न-भिन्न कर्म या प्रकारों का,—विष्णु (वि०) भिन्न-भिन्न प्रकार का, नाया प्रकार विविध,—शब्दा अलग सोना,—स्थिति (स्त्री०) अलग सत्ता ।

पुक्चो [प्रचु०+चुक्, सप्रसारण] दे० पुक्चो ।

पुक्चो (स्त्री०) पाण्डु की दो पत्नियों में से एक, कुन्ती का नाम । सम०—अः,तमथ,भुगः,सुगुः पहले तीन पादकों का विशेषण परन्तु प्राय 'अर्जुन' के लिए व्यवहृत—अदशस्थाना हत इति प्यासुनाना स्पष्टमुक्ता—वेणी० ३।९, अमिसन्न पुक्चान्पु ल्हेन परितस्तर—कि० १।१८,—पतिः पाण्डु का विशेषण ।

पुक्चिका [प्रचु०+क+क+टाप्] सप्रसारणम्, इरम्] कनकचुरा ।

पुक्चिकी [प्रचु०+क्विन्, सप्रसारणम्] पुक्चो (कई 'पुक्चो' की किला जाता है) । सम०—इन्द्रः,ईशः,शिवः (पु०)—पालः,पालकः,—मुक्च (पु०)—मुक्चः,सक्, राजा,—सकम् धरातक,—पतिः 1 राजा 2 मृत्यु का देवता यम,—अकलः,कम् प्रमंथल,—सुः वृक्ष—वर्तमान पुक्चिकी दहानिच—रघु० ८।९,—कीचः सर्वलोकक मुक्चो ।

पृथु (वि०) (स्त्री०-पृथ्वी) तुल० प्रथीयत्-जल० अ० प्रथिष्ठ [प्रथ् + कु, सप्रसारणम्] 1. चौड़ा, विस्तृत, प्रयाप्त, फैलावदार—पृथुमित्तव—वे० नीचे, सिंधी। पृथुमपि तन्मू—वेध० ४६ 2 यथेष्ट, बहुल, पर्याप्त—विष्णु० ४।२५ 3 विस्तोषे, बढ़ा—पृथु पृथुतरीकृता—रत्न० २।१५, सि० १२।४८, रघु० ११।२५ 4 विचलपुस्त, अतिविस्तृत 5 बहुसम्बन्ध 6 चुल्ल, कुर्तीला, चतुर 7 महात्पुण्य.—शु 1 अलि का नाम 2. एक राजा का नाम (पृथु जग के पुत्र बेन का बेटा था। बही पहला राजा कहलाता है जिससे कि इस भूमि का नाम पृथ्वी पड़ा। विल्लु पुराण में वर्णन मिलता है कि बेन स्वभाव से गुप्त था, जब उसने बहू व पुत्र का निषेध किया तो पुष्यात्मा ऋषियों ने उसे पीट कर मार डाला, उसके पश्चात् राजा के त होने पर देश में कूट मार होने लगी, अराजकता फैल गई, फलतः मुनियों ने पुत्रोत्पत्ति की इच्छा में मनु राजा की शर्तें भूजा को मसका, तब उससे अग्नि के समान तेजस्वी पृथु निकला। उसे तुरन्त राजा घोषित कर दिया गया। उनकी प्रजा दुग्धिमस्त भी—अतः उनमें राजा से भोज्य फलों को दिलाने की प्रार्थना की जो कि पृथ्वी ने देना कष्ट कर दिया था। बुद्ध होकर पृथु ने अपना बन्धु उठाया और पृथ्वी को अपनी प्रजा के लिए आवश्यक पदार्थ वंदा करने के लिए बाध्य किया। पृथ्वी ने शाप का रूप धारण कर लिया और राजा के आगे-आगे भागने लगी—राजा भी उसका पीछा करता रहा। अन्त में पृथ्वी ने आत्मसमर्पण कर दिया और राजा से अपने प्राण बचाने की प्रार्थना की, साथ ही यह प्रतिज्ञा की कि आवश्यक फल शाकादिक प्रजा को मिल सकेंगे यदि उसे एक बछड़ा दे दिया जाय जिसके द्वारा वह दूध देने के योग्य हो सके। तब पृथु ने स्थायम्व मनु को बछड़ा बनाया, पृथ्वी को दुग्धा और दूध अपने हाथों में लिया जहाँ से सब प्रकार के अन्न, शाक-भाजियाँ और फलफूल प्रजा के पालन-पोषण के लिए उत्पन्न हुए। इसके पश्चात् पृथु के उदाहरण का बाद में ताना प्रकार से अनुकरण किया गया। देव, मनुष्य, ऋषि, पहाड़, नाग और असुर आदि ने अपने में से ही उपपन्न दोषों तथा बछड़े को दुग्धा और दूध पृथ्वी का अपनी इच्छानुसार दोहन किया—तु० कु० १।२, —पृ० (स्त्री०) अर्धोन्न। सम०—अरर (वि०) शीटे पेट बाला, हृष्ट-पृष्ट (रः) मंडा,—अन्न,—निर्भय (वि०) गौटे और विस्तार युक्त कूटो से युक्त—पृथुमित्तव नितबबती तव—विष्णु० ४।२६,—पृथु-अम् लाल महयुव —पृथु-अम्ब (वि०) दूर-दूर तक प्रसिद्ध, व्यापक

यद्यस्वी,—दोल्ग (पु०) मछली, भुम्ब मीन राशि, —श्री (वि०) अत्यन्त समृद्ध,—श्रीश्री (वि०) बड़े भारी कूटों वाला,—अम्ब (वि०) घनवान्, दीर्घ मर,,—अम्बः नूजर।

पृथुकः, कम् [पृथु+क+क] शीले, धिवटे—कः कच्चा नित्यजनन्य पृथुकान् पथिन्य—छि० ३।२१,—का लड़की।

पृथुल (वि०) [पृथु+लच्, ला+क वा] चौड़ा, प्रयाप्त, विस्तृत—श्रीशिव् प्रियकर पृथुलानु स्वर्धेमाप सकलेन तलेन सि० १०।६५।

पृथ्वी [पृथु+श्रीच्] 1. पृथिवी, धरा 2. पृथु मूल तत्त्वों में से एक, पृथ्वी 3 बड़ी इलायची 4. एक छद (दे० परिधिष्ट १)। सम०—ईशः-पतिः, धामः,—भुम्ब (पु०) राजा, प्रभु,—अस्तम् पृथु, —बकं यनेस का विशेषण,—पृथुम् मूध, कृषिम सोह,—कः 1. वृत् 2 भयल बह।

पृथ्वीका [पृथ्वी+कन्+टाप्] 1 बड़ी इलायची 2 छोटी इलायची।

पृथुकुः [पृदं+कानु, सप्रसारणम्, प्रकारलोप] 1. विष्णु 2. व्याघ्र 3. साँप, छोटा विषेला साप 4 वृक्ष 5 हाथी 6 शीता।

पृथिन (पिन्) (स्वृच्+ति नि०) पृथो० सलोप] 1 छोटा, छोटे कर का बीजा 2 सुकुमार, दुबला-पतला 3 दिविध प्रकार का, चित्तीदार,—किन् 1. प्रकार की किरण 2 पृथ्वी 3 तारा समूह से युक्त बाकास्य 4 कृष्ण की माता देवकी। सम०—मर्षः—अरः,—अः कृष्ण के विशेषण,—पृथुः 1 कृष्ण का विशेषण 2 यनेस का विशेषण।

पृथिन (पिन्) का, पृथ्वी (श्री) [पृथो० बले कामवि-शोभते—पृथिन+कं+क+टाप्, पृथिन+श्रीच्] जल में पंदा होने वाला एक पीया, जलकुमी।

पृथुत् (नपु०) [पृथु+अति] 1 जल वा किसी और तरल पदार्थ की बूद (कुछ कोषों के मतानुसार केवल म०ब० में प्रयुक्त)। सम०—अंकः, अक्षः 1 वान्, वृषा 2 विच का विशेषण,—आम्बु० दही में मिला हुआ भी,—पतिः (पृथतां पतिः) वान्—अक्षः वान् का शोभा।

पृथुतः [पृथु+अत्च्] 1 चित्तीदार हरिण 2 पानी की बूद—पृथुतरणा सम्यतां च रत्न—कि० ६।२७, रघु० ३।३, ४।२७, ६।५१ 3. कच्चा, निखान—सर्व०—अक्षः हवा, वायु।

पृथुकः [पृथु+कन्] नाम-तुपोर्ध्वेव नवरचरी पृथुकः—कि० १३।२३, सि० २०।१८,—उज्जट १।१, चतुर्वीं हस्तवता पृथुका—रघु० ७।४५।

पृथुतिः [पृथु+तिच्] शानी की बूद—अः पृथुतिः

स्पृष्टा भाति वाता सनैः स्मैः—अधरकोश पर भरत ।

पुषपाभा—पुषपाभा ।

पुषाकरा [पुष्+किन्त्, पुंसे लोचनाय आकीर्त्ये—पुष्+आ+ङ्+अप्+टाप्] छोटा फल्वर (जो बाट की भांति प्रवृत्त किया जाय) ।

पुषातकम् [पुष्+आ+तक्+अच्] वही और भी का समिपथ ।

पुषोहरः [पुष्त् उदर यस्य, पुषो० तलेज्] (यह शब्द पुष्त् और उदर से मिल कर बना है, पुष्त् के तु का अनिर्दिष्ट कारक के रूप में लोप हो गया) । इस प्रकार यह शब्द अनिर्दिष्ट समासों की एक पूरी श्रेणी है—पुषोहरादित्वात् साप्, दे० 'अर्ष' पा० ५।३।१०९ ।

पुष् (पु०क०ङ्) [प्रम्ह+क्त] 1 पुष्प हुआ, पना लगाया हुआ, प्रस्त किया हुआ, सवाक किया हुआ, 2 छिद्रका हुआ । स्य०—आत्मकः 1. धान्य विशेष, जनाय 2 हाथी ।

पुष्किः (स्त्री०) प्रम्ह+किन्त्] पुष्-ताड, प्रस्त बाधकता ।

पुष्पम् [पुष् स्पृष्ट् वा बद्ध, नि० साप्] 1 पीठ, पिछला हिस्सा, पिछाडी 2 जलवर की पीठ—अव्यपुष्पमास्त्व—आदि 3 तानवर का ऊपर का भागर् रवु० ५।३।१२।१७, कु० ७।५१, इसी प्रकार अव्यपुष्प-चारिणीम्—उत्तर० ३ 4 (किसी पत्र वा वस्तुत्वैव की) पीठ या हुररी तरङ्ग—मा० २।१३ 5. घर की चपटी छत 6 पुलक का पुष्प । स्य० अस्मि (नपु०) रीठ की हुररी,—चोपट—रक्तः जो किसी सबत हुए गोडा की पीठ की रखा करे,—अस्मि (वि०) कजुपान्, कुबज युक्त,—अस्तु (पु०) केकडा,—लक्षयम् हाथी की पीठ की बाहरी मांसपेशियाँ, पुष्किः 1 केकडा 2 रीठ, फलम् किसी आकृति का फाल्गु भाग,—आमः पीठ, अस्मि 1 पीठ का मांस 2 पीठ पर की गुमरी अथ 'अव्य' (वि०) चुनलसोर, बवनाम करने वाला, कर्कश करने वाला (—दम्,—दम्) गुगली, पुष्पासायन तख्त परीके दोष-कीर्तनम्—हेमचन्द्र—तु० शाक्यपादयोः पतति सादति पुष्पासायम्—हि० १।८१, बालम् सवारी,—अंसः रीठ की हुररी—बालु (नपु०) भकन की ऊपर की भक्ति,—बाहू (पु०)—बाहूज् कट्टू बँक,—अव्य (वि०) पीठके बल लाने वाला,—पुष्कः अंगुली बकरी,—अस्मि (पु०) 1 मंडा 2 नैसा 3 हिजडा 4 शीय का विशेषण ।

पुष्पकम् [पुष्+कम्] पीठ ।

पुष्पलत् (अव्य०) [पुष्+लत्] 1 पीठे, पीठ पीठे, पीठे से—पुष्पलत्-पुष्पोऽस्मिन्—अनु० ५।१५५, ८।३००, स्य० ११।४० 2 पीठ की ओर, पीठे की

ओर—पुष्पलत् 3 पीठ पर 4 पीठ पीठ चुप-चाप, प्रच्छन्न रूप से (पुष्पलः क्) 1 पीठ पर रखना, पीठे छोड़ना 2 उपेक्षा करना, हिचकालि देना, छोड़ देना 3 बिरक्त होना, हाथ सीकना, त्याग देना, तिलाजलि देना, पुष्पलौ यच्च—अनुसरण करना, पुष्पलौ भू—1 पीठे लड़े होना 2 उपेक्षित होना ।

पुष्पच (वि०) [पुष्+चत्] पीठ से सबध रखने वाला, क्वच कट्टू भोज ।

पुष्किः (स्त्री०) [—पुष्कि पुषो०] एकी ।

पु (ब्रह्म०, कथा०—पर०) पिपति, पुषाति, पुष्-कर्म० पुंसे, प्रेर० पूरयति—ते, इच्छा० पिपरि (री) वति, पुष्पति 1 भरना, भर देना, पूरा करना 2 पूरा करना, (आमा आदि) पूरी करना, पुष्प करना 3 हवा भरना, (शल, बसरी आदि) बजाना 4 सतुष्ट करना, बकाबट दूर करना, प्रसन्न करना—पितृनपारीत्—अटि० १।२ 5. पालना, परवरिष्ठा करना, पुष्ट करना, पालनपोषण करना, पालन करना ।

पेषकः [पष्+बुन्, इत्थम्] 1 उत्सुक 2 हाथी की पूँछ की जड़ 3 फलम, धव्या 4 बादल 5. बूँ ।

पेषकिल् (पु०) पेषित [पेषक+इति, पष्+इत्थम्, इत्थम्] हाथी ।

पेषुकः (पु०) कान का मैल, गुच, दे० पित्रुय ।

पेट-अप् [पिट+अच्] 1 पैला, टोकरी 2 देटी, सट्टक,—द लुला हाथ जिसकी अगुनियाँ फैलाई हुई हो ।

पेटकः—कम् [पेट+कम्] 1 टोकरी, सट्टक, पैला 2 सम-न्वय, गठरी ।

पेटाकः [—पेटक, पुषो०] पैला, टोकरी, सट्टक ।

पेटिका, **पैठी** [पिट+प्लुत्+टाप, इत्थम्, पेट+कीप्] छोटा पैला, टोकरी ।

पैठा [—पेट, पुषो०] बड़ा पैला ।

पेष (वि०) [पा+प्लुत्] 1 पीने के योग्य, चढ़ा जाने के लायक 2 स्वादिष्ट,—अव्य पानीय, पष वा शर्बत आदि,—वा मात का मांस, भावनी की लपसी ।

पेषुः (पु०) 1 समूह 2 अग्नि 3 बूँ ।

पेषुषः—अप् [पीप्+अपत्, वा० गुण] 1 अमृत 2 उस गाय का हृष जिससे आये बभी एक सताह से अधिक नहीं हुआ—सत्तरात्रप्रसूताया और वैदुषयुष्यते—हाराकमी, मनु० ५।६ 3 ताजा भी ।

पैरा (स्त्री०) एक प्रकार का बाद्ययन्त्र—अटि० १।७। 1 जाना, चलना—चित्रा 2 हिलना, कपना ।

पैलम्, **पैलकः** [पैल+अच्, पैल+कम्] अष्यकीय ।

पैलक (वि०) [पैल+का+क] 1 सुकुमार, सुकीर्ण, मनु० मुतायम्,—अव्य पैलकपुष्प पत्रिणः—कु० ५।२९, ५।५, ७।६५ 2 दुर्बल, पतला, शीघ्र—सं० ३।२२ ।

वेदि, वेदिम् (पुं०) [वेद + इत्, वेद + इति] बौद्ध ।

वेद (प, इ) क (वि०) [विष् (प, व्) + वल्च्]

1. मनु, मुकामय, मुकुमार—रघु० १।४०, १।१४५,

वेध० १३ 2. बुकल-पठका, बौध (कमर बादि)

—रघु० १।१३४ 3. मनोहर, सुन्दर, कामध्वनुत

अच्छा—भावि० ३।२ 4. विषेय, चतुर, कुशल

—अनु० ३।५६ 5. बालक, छलौ ।

वेदि, -डी [विष् + इत्, वेदि + डीच्] 1. मांस का पिंड

2. मांस राशि 3. अंडा 4. पुच्छा—वाङ्म० ३।२००

5. पर्यायान के प्रथमात् शीघ्र भाव का कृष्ण पर्य-

पिच्छ 6. शिकने के लिए तैयार कली 7. दूध का

बल (पुष्कल भी) 8. एक प्रकार का माद्ययंत्र ।

सय०—श्रीकृ० (क) यक्षी का अंडा ।

वेदः [विष् + वल्च्] वीरता, बुरा करना, कुचकना—वि०

१।४५ ।

वेधवच् [विष् + इत्] 1. बूधे बनाना, पीसना 2. अलि-

हान का बहूँ स्थान जहाँ अनाज की बाली पर दार्य

बकाई जाती है 3. डिक और कोडी, पीसने का कोई

भी उपकरण ।

वेधनिः (स्त्री०) वेधनी, वेधाक. [विष् + ननि,

वेधनि + डीच्, विष् + धा—कन्] अस्त्री, सिद्ध,

शरल ।

वेधर (वि०) [वेत् + वल्च्] 1. जाने वाला, घूमने

वाला 2. ताड़कार ।

वे (अधा० पर०) पावति सुवना, सुरावा ।

वेमिः [विष् + इत्] धासक का वेतुकनाम ।

वेम्बू [विष् + वल्च्] कान ।

वेठर (वि०) (स्त्री०—ती) [विठर + वल्च्] किसी पात्र

में उबाला हुआ ।

वेठीमतिः (पुं०) एक प्राचीन ऋषि जो एक धर्मशास्त्र

का प्रणेता है ।

वेठीकम्बु, वेठीकम्बू [विष् + क्म् + वल्च्, विष् + इत्

+ वल्च्] विद्या पर जीवन विवाह करना, विद्या-

वृत्ति ।

वेठामह (वि०) (स्त्री०—ही) [पिठामह + वल्च्] 1. दादा

या पिठामह के संबंध रखने वाला 2. उत्तराधिकार

में पिठामह के प्राप्त 3. बह्ना से गृहीत, बह्ना से अवि-

च्छिन्न, या बह्ना के सम्बन्ध रखने वाला—रघु० १५।

६०.—हृत् (द० व०) वृषपुराडा, बाप दादा ।

वेठामहिक (वि०) (स्त्री०—की) [पिठामह + ठच्]

पिठामह के संबंध रखने वाला ।

वेतुक (वि०) (स्त्री०—की) [विष् + क्म्] 1. पिठा से

सम्बन्ध रखने वाला 2. पिठा से प्राप्त या वागत,

पुराणों से उद्धृत, पिठा की परंपरा से प्राप्त—रघु०

८।६, १।८।४०, मनु० ५।१०४, वाङ्म० २।४७ 3. पितरों

के लिए पुरीत,—कम्बू मूल पुराणों या पितरों के

सम्मान में अनुष्ठित था ।

वेतुकायः [विष् + क्म् + वल्च्] 1. अविवाहिता स्त्री का पुत्र

2. किसी अविध वेतुक का पुत्र [विष् + क्म्]

वेतुकायः, वेतुकायः [विष् + क्म् + वल्च्, क्म् वा] कृषी

या वृष का वेदा ।

वेत (वि०) (स्त्री०—ती), वैतिक (वि०) (स्त्री०—की)

[विष् + वल्च्, क्म् वा] वितीव, पितृव्यवृत्ति ।

वैध (वि०) (स्त्री०—की) [विष् + वल्च्] 1. पिता या

पुराणों से संबंध रखने वाला, वेतुक, पुराणी

2. पितरों के लिए पुरीत,—कम्बू तर्कनी और बह्ने

का मध्यवर्ती हाथ का नाम (इस अर्थ में 'वैधवच्' भी) ।

वैधवच् (वि०) (स्त्री०—की) [वी० + वल्च्] वी० वृक्ष

की कफरी से बना हुआ—मनु० २।४५ ।

वैधवच् [वेधक + वल्च्] मुहुता, मुहीकता, मुहुनारता ।

वैधाय (वि०) (स्त्री०—की) [विधाय + वल्च्] राजसी,

नारकीय,—कः हिन्दु-धर्मशास्त्र में अहित वाठ प्रकार

के विवाहों में से बाढवाँ या निम्नतम श्रेणी का विवाह

(इसमें किसी कोई हुई प्रयत्न या पापक कन्या का,

उसकी स्वीकृति के बिना उसका कौमार्यरूप किया

जाता है—मुतावत अर्थात् प्रयत्न वा रंठे) यथोपपन्नति

स पापिको विवाहात्ता वैधायव्याध्वोऽयः—मनु०

३।१४, वाङ्म० १।६१ 2. एक प्रकार का राजत वा

विधाय,—भी किसी धार्मिक संस्कार के अन्तर्गत पर

तैयार किया गया नैवेद्य 2. राठ 3. एक प्रकार की

अर्धब्रह्म याचा जो संवत् पर विधायी द्वारा बोली

जाय, शाक्य याचा का एक निम्नतम रूप ।

वैशाधिक (वि०) (स्त्री०—की) [विधाय + ठच्] नार-

कीय, राजसी ।

वैतुमन्, वैतुम्बू [विष् + वल्च् वाः कर्म वा, विष् + वल्च्

वा] 1. वृषकी, यवनायी, धरर की उधर बनाना,

कटक—मनु० ७।४८, १।१५५, मनु० १।६२ 2. बह-

मायी, ठकी 3. कुच्छा, मुहीकता ।

वेध (वि०) (स्त्री०—ही) [विष् + वल्च्] बाटे का

या पीठी का बना हुआ ।

वैधिक (वि०) (स्त्री०—की) [विष् + क्म्] बाटे वा

पीठी का बना हुआ—कम्बू 1. कृषीवर्षों का डेर

2. अनाज से बनी हुई मरिदा ।

वेधी [वैष् + डीच्] अनाज को छद्मकर उसके वैशा.

की हुई मरिदा—मु० बीठी ।

वैधव (वि०) [वीः वृद्धो यद् एकदेशो मन्व-ठारा०]

1. बन्ना, बहवत्क, बहूँ विकसित 2. कम वा विकृत

अंग वाला 3. विकृत, विरूप,—कः शाक्य कितरी

नाम् ५ से लोहू वर्ध के नीतर की हो, पु०

'वर्धव' ।

बोक: [पुट + बन्] घर की नींव । सम०—दलः 1 एक प्रकार का नखुल 2 कास 3 एक प्रकार की मछली ।
बोहक: [पुट + ब्हुल्] नीकर ।
बोहा: [पुट + बन् + टाप्] 1 नरदानी स्त्री, पुत्रो की भाँति दाढ़ी वाली स्त्री 2 हिजड़ा, उभयलिंगी 3 नीकरानी ।
बोहो: [पो + डीप्] लुलकाय मगरमच्छ ।
बोह्लिका, बोह्लो: [बोह्लो + कन् + टाप्, ह्रस्व, पो + की + ड डीप्, पुषो०] पीटली, मुसिका, गडरी ।
पोत: [पू + तन्] 1 किसी भी जानवर का बच्चा, पशु-शायक, बछेड़ा, अथवायक आदि—पिब स्तन्य पोत—पाणि० ११६०, मृतपोत, करिपोत आदि, बोरपोत मया योद्धा उत्तर० ५१३ 2 दस बरस का हनुमी 3 अहाज, बेबा, किसी पोहो दुस्तरवारिरासितनर—हि० २०११५५, मनु० ७३२ 4 वस्त्र, कपड़ा 5 पोथे का अक्षर 6 घर बनाने की जगह । सम०—आभाबनम् तन्, आधानम् छोटी-छोटी मछलियों का भूषण, चौरिन् (पु०) अहाज का स्वाधी, भंग-अहाज का टूट जाना,—रत्नः किसी या गाव का चपू या बाह—बौधाय् (पु०) व्यापारी जो समुद्र से आ जाकर व्यापार करे, बाह—खिबया, नाविक ।
पोतक: [पोत + कन्] 1 पशुशाक 2 छोटा पीघा 3 घर बनाने के निमित्त भूखण्ड ।
पोतक: [पोत + बन् + बन्] एक प्रकार का कपूर ।
पोतु (पु०): [पू + तुन्] यज्ञ में कार्य कराने वाले बोलहू ऋत्विजों में से एक (ब्रह्मा नामक ऋत्विज का सहायक) ।
पोतवा: [पोत + य + टाप्] नौकाओं का बेडा ।
पोतम्: [पू + क्त्] 1 सूजर की ध्वन 2 नौका, जहाज 3 हल का फलका 4 बज 5 वस्त्र 6 पोतु का पद । सम०—आयुधः सूजर, बराह ।
पोथिन् (पु०): [पोथ + इनि] सूजर, बराह ।
पोथ: [पुत् + थ] 1 बेर 2 राशि, विस्तार ।
पोथिका, पोथी: [पोथी + कन् + टाप्, ह्रस्व, पी + डीप्] एक प्रकार की पूरी (नेहूँ की बनी हुई) ।
पोथिक: [पोथिक्य अत्रिन्द इव - पुषो०] जहाज का मस्तक ।
पोथ: [पुत् + बन्] 1 पोषण, सपालन, सधारण 2 पुष्टि, बुद्धि, सवर्धन, प्रपति 3 समृद्धि, प्राप्ति, बाहुल्य ।
पोथन्: [पुत् + पिच् + स्तुट्] पोथना, (छाती का) दूध पिलाना, पालना, सधारण करना ।
पोथन्किन्: [पुत् + पिच् + इत् + क्] कौशल ।
पोथिन् (वि०): [पुत् + पिच् + तुच्] दूध पिला कर पालने वाला, पालन-पोषण करने वाला—(पु०) पररिचर करने वाला, दूध पिलाने वाला ।

पोथिन्, पोथ् (वि०): [पुत् + पिनि, तुच् च] दूध पिलाने वाला, पालन-पोषण करने वाला—(पु०) पालक, पोषक, रत्नक ।
पोथ्य (वि०): [पुत् + प्यत्] 1 खिलाये जाने के बोध, पालन-पोषण किये जाने बोध, सपालनीय 2 सुपाकित, फलता-फूलता, समृद्ध । सम०—बुधः,—सुतः बोध किया हुआ पुत्र, -वर्गः ऐसे सबधियों का समूह जो पालन पोषण तथा रक्षा किये जाने के बोध हो ।
पोथ्यलोय (वि०) (स्त्री० -यी): [पुथ्यलो + छम्] वेष्मामो से सबध रखने वाला ।
पोथ्यस्थम्: [पुथ्यलो + थ्यम्] वेष्मापन, कुलटापन—मनु० १११५ ।
पोथ्यवन्: [पुथ्यवन् + वन्] दे० 'पुथ्यवन्' ।
पोथ्य (वि०) (स्त्री० -स्त्री): [पुथ् + स्तन्] 1 पुष्प-पोषित—महि० ५११ 2 मदाना, पोषक्य,—स्त्वन् मदानिगी, पोष्य ।
पोथ्य (वि०) (स्त्री० -टी): [पोथ्य + जन्] बान्धोषित, -इन् बन्धन, वास्यावस्था (५ से १६ वर्ष तक की आयु) ।
पीड: [पीड + अन्] 1 एक देश का नाम 2 उस देश का राजा, या निवासी 3 एक प्रकार का गन्ना 4 संघ-शायबोधक तिलक 5 भोग के छल का नाम—पीड् दम्भी महाशयल भोगकर्ता बुकावर—अण० १११५ ।
पीडक: [पीड + कन्] 1 गर्ने (हँक) का एक मेट 2 (रस पका कर गुद बनाने वालों की) बर्धनकर भाँति—तु० मनु० १०:४४ ।
पीडिक: [पीड + ठक्] एक प्रकार का गन्ना (हँक) पीघा ।
पीडिकम्: [= पीडिक पुषो०] एक ढोल ।
पीडिकम्: [पीडिक जन्] (पीले रंग का) एक प्रकार का गहवर ।
पीड (वि०) (स्त्री० -नी): [पुनस्यापत्यम् - अन्] पुत्र से प्राप्त या सचक- प्रः पीठा, पुत्र का बेटा,—भी पीठी, पुत्र की बेटे ।
पीडिक्यः: [पुडिका + ठक्] लड़की का पुत्र जो अपने माता का बस बलाये ।
पीनः पुनिक (वि०) (स्त्री० -की): [पुनः पुन + ठन्, टिकोप] बार २ दोहराया गया, बार २ होने वाला ।
पीनः पुन्यम्: [पुन पुन + थ्यम्] बार बार आवृत्त, लघुतर दोहराया जाना ।
पीनस्तन्, पीनस्तन्: [पुनस्तन् + वन्, थ्यन् च]—आवृत्ति,—अतिप्रियाश्रीति पीनस्तन्—अ० २१७, रम्० १२४० 2 आवृत्त, अनावृत्तकदा, निर्यंकदा—अनिव्यस्तायां प्रिकायां किं दीपिका-पीनस्तपेन—विक्रम० ३ ।
पीनस्त (वि०): [पुनर् + अन्] 1. विद्यने इतरे पति

से विवाह कर लिया है ऐसी विधवा से संबध रखने वाला 2 रोहराया हुआ, —व. 1 पुनर्विवाहिता विधवा का पुत्र, प्राचीन हिन्दू-धर्मशास्त्र में स्वीकृत भारत पुत्रों में से एक—याज्ञ० २।१३०, मनु० ३।१५५ 2 स्त्री का दूसरा पति - मनु० १।१७६।

पीर (वि०) (स्त्री०-री) [पुर+अण्] किसी नगर या शहर से संबध रखने वाला—रु घहरी, नगरिक (विण० जालपय) कु० ६।४१ शेष० २७, रघु० २।१०.७४, १२।३, १६।९। मण०—अंधला—योषित् (स्त्री०),—स्त्री नगर में रहने वाली स्त्री,—जालपय (वि०) शहर या नगर से संबध रखने वाला (व ब -शः) नगरिक और ग्रामीण, शहरी और देहाती—कथ दुर्बला पीर जालपय—उत्तर० १,—बृहः प्रमुल नगरिक, उपनगरपाल।

पीरकम् [पीर+कं+क] 1 घर के निकट बगीचा 2 नगर के निकट उद्यान।

पीरहर (वि०) (स्त्री०-री) [पुरहर+अण्] इन्द्र से प्राप्त, इन्द्र सबधी, इन्द्र के लिए पुनीत, रघु ज्येष्ठा नक्षत्र।

पीरध (वि०) (स्त्री०-धी) [पुर+अण्] पुरु के वध में उत्पन्न,—कः पुरु की सन्तान, पुरुवशी—श० ५, 2 भारत के उत्तर में स्थित एक देश तथा उसके नगरिक 3 उस प्रदेश का निवासी या राजा।

पीरधीय (वि०) (स्त्री०-धी) [पीरध+छ] पीरधों का मन्त्र।

पीरस्थ (वि०) [पुरध+त्यक्] 1 पूर्वी—वीरस्थो वा सुवयति मन्त्र साधुसवाहनाभि—मा० १।२५, पीरस्थज्ञामयत् १।१७, रघु० ४।३४ 2 प्रमुल 2 पहला, प्रथम, पूर्ववर्ती।

पीरत्व (वि०) (स्त्री०-गी) [पुराण+अण्] 1 भूत काल का, प्राचीन, अतीत काल का 2 प्राक्कालीन 3 पुराणों से संबध रखने वाला या उनसे प्राप्त।

पीरार्थिक (वि०) (स्त्री०-की) [पुराण+ठक्] 1 भूत काल का, प्राचीन 2 पुराणों से संबध या उनसे प्राप्त 3 अतीत काल के उपासकों का ज्ञाता, क पुराणों का सुविज्ञ ब्राह्मण, पुराणों का पाठक (जनसाधारण में बैठ कर) 2 पुराणविद, पीरार्थिक कथा जानने वाला व्यक्ति।

पीरध (वि०) (स्त्री०-धी) [पुरुध+अण्]। पुरुध सबधी, मानवी 2 गर्दना, पुरुषोक्ति,—कः एक मनुष्य के द्वारा बोये जाने योग्य बोझा, धी स्त्री धम् 1. मानवी कृत्य, मनुष्य का काम, चेष्टा, प्रयत्न—विश्वाम्बुषा पीरधम् मत्तं० २।८८, वैश्व निहृष्य कुच पीरधमालयकचया—वच० १ 2 शौर्य, विक्रम, वीरता, गर्दानी, साहस—वीरधमूषण—रघु० १।५।२८,

८।२८ 3. पुरुषत्व—मण० ७।८ 4. शौर्य, वृक्ष 5. पुरुष की अन्तेन्द्रिय, किञ्च 6. मनुष्य की पुरी ऊँचाई, झुली हुई अगुलियों समेत अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर बितती ऊँचाई तक मनुष्य पहुँचि 7. वृषधरी।

पीरध्वेय (वि०) (स्त्री०-धी) [पुरुध+ध्वञ्] 1. मनुष्य धे प्राण, मनुष्य कृत, मनुष्य द्वारा स्थापित या प्रवर्तित यथा—अपीरध्वेया ई वेदा 2 गर्दना, पुरुषोक्ति 3 आध्यात्मिक,—व 1 मनुष्यत्व 2 मनुष्यों की भीड 3. रोजनकारी पर काम करने वाला श्रमिक, कमेरा 4 मानवी काम, मनुष्य का कार्य।

पीरध्वम् [पुरुध+ध्वञ्] गर्दानी, साहस, शौर्य।
पीरध्वः [पुरोऽग्रेणी नैत्र यस्म पुरोध्+अण्] राज मन्त्र का अधीक्षक, विद्योक्त राजा की रक्षाई का।

पीरोभाष्यम् [पुरोभाषिन्+ध्वञ्, अन्व कोष, कृत्] 1. छिद्रान्वेषण, दोषदर्शन—प्रियोपभोग विज्ञेयु पीरो-भाषयमिवाचरन्—रघु० १२।२२ 2. दुर्वाचना, ईर्ष्या, डाह।

पीरोहियम् [पुरोहित+ध्वञ्] कुलपुरोहित का पद, पुरोहितार्थ।

पीरंमास (वि०) (स्त्री०-सी) [पूर्णमासी+अण्] पूर्णिमा से संबध रखने वाला,—सः अग्निहोत्री द्वारा पूर्णिमा के दिन अन्वष्टित साकार।

पीरंमासी, पीरंसी [पीरंमास+डीप्, पूर्णं+मा+क +अण्+डीप्] पूर्णिमा, पूर्णमासी।

पीरंमास्यम् [पीरंमासी+स्य् बा०] पूर्णिमा के दिन किया जाने वाला यज्ञ।

पीरिमा [पूर्णिमा+अण्+टाप्] पूर्णमासी का दिन।

पीरितिक (वि०) (स्त्री०-की) [पूर्ण+ठक्] पुष्यप्रद वर्माई-कावों से संबध रखने वाला—मनु० ३।१७८, ४।२२७।

पीरं (वि०) (स्त्री०-री) [पूर्ण+अण्] 1 भूतकाल सबधी 2 पूर्ण दिवा से संबध रखने वाला, पूर्णी।

पीरंवे (हे) हिक (वि०) (स्त्री०-की) [पूर्णवेह+ठक्] पूर्वजन्म सबधी, पहले जन्म में किया हुआ, पूर्वजन्म-कृत—मण० ६।४३, याज्ञ० १।३४८।

पीरंवरिक (वि०) (स्त्री०-की) [पूर्णवर+ठक्] समास के प्रथम पद से संबध रखने वाला।

पीरंवरंम् [पूर्णवर+ध्वञ्] 1 पहले का और बाद का संबध, पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती का संबध 2 उचित क्रम, अनुक्रम, सातत्य।

पीरंविहिक (वि०) (स्त्री०-की) [पूर्णविह+ठक्] रोषहर के पूर्वकाल से संबध रखने वाला, मध्याह्न पूर्व सबधी।

पीरंवि (वि०) (स्त्री०-की) [पूर्ण+ठक्] 1 पहला, पूर्वकालीन, पहले का 2 पुरुक 3. पुराण, प्राचीन 4. पीरंमत्स्यः [पुरंमत्से अण्वत्त्वं—पुनर्लिप्त+यञ्] राघव का

विशेषण—वीकल्पः कथनान्वयारूपेणैवोच्यते न विज्ञात-
वान्—पंच० २१५, रघु० ५१८०, १०१५, १२१०२
२ कुबेर का विशेषण ३. विदोषण का विशेषण
४ चन्द्रमा ।

वीकः (वृ०, स्त्री०) वीली (स्त्री०) [वृत् + ण, पोलन
निवृत्तः—वीक + ङञ्, वील + ङीप्] एक प्रकार
की वृत्ति ।

वीलोमी [वृलोमन् + ञच्, वनी लोप, वीलोम + ङीप्]
घड़ी, वृलोमा की घड़ी, इन्द्र की पत्नी—आशीरव्या
न ते युक्ता वीलोम्या सद्यो भव—शं० ७।२८ ।
सन्०—संज्ञकः जपन्त का विशेषण ।

वीधः [वीधी + ञच्] एक चाण्डाल का नाम जिसने चन्द्रमा
पुष्य नक्षत्र में रहता है (दिसम्बर/जनवरी में जाने
वाला मास)।—वी धीध मास में जाने वाली पूर्णिमा,
रघु० १८।३५ ।

वीष्कर-रक, (स्त्री०—री, -की) वृष्कर + ञच्, वीष्कर
+ ङञ्] नील कमल से सजाए रखने वाला ।

वीष्करिणी [वृष्कराणां समूह—वीष्कर + इनि + ङीप्]
कमलों से भरा हुआ सरोवर, सरोवर ।

वीष्कलः [वृष्कल + ञच्] अनाब का एक भेद ।

वीष्कलम् [वृष्कल + व्यञ्ज] १. परिपक्वता, पूर्ण विकास,
वृत्ति वृद्धि २ वाहुल्य ।

वीष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [वृष्टि + ठञ्] १ वृद्धि
करने वाला, फलान्तर कारक २ पोषण करने वाला,
पोषक, पुष्टिकारक, बलवर्धक ।

वीष्कम् [वृषावेवता अस्थ—वृषन् + ञच्, उपचालोप]
रेवती नक्षत्र ।

वीष्य (वि०) (स्त्री०—यी) [वृष्य + ञच्] फूल सबंधी
या फूलों से प्राप्त, पुष्पमय, पुष्पित,—व्यी १ पाटलि-
पुत्र नगर, पटना २ (फूलों से तैयार की गई एक
प्रकार की) छटाब ।

व्याह (अय्य०) [व्याह् + डाटि (वा०)] हो, अहो आदि
अव्यय जो बुलाने या पुकारने के लिए व्यवहृत होते
हैं ।

व्याम् (व्या० वा०)—व्यापते, व्यान या पीन) फूलना,
मोटा होना, बढ़ना—दे० नीचे 'व्ये' ।

व्यामन् [व्याम् + ल्युट्] बर्षन, वृद्धि ।

व्यामिल (वि०) [व्याम् + क्त] १ बर्षित, वृद्धि को प्राप्त
२ जो मोटा हो गया हो ३ विद्यालय, सजावट किया
हुवा ।

व्ये (व्या० वा०)—व्यापते, पीन) १ बढ़ना, वृद्धि को
प्राप्त होना, मोटा होना—मौ० १।३३ २ वृष्कल
होना, समृद्ध—मै०० व्यापयति-ते १ बढ़ाना २ बसा
करना, मोटा बनाना सुधी करना—भयु० १।३१५
२ तुष्य करना, इच्छानुसार सन्तुष्ट करना ।

व्र (अय्य०) [वृ + ङ] १. वातुओं के पूर्ण उपलव्य के रूप
में लग कर इतका अर्थ है—'आगे' 'आगे का' 'सामने'
'आगे की ओर' 'पहले' 'पूर' यथा प्रथम, प्रस्था,
प्रचर, प्रया आदि २ विशेषणों के पूर्ण लग कर इतका
अर्थ है—'बहुत' 'बहुत अधिक' 'अत्यंत' आदि—
प्रकृष्ट, प्रमत्त आदि, दे० आगे ३. समाचो (चाहे
वातुओं में बने हो) के पूर्ण लग कर वच० के अनुसार
इसके निम्नांकित अर्थ होते हैं— (क) जारय, उपक्रम
यथा प्रयाणम्, प्रस्थानम् प्राङ् (ख) सम्भार्ई यथा
प्रवालमूषिक (ग) शक्ति यथा प्रभु (घ) तीव्रता,
आधिक्य यथा प्रवाद, प्रकथं, प्रब्रजय, प्रपुष (ङ) श्रोत
या मूल यथा प्रभव, प्रवीच (च) पुति, पूर्णता, तुष्टि
यथा प्रभूक्तमप्रभु (छ) अभाव, विबोग, अनतिस्तव
यथा प्रोक्षिता, प्रपणं वृक्ष (ज) अतिरिक्त यथा प्रभु
(झ) श्रेष्ठता यथा प्राधान्यं (ञ) पवित्रता यथा
प्रसन्न जलम् (ट) सम्मान आदर यथा प्राक्षिन् (ठ) विराम
यथा प्रशम (ड) सम्मान आदर यथा प्राक्षिन् (ङी) सादर हाथ जोड़ता है (ड) प्रयुक्तता यथा प्रणस,
प्रवाल ।

प्रकट (वि०) [प्र + कट् + ञच्] १ स्पष्ट, साफ, जाहिर,
प्रतीयमान, प्रखर २ बेपरदा, खुला हुआ ३ दृश्यमान,
—इम् (अय्य०) साफ तौर से, प्रत्यक्षत, सार्वजनिक
रूप से, स्पष्ट रूप से (प्रकटी कृत व्यक्त करना, खोलना,
प्रदर्शन करना, प्रकटी भू व्यक्त होना, जाहिर होना) ।
सम०—प्रोक्षिष्यथैः शिव का विशेषण ।

प्रकटम् [प्र + कट् + ल्युट्] व्यक्त होने की क्रिया,
खोलना, उघाड़ देना ।

प्रकटित (भू० क० कृ०) [प्रकट् + क्त] १ व्यक्त, प्रदर्शित,
अनापत् २ सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित ३ जाहिर ।

प्रक्षोषः [प्र + क्षम् + षञ्] काचना, हिलाना, बरषराना,
प्रचद बरषरी या (भूकम्प के) बबके - बाला चाह
मनसिजवशात् प्राप्तगात्रप्रकषा—नुमा०, सधिर-
प्रकषम्—शि० १३।५२ ।

प्रकम्पन (वि०) [प्र + कम्प + ल्युट्] हिलाने वाला,—नः
१ हुआ, प्रचद वायु, माथी का हिलका—प्रकम्पनेनानु-
चक्रिरे सुरा—शि० १।६१, १।४५३ २ नरक का
नाम,—नम् अत्यधिक या प्रचद कपकरी, बोरदार
बरषरी ।

प्रकरः [प्र + कृ (कृ + ञच्) डेर, समृद्धय, माथा, सवह
—मुक्ताफलप्रकरमात्रि गुहागुहाणि—शि० ५।१२,
भाष्यप्रकर कलशा वृष्टिम्—शं० ६।८, रघु० १।५६,
कृ० ५।६८ २ गुलदस्ता, पुष्पचय ३ मन्द, सहायता,
मित्रता ४ रिवाज, प्रचलन ५. आदर ६ स्तौत्यहण,
जपहरण,—रघु अंगर की लकड़ी ।

प्रकरषम् [प्र + ष + ल्युट्] १ निकषण करना, व्याख्या

करता, विचारविमर्श करता 2 विषय, प्रसंग, विभाग, (विषय का) विषय—कृतयत्प्रकरणमाश्रित्य—श० १ 3 अनुभाग, पाठ, परिच्छेद आदि किसी कृति का छोटा प्रभाग 4 मौका, अवसर 5 मासिक, बात 6 प्रस्तावना, आमुख 7 नाटक का एक भेद जिसकी कथाबस्तु कृत्रिम हो—जैसा कि मूच्छकटिक, मालती-माधव, पुण्यभूति आदि । सा० ६० कार द्वारा दी गई परिभाषा—भवेत्प्रकरणे वृत्त औक्तिक कविकल्पितम्, भृगुरोशो नामकस्तु विप्रोऽपारोऽपवा बणिक, सापायधर्मकामार्थं परो धीरप्रसातक ५११।

प्रकरणिका, प्रकरणौ [प्रकरणौ+कन्+टाप्, ह्रस्व, प्रकरण+क्रीप्] एक नाटक को प्रकरण के जगणो से ही मुक्त हो । सा० ६० कार उस परिभाषा इस प्रकार करता है—नाटिकेन प्रकरणिका सायंभाहा-विनायिका, समानव्यञ्जा नेतुर्नबोधन च नायिका ५५४।

प्रकारिका [प्रकरी+कन्+टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार का विष्कम्भ या उपकथा जो नाटक में आगे वाली घटना को बतलाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय ।

प्रकरी [प्रकर+क्रीप्] एक प्रकार का विष्कम्भ या उपकथा जो नाटक में आगे आने वाली घटना को बतलाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय 2 नेटो की पीठाक 3 रगस्वली 4 चौगहा 5 एक प्रकार का गीत ।

प्रकवेः [प्र+कृप्+पञ्च] 1 श्रेष्ठता, प्रमुञ्जता, सर्वोपरिता—चतुः प्रकृपदिवयव्युक्त रयु—रयु० ३३२४, वर्ष प्रकयं सति—कृ० ३१२८ 2 तीव्रता, प्रबलता, आधिक्य—प्रकयतेन शोकसतानेन—उत्तर० ३ 3 मायध्यं, दक्षिण 4 निरपेक्षता 5 लम्बाई, विस्तार प्र कवेण प्रकवति किया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'अत्यत' 'अधिकता के साथ' या 'उत्कृष्टता के साथ' अर्थ प्रकट करते हैं ।

प्रकवेनम् [प्र+कृप्+न्युट्] 1 खीचने की क्रिया, आकर्षण 2 हल चलाना 3 अर्थात्, लम्बाई, विस्तार 4 श्रेष्ठता, सर्वोपरिता 5 ध्यान हटाना ।

प्रकला [प्र० स०] अपत्य सूक्ष्म अक्ष ।
प्रकल्पना [प्र+कल्प्+णिप्+युक्+टाप्] स्थिर करना, निश्चयन, नियत करना—मनु० ८१२११ ।

प्रकल्पित (यू० क० कृ०) [प्र+कल्प्+णिप्+क्त] 1 बनाया हुआ, कृत, निर्मित 2 नियत किया हुआ, नियत किया हुआ,—ता एक प्रकार की पहेली ।

प्रकाश,—डम् [प्रकृष्ट काश—प्रा० स०] 1 वृक्ष का तना जड़ से शाखाओं तक—शि० १५५ 2 शाखा, किसलय 3 (समास के अन्त में) कोई भी श्रेष्ठ या प्रमुख प्रकार का पदार्थ—ऋषप्रकाशद्वितयेन तस्या—नै० ७१२ 3 क्षय प्रकाश—महाभौ० ४३२५ ५४८ 4 भुजा का ऊपरी भाग ।

प्रकाशकः [प्रकाश+कन्] दे० 'प्रकाश' ।

प्रकाशकः [प्रकाश+क+क] वृक्ष, पेड़ ।

प्रकाश (वि०) [प्रा० स०] 1 भृगुराश्रिय 2 अत्यन्त, अति, भवभर कर, सान्त्व—प्रकाश विस्तर—रयु० २१११, प्रकाशा लोनीयताम् कु० २१२४,—मः इच्छा, आनन्द, संतोष—अयु (अव्य०) 1 अत्यधिक, अत्यत—जाली मयाय विवाद प्रकामम् (अन्तरात्मा), श० ५१२१, रयु० ६१५४, मूच्छ० ५१कम् 2 पर्याप्तप से, मन भर कर, इच्छानुकूल 3 स्नेहपूर्वक, मन से । सम०—अयु (वि०) जबा कर लाने वाला, मन भर कर लाने वाला—रयु० ११६९ ।

प्रकाशः [प्र+कृ+पञ्च] 1 डग, रीति, तरीका, शैली—क प्रकाशः कियेत्—शा० ५१२० 2 किम, विन्ध, भेद, बाति (श्राय समास में प्रयुक्त) बहुप्रकार विविध प्रकार का, विप्रकार, नाना आदि 3 समरूपता 4 विशेषता, विशिष्ट गुण ।

प्रकाश (वि०) [प्र+काश्+अच्] 1 चमकीला, चमकने वाला, उज्ज्वल—प्रकाशकाप्रकाशच लोकालोक इषाचल—रयु० ११६८, ५१२ 2 साफ, स्पष्ट, प्रखल—वि० १२५६, भग० ७१२५ 3 विशद, प्राखल—कि० १५४ 4 विख्यात, विभूत, प्रसिद्ध, माना हुआ—रयु० ३१५८ 5 बुला, सावधानिक 6. युद्धादि काट कर साफ किया हुआ स्थान, खुली जगह—रयु० ४३१ 7 जिला हुआ, विस्तारित 8 (समास के अन्त में) (के) समान दिखाई देने वाला, समृद्ध, मिलता-जुलता,—शः 1 दीपि, कान्ति, आभा, उज्ज्वलता 2 (आल०) प्रकाशन, स्पष्टीकरण, व्याख्या करना (श्राय पुस्तकों के नामों के अन्त में) काव्य प्रकाश, भाव प्रकाश, तर्क प्रकाश आदि 3 रूप 4 प्रदर्शन, स्पष्टीकरण—वि० १५५ 5 कीर्ति, स्वाति, प्रसिद्ध, बख 6. विस्तार, प्रसार 7 खुली जगह, खुली हवा—प्रकाश निर्वोऽलोकयति—शा० ५४ सुनहरी शीशा 9. (पुस्तक का) अध्याय, परिच्छेद या अनुभाग—अयु (अव्य०) 1 बुले रूप से, सार्वजनिक रूप से—प्रतिप्रदीपितो यस्तु प्रकाश धनिनो धनम्—याज्ञ० २५६, मनु० ८११३ ११२८ 2 ऊँच हवर से, प्रकट होकर, (रमयच के अनुदेश के रूप में नाटकों में प्रयुक्त—वि० आत्मगतम्) । सम०—आत्मक (वि०) चमकीला, उजला,—आत्मन् (वि०) उज्ज्वल, चमकदार (यू०) शिव का विशेषण 2 सूर्य—द्वार (वि०) जो दिखाई न दे, अदृश्य,—कमः कुलमकुला करीदना,—नारी वाराणा, दही, वेध्या—अलं चतुःशाल मित्र प्रवेश्य प्रकाशनारीभूत एव यस्मात्—मूच्छ० ३१७ ।

प्रकाशक (वि०) (स्त्री)—शिका [प्र+काश्+णिच्

बन्तु] 1 प्रकट करने वाला, सोजने वाला, उधाड़ने वाला, भूषित करने वाला, बतलाने वाला, प्रदर्शित करने वाला 2 अभिव्यक्त करने वाला, संकेत करने वाला 3 ब्याख्या करने वाला 4 उजला, चमकीला, उज्ज्वल 5 माना हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात.—क 1 सुयं 2 मोबी 3. प्रकाशित करने वाला । सम०—ब्रह्म (पु०) मुर्धा ।

प्रकाशन (वि०) [प्र+काश्+णिच्+ल्यट्] रोखनी करने वाला, विख्यात करने वाला,—न्म् 1 जनलाना, प्रकट करना, प्रकाश में लाना, उधाड़ना 2 प्रदर्शन, स्पष्टीकरण 3. रोखनी करना, चमकीला, उजला करना,—नः विष्णु ।

प्रकाशित (मू० क० ङ०) [प्र+काश्+णिच्+क्त] 1 प्रकट किया गया, स्पष्ट किया गया, प्रदर्शित, प्रकटीकृत 2 छाया गया—प्रशोतो न तु प्रकाशित—उत्तर० ५ 3. रोखन किया गया, चमकीला गया, ज्योतिर्मान किया गया 4 जो दिखलाई दे, दृश्य, स्पष्ट, प्रकट ।

प्रकाशित् (वि०) [प्रकाश+इनि] साफ, उजला, चमकीला आदि ।

प्रकिरणम् [प्र+ङ+ल्यट्] इधर उधर बिखेरना, छितराना ।

प्रकीर्ण (मू० क० ङ०) [प्र+ङ+क्त] 1 इधर उधर बिखरा हुआ, छितराया हुआ, बिखारा हुआ, तितर तितर किया हुआ—प्रकीर्णः पुष्पाणा हरिचरणयोरञ्जलरियम् वेधी० १११ 2. फैलाया हुआ, प्रकाशित, उड़ोपित 3 लहराया हुआ—लहराता हुआ—सि० १२११७ 4 विपर्यस्त, विपुल, अस्तव्यस्त 5 अन्व-विक्षित, असन्न—बहुपि स्वेच्छ्या काम प्रकीर्णमधि-धोयते—सि० २१६३ 6 धुम्ब, उरोजित 7 विविध, मिश्रित जैसा कि मृत्काम्य का प्रकीर्णकाट,—धम् 1 नाना-सग्रह, फूटकर सग्रह 2 फूटकर नियमों के सग्रह का एक अध्याय ।

प्रकीर्णक (वि०) [प्रकीर्ण+कन्] इधर उधर बिखरे हुए, छिदरे हुए, क, कम् चकर, मोरछल सि० १२११७, कः घोषा,—कम् 1 नाना सग्रह, फूटकर बस्तुओं का सग्रह 2 विविध विषयों का अध्याय ।

प्रकीर्तनम् [प्र+ङ+ल्यट्] 1 उदोषण, बोधना 2 प्रशंसा करना, स्तुति करना, स्तना करना ।

प्रकीर्ति (स्त्री०) [शा० सं०] 1 प्रसिद्धि, प्रशंसा 2 वय, स्वाति 3 बोधना ।

प्रकृ: [प्र+कृञ्+धन्] कारिता का विशेष भाग ।

प्रकृति (मू० क० ङ०) [प्र+कृप्+क्त] 1 अतिशुद्ध, बोधायित्, कष्ट 2 उत्तमि ।

प्रकृतम् [प्र+कृञ्+क] सुन्दर शरीर, सुवील काया ।

प्रकृत्यो [शा० व० स्त्री] दुर्गा का विशेषण ।

प्रकृत (मू० क० ङ०) [प्र+कृ+क्त] 1 निष्पन्न, पूरा किया हुआ 2 आरम्भ किया हुआ, शुरु किया हुआ 3 निष्पन्न किया हुआ, जिसे कार्य भार सेनाका जा चुका 4 असली, वास्तविक 5 चर्चा का विषय, विचारणीय विषय, प्रस्तुत विषय (अलकारयथो में 'उपमेय' के लिए बहुधा प्रयुक्त) सनातनमयीप्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् काव्य० १० 6 महत्त्वपूर्ण, मनोरञ्जक,—त्म् मूलविषय, प्रस्तुत विषय, यातु किमनेन प्रकृतमेव अनुसंगम् । सम०—अर्थ (वि०) मूल अर्थ को रखने वाला (—र्थः) मूल अर्थ ।

प्रकृतिः (स्त्री०) [प्र+कृ+क्तिन्] 1 किसी वस्तु की नैसर्गिक स्थिति, ाया, जड़जगत्, स्वाभाविक रूप (विष० विकृति जो या तो परिवर्तन है या कार्य) प्रकृत्या यद्दकम्—सा० ११९, उष्णत्वमन्थापसप्रयोषात् शैत्यं हि यस्ता प्रकृतिर्वलस्य—रघु० ५/१५४, मरण प्रकृति शरीरिणा विकृतिर्वीर्यवितमम्यते बृष—रघु० ८/८७, जेर्गेहि दे अन्नभक्षान् प्रकृतिमापन्न—सा० २, (उन्होंने फिर अपना सामान्य स्वभाव धारण कर लिया है) प्रकृतिमापद्, प्रकृतिप्रतिपद्, प्रकृतौ स्था हांस में आना, अपना बौतन्व फिर प्राप्न करना 2 नैसर्गिक स्वभाव, मिजाज, स्वभाव, जात, (मान-सिक) रचना, वृत्ति—प्रकृतिरूपण, प्रकृतिशिष्टि—दे० नो० 3 बनाबट, रूप, आकृति—महानुभावप्रकृति—मा० १ 4 वतानुकम्, वतपरराज—मृच्छ० ७

5 मूल, स्रोत, मौलिक या भौतिक कारण, उपादान-कारण—प्रकृतिर्चोपादानकारणं च बहुधाभ्युपन्यतव्यम् मारी० (ब्रह्म० १/५१० ५२ की गई चर्चा का पूरा विवरण देखिये) यामाहु मूलमृतप्रकृतिरिति—सा० १११ 6 (साम्य० में) प्रकृति (पुरुष से विशिष्ट) = भौतिक मृष्टि का मूलस्रोत जिसमें तीन (सत्त्व, रज्ज् और तमस्) प्रधान गुण सन्निविष्ट हैं 7 (आ० में०) मूलधातु या मूळ (भौतिक) जिसमें लकार और कारको के प्रत्यय लगाए जाते हैं 8 आरम्भ, नम्ना, मानक (विशेषण कर्मकाष्ठ की पुस्तकी में 9 स्त्री 10 मृष्टि रचना में परमात्मा की मूर्त इच्छा (इसी को 'माता' या मरीचिका कहते हैं) ब्रह्म० १। १० 11 स्त्री या पुरुष की जननेन्द्रिय, योनि, लिङ्ग 12 माता, (ब० ब०) 1 राजा के मन्त्री, मन्त्रिपरिषद्, मन्त्रालय—रघु० १२/१२, पञ्च० १/५८, ३०१ 2 (राजा की) प्रजा—प्रवर्तता प्रकृतिहिताय पाषिच—सा० ७/२५, नृपति प्रकृतीरर्थैस्त्रियुम् रघु० ८। १८, १० 3 राज्य के सन्धिधारी शासक तथा अथ अर्थात् १ राजा २ मन्त्री ३. मित्रराष्ट्र ४ को व ५ सेना, ६ प्रदेश ७ गड आदि ८ नगरपालिका या नियम (यह भी कभी-कभी उपर्युक्त सत्तों के साथ

जोड़ दिया जाता है) —स्वाभाव्यात्ययसुहृत्कीसरापु-
दुर्गबलानि च -अस्य 4 अनेक प्रभु जो युद्ध के समय
विचारणाए होते हैं (पूरे विवरण के लिए दे० मनु०
७।५५, और १५७ पर कुल्लू०) 5 आठ प्रधान
तन्त्र जिनसे साम्यात्मियों के अनुसार प्रत्येक वस्तु
उत्पन्न होती है, दे० मा० का० ३ 6 सृष्टि के पांच
प्रधान तन्त्र, पंच महाभूत अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि,
वायु और आकाश । सम० इति. राजा या दण्डा-
धिकारी, -कृपण (वि०) स्वभाव से मुन्य, या धिक्कहीन
- मेघ० ५, - बरल (वि०) चकल स्वभाव का,
असंगत, बेधेन. - अक्षर २७, -पुष्प. म-मी. (राज्य का)
कार्य निर्वहक -मेघ० ९, - मङ्गलम् ममलत प्रदेश या
राजधानी - स्प० १।२, - लयः प्रकृति में सम्य आना,
विवचन का विघटन, सिद्ध (वि०) अल्पजानि, सहज,
नैसर्गिक अर्थ० २।२०, सुभय (वि०) स्वभाव से
त्रिद, हृदिकर, स्व (वि०) 1 प्राकृतिक अवस्था
में होने वाला, स्वाभाविक अवस्था 2 प्रवर्द्धित, सहज,
प्रकृति के अनुरूप स्प० ८।२१ ३ स्वस्थ, तन्दुरुस्त
4 जिनसे शरीरद शान्त कर लिया हो 5 स्वस्थ,
आयुष्मन् 6 विराम, गंगा ।

प्रकृत (म० क० क०) [प्र + कृत् + क्त] 1 बीचकर
निष्ठा हुआ 2 मुद्राएँ, लबा, अनिश्चित 3 सर्वो-
त्तम, पूज्य, श्रेष्ठ प्रभुत्व, गौरववाली 4 मुख्य, प्रधान
5 विशाल, अद्यात ।

प्रकल्प (म० क० क०) [प्र + कल्प् + क्त] तैयार किया
हुआ, मञ्जरीकृत व्यवस्थित ।

प्रकोष [प्र + कुष् + पञ्] सहाय, बंदूक ।

प्रकोष्ठ [प्र + कुष् + स्थ] 1 काठनी म नीचे की भूजा,
गट्टे से ऊपर का टाक-चामप्रकोष्ठपितृहेमवेच -कु०
२।६१ वनकवचव्यभंगिनिकप्रकोष्ठ मेघ० २,
स्प० २।५९ वा. ५।६ 2 फाटक के निकट का
कमरा मटा० १ ३ पर वा अंगण (चारी और
मकानों में विद्यमान) चौकोर या वर्गाकार आगम
इस प्रथम प्रकार प्रविशान्तर्य -आदि-म०७० ४ ।
प्रकोष्ठक [प्रकोष्ठ + क्व] फाटक के गाम का कमरा
नद्विनिवर्द्धितिलासकुले नद्वद्वन्द्वद्वन्द्वदि प्रको-
ष्ठक -कु० १।५६ ।

प्रकथ [प्र + कथ् + क्त] 1 हाथी या घोड़े की रक्षा
के लिए कवच 2 कुना 3 गन्धर ।

प्रकम् [प्र + कम् + पञ्] 1 पय, कदम 2 दूरी मापने
हा गज, पय का अन्तर (लगभग ३० इंच 3 आरम,
शुक्र 4 प्रयमन, मार्ग मा० ५।२४ 5 प्रस्तुत बात
6 अवकाश, अवसर 7 नियमितता, क्रम, प्रणाली
8 मात्रा, अनुपात, माप । सम०- अन्तः नियमितता
और सममिति का अभाव, क्रम का टूट जाना, रचना
११

का एक दोष (काव्य० ७ में उचित 'मन्म-प्रकमता'
यही है, सममिति या समक्यता का अभाव चाहे यह
अभिव्यक्ति में हो चाहे रचना में—नामो निशाया
नियतेनियोगादस्त एते ह्येत् निशापि वाता—यह अभि-
व्यक्ति की समक्यता के अभाव का उदाहरण है, यहाँ
'यता निशापि' ने अभिव्यक्ति की अनियमितता को
शान्त कर दिया है,—विश्वम् कियता वराहृत्तिनि-
र्मुत्ताश्रति पत्नके—रचना की अनियमितता का
उदाहरण है, यहाँ कविता की समक्यता को स्थिर
रखने के लिए कर्मवाच्य के बजाय कर्मवाच्य रचना
की आवश्यकता है, इसी पंक्ति को बदलकर 'विद्यम्वा
रचयतु शुकरवरा मन्ताश्रति पत्नके' पढ़ने से दोष का
परिहार हो जाता है—अधिक विवरण के लिए दे०
काव्य ७ 'मन्म-प्रकमता' के नीचे ।

प्रकान्त (म० क० क०) [प्र + कम् + क्त] 1 आरम
किया गया, शुरू किया गया 2 गत, प्रयात 3 प्रस्तुत,
विचारप्रस्त 4 बहादुर ।

प्रकीर्षा [प्र + कृ + क्त + टाप्] 1. रीति, प्रणाली, पद्धति
2. कर्मकांड, मस्कर 3 राजचिह्न का धारण करना
4 उच्च पद, समुपति 5 (किसी पुस्तक का) एक
अध्याय वा अनुभाग—यथा उपादिप्रकीर्षा 6 (म्या०
में) व्यत्ययितव्य रूपनिर्माण 7 प्राधिकार ।

प्रकीड [प्र + कीड् + अच्] कीडा, मनोरंजन, खेल या
आमोद-प्रमोद ।

प्रकिलत्र (म० क० क०) [प्र + किलद् + क्त] 1 तर,
नमी वाला, घोला 2 तुण्ड 3 दया से पसीजा हुआ ।

प्रक्वच, प्रक्वच. [प्र + क्वच् + अच्, घञ्, च] बोधा
की अन्तकार ।

प्रक्षय [प्र + क्षि + अच्] नाश, बरबादी ।

प्रक्षर दे० प्रक्षर ।

प्रक्षरवम् [प्र + क्षर् + इप् + क्त] मन्त्र २ उचित होना
निसना ।

प्रक्षालनम् [प्र + क्षल् + क्विप् + इप् + क्त] 1 धोना, धो
डालना—स्प० ६।४८ 2 मात्राना, माफ करना, स्वच्छ
करना 5 धोने के लिए पानी ।

प्रक्षालित (म० क० क०) [प्र + क्षल् + क्विप् + क्त]
1 धोया गया, मात्रा गया 2 स्वच्छ किया गया
3 जिसने प्रायश्चित्त कर लिया है ।

प्रक्षिप्त (म० क० क०) [प्र + क्षिप् + क्त] 1 फेंका
गया, डाला गया, उछाला गया 2 डाला गया मा०
५।२० 3 निकला हुआ 4 बीच में डाला गया,
नकलो या खोटा यथा 'प्रक्षिप्तोऽयं श्लोकः' में ।

प्रक्षीक (म० क० क०) [प्र + क्षि + क्त] 1 यहाँवा
हुआ, दुबला होने वाला 2 नष्ट किया हुआ 3 जिसने
प्रायश्चित्त कर लिया है 4 लुप्त, अशक्त ।

प्रमुख (मू० क० कू०) [प्र + मुख् + क्त] 1 कुचला हुआ 2. बारबार बेदा हुआ 3. उतेजित किया हुआ ।
 प्रसन्न [प्र + सिन् + घञ्] 1 आगे फेंकना, उभारना फेंकना, डालना 3 बहाहरना 4. लोट घसाना, बूँध में मिलाना 5. गाड़ी का बन्स 6 किसी व्यापारिक सभ के प्रत्येक सदस्य द्वारा बसा की गई धनराशि ।
 प्रसन्नचम् [प्र + सिन् + गिच् + ल्युट्] फेंकना, डालना, उछालना ।
 प्रसन्नचम् [प्र + सुन् + ल्युट्] उतेजना, लोभ ।
 प्रसन्नचम् [प्र + शिव् + ल्युट्] लोहे का तीर 2 हल्ला-गुल्ला, हड़बडी ।
 प्रसन्नचित्त (वि०) [प्र + शिव् + गिच् + क्त] मूखर, शीत्कार से पूर्ण, कोलाहलमय ।
 प्रसन्न (वि०) [प्रकृष्ट + च् + प्रा० सं०] 1 अत्यन्त गरम - यथा प्रसन्नकरण 2. तेज गन्धयुक्त, तीक्ष्ण 3 अत्यन्त कठोर, कसा, - श् + दे० 'प्रसन्नर' ।
 प्रसन्न (वि०) [प्र + स्या + क्] 1 साक, प्रत्यक्ष, स्पष्ट 2 (के समान) दिखाई देने वाला, मिलता-जुलता (समाप्त के अन्त में प्रयुक्त) अमृत^०, गशाक^० आदि ।
 प्रसन्ना [प्र + स्या + अञ् + टाप्] 1 प्रत्यक्षनेयता, दृश्यता 2 विश्रुति, यश, प्रसिद्धि—न्यस्यगर्भप्रसन्न सप्रत्येक पुरीमिभाम्—रामा० 3 उल्लासना 4 समरूपता, समानता (समाप्त में)—यास० ११० ।
 प्रसन्नात् (मू० क० कू०) [प्र + स्या + क्त] 1 यशहर, प्रसिद्ध, विश्रुत माना हुआ 2 पहले में मोल लिया हुआ, पूर्वक्याधिकार केवल पर अल्पवित्त 3 मूज, प्रसन्न । सम० - बन्धुक् (वि०) प्रसिद्ध पिता वाला ।
 प्रसन्नाति (स्त्री०) [प्र + स्या + क्तिन्] 1 कीर्ति, विभूति, प्रसिद्धि 2 प्रसादा, स्तुति ।
 प्रसन्नः [प्रकृष्ट नदी वस्त्र प्रा० ब०] कोहनी से ऊपर कंधे तक की मूजा ।
 प्रसन्नी [प्रसन्न + स्त्रीच्] (नगर का) परकोटा, बाहरी दीवाल ।
 प्रसन्न (मू० क० कू०) [प्र + गम् + क्त] 1 आगे गया हुआ 2 पृथक्, अलग । सम० - आम्, आलुक् (वि०) धनुष्यदी, घुटने पर मूडी हुई टापी वाला ।
 प्रसन्नः [प्र + गम् + अच्] प्रेम की आराधना में प्रथम प्रगति, प्रेम की प्रथम अभिव्यक्ति ।
 प्रसन्नचम् [प्र + गम् + ल्युट्] 1 आगे बढ़ना, प्रगति 2 प्रेम की आराधना में पहला कदम, दे० ऊ० 'प्रसन्न' ।
 प्रसन्नचम् [प्र + गम् + ल्युट्] बहादुरता, जिवाहता, गरजना ।
 प्रसन्न (वि०) [प्र + गम् + अच्] 1 साहसी, भरोसा करने वाला 2 हिम्मतो, बहादुर, नि शक, उत्साही, साहसी, -रूप० २।४१ 3 बाम्पी, बाकपटु—रूप०

६।२० 4 हाजिर जवाब, मुग़नेद 5 दृढ़ सकल्यी, ऊर्ध्वस्वी 6 (आय की दृष्टि से) परिपक्व, कु० १। ५।१ 7 परिपक्व, विकसित, पूरा बड़ा हुआ, बलवान् प्रगल्भवाक्—कु० ५।३०, (प्रोडवाक्) मा० ९।२९, उत्तर० ६।२५ 8 कुशल फा० १० 9 बेधड़क, उद्वल, धमकी, उपकारयोग्य 10 निर्लेख्य, ठीठ—रूप० १३।९ 11 गौरवशाली प्रसन्न, -रत्ना 1 साहसी स्त्री 2 कर्नाडा, क्षयशालू स्त्री 3 उद्वल या प्रोड् स्त्री, काव्यनाटक की नायिकों में में एक । सब प्रकार के लाक्षप्यार व चूमा-चाटी में धनुर् अथे दर्जे के व्यवहार से युक्त, शालीनता-सम्पन्न, गँध जायु की तथा अपने पति पर शासन करने वाली—मा० द० १०१ तथा तत्संबन्धी उदाहरण ।

प्रसन्न (मू० क० कू०) [प्र + गाह् + क्त] 1 हुयोया हुआ, तर किया हुआ, भिमोया हुआ 2 प्रति, अत्यधिक, तीव्र 3 दृढ़, मजबूत 4 कठोर, कठिन, - ह्व् 1 कगाली 2 तपस्या, शारीरिक, कष्ट, हम् (अव्य०) 1 अत्यधिक, अत्यन्त 2 दृढतापूर्वक ।

प्रसन्न (प०) [प्र + गै + लृच्] उत्तम गाने वाला ।
 प्रसन्न (वि०) [प्रकथेण गुणो यश प्रा० य०] 1 सीधा, ईमानदार, नग्रा, (आत्म० आ० से) बहि सर्वाकारप्रगुणरमणीय व्यवहारम् मा० १।१४ 2 सुसाक्षात्सम्पन्न, उत्तम गुणों में युक्त धनव्ययात्प्रगुणा, व कराल्यमो तनुमान्द्रुतसर्वसर्वेयमो रूप० ९।४९ 3 (क) योग्य, उपयुक्त, गुणी मा० १।१६ (ख) प्रवीण -९।४५ 4 कुशल, चतुर (प्रसुम्भी कू 1 सीधा करना, क्रम में रखना, व्यवस्थित करना 2 चिकना करना 3 पालन-पोषण करना, परवरिश करना) ।

प्रसुगित (वि०) [प्र + सुग् + क्त] 1 सीधा या समतल किया हुआ 2 चिकना किया हुआ ।

प्रसुहीत (मू० क० कू०) [प्र + प्रह् + क्त] 1 धामा हुआ, मन्त्राला हुआ 2 प्राप्त, स्वीकृत 3 सधि के नियमों की अधीनता का अभाव, दे० नीचे 'प्रगुह' ।
 प्रसुह्यम् [प्र + प्रह् + क्वप्] सधि के नियमों से मुक्त स्वर जो स्वतंत्र रूप में बोला या लिखा जाय 'ईदृदे-द्विचक्र प्रगुह्यम्' पा० १।१।११ ।

प्रसु (अव्य०) [प्रकथेण नीयतेऽय - प्र + गै - के] मोर होने ही, पी फटते ही इत्य रथात्वेभनिष्ठादिना प्रगे गुणो नृपमानव्य शौरणाद् बहि -वि० १२।१, साय स्नायात्प्रगे तथा—मनु० ६।९, ४।६२ । सम० तप (वि०) प्राप्त काल, अनुष्येय कर्म,—निष्ठा,—शाय (वि०) जो दिन निकल जाने पर भी सोय, पशाई ।

प्रसोधनम् [प्र + सुप् + ल्युट्] रक्षण, सधारण ।
 प्रसोधनम् [प्र + सुप् + ल्युट्] नदी करना, गूथना, बुनना ।

प्रहृ [प्र + हृ + अच्] 1 फीलाना, धामना 2 पकड़ना, लेना, प्रहृण करना, हृषिवार लेना 3 ग्रहण का आरम्भ 4 रास, लगाम - धना प्रहृहा अवलम्बाग्रहमान् - श० १, शि० १२।११ 5 रोक धाम, पाबन्दी 6. वधन, बंद 7 कौटी, बन्दी 8 पालना, (कुने आदि जानवर को) सधाना, 9 प्रकाश की किण्व 10 नराजु की होरी 11 मधि के नियमी से मुक्त स्वर, दे० 'प्रनुह'।

प्रहृणम् [प्र + हृ + ल्यट्] 1 लेना, पकड़ना, धरना 2 ग्रहण का आरम्भ 3 रास, लगाम 4 रोक धाम, पाबन्दी।

प्रहृह् [प्र + हृ + घञ्] 1 पकड़ना, लेना 2 ले जाना, डोना 3 तराजु की होरी 4 रास, लगाम।

प्रधीष, धम् [प्रकृष्टा प्रीषा यस्य - प्रा० ङ०] 1 रगी हुई बर्षी 2 किसी मकान के चारों ओर लकड़ी की बाड़ 3 तबेला 4 बल की चोटी।

प्रधृक [प्र + धृ + णिच् + ष्वल्] नियम, सिद्धान्त, विधि (आदेश)।

प्रधृटा [प्रा० म०] किसी विज्ञान के आरम्भिक सिद्धान्त या मूलनियम। म० - विद् (पु०) ऊपर ऊपर का पाठ करने वाला पल्लवग्रहो।

प्रध्व (न) प्रधाय (न) [प्र + हृ + अच् पसेव्दि, नत्वाभावरश्च] 1 भवन के द्वार के सामने बनी इचाड़ी पीली, 2 ताय का बतन 3 लोहे की सदा या धन (नोहरदण्ड)।

प्रध्व (वि०) [प्र + अच् + शप् धरादेश] आज, पेटू - स 1 रासस साज्जना, पेटून।

प्रधातः [प्र + हृ + घञ्] 1 हृया 2 सधर्म, युद्ध। प्रधुन [प्र + धृ + क] अतिथि (पाठान्तर - प्राधुन, या प्राधुर्म)।

प्रधुर्भे [प्र + धृ + अच्] अतिथि - दे० 'प्राधुर्भे'।

प्रधीष [प्र + धृ + घञ्] 1 घोर, शब्द, कोलाहल 2 हृगामा, होहल्ला।

प्रधृक् [प्रगतश्चक्रम - प्रा० म०] कृष करने वाली सेना, प्रयाणोन्मुख फौज।

प्रधृक् (पु०) [प्र० + चक्ष् + अच्] 1 बहुस्पति ग्रह 2 बहुस्पति का विशेषण।

प्रध्वं (वि०) [प्रकर्म्य चण्ड - प्रा० श०] 1 उत्कट, अत्यन्त तीव्र, उग्र 2 मद्युक्त, मत्तिलशास्त्री, भीषण 3 अत्युष्ण, दम धोटने वाली (यमी) 4 क्रुद्ध, कोपा-विष्ट 5 साहसी, बरोमा करने वाला 6 भयकर, भयावह 7 अमहियु, अमह्य। म० - आशयः भीषण गमी, - बोध (वि०) लकी नाक वाला, - धूर्त् (वि०) उच्च या उल्लेह हुए सूर्य वाला - चतु० १।१, १०।

प्रध्व (वा) य [प्र + धि + अच्, घञ्, थ] 1 सग्रह

करना, (फल आदि) चुनना 2 समुच्चय, माथा, सधय, राशि - महावी० २।१५ 3 बुद्धि, बर्षन 4 साधारण मेलजोल।

प्रध्वनम् [प्र + धि + ल्यट्] सग्रह करना, एकत्र करना।

प्रध्वरः [प्र + धृ + अच्] 1 मार्ग, पथ, रास्ता 2 प्रया, धिवाज।

प्रध्वल (पु०) [प्र + धृ + अच्] 1 कोपता हुआ, हिलना हुआ, धरधरता हुआ, - कु० ५।३५, मा० १।३८ 2 प्रचलित, प्रधानकुल।

प्रध्वलाक [प्र + धृ + आकन्] 1 धनुविद्या 2 मोर की पंख 3 सीप।

प्रध्वलाकिन् (पु०) [प्रध्वलाक + इति] मोर - उत्तर० २।२१।

प्रध्वलायिक (वि०) [प्रध्वल + ष्यच् + क्त] इधर उधर करबट बदलने वाला, लुढ़कने वाला, - सत्त् सिर हिलाना (बैठे २ ऊँठने या सीते समय)।

प्रध्वलायिका [प्र + धि + णिच् + ष्वल् + टाप्] (फूल आदि) बारी २ से चुनना 2 चुनने वाली स्त्री।

प्रध्वार [प्र + धृ + घञ्] 1 बिचुरण करना, भ्रमण करना 2 इधर उधर टहलना, घूमना - कु० ३।४२, 3 दर्शन, प्रकटीकरण, - उत्तर० २, मुद्रा० १ 4 प्रचलन, प्रसिद्धि, रिवाज, व्यवहार, प्रयोग - बिलोचय तैत्त्ययुना प्रध्वारम् - वि० ५ 5 आचरण, व्यवहार 6 प्रया, रिवाज 8 गोचरधूमि, चरणगाह - याज्ञ० २।१६१ 9 रास्ता, पथ - मनु० १।२१९।

प्रध्वारक [प्रकृष्टरवाल - प्रा० सं०] बीषा की गरदन।

प्रध्वारलम् [प्र + धृ + णिच् + ल्यट्] विकोहन, हिलाना, हलचल।

प्रध्वित (पु० क० कु०) [प्र + धि + क्त] 1 एकत्र किया हुआ, सधय किया हुआ, सोझा हुआ 2 डेर किया गया, मत्तित 3 उका गया, भरा गया।

प्रध्वर (वि०) [प्र + धृ + क] 1 अति, यथेष्ट, बहुत, पुष्कल - नित्यभ्या प्रध्वरितवचनायामा च - मनु० २।४७, शि० १२।७२ 2 बडा, विद्याल, विस्तृत - प्रधुर पुरदरधनु - गीत० २ 3 (समास के अन्त में) बहुत अधिक, भरपूर, परिपूर्य, - रः धोर। म० - पुष्कल (वि०) जनसङ्कल, घना आबाद (कः) धोर।

प्रध्वेलम् (पु०) [प्र + धि + अच्] 1 बधय का विशेषण - कु० २।२१ 2 एक प्राचीन ऋषि जो स्मृतिकार था - मनु० १।३५।

प्रध्वेतु (पु०) [प्र + धि + तुच्] रचवान्, सारथि।

प्रध्वेलम् [प्र + धि + अच्] चन्दन की पीली लकड़ी।

प्रध्वेलकः [प्र + धि + ष्वल्] बोझ।

प्रध्वीत [प्र + धृ + घञ्] 1 आगे हुकाना, बलपूर्वक चलाना, आगे बढ़ने के लिए उकसाना 2 धक्काना, प्रेरित करना।

प्रबोधनम् [प्र + बुद् + ल्यट्] 1 हुक कर जाने बडाना, बलपूर्वक बलाना, उकसाना 2 भडकाना, जमा देना 3 भावेदा देना, निर्देश देना 4 नियम, विधि, समादेश ।
प्रबोधित (भू० क० कृ०) [प्र + बुद् + क्त] 1 बलपूर्वक बडाना हुआ, उकसाया हुआ 2 भडकाया हुआ 3 निर्देशित, भाविष्ट, नियत किया हुआ—मनु० २।१११ 4 भोजा गया, प्रेषित 5 निर्णीत, निर्धारित ।
प्रबुद्ध (तुदा० पर०) पूच्छति, वृष्ट-प्रेर० प्रच्छयति, कर्म० पूछयते, इच्छा० विपुच्छयति, पूछना, मवाल करना, प्रश्न करना, पूछताछ करना (द्विकर्मक) पप्रच्छ रामा रमणीभिलाषम्—रघु० १।४।२७, अट्टि० ६।८, रघु० ३।५, भग० २।७, ब्राह्मण कुशल पूच्छन्—मनु० २।१२७ 2 इंजना, ललाच करना, अनु—, पूछनाछ करना, इधर उधर के प्रश्न करना, आ—, । पूछना, प्रश्न करना 2 बिदा करना 3 बिदा होना (वा०) अपुच्छन् प्रियन्ससन् तुगमालिष्य वीरम्—मेघ० १२, रघु० ८।४९, १२।१०३, परि—, पूछनी, प्रश्न करना, पूछताछ करना ।

प्रच्छन्नः [प्र + च्छद् + णिच् + घ] आवरण, जाच्छादन, लपेटन, चादर, बिछावन बिस्तरें की चादर—रघु० १५।२२ । सम०—वृष्टः बिछावन, चादर ।

प्रच्छन्नम्, -ना [प्रच्छ् + ल्यट्] पूछताछ, परिपुच्छा ।

प्रच्छन्न (भू० क० कृ०) [प्र + च्छद् + क्त] 1 डका हुआ, बरसाच्छादित, बरस पड़ने हुए, लपेटा हुआ, लिफाफे में बन्द किया हुआ 2 निजी, गोपनीय—मनु० २।६८ 3 छिपा हुआ, गुप्त (द० प्रयुक्त छद्),—अमृ० 1 निजी डार 2 झरोका, जाली, निवडकी, -अन् (अन्व०) गुप्त रूप से चुपचाप । सम०—सत्करः गुप्तचर, जो चोरी करना हुआ दिखाई न द, परन्तु चोरी करे अवध ।

प्रच्छन्नम् [प्र + छद् + ल्यट्] 1 वनन 2 बाहर निकालना, फेंकना 3 उलटी भांगे वाली (दवा) ।

प्रच्छन्निका [प्र + छद् + ष्वल् + टाप्, इत्थम्] उलटी होना, कं भावा ।

प्रच्छन्नम् [प्र + छद् + णिच् + ल्यट्] 1 डकना, छिपाना 2 उत्तरीय, झांझी । सम०—वृष्टः लपेटन, डकना, चादर ।

प्रच्छन्नित (भू० क० कृ०) [प्र + छद् + णिच् + क्त] 1 डका हुआ, लपेटा हुआ, बरसाच्छादित आदि 2 गुप्त, छिपा हुआ ।

प्रच्छानम् [प्रच्छा + ण्यत्] सपन छाया, छायादार स्थान—प्रच्छानमूलमिन्द्रा दिवसा परिधामरमणीया—श० १।३, मालि० ३ ।

प्रच्छिन्न (वि०) [प्रच्छ् + इलच्] दुष्ट, निर्दल ।

प्रच्छन्नः [प्र + च्छद् + अच्] 1 पात, बरसि 2 मुघार, पतनि, विकल 3 वापसी ।

प्रच्छन्नम् [प्र + च्छद् + ल्यट्] 1 बिदा होना, मुबना, वापसी 2, हानि, बचना 3 रिसना, सरना ।

प्रच्छन्त (भू० क० कृ०) [प्र + च्छ् + क्त] 1 टूट कर गिरा हुआ, प्रका हुआ 2 भटका हुआ, बिचलित 3 स्थान भ्रष्ट, विस्थापित, पतित 4 लवेडा हुआ, भगाया हुआ ।

प्रच्छन्ति (स्त्री०) [प्र + च्छ् + क्तिन्] 1 बिदा होना, वापसी, 2 हानि, बचना, अघ पतन—नित्य प्रच्छन्ति शक्या क्षयमपि स्वयं न भोदाग्ने-शा० ४।२० 3 पात, बरसि ।

प्रक्षः [प्रविद्य जायाया जावते - जन् + ष] पति, स्वामी ।
प्रक्षन् [प्र + जन् + षन्] 1 गर्भाधान करना, पैदा करना, जन्म देना, उत्पादन—मनु० ३।६१, ९।६१ 2 पशु (नर पशु का मादा पशु म समम) में गर्भाधान करना 3 उत्पन्न करना, -पैदा करना—मनु० ९।१६ ।

प्रक्षन्तम् [प्र + जन् + ल्यट्] 1 प्रसूजन, जनन, योनि में वीर्य-ससेचन 2 उत्पादन, जन्म, प्रसव 3 वीर्य 4 पुत्र्य या स्त्री की जनवर्धय (लिंग या भय) 5 सन्तान ।

प्रक्षनिका [प्र + जन् + णिच् + ष्वल् + टाप्, इत्थम्] माता ।

प्रक्षनुक [प्र + जन् + उक्] शराण, काया ।

प्रक्षन् [प्र + जन् + षन्] बालकजन्म, गणधन, असावधान या ऊपटान इच्छ (प्रेमी का अनिवादन करने में प्रयुक्त) अनुरोधमालिष्युना योऽप्यधीर्यमुद्रया, प्रियस्य कोयलोद्धार प्रजन्म सतु कथ्यते ।

प्रक्षन्त्यम् [प्र + जन् + ल्यट्] 1 बलपीत करना, बोलना 2 बालकलव, गायत्र ।

प्रक्षन्ति (वि०) स्त्री०-नी) [प्र + ज् + ष्ति] जागू, हुतगामी, वेगवान्—शु० आगुवामी दूत, हकारा ।

प्रक्षा [प्र + जन् + ष + टाप्] (बहु०) समास के अन्त में बदल कर 'प्रजन्' हो जाता है जब कि प्रथम पद अ, सु या द्वा ही, द० रघु० ८।३२, १८।२९, १८।२९, १ प्रसूजन, प्रसूनि, जनन, प्रवोत्पत्ति, जन्म, उत्पादन 2 सन्तान, प्रजा, सन्तति बन्धे, पक्षिवाचक,—अजायं-प्रतक्षसिताम् रघु० २।७३, प्रजायै गृहमेधिवान्—१।७, मनु० ३।४२, याज्ञ० १।२६२, इमी प्रकार बहस्य प्रजा, सर्पपुत्रा आदि 3 कोम, मनुष्य-नननु सप्रजा प्रजा—रघु० ४।३, प्रजा प्रजा स्वा इव तथयित्वा श० ५।५, (यहाँ प्रजा का 'सन्तान' अर्थ भी है) रघु० १।७, २।७३, मनु० १।८ ४, वीर्यं । सम० अलक्ष मृत्यु का देवता यम—रघु० ८।४५,—ईप्सु (वि०) सन्तान की इच्छा वाला,—ईक्षर-ईक्षर मनुष्यो का रात्रा, प्रभु—रघु० ३।६८, ५।३२, १८।२९,—जन्वति,—जन्वायन्म्

सन्तान का पैदा करना,—**सन्तान** (वि०) सन्तान की इच्छा वाला,—**सन्तु** बस पत्थरा, कुल,—**सामम्** बाँधी,—**सामः** 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 राजा, प्रभु, राजकुमार—रघु० 2।४८, १०।८३,—**सः** राजा,—**सिक्के**: नगरीयान, (गर्भाशय में स्थापित), बीज—रघु० १४।६०,—**सति**: 1 सृष्टि की अविच्छाद्यी देवता—मनु० १२।१२१ 2 ब्रह्मा का विशेषण—अस्या सर्वविधो प्रजापतिरभूच्चद्रो नु कालिप्रद—**सिक्कम**० १।९ 3 ब्रह्मा के दस वर्षप्रवर्तक पुत्र—दे० मनु० १।३४ 4 देवशिली विज्वकर्मा का विशेषण 5 मूर्ध 6 राजा 7 जामाता 8 विष्णु का विशेषण 9 पिता, जनक 10 शिल्प,—**सालः**,—**सालः** राजा, प्रभु,—**सालिः**—शिव का विशेषण,—**सुद्धिः** (स्त्री०) सन्तान की वृद्धि,—**सूक्ष्म ब्रह्मा** का विशेषण—**सि**० १।२८,—**सित्त** (वि०) बन्धुओं के या लोगों के लिए हितकर (सम्) पाली ।

प्रजागर् [प्र+जा+गर्] 1 रात को जागते रहना, निद्रा का अभाव—प्रजागरात् खिलीभूत तस्या स्वप्ने समागम—शं० ६।२१ 2 चौकसी, सावधानी 3 अभिभावक, सरसक 4 कृपा का विशेषण ।

प्रजात (भू० क० कृ०) [प्र+जन्+क्त] पैदा हुआ, उत्पन्न,—**ता** ५६ स्त्री जन्मा जिनके बन्धा पैदा हुआ हो ।

प्रजाति (स्त्री०) [प्र+जन्+क्तिन्] 1 प्रसूजन, प्रसूति, उत्पादन, जन्म देना 2 प्रथम 3 प्रजननारम्भ शक्ति 4 प्रसववेदना, प्रसवपीडा ।

प्रजावत् (वि०) [प्रजा+मनुष्य] प्रजा या सन्तान वाला 2 गर्भवती,—**सौ** भाई की पत्नी, भाभी—रघु० १४।४५, १५।३३ 2 विवाहिता नारी, मातृका, माता । **प्रजिन**, [प्र+जि+नञ्] वायु ।

प्रजोबनम् [प्र+जीव्+त्युट्] जीविका, जीवन निर्वाह का साधन ।

प्रजुष्ट (वि०) [प्र+जुष्+क्त] अनुश्रुत, श्रुत, जुटा हुआ ।

प्रज्ञ (वि०) [प्र+ज्ञा+क्त] बुद्धिमान, मेधाई, विद्वान् ।

प्रज्ञप्ति [प्र+ज्ञा+णिच्+क्तिन्] 1 सः ति, प्रतिज्ञा 2 शिक्षा, सूचना, समाचार देना 3 मिः श्रुत ।

प्रज्ञा [प्र+ज्ञा+ञ+ञ्] 1 मेधा, समझ, बुद्धि, बुद्धिमत्ता, आकारसदृशप्रज्ञ प्रज्ञया सदुपागम—रघु० १।१५, धरन् गृह्णति पुरुषस्य धरौरेकेक प्रज्ञा कुल च विभव च घटवर्ध हन्ति मुञ्जा० 2 विवेक, विवेचन, निश्चय 3 तरकीब, योजना 4 बुद्धिमती और विदुषी स्त्री । सम०—**चक्षुस्** (वि०) अथा, (सा०) बुद्धिस्त्री एकमात्र अर्थ रखने वाला, (पु०) पुत्रराष्ट्र का विशेषण, (नपु०) मन की आँस,

मानसिक चक्षु, मन—**मालि**० १,—**मृदु** (वि०) समझदारी में बड़ा,—**हीन** (वि०) निर्बुद्धि मूर्ख, बेवकूफ ।

प्रज्ञात (भू० क० कृ०) [प्र+ज्ञा+क्त] 1 जाना हुआ, समझा हुआ 2 अन्तर्युक्त, विचिन्त 3 स्पष्ट, साफ 4 प्रसिद्ध, सुविख्यात, विभूत ।

प्रज्ञानम् [प्र+ज्ञा+न्युट्] 1 बुद्धि, जानकारी, समझ 2 विज्ञ, प्रतीक, निशान ।

प्रज्ञावत् (वि०) [प्रज्ञा+मनुष्य] समझदार, बुद्धिमान ।

प्रज्ञाल, **प्रज्ञिन्** (स्त्री०—नी), **प्रज्ञिक** (वि०) [प्रज्ञा+ण्व्, इति, इल्व् च] समझदार, बुद्धिमान्, मनीषी ।

प्रभु (वि०) [प्रभते चिरले जानुनी यस्य—ब० स०, हु आदेश] अनुपपत्ती, (विस्तारो दाने कनुष की भाँति मूठी हो), घुटने पर मूठी हुई टांगो वाला । ('प्रभ' मी) ।

प्रब्रह्मन्व [प्र+ब्रह्म+न्युट्] देदीप्यमान—होना, लपटें उठाना, जलना, दहकना ।

प्रब्रह्मन्ति (भू० क० कृ०) [प्र+ब्रह्म+न्ति] 1 लपटो में होना, जलना, लपटें उठाना, देदीप्यमान होना 2 चमकीला, जगमगाता हुआ ।

प्रब्रौम्य [प्र+ब्री+ङ्] 1 डर दिना में उठना 2 आगे दौडना, 'डौने' के अन्दर दे०, 3 भाग जाना ।

प्रभ (वि०) [पुरा भव—प्र+भ] पुराना, प्राचीन ।

प्रभक्षः [प्रकृष्ट नभ—भा० स०] नील का सिरा ।

प्रभत (भू० क० कृ०) [प्र+भन्+क्त] 1 झुका हुआ, उलटाना, प्रथम 2 प्रथम करना, नभस्कार करना 3. विनम्र 4 कुशल, चतुर—दे० प्र पूर्वक 'नम्' ।

प्रभति (स्त्री०) [प्र+भन्+क्तिन्] 1. प्रथम, नभस्कार, अभिवादन तब सर्वविधेयवर्तिन प्रभति विभ्रति के न भूमत—सि० १६।५, रघु० ४।८८ 2 विनयशीलता, नम्रता, शिष्टाचार स दसके वेतसवनाचरिता प्रभति क्लोयति समुद्रिकरीम् कि० ६।५, निजितेय तरसा तरस्विना सानुपु प्रभतिरेव कीर्तये रघु० ११।८९ ।

प्रब्रह्मन् [प्र+ब्रह्म+न्युट्] शब्द करना, आवाज करना, शब्द, ध्वनि ।

प्रथमः [प्र+नी+ञ्] 1 विवाह करना, पाणि ग्रहण करना (यथा विवाह में)—सा० ६।१४ 2 (क) प्रथम स्नेह, वाच, अनुश्रुति—अभिरुचि,—भीतिताधारणोऽयन्—अयो प्रथम स्मरस्य—विक्रम० २।१६, साधारणोऽय प्रथम शं० ३, ६।७, ५।२३, मेघ० १०५, रघु० ६।१२ अर्जु० २।४२ (ख) अभिलाषा, इच्छा, लालसा—कु० १।८५, मा० ८।७, शं० ७।१६ 3 मित्रता—पूर्व परिचय, प्रीति, मैत्री, धनिकता—मा० १।९ 4 परिचय, अरोसा, विश्वास—शं० ६ 5 अनुग्रह, कृपा, सौजन्य—अलङ्कृतोऽस्मि स्ववद्वाहप्रथमयेन यथा—

मूक्य १, १।४५ 6 अनुरोध, प्रार्थना, निवेदन—
 तद्गुणनामान्गुणनाहंसि त्वं सबन्धिनो मे प्रणयं विह्वल्यु-
 -रघु० २।२८, विक्रम० ४।१३ 7 श्रद्धा, भक्ति
 8 मोक्ष । सम०—अप्रराध, प्रेम या मित्रता के
 विरुद्ध अपराध, - उन्मूल (वि०) 1 प्रेमाविष्ट, अपना
 प्रेम प्रकट करने को उद्यत, मालवि० ४।१३ 2 प्रेमा-
 वेश के कारण आतुर, -कलह प्रेमी का शत्रुता, कृपित
 या झूठमूठ का शत्रुता—नाप्यन्वेस्मात्प्रणयकलहादि-
 प्रयोगोपपत्ति—मेघ० (मल्लि०—नकली या कल्पित) —,
 कुपित (वि०) प्रेम के कारण मूढ़—मेघ० १०५—
 क्रीष्ण किसी नायिका का आने यापक के प्रति झूठ
 मूठ का क्रोध, मखरो से भरा क्रोध, प्रकथं, अत्यधिक
 प्रेम, तीव्र अनुरोध, भय 1 मित्रता का टूट जाना
 2 विदवासागत, -बन्धनम् १।भाभिन्नादि, - विमूल
 (वि०) 1 प्रेम से पराङ्मन 2 मित्रता करने में
 अनिच्छुक, मेघ० १०७, -विह्वित, -विघात (प्रार्थना
 आदि की) अस्वीकृति, न मानना ।

प्रणयनम् [प्र + नी + न्युट्] 1 जाना, ले जाना 2 सचाल-
 न करना, पहुँचाना 3 पालन करना, कार्यन्वयन
 करना, अनुष्ठान करना - कु० ६।९ 4 निवृत्तना,
 अक्षरसौजन्य करना 5 निर्णयादेश देना, दण्डाज्ञा देना,
 परिनिर्णय या पचनिर्णय देना, वषा दण्डन प्रणयनम् ।

प्रणयनम् (वि०) [प्रणय + मनु] 1 प्रेम करने वाला,
 प्रीतिकर, स्नेही - रघु० १।१५७ 2 स्पष्टवचना, खरा
 3 अत्यन्त उत्कण्ठित, आतुर ।

प्रणयिन् (वि०) [प्रणय + टि] 1 प्रेम करने वाला,
 स्नेही, कृतात्, अनुरक्त—मा० ३।९ 2 प्रिय, अप्यन
 प्याग 3 इच्छुक, मालादिन, उत्कण्ठित - मा० ७।१७,
 मेघ० ३, रघु० ९।१५ १।१३ 4 सुपरिचित, धर्मिष्ठ
 ५ 1 मित्र भावी, कृताभाव - कु० ५।११ 2 पति,
 प्रेमी 3 कृताञ्जलि, विलम्ब निवेदक, प्रार्थी - म्वादीन
 मना मुक्तना प्रणयिच्छीव विक्रम० ६।१५ ३।०
 4 पृथक, भयन - कु० ३।६६, -जी 1 गृहिणी,
 प्रियवा, पत्नी 2 मधी, महेनी ।

प्रणय [प्र + न् + अच्, पत्वम्] 1 पतिव्रत अक्षर 'प्राप्'-
 आसौग्महीअनिनामश्च प्रणयवददनामिव-रघु० १।११,
 मनु० २।७६, कु० २, १२, मय० ७।८ 2 एक प्रकार
 का बाधयत्र (राल या मृदग) 3 किरण या नम-
 पूष्य परमात्मा का विशेषण ।

प्रणय (वि०) [प्रणना नामिका पर्य, मादग, अच्,
 पत्वम्] लम्बी नाक वाला, बड़ी नाक वाला ।

प्रणयी [-प्रणायो, लघ्य इ] अलगावग, अलग प्रवेदन,
 माध्यम ।

प्रणय [प्र + न् + घञ्] 1 ऊँची आवाज, शीतल,
 ऊदन 2 दहाइना, दहाइ 3 द्विर्द्विताना, रेकना

4 हृषातिरेक की कलकलध्वनि, बाह्या, क्या मुख
 5 दुहाई देना 6 कान का चिंचोय रोग (इस रोग
 में कानों में 'भ्रमभ्रनाद' की ध्वनि होती है) ।

प्रणाय [प्र + न् + घञ्] 1 सुकना, नमस्कार करना,
 नमन या नति 2 सादर नमस्कार, अभिवादन, दण्ड-
 वन् प्रणाम, प्रणति, गया माट्याग प्रणाम - कु०
 ६।९१ ।

प्रणायक [प्र + नी + ष्वुन्] 1 नेता, नेनापति 2 पध-
 प्रदर्शक, प्रधात, मुख्य ।

प्रणाय (वि०) [प्र + नी + ष्वुन्] 1 प्रिय प्यारा 2 खरा,
 ईमानदार, स्पष्टवादी 3 अग्रिय, अनभिमत—मट्टि०
 ६।१६ 4 आवेग मूक्य, विक्रम ।

प्रणाल - ली, **प्रणालिका** [प्र + नन् + घञ्, प्रणाल +
 डीप्, प्रणाली - वन् + टाप्, लृक्] नहर जलमार्ग,
 नाली कुर्वन् पुराणं नयनयसा वक्रवर्तान् प्रणाली -
 उ० म० २, शि० ३।४४ 2 परपन, अविच्छिन्न
 निर्यायना ।

प्रणाल [प्र + नन् + घञ्] 1 विराम, हृदि, शोष -
 कि० १।१६ 2 मय, विनाश रघु० १।६१ ।

प्रणान (वि०) [प्र + न् + णिच् + न्युट्] नष्ट करने
 वाला हटाने वाला, नम् मनुच्छेदन, उन्मूलन
 - रघु० ३।६० ।

प्रणमित (वि०) [प्र + णिच् + क्त] जिसका बुम्बन
 किया हो ।

प्रणयानम् [प्र, नि + घा + न्युट्] 1 प्रयोग करना,
 नियुक्त करना व्यवहार, उपयोग 2 महान् प्रयत्न,
 पक्ति 3 धार्मिक मनन, भार्यन्तान रघु० १।७६,
 ८।१९, विक्रम० ७ 4 सम्मानपूर्ण व्यवहार (अधि०
 के पाप) 5 कामधरुप्याय ।

प्रणिय [प्र, नि + घा + णि] 1 चोकना रहने वाला,
 नाथ-शाक वर्ग वाला 2 गुणवत् भोजना 3 जातूत,
 भेदिता कु० ३।६, रघु० १।७८ मनु० ७।१५३
 ८।२८ 4 टरलुभा, अनुभर 5 देकभाल, ध्यान
 6 निवेदन अनुरोध प्राथना ।

प्रणित [प्र + नि + न् + घञ्] गहरी ध्वनि ।

प्रणितनम्, **प्रणियात** [प्र + नि + पत् + न्युट्, घञ् च]
 1 पैना में घिसना, माट्याग प्रणाम विनति - रघु०
 ६।६६ 2 अभिवादन, नमस्कार, सादर प्रणति
 - कु० ३।६१, ६।३५, रघु० ३।२५ । मय० रस
 सम्मानना पर उच्चारण किया जाने वाला जाट
 या मय ।

प्रणिहित (भू० क० कृ०) [प्र + नि + घा + क्त] 1 रक्वा
 2 भा, व्यवहृत 2 जमा किया हुआ 3 कौशाया हुआ
 प्यारा हुआ - मेघ० १०५, 4 पतन, धर्मपति, मृगुद
 5 एकप्रचित, लक्ष्मीन, मृदा हुआ 6 निर्वाण,

निदिचन 7 मावधान, चौकस 8 जवाप्त, उपलब्ध
9 वेद लिया हुआ (दे० प्रसि० पूर्वक धा) ।
प्रवीत (भू० क० कृ०) [प्र + तो + क्त] 1 सामने
प्रस्तुत, आगे पेश किया हुआ, उपस्थित 2 नीचा
गया, दिया गया, प्रस्तुत किया गया, उपस्थित किया
गया 3 लाया गया, कम किया गया 4 कार्यान्वित
कार्य में परिणत अनुष्ठित 5 शिक्षाया गया, नियत
किया गया 6 फेंका हुआ, भेजा गया, बेचामुक
(दे० प्र पूर्वक 'नी'), -त मन्त्र से अभिमन्त्रित की
गई यज्ञार्थि, -तम् पकाया हुआ या सवारा हुआ कोई
पदार्थ यथा चटनी, अचार आदि ।
प्रचल (भू० क० कृ०) [प्र + लृ + क्त] प्रचला किया
गया, हल्लाया किया गया ।
प्रचल (भू० क० कृ०) [प्र + लृ + क्त] 1 हलककर
दूर किया हुआ, पोछे ढकेला हुआ 2 भगाया हुआ ।
प्रचल (भू० क० कृ०) [प्र + लृ + क्त, ल्यम्] 1 हलक
कर दूर भगाया हुआ, 2 गतिशील किया हुआ
3 भगाया हुआ 4 हिनता हुआ, कीटना हुआ ।
प्रणेतृ (पु०) [प्र + नी + तृच्] 1 नेता 2 निर्माता, स्रष्टा
3 किसी विद्वान् का उद्घोषक, व्याख्याता, अष्टायाक
4 पुस्तक का रचयिता ।
प्रणेष (वि०) [प्र + नी + ष] 1 पथप्रदर्शन किये जाने
योग्य, नेतृत्व दिये जाने योग्य शिक्षणीय, विनम्र,
विनीत, आज्ञाकारी 2 कार्यान्वित या निष्पन्न क्रिय
जाने योग्य 3 विधिक्रम या नियम किये जाने योग्य ।
प्रणेष [प्र + लृ + षच्] 1. होकरना 2 निदेश देना ।
प्रतत (भू० क० कृ०) [प्र + त् + क्त] 1 विछाया
हुआ, ढका हुआ 2 फैलाया हुआ, पसार हुआ ।
प्रतति (स्त्री०) [प्र + त् + क्त] 1 विन्तार, फैलाव,
प्रसार 2 लता ।
प्रतन (वि०) (स्त्री०-नी) [प्र + त् + अच्] पुराना,
प्राचीन ।
प्रतनु (वि०) (स्त्री०-नु, स्त्री) [प्रकृष्ट तनु, प्रा० सं०]
1 पतला, सूक्ष्म, सुदुमर मेघ० ०९, 2 अत्यल्प,
मीनित, मीठा-सतनुपसमा-का० ६९, उत्तर० ११०,
मेघ० ४१ 3 बुबला-पतला, कृश 4 लम्घ, मामूली ।
प्रतनम् [प्र + त् + क्त] घरमाना, गरम करना ।
प्रतप (भू० क० कृ०) [प्र + त् + क्त] 1 तपाया
हुआ 2 गर्म, उष्ण 3 सतप, मनाया हुआ, पीड़ित ।
प्रतर [प्र + त् + अच्] पार जाना, पार करना या जाना ।
प्रतर्क, प्रतर्कणम् [प्र + तर्क + अच्, ल्यट् ब] 1 अटकट,
कल्पना, अनुमान 2 विचारविमर्श ।
प्रतस्म [प्रकृष्ट तस्म प्रा० सं०] निम्नलोक के सात
विभागी से एक-दे० पाताल, सप्त स्रुते हाथ की
हूयेली ।

प्रतान [प्र + त् + अच्] 1 अकुर तनु—लताप्रता-
नोद्धारिते सकेसै—रघु० २८, धा० ७।११ 2 क०,
नीचे भूमि पर ही फैलने वाला पौधा 3 छाया-
प्रदाता, शाखा मर्मिभाग 4 धनुर्बत रोग या भिररी
रोग ।

प्रतानिन् (वि०) [प्रतान + इति] 1 फैलाने वाला
2 अकुर या तनु वाला,—नी फैलाने वाली लता ।

प्रपात [प्र + त् + पञ्च्] 1 ताप, गर्मी-पञ्च १।१०३
2 दीप्ति, दहकती हुई गर्मी - कृ० २।२४, 3 आभा,
उज्वलता 4 मर्षादा, शान, यश - महावी० २।४
5 साहस, पराक्रम, शौर्य प्रतापस्तत्र भानोश्च युग-
पदव्याजसे दिश न्यु० ४।१५, यहाँ 'प्रताप' का
अर्थ गर्मी भी है) ४।२० 6 शक्ति, बल, ऊर्जा
7 उत्कण्ठा, उत्साह ।

प्रतापन (वि०) [प्र + त् + णिच् + ल्यट्] 1 गर्माने
वाला 2 सताप देने वाला, नन् 1 जलना, तपाना,
गर्माना 2 पीड़ित करना, सताना, दण्ड देना,—न
एक नरक का नाम ।

प्रतापवत् (वि०) [प्रताप + वत्, कवम्] 1 कीर्तिशाली,
ओजस्वी 2 बलशाली, शक्तिशाली, ताकतवर—पु०
शिव का विशेषण ।

प्रतार [प्र + त् + णिच् + षच्] 1 पार से जाने वाला,
2 घोखा, जालसाजी ।

प्रतारक [प्र + त् + णिच् + षच्] ठग, छपनेवादी ।
प्रतारकम् [प्र + त् + णिच् + षच्] 1 पार से जाना
2 घोखा देना, ठगना, छल, कपट, सा जालसाजी,
धोखा, मन्त्रकारी, धूर्तता, बदमाशी, दगाबाजी, पाखंड
यदीच्छति वयार्कन् जगदेकेन कर्मणा, उपाम्यन्ता
कलौ कल्पन्ता देवो प्रतारका, प्रतारकासमर्षस्य
विद्यया कि प्रयोजनम् उद्भूट ।

प्रतारित (वि०) [प्र + त् + णिच् + क्त] छला हुआ,
ठगा हुआ ।

प्रति (अव्य) [प्र + इति] 1 घात के पूर्व उपसर्ग के
रूप में लग कर निन्माकित अर्थ हैं—(क) की ओर,
को दिशा में (ख) वापिस, लौट कर, फिर (ग) के
विपक्ष, के सकारके में, विपरीत (घ) ऊपर, वृथा
(इम उपसर्ग से युक्त कुछ शब्दों की देखिए)
2 सत्ताओं (हुदत से मित्र) से पूर्व उपसर्ग के रूप
में निन्माकित अर्थ (क) समाप्ता, समरूपता, सादृश्य
(ख) प्रतिस्पर्धा—यथा प्रतिस्पर्धा (प्रतिस्पर्धी-चन्द्रमा),
प्रतिपुत्र आदि 3 स्वतंत्र रूप से सबलौषक अर्थ
के रूप में प्रयुक्त (कर्म० के माथ) निन्माकित अर्थ
—(क) की ओर, को दिशा में, की तरफ-ती दम्पती
स्वा प्रतिराजधानी प्रस्थापयामास वही बलिष्ठ
—रघु० २।७०, १।७५, प्रत्यन्त विषे— ० ३।

११, वज्र प्रतिविद्योते विद्मन्—सिद्धा०, (क्ष) के विषय, प्रतिकूल, भी विपरीत दिशा में, सम्मुख—तथा यायादियु प्रति—मनु० ७१११, प्रवृद्धकल प्रति राक्षसेन्दु—रामा०, यथावत्—प्रथरत्संन्येव—रघु० ७५५, (य) की तुलना में, सममुख पर, के अनुपात में, जोड़ का—वज्र सहस्राणि प्रति—ऋजू० २११८, (ब) निकट, के आसपास, पास की ओर, में, पर—समासेषुस्ततो गमा भृगवेरपुर प्रति—रामा०, यथा प्रति (ङ) के समय, लगभग, दौरान में—आदित्य-स्थोदय प्रति—महा०, फाल्गुन वाष वैश्र वा दाम्यो प्रति—मनु० ७११८२, (च) की ओर से, के पक्ष में, के भाग में—वद्वज्र या प्रतिस्थात्—सिद्धा०, हर प्रति हलाहल (अभयत्)—बोप०, (छ) प्रत्येक में, हरेक में, अलग-अलग (विभागसूचक), वष प्रति, प्रतिवर्षम्, यज्ञ प्रति—याज्ञ० १११०, वज्र वज्र प्रति सिधति—सिद्धा०, (ज) के विषय में, के सबष में के बारे में, विषयक, ब्रह्मन्, विषय में—न हि मे सवीतिरस्या दिव्याता प्रति—का० १३२, चन्द्रोपराग प्रति तु केनापि विप्रलम्भासि—मुद्रा० १, धर्मप्रति—श० ५, मदीसुबो प्रेम् नगरमन प्रति—श० १, कु० ६१२७, ७१८३, याज्ञ० ११२१८, रघु० ६१२०, १०१२०, १२१५१, (झ) के अनुसार, क समन्वय—मा प्रति (मेरी सम्मति में), (ञ) के सामने, की उपस्थिति में, (ट) कर्षाँक, के कारण ४ स्वतंत्र सबबोचक अन्वय के रूप में (अपा० के साथ) इसका अर्थ है, (क) प्रतिनिधि, के स्थान में, के बजाय—प्रद्युम्न कृष्णाप्रति—मिद्धा० सप्तमे यो नारायणत् प्रति—मट्टि० ८८९, अथवा (क्ष) की एकत्र में, के बदले—तिलेकम् प्रति चच्छनि माषात्—सिद्धा०, अन्ते प्रत्यम्त धाम्नी—बोप० 5 अन्वयीमात्र समास के प्रथम पद के रूप में प्राय इसका अर्थ है, (क) प्रत्येक में या पर, यथा प्रतिन-वत्तरम्—(प्रतिवर्ष), प्रतिक्षण, प्रत्यक्ष जादि, (क्ष) की ओर, की दिशा में—अत्यनि चलमा डयने 6 'प्रति' कमी कमी 'अल्पतार्थ' प्रकट करने के लिए अन्वयीमात्र समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त होता है दूषमति, शाक प्रति (विशे० निम्नांकित समासों में वह सब शब्द जिनका दूसरा पद क्रिया के साथ अन्वयबहित रूप से नहीं जुड़ा हुआ है, सम्मिलित कर दिए गए हैं अन्य शब्द अपने-२ स्वानों पर मिलेंगे। सम०—अक्षरम् (अन्व०) प्रत्येक अक्षर में प्रत्यक्ष अक्षरमयप्रवच वाच०—अग्नि (अन्व०) अग्नि की ओर,—अग्नम् 1. (शरीर का) गोष या छोटा अंग—जैसे कि नाक 2 प्रभाग, अध्याय, अनुभाग 3 प्रत्येक अंग 4 अन्व (अन्व०—मनु) 1 शरीर के प्रत्येक अंग पर—यथा—अव्ययमालिगित—गीत० १ 2

प्रत्येक उपप्रभाग वा उपाग के लिए,—अक्षरम् (वि०) 1 मट कर पहीस में होने वाला 2 उत्तरा-धिकारी के रूप में निकटतम विद्यमान 3 सुरत बाद का, बिल्कुल जुड़ा हुआ—जोतेत् क्षयिष्यमण स स्वस्य (बहुशुक्त) प्रत्यनतर मनु० १०८२, ८१ १८५,—अग्निमन्व (अन्व०) हवा की ओर, या हवा के विषय—अनौक (वि०) 1 विरोधी, विरुद्ध, विदेवी 2 मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला (कः) शत्रु (—कम्) 1 विरोध, शत्रुता, विप-रीत दग वा स्थिति न अस्ता प्रत्यनीकेषु स्वात् मम मुगामुरा—राम० 2 शत्रु की सेना—वन्ध शूरा महे-ज्वासा प्रत्यनीकता रणे—महा०, येजम्भिता, प्रत्य-नीकेषु योषा—भग० ११३२, (यथा 'प्रति' का अर्थ 'शत्रुता' भी है) 3 (अन्व० शास्त्र) अलकार इसमें एक व्यक्ति उस शत्रु को जो स्वयं घायल नहीं हो सकता, बोट पड़वाने का प्रयत्न करता है—प्रतिपक्षम-शक्तेन प्रतिकर्तुं निरस्किम्भा, या तदीयस्य तत्सुल्ये प्रत्यनीक तदुच्चते—काण्व० १०, अनुमानम् प्रति-कूल उपसहार—अत (वि०) समक, तदा—हुवा साथ क्या हुआ, मीमावर्ती (स) 1 सीमा, हद, रघु० ४१-६, 2 सीमावर्ती देश, विशेषतः म्लेच्छा द्वारा अधिकृत प्रदेश, वैशः मीमावर्ती देश, 'पर्वत माष लपो हुई पहाड़ी—यादा प्रत्यय चर्चता—अक्षर०,—अपकार प्रणिष्टोच, बदले में क्षति पड़वाना—शाश्वे-त्यन्यपकारेण नापकारेण तुर्वेन—कु० २१७०,—अन्वम् (अन्व०) प्रतिवर्ष, अग्निघोष बदले में दाषारोपण, प्रत्यारोप, -अभिषम् (अन्व०) शत्रु की ओर, अर्थ, झूठमूठ का सूत्र, -अषयम् (अन्व०) 1 प्रत्येक अंग में 2 प्रत्येक विशेषण के साथ, चित्ररथ सहित, -अक्षर (वि०) 1 निम्न पद का, कम सम्मानित 2 अघम, पतित, अत्यत निगम्य, -अक्षम् (पु०) गेह, -अहम् (अन्व०) प्रतिदिन, हररोज, रोज—गिरि-शमुषचार प्रत्यहम्—कु० ११६०,—आकार, कोष, म्यान, -आषात् 2 प्रत्याक्षम् 2 प्रतिक्रिया,—आषार उपयुक्त आचरण या व्यवहार, अक्षम् अकेला, अलग अलग,—आक्षिप्य झूठमूठ का सूत्र,—आरम् 1 फिर शुक करना, दूसरी बार आरम् करना 2 प्रतिषेध,—आशा 1 उम्मीद, पूर्वधारणा—मा० १८ 2 विश्वास, भरोसा, उत्तरम्, जवान, उत्तर का उत्तर,—उलूक 1 कौषा 2 उलूक से मिलता-जुलता पत्नी,—उलूक (अन्व०) प्रत्येक ऋचा में,—एक (वि०) प्रत्येक, हरेक हरकाई (अन्व० अन्व०) 1 एक एक करके, एक बार में एक, अलग, अलग, अकेला, हर एक में, हर एक को (बहुधा विशेषात्मक बल के साथ)—विशेष दण्डकारण्य प्रत्येक क सत्ता मन—रघु०

१२१९ (प्रत्येक सज्जन पुत्र के वन में प्रवेश किया)
 १२३३, ७३३४, कु० २३३१,—कण्ठक शत्रु—कठम्
 (अव्य०) 1 अलग अलग, एक एक करके 2. गले के
 निकट,—कष (वि०) उद्बुध, जो हृष्टर से भी बस
 में न आये, काय 1 पुतला, प्रतिभा, चित्र, समानता
 2 शत्रु—की० १३२८ 3 लक्ष्य, शीघ्रकारी, निशान,
 —कित्तव जूए में प्रतिद्वन्द्वी,—कुंजर प्रतिरोधी हाथी,
 —कृष परिवार, खाई,—कूक (वि०) अननुकूल
 विरोधी, प्रतिपक्षी, विपक्ष—प्रतिकल्पतामुपगते हि
 विधी विकलत्वमेति बहुसाधनता—शि० ११६, कु०
 ३१२४ 2 कडीर, बेमेल, अशिय, अवचिकर—अप्यन्-
 पुष्टा प्रतिकल्पनाम्—कु० ११४५ 3 अशुभ 4 विरोधी
 5 उलटा, व्युत्क्रान्त 6 विपरीत, जाह्न, कर्कश, कडीर,
 आचरितम् कुम्भित या आक्रमणायक कार्य अथवा
 आचरण—रघु० ८८१, अक्षयम्, कित (स्वी०)
 विरोध, कारित् (वि०) विरोध करने वाला, बर्षन्
 (वि०) अग्रम लथवा अग्रद दशने वाला, प्रवर्षितम्
 —वर्षित् (अव्य०) विपरीत कार्य करने वाला,
 उलटा मार्ग यहण करने वाला, भाषित् (वि०)
 विरोध करने वाला, असगत बोलने वाला, बचनम्
 अवचिकर या अग्रिय भाषण,—कलम् (अव्य०) 1
 विरोधी तग से, विपरीतता के साथ 2 उलटी तरह से,
 विपयंस क्रम से, क्षमम् (अव्य०) प्रत्येक क्षण, हर
 मय, कु० ३१५६, नक्ष भाद्रकणकारी हाथी,
 —पात्रम् (अव्य०) प्रत्येक अय में,—चिरि 1 सामने
 का पहाड़ 2 छोटा पहाड़, गृहम्, वेहम् (अव्य०)
 हर घर में,—घामम् (अव्य०) हर गाव में, चर
 मूठमूठ का चौर, चरामम् (अव्य०) 1 प्रत्येक
 (वैदिक) मिश्रान्त या जाला में 2 हर पय पर,
 —छाया 1 प्रतिबिम्ब, परछाई, छाया 2
 प्रतिमा, चित्र,—छेषा टोंग का अगला भाग
 —किल्बि, किल्बिका गले की नीतर की घटी, मास-
 तान्, कोमल तान्, तक्षम् (अव्य०) प्रत्येक तज या
 मर्मज्ञ के अनुसार, तंश्रिस्तान्, एक ऐसा सिद्धत
 जिसको एक ही पक्ष में माना हो (बादिप्रतिवाचकतर-
 मात्राभ्युपगमन), श्रवणम् (अव्य०) लगातार तीन
 दिन तक, चित्तम् (अव्य०) हर रोज, चिन्तम्
 (अव्य०) हर विधा में, चारी और, सर्वत्र मेघ०
 ५८, वेधाम् (अव्य०) प्रत्येक देश में, वेहम्
 (अव्य०) हरेक शरीर में,—वेधस्तम् (अव्य०) प्रत्येक
 देवता के निमित्त,—इन्द्रः 1 प्रतिस्पर्धी, विरोधी, शत्रु,
 प्रतिद्वंद्वी 2 शत्रु,—इन्त् (वि०) विरोध, शत्रुता,—ईहिन्त्
 (वि०) 1 विरोधी, शत्रुतापूर्व 2 प्रतिकूल—कि०
 १६१२ 3 लाघाश्ट रखने वाला, प्रतिस्पर्धीशील
 —श० ४१४,—(शु०) विरोधी, प्रतिपक्षी, प्रतिस्पर्धी

—रघु० ७३३७, १५१२५,—डारम् (अव्य०) प्रत्येक
 दग्धाजे पर,—दुरः दुरमे बोहे के साथ जुड़ा हुआ
 बोझ,—दम् (पु०) प्रपीत, पीन का पुत्र,—नभ
 (वि०) 1 नूतन, युवा, ताजा 2 हाल का खिला
 हुआ, या जिसमें अभी कल्पित आई हो—मेघ० १६,
 —नाडी प्रविवा, उपनाडी, नाभकः किसी काव्य का
 कलायक जैसे रामायण में रावण, तथा माघकाव्य में
 विशुपाल,—कस्तः 1. विरोधी पक्ष, हल या गृहबन्दी,
 शत्रुता 2 प्रतिकूल, शत्रु, दुश्मन, प्रतिद्वंद्वी, प्रतिपक्ष-
 कालिणी प्रतिद्वंद्वी पत्नी—भाषि० २१६४, विषमाक०
 १७०, ७३, प्रतिपक्षभाषितेन प्रतिकूलम् काव्य० १०,
 समास में प्राय 'सम' या 'समान' अर्थ में प्रयुक्त
 3 प्रतिवादी, मुद्दाल, पक्षित (वि०) 1 विरोध
 से युक्त, 2 विरोधात्मक प्रतिज्ञा से विकल किया
 हुआ, (जैसे न्याय में हेतु) (वह हेतु) जो सत्यप्रियत
 नामक दोष से युक्त हो), पक्षित् (वि०) विरोधी,
 शत्रु, पक्षम् (अव्य०) मार्ग के साथ२, रास्ते की
 रास्ते की ओर,—प्रतिपक्षगतिराशोद्गदीर्घाकृताम्—कु०
 ३७६, पक्षम् (अव्य०) 1 प्रत्येक पय पर 2 प्रत्येक
 स्थान पर, सर्वत्र 3 प्रत्येक मन्त्र में, पात्रम् (अव्य०)
 प्रत्येक चरण में, पात्रम् (अव्य०) प्रत्येक भाग के
 विषय में, प्रत्येक पात्र के विषय में प्रतिपात्रभाषीयता
 गन् श० १ (प्रत्येक पात्र की देख रेख की जानी
 चाहिए, पात्रम् (अव्य०) प्रत्येक वृत्त में,—पाप
 (वि०) पाप के बदले पाप करने वाला, दुराई के
 बदले दुराई करने वाला, पु (पु) क्वः 1 समान या
 सदृश पुत्र 2 स्वभाषण, प्रतिनिधि 3 साथी
 4 पुतला बादमी का पुतला जिते चोर किसी पर
 में स्वयं घसने से पहले यह जानने के लिए फेंका करते
 थे कि कोई ज्ञाय तो नहीं रहा है 5 पुतला, पुष्पीकम्
 (अव्य०) प्रत्येक प्रख्यातपुत्र, हर दोषहर से पहले,
 प्रभतम् (अव्य०) प्रत्येक मुबह, प्रलाजः बाहरी
 परकोटा या फसील,—प्रिषम् बदले में की गई कृपा या
 सेवा रघु० ५१५६, इषु जो पर व स्थिति में
 समान हो, बल (वि०) बल में समान, अपने जोड़े
 का, समान शक्तिशाली (लम्) शत्रु की सेना
 —अत्रज्जालावलीप्रतिबलजलपेतरीर्वायमापे—वेपी०
 ३१५, बह्नु भूजा को अगला भाग, कोहनी से नीचे
 का भाग चि (चि) कः, कम् 1 परछाई, प्रतिमूर्ति
 कु० ६४२२, शि० १११८ 2 प्रतिमा, चित्र, षट
 (वि०) प्रतिस्पर्धी, प्रतिद्वंद्वी षटप्रतिषटस्तनि न०
 १३१५, (हः) 1 प्रतिद्वंद्वी, प्रतिपक्षी 2 सम्पक्ष का
 योद्धा समालोक्यो ल्वा विदधति विकल्पान् प्रति-
 भोटा काव्य० १०, षव (वि०) 1 भ्रातृवह
 शोषण, अदकर, भ्रयानक 2 अतराजक पक्ष०

२।१६६, (बन्) भग, सतरा, --भङ्गम् केन्द्रब्रह्म
परिवेद्य, --सद्विरम् (अव्य०) प्रत्येक घर में, मकल
प्रतिस्पर्धी, प्रतिद्वंद्वी --नै० १।६३; पातालप्रतिमस्तपल
भादि मा० ५।२२, माया; जवाबी जादू, मासम्
(अव्य०) प्रतिमास, मासिक, चित्रम् शत्रु, विरोधी,
मुञ्ज (वि०) 1 मुञ्ज के सामने खड़ा हुआ, यामने
स्थित प्रतिमुखागत मनु० ८।२११ 2 निकटवर्ती,
उत्सिन्धत (सम्) नाटक की एक घटना या गीणकवा-
बस्तु जो नाटक के महान् परिवर्तन या उलट फेर को
या ता जल्दी लाये या और भी अधिक देर कर दे
--दे० सा० द० ३३४ और ३५१-३६४, --मुञ्जा
मुकानले की मोहर, --मुञ्जत्तम् (अव्य०) प्रतिक्षण,
--मूर्ति (स्त्री०) प्रतिमा, गमनाता, --सुषप
आक्रमणकारी हाथियों के दुष्ट का अग्रजा या नेता,
--रजः प्रतिपक्षी योद्धा (सा०) युद्ध रण में बँड कर
लड़ने वाला) --दीप्यतिप्रतिरथ तदय निवेद्य --ज०
५।१९, राजा विरोधी राजा, राजम् (अव्य०)
हूँ रात, --रज्ज (वि०) 1 तदनु रूप, समान, मुकानले
का भाग रखने वाला, --चेष्टाप्रतिरूपिका मनोवृत्ति
--सा० १ 2 उपयुक्त, समुचित (बन्) चित्र, प्रतिमा,
समानता, रूपकम् चित्र, प्रतिमा, लक्षणम् निधान,
चिह्न, प्रतीक, --लिंगि (स्त्री०) लिंग की मकल,
लिखी हुई प्रति, --लोक (वि०) 1 नैसर्गिक क्रम के
विषय, व्युत्क्रान्त, उलटा 2 जाति विरुद्ध (अपने पति
से उच्च वर्ग की स्त्री को मन्तान) 3 विरोधी
4 नीचे, दुष्ट, अथवा 5 बान (अव्य० मन्)
बालों के विपरीत, अनाज के विरुद्ध उलटा, विपर्यन्त
रूप से, --अ (वि०) जाति के विपरीत क्रम में
उपस्थ अर्थात् अपने पति से उच्चवर्ग की स्त्री की
समानता, लोककम् उलटा क्रम, विपरीत क्रम, --बस्त-
रम् (अव्य०) प्रतिवर्ष, हर साल, वनम् हर जगल
में, --वर्षम् (अव्य०) हरसाल, --वस्तु (नपु०)
1 समान, प्रतिभूति, प्रतिकल्प 2 प्रतिदान 3 समानता,
गुल्यता उपमा एक अलंकार जिसकी परिभाषा मम्मट
ने यह दी है --प्रतिबन्तुपमा नु सा, सामान्यस्य द्विरे-
कस्य अत्र बाधपदमे तिबन्ति काव्य० १०, उदा०
तापेन भावते सूर्यं शूर्यबाधेन गजते --चन्द्रा० ५।
४८, --वाल चलौटी हवा (अव्य०-सम्) हवा के
विरुद्ध चीनामुकामिव केडो प्रतिबन्त नीयमानस्य
--स० १।३४, --वास्तवम् (अव्य०) प्रतिदिन
--विषदम् (अव्य०) 1 प्रत्येक शाखा पर 2 एक
एक शाखा पर, --वेद्यम् (अव्य०) प्रत्येक वेद में या
हरेक वेद के लिए, --विद्यम् विद्यप्रतीकारक औषधि,
--विद्युत्क, मुक्कुन्द वृक्ष, --वीर विपक्षी गदु --वृष
आक्रमणकारी बँल, --वेद्यम् (अव्य०) हर समय,

प्रत्येक अवसर पर, --वेद्य 1 पड़ोस का घर, आसपास
2 पड़ोसी, --वेद्यिन् (अ०) पड़ोसी, --वेद्यम् (नपु०)
पड़ोसी का घर, --वेद्य पड़ोसी, --वेद्यम् नैर प्रतिशोध,
बदला, प्रतिहिंसा, --शब्द 1 प्रतिस्पर्धि, मुँज, --बनुया-
वरकन्दराभिर्षी प्रतिस्पर्धीप्रि हरेभिर्नति नागान्
चिकम् ० १।१६, कु० ६।६४, रघु० २।२८ 2 गरज,
उहाड़, --सिन्धु (पु०) झूठमूठ का बाँद, --सकलरम्
(अव्य०) प्रतिवर्ष, हर साल, --सख (वि०) तुल्य,
जोड़ का, --सख्य (वि०) विपर्यस्त क्रम में, --सायम्
(अव्य०) प्रतिसंध्या, हर रात, --सूय, --सूयक
1 झूठमूठ का सूरज 2 छिपकली, गिरमिट --उत्तर०
२।१६, --सेन, शत्रु की सेना, --स्वानम् (अव्य०)
हर स्थान में, हर स्थान पर, --स्त्रोतम् (नपु०) धारा
के विपरीत --हस्तक, --हस्तक, प्रतिनिधि, अधिकारी,
स्थानापन्न, प्रविपुष्य आश्रिताना भूती स्वामित्ववाय
धर्मसेवने, पुत्रव्यापारवने शैव न सति प्रतिहस्तका,
--हि० २।३३।

प्रतिक (वि०) [कार्षाण + टिठन्, कार्षाणस्य प्रया
देव] कार्षाण के मूल्य का या कार्षाण से लगीदा
हुआ।

प्रतिकर [प्रति + कृ + अच्] प्रतिकोष, क्षतिपूर्ति।
प्रतिकर्तुं (वि०) (स्त्री०-र्षी) [प्रति + कृ + तुच्]
प्रतिशोध लेने वाला, क्षतिपूर्ति करने वाला -- (पु०)
विरोधी, विपक्षी।

प्रतिकर्मन् (नपु०) [प्रति + कृ + मनिन्] 1 प्रतिशोध,
प्रतिहिंसा 2 हजारा, उपचार, प्रतिकार 3 शारीरिक
श्रृंगार, रूपसज्जा प्रमाधन, शरीर-सज्जा (अबला)
प्रतिकर्म कर्तृमुपवर्षमिरे समये हि सर्वमुपकारि कृतम्
--शि० १।४३, ५।२३, कु० ७।३ 4, विरोध, सचता।

प्रतिकर्ष [प्रति + कृ + षच्] 1 एकहीकरण, सधाजन
2 (किसी आगे आने वाले शब्द का) पूर्व विचार।

प्रतिकर्ष [प्रति + कृ + षच्] 1 नेता 2 महायक
3 सदेहहर।

प्रति (लौ) कार [प्रति = कृ + षच्, पक्षे उपसंगम्य
दीर्घ] 1 प्रतिशोध, पुरस्कार, प्रतिदान 2 बदला,
प्रतिहिंसा, प्रतिकूल 3 प्रतिविधान, निवारण, रोक-
थाम, उपचार, इलाज या चिकित्सा --विकार लक्ष्
पन्मार्षतोऽज्ञात्वाज्जारम प्रतीकास्य श० ३, प्रती-
कारो आधे सुवर्णिति विपर्यस्यति जन - भृ० ३।
९२ 4 विरोध। मम० --कर्मन् (नपु०) जीणोद्धार
करना, सुधार करना, चिद्यन्तम् इलाज करना,
चिकित्सा करना --प्रतिकारविधानमाद्युष सति शोथे
हि फलाय कल्पते रघु० ८।४०।

प्रति (लौ) कात् [प्रति + कृ + षच्, पक्षे उपसंगम्य
दीर्घ] 1 परछाई 2 वृत्ति, दर्शन, सादृश्य -- (प्राय

समान के अन्त में-के समान 'से मिलता-जुलता' अर्थ प्रकट करना है) —पुटाकप्रतीकाश —उत्तर० ३११ ।
प्रतिकुम्भित (वि०) [प्रति + कुम्भ् + क्त] झुका हुआ, मुड़ा हुआ ।
प्रतिकूल (भू० क० कृ०) [प्रति + कृ + क्त] 1 बापस किया हुआ, लौटाया हुआ, प्रतिपादित, प्रतिहिंसित 2. प्रतिबहिर्हित, उपचार किया हुआ ।
प्रतिकूलि (स्त्री०) [प्रति + कृ + क्त] 1 बदला, प्रतिहिंसा 2. बापसी, प्रतिशोध 3 परछाई, प्रतिबिम्ब 4 समानता, चित्र, मूर्ति, प्रतिमा —रघु० ८।१२, १६।८७, १८।५७ 5 स्थानापन्न ।
प्रतिकृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति + कृ + क्त] 1 दो-बार जोता हुआ 2 पीछे ढकेला हुआ, निरम्बल, अस्वीकृत 3. छिपाया हुआ, गुप्त 4 नीच, दुष्ट, अधम ।
प्रतिकोप, **प्रतिकोध** [प्रति + कृ + क्त] कोप के प्रति होने वाला कोप ।
प्रतिक्रम [प्रति + कृ + क्त] उलटा क्रम ।
प्रतिक्रिया [प्रति + कृ + क्त, इन्द्र + टाप्] 1 क्षतिपूर्ति, प्रतिपाद 2. प्रतिहिंसा, बदला, प्रतिकूल 3 प्रतिविधान, पराङ्कार, दूरीकरण —अहेतु पक्षपाता परतस्त प्रतिक्रिया —उत्तर०-५।१७, रघु० १५।४ 4 विरोध 5 दामोदरवा, भृंगार, रूपमन्त्रा 6 रक्षा 7 सहायता, कुम्भक या माहात्म्य ।
प्रतिकृष्ट (वि०) [प्रति + कृ + क्त] दयनीय, बेचारा, गरीब ।
प्रतिशब्द [प्रति + शि + अच्] सरलक, टहलुआ ।
प्रतिश्रित (भू० क० कृ०) [प्रति + शिप् + क्त] 1 रद्द किया हुआ, अस्वीकृत, हटाया हुआ 2 प्रतिहृत, प्रतिरुद्ध, पीछे ढकेला हुआ, अवरोध किया हुआ 3 अन्यायित, भ्रमना किया हुआ, बदनाम किया हुआ 4 भेजा हुआ, प्रेषित ।
प्रतिभूतम् [प्रति + भू + क्त] छीक ।
प्रतिष्ठा [प्रति + शिप् + क्त] 1 पानि स्वीकार न करना, अस्वीकृति 2 विरोध करना, लच्छन करना, प्रतिवाद करना 3 विवाह ।
प्रतिस्थापित [प्रति + स्था + क्त] विधूत, प्रमिट्टि ।
प्रतिगत (भू० क० कृ०) [प्रति + गम् + क्त] आगे या पीछे उभान भरना, इधर उधर चक्कर काटना ।
प्रतिगमनम् [प्रति + गम् + क्त] लौटना, वापिस जाना, वापसी ।
प्रतिगृहीत (भू० क० कृ०) [प्रति + गृह् + क्त] कलकित, निर्दिष्ट ।
प्रतिगर्भता [प्रति + गर्भ + क्त] गर्भ के जवाब में गर्भना करना, रिश्ती की दृष्टि मुनकर दहाइना ।

प्रतिगृह्यत (भू० क० कृ०) [प्रति + गृह् + क्त] 1 लिया, ग्रहण किया, स्वीकार किया 2 मान किया, हाथी मरी 3 विवाह किया ।
प्रतिग्रहः [प्रति + ग्रह् + अच्] ग्रहण करना, स्वीकार करना 2. दान ग्रहण करना या स्वीकार करना 3. दान ग्रहण करने का अधिकार 4 उपहार ग्रहण करने का अधिकार (जो कि शास्त्रों का ही विशेषाधिकार है) मनु० १८८, ५।८६, याज्ञ० १।११८ 4 भेंट, उपहार, दान-दाजः प्रतिग्रहोऽयम्-सं० १, शि० १४।३५ 5 (भेंट का) ग्रहण करने वाला 6 मादर स्वागत 7 अनुग्रह, दान 8 पाणिग्रहण 9 ध्यान पूर्वक मुनना 10 लेना का पिछला भाग 11 पीक दान ।
प्रतिग्रहणम् [प्रति + ग्रह् + क्त] 1 उपहार ग्रहण 2 स्वागत 3 पाणिग्रहण ।
प्रतिग्रहीत, **प्रतिगृहीत** (पु०) [प्रतिग्रह् + शिन्] प्रति + ग्रह् + क्त] ग्रहण करने वाला, ग्रहीता ।
प्रतिग्रहः [प्रति + ग्रह् + क्त] 1 उपहार स्वीकार करना 2 युक्तदान, पीक दान ।
प्रतिघ [प्रति + हन् + क्त, कुलम्] 1 विरोध, मुकाबला 2 लड़ाई, सघर्ष, आपस की मारपीट 3 क्रोध, रोध 4 मूर्ख 5 पाप ।
प्रति(सौ)घातः [प्रति + हन् + क्त + टाप्] पसे उपसर्गस्य दीर्घ] 1 दूर हटाना, पीछे ढकेलना 2 विरोध, मुकाबला 3 आघात के बदले आघात, जवाबी आघात 4 प्रतिशोध, प्रतिकार 5 प्रतिशेष ।
प्रतिघातनम् [प्रति + हन् + क्त + टाप्] 1 पीछे ढकेलना, दूर हटाना 2 घर्ष, हत्या ।
प्रतिघ्नम् [प्रति + हन् + क्त] शरीर ।
प्रतिघ्नोर्षा [प्रति + हन् + क्त + टाप्] बदले की इच्छा, प्रतिहिंसा की इच्छा, बदला लेने की अभिलाषा ।
प्रतिघ्नस्तनम् [प्रति + हन् + क्त + टाप्] मनन करना, गहन-चिन्तन करना ।
प्रतिघ्नस्तनम् [प्रति + हन् + क्त + टाप्] डकना, चार ।
प्रतिघ्नस्तनः [प्रति + हन् + क्त + टाप्, कन् च] 1. समानता, चित्र, मूर्ति प्रतिमा 2 स्थानापन्न - शि० १२।२९ ।
प्रतिघ्नस्तन (भू० क० कृ०) [प्रति + हन् + क्त] 1 दका हुआ, आस्थादिन, लपेटा हुआ 2 छिपाया हुआ, गुप्त 3 बुटाया हुआ, पूर्वसंचित 4 गोट या मगशी लगाया हुआ, जडा हुआ ।
प्रतिघ्नः [प्रति + हन् + क्त] मुकाबला, विरोध ।
प्रतिघ्नः [प्रति + हन् + क्त] उत्तर, जवाब ।
प्रतिघ्नः [प्रति + हन् + क्त] सादर सहमति ।
प्रतिघ्नः [प्रति + हन् + क्त] निगरानी, देख-रेख सावधानी ।

प्रतिबीचनम् [प्रति + बीच् + ल्यट्] पुनर्बीचन, पुन
सबीचता ।

प्रतिज्ञा [प्रति + ज्ञा + अङ् + टाप्] 1 मानना, अंगीकार
करना 2 व्रत, बचन, वादा, औपचारिक घोषणा
—ईशानोर्ण प्रतिज्ञा मुद्रा० ४।१२, तीर्था जनेनैव
विनायदुत्तरा नदी प्रतिज्ञापिष्य ता श्रीश्रीसीम्—वि०
१२।७८ 3 उक्ति दृढोक्ति, घोषणा, वचन
4 (न्या० में) प्रस्थापना, सहाय्य पचासो अनुमान
का प्रथम अंग, दे० 'न्याय' के अन्तर्गत ('पर्वतो
वज्रमान' नामान्य उदाहरण है) 5 अधिघोष,
आरोपणम् । मम०—पञ्च बचनम्, निश्चित सविदापत्र,
—मम प्रतिज्ञा का तोड़ देना, —विरोध, वचन के विरुद्ध
आचरण करना —विधाहित (वि०) जिसकी मगई हो
गई हो, —सत्यास 1 वचन भंग करना, 2 (न्या० में)
मूल प्रस्ताव का त्याग कर देना (इसी अर्थ में 'प्रतिज्ञा-
हानि' शब्द भी प्रयुक्त होता है) ।

प्रतिज्ञात (भू० क० कृ०) [प्रति + ज्ञा + क्त] 1 उद्घोषित,
उक्त, दुहरा प्रबुद्ध कथित 2 वचनबद्ध, सहमन
3 माना हुआ, अंगीकृत—तम् वचन, वादा ।

प्रतिज्ञानम् [प्रति + ज्ञा + ल्यट्] 1 उद्घोषित, प्रवचन
2 करार, वादा 3 मानना, स्वीकार करना ।

प्रतिज्ञर [प्रति + त् + अण्] शक होने वाला, मल्लाह या
नाविक ।

प्रतिज्ञाली [प्रतिज्ञा तालम्—शा० सं० शीप्] (दरवाजे
की) कुञ्जी, चाबी ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति + द्भृ + ल्यट्] बंधना, प्रत्यन्त करना ।
प्रतिबन्धनम् [प्रति + धा + ल्यट्] 1 फलटाना, प्रत्यन्त, वापिस
देना, (घरोट्टर आदि की) पुनरापत्ति 2 विनिमय,
वस्तुओं की बदलावदली ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति + धृ + षिच् + ल्यट्] 1 लड़ाई, युद्ध
2 काटना ।

प्रतिबन्धनम् (पु०) [प्रात + दिव् + कान्त्] 1 दिन 2 सूर्य ।

प्रतिबुद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति + बुद् + क्त] 1. देखा
हुआ 2 दृष्टि मात्र, दृश्यमान ।

प्रतिबाधनम् [प्रति + धाव् + ल्यट्] धाबा बोलना, हमला
करना आक्रमण करना ।

प्रतिध्वनि, प्रतिध्वान [प्रति + ध्वन् + इ, धञ् वा]
गूं, प्रतिध्वनन ।

प्रतिध्वस्त [भू० क० कृ०] [प्रति + ध्वन् + क्त] पछाड़-
कर नीचे गिराया हुआ, अधोमुख, क्षिप्त ।

प्रतिध्वस्तम् [प्रति + ध्वन् + ल्यट्] 1, बघाई देना, स्वागत
करना 2 धन्यवाद देना ।

प्रतिज्ञर [प्रति + त् + धञ्] गूं, प्रतिध्वनि ।

प्रति (श्री) ग्राह [प्रति + गृह् + घञ्, घञ् उपसर्गस्य
वीर्ष] ग्राहा, पताका ।

प्रतिविधि [प्रति + वि + पा + क्ति] 1. स्थानापन्न, एवञ्जी,
वह स्थिति जो किसी वस्तु के बदले काम पर लगाया
जाय—सोऽप्रवृत्तप्रतिविधिर्न कर्मणा—रघु० ११।१२,
१।८१, ४।५८, ५।६३, ९।४० 2 सहायक, प्रविधि
3 स्थानापत्ति 4 जातिन 5 प्रतिमा, समानता, चित्र ।

प्रतिविधय [प्रा० त्त०] सहाय्य विषय ।

प्रतिविजित (भू० क० कृ०) [प्रति + वि + जि + क्त]
1 पराजित, परास्त 2 निराक्रान्त, निरस्त ।

प्रतिविरोध (वि०) [प्रति + निर + विच् + ष्वप्] जो
पहला कहा हुआ होने पर भी फिर दोहराया जाय
जिससे कि तन्मयी और कुछ भी फिर दोहराया जाय
जिसमें कि तन्मयी और कुछ भी कह दिया जाय
तु० काव्य० ७ में दिने मये उदाहरण की—उदेति
संविता तावन्तस्ता एवास्तमेति च—(यहाँ 'तावन्'
शब्द को पुनरुक्ति यह बतलाने के लिए की गई कि
सूर्य 'तावन्' ही निकलता है, 'तावन्' ही छिपता है) ।

प्रतिविधानम् [प्रति + वि + धृ + षिच् + ल्यट्] प्रति-
शोध, प्रतिहिना ।

प्रतिविधिष्ट (वि०) [प्रति + वि + विच् + क्त] दुराग्रही,
हठी, पक्का, जिद्दी । मम० मुर्ख दुराग्रही बेवकूफ,
पक्का बुद्ध—न तु प्रतिविधिष्टमूर्खजनचित्तमारा
घयेत्—मनु० २।५ ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति + वि + वृ + ल्यट्] 1 लौटाना,
वापस 2 मुड़ना ।

प्रतिबोध [प्रति + बुद् + घञ्] पीछे ढंकेलना, पीछे
हटाना ।

प्रतिपत्ति (म्यो०) [प्रति + पद् + क्तिन्] 1 हासिल
करना, अवाप्ति, उपलब्धि—चन्द्रलोकप्रतिपत्ति, स्वर्ग
आदि 2 प्रत्यक्षज्ञान, अवेशन, चेतना, (यथावत्) जान
—यावत्प्रतिपत्तये—रघु० १।१, तयोर्भेद प्रतिपत्तिरस्ति
मे—मनु० ३।९९, गुणिनामपि निज रूपप्रतिपत्ति
पत्त एव समवर्ति—वास० 3. हमारी भरना, आज्ञा
पालन, स्वीकरण—प्रतिपत्तिपराङ्मुखी—अदि० ८।९५
(आज्ञानुपालन के विरुद्ध, इस में न जाने वाला)
4 माल लेना, अधिस्वीकृति 5 दुर्वाप्ति, उचित
6 समारम्भ, शुरु, उपक्रम 7 कार्यवाही, प्रयत्न, किया
विधि बयस का प्रतिपत्तिरूप मालवि० ४, कु०
५।४२, विधादनुत्त प्रतिपत्ति संयम्—रघु० ३।४०, लेना
जो क्या कार्यविधि अपनाई जाय इस बात की विधाद
के कारण न जान सकी 8 अनुष्ठान, करना, प्रयत्न
करना प्रस्तुत प्रतिपत्तये—रघु० १५।७५ ९ दुर्ब
सकल्प, निश्चित धारणा—अथवमाय प्रतिपत्ति निष्ठुर
—रघु० ८।५५ १० समाचार, गुप्त बातों कर्मसिद्धा
बाधु प्रतिपत्तिमानय—मुद्रा० ४, शा० ६ ११ सम्मान,
आदर, पूजनीयता का चिह्न, आदर्यक्त श्चहार

—सामान्य प्रतिपत्ति पूर्वकभिय दारेषु दुसवा लवया
 वा० ४११६, ७१, २५० १४१२२, १५१२२
 12 प्रभातो, उवाय 13 बुद्धि, प्रभा ३४ रिवाज,
 प्रयोग 15 उन्नति, तरकमी, उच्चपद प्राप्ति 16 यश
 प्रसिद्धि, क्वाति 17 साहज, भरोसा, विश्वास
 18 सम्प्रत्यय, प्रमाण । सप्त०—बह (वि०) कार्य
 विधि का ज्ञाता,—बह एक प्रकार का नवाडा,—बह.
 मतमेद, दृष्टिकोण में अन्तर, विशारद (वि०)
 कार्यविधि से परिचित, कुशल, वतुर ।
 प्रतिपद् (स्त्री०) [प्रति+पद्+ङिच्] 1 पशुंच, प्रवेश,
 मार्ग 2 आरम्भ, शुरु 3 प्रभा, बुद्धि 4 मुकलपक्ष का
 पहला दिन 5 नवाडा । सप्त०—बह (प्रतिपदा
 का) नया चांद, (विशेष रूप से पूज्य)—प्रतिपञ्चन्द्र-
 तिथीयमास्यञ्—रघु० ८१६५,—सूयम् एक प्रकार
 का नवाडा ।
 प्रतिपदा,—वी [प्रतिपद्+टाप्, डीप् वा] मुकलपक्ष का
 पहला दिन ।
 प्रतिपन्न (भू० क० ङ०) [प्रति+पद्+स्त] 1 उपलब्ध,
 प्राप्त 2 किया गया, अनुष्ठित, कार्यान्वित, निष्पन्न
 3 हाथ में लिया हुआ, आरम्भ 4 वचन दिया हुआ,
 लमा हुआ 5 सहमत, माना हुआ, स्वीकार किया
 हुआ 6 ज्ञात नमोसा हुआ 7 जबाब दिया गया, उत्तर
 दिया गया 8 प्रमाणित, प्रदर्शन (प्रति पूर्वक पद्
 देलो) ।
 प्रतिपारक (वि०) (स्त्री०—दिका) [प्रति+पद्+ङिच्
 +ष्णुल्] 1 देने वाला, स्वीकार करने वाला, प्रदान
 करने वाला, समर्पित करने वाला 2 प्रदर्शित करने
 वाला, महायना करने वाला, प्रमाणित करने वाला,
 स्थापित करने वाला 3 मोच-बिचार करने वाला,
 व्याख्या करने वाला, मोदाहरण निरूपण करने वाला
 4 उन्नत करने वाला, आगे बढ़ाने वाला, प्रगति करने
 वाला 5 प्रभावशाली, निष्पादन करने वाला ।
 प्रतिप्राशनम् [प्रति+पद्+ङिच्+स्युट्] 1 देना, स्वीकार
 करना, प्रदान करना 2 प्रदर्शन, प्रमाणन, स्थापन
 3 अनुशीलन, व्याख्यान विस्तृत रूप से प्रस्तुत करना,
 मोदाहरण निरूपण 4 कार्यान्विनि, निष्पन्नता, पूर्णता
 5 जन्म देना, पैदा करना 6 आवृत्ति, अभ्यास
 7 आरम्भ ।
 प्रतिप्राशित (भू० क० ङ०) [प्रति+पद्+ङिच्+स्त] 1 दिया हुआ,
 प्रदान किया हुआ, प्रस्तुत 2 स्थापित,
 प्रमाणित, प्रदर्शित 3 व्याख्यान, साबितरण प्रस्तुत
 4 उन्नोषित, उन्नत 3 जन्म दिया, पैदा किया ।
 प्रतिपालक [प्रति+पाल्+ङिच्+ष्णुल्] बचाने वाला,
 सरक्षक अभिभावक ।
 प्रतिपालम् [प्रति+पाल्+ङिच्+स्युट्] सरक्षण, बचाना

रक्षा करना, पालन करना, अभ्यास करना ।
 प्रतिषोडनम् [प्रति+षोड्+ङिच्+स्युट्] अत्याचार
 करना, सताना ।
 प्रतिपुत्रणम्,—पुत्रा [प्रति+पुत्र्+स्युट्, प्रतिपुत्र् ; अ ।
 टाप्] 1 अज्ञातलि ज्ञात करना, सम्मान प्रदर्शित
 करना 2 पारस्परिक अभिवादन, मिष्टाचार का
 विनियम ।
 प्रतिपुत्रणम् [प्रति+पुत्र्+स्युट्] 1 पूरा करना, भग्ना
 2 (सुन्दर पिचकारी द्वारा किसी तमल पदाथ को)
 अन्न क्षिप्त करना ।
 प्रतिप्रभाय [प्रति+प्र+नम्+षञ्] बदल में किया
 गया अभिवादन ।
 प्रतिप्रवानम् [प्रति+प्र+दा+स्युट्] 1 वापिस कागना,
 लौटना 2 विवाह में देना ।
 प्रतिप्रवाणम् [प्रति+प्र+या+स्युट्] वापसी, प्रत्यावर्तन ।
 प्रतिप्रण [प्रति+प्रच्छ्+नञ्] के बदले में पूजा गया
 प्रण 2 उत्तर ।
 प्रतिप्रसन्न [प्रति+प्र+सु+ञ्] 1 प्रत्यपवाद, अपवाद
 का अपवाद (बहो अपवाद के अन्तर्गत उदाहरणों में
 ही सामान्य नियम का विधान प्रदर्शित किया जाये)
 तुत्रकाभ्या कर्तार इत्यस्य प्रतिप्रसन्नोऽयम् (गायका-
 दिग्गम्य) सिद्धा० ।
 प्रतिप्रहार [प्रति+प्र+हृ+घञ्] बदल में प्रहार
 करना, घपड़ के बदले घपड़ लगाना ।
 प्रतिप्लवनम् [प्रति+प्ल+न्वुट्] पीछे की ओर बहना ।
 प्रतिप्लव प्रतिकल्पम् [प्रति+प्ल+ञ्] 2 प्रतिप्लव +
 स्युट्] 1 परछाई, प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, छाया 2 पार्श्व-
 धर्मिक, प्रतिदान 3 प्रतिहिंसा, प्रतिबंध ।
 प्रातःफुल्लक (वि०) [प्रति+फुल्+ष्णुल्] फिलने वाला,
 पूरा फिला हुआ ।
 प्रतिषङ्ग (भू० क० ङ०) [प्रति+ञ्+स्त] 1 बाधा
 गया, रंधा हुआ, कना हुआ 2 बांटा गया 3 अवकट,
 स्कापट शाली गर्द, बाधित 4 टुटा हुआ, जटा हुआ
 —वि० ११८ 5 समायुक्त, अधिकार में रूत प्राण
 6 योग्य हुआ, अन्तर्गत 7 दूर रखा हुआ 8 निर्गण
 9 (दर्शन में) अनिर्वाच्य तथा अनिश्चित रूप में
 संयुक्त (जैसे आग और धुँआँ) ।
 प्रतिषण्णः [प्रति+षण्+घञ्] 1 बधन, बाधना 2 अव
 रोध, स्कापट, विघ्न—सतत प्रतिषण्णमन्या—रघु०
 ८१८०, महावी० ५१४ 3 विरोध, मुकाबला 4 आव-
 रोध, नाकेबंदी, बरत 5 सबब 2 (दर्शन में)
 अनिर्वाच्य तथा अनिश्चित सयोग ।
 प्रतिबंधक (वि०) (स्त्री०—धिका) [प्रति+ञ्+
 षुल्] 1 बाधने वाला, अकचने वाला, 2 स्कापट
 अशने वाला, अवरोध करने वाला, विघ्नकारक 3.

मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला, -क
भाषा, अहुर ।
प्रतिबन्धनम् [प्रति + बन्ध् + ल्यट्] 1. बाधना, कसना 2
जद, बधन 3. अवरोध, रूकावट ।
प्रतिबन्धि, -धी [प्रतिबन्ध् + इति, प्रतिबन्ध् + ङीष्] 1.
आरोप 2. ऐसा तर्क जो विपक्ष पर समान रूप से
प्रभाव डाले (इस अर्थ में 'प्रतिबन्धी' शब्द भी है) ।
प्रतिबाधक (वि०) [प्रति + बाध् + क्त] 1 हटाने वाला,
दूर करने वाला 2. रोकने वाला, जबरन करने वाला ।
प्रतिबाधक [प्रति + बाध् + ल्यट्] हटाना, दूर करना,
अवरोधक करना ।
प्रतिबिम्बम् [प्रतिबिम्ब + बिम्ब् + ल्यट्] 1. परछाईं 2
तुलना -बुध्दात्त पुनरेतेया सर्वेषां प्रतिबिम्बनम्
-काव्य० १० ।
प्रतिबिम्बित (वि०) [प्रतिबिम्ब + बिम्ब् + क्त] जिसको
परछाईं पड़ी हो, दर्पण में प्रतिफलित ।
प्रतिबुद्ध (म० क० कृ०) [प्रति + बुद् + क्त] 1 जाया
हुआ, जगाया हुआ 2 पहचाना हुआ, देखा हुआ 3
सिद्ध, विषयात् ।
प्रतिबुद्धि (स्त्री०) [प्रति + बुद् + क्तिन्] 1. जागरण
2 विरोधी अभिप्राय या इरादा ।
प्रतिबोध [प्रति + बुद् + घञ्] 1 ज्ञानता, जागरण,
जगाया जाना -तदपोहितुमर्हति प्रिये प्रतिबोधेन
विषयमाद्यु मे-रघु० ८।५४, अप्रतिबोधघटाश्रित्यी
-५८, सदा के लिए मैं जाने वाली' कि० ६।१२,
१२।८८ 2 प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी 3 अनुदेश, शिक्षण
4 तर्क, तर्कना, मन शक्ति-किमुत्त या प्रतिबोधवत्य
श० ५।२२ ।
प्रतिबोधनम् [प्रतिबुद् + णिच् + ल्यट्] 1 जगाना 2
शिक्षण, अनुदेश ।
प्रतिबोधित (वि०) [प्रति + बुद् + णिच् + क्त] 1
जगाया हुआ 2 अनुदिष्ट, शिक्षित ।
प्रतिभा [प्रति + भा + क् + टाप्] 1 बख्श, दृष्टि 2
प्रकाश, प्रभा 3 बुद्धि, समझ-कि० १६।२, विक्रम०
१।८, २३ 4 मेधा, प्रखर बुद्धि, विशद कल्पना,
प्रज्ञा (प्रज्ञा नवनबोधवैशालिनी प्रतिभा मता) 5.
प्रतिबन्ध, परछाईं 6 बुध्दात्ता, छिटाई। सम०-अन्वित
(वि०) 1 मेधावो, प्रज्ञावान् 2 बंधक, साहसी,
-बुद्ध (वि०) साहसी, दिनेर, -हृत्ति (स्त्री०)
1 अधिकार 2 प्रज्ञा या मेधा का अभाव ।
प्रतिभात (भू० क० कृ०) [प्रति + भा + क्त] 1 उज्वल,
प्रभासक 2 ज्ञान, अध्याहृत, अचलत ।
प्रतिभासम् [प्रति + भा + ल्यट्] 1 प्रकाश, दीप्ति 2 बुद्धि
या समझ, ज्ञान की चमक-हि० ३।१९ 3 हाथिर
जगानी -प्रत्युत्पन्नमित्ये-कालवबोध प्रतिभासवत्यम्

-मा० ३।११, दमघोषमुनेन कश्चन प्रतिभाष्ट
प्रतिभासवानथ-शि० १६।१ ।
प्रतिभास [प्रति + भा + घञ्] तदनुकूप वृत्ति ।
प्रतिभासा [प्रति + भाष् + अ + टाप्] उत्तर, जवाब ।
प्रतिभास [प्रति + भाष् + घञ्] 1 मन में स्पष्टि होना,
चमकना झलकना, (अकम्पाम्) प्रतीति-बाध्य-
वैकिन्ध प्रतिभासादेव-काव्य० १० 2 दृष्टि, दर्शन
3 चम, माया ।
प्रतिभासवम् [प्रति + भाष् + ल्यट्] दृष्टि दर्शन, झलक ।
प्रतिभिन्न (भू० क० कृ०) [प्रति + भिन् + क्त] 1 पार-
विद्ध 2 मटा हुआ, जुड़ा हुआ 3 विभक्त ।
प्रतिभू [प्रति + भू + क्तिष्] 1 जमानत, प्रतिभूति,
जमानत देने वाला, (उत्तरदायी होने का प्रमाणपत्र),
विधवाय, सीमायात्यागप्रतिभू पदानाम्-विक्रम०
१।९-वाङ्म० २।१०, ५०, न० १६।६ ।
प्रतिबेदनम् [प्रति + भिद् + ल्यट्] 1 आर पार बांधना,
घुसेटना 2 काटना, व्यंजित करना, फाटना 3
(आय) निकाल लेना 4 विभक्त करना ।
प्रतिभोग [प्रति + भू + घञ्] उपभोग ।
प्रतिभा [प्रति + भा + अङ् + टाप्] 1 प्रतिबिम्ब, समानता,
प्रतिभा, आहुति, वृत्त -रघु० १६।३७ 2 समरूपता
सादृश्य (शाय समान में गुरो जगानुप्रतिमान्
-रघु० २।५९, 3 परछाईं, प्रतिबिम्ब -मुष्मिदु-
कञ्जवलकपोलमन प्रतिभाच्छलेक, मुद्राभाविशान्-वि०
९।४८, ७३, रघु० ७।६६, १२।१०० 4 भाष, विलास
5 दोनो दातो के बीच का हाथी के सिर का भाग ।
नम०-गत (वि०) मूर्ति में वर्तमान, -कञ्ज प्रति-
बिहित चन्द्रमा, चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब -रघु० १०।६५,
दसो प्रकार-प्रतिभेदु, प्रतिभासगाक, -परिचरक
पुजारी, मूर्ति का सेवक ।
प्रतिभालम् [प्रति + भा + ल्यट्] 1 नमना, प्रतिभूति 2
प्रतिभा, मूर्ति 3 समानता, उपमा, समरूपता 4 बोल
5 दातो का मध्यवर्ती सिर का भाग-पृथुप्रतिभासभाग
-, शि० ५।३६ 6 परछाईं ।
प्रतिभुषत (वि०) [प्रति + भू + क्त] 1 धारण किया
हुआ, पहना हुआ, प्रयुक्त किया हुआ 2 कसा हुआ,
बांधा हुआ, जकड़ा हुआ 3 शास्त्र से मज्जित,
हृथियाजद 4 मुक्त, छोड़ा हुआ 5 लौटाया हुआ,
वापिस किया हुआ 6 फँका हुआ उछाला हुआ
(दे० प्रतिपुर्बक 'भूच्') ।
प्रतिभोज, प्रतिभोजनम् [प्रति + भोज् + घञ्, ल्यट्,
वा] भूषित, छुटकारा ।
प्रतिभोजनम् [प्रति + भू + ल्यट्] 1 शिथिल करना
2 प्रतिबोध, प्रतिहिंसा, प्रतिदान-वैरप्रतिभोजनाय
-रघु० १५।४१ 3 मूर्ति, छुटकारा ।

प्रतिबन्ध [प्रति + बन्ध् + क्त] 1 प्रवास, उद्योग, चेष्टा 2 तैयारी, परिश्रम द्वारा सम्पादन—शिव ३१५४ 3 पूर्ण या पूरा करना 4 नया गुण सिखाना—सतो गुणांतराचल प्रतिबन्ध—शां २३१५३ पर काँधिका 5 अभिलाषा, इच्छा 6 विरोध, मुकाबला 7 प्रतिहिंसा, प्रतिघोष, बदला 8 बंदी बनाना, बंद करना 9 अनुग्रह ।

प्रतिघातनम् [प्रति + घात् + क्त] प्रतिघोष, प्रतिहिंसा—जैना कि 'अप्रतिघातन' में ।

प्रतिघातना [प्रति + घात् + क्त] प्रतिघोष, प्रतिघोष, प्रतिघातन—शिव ३१३४ ।

प्रतिघातनम् [प्रति + घात् + क्त] शीटना, प्रत्यावर्तन, वापिस ।

प्रतिघोष [प्रति + घोष् + क्त] 1 किसी वस्तु का प्रतिरूप होना या बनाना 2 विरोध, मुकाबला 3 अन्तर्विरोध, बचनविरोध 4 सहयोग 5 विपनिवारक अधिपति, उपचार ।

प्रतिघोषिन् (वि०) [प्रति + घोष् + क्त] 1 विरोध करने वाला, प्रतिकारक ब्राह्मण 2 सख्त या तदनु रूप, किसी वस्तु का प्रतिरूप बनाने वाला, प्रायः न्यायविषयक रचनाओं में प्रयुक्त 3 सहयोग करने वाला—(पु०) 1 विरोधी, विपक्षी, शत्रु—दृष्टयोग्य प्रतिघोषिण्यवै—विष्णु १११७ 2 प्रतिरूप, ढोड़ का ।

प्रतिघोड़ (पु०) प्रतिघोष [प्रति + घोष् + क्त] शत्रु, विपक्षी ।

प्रतिघ्ननम्—रक्षा [प्रति + घ्न + क्त] शत्रु, अह् + टाप् वा] बचाव, सधारण, रक्षा ।

प्रतिरम् [प्रति + रम् + क्त] क्रोध, रोष ।
प्रतिरम् [प्रति + र् + क्त] 1 कलह, झगडा 2 गुज, प्रतिस्पर्धि ।

प्रतिरुद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति + रुद् + क्त] 1 अवरुद्ध, बाधित, बिच्छापूर्वक 2 रक्षा हुआ, अन्तर्गत 3 अतियुक्त 4 विकलकृत 5 वेष्टित, घेरा डाला हुआ ।

प्रतिरोध [प्रति + रोध् + क्त] 1 अटकाव, रुकावट, स्थि 2 घेरा, नाकेबंदी 3 विपक्षी 4 छिपाना 5 चोगे, डकैती 6 निन्दा, धूषा ।

प्रतिरोधक, प्रतिरोधिन् (पु०) [प्रति + रोध् + क्त] प्रतिरोधक, प्रतिरोधिन् (पु०) [प्रति + रोध् + क्त] 1 विपक्षी 2 कूटरा, बोर—मालवि० ५११० 3 रुकावट ।

प्रतिरोधनम् [प्रति + रोध् + क्त] विरोध करना, रुकावट डालना ।

प्रतिरुम् [प्रति + रुम् + क्त] 1 हासिल करना, प्राप्ता करना, ग्रहण करना 2 निन्दा, गाली, खरी-वांटी (सुनाता) ।

प्रतिरुम् [प्रति + रुम् + क्त] वापिस लेना, ग्रहण करना, हासिल करना ।

प्रतिबन्धनम्, प्रतिबन्धम् (नपु०) प्रतिबन्ध (स्त्री०) प्रति-
बन्धनम् [प्रति + बन्ध् + क्त] बन्ध् + क्त + क्त] उत्तर, जवाब—प्रतिबन्धनदत्त केनाथ तपमानाम न वेदिभूमुखे—शिव १६१२५, परभूतविष्णु काल यथा प्रतिबन्धनीकृतमेतिरीयुगम्—शं ४१९ ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति + बन्ध् + क्त] शीटाना, वापिस करना ।
प्रतिबन्धनम् [प्रति + बन्ध् + क्त] श्राम, शिव ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति + बन्ध् + क्त] वापिस ले जाना, वापिस ले जाने में नेतृत्व करना ।

प्रतिबाध [प्रति + बाध् + क्त] 1 उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब 2 इकार करना, अस्वीकृति ।

प्रतिबाधिन (पु०) [प्रति + बाध् + क्त] 1 विपक्षी 2 प्रतिपक्षी उत्तरदायी (कानून में) ।

प्रतिबाध, प्रतिबाधनम् [प्रति + बाध् + क्त] प्रति + बाध् + क्त] परे रचना, बुरा रचना ।

प्रतिबाधिता [प्रा० म०] वर्णन, सूचना, समाचार, सवाद ।
प्रतिबाधितम् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रति + बाध् + क्त] निकट रहने वाला, पड़ोस में रहने वाला—पु० पड़ोसी ।

प्रतिबाधित [प्रति + बाध् + क्त] प्रहार के बदले प्रहार करना, बचाव ।

प्रतिबाधनम् [प्रति + बाध् + क्त] 1 प्रतिकार करना, विरोध में काम करना, विरोध करना, बिम्ब कार्य करना 2 व्यवस्था, काम 3 रोक धाम 4 स्थाना-पन्न सम्कार, महकारी सम्कार ।

प्रतिबाधित [प्रति + बाध् + क्त] 1 प्रतिघोष 2 उप-चार, प्रतिक्रिया के उपाय ।

प्रतिबाधित (वि०) [प्रति + बाध् + क्त] अत्यन्त श्रेष्ठ ।

प्रतिवेश [प्रति + विष् + क्त] 1 पड़ोसी 2 पड़ोसी का वास्तुस्थान, पड़ोस । सम०—वासिन् (वि०) पड़ोस में रहने वाला (पु०) पड़ोसी ।

प्रतिवेशिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्रतिवेश + इति] पड़ोसी—दृष्टि हे प्रतिवेशिनि अणमिहाण्यस्मदगृहे दास्यमि—मा० दा०, मुष्ण ३११४ ।

प्रतिवेश [प्रति + विष् + क्त] पड़ोसी ।
प्रतिवेशित (भू० क० कृ०) [प्रति + वेष्ट् + क्त] प्रत्या-वृत्त विषयन्त, पीछे की ओर मुड़ा हुआ ।

प्रतिव्यूह (भू० क० कृ०) [प्रति + वि + क्त] सदाय व्यवह रचना में परास्त ।

प्रतिव्यूह [प्रति + वि + क्त] 1 शत्रु के विरुद्ध सेना की व्यवह रचना 2 व्यवस्था, सधह ।

प्रतिव्यूह [प्रति + वि + क्त] विधान, विराम ।

प्रतिव्यूह [प्रति + वि + क्त] किसी अश्रेष्ठ पदार्थ की प्राप्ति के लिए अनशन करके देवता के सामने पड़े रहना, धरना देना ।

प्रतिशयित (वि०) [प्रति + शी + क्त] अपने किसी अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति के लिए बिना कष्टों के देवता के सामने धरना देने वाला—अनया च किलास्ये प्रतिशयिताय स्वप्ने सभासिद्धम्—दाश० १२१।

प्रतिशयः [प्रति + शय् + घञ्] शायक के बदले शाय, बदले में शाय।

प्रतिशालनम् [प्रति + शाल् + स्पृट्] 1 आदेश देना, हूत के रूप में भेजना, आज्ञा देना 2 किसी हूत की बाहर के बूला भेजना 3 वापस बुलाना 4 विरोधी आदेश, अधिकृत कथन—अप्रतिशालनं जगत्—रघु० ८।२७ (पूर्व रूप से एक ही शासक के शासन में)।

प्रतिशिष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति + शिष् + क्त] 1 आदिष्ट, प्रेषित वि० १६।१ 2 विश्रुत किया हुआ, अस्वीकृत 3 विख्यात, प्रसिद्ध।

प्रतिशया, प्रतिशयात्मन्, प्रतिशयायः [प्रति + शय् + क + टाप्, स्पृट्, वा वा] अकाम, समी।

प्रतिशयः [प्रति + शि + अच्] शरणागुह, आश्रम 2 घर, आवासस्थान, निवासस्थल—याज्ञ० १।२१० मनु० १०।५१ 3 समा 4 यज्ञ भवन 5 मन्द, सहायता 6 प्रतिज्ञा।

प्रतिशयः [प्रति + श्य् + अच्] 1 स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा 2 गुज।

प्रतिशयश्चयम् [प्रति + श्य् + स्पृट्] 1 ध्यान पूर्वक मुनना मनु० २।१९५ 2 वचन देना, हाथी भरना, सहमत होना 3 प्रतिज्ञा।

प्रतिश्रुत, प्रतिश्रुति (स्त्री०) [प्रति + श्रु + क्तिच्, क्तिच् वा] 1 प्रतिज्ञा 2 यज्ञ, प्रतिष्ठापन रघु० १३।६०, १६।३१, शि० १।७।५२।

प्रतिश्रुत (भू० क० कृ०) [प्रति + श्रु + क्त] वचन दिया हुआ, सहमत, हाथी भरी हुई।

प्रतिश्रिद्ध (भू० क० कृ०) [प्रति + श्रिप् + क्त] 1 निषिद्ध, रजित, अननुमत, अस्वीकृत 2 मण्डित, प्रत्यक्ष।

प्रतिशेष [प्रति + शिप् + क्त] 1 दूर रचना, परे हटाना, हाक कर दूर कर देना, निकाल देना—विष्णु० १।८ 2 प्रतिशेष पद्या आत्मप्रतिशेष में 3 मुकरना, अस्वीकृति 4 निषेध करना, विरुद्ध कथन। सप्र० अक्षरम्, उचित, (स्त्री०) मुकर जाने के शब्द, अस्वीकृति शं० ३।२५, उपमां दधित द्वारा वणित उपमा का एक शब्द, इसकी परिभाषा न जानू शक्ति-विन्दोस्ते मुखेन प्रतिशेषितुम्, कलकत्तो अदस्येति प्रतिशेषोपसर्गे सा काण्डा० २।३५।

प्रतिशेषक, प्रतिशेषकम् (वि०) [प्रति + शिप् + क्त, कृच् वा] 1 हटाने वाला, निषेध करने वाला, रोकने वाला 2 मना करने वाला—(पुं०) विप्रकारक, निवारक।

प्रतिशेषणम् [प्रति + शिप् + स्पृट्] 1 दूर रचना, परे हटाना, रोकना 2 निवारण करना 3 मुकरना, अस्वीकृति।

प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठाकः [प्रति + स्था + क्त, प्रति + कश् + अच्, मुट्] आसूत, सदेशबाहक, हूत।

प्रतिष्ठाकः [प्रति + कश् + अच्, मुट्] 1 मेधिया, हूत 2 चाबुक, हट्टर।

प्रतिष्ठाकः [प्रति + कश् + अच्, मुट्] चाबुक, बमड़े का कोड़ा।

प्रतिष्ठश्च, [प्रति + स्तम् + घञ्, पत्व] अक्षरोच, रुकावट, मुकाबला, विरोध, विघ्न—बाहुप्रतिष्ठमविवृद्धमन्यु—रघु० २।३२, ५९।

प्रतिष्ठा [प्रति + स्था + अच् + टाप्] 1. उठरना, रहना, स्थिति, अवस्था—अपौरुषेयप्रतिष्ठा—भा० ९, शं० ७।६ 2 घर, निवासस्थान, जन्मभूमि, आवास—रघु० ६।२१, १५।५ 3 स्त्रीय, स्थिरता, दृढ़ता, स्थापना, दृढ़ाधार—अप्रतिष्ठे रघुज्येष्ठे का प्रतिष्ठा कुलस्य न—उत्तर० ५।२५, अत्र सत्तु मे यथाप्रतिष्ठा—शं० ७, यथा प्रतिष्ठा नील का० २८०, शि० २।३४ 4 आधार, नींव, ठिकाना—असा किं 'युधप्रतिष्ठा मे 5. पाया, टेक, महाराज (अन) कीर्तिमानजन, विधुत अलकार—रत्ना मया नाम कुलप्रतिष्ठा—शं० ६। २५, हे प्रतिष्ठे कुलस्य न ३।२१, कु० ७।२७, महाशी० ७।२१ 6 उच्चदण्ड, प्रमुखा, उच्च शक्ति—मुद्रा० २।५ 7 स्थापित, यज्ञ, कीर्ति, प्रतिष्ठा—भा निषाद प्रतिष्ठा स्वमगम शब्दतो समा—रामा० (= उत्तर० २।५) 8 सम्पत्ताना, प्रतिष्ठापन मुद्रा० १।१५ 9 अभीष्ट पदार्थ की प्राप्ति, निष्ठापित, (इच्छा की) पूर्ति औपम्यमात्रमवसादवति प्रतिष्ठा—शं० ५।६ 10 गाति, विश्राम, विश्रान्ति 11 आधार 12 पृथिवी 13 किसी देवप्रतिमा की स्थापना 14 सीमा, हद।

प्रतिष्ठात्मन् [प्रति + स्था + क्त] 1 आधार, नींव 2 ठिकाना, स्थिति, अवस्था 3 टोंग पैर 4 गंगा यमुना के संगम पर स्थित एक नगर—चन्द्रवशा के आदिकाशीन गजशाओ की गजधानी था—तु० विष्णु० २।५ 5 गोदावरी पर स्थित एक नगर का नाम।

प्रतिष्ठित (भू० क० कृ०) [प्रति + स्था + क्त] 1 जनाया हुआ अथवा किया हुआ 2 स्थिर किया हुआ, स्थापित किया हुआ 3 रक्सा हुआ, अवस्थित 4 स्थापित, प्रतिष्ठापित, अभिमानित—पुन, कार्यान्वित 6 कीमती, मूल्यवान् 7 विख्यात, प्रसिद्ध (हे० प्रति पूर्वक स्था)।

प्रतिष्ठितम् (स्त्री०) [प्रति + स्तम् + विट् + क्तिच्] किसी वस्तु के विवरण का वैशेष्य ज्ञान।

प्रतिष्ठितारः [प्रति + स्तम् + ह् + घञ्] 1 पीछे से जाना,

वापिस हटाना 2 अलगा, सपीडन 3 धारणा
शक्ति, समारोह 4 परिपक्व करना, छोड़ना ।
प्रतिनवृत्त (मू० क० ह०) [प्रति + न्वृत् + क्त]
1 वापिस लिया हुआ, पीछे को लौटा हुआ, एष
प्रतिनवृत्त - श० १ 2 सम्मिलित करना, अलग-अलग
करना 3 सपीडित ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] 1 पुनरुत्थान
2 प्रतिच्छाया, परछाई ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ् + टाप्] चेतना ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ् + ट] 1 पीछे मुड़ना
2 पुनरुत्थान 3 विरोध विराट् अण् का किर
प्रकृति के रूप में लीन हो जाना ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] सदेव का जवाब,
मदेव के बदले मदेव ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] 1 एक स्थान पर
मिलना, एकत्र होना 2 दो युगों का मध्यवर्ती सङ्ग
मणकाल 3 उपाय, उपचार 4 आत्मनिवेशन, आत्म
ध्यान 5 प्रयोग ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] 1 पुनर्मिलन 2 मधी-
न्य में प्रवेशकाल 3 दो युगों का मध्यवर्ती सङ्ग
काल 4 विराट्, उपरम् ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] चिकित्सा,
उपचार ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] 1 सामना
होना, जोड़ का होना 2 मुकाबला करना, विरोध
करना, टक्कर देना ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] कलाई वा गरदन में
पहनने का नाबीज, - र 1 बैक, अमृचर 2 कडा,
किवाज-रुक्म सम्पत्तिसंपन्निकरण करण पाणि (अमृ-
चर) - कि० ५३३ (= कौमुकमृचर = पल्लि०)
3 पुण्यमाला वा हार 4 प्रभात काल 5 सेना का
पुनराय 6 एक प्रकार का जादू 7 धाव का पुनरा,
ग घाव पर पट्टी बांधना ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] 1 गीय रचना (जैसा
कि ब्रह्मा के नाम पर पूरे द्वारा) 2 विघटन, प्रलय ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] भाट नारण,
बंदी ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] 1 धाव के
किनारी की मग्ननाद्री करना 2 धाव में मग्न
जगने का उपकरण ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + घञ्] परदा, बिक,
कनात ।
प्रतिनवृत्त (म० क० ह०) [प्रति + न्वृत् + क्त] 1. मेवा
गडा, प्रेषित 2 प्रतिष्ठ 3 पीछे डकेला गया, अस्वीकृत
4 तबों में बूर (वरणि के अनुसार 'प्रमत्त') ।

प्रतिनवृत्त (मू० क० ह०) [प्रति + न्वृत् + क्त] म्यान
किया हुआ ।
प्रतिनवृत्त [प्रा० स०] बदले में प्यार, प्रतिप्रेम वा बदले
में किया गया प्रेम ।
प्रतिनवृत्त [प्रा० स०] हृदय की धक्कन ।
प्रतिनवृत्त, प्रतिनवृत्त [प्रा० स०] नृज, प्रतिध्वनि - शि०
१३३१ ।
प्रतिनवृत्त (मू० क० ह०) [प्रति + न्वृत् + क्त] 1 उलटा
पारा हुआ, पछाहा हुआ 2 भगवा हुआ, हूर किया
हुआ, पीछे डकेला हुआ 3 विरोध किया हुआ, अचरब
4 मेवा हुआ, प्रेषित 5 प्रेषित, नापसंद 6 हाथ,
अन्नात । सम० - मति (वि०) नृजा करने वाला,
नापसंद करने वाला ।
प्रतिनवृत्त (स्त्री०) [प्रति + न्वृत् + क्त] 1 उलटकर
प्रहार करना, पछाडना, डकेलना 2 पलट पडना,
परावर्तन - प्रतिनवृत्त अमृचरमुष्टव - कि० १८५,
शि० १५९३ नाउम्मीदी, अन्नाता 4 श्रेष्ठ ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त] उलट कर प्रहार करना,
पछाड देना, पलट कर मानना, आधान के बदले
आधात करना ।
प्रतिनवृत्त (पु०) [प्रति + न्वृत् + क्त] पछाडने वाला,
हटाने वाला, पीछे डकेलने वाला, हूर करने वाला ।
प्रति (स्त्री) हार [प्रति + न्वृत् + क्त], पले उपसर्ग
दीर्घ] 1 उलट कर प्रहार करना 2 दरवाजा,
फाटक 3 दरवान, द्वारपाल 4 जादूगर 5 ऐन्द्रजालिक,
जादूभरो चाल । सम० - भूमि (स्त्री०) (चर की)
देहली कु० ३५८, - रको स्त्री द्वारपाल, प्रतिनवृत्त
- रघु० ६१० ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त] ऐन्द्रजालिक, जादूगर ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त] हसी के बदली हसी ।
प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त + टाप्] प्रतिशोध, बदला ।
प्रतिनवृत्त (मू० क० ह०) [प्रति + न्वृत् + क्त] साथ जडा
गया, साथ सटा दिया गया ।
प्रतिनवृत्त (वि०) [प्रति + क्त, नि० दीर्घ] 1 की ओर
मुड़ा हुआ 2 विपर्यस्त, उलटा 3 विहट, प्रतिकूल,
विपरीत, - क. 1 अवयव, अग - शि० १८७९
2 भाग, अग, - कम् 1 प्रतिवा 2 मूर्त, चेहरा
3 (किमी वस्तु का) अर्धभाग 4 (किसी श्लोक वा
वाक्य का) प्रथम शब्द ।
प्रतिनवृत्त, प्रतिनवृत्त [प्रति + न्वृत् + क्त, प्रति + न्वृत् +
क्त + टाप्] 1 इनकार करना 2 अपेक्षा, आशा
3 क्वात, विचार, ध्यान ।
प्रतिनवृत्त (मू० क० ह०) [प्रति + न्वृत् + क्त] 1 जिसकी
दंतबाज की गई, अपेक्षा की गई 2 विचार किया
गया ।

प्रतीक्य (सं० क०) [प्रति + ईञ् + क्यत्] 1 प्रतीक्षा
 किसे जाने योग्य 2 क्याल वा विचार के बोध
 3 श्रद्धेय, आदर्शोप—रघु० ५।१४, सि० २।१०८
 4 अनुसरणोप, प्रतिपादनीय, परिपूरणोप—छि०
 २।१८०।

प्रतीची [प्रति + अञ् + कित् + चीप्] पवित्र दिशा ।
 प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च + क्त, नलोपो दीर्घश्च]
 1 पवित्रमी, पाश्चात्य 2 भावी, परकीर्णी, अनुकली ।
 प्रतीच्छकः [प्रतिगता इच्छा सम्प प्रा० ब०, कृ०] बह्व्य
 करने वाला ।

प्रतीच्य (वि०) [प्रतीची + यत्] पवित्र में रहने वाला
 पञ्जाही, पाश्चात्यदेशवासी ।

प्रतीत (मू० क० क०) [प्रति + इ + क्त] 1 प्रस्वित,
 प्रवात 2 गुञ्जर हुआ, बीता हुआ, गया हुआ
 3 विद्वन्, अरोंसे का 4 प्रमाणित, सत्यापित
 5 स्वीकृत, माना हुआ 6 पुकारा गया, ज्ञात, नामक
 —सौज्य बट. श्याम इति प्रतीत—रघु० १।१५३
 7 विद्यमान, विद्युत, प्रसिद्ध 8 दुःसहकल्पयुक्त 9.
 विप्रवास करने वाला, भरोसा रखने वाला, विश्वस्य
 10 प्रसन्न, लुप्त—रघु० ३।१२, ५।२६, १५।४७, १६।२३
 11 प्रतिष्ठित 12 चतुर, विद्वान्, बुद्धिमान् ।

प्रतीति (स्त्री०) [प्रति + इ + कित् + णि] भारता,
 निधिचान भरोसा—अ० ७।३१ 2 विश्वास 3 ज्ञान,
 निश्चय, स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान या समस्त अणिनु वाच्य-
 वैशिष्य प्रतिभासादेव चाक्याप्रतीति—काव्य० १०
 4 यश, कीर्ति 5 आदर 6 सुवीर ।

प्रतीत (वि०) [प्रति + दा + क्त] वापि दिया हुआ,
 लौटाया हुआ ।

प्रतीत्यक (पु०) विदेह देस का नाम ।

प्रतीप (वि०) [प्रतिगता अपो यत्, प्रति + अप् + क्यत्,
 अपर्षच् च] 1 विरुद्ध, प्रतिकूल, विपरीत, विरोधी
 —सत्यतीपपननादि संकृत—रघु० १।१६२ 2 उल्टा,
 विपर्यस्त, विगडा हुआ 3 पिछडा हुआ, प्रतिपामी
 4 अक्षिकर, अग्रिय 5 अक्षियल, आशा का उल्लंघन
 करने वाला, हठी, दुराग्रही—यम० १।४२४
 6 विघ्नकारी, -पः एक राजा का नाम, महाराज
 क्षाम्बु के पिता तथा भीष्म के पितामह का नाम,
 —यम् एक अक्षकार का नाम जिसमें तुलना के
 सामान्य रूप की बदल कर उपमात की उपमेय से
 तुलना करते हैं—प्रतीपमुपमानस्याप्युपमेयत्वकल्पनम्,
 त्वल्लोचनसम रथ लङ्करकसदुद्यो विष्णुः—कन्नड० ५।१९
 (और अक्षिक विवरण तथा परिभाषा की जानकारी
 के लिए काव्य० १० में रचित 'प्रतीप' के अन्वर्तित
 दे०,—यम् (अव्य०) 1 इसके विपरीत 2 विपरीत
 क्रमानुसार 3 के विरुद्ध, के विरोध में—प्रतीपिप्रकृता-

ऽपि रोषघतता भा स्व प्रतीप नम—अ० ५।१८ ।
 सम० ग (वि०) 1 विरुद्ध चलने वाला 2 विपरीत,
 प्रतिकूल—रघु० १।१५८,—गमनम्, यति (स्त्री०)
 उल्टा चलना—कु० २।२५,—तरणम् घाट के विरुद्ध
 जाना या नाव चलाना, वि० १।५,—बलिनी स्त्री,
 -बधनम् 1 सञ्चय 2 दुरापूर्वम् या टालमटोल
 करने वाला कहने का डग,—विषाकिन् वि०) विपरीत
 फलदायक (कर्ता पर ही उल्टा फल रखने वाला)
 —मा० ५।२६ ।

प्रतीरम् [प्र + तीर + क] तट, किनारा ।

प्रतीबाप [प्रति + बप् + क्यत्, उपसर्गस्य दीर्घ] 1 (बहु
 औषधि जो जाड़े आदि में) खोड़ी जाय या मिलायी
 जाय 2 धानु को नमस करता या रिषलाना 3, धूत
 की बीमारी, महामारी ।

प्रतीवेश, प्रतीहार, प्रतीहान् [प्रति + विच् + इ + हस्
 + घञ्] दे० प्रतिवेश आदि ।

प्रतीवेशित् (वि०) [प्रतीवेश + इति] दे० प्रतिवेशित् ।

प्रतीहारी [प्रतीहार + क्यत् + ङीप्] 1 स्त्री डारपाल
 2 दण्डोद्योग ।

प्रतुव [प्र + तुद् + क] 1 पक्षियों की एक जाति
 (बाज, तोता कौआ आदि) 2 बुभोने का उपकरण ।

प्रतुष्टि (स्त्री०) [प्र + तुष् + कित् + णि] नृपि सन्तान ।

प्रतुव [प्र + तुद् + क्यत्] 1 अक्षुण्ण 2 लम्बा चाबूक
 3 बुभोने वाला उपकरण ।

प्रतूर्ण (वि०) [प्र + तूर्ण + क्त] त्वरित, सिप्रगामी,
 दूर्नीका, तेज ।

प्रतूर्णी [प्र + तुष् + क्यत् + ङीप्] गन्धी, मुख्य मार्ग,
 नगर की मुख्य सड़क—प्रापप्रतूर्णीमनुलप्रनाप
 —सि० ३।६४

प्रस (मू० क० क०) [प्र + दा + क्त] 1 दिया हुआ,
 प्रदत्त, प्रदान किया हुआ, प्रस्तुत किया हुआ 2 विवाह
 में दिया हुआ, विवाहित ।

पल्य (वि०) [प्र + ल्यप्] 1 पुराना, प्राचीन 2 गहला
 3 परम्परा प्राप्त, प्रथागत ।

प्रत्यक (अव्य०) [प्रति + अञ् + कित्] 1 विरुद्ध
 दिशा में, पीछे की ओर 2 के विरुद्ध 3 (अप्रा० के
 साथ) से पवित्र में 4 भीतर की ओर, अन्तर की
 तरफ 5 पहले समय में ।

प्रत्यक्ष (वि०) [अक्ष्य प्रति] 1 दृष्टिगोचर, दृश्य
 प्रत्यक्षामि प्रपन्नस्तनुभिरक्तु वस्ताभिर्प्रदाभिरीय
 —भा० १।१ 2 उपस्थित, दृष्टिगत, भीष्म के सामने
 3 इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियसम्बन्ध 4 स्पष्ट, विशद, साफ
 5 सीधा, व्यवधानवृत्त्य 6 सुस्पष्ट, मुख्यतः 7 शारी
 रिक, भौतिक, कर्म 1 प्रत्यक्षज्ञान, आँसे देखा
 साक्ष्य, इन्द्रियो द्वारा बोध, एक प्रकार का प्रमाण

इन्द्रियार्थसाधिकांजन्य ज्ञानम् प्रत्यक्षम्—तर्क०
2 सुव्यक्तता, सुस्पष्टता (प्रत्यक्षम्, प्रत्यक्षम्, प्रत्यक्षम्,
या प्रत्यक्षत् रूप क्रियाविशेषण की भांति प्रयुक्त
किये जाकर निम्न अर्थ प्रकट करते हैं—1 सामने,
को उपस्थिति में, की दृष्टि में 2 लुप्तकर, लार्भ-
जनिक रूप से 3 मोक्ष, अर्थपरिहृत रूप से 4 व्यस्ति-
गत रूप से 5 देखकर 6 स्पष्ट रूप में । सम०
ज्ञानम् औषो देखा गवाहो, सोषा इन्द्रियो द्वारा
प्राप्त ज्ञान,—ब्रह्मण-ब्रह्मिन् (वि०) आँसो देखा गवाह,
-बृष्ट (वि०) स्वयं देखा हुआ,—प्रया सही ज्ञान या
बहु ज्ञानकारी जो सोषे ज्ञानिन्द्रियो द्वारा प्राप्त की
जाय,—प्रमाणम् आँसो से देखा सबूत, स्वयं ज्ञानेन्द्रियो
का साक्ष्य होना,—कक (वि०) स्पष्ट और दूर फलों
के रखने वाला,—ब्रह्मिन् (पु०) बहु बौद्ध जो प्रत्यक्ष
प्रमाण (औषो देखा दात) के अतिरिक्त और किसी
प्रमाण को न मानता हो,—बिहित (वि०) सोषा
और स्पष्ट विधान किया हुआ ।

प्रत्यक्षिन् (पु०) [प्रत्यक्ष + इति] औषो देखा गवाह,
प्रत्यक्ष इष्टा ।

प्रत्यक्ष (वि०) [प्रतिगन्म् अयम् श्लेष यस्य— प्रा० ब०]
1 नाजा, नया, नूतन, अभिनव—प्रत्यक्षहूनामा मास
—नेषो० ३, कुसुमशयन न प्रत्यक्षम्—विक्रम० ३११०
मेघ० ४, रघु० १०५६, रत्न० १२१२ दोहराया
हुआ 3 विद्युत् । सम० बबलु (वि०) प्रत्यक्षवम्भ,
जीवन को पौरुषकाबन्धना में, तरण ।

प्रत्यक्ष (वि०) (स्त्री०)—प्रतीचो, वीपदेवो के मतानुसार
—प्रत्यक्षो) [प्रति + अश्म् + क्तिन्] 1 को ओर
पूरा हुआ 2 पश्चवर्ती 3 अनुवर्ती, भाषी 4. परे
किया हुआ, हटाया हुआ 4 पदकारण, पश्चिम दिशा
का । सम० - अक्षम् (प्रत्ययशम्) आन्तरिक अवयव,
- आक्षम् (पु०) प्रवगातम्) वैयक्तिक जीव,
आत्मा,—आक्षापतिः (प्रत्ययासापति) पश्चिम
दिशा का स्वामी, बरण का विशेषण,—उष्य
(स्त्री०) प्रत्ययानुच्य उत्तर पश्चिमो, दक्षिणतः
(अश्म् प्रत्ययसिगत) दक्षिणपश्चिम की ओर
—बुलु (स्त्री०) (प्रत्ययानुच्य) आन्तरिक भाषी,
अन्तर्दृष्टि,—बुलु (वि०) (प्रत्ययानुच्य) 1. पश्चिमा-
भिमुखी 2. मूंह मोड़े हुए, कोत्तम् (वि०)
(प्रत्ययानुच्य) पश्चिम की ओर बहने वाला
—सि० ४१६६ पर मल्लि०, (स्त्री०) नर्मदा नदी का
विशेषण ।

प्रत्यक्षित (वि०) [प्रति + अश्म् + क्त] सम्मानित, प्रुक्षित,
अक्षित ।

प्रत्यक्षन् [प्रति + अश् + ल्यट्] 1. जीवन करना 2.
भाषन ।

प्रत्यक्षिन् [प्रति + अश् + क्त + टाप्] जानना, पृह-
चानना—मप्रत्यक्षिन्व नामबलोक्च—मा० १२५ ।

प्रत्यक्षिज्ञानम् [प्रति + अश् + क्त + ल्यट्] 1 पृहचानना
—प्रत्यक्षिज्ञानरत्न ब रामानन्दशेखरुटी—रघु० १२१६ ।

प्रत्यक्षिज्ञात (पु० क० कृ०) [प्रति + अश् + क्त + क्त]
पृहचाना हुआ ।

प्रत्यक्षिज्ञात (पु० क० कृ०) [प्रति + अश् + क्त + क्त]
पराजित, जीता हुआ ।

प्रत्यक्षिज्ञात (पु० क० कृ०) [प्रति + अश् + क्त + क्त]
बदले में अभियोग लगाया हुआ ।

प्रत्यक्षिज्ञात [प्रति + अश् + क्त + क्त] 1. अभियोगता
के विषय दोषारोप, बदले में दोषारोपण करना
—याज्ञ० २११० ।

प्रत्यक्षिज्ञात, प्रत्यक्षिज्ञानम् [प्रति + अश् + क्त + क्त + क्त]
+ क्तम् ल्यट् वा] नमस्कार के बदले नमस्कार,
(प्रणाम के बदले आशीर्वाद)—मनु० २१२६ ।

प्रत्यक्षिज्ञातम् [प्रति + अश् + क्त + ल्यट्] जवाबी
नाशिका, प्रसारोप ।

प्रत्यक्षः [प्रति + इ + अश्] 1 धारणा, निश्चित विश्वास,
- मूढः परप्रत्ययनेयवृद्धि - मालवि० १२, सजात-
प्रत्यय - पञ्च० ८ 2. विश्वास, भरोसा, अज्ञा, विश्वास
—कु० ६२०, सि० १८६३, मनु० ३१६० 3. संकोच,
विचार, भाव, सम्मति 4. वकील, निपचयता 5. जान-
कारी, अनुभव, सञ्ज्ञान—स्वान्तर्गतत्वात् वा ७ पञ्चान
की दृष्टि से अन्तर्जा लगाते हुए इसी प्रकार—आज्ञित
प्रत्ययात्—मालवि० १, मेघ० ८ 6. कारण, आधार,
किया का साधन—कु० ३११८ 7. प्रतिष्ठि, पण, कीर्ति
8 मृग, तिष्ठ आदि प्रत्यय जो लक्ष्य व शानुओं के
भाग लगते हैं, कृदन्त व तद्धित के प्रत्यय—सि०
१४१६६ 9. लयण 10. परात्मयी 11. प्रचलन, ब्रम्हात,
12. छिद्र 13 बुद्धि, समझ । सम०—कारक,—कारिण
(वि०) विश्वास पैदा करने वाला, भरोसा देने वाला,
(गी) मूहर, नामांकित मूहा या मगुडी ।

प्रत्यक्षित (वि०) [प्रत्यय + इत्थत्] 1. विश्वस्त, भरोसे का
2. विश्वासी, विश्वास पूर्वक कहा या लिखा हुआ ।

प्रत्यक्षिन् (वि०) [प्रत्यय + इति] 1 निर्भर करने वाला,
विश्वास करने वाला, भरोसा रखने वाला 2. विश्वास-
पात्र, विश्वास या भरोसे के योग्य ।

प्रत्यक्षं (वि०) [प्रति + अश् + ल्यट्] उपयोगी, युक्ति-
सगत,—अश्म् 1 उत्तर, अज्ञा 2 अज्ञता, चिरोप ।

प्रत्यक्षं [प्रति + अश् + ल्यट्] प्रतिपत्ती, चिरोपी ।

प्रत्यक्षिन् (वि०) (स्त्री०)—गी) [प्रति + अश् + ल्यट्]
विपत्ती, चिरोपी, शत्रुतापूर्व,—नाशिक मत्स्योदीत्तर-
विशेषणप्रत्यक्षी—विक्रम० २, (पु०) 3. विपत्ती,
चिरोपी, शत्रु 2 प्रतिद्वन्द्वी, तन, जोड़ का, चन्दी

प्रत्यक्षिन् (वि०) [प्रत्यय + इत्थत्] 1. विश्वस्त, भरोसे का
2. विश्वासी, विश्वास पूर्वक कहा या लिखा हुआ ।

प्रत्यक्षिन् (वि०) [प्रत्यय + इति] 1 निर्भर करने वाला,
विश्वास करने वाला, भरोसा रखने वाला 2. विश्वास-
पात्र, विश्वास या भरोसे के योग्य ।

प्रत्यक्षं (वि०) [प्रति + अश् + ल्यट्] उपयोगी, युक्ति-
सगत,—अश्म् 1 उत्तर, अज्ञा 2 अज्ञता, चिरोप ।

प्रत्यक्षं [प्रति + अश् + ल्यट्] प्रतिपत्ती, चिरोपी ।

प्रत्यक्षिन् (वि०) (स्त्री०)—गी) [प्रति + अश् + ल्यट्]
विपत्ती, चिरोपी, शत्रुतापूर्व,—नाशिक मत्स्योदीत्तर-
विशेषणप्रत्यक्षी—विक्रम० २, (पु०) 3. विपत्ती,
चिरोपी, शत्रु 2 प्रतिद्वन्द्वी, तन, जोड़ का, चन्दी

प्रत्यक्षिन् (वि०) [प्रति + अश् + ल्यट्] 1. जीवन करना 2.
भाषन ।

प्रत्यक्षिन् [प्रति + अश् + ल्यट्] 1. जीवन करना 2.
भाषन ।

मुक्तस्य प्रत्ययौ 3 (कानून में) प्रतिवादी -स धर्मस्थ-
सक शस्त्रशक्तिप्रत्याधिना स्वयम्—रघु० १७।२९,
मनु० ८।७९, पाण्ड० २।६। सम०—भूत (वि०)
मान में यकावट, बाघक बना हुआ—कु० १।५९।
प्रत्ययधत् [प्रति + धृ + धिच् + म्यट्, पुकायाम्] बाणिय
देना, लौटा देना—सीताप्रत्ययवैविध्यम्—रघु०
१।५८५।
प्रत्ययित (मू० क० कू०) [प्रति + इ + धिच् + क्त,
पुकायाम्] लौटाया हुआ, बाणिस दिया हुआ।
प्रत्ययधर्मा, ई [प्रति + धव + धृच् + घञ्] 1 यभीर
चित्तन, सहन मनन 2 परामर्श, तसोहल 3 प्रत्युप-
सहार।
प्रत्ययधरोधनम् [प्रति + धव + कृ + धृच् + म्यट्] ककावट, विघ्न।
प्रत्ययधर्मात् [प्रति + धव + सा + धृच् + म्यट्] माना या पीना
—पा० १।४।५२।
प्रत्ययधिसिक्त (वि०) [प्रति + धव + सो + क्त] नाया हुआ,
पीया हुआ।
प्रत्ययधत्कम्, धनम् [प्रति + धव + म्कन् + घञ्, ल्युट्
वा] विनाय तक जिसका कि प्रतिवादी उलार के रूप
में प्रस्तुत करना है परन्तु वह आरोप के रूप में नहीं
समझा जाता, प्रतिवादी का वह उत्तर जिसमें वह
बाधी के क्षमियाय का लक्षण करता है।
प्रत्ययधत्त्वानम् [प्रति + धव + स्था + धृच् + म्यट्] 1 अयाकण
2 अक्षु, विरोध 3 यथास्थिति, दुर्बस्थिति।
प्रत्ययबहार [प्रति + धव + हृ + घञ्] 1 बाणिस लीचना
2 विन्व का विनाश, (मूट्टि का) प्रलय—नवीस्थिति-
प्रत्ययबहारहेतु रघु० २।४८।
प्रत्ययधाय [प्रति + धव + धृ + घञ्] 1, ह्याम, स्तुना
2 अवरोध, ककावट उत्तर० १।९ 3 विरुद्ध या
विपरीत मार्ग, वैपरीत्य मनु० ४।२४५ 4 पाप,
अपराध, पापमयता—अन्वयति तथा चाण्ये प्रत्ययधायस्य
मन्वन—आचारिणः।
प्रत्ययधत्त्वम्, प्रत्ययधत्ता [प्रति + धव + धृ + म्यट्, अह
+ टाप् वा] ध्यान लगाना, खयाल करना, देखरख
करना रघु० १।४।५३।
प्रत्ययलभय [प्रति + अन्तम + अच् + अच्] 1 (सूय का)
छिपना 2 अन्त, समाप्ति।
प्रत्ययलोपक (वि०) (स्त्री० चिक्का) [प्रति + आ + धिच्
ध्वन्] तादा मानने वाला, व्यवचूर्ण, उपहासजनक
चिदाने वाला।
प्रत्ययल्लान (मू० क० कू०) [प्रति + आ + ल्या + क्त] 1 मना
लिया हुआ 2 मुकरा हुआ 3 प्रतिनिद्धि
निपिद्ध 4 एक ओर रक्खा हुआ, अस्वीकृत 5 पीछे
डकेना हुआ।
प्रत्ययल्लानम् [प्रति + आ + ल्या + म्यट्] 1 पीछे हटाना,

अस्वीकार करना 2 मुकरना, मना करना, इनकार
3 अवहेलना 4 भर्त्सना 5 निराकरण।
प्रत्ययगति (स्त्री०) [प्रति + आ + धृ + कित्] बाणिम
प्राना, लौटना।
प्रत्ययगम्, —प्रत्ययल्लानम् [प्रति + आ + धृ + अच्, ल्युट्
वा] लौटना, वापिस आना।
प्रत्ययल्लानम् [प्रति + आ + दा + ल्युट्] बाणिम लेना,
पुनर्ग्रहण, पुन प्राप्ति।
प्रत्ययविष्ट (मू० क० कू०) [प्रति + आ + दिच् + क्त] 1
नियत 2 सूचित 3 अस्वीकृत, पीछे डकेना हुआ
4 हटाया हुआ, एक ओर रक्खा हुआ 5 तिराहित,
अधकार में डाला हुआ—रघु० १०।६८ 6 बेताया
हुआ, सावधान किया हुआ।
प्रत्ययवेश [प्रति + आ + दिश + घञ्] 1 आदेश, हुक्म
2 समूचन, घोषणा 3 मना करना, मुकरना,
अस्वीकृति, पीछे हटाना, निराकरण—प्रत्ययदेशाम् धृच्
भवती घोषता कल्पयामि—मेघ० १।१४, ९५, ज०
६।९ 4 तिराहित करना, धन करना, तिराधला
लज्जित करने वाला, अधकारावन करने वाला वा
प्रत्ययदेशो कल्पयवित्ताया श्रिय—विष्णु० १, का० ५
5 नावधानी, बेतावनी ० विशेष रूप से दिव्य
भावधानता, अतिप्राकृतिक वेतनधने।
प्रत्ययल्लानम् [प्रति + आ + ली + ल्युट्] वापिस लाना, लौटा
लाना।
प्रत्ययपत्ति (स्त्री०) [प्रति + आ + प + कित्] 1 बाणमी
2 अर्थिक सांसारिक विषया के प्रति विरोध, वैरोध।
प्रत्ययान्नाय [प्रति + आ + म्ना + घञ्] अनुमान प्रकिया का
नामक वह अर्थोत्तु नियमन (प्रथम प्रतिज्ञा की आर्ध्वान)।
प्रत्ययध [प्रति + अच् + घञ्] चुगी, कर।
प्रत्ययधक (वि०) [प्रति + आ + धृ + धिच् + घञ्] 1
प्रमाणित करने वाला व्याख्यान करने वाला
2 विषयक दिखाने वाला, भरोसा उत्पन्न करने वाला।
प्रत्ययधनम् [प्रति + आ + धृ + धिच् + म्यट्] 1 (दुलजन
का) घर के जाना, विवाह करना 2 (सूय का)
छिपना।
प्रत्ययलीहम् [प्रति + आ + लिह + क्त] निशाना लगाने
मयम का विशेष आसन (कि० आलोड)।
प्रत्ययधनेनम् [प्रति + आ + धृ + म्यट्] लौटना, बाणिम
प्राना।
प्रत्ययधत्त्वम् (मू० क० कू०) [प्रति + आ + धवस + क्त]
सावधाना दिया हुआ, जिताया हुआ, ताजा दम किया
हुआ, दखल बंधाया हुआ।
प्रत्ययधत्स [प्रति + आ + धव + घञ्] फिर से साम
लेना, (सास का) फिर लौट आना, फिर चलने
लगना।

प्रत्यावकाशनाम् [प्रति + आ + स्वप् + णिच् + ल्युट्] डाकट
बघाना, सामन्तना देना ।

प्रत्यासर्षा (स्त्री०) [प्रति + आ + सृ + ङिच्] 1 (समय
और स्थान की दृष्टि से) अत्यंत सामोप्य, ससक्ति
2 धनिष्ठ संपर्क 3 सावधान्य ।

प्रत्यासन्नम् (भू० क० कृ०) [प्रति + आ + सृ + ङ]
गमोप, निकट, ससन्न, सदा हुआ ।

प्रत्यास (ता) १ [प्रति + आ + न् + अच्, घञ्, वा]
1 तना का घुटभाग 2 एक ब्यूह के पीछे दूसरा
ब्यूह—पैसी ब्यूह रचना या मोर्चा बन्दी ।

प्रत्याहारणम् [प्रति + आ + ह् + ल्युट्] 1 बापिम लेना,
पुनः ग्रहण करना, वन्दी 2 रोकना 3 ज्ञानदियो का
निग्रहण करना ।

प्रत्याहार. [परि + आ + ह् + घञ्] 1 पीछे हटाना,
बापिम बचाना, प्रत्यावर्तन 2 पीछे रचना, रोकना
3 इन्द्रिय दमन करना 4 सृष्टि का विघटन या प्रलय
5 (आ० में) एक ही ध्वनि के उच्चारण में कई
अक्षरों का बोध, मश के प्रथम अक्षर में लेकर अन्तिम
माने निक बर्ण तक आइना या कई सूत्रों के होने पर
आन्तम मश के अन्तिम बर्ण तक तथा 'अ इ उ ष्'
सूत्र का प्रत्याहार 'अच्' तथा 'अ इ उ ष्', 'अच्', 'ए
ओः, मे औच्' इन चार सूत्रों का प्रत्याहार 'अच्'
(स्वर) है प्रत्याहार है. व्यञ्जनों का प्रत्याहार 'हल्'
तथा 'मन्त्री बन्धों का छातक 'अच्' प्रत्याहार है ।

प्रत्युक्त (भू० क० कृ०) [प्रति + वच् + क्त] उनर दिया
गया, बदले में कहा गया, जबाब दिया हुआ ।

प्रत्युक्ति (स्त्री०) [प्रति + वच् + क्तिन्] उत्तर, जबाब ।
पत्युच्चार, प्रत्युच्चारणम् [प्रति + उद् + चर् + णिच् +
घञ्, ल्युट् वा] आबुक्ति, दोहराना ।

प्रत्युत्थोषणम् [प्रति + उद् + थीच् + ल्युट्] पुनर्जीवन
होना, जीवन का फिर सञ्चार होना, किन् में जो उडना
(आज० भी) ।

प्रत्युत् (अर्थ०) [प्रति + उत इ० म०] 1 इसके विप-
रौत—कूनमति महीपकार पय इव पोन्वा निगलङ्क,
प्रत्युत् हन्तु मतले कान्कादन्सोदर श्लो जगति—भाषि०
१।७६ 2 बलि, भी 3 दूसरी धार ।

प्रत्युत्थम्, — कर्मणम्, — शान्ति. (स्त्री०) [प्रति + उद् +
कृ + घञ्, ल्युट्, क्तिन् वा] 1 (किसी कार्य का
करने का) बाँडा उठाना 2 युद्ध की तैयारी 3 धनु
पर चढ़ाई करने के लिए प्रयाण 4 गौण कार्य जो
मुख्य कार्य में सहायक हो 5 किसी व्यवसाय का
सम्भारणम् ।

प्रत्युत्थानम् [प्रति + उद् + स्था + ल्युट्] 1 किसी के
विषय उठाना 2 युद्ध की तैयारी करना 3 किसी
जम्मागत का स्वागत करने के लिए (सम्मान प्रदर्शन

करने के लिए) अपने आमन से उठाना—मनु०
२।२१० ।

प्रत्युत्थित (भू० क० कृ०) [प्रति + उद् + स्था + क्त]
(किसी निश्च या धनु आदि को) मिलने के लिए उठा
हुआ ।

प्रत्युत्थनम् (भू० क० कृ०) [प्रति + उद् + पद् + क्त]
1 पुनरुत्पादित, फिर से उत्पन्न 2 उद्यत, उत्तर,
पूर्वोक्त 3 (गणित०) गुणा किया हुआ,—लम्ब गुणा ।
सम०—वर्ति (वि०) समय पर जिसकी दृष्टि ठीक
कार्य करने, हाजिर जबाब 2 नाहशी, दिलेर 3 तीव्र,
तीक्ष्ण ।

प्रत्युत्थाहरणम् [प्रति + उद् + आ + ह् + ल्युट्] मुकाबले
का उदाहरण, विपक्ष का उदाहरण ।

प्रत्युत्थत (भू० क० कृ०) [प्रति + उद् + यम् + क्त]
अतिथि का स्वागत करने के लिए (सादर अभिवादन
स्वरूप) अपने आमन से उठा हुआ—प्रत्युत्थतो मा
भरत ससंय - रघु० १२।६४, १२।६२ 2 किसी के
विषय आने बड़ा हुआ ।

प्रत्युत्थति (स्त्री०), प्रत्युत्थाम, प्रत्युत्थमणम् [प्रति +
उद् + यम् + क्तिन्, अच्, ल्युट् वा] अतिथि का
सत्कार करने के लिए अपने आमन से उठाना या बाहर
आना ।

प्रत्युत्थमनीयम् [प्रति + उद् + यम् + अनीयर्] स्वच्छ
वस्त्र का जोडा—महीतप्रत्युत्थमनीयवस्त्रा—कु० ७।११
पत्युत्थमनीय वस्त्रा का पाठान्तर । दे० 'उत्थमनीय' ।

प्रत्युत्थरणम् [प्रति + उद् + ह् + ल्युट्] 1 पुनः प्राप्त
करना, दो हुई वस्तु का बापिम लेना 2 फिर उठाना ।

प्रत्युत्थः [प्रति + उद् + यम् + अच्] 1 प्रतिस्तुलक, सम-
तोत्युत् 2 राक घाम, प्रतिक्रिया—मनु० ८।८८,
पाठान्तर ।

प्रत्युत्थत (वि०) [प्रति + उद् + या क्त] दे० 'प्रत्युत्थत' ।

प्रत्युत्थनम् [प्रति + उद् + नम् + ल्युट्] पुनः उठाना, फिर
उठलना, घलटा साकर आना ।

प्रत्युत्थकार. [प्रति + उप + कृ + घञ्] किसी की कृपा
या सेवा का बदला पूकाना, उपकार का प्रतिदान,
बदले में सेवा ।

प्रत्युत्थिष्ठा [प्रति + उप + कृ + श, इयङ्, टाप्] सेवा का
प्रतिफल ।

प्रत्युत्थदेष्ट. [प्रति + उप + दिष् + घञ्] बदले में परामर्श
या उपदेष्टा—कु० १।२४ ।

प्रत्युत्थवच (वि०) [प्रति + उप + पद् + क्त] दे०
'प्रत्युत्थवच' ।

प्रत्युत्थानम् [प्रति + उप + मा + ल्युट्] 1 समक्यता
का प्रतिकल्प 2 नम्रता, आदर्श 3 मुकाबले की तुलना
—विष्णु० ०।११ ।

अनुपसर्गम् (मू० क० कू०) [प्रति + उप + लम् + क्त]
वापिस प्राप्त, फिर लिखा हुआ ।

अनुपसर्गः—**वेद्यन्म्** [प्रति + उप + विद्य + णिप् + धञ्]
स्पृष्ट वा] ब्राह्मण-पाठन करने के लिए किसी को
बेरना ।

अनुपसर्गम् [प्रति + उप + म्वा + स्पृष्ट] आसपास,
पड़ोस ।

अनुप्राय (मू० क० कू०) [प्रति + ण्य + क्त] 1 उदा
हुआ, या अजमाया हुआ, उदित, भरा हुआ 2 बोया
हुआ 3 स्थिर किया हुआ, गाढ़ा हुआ, दृढ़ता पूर्वक
टिकाया हुआ, या अजमाया हुआ—मा० ५।१०, उत्तर०
३।३५, ४६ ।

अनुप्रायः, **अनुप्रायम्** (मयु०) [प्रत्योगति नाशयति कर्णकारम्
—प्रति + उप् + क, प्रति + उप् + अति] प्रभात,
भोर, तड़का ।

अनुप्रायः—**अयम्** [प्रति + ऊय् + क] भोर, प्रभात, तड़का
—प्रत्ययेषु स्फुटितकण्ठानामौदसीपीकषाय—मेष० ३१,
—कः 1 सूर्यं 2 आद वस्तुनो मे से एक वस्तु
का नाम ।

अनुप्रायम् (मयु०) [प्रति + ऊय + अति] भोर, प्रभात,
तड़का ।

अनुप्राह [प्रति + ऊह + धञ्] स्फाटित, बाधा, विघ्न,
—विघ्नम्, सर्वथा ह्राय प्रयुह सर्वकषायम्—हि० २।१५ ।

अनु । (म्वा० मा०—प्रपठे, प्रथितम्) 1 (ऐत्ययं का)
बढ़ाना 2 (कोटि, अफवाह आदि का) फैलाना—तथा
यथोक्त्य प्रथमे मयु० १।१।१५ 3 सुविख्यात होना,
प्रसिद्ध होना—अतलदाकष्या तीर्थं पावनं भुवि प्रथमे
—रघु० १।५।१०१, अतोऽपि लोके जेदे च प्रथित
पुरयोसम्—मय० १।५।१८, शि० १।१।१६, १।५।२३, कु०
५।७, मेघ० २४, रघु० ५।६५, ९।७६ 4 प्रकट होना,
उदय होना, प्रकाश में आना—अनो नु तासा मवनो
नु प्रथमे—कि० ८।५।३ ॥ (पुरा० उ०)—प्रथयति
—ते, प्रथित् 1 फैलाना, उद्घोषणा करना—सम्भवा
एव साधना प्रथयति सुशोक्तम्—दृष्टान्त० १२, मद्रि०
१।७।१० 2 शिक्षाना, प्रकट करना, प्रदर्शन
करना, प्रकाशित करना, सूचित करना परम वपु
प्रथयतीच अयम्—कि० ६।२५, ५।३, शि० १०।२५,
एत० ४।१३, शं० ३।१६ 3 बढ़ाना विष्णुत् करना,
ऊँचा करना, अधिक करना, बढ़ा करना—अनु०
२।४५ 4 बोलना ।

अनुष्मन् [मयु० + स्पृष्ट] 1 फैलाना, विस्तार करना
2 बखेरना 3 फैलाना, आगे की ओर बढ़ाना
4 बुरलाना, प्रकाशित करना, प्रदर्शन करना 5 वह
स्थान जहाँ कोई चीज फैलायी जाय ।

अनुष्मन् (वि०) (प०, कर्त्त०, व० व०) प्रथमे या प्रथमा)

[मयु० + अमम्] 1. पहला, सबसे आगे का—रघु०
३।४४, हि० २।३६, कि० २।४४ 2 प्रमुख, मुख्य,
प्रधान, अष्टतम, बेजोड़, अनुपम—शि० १।५।४२,
मयु० ३।१।४७ 3 आदि कालोन, अत्यंत प्राचीन,
प्राक्कालीन प्राथमिक 4. पहले का, पूर्वकालीन,
पहला, इससे पूर्व का—अथममुकुटापेक्षया—मेघ०
१७, रघु० १०।६७ 5 (आ० में) प्रथम पुरुष
(—अयं पुरुष या पाठभात्यपरजितान के अनुसार
तृतीय पुरुष), म 1 प्रथम (—अयम्) पुरुष 2 वय
का प्रथम अवनन, —मा कर्त्तृकारक,—मयु० (अयम्)
1 पहले, प्रथमतः, सर्वप्रथम, कु० ७।२४, रघु० ३।४
2 पहले ही, पहले ही से, पूर्वकाल में—रघु० ३।६८
3 वस्तुतः, तत्काल 4 पहले ही यात्रायै चोदयामास त
वक्तौ प्रथम वारम्—रघु० ५।२४, उतितोऽथेयम
चायम् चरमं चैव सविनोः—मयु० २।१।६४ 5 अभी
अभी, हाल में,—अथमम्, अनन्तरम्, तत, पश्चात्
पहले, इससे बाद । सम० अर्थः, —अयं पूर्वाधिक,
—आथम्यं चार आथम्यो मे मे पहले आथम्यं अर्थात्
बहुवचनं आथम्यं,—इतर (वि०) 'प्रथम की अपेक्षा
और' अर्थात् दूसरा,—उचित (वि०) पहले उच्चारण
किया हुआ—उवाच वाक्यं प्रथमोदितं वच—रघु०
३।२५,—कल्पः चलने के लिए बढ़िया मार्ग, प्रथम
निवृत्त,—कल्पित (वि०) 1 पहले सोचा हुआ 2 पर
वा महत्त्व को दृष्टि से सर्वोच्च,—अ (वि०)
सबसे पहले पैदा हुआ,—अक्षयम् पहला दशमं,—विश्वतः
सबसे पहला दिन—मेघ० २,—पुष्पक प्रथम पुरुष,
अयं पुरुष (असेवी पठति के अनुसार तृतीय पुरुष)
—वीचनम् युवावस्था का आरम्भ, किशोरावस्था,
—अयम् (मयु०) बचपन, शौचा,—चिरुः पहला बार
का विवाह,—अवाकरण 1 अत्यंत पूज्य वैवाकरण
2 आकरण में वागिभू,—साहस्य, दृष्ट की निम्नतम
या प्रथम स्थिति,—कुलुत्सु पूर्वकृपा या सेवा ।

अनु [मयु० + अय् + टाप्] स्वयति, प्रसिद्धि—शि० १।५।२७ ।
अनुचित (मू० क० कू०) [मयु० + क्त] 1 बढ़ाया हुआ,
विस्तार किया हुआ 2 प्रकाशित, उद्घोषित, फैलाना
हुआ, घोषणा का ह्राय,—प्रथितवजसा भासकविस्तीमित्त-
कविप्रियादीनाम्—मालादि० १ 3 विद्याया तथा
प्रदर्शन किया गया, प्रकट किया गया, प्रकाशित किया
गया 4 विख्यात, प्रसिद्ध, विष्णुत् (दे० 'अयु०' भी) ।
अनुचितम् (मयु०) [पूर्वोभवि—मयु० + अनुचित्] चौड़ाई,
विद्यालया, विस्तार, बढ़ाना—प्रथितान दधानेन जयनेन
पठनेन मा—मद्रि० ६।१७, (मूना) प्रारम्भपूर्वमा
प्रथितानमायु—रघु० १।८।४८ ।

अनुचित (रवी०)] = पूर्वोभो, पूर्वो०] पृथ्वी, धरती ।
अनुचिच्छ (वि०) [पृ०, टटलन, प्रथादेशः] सबसे बड़ा

सबसे चौड़ा, अत्यन्त विधाक ('पुष्' की अतिधाया-
बन्धा) ।

प्रवीणम् (वि०) (स्त्री०-नी) [पुष्+ईयुन्] अवेधा-
कृत बड़ा, चौड़ा, विशाल 'पुष्' की तुलनाबन्धा) ।

प्रवृ (वि०) [प्र+उण्] व्यापक, दूर दूर तक फैला हुआ ।

प्रवृक् [प्र+उक] चिउड़े, चौड़े, (तु० पुष्क) ।

प्रवर्षिण (वि०) [प्र+सं] 1 दाईं ओर रक्ता हुआ,
या लडा हुआ दाईं ओर को घूमने वाला 2 सम्मान-
पूर्ण, श्रद्धालु 3 क्षम, शनकलक्षणयुक्त, -ष, -षा,
-षम् दाईं ओर से दाईं ओर को घूमना जिससे

कि दाहिना पार्श्व सदैव उस व्यक्ति या वस्तु की ओर
हो जिसकी परिष्कारा की जा रही है, श्रद्धापूर्ण अभि-
वादन जो इस प्रकार प्रदक्षिणा द्वारा किया जाय

-रु० ७।७९, याज्ञ० १।२३२, -षम् (अव्य०) 1 दाईं
ओर से दाईं ओर को 2 दाईं ओर को, जिसने कि

दाहिना पार्श्व सदैव प्रदक्षिणा की गई व्यक्ति या
वस्तु की ओर रहे 3 दक्षिण दिशा में, दक्षिण दिशा

की ओर-मनु० ४।८७, (प्रवर्षिणी ह्य) दाईं ओर
ने दाईं ओर को जाना (सम्मान प्रदर्शित करने के

लिए) -प्रदक्षिणोक्तुक्त्व सयोदुताम्नीन्-शा० ४,
प्रदक्षिणोक्तुक्त्व हृत इत्याजम्-रु० २।७१ । सम०

अक्षिण् (वि०) जिसकी दाईं ओर की उबलाने
उठनी हो, दाईं ओर को उबलाने रखने वाला-
प्रदक्षिणाविहृतिरित्यन्तादे-रु० ३।१४ (स्त्री०)

दाईं ओर को मुड़ो हुई अक्षिण्य-रु० ४।२५, -किया
प्रदक्षिणा करना, सम्मान प्रदर्शित करने के लिए

सम्माननीय व्यक्ति को दाईं ओर रखना-रु०
१।७६ - पठिका सहज, आगत ।

प्रवृष्य (भू० क० ह०) [प्र+इह्,+क्त] जलाया गया,
भस्म किया गया ।

प्रवृत्त (भ० क० ह०) [प्र+दा+क्त] दे० 'प्रवृत्' ।

प्रवरः [प्र+वृ+अप्] 1 तीव्रता, फाड़ना 2 अविचलन
होना, दरांग पडना, फटाव, छिद्र, बिबर 3 सेना का

तिर बितर होना 4 तीर 5 विषयो को होने वाला
एक रोग ।

प्रवर्षे, [प्र+सं] पमड, बहकार ।

प्रवृष्य [प्र+वृ+अप्] 1 दृष्टि, दर्शन 2 निवेद्य, आज्ञा ।

प्रवृष्येक (वि०) [प्र+वृ+अप्] दिखलाने वाला,
प्रकट करने वाला ।

प्रवृष्यन् [प्र+वृ+अप्] 1 दृष्टि, दर्शन जैसा कि
'धाराप्रदर्शन' में 2 प्रकट होना, प्रवर्षित करना, दिख-
लाना, प्रदर्शनी, नुमायश 3 अन्वयान व्याख्या करना

4 उदाहरणम् ।

प्रवृषित (भू० क० ह०) [प्र+वृ+अप्] दिखलाया
हुआ, सामने रक्ता हुआ, प्रकट किया हुआ, प्रकाशित

किया हुआ, प्रवर्षित किया हुआ 2 बतलाया गया

3 खिलारा हुआ 4 व्याख्या किया गया, उद्घोषित
किया गया ।

प्रवृष्य [प्र+वृ+अप्] बाण, तीर ।

प्रवृष्य [प्र+वृ+अप्] अस्माना, आकाश उठाना ।

प्रवृष्य (पु०) [प्र+दा+अप्] 1 देने वाला, दानी

2 उदार व्यक्ति 3 (विवाह में) कन्या दान करने
वाला 4 इन्द्र का विशेषण ।

प्रवृष्यन् [प्र+दा+अप्] 1 देना, प्रदान करना, अर्पण
करना, प्रस्तुत करना बर०, अग्नि०, काष्ठ० आदि

2 (विवाह में) कन्या दान करना, कन्या० 3 समर्पित
करना, अन्वयान करना, सिखा देना, विद्या० 4 भेंट,
दान, उपहार 5, अक्षुष्य । सम०-अक्षुष्य अति दान-
शील पुत्र, दाता ।

प्रवृष्यन् [प्रदान+अप्] पुरस्कार, भेंट, दान, उपहार ।

प्रवृष्यन् [प्र+दा+अप्, अप्] उपहार, भेंट ।

प्रवृष्य [प्र+दा+अप्, अप्] उपहार, भेंट ।

प्रवृष्य (भू० क० ह०) [प्र+विह्,+क्त] चिकनाई
सूटी हुई, पोती हुई, माथिया किया हुआ, -अप्
विशेष प्रकार से तला हुआ भस्म ।

प्रवृष्य (स्त्री०) [प्रदान विभ्य-प्र+विह्+अप्] 1
1 कहेत करना 2 आदेश, निदेश, आज्ञा 3 परिचि
कः अन्तर्गतीं किन्तु जैसे कि नैच्योती, आग्नेयो, ऐशानी
कीर वायव्ये ।

प्रवृष्य (भू० क० ह०) [प्र+विह्,+क्त] 1 दिखलाया
हुआ, संकेतित 2 निरिष्ट, आदिष्ट 3 स्थिर किया
हुआ, आदेश लाया किया हुआ, नियोजित किया हुआ
-रु० २।२९ ।

प्रवृष्यः [प्र+वृ+अप्+क्त] 1 दीपक, चिरान
(बाल० से भी) अनेक पूरा मूलप्रदीप-रु०

१।१०, रु० २।२४, १६।४, कुलप्रदीपो नृपतिदिलीप
-रु० ६।७४, 'कुल का दीपक या प्रकृत' - ७।२९

2 जो आनकारी करता है, या बात को लोककर
कहता है, व्याख्या, विशेषण इन्हीं के नामों के अन्त
में प्रयुक्त, तथा महाभाष्य प्रदीप, काव्यप्रदीप आदि ।

प्रवृष्य (वि०) (स्त्री०-नी) [प्र+वृ+अप्+अप्] 1
1 अज्ञाना 2 उद्घोषित करना, उल्लेखित करना, -अप्
सुलभाने की किया, जलाना, उदीप्त करना, -अप् एक
प्रकार का खनिज विष ।

प्रवृष्य (भू० क० ह०) [प्र+वृ+अप्+क्त] 1 मूलभाया
हुआ, जलाया हुआ, प्रखलित, प्रकाशित 2 देदीप्य-
मान, प्राञ्जल्यमान, प्रकाशमान 3 उठाया हुआ,
विक्षारित--प्रदीपानिस्समाधीविषम्-- रु० 4 उद्घो
षित, उल्लेखित (सूत्रा आदि) ।

प्रवृष्य (भू० क० ह०) [प्र+वृ+अप्+क्त] 1 विषया

हुआ, अष्ट 2 द्रुवित, मलिन, पापमय 3 लम्पट, स्वेच्छाधारी।

प्रवृत्त (म० क० क०) [प्र + वृत् + गिच् + क्त]
1 अष्ट, विधाक्त, विकृत, पतित 2 अपवित्र, मलिन, अष्ट।

प्रवेद्य (स० क०) [प्र + दा + यत्] दिष्ट जाने के योग्य, (समाचार आदि) दिष्टे जाने के लायक, सबह्त किये जाने के उपयुक्त—रघु० ५।१८, ३१।

प्रवेश [प्र + दिप् + घञ्] 1 संकेत करना, इशारा करना 2 स्थान, क्षेत्र, जगह, देश, प्रवेश, मखल—पितृ प्रवेशास्तव देवमनुष्य—कु० ५।४५, रघु० ५।६०, इसी प्रकार कठ० तालु० हृदय० आदि 3 चित्ता, बालित 4 निरुचय, निर्धारण 5 दोषार 6 (ध्या० में) उदाहरण।

प्रवेशनम् [प्र + विश + ल्यट्] 1 संकेत करना 2 उपदेश, अनुदेश 3 भेंट, उपहार, चढ़ावा विशेष कर देवताओं को या थोछतर व्यक्तियों को।

प्रवेश (शि) नी | प्रवेशन + शीप्, प्र + दिप् + गिनि + शीप् | सर्वनी अगुनी, अविमुषक अगुनी।

प्रवेह [प्र + विद् + घञ्] 1 लेप करना, तेल वा जोषधि आदि की मालिश करना 2 लेप, पलम्पन।

प्रवोष (वि०) | प्रकृष्ट दाहो यम्य—शा० ब० | बुरा, अष्ट,—ब 1 दोष, बृष्टि, पाप, अपराध 2 अव्यक्तित्वात् स्थिति, विदोष, बनावत 3 मध्याकाल, रात्रि का आरम्भ—तत्र स्वभावास्तेष्वप्यने प्रवोषमनुवायिन—शि० २।७८ (यही प्रवोष का अर्थ मुख्य रूप से 'अष्ट' और 'पतित' हैं),—ब्रह्मसुन्दरी ब्रह्मनस्तोषप्रवोष—गीत० ५, कु० ५।४४, रघु० १।२२, ऋतु० १।११। मम०—काकः सध्या समय, रात्रि का आरम्भ,—तिस्मिन् प्रवोषतिमिरेण न दुष्यते त्वम्—मृच्छ० १।३५।

प्रवोह [प्र + वृट्, + घञ्] 1 दुहना, दुध निकालना।

प्रब्रुम् [प्रकृष्ट ब्रुम् बल यम्य—शा० ब०] कामदेव का विशेषण, कामदेव | यह कृष्ण और रसिमयी का पुत्र था। जब यह छ वर्षों की आयु का था तो शबर नामक दैत्य ने इसका अपहृत्य कर लिया क्योंकि उसे यह पहले ही ज्ञान हो गया था कि प्रब्रुम् के द्वारा उसकी मृत्यु हो जायेगी। शबर ने उस बालक को बंधारते हुए समुद्र में फेंक दिया जहाँ उसे एक मछली मिल गयी। एक मछल ने इस मछली को पकड़ लिया और शबर के सामने ला रक्खा। जब इस मछली को काटा गया तो इसके पेट से एक सुन्दर बालक मिला। नारद मुनि की इच्छानुसार शबर की मुहिनी मायावती ने इस बालक का पालनपोषण किया। जब यह बालक जवान हो गया तो स्वयं

मायावती का मन इसके सौन्दर्य पर आकृष्ट हो गया। परन्तु प्रब्रुम् ने मायावती का मातृत्व की दृष्टि करने वाली इस प्रकार की भावनाओं के कारण दुःख-भला कहा, क्योंकि वह तो उसे माता समझता था। परन्तु जब उसे बतलाया गया कि वह विष्णु का पुत्र है, उसे शबर ने समुद्र में फेंक दिया था, तो उसने क्रोध से आगबल्ला होकर शबर की युद्ध के लिए ललकारा, तथा अपनी माया के द्वारा उस का बंध कर दिया। उसके पश्चात् वह और मायावती कृष्ण के घर गए जहाँ नारद मुनि ने कृष्ण और रसिमयी को बतलाया कि यह तो उनका अपना पुत्र है तथा मायावती उसकी पत्नी है।

प्रब्रौत | प्रकृष्टो ब्रौत—शा० म० | 1 जग मगाना, प्रकाश, रोशनी 2 आभा, प्रकाश, कानि 3 प्रकाश की किरण 4 उज्ययिनी के एक गजा का नाम जिनकी पुत्री से वसु के राजा उज्ययन ने विवाह किया था—प्रब्रौतस्य प्रागुत्थिर वसुगजोत्त ब्रह्म—मेष० ३२ (मल्लि० इसे 'प्रक्षिप्य' समझते हैं), रत्न० १।१०।

प्रब्रौतनम् [प्र + ब्रुत् + ल्यट्] 1 जगमगाना, चमकना 2 प्रकाश न मूये।

प्रब्रु | प्र + वृट् + अच् | दौटना, पलायन।

प्रब्राय | प्र + वृट् + घञ् | 1 भाग जाना, पलायन, प्रत्यावर्तन, बच निकलना 2 दृढगमन, तेजी से जाना।

प्रहार, **प्रहारम्** | प्रगन हारम्—शा० म० | दरवाजे या फाटक के सामने का स्थान।

प्रवेक्ष, **प्रवेक्षनम्** | प्र + विच् + घञ्, ह्यट् वा | नापमन्दरी, घृणा, अर्चि।

प्रघनम् | प्र + घा + षच् | 1 युद्ध, लड़ाई, मशग, मर्षा,—प्रहित प्रघनाय मोक्षवान्प्रमाकारयित् यतीभूता—शि० १६।५२, क्षेत्र सप्तप्रघनविराज कौरव तद्भुजेथा—मेष० ८८, रघु० १।१७७, महावी० ६।३३ 2 युद्ध में लड़ना का माल 3 विनाश 4 फाटना, तोड़ना धीरफाट।

प्रघननम् [प्र + घम् + ल्यट्] 1 लडा साम लेना 2 मधुघनी, नस्य।

प्रघष [प्र + घृष् + घञ्] 1 हमला, आक्रमण 2 बलाकार।

प्रघषणम्, **घा** [प्र + घष् + गिच् + ल्यट्] 1 हमला आक्रमण 2 बलाकार, दुर्व्यवहार, अपमान।

प्रघषित (म० क० क०) [प्र + घष् + गिच् + क्त] 1 हमला किया गया, आक्रान्त 2 अतिघरन, चोट पहुँचाया हुआ 3 घमर्षा, बहकारी।

प्रघाम (वि०) | प्र + घा + ल्यट् | 1 मुख्य, मूल, प्रमुख, बडा, उत्तम, सर्वोत्कृष्ट जैसा कि प्रधानमातय, प्रधान-पुत्र आदि में—मनु० ७।२०३ 2 मुख्य रूप से अनादिन, प्रचलित प्रबल,—नस्य 1 मुख्य पदार्थ, अथयन महत्वपूर्ण, वस्तु, अधिष्ठाता मुख्य न

परिचया मलिनात्मना प्रधानम् शि० ७३६१, गया० १८, प्रयोगप्रधान हि नाट्यशास्त्रम्—मालवि० १, धर्मप्रधानेषु तपोधनेषु शं० २१७, रघु० ११७९ २ प्रथम विकासकर्ता, जन्मदाता, भौतिक मूर्ति का ध्यान, प्रथम जीवाणु जिनमें से यह समस्त भौतिक ससार विकसित हुआ है (साध्य० के अनुसार)—ने पुनरपि प्रधानवादी अशब्दत्व प्रधानस्यासिद्धमित्याह—शारी०, दे० 'प्रकृति' भी ३ परमात्मा ४ बुद्धि ५ किसी मिश्रण का मुख्य अणु, क, -नम् १ राजा का मुख्य सेवक या महारथ (उसका मन्त्री या अन्य विरक्तस्त पुरुष) २ महानुभाव, राजसभासद ३ महाबल, -अङ्गम् १ कितनी वस्तु की मुख्य भाषा २ शरीर का मुख्य अणु ३ राज्य का प्रधान या प्रमुख व्यक्ति—अमात्य प्रधानमंत्री—आत्मन (पु०) गणु का विमोक्षण, धातु शरीर का मुख्य तरंग अर्थात् बोध, सुक, पुरुष १ प्रमुख व्यक्ति (राज्य का), २ शिव का विमोक्षण, -मन्त्रिन (पु०) राज्य का संबंधे बड़ा मंत्री, वासम् (नपु०) मुख्य वस्त्र, ब्रष्टि (स्त्री०) वषा की भारी जोड़ा।

प्रधानम् [प्र + धा + क्त] शाय, हवा लम् रगत देना, घो देना।

प्रधि [प्र + धा + क्ति] १ पहिये की नाभि या परिणाह—शि० १५७९, १७९७ २ कुजा।

प्रधी (वि०) [प्रकृष्टा धी ग्य - प्रा० ब०] कुषाप्रबृद्धि, (स्त्री०) बड़ी बुद्धि, प्रज्ञा।

प्रध्वनित (भू० क० कृ०) [प्र + ध्व् + क्त] १ सुवासित, सुदृषयत् २ गर्भित हुआ, तपाया हुआ ३ प्रज्वलित ४ सतप्त, ता १ रुद्रप्रसन्न स्त्री २ वर दिशा जिम आर सूर्य वर रजा हो।

प्रध्वष्ट (भू० क० कृ०) [प्र + ध्व् + क्त] १ निरस्कार पूर्वक बर्ताव किया गया २ धमकी, अहकारी, दपन या अभिमान।

प्रधानम् [प्र + धा + क्त] १ गहन विचार या विमर्श २ विचार या विमर्श।

प्रध्वस्त [प्र + ध्व् + क्त] गर्भया विनाश, संहार। सम०—अभाव विनाशजनित अभाव, चार प्रकार के अभावों में से एक, जिसमें विनाश से अभाव की उत्पत्ति होती है, जैसे कि किसी वस्तु की उत्पत्ति के पश्चात्।

प्रध्वस्त (भू० क० कृ०) [प्र + ध्व् + क्त] संहार किया हुआ, पूर्ण रूप से नष्ट किया हुआ।

प्रध्वस्त (पु०) [प्रयात न्यारा जनकतया प्रा० म०] पीत्र का पृथ, प्रपीत्र।

प्रध्वस्त (भू० क० कृ०) [प्र + ध्व् + क्त] १ अन्तर्धान, लुप्त, अदृश्य २ लोप्य हुआ ३ मिटा हुआ, मृत ४ बरबाद, समुच्छन्न, उन्मूलित।

प्रधायक (वि०) [प्रयात नायको यस्मात् प्रा० सं० व०] १ जिसका नेता विद्यमान न हो २ नायक या पथ-प्रदर्शक से रहित।

प्रधायक-स्त्री (स्त्री०) [प्रा० सं०] दे० प्रधायक और प्रधायकी।

प्रधिघातनम् [प्र + धि + क्त] धिघ् + ल्युट्] वध, हत्या।
प्रधुक्त (वि०) [प्र + धृ + क्त] नाचने वाला, लम् नाच।

प्रधक्त [प्रा० सं०] पक्ष का अर्धम सिरा।

प्रधक्त [प्रा० सं०] १ प्रदर्शन, प्रकटीकरण गणप्रथ प्रपञ्च—का० १५१ २ विक्रम, फौज, विस्तार शि० २०१४४ ३ विस्तारण, विपद व्याख्या, स्पटीकरण, विचारण ४ मुक्तिस्तारता, प्रसार वास्तव्य—अल प्रपञ्चेन ५ बहुविधता, विविधता ६ डेर, प्राच्य, माया ७ दर्शन, दृश्यवस्तु ८ माया, जालमात्री ९ दृश्यमान जन्तु जो केवल माया, जीव नानात्व का प्रदर्शन मात्र है। सम०—बुद्धि (वि०) पूर्व, कपटी, -अचनम् विन्मृत प्रचनन, प्रमादयुक्त बातचीत।

प्रधक्तवति (नामघातु-पर०) १ दिग्गलाना, प्रदर्शन करना प्रपञ्चव्य पञ्चमम् गीत० १० २ विस्तार करना, प्रसार करना।

प्रधक्तित (भू० क० कृ०) [प्र + ध्व् + क्त] १ प्रदर्शित २ विस्तारित, प्रसारित ३ फैलाया गया, पुरी व्याख्या की गई, विघटोक्त ४ मूल जाने वाला, भटका हुआ ५ धोखे में आया हुआ, छला हुआ।

प्रधक्तम् [प्र + ध्व् + क्त] १ उड़ जाना २ गिरना, अवपतन ३ अवतरण ४ मृत्यु, विनाश ५ लठी चट्टान, इलवा चट्टान।

प्रधक्तम् [प्रा० सं०] पैर का अर्धभाग।

प्रधक्ती (वि०) [प्रध + क्त] पैर के अर्धभाग से संबद्ध, या अर्धभाग तक विस्तृत।

प्रधक्त (भू० क० कृ०) [प्र + ध्व् + क्त] १ पधारने वाला, पहुँचने या जाने वाला २ आशय लहान करने वाला, अपनाने वाला—कु० ३१५, ५१५९ ३ धरण केने वाला, मरक्षण इहने वाला, प्राणी, वीर, पायक—शिल्पमन्त्रेऽपि शक्ति मा स्वा प्रधक्तम्—अग० २१७ ४ अनुसरण करने वाला ५ मुर्गाजित, युक्त, आधि-पत्य प्राण—ग० १११ ६ प्रतिज्ञात ७ हासिल, प्राप्त ८ बेचारा, कष्टप्रस्त।

प्रधक्ता [प्रधक्त + अल + क्त], इलयोरभेद] दे० 'प्रधक्ता'।

प्रधक्ते (वि०) [प्रधक्तीनामि पर्यायि ग्य - प्रा० ब०] पत्नी से रहित (वध), -अर्थ विरा हुआ पत्नी।

प्रधक्तायनम् [प्र + धा + क्त + ल्युट्, रय ल] भाग लबा होना, प्रत्यावर्तन।

अथा [प्र + पा + अङ्ग + टाप्] 1 प्याङ व्याख्यास्थानान्य-
मलसलिला यस्य कृपा प्रपारब्ध—विक्रमाक० १८१७८
2 कर्त्ता, कुण्ड मनु० ८१३१९ 3 पशुओं की पानी
पिलाने का स्थान, खेल 4 पानी का भंडार। सम०
—पालिका बटोहियों की जल पिशाने वाली स्त्री
विक्रमाक० ११८९, १३११०, चम्पू शीतोद्यान।
प्रपाठक [प्रकृष्ट पाठोऽथ - प्रा० ब०] 1 पाठ, व्याख्यान
2 किसी का अध्याय वा भाग।
प्रपाणि [प्रकृष्ट पाणि - प्रा० सं०] 1 हाथ का अंगला
भाग 2 हाथ की सुली हथेली।
प्रपात [प्र + पत् + घञ्] 1 चले जाना, विदायणी 2 नीचे
गिरना, अवतरण—अनोरथानामनटप्रपात श० ११९,
कु० ६१५७ 3 आकस्मिक आक्रमण 4 बारिप्रवाह,
झरना, झाल, बह स्थान जिसके ऊपर पानी गिरता
रहता है रथ० २१२९, 5 नट, बेला, 6 खड़ी
चट्टान, इन्का चट्टान 7 गिरजाना, लड़ जाना
—यथा केशप्रपात 8 उन्मत्त, प्रसन्न, स्थूल
—जैसा कि 'वीरप्रपात' में 9 किसी चट्टान से अपने
आपको नीचे गिरा देना 10 उड़ान की एक विशेष
रीति।
प्रपातनम् [प्र + पत् + चिच् + ल्यट्] गिराना, (भूमि पर)
गिराना [
प्रपाधिक [प्रा० सं०] मोर।
प्रपातनम् [प्र + पत् + ल्यट्] पीना, पेय पदाथं।
प्रपातनम् [प्रपात + क्त] एक प्रकार का पेय।
प्रपितामह [प्रकर्षण पितामह - प्रा० सं०] 1 पड़ बाबा
पड़दादा 2 कृष्ण का विशेषण भय० ११३२९
3 बहू का उपाधि, ही पड़दादी।
प्रपितृषु [प्रा० सं०] ताऊ।
प्रपौत्रम् [प्र + पौत्र + णिच् + ल्यट्] 1 मीचना, निष्-
टना 2 रत्नजातारोपक औषधि।
प्रपोत (श्) (वि०) [प्र + पा (प्याप्) + क्त] सूजा हुआ,
फूला हुआ।
प्रपुना (श्) ड, [प्रकर्षण पुनास नाटयति-प्र + पुप् + लट्
+ णिच् + अच्] चकनदे नाम का वृक्ष, चकवड।
प्रपूरणम् [प्र + पूर + ल्यट्] 1 पूरा करना, भरना, पूरित
करना 2 साक्षिबद्ध करना, मुर्द लगाना 3 समुष्ट
करना, तुल्य करना 4 सबद्ध करना।
प्रपूरित (भू० क० क०) [प्र + पूर + क्त] भरा हुआ।
प्रपृच्छ (वि०) [प्रा० सं०] विचारित घोट बाला।
प्रप्रीक [प्रा० सं०] पड़पोता बाऊ० ११७८, — श्री
पड़पोती।
प्रफुल्ल (भू० क० क०) [प्र + फल् + क्त] 1 खिला हुआ, पुष्प
विकासित—लोप्रदुम्ब समुत्तम प्रफुल्लम् रघु० २१२९
'प्रफुल्ल' का पाठान्तर।

प्रफुल्लि (स्त्री०) [प्र + फल् + क्त] खिलना, बिलहरण,
पुष्पित होता।
प्रफुल्ल (भू० क० क०) [प्र + फल् + क्त, उत्थम् क्त च]
1 पूरा खला हुआ पजरित, मुकुलित—न हि प्रफुल्ल
सहकारमेव वृक्षान्तर काष्ठशक्ति पदपराभी—रघु०
६१७९, २१२०, कु० ३१४५ ७३११ 2 खिले हुए
फूल की भांति फूली हुई या बिलहारयुक्त (अक्षि
आदि) 3 मुस्कारता हुआ 4 प्रपुष्पित, उत्कलित,
प्रसन्न। सम०—नयन, नेत्र, —लोकन (वि०) हृष्य
के कारण खिली हुई आंखा बाला, —बहल (वि०)
हृष्योत्कल या हसमुख, हसमुख चेहरे बाला।
प्रफुल्ल (भू० क० क०) [प्र + फल् + क्त] 1 बाधा हुआ,
बधा हुआ, कसा हुआ 2 रोका हुआ, अवरुद्ध,
अटकाया हुआ।
प्रफुल्ल (पु०) [प्र + बल् + तुच्] प्रपेता, प्रत्यक्षार।
प्रफुल्ल [प्र + बल् + घञ्] 1 बघन, जौड़ या गोट
2 अविच्छिन्नता, मानस्य, वैरतयं, अविच्छिन्न भेषी या
परमया विच्छेद माप भूति यन्तु कथाप्रबन्ध—का०
२३९, क्रियाप्रबन्धप्रवचनप्रवचनम् रघु० ६१२३,
३१५८ मा० ६१३ 3 अविच्छिन्न या सुवर्णन वर्णन
या प्रवचन अनुजिततयं सन्ध्य प्रबन्धो दुर्दुहाहर
[सं० २१७३ 4 साहित्यिक कृति वा रचना,
विशेषतः काव्यरचना प्रचितयशना भागकविर्गी-
मलकारिणीयादीना प्रबन्धानतिक्रम्य—मालवि० १,
प्रत्यक्षरलेखनप्रबन्ध—आदि वास० 5 व्यवहार,
योजना, कल्पना जैसा कि 'कण्टप्रबन्ध' में। सम०
कल्पना सटमूठ को कहानी, किसी तथ्य के उपस्तर
पर आधांगि कल्पनाकृति प्रबन्धकल्पना स्तोत्रकल्पना
प्राज्ञा कथा विदु।
प्रफुल्लनम् [प्र + बल् + ल्यट्] बघन, जौड़ या गोट।
प्रफुल्ल (पु०) इन्द्र का नामान्तर।
प्रफ (श्) हं (वि०) [प्र + ब (श्) हं, अच्] सर्वश्रेष्ठ
सर्वात्म।
प्रफुल्ल (वि०) [प्रकृष्ट बल यम् प्रा० ब०] 1 बहुत
सज्जन, गतिमान्ता, ताकतवर, शूरवीर (पुरुष)
रघु० ३१६० शत्रु० ३१०३ 2 प्रचद, सज्जन, तीव्र
अप्राधिक, बहुत बड़ा प्रबलपुरोधातया वृष्टया
—मालवि० ६१२, प्रबला वेदनाम् रघु० ८१५०
3 महत्त्वपूर्ण 4 प्रपूर 5 भयानक, विनाशकारी।
प्रफ (श्) झुका [प्र + ब (श्) ज्, अच्] टाप
दलम् / २० 'प्रह्लिक'।
प्रफाणनम् [प्र + वाच् + ल्यट्] 1 प्रत्याहार, प्रपौत्र
2 अस्वीकृति, मुकरना 3 दूर रचना।
प्रफा (श्) क, लम् [प्र + ब (श्) ज् + णिच् + अच्]
1 कोपल, अकुट, किसलय—अपि प्रफाभासात्म-

सुगन्धि वीरधान्—कु० ५१२४, ११४४, ३१८, रघु० ६११२, १११४९ २. मुञ्जा ३ वीणा की गददन,—स १ शिब्य २ जम्बु । सम०—अमलमलकः १ लाल अमलक वृक्ष २ मूत्र का वृक्ष,—चम्बु लाल कमल,—कम्बु लाल चम्बन की लकड़ी,—अम्लम् (नपु०) मूत्र की प्रसव ।

प्रबाहु [प्रकृष्टो बाहु—प्रा० सं०] मुञ्जा का अग्रभाग, पशुबा ।

प्रबाहुकर्म (अम्य०) [प्रबाहु+कृत्] १ ऊँचाई पर २ उत्ती समय ।

प्रबुद्ध (पु० क० कृ०) [प्र+बुध+क्त] १ जगया हुआ, जाया हुआ २ बुद्धिमान्, विद्वान्, बतुर ३ ज्ञाना, जानकार ४ पुरा सिका हुआ, फीस हुआ ५ कारीरम करने वाला, या कार्यनिमित्त होने वाला (बाहु, मय आदि) ।

प्रबोध [प्र+बुध्+बन्] १ जागना (जाल० भी) जागरण, होश में आना, जेतना—अप्रबोधाय सुध्याय—रघु० १२१५० मोहादमूकघटतर प्रबोध—[४५ ५९ २ (कृष्ण का) सिलका, कँलना ३ जागरण, नीद का अभाव ४ सतर्कता, सावधानी ५ ज्ञान, समझ, बुद्धिमता, भ्रम को दूर करना, यथार्थ ज्ञान—यथा 'प्रबोधमन्द्रोदय' में ६ सालना ७ किसी सुगन्ध द्रव्य में सुगन्ध का पुनर्जीवन ।

प्रबोधन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+बुध्+णिच्+त्] जागरण, जागना,—सम् १ जागते रहना २ जाग, जगना ३ सचेत होना ४ ज्ञान, बुद्धिमता ५ ध्यायन, उपदेश देना ६ किसी गन्धद्रव्य की सुगन्ध का पुनर्जीवन ।

प्रबोध (वि०) नी [प्रबोधन+धीप्, प्र+बुध्+णिच्+गिति+धीप्] देव उठनी एकादशी, कान्तिक शुक्ला एकादशी जिस दिन बिल्गु भगवान् चार भाल की नीद लेने के पश्चात् जागते हैं ।

प्रबोधि (पु० क० कृ०) [प्र+बुध्+णिच्+क्त] १ जाना हुआ, जगया हुआ २ शिक्षण, प्राप्ति, सूचना दिया हुआ ।

प्रबन्धनम् [प्र+भञ्ज्+त्] टुकड़े टुकड़े करना,—मः हूरा, विधोषकर शीघ्र, सहायता—ने० ११६१, पच० ११२२१ ।

प्रबन्ध [प्रबन्ध मयस्यात्—प्रा० सं०] नीम का पेड़ ।

प्रबन्धः [प्र+भू+भृत्] झोटा, मूल—अन्तरालप्रभवस्य मय्य—कु० ३१३, अकिचन सन् प्रबन्ध स सपदान्—पौ० ७०, रघु० ११०५ २ अन्न, पंदावश ३ नदी का उद्गमस्थान—तस्या एव प्रभवमचलं प्राप्य वीर तृषारं—शेष० ५२ ४ उत्पत्ति का कारण, (माता, पिता आदि) जन्मदाता—तमस्या प्रभवमवगच्छ

—स० १ ५ प्रवेला, रचिता—कु० २१५ ६ जन्म स्थान ७ शक्ति, सामर्थ्य, शौर्य, भय गरिया (प्रभाव) ८ विलम्ब की उपाधि ९ (समाज के अन्त में) उत्पन्न होने वाला, व्युत्पन्न—सूर्यप्रभो वश—रघु० ११२, कु० ३१२५ ।

प्रभक्षित् (पु०) [प्र+भू+भृत्] सासक, यहाप्रभु ।

प्रभक्षिन् (वि०) [प्र+भू+इभृत्] मजबूत, ताकत-वर, शक्तिशाली,—सम् १ प्रभु, स्वामी—अप्रभोभि-व्यने रोचते—स० २ २ विलम्ब की उपाधि ।

प्रभा [प्र+भा+अङ्+टाप्] १ प्रकाश दीप्ति, कान्ति, अथमगाहट, चमक—प्रभास्मि शक्तिःसंज्ञा—मग० ७१८, प्रभा पतञ्जल्य—रघु० २१२५, ३१, ६११८, ऋतु० ११२९, शेष० ४७ २ प्रकाश की किरण ३ भूप धरी पर सूरज की छाया ४ दुर्गा की उपाधि ५ कुबेर की नगरी का नाम ६ एक अप्सरा का नाम । सम०—हर १ सूर्य—रघु० १०१७ २ कन्दमा ३ अग्नि ४ समुद्र ५ शिव का विशेषण ६ एक विद्वान् लेखक का नाम, मीमांसा दर्शन की उस एक विचारधारा के प्रवर्तक, जो उन्ही के नाम से प्रसिद्ध है,—कीटः वृगनु,—तरल (वि०) जलमयता हुआ न प्रभातरक ज्वालिखदेति वसुधानलात्—स० ११२६,—अमलम् प्रकाश का एक वृत्त, परिचय—कु० ११२६, ६४ रघु० ३१६०, १४ १४,—केचिन् (वि०) कान्तियुक्त, कान्ति का प्रसारक विक्रम० ५१३४ ।

प्रभाम् [प्र+भञ्ज्+भञ्ज्] १ भाग, टुकड़ी २ (गणित०) भिन्न का भिन्न ।

प्रभात (पु० क० कृ०) [प्र+भा+क्त] जो स्पष्ट या प्रकाशित होने लगा हो—ननु प्रभाता रजनी—श० ४,—सत्प दिन भिकलना, धी फटना ।

प्रभानम् [प्र+भा+त्] प्रकाश, कान्ति, दीप्ति, ज्योति, चमक ।

प्रभावः [प्र+भू+भृत्] १ कान्ति, दीप्ति, उजाला २ गरिया, बध, सहिमा, तेज, भय कान्ति—प्रभाव-वानिव लक्ष्यते स० १ ३ सामर्थ्य, शौर्य, शक्ति, अमर्थता—पच० ११७ ४ राजोचित शक्ति (तीन शक्तिवो में से एक) ५ अतिमानव शक्ति, अलौकिक-शक्ति रघु० २१४१, ६२, ३१४०, विक्रम० १, २, ५, महानुभावता । सम०—स (वि०) राजशक्ति से उत्पन्न प्रभाव से युक्त ।

प्रभावम् [प्र+भाप्+त्] व्याख्या, अर्थकरण ।

प्रभातः [प्र+भाप्+भञ्ज्] दीप्ति, तीव्र्य, कान्ति,—सः,—सत्प डारका के निकट स्थित एक सुविख्यात तीर्थस्थान ।

प्रभातनम् [प्र+भाप्+त्] प्रकाशित होना, जगमग होना, चमकना ।

प्रभास्वर (वि०) [प्र + भास् + वरच्] उज्ज्वल, चमकीला, चमकदार ।

प्रभिस (भू० क० कू०) [प्र + भिद् + क्त] 1 अलग किया हुआ, खटित, फाड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ 2 टुकड़े 2 किया हुआ 3 काटा हुआ, विभक्त किया हुआ 4 मुकुलित, विकसित, खिला हुआ 5 बरसा हुआ, परिबलित 6 विकसित, बिकृत 7 क्षिबलित, डीला 8 नसे में चूर, मद्यमल्ल—कू० ५१८० (दे० प्रयुक्त भिद्)—अ मनवाला हापी । मम०—अञ्जलम् काजल ।

प्रभु (वि०) (स्त्री०—भु, प्र-भौ) [प्र + भू + इ] 1 बलवान्, महबूत, शक्तिशाली—शक्तिप्रभावात्मयि नान्त-कोटिपि प्रभुं प्रहृन् किमुतान्यद्विधा रघु० २१६-समाधिभेदप्रभवा भवन्ति—कू० ३१४० 3 जोर का—प्रभुमाला मलय—मृ०, भु 1 अधिपति, स्वामी प्रभुदुर्भुवुंवनजयस्य य वि० ११६९ 2 राज्यपाल, शासक, सर्वोच्च अधिकारी 3 स्वामी, मालिक 4 पारा 5 विष्णु 6 शिव 7 ब्रह्मा 8 उग्र । मम०—अस्त (वि०) अपने स्वामी में अनुत्क, राजभक्त (क्त) बढ़िया घोड़ा, भक्ति (स्त्री०) अपने स्वामी की भक्ति, राजभक्ति, स्वामिभक्त ।

प्रभूता—स्वम् [प्र + भू + त् + टाप्, प्रभु + त्व] 1 आधिपत्य, सर्वोपरिता, स्वायत्त, शासन, अधिकार श० ५१२५, विक्रम० ४११२ 2 मलिकवत ।

प्रभूत (भू० क० कू०) [प्र + भू + क्त] 1 उद्भूत, उत्पन्न 2 प्रबु, विपुल 3 अलम्ब, अनेक 4 परिपक्व, पूर्ण 5 ऊँचा, उत्तम 6 लबा 7 प्रधानत्व में । मम०—वक्षसेन्वन् (वि०) जहाँ हरीपास और दूधन की बहुतायत हो, बध्म् (वि०) बयोवृद्ध, बुढ़ा, उमरावसीदा ।

प्रभृति (स्त्री०) [प्र + भू + क्तिन्] 1 उदगम, मूल 2 शक्ति, सामर्थ्य 3 पर्याप्तता ।

प्रभृति [प्र + भू + क्तिन्] 1 आरम्भ, शुरु (इस अर्थ में यह बहुधा बहुव्रीहि भगाम के अन्त में प्रयुक्त इन्द्रप्रभृतयो देवा आदि)—(अथ०) 2 ग, से लेकर शुरु करके (अथा० के साथ) शैशबाहप्रभृति पार्ष्णिता पित्राम् उल० ११६५ रघु० २१०८—अष्टप्रभृति आज (अब) से लेकर, अतः प्रभृति, ततः प्रभृति आदि ।

प्रभृ [प्र + भिद् ; प्रभृ] 1 फाड़ना, चीरना, खालना 2 भ्राम, विचार 3 हापी के गन्धस्थल में मर का बहुना, रघु० ३१३७ 4 अलत, भेद 5 प्रकार वा विस्म ।

प्रभृ [प्र + भृ + क्त] गिरना, गिरकर अलग हो जाना ।

-प्रभृ [प्र + भृ + क्त] नाक का एक रोग, पीनव ।

प्रभृजित (भू० क० कू०) [प्र + भृ + क्त] 1 फेंका गया, टांग दिया गया 2 अञ्जित ।

प्रभृजित् (वि०) [प्र + भृ + क्त] टूटकर गिरना, अडना ।

प्रभृष्ट (भू० क० कू०) [प्र + भृ + क्त] गिरा हुआ नोच गडा हुआ, छद्म गिर पर बिराजमान मुकुट की शिवापर धारण की गई फूल-माला, शिखाव-लबिनी फलमाला ।

प्रभृष्टम् [प्रभृष्ट + क्त] दे० 'प्रभृष्ट' ।

प्रभृन् (भू० क० कू०) [प्र + भृ + क्त] हुआ हुआ, मोना दिया हुआ चुबोया हुआ ।

प्रभृत् (भू० क० कू०) [प्र + भृ + क्त] विचारा हुआ ।

प्रभृत् (भू० क० कू०) [प्र + भृ + क्त] 1 नसे में चूर, मद्यमल्ल श० ४११ 2 उग्रत, पावल 3 लापर-बाह, उल्लेख, अनवधान, असावधान, अनपेक्ष (प्राय अधि० के साथ) 4 उन्मादगामी, भूल करने वाला (अथा० के साथ) स्वाधिकारात्मक—मेष० १, 5 पीपट करने वाला 6 स्वेच्छाचारी, लभृष्ट । मम०—मोत (वि०) अमानजानतापूर्वक गाया हुआ,—चित्त (वि०) लापरवाह असावधान, बेखबर ।

प्रभृत् [प्र + भृ + क्त] 1 घोड़ा 2 शिव के गण (या अून देन माने जाते हैं) जो उसकी सेवा में रत हैं कू० ७१५५ । मम०—अधिष्, नाच बलि-शिव की उपाधि ।

प्रभृत् [प्र + भृ + क्त] 1 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, नतन करना 2 बच, हूदा 3 मन्वन् करना, बिलाना ।

प्रभृत् (भू० क० कू०) [प्र + भृ + क्त] 1 प्रपौठिन-नष्टप्रस्त 2 कुचला हुआ 3 कतल किया हुआ, बाध किया हुआ, भा० ३११८ 4 अली मालि बिलोया हुआ, तम जल रहित छाछ, महुा ।

प्रभृत् (वि०) [प्रभृत्तो भदो वस्य—श्रा० व०] 1 मन-वाला नश में चूर (शाल० से भी) 2 आविष्पूर्ण 3 लापरवाह 4 स्वेच्छाचारी बदचलन,—शः 3, हर्ष, प्रमथना, मृषा शि० ३१५४ ३१२१ 5 धतुरे का पीषा । मम०—कानम्, बलम् राजकीय अन्त पर में बूः १४४ प्रमाद वन वह उद्यान जिसमें राजा अपनी रािनियों के साथ विहार करता है ।

प्रभृत् (वि०) [प्रभृ + क्त] लभृत्, कामुक ।

प्रभृत् [प्र + भृ + क्त] कामेच्छा ।

प्रभृत् [प्रभृ + क्त + टाप्] 1 सुन्दरी नवयुवती रघु० ११३१, श० ५११७ 2 पत्नी वा स्त्री कू० ४११२, रघु० ८१७३ 3 कन्याराशि । मम०—कानम्, बलम् राजकीय अन्त-पर के साथ बुद्धा हुआ प्रमोद

उद्दान (यहाँ टानिया बिहार करती है), जन-
1. नवयुक्ती, तर्फी 2. स्त्री ।

प्रखर (वि०) [प्र + मृ + खर] लापरवाह, अनव-
धान, बसावधान ।

प्रखरम् (वि०) [प्रकृष्ट मनो यस्य—प्रा० ब०] 1 लुप्त,
हर्षयुक्त, प्रसन्न, मानन्दित ।

प्रखर्यु (वि०) [प्रकृष्टो मन्य यस्य—प्रा० ब०]
1 फोषाधिष्ठ, चिदचिदा चिदा हुआ (अवि० के
साथ) रघु० ७।३४ 2 कष्टग्रस्त शोकान्वित,
शोकसंतप्त ।

प्रखरः [प्र + मी + खर] 1 मृत्यु 2 बरबायी, नाश,
निधन 3 बध, हत्या ।

प्रखर्यम् [प्र + मृ + खर] प्रसन्न होना, मष्ट करना,
कुशल देना, नः विरुद्ध का विशेषण ।

प्रमा [प्र + मा + ष + टाप्] 1 प्रतिबोध, प्रत्यसजान
2. (तर्क० में) सही भाव, स्थिष्टु ज्ञान, यथार्थ ज्ञान-
कारी, ठीक ठीक प्रत्यय (यथा रजते इदं रजतमिति
ज्ञानम् तर्क०) ।

प्रमाणम् [प्र + मा + ल्यट्] 1 (सबार्थ चौहार्द) माप
-रघु० १८।३८ 2 आकार, विस्तार, परिमाण
(सबार्थ चौहार्द) 3 ज्ञान, मानक—पृथिव्या स्वामि-
भक्तानां प्रमाणे परमे स्थित-मृदा० २।१०
4 सोमा, परिमाण 5 साक्ष्य, शहादत, प्रमाण 6 अधि-
कारी, सम्भोदय, निर्णय, निश्चायक, वह जिसका
शब्द प्रमाण माना जाय श्रुत्या देव प्रमाणम् पञ्च
१. 'यह सुनकर श्रीमान् ही निणय करेंगे (कि क्या
करना चाहिए)'—आर्यमिथा प्रमाणम्—मालवि० १,
मृदा० १।१, स० १।२०, व्याकरणे पाणिनि प्रमाणम्
7 सत्य ज्ञान, यथार्थ प्रत्यय या भाव 8 प्रमाण की
गति, यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का उपाय (नैययिक
कैवल्य चार प्रमाण प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और
शब्द मानते हैं, वेदान्ती और मीमांसक अनुपपत्ति
और अर्थोपनिषि दो और मानते हैं) 9 साक्षा कबल
प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द को ही मानते हैं—'अनु-
सर्' भी 9 मुख्य, मूल 10 एकता 11 वेद, शास्त्र,
धर्मग्रन्थ 12 कारण, हेतु, (प्रमाणी कृ) 1 अधिकारी
मानना या समझना 2 आज्ञा मानना, अनुमा होना
3 साधित करना, सिद्ध करना 4 यथोचित भाग
बाटना । सम० अधिक (वि०) सामान्य मे अधिक,
अपरिमित, अत्यधिक—स० १।३०,—अस्तरम् प्रमाण
की अन्य रीति, अभाव प्रमाणशून्यता, अ—(वि०)
(साक्षिक की भाँति) प्रमाण पद्धति का जातकार,
(कः) शिव का विशेषण,—बुध (वि०) अधिकारी
द्वारा स्वीकृत, पञ्च लिखित अधिकारपत्र, पुष्पः
विभाषक, निर्णायक, मध्यस्थ,—अपत्यम्, धारण्यम्

अधिकृत बलवन्,—शास्त्रम् 1 वेद, धर्मशास्त्र 2 तर्क
विज्ञान,—सूत्रम् मापने की डोरी ।

प्रमाणवति (मा० बा० पर०) अधिकृत समझना, प्रमाण-
स्वरूप मानना हि० १।१० ।

प्रमाणिक (वि०) [प्रमाण + क्त] 1 'नाप' का आकार
ग्रहण करने वाला 2 प्रमाण या अधिकार का रूप
धारण करने वाला ।

प्रमाताम्हः [प्रकृष्टो मातामह—प्रा० म०] 1 परनाना
ही परनामी ।

प्रमाथः [प्र + मृ + थञ्] 1 प्रदीपन, भताप देना,
मत्ताना 2 लुप्त करना, बिलोना 3 बध, हत्या,
विनाश सैनिकाणा प्रमाणेन सत्यमोक्षायिन त्वया
—उत्तर० ५।३१, ४ 4 हिमा, अत्याचार 5
बलकार, बलपूर्वक अपहरण ।

प्रमाथिन् (वि०) [प्र + मृ + थि] 1 यन्त्रणा देने
वाला, तप करने वाला, सपोडित करने वाला, कष्ट
देने वाला, दुःख पहुँचाने वाला क्व रजा हृदय-
प्रमाथिनी क्व च ते विद्वाननोयमायुषम्—मालवि० ३।२,
मा० २।१, कि० ३।१४ 2 बध करने वाला, विनाश-
कारी 3 लुप्त करने वाला, सनिमान करने वाला
—मव० २।६०, ६।३४ 4 फाड़ने वाला, गिराने
वाला, पड़ाउने वाला रघु० १।१।४८ 5 कष्ट कर
गिराने वाला कि० १।७।३१ ।

प्रमाथः [प्र + मृ + थञ्] 1 अवहेलना असावधानी,
अनवधान, लापरवाही, मूल-भूक—ज्ञान प्रमादम्बलिन
न शक्यम्—स० ६।२६, चौर० १ 2 मादकता,
वागमलन, उन्मत्तता 4 मूर्खता, भारी भूल, मल्ल
निर्णय 5 दुर्बेदना, उन्मत्त, सकट, भय—अहो प्रमाद
—मा० ३, उत्तर० ३ ।

प्रमाथणम् [प्र + मी + थिञ् + ल्यट्, पुक्] बध, हत्या ।

प्रमाथनम् [प्र + मृ + थिञ् + ल्यट्] मिटा देना, रगड
देना, धो देना ।

प्रमित (पू० क० कृ०) [प्र + मा (मि) + क्त] 1 नया
तुला, सीमित 2 कुछ, धाटा—प्रमितविषया शक्ति
विदन्—महावी० १।५१, सि० १६।१० 3 ज्ञान, समझ
हुआ 4. प्रमापित, प्रदक्षित ।

प्रमितः (स्त्री०) [प्र + मा (मि) + क्तान्] 1 माप, नप
2 मध्य या निश्चित ज्ञान, यथार्थ भाव या प्रत्यय
3 किसी प्रमाण या ज्ञान के जोर से प्राप्त जातकारी ।

प्रमोह (वि०) [प्र + मिहृ + क्त] 1 घना, सघन, सटा
हुआ 2 मूक बनकर निकला हुआ ।

प्रमोत (पू० क० कृ०) [प्र + मी + क्त] मरा हुआ, मृतक,
सः यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ या बध
किया हुआ पशु ।

प्रमोतिः (स्त्री०) [प्र + मी + क्तान्] मृत्यु, विनाश, निधन ।

प्रबोधा [प्र+बोल्+अ+टाप्] 1 तन्ना, आलस्य, उल्लाह-
हीनता 2 वीर्यो के राज्य की प्रभुताशासन स्त्री का
नाम, (जब अर्जुन का बोधा उस स्त्री के राज्य में
वहूँना तो उनमें अर्जुन के साथ युद्ध किया, परन्तु
अर्जुन के विजय हो जाने पर प्रबोधा, अर्जुन की पत्नी
बन गई) ।

प्रबोहित (भू० क० कृ०) [प्र+बोल्+कल्] मुँही हुई
आँसो वाला ।

प्रबुद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+भुच्+क्त] 1 शिथिलित
2 स्वाधीन किया हुआ, स्वतंत्र छोड़ा हुआ 3 तिग्म,
विरक्त 4 डाला हुआ, फेंका हुआ । सम० कम्पन्
(अवय०) कृत्कृत कर ।

प्रबुध् (बि०) [प्र+बु०] 1 नहूँ किये हुए, नहूँ मोडे हुए
2 मुख्य, प्रधान, अथवा, प्रथम 3. (कर्माल के मत में)
(क) प्रधानता में, प्रधान या मुख्य बनाकर—वास्तुनि-
प्रभुता कु० ३१२८ (क) से मूल, तस्मिन् प्रीति-
प्रभावचन स्वागत व्याजहार—मेघ० ८, काः ।
प्रदणोप्य दृश्य 2 देर, तन्मन्थन, सम् 1 मूह
2 अन्वय या परिच्छेद का आरम्भ (प्रबुध्कत, प्रबुध्
किया विशेषण के रूप में प्रबुध्कत शोकर 'के सामने
'सामने' के विपद' अर्थ का प्रकट करने हैं भग०
१२५, म० ७२२) ।

प्रबुध् (बि०) [प्र+भुह्+क्त] 1 नृत्तिन, अचेत,
2 अज्ञान प्रिय ।

प्रबुध् (स्त्री०) [प्र+भुह्+किल्प्] कथत रूप ।
प्रबुध्कित (भू० क० कृ०) [प्र+भुह्+क्त] उन्मत्तित,
आज्ञादिन, प्रमत्त, आनयित । सम० हृद्यम् (बि०)
प्रमप्रमता ।

प्रबुध्कित (भू० क० कृ०) [प्र+भुच्+क्त] चुराया हुआ,
अपहृत—सि० 1७७१, ता एक प्रकार की पत्नी ।

प्रबुध् (भू० क० कृ०) [प्र+भुह्+क्त] 1 विरहित,
उत्थित, आगत 2 मूर्ख, बूढ़ ।

प्रबुध् (भू० क० कृ०) [प्र+भु+क्त] मरा हुआ, मृतक,
तम् 1 मृत्यु 2 मेलो ।

प्रबुध् (भू० क० कृ०) [प्र+भुच्+क्त] 1 रसद दिया
गया, वां दिया गया, मिटा दिया गया, साफ किया गया—
रघु० ६१४१, ४४२ चमकाया हुआ, चमकीला, स्पष्ट ।

प्रबुध् (बि०) [प्र+भा+यत्] 1 मापे जाने योग्य,
निश्चित 2 प्रमाणित किये जाने योग्य, प्रवर्धनीय,
- यन् 1 निश्चित ज्ञान की वस्तु, प्रदत्त उपसहार,
साध्य 2 सिद्ध करने योग्य बात, जो विषय सिद्ध
(प्रमाणात्) किया जा सके ।

प्रबुध् [प्र+भिह्+भञ्ज्] एक प्रकार का मूत्र रोग
(धानु शीघता वा मूत्रमेह आदि) जिसमें मूत्र के साथ
धानु या सक्कर चिरती हो ।

प्रबोधः [प्र+बोल्+भञ्ज्] 1 गिराना, गिरने देना
2 मुक्त करना, स्वतंत्र करना ।

प्रबोधयन् [प्र+भुच्+स्तुट्] 1 मुक्त करना, स्वतंत्र
छोड़ना 2 उपलब्ध, छोड़ना ।

प्रबोधः [प्र+भुह्+भञ्ज्] हर्ष, आह्लास, उल्लास, प्रमत्तता
—प्रबोधनम् नहूँ वाग्योपिताम् रघु० ३११९,
मनु० ३१६१ ।

प्रबोधयन् [प्र+भुह्+गिच्+स्तुट्] 1 आह्लासित करना
आनयित करना, प्रसन्न करना 2. प्रसन्नता न. विद्यु
का विशेषण ।

प्रबोधित (भू० क० कृ०) [प्र+भुह्+गिच्+क्त] 1
प्रसन्न, आह्लासित, हृष्ट, आनयित,—ता बुधेर का
विशेषण ।

प्रबोह् [प्र+भुह्+भञ्ज्] 1 मूर्खी, बेहोशी, बज्रता
—तिरयति करवाना चाहकत्व प्रबोहः भा० ११४१,
2 बिकलता, बज्रहीन ।

प्रबोहित (भू० क० कृ०) [प्र+भुह्+गिच्+क्त] 1
आकुलित, उत्थित, बज्रघाया हुआ ।

प्रबुध् (भू० क० कृ०) [प्र+यस्+क्त] 1 नियमित,
जितेन्द्रिय, पुन, पावन, प्रकृत, कर्मिक अनुष्ठाओं एव
साधनाओं से जिसने अपने वाक्यको पवित्र बना लिया
है, आर्यसम्बन्धी,— रघु० ११९५, ८१११, १३००, कु०
१५८, ३१६६ 2 मोक्षसाह, अद्वैतसुख 3 सुशील,
विनय ।

प्रबुध् [प्र+भुह्+भञ्ज्] 1 प्रवाल, बेट्टा, उद्योग—रघु०
२१५६, मद्रा० ५१२ 2 अन्वयत प्रवाल, धर्म 3 अथ
कठिनाई प्रवलप्रशोधय सक्त—वा० १, 'पुर्व्वव्य'
'दुष्ट' 4 बड़ी साधनायी, बोकसी—कृतप्रयत्नादि
गृह किययति पच० ११२०५५ (आ० में) उन्वयार
में प्रवाल, मूत्र का वह व्यापार जिसके सहारे बगों
का उन्वयण होता है ।

प्रबुध् (भू० क० कृ०) [प्र+यस्+क्त] अन्वयत,
सिद्धाया हुआ, प्रमात्त आदि शक्य कर स्थापित किया
हुआ ।

प्रबुध् [प्रकृष्टो वागफल वच-श्रा० व०] 1. वज्र 2 इन्द्र
3 बौद्ध 4 वर्तमान इलाहाबाद के पाल गया मन्दिर
के लगभग पर बना प्रसिद्ध तीर्थस्थान—मनु० २१२१
(इस अर्थ में शब्द ननु० भी है) । सर्व०—अथ
इन्द्र का विशेषण ।

प्रबुध्कयन् [प्र+भाच्+स्तुट्] 1 शिथिल, शार्धना करना,
विश्रान्तना ।

प्रबुध्कयः [प्र+भुह्+भञ्ज्] प्रबुध्कयत तबवी एक
अनुष्ठाण ।

प्रबुध्कयन् [प्र+भा+स्तुट्] 1 कृष्य करना, अर्थदान करना,
दिया 2. अधिवान, प्राया—मार्गं तावन्मनु० कथयत-

स्वल्पप्रयाणानुक्रमम् । मेघ० १३ 3 प्रमति, अक्षयमन
4 (अनु का) अभियान, हुमला, आश्रम, चढाई
- काम पुत्र, शुक्तिप्रय मेघ० कु० ३।४३, रघु० ६।
३३ 5 आरभ, शुक 6 मयू (इस समार से) बिदा
- भय० ७।३० 7 फोड़े की पीठ 8 किसी भी जन्तु
का गिड़ला भाग । नम० - भय चात्रा के बीच कही
रक जाना, ठहरना पन० १ ।

प्रयाणकम् । प्रयाण + कन् । यात्रा, प्रस्थान का० ११८,
३०५ ।

प्रयास (भू० क० क०) । प्र + या + क्त । 1 जाने बड़ा
हुआ, गया हुआ, विसर्जित 2 मूलक, मरा हुआ - श.
1 आक्रमण 2 चटान, दलवाँ चट्टान ।

प्रयापित (भू० क० क०) । प्र + या + णिच् + क्त, पक् ।
1 आगे पहुँचाया हुआ भेजा हुआ 2 भगाया हुआ ।

प्रयास । प्र + यम् + घञ् । 1 अमाव, कमी, (ब्रह्मादि
की) महर्गादि 2 रोकथाम, निग्रहण 3 लम्बाई ।

प्रयास । प्र + यन् + घञ् । 1 प्रयास, बेप्टा, उछाल
रघु० १२।५३ १४।५१ 2 अम, कठिनाई ।

प्रयत्न (भू० क० क०) । प्र + यत् + क्त । 1 जोता
हुआ काठी जौन आदि कसा हुआ 2 प्रचलित, (शब्द
आदि) व्यवहार में लाया हुआ 3 प्रयोग में लाया
गया 4 नियम किया हुआ, मनोनीत 5 किया हुआ,
प्रतिनिहित 6 उदित, उद्भव, उत्पन्न, फलित 7 युक्त
8 ध्यानमग्न, बेमग्न 9 (न्याय आदि) व्याज पर
दिया हुआ 10 प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ
(दे० १ पूर्वक पढ़) ।

प्रयत्नित (भू० क० क०) । प्रयत् + क्त । 1 इन्तेमाल, उपयोग
प्रयोग 2 उनेजना उकसाना 3 प्रयोजन, मुख्य उद्देश्य
या ध्येय, अवसर 4 परिणाम, फल ।

प्रयत्नम् । प्रा० म० । इस बाल की सख्या ।

प्रयत्न्युत् । प्र + यत् + क्त + उट् । 1 थोड़ा 2 मेंडा
3 हवा, बाय 4 सन्यासी 5 दूध ।

प्रयत्न्युत् । प्रा० म० । स्याम, लडाई ।

प्रयोक्तृ (वि०) । प्र + यृच् + क्तृच् । 1 उपाय, शब्द आदि
का) उपयोग करने वाला 2 अनुष्ठाता, निदेशक,
उपायक 3 प्रेरक, उत्तेजक, उकसाने वाला 4 प्रमेता,
अभिकर्ता - उत्तर० ३।४८ 5 (नाटक का) अभिनय-
कर्ता 6 व्याज पर रुपया देने वाला, साहूकार
7 तीरदाज् ।

प्रयोग । प्र + यृच् + क्तृच् । 1 इस्तेमाल, व्यवहार, उप-
योग जैसा कि 'शब्द प्रयोग' में अर्थ शब्दों वृत्ति-
प्रयोग, अल्पप्रयोग - इस शब्द का बहुल प्रयोग, या
बिना प्रयोग होता है 2 प्रचलित रूप, सामान्य
प्रचलन 3 केंद्रना, प्रलेपन, मुक्त करना (विप०
'सहार') - प्रयोगसहार विनयप्रयोगम् - रघु० ५।५७

4 प्रखानी अनाटान, (नाटकीय) अभिनयन, नाटक
सेलना - देव प्रयोगप्रधान हि नाटयशास्त्रम् - भागवि०
१ नाटिका न प्रयोगानो दृष्टा - रघु० १ मन् ५२
अभिनीत नही देखी गई 5 अक्षयमन, (किमी विषय
का) प्रायोगिक भाव (विप० शास्त्र या सैद्धांतिक
भाव) तत्र अभ्यासि मा च शास्त्रेण योगे च विमुञ्जतु
भागवि० १ 6 कार्यविधि का क्रम, मान्यकारिक
रूप 7 कृत्य, कार्य 8 पाठ करना, पढ़कर सुनाना
9 आरभ, शुक 10 याचना, माधन, युक्ति, तरकीब
11 साधन, उपकरण 12 फल, परिणाम 13 जादू -
प्रयोग, ऐन्द्रजालिक रचना, अभिचार 14 व्याज पर
रुपया देना 15 घोड़ा । मम० - अतिशय प्रस्तावना
के पीछे मेरा मे मे एक जिनमें प्रस्तुत प्रयास के
अन्तर्गत दूसरा प्रयोग इस रीति से उपस्थित किया
जाता है कि अक्षयमान् पात्र रंगमंच पर प्रवेश करने
हैं अर्थात् वह मूखपात्र पात्र - का संकेत करना
है और इस प्रकार अपने भावों काय (न्याय) को पूर्ण
सूचना देना है - ना० द० परिभाषा देना है - नाटि
प्रयोग एकत्रित प्रयोगोप्य प्रयोगमे, तत्र पात्रप्रवेश-
श्वेत प्रयोगानिश्चयम् । २११. निष्पुण (वि०)
नृत्याभ्यास में कुशल - भागवि० ३ ।

प्रयोजक (वि०) । प्र + यृच् + क्तृच् । निमित्त बनने वाला,
कारण बनने वाला, मध्यम करने वाला, के निमित्त करने
वाला, उकसाने वाला, उद्योगक, न. 1 नियुक्त
करने वाला, या इन्तेमाल करने या काम ले 2 प्रयोजनी
3 सम्पापक, प्रवर्तक 4 साहूकार, महाजन 5 चम
शास्त्री, विधायक ।

प्रयोजनम् । प्र + यृच् + क्तृच् । 1 इन्तेमाल काम में
लभाना, निर्पुक्ति 2 उपयोग, आवश्यकता, (आव-
श्यक जन्तु में कारण, तथा उपयोगना में सब०)
सर्वरूपि राजा प्रयोजनम् - पञ्च० १, बाने किमनेन
पृष्टेन प्रयोजनम् का० १४४ 3 ध्येय, लक्ष्य, उद्देश्य,
अभिप्राय प्रयोजनमनुदृश्ये न यदापि प्रवर्तने, पुत्र
प्रयोजना दारा पुत्र पित्रप्रयोजन हितप्रयोजन मित्र
धन सर्वप्रयोजनम् सुमा०, मुण्डनापि परप्रयोजना
- रघु० ८।३१ 4 प्राप्ति का साधन - मनु० ७।१००
5 कारण, उद्देश्य, निमित्त 6 लाभ, स्वार्थ ।

प्रयोक्तृ (म० क०) । प्र + यृच् + क्तृच् । 1 इन्तेमाल
करने के योग्य, काम में लागने के योग्य 2 अभ्यास
करने के लायक 3 उत्पन्न या पैदा करने के योग्य
4 नियुक्त करने के योग्य 5 चलाने या फेंकने के
योग्य (अम्ब) 6 कार्य आरम्भ करने के योग्य ।

प्रयुक्त (भू० क० क०) । प्र + क्तृ + क्त । फूट फूट कर
रोया हुआ, मुक्त कठ से पतल ।

प्रयुक्त (भू० क० क०) । प्र + क्तृ + क्त । 1 पूरा बड़ा

हना, पूर्ण विकसित 2 उत्पन्न, उद्भूत, पैदा हुआ
 स्थापयमाना कृति प्रकट शं० ७११९ 3 बड़ा
 हुआ 4 महाराष्ट्र एक पचा हुआ यथा 'प्रकृतमल'
 मे 5 लम्बे बड़े हुए यथा 'प्रकृतकेय' 'प्रकृतमय' मे ।
प्रकटि (स्त्री०) [प्र + कृ + क्तित्] बर्धन, वृद्धि ।
प्ररोचनम् [प्र + च् + णिच् + ल्यट्] 1 उत्तेजना, उद्दीपन
 2 निर्दोष, ग्राह्यता 3 (किसी व्यक्ति का) प्रदर्शन
 विमने जाग देव सके और पसंद करें—अलोकनामाप्य-
 गुणस्तनूय प्ररोचनायै प्रकटीकृतयच मा० १११०
 (यहाँ 'प्ररोचनायै' का अर्थ जगद्गुरु पंडित 'प्रवृत्ति
 पाठवार्य'—समारंश से पूर्ण परिचित होने के लिए
 करते हैं) 4 नाटक में प्रागे जाने वाली बात का
 रोचक बर्णन 5 ध्येय की पूर्णरूप से प्रतिस्थापना
 —दे० सा० १० ३८८ (अनिशय दानो अथ का बलाने
 के लिए 'प्ररोचना भी) ।
प्ररोह [प्र + रुह + पञ्] 1 अकृति होना, अस्वा
 निकलना, बढ़ना, बीजाकुरण यथा पशुगुणोत्तर
 2 अकुर, अस्वा (आन्० मे भी)—कलप्रशास्त्र १४
 बीजवत्त विभेद २५० ८।१३ त्वक्षत् प्ररोहवदित्ता-
 निव मविवात् २३७३, कु० ३१६०, ७१३७
 3 किमलय, गन्ताना त् गन्तव्यकुलप्रदात्त वेणी० ६
 महारा० ६१२४ ४ प्रकाशकुर कुर्वन्ति सामाशिका-
 मणाना प्रभोप्ररोहोत्पन्नय स्वामि- २५० ६१३३
 ५ नगपल्लव गं टपनी, जाना, कोपल ।
प्ररोहणम् [प्र + रुह + ल्यट्] 1 रचन, अकुरण स्पष्टन
 2 कला विलना अकुरण या उल्ला 3 टपनी, किमलय
 स्पष्टन कारण ।
प्रलयनम् [प्र + ल् + ल्यट्] 1 बान चीन करना बान,
 जन्म, लता 2 वाचालता बालकल्लव बहवः, अयधु
 बाल, बकासि उर कार्याणि प्रलयितम् 3 विलास,
 रोना पोना उर १० ३१२९ ।
प्रलयित (म० क० क०) [प्र + ल् + क्त] कहा हुआ,
 प्रसार किया हुआ, - तम् बाल- दे० उपर 'प्रलयन' ।
प्रलय (म० क० क०) [प्र + ल् + क्त] घोषा दिवा
 हुआ, उग, उबा ।
प्रलय (वि०) [प्र + ल् + अच्, घञ् वा] 1 लटकन-
 शील, नीचे की ओर लटकने वाला - ब्रेगा कि 'प्रलय
 केस' में 2 उन्नत—यथा प्रलयनामिक' मे 3
 मन्थर, विलंबकारी, —ब 1 उत्पत्ता हुआ, आश्रित
 2 कोई भी नीचे का लटकने वाली वस्तु 3 शान्ता
 4 कण्ठार 5 एक प्रकार का हार 6 स्त्री की छाती
 7 उस्ता या मोहर 8 एक प्रकार का नाम जिसकी
 बलगत ने मार डाला था । मम० अह, नह पुष्य
 जिसके पीछे लटकने ली, —ज्, यच्च, हन् (प०)
 बलराम का विशेषण ।

प्रलयनम् [प्र + ल् + ल्यट्] नीचे लटकना, आश्रित
 रहना ।
प्रलयित (वि०) [प्र + ल् + क्त] लटकनशील, लटकने
 वाला, निलंबित ।
प्रलय [प्र + ल् + घञ्, मृगाम्] 1 प्राण करना,
 लाभ उठाना, अवान्ति 2 घोषा देना, छलना, उगना,
 प्रयचना ।
प्रलय [प्र + ली + अच्] 1 विनाश, महार, विघटन—
 स्थानानि कि हिमवत प्रलय मणानि - भर्तृ० ३७०
 २९, प्रलय नीरथा - शं० १११६६, 'तिरोहित करके'
 (फल्य क अन्त मे) 2 मन्थर का विनाश विच्छेद्यापी
 विनाश कु० २१६८, भग० ७१६ 3 स्थापक विनाश
 या बरबाद 4 मृत्प, मरना, निधन—प्राक्कथा-प्रलयय
 मासबदना विच्छेद्युते वयम् मृदा० ५१२१ ११४
 भग० १११४ 5 मूर्छा, बेहोशी, बेतना का न रहना,
 गस कु० ५१२ 6 (अन्त मा० में) बेतना का हानि
 (३ व्यक्तियोंभाषा में एक—प्रलय मूल-दु खारौ-
 गतिमिदियमूर्च्छेन्य- प्रता० 7 रहस्यवर्ति, आम्
 या प्रणव । मम० काल विघ्नमय का समय,—अलक्षर,
 मृत्-विघटन के अवसर तो कानी घटा,—बहन्
 मृत्- विघटन क अवसर पर आग,—पयोधि स्पृष्टि
 है विनाश का मयुट ।

प्रलयत (वि०) [प्रा० म०] उन्नत मन्थर वाला ।
प्रलय [प्र + ल् + ङ] टकना करना, लड ।
प्रलयितम् [प्र + ल् + क्त] काटने का उपकरण ।
प्रलय [प्र + ल् + घञ्] 1 बान, वार्तालाप, प्रवचन
 2 वाचालता बालकल्लव बहवः अयधु अने या कक्याद
 मन्० १० ३३ विनाश, गना पासा—उत्तराप्रलापा-
 पत्रविशेषा भाषणम् बामुदेव—मा० १२५, वेणी०
 ५१००, मम०—हल (प० एक प्रकार का अन्न) ।
प्रलाधिम् (वि०) [प्र + ल् + णिच्] 1 बातनी, बोलने वाला
 —अथमवदप्रमाणानि—महा ३२ वाचालता, बालकल्लव ।
प्रलीन (म० क० क०) [प्र + ली + क्त] 1 पिघला हुआ,
 घुला हुआ 2 न्यून, पित्त 3 निम्बि, बेतना शून्य ।
प्रलीन (म० क० क०) [प्र + ल् + क्त] काट कर मिगया हुआ ।
प्रलीय [प्र + ल् + घञ्] लेप, मन्थन, चोपट ।
प्रलेपक [प्र + ल् + घञ्] 1 मलने वाला, लप करने
 वाला 2 एक प्रकार का मन्थकम् ।
प्रलेह [प्र + लि + घञ्] एक प्रकार का रस, शोणवा ।
प्रलोडनम् [प्र + ल् + ल्यट्] 1 (भूमि पर) उठाना 2
 उन्नोचन, उछालना ।
प्रलीन [प्र + ल् + घञ्] 1 अतिशुद्धा लालच,
 मालता 2 ललचाला, उछालना ।
प्रलोडनम् [प्र + ल् + ल्यट्] 1 आकर्षण 2 ललचाला, कुस-
 लाना, लालच देना 3 प्रलोडन की वस्तु, चारा, दाना ।

प्रलोभनी [प्रलोभन + लीच्] रेत, बाल ।
प्रलोक (वि०) [प्रा० ल०] अत्यंत सुख, बरबर करने वाला ।

प्रबन्ध (पु०) [प्र + बन्ध् + भृच्] 1 बर्णन करने वाला, बस्ता, उद्योगिक 2 अध्यापक, व्याख्याता—मनु० ७।२० 3 सुवक्ता, धाराप्रवाह बोलने वाला ।

प्रबन्धः, प्रबन्धः प्रबन्धन (पु०) बरबर, दे० 'लघय' और 'लघयङ्गम' ।

प्रबन्धनम् [प्र + बन्ध् + ल्यट्] 1 बोलना, प्रकथन करना, घोषणा करना, पद्य० १।१९० 2 अध्यापन, व्याख्यान 3 बोलकर समझाना, व्याख्या करना, बर्णन करना -- महावी० ४।२५ 4 बर्णितना 5 धर्मशास्त्र, मनु० ३।१८४। सम० - षट् (वि०) बात करने में कुशल, शायनी ।

प्रबट् [प्र + बट् + अच्] गेहूँ ।

प्रबण (वि०) [प्र + बण् + अच्] 1 डलवा, रस्तान वाला, मुकाबदार, नीचे की बहने वाला 2 डालू, दुखारोह, विप्रगती, घट्टान जैना 3 कुटिल, मुका हुआ, 4 अनुकूल, प्रबल, सलग्न (प्रायः समास के अन्त में) बचनप्रण -- कि० ३।१९ 5 भक्त, अनुरक्त, व्यस्त, गुना हुआ, मुका हुआ, भरा हुआ नृमि प्राणप्राण-प्रणयतिनि कंचिवधुना मनु० ३।२९, सि० ८।२५, मुदा० ५।२१, कि० २।४६ 6 अनुकूल, उत्सुक—कु० ४।४२ 7 आरु, उत्तर कि० २।८ 8 युक्त, सन्नम्र 9 विनम्र, मुबोक्त, विनीत 10 मुत्राया हुआ, बर्बाद, क्षीय, या चौराहा, -णम् 1. उतार, डलवा उतार, घट्टान 2 पहाड़ का पारबभाग, डलान, मुकाब ।

प्रबलत्स्यन् (वि०) (स्त्री०-ली, ली) [प्र + बल् + स्य (वृट्) + भृच्] यात्रा पर जाने के लिए तैयार । सम० धतिका उन नायक की पत्नी जो यात्रा पर जाने के लिए तैयार बैठा है (रीतिकाव्यों में आठ प्रकार की नायिकाओं में से एक) ।

प्रबलणम् [प्र + बल् + ल्यट्] 1 बुने हुए कपड़े का ऊपर का भाग 2 अङ्कुरा शि० १।३।९० ।

प्रबल्य (वि०) [प्रबल बवो यत्य प्रा० ब०] बड़ी उन्नत का, बूढ़, बुढ़ा केन्द्रोत्ते प्रबल्यस्तवा दिग्धव-उत्तर० ४, रघु० ८।१८ ।

प्रबर (वि०) [प्र + बर् + अच्] 1 मुख्य, प्रधान, संबंधेष्ट या पूज्य, सर्वोत्तम, श्रीमान् मकनके चिरयनि प्रबरो विनोद मूच्य० ३।३, मनु० १०।२०, षट्० १६ 2 उद्येष्ट, र- 1 बलावा, आह्वान 2 एक विशेष प्रकार का आवाहन या अभ्यासान के अवसर पर शक्ति को संबोधित किया जाता है 3 वन परगना 4 कुल, परिवार, वय 5 पूर्वाज 6 गोत्रप्रवर्तक कृषि 7 सन्तान, पशज 8 डलवा, धारद, रम् अग्र की

लकड़ी । सम०—बाहनी (दि० व०) बधिवनी-कुमारों का विशेषण ।

प्रबन्धः [प्रबन्धते नि शिष्यते हविरादिकमस्मिन्—प्र + बन्ध् + भृच्] 1 यकीय शक्ति 2 विष्णु का विशेषण ।

प्रबन्धः [प्र + बन्ध् + भृच्] सोमयाग से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान ।

प्रबन्धः [प्र + बन्ध् + भृच्] आरभ, उपक्रम, काम में लगाना ।

प्रबन्धक (वि०) (स्त्री०-तिका) [प्र + बन्ध् + णिच् + ल्यट्] 1 बाल करने वाला, स्थापित करने वाला 2 प्रवर्तिधील, उन्नता, आगे बढ़ाने वाला 3 रीदा करने वाला, जन्म देने वाला 4 प्रबोधक, प्रोत्साहक, उक्ताने वाला, भटकाने वाला (बुदे ल्यं में), —क-जन्मदाता, प्रवर्तक, प्रणेता 2 प्रबोधक, प्रोत्साहक 3 विवाचक, मध्यस्थ ।

प्रबन्धनम् [प्र + बन्ध् + ल्यट्] 1 चलते रहना, आगे बढ़ना 2 आरभ, शुक 3 कार्यारम्भ, नीव डालना, सस्थापन, प्रतिष्ठापन 4 प्रोत्साहन, बलपूर्वक चलाना, उद्दीपन 5 व्यस्त होना, काम में लगना 6 होना, घटित होना 7 क्लिप्ता, कार्यं 8 अवहार, आचरण, कार्यविधि, या कार्य में प्रेरित करना, प्रोत्साहन देना ।

प्रबन्धित (वि०) [प्र + बन्ध् + णिच् + भृच्] संचालन करने वाला, जो नीव डालता है, सस्थापित करता है और उसे चलाता रहता है या रकेलता है ।

प्रबन्धित (मू० क० कू०) [प्र + बन्ध् + (णिच्) + क्त] 1 मोठ दिया हुआ, चलाया हुआ, लड़काया हुआ, पक्कर खाने वाला रघु० ९।१६२ 2 नीव डाला हुआ 3 प्रेरित किया हुआ, उक्तमाया हुआ, भटकया हुआ 4 मुष्टमाया हुआ 5 जन्म दिया हुआ, निर्मित 6 पवित्र किया हुआ, छाना हुआ मनु० ११।१९६ ।

प्रबन्धित् (वि०) [प्र + बन्ध् + णिच् + णिन्] 1 प्रवर्तिधील, आगे बढ़न वाला 2 सक्रिय रहने वाला 3 जन्म देने वाला, प्रभावी 4 इस्तेमाल करने वाला ।

प्रबन्धनम् [प्र + बन्ध् + ल्यट्] बद्धि करना, बहाना ।

प्रबन्धः [प्र + बन्ध् + भृच्] भारी बद्धि, मूललाधार वर्षा ।

प्रबन्धनम् [प्र + बन्ध् + ल्यट्] 1 बरसना 2 पहली बद्धि ।

प्रबन्धनम् [प्र + बन्ध् + ल्यट्] विदेश जाना, विदेश यात्रा, यात्रा पर जाना ।

प्रबन्ध [प्र + बन्ध् + अच्] 1 बहाना, धार बनकर बहना 2 वायु 3 वायु के ताप मापों में से एक (जो पट्टी को घनिमान् करता है) ।

प्रबन्धनम् [प्र + बन्ध् + ल्यट्] 1 बन्द गाड़ी या पालकी (स्त्रियों के लिए) 2 गाड़ी, बाहून, मबारी 3 बहाज ।

प्रचक्षि-—ह्री [प्र+वृह+क्ष्, प्रचक्षि+क्षीप्] दे०
'भेदिका' ।

प्रचाव् (वि०) [प्रा० व०] चाव्, चवता—(कुम्भे)
वसानप्यनुलोभाय च प्रचाव्. कृतिना गिर.—सि०
२।२५ 2 बावुनी, बावाल—प्रा० ३।१६ ।

प्रचाचवम् [प्र+वच्+गिच्+स्युट्] चोचया, उद्योचया,
प्रचयन ।

प्रचावन् [प्र+वे+स्युट्] बुने हुए कपडों के
घोट लगाना या छोटाना या सम्भालना ।

प्रचाणि-—भौ (स्त्री०) [प्रचाय+क्षीप्, नि० लृट्चो वा]
जुलाहे की दरकी ।

प्रचाल (भू० क० कू०) [प्रच्यो वातो गरिमन्—प्रा० व०]
जुलान में पका हुआ—सम् 1 बायु का झोका, ताजा
हवा—प्रचातशयनस्या देवी—मात्स्य० ४ 2 तुफानी
हवा, बाबी—ननु प्रचातेऽपि विक्रया गिरय—स० ६,
3. हवादार स्थान, कु० १।१५६ ।

प्रचावः [प्र+वच्+घञ्] 1 सख् बा ध्यति का उच्चारण
2 अभिधान करना, उल्लेख करना, प्रकथन करना
3 प्रबन्धन, वातालाप 4 भाव, प्रतिवेदन, अफवाह,
किबादली—अनुराधप्रवादस्तु प्रचयो सार्वलौकिक
भा० १।१३, ब्याप्री मानुष खादतीति लोकप्रवासे
दुर्निवार—हि० १, रत्न० ४।५ 5 भाष्यायिका,
गन् 6 विवाद सबंधी भाषा 7 चुनौती के सख्,
पारस्परिक विरोध—इत्य प्रचाव युधि सप्रहार प्रचक्रु
रामनिवाहिकारी—महि० २।३६ ।

प्रचार, प्रचारकः [प्र+वृ+घञ्, प्रचार+कन्] चादर,
आच्छादन ।

प्रचारणम् [प्र+वृ+गिच्+स्युट्] 1 (हच्छा) पूर्ण करना
छाँट की प्रार्थनिकता 3 निवेश, विरोध 4 काम्यदान ।

प्रचालः (पु०) दे० 'प्रवाल' ।

प्रचालः [प्र+वल्+घञ्] 1 विदेशभ्रमन, विदेशयात्रा,
घर पर न रहना, परदेशनिवास रघु० १६।४४ ।
सम०—गत,—स्थ,—स्थित (वि०) विदेश की यात्रा
करना, घर पर न रहने वाला ।

प्रचालनम् [प्र+वल्+गिच्+स्युट्] 1 विदेश निवास,
अस्थायी रूप से बास करना 2 निर्वासन, देशनिकास,
बन्ध, हत्या ।

प्रचाक्षिन् (पु०) [प्र+वल्+गिन्] यात्री, बटोही,
परदेशी ।

प्रचाह [प्र+वह+घञ्] 1 बहाव, धार वन कर बहना
2 नदी, पेठा वा जलमार्ग, धारा—प्रचाहन्ते वाग
धियमग्मवात् विश्वु न—भा० २, रघु० ५।४५,
१३।१०, ४८, कु० १।५४, मेघ० ४६ 3 बहाव,
बहना हुआ पानी 4 अविच्छिन्न बहाव, अटूट भ्रमका,
नैऋत्यं 5 घटना कम (नदी की धार की भाँति

सङ्कलना) 6 क्रियता, सक्रिय व्यस्तता 7 तावाव,
बौल 8 बहिया बौला (प्रचाहे भूमितम्) नदी में
मृतना (घा०), व्यर्थ कार्य करना (बाल०) ।

प्रचाह्वकः [प्र+वह्+वृह्] भूत प्रेत, पिशाच ।

प्रचाह्वन् [प्र+वह्+गिच्+स्युट्] 1 हाक कर जागे
बहना 2 वस्तु कराना ।

प्रचाहिका [प्र+वह्+घञ्+टाप्, दत्वम्] दस्त लग
जाना ।

प्रचाही [प्रचाह+क्षीप्] देह, बाल ।

प्रचिक्वोर्ष (भू० क० कू०) [प्र+वि+क्व+वत्] 1 बसेरा
हुआ, इधर उधर छितराया हुआ 2 तितर बितर
किया हुआ, फैलाया हुआ ।

प्रचिक्व्यात् (भू० क० कू०) [प्र+वि०+क्व्या+क्व] 1,
नामी, मूलाया हुआ 2 प्रसिद्ध, मशहूर, विभूत ।

प्रचिक्व्याति [प्र+वि+क्व्या+क्वित्] मशहूरी, कीर्ति,
प्रसिद्धि ।

प्रचिक्व्य [प्र+वि+क्वि+क्वच्] परीक्षा, लोख, अनु-
संधान ।

प्रचिक्वार [प्रा० सं०] विवेचन, विवेक ।

प्रचिक्वितम् [प्र+क्वि+क्वित्+स्युट्] समझ ।

प्रचित्त (भू० क० कू०) [प्र+चि+त्त+क्व] 1
छिछाया हुआ, फैलाया हुआ 2 विक्षेप हुए, अस्तव्यस्त
(बाल) ।

प्रचित्ति [प्र+चि+त्त+घञ्] फट कर टुकड़े टुकड़े
होना, खुलना ।

प्रचित्तिरणम् [प्र+चि+त्त+गिच्+स्युट्] 1 फाटना,
विदीर्ण करना, तोड़ना, फट कर टुकड़े टुकड़े होना
2 कली लगाना 3 सपथें, युद्ध, लड़ाई 4 भीटभाड,
गडबडी, हल्ला-गुल्ला ।

प्रचिद्ध (भू० क० कू०) [प्र+ध्यच्+क्व] डाला, हुआ,
फेंका हुआ ।

प्रचिह्वत् (भू० क० कू०) [प्र+चि+ह्व+क्व] तितर-
बितर किया हुआ, भगयाया हुआ, बसेरा हुआ ।

प्रचिभत् (भू० क० कू०) [प्र+चि+भृ+क्व] 1
अन्न किया गया, बिचूक 2 हिलने किया गया,
विभाजन किया गया, बाँटा गया, विभक्त किया गया
—अश्लीषि वर्तपति च प्रचिभक्तरीम—श० ७।६ ।

प्रचिभाग [प्र+चि+भृ+घञ्] भाग, एकमीम,
वितरण, बर्गीकरण—रघु० १६।२ 2 हिस्सा, अंश ।

प्रचि (पु०) पीला पचन ।

प्रचिरल (वि०) [प्रा० सं०] 1 बहुत दूर दूर, विचूक,
अन्तर्गाथा 2 बहुत बोरे, स्वल्प, धीरा
—प्रचिरला इव मयवचूकया—रघु० १।३४ ।

प्रचिसय [प्र+चि+सो+अच्] 1 पिघलकर बह
जाना 2 धूरी तरह धुल जाना या अवशूक हो जाना ।

प्रविष्टुल (भू० क० कू०) [प्र + वि + लुप् + क्त] कटा हुआ, बिकला हुआ, हटाया हुआ ।

प्रविश्या [प्र + वि + श् + यञ्] झगड़ा कलह, तकरार ।

प्रविश्लत (वि०) [प्रा० श्ल] 1 विकसल जकेला 2 विमुक्त, अलग किया हुआ ।

प्रविश्लेषः [प्र + वि + श्लिप् + यञ्] वियोग, बूटाई ।

प्रविशम्भ (भू० क० कू०) [प्र + वि + श् + क्त] सिद्ध, उदास, हलोत्साह ।

प्रविष्ट (भू० क० कू०) [प्र + विष् + क्त] 1 अन्दर गया हुआ, घुसा हुआ—रक्षार्थेन प्रविष्ट शरपतनभया-दुभयता पूर्वकायम्—श० १।७ 2 गया हुआ, व्यस्त 3 आरम्भ ।

प्रविष्टकम् [प्रविष्ट + कन्] रण भूमि का द्वार ।

प्रविस्त (स्ता) रः [प्र + वि + स्तु + श् + क्त] विस्तार, वृत्ति ।

प्रबोध (वि०) [प्रकृष्टा ससाधिता वीणा येन प्रा० ब०] नवुर, कुशल, जानकार आमोदानथ हृदिदतुराणि मेतु नैवाभो जयति ममीरणाजकीण —माभि० १।१५, कु० ७।६८, 1

प्रबोर (अ०) [प्रा० स०] 1 अग्रणी, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ या मुख्य —रघु० १।४।२९ १६।१, भग० १।१।४८ 2 मजबूत, शक्तिशाली, शौर्यसम्पन्न,—र 1 बहादुर शक्ति, नायक, योद्धा 2 मुख्य, पूर्य व्यक्तित्व ।

प्रवृत्त (भू० क० कू०) [प्र + वृ + क्त] घुना हुआ, सकलित, छाटा हुआ ।

प्रवृत्त (भू० क० कू०) [प्र + वृत् + क्त] 1 आरम्भ किया गया, शुरु किया गया, प्रगत 2 स्थिर किया हुआ—अचिरप्रवृत्त श्रीमन्मयमधिकृत्य—श० १ 3 स्थान, सलन 4 जाने के लिए उद्यत, कटिबद्ध 5 स्थिर, निश्चित, निश्चित 6 निर्बाध, विवादाहित 7 गोल,—स्त गोल आभूषण ।

प्रवृत्तकम् [प्रवृत्त + कन्] रण भूमि में अन्दरग ।

प्रवृत्ति (स्त्री०) [प्र + वृत् + क्तित्] 1 निरन्तर प्रगमन, प्रगति, आगे बढ़ना 2 उदय, मूल, स्रोत, (शब्दों का) प्रवाह—प्रवृत्तिरामीकृष्टदाना चरितायां चतुष्टय्यी—कु० २।१७ 3 रवौं, प्रकटीकरण—कुसुमप्रवृत्ति-मयम्—श० ४।१७, रघु० १।१।६३, १।६।३९, १।५।४ 4 उदय, आरम्भ, शुरु—आकालिकी बौद्ध मधुप्रवृत्ति—कु० ३।३४ 5 प्रयोग, स्थान, श्रुतय, सन्तान, शक्ति, प्रवर्णना—श० १।२२ 6 आचरण, व्यवहार—रघु० १।५।३१ 7 काम में लगाना, व्यवसाय, किपाशीलता कु० ६।२६ 8 प्रयोग, नियोजन, (शब्द का) प्रचलन 9 अन्वयत प्रयत्न, धर्म 10 मार्गवेता, मार्गार्थ, (शब्द की) स्वीकृति 11 निरन्तरता, स्थायिता, प्राक्कल्प 12

सक्रिय सांसारिक जीवन, सांसारिक जीवन में सक्रिय भाग लेना (विष्० विवृति) 13. सन्वापार, खबर, गुप्त बातों—योमुलेन स्वकृष्णलमयी हारिषिष्यन् प्रवृत्तिम्—मेघ० ४, विष्णु० ४।२२ 14 नियम की प्रबोधनीयता या वैधता 15. भाष्य, नियति, किस्मत 16. सन्तान, वीचा प्रत्यक्षाना, समबोध 17 हाथी का यव (जो मलती की अकस्या में उसके परस्पर से निकलता है), 18 उज्ज्विनी नगरी का नामान्तर । सम० मः जासूत, मेदिना, वृत्, गुलचर,—विश्वित्त्तु किञ्चि शब्द का किसी विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होने का कारण,—धार्मः सक्रिय या सांसारिक जीवन, कार्य में अन्दरहित, सक्षर में सुख तथा आनन्द ।

प्रवृद्ध (भू० क० कू०) [प्र + वृष् + क्त] 1 पूरा बढ़ा हुआ 2 बड़ा हुआ, वृद्धि की प्राप्ति, विस्तारित, बढ़ा किया हुआ 3 पूरा, गहरा 4 बगड़ी, अहंकारी 5 प्रचण्ड 6 विशाल ।

प्रवृद्धि (स्त्री०) [प्र + वृष् + क्तित्] 1 बढ़ना, वृद्धि—रघु० १।१।७१, १।७।१२ 2 उन्नति, समृद्धि, पदोन्नति, तरक्की, उत्कर्ष ।

प्रवेक (वि०) [प्र + विष् + यञ्] उत्तम, मुख्य, छाट का, अग्रत श्रेष्ठ ।

प्रवेणः [प्र + विज् + यञ्] वीर्य शाल, वेग ।

प्रवेष्ट [प्र + वी + ट] जी, यव ।

प्रवेणि, —पी (स्त्री०) [प्र + वेणु + इत्, प्रवेणि + ङीप्] 1 बाला का जूहा—रघु० १।५।३० 2 बिलरू टट्ट या भृगुगारदीन बाल (पति की अनुपस्थिति में स्त्रियाँ प्राय ऐसे बाल धारण करती हैं) 3 हाथी की भूक 4 रवौं जन्म काट का टुकड़ा 5 (नदी का) प्रवाह या धार ।

प्रवेत्तु (पु०) [प्र + भृ + त् + क्त] अग्ने वी आदेश] सारथि, रथवान् ।

प्रवेत्तनम् [प्र + विद् + मिष् + श् + क्त] बतकाना, ऐतान करना, घोषणा करना ।

प्रवेष्ट, प्रवेष्टकः, प्रवेष्ट वृ, प्रवेष्टनम् [प्र + वेष् + यञ्], प्रवेष्ट + कन्, प्र + वेष् + अच्, प्र + वेष् + श् + क्त] कयकपी, डिडुरन, बरघराना, सिंहरन ।

प्रवेरित [प्रवेर + क्त] इधर उधर शला हुआ, फेंका हुआ ।

प्रवेस, [प्र + वेल् + अच्] एक प्रकार की मृग ।

प्रवेश (वि०) [प्र + विष् + क्त] 1 भीतर जाना, घुसना—नुर-प्रवेशानिमृशो बभूव—रघु० ७।१, कु० ३।४ 2 अन्वयन, पंड, पहुँच 3. रथभूमि में प्रवेश—तेन पात्रप्रवेशाचेत् सा० द० ६ 4 (घर का) बरघराना, घुसने का स्थान 5. आय, राक्षस 6. (किसी काम का) वीछा करना, प्रवेशन की तत्परता ।

विष्कम्ब [प्र+विष्+बन्] परिचायक, विम्बनामों (वीकर वाकर) द्वारा अविगीत विष्कम्बक (इसमें बोला को रंभय पर अस्तुतु बटना का आग्य होने वाली बातों की जानकारी के लिए ज्ञान कराना आवश्यक है); (विष्कम्बक की भाँति यह वाटक की कषा तथा कषायस्तु के अन्तार में वनों को जो या तो अंकों के अन्तराल में बटित हो चुके हैं या अन्त में होने वाले हैं, जोड़ देता है; यह पृ० के अंक के आरम्भ या अन्तिम अंक के अन्त में कभी प्रयुक्त नहीं होता) तादृशित्वपर्यन्तकार इसकी परिभाषा देते हैं—प्रवेशकोनु-दासीकस्या नीचपात्रप्रयोजित, अकृदातविजये शेष विष्कम्बके गया—१०८, दे० 'विष्कम्ब' ।

प्रविष्कम्ब [प्र+विष्+बन्] 1 शक्ति होना, गुणना, अन्तर जाना 2 परिचय देना, मंत्रुत्व करना, सफलन 3 बर का मुख्य द्वार, फाटक 4 मैथुन, स्त्री सयम ।

प्रवेशित (भू० क० क०) [प्र+विष्+णिष्+क्त] परिचित कराया हुआ, अन्तर पहुँचाया हुआ, अन्तर के बाधा गया, पचाया हुआ ।

प्रवेश्य [प्र+वेश्+ञ्] 1 भूजा 2 कलाई, पहुँचा 3 हाथी की पीठ का मोसल भाग (जहाँ महावत बैठता है) 4 हाथी के नखों 5 हाथी की मूत्र ।

प्रव्यक्त (भू० क० क०) [प्रकर्मण व्यक्त—प्री० सं०] स्पष्ट, साफ, प्रकट, आह्वित ।

प्रव्यक्ति (स्त्री०) [प्र+वि+ञ्+क्तिन्] प्रकटी भवन, दशौन ।

प्रव्याहारः [प्र+वि+आ+ह+वञ्] प्रवचन का फैलाव या विस्तार ।

प्रव्रजनम् [प्र+व्रज्+त्यट्] 1 विदेश जाना, अस्थायी रूप से रहना 2 निर्वासित होना 3 वापसव्रत हो जाना ।

प्रव्रजित (भू० क० क०) [प्र+व्रज्+क्त] 1 विदेश गया हुआ या निर्वासित 2 सन्ध्याती या परित्राचक बना हुआ,—क्तः 1 साधु, सन्ध्याती 3 पीथे आश्रम में स्थित शास्त्र, भिक्षु 3 जैन या बौद्ध भिक्षु का स्थिय,—त्म् सन्ध्याती बन जाना, साधु का जीवन ।

प्रव्रज्या [प्र+व्रज्+कम्+टाप्] 1 विदेश जाना, देशान्तरगमन 2 पर्यटन, (साधु के रूप में इतस्तत) प्रणय 3 सन्ध्या आश्रम, सन्ध्याती का जीवन, शास्त्र की पीथनचर्चा में पीथा आश्रम (भिक्षु जीवन)—मन्त्रज्या कल्पयथा इषाधिता कु० ६१६ (यहाँ मल्लि० के अनुसार 'प्रव्रज्या' का तात्पर्य मानप्रस्थ या तृतीय आश्रम है) । सम०—अव्यक्तिः बहु पुरुष क्लित्त सत्यास प्रवृत्त करके उन आश्रम की छोड़ दिया हो ।

प्रव्रज्यन् [प्र+व्रज्+त्यट्] लकड़ी काटने का उपकरण ।

प्रव्रज्यम् (पुं०), प्रव्रज्याकः [प्र+व्रज्+विन्, वृत्त् वा] साधु, सन्ध्याती ।

प्रव्रज्यन्त्यम् [प्र+व्रज्+विष्+त्यट्] निर्वासित, देश-निकासी, निर्वासित करना ।

प्रव्रज्यन्त्यम् [प्र+व्रज्+त्यट्] प्रव्रज्या करना, स्तुति करना ।

प्रव्रज्या [प्र+व्रज्+अह्+टाप्] प्रव्रज्या, स्तुति, प्रशंसित, गुणगान करना—प्रव्रज्याचनम्, प्रव्रज्यात्मक या सम्मान-सूचक वाली 2 वर्षान्, उल्लेख—जैसा कि 'अप्रस्तुत-प्रव्रज्या' में 3 कीर्ति स्वाति, प्रसिद्धि । सम०—उपमा दण्डिद्वारा वणित उपमा के अनेक भेदों में से एक—ब्रह्मगोप्युद्भूत पद्यरचन शम्भुशिरोयुत, ती मुत्स्यी स्वम्भुवेति सा प्रव्रज्योपमाञ्चते काव्या० २१३१,—मुञ्चर (वि०) ऊँचे स्वर से प्रव्रज्या करने वाला ।

प्रव्रज्यति (भू० क० क०) [प्र+व्रज्+क्त] प्रव्रज्या किया गया, स्तुति किया गया, गुणगान किया गया, शारीक किया गया ।

प्रव्रज्यन् (पुं०) [प्र+व्रज्+ञ्+विन्, तुट्] मन्त्र, सागर ।

प्रव्रज्यन् [प्रव्रज्यन्+डीप्, र आदेश] नदी ।

प्रव्रज्यन् [प्र+व्रज्+ञ्] 1 शमन, शान्ति, स्वस्व-चितता—प्रव्रज्यन्त्युपेयपिबन् —रघु० ८।१५, कि० २।३२ 2 शान्ति, विश्राम 3 बुझाना, उपशमन—कु० २।२० 4 विराम, अन्त, विनाश—शि० २०।७३ 5 सान्त्वना, तुष्टीकरण—शि० १६।११ ।

प्रव्रज्यन् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र+विष्+त्यट्] शान्त करने वाला, शान्तिस्थापित करने वाला पीरज बधाने वाला, दूर करने वाला (रोग आदि को)—नन् शान्त करना, शान्ति स्थापित करना, पीरज बधाना 2 दमन करना, घेँबेबधाना, दिलासा देना, हलका करना—आपरातिप्रशमनफला सपयो हृद्यमानाम्—मेघ० ५३ 3 चिकित्सा करना, स्वस्थ करना—जैसा कि 'प्याथिप्रशमनम्' में 4 (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना, दमन करना, मिटा देना 5 विराम, शान्ति 6 उपयुक्त रूप से प्रदान करना, सत्पान की प्रदान करना—मन्० ७।५६, (सत्पाने प्रति-पादनम्—कुल्लु०, परन्तु अन्य विद्वान् इसका अर्थ अथवा अर्थ समझते हैं) 7 प्राप्य करना, रक्षा करना, सुरक्षित रखना—लम्बप्रशमनस्वस्थमर्षेन समुपस्थिता रघु० ४।१४ 8 बध, हत्या ।

प्रव्रज्यति (भू० क० क०) [प्र+व्रज्+विष्+क्त] 1 सान्त्वना दी गई, पीरज बधाना गया, स्वस्थपित, तुष्टीकृत, शान्त किया गया 2 (आग) बुझाई गई, (प्यास) शान्त की गई 3 प्राप्यचित्त किया गया, परिशोधन किया गया—उत्तर० १।४० ।

प्रव्रज्यति (भू० क० क०) [प्र+व्रज्+क्त] 1 प्रव्रज्या किया गया, शारीक किया गया, दलावा की गई,

स्तुति की गई 2 प्रघटनीय, तारीक के योग्य 3 सर्वांशय, श्रेष्ठ 4. सीमाग्यशाही, प्रसन्न, आनन्दित, सुख । सम०—अग्निः एक पहाड़ का नाम ।
प्रशस्तिः (स्त्री०) [प्र+शस्+क्तिन्] 1. प्रशंसा, स्तुति, तारीक 2. बगल उत्तर० ७३ किसी की (उदा० सरक्षक) प्रशंसा में लिखी गई कविता 4 श्रेष्ठता, महत्त्व 5 क्षम कामना 6 निर्दोष, विश्राम, निर्दोष-नियम जैसा कि 'लेखप्रशस्ति' (लिखने का एक प्रकार) में ।
प्रशस्य (वि०) (म० अ०—येषु या ज्येषु, उ० ब०—श्रेष्ठ या श्रेष्ठे) [प्र+शस्+क्यप्] प्रशंसा के योग्य, तारीक के लायक, श्रेष्ठ ।
प्रशासक (वि०) [प्रशस्ता शासा यस्य—शा० ब०] 1. जिसकी जनक शासनाएँ इधर उधर फैली हों 2 गर्भपिण्ड की बाँधबीँ अवस्था कहते हैं कि इस समय गर्भस्थित बालक के हाथ पैर बन जाते हैं),—आ छोटी शाखा या टहनी ।
प्रशासिका प्रशाका+कन्+टाप्, इत्त्वम् [छोटी शाखा, टहनी ।
प्रशान्त (पू० क० कृ०) [प्र+शम्+णिच्+क्त] 1 शांत, शान्तिप्राप्त, स्वस्थचित 2 निश्चल, सीम्य, निस्तम्ब, बीर, निश्चेष्ट—अग्नी प्रशान्तरमणीयतो-दानस्य 3 पालक, बगोइत, दयावा हुआ 5 समान्य, विरत, निवृत्त—तत्सर्वमेकपद एव मम प्रशान्तम्—भा० १२३६, प्रशान्तमस्त्रम्—उत्तर० ६ 'कार्य करने से रुका हुआ या निवृत्त' 5 मृत, मरा हुआ (दे० प्रपूर्वक-लम्) । सम०—आत्मन् (वि०) स्वस्थपना, शान्ति-पूर्ण, अचंचल,—अर्द्ध (वि०) क्षीयशक्ति, निस्तेज, विपण्य,—काल (वि०) सन्तुष्ट,—श्रेष्ठ (वि०) विराम करने वाला, विधांत, विरत,—बाध (वि०) जिसकी समस्त बाधाएँ व सकट दूर हो गये हैं—वि० ११८ ।
प्रशान्तिः (स्त्री०) [प्रा० सं०] 1. वैयं, शान्ति, मनकी स्थिरता, निश्चयता, विश्राम 2. विराम, विराम, ठहराव 3 निराकरण करना, (प्यास) बुझाना, (बाग) बुझाना ।
प्रशान्तः [प्र+शम्+णञ्] 1 शान्ति, वैयं, मनकी स्वस्थता 2. (प्यास) बुझाना, (बाग) बुझाना, निराकरण करना 3 विश्राम ।
प्रशासनम् [प्र+शास्+स्युट्] 1. शासन करना, हुकूमत करना 2 आदेश देना, बल पूर्वक बसूल करना 3. राज्य शासन ।
प्रशास्य (पुं०) [प्र+शास्+ण्यच्] राजा, शासक, राज्यपाल ।
प्रशिक्षक (वि०) [प्रा० सं०] बहुत दीक्षा ।

प्रशिक्ष्यः [प्रा० सं०] शिक्ष्य का शिक्ष्य, पशुशिक्ष्य—शिक्ष्य प्रशिक्ष्येष्वपीथयाममेतिह्नि लभ्यतमिषयान्—सकर० ।
प्रशुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० सं०] स्वच्छता, पवित्रता ।
प्रशोचः [प्र+शुच्+णञ्] सुखना, सुख जाला, सुखापन ।
प्रशोचोत्सवम् [प्र+शुच्+स्युट्] छिद्रकना, धारण—उत्तर० ३१११ ।
प्रशयः [प्रशय+तञ्] 1 लयान, सुखासक्त, परिपुष्क, परिप्रेमन (अधिक्रांतप्रबन्धन प्रसन्न इत्यभिधीयते) अना-म्यप्रसन्न पूर्वकम्—भा० ५, कुलच्छेद्य के प्रसन्न के शायं 2 अवांलती शीघ्र पशुताक या गवेषया 3 विश्वासपत्र, विश्वादास्यत्र विश्व, विश्वादास्यत् इतिशेष —इति प्रसन्न उपस्थितः 4. समसा, हिंसात्र का प्रसन्न—बहु ते प्रसन्न शस्यामि—बृह० ५ 3 शक्ति छत्रयो पूछताक 6 किसी शत्रु का अनुग्राम या परि-च्छेद । सम०—अपिष्यन् (मपुं०) एक उपनिषद् का नाम (इत्थं छ. प्रसन्न तथा उगते छ. उत्तर है) —बृहिः-पृती (स्त्री०) पृती, पृतीभव ।
प्रशयः [प्र+शय्+ण्यच्] शिथिलता, दीक्षापन, शिथिली-करण ।
प्रशयः [प्र+शयि+ण्यच्, स्युट् वा] 1. आदर, शिष्टता, सुजनता, चित्तश्रदा, सम्मानपूर्वक अवस्था शिष्टतायुक्त व्यवहार, शिष्य—समावर्तः प्रशयवक्र-मूर्तिभि—सि० १२३३, रघु० १०१००, ८३, उत्तर० ६१२३, अश्वत्थम् आदरपूर्वकं, संविनय 2 प्रेम, स्नेह, आदर—पच० २१२ ।
प्रशयः (पू० क० कृ०) [प्र+शयि+ण्यच्] सुजन, मत्र, शिष्ट, विनीत, शिष्टाचरणयुक्त ।
प्रशयः (वि०) [प्रा० सं०] 1. बहुत दीक्षा वा पितृशिक्षा 2 उत्साह-हीन, निस्तेज ।
प्रशयः (पू० क० कृ०) [प्र+शयि+ण्यच्] 1. नरोइया विवा हुआ, ऐंठा विवा हुआ 2. तर्कसमत्, मुक्तियुक्त ।
प्रशयः [प्र+शयि+ण्यच्] बना लयकं, सार्थी ।
प्रशयः [प्र+शया+णञ्] शीत, स्वसन, दयाल-प्रशयशिक्षा ।
प्रशयः (वि०) [प्र+शया+क] 1. सामने लका हुआ—रघु० १५१२-2. मुग्ध, प्रमान, लक्ष्मी, उत्तम, नेता—गुलस्तच्छ्रेष्ठ. महावी० ११३०, ६३०, शि० १९३० । सम०—बाहू (पुं०) हल जोतने के लिए सहाया जाता हुआ अनाज बेल ।
प्रशयः (स्वा०) विवा—भा० प्रत्ये, प्रत्येते 1. शत्रु को जन्म देना 2. फैलाना, प्रसार करना, विस्तार करना, बढ़ाना ।
प्रशयः (पू० क० कृ०) [प्र+शयि+ण्यच्] 1. कर्म, युक्त 2. अत्यन्त आसक्त या स्नेहशील—पच० १११३

3. अनुपामी, अनुपचय 4. विवर, तुला हुआ, भक्त, व्यस्त, व्यस्तवस्त, प्रमुत्त—वि० १६३, इवी प्रकार वृत्त, मित्रां भादि 5. सदा हुआ, निकटत्व 6. अवि-
च्छन्न, निरन्तर, अनवरत—कि० ४१८, रघु०
१३४०, मा० ४१६, मासिक० ३११ 7 हासिक, प्राय,
लज्ज,—कर्म (अर्थ०) निरन्तर, लगातार—कि०
१६१५।

प्रसन्नितः (स्त्री०) [प्र + सञ् + क्तित्] 1 आसक्ति,
भक्ति, व्यसन, संकल्पता, अनुरक्ति 2 संबंध, सयोग,
साहाय्य 3 प्रयोजनीयता, सबब, प्रयोग वैसा कि
'अति प्रसन्नित' (अतिव्याप्ति) में 4 ऊर्जा, शैष—
संतापे विद्यन्तु शिव दिवां प्रसन्नितम्—कि० ५१५
5. उपसंहार, घटना 6 विषय, प्रवचन का विषय
7. समाचना का बतल होना।

प्रसन्निका [प्रा० सं०] 1 कुल योग, राशि 2 विचार विमर्श।
प्रसन्निकान् [प्र + सन् + क्त्वा + ल्युट्] 1. निम्ना 2
विचारण, समन, रहन चिन्तन, माय चिन्तन—भूता-
क्षरोपीतिरिचि लभेऽस्मिन् ह्र प्रसन्नानपटी बन्व
—कु० ४१३० 3 कीर्ति, प्रसिद्धि, विभूति,—कः
अशायी, मृगता।

प्रसन्नः [प्र + सञ् + क्तम्] 1 आसक्ति, भक्ति, व्यसन,
संकल्पता—स्वप्नयोगे सुतत्प्रसन्ने—कु० ११९,
सत्याधातुकोमलस्य सतत वृत्त प्रसनेन किम्—मूञ्च०
३१११, वि० ११२२ 2 मेल-जील, अल सपके,
साहाय्य, सबब—निवर्ततामस्माद् गणिका प्रसगात्
—मूञ्च० ४ 3 अर्थे मेलन 4 व्यस्तता, एकाग्रता,
कायपरता—भूमिकिधिया विरतप्रसवे—कु० ३४७
5 विषय, शीर्षक (प्रवचन या विचार का) 6 अवसर,
घटना—दिग्विजयप्रसनेन—का० १११, यात्राप्रसनेन
—मा० १ 7 सयोग, समय, अवसर—मनु० ९५
8 शैषयोग, घटना, काण्ड, समाचना का होना—नेश्वरी
जगत. कारणमुपपद्यते कुत शैषमनेर्षुष्य प्रसगात्
—शारी०, एक आनवस्था प्रसा तवेव, कु० ७१९
9 सबद्ध तर्कना, या युक्ति 10 उपसंहार, अनुमान
11. सबद्ध भावा 12 अविषय्य प्रयोग या सबब
(व्याप्ति) 13 यात्रा चिन्ता का उत्प्रेक्ष (प्रसंगेन,
प्रसंगतः, अर्थेभात्—यह किन्ना विद्येयन के रूप में
प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं—1 के
संबंध में 2 के फल स्वरूप के कारण, कर्मीक, के
रूप में 3 अवसरानुसार 4 के रूप में (यथा—कथा-
प्रसङ्गेन आतमीत के सिलसिले में)। सम०—विचारणम्
भविष्य में इस प्रकार की स्थिति का रोचना,—वशात्
(अर्थ०) समय के अनुसार, परिस्थितिबद्ध,—विनिर्भूति
(स्त्री०) इस प्रकार की संकटस्थिति की पुनरावृत्ति
का न होना।

प्रसन्नकान् [प्र + सञ् + ल्युट्] 1 जोड़ने की क्रिया,
मिलाना, एकत्र करना 2 व्यवहार में जाना, सबल
बनाना, उपयोग में लाना।

प्रसन्नितः (स्त्री०) [प्र + सन् + क्तित्] 1 अनुग्रह, कृपा-
लुता, विधाचार 2 स्वच्छता, परिश्रिता, विधातरा।
प्रसन्निकान् [प्र + सन् + क्त्वा + ल्युट्] मिलान, मेल।

प्रसन्न (पुं० क० ङ०) [प्र + सञ् + क्त] 1 परिश्र,
स्वच्छ, उज्ज्वल, निर्मल, विमल, पारदर्शी—कु० १।
२३, ७७४, सं० ५१२० 2 लुप्त, आतन्त्रित, प्रमुत्त,
शान्त—गंगा शरप्रयति तिम्रुपति प्रसन्नान्—मृडा०
३१९, गम्भीराया पयति सरितापेतेतसौष प्रसन्ने—वैष०
४० (यहाँ प्रथम अर्थ भी अभिप्रेत है), कु० ५१९५,
रघु० २१८८ 3 हयाल, अनुग्रहशील, कृपालु, महाप्रद
—अवेहि मा कामदुर्वा प्रसन्नान्—रघु० २१६३ 4 सरल,
सीधा, स्पष्ट, सुवीच्य (अर्थ) 5 सत्य, सही—प्रसन्नस्ते
तर्क—विष्णु० २, प्रसन्नप्रयस्ते तर्क—मा० १,
—व्या 1 प्रसादन, अनुरचन 2 शीघ्री हुई शरिरा।
सम०—आशान् (वि०) कृपालुमना, महाप्रद,—हैरा
शीघ्री हुई शरिरा,—कर्म (वि०) 1 शान्त प्राय
2 सत्यप्राय,—कर्म—कर्म (वि०) कृपालुवृत्ति वाला,
प्रसन्न नेहुरे वाला, मुक्तपराता हुआ,—सत्सल (वि०)
स्वच्छ पानी वाला।

प्रसन्नः [प्रयाता सना समानाधिकारो यस्मात्—प्रा० सं०]
बल, हिता, प्रवृत्ता—प्रसन्नोदरति—रघु० २३०,
—अम् (अर्थ०) 1 बलपूर्वक, जबरदस्ती,—इन्द्रियाणि-
प्रयापीति हरति प्रसन्न मन—अम० २१०, मनु० ८।
३३२ 2 बहुत अधिक, अत्यंत—तत्रास्मि गीतरागेण
हारिणा प्रसन्न हृत—सं० १५, मनु० ६१२५
3 मातृहृत्पूर्वक—मय० ११४१। सम०—कर्मणम्
बलपूर्वक दधाना—सं० ७३३,—हरणम् बलपूर्वक
अपहरण।

प्रसन्नोपपन्नः प्रसन्नोका [प्र + सन् + ईस् + ल्युट्, प्रसन्
+ ईस् + अद् + टाप्] विचारण, विचारविमर्श,
निर्धारण।

प्रसन्नान् [प्र + सि + ल्युट्] 1. बचन, मनना 2 जाल।
प्रसर [प्र + सृ + अर्] 1. आगे जाना, प्रयान करना
—सं० १२९२ 2 मुक्त या निर्बंध गति, मुक्त श्रेण,
पहूँच, गति—रघु० ८१३, १६१२०, मृडा० ३१५, हिं०
११८६ 3 फैलाव, प्रसार, विस्तार, विस्तार, फैलना
—सं० ९७१ 4 विस्तार, आवाह, बढी भावा
सि० ३१२५ 5 प्रवलन, प्रभाव—सि० ३११०,
6 सरिता, प्रवाह, धारा, बाह—पपात स्वेदानुप्रसर
इव हृत्पथुनिकर—गीत० ११ 7 समूह, 8 समुपबंध
युद्ध, लड़ाई 9 लोहे का बाल 10 चाल 11 विनम्र
याचना।

प्रसरणम् [प्र + सु + स्तृट्] 1. आगे जाना, हीरना, बहना
2 बच निकलना, भाग जाना 3. दूर तक फैलाना
4. धनु की बरना 5. हीरान्य ।

प्रसरणिः—नी [प्र + सु + शनि, प्रसरणि + ङीप्] मनु
की बर लेना ।

प्रसर्पणम् [प्र + सर्प + स्तृट्] 1. चलना, सरकना, आगे
बहना २ व्याप करना, सब दिशाओं में फैलना ।

प्रस (स) कः [प्र + सल् + क्त्वं, परो युधो० शस्य व]
हैमंत ऋतु ।

प्रसवः [प्र + सु + भृप्] 1. जन्म देना, जनन, प्रसूति,
जन्म, उत्पादन 2. बच्चे का जन्म, गर्भ मोचन, प्रसूति
—यथा 'आसन्नप्रसवा' में 3 सन्तान, प्रजा, छोटे बच्चे,
बालक—केवल वीरप्रसवा भूयाः—उत्तर० १, कु०
७।८७ 4. बोट, मूल, जन्मस्थान (आल० से भी)
कि० २।४२ 5. फूल, मखरी—प्रसवविभूतिन् मूष्ण
विरक्त—वि० ७।४२, नीला लोमप्रसवचरजा पाण्डुता-
मानने श्री-मेघ०, कुदप्रसवशिथिल जीवितम्—११३,
२५० १।२८, कु० १।१५, ४।४, १४, ८।५, ९, मा०
१।२७, ३१, उत्तर० २।२० 6 फल, उत्पादन ।
सम०—उन्मुक्त गर्भ से मुक्त होने वाला, उत्पन्न होने
वाला- पति प्रतीत प्रसवोन्मुखी प्रिया ददर्श—२५०
३।१२,—मुहूर्त् प्रसूतिकागृह, जन्माघर,—शक्तिम् (वि०)
उपजाऊ, उबेर, कृष्णम् कूल या पते की बँडल,
मुत्त—बैठना,—यथा प्रसव काल की पीडा, बच्चा
जनने का कष्ट,—स्वकी माता,—स्वामिन् 1 प्रसूतिका-
गृह, 2 जाल ।

प्रसवकः [प्रसवेन पुष्पादिना कापति शोभते—प्रसव + कं
+ क] पियाल बूझ, बिटौजी का पेर ।

प्रसवणम् [प्र + सु + स्तृट्] 1 पैदा करना 2 बच्चे को
जन्म देना, उत्पादन ।

प्रसवन्तिः (स्त्री०) [प्र + सु + शिच्, वन्तादिष्] जच्चा स्त्री ।

प्रसवन्ती [प्र + सु + शतृ + ङीप्] जच्चा स्त्री—न परस्वत्
प्रसवन्ती व सेजकामो द्विजोत्तम—मन्० ४।४४ ।

प्रसवितु (पु०) [प्र + सु + तु] पिता, प्रजनक ।

प्रसवित्री [प्रसवितु + ङीप्] माता ।

प्रसव्य (वि०) [प्रगत सव्यात्—प्रा० स०] प्रतिकूल,
व्यर्कत, बायाँ, उलटा ।

प्रसह (वि०) [प्र + सह् + भृप्] सहनशील, सहिष्णु, सहन
करने वाला,—हूः 1 शिकारी जानवर या पक्षी
2 मुकाबला, सहन क्षमता, विरोध ।

प्रसहन् [प्र + सह् + लृट्] शिकारी जानवर या पक्षी,
म् 1 सामना करना, मुकाबला करना 2 सहन
करना, बर्दाश्त करना 3 पराजित करना, बिजय प्राप्त
करना 4. आलिप्त, परिस्मय ।

प्रसह्य (सव्य०) [प्र + सह् + (कत्वा) स्यप्] 1 बल पूर्वक,
प्रचण्डता के साथ, बुराहली—प्रसह्य मणिमुद्गेत्यकर-
वत्सुर्बुद्धुः—मन्० २।४, वि० १।२७,
2 आत्यधिक, अत्यंत ।

प्रसह्यता [प्रयतां शक्ति (ताश०)—शो + शित् + यच्वा ।
—प्रा० ब०, कर् + टाप्] एक प्रकार का बावल
(छोटे घागे बाका) ।

प्रसाहः [प्र + सद् + भृच्] 1 अनुग्रह, कृपा, शक्तिम्,
कल्याणकारिता—कुड वृष्टिप्रसाद 'कृपा दर्शन दीक्षिष्',
इत्याप्रसादावस्थास्य परिचयीभो भव—२५० १।१९,
२।२२ 2. अच्छा स्वभाव, स्वभाव में कड़वाशीलता
3. शीरता, शान्ति, मन की स्वस्थता, सोम्यता, पानीय,
उत्तेजना का अभाव—मन्० २।६४ 4. स्वच्छता,
निर्मलता, उज्ज्वलता, पारदर्शिता, (पानी या मन
काहि की) पवित्रता—यज्ञा रोष पतनकृष्णा मुहूर्त्तव
प्रसादम्—विक्रम० १।८, घ० ७।३२, प्रातःपुष्टि-
प्रसादा—वि० ११।६, रघु० १।७१, कि० १।२४,
5. प्रसादगुणयुक्तता, शैली की विद्यता, मम्मट के
अनुसार, तीन गुणों में एक—प्रसाद गुण, परिभाषा-
शुक्लेश्वरान्वितम् स्वच्छप्रलत्सहस्रं व, श्याजी-
रप्यन्वयसादोर्षी सर्वं विहितविति—काव्य० ८,
पाददर्थकपदलक्ष्यपर्यवस्यं प्रसाद, या मुत्तमाया
वाक्यार्थ कालान्तरपरिचि निवेदयन्ती घटना प्रसादस्य
—स०, दे० काव्या० १।४५, सा० ६० ६११ भी

6. भगवान् की मुक्ति को भोग लाना हुआ नैवेद्य का
अवशिष्ट 7 बड़ाया, पुरस्कार 8. शान्तिकार भेंट
9. कुशल, लेन । सम०—उन्मुक्त (वि०) अनुग्रह
करने के लिए तत्पर—पराङ्मुख (वि०) 1. अनुग्रह
की वापिस खींचने वाला 2. जो किसी के अनुग्रह की
अपेक्षा न करे,—वाग्रभू अनुग्रह का पात्र,—स्व (वि०)
1. कुशल, मंगलप्रद 2. शान्त, तुष्ट, आनन्दित ।

प्रसाहक (वि०) (स्त्री०—विषया) [प्र + सद् + शिच् + ष्वल्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, स्टाईक
सपुत्रा विषद करने वाला 2 तसलीनी देने वाला, डाइस
बचाने वाला 3 आनन्दित करने वाला, सुख करने
वाला 4. अनुग्रह करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।

प्रसाहन् (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सद् + शिच् + स्तृट्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, विषय का
विभूट करने वाला—कतं कतकृष्णस्य यथायम्प्रसादनम्
—मन्० ६।६७ 2 साँवना देने वाला, डाइस बचाने
वाला 3. सुख करने वाला, आनन्दित करने वाला,
—मः राजकीय तनु—मन् १ निर्मल करना, पवित्र
करना 2 साँवना देना, डाइस बचाना, शान्त करना,
मन स्वस्थ करना, 3 प्रसन्न करना, तुष्ट करना
4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, मा 1. सेवा, मुखा
2. निर्मली करण ।

प्रसाह्य (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सद् + शिच् + स्तृट्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, स्टाईक
सपुत्रा विषद करने वाला 2 तसलीनी देने वाला, डाइस
बचाने वाला 3 आनन्दित करने वाला, सुख करने
वाला 4. अनुग्रह करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।

प्रसाह्यन् (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सद् + शिच् + स्तृट्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, विषय का
विभूट करने वाला—कतं कतकृष्णस्य यथायम्प्रसादनम्
—मन्० ६।६७ 2 साँवना देने वाला, डाइस बचाने
वाला 3. सुख करने वाला, आनन्दित करने वाला,
—मः राजकीय तनु—मन् १ निर्मल करना, पवित्र
करना 2 साँवना देना, डाइस बचाना, शान्त करना,
मन स्वस्थ करना, 3 प्रसन्न करना, तुष्ट करना
4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, मा 1. सेवा, मुखा
2. निर्मली करण ।

प्रसाह्यन् (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सद् + शिच् + स्तृट्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, विषय का
विभूट करने वाला—कतं कतकृष्णस्य यथायम्प्रसादनम्
—मन्० ६।६७ 2 साँवना देने वाला, डाइस बचाने
वाला 3. सुख करने वाला, आनन्दित करने वाला,
—मः राजकीय तनु—मन् १ निर्मल करना, पवित्र
करना 2 साँवना देना, डाइस बचाना, शान्त करना,
मन स्वस्थ करना, 3 प्रसन्न करना, तुष्ट करना
4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, मा 1. सेवा, मुखा
2. निर्मली करण ।

प्रसाह्यन् (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सद् + शिच् + स्तृट्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, विषय का
विभूट करने वाला—कतं कतकृष्णस्य यथायम्प्रसादनम्
—मन्० ६।६७ 2 साँवना देने वाला, डाइस बचाने
वाला 3. सुख करने वाला, आनन्दित करने वाला,
—मः राजकीय तनु—मन् १ निर्मल करना, पवित्र
करना 2 साँवना देना, डाइस बचाना, शान्त करना,
मन स्वस्थ करना, 3 प्रसन्न करना, तुष्ट करना
4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, मा 1. सेवा, मुखा
2. निर्मली करण ।

प्रसाह्यन् (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सद् + शिच् + स्तृट्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, विषय का
विभूट करने वाला—कतं कतकृष्णस्य यथायम्प्रसादनम्
—मन्० ६।६७ 2 साँवना देने वाला, डाइस बचाने
वाला 3. सुख करने वाला, आनन्दित करने वाला,
—मः राजकीय तनु—मन् १ निर्मल करना, पवित्र
करना 2 साँवना देना, डाइस बचाना, शान्त करना,
मन स्वस्थ करना, 3 प्रसन्न करना, तुष्ट करना
4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, मा 1. सेवा, मुखा
2. निर्मली करण ।

प्रसाह्यन् (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सद् + शिच् + स्तृट्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, विषय का
विभूट करने वाला—कतं कतकृष्णस्य यथायम्प्रसादनम्
—मन्० ६।६७ 2 साँवना देने वाला, डाइस बचाने
वाला 3. सुख करने वाला, आनन्दित करने वाला,
—मः राजकीय तनु—मन् १ निर्मल करना, पवित्र
करना 2 साँवना देना, डाइस बचाना, शान्त करना,
मन स्वस्थ करना, 3 प्रसन्न करना, तुष्ट करना
4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, मा 1. सेवा, मुखा
2. निर्मली करण ।

प्रसाह्यन् (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सद् + शिच् + स्तृट्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, विषय का
विभूट करने वाला—कतं कतकृष्णस्य यथायम्प्रसादनम्
—मन्० ६।६७ 2 साँवना देने वाला, डाइस बचाने
वाला 3. सुख करने वाला, आनन्दित करने वाला,
—मः राजकीय तनु—मन् १ निर्मल करना, पवित्र
करना 2 साँवना देना, डाइस बचाना, शान्त करना,
मन स्वस्थ करना, 3 प्रसन्न करना, तुष्ट करना
4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, मा 1. सेवा, मुखा
2. निर्मली करण ।

प्रसाह्यन् (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सद् + शिच् + स्तृट्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, विषय का
विभूट करने वाला—कतं कतकृष्णस्य यथायम्प्रसादनम्
—मन्० ६।६७ 2 साँवना देने वाला, डाइस बचाने
वाला 3. सुख करने वाला, आनन्दित करने वाला,
—मः राजकीय तनु—मन् १ निर्मल करना, पवित्र
करना 2 साँवना देना, डाइस बचाना, शान्त करना,
मन स्वस्थ करना, 3 प्रसन्न करना, तुष्ट करना
4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, मा 1. सेवा, मुखा
2. निर्मली करण ।

प्रसाह्यन् (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सद् + शिच् + स्तृट्]
1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, विषय का
विभूट करने वाला—कतं कतकृष्णस्य यथायम्प्रसादनम्
—मन्० ६।६७ 2 साँवना देने वाला, डाइस बचाने
वाला 3. सुख करने वाला, आनन्दित करने वाला,
—मः राजकीय तनु—मन् १ निर्मल करना, पवित्र
करना 2 साँवना देना, डाइस बचाना, शान्त करना,
मन स्वस्थ करना, 3 प्रसन्न करना, तुष्ट करना
4. कल्याण करना, अनुग्रह करना, मा 1. सेवा, मुखा
2. निर्मली करण ।

प्रसाधित (भू० क० कृ०) [प्र+सद्+धिच्+क्त] 1

1. पवित्र किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2 खुल किया हुआ, प्रसन्न किया हुआ 3 पूजा किया हुआ 4. धीरे-धीरे बताया हुआ, सात्वता दिया हुआ ।

प्रसाधक (वि०) (स्त्री०—धिक्का) [प्र+साप्+ध्वल्] 1

1. निष्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला 2 पवित्र करने वाला, छानने वाला 3 सजाने वाला, अलङ्कृत करने वाला, -कः पादबंधर, अपने स्वामी की बरफ पहनाने वाला सेवक ।

प्रसाधनम् [प्र+साप्+स्युट्] 1 निष्पन्न करना, कार्वा-

- न्वित करना, करवाया 2 व्यवस्थित करना, क्रमबद्ध करना 3 सजाना, अलङ्कृत करना, विभूषित करना, शारीरसज्जा, वेद्यमूषा—कु० ४।१८ 4 सजावट, वासुधन, सजाने या विभूषित करने का साधन—कु० ७।१३, ३०, -कः, नमः, नी, कपी । सम०—धिक्कः सजावट, भूगार, -विशेषः सबसे ऊँचा भूगार—प्रसाधन विशेषे प्रसाधन विशेषे—विष्णु० २।३ ।

प्रसाधिका [प्रसाधक+टाप्+इत्वम्] सेविका, वह दासी

- की अपनी स्वामिनी के भूगार की देख-रेख करे—प्रसाधिकालम्बितमण्डपादासिध्—रघु० ७।७ ।

प्रसाधित (भू० क० कृ०) [प्र+साप्+क्त] 1 निष्पन्न,

- पूरा किया हुआ, पूर्ण किया हुआ 2 विभूषित, सुसज्जित ।

प्रसारः [प्र+सृ+घञ्] 1 फैलाना, विस्तार करना

- 2 फैलाव, प्रसृति, विस्तार, प्रसारण 3. विज्ञापन 4. साधान्वेषण के लिए देश में इधर उधर फैल जाना ।

प्रसारणम् [प्र+सृ+धिच्+स्युट्] 1. विदेशों में फैलाना,

- बढ़ाना, वृद्धि, प्रसृति, फैलाव 2 फैलाना—यथा 'साधप्रसारणम्' में 3. सृष्टि की घटना 4. इधर-उधर भाग के लिए समस्त देश में फैल जाना 5. अर्धस्वर यनों (यरलव) का स्वरों (इ, ऋ, ए, उ) में बदल जाना, प्रसारण ।

प्रसारिणी [प्र+सृ+घिन्] सृष्टि की घटना ।

प्रसारित (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+धिच्+क्त] 1

- 1 प्रसार किया हुआ, फैलाया हुआ, प्रसृत किया हुआ, बढ़ाया हुआ 2 (हाथों की भांति) फैलाया हुआ 3 प्रदमित किया हुआ, रक्ता हुआ, (विभी के लिए) रक्ता हुआ ।

प्रसारः [प्र+सृ+घञ्] अपने प्रभाव में जाना, नीत

- लेना, पराजित करना ।

प्रसित (भू० क० कृ०) [प्र+सि+क्त] 1. बांधा हुआ,

- कसा हुआ 2. सलन, व्यस्त, काम में लगा हुआ 3. तुला हुआ, प्रबल इच्छुक, आकांक्षित (करण० या क्षि० के साथ)—कर्म्या सक्रम्या वा प्रसित—सिद्धा०, रघु० ८।२३, -सम् पीव, नयाव ।

प्रसितिः (स्त्री०) [प्र+सि+कित्] 1 बाल 2 पट्टी

3. बचन, नमस्के की पट्टी ।

प्रसिद्ध (भू० क० कृ०) [प्र+सिप्+क्त] 1. विभूत,

- विख्यात, महादूर 2 सजा हुआ, अलङ्कृत, विभूषित—रघु० १८।११, कु० ५।९, ७।१९ ।

प्रसिद्धिः (स्त्री०) [प्र+सिप्+कित्] 1 कीर्ति, ख्याति,

- महादूरी, विभूति 2 सफलता, निष्पन्नता, पूति—कि० ३।३९, मनु० ४।३ 3 भूगार, सजावट ।

प्रसौधिका [प्रसाधतेऽप्याम्—प्र+सद्+ध्वल्, इत्वम्,

- टाप्, सीधादेश] बाटिका, छोटा उद्यान ।

प्रसुत (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+क्त] 1 सोया

- हुला, निहित 2 प्रगाढ़ निद्रा में ।

प्रसृतिः (स्त्री०) [प्र+सृ+कित्] 1 निद्रालुता,

- प्रगाढ़ निद्रा 2 सकने का रोग ।

प्रसू (वि०) [प्र+सृ+कित्] 1 प्रकाशित करने वाला,

- वेदा करने वाला, जन्म देने वाला—स्त्रीप्रसूषधाधि-बेलथ्या—भा० १।७३—(स्त्री०) 1 माता—मातर-पितरौ प्रसूजनपितरौ—अमर० 'जनक-जननी' 2 घोड़ी 3 फैलने वाली कला 4 केला ।

प्रसूका [प्र+सृ+कन्+टाप्] घोड़ी ।

प्रसृत (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+क्त] 1. उत्पन्न, जनित

- 2 वेदा किया हुआ, धन्य दिया हुआ, उत्पादित,—सम् 1 कूल 2 कोई उत्पादक स्रोत,—सा यन्था स्त्री ।

प्रसृतिः (स्त्री०) [प्र+सृ+कित्] 1 प्रसूजन, जनन,

- प्रसव 2 जन्म देना, वेदा करना, शर्मभोजन, बच्चे को जन्म देना—रघु० १।१६३ 3 बछड़े को जन्म देना 4 बच्चे देना—नी० १।१३५ 5 जन्म, उत्पादन, जनन—रघु० १०।५३ 6 दर्शन, प्रकट होना, (फूलों का) विकसन—रघु० ५।१५, कु० १।५२ 7 कूल, वेदाधार 8 सतति, प्रजा, अयाव—रघु० १।२५, ७७, २।५, ५।७, कु० २।७, शं० ६।२५ 9 उत्पादक, जनक, प्रकृष्टा—रघु० २।६३ 10 माता । सम०—कम् प्रसव से उत्पन्न होने वाली पीढ़ा,—वायुः प्रसव के समय शर्मभोज्य में उत्पन्न होने वाली वायु ।

प्रसूतिः [प्रसृत+ठन्+टाप्] जन्मा स्त्री, वह स्त्री

- जिसमें अभी हाल में बच्चे को जन्म दिया है ।

प्रसून (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+क्त, तस्य नत्वम्]

- वेदा किया गया, उत्पन्न,—सम् 1 कूल—कलाया प्रसून-लताया प्रसूनस्यायम कूल—उत्तर० ५।२०, रघु० २।१० 2 कली, मजरी 3 कूल सम०—इषुः, -वाणः,—वाणः कायदेव का विशेषण,—बर्कः पुष्पसृष्टि ।

प्रसूनकम् [प्रसून+कन्] 1 कूल 2 कली, मजरी ।

प्रसृत (भू० क० कृ०) [प्र+सृ+क्त] 1 भागे बढ़ा

- हुला 2. पसारा हुआ, बढ़ाया हुआ 3. फैलाया गया, प्रसारित किया गया 4. कला, कलाया किया हुआ

- 5 अस्त, लया हुआ 6 पूर्णता तेज 7. सुधीक, विनीत
—तः हाथ की लुकी हथेली, अंजलि, —तः, —तः दो
पल का माप, —ता टांग। सम०—तः पुर्ण का विशिष्ट
वर्ण, व्यभिचार जनित पुत्र, कुडगोलकल्प।
- प्रसृति:** (स्त्री०) [प्र + सृ + क्तिन्] 1 आगे जाना,
प्रगति 2 बढ़ना 3 फैलाने हुए हाथ की हथेली,
अजलि 4 मुट्टी भर (यही दो पल की माप समझी
जाती है) —परिशीला: कश्चित्पुत्रयति यवाना प्रसृतये
—मत् ० २।४५, याज्ञ० २।११२।
- प्रसृष्टर** (वि०) [प्र + सृ + क्त्वरप्, तुकायम्] इधर उधर
फैलने वाला भागि० ४।१।
- प्रसृम्भ** (वि०) [प्र + सृ + भ्रमरप्] बहला हुआ, घुंने
वाला, टपकने वाला।
- प्रसृष्ट** (भू० क० कृ०) [प्र + सृ + क्त] 1 एक ओर
शला हुआ, त्यागा हुआ 2 धायल, क्षतिग्रस्त, —च्छा
फैलाई हुई अगुली (अकगुन्ध प्रसृता यास्तु ता प्रसृष्टा
उदीरिता)।
- प्रसैक** [प्र + सिच् + घञ्] 1 बहना, रिसना, टपकना
2 छिड़कना, आर्द्र करना 3 उद्विग्न, प्रसन्न
—हनु० ३।१ 4 उन्नत, ऊँ।
- प्रसेविका** [= प्रसीदिका, पृषो०] छोटा उद्यान, बाटिका।
- प्रसेवक**, [प्र + सिच् + घञ्, प्रसेव + कन्]
1 बीजा, (अनाज के लिए) बोरी 2 चमड़े की बोटल
3 काष्ठ का बना छोटा उपकरण जो बीजा की गर्दन
के नीचे लगाया जाता है जिससे कि उसका स्वर अपेक्षा-
कृत कुछ गहरा हो जाय।
- प्रसम्भन्तम्** [प्र + सम्भन् + ह्युट्] 1 कुब्र जाना, छलांग
लगाना 2 विरचन, जूलान, अतिवार, —कः विष का
निषेधण।
- प्रसम्भन्** (भू० क० कृ०) [प्र + सम्भन् + क्त] 1 फलाया
हुआ, छलांग लगाकर पार किया हुआ 2 पणित,
टपका हुआ 3 परास्त, —ञ्जः 1 जातिबहिष्कृत
2 पापी, अतिभ्रमणकारी।
- प्रस्तुष्टः** [प्रगत कुव्य चक्रम् — प्रा० सं०] गोलाकार
वेदी।
- प्रस्तुस्तम्** [प्र + स्तु + ह्युट्] 1 लड़कहाना 2 इगम-
गाना, गिर जाना।
- प्रस्तर** [प्र + स्तु + षच्] 1 पर्णशय्या, पुष्पाय्या
2 पर्यंक, खटिया 3 समतल शिखर, इमवार, समतल
4 पत्थर, चट्टान 5 मूल्यवान् पत्थर, रत्न।
- प्रस्तरम्**, —व्या [प्र + स्तु + ह्युट्] 1 पलम 2 ताम्बा
3 बिलोना।
- प्रस्तार**, [प्र + स्तु + घञ्] 1 बसेरना, फैलाना, आच्छा-
दित करना 2 पुष्पाय्या, पर्णशय्या 3 पलम, साट
4 चपटी सतह, समतल इमवार 5 बनसली, जेयक

6. (कन्द० में) सभावित भेदों समेत कन्द की हस्त
तथा दीर्घ मापाओं की बोटिका वाटिका।
- प्रस्ताक**: [प्र + स्तु + घञ्] 1. आरम, बृक्ष 2. आमुव
3. उल्लेख, संकेत, उदरन—नाममात्रप्रस्ताव - वा०
७ 4. बन्धन, बीका, समय, शत्रु, उपयुक्तकाक
—स्वराप्रस्तावोप्यं न शत्रु परिहासस्य समय—मा०
५।४४, लिप्याय बृहतां पर्यु प्रस्तावमविशददुता
—वि० २८ 5. प्रबंधन का प्रयोजन, विषय, शीर्षक
6. नाटक की प्रस्तावना—दे० 'प्रस्तावना' नीचे। तम०
—ब्रह्मः ऐसा शर्यालाय जिसमें प्रत्येक बन्धनवादी
जाय से।
- प्रस्ताक्या** [प्र + स्तु + सिच् + घञ् + टाप्] 1. प्रवर्तित
या उत्कृष्टित होने का कारण बनना, प्रसादा, साराहना
2 बृक्ष, आरम—आर्यनालकवितप्रस्तावनादिभिर्मा
महाम्नी०—१५४ 3 परिचय, मुद्रिका, आमुव—प्रस्ता-
वना इव कण्ठनाटक्यम्—मा० २ 4. नाटक के
आरम में सूचवार तथा किसी एक पात्र के बीच में
हुआ परिचयवाचक शर्यालाय (इसमें नाटककार तथा
उसकी बोम्बला का परिचय देकर शर्यालों के सम्मुख
नाटक की घटनाओं को रक्खा जाता है) परिभाषा के
लिए दे० 'आमुव'।
- प्रस्ताकित** (वि०) [प्र + स्तु + सिच् + क्त] 1 आरम
किया हुआ, बृक्ष किया हुआ 2. उत्कृष्टित, इज्जत
—मा० ३।१।
- प्रस्तिकः** [= प्रस्तरः वि० इत्यम्] पर्णशय्या, पुष्पाय्या।
- प्रस्तोत्, -न** (वि०) [प्र + स्तर् + क्त, तम०, पके तस्
नः] 1. लीज्यहृत् करने वाला, शब्दावधान 2. पीड़-
यकृष्का, शुक बनाते हुए।
- प्रस्तुत** (भू० क० कृ०) [प्र + स्तु + क्त] 1. प्रिक्तकी
प्रशंसा की गई हो, या स्तुति की गई हो 2 आरंभ
किया हुआ, बृक्ष किया हुआ 3 निम्न, कुत, कार्वा-
न्वित 4. कटित 5. उपागत 6 प्रस्तुत किया गया,
उद्योक्त, विचाराधीन या विचाराधीन (दे० प्रपूर्वक
स्तु), —ञ्जः 1 उपस्थित विषय, विचाराधीन विषय
—अमुक प्रस्तुतमनुस्मियताम् 2 (अक० वा०)
विचार के विषय की स्मरणा बनाना, उपदेश, दे०
'प्रस्तुत'। अस्तुतप्रशंसा ता या तैव प्रस्तुताय्या
—आम्ब० १०। तम०—अस्तुतः एक अर्थकार जिसमें
बोला के अन्त में निहित किसी बात को प्रकाशित
करने के लिए सचारी परिस्थिति का उल्लेख किया
जाता है, दे० चन्द्रा० ५।६४, और कुब० (प्रस्तुताङ्कुर
के नीचे)।
- प्रस्तु** (वि०) [प्र + स्तु + क्] 1 जाने वाला, दर्शन करने
वाला, धायल करने वाला—यथा 'वानप्रस्थ' में
2. बाध पर जाने वाला 3. फैलाने वाला, विस्तार करने

वाला 4. दुष्ट, विपद, —स्वः—स्वम् 1. समतलभूमि, चौरस मैदान, बैसा कि औषधिप्रसव या इद्रप्रसव में 2 पर्वत के शिखर पर समतल या चौरस भूमि, —प्रसव हिमाद्रेश्चैवनामिगन्धि किचिद्वत्पथिकप्ररम्भुवास—कु० १।५४, मेघ० ५८ 3. पहाड़ का शिखर या चोटी —धि० ५।११ (यहाँ यह चोपे अर्थ को भी प्रकट करता है) 4. एक विशिष्ट माप जो ३२ पलों के बराबर होता है 5. 'प्रसव' के ताल के बराबर कोई वस्तु । सम०—पुष्पः तुलसी का एक भेद, बीजा मरुता ।

प्रसवपथ (वि०) [प्रसव + पथ + अथ, भूषायाम्] प्रसवपथ पकाने वाला ।

प्रसवपथम् [प्र + स्था + ल्युट्] 1 प्रयाण करना, कूच करना, बिदा, प्रयान करना—प्रस्थानविकलनवदेरकलम्भनार्थम्—जा० ५।३, रघु० ५।८८, मेघ० ४१, अथर्व ३१ 2 पर्वतना—कु० ६।६१ 3 कूच करना, किसी सेना का या आक्रमण का कूच करना 4. प्रयाणी, पदवृत्ति 5. मृत्यु, मरण 6. निकृष्ट योषी का नाटक—दे० सा० १० २७६, ५४५ ।

प्रस्थानम् [प्र + स्था + णिच् + ल्युट्, पुकायाम्] 1. भोजना, तिनार-बितर करना, प्रेषित करना 2 हुतावस्य में नियुक्ति 3 प्रमाणित करना, प्रसंग्य करना 4 उपयोग करना, काम में लगाना 5. पशुओं का अपहरण ।

प्रस्थापित (भू० क० कृ०) [प्र + स्था + णिच् + क्त, पुकायाम्.] 1 भेजा गया, प्रेषित 2 स्थापित, सिद्ध ।

प्रस्थित (भू० क० कृ०) [प्र + स्था + क्त] प्रयात, जागे बढ़ा हुआ, बिदा हुआ, विसर्जित, यात्रा पर गया हुआ (दे० प्रपूर्वक 'स्था') ।

प्रस्थितिः (स्त्री०) [प्र + स्था + क्तिन्] 1. बसे जाना, बिदा होना 2 कूच करना, यात्रा ।

प्रसवः [प्र + स्था + क्] स्नान-यात्र ।

प्रसवः [प्र + स्तु + अच्] 1 उमड़ कर बढ़ना, वह निकलना, निःस्रवण—उत्तर० ६।२२ 2. (दूध की) धारा या प्रवाह—रघु० १।८४ ।

प्रसृत (भू० क० कृ०) [प्र + स्तु + क्त] सरता हुआ, रिलता हुआ, बहकर निकलना हुआ । सम०—स्तनी वह स्त्री जिसकी छाती से (मातृस्नेहातिरेक के कारण) दूध टपकता है—उत्तर० ३ ।

प्रसृता [प्र० स०] पीयवृषु ।

प्रस्रवणम् [प्र + स्प्रन् + ल्युट्] पडकन, धरधराहट, कपकपी ।

प्रसृष्ट (वि०) [प्र + सृष्ट् + क्त] 1 बिना हुआ, विकसित, (फूल आदि) फूला हुआ 2 उद्योषित, प्रकाशित, (रिपोर्ट आदि) कोड़ा हुई 3 सरल, साफ, प्रकट, स्पष्ट ।

प्रसृष्टित (भू० क० कृ०) [प्र + सृष्ट् + क्त] ठिठुरता हुआ, कापला हुआ, धरधराता हुआ, कम्पायमान ।

प्रस्फोटनम् [प्र + सृष्ट् + ल्युट्] 1 फूट निकलना, तिलना, मुकुलित होना 2 स्पष्ट या साफ करना, खोलना, प्रकट करना 3 टुकड़े-टुकड़े करना 4 खिलाना, विकसित करना 5. जनाज फटकना 6. छाड़ 7 छेतना, पीटना ।

प्रसृष्टित् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र + सृष्ट् + णिनि] समय से पूर्व गिर जाने वाला (घने), कच्चा गिरना ।

प्रस्रवः [प्र + स्तु + अच्] 1 बूँद-बूँद गिरना, टपकना, बहना रिजना 2 बहाव, धारा 3 औड़ी या स्तन से टपकने वाला दूध—प्रस्रवेण (पाठान्तर 'प्रस्रवेण') अभिवर्धेती वल्लालोकप्रवतिना—रघु० १।८४ 4. मूत्र, —वा—(व० व०) उमड़ते हुए ओसु ।

प्रस्रवणम् [प्र + स्तु कान् + ल्युट्] 1 बह निकलना, उमड़ना, टपकना, सरना, बूँद बूँद गिरना 2 स्तन या औड़ी से दूध बहना—(युक्तान्) पटस्तनप्रस्रवणैर्व्यवर्धयन्—कु० ५।१४ 3 मूलप्रवाह, प्रवातिका, निर्भर 4 सरना, पौषारा—समाधिता प्रस्रवणे समतत—रघु० २।१३ मनु० ८।२४८ पाण्ड० १।१५९ 5 नाली, टोटी 6 पहाड़ी सरिताओ से बना पोखर, पत्तल 7 स्नेद, पसीना 8 मूलप्रवाह, —वा एक पहाड़ का नाम—जन-स्थानमन्वगो गिरि प्रस्रवणो नाम—उत्तर० १ ।

प्रस्रावः [प्र + स्तु + घञ्] 1 बहाव, उमड़न, मूत्र ।

प्रसृत (भू० क० कृ०) [प्र + स्तु + क्त] उमड़ा हुआ, टपका हुआ, बूँद-बूँद कर गिरा हुआ, रिसा हुआ ।

प्रस्रव (स्वा०) व. [प्र + स्तव् + अच्, घञ् वा] ऊँची आवाज ।

प्रस्राव [प्र + स्तव् + घञ्] 1 निद्रा 2 स्वप्न 3 निद्रा लाने वाला वस्त्र ।

प्रस्रावणम् [प्र + स्तव् + णिच् + ल्युट्] 1 सुलाना, निद्रित करना 2 ऐसा अस्त्र जो आक्रान्त व्यक्तिको सुला दे—रघु० ७।६१ ।

प्रस्रिचन (भू० क० कृ०) [प्र + स्विच् + क्त] पसीना आया हुआ, पसीने से तर ।

प्रस्रिचः [प्र + स्विच् + घञ्] बहुत अधिक पसीना ।

प्रस्रिचैत (भू० क० कृ०) [प्र + स्विच् + णिच् + क्त] 1 स्वेदाच्छन्न, पसीने से मराबोर, पसीना आया हुआ 2 पसीना लाने वाला, घने ।

प्रस्रवणम् [प्र + हृन् + ल्युट्] बध, रुग्ण ।

प्रसृत [प्र + हृन् + क्त] 1 घालन, बध किया हुआ, धारा हुआ 2 पीटा हुआ, (डोल आदि) चबाना 3 स्वयं प्रहृन्पुष्कर कृती—रघु० १।१२४, मेघ० ६८ 3 पीछे ढकेला हुआ, विभित, पराजित 4 फँसाया हुआ, फूलाया हुआ 5 सटा हुआ 6 (पगडडो) पिटा-पिटा, गलानु-गतिक 7. निष्पन्न, विज्ञान ।

प्रहरः [प्र + ह + अच्] दिन का आठवाँ भाग, प्रहर (तीन घंटे का समय) - प्रहरे प्रहरेऽहोष्वास्तितानि मामानयेत्वादिपदानि न प्रभाषन् - तर्कः ।

प्रहरकः [प्रहर + कच्] एक पहर ।

प्रहरणम् [प्र + ह + ण्यट्] 1 प्रहार करना, मारना 2 डालना, फेंकना 3 बाधा करना, आक्रमण करना 4 घायल करना 5 हटाना, बाहर निकालना 6 दण्ड अर्थ, या (उर्बशी) सुकुमार प्रहरण महेन्द्रस्य - विक्रम० १, रघु० १३।७३ भग० १।९, मा० ८।९ 7 सत्राय, युद्ध, लडाई 8 डकी हुई पालकी या डोला ।

प्रहरणोचम् [प्र + ह + उचोयच्] अर्थ, दण्ड ।

प्रहरिन् (पुं०) [प्रहर + इनि] 1 रलवाला 2 पहरदार, घटी वाला ।

प्रहर्त् (वि०) [प्र + ह + तुच्] 1 प्रहार करने वाला, पीटने वाला, हमला करने वाला 2 लड़ने वाला, संघर्षी, योद्धा 3 तीरदाय, निशाने बाज, धनुर्धर ।

प्रहर्ष [प्र + हृच् + षच्] 1 अत्यधिक हर्ष, अत्यानन्द, उत्साह - मुह प्रहर्ष प्रबभूव नारदनि - रघु० ३।१७ 2 विजृम्भ का सहा होना ।

प्रहर्षणम् [प्र + हृच् + ण्यट्] उत्सहित करना, प्रहृष्ट करना, आनन्दित करना, - भूष ग्रह ।

प्रहर्षं (षि) षी [प्र + हृच् + णिच् + ल्युट् + ङीप् + प्र + हृच् + णिच् + णि + ङीप्] 1 हल्दी 2 एक छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट ।

प्रहर्षुल [प्र + हृच् + उलच्] बुध ग्रह ।

प्रहस्तम् [प्र + हस् + ल्युट्] 1 जोर की हँसी, अट्टहास, विनाशलाकर हँसना 2 मजाक, ठिठोली, व्यंग्योक्ति, उपद्राव - पिक् प्रहस्तम् - उत्तर० ४ 3 व्यंग्यलेख, व्यंग्य 4 स्वाय, तमाशा, हँसी का सुखान्त नाटक - सा० द० मे दी गई परिभाषा - भाष्यवत्सन्धिसम्प्य-ज्ञलास्याङ्गाङ्गीविनिमित्तम्, भवेत्प्रहस्तम् वृत्त निन्दाना कश्चिदल्पनाम् - ५५३ तथा आगे, उदा० 'कल्पकेलि' ।

प्रहस्तनी [प्र + हस् + नीच् + ङीप्] 1 एक प्रकार की बमेली, जुती, मुथिका, बालतनी 2 एक बड़ी अजीठी ।

प्रहसित (भू० क० कृ०) [प्र + हस् + क्त] हँसता हुआ, - तम् हँसी, हास्य ।

प्रहस्य [प्रसत् प्रसूतो हसन् - प्रा० सं०] 1 मूला हाथ त्रिसूती अंगुलियों फेली हो, (सपथ) 2 रावण के एक सेनापति का नाम ।

प्रहाष्यम् [प्र + हा + ष्युट्] त्यागना, छोड़ना, भूल जाना - भनु० ५।५८ ।

प्रहाषिः (स्त्री०) [प्र + हा + णि, णच्] 1 त्यागना 2 कमी, अभाव ।

प्रहारः [प्र + हृ + ण्यट्] 1 बार करना, पीटना, चोट करना यात्र० ३।२४८ 2 घायल करना, मार

डालना 3 बाधा, मुक्का, चोट, ठोकल, बील - रघु० ७।४४, मुष्टिप्रहार, तलप्रहार आदि 5 ठोकल - जैसा कि पाठप्रहार और कलाप्रहार में 6 पोली मारना ।

प्रहारणम् [प्र + हृ + णिच् + ल्युट्] बाष्पनीय उपहार ।

प्रहास [प्र + हस् + षच्] 1 जोर की हँसी, अट्टहास 2 मजाक, दिलोमी, हसी 3 व्यंग्योक्ति, व्यंग्य 4 मतेक, वट, पाष 5 शिब 6 दर्शन, विश्वाषा - बेगी० २।२८ 7 एक तीर्थ स्थान का नाम - भु० प्रहास ।

प्रहासिन् (पुं०) [प्र + हस् + णिच् + णिनि] विद्वक, मसकर ।

प्रहिः [प्र + हि + णिच्] कुर्वा ।

प्रहित (भू० क० कृ०) [प्र + धा + क्त] 1 रक्सा हुआ, प्रस्तुत किया हुआ 2 बताया हुआ फँसना हुआ 3 भेजा हुआ, प्रेषित, निर्दिष्ट - विचारमार्थप्रहितेन वेतसा - कु० ५।४२ 4 छोड़ा हुआ, निशाना लगाया हुआ (तीर आदि का) 5 नियुक्त किया गया 6 समुचित, उपयुक्त, - तम् घाट, घटनी ।

प्रहीण (भू० क० कृ०) [प्र + हा + क्त, ईत्, तस्य न, ण्वच्] छोड़ा गया, साली किया गया, त्यागा गया, - षम् निनाश, निराकरण, घाटा ।

प्रहुतः, - तम् [प्र + हु + क्त] भूतयक, बलिबन्धयधेव, दैनिक पाँच यज्ञों में एक, तु० भनु० ३।७४ ।

प्रहुत (भू० क० कृ०) [प्र + हु + क्त] पीटा गया, बाधात किया गया, चोट किया गया, घायल किया गया । - तम् मुक्का, प्रहार, चोट ।

प्रहुष्ट (भू० क० कृ०) [प्र + हृच् + क्त] 1 खुश, प्रसन्न, आनन्दित, आह्लासित 2 पुलकित करना, रोयाचित करना (रोगदे लडे होना) । सप्र० - अहसन् - घिस, - षम् (वि०) मन से खुश, हृदय से आनन्दित ।

प्रहुष्टकः [प्रहुष्ट + कच्] काक, कौवा ।

प्रहेलक [प्र + हिल + ष्युट्] 1 एक प्रकार का मुद्गाक, मोठी रोटी 2 पहेली - दे० नी० 'प्रहेलिका' ।

प्रहेला [प्र + हिल + ष + टाप्] मुक्त या अनिर्दिष्ट व्यवहार, शापिल आचरण, रचरली, बिहार ।

प्रहेलिः (स्त्री०), प्रहेलिका [प्र + हिल + इत्, प्रहेलि + क् + टाप्] पहेली, बुझौल, कूट प्रश्न, विद्वन्मूख-मडन में दी गई परिभाषा - व्यक्तोक्त्युक्त क्रमपूर्व स्वरूपाश्चैव गोपनात्, यत्र बाह्यन्तरावर्षो कथ्यते सा प्रहेलिका । यह बाँधी और शाब्दी दो प्रकार की हैं । तदव्याप्तिज्ञात कण्ठे नितम्बस्वल्पमाश्रित, मुक्का सप्रधानेर्जपे क क्वचित् मुहुर्मुहुः । (यहाँ पहेली का उतर है इयन्तजलपूर्वकुम्भ) यह बाँधी का उदाहरण है । सवारिसव्यापि न वैविकथा नितान्त-रक्ताप्यसिद्धेन नित्य सधोक्तवादिप्यापि नैव हृती का

नाम जाननेति निवेदयाम् । (यहाँ पहली वा उत्तर है कारिका) यह शब्दी का उदाहरण है । दम्भी ने सोलह प्रकार की पहिलिया बतलाई है—काव्या० २।१६—१२४ ।

प्रह्लाव (भु० क० कृ०) [प्र+ह्लात्+कृ, ह्रस्व] लुप्त, आनादित, प्रसन्न ।

प्रह्ला (ह्ला) कः [प्र+ह्लात्+घञ्, रलघोरक्षम्] 1 अत्यधिक हर्ष, प्रसन्नता, लुप्तो, आनन्द 2 शब्द, आवाज 3 हिरण्यकशिपु गण्डम के पुत्र का नाम (पथपुराण के अनुसार प्रह्लाव अपने पूर्व जन्म में शङ्खम था । जब उसने हिरण्यकशिपु के पहाँ जन्म लिया तो भी उसकी विष्णु के प्रति अनप्यभक्ति बनी रही । उसका पिता यह नहीं चाहता था कि उसका अपना पुत्र ही उसके घोर शत्रु देवी का ऐसा पक्का भक्त बने । अतः उससे छुटकारा पाने के उद्देश्य से उसने अपने पुत्र प्रह्लाव को नाना प्रकार की यातनाएँ दीं । परन्तु विष्णु की कृपा से प्रह्लाव का कुछ नहीं बिचरा, उसने और भी अधिक उसाह से इस बात का उपदेश करना आरम्भ कर दिया कि विष्णु सर्वव्यापक, सर्वत्र और सर्वशक्तिमान् है । हिरण्यकशिपु ने कोपावेष में प्रह्लाव से पूछा कि बता कि यदि विष्णु सर्वव्यापक है तो इस वृक्ष के स्तम्भ में वह क्यों नहीं दिखलाई देता ? इस पर प्रह्लाव ने स्तम्भ पर चढ़के का आघात किया (दूसरे मतानुसार स्वयं हिरण्यकशिपु ने क्रोध में भरकर अपने पुत्र के विश्वास की भ्रष्टता का उसे विश्वास दिलाने के लिए स्वयं स्तम्भ को ठोकर मारी) फलतः विष्णु नरसिंह (अर्ध मनुष्य तथा अर्ध सिंह) के रूप में प्रकट हुआ और हिरण्यकशिपु के टुकड़े टुकड़े कर बिधे । प्रह्लाव अपने पिता का उत्तराधिकारी बना और बुद्धिमत्ता पूर्वक, तथा न्यायपूर्वक राज्य किया) ।

प्रह्ला(ह्ला)वम (वि०) [प्र+ह्लात्+विष्+हृष्ट, रलघोरक्षम्] आनन्द देने वाला, प्रसन्न करने वाला —रघु० १३।४.—वष् हर्ष या प्रसन्नता देना करना, आनन्द देना, मृग्य करना—यथा प्रह्लादनाचन्द्र —रघु० ५।१२ ।

प्रह्ल (वि०) [प्र+ह्ल+घञ्, नि० साधु] 1 इलुकी, तिरछा, मुका हुआ शि० १२।५६ 2 मुकता हुआ, नीचे को मुका हुआ, विनम्र, विनीत एव प्रह्लोऽग्निम ब्रह्मन् एषा विद्यापता च न—महाभी० १।४०, ६।३० 3 दोन, विनीत, सुशील, विनयी प्रह्लोऽध्वनिर्वचयो हि सन्त —रघु० १६।८ 4 अनुत्स, भक्त, व्यस्त, बाधक । सम०—अध्वकलि (वि०) सम्मान के चिह्न स्वरूप दोनो हाथ जोड़ कर सिर मुकाए हुए ।

प्रह्लकी (ना० घा०—परा०) विनीत करना, वचवर्ती बनाना ।

प्रह्लिका (स्त्री०) दे० प्रह्लिका ।

प्रह्लाव [प्र+ह्ले+घञ्,] बुलावा, आमन्त्रण, निमन्त्रण ।

प्रह्लु (वि०) [प्रकृटा अन्वयो घञ्—प्रा० ब०] 1 ऊँचा, लम्बा, कड़ावर, ऊँचे कद का (मनुष्य)—यासप्राधुर्ग्रहाम्भूत—रघु० १।१३, १५।११ 2 लम्बा, बड़ाया हुआ —श० २।१५.—शुः लम्बा मनुष्य, बड़े कद का आदमी—प्राधुल्ये कले लोभादुद्वाहुरिच वामन—रघु० १।३ ।

प्राक् (अव्य०) [प्राचि सणभ्यर्थे जसि तस्य लुक्]

1 पहले (अप० के साथ)—सकलानि निमित्तानि प्राक्प्रधानात्ततो मय भट्टि० ८।१०, ६, प्राक् सृष्टे केवलान्मने कु० २।१, रघु० १।४।८, श० ५।२१ 2 सबसे पहले, पहले ही—प्रमथय प्रागपि कोशलेन्दे रघु० ७।२४ 3 पहले, पूर्व, पूर्व अर्थ में (पुस्तक के)—इति प्रागेव निदिष्टम्—सनु० १।७१ 4 पूर्व में, से पूर्व दिशा में—शामात्प्राक् पर्वत 5 सामने 6 जहाँ तक हो वहाँ तक, पर्यंत, तक प्राक् कडारात् ।

प्राक्त्वम् [प्रकट+व्यञ्] प्रकट करना, प्रकाशित करना, कुख्याति ।

प्राकरयिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकर+ठक्]

विचारणीय विषय से संबंध रखने वाला, प्रस्तुत विषय (अक्षर वाक्ययो) द्वारा प्राक् 'उपमेय' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है) से संबद्ध—अप्राकरयिकस्वाभिधानं प्राकरयिकस्यालोपोऽस्त्युपपद्यता—काव्य० १० ।

प्राक्विक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकथं+ठक्] श्रेष्ठतर या अधिक अच्छा समझाने का अधिकारी ।

प्राक्विक [प्र+आ+कन्+इकन्] 1 लौंडा, गाइ

2 दूसरे की स्त्री से अपनी बौविका चलाने वाला ।

प्राकाशम् [प्रकाश+घञ्] 1 इच्छा की स्वतन्त्रता

—प्राकाशमे विभृतिपु—कु० २।११ 2 स्वेच्छा—चारिता 3 अनिवाय संकल्प, शिव की आठ प्रकार की निदियों में से एक (जिनकी प्राप्ति से सब मनोग्य पूरे हो जाते हैं) दे० 'सिद्धि' ।

प्राकृत (वि०) (स्त्री०—ना, ली) [प्रकृति+अम्]

1 मौलिक, नैसर्गिक, अपरिचलित, अधिकृत—स्थानाम्निषो मिषे च सहप्रक्राकृतापि—नि० २।२६, (इस पर देखो मल्लि०) 2 प्रचलित, सामान्य, साधारण 3 असंस्कृत, गवार, असभ्य, अशिक्षित प्राकृत इव परिभूषणमायामान न स्वसि—का० १।४६, अग० १।८।२४ 3 नगध्व, महत्त्वहीन, तुच्छ—भृश० १, 4 प्रकृति से उत्पन्न प्राकृतो सच 'प्रकृति में ही पुन लौन होना' 5 प्राचीन, देहाती (बोली), दे० नी०,—त बोक्षा मनुष्य, साधारण व्यक्ति, देहाती पुरुष,—सन् एक देहाती या प्राचीन बोली जो संस्कृत से व्युत्पन्न तथा उससे मिलती-जुलती है—प्रकृतिः

संस्कृत तत्र भवत आगतं च प्राकृतम्—हेम०
(इनमें बहुत सी बोलियाँ संस्कृत नाटकों में निम्न
श्रेणी के पात्रों या स्त्री पात्रों द्वारा बोली जाती हैं)
नट्टवस्तुत्वयो देशीत्यनेक प्राकृतकम्—काव्या०
१।२३, ३५, ३६ त्वमप्यस्मादज्ञानयोर्म्ये प्राकृतमार्य
प्रवृत्तोऽसि—विद्वा० १। सम०—अरि नैसगिक शत्रु
अर्थात् पड़ोसी देश का शासक दे०, सि० २।२६ पर
मल्लि०—उदासीन, नैसगिक तटस्थ अर्थात् वह राजा
जिसका राज्य नैसगिक मित्र राज्य के परे है,—अररः
सामान्य या साधारण दुश्मन,—प्रलयः बिल्व का पूर्ण
विषटन,—विश्वम् नैसगिक मित्र अर्थात् वह राजा
जिसका राज्य नैसगिक शत्रु राज्य से मिला हुआ है
(अथवा जिसका देश उस देश से पृथक् है जिसके साथ
मित्रता का संबंध हो चुका है)।

प्राकृतिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [प्रकृति + ठञ्]
1 नैसगिक, प्रकृति से व्युत्पन्न—महावी० ७।२९,
2 भ्रान्तिजनक, भ्रमोत्पादक।

प्राक्तन (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [प्राक् + टप्, तुडागम्]
1 पहला, पूर्व का, पिछला—प्रवेदिरे प्राक्तनजन्मविद्या
—कु० १।३० 2 पुराना, प्राचीन, पहले का 3 पूर्व-
जन्म से संबंध, या पूर्वजन्म में किये हुए कार्य
—अस्कारा प्राक्तना इव—गु० १।२०, कु० ६।१०।
प्राक्त्वम् [प्रक् + ष्यञ्] 1 पैनतन 2 तीक्ष्णता
3 दृष्टता।

प्रागल्भ्यम् [प्रगल्भ + ष्यञ्] 1 साहस, भरोसा—नि.साध्म-
मन्व प्रागल्भ्यम्—सा० द० 2 धमक, अहंकार,
3 प्रवीणता, कुशलता 4 विकास, वृद्धपन, परिपक्वता
—द्विप्रिप्रागल्भ्य, तम प्रागल्भ्य आदि 5 प्रकटीकरण,
प्रतीति—अवान प्रागल्भ्य परिगतश्च वीरुतनये
—काव्य० १० 'जो प्रतीति हुआ' 6 वाक्पटुता
प्रागल्भ्यहीनस्य मरत्य विद्या शत्रु यथा कापुष्यस्य
मते (यहाँ 'प्रागल्भ्य' का अर्थ 'साहस' भी है)—मा०
३।११ 7 धूमधाम, गर्वता 8 दृष्टता, दिखाई।

प्रागार | प्रकृत आगार—प्रा० सं०] पर, गवन।
प्राग्यम् [प्रा० सं०] उच्चतम बिन्दु। सम०—स्रर (वि०)
प्रगम, अग्रणी,—हृर (वि०) मुख्य, प्रधान—रघु०
१।१२१।

प्राघात [प्राघ + अट् + अघ] फलता जमा हुआ दूध।
प्राग्य (वि०) [प्राघ + यत्] मुख्य, अग्रणी, उत्तम,
अतिश्रेष्ठ।

प्राघात [प्रकृत आघात—प्रा० सं०] युद्ध, लड़ाई।
प्राघार. [प्र + घृ + घञ्] टपकना, बूद बूद गिरना,
रिसना।

प्राघुक्, प्राघुक्क, प्राघुक्क, } [प्र + घृण् + क, प्राघुण
प्राघुक्क, प्राघुक्क, } + कन्, प्राघुण + ठञ् प्र

+ आ + घृण् + ष्यञ्, प्राघुर्ण + ठञ्] अघिभि,
पाहुना, अग्यगत, मेहुमान-चिरापायस्मृतिवांसलोपि
गेष क्षणप्राघुक्किको बभूव—भासि० २।६६, अथक्-
प्राघुक्किकीकृता कर्त्त (कथा)—नी० २।१५६।

प्राङ्गुक् [प्रकृतमग मय्य—प्रा० व०] एक प्रकार की
डालक, पत्रव।

प्राङ्गुक् (मन्) [प्रकर्वेण जगन गगन यन्—प्रा० व०]
1 सहन, आयन 2 (चक्र का) फर्म 3 एक प्रकार
की डालक।

प्राञ्, प्राञ्च (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [प्र + अञ्च + षिञ्]

1 सामने की ओर मुड़ा हुआ, सामने बिल्कुल आवे
रहने वाला 2 पूर्वदिशा संबंधी, पूर्व का 3 प्राथमिक,
पहला, पूर्वकाल का (य० व० व०) 1 पूर्वदिश के
लोग 2 पूर्वीय बंधाकरण। सम०—अञ्च (वि०)

(प्रागञ्च) पूर्वदिशा की ओर दृष्टि करे हुए,—अत्रायः
(प्रायभाव) पिछला, सत्ता का अभाव, किसी वस्तु
की उत्पत्ति के पूर्व का अनस्तित्व, उत्पत्ति से पूर्व की

अवस्था,—अभिहित (वि०) (प्रागभिहित) पूर्वकित,
—अवस्था (प्रायवस्था) पहली दशा,—न तद्धि प्राय-
वस्थाया परिहृयते—मा० ४, 'पहली अवस्था की

अपेक्षा कभी पर नहीं हो'—प्रावत्त (वि०) (प्राग-
वत्त) पूर्वदिशा की ओर बसा हुआ,—जिम्बिः (स्त्री०)
(प्रागुक्ति) पूर्वकथित,—उत्तर (व०) (प्रावत्तर)

पूर्वोत्तर का,—उत्तरीणी (स्त्री०) (प्रागुत्तरीणी) पूर्वोत्तर
दिशा,—कर्मन् (मपु) (प्राक्कर्मन्) पूर्वजन्म में किया
हुआ कार्य,—कालः (प्राक्कालः) पहला युग,—कालीन

(वि०) (प्राक्कालीन) पूर्वकाल से संबंध रखने
वाला, पुराना, प्राचीन,—कूल (वि०) (प्राक्कूलः)
जिसकी नोक पूर्वदिशा की ओर मुड़ी हुई हो (कुल-
शाल) मनु० २।१०५,—कृतम् (प्राक्कृतम्) पूर्वजन्म

में किया गया कार्य,—चरत्वा (प्राक्चरत्वा) स्त्री की
अननेन्द्रिय, योगि, चिरम् (अव्य०) (प्राक्चिरम्)

समय रहते, देर न करके,—अकम्प (मपु०) (प्राक्-
कम्पन्)—आतिः (स्त्री०) (प्रागआति) पूर्वजन्म
—अप्योतिवः (प्राग्योतिव) 1 एक देश का नाम,

कारण देश का नामांतर 2 (व० व०) इस देश
के रहने वाले लोग, (मन्) एक नगर का नाम,
'अप्येष्ट विरुध का विशेषण,—अस्मिन् (वि०) (प्रा-
स्मिन्) दक्षिणपूर्वी,—देश (प्रादेश) पूर्वदिशा का

देश,—हार,—हारिक (वि०) (प्राहार, प्राहारिक)
जिसका दरवाजा पूर्वदिशा की ओर हो,—व्यासः
(प्राश्च व्यास) पहली आचपट्टाल का तर्क, पहले से

ही निर्णीत मुकदमा—आचारोपावसरोपि पुनर्मंसवते
यदि, सोऽभिषेयो जित पूर्व प्राश्चव्यासस्तु स उच्यते
1.—प्राहारः (प्राक्प्रहार) पहला मुक्का, कालः

(प्राक्फलः) कटहल-पेड़, -क (का) स्मृणी (प्राक्फ (का) स्मृणी) ग्यारहवाँ नक्षत्र, पूर्वाभास्मृणी, *नमः
 1. बृहस्पतिवहू 2 बृहस्पति का नाम, -काल्युक्त, - काल्युक्तः (प्राक्काल्युक्त, प्राक्काल्युक्त) बृहस्पतिवहू, -काल्युक्त (प्रमथकम्) भोजन से पूर्व शौचविशेषन-वाचः (प्राग्वाच) 1. सामने का वाच
 2. कृष्णा वाच, -वाचः (प्राग्वाच) 1 पहाड़ का शिखर या चोटी-मा० १।१५ 2 सामने का वाच, (किसी कीड़का) जन्मा भाग या किनारा-कन्ध-स्केरबचच्छङ्कालुतिभूतप्राग्वाचमीमंस्टट-मा० १।१५
 3. कक्षा परिष्कार, ईर, समुष्ण्य, बाह-मत्तु० ३।१२५, मा० ५।२५, -माचः (प्राग्वाच) 1. पूर्वजन्म 2 अष्टता, उत्तमता, -भूच (वि०) (प्राक्भूच) 1 पूर्व की ओर की भूजा हुआ-कु० ७।१३, मनु० २।५१, ८।८७, 2 भूजा हुआ, कामना करता हुआ, इच्छुक, -भाः (प्राग्भाः) 1 यज्ञशाला जिसके स्तर पूर्व की ओर बने हुए हों-रघु० १६।६१ (प्राचीनस्मृषुषी यज्ञशाला-विशेष - मत्स्य०, परन्तु कुछ लोगों के मतानुसार इस का अर्थ है 'वह कस जहाँ यज्ञमान का परिवार और मित्र इकट्ठे रहते हों') 2 पहला वय या पीढ़ी, -वृक्षम्-दे० आ३ ग्याय, - वृक्षान्तः (प्राग्वाचान्त) पहला घटना, -शिरस्, -शिरस्, -शिरस्क (वि०) (प्राक्शिरस्) आदि पूर्वदिशा की ओर मिर मोड़े हुए, -सन्ध्या (प्राक्सन्ध्या) प्रातःकालीन सन्ध्या, -सेवनम् (प्राक्सेवनम्) प्रातःकालीन जलतपण या यज्ञ, -श्रोतस् (वि०) (प्राक्श्रोतस्) पूर्व की ओर बहने वाला ।
 प्राक्पञ्चमम् [प्राक्पञ्च + प्यञ्,] 1. उत्कटता, उग्रता, 2. भीषणता, विकराल दृष्टि-मा० ३।१७ ।
 प्राक्पिका [प्र + अञ्च + पङ्क्तु + टाप्, ड्रवम्] 1. मच्छर दास की आँसु की एक जगली यक्ष्मी ।
 प्राची [प्र + अञ्च + चिन्व + ङीप्] पूर्व दिशा, -तनयमभिरात् प्राचीवार्क प्रभूव न पावनम् - ष० ५।१८ ।
 सम०-वसि-इन्द्र का विशेषण, भूम्य् पूर्वी शित्तिज प्राचीमुने तनुमिब कलामात्रशेषा हिमाधो - षेप० ८९ ।
 प्राचीन (वि०) [प्राञ् + च] 1 सामने की ओर या पूर्व दिशा की ओर भूजा हुआ, पूर्वी, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी 2 पहला, पूर्वकाल का, पूर्वोक्त 3 पुराना, पुरातन, -न, -नम् बाह, दीवार । सम०-अध (वि०) दे० प्रागध, -आचीतम् यज्ञोपवीत, अनेऊ (जो दाहिने कंधे के ऊपर से तथा बाईं भूजा के नीचे से पहना हुआ हो जैसा कि पाठ के अनुसार पर), आचीतिन्, -अचीत (वि०) अनेऊ को दाएँ कंधे के ऊपर से तथा बाईं भूजा के नीचे से पहनने वाला-मनु०

२।६३, -कल्पः पहला कल्प, -माषा पुरानी कहाणी, -लिलकः चन्दना, -कलक बेल का वृक्ष, -वहिसू (पु०) इन्द्र का विशेषण, -कलम् पुरानी सम्पत्ति ।
 प्राचीरन् [प्र + आ + चि + कन्, दीर्घ] घेरा, बाह, दीवार ।
 प्राच्युर्धम् [प्रचुर + ध्यञ्] 1 बहुतायत, पर्याप्तता, बहुलता 2 समुष्ण्य ।
 प्राचेतसः [प्रचेतस अपत्यम्-प्रचेतस् + अन्] 1. मनु का पौत्रक नाम 2. देश का कुलसूचक नाम 3. बाल्मीकि का गोपीय नाम ।
 प्राच्य (वि०) [प्राचि भव यत्] 1 सामने से स्थित या विद्यमान 2 पूर्व दिशा में रहने वाला, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी 3 प्राथमिक पूर्ववर्ती, पहला 4 प्राचीन, पुराना- (ब० व०-भ्याः) 1 पूर्वी देश, सरस्वती के दक्षिण में या पूर्व में स्थित देश 2 इस देश के निवासी । सम०-माषा पूर्वी बोली, भारत के पूर्व में बोली जाने वाली भाषा ।
 प्राच्यक (वि०) [प्राच्य + कन्] पूर्वी, पुरवैया, पूर्वाभिमुखी ।
 प्राष्ट (वि०) [प्रष्ट + चिन्व, नि० दीर्घ] (कन्०, ए० व०-प्राट्, प्राह्) पुछने वाला, पुछताछ करने वाला, प्रश्न करने वाला, जैसा कि 'शब्द प्राट्' में । सम०-बिबाकः (शार्दूलबिक) न्यायाधीश, कचहरी या अदालत में प्रधान पद पर अधिष्ठित अधिकारी -मनु० ८।७९, १८१, १।२३४ ।
 प्राजकः [प्र + अञ् + चिन्व + ष्वल्] सागधि, चालक, रथवान् मनु० ८।२९३ ।
 प्राजन-नम् [प्र + अञ् + स्युट्] हटर, चालक, अकुश -त्यक्तप्राजनरधिरहित्तनुं पार्थाङ्कृतमार्गं - वेणी० ५।१० ।
 प्राजापत्य (वि०) [प्राजापति + यक्] प्राजापति से संबंध रखने वाला या जो प्राजापति के लिए पुष्पप्रद हो, -त्य हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें लड़कों का पिता वर से बिना किसी प्रकार का उपहार लिए केवल इस लिए कन्यादान करता है जिससे वह सानन्द, धृदा और भक्तिपूर्वक साथ २ रहकर दाम्पत्य जीवन बिताने, महोभो चरता धर्ममिति वाचानुभाष्य न, कन्याप्रदानमन्वक्यं प्राजापत्यो विधि स्मृत-मनु० ३।३०, या, इत्य-कृत्वाचरता धर्मं सह या दौषतेऽधिने, स काय (अर्थात्-प्राजापत्य) पावचेतस्य पदं बहू वर्यान्स-हायना-याञ्च० १।६० 2 गाा और यमुना का मगम, प्रयाग, -त्यम् 1 एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्र-हीन पिता अपनी लड़की के पुत्र को अपना उत्तराधिकारी नियत करने से पूर्व करता है 2 सर्वनात्मक

ऊर्जा या शक्ति, —स्था संन्यासी बनने से पूर्व अपनी सारी संगति को धाक कर देना।

प्राक्तिक [प्र+अन्+ठञ्] वा, पत्नी, स्वेन ।

प्राक्त्वि, प्राक्त्वि (पु०) [प्र+अन्+त्त्वि, प्र+अन्+गिति] सारथि, बालक, रथवान्—सि० १८।७ ।

प्राग्नेयम् [प्राग्नेयो देवताऽयम्—प्राग्नेय+अन्] रोहिणी नक्षत्र ।

प्राज्ञ (वि०) (स्त्री०—सा, स्त्री) [प्रकथय मानाति इति

—प्र+ज्ञा+क=प्राज्ञ, तत्. स्थायं—अन्] 1 मनीषी

2 बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर—किमुप्यते प्राज्ञ कन्

कुमार - उत्तर० ४, —अः 1 बुद्धिमान् पुलक सेम्

प्राज्ञा न विद्ययति—वेणी० २।१४, अम० १७।१४

2 एक प्रकार का तोता, —आ 1 बुद्धि, समझ 2 चतुर

या समझदार स्त्री, —स्त्री 1 चतुर या विदुसी स्त्री

2 विद्वान् पुलक की पत्नी 3 सूर्य की पत्नी का नाम ।

प्राञ्च (वि०) [प्र+अन्+घञ्] 1 प्रचुर, पर्वण्य, बहुल,

अधिक, बहुत—सब भवतु विद्वोश्च प्राञ्चयन्तिः

प्रजापु—स० ७।३४, रघु० १३।१२, सि० १४।२५

2 बड़ा, विशाल, महत्त्वपूर्ण—प्राञ्चयिष्मः—कु०

२।१८, अग्नि प्राञ्च राज्य तुषमिभ परिव्रज्य सहसा

—मगा० ५ ।

प्राञ्चल (वि०) [प्र+अन्+अल्] निरञ्जल, स्पष्टवपता,

हरा, ईमानदार, निष्कपट ।

प्राञ्चलित (वि०) [प्रबद्धा अञ्जलि यैः—प्रा० ब०] चिनप्रता

और समझाने के विद्वत्त्वत्पत्र जिनसे जलने ह्राय जोड़े

हुए हैं ।

प्राञ्चलिक, प्राञ्चलिकम् (वि०) [प्राञ्चल+कन्, इति वा]

दे० 'प्राञ्चल' ।

प्राण [प्र+अन्+अन्, घञ्, वा] 1 सास, द्वास

2 जीवन का सास, जीवनशक्ति, जीवन, जीवनशायी

वायु, जीवन का मूलतत्व (इस अर्थ में प्राय ४० व०,

स्पर्शिक प्राण पितृती में पाँच है—प्राण, अपान, समान,

ध्यान और उदान)—प्राणैरुपक्रोशमकीमर्षी—रघु०

२।५३, १२।५४ 3 जीवन के पाँच प्राणों में से पहला

(जिसका स्थान फेफड़े हैं) भग० ४।२० 4 वायु,

अन्तर बीचा हुआ साँस 5 ऊर्जा, बल, सामर्थ्य,

शक्ति, जैसा कि 'प्राणसार' में 6 जीव या आत्मा

(विष्णु शरीर) 7 परमात्मा 8 ज्ञानेन्द्रिय,—मनु०

४।१४ 9 प्राणों के समान आश्चर्य या प्रिय, प्रिय

व्यक्ति या पदार्थ,—कोश—कोश कोशवत् प्राणा प्राणा

प्राणा न भूपते—हि० २।१२, अर्धपतेचिन्मर्दको बहि-

स्वरा प्राणाः—दश० १० कविता का सत्, काश्च-

मयी प्रतिभा, स्फूर्ति 11 महाप्राणका, स्वासग्रहण

—जैसा कि महाप्राण और अल्पप्राण में 12 प्राणन

13 समय का मापक सास 14 लोभान, मोद । सम०

—अतिप्रातः जी वित प्राणी का बंध, जान लेना,

—अत्यन्तः जीवन की हानि,—अधिक (वि०)

1. प्राणों से भी प्रिय, 2 सामर्थ्य और बल में श्रेष्ठ,

—अतिप्रातः पति, —अधिकः बालर,—अमः मृत्यु,

—अतिष्ठ (वि०) 1. पातक, नष्टर 2 जीवन भर

रखने वाला, जीवन के साथ ही समाप्त होने वाला

3. कांसी का दण्ड (कम्) बंध,—अप्यहारिष्णु (वि०)

पातक, प्राणनाशक,—अमन्त्र ज्ञानेन्द्रिय,—आवाहः

जीवन का नाश, जीवित प्राणी का बंध—मर्त्य० ३।१३,

—आवाह्यः राजा का बंध,—आव (वि०) पातक,

नष्टर, प्राणपातक,—आवाहः जीवन को शक्ति,—आवाहः

देवताओं का मानस-पाठ करते हुए साँस रोकना,—ईश,

—ईश्वर प्रेमी, पति—अमर १७, भाषि० २।५७,

—ईश्वर—ईश्वरी पत्नी, शिवा, गृहस्वामिनी,—उत्त-

मन्त्र—उत्तरार्धः आत्मा द्वारा शरीर को छोड़ देना,

मृत्यु,—उत्तरार्धः जीवन,—हृच्छम् जीवन का लहरा,

प्राणों को बंध,—पातक (वि०) जीवन का नाश

करने वाला,—अन (वि०) पातक, जीवन-नाशक,—छेद

बंध, हत्या,—आवाहः 1 जामहत्या 2 मृत्यु,—अन्

1 पानी 2 शिबर,—बलिना प्राणों की भेंट,—बन्धः

फाँसी का दण्ड,—बलिः पति,—अमन्त्र प्राणों की भेंट,

किसी की जान बचाना,—द्वेष्ट, किसी की जान पर

आक्रमक,—घारः जीवित प्राणी,—घारणम् 1. भरण-

पोषण, जीवन का सहारा 2 जीवनशक्ति,—नाच-

1. प्रेमी, पति 2. बंध का विघोषण,—निषह हाँस

रोकना, स्वासावरोध,—पतिः 1. प्रेमी, पति 2. आत्मा,

—परिचयः जान जोशिय में झलना,—परिग्रह जीवन-

धारण करना, जीवन या अस्तित्व रक्षना,—प्रब (वि०)

जीवन देने वाला, जीवन बचाने वाला,—प्रयाणम्

प्राणों का चला जाना मृत्यु,—प्रियः प्राणों के समान

प्यारा प्रेमी, पति,—अन्न (वि०) वायुशरी,—अ-

स्वम् (पु०) समुद्र,—मृत् (पु०) प्राणवायी जन्तु

—अनंतत प्राणमृता हि वेद—रघु० २।४३,—मोक्ष-

कम् 1 प्राणों का चला जाना, मृत्यु 2 आत्महत्या,

—बन्धा जीवन का सहारा, भरण-पोषण, जीविका

—विषपात वाप्राणयावा भवन्तीम्—मा० १—वीरिः

(स्त्री०) जीवन का श्रोत,—अरम्भ 1 मृत् 2 नपना,

—रोग 1. स्वासावरोध 2 जीवन को लहरा,

—विनाशः,—विचयः जीवन की हानि मृत्यु,—विद्योः

शरीर से आत्मा का विच्छेद, मृत्यु,—व्ययः प्राणों का

उत्सर्ग, संघयः सास का रोकना,—संघयः,—सकटम्

—सहिः जीवन को लहरा, जीवन को अर्थ, जीवण

लहरा,—सच्छम् (पु०) शरीर,—सार (वि०) जीवन

ही जिसका बल है, सामर्थ्य में युक्त, बलवान्, बलिष्ठ

—गिरिचर इव नम प्राणसार (प्राणम्) विनति

स० २।४,—हर (वि०) 1. प्राणपातक, जीवन का बंध-

हृत्प करने वाला, घातक—पुरुष मन् प्राचहरो मन्-
ध्वत्ति, गीत० ७ २. फांसी, —हृत्क (वि०) घातक
(कम्) भयकर विभ ।
प्राचक [प्राच + क + क] १. जीवित प्राची, बीजधारी
जन्तु २. जीवान ।
प्राचनः [प्र + अन् + च] १. वानु, हवा २. शीर्ष स्थान
३. प्राणधारियों का स्वामी ।
प्राचनः [प्र + अन् + च्च] मला, —कम् १. स्वासप्रवास,
सास लेना २. जीवन, जीवित रहना ।
प्राचस्तः [प्र + अन् + श, अन्तादेव] बाँस, हवा ।
प्राचन्ती [प्राचन् + क्रीप्] १. मूल २. सुवचना
३. हिककी ।
प्राचाम्य (वि०) (स्त्री० - स्त्री) [प्र + अन् + चिप् +
भ्यत्] उपचित, योग्य, उपयुक्त ।
प्राचित (वि०) [प्र + अन् + च्त्] जीवित, बीजधारी ।
प्राचिन् (वि०) [प्राच + इति] १. सति मेने नाम्ना, जीने
वाला, जीवित (पु०) जीवित या जीवधारी प्राची,
जीवित जन्तु यथा—प्राचिन प्राचकत्. - ङ० १।१.वेध०
५ २. मनुष्य । सम० अङ्गम् किसी जन्तु का अणु,
—अणुम् प्राणीवर्ग, —सूत्रम् (मूर्तों की लम्बाई, मेढ़ों
की लम्बाई) तीतर बटेरे बादि जन्तुओं को लडा कर
जडा लेलना, —पीडा जन्तुओं के प्रति करता, —हिंसा
जीवन को सति, जीवित जन्तुओं को कष्ट देना, हिंसा
जुता, बूट ।
प्राचीत्यम् [प्राची + ध्यञ्] श्लघ ।
प्रातर (अन्व०) [प्र + अत् + अरन्] १. तबके, पौ फटने
पर, प्रभात काल से २. कल तबके, अनेके दिन सुबह,
कल प्रात काल । सम० -अह्नः दिन का प्रारम्भिक
काल, दोपहर पहले, आकः प्रातःकालीन भोजन,
कलेवा—अन्वथा प्रातराशाय कुर्वाण त्वाभल वयम्
भट्टि० ८।१८, —आशिन (पु०) जिसने कलेवा कर
लिया है, या प्रात काल का भोजन कर लिया है,
—कर्मन् (नपु०) —कर्मन्—कृत्तम् (प्रात कर्म
—बादि) प्रात कालीन कर्म, —कालः (प्रात काल)
प्रात का समय, —वेधः पारण जिसका कर्तव्य किसी
राजा या अन्य महपुत्र को उपयुक्त मान द्वारा प्रात
काल जमाना है, —त्रिकर्मा (प्रातत्रिकर्मा) यथा नदी,
—विषम् दोपहर से पहले, —प्रहृः दिन का पहला पहर
—शौक्त (पु०) कौवा, —शौक्तम् प्रात काल का
भोजन, कलेवा, —सध्या (प्रात सध्या) १ प्रात
काल की सध्या या भजन, —समयः (प्रात समय)
सवेरे का समय, प्रमानकाल, —सकः—सकन् (प्रात
सव —बादि) सोमयाव द्वारा प्रात कालीन तर्पण,
—स्नानम् (प्रात स्नानम्) सवेरे ही नहाना, —होचः
(प्रातहोच) प्रात काल का बह ।

प्रातस्तन (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [प्रातर् + टप्, तुट्]
प्रात काल से संबद्ध, सुबह का ।
प्रातस्तारम् (अन्व०) [प्रातर् + तरप् + आम्] सुबह
बहुत सवेरे—प्रातस्तप ज्वाभ्य प्रयुद्ध प्रथमम् रविम्
-भट्टि० ४।१४ ।
प्रातस्त्य (वि०) [प्रातर् + त्यक्] सुबह का, प्रभात
कालीन ।
प्राति (स्त्री०) [प्र + अन् + इन्] १. मृते और तर्जनी
के बीच का स्थान २. भरता ।
प्रातिका [प्र + अन् + वृत् + टाप्, इत्तम्] जवा का
पीया ।
प्रातिकूलिक (वि०) (स्वा० स्त्री) [प्रातिकूल + ठक्]
विपक्ष, विरोधी, प्रतिकूल रहने वाला ।
प्रातिकूल्यम् [प्रातिकूल + ध्यञ्] प्रतिकूलता, विरोध,
घनुता, अननुकूलता, अयमौघुता ।
प्रातिक्रमोप (वि०) (स्त्री० स्त्री) [प्रतिजन + क्रञ्]
घनु का मुकाबला करने के लिए उपयुक्त ।
प्रातिक्रम्य [प्रतिज्ञा + अन्] विचारार्थीन विषय ।
प्रातिदिवसिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [प्रतिदिवस् + ठक्]
प्रतिदिन होने वाला ।
प्रातिपक्ष (वि०) (स्त्री० - स्त्री) [प्रतिपक्ष + अण्]
१ विपक्ष, प्रतिकूल २. घनुतापूर्ण, यत्रयन्वयी ।
प्रातिपक्ष्यम् [प्रतिपक्ष + ध्यञ्] घनुता, विरोधिता ।
प्रातिपथ (वि०) (स्त्री० स्त्री) [प्रतिपदा + अण्]
१ उपक्रम करने वाला २. प्रतिपदा के दिन उत्पन्न,
प्रतिपदा से संबद्ध ।
प्रातिपथिकः [प्रतिपदा + ठञ्] अग्नि, —कम् नाम शब्द
का परिपक्व रूप, विभक्ति विज्ञ के जहने से पूर्व
सजा शब्द—अर्कवदयानुरप्रत्यय प्रातिपथिकम्—पा०
१।२।४५ ।
प्रातिपथीयिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [प्रतिपुक्ष + ठक्]
पौर्ण्येय भद्राणि या पराक्रम से संबद्ध ।
प्रातिभ (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [प्रतिभा + अण्] प्रतिभा
या दिव्यता से संबध रखने वाला, अन्न प्रतिभा या
विवाद कल्पना । जमानत देने के लिए (प्रतिभू के रूप
में) खडा होना ।
प्रातिभाष्यम् [प्रतिभू + ध्यञ्] जमानत या प्रतिभूति
होना, जामिनपना, किसी कर्जदार को (कचहरी में)
उपस्थित करने का उत्तरदायित्व होना (स्वीकृत बहु
विधवासपात्र हैं तथा कर्जे का शपथ बापिल कर देना) ।
प्रातिभासिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [प्रतिभास + ठक्]
१ जो केवल दिखाई सी दे पर वस्तुत ही उसका
अभाव ३ वास्तविक २ दिखाई सी देने वाली ।
प्रातिलोमिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [प्रतिलोम + ठक्]
लाम के विपक्ष, विरोधी, घनुतापूर्ण, अर्थात्कर ।

प्रतिलोभम् [प्रतिकोप + ध्वञ्] 1 उलटापन, व्युत्क्रान्त या प्रतिकूल क्रम—मनु० १०।१३ 2 शत्रुता, विरोध, शत्रु जैसी भावना ।

प्रतिवेशिक, प्रतिवेशक, प्रतिवेशक. [प्रतिवेश + ठक्, प्रतिवेश + अन् + कन्, प्रतिवेश + ध्वञ् + कन्] पड़ोसी ।

प्रतिवेश्य. [प्रतिवेश + ध्वञ्] 1 सामान्यतः पड़ोसी 2 बराबर के घर में रहने वाला पड़ोसी (निरतर-गृहवासी—कुल्लू०) ।

प्रतिशास्त्रम् [प्रतिशास्त्र भव—ञ्य] व्याकरण का एक ग्रन्थ जिसमें स्वरमिथि तथा अन्य वर्णपरिवर्तनों के नियमों का उल्लेख है जो कि वेद की किमी भी शाखा में पाये जाते हैं तथा जिसमें स्वरपाठ समेत उच्चारण को पद्धति बतलाई गई है (प्रतिशास्त्र चार है—एक तो ऋग्वेद की शाकल शाखा का दो यजुर्वेद की दोषी शाखाओं के लिए, तथा एक अथर्ववेद का) ।

प्रतिशिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिस्व + ठक्] विविष्ट, अगामान्य, अपना निजी ।

प्रतिहन्त्रम् [प्रतिहन् + अन्] बदला, प्रतिशोध ।

प्रतिहार, प्रतिहारक, प्रतिहारिक [प्रतिहार + अन्, प्रतिहार + कन्, प्रतिहार + ठक्] जादूगर, ऐन्द्र-जादिक ।

प्रतीतिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतीति + ठक्] मान-सिद्ध, केवल मन में विद्यमान, कल्पनिक ।

प्रतीप [प्रतीप + अन्] शत्रुता का शत्रु ।

प्रतीपिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतीप + ठक्] 1 उलटा विरोधी, विपरीत ।

प्रत्यक्षिक [प्रत्यक्ष + ठक्] प्रत्यक्ष का एक राजकमार ।

प्रत्यधिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रत्यय + ठक्] 1 भरोसे का, विश्वासपात्र 2 किसी ऋणी की विश्वासघातना के हेतु प्रमादित देने के लिए (प्रतिभू के रूप में) लडा होना ।

प्रत्यहिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रत्यह + ठक्] प्रतिदिन होने वाला, नियम, प्रतिदिन ।

प्रत्यधिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रत्यय + ठक्] 1 प्रार-भिक 2 पूर्व जन्म का, पूर्वकाल का पहली बार होने वाला ।

प्रत्यक्षम् [प्रत्यक्ष + ध्वञ्] प्रथम होना, पहला उदाहरण, प्राथमिकता ।

प्रत्यक्षिणम् [प्रत्यक्षिण + ध्वञ्] किसी व्यक्ति या पदार्थ के चारों ओर घासे से चूने कर दामे को जाना, और प्रदक्षिणा किये जाने वाले पदार्थ की मूर्धन्य प्राणी दाईं ओर रचना ।

प्रभुम् (अभ्य०) [प्र + अद् + डभि] विचार्य देने के साथ स्पष्टतः, प्रकटरूप से, दृष्टि में (प्रायः भू, कृ और

वस् के साथ प्रयोग,—प्रायः व्याकृ इव वित्त पुर परेण—भा० ८, १२, कृ, भू और वसन् के अन्तर्गत भी देखिए) । सन्—कारणम् (प्राध्वक्त्वात्) प्रकटीकरण, दृश्यमान करना,—भाष्य (प्रादुर्भावे) 1 अस्तित्व में आना, उपज होना—क्यु प्रादुर्भावात्—काव्य० १० 2 प्रकट या दृश्यमान होना, प्रकटीकरण, एखन 3 मुनने के योग्य होना 4 पृथ्वी पर देवता का प्रगट होना ।

प्राध्वक्त्वात् [प्रादुस् + वल्] प्रकटीकरण ।

प्रादेशक [प्र + दिष् + धञ्, उपसर्गस्य दीर्घ] 1 अंगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान 2 स्थान, जगह, प्रदेश ।

प्रादेशकम् [प्र + भा + दिष् + ल्यट्] अंत, दान ।

प्रादेशिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रादेश + ठक्] 1 पूर्व दृष्टतः वाला 2 सीमित, स्थानीय 3 बंधार्थ,—कः एक जिले का स्वामी ।

प्रादेशिनी [प्रादेश + इति + डीप्] तर्जनी अंगूठी ।

प्राशोध (वि०) (स्त्री०—की), प्राशोधिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्राशोध + अन्] प्राशोध + ध्वञ्] सम्पा-कालीन, सन्धा से संबद्ध ।

प्राधानिकम् [प्रधान संधान, तत्साधनमस्य—प्रधान + ठक्] नाशकारक सत्त्व, कोई भी यज्ञोपकरण ।

प्राधानिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रधान + ठक्] 1 अत्यन्त अष्ट या प्रमुख, सर्वोपरि, अत्यन्त मुख्य 2 प्रधान से संबद्ध या उससे उत्पन्न ।

प्राधान्यम् [प्रधान + ध्वञ्] 1 प्रमुखता, सर्वोपरिता, प्रभुत्व, उदग्रता 2 प्रावृत्त्य, सर्वोच्चता 3 मुख्य या प्रधान कारण (प्राधान्येन, प्राधान्यात्, प्राधान्यतः 'मुख्य रूप से' 'विशेष रूप से' तथा 'प्रधान रूप से' भि०—१०।१९) ।

प्राधौत (वि०) [प्र + अधि + इ + क्त] भली-भाति पडा लिका, (बाह्यण की भाति) अत्यन्त शिष्टि ।

प्राध्व [प्राध्व] [प्रगतोऽपानम्—प्रा० सं०] 1 दूर का, दूरदर्शी, दूर 2 झुका हुआ, रुचि रखता हुआ 3 कला हुआ, बधा हुआ 4 अनुकूल,—ध्वः गायी,—अध्वम् (अध्व०) 1 अनुकूलता के साथ, रक्षिपूर्वक, समनु-रूपता के साथ, उपयुक्तता से युक्त—संधानवे मे भुजमूर्ध्वबाहु सन्धेनर प्राध्वयित प्रयुञ्जते—रघु० १३।४३ 2 टेंपेन से ।

प्राप्त [प्रकृष्ट अन्त—प्रा० सं०] 1 किनारा, हाथिया, शालर, मगरी, छोर—प्राप्तसतीर्षदर्भा—भा० ४।७ 2 (श्रेष्ठ व अश्लि आदि का) किनारा—भा० ४।२, श्रेष्ठ०, नयम० 3 हृद, सीमा 4 अन्तिम किनारा, सीमा,—यौवनप्राप्तः पच० ४ 5 बिन्दु, नोक ।

सम्—भा (वि०) प्राप्त ही रहने वाला,—सुषुम् नगर के बाहर का, नगराचल, किले के निकट होने वाला

उपनगर,—विरस (वि०) अन्त में रसहीन,—शून्य (वि०) दे० 'प्रारम्भम्',—स्व (वि०) जो सीमा पर रहता है ।

प्राप्तम् [प्रकृष्टम् अन्तर शब्धान यत्र—प्रा० व०]
1 खड़ा और सुनसान मार्ग, जनशून्य या बोरान सड़क 2 छायाहीन सड़क, निर्जन भूलच्छ 3 जगल, उजाड़ 4 वृक्ष को कीटार । सम०—शून्य लकी सुनसान सड़क (जिस पर वृक्ष या छाया न हो) ।

प्राप्य (वि०) [स्त्री०—पिका] [प्र+आप्+प्ठुल्]
1 ले जाने वाला, पहुँचाने वाला 2. प्राप्त कराने वाला, साधनी से युक्त कराने वाला 3. स्थापित करने वाला, वैध बनाने वाला ।

प्राप्यम् [प्र+आप्+स्युट्] 1 पहुँचना, बढ़ जाना 2 प्राप्त करना, अधिकार, अर्वापि 3 ले जाना, पहुँचाना, ले जाना 4 सामग्री से युक्त करता ।

प्रापिक [प्र+आ+पण्+किकन्] सीदावर, व्यापारी—प्राहपादिक प्रापिकावबन्धम्—वि० ४११ ।

प्राप्त (पू० क० कृ०) [प्र+आप्+क्त] 1 हासिल, अर्वाप्त, उपलब्ध, अर्जित 2 पहुँचा हुआ, निष्पन्न 3 घटित, मिला हुआ 4 (सर्घं) उठाया हुआ, घस, सहन किया हुआ 5 पहुँचा हुआ, आया हुआ, उपस्थित 6 पूरा किया हुआ 7. उचित, सही 8 नियम के अनुसार । सम०—अनुक्त (वि०) जाने के लिए अनुमति, बिदा होने के लिए जिसने अनुमति प्राप्त कर ली है,—अर्थ (वि०) सफल (पं०) लब्ध पदार्थ,—अवसर (वि०) जिसे मौका या अवसर मिल चुका है,—उद्यम (वि०) जो उन्नत हो गया है, या जिसने उन्नति अथवा उन्नत पद प्राप्त कर लिया है,—कारिन् (वि०) सही कार्य करने वाला,—काल (वि०)

1. समवानुक्त, यथाशुक्त, उपरुक्त दे० 'अप्राप्त काल, विवाह के योग्य 3 नियत, भाग्य में लिखा, (सु०) उचित समय, उपयुक्त या अनुकूल क्षण,—व्यस्य (वि०) पौरो तत्त्वों में समाविष्ट अर्थात् मूल, तु० 'पचाल',—प्रसव (वि०) जिसने बच्चे को जन्म दे दिया है,—पुत्रि (वि०) मिलान प्राप्त किया हुआ, प्रकाश युक्त,—भार बोझा ढोले वाला पशु,—अनारथ (वि०) जिसका मनोरथ पूरा हो गया है,—यौवन (वि०) तरुण, वयस्क, जवान,—व्य (वि०) 1 सुन्दर, मनोहर 2 बुद्धिमान्, विद्वान् 3 उपयुक्त, समुचित, सुयोग्य,—व्यवहार (वि०) व्यवस्था, बालिग जो कानून की दृष्टि से अपने कार्यों को सम्भालने का अधिकारी हो, (वि०) अवयस्क) श्रो (वि०) जिसकी उन्नति किसी और के द्वारा हुई हो ।

प्राप्ति (स्त्री०) [प्र+आप्+क्तिन्] 1 प्राप्त करना, अधिकार, उपलब्धि, अर्वापि, लाभ—द्वय, ० यथा ०

सुख^० आदि 2 पहुँचना, प्राप्त करना 3 पहुँच, आगमन 4 देखना, मिलना 5 परास, पहुँच 6 अनुमान, अटकल 7 हिंसा, अज्ञ, बेर 8 भाव्य, किम्बत 9 उद्यम, पैदावार 10 किसी पदार्थ को प्राप्त करने की शक्ति (आठ सिद्धियों में से एक) 11 सप, समुच्चय, सहति 12 किसी योजना को सफल समाप्ति, सुखयोग । सम० आशा किसी चीज को प्राप्त करने की आशा (नाटकीय कथावस्तु के विकास का एक भाग)—उपादापायसङ्ग्राम्या प्राप्त्यासा प्राप्ति-सम्भवा—सा० द० ९ ।

प्राप्यम् [प्रवल+घञ्] 1 प्रभुता, सर्वोच्चता, बोल-बाला 2 शक्ति, बल, ताकत ।

प्राधा (वा) तिक् [प्राधा (वा) ल+ठक्] मृगो का व्यापार करने वाला ।

प्रबोध (वि) क [प्र+आ+बुध्+धिष्+प्ठुल्, प्रबोध+ठञ्] 1 तदका, प्रभत 2 पाग्य जिसका कर्तव्य प्रात काल उपयुक्त भजन गाकर अपने आश्रयदाता राजा को जताना है ।

प्राभञ्जन्म् [प्रभजन+ञ्] स्वानिजलप ।

प्राभञ्जनि [प्रभञ्जन+ठञ्] 1 इन्द्रमान् का विशेषण 2 भीम का विशेषण ।

प्राभवम् [प्रभु+अण] सर्वोच्चता, सर्वोपरिता, प्रभुता ।

प्राभवत्यम् [प्रभवत्+घञ्] सर्वोपरिता, अधिकार, सत्ता, शक्ति मनु० ८१२२ ।

प्रभाकर [प्रभाकर+अण] प्रभाकर का अनुयायी^० मीमांसा के आचार्य प्रभाकर के मत (प्रभाकर) का अनुयायी ।

प्राभातिक (वि०) (स्त्री० कौ०) [प्रमाग+ठञ्] प्रात-काल संबंधी, प्रातकालीन ।

प्राभूतम्, प्राभूतकम् [प्र+आ+भू+क्त, प्राभूत+कृन्] 1 उपहार, भेंट, किसी राजा या देवता को भेंट, नजराना 2 रिशत ।

प्रामाणिक (वि०) (स्त्री० कौ०) [प्रमाण+ठञ्] 1 प्रमाण द्वारा सिद्ध, प्रमाण पर आधारित या आश्रित 2 शास्त्रसिद्ध 3 अधिकृत, विश्वसनीय 4 प्रमाण संबंधी, कौ० जो प्रमाण को मानता है 2 जो वैवायिकों के प्रमाणों का जताना है, ताकि 3 किसी व्यवसाय का प्रधान ।

प्रामाण्यम् [प्रमाण+घञ्] 1 प्रमाण होना या प्रमाण पर आश्रित होना 2 विश्वसनीयता, प्रामाणिकता 3 प्रमाण, साक्ष्य, अधिकार ।

प्रामाणिक (वि०) [प्रमाद+ठञ्] असावधानतावश, गलत, दोषयुक्त, अशुद्ध इति प्रामाणिक प्रयोग या पाठ आदि ।

प्राभाष्यम् [प्रमाद+घञ्] 1 भुटि, बोध, गलती, अशुद्धि, 2 पागलपन, उन्मत्त 3 नया, मादकता ।

प्राय. [प्र+अ+घञ्] 1 अणमन, विद्यायोगी, जीवन से प्रयाण 2 आभरण अलंकरण, कृत रचना, किसी इष्टनिधि के लिए खाना पीना छाड़ कर चरना देना, (प्राय 'आस' 'उपवेश' आदि शब्दों के साथ, दे० नी० प्रायोग्येशन 3 बड़े से बड़ा भाग, अधिकांश अवस्था 4. अधिकता, बहुतायत, प्रचुरता 5 जीवन की एक दशा, विष्टे० (समास के अन्त में अण बन् 'प्राय' का अनुवाद निम्नांकित होता है (क) अधिकार में, बहुधा, अधिकतर, लगभग, तक्रोबन, -स्तनप्राथी गिरने वाले, मूलप्रायः लगभग मरा हुआ, मरने से जरा कम, तक्रोबन मरा हुआ या (ख) से युक्त, समृद्ध, भरा हुआ, आदर्शिक, प्रदुर शब्दप्राय शरीरम् उत्तर १, वालोप्रायो देश पच० ३ कमलानंदप्राया वृत्तान्तिला उत्तर० ३१२४, सुगन्ध से भरा हुआ या (ग) के लयान, मिलन-सुकुता - वर्षशतप्राय दिनम्, अदन्-प्राय वचनम् आदि। मम० उपवचनम्, उपवेश उपवेशानम्, उपवेशानिका, जिना सायि पीमे धरना देना और इस प्रकार मरने की तैयारी करना, आभरण अलंकरण मया प्रायोग्येशन कृत विधि पच० ६, प्रायोग्येशनमतिनृत्तितभुव शर्ग० ११६ प्रायार-वचनदश कृतमतिनृत्तितभुव -वेणो० ३१९, उपेते (वि०) जिना सायि रहकर मायु की बात जाहने वाला, उपविष्ट (वि०) आभरण अलंकरण करने वाला, ह्यंत्वम् सामान्य घटतातन्त्र ।

प्रायणम् [प्र+अ+ल्यट्] 1 प्रवेग, आरम्भ, शुरु 2 जीवनपथ 3 तीक्ष्णक मृग्यु मन्० १३३:३ 4 शरण लेना ।

प्रायणीय (वि०) [प्र+अ+अनीवर] गन्धवान्मक, आरम्भिक, दोशात्मक, -स्य सामंशिक का प्रथम दिन ।

प्रायणस (अर्थ०) [प्राय+शस्] बहुधा, अधिकतर, अधिकांश में, सर्वथा—आशास्त्रम् कुमुमसदृश प्रारशां हा ज्ञानाना सद्य पाणि प्रणयिहृदय विप्रयोगे रुग्दि मेघ० १० ।

प्रायश्चित्तम्, **प्रायश्चित्ति** (स्त्री०) [प्रायस्य पापस्य-चित्त विनाशेन चरमात् ब० स०, नि० मुट्] 1 परिशुद्धि पापनिष्कृति, क्षतिपूर्ति पाप से निम्नतर जाने के लिए धार्मिक साधना मातृ पापस्य भरत प्रायश्चित्तमिवाकरात् पृ० १२१९ (प्राया नाम तय प्राक्त चित्त निश्चय उच्छेदे, तर्पणनिश्चयसंयोगात् प्रायश्चित्तमिनीयते हेमादि) 2 सताप, मुषार ।

प्रायश्चित्तम्, (वि०) [प्रायश्चित्त+इति] जो पापों का परिशुद्धि करे ।

प्रायश्च (अर्थ०) [प्र+अ+असुन्] 1 अधिकतर, बहुधा, साधारणतः, अधिकांशतः, प्रायः प्रत्ययमाधने स्वयमेवमुत्साधर कु० ६१२०, प्रायो भूयास्त्यजति प्रचलितविभक्त स्वामिन सेवमाना मुद्रा० ४१२१,

प्रायो गच्छति यत्र भाभ्यरहितस्तमैव यास्त्यापय भृत्० २१९३ 2 सर्वथा, अधिकतर, लगभग, कदाचित् तत्र प्राय प्रसादादि प्राय प्राप्यानि जीवितम् महा० ।

प्रायश्चित्त, **प्रायश्चित्त** (वि०) (स्त्री० स्त्री) [प्रायाण +ठक्, प्रयाणा+ठक्] याथा के लिए आक्षेपक या उपयुक्त ।

प्रायश्चित्त (वि०) (स्त्री० स्त्री) [प्राय+ठक्] प्रचलित, सामान्य ।

प्रायश्चित्तम् (पु०) [प्रायश्चित्ते-प्रायश्च+हेच्+गिति] धोखा ।

प्रायेण (अर्थ०) [करण०] 1 अधिकतर, साधारण नियम के अनुसार प्रायेणै रमणविह्वेषज्ञानाना विनादा मेघ०, प्रायेण सत्यपि हिताभेदे विचौ हि श्रयासि लम्बुमसुभानि विनात्तरायै कि० ५४९, कु० ३१२८, श्रुतु० ६१२३ ।

प्रायोगिक (वि०) (स्त्री०-रफ्) [प्रयोग+ठक्] 1 प्रयुक्त 2 प्रयुग्मयान ।

प्रायश्च (भू० क० कु०) [प्र+आ+रम्+क्त] आरम्भ किया गया शुरु किया गया, -ञ्चम् 1. जो शुरु किया गया है, अथवासाय 2 भाव, नियति ।

प्रायश्चि (स्त्री०) [प्र+आ+रम्+किलन्] 1. आरम्भ शुरु 2 लडा जिनसे हाथी बाधा जाय, हाथी की बाधने के लिए रखी ।

प्रायश्च [प्र+आ+रम्+घञ् म्] आरम्भ, शुरु -प्रायश्चिपि त्रियामा तरुणयौनि निज नीलिमान वनेवु मा० ५६, रघु० १०१९, १८१४९. 2. अथवा-माय, काम साहसिक कार्य, आरम्भ सवृष्टारम्भ प्रायश्चसदायव-रघु० १११५, फलानुमेया प्रायश्चा मन्काग प्राक्तना इव-२० ।

प्रायश्चाम् [प्र+आ+रम्+ल्यट्, मुम्] आरम्भ करना, शुरु करना ।

प्रायश्च [प्रायश्च+ण] अकुर, अनुवा, कितलय, दे० प्ररोह ।

प्रायश्च [प्रकृष्टमृगम्-प्रा० म०] मुख्य शृण ।

प्रायश्च (वि०) (स्त्री०-विष्ठा) [प्र+अर्थ+ष्णल्] पुष्टने बाना, मागने वाला, प्रायश्च करने वाला, निवेदन करने वाला, अनुरोध करने वाला, इच्छा करने वाला, कायना करने वाला, -क. आभेदक, प्रायश्च ।

प्रायश्चम्, ना [प्र+अर्थ+ह्यट्] 1 याचना, अनुरोध, प्रायश्चाना, निवेदन ये बर्णने घनपतिपुर प्रायश्चानु ल-भाज-भृत्० ३४७ 2 कामना, इच्छा—लम्बाव-काणा मे प्रायश्चाना, ना—न दुःखापेयु सतु प्रायश्चाना—श० १, उत्सर्पिणी सतु महा प्रायश्चाना—श० ७, ७१२

3. नाशिका, आवेदन, विपत्ती, प्रथम-प्रार्थना - कदा-
चित्कालप्रार्थनायाम् तुरेभ्य कथयेत्—श्ल० २ । सम०
अङ्ग प्रार्थना अस्वीकार करना, तिष्ठि दृष्ट्या
की पूर्ति— प्रार्थनासिद्धिसिद्धि—रघु० १।४२ ।
प्रार्थनीय (शु० कृ०) [प्र+अर्थ+अनीयर्] 1 प्रार्थना
या आवेदन करने जाने के उपयुक्त 2 अभिलषणीय,
बाह्यने के योग्य,— वृत्त तृतीय या द्वारपर यत् ।
प्रार्थित (शु० क० कृ०) [प्र+अर्थ+क्त] 1 याचना
किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ, प्रोत्सा हुआ, आवेदन
किया गया 2 अभिलषित, इच्छित 3 आकांक्ष, शत्रु
के द्वारा विरोध किया गया—रघु० १।५६ 4 शरा
गया, चोट की गई (शे० प्र पूर्वक अर्थ) ।
प्रार्थिन् (वि०) [प्र+अर्थ+गिन्] 1 मागने वाला,
प्रार्थना करने वाला 2 कामना करने वाला, इच्छा
करने वाला—मन्द कविधाम प्रार्थी गमिष्याम्युपहास-
ताम्—रघु० १।३ ।
प्रालम्ब (वि०) [प्र+आ+लम्ब+अच्] 1 झुलना
लटकना हुआ—प्रालम्बद्विगुणितचामरग्रहास वृषी०
२।२८,—कि० 1. मोलियों का बना आभूषण 2 स्त्री
का लम्ब,—अन्व छाती तक लटकने वाला कठोर
—प्रालम्बसूक्ष्म वषावकाश निनाय सावीकुनचाम्बवश
—रघु० ६।१४, मुक्ताप्रालम्बे का० ५२ ।
प्रालम्बकम् [प्रालम्ब+कम्] दे० 'प्रालम्ब' ।
प्रालम्बिका [प्रालम्ब+कन्+टाप्, इत्थच्] सोने का हार ।
प्रालेपम् [प्र+ली+अच्—प्रलेप+अण्] लिप, कुहर,
ओस, गुणार—ईशाचलप्रालेपज्वलेच्छया गीत० १
प्रालेपोत्तमचलेश्वरपीश्वराणि (अभिषेने)—पि०
४।६४, मेघ० ३१ । सम० अग्नि, शैल हिमा-
च्छादिन पहाड़, हिमालय मय० ५७ अशु, कार,
रश्मि 1 चन्द्रमा 2 कणुर, लेख शिला ।
प्रालयः [प्र+अव+अट्+अच्] गी ।
प्रालयम् [प्र+आ+य्+अच्] प्रलय, तुरण, मुदाल ।
प्रालर [प्र+आ+य्+अच्] 1 आट, धरा 2 (हेम०
के मतानुसार) उन्मयेय वस्त्र 3 एक देव का नाम ।
प्रालरयम् [प्र+आ+य्+अच्] आठनी, बाहर विद्यो
धन कोटि उन्मयेय वस्त्र, चागा, लबादा या बुट्टा ।
प्रालरणीयम् [प्र+आ+य्+अनीयर्] उन्मयीय वस्त्र ।
प्रालर [प्र+आ+य्+अच्] 1 उन्मयेय वस्त्र, चागा,
लबादा 2 एक जिले का नाम । सम० कोटि दीपत,
पनम ।
प्रालरक [प्रालर+क] उन्मयीय वस्त्र, चागा या
लबादा यदीच्छति लम्बदगार्वात् प्राशान्क मुग्ग-
नीहि युक्ताय मन्थ० १।००, ताम्बिकुमुमवायिन
प्राशान्काजप्रेयिन् मूच्छ० १ ।
प्रालरतिक [प्रालर+तिक] उन्मयेय वस्त्र का निमात्र ।

प्रालस (वि०) (स्त्री० -) स्त्री । प्रवास+अच् । यात्रा
संबधी, यात्रा में करने या विवे जाने के योग्य ।
प्रालातिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [प्रालस+ठक्] यात्रा
के लिए उपयुक्त ।
प्रालीष्यम् [प्रवीण+ष्यच्] चतुराई, कुशलता, प्रवीणता,
दक्षता—अविष्कृत कथा प्रालीष्य वामने उत्तर० ४,
१।६८ ।
प्राल् (शु० क० कृ०) [प्र+आ+य्+फल्] विरा हुआ,
पेरा हुआ, उका हुआ, परदे वाला,—अ, लम्ब घुवट,
बुरका चादर (स्त्री० भी) ।
प्राल्ति (स्त्री०) [प्र+आ+य्+फिल्] 1 घेरा, चाद,
आड 2 आध्यात्मिक अर्थकार ।
प्राल्तिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [प्राल्ति+ठक्] शीघ्र,
अप्रधान, क हूँ ।
प्राल् (स्त्री०) [प्र+आ+य्+फिल्+क्विप्] वर्षा ऋतु,
श्रीमती हवा, वर्षा काल (आषाढ और आषाढ काल
का यज्ञोत्त) —कलापिना प्राल्ति पथ्य न्ययम् रघु०
६।५१, १५।२७, प्राल्त् प्राल्तिनि वृषीनि शठयो शार
ज्ञो प्रालिनम्—मूच्छ० ५।१८, मेघ० ११५ । सम०
अव्यय (प्राल्त्तयम्) वर्षा ऋतु का अन्न,—काल
(प्राल्त्काल) वर्षा ऋतु ।
प्राल्, का [प्र+आ+य्+क्, प्राल्+टाप्] वर्षा
ऋतु, वर्षा काल ।
प्राल्तिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [प्राल्+ठक्] वर्षा
ऋतु में उपजन,—क मार ।
प्राल्तिज (वि०) [प्राल्ति जायते अच्+ट, अलुक्
म०] वर्षा ऋतु में उपजन ।
प्राल्शेभ्य (वि०) [प्राल्+शेभ्य] वर्षा ऋतु में उपजन
वर्षा ऋतु में सबहु मा कि लबादा जलपिपुमिह प्राव-
शेभ्येन वाग्नेन भामि० १।३०, ४।६, रघु०
१।३६ २ वर्षा ऋतु में इव (ऋण आदि) अच्
1 कदम्ब वृक्ष 2 कुटज वृक्ष, अन्व बहुमन्थकना,
बाहुन्व, प्राल्शुर् ।
प्राल्शु, [प्राल्+शु] 1 एक प्रकार का कदम्ब का वृक्ष
2 कुटज वृक्ष, अन्व बहुमन्थक, शोलाय ।
प्राल्शेभ्यम् (नपु०) वधिया ऊनी चादर ।
प्राल्शत (वि०) (स्त्री० स्त्री) [प्राल्शत+अच्] प्रवेग
करने पर जा दिया जाय या किया जाय (किंती क्ष
ने या रघुमन्थ पर) ।
प्राल्शयम्, प्राशान्कम् [प्राल्शयम्, अण्, पक्षे उत्तरपद-
वर्द्धय] शानिक मांश या मन्वासी का जीवक ।
प्राश [प्र+अच्+अण्] 1 माना, स्वाद चखना,
निर्वाह करना, पुष्ट होना मद्० ११।१६३, वम
आदि 2 आहार, भाजन ।
प्राशानम् [प्र+अच्+रघट्] माना, पुष्ट होना, स्वाद

चमना 2 चिलना, स्वाद चखाना—मनु० २।२९, 3. आहार, भाजन ।
प्रासनीयम् [प्र + अय् + अनौयर्] आहार, भोजन ।
प्रास्तव्यम् [प्रस्त + व्यञ्] श्रेष्ठता, स्तुत्यता, प्रश-
 स्तोता ।
प्रासित (मू० क० ह०) [प्र + अय् + क्त] लाया हुआ,
 चखा हुआ, उपभुक्त,—तन्म मन पुत्रमात्रो के पितरों को
 उदकदान और पिण्डदान, पितरों के और्ध्वदेहिक
 सम्कार—प्राशितम् पिततर्पणम् मनु० ३।७६ ।
प्रास्तिक [प्रस्त + ठक्] परीक्षक 2 मध्यम्य, विवा-
 चक, म्हावापीत जहो प्रयोगभ्यन्तर प्रास्तिक
 —मन्त्रवि० १ ।
प्रास [प्र + अय् + घञ्] 1 फेंकना, डालना, (नीर)
 छारना 2 बर्छी, भाला, फलकदार अस्त्र (जिममें
 फल लगाया हुआ हो) । मनु० ६।३२, कि० १६।६ ।
प्रासक [प्राय् + क्त] 1 बर्छी, भाला, या फल लगा हुआ
 अस्त्र 2 पत्ता ।
प्रासय [प मञ्च् घञ्, उपसर्ग्य दीर्घ] बँलों के
 लिए मूआ ।
प्रास्तिक (वि०) (स्त्री० क्री) [प्रसय + ठक्]
 1 घनिष्ठ संबंध में उत्पन्न 2 सयुक्त, सहज 3 प्रसगा-
 नुकूल, आकर्षिक आगामी, यदाकदा होने वाला
 —प्राप्तिक्रीना विषय कथानाम्—उत्तर० २।६
 संबधानुकूल कृत्यनुकूल, अवसरानुकूल 6 उपा-
 न्दान विषयक ।
प्रासह्य [प्रासय + यत्] हल में जूने वाला बेल ।
प्रास्ता [प्रसोदतिन अस्मिन् प्रसद् + घञ्, उपसर्ग्य
 दीर्घ] 1 महल, भवन, गणतन्त्रवी बिलास भवन
 निम्न नुटोवनि प्रासादे निम्ना०, मेघ० ६४
 2 गंभवन 3 मन्दिर का देवालय । सम०—अङ्गनम्
 किनो महल या मन्दिर का आगन, आरौह्यम् महल
 में जाना या प्रविष्ट होना, कुक्कुट, पाल्म कन्दार,
 —तलम् महल की समलन चपटो छत्र, —पूष्ठ महल
 की बाटो पर बना छत्रा,—प्रतिष्ठा मन्दिर की
 प्रतिष्ठा, या अस्मिन्—प्राथिम् (वि०) महल
 में सोने वाला, शृङ्गम् किसी महल या मन्दिर का
 कलम या मोतार, कर्पूर ।
प्रास्तिक [प्रस् + ठक्] भाला रखने वाला, बर्छी-पारो ।
प्रास्तिक (वि०) (स्त्री०—का) [प्रस्तुति + ठक्] प्रसव
 से संबंध रखने वाला, बच्चे के जन्म से संबंध ।
प्रास्त (मू० क० ह०) [प्र + अस् + षत्] 1 फेंका गया,
 (बर्छी भाला आदि) चलाया गया, डाला गया, छोड़ा
 गया 2 विवाहित किया गया, बाहर निकाला गया ।
प्रास्ताधिक (वि०) (स्त्री०—क्री) [प्रस्ताव + ठक्] प्रस्ता-
 वना का काम देने वाला, प्रस्तावना या परिचय,

भूमिका विषयक—जैसा कि 'प्रास्ताधिक विचार' में
 (प्राथिनी-विचार) का प्रथम या प्रारम्भिक अर्थ)
 प्रास्ताधिक बचनम् भूमिका में दिया गया बिबरण
 2 श्रुति के अनुकूल, अवसरानुसार, सामयिक 3 सगत,
 प्रसगानुकूल, (प्रस्तुत विषय से) संबंध—अवस्ता-
 विकी महर्ष्या कथा—मा० २ ।
प्रास्तुत्यम् [प्रस्तुत + व्यञ्] विचार विमर्शका विषय
 होना ।
प्रास्ताधिक (वि०) (स्त्री०—क्री) [प्रस्तान + ठक्]
 प्रयाण से संबंध या विशा के अवसर के उपयुक्त—तपु०
 २।७० 2 विदा के अनुकूल ।
प्रास्तिक (वि०) (स्त्री०—क्री) [प्रस्व + ठक्] 1 तोल
 में एक प्रस्य 2 एक प्रस्य में मोल लिया हुआ
 3 प्रस्यभर तोल का 4 एक प्रस्य बीज से बोया गया ।
प्रास्तव्य (वि०) (स्त्री०—क्री) [प्रस्तवय + अय्] झरने
 से उत्पन्न झील से निकला हुआ ।
प्राह [प्रकर्षेण 'आह' शब्दो यत्र प्रा० ब०] नृपकला
 की शिक्षा ।
प्राह [प्रथम व तदह्वय, कर्म० त०, टप्, अह्लादेश,
 पत्यम्] दोषहर से पहले का समय ।
प्राह्लतन (वि०) (स्त्री०—क्री) [प्राह्ल + टप्, तुट्, नि०
 एत्वम्] मध्याह्न से पूर्व होने वाला, वा मध्याह्नपूर्व
 संबंधी ।
प्राह्लतराम्—साम् (अय्य०) [प्राह्ल + तरप् (तमप्),
 याम्, नि० एत्वम्] प्रात काल, बहुत सबेरे ।
प्रिय (वि०) [प्री + क्] (म० अ०—प्रेयस्, उ० अ०
 —प्रेष्ठ) 1 प्रिय, प्यारा, पसन्द आया हुआ, रमणीय,
 अनुकूल अर्थप्रदानम् कु० १।२६, २४० ३।२९
 2 मुहाबना, शक्तिर—ताम्रचतुसे प्रियमप्यमित्याम्
 —२४० १।४६ ३ चाहने वाला, अनुकूल, भक्त
 —प्रियमवचना श्र० ४।९, प्रियारामा वदेहो—उत्तर०
 २, व. 1 प्रेमी, पति—स्त्रीगामाद्य प्रययवचन
 विधयो हि प्रियेव—मेघ० २८ 2 एक प्रकार का
 मृग,—या प्रिया (पत्नी), पत्नी, स्वामिनी—प्रिये
 चक्षुशो प्रिये रम्यशोले प्रिये—गीत० १० 2. स्त्री
 3 छोटी इलायची 4 समाचार, सन्तुलन 5 लीची
 हुई मदिरा 6. एक प्रकार का बसेली (का फूल),
 —श्व 1 श्रेय 2 कृपा, सेवा अनुग्रह—प्रियमाचारित
 लते त्वया मे—बिक्रम०—१।१७, प्रतिप्रयार्थविधासो
 —मेघ० २२, प्रिय मे प्रिय मे, 'पेरी अच्छी सेवा की
 गई—मय० १।२३, पच० १।३६५, १९३ 3 सुखद
 समाचार—२४० १।२।१, प्रियनिवेदिनाराम् त० ४
 4 आनन्द, सुख,—श्व (अय्य०) बडे सुगहनं या
 शक्तिर इय से । सम०—अतिथि (वि०) आतिथेयं,
 अतिथिसत्कार करने वाला,—महाव. किनो प्रिय बस्तु

का अभाव या हानि, —अप्रिय (वि०) सुख और दुःख, हर्षिकर और अहर्षिकर (भावार्थ) (धम्) सेवा और अनिष्ट, अनुग्रह और क्षति, —अम्बु आम का वृक्ष, अहं (वि०) 1 प्रेम या कृपा का अधिकारी उत्तर ० ३ 2. मिलनसार (हं) विष्णु का नाम, —अमु, (वि०) जीवन का प्रेमी, —आशय (वि०) अच्छा समाचार सुनाने वाला, —आशयम् हर्षिकर समाचार, —आशय्य (वि०) मिलनसार, सुखद, हर्षिकर, —अस्ति (स्त्री०) —अस्तिम् कृपा से युक्त वा में शीघ्रमें यन्तुता, यामलसी के वचन, —उपपत्ति (स्त्री०) आनन्दप्रद वा सुखद वटना, उपभोग: किसी प्रेमी या प्रेयमी के साथ रगरेडियाँ —रघु० १२।२२, —एकिा (वि०) 1 भला चाहने वाला, सेवा करने का इच्छुक 2 मित्रता में युक्त, स्नेही, —कर (वि०) गृह देने वाला वा देना करने वाला, —कर्मन् (वि०) अनुग्रह पूर्वक वा मित्रता में एक व्यवहार करने वाला, —कलत्र अपनी पत्नी से प्रेम का सेवाका पति, अपनी भार्या को अत्यन्त चाहने वाला, काम (वि०) मित्रवत् व्यवहार करने वाला, सेवा करने का उच्छ्रय, —कार, —कारिन् (वि०) अनुग्रह करने वाला, भला करने वाला, —कृत् (पु०) भला करने वाला, मित्र, तित्तोपी, —अत वेदपात्र वा प्यारा अर्पित, —अति अपनी रत्नों को अत्यन्त प्यार करने वाला पति, —बोधक एक प्रकार का रतिवन्ध, मीथुन का आसन विशेष, —दसो (वि०) देवने में सुन्दर, —दशोन (वि०) देवने में सुहावना, सुन्दर दशाने वाला, सुन्दर, मनोहर, सुवसूत-अहो प्रियवचन कुमार —उत्तर० ५, रघु० १।४०, शं० ३।११, (त्र) 1 नामा 2 एक प्रकार का छुहारे का वृक्ष 3 गन्धर्वों के राजा का नाम—रघु० ५।५३, —दशित् (वि०) राजा अशोक का विशेषण, —देवम (वि०) वृक्षा खेलने का शौकीन, —धन्व मित्र वा विशेषण, —पुत्र एक प्रकार का पक्षी, —प्रसाधनम् पति को प्रमत्त करना, —प्राय (वि०) अत्यन्त कृपालु वा मुसीबत—उत्तर० २।२, (धम्) भाषा में वाक्पटुता, —प्रायम् (नपु०) बहुत ही राबक बनना, जैसा कि एक प्रेमी का अपनी प्रेयमी के प्रति कथन, —प्रेम्णु (वि०) अपने अभीष्ट पदार्थको प्राप्त करने की इच्छा करने वाला, भाव. प्रेम की भावना उत्तर० ६।३१, —भावणम् कृपा से युक्त वा र्णिकर शब्द, —आशित् (वि०) मधुरभाषी, —वचन (वि०) अलकारों का प्रेमी—शं० ६।२, —मधु (वि०) मद्य का शौकीन, (धु) यन्त्राम रा विशेषण, —रघु (वि०) वराह, धृ, वीर, —वचन् (वि०) राबक तथा कृपालु शब्द बोलने वाला (धम्) कृपा से युक्त प्रत्याह्वय तथा मधुर शब्द —विद्यम ० २।१२, बवन्द प्रिय मित्र, —वर्षी प्रिय नामक पौधा, —वस्तु (नपु०) प्यारे चीज बाध (वि०) कृपा से युक्त शब्द बोलने वाला, रगरेडियाँ करने वाला, (स्त्री०) कृपालु और राबक पद,

—बाधिका एक प्रकार का वाद्ययन्त्र, —बाधित् (वि०) कृपा से युक्त तथा मधुर शब्द बोलने वाला, बाधमूत्र —मुलभा पुरुषा गजन् मत्त प्रियवादिन - रामा०, —अवत् (पु०) कृपालु का विशेषण, —सखत् प्रिय व्यक्ति का नाम, —सख प्रिय मित्र, (स्त्री०—स्त्री) सहेला, अन्तरंग सहेला (किसी स्त्री की), —सत्य (वि०) 1 सत्य का प्रेमी 2 सत्य होने पर भी प्रिय, संदेश 1 प्रिय समाचार, प्रेमी का समाचार 2 'चपक' नाम का वृक्ष, —समानम् अपने प्रिय व्यक्ति (वा पदार्थ) से मिलन, सहचरी प्यारी पत्नी, सुहृत् (पु०) प्रिय वा प्राणप्रिय मित्र, हादिक मित्र, स्वल्प (वि०) सोने का प्रेमी रघु० १२।८१ । प्रियवद (वि०) [प्रिय वदति प्रिय + वद् + लृच्, मूम्] मधुरभाषी, प्रिय बोलने वाला, प्यारी बातें करने वाला, मिलनसार कु० ५।२८, रघु० ३।६८, इ 1 एक प्रकार का पक्षी 2 एक गन्धर्व का नाम । प्रियक [प्रिय + कृन्] 1 एक प्रकार का हरिण—शं० ६।२२ 2 नीप नामक वृक्ष 3 प्रियगु नाम की लता 4 मधु-मन्थी : एक प्रकार का पक्षी 6 आकारान, केसर कु० असन वृक्ष का फूल वि० ८।२८ । प्रियकूर, प्रियकूरण, प्रियकूरण (वि०) [प्रिय + कृ + लृच्, कृन् अण् वा, मूम्] 1 अनुग्रह दर्शाने वाला, कृपा करने वाला, स्नेह करने वाला, —प्रियकुरी में प्रिय इत्यन्तन्त् रघु० १५।४८ 2 हर्षिकर 3 मिलनसार । प्रियकम् [प्रिय + गम् + कृ] एक लता का नाम (क. ने है कि यह लता मित्रियों के स्वयं मंत्र में स्थित उठती है) प्रियकम्बामाङ्गप्रकृतिर्निव सा० ३।९ (निम्नांकित श्लोक में उन सभी कविमयों को एकत्रित कर दिया गया है जहाँ विशिष्ट परिस्थितियों में वृक्षों के फूलों का जाना बन्दोबाज गया है पादाघातदशोक-म्लिककुरवकी वीक्षणार्थिनङ्गाभ्या, श्लेषा स्वयंत् प्रियङ्गवकर्मनि बहुल सीधुषणहृदयमेकान् । मन्वारी नम वाक्पयान पदमुदुगन्ताम्बुका वक्त्रवातात्पु वृता गोताप्रधमदिकर्मनि च पुरा नर्तनान् कचिकार १) 2 वरी पीपल, मू (नपु०) । प्राकारान, केसर । प्रियतम (वि०) [प्रिय + तमम्] अत्यन्त प्रिय, सबसे अधिक प्यारा, —म प्रेमी, पति मित्रावल प्रियतम इव प्रादनातादकार—मध० ३।१००, —आ पत्नी, स्वामिनी, बल्लभा, प्रियमा । प्रियतर (वि०) [प्रिय + तर्म्] अधिक प्रिय, अपेक्षाकृत प्यारा । प्रियता, —स्वम् [प्रिय + तम्, प्रिय + त्व] 1 प्रिय होने, प्यार 2 प्रेम, स्नेह । प्रियतमविष्णु, प्रियतमवृक्ष (वि०) [प्रिय + भू + विष्णव भूकम् वा, मूम्] स्नेह का पात्र अत्यन्त प्रिय ।

प्रियालः [प्रिय + अल् + अल्] पियाल नामक मूल, दे० 'पियाल',—सा अगूरी की बेल ।

श्री १ (कथा० उ०) प्रीणाति, प्रीणीते प्रीत् १. प्रसन्न करना, मूष करना, सन्तुष्ट करना, आनन्दित करना—प्रीणाति य मुचरिते पितर स पुत्र—अर्थ० २।६८, सन्तु पितृन् पिप्रियुराणामु—भट्टि ३।२८, ५।१०४, ७।६४ २ प्रसन्न होना, मूष होना—कश्चिन्मनस्ते प्रीणाति वनवासे—महा० ३. कृपामय बतवि करना, अनुग्रह दर्शना ४ प्रसन्न या हँसमुख रहना—प्रे० (प्रीणयति—ते) प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना ।

॥ (दिवा० आ०) (प्रीयते—प्री) किया का कर्मबाध्य का रूप सन्तुष्ट या प्रसन्न होना, तृप्त होना—प्रकाममप्रोवत यज्जना प्रिय - सि० १।१७, रघु० १।५।३०, १।५।३० याज्ञ० १।२४५ २ स्नेह करना, प्रेम करना ३ सहमति या मञ्जुरी देना, सन्तुष्ट होना ।

श्रीम (वि०) [प्री + क्त, तल्य न] १ प्रसन्न, सन्तुष्ट, तृप्त २ पुराना, प्राचीन ३ पहला ।

श्रीमम् [श्रीम् + म्पृट्] १ प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना २ जो प्रसन्न या सन्तुष्ट करता है ।

श्रील (मू० क० कू०) [प्री + क्त, नर्वाभाव] प्रसन्न, मूष, प्रदूष्ट, आनन्दित—प्रीतामि ते पुत्र वर वृषोष्य—रघु० २।६३, १।८१, १।२।५४ २ आनन्दयत्, आह्लासित, हर्षपूर्ण—मेघ० ४ ३ सन्तुष्ट ' प्रिय, प्यारा ५ कृपाल, स्नेही । मघ०—आत्मन्,—चित्—मयस् (वि०) हृदय में मूष, मन में आनन्दित ।

श्रीति. (स्त्रो०) [प्री + क्तिञ्] १ प्रसन्नता, आह्लाद, नन्दी, मूषी, आनन्द, हर्ष, तृप्ति—भुवनेलोकनश्रीति कु० २।४५, ६।२१ रघु० २।५१ मेघ० ६२ २ अनुग्रह, कृपालुता ३ प्रेम, स्नेह, आदर मेघ० ४।११६, रघु० १।५७, १।२।५४ ४ पसन्द, चाह, मूषी, अग्रस—दूतं मूषया ५ मित्रता, सौहार्द ६ कामदेव की एक पत्नी का नाम, रति की सौत (साली सजाना रत्ना श्रीतिरिति श्रुता) । सम०—कर (वि०) प्रेम या अनुग्रह उत्पन्न करने वाला, अधिकार. —कम् (नपु०) मैत्री या प्रेम का बन्धन, कृपापूर्ण कार्य.—कं नाटक में विद्रुपक या मसकर, बल (वि०) स्नेह के कारण दिया हुआ (सम्) स्त्री को दी हुई संपत्ति, विशेषकर विवाह के अवसर पर साम या दसभुट द्वारा, —बालम्—बाघ प्रेमीपहार, मित्रता के नाते दिया गया उपहार—नदवसरोऽय प्रीतिदायस्य मा० ४, रघु० १।५।६८, —कम् प्रेम या सौहार्द के कारण दिया हुआ वन—याचम् प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति, या वस्तु,—पूर्वम्, —पूर्वम् (अण०) कृपा के साथ, स्नेहपूर्णक, —मयस् (वि०) मन में मूष, प्रसन्न, आनन्दित,—बुष् (वि०) प्रिय, स्नेही, प्यारा - कि० १।१०,

—बलम् (नपु०),—बलम् मैत्री से भरी हुई या कृपापूर्ण भावी, —बलम् (वि०) प्रेम या हृदं को बढ़ाने वाला (कः) विष्णु का विशेषण,—बाघ मित्रबत् विचारविमर्श,—बिवाहः प्रीति या प्रेम के कारण होने वाला विवाह, प्रेम-सन्ध, (जो केवल प्रेम पर आधारित हो),—बाधम् पितरों के सम्मानार्थ किया जाने वाला और्ध्वदैहिक संस्कार या श्राद्ध ।

श्रु (म्भा० आ०—प्रकृते) १ जाना, चलना-फिरना २ कृदना, उछलना ।

श्रु० १ (म्भा० पर०)—प्रोचति, प्रुष्ट १ ज्ञानना, सा पी जाना २ भ्रम करना १ (कथा० पर०—पुष्पाति)

१. आर्द्र या तर होना २ उबेलना, छिड़कना ३ मरना । श्रुष्ट (मू० क० कू०) [श्रु + क्त] जलाया हुआ, आया-पीया हुआ, जला कर रास किया गया ।

श्रुष्क [श्रु + क्त] १ जर्षा श्रुतु २ सूयं ३ पानी की बूद—सिद्धा० ।

श्रुष्क [श्रु - ईक्ष् + श्रुल] दर्शक, तमाशाबीन, देखने वाला, दृश्य—इष्टा ।

श्रुष्कम् [श्रु + ईक्ष् + श्रुट्] १ देखना, दृष्टि डालना २ दृश्य, दृष्टि, दर्शन ३ श्रुषि - बकित हरिणी श्रुष्का—मेघ० ८२ ४ तमाशा, सार्वजनिक दृश्य, दिखावा । सम०—कृष्ण मास का डेला ।

श्रुष्कम् [श्रुष्क + क्त] दिखावा, तमाशा ।

श्रुष्किका [श्रु + ईक्ष् + श्रुल, इवम्] तमाशा देखने की शीकीन स्त्री ।

श्रुष्कीय (वि०) [श्रु + ईक्ष् + अनोचर] १ दर्शनीय, विचारणीय, निगाह डालने के योग्य २ देखने के लिए उपयुक्त, मनोहर, सुन्दर—मेघ० २, रघु० १।५।९ ३ विचारणीय, ध्यान देने के योग्य ।

श्रुष्कीयकम् [श्रुष्कीय + क्त] दिखावा, दृश्य, तमाशा—शि० १०।८२ ।

श्रुष्का [श्रु + ईक्ष् + अक्ष + टाप्] दृष्टि डालना, देखना, तमाशा देखना २ अवलोकन, दृश्य, दृष्टि, दर्शन ३ तमाशाबीन होना ४ कोई सार्वजनिक तमाशा, दिखावा, दृष्टि - विशेषकर थियेटर का तमाशा, नाटकीय दर्शने, अभिनय (बुद्धि, समझ ७ विमर्श, विचारणा, पर्यालोचन ८ मूख की शाखा । सम०—अ (आ) शर, रम्, मूष्म, स्वामन् । थियेटर, नाट्यशाळा, रंगशाळा २ मन्त्रणा-भवन सभाज श्रोता दर्शकों को भीक्षु, सभा ।

श्रुष्कात् (वि०) [श्रुष्का + मत्] विचारशील बुद्धिमान् श्रुष्कान् (पुंशब्ध) ।

श्रुष्कित (मू० क० कू०) [श्रु + ईक्ष् + क्त] देखा हुआ विचार किया हुआ, नजर डाला हुआ, निगाह में से निकाला हुआ, अवलोकन किया हुआ,—तम्, रूप, छवि, मलक ।

प्रेक्ष्—अन् [प्र + इक्ष् + पञ्] झूलना, पेंग (झोटा) लेना ।

प्रेक्ष्य (वि०) [प्र + इक्ष् + ल्यट्] धूमने वाला, इधर उधर फिरने वाला, प्रविष्ट होने वाला—भट्टि० १।१०६, —अन् १ झूलना २ झूला ३ नायक, सुनवार आदि पाषो से क्षुब्ध एकांकी नाटक—सा० ४० डारा वी गई परिभाषा—नर्भावमर्षीरहित प्रेक्ष्य हीननायकम्, अनुसंधारिका कुसुमविष्कम्भ प्रवेशकम्, नियुक्तकोटयत् सर्ववृत्तिसमाश्रितम् । ५४०, उदा० 'वालिवध' ।

प्रेक्ष्य [प्र + इक्ष् + अञ् + टाप्] १ झूला २ नृत्य ३ पर्यटन, धूमना, यात्रा करना ४ एक प्रकार का भवन या घर ५ बोरे का विशेष कवच ।

प्रेक्ष्य (भू० क० कृ०) [प्र + इक्ष् + क्त] झूला हुआ, झिझका हुआ, प्रदीक्षित या डाबाडोल ।

प्रेक्ष्य (पू०) उभ०—प्रेक्ष्योक्तयति—ते) झूलना, झिलना डाबाडोल होना ।

प्रेक्ष्योक्तम् [प्रिञ्चोत् + ल्यट्] १ झूलना, झिलना, इधर से उधर प्रदीक्षित होता २ झूला, पेंग ।

प्रेत (भू० क० कृ०) [प्र + इ + क्त] इस तसारा से गया हुआ, —मृत—स्वजनायु किलातिसलत दहति प्रेतमिति प्रवक्षते—रघु० ८।२६, —त १ दिवगत आत्मा, और्ध्वदेहिक प्रिया क्रिय जाने से पूर्व जीव की अवस्था २ जूत, पिशाच—मय० १०।४, मनु० १२।७१ । स०—अधिच, यमका विशेषण, —अक्षम् पितरो को अर्पित बाहार, —अधिच (नपु०) मृतक पुरुष की तद्बो, 'धारिम् शिव का विशेषण, —ईश, —ईश्वर, यम का विशेषण, —उद्देश पितरो के निमित्त अर्पण, —कर्मन् (नपु०)—कर्मन्, —कृत्या और्ध्वदेहिक या अन्वेषित स्कार, —गृहम् कब्रिस्तान, शवस्थान, —धारिम् (पु०) शिव का विशेषण, बाहू मूर्दे का जलाना, शवदाह, —धूमः चिता से उठता हुआ धुआँ, —यज्ञः पितृपक्ष, आदिबन का कृष्णपक्ष जब कि पितरो के सम्मान में श्यादाजिया अर्पित की जाती हैं, पु० 'पितृपक्ष' । —यज्ञः अर्घी के जाने समय बचाया जाने वाला डोल—पति, यम का विशेषण, —पुरुष यमराज को नमरो, —वाचः मृत्यु, मूक्ति (स्त्री०) कब्रिस्तान, शवस्थान, —शरीरम् विदूषित जीव का शरीर, मृत शरीर, —शुद्धि (स्त्री०), —शौचम् किसी सबधी को मृत्यु हो जाने पर शुद्धि पातक शुद्धि, —श्राद्धम् किसी मृत सबधी के निमित्त बरसी से पहले २ क्रिये जाने वाली और्ध्वदेहिक (मासिक) क्रियाएँ, हार १ मृत शरीर को (समाधानमूमि तक) ले जाने वाला २ निकट सबधी ।

प्रेतिक [प्रकषेणं हति यमन यस्य प्रा० व० प्र + इति + क्त,] मृत, प्रेत ।

प्रेत्य (अन्व०) [प्र + इ + क्त्वा + ल्यप्] (इस तसारा से) बिदा होकर मरने के पक्षत्व दूसरे लोक में—न च तप्रेत्य नो इह भग० १०।२८, मनु० २।१, २।६, स०—आतिः (स्त्री०) परलोक की स्थिति, —आद्य, मरने के पश्चात् आत्मा की अवस्था ।

प्रेष्य (पु०) [प्र + इ + ष्वभिन्, तुकाराम] १ बापु २ इन्द्र का विशेषण ।

प्रेष्य [प्र + अण् + सन् + अ + टाप्] १ प्राप्त करने को इच्छा २ इच्छा ।

प्रेष्यु (वि०) [प्र + अण् + मन् + उ] १ प्राप्त करने का इच्छुक, कामना करता हुआ, अभिलाषी, प्रबल इच्छुक २ उद्देश्य रखने वाला ।

प्रेष्य (पु०, मनु०) [प्रियम् भाव इमन्निष् प्रादेश एकाच्छब्दान् न टिलोप - सारा०] प्रेम, स्नेह—नारदप्रेम-हेमनिकचोपलना नवीनि—गीत० ११, मेघ० ४४ २ अनुग्रह, कृपा, कृपापूर्ण या मृदु व्यवहार ३ आनन्द-प्रमोद, मनोविनोद ४ हर्ष, सुखी, उल्लास । स०—अण्य (नपु०) हर्षोष्, स्नेहायु, —अद्रि, (स्त्री०) स्नेहवर्धन, उन्कट प्रेम, घर (वि०) स्नेहशाल, प्रिय, पालम् १ (हृत् के) अन् २ (श्रीम् गिरानेवानी) जीव, पारम् प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति या वस्तु, अथ अथयम् स्नेहवचन, प्रेम की कति ।

प्रेषिन् (वि०) (स्त्री०)—मी [प्रेमन् + इनि] प्रिय, स्नेह-शील ।
प्रेष्य (वि०) (स्त्री०)—श्री [अयमनयो अविनायन प्रिय प्रिय + ईयसुन्, प्रादेश 'प्रिय' की म० अ०] अधिक प्यारा, अपेक्षाकृत प्रिय या हृद्यकर (पु०) प्रेमी, पति (पु०, नपु०) चापलूसी, सो पत्नी, स्वामिनी ।
प्रेयोपय [अण्यनाया पेंव] अगुना, कृक पक्षी ।

प्रेरक (वि०) (स्त्री०—रिका) [प्र + ईर् + णिच् + ष्वल्] १ प्रेरित करने वाला, उर्ध्वक, उद्दीपक २ भेदने वाला, निदेशक ।

प्रेरणम्—भा [प्र + ईर् + णिच् + ल्यट्] १ प्रेरित करना, उर्ध्वकित करना, आगे बढ़ाना, उकसाना, भड़काना २ भाषित, आदेश ३ फेरना, डालना भवति विकल्प-प्रेरणा चूर्णमूर्ति—मेघ० ६८ / भेजना, प्रेषित करना ५ आदेश, निदेश ६ (ध्या० से) किसी आंग से कार्य कराने की क्रिया प्रेरणाधिक क्रिया ।

प्रेरित (भू० क० कृ०) [प्र + ईर् + णिच् + क्त] १ आगे बढ़ाया गया, उर्ध्वकित किया गया, उकसाया गया २ उर्ध्वकित, उद्दीपित, प्रेषित ३ भेजा गया, प्रेषित ४ स्थल किया गया, स दूत, एलची ।

प्रेष् (भ्या० उभ०) पेषान्—ते) जाना, चरना—फिरना ।

प्रेषः [प्र + इष् + घञ्] १ भेजना, प्रेषण करना २ डाल के रूप में भेजना, निदेश देना, भार या बोझ डालना, आणुक्त करना ।

मेवित (मू० क० कू०) [प्र + इत् + क्त] 1 (सवेधा देकर) भेजा हुआ 2 आदिष्ट, निर्दिष्ट 3. मुद्रा हुआ, स्थिर, निश्चित होकर, (गृष्टि) डाली हुई 4 निर्वासित ।

प्रेष्ठ (वि०) [अयमेधावतिषायेन प्रिय प्रिय + इष्टन्, उ० ष०] अत्यंत प्यारा, प्रियतम, ---कः प्रेमी, पति, प्या पत्नी, स्वामिनी ।

प्रेष्य (वि०) [प्र + इत् + ध्यत्] आदेश दिये जाने के पोष्य, भेजे जाने या प्रेषित किये जाने के पोष्य, प्य सेवक, भृत्य, दास, --- प्या सेविका, दासी ध्यम् 1 दूतमंडली को भेजना 2 सेवा । सम० अन्. सेवको का समुह, भाष. सेवक की शारिता, सेवा, बन्धन मालवि० ५।१२, षष्ः 1 सेवक की पत्नी 2 सेविका, दासी, - बघः सेवकवन्द, अनुषरवर्ग ।

प्रेहि [प्र पूर्वक द पानु, लोट्, मध्य० पु०, एक व०] । सम० कदा विशेष प्रकार की आचारविधि जिसमें बटाइयो का निषेध है, - कर्बवा एक विशेष अनुष्ठान जिसमें सब प्रकार की अपवित्रता रजित है, - द्वितीया एक अनुष्ठान विशेष जिसमें किसी और की उपस्थिति रजित है, - ब्राह्मिका एक अनुष्ठानविशेष जिसमें व्यापारियों को उपस्थिति निषिद्ध है (दे० प्र० २।१।७०) ।

प्रेष्य [प्रिय + अन्] कृपालु होना, अनुग्रह प्रा० ।
प्रेष [प्र + इत् + धञ्, वृद्धि] 1 भेजना, निर्देश देना 2 आदेश, समावेश, आमन्त्रण 3 दुःख, कष्ट 4 पागलपन, उन्माद 5 कुचलना, दबाना, मर्दन करना, भीचना ।

प्रेष्य [प्र + इत् + ध्यत्, वृद्धि] सेवक, भृत्य, दास, प्या दासी, सेविका, ध्यम् सेवा, दासता । सम० भाषः सेवक को क्षमता, सेवक की भाँति उपयोग करना, सेवा—कु० ६।५८ ।

प्रेषत (मू० क० कू०) [प्र + षत् + क्त] 1. कहा हुआ, बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ 2 नियत किया हुआ, निर्धारित किया हुआ ।

प्रेषणम् [प्र + उञ् + ल्युट्] 1 छिड़काव, पानी छिड़कना, -मनु० ५।११८, याज्ञ० १।१८४ 2 छीटे देकर अभिमनित करना 3. यज्ञ में पशु का बध, - भी छिड़कने या अभिमन्त्रण के लिए जल, पुष्पजल (ब० व०, कयी-कमी यह शब्द 'पवित्र जल से पूरित कलश' के लिए भी प्रयुक्त होता है, जिस अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होने वाला शब्द 'प्रेषणीया' है) ।

प्रेषणीयम् [प्र + उञ् + ङीयर्] पवित्रीकरण (प्रेषण) के लिए उपयुक्त जल ।

प्रेषित (मू० क० कू०) [प्र + उञ् + क्त] 1 जलमार्जन से पवित्र किया हुआ 2 यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ ।

प्रेष्य (वि०) [प्रा० सं०] अत्यन्त भीषण या भयानक ।
प्रेष्यीः (अव्य०) [प्रा० सं०] 1 बहुत ऊँचे स्वर से, चीर से 2 बहुत अधिकता से ।

प्रेष्युक्त (मू० क० कू०) [प्रा० सं०] उचित ऊँचा, उत्तम, उन्नत ।

प्रेष्यस्तनम् [प्र + उत् + ञ् + णिच् + ल्युट्] बध, हत्या ।

प्रेष्यस्तनम् [प्र + उञ् + ल्युट्] त्यागना, साला कर देना, छोड़ना ।

प्रेष्यस्त (मू० क० कू०) [प्र + उञ् + क्त] त्यागना हुआ, छोली किया हुआ, परित्यक्त, हटाया हुआ ।

प्रेष्यस्तम् [प्र + उञ् + ल्युट्] 1 छिटा देना, पीछे देना, छोल देना—ने० ५।३६ 2 अवशिष्ट पड़े हुए को चुन लेना ।

प्रेष्यीव (वि०) [प्र + उत् + वी + क्त] जो ऊपर उड़ गया हो, या उड़ गया हो ।

प्रेष, प्रेषि [प्र + इत् + क्त, क्तिन् वा, सम्प्रसारण] दे० प्रेष, प्रेषि ।

प्रेत (मू० क० कू०) [प्र + वे + क्त, सम्प्रसारणम्] 1 सिला हुआ, टाका लगाया हुआ, —कु० ७।४९ 2 नब्बा या सीधा फैलाया हुआ (विष्० श्लो०) 3 बधा हुआ, बौधा हुआ, कसा हुआ—महावी० ६।३३ 4 विद्ध किया हुआ, आर-पार किया हुआ—रघु० ९।७५ 5 पारित, आर-पार निकला हुआ—तर्ज्यप्रभोतान् अवर्हि (चन्द्रकिरणान्) विमयित करो सकलयति—काव्य० १० 6 जमाया हुआ, जडा हुआ—महावी० १।३५, —सम् वरुच, वृना हुआ कपडा । सम०—उत्साहनम् 1 छतरी 2 वस्त्र-भंडार, तव् ।

प्रेतकण्ड (वि०) [प्रकथं उक्तम्—प्रा० सं०] गर्दन ऊपर उठाये हुए या फैलाये हुए ।

प्रेतकण्डम् [प्र + उत् + क्त + क्त] कोलाहल, हल्ला-मुल्हा ।

प्रेतस्त (मू० क० कू०) [प्र + उत् + ल्यन् + क्त] सोया हुआ ।

प्रेतुञ्ज (वि०) [प्रा० सं०] बहुत ऊँचा या उन्नत ।

प्रेतुञ्जम् (वि०) [प्रा० सं०] पूरा सिला हुआ, फूला हुआ ।

प्रेतुञ्जम् [प्र + उत् + स् + णिच् + ल्युट्] छुटकारा करना, साफ कर देना, हटाना, निर्वासित करना ।

प्रेतुञ्जित (मू० क० कू०) [प्र + उत् + स् + णिच् + क्त] 1 हटाया गया, छुटकारा पाया हुआ, निष्कासित 2. कामे बढ़ाया गया, उक्तसाया 3 परित्यक्त ।

प्रेतुञ्जित् [प्र + उत् + षत् + धञ्] 1. अत्यन्तकृत, उत्कटता 2. बढ़ावा, उद्दीपन ।

प्रोत्साहकः [प्र + उत् + सह् + गिच् + क्त] उकसाने वाला, भडकाने वाला ।

प्रोत्साह्यम् [प्र + उत् + सह् + गिच् + क्त] उकसाना, उद्दीपन, भडकाना, प्रशोदन ।

प्रोष् [प्र + उत् + श् + क्त] 1 समान होना, जोड़ का होना, मुकाबला करना (सम्प्र० के साथ) पुरोधार्थम् न करचन—अटि० १४।८४, १५।४०, 2 योष्य होना, यषेत् होना, सख्य होना 3 भरा हुआ या पूरा होना ।

प्रोष [प्रोष् + ष] 1 विख्यात, सुविश्रुत 2 रक्सा हुआ, स्थिर किया हुआ 3 भ्रमण करना, यात्रा पर जाना, मार्ग चलना—वृक्षान्तमुद्रकान्त च प्रिय प्रोष-मनुवजेत्—नारा०, - च -भम् 1 घोड़े की नाक या नखुना—नी० १।६०, शि० ११।११, १२।७३ 2 सुखर की सूचन,—च 1. कृत्वा, नितम् 2 खुदाई 3 वस्त्र, पुरातन कपड़े 4 गर्भ, कतल ।

प्रोषिन् (पु०) [प्रोष् + इनि] घोड़ा ।

प्रोद्गुण्ड (भू० क० क्त०) [प्र + उद् + गुण् + क्त] 1 गुजना, प्रतिष्ठापित करना 2 कोलाहल करना ।

प्रोद्बोधयन्, -वा [प्र + उद् + बुध् + क्त] 1 ऐकान करना, घोषणा 2 ऊँचा शब्द करना ।

प्रोद्दीप्त (भू० क० क्त०) [प्र + उद् + दीप् + क्त] आग पर रक्सा हुआ, जलता हुआ, देवीपूजान—मत्त० ३।८८ ।

प्रोद्भिन्न (भू० क० क्त०) [प्र + उद् + भिद् + क्त] 1 अकुरित, अखुवा कृता हुआ 2. कूट कर निकाला हुआ ।

प्रोद्भूत (भू० क० क्त०) [प्र + उद् + भू + क्त] कृता हुआ, निकला हुआ ।

प्रोद्यत (भू० क० क्त०) [प्र + उद् + यञ् + क्त] 1 उठाया हुआ 2 सक्रिय, परिश्रमशील ।

प्रोद्वाहः [प्र + उद् + वह् + घञ्] विवाह ।

प्रोद्यत (भू० क० क्त०) [प्र + उद् + यञ् + क्त] 1 बहत ऊँचा या उन्नत 2 उभरा हुआ ।

प्रोद्यमानि (वि०) [प्र + उद् + लाप् + क्त] 1 रोग से मुक्त हो उठा हुआ, स्वास्थ्योन्मुख 2. सुगठित, हट्टाकृता ।

प्रोद्येक्यन् [प्र + उद् + ल्यिच् + क्त] खुरचना, चिह्न लगाना ।

प्रोषित (भू० क० क्त०) [प्र + षत् + क्त] परदेश में गया हुआ, विदेश में रहने वाला, घर से दूर, अनुपस्थित, परदेश में रहने वाला । सम०—भर्तृका वह स्त्री जिसका पति परदेश गया हो, भूपारकाभ्यान्तर्यत बाट नयिकाजो में से एक, सा०८० में दी गई परिभाषा—नानाकार्यबशाच्चस्या दूरदेशे गत पति, सा मनोयव-दुःखार्ता भवेत् प्रोषितमर्तुका—११९ ।

प्रो (प्रो) ष् [प्रकृष्ट ओष्ठो यस्य—प्रा० ब०, परकृष्ण, पक्षेवृद्धि] 1 बेल, बलीवर्द 2 तिपार्द, नीकी 3 एक प्रकार की मछली (ष्ठी—भी) । सम०—पक्ष-भाद्रप भास (हा) पूर्वनिग्रापदा और उत्तरभाद्रपदा नाम का पष्णीसर्वा व छम्बीसर्वा नक्षत्र ।

प्रो (प्रो) ह् (वि०) [प्र + उह् + घञ्, परकृष्ण, पक्षे वृद्धि] ताकिक, विवादी,—ह् 1 तर्क, उक्ति 2 हाथी का पैर 3 बधि, जोड़ ।

प्रो (प्रो) ङ् (वि०) [प्र + षह् + क्त, सम्प्रसारणम्, परकृष्ण, पक्षे वृद्धि] 1 पूरा बढ़ा हुआ, पूर्णविकसित परिपक्व, पका हुआ, पूरा बना हुआ, पूर्ण (जैसे कि चन्द्रमा)—प्रोद्गुण्ये कदम्बै—मेघ० २५, प्रोद्गतानीचि-पाद्, आदि—मा० ८।१, ९।२८ 2 वयस्क, बुढ़ा, बुढ़ --वनेते हि मन्थयप्रोद्गुण्यो निषीयस्य योवनयो—मा०८—शि० ११।३९ 3 बना, सघन चोर— प्रोद्-उत्त कुण्डलतयैव भद्रम्—मा० ७।३, शि० ४।६० 4 विद्याल, बलवान्, समर्थ 5 प्रपञ्च, उत्कट 6 भरोसा करने वाला, माहसी, बेचक 7 समझी,— हा हाहनी और बड़ी उन्न की स्त्री, अपने स्वामी के नामने भी निर्भीक और निर्लज्ज, कायस्त्रचनाओं में बलिष्ठ चार प्रकार की मुख्य शि.यो में से एक भेद— आयोडनाङ्ग-वेदबाला विद्याता तर्फी मता, यञ्चयञ्चाशता प्रोद्वा भवेद्बुद्धा तत् परम् । सम०—अङ्गना साहसी स्त्री, दे० ऊपर,—उक्ति (स्त्री) साहसयुक्त या दम्पूर्ण उक्ति,—प्रताप (वि०) बड़ा तेजस्वी, बलवान्,—बोधन (वि०) जवानी में बढ़ा हुआ, उल्लो जवानी का ।

प्रो (प्रो) ङि (स्त्री०) [प्र + वह् + क्त] 1 पुण्य वृद्धि या विकास, परिपक्वता, पूर्णता 2 वृद्धि, वधन 3 गौरव, गेवये, समुपनि, प्रताप—विष्णु० १।१५ 4 साहय, निर्भीकता 5 धनद, जहकार, आत्मविश्वास 6 उत्साह, चेष्टा, उद्योग । सम०—बाह् वाग्विदम्यता से युक्त गवौली बाणी 2 साहसपूर्ण उक्ति ।

प्रोष (वि०) [प्र + ओष् + अच्] क्षुत्, विह्वान्, कुशल । **पक्ष** [प्लच् + घञ्] 1. बटुका, गुजर का पेड़—पक्ष-प्ररोह इव शीतलान् विवेद—रघु० ८।९३, १३।७१ 2 सप्तर के सात द्वीपों में से एक 3. पाण्य द्वार या पिछवाड़े का दरवाजा, निष्ठा पुण्य द्वार । सम०—बाती,—समुद्रबाणका सरस्वती नदी का विशेषण,—दीर्घम्,—प्रक्षयम्,—राज् (पु०) वह स्थान जहाँ से सरस्वती निकलती है ।

पक्ष (वि०) [प्ल् + अच्] 1 तेरता हुआ, बहुता हुआ 2. कूदता हुआ, छलाय लगात हुआ, ब. 1 तेरता, बहुता 2 बाह, दरिया का बढ़ाव 3 कुलाय, छलाय 4. बंहा, धबधब, डोरी, छोटी नौका— नाशयेच्छ सन् पक्षान् पक्ष सलिलपूरवत्—पच० २।३८, सर्वं ज्ञान-

प्लवनेव बुजिन सतरिप्यसि भय० ४।३६, मनु० ४।१९४, १।११९, बेची० ३।२५ 5 मेंक 6 बन्दर 7 डलान, डलनी स्थान 8 गधु 9. मेड 10 नीच जाति का पुष्य, चाडाल 11 मछली पकडने का जाल 12 अजीर का वेड 13 कारण्डव पक्षी, एक प्रकार की बतख 14 पयोजना की दृष्टि से बड़ी हुई पाँच या अधिक पक्षितद्वी, कुलक 15 स्वर का दीर्घोच्चारण । सम०—ग 1 बन्दर—रघु० १।२।७ 2 मेंक 3 जलीय पक्षी, पनडब्बो पक्षी 4 विरोध का बख 5 मृग के सारथि का नाम (गा) कन्याराशि,—गति. मेंक ।

प्लवकः [प्लु + वाहु० + क्व] 1 मेंक 2 कुदने वाला व्यक्ति कलाबाज, रस्ते पर नाचने वाला मट 3 बड़ या पाकर का बूट 4 चाण्डाल, जति-बहिष्कृत 5 बन्दर ।

प्लवग [प्लव + गम् + मच्, द्वित्, टिलोप मुम्] 1 लंगूर, बन्दर 2 हरिण 3 बटवृक्ष, पाकर का बूट ।

प्लवङ्गम [प्लव + गम् + मच्, मुम्,] 1 बंदर—शि० १।२।५ 2 मेंक ।

प्लवन्म [प्लु + म्वृट्] 1 तैरना 2 स्नान करना, गीला लगाना मा० १।१९ 3 छलांग लगाना, कुदना 4 बड़ी भारी बाड़, प्रलय 5 डलान ।

प्लवाकाः [प्लु + अकृत् + टाप्] बहनई, बेड़ा ।
प्लविक (वि०) [प्लव + ठन्] नाव में बिठाकर ले जाने वाला, शिबेया ।

प्लासम् [प्लज + अच्] प्लज का फल ।

प्लावः [प्लु + पञ्च्] 1 बह निकलना 2 कुदना, छलांग लगाना 3 इठना भरना । प्लावे से बाहर निकल जाय 4 तरल पदार्थ को छानना (उसका मूल दूर करने के लिए) पाइ० १।१९० (दे० इस पर भिन्ना०) ।

प्लावन्म [प्लु + गिच् + ल्युट्] 1 स्नान, आचमन 2 बाहर निकल कर बहना, बाड़ जा जाना, जलमय हो जाना 3 बाड़ प्रलय ।

प्लावित (मू० क० कृ०) [प्लु + गिच् + क्त] 1 तैरना गया, बहनाया गया, जलधन्य किया गया 2 जलमय किया गया, बाड़ में डुबोया गया, जल से लजालज भरा गया 3 तर किया गया, गीला किया गया, छिड़का गया—शि० १।२।५, कि० १।१३६ 4 डका हुआ, भाष्कारित ।

प्लव् (म्ना० मा०—प्लवते) जाना, चलना-फिरना ।

प्लो (कृपा०—पर० प्लोनाति) जाना, चलना-फिरना ।

प्लोहन् (पू०) [प्लिह् + क्वमिन्, मि० दीर्घे] तिल्ली, तिल्ली का बड़ जाना (प्लिहन् भी) । सम०—उडरम्

तिल्ली का बड़ जाना,—उडरिन् बह पुष्य जो तिल्ली की बूझि से पीड़ित हो ।

प्लोहा (स्त्री०) तिल्ली ।

प्लु (म्ना० मा०—प्लवते, प्लुत) बहना, तैरना—कि

नामैतत् मञ्जुवत्याबुजि प्राणायाः प्लवन्ते इति—महाशी १,केसोत्तर गणवशात् प्लवन्ते—रघु० १।१।६०,प्लवन्ते

धर्मलघवो लोकेऽभसि यथा प्लवा - सुभा० 2 नाव में बैठ कर पार जाना 3 इधर उधर झुलना, घर-

घराना 4 कुदना, छलांग लगाना, फलांगना—भट्टि० ५।४८, १।४।२३, १।५।१६ 5 उठना, उड़ान भरना,

हुवा में मडराना 6 कुदकना 7 (स्वर का) दीर्घ होना, प्रेर०—प्लावयति—ते 1 तैराना, बहना

2 हुटाना, बहा ले जाना 3 स्नान करना 4 जलधन्य एक करना, प्रलय आना, बाड़ जाना, जल में डुबाना

बट बड़ कराना, बनि—, 1 बह निकलना 2 डकी हो जाना, परानुत् करना (आल०), अब—, कुदना,

छलांग लगाकर बाहर होना, उव्—, 1 बहना, तैरना 2 उछलना, फलांगना—मनु० ८।२३, ६३, कुदना,

उचकना—शि० १।२।२२, उच—, 1 बहना, तैरना 2 प्रहार करना, हमला करना, आक्रमण करना

3 अत्याचार करना, कष्ट देना, तंग करना, सताना निशाचरोपप्लुतभन्तुकाया (सपत्निकीनाम)—रघु०

१।५।६४, १।०।५, मनु० ४।१८८, धरि , 1 तैरना, बहना 2 स्नान करना, डुबकी लगाना 3 कुदना,

उछलना 4 जल प्रलय होना, जलधन्य होना, बाड़ जाना 5 डकना 6 हाथी हो जाना (आल०), वि—,

1 इधर उधर बहना, इधर उधर झाँझोल होना, पटबड़ होना 2 (समूह में) निरुद्देश्य संचरण करना,

नितरनितर होना—हि० ३।२ 3 (मन आदि का) अव्यवस्थित होना 4 बर्बाद होना, नष्ट हो जाना

5 अमफल होना, प्रेर०—1 बहना, तैरना 2 (अयोग्य व्यक्ति को) अव्यापन करना - मनु० १।१।१९९

3 अव्यवस्थित होना, बर्बादना, उडिन्न होना, सम्—

1. पट बड़ होना, इधर-उधर बहना 2 इच्छते बहना, (पानी की भाँति) मिलना—भय० २।४६ ।

प्लुत (मू० क० कृ०) [प्लु + क्त] 1. तैरना हुआ, बहना हुआ 2 जलमय हुआ, जल में डुबा हुआ, जल में बहा हुआ 3 कुदा हुआ, फलांगना हुआ 4. (स्वर) दीर्घोक्त,

प्रदीर्घ हुआ 5 डका हुआ (दे० प्लुट्), -सम् 1, कुद, उछल, उचक 2 कुद फाट, घोड़े का कदम विधोष ।

सम०—गतिः लरोगोप (स्त्री०) 1 उछल कुद कर चलना 2 सतपट दौटना, घोड़े की टपेटदार बाल ।

प्लुति. (स्त्री०) [प्लु + क्तित्] 1. बाड़, ऊपर से बहना, जलमय होना 2 उछल, कुद, उचक जैसा कि 'पडक-प्लुति' में 3 कुदकाद कर चलना, घोड़े की एक बाल

विशेष 4 म्वर की ध्वनि का लबा करना, प्रदीप्य करना ।
प्लु 1 (म्बा० दिवा० कथा० पर० प्लोपति, प्लुष्यति, लुष्यति, प्लुष्ट) जलाना, झुलसना, घकमकाना, गर्म मोहो से दायना ऋतु० ११२२, मट्टि० २०३४ ।
 ॥ (कथा० पर० प्लुष्यति) 1 छिन्नकना, गीसा करना 2 जेप करना 3 भरना ।
प्लुष्ट (भू० व० कृ०) [प्लु + क्त] झुलसाया गया, जलाया गया, दाया गया ।
प्लेम् (म्बा० जा० प्लेवते) सेवा करना, हाजरी देना, सेवा में उपस्थित रहना ।

प्लोषः [प्लु + घञ्] जलाना, अन्तर्दह होना (घोष भी) ।
प्लोषण (वि०) (स्त्री० षो) [प्लु + ष्यट्] जलाना, झुलसना, जल कर गल हो जाना—तातोपीक पुरा-रेस्तदबतु मदनप्लोषण लोचन व - मा० १, (पाठा नर), - षण् जलना, झुलसना (घोषण भी) ।
प्ला (अदा० पर० प्लानि, प्लात) खाना, निपल जाना ।
प्लाते (भू० क० कृ०) [प्ला + क्त] 1 खाया हुआ 2 भूना ।
प्लानम् [प्ला + ष्यट्] 1 खाना 2 भोजन ।

५

फक् (म्बा० पर० फक्कति, फक्कत) 1 धने—धने चलना-फिगना, फुर्ती में जाना, सरकना, धीरे-धीरे चलना 2 मलती करना, दुर्धनबहार करना 3 फूल उठना ।
फक्किका [फक् + क्तुल् + टाप्, इत्तम्] 1 एक अवस्था, सिद्ध करने के लिए पूर्वपक्ष, उक्ति या प्रतिज्ञा जिनकी बनाये रखना है फाँसभाषितभाष्यफक्किका विद्यमा कुच्छलनामकापिता—ने० २।१५२ पक्षपात, पूर्वोच्यन्ति सम्मति ।
फट् (अध्वा०) एक अनुकरणमूलक शब्द जिसे जानू मना-दिक के उच्चारण करने में रहस्यमय रीति से प्रयुक्त किया जाता है अस्वाद्य फट् ।
फट् [स्फुट् + अच्, पृषो०] 1 साँप का प्रसारित किया हुआ फया (फटा' भी इसी अर्थ में) । निविषेणापि सपेण कर्तव्या महती फटा (पाठान्तर—फया) विष भवतु मा भूदा फटाटोपो मम हूर पच० १।२०४ २ दति 3 धृत्, ठप, कितव ।
फटिग [फट् इति शब्दमिङ्गति फट् + इङ्ग + अच् टाप्] डीपूर, टिट्टी, टिट्टा, फतिग ।
फम् (म्बा० पर० फमति, फमित) 1 चलना-फिगना, इधर उधर घूमना,—स्फुट् + अच् केषुर्बहुधाहरिराससा भट्टि० १।७७ २ अनामान उत्पन्न करना, बिना किसी परिश्रमके पैदा करना (यह अर्थ कुछ के मतानुसार वैरमार्थक किया का है) ।
फण,—फा [फण् + अच्, स्थिया टाप्] किसी भी साँप का फलाया हुआ फण विप्रकृत प्रथम फण (फया) कुस्ते—ख० ६।३०, मणिभि फणस्यै रघु० १३। १२, कु० ६।६८, महति मुनयोपि शेष फणाफलक-

स्थिताम् भर्तुं २।३५। सम०—कर. साँप, धर 1 साँप 2 शिब का नाम भूत् (पु०)साँप, मणि-साँप के फण में पाई जाने वाली मणि, मन्थकम् साँप का कुडलीकृत शरीर करालकलमण्डलम् रघु० १२। १८, नाक्यामण्डलोद्विभंगिद्योतितविग्रहम्—१०।७ ।
फणिन् (पु०) [फण + णिन्] 1 फणचारी साँप, सामान्य साँप, मणं उद्विग्नो मन्थरल फाँस गुण्णासि परियन्तोदगारे भासि० १।१२.५८, फनी मयूरस्य तले निषीदति ऋतु० १।१३, रघु० १५।१७, कु० ३।-१ २ राहु का विशेषण 3 फतजाल का विशेषण, (फाणिनि के सूत्रो पर महाभाष्य के प्रचेता)— फणि-भाषितभाष्यफक्किका ने० २।१५। सम० इह, ईश्वर 1 शेषनाग का विशेषण 2 साँपो के अधिपति अन्तक का विशेषण 3 पतजाल का विशेषण, खेल लवा, बटेर, सत्यम विष्णु का (शेषनाग जिनकी शय्या है) विशेषण, कति 1 बानुकि या शेषनाग का विशेषण 2 पतजाल का विशेषण—ग्रिथ. वायु, फेन अशेष, भाष्यम् (फाणिनि के सूत्रो पर किया गया भाष्य) महाभाष्य, भुम् (पु०) 1 मोर 2 महद का विशेषण ।

फफारिम् (पु०) [फफार + णि] पक्षी ।
फरम् [फल् + अच्, रजयोगेद] डाल मु० फलक ।
फक्कणम् (तपु०) पानदान पान रखने का डब्बा ।
फर्करीकः [स्फुर + क्त, पातो फर्करादेस] मुले हुए हाथ की तपकी । फम् 1 ताजा अकुर या टहनी का अलुवा २ मुदुता, का जूता ।
फल् 1 (म्बा० पर० फलति, फलित) 1 फल खाना, फल पैदा करना—जानाफर्क फलति कल्पलसेव विद्या—भर्तु०

२४०. परोपकारय हुआ फलति मुभा०—विधापु-
ध्वान्गर फलतु च मनोऽनय भवतु—मा० १११६ (इन
अर्थ में प्रायः सर्वत्र के रूप में वातु का प्रयोग होता है)

श्रीधरस्यैव फलति विधिषयेयसि मन्नीतय—मुद्रा०

२४१६ 'निष्पन्न वा पठित कर्ता' २ परिणामयुक्त

होना, सफल होना, पूरा होना, निष्पन्न होना, काम-

याद्व होना 'केचित् कामा फलितस्तैस्त्रि—रघु०

१३१५९, १५१०८, यदा न फेनु भगदाचराणां (मनो-

रथा)—मट्टि० १४११३, १२१६६, नैवाकृति फलति

नैव कुल न शीलम्—भर्तु० २१९६, ११६ ३ फल

निकलना, परिणाम या नतीजा पेटा करना - फलित-

मन्त्राक कपटप्रस्थेन—हि० १, फलित नस्तहि

भयवती पाषण्णसादेन—भा० ६, कि० १८२५, लल

करोति कुर्वत नूनं फलति सापुषु—हि० ३१२१, 'दुष्ट

व्यति बुरे कार्य करते हैं और भले पुरुषों को उनका

परिणाम भुगतना पड़ता है ४ वक्ता होना, एक जाना ।

॥ (आ० ५७०)—फलति, कुल्य या कुल्य (पहले अर्थ

में), दूसरे अर्थ में फलित) १ बलपूर्वक तोड़ना,

खट्ट २ करना, फट जाना, दरार पड़ना—उत्स्य

मूढनिमासाद्य पक्कासिखरो हि म—महा० २ प्रति-

फलित होना, अक्स पड़ना—कि० ५१३८ ३ जाना ।

फलम् [फल + अच्] १ फल (आल० से भी) जैसे वृक्ष

का—उदेति पूर्वं कुपुषु तत फलम्—स० ७३०,

रघु० ५१३३, १४१९ २ फल, पैदावार—हृषिकल

—मेष० १६ ३ परिणाम, फल, नतीजा, प्रभाव

—अयस्कटे पापुषुर्ध्वरिह्वे फलमग्नते—हि० ११८३,

फलेन शास्वसि—पच० १, न नव प्रभुराफलोदयात्

स्थिरकर्मा विरगम कर्णम्—रघु० ८१२२, ११३३

४ (अत) पुरस्कार, क्षतिपूर्ति, पारितोषिक (धुम

या अशुभ) प्रतिफल—फलमस्यापहामन्य मल

प्रस्थसि पश्य माम्—रघु० १२१३० ५ कृत्य, कर्म

(विप० वचन)—बुधते हि फलेन साधवो न तु कटेन

निजोपयोगिताम्—नै० २४८८, 'भले पुरुष अपनी उप-

योगिता कर्मों से सिद्ध करते हैं न कि वचनों से'

६. उद्देश्य, आशय, प्रयोजन—परेऽज्ञितज्ञानफला हि

बुद्धय—पच० १४३३, किमपेक्ष्य फलम्—कि० २१२१

'किस आशय को विचार में रखकर', येष० ५४

७ उपयोग, अलाई, लाभ, हित - जगता वा विफलन

कि फलम्—भाषि० २५११ ८ लाभ वा मूलराशि

का व्याज ९ प्रज्ञा, संज्ञान - रघु० १५१३९

१० (फल की) निरी ११ पट्टिका या फलक

१२ (सलकार का) फल १३ नीर की नोक वा सिरा,

बाण, शीतकार—मुद्रा० ७३१० १४, डाल १५ अर-

कोष १६ उपहार १७ (गणित में) गणना-फल

१८ नृगनफल १९ रज श्राव २० ज्ञापक २१ हल

का फल, फाली । सम०—अवतः—फलाशन, -अनु-

बन्ध. परिणामकम्, फलपरम्परा, अनुमेय (वि०)

जिसका अनुमान फल या परिणाम पर निर्भर हो

—फलानुमेयां प्राप्त्वास्त तस्कारा प्राकता इव रघु०

११२०, -अन्त. वास, अन्वेषिन् (वि०) (कर्मों के)

पुरस्कार या क्षतिपूर्ति की शोध करने वाला, अन्वेषा

(कर्मों के) फल या परिणामों की भांति, नदीतरे का

ध्यान, -अवतः तोता, -अन्वेष इमली, -अन्वेष (नपु०)

नारियल, -आकाशा (अच्छे परिणामों की) भांति

—दे० फलापेक्षा, ज्ञापकः १ फलों की पैदावार,

फलों का भार, -भवन्ति नप्रास्तार्य फलाग्रं यं

५११२ २ फलों का मौसम, पतझड़, आश्व (वि०)

फलों से भरा हुआ, -आश्रया एक प्रकार के अंगुर

(जिसमें गुठलियाँ या बीज नहीं होते), उत्पत्ति

(स्त्री०) १ फलों की पैदावार २ पायदा, लाभ

(ति) आम का वृक्ष (कभी-कभी इसी अर्थ में प्रकट

करने के लिए 'फलोत्पत्ति' भी लिखा जाता है),

-अवयः १ फलों का दिनाई देना (आना), फल

या परिणाम का निकलना, अमोघ्य पदार्थ या सफलता

की प्राप्ति—आफलोदयकर्मणाम्—रघु० ११५,

-उद्देशः फलों का ध्यान, दे० फलापेक्षा, -कामना

परिणाम या फल की इच्छा, -कासः फलों व समय,

केसर नारियल का पेड़, षड् हित या लाभ की

ब्रह्म करने वाला, षड्, -षड्भिन् (वि०) (फले-

षड्भि या फलेषादिन्) फलों से भरा हुआ, मीसम में

फल देने वाला, श्लाघ्यता कुनमूर्पति पैतृक म्याग्म-

नोरषतश्च फलेषड्भि—कीर्ति० ३१६, भा० ९१९९,

—इ (वि०) १ उपजाऊ, फलदार, फल देने वाला

—भनु० १११४२ २ लाभकर या फायदा पहुँचाने

वाला (क) वृक्ष, निर्वृत्तिः (स्त्री०) परिणामों की

समाप्ति, निष्पत्तिः फलों का उत्पादन, वाक (फले-

वाक' भी) १ फलों का पकना २ परिणामों की

पूर्णता, वाक्च फलवृक्ष, पूर, -पूरक. सामान्य

नैवृष का पेड़, प्रथमम् १ फलों का देना २ विवाह

के अवसर पर एक स्तम्भ विक्षेप, अन्विन् (वि०)

फल को विकसित करने वाला या रूप देने वाला,

—भूमिः (स्त्री०) वह स्थान जहाँ मनुष्य अपने

कर्मों का सुमाधुष्य फल भोगता है (अर्थात् स्वर्ग या

नरक), -भूत् (वि०) फलदायी, फलों से पुष्ट, भोग

१ फलों का आनन्द लेना २ भोगाधिकार, -भोग्य

१ अभीष्टपदार्थ या फल की प्राप्ति मुद्रा० ७३१०

२ मन्वृत्ती, पारिस्थिक, राजन् (पु०) तरबूटा

—अनुकम् तरबूज, -बुकाः फलदारवृक्ष, -बुकाक कट-

हल का वृक्ष, -साश्वः अना का पेड़, -शब्द आम

का पेड़, -शष्व १ फलों की बहुतायत २ सफलता,

- साधनम् अभीष्ट पदार्थ की उपलब्धि का उपाय, उद्देश्य की पूर्ति, स्मृष्ट अखरोट का पेड़, हारी कानी या दुगा का विशेषण ।

फलकम् [फल + कन्] 1 पट्ट, तख्ता, शिला, पटल या पट्टी—काल काल्या मुक्कलके फ्रीडति प्राणिघारे—मनु० ३।३९, घृत् चित्र' आदि 2 जपटी सतह—चुम्बानकपील फलकाम्—का० २।१८, घृतमुग्ध-मरुफलकविषम्—शि० १।८३, २७, तु० 'सद' 3 डाल 4 पत्र पृष्ठ 5 निरुद, कुन्दा 6 हाथ की हथेली । सम०—**शाधि** (वि०) (बाढा को भानि) डाल में मूसज्जल,—**धग्म** भास्करानार्य द्वारा आविष्कृत एक ज्योतिषियक उपकरण ।

फलतः (अध०) [फल + तसिन्] फलवत्कम्, परिणामकम्, वधाचरतः ।

फलवम् [फल + वृत्] 1 फल आना, फलवान् होना 2 फल या परिणाम उत्पन्न करना ।

फलवान् (वि०) [फल + मान्] 1 फलवान्, फलदार 2 फलदायी, परिणामदायी मफल, लाभकारी, ही 'प्रियम्' नामक कला ।

फलिता [फल + इत् + टप्] रजध्वना स्त्री ।

फलिन (वि०) [फल + इनि] फलों में पूर्ण, फलदायी, (फल० भी) पुष्पिन फलिनदत्तवं वृक्षान्प्रभयन् स्मृता—मनु० १।८३, मृचड० ६।१०, (पु०) वृक्ष ।

फलिन (वि०) [फल + इन्] फल में पूर्ण, फलदायी, —न कटहल का पेड़ ।

फलिनी—फली [फलिन + ङीप्, फल् + अच् + ङीप्] प्रियम् लता (कवियों के द्वारा इसे 'आम की पत्नी' कहा गया है—तु० रघु० ८।६१) ।

फलम् (वि०) [फल + उ, गुक् च] 1 विना वृद्धे का, 'सहीन, तत्त्वहित, मार्गबिहीन—मार तथा शास्त्रम-पायि फलम् पच० १।२ 2 अर्थाय, निश्चयक, मरुत्सहीन—शि० ३।७६ 3 अल्प, मूषम 4 निर्मूल, अध्रं 5 दुर्बल, बलहीन, निस्तार,—लु० (स्त्री०) 1 बलन्तश्चतु 2 गुणर का वृक्ष 3 गया के पास एक नदी । सम०—उत्सव बसन्तीत्यव, हीनों का व्याहार ।

फलम् [फल + उन्, गुक् च] 1 फाल्गुन का महीना 2 इन्द्र का नामान्तर,—भी एक नक्षत्र का नाम कु० ७।६ ।

फलपम् [फल + पल्] फल ।

फालि, **क्राफितम्** [फल् + गिच् + इज्, क्त वा] मारा, राव ।

फाष्प (वि०) [फल् + क्त, वि० साध्] मुगम प्रक्रिया द्वारा निर्मित, आसानी से बनाया हुआ (सेत नाडा),—**ह**,—**हम्** अर्क, काड़ा—फाष्पनापाससाध्य रूपाय-

विशेष—मिठा०, फाष्पिचाष्टपाणय—मट्टि० १।१७, (१० भाष्य) ।

फाल्,—**लम्** [फल् + अच्, फल् + धञ्, वा] 1 हल का फल, फाली-मनु० ६।१६ 2 बाणों की माय निकालना, सोमतराग म० १।१६,—**कः** 1 बलगम का विशेषण 2 शिव का विशेषण 3 नीबू का पेड़, **लम्** 1 मूली कपडा 2 अला हुआ सेत ।

फाल्गुन [फाल्गु + अच्] 1 महीने का नाम (जो फरवरी-मार्च में आता है) 2 अर्जुन का विशेषण महा० में नाम की ब्याख्या इस प्रकार है—उत्तराभ्या फाल्गुनीभ्या नक्षत्राभ्यामह दिवा, जातो हिमवान् पृष्ठे तेन मा फाल्गुन विदु 3 वृक्ष का नाम, जिसे 'अर्जुन' कहते हैं । सम० अनुब 1 चंच का महीना 2 बसंतकाल 3 तनुज और सहदेव का विशेषण ।

फाल्गुनी [फाल्गुनी + अच् + ङीप्] फाल्गुन मास की पूजिका । सम० जब बृहस्पति ग्रह का विशेषण ।

फिरङ्ग (पु०) फिरगियों अर्थात् यूरोपियों का देश ।

फिरङ्गुन (पु०) [फिरा + इति] फिरगी, अर्थे, यूरोपियन ।

फुक [फु + क + फ] पक्षी ।

फु (कृ) ल् (अध०) अनुकरणमूलक शब्द जो प्राय 'कु' के साथ प्रयुक्त होता है, तरल पदार्थों में फुक मारने से पैदा होने वाला ध्वनि, पत्नी-कभी इससे घृणा सूचित होती है, **फु** (कृ) ल् कृ (किसी तरल पदार्थ में) फुक मारना—बाल पायसद्वयो दध्ययि फुकृत्य भक्षयति हि० ६।१०३ । सम० **कार**, **कृतम्**,—**इति** (स्त्री०) 1 फुक मारना 2 सोंप की पुष्पकार 3 मी मों करना, साथ साथ की ध्वनि 4 मुक्कना 5 चाम मारना, बार की चौक, पीछार ।

फुफुल,—**सम्** (तपु०) फेफड़े ।

फुल्ल (भ्रा० पर० पुन्लति, फुल्लिन) कली आना, फूलना, फूलाना, (पुष्प का) मिलना ।

फुल्ल (म० क० कृ०) [फल् + क्त, उत्त्व लत्वम्] 1 फलाया हुआ, खिला हुआ, फूला हुआ पुष्प च फुल्ल नव-मल्लिकाया प्रधाति कान्ति प्रमदाजनानाम् शतु० ६।६, फुल्लार्थवद्वदानाम् चौर० १ 2 फूल आना, खिला हुआ म्पु० १।६३ 3 विम्भारित, फलाया हुआ, (आँसों की भाँति) लूढ़ लुना हुआ पच० १।१३६ । सम० **लोचन** (वि०) (हृष से) मिली हुई आँसों वाला (ने) एक प्रकार का मूस ।

फेदकार [फे + क् + धञ्] बीस, हूक (कुत्ते रोबिये की ध्वनि) ।

फेज,—**न** [स्फाच् + न, के शब्दादेश, पक्षे लत्वम्] 1 क्षाम, फेज (कफ आदि)—गौरीवक्त्रभ्रुकुटिरचना या विह-स्वज फेजै—मेघ० ५०, रघु० १।३।११, मनु० २।६१

2 मूढ का शाग या बुलबुला 3 मूक । मय० - पिच्छ
1 बुलबुला 2 लोखला विचार, अनतिरह, चाहिन्
(पु०) छानने के काम का कपड़ा ।
फंग (न) क [फंग + कन्] दे० 'फेन'
फेनिल (नि०) [फेन + इलच्] छायादार, बुलबुले वाला,
फेनिलमम्बुराचि - रपु० २३१२ ।
फेर, फेरफ. [फे + रा + फ, फे + रफ्ठ + अच्] गीदड़ ।
फेरक [फे इति रयो मय्य ब० सं०] 1 गीदड़-कन्दफेरक-

चण्डटालकृति - मा० ५१९९ 2 फन, बदमाश, ठग
3 रासल, गिराच ।

फेव [फे + व + इ] गीदड़ ।

फेल्म, फेला, फेलिका, फेली [फेल्मते दूरे निक्षिपते,
फेल् + अह, मित्राय टाप्, फेल् + कन् + टाप्,
फेलि + डीप्] उच्छिष्ट भोजन, भोजन का बचा हुआ
भाग, जूठन ।

व

बहू. (भा० आ० बहले, बहति) बड़ना, उगना ।
बहिनम् (पु०) [बहुल + इमनिच्, बहादेश] बहुतायत,
मातृत्व ।
बहिष्ठ (नि०) [बहुल + इष्टन्, बहादेश उ० अ०]
अत्यन्त अधिक, अत्यन्त बड़ा, बहुत ही ज्यादा ।
बहोषत् (वि०) [बहुल् + ईषसुन्, बहादेश म० अ०] अपे-
क्षाकृत अधिक, बहुत ज्यादा, अपेक्षाकृत बहुमूल्यक ।
बक. [बङ्क + अच्, पृषो० साप्] 1 बगला 2 उग, पुल, पालड़ी (बगला बड़ा घुत्त पक्षी है, यह अपने पंज में दूसरों को फास देता है) 3 एक रासल का नाम जिसमें भीम ने मारा था 4 एक रासल का नाम जिसमें कृष्ण ने मारा था 5 कुबेर का नामान्तर । मय०-बक,
-बुलि, -बल्लर, -बल्लिक, -बल्लिन् (पु०) बगले की भांति आचरण करने वाला, डोपों, पाण्डों-अधो-
धृष्टिर्नैकृतिक, स्वार्थसाधनतत्पर, शरीर मिथ्याविनीत-
न बकवतचरी द्विज - मनु० ५१९९, -जित् (पु०)
-निबुधन-1 भीम का विशेषण 2 कृष्ण का विशेष-
ण, -बल्लम् बगले की भांति आचरण, पाण्ड ।

बकुल [बङ्क + उरच्, देकप मस्यन्, मलोप] एक (मौल-
सिरी) वृक्ष (कहा जाता है कि कविसमयानुसार नर-
सिमी ढांग मंदिरा का मङ्क छिन्नकने पर इसमें मजरी फूट जाती है) -तासरापयो (अर्थात् केसर या बकुल) बदनमंदिरा दोहदम्बधनाख्या -मेघ०
७८, बहुल सीयवदुपसेकात् (विकसित) (इस प्रकार के अम्यवृक्षों से सबद कविसमयों के लिए प्रियम् के शीघे उद्धरण देखो) -सम् मौलसिरी वृक्ष का सुगन्धित फूल - भावि० ११५४ ।

बकेका [बकाना बकसमूहानाम् ईरक गतियंथ-ब० सं०]
छोटी बगली ।

बकोट. (पु०) बगला ।

बट. [बट + उ, बवयोग्भेद] बालक, लड़का, छोकरा
(बहुधा तिरस्कारमूचक) चाणक्यवट -आदि दे० 'बट' ।
बटि (सि) शम् (नपु०) मछली पकड़ने का काटा -अनु०
३१३१ ।

बत [अध०] [बन् + क्त, बवयोग्भेद] निम्नांकित अधप्रकट
करने वाला अर्थात् 1 शाक, खेट -वय बत विदुरन
कमलता पक्षी कन्यका मा० ३१८, अहो बत मह-
त्याप कन्तु ध्यवमिता वयम्, भग० ११८५ 2 दया या
कृष्णा -बव बत हरिष्कानता जीवित् चानिर्गलम्
-श० ११० 3 मबोधन, पुकारना - बत वितनन ताय
तोयबाहा वितानम् गुण०, मयु० ९१४७ 4 हर्ष या
सवोध -अहो बतानि स्पृष्टधीवीपे -कु० ३१२
5 आश्चर्य, अवभा, अहो बत महान्चरम्-का० १५४,
6 निन्दा (अहो के साथ 'बत' के अर्थ 'अहो' के
अन्तर्गत दे०) ।

बबर [बच् + अच्] बेर का पेड़ - रम् बेर का फल, कर्-
बदम्पदुषमखिल भुवनतन परप्रदादन कवय, परपनि
सूक्ष्मभय सा बयति सरम्बनी देवी -शाम० १,
भावि० २१८ । मय० -बाबनम् एक पृथ्वीयं स्थान ।
बबरिका [बदरी + कन् + टाप्, ह्रस्व] बेर का पेड़ या
फल, अन्ये बबरिकाकारा ब्रह्मिव मनोहरा -शि०
११५४ 2 गया का एक खेत, जो नर और नागवध
के आश्रम के निकट स्थित है, इसे ही बदरीनागवध
कहते हैं । मय०-आश्रमः बबरिका का आश्रम ।

बदरी [बदर + डीप्] 1 बेर का पेड़, दे० बादरायण
2 -बदरिका (अर 2) । मय० -तपोवनम् बदरी-
स्थित तापस्या करने का उद्यान -कि० १२३३,
-कसम् बेर के पेड़ का फल, -कसम् (वम्) बेर
की झाड़ी या जंगल, -कस बदरी पर स्थित पहाड़ ।
बड (पु० क० ह०) [बच् + क्त] 1. शीघा टुआ, नया

हुवा, कला हुआ 2 श्रुतलिन, बेविया से जकड़ा हुआ 3. बदी, पकड़ा हुआ 4. अवच्छद, कारावासित 5, कमर कसे हुए 6. सयत, दबाया हुआ, रोका हुआ 7 निमित्त, बनाया हुआ 8. प्यार किया गया, रिझाया गया 9 मिलाया गया, सहित 10 पकवा जमाया गया, दूढ़ 1 सम०—अग्रमुलिन,—अग्रमुलिकाण (वि०) दस्ताना पहने हुए, अग्रजलि (वि०) हाथ जोड़े हुए, आदर या सम्मान प्रदर्शित करने के लिए नम्रता पूर्वक दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार करते हुए,—अनुराग (वि०) स्नेह में बंधा हुआ, प्रेम के कारण अनुरक्त, प्रेमबधन में जकड़ा हुआ, अनुस्रव (वि०) परचासाप करने वाला, आशङ्क (वि०) जिसकी आशङ्काएँ बंद गई हैं, गङ्गानुल,—उत्सव (वि०) उत्सव या त्योहार मनाते हुए,—उद्यम (वि०) मिलकर प्रयत्न करनेवाले, कस, कस्य (वि०) दे० 'बद्धपरिकर'—कोष, मन्थ,—रौष (वि०) 1. कोष अनुभव करते हुए, कोष या रौष की भावना रखते हुए 2 अपने कोष का दमन करने वाला, घिस, मनस् (वि०) मन की किसी ओर जमाये हुए, मन को किसी ओर दृढतापूर्वक लगावे वाला, विह्वल (वि०) जिसकी विह्वला कील दी गई है, वृष्ण,—मेघ, सोषण (वि०) आस की धूल और जमा कर तानने वाला, टकटकी लगाकर देखने वाला,—घार (वि०) लगातार अविच्छिन्न रूप से बहने वाला, जेषम्ब (वि०) नाटकीय वेलाभूषण धारण किये हुए, परिकर (वि०) कमर बांधे हुए, कमर कसे हुए, तैयार, सज्जित, प्रतिज्ञ (वि०) 1 जिसने कोई व्रत या प्रतिज्ञा की है 2 दृढ़ सकल्प वाला, भाव (वि०) स्नेहशील, दिल लगाये हुए, मृग्य (अधि० के साथ) दृढ़ स्वयि बद्धभावार्थशी विग्रहण० २,—मृष्टि (वि०) 1 मुट्टी बाध हुए 2 मुट्टी भीचे हुए, कजस, मूल (वि०) जिसको जब गहराई तक गई हो, जब पकड़ हुए - बद्धमूलस्य मूल हि महदंतेतरो स्थिय सि० २१२८, मोल (वि०) जीभ घामे हुए, मोल रहने वाला, चप अशुद्धत्व ल्बन्वर्णारविन्दविस्लेषदुस्त्रिचि बद्धमोनम् रघु० १३१२३,—राष (वि०) आसक्त, मृग्य, अनुरक्त पद्य० १११२३,—वसति (वि०) अपना वास स्थान स्थिर करने वाला, बाष् (वि०) जिह्वा रोके हुए, चुप रहने वाला,—वेपथु (वि०) कपकपी से घसत, बर (वि०) जिसको किसी से घोर घृणा हो गई हो या पक्की धमना हो गई हो, सिक्क (वि०) 1 जिसने अपनी चीटी बाध ली है, (चीटी में घाँट दे ली है) 2 जो बन्धी बन्धा है, बालक,—स्नेह (वि०) अनुराग करने वाला, स्नेहशील ।

बष् (भा० आ०—बीभस्तले—मूल अर्थ को बताने वाले बष् धातु का सम्प्रत्यय रूप) घिन करना, घृणा करना, अर्थात् रखना, संकोच करना, शिक्षका, जमाना (अपा० के साथ) - येम्बो बीभस्तमानाः—उत्तर० १ ।

बाधर (वि०) [बन्ध् + किरच्] बहुरा,—ज्यनिभिर्वनस्य बाधरोकुलधृते—गि० १३३२, मनु० ७१४१ ।

बाधरयति (ना० घा० पर०) बहुरा बनाना (आल० से भी) बाधरिताशेषदिगन्तगलम् का०, महावी० ६१८० ।

बाधरित (वि०) [बाधरि + इत्] नहरा किया गया, बहुरा बनाया गया ।

बाधरितम् (ए०) [बाधरि + इमिच्] बहुरागण ।

बाधि, हो (स्त्री०) [बन्ध् + इन्, बन्धि + डीप्] 1 बधन, कागवाह 2 कटी, बधुआ—कु० २१६१ ।

बन्ध् (क्या० पर० बन्धाति, बद्ध०, कर्म० बन्धते)

1 बाधना, कसना, जकड़ना—बद्ध न नभासित एव तावत्करेण वद्धोपि च केसपाशा कु० ७१५७, रघु० ७१२, कु० ७१२५, भट्टि० १७५५ 2 बंधोचना, पकड़ना, जेल में डालना, आल में फसाना, बन्धी बनाना—कर्मिनिं स बन्धते भग० ४१४४, बलिर्वन्धते—भट्टि० २१३९, १४५६ 3 जखीर में बाधना, बेड़ी में जकड़ना 4 रोकना, ठहराना, दमन करना यथा बद्धकोप, बद्धकोष्ठ आदि में 5 पहनना, धारण करना न हि बुधामणि पादे प्रथमाभीनि बन्धते—पद्य० ११७२, बन्ध्वरहमुलिकाणि भट्टि० १४७७, 6 (आल आदि का) आकृष्ट करना, गिरफ्तार करना बन्धय चसुवि यवप्ररोह कु० ७११७, या बध्नाति मे चक्षु (चित्रकूट) रघु० १३१७ 7 स्थिर करना, जमाना, (आवि या मन आदि) निर्देशन करना, आलना (अधि० के साथ) दृष्टि लक्ष्येषु बन्धन्—मद्रा० ११२, रघु० ३१४, ६३६, भट्टि० २०१२२ 8 (बाल आदि) बाधना, मिशाकर जकड़ना मद्रा० ७१० 9 निर्माण करना, मरकन करना, रूप देना, व्यवस्थित करना बद्धोमिनाकव-जितापनिनुकमस्तम्—कि० ८१५७, मूलकुल रोमन्य-मन्धस्यनु० शं० २१६, तन्माञ्जलि बन्धुमती बन्धय रघु० १६१५, गी३८, ११३५, ७८, कु० २१४७, ५१० भट्टि० ७१७७ 10 एकत्र करना, रखना करना, (कविना श्लोक आदि) निर्माण करना तुष्टेर्बद्ध तदनु रघुस्वामिन सच्चरित्रम्—विष्णु० १८१०७, श्लोक एव तथा बद्ध—रामा० 11 बनाना, पैदा करना, (फल आदि) जन्म देना—रघु० १२१६९, ज० ६१४ 12 रखना, अधिकार में करना, बहण करना, सजा कर रखना उत्तर० २१८, ('बध्' के अर्थ में उन सज्ञाओं के अनुसार जिनके बध

नयुक्त होता है, नाना प्रकार के परिवर्तन होते हैं ।
 उदा०— **अक्षुब्ध बन्धु** भोरो में बल डालना, **प्योरी**
 बढ़ाना; **मृष्टि बन्धु** मृष्टी बौधना, **अच्छल बन्धु** तत्र
 निवेशन के लिए हाथ जोड़ना, **चिन्त**, **धिप**,
मन, **हृदय**, **बन्धु** मन स्थाना, दिन लगाना,
प्रोति, **भाव**, **राय** बन्धु, प्रेमपाश में बद्ध होना,
 मायु होना, **सेतु बन्धु** पुल बनाना, सेतु का निर्माण
 करना **वैर बन्धु** घना पैदा होना, **जन्तु**,
सत्त्व, **सोद्वैर बन्धु** मैत्री करना, **घोष बन्धु** गाल
 बौधना, **सङ्घ बन्धु**, **मन्त्र** बनावना **गोल बाध** कर
 बैठना, **मोन बन्धु**, चुपची पाशना, **परिकर बन्धु**, **कला**
बन्धु कला रूपना, **पैवार हो** शाना २० **बद्ध** के नीचे
 मन्त्र वाच्य, **प्रेर**० **बध**बाना, **बन**बाना, **रत्न**बाना,
 निर्माण करवाना २५० १०३० **अनु** १ **बाध**ना,
 जकड़ना **सि० ८१२** २ **ज्य** जाना **विषय**ना, **बुद्ध**
 जाना **हाथेबाध**शानि **धाम**बुद्धशानि **उत्तर**० ३
 ३ **उपस्थित** रचना, **वृष**बाध **जाल**रच्य करना, **उद**
विज्ञो पर **चनना** **मधु**काकुनेलपध्यामानम् का०
 १३०, का **नु** **बन्ध**पदबन्धु **पाना**पस्थितनीध्यामबाल-
 नवीं **बाध** श० ३ **दवा**र डालना, **पेनि** करना
 अग्रत **बाध** करना, **आ** १ **बाध**ना **जकड़**ना,
कनना—**मनु० १११०** ५ **२** **बना**ना, **निर्माण** करना
अवस्थित करना—**आव**द्वयमशना **नग**मराग्यिद्ध—का०
 ६९, **बाव**द्वयमा—**मैथ० ९**, **पठि० ३१३०**, **हि०**
 ५१३३,—**आव**द्वयमशितो **नकम**उभरोति—**मील० ११**
 ३ **स्थिर** करना, **बनाना**, **निर्दिष्ट** करना—**रघु०**
 ११६०, **उद** १, **बाध**ना **नट**कना **कठमुद्ध**रणाति
 मुद्रा० ६, **रघु० १६१६** **नि** १, **बाध**ना, **कनना**
जकड़ना, **शुच**नित करना, **बेदी** में **बाध**ना **आम-**
बल न कर्माणि **निष्क**रन्ति **धनु**जना **अम० ६१६**,
 २१९, १६३, १८१३, **मनु० ५१०५**, **कु० ५१०**
 २ **स्थिर** करना **जमाना**, **निय** निबद्धने **विष्म०**
 ६१२९ **३** **बनाना**, **निर्माण** करना, **मरचना** करना
अवस्थित करना—**द्वैम**निबद्ध **चक्र** पाशाघनचरबद्ध
कृप आदि ४ विधना, **रचना** कना **निबद्ध** १
मिथियी कथा—**क० ५**, **सिन्धु** १ **दवा**र डालना **प्रति**
 करना, **अपन** **आव**र करना, **परि** १ **कनना**, **बोध**ना
 २ **पह**नना **३** **घेरा** डालना, **बागे** और से **बाध**ना
 ४ **निष्कार** करना, **ठह**राना ५ **विष** डालना,
दवाबद्ध डालना, **प्रति** १ **कनना**, **जकड़**ना **ज्य**ना
पौननिबद्धकाम्य(बैश्वम्) **रघु० २११** २ **स्थिर**
 करना, **निर्दिष्ट** करना, **कु० ७११** ३ **राच**न करना,
जमाना, **मडना**—**यदि** **मिथि**कृष्णि **प्रति**वचनत **तत्र**
 ११०५, **बहु**जानुपासकुठिन्वदलकनिबद्धमध्यामिब **विष्-**
मय—**सि० ९१८** ४ **अवरोध** करना, **विष** डालना,

पीछे **हटा**ना, **निबल** देना, **बद्ध** कर देना—**प्रति-**
बन्धानि **हि** श्रेय **पुण्य**पुण्यार्थिकम् **रघु० ११०९**
 ५ **रोक**ना, **हम**शेष करना—**मैत्र**मन्तरा **प्रति**कभीतम्
 श० ६, **सम्** १ **मिला** कर **बाध**ना या **कनना**, **एक**
 करना, **नय**कन काना, **साथ** लगाना २ **मर**चन करना,
बनाना ३० **मर**च ।

बन्धु [**बन्धु** घञ् । १ **ग्रन्थि**, **कथन** **यथा**-**आशा**रच्य)
 २ **शाना** १ **बाध**ने की **पुटी**, **कीना** **विष्म० ५११०**,
 श० ११३० ३ **शुच**नना, **बेदी** ४ **बेदी** डालना,
जालपार में **पानना**, **जेल** में **बद्ध** करना **मनु०**
 ८१-९० ५ **बोच**ना, **पकड़**ना, **पकड़** देना **मृज**बन्ध
 रघु० ५१२ ६ **निर्माण**, **मर**चना, **अवस्था**पन
 - **मर्ष**बन्धा **महा**भाष्य **मा०** ६० ६ ७ **बाध**ना
पारणा, **विनाश**ना ८ **मर**चनरचयन **सुक**विप्रेमबन्धे
विरोसु-**विष्म**रच० ८११० ३ रघु० २११ ८ **मयो**,
मिलन **अन** **मर**चक ९ **जानना**, **मिलना**, **मिथ**न
 करना **रघु० ५११३** **अव**स्थित्य आदि १० **पुटी**,
कनी ११ **मह**मति **बाध**नम् १२ **प्रकटी**करण, **प्रद**र्शन,
निष्पण - **रघु० १६१५** १३ **बध**न, **मर**चन **विष्म०**
मरिच० ३ **अप**रा **सांसारिक** **बध**ना से **पुर्ण** मोक्ष) **अन्य**
माध व ११ **वेति** **बुद्धि** या **पार**ण **सांख्य**की **अन**०
 ११३०, **बन्धा**न्कर्म **लतु** **मय**बन्धान **कुर्वे** कथ
पाशा—**भगि० ५१२१**, **रघु० ११५८**, १८१
 १४ **कल**, **परिणाम** १५ **विधि**, **अप**स्थित्य **आम**-
कनवीर **रघु० ५१६** **कु ३१५**, ५९ १६ **मैथु**
करने **मय** निर्माण **प्राप्त**न, **प्रति**बध, (**मिथि**परी में
 उन प्रकार **क** ९६ **आप्त**न **कना**ये **गये** हैं **अथ** **कि** **और**
लक्षक १६ १७ **बद्ध** शै है! १७ **पाद**, **किनारी**, **रूप**
देना, **दावा** १८ **किमा** **श्लोक** का **गो**ई **विशिष्ट** **रूप**-
उदा० न **हृद**य, **पद**मय, **मृज**बन्ध **काथ**० ९
 १९ **न्याय**, **नर**चन २० **परी** २१ **अमान**, **घरो**हर ।
सव०—**कर**णम् **बेदी** डालना, **कारा**पार में **डाल**ना,
तन्त्रम् **पूरी** **मेना** या **कुतुर**गिणी **सेना** **अर्थात्** **गजा-**
रोही, **अ**का**रोही**, **ग्या**ग**रोही** तथा **परा**णि, **पाठ**णम्
अन्ध**भा**विक या **हो**मि **अ**न्व**र**चना, **सत्त्व** **पशु**ओं
 का **बाध**ने का **मुद्रा** (उदा० **हो**मो आदि) ।

बन्धक [**बन्धु**+**बन्धु**] । **बाध**ने वाला, **पकड़**ने वाला
 २ **रोक**ने वाला ३ **बन्ध**, **पाठ** **रन्धी** **अव**रु के **का** **तमा**
 ४ **मेरु**, **किनारा** **बाग** ५ **घरो**हर **अमान** ६ **परी**
का **अ**न्याय ७ **अ**न्याय**दो** **विनि**य ८ **अन** **कने**
काल **नो**उने **काल** ९ **परी**ना १० **नगर** ११ **बाध**
 या **अ**स(**द्रि**नु **म**मान के **अ**न्व में)—**अ**न्य **सद**रा**ण**क
 - **या**ज० ५१७, - **क**म् **वा** **भा**, **मी**मि **कर**ना, **की**
 १ **अ**मरी **रु**ची **न** से **व**या **की** **म**र**च**बन्ध**क**या **प्र**बो**ध**नम्
 - **मा० ७**, **बे**मो ० २ २ **बे**या **कारा**पना **कन**न

पुनोति मयेति बन्धकीघाट्टेभ्यम् का० २३७,
3 हृषीने।

बन्धनम् [बन्ध् + ष्टुट्] 1 बाँधने की क्रिया, जकड़ना, बलना, कु० ४१८ 2 धारो और से बाँधना, स्पष्टना, आलिंगन - बिनप्रशाखाभूजबन्धनानि—कु० २३२९, षट्ब भूज-बन्धनम्—गीत० १०, रघु० १९।१७ 3 गाँठ, घनत्व (आल० से मी) रघु० १२।१७, आशाबन्धनम् आदि 4 बेड़ी डालना, जजीर से बाँधना, कैद करना 5 शृङ्खला, बेड़ी, पगहा, रज्जु आदि 6 गिरफ्तार करना, पकड़ना 7 बाँधना, कैद, जेल, कारा, जैसा कि 'बन्धनागार' में 8 बन्दीगृह कारागार, जेलखाना—स्था कार्यादि कमलौदरबन्धनस्यम् श० ६।२०, मनु० ९।२८६ 9 बनाना, निर्माण, सरचना,—मनु-बन्धनम्—तु० ४१६ 10 मयकल करना, मिलाना, जोड़ना 11 चाट पहुँचाना, सति पहुँचाना 12 दही, ठंडक, (फल का) बल—श० ३।६, ६।१८, कु० ४।१४ 13 स्नायु, पुट्टा 14 पट्टी। सम०—आ (आ) गार, -रघु, -आलय, कारागार, जेलखाना, -प्रथिवि 1 पट्टी को गाँठ 2 जाल 3 पशुजा को बाँधने का रस्सा, -पालक, -रक्षित (पु०) कारागार, जेल का अपीक्षक, -वेष्टनम् (मनु०) कारागार - स्थ: बंदी, कैदी, -स्थम्ब लूटा, (हाथी आदि पशुओं की बाँधने का) मत्ता, -स्थानम् अन्तबल, घुड़माल।

बधित (वि०) [बध् + इत्] 1 बधा हुआ, जकड़ा हुआ 2 कैदी, बंदी।

बन्धित [बध् + इत्] 1 कामदेव 2 बमडे का पत्नी 3 चब्दा, मत्ता।

बन्धु [बन्ध् + उ] 1 रिश्तेदार बन्धु, बाधक, सबंधी—यत्र दूता अपि मृगा अपि बन्धवा ये उत्तर० ३।८, मान्-बन्धुनिवासनम् रघु० १०।१२, श० ६।२०, भग० ९।९ 2 किसी प्रकार के संबंध में बंधा हुआ, भाई, -प्रदासबन्धु सह पश्ये, धर्म बन्धु आध्यात्मिक ज्ञाना—श० ४।९ 3 (विधि में) सजाती बन्धजन, अपना मित्रो मगोत्र बन्धु (बन्धु तीन प्रकार के हैं—आय, 'पितृ' तथा मान्) 4 मित्र (जैसा कि नीचे 'बन्धुकृत्य' में) प्राय समास के अन्त में—मकरन्दलम्-बन्धो—मा० १।३६, 'मघ का विधि अर्थात् मुवागित' ९।१३ 5 पति—वैदेशिकपोहं दय विदरे रघु० १४।३३ 6 पिता 7 माता 8 भ्राता 9 बन्धुजीव नाम का वृक्ष 10 वह व्यक्ति जिसका किसी जाति या उपजाय से नाममात्र का संबंध हो, अर्थात् जो जाति में अन्य लेकर अपनी उस जाति के कर्तव्यों का पालन न करता हो (प्राय निरन्कारभूषक शब्द) स्वमेव ब्रह्मबन्धुर्नास्ति धर्मप्रदाय - मालि० ४, तु० अत्रबन्धु। सम० कृत्यम् 1 मगोत्रबन्धु का

कर्तव्य—त्वयि तु परिनामान् बन्धुकृत्य प्रजातान् - श० ५।८ 2 मंत्रीपूर्ण कार्य या सेवा कश्चित्सौम्य व्यव-सितमिद बन्धुकृत्य त्वाया मे—मेघ० ११४,--जन्-1 रिश्तेदार, भाई-बन्धु 2 बन्धुवर्म, स्वजन, जीव, -जीवक वृक्ष का नाम—बन्धुजीवमधुरापरपल्लवमूल-सितस्मितशोभम्—गीत० २, रघु० ११।२५, बलम् एक प्रकार का स्त्रीधन या स्त्री की संपत्ति, विवाह के अवसर पर कन्या के संबंधियों द्वारा कन्या को दिया गया धन—याज्ञ० २।१४४, -प्रीति (स्त्री०) 1. रिश्तेदार का प्रेम—बन्धुप्रीत्या—मेघ० ८९ 2 मित्र के लिए प्रेम,--आश. 1 मित्रता 2 रिश्तेदारों—धर्म भाई-बन्धु, स्वजन, -हीन (वि०) बन्धुबाधको या मित्रों से रहित।

बन्धुका: 1 बन्धुजीव नामक पेठ 2. हरामी (सन्तान) बण-सकर, -का, की असती स्त्री (दे० बधकी)।

बन्धुता [बन्ध् + तल् + टप्] 1 रिश्तेदार, भाई-बन्धु स्वजन (नामात्मिक रूप से) 2 रिश्तेदारी संबंध।

बन्धवा [बन्ध् + वा + क + टप्] जसती स्त्री।

बन्धुर (वि०) [बन्ध् + उरत्] 1 डौबाडान, लहरदार, ऊँचा-नीचा—श० ७।३४, कु० १।८२ 2 झुका हुआ, छलान वाला, विनत बन्धुरगान्—रघु० १३।६७, (-सन्तापि) 3 टंडा, बक 4 मुद्रावन, मनोहर, सुन्दर, श्रिय—श० ६।१३, (यज्ञ) इसका अर्थ 'आवा-डोल' भी है 5 बहरा 6 हासिकर, उपताम्रिय, —र 1 हंस 2 साम्ग 3 जीवधि 4 खली 5 योनि - रा (ब० व०) मुग्गे या खाद्य पदार्थ, - रा असती स्त्री, रघु भुकुट, ताजे।

बन्धुक (वि०) [बन्ध् + उल्च्] 1 झुका हुआ, वक्र, छलान वाला 2 मुहावरा, मुग्गनुमा, आकर्षक, सुन्दर, - ल 1 हरामी (सन्तान)—परमूहल्लिता पराश्रयुष्टा परमुहूर्जेनिता पराङ्गनाय, परमनेरिता नृपेववाप्या गजकलभा इव बन्धुना ललाम—मृच्छ० ६।२८, (बिदूषक के प्रति 'भो के येव बन्धुता नाम') का यह उतर है जो स्वयं बन्धुलो ने दिया 2 वेदशा का मेघक 3 बन्धु नाम का पेठ।

बन्धुक [बन्ध् + ऊर्] एक वृक्ष का नाम—नव करुनिकरण म्नाटवन्कमुनस्तवकर्जन्तमेते शेखर विश्वतीव—शि० ११।८६, ऋतु० ३।५ -कम् हम् वृक्ष का फूल बन्धुकवृत्तिबाणधोऽयमथर—गीत० १०, ऋतु० ३।२५।

बन्धुर (वि०) [बन्ध् + ऊर्च्] 1 डाकाडोल, उपतामनन 2 झुका हुआ, छलानवाला, विनत 3 मुहावरा, मुग्गनुमा, श्रिय, तु० बन्धुर, रम् शिष्ट, पूरख।

बन्धुलि [बन्ध् + ली] बन्धुजीव नामक वृक्ष।

बन्धुव (वि०) [बन्ध् + ष्टुट्] 1 बापे जाने के योग्य, बेटी

डारा ब्रकड़े जाने योग्य, कैंद किये जाने या बन्दी बनाये जाने के योग्य—आश० २।२४३ 2 मिलाकर बाँधने या जोड़ने के योग्य 3 निर्माण किये जाने के योग्य, बनाये जाने या संचालित किये जाने के योग्य 4 निरुद्ध, निगूहीत 5 बाँध, बन्ध, जो उपजाऊ न हो, निष्फल, निरर्थक (शक्ति या बस्तु)—बन्ध्यबन्धस्ते—रघु० १६।७५, अरुन्धत्यालारव बभ्रुवदुर ते—३।२९, कि० १।३३ 6 जिसका मासिक रज झाब जाना बन्द हो गया हो 7 (सवास के अन्त में) विहीन, विरहित । सम० छल (बि०) निरर्थक, अर्थहीन, सुस्त ।

बन्ध्या [बन्ध्य+दाप्] बाँध स्त्री न हि बन्ध्या विज्ञानाति गुर्वा प्रसववेदान्ताम्—मुभा० 2 बाँध गो 3 एक प्रकार का गन्धद्रव्य—(बालछत्र) । सम०—तन्ध्या,—पुत्र—मुत्त या ब्रुहित्—पुत्रा बाँध स्त्री का पुत्र या पुत्री अर्थात् धार अमभाव्यता, जिसका न अस्तित्व है न हा सकता है, एव बन्ध्यासुतो यानि सपुत्र्यकृतधोमर—३० 'सपुत्र्य' ।

बंधम् [धं+उट्] बन्धन, गाठ ।

बन्धनी [वधु+अन्+ङीप्, नवङि] दुर्गा की उपाधि ।

बधु (बि०) [भृ+ङु, डित्स्—बभ्रु+उ वा] 1 गहटा भूरा, गांठी, जाली जिये हुए भूरा—ज्वालामुखीरासह—रघु० १५।१६, १९।२५, बन्धु बालाकण-बभ्रु बन्धुलम्—कु० ५।८ 2 किसी रंग के कारण गन्ने सिर वाला,—भ्रु 1 आग, 2 नेबला 3 बाकी रंग 4 भूरे बालो वाला 5 एक वादक का नाम—शि० २।४० 6 शिब का विशेषण 7 विष्णु का विशेषण । सम०—बामु 1 सोना 2 वेद, सुवर्णगैरिक,—बाह्य विद्यापदा के गर्भ से उत्पन्न अर्जुन का एक पुत्र, [वृषिष्ठिर डारा छोड़े गये अश्वमेध के घोड़े की देल-भाल अर्जुन करना था । वह घोड़ा घूमता हुआ मणिपुर देश में चला गया । उस समय वहाँ बभ्रुवाहन राज्य करता था । वह अद्वितीय पराक्रमी था । जब वह घोड़ा उसके पास लाया गया और उसने घोड़े के सिर पर बँधे घुट्ट पर 'गाइको' का नाम पडा तथा यह जाना कि उसके पिता अर्जुन राज्य में आ गए हैं तो सोझता से वह उनके पास गया, बड़े सम्मान, के साथ अपना राज्य और क्रोध, अश्वसहित उनके सामने प्रस्तुत किया । अर्जुन ने उस बूरे समय में बधु राहन के सिर पर प्रहार किया और उसकी कायरता के लिए उसे जोटा, फटकारा और कहा कि यदि वह सम्झा पराक्रमी होता, तथा अर्जुन का सम्झा पुत्र होता तो उसे अपने पिता में इन्ना नहीं चाहिए था, और न इस अक्रान् रीतिता दिखलानी चाहिए थी । इन शब्दों से उस बीर युवक की अत्यन्त क्रोध आया,

ओष में भरकर उसने अर्जुन पर एक अर्धचन्द्राकार बाण छोडा जिससे उसका सिर घट से बल्य हो गया । सयोगवश उस समय वहाँ चिन्तापदा के पास उलुपी विद्यामान थी, उसने अर्जुन को पुनर्जीवित कर दिया । अर्जुन ने ही बभ्रुवाहन को अपना सप्या पुत्र मान लिया और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया ।

बन्धु (म्बा० पर०) बन्धति जाना, चलाना-फिरना ।

बन्धुः [भृ+अच्, डित्स् युच्] मधुमक्खी, मींग ।

बन्धुराली [बन्धुर+अल्+अच्+ङीप्] मक्खी ।

बन्ध [वृ+अट्, बन्धोर्भेद] एक प्रकार का अन् ।

बन्धे (म्बा० पर०) बन्धति जाना, चलाना-फिरना ।

बन्धेः (बन्धे+अट्) एक प्रकार का अनाज, राजमाष ।

बन्धेटी [बन्धे+ङीप्] 1 एक प्रकार का अन्न, राजमाष 2 देवता, रक्षी ।

बन्धेया (स्त्री०) नीली मक्खी ।

बन्धेर [वृ+अरच्, बृट् बन्धोर्भेद] 1 जो धार्य न हा, अनाथ, असम्भ, नीच 2 पूर्व, घुट्ट—भृगु ते बन्धेर—हि० २ ।

बन्धेर [बन्धे+उरच्] एक वृक्ष, बाभल—उपसर्गेन भवन्त बन्धेर वद कस्य लोभेन—भाशि० १।२५ ।

बन्धे (म्बा० जा०) बन्धेते 1 बोजना 2 देना 3 इकना 4 शक्ति पहुँचाना मार डालना, नष्ट करना 5 कैलाना, नि . मार डालना, नष्ट करना शि० १।२९ ।

बन्धेः—हृम् [बन्धे+अच्] 1 मोर की पूँछ—दबोकाहत-शेषवर्हा—रघु० १६।१५ (केजपारी) सति कुमुद सनापे क हरेदेव बन्धे—बिक्रम० ४।१०, पाठान्तर 2 पत्नी की पूँछ 3 पूँछ का पल (विशेषकर मोर की) शेष० ४४, कु० १।१५, शि० ८।११ 4 पत्ता अपाण्डुर केतकबर्हन्मन्—रघु० ६।१७ 5 अनुचरवर्ग, नीकर-बाकर । सम०—भाए 1 मोर की पूँछ 2 मोरछल, लाठी की मूठ में बधा मोर के पत्तों का गुच्छा ।

बन्धुमन् [बन्धे+ल्यट्] पत्ता ।

बन्धि [बन्धे+इन्] आग—(नपु०) कुश नामक घास ।

बन्धिन [बन्धे+इन्च्] मोर—आवासवृक्षोन्मुखबन्धिनि (बनानि) रघु० २।१७, १६।१५, १९।३० । सम०—भासः मोर के पंख से युक्त बाण,—बाह्यन काटित-केव का विशेषण ।

बन्धिन् (पु०) [बन्धे+इनि] मोर—रघु० १६।१४, बिक्रम० ३।२, ४।१०, श्रुत् २।६ । सम०—कुमुदम्,—पुष्पम् एक प्रकार का गन्धद्रव्य, ध्वजा दुर्गा का विशेषण, घास,—बाह्यन कार्तिकेय का विशेषण ।

बन्धिन् (पु०, नपु०) [बन्धे+(कर्मणि) इति] कुश नामक घास—कु० १।६० 2 विस्तरा या कुशघास का

विहीना—(पु०) 1 आग 2 प्रकाश, दीप्ति (नपु०)
1 जल 2 यज्ञ । सम०—केस।—अधोतिः (पु०)
भाग का विशेषण, सूक्ष्मः (बहिर्मुख) 1 आग का
विशेषण 2 देवता (जिसका मूल अग्नि है),—सुखम्
(पु०) आग का विशेषण, सख् (बहिर्मुख) (वि०)
कुण्डनामक घास के जलन पर बैठे हुआ (पु०)
पितर (ब० व०) ।

बलः 1 (म्वा० पर० बलति) 1 सास सेना, जीना
2 अनाज सपह करना ॥ (म्वा० उ० बलति-ते)
1 देना 2 षोड पठेधाना अर्थात् पठेधाना, माग डालना
3 बोलना 4 देवता, पिङ्गु लपाना । प्रेर०—(बालयति-
ते) पालना-पोसना, भरणपोषण करना ।

बलम् [बल्+अच्] 1 सामर्थ्य, शक्ति, ताकत, वीर्य,
शौर्य 2 जबरदस्ती, हिंसा जैसा कि 'बलात्' में
3 सेना, बन्ध, फौज, सैन्यदल—भवेदभीष्ममद्रोग
वृताप्युबल कथम्—वेणी० ३१२४, ४३, भा० १११०,
रघु० १६१३७ 4 महादान, गुण्ड (शरीर की)
5 शरीर, आकृति, रूप 6 वीर्य, शुक 7 शक्ति
8 गौर, रसधर (सीसा की तरह का सुगन्धित गौर)
9 अक्षर, अक्षर, (कलेन सामर्थ्य के आधार पर),
'की बदौलत'—बाहुबलेन जित, वीर्यबलेन, बलान्
'बलपूर्वक' 'जबरदस्ती' 'हिंसापूर्वक' 'इच्छा के विरुद्ध'
बलाभ्रंश समायुता—एव० १, हृदयमदये तस्मिन्नेव
पुनर्बले बलात्—गीत० ७)।—स 1 नीचा 2 कृष्ण
के बड़े भाई का नाम दे० नी० 'बलराम' 3 एक
राजस का नाम जिसे इन्द्र ने मारा था । सम०
—अयम् अत्यधिक सामर्थ्य, शक्ति (—घ) सेना
का प्रधान,—अयक. बलन—हेम० १५६,—अभिज्ञता
बलराम की नीति, अट एक प्रकार का शहतीर,
—अधिक (वि०) सामर्थ्य में बढ़चढ़ कर, अत्यंत
बलशाली, अश्वत्थ. 1 सेनापति मनु० ७।१८२,
2 युद्धमंत्री, अयुक् कृष्ण का विशेषण,—अन्वित
(वि०) सामर्थ्य से युक्त, बलवान्, शक्तिशाली,
—अयुक्तम् 1 तुलनात्मक सामर्थ्य और असमर्थता,
आपेक्षिक सामर्थ्य तथा दुर्बलता रघु० १७।५९
2 आपेक्षिक शक्तिता तथा तदवध्या, तुलनात्मक
महत्त्व तथा महत्त्वशून्यता सम्य एव करोति बला-
बलम् शि० ६।४८, अश्वः बाहल्य के रूप में सेना,
—अराति. इन्द्र का विशेषण, अश्वत्थ सामर्थ्य का
अभिमान, अश्वः—अस 1 क्षयरोग, तपेदिक 2 कुरु
का आधिक्य 3 शले में सृजन (आहार नली का
अवरोध),—अतिशया एक प्रकार का मूत्ररमुची फूल,
हलितयुवी, आहः पानी, उपचय, उपेत (वि०)
सामर्थ्य से युक्त, मजबूत, शक्तिशाली, शोध. सैन्य-
दल का समूह, अश्वत्थ सेना—शि० ५।२,—शोध.

में अभ्यवस्था, गवर, विद्रोह, अश्वत्थ 1 उपनिवेश,
साम्राज्य 2 सेना, समूह, जम् 1 मगर का फोटक,
मुष्यदार 2 खेत 3 अनाज, अन्न का ढेर, शि० १५।७
4 युद्ध, लड़ाई 5 बसा, मज्जा (जा) 1 पृथ्वी
2 सुन्दरी स्त्री 3 एक प्रकार की चमेली, इ बेल,
बलीबई, वर्षे शक्ति का अभिमान—देव. 1 बायु,
हुवा 2 प्रणय के बड़े भाई का नाम दे० नी०
'बलराम', डिम्ब (पु०) निपुणन. इन्द्र के विशेषण
—बलनिपुदनमर्षपति य तम् रघु० ९।३, पति
1 सेनापति, मन्तानायक 2 इन्द्र का विशेषण,—प्रह
(वि०) तानन देने वाला, बलबन्धक, प्रभु, बलराम
की माता राक्षिणी, भद्र 1 बलवान् मनुष्य 2 एक
प्रकार का बेल 3 बलराम का नाम, दे० नी०
4 लोभ नामक वृक्ष, भिम्ब (पु०) इन्द्र का विशेषण
शं० २ भूत् (वि०) बलवान्, शक्तिशाली,
राम 'बलवान् राम' कृष्ण के बड़े भाई का
नाम (यह कमुद्व और देवकी का मातृवा पुत्र
था, कन की कला का शिकार होने से बचाने
के लिए यह रोहिणी के गर्भागम में स्थानान्तरित
कर दिया गया । यह और कृष्ण दोनों का
गोकुल में नन्द द्वारा पालन-पोषण किया गया । जब
यह बालक ही था ता इतने शक्तिशाली राक्षस बनेन
और प्रलब का मार्ग गिराया, तथा अपने भाई कृष्ण
की भाति अनेक आश्चर्यजनक काम किये । एक बार
मरिचा के नगे में जिसका कि बड़ बहुत शोकीन था
यमुना नदी का निकट आने का आवेश दिया जिसमें
कि वह स्नान कर सके, जब उसकी इच्छा पर ध्यान
नहीं दिया गया ता उसने अपने हल का फासी से
यमुना नदी की भीषा, अन्त में यमुना ने मनुष्य का
रूप धारण कर उनसे क्षत्रा माफी । एक दूसरे जब
सर पर उसने दीवारों मंगेत समस्त हस्तिनापुर को
अपनी आर खीचा । जिस प्रकार कृष्ण पाण्डु को
प्रशक्त थे, उसी प्रकार बलराम कौरवों के प्रशक्त
थे जैसा कि उसकी इय बात से प्रकट होता है कि
वह अपनी बहन सुभद्रा का विवाह दुष्योधि से करना
चाहता था कि अर्जुन से । इनका होते हुए भी
उत्तने महाभारत के युद्ध में न पाइया का पक्ष लिया
और न कौरवों का । इसका वयन नीली वेणुयुष्मा
धारण किये हुए 'हल' से जा कि उसका अत्यंत प्रभाव-
शाली शक्त था, मुक्तिजनित किया जाना है । उसकी
पत्नी का नाम रबली था । कई बार इसे शेषनाग
का अन्तार और कई बार विष्णु का आठवाँ अन्त-
तार समझा जाता है—नु० गीत०)।—विश्यातः सत्य
दल की स्पृहरणता,—अश्वत्थम् सेना की हार,—सुषुप्त
इन्द्र का विशेषण,—स्व यादा, सैनिक,—स्थिति.

(स्त्री०) 1 शिबिर, पड़ाव 2 राजकीय छावनी, —हृत् (पुं०) इन्द्र का विशेषण, —ह्रीम (वि०) बलहीन, दुर्बल, अधकृत् ।

बलस्य (वि०) [बल शायत्यन्तात्-स्येत् + क] श्वेत-द्विरदन्ताबलस्यमलस्यत स्फुरितभृङ्गमृच्छवि केनकम्—सि० ११३४ । सम० मृ. (सौ 'किरण' का रूपान्तर) बन्धना-यथानुपचयनाम्नमसदुत्साको बलस्य काव्या० १४४६, (सौहार्दों के प्रसाद मृग का एक उदाहरण) ।

बलस्य [बल + ल्य + क] इन्द्र का विशेषण ।

बलस्यत् (वि०) [बल + मत्स्यु] 1 मजबूत, शक्तिशाली, ताकतशर—विशिरहो बलवानिनि मे मति भर्तुं २।९।१ 2 बलिष्ठ, हट्टा-कट्टा 3 सघन, घिनका (अधकार आदि) 4 अधिभावी, सर्वश्रेष्ठ, प्रभविष्णु—बलवानिन्द्रियधामो विद्वानमपि कर्षति—मनु० २।०।१५ 5 अति महत्त्वपूर्ण, अत्यावश्यक—रघु० १।६।४० (अर्थ०) 1 मजबूती से, शक्ति के साथ-पुनर्विशिष्टाद्वलवद्विगुह्य कुं २।६९ 2 अव्ययिक, अन्वय, अनिश्चय भाषा में—बलवदपि शिक्षितामात्मव्यवप्रत्यय चेत—स० १।२, सौमित्रि बलवदुपयुक्ते नोरे शि० ८।६२, स० ५।३१ ।

बला [बल + अच् + टाप्] शक्तिमत्पत्र ज्ञान या मन्त्रयोग (यह योग विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को बतलाया था) सौ बलानिबन्धयो प्रथमतः रघु० ११।० ।

बलाक—का [बल + अच् + अच्, शिवाय टाप् च] बगला, —सेविष्यते नयननुभय न्य अबन बलाका मध० ९, मृच्छ० ५।१८, १९, का श्रिया, कात्ता ।

बलाकिका [बलाका + कन् + टाप्, इत्यम्] छोटी जाती बगला ।

बलाकिकन् (वि०) [बलाका + इति] बगलों या मारुमा से भरा हुआ—कालिकेय त्रिबिडा बलाकिकी रघु० १।१५, कुं ७।३९ ।

बलाकार [बल + अन् + शिबत् बलात् + क् + अच्] 1 हिंसा का प्रयोग करना, बल लगाना 2 मतील-नाशन, बिनयभंग, बल, अत्याचार, छीनाछपटी रघु० १०।४०, बलाकारेण निर्वेद्ये आदि 3. अन्याय 4 (विधि में) उत्तरमें डाग अधमणं को रोकना तथा शूद्र की बापसी के लिए बल का प्रयोग करना ।

बलाकृत (वि०) [बलात् + क्त + क्त] जिसके साथ अव-रसती की गई हो या जो परास्त कर दिया गया हो ।

बलाहक [बल + हा + क्तुन्] 1 बादल बलाह-कृच्छेदविभक्तानामकालसम्भ्यामिभ धानुमताम् कुं १।४ 2 एक प्रकार का बला या सारल 3 पहाड़ 4. प्रलयकालीन सात बाघों में से एक ।

बलिः [बल् + इत्] 1 जाहुति, भेंट, बड़ावा (प्राय

घामिन्) नीवारबलि विलोकवत—स० ४।२०, १।४९ 2 दैनिक आहार (चावल, अनाज तथा धी आदि) में से कुछ अन्न का सब जीवों को उपहार, (इसे 'भूतयज्ञ' भी कहते हैं) दैनिक पंच महात्म्यों में से एक, बलिबैतव्येय यज्ञ (दे० मनु० ३।६।९१) इसका अनुष्ठान घर के द्वार के निकट, भोजन करने से पूर्व दैनिक आहार का कुछ अन्न बाहर जाकान में फेंक कर किया जाता है यासा बलि स्पष्टि मद्गु-हदेहनीना हर्षेय माग्मसर्गैश्च विन्दुनपूर्वं मृच्छ० १।९ 3. पूजा, आराधना—कुं १।६०, मेघ० ५५, स०

४ 4 उच्छिष्ट 5 देवमूर्ति पर बड़ाया नैवेद्य 6 शुल्क, कर, धूसी—प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताम्यो बलि-मघहीत् रघु० १।१८, मनु० ७।१००, ८।०००, 7 चवर का डडा 8 एक प्रसिद्ध राजस का नाम (यह प्रह्लाद के पुत्र विरांचन का पुत्र था, बहुत शक्तिशाली था, देवताओं को अत्यंत पीड़ित करता था। कलसक्य देवताओं ने विष्णु से सहायता की प्रार्थना की। विष्णु ने करवप और अर्द्धिना का पुत्र बन कर बामन का अवतार धारण किया। उनमें साक्षु का वेश धारण किया। और बलि के पास जाकर उससे तीन पग पुष्पी मांगी। स्वभाव से उदार बलि ने निस्सकोच प्रष्ट रूप से इन मायाव्य प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। परन्तु तीस्र ही बामन ने अपना विराट रूप दिखलाया और तीन पग मापना गृह किया। पहले पग में उसने सारी पुष्पी को आच्छादित कर लिया, दूसरे से सभस्त अन्तरिक्ष को और तीसरे पग के लिए स्थान न पाकर उसे बलि के गिर पर रख दिया, और राजा बलि को उसका अस्वभाव केना मनेत पानाल लोक भेज कर वहाँ का शासक बना दिया। इस प्रकार विश्व एक बार फिर इन्द्र के शासन में आ गया)—छलमसि विक्रमणे बलिमद्भुत-भामन-गीत० १, रघु० ७।३५, मेघ० ५०, लि' (स्त्री०) तह,

धुरीं (प्राय 'बलि' शिवा जाता है) । सम० कर्मन् (नपुं०) 1 सब जीवजन्तुओं को भोजन देना 2 कर अदायगी, बामन् 1 देवता को नैवेद्य अर्पण करना 2 सब जीव जन्तुओं को भोजन देना, प्रबलिन् (पुं०) विष्णु का अवतार, मन्वन्: पुत्रः, सुत श्रित के पुत्र बाण का विशेषण, पुष्ट, —भोजन, कौषा, —ग्रिमः लोप्र मूढ, —अन्वय, विष्णु का विशेषण, मृच्छु (पुं०) 1 कौषा 2 सहिष्ठा 3 बगला या सारल, —अभिषिन्, वैष्मन् सखन् (नपुं०) पाताल लोक, बलि का आवासस्थान, —आकुल (वि०) पूजा में अथवा सब जीव जन्तुओं को भोजन देने वाला मेघ० ८५—हृत् (पुं०) विष्णु का विशेषण, हृत्सन् सब जीव जन्तुओं को भोजन देना ।

बलिन् (वि०) [बल+इति] मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, रघु० १६।३७, मनु० अ।१०५—(५०)
 1. भेसा 2. सुभर 3. ऊँट 4. साँझ 5. सैनिक 6. एक प्रकार की चमेसी 7. कलात्मक कृति 8. इतराम का विशेषण।

बलिन, बलिञ्च [बलि+ञ, भ बा, बययोरभेद] दे० 'बलिन भ'।

बलिन्धकः [बलि+इन्+लच्, मुन्] विष्णु का विशेषण।
 बलिन्धत् (वि०) [बलि+इन्+लृच्] 1. पूजा या आहुति को सामग्री तैयार रखने वाला रघु० १।४।१५ 2. का उपाहने वाला।

बलिन्धन् (५०) [बल+इमिन्] सामर्थ्य, ताकत, शक्ति।

बलिन्धर्व दे० बलीन्धर्व।

बलिष्ठ (वि०) [बलवत् (बलिन्)+इष्टन्] शायत बलशाली, शायत मजबूत, अतिशय शक्तिशाली, —क, ऊँट।

बलिष्णु (वि०) [बल+इष्णुन्] अपमानित, अनादृत, तिरस्कृत।

बलीकः [बल्+ईकन्] छत्र की पुरे।

बलीयसु (वि०) (स्त्री०—सी) [बलवत् (बलिन्)+इयसुन्] 1. अपेक्षाकृत मजबूत, अधिक शक्तिशाली 2. अधिक प्रभावी 3. अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण।

बली (स्त्री) बर्षे [वृ+बिष्प=वर्, ई बयच=ईवरी, ली यदाति-दा+क, ईवर्षे, बली चासौ ईवर्षेण कर्म० म०] साँझ, बेल—गौरवाय पुण्यत् बलीवर्षे।

बल्य (वि०) [बल+यत्] 1. मजबूत, शक्तिशाली 2. शक्तिप्रद, —स्यः बीड भिक्षु, —स्यम् वीर्यं युष्।

बल्यकः [बल्य्+अच् त वाति बा+क] 1. खाना—कुम्भेष्वाद्यत वीरगिन्धरपरिचया बल्लवा सञ्चरन्तु—वेणी० ६।२, शि० ११।८ 2. रसोद्देश 3. विराट के यहाँ भीम का नाम जब वह रसोद्देश का कार्य करता था,—वी ग्यालिन—कि० ४।१७। सम०—युषति०—सो (स्त्री०) जवान ग्यालिन (सोपी) हरिश्चन्द्राकुलकल्पवृत्तिसौख्यचपन पठनीयम्—गीत० ४।

बल्यकः—बा [?] एक प्रकार का मोटा घास—मनु० २।४३।

बलिष्ठाः, बलीष्ठा (ब० ब०) एक (बलव) देश का तथा उसके अधिवासियों का नाम।

बल्य्य (वि०) [बल्य्+अयन्] बड़हा (एक वर्ष का बछड़ा)।

बल्य्य (वि) ली (स्त्री०) [बल्य्य+इति+ङीप्] 1. वह माय जिसका बछड़ा पूरा बढ़ गया हो—वै० १६।१२ 2. बहुप्रसवी माय (जिसके बहुत बछड़े पैदा हुए हैं)।

बल्यः [बल्य्+अच्] बकरा। सम०—कर्म साल बुध।

बहुल (वि०) [बहु+अलच्] 1. अत्यधिक, बंधेष्ट, प्रचुर, पुष्कल, बहुविध, महान्, मजबूत—उत्तर० १।३८, ३।२३, शि० १।८, भाषि० ४।२७ 2. विचका, सचन 3. लोमण (पूछ की भाँति)—मा० १ 4. कठोर, बड़े, सटा हुआ,—क एक प्रकार का इधुरास, ईश, पत्रा,—सा बड़ी इलायची। सम०—बन्ध एक प्रकार का चदन।

बहुल्य (अध्व०) [बहु+इल्यन्] 1. मैं से, बाहर (अप० के माप)—निबन्धनावयचं पुण्ड्रबहि—रघु० ८।१५, ११।२९ 2. बाहर की ओर, दरवाजे के बाहर (विप० अन्) बहिर्यच्छ 3. बाह्यत, बाह्य की ओर से—अन्-बहिं पुरत एव विवर्तमानाय्—मा० १।१०, १५—हि० १।१४ (बहिर्यच्छ 1 बाहर की ओर रखना, में निकालना, हाक कर बाहर कर देना—मनु० ८।३८०, याज्ञ० १।१३ 2. जालि से बाहर करना, बहिर्यम्, —वा, —इ बाहर जाना, बने जाना। सम०—बहु (वि०) बाहर का, बाहर की ओर का (सम्) 1 बाहरी भाग 2 बाहरी अंग,—उपधि (बहिर्यधि) बाहर, दशा या परिस्थिति—मा० १।२४, —अर (वि०) बाहर का, बाहर की ओर का, बाहर की तरफ का—बहिर्यवरा प्राया—दश०,—इत्यर्ष बाहर का दरवाजा, दहनीव।

बहु (वि०) (स्त्री०—हु, ह्रीं) [बहु+हु लोपे—म० ब०—भूयत्, उ० अ०—भूमिष्ठ] 1. अधिक, पुष्कल, प्रचुर, बहुत तस्मिन् बहु एतदपि श० ४, 'बहु भी उसके लिए अधिक था' (इतना अधिक जितने की उससे अपेक्षा में की जा सके)—बहु प्रष्टव्यमत्र—मृदा० ३, अल्पस्य हेतोर्बहुं हातुमिच्छन्—प० २।४७ 2. अनेक, असंख्य—तथा बहुसरं और 'बहु प्रकार' में 3 बार-बार किया गया, दोहाया गया 4 बरा, विद्याल 5 भरापूरा, समृद्ध (समाप्त के प्रथम पद के अर्थ में)—बहुकष्टो देश—आदि—अम०) अनि, बहुतायत से, अत्यधिक, अत्यंत, अतिशयपूर्वक, बड़े परिमाण में 2 कुछ, लयगत, प्राय जैसा कि 'बहुतना' में (कि बहुना अधिक, कइने से क्या काम ? 'संक्षेप में' बहुल्य बहुत सोचना, बहुत मानना, जैसा मूल्य जमाना, बहुमूल्य मानना, कट करना लक्ष्य-भावितमास्तान बहु मन्नामो वयम्—पु० १।२०, यवातिस्त्रिंशत्सिन्धो अनें बहुमता भव—मा० ८।६, ७।१, रघु० १।२।१ अंग २।३५, अहि० ३।५३, ५।८४, ८।१०)। सम० अक्षर (वि०) अनेक अक्षरों वाला, (शब्द) बहुत से अक्षरों में बना हुआ, अच्,—अच्छ (वि०) अनेक स्वरों में युक्त, बहुत स्वरों वाला,—अच्,—अच्छ (वि०) उत्कृष्ट, अच्छ (वि०) अनेक मतों में युक्त (त्य) 1 नूतन 2 मूना,

बहु (वि०) (स्त्री०—हु, ह्रीं) [बहु+हु लोपे—म० ब०—भूयत्, उ० अ०—भूमिष्ठ] 1. अधिक, पुष्कल, प्रचुर, बहुत तस्मिन् बहु एतदपि श० ४, 'बहु भी उसके लिए अधिक था' (इतना अधिक जितने की उससे अपेक्षा में की जा सके)—बहु प्रष्टव्यमत्र—मृदा० ३, अल्पस्य हेतोर्बहुं हातुमिच्छन्—प० २।४७ 2. अनेक, असंख्य—तथा बहुसरं और 'बहु प्रकार' में 3 बार-बार किया गया, दोहाया गया 4 बरा, विद्याल 5 भरापूरा, समृद्ध (समाप्त के प्रथम पद के अर्थ में)—बहुकष्टो देश—आदि—अम०) अनि, बहुतायत से, अत्यधिक, अत्यंत, अतिशयपूर्वक, बड़े परिमाण में 2 कुछ, लयगत, प्राय जैसा कि 'बहुतना' में (कि बहुना अधिक, कइने से क्या काम ? 'संक्षेप में' बहुल्य बहुत सोचना, बहुत मानना, जैसा मूल्य जमाना, बहुमूल्य मानना, कट करना लक्ष्य-भावितमास्तान बहु मन्नामो वयम्—पु० १।२०, यवातिस्त्रिंशत्सिन्धो अनें बहुमता भव—मा० ८।६, ७।१, रघु० १।२।१ अंग २।३५, अहि० ३।५३, ५।८४, ८।१०)। सम० अक्षर (वि०) अनेक अक्षरों वाला, (शब्द) बहुत से अक्षरों में बना हुआ, अच्,—अच्छ (वि०) अनेक स्वरों में युक्त, बहुत स्वरों वाला,—अच्,—अच्छ (वि०) उत्कृष्ट, अच्छ (वि०) अनेक मतों में युक्त (त्य) 1 नूतन 2 मूना,

पूहा, (स्था) वह गाय जिसके बहुत बच्चे बछड़ियाँ हैं, —अर्ध (वि०) 1 अनेक वर्षों से युक्त 2 बहुत से उद्देश्य रखने वाला 3 महत्त्वपूर्ण, —आशिकु (वि०) बहुशोभी, पेड़, —उपकः एक प्रकार का चिड़ू जो अज्ञात नगर में निवास करता है तथा घर घर भिंसा मांग कर अपना निवास करता है—तु० 'कुटीचक', —उपाय (वि०) प्रभावी, कियावान्, —शुष् (वि०) अनेक कृपाओं से युक्त, (स्त्री०) शुष्नेद का नामान्तर, —एतस् (वि०) अति पापमय, —कर (वि०) अतिक्रियाशील, व्यस्त, उद्योगी, (र०) 1 भङ्गी, झाड़ देने वाला 2 ऊँट, (री) झाड़ू, —कालम् (अव्य०) बहुत देर तक, —कालीम (वि०) बहुत समय का, पुराना, प्राचीन, —कूर्धं. एक प्रकार का नारियल का पेड़, —कम्बहा कस्तुरी, मूषक, —कम्बा 1 घुँघिका लता 2 चपाकली, —मूष (वि०) 1 अनेक तद्गुणों से युक्त 2 कई प्रकार का, तरह-तरह का 3 अनेक चाणों से युक्त, —कृष् (वि०) बहुभायी, मूखर, वाचाल, —क (वि०) बहुत जानकारी रखने वाला, अच्छा जानकार, सुचिज्ञ, —तुषम् कोई पदार्थ जो बहुधा घास की भाँति हो अथ महत्त्वगुण्य या निरकरणीय हो—निदर्शनमसारथा लम्बेहुतगुण्य नर—शि० २।५०, —स्वच्छ, —स्वच् (पु०) एक प्रकार का भोजन्य, —इक्षिण (वि०) 1 जिनमें बहुत दान और उपहार प्रस्तुत किया जाय 2 उदार, दानशील, —शशिकु (वि०) उदार, दानशील, उदारतापूर्वक दान देने वाला, —गुण्य (वि०) बहुत दूध देने वाला, (स्थ.) गेहूँ, (स्था) बहुत दूध देने वाली गाय, —दुग्धम् (वि०) दूध अनुभवही, जिसमें बहुत देखा मुना हो, —दोष (वि०) 1 जिसमें अनेक दोष हो, बहुत सी त्रुटियाँ हो, अतिवृष्ट पापपूर्ण 2 अपराधों से युक्त, भयदायी—बहुदोषा हि प्रचरो—मूच्छ० १।५८, ध्व (वि०) बहुत धनी, धनाढ्य, —धारम् इन्द्र का वज्र, वेनुकम् दूध देने वाली गौओं की बड़ी सन्ध्या, —मादः श्लथ, —पक्षः प्याज, (अम्) अन्नक, (श्री) तुलसी का पौधा, —पद्, वाष्-पाद (पु०) बस का वृक्ष, —पुष्पः 1 मृगे का पेड़ 2 नीम का वृक्ष, —प्रकार (वि०) बहुत प्रकार का, नाना प्रकार का, विविध प्रकार का, —प्रज (वि०) बहुत सन्तान वाला, अनेक बच्चों वाला, (अ.) 1 भूजर 2 मूज—एक घास, —प्रतिज्ञ (वि०) 1 नाना प्रकार की उक्ति और वाक्यों से युक्त वेचोदा 2 (विधि में) अभियोग पत्र के रूप में गृही कई प्रकार का मुक्क लगे, —प्रब (वि०) अनाया उदार, उदार, दाता, —प्रसू अनेक बच्चों की माँ श्रेयसी (वि०) जिसके बहुत से प्रेमी १।—फल (वि०) कलों से समृद्ध, (क) कदम्ब का वृक्ष, बस. सिंह,

भासिन् (वि०) मूखर, वाचाल, —अञ्जरी तुलसी . पौधा, —अस्त (वि०) बहुत माना हुआ, पत्यवर्धन, कीमती, सम्मानित, —अतिः (स्त्री०) बड़ा मूल्य, या मूल्यवान्—कि० ७।१५, —अलम् तीसरा, —आम बड़ा सम्मान या आदर, ऊँचा मूल्यवान्, —पुल्यबहुमानो विगलित—अर्ध० ३१८, अक्षमानकवे कालिदासय क्रियाया कथ परिपदो बहुमान—मालवि० १, विक्रम० ११२, कु० ५।३१, (नम्) उपहार जो बड़ी द्वारा छोटी को दिया जाय, —आम्य (वि०) आदरणीय, माननीय, —आम कलाभय, छलयुक्त डोही पद्य० १।३२१, —आर्गया गया—रत्न० १।१, —आर्षी जहाँ बहुत सी सड़कें मिलती हो, —मूष (वि०) मधुमेह रोग से पीड़ित, —अर्धम् (वि०) क्षिण का विशेषण, मूष्य (वि०) मूल्यवान्, ऊँची कीमती का मूष (वि०) जहाँ बहुत से मृग हो, —रत्न (वि०) रत्नों से समृद्ध, —ष्य (वि०) 1 अनेक स्त्री, बहुस्त्री, विष्वक्पत्नी 2 वितकबरा, धन्यदार, रगविरला या चारखानेदार, (श) 1 छिपकली, निर्गणित 2 बाल 3 मृग, 4 शिव 5 विष्णु 6 ब्रह्मा 7 कामदेव, —रेतस् (पु०) ब्रह्मा का विशेषण, —रोधम् (वि०) बहुलोमी, रोधवार (पु०) भेद, सम्बन्ध मुनिपा परती, बचनम् (व्या० में) एक से अधिक वस्तुओं का ज्ञान कराने का प्रकार, —अर्ध (वि०) बहुशोभी, रगविरला, —आशिक (वि०) बहुत वर्षों तक रहने वाला, —अशिन (वि०) अनेक कठिनाइयों से युक्त नाना विघ्नबाधाओं से भरा हुआ, विधि (वि०) अनेक प्रकार का, तरह-तरह का, विविध प्रकार का, —ओ (श्री) अम् शरीर, —श्रीहि (वि०) बहुत धावने वाला—नृत्युष्य कर्मचार्य सेनाहू तथा बहुवीहि—उद्भट (यहाँ यह समास कर्मचार्य का नाम भी है), (हि) सक्कल के चार मुख्य समासों में एक (इसमें दो पद पास-पास रख दिये जाते हैं, विशेषात्मक पद (चाहे वह सज्ञा हो या विशेषण) को पहले रखते हैं, जो दूसरे पद को विभोचित करता है, परन्तु वह दोनों पद पृथक-पृथक अर्थात् अर्थ का प्रतिपादन नहीं करते, बल्कि मिलकर एक अन्य अर्थ खोजकर शब्द का निर्माण होता है। यह समास विशेषणपरक होता है। परन्तु कभी-कभी इसका प्रयोग सज्ञाओं की भाँति किया जाता है जहाँ यह किसी विशेषित शब्द के अर्थ में सन्निर्वाण होता है उदा० चक्रगणि, पशिषोत्तर, पीतांबर, वसुधंश, त्रिनेत्र, कुसुमशर आदि, —शानु कोरिया चिदिदा, —अश्व. खदिरवृक्ष का एक भेद—शुङ्गुः विलगु का विशेषण—भुत (वि०) 1 विज पुरुष, प्रविधान्—हि० १।१, पद्य० २।१, रपु० १।५।३६ 2 वेदों का जानकार—मनु० ८।३५०, —सत्तति (वि०) अनेक बाल-बच्चों

वाला (सि) एक प्रकार का बांस,—सार (वि०) बहुत अधिक मज्जा या रस से युक्त, साग्युक्त, (र) सादरवृक्ष, सैर,—सूः 1 अनेक बच्चों की मा 2 चुकरी, सरी,—सुक्तिः (स्त्री०) 1 अनेक बच्चों की मा 2 बहुत दार भ्याने वाली गाय,—स्नन (वि०) काकाहनुपूर्ण (न), उल्लू,—शासिक (वि०) जिसके स्वामी अनेक हो।

बहुक (वि०) [बहु + कन्] मर्यादा खरीदा हुआ, क 1 सुय 2 मर्यादा पोषा 3 केकडा 4 एक प्रकार का जलकुम्बकृत।

बहुतर (वि०) [बहु + तरण] अपेक्षाकृत अमन्य, अधिक, ज्यादा।

बहुतम (वि०) [बहु + तमम्] अत्यन्त अधिक, अतिशय।

बहुत (अध०) [बहु + तम्] माना पाठ्यों न, कर्तृत्वक से।

बहुता, बह्व्यम् [बहु + तम् + टाप्, ख वा] बहुतायत, प्राच्यं अलभ्यता।

बहुविध (वि०) [बहु + विध्] ज्यादा, अधिक, अनेक-काल गये बहुविध—आ० ५१३, तदत्र भूवि बहुविधा मित्यय कि० १२१२।

बहुधा (अध०) [बहु + धाच्] 1 कर्तृ प्रकार से, विविध प्रकार से, बहुत तरह से बहुधाप्यायमीभजा रघु० १०।२६, भग० १३।६ 2 भिन्न-भिन्न रूप से वा रीतियों से 3 बार-बार, दोहराकर 4 विविध स्थानों या दिशाओं में।

बहुस (वि०) [बहु + कुलत्, नत्वांयः] (म० अ० बहीयम्, उ० अ० बहिष्ठि) 1 पितृका, मघन, मया हुआ 2 विद्यालय, विस्मय, आचन, विपुल, बडा 3 प्रचुर, बसेष्ट, पुष्कल, अधिक, अमन्य अकिन्त-बहुलताया का० १६७ 4 अनेक, बहुत प्रकार का, अनगिनत मा० ११।८ 5 भरापूरा, समृद्ध, प्रभु अमन्य स्तेन्यबहुने कि नु यु बधन परम्—वि० १।१८४, भग० २।४१ 6 मयुक्त सलम्न 7 कृतिका नक्षत्र में जितका अन्त हुआ है 8 काल क 1 मान का कल्पवृक्ष,—प्रादुरासबहुलशापाछवि रघु० ११।१५, करण भागोर्ध्वद्वारासमानं मघश्यामागेव शवा-द्वारका कु० ७८, ७११३ 2 अति का विशेषण, —सा 1 गाव 2 इलायची 3 नील का पोषा 4 (ब० ब०) कृतिकानसत्र, लम् 1 आकाश सफेद सिंघं, (बहुसोड्ड) 1 प्रकाशित करना, मोलना, भडाकोड करण 2 मघन या मटकार बनाना शि० १३।६६ 3 बड्डाना, विस्तार करना, वृद्धि करना भूतेषु कि च कल्पा बहुसोकरोति—प्रागि० १। १२२ 4 फटकना, बहुसोड्ड 1 फेलाना, बिस्तृत करना, बुधा करना—छिद्रेष्यन्तर्वा बहुसो भवन्ति

—पच० २।१७५ 2 दूर तक फैलना, प्रकाशित होना, बढनाम हाता, सुविस्तृत होना, दूर दूर तक फैल जाना बहुसोभवन सोदु न तल्लुवंबवमर्षीयो रघु० १६।३८) मय० आलाप (वि०) बातूनी, साधारण, सुन्दर, गन्धा इत्यायची।

बहुसिका (स्त्री०—ब० ब०) कृतिकानसत्र।

बहुशः (अध०) [बहु + शम्] 1 अत्यन्त, बहुतायत के साथ, अत्यधिकता के साथ मेष० १०६ 2 बार-बार, दोहरा कर, बहुसुद्धः—बलायाद्वा वृद्धि स्तुयामि बहुशा वेपयुमीयु न ० १।२२, कु० ६।२५ 3 साधारण्यत, सामान्य रूप में।

बाकुलम् [वकुल + अच्] वकुल वृक्ष का फल।
बादू (स्त्री० आ० बाहते) 1 स्नान करना 2 पोता लगाना।

बाहव [वडवा + अण्, ववयोर्भवे] दे० 'बाहव'।

बाहवेय (वि०) [वडवा + षक्] दे० 'बाहवेय'।

बाहव्यम् [बाहव + यन्] दे० 'बाहव्यम्'।

बाह (वि०) [वड् + क्त नि० साच्] (म० अ०—साधो-वन्, उ० अ० साधिष्) 1 दूध, मज्जबल 2 ऊँचे स्वर का,—इम् (अध०) 1 यकीन, निश्चय ही, अवश्य, बखुब, हाँ (प्रत्यय के उतर के रूप में) —चालक्य चन्द्रनदाय, गच्छ ते निश्चय, चन्द्रनदाय—बाहम्, एय म शिबरा निरचय—भृश० १, बाहमेय दिवसेषु पाथिव कर्म साधयति पुत्रजनने रघु० ११।५२ 2 बहुत अच्छा, लक्ष्यन्तु, गुणम् 3 अत्यन्त, बहुत ज्यादा शि० १।७७।

बाण [वन् + घञ्] गौर बाण, शर—घनुष्यमोष सम-पत बाणम्—कु० ३।६६ 2 तीर का निशाना, बाण का लड्ड 3 तीर का पकचूक भाग 4 गाय का ऐन या ओधी 5 एक प्रकार का पोषा (नील-सिटी भी)—विकचवाणदनाबाणयोश्चिह्नं हविरे रचिरे-स्यविध्रमा शि० ६।६६ 6 एक राक्षस का नाम, बलि का पुत्र—नु० उषा 7 एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में राजा हर्षवर्धन के दरबार में विद्यमान था (दे० परिशिष्ट २), उनसे कादंबरी, हर्षचरित तथा और कई पुस्तकें लिखीं (आर्यों के ३७ वें शताब्दी में गोवर्धन ने बाण के विषय में निम्नांकित कहा है—जाता शिवविष्णोर्नाशयथा शिवश्चो तथावागच्छामि, शालम्यमधिकमान् शामी बाणो बभूविति। इसी प्रकार—हृदयवसति पञ्चबाणान्मु बाण—प्रस० १।२२) 1 'पौत्र' की संख्या के लिए प्रतीकात्मक उक्ति। सय० अलक्षम् धनुष, —आर्षालि, —सी (स्त्री०) 1 बाणों की सेधी 2 एक वाक्य में अङ्कित पौत्र स्थानों का एक कुलक, —आशय, तत्कत, गोचर बाण का पराश, —आशयम्

बागों का समूह, जिन् (पु०) विष्णु का विशेषण,
-बुधः, -धिः तरकसः, -पथः बाघ का पराग, -पाणि
(वि०) बागों में सुसज्जित, पाल 1 तीर की मार
(दूरी की माप) 2 तीर की परात, -भूतिः, -भौक्षणम्
बाग मारना, तीर छोड़ना, -भौक्षणम् तरकस, -दुष्टिः
(स्त्री०) तीरों की बीछार, -बारः वक्षस्त्राण, कवच,
उरस्त्राण तु० वारबाण, सुतर बाण की पुत्री
ज्या का विशेषण, दे० उपा, हुन् (पु०) विष्णु का
विशेषण ।

बाणिनी [बाण : इनि + डीप्] दे० बाणिनी ।

बाबर (वि०) (स्त्री०-री) [बद्र : अण्] 1 बेर के
बस से प्राप्त या सबद्ध 2 रुई का बना हुआ, -र
रुई का पीठा, बाडी, -रु 1 बेर 2 रदास 3 पानी
4 रुई का वस्त्र 5 दक्षिणावत शत्रु, रा कपास
का पेड़ ।

बाहराणम् [बदरी + फ्र्] वेदान्त दर्शन के शारीरक
सूत्रों का प्रणेता बाहराणम् (जिसे प्रायः व्यास का
नामान्तर माना जाता है) । सम० सुत्रम् वेदान्त
दर्शन के सूत्र, सम्बन्ध कल्पित या दूर का सम्बन्ध
(आधुनिक रूप) ।

बाहराणिक [बाहराण + इञ्] व्यास का पुत्र
सूत्र ।

बाह्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [बद्र + इञ्] बेर
एकत्र करने वाला ।

बाध् (उभ० आ०) बाधत, बाधति । 1 तप करना, उपवी-
र्यन करना, सताना, अत्याचार करना, छेड़ना, बन्ध
देना, दुर्गों करना, परनाश करना, पीडा देना ऊन
न सत्त्वव्यवस्था बंधाये रघु० २।१४, न तथा बाधते
स्कन्धा यथा बाधति बाधते सुभा०, मध० ५१,
मनु० १। २१ १०।१२२, भट्टि० १६।४५ 2 मुका-
बला करना, विग्राह करना, निफल करना, रोकना,
फलावट डालना, अवरोध करना, हस्तक्षेप करना
-कि० १।११ उतर० ५।१२ 3 आक्रमण करना,
हमला करना, धावा बोलना : अनुचित व्यवहार
करना, अन्याय करना 5 चाट पहुँचाना, क्षति पहुँ-
चाना 6 हाक कर दूर करना पीछे डकेलना, हटाना
7 स्थगित करना, एक भाग रचना, रद्द करना,
तोड़ना, मिटाना (निवम आदि) रघु० १७।५,
अभि० 1 चाट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2 दुःख
देना, तप करना, सताना, आ दुःख देना, सताना,
क्षति पहुँचाना, परि० कष्ट देना, पीडा पहुँचाना
- द० ७।२५, प्र० 1 कष्ट देना, मताना, तप
करना, चिड़ाना, क्षति पहुँचाना समुच्चितालेव तन्मन्
प्रवासेते (प्रभञ्जन) हि० १, भट्टि० १२।२ 2 हाक
कर दूर हटाना, मिटाना, पार करना—कथ नु देव

बाधते पीछेण प्रवाविनुम् महत्, सम्, कष्ट
देना, सताना ।

बाध्, -ध [बाध् + धञ्] 1 पीडा, यातना, कष्ट,
सत्याप-रचना सह जृम्भते मदनबाधा विक्रम० ३
2 रुकावट, छेड़छाड़, परेशानी इति भ्रमरकाथा
निरूपयति द० १ 3 हाति, क्षति, घाटा, बाँट
---चरणम् बाया मालवि० ४, याज्ञ० २।१५६
4 अथ अतरा 5 मुकाबला, विरोध 6 आपत्ति
7 प्रत्याख्यान, निराकरण 8 स्थान, रद्द करना
9 अनुमान प्रविष्टा मे वृत्ति, हेतुभास क पान रूपो
में से दे० नी० 'बाधति' । सम० अपवाद अपवाद
का लक्षण ।

बाधक (वि०) (स्त्री०-विधा) [बाध् + क्त] 1 कष्ट
देने वाला, मगाने वाला, उपोद्बक 2 छेड़छाड़ करने
वाला, परेशान करने वाला 3 उन्मूलन 4 बाधा
डालने वाला ।

बाधनम् [बाध् + ल्यट्] 1 तप करना, उपवीर्यन, परेशान
करना, अशान्ति, पीडा—आ० १ 2 मिटाना 3 हटाना,
स्थान 4 निराकरण, प्रत्याख्यान, -ना पीडा, कष्ट,
चिन्ता, अशान्ति ।

बाधित (प्र० क० कृ०) [बाध् + क्त] 1 तप किया
हुआ, उपवीर्यित, परेशान 2 पीडित, सम्पन्न, कष्टग्रस्त
3 विरुद्ध, अवच्छेद 4 रोका हुआ, प्रयुगील 5 एक
भोर रक्ता गया, स्थिति 6 निराकृत 7 (तर्क० में)
अपिष्ट, विवादग्रस्त, असतत (फलतः अर्थ) ।

बाधियम् [बाधिर, धञ्] बहराणम् ।

बाध्किनेय [बन्धकी + इञ्, इतहादेया] दायता, धर्म
सकर ।

बाध्चक, [बन्धु + अण्] 1 रिश्तेदार, मन्धी—यस्यापार्थन-
स्य बाध्चका—हि० १, मनु० ५।७४, १०१, ६।७७
2 मातृपूरक रिश्तेदार 3 मित्र—धनेभ्यः परी बाध्चकी
नास्ति लोके—सुभा० 4 भाई । सम० - जल, रिश्ते-
दार, बन्धु-बाध्चक—दारिद्र्यात्पुत्रस्यैव बाध्चकत्वो
वाक्ये न सतिष्ठते—मूच्छ० १।२६, पथ० ४।७८ ।

बाध्चक्यम् [बाध्चक + ध्यञ्] समाधान, रिश्तेदारी ।

बाधकी [बन्धु + अण् + डीप्] दुर्गा का विशेषण ।

बाध्कीरः [?] 1 आम का गूदा 2 जल 3 नया अक्रुर
केषा का पुत्र ।

बाह् (वि०) (स्त्री०-ह्री) [बहं + अण्] मार की पूछ
के चटवा से बना हुआ ।

बाह्द्वच, बाह्द्वधि [बृहद्वच + अण्, इञ् ना] गजा
अरासक का पितृपूरक नाम ।

बाह्द्वस्वत (वि०) (स्त्री०-नी) [बृहस्पति + अण्] बृह-
स्पति में सबद्ध, बृहस्पति की सत्यान वा बृहस्पति
की प्रिय ।

बाहुस्थल्य (शि०) [बृहस्पति + यक्] बृहस्पति से सबंध रखने वाला,—स्थः 1 बृहस्पति का विषय 2 भौतिकवाद के उद्भव के विशक बृहस्पति का अनुयायी, भौतिकवादी,—स्थम् पुष्पशाला ।

बाह्वि (वि०) (स्त्री०—षी) [बह्वि + जन्] मोर से सबंध या उत्पन्न ।

बाह्व (वि०) [बह्व् + ण या बाल + अच्] 1 बच्चा, शिशु-बन्, अवयस्क, न्याना- बालिन स्वविरिण वा मनु० ८।७०, बालाशोकमुपोद्वाराममुभय भेदोन्मूल तिष्ठति—विक्रम० २।७, इसी प्रकार बालमन्दारवृक्ष—मेघ० ७५, रघु० २।५५, १३।२४ 2 नया उगा हुआ, बाल (रक्ति या अर्क)—रघु० १२।१० 3 नृतन, वर्षमान (चन्द्रमा)—पुरोच बुद्धि हरिदीपितेरनुप्रवेशादिन बालचन्द्रमा रघु० ३।२२, कु० ३।२२ 4 बालिका 5 अनजान, अशोक, ल. 1 बालक, शिशु-बालादपि सुभाषित श्राह्यम् मनु० २।२३९ 2 बालक, युवा, तरुण 3 अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का)—आम बालोद्दशादुपनि—तारु 4 बछेरा, अवयव 5 मूत्रं, भोजू 6 पृष्ठ 7 बाल 8 पाँच वर्ष का हाथी 9 एक प्रकार का गन्धद्रव्य । सम०—अधमू बाल की नोक,—अध्यापक बच्चो का शिक्षक,—अध्याप्तः बाल्यावस्था में अध्ययन, (अध्ययन में) छोड़ लगाना, अरण (वि०) प्रभातकालीन उषा की भाँति लाल, (ष) प्रभातकालीन उषा,—अर्क- नवोदित सूर्य—रघु० १०।१००, अशोक, बच्चो की शिखा, अवस्थ (वि०) तरुण, नवयुवक विक्रम० ५।१८, अवस्था बचपन,—आतपः प्रातः कालीन घृष,—इन्द्रु नया बढ़ता हुआ चन्द्रमा—कु० ३।०९, इन्द्रु बँरी, बँर का पेड़,—उपचार (आयु०) बच्चो की चिकित्सा,—उपशीतम् लगोटी, दमाती, कबली केने का नया पीषा, कुम्ब,—भम् एक प्रकार की नई चमेली (भम्) चमेली की नई लिली हुई कली अलके बालकुन्दानुविद्धम् मेघ० ६५, कृमिः नूँ, कृष्ण बालक के रूप में कृष्ण,—क्रीडनम् बच्चे का खिलौना या खेल,—क्रीडनकम् बच्चे का खिलौना, (कः) 1 गेंद 2 शिव का विशेषण,— क्रीडा बच्चो का खेल, बालको या तरुणो का खेल,—खिल्य ब्रह्मा के रोम से उत्पन्न, अगृते के समान आकारवाली दिव्य मूर्तियों (जो गिनती में साठ हजार समझी जाती हैं) नु० रघु० १५।१०,—सभिषो पहली बार गायिन हुई गाय, गोपालः—तन्मा ग्वाला बालगोपाल के रूप में कृष्ण का विशेषण, ब्रह्म बालको को पीडा पहुँचाने वाला पिपाच (या उपग्रह),—बन्ध- चन्द्रमस्य (पुं०) दूज का पंड, बन्ना हुआ बँद—मा० २।१०,—अरितम् 1 तरुणों के खेल 2 बाललीला, बाल्यजीवन के कारनाम—उत्तर०

६,—अयं कानिनेय का नाम, (षी) बच्चे का ध्वजहार, - अ (वि०) बालों से उत्पन्न,—तपय, खरिर का वृक्ष, खैर,—तन्मम् धारीकर्म,—तृणम् नई दूब, हरी घास,—दलक खैर, वि. बालो वाली पृष्ठ—वि० १२।७३, कि० १२।४७,—वाह्या 1 बालों की माँग में पहने जाने के पीष्य आभूषण 2 बालों की चोटी में धारण की जाने वाली भौतियों की लड़ियाँ,—पुष्टिका,—पुष्टी एक प्रकार की चमेली, शेषः 1 बच्चो की शिखा 2 अनुभवपूष्य नये बालको की दक्षि के अनु-सार कोई कार्य,—अन्नकः एक प्रकार का विष,— भार बालों से भरी हुई लम्बी पृष्ठ—बाधेतोल्काशपित्तचमरी बालमारो दवाग्नि—मेघ० ५३,—प्राथ बचपन, बाल्यावस्था, शेषमस्य एक प्रकार का अन्न,—शोष्यः मटर,—मृग मृग शीतान, यशोपशीतकम् वक्ष म्मल के ऊपर से पहने जाने वाला जनेऊ,—राजम् वैदूर्यमणि, नीलम्—रौप्य बच्चो का रंग,—रत्ना नूतन बेल—रघु० २।१०,—शीला बच्चो के खेल, बालको का मनोरिनाद,—भत्ता 1 नन्हा बछडा 2 कबूतर,—बायजम् वैदूर्यमणि नीलम्,—बास्त्य (नपु०) ऊनी वस्त्र, बाह्य वाली बकरा,—बिषया बाल्यावस्था में ही जिसका पति मर गया हो, व्यवजम् चबुर, बौरी (सुरामाय के बालो से बनी बौरी जो एक प्रकार का राजविज्ञ है)—रघु० ५।६६, १५।११, १६।३३, ५७, कु० १।१३,—सत्तिका बाल्यावस्था में बना मित्र, बचपन का दोस्त,—सध्या मृदुपुटा,—सुहृद् (पु०) बचपन का मित्र,—सुष्यं,—सूर्यक वैदूर्यमणि, नीलम्,—हत्या बच्चे की हत्या,—हस्तः बालो वाली पृष्ठ ।

बालक (वि०) (स्त्री०—लिका) [बाल + कन्] 1 बच्चो जैसे, नन्हा, अवयस्क 2 अनजान,— क 1 बच्चा, बाल 2 अवयस्क (विधि में) 3 अँगूठी 4 मुख या बूट 5 कडा, ककण 6 हाथों या घोड़े की पृष्ठ,— कम् अँगूठी । मम० हत्या, बच्चे की हत्या ।

बाला [बाल + टाप्] 1 लडकी, बच्चा 2 सोलह वर्ष से कम आयु की युवती 3 तरुणी, युवती, जाने लागी वीर्य मा बाला परवतीति में ब्रिटिनम्—शं० ३।१, द्य बाला मा प्रत्यनवर्तमिन्दोवरत्नप्रभाचोर बहु खिलानि भर्तु० २।६७, मेघ० ८३ 4 बमेली का एक भेद 5 नागिख 6 धृत्कुमारो का पीषा 7 इलायची 8 हल्दी । मम० हत्या स्त्रीहत्या ।

बालि [बह्व् + डन्] एक प्रसिद्ध वातराज का नाम द० बालि । मम० हन् हन्स्य (पु०) राम का विशेषण ।

बालिका [बाला + कन् + टाप्, इवम्] 1. लडकी 2 कान की बाली की धरी 3 लोटी इलायची 4 रेल 5 पत्तो की सरसराहट ।

बालिन् (पु०) [बाल+इनि] एक बानर का नाम—दे० 'बालि'।

बालिनी [बालिन्+नीप्] अरिबनी नलत्र।
बालिष्यन् (पु०) [बाल+इनिष्] बचपन, बाल्यावस्था, लडकपन।

बालिष्य (वि०) [बाडि एवति, बाडि+शो+इ डलयोरभेद] 1 बच्चा बैसा, अबोध, मूर्ख 2 बच्चा 3 मूर्ख, अनजान मनु० ३।१७६ 4 लपरबाह, अः 1 मूर्ख, बुद्ध 2 बच्चा, बालक, शम् तकिया।

बालिष्यन् [बालिष्+ष्यञ्] 1 लडकपन, बचपन 2 बचकानापन, मूर्खता, बेबकूफी।

बाली [बालि+लीप्] एक प्रकार की कान की बाली।
बालीशः (पु०) मूषावरोध।

बालुः + **बालुकम्** [बल+उज्, बालु+कन्] एक प्रकार का नष इत्य।

बालुका दे० 'बालुका'।
बालुकी, **बालुकुटी**, **बालुङ्गी** [बल+उकञ्+ङोप्] एक प्रकार की ककड़ी।

बालुक [बल+उकञ्] एक प्रकार का शिव।
बालेष्य (वि०) (स्त्री०—यी) [बलि+इज्] 1 बलि देने के लिए उपयुक्त 2 मृदु, मृदायम 3 बलि को खतान,— ष गया।

बालेष्यम् [बाल+ष्यञ्] 1 लडकपन, बचपन—बाल्यात्परामित्र वना मदनोप्यबास रणु० ५।६३, कु० १।२९ 2 (चन्द्रमा के) बहने की अवधि—कु० ७।३५ 3 समझ की अपरिपक्वता, मूर्खता, अबोधता।

बालहृका, **बालिहृका**, **बालहोका** (पु० व० व०) [बलिहृदेशे भवा बलिहृ+वृज्, बलिहृ+ठञ्, षीषो० पत्वे दीर्घत्वम्] बलिहृ के अधिवासी, कः 1 बालीकी का राजा 2 बलस का घोडा,—कम् 1 केसर, डाफरान, 2 हीय।

बालिः (पु०) एक देश का नाम। सम०—अ (वि०) बलस देश में पला, बलस देश की नलस।

बाल्यः ष्यन् [बाप्+भृषो० सत्त्वं पत्वं वा] 1 औसु, अयु-कठ स्तम्भिनकण्वृत्तिकलत्र—ना० ४।५ 2 भाग, प्रमाण, कुहरा 3 लोहा। सम०—अभ्यु (नपु०) औसु,—उद्भयः आसुओ का जाना,—कठ (वि०) जिसका गला भर आया हो, गद्वयुद्ध कट वाला,—कुशियन् औसुओं को बाड,—पूर औसुओ का फूट पडना, औसुओ को बाड,—बारबार तिरयति दुषोषद्वयम बाडपूर—मा० १।३५,—मोक्ष, मोक्षन् औसु बहाना,—किन्तु (पु) औसु की बूँद,—सचिष्य (वि०) जो औसुओ के कारण अस्पष्ट हो।

बाल्यावस्था (ना० फा० वा०) औसु बहाना, रोना—तत्कामिति शान्तायित अगकत्या—ना० ६, विक्रम० ५।९।

बास्त (वि०) (स्त्री०—स्ती) [बस्त+अप्] बकरे से उत्पन्न या प्राप्त—मनु० २।४१।

बाहू [=बाहु षीषो० बहु+गिष्+अच्, बवयोरभेद] 1 भुजा 2 घोडा।

बाहा (दे० बाह) भुजा,—भा प्रत्यालिङ्गोत्पत्ताभि शास्त्र-बाहाभि—ना० ३। सम०—बाहृभि (अभ्य०) हस्ताहृति, भुजा से भुजा—तु० बाहू-बाहृभि।

बाहोका (ब० व०) [बहू+ईकण् बवयोरभेद] पञ्चम के अधिवासी,—कः 1 पञ्चमी 2 बैल।

बाहु [बाप्+हु, वय ह] 1 भुजा—शान्तिमदनाश्रमपद स्फुरति च बाहु कुन फलमिहास्य—ना० १।१६ इसी प्रकार 'महाबाहु', आदि 2 कलाई 3 पशु का अगला पैर 4 द्वार की चौकट का बाहु 5 (उद्या० में) समकोण त्रिभुज का आधार,—हु (द्वि० व०) आर्द्ध नलत्र। सम०—अश्लेषम् (अभ्य०) भुजाओ को ऊपर उठा कर—बाहृश्लेष कश्चित् च प्रमुत्ता—ना० ५।३०,—कुम्भ कुम्भ (वि०) लुजा, जिसका हाथ विकृत हो गया हो,—कुम्भः (पशो० का) बाहु, ईना, बाधः पौष्य की माप, अर्थात् दोनो हाथों की फैलाकर मापी हुई दूरी,—अ शत्रिय वध का व्यक्ति—तु० बाहु राजन्य कृत—अहृपु० १०।९०।१२, मनु० १।३१, 2 तोता, ष्या (गणित० में) बापु के सिरों को मिलाने वाली सीधी रेखा,—त्र, —त्रम्—त्राभ्यम् भुजाओ की रक्षा करने वाला कवचविशेष, बष्पः 1 इडे की भाँति लकी भुजा 2 भुजा या मुक्के से दक्षिण करना,—बाहृ 1 मल्लयुद्ध में एक पैरा बनाना जैसा कि आग्निन के समय किया जाता है,

—प्रहरणम् धूसो की लडाई, मल्लयुद्ध,—बलम् भुजा की ताकत भासपेशियों की शक्ति,—भृषणम्,—भृषा भुजा में पडना जाने वाला आनुपम, बाजुवद, अंगद,—शेषिन् (पु०) विष्णु का विशेषण,—मल्लम् 1 काम, 2 कपे और बाहु का जोड, युद्धम् हाथपार्द, मल्लयुद्ध, धूसो की लडाई, योधः शेषिन् (पु०) मृष्टि योद्धा, वृसेबाज,—लता भुजा की भाँति बेल, अन्तरम् स्तन, गल स्थल,—शैर्ष्यम् भुजाओ की शक्ति, श्यायल कनरत,—शान्तिन् (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 भीम का विशेषण,—शिरारम् भुजा का ऊपरी भाग, कथा,—सश्वः शत्रिय जाति का पुत्र, सहस्रभृत् (पु०) काशंवीर्य राजा का विशेषण ('सहस्राजिन') भी इसका तामान्तर है।

बाहुक [बाहु+क+क] 1 बन्दर 2 कर्कोट के द्वारा बना दिये जाने पर नल का बदला हुआ नाम।

बाहुगुण्यम् [बहुगुण+ष्यञ्] अनेक मद्गुण और श्रेष्ठताओ का स्थापितिक।

बाहुवन्तकम् [बहुवन्तक+अप्] नैतिक कर्तव्यों का स्मृति

क रूप में निरूपण जिसके रचयिता इन्द्र कहे जाते हैं।

बाहुवनेषु [बहुरूप + ङ] इन्द्र का विशेषण।

बाहुका [बाहु + दा + क + टाप्] एक नदी का नाम।

बाहुभाष्मम् [बाहुभाष् + प्यञ्] मुखरता, बापालता, बातुनीयता।

बाहुकल्पम् [बहुरूप + प्यञ्] बहुकल्पता, विविधता।

बाहुलः [बहुल + अण्] 1 अग्नि 2 कालिका का महीना, —सम् 1 बहुरूपता 2 भूजाओं की रक्षा के लिए कवच विशेष। सम०—**श्रीष** भोज।

बाहुमकम् [बाहुल + कन्] 1 अनेककल्पता 2 आकारण में प्रयुक्त विधिविशेष बाहुलकाच्छदति, किसी रूप, अर्थ या नियम की विविध या अमीय प्रयोजनीयता।

बाहुनेषु [बहुल + ङ्] कारिकेय का विशेषण।

बाहुकथम् [बहुल + प्यञ्] 1 बहुतायत, प्राचुर्य, यथेष्टता 2 बहुकल्पता, अनेकता, विविधता 3 बस्तुओं का सामान्य नाम या प्रचलित व्यवस्था।

बाहुब्राह्मि (अब्ज०) [बाहुभिर्बाहुभिः प्रहृष्येद प्रवृत् युद्धम् | भुजा से भुजा मिला कर, हस्तहस्तित, प्रसासान युद्ध]।

बाह्य (बि०) [बहिर्भवे ष्यञ्, टिलोप] 1 बाहर का, बाहर की ओर का, बाहरी, बहिर्देश, बाहर स्थित विरहू किमिदानुपायवेदं वद बाह्यैर्विषयीविषयिच-नम् रघु० ८।८९, बाह्योपाने-मेघ० ७, कु० ६।१६, बाह्यनामम् 'बाहरी नाम', अर्थात् पक्ष की पीठ पर लिखा हुआ पता या सिरानाम, सगनामा—**भृशो** १ 2 विदेशी, अपरिचित—**पच०** १ 3 बहिष्कृत, कठ-धर से बाहर—जातान्नदूषणमानबाह्या—**कु०** १।३६ 4 ममाज से बहिष्कृत, जानिबहिष्कृत, **ह्यः** 1 अप-रिचित, —**ह्यम्**, **बाह्येन**, **बाह्ये** (अब्ज०) बाहर, बाहर की ओर, बाहरी दग से।

बाह्यध्वजम् [बह्वृच् + प्यञ्] ऋग्वेद का परम्परागत अध्यापन।

बिद् (भ्वा० पर० षेटनि) 1 शपथ लेना 2 अभिशाप देना 3 चित्तनाश, जोर से बोलना।

बिटक, **कम्**, **बिटका** [-पिटक, पृषो०] फोडा, कुमोई।

बिद्धम् [बिद् + क] एक प्रकार का नमक।

बिडालः [बिद् + कालन्] 1 बिम्बा, बिलाव 2 आँस का डला। सम०—**पव**—**पवकम्** १६ मासे के ताल का बट्टा।

बिडालक [बिडाल + कन्] 1 बिलाव 2 आँस के बाहरी भाग पर मल्लम लगाना, — **कम्** पीली मल्लम।

बिदोब्जम् (पु०) [बिदेति बिद् व्यापकभाजो यस्य विदोबा, पृषो० षट्] इन्द्र का विशेषण, — शं० ७।३४।

बिद्, **बिद्** (भ्वा० पर० विदति) 1 शपथ शपथ करना 2 बोटना।

बिबलम् दे० 'बिदल'।

बिन्दु [बिन्द् + उ] 1 बूँद, बिंदी जलबिन्दुनिपातेन कमम पुर्यते षट् "छोटी-छोटी बूँदे मिल कर एक सरोवर बन जाता है", बिन्दीर्यते पशो लोके ठैलबिन्दुभिर्बाम्भसि यनु० ७।३३, अर्चना (कुतुहलस्य) बिन्दुरपि नावधोपित-शं० २ 2 बिन्दु, बिंदी 3. हाथी के शरीर पर रगोन बिंदी या बिन्दु—**कु०** १।७ 4 शून्य, सिफर—**न** रोम-कूपोपमिषाऽप्रवाहकता कृताश्च किं रूपमस्यविन्दव-नी० १।२१। सम० **चित्रक**, चित्तीदार होरिंग, **जालम्**—**जालकम्** 1 बूँद का समूह 2 हाथी के सूड और शरीर पर बनाये गये चित्रण, चित्तिर्वा, —**सम्**, 3 पासा 2. गनरज की बिडाल, —**देशः** शिव का विशेषण, —**पव**, एक प्रकार का भोजन, —**कसम्** मोती, —**रेषक** 1 अनुस्वार 2 एक प्रकार का पशु, —**देशा** बिन्दुओं की पक्षि, —**बासर** गर्भाधान का दिन।

बिम्बोक, (बिम्बोक, बिम्बोक) [?] 1 अभिमान के कारण अपने अविनाम पदार्थ की ओर उदासीनता का प्रदर्शन—**प्रनाक** प्रियकपालाये बिम्बोकोज्ञादरकिवा—**प्रनाप**-छद, या, बिम्बोकव्यतिगर्षणे बस्तुनीष्टेऽप्यनादर—**सा०** ६० १३९ 2 घमट के कारण उदासीनता 3 केजि-पत्रक या प्रीतिवियक संकेत—**सहाय्य** क्षणमिति निश्चिकाय करिचद्बिम्बोकैर्बैरकसहासिता परीक्षे-**शि०** ८।९ (विलास—**मल्लिक**)।

बिभित्सा [बिद् + सन् + उ + टाप्] भेदने की इच्छा, बीचने की या छेद करने की इच्छा।

बिभित्सु (बि०) [बिद् + सन् + उ] छेदने या बीचने की इच्छा।

बिभीषण [भी + सन् + ल्युट्] एक राक्षस का नाम, रावण का भाई (पद्यपि वह जन्म से राक्षस था परन्तु तभी सीता के अपहरण के कारण वह बड़ा मित्र था, उसने रावण की इस दुष्कृत्य के लिए बहुत बुरा प्रयास कहा। उसने बाग-बाग रावण की ममताया कि यदि जीवन रहना चाहते हो तो सीता को राम के पास वापिस पहुँचा दो। परन्तु उसने बिभीषण की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया। अतः जब उसने देखा कि रावण का विनाश अवश्यभावी है तो वह राम के पास चला गया और उनका पक्का मित्र बन गया। रावण की मृत्यु के वक्तात् राम ने बिभीषण को लका की राजकीय पर बिडा दिया। बिभीषण सात चिरजीवियों में गिना जाता है—दे० 'चिरजीविन्')।

बिभ्रम्, **बिभ्रन्ति** [प्रञ्च् + सन् + उ, विकल्पेन इट्] आग।

बिम्ब, -**बम्** [बी] -**बन्** नि० साधुः । सूर्यमण्डल वा चन्द्र-
मण्डल - चन्दनेन निम्नित तत्र मीलीयते चन्द्रबिम्बमन्वरे
मुभा०, इसी प्रकार सूर्य, रवि आदि २ कोई
गोल वा गडकाकार सतह, मण्डल वा गोल। जैसे
'नितम्बबिम्ब' गोलकाकार कुन्हा, 'धोणीबिम्ब' आदि
३ प्रतिमा, छाया, प्रतिबिम्ब ४ शोभा, दर्पण ५ कलम
६ उपमित पदार्थ (विप० प्रतिबिम्ब), **बम्** एक नुस
का फल (यह जब तक जाता है तो फाल रग का हो
जाता है, तबम बिम्बो के हाँडा को तुलना इसी ग
की जाती है) -**नक्तशोककथा** विप्रोपितयुवा विम्बाधरा-
नक्तक मालवि० ३५, एकबिंबावराट्टी- मध०
८२, तु० नै० २४। सम० -**ओष्ठ** (वि०) (विवा
(बो) १३) विव फल के समान लाल-लाल गूदर ह ठो
पाया मालवि० ४१६, (-**ष्ठ**) विव फल की
भाति आठ-उमासुने बिम्बकलाधरोष्ठे-कु० ३६७।

बिम्बकम् [बिम्ब [कन्] १ सूर्यमण्डल वा चन्द्रमण्डल
२ बिम्बफल।

बिम्बिका [बिम्ब [कन्, इत्यम्] १ सूर्यमण्डल वा चन्द्रमण्डल
२ बिम्ब का पोषा।

बिम्बित (वि०) [बिम्ब [इत्यन्] १ प्रतिबिम्बित, प्रीति छाया
प३ दुई २ बिंबित।

बिन् (पु० पर०, चुरा० उभ०) बिम्बान् वेल्सनि-न) लट
लपट करना फाटना, गडना, बाटना, टुकड़े-टुकड़े
करना।

बिन्त् [बिन्त् [क] १ छिद्र, विवर, खूड (हल चलाने से
जना गहने सीधो रेखा) खननावुक्ति सिद्ध
पानानि नवभग वि० ३१९, गृह० १२५
२ चिन्तनस्थान, चर, छिद्र ३ द्वारक, छिद्र, गुराण,
४ लहरा, काटर ल. इन्द्र के घोड़े 'उन्ने श्वा' का
नामान्तर। सम० ओक्क (पु०) बिल में रहने
वाला जानवर, **कारिन्** (पु०) चूहा, **पोनि** (वि०)
बिन्तनुभा की नन्म के जानवर वशाववा बिल-
पानव कु० ६३९, -**बाह** गधमाजौर, **बासिन्**
(बिन्वासिन्) (पु०) मीप।

बिन्धयम् [बिन्ध - यन्] -**यन्**, **मु** [यन्, सौप]।

बिन्धेशय [बिन्धे गेते यो] -**यन्**, अलुक सं०] १ साप
२ मूषा, चूहा ३ माद में रहने वाला कोई भी
जन्तु।

बिन्ध [बिन्ध [ला] क नि० अकार लप] १ गर्न
२ बंधोपत बाँधना, बालवान। सम० -**धू**: दम
बन्ना की भा।

बिन्ध, [बिन्ध [वन्] वेल्स नामक वृक्ष-**वन्ध** १ बेल का फल
२ एक विदोष बाल, पल भरः। सम० -**बह**: शिव का
विदोषण, -**वैसिका**, -**वेसो** बेल का छिन्का (जो लकड़ी
के समान कड़ा होता है), **बन्ध** के गी का प्रयत्न।

बिन्धकोषा [बिन्ध - छ, कुक्] वह स्थान जहाँ बल के
पीधे लगाये जा हो।

बिन्त् (दिवा० प०) बिन्धति १ जाना, हिलना-हुलना
२ उकसाना, घेरित करना, भडकाना ३ फँकना, डाल
देना ४ टुकड़े टुकड़े करना।

बिन्त् [बिन्त् [क] १ कमल तनु २ कमल की तनु
वाली इडी-पाथेयमन्त्र विम ग्रहणाय भुय -**बिन्त्** ०
५१५, बिन्मलमधानाय म्बाडु पलाय नायम् -**बिन्** ०
३१२, मध० ११, कु० ३१३, ३१२९। सम०
-**कणिका**, **कण्डिन्** (पु०) छाटा साग्न **कुमुधम्**,
-**गुधम्**, -**प्रसूयम्** कमल का फूल, -**वधुवि** वृत्ति-
कामिबिम्बप्रमुना शि० ५५८, -**काविका** 'कमल
तनुभा की खाने वाली, -**द्रिधि** कमलइडी के ऊपर
की गाठ, **कमल** की तनुय वडी का टुकड़ा,
-**जम्** कमल, का फूल, कमल तनुय कमल का रोया,
-**नाभि** (श्री०) कमल का पीधा, पधनी, -**नासिका**
एक प्रकार का साग्न।

बिन्त् [बिन्त् [क] मया अकुर, अलुका, कमी।
बिन्त् [बिन्त् [इति] १ कर्मान्तो, कमल का पीधा
भर्त् ० ३३९ २ कमल तनु ३ कमलो का मधुर।

बिन्त् (वि०) [बिन्त् [इत्यन्] विम म मन्ड प्राण्य।
बिन्त् [बिन्त् + क्त] (८०) गतियो के अगवर) गीने
का तील।

बिन्त् (पु०) विक्रमाकडेवर्गित नामक काण्य का
रूपिना।

बीजम् [नि । जन्] इ उपसर्गस्य पीधे बवयारभेद ।
बीज (अल० म भी) बीज का दाता, अनाज
-**अरुपबीजाजलदानलालिना** कु० ५१५, बीजा-
जनि पतिनी कीटमन्वावकीड -**मूष** ० ११९, गृह०
१५५७, मनु० ५१३३ ३ बीजाणु, तत्व ३ मूल,
सात, बारण, बीजप्रकृति शो० १११, (पाठान्तर)
४ बीयं, गृह्-कु० २५, ६० ५ किसी नाटक को
क्यावस्तु का बीज, कहानी आदि, -**दे०** सा० द० ३१८
६ गुदा ७ बीजगणित ८ बीजमत्र, -**ज**, नीव का पेड़,
(बीजक १ बीज बोना-व्योमिति बीजाकुर्वते-**भाषि** ०
११८ २ बीज बोने के बाद हल चलाना)। सम०
-**अक्षरम** मत्र का प्रथम अक्षर, -**अक्षर**: बीज का
अकुर कु० ३१८, **व्याघ** बीज और अकुर का
व्याघ, दे० 'व्याघ' क अन्तर्गत, **अध्वल** शिव का
विशेषण, **अध्व** जननाद्य, माद घोडा, -**आध्व**,
-**धूर**, -**धूरक**: बिजौग नीव, चकीतरा, (रन्, -**रकम्**)
नीव का फल, -**अक्षर** मत्र अक्षर बीज, -**अक्षर** मत्रोला,
-**कन्** (पु०) शिव का विशेषण, -**कोष**, -**कोष** १ बीज
पात्र २ कमल का बीजपात्र, -**वसिन्** मत्र बीजगणित
का विज्ञान, -**वसिन्** (श्री०) बीजकोष, फनी, वेम,

व्यवहार करने वाला, तर्कयुक्त बात करने वाला
-बुधम्-बुधकम्-पुर-सत्रम् (अष्टमं) इरादान, जानबूझ
कर दबोछा दे, अथ, मन का उचाट, मन की विषय-
गोचरता, -बोध ब्रह्म से बौद्धिक मायुष्य, -लक्षणम्
बुद्धिमता या प्रतिभा का चिह्न -प्रारम्भस्थानार्थमनम्
द्वितीय बुद्धिलक्षणम्, -बोधबन्धु प्रतिभा की शक्ति,
सत्रम् (वि०) समझ या बुद्धि से युक्त, -शास्त्रि-
समझ (वि०) बुद्धिमान समझदार, -सत्र, -सहाय्य,
परामर्शदाता, -हीन (वि०) प्रतिभाशून्य, मूर्ख,
बेवकफ ।

बुद्धिमतु [बुद्धि - मनुत्] 1 मझ से युक्त, प्रज्ञावान्,
विवेकवान् 2 समझदार, विद्वान् 3 तेज, चतुर,
शील ।

बुद्धवृत्त (पु०) बुद्धवृत्ता, -मनन जातविमलटा पपमामिव
बुद्धवृत्ता पयसि—पच०५७ ।

बुध् (म्भा० उभ०, दिवा० आ०)-बोधयति-ने, बुध्यते, बुद्ध
1 ज्ञानना, समझना, मन्बोध होना-कमाम्दम् नारद इत्य
बोधि त -शि० ११३, १३०८, नाबुद्ध कल्पद्रुमता विद्याय
जात तमात्मन्यसिपत्रवृत्तम्-रघु० १४४८, यदि
बुध्यते हरिशिष्यु स्तनधम-भाशि० १५३ 2 प्रत्यक्ष
करना, देखना, पहचानना, ध्यान से देखना हिरण्य
हमयबोधिय नैषध-ने० ११११७, अति लङ्घनमध्वान
बुध्पे न बुधोपम-रघु० १४७, १२३९ 3 मोचना,
विचार करना, समझना, मानना आदि 4 ध्यान देना,
चित्त लगाना 5 मोचना, विमर्श करना 6 जगना,
मन्बेन होना, मोकर उठना-ददपि निरमलबुध्यते
ना मनुर्य - शि० ११४, ते च प्रागुद्यन्वन्त बुध्पे
नाथिवृत्त-रघु० १०६ 7 फिर से मचेत होना,
होस मे आना मनैर्बोधि सुधीय मांजु-बीरुकम्
नाथिकम्-भट्टि० १५५७, प्रेर०-बोधयति-ने 1 ज्ञान-
लाना, ज्ञात करना, सूचित करना, परिचित करना
2 अध्यापन करना, समाचार देना, (शिक्षा आदि)
प्रदान करना 3 परामर्श देना, बेताना-बोधयत
हितार्हितम्, भट्टि० १८८०, भग० १०१९ 4 पुनर्जीवित
करना, फिर जान डालना, होस दिलाना, संबत करना
5 फिर ध्यान दिलाना, याद दिलाना ष० ४११
6 जगाना, उठाना, उतोजित करना (आल०)-अकाले
वापिती आत्रा-रघु० १२८१, ५७५ 7 (गध-
द्रव्य को) फिर से मुबानित करना 8 फैलाना,
बिालाना-मवृत्त्या मवृत्तितमाधवी -शि० ६२०
9 धोनित करना, सबहक करना, मकेत करना
इच्छा० बुध् (बो) विषयि-ने, बुभुत्सते-1 जानने
को इच्छा करना आदि, अनु, 1 जानना, समझना
2 सीखना, जानकार होना, सचेत होना, प्रेर०-
1 परामर्श देना, बेताना-रघु० ८७५ 2 ध्यान

दिलाना-आयं सम्यग्नुबोधितोऽस्मि-स० १, अथ-
जानना, ज्ञात करना, समझना-मनु० ८५३, मट्टि०
१५११०, प्रेर०-1 ज्ञात कराना, सूचित करना,
परिचय देना-ब्रह्मबोधानुपुष्यमवबोधयत्ये केवलम्
शारी० 2 उठाना, जगाना रघु० १२२३,
उत्-1 जगाना, उठाना 2 फैलाना, बिलाना-प्रेर०
जागृक करना, उतोजित करना, प्रबुद्ध करना, जगाना,
भि-1 जानना, समझना, ज्ञात करना-निबोध ताथी
तव चेतुस्तुल्यम्-कु० ५५२, ३१४, मनु० ११६८,
याज्ञ० १२ 2 मानना, विचार करना, समझना, प्र-
जानना, उठाना, ज्ञात बोलना ष० ५११, शि०
११३० 2 बिलाना, फैलाना, बिलना साधेऽल्लोव
स्थलकमलिनी न प्रबुद्धा न मुत्तान् मेघ० ९०-प्रेर०
1 सूचित करना, जतलाना-रघु० ३१८ 2 जगाना,
उठाना रघु० ५६५ ६५६ 3 फैलाना, बिलाना
-कु० १११५, प्रति-जगाना, उठाना-मनु० ११७४,
याज्ञ० १३३०, प्रेर० 1 सूचित करना जतलाना,
परिचित करना, समाचार देना रघु० ११७४, शि०
६८, 2 जगाना, उठाना, वि-जगाना, उठाना-कु०
५५७ 3 प्रेर० 1 जगाना, उठाना 2 फिर से सचेत
करना-अथ मोहपरायणा सती विवशा कामवर्षुवि-
बोधिता-कु० ४१२, सम्-जानना, समझना, ज्ञात
करना, जानकार होना भट्टि० ११३०, प्रेर०
1 सूचित करना, परिचित करना, सूचना देना-नवा-
गतिज्ञ समबोधयन्ताम् रघु० १३२५-सर्वाधिपन
करना ।

बुध् (वि०) [बुध् + क] बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान्, -य
1 बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष निरपेय यम्य क्षिनि-
रक्षिण कथा तथाद्रिवने न बुधा मुयामपि ने०
१११ 2 देव, नै० १११ 3 बुध् षड् रक्षयैर्न तु
बुध्बोधय-मृदा० १६, (परा 'बुध्' का अर्थ 'बुद्धिमान्'
भी है) रघु० ११८७, १३७६) मम० जन्
बुद्धिमान् मा विद्वान् पुरुष, तप्त चन्द्रमा, चिनम्,
घार, वासर बुधवार, -रत्नम् मरकतमणि, पत्रा,
-सुत पुरुषा का विशेषण ।

बुधान [बुध् + आनय, क्ति व] 1 बुद्धिमान् पुरुष, ऋषि
2 धर्मोपदेश्य, अध्यापयधर्षक ।

बुधित (वि०) [बुध् + इत] जाना हुआ, समझा
हुआ ।

बुधिस (वि०) [बुध् + किलच्] विद्वान्, बुद्धिमान् ।
बुध्, [कच् + नच्, अध्यादेश] 1 वर्तन की तुल्य 2 वेद
की जड 3 निम्नतम भाग 4 शिव का विशेषण
(अश्लिष अर्थ में 'बुज्य' भी) ।

बुध्, बुध् (म्भा० उभ०) बुद्धयि-ने, बुध्यति-ने 1 प्रत्यक्ष
करना, देखना, भाषाना 2 विमर्श करना, समझना ।

भुभुक्षा [भुभु + सन् + अ + टाप्] 1. खाने की इच्छा, भुभु 2 किसी भी वस्तु के उपयोग का इच्छा।

भुभुक्षित (वि०) [भुभुक्षा + इत् + क्त] भुभुक्षा, भुभुभक्षण, भुभुक्षणी - भुभुक्षित किन् करोति पापम् पच० ८। १५, या भुभुक्षित किं द्विक्रमेण भुभुक्षते उद्भूट।

भुभुक्षु (वि०) [भुभु + सन् + उ + इ] भुभुक्षा, सामाजिक उपयोगी का इच्छुक (वि०) मू० सु०।

भुभुक्षा [भु + सन् + अ + टाप्] होने की इच्छा।
भुभुक्षु (वि०) [भु + सन् + उ + इ] चलने की या होने की इच्छा वाला।

भुल् (चुरा० उभ०) भोजयति - ने 1 भुवना, गोना लगाना - भोजयति प्लव पयसि 2 बुझोना।

भुलि (स्त्री०) | भुल् + डी + क्त | 1 भय डर।

भुलु (द्विवा० पर०) व्यथति छाटना, उगलना, उडलना।

भुलं (धनु) | भुलु + क पले गुणो० कवचम् | 1 बुर, भुमी 2 कृषा, गधवी 3 गाय का सूबा गाधर 4 धन, होलन।

भुलु (चुरा० उभ०) भुलयति - ने 1 सम्मान करना, आदर करना 2 अनादर करना, विम्बकासुर्वक अर्थात् घृणायुक्त व्यवहार करना।

भुलुम् [बुलु + धन् + क्त] भने हुए मेष का टुकड़ा।

भुलुकम् बुलुक।

भुली, भुली (स्त्री) | बुलुनाज्या सोदन्ति वलुत् + सन् + उ + डी + क्त + गो + मात् | किसी सन्ध्यामी या माघ महान्या की गद्दी।

भुल्, भुला० नुला० पर० बहति, बुलति 1 बहना, उगना - बृहतिमन्वेषा - भर्तु० ३।४९, २ दशाडना। प्र०० - पावन-योग्य करना।

भुलुणम् | बुल् + ल्युट् | (शाधी के) चिपारुने का लव - वि० १८।३।

भुलित (भु० क० क०) | बुल् + लुट् | 1 उगा हुआ, बड़ा हुआ - आमि० २।१०९, २ चिपारुना हुआ, लम् हाथी की चिपारु - आ० १०।१५, वि० ६।३९।

भुल्, भुला० नुला० पर० बहति, बुलति 1 उगना, बहना, फलना 2 दशाडना उद् + इ 1 उडागा, ऊपर की करना भलु० १।१५, भर्तु० १।५१, वि० नष्ट करना, हटाना वि० १।२६।

भुलु (वि०) (स्त्री० - स्त्री) | बुल् + अति | 1 विमल, बिजाल, बड़ा, स्वल् मा० १।५ 2 पीडा, प्रसन्न, विस्तृत, दूर तक फैला हुआ दिल्लीमनो म बुलु - भुजालतम् म् ३।५८ 3 विस्तृत, यथेष्ट, प्रचुर 4 मजबूत, मजिस्साली 5 म्बला, ऊँचा देवराज - बुलुदुम् कु० ६।५१ 6 पूर्णविकसित 7 सटा हुआ सवन - स्त्री० बाणी - वि० २।६८, - लु० 1 बंद 2 सामवेद का मंत्र (गाम) - ध्य० १०।३५ 3 बड़ा।

मम० - अल्ल - काय (वि०) स्थूलकाय, विद्यालकाय (ग) बड़े डोलडोल का हाथी, आरम्भम् - आरम्भ - कम् एक प्रसिद्ध उपनिषद्, मतपथ काग्राम के अन्तिम छ अध्याय, एका बड़ी इलाकगी, - कुलि (वि०) नुदिल, बड़े पैठ बना, - हेतु अग्नि का विशेषण, - गृह एक देव का नाम, - योसम् तरबूज, - धिल नीत्र का पैठ जयन्त (वि०) प्रयत्नकृतो वाक्ता, औषधिका, औषधो एक प्रकार का पोषा, - डकका बड़ा होश नष्ट, मल ला, राजा विराट के दरबार में नृप श्री मणोन् मिशर के रूप में रहते हुए अर्जुन का नाम, नेत्र (वि०) दूरदर्शी, मनीषी, पाठन नुन, घाल बड़ या अग्न का धूस, भट्टरिका दुर्गा का विशेषण, भानु अग्नि, - रथ 1 उड का विशेषण २ एक गाथा का नाम, जगन्मथ का पिता, - राक्षिन् (पु०) एक प्रकार का छोटा उल्ल, - स्तिक्च (वि०) प्रयत्न 1 वाक्ता, बड़े नितबो काया।

भुलितिका | बलत् | डी + क्त + टाप्, ह्रस्व | उत्तरीय वस्त्र, दुग्डा, चागा, वादर।

भुलुयति | बुलुत् वाच पति - आम्भकारि० | 1 देवों के मूर, (इन्द्रकी पत्नी मातृ) के लक्ष डारा अपहरण के लिए दे० नारा या मम के लीके २ बहुस्वपति बह बृह मनिषीयादृश्य - १।० १।३।३६ ३ एक स्मृतिकार का नाम याज्ञ० १।५। मम० - पुरोहित, इन्द्र का विशेषण, - वार, - वासर गुन्वरा।

बुहा [विट + गण्] नाव किन्ती।

बुह (भ्वा० आ०) वेत्तु उडाग करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना।

बुहिक (वि०) (स्त्री० - स्त्री) | बोज ; ठक् | 1 वीर्यसवत्री 2 मोहित 3 वनीवपत्रक 4 मैनुनमबची, क अतुदा, नवा अट्टर, कम् काण्य, सोन, मूल।

बुहल (वि०) (स्त्री० - स्त्री) | विहाल ; अणु | 1 बिलाव त सबर रखने वाला २ बिलाव की चिवाघटा की रखने वाला। मम० व्रतम् 'बिलाव जैमा व्रत' अर्थात् बिलाव की भांति अपना द्वेष तथा दुर्भावनाओं का परित्रना और गुरुत्व को धार में छिपाये रखना। - व्रति वा ग्रीषु सवधान त मिलने के कारण ही माघ जोवन विनाये (इस लिए नहीं कि उसने अपनी उन्निदा का वध में कर लिया है) - व्रतिक - व्रतिन् (प०) धम का आडम्बर करने वाला, वाक्की, बोधी।

बुहल | विदत् | अण बहवोर्भेद | दे० 'वैरल'।

बुहिक, [विमन् + ठक्] श्री महिलाविषयक कायों में मनो-योगपूर्वक लयनेशाना ही, प्रेमनिपुण, प्रेमी - वाक्षिय नाम विम्वोर्तिट वैमिकाना कुम्भारम् - मालवि० ५।१४।

बुहल (वि०) (स्त्री० - स्त्री) | बिल्व - अणु, | 1 बेल के वृक्ष

या लकड़ों से सबद्ध या निर्मित 2 बेल के पेड़ों से उका हुआ, —स्वम् बेल के पेड़ का फल ।

बोध [बुध् + बन्] 1 प्रत्यक्ष ज्ञान, जानकारी, समझ, आलोचना, विचार—आलाना सुखबोधाय—तर्क-
2 विचार, चिन्तन 3 समझ, प्रतिभा, प्रज्ञा, बुद्धिमत्ता
4 जागना, जागृक होना, जागृति की स्थिति, जेत-
नता 5 विलाना, कूलना, फैलना 6 शिक्षण, परामर्श,
प्रेतावनी 7 अमाना उठाना 8 उपाधि, पर । सम०
— भतीत (वि०) अज्ञेय, ज्ञान के परे, — कर (वि०)
सिखाने वाला, सूचित करने वाला, (रं) 1 चारण
या भाट (जो उपयुक्त भजन गाकर प्रातःकाल अपने
स्वामी को जगाता है) 2 शिक्षक, अध्यापक, गुरु
(वि०) सप्रयोजन, सचेत तु० 'अबोधपूर्व', वासरः
कातिक मुक्ता एकादशी, जब विष्णु भगवान् अपनी
चार मास की निद्रा को त्याग कर जागे हुए समझे
जाते हैं - दे० शेष० ११०, १११, ११२ प्रबोधिनी ।

बोधक (वि०) (स्त्री० विधाया) [बुध् + गिच् + ण्युल्] 1 सूचना देने वाला, (स्थिति से) अवगत कराने
वाला 2 शिक्षण देने वाला, अध्यापन करने वाला
3 अभिसूचक 4 जगाने वाला, उठाने वाला, —क-
भेदिता, जानसु ।

बोधन [बुध् + गिच् + म्युट्] बुधग्रह, — नम् समुपन,
अध्यापन, शिक्षण, ज्ञान देना —अयस्वोपच तर्हिज्ञान-
योधनम् रघु० ११/४९ 3 जापन करना, निर्देश
करना 3 जगाना, उठाना समयेन तेन चिरमुपतनो-
भनबोधन मममबोधियत सि० १२/४ 4 घुप देना,
जो 1 कातिकमुक्ता एकादशी जब भगवान् विष्णु
अपनी चार मास की नींद त्याग कर उठते हैं, देव
उठनी एकादशी 2 बड़ी पीपल ।

बोधान [बुध् + जानच्] 1 बुद्धिमान् पुण्य 2 बुध्मयति
का विशेषण ।

बोधि [बुध्, इन्] 1 पूर्ण मति या ज्ञान का प्रकाश
2 बुद्ध की ज्ञान से प्रकाशित प्रतिभा 3 पावन बट-
वृक्ष 4 मृगा 5 बुद्ध का विशेषण । सम० लक्ष्.
दुम, बुध्, पावन बटवृक्ष, इ (त्रैलोक्य का)
अंश, सख, बौद्ध सत्यार्थी या महात्मा जो पूर्ण
ज्ञान की उपलब्धि के मार्ग पर अग्रसर है तथा जिसके
केवल कुछ ही जन्म अवशिष्ट हैं जिनको पार करने
पहें पूर्णबुद्ध की स्थिति की प्राप्ति कर केया और
जन्ममरण के दुःख से छुटकारा या जागृता (वह
निश्चित पावन तथा अकृत्यों की दीर्घवृत्तला ४ पार
करके प्राप्ति की जाती है) - एवबिषैरतिविविधसिंहरि-
बोधिमतले - मा० १०/२१ ।

बोधित (पुं० क० ङ०) [बुध् + गिच् + क्त] 1 जताया
गया, सूचित किया गया, अवगत कराय गया 2, फिर

ध्यान दिक्रिया गया 3 पदार्थों, द्रव्या पद्या, शिक्षण
प्रदान किया गया ।

बौद्ध (वि०) (स्त्री०-ज्ञी) [बुद्धि + अच्] 1 बुद्धि या
समझ से सबद्ध रहने वाला 2 बुद्ध विषयक, — ज्ञः
बुद्ध द्वारा प्रचारित धर्म का अनुयायी ।

बोधः [बुध् + अच्] बुध का पुन, पुनरुक्त का विशेषण ।
बोधायकः [बोधस्यायत्य पुमान्—बोध + क्त] एक
प्राचीन मुनि का पितृपरक नाम जिसने श्रौतसंदि सूत्रों
की रचना की ।

बध्: [बन्च् + गन्, बध्प्रत्ये] 1 सूर्य 2 बुध की उद
3 दिन 4, महरार का पौषा 5 सोसा (पु० ?) 6
घोडा 7. शिव या ब्रह्मा का विशेषण ।

बहुम् [बहु + मनिन्, नकारस्वाकारे क्तो लत्वम्—ये
यं नाम्ना से अकारान्ता अपि इत्युक्ते अकारान्तोऽयं
सब्ध] परमात्मा ।

ब्रह्मण्य (वि०) [ब्रह्मन् + मत्] 1 ब्रह्म से सबद्ध
2 ब्रह्मा या प्रजापति से सबद्ध 3 पुनीत ज्ञान के रहण
से सबद्ध, पवित्र, पावन 4 ब्राह्मण के योग्य 5 ब्राह्मण
के लिए सीहाधेयुयं या ब्राह्मिण्यकारी, — ब्रह्मः 1 वेदों
में निष्प्रात व्यक्तित—महावीर० ३/२६ 2 सहस्रानु
का बुध 3 ताड़ का पेड़ 4. बुध नामक षास
5 गान्धर्व 6. विष्णु का विशेषण 7 कातिकेय का
विशेषण, — ब्रह्मा दुर्गा का विशेषण । सम० — शेषः विष्णु
का विशेषण ।

ब्रह्मात्म्य (पुं०) [ब्रह्मन् + मतुप्, लत्वम्] अग्नि का
विशेषण ।

ब्रह्मता, स्वम् [ब्रह्मन् + तल् + टाप्, ल् वा] 1 पर-
मात्मा में लीन होना 2 दिव्य प्रकृति ।

ब्रह्मन् (नपुं०) [बहु + मनिन्, नकारस्वाकारे क्तो
लत्वम्] 1 परमात्मा जो निराकार और निर्गुण
समझा जाता है (वेदान्तियों के मतानुसार ब्रह्म ही
इस बुध्ममान सत्ता का निमित्त और उपादान कारण
है, कही सर्वव्यापक आत्मा जो विश्व की जीव
शक्ति है, यही वह मूलत्व है जिससे सत्ता की सब
वस्तुएँ पैदा होती हैं तथा जिनमें फिर वह लीन हू
जाती है—अस्ति तावन्वित्युद्बुद्धमूनस्वभाव सर्वत्र
सर्वव्यक्तिसमन्वित ब्रह्म—सारी०) समीभूता दृष्टिदिक्-
भूवन्मनि ब्रह्म ननुते—भर्तु० ३/८४, कु० ३/१५
2 स्तुतिपरक वृत्त 3 पुनीत पाठ 4 शेष—कु० १/१६,
उत्तर० १/१५ 5 ईश्वरपरक पावन अक्षर, —
—एकाक्षर पर ब्रह्म—मनु० २/८३ 6 पुरोहितवर्ग
या ब्राह्मण समुदाय—अनु० १/३२ 7 ब्राह्मण की
शक्ति या ऊर्जा—रघु० ८/४ 8. धार्मिक साधना या
तपस्या 9. ब्रह्मचर्य, सतीत्य—शास्त्रे ब्रह्मणि जने
—म० १ 10 सोस या निर्वानि 11. ब्रह्मज्ञान,

अध्यात्मविद्या 12 वेदों का शास्त्रभाग 13 धनदोलत, सपत्ति,—(५०) परमात्मा, ब्रह्मा, पावन त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) में प्रथम जिनकी सत्ता की रचना का कार्य नैवा गया है (सत्ता की रचना का वर्णन 'बहुत ही बातों में मिल २ है, मनुस्मृति के अनुसार यह विषय अचकारावृत्त वा, स्वयम्भू भयवान् ने अचकार को हटा कर स्वयं की प्रकट किया। सबसे पहले उसने जल पैदा किया तथा उसमें बीजबपन किया। यह बीज स्वर्णिम अर्धे के रूप में हो गया, जिससे ब्रह्मा (सत्ता का शब्द) के रूप में वह स्वयं उत्पन्न हुआ। फिर ब्रह्मा ने इस अर्धे के दो भेद किये—जिससे उसने पुरुषों और अतरिक्त की जन्म दिया, उसके पश्चात् उसने दस प्रजापतियों (मानस पुत्रों) की जन्म दिया जिन्होंने सृष्टि के कार्य की पूरा किया। दूसरे वर्णन (रामायण) के अनुसार आकाश से ब्रह्मा का जन्म हुआ। उसके फिर मरीचि का जन्म हुआ, मरीचि से कल्पव और कल्पव से फिर विश्वान् ने जन्म लिया। विश्वान् से मनु की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार मनु ही मानव सत्ता का रचयिता है। तीसरे ब्रह्मा के अनुसार स्वयम्भू ने मुनहरे अर्धे की दो लक्ष्मों (मर और नारी) में विभक्त किया उनसे विराज और मनु का जन्म हुआ—मु० कु० २१७, मनु० ११२ तथा आगे। पौराणिक कथा के आधार पर ब्रह्मा का जन्म उस कल्प से हुआ जो विष्णु की नाभि में उगा था। स्वयं अपनी पुत्री शरस्वती से उसने अर्धे लक्ष्म द्वारा सृष्टि रचना की। ब्रह्मा के प्रारम्भ में पृथि्वि सिर में, पशु एक सिर शिव ने अपनी अनामिका से काट दिया या नृवीय वेध की आग से अर्ध कर दिया। ब्रह्मा की सवारी हम है। उसके अनंत चित्तेष्व है जिनमें से अधिकाय उसकी कमल में उत्पत्ति का संकेत करते हैं) 2 शास्त्र—या० ४४ 3 भक्त ४, सोमयाग में नियुक्त चार ऋषियों (पुरोहितों) में से एक 5 धर्मज्ञान का ज्ञाता 6 सूय 7 प्रतिभा 8 सात प्रजा पतियों (मरीचि, अग्नि, अग्निरस, पुत्रस्य, पुत्रह, मनु और बसिष्ठ) का विशेषण 9 बृहस्पति का विशेषण 10 शिव का विशेषण। सम०—अक्षरम् पावन अक्षर 'अ',—अज्ञम् घोडा,—अज्ञानि वेद पाठ करने समय हाथ जोड़ कर सार्व भगिनादत्त 2 आचार्य या गुरु का सम्मान (वेद पाठ के आरम्भ तथा समाप्ति पर)।—अक्षम् 'ब्रह्मा' का अर्ध, बीजम् आ जिससे यह समस्त सत्ता या विश्व का उद्भव हुआ—ब्रह्मण्यच्छन्दश्च—दश० १, —पुराणम् 1 अर्धत्त पुराणों में से एक पुराण, —अभिजाता गोदावरी नदी का एक विशेषण,

अधियगम् अधियगमन्म् वेदों का अध्ययन, अम्मात्त वेदों का अध्ययन, अम्मात्त (मनु०) गाम्भू, —अक्षम्,—म नारायण का विशेषण, अक्षम् 1 ब्रह्मज्ञान का अर्थ या मन्त्र,—अक्षम् ब्रह्मा से अर्धित एक अक्ष, आत्मन् घोडा,—आत्मन् ब्रह्म में लीन होने का आध्यात्मिक मुक्त या आनन्द—ब्रह्मानन्द माशास्त्रिका महावीर० ७३१, आरम्भ वेदों का पाठ आरम्भ करना—मनु० २१७१, आर्षत (हितनापुर के पदिचमोत्तर में) सम्भवती और द्युदती नदियों के बीच का मार्ग मरम्पनी द्युदयोर्वेदनायोर्वेदन्तर, त देवनिमित्त देश ब्रह्मावर्त प्रकथने मनु० २१७, १९, मेघ० ४८,—आसम्भू गहन समाधि के लिए विशिष्ट जामन,—आहुति (स्त्री०) प्रायनापरक मन्त्री का पाठ, स्वस्तिवाचन, दे० ब्रह्मयज्ञ, उज्ज्वला वेदों की भूम जाना या उनकी उपेक्षा करना—मनु० ११५७, (अधोतवेदस्यानभ्यासेन विस्मरणम्—कुल्ल०),—उज्जम् वेद की व्याख्या करना, ब्रह्मात्मविषयक समस्याओं पर विचार विमर्श,—उपवेश ब्रह्मज्ञान या वेद का शिक्षण, 'वेत्' (पु०) डाक का वृक्ष,—ऋषि (ब्रह्मि या ब्रह्म-ऋषि) ब्रह्मण ऋषि, देश मडल, जिला (कुक्षेत्र व मत्स्यदेश पञ्चाला क्षुरसेनका, एष ब्रह्मिषेयो वै ब्रह्मावर्तान्तरम्—मनु० २१९९) —कथका मरम्पनी का विशेषण, कर पुरोहित वर्ग को दिया जाने वाला शुल्क,—कर्मन् (मनु०) 1 शास्त्रण के धार्मिक कर्तव्य 2 यज्ञ के चार मुख्य पुरोहितों में ब्रह्मण का पद, कल्प ब्रह्मा की आयु,—काष्ठम् ब्रह्मज्ञान से संबद्ध वेद का भाग, काष्ठ शहतूत का पेड़,—कूर्चम् एक प्रकार की साधना —अहोरात्रिभिर्नो भूत्वा पीपाम्या विशेषण, पंचगव्य पिबेत् प्रातर्ब्रह्मकूर्चमिति स्मृतम्,—कुल्ल (वि०) स्मृति करने वाला (पु०) विष्णु का विशेषण, मुक्त एक ज्योतिषिद् का नाम जो मन् ५९८ ई० में उत्पन्न हुआ था,—पौष विश्व,—पौरवम् ब्रह्मा से अर्धित अम्भ का सम्मान—भट्टि० १७३, (मा भूमोषो ब्रह्मा पाय इति),—ऋषि मरीच का विशिष्ट जोड़, ब्रह्मापाठ, यह, पिशाच—पुष्य,—रक्षत्(मनु०), —रक्षत् एक प्रकार का भूत, पिशाच, ब्रह्मण्यत्त का जीवन भर धूयित वृत्ति में सलन रहता है दूसरों की पत्तियों का तथा ब्राह्मणों की सपत्ति का अपहरण करता है (परम्य योयित हुत्वा ब्रह्मण्यमपहृत्य च, अरभ्ये निजंके देसे भवति ब्रह्माराक्षस याज्ञ० ३१२२, पु० मनु० १२१० भी), ब्रह्मकः ब्रह्मण की हत्या करने वाला,—धार्तनी ऋषु के दूसरे दिन की (अस्वला स्त्री, बौधः 1 वेद का सार्व पाठ 2 पावन सन्ध,

वेदमयी—उत्तर० ६।९ (पाठांतर), - अन्तः ब्राह्मण की हृत्वा करने वाला, - अर्थम् 1 धार्मिक विष्णुवृत्ति, वेदाध्ययन के समय ब्राह्मण बालक का ब्रह्मचर्यजीवन, जीवन का प्रथम आश्रम - अविच्छिन्नब्रह्मचर्यो गृह-स्वाध्यायमचार्यत्—मनु० ३।२, २।२५९, महावीर० १।२४ 2 धार्मिक अध्ययन, आरम्भसमय 3 कौमार्य, सतीत्व, विरति, इन्द्रियनिग्रह, (सं:) वेदाध्ययनशील, —दे० ब्रह्मचारिन् (याँ) सतीत्व, कौमार्य, 'असन् सतीत्व रक्षण की प्रतिज्ञा' स्वस्वस्वम् सतीत्व या ब्रह्मचर्य से गिर जाना, इन्द्रियनिग्रह का अभाव —चारिण्यम्, वेदों के विद्यार्थी का जीवन, चारिण्य (पु०) 1 वेद का विद्यार्थी, जीवन के प्रथम आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण जो योपवीत धारण करने के पश्चात् वीक्षित होकर गुरुकुल में अपने गृह के साथ रहता है तथा वेदाध्ययन के समय ब्रह्मचर्यधर्म के नियमों का पालन करता रहता है जब तक कि वह गृहस्वाध्याय में प्रविष्ट नहीं हो जाता है—मनु० २।४१, १७५, ६।८७ 2 जो आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करता है—चारिणी 1 दुर्गा का विशेषण 2 वह स्त्री जो सतीत्व व्रत का पालन करती है, अ-कार्तिकेय का विशेषण, —आरः ब्रह्मण की पत्नी का प्रेमी, —वीचिन् (पु०) जो ब्रह्मज्ञान के द्वारा ही अपनी माया-विका कृपाता है—अ वि०) जो ब्रह्म को जानता है (अः) 1 कार्तिकेय का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण, —आश्रम्य सत्यज्ञान, दिव्यज्ञान, ब्रह्मण की ब्रह्म के साथ एकरूपता का ज्ञान, —अर्थः ब्राह्मण का बच्चा आई, —श्वीतिस्त् (नपु०) ब्रह्म वा परमात्मा की ज्ञानव्योति, — तत्त्वम् परमात्मा का यथार्थ ज्ञान, —तैत्त्वम् (नपु०) 1 ब्रह्मण की क्रीडित 2 ब्रह्म की कान्ति, बहु क्रीडित या कान्ति जो ब्राह्मण को चारों ओर से घेरे हुए समझी जाती है, —अ वेदज्ञान के प्रदाता गुरु, —अर्थः 1 ब्राह्मण का साथ 2 ब्राह्मण को दिया गया उपहार 3 शिव का विशेषण, —शान्त्वम् 1 वेद पढ़ाना 2 वेद का ज्ञान जो उत्तराधिकार में या वशानुक्रम से प्राप्त होता है, —दायाद, 1 ब्राह्मण, जो वेदों को आनुवंशिक उपहार के रूप में प्राप्त करता है 2 ब्राह्मण का पुत्र, —दादः सहजतः का पेड़, —दिग्म् ब्रह्मण का दिन, —वीत्यः वह ब्राह्मण जो रासत वन आय-नु०, ब्रह्मचर्य, —दिग्-द्वेषिन् (वि०) 1 ब्राह्मणों से भृणा करने वाला 2 वेदविहित कृत्यों या श्रुति का विरोधी, अपावन, निरीश्वरवादी, —द्वेषः ब्राह्मणों की भृणा, —नवी सरस्वती नदी का विशेषण, —मायः विष्णु का विशेषण, —निर्वाच्यम् परमब्रह्म में लीन होना, —निष्ठा (वि०) परमात्म-चिन्तन में लीन, (अः) सहजतः का पेड़, —बन्धम् 1 ब्राह्मण का पद या दर्जा 2 परमात्मा का स्वान,

—वचिभः कुच नामक फल, —वचिष्त् (स्त्री०) ब्राह्मणों की सना, —वाच्यः दाक का पेड़, —वाराच्यम् वेदों का पूर्ण अध्ययन, सारे वेद—उत्तर० ४।९, महावीर० १।१४, —वाचः ब्रह्म द्वारा अभिहित अस्य विद्यय —मष्टि० ९।७५, —विष्णु (पु०) विष्णु का विशेषण, —गुणः 1 ब्राह्मण का बेटा 2 हियाक्य की पूर्वी सीमा से निकलने वाला तथा गंगा के साथ मिल कर बंगाल की खाड़ी में गिरने वाला 'ब्रह्मपुत्र' नाम का दरिया, (जी) सरस्वती नदी का विशेषण, —पुरम्, पुरी 1 (स्वर्ग में) ब्रह्मण का नगर 2 बाराणसी, —पुराणम् अठारह पुराणों में से एक का नाम, - प्रक्यः ब्रह्मण के ली बंधे बोलने पर सृष्टि का विनाश जिसमें स्वयं परमात्मा भी विनीन माना जाता है, —प्रापिः (स्त्री०) परमात्मा में लीन होना, —अण्यः ब्राह्मण के लिए तिरस्कार-मुचक शब्द, अव्यय ब्राह्मण—मा० ४, विष्णु० २ 2. जो केवल जाति से ब्राह्मण हो, नाम मात्र का ब्राह्मण, —बीभ्यः ईश्वरवाचक अक्षर अः, —बुधानः जो ब्राह्मण होने का बहाना करता है, —बन्धन्यम् ब्राह्मण का आवास, —भाषः सहजतः का वृक्ष, —भाषः परमात्मा में लीन होना, भुवन्यम् ब्रह्मण की सृष्टि —भय० ८।१९, —भूत (वि०) जो ब्रह्मण के साथ एक रूप हो गया है, परमात्मा में लीन, —भृतिः (स्त्री०) सत्या, भुवन्यम् 1 ब्रह्मण के साथ एकरूपता 2 ब्रह्मण में लीनता, योग, निर्वाण—स ब्रह्मभूय गतिमात्रगमन - रभु० १।८२८, ब्रह्मभूयाय कल्पते —भय० १।४२६, मनु० १।९२ 3 ब्राह्मण, ब्राह्मण का पद या स्थिति, —भूयस्त् (नपु०) ब्रह्मण में लय, —भंगत्वमेवता लक्ष्मी का विशेषण मोक्षात्, वेदान्त-दर्शन जिसमें ब्रह्म वा परमात्माविषयक चर्चा है, —भृति (वि०) ब्रह्मण का रूप रखने वाला, भूर्ध्वभूत् शिव का विशेषण, —भेक्षकः मूत्र फाल का पीया, —भ्रष्टः (गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय) दैनिक पचयमों में से एक, वेद का अध्यायन तथा संस्कार पाठ—अध्यायन ब्रह्म यज्ञ—मनु० ३।७० (अध्यायनवाच्येन अध्ययनमपि गृह्यते—कुल्लु०), वीषः ब्रह्मज्ञान का अनुशीलन या अभिग्रहण, —वीषि (वि०) ब्रह्मण से उत्पन्न, —रत्नम् ब्राह्मण को दिया गया मूल्यवान् उपहार, रत्नम् मूर्धन में एक प्रकार का विवर जहाँ से जीव इत सटीक की छोड़ कर निकल जाता है, रत्नकः दे० ब्रह्मचर्य, —रसः शुक्रदेव का विशेषण, रासिः 1 ब्रह्मज्ञान का प्रवक या समस्त रासि, सपूर्ण वेद 2 परब्रह्मण का विशेषण, रीतिः (स्त्री०) एक प्रकार का वीतक रे(से) आ-निमित्तम्, —नेत्रः विद्याता के द्वारा प्रस्तुत पर लिखी गई पतितवाँ किन्ते मनुष्य का भाव्य प्रकट होता है, मनुष्य का प्रारम्भ, शेषः ब्रह्मण

का लोक,—**क्यु** (पुं०) वेदों का व्याख्याता,—**ब्रह्म**
 ब्रह्म का ज्ञान,—**ब्रह्म**—**ब्रह्म**—**ब्रह्म** ब्राह्मण की
 हुंसा,—**ब्रह्म** (नपुं०)—**ब्रह्म** 1 दिव्य आत्मा
 या कीर्ति, ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न आत्मशक्ति या
 शेष (तस्य हेतुस्त्वद् ब्रह्मवर्चसम्—**रघु**० १।१३,
 मनु० २।३७, ४।१४ 2 ब्राह्मण की अन्वहित
 पवित्रता या शक्ति, ब्रह्मदेव—**शं** ९, **बर्हस्पति**,
 —**बर्हस्पति** (वि०) ब्रह्म देव से पवित्रोक्त,
 शुद्धात्मा (पुं०) प्रयत्न वा श्रद्धेय ब्राह्मण,—**बर्ह** दे०
 ब्रह्मवर्त्त,—**बर्ह** नम् नावा,—**बावि** (पुं०) 1 जो
 वेदों का अध्यापन करता है, वेदव्याख्याता उन्नर०
 १, मा० १ 2 वेदान्त दर्शन का अनुयायी,—**बास**
 ब्राह्मण का आवासस्थल,—**बिह-बिह** (वि०) परमात्मा
 को जानने वाला, ब्रह्म (पुं०) श्रेष्ठ, ब्रह्मवेत्ता,
 वेदान्ती,—**बिष्ठा** ब्राह्मण,—**वि** (वि) हुं वेद का
 पाठ करने समय धृति में निकलने वाला यज्ञ का छोटा,
 —**विश्वधन्**: इन्द्र का विशेषण, **वृक्ष** 1 ढाक का
 वेद, 2 मूलर का वृक्ष,—**वृषि** (स्त्री०) ब्राह्मण की
 आजीविका,—**बृहन्** ब्राह्मणों की समूह,—**वेद** 1 वेदों
 का ज्ञान 2 ब्रह्म का ज्ञान 3 अथर्ववेद का नाम
 —**वेदि** (वि०) वेदवेत्ता, नुं ब्रह्मविद्, **वैश्वर्त**
 अठारह पुराणों में से एक,—**वसिष्ठ** सतीत्य या धृतिता
 की प्रतिष्ठा, **विष्**—**वीर्षन्** (नपुं०) एक विशिष्ट
 अस्त्र का नाम, **वसन्** (स्त्री०) ब्राह्मणों की सभा
 —**वसि** सरस्वती नदी का विशेषण,—**सत्रम्** 1 वेद
 का पढ़ना-पढ़ाना, ब्रह्मयज्ञ 2 परमात्मा में लय होना,
सत्रम् (नपुं०) ब्रह्म का निवासस्थान,—**सभा**
 ब्रह्म का दरवार, ब्रह्म की सभा या अवन,—**सम**
 (वि०) ब्रह्म से उत्पन्न या प्राप्त, (क) नारद का
 नामान्तर, **सर्व** एक प्रकार का गोप,—**सद्युष्यम्**
 परमात्मा के साथ पूर्ण एकक्यता—**नुं** ब्रह्मयज्ञ,
 —**साष्टिका** ब्रह्म के साथ एकक्यता मनु० ६।२३८,
सार्ध तमसे मनु का नामान्तर, **सुत** 1 नारद
 का नामान्तर, यतीषि जादि 2 एक प्रकार का कन्दु
 सू 1 अनिष्ट का नामान्तर 2 कामदेव का
 नामान्तर, **सुभम्** 1 जनेऊ या यज्ञोपवीत जिसे
 ब्राह्मण या द्विजमात्र कचे के ऊपर से धारणा कर-
 ते हैं 2 बादरायण द्वारा रचित वेदान्तदर्शन क मूत्र,
 —**सुवि** (वि०) जिसका उपलवण सम्कार हो चुका
 हो, यज्ञोपवीतधारि, **सु** (पुं०) शिव का विशेषण,
 —**साम्य** महार, विषय—**महावीर**० ३।४८,—**स्तेयम्**
 अर्थात् उपवास से उपार्जित वेदान्त,—**स्वम्** ब्राह्मण
 की संपत्ति वा वनदीपत,—**याज्ञ**० ३।२१३, **हारि**
 (वि०) ब्राह्मण का वन पुराने नाम,—**हृन्** (वि०)
 ब्रह्मव्याता, ब्राह्मण की हुंसा करने वाला,—**हुत्स**

दैनिक पाँच यज्ञों में से १, जिसमें अतिथिस्तकार की
 क्रियाएँ सम्पन्नित हैं—**मनु**० ३।७४,—**हुत्स**—**यम्**
 एक नक्षत्र का नाम जिसे अंग्रेजी में कैपेल्ला कहते हैं।
ब्रह्म (वि०) [**ब्रह्म** + **यमद्**] 1 वेद से युक्त वा व्युत्पन्न,
 वेद वा वेदज्ञान से संबद्ध—**जलविष** ब्रह्मयज्ञेन तेषाम्
 —**कुं**० ५।३७ 2 ब्राह्मण के गोप, **यम्** ब्रह्म से
 अधिष्ठित अस्त्र।
ब्रह्म (वि०) [**ब्रह्म** + **मनुष्य**] वेदज्ञान रखने वाला।
ब्रह्म (अव्य०) [**ब्रह्म** + **सोनि**] 1, ब्रह्म वा परमात्मा
 की स्थिति 2 ब्राह्मणों की देवपत्न्य में।
ब्रह्म (वि०) [**ब्रह्म** + **वीप**] 1 ब्रह्म की पत्नी 2 दुर्गा
 का विशेषण 3 एक प्रकार का गन्धद्रव्य (द्रव्यका)
 4 एक प्रकार का पीनल।
ब्रह्म (वि०) [**ब्रह्म** + **रिभि**, **रिभ्यो**] ब्रह्म से संबद्ध,
 (पुं०) विष्णु का विशेषण।
ब्रह्म (वि०) [**ब्रह्म** + **रिभ्यो**, **रिभ्यो**] वेदों का
 पूर्ण पठन, अनिश्चय विज्ञान वा व्याख्याता—**ब्रह्म**
 मायाय निर्रेषिकारे ब्रह्मरिभ्यो न्वननुपमन्तम्—**रघु**
 १।८।२८,—**रिभ्यो** दुर्गा का विशेषण।
ब्रह्म [**ब्रह्म** + **अण्** + **शीन्**] ब्राह्मों बटी का गोपा।
ब्रह्म (वि०) [**ब्रह्म** + **विष्णु**] 1 ब्रह्मण्य विष्णु
 1 कर्मिकेय का विशेषण 2 विष्णु की उपाधि।
ब्रह्म (वि०) (स्त्री०—**रुद्रे**) [**ब्रह्म** + **अण्**, **रिभ्यो**]
 ब्रह्म विद्याता वा परमात्मा से संबद्ध—**रघु**० १।३।९०,
 मनु० २।६० भा० २।७७ 2 ब्राह्मणों से संबद्ध
 3 वेदाध्ययन वा ब्रह्मज्ञान से संबद्ध 4 वेदविहित
 वैदिक 5 विशुद्ध, पवित्र दिव्य 6 ब्रह्म द्वारा
 अर्थात् जैसा कि मूर्त्त (दे० ब्राह्ममूर्त्त), या
 अन्न, **रुद्र** शिष्यधर्मशास्त्र के अनुसार आठ प्रकार
 के विवाहों में से एक, जिसमें आभूषणों से अलङ्कृत
 कन्या, वर से बिना कुछ किये, उसे दान कर दी जाती
 है (युगी ब्रह्म भेदों में सर्वश्रेष्ठ प्रकार है)।
 —**ब्राह्म** विवाह ब्राह्मण दीयते शक्यलक्ष्मणा—**वाज**
 ० १।५, मनु० ३।२१३, ७ 2 ब्रह्म का नामान्तर,
 —**रुद्र** हथौड़ी का अष्टमूर्त्त के नीचे का भाग
 2 वेदाध्ययन। मनु० **अहोरात्र** ब्रह्म का एक
 दिन और एक रात, **वेदा** ब्राह्म विवाह की रीति से
 विवाहित की जाने वाली कन्या—**सुकृते** दिन का
 विशिष्ट भाग, दिन का वर्षा मन्वेरे का समय
 (गन्धर्व पक्षिमे नामे मूर्त्तों ब्राह्म उच्यते) ब्राह्म
 मूर्त्तें किल तस्य देवी कुमारकन्या सुपुत्रे कुमारम्
 —**रघु**० ५।३९।
ब्रह्म (वि०) (स्त्री०—**को**) [**ब्रह्म** वेदं **गृह्ण**] वैतन्य
 वा वेदपत्नीते वा—**अण्**] 1 ब्राह्मण का 2 ब्राह्मण
 के गोप 3 ब्राह्मण द्वारा दिया गया,—**को** 1 हिंदू

वर्षों के माने हुए चार वर्षों में सर्वप्रथम वर्ष का, (पुण्य- ब्रह्म- के मुख से उत्पन्न- ब्राह्मणाज्य मुखमासीत् ऋक्० १०१०।१२, मालि० १।३१, १६) ब्राह्मण- नग्नता जायते ब्रह्म सन्कारद्विज उच्यते, विद्यया याति विद्यत विभिः शोचिय उच्यते, या-जात्या कुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन च, अभियंक्तो हि दस्तिच्छेदप्रय स द्विज उच्यते) 2 पुरो- हिन, ब्रह्मज्ञानी या परमेश्वरः 3. अग्नि का विशेषण 4 वेद का वह भाग जो विविध यज्ञों के विषय में मन्त्रों के विनियोग तथा विधियों का प्रतिपादन करता है, साथ ही उनके मूल तथा विवरणमत्तक व्याख्या की मन्त्रबन्धी निदानों के साथ जो उपासकों के रूप में विश्रुत है, प्रस्तुत करता है वेद के मन्त्रभाग में यह किन्तुल पुषक है 5 वैदिक रचनाओं का समूह जिसमें ब्राह्मण नाम मन्त्रिमण्डल है (वेद के मन्त्रों की भाँति अपौरुषेय या श्रुति माना जाता है) प्रत्येक वेद का अपना पुषक-पुषक ब्राह्मण है, ये हैं ऋग्वेद के गैत्रेय या आश्वलायन, और सोमोपनी की या साम्बान्य ब्राह्मण है, यजुर्वेद का शतपथ, सामवेद का पञ्चविन, पर्वणिग तथा छ और है, अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है । सम० - अतिरिक्त- ब्राह्मणों के प्रति सर्वोप या निरन्तर मुखक व्यवहार, ब्राह्मणों का अनन्तर - ब्राह्मणानिर्गमतागो धवतामेव भूतये महावीर० २।८० - अथाथ्य ब्राह्मणों की धरणा में जाना, - अभ्युपपत्ति (स्त्री०) ब्राह्मण की रक्षा वा पालन- पाथ, ब्राह्मण के प्रति प्रदग्नि कृपा मनु० १।८७, - ध्व- ब्राह्मण की हत्या करने वाला, - ब्रह्मन्, - जाति. (स्त्री०) ब्राह्मण की जाति, - जीविका ब्राह्मण के लिए विहित वृत्ति के साधन, ब्रह्मन्, - स्वम् ब्राह्मण की मर्पति, निम्बक ब्राह्मणों की निन्दा करने वाला, - ब्रुष- जो ब्राह्मण होने का बहाना करना है, नाम मात्र का ब्राह्मण जो ब्राह्मण जाति के जितन कर्तव्यों का पालन नहीं करता है बहोवी ब्राह्मणबुवा निवसन्ति २४०, मनु० ७।८५, ८।२०, भूषिष्ठ (वि०) जिसमें अधिकतर ब्राह्मण ही रहते हैं। - बधः ब्राह्मण की हत्या, ब्रह्महत्या, संतपेणम् ब्राह्मणों को मिताना या तृप्त करना ।

ब्राह्मणक. [ब्राह्मण + क] 1 अयोय या नीच ब्राह्मण, नाम मात्र का ब्राह्मण 2. एक देश का नाम जहाँ गोदा ब्राह्मणों का वास हो ।
ब्राह्मणवा (अव्य०) [ब्राह्मण + वाच्] 1. ब्राह्मणों में 2. ब्राह्मण की पदवी को- - जैता कि 'ब्राह्मणात् भवति धनम्' में ।
ब्राह्मणान्धसिन्धु (पु०) [ब्राह्मणो विहितानि साधनानि अस्ति द्वितीयार्थे पञ्चमपुनश्चान्यम् - अन्धक सं०, सप्त + इति]

एक पुरोहित का नामान्तर, ब्रह्मा नामक ऋग्वेद का सहायक ।
ब्राह्मणो [ब्राह्मण + ङीप्] 1 ब्राह्मण जाति की स्त्री 2 ब्राह्मण की पत्नी 3 प्रतिभा (मौलकठ के मतानुसार 'ब्रह्मि') 4 एक प्रकार की छिपकली 5. एक प्रकार की मिरड 6 एक प्रकार का शास । सम० - भासिन् (पु०) ब्राह्मण स्त्री का प्रेमी ।
ब्राह्मण्य (वि०) [ब्राह्मण + ष्यञ्, वा यत्] ब्राह्मण के योग्य, - ष्यः गतिपद का विशेषण, - ष्यम् 1 ब्राह्मण की पदवी या दर्जा, पुरोहितत्व या याज्ञकीय वृत्ति, - सत्य रूपे ब्राह्मण्येन- मूच्छ० ५, पथ० १।६६, मनु० ३।१७, ७।४२ 2 ब्राह्मणों का समुदाय ।
ब्राह्मी [ब्राह्म + ङीप्] 1 ब्रह्म की मूर्तिमती शक्ति 2 बाणी की देवी सरस्वती 3 बाणी 4 कहानी, कथा 5 धार्मिक प्रथा या रिवाज 6 रोहिणी नक्षत्र 7 पूर्वा का नामान्तर 8 ब्राह्मविद्या की विधि में परिष्कारिता स्त्री 9 ब्राह्मण की पत्नी 10 एक प्रकार की बूटी 11 एक प्रकार का शीपक 12 नवी का नामान्तर । सम० कम्ब बाराही कद, - पुषः ब्राह्मी का पुत्र- २०- ३०, मनु० ३।२७, ३।७ ।
ब्राह्म्य (वि०) (स्त्री०- ह्रस्वी) [ब्रह्मन् + ष्यञ्] 1 ब्रह्मा अर्थात् विद्याते से संबन्ध रखने वाला 2 परमात्मा से संबद्ध 3 ब्राह्मणों से संबद्ध, - ह्रस्वम् आरचयन्, अचम्भा चिन्तयन् । सम० ब्रह्मैव- ब्राह्मणुर्हत्, - हुत्सम् अतिथि- सत्कार दे० 'ब्रह्मण्य' ।
ब्रुष (वि०) [ब्रु + क्] धनने वाला, बहाना करने वाला, अपने आपकी उस नाम से पुकारने वाला जो उसका वास्तविक नाम न हो, (समान के अन्त में) यथा ब्राह्मणब्रुष, क्षत्रियब्रुष में ।
ब्रू (अदा० उभ०) उर्वीति- ब्रूते वा ब्राह्) (आर्षाधातुक लकारों में इस धातु में असाधारण परिवर्तन होता है, इसके रूप 'ब्रू' धातु से बनाये जाते हैं) 1 कहना बोलना, बात करना (द्विकर्षक धा०) ता ब्रूया एषम् वेध० १०५, राम कथान्वित सर्वं भाता ब्रूते स्म विह्वलः भट्टि० ६।८, या माणवक वर्षं ब्रूते - शिष्टा०, कि त्वो प्रतिब्रूमहे- भावि० १।५६ 2 कहना, बोलना, संकेत करना (किंबी व्यक्तित्व या वस्तु की ओर) - ब्रूह तु शकुन्तलाभिषिक्तुय इकीमि ७- २, 3. बोधना करना, प्रकथन करना, प्रकाशित करना, सिद्ध करना- ब्रूवते हि फलेन साधवो न तु कथनेन निरोपयोगित्वात्- मं० २।२६, रत्न० २।१३ 4 नाम लेना, पुकारना, नाम रखना, - छदसि दद्या ये कवय- स्तन्मभिप्रथ्य से ब्रूवते- व्युत्० १५ 5. उत्तर देना - ब्रूहि मे प्रज्ञानम्, जम्बु कहता, बोलता, बोधना करता, निष्, - व्याख्या करना, व्युत्पत्ति बतलाना,

प्र—कहना बोलना, बात करना—मट्टि० ८१८५,
प्रति—, उत्तर में बोलना, उत्तर या जवाब देना

—प्रत्यक्षबीचनम्—रघु० २।४२ वि—, 1. कहना,
बोलना 2 गलत कहना, मिथ्या बतलाना ।
लीकम् (नपु०) फटा, बाल, पाश ।

म

मः [भा+घ] 1. सुक बहू का मामात्पुत्र 2 भय, भ्रान्ति,
आभास,—वम् 1 तारा 2 मूख 3 बहू 4 राशि
5 सताइत को सक्ता 6 मूखकमी । सम०—ईश,
—ईशः सूर्य,—मन्मः—मन्मः—मन्मः 1 तारापुत्र, नक्षत्रपुत्र
2. राशिचक्र 3 बहू का राशिचक्र में भ्रमण,—मोलः
तारामंडल,—मूखकम् मूखकम् रागिचक्र, बलि
चन्द्रमा,—मूखकः उद्योतिषी ।

मक्षिका [?] कीपूर ।

मक्षत (मू० क० इ०) [मञ्+क्त] 1. विमक्षत, निपयो-
कृत, निविष्ट 2 विभाजित 3. सेवित, पूजित 4 व्यस्त,
दत्तचित्त 5 अनुरक्त, सलम, श्रद्धालु, निष्ठावान्
—मय० १।३४ 6 प्रसाधित, (भोजन आदि) पक्व,
दे० मञ्,—क्तः पूजक, आराधक, उपासक, पुजारी
वा दास, स्वाभिपक्ष नीकर—मक्षतोऽपि मे सखा वेति
—मय० ४।३, १।३१, ७।२३,—कम् 1 हिस्ता,
माय 2 भोजन—मञ्० ३।७४ 3 उबाला हुआ पाचक,
भात—उत्तर० ४।१ 4 पानी में डाल कर पकाया
हुआ कोई भी अन्न । सम०—अभिपक्षः भोजन की
इच्छा, भूख,—उपसाधक रसोदया,—कस्तः भोजन की
बाली,—कष्टः ताम्रा प्रकार के मधु इन्धो से तैयार की
गई धूप,—काष्टः रसोदया,—कम् 1 भूख,—भातः भोजन
मात्र पर दूसरों की सेवा करने वाला नीकर, जिसे
सेवा के बदले केवल भोजन ही मिलता है—मनु०
८।४१५,—श्रेः भोजन से बर्चस, महाशिव,—मक्षः
भात का मात्र,—रोचन (वि०) भूख को उत्तेजित
करने वाला,—कस्तल (वि०) अपने भूख नीर भस्त्रों
के प्रति कुपालु,—कस्तल 1 भोजनक (प्राथियों की
बात सुनने का कथन) 2 भोजन-गृह ।

मक्षितः (स्त्री०) [मञ्+क्तिन्] 1 विभोजन, पृथक्करण,
विभाजन 2 प्रमाण, अक्ष, हिस्ता 3 उपलब्धा, अनु-
रक्ति, सेवा, स्वाभिपक्षित—कु० ७।३७, रघु० २।६३,
महा० १।१५ 4 सामान, सेवा, पूजा, श्रद्धा 5 विन्यास,
व्यवस्था—रघु० ५।७४ 6. सजावट, अलंकार, श्रुतार
—आबद्धमुक्ताफलमक्षितविषये—कु० ७।१०, १४, रघु०
३।३५, ७५, १५।३० 7 विशेषण । सम०—मक्ष
(वि०) विपक्ष अविवादात् करने वाला,—भूषण्,

—भूषणम् (अभ्य०) भक्तिपूर्वक, सम्मानपूर्वक,—भाञ्
(वि०) 1 धर्मनिष्ठ, श्रद्धालु 2 बृद्ध अनुराग रखने
वाला, निष्ठावान्, श्रद्धालु,—भाञ्जः भक्ति की रीति
अर्थात् परमात्मा की उपासना (शाबद शास्त्रि और
मोक्ष प्राप्ति की रीति 'भक्ति या उपासना' ही सपत्नी
जाती है), घोषः सानुराग निष्ठा, श्रद्धापूर्वक उपा-
सना, भाञ् अनुराग का विश्वास ।

मक्षितवत् (वि०) [भक्ति+मपुप्] 1 उपासक, श्रद्धालु
2 निष्ठावान्, स्वामिभक्त, अनुरागी ।

मक्षितक (वि०) [भक्ति+का+क] स्वामिभक्त,
विश्वासपात्र (जैसे कि घोडा) ।

मक्ष् (धुरा० उभ०—मक्षयति—ते, भक्षित) 1 खाना,
निगलना—यथाशय जले मत्स्यैर्मक्षते स्वापदैर्भूषि
—पच० १ 2 उपभोग में खाना, उपभोग करना
3. बर्बाद करना, नष्ट करना 4 काटना ।

मक्षः [मञ्+भञ्] 1 खाना 2 भोजन ।

मक्षक (वि०) (स्त्री०—क्षिका) [मञ्+भृत्] 1 खाने
वाला, निर्वाह करने वाला 2 पैदल, भोजनमट्ट ।

मक्षच (वि०) (स्त्री०—क्षी) [मञ्+भृत्] खाने वाला,
निगलने वाला,—वम् खाना, खिलाता, जीविका
बसाना ।

मक्षय (वि०) [मञ्+भृत्] खाने के योग्य, भोजन के
लायक,—वम् कोई भी भोज्य पदार्थ, माक्ष पदार्थ,
आहार, (भास० मी)—मक्षयमक्षयो प्रीतिविषयतरेव
कारणम् हि० १।५५, मनु० १।१३३। सम०—काष्टः
('मक्षयकार' मी) पाचक, रसोदया ।

मगः [मञ्+घ] 1 मृग के बाहू कपो में एक, सूर्य
2 चन्द्रमा 3. शिव का रूप 4. अच्छी किस्मत, भाग्य,
सुखद नियति, प्रसन्नता—भास्ते भग लासीनस्य—ये०
शा०, भगमिन्द्रश्च वायुश्च भग सप्तर्षयो ददु—मात्र०
१।२८२ 5 सम्पन्नता, समृद्धि 6. मर्षादा, श्रेष्ठता
7 प्रसिद्धि, कीर्ति 8. लावण्य, सौन्दर्य 9 उत्कर्ष,
श्रेष्ठता 10 प्रेम, स्नेह 11. श्रेयसाय श्रेयसिभ्यो, कैल,
आयोद 12 स्त्री की योगि—मात्र० ३।८८, मनु०
१।२३७ 13. सगुण, नैतिकता, धर्म की साधना
14 प्रयत्न, चेष्टा 15 इच्छा का अभाव, सासारिक

विषयो में विरिण 16 मोक्ष 17 सामर्थ्य 18 सर्व-
प्रतिभ्रमता (तपु भी अविभ्रम १५ अर्थों में),—गन्-
उत्तराफल्गुनी नक्षत्र। सम०—अक्षरुः (आयु० में)
विष्णु, योगिन्द्र पर की पृथिवी, —आध्यात्म्य दाम्पत्य-
मूल प्रदान करना, इन्द्र. शिव का विशेषण, देवः
पूर्ण स्वैच्छाचारी. लम्पट—देवता विवाह की अधि-
ष्ठात्री देवता, ईश्वरम् उत्तराफल्गुनी नक्षत्र, —नक्षत्र-
विष्णु का विशेषण, —अक्षर विट, दलाल, भद्रजा,
—देवत्वम् वैवाहिक आनन्द की उद्योगपणा।

भगवन्तर [भग + तृ + गिन्त् + लृप्, मुम्] एक रोग जो
गुदावर्त में ब्रण के रूप में होता है।

भगवत् (वि०) [भग + मनुप्] 1 यशस्वी, प्रतिष्ठ
2 सम्मानित, अद्वेष, दिव्य, गतित्र (देव, उपदेव तथा
अन्य प्रतिष्ठित एवं ममाननीय व्यक्तियों का विशेषण)
—अथ भगवान् कुशाग्री कावचप ष० ५, भगवन्वर-
चप जन रघु० ८।८१, इमी प्रकार भगवान् वासुदेव
आदि (पु०) 1. देव, देवता 2 विष्णु का विशेष-
ण 3 शिव का विशेषण 4. जिन का विशेषण
5 ब्रह्म का विशेषण।

भगवतीः [भगवत् + छ] विष्णु का पूजक।
भगवत् [भग + कालम्, कुलम्] शोषणी।
भगवत् (पु०) [भगवत् + इति] शिव का विशेषण।
भगिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [भग + इति] 1 फलता-
पुष्पा, सपत्र, भाग्यशाली 2 भैरवशाली, शानदार।

भगिनिका [भगिनी + कन् + टाप्, इत्थम्] बहन।
भगिनी [भगिन् + क्रीप्] 1 बहन 2 सौभाग्यवती स्त्री
3 स्त्री०। सम०—पति, भर्तृ (पु०) बहन का
पति, बहुनीदं।

भगिनोयः [भगिनी + छ] बहन का पुत्र, मानजा।

भगीरथ [?] एक प्राचीन मुसंभवो राजा का नाम, समर
का प्रपौत्र, जो अनियाय घोर साधना करके स्वर्ग से
दिव्य गंगा को उतार कर इस पृथ्वी पर लाया, तथा
गंगा समर के ६० हजार पुत्रों (पुत्रपुत्रों) की प्रथम
को पवित्र करने के लिए इस पृथ्वी से पताल लोक
को ले गया। सम०—पत्न्यः—प्रथम भगीरथ का
प्रथम जो किसी अतिदुष्कर कार्य या भीम कर्म को
आलंकारिक रूप से प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया
जाता है, सुता गया का विशेषण।

भग (भू० क० क०) [भग् + क्त] 1 टूटा हुआ, हृदी
टूटी हुई, टूटा फूटा, फटा-पूरना 2 बाला, ध्वस्त,
निराश 3 अवशय, गृहीत, निरक्षित 4 बिगाड़ा हुआ,
तोड़ा-तोड़ा हुआ 5 पराजित, पूर्णरूप से परास्त,
छिन्न-भिन्न किया हुआ—उत्तर० ५ 6 बहाया हुआ,
विनष्ट (दे० भग्न्),—नक्षत्र वैर की हृदी का टूटना।
सम०—आत्मन् (पु०) चन्द्र का विशेषण,—आत्मन्

(वि०) जिसने कठिनाइयों और आपत्तियों पर
विजय प्राप्त कर ली है, जास (वि०) निराह
—भर्तृ० २।८४, हताश—भर्तृ० ३।५२, उल्लाह
(वि०) जिसका उल्लाह टूट गया हो, जिसकी शक्ति
अवसन्न हो गई हो, जिसका उल्लाह, भग हो गया
हो, —उल्लाह (वि०) जिसके उद्योग निष्फल कर दिने
गये हो, निराश, जिसका विकास अवशय हो गया हो,
अन्तः—अन्तः अभिव्यक्ति या निर्माण में समर्पित
का अतिरिक्त, दे० 'प्रक्रमभय', शेष (वि०) निराश,
हताश,—एवं (वि०) विनीत, जिसका वन्द टूट गया
हो,—विज (वि०) जिसकी नीर में बाधा डाल दी गई
हो,—पाप्यं (वि०) जिसके पाप्यं में पीडा होनी हो,
—पृष्ट (वि०) 1 जिसकी कमर टूट गई हो
2 सामने आना हुआ,—प्रतिज्ञ (वि०) जिसने अपनी
प्रतिज्ञा तोड़ दी हो, भगन्त् (वि०) निरुत्साहित,
हतोत्साहित, छत (वि०) जो अपने बतों में निष्ठा-
वान् न हो,—सकथ्य (वि०) जिनकी योजनाओं को
उल्लाहहीन कर दिया गया हो।

भग्नी [= भगिनी, एषो० साथ] बहन।
भग्ना (भा) रो [भगिनि शब्द करोति भग् + क्त + अण्
+ क्रीप्] दास, भोगिनी।

भग्नाः (स्त्री०) [भग्न् + तितन्] टूटना, (हृदी का)
टूटना।

भग्नाः [भग्न् + घञ्] 1 टूटना, टूट जाना, छिन्न-भिन्न
होना, फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े करना, विभक्त
करना—आयंलामङ्ग इव प्रवृत्त—रघु० ५।४५,
2 टूट, हृदी का टूटना, विच्छेद 3 उल्लाहना, काटना
—आञ्जलिका भङ्ग—श० ६ 4 पार्श्व, विरले-
पथ 5 अंश, टुकड़ा, सड़, विद्युत् अंश—पुष्पोन्मय
पल्लवभङ्गभिल कु० ३।६१, रघु० १६।१६
6 पतन, अथ पतन, प्लस, विनाश, बर्बादी जैसा कि
राज्यं, सत्त्वं आदि में 7 अलग अलग करना, शिर-
वितर करना—याथाभङ्ग मा० १ 8 हार, पछाड़,
पराभव, पराभव—पथ० ४।४१, शि० १६।७२

9 अक्षरकला, निराशा, हताश—रघु० २।५२, आया-
भय आदि 10 अस्वीकृति, इकारो—कु० १।४२,
11 छिन्न, दरार 12 विभ, बाधा, रकावट—निदा°
वति° आदि 13 अननुष्ठान, निरुत्थन, स्वगन
14 मयदव 15 मोक्ष, तह, लहर 16 सिक्कन, भुकाव,
सकींच या सटाना उत्तर० ५।३३ 17 गति बाल,
18 ककप, फालिब 19 जालसाजी, घोसेवाजी
20 नहर, अलमार्य, नाली 21 गोलगोल या घूमघूमकर
कहने वा करने का इय—दे० प्रीति 22 पतन। तप०
—अथः बाधाओं को हटाना,—बासा हृदी,—आर्थं
(वि०) बेईमान, जालसाज।

भङ्गना [भञ्ज् + अ + टाप्] 1 पटसन 2 पटसन से टूटवार किया एक मादक पेय । सम० - कदम्ब पटसन का पेय ।

भङ्गिनि - नी (स्त्री०) [भञ्ज् + इन्, कुडबन्, भङ्गि + ङीप्] 1 टूटना, हड़डी का टूटना, बिच्छेद, प्रभाग 2 हिनोर 3 भुजाय, सिकुबन् - दम्भक्रीडि प्रथम-भपुरासगमे बुम्बितोऽस्मि - उज्जट, सं० १३ 4 लहर 5 बाढ, भारी 6 देहा मार्ग, वृषावदार या चक्रदार मार्ग 7 गोलमोल या बुम्बुमाकर कहने या करने का रूप, बाष्पाक अथायतरेण कथनात् - काष्म० १०, बहुभङ्गिबिशाद - दस० 8 बहाना, छापेप, आभास - य पाञ्चजन्यप्रतिविम्बभङ्ग्या वाराम्भस फेननिब धनकित - विक्रम० ११ 9 दाकपेच, जालसाजी, धोखा 10 व्यथोक्ति 11 व्यथोत्तर, आधुत्तर 12 पग - रघु० १३।६९ 13 अन्ताराल 14 हठी, लज्जा-शीला । सम० - भक्ति (स्त्री०) तरणवन्तु कदमो या नरयो की भुजला में विभाजन, लहरियेदार जीना - मेघ० ५० ।

भङ्गिन् (वि०) [भङ्ग + इनि] 1 क्षीर टूटने वाला, मंयूर, अम्बायी - तदपि तल्लगभङ्गि करोति जेत् - भृत्० २। ११ 2 किसी अभियोग में पछाड़ा हुआ ।

भङ्गिजम् (वि०) [भङ्गि + जम्] कहरियेदार, करारा ।
भङ्गिजन् (स०) [भङ्ग + इनिच्] 1 (हड़डी का) टूटना, तोटना 2 सिकार, हिनोर 3 वृषारालापन 4 छापेप, धोखा 5 आधुत्तर, अयथोक्ति 6 कुटिलता ।

भङ्गिजम् [भङ्ग + इजम्] ज्ञानेन्द्रियों में कोई दोष ।

भङ्गुर् (वि०) [भञ्ज् + घुरच्] 1 टूटने के योग्य, सिद्ध, कदकम्बल 2 दुबला-यतला, अस्थिर, अनित्य, भङ्गर - आभरणान्ता प्रथया कोपास्तलायभङ्गुरा हि० १।१८८, वि० १६।७२ 3 परिवर्तनशील, चर 4 कुटिल, देहा 5 बक, वृषावदार - तथिमि त्व भाति भङ्गुरभ्रः - गीत० १० 6 जालसाज, बेईमान, बालाक, - रः किसी नदी का मोड़ ।

भङ्ग । (धा०) उभ० भजति ने, परन्तु व्यवहारत आ०, भक्त 1 (क) हिम्मे करना, विनिरित कराना, बाटना - भजेत् पंतुक रिशेषम् - मनु० १।१०४, न तपुर्बेभवेसापेन् २००, १।१९, (ख) निषिद्ध करना, निषत करना, अनुभाजन करना - गायत्री-मानसम्बन्त् ऐ० शा० 2 किसी के 1 ए प्राप्त करना, हिम्मा लेना, भाग लेना - विष्यं वा भजते शीतम् धनु० १०।५९ 3 स्वीकार करना, ग्रहण करना मा० १।२५५ (क) आशय लेना, एते आप को) समर्पण करना, पतुं च रक्षणा - दित्त्वा उ भवे का० १७९, मातर्लक्ष्य भवन्व कश्चिपरः - भृत्० ३।६४, न कश्चिद्विनामपयभङ्गुदीऽपि भजत

- सं० ५।१०, भासि० १।८३, रघु० १७।२८, (ख) अग्न्यास करना, अनुभजन करना, पालन करना - भजे धर्ममनातुर रघु० १।२१ 5 उपभोग करना, अधिकृत करना, रचना, भोगना, अनुभव करना, मनोरजन करना विषुरपि भजतेतरा कलकृम् - भासि० १।७४, न मेजिरे भीमविभोगे यीतिम् - भृत्० २।८०, व्यक्ति भजन्त्यापणा शा० ७।८, अभिलषामपोऽपि मादं च भजते कैव कथा परीरियु - रघु० ८।६३, मा० ३।२, उत्तर० १।३५ 6 सेवा में परतुत रहना, सेवा करना रघु० २।२३ पंच० १।१८९, मूच्छ० १।३२ 7 आराधना करना, सत्कार करना (देव मान कर) पूजा करना 8 छिंटाना, बुलाना, पसद करना स्वीकार करना तल्ल परीश्यामतरद् भजन्ते सान्त्वित् १।२ 9 शारीरिक सुखेभोग करना, - पच० ५।५० 10 अनुत्कत होना, भक्त बनना 11 अधिकार में करना 12 भाग में पटना (इस पातु के अर्थ - मन्त्राजी के साथ जुबकर विविध रूप ग्रहण कर लेते हैं उदा० मित्रां भजे मोना, मुष्टां भज् बंहीषा हीना, भाष भज् भ्रम प्रदक्षित करुता आदि) बि - 1 विभक्त करना, बाटना - विभज्य मेरुर्न यदधिमाकृत - नी० १।१६, परिणां व्यभजताभ्रमाद्रिहि - रघु० १।१२९, १०।५४, वि० १।१ 2 अलग २ करना, (सगति, पैतुक आयादा आदि) बाटना - विभक्ता आतर - बटे हूए मारि 3 भेद करना 4 सम्पात करना, पूजा करना, सवि, हिम्मा लेना, हिम्मे में किसी को प्रविष्ट करना वित पया यन्त्र च सविभक्तम् ॥ ३।२२ उभ० - भावयति - ते - कई विद्वानों के मतानुसार यह 'भज्' के ही प्रे० रूप हैं) 1 पकाना 2 देना ।

भजक [भज् + क्] 1 बाटने वाला, वितरक 2 पुत्रक, भक्ता, उपासक ।

भजकम् [भज् + क्] 1 हिम्मे बनाना, बाटना 2 स्वयं 3 सेवा, आराधना, पूजा ।

भजमान (वि०) [भज् + शानच्] 1 बाटने वाला 2 उप-सोक्त 3 योग्य, सही, उचित ।

भञ्ज 1 (धा०) प० भञ्जति, भज - इच्छा० विभसति 1 तोड़ना, फाड़ डालना, छिन्नभिन्न करना, चूर चूर करना, टुकड़े टुकड़े करना, लच्छा करना - भनञ्जि सर्वमयासा भृत् ० ६।३८, भङ्गत्वा भुञ्जी - य।३, वभञ्जुर्बलयापि च ३।२२, भन्तुर्भावि यत्स्वभा - रघु० १।१७६ 2 उजाड़ना, उखाड़ना - भनक्त्युपवन कापि - भृत् ० १।२ 3 (किले में) दरार डालना 4 भगाना करना, प्रत्यन व्यर्थ करना, निराश करना, प्रयति रोकना - पिनाकिना भनक्तनोरथा सती - कु० ५।१ 5 पकड़ना, रोकना, विघ्न डालना, निलान्त

करना जैसा कि 'भगमिद्र' में 6. हुराना, पकास्त करना—अप्राणि राम परिभूव रामात् क्षयाघयाः मयत् स विज्ञे—नै० २२।१३३, अच्—, तोड डालना, ध्वस्त करना—तु० ३।७४, प्र—, 1 तोड डालना, ध्वस्त करना, बलिष्ठाया उडाना 2 रोकना, गिरफ्तार करना, निरोधित करना 3 भग्नाश करना, निराश करना ।

॥ (चु०) उभ० भञ्जयति ते) उज्ज्वल करना, चमकाना ।

भञ्जक (वि०) (स्त्री०-ञिका) [भञ्ज् + क्त्वा] तोड़ने वाला, बोटम वाला ।

भञ्जना (वि०) (स्त्री०-नी) [भञ्ज् + क्त्वा] 1. नोडने वाला, टुकड़े करने वाला 2 गिरफ्तार करन वाला, रोकने वाला 3. भग्नाश करने वाला 4 प्रबल पीडा पहुँचाने वाला,—अच् 1 नोड डालना, ध्वस्त करना, विनष्ट करना 2 हडाना, दूर करना, भगा देना—नुडिभयभञ्जनाय युनाम्—गीत० १० 3 पराजित करना, हुराना 4 भग्नाश करना 5 रोकना, विण्ड डालना, बाधा पहुँचाना 6 कष्ट देना, पीडित करना, - कः शलां का विरना ।

भञ्जवक [भञ्जना + क्तु] मूक का एक रोग जिसमें दाँव गिर जाते हैं, हाँठ टेढ़े हो जाते हैं ।

भञ्जकः [भञ्ज् + क्तव्य] मंदिर के पास उगा हुआ वृक्ष ।

भट् [म्वा० पर० भटति, भटित] 1 पोषण करना, पालना पोषण, स्थिर रखना 2 भाड़े पर लेना 3 मजदूरी लेना ॥ (चु०) उभ० भटयति-ने) बोलना, बातें करना ।

भट [भट् + क्त] 1 यात्रा, सैनिक, लड़ने वाला—तद्भटवानुरीतुरी नै० १।१०, वादिनसुष्टिबंधते भटस्य २२।२२ मट्टि० १४।१०१ 2 भूतिभोगी, भांडीत सैनिक, भांडे का टट्टू 3 जातिबहिष्कृत, वर्णसंकर 4 पिशाच ।

भट्टि (वि०) [भट् + इच्] चालाका पर रखकर पकाया गया मांस ।

भट्ट [भट् + क्त] 1 प्रभु, स्वामी (राजाओं को संबोधित करने के लिए सम्मान सूचक उपाधि) 2 विद्वान् ब्राह्मणों के नामों के साथ प्रयुक्त होने वाली उपाधि—भट्टयोपालस्य पौत्र—मा० १. इसी प्रकार 'कुमारिल भट्ट' आदि 3 कोई भी विद्वान् पुरुष या दार्शनिक 4 एक प्रकार की मिश्र जाति जिसका व्यवसाय भाट वा चारणों का व्यवसाय अर्थात् राजाओं का मूनि मान है—सत्रियाद्विप्रकस्याया भट्टो जानोऽनुवाचक 5 भाट, कन्वीनन । सम०—आचार्य प्रसिद्ध अध्यापक या विद्वान् पुरुष को यों भी उपाधि 2 विश्व,—प्रधासः—प्रधास, इलाहाबाद ।

भट्टार (वि०) [भट्ट् स्वाभिव्यभिधति ऋ—अण्] 1 भट्टारस्पद, पूज्य 2 व्यक्तिसाचक महाओं के साथ प्रयुक्त होने वाली सम्मानसूचक उपाधि—यथा-भट्टार-हरिचन्द्रस्य पथकधो नृपायते—हर्य० ।

भट्टारक (वि०) (स्त्री०-रिका) [भट्टार + क्तु] अडेय, पूज्य—आदि दे० ऊ० 'भट्टार' । सम०—बासन् रविवार ।

भट्टिनी [भट्ट् + इति + ङीप्] 1 (अभिविधक) रानी, राजकुमारी, (नाटकों में दामियो द्वारा रानी की संबोधन करने में बहुधा प्रयुक्त) 2 ऊँचे पद की महिला 3 ब्राह्मण की पत्नी ।

भट्ट [भण्ट् + अच्, नि० नलोप] विशेष प्रकार की एक मिय जाति ।

भट्टिक [भण्ट् + इलच्, नि० नलोप] 1 नेता, घोडा 2 टहनजा, नोकर ।

भण् (म्वा० पु० भणति,) 1 कहना, बोलना—पुरुषोत्तम इति भणितश्चे—विक्रम० ३, मट्टि० १४।१६ 2 बर्णन करना—काव्य स काव्येन सभासभाप्राप्ते—नै० १०।५९ 3 नाम लेना, पुकारना ।

भणनम्, भणितम्, भणितिः (स्त्री०) [भण् + क्तु, क्त, क्तिन्] 1 कहना, बोलना, बातें करना, बचन, प्रवचन, वार्तानाम्— न बोधामानन् जनयति जगन्नाथ भणिति—भासि० ४।३२, २।७७, श्रीवचदेव, भणित हरिश्चितम्—गीत० ७, इह रत्नमयने—नदेव ।

भण्ट् [म्वा० आ० भण्टते] 1 भर्त्सना करना, छिडकना 2 खिल्लो उडाना, अग्र्य करना 3 बोलना 4 उपहास करना, मसौल करना ॥ (चु०) उ०—भण्टयति-ने) 1 मोहाव्यवधानी बनना 2 चमका देना (शुद्धपाठ—भट्) ।

भण्ट [भण्ट् + अच्] 1 भांड, मसखरा, चिट्पक—भयो वैरस्य कठोरो भण्टयतेपिशाचका—सर्व० 2 एक मिश्रजाति का नाम—तु० 'भण्ट' । सम०—तपस्विन् (पु०) बनावटी सन्यासी, डोभी,—हासिली बेव्या, चारागना ।

भण्टक [भण्ट् + क्तु] एक प्रकार का लजन पत्नी ।

भण्डनम् [भण्ट् + क्तु] 1 कवच, बस्त्र 2 सत्राम, युद्ध 3 उत्पाद, दुष्टता ।

भण्डि-डी (स्त्री०) [भण्ट् + इ, भण्टि + ङीप्] लहन, तरण ।

भण्डिल (वि०) [भण्ट् + इलच्] सुलद, शुभ, सम्पन्न, सौभाग्यशाली,— कः 1 अण्ठी किस्मत, प्रसभता, कल्याण 2 दूत 3 कारीगर, दलकार ।

भण्ट [भण्ट् + अच्, अन्तादेश, नलोपच] 1 बौद्ध धर्म-न्यायी के लिए प्रयुक्त होने वाला आर्य सूचक शब्द—मदल तिबिरेव न वृष्यति—भूटा० ४ 2 बौद्धमिष्ठ ।

भण्डाकः [भण्ट् + आक, नलोप] सम्पन्नता, सौभाग्य ।

भद्र (वि०) [भद्र+रू, नि० मलय] 1 मला, सुन्दर, समृद्धिदायी 2 शुभ, भाग्यवान् बैसा कि 'भद्रमुख' 3 प्रमुख, सर्वोत्तम, मुख्य—परमेश्वर भद्र विजितारिभद्र—रघु० १५।३। 4 अनुकूल, मङ्गलप्रद 5 कृपालु, सदाय, श्रेष्ठ, सौहार्दपूर्ण, प्रिय, (सबोधन एक बचन में प्रयुक्त होकर शर्ष होता है 'पूज्य श्रीमान्' 'प्रिय मित्र' 'पूज्य महिले' 'पूज्य श्रीमति' 6 सुहावना, उपभोग्य, प्रिय, सुन्दर—पद्य० १।१८। 7 स्तुत्य, प्रशान्त, प्रशंसनीय 8 प्रियतम, प्यारा 9 षट्कदार, बाह्यत रमणीय, पालकरी, इष्ट उल्लास, लीलाय, कल्याण, आनन्द, समृद्धि—भद्र भद्र वितर भगवन् भूयसे मगलाय—मा० १।३, १।७, त्वयि वितरतु भद्र भूयसे मगलाय—उत्तर० ३।५८, (इस अर्थ में बहुधा व० व० में प्रयोग), सर्व भद्राधि पश्यतु भद्र ते 'ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे' तुम्हें ऐश्वर्यशाली बनाए' 2 तीना 3 लोहा, इस्पात, इ. 1 बैल 2 एक प्रकार का सज्जन पत्नी 3 विशेष प्रकार का हाथी 4 छपरोपी, पाखत्री—मनु० १।२५८ 5 शिव का नामान्तर 6 मेषर्षिन का विशेषण 7 एक प्रकार का कदम्बवृक्ष (भद्रा कृ हुजावत करना, बाल भूँडना भद्राकरणम् सुन्दर) 1 सभ्य—भद्रकः बलराम का विशेषण,—आकार,—आकृति (वि०) शुभ लक्षणों से युक्त, अलम्बन, तनवरी,—आयत्नम् 1 राजासन, राजादही, सिंहासन 2 सहायि की विशेष अवस्थिति, योग का आसन,—ईश्वर शिव का एक विशेषण, एका बरी इलायची,—अपिक्त शिव का एक विशेषण, कारक—(वि०) मंगलप्रद,—कालो दुर्गा का नामान्तर, कुम्भ—किरी तीर्थ के जल में (विशेषकर यमाजल से) भरा हुआ सुनहरी घडा,—वपितम् जात्रु के रेखाचित्रों की बनावट, षट्, षट्कः एक घडा जिसमें भाग्य की पंचियां शान्ती जाव,—बाध (पु० नपु०) चीठ का वृक्ष,—नाभम् (पु०) सज्जनपत्नी,—बीठम् 1. राजमहो, राज-कुर्ती, सिंहासन रघु० ७।१० 2 एक प्रकार का पत्तदार कोडा,—बलनः बलराम का विशेषण,—भक्त (वि०) 'भाषणिक वेहरे बाला', विनम्र सन्तोषन के रूप में प्रयुक्त 'मानवर महोदय' 'पूज्य श्रीमान्'—श० ७,—भूयः एक विशेष प्रकार के हाथी का विशेषण,—रेषुः इन्द्र के हाथी का नाम, बर्षम् (पु०) एक प्रकार की नवमालिका,—आशः कालिकेय का विशेषण,—अभयम्,—अभयम् चन्दन का काष्ठ,—श्री (स्त्री०) चन्दन का वृक्ष,—सौभा यथा का विशेषण ।

भद्रक (वि०) (स्त्री०—श्रिका) [भद्र+कृ] 1 शुभ, मङ्गलमय 2 मनीहर, सुन्दर,—कः देवदास का वृक्ष ।

भद्रकूर (नपु०) [भद्र+कृ+कृ, मूष्] सुख सम्पत्ति का दाता, समृद्धकारी ।

भद्रकृ (वि०) [भद्र+कृ] मंगलमय, (नपु०) देवदार का वृक्ष ।

भद्रा [भद्र+टाप्] 1 गाय 2 चान्द्रमास के एक ही दौराज, सप्तमी और द्वादशी 3 स्वर्णपा 4 नाना प्रकार के पौधों के नाम । सभ्य—अभयम् चन्दन की लकड़ी ।

भद्रिका [भद्रा+कृ] [टाप्, इत्] 1 ताबीज 2 दौराज, सप्तमी व द्वादशी नाम की तिथियां ।

भद्रिलम् [भद्र+इत्] 1 समृद्धि, श्रीभाग्य 2 कपनशील या धरमराहत वाली नति ।

भद्रम् [भम्+भा+क] 1 मन्त्री 2 वृत्त ।

भद्रभरालिका, **भद्रभाली** [भम् इत्यम्बकनचन्द्रस्य भर बाहुस्य आत्मानि—भम्भर+भा+ला+क+ङीप्—भद्रभराली+कन् टाप्, ह्रस्व] 1 गोमती 2 डोस ।

भद्रभारकः [भद्रभा+ह+अन्] गाय का राभना ।

भद्रम् [विभोयस्मात् भी-अपादाने अच्] 1 डर, आतंक, विभीषा, आशयका (प्राय आश० के साथ) भागे रांग-भय कुने ध्वनिभय विले नालाद्रुयम्—भर्त० ३।३३ यदि स्मरमपाय नस्ति म्वाभयम् वेणी० ३।५ 2 डर, श्रास जगद्रुयम् आदि ३ मन्त्रा, जामिम्, सकट तावद्रुयम् भोग्य पावद्रुयमनागम, आशय तु भय बोध्य नर कुपोषाचानम्—हि० १।५७,—म बीमारी, राग । सभ्य—अस्मित,—आकान्त (वि०) ज्वरग्रन्त जात्रु,—आते (वि०) उग हुआ आन-द्विज, भयवर्ती,—आश्व (वि०) 1 अंत्योपाक 2 जामिम् बाला—स्वर्गमें निचन धेय परधर्मों भयावह भय० ३।२५,—उत्तर (वि०) भय से युक्त, कर ('नयकर' भी) 1 डरने वाला, भयानक, भयपूर्ण 2 मन्त्रयाक, नकटपूर्ण इन्हीं प्रकार 'भयकारक' 'भयकृत', विद्विष्य गृह में प्रयुक्त किया जाने वाला डाल, मास बाज,—दुत (वि०) भय के कारण भागने वाला, पराजित, भयावा हुआ, प्रतीकार भय की दूर करना, डर हटाना, श्रम (वि०) भयदायक, भयपूर्ण, भयानक, प्रस्ताव भय का अन्तर,—आहृष्य उत्पाक श्राद्धन, बहु श्राद्धन जो अपनी जान बचाने के लिए (यह समस्त कर कि श्राद्धन अबध् है) अपने श्राद्धन होने की वृथाई देता है,—विप्लव (वि०) आतंक-पीडित, अहू डर की अवस्था होने पर सेना की विशेष क्रम-व्यवस्था ।

भयानक (वि०) [विभोयस्मात्-भी+आतक] भयकर, भीषण, भयजनक, डरावना—किमत पर भयानक स्वात्—उत्तर० २, शि० ७।२०, भय० १।२७,—क 1 व्याघ्र 2 राहु का नामान्तर 3 भयानक रस, काश्य के आठ या नौ रसों में एक—दे० 'रस' के अन्तर्गत, कम् श्रास, इट ।

भर (वि०) [भृ+भृ] धारण करने वाला, देने वाला,

भरणपोषण करने वाला भादि.—रु. 1. बोहा, भार, बजन—भरणमें भर कृत्वा—पञ० १. 'अपने तीन सुते' पर ही अपने आपको सहारा देने वाला', फल-भरपरिणामवशात्प्रभञ्ज—भादि—उत्तर० २।२०, भर-श्या—भृता० २।१८ 2 बड़ी सभ्या, बड़ा परिमाण, सहा, समृद्ध—पते भर कुमुदप्रफलावलीनाम्—भादि० १।१४, १४, वि० १।४७ 3 प्रकाश, राशि / भाषिक्य—निष्कंडसीद्धमरेति गुणोऽप्यतेति—मा० ६।१७, सोमाभरं समृता—भादि० १।१०३, कोपभरण—गीत० ३।७ तोल की एक विशेष माप ।

भरतः [भृ + षट्] 1 कुम्हार 2 सेवक ।

भरण (वि०) (स्त्री०—भ्री) [भृ + ष्यट्] धारण करने - वाला, निर्राह करने वाला, सहारा देने वाला, पालन-पोषण करने वाला, भृ 1 पालन-पोषण, निर्राह करना, सहारा देना—रघु० १।२१, शं० ७।३३ 2 बहन करने या डोने को क्रिया 3 खाना, प्राप्त करना 4 पुष्टिकारक मोजन 5 भाडा, मजदूरी, धा-भरणी नामक नक्षत्र ।

भरणी [भरण + ङीप्] तीन तारों का पुत्र जो दूसरा नक्षत्र है, सम०—भृः राहु का विशेषण ।

भरतकः [भृ + कण्ठन्] 1 स्वामी, प्रभु 2 राजा, शासक 3 बिल, छाँड 4 कीडा ।

भरतस्यु [भरण + स्यु] 1 मालन-पालन करने वाला, सहारा देने वाला, पालन-पोषण करने वाला 2 मज-दूरी, भाडा 3 भरणी नक्षत्र, —भ्या मजदूरी, भाडा । सम०—भृञ् (पु०) प्रति-सेवक, भाडे का नौकर ।

भरतस्युः [भरन्त्यु (कंडवा०) + त] 1 स्वामी 2 प्रशस्तक 3 मित्र 4 अग्नि 5 चन्द्रमा 6 सूर्य ।

भरतः [भर तनीति—तन् + ङ] 1 शकुन्तला और दुष्यन्त का पुत्र जो चक्रवर्ती राजा था । इसीके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष है । यह कीरव और पांडवों का दुर्यवर्ती पूर्वपुत्र था 2 दशरथ की सबसे छोटी पत्नी कैंकेयी का भैया, राम का एक भाई, यह बड़ा धर्मपतिवा और पुण्ययोगी व्यक्ति था, राम के प्रति इसकी इतनी श्रद्धा थी कि जब कैंकेयी की रक्षित भांग के अनुसार राम वन में जाने को तैयार हुए तो भरत को यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ कि उसकी अपनी माता ने ही राम को निर्वासित किया फलतः उसने अपनी प्रभुसत्ता की अव्योक्तार कर राम के नाम (राम की सहायकों को लाकर उनको राज्यप्रतिनिधि के रूप में सिंहासन पर रखकर) से तब तक राज्यप्रशासन किया जबतक कि बीरहृवर्ष का निर्वासित समाप्त करने राम वापिस जयोम्या नहीं आये 3 एक प्राचीन मूनि का नाम जो नाट्यकला तथा संगीतविद्या के प्रवर्तक माने जाते हैं 4 अभिनेता

रामच पर अभिनय करने वाला पात्र—कल्किनिवृ-राघते भरता—मा० १।५ 5 भाड़े का सैनिक, केवक पत्र के लिए काम करने वाला नौकर 6 बंगली, पहाड़ी 7 अग्नि का विशेषण । सम०—भरतक 'भरत का ज्येष्ठ भ्राता', राम का विशेषण—रघु० १।४।७३, —भरतस्यु भारत के एक भाग का नामान्तर.—भ (वि०) भरतशास्त्र या नाट्यशास्त्र का शास्त्र, —भृषकः अभिनेता—भृषः भरत का देश अर्थात् भारत, —भारतस्यु नाटक के अन्त में दिया गया श्लोक, एक प्रकार की नान्दी (नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक भरत मुनि के सम्मानार्थ कहा गया)—तथापीठमस्तु भरतशास्त्रस्यु (प्रत्येक नाटक में उपलब्ध) ।

भरतः [भृ + ञप्] 1 प्रभुसत्ता प्राप्त राजा 2 अग्नि 3. दशरथ के किसी एक प्रदेश की अधिष्ठाणी देवी, लोकपाल ।

भरद्वाजः [विप्रयते भरद्वाज् भृ + ञप् = भर, इन्द्रमा जायते द्वि + ञन् इ = द्विज, भरद्वासो द्विजपत्र कर्म० सं०] 1 सात ऋषियों में से एक का नाम 2 धातक पक्षी ।

भरित (वि०) [भर + इत्] 1 परिवर्तित किया गया, पाला-पोना गया 2 भरा हुआ, भरपूर—जगज्जाल कर्ता कुमुदमत्सोरभ्यभरितम्—भादि० १।५४, ३३ ।

भर [भृ + उन्] 1 पति 2 प्रभु 3 शिव का नामान्तर 4 विष्णु का नाम 5 सोना 6 समृद्ध ।

भरतः—भा, —भ्री (स्त्री०) [भृ इति सम्भेन द्यजति —म + ष्व + क] गौडक ।

भरतकन् [भृ + उट + कन्] तला हुआ मांस ।

भरतः [भृञ् + षट्] 1 शिव का नाम 2 बह्या का नाम ।

भरतः [भृञ् + ष्यट्] शिव का विशेषण ।

भरतं (वि०) [भृञ् + ष्यट्] 1 भूने वाला तलने वाला, पकाने लाला 2 नष्ट करने वाला,—भृ 1 भूने या तलने की क्रिया 2 कडाही ।

भरतं (पु०) [भृ + ष्यट्] 1 पति—यद्भृतेषु श्रुतिविष्णुति तत्कल्पम्—भर्तु० २।८, स्वर्णाभा भर्ता धर्मदाराद्यत्र पुत्राम् मा० ६।१८ 2. प्रभु, स्वामी, महत्तर—भर्तु धापेन—मेघ० १, नयं, भूतं भादि 5 नेता, सेना-पति, मुख्य—रघु० ७।४१ 4 भरणपोषण कर्ता, भावहनकर्ता, प्रशस्तक । सम०—भ्री भरणे पति का पत्र करने वाली स्त्री, —भारतक सुभराज, रामकुमार, उत्तराधिकारी, कुमार (नाटक में बह्या प्रवृत्त सवोधन),—भारिका सुभराजो (नाटकी में प्रवृत्त सवोधन सम्बन्ध)—भ्रतम् पतिव्रत, पतिप्रमिल (सं) सास्त्री पतिव्रता पत्नी—भृ० पतिव्रता,—भ्रीकः पति की मृत्यु पर शोक,—हृदिः एक प्रसिद्ध राधा की तीन

घटक (भृंगार, नीति, वैराग्य), वाक्यपदीय तथा भट्टिकाव्य का रचयिता है ।

मृगशी [मृत् + मनुत् + शीप्] विवाहिता स्त्री जिसका पति मृगशीत हो ।

मृगशी (अर्थ०) [मृत् + शति] पति के अधिकार में, कुला विवाहित हुई है ।

मृत् (भृ० आ० भल्लयते, कभी २ पर० भी) 1 धमकाना, घुड़कना 2 सिद्धकना, बुरा भला करना, अपवाद कहना 3 व्यथ करना, निम्न, 1 सिद्धकना, निम्ना करना, गाली देना 2 आगे बढ़ जाना, ग्रहण करना, लज्जित करना कु० ३।५३, 1

मृत्क [मृत् + क्तृ] धमकी देने वाला, घुड़कने वाला ।

मृत्पितृ, भल्लना, भल्लितम् [भ्रमं + मृत्, निघाटात्, क्त वा] 1 धमकाना, घुड़कना 2 धमकी, सिद्धकी 3 बुरा भला कहना, गाली देना 4 अभिधाप ।

मृत् [मृ + मनिन्, वि० मनीष] 1 मजदूरी, भाडा 2 सोना 3 मांस ।

मृत्वा [भ्रमं + यात् + टाप्] मजदूरी, भाडा ।

मृत् (भृ०) [मृ + मनिन्] 1 सहारा, सहाय्य, पालन-पोषण 2 मजदूरी, भाडा 3 सोना 4 सोने का सिक्का 5 मांस ।

मृ 1 (भृ० आ० भालयते, भालित्) देखना, अवलोकन करना, -नि, (पर० भी) 1 देखना, अवलोकन करना, प्रवेश करना, निगाह डालना-- निभाल्य भूयो निजगौरिमात्र या नाम मान महर्षेव गाली -- प्राप्ति० ३।१७६, या-यन्मा न भ्रामिनि निभालयति प्रभातवीलाग्विन्दमदभङ्गिपदे कटाक्षे -- ३।४ ॥ (भ्वा० आ०) दे० 'भल्ल'

मृत् (भ्वा० आ० भल्लते, भल्लित्) 1 वर्णन करना, बयान करना, कहना 2 धामल करना, घांट पट्टी चाना, धार डालना 3 देना ।

मृत्, -मृत्नी-मृत्नी [भ्रमन् + जच्, म्रियर्वा षीप्] एक प्रकार का अस्त्र या दाय-वर्षादाकारणविक्राट्मल्लवर्षी --रघु० १।६६, ४।६३, ७।५८, -मृत्, 1 रीछ 2 शिव का विशेषण 3 मिलावे का पोधा, ('भल्ल' भी) ।

मृत्क, मृत्कः ! मृत् + क्तृ] रीछ ।

मृत्काल, मृत्कालक [मृत् + क्तृ + मृत्, भल्लान् + क्तृ] भिषावे का पोधा, ।

मृत्क, मृत्कः ! मृत् + क्तृ, परो पृषो० ह्रस्व] 1 रीछ, भासू-दधति कुहुरभावायमृत्कः मृत्कधूनाम् --उत्त० २।२१ 2 कुता ।

मृ (वि०) [भ्रमयन्मात्-भृ + अयादाने अच्] (समान के अन्त में) उदय होता हुआ या उत्पन्न, जन्म लेता

हुना,--कः 1 होना, होने की स्थिति, सत्ता 2 जन्म, उत्पत्ति - भवो हि लोकात्म्यद्वयं तापुशाम्--रघु० ३।१४, या० ७।२७ 3 ओत, मूल 4 सांसारिक अस्तित्व, सासारिक जीवन, जीवन--जीता कि भव-मर्थ, यथागार अदि में-कु० २।५१६ सत्ता 6 कुशल-शेव, स्वान्ध, समृद्धि 7 श्रेष्ठता, उत्तमता 8 शिव का नाम दशरथ कन्या मन्वपूर्वपत्नी-कु० १।२१ ३।७२ 9 देव, देवता 10 अभिषेहण, प्राप्ति । सम० अस्ति (वि०) सासारिक जीवन पर विजय पाने वाला, वीरगाय, अस्तकृत्य बह्ना का विशेषण -- अस्तम्भू दुमरा जीवन (भूत या भावी) पच० १। १२१,--प्रथिवः--अर्जवः, समुद्रः--सागरः--सिन्धुः सासारिक जीवन स्त्री समुद्र,--अथवा, नी गंगा नदी,--अरवन्धु सासारिक जीवन स्त्री जगल भुनमान सत्ता, आत्मनः गर्वेश वा कारिकेय का विशेषण, उत्पन्न सासारिक जीवन का विनाश --रघु० १।७७७ अस्ति (स्त्री०) जन्मस्थान, घस्मन् दानान्त, जगल की भाग,--सिन्धु (वि०) सासारिक जीवन के बधनो को काटने वाला, जन्म की पुनरागत को रोकने वाला--भवन्निन्दस्वाम्भक-पादपाशव का० १,--छत्र, पल्लवम् का रोकना वि० १।१५, -दाह (भृ०) देवदारु का वृक्ष,--भृति एक प्रसिद्ध कवि का नाम, (दे० परि० २) भवभूते, सर्वथादुभयभरते भारतीय भाषा, एतत्कृतकारण्य किमन्यथा रोतिवित प्राचा । आर्या सप्त० ३६, --श्व (भृ०) अन्वेषित स्वकार के अवतर पर बजने वाला डोल, वीति (स्त्री०) सासारिक जीवन से छूटकारा- कि० ६।११ ।

मृत् (वि०) (स्त्री०-मृत्नी) [मृ + यात्] 1 होने वाला, घटित होने वाला, घटने वाला 2 वर्तमान --समशीत च भव च भावि च--रघु० ८।७८, (साव० वि०) (स्त्री०-मृत्नी) आचरन्मूक, या सम्मानमूक सर्वनाम --जिनका अन्वय है 'आदारीय श्रीमन्' 'पुत्र श्रीमति' (मध्यम पुरुष, पुरुषवाचक सर्वनाम के अर्थ में बहुधा प्रयुक्त, परन्तु किञ्च अन्य पुरुष की) --अथवा कथं भवान् मन्वत-सात्वि० १, भवत् एव जानति रघुषा च कुलस्मिन्-उत्तर० ५।२३, रघु० २।४०, ३।४८, ५।१६, प्राय इसके साथ 'जन्' या 'वृष' भी जाड दिया जाता है (छन्दो को देखो) कभी कभी 'स' के साथ लया दिया जाता है- यन्मा विधेयविधे संसभ-वाप्रियुवन्-मा० १।१ ।

मृत् (वि०) [मृत् + क्तृ] मान्यवर महोदय का, आपका, तुम्हारा ।

मृत्क [मृ + क्तृ] 1 होना, अस्तित्व 2 उत्पत्ति, जन्म 3 आवास, निवास, घर, मन्व--अथवा भवन्-

प्रत्ययात् प्रविष्टोऽस्मि—मू०० ३, मेघ० ३२
४ स्थान, आवास, आचार जैसा कि 'अविनयभवन्म्'
में पद्य० ११९१५ इमारत ६ प्रकृति । सम०
—इच्छम् घर का मध्यवर्ती भाग, —भक्ति, —स्वाभिन्
(पु०) घर का स्वामी, कुल का पिता ।

भवन्तः—ति [भू० + भव् (सिच्) अन्वादेश] इस समय,
वर्तमान काल में ।

भवन्ती [भू० + भव् + षीप्] युवकनी स्त्री ।

भवानी [भव् + ङीप्, जानृक्] शिव की पत्नी या पार्वती
का नाम —आत्मन्तापकरण्यत्र भवो भवाग्धा —कि०
५१२९, कु० ७८४, मेघ० ३६, ४६, । सम० युव,
हिमालय पर्वत का विशेषण, पति तिव का विशेषण
—अधिवसति सदा यदेन जनेरतिविदिनविभयो भवानी-
पति कि० ५१२९ ।

भवान्म (वि०) (स्त्री०) शो भवान्म (वि०) भवान्म
(वि०) (शो) (वि०) आपका भावि, तुम्हारे
भाति ।

भविक (वि०) (स्त्री०—की) १ दाता, उपयुक्त, उप-
योगी २ सुख, फलता-फलता हुआ, —कम् मयत्रता,
कल्याण ।

भवितव्य (वि०) [भू० + तव्यत्] होने वाला, घटित होने
वाला, होमहार (बहुधा भाववाच्य में प्रयोग होता है
अर्थात् करणकारक को कर्ता के रूप में तथा क्रिया नपु०,
ए० व० में रत्नकर—त्वया सम महायत्नं भवितव्यम्
—श० २, मुक्ता कारणन भवितव्यम्—श० २),
—अव्यम् अवश्यवाची, भवितव्यं भवत्येव पश्चिममंनिमि
स्थितम्—सुभा० ।

भवितव्यता [भवितव्य + तन् + टाप्] अनिवार्यता, होनी,
प्राप्त्य, भाग्य —भवितव्यता वरुचयी—श० ६, सर्वद्वेषा
भयकरी भवितव्यतेव—मा० ११२३ ।

भवितु (वि०) (स्त्री०—की) [भू० + तु] होने वाला,
भावी—रघु० ६।५२, कु० १।५० ।

भविकः [भवत्य इत् सूर्य, पृथो० साप्] कवि (भवि-
निन्—पु० भी इसी अर्थ में) ।

भविकः [भू० + इत्] १ प्रेमी, उपपत्ति २ लग्न,
कामो ।

भवित्म् (वि०) [भू० + इत् + न्] —दुष्पु होने वाला ।

भवित्व्य (वि०) [भू० + इत् + न् + क्त, पृथो० त लोप]
१ आगे जाने वाला २ भावी अथवा निकटवर्ती,
—अव्यम् भावी काल, उत्तर काल । सम०—काल
भवित्व्य काल, ज्ञानम् आगं होने वाला, बला का
आनकारी,—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक
का नाम ।

भवित्व्यत् (वि०) (स्त्री०—ती, त्नी) भू० + इत् + न् + क्त
+ ण्यत्] होने वाला, आगामी समय में होने वाला ।

सम०—कालः उत्तर काल,—अव्यम्—वाचिन् (वि०)
आगे होने वाली घटनाओं को बताने वाला, भविष्य-
वाणी करने वाला ।

भव्य (वि०) [भू० + यत्] १ विद्यमान, होने वाला,
प्रस्तुत रहने वाला २ आगे होने वाला, आगे वाले
समय में घटित होने वाला ३ होमहार ४ उपयुक्त,
उचित, लायक, योग्य कि० १११३ ५ अच्छा,
वडिया, उत्तम ६ शुभ, भाग्यवान्, आनन्ददायक—कु०
११२९, कि० ११२९, १०।५१ ७ मनोहर, प्रिय, सुन्दर
८ योग्य, शान्त, नृदु ९ सत्य,—व्या पाथी—अव्यम्
१ सत्ता २ भावी काल ३ परिणाम, फल ४ अच्छा
फल, समृद्धि—रघु० १०।५२ ५ हृदी ।

भम् (स्वा० पर० भवति) १ भाकना, गुराँत, भूकना
२ हाकी देना, सिद्धकना, हाटना—पटकारना,
धमकाना ।

भवः, भवकः [भव् + अच्, क्युन् वा] कुता ।

भवक [भव् + ल्युट्] कुता, भम् कुने का भौकना,
गुराँत ।

भवम् (ण०) [भम् + अटि] १ मूयं २ मांस ३ एक
प्रकार की बस्तु ४ समय ५ हांगी ६ पिठला भाग
(स्त्री० और नपु० भी) ७ यंत्रि ।

भवन् [भम् + न्युट्] मय्यकर्ता ।

भवन्तः [भम् + न्युट्] अन्वादेश । काल, समय ।

भवित (वि०) [भव् + क्त] जल कर भस्म बना हुआ,
—सम् भस्म भावि० १।८४ ।

भवत्का, भवत्, भवितः (स्त्री०) [भव् + क्त + न् +
+ टाप्, भवत् + टाप् + भवत् + इङ्] १ घोकनी
२ जल मग्ने के लिए धमक का पात्र, भवक ३. चमटे
का यन्त्र, शोली ।

भवत्कम् [भवत् + कम्] १ मोना या चादो २ गर
रोग जिसमें जो कुछ लावा जाय तुरन्त पत्ता जैसा
ज्ञान हो (परन्तु यन्तु पचता नहीं) और नीत्र
भूय लगे रहता ३ आँवो का एक राग ।

भवत्कम् (नपु०) [भम् + भवित्] १ राग (कानने)
—ध्रुव विद्याभारगी विशुद्धय—कु० ५।७९, २. विभ्रति
या पवित्र राग (जो शरीर में मत्वा जाती है),
(भवति हि राग में जाहति देना अर्थात् धार्यं कार्यं
करना,—अव्यम् भवत्कम् जला कर राग करना,
अस्वीम् जल कर राग हो जाता—अस्वीभूतस्य देवस्य
पुनरागमनं कुन सर्वे०) । सम० अग्नि भोजन
के जखी पच जाने में नीत्र भव् का लगे रहता,
—अव्यम् (वि०) जो केवल राग के रूप में रह
जाय—कु० १।७९,—आह्वयः कपूर, उद्धृतम्
गुच्छम् शरीर पर राग मत्वा अस्वीभूतल
मदमन्तु भवते—काव्य० १०,—अव्यम् चोवी,—कृतः

राज का डेर, -सम्पत्, -सम्पत्, -सम्पत्नी एक प्रकार का चमकान, - तुल्य, 1 कुहरा, द्वि 2 पूल की बौछार 3. गौबो का समूह, -विषय: शिव का विशेषण, -रोग एक प्रकार की बीमारी—तुं मस्मानि, जेननम् शरीर पर राज चलना, विधि: राज से किया जाने वाला अनुष्ठान, - वैद्यक: कपूर, -स्नानम् राज मल कर निर्मल करना ।

राज्यता [सम्पन् + तल् + टाप्] राज का होना ।
राज्यताम् (अभ्य०) [सम्पन् + साति] राज की स्थिति में, कृ अलाकर राज कर देना ।

रा [बदा० पर०—भाति, भात, प्रेर० भापयति—ते, इच्छा० बिभासति] चमकना, उज्वल होना, चमकदार या चमकीला होना—पञ्चविंश सरो भाति सत् जलजने-विना, षट्सर्वविना काव्य मानस विषयविना—मायि० ११११६, समतीत्य भाति ज्यती ज्यती—कि० ५१२५, रघु० ३१८८ दिखाई देना, प्रतीत होना—बुभुक्षित न प्रतिभाति किञ्चि—महाभाष्य 3 होना, विद्यमान होना 4 इतराना, अस्ति—चमकना—दिवि स्थिति सूर्य इवाभिभाति—महा०, आ-1 चमकना, जगमगाना, शानदार प्रतीत होना—नरेन्द्रकन्यास्तम्बवाप्य सत्यति तपोवद् दशमुखा इवाभम्—रघु० ३१३३ 2 दिखाई देना, प्रकट होना—रघु० ५११५, ७०, १३१४, निम्न-1 चमक उठना, जगमगाना—अश्वीजवलयेन निर्बभौ—रघु० १११६ 2 प्रगति करना, उन्नति करना, विचारों में आगे बढ़ना—वेदादामो हि निर्बभौ—मनु० ५१४४, २११०, प्र-1 प्रकट होना 2 चमकना, प्रकाशित होने लगना, प्रभात काल होना—ननु प्रभातारज्ज्वी शं० ४, प्रभातकत्या क्षणिव शर्वरी—रघु० २१३, प्रति-1 चमकना, चमकदार या चमकीला प्रकट होना—प्रतिभास्यच्च ब्रह्मिणै केतकानाम्—षट० १५ 2 इतराना, बनना 3 दिखाई देना, प्रकट होना—श्रीरत्नसूचिपररा प्रतिभाति सा मे—शं० २१९, रघु० २१४७, कु० ५१३८, ६५४ 4 सुसना, मन में आना—नोत्तर प्रतिभाति मे, वि-1 चमकना—मनु० २१७१ 2 दिखाई देना, प्रकट होना, अस्ति—(आ०) बहुत चमकना, जगमगाना अपि लोकत्रय इशावपि भूतवृष्टा रमणीयुना अपि, धृतिपातितया दम्बसुअतिभाते नितरा बरापते—न० २१२२, (वहाँ) किवा इसी प्रकार 'युगम्', 'दुर्ग' और 'युगा' के साथ भी बन सकती हैं—तु० पा० ११३१४) ।

रा [भा + अङ् + टाप्] 1 प्रकाश, आभा, कान्ति, मौजदं—सावद्रा भारवेभाति शायन्मास्य नोदय—उद्भूट 2 छाया, प्रतिबिम्ब । सम०—कोशः-यः सूर्यः, यन्-तारायुज, ताराकावली,—निष्कर, प्रकाशयुज, किरणो का समूह,—सैविः सूर्यः,—संज्ञकम् प्रभामदल तेजोमदल ।

भातर दे० भास्कर 'भास्' के अन्तर्गत ।

भास्त्र (वि०) [भक्त—अण्] 1. जो नियमित रूप से दूसरे से भोजन पाता हो, पराभित, सेवा के लिए प्रतिभूत अर्थात् अनुजीवी 2 भोजन के योग्य 3 बटिया, गौण (विप० मुख्य) 4 गौण अर्थ में प्रयुक्त ।

भास्त्रिकः [भक्त + ठक्] अनुजीवी, पराश्रयी ।
भास (वि०) (स्त्री०—सौ) [भासा + अण्] पेट, भोजनमट्ट ।

भाग [भञ् + घञ्] 1 अष्ट, अश, हिस्सा, प्रमाण, टुकड़ा जैसा कि भागहर, भागश आदि में 2. नियतन, वितरण, विभाजन 3 भाग्य, किस्मत—निर्माणभास परिणत—उत्तर० ४ 4 किसी पूर्ण का एक अष्ट, भिन्न 5 किसी भिन्न का अश 6 चौथाई, चतुर्थ भाग 7 किसी वृत्त की परिधि का ३६० वा घात या अष्ट 8 राशिचक्र का तीसरा अश 9 लम्बि 10 कक्ष, अन्तराल, अण्ड, क्षेत्र, स्थान रघु० १८५७ । सम० अर्ह (वि०) दाय या पैतृक सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी, कल्पना हिस्सो का विभाजन,—जाति (स्त्री०) (गणि० में) भिन्न राशियों के घटा कर हर समान करना,—वेद्यम् 1 हिस्सा, अष्ट, अश नीचाभागपेनोचितमं—रघु० १५० 2 किस्मत, भाग्य, आरब्ध 3 अर्थात् किस्मत, सीमाय तद्भाग्येष परम पशूना मनु० २१२२ 4 सम्पत्ति 5 आनन्द, (श्र) 1 कर—शं० २२ उत्तराधिकारी,—भास्त्र (वि०) स्वार्थपर, हिस्सेदार, साक्षीदार,—अण् (पु०) राजा, प्रभु,—लक्षणा लक्षणा सन्दर्भित का एक अर्थ या शब्द का गौण प्रयोग जिससे शब्द अपने अर्थ को अक्षत रखता है तथा अक्षत को केता है, 'अहद्वजहल्लक्षणा' भी इसे ही कहते हैं—उदा० सोऽय देवदत्त, हर 1 सहउत्तराधिकारी 2. (गणि० में) भाग या तकसोप, हारः (गणि० में) भाग ।

भागवत् (वि०) (स्त्री०—सौ) [नगवत् अगवत्वा वा इव सोऽय देवता वा अण्] 1 विष्णु से सबब रखने वाला या विष्णु की पूजा करने वाला 2 देवता सबधी 3 पवित्र, दिव्य, पुण्यशील,—तः विष्णु या कृष्ण का अनुचर अथवा भक्त,—तम् अठारह पुराणों में से एक ।

भागवत् (अभ्य०) [भाग + घञ्] 1 लक्ष्मों में या अक्षों में, सज्ज लज्ज करके 2 हिस्से के अनुसार ।

भागिक (वि०) [भाग + ठक्] 1. अष्ट सम्बन्धी 2 अष्ट बनाने वाला 3 भिन्न सम्बन्धी 4 व्याज बहुत करने वाला (भागिक घटम्) 'शो में से एक भाग अर्थात् एक प्रतिशत', इस प्रकार भागिक विभक्ति आदि ।

भागिन् (वि०) [भञ् + भिनुन्] 3. हिस्से या भागों से युक्त 2 हिस्सा रखने वाला, हिस्सेदार 3. हिस्सा लेने वाला, भाग लेने वाला, साथी यथा दुःख

4 सम्प्रथित, इस्त 5 अधिभूतधारी, स्वामी—मनु० १।५३ 6 हिस्ते का अधिकारी मनु० १।१५५, याज्ञ० २।१२५ 7 भाग्ययान्, किम्मत वाला 8 घटिया, गीब ।

भाविनेषु [भाविने + इक्] बहन का पुत्र, भानया,—औ भानयो ।

भावीरथी [भावीरथ + अच् + क्रीप्] 1 महा नदी का नामालर- भावीरथी निर्झरनेकराणाम् कु० १।१५ 2 गया की तीन मुख्य शाखाओं में एक ।

भाग्यम् [भग् + ध्यत्] 1 किम्मत प्रारब्ध, तफदीर, सौभाग्य या दैव- निग्रहात्परित्र पुरुषस्य भाग्य दैवो न जानाति कुतो मनुष्य-मुभा० (बहुधा ब० व० में) स० ५।३० 2 अक्षय भाग्य या किम्मत रघु० ३।१३ 3 समृद्धि, सम्पत्ति-भाग्येष्वनुत्पत्तिनी स० ५।१७ 4 जानद, कल्याण । सन० - भाग्यत् (वि०) भाग्य पर अश्रित-भाग्यायतनम परम् स० ५।१९

उद्यम सौभाग्य का प्रभान, भाग्यशाली घटना, -कम् भाग्य की बाल, किम्मत का फेर-भाग्य श्रेण हि घनानि भवन्ति यानि मूच्छ० १।१३, योग, भाग्य की बला, किम्मत का मेल, - विप्लवः व्रीरिम्मत, दुर्भाग्य-रघु० ८।५७, भाग्यत् (अव्य०) विधि की इच्छा से, भाग्य से, किम्मत से, भाग्यबला ।

भाग्यशाली (वि०) [भाग्य + शाली] 1 भाग्यशाली, सौभाग्यसम्पन्न, भाग्यशाली 2 समृद्धिशाली ।

भाङ्ग (वि०) (स्त्री०) सौ [भङ्गा + अच्] पटलन से निर्मित, सन का बना हुआ ।

भाङ्गक [भाङ्ग + क्त] फटा पुराना कपड़ा, जीर्ण शीर्ष, चिपड़ा ।

भाङ्गपीनम् [भङ्गाया भवन क्षेत्रम् अच्] सन या पटलन का सत ।

भाञ् (पुं० उभ०) बाँटना वितरित करना, दे० 'भञ्' प्र० ।

भाञ् (वि०) [भाञ् + विभक्] (प्राय समास के अन्त में) 1 हिस्सेदार, साथी, भागी 2 रखने वाला, उपभोग करने वाला, अधिकार करने वाला, प्राप्त करने वाला सुख, रिक्प० 3 अधिकारी 4 भावुक, अनुभव करने वाला, सचेतन 5 अनुष्णत 6 रहने वाला, भावशाली, निवास करने वाला यथा 'कुहुरभाञ्' 7 जाने वाला, सहारा देने वाला खोजने वाला 8 पूजा करने वाला 9 भाग्य से बढा हुआ 10 अवयवकारणीय, कर्तव्य भट्टि० ३।२१ ।

भाञ्क [भाञ् + क्त] 1 बाटने वाला 2 (गणि० में) बहु अंक जिससे भाग किया जाय ।

भाञ्जयम् [भाञ्जयेज्जेन भाञ् + क्त] 1 हिस्से बनाना, बाटना 2 (अक में) भाग 3. पात्र, बर्तन, प्याला,

पाली पुष्पभाञ्जयम्-स० ४, रघु० ५।२२ 1 (आल०) आचार, ग्रहण करने वाला, जासय स भियो भाञ्जय नर पथ० १।५३, कल्याणना त्वमसि महात्मा भाञ्जय विश्वमूर्ते मा० १।३, उत्तर० ३।१५, मालवि० ५।८ 5. योग्य या पात्र, योग्य पदार्थ या व्यक्ति-भवाद्वा एव भवति भाञ्जयपुपदेशानाम् - का० १०८ 6 प्रतिनिधान 7 १५ पत्तों की माप ।

भाञ्जितम् [भाञ् + क्त] हिस्सा, अन्न ।

भाञ्जी [भाञ् + घञ् + क्रीप्] भावक, मात का माघ, दलिया ।

भाञ्ज्यम् [भाञ् + ध्यत्] 1 अन्न, हिस्सा, दाघ, 3 (अक में) लाभाय ।

भाटव, **भाटकम्** [भट् + घञ्, भृत् वा] मजदूरी, भाडा, किराया ।

भाटिः (स्त्री०) [भट् + णिच् + इज्] 1 मजदूरी, भाडा, 2 बेप्या की कपाई ।

भाट्टः [भट्ट + अच्] भट्ट का अन्तः, कुमारिल भट्ट द्वारा स्थापित सोमासाधन के मित्रातों का अनुयायी ।

भाष् [भष् + घञ्] नाट्यकाल्य का एक भेद, इसमें केवल रसम पर एक ही पात्र होता है, जो अन्त-विद्यियों के स्थान की आकाशभाषित का यथेष्ट प्रयोग करते पूरा कर देता है भाष स्वाद्वर्तचरितो नाना-व्यक्तान्तरामक, एकाङ्क एक एवात्र विपुण पक्वितो विट सा० ६० ५१३, आगे के श्लोक भी देखिये, उदा० वसततिलक, मुकुटदान, लोलासुधकर आदि ।

भाष्कः [भष् + क्त] उदायक, गोषणा करने वाला ।

भाष्क्यम् [भाष् + अच्, भष् + इ स्वार्थे अच् वा-तारा०] 1 पात्र, बर्तन, बालन (पाली, कटोरी पिछास आदि) नीलभाडम् 'नील रखने का मटका' इसी प्रकार 'शौरभाडम्' 'दूध की हाठी' सुरा०, पथ० आदि, 2 सद्गक, टुक, पेटी, सद्गकची सुरभाड-पथ० १३ बीबार या उपकरण, यत्र 4 सपोत-उपकरण 5 सामान, बर्तन, माल, पथसाधरी, हुकान-दार की बाणिव्यस्तु मधुराणामोणि भाट्टानि-पथ० १ 6 माल की गाँठ 7 (आल०) कोई भी मूल्यवान् संपत्ति, निधि-आल का रघुनन्दने तदुभय तपुष्-भाष् हि मे उत्तर० ५।२४ 8 नदी का तल 9 पाँडे की जीन या साज 10 भरी, मसखरण, - गच्छाः (पु०, व०) बर्तन, पथसाधरी । स० अ (आ) धार, -रन् भडारधर, सामान का कोडा (शा०) जहाँ धर का सामान नीर बर्तन आदि रखने जते हैं) - भाडा-भाट्टाभङ्गत विदुषा सा स्वयं योग्यानि- विष्कामक० १८।५५ 2. कोष, ज्ञान 3. सङ्घ, गोदाय, भडार, -पतिः सोदाधर, -भूटः नाई, -प्रतिभाष्क्यम् विनिधाय, सामान की बदलावदली की संघटना, -भरकः बर्तन

की अन्तर्वस्तु, मुख्य बतोंगे के रूप में पूंजी,—शाखा
गोदाम, अर्थात् ।

भाष्यकः—कम् [भाष्य + कम्] छोटा बतंग, फटोरा,—कम्
माल, पथ्यसायमी, बतंग ।

भाष्यारम् [भाष्य + ऋ + अण्] गोदाम, अर्थात् ।

भाष्यारिन् (पुं०) [भाष्यार + इनि] गोदाम या भटार
का रक्षकाला ।

भाषिड (स्त्री०) [भष् + इन् पुषो० साप्] उत्तरे का घर,
पेटो । मम० बहूः नाई,—घासा नाई की दुकान ।

भाषिकः—ल [भाष्य + क्त, भाषि + लप्] नाई ।

भाषिकका [भाषिड + कन् + टाप्] उपकरण, बीजार, यन्त्र ।

भाषिडनी [भाष्य + इनि + ङीप्] पेटो, टोंकरो ।

भाषीरः [भष् + ईरष्, पुषो० साप्] बड का या मूलर
का वृक्ष ।

भात (मू० क० कृ०) [भा + क्त] चमकता हुआ, जग-
मगना हुआ, चमकीला,— लः उप काल, प्रभात,
प्रात काल ।

भाति (स्त्री०) [भा + क्तिन्] 1 प्रकाश, चमक, कान्ति,
आभा 2 प्रत्यक्षमान, ज्ञान या प्रतीति ।

भातु [भा + तुन्] मूयं ।

भाद्र भाद्रपद । भाद्रपदो वा पीर्यमासो अस्मिन् मासे
नासौ (भाद्रपदा) + अण्] भाद्रपद के एक मास का
नाम । अग्रतः और सितवर के मास में आने वाला ।
—वा (स्त्री०—ब० व०) पशुबीजवा और लक्ष्मीमया
मक्षर (पुत्राभाद्रपदा और उत्तरभाद्रपदा) ।

भाद्रपदी, भाद्री [भाद्रपद + ङीप्, भद्रा । अण् + ङीप्]
भाद्रपद नाम की पुत्रिमा ।

भाद्रयानि । भद्रयानुरयन्म्—भद्रयान् + अण्, उकारा-
रन् । मनी माषो माता का पुत्र ।

भानम् [भा भाव् स्यट्] 1 प्रकट हुना, दृश्यमान
2 प्रकाश, कान्ति 3 प्रत्यक्षमान, ज्ञान ।

भान् [भा + न्] 1 प्रकाश, कान्ति, चमक 2 प्रकाश-
करणा—सिंहगताञ्जलदिकप्रान्ताश्चम्बहाशा पान्नु भानव
—भासि० ११२२९, सि० २५३६, मन्० ८११३२ 3 मूयं,
भातु महदुक्ततुरष् एव—बा० ५४, भीमभानी
निदापे—भासि० १३० 4 सोद्वयं 5 टिल 6 राजा,
गङ्गामार, प्रम 7 शिव का विशेषण—स्त्री० सुन्दर
रयो । मम० केस (स) र मूयं,—क धनिपह
—विभम्,—वारः रविवार, इतवार ।

भानुमत् (वि०) [भान् + मत्] 1 अतिमार्ज, चमकीला,
जगमग करता हुआ 2 सुन्दर, मनोरंज ए० मूयं कु०
३१६५, रघु० ६३३६ ऋतु० ५१२, ली दुर्वाधन की
पत्नी का नाम ।

भासिनी [भास् + षिनि + ङीप्] 1 सुन्दर लक्ष्मी,
कामिनी —रघु० ८१२८ 2 कामुकी स्त्री (बहुत प्यार

के कारण ऐसी स्त्री के लिए 'चडो' शब्द भी प्रयुक्त
हुआ है)—उपचोयत एव कापि क्षोभा पतिना भासिनि
ते मूलस्य नित्यम्—भासि० २११ ।

भार [भृ + घञ्] 1 बोझ, बजन, ताल (बाल० से
भी) कुचभारानमिता न योषित —अद० ३१२७, इसी
प्रकार—श्रीगोभार—मेघ० ८२, भार कायो शीविन
वक्षकीलम्—मा० ९१३७, 2 (आक्रमण आदि का)
वक्ता, (युद्ध आदि का) अत्यन्त विचपिच भाग
उत्तर० ५५५ 3 अतिरेक, मार या उडान—रघु०
१४।६८ ४ श्रम, मेहनत, आयाम 5 राशि, बड़ी मात्रा
—कच०, अटा० 6 २००० पल सेने के तीन के
बराबर 7 बोझा देने के लिए जुआ । सप०—आकान्त
(वि०) बोझ से अत्यन्त देवा हुआ, अधिक बोझा
लिए हुए,— उडहू कुली, बोझा डोने वाला, उपजीव-
न्म् बोझा डारकर जीवन-यापन करना, मुन्नी का
जीवन,—यष्टि बोझ उडाने को लकड़ी,—बाहू (वि०)
(स्त्री०—भारीही), बोझा डाने वाला, बाहू, बोझा ले
वाने वाला, कुला,— बाहुनः बोझा डाने वाला जानवर
(नम्) गारो, मालगारो का शिवा, बाहिक, कुला,
सहू (वि०) जो अधिक बोझा उटा सके, (अन)
बहुत मनवून चलवान, हर, हार बोझा डाने
वाला, कुला, हरिन् (पुं०) कृष्ण का विशेषण ।

भारवड [?] एक प्रकार का काव्यनिक पद्य जिसका
वचन केवल कृताभिधो में पाया जाता है ('भारवड'
भी) वच० ५११०२ ।

भारत (वि०) (स्त्री० नी) [भरत + अण्] भरत से
सम्बन्ध रखने वाला या भरत की मन्थान,—ल 1 भरत
की मन्थान 2 भारतवर्ष या हिन्दुस्तान का निवासो
3 अभिनेता, लम् 1 भरत का देश, भारत शि०
१०५५ 2 मन्थन में किता हुआ एक अत्यन्त प्रसिद्ध
महाकाव्य जिसमें अत्यन्त उपास्यमाना के साथ भरतवर्षी
राजाआ का इतिहास पाया जाता है (व्याय वा कृष्ण-
इत्याय इसके रचयिता माने जाते हैं परन्तु यह जिस
विशाल रूप में आज विख्यात है निश्चित रूप से अनेक
रचयियों की रचना है) अर्थात्कालिदासेय विरचित-
वान् भारतवाग्मयूतः, लमहम्मयामकृष्ण कृष्णद्वैप-
यन इदे—वेणी० १४, व्यासगिरा निर्वाय सार
विषयस्य भारत कर्दे, भूपथतयैव सैतां पदां कृता
भारती बहति आर्या० ३१,—लौ वाणी, वाग्म्य, बजन,
वाणी-प्रवाह भान्नीनिर्घोष उत्तर० ३, लमर्धमिन
भारत्या मृतया पोषतुमर्हसि—कु० ६१७९ नवरससचिवा
निर्मितमाधपनी भारती कवेज्यपति—काव्य० १
2 वाणी की देवता, मरुस्वनी 3 क्लेश्य प्रकार की
सेनी भारती सस्कृतप्राची वाग्म्याभारो नटाव्य—
सा० ६० २८५ ४ लजा, बटेर ।

भारद्वाज. [भद्राजस्यापत्यम्-अण्] 1 नीरव पाद्यों की मैत्रिक विद्या के आचार्य गुरु द्रोण 2 अवस्थ्य वा भाभान्तर 3 मन्त्रज्ञ 4. फालक पत्नी, अण् हृष्टी ।

भारवः [भार वति - वा +क] धनुष की डोरी ।
भारवि. [?] किरातावृन्दीय नामक सस्कृतकाव्य के रचयिता, तावद्वा भारवेभिति याकन्यापस्य नोटव, उदिते च पुनमभि भारवेभर्त रवेरिव, भारवेर्यंगौरवम् - उद्भूट ।

भारिः [इभस्य अरि पुरो० साङ्] सिंह ।
भारिक, भारिन् (वि०) [भार +ठक्, इति वा] भारी पु० बोझा देने वाला, कुली ।

भार्गं [भर्गं +अण्] भर्ग देश का राजा ।
भार्गवं [भृगोरपत्यम् अण्] 1 शुक्रचार्य, शुक्रग्रह का शास्त्रा और असुरों का आचार्य 2 परशुराम, दे० परशुराम 3 शिव का विशेषण 4 धनुषं 5 हाथी । मम० प्रिय हीरा ।

भार्गवो [भार्गव + डीप] 1 दूर 2 लक्ष्मी का विशेषण ।
भार्ग्य. [भृ + ध्वन्] सेवक, पराश्रयी (भरण-पोषण क्रिये जाने के योग्य) ।

भार्या [भर्नु योग्या + भार्य + टाप्] 1 धर्मपत्नी—सा भार्या वा गृह दशा सा भार्या वा प्रजावती, सा भार्या वा परित्राणा सा भार्या वा परित्राता हि० १।११६ 2 मादा जालकर । मम०—आठ (वि०) अपनी पत्नी के वैश्यापन से जीवन निर्वाह करने वाला,—ऊढ (वि०) विवाहित (पुरुष)—भार्योऽत्मवत्ताय—भट्टि० ४।१५. —अत्रि पत्नी से प्रभावित पति, जोक का मूलाम ।

भार्याक [भार्या + क्त + उण्] 1 एक प्रकार का मृग 2 उस बालक का पिता जो अन्य पुरुष की पत्नी से उत्पन्न हो ।

भारुम् [भा + लृच्] मस्तक, कलाट यद्वात्रा निजबाल-पट्टलिखित स्नोक भद्रा धनुम्—मनु० २।४९, (स्वर-रप) षणु सद्यो भालानलमक्षितत्राहास्वदमभूत्—भामि० १।८ 2 प्रकार 3 अकार । मम० अण् 3 भाग्य-वान् पुरुष जिसके मस्तक पर भाग्य देखा विराजमान है 2 शिव का विशेषण 3 आरा 4 कछुवा, अण् 1 शिव का विशेषण 2 गणेश का विशेषण, - बर्धनम् सिद्ध, - बर्धिन् (वि०) 'मस्तक या कलाट को देखने वाला' अर्थात् वह नीकर जो अपने स्वामी की इच्छाओं के प्रति सावधान रहता है, कृष् (पु०)—लौक्यः शिव का विशेषण, षट्,—द्वम् मस्तक, कलाट ।

भारु [भृ + उण्, कृडि, रस्य ल] धूर्ण ।
भारुक, भारुक, भारुक, भारुक [भलते हिनन्ति प्राणिन मण् + उक (ऊक) + अण्, मल्लु (म्लु) + क + अण्] रीछ, भालू ।

भाक् [भृ भावे षन्] 1. होना, सत्ता, अस्तित्व नास्तो विद्यते भाव - मम० २।१६ 2. होना, घटित होना, घटना 3 स्थिति, अवस्था, होने की अवस्था—कटा-भावेन परिणतमस्या रूपम् विक्रम० ४; कातराज, विषर्भावा आदि 4 रति, अण 5 दर्जा, स्थिति, पद, हैशियत—देवीभाव ममिता - काव्य० १०, इसी प्रकार प्रेष्यभावम्, किकरभावम् 6 (क) यथायं दशा वा स्थिति, यथायंता, वास्तविकता - मम० १०।८ (अ) निष्कपटता, अथित—स्वयि से भावनिवन्ना रति - रघु० ८।५२, २।२६ 7 सहज गुण, चित्तवृत्ति, प्रकृति, स्वभाव—उत्तर० ६।१४ 8 शुक्रव या मनो-वृत्ति, भावना, विचार, मत्, कल्पना पच० ३।४३, मनु० ८।२५ ४।६५ 9 भावना, सबेग, रस वा मनो-भाव एको भाव पच० ३।६६, कु० ६।१५, (नाट्य विज्ञान या काव्यरचना में भाव बहुधा दो प्रकार के होते हैं प्रथम या स्थायीभाव, तथा गीण या व्यभिचारिभाव । स्थायिभाव गिनती में आठ वा नौ है, तदनुसार अपने २ स्थायिभाव से युक्त रस भी आठ वा नौ है । व्यभिचारिभाव गिनती में तैत्तिरीय या चौतीस है तथा स्थायिभावो का विकास करने एव सर्वयंन करने में सहायक होते हैं, इनके कुछ भेदों की परिभाषा तथा गिनती के लिए—रस० का प्रथम ज्ञानन वा काव्य० का चौथा समास्ता देखो) 10 प्रेम, स्नेह, अनुराग—इन्द्रानि भावं क्रियया विबद्धु कु० ३।३५, रघु० ६।३६ 11 अभिप्राय, प्रयोजन, सारास, आशय, इति भाव (प्राय भाष्यकारों द्वारा प्रयुक्त) 12 अर्थ, आशय, तात्पर्य, व्यञ्जना मा० १।२५ 13 प्रस्ताव, सकल्प 14 हृदय, आत्मा, गन-नयोविवृत-भाक्त्वात्—मा० १।१२, मम० १८।१६ 15 विद्यमान पदार्थ, वस्तु, चीज, तत्पार्थ,—अगति जयिन्ते से भावा नवेन्दुबलादय—मा० १।१७, ३६, रघु० ३।४१, उत्तर० ३।३२ 16 प्राची, जीवपारी वस्तु 17 भाव-मय मनन, चिन्तन (= भावना) 18 आचरण, गति-विधि, हावभाव 19 प्रीति चोतक हावभाव या रस की अभिव्यक्ति, प्रेम सकेत—शं २।१ 20 जन्म, 21. सत्ता, विषय 22 गर्भोद्य 23 इच्छावाञ्छित 24. अतिमानव शक्ति 25 उपदेश, अनुरोध 26. (नाटकों में) विज्ञान और सम्माननीय व्यक्ति, योग्य पुरुष (विशेषणशब्द)—प्राज अयमस्मि विक्रम० १, तो कलु भावेन तयैव सर्वे बर्था पाटिता—मा० १ 27. (व्या० में) भाववाचक संज्ञा का भाषय, भावावयक विचार—प्राये क्त 28 भावनाम्ब 29 (ज्योति- में) जन्मकुञ्जी के स्थान 30. मन्त्र । मम०—अनुव (वि०) स्वाभाविक, (या) साया,—अन्तरस्य चिन्त स्थिति - अर्थः 1. स्पष्ट अर्थ वा ध्वनि (किन्ती शब्द वा

पदोच्चय की) 2 विषय-नामप्री, -आकृतम् मन के (वृत्त) विचार -अनर ४, -आत्मक (वि०) वास्तविक, यथार्थ, -आत्मज्ञः भावना का अनुकरण, बनावटी या मिथ्या ज्ञान, -आलोना छाया, -एकरत्न (वि०) केवल (निष्कपट) प्रेम के रस से प्रभावित -कु० ५।८२, -अमोरीरम् (अव्य०) 1 हृदय से, हृदयतल से 2 गभीरता के साथ, तबीदनी से, -कम्ब (वि०) मन से ज्ञान हुआ-नेष० ८५, -छाहियु (वि०) 1 भावय को समझने वाला 2. मनोभाव की कदर करने वाला, -कः कामदेव, -क-बिद् (वि०) हृदय को जानने वाला, -दक्षिणु (वि०) दे० 'भावादसिन्', -दम्बन (वि०) हृदय को मूढ्य करने वाला या जानने वाला, हृदयों की कड़ी को जोड़ने वाला -रघु० ३।२४, -दोषक (वि०) किसी जी भावना को प्रकट करने वाला, -दिक् योय व्यक्ति, सज्जन पुरुष (नाटको में प्रयुक्त), -द्वय (वि०) वास्तविक, यथार्थ, -दम्बनम् भावात्मक विचार को प्रकट करने वाला, भावना की मोबासफता की बहुत बाला, -बाष्कम् भावबाधक सज्ञा, -सकलम्बम् नाना प्रकार के सर्वेषो और भावो का मिश्रण (भावानां बाष्कबाधकभाव-मादाप्रानामुदासीनता वा व्यभिचरणम्-रस० तदवत उदाहरण दे०), -सुष्य (वि०) यथार्थ प्रेम से रहित, -सन्धि. दो सर्वेषो का मेल वा सह-अस्तित्व- (भाव-सन्धिरन्धोव्यानसिभूतयोऽन्धोव्याभिभावनयोम्ययो सामानाधिकरन्धम्-रस० दे० तद्वगत उदाहरण), -समाहित (वि०) भावमनस्क, भक्त, -सर्ग-मानसिक सृष्टि अर्थात् मानव की मनसकियती की सृष्टि और उनका प्रभाव (वि०) भौतिक सर्ग वा भौतिक सृष्टि), -स्व (वि०) आसक्त, अनुरक्त, कु० ५।५८, -सिन्धर (वि०) मन में दृढ़तापूर्वक जमा हुआ -श० ५।२, -सिन्धर (वि०) लोहसिक्त, सत्यनिष्ठा पूर्वक ज्ञायस्त-पञ० १।२८५ ।

भावक (वि०) [भू + गिच् + क्त] 1 उत्पादक, प्रकाशक 2 कल्पानकारक 3 उर्वरक, कल्पना करने वाला 4 उदात्त और सुन्दर भावनाको के प्रति शक्ति रखने वाला, काव्यपरकशक्ति रखने वाला, -कः 1 भावना मनोभाव 2 मनोभावी (विशेष कर प्रेम के) की बाहर प्रकट करना ।

भावन (वि०) (स्त्री०-श्री०) [भू + गिच् + क्त] उत्पादक-दे० ऊ० भावक, -नः 1 निर्मितकरण 2 सृष्टिकर्ता-भा० १।४ 3 शिव का विशेषण-नभू-भा० 1 पंदा ररता, प्रकट करना 2 किसी के हितो को अनुप्राणित करना 3 सप्रथय, कल्पना, उर्वरता, विचार, वाग्ना -मधुरिपुरद्विमिति भावनशीला-गीत० ६ वा भावनया स्वयि लीला-४, पञ० ३।१६२ 4 भक्ति

भावना, निष्ठा पञ० ५।१०५ 5 मनन, अनुपधान, भावात्मक चिन्तन 6 कल्पना, प्राक्-कल्पना 7 निरीक्षण, पक्षेचना 8 निरचयन, निर्धारण-भाज्ञ० २।१४९ 9. बाध करना, प्रत्यास्मरण 10 प्रत्यक्ष ज्ञान, सज्ञान 11. (तर्क० में) प्रत्यक्ष ज्ञान से उत्पन्न स्मृति का कारण-दे०, तर्क० में 'भावना' और 'स्मृति' 12 प्रमाण प्रदर्शन, दृष्टि 13 सिक्त करना, सराबोर करना, किसी वृत्ते पूर्ण को रस से भिगोना 14 सुभासित करना, कूर्खों और सुदुषित इन्धो से सज्ञाना ।

भावकः [भाव भावेन वा अटति-अट् + अणु, अच् वा] 1 सत्य, आबेध, मनोभाव 2 प्रेम की भावना का वाद्य संकेत 3. पुष्पाद्या या पुष्पशील व्यक्ति 4 रसिक व्यक्ति 5 अग्निनेता 6. सजावट, वेरायवा ।

भाविक (वि०) (स्त्री०-श्री०) 1 प्राकृतिक, वास्तविक, अन्तहित, अन्तर्जात 2 भावुकतापूर्ण, भावुकता या भावना से व्याप्त 3 भावी समय, -कम् 1 उत्कट प्रेम से पूर्ण भावा 2. (आत्म० में) एक मलकार का नाम जिसमें मृत और अविष्यत् का इस विहादता से वर्णन किया गया हो कि वस्तुतः वर्तमान प्रतीत हो । ममता की ही हुई परिभाषा-प्रत्यक्षा इव यद्भावा कियेनो मृतमाशिन, तद्भाविकम्-काव्य० १० ।

भावित (भू० क० क्त०) [भू + गिच् + क्त] 1 पैदा किया गया, उत्पादित 2 प्रकटीकृत, प्रदर्शित, निदर्शित -भावितविषयविशेषः दश० 3 लालन-पालन किया गया, पाला पोसा गया 4 सव्यक्त किया गया, कल्पना किया गया, कल्पित, कल्पना में उपस्थित 5 चिन्तित, मनन किया गया 6 बनाया गया, रूपा-न्तरित किया गया 7 मनन द्वारा पावन किया गया-दे० भावितालम्ब 8 सिद्ध, स्थापित 9 व्याप्त, भरा हुआ, सत्पत्, प्रेरित 10 इदया गया, सराबोर, मनन 11 सुभासित, सुपासित 12 मिश्रित, -तम् गुणनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त गुणनफल । सम०-भावनम्-बुद्धि (वि०) 1. जिसका आत्मा परमात्म-चिन्तन से परिष्व हो गया है, जिसने परमात्मा को प्रत्यक्ष कर लिया है 2. विबुद्ध, भक्त, गुणशील-पञ० ३।६६ 3 चिन्तनशील, मनस्वी रघु० १।७४ 4 वास्त, व्याप्त -सि० १।२३८ ।

भावितकम् [भाक्ति + क्तम्] गुणनप्रक्रिया द्वारा प्राप्त गुणनफल, तत्पविचरण ।

भावितम् [भू + गिच् + क्तम्] तीन लोक- (स्वर्गलोक, मर्त्यलोक और पाताल लोक) ।

भावितु (वि०) [भू + इति, गिच्] 1 होनहार, होने वाला, -मृत्यमाशिव-रघु० १।१४९ 2 होने वाला, प्रविष्य में घटने वाला, आगे जाने वाला- लोकेन भावी पितुरेव तुल्य -रघु० १।८३८, नेष० ४१

3. भविष्य—समशील च भवन्म भावि च—रघु०
८।७८, प्रत्यक्षा इव यद्भावा कियन्ते भूतभाविन-
—काव्य० १०, नै० ३।१११ 4 होने के योग्य 5. अव-
श्यभावी, भवितव्य, प्राकृतियल या पूर्वनिदिष्ट—यव-
भावि न उद्गाधि भाविष्येण तदव्यथा—हि० १
6. उत्कृष्ट, सुन्दर, मध्य,—भी 1 सुन्दर एकी 2 उत्तम
या साम्नी महिला—कु० ५।३८ 3 स्वेच्छाचारिणी
एकी ।

भायुक (वि०) [भू+उकञ्] 1 होने वाला, घटने
वाला 2 हीनहार 3 समृद्ध, प्रसन्न 4 सुन, मंगलमय
5 काव्य में रचित रहने वाला, गुणप्राही,—क १ बहुनोई
(बहुधा नाटको में प्रयुक्त)—कम् 1 प्रसन्नता,
कल्याण, समृद्धि स एतु को बुद्धवन्तो भायुकानां
परधराम्—काव्य० ७ ('अप्रयुक्ताव' नाम काव्य
रचना के दोष का उदाहरण 2 प्रेम और प्रययोन्याद
से पूर्ण भाया ।

भाष्य (वि०) [भू+ष्यत्] 1 होने वाला, घटित होने
वाला, प्राय 'भविष्यन्' की भाँति भावरूप में प्रयुक्त
—कि तैत्तिर्य मम सुविशते—भर्तृ० ३।५ 2 भविष्य
3 अनुष्येय या जो पूरा किया जाय 4 तोषे जाने
या कल्पना किये जाने योग्य 5 सिद्ध या प्रदर्शित
किये जाने योग्य 6 निर्धारण या गवेषणा किये जाने
योग्य,—अम्य 1 प्रारम्भ, अवश्यभावी 2 भवितव्यता ।

भाष्य (स्वा० आ० भाषते, भाषित) 1 कहुना, बोलना,
उच्चारण करना—स्वयंक्रमीष प्रति साधु भाषितम्
—कु० ५।८१, बहुधा द्विकर्मक,—मीता प्रियामेत्य
वचो वभाषे—रघु० ७।६६, आलम्बल काममिद
वभाषे—कु० ३।११, भट्टि० १।१२२ 2 बोलना,
संवाचित करना—किचिद्विहृत्स्वापचित वभाषे—रघु०
२।५६, ३।५१ 3 बोलना, श्लोकना करना, प्रकथन
करना—सितपाकमुष्णं प्रीत्या तमेवार्थमभाषतेव
—रघु० २।५१ 4 बोलना, बातें करना 5 नाम लेना,
पुकारना 6 बर्णन करना,—अनू 1 बोलना, कहुना
2 समाचार देना, घोषणा करना—मनु० १।१२२८,
अप—सिद्धकना, बुरा भला कहुना, बरदान करना,
निन्दा करना, बुराई करना—अहमगुणान न किचि-
दपभाषे—भासि० ५।२७, न केवल यो महतीजभाषते
श्रुणोति तस्मादपि च स पापभाक्—कु० ५।८३,
अभि—, 1 बोलना, भाषण देना—मनु० २।१२८
2. बोलना, कहुना 3 प्रकथन करना, घोषणा करना,
कहुना, समाचार देना 4. बर्णन करना, आ—, 1 बोलना,
भाषण देना,—वैशम्पायनवक्त्राप्रीवभाषाव—का०
१।१७ 2 कहुना, बोलना,—आभाषि रामेण बन्धः कनी-
यान्—भट्टि० ३।५१, अरि—, परिपाटी स्वापित
करना, औपचारिक रूप से बोलना, प्र—, कहुना,

बोलना—स्वितधीः कि प्रमायत—अम० २।५५,
अति—, 1 बदले में कहुना, उत्तर देना—भट्टि०
५।३९ 2 कहुना, बर्णन करना 3 एक के बाव बोलना,
सुनकर बोलना 4. नाम लेना, पुकारना—कामिनि
तामुपगीति प्रतिभाषन्ते महाकवय—धृत् १, वि—,
ऐम्बिक नियम के रूप में निर्धारित करना, अम्य—,
मिलकर बोलना, बातचीत करना—मनु० ८।५५ ।

भाषणम् [भाष्+ण्यट्] 1. बोलना, बातें करना, कहुना
2 वक्तृता, शब्द, बात 3 कृपापूर्ण शब्द ।

भाषा [भाष्+अङ+टाप्] 1 वक्तृता, बात—यथा
'वाचभाष' में 2 बोली, अजान—मनु० ८।१६५
3. सामान्य या देहाती बोली (क) बोली जाने वाली
संस्कृत भाषा (विप० छद्म वा वेद)—विभाषा भाषा-
याम्—पा० ६।१।१८१ (स) कोई प्राकृत बोली
(विप० संस्कृत) मनु० ८।३३२ 4 परिभाषा, बर्णन
—नियतप्रशस्य का भाषा—अम० २।५५ 5 सरस्वती का
विशेषण, भाषा की देवी 6 (विधि में) अभियोग
की बार अवस्थाओं में से पहली, शिकायत, आरोप,
दोषारोपण । सम०—अन्तरण्य 1 अन्य भाषी या बोली
2 अनुवाद,—वाङ् अरोप, शिकायत—दे० 'भाषा'
6 ऊपर,—सप्तः एक अक्षर का नाम जिसमें
शब्दकम का न्यास इस प्रकार किया जाता है कि
बाहे आप उसे संस्कृत समझें और बाहे प्राकृत (कोई
न कोई भेद)—उदा०—यञ्जुलमयिणमजीरे कलपयति
विहारसस्वतीरे, विरसाति कैलिकीरे किमासि धीरे
व गन्धसासमीरे—सा० द० ६५२, (एच एचोकर
संस्कृतप्राकृतशौरसेनीप्राच्यव्याख्यानरायप्रशोष्येकविष
एव), कि त्वा भषामि विष्णोदेवाणामासकारिणि,
काम कुच बराहोहे देहि मे परिदमणम्—मा० ६।११,
(यह संस्कृत या शौरसेनी में है) इसी प्रकार ६।१० ।

भाषिका [भाष्+कृ+टाप्, ह्यन्, इत्यम्] वक्तृता,
भाषा, बोली ।

भाषित (भू० क० कृ०) [भाष्+ण्] बोला हुआ, कहा
हुआ, उच्चारण किया हुआ,—सम् भाषन, उच्चा-
रण, शब्द, बोली—मनु० ८।२६ । सम०—भुष्क
=उक्तपुष्क ।

भाष्यम् [भाष्+ष्यट्] 1 बोलना, बातें करना 2. सामान्य
या देहाती भाषा की कोई रचना 3 व्याख्या, वृत्ति,
टीका जैसा कि 'वेदभाष्य' में 4 विशेषकर सुत्रों की
वृत्ति जिसमें शब्दश ब्याख्या और टिप्पण होते हैं
(सुत्रार्थी बर्णयते यत्र पदं सुत्रानुसारिणि, स्वपदानि
च बर्णयन्ते भाष्य भाष्यविधौ विदुः)—तस्मिन्त्याव्यक्तोऽ
स्यैव भाष्यस्यास्यंपरीयस, सुविस्तरात्वात्वावो भाष्य-
भूता भवन्तु मे—वि० २।२५ 5. पाणिनि के सुत्रों पर
पतञ्जलि का महाभाष्य । सम०—अट—आट—कृष्

(पं०) 1. भाष्यकार, टीकाकार 2 पत्रबलि ।
भास् (म्भा०) भा० भासते, भासित 1 चमकना, जग-
 याना, जगमग करना—डावत्कामयुगातपत्रमुषम
 विन्व बभासे विधे—भासि० २।७४, ४।१८, कु०
 १।११, अट्ट० १०।६१ 2 स्पष्ट होना, विचार होना,
 मन में होना—त्वयङ्कामायेवे दृष्टे कस्य चित्ते न भासते,
 मालतीसामुल्लेखाकदलीना कठोरता—चन्द्रा० ५।४२
 3 प्रकट होना—वेर० (भासयति—ते) 1. चमकाना,
 देदीप्यमान करना, प्रकाशित करना अधिषसस्तनु-
 म्भरवीक्षितामसभभासमभासयदीश्वर—रघु० १।२१,
 मय० १५।६ 2 जाहिर करना, स्पष्ट करना, प्रकट
 करना—अट्टि० १५।४२, अश्व—, 1 चमकना, कि०
 १।४६, 2 प्रकट होना, प्रकाशित होना, स्पष्ट होना
 —आहोस्विन्मूषमवभासने युक्त्या—सि० ८।२९,
 भा—, प्रकट होना, के समान चमकना, की तरह
 दिखलाई देना—स्वानात्तर स्वगं इवावभासे—कु०
 ७।३, रघु० ७।४२, १।१२२, उब्—, चमकना, के
 समान दिखाई देना,—चिन्त्—, चमकना—कि० ७।३९,
 प्रति—, 1 चमकना 2 दिखलाई देना 3 स्पष्ट होना,
 प्रकट होना, वि—, चमकना ।

भास् (स्त्री०) [भास् + विभर्त्] 1 प्रकाश, कान्ति, चमक
 —यथा मिश्रेन्दोषरत्नाधामसा—ने० २२।४३, रघु०
 ५।०१, कु० ७।३ 2 प्रकाश की किरण—कि०
 १।४८, ४६, ९।४, रत्न० १।२४, १।१६ 3 प्रतिबिम्ब,
 प्रतिमा 4 महिमा, कीर्ति, विभूति 5 लालसा, इच्छा ।
 सम०—कार 1 सूर्य—सि० ११।६९ रघु० ११।७,
 १२।२५ कु० ६।४२ 2 नायक 3 अग्नि 4 शिव
 का विशेषण 5 एक प्रसिद्ध उद्योगियों जो ११ वीं
 शताब्दी में हुए हैं, (रघु) सोना, 'प्रिय माल, 'सप्तमी
 माघशुक्ला मण्डी,—हरि. शनिप्रह ।

भास [भास् भावे घञ्] 1 चमक, प्रकाश, कान्ति
 2 उत्प्रेक्षा 3 सुग्री 4 शिष्ट, 5 गोष्ठ, गीशाला
 6 एक कवि का नाम—भासी हाम. कविकुल्लगृह
 कालिदासी विद्यास प्रसन्न० १।२२, मालवि० १ ।

भासक (वि०) (स्त्री०—सिका) [भास् + क्तृ] 1 प्रकाश
 करने वाला, चमकाने वाला, रोशनी करने वाला
 2 दिव्यवाने वाला, विचार करने वाला 3 बोधगम्य
 बनाने वाला,—कः एक कवि का नाम ।

भासकम् [भास् + क्तृ] 1 चमकना, जगमगाना 2 उद्योति-
 धेय, छतिमान् ।

भासन्त (वि०) (स्त्री०—न्ती) [भास् + श्च्, अन्त्यादेश]
 1 चमकदार 2 सुन्दर, भवोद्भर,—कः 1 सूर्य 2 चन्द्रमा
 3 नक्षत्र, तारा, सौ नक्षत्र ।

भासु [भास् + श्च्] सूर्य ।

भासुर (वि०) [भास् + घृत्] 1 चमकीला, चमकदार

भय्य कि० ५।५, रघु० ५।२० 2 भयानक,—रः
 1 नायक 2 स्फटिक ।

भास्यन् (वि०) (स्त्री०—न्ती) [भस्मन् + अण्, मन्त्रत्वात्
 न टिलोप] राक्ष से बना हुआ, राक्ष वाला—सि०
 ४।६५ ।

भास्यन्तु (वि०) [भास् + मनुत्, मस्य व] चमकीला,
 चमकदार दृष्टिमान, देदीप्यमान्—कु० १।२, ६।६०,
 पृ० 1 सूर्य—भास्वानुवेष्पति हसिष्यति पङ्कजाणि
 -नुमा०, रघु० १६।४४ 2 प्रकाश, कान्ति, जामा
 3 नायक,—सौ सूर्य की नगरी ।

भास्यन्त (वि०) [भास् + वरत्] चमकीला, प्रकाशमान,
 चमकदार, उज्वल—र 1 सूर्य 2 दिन ।

भिस् (म्भा०) भा० भिक्षते, भिक्षित 1 पूछना, प्रार्थना
 करना, मागना (द्विकर्मक)—भिक्षमागो वन त्रिया
 —अट्टि० ६।९ 2 याचना करना (भिक्षा की) -व
 यजार्थं शूद्रादिभो भिक्षेत कश्चित्—मनु० ११।२४, २५
 3 बिना प्राप्त हुए पूछना 4 क्लान्त वा दुखी होना ।

भिक्षणम्, [भिष् + श्च्, ट्] मागना, भिक्षा मागना,
 भिक्षावृत्ति, भिखारीपण ।

भिक्षा [भिष् + श् + टाप्] 1 मागना, याचना करना,
 प्रार्थना करना—मनु० ६।५६ 2 दान के रूप में जो
 चीज दी जाय भीष्,—भरति भिक्षा देहि 3 भवदूरी,
 भूमा 4 सेवा । सम० अदन्तं भीष् भावते ह्यु
 पूचना (क) भिखारी, सायु—अन्नम् मांग कर प्राप्त
 किया गया अन्न, भीष्,—अन्नम् (घञ्)—भिक्षाटन,
 —अभिष् (वि०) भीष् मांगने वाला (पु०) भिखारी,
 —अह् (वि०) भिक्षा के योग्य, दान के लिए उपयुक्त
 पदार्थ,—आभिष् (वि०) 1 भिक्षा पर निबन्ध करने
 वाला 2 नै ईमान, -उपभोविष् (वि०) भिक्षा पर
 जाने वाला, भिखारी,—करणम् भिक्षा लेना, भीष्
 मांगना,—हरणम्—अन्नम्, चर्या भीष् मांगने हुए घुमना,
 - वाचम् भिक्षा ग्रहण करने का बर्तन, भीष् के लिए
 कटोरा—इसी प्रकार भिक्षाभाण्डम्, भिक्षाभाजनम्,
 —भाषकः भिखारी बन्धा (तिरस्कार—सूचक शब्द),
 —वृत्ति (स्त्री०) भीष् मांग कर जीना, साधु या
 भिक्षुक का जीवन ।

भिक्षाकः (स्त्री०—की) [भिष् + क्तृ] भिखारी, तापु,
 भिक्षुक ।

भिक्षित (भू० क० क्) [भिष् + क्त] याचना की गई,
 माँगा गया ।

भिष्: [भिष् + उन्] 1 भिखारी, साधु भिक्षा च
 भिक्षते दद्यात्—मनु० १।९४ 2 साधु, धीमे आश्रम
 में पहुँचा हुआ ब्राह्मण (जब कि वह कुटुम्ब, घर
 डार छोड़ कर केवल भिक्षा पर निर्वाह करता है),
 सन्यासी 3 ब्राह्मण का चौथा आश्रम, सन्यास

4. बौद्ध भिक्षुक। सम०—धर्मा शिक्षा मोक्षना, साधु का जीवन,—सङ्घः बौद्ध भिक्षुओं का समाज—सङ्घाती कटे पुराने कपड़े, चीवर।

भिक्षुकः [भिञ् + उक्] भिक्षारी, साधु—मनु० ११५१ ।
भिक्षुम् [भिञ् + क्त] 1. भाग, अथ 2 लण्ड, टुकड़ा 3 दीवार, विभाजक दीवार ।

भित्तिः [भिञ् + क्त] 1 तोड़ना, लण्ड-लण्ड करना, बाँटना 2 दीवार, विभाजक दीवार, समया सीप-भित्तिम्—दश०, शि० ४१६७ 3 (अत) कोई स्थान, जगह या भूमि जिस पर कुछ किया जा सके, आधार, आश्रय—चित्र-कर्म रचनाभित्ति चिना वतंते—मूद्रा० २।४ 4 लण्ड, लव, टुकड़ा, अथ 5 कोई भी टूटी हुई वस्तु 6 दरार, तरेङ्क 7 बटाई 8 कमी, लोटे 9 अवसर। सम०—आगतः चूहा,—घोरः सैप लगा कर घर में घुसने वाला घोर,—पतनः 1. एक प्रकार का चूहा 2 चूहा।

भित्तिका [भिञ् + क्त + टाप्] 1 दीवार, विभाजक दीवार 2 घर की छोटी छिपकली ।

भिद् + (भा० पर० भिन्दति) बाँटना, टुकड़े २ करके बाँटने वाला । १) (भा० उ०) भिनत्ति, भित्ते, भिन्न तोड़ना, फाड़ना, टुकड़े २ करना, काटकर अलग २ करना, फट जाना, छिद्र करना, बीच में से तोड़ना—अतिशीतलम्प्यम्भ कि भिनत्ति न भूभूत—शि० ३।४५ तथा कथं नु हृदय न भिनत्ति लज्जा—मूद्रा० ३।२४, शि० ८।२१, मनु० ३।३३ रघु० ८।५५, १२।७७ 2 खोदना, उखोदना, खुदाई करना—उत्तर० १।२३ 3 बीच में से निकल जाना—पंच० १।२११, २।२२ 4 बाँटना, पृथक्-पृथक् करना द्विधा भिन्ना विश्लिष्टिभि—रघु० १।३९, अग्रसन्न करना—रघु० १।३३ 5 उल्लूखन करना, अतिक्रमण करना, तोड़ना, मग करना—समय लक्ष्यभोऽभिनत्—रघु० १।५९४, निहतश्च स्थिति भिन्दन् दासकोऽनौ बलद्विधा—भट्टि० ७।६८ 6 हटाना, दूर करना—शि० १।५८७ 7 विघ्न डालना, स्कावट डालना जैसा कि 'समापिभेदिन्' में 8 बदलना, परिवर्तन करना, (न) भिदति मनसा गतिपथस्वयुक्त्य—कु० १।११ या विश्वासोपमभादभिन्नगतय शब्द सहन्ते मृगा—शं० १।१४ 9. खिलाना, फूलाना, फैलाना—सूमीधुर्मिभ्रमिभारिभन्दम्—कु० १।१२, नवीचसा भिन्नाभिकेकपञ्चम्—शं० ७।१६, मेघ० १०७, 10 वितरितकरना, बँसोरना, उडा देना—भिन्नसारज्जुमुष—शं० १।३३, विष्णु० १।१६ 11 जोड़ खोलना, विपुलत करना, पृथक् २ करना मूद्रा० ३।१३ 12 ठीका करना, विधायन करना, धोलना—पर्यङ्कन्य निविष्ट विमेष्ट कु० ३।५९ 13. भेद

खोलना, मग्नाफोड़ करना 14 मटकाना, उपाट करना 15 भेद करना, विविधत करना। कर्मवाच्य—भिद्यते, 1. टुकड़े २ होना, फटना, धरधराना—मूच्छ० ५।२२ 2. बाटा जाना, विपुलत किया जाना 3 फैलाना, खिलाना, खिलाना 4 खिपल या विधात किने जाना—प्रस्थानभिन्ना न ब्रह्मन् नीबीम्—रघु० ७।९, ६६ 5 पृथक् होना (जपा० के साथ) रघु० ५।३७, उत्तर० ४ 6 नष्ट किया जाना 7 भडाफोड़ किया जाना, घोसा दिया जाना, दूर चले जाना—वद्वर्षो भिद्यते मन्त्र—पंच १।९९ 8 तग, पीड़ित, या व्यथित किये जाना—प्रेर० भेदयति ते 1 लण्ड २ करना, फाड़ना, बाँटना फाड़ना आदि 2 नष्ट करना, विधित करना 3. जोड़ खोलना, पृथक् २ करना 4 भटकना 5 सतीत्व या सत्यप से विगाना। इच्छा० (विभित्तिति—ते) तोड़ने की अभिलाष करना, भवु—, बाटना, तोड़ डालना, उक्—, फूटना, जयना (पीषा) पैदा होना—कु० १।२४—रघु० ५।३२१, भिष्—, 1 फाड़ना, फटकर अलग २ होना, टूटना भट्टि० १।६७ 2 खोलना, घोसा देना—उत्तर ३।१, प्र—, 1 तोड़ना, फाड़ना, फाड़कर पृथक् २ करना 2 चूना, (हाथी के गण्डस्थल से) कु० ५।५०, प्रति—, पाठ लगाना, भेदना, घुसाना 2 भेद खोलना, घोसा देना 3 सिद्धकना, वालो देना, निर्या करना—प्रतिभिद्ध कान्तमपरायकृतम्—शि० १।५८, रघु० १।१२२ 4 अस्वीकार करना, मुकरना, 5 चूना, सम्पर्क करना—शं० ७।३५, वि—, 1 तोड़ना फाड़ना 2 छेद करना, घुसाना 3 बाटना, अलग २ करना 4 हस्तक्षेप करना 5 बँसोरना, वितरितकरना, लम्—, 1 तोड़ना, फाड़ कर टुकड़े २ करना, टुकड़े २ होना 2 मिल जाना, संगठित होना, सम्बद्ध होना, मिश्रित होना, मिलाना, एक जगह रखना—अस्योभ्यसधिप्रदुषा सबीनाम् मा० १।३३, भट्टि० ७।५ ।

भिद्यकः [भिञ् + क्त] तलवार,—कर्म 1 होरा, 2 इन्द्र का वज्र ।

भिधा [भिञ् + जङ् + टाप्] 1. तोड़ना, फटना, फाड़ना/चोरना—शि० ६।५ 2 वियोग 3 अन्तर 4. प्रकार, जाति, किसम ।

भिदि, भिदिरम्, भिदुः [भिञ् + इ, किरप् कु वा] इन्द्र का वज्र ।

भिदुर (वि०) [भिञ् + कुरप्] 1 तोड़ने वाला, फाड़ने वाला, टुकड़े टुकड़े करने वाला 2 भुरभुरा, बीघ्र टूटने वाला 3. सम्मिश्रित, चितकचरा, मिला हुआ, तदिलष्ट—नीलाशमद्युतिभिदुराभ्योऽग्रर—शि० ५।२६, १।५८,—शं० प्लस वृषा,—रज् वज्र ।

भिद्यः [भिञ् + क्यप्] 1 वेग से बहने वाला दरिया 2. एक

विशेष नर का नाम—दीपशायम इषोद्वयविश्वयोर्ना-
मशेषस्युष विशेष्टितम्—रघु० ११८ (दे० मल्लि०) ।

भिन्नम् [भिन् + रन्] बन् ।

भिन्न (वि) बालः [भिन् + इन् = भिन्निं पालयति—पाश्
+ अन्] 1 हाथ से सँका जाने वाला छोटा बाला
2 गोफिया, (गोफिया या मुलेल जैसा एक उपकरण
जिसमें रखकर पत्थर फेंके जायें) ।

भिन्न (भू० क० कृ०) [भिन् + क्त, तस्य न.] 1 टूटा
हुआ, फटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ, फाटा हुआ
2 बिभक्त, बिपुक्त 3. पृथक्कृत, विच्छिन्न, अलगाया
हुआ 4. फँसाया हुआ, फुलाया हुआ, फुला हुआ
5 अलग, हटार (अपा० के साथ)—तत्माशय भिन्न
6 नानाक्य विविध, 7 डोला किया हुआ 8 सकलित,
मिलाया हुआ, मिश्रित 9 विचलित 10 परिचलित
11 प्रचण्ड, मरुभंगत 12 गहिल, हीन, क्षिति,
(दे० भिन्),—क भिन्सी रत्न मे दोष या खोट,—अन्
1 लक्ष, क्षत्र, टुकड़ा 2 मजरी 3 पाव, (सुरे जादि
भोक्ते का) आघात 4 भिन्न राशि । सम०—अञ्जनम्
बहुत सी औषधियों को पीसकर तैयार किया गया
सुरा—प्रयान्ति मिश्राञ्जनवर्गता घना—शि०
१११६ मेघ० ५९, ऋतु० ३५, राश्व० स्पष्ट,
विषय, सुबोध,—उदर इतरी माला से उत्पन्न
सौतेला भाई,—कण्ट मरुभंगत हाथी (जिसके
मस्तक से मद रिलता है),—कूट (वि०)
नेतृहीन (सेना आदि),—कम् (वि०) कमहीन,
कमरहित,—वति (वि०) 1 पग छोड़ कर चलने
वाला, 2 तेज बाल चलने वाला,—पर्म (वि०)
(केन्द्र में) टूटा हुआ, अव्यवस्थित,—गुणम् भिन्न
राशियों की गुणा, —घन भिन्नराशि का चिह्न,
—वशिन् (वि०) अन्तर देखने वाला, आशिक,
—प्रकार (वि०) अलग प्रकार या किस्म का,
—भाक्कम् टूटा बर्तन, डीकरा,—भम् (वि०)
मर्मस्थल में घाव क्षाया हुआ, प्राणघातक खोट से
आहत, भयार्थ (वि०) जिसने उचित सीमाओं का
उल्लंघन कर दिया है, निरादरपुक्त,—आ, तातापवा-
दिभिन्नमर्षदि—उत्तर० ५ 2 असयत, अनियमित,
—चि (वि०) अलग शक्ति रखने वाला,—भिन्नरु-
चिह्नि लोक—रघु० ६१३०,—लिङ्गम्—बन्धम् रचना
में विंग और बचन की असंगति—दे० काव्य० १०,
—बर्षत्,—बर्षत्क (वि०) मल्लोत्सर्ग करने वाला,
—वृत्त (वि०) बुरा जीवन बिताने वाला, परित्यक्त,
—वृत्ति (वि०) 1 बुरा जीवन बिताने वाला,
कुमार्य का अनुसरण करने वाला 2 अलग प्रकार की
भावनार्थ, दृष्टि या सबेग रखने वाला 3 नाना प्रकार
के व्यवसाय करने वाला,—संहति (वि०) न बुरा

हुआ, विचरित,—स्वर (वि०) 1 बदली हुई आवाज
वाला, हकलाने वाला 2 बसुरा,—दूषण (वि०)
जिसका हृदय दूष दिया गया हो—रघु० ११११ ।

भिरिदिका (स्त्री) एक प्रकार का पोषा, श्वेतगुजा, सफेद
पुष्पी ।
भिल्लः [भिल् + लक्] एक जंगली जाति । सम०— गभी
नील गाय, सध. लोभ्रपुष्, —भूचनम् पुष्पी का
पोषा ।

भिल्लोटः,—टकः [भिल्लप्रियम् उट पत्र यस्य ब० सं०,
भिल्लोट + कन्] लोभ्रपुष् ।

भिषम् (पु०) [बिभेत्यस्मान् रोग भी + पुक्, हृत्पथक]
1 बंध, चिकित्सक—भिषवामसाध्यम्—रघु० ८१९३
2 बिष्णु का नाम । सम०—जितम् औषधि या दवा,
—पाश. कठबंध,—बरः श्रेष्ठ बंध ।

भिष्मा, भिष्मिका, भिल्लटा, भिल्लिता (स्त्री०) भूना
हुआ या तला हुआ अनाज ।

भिल्लार (स्त्री०) [भल् + स, टाप्, एत्वम्] उबाले हुए
चावल ।

भी (ब्रुहो० पर० विभेति, भीत) 1 डरना, भय जाना,
भयभीत होना—भूयोविभेति किं बाल, न स भीत विभु-
चति 1 रावणात्विभ्वतो भूनाम्—भट्टि० ८१७०, शि०
३५५ 2 आतुर या उत्कण्ठित होना (भा०) प्रेर०
(भाषयति) डराना,—कुषिकर्मन भाषयति सिद्धा०
(भाषयते, भीषयते) डराना, घास देना, सजस्त कला
—मृगो भाषयते—सिद्धा०, सतिनेत भीषयित्वा धारा-
हस्तेः परामुचति—मृच्छ० ५१२० ।

भी (स्त्री०) [भी + विष्प्] भय, डर, आतक, सहास,
घास, अभीः 'तिर्भव'—रघु० १५१८, वपुष्माम् भीतभी-
र्षीन्भी वृत्तो राज्ञः प्रशस्यते—मनु० ७१६४ ।

भीत (भू० क० कृ०) [भी + क्त] सजस्त, डरया हुआ,
आतंकित, घ्नम् (अपा० के साथ)—न भीतो मरणा-
दस्मि—मृच्छ० १०१३ 2 कतरे में डाला हुआ,
आपदग्रस्त । सम० भीत (वि०) अत्यन्त डर
हुआ ।

भीतद्वार (वि०) [भीत + द्व + अन्] डराने वाला ।

भीतद्वारम् (अभ्य०) [भीत + द्व + षन्] किसी को
कायर के नाम से पुकारना ।

भीति (स्त्री०) [भी + क्तिन्] 1 डर, आशंका, भय,
घास 2 कपकपी, धरपराहट । सम०—नादितकम्
भयभीत होने का नाट्य करना या हाहभाव दिख-
लाना ।

भीष (वि०) [बिभेत्यस्मान्, भी अघाहाने मक्] भया-
नक, घास देने वाला, भयावह, डरावना, भीषण—न
भेदिरे भीषविषेण भीतिम्—भट्टि० २१८०, रघु०
१११६, ३५४,—कः 1 शिव का विशेषण 2 द्वितीय

पाण्डव राजकुमार (यह पवन देव द्वारा मुन्दी से उत्पन्न हुआ था, बचपन से ही यह अपनी असाधारण शक्ति का प्रदर्शन करने लगा, अतः इसका नाम भीम पड़ा। बहुभोजी होने के कारण इसे बृकोदर 'भेड़िये के पेट वाला' भी कहते थे। इसका अचूक मस्त्र इसकी गदा थी। महाभारत के युद्ध में इसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया और युद्ध के अन्तिम दिन अपनी अमोघ गदा से दुर्योधन की जवा की बीर दिया। इसके जीवन की कुछ पहली मूक्य घटनाएँ हैं— हिडिम्ब और एक राक्षस को पछाड़ना, जरासभ को परास्त करना, कौरवों के विशेष कर दुःशासन के (जिनमें द्रौपदी के प्रति अपमानजनक आचरण किया) विरुद्ध भीषण प्रतिज्ञा, दुःशासन के मृत को पीकर प्रतिज्ञा की पूर्ति, जयद्रथ को पराजित करना, राजा बिराट के यहाँ रसोदये के रूप में कीचक के साथ मल्लयुद्ध, तथा कुछ और कारनामों जिनमें उसने अपनी असाधारण शीरता दिखाई। इसका नाम अपनी असीम शक्ति व साहस के कारण लोक प्रसिद्ध हो गया। सम०—उबरी उमा का विशेषण, -कर्मन् (वि०) भयकर पराक्रम वाला भय० ११५, दशान डरावनी शक्त का, विकराल, -माड (वि०) डरावना शब्द करने वाला, (कः) 1 भयानक वा उँची आवाज शि० १५११०, 2 सिंह 3 उन सात बादलों में से एक जो सृष्टि के प्रलय के समय प्रकट होते, पराक्रम (वि०) भयानक पराक्रम वाला, -रथी मनुष्य के सततारों बंध में सातवें महीने की सातवीं रात (यह अत्यंत संकट का काल कहा जाता है) (सप्तसप्तनिमेषे वर्षे सप्तमे मासि सप्तमी, रात्रिर्भीमरथी नाम नराधामतिदुस्तरा।), रूप (वि०) भयानक रूप का - विक्रम (वि०) भयानक विक्रमशील, -विक्रान्तः सिंह, -विषहू (वि०) विशालकाय, डरावनी मूरत का, -शालकः यम का विशेषण, सेन 3 द्वितीय पाण्डवराजकुमार 2 एक प्रकार का कपूर।

भीमरत्न (नपु०) युद्ध, लड़ाई।

भीमा [भीम + टाप्] 1 दुर्ग का विशेषण 2 एक प्रकार का गंधद्रव्य, टोचना 3 हुटर।

भीष्म (वि०) (स्त्री० क, क्) [भी + भृ + क्त] 1 डरपोक, कायर, भयपुस्त, -साथ्या भीष्म—हि० २१२६ 2 डरा हुआ (बहुधा समास में) पाप, अधर्म, प्रतिज्ञायमय' आदि, -क 1 गीदह 2 व्याघ्र, -क (नपु०) चाँदी, स्त्री० 1 डरपोक स्त्री 2 डरती 3 छाया 4 काल-सूत्रा। सम०—वेतसू (पुं०) हरियर, -रथः चूल्हा, मही, -सम्भ (वि०) कायर, डरा हुआ, -हृषकः हरियर।

भीष्म (सु) क (वि०) [भी + भृ + क्त, क्लृप्त वा]

1 डरपोक, कायर, बुझारिल, साहसहीन 2 सकौची, —कः 1 रीठ 2 उल्लू 3 एक प्रकार का गन्ना, -कम् कणक, बन।

भीष्क (सु) (स्त्री०) [भीष् + क्त, पक्षे रत्नोत्प्रेद] डरपोक स्त्री, ---व खल्ला भीष्क यतीजननीता—रघु० १३१२४।

भीष्क (सु) क [भी + क्लृकृत्] रीठ, भाष्क।

भीष्क्य (वि०) [भी + भिष् + ल्यट्, वृकागम] जाल-जनक, विकराल, डरावना, घोर, दास्य - विष्मयि-डातेक्षणभीष्क्याम्,—शि० ३१४५, -कः (साहित्य में) 1 भयानक रत्न—दे० भयानक 2 शिव का नाम 3 कबूतर, कपोल, -कम् भय को उत्तेजित करने वाली कोई भी वस्तु।

भीष्का [भी + भिष् + ञट् + टाप्, वृकागम] 1 शस देने या डराने की क्रिया, धमकाना 2 डराना, त्त देना।

भीषित (वि०) [भी + भिष् + क्त, वृकागम] डराया हुआ, सशक्त।

भीष्म्य (वि०) [भी + भिष् + मक् वृकागम] भयानक, डरावना, भीषण, कपाल, ---म्यः (साहित्य में) 1 भयानक रत्न, दे० भयानक 2 राजस, विशाच, दानव, भूल-वैत 3 शिव का विशेषण 4 शन्तनु का गदा से उत्पन्न पुत्र (शतनु से गया में आठ पुत्र हुए, आठवां पुत्र यही था, पहले सात पुत्रों के मर जाने के कारण यह आठवां पुत्र ही अपने पिता की राज्यगद्दी का उत्तराधिकारी था। एक बार राजा शतनु नदी के किनारे घूम रहे थे तो उनकी वृद्धि सत्यवती नामक एक सावन्ध्यामयी तरुणी कन्या पर पड़ी, वह एक मछुने की नेटी थी। यद्यपि राजा डलती उभर का था फिर भी उसके मन में उसके लिए उल्लूक उल्लाह आयाति हुई, क्लृप्त उसने इस अपने पुत्र की दासवीत करने के लिए जेबा। लड़की के माता पिता ने कहा कि यदि शन्तनु द्वारा हमारी पुत्री के कोई पुत्र हुआ तो, राज्यगद्दी का उत्तराधिकारी शतनु का पुत्र विद्यमान होने के कारण, उसे राज्यगद्दी न मिल सकेगी। परन्तु शतनु के पुत्र ने अपने पिता को प्रसन्न करने के लिए उनके सामने भीषण प्रतिज्ञा की कि मैं कभी राज्यगद्दी पर नहीं बैठूँगा, और न कभी बिवाह करूँगा जिसके कि किसी सख्य की किसी पुत्र का पिता न बन सकूँ अतः यदि आपकी पुत्री से मेरे पिता का कोई पुत्र होगा तो निश्चित रूप से वही राज्यगद्दी का अधिकारी होगा। यह भीषण प्रतिज्ञा शीघ्र ही लोगों में विदित हो गई और तब से केवल उसका नाम भीष्म पड़ गया। वह जातीयन अवि-बाहित रहा, और अपने पिता की मृत्यु के बाद उसने

सत्यवती के पुत्र विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठाया तथा काशिराज को दो कन्याओं के साथ उसका विवाह कराया, एव अपने पुत्र तथा पौत्रों (कौरव पांडवों) का अधिभारक बना रहा । महाभारत के युद्ध में वह कौरवों की ओर से मर्या, परंतु सिखड़ी की सहायता से अर्जुन ने युद्ध में भीष्म की घायल कर दिया, तब उसे 'शरराम्या' पर रक्षता मया । परन्तु अपने पिता से इच्छामृत्यु का बरदान पाने के कारण वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक कि उत्तरायण में न प्रविष्ट हो, जब सूर्य ने वनगत विभूष को पार किया तब वही उसने अपने प्राण त्याग्ये । वह अपने समय, बुद्धिमत्ता, मकल्प की दृढ़ता तथा ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति के कारण अत्यंत प्रसिद्ध हो गया । सम०—जन्मो गंगा का विशेषण, —पञ्चकर्म कातिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक के पीछे दिन (यह पाँच दिन भीष्म के लिए पावन माने जाते हैं) । —कू० (स्त्री०) गंगा नदी का विशेषण ।

भीष्मक [भीष्म+कन्] 1 जलनु का गया से उत्पन्न पुत्र 2 विदर्भ के राजा का नाम, जिसकी पुत्री रत्नियों को कृष्ण उठा लाया था ।

भुक्त (भू० क० क्) [भूज्+क्त] 1 खाया हुआ 2 उपभोग, प्रयत्न 3 भोग, अनुभव किया 4 अधिकृत किया, (विधि में) अधिकार में लिया—दे० भूज्, —कम् 1 उपभोग करने या खाने की क्रिया 2 जो खाया जाय, आहार 3 वह स्थान जहाँ किसी ने खाया है । सम०—उच्छिद्यम्, —सकः, —समुत्सितम् किंचे ह्युप भोजन का अवशिष्ट, जूटन, उच्छिष्ट भक्ष, —भोग (वि०) 1 जिसने कुछ भोगा है, या आनन्द उठाया है, उपभोक्ता 2 जो प्रयत्न किया गया है, उपभुक्त, निपुक्त,—सुप्त (वि०) भोजन करके सोया हुआ ।

भुक्ति (स्त्री०) [भूज्+क्तिन्] 1 खाना, उपभोग करना 2 (विधि में) अधिकृत सामग्री, सुभोगभोग—पञ० ३१५, वा० २१२ 3 खाना 4 ब्रह्म की दैनिक गति । सम०—अरः एक प्रकार का पीसा, मृग, —वर्जित (वि०) जिसके उपभोग करने की अनुमति नहीं है ।

भुज् (भू० क० क्) [भूज्+क्त, तस्य न] 1 भुंका हुआ, चिनन, प्रयत्न—बाहुभुज, रजाभुज आदि 2 देना, पक, —भट्टि० ११८, विक्रम० ५३२ 3 टूटा हुआ (भग्न का अर्थ) ।

भुज् 1 (तुदा० पर०) भुजति, भुज्ये 1 भुंक्राना 2 मोचना, टूटना करना । ॥ (स्था० उभ०) भुजति, भुज्यते 1 खाना, निगलना, खा पी जाना (आ०)—क्षयनस्वी न भुजति—मनु० ५७७, ३१४६, भट्टि० १४१२,

भय० २१५, 2 उपभोग करना, प्रयोग करना, (सम्पति, भूमि आदि को) अधिकार में करना—विक्रम० ३११, मनु० ८१४६, याज्ञ० २१२ 3 शारीरिक उपभोग करना (आ०)—सद्य भुज्यते महाभुज्—रघु० ८७, ४७, १५१, १८४, सुकृष्ण वा सुकृष्ण वा पुमान्-स्येव भुज्यते—मनु० ११२४, 4 हुकूमत करना, शासन करना, प्रशस्त करना, रम्बाली करना (पर०)—राज्यं न्यासनिवाभुनक्त—रघु० १२१८, एक कल्पना(चरित्रो) नगरपरिशशाशुवातुमुनक्ति०—श० २१४, 5 भोगना, महन करना, अनुभव करना—बुद्धो नरो दुःखसागानि भुज्यते—सिद्धा० 6 खिलाना, भोजन कराना—प्रेर० (भोजयति-ने) खिलाना, भोजन कराना, इच्छा० (बभूषति-ने) खाने की इच्छा करना आदि । अनु०—उपभोग करना, (बुरे या भले का) अनुभव करना, (बुरे फल) भुगताना—मेषभुक्तविषादां स-चन्द्रिकाम् (अन्वभुक्त)—रघु० ११३९, कु० ७५, उच०— 1 मजा लेना, बखाना—तपसाभुजभुञ्जाना, फलानि—कु० ११०, 2 शारीरिक रूप से मजे लेना (यथा स्त्रीसभोग) 3 खाना या पीना—अधोप-भुक्तेन बियेन कु० २३७, पय पुत्रोपभुज्—रघु० २१६५, १६७, भट्टि० ८४४, 4 भोगना, सहन करना, खिलाना—मनु० १२८, 5 अधिकार में करना रम्बना, पति 1 खाना 2 उपभोग करना, आनन्द लेना—न कष्टं च परिभोक्तुं नैव सन्धीयं हातुम्—श० ५११९ कि० ५५, ८५७, तम्—1 खाना 2 उपभोग करना 3 शारीरिक रूप से मजे लेना ।

भुज् (वि०) [भूज्+क्विप्] (समास के अन्त में) खाने वाला, मजे लेने वाला, भोगने वाला, राख करने वाला, भासन करने वाला, स्वभाभुज्, हुनभुज्, पापं क्षितिं मही आदि. (स्त्री०) 1 उपभोग 2 खान, हित ।

भुज् [भूज्+क] 1 भुजा—आयत्तिक विद्यदभुजो मे रक्षति शीघ्रकिंकाङ्क इति—श० ११३३ रघु० १३४, २७४, २५, 2 हाथ 3 हाथी का सूँठ 4 हुंकार, बक्, मोक्ष 5 गणितवियक्त आकृति का एक पार्श्व, यथा 'त्रिभुज त्रिकोण' 6 त्रिकोण आघार । सम०—जलतरुम्, —अमलतरुम् हृदय, छाती—रघु० ३५४ ११३२, मालवि० ५१०, —आधीकः भुजपाथ में पकड़ना, बाहो में लिपटाना, —कीटारः बयल, —ष्ठा आघार की लम्बरेला, —सङ्घः—बाहुसङ्घ, बक्, —कम् हाथ, —बन्धनम् लिपटाना, आक्रियन करना—पद्य भुजबन्धनम्—गीत० १०, कु० ३३९, —कल्प-वीर्यम् भुजा की सामर्थ्य, पुट्टों की टाकत, —कल्पम् छाती—रघु० १३७३, —भुजम् कंधा, —क्षिप्रम्—क्षिप्रम् (नपु०) कंधा, —भुजम् आघार लंबरेला ।

भुवणः [भुज् भञ्जे क, भुज् कुटिलीभवन् सन् गच्छति गन् + क्] लोप, सपे - भुजगान्तेष्वसौवर्तवानी-भुञ्ज० १।१, देव० ६०। १।० - अलकः, अलकः-आयो-विन् (पु०)-बारणः-वीरिन् (पु०) 1. वरद 2. मोर 3. और नेपके का विशेषण,-- ईश्वरः-राजः शेष के विशेषण ।

भुवङ्गः [भुज्, सन् गच्छति गन् + ङ्, भुज् डिप्थ] लोप, सपे - भुजङ्गमयि कोपित गिरति पृथ्वद्वारयेत्-भन्० २।४ 2. उपपत्ति, गतिमा या सोम्यमेयी अनुमिरेषा भुजङ्गमङ्गिभितानाम् का० १९६ 3 पति, प्रभु 4 लौहा, इत्यती 5 राजा का लम्पट मित्र 6 आलेषा नक्षत्र 7 आठ की लम्बा । लम् : इन्धः नामराज शेषनाम का विशेषण, ईशः 1 बाहुक का विशेषण 2 शेषनाम का विशेषण 3. पत्न्यजलि का विशेषण 4 पिताम मुनि का विशेषण-कथा लोप की नक्षी कथा, अन् अरलेषा नक्षत्र, -भुज् (पु०) 1 गच्छ का विशेषण 2 मोर, -स्ता पात्र की बेल, तावूली, -हन् (पु०) गच्छ का विशेषण दे० भुजया-तक आदि ।

भुजङ्गपत्रः [भुज् + गन् + ङ्, भुज्] 1 लोप 2 राहु का विदायण 3 आठ की लम्बा ।

भुजा [भुज् + टाप्] 1 बाहू, हाथ निहितभुजा। लम्बैक-यांरकम्प - शि० ७।७ 2 हाथ 3 लोप की कुडकी 4 चक्र, घेरा । भय० -कथः अंगुली का नाभूय, -बल हाथ, -बन्धः 1 कंधनी 2 छातो, -भुज् कथा ।

भुजिष्वा [भुज् + ङिष्वा] 1 दाम, नीरु 2 सारी 3 पोहरी, सूत्र जो कलाई पर पहना जाय 4 रोप, ध्या 1 परिचारिका, सेविका, दासी--अथायदा-सिलत्प्रभुज् भुजिष्वा--रम्० ६।५३, भुञ्ज० ४।८, पाठ० २।९० 2 कारागारा, देव्या ।

भुज् (भ्या० आ० भुञ्जते) 1 सहारा देना, स्थापित रखना 2 चुनना, छानना ।

भुजुंरिका, भुजुंरी (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।

भुजुम् [भञ्जयन्, भू--आधाराद्यो-भ्युम्] 1 लोक (लोक) के नाम या तो हीन है- त्रिभुजम् या बोध-इह हि भुजुम्भयन् वीराधत्तुर्देव भुञ्जते -भन्० ३।२३ दे० 'लोक' भी, भुजुमालोकनप्रोति-कु० २।४५, भुजुमालोकरितम् देव० ६ 2 पृथ्वी 3 स्वर्ग 4 प्राणी, जीवधारी कन्तु 5 मनुष्य, मानव 6 पानी 7 बीरह की लम्बा । लय० -ईशः पृथ्वी का स्वामी, राजा, -ईश्वरः 1. राजा 2. मित्र का नाम, -लोकम् (पु०) देवता, -प्रभुम् पिताकी (मूलोक, अन्तरिक्ष और बुलोक; या स्वर्गलोक मूलोक और पाताल लोक), -वल्कीनी यना का विशेषण, कासिन् (पु०) राजा, सायक ।

भुजुम् [भू + ङ्भुज्] 1. स्वामी, प्रभु 2. स्वर्ग 3. जमि 4 कण्ठमा ।

भुज्, भुज् (भ्यञ्) [भू + भुज्] 1. अन्तरिक्ष, आकाश (सीनें लोको में से दूरता, भुजोक्त से ठीक ऊपर) 2. रहस्यमय कथ, तीन व्याहृतियों में से एक (भुज् + ल्) ।

भुजिष् (पु०) [भू + ङिष्, ङिष्] लयः । भुजिष्ठा, -डी (स्त्री०) एक प्रकार का मत्स्य या अन्न ।

भू । (भ्या० पर०--(आ० बिरल)--भवति, भूत् 1 होना, घटित होना कथयय भवेत्तम, कस्या किमभवत् - भा० १।२९ 'उसके भाव्य का क्या हुआ' उत्तर० ३।२७, यद्गृहिं तद्भुजु-उत्तर० ३, 'होने की को कुछ होता है' इसी प्रकार बुजितो भवति, हृद्यो भवति आदि 2 उत्पन्न होना यदपत्य भवेदस्याम् मनु० १।२७, नात्यकमेव हि यदानी भवति वान्ति भुञ्ज० १।१३ 3. फटना, निष्कारना, उदय होना कौशाङ्गवति लघोह-मन० २।६३, १।४१७ 4 घटित होना, होना, उपस्थित होना--नाततामिषे दोषो हनुमन्वति कथयन् मनु० ८।३५१, यदि सप्तयो भवेत्-आदि 5 जीवित रहना, विद्यमान रहना - भयुवभूतयोः राधा चितामर्षिर्नाम- वाच०, अन्-दुपो विभुवल्का परन्तः-जटि० १।१ 6 जीवित रहना, जिवा रहना, लस लेना-त्वयिदानी न प्रविष्यति-श० ६, आः वास्तवतस्तु अय न भवति -भुञ्ज० ४, दूरतस्त्वं बहुर नन्वयं न भवति- भा० ५ (गुण भर चुके हो, अब तुम्हें लस नहीं जायेगा) भय० १।१३२ 7. किसी भी वस्तु या वचन्या में रहना, कण्ठी का बुरी तरह बीतना- भवान् स्वले कथ भविष्यति-भय० २ 8. उठना, उठे रहना, रहना-उत्तर० ३।३७ 9 सेवा करना, काम जाना -इदं लघोक्तं भविष्यति- श० १ 10. संभव होना (इस अर्थ में प्रायः लुट् लकार)--भवति भवान् साव-विष्यति शिष्टाः 11 नेतृत्व करना, संभालन करना, प्रकाशित करना (संभ० के साथ)--वाताय कपिना विभूत् पीठा भवति स्वत्याय दुर्गिजाय शिता भवेत् -भृगाणा०, कुशाव टण्णन्वितं भयु-कु० १।२३ संस्मृतिरिभ भवत्यवधार कि० १।८२७, य तस्या कथये भयु-रम्० ६।३४ 12 प्राय देना, सहजता करना, देना अनुगतोऽभवत् 13. संकल्प रखना, पाठ रखना-उत्तर० ६ लसं जाया भयु-रेत० डा०, भन्० ६।१९ 14. कलस होना, आस्पृत होना (अधि० के साथ)--वरमहात्मने इज्जो वाद्यमानं स्वर्गं ह्यभूत् -भृगा० 15. पूर्ववर्ती संज्ञा या विशेषण के भागे 'भू' वातु का अर्थ है 'उह होना की पहले नहीं' का केवळ नाम 'होना'- श्वेतीभू सपेय होना, इज्जोभू

काका होना, पयोधरीयू स्तन का काम देना, इती प्रकार क्षयधोयू सायू होना, श्रिषधोयू गुतचर का काम करना, माधोयू पिपलना, मधोयू रास बन जाना विषधोयू विषय बनाना, इती प्रकार एक मतीयू, तदुधोयू आदि विधोयू, 'मू' घातु का अर्थ सबद क्रिया विशेषण के अनुसार ताना प्रकार से परिवर्तित होता रहता है, उदा० अघेयू आये रहना, सेतूयू करना अतूयू लीन होना, सम्मिलित होना — मोक्षयन्तान्भवयन्त्यु—काय० ८, अन्वेषायू और तरह होना, बदलना—न ये कचनमयथाभितुमर्हति

श० ४, आशियू प्रकट होना, उदय होना, स्पष्ट होना दे० आशियू, तिरियू बोझाल होना, बोधायू सधा होना, सायकाल होना, पुष्ययू फिर विवाह करना, बुरीयू अघसर होना, आये सरे होना प्रायूयू उदय होना, दिखाई देना, प्रकट होना, विषययू मूठ निकलना, बुषायू व्यर्थ होना आदि श्रे० (भाष-पति-से) 1 उत्पन्न करना, अस्तित्व में लाना, सत्ता बनाना 2 कारण बनना, पैदा करना, जन्म देना 3 प्रकट करना, प्रदर्शन करना, निर्देशन करना 4 पालना, परवरण करना, सहारा देना, लत्पारण करना, जान डालना—पुन सुवर्ति कर्षणिय भगवान् भावयन् प्रदा—महा०, देवान् भावयन्तेन ते देवा भावयन्तु व, परस्पर भावयन्त्ये शेष परमवाक्य्य—अग० ३।११, महि० १६।२७ 5 बोधना, विमर्श करना, विचारना, खबाल करना, कल्पना करना 6 देखना समझना, जानना—अर्धमनर्थं माषय नित्यम्—मोह० २ 7 सिद्ध करना, साक्षित करना, पक्का—याज्ञ० २।११ 8 पवित्र करना 9 हासिल करना, प्राप्त करना 10 बिलाना, विषय, तैपार करना 11 परिवर्तन करना, रूपान्तरित करना 12 इबोना—सराबोर करना । इच्छा—वसुवर्ति, होने की या बनने की इच्छा करना, अति—अतिरिक्त होना आये बड़ जाना, अधिक हो जाना, अन्—1 मने केना, अनुभव करना महसूस करना, भोगना (बुरा या भला)—असक्त सुषयन्वभूत—यु० १।११, कु० २।४५ रघु० ७।२८, आत्यकृतानां हि दोषाया फलमनुभवित्वाभ्यासार्थं व—का० १२।१, श० ५।७ 2 प्रत्यक्ष करना, बोध होना, समझना 3 जाच करना, परोक्ष करना, श्रे०—वान्य मनवाना, अनुभव या महसूस करवाना—आमोदो न हि कस्तुर्या मप्येनानुभाव्यते—यामि० १।१२०, अति—1 विजय प्राप्त करना, दमन करना, परास्त करना, आये बड़ जाना, उत्पन्न होना—मय० १।२१, कि० १०।२३, रघु० ८।३६ 2 आक्रमण करना, हथका करना—विषयोऽग्रिमश्चैविक्रम्य—कि० २।१४ अन्वयादि यत्तदावस्तया—रघु० १।११६

3 नीचा दिखाना, अपमान करना 4 प्रभुत्व रखना, प्रभाव रखना, व्याप्त होना, उच्च—उच्च होना, उपजा उद्भूतध्वनि, श्रे०—पैदा करना, सुखन करना, जन्म देना रघु० २।६२, वरा—1 हराजना, परास्त करना, जीत केना 2 चोट पहुँचाना, सति पहुँचाना, मताना, परि—1 हराजना, दमन करना, जीतना, हाबी होना (अत) अत्ये बड़ जाना, पछार देना लग्नद्विरेक परिभूय पद्यम्—मृदा० ७।१६, रघु० १०।३५ 2 तुच्छ समझना, उपेक्षा करना, बुषा करना, अनादर करना, अपमान करना, या या महात्मन् परिभू महि० १।२२, ४।३७ 3 सति पहुँचाना, नष्ट करना, बर्बाद करना 4 कष्ट पहुँचाना, दुख देना 5 नीचा दिखाना, लज्जित करना, प्र—1 उदय होना, निकलना, फूटना, जन्म केना, उप-जना, पैदा होना (अया०के साथ)—लोभात्कोष प्रभवति—हि० १।२७, स्वाय भूतात्परीतेषां प्रभवत्प्रजापति

—ग० ७।९ पुरुष प्रभवत्प्राणैर्विष्मयेन सहस्रिवायाम्—रघु० १०।५०, अग० ८।१८ 2 प्रकट होना, दिखाई देना हि० ४।८४ 3 गुषा करना, बढाना, दे० प्रभुत् 4 मजबूत होना, लक्षितानी होना, छि जाना, प्रभुत्व होना, बल दिखाना प्रभवति हि महिना स्वैव योगीश्वरोय सा० ९।५०, प्रभवति भयवान् विधि—का० ५, 5 बोधय होना, समान होना, साक्षि रखना ('पुपुनन्त'के साथ)—कुमुदागर्वि सायमज्जुमान् प्रभव-त्यायुरपरोहितु परि—रघु० ८।१४, श० ६।३०, विक्रम० १।९, उत्तर० २।४ 6 नियंत्रण रखना, प्रभाव रखना, छा जाना, स्वामी होना (बहुधा मव० के कमी ७ सप्र० या अधि० के साथ)—यदि प्रभवित्वाभ्यात्मन—ग० १, उत्तर० १, प्रभवति नियन्त्रय कल्पकाजनस्य

महागज—मा० ४, तत्रभवति अनुशासयेन देवी-वेणी० २ 7 जोडा का होना प्रभवति मल्ला मल्लाय—महामा० 8 पर्याप्त होना, पर्यप्त होना—कु० ६।५९ 9 रक्शा जाना (अधि०के साथ)—नृत् प्रथम प्रभवत् नारयनि—रघु० ७।१७ 10 उपचोती होना 11 माचना करना, अनुभव—विषय करना, बि—(श्रे०) 1 सोचना, विमर्श करना, विचारना 2 जाचकर होना, जानना, प्रत्यक्ष करना, देखना—श० ४ 3 फलना करना, निष्पन्न करना, स्पष्ट करना, लम्—1 उदय होना, पैदा होना, उपजना, फूटना—कथमपि भुक्तेऽर्थमस्ता-दुषा सञ्चरति—मा० २।९, धर्मस्तथापलाचार्य सय-शाधि युगे युगे—नय० ४।८, कि० ५।२२, महि० ६।१३८, मनु० ८।१५५ 2 होना, बनना, विद्यमान होना 3 घटित होना, घटना होना 4 सभ्य होना, 5 मधेष्ट होना, सखाम होना ('पुपुनन्त'के साथ)—न गतियन्तु समयादि प्राणान्—शि० १।२७

6. विक्रमा, एक होना, सम्मिलित होना—अभूयान्भी-
विभ्रमेति महान्वा भवायथा—वि० २।१००, संभूयैव
सुखानि वेतति—मा० ५।११ 7. कलता होना 8. पकड़ने
के योग्य, (त्रेर०) 1. पैदा करना, उत्पन्न करना
2. कल्पना करना, सोचना, उद्भावना करना, चिन्तन
करना 3 अनुमान लगाना, अटकक लगाना—वा० २,
4 सोचना, अज्ञान करना 5 सम्मान करना, आदर
करना, आदर प्रदर्शित करना—प्राप्त्यति समा-
वसितु बगालाम्—रघु० ५।११, ७।८ 6 सम्मान
करना, उपहार देना, अर्पण करना—कु० ३।३७
7 मड़ना, सोचना—मू० १।३६।

11 (ध्वा० उ०) भवति-ते) हासिल करना, प्राप्त
करना।

iii (चुरा० मा० भावयते) प्राप्त करना, उपलब्ध
करना।

iv (चुरा० उ०) भावयति—ते) 1 सोचना,
विमर्श करना 2 मिलाया, मिश्रित करना
3 पवित्र होना ('युं' के त्रेर० रूप से सबद्ध)।

यू (वि०) [यू+विभृ] (समान के अन्त में) होने
वाला, विद्यमान, बचने वाला, सूटने वाला, अपने
वाला, उपजने वाला, चित्तयू, बालयू, कमलयू,
वित्तयू आदि—(यू०) वित्तयू का विशेषण।

यू (स्त्री०) [यू+विभृ] 1 पृथ्वी (विप० अन्वयिष्ठ
या स्वर्ग-दिग् मरुत्कानिश् भोवते मुचम्—रघु० ३।४,
१।८, मेघ० १८, मत्स्यकृष्णवदनने युवि सन्ति पृरा
2 विश्व, भूमण्डल 3 भूमि, फल्य प्रासादोपरिभूयय
युदा० ३, मत्स्यययुय (प्रासादा) मेघ० ६४
4 भूमि, भूसर्पति 5 जगह, स्थान, क्षेत्र, भूखण्ड
कानिनभूमि, उपवनभूमि आदि 6 सामग्री, विषय-
वस्तु 7 'एक' की संख्या की प्रतीकार्थक अभिव्यक्ति
8 व्यापित की ब्राह्मि की आधारेखा 9 (धरती का
प्रतिनिधान करने वाली) सबसे पहली (तीनों में)
व्याहृति वा रहस्यमूलक अक्षर 'अ' जिसका उच्चारण
प्रतिदिन सन्धा के समय मन्त्रपाठ करते हुए किया
जाना है। सम०—उत्सन्नयु सोमा, कवच्यः कदम्ब
युध का मेघ, कल्पः भूवाण,—कर्मः धरती का व्यास,
—कवच्यः कृष्ण के पिता वासुदेव का विशेषण,—काक
1 एक प्रकार का बगुला 2 पनभूमि 3 एक प्रकार
का कन्नूर,—केसः बट-युज,—केसा राजसी, पिशाचिनी,
किन्तु (यू०) सूवर,—अरुच्य विशेष प्रकार का अहूर,
—अर्धे भवभृति का विशेषण,—अहृत्,—वेहेतु भूमि
के नीचे का गोदाम, तहखाना, भोक्तः भूमिगोल,
भूमण्डल—भूगोलभूमिप्रदे—गीत० १, 'विज्ञा भूगोल,
—अनः काया, अरोर—अन्वयि विपुत्रेखा, भूमण्डलेखा
चर (वि०) भूमि पर चलने वाला वा रहने वाला

(रः) विष का विशेषण,—अन्वयि, अन्वयि 1. नू छाया,
(इति ही शायी 'राहु' कहते हैं) 2 अन्वयि-अन्वयि
1. एक जमीन का कोड़ा 2 हाथी, -अन्वयि, -अन्वयि
—अन्वयि बरातल, पृथ्वीतल, -अन्वयि (भूतयु) एक
प्रकार का सुगन्धयुक्त घास, -घासः सुवर, -वेक, -सुवः
बाह्यण, -अनः राजा अरः 1 पहाड़ 2. विष
का विशेषण 3. कृष्ण का विशेषण 4. 'सात'
की संख्या 'ईश्वर', 'राज' द्विगल्य पहाड़ का
विशेषण 'अः' यज्ञ, -आयः एक प्रकार का धरती का
कोड़ा, केंचुआ, -अन्वयि (यू०) प्रभु, शासक, राजा, -अः
प्रभु, शासक, राजा, -अन्वयिः 1 राजा, 2 विष का
विशेषण 3 इन्द्र का विशेषण, -अनः यज्ञ, -अन्वयि एक
विकिष्ट प्रकार की बमेरी, -अन्वयिः पृथ्वी का घेरा,
—आयः राजा, प्रभु—आयः प्रभुता आधिपत्य
—अन्वयि, -अन्वयिः मंगलग्रह, -अन्वयि, -अन्वयि 'धरती की
बेटी' सीता का विशेषण, -अन्वयिः भूवाण, -अन्वयि
भूवाण, -अन्वयि, -अन्वयि भूगोल, भूमण्डल, -अन्वयि (यू०)
राजा, प्रभु, -आयः क्षेत्र, स्थान, जगह, भूमि (यू०)
राजा, -अन्वयि (यू०) पहाड़—आया मे भूमता आयः
प्रमाणीकियतामिति—कु० ६।१, रघु० १७।७८
2 राजा, प्रभु 3 विषयमन्त्र रिपुराज भूमतायू ययु०
१।८१ 3 विषय का विशेषण -अन्वयि ययु०
भूमण्डल, धरती, -अहृत् (यू०), -अहृत् यज्ञ, -अन्वयिः
(भूगोल) भूमण्डल, अन्वयि भूमण्डल, अन्वयिः
राजा, प्रभु, भूमण्डल भूमण्डलेखा, -अन्वयि 'धरती पर
इन्द्र, राजा, प्रभु, -अनः विष्णु का विशेषण, -अन्वयि
(यू०) बमी, दीमक का मिट्टी का टीला, -सुवः
बाह्यण, स्युयु (यू०) 1 अनुष्य 2 मानवजाति
3 वैश्य, स्वयः मेघ पहाड़ का विशेषण, -स्वामिन्
(यू०) भूमिचर, भूमि का स्वामी।

यूकः, अन्वयि [यू+क] 1 विवर, रजध, वर्त 2 धरना
3 काल।

यूकलः [यूवि कलयति कल्+अन्वयि] अविद्यल घोड़ा।

यूत (यू० क० क०) [यू+त] 1 जो हो चुका हो, होने
वाला, वर्तमान 2 उत्पन्न, निर्मित 3. बस्तुतः होने
वाला, जो बस्तुतः बट चुका हो, यथावत् 4. टीक,
उत्तर, सही 5 अतीत, गया हुआ 6 उपलब्ध
7. मिश्रित या मिलाया हुआ 8 सद्युत, तजान दे०
'यू' -तः 1 पुत्र, बच्चा 2 विष का विशेषण
3. आन्वयि के कृष्णपल की बस्तुदेवी का दिन, -अन्वयि
1. प्राणी (मानव, दिव्य, वा अन्वयि) -कु० ४।१५,
पद्य० २।८७ 2. अविद्यल प्राणी, अन्वयि, वीरवारी
-यूतयु कि च कवचा बहूनी करति -अन्वयि०
१।१२२, उत्तर० ५।६ 3 अन्वयि, मृत, पिशाच, दानव
4. तप्य (दे पाँच हैं—अन्वयि पृथ्वी, अन्वयि,

राज्य और आकाश) — त्रि वेदा विद्वेषे नून महाभूत-
 संपादिना - रघु० १।२९ ५ वास्तविक घटना, तन्म,
 वास्तविकता ६ अतीत, भूतकाल ७ सत्तार ८ कुशल-
 शेष, कल्याण ९ पाँच की संख्या के लिए प्रतीकात्मक
 अग्निव्यापित। सम०—समुच्चया सब प्राणियों के लिए
 कथना—भूतानुकम्पा तत्र चेत्—रघु० २।४८, - अस्तकः
 मृत्यु का देवता यम, - अर्धः तन्म्य, वास्तविक तन्म्य,
 यथाथं स्थिति, मन्वाह, वास्तविकता—आयं कन्यामि
 ने भूतार्थम् श० १, भूतार्थयोगाह्वयमाणनेत्रा—कु०
 ७।१३, क थदास्वति भूतार्थं तयो मां तुल्यिध्याति
 - मृच्छ० ३।२४, कथमव, व्याहृतिः (स्त्री०)
 तन्म्यवर्धन-भूतार्थव्याहृति सा हि न स्तुति परमेष्ठिन
 - रघु० १०।३३, -आत्मक (वि०) तन्म्यो से युक्त
 या तन्म्यो से बना हुआ, आत्मन् (पु०) १ जीवात्मा
 (विप० परमात्मा), आत्मा २ ब्रह्मा का विशेषण
 ३ शिव का विशेषण ४ मूलतत्त्व ५ शरीर ६ युद्ध,
 सधर्म—आधि १ परमात्मा २ (आत्म० में) अहंकार
 का विशेषण, - आत्मे (वि०) प्रेताविष्ट, -आवास्तः
 १ शरीर २ शिव का विशेषण ३ बिष्णु का विशेषण,
 -आविष्ट (वि०) भूता प्रेतादि से प्रभावित,
 -आवेशः भूत या प्रेत का किसी पर सवार होना,
 -इक्ष्म्य, -इक्ष्मा भूतो को आहुति देना, -इक्ष्मा
 कृष्ण पक्ष की चतुर्विंशती, - ईक्षः १, ब्रह्मा का विशेषण
 २ बिष्णु का विशेषण ३ शिव का विशेषण - भूतेनास्य
 भूजङ्गबालवलयरुनडभूताचटा भा० १।२,
 -ईष्वर शिव का विशेषण—रघु० २।४६, - उन्माद्य,
 भूत प्रेतादि के चढ़ने से उत्पन्न पागलपन,—उपसृष्ट,
 -उपहृत (वि०) पिशाच से पीड़ित,— शोचनः पायली
 की घाली, - क्तुं - क्तु (पु०) ब्रह्मा का विशेषण,
 -काकः १ बीता हुआ समय (व्या० में) अतीत या
 भूतकाल, - केतो तुलसी,—कालिः (स्त्री०) भूत-प्रेत
 की सवारी, यथा उत्पन्न प्राणियों का समुदाय
 २ भूतप्रेत या पिशाचों का समूह- भग० १८।४,
 -कस्त (वि०) जिसपर भूतप्रेत सवार हो गया हो,
 -कान्तः १ आदि प्राणियों का समूह, समस्त जीव,
 कष्टि—उत्तर० ७, भग० ८।१९ २ भूतप्रेतों का समूह
 ३ शरीर, -कनः १ जंटे २ लक्ष्मण, (श्री) तुलसी
 -चतुर्विंशती कालिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्विंशती,
 -चारिन् (पु०) शिव का विशेषण, - चयः तन्म्यो के
 ऊपर विजय,— बया सब प्राणियों के प्रति क्रमा,
 प्राणिमात्र पर दया,—चयः, - चानो,— चारिणी पुष्पी,
 -चाषः शिव का विशेषण,— चाविका युवाँ का
 विशेषण,—चासनः १ मिलावें का पीषा २ सरसो
 ३ कालोमिर्च,—चिचयः शरीर,—चिति १ शिव का विशेष-
 ण—कु० १।४२, ७४ २ अग्नि का विशेषण ३ काली

तुलसी,—चुचिना आदिन मास का पूर्वमासी,—चूर्ण
 (वि०) पहले से विद्यमान, पहला - भूतपूर्वकालायम्
 -उत्तर० २।१७, -चूर्णम् (अन्म०) पहले,—चक्रतिः
 (स्त्री०) सब प्राणियों का मूल,—चक्तिः—भूतयत्र
 दे०— चक्रन् (पु०) अथम ब्राह्मण जो अपना निवाह
 मृति पर पढ़ावें से करता है दे० देवक,—चर्तु
 (पु०) शिव का विशेषण, - भाषणः ब्रह्मा का विशेषण
 २ बिष्णु का विशेषण, - भावा— भाषित पिशाचों
 की भाषा,—चहृष्वरः शिव का विशेषण,— चक्षः सब
 प्राणियों की बलि या आहुति देना, दैनिक पाँच यज्ञों में
 से एक बलिदेवदेव, योमिः उत्पन्न प्राणियों का
 मूलभोत,—चाकः शिव का विशेषण, - चर्षः भूत-प्रेतों
 का समुदाय, - चामः बड़े के का वृक्ष, - चालुनः शिव
 का विशेषण, - चिकिष्या १ अपस्वार, मिरगी २ भूत
 या पिशाच की सवारी,—चिमानम्, - चिवा पिशाच
 विज्ञान,—चूतः जिनोतक वृक्ष, बड़े का पेड़, सत्तारः
 नर्चलोक, सत्तारः भूत पिशाच का आवेग,—चम्बः
 शिव का जलप्रलय, या विनाश,—चर्षः सत्तार की
 सृष्टि, उत्पन्न प्राणियों का समुदाय,—चूर्णम् चूर्ण-
 तत्त्व, - च्वात्मम् १ जोषधारी प्राणियों का आवास
 २ पिशाचों का वास्तवधान, - ह्यवा जोषधारी प्राणियों
 की हत्या।

भूतम्य (वि०) [भूत+मयट्] १ सब प्राणियों समेत
 २ उत्पन्न प्राणियों या मूलतन्म्यो से निर्मित।

भूतिः (स्त्री०) [भू+क्तिन्] १ होना, अस्तित्व २ अन्म,
 उत्पत्ति ३ कुशल-शेष कल्याण, आनन्द, मनुष्य,
 -प्रजानामेव भूतयं स ताम्यो बलिमहर्षिन्—रघु०
 १।१८, नरपतिकुलभूतयं—२।७४, स वाञ्छन्तु भूतयं
 भगवान् मुकुन्ध—विश्वकामं० १।२ ४ सफलता,
 अच्छा भाग्य ५ धन-वीर्य, शौर्याय— विपत्रतोकार-
 परेण मयात् निषेच्यते भूतिसमुत्पन्नेन वा कु० ५।७६
 ६ गौरव, महिमा, किभूति ७ राक्ष—भूतभूतिरहीन-
 योगमात्र— शि० १६।७१ (यहा 'भूति' शब्द का
 अर्थ 'धन' की है), स्फुटीयम भूतिसिन्धेन धामना—१।४
 ८ रानी धारियों से हाथी का भ्रूणार करना - प्रकित-
 च्छेदेरिच विरचिता भूमिमङ्गे यजस्व— मेघ० १९
 ९ तपस्या या त्रिभार के अनुष्ठान से प्राप्य अति-
 मानव शक्ति १० तारा हुआ मास ११ हाणियों का यव,
 -सिः १ शिव का विशेषण २ बिष्णु का विशेषण
 ३ पितृव्य का विशेषण। सम०—कर्मणं (नपु०)
 कोई भी गुण कृत्य या उत्पन्न, - काम (वि०) समृद्धि
 का दृष्टक (कः) १ राज्यमन्त्री २ बृहस्पति का
 विशेषण, - काकः गुण वा सुख सत्य, - कौकः
 १ छिद्र, वतं १ काई ३ भूयमंगल, तह्लाणा,—कृन्
 (पु०) शिव का विशेषण,—कर्मः मयभूति का विशेष-

पय, - इः विष का विषेषण, - विधानम् परिष्ठा
नक्षत्र, - भूषणः विष का विषेषण, - बहूयः विष का
विषेषण ।

भूमिकम् [भूति + कम्] 1. कपूर 2. चन्दन की लकड़ी
3. मोषिक का पीसा, कायफल ।

भूमत् (वि०) । भू + मत्प्र [भूमिधर - पु० राजा, प्रभु ।
भूमत् (पु०) [बहोर्भावे बहु + इत्यनिच् इतोरेच्च्भ्रादेश]

1 भारी परिमाण, प्राचुर्य, यथेष्टता, बड़ी सख्या
- भूमना रसानां गहना प्रयोगा मा० ११४, सम्बन्धे
मुखादि शेतसि पर भूमानमातन्वते ४१२ 2 दीलन
न्यु० 1. पृथ्वी 2. प्रदेश, जिला, भूखण्ड 3. प्राची,
जन्तु 4 बहुवचनता (सख्या की) आप स्त्रीभूमि
अमर० नु० पु० भूमन् ।

भूमय (वि०) (स्त्री - स्त्री) [भू + मयट्] मिट्टी का,
मिट्टी का बना या मिट्टी से उत्पन्न ।

भूमि. (स्त्री०) [भवन्त्यग्निम् भूतानि - भू + मि क्त्विच् वा
डीप्] 1 पृथ्वी (विप० स्वर्ग, गगन वा पाताल) क्षीर्भूमि-
रापोद्भव यमस्व-रच० ११८२, रघु० २।७४ 2 मिट्टी,
भूमि उन्मातिनी भूमि - मा० १, कु० ११२४
३ प्रदेश, जिला, देश, नृ विदम्भूमि 4 स्थान,
जगह, जमीन, भूखण्ड - प्रयत्नभूमयः - मा० ६,
आध्यात्मभूमि - न० २२।४१, रघु० १।५२ ३।६१,
कु० ३।५८ 5 स्थल, स्थिति 6 जमीन भूयसि 7
कहानी, घर का फर्श यथा सत्तभूमिक प्रसाद
में 8 अभिर्भाव, हावभाव 9 (नाटक में) किसी
पात्र का चरित्र या अभिनय - नु० भूमिका 10. विषय,
पराम्य, आधार विषयभूमि, स्नेहभूमि आदि 11 दर्जा,
श्रेण्यार, सीमा कि० १०।५८ 12 जिल्ला, जबान ।
सप० अन्तरः पहाड़ी राज्य का राजा, इन्ध,

ईश्वर. राजा, प्रभु, कर्षक, कदम्ब का एक भेद,
गुहा भूमि में विचर या गुफा, - भूष्म् भूगर्भगृह,
योग, तहसाना, - बलः बलम् भूषात् - काः
1 मंगलग्रह 2 तरकापुर का विषेषण 3 अनुव्य
4 भूमि नाम का पीसा, (का) सीत का विषेषण,
- श्रीमिन् (पु०) वैश्य, - तलम् भूतल, पृथ्वी की
तलह बलम् भूदान, - वैकः ब्राह्मण घर 1 पहाड़
2 राजा 3 मात की सख्या, - भाष्य, चः, धति,
पाल, - भूष् (पु०) राजा, प्रभु - रघु० १।४७,
- पक्षः तेज बोझ, विभाष्य ताक का बूझ (जिससे
ताड़ी तैयार की जाती है), - पुष्कः मंगलग्रह, - भुरभरः
1 राजा 2 दिलीप का नाम, - भूष् 1 पहाड़ 2 राजा,
- सख्या एक प्रकार की बसेली, - रत्नकः तेज बोझा, - साधः
मृत्यु (धा०) मिट्टी में मिल जाना, - केवलम् गोबर
- बलम् - नम् मृतक शरीर, हब, - लम् (वि०)
भूमि पर सीने वाला (कः) बंगली कबूतर, - बलम्,

- सख्या भूमि पर सीना, - संवयः-सुतः 1. मंगलग्रह
2 तरकापुर का विषेषण, (-वा-सा) सीता का
विषेषण, - श्रीमिन्ः वैश का सामान्य दर्शन, - न्यु
(पु०) 1. मनुष्य 2. मानवजाति 3. वैश्य 4. शौर ।

भूमिका [भूमि + क + टाप्] 1 पृथ्वी, जमीन, मिट्टी
2 स्थान, घरेलू, स्थल (भूका०) 3. कहानी, उदात्तक
4. पय, दर्जा - मधुमतीतज्ञा भूमिकां साक्षात्कृत्यनः

- योग० या तैयारिकादिभिरारमा प्रथमभूमिकाया-
मवधारित, - साक्ष्यप्र० 5. लिखने के लिए तस्त्रा
- दे० अक्षरभूमिका 6 नाटक में किसी पात्र का
चरित्र या अभिनय - या वस्य यज्यते भूमिका तां
सलु तर्षव भावेन सर्वे वर्यां पाठिता, कामन्दक्या.
प्रथमा भूमिका भाव एवाधीते - मा० १, लक्ष्मीभूमि-
काया बर्तमानोर्बोधी बाष्पीभूमिकायां बर्तमानया
वेनकमा पुष्पा - विक्रम० ३, जि० १।६९ 7 नाटक
के पात्र की अभिनय सम्बन्धी पोशाक 8 सजावट
9 किसी पुस्तक की प्रस्तावना या परिचय ।

भूमि [भूमि + डीप्] पृथ्वी, दे० भूमि । सप० - कदम्ब
= भूमिकदम्ब, - अति, - भूष् (पु०) राजा, - लम्
(पु०) बहू भूष ।

भूम्य् (न्यु०) होने की स्थिति - जैमा कि 'ब्रह्मभूम्यम्' में
- दाशरथिभूम्यम् - सि० १४।८१ ।

भूयसम् (अव्य०) [भूय + तल्] 1 अधिकतर, बहुधा,
सामान्यतः, साधारण नियम के रूप में 2 अन्वयिक,
बड़े परिमाण में 3 फिर, और जागे ।

भूयत् (वि०) (स्त्री० - स्त्री) [बहु + ईयन्तु, ईतोरेच्च्भ्रादेशः]

1 अधिकतर, अपेक्षाकृत सख्या में अधिक या बहुत
2. अधिक बढ़ा, अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत - कु०
६।१३ 3 अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण 4 बहुत बढ़ा
या विस्तृत, अधिक, बहुत, असख्य भवति च पुन-
र्भूयान्भेदः फल प्रति तथया - उत्तर० २।४, अह भद्र
बितर भगवभूयते मङ्गलाय मा० १।३, उत्तर० ३।६,
रघु० १।७।६, उत्तर० २।३ 5 सम्पन्न, बहुत एव-
प्राययुष्मभूयसी स्वकृति - मा० १, अव्य० 1. अधिक,
अत्यधिक, अत्यन्त, अधिकतर, बहुत करके 2. और
अधिक, फिर, जागे, और फिर, इसके अतिरिक्त,
- पाण्ययमस्तुच्च विस प्रहृषाय भूय - विक्रम० ४।१६
रघु० २।१६ मेघ० १११ 3 बार बार, बहुबहुं
- (इस शब्द का रूप भूयसा जब कि० वि० के रूप
में प्रयुक्त होता है तो तिन्नाकित अर्थ होते हैं
1. अत्यधिक, बहुत अधिक, अत्यन्त, अपरिमित, अधि-
कांश में - न करो न च भूयसा भूतु रघु० ८।८,
परचार्येन प्रथित सारपतनमयात् भूयसा पूर्वकायम्
घ० १।७ 2. बहुत, साधारणतः - भूयसा श्रीविषये
एव - उत्तर० ५) । सप० - बलम् 1. बार बार

देखना 2 बार बार व्यापक दर्शन पर आधारित अनुमान, - भ्रमन् (अर्थ०) पुन पुन, बार बार - भ्रमोभ्रम सविषमगरीरभ्ययापमंठनाम् - मा० १११५, - बिभ्र (वि०) 1 अविधाकृत विद्वान् 2 अत्यन्त विद्वान् ।

भ्रमन्सम् [भ्रमन् + सम्] 1 बहुतायत, बहुलता 2 बहु-सम्पत्ता, प्रचलता ।

भ्रमिष्ठ (वि०) [ब्रिचिचयेन बहु + इच्छन् भ्रवादेशे युक् च] 1 अत्यत, अत्यन्त असम्पत्क या प्रचुर 2 अत्यन्त महत्त्व पूर्ण, प्रधान, मुख्य 3 बहुत बड़ा या विलम्ब, अत्यधिक, बहुत, बहुत से, असम्पत् 4 मुख्य रूप से, अपना स्वस्थचित, अत्यन्त सचरित या मुक्त, मुख्यतः भरा हुआ या चरित्र से युक्त (समास के अन्त में) - अभि-स्युधिका परिषद् - श० १, सुव्यपामभ्रमिष्ठ आहारोऽप्यते - श० २, रघु० ५।३० 5 प्राय अधिकतर, अन्ततः सब (बहुधा) क्वातं रूप के परवात् - अयं उचितभ्रमिष्ठ एव लण - मा० १, तिर्गीयभ्रमिष्ठ-महास्य कीर्यम् - कु० ३।५२, विक्रम० १।८, छन्द (अर्थ०) 1 अधिकशत, अत्यन्त श० १।३१ 2 अत्यधिक, बहुत ज्यादा, अधिक से अधिक - भ्रमिष्ठ भव दक्षिणा परिचने - श० ५।१७, रघु० ६।४, १३।४ ।

भ्रू (अर्थ०) [भ्रू + रून्] तीन व्याहृतियों में से एक ।

भ्रुरि (वि०) [भ्रू + क्रिन्] 1 बहुत, प्रचुर, असम्पत्, वर्षष्ट 2 बड़ा, विलम्ब, (पु०) 1 विष्णु का विशेषण 2 बड़ा का विशेषण 3 गिच का विशेषण 4 दन्त का विशेषण (पु०) सीना, (अर्थ०) 1 बहुत, अधिक, आत्यधिक - नगाम्भ्रिर्भ्रुरि विलम्बिनी घना - श० ५।१२ 2 बार बार प्राय मुहुर्मुहुः । सम० - गण. पत्रा, - सैकम् (वि०) अतिक्रान्तियुक्त (पु०) जनि, - ब्रिचिच (वि०) 1 मृत्यवान् उपहार या वुरस्कारों से युक्त 2 वुरस्कार देने में उदार, दानशील, - दानम् उदारता, - वम (वि०) रीततमद, वनाडय, - वामन् (वि०) अतिक्रान्ति से युक्त, - वषोष (वि०) जिनका बहुत उपयोग हुआ है, सामान्य व्यवहार में जाने वाला (वम्) - वेषम् (पु०) चक्रमा, - भाग (वि०) घनाद्वय, समुद्रियाली, - भाग शीतल या सोमरी, रस-पत्रा, - काभ, बहुत साधदा, - विक्रम (वि०) बड़ा बहादुर, बड़ा योद्धा, - भ्रुष्टि (लृ०) बहुत धारित, - अक्षम् (पु०) कौरवों के पक्ष से लड़ने वाले एक योद्धा का नाम जिसे सारथिक ने यमपुर मेजा था ।

भ्रिन् (लृ०) [भ्रू + इत्, पु०] साधु] पुष्पी ; क्रि० [भ्रू + कर्त् + भ्रञ्] भ्रमिष्ण का पेठ - भ्रुर्भंगतो-ज्वरविनाश वि० २, कु० १।७ । घम० - कृष्णः वर्षसकर जाति का पुरुष, जाति से बहुकृत बाह्यम्

की उन्नी वर्ष की स्त्री से उत्पन्न सन्तान - बाला पु-जायते विप्रार्यापाया भ्रुर्भङ्गकः - अनु० १०।२१, पत्रः भोजन का वृत् ।

भ्रुकिः (म्ब०) [भ्रू + नि, वि०] उल्लम्] पुष्पी । भ्रु (म्ब०) पर०, भ्रुरा० उभ० - भ्रुषति, भ्रुषयति - ते, भ्रुषति 1 अलङ्कृत करना, सजाना, भ्रुषार करना - भ्रुषि भ्रुषयति श्रुत वृत् - भट्टि० २०।१५ 2 अपने आपकी सजाना (जा०) भ्रुषयते कम्पा स्वयमेव 3 फँसाना, बसेरना, बिछाना - रघु० २।३१, अग्नि, - अलङ्कृत करना, भ्रुषित करना, सोनिये देना - शि० ७।३८, वि० - अलङ्कृत करना, सजाना - केवुरा न विभ्रुषयति पुष्वम् - भट्टि० २।१९, शि० ९।३३, कु० १।२८ ।

भ्रुषणम् [भ्रुष + ण्यट्] 1 अलङ्करण, सजावट 2 अल-कार, भ्रुषार, सजावट का सामान - शीघ्रते सक्तु भ्रुषणानि सततं वाचस्पृण भ्रुषणम् - भट्टि० २।१९, रघु० ३।२, १३।५७ ।

भ्रुषा [भ्रुष + क + टाप्] 1 सजाना, भ्रुषित करना 2 आभूषण, सजावट जैसा कि 'कर्मभूषा' 3 रत्न । भ्रुषित (भ्रु० क० कृ०) [भ्रुष + णि] सजाना हुआ, सुभ्रुषित, - मणिना भ्रुषित तपे किमनो न भवद्भूर ।

भ्रुष्णु (वि०) [भ्रू + ष्णु] 1 होने वाला, बनने वाला जैसा कि अलभूष्णु 2 घन या समृद्धि की इच्छा करने वाला - अनु० ४।१३५ ।

भ्रु (म्ब०) जुहो० उभ० भरति - ते, विभ्रति - भ्रुमते भ्रुत, कर्मबा० भ्रियते, इच्छा विभ्रति या भ्रुम-पति । नरता - खर को न विभ्रति केवलम् - पत्र० १।२२ 2 भरना, व्याप्त होना, पूर्ण होना अभाषीद् भ्रुवति लोकात् - भट्टि० १।५।२४ 3 रचना, यहाया देना, समालना, पोषण करना भ्रु परिभ्या विभ्र-राम्भ्रुव - रघु० १८।४४ कर्मो विभ्रति पारपी सक्तु पुच्छकेन - वीर० ५०, भट्टि० ७।१६५ 4 सचारण करना, दुष्ट पिलाना, लालन-नाशन करना, प्रसन्न करना, समाज रखना, परवरित करना दक्षिणभर कीनीय या प्रयच्छेवरे वनम् - हि० १।१५ 5 चारण करना, रखना, अधिकार में लेना - तिषोर्वेनार लल्ल शयनीयलक्ष्मीम् - कि० ७।५७, पिप्लवन सक्तु विभ्रति क्षितीम् - मासि० १।७४, बलिचय वाच बभार बाला - कु० १।३१ इन्दोर्नैव त्वन्सतरणिक्यकातोविभ्रति - मय० ८४, श० २।४ 6 पहनना - विभ्रच्छटा-मण्डलम् - श० ७।११, ६।५ विवाहकौमुदं कलितं विभ्रत एव (तत्त्व) - रघु० ८।१, १०।१० ७ पटाव च विभ्रयामित्यम् - मनु० ६।६ 7. महसूत करना, अनु-नव करना, भोगना, सहन करना (हर्षं वा दुःखं आदि) - माधवुद्विषाक्षित्तिर्वैव वनो माटकीरिच बभार

बीजन—सि० १४५०, सवासमविन शकः—भट्टि०
 १७१०८, सा० ७३११ ४ समर्थन करना, प्रदान करना,
 देना, देना करना—बीजने सदलकारा. धोना विप्रति
 सुभूष—सुभा० ९. रचना, वाचना, धारण करना
 (स्मृति में) १०. भाड़े पर लेना—सम्० १११९२,
 वाञ्छ० ३२३५ ११. काना, या से जाना, उद्—, धारण
 करना, सहारा देना, सहायता—मूलोत्सृष्टिप्रदो—गीत०
 १, सम्—, १ एकन करना, बाँटना, इकट्ठा रखना
 —त्यागय समुत्सर्गानाम्—रघु० १७७, ५१५, ८१३,
 मट्टि० ११८० २ उत्पन्न करना, देना करना प्रकाशित
 करना, सम्पन्न करना—सुरतथमसमृतो नृषो श्वेदकष
 —रघु० ८१५१, कि० ११४९, मेघ० ११५३ संभारन
 करना, पालन-पोषण करना, सुष विलास ४. तैवार
 करना, सम्बन्धित करना—विष्णु० ५, रघु० १५१५४
 ५ देना, अर्पित करना, प्रस्तुत करना ।

मुञ्ज (स) [भ्रूवा कुञ्ज (कुञ् (सु) +ञ्ज्) भाव-
 प्रकीर्ण इयितञ्जपर्वन् वस्य, नि० सत्रसारण] स्त्री का
 शेष प्राणन करने वाला मट ।

मुञ्जि, ही [भ्रूव कुटि (कुट् + झृन्) कौटिल्य, नि०
 सत्र०] भीह । दे० झृ (भ्रू) कुटि ।

मुन् (अव्य०) अग्नि की चटपट आवाज को अभिव्यक्ति
 करने वाला अनुकरणात्मक (शब्द) ।

मुन् [अस्त् + कु, सत्र, कुवन्] एक श्वि जो मनुष्य
 का पूर्वपुरुष माना जाता है, इस शब्द का वर्णन समु०
 १३५ में मिलता है; मनु से उत्पन्न दस नृपपुरुषों में
 से एक (एक बार जब श्विबो को इस बात पर एक
 मत न हो सका कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव में से
 कौन सा देवता ब्राह्मणों की पूजा का श्रेष्ठ अधिकारी
 है तो मनु को इन तीनों देवों के चरित्र का परीक्षण
 करने के लिए भेजा गया । वह पहले ब्रह्मा के निवास
 स्थान पर गया और जानबूझ कर प्रशाम नहीं किया
 इस बात पर ब्रह्मा ने उसे बहुत घटकारा परन्तु कामा
 भांगने पर वह शांत हो गए । उसके पश्चात् वह
 कैलाश पर्वत पर शिव जी के पास गया तथा पहले
 की भाँति प्रशामादि के सिष्टाचार का पालन नहीं
 किया । प्रतिहितापराधम शिव क्रुद्ध होकर मनु का
 उस समय मरम् कर देता यदि मनु शब्दों से मनु ने
 उन्हें शांत न किया होता । (एक दूसरे वृत्तान्त के
 अनुसार मनु का ब्रह्मा ने बादर लतकार नहीं किया,
 इसलिए मनु ने शाप दे दिया कि संसार में उसकी
 आराधना और पूजा नहीं होगी, शिव को भी 'विष्णु'
 बन जाने का अभिशाप दिया क्योंकि जब मनु शिव
 के पास गया तो उस समय वह उससे मिल न सका
 क्योंकि उस समय शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ
 विराजमान थे, अन्त में वह विष्णु के पास गया और

वच उसे छोटा हुआ पाया तो उसने विष्णु को
 छातीपर ठोकर मारी जिससे उसकी अक्षि झूल
 गई । जो श्विदाने के बजाय उस समय विष्णु ने
 मनुका के साथ मनु से पूछा कि कहीं उनके
 पैर में थोटा तो कहीं लथ गई, और यह कहने के
 साथ ही मनु का पैर जनेर मरने लगा । उस
 मनु ने कहा कि वह विष्णु ही सबसे अधिक बलशाली
 देवता है क्योंकि पहले अपने सबसे क्षमिताशाली सस्य
 कृपालता और उदारता से अपना स्थान सबसे प्रमुख
 बना लिया है, इसलिए विष्णु ही सब को पूजा का
 सर्वोत्तम अधिकारी समझा गया) २ अवदनि श्वि
 का नाम ३. कुञ्ज का विशेषण ४. कुञ्ज बहु ५. उत्प-
 न्नात्, इत्यादि कृद्दान मनुपत्तनकारकमनुचक्रम्
 --रघु० ६. समस्त मूमि, पहाड़ की समतल चोटी
 ७. कुञ्ज का नाम । सव्यः—उद्भवः परशु राम का
 विशेषण, -क, लस्य कुञ्ज का विशेषण, -कमव्यः
 १ परशुराम का विशेषण शीरो न वस्य मगमव्यः
 मनुपत्तनोक्ति—उत्तर० ५३३५ २. कुञ्ज—वर्तिः
 परशुराम का विशेषण—मनुपत्तनोक्तिवर्णनं वत्
 कौञ्जलक्ष्यम्—मेघ० ५७, इसी प्रकार मनुष्या पति,
 --संज्ञः परशुराम से प्रकथित श्व, धारः वास्तवः
 कुञ्जकार, नृणा, कानुञ्ज, --वेष्टः--लस्यः परशुराम
 का विशेषण—कुञ्जः—सुनुः १. परशुराम का विशेषण
 २. कुञ्ज का विशेषण ।

मुञ्जः [मु + जन् किय, मुट् च] शीरा -जामि० ११७, रघु०
 ८१५३ २ एक प्रकार की चिरं, उत्तया ३. एक प्रकार
 का पत्नी, भीम राज ४. कम्पट, कानुक, व्यविचारी,
 दु० भ्रमर ५. सोने का कलश, -सन्व बधक, -बी
 शीरी—शुची पुञ्ज पुञ्ज स्त्री वाञ्छित जब नवम् ।
 सव्य०—अव्योच्यः माय का वेष्ट, --अव्योच्यः श्विका वेष्ट,
 -आव्योच्यो शीरी की पाठ, मयिचवों का कुञ्ज, --कन्
 १. अवर २. अन्नक (का) बाँव का पौधा, --पयिका
 छोटी दमावची, --रन्व (पु०) १. एक प्रकार की बड़ी
 मच्छी २. अचरा नाम का पौधा, --रितिः, --रीतिः
 शिव का एक श्व (जो बहुत कुपन कहा जाता है),
 --रीतिः एक प्रकार की चिरं, अलकनः कदव वृक्ष
 का एक वेष्ट ।

मुञ्जारः, रघु [मुञ्ज + अ + जन्] १. सोने का कलश या
 घट २. विशेष वाकार का कलश, शारी विद्विध
 शुरामि-सामिक पूर्वोत्तम मुञ्जारः -शेषी० ९ ३. राज्या-
 मयिके के कक्षर पर इक्षुत किया जाने वाला पत्ता,
 --सन् १ स्वर्ण २. भीष ।

मुञ्जारिका, मुञ्जारी [मुञ्जार + कन् + टप्, इत्यन्] शीमूर ।
 मुञ्जिन् (पुं०) [मुञ्ज + इनि] १. घट वृक्ष २. शिव के एक
 श्व का नाम ।

भुङ्गिरि (री) सिः [भुङ्ग + र्दृ + इत्, घृषो० साधु] दे० भुङ्गिरि ।

भुङ्गेरिदि [भुङ्गे + र्दृ + इत्, अथुक् क०] शिव के एक गण का नाम ।

भुष् (भा० आ० भर्षेते) भूकना, तलना ।

भूषिका [= भिरुषिका, घृषो० साधु] एक प्रकार का भूषणी का पीषा ।

भूषिकः (स्त्री०) [?] कहर ।

भूत ((भू० क० क०) [भू + क्त] 1. धारण किया हुआ 2 सहारा दिया हुआ, सहायित, पालन पोषण किया गया, दूष मिला कर पाला गया 3 अधिकृत, ललित, सज्जित 4. परिपूर्ण, भरा हुआ 5 भाड़े पर किया गया, बेंतनिक, —क भाड़े का नौकर भाड़े का टट्ट, बेंतनभोगी, —उत्तमस्तम्भभोगीयो यो मध्यमस्तु कुषीभल., अथमो भारवाही स्वार्थिपथ भिविधो भूत —मिता० ।

भूतक (वि०) [भूत भरण बेंतनभूषणीवति क्त] मजदूरी पर रक्ता हुआ, बेंतनिक, —क भाड़े का नौकर । सम० —अध्यापकः भाड़े का अध्यापक, —अध्यापित (वि०) भाड़े के अध्यापक द्वारा चिह्नित (स्त) वह विद्यार्थी जो अपने अध्यापक को फीस देकर पढ़ा है (आधुनिक काल का फीस देकर पढ़ने वाला विद्यार्थी) मनु० ३।१५६ ।

भूतिः (स्त्री०) [भू + क्तित्] 1 धारण करना, सहायना, सहारा देना 2 सहायन, सहायण 3 नेतृत्व करना, मार्ग-प्रदर्शन 4. परवरित, सहायता, सपोषण 5 आहार 6 मजदूरी, भाड़ा 7 भाड़े के बदले सेवा 8 पूजा, मूलधन । सम० —अध्यापणम् बेंतन लेकर पढ़ाना (विशेषत 'बेदाध्ययन'), —भूष् (पु०) बेंतनभोगी नौकर, भाड़े का टट्ट, —कणम् किसी विशेष काम के लिए पारिश्रमिक के बदले दिया जाने वाला पुरस्कार ।

भूष (वि०) [भू + भूषणं क्त] जिसकी परवरिग की जानी चाहिए, पालन-पोषण किये जाने के योग्य, 1 कीर्ती भी महापता चाहते वाला व्यक्तित्व 2 नौकर, आशयी, दास 3 राजा का नौकर, राज्य मन्त्री, तथा पालन-पोषण करना, दूष मिलाया, परवरित करना, देखभाल करना —कैफि 'कुमारभूष' में 2 सहायण, सपोषण 3 बौधित रहने का साधन, आहार 4 मजदूरी 5 सेवा । सम० —अनः 1 सेवक, पराश्रित 2 सेवकजन, अर्णु (पु०) कुल का स्वामी कवीः सेवकों का समूह, —अस्तम्भभू नौकरों के प्रति कृपा, भूतिः (स्त्री०) नौकरों का धरण-पोषण मनु० १।१० ।

भूषित (वि०) [भू + क्तित्] पाला पोसा गया, परवरित किया गया ।

भूषिः [भूष् + इ, सप्र०] भवर अलावतं ।

भूष् (विदा० पर० भूषयति) नीचे गिरना, दे० अयु ।

भूष् (वि०) [भूष् + क्त] (म० अ० भूषोयम्, उ० अ० भूषयिष्) मजबूत, शक्तिशाली, ताकतवर, गहन, अत्यधिक, बहुत ज्यादा, अयु (अयु०) 1 ज्यादा, बहुत ज्यादा अथवा, सहारा देने के साथ, प्रवृत्तता के साथ, अत्यधिक, बहुत ही अधिक, बहुत करके 'म-वेद्य हरीद सा भूष्म् कु० 4।२५, रघुभंग वक्षति तेन तावित्' रघु० ३।६१, चुकोप तस्मै स भूष्म ३।५६, मनु० ७।१००, श्वेतु० १।११ 2 प्राय, बार-बार 3. अपेक्षाकृत अच्छी रानि में । सम० कोषण (वि०) अत्यन्त छोपी, दुखित, —पोषित (वि०) अत्यन्त कष्टग्रस्त, सहृष्ट (वि०) अत्यन्त पमन ।

भूष् (भू० क० क०) [भूष् + क्त] तला हुआ, भूना हुआ, सला हुआ । सम० अन्धम् उबाला हुआ या तला हुआ धान्य, अन्न —घषाः (घ० व०) भूने ढूँ जो ।

भूष्टिः (स्त्री०) [भूष् + क्तित्] 1 तलना, भूना सेकना 2 उजडा हुआ भाग या उपधन ।

भू (शुदा० पर० भूषाति) 1 धारण करना, परवरित करना, सहाय देना, पालन-पोषण करना 2 तलना 3 कलकित करना, निन्दा करना ।

भूक [भू + क्त] भेदक, —पट्टे निम्नत्व वर्जित भेक। भवति भूष्यं 2 उरूपोक्त आयुषी 3 धारण को 1 छोटा भेदक 2 सेवकी । सम० भूष् (पु०) सौय, रब, —शब्द भेदकों का टराना ।

भूष [भू + इ] 1 भेदा, भेद 2 बेधा घनई ।

भूषः [= भेद, पयो० साधु०] भेदा ।

भूष [भू + क्त] 1 टट्टना, टुकडे टुकडे होना, फाड़ना, (कष्टवचन) आघात करना 2 बीगना, फाड़ना 3 विभक्त करना, विभूक्त करना 4 बीघना, छिद्रण 5 भग, बिहाण 6 बाया, बिल 7 विभाजन, विधो-जन 8 छिद्र, गर्त, विवर, दरार 9 घाट, क्षति घाव 10 गिन्नाता, अन्त-नवाग्नेयशक्तिपरिणाम में भूष्० ३।९९, अगीन्वभेदेन —कु० ६।१२, भूष्० १।८।१९, २९, रस, काल आदि 11 परिचयन, विकार बुद्धिभेदम् अयु० ३।१० 12 फूट, असहर्षति 13 विवृति, भेद खोलना अथवा कि 'रहस्यभेद' में 14 विद्यासघात, देशद्रोह 15 किरम, प्रकार भेदा पदसमादयो विधे-अवर० शिरीषपुष्पभेद 16 डैनवाद (राजमय में) शत्रुघ्न में फूट डालकर उसकी जीर्ण कर किसी की ओर करना, यन्त्र के बिच्छु सफलता प्राप्त करने के बार उपायों में से एक दे० 'उपाय' और 'उपाय-अनुष्ठय' 18 पराजय 19 (आयु० में) रेषन शिव, अन्त कोट प्राप्त करना । सम० —अभोगी

(दि० व०) 1 फूट और मेल, अवहृत्पति और सह-
पति 2 भिन्नता और एककता - भेदाभेदज्ञानम्
उत्पन्न (वि०) फूटने वाला, खिलने वाला विक्रम०
२७. **भर**, **भृत्** (दि०) फूट के बीज होने वाला
- **भक्षिन्** - **भृक्षि**, **भृक्षि**, (वि०) विषय को परमात्मा
से भिन्न समझने वाला, - **भक्ष्य**. हेतुवाद में बिद्वान्,
- **बाधिन्** (पु०) जो इतं विद्वान् को मानता है, - **सह**
(वि०) 1. जो विभक्त या विपुक्त हो सके 2 कलु-
चित होने योग्य, दृग्गोच्य, प्रलोभन द्वारा जा फनाया
जा सके ।

भेदक (वि०) (स्त्री० - **क्षिका**) [भिद् + कृत्] 1 तोड़ने
वाला, लच्छ लच्छ करने वाला, विभक्त करने वाला,
अलग अलग करने वाला 2 बीजने वाला, छिद्र करने
वाला 3 मष्ट करने वाला, विनाशक 4 भेद करने
वाला, अन्तर करने वाला 5 परिभाषा देने वाला,
क विभोग्य या विभेदकारी विशेषता ।

भेदनम् [भिद् + कृत् + क्त] 1 टुकड़े-टुकड़े करना, तोड़ना,
फाड़ना 2 बाँटना, अलग-अलग करना 3 भेद करना
4 फूट के बीज बोना, मनमूढाव पैदा करना 5 मग कर,
शिथिल करना 6 उधाड़ना, खोलना, - **भ** यूरश् ।

भेदिन् (वि०) [भिद् + णिनि] तोड़ने वाला, विभक्त करने
वाला, भेद करने वाला आदि ।

भेदिकम्, **भेदुरम्** [भिद् + किरच्, कुरच् वा, पृथो० गुण]
वच ।

भेद्यम् [भिद् + ष्यन्] विशेष्य, सहा । सम० - **क्षिन्** (वि०)
लिंग द्वारा जा पहचाना जा सके ।

भेर [विभोग्यमान् - भो + रन्] घोसा, ताशा (बड़ा डाल) ।
भेरि - **री** (स्त्री०) [भी + क्तिन्, वा० गुण, भेरि + टोप]
घोसा, ताशा (बड़ा डाल) । भग० १।१३ ।

भेदक (वि०) भगवत्क, भयवृत्त, इगवता, भयकर, इ
पक्षियों का एक भेद, इन्म गर्भोधान, गर्भस्थिति ।

भेदक [भेदक + कन्] मीरद, शृगाल ।

भेद (वि०) [भी + रन्, रयञ्] 1 इरपोक, भेद
2 मूर्ध, अनज्ञान 3 अस्मिन्, चचल 4 लबा
5 कुर्त्तिया, चून् - ल नाव, वेडा चिपई ।

भेदक, - **कम्** [भेद + कन्] नाव, वेडा ।

भेद्य (भा० उभ० - **भेद्यति**) इरना, चल हाता भय-
भीत होता ।

भेदक [भेद रोगमय जराति - जि + इ हागा०] औषधि,
भेदक या दवा नगनम् प्रान्त्वामिह परम भेदक-
मति - भा० १५, अतिवीर्यवती भेदके बहुशब्दीयति
दृष्टते गुण कि० २७ 2 विक्रिन्ना या इलाज
3 एक प्रकार का माया । सम० - **अ** (आ) वाट,
रम् अन्तर (औषधिक्रिया) की दुकान, - **अज्ञान्**
कोई बीज जो दवा खाने के बाद ही जाय ।

भेद (वि०) (स्त्री० - **क्षी**) [भिर्त्वं तत्समूहो वा - अण्]
भिक्षा पर जीवन-निर्वाह करने वाला, **कम्** 1 मागना
मील - मनु० ६।५५, यात्र० ३।५२ 2 जो कुछ
भिक्षा में प्राप्त हो, भोज, दान - भेदणं वर्तयेन्नित्यम्
मनु० २।१८८, ४।५ । सम० - **अज्ञम्** भिक्षा में
प्राप्त आहार, भिक्षा का अन्न, - **आधिन्** (वि०) भिक्षा में
प्राप्त अन्न को खाने वाला, (पु०) भिक्षारी, साधु,
- **आहारः** भिक्षारी, - **कास** भोज मागने का समय,
हरणम्, - **धर्मम्**, - **धर्मा** भोज मागने के लिए
इधर उधर फिरना, भोज मागना, भिक्षा एकत्र करना,
भीषिका, - **क्षि** (स्त्री०) भिक्षारीपन, - **भृष्** (पु०)
भिक्षारी, भियमया ।

भेदकम्, **भेदकम्** [भिद्वया समूह - अण्] भिक्षारियों का
समूह ।

भेदक [भिक्षा + ध्यञ्] माग कर प्राप्त किया हुआ अन्न,
भिक्षा, भोज, दान दे० 'भेद' ।

भेद (वि०) (स्त्री० - **क्षी**) [भीम + अण्] भीमविषयक,
- **क्षी** 1 भीम की पुत्री, नक्ष क्षी पत्नी दमयन्ती का
पितृपरक नाम 2 माय मुखला एकादशी, या उन
दिन किया जाने वाला उत्सव ।

भेदसेवि, - **स्य** [भीमेन + इन्, अय वा] भीमसेन का पुत्र ।

भेदक (वि०) (स्त्री० - **क्षी**) [भी + अण्] 1 भवानक,
इगवता, भोषण, प्रवाह 2 भैरवसम्बन्धी, - **व** शिव
का (इसके आठ रूप गिनाये गये हैं) एक रूप ।

- **क्षी** 1 दुर्गादेवी का एक रूप 2 हिन्दू-सगीत पद्धति
में एक विशेष गायिकी का नाम 3 बारह वर्ष की
कन्या या बालिका जो दुर्गा-पूजा के उत्सव पर दुर्गा
का प्रतिनिधित्व करे, - **इन्म** नाम, भीषणता । सम०
- **इन्म** विष्णु का विशेषण, शिव का विशेषण, - **सर्वक**,
- **वात्म** काशी में जाकर शरीर त्यागने वाले
व्यक्तियों की आस्था को परमात्मा में लीन होने के
लिए उनको दी जाने वाली यातना ।

भेदकम् [भेदक + अण्] औषधि, दवा, - **क** लबा पत्ती,
नावक ।

भेदक [भिदक कर्म भेदक + स्वार्थ वा ध्यञ्] 1
औषधिवा देना, विक्रिन्ना करना 2 दवादाक,
औषधि, दवाई 3 आरोग्यशक्ति, नैरोगकारिता ।

भेदक [भीष्मक + अण् + क्षी] विदर्भराज भीष्मक की
पुत्री, सविमयी का पितृपरक नाम ।

भेदक (वि०) [भृष् + कृत्] 1 उपभोक्ता 2 कन्या
करने वाला 3 उपभोग में खाने वाला, प्रयोक्ता
4 महामुस करने वाला, अनुभव करने वाला, भोगने
वाला, (पु०) 1 काविक, उपभोक्ता, उपभोक्ता 2
पति 3 राजा, शासक 4 प्रेमी ।

भोग [भुज् + भञ्] 1 माना, खा पी जाना 2 सुको-
पयोग, आस्वाद्य 3 स्वाभिव्य 4 उपयोगिता, उपादे-
यता 5 हकमत करना, शासन, सरकार 6 प्रयोग,
(बरोहुर कोवि का) व्यवहार 7 भोगना, सेवना,
अनुभव करना 8 प्रतीति, प्रत्यक्षज्ञान 9 स्त्रीसभोग,
सैभुन, विषयसुख 10 उपभोग, उपभोग की वस्तु
—भोगे रोचभयम् भन् ० ३१३५, भय० ११३२
11 भोजन, खाद्य, भोज 12 आहार 13 नैवेद्य
14 लाभ, फायदा 15 आय, राजस्व 16 धनसर्पण
17 वेपथ को दी गई मजदूरी 18 वक्र, घुमाव, चक्कर
19 सौप का फैलाया हुआ कप—ध्वनदमितभ्रजङ्ग-
भोगाङ्गदवन्धि आदि—ना० ५१२३, रघु० १०७,
११५९ 20 सौप। सम०—अहं (वि०) उपभोग्य
(रूप०) सर्पति, दौलत, —अष्टम्युजनाय, अथ,—आधि
सत्यक में रखी हुई वस्तु जिसका उपभोग नर तक
किया जाय जब तक कि वस्तु छुड़ाई न जाय,—आबली
किसी व्यावसायिक प्रयत्नितवाचक द्वारा स्तुतिगान—
नम स्तुतिव्रतस्तस्य धपो भोगान्धो भवेत्—देय०
—आवासः जनानवाना, अन्त पुर,—कर (वि०)
सुसद या उपभोग्यद,—गुरुभम् वेपथको का दी गई
मजदूरी,—गुरुम् महिलाकस, अन्त पुर, जनानवाना,
—कथा सासायिक उपभोगी की दृष्ट्या—तदुपाभ्यत-
मपहोदय पितृगर्भित न भोगतुष्ण्या—रघु० ८१२,
'स्वायंपूर्ण उपभोग' मा० २,—हृः 'भोग-वारी'
सूक्ष्मवारी या कारणवारी जिसके द्वारा व्यक्ति
परलोक में अपने पूर्वकृत सुभासुभ कर्मों का मधुदुःख
भोगता है,—धर सौप,—धर्मः राज्यपाल या विपया-
धिति,—वास, माईन,—पिशाचिका भय,—अतक
जी केचन जीविना के लिए नौकरी करता है, वस्तु
(रघु०) उपभोग की वस्तु या पदार्थ,—सधन (रघु०)
भोगावास, दे०,—स्वानम् 1 उपभोग का आनन गरीर
2 अन्त पुर।

भोगवत् (वि०) [भोग + भवत्] 1 सुख, प्रसन्नता
देने वाला, सुखी देने वाला 2 प्रसन्न, समृद्ध ३ बक्र-
वाला, मकलाकार, कुण्डलाकार, (ए०) 1। सौप
2. पहाड़ 3 नृत्य, अभिनय, और गायन—(स्त्री०-
ती) 1 पालक वृत्ता का विशेषण 2 सर्पिशाचिका
3 पालक लोक में नाय—पिशाचिकाओ का नवर
4 चांद्रमान की द्वितीया तिथि की गत।

भोगिक [भोग + इत्] माईन, घाटे का ग्धवाला।

भोगिन् (वि०) [भोग + इति] 1 वाने उष्ण 2 रघु-
भोग्ना 3 भोगने वाला, अनुभव करने वाला, महन
करने वाला 4 उपभोगना, स्वायं—इत उपभवन
चार अर्था में (सनात के अन्त में प्रयोग) 5 माइताय
6 फणदार 7. उपभोग में मन्त्र, विषयवाचननात्रा में

लिखत—पच० ११६५, (यहाँ इसका अर्थ 'काम में
युक्त' भी है) 8 घनाइय, सम्पत्तिगामी, (ए०)
1 सौप गजानिनासिद्धि पिनद्धभाति का कु० ५।
७८ रघु० २१२२, ४४४८, १०७७, ११५९ 2 गजा
3 विपयी 4 नाई 5. सौप का मुर्तिया 6 आनन्देपा
नक्षत्र,—नी राजा के अन्त पुर की स्त्री जो रानी के
रूप में अभिविष्णु न हो, रत्न, उपगली 1 सम०
—इन्द्र,—इशः शेष या साम्कि,—काम्नी वायु, हवा,
—अङ्ग (ए०) 1. नेचल 2 मोर, बल्लभम् चदन।

भोग्य (वि०) [भुज् + भ्यत्, कृष्णम्] 1 उपभोग के
योग्य, या वाम में लाये योग्य—रघु० ८११८, पच०
१११७ 2 भोगने योग्य या महन करने लायक
—मेघ० १ 3 आभदायक,—ध्वम् 1 उपभोग का
कोई पदार्थ 2 दौलत, सम्पत्ति, जावदार 3 अजरा,
अन्न, ग्रा वेपथा, शारागना।

भोज [भुज् + जन्] 1 मानवा (या वागा) का प्रसिद्ध
राजा, (ऐसा माना जाता है कि राजा भोज इसकी
शताब्दी के अन्त में या ग्वागरी गजद्वी के आरम्भ
में हुए थे, वे मस्केन ज्ञान के बड़े अभिजासक थे, भर
म्बनीकदाअर्थ आदि कई वषा का उन्हें प्रणेता ममप्रा
जाना है) 2 एक देश का नाम 3 विदमें के राजा का
नाम भाजन हुता रथके हिमरु—रघु० ५१३, ७।१
—०९ ३५, आः (ए० ब० ब०) एक ज्ञान का
नाम। सम०—अधिष क्त का विशेषण --इन्द्र-
भोजी का राजा,—कटम् स्वमी द्वारा स्थापित एक नगर
का नाम, श्रेष्ठ, राज। राजा भाज दे० (१) उपर
—वर्ति 1 राजा भोज, 2 क्व का एक विशेषण।

भोजनम् [भुज् - स्युट्] 1 माना, भोजन करना,—अज्ञीयो
भाजन नियम् 2 आहार 3 भाजन (स्थान के लिए)
देना, खिलाता 4 उपभोग करना, उपभोग करना
5 उपभोग की ग्वाग्नी 6 त्रिकका उपभोग किया
जाय 7 सर्पति, दौलत, जायदार, न. शिख का विवि-
ण। सम०—अधिकार चार का कार्यभार, वाच-
गाम्यो का अधीनत्व, कार्यपक्ष का पद—आच्छादनम्
वाना-रूपडा, काल, श्रेष्ठ, सख्य भोजन करने
का समय याने या समय स्थान आहार का त्याग,
जामल भूमि (स्त्री०) भोजनकक्ष, याने का कमरा,
विशेष स्वादिष्ट भाजन, विविष्ट भाजन, कृष्णि
(स्त्री०) भोजन, आहार, श्रेष्ठ (वि०) याने में
धान्य, ध्वय याने-पाने का मन्त्र।

भोजनीय (वि०) [भुज् अनौपत्] उपभोग्य, याने योग्य,
यय आहार।

भोजयिन् (वि०) [भुज् जिन् + त्] जो दूसरी को
भाजन कराये, पिनकाने वाला।

भोज्य (वि०) [भुज् + भ्यत्] 1 जो खाया जा सके

2 उपभोग के योग्य, अधिकार में करने के योग्य
3 भोगने के योग्य, अनुभव करने लायक 4 समोग
मूल के योग्य, -अन्व 1 आहार, खाना—न्व भोक्ता
अहं ब भोक्ष्यमान—न्व० २, कु० २।१५, मनु० ३।२४०
2 लाघ नामभूत का भटार, कृष्ण पदार्थ 3 स्वादिष्ट
भोजन 4 उपभोग । मय०— काकः भोजन करने का
समय, - संखः आमरस, शरीर का प्राथमिक रस ।

भोक्ष्या [भोज्य+टाप्] भोज की एक गणी—रघु० ६।५९
७।२, १३ ।

भोटः एक देश का नाम, (कहते हैं कि तिब्बत का ही यह
नाम है) । मय०—अर्थः 'मटान' कहलाने वाला प्रदेश ।

भोटीय (वि०) [भोट+छ] तिब्बतवासी ।

भोलीरा (स्त्री०) भूया जिह्वुम् ।

भोत् (अर्थ०) [भा+भोत्] सभोषण सूचक अर्थय
जिसका अनुवाद होता है 'भरे, भो, बहो, ओह, आह'
क कोष्ठ में ष० २, (स्वर वा सभोषं व्यञ्जन परे
होने पर पदान्ति विनाई का लोप हो जाना है) अर्थ,
आमहपिपुत्र—श० ७, कवी—कवी इनकी दोहुराया जाना
है भो भो सकरन्वृहाधिसानिने जानपदा मा० ३,
इसके अनिर्दिष्ट 'भो' का प्रयोग 'भोक्' तथा 'प्रव-
वाचकता' के लिए भी होता है ।

भोजङ्ग (वि०) (स्त्री०) लो । [भुजङ्ग+अण्] सर्पिल,
भाग जैसा मधु 'प्राधरेया' नामक नखर ।

भोट्ट [भोट+अण् पूर्वा०] तिब्बती, तिब्बतवासी ।

भौत (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [भूतानि प्राणिनोऽपि कृत्य
प्रवृत्त, नाति देवता वा अर्थ अण्] 1 भौतिक प्राणियों
में सम्बन्ध रखने वाला 2 मूलभूत, भौतिक 3 पंचाधिक
4 पालक, विसिद्ध, -तः भूतप्रेत व पिपासो की पूजा
करने वाला, देवल, पुजारी, -तम् भूत-प्रेतो का समूह ।

भौतिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [भूत+ठक्] 1 जीवित
प्राणियों में सम्बन्ध रखने वाला— मनु० ३।७४ 2 स्थूल
तत्त्वों में निर्मित, भौतिक, भौतिक—पिरेष्वनास्था
गल भौतिकेषु—रघु० २।५७ 3 भूत-प्रेतो में सम्बन्ध
रखने वाला, -कः शिव का नाम, -कम् भौती ।
मय०—सठ—विहार, विद्या आश्रम, अभिचार ।

भौष (वि०) (स्त्री०) [भूमि+अण्] 1 पृथिवी 2 पृथ्वी
पर होने वाला, मिट्टी का बना हुआ, लौकिक - भौषो
मुने स्थानपरिग्रहोऽयम्—रघु० १३।३६, १५।५९
3 मिट्टी का, मिट्टी से निर्मित 4 मगल से सम्बन्ध,
—मः 1 मगलग्रह 2 नरकामुद्र का विशेषण 3 जल
4 प्रकाश । मय०—विषय, -वारः, वास्तवः मगल-
वारः—वि० १५।१०, -रत्नम् भूया ।

भौषणः [भूमि+अण्] देवों के पाली विषयकारों का नाम ।

भौषिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [भूमि+ठक् यत् वा]
भौष्य (वि०) [भू+अण्] 1 पृथिवी, लौकिक, पृथ्वी

पर रहने वाला वा विषयमान ।

भौरिकः [भूमि सुवर्णमधिकरोति - ठक्] राजकीय कोश में
सुवर्णोष्ण, गोधाष्ण ।

भौषणः दे० भौषण ।

भौषाधिक (वि०) (स्त्री—स्त्री) [भूषा+ठक्] भूषाधि
अर्थात् भू से आरम्भ होने वाली वस्तुओं से सम्बन्ध
रखने वाला ।

भ्रंश (भ्रा० वा, दिवा० पर०) भ्रष्टते, भ्रष्टयति, भ्रष्ट
(अधिकर०) अया० के साथ 1 गिरना, टपकना, उलट
जाना,—हस्ताक्षरप्रतिष्ठा विद्याधरजम्—वा० ३।२६
2 गिरना, विचलित होना, अक्षय कूट जाना
—युवाक्षुभ्रष्ट—हि० ४, रघु० १४।१६ 3 बन्धित
होना, लो देना—बन्धोऽती धृतेस्ततः—मट्टि०
१४।७१, पञ्च २।१०८ ४।३७ 4 बन्ध निकलना, भाग
जाना,—सत्त्वामात् बन्धु केषिणु—मट्टि० १४।१०५,
१५।५९ 5 लीप होना, मुझाना, घटना 6 भौतिक
होना, नष्ट होना, अलग होना—मालवि० १।८, १२,
प्रे० ३ प्रथयति—ते । गिरना, पछार देना 2 बन्धित
करना, परि—, 1 गिरना, टपकना, उलटना,
फिसलना 2 बहकना, टपकना 3 अलग हो जाना,
पचभ्रष्ट होना, विचलित होना 4 खोना, बन्धित
होना—मनु० १०।२० म—, 1 गिरना, टपकना
फिसलना,—प्रथयमानाभरणप्रयुक्तम्—रघु० १४।५४
2 खो देना, बन्धित होना—प्रथयते तेजः—मनु०
१।१४, प्रे० पछार देना, नीचे डालना, नीचे गिरना
रघु० १३।३६, वि—, 1 गिरना, टपकना
2 बर्बाद होना, लीप होना 3 गिरना, घटना,
पचभ्रष्ट होना 4 लो देना ।

भ्रंशः—सः [भ्रंश भावे षञ्] 1 गिर पड़ना, टपक
पड़ना, गिरना, फिसलना, नीचे गिरना—सौष्ठव्य न
भ्रंशमती न लोमानु—रघु० १५।७४, कनकवलय-
भ्रंशरिचनप्रकोष्ठ—मेष० २ 2 लीप होना, घटना,
ह्रास होना 3 पतन, नाश, बर्बादी, विच्छेद 4 भाग
जाना 5 भौतिक हो जाना 6 लो जाना, हानि,
बन्धना—स्मृतिप्रभात् बुद्धिनाशः—मय० २।६३
इसी प्रकार 'जातिभ्रंश' 'स्वार्थभ्रंश' 7 भटकने वाला,
भ्रष्ट हो जाने वाला, विचलित ।

भ्रंशयुः [भ्रंश+अण्] दे० 'प्रथयणु' ।

भ्रत (भ्र०) न (वि०) (स्त्री—स्त्री) [भ्रंश+स्यट्]

1 नीचे पेंक देने वाला,—मनु 1 गिर पड़ने की किया
2 गिरना, बन्धित होना, लो देना ।

भ्रंशित् (वि०) [भ्रंश+णिनि] 1 नीचे गिरने वाला,
पतनशील 2 जीप होने वाला 3 भटकने वाला
4 बर्बाद होने वाला, नष्ट होने वाला ।

भ्रंशुः—दे० 'भ्रत' ।

अनुक्तः [बुधा बुधो भाषण यस्य इ० सं०, अकारादेशः]
स्त्री की बेशभूषा में नट (नाटक का पात्र) ।

अभू (भ्या० उभ० प्रथति—ते) खाना, निगलना ।

अभ्रमन् [अह्रन् + ह्यट्] तलने की क्रिया, भूलना, सेकना ।

अभ्रु (भ्या० पर० प्रथति) गन्ध करना ।

अभ्रवा—दे० भ्रूम ।

अभ्रु (भ्या० विद्वा० पर० प्रथति, अभ्रयति, अभ्रम्यति, भ्राता) 1. इधर उधर घूमना, हिलना-डुलना, मारा मारा करना, टहलना, (आल से भी)—अभ्रमति भ्रुवने कम्पयति—मा० १११५, मनो निष्ठापूष्य अभ्रमति च किमप्यालिनति च—३१, (बहुधा स्वान में कर्म) भ्रुव बभ्राव—दश०—विद्वन्पण्डित उरति मानस चापसेन—मत्स्य० ३१७७, इसी प्रकार भिन्नां अभ्रु 1 इधर उधर भाँसे फिरता 2 भ्रुवना, चक्कर काटना, घूमना, बर्तुलाकार गति होना—सूर्यो अभ्रमति नित्यमेव गगने—मत्स्य० २१९५, भ्रमता भ्रमरेण—गीत० ३, 3 भटक जाना, भटकाना, इधर-उधर होना, विचलित होना 4 इयमयाता, लडखडाना, डाबाडोल होना, संदेह की अवस्था में होना, भ्रमकना मा० ५१२० 5 भूल करना, भूल में डलना होना, गलती पर होना,—आमरणकारस्तु तालव्य इति बभ्राव 6 कुत्तुराणां, इयमयाता, कापना, चक्कर होना—बभ्रु-भ्रम्यति—पञ्च० ५१७८ 7 घेरना,—प्रेर० (अभ्रयति—ते, अभ्रयति—ते) टहलाना, फिराना, घूमना, चक्कर दिसाना, आवलित करना—अभ्रय जलशयान भोगयन्ति—मा० ११४१ 2 भ्रुवना, भ्रम में डालना, घूमना, भ्रमण करना, उड्डिन करना, झगड़ में डालना, चक्कर देना, डाबाडोल करना—विकारवर्षितस्य अभ्रयति च मनीलयति च उत्तर० ११३५ 3 लडखडाना, (तलवार) घूमना, दोनाघमान करना—मीलारविन्द अभ्रयान्चकार—रघु० ६१३ उभ्रु, 1 अभ्रमण करना, इधर उधर घूमना, गडबडा जाना—धावत्युभ्रमति प्रमोलीत पतयद्यपि मूढस्यपि—गीत० ४ 2 भ्रुवना, भूल में पडना 3 विस्मय होना, आकुल होना—रघु० २१७५, वरि 1 टहलना, घूमना, भ्रमण करना, इधर-उधर हिलना-डुलना—परिभ्रमति कि बुधा स्वचन चित्त विध्रम्यताम्—मत्स्य० ३१३० 2 भ्रुवना, चक्कर लगाना—परिभ्रमन्मूर्खव्यदपदाकुल—कि० ५११४ 3 घूमना, घेरकम्प करना, घुबना, 4 घूमना, मारा मारा फिरना (कर्म) के साथ) 5 घोरना, प्रदक्षिणा करना, वि—, 1. घूमना, इधर उधर चक्कर काटना 2. भ्रुवना, आवलित होना, चक्कर खाना 3 उडा देना, तितर भितर करना, इधर उधर बखेरना 4 गडबडा जाना, लडखडित होना, आकुल होना,

विस्मित होना—मय० १६११९, (प्रेर०) घबरा देना, उड्डिन करना प्रभामतदचक्रो जगदिदमहो विध्रम-यति—काव्य० १०, सव—, 1 घूमना, टहलना 2 गलती पर होना, आकुल होना, उड्डिन होना, घबडा जाना ।

अभ्रः [भ्रु + अच्] 1 घूमना, टहलना, चक्करकरी करता 2 चक्कर खाना, आवलित होना, घूम जाना 3 चक्कार गति, परिक्रमा 4 भटकना, विचलित होना 5 भूल, गलती अशुद्धि, चलनकहबी, भ्रान्ति—शुक्रो रत्नार्थमिति ज्ञान भ्रम 6 गडबडी, आकु-लता, उलझन 7 अवर, जलावत 8 कुम्हार का चक्र 9 चक्की का पाट 10 झराद 11 घूर्ण 12 फौवार, जल प्रवाह । मय०—आकुल (वि०) घबराया हुआ,—आसक्त सिक्कीपर, दम्पपार्श्वक ।

अभ्रमन् [भ्रु + ह्यट्] 1 इधर-उधर घूमना, टहलना 2 भ्रुवना, कान्ति 3 विचलन, पथभ्रान 4 कापना, इयमयाता, चक्करना, लडखडाना 5 गलती करना 6 घूर्णन, घुमेरी,—श्री 1 एक प्रकार का खेल 2 जीक ।

अभ्रत् (वि०) [भ्रु + शत्] घूमना, टहलना आदि । मय०—कुटी एक प्रकार का छाना ।

अभ्रर [भ्रु + कर्त्] 1 मधुमक्खी, शींग—मल्लिनेऽपि रामपुरां विकसितवदनामनन्तुजन्नेऽपि, स्वयि चरलेऽपि च मरणा भ्रमर कथं वा मरोगेऽपि त्यजति—भाषि० ११०० (यहाँ द्वितीय अर्थ भी सुझाया जाता है) 2 प्रमो, मीन्वयंप्रेमो, लम्पट 3 कुम्हार का चाक, 4 घूर्णन, घुमेरी । मय०—अतिभिः चम्पा का पीषा,—अभिलोने (वि०) मक्खियों में लिपटा हुआ, रघु० ३१८,—अलक मन्त्रक पर की लट,—ह्यट्ः क्यानाक का वृक्ष,—उत्सवा माधवी लना, करण्डका मक्खियों से भरी हुई पेटों (इसे चोर अपने साथ रखते हैं और जब चोरी करने जाते हैं तो इन मक्खियों को छोड़ देते हैं जिन्में कि यह बनी बुझा में)।—कीटः भिरो की जाति,—विष्ट दम्ब वृक्ष का एक भेद,—श्राधा भोरे हाग मनाया जाना—म० १,—अच्छकम् मक्खियों (भीरो) का झुंड ।

अभ्ररक [अमर + क्] 1 शींग 2 जलावत, भ्रवर,—इ,—कम् 1 मन्त्रक पर लटकने वाली बाली की लट 2 ललने के लिए गेट 3 कट्टू ।

अभ्ररिका [अमरक + टाप् इवम्] सब दिशाओं में घूमने वाली ।

अभिः (स्त्री०) [भ्रु + इ] 1 आवर्तन, मोड़, चक्कर गति, इधर-उधर घूमना, कान्ति—उत्तर० ३११९, ६३, मा० ५१२३ 2 कुम्हार का चाक 3 झरादी की झराद 4 भ्रर 5 बखर 6 गोलाकार सैनिक—कम्-व्याख्या 7 भूल, गलती ।

अश्व दे० अश्व ।

अश्विनम् (पु०) [भ्राश्वन् भावः इयन्विष्, ऋतो र] प्रबद्धता, अत्यधिकता, उद्यता, उत्कण्ठता ।

अश्वत्थ (वि०) [अश्व् + श्वत्] १ पतित, नीचे पड़ा हुआ २ तिरा हुआ ३ चटका हुआ, विचलित ४ विद्युत्, वज्रित, निकलाने, निकाला हुआ—यथा 'अश्वत्थ-घिकार' में ५ मुक्तियां हुआ, क्षीण, बर्बाद ६ जोड़ल, जोड़ा हुआ ७. पुत्रधरित्र, वृषितधरित्र । सम० —अधिकार (वि०) अपनी शक्ति या पर से वज्रित, परभ्यत्, - क्वि (वि०) विहित कर्मों को जिसने नहीं किया, —गृह (वि०) एक प्रकार के गुदरोम से प्रस्त, बीच जो धर्मभ्यत् हो गया हो ।

अश्वत्थ (पु०) उभ० - भुज्जति, भुष्ट - प्रेर० भ्रंजयति - तै, अजयति तै, इच्छा० विभर्षति विभर्षयति, विभर्षयति) लक्ष्मणा, भुजना, सेकना कील पर मास भुजना, (आल० में भी) -अश्वत्थ निहने नमिन्मू लोको रावणममिन्वत् - अश्व० १४।८६ ।

अश्वत्थ (स्वा० भा०) आजते) चमकना, दमकना, धम- धमना, जगमगना - इत्युभयोरिरे केषुं संतुपा हरिग- लक्ष्मणा अश्व० १४।७८, १५।२४, वि जगमग करना, देदीप्यमान होना - विभाजसे मकरकेतनमर्ष- यन्ती रत्न० १।२१ ।

अश्वत्थ (अश्व् + श्व) नाम सूचों में से एक, - अश्व एक प्रकार का नाम ।

अश्वत्थ (वि०) (स्त्री०-जिका) [अश्व् + श्वत्] चमकाने वाला, देदीप्यमान, कम्पित, त्वका में व्याप्त पिल ।

अश्वत्थ (अश्व् + अश्वत्) आना, कानि, उज्ज्वलता, पोन्दमें ।

अश्वत्थ (वि०) [अश्व् + श्वत्] चमकाने वाला, जगमगाने वाला ।

अश्वत्थ (वि०) [अश्व् + श्वत्] चमकाने वाला, देदीप्य- मान, उज्ज्वल, दीनिकेन्द्र, - श्वत्, १ शिब का विशेषण २ शिब का विशेषण ।

अश्वत्थ (पु०) [अश्व् + श्वत् पु०] १ भाई, सहोदर २ घनिष्ठ मित्र या संबंधी ३ निकटवर्ती रिश्तेदार ४ मित्रवत् संबंधों का बिह्वल (शिव मित्र), भात कष्ट- महो - भर्त्स० ३।३७, २।३४, तत्त्व चिन्तय तदिव भात- योहो० । सम० - शिब, - शिबिक (वि०) जिसका भाई केवल नाम के लिए हो, नाम मात्र का भाई, - कः भतीजा (जा) भतीजी—भावा (भ्रातृजाया भी) भाई की पत्नी, भाभी, मेघ० १०, - बसम् बहन के विवाह पर भाई द्वारा बहन को वी र्हाई संपत्ति, - श्रितोया कातिक शूल्का श्रितोया (इत पिल बहनें अपने मायवो का अपने घर पर आमंत्रित करती हैं और उनकी आतिथ्य करती हैं, भाई भी इस विन

बहनों को उपहार देते हैं, समस्त यह विन इत किए मनाया जाता है कि इस विन यमुना ने अपने भाई को आमंत्रित किया था—पु० यमद्वितीया), - पुत्रः (भ्रातृपुत्र भतीजा, - बसुः भाई की पत्नी, - श्वत्पुत्रः पति का बड़ा भाई, जेट, - हृष्या भाई की हृष्या ।

अश्वत्थ (वि०) [अश्व् + श्वत्] भाई से संबंध रखने वाला ।

अश्वत्थ (अश्व् + पुत्र श्वत्) १ भाई का बेटा, भतीजा २ श्वत्, विरोधी ।

अश्वत्थ (वि०) [अश्व् + श्वत्] जिसके एक मा अधिक भाई हो ।

अश्वत्थ (अश्व् + श्वत्) भाई का पुत्र, भतीजा ।

अश्वत्थ (अश्व् + श्वत्) भाईचारा, भ्रातृभाव ।

अश्वत्थ (वि०) [अश्व् + श्वत्] १ इधर उधर घूमना फिरा हुआ २ मुड़ा हुआ, चक्कर मारना हुआ, घूमना हुआ, ३ भुला हुआ, कुपयामी, भटका हुआ ४. बचड़ाया हुआ, गड़बड़ाया हुआ, इधर उधर घूमने फिरने वाला इधर से उधर और उधर से इधर घूमने फिरने वाला, चक्कर काटने वाला - तथ १ घूमना, इधर उधर फिरना, - वर पर्वतपुराण भ्रातृ बन्धनं सह—भर्त्स० २।१४ २ घलती, भूल ।

अश्वत्थ (स्त्री०) [अश्व् + श्वत्] १. इधर उधर फिरना, घूमना २ घूमकर मुड़ना, घटाराल करना ३ श्रान्ति, गोलाकार या चक्राकार घूमना—चक्राश्रान्तिरारान्- रेणु विनोपेयव्यामिवाश्रान्तिम्—विष्णु० १।५ ४ भूल, गलती, भ्रम, व्याप्ती, मित्याभाव—श्रान्ति चन्दनभ्रातृया वृषिपाक शिवद्रुमम्—उत्तर० १।५६ ५ घबराहट, उद्विग्नता ६ संदेह, अनिश्चय, शंका । सम० - कर (वि०) विह्वल करने वाला, भ्रम में डालने वाला, - भाष्यः शिब का विशेषण, - हूर (वि०) संदेह या भूल को हूर करने वाला ।

अश्वत्थ (वि०) [अश्वत्थ + श्वत्] १ घूमने वाला, मुड़ने वाला, - श्रान्तिमहारिचक्रम्—मालवि० २।३३ २. भूल करने वाला, घलती करने वाला, भ्रमयुक्त—पु० एक अलकार जिसमें दो वस्तुओं की पारस्परिक समानता के कारण एक वस्तु को भूल से अन्य वस्तु समझ लिया जाता है, - श्रान्तिमानस्यसकित्तुत्पद्यवर्षे - काष्ण० १०, उदा०—रुपाले मात्रार्जः पय इति करान्त् सेवि शशिन, आदि-विष्णु० ३।२, मा० १।२, जी ।

अश्वत्थ (अश्व् + श्वत्) १ इधर-उधर घूमना २ मोह, भूल, गलती ।

अश्वत्थ (वि०) (स्त्री०-जिका) [अश्व् + श्वत् + श्वत्] १ घूमने वाला २ आश्रित करने वाला ३ उलझाने वाला, शोका देने वाला—क १. सूरजपुत्री पूर २ एक प्रकार का बुद्धक पत्थर ३. मोहवाच, बधमात, उय ४ गीरध ।

अमर (वि०) (स्त्री०—री) [अमरेण समृत अमरस्वेद वा अण्] अमर संबंधी,—र, —रन् एक प्रकार का वृक्ष अमर—रन् 1 चकर काटना, 2 आधुनिक 3. अमरना, मिरगी 4. गहर 5. एक प्रकार का रसिक, संजीव का आसन विशेष री 1 दुर्गा का विशेषण 2. चारों ओर घूमना, प्रदर्शित करना—दीवना प्रायर्ष.—कर्० ४. वि० २ ।

आ (म्हा) व् (म्हा० दिवा० आ० प्रायते, प्राप्सन्ते, प्रसाधते, प्रसाधयते) चमकना, दमकना, उगमगाना ।

आण्डः—अण् [अण् + ङ् + अण् + अण् वा] कडाही, — ङ् 1 प्रकाश 2 अनादि ।

आण्डकिम्ब (वि०) [आण्ड + इण् + ण्, म्] लकने वाला या मूले वाला, मरभूजा ।

आ (म्हा) व् दे० 'आ (म्हा) व्' ।

आ (भू) कुंठाः (सः) [भूवा कुंठा (नी) भाषण वस्य दे० स० कुंठा संकल्पिक] स्त्री की वेष्ट्या में नाटक का पुरुषपात्र ।

आकुटिः—ही [भूव कुटि. कौटिम्ब्य—य० न०] दे० 'आकुटि' ।

आकु (मुवा० पर० भ्रूइति) 1 सपथ करना, एकत्र करना 2 इकना ।

आ (स्त्री०) [अण् + अण्] भोह, आँध की भोह—वालि-भूवावातसेलबोया—कु० १।७३। सम०—कुटि, —ही (स्त्री०) भोहो की मिकुडन वा कुटिलना, त्योरी चढ़ाना, 'बध', 'रचना भूषण वा भूमिगमा, भूकुटि बंध या रथ भोहो मिकाइना, त्योरी चढ़ाना—शेषः भोहो की मिकोडना—भूक्षेपमावाभूमतप्रवे-

राम—कु० ३।६०,—आहम् भोहो का मूल,—अङ्गः,—शेषः भोहो की मिकुडन वा कुटिलना,—त्योरी—तरङ्ग-भूमत्ता अभितविहगधेरिगाना—विक्रम० ४।२८, सभूमङ्ग मसिब—मेघ० २४, सभूमङ्ग 'त्योरी—बधा कर,—भोहम् (वि०) त्योरी चढ़ाय हुए,—अप्यम् भोहो के बीच का स्थान,— क्ता बेल की भाँति भोह, महारावदार वा कुटिल भोह, विकारः,—विधिष्या,—विशेष भोहो की मिकुडन, —विधेयितम्,—विधयः,—विलास भोहो का माहक संचालन, भोहो की काम केलि,—सभूविलासयय सोऽयमितोरयिष्या मा० १। २४, मेघ० १६ ।

आण् [भूण् + घञ्] 1 चर्म, कलक 2 (गर्मन्व) बन्ना, डालक। मय० अण् हण् (वि०) भूण् हत्या करने वाला,—हृति,—हृत्वा भूण् कागिराना, गर्भपात करना—भूण्हत्या वा एते जनि—गात्र० १।६४ ।

अण (म्हा० आ० अण्रते) चमकना ।

अण (म्ह) व् (म्हा० उभ०—अण्रति—ते, अण्रति—ते) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 गिरना लडखडाना, उगमगाना, फिसलना 3 डरना 4 शोध करना ।

अणः [अण् + घञ्] 1 हिलना-जुलना, गति 2 उगमगाना, उडखडाना, फिसलना 3 विचलित होना, भटकना, पथभ्रम 4 मय मे विचलन, अतिक्रमण, पाप 2 हाँसि, वचना ।

अणहृत्स्य [भूणहृत्या + अण्] गर्भस्य विणु की हत्या । मन्त्र दे० अण् । म्हाण् दे० भाष ।

म

मः [मा + क] 1 काम 2. विप 3 ग्राहू का गुर 4 चन्द्रमा 5 ब्रह्मा 6 विष्णु 7 मित्र 8 यम,—अण् 1. जल 2. प्रसन्नता, कल्याण ।

मकरः [म + विप किरति—क + अण्—ताग०] 1 एक प्रकार का समुद्री-जन्तु, बाँडवाग, मगरमच्छ,—सहाया मकरधामि—अण० १०।३१, मकरवचन—अण्० २।४ ('मकर' कामदेव का प्रतीक वा कुलचिह्न माना जाता है, दु० निम्नांकित सभन्त पर्यो की) 2 मकरगति 3. मकरमूह, सेता का मकराकार स्थिति में कनकड करता 4 मकर के आकार का कुण्ड 5 मकर के रूप में हाथा को बाँधना 6. कुचेर की नौ विधियों में से

एक। सम० अङ्कः 1. कामदेव का विशेषण 2 मयूह का विशेषण,—अण्. बरग का विशेषण,—अकरः,—आकय,—आवासः मयूह, सागर,—कुण्डलम् मकर को आकृति का कृष्ण,—केतव,—केतुः केतुण् (२०) कामदेव के विशेषण,—अण्. 1 कामदेव का विशेषण—अण्. मवारि मकरध्वजनापहारि—चौ० ४१ 2 मेना की विशेष कन-व्यवस्था,—रति (स्त्री०) मकर रति,—संक्षयम् सूर्य की मकरगति में गति,—सप्तमी माषयुक्ता सप्तमी ।

मकरव्य [मकरगति हनि कामजनकान्वा दो—अवलपटने क पूर्वो० मृम्—ताग०] 1 कुली से प्राप्त गण्ड,

मधु, कुम्भो का रम मकरन्दमुन्दिलानामरविन्दानामय
 महामान्य भागि० १।६, ८ 2 एक प्रकार की
 चमकी 3 कायल 4 भीना = एक प्रकार का सुग-
 न्धित आञ्जवृक्ष, - इन्ह कुम्भो का केसर ।
 मकरन्दवत् (वि०) [मकरन्द + मनुन्] मधु से पूर्ण, - ली
 पाटल की बेल या पाटल का फूल ।
 मकरिन् (पु०) ! मकर इति । मन्द्र का विशेषण ।
 मकरी [मकर + डीप्] मादा पक्षियाल । मम० - पत्रम्,
 -लेखा लक्ष्मी के मयपर 'मकरो' का चिह्न, - प्रत्यः
 एक नगर का नाम ।
 मकुटम् [मङ्क + उट, अननागिकर्णम्] ताज-मु० 'मुकुट' ।
 मकुति [मङ्क + उति प्रा०] मृगशामन, राजा की ओर
 से मुद्रो के लिए आदेश ।
 मकुज [मङ्क + उरच् प्रा०] 1 शीमा, दर्पण 2 कुकुल
 या वज्र 3 काकी 'अरु' की बमेकी 5 कुम्भार
 के चान या ढहा ।
 मकुन [मङ्क + उलच्, प्रा०] 1 कुकुल का वृद्ध
 2 काकी ।
 मकुष्टः, मकुष्टक [मङ्क + उ प्रा०] नलीय मङ्क भूया
 म्भक्ति प्रमिदति-मङ्क, -स्तक, -अच्] एक प्रकार
 की लोबिया ।
 मकुष्ट [मङ्क + म्भा + क] मोठ, (लोबियो का एक
 प्रकार) ।
 मकुलक [मङ्क + ऊलक्, -कन् प्रा०] नलीय] 1. कली
 2 दवा नामक वृक्ष ।
 मकुत् (म्भा० आ०-मकुते) जाना, हिलना-जुलना ।
 मकुलः [मकुत् + उलक्] वृग, गुग्गुलु, मेक ।
 मकुल [मकुत् + ओलच्] पक्षिया मिट्टी ।
 मकु (म्भा० पर० मकुति) 1 इकट्ठा होना, डेर लगना,
 सञ्चय करना 2 कुट्ट होना ।
 मकु [मङ्क + कञ्] 1 क्रोध 2 पावपद 3 मनुष्यव्य,
 मग्रह । सम० शीघ्र पियाल वृक्ष ।
 मकु (श्री) का [मकु + कुन् -टाए इन्] मकरी,
 मधुपक्षी- भो उपरिग्रह नयनमधु सनिहिना मक्षिका
 व मालवि० २ । सम०-अक्षय शीघ्र ।
 मकु, मकु (म्भा० पर० मकुति, मकुति) जाना चलना
 सरकना ।
 मकुः [मङ्क मञ्जाया ष] वज्र, यज्ञविषयक कृत्य, -अकि-
 वनाय मकुज व्यनक्ति रघु० ५।१६, मनु० ४।०४,
 रघु० ३।३९ । सम०-अक्षि, -अमलः यज्ञानि
 -अनुवृत् (पु०) शिव का विशेषण किया यज्ञ
 विषयक कोई कृत्य, - अङ्क (पु०) राम का विशेषण,
 द्विक् (पु०) पिशाच, गल्लम रघु० ११।२७
 -द्वेषिन् (पु०) शिवका विशेषण, -हृत् (नपु०)
 1 इन्द्र का विशेषण 2 शिव का विशेषण ।

मगधः [मगध् + अच्, मग रोष दयाति वा मग + वा
 + क] एक देश का नाम, बिहार का दक्षिणी भाग
 -अन्ति मगधेयु पुण्यपुरी नाम नगरी-दण० १
 अगाधमरुतो मगधप्रतिष्ठ -रघु० ६।११ 2 नाट,
 बन्दी, चारण, -भाः (ब० ब०) 1. मगध देश के
 अधिवासी, भाषण 2 बन्दी पीपल । सम०- उद्धवा
 बन्दी पीपल, -पुरी मगध की नगरी, -लिपि (स्त्री०)
 मागधी लिपि या लिखाष्ट ।
 मग (पु० क० क०) [मङ्क् + कन्] 1 गोला लगा हुआ,
 इककी लगाई हुई 2 सराबोर, डूबा हुआ 3 लीन,
 लिपि (दे० मङ्क्) ।
 मगः [मङ्क् + अच्, प्रा०] विषय के एक द्वीप या प्रभाग
 का नाम 2 एक देश का नाम 3 एक प्रकार की
 औषधि । मुग - मघा नाम का दखन नक्षत्र, धम्
 एक प्रकार का फूल ।
 मगध, मगधत् (पु०) [मधवन् + ग्] अन्तर्वेद्य, श्चकारस्य
 इन्द्रजा इन्द्र का नाम ।
 मगधन् (पु०) [मङ्क, पूजाया कनिन्, नि० ह्यच् घ, वृणा-
 गमयच्] (कन्० ए० ब० मगधा, कर्म० ब० व०
 -मघान्) 1. इन्द्र का नाम-बुद्धोद्दगाय स यज्ञाय सत्याय
 मघवा दिवम् रघु० १।२६, ३।८६, कि ३।५२, कु०
 ३।१ 2 उल्ल, पेचक 3 व्यास का नाम ।
 मगा [मङ्क + घ, ह्यच् घल्क्, टाप्] दसवा नक्षत्र, जो
 पाच तारो का समूह है । सम० अयोध्या भाद्रपद
 कृष्णा प्रयादशी, -अध, -भू अक्षरद ।
 मगङ्क (म्भा० आ० -मकुते) 1 जाना, हिलना-जुलना
 2 मञ्जाना, अलकून करना ।
 मङ्किल, [मङ्क + इलच्] दावानल, ज्वल की जाग ।
 मङ्ककुरः [मङ्क + उरच्] दर्पण, शीशा ।
 मङ्कअणम् [मङ्क + अण्, प्रा०] लक्ष्य शल्यम् टागो की
 रक्षा के लिए कवच, पिछोलाया की रक्षण कवच ।
 मङ्कम् (अथ०) मङ्क् + उन्, प्रा०] अन्य अण्वम्] नुरन्,
 जल्दी से, शीघ्र, -मङ्कसुरपानि परित पटलेरलानाम्
 - सि० ५।३७ 2 अल्पन, बहुत अधिक ।
 मङ्क [मङ्क + अच्] 1 राजा का चारण 2 एक विशेष
 प्रकार की औषधि ।
 मङ्क् (म्भा० उ०) मङ्कति-ने) जाना, हिलना-जुलना ।
 मङ्क [मङ्क् + अच्] 1. नाव का अगला भाग 2 नाव का
 एक पावर्ष ।
 मङ्कल (वि०) [मङ्क् + अलच्] 1 वृष, भाष्यवाली, कल्या-
 यकारी, हितकाम-यथा मङ्कलदिवस, मङ्कलवृषभ
 मं, 2 समृद्ध, कल्याणप्रद 3 बहादुर, लम् । (क)
 मङ्कल, कल्याणकारिता जनकाना रक्षणा च यत्कलन्
 गौषयणम् उत्तर० ६।४६, रघु० ६।९, १०।६७,
 (स) प्रसन्नता, सौभाग्य, अच्छी किस्मत, आनन्द,

उल्लास - मा० १।३, उत्तर० ३।४८, (ग) कुवाल, शैम, कल्पाच, मगल—सङ्ग सता किमु न मङ्गलमान-
 मोति - भाषि० १।१२२ 2 शुभ शकुन, कोई भी
 शुभ घटना 3 आशीर्वाद, नादी, शुभकामना 4 शुभ
 या मगलकारी पदार्थ 5 शुभाचर, उत्सव 6 (विवाह
 आदि) शुभ सस्कार 7 कोई पुरानी प्रथा 8 हल्दी,
 - क. मगलप्रद, स्या पवित्रता स्त्री। सम०—अक्षता
 (पु०, ब० व०) आशीर्वाद देने समय हाथों के
 द्वारा लोभी पर फेंके जाने वाले चावल,—अगुह (गु०)
 चन्दन का एक भेद, - अयनम् आनंद या समृद्धि का
 मार्ग,—अलङ्कृत (वि०) शुभ अलंकारों से अलंकृत
 कु० ६।८७,—अष्टकम् विवाह के अवसर पर बरबध
 की मगलकामना के लिए पड़े जाने वाले आशीर्वादात्मक
 श्लोक,—आचरणम् (सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य
 से) किसी भी इच्छा के आरम्भ में पढ़ी जाने वाली
 प्रार्थना के रूप में मगल-प्रस्तावना,—आधार 1 शुभ,
 उभय के अवसर पर ब्रतिया जाने वाला ढोल,
 —आदेशवृत्तिः भाव में लिखे को बताने वाला
 ज्योतिषी, —आरम्भ गणेश का विशेषण—आलम्बनम्
 किसी शुभ वस्तु को स्पर्श करना, —आलय
 —आवाप्त देवालय, मन्दिर, —आङ्गुलम् मगल-
 कामना के लिए नित्य अनुष्ठेय धार्मिक कृत्य, —इच्छु
 आनन्द वा समृद्धि का इच्छुक, —करणम् किसी
 (वि०) भी कार्य की सफलता के लिए पढ़ी
 जाने वाली प्रार्थना, —कारक, —कारिन् (वि०) शुभ,
 मगलकारी, —कायम् उत्सव का अवसर, कोई भी
 मार्गलिक कृत्य—अ० ४, शौचम् उत्सव के अवसर
 पर पहना जाने वाला रेशमी वस्त्र—रपु० १२।८,
 —शुभ शुभप्रद घट—पात्रम् उत्सव के अवसर पर पानी
 से भरा कलश जो देवोंको अर्पित किया जाय, छात्र
 पक्ष का शुभ, पाकड़ का पेड़, —तूर्यम्,—वाद्यम् एक
 वाद्य यंत्र बिल्व, वा ढोल आदि—जो उभयार्थिक के
 शुभ अवसरों पर ब्रतिया जाय—रपु० ३१२०, —देवता
 शुभ या रसक देवता, —वाद्यक नाट, नाच, नर्तनयन
 —जा टुरात्मन् वृषामगलप्रदक धौलपाण्डर-
 वेणी० १, —गुणम् शुभ कृत्य, —प्रतिस्तर, —शुभम् शुभ
 शरीर, शुभ होरा जो सौभाग्यवती स्त्रियों अपने नले में
 रख सकें पहनती हैं जब तक उनका पति जीवित है,
 —अर्थ कल्पितमङ्गलप्रतिमम् (अङ्गुला)—मा० ५।१८
 2. नादीयं को डोरा प्रथ (वि०) शुभ (हा) हल्दी,
 —प्रथ एक पहाड़ का नाम, पात्रभक्षण वि० शुभ
 अलंकार अर्थात् अनेक या कल्पितौचित्य आदि से
 सुसुपित, —वस्त्रम् (पु०)—आद्य मगलात्मक अभिव्यक्ति
 आशीर्वाचन, मगलाचरण, —वायम् दे० 'मगलपुत्रम्',

बार, वासर मगलवार,—विधिः उभय या कोई
 शुभकृत्य, —शब्द अभिनन्दन, आशीर्वादात्मक अभि-
 व्यक्ति,—गुणम् दे० 'मगलप्रतिस्तर', स्वानम् मगल
 कामना के लिए किसी शुभ अवसर पर किया जाने
 वाला स्नान।

मङ्गलोप (वि०) [मङ्गल + छ] शुभ, सौभाग्यसूचक।
 मङ्गल्य (वि०) [मङ्गल + यत्] 1 शुभ सौभाग्यवाली,
 मानद, किम्मतवाला, ममूद—मनु० २।३१ 2 सुन्दर,
 रचिकर, सुन्दर 3 पवित्र, विद्युद, पावन उत्तर०
 ४।१०,—स्य 1 बट-वृक्ष 2 नारियल का पेड़ 3 एक
 प्रकार की दास, ममूर की दास, —स्य 1 सुगन्धित
 चन्दन का भेद 2 दुर्गा का नाम 3 अंग की लकड़ी
 4 एक विशेष मृगध इत्य 5 एक प्रकार का पीला
 रंग,—स्यम् (अनेक तीर्थ स्थानों में लाया गया) 1 राजा
 के राज्याभिषेक के लिए शुभ तीर्थजन्म 2 मोना
 3 चन्दन की लकड़ी 4 मिट्टा 5 लट्टा दही।

मङ्गल्यक [मगल्य + कन्] एक प्रकार की दास,
 ममूर।

मङ्ग्य (स्वा० पर०) मङ्गुनि अलंकृत करना, सजाना।
 ॥ (स्वा० मा०) मङ्गुने 1 ठगना, धोखा देना
 2 आरम्भ करना 3 कल्पित करना 4 निन्दा
 करना 5 जाना, बल्दी में जाना 6 आरम्भ करना
 प्रस्ताव करना।

मग् (स्वा० जा०) मचने 1 टुट्टा होना 2 ठगना,
 धोखा देना 3 गंभी बघारना - घमखड़ी वा अहंकारी
 होना।

मग्बचिका [मगम्यु चर्चिन-म + चर्च -] गुण्यु + टाप्, इत्यम्।
 'श्रेष्ठता या सर्वोन्नतता'को प्रकट करने के लिए
 सजा के अन्त में लगाया जाने वाला मन्त्र तथा
 मगमबचिका एक ब्रह्मिया गाय या बेल, तु०
 उड।

मग्ध [म + विवृप्-शी + ड] (मन्त्र का अर्थ रूप)
 मङ्गली।

मग्जन् (पु०) [मग्ज् + कनिन्] माग और हृदिइयो ने
 रहने वाली मग्जा, पीप का रस। सम०—
 (नपु०) हरदी, समुद्रक बीज, बुक।

मग्जन्म [मग्ज् भावे म्पृट्] 1 हडकी लगाना, ५।११
 लगाना पानी में हडकी, मराबोर होना 2 स्नान
 करना, नहाना—अप्यधमज्जनविशेषविशिवित्तफाणि
 —रत्न० १।११, रपु० १६।५७ 3 हडना 4 मांस और
 हृदिइयों के बीच की मग्जा।

मग्जा [मग्ज् + अच् + टाप्] 1 मांस और हृदिइयों के
 बीच का रस या रस 2 पीप का रस। सम०
 —रजम् (नपु०) 1 एक विशेष नरक 2 गुण्यु
 —रस, बीज, शुक्र,—सार, जायफल।

मञ्जुषा दे० मञ्जुषा ।

मञ्जु (म्भा० आ० मञ्जुत्ते) 1 धामना 2 ऊँचा या पन्ना होना 3 जाना, चलना-फिरना 4 भयकना 5 अलङ्कृत करना ।

मञ्जुः [मञ्जु + जञ्] 1 धाम्या, चारपाई, पलंग, बिस्तरा 2 उभरा हुआ आसन, बेदी, सम्मान का आसन, राज्यासन, सिंहासन-ताम मञ्जुष्व मनोज्ञवेपान् --रघु० ६१९, ३१० 3 मकान, टाड (खेत के रम्बवाले के लिए) 4 व्यासपीठ, ऊँचा आसन ।

मञ्जुकम् [मञ्जु + कञ्] 1 धाम्या, बिस्तरा, पलंग 2 उभरा हुआ आसन या बेदी 3 जोख सुरक्षित रखने का हाज। मम० आश्रयः सटमल, सट में रहने वाला कीडा ।

मञ्जुष्का [मञ्जु + टाप्, इत्थम्] 1 कुर्मी 2 कठोली, धाकी, 3 माची (चार पायों में बनाया हुआ स्टैंड जिमपर बूगचों में भरा मामान लदा गृहता है) ।

मञ्जुश्चम् [मञ्जु + अर्] 1 फुला का गुच्छा 2 मोली 3 तिलक नाम का पोषा ।

मञ्जुरि, -री (रु०) [मञ्जु + ऋ + ञ् ङ्क० पररूपम्, पक्षे ङीप्] 1 काण्य अकुर, बीर निचये सहकार-मञ्जुरी - कु० ४१८८, मनुकान्तिरलक्षण मञ्जुरी - रघु० १४६६, ११५९ इती प्रकार - स्फुरन्तु कुच-कुचयाध्वपरिमणिमञ्जुरी-गीत० १०, मूल मुक्ताक्षो-पत्ते धर्माश्च कथामञ्जुरी-काश्य० ०३७१, 2 फुली का गुच्छा 3 फुल रुकी 4 फुल का बुन्ना 5 ममानान्तर गेवा 6 माती 7 लता 8 नुनगी 9 तिलक का पोषा । सम०--आत्मरम् मञ्जुरी की प्रकल का चवर पक्षे जैसी मञ्जुरी विक्रम० ४१८, नञ् 'वेतम' का पोषा ।

मञ्जुरित (वि०) [मञ्जुर + इत्थच्] 1 फुलो या बीरो के गुच्छो में युक्त 2 वृत् पर लगी हुई कली आदि ।

मञ्जुः [मञ्जु + जच् + टाप्] 1 बकारी 2 बीरो (फुलो) का गुच्छा 3 लता ।

मञ्जु, -ञी [मञ्जु + इन्, पक्षे ङीप्] 1 फुलो (या बीरो) का गुच्छा 2 लता । सम० फुला केले का पोषा ।

मञ्जुष्का [मञ्जु + ष्वल् + टाप् + इत्थम्] वेध्या, वागयना, बाबाऊ म्की, रई ।

मञ्जुश्चम् (पु०) [मञ्जु + इत्थन्] मीन्द्रमं, मनोहरता ।

मञ्जुष्ठा [अतिशयैव मञ्जुश्चमी इच्छन् मनुष्यो लीप ताग०] मञ्जीठः । सम० प्रवेष्ट एक प्रकार का मन्-रोम, --राम. 1 मञ्जीठ का रम 2 मञ्जीठ के रम जैसा आकर्षक और टिकाऊ अर्थात् स्थायी अनुगाय ।

मञ्जुवीरः --रम् [मञ्जु + ईरन्] नूपुर, पैर का आभूषण । --मिञ्जानमञ्जुमञ्जुवीर प्रविषेव निकेतनम् गीत० ।

११, या मञ्जरमधीर त्यत्र मञ्जुवीरं रिपुमिव केनियु कोलम् ५, मा० १, --रम् वह स्थूणा विममं रई की रस्सी लगेटी जाओ है ।

मञ्जुवीरः (पु०) बहु गीष जितमं घोषियो का निषात हो ।

मञ्जु (वि०) [मञ्जु + उन्] प्रिय, सुन्दर, मनोहर मञ्जु, सुन्द, हीचकर, आकर्षक-स्वल्पदसमञ्जुमञ्जुअल्पित ते (स्मृद्रामि), उत्तर० ४४४, अग्रिदलदरबिन्द स्पन्दमान मरन्द तत्र किमपि लिहन्तो मञ्जु गुञ्जन्तु मञ्जु --भामि० १५, तन्मञ्जुमन्दहसित वसितानि तानि --रा५। मम० --केछिन् (पु०) कृष्ण का विशेषण, --नमन (वि०) सुन्दर गति वाला, (मा) 1 हसिनी 2 राजहस, --नो-नयात् देश का नम, --गिर् (वि०) मञ्जु स्वर वाला --एते मञ्जुगिर मुक्, - काव्या० २१९, --गुञ्जः प्यारी गुञ्, --घोष (वि०) मञ्जु स्वर बोलने वाला, - माती 1 सुन्दर स्त्री 2 दुर्गा का विशेषण 3 दृढ की पत्नी शर्मा का विशेषण, --पाठक तौता, --प्राणः इत्यां का विशेषण, भाविन्, --बाष् (वि०) मञ्जु स्वर बोलने वाला गिग्मनुवदति मुकस्तं मञ्जुवाक् पञ्जरस्थ --रघु० ५७४, १२३९९-वक्तु (वि०) सुन्दर मुख वाला, मनोहर, स्वम्, --स्वर (वि०) मीठे स्वर वाला ।

मञ्जुल (वि०) [मञ्जु + उ + लच् वा] प्रिय, सुन्दर, मंचिकर, मनोहर, मञ्जु, मुरीली (आवाज), सप्रति मञ्जुल-वञ्जुल मीर्मनि केनिशयमनुदानम् गीत० ११, कृजित राजहमाला वधे मद्मञ्जुलम् --काव्या० २३३८ लम् 1 लतामण्डप, कुञ्ज, लतागृह 2 निर्झर, कक्षा, --म्, एक प्रकार का जलकुचकुट ।

मञ्जुषा [मञ्जु + ञ्यन् + टाप्] 1 मट्टक, हम्बा, पेटी, आधार - मदीयधरतरताना मञ्जुषैया मया कृता --भामि० ४४५, 2 बही टोकरी, पिटारा 3 मञ्जीठ 4 पत्थर ।

मटकी, मटतो [मट् + अप् = मट् + चि + वि + ङीप्, मट् + गन् + ङीप्] गोला ।

मटस्कीट [मट् + स्कीट् + इ] 'मटह का आरम्भ', आरम्भ अभिमान ।

मट्टकम् (पु०) छत्र की मुंडेर ।

मट् (म्भा० पर० मठनि) 1 रसना, बसना 2 जाना, 3 पीसना ।

मठ, --ठम् [मट्पथ मट् पञ्चार्थे क] 1 भग्याली की कोठरी, माघक की कुटिया 2 विहार, शिक्षालय 3 विश्रामनि, महाविद्यालय, ज्ञानपीठ 4 देवालय, गन्दिर 5 वेग्याओ, -ठी 1 कोठरी 2 मनी, विहार । मम० - आयतनम् विश्रामान्दिर, महाविद्यालय ।

मठर (वि०) [मन् + अर्, ठ अन्तादेश] नष्ट में चूर, मद्य पीकर मतवाला ।

मठिका [मठ+कन्+टाप्, इत्स्वम्] छोटी कोठरी, कुटी, कुटीर।

मद्दुः, मद्दुक [मद्+दु, मद्दु+कन्] एक प्रकार का हॉल।

मम् (स्त्री० पर० मर्षति) बजाना, गुनगाना।

मर्षिः (स्त्री० भी, परन्तु विरल प्रयोग) [मृन्+इत्, स्त्रीत्वपक्षे वा डीप्] 1 रत्नजडित आभूषण, रत्न, मूल्यवान् जवाहर—अलङ्काराधिक्यवा नृपाणा न जानु मौलौ मणयो वसन्ति—भास्मि० १।७३, मणी बखसमन्कीर्णं सूत्रस्येवास्मि मे मर्षि—रघु० १।४, ३।१८ 2 आभूषण 3 कोर्ट भी उलम बन्तु नु० रत्न 4 बुन्दक, लक्ष्मणि 5 कलाई 6 जलकलश 7 बिहङ्ग, भगवतुर 8 किण का अगना भाग (इन अर्थों में 'मणी' भी लिखा जाता है)। मम०—इष्ट, - राज हीरा, कच्छ- नीलकण्ठ पत्नी, कच्छक-मूर्धा,—कौशिका,—कृष्णो वाराणसी में विद्यमान एक पवित्र कुण्ड, काश्क- बाण का वह भाग जहां पक्ष लगा रहता है, काननम् शीला, कार रत्नाजीव, जोहरी,—हारक मारग पत्नी, इष्यं रत्नजटित घोषा, द्वीप 1 अजल नाम का कण 2 अजल सागर में विद्यमान एक काल्पनिक टापु,—धनु,—अजलम् (मृ०) इन्द्रधनुष, बाली जीर्जन, रत्न आभूषणों की देखभाल करने वाली स्त्री,—पुष्पक महर्षि के शल का नाम—म० १६,—सूर- 1 नामि 2 रत्नजटित बाली, (रश्मि) कालिया दश में विद्यमान एक मगर, इन्ध. 1 कलाई—श० ७, 2 रत्नो का बाणना रघु० १२।१०२ इन्धनम् 1 रत्नो का (कलाई में) बाणना मोतियों की लड़ी 2 ककण या अंगूठी का वह भाग जहाँ उसमें नख जड़े जाते हो—श० ६ 3 कलाई—श० ३।१३, बीज, —बीज अनाज का पेड़,—भित्ति (स्त्री०) घोषनाग का महल, मू. (स्त्री०) रत्नजटित फर्श,—मूवि (स्त्री०) 1 रत्नों की शान 2 रत्नजटित फर्श, वह फर्श जिसमें रत्न जड़े हो,—मन्थम् सेवा ममक,—मासा 1 रत्नो का हार 2 कानि, आभा, सौन्दर्य 3 (कामकेलि में) दास से काटे का गोल निधान 4 लक्ष्मी 5 एक छन्द का नाम, वष्टि (प०, स्त्री) रत्नजटित लकड़ी, रत्नो की लड़ी, रत्नम् आभूषण, जडाक गड़ना, रत्न, जवाहर, रास, रत्ना का रत्न (मृ०) सिद्धर, शिला रत्नजटित शिला, सर रत्नो का हार,—सूत्रम् मोतियों की लड़ी, सोपानम् रत्नजटित पीढ़ी जैना, स्तम्भ रत्नो में जडा हुआ शभा, हृष्यम् रत्नजटित या स्फटिक का महल।

मणिक कम् [मणि+कम्] जलजलम्, - क रत्न, जवाहर।

मणितम् [मण्+कन्] एक अस्पष्ट सी गीतकार जो स्त्री—सम्भ्रंय के समय उन्मत्त होती है शि० १०।७५।

मणिवत् (वि०) [मणि+मनुप्] रत्नजटित (प०) 1 सुयं 2 एक पर्वत का नाम 3 एक तीर्थस्थान का नाम।

मणीचक [मणी+चक्+अच्] रामचरित्रा, - कम् चन्द्र-कान्तमणि।

मणीचकम् [मणीव कायति मणी+कं+क] फूल, पुष्प।

मण्ड (प्रा० आ० मण्डन) 1 प्रवल अभिलाष करना 2 सन्देह मरण करना, शोक के साथ विनन करना।

मण्ड [मण्ड+अच्] गण प्रयोग वा क्ता हुआ मिष्टान।

मण्ड (प्रा० पर०, चुरा० उभ० मण्डति, मण्डयति—ते मण्डयन्) 1 अलङ्कृत करना, सजाना—प्रभवति मण्डयितु वधमनङ्—कि० १०।५९, मिष्टि० १०।२३ 2 हर मानाना।

॥ (प्रा० आ० मण्डते) 1 बस्त्र धारण करना, कपडे पहनना 2 घेरना, घेरा डालना ३. विभक्त करना, बंटाना।

मण्ड,—इम् [मण्ड+अच्, मन्+इ तस्य नेत्वम् वा] 1 गाड़ी चिकना पडाचं जो किसी तरल पदार्थ के ऊपर जम जाता है 2 उबाले हुए चाबलों का मोड़—तीव्रगी-दनमण्डमण्डमधुमन्—उत्तर० ४।१ 3 (दूध की) मलाई 4 शाय, जेनक, फकून 5 उफान 6 बात का माह 7 रम, सत् 8 सिर,—इ 1 आभूषण, शृंगार 2 मंडक, 3 एरक का वृक्ष,—इ 1 लीकी हुई घराब, 2 आबले का वृक्ष। मम०—उचकम् 1 लमीर, 2 उत्सवादिभे के अवसर पर फर्श व दीवारों को सजाना 3 मानसिक क्षोभ या उत्तेजना, ५ (वि०) मण्ड पीने वाला, मलाई खाने वाला,—हारकः घराब खीचने वाला।

मण्डक [मण्ड+कन्] 1 कसार, एक प्रकार का पकाया हुआ मंडा 2 फुलका, पतली रोटी।

मण्डलम् [मण्ड+लट्] 1 सजाने या सुभूषित करने की क्रिया अलङ्कृत करना—यामलम् मण्डनकालहाने—रघु० १३।१६, मण्डनविधि,—श० ६।५ 2 आभूषण, शृंगार, सजावट—सा मण्डनमण्डनमन्त्रभूषण—कु० ७।५, कि० ८।४०, रघु० ८।७१,—कः (मण्डन-मिथ) दर्शन दास्य के एक विधान पंडित जो शास्त्रार्थ में गङ्गुराचार्य से हार गये थे।

मण्डप [मण्ड भूषा पानि—पा+क, मण्ड+कण्प वा] 1 विवाहादि मन्कारों के अवसर पर बनाया गया अस्थायी मण्डप, मूला कमरा, विवाह मण्डप 2 तट्ट, मंडपा—रघु० ५।७३ 3 लता कुंड, लतागृह, लतामंडप

—मेघ०७८ 4 किसी देवता को अर्पित किया गया भवन । सम०—प्रतिष्ठा देवालय की प्रतिष्ठा ।
इमल [मण्ड+गिच्+इच्] 1 आभूषण, शृंगार 2 अभिनेता 3 आहार 4 स्त्री साध, स्त्री स्त्री ।
हरी [मण्ड+अरन्+हीच्] शिल्पी, शीशुर विशेष ।
हल (वि०) [मण्ड+कल्च्] गोल, वृत्ताकार,—कः 1 सैनिका का गोलाकार क्रमव्यवस्थापन 2 कुत्ता 3 एक प्रकार का सौय, लम्ब 1 गालाकार पिण्ड, गोलक, चक्र, गोलाकार वस्तु, परिधि, कोई भी गोल वस्तु—करालफणमण्डलम्—रघु० १२।१८, आदर्श मण्डलनिर्माण समन्वयनि कि० ५।४१, स्फुरप्र-भासमण्डल, चापमण्डल, मूलमण्डल, स्तनमण्डल आदि 2 (जादूवर द्वारा लीकी हुई) गोलाकार रेखा—मुद्रा० २।१ 3 बिंब, विशेषतः चन्द्र या सूर्य का बिंब,—अप-वीण ग्रहकन्देन्दुमण्डला (विभावरी) मालवि० ४।१५, दिनमणिमण्डनमण्डप्रभयण्डन ए गीत० 4 परिवेष, मूय-चन्द्र के द्वे दिग्द पठने वाला घेरा 5 ग्रहपथ या ग्रहकक्ष 6 समुदाय, समूह, मण्डल, सघट, टोकी, वृन्द—एव मिलितेन कुमारमण्डलिन-दशा०, अखिल वाग्मण्डलम्—रघु० ४।४ 7 समाज, सम्मेलन 8 बहा वृत्त 9 दृश्य सित्तिज 10 जिला या प्रान्त 11 पदोंय का जिला या प्रदेश 12 (राजनीति में) किसी राजा के निकट और दूरवर्ती पदोसियों का गुट—उपगतोऽपि मण्डलनामितान्—रघु० १।१५ (मन्त्रि० द्वारा उद्भूत कामन्दक के अनुसार राजा के निकट और दूरवर्ती पदोसियों के गुट में बारह राजा सम्मिलित हैं । एक तो केन्द्रीय राजा या विजिगीय, पाँच अग्रवर्ती राज्यों के राजा, चार परच-वर्ती राज्यों के राजा, एक मध्यम या अल्पवर्ती राजा तथा एक उदासीन अथवा तटस्थ राजा । अग्रवर्ती और परचवर्ती राजाओं की विशेष सहाय है—दे० लदगत मल्ल० सु० सि० २।८१ भी तथा इसके ऊपर मल्ल० । कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार ऐसे राजाओं की सन्धा, चार, छ, आठ, बारह या इससे भी अधिक हैं—दे० याज्ञ० १।३४५ पर मिना० और दूसरे विद्वानों के अनुसार गुट में केवल तीन ही राजा होने हैं—प्राकृतारि या स्वाभाविक शत्रु (बलबाले देश का प्रभु), प्राकृत मित्र या स्वाभाविक दोस्त (केन्द्रीय राजा से मिले हुए दूसरे अन्य राज्यों के बाद जिसका राज्य हो) और प्राकृतोदासीन या स्वाभाविक नटस्थ (जिसका राज्य स्वाभाविक मित्रराष्ट्र से भी परे हो) । 13 बन्धु का निशाना लगाने समय विशेष पैतरा 14 दिव्य विभूतियों का आवाहन करने के लिए एक प्रकार का गुप्त वैशाधिष या तत्र, 15 ऋषेय का एक सङ्घ (समस्त ऋषेय सत मण्डलो

या आठ अष्टको में विभक्त हैं) 16 एक प्रकार का ऋद्ध जिसमें गोल चकत्ते एक आते हैं 17 एक प्रकार का गन्धद्रव्य,—सौ वृत्त, समूह, सघट (मण्डलीक कुडलाकार या वृत्ताकार बनाना, लपेटना, मण्डलीक वृत्त बनाना) सम०—अधः सुकी हुई या टेढ़ी तलवार, लङ्का,—अधिष,—अधोदा,—ईश,—ईश्वर 1 किसी ठिके या प्रान्त का राज्यपाल या शासक 2 राजा, प्रभु,—आवृत्ति (स्त्री०) गोलाकार घटि—उत्तर० ३।१९,—कार्युक (वि०) गोलाकार वस्तु की धारण करने वाला,—नृप्यम् मडलाकार घूमन हुए नाचना, गोलाकार नाच,—स्थास वृत्त का वर्णन करना,—गुणुक एक प्रकार का कौदा,—बट, गोलाकार रूप में बट का वृक्ष,—वृत्तिम् (पु०) एक छोटे प्रान्त का शासक,—वर्षः राजा के समस्त प्रदेश में बारिस का होना, देशव्यापी वर्षा ।

मण्डलकम् [मण्डल+कन्] 1 वृत्त, 2 बिंब 3 जिला, प्रान्त 4 समूह, सघट ५ सैनिका की चक्राकार व्यवस्था 6 सफेद कौड़ जिसमें गोल चकत्ते होने हैं 7 दर्पण ।

मण्डलघटि (ना० घा० पर०) गोल या वृत्ताकार बनाना ।
मण्डलस्थित (वि०) [मण्डलश्च आचरितम्—मण्डल+स्थद्, दीर्घ, मण्डलाय+त्] गोल, वर्तुल,—लम्ब गेद, गोलक ।

मण्डलित (वि०) [मण्डल कृत—मण्डल+विषय—मण्डल+कन्] गोल बना हुआ, वर्तुल या गोल बनाया हुआ ।

मण्डलित् (वि०) [मण्डल+इति] 1 वृत्त बनाने बाधा, कुडलाकृत 2 देश का शासन करने वाला, (पु०) 1 एक प्रकार का सौय 2 सामान्य सर्प 3 बिलास 4 ऊरबिलास 5 कुत्ता 6 सूर्य, 7 बटवृत्त 8 किसी प्रांत का शासक ।

मण्डित (वि०) [मण्ड+क्त] अलकृत, भूषित ।

मण्डूक [मण्डयति वर्षासमय—मण्ड+ऊकच्] मेंढक नि-पामिष मण्डूका सोढोषा नरनामोनि विपशाः सर्व-सपद, सुभा०, कम् स्त्रीसभोग का एक प्रकार, रतिव्यभिचारेण,—की 1 मेंढकी 2 व्यभिचारिणी स्त्री 3 कुछ पौधों के नाम । मम०—अनुवृत्ति,—प्लुतिः (स्त्री०) 'मेंढकी की उछल कूद' बीच बीच में छोड़ देना, बीच में छोड़कर आगे फलाय जाना (व्याकरण में यह शब्द कुछ सूत्र छोड़ कर उनके पूर्ववर्ती सूत्र से आपूर्ति करने के निमित्त प्रयुक्त होता है) —किया ४थम मण्डूकप्लव्यानुवतेते—सिद्धा०—कुल्लम् मेंढकों का समूह,—घोष भाष-समाधि का एक प्रकार जिसमें साधक मेंढक की भांति निपल्ल होकर समाधिस्थ होता है,—सत्तुम् (पु०) मेंढको से भरा हुआ सरोवर ।
मण्डूरम् [मण्ड+ऊरन्] लोहे का जग, लोहे का मूल (यह पौष्टिक औषधि के रूप में प्रयुक्त होता है) ।

मल (म० क० कू०) [मन् + क्त] 1 चितित, विवक्षित, कथित 2 सोचा हुआ, माना हुआ, ख्याल किया हुआ, समझा हुआ 3. मूल्यवान् माना हुआ, सम्मानित, प्रतिष्ठित—रघु० २।१६, ८।८ 4 प्रशंसित, मूल्यवान् 5 अटकल लगाया हुआ, अनुमान लगाया हुआ 6 मनन किया हुआ, चिन्तन किया हुआ, प्रत्यक्ष किया गया, पहचाना गया 7 सोचा गया 8 अभिप्रेत उद्दिष्ट 9 अनुमोदित, स्वीकृत (दे० मन्) - तम् चिन्तन, विचार, सम्मति, विस्वास, पर्यवेक्षण—निश्चित-मत्स्यसमम् - भग० १८।६, केपाचिन्तनेन-आदि 2 सिद्धांत, उमूल, पत्त, धर्ममन, विरहात्म—ये मे मत-मिद निव्यसनुतिष्ठन्ति मानवा—भग० ३।३१ 3 उप-देश, अनुदेश, सलाह 4 उद्देश्य, योजना, अभिप्राय, प्रयोजन 5 समनुमोदन, स्वीकृति प्रशंसा। मय०—अक्ष (व०) पासे के खेल में प्रवीण, अन्तरम् 1. भिन्न दृष्टि 2 भिन्न पन्थ, - अवलम्बनम् विशेष प्रकार की सम्मति रखना।

मलज्जु [मलार्थि अनेन—मद् + अज्ज् रम्यत ताग०]
1 हाथी 2 बालक 3 एक ऋषि का नाम—रघु० ५।३३।

मलज्जुज् [मलज्जु + ज् + ज्] हाथी - न हि कमलिनी दृष्ट्वा प्राहमवेक्षते मलज्जुज् - - मालवि० ३, कि० ५। ४७, रघु० १२।७३।

मलत्तिका [मत् मतिम् अलति भूषयति - मत् + अल् + श्लुल् पूर्वो साधु] मवीतमा, सर्वश्रेष्ठता प्रकट करने के लिए इस शब्द को सजाओ के अन् में जोड़ दिया जाता है, मालत्तिका 'श्रेष्ठ गी' तु० उद्ग । मलत्ती दे० मलत्तिका ।

मति (म्त्री०) [मन् + तिनन्] 1 बुद्धि, समझदारी, भाव, ज्ञान, तकल्य मतिर इत्यादयोपयोगी - हि० २।८६, अलविषया मति - रघु० १।२ 2 मन, हृदय - मम तु मनिर्न मतागर्वतु धर्मात् भाषि० ५।२६, इवी प्रकार दुर्मति, सुमति 3 मोचना, विचार, विस्वास, सम्मति, भाव, कल्पना, संस्कार पर्यवेक्षण - विशिष्टहो वलवानिति मे मति - भर्तृ० २।११, भग० १८।०८ 4 अभिप्राय, योजना, प्रयोजन दे० मत् 5 प्रस्ताव निधारण 6 सम्मान, प्रतिष्ठा, आदर कि० १०।९ 7 अभिप्राय, दृष्ट्या, कान्ता-पाया-पवेशमतिर्नुपतिर्बन्धु- रघु० ८।९४ 8 सलाह, परामर्श 9 याद, प्रत्यास्मरण (मतिह, - भा, आधा, मत लगाता, निश्चय करना, मोचना, मत्स्या (कि० वि०) 1. जानबूझकर, सामिप्राय, स्वेच्छा से मत्स्या भुक्त्याचरेत् कृच्छ्रम् - - मन्० ५।२०३, ५।१९ 2 इन विचार से कि व्याघ्रमत्स्या पलायते।। सम० ईश्वरः निश्चयकर्ता का विशेषण, धर्म (वि०)

प्रजावान्, बुद्धिमान्, चतुर, - ईशम् मतमिधता, - निश्चय. निश्चित विस्वास, दृढ़ विस्वास, - पूर्व (वि०) सामिप्राय, स्वेच्छाचारी, यथेच्छ, - पूर्वम्, - पूर्वकम् (अभ्य०) सप्रयोजन, सामिप्राय, स्वेच्छा से, लुपी से, - प्रकृतं बुद्धि की श्रेष्ठता, चतुरार्थ, - मेव विचारमिधता, - धर्म, - विषयार्थ 1 व्यामोह, मान-सिक भ्रम, मन की भ्रान्ति—सं० ६।९ 2 बुद्धि, गल्ती, भूल, गलत फहमी, - विघ्नम्, - विघ्नः मन की अव्यवस्था या दोषानापन, पागलपन, उन्माद, शालिन् (वि०) बुद्धिमान्, चतुर, - हीन (वि०) मूर्ख, अज्ञानी, मूढ़।

मत्क (वि०) [अम्मद् + कन्, मदादेश] मेरा - सप्रयुक्त्य कने मत्कं मगच्छस्व नने शुभे - अट्टि० ८।१६ - -रकः मत्कमल।

मत्कुपु [मद् + विवृप्, कुपु + क, तत कर्म० म०] 1 खट-मल मत्कुपाविव पुरापरिष्कवी - शि० १।५६८, 2 बिना दांत का हाथी 3 छोटा हाथी 4 बिना दाढ़ी का मनुष्य 5 श्रेष्ठ 6 नारियल का पेड़, - यम् टागो या जघाओ के लिए कवच । सम० - अरि पत्तन का पीछा ।

मत्स (म० क० कू०) [मद् + क्त] 1 तपो में पूर, मत-वाला, मदीमत्त (आल० से भी) - ज्योत्स्नापानमदाल-सेन वपुषा मत्ताश्चकोराङ्गना - अट्टि० १।११, प्रमा मत्सश्चन्द्रो जगदिदमहो विघ्नमयति - काण्य० १०, इसी प्रकार 'तेष्वर्षे' धर्मे' इल० आदि 2 पागल, विशिष्ट 3 मदवाला, भीषण (हाथी) - रघु० १२।९३ 4 धमड़ी, अहंकारी 5 सुवा, अतिहृष्ट, हर्षोदीप्य 6 श्रोत्रविषयक, कैलिपरायण, स्त्री, - स 1 विष-मत्स 2 पागल मनुष्य 3 मदवाला हाथी 4 कोयल 5 भैंसा 6 घतूरे का पीछा । सम० आलम्ब (किन्वी चनी पुरुष के) विद्याल भवन की बाट, इम मदवाला हाथी विघ्नना मत्स हाथी के सदाज बाल वाली स्त्री अर्थात् अलमयति, काशि (सि) भी एक सुन्दर लावण्यवती स्त्री, बलिन् (पु०) नाग, शरत्क. मदवाला हाथी, (- य - नाम) 1. विद्याल-भवन के चारों ओर बाट 2 किसी विद्यालभवन के ऊपर बनी अटारी 3 बरादा, अलिद 4 भवन का सुगन्धिज बरिभ्रम, - (कम्) कटी हुई सुपारी ।

मत्स्यु [मत् + यत्] 1 हल द्वारा बनाया लुङ् 2 ज्ञान प्राप्त करने का साधन 3 ज्ञान का अभ्यास ।

मत्स [मद् + मत्] 1 मछली 2 मत्स्य देना का स्वामी ।
मत्सर [मद् + सत्] 1 ईर्ष्यालु, डाह करने वाला 2 अतृप्त लाठवी, मोमी 3 दरिद्र 4 बुद्ध, - रः 1 ईर्ष्या, डाह—अदत्तावकाशो मत्सरस्य - का० ४५, परवृत्तिपु बद्धमत्सराणा—कि० १३।७, शि० १।६३,

हु० ५।१७ 2 बिरोधिता, वायुता—रघु० ३।६०
3 घमड—शि० ८।७१, 4 लोम, लालध 5 क्रोध,
कोपावेश 6 हांस वा मञ्जर ।

वस्त्रिन् (वि०) [मस्त्र + इति] 1 ईर्ष्यालु, डाह
करने वाला—परबुद्धिमस्त्रिन् मनो हि मानिनाम्—शि०
१५।१, २।११५ दुष्टात्मा परमुखावन्तरी मनुष्य
—मञ्ज० १।२७, रघु० १।८।१९ 2 बिरोधी, वायुनापूर्ण
3 साक्षात्, स्वार्थत (अधि० के साथ) 4 दुष्ट ।

मत्स्यः [मद् + स्यन्] 1 मछली—शूले मत्स्यानिवा-
पथ्यन् दुर्बलाबलवन्तरा मनु० ७।२० 2. मछलियों
की विशेष जाति 3 मत्स्य देश का राजा, स्वामी
(हि० व०) ग्रीन राशि.—स्याः (ब० व०) एक
देव तथा उसके अधिवासियों का नाम—मनु० २।१९
याज्ञ० १।८३, 1 सम०—अलका,—अशी एक विशेष
प्रकार की सोमलता, -अव्, -अवत -आव (वि०)
मछलियाँ खाकर पकने वाला मत्स्यमक्षी,—अवतार
विष्णु के दस अवतारों में सबसे पहला अवतार
(सातवें मनु के शासनकाल में दूधित हुई मारी पुत्री
वाइवस्वत हो गई और पावन मनु तथा सप्तारियों
(इनकी विष्णु ने मछली बनाकर बना लिया था) की
छांरकर मय जीवधारों प्राणी कालकवलि हो गये)
३० इस अवतार का ब्रह्मदेववर्षित वर्णन—प्रलयपयो-
विजले धृतमानसि वेद विहितवर्षित्प्रचरिन्ममवेद
केवाव धृतामीनवरीर जय जगदीश हृते—गीत० १,
—अज्ञानः 1 रामचिरंया (एक शिकारी पक्षी)
2 मत्स्यमक्षी,—अमुत्: एक राजस का नाम,—आधीच
मछुवा, आधानी धानी मछलियाँ रखने की टोकरी
(जिसे मछुबे प्रयुक्त करते हैं)—उदरिन् (पु०)
बिराट का विशेषण,—उदरी सत्यवती का विशेषण
—उदरीय, व्यास का विशेषण, उपधीचिन् (पु०)
मछुवा,—करिष्का मछलियाँ रखने की टोकरी, मय
(वि०) मछली की गंध रखने वाला, (बा) सरस्वती
का नाम—बद्ध एक प्रकार की मछली की बटनी
धामिन्—धीचत्,—धीचिन् (पु०) मछुवा,—जालम्
मछलियाँ पकड़ने का जाल, देश मत्स्यवासियों का
देश,—नारी सत्यवती का विशेषण,—नासकः—नासनः
मत्स्यमक्षी उकाव, कुररपक्षी—पुराणम् अठारह
पुराणों में से एक, -अन्वत्,—अन्विन् (पु०) मछुवा
—अन्वन्म् मछली पकड़ने का काटा, बशी,—अन्व
(वि०) भी मछलियाँ रखने की टोकरी,—रङ्गु,—रङ्गु,
—रङ्गकः रामचिरंया (मछली खाने वाला एक
शिकारी पक्षी)—वेचनम्,—वेचनी मछली पकड़ने
की बशी,—अव्यक्त, मछलियों का दूर,—मत्स्यच्छिका,
मत्स्यमक्षी मोटी या बिना साक की हुई भीनी ही ही
इय सीधुपाओद्वैकित्स्व मत्स्यच्छिकोपयता—मालवि० १ ।

मम् दे० मन्व ।

मभ माय ।

मभम् (वि०) (स्त्री० मी) [मभ + स्युट्] 1 मिलने
वाला, मधन करने वाला 2. चोट पहुँचाने वाला,
अति देने वाला 3. मानने वाला, नष्ट करने वाला,
नाशक—मुषे मधुमधनमनुष्यमनुमर राधिके—गीत०
२—भा: एक वृक्ष का नाम,—मम् 1 मन्वन करना,
बिलोना, विजुल्य करना 2 पियला, राहना 3 अति,
चोट, नाश। सम०—अभक्त, पर्वत, मन्दराचल
पहाड़ जिसको रई का डडा बनाया गया था ।

मभि [मभ् + इ] रई का बड़ा ।

मभित (भू० क० कृ०) [मभ् + क्त] 1 मया गया,
बिलोया गया, विजुल्य किया गया, लूट लियाया गया
2 कुचला गया, पीसा गया, चूटकी काटी गई 3 कष्ट-
प्रस्त, दुःखी, अत्याचार पीड़ित 4. बध किया हुआ,
नाश किया हुआ 5 स्थानभ्रष्ट (दे० मन्व),—तम्
(बिना पानी डाले) मया हुआ विजुल्य मट्टा ।

मभिन् (पु०) [मभ् + इति] (कन्० ए० व०—मया कर्म०
ब० व० मभ) रई का डडा—मूहु प्रपुञ्जेषु मया
शिवतर्नैन्दल्लु कुम्भेषु मद् ब्रह्मन्वरम्—कि० ८।१६, नै०
२२।४४, 2 वायु 3 उज्ज, 4 पुष्प का लिंग ।

मभ् (घ) रा [मभ् + उ (ऊ) र् + टाप्] यमना नवी
के दक्षिणी किनारे पर बना हुआ एक प्राचीन नगर,
कृष्ण की जन्मभूमि तथा उसके कारनामों का स्थल,
यह भारत की सात पुष्यनगरियों में एक है, (दे०
अवन्ति) और आज भी हजारों की सख्या में भक्त
लोग दर्शनार्थ यहाँ जाते हैं। कहा जाता है कि इस
नगर की शत्रुघ्न ने बसाया था निर्ममे निर्ममोऽर्थेषु
मयुग मयुराहुति—रघु० १५।८, कलिन्दकन्या मयुरों
गताग्निं गङ्गासिमतसकजलेषु भाति—९।४८, 1 सम०
—ईश,—नाचः कृष्ण का विशेषण ।

मद् उरामपुत्र्य सर्वनाम के एक वचन का रूप जो प्राय
समस्त शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त होता है—मया
मदये, 'मेरे लिए' 'मेरी सातिर' 'मच्चित्त' 'मेरे विषय
में मोचकर' महचनम्, मत्सन्देश, मत्प्रियम् आदि ।

मद् । (विवा० पर० माधति, मदा) 1 मस्त होना, नशे
में चूर होना—वीक्ष्य मच्चमितगतु मयाव—शि०
१०।२७ 2 पागल होना 3 आनन्द मगना, सुखी
मनाना 4 प्रसन्न या हूष्ट होना । प्रे० (मादयति)
1 नशे में चूर करना, मद्योन्मत्त करना, पागल बना
देना 2 (मदयति) उल्लसित करना, प्रसन्न करना,
लुप्त करना—मा० 1।३१ 3 प्रथमोऽमाद को उत्तेजित
करना—मा० ३।६, उद्,— 1 मस्त या नशे में चूर
होना (बाच० से भी) 2 पागल होना—यनु० ३।
१११, प्रे०—ज्मे में चूर करना, मद्योन्मत्त करना

-- अद्यापि मे हृदयमृगमदमन्ति हस्त भागि० २५,
 ३ १ नये मे चूर होना, मस्त होना 2 उपेक्षक
 होना, कायरवाह या अवधान रहित होना (अधि
 के साथ) अतीव्रान्त प्रमाद्यन्ति प्रमाद्यन्तु विपश्चित
 मनु० २।२१३ 3 मूलषक होना, भटक जाना, विच-
 लित होना यथा स्वाधिकान्तरप्रसक्त मेघ० १ में,
 4 यलती करना, मूल करना राहू मूल जाना-भट्टि०
 ५।८, १।३।९, १।८।८, सम्-1 नये मे चूर चूर होना,
 2 हृष्यपुस्त होना, प्रसन्न होना ।
 ३ (चुरा० आ० मादधने) प्रसन्न करना, लुप्त
 करना ।

मयः [मय् + अच्] 1 मरकता, मक्ती, मद्योगतता
 --मदेनास्पृश्ये-दश०, मयिकाराणा दशक-का० ४५,
 दे० नी० समस्त पद 2 पागलपण, विक्षिप्तता 3 उप
 प्रयोजनमाद, लालसापूर्ण उत्कण्ठा, गाढाभिलाषा,
 कामुकता, मयुनेच्छा - इति मयमदनाभ्या रागिण
 स्पष्टतराणां सि० १०।९।४ मदनल हाथी के
 मस्तक से चूने वाला मय मदेन भाति कलम प्रतापेन
 महोपति चन्द्र० ५।४५, इनी प्रकार दे० मदनल,
 मदात्मत, मेघ० २०, रघु० २।७ १२।१०२ 5 प्रेम,
 रूझा, उत्कठा 6 घमण्ड, अहंकार, अभिमान पंच०
 १।२४० 7 उन्मत्त, आनन्दान्तरिक 8 लीची हुई
 पाराव 9 मय, गहद 10 कन्तूरी 11 बीचें, मूक ।
 सम्० अल्पय- आतड्य, सुरापात्र के परिणामस्वरूप
 होने वाला विकार (सिरदर्द आदि),- अन्ध (वि०)
 1 मय से अन्धा, पीकर बेहोश, नींद उत्कण्ठा से पीने
 हुए अचरमिक मदाव्या पानुमेधा प्रवृत्ता विक्रम०
 ४।१३, 2 अभिमान मे अंधा, घमडी, अवनयनम्
 तथा डूर करना,--अन्धर 1 मदवाला हाथी 2 इन्द्र
 का हाथी ऐरावत, अलत (वि०) नये या जोश से
 निहाल,--अवस्था 1 पीकर मदर्होशी की हालत
 2 स्वेच्छाचारिता, कामासक्ति 3 मय चूने की स्थिति
 --रघु० २।७,--आतड्य (वि०) मद्योगत,--आह्वय
 (वि०) पीकर मस्त, नये मे चूर (इय) ताड़ का
 पेड़,--आम्नातः हाथी की पीठ पर बजाया जाने
 वाला डोल या नगाडा, आलापिन् (पु०) कोयल,
 --आह्व कन्तूरी, उत्कट (वि०) 1 मय में चूर,
 मज्जान से उमेजित 2 तीव्र प्रयोजनम्, कामुक
 3 अभिमान, घमडी, दर्येक 4 मदवाला, मयमस्त
 रघु० ६।७, (इ) 1 मद्योगता (?) 2 पीठकी,
 (इ) लीची हुई गणव,--उदय, उन्मत्त (वि०)
 1 पीकर मस्त, नये मे चूर 2 मयकर, जोश से भरा
 हुआ-मदीवशा ककुषानः सतिता कलमडुता-रघु० ४।
 २२, 3.आभिमानी, घमडी, अहंकारी,--उदल (वि०) जोश
 से भरा हुआ--इ० ३।३१ 2 घमण्ड से फूला हुआ,

--उत्कषापिन् (पु०) कोयल, कर (वि०) मादक,
 नये मे चूर करने वाला,--कारिन् (पु०) मदवाला
 हाथी,--कल (वि०) मदभाषी अव्यक्तभाषी, अस्पष्ट-
 भाषी रघु० १।२७, प्रेम की मयध्वनि उत्पन्न
 करने वाला 3 जोश से भरा हुआ--उत्तर० १।३१,
 मा० १।१४ 4 असाद परन्तु मयुर--मदकाल कृति
 सांगसानाम्--मेघ० ३१, 5 मदवाला, घमण्ड,
 मद्योगत विक्रम० ४।२४, (-रः) मदवाला हाथी
 --कोहल (स्वेच्छा से भ्रमण करने के लिए) मस्त
 सडि,--कल (वि०) प्रयोजनमाद के कारण केलिप्रिय
 --विक्रम० ४।१६,--यथा 1 मादकपेय 2 पदसत,
 --गमन शैला--च्युतु (वि०) 1 (हाथी की भाँति)
 मय चूबने वाला 2 कामुक, स्वेच्छाचारी, पीकर धुन
 3 आनन्ददायक उन्मत्तमय (पु०) इन्द्र का विशेषण
 --जालम्,--वारि (तपु०) मदन, मदवाले हाथी
 के गण्डस्थल से चूने वाला मय,--अ्वर घमण्ड या
 जोश का बुझार--भर्ग० ३।२३,--द्विप, उन्मत्त हाथी,
 मयमस्त हाथी,--प्रमयि,--प्रसेक,--प्रमयणम्--जालः,
 --कृति (स्त्री०) हाथी के गण्डस्थल मे मय का चूना,
 --मूष (वि०) 'मद टपकाने वाला' मद्योगत, नये में
 चूर-उत्तर० ३।१५,--रक्त (वि०) ओषधीला,--राव
 1 कामदेव 2 मूर्धा 3 पीकर धुन,--विक्षिप्त (वि०)
 1 मयमस्त, मद्योगत 2 कामलाकांक्षा से विद्युज्व
 विह्वल (वि०) 1 घमण्ड या काम लाभता से
 पागल 2 नये के कारण निश्चेष्ट,--बुध, एक हाथी,
 --शौषकम् जायकन,--सारः बाड़ी,--स्वल्पम्,--स्वानम्
 मदिरालय, पराबधर, मद्युजाल ।

मदन (वि०) (स्त्री ली) [मार्चिन् अनेन मद् करणे
 ल्यट्] 1 मादक, पागलपन लाने वाला 2 आनन्द-
 दायक, उन्मत्तमय, न. 1 कामदेव व्यापारोभि
 मदनस्य निधेवितव्यम् श० १।२७, हतापि निहु-मयेव
 मदन - भर्ग० ३।८ 2 प्रेम, प्रयोजनमाद, उत्कण्ठा,
 कामुकता विनयकारित्ववृत्तितसत्याय न विवृता मदनो
 न च सवृत् - इ० २।११, सतन्निपत मदनस्य
 दीपकं ऋतु० १।३, रघु० ५।६३, इसी प्रकार
 'मदनानुर' 'मदनपीडित' आदि 3 वधत ऋतु
 4 मधुमक्खी, औरा 5 मीम 6 एक प्रकार का
 आलियन 7 घतुरे का पीथा 8 बकुल का मूश, लँर,
 --ना,--नी 1 लीची हुई शराव 2 कन्तूरी 3 अतिमूक्त
 लता (—नी केवल इत ही अर्थों में),--मम् 1 मादक
 2 प्रमत्त करने वाला, 3 आनन्ददायक । सम्०
 --अयकः एक धान्यविशेष, कोदो,-- अह्वकृष्णः 1 गुरुष
 का लिय 2 नाहन या नमनसत (सम्भोग के समय
 हुआ)--अस्तकः--अरि, दमक, इहमः,--काशनः,
 रिपुः पिय के विशेषण,--अयक्य (वि०) प्रेमासक्त,

सागरात्—आतुर—अर्थात्, विलुप्त पीडित (वि०) कामान्, प्रेमविल्लस, कामरोगी रघु० १२।३२, ध० २।१०, -आयुष्यम् १ स्त्री की भग या योनि २ 'कामदेव का अर्पण' अर्थात् कामध्वजयुगी स्त्री, आत्म्या, यन् १ स्त्री की योनि २ कमल ३ राजा, -इच्छाफलम् भामो का राजा, -उत्सव-कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला बसन्त-कालीन उत्सव, (बा) अमरा, उत्सुक (वि०) प्रेम के कारण उत्कण्ठित या निडाल, -उत्सवम् 'प्रमोद वन' एक उद्यान का नाम, -कष्टकः १ प्रेमप्राप्तना से उत्पन्न रोमांच २ वृक्ष का नाम कलहः प्रेमकलह, मूँचन् छेदमुलभाम्, भा० २।१२, -काकुरव पैड़की या कजुनर, गोपालः कृष्ण का विशेषण, -चतुर्विंशो चतुर्विंशती चतुर्विंशती, इसी दिन कामदेव के सम्मानार्थ मनाया जाने वाला उत्सव, -त्रयोदशी चतुर्विंशती त्रयोदशी या काम के सम्मान में उम दिन मनाया जाने वाला उत्सव, -वर्तिका अतीस, स्त्री, -वर्जित् (पु०) मजन पत्नी, -पाठकः कीचक, -पीडा, -बाधा प्रेमवदना, प्रेम की टीस, बहुल्लसः कामदेव के सम्मान में मनाया जाने वाला महात्म्य, -मोहः कृष्ण का विशेषण, -मलिनम् प्रेमकेलिन, रगरेली, कामकीटा, -मेघः प्रेम-पत्र, -महा (वि०) प्रेममूर्ध, माहित, -महाका १ कोयल (मादा) २ कामोद्दीपक ।

मदनक [मदन + कन्] एक पीछे का नाम, मदनक ।
मदवलिना, मदवली [मदयन्त्री - कन् + टाप् ह्रस्व, मद् - णिच् + अच् + ङीप्] एक प्रकार की चमेली (अरब की) ।

मद्वर्षाणम् (वि०) [मद् + णिच् + इत् + लृच्] १ मादक, पापल बनाने वाला २ आनन्द देने वाला, - लृ १ कामदेव २ बादल ३ कलवार ४ पीकर घृत हुआ ५ लीची ६ दुःख, (उम अर्थ में 'नपु०' भी) ।

मद्वार [मद् + आर्त्] १ मरवाला हाथी २ मूजर ३ धतूरा ४ प्रमा, हासक ५ एक प्रकार का सुगंध द्रव्य ६ ठग या बदमाश ।

मद्वि (स्त्री०) [मद् + इन्] मटेला, मंडा ।

मद्विर (वि०) [माद्यति अनेन मद् करने किञ्च्] १ मादक, दीवाना करने वाला २ आनन्ददायक, आकषक, (आलो हा) उप कर, -र (लाल फूलों का) चौर का वृक्ष । सम० अक्षी, - ईश्वर - जयमा, -लोचनाना मनोहर और आदर्श आँखों वाली स्त्री -मधुकर मदिगव्या गन, नरगा प्रवृत्ति -विक्रम० ६।२२, रघु० ८।८६, -आयतनयन (वि०) बड़ा और मात्रा २ आँखों वाला - ध० ३।५, -आत्मः मादक पत्र ।

मद्विरा [मदिर् + टाप्] १. स्त्री की हुई शराब काशयफला बदनमदिग दीव्यवच्छयनाया -मेघ०७८, शि०

११।४९ २ एक प्रकार का लजन पत्नी ३ दुर्गा का नामान्तर । सम० -उत्कट, - उन्मत्त (वि) शराब के नदी में चूर, -मृगम्, -शास्त्रा मदिगालय, शराबखाना, मधुनाला, -सम्भ. आम का पेड़ ।

मद्विष्ठा [अतिमयेन मदिनी -इष्टन्, इतो लोप, टाप्] स्त्री की हुई शराब ।

मद्वीय (वि०) [मस् + उ, मदादेश] मेरा, मुझसे सबद्ध, -रघु० २।४५, ६५, ५।२५ ।

मद्व्यू [मस् + उ न्यङ्क्वा०] १ एक प्रकार का जलचर जन्तु, जलकाक, पनटुध्वी पत्नी २ एक प्रकार का लीप ३ एक प्रकार का जंगली जानवर ४ विशाल नौका या युद्धपोत काजपि मद्रुगम्यभावत् दस० ५ एक पतित बर्णसकर शक्ति, भाट जाति की स्त्री में बाहुल्य द्वारा उत्पन्न मन्तान -दे० मद्रु० १।७।४८ ६. जाति-वहिकृष्ण ।

मद्व्युरः [मद् + यूक् + उरच, न्यङ्क्वा०] १ गोताफोर, माती निकालने वाला २ जर्मनमछली ३ एक पतित बर्ण नकर जाति -दे० मद्रु० (५) ।

मद्र (वि०) [माद्यत्वेन करने यन्] १ मादक २ आनन्ददायक, उल्लासमय, -छम् लीची हुई शराब, मदिग, मादकोय-रगतिनि इ. निगमकुर्यात् -रघु० ७।६९ -मन० ५।५६, ९।४४ १०।८९। सम० -आयोः मोलमिरो का पत्र, -कीटः एक प्रकार का कीड़ा, -इयः एक प्रकार का वृक्ष, मादवृक्ष, -यः पियकट, शराबी, नशेबाज, मद्रो १ मादक मदिग पीना २ कोई भी मादक पत्र, -योत्त (वि०) पीकर नशे में चूर -गुप्सा धानकी नामक पीषा, पी, -बी (बी) जल खमोर उठाने वाली ओषध, खमोर पैदा करने वाली लैट, -भाबकम् शराब का गिलास, इसी प्रकार मद्य-भाबकम्, -मण्डः शराब का भाग, मद्यफेन, -बाधिनी धातकी नामक पीषा, -सघलम् मदिग लीचन ।

मद्र. [मद् + रक्] १ देश का नाम २ उम देश का शासक, -ही (व व०) मद्र देश के अधिवासी, -इम् हृप प्रसन्नता (मद्राह -मद्राह बालकाटना, कँची से कत-रना, मूँडना) । सम० -कार (वि०) ('मद्रकार' भी) हृपोत्पादक ।

मद्रकः [मद्र + कन्] मद्र देश का शासक या अधिवासी, -का (व० व०) दलिन देश की एक पतित जाति ।

मद्वच्य [मधु + यत्] वैशाख का महीना ।

मद्रु (व०) (स्त्री० - धु या० ध्वी) [मन्यत इति मधु, मन् + उ नम्य घः] मधुर, सुगन्ध, रुचिकर, आनन्द युक्त -नप० (धु) १ सहृद एताम्ना मधुवी पागदचोर्नालि सविद्यास्तवयि उत्तर० ३।३६, मन् निल्धलि जिह्वाधि हृदये तु ह्लासकम् २ पुण्यम या कुलो र' रस -कु० ३।३६ देहि मन्कमलमधुपान

—गीत० १० ३ मीठा मादक, पेय, शराब, स्त्रीकी हुई शराब—विनयले स्म तद्यथा मधुभिर्बिजयभ्रमम्
—रघु० ४।६५, ऋतु० १।२ ४ पानी ५ शक्कर
६ मिठास, —पु० (शु०) १ बनल ऋतु—कृ० नू हृदय-
ज्जम सखा क्षुभुमायोचितकार्मुकी मधु—कु० ४।२४-
२५, ३।१०, ३०, चंद्र का महुना—भास्करस्य
मधुमाघवाचिव—रघु० ११।१०, मासे मधौ मधुरको-
किलभूजनादे रामा हरन्ति हृदय प्रसभ नराणाम्
—ऋतु० ६।२४ ३ एक राक्षस का नाम जिसे विष्णु
ने मारा था ४ एक और राक्षस जिसके पिता का
नाम लवण था तथा जिसे शत्रुघ्न ने मारा था
५ अशोक वृक्ष ६ कार्तवीर्य राजा का नाम । सम०
—अश्वीला शहद का लौटा, जमा हुआ शहद,
—आषाढः मोम, आषाढ (वि०) पहली बार शहद
चलने वाला—मनु० ११।१९, —आषा एक प्रकार का
आम का वृक्ष, —आषाढ (शहद से) स्त्रीकी हुई मीठी
शराब, —आषाढ (वि०) शहद का स्वाद चलने वाला,
आहुतिः (स्त्री०) यज्ञ में मिठास की आहुति देना
—उत्थिच्छटम्, —उत्थम्, —उत्थितम् मधुमन्त्रियों का
मोम, —उत्थसः बसन्तोत्थय, —उत्थकम् 'मधुजल', शहद
मिला हुआ पानी, जलमधु उत्थानम् बसन्तोत्थान,
—उत्थनम् 'मधु का आवास' मधुरा का नामान्तर
—रघु० १५।१५, —कण्ड कोयल, —कर १ मीरा
—कुटजे खनु तेनेहा तेने हा मधुकरेण कथम्
—भामि० १।१०, पंच० १।३०, मेघ० ३५।४७ २ प्रेमी,
कामुक, 'गण', 'श्रेणि' (स्त्री०) मक्खियों का झुंड,
—कर्कोटी १ मीठा नींबू, चकोतरा २ एक प्रकार
का छुहारा, काननम्, —कनम् मधुराक्षय का वन,
—कारः—कारिन् (पु०) मधुसक्ती कुक्कुटिका,
—कुक्कुटी एक प्रकार का नींबू का पेड़, —कुन्धा
मधु की नदी, कृत (पु०) मधुमक्खी, —केषरः मधु-
मक्खी, —कीषा, —कः मधुमक्खियों का छुरा, कम्,
शहद की मक्खियों का छला (ब० ब०) मदिरा पीने
की हौद, आषाढक, —कीर', कीरक, खजूर का पेड़,
—कायल कोयल, —कह मधु का नंपण, —कोष कोयल,
—जम् मोम, —जा १ मिमरी २ पत्नी, —जम्बीर
एक प्रकार का नींबू जित्तु, द्विष्, —निषुबल,
—निहन्तु (पु०), मधु, —मधन, —रिपु, —शत्रु,
सुहन, विष्णु के विशेषण— इति मधुरिगुणा मधुं
निधुक्ता, — गीत० ५, रघु० १।४८, वि० १५।१,
—तुण—गम् गन्ना, ईल, —त्रयम् तीन मीठे पदार्थ
अर्थात् शक्कर, शहद और मी, —वीण कायदेव, —वृत्त
आम का पेड़, बोग, मधु था मिठास लीचका, —इ.
१ मीरा २ कामुक, —इव काल फूलों का एक वृक्ष,
—इमः आम का पेड़, —बातुः एक प्रकार का पीला

मासिक, —बारा शहद की बार, —बुक्तिः राव, बूद,
— मालिकेरक एक प्रकार का नारियल, मेनु (पु०)
मीरा, क मधुक, या पिपकक—राजश्रीको कं-
विष्णो रमले मधुपैः सह—भामि० १।१२६, १।३३,
(यहा दोनो अर्थ अभिप्रेत हैं), —पटम्बु शहद की
मक्खियों का छला, —पति कृष्ण का विशेषण, —पक्ष
'शहद का विशेषण' एक सम्मानयुक्त उपहार जो किसी
अतिथि को या कन्या के पिता के द्वार पर आ जाने
पर हूले को अर्पित किया जाता है, इसमें विन्यक्तित
पांच पदार्थ डाले जाते हैं—दधि सौपत्रिक क्षौद्र सित्त
चंतेदच पक्षि, प्रोच्यते मधुपर्क, तयामो मधुपर्क
—उत्तर ०४, अमिस्वइधमपुष्पकर्मणि स तु व्यथा-
सकंमुर्कंदविनाम्, यदैष पास्थन्मधु भीमजाघर-
मिषेण पुष्याहृविषि तथा कृतम्—नै० १६।१३, मनु०
३।११९ तथा आये, —पक्ष्ये (वि०) मधुपर्क का
अधिकारी, बलिष्ठा, —पक्षी नील का पौधा, —पक्षिन्
(पु०) मीरा, —पुरम्, —री, मधुरा का विशेषण -
मयत्वच्छित्तवातल मधुपुरीमध्ये हरि सेव्यते—भामि०
४।४४, —पुष्प १ अशोक वृक्ष २ मीलसिरी का वृक्ष
३ दन्ती वृक्ष ४ मित्रम का पेड़, प्रषयः शराब की
खन, मधुमेह, शंकरायुक्त मूत्र, —श्रावणम्
सूटीकरण के मोहल सस्कारों में से एक जिसमें नव-
जात शिशु का मधु चढ़ाया जाता है, —त्रिष बरगम
का विशेषण, —फल एक प्रकार का नारियल, —कलिका
एक प्रकार का छुहारा, —बहुला मावरी लता, —बी
(बी) अजगर का वृक्ष, —बी (बी) जवुर एक प्रकार
की नींबू, चकोतरा, मज, —सा, —मक्षिका मधुमक्खी,
—मधुजन अलोट का पेड़—मधु शराब का नशा
—मन्त्रि, स्त्री (स्त्री०) मावरी लता, —माघकी
१ एक प्रकार का मादक पेय २ कोई भी वस्तु ऋतु
का कृष्ण, —माघकीकम् एक प्रकार की मादक मदिरा,
—मारक मीरा, —मेह—मधुप्रेत दे०, —पष्टि (स्त्री०)
गन्ना, ईल, मुलेठी, —रस १ ताड़ का वृक्ष जिससे
ताड़ी बनती है) २ गन्ना, ईल ३ मिठास, (सा)
१ अमुरा का गुच्छा २ अमुरा की बेल, —सम्बः एक
वृक्ष का नाम, —सिहू, सेहू, —सेहिम् (पु०),
—सोम्य मीरा इसी प्रकार 'मधुनो सेहू', —बन्धम्
वह जगल जहाँ मधु नामक राक्षस रहा करता था
जिसको मारकर शत्रुघ्न ने मधुरा नगरी बसाई थी,
(म) कोयल, बारा (पु०, ब० ब०) बार २ पीने
वाले, शराब के जाम पर जाम चढ़ाने वाले, इटकर
शराब पीने वाले अर्थात् बहुमता प्रथदानामोष्ठ-
शाबकनदो मधुवारा—कि० १।५९, तास्वित नू तास्वित
नू बधना आस्वित नू हृदय मधुवारा वि० १०।१४,
(कभी कभी यह शब्द एक बचनावत भी होता है) दे०

कि० ८१५७, ब्रह्मः शीरा मासिक को मन्वानाम-
नरणा मधुबतम् भासि० १११७, तस्मिन्मधु मधुको
विधिपसात्माभ्याकमाकाशति ४६, कर्करा सहृद से
नैवार की हुई सकर,--आशः एक प्रकार का (महूर
का) पेड़,--सिन्धु,--शेषम् शीष,--सन्धः, सन्धु,
--कारधि, मुहुध कामदेव,--सिन्धुकाः एक प्रकार
का विष,--सुधनः शीरा, स्वाम्भु मन्मन्सिन्धो का
छना, स्वधः कोबल, हनु (पु०) १ सहृद की नष्ट
करने वाला या एकत्र करने वाला २, एक प्रकार का
शिकारी पक्षी ३, उद्योगिणी, प्रविध्यवशात् ४, विष्णु
का नामान्तर ।

मधुक [मधु + कन्, कं + क वा] १ एक वृक्ष (= मधुक,
महुआ) का नाथ २ अशोक वृक्ष ३ एक प्रकार का
पक्षी, कम् १ जन्ता २ मुर्खी ।

मधुर (वि०) [मधु भापुयं गति रा + क मधु मल्लिकार्जु-
न वा] १ मीठा २ अहमयुक्त, मधुमय ३ सुख, मनो-
हर, आकर्षक, मधिकर--जहो मधुरधामां बह्वैकम्
श० १ कु० ५१७ उभर० ११०० ४ सुरीला
(गर्ज), २ मीठ रस का गन्ध, ईश २ चाबक
१ राव, गृह ४ एक प्रकार का आम, रघु १ भापुयं
२ मधुमय, पार्श्वे ३ विद्य ४ जन्ता, -रघु (अभ्य०)
मिठाम क माध सुहावने द्रव से, रोचकता के माध ।
मम० अक्षर (वि०) मधुर ध्वनि वाला, मिष्टभाषी,
रमोला, आलाप (वि०) मधुर शब्दों का उच्चारण
करने वाला (घ) मधुर या मरीचे स्वर मधुपताप-
निसर्ग पण्डितानाम्-कु० ४११६, (-शा) मीठा, मदनसा-
यिका,--कष्टक एक प्रकार की मछली,--कम्बीरम् नीबू
का एक जाति,--प्रयत्न-मधुवयम् दे०, -कला एक
प्रकार का पेंसिली डेर,--भाषित,--भाष् (वि०)
मधुरभाषी,--अक्षा एक प्रकार का छुहारे का पेड़,
स्वर,--स्वत (वि०) मधुर स्वर से अलापने वाला,
मधुस्वर वाला ।

मधुरता, -स्वम् । मधुर + तन् + टाप्, त्व वा] भापुयं,
सुहावनापन, रोचकता ।

मधुरितम् (प०) [मधुर + इमनिष्] भापुयं, रोचकता
मधुरिगतिमयने बर्वाभुउम्--भासि० ११११ ।

मधुनिका [मधुन + कन् + टाप्, इत्यम्] काली सरसो,
गई ।

मधुक [मधु + उक्त नि० ह्रस्व घ] १ शीरा २ एक
वृक्ष का नाम महुआ,--कम् मधुक (महूर) वृक्ष
का फूल-दुर्वाकता पाश्चिमदुकवान्ता-कु० ७११६,
नित्यो मधुकम्भविगंघ-नीत० १०, रघु०
६१२५ ।

मधुक [मधु + तानि का + कृषो०] एक प्रकार का
वृक्ष, -सो आम का पेड़ ।

मधुलिका [मधुल + कन् + टाप् इत्यम्] एक प्रकार
का वृक्ष ।

मध्य (वि०) [मधु + यन्, तस्य घ, तारा०] १ बीच
का, केन्द्रीय मध्यवर्ती, केन्द्रवर्ती--मेघ० ४६, मधु०
२१२१ २ अन्तर्वर्ती, मध्यवर्ती ३ बीच के दूबों का, मध्यक,
समियाने कदका, बीच का--प्रारम्भ विष्णुविहता विर-
मनि मध्या मन्० २१२७ ४, तटस्थ, मिल्पला
५ मध्य, यथायं ६ (उद्यो० में) मध्यभाग, -ध्व,--ध्वम्
१ मध्य, केन्द्र, मध्य वा केन्द्रीय भाग अह्नु मध्यम्
दोपहर, दिन का मध्य--सहस्रदीपिनरककुरोति
मध्यमह्नु मा० १, 'मूयं शिरोविन्दुं यं १ । अर्थात्
ठीक सिर के ऊपर है, श्लोममध्यं विष्णु० २११
२ शरीर का मध्यभाग, कमर--मध्यं शामा- मेघ०
८२, वेदिविलम्भमध्या कुम० ११३१ विशालमवास्त-

मुत्तममध्य--रघु० ६१२३ ३ पेट, उदर मध्यन
बलिचय चाय बमार बाला-कु० ११३१ ४ किसी
वस्तु का भीतर भाग ५ बीच की स्थिति या दशा
६ बोरे की कोश ७ तमोन में मध्यवर्ती सप्तक
८ किसी श्रेणी की मध्यवर्ती राशि, क्या बीच की
जगह, ध्वम् दल अरब की सफा 'मध्य' के कर्म०,
करण० अपा० और अधि० के रूप कि० ० वि० की
धति प्रयुक्त होने हैं (क) मध्यम्, के बीच में
(ख) मध्यमे से, बीच में (ग) मध्यात् में से, के
बीच (सब० के साथ) से शेषा मध्यात् काक प्रोवाच
-पच० १ (घ) मध्ये १ बीच में, में, मध्य में
रघु० १२१२९ २ में, के अन्दर, के भीतर, बहुधा
(अब कि अर्थयोपाश समस्त के आदि पद के रूप में
प्रयोग हो) उदा० मध्यगङ्गात् 'गंगा में', मध्येजठरम्
'पेट में'-भासि० १११८, मध्येनगम् 'गण' के
भीतर मध्येनदि 'नदी के बीच में' मध्येपठम् 'पीठ पर'
मध्येमकम्, भोजन करने के पश्चात् फिर दोबारा
भोजन करने से पूर्व बीच में ली जाने वाली औषधि,
मध्येरगम् 'पूठ में'-भासि० ११२८, मध्येसत 'सना
में या मजा के सामने'-नै० ६१७६, मध्येसमद्म्
'समूह के बीच में' शि० ३१३१ । सम०--अङ्गणिक,
-सो (स्त्री०) बीच की जगह--अह्नु ('अह्नु'
के स्थान में) मध्याह्न, दोपहर, 'कृष्णम्', 'श्वेता दोप-
हर के समय की जाने वाली शिवा, 'काक' 'श्वेता'
'सव्य दोपहर का समय, 'भानाम् दोपहर का नहाना,
--कर्म: अर्धगाय, ग (वि०) बीच में जाने वाला
गल (वि०) केन्द्रीय, मध्यवर्ती, बीच में होने वाला,
गन्धः बाय का वृक्ष, -बह्वन्मू पहल का मध्य,
विष्णुम् ('मध्यदिनम्' भी) १ मध्य दिन, दोपहर
२ दोपहर का उपहार, - बीचकम् बीच अन्कार का
एक शब्द, इत्यं सामान्य विशेषण भी अन्तत विशेषण

पर प्रकाश डालता है बीच में स्थिति किया जाता है, उदा०—मट्टि० १०।२५, —बैसा 1 मध्यवर्ती स्थान या प्रदेश, किसी चीज का मध्यवर्ती भाग 2. कमर 3. पेट 4. याम्योत्तर रेखा 5 केन्द्रीय प्रदेश, हिमालय तथा विध्य पर्वत के बीच का भाग हिमवद्विन्ध्य-योर्मध्य यथाश्विनशानादवि, प्रायगेव प्रयागाञ्च मध्यदेश स कीर्तित—मनु० २।११, —बैहू शरीर का प्रमुख भाग, पेट, —षडम् मध्यवर्ती पद, °लोपिन दे० मध्यमपदलोपिन्, —पात सहृषमंभारिता, ममागम, —भागः 1 मध्य भाग 2 कमर,—भाष बीच की स्थिति, सामान्य स्थिति,—यवः पीली सरसो के छ दानों के बराबर का एक तोल, रात्र, —रात्रि. (स्त्री०) आधी रात, रात का बीच,—रेखा केन्द्रीय या प्रथमयाम्योत्तर रेखा,—लोक तीनों लोक के बीच का लोक अर्थात् मत्स्यलोक या समार, °हीन, ईश्वर. राजा,—वयस् अपेक्ष उन्न-वाला, —वसिन् (वि०) बीच में स्थित, केन्द्रवर्ती (पु०) विवाचक, मध्यस्थ, ब्रह्म माभि, —मृत्रम्= मध्यरेखा दे०,—स्व (वि०) 1 बीच में स्थित या विद्यमान, केन्द्रीय 2 मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3 बीच का 4 बीच—बचाव करने वाला, दो दलों के बीच मध्यस्थता करने वाला 5 निष्पक्ष, नटस्य 6 उदासीन. लगाव-रहित—श० ५, (स्व) निर्णायक, विवाचक, मध्यस्थ 2 विद्य का विशेषण, स्वल्पम् 1 मध्य या केन्द्र 2 मध्य स्थान या प्रदेश 3 कमर,—स्थालम् 1 बीच का पड़ाव 2 बीच का स्थान अर्थात् बायु 3 नटस्य प्रदेश, —स्थित (वि०) केन्द्रीय, अन्तर्वर्ती ।

मध्यतः (अध्य०) [मध्य +तसिन्] 1 बीच से, मध्य में, में से 2 में ।

मध्यम (वि०) [मध्ये भव - मध्य +म] बीच में स्थित या वर्तमान, बीच का, केन्द्रीय वितु पद मध्य-मनुप्यतन्ती-विक्रम० १।१९, इसी प्रकार 'मध्यमलाकपाल' मध्यमपदम् मध्यमरेखा 2 मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3 बीच का, बीच की स्थिति या विशेषणता का, बीच के दर्जे का यथा 'उत्तमाद्यममध्यम' में 4 बीच का, औसत दर्जे का- तेन मध्यमगस्तोति मित्राणि स्थानि-ताम्यत रघु० १०।५८ 5 बीच के कदम का 6 न सबसे छोटा न सबसे बड़ा, (भाई) बीच में उत्पन्न—प्रणमति पितात् वा मध्यम पाण्डवाद्यम्—वेणी० ५।२६ 7 तिष्पक्ष, नटस्य,—म 1 मगोन में पचम 2 विशेष सगीत पद्यति 3 मध्यवर्ती देग, दे० मध्यदेश 4 (व्या० में) मध्यम पुरुष 5 नटस्य प्रम-धमोत्तर तम्यममाभवने - रघु० १३।७ 6 प्राल का राज्यपाल, सा 1 बीच की अगुली 2 विवाह योग्य कन्या, वयस्क कन्या 3 कमल का बीचकोप 4 काठ-

शास्त्रों में बहिर्न एक नायिका, अपनी जवानी की उम्र के बीच लुँची हुई स्त्री, तु० सा० २० १००, मम् कमर । सम०—अनुपुल्ल बीच की अगुली, आहुरणम् (बोत्र० में) समीकरण म बीच की राशि का निरसन, कथा बीच का आगन, ज्ञात (वि०) दो के बीच में उत्पन्न, महला,—षडम् (समास के) बीच का पद, °लोपिन् (पु०) तत्पुरुष समास का एक अवाचक भेद जिसमें कि रचना के बीच का शब्द लुप्त कर दिया जाता है, इसका सामान्य उदाहरण 'साकपायिष' है, इसका विग्रह है - साक-पिय पायिष, यहाँ बीच के शब्द 'प्रिय' का लोप कर दिया गया, इसी प्रकार छायातक व मुद्रशाना अदि शब्द हैं वाच्य अत्रेन का विरोध, पुष्य (व्या० में) मध्यमपुरुष—वह पुरुष जिसको सम्बोधित किया जाय,—भूक्त किमान, संनिहुर (जो अपने लिए और अपने स्वामी के लिए स्वतंत्रता का काम करता है), - रात्र आधी रात,—लोक बीच का समार, भुलीक, °वास राजा रघु० २।१६, वयस् (पु०) प्रौढा कन्या, बीच की उम्र, वयस्क (वि०) प्रौढ, बीच की उम्र का, सग्रह बीच के दर्जे का गुणधर्म, जैसे कि गृहमें कपडे, पुण्य अदि उपहा में भेज कर पत्नीका की फुललाना, व्यास तेन इसकी निम्नांकित परिभाषा की है- प्रेषण यन्व्यापाना घृषभूषणचामसात्, प्रवेक्षित चारुवार्नमंध्यम यदत्र स्मृत,—साहस्य मीन प्रकार के दण्डभेदों में द्वितीय प्रकार मनु० ८।१३८, (स्व-सम्) मध्यवर्ग के प्रति अणक या अत्याचार,—स्व (वि०) बीच में होने वाला ।

मध्यस्क (वि०) (स्त्री०—सिका) [मध्यम +कन्] बीच का, बिलकुल बीचोबीच का ।

मध्यसिका [मध्यम + ; टाप्, इत्यम्] वयस्क कन्या, जा विवाह योग्य उम्र की हो गई हो ।

मध्ये द० 'मध्य' के अन्तर्गत ।

मध्य एक प्रसिद्ध आचार्य तथा शास्त्रप्रणेता, वैशाल मगदाय के प्रवर्तक तथा वेदान्तग्रन्थों के भाष्यकर्ता ।

मध्यक [मधु + अक्ष + अच्] भोरा ।

मध्यिका [मधु ईजते प्राप्नोति—मधु + ईज् + क + टाप्, पृथा० ह्रस्व] कोई भी मादक पेय, मीची हुई शराब ।

मन् । (इवा० प० मन्ति) 1 घमण्ड करता 2 पूजा करना ॥ (वृग० आ० मानयते) घमण्डी होना, ॥ (रिवा० नना० आ० मानयते, मनुते, मत) 1 मानना, विवशम करना, कल्पना करना, चिन्तन करना, उपदेश करना, विचारना—अङ्क केरुपि शर्माङ्कुरे जलनिधे पङ्क परे मेनिर—मुभा०, वस मन्त्रे कुमार-पायनेन जूषकाप्यमाग्नितनय—उत्तर० ५, ४५ भवान्मन्यते 'आपकी क्या सम्मति है' 2. स्वात्त कराना,

आदर करना, मानना, देखना, समझना, मान लेना—समीचीता इष्टिदिग्भुवनमपि ब्रह्म मनु०—भर्तु० ३१८४, अमस्तचानेन परार्थ्यज्यना विन्तेरवेत्ता स्थितिमतान्पथम्—रघु० ३१२७, १३३२, ६१८४, अण० २१२६, ३५ भट्टि० ११११७, स्तनविनिहितमपि हारमुदार सा मनु० इत्यतमृषि भारम्—गीत० ४ ३. सम्मान करना, आदर करना, मान करना, मूल्यवान् समझना, बड़ा मानना, बरेष्य समझना—यस्थानुपविज्ञान इमे भुवनविषय मोगादय रूपणलोकमता मचन्ति—भर्तु० ३१७६ ४. जानना, समझना, प्रत्यक्ष करना, पर्यवेक्षण करना, लिहाज करना—मत्वा देव धनपति-सम्ब यम साक्षाद्वस्तम् मेघ० ७३ ५ स्वीकृति देना, हाथी भरना, अमल करना—नरमणस्य मम वचनम् मूच्छ० ८ ६. सोचना, विचार विमर्श करना ७ इरादा करना, कामना करना, भाषा करना ८ मन लगाना, 'मनु' धातु के अर्थ उम णब्द के अनुभार जिसके साथ इसका प्रयोग होता है, विविध प्रकार से बदलने रहते हैं उदा० ऋण् मन् बहून् मानना, बड़ा समझना, बहुत मूल्य जानना, बरेष्य समझना, पूर्य मानना बहु मनुते तनु ते तनुत्यत-पवनर्वाजिनमपि देणम्—गीत० ५, 'बहु' के अन्वयैत भी दे०, ऋण् मन् तुच्छ समझना, चुपचा करना, अपमान करना—श० ७३१, अज्याथा मन् और तरह सोचना, संदेह करना, साधु मन् भला सोचना, अनुमोदन करना, मताधिकनक समझना, श० ११२, अज्ञाधु मन् नापसद करना, तुषाथ मन् या तुष्यत् मन् तिनके जैसा समझना, हलका मूल्य लगाना, तुच्छ समझना—हरिमयममसद तुषाथ शि० १५६१, न मन् अबज्ञा करना, अबहेलना करना, प्रेर० (मानयति-ते) मम्मान-करना, थड़ा दिखाना, आदर करना, अभि-वादन करना, मूल्यवान् समझना मान्यान्वायन—भर्तु० २१७७, इच्छा० (मोमासते) ३ विचार विमर्श करना, परीक्षण करना, अन्वेक्षण करना, पुछताछ करना २ संदेह करना, पुछताछ के लिए बूझना, (अधि० के साथ), अनु—स्वीकृति देना, हाथी भरना, अनुमोदन करना, स्वीकार करना, अनुमति देना, अनुज्ञा देना, मजूरी देना—राज्यान्ध्रपुरनि-सुययंजुमेने—रघु० ४१८७, १४१२०, तत्र माहमन्-मनुषुस्तहे मोषकृति कलमस्य चेष्टितम्—रघु० १११३१, ५० १५९९, ३१६०, ५१६८, भर्तु० ३१२२, रघु० १६१८५, प्रेर०—छट्टी मांगना, अनुमति मांगना, स्वीकृति मांगना—अनुमायिता महाराज—विष्णु० २, अग्नि- १ कामना करना, इच्छा करना, कामावित होना—मनु० १०१९५ ३ अनुमोदन करना, हाथी भरना ३ सोचना, उल्लेख करना, कल्पना करना, मानना,

अथ—, चुपचा करना, हेय समझना, अपमान करना, नीच समझना, तुच्छ समझना—वर्तुद्विधीयानवमय मानिनी—कु० ५५१३, मनु० ४१२३५, विष्णु० २१११ प्रलि—, सोचना, विचारना—प्रेर० ३ सम्मान करना, सम्मानित समझना, आदर करना २ अनुमोदन करना, प्रशंसा करना ३ अनुज्ञा देना, अनुमति देना, वि (प्रेर०) अन्यादर करना, तुच्छ समझना, अपमान करना, नीच समझना—स्त्रीप्रियामिनिताना काकुष्ठाणां विध-यते मदन—मूच्छ० ८१९, मन्—, १ सहमत होना, एकमत होना, एक मन का होना २ हाथी भरना, स्वीकृति देना, अनुमोदन करना, पसव करना ३ सोचना, कथाल करना, मानना ४ स्वीकृति देना, अधिकार देना ५ मान करना, सम्मान करना, महत्त्वपूर्ण समझना, कल्पितविधिकानाम्य काले तथम्वरेऽतिपिम्—भट्टि० ६१६५, समस्त बभूवु ११२ ६. अनुज्ञा देना, अनुमति देना (प्रेर०) सम्मान करना, आदर करना, प्रतिष्ठा करना ।

मनम् [मन् + ल्यट्] १ सोचना, विचार विमर्श करना, महत्त्वचिन्तन करना, अबचारणा करना—मननान्मनि-रेवासि—हरि० २ प्रज्ञा, समझ ३ तर्कसंगत अनुमान ४ अटकल, अदावा ।

मनः (मनु०) [मन्यतेऽनेन मन् करणे अतुत्] १ मन, हृदय, समझ, प्रत्यक्षज्ञान, प्रज्ञा, जैसा कि सुमनम्, दुर्मेनत् आदि में २ (दशो० में) सञ्ज्ञान और प्रत्यक्ष-ज्ञान का मान्तरिक अथ वा मन्, बहु उपकरण जिसके द्वारा ज्ञेय पदार्थ ज्ञानको प्रभावित करते हैं, (म्या० द० में मन एक द्रव्य या पदार्थ माना गया है जो ज्ञाता से सर्वथा भिन्न है)—तदेव सुखदुःसाद्युपलम्बिताद्यन-निन्दिय प्रतिजीव विभ्रमम् नित्य च—त० की० ३ चेतना, निर्णय या विवेचन की शक्ति ४ सोच, विचार, उल्लेख, कल्पना, प्रत्यय, पश्यद्गूढान्यमसाय-पृथग्म्—कु० २१५१, रघु० २१२७, कायेन साक्षा मनसाऽपि संवत्—५१५ ५ योजना, प्रयोजन, अभि-प्राय ६ तत्पर्य, कामना, इच्छा, रचि, इस अर्थ में 'मनस्' शब्द का प्रयोग बहुधा धातु के अनुभूत रूप के साथ (मनु के अन्वय 'म' का जोर करके) होता है, जो विशेषण शब्द बनते हैं—अथ जन प्रष्टमना-स्तपोनिचे—कु० ५१५०, तु० काय ७ विचारविमर्श ८ स्वभाव, प्रकृति, मित्राज ९ तेज, मोक्ष, तत्त्व १० मानस नायक सरोवर (कल्पना मन् सोचना, चिन्तन करना, याद करना—कु० २१६३, अथ-इ मन को स्थिर करना, विचारों को स्थिर करना, (तथ० वा अधि० के साथ), अन्-अन्व मन लगाना, स्पेह हो जाना—अभिजाये मनी बरज्यान्परमान् विष्णुस्त सा—रघु० ३१४, अन्-तथावा अपने आकांक्षीत्व करवा, कर्नात्-

उत्पन्न मन को पार करना, मत्तलि क्ल सोचना, ध्यान रखना, दृढ़ सकल्प करना, निर्धारण करना, मन में रखना । सव०—**अभिधातः** प्रेमी, पति, —**अनवधानम्** अनवधानता, —**अनुम्** (वि०) मनो मुक्त, हृषिकर, —**उपहारिन्** (वि०) हृदयहारी, —**अभिरिषेसः** वृत्र मन लगाना, प्रयोजन को दृढ़ता, —**अभिराष** (वि०) मन के लिए सुखद, हृदय को वृत्त करने वाला—**रपु०** १२३९, —**अभिधातः** मन की कालसा या इच्छा, —**आर** (वि०) हृदयहारी, आरु- र्भक, सुहावना, —**आन्त** (वि०) (मनस्कान्त या मन, कान्त) मन का प्रिय, सुहावना हृषिकर, —**कार** पूर्ण प्रत्यक्ष ज्ञान (सुख या दुःख का) पुरी वेतना, —**क्षेप** मन की उषाट, मार्गसक अव्यवस्था, —**मत्त** (वि०) मन में विद्यमान, हृदय में छिपा हुआ, आन्तरिक, अन्तर्कनी, गुप्त, —**नेत्र** न बदरति मनमानमाधितेनुम् —०३१२२ २ मन पर प्रभाव डालने वाला, बाधित (शम्) १ कामना, चाह—**मनोगत** सा न ज्ञाताक धामितुम्—कु० ५१५१ २ विचार, चिन्तन भाव, सम्पत्ति,—**पति** (स्त्री०) हृदय की इच्छा, —**प्राप्ती** कामना, चाह, —**पुष्पा** मनसिन्—**पहणम्** मन को हराणा, —**प्राहित्** (वि०) मन का हराने वाला या आकृष्ट करने वाला, —**ज**, —**जम्नन्** (वि०) मनोजात, (पु०) कामदेव, **अज** (वि०) विचार की भाति, फुर्तीला, आशुगामी २ चिन्तन और विचारण में नेत्र, ३, पंतक, पितृ दुःख सन्ध रखने वाला—**अभस्** (वि०) पिता के नामान, पितृदुःख,—**आप्त** (वि०) मन में उत्पन्न, मन में उठित या पैदा हुआ,—**जिद्र** (वि०) मन से सुपने वाला अर्थान् दूसरे के मन के विचार भावने वाला, —**ज** (वि०) सुहावना प्रिय हृषिकर, सुन्दर, लक्ष्यमय—**इयमानिकमना** क्ललनार्थि तन्वी—श० ११०, ११०, ३१०, ६१७ (ज) एक गन्धर्व का नाम, —(ज) १ सैनाशल २ मावक पत्र ३ राजकुमारी,—**ताप** पीडा १ मानसिक पीडा या वेदना ध्याया २ पशुचारा, पशुनाश,—**तुष्टि** (स्त्री०) मन का मनोव,—**तोका** दुर्गा का विशेषण, —**वृष** मन का विचारो पर पूर्ण नियंत्रण मत्० १०११० तु० विशिष्ट, **वस** (वि०) मनचित्त, जिसका मन किसी वस्तु में पूरी तरह लग रहा हो, मन से दिया हुआ **बाह**—**बुध** म् मन का क्लेश, पीडा, मनस्याप नष्टा बद्धि का नाश, विभिन्नता, पापकल्पन,—**नील** (वि०) पसर किया हुआ चूना हुआ, —**पति** विष्णु या विदेवण,—**पूत** (वि०) १ मन जिसे पवित्र मानना हो, अस्वाम्या द्वारा अनुमोदित,—**मन** पूत समाचरणे—मत्० ६१६ २ लोहाग्ना, सचेत, प्रचीन (वि०) मन का हृदय या सुखद,

—**प्रसाहः** विल की स्वयंता, मानसिक शक्ति, —**प्रीति** (स्त्री०) मानसिक मनोप, हर्ष, खुशी, —**भयः**, **भूः** १ कामदेव मनोज—**रे** ने मना मम मनोभवशासनस्य पादाभ्युदयमनारतमानमानम् —**आमि०** ५१३३, कु० ३१७७, म्पु० ७१२२ ३ प्रेम, प्रणयोन्याद, कामकला—**अत्यास्ता** हि नारीनामकालतो मनोभव —**रपु०** १२३३,—**अथन** कामदेव, —**अथ** (वि) वृषक देविण,—**यापिन्** (वि०) १ इच्छानुसार मनन करने वाला २ मंत्र, फुर्तीला,—**योग** दत्त विलता, मंत्र ध्यान देना, योनि कामदेव **रजन्** १ मन को प्रसन्न करना २ सुहावनापण,—**रथः** १ मन की गाड़ी कामना, चाह अवन्त सिद्धिपथ गन्ध स्वभनोत्पत्त्येव—**मालवि०** ११००, मनोरथानामध- तिन विद्यते—कु० ५१६४, म्पु० ३१०२, १२१५९ २ अर्पित वदार्थ—**मनोरथाय** नागमे—**श०** ७११३ ३ (नाटक में) मकेत, परीक्ष क्त मे या वृत्त से प्रकट की गई कामना, **बाधक** (वि०) किसी एक व्यक्ति का आशाओं को पूरा करने वाला, —(क) कल्प-रु का नाम **सिद्धि** (स्त्री०) कल्पना की गति हुईई किं बनावना, **रथ** (वि०) आरक्षण, सुखद अधिकर, प्रिय सुन्दर—**अथनवमनारमान** नमना (अशुलीय)—**श०** ६११०—(आ) १ कामनीय स्त्री २ मंत्र प्रकार का रथ, —**रायम्** कल्पना वा राग थाई किला: मनोरा- ज्ञा विद्वद्भगवन्त 'रह ज्वा' किने बनाना है **अमः** वेतना का नाश,—**मोक्षम** मन की क्लानता, मन की लहर या मीज, **वाच्छा**, —**वाञ्छितम्** हृदय को अधि लाध इच्छा **विचार**, **चिकित्** (स्त्री०) मन का मदेव—**वसि**, (स्त्री०) १ मन की क्लेशपीडना इन्ध्राशक्ति २ स्वभाव, चिन्तना, वेग विचार की तृती,—**व्यथा** मानसिक पीडा या वेदना, शील, सा मनसिल मन शिर्षारकल्पिना जिनें कु० ११५५, म्पु० १-१८० **शोड** (वि०) मन की भाति नेत्र,—**शय** मन की (किसी वस्तु में) आसक्ति, **सत्याप** मन को व्यथा **व्य** (वि०) हृदय में स्थित, मानसिक,—**स्वयंम्** मन की दृढ़ता—**हृत्** (वि०) निराग, **हृ** (वि०) मुखय नाशकण्ठार, आरुर्भक, कामनीय प्रिय—**अथा** जमनोहर वपु—**श०** १११३, कु० ३१३९, म्पु० ३१३२—(र) एक प्रकार की बधेली, —(रम) माना,—**हर्ष**—**हृषिकर** (वि०) हृदय को हृषय करने वाला, मनोहर, हृषिकर, सुखद हिन मनोहासि च दुःख न कच कि० ११४, **हारी** अस्वी या व्यभि- चारिणी स्त्री,—**हृष** हृदय का उल्लास,—**हृत्** मनसिल।

मनसा । मनस, अच्-टाप् । कश्यप की एक पुत्री का नाम नागराज अन्तन की जन्म तथा जटकाक शुनि का पत्नी, दुर्गा प्रकार 'मनसादेवी' ।

मनसिज [मनसि जायते-जन्+इ, अलुक् सू०] 1 काम-
देव रघु० १८१५२ २ प्रेम, प्रणयान्वाह-मनसिज-
हज सा वा विद्या ममालमपीतिनुम्-विक्रम०
३१०, शं० ३१५ ।

मनसिजयः [मनसि घोते-घी+अच् सप्तम्या अलुक्]
कामदेव शि० ७३२ ।

मनस्त. (अभ्य०) [मनस्+नस्] मन से, हृदय से
-रघु० १४८१ ।

मनस्विन् (वि०) [मनस्+विनि] 1 बुद्धिमन्, प्रज्ञा-
वान्, चतुर, ऊँचे मन वाला, उच्चात्मा-रघु० १।
३२ पत्र० २१२० २ स्थिरमना, बुद्धिमत्त्व, दृढ़
सकल्प वाला कु० ५१६, नी० १ उदार मन की या
अभिमानिनी स्त्री मनस्विनीमानविवाहादक्षम् कु०
३१३२, मालवि० ११९९ २ बुद्धिमती या सती स्त्री
३ दुर्गा का नाम ।

मनस्क (अभ्य०) [मन्+आक्] 1 जरा, बोझ सा,
अल्पमात्रा से, न बलाक 'बिस्तुल नहीं' रे पाप्य
विद्वान्मना न मनारगि स्या - भाषि० ११३७, १११
२ जने जने, बिलक से । सम०-कर (वि०)
भाटा करने वाला, (रघु०) एक प्रकार की गधयुक्त
जगर की लकड़ी ।

मनस्का [मन्+आक्; टाप्] द्विबन् ।

मनित (वि०) [मन्+कन्] ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान, समझ
हुआ ।

मनोक्षय [मन्+कीकन्] मुर्गा, अजन ।

मनोषा [मनस ईया घ० त०, जक०] 1 चाह, कामना,
या दुर्बल वशयित्नुं ननुते मनोषा भाषि० ११५
२ प्रज्ञा, समझ ३ सोच, विचार ।

मनोषिका [मनोषा+कन्+टाप्, टात्वम्] ममज्ञ, प्रज्ञा ।

मनोषिल (वि०) [मनोषा+इन्] 1 अमिलपित,
वाकित, पसद किया गया, प्यारा प्रिय मनोषिता
मनि मुद्देय देवता-कु० ५४४ २ हकिकर, -तम्
कामना, इच्छा, अभीष्ट पदार्थ-मनोषित क्षीरपि
येन दुग्धा रघु० ५१३३ ।

मनोषिन् (वि०) [मनोषा+इनि] बुद्धिमान्, विद्वान्,
प्रज्ञावान् चतुर, विचारशील, ममज्ञदार रघु० १।
१५, (प०) बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, मुनि, पंडित
-माननोषो मनोषिणाम्-रघु० ११११, मन्कारव-येव
मिरा मनोषी कु० ११२८, ५१३९, रघु० ३१४४ ।

मनु [मन्+उ] १. एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो मानव का प्रति-
निधि और मानवजाति का स्रष्टा माना जाता है (कभी
कभी यह दिव्य व्यक्ति समझे जाते हैं) २ विश्व-
पद चौदह क्रमागत प्रजापति या भूलोक प्रभु-मनु०
११६३ (सबसे पहले मनु का नाम स्वायम्भुव मनु है,
जो एक प्रकार से चौथे अष्टमा सम्राट् जाता है, इससे

इस प्रजापति या महर्षियों का जन्म हुआ । इसी को
मनुस्मृति नामक धर्मसंहिता का प्रणेता माना जाता है
सातवें मनु वैवस्वत मनु कहलाता है क्योंकि उसका
जन्म विवस्वत (सूर्य) से हुआ । यही जीवधारी
प्राणियों की वर्तमान जाति का प्रजापति ममज्ञा जाता
है । जब प्रलय के समय मत्स्वावतार के रूप
में विष्णु ने इसी मनु की रक्षा की थी । अयोध्या पर
शासन करने वाले जयवंशी राजा के सूर्यवंश का प्रक-

मंक भी यही मनु समझा जाता है-दे० जसर० ६११८
रघु० ११११, चौदह मनुओं के क्रमवा निम्नलिखित
नाम हैं-१ स्वायम्भुव २ स्वारोषिच ३ भीसनि
४ तामस ५ रेतव ६ वाशुच ७ वैवस्वत ८ सावर्णि
९ वससावर्णि १० ब्रह्मसावर्णि ११ बर्मसावर्णि १२ छद-
सावर्णि १३ रौष्यदैवसावर्णि १४ इन्द्र सावर्णि ।
३ चौदह को सख्या के लिए प्रतीकार्थक अभिव्यक्ति,
-नुः (स्त्री०) मनु की पत्नी । सम० अन्तरम्
एक मनु का काल (मनु० ११७९ के अनुसार यह
काल मनुष्यों के ४३२०००० वर्षों का होता है, इसी
का ब्रह्मा का १११४ दिन मानते हैं, क्योंकि इस प्रकार
के १४ कालों का योग ब्रह्मा का एक पुरा दिन होता
है । इन चौदह कालों में से प्रत्येक का अष्टौष्टौ-
मनु पुरुष २ हैं इस प्रकार के छ काल बीन चुके हैं,
इस समय हम सातवें मन्वन्तर में रह रहे हैं, और
ज्ञान और धर्मतर अभी जाने हैं) -अ. मानवजाति
'मन्विष्य', 'मन्विति' ईश्वर, 'पतिः', 'राजः राजा,
प्रभु, 'लोकः' मानवों की सृष्टि-अर्थात् भूलोक,
-अस्तः मनुष्य, -अव्येष्टः तलवार-प्रभौत (वि०)
मनु द्वारा शिक्षित या उपालयान्, -मूः मनुष्य, मानव
जाति, -राष् (प०) कुबेर का विशेषण, -अवेष्टः
विष्णु का विशेषण, -संहिता धर्मसंहिता को प्रथम
मनु द्वारा रचित मानी जाती है, मनु द्वारा प्रणीत
विधिविधान ।

मनुष्य. [मनोरपयय वक् लुक् च] १ आदमी, मानव, सर्व
२ तर । सम०-एश्वर, ईश्वरः राजा, प्रभु-रघु०
२१२, जाति. मानव जाति, इंसान, देवः १ राजा
-रघु० २१५२ २ मनुष्यों में देव, ब्राह्मण, -अवेः
१ मनुष्य का कर्तव्य २ मानव परिवर्, इंसान की
विशेषता, -अवेम् (प०) कुबेर का विशेषण, -अवर-
अम् मानवहृदय, यज्ञः आतिथ्य, अतिथियों का
सत्कार, गृहस्थ के पाँच दैनिक कृत्यों में एक,
दे० नृवज्ज, -लोकः मरणशील (मर्त्य) मनुष्यों का
समाह, भूलोक, विश्व, विज्ञा (स्त्री०), -विद्यम्
इंसान, मानवजाति, -श्रीशिल्पम् मानववस्तु - (प०)
कुपुहलेनेव मनुष्योपनिषत्-रघु० ३१५४, -सभा
१ मनुष्यों की सभा २ भीड़, जनार्थ ।

मनोमय (वि०) [मन्त् + मयट्] मानसिक, आत्मिक ।
सम् + कोश, -कः आत्मा को मान्त् करने वाले
पथ कोशों में से दूसरा कोश ।

मन्तुः [मन् + तुन्] १ शेष, अपराध—प्रश्न मन्तु परि-
कल्प्य धामि० २।३३ २ 'मन्तुष्य, मानवजाति, तु
(स्त्री०) समग्र ।

मन्त् (पृ०) [मन् + तुच्] ऋषि, मुनि, बुद्धिमान्,
मन्थ्य, परामर्शदाता, सलाहकार ।

मन्त्, बुरा०आ०मन्थते, कमी कमी 'मन्-पति' भी, मन्त्रित)
१. सलाह लेना, विचार करना, सोच विचार करना,
मन्थना करना, परामर्श देना—इ हि स्त्रीभि सह
मन्थयित्मु ग्यते—पञ्च० ५, मन्० ७।१४६ २ उपदेश
देना, सलाह देना, परामर्श देना अतीतलाभस्य च
रक्षणार्थं यन्मन्थते तौ परमो हि मन्त्र—पञ्च०
२।१८२ ३ वेदपाठ को अभिमन्त्रित करना, जादू से
मूढ करना ४ कहना, बोलना, बातें करना, मन्-
गुणाना—किमपि हृदये कृत्वा मन्थये—शं० १, किमे-
काकिनी मन्थयति—शं० ६, हला समीतशालापरिम-
देऽथकीकिता द्वितीया त्व कि मन्थयन्त्यामी मा० २,
अन्—१ अभिमन्त्रित करना, जादू करना विस्तृष्टश्च
वामदेवानुमन्त्रितोऽन्यः—उत्तर० २ २ आर्थावेदि
देकर विद्या करना—रथमारोप्य कृष्णेन यत्र कर्णोऽनु-
मन्त्रित—महर्ष०, ऋषि १ वेदपत्रों द्वारा अभिमन्त्रित
करना,—पद्यारो मी अभिमन्थ्य ऋषी हत—अमर०,
वाङ्म० २।१०२, ३।२२६ २ मूढ्य करना, मोहना,
आ - १, विद्या करना, बिसर्जन करना, आमन्त्रयत्य
सहचारम् शं० ३, कु० ६।१४४ २ बोलना, बुलाना,
कहना, संबोधित करना, बार्तालाप करना तयामन्-
यावयव—का० ८१, वेणी० १ ३ कहना, बोलना
परिञ्जनोऽप्येवमामन्त्रयते क० १२५, मट्टि०
१।१८ ४ बुलाना, निमन्त्रित करने, उपदेश
देना, उक्तमाना, फुलसाना, नि, प्यति देना, बुलाना,
बला भंजना दिग्भ्यानिमन्त्रितात्प्रेतमभिरजम्सुहृदये
—रघु० १५।५९, ११।३२, वाङ्म० १।२२५,
—जादू से अभिमन्त्रित करना सम् - , सलाह करना,
परामर्श या सलाह लेना,—मम हृदयेन त्वं समन्त्रोक्त-
वानमि—मद्रा० १ ।

मन्त्र [मन्त् + अच्] १ (किमी भी देवता को संबोधित)
वैदिक मन्त्र या प्रार्थनापत्र वेद मन्त्र, (वेद का पाठ
नोन प्रकार का है—यदि छन्दोबद्ध और उच्चस्वर से
बोला जाने वाला है तो ऋच् है, यदि गद्यमय और
निम्नस्वर से बोला जाने वाला है तो यजुस् है, और
यदि छन्दोबद्धता के साथ गेयता है तो साम्य है)
२ वेद का महिमा पाठ (ब्राह्मण भाग को छोड़कर)
३ माहृत, यधीकरण तथा आवाहन के मन्त्र, न हि

वीर्यन्ति जना मनापमन्त्रा—धामि० १।१११, अथस्यो
हि मन्त्रमन्त्रोपधीना प्रथम रत्न० २, रघु० २।
३२, ५।५७ ४ (प्रार्थना पत्रक) यजुस् जो किसी
देवता को उद्दिष्ट करके बोला गया हो 'ओ नम
शिवाय' आदि ५ गुणवार्ता, मन्त्रणा, परामर्श, उप-
देश, सकल्प, योजना तस्य सत्त्वमन्त्रस्य रघु०
१।२०, १।२२०, पञ्च० २।१८२, मनु० ७।१८
६ गुण योजना या मन्त्रणा, रहस्य । सम०—आराधनम्

मोहृत पत्रक या आवाहन के मन्त्रों में सिद्धि की चेष्टा
मन्त्राराधनतत्परेण मनसा नीता इत्यनेन विद्या
— मनु० ३।४, उदकम्, -अथम्, शोष्यम् वारि
(न्यु०) मन्त्रा द्वाग अभिमन्त्रित जल, मन्त्र पढ़कर
पवित्र किया हुआ पानी, उच्चस्वः मन्त्रांशों द्वारा
समर्थन कर्ता, करणम् १ वेदपाठ २ स्वर वेदपाठ
करना, शरः वैदिक मुक्तो का कार्य,—कालः मन्त्रणा
या परामर्श का समय,—कुसल (वि०) परामर्श देने
में चतुर, कुत् (पृ०) वैदिक सूत्रा का प्रणेता या
रचयिता—रघु० ५।४, १।५१, १।५।३१ २ वेद पाठों
३ सलाहकार, परामर्शदाता ४ राजदूत मन्त्र-
ज्ञान, विद्या, गुण (स्त्री०) गुण सलाह, मुक्-
गुणचर, मुक्तदूत या अभिर्वाता,—विद्मः अमिं—विद्मः
२।१०३, श १ सलाहकार, परामर्शदाता २ विद्मः
ब्राह्मण ३ गुणचर, व, वान् (पृ०) आध्या-
त्मिक गुण या आचार्य, अविम् (पृ०) १ वैदिक
सूत्रा का इष्टा २ वेदा में निष्ठात ब्राह्मण
—दोषित, अमि, वृष् (पृ०) १ वैदिक मुक्तो
का इष्टा, ऋषि २ परामर्शदाता मन्त्राकार, देवता
मन्त्र द्वारा जाह्न देवता शर, सलाहकार,—निर्धेय
मन्त्रणा के पश्चात् अन्वय निर्णय, पूत (वि०) मन्त्रों
द्वारा पवित्र किया हुआ, प्रयोग मन्त्रों का प्रयोग,

मी (श्री) जम् मन्त्र का प्रयासकार, -वेद्य उप
परामर्श का प्रवृत्त कर देना, भेद माल देना, मुनिः
निव का विरापण मन्त्रम् जादू,—यन्त्रम् जादू के
सकेने में मुक्त एक रश्मिमुख रश्माचित्र, नावीन्य,
—योग १ मन्त्रों का प्रयोग २ जादू, बर्जस्
(अर्थ०) विना मन्त्र बोल,—विद्मः दं ऊ० 'मन्त्र',
—विद्या मन्त्रविज्ञान, जादू—सत्कारः वेदपाठ में
मुक्ता काट मन्त्रार या अनुष्ठान, संहिता वेद के
सम्बन्धनको का मयह साधक जादूना, बाजीग
साधनम् १ जादू द्वारा वर में करना, या कार्य
निदि २ मोहनमन्त्र, आवाहनमन्त्र,—साध्य (वि०)
जादू के मन्त्रों में यधीकरण या कार्यनिदि के साथ
२ मन्त्रणा द्वाग प्राप्य,—सिद्धि (स्त्री०) १ किसी
मन्त्र की क्रियाशीलता, या सफलता २ मन्त्रज्ञान में
प्राप्त होने वाली शक्ति,—स्युष् (वि०) मन्त्रों द्वारा

किन्ती सिद्धि को प्राप्त करने वाला,—हीन (वि०)
बेदयज्ञा से रहित अथवा विद्वद् ।

मन्त्रवत्,—मा [मन्त्र + त्यट्] विचार, परामर्श ।
मन्त्रवत् (वि०) [मन्त्र + मत्] मन्त्री से युक्त—रघु०
३।३१ ।

मन्त्रि = मन्त्रिन्, दे० ।

मन्त्रित (भू० क० कृ०) [मन्त्र + क्त] 1 जिसका परा-
मर्श लिया जा चुका है 2 जिस पर सलाह ली गई,
परामर्श लिया गया है 3 कहा हुआ, बोला हुआ
4 मंत्र पडा हुआ अधिष्ठात 5 निश्चित, निर्धारित ।

मन्त्रिन् (पु०) [मन्त्र + गिन्] मन्त्री, सलाहकार, राजा
का मन्त्री रघु० ८।१७ मनु० ८।१। सम०—इर
(वि०) मन्त्रालय के भाग को समालोचने में समर्थ,—पत्ति,
—प्रधान, प्रमुख मुख्यः, इर, श्रेष्ठ प्रधान
मन्त्री, मुख्यमन्त्री,—प्रकाश खेट्ट या प्रमुख मन्त्री,
—धर्मिय वेदों से निष्ठात मन्त्री ।

मन्त्र, मन्त्र (आ० आ० पर०) मन्त्रति, मन्त्रति, मन्त्रान्ति,
मन्त्रित, कर्म वा० मन्त्रते 1 बिलोना, मधना (प्राय
शिकर्मक)—मुषा सागर मन्त्रम्—भा देवासुरैरुत्तममन्त्रि-
धिर्मन्त्रम्—क० ५।३० 2. मुख्य करना, हिलाना घुमाना,
ऊपर नीचे करना वस्त्रान् समुद्रादिषु मध्यमानान्
—रघु० १५।३५, 3 पीस डालना, जलपात्र करना,
माना, कष्ट देना दुर्भी करना मन्त्रधो मा मन्त्र-
प्रिजनाय मान्त्र्य करानि—दश०, अत्रा मन्त्रे विशिष्ट-
मथिता पौधनी वायुकराम्—मेघ० ८३ 4 बोट
पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 5 नष्ट करना, मार डालना,
महार करना, कुचल डालना मन्त्राधि कीरवस्त
मन्त्रे न कोपान् वेधो० १।१५, अमन्त्रोच्च परावी-
रम् अट्टि० १५।४६, १५।३६ 6 फाड़ डालना,
विन्धायित करना, उच्—, 1. प्रहार करना मारना,
नष्ट करना—मीमासाङ्गननुमन्त्राय महना हस्ती
मनि जैमिनिम्—पञ्च० २।३३, वैशंपायन्य—मा०
१।१८, 'नष्ट करके या उखाड़ कर' 2 हिलाना,
अमान्य करना 3 फाड़ना, काटना या छीलना—रघु०
२।३३, निष्—1 बिलोना, हिलाना, घुमाना—अमृत-
सायने निर्मयिध्यामहे जलम् महा० 2 राड से जाग
पेदा करना 3 खरोचना, पीटना 4 पुरात नष्ट करना,
कुचल डालना, इ—, 1 बिलोना (समुद्र) प्रपथ्य-
माना गिरिमेव भूय—रघु० १३।१४ 2 तग करना,
अमान्य कष्ट देना, दुर्भी करना, सताना 3 प्रहार
करना, खरोचना, खाघात करना 4 फाड़ डालना,
फाट देना 5 उखाड़ देना 6 मार डालना, नष्ट करना
मा० ५।९; २।९ ।

मन्त्र [मन्त्र कर्मो वज्] 1 बिलोना, इधर उधर हिलाना,
झोलाडिन करना, धुक्क करना मन्त्रादिषु सम्युक्ति

गाङ्गमन्त्र—उत्तर० ७।१६, रघु० १०।३ 2 सहार
करना, नष्ट करना 3. विधित पेश 4 रई का डडा
(‘मर्षा’ भी) 5 सूर्य 6 सूर्य को किरण 7 जीव
का मेल, डीङ, मोतियाबिंद 8 वर्षण से अग्नि सु-
माने का उपकरण । सम० अञ्जल,—अग्निः, धिरिः,
—पर्वतः,—सक मन्दर पर्वत (रई को के डडे के
रूप में प्रयुक्त हुआ)—त्रासि० १।५५,—उबकः,
—उबधिः क्षीर सागर,—मुक्कः बिलोने के रस्सी, नेपा,
—अम् मन्त्रन,—इषक,— इषकः रई का डडा ।।

मन्त्रनः [मन्त्र + त्यट्] रई का डडा,— नम् बिलोना, सुन्व
करना, बिलोनाट करना, इधर उधर हिलाना
2 वर्षण द्वारा जाग सुलगाना,— भी मधनी, बिलोनी ।
सम० छट्टी बिलोनी, मधनी ।

मन्त्रर (वि०) [मन्त्र + अरन्] 1 सिधित, मन्त्र, बिलक-
कारी, मुस्त, अकर्मण्य—मन्त्रमथरा—श० ४, प्रत्यवि-
ज्ञानमथरा भवेत् तदेव, दरमन्त्ररथरथविहारम्—गीत०
११—शि० ६।४०, ७।१८, ५।६२, रघु० १५।२१
2 जड़, मुड़, मूख—मधरकोकिण 3 नीच, गहरा,
खोल्ला, मन्दस्वर 4 विस्तृत, विशाल, चौडा, बडा
5 झुका हुआ, टेडा बक,—रः 1 अडार, कीच 2 सिर
के बाल 3 क्रोध, गुस्ता 4 ताजा मन्त्रन 5 रई का
डडा 6 एकावट, बाधा 7 गड़ 8 फल 9 गुप्तवर,
सूचक 10 वैशाव नाम 11 मन्त्रर पर्वत 12 हरिण,
बारहसिन्धवा,—रा कौकेयो की कुम्भदासी जिसने अपनी
स्वामिनी को, राम के राजपथिक के अवसर पर,
अपने दो पूर्ववत बरदान (एक से राम का चौदह
वर्ष के लिए निवासन, दूसरे से भरत का राज्यारोहण)
राजा से मांगने के लिए उकसाया,—रम् कुमुम्भ ।
सम० शिविक (वि०) निर्धय करने में मन्द, विवेक-
यक्ति से सुन्य मा० १।१८ ।

मन्त्रध. [मन्त्र + अह] खबर डुलाने से उत्पन्न हुआ ।

मन्त्रान. [मन्त्र + आनच्] 1 रई का डडा, मधानी 2 विष
का विशेषण ।

मन्त्राणक. [मन्त्रान + कन्] एक प्रकार का धात ।

मन्त्रिन् (वि०) [मन्त्र + गिन्] 1 बिलोने वाला, मधन
करने वाला 2 कष्ट देने वाला, तग करने वाला
(पु०) वैश्व, सूक,—भी बिलोनी, मधनी ।

मन्त्र (आ० आ०) मन्त्रते—बृहदारण्यिक प्रयोग 1 पीकर
धुल होना 2 प्रसभ होना, हृदयुक्त होना 3 डोलना-
डाला होना, गिरिचिह होना 4 बसकना 5 धने २
बलना, टहलना, घुमाना ।

मन्त्र (वि०) [मन्त्र + जन्] 1 धीमा, बिलककारी, अक-
र्मण्य, मुस्त, मर, मटरगस्ती करे वाला—(म०)
गिन्धनि मन्त्रा गतिमन्त्रमन्त्र्य—कु० १।११, तच्छरित
गोविन्दे मन्त्रिजमन्त्रे सर्वा प्राह—गीत० ९ 2 विच-

खाही, तदर्थ-उदासीन 3 जड़, मंदबुद्धि, मूढ़, अज्ञानी, निर्बल-मस्तिष्क, मन्दोऽप्यमर्यादाभेदि ससर्गं विपरिचय-मासर्गि० २।८, मन्द कविपदा प्राचीं गद्यपद्या-स्युपहास्यताम्-रघु० १।३, द्विचिन्ति मन्दाचरित महाशयनाम् कु० ५।७५ 4 बीमा, गहारा, मोखला (ज्वनि आदि) 5 कोमल, घुसला, मुसु यथा 'मदस्मितम्' में 6 बीडा, अल, जरा सा, मन्दोदरी, दे० 'अमन्द' भी 7 दुबल, बन्हीन, कमजोर यथा 'मदान्ति' में 8 दुर्भाष्यप्रस्त, अभागा 9 मूर्खाया हुआ 10 दुष्ट, दुश्चरित्र 11 शराह की लत बाला,—इ 1 शनिप्रथ 2 यम का विशेषण 3 सुष्टि का विषयत 4 एक प्रकार का हाथी—वि० ५।४९, इम् (अव्य०) 1 बीमे से, क्रमशः, धीरे-धीरे—यात यथ निराश्रयोर्युंज्या मद विलासादि—ज० २।१ 2 धीरे २, हल्के २, शान्ति से—मन्द मन्द नृदिनि पवनपञ्चानुकूलो यथा स्वायं—मेघ० ९ 3 धीमे-धीम, मद गति से, मद स्वर से, हल्केपन से 4 मद्धमस्वर से, गहराई के माप (मन्दी कृ डीलडाल करना,—मन्दी-कृतो वेग—ज० १, मन्दी भू डीला होना, कम ताकतवर होना) । सम० अक्ष (वि०) कमजोर आँखो वाला (—अम्) लज्जा का भाव, लज्जाशीलता, शर्माँलापन,—अनि (वि०) दुबल पावन शक्ति वाला, (नि) अग्निमाद्य, पावनशक्ति की मदता,—अनिल मुदु पवन,—अमु (वि०) दुबल दवाय बाला,—आकालता एक छद का नाम दे० परिशिष्ट १,—आरम्भ मन्दबुद्धि बाला, पूर्व, अज्ञानी—मन्दास्मानुजिषुषया मन्दि०,—आबर (वि०) ! कम आदर प्रदायित करने वाला, अवज्ञा करने वाला, आपराध 2 असाधवान,—उस्ताह (वि०) हुनाय, उस्ताहहीन—मन्दोन्माह कृतोऽस्मि मृगयापदादिना माषण्ये—ज० २,—उदरी राखण की पत्नी का नाम, पंच सती स्त्रियो में से एक—तु० अरुन्धा,—उरुम (वि०) अक्षय, मृगुत्पा (—व्यायु) कोष्णता, वृणुत्पापन,—औसुख (वि०) धीमो उन्मुक्तता वाला पराङ्मन, रुचिहीन—मन्दोन्मुषयोः मि नन्ममन शनि—ज० १,—अर्ध (वि०) कुछ बढ़ना, सूक्ति—विपरिमन्दकर्म भेदात् 'अजाल की अपेक्षा कुछ होता अच्छा है'—कानि चन्द्रमा,—कारित (वि०) धीमे ० काम करने वाला, ग गति,—गति,—गतिम् (वि०) गने ० चलने वाला, धीमो गति वाला,—वेत्तु (वि०) 1, मन्दबुद्धि, मूर्ख, मूढ़ 2 अयमन्त्र 3 मूर्खान्, अन्ध,—छाय (वि०) घुसला, घटप, शोभाशून्य—मेघ० ८०,—अवनी शनि, की माना,—धी,—प्रज,—अति,—नेषत् मद बुद्धि, मूर्ख, मूढ़, भाषिन्, भाष्य (वि०) भाष्यहीन, दुर्भाष्यप्रस्त, अभागा, दयनीय, बेचारा,—रश्मि (वि०)

घुसला, बीमं दुबल,—बुद्धिः (स्त्री०) हल्की बारीज, स्थिर,—हास, हास्यम् हल्को हमी, मद मुस्कान ।
 मन्दत् [मन् + अत् । अच् सक० परस्पर] मूगे का वृक्ष ।
 मन्दवम् [मन् + म् + अत्] प्रथमा, स्तुति ।
 मन्दवस्तो [मन् + वस् + अत्] दुर्गा का विशेषण ।
 मन्दर (वि०) [मन् + अर] 1 धीमा, विलम्बकारी, कुत्स 2 माटा, सपन, दूढ़ 3 विस्मृत, स्मूल,—र 1 एक पहाड़ का नाम (इसको मन्दमथन के समय देवानुरो ने मयानी—रदे का डडा बनाया था, और तब सुधा का मथन किया था)—पूषनेमन्दरोऽमुने धीरोमेय इवाचमहम्—रघु० ४।७७, अभिनवब्रह्मचरमुन्दर वृत्तमन्दर—गीत० १ शोभे मन्दरसुखसुखिता-भोधिवर्षता—वि० २।१०७, कि० ५।८० 2 मोतियों (आठ या सोलह लक्षियों) का हार 3, स्वर्ग 4 दर्शन 5 इन्द्र के तन्दनकानन में स्थित पंच वृक्षों में से एक मन्दार वृक्ष, दे० मदार । सम०—आधस्ता, अस्तिनी दुर्गा का विशेषण ।
 मन्दसान [मन् + शानच्] 1 अग्नि 2 जीव 3 निद्रा ('मन्दसान' भी लिखा जाता है) ।
 मन्दाक [मन् + आक] भाग, नदी ।
 मन्दाकिनो [मन्दमकति—अच् + जिति + ङीप्] 1 गंगा नदी—मन्दाकिनी प्राति नपायकण्ठे मुक्तावली कण्ठमेव मूम—रघु० १।३४६, कु० १।१०९ 2 स्वर्गवा, विद्यदाया (मदाकिनी विद्यदायू)—मन्दाकिन्या लिललशिशां सेव्यवाना महर्षि—मेघ० ६३ ।
 मन्दापले (ना० शा० आ०) 1 शनै शनै चलना, विलम्ब करके चलना, पिछड़ना, मटगमन करना, देर लगाना—मन्दापले न लम्ब मुहुराम्मुपेयांरुण्ड्या—मेघ० ४, विक्रम० ३ १५ 2 दुबल होना, कम होना, घुसला होना—रघु० ४।११ ।
 मन्दार [मन् + आरक] 1 मूगे का पेड़, इद्र के तन्दन काननस्थित पंच वृक्षों में से एक—हृत्पशाप्यस्तब्रकन-मिता बालमन्दारवृक्ष—मेघ ७५ ६७, विक्रम० ४।२५ 2 आक का पौधा मदार वृक्ष 3 बतूरे का पौधा 4 स्वर्ग 5 शायो—रम् मूगे के वृक्ष का फल—कु० ५।८० रघु० ६।१३। सम०—माता मदार के फूलों की माला—मदारमना हरिणा पिनडा—ज० ७।१, कण्ठी माधमुरो छट ।
 मन्दारक मन्दारव, मन्दाव [मन्दार + कन्, मन् + आ + क् + अच्, मन् + आक] मूगे का वृक्ष दे० 'मदार' ।
 मन्दिमन् (पु०) [मन् + म् + अच्] 1 बीमापन, विलम्बकारी 2 मूर्खी, जहता, मूर्खता ।
 मन्दिमन् [मन्दिमन् मन् + म् + अच्] 1 रहने का स्थान, आवाग, महल, प्रवन—कु० ७।५५, महि० ८।९६

रघु० १२।८३ २ आगल, रहने का घर तथा क्षीरा-
शियमदिरः में ३ तगर ४ शिबिर ५ देवालय । उम०
—यसु बिल्ली शक्तिः शिव का विशेषण ।
शबिरा [शबिर + टाप्] बुढ़ाल, अस्तबल ।
मंशुरा [मन् + उरन् + टाप्] १. अस्वखाला, बुढ़ाल
अस्तबल—प्रशब्दोप्य षत्वञ्च शबिसति नृपतेर्मदिर मरु-
ताया रल० २।२, रघु० १६।४१ २. लम्बा, चटाई ।
मन्ध (वि०) [मन्ध + र्त्] १. नीचा, गहरा, गभीर,
खोखला, चरमराना—पयोदमन्धप्रतिना परित्री—कि०
१।३, ७।२२, मेघ० ९९, रघु० ६।५६,—इः
१ मन्धप्रति २ एक प्रकार का डोंर ३ एक प्रकार
का हाथी ।
मन्धवः [मन् + मिवृत्, मन् + म्वृ, ष० ष०] १ काम-
देव, प्रेम का देवता—मन्धवो मा मन्धविव माय
लान्धय करोति दश० २१, मेघ० ७३ २ प्रेम, प्रण-
योन्माय प्रयोप्यते मन्ध इवाद्य मन्धय ऋतु०
१।८ इमी प्रकार 'परिसामन्धय जन'—श० २।१८
३ कैयः मन्धः आन्धः एक प्रकार का आम का
पेड़—आन्धः १ आम का पेड़ २ स्त्री की मर,
—कर (वि०) प्रेमोत्तेजक,—बुढ़ाव प्रेमकेति, सभोग,
मैत्र्य कैश्च प्रेम-यत्र—श० ३।२६ ।
मन्धन (पु०) १ गुप्त कानाकली (दयतोर्येर्लिपन् मन्धन्)
करोति सहकारस्य कलिर्कालिकानोर, मन्धनो
मन्धनोऽप्येव मन्धकालिनस्वन काव्या० ३।११
२ कामदेव ।
मन्धु [मन् + म्वृ] १ कोष, रोष, नाराजगी, कोप,
गुस्सा—रघु० २।३२, ४९, ११।४६ २. व्यथा, शोक,
रुद्ध, दुःख उतर० ४।३, कि० १।३५, अट्टि० ३।४९
३ विपद्बन्धना या दयनीय स्थिति, कमोत्पापन ४ यत्र
५ अग्नि का विशेषण ६ चिदा का विशेषण ।
मन्धु (म्वा० पर० मन्धति) जाना, हिलना-जुलना ।
मन्धु [अन्धन् मन्ध-सर्वनाम उत्तमपुरुष-सर्व० ए० व०]
मेरा । मन्ध० कारः—कृत्वच्च् मेरापन, बसता,
स्वार्थ ।
मन्धता [मन् + तन् + टाप्] १ अपने मन की भावना,
स्वाधे, स्वहित २ धर्मर, अभिमान, आरधनिर्मरता
३ व्यक्तित्व ।
मन्धत्वम् [मन् + त्व] १ मेरापन, अपनापन, स्वामित्व की
भावना २ स्नेहपूर्ण आदर, अनुराग, मानना—कु०
१।१२ ३. अहंकार, बगद ।
मन्धवस्तुत्त [मन्धु + आल, लघोप, मकारादेश, अण
दुदागम्] शान्तिद्वय का विशेषण ।
मन्धु (म्वा० पर०) जाना, हिलना-जुलना ।
मन्धन् 'काव्यप्रकाश' का प्रमेता ।
मन्धु (म्वा० आ० मन्धते) जाना, हिलना-जुलना ।

मन्ध (वि०) (स्त्री०-यो) 'पुर्ण' से युक्त 'तरचित' से
बना हुआ' अर्थ को प्रकट करने वाला तद्विन का
प्रत्यय, उदा० कलकमय, काष्ठमय, तेजोमय और जल-
मय आदि, घ. १ एक दानव, दानवों का शिन्धी
(कहते हैं कि हमने पादकों के लिए एक मन्ध भवन
का निर्माण किया था २ घोड़ा ३ ऊँट ४ लम्बरा ।
मन्धः [मन् + अटन्] भासकृन् की शोषी, पणशाला ।
मन्ध (पु) षत्व [-मन्धन्, पु० सापु]
मन्धुः [मन् + कु] १ किलर, स्वर्गीय मनीषत्र २ हरिण,
बारहसिया । सम० राजः कुबेर का विशेषण ।
मन्धुः [मा + ऊल मयादेव] १ प्रकल की किरण,
रश्मि, अक्षु, कालि, दीप्ति—विश्रुति हिमपर्यैरणि-
मित्तुमंयुर्बं ष० ३।२, रघु० २।४६, सि० ४।५६,
कि० ५।५, ८ २ तन्वये ३ ज्वाला ४ बुधबडी
की कील ।
मन्धुरः [मी + ऊरन्] १ मोर—स्मरति विरिमयूर एव
देव्या—उत्तर० ३।२०, कवी मयूरस्य लके विधीयति
—ऋतु० १।३३ २ एक प्रकार का कुल ३ (पुं०)
मयूर का प्रमेता) एक कवि अस्वाचारविषकु-
निकर कर्मगुरो मयूर प्रसन्न० १।२२,—री मोरनी
—सूक्ति— बर तत्कालोपनता शिबिरी न पुनरिबवा-
तरिता मयुरी चिद्ध० १, वा—वा मध करोती म श्वो
मयूर हाथ में बाधा एक पक्षी, छाडी में बैठे दो
पक्षियों से अच्छा है' अर्थात् नौ नकद न उरह उचार ।
मन्ध० अरिः शिवकली,—केतुः कालिकेय का विशेषण,
—श्रीवक्त्रं सुतिया, चटकः गृह कुचकट—बुद्धा मोर
की शिखा, कुचम् सुतिया—वसिष् [वि०] पय-
युक्त, मोर के पंखों से युक्त (बाग आदि)—रघु०
३।५६, रघु० कालिकेय का विशेषण,—अन्धकः नाशक
मोर, शिखा मोर की शिखा ।
मन्धुरकः [मयूर + कन्] मोर,— कन् सुतिया, नीला-
धोया ।
मन्धकः [म् + धृन्] महामारी, पशुओं का एक संक्रामक रोग,
ज्येष्ठ प्रसारक रोग, संक्रामक रोग ।
मन्धकल्प मरकतहरतमेन—[म् + ह] पना— बायीं धामन्
मरकतशिलाबद्धसोपानमार्गा—मेघ० ७६, सि०
४।५६, ऋतु० ३।२१, (कवी-कवी 'मरकत' की शिखा
बताता है) । सम०— शक्तिः (पु०, स्त्री०) पना,
— शिखा पक्षे की शिखी ।
मन्धवम् [म् + धावे स्युट्] १ मरना, मृत्यु—मरण प्रकृत
धरीरिणाम्—रघु० ८।८७ वा—समाहितस्य धारीति-
मरणादतिरिच्यते—मय० २।३४ २ एक प्रकार का
विष । मन्ध० अल, अंतक (वि०) मृत्यु के माघ
समाप्त होने वाला,—अविभक्त,—उन्मुक्त (वि०)
मृत्यु के निकट, मरणात्पन्, शिवमाण,—धमेन्

(वि०) मयं, मरणसौल, मिश्रण्य (वि०) मयते के लिए वृद्ध निष्पन्न वाक्का पश्० १ ।

मरतः [मृ+अन्] मृत्यु ।

मरन्तः, मरन् [मृ+अन्] मरति-मर+अन्+क, पुषी०, मरन्+कन् फुलो का रत्न-प्रामि० ११५, १०१५, सम०-ओकम् (नपु०) फूल ।

मरारः [मर मरणमलति निवारयति-मर+अन्+अन्] लस्य रत्नम् । सती, धान्यागार, अनाज का अडार ।

मराम् (वि०) [मृ+आलच्] 1 मृदु, चिकना, स्निग्ध 2 सौम्य कोमल, - ल. (स्त्री०-ली) 1 हस, बलाक, राजहस-मरालकुलनायक कृष्य रे कृष्य वर्तताम्-भामि० ११३, विवेचि मरालविकारम्-गीत० ११, नै० ६१०२ 2 एक प्रकार का जलधर पत्ती, कामध्वज 3 घोडा 4 बादल 5 अवन 6 अनारो का बाग 7 बरमासा, उग्र ।

मरि (री) च [प्रियते मरयति श्लेषादिकमनेन-मृ+इच, इचवा] काली मिर्च की छाडी, -बन् काली मिर्च ।

मरीचि (पु० स्त्री०) [मृ+इचि] 1 प्रकाश की किरण - न चन्द्रमरीचय-विक्रम ३११०, मरितुमरीचि-श्वनु० १११६, रघु० १११३, १३१४ 2 प्रकाश का कण 3 मृगान्ध्या, -चि प्रजापति, प्रथम मनु मे उत्पन्न दल मूल पृथगे मे से एक, या-ब्रह्मा के दम मानस पुत्रो मे एक, यह कश्यप का पिता या 2 एक स्मृतिकार 3 कृष्ण का नामान्तर 4 कज्जुल । सम०-तीक्ष्ण मृगान्ध्या, -मालिन् किरणो से चिरी हुई, उज्ज्वल, चमकदार (पु०) मृग ।

मरीचिका (मरीचि+कन्+टाप्) मृगान्ध्या ।

मरीचिन् (पु०) [मरीचि+इनि] मृग ।

मरीचिमत् (पु०) [मरीचि+मत्] मृग ।

मरीमज (वि०) [मृन् (मरलान्वात्) द्वित्वम्]+अच्] बार २ मलने वाला ।

मर. [प्रियतेऽस्मिन्-मृ+उ] 1 रेगिस्तान, रेतीली भूमि, बीराना, जल से हीन प्रदेश 2 पहाड़ या चट्टान (पु०) व० व०), एक देश और उसके अधिवासियों का नाम । सम०-उज्जुषा 1 कनाम का पौधा 2 नकडी, -कण्ठक एक जिले का नाम, जः एक प्रकार का गन्धद्रव्य, देश, 1 एक जिले का नाम 2 जल-क्षय प्रदेश, द्विच, -मिषः ऊट, -बन्धः, -कण्ठम् (पु०) बीराना, उजाड़, -पथ, वृक्षम् रेतीली मर-भूमि बीराना-रघु० ४१३१-भू (व० व०) मारवाट देश, -भूमि (स्त्री०) मरमन्, रेतीला मरप्रदेश, -संकाक एक प्रकार की मूली, -स्थलम्, स्थली बीराना, उजाड़, बजर-तन्त्रापीति मर-स्थलेऽपि जितरा मेती नतो नाचिकम्-अनु० २४५९ ।

मरकः [मर+क] मोर ।

मरकत् (पु) [मृ+उति] 1 हवा, वायु, पवन-विधा प्रसेधुमयती वद् सुखा-रघु० ३११४ 2 वायु का देवता-कि० २१२५ 3 देवता, देवी-वैमानिकातां मरुतामपथयशाकृष्टमीलान्तर लीक पातान् रघु ६११, १२१०१ 4 एक प्रकार का पौधा, मरकत् (नपु) द्विपथं नाम का पौधा । सम०-आशोकः (हरिण या मैसे की माल से बना) एक प्रकार का पत्ता, कटः एक प्रकार की सेम, लोबिया, -कर्मन् (पु) -कृष्णा उदर, -वायु, अक्षरा, -कोणः पश्चिमोत्तर दिशा, मरु देवसमूह, -सवधः, -दुषः-सुप्तः, -दुनु 1 हनुमान के विशेषण 2 भीम के विशेषण, -पञ्चम् हवा में लहराने वाला मरुका (सूत का बना कपडा), -शट बादवान, -पति, -वासः इन्द्र का विशेषण, मरुः आकाश, अन्तरिक्ष, -पञ्चः मित्र, -कलम् भोजा, -कृष्ट 1 विष्णु का विशेषण 2 एक प्रकार का यज्ञ-याग, -रथः वह गाड़ी जिसमें देव प्रति-माएँ रथ कर इष्टर उष्टर ले जाई जाती है, -सोकः वह लोक जिसमें 'मरुत' देवता रहते हैं, -कल्पन् (नपु) आकाश, अन्तरिक्ष, बाहू 1 बर्जा 2 अग्नि, -सक्तः 1 अग्नि का विशेषण 2 इन्द्र का विशेषण ।

मरुत् [मृ+उत्] 1 वायु 2 देवता ।

मरुतः [मरुत्+तप्] मृगवेश का एक राजा, कहते हैं उसने एक यज्ञ किया जिसमें देवताओं ने प्रतीक्षक मेवक का कार्य किया तु० तदप्येव श्लोकाऽभिगीतो मरुत परिषेष्टानो मरुतम्यावसन् गृहे, आचिश्चिनय काम-प्रेक्षिष्येदेवा सभावाट इति ।

मरुतक. [मरुतिव नकति हमति-मरुत्+तप्+अच्] मरुतक पौधा ।

मरुतवत् (पु) [मरुत्+मत्पु, मय्य व] 1 बादल 2 इन्द्र का नामान्तर 3 हनुमान का नामान्तर ।

मरुक् [मृ+उक्] एक प्रकार की बमल, कारहब ।

मरुच [मृ+वा+क, नि० दीर्घ] 1 एक पौधे का नाम मरुका 2 राहु का विशेषण ।

मरुच (व) क [मरुच+कन्, दवयोर्भेद] 1 एक प्रकार का पौधा, मरुका 2 धुने का एक भेद 3 व्याघ्र 4 राहु 5 मारम ।

मरुचः [मृ+ऊक] 1 मोर 2 बाग्दमिया हरिण ।

मरुट [मर्क+अट्] 1 नहर, बन्दर, हार वलमि केनापि दलमज्ञेन मरुट, लोडि जिप्रति मक्षिण करो-व्युत्प्रमहासलम्-भामि० ११९९ 2 मरुकी 3 एक प्रकार का साम्भ 4 एक प्रकार का रतिवच, सभोग, मेषुन 5 एक प्रकार का विष । सम०-आस्थ (वि०) बन्दर जैसे मूठ वाला (कण्ठम्) ताका, -इन्दु आबनम्, -सिन्धुः एक प्रकार का जाबनूत, पोत

बन्धर का बन्धा, बासः मकड़ी का बाला, ओषध्
सिधुः ।
मरकटः [मरुट+कम्] 1 लघुः 2 मकड़ी 3. एक
प्रकार की मछली 4 एक प्रकार का जनाव, धान्य
विशेष ।
मसंरा [मृत्+अर+टाप्] 1 पाष, बतन 2 अन्त कञ्जीय
छिद्र, सुरंग, बिबर, कोह, गुफा 3 बाँस स्त्री ।
मम् (बुरा० उभ०—मर्षयति—ने) 1 लेना 2 साफ
करना 3 शब्द करना ।
मर्मः [मृत्+ऊ] 1 बोबी 2 इत्तली, औंठा, (स्त्री०) साफ
करना, घौना, पवित्र करना ।
मर्तः [मृ+तन्] 1 मनुष्य, मानव, मर्त्य 2 भूलोक,
मर्त्यलोक ।
मर्द (वि०) [मर्त+यत्] मरणाशय, त्वं 1 मरणधर्मा,
मानव, मनुष्य—मनु० ५१७० 2 मर्त्यलोक, भूलोक
स्वयं शरीरः । सम०—धर्म मरणाशयाना,—धर्मन्
(वि०) मरणाशय आरम्भ, -विधासिन् (१) मनुष्य,
मानव,—आध मानव-ध्वभाव,—जुषन् मर्त्यलोक,
भूलोक,—सहितः देवता, भूकः किण्वर, इनका मृत्यु
मनुष्य के मृत्यु जैसा तथा और शेष शरीर जानवर के
शरीर जैसा होता है, यह कुबेर का सेवक ममदा
जाता है)।—लोक, मर्त्यलोक भूलोक शीघं दुष्ये
मर्त्यलोक विनास्ति—अथ० ११२१ ।
मर्द (वि०) [मृ+घञ्] कुचलने वाला, चूर चूर कर
देने वाला, पीसने वाला, मट करने वाला (सपास के
अन्त में प्रयोग), ईः 1 पीसना, चुरा करना 2 प्रबल
प्रहार ।
मर्द (वि०) (स्त्री० नी) [मृ+त्पृट्] कुचलने
वाला पीसने वाला, मट करने वाला, मताने वाला
- मृत् 1 कुचलना, पीसना 2 गृहना, माण्ड
करना 3 लप करना (उबटन आदि से) 4 दबाना,
माइना 5 पीछा देना, सताना, कट देना 6 मट
करना, उभापना ।
मर्द [मर्द+आ+क] एक प्रकार का डोल सि०
१३११, ऋतु० २११ ।
मर्द (स्था० पर० मर्दति) जाना, छिन्ना-बृचना ।
मर्मन् (मृ०) [मृ+मिन्] शरीर का तबीय प्राय-
मुक्त भाग, बीबाधारिक तथैव तीक्ष्ण हृदि शीक-
सकुर्मर्माणि छिन्नामपि कि न सोड उतर० २३२५,
गार्ग० ११५३ मटि० १५१५, स्वहृदयमर्माणि वने
कराति गीत० ४ 2 कोरिं श्री दुर्लभ या जालोष्य
।अनु, दोष, भृष्टि 3 अन्तस्तत्, मजीब 4 (किसी
की अणु का) सन्निस्थान 5 गुहाय, (किसी बात
का) तथैवास्मिं प्रकाशिका टीका, सा
गणधर मर्मप्रकाश तनुते मुबन्—भागेण० 6 रहस्य

भेद । सम० सतिव (वि०) मर्मवेदी—सि० २०१
७० सम्मेषणम् 1 जलाकापरीक्षण करना 2
दुर्लभ और आलोष्य बातों की जाच पड़ताल करना,
—आधरन्म कथय, विरहृदकर, -आसिन्, उप-
धासिन् (वि०) (हृदय के) मर्म स्थलों को मेघने
वाला महावी० ३११०,—शोकः पति,—म (वि०)
मर्मवेदी, तीक्ष्ण, धीर,—अन् (वि०) मूल पर आधान
करने वाला, अत्यन्त पीडाकर,—अन् हृदय,—छिन्,
—विद् (इसी प्रकार छेदिन्, भेदिन्) (वि०) मर्म-
स्थलों का मेघने वाला, हृदय पर घोट करने वाला,
अत्यन्त कष्टदायक—उतर० ३३३१ 2 प्राणघातक
घोट करने वाला, प्राणहर,—अ (वि०)—विद्
(वि०) 1. दुष्टों के दोष या दुर्बलताओं को जानने
वाला 2 किसी विषय की अत्यन्त गूढ़ बातों को
समझने वाला 3 किसी विषय गहरी ज्ञानपूर्वक रखने
वाला, अत्यन्त निपुण या चतुर, (—अः) कोई भी
प्रकार विद्वान्,—अन् विरहृदकर, धारण (वि०)
गहन जन्तुर्घटि रखने वाला, पूरा जानकार, दुष्टों के
रहस्यों को जानने वाला,—अथ 1 मर्मस्थाना को
छेदना 2 दुष्टों के रहस्य या दुर्बलताओं को प्रकट
करना, प्रवेक,—असिन् (१०) बाण, नीर,—विह
दे० 'मर्मज्ञ', स्वस्वन्, स्वस्वन् 1 भावप्रवण या
सजीव भाष 2 कमचोरियाँ, जालोष्य बातें, स्पृश
1. मर्मस्थानों, हृदयस्थानों 2 अतितीक्ष्ण, तीक्ष्ण, तज या
कटु (शब्द आदि) ।
मर्द (वि०) [मृ+अन्, मृत् च] (पत्तो की) सर-
सराहट, (कस्तो की) सरसराहट लीरेण तालीवन-
मर्मरेण—रघु० १५७०, ५७३१, १९१४, मदीडा
प्रत्ययिन् विषेध्वनस्थलीमर्मरेणयोहा—कु० ३३३१,
-रः 1 सरसराहट की ध्वनि 2 सरसराहट ।
मसंरी [मर्मर+शीष्] 1 देवदार का एक भेद 2 हत्ती ।
मसंरीकः [मृ+ईकन्, मृत्] 1 निर्धन दुष्य, शरीर 2 दुष्ट
मनुष्य ।
मसंरी [मृ+यत्+टाप्] सीधा, हृद्य ।
मसंरी [मर्मया सीमाया शीघ्रे मर्म+दा+अङ्+टाप्] 1 सीमा, हृद्य (आक से भी) छोटा, सीमान्त, सरहद,
किनारा मर्मदास्यतिष्क—पथ १ 2 अन्, अव-
सान, अन्तिम शक्ति, उद्देश्य 3 तट, किनारा 4
चिह्न, सीमाचिह्न 5 नीति का बंधन, निश्चित प्रदा
या व्यवस्थित नियम, शैतिक विधि 6 शिष्टाचार या
औचित्य का नियम, औचित्य की सीमा, सदाचरण का
औचित्य—आसादापसादाविनामसंरी—उतर० ५,
पथ० ११५२ 7. तस्मिन्, अनुबन्ध, करार । मम०
-अथकः—शिवः, कर्णः सत्पुत्र पर विभक्त पहाड,
शेवकः सीमाचिह्नों को मट करने वाला ।

बर्षादिन् (पु०) [वर्षादा + इति] पड़ोसी, सीमागत जाती ।

बर् (ञ्या० पर० मर्त्ति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 मरना ।

बर्ह [मृश् + पञ्] 1 विचारणा 2 परामर्श, सम्बन्धा 3 मत्स्य, छीकसाने वाला ।

बर्हणम् [मृश् + स्पृट्] 1 गहना 2 परीक्षण, पूछना 3 विचारणा, सम्बन्धा 4 उपदेश देना, सलाह देना 5 भिदना, मल देना ।

बर्ह्यः, बर्ह्यम् [मृश् + पञ्, स्पृट् वा] सहनशीलता, सहिष्णुता, धैर्यं ।

बर्हति (जू० क० ङ०) [मृश् + ल्] 1 सहन किया हुआ, सबर के साथ सहा हुआ 2 बना किया गया, माफ किया गया, -तम् सहनशीलता, धैर्यं ।

बर्हिन् (बि०) [मृश् + गिन्] सहन करने वाला, धैर्यशील ।

बर्ह् (ञ्या० आ०, बुरा० पर०) मलने, मलयति) बामना, अधिकार में रखना ।

बर्हः, बर्हम् [मृश्मते शोष्यते मृश् + कल् टिलोप - तारा०]

1 मेल, यमनी, अपविष्टता, बूल, जसुद सामग्री मल-वायका खला - का० २, छाया न मुँछति मलोपहत-प्रसादे शुद्धे तु दर्पणतले मुलभाकशाया - श० ७३३२ 2 तलछट, कुशाकरकट, गाद, पुरीष, दोबर 3 (धानुबी का मेल, जय, मोटे 4 मैतिक दोष वा अपविष्टता, पाप 5 गरीर का कोई भी अपविष्ट स्त्राव (ननु के अनुसार इस प्रकार के बारह स्त्राव हैं - वसा शुक्रमसृग् मज्जा मूत्रविद् प्राणकर्मविद्, श्लेष्माशु-क्षुषिका स्वेदो द्वादशैते नृपा मला - मनु० ५१३३५) 6 कपूर 7 'मसोक्षेपी' जलचरवर्षोष का प्रमाजन के काम आने वाला मोतरी कवच 8 कनाया हुआ चमड़ा चयने का वस्त्र - कम् एक प्रकार की शर्ट, धातु । सम० - अषकर्मणम् 1 मेल दूर करना पवित्र करता 2 पाप दूर करता, -ञरिः एक प्रकार की मज्जी, -अवरोधः कोष्ठजड़ता, कब्ज आक्षिप्त्

(पु०) श्राद्ध देने वाला, भगी, -आषह् (बि०) 1 मेल पेटा करने वाला, मिला करने वाला, मलिन करने वाला 2 द्वेषित करने वाला, अपविष्ट करने वाला, आवासः पेट, -उत्सर्गे, टट्टी बाना, पेट से मल निकालना, स्न (बि०) परिमार्जक, शोषक बम् पीप, मवाद, -दूषित (बि०) मैला, गदा, मलिन, -अवः रेषन, अनिसार, -धात्री दाई की बच्चे की आवश्य-कताओं का ध्यान रखती है, -पूष्म् किसी पुत्रक का पहला पृष्ठ, आवरणपृष्ठ (बाह्य पृष्ठ), -पूष् (पु०) कौवा, -मल्लक कौपीन, नषोट, -भास अत-रीय या लोड का महीना ('मलभास' इसी लिए कहलाता है कि इस अधिक मास में कोई भी धार्मिक

कृत्य नहीं किया जाता है), बासष् (स्त्री०) रज-स्वला स्त्री, जो स्त्री रूपों से हो, - विसर्गः, -वित-अन्तम्, -बुद्धि (स्त्री०) मन्त्रणा, कोष्ठसृष्टि, -हारक (बि०) मेल या पाप को दूर करने वाला ।

मलनम् [मृश् + स्पृट्] कुचलना, पीगना, -नः तन् ।

मलम् [मलते धरति चन्दनादिकम् मल् + क्यन्] 1 भारन के दक्षिण में एक पर्वत श्रृंखला जहाँ चन्दन के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं (कविसमुदाय प्रायः मलय-पर्वत से चन्दन वाली पवन का उल्लेख किया करता है, यह पवन चन्दन तथा अन्य मृगुचित पौधों की मृगुष को द्रवर उधार फैलाने के साथ-साथ कामाती व्यक्तियों का विशेष रूप से प्रभावित करती है) 2 सनावित्र विधातस्था शैली मलयवर्तुरी - रघु०

४५५१, ९१२५, १३३२ 2 मलयश्रृंखला के पूर्व में स्थित देश, मलाबार 3 उद्यान 4 इन्द्र का चन्दन-कानन । सम० - अचलः, -अरिः, -गिरिः, -पर्वतः, मलय पहाड़, -अचिलः, -बासः, -समीर मलयपहाड़ से चन्दन वाली पवन, दक्षिणीपवन - ललितवज्रगलना-परिशीलनकीमलमलयसमीर शैली - १. तु० अणत-दाक्षिण्यदक्षिणानिलहृत्क पूर्वास्ते मनोरथा कृत कर्मव्य भेदोपायी मयेष्टम् का० - उरुक्षम् चन्दन को लकड़ी, -अ चन्दन का वृक्ष - अयि मलयज महि-मा कस्य निगमेषु विषयस्ते - भाषि० ११११, (अ - अम्) चन्दन की लकड़ी (-अम्) राहु का विशेषण, रजम् (नपु०) चन्दन का पूरा, -अम् चन्दन का पेड़, -बासिनी दुर्गा का विशेषण ।

मलाका [मलेन मनोमालिन्घते अकति कुटिल मच्छति - मल + अक् + अच् + टाप्] 1 श्रुतारप्रय या कामुक स्त्री 2 हठी, अन्तरंग सखी 3 हथिनी ।

मलिन (बि०) [मल् + इत्] 1 मैला, गन्दा, धिनीना अपविष्ट, अशुद्ध, अष्ट, कलकित, कलुषित (आल० मे भी) धन्यान्तरदङ्गरजसा मलिनोवर्षति श० ७५५७, किमिति मृधा मलिन यश कुक्ष्ये - वेणी० ३१४ 2 कामा, अधकारणय मलिनमपि हिमाशोर्लम्-लक्ष्मी तनोति श० ११२०, अतिमलिनं कर्तव्ये भवति शलानामतीव मिपुष्पा श्री बास०, शि० ११८ 3 पानी, दुष्ट, दुश्चरित्र - मलिनाचरित कर्म सुर-मनेनवाप्रतम् कण्ठा० २१७८ 4 नीच, दुष्ट, अधम लचव प्रकृती भवति मलिनाभवत शि० ११२३ 5 मेधाच्छन्न, तिरोहित, नम् 1 पाप, दोष, अपराध 2 मट्टा, 3 सोहागा, -मा, -नी रजस्वला स्त्री । सम० - अम् (नपु०) 'काला पानी' मयी, स्थाही, -आस्य (बि०) 1 काले या मैले मूत्र वाला 2 नीच, गवार 3 बहूनी, दूर - अम् (बि०) तिरोहित, द्विपत्र, मेधाच्छन्न, -मूष् (बि०) = मलिनास्य, दे०

(ख) 1 जनि 2 भुल, भ्रैल 3 एक प्रकार का बर, गोलगुल ।

मलिनमयति (मा० बा० पर०) 1 मैला करना, मलिन करना, कलकित करना, दूषित करना, घबघा लगाना, बिगाड़ना—यदा मेघादिनी शिथ्योपदेश मलिनयति तदाधार्म्य दोषो ननु—मालवि० १, 'बदनामी बमाता है या कलकित होता है' 2 भ्रष्ट करना, बदचलन करना ।

मलिनमन्त्र (पु०) [मलिन + इमन्त्रि] 1 मैलापन, गंदगी अपवित्रता 2 काकिमा, कालापन—मलिनमालिनि माधवमोहिता—सि० ११४ 3 नैतिक अपवित्रता, पाप ।

मलिनम्बु [मली मनु म्बोषित—मलिन + म्बु + क] 1 मट्टेरा, बोर—सि० १६१२ 2 राजस 3 डाम, पिम्बु, मटमल 4 लौह का महीना 5 बापु, हुवा 6 अरि 7 वह बाह्य जो दैनिक पच महापत्रों को नहीं करता है ।

मलीमस (वि०) [मल + ईमन्त्रि] 1 मैला, गन्दा, अपवित्र, अशुद्ध, कलकित, मलिन—मा ते मलीमसकारिण्यता मनिर्भूत—मा० ११२२, रघु० २१५३ 2 कृष्ण, काला, वाने रस का—मिथसा न जनास्वैरवेदि कुत्रन्तमलि मलीमसम्—मै० २१९२, विसाखिनामिहृत कोकिला-वरीमलीमसा जलदमदाङ्गराजय—सि० १७१७, ११५२ 3 घुट, पापपूर्ण, सदेय, बेईमान—मलीममा सदेव न पदतिन्—रघु० ११६६,—स. 1 लोहा 2 हरा कमीस ।

मम्ब (धा० आ० मन्कले) धामना, अपिचार में करना ।

ममल (वि०) [मल्ल + मञ्] 1 हृष्टपुष्ट, व्याधामशील, बलिष्ठ कि० १८८ 2 अच्छा, उत्तम—स्काः 1 बलवान् पुष्ट 2 कसरती, मुक्केबाज, पहलवान—प्रभूमन्त्रा मलाय—महा० 3 पान पात्र, प्याला 4 हत्यशेष 5 माल, कपोल, मच्छस्थल । मम० - अर्थिः 1 कृष्ण वा विशेषण 2 शिव का विशेषण,—श्रीडा मुक्केबाजी वा ममलपुष्ट,—अम्ब काली मिर्च,—सूर्यम् एक प्रकार का डोल,— म्बु - भुक्ति (स्त्री०) 1 अखाडा, ममलपुष्ट का मैदान 2 एक देश का नाम,—पुष्टम् कुली करना या मुक्केबाजी, मुष्टिपुष्टीय मिमल वा मुठभंड,—श्रीडा ममलपुष्ट की कला,—वाला व्यायामशाला, अखाडा ।

ममलक [मल्ल + कन्, मल्ल + म्बुल वा] 1 दीबट 2 दीबा, मैलापत्र 3 दीपक 4 नारियल का बना हुआ प्याला 5 दांत 6 एक प्रकार की बमेली ।

ममिल - स्त्री (स्त्री०) [मल्ल + इन्, मल्ल + डीप्] एक प्रकार की बमेली । मम० - ममि (नपु०) अमर, नाक एक प्रसिद्ध आयुष्कार जो चौदहवीं या पंद्रहवीं पाताथी में हुआ (उसने 'रघुवश' कुमार-

समर्थ, 'विषयुक्त' 'किराताभूनीय', 'नैषधचरित' और शिवागलकष पर टीकाएँ लिखीं), चम्बू छपाक, साँप की छतरी ।

ममिलक [मल्ल + कन्] 1 एक प्रकार का हंस जिसकी टाँपें और थोंच भूरे रंग की होती हैं 2 माघ का महीना 3 बुलाहू की डरकी, फिरकी । मम० - अमलकः - - अमलकः एक प्रकार का हंस जिसकी टाँपें और थोंच भूरे रंग की होती हैं—एवमित्ममदकलमल्लिकाशप-शब्दापुत्रकानुवदुदठपुडरीका (मुको विभागः - उत्तर० ११३१, मा० १११४—अर्थुः ५' न नामक पर्वत पर बिराजमान शिव का एक लिंग, -आख्या एक प्रकार की बमेली ।

ममिलका [मल्ल + कान्] 1 एक प्रकार की बमेली—वनेषु सायतनमल्लिकाना विदुग्मभोदगन्धिषु कुहमनेषु -रघु० १६१४ 2 इस बमेली का फूल—विश्वस्त नायननमल्लिकेषु (केशव)—रघु० १६१७ -आख्या० २१२५ 3 दीबट 4 किसी विशेष आकृति वा मिट्टी का बतन । मम०—मम एक प्रकार की अबर ।

ममलीकर [अमलकण्य आमान मल्लमि व करोति मल्ल + मिति, इन्म, कृ + अच्] कोर ।

मम्बु [मल्ल + उ] गैश, मालु ।

मम् (धा० पर० मवति) कसना, बाधना ।

मम्बु (धा० पर० मम्बति) बाधना ।

मम् (धा० पर० मघति) 1 भिनभिनाता, गुब्बन करना ऊ ऊ करना 2 फोंच करना ।

मम [मम् + अच्] 1 मच्छर 2 गुब्बना, गुग्गुनाना 3 फोंच, मम०—हरी मच्छरधानी, ममहरी ।

ममक [मम् + कुन्] 1 मच्छर, पिम्बु, दास—सर्वे अलस्य अरि ममक करोति—हि० १७८, मनु० १८५ 2 चमडी का एक विशेष रोग 3 मगक, चमड़े का बना पानी भरने का बेल्ला । मम० - कुट्टिः - ही (स्त्री०), - करमम् मच्छर उड़ाने का बर (हरी ममहरी, मच्छरधानी) ।

ममकित् (पु०) [ममक + इनि] मूलर का पेड़ ।

ममून (पु०) कुत्ता ।

मम् (धा० पर० ममति) बीट पहुँचाना, छीटि पहुँचाना, मार डालना, नष्ट करना ।

ममि—वी (स्त्री०) [मम् + इन्, ममि + डीप्] = मसी दे० ।

मम् (दिवा० पर० मस्यति) 1 तोलना, मापना, पैमाना करना 2 रूप बदलना ।

मस [मम् + अच्] माप, तोल ।

मसमम् [मम् + ल्यट्] 1 मापना, तोलना 2 एक प्रकार की नटी ।

मसुरा [मस्+अरच्+टाप्] एक प्रकार की दाल, मसूर ।
मसुरारकः [मस्+विभृच्, मस परिमाणम् ऋच्छति
मस्+ऋ+अच्, मसुरा+कच्] पन्ना ।

मसिः (पु० स्त्री) [मस्+इच्] 1 स्थाही 2 दीबे की
स्थाही, काजल 3 बोली में लगाने की कासी काजल ।
सम० आधारः,—कुषी,—बालम्,—बानी,—मसि
स्थाही रखने की बोलल, दबात,—कलम् रोसनाई,
—पण्यः लेखक, लिपिकार,—षष्ः कलम, लेखनी,
—प्रभु (स्त्री०) 1. लेखनी 2. स्थाही की बोलल,
—बलेण्यु कोवान ।

मसिकाः [मसि+कच्] ससि का बिल ।

मसी [मसि+डीप्] रे० ऊपर 'मसि' । सम०—जलम्
स्थाही,—बानी दबात,—कलम् काजल लगाना
—सिरसि मसीपटलम् दबाति दीप—मसि०
१७४ ।

मसु (सु) र [मस्+उरन्, ऊरन् वा] 1 एक प्रकार की
दाल, मसूर 2 लक्ष्म्या,—र 1. मसूर की दाल 2
बेस्या, रडी ।

मसुरिका [मसूर+कन्+टाप्, इवच्] 1 एक प्रकार का
शीतला रोग, लसुरा 2 मसहरी 3 कुट्टिनी, डूती ।

मसुरी [मसूर+डोष्] छोटो बेचक ।

मसुण (वि०) [ऋप् (दीर्घ) +कृ,पुषो० साच्] 1
स्निग्ध, चिकना—मसुणबदनर्षिचाम्नी—बीर० ७,
वा, सरस मसुणर्षि मसुणबचकम्—गीत० ४ 2
गुडु, कोमल, सरल—उत्तर० ११३८ 3. सौम्य, मृदु,
मधुरमसुणवाणि—गीत० १० 4 पिय, महोदर
विनयमसुणो वाधि नियम उत्तर० २१२, ४१२१
5 चमकीला, उज्ज्वल—मा० ११२९, ४१२,—वा
जलसी ।

मस्क् (म्भा० पर० मस्कृति) जाना, झिलना-बुलना ।

मस्करः [मस्क्+अरच्] 1 बौल 2 खोखला बौल 3 गति,
वाल 4 ज्ञान ।

मस्करिन् (पु०) [मस्कर+इनि] 1 लयासी वा सायु,
सन्धास आश्रय में बसवान शङ्खय धारयन् मस्करि-
रिजतम्—मट्टि० ५१६३ 2 कन्दरा ।

मस्क् (तुदा० पर० मस्कृति, मय्-वे० मस्कृयति-इच्छा०
मिमझति) 1 स्नान करना, दुबकी लगाना, पानी में
गोता लगाना—रघु० १५१०१, मसि० २१५५
2 दुबना, डलना, डूबवाना, नीचे बैठना, गोता लगाना
(अधि० वा कर्म० के साथ) सीपकथे तमसि विधुरो
मस्कृतीवान्तराला—उत्तर० ३१३८, मा० ११३०
—सोऽव्युत नाम तस्य सह तेनैव मस्कृति-गु० ४०८१,
गु० ११५२ 3 दुबना, पानी में मूठ होना 4 बुझा-
पयस्त होना 5 हलासाह होना, निरास या उल्लाह-
होन होना, उच् पानी से बाहर जाना, दृष्टिगोचर

होना, उठना—बन्ध सरितो गज उन्ममञ्ज—रघु०
५१४३, १६१७९, कि० ११२३, शि० ११३०,
शि० दुबना, नीचे बैठना डल जाना (बाल से भी)
यथा प्लेनोपलेन निमज्जत्युत्के तरन्, तथा निमज्ज-
तोऽप्लनादसौ दातु प्रतीच्छकी—मनु० ४११९४, ५१७३,
शोके मुहुषाचारित न्यमासीत्—मट्टि० ३१३०, १५१
३१, शि० ११७४ गीत० १ 2 बुल जाना, डूब जाना
बोसल होना, नजर से बच निकलना, एको हि दोषो
गुणसंप्रपाते निमज्जतीदो किरणेष्विवाक—कु०
११३ ।

मस्तम् [मस्+कच्] सिर माथा । सम०—दाह (नपु०)
देवदास का पेड़,—मूलकम् गर्दन ।

मस्तकः, कम् [मस्मति परिमत्त्वनेन मस् करणेन स्वार्थे क
तात्०] 1 सिर, माथा, खोपड़ी—अस्तिलोभा (पाठा०
तृष्णा) भिभूतस्य चक भ्रमति मस्तके—पद्य० ५१२०
2 किसी चीज की चोट्टी या सिर न च पर्वतमस्तके
—मनु० ४१४७, वृत्त० बुल्लो० शदि । सम० आश्रय,
वृत्त की चोट्टी, शब्द,—मूलकम् तीर सिरवर्द,
—पिच्छक,—कम् मद्योगत हाथी के गडम्यल पर
का गोल उभार, मूलकम् गर्दन,—स्नेह मस्तिष्क ।

मस्तिष्कम् [=मस्तकम्, पुषो० इवम्] सिर ।
मस्तिष्कम् [मस्तकम् इष्यति स्वभावत्वेन प्राप्तेर्नि
मस्त+इप्+क, पुषो०] दिमाग । सम० स्त्रव
(स्त्री०) मस्तिष्क पर चारों ओर लिपटी २
सिन्धली ।

मस्तु (नपु०) [मस्+तुल्] 1 मट्टी मलवाई 2 छाः
सम०—सुय, गम्, सुगकः, कम् मस्तिष्क
दिमाग ।

महः 1 (म्भा० पर०, चुरा० उभ०—महति, महयति—न,
महित) सम्मान करना, श्राद्ध करना, बड़ा मानना
पूजा करना, श्रद्धा रखना, महत्त्वपूर्ण मंगलना—गोप्या
न विधीना महयति महोदरम् विबुधा मुग्धा०, जयथा
विन्यस्तोर्हित इव मदारकुमुय—गीत० ११, कु०
५१२५, ५१२२, कि० ५१७, २४, मट्टि० १०१२, रघु०
१११४९ ।

1) (म्भा० जा० महने) विकसित होना, बड़ना ।

मह् [मह्, घञ्चै क] 1 उत्सव, त्योहार बहुमहोदय-
कीमतीमह मा० ११२१, स मन्तु दूरततोऽप्यनिवर्तनं
मह्यसाधिति बहुतयोधितं शि० ६११९, मदनमह्यम,
रत्न० १ 2 उपहार, यज्ञ 3 बैसा 4 प्रकाश, कानि
तु० 'महस्' से भी ।

महकः [मह+कच्] 1 प्रमुख पुरुष 2 कसूबा 3 विष्णु
का नामान्तर ।

महत् (वि०) (म० अ० महीयस्, उ० अ० महिष्ठ, कर्तु०
(पु०) महान् महान्ती महति, कर्म०/(स० ब०)

महत) [मह-+अति] 1 बड़ा, बृहद्, विस्तृत, विशाल, विस्तीर्ण महान् सिंह व्याघ्र आदि 2 पुष्कल, यथेष्ट, विपुल, बहुत से, अत्यन्त—महाजन, महान्, इन्द्रराज 3 लम्बा, विस्तारित, व्यापक, महाती बाहु यद्यपि महाबाहु इसी प्रकार महती कथा, महानप्या 4 हृष्टपुष्ट, बलवान्, ताकतवर जैसे महान् वीर 5 प्रबल, महान्, अत्यधिक महती विरोधेदना, महती पिपासा 6 हृष्टपुष्ट, बलवान्, ताकतवर जैसे महान् वीर 7 महत्त्वपूर्ण, गुस्तर, भारी महत्कार्यमुपस्थितम्, महती राता 8 ऊँचा, उन्नत, प्रमुख, मुख्य महत्कुलम्, महान् जन 9 उनाल—महान् शोध, ध्वनि 10 लंबेरे या देर में महति प्रत्युषे, 'प्रातःकाल लंबेरे' महत्प्रपराह्णे 'दोपहर बाव देर में' 11 ऊँचा-महाध (पुं०) 1 ऊट 2 गिब का विशेषण 3 (संख्य में) महतरत्न, बुद्धि तरण (यन मे चिन्त) साध्य० डारा माने यद्ये पञ्चीस तन्त्रों में से दूसरा मनु० १२।१४, सा० १।८।२२ आदि मनु० 1 बरभन, अनलता, असम्पत्ता 2 राग्य, उपनिवेश 3 पवित्रज्ञान (अध्य०) बहुत अधिक, आर्याधिक, बहुतन्त्राया, अत्यन्त (विशे०) महत् शब्द तन्मुख्य समास के प्रथम पद के रूप में तथा कुछ अन्य स्थानों पर अपरिवर्तित ही रहता है, परन्तु कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों में बदल कर 'महा' बन जाता है। सम० आत्मकः विशालभवन, आत्मा ऊँची आया, —आत्मर्ष्ये (वि०) अत्यन्त आत्मार्यजनक, —आधयः बड़ों का सहारा, बड़ों की राग्य, —कष (वि०) बड़ों द्वारा कथित वा उल्लिखित, बड़े लोग के मुख में, —शेष (वि०) विस्तृत प्रदेश पर अधिकार करने वाला, —साध्यम् साध्यों के पञ्चीस तन्त्रों में से दूसरा, —विपुल अन्तर्गत, —सेवा बड़ों का सेवा, —स्वाम्यम् ऊँचा स्थान, उन्नत स्थान ।

महती [महत्+ती] 1 एक प्रकार की बीया 2 नारद की बीया 3 बनेसमाज महती मुहूर्त्त—विशु० १।१० 3 लफेरे बीज का पीया 4 बरभन, महत्त्व ।

महतर (वि०) [महत्+तरन्] अज्ञातका बड़ा, विशाल —र 1 प्रधान, मुख्य या सबसे बड़ा व्यक्ति अर्थात् सम्माननीय पुण्य—उत्तर० ४ 2 कपुची वा राज भवन का महाप्रतिहार 3 दरबारी 4 शोध का मुखिया या सबसे बड़ा आयुधी ।

महतरक [महतर+कन्] दरबारी आदमी, किसी राज-भवन का महा प्रतिहार ।

महत्त्वम् [महत्+त्व] 1 बड़ापन, विशालता, विस्तृति, महाविस्तार 2 शक्तिशाली, विपुल, ऐश्वर्य 3 आचरणका 4 उन्नत अवस्था, ऊँचाई, उन्नतपन 5 मह-ता, प्रचण्डता, ऊँचा परिमाण ।

महनीय (वि०) [मह-+अनीयत्] सम्मान के योग्य, आदरणीय, प्रतिष्ठित, श्रीमान्, पद्मम्बो, उदात्त, श्रेष्ठ—महनीयमानव—पु० १।१५, महनीयकीर्ति २।२५ ।

महत्: [मह-+अच्] किसी पद का मुख्याभिधान ।

महत् (महत्) (अध्य०) [मह-+अच्] भुलाक से ऊपर के लोगों में से चौथा लोक (स्वर् और जनक के बीच का लोक) (इसी अर्थ में 'महर्लोक' शब्द भी) ।

महत्त्वः, महत्त्विक [अर्थों भाषा में व्युत्पन्न शब्द महत् +त्वा+क] राजा के अन्तपुर में रहने वाला बीजा या हिजड़ा ।

महत्त्वकः [महत्त्व+कन्] निर्बल, कमजोर, पुराना, —कः 1 राजा के अन्तपुर का बीजा या हिजड़ा विशाल भवन, महत्त्वः ।

महत् (मनु०) [मह-+अनुत्] 1 उत्सव, त्योहार का अवसर 2 उपहार, आहुति, यज्ञ 3 प्रकाश, आभा —कल्याणाना स्वामि महता भान्ति विभवयते—सा० १।३, उत्तर० ४।१० 4 सात लोगों में से चौथा —दे० 'महर्' ।

महत्त्वम्, महत्त्विकन् (वि०) [महत्+मनुत्, विनि वा] धन्य, उज्ज्वल, धमकीला, प्रकाशपूर्ण, आभासय ।

महा [मह-+घ+टाप्] गाया ।

महा [कर्म० सं० और व० सं० में प्रथम पद के रूप में, तथा कुछ अन्य अनिपमित शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त 'महत्' का स्थानापन्न रूप] (विशे०) उन समस्त शब्दों की संख्या जिनका आदि पद 'महा' है, बहुत अधिक है, तथा और अनेक शब्द बन सकते हैं, उनमें से अपेक्षाकृत आवश्यक या जो कोई विशिष्ट अर्थ एक ही, नीचे दिए गए हैं) । सम०—अस गिब का विशेषण, —अंग (वि०) स्थल, महाकाय (म) 1 ऊट 2 एक प्रकार का हुआ, घूम 3 गिब का नामान्तर, —अंशकः एक पहाव का नाम, —अव्यय-मकट का भारी लतरा, —अध्वनिक (वि०) 'हूँ' तक गया हुआ महाप्रघात, मृत, —अध्वरः बड़ा यज्ञ, अन्त-त्सु भारी गायी (सं:—सम्) रसोई, अनुभाव (वि०) महाप्रतापी, बीमस्त्री, उदात्त, यशस्वी, महाशय, उदार, श्रीमान्—शि० शि० १।१७, श० ३ 2 मुखवान् ईमानदार, धर्मिणा, (सं:) प्रतिष्ठित या आदरणीय व्यक्ति, —अंतकः 1 मुख्य 2 गिब का विशेषण, —अध्वकारः 1 धोर अन्वेष 2 आध्यात्मिक ज्ञान, —अंधाः (ब० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम, —अध्वयः, अधिजन (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न, सरकुलोद्भव (सं:—क) उत्तम जन्म, ऊँचा कुल, अधिष्ठाः शीघ्र का अत्यन्त बीया हुआ लव, —अन्तकः (राजा का) मुख्य

य प्रथमयन्त्री,—अनुकः शिव का विशेषण, अनुकम्प
 दम करब, अस्मक (वि०) बहुत बड़ा (—इस्मक)
 इमली का फल, अस्मकम्प मुसलान जाल, विद्याल
 वगत, अर्थ (वि०) अतिमूल्यवान्, अँधी कीमत
 वाला (—अँ) एक प्रकार की बटेर, अर्थ (वि०)
 मूल्यवान्, कीमती,—अर्थिस् (वि०) अँधी जालाओ
 वाला, अर्थिः 1 महासागर 2 शिव का नामान्तर,
 अर्थुदम् एक अरब अह (वि०) 1 अतिमूल्य-
 वान्, बहुत कीमती कु० ५११२ 2 अनमोल, अनन्-
 मेय उत्तर० ११११ (—हम्) सफेद चन्दन की
 लकड़ी, —अरबरोह वटवृक्ष, अशामिषज वज्र के रूप
 में एक बड़ा मृदा रत्न० ३५६९, अमल (वि०)
 वेद, भोजनभद्र, —अमलम् (पु०) मूल्यवान् पाप,र,
 लाल, —अम्ली आन्वित लुक्ला अम्ली, दुर्गाष्टमी,
 —अमि बड़ी तलवार, अमुरी दुर्गा का नामान्तर,
 अम्ल होपहर बाद का समय, —आकार (वि०)
 विस्तार, विशाल, बड़ा, —आशय 1 प्रथम अध्यायक
 शिव का विशेषण, —आशय (वि०) बनवान्, अभीर
 (—अय) कदम्ब का वृक्ष, आशय (वि०) 1 महाशय,
 महामनस्क, उदारचेता, महोदय, अथ दुर्गमा अशवा
 मृदाग्ना कीटिल्य —मृदा० ७, द्विपति मन्दाश्चरित
 महात्मना—कु० ५७७५, उत्तर० १५५९ 2 श्रीमान्,
 पुत्र, श्रेष्ठ, प्रभाव (पु०) परमात्मा मनु० १५५४
 (महात्मवत् का भी वही अर्थ है जो 'महात्मन्' शब्द
 का), आनक एक प्रकार का बड़ा डाल, —आनक,
 मन्द 1 बड़ा हर्ष या उल्लास 2 विशेष कर
 माल का आनक, —आपमा बड़ा दरिया, —आपुषः शिव
 का विशेषण, —आरम्भ (वि०) बने-बने कार्यों में
 हाथ में लेने वाला, माह्निक (—भ) कोई बड़ा माह-
 न्निक कार्य, —आसय 1 देवालय 2 पवित्र स्थान
 आश्रम 3 बड़ा आवासस्थान 4 तीर्थस्थान 5 ब्रह्म-
 लाक 6 परमात्मा (—आ) एक विशेष देवता का
 नाम, —आशय (वि०) महामत्मा, महामनस्क, उदार-
 चेता, उदात्तरचित १० महात्मन् (—अ) 1 उदार-
 मत्मा या उदारचेता व्यक्त—महाशयब्रह्मर्षी—भामि०
 १७७० २ समृद्ध, —आशय (वि०) 1 उत्तम पद
 पर अधिकार करने वाला 2 तानकर, बलवान्,
 —आशय, बड़ा या महाशय, —आशय (वि०) 1
 उदारचेता, उदारमत्ता महामत्मा, उदात्तरचित—रघु०
 १८३३ 2 महान् उद्देश्य और आशय ३ उम्मेद वाला,
 महत्वाकांक्षी, इन्द्रः 1 महेंद्र अर्थात् महान् इन्द्र
 कु० ५५३, रघु० १३२०, मनु० ७७७ 2 मुखिया
 या नेता 3 एक पर्वत श्रृंखला, —आशय इन्द्रवत्पुत्र,
 —आशय इन्द्र की राजधानी अन्तराष्टी, —आशय (पु०)
 बृहस्पति का विशेषण, —आशयः बड़ा धनुर्धर, बड़ा

भारी योद्धा भय० १५, ईशः,—ईशानः शिव का नाम,
 ईशानी पर्वतो का नाम, —ईश्वर 1 महाशय,
 स्वामी 2 शिव का नामान्तर 3 विष्णु का नाम,
 (—री) दुर्गा का नाम, —उकः (—उशान्) के स्थान
 पर) महाकाय बैल, हृष्टपुष्ट बैल —महाशला वल्लर
 स्पृशशिव—रघु० ३१३२, ५१२२, ६७२७, शि० ५५६३,
 —उत्पलम् एक बड़ा नील कमल, —उत्पल, 1 एक
 बड़ा पर्व, या हर्ष का अवसर 2 कामदेव, —उत्पलाह
 (वि०) ऊर्ध्वस्थी, ओन्गम्बी, पंयंशाली (—हः) पर्व,
 —उत्पलि 1 महासागर रघु० ३१३७ 2 इन्द्र का
 विशेषण 'ज-शय, सोपी, —उत्पल (वि०) बड़ा समृद्धि-
 शाली या भाग्यवान्, बड़ा वशस्वी या प्रभ्य अति-
 समृद्ध (—भ) 1 प्रोक्तं, उपपन्न, बहूपन्न, समृद्धि
 —रघु० ८१८ 2 मोक्ष 3 प्रभु, स्वामी 4 काम्य-
 कुम्भ या कश्चीर नामक जिला 5 कश्चीर की राजधानी
 का नाम 6 मधुपर्क, —उत्तर (वि०) बड़े पेट वाला,
 मोटा (—रम्) 1 बड़ा पेट 2 जलोदर, —उत्तर
 (वि०) अनिदानशील, या उदारचेता, बदान्य, —उत्पल
 (वि०) =महोत्साह दे०, —उत्पल (वि०) अतिपरि-
 श्रयो, मेहनती, परिश्रमशील, —उत्पल (वि०) अत्यन्त
 ऊँचा (—स) पत्थिया मन्त्र का वृक्ष —उत्पति
 (स्त्री०) प्रकथं, उपपन्न (आल० भी) उत्कृष्ट पद,
 उत्पकार बड़ा आभार, —उत्पाच्छाय मुख्य गुरु,
 विद्वान् अध्यापक, उत्पन्न, बड़ा सोप —रघु० १२१८,
 —उत्पक (वि०) विगल बलमूल्य वाला (—म्क)
 शिव का विशेषण, उत्पका 1 एक बड़ा टूटा तागा
 2 बड़ी जफनी हुई लकड़ी, —ऋषि (स्त्री०) बड़ा
 समृद्धि या मयप्रता, ऋषभ सोप, —ऋषि
 1 बड़ा ऋषि या मन्त्र (मनु० ११३४ में यह शब्द
 मानवजाति के मूलपुरुष या दम प्रजापतियों के शिष्य
 प्रयक्त हुआ है, परन्तु यह 'बड़ा ऋषि' के सामान्य
 जर्में भी प्रयक्त होगा है) 2 शिव का नाम,
 —बोष् (पशुशब्द) (वि०) बड़े होठों वाला
 (—ष्) शिव का विशेषण, —ओम्बन् बहुत ताकतवर,
 अतिबलशाली, प्रतापी, पशुश्रेणी, महोत्सवो मानघना
 बनादिता—कि० १११९, (पु) बड़ा शूरवीर या
 योद्धा, मल्ल, —ओम्बन् विष्णु का शत्रु, —ओषधि
 (स्त्री०) 1 अमोघ औषधि का पौधा, अमूक दवा:
 2 दूर्वा वास, —ओषधम् मर्वोपरि उपाहार, रामबाण,
 सब रोगों की अमूक दवा 3 अदरक 4 लहसुन 5
 एक प्रकार का मेष, बलवान्, —कच्छः 1, समृद्ध
 वरुण का नाम 3, पहाड़ का नाम, —कंठः लहसुन,
 —कण्ठः एक प्रकार की सोपी, कौडी, —कण्ठिन्वन् बंज
 का पेट 2 माल महामुन, —कम् (वि०) बिल्कुल नगा
 (. षु) शिव का विशेषण, कर (वि०) 1 लंबे

होयो वाला 2 जिनमें बहुत गन्धर्व मिलता हो—कर्मः शिव का विशेषण, कर्मण (वि०) बड़े-बड़े काम करने वाला (पुं०) शिव का विशेषण, कला धुल्ल पक्ष की द्वितीयका का रात, कशिः 1 कर्षार्थीरामायण कालिदास अथर्वसि, बाण और भागवि आदि महाकाव्य 2 शुक्राचार्य का विशेषण—कल्पः शिव का विशेषण (- ता) पृथ्वी, काय (वि०) स्थूलकाय, बड़ा महा-शार, अतिक्रम्य (य) 1 हाथो 2 शिव का विशेषण 3 शिष्य का विशेषण 4 शिव का एक अन्वय नदी बेल, कालिको कालिक मास की पूर्णिमा, काल प्रलयकाली कल्प में शिव का एक रूप 2 एक प्रसिद्ध मन्दिर या शिव (महाकाल) का मन्दिर, (महाशारण) का यह मन्दिर उज्जैन में विद्यमान है, कालिदास न अपने मेघदूत की रचना द्वारा इसे अमर कर दिया है, बहा (महाकाल शिव) देवता, उमका मन्दिर, पूजा आदि के साथ-साथ नगरी का सचिव यवन मिलता २ तु० मय० १०-१८, २५० ६१३४ 3 शिष्य का विशेषण 4 एक प्रकार की लोकी या हल्दी, पुरम् उग्रशरणी की नगरी, कालो दुर्गा देवी का उगवना स्थ, काव्यम् लौकिक काव्य, महाकाव्य (महा शिष्य में पूरा विशिष्ट ज्ञा गणित्य शान्तिव्यो में शिष्य २ मा० २० ५५० में दे०) (महाकाव्य शिष्या में शिव है) यवना कुमारभद्र किराता-शार, शिवाण्यव्य, और नैरयचोतः। यदि सड-रिष्य मेघदूत भी नापारं भी मूलित किया जाय त त महाकाव्य ही ज्ञान है परन्तु यह गणना केवल शारण-शारण, कर्षाक भट्टिकाव्य, विक्रमाकदेवचरित और शरविजय आदि का भी महाकाव्य की दृष्टि में शिवार शिष्य ज्ञान का समान अपेक्षार है। कुमार गजा का मयम बड़ा पुत्र, सुवराज, कुल (१२०) मनु शान्तर, ललकुलाद्रुव, जेवे कुल में (१२) लम्) उक्तानु न जन्म, ऊँचा कुल, कुलम् ५० सायना भारी-गाम्ना कोश शिव का विशेषण, जन्म महाशर, उदा० अद्वयमय—२५० २१६६, कर्म शिष्य का विशेषण, कोशः शिव का विशेषण अथवा महाशरणापार, उपदासक, कोश गजा उदा लवः, कर्म (बरी मन्था सी शरर की सन्धा) गज उदा गयो दे० दिक्वगिन्, कर्मवलि. गणेश उदा का उक्त म् गज एक प्रकार की बेल (कर्म) गज शार उः चन्दन की लकड़ी, कर्मः सुरापाय, पुत्र (वि०) अमाय, अकर्म (अपवि आदि) मुष्टि शिवाक शील की गाय, कर्मः राहु का विशेषण शीव 1 उट 2 शिव का विशेषण,—श्रीविन् (पुं०) उट घुर्की सानी हुई शराह, घोषम् मर्डी, मन्ता (- क) उवा शार, कोशाल, गुनमापाका,

- चक्रवर्तिन् (पुं०) सार्वभौम नरेश, कर्मः (स्त्री०) विशाल मेवा, - शार, बटवृक्ष, - उट. शिव का विशेषण, जन्म (वि०) जिसकी हमलो की हृदयी बहुत बड़ी हो (उ) शिव का विशेषण, कर्म. 1 लोगो का समूह, बहुत से प्राणी, साधारण जनता - महाशर मेन गत, स पन्था महा० 2 जनसंख्या, मीड-भाड —मशजन स्पेरसुको भविष्यति कु० ५१७० 3 बड़ा आदमी, प्रतिष्ठित पुत्र्य, प्रमुख ध्वन्ति महा-जनस्य ममर्ग कर्म नोभ्रति कारक, पधपत्रस्थित शीव धते मन्था फलधियम् सुमा० 4 किसी व्यवसाय का मुखिया 5 शीवागर, व्यापारी - शतीव (वि०) 1 दाम-शील 2 उत्तम जाति का, श्रोतिसम् (पुं०) शिव का विशेषण—सत्सम् (पुं०) 1 कठोर तप करने वाला 2 शिष्य का विशेषण,—सत्सम् शीव के मात लोको में से एक, दे० पानाल, तिक्त निवृत्त, शीष्य (वि०) अत्यंत तेज या तीव्र (क्या) शिलावा,—तेजस्य (वि०) 1 बरी भारी कानि या दीप्ति में युक्त 2 तेजस्वी, शक्तिशैली, शीष्यपुत्र्य (पुं०) 1 शूरवीर, शोडा 2 शानि 3 कालिकेश का विशेषण (म०) शार,—इष्ट- इत् 1 बटे दाना वाला हाथी 2 शिव का विशेषण 1 लकी भूजा 2 भारी दह इडा (मनुष्य के भाग पर) प्रबल यह २ प्रभाव, - बाक (न पुं०) देवदार वृक्ष, देव शिव का नापारत (शी) शार्वती का नापारत, दुम् पीपल का वृक्ष, - कर्म (विं०) 1 घनाडप 2 कोमली, मलयवात् (—नम्) 1 शीला, 2 गध, वृष 3 मलयवात् वेणुम्भा,—धनुम् (पुं०) शिव का विशेषण, शारु 1 शीला 2. शिव का विशेषण 3 मेरा का विशेषण,—नडः शिव का विशेषण नड बड़ा दरिया, नदी 1 गगा, कुष्णा जैसी बड़ी नदी मययाभ्रविजयशैलि महाजघा नापागना शि० २११०० 2 बाला की शारडी में शिने वाली एक नदी, नडा 1 शीवः नड शार 2 एक नदी का नाम, नरक इक्षीम नरका में से एक,—नल एक प्रकार का नरकुल, नेडा —नडश्रीभ्राशिवर सुकुला शीवी दुर्गातवर्मा, नडकर्म 'महाशार' एक नाट्य' का नाम जिसे द्रुममन्नाटक' (द्रुमशानु के नाम से सर्वप्रिय शीव के कारण) श्री कहत है, नाडः 1 ऊचो आकाश शीर 2 बड़ा डाल 3 गन्धने वाला बादल, 4 शाय ५ शायी 6 सिह 7 कान 8 उट 9 शिव का विशेषण, (कर्म) एक वाद्ययंत्र, - नल शिव का विशेषण,—निडा 'महाशिडा', मृग्य, निष्य शिष्य का विशेषण, - निष्यानम् (शोडा के अनुसार) स्पष्ट-मन्ता का पूर्ण मोक्ष, शिवा 1 शारीगण, रात का दूसरा या तीसरा पहर - महाशिना तु शिष्यो माध्यम

प्रहरद्वयम्,—बीष कोषी,—नील (वि०) गहरा नील (सू०) एक प्रकार का नीलम या पन्ना—शि० १११६, ४४४, २५० १८४२, उल्मः नीलम,— नृष्यः शिव का विशेषण, मेघि कोषी,—पक्षः १ गहड़ का विशेषण २ एक प्रकार की बतख, (शी) उल्म,—यक्षमूलम् पाँच पेड़ों की जड़ों का योग—विश्वोन्मियन् स्थोनाकः कामरौ पाटला तथा, सर्वसूत मिलितैरेते स्थानमहापञ्चमूलकम्, पञ्चविषयम् पाँच घातक विषों का योग—भृगी च कालकृदन्व मुक्तको वस्स-नामक, शंक्कणीति योयोग्य महापञ्चविषाभिष, पक्षः १ मुख्य सड़क, प्रधान बोधी, राजमार्ग—कु० ७३३ २ परलोक अर्थात् मृत्यु का मार्ग ३ कुछ पर्वत के शिखर जहाँ से प्रकल लोग स्वर्गपथ प्राप्त करने के लिए अपने आपको फेंक करते थे ४ शिव का एक विशेषण, पक्षः एक विविध बड़ी सख्या, (श्री पद्य की सख्या ?) २ नारद का नामान्तर ३ कुबेर की नौ निधियों में से एक (घम्) १ श्वेत कमल २ एक नगर का नाम, पति नारद का नामान्तर,—पराहृत् देव में, दीपहृद बाद,—पातकम् बहुत बड़ा पाप, जघन्य अपराध ब्रह्महत्या मृतपान स्नेह भुवंगनायाम, शान्तिर पानकान्माहृतस्तपस्यमंगेच पंचमम् मनु० ११५४ २ कोई बड़ा पाप, या अतिक्रमण, पाप प्रदान करने, पाद शिव का विशेषण, पाप्मन् (वि०) अत्यन्त पापपूर्ण या दुर्बल, पुष महान् पुत्र पुष्य, १ बड़ा आदमी, एक प्रमुख या पूज्य व्यक्ति— शब्द महापुरुषसंविहित विशय्य उपर० ६१७ २ परमात्मा ३ विष्णु का विशेषण, पुष्य एक प्रकार का कीड़ा, पूजा बड़ी पूजा, अमाशयण अवसरो पर अनुपिष्ट शनू दृजा, पुष्य एक ऊँट, प्रष्य शिव का विगतकम्, प्रष्य (वि०) बड़ी भारी कानि बाला (अ.) दीपक या प्रकाश,—प्रभु १ परमेश्वर २ राजा महाप्रभ ३ मुख्य ४ इन्द्र का विशेषण ५ शिव का विशेषण ६ वैष्णु का विशेषण,—प्रलय महा-विघटन ब्रह्मा की जीवन मर्यादा पर शिव का पूर्ण विनाश जब कि अपने अधिकांशों सहित समस्त लोक, देव, मनु, ऋषि आदि मय ब्रह्मा अपने सभी विनाश का प्राण में जर्त है,—प्रसाद १ एक बड़ा अनुग्रह २ (भववा- की मति पर गवाला हुआ योग) एक बड़ा उदाहार,— प्रस्थानम् इन जीवन ने बिगड़नेना, मुख्य अँबा ३ऽय व, स्वाभाविक—वनि ज्ञा ऊर्म वर्णों के—स्वाभाव म, की जर्नी है २ उदात्तानि-नेक ने पुत्र्य वर्णं—अर्थात् पु० उ० ज्ञा— ३ य ३ व् पु० पु० ह् ३ पराधी नौवा,—स्यव भारी वाद, अन्वशासन,—फल (वि०) बहुत फल देने वाला (सा) १ कड़वी लोकी २ एक प्रकार की बड़ी, (सम्) च-

फल या पुरस्कार,—बल बहुत मजबूत (ह्) २वा (सम्) सोना ईश्वरः वर्तमान महाकालेश्वर च तिरः स्थापित शिव का लिंग,—बाहु (वि०) जहाँ मुजाया बाला, शक्तिशाली (ह्) विष्णु का विशेषण,—बि (वि) सम्—१ अनादि २ हुदय ३ जलकल्प, वहा ४ बिबर, गुफा,—श्री (श्री) ज शिव का विशेषण,—श्री (श्री) श्वम् मूलाधार,—श्रीषि. बौद्धभिष, —ब्रह्मम्, ब्रह्मन् परमात्मा,—ब्रह्मण्य १ एक बड़ा या विद्वान् ब्राह्मण २ एक नाच या तिरस्करणीय ब्राह्मण,—भ्रम (वि०) १ अतिभ्र, उवान्, भीभाय-शाली, समूह २ शोमान्, पुत्र्य, यशस्वी—महाभाग काम नरपतिरभिप्रथिविनिरमी—श० ५१२०, मनु० ३११९२ ३ अत्यन्त निर्मल या पवित्र, अद्यत गुणवान्,—भ्रायिन् (वि०) अनिभायवान् या नमूद,—भारतम् प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें पुनराधु और पांडु के पुत्रों की प्रतिद्वन्द्विता और मरण का वर्णन है (इसमें अठारह पर्व या अध्याय हैं, कहा जाता है कि इसकी रचना व्यास ने की, तु० 'भारत' शब्द की भी), भाष्यम् १ एक बड़ी टीका २ विशेषकर पाणिनि के सूत्रों पर फर्जल द्वारा लिखा गया महाभाष्य (विम्बन् टीका), —भीष राजा शान्तु का विशेषण, भीष एक प्रकार का कीड़ा, मुकुरा, भुज (वि०) जहाँ भुजाया बाला, शक्तिशाली,—भुलम् मूलकम् २० भूत-न-वेषाविद्येयन महाभूतममायिना २५० ११६, मनु० ११६ (त.) एक बड़ा जलचर, भीमा दुर्गा का विशेषण,—भूषि कोमलों या मृगयान् मणि, आभयण, जवाहर भूषि (वि०) १ उच्चमनस्क २ चतुर (ति) वृत्तानि का नाम,—भृद (वि०) मन में अग्रन्त चर् (- द) मनवाला हाड़ी, भनस्क,—भनस्क (वि०) १ उच्चमना उदानमनस्क, उदारताय २ उदार ३ धमण्डी, अभिमान् (पु०) धरम' नाम का एक कल्पनाप्रसुत जन्तु,—भृशिन् (पु०) प्रथममन्त्री मन्थामन्त्री,—महोपाध्याय १ बहुत बड़ा उपाचार अध्यापक, महापंडित, विद्वान् और प्रसिद्ध पाठना दी जाने वाली उपाधि उदा० महाभोगीयनाय मन्त्रिनाय मृगि आदि, भास्य 'मन्त्रवान् भा- विशेषकर नरनाम० ५१२० भास्य १ राज्य बड़ा अधिकारी, उल्म महाधिपकारी, मुद्राभयना कल्पे कर्मण भूपाया विरो माने परिन्दे, भाता ब मन्त्री वेवा महाभाश्वानु ने म्मुना मनु० ११०५० २ महाकत, हाविया पर निपटारी करने वाला पक्ष, ११११ ३ हावियों का अधीशक (श्री) १ मुख्यमन्त्री की पत्नी २ आध्यात्मिक गुरु की पत्नी, भाष्य विशेष का विशेषण, भाषा मासामिक कारण भूता ज्ञवियों जिसमें श्व समस्त भौतिक जगत वास्तविक प्रतीत

होता है, —भारी हंडा, बर्बाई रोग, सफायक बीमारी, —**बहोखबर**: शिव या गणेश्वर का बड़ा भक्त, —**बुझ**: प्रवरमच्छ, बरिदान, —**बुनि**: बड़ा मूल्य 2 **भ्यास** (नपुं लि) आधुनिक की उड़ीमुटी, —**भुधंम्** (पुं०) शिव का विशेषण, **भुलम्** एक बड़ी मूली (सः) एक प्रकार का प्याज, **भुल्य** (वि०) अत्यन्त कीमती (स्वः) माल, **भुन** 1 कोई भी बड़ा जानवर 2 हाथी, **भेह** भूने का पेड़, —**भोह**: मन का भारी आकर्षण (—ह्रा) दुर्गा का विशेषण, **भस**: महायज्ञ गृहस्थ द्वारा अन्वयेन वैदिक पात्र यज्ञ या ओर कोई धर्मकृत्य—अध्यापन ब्रह्मयज्ञ विदुष्यजन्तु तर्पणम्, होमा देवो (देवयज्ञ) बलिमौतो (भूत यज्ञ) नृपश्रोऽ निधिजनम् **भन** ० ३१००—७२, —**भनकम्** बृहस्पतकं अर्थात् किसी इलाक के चारों चरण जहा जग्दी एक मे है, पल्लु अर्धत भिप्र है, उदा० दे० वि० १५१५२, जहा तिकागमोपुर्जगतोयामार्गणां पक्ति के चार भिग २ अर्थ है तु० भट्टि० १०११९ की भी, यात्रा 'वशां नीर्ययाता' काशी यात्रा, **भम्भु**, —**भम्भु** विष्णु या विशेषण, **भुम्भु** नृहृद् युग्मं भन्वयो के चार पक्ष का सप्ताहार अर्थात् ३२०००० भानवर्ष, **भोगिन्** (पुं०) 1 शिव का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 मर्गा, —**भरत्सव** 1 मात्रा 2 धनुरा, **भरजम्** 1 केंसर 2 सोना, —**भरम्भ** बहुमूल्य १, रथ 1 बड़ी गायी या रथ 2 बड़ा घोड़ा या गाँव कुन प्रभावो घनजवस्थ महारथजवप्रथम्य विपिनमन्वादिनुम् वेणी० २, रथ० १११, दि० ५०० (महाराज की परिभाषा एका दशमहाराणि या२देव्यन्तु धनिता, सन्धसन्धप्रबोधः विज्ञेय ग महाराज), —**भस** (वि०) अत्यन्त रमोला (स) 1 पत्र, २ व 2 पांग 3 बहुमूल्य पानु (सम्) धानया इः जपकेदार माड, —**राज** 1 बड़ा राजा, २म का महाराट 2 राजाओं या बड़े र ध्वजितयो को सम्मानन सम्बोधित करने की रीति (महाराज, देव २५ महामहिम), 'भुक्त' एक प्रकार का जाम, **राजिका** (पुं, ब० ब०) एक देवमण्ड का विशेषण (गिनती में यह देव २०० या २३६ माने जाते), —**राज्ञी** मुख्य रानी, गजा का प्रधान पत्नी, **राज्ञि**, —**ज्ञी** (स्त्री०) दे० महाराज्य, —**राष्ट्र**: 1 महाराष्ट्र भाग के पश्चिम में मराठो का एक देग 2 महाराष्ट्र देग के अधिवासी, मराठे (ब० ब०) (पुं) मुख्य प्राकृत बोली, महाराष्ट्र के अधिवासीयो की भाषा तु० इण्डी—महाराष्ट्राधवा भाषा प्रकृष्ट 'इहन् दिदु काव्या० १३५, रूप (वि०) रूप म बलवान् (ब) 1 शिव का विशेषण 2 राज, **रेतम्** (पुं०) शिव का विशेषण, **रौह** (वि०)

बड़ा बराबना (—ज्ञी) दुर्गा का विशेषण, —**रीख**: इस्कीस नरको में से एक—**मनु०** ४१८९—९०, —**रुक्मी** 1 नारायण की धारिता या महालक्ष्मी 2 दुर्गापूजा के उत्सव पर दुर्गा बनने वाली कन्या, —**रुग्म्** गृहस्थिन (ग) शिव का विशेषण, —**रुक्मि**: कीर्ता, —**रुक्मि** चम्बक, **रुम्भ** 1 एक बड़ा जयल 2 विद्यवान में एक बड़ा जयल, **रुवाह**: 'महाबराह' विष्णु का विशेषण, तृतीय अवतार 'बराह सुकर' के रूप में, **रुवा** शिशुमार, मूस, —**रुवायम्** 1 लबा वाक्य 2 अविच्छिन्न रचना या कोई साहित्यिक कृति 3 महदर्प प्रकाशक वाक्य—**रुवे** लक्ष्यमति, ब्रह्मदेव सर्वम् आदि, —**रुवत**: आधी, ससावत, —**रुवातिकम्** पाणिनि के सुत्रों पर काव्यायन द्वारा रचित वाकिक, **रुविहृ** योगवर्धन में प्रदक्षित मन की अवस्थाविशेष या ध्वनि-विशेष, —**रुविना** सत्त्विकल्प नियम, —**रुविचम्** वेध की सकान्ति 'सकान्ति वसन्तविषुव' (जब सूर्य मीन राशि से मेघराशि पर सक्रमण करता है), **रुवीर** 1 बड़ा याग्योर या घोड़ा 2 सिंह 3 इन्द्र का बख 4 विष्णु का विशेषण 5 सक्क का विशेषण 6 हनुमान् का विशेषण 7 कोयल 8 मण्ड बाहा 9 यज्ञाग्नि 10 यज्ञपात्र 11 एक प्रकार का बाज पक्षी, **रुवीर्य** सूर्य की पत्नी महा का विशेषण, **रुव**, भारी देव सोड, **रुव** (वि०) बहुत तेज प्रकल्पन शाला (बः) 1 लड़ी धाल, प्रकल्प देव 2 लम्ब 3 गन्ध पत्ती, —**रुवेल** (वि०) तरंगमय, **रुवाधि** (स्त्री०) 1 भारी बीमारी 2 (काला कोड) काट का भयानक रूप, —**रुवाहति** (स्त्री०) अत्यन्त गूढ गूढ अर्थात् भू, भुवन और स्वर्, **रुव** (वि०) अत्यन्त धर्म-निष्ठ, कठोरतापूर्वक बल का पालन करने वाला (सम्) 1 महाबल, बहुत बड़ा कठिन इत, महान् धर्म-कृत्य का पालन 2 कोई भी महान् या प्रधान कर्तव्य प्राथंरपि हित्वाकृतिप्रोक्षे व्याजवर्जन्तम् आत्मनिय प्रियाधानमेतन्मर्षीमहाब्रह्मन्—**महावी०** ५१५९, **रुवित्** (पुं०) 1 भक्त, सन्ध्यामी 2 शिव का विशेषण, —**रुवाति**: 1 शिव का विशेषण 2 कान्तिकय का विशेषण, —**रुव** 1 बड़ा शम्-भय० १११५ 2 कनपटी की हृद्दी, **रुवन्** 3 मानव अर्थात् 4 विशिष्ट ऊँची मस्या, —**रुव** एक प्रकार का धनुरा, **रुवम्** (वि०) ऊँची ध्वनि करने वाला अत्यन्त कोलाहलपूर्ण, ऊपम भवाने वाला, **रुवक**: समुद्री केकडा या झींगा मछली **मन** ० ११२७२, —**रुवाल**: बड़ा गृहस्थ, **रुविरम्** (पुं०) एक प्रकार का साप, **रुवित**, (स्त्री०) मोतियों की सीरी, —**रुवक** तरन्वती का विशेषण, —**रुवम्** बाँदी, **रुव** (स्त्री०—ज्ञी) 1 उच्चपदस्थ गूढ 2 बाला, —**रुवकल्प**

बारभसी का विशेषण, - अल्पः युद्ध का विशेषण, - इवासः एक प्रकार का इमा, - खेता 1 सरस्वती का विशेषण 2 दुर्गा का विशेषण 3. सफेद साड़, सफासिः (स्त्री०) मकर सफासि, - सती बड़ी सती साध्वी स्त्री, - सत्त्व असौम्य असित्त्व, - सत्यः यम का विशेषण, - सत्यः कुबेर का विशेषण, - संविधिग्रहः शान्ति और युद्ध के मन्त्री का पद, - सप्तः कुबेर का विशेषण, - सप्त कटहल, - सप्तपत्र एक प्रकार की घोर तपस्या - दे० मनु० ११।२१२, - साविधिग्रहिकः शान्ति और युद्ध का (परराष्ट्र) मन्त्री, - सारः एक प्रकार का अरि का वृक्ष, सारथि अरुण का विशेषण, - साहसम् अरिसाहस, बलाकार, अव्ययिक दिल्ली, - साहसिक डाकू, बटारना, साहसीलुटा, - सित्तुः शरप नाम का एक कपा से वणित जन्तु, - सिद्धिः (स्त्री०) एक प्रकार की जादू की शक्ति, - सुखम् 1 बड़ा आनन्द 2. सम्भोग, - सुकमा रेत, - सुत सैनिक डोल, - सेन 1 कालिकेश का एक विशेषण 2 विशाल सेना का सेनापति (या बड़ी सेना, - स्वधः ऊँट, - स्वलो पृथ्वी, - स्वाम्यम् बड़ा पद, - स्वम् एक प्रकार का डोल हस्त) विष्णु का विशेषण, - हुसिम् (नपु०) पी, - ह्यिषयत् (पु०) एक पहाड़ का नाम ।

महिका [मह् + क्वन् + टाप्, इत्यम्] कोहरा, पुष्प ।
 महित (भू० क० कृ०) [मह् + क्त] सम्मानित, पूजित, बहुमानित, अर्पण - दे० मह्, - तम् शिव का शिष्य ।
 महिषम् (पु०) [महत् + इमनिच् टिलोप] 1. बड़पन का से भी - अथि मलयज महिभाव करप विगमम्यु विषयन्ते - भासि० १।११ 2. यश, गौरव, ताकत, शक्ति कु० २।६, उत्तर० ४।२१ 3 ऊँचा पद, उन्नत पदवी, या ऊँची प्रतिष्ठा 4 सिद्धिपौ में से एक-अपना वरीर फुलाना - दे० मिदि ।

महिर [मह् + इलच्, ल्यप् रन्म्] मूर्ख ।
 महिला [मह् + इलच् + टाप्] 1 स्त्री 2. मदमन या विभाविनी स्त्री विग्रहेण विकलद्वेषा निर्जन्मनीना-यने महिला - भासि० २।६ 3 प्रियम् नाम की लता 4. एक प्रकार का सघटव्य या सुगंधित पौधा - रेणुका । सम० - आहूषया प्रियम् लता ।

महिलासरोवरेण्यम् दक्षिण भारत में स्थित एक नगर का नाम ।

महिष [मह् + टिपच्] 1 भैंसा (यम का वाहन माना जाता है) गाहना महिषा निगानसन्निभश्रुर्वहुम्मा-त्तिम् - म० २।६, एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने माँ गिराया था । सम० - अर्धेन कालिकेश का विशेषण, - असुर महिष नाम का राजन चालित्नी, मध्वी, भवनी, सुवती दुर्गा के विशेषण, स्त्री दुर्गा का विशेषण, अथ यम का विशेषण, - वाल,

- वालकः भैंस रखने वाला, महकः - बाह्यः यम के विशेषण - कृत्वाण कि साक्षात्महियवहनाऽस्ताविति पुन कायम् १० ।

महिषी [महिष + स्त्रीप्] 1 भैंस, मनु० १।५५, वाङ् २।१५१ 2 पटरानी, राजमहिषी - महिषीमथ - रघु० १।४८ २।२५, ३।१९ 3. रात्री 4. पत्नी की मात्रा 5. स्त्रीदासी, सेविका, सराधी 6 अम्बिचारिणी स्त्री 7 अपनी पत्नी की वैधवापूति ने अजित वन पु० माहिषिक । सम० - वाचः भैंसी के रखने वाला, - स्वम्भः भैंस के सिर से अलकृत खवा ।

महिष्यत् (वि०) [महिष + मनुप्, पुषो० टिप्पोप] बहुत सी भैंसे रखने वाला, या जहाँ भैंसे बहुतायत में हों ।

मही [मह् + अच् + स्त्रीप्] 1 पृथ्वी - जैसा कि महीपाल और महीभूत आदि में - मही रम्भा शब्दा - भर्तु० ३।७९ 2 भूमि, मिट्टी 3. भूस्वप्ति, जमीन - जयवद 4 देश, राज्य 5. एक नदी का नाम जो, यशान का साडी में गिरती है 6 (प्या० में) समतल आकृति की आकाररेखा । सम० इन्द्र, ईश्वरः राजा, - न न मही नमहीनपराक्रमम् - रघु० १।५, कप भूचात् (पु०) राजा, प्रभु रघु० १।११, ८।५, १०। २० - 1 मगलघट 2 वृत्त (अम्) हरा अदर, तलम् धरातल, कुपम् मिट्टी का किना, भूत्त - धर 1 1 पहाट रघु० ६।५० कु० ६।८० 2 विष्णु का विशेषण, ध्र 1 पहाट भर्तु० २।१०, शि० १।५२४, रघु० २।६० १।३७ 2 विष्णु का विशेषण, वाचः, प, पति, भुञ्ज (पु०), अथयन् (पु०), - अश्वेन राजा भग० १।२०, रघु० २।० ६।१३, पुषः, पुन, - सुनु 1 मगलघट 2. नरका मुर का विशेषण, सुषी, सुता सीमा का एक विग पण, प्रकप भूचात्, प्ररोहः, रहू (पु०) रहू वृक्ष कि० ५।१०, शि० ०।५८९, प्राचोदरम्, प्राचर समुद्र, - भर्तु० (पु०) राजा, भूत् (पु०) 1 पत्न - कु० १।००, कि० ५।१ 2 राजा, प्रभु, लता के भ्रा, - सुर ब्राह्मण ।

महीयत् (वि०) [प० अ०, मज्ज + टैयसुन्] अपेक्षाकृत बड़ा विद्याल, अपेक्षाकृत अधिक शक्तिवादी भाग या महत्त्वपूर्ण अधिक ताकतवर, मज्जवत् पु० महापना, उदात्तवना प्रह्वान तलु सा महीयस सहने नाम मम्प्रति वया कि० ५।२७, शि० २।१३ ।

महीला, महेला [- महिला, पुषा० माध्] स्त्री, नारी ।
 मा (अव्य) [माः क्विप्] प्रतिपेक्षोद्यक अव्यय, (यकारान्तक विरक्त) श्राय काटू लकार की प्रया क माध् बड़ा हुआ यदापि या कुम् विवादात्मनारेण - भासि० ६।६९, (क) मूढ लकार की क्पिा क गाव

जबकि उसके आगम 'अकार' का लोप ही हो जाता है - गपि रति मा कृषा - भर्तुं २।७७, मा मुमुहूषु लव भवतमन्वजजमा मा ते मनीषसविकारधना मतिर्मुं मा० ३।२२ (ख) लङ् लकार की क्रिया के साथ भी (यहाँ भी आगम 'अकार' का लोप ही जाता है) मा सैनमभिभाषथाः रामः (ग) लृट् लकार या विधि लिङ्ग की क्रिया के साथ भी, 'ऐसा न हो कि' ऐसा नहीं कि' अर्थ को प्रकट करने में लघु एता परिश्रावस्व मा कस्यापि तपस्विनी ह्रस्वे पतिरपति - ष० २, मा कश्चिन्वमापयनधी भवेत् पञ्च० ५, मा नाम वेष्वा. किमप्यनिष्टमूल्यत्र भवेत् का० ३०७, (घ) जब अभिषाष अभिषेत् ऽना शक्यत् (वर्तमानकालिक विशेषण) के रूप में प्रयुक्त - मा जीवन्व पत्रावज्ञातु न्दधयोऽपि जीवति सि० २।४५ या (ङ) समाधानार्थक कर्मवाच्य-पत्यवात् पिशाओ के साथ -मैव प्राप्त्यन्, मा कभी कभी बिना किसी क्रिया में लङ् या लृट् लकार का प्रयोग होता है मा.तावन् 'अरे ऐसा मत कहो' मा मैवम् मा तामर्गक्षण - मृच्छ० ३, 'कहीं कोई पुलिस का नाम न हो' दे० नाम के अन्तगत । कभी कभी 'मा न बाद मन्व लगा दिया जाता है, और उस नाम क्रिया में लङ् या लृट् लकार का प्रयोग होता है तथा आगम 'अकार' का लोप हो जाता है, बिचि-लङ् के साथ प्रयोग अबल्लत देखा जाता है कर्मव्य मा स्म वम पार्थ भय० २।३, मा स्म प्रतीप वम ष० ६।१७, मा स्म सोमतिनी काविज्जनयेत्युच्यो-दयम् ।

मा [मा । क. टाप्] । धन की देवी लक्ष्मी - तमाम्पव गेरेन् भज मा ज्ञानदायकम् मुमा० २ माता ३ माता । मा १० - ष - प्रति विष्णु के विशेषण ।

मा [अदा० पर०, जहाँ० दिवा० आ० - माति, मिमीने, सीपने, मित) । मापना ग्राह्यन मिषान इवाचानि पदानि सि० ७।१३ २ माताल करना, चिह्न उमाना, सीमाकन करना दे० मित० ३ (डोल डोल में) तुलना करना, किसी की मापपथ से मापना में तु० ५।१५ ४ अन्तर होना, अन्तर स्थान हुइना, युन या सङ्घिन होना तनी भमुस्तत्र न कर्तव्येय तपान्ताभ्याममममबा मुद - सि० १।२३, वृद्धि गतेऽ-पागामिन नैव शान्ती ३।३३ १०।५०, याति यानुच-गक्यापि यथागसिधेयव ते काव्य० १० प्रेर० (मापयति - ते) मापवाना, नाप करवाना एतेन माप-यति (सिपित् कर्ममायम् - मृच्छ० ३।१६ इच्छा० (मिषयति - त) मापने की कामना करना । अन् । 1 अनुमान लगाना, पटना (कुछ कारणों के आधार पर) घुमावटिनमनुमाय तर्क०. कु० २।२५, अन्दाख

लगाना, अटकल लगाना - अन्वनीयत् सुवृत्ति धातेन ययुषव सा - रघु० १५।७७, १७।११ २ समाधान करना, पुनर्मिहित करना, दृष - तुलना करना, समानता करना - तेनोपवीयेत नमानोऽप्यम् सि० ३।८, लनी मांसधी कनककलशाविसुपमिनी - भर्तुं २।७०, सिष्, बनाना मुजब करना, अस्तित्व में लाना निर्माण प्रभवेऽम्बोहरविद रूप पुराणो मुनि - विष्णु० १।८, यम्पाया सुरेन्द्राणा माताम्बो निर्मितो गुण - मनु० ७।५ १।१३ २ (क) बनाना, रूप बनाना, नरचना करना स्थायनिर्मिता एते पाशा हि० १ (ख) बसाना, (नगर पुर आदि) नई बस्ती बसाना - निर्ममे निर्ममोऽप्युं मंथरा मधुदाकृति - रघु० १५।२८ ३ उपलब्ध करना, पैदा करना - यत्नाकाञ्चननिर्मितव - तु० ५।४७, निर्माण सम-व्ययाम - नीत० ३ ४ रचना करना, लिखना - स्वर्णिमिनया टोकया समन काव्यम् ५ तैयार करना, निर्माण करना, सीर - १ मापना २ माप कर विज्ञान लगाना, सीमाबन करना, प्र - १. मापना २ सिद्ध करना, स्थापित करना, प्रदर्शित करना, लम् - १ मापना २ समान बनाना बराबर बराबर करना - कान्तार्णामिततपोदेवायुत्रे - काव्य० १, दे० समित ३. समानता करना, तुलना करना ४. तुलना या सहित होना मृचालसूत्रमपि ते न समानि स्तनान्तरे - सुभा० ।

मात्सु (नप०) [१] मास (इय शब्द के पहले पाँच बच्चों के रूप नहीं होत और उनके पश्चात् उनके स्थान में विकल्प से 'मान' आदेश ही जाता है ।)

मात्सु [मन् - स दीर्घश्च] । मास मास - ममामो मधुपकं उत्तर० ४ (इय शब्द की व्युत्पत्ति को उद्घाटनाना मन्० ५।५५ में इस प्रकार की गई है - मा स भक्ष-यिताऽप्युष यस्य मासविहाऽप्यहम्, एतन्मानस्य मासत्वं प्रबदन्ति मनीषिण) २ मछली का मास ३ फल का मुदा, - स १. कीड़ा २ मास बेचनेवाली एक वर्ष मकर जति । सम० - अय - अय - जतिव एकक (वि०) मास धामे वाजा, आयिपधोषी (जैसे कि एक जानवर) - भट्टि० १६।२८, मन्० ५।१५ कर्मकः लम् मास का टुकड़ा जो मूट में नीचे लटकता है - अल्लम मास लाना, - अहारः पाषव भोजन, - उपधीषिन् (पु०) मास बेचने वाला, - अक्षय- १ मछली का मास २ मास के साथ पकाये हुए बाखल, - कारि (नपु०) रबर, कृषिः मास की गिस्ती, अन् - तेष्क (नपु०) चर्बी, वसा, इक्षिन् (पु०) बटाविट्टा बाका, कट्टी भाजी, - निष्पतिः सरीर के बाल, पिच्छकः कम् । मास की टोकी २ मास का बड़ा डेर, - पिच्छत् हट्टी, - वैधी १ पुट्टा

2. मांस का टुकड़ा 3. मांस से चौदह दिन तक के गर्म का विशेषण,—भेषु,—भेषिन् (वि०) मांस काटने वाला,—भेषिः रसत-मांस से बना जीव,—विषयः मांस की बिक्री,—हारः,—स्नेहः चर्बी, बहा,—हस्ता श्राक, चमड़ा।

मांसल (वि०) [मांस + लच्] 1 मांस से भरा हुआ, 2. पुट्टेदार, मोटा हाजा, बलवान्, हुट्टपुष्ट—उत्तर० 1 3. स्फुल्लकाय, मज्जबूत, शक्तिशाली—शास्ता. वत मांसला—भाषि० १।३४ 4 (ध्वजि की भांति) बहुरा—उत्तर० ६।२५ 5 महाकाय, ह्युक्कटा मा० १।१३।

मांसिक [मांस पशुमय ठक्] कसाई, मांस बिक्रेता। **मांस्य** [मा + क्त्वि मा. परिमित मुपठित कन् इय फल अस्] आम का पेड़—भाषि० १।२९,—भी 1. जीबले का पेड़ 2. पीला चन्दन 3 गंगा के किनारे स्थित एक नगर का नाम।

मांसर (वि०) (स्त्री०—री) [मकर + अच्] मगरमच्छ से संबद्ध, मांस मांस से संबद्ध।

मांसरत्न (वि०) (स्त्री०—न्) [मकरन्द + अच्] कुली के रस से प्राप्त या, पुष्परस से संबद्ध, सहृद से भरा हुआ, मधुमिश्रित—मा० ८।१, ९।२२।

मांसति (पु०) 1 इन्द्र का सारथि पातलि 2 चन्द्रमा।

मांसि (की) क (वि०) (स्त्री०—की) [मांसिकाभि मन्व्य कृतम्—अण्] पशु नि० दीर्घ] मधुमन्वियो मे उत्पन्न या प्राण,—कम् 1 मधु भासि० ४।३३ 2 मधु की भांति एक क्षत्रिय पदार्थ। सम० ब्राह्मणम्,—अण् बीम,—कलः एक प्रकार का नारियल,—सक्रेषा कदमुक्त साह।

मांस्य (वि०) (स्त्री०—न्) [मगध + अच्] मगध देश में रहने वाला, या उससे संबद्ध, या मगध के अधिवासी, - च 1 मगध का राजा 2 एक मिथवाति (कहा जाता है कि यह जाति वैश्य पिता और क्षत्रिय माता की संतान, इस जाति का कर्तव्य कर्म व्यावसायिक घाटों का कार्य है)—अनु० १०।११।१७, याज्ञ० १।१५ 3 चारण या बन्धीजन,— भाः (ब० ब०) मगध के अधिवासी, भी 1 मगध देश की राजकुमारी—रघु० १।५७ 2 मगधी भाषा, चार मुख्य प्राणियों में से एक 3. बड़ी पीपल 4 सकुह जीरा 5 परिष्कृत आर 6 एक प्रकार की बनेबी 7 छोटी इलायची।

मांस्य, **मांसिका** [मांस्य + टाप्, मांस्य + ठक् + टाप्] बड़ी पीपल।

मांस्यिक [मांस्य + ठक्] मगध का राजा।

मांस्य [मगानश्रवणस्ता घोषमासी मासी साऽप्य मासे अण्] 1 चान्द्रवर्ष के एक महीने का नाम (यह जनवरी-फरवरी मास में आता है) 2 एक कवि का नाम

विसने शिशुपालवध या माघकाव्य की रचना की (कवि ने शि० २०।८०-८४ में अपने कुल का बर्णन इस प्रकार किया है—श्रीधरदरम्यकृतसर्गमापातिलयम् लक्ष्मीपतेस्वरितकीर्तनशार माघ तस्याऽप्यम् सुकवि-कीर्तिपुराणमाघ काव्य व्यञ्जत शिशुपालवधार्थिमाघान्)—उपमा कालिदासस्य भारतेरर्षीयोरनुम्, दक्षिण पदलालिन्य माघे मन्ति त्रयो गृधा उज्ज्वल,—भी माघ नाम की पूर्णिमा।

माघमा (स्त्री०) माघा केकड़ा।

माघयन् (वि०) (स्त्री०—नी) [मघवत् + अण्] इन्द्र से संबन्ध रखने वाला,—भी पूर्वदिशा। सम० चापम् इन्द्रचक्रम्—उत्तर० ५।११।

माघयन् (वि०) (स्त्री०—नी) [मघवत् + अण्] इन्द्र से शायित या संबद्ध—ककुभ समककुल माघवनीम्—शि० ९।२५, अर्बनीतलमेव साधु मय्ये न मनी माघवनी विलासहेतु अण०।

माघयन् [माघे जातम्—माघ + यत्] कुण्ड लता का फूल।

माघय् (धा० १२० भाषति) कायना कर्ना, इच्छा करना, लालसा करना।

मागलिक (वि०) (स्त्री० की) [मगल + ठक्]

1 शुभ, मगलमूचक, भाग्यवान्—मृदसंख्य मागलिक-मूचकना अर्थन्यं प्रवेननुमूचयमपाम कि० ६।४, महावी० ४।३५, भाषि० २।५७ 2 सौभाग्यशाली।

मागल्य (वि०) [मगल + अण्] शुभ, सौभाग्यमूचक श० ४।५,—स्यम् 1 मागलिकता, समृद्धि, कल्याण, सौभाग्य 2 आशीर्वाद, शुभकायना 3 पर्व, रथीहार, कोई भी शुभ कृत्य। सम० मूचकः शुभ अवसरो पर बजाया जाने वाला ढोल उत्तर० ६।२५।

माघ [मा + अच् + क] सड़क, मार्ग।

माघल [मा + चल् + अच्] 1 चोर, लुटेरा 2 मगर-मच्छ।

माघिका [मा + अच् + क + कन् + टाप्, इत्यम्] मन्थनी।

माघिक्य (वि०) (स्त्री०—क्यी) [मघिच्युष्ठा रक्तम् अण्] मन्थनी की भांति लाल,—क्यम् काक रत्न।

माघिच्युष्क (वि०) (स्त्री०—क्यी) [मघिच्युष्ठा + ठक्] मन्थनी के रंग से रंगी हुई—उत्तर० ४।२०, महावी० १।१८।

माघः [मत् + अण्, तत् अण्] 1 ब्यास का नाम 2 ब्राह्मण 3 घोड़िक, कलवार, सराव खीचने वाला 4 हथों का एक सेवक।

माघी (स्त्री०) कवच, जिरहबन्धर।

माघः (पु०) 1 विशेष जाति का वृक्ष 2 तील, माप।

माघिः (स्त्री०) [माह् + क्तिन्] 1. किलकय (जो

अभी खला न हा) 2 सम्मान करना 3 उदासी, खिन्ना 4 निषेधना 5 क्रोध, आवेश 6 पत्न की किनारी या झानर (पोड) 7 कुहरा दौन
माधव [मयाग्लयम् अण्, अत्यायं णञ्] 1 लडका, बालक, छात्र, छात्रा, बच्चा 2 छोटा मनुष्य, मुन्हा (निरस्कार मूषक) 3 मोलहू (बीस) लड़ियों की मॉनियां की माता ।

माधवक [माधव कन्] 1 लडका, बालक, बच्चा, छात्र (प्राग् निरस्वारसूचक के रूप में प्रयुक्त) 2 छोटा मनुष्य, बीता, मुन्हा - मायामाधवक हरिम् ३ गम० ४ मयं व्यभिच 4 छात्र परमेशान्न पदने धारा विद्यायी 5. सालह (या बीस) लड़ियों की मॉनियां की माता ।

माधवीन (वि०) [माधवमेर मञ्] बालको जैमा, बच्चा जैमा ।

माधव्यम् [माधवाना मसृष्ट यन्] बच्चों या छात्रों की टाग ।

माधिका [मान् + धञ्, वि० शब्दम् + कन् + टाप् ऋचम्] एक विनीय जाट (जाट पल बजल के बराबर) या नाक ।

माधिव्यम् [माधि] कन् + व्यञ् । लाल ।

माधिव्या [माधिव्य + टाप्] छिपकली ।

माधिवधम्, माधिवधम् [माधिवध (मध्व)] अण् निष्ठा नमक ।

माध्वकि (वि०) (स्त्री० की) [मध्वन + टक्] किन्ती प्रान्त प० मानन करने वाला या उससे सम्बन्ध रखने वाला, क प्रान्त का मालक, रांमपाय ।

मातङ्ग [मान् क्लृप्प मुनेत्यम् अण्] 1 हाथी - वि० ११५४ २ नीचनम जाति का पुत्र, बाष्पाड 3 किरान, बीस पटारी या बंधर 4 (ममास के अन्त में) कोई भी नवीनम वस्तु - उदा० बलाहक मातय । सम० - विद्याकर एक कवि का नाम, - नञ् : हाथी जैसा विशाल स्मरपशु - रण० ११११ ।

मातरिपुत्र [अन्तः समास] 'वह मा घर में अपनी माता के सामने ही अपनी भुरकीला जवाना हो' डरपीक, कायर, सेलौलाग, बुद्धिहीन ।

मातरिपुत्र (पु०) [मातरि अन्तरिख इत्यति कथंते पिबकनिन्] इन्ध अलुक् सं०] बाय - पुनश्चमि विदितं मातरिपुत्राश्चक्ये अन्धवति' सधनानि मालनीया र्थोनि वि० १११०, कि० ५१३६ ।

मातलि [मनक्यापय्य पुमान् - मतन् + इञ्] इन्ध के मातंग का नाम । सम० सातविः इन्ध का विशेषण ।

माता [मान् पूजाया तुच् न कोण] माता, मां ।

मातामहः [मातु + शमहत्] नाना, ही (हि० ब०) नाना नादी, - ही नादी ।

मातिः (स्त्री०) [मा + कित्] 1 माय 2 चिन्तन, विचार, प्रायश्च ।

मातुलः [मातुभ्रता मान् + टलच्] 1. मामा - भग० ११२६ मय० २१२३०, ५४८१ 2. बतूरे का पोषा ३ एक प्रकार का तोप । सम० पुत्रक 1 मामा का बेटा 2. बतूरे का फल ।

मातुलकः दे० मातुलिय ।
मातुला, मातुलानी, मातुली [मातुल + टाप्, शीष्, वा, पठे आनुक् च] ? मामी, मामा की पत्नी - मय० २१२३१, यात्र० २१२३२ 2 पटसन ।

मातुलिङ्गः, मातुलुङ्गः [मातुल + गम् + लच्, मृत्, पृषो० सायु] एक प्रकार का मौजू का वृक्ष (मूला) भागः प्रसिद्धमानुलुङ्गस्तय प्रयो विद्यायति वाम् - मा० ६११९, - यम् इय वृक्ष का फल, क्योपरा ।

मातुलेयः (स्त्री० - यी) [मातुल + छ, मातुली + इक् वा] मामा का पुत्र ।

मातु (स्त्री०) [मान् पूजाया तुच् न कोण] 1 मां, माता - मातुबनरदारोय य पर्यायि म पर्यायि, सहस्र तु पितुन् माता पीरवेणानिरिक्ते सुमा० 2 माता (आयर तथा बालक्य सूचक) - मातार्षिण अत्रम्व कश्चिदपण् - अण्० ११५६, ८०, अथि मानदेवजनसमसे देवि सौते उत्तर ८ 3. माय 4 लक्ष्मी का विशेषण 5 दुर्गा का विशेषण 6. अन्तरिख, आकाश- 7 पूर्वा 8 देव माता - मातुभ्यो बलिमपहर मूष० १ (ब० ब०) देव माताओं का विशेषण, जो सिद्ध की परिचरिका कही जाती है परन्तु बहुधा एक्य की परिचर्या में लिप्य रहती है (ये गिनती में बाह ही - बाड़ी माहेवरी बड़ी बाराही वैष्णवी तथा, कीमारी वैव शाम्बा कश्चिकेव्यमातर । कुछ के मत में वह केवल सात ही - बाड़ी माहेवरी वैव कीमारी वैष्णवी तथा, माहेन्दी वैव बाराही शाम्बा मय मातर । कुछ लोग इनकी संख्या १६ तक बताते हैं) । सम० - केलाः माया, - ययः देव माताओं का लङ्, - गन्धिकी विपरीत स्वभाव वाली माता, - गामिन् (पु०) माता के साथ बचन करते वाला, - योषम् मातुकुल, - यलः, - यालक, - यालिन् (पु०), क् माता की लुपा करते वाला, - यालुकः । मातुहता 2 इन्ध का विशेषण, - यालु देवमाताओं का समूह, देव (वि०) जो माता की ही जन्मा देवता मानता है, बाता की देवता की भाति पूजने वाला, - यालयः कातिकेय का विशेषण, यल - (वि०) मातुकुल से लब्ध, (- अः) माया, नाना आवि, - यिन् (हि० ब०) (मातारिपतरी या मातरिपतरी) माता-पिता, - पुत्री (मातापुत्री) मां और बेटा, - यूलक्य देवमाताओं की पूजा, - यूलः, यालयः मातुकुल के लक्षणी - रण० १११२, (ब०

ब०) मातृकुल के रिपेदारो का समूह, व ये हैं—मानु पितृ स्वसृ पुत्रा मातृप्रांतु स्वसृ मुवा मातृप्रांतु-पुत्रावच पित्रेया मातृवावच, मरुत्सम् देवमातृकाओ का समूह,—आतृ(स्त्री०) वावन्तो का विभोग,—मूत्र मूत्रं व्यक्त, भोद्रु,—यस्यः देवमातृकाओ के निमित्त किया गया यज्ञ,—वस्यस्यः कालिकेय का विशेषण—स्वस् (स्त्री०) (मातृत्वम् या मातृस्वम्) माना की वरन मौनी,—स्वसेयः (मातृत्वसेय) माता की वरुन का पुत्र (मौ) मौनी की पुत्री, इमी प्रकार मातृत्व-मौयः—या ।

मातृक (वि०) [मातृ+कम्] 1 माता में आधा हुआ या उत्तराधिकार में प्राप्त - मातृक व धनकर्मिन वचत् - -रघु० ११।१५, १० 2 माता सवनी -क माना, - का 1 माता 2 शारी 3 धार्मी, शार् 4 माल मुक्त 5 देवमातृका 6 अक्षरो में क्लिप्त हुए वृत्त रेखाचित्र जो जादू की शक्ति रखते शालू कहें जाते हैं 7 इस प्रकार प्रयुक्त की गई वर्णमाला (ब० ब०)।

मात्र (वि०) (स्त्री०—वा, श्री) [मा+त्र] 'तनी माता का जितना कि' 'तुना ऊँचा लया या चौड़ा जितना कि' 'वहाँ तक पहुँचना हुआ' 'जदा तक कि' अर्थात् जो प्रकट करने के लिए सजाओ के साथ जाया जाने वाला प्रत्यय, जैसा कि ऊलमाओ मिलि (इस अर्थ में समास के अन्त में 'मात्र' शब्द का प्रयोग जो चिन्तनीय है, दे० नी०), -त्रा 1 एक माप (चारे बर लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई की है, पाठे हीनश्री, स्थान, दूरी या संख्या की है, प्रयोग बहुधा समास के अन्त में उदा० अनुलिमात्रम् इत्यदि के उदाहरण चौड़ाई, किंचिन्मात्र शब्दा कुल दूरी, श्लोशमात्रे एक कोय की दूरी पर देखायात्रयति शब्दा व० की चौड़ाई भी, इतनी चौड़ाई जितनी कि एक रेखा की होती है, -रघु० १।१०, इती प्रयाग क्षणमात्रम् विविधमात्रम् एक क्षण का प्रतारण, क्षणमात्रम् संख्या में मौ, यत्रमात्रम् इतना ऊँचा या उदा जितना कि शायं नालमात्र, यत्रमात्रम् आदि 2, किमी चीज का पुरा माप, वस्तुता की पूर्ण समष्टि, गाँव जीवमात्र या प्राणिमात्र, जीवधारीयो प्राणियों का समस्त समुदाय, मनुष्यमात्रा मर्त्य, प्रत्येक मनुष्य मरणादि है 3, किमी चीज का सामान्य माप, केवल एक बाल का उससे अधिक नहीं, इनका अनुवाद प्रायः 'केवल', 'सिर्फ' या 'भी, ही' आदि शब्दा से किया जाता है, -शक्तिमात्रण हि० १।५८, केवल जाति में, हिट्टिभ-मात्रेण समुद्रः व्याकुलीकुल - २।१८९, केवल टिट्टरे के द्वारा, वाचामात्रेण ज्यसे—प० ०, केवल वाणी 'हाग' इमी प्रकार अर्धमात्रम्, समासमात्रम्—प० १।८३, क्वात्त शब्दों के साथ जुड़ कर 'मात्र' शब्द

का अनुवाद जगदीश 'ही' आदि हैं विदमान रघु० ५।५१, जगदीश कह वेवा गया त्योही 'बीषे जाने पर ही', भवनमान, 'माने में जादू हो', प्रथितमान एव तत्रभवति प० ३ आदि ।

मात्रा [माप : टाप्] 1 माप देया मात्रम् ऊरः 2, मापद, मात्रक, विद्यम 3, नहीं माप 4 माप ३। टकाई, एक कुट - वण ० वण, अणु 7 भाग, अ० -मुष्टमात्राभावनमंमात्रा-रूप० ३।११ 8 अल्पाश अल्प परिमाण, छाट्टी माप दे० मात्र (३) 9 अब, महत्त्व राजेति विद्या मावा प० ० १।८०, 'राजा किम अर्थ का है, था महत्त्व है' 'उमका' अर्थात् में उसे बाई महत्त्व नहीं देना शायद्व इति लम्बी मात्रा मु० ० 1५ वन, मथलि 11 (छन्द मात्रम् में) एक मात्रा का क्षण ह्रस्व स्वर को उच्चारण करने में लगने वाला काः 12 नरुष 13 भौतिक ममात्र, मृदुद्वय 14 नागय इ अक्षर का ऊर्ध्व (अलिखित) भाग, अर्थात् मात्रा 15, बाल की बाली 16 अक्षयच, अल-वार 1 ममः छन्दस्य, आशीमाता का क्षण छन्दस्य, -वक्षस्य वः उर विमता विविधय मात्राशा की मिलने व आयात्र पर होता है उदा० आर्षी,—वक्षसा वदवा सङ्ग मातृत्वय मायवी या मरिचि में प्राणविक्रि या अनुद्यय - म० ० ६।२३,—मन्त्रक एक प्रकार के छंदों का समूह दे० परिभाषा १ स्वप्न, भौतिक मपन भौतिक तन्त्रों के साथ शब्दों का समास, अम० २।२८।

मात्रिका [मात्रा टक : टाप् : मात्रा, या छन्द शास्त्र का हस्तक्षरक उच्चारण में लगने वाला छन्द (० मात्रा) ।

मात्सर (वि०) (स्त्री० मी) , मात्सरिक (वि०) (स्त्री० की) | मात्सर अणु टक वा : शब्द वरन वाला शब्दों विदेशी प्रयोगशब्द ।

मात्सर्यम् | मन्वर 'वचत्' : उर्ध्व अमुया विदेश अरो वस्तुनि मात्सर्यम् यथा० - १।८५, कि० २।५३ ।

मात्सर्यम् | मन्वर । उरु : मनुका मातृहोरो ।

मात्र | मयु : घञ् । 1 किंवा मयन विहासन करना 2 हत्या, विनाश 3 कार्य, सबक ।

मायु (वि०) (स्त्री० री) | मयुः+अणु | 1 मयुग में आया हुआ 2 मयुग में उत्पन्न 3 बहुरा में गने वाला ।

माय | मय+घञ् । 1 नगर, मन्दी 2 हयं, मूवी 3 पयड, अहूका ।

मायक (वि०) (स्त्री०—दिका) | मयु : घिच् । घञ् । 1 नया करने वाला, उत्पन्न करने वाला, सैद्धान्तिक करने वाला 2 प्रजननदायक —अ-अलकुलकुट ।

माहन (वि०) (स्त्री० मी) [मद् + गिच् + झ्यट्] नदी में बृह कर्कने वाला दे० माघक मः १ कामदेव २ अनुरा, मन् १ नवा करना २ आनन्द देना, उल्लास देना ३ लीय ।

माघवीर्यम् [मद् + गिच् + अवीर्य] एक नदीका देव ।
माघुल (वि०) (स्त्री० - ली) । माघुल (वि०) भायुल (वि०) (स्त्री० ली) [अम्बद् + द्वा + क्त (विष्णु, कञ्, वा) मदादेश, भावम्] भारी भाति, मुझसे मिलता जलता—प्रकृतिसारा जल माघुलां विर कि० १।२५, उतर० २, उपबारागे नैव कल्प्य इति तु माघुला रम० ।

माघक [मद् + वृज्] अत्र देवा का राजकुमार ।

माघक्री [मद् + मनुप्, वत्वम् अण् डीप्,] पाण्डु की द्वितीय पत्नी का नाम ।

माघी [मद् + अण् - डीप्] पाण्डु की द्वितीय स्त्री का नाम । सम०-जन्मन् नकुल और सहदेव का विशेषण, पति, पाण्डु का एक विशेषण ।

माघेय [माघी + इक्] जकुल और सहदेव का विशेषण ।

माघव (वि०) (स्त्री० ली) [मद् + अण्, विष्णुपक्षे माया शब्दात् धव व० ल०] १ मन् की पत्नी मीठा २ माघ से बना हुआ ३ शान्तीका ४ मधु इत्य के बजाये से सब्ध रखने वाला, ब. कृष्ण का नाम राधासाधवर्षावैश्विन यन्त्राकृते रहू केत्य-गीत०

१ माघवे मा कुल मानेति मानवो २ कामदेव का मित्र वल्लभ पु० -स्वर पर्य्युक्त एष माघव - कु० ६।२, स माघवेनाभिमतेन सखा (अनुप्रयात) ३। २३ ३ वैशाख मास भास्करस्य मधुमाघवादि च ११।७ ४ इन्द्र का नाम ५ परशुराम का नाम ६ पाटवो का नाम (ब० ब०) वि० १६।५२

७ माघव का पुत्र एक प्रसिद्ध ज्ञानकर्ता, साधव और भावनाय इसके भाई थे, लोगो को भावना है कि माघव पन्द्रहवीं शताब्दी में हुआ । यह बहुत ही प्रसिद्ध विद्वान् था, कई महात्मपूर्ण ग्रन्थों की रचना का श्रेय देने प्राप्त है । ऐसा माना जाता है कि साधव और माघव दोनों ने मिल कर सयुक्त रूप से चरों कैदों पर भाष्य लिखा—श्रुतिस्मृतिसदाचार्यात्मको माघवो बुध, स्मार्त व्याख्याय सर्वार्थं द्विवाच्यं शीत उच्यत । दे० ग्या० वि० । मय०—क्षणी—माघवो दे०, -की वमल कालीन शौर्यम् ।

माघवक [माघव + क्व] एक प्रकार की मधुकी शराब (मधु से बनाई गई) ।

माघविका [माघवी + क्व + टाप्, क्वञ्] माघवी लता । माघविका परिमलजलिते मीठ० १ ।

माघवी [मद् + अण् + डीप्] १ कम्बुधत्त का २ शत्रु से बनाया हुआ एक प्रकार का देव ३ शरणांगी लता १००

जिमके मुसुभि खेत फूल आते हैं पत्राभाविन शोषनन यस्या स्पष्टा सता माघवी म० २।१०
वेध० ७८ ४ तुलसी ५ कुट्टिनी, हूनी । मय० - लता वा मनी लता, बन्धु माघवी लताओ का उचान ।

माघवीष (वि०) [माघव + छ] माघवतबधी ।

माघुकर (वि०) (स्त्री०-री) [मघुकर + अण्] मीने से सबद्ध वा मिलता-जुलता, देसा कि 'माघुकरो वृत्ति' में, - नी १ घर २ आकर भिक्षा मागना, त्रिष प्रकार मधुमक्खी एक फूल से दूसरे फूल पर आकर मधु एकत्र करती है २. पाँच भिन्न २ स्थानों से श्राप भिक्षा ।

माघुकर [मघु + अण्] मलिका लता का फूल ।

माघुरी [माघुर + डीप्] १ मिठास, मधुर वा मधेश्वर स्वाद बढ़ने तक यत्र माघुरी सा—मामि० २।१६१, —कामासक्तस्वर्वाभाधरमाधुरीमधुरयन्त्र बाबा विवाको मय ५।४२, १७।४२ २ लीची हुई शराब ।

माघुर्वन् [मघुर + ध्यञ्] १ मिठास, सुहावनापन—माघुर्वन्-मीठे लीरान्नु इतीतुम्, - मधु १८।१३ २ आकषेक शौर्य, उत्कृष्ट शौर्य, -क्य किमप्यनिबन्धित तनोर्मा-पुर्वमुच्यते ३ (काव्य० में) मिठास, (ममट के अनुसार) काव्य रचनाओं में पाये जाने वाले तीन मुख्य युक्तों में से एक—विश्राब्धिःभावमयो ह्यौषो माघर्वमुच्यते—सा० दे० ६०६, दे० काव्य० ८ ली ।

माघ्य (वि०) [मघ्य + अण्] केटी, मध्यवर्ती ।

माघ्यविक [मघ्यदिन + अण्] शान्तनेमिसहिता की एष शान्ता, मधु सुवस्वकर्मदे की एक शान्ता जिसका अनुसरण माघ्यदिन करते हैं ।

माघ्यव (वि०) (स्त्री०-ली) [मघ्य + अण्] मध्यवर्ती यत्र से सबद्ध, केन्द्रीय, मध्यवर्ती, विलकुल मध्य का ।

माघ्यवक (वि०) (स्त्री०-लिका), माघ्यविक (वि०) (स्त्री०-ली) [मघ्य + वृज्, ठक् वा] मध्यवर्ती, केन्द्रीय ।

माघ्यवन्, माघ्यवन्धु [मघ्यवन् + अण्, व्यञ् वा] १. निष्पत् २. उत्पत्ता, उत्पत्ती—अण्प्रथमायङ्-अनेन साधुर्माध्यम्यमिष्टेऽप्यवत्कलेऽर्थ— कु० १।५२, ३ मध्यस्थीकरण, बीचबचाव करना ।

माघ्यविक्रक (वि०) (स्त्री०-ली) [मघ्याङ् + ठक्] दीपहर से सब्ध रखने वाला ।

माघ्य (वि०) (स्त्री०-ली) [मधु + अण्] मधुर, मीठा, -अः [मघ्य + अण्] मधुमाघवों का अनुयायी, ध्वी एक प्रकार की शराब जो मधु से तैयार की जाती है ।

माघ्यवीक्ष [मधुना मधुकुम्भेण निर्मुत्तम् ईकम्] एक प्रकार की शराब की मधुक बुध के फूलों से

सम्मान की जाती है—चचाय मधु माञ्जीकम् अट्टि०
१४१५४ 2 अग्रो से कीची हुई दागव ताञ्जी
माञ्जीकपिला न भवति अन्त-गीत० १०
(=मधो-टी०) 3 अग्र । सम०-कलम् एक
प्रकार का ताण्डिल ।

मान् : (मना० आ० 'मन्' का इच्छा०-मीमानते)
1) (मना० पर०, चुरा० उच्य०-='मन्' का प्रेर०)

मान् : [मन् + घञ्] आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा, सादर
विचार-मानद्विपालनता-घञ० २।१५९, भञ० ६।७,
इसी प्रकार 'मानयन्' आदि 2 वचं (अच्छे भाव में)
आत्मनिर्भरता, आत्मप्रतिष्ठा-ज्यमिनी मानहीनस्य
तृणस्य च समागति पञ० १।१०६, रघु० १६।८१
3 अहंकार, घमण्य, अकरोप, आत्मविद्वान् 4 सम्मान
की आहत भावना 5 ईर्ष्यायुक्त क्रोध, डाह के कारण
उदीर्य रोप (विशेषतः शिष्यों में), क्रोध, मूच मयि
मानमनिदानम्-गीत० १०, माधवे मा कुच मानिनि
मानयथे-९, शि० १।८४, भाषि० २।५६-मन्
1 मापना 2 माप, मापदण्ड 3 आयाम, सपना
4 मापदण्ड, मापने का डाहा, मानदण्ड 5 प्रमाद
सत्ताधिकार, प्रमाद या प्रवर्षन के मापन,—येऽमी
माधुयैव प्रसादा रसमाधुधर्मयोक्त्यास्तेषां रसधर्मत्वे
किं मानम्-रस०, मानाभावात्, (विचारादास्पद भाषा
में बहुधा प्रयुक्त) 6 मनाता, मिला-जुलना । सम०
-आत्मन् (वि०) दर्पण, अहंकारी, घमडी,—उच्चति.
(स्त्री०) बहुत आदर, भारी सम्मान, उच्चाहः
घमड का नाय, -कलहः,—कलिः ईर्ष्यायुक्त क्रोध से
उत्पन्न संपदा,—कलिः (स्त्री०)-अङ्गुः-हानिः
(स्त्री०) सम्मान की क्षति, दीनता, अपमान, अप्रति-
ष्ठा,—घण्टि-सम्मान या वचं की क्षति—इ (वि०)
1 सम्मान करने वाला 2 घमडी,—अच्छ. मापने का
डाहा, गज—स्थित पृथिव्या इव मानदण्ड-कु० १।११,
-कल (वि०) सम्मानकृपी घन से समृद्ध—महोदजो
मानयना यनाक्षिता कि० १।१९,—वाणिजा ककडी,
-वर्षिष्यन्वन् मानध्वस, दीनता,—अच्छ. दे० 'मानधाति',
—महन् (वि०) गौरव से समृद्ध, अत्यंत दर्बीला
—किं जोषं तुषयति मानमहतामपेक्षर केसरी-मत्त०
२।२९,—योयः माप दोल की ठीक रीति—मन्-
१।३३०, इच्छा एक प्रकार की जलमयी, एक छिद्र-
युक्त जलकलस जो पानी में रखा हुआ धने धने
बरता रहता है, उसी से सम्यक् की माप की जाती
है, सूक्ष्म 1. मापने की शोरी 2 (सोने की) जबीर
जो शरीर में पहनी जाय, कल्पनी ।

मान-सिद्ध (वि०) [मन शिवा + भृञ्] वैभवित से युक्त ।
मानने,—वा [मन् + ध्युट्, शिवां टप् च] 1 सम्मान
करना, आदर करना 2 ह्वा—वि० १६।२ ।

माननीय (वि०) [मान् + अनौपर] सम्मान के योग्य,
आदरणीय, प्रतिष्ठित होने का अधिकारी (भव० के
साथ) मेना मुनीनामिच माननीयाम् कु० १।१८,
रघु० १।११ ।

मानव (वि०) (स्त्री० स्त्री) [मनांगपत्यम् अण्] मनु में
सदृश रहने वाला, या मनु के वच में उत्पन्न मान-
वस्य राजविषयस्य प्रमतिनाद सवितारम्—उत्तर०
३, मनु० १२।१०७ 2 मानवमवधी,—चः 1 मनुस्य,
आदमी, इत्यन्,—मनोबंधो मानवाना त्वंऽय प्रथितोऽ-
भवत्, बहुधासादयलत्साम्प्रतोजानाम् मानवा-महा०,
मनु० २।९, ५।३५ 3 मनुष्यजाति (व० व०)।-अण्
एक विशेष प्रकार का दंड । सम० इन्द्र, वैश्व,
—वसिः मनुष्यों का स्वामी, राजा, प्रभु०—रघु०
१।४३२ धमशास्त्रम् मनुमार्गना, मनुस्मृति, राक्षस.
मनुष्य के रूप में राक्षस या पिशाच तैऽमी मानव-
राक्षसा पराङ्गन स्वाधीय निष्पन्नि ये-मत्त० ०।७४ ।

मानवत् (वि०) [मान + मनुष्य, वत्सम्] घमडी, अहंकारी,
अभिमानी, दर्पण, स्त्री घमडी या टपोद्गल स्त्री
(ईर्ष्या के कारण कूट) ।

मानव्यम् [मानव + यत्] (माशब्दम् भी) लडको का मनुष्य ।

मानस (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [मन एव, मनस इदं वा
अण्] 1 मन से संबंध रहने वाला, मानसिक, आत्मिक
(विष०) सारीरिक 2 मन से उत्पन्न, इच्छा से
उत्पन्न कि मानसी सृष्टि—सं० ४, कु० १।१८,
भग० १०।६ 3 केवल मनसा विचारणीय, कल्पनीय
4. उपलक्षित, ध्वनि 5 'मानस' शरीर पर रहने
वाला—स. विज्जु का एक कृ. —संस् 1. मन, हृदय
—सपदि मदननालो हृदि मम मानसम्—गीत० १०,
अपि च मानसमण्डनविधि—भाषि० १।११३, मानस
विषयविना (भाति) ११६ 2 कैलास पर्वत पर
स्थित एक पुनीत सरोवर—कैलाशखिखरे राम मनसा
निमित्त सर, बहुधा प्राणिव यन्मातदभ्युमानस सर ।
राम० (कहा जाता है कि यह सरोवर ही राजहंसों
की जन्मभूमि है, राजहंस प्रतिवर्ष प्रसक्तकाल के आरंभ
होने के अवसर पर या बरसाती हवाओं के आगमन
पर इस सरोवर के तट पर जा बिराजते हैं—वेच-
श्यामा विशो हृदका मानसोलुकचेतसाम्, कूजित
राजहंसानो नेद मृदुरधिनिमित्तम्—विष्णु० ४।१४, १५,
यस्यास्तीयो कृतवसतयो मानस हनिक्वट् माध्यास्मिनि
व्यपगतमुचस्त्वामपि प्रेष्य शम्—वेच० ७६ दे० वेच०
११, घट० ९ भी) रघु० ६।२६, वेच० ६२, भाषि०
१।३ 3 एक प्रकार का नमक । सम०—आत्म्यः
राजहल, मराल, उच्छ (वि०) मानसरोवर जाने के
लिए उत्तुक् वेच० ११,—मोक्षम्,—भाषिण् (पु०)
राजहल—अण् (पु०) 1. कामधेय 2. राजहल ।

मानसिक (वि०) (स्त्री०-बी) [मनस्+उत्पन्] मन से उत्पन्न, मन सम्बन्धी, आंतरिक,—कः विष्णु का विशेषण ।

मानिका [यन्+भिन्+भ्यत्+टाप्, इत्वम्] 1. एक प्रकार की लीची हुई बरतल 2. एक प्रकार का ढोल ।

मानित (यु० क० कृ०) [मान+इत्त्] सम्मानित, आदर-प्राप्त, प्रतिष्ठित ।

मानित् (वि०) [मान्+णित्] 1 मानने वाला, सम्मानने वाला, अधिमान करने वाला (समास के अन्त में) जैसा कि 'पश्चिमानित्' में 2 सम्मान करने वाला, आदर करने वाला (समास के अन्त में) 3 अधिवादी, पम्पही आत्माधिकारी—पराभवोपपत्त्यश्च एव मानित्वान्—कि० १५४१, परबुद्धिमत्सर्ग मनो हि मानित्वान्—कि० १५४१ 4 आदरणीय, अतिसम्मानित—अहि० १९१२४ 5 अवज्ञापूर्वक, कोचयुक्त, रुष्ट (पुं०) सिंह, श्री 1 आत्माधिकारिणी स्त्री, बुद्ध सकल्प वाली, एकके निश्चयवाली, गर्वयुक्त (अच्छे अर्थों में)—चतुर्वि-गीतानन्दमत्त्वमानिनी कु० ५५५३, रघु० १३३३८ 2 कुपित स्त्री, (ईर्ष्यायुक्त गर्व के कारण) अपने पति से रुष्ट—माधवे मा कुबु मानिनि मानमये—गीत० १, कि० ९१३६ 3 एक प्रकार का सुगन्धयुक्त या महकदार तोषा ।

मान्य (वि०) (स्त्री०-बी) [मनोरयम् अच्, मुच् च] 1 मान्य की, मानकी, इंसानी—मान्यो तनु, मान्यो वाक् रघु० ११६०, १६१२२, मग० ४१२२, ९१११, मनु० ४१२४ 2 कुपालु, दयालु,—कः 1 मनुष्य, मानव, इंसान 2 मिथुन, कन्या और तुला राशियों का विशेषण,—स्त्री स्त्री,—अच् 1 मनुष्यत्व 2 मानव प्रपन्न या कर्म ।

मान्यक (वि०) (स्त्री-बी) [मान्य+कन्] मनुष्य सम्बन्धी, इंसानी, परणवीर्य, मर्य ।

मान्यक्य, मान्यक्यम् [मान्य+अच्, वृन् हा] 1 मानव प्रकृति, मनुष्यत्व, इंसानिक 2 मनुष्य जाति, मानव-सत्ता 3 मानवसमुदाय ।

मान्यकम् [मनोह+कम्] सौन्दर्य, प्रियता, मनोहरता । मान्यिक [मन्+उक्] बहु को बंध-दण्ड से सुपरिचित है, जाहूगर, बाबीगर, ऐन्द्रजातिक ।

मान्यम् [मान्य+अच्] 1. मान्यता, मन्दता, अकर्मण्यता 2. दुर्बलता ।

मान्यार, मान्यारवः [मान्यार+अच्] एक प्रकार का वृक्ष ।

मान्यम् [मन्+अच्] 1 मन्दता, सुस्ती, मन्वराता

2 जहता 3. दुर्बलता, निर्बल स्थिति, अल्पियाद्य

4 विराय, अनासक्ति 5. रोष बीजारी, अस्वस्थता ।

मान्यतु (पुं०) [मां वास्यति—मान्+थे तुच्] युवताश्च का पुत्र एक सुगंधी राका (श्री पिता के पैर से उत्पन्न

हुवा था), श्वेदीति बहु पैर से बाहर निकला कि श्वेदियों ने पूजा 'कम् एव वास्यति', इस पर इन्द्र नीचे उतरा और उसने कहा "मां वास्यति", श्वेदीभिर बहु बालक 'वास्यतु' के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

मान्यत् (वि०) (स्त्री०-बी) [मन्यत्+अच्] काम से सबक रखने वाला या काम से उत्पन्न—अत्यायक विजयि मान्यत्प्राकीरणीत्—मा० ११२६, २५४ ।

मान्य (वि०) [मान् अर्थात् कर्मणि चान्] 1 मान करने के योग्य, आदरणीय—अहमपि तुव मान्या हेतुभिस्तैश्च तैश्च—मा० ११२६ 2. आदर किये जाने के योग्य, सम्माननीय, श्रद्धेय रघु० २५५५, ब्राह्म० ११११ ।

मान्यन्, मा+णित्+एत्, तुच् [मान्यन्] 1 मानना 2 रूप देनादि, बनाना, नः उत्पन्न ।

मान्यः [मा विभजे अपत्य यस्य] कामदेव ।

मान्य (वि०) (स्त्री०-बी) [मम इट्—अस्यत्+अच्, यमादेश] 1. मेरा 2 (संबोधन में) बाबा ।

मान्यक (वि०) (स्त्री०-बिम्बा) [अस्यत्+अच्, ममकादेशः] मेरा मेरे पक्ष से संबंध रखने वाला,—मान्यकाः पाथ-वार्षव किमकुर्वन्त सम्भव—मग० १११ 2 स्वार्थी, लालची, लोभी,—कः 1. कर्तु 2 माना ।

मान्यकील (वि०) [अस्यत्+अच्, ममकादेशः] मेरा—यो मान्यकीलश्च वसतो द्वितीयम् निवचन्—मा० २, भावि० २१३२, ३१६ ।

मान्यः [माया अस्ति वस्य—माया+अच्] 1. जाहूगर, बाबीगर, ऐन्द्रजातिक 2. राजा, भूत भेद ।

माया [मीयते अनया—मा+य+टाप् हा० नेत्वम्]

1 मोक्षा, बालसाधी, कपट, भ्रूता, दौष, दुश्चिन्त, धाव-पंच० ११३५९ 2 जाहूगरी, अधिभार, जाहू-टोना,

इन्द्रजाल—स्वप्नो नु माया नु यतिप्रभो नु—श० ६७३ 3. अवास्तविक या मानवाधी बिम्ब, कल्पनासृष्टि,

मनोलीला, अवास्तविक आभास, छाया—मायां मनो-मुक्त्य परीक्षितोऽसि—रघु० २१६२, प्रायः कलाय के प्रथम पक्ष के रूप में प्रयुक्त होकर 'विध्या' 'आमाश'

'छाया' अर्थों को प्रकट करता है—उवा० मान्यक्यन् विध्या शब्द', मायायव आदि 4 राजनीतिक दक्षिण, धाम, युक्ति, कृतीति की भाव 5. (बैशाख० में)

अवास्तविकता, एक प्रकार की भ्रान्ति जिसके कारण यन्मुख्य इत अवास्तविक विषय को वास्तविक तथा

परमात्मा से भिन्न अस्तित्ववान् समझता है 6 (सांख्य० में) प्रथम या प्रकृति 7 दुष्टता 8. दवा,

कन्या 9 बुद्ध की माता, का नाम । उवा०—मान्यार दोषो वे काम करने वाला, मान्यक (वि०) विध्या,

भ्रान्तिमान्, उच्यते चिन्म (वि०) बालसाधी और कपटपूर्ण जीवन जिताने वाला—पंच० ११२८८,

—कार, कुन्, चीकिन् (पुं०) जाहूगर, बाबीगर

क मयप्रच्छ, -देवी बुद्ध की माता का नाम, 'सुतः बुद्धः' अर् (वि०) कण्टपूर्व, अवात्मक, -बन्धु (वि०) पोसा देने में कुशल, जालसाज, ठग, -प्रयोगः 1 पोसा, जालसाजी या दीर्घपंच का प्रयोग 2 जादू का प्रयोग, मन्त्र (वि०) मिथ्याहारिण, अवात्मक या छाया मन्त्र, योग्य जादू-टोना, -योग जादू करना, -बन्धुम् छूटे या कण्टपूर्व शब्द, -बाधः भ्रान्ति का सिद्धांत इस सिद्धांत के अनुसार सारी सृष्टि मिथ्या समझी जाती है, बुद्धवार, बिम्बु (वि०) कण्ट जाल रखने में कुशल, या जादू की कला, सुत बुद्ध का विशेषण ।

मायावत् (वि०) [माया + मतुर्] 1 कण्टपूर्व, जालसाज 2 भ्रान्तिपूर्क, अवास्तविक, अमोत्यायक 3 इन्द्रजाल की कला में कुशल, जादू की शक्ति लगाने वाला पु० क्व का विशेषण, ती प्रद्युम्न की पत्नी का नाम ।

मायाविन् (वि०) [माया अवस्थर्षे विनि] 1 घोषेबाजी या चाल से काम लेने वाला, कूटप्रकिक का प्रयोग करने वाला, पोखेबाज जालसाज-अवन्ति से मूढधिय परामत्र अवन्ति मायाविन् से न भाविन -कि० १।३० 2 जादू के कार्य में कुशल 3 अवास्तविक, भ्रान्तिजनक, (पु०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर 2 बिल्ली, ननु० मानूकल ।

मायिक (वि०) [माया + ठन्] 1 कण्टमय, जालसाज 2 भ्रान्तिमान्, अवास्तविक, क जादूगर, क् मानूकल ।

मायिन् (वि०) [माया + इनि] दे० मायाविन्, -पु० 1 शस्त्रीगर 2 वृत्त, ठग 3 ब्रह्मा या काम का नामान्तर ।

मायुः [मि + उन्] 1 मूर्ध 2 पित्त, वैतिक रस (इस अर्थ में नपु० भी) ।

मायूर (वि०) (स्त्री०) रौ० [मयूर + अण्] 1 मोर से सबंध रखने वाला, या मोर से उत्पन्न होने वाला 2 मोर के पक्षी से बना हुआ 3 (शाही की भाँति) मोर द्वारा सीखा जाने वाला 4 मोर को प्रिय, रम् मोरों का समूह ।

मायूरकः, मायूरिक [मयूर + वृज्, ठक् वा] मोर पकड़ने वाला ।

मार [म् + वज्] 1 हत्या, बध, फतल अशेषप्राप्ति-नामादीयमारो दश बत्सरान् राजत० ५।६४ 2 बाधा, विघ्न, विरोध 3 कामदेव, -स्वामात्मा कुटिल करोतु कर्त्तव्यमारोऽपि मारोऽयम् पीत० ३ (यहाँ 'मार' का मुख्य अर्थ 'हत्या' है) नाग० १।१ 4 प्रथमोन्माद 5 पयूरा 6 अनिष्ट, (बीड़ों के अनुसार) विनाशक । नम० बन्धु (वि०) 'प्रेमपिञ्जिन'

प्रेम के संकेत करने वाला मारारुद्ध रत्नकेलिस्तकुल-रचारम्भे-गीत० १२. अविभू (पु ?) बुद्ध का विशेषण, अरिः पितु पात्र, अवात्मक (वि०) हत्यागः-कच मारारुधके त्वयि विषनाम कृत्यम् हि० १, -जित् (पु०) 1. पात्र का विशेषण 2 बुद्ध का विशेषण ।

मारकः [म् + पिञ् + वृज्] 1 कोई घातक रोग, महामारी, 2. कामदेव 3 हत्या करने वाला, विनाशकर्ता 4 बाज ।

मारकल (वि०) (स्त्री०-ती) [मरकत + अण्] पत्थे से मरुद्ध, -काच काञ्चनसमर्पादिते मारकती धुनिम् -हि० प्र० ४१ ।

मारणम् [म् + पिञ् + ल्यट्] 1 हत्या, बध, फतल, विनाश -पशुमारणकर्मदायण -सं ६।१ 2 पाप का विनाश करने के लिए किया गया जादूटोना 3 फूकना, राक्ष कर देना 4. एक प्रकार का विष

मारिः (स्त्री०) [म् + पिञ् + इण्] 1 घातकरोण, महामारी 2. हत्या, बर्बादी, विनाश ।

मारिष (वि०) (स्त्री०) शौ० [मरिष + अण्] मिषं का बना हुआ ।

मारिष [मा रिष्यति हित्मिन् -मा + रिप् + क] किसी मुख्य पात्र को सूत्रधार द्वारा नाटक में संबोधित करने के लिए सम्मानयुक्त रीति, आदरणीय, श्रेष्ठ्य -दे० उत्तर० १, मा० १ ।

मारी [मारि + डीण्] 1 रोग, घातक रोग, सङ्गमक रोग 2 घातक या मारक रोगों को अधिक्यन्ती देवता दुर्गा ।

मारीच (पु०) 1 ताड़का और मुन्द राक्षस की सन्तान, मारीच नाम का राक्षस । यह स्वर्णमूष का रूप धारण करके राम का सीता से दूर भ्रमा ले गया जिसमें कि रावण को सीता का अपहरण करने का अवसर मिल गया 2 एक विशाल या राजकीय हाथी 3 एकाग्र का पोषा, -अण् मिषं की शाब्दियों का मयह ।

मारुच्छः (पु०) 1 माप का अच्छा 2. गोबर 3 पच, मां, सखक ।

मारुत् (वि०) (स्त्री०-ली) [मरुत् + अण्] 1. मरुत् सबंधी या मरुत् से उत्पन्न होने वाला 2 वायु से सबंध रखने वाला, शायकी, हवाही, -सः 1 हुआ-रपु० २।१२, ३४, ४।५४, ननु० ४।१२२ 2 वायु का देवता, पवन की अधिक्यन्ती देवता 3. इषास लेना 4 प्राण, शरीर के तीन मूल रसों (बात, पित्त, कफ) में से एक 5 हाथी की मूत्र, -सम्प स्वाति नाम का नक्षत्र । सम०-अश्विनः साप-अश्विनः-सुतः, -सुतः 1 हनुमान् के विशेषण 2 भीम के विशेषण ।

भाषितः [महोत्सवम्—इज्] 1 हुनान्त का विशेषण
रघु० १२।६० 2 भीष का विशेषण ।

भाष्यः, भाष्यः [बुधश्चो अथयम्—अथ, बुधश्च + इच्]
एक प्राचीन ऋषि का नाम । सम०—पुराणम्
(इस ऋषि द्वारा प्रणीत) एक पुराण ।

भाष्यं 1 (स्वा० पर०, पुरा० उ०) श्रावित, मार्ग-
यति-ते) 1 योजना, दूधना 2 तलाश करना, पीछे
पहना 3 प्राप्त करने का प्रयत्न करना, कोशिश करने
रहना—आयोत्कर्षं न मार्गेत परेषा परिनिन्दया, स्वप्न-
नेरेव मार्गेत विप्रकर्षं पृषयन्नात् मुना 4 निषेधन
करना, प्रार्थना करना, याचना करना वर बरेध्वो
मृणेरमार्गेत् अट्टि० १।१२, यात्र० २।६६,
5 विवाह के लिए मायना ।

॥ (पुरा० उ०) मार्गयति ते) 1 जाना, हिलना-
डुलना, 2 सजाना, बलकून करना । परि—, लोअना,
दूधना ।

भाष्यं । भाष्यं । भञ्ज् । 1 रास्ता, सड़क, पथ (आल०
जी) अनिश्चरत्पमार्गमादेशय - श० ५, इसी प्रकार
—विचारमार्गप्रसिद्धेन वेतसा—कु० ५।४२, रघु० २।७२
2 क्रम, रास्ता, भूखंड (जा पार कर लिया गया
है) भाषारिभ परिब्रह्म्य बदन्ति मार्गम्—श०
७।७ 3 पहुँच, परास- कि० १।८।५ 4 किच,
बर्नबहु रघु० ५।४८ १।५।५ 5 प्रहस्य 6 भीष,
पुठनास, गयेषणा 7 नहर कुम्हा, जलमार्ग 8 माथन,
गो० 9 मही मार्ग उचित पथ सुमार्ग, अमार्ग
10 पद्वति रीति, प्रयागी, क्रम, चलन—गानि—रघु०
७।७१, इसी प्रकार कुल—शास्त्रं धर्म० आदि
११ लैकी, वाक्यविन्यास—इति वैदर्भमार्गस्य प्राणा दश
११ स्मृता काव्या० १।११, वाचां विधिप्रमार्गा-
नाम्—१।११ 12 युवा, मलद्वार 13 कस्तूरी 14 'मृग-
शिरम्' नाम का नक्षत्र 15 मार्गशीर्ष का महीना।
मम० सौरभम् सड़क पर बनाया गया उत्सवसूचक
महासमारोह द्वार—रघु० ११।५, शर्मकः पथप्रदशक,
भञ्ज्, भङ्गम् चार कोश की हुरी,—भञ्जम्
रोक, आड,—रत्नकः सड़क का रकबाला, सड़क पर
पहुँच देने वाला,—शोधकः दूसरे के लिए मार्ग
प्रगटन करने वाला, स्व (वि०) यात्रा करने वाला,
बटाही, हर्षम् रात्रपथ पर बना हुआ महल ।

मार्गक [मार्गः । क्तु] मार्गशीर्ष का महीना ।

मार्गमन्, —भा [मार्गः । त्वृट्] 1 याचना करना, प्रार्थना
करना, निवेदन करना 2 योजना, तलाश करना,
दूधना 3 गयेषणा करना, पूछताछ करना, जाचपडताल
करना, - न 1 शिक्षक, अनुभव विनय करने वाला,
साधु 2 बाण दुर्वाता मरुप्रार्थना - काव्य० १०,
अपेदि तथाद्वयनङ्गमार्गशीर्षदस्य पीथ्येति धर्मकञ्जुकम्

नै० १।४६, विक्रम १।७७, रघु० १।१७, ६५
3 'पार्श्व' की सख्या ।

मार्गशिरः मार्गशिरश्च, (पु०) मार्गशीर्षः [मृगशिरा + अथ,
मृगशीर्ष + अच्] (जम्बर और विंशंवर में पड़ने वाला)
हिन्दुओं का नवाँ महीना जिसमें कि पूर्वचरन्त्या मृग-
शिरश्च नक्षत्र में विद्यमान है ।

मार्गशिरि, मार्गशीर्षी [मार्गशिर + शीर्ष, मार्गशीर्ष + शीर्ष]
मार्गशीर्ष के महीने में आने वाली पूर्वमासी का दिन ।

मार्गिकः [मृगान् हृत्ति—मृग + उक्] 1. बायी 2 शिकारी ।

मार्गित (मृ० क० कृ०) [मार्ग + इत्] 1 सोया हुआ,
दूधा हुआ, पूछनास किया हुआ, 2 जिसके पीछे २
फिरा गया हो, अशोच, निषेधित ।

मार्ग्यं (पुरा० उ०) मार्गयति—ते) 1 निर्मल करना,
स्वच्छ करना, पोंछना—तु० मृ० 2 ध्वनि करना ।

मार्ग्यः [मृ० (मार्ग्यं वा) + भञ्ज्] 1 स्वच्छ करना, निर्मल
करना, मोना 2 शोधी 3 विञ्ज् का विशेषण ।

मार्ग्यक (वि०) (स्त्री—शिक्षा) [मृ० + मृत्] स्वच्छ
करने वाला, निर्मल करने वाला, धोने वाला ।

मार्ग्यन् (वि०) (स्त्री—नी) स्वच्छ करने वाला, निर्मल
करने वाला, —मृ० 1 स्वच्छ करना, साफ करना,
निर्मल करना 2 पोंछ देना, रगड़ कर मिटा देना
3 साफ कर देना, पोंछ डालना 4 उबलने में मल मल
कर शरीर स्वच्छ करना 5 हाथ ने या कुत्ता से शरीर
पर जल के छींटे डालना, नः लोड्रबुध, मा
1 स्वच्छ करना, निर्मल करना, साफ करना 2 डोल
की आवाज—माधुरी मधयति मार्ग्या मनाग्नि—मार्ग्यि०
१।१८,—नी बुधारी, लंबी झाड़ या दूध ।

मार्ग्यारः (लुः) बिलास कपाके मार्गार पथ १९
करालेदि शशिन काव्य० १० 2 यममार्गार ।
सम०—कृष्कः मोर, करचम् एक प्रकार का मैथुन वा
रतिवन्ध ।

मार्ग्यारकः 1 बिलास 2 मोर ।

मार्ग्यारी 1 बिल्सी 2 मुक्क बिलास, शोनु 3 कस्तूरी ।

मार्ग्यारीक 1 बिलास 2 युव ।

मार्ग्यितम् (मृ० क० कृ०) 1 स्वच्छ किया हुआ, मग-मल
कर माना हुआ, निर्मल किया हुआ 2 बुहाण हुआ,
झाड़ या कुच से साफ किया हुआ 3 अलकृत किया
हुआ ।

मार्ग्यिता दही में बीवी और मसाले डाल कर बनाया गया
स्वाधित्य पदार्थ, यौक्षर ।

मार्ग्यकः 1 सुवै जय मार्ग्यक कि स सलु सुवै सत्यभि-
रित—काव्य० १०, उत्तर० १।१२ 2 मदार का
पीछा 3 सुभर 4 बारहू की सख्या ('मर्त्यक' की)

मार्ग्यिक (वि०) (स्त्री—की) मिट्टी का बना हुआ,
मिट्टी का,—कः 1 एक प्रकार का बड़ा 2 बड़े का

उत्कल, पाली, —कम् धिरी का लोहा—नृपमण्डे हरि-
पाक्षी मालिककाकलीहनुकाम मान्—भाभि०
२।४१।

मालकम् - धरमधीकता ।

मालकम् - दोषकिया, मूषक बनाने वाला, —कम् नगर, कस्बा ।

मालकिका - मूषक बनाने वाला, दोषकिया ।

मालकम् मूलक (शा० बीर आक०) कधीलापन, कुर्न-
कता - अभितलमयोपि मारवं मजते क्व कया शरी-
रिवु - रम् ० ८।४३, 'मूढ हो जाता है', स्वधारी-
मारवंम् कु० ५।१८ 2 मरनी, कुवा, कोमलता,
उदारता - मण० १६।२ ।

मालीक (वि०) (स्त्री०) क्वी अगुरो से बनाया हुआ,
—कम् धाराज—श्रि० ८।३० ।

मालिक (वि०) —महरी अतर्दीप्त रखने वाला, तत्त्व
हीनमौषिक से पूर्ण परिचित, (धर्मज्ञ दे०) —मालिक
को मरन्दानामन्तरेण मधुव्रतम् भाभि० १।११७,
५।८, ४।४० ।

माली: - दे० 'मालि' ।

मालि: (स्त्री०) स्वच्छ करना, मलमलकर भाजना,
निर्मल करना ।

माल: 1 बगल के पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम में एक
जिले का नाम 2 एक बरंवे बाति का नाम, पहाड़ी
3 विष्णु का नाम, —कम् 1 मैदान 2 ऊँची भूमि,
उड़ी हुई या उन्नत की हुई भूमि (मालमुन्नतभूत-
कम्) क्षेत्रमापण मालम् मेघ० १६ (सैलमापमुन्न-
तस्वल्म - मालि०) 3 घोसा, जालसाजी । सम०
—कम्कम् कान्हे का जोर ।

मालक: 1 नौय का पेड़ 2 गाँव के पास का जंगल
3 नारियल के लोले से बना पात्र, कम् माला ।

मालकि, ली (स्त्री०) (सुगन्धित ध्वेत फूलों से युक्त)
एक प्रकार की धमेकी—तन्मये क्वचिदङ्गु भूङ्गतयण-
नास्वादिता मालती—गण०, जालकमालतीनाम्—मेघ०
१८ 2 मालती का फूल शिरशि बहुलमाला माल-
तीभि समेता—कृतु० २।२४ 3 कली, सामान्य फूल
4 कन्या, तस्वी 5 रात 6 चादनी । सम०—आरक:
सुहाया, बकिष्ठा जायफल का क्लिका,—कम्कम् जाय-
फल, भासा मालती या बमेली के फूलों की माला ।

मालक (वि०) (स्त्री०) क्वी मलय पर्वत से आने
वाला,—यः पदन कीलकडी ।

मालक: 1 एक देश का नाम, मध्यभारत में कर्तमान
मालवा 2 राय का नाम, या स्वस्थान की रीति,
—भा: (ब० व०) मालवा प्रदेश के अधिवासी ।
सह०—अधीष्ठा—इन्द्र,—मृषति: मालवा का राजा ।

मालकक: -1. मालकवासियों का देश 2 मालवा का
निवासी ।

मालती—एक पीपे का नाम ।

माला—1. हार, शब्द, मञ्जरा—वर्णमयतापरिमलाजिपि हि
हरति मूष मालतीनामा - भाष० 2. रेखा, पंक्ति,
सिलसिला, श्रेणी या तता मूषोद्गीनाकिमाभा
—या० १।१, आर्यमाला: - मेघ० १ 3. समुद्र,
सुरमुट, समुध्य 4 लकी, कण्ठहार—जैसा कि 'रत्न-
माला' में 5. अपमाला, जंजीर—जैसा कि 'कलामाला'
में 6 लकीर, लहर, कौष जैसा कि 'तश्निमाला' और
'विद्युन्माला' में 7 विशेषणों का सिलसिला
8 (नाटक में) अपने मनोरंजक की सिद्धि के लिए ताना
बस्तुओं का उपहार । सम० उक्त्वा उपमा का एक
भेद जिसमें एक उपमेय की अनेक उपमानों से तुलना
की जाती है उदा० अनन्तेनैव राज्यधीर्दन्त्येनैव मन-
स्विता, मन्वी साध विधादेन पथिनीव हिमाम्बसा
—काव्य० १०, कर्त्त:—आर: 1 हार बनाने वाला,
फूल-बिन्दता, माली, कृती मालाकारों बहुलमपि
कुत्रापि निधये भाभि० १।५४, पत्र० १।२२० 2
मालियों की एक जाति,—नृपम्क एक प्रकार का सुगन्धित
पास,—दीपकम् दीपक अलंकार का एक भेद, दम्भट
ने इसकी परिभाषा बताई है मालादीपकमाद्य वैच-
कोतरसुमावहम् काव्य० १०, उद० ० देखें उसी स्थान
पर ।

मालिक: 1 फूलों का व्यापारी, माली 2 रगने वाला,
रगरेज ।

मालिका 1 माला 2 पंक्ति, रेखा, मिलसिला 3 मङ्गी,
कण्ठहार 4 बमेली का एक प्रकार 5 अलसी
6 बेंटी 7 महल 8 एक प्रकार का पक्षी 9 मालक
पेय ।

मालिकम् (वि०) 1 माला पहनने वाला 2 (समाज के
अन्त में) मालाजो से सम्मानित, हुं, गे । मुसोमित
मञ्जरो से लपेटा हुआ समुद्रमालिनी पर्वी, बहु-
मालिन्, मरीचिमालिन्, ऊर्मिमालिन् आदि, नृप०
फूलमाली, हार बनाने वाला, ली 1 फूलमालिन्,
हार बनाने वाले की पत्नी 2 चम्पा नगरी का नाम
3 सात वर्ष की कन्या या दुर्गा पूजा के उत्सव पर दुर्गा
का प्रतिनिधित्व करे 4. दुर्गा का नाम 5 स्वर्गना
6 एक छद का नाम दे० परिशिष्ट १ ।

मालिकम् 1 मैलापन, मङ्गी, अपविष्टता 2 मलिनता,
दूषण 3 पापपूर्णाता 4 कालिमा 5 कृत्, दुःख ।

मालु: (स्त्री०) 1 एक प्रकार की कता 2 एक स्त्री ।
सम०—आन: एक प्रकार का साप ।

मालु: 1 बेल का वृक्ष 2 कर्म का मूक ।

मालिया बडी इलायकी ।

माल्य (वि०) 1 हार के उपयुक्त या हार से सज्ज, स्वम्
1 हार मञ्जरा माल्यो ना निर्वचन अथान कु०

७।१९, कि० १।२१ २. पूरु- भय० ११।११, मनु० ४।७२ ३ सुमिरणी या शिरोमास्य । सम० आस्यः फुलो की मही, शीशुकः फूलमाही, मालाकार, -पुष्पः पटसन, -धनिकः फुलो का व्यापारी ।

मास्यम् (वि०) माला मारण किए हुए, हातों से सुनो-मित (प०) १ एक पर्वत या पर्वतपुष्पका का नाम —उत्तर० १।३३, रघु० १३।२६ २ मुकेनु का पुत्र एक राक्षस (मास्यवान् राक्षस का नामा और मयी था, उसकी बहुत सी योद्धाओं में वह सहायता देता था, अपने पूर्वकाल में और तपस्या द्वारा उसने ब्रह्मा की प्रसन्न किया। इसके फलस्वरूप उसके लकाहीय की सृष्टि की गई। कुछ वर्षों वह अपने माइयी समेत वहाँ रहा, परन्तु बाद में उसने लका को छोड़ दिया। कुबेर ने फिर लका पर अपना अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् फिर जब रावण ने कुबेर की निर्वासित कर दिया तो मास्यवान् फिर अपने बन्धु-बांधवों समेत वहाँ आ गया और वरुणों रावण के साथ रहा) ।

मास्य एक प्रकार की वर्षाकर बाति ।

मास्यकी कुट्टनी या मुकेनवाजी की प्रतियोगिता ।

मास्य १ उद्ध (एक बचन पौष के अर्थ में तथा इ० ब० फल या बीज के अर्थ में) तिलेभ्य प्रतियच्छति मास्यन् सिद्धा० २. भोने की एक विशेष लील, मासा माया विधानियो मास पन्थय परिकीर्णित—या-मुञ्जान्भिरदेशिभिर्या ३ मूयं, इदम् । सम० अक्ष, आश कसुया—मास्यम् धी के साथ पकाये हुए उद्ध, मास पोडा, जून (वि०) एक मासा रुम, बर्षक, गुनार ।

मासिक (वि०) (स्त्री०) स्त्री) एक मासे के मूल्य का । मासोपम्, मास्यम् उदरो का अर्थ ।

मास्य (प०) = मास दे० (पहले पांच बच्चों में इस सम्बन्ध का कोई रूप नहीं होगा, हि० वि० के हि० ब० के पश्चात् विकल्प से 'मास के स्थान में 'मास्य' अर्थात् ही जाता है) ।

मास्य, मस्य—महीना (यह चाँद, सौर, सावन, मास्य या बार्हस्पत्य में से कोई भी हो सकता है)—मासे प्रति-पत्तासे या केमलतासि वैशिक—भाट्ट० ८।१५, २ 'बार्ह' की संख्या । सम० अमृतालिक (वि०) प्रतिमास होने वाला, अन्धः अज्ञानता का दिन, —आहार (वि०) मास में केवल एक बार खाने वाला, —उपवासिनी १ पूरा महीना भर उपवास रखनेवाली स्त्री २ कुट्टनी, लम्पट या दुर्घरित्र स्त्री (अय्योक्ति-पूर्वक), कासिक (वि०) मासिक, —मास्य (वि०) एक मास का, जिसको उत्पन्न हुए एक महीना ही पूरा है, अः एक प्रकार का जलकुण्ड, —देव (वि०) जिसे महीने भर में पूजना हो, —प्रमितः

अमावस्या या प्रतिपदा का चंद्रमा, प्रवेशः महीने का 'आरम्भ,—मास्यः वर्ष ।

मास्यकः महीना ।

मास्यरुः उसके हुए बासकों की पीच, मोड़ ।

मास्यकः वर्ष ।

मासिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) १ महीने से तबब रखने वाला २ प्रतिमास होने वाला ३ एक महीने तक रहने वाला ४ एक महीने में पूजाया जाने वाला ५ एक महीने के लिए नियुक्त,—अन्धः प्रत्येक मन्त्रनिधि को किया जाने वाला धाड़ (मनुष्य के मरने के प्रथम वर्ष में)—पितृया मासिकं श्राद्धमन्वाहायं विदुर्वा ।

मासोप (वि०) १ एक मास की आयु का २ मासिक ।

मासुरी शक्ति ।

मास्य (स्त्री०) उप० माहति से) मापना ।

मास्यकुल (वि०) (स्त्री०—स्त्री), मास्यकुलेय (वि०) (स्त्री—स्त्री) १ सत्कुलोपपन्न, उत्तम कुल का, नामी बराने या प्रस्ताव कुल का ।

मास्यवर्षिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री), मास्यवर्षीय (वि०) (स्त्री०—स्त्री) १ शीशुवर्षों के लिए उपयुक्त २ महाबलीचिंत, बड़े श्रावणी के योग्य ।

मास्यवर्षिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) उत्पन्न-भना, उदारराज्य, उत्तम, महानुभाव, वरुणवी ।

मास्यवर्ष्यम् १ उदारराज्यता, महानुभावता २ ऐश्वर्य, प्रथिमा, उल्लूख पर ३ किसी इष्ट देव या दिव्य विभूति के मूय, या एही कृति जिसमें इस प्रकार के देवी देवताओं के मुर्तों का वर्णन दिया गया हो—जैसा कि देवीमाहात्म्य, सनिमाहात्म्य आदि ।

मास्यारविक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) तत्राट्ट के उपयुक्त, सास्त्राध्यसंबंधी, राजकीय या राजोचित ।

मास्यारव्यम् प्रभूता ।

मास्यारव्यी दे० महाराष्ट्री ।

मास्यिः इन्द्र का विशेषण ।

मास्यिक (वि०) (स्त्री—स्त्री) भैस या भैसे से उत्पन्न या प्राप्य, जैसा कि 'मास्यिं दधि' ।

मास्यिकः १ भैस रखने वाला, म्वाला २ जसती या अविचारिणी स्त्री का चार—मास्यीत्युच्यते नारी या च स्वायं अविचारिणी, तां वृष्टां कामयति य स नै मास्यिकः स्मृत—कालिका पुराण ३ जो अपनी पत्नी की बेव्यावृत्ति पर निर्बाह करता है मास्यीत्युच्यते नारीं भोगेनोपाहितं क्षयम्, उपवीचति यस्तस्याः च नै मास्यिकः स्मृत—वि० पु० पर शीघ्र० ।

मास्यिक्यते एक नर का नाम, हूहव राजाओं की कुल-कामल राजधानी—रघु० ६।४३ ।

मास्यिक्यः क्षत्रिय पिता और वैश्य माता से उत्पन्न एक विश्व या वर्षाकर बाति ।

मद्येय (वि०) (स्त्री०—ही) द्रव से सबब रखने वाला
हु० ७१८६, रघु० १२०६६,—ही १ पूषं दिवा
२ माघ ३ इन्द्रपौष का नाम ।

मद्येय (वि०) (स्त्री०—वी) भौतिक, कः १ मंगल इह
२. युवा ।

मद्येयी श्राव ।

मद्येयकरः मित्र की युवा करने वाला ।

मि (स्वा० उभ०) मित्रोक्ति, मित्रुने कौकिल्लाहिय्य ये
विग्रह प्रयोग) १ कंकवा, डालना, बन्देख २ निर्मात
करना (मकान) खड़ा करना ३ सज्जना ४ स्थापित
करना ५ ध्यानपूर्वक देखना, प्रयत्नपूर्वक श्राव करना ।
मिच्छ (सुहा० पर० मिच्छन्ति) १ मिच्छ डालना, बाधा
डालना २ लग करना ।

मित (सु० क० इ०) १ माया हुआ, नया नुका २ माप
कर, मिलाक लगाया हुआ, इदबन्दी की हुई, सोमाबद्ध
किया हुआ ३ मीमित, परिमित, बर्बादित, बाधा,
स्वल्प, अर्था रखने वाला, संक्षिप्त (अर्थ आदि)
—पुनः सत्य मित मूले स भूयोर्द्धौ महीभुवात्—पञ०
१८७, रघु० २१३४ ४. मापने में, माप का (ममास
के अन्त में) असा कि 'ग्रहणयुक्तिरन्विते वर्षे' अर्थात्
१८८९ ५ बाध पड़ताल किया हुआ, परीक्षित (दे०
मा०) । मम० अक्षर (वि०) १ उत्पन्न, नया-
तुला, पोहे में, सामासिक—हु० ५६३ २ छन्दोबद्ध,
पद्यात्मक, अर्थ (वि०) नये-तुने अर्थ वाला अक्षर
(वि०) छोड़ा जाने वाला, (रः) परिमित अक्षर,
—माथिन्—बाध कर्म बोधने बाधा, नयेतुने मद्यो
में अपनी बात कहने वाला महीवाल प्रकृत्या
मिनमाथिन्—मि० २१३३ ।

मितकृन्त (वि०) बीरे-बीरे चलने वाला—कः हाथी ।

मितकृन्त (वि०) १ नया-तुला अथ पकाने वाला, बाधा
पकाने वाला २ मितकृन्त, दरिद्र कृन्त ।

मितिः (स्त्री०) १ नाचना, माप, तौल २ यथावत् ज्ञान
३ प्रमाण, माध्य ।

मित्र १ सूर्य २ आदित्य (इसका वर्चन श्राय वरुण के
साथ मिलना है), ऋम् १ दोस्त—तन्मित्रमापदि
सुते च समकिय यत् भवुं २१६८, मेघ० १७
२ मित्रराष्ट्र, पड़ोसी राजा सु० 'मण्डल' । सम०
—साधार. मित्र के प्रति स्वबह्दार.—उद्धवः १ मूरख
का उचना २ मित्र का कराराण या सम्बन्धि,—कर्मन्
(न्यु०)—कार्यम्,—कर्मन् मित्र का कार्य, मित्रता-
पुनं कार्य या सेवा—रघु० १९१३ १,—अन् (वि०)
विश्रामघाती, दुह, कौशिल् (वि०) मित्र से युवा
करने वाला, मित्र के साथ विश्रामघात करने वाला,
मृता या विश्रामघाती मित्र, अर्थः मित्रता, दोस्ती,
अर्थः मैत्रीभाव, बल्लभ (वि०) मित्रों के

प्रति करान्, मित्राचारयुक्त, हृष्या मित्र ग व०
कराना ।

मित्रम् (वि०) १. मित्रवत् आचरण करने वाला, हिनैयां
२ स्नेहबोध, मिलनसार ।

मिष् (स्वा० उभ०) मेघति—ने) १ सहकारी बनना,
२ एकत्र मिलना, मैथुन करना, जाड़ा बनाना ३ चोट
पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, प्रहार करना, बध करना
४ मजसना, प्रयत्न ज्ञान प्राप्त करना, जानना
५ लपटा ।

मिष्त् (अभ्य०) १ परस्पर, आपस में, एक दूसरे का
मन० २१६७, (प्राय ममास में)—मिषः प्रस्थाने
श० २, मिष ममयात् ग- ५ २ गुण रूप से,
व्यक्तिगत रूप से, क्षुधाया, निवृत्ति रूप से भवुं
प्रवासं प्रतिपद्य भुवर्त्ता वयुं मिष प्राकमनैवधेनम्—हु०
३१२, ५११, रघु० १३११ ।

मिषिकः एव राजा का नाम,— ला. (ब० व०) एक राष्ट्र
का नाम,—सा ममर का नाम, विदेह देश की राजधानी ।
मिषुक्म् १ जोड़ा, दम्पती—मिषुन् परिवन्ति तथा मर-
कार फलित्नी व नन्दिमौ—रघु० ८६१, मेघ० १८,
उत्तर० २६ २ यम, ३ समापन, मगम १ मैथुन,
सभोग, सहवास ५ मिषुन् रागि ६ (व्या० में) उग
मर्ष से युक्त वातु । सम० भाव १ जाड़ी बनाना
जोड़ा बनने की स्थिति २ सभोग, इतिन् (वि०)
सहवास करने वाला ।

मिषुनेकर. चक्रवाक, चक्रवा सु० 'इन्द्रव' ।

मिष्या (अभ्य०) १ मृत्पृष्ठ, पोखे से, गलन तरीके म.
अमृदना के साथ बहुधा विषेयण का बल रखने
हुम् मवी मरानील इति प्रभावाद्यन्प्रमाणेऽपि यथा
न मिष्या रघु० १८४२, यदुवाच न तन्मिष्या
१७४२, मिष्येव अयस चदन्ति मृगयामोदुन्विनेतौ
कुत ग० २१५ २ विपर्यय रूप से, विपरीततया
३ निष्प्रयोजन, अर्थ, निष्फलता के साथ—मिष्या
कारयते चारेषीयथा राजसाधिच मद्रि० ८६६
भग० १८५९, मिष्या बहु (वयुं) मिष्या कहना,
मृत् बलना, मिष्या इह—, मिष्या सिद्ध करना, मिष्या
भू—, मृत् निकलना मृत् होता, मिष्या बहु, गलन
ममजसना, मूल होता या करना ममास के आदि में
प्रयुक्त 'मिष्या' का अनुवाद 'मृत्' अन्वय, अत्रान्त-
विक, मृत्पृष्ठ, उल्लयुक्त, जाड़ी आदि लक्ष्य से किया
जा सकता है । सम०—अध्यवसिति— एक अलग-अलग
विषयों किसी असभव घटना पर आश्रित होने के
कारण किसी वस्तु की चमत्मानता की अधिष्ठाति
हो—किञ्चिन्मिष्यामिष्यदर्श, मिष्याधर्मात्करकान्यम्,
मिष्याध्वसितिर्वेद्या वयातेत् लभ्य बहुन् कुब०,
—अध्वसाः मृता आरां—अधिष्ठातम् मृती युक्ति

—अविशेषः झूठा वा विचारपर आरोप, —अविशेषणम्
झूठा आरोप, मिथ्या दोषारोपण, —अविशेषणः 1. झूठी
अविशेषणाधी 2. झूठा वा अमान्य वाया, —आध्याः
गलत वा अनुचित आचरण, —आहाटः गलत भोजन,
—अध्वरम् झूठा वा योग्यता नवान, —अध्वरः
दत्तावटी हुवा या सेवा, —अर्धम् (मू०) झूठा कार्य,
—अधीः, —अधीः झूठ झूठ का गुस्ता, —अधीः मिथ्या
मूल्य, अधीः ग्रहणम् समयने में मूल होना, गलत
समझना, —अधीः पाकम्, —अधीः अगति, अधीः
गलतफहमी, —अधीः पाकअधीः, अधीः अती, —अधीः
(स्त्री०) पतविरोध, नास्तिकता के सिद्धांतों की
मानना, —अधीः छाया पुष्प, —अधीः (वि०) झूठी
प्रतिज्ञा करने वाला, दगाबाज, —अधीः काव्यनिक
लाभ, —अधीः भ्रम, अधीः अधीः, अधीः अधीः
मिथ्यात्व, झूठ, —अधीः झूठा विवरण, —अधीः (पु०)
झूठा बयान ।

मिथ् (म्भा० आ० दिवा०, चुरा०, उ०) वेदते, वेद्यति-ते,
मेहयति ते) 1 विकला या लिण्य होना 2 पिच-
लना 3 मोटा होना । प्रेम करना, स्नेह करना ।

ii (म्भा० उ०) वेदति-ते) दे० मिथ् ।

मिद्धम् 1 तन्त्रा, निठल्लाण, सुल्लो 2 अक्षता, निद्राक्षता,
मन्त्रता (उत्साह की सी) ।

मिन्द् (म्भा० चुरा० पर०) मिन्दति, मिन्दयति) दे०
मिन्द् ii ।

मिन्द् (म्भा० पर०) मिन्दति) 1 छिन्नकता, तर करना
2 मम्मान करना, पूजा करना ।

मिन्द् (गुरा० उ०) मिलति ते, सामान्यत मिलति,
मिन्दि 1 सम्मिलित होना, मिलना, माय्य होना
—अन्वयतो मिलिन रल० ४ 2. आना वा परस्पर
मिलना, सम्मिलित होना, एकट्ठे होना, एकत्र होना
ये चान्ये सुहृद् सम्बन्धिमये इन्द्राभिलाषाकु-
लास्ते सर्वं मिलन्ति हि० १।२१०, यथा किं न
मिलन्ति अमर १०, मिलितिसीमूक .. गीत०
१, स पाने समितोऽप्यत्र भोजनमिन्दि न य
—मिन्दि 3 मिश्रित होना, मिलना, अर्धक में आना
—मिलति तत्र तोयैर्व्यामद-मिन्दि ७ । मिलना,
मुकाबला करना (मुद्धारि में) सभन होना, लटना,
5 बटिन होना, होना 6 मिलना, साथ आ पड़ना —
प्रेर० मेकयति-ते, एकत्र आना, एकट्ठे होना, सम्मेलन
मुकाना ।

मिलनम् 1 सम्मिलित होना, मिलना, एक स्थान पर
एकत्र होना 2 मुकाबला करना 3 सत्पर्क, मिश्रित
होना, सत्पर्क में आना आकालिकव्यतिनेन वरलभिय
कलपति अलवसनीरम् शील० ४ ।

मिन्दि (मू० क० कृ०) 1 एक स्थान पर आना हुवा,

एकत्र हुवा, मुकाबला किया गया, मिश्रित 2. मिला
हुवा, मुठमें डूँ 3. मिश्रित, 4 एक स्थान पर रखे
हुए, सबकी ग्रहण किया हुआ ।

मिन्दि-यः अर्थमन्वी, श्रीप-—विशालमकरत्वमाविकाले
अवति यन्तु विरायुषी मिन्दि-यः— भाषि० १।८, १५।

मिन्दि-यः एक प्रकार का सौप ।

मिन्द् (म्भा० पर०) वेद्यति) 1. छीर करना, फोसाहक
करना 2 कूट होना ।

मिन्द् (चुरा० उ०) मिथयति-ते 'मिथ' की ना०
धा०) मिलाना, गड़बड़ करना, फोड़ना, भोलना,
सम्बन्ध करना, बढ़ाना- वाच्य न मिथयति यद्यपि मे
धर्माधिः—स० १।३१, न मिथयति सोचने- धाभि०
२।१४० ।

मिथ् (वि०) 1. मिला हुआ, भोला हुआ, ग-उपदेश कि०
हुवा, मिलाया हुआ गंध पर्व मिथ्य न तन् विर्वन
व्यवस्थितम्—काव्या० १।११, २१, ३२, रघु० १९।
३२ 2 साथ लगा हुआ, संयुक्त 3 बहुविध, माना
प्रकार का । उल्लास हुआ, अत्यन्त 5. (समान
के अन्त में) मिश्रणसहित, अधिकारित युक्त, अः
1 आदरणीय या योग्य व्यक्ति, यह अर्थ प्रायः बड़े न
पुरुषों और विद्वानों के नामों से पूर्व लगाया जाता ।
—आयमिथ्या प्रमाणम्— भाषि० १, आयमिथ्य,
मदनमिथ्य भाषि 2 एक प्रकार का हाथी, अन्व
1 मिश्रण 2 एक प्रकार की मूली, सज्जन । सम०
—अः अन्वर—अर्थ (वि०) मिश्रित रस का
(—अन्व) एक प्रकार की काली अन्वर की लकड़ी,
—अन्वः अन्वर ।

मिथ्यक (वि०) 1 मिश्रित, गड़बड़ किया हुआ 2 पुष्टकर,
—अः सयोजक 3 व्यापारिक वस्तुओं में मिलावट
करने वाला, —अन्व खारी मिट्टी से पैदा किया गया
नमक ।

मिथ्यम् मिलाना, भोलना, सम्बन्ध करना ।

मिन्दि (मू० क० कृ०) 1. मिला हुआ, चुला हुआ,
सम्बन्ध 2 बढ़ाना हुआ 3 आदरणीय ।

मिन्द् (गुरा० पर०) मिथयति) 1 मिला मिलाना, सपकना
2 देखना, विचक्षतापूर्वक देखना—जातवेदो मुक्ता-
न्वाधो विद्यतामिन्दि न-—कु० २।४६ 3 प्रति-
द्विष्टा करना, होइ लेना, प्रतिस्पर्धा करना, अन्-
1. आर्थ सोचना—उन्निवन्दिमिथयति—अन्व० ५।९,
2 (शौचों की तरह) भोलना—अन्व० ५।२ 3 सुलना,
सिलना, फुलित होना 4 उदय होना 5 सपकना,
सपकाना, मि-—, आर्थ सुचना—अन्व० ५।९ ।
ii (म्भा० पर०) वेद्यति) आइ करना, तर करना,
छिन्नकना ।

मिथ्ः प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्विष्टा, —अन्व बढ़ाना उद्योग, भोला,

रांघेय, बालसाजी, मुठा बामास—बालमेनमेकेन विषेणानीय—दस०, (उत्तेजा प्रकट करने के लिए बहुरा 'छल' की भांति प्रयुक्त होता है)।—य रीष-कूपीषविधाज्जनाकृता कृतायष कि वृषणसुन्यविन्धः—नी० ११२१, गते विनिषेविता भुज्जी पिङ्गुनायां रसनामिषेण पात्रा—भाषि० ११११११।

विष्ट (वि०) 1. मयूर 2 स्थाविष्ट, मजेंदार—कि विष्ट-मभ सरसूकराणाम्, तुं श्वाई कास्ट पलं विष्टोर स्वाइन' (Why cas' pearls before the swine ?) अर्थात् बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद 3 तर किया हुआ, मीला किया हुआ,—अष्ट मिष्टान्न, पिठाई।

विह (म्वा० पर० मेहति, मीड) 1 मुत्रोत्सर्ग करना 2 मीला करना, तर करना, छिद्रकना 3 वीर्यपात करना।

विहित्वा पाला, हिन।
विहितः 1 सूयं—मयि हावामिहिरोरुपि तिर्योऽमृतु—भाषि० २३४, वाते मय्यचिराभिदाषामिहित्वावालाते सुष्क-ताम्—११२६, नी० २३६, २३५४ 2 बालक 3 चन्द्रमा 4 हवा, वायु 5 दूध आदमी।
विहित्वा, शिव का विशेषण।
वी 1 (कृपा० उभ० मोनाति मीनीते, श्रेष्य साहित्य में विरल प्रयोग) 1 मार डालना, निनाश करना, चोट पहुचाना, क्षति पहुचाना 2 घटना, कम करना 3 बदलना, परिवर्तित करना 4 अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना ॥ (म्वा० पर० चुरा० उभ० मबलि, माययति—ते) 1 जाना, हिलना-गुलना 2 जानना, समझना (गतिमरयोर्थे) ॥ (चुरा० आ० मीषते) मरना, नष्ट होना।

वीड (मू० क० ड०) 1. मुत्रोत्सृष्टि, पेशाव किया गया 2 (मूत्र की मात्रि) बहाया गया।
वीड्यधत्, वीड्यस् (पु०) शिव का विशेषण।
वीडः 1 मछली—सुतमीन इव हृद—रघु० १७३, मीने नु हृत् कतमा गतिमम्युपेनु—भाषि० ११७३ 2 बाखुबी अर्थात् मीन राशि 3 विष्णु का पहला अवतार दे० सत्पावनार। सन० अष्टम मछली का अर्थ, मछली के अर्थों का समूह,—आघातिन्, घातिन् (पु०) 1. मछुवा 2 सारन, आलस्य समुद्र,—केलन कामदेव,—गन्धा सववन्ती का विशेषण, तन्धिषा जोहृद, पन्थल,—१ मू०—रङ्ग रामचरिया, बहरी (एक विकारी पत्नी)।

वीडः मरमन्थ नाम का समुद्री-दानव।
वीड् (म्वा० पर० मीमति) 1 जाना, हिलना-गुलना 2 शब्द करना।
वीड्यासक 1 जो अनुसंधान करता है, पूछताछ करता है,

अनुसंधानकर्ता, परीक्षक 2 मीमासादर्शनशास्त्र का अनुयायी।

वीड्यासनम् अनुसंधान, परीक्षण, पूछताछ।

वीड्यासा गहन विचार, पूछताछ, परीक्षण, अनुसंधान,— रस-यज्ञापरनामी करोति कुतुकेन काव्यमीमासात्— रस०, इसी प्रकार दत्तक अलकार आदि 2 भारत के छ मुख्य दर्शनशास्त्रों में से एक। (मूल रूप से यह दो भागों में विभक्त है,—जैमिनि द्वारा प्रवर्तित पूर्व-मीमासा, और बादरायण के नाम से विख्यात उत्तर-मीमासा वा बह्वमीमासा। परन्तु इन दोनों दर्शनों में समानता की कोई बात नहीं है। पूर्वमीमासा तो मुख्यतः वेद के कर्मकाण्डपरक मन्त्रों की सही व्याख्या तथा वेद के मूलशब्दों के सदिग्ध अर्थों का निर्णय करता है। उत्तर मीमासा मुख्यतः ब्रह्म अर्थात् परमात्मा की स्थिति के विषय में विचार करता है। अतः पूर्वमीमासा को केवल 'मीमासा' के नाम से तथा उत्तरमीमासा को 'वेदान्त' के नाम से पुकारते हैं। उत्तरमीमासा में जैमिनी के दर्शनशास्त्र की उपद्रव्यता की कोई बात नहीं है, इसी लिए उसको अब एक पृथक् दर्शन माना जाता है), मीमासाकृतसम्प्रामाण सहसा हस्ती मनि जैमिनिम्—पञ्च० २३३।

वीर 1 समुद्र 2 सीमा, हृद।

वीर्य (म्वा० पर० + मीलति, मीलति) 1 अर्थात् मूदना, पलको को बन्द करना, ओष धपकाना, धपकी—पने विन्मति मीलति धपयति शिप्र तदाकोकनात् गीत० १० 2 मूदना, (ओष वा फूलों का) मूदना वा बन्द होना नयनयमममीलन्— शि० ११२, तस्मा मिमी-लनुवने—भट्टि० १५५४ 3 मूदना, अन्तर्धान होना, नष्ट होना 4. मिश्रना, एकत्र होना—प्रेर० (मीलयति ते) बन्द करवाना, मूदवाना, (ओष वा फूल आदि का) बन्द करना शेषान्मासान्नायष चतुरो लोचने मीलयिन्वा—मेष० ११०, भा—, प्रेर० बन्द करना, नेत्रे धामीलयन्—काण्य० २१११, उष्—1 आसं मीलना—उदमीलन्श्रेष्य लोचने भट्टि० १५१०२, १६८ 2 जवाया जाना, उद्बुद्ध किया जाना शि० १०७० 3 फूलाना, फूल मारना कि० ४३३, मा० १३८ 4 प्रसूत किया जाना, फैलाया जाना, मुच्छे बनना, भूषण हो जाना उन्मीलन्मधुश्रेष्य गीत० १, उत्तर० ११० 5 दिखाई देना, अक्षुर फूटना अ वायुज्वलनो अल क्षतिरिति नैलोक्षयन्मीलीत—प्रभाष० ११०, मासि ०७० (प्रेर०) सुजना तदेत-दुम्नीलय धसुरायत विक्रम० ११५, मुच्छ० १,३३ नि , 1 अर्थे मूदना रघु० १२६५ मनु० १५२ 2 मूयु के कारण ओषे मूदना, मरना निर्दिमील नरानमत्रिया हृतपदा तमसेव कीमूवी रघु० १६८

4 (आँसू या फूल आदि का) मूदना या बन्द होना - निमीलितानयिष एकजानाम् रघु० ७।६४ 5 ओझल होना, नष्ट होना, अस्त होना (आँसू) नरेणो जीवकाकोऽयं निमीलति-काव्या० २।२४५, घीनिमीलितनक्षत्रा हरि० (श्रेर०) बंद करना, मूदना - उन्मीलितऽपि वृष्टिनिमीलितेबावकारेण मूच्छ० १।३३, न्यमिमीलवक्रनयन मलिनो-सि० १। ११, कीलापथ न्यमीलयत्-काव्या० २।२६१, कु० २।३६ ५।५७, रघु० ११।२८, लम्-।बव होना, मूदना (श्रेर०) 1 बन्द करना या मूदना, उपात्त मम्मिलितलोचनो नृप-रघु० ३।२६, १३।० 2 मग्निन कराना, अंधेरा करना, मूचला करना विकार-वृत्तस्य भ्रमयति च समीलयति च उत्तर० १।३६। मलिनम् 1 आँसू का मूदना, झपकना, झपकी लेना 2 आँसू का मूदना 3 फूल का बन्द होना।

मीलित (म० क० कृ०) 1 बन्द, मूदा हुआ 2 झपकी हुई 3 अथल्ला, बिना किला 4 नष्ट हुआ, ओझल-लम् (अल० में) एक अलकार जिसके बीच का अन्तर या अंद उसकी प्राकृतिक या कृत्रिम समानता के कारण पूर्णरूप से अस्पष्ट रहता है, मम्मट इसकी परिभाषा करता है- सनेन लक्षणा वस्तु वस्तुना परि-पूक्ष्णने, निवेदानानुना बाधि नन्मीलितमिति स्तुत्यम्-काव्य० १०।

मीव (म्रा० पर० मीवति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 मोटा होना।

मीवर मैना का नायक, मैनापक्षी।
मीषा [मी + वञ्] 1 पट्टकम्, अक्षरीट, कंचुका 2 बाण।
मू [मूच् + डृ] 1 शिष्ट का विशेषण 2 बन्धन, कर 3 मोक्ष 4. चिता।

मूकन्धक व्याज।
मूकः [मूच् + कृ, पृषा०] मूकित, छूटकारा, विशेषत मोक्ष।
मूकटम् [मूक् + उटन्, पृषा०] 1 ताज, किरोट, राज-
मूकट मूकटारलमरीचिभिरस्युक्षत्- रघु० १।१३
2. गिगा 3 शिखर, नोक या सिर।

मूकुटी [मूकुट + कृष्] अमृतिमां चटकाना।

मूकुम्ब [मूकुम् दाति दा + कृ पृषा० मून्०] 1 विष्णु या कृष्ण का नाम 2. प.रा 3 मूक्यनाम् पत्थर या रत्न 4 कुबेर की नौ निचियों में से एक 5 एक प्रकार का बेल।

मूकुम्भः [मूक् + उरच्, उत्थम्] मूह देहने का बीजा-नृपि-नामपि निजरूपप्रतिपत्ति परत एव सप्रबोध, स्वयंहिय-दर्शनमरुषोर्मुकुम्भरत्ने जायते यस्मात्-वास०, सि० १।७३, न० २२।४३ 2 कली, दे० 'मुकुल' 3 कुम्हार के बाक का डंडा 4 मोकसिरी का पेड़।

मुकुम्भः, -कम् [मूच् + उलच्] 1 कली --आधिर्भूत प्रथम-

मुकुला कन्दकीरपानुकम्भम्-येष० २१, रघु० १।३१, १५।१९ 2 कली बेंसी कोई वस्तु-बाहकवधम्मुकु-काम् (तनयान्)-स० ७।१७ 3 डरीर 4. बाला, जीव (मुकुलीकृ, -कली की भाँति मूदना-कु० ५।६३)।

मुकुलित (वि०) [मुकुल + इत्च्] 1 कलियों से युक्त, कलीवार, फूल 2 अममूदा, भाषाबद - परन्मुकुलित नयनसरोजम्-गीत० २, कु० २।७६।

मुकुम्भः, मुकुम्भकः [मूक् + स्था + क, मुकुम्भ + कन्] एक प्रकार का लोबिया, मोटा।

मुक्तः (मू० क० कृ०) [मूच् + क्त] 1 बीजा किया हुआ, शिथिलित, मय या बीजा किया हुआ 2 स्वतंत्र छोड़ा हुआ, भाषाबद किया हुआ, कियावद दिया हुआ 3 परित्यक्त, छोड़ा हुआ त्यागा हुआ, एक मोर फेंका हुआ, उतारा दिया हुआ 4 फेंका हुआ, बाला हुआ, कार्यमुक्त किया हुआ, ढकेला हुआ 5 गिरा हुआ, अक्षयित 6 म्लान, अवसन 7. निकाला हुआ, उत्सृष्ट 8. मोक्ष प्राप्त किया हुआ (दे० मूच्), -कतः जो सांसारिक जीवन के बन्धनों से मुक्ति या मुक्ति है, जिसने सांसारिक आसक्तियों को त्याग कर पृथक् मोक्ष प्राप्त कर लिया है, अपमुक्त सत, -मुक्ताविषेण गीतेन मुयतीना च लीलयता, मनो न भिच्छते वस्य स वै मुक्तो ज्यवा पशु -मुना०। स०-।-अक्षरः दिग्बर तन्मदाय का जन सायु-।-अक्षरम् (वि०) जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है (पृ०) 1. सांसारिक बासनाओ और पापों से मुक्त आत्मा 2 वह व्यक्ति जिसकी आत्मा अपमुक्त हो गई है, -आत्मन (वि०) अपने आसन से उठा हुआ, कण्ठः बीड, कन्धुकः बहु लीप जिसने अपनी कंचुकी उतार दी है, -कण्ठ (वि०) दुहाई मनाने वाला (अध्य० छम्) फूट-फूट कर, ऊँचे स्वर से, बोर से-रघु० १४।६८, -कर, हुल्ल वि०) उदार, बूले हाथ वाला, बानी, चक्रवृत् (पृ०) सिंह, बलन दे० मुक्तांबर।

मुक्ताकम् [मुक्ता + कन्] 1 बस्य आवासात्थ 2 तरल मद्य 3 एक पथकृत हलोक जिसका अर्थ स्वयं अपने में पूर्ण हो दे० काव्या० १।१३ -मुक्ताक स्लोक एवकथमत्कास्तम सताम्।

मुक्ता [मुक्ता + टाप्] 1 मोती-हारोज हरिपात्रीकां लठति स्तनमण्डके, मुक्तानामप्यवस्थेय के बंध स्वर-किङ्करा अमर १०० (यहा 'मुक्तानां' का अर्थ 'वोपमुक्त सत' भी है) मोती अनेक कौनों से उपलब्ध बतलाये जाते हैं परन्तु विशेष कर समुद्री लीपी से प्राप्त होते हैं, -कीरत जीमूतवराहोत्सवस्यारि शुक्रवृ-मुक्तेभूजावि, मुक्ताफलानि प्रमितानि लोके तेषां तु शुक्रवृ-मुक्तेभू मूरि-मलिन०) 2. बेव्या,

पथिका । सम०—अवारः, आवारः मोती का बीजा,
—आवधिक,—ती (स्त्री०)—कल्पः मोतियों का हार
—बुकः मोतियों का हार, मोतियों की लड़ी—मेघ०
४६, रघु० १६।१८, बाल्मू० मोतियों की लड़ी या
करपनी,—दालम् (पपु०) मोतियों की लड़ी, बुब्बः
एक प्रकार की बसेली, प्रसूः (स्त्री०) मोती की
दुक्ति, प्रासम्बः मोतियों की लड़ी, —कलम् 1 मोती
—कु० १।६, रघु० ६।२८ १६।६२ 2 एक प्रकार
का फूल 3 सीताफल या कुन्हुदा 4. कपूर, मणिः
मोती, मातृ (स्त्री०) मोती का पोषा, रस्ता,
—अव हारः मोतियों की माला, दुक्तिः स्कोटः
बहु भाषा या सीपी जिसमें से मोती निकलते हैं ।

मुक्तिः (स्त्री०) [मुच्+क्तिन्] 1 छूटकारा, निस्तार,
उन्मोचन 2 स्वातन्त्र्य, उद्धार 3 मोक्ष, आवागमन के
बन्ध से आराम का मोचन 4 छोड़ना, त्याग, परित्याग,
टाकना—सर्वत्रमुक्तिं ज्ञेयं यत् ० २।६२ 5 फेंकना,
गिरा देना, छोड़ देना, मुक्त करना 6. आजाद करना,
खोलना 7 ऋण मुक्त होना, ऋण परितोष करना ।
सम० अक्षय्य शाराभतो का विशेषण, मार्गः मोक्ष
का रास्ता, मुक्त-लोचन ।

मुक्त्वा (अभ्य०) [मुच्+क्त्वा] 1 छोड़कर, परित्याग
करके 2 सिबाय, छोड़ कर, बिना ।

मुक्त्वा [लृप्+भक्, क्तिन्] 1 मुह
(आल० से भी) हाहाकारजन्य मुग्धमस्तीम् ऋक्
१०।१०।१२ सभूमङ्ग मुग्धिव—मेघ० २४, त्व
सम मुग्ध भव -विक्रम० १, 'मेरे मुखपात्र या प्रति-
निधिवंका बनिवे 2 बेहूरा, मुग्धमण्डल परिवृत्ताध-
मूखी मयाध वृष्टा—विक्रम० १।१०, नियमसाम्मुखी
वृत्तैरेणि श० ७।२१, इसी प्रकार चन्द्रमुखी,
मुखचन्द्र आदि 3 (किसी आंगर की) घुबन, घुबनी
या मोहरो 4 अग्रनाथ, हरावल, पुरोनाथ 5 किनारा,
नोक, (बाध का) फल, प्रमुख पुरातिमप्राप्तमुख
जिसीमुख—कु० १।१४, रघु० ३।१७, ५० 6 (किसी
उपकरण का) की चार या तीन कोण 7 मुचुक,
स्तनाध—कु० १।४०, रघु० ३।८ 8 पक्षी की बाँध
9 दिशा, तरफ जैसा कि 'दिग्मुख, अन्तर्मुख' में
10 विवर, द्वार, मुह—नीबारा मुकमनकोटोरमुख-
अपचास्तक्यामथ ज० १।१४, नदीमुखनेव समुद्र-
माविकम् रघु० ३।२८, कु० १।८ 11 प्रवेश द्वार,
दरवाजा, गमन मार्ग 12 आरम्भ, शुक, सबीजनोद्भिज्ज-
कौमुदीमुखम् रघु० ३।१, विनमुखातिरविहिमनिग्रह-
विलम्बन् मलय नममप्यजत्—१।२५, ५।७६, ४८०
२ 13 प्रस्तावना, 14 मुख, प्रधान, प्रमुख (इस अर्थ
में प्रयोग लगत के अन्त में) बन्धोन्मुख्यं सल
मवमुखाकुर्वते कर्मपादान् मणि० ४।२१, इसी

प्रकार 'इन्द्रमुखा देवा' आदि 15 सतह, ऊपरी पार्श्व
16 सायन 17 श्रोत्र, जन्मस्थान, उत्पत्ति 18 उच्चा-
रण जैसा कि 'मुखमुख' में 19 वेद, धृति
20 (काव्य में) नाटक में अभिनयविधि कर्म का
मूलज्ञान, एक सधि । सम० अग्नि 1 दावानल
2 आय के मुख वाला बेटाल 3 अधिमन्त्रित या
यज्ञीय अग्नि 4 चिता में अग्धाधान के अवसर पर
सब के मुख पर रखी जाने वाली आग, अग्निलः,
उच्छ्वासः श्वास, अक्षर केकडा, आकारः बेहूरा,
मुखछवि, दर्शन,—आसःअचराभूत,—आज्ञावः, आश-
बुक, मुह की लार, इन्दुः चन्द्रमा जैसा मुह अर्थात्
गोल सुन्दर मुख, उल्का दावानल, —कमलम् कमल
जैसा मुख, सुट दात,—यचक.प्यान—चपल (वि०)
बातूनी, बापाल,—अपेठिका मुह पर लगाई जाने वाली
चपल, शौरिः (स्त्री०) जिह्वा,—अःहाङ्गण, आहम्
मुह की जड़, कथः, कृषणः व्याज, दुष्णिका मुहासा,
निरीक्षकः मुस्त, आलसो, मुह की ओर ताकने वाला,
—निवासिनी सरस्वती का विशेषण,—वटः पूषट—कुर्वन्
काम क्षयमुखप्रतीतिमारावन्त्य मेघ० ६२, निम्बः
(मोचन का) घास, पूरुषम् 1 मुह को भरना
2 एक कुल्ला पानी, मुहभर, प्रसातः प्रसन्नवदन,
मुख की प्रसन्नमुद्रा, प्रिय-सतरा, बच, भूमिका,
प्रस्तावना, कल्पन्म् 1 भूमिका 2 इच्छन, आदरण,
—मुखम् पान लगाना—दे० नाबुल, श्रेवः बेहरे का
विकृत हो जाना, मधु (वि) मिष्टमाही, मधुरावर,
सार्बन्म् मुह घोंना, कश्चम् लगाम की मुल्लरी
या बल्ला, राध, बेहरे का रण रघु० १।२८, १७।
३१, साङ्गुलः नूबर, लेप 1 (डोलक के) उपरी
भाग पर लेप करना 2 कठ प्रकृति वाले पुरुष की
एक बीमारी, कस्तम अजार का पेट, आहम्
1 मुह से बजाया जाने वाला बाजा, फुक मार कर
बजाया जाने वाला बाजा 2 मुह से 'बम् बम्' शब्द
करना, बासः, बासन श्वास को सुगन्धित बनाने
वाला एक गण्डम्, विष्किष्का बकरी, —अवाहानम्
मुह काटना, जमाई लेना, शक (वि०) गाली देने
वाला, अश्लीलभाषी, बदबवान, —सुद्धिः (स्त्री०)
मुह को घोंना या निर्मूल करना, श्लेघः राहु का
विशेषण,—शोषण (वि०) 1 मुह को स्वच्छ करने वाला
2 तीक्ष्ण, तीसा, (मः) चरणराहट, तीसापन, (सम्)
मुह की साफ करना, धी (स्त्री) 'मुख का तीक्ष्ण'
प्रिय मुखमुद्रा, कुक्कुम् उच्चारण की मुविधा, अज्या-
त्यक मुख, कुक्कुम् हीनों की तरावट ।

मुखम्बकः [मुख+पृ+भक्, मुम्] मिशारी, सापु ।
मुक्कर (वि) [मुख मुखव्यापार कश्चन राशि-रा
+क] । बातूनी, बापाल, भावपटु—मुक्कर

सन्धेया गर्भदासी रत्न २, मुखरतावसरे हि विराजते
—कि० ५।१६ ३ कोलाहलमय, लगातार शब्द
करने वाला, टनटन बजने वाला, (पानेव की भांति)
स्फुरान करने वाला—सन्धेयना मुखरशृङ्खलकर्णवपस्ते
—रघु० ५।७२, अन्तः कृष्णमुखरशकुनो यम रम्यो
वमान उत्तर० २।२५, २०, मा० १।५, मुखरमभीरं
त्यज मञ्जीर रिपुमिव केलिषु कोलम्—गीत० ५,
मुच्छ० १।३५ ३ ध्वननशील, अननादी, गूजने वाला
(प्राय समाप्त के अन्त में)—स्वार्थे—स्थाने मुखरककुभो
शाङ्कतैर्निर्भराणाम्—उत्तर० २।१४, मण्डली मुखर-
शिलरे (लगाकुञ्जे) गीत० २, रघु० १३।५६
४ अभिव्यञ्जक या मूकक ५ अस्तीलभाषी, गाली देने
वाला, बदबजान ६ उपहास करने वाला, हँसी दिस्तगी
करने वाला (मुक्करीक, शब्द करवाना, बूलवाना,
प्रतिध्वनित करवाना), र १ कौवा २ नेता मूक्य
या प्रधान पुरुष—यदि कार्यविपत्ति स्यान्मुखरत्न
हम्यते हि० १।२९ ३ मूल ।

मुखरवति (ना० घा० पर०) १. प्रतिध्वनित या कोला-
हलमय करना, गुजाना २ बूलवाना या शब्द करवाना,
अन एव शृङ्खला मां मुखरयति—मुद्रा० ३३ अधि-
मुचित करना, घोषणा करना, अभिज्ञापन करना ।
मुखरिका, मुखरी [मुखर+कन् टाप्, इत्त्वम्, मुखर+शीष्]
लगाय की बन्धा, कणाय का दहाना ।
मुखरित (वि०) [मुखर+इत्त्वम्] कोलाहलमय या अनु-
नादित किया हुआ, बजता हुआ, कोलाहलपूर्ण—यदो-
दृष्टानामिहाला मुखरितककुभस्तावदे शूलपाले
मा० १। १।

मूक्य (वि०) [मूने आदी भञ्ज—यत्] १ मूल या वेहरे
से सबब रखने वाला २ बडा, प्रधान, प्रमुख, प्रधान,
सर्व प्रधान, उलाम, द्विजातिमुख्य, वारमुख्या,
पोषमुख्या आदि, —रघुव नेता, पपप्रथमक क्यम्
१ प्रधान यज्ञकृत्य या धार्मिक संस्कार २ वेदों का
पठनपाठन । सम० खर्षे शब्द का मूक्य या मूल
(विप० गौण) आशय,—आत्म-मूक्य चाइ मात, नृप-
मूक्यतिः प्रभुसत्ताप्राप्त राजा, सर्वपरि प्रभु,—पणिम्
(५) प्रधान मणी ।

मुनूह. एक प्रकार का जल कुकट ।
मुन्ध (वि०) [मुह्, +क्त] १ अदीकृत, मूछित २ हल-
बुद्धि, प्रयोगमत्त ३ मूत्र, अज्ञानी, मूर्ख, जड़—सत्ताङ्क
केन मून्धेन सुधांशुरिति भाषित—भाषि० २।२९
४ सरल, सोपाभादा, मोला-भाला—उत्तर० १।४६
५ मूल करने वाला, मूल में पड़ा हुआ ६ बालीकेत
सरलना से मोहित करने वाला (अभी प्रेरण से
अपरिचित), बालमुलम्, —(क) अयमाचरत्यचिनय
मुपायु तपस्विभ्यामु श० १।२५, रघु० १।३४,

(अत) सुन्दर, विम, मनोहर, कांत—हिरिहू मून्ध-
वधुनिकरे विलासिनि विलसित केलिपरे गीत० १,
उत्तर० ३।५.—आ कुमारी सुकम मोलेनने दे आकथेक
किशोरी, सुन्दर तस्वी, (कामकृतिषों में यह एक
नायिका का भेद माना जाता है) । सम०—अन्ती
सुन्दर अशौं वाली युवती विमोमो मृगाभ्या स
बल रिपुघाताविरम्भूत् उत्तर० ३।४४, आभवा
सुन्दर मूक्य शाली, शी, बुद्धि, मति (वि०)
मूर्ख, मूक, जड़, मोला-भाला, भावः सादवी,
भोलापन ।

मुन्धु । (आ० वा० मोक्षते) घोसा देना, ठगना, दे०
मुन्धम् ।

१। (पुहा० जय०—मुञ्चति—ते, मुक्ता) धिपिल करना,
मुक्त करना, छोड़ना, जाने देना, डीला होने देना,
स्वतंत्र करना, छुटकारा करना (अपन भादि ते)
—इनाय यशोपनी येनमुन्धेन्दोष—रघु० २।१
३।२०, मनु० ८।२०२, मोक्षते मुराघदीना वेधीर्षीर्ष-
विमुक्तिभिः—कु० २।६१, रघु० १०।४७, मा प्रवान-
ज्जानि मञ्चन्तु विक्रम० २, प्रववान् करे आपने अय
स्मान न हो—होस्ताह न होए २ आबाद करना,
डीला छोड़ना (वाची की भांति)—अप्ट मुञ्चति बद्धिषु
समयन मुच्छ० ५।१४, 'अपनी भागी या कठ को
डीला देता है' अर्थात् नीलकार करता है ३ छोड़ना,
परित्याग करना, उन्मुक्त करना, छोड़ देना, एक ओर
हाल देना, उत्सर्ग करना रातिर्गन्त यतिमान् बर
मुञ्च गम्याम्—रघु० ५।६६, मुनिमुता प्रथमस्मुति-
रधिना मम च मुक्तमिद तमसा अन्ः श० ६।७,
मं मुञ्चति कि च कैरवकुले राति० १।४, आकि-
जुते शक्तिनि तमसा मुन्धमानेव राति० विक्रम० १।८,
मेघ० १६, ४१, रघु० ३।११ ४ अलग रखना, अप-
हरण करना, अलग-ग, दे० मुक्ता ५ डालना, फेंकना,
उछाल देना, पटक देना, घोसा उतारना—मुन्धे
शरान्मुक्त्वा रघु० २।५८, भट्टि० १५।५३ ७ निकाल-
ना, पिराना, उबेलना, टपकाना (अङ्ग) हलकाना
—अपसुतपाञ्चपुत्रा मुञ्चन्त्यशुधीव कता—श० ४।११,
चिरचिरहृव मुञ्चतो बाणमुज्जम् मेघ० १२, भट्टि०
७।२ ८ उच्चारण करना, बोलना मा० १।५,
भट्टि० ७।५७ ९ प्रदान करना, अनुदान देना, अर्पण
करना १० पशुना (आ०) ११ उत्सर्ग करना
(बलमूक का)—कर्मशा० (मुञ्चते) डीला किया जाना,
छुटकारा पाना, स्वतंत्र होना, शीमूक्त होना,—मुञ्चते
सर्वपापेभ्यः—प्रेर० (मोचयति—ते) १ स्वतंत्र या
मुक्त करना २ गिरवाना ३ डीला छोड़ना, आबाद
करना, छुटकारा देना ४ उछार करना, सुलझाना
५ मुहा हलाना, (घोसे भादि पर दे) साच उतारना

6. प्रदान करना, अर्पण करना 7 प्रसन्न करना, आनन्दित करना - इच्छा 1 (मुमुक्षति) मुक्त या स्वतंत्र करने की इच्छा करना 2. मुमुक्षते, -मोक्षते) मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा करना । अन्न - उतार देना, उड़ा देना आ, -1 पहनना, धारण करना, धारो और बाधना या कसना नामुष्कटीधारण द्वितीयम् रघु० १३११, १२१८६, १८१०४, कि० १११५, आमुष्कद्वयं रत्नाङ्गम् - मट्टि० १७१२ 2 झालना, फेंकना, दावना आमोक्ष्यन्ते त्वयि कटा-क्षान् - मेघ० १५, उद्ग, -1 सोलना, रघु० ६१२८ 2 डौंसा करना, मुक्त करना, स्वतंत्र करना 3 उतारना, शीघ्र ले जाना, एक ओर करना, छोड़ना, परित्याग करना - मट्टि० ३१२२ निम्, -1. स्वतंत्र करना, आजाद करना, मुक्त करना द्विनिर्मूलतयोयोगे विषया वन्दनसौरिण - रघु० १४६, भग० ७१२८ 2 छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना, धरि - 1 स्वतंत्र करना, छुटकारा देना, मुक्त करना, -मेघोपरोक्षपरिमुक्तसथा कुम्भका - शतु० ३१७, बौर० ९ 2 छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना प्र , 1 स्वतंत्र करना, मुक्त करना, छुटकारा देना, 2 फेंकना, डालना, उछालना 3 गिराना, उत्सर्जन करना, बीच बिखेरना, प्रति 1 स्वतंत्र करना, मुक्त करना, छुटकारा देना, आजाद करना, - गीत-प्रतिमुक्तस्य रघु० ४१३, अमु तुरङ्ग प्रतिमोक्षुस-हृदि - ३१४६ 2 धारण करना, पहनना 3 खाली कर देना छोड़ना, परित्याग करना, 4 फेंकना, डालना, दावना, बि - 1 स्वतंत्र करना, मुक्त करना 2 छोड़ देना, एक ओर डाल देना, परित्याग करना, खाली कर देना - विमुच्य भासति मुक्तिं साप्रतम् शतु० १। ७ 3 जार्न देना, डील देना मट्टि० ७५० 4 अल-माणा, अलना रखना, कु० ३१३१ 5 गिराना, (अनि) डलकाना - चिरमयुनि विमुच्य राघव - रघु० ८१२६ 6 फेंकना, डालना, सम् - गिराना, भारमुक्त करना ।

मुचकः साह ।

मुचु (च) कृष्णः 1 एक बल का नाम 2 माघाता के पुत्र एक आशीन राजा का नाम (देवासुर उग्रान में देव-ताओं की सहायता के बदले उसे बिना किसी रोक के लम्बी मीद का मुल प्राप्त करने का वरदान मिला था । देवों का आदेश था कि जो कोई उसकी नीद में बिज्ज शलया मरम् हो जायगा । जब कृष्ण ने बल-वान् कालयवन को मारना बाह्य तो उसे मुचुकुद की पुत्र में बंधक दिया । वही प्रबिध होते ही मुचुकुद राजा की नेत्रान्ति से कालयवन मरम् हो गया ।) सम० - प्रसावकः कृष्ण का विशेषण ।

मुचिरः [मुच्य् + किरिच्] 1 देवता 2 गुण 3 वायु ।

मुचिलिम्बः एक प्रकार का फूल, तिलपुष्पी ।

मुचुवी 1 अमुर्लीया बटकाना 2 मुष्का ।

मुच्य्, मुच्यन् (म्वा० पर०, चुरा० उभ०) भोजति, भुञ्जति, भोजयति - ते, भुञ्जयति ते) 1 स्वच्छ करना, निर्मूल करना 2 शब्द करना ।

मुञ्ज. [मुञ्ज् + अच्] एक प्रकार का घास (जिससे कि श्राद्ध की तडागी तैयार करनी चाहिए) - मनु० २। ४३ 2 धारयति राजा मुञ्ज का नाम (कहते हैं कि मुञ्ज राजा भोज का घास था) । सम० केषाः 1 शिष का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण, केषिन् (पु०) विष्णु का विशेषण, बन्धनम् यज्ञोपवीत पहनना अर्थात् तडागी धारण करना, अर्थात् उपनयन सम्कार, वासस् (पु०) शिव का विशेषण ।

मुञ्जवरम् [मुञ्ज् + अरत्] कमल की रेशेदार जड़ ।

मुद (म्वा० पर०, चुरा० उभ०) मोदति, मोदयति - ते)

1 कुचलना, तोड़ना, पीसना, चुरा करना 2 कर्मकित करना, बुरा भला कहना (इस अर्थ में धातु तुदा० की भी है) ।

मुद् (तुदा० पर०) मुपति प्रतिज्ञा करना ।

मुद् (म्वा० पर०) मुपति कुचलना, पीसना ।

मुद् (म्वा० पर०) मुपति 1 शौर कर्म करना, मूडना 2 कुचलना, पीसना । 1 (म्वा० भा०) मुपते) डूबना ।

मुद् (वि०) [मुद् + अच्] 1 मूडा हुआ 2 कतरा हुआ, छाटा हुआ 3 कुपित 4 अथम, नीच, इ- 1 जिसका सिर मूडा हुआ हो या मजा हो 2 मूडा हुआ या वंजा सिर 3 भयन्क 4 नाई 5 वेद का तना जिसकी ऊँची ऊँची शाखाएँ झाग दी गई हो) आ किसी विशेष बाधम की स्त्रीभिक्षुणी, - इम् 1 सिर 2 लोहा । सम० - अयसम् लोहा, क्लमः नारियल का वेद, - कच्छली ऐसा जनसमुह जिनके सिर मुड़े हुए हो, - लोहम् लोहा, - शाक्तिः एक प्रकार का बाबल ।

मुधकः [मुध् - कन्] 1. नाई 2 वेद का तना जिसकी बड़ी बड़ी शाखाएँ झाग दी गई हो, दूढ़, - कम् सिर । सम० - उपनिषद् (स्त्री०) अथर्ववेद की एक उप-निषद् का नाम ।

मुधकम् [मुध् + स्पृट्] सिर मूडना, मूडन ।

मुधित (पु० क० इ०) [मुध् + क्त] 1 मूडा हुआ 2 कतरा हुआ या छाटा हुआ, झागा हुआ, - तम् लोहा ।

मुधिन (पु०) [मुध् + इनि] 1 नाई 2 शिव का विशेषण ।

मुध्य् मोती ।

मुद् (चुरा० उभ०) मोदयति - ते) 1 मिलावना, घोलना 2 स्वच्छ करना, निर्मूल करना ।

॥ (भा० भा० मोदते, प्रेर० मोदयति ते, इच्छा० मूर्धयिते या मूर्धोदियते) हर्षं मनाना, प्रसन्न होना, हृष्ट या आनन्दित होना यक्ष्ये दास्यामि बोधिष्य इत्यज्ञानविमोहिता भग० १६१५, मय० २।२३२, २५१, मटि० १५१५, अयु, अनुमोचन करना, मजूरी देना, अनुमति देना, स्वीकृति देना, रघु० १५।४३, आ , 1 प्रसन्न या हर्षित होना, हर्षं मनाना 2 युगपिन होना, (प्रेर०) युगपित करना, सुवासित करना, परिमलैरापोदयन्ती दिश भासि० १।५६, प्र अत्यंत प्रसन्न होना बहुत खुश होना, रघु० ६। ८६ भा० ५।२३।

मुद्, मुद्वा (स्त्री०) [मुद् + (भावे) क्तिप्, मुद् + टाप्] हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता, खुशी, सतोष, पितृवृत्ते से जलन सोझेंक रघु० ३।२५, अजन्त पुरो हरितको मृदमादधान मि० ५।५८, १।२३, विद्यादे कर्तव्ये विदधानि जडा प्रत्युत्त मुद्म भूतु० ३।२५, द्विपरम मुदा गीत० ११, कि० ५।२५, रघु० ७।३०।

मुदित (भू० क० इ०) [मुद् + क्त] प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, खुश, हर्षयुक्त, तम् 1 प्रसन्ना, आनन्द, खुशी हर्ष 2 एक प्रकार का संयुक्तानुजन, सा हर्ष, आनन्द।

मुदिर [मुद् + किरच्] आलस प्रचुर पुण्डरन्ध्रनृजिज्जन्मदुर्मादिर मुवेगम् गीत० २, या, मुञ्चन्ति नाञ्जाति ख्य भासिनि मुदिरालिर्नयाय भासि० २।८८ 2 प्रेमी, कामासक्त 3 मूँक।

मुदी [मुद् + क - डोष्] ज्योत्सना, चादनी।
मुद्ग [मुद् + गक्] 1 एक प्रकार का मोड़िया, मूय 2 दकना, आङ्गुल 3 एक प्रकार का समुद्री-पशु।
सम० मुञ्, - भोजिन् (पू०) घोडा।

मुद्गर [मुद् गिरति गु + अच्] 1 हथौडा, पोयरी, जैसा कि 'माहमुद्गर' शकराचार्य कृत एक छोटा काव्य) में-रघु० १२।७३ 2 लतका, गदा 3 मिट्टी के डेले तोड़ने वाली पोयरी 4 इम्बल, लोहे के छोटे मुद्गर 5 कली 6 एक प्रकार की भलेली (इस अर्थ में यह शब्द नपु मी होता है)।

मुद्गल [मुद्ग + ला + क] एक प्रकार का घास।
मुद्गच्छ (पू०) एक प्रकार की मूय।

मुद्गम् [मुद् + रा + ल्युट्, पूषो०]। मोहर लगाना, मुद्राकित करना, छापना, चिह्न लगाना 2 मूदना, बंद करना।

मुद्रयति (ना० धा० पर०) 1 मोहर लगाना अथवा मुद्र या मुद्रयन्म्-मुद्रा० १ 2 मुद्राकित करना, चिह्न लगाना, अंकित करना 3 दफना, मूदना (आल०) - विचराणि मुद्रयन् शगुणामुद्रिय सज्जनी जयति -भासि० १।९०।

मुद्रा [मुद् + र्क + टाप्]। मोहर लगाने या मुद्राकित

करने का उपकरण, विशेषत मोहर लगाने की अगुठी नामांकित अगुठी-अनया मुद्रया मुद्रयन्म् मुद्रा० १, नाममुद्राखरारण्यनुनाथ परस्परमवबोकमत भा० 2 मोहर, छाप, अंक, चिह्न चतुःसमुद्रयन् का० १९१, सिन्धुमुद्राङ्कित (बाहु), गीत० ४ 3 प्रवेश-पत्र, बोतपारक (जैसा कि मुद्राङ्कित रूप में दिया जाता है) अगुठीतमुद्र काटकाकिष्कायति-मुद्रा० ५ 4 मोहर लगा सिकका, लया रना आदि सिकके 5 पदक, सन्धा 6 प्रतिमा चिह्न, विल्ला, प्रतीकार्यक चिह्न 7 बंद करना, मूदना, मोहर लगा देना संबो-धमुद्रा स च कर्णपाया -उत्तर० ६।२०, शिपिजिह्वामुद्रा मदनकसहस्रेष मूलभाम् भा० २।२५ 8 रहस्य 9 धर्मनिक भक्ति में अगुणियों की विशिष्ट मुद्रा।
सम० अक्षरम् 1 मोहर का अक्षर 2 टाइप (छापने के अक्षर-आधुनिक प्रयोग), कार: मोहर बनाने वाला, - भासि: मस्तक के बीच में होने वाला रश्म जिसके द्वारा (योगियों का) प्राणवायु बाहर निकल जाता है, बहुरश्म।

मुद्रिका [मुद्रा + कन् + टाप्, इत्थम्] मोहर लगाने की अगुठी से० 'भुवा'

मुद्रित (वि०) [मुद्रा + इत्थक्] 1. मोहर लगा हुआ, चिह्नित, अंकित, मुद्राकित त्याग सप्तसमुद्रमुद्रित-मुद्रा विष्वाजितानवधि-मुद्राजी० २।३९, कापीर-मुद्रित मुरो मधुसूदनस्य गीत० १, स्वय सिन्धुरेश द्विपरम मुद्रामुद्रित इव ११ 2 बन्द किया हुआ, मुहरबंद 3 अनभिन्ना।

मुद्रा (अव्य०) [मुद् + का, पूषो० ह्यप् षः] 1, अर्थ, निष्प्रयोजन, निरर्थकता के कारण, बिना किसी लाभ के-यत्किञ्चिदपि सवीक्ष्य कुक्षे हसित मुद्रा-सा० २० 2 ललन रीति से, मिथ्यारूप से-रात्रि सेव पुन. स एव दिवसे मत्वा मुद्रा जन्तव-भर्तु० ३।७८ (पाठान्तर)।

मुद्रि: [मन् + ष्ट्, उर्ध्वं मन्ते जानानि यः] 1 श्चधि, महारथा, सन्त, भक्त, सत्यासी-मनीनामप्यह् व्यास भग० १०।३७, पुष्य शब्दो मुद्रिरीरित मुद् केवल राजपूव- श० २।२५, रघु० १।८, ३।५९, भय० २।५५ 2 अग्रस्य मुद्रि का नाम 3 भ्यास का नाम 4 बुद्ध का नाम 5 आम का पेठ 6 'सात' की संख्या (स० व०) सत्यनि। सम०-अलम्ब (स० व०) सत्यासियों का भोजन, -इन्द्र: -ईश: -ईश्वर: एक बड़ा श्चधि, -अथम् 'मुद्रिय' अर्थात् पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि (जो कि अल परेका प्राप्त मुद्रि माने जाते हैं)-मुद्रियय नमस्कृत्य या, विमुद्रि व्याकरणात् सिद्धा० -विलम्ब तांवा, कुक्षक: महान् या प्रयुक्त श्चधि, -मुषक: 1 संवनपत्नी 2 दमनक वृक्ष

+ भेषजम् 1 बायला 2 उपवास, —सत्तम् सन्धासी की प्रतिष्ठा—कु० ५१४८ ।

भुव (म्भा० पर० मूर्धति) जाना, हिलना—बलना ।

भुवना [मोक्षमुनिच्छन् भुव् + सन् + ख + टाप्, पातोहित्यम्] छटकारे या मोक्ष की इच्छा ।

भुवन् (वि०) [भुव् + सन् + उ] 1. बरी या स्वतंत्र होने का इच्छुक 2. कार्यभार से मुक्त होने का इच्छुक 3 (बाग आदि) छोड़ने की प्रसन्न रघु० १।५८ ४. सांसारिक जीवन से मुक्त होने का इच्छुक, मोक्ष, प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील,—शुः मोक्ष के लिए प्रयत्नशील ऋषि - कु० २।५१, भग० ५।१५, विक्रम० १११ ।

भुवधानः [भुव् + धान्च्, लघ्वद्भावाद्भित्त्वम्] शारल ।

भुवर्षा [भु + सन् + ख + टाप्] मरने की इच्छा - भट्टि० १।५७ ।

भुवर्ष (वि०) [भु + सन् + उ] मरणासन, मृत्यु के निकट ।

भुव (तुदा० पर० मूर्धति) घेरना, अन्तर्गत करना, परिष्कृत करना, लिपटना ।

भुवः [भुव् + क] एक रासस का नाम जिसे कृष्ण ने मार गिराया था, रघु परिवृत्त करना, घेरना । सम० —अरिः 1 कृष्ण का विशेषण—मूर्धारिभावाकुपदसंघ-यसो गीत० १ 2 'अनर्धराधव' नाटक का प्रयोग, —जित्, -विष्, भिद्, सर्वेण, -रिपुः—वैरिण्, हन् (पु०) कृष्ण या विष्णु के विशेषण —प्रकीर्णसिन्धुर्बर्षति भुवजदधो मूर्जित—गीत० १, मूर्धैरिणो राधिकासि वचनवातम् १० ।

भुवजः [भुवज् वेष्टनात् जायते—जन् + उ] 1 एक प्रकार का डोल या मृदय—सामन्द् नन्दिहस्ताहत भुवजवरव मा० १११, सगीताय प्रहलभुवजा—भेष० ४४, ५६, मालवि० १।२२, कु० ६।४१ 2 किसी स्थान की भाषा को भुवज के रूप में व्यवस्थित करना, भुवज्भव भी इसे ही कहते हैं काव्य० ९ । सम० फलः छटहल का पेड़ ।

भुवजा [भुवज् + टाप्] 1. एक बड़ा डोल 2 कुबेर की पत्नी का नाम ।

भुवज्वा एक नदी का नाम (इसे ही बहुधा 'नर्मदा' मानते हैं) ।

भुवजा [भुव् + जा + क + टाप्] केरल देश से निकलने वाली एक नदी का नाम (उत्तर० ३ में 'नर्मदा' के साथ इसका उल्लेख आता है) मुलामाफतोद्भूत-मगमत् फलक रज रघु० ४।५५ ।

भुवभी [भुव् अक्षुलिषेष्टञ्छाति—भुव् + ला + क + ङीप्] बामुदी, बड़ी, वेणु । सम०—चरः कृष्ण का विशेषण ।

भुष्ट (म्भा० पर० मूर्धति, मुञ्जित, वा मुत्, इत् धातु की

'भुष्ट' या 'भुष्ट' भी लिखते हैं) 1 ठोस बनाना, जमना, गाढ़ा होना 2 मुञ्जित होना, बेहोश होना, भुष्टा जाना, अचेतन होना, सञ्चारहित होना—पतस्य-छाति मूर्धन्यपि—गीत० ४ कीर्तानिजितविषममुञ्जित-जनाघातेन कि पीरुम्—गीत० ३, भट्टि० १।५५ 3 उगना, बढ़ना, बलवान् या शक्तिशाली होना—भुमुष्टं सहज तेजो हृदिषेव हृदिर्भुज—रघु० १०।७९, भुमुष्टं सस्य रामस्य—१२।५७, मूर्धन्यपी विकारा प्रायेणैववर्षमतेषु—भा० ५।१८ 4 बल एकत्र करना, मोटा होना, सघन होना तथा निधि मुष्टताम्—विक्रम० ३।७ 5 (क) प्रभाव डालना—छाया न मुञ्छति यलोपहृतप्रहृतसुष्टे तु रूपगतले सुलभावकाशा—सं० ७।३२, (ख) छा जाना, प्रभावित करना—न पादयोभूलनाशकितहृत् शिलोच्छ्वये मुञ्छति मास्तस्य रघु० २।३४ 6 भरना, व्यापन होना, प्रविष्ट होना, फैल जाना—कु० ६।५९, रघु० ६।९ 7 जोड़ का होना 8 बार बार होना 9 ऊँचे स्वर से शब्द करवाना—अरे० (मुष्टपति—ने) जड़ी-मूल करना, मुञ्जित करना—म्लेच्छीन्मुष्टयते—गीत० १, वि—, मुञ्जित होना, बेहोश होना, सप्त—, 1 मुञ्जित होना, बेहोश होना 2 ताकतवर या शक्तिशाली होना, बलवान् होना, प्रबल होना, किं० ५।४१ ।

भुवर्तः [भुव् + क पृथो० द्विषम] 1 गुणानि, तुष या भुकी से तैयार की हुई अग्नि स्वरहृताशनभुवर्षुस्त्वाना रघुनिवाप्रवधस्य रज कथा—शि० ६।६ 2 काम-देव 3 सूर्य का एक घोड़ा ।

भुव (म्भा० पर० मूर्धति) बाधना, कटना ।

भुवर्षी [भुव् + अटन् + ङीप्, पृथो० पथय व] एक प्रकार का बर ।

भुव (स) ली छांटी छिपकली ।

भुव (कथा० पर० मृणाति, मृषित, इच्छा० भुमृषिपति)

1 चुराना, उठा लेना, छुटना, हाका डालना, अपहरण करना (द्विक० मानो जाती है, देववत्त तत मृणाति परन्तु लौकिकसाहित्य में चिरल प्रयोग),—भुषाण रत्नानि—शि० १।५१, ३।३८, शत्रस्य मृणन् वसु वैकमोज कि० ३।४१ 2 ग्रहण लगाना, बटना, लपटना, छिपाना—मैत्र्येणुमुधिताकीर्षीधिति—रघु० ११।५१ 3 बन्दी बनाना, धुव्य करना, लुभाना ४ पीछे छोड़ देना, भागे बड़ जाना—मुष्ण्य, धियमयोकांना रक्षे परिजनाम्बरे, गीतैर्बराङ्गानां च कोकिलभ्रमण्यन्निम्—कथा० ५५।११३, रत्न० १।२४, भट्टि० ९।३२, भेष० ४७, परि—, लुटना, वधित करना—परिमृषितरत्न विमुवतम्—भा० ५।३०, प्र—, अपहरण करना, निस्तेज करना भट्टि० १७।६० ।

॥ (स्य० पर० मोघति) चोट पठुँवाना, क्षति पठुँवाना, हत्या करना ।

॥॥ (स्य० पर० मूष्यति) १ चुराना २ तोड़ना, नष्ट करना—मट्टि० १५११६ ।

मूषकः [मूष्+कृत्] बूढ़ा ।

मूषक २० 'मूलक' ।

मूषा-श्री [मूष्+क+शप्, शेष वा] कुठाली ।

मुषित (मू० क० कृ०) [मूष्+कृत्] १. कुड़ा गया, चोरी किया गया, अपहृत २ अपहरण किया गया, छीन कर ले जाया गया ३ बन्धित, मुकल ४ ठगा गया, धोखा दिया गया—द्वेषेन मुषितोऽस्मि—का० ।

मुषितकम् [मुषित+कन्] बुराई हुई सर्पति ।

मुष्क [मूष्+कृत्] १ बरकोप २ पीठा ३ गठीला तथा हृष्ट-श्रुत पुरुष ४ राशि, डेर, परिनाय, समुच्चय ५ चोर । सम०—बेश्—अधकोप का स्थान,—पुष्कः डिङ्गडा, बधिया किया हुआ पुरुष,—शोक. पीठां की मूजन ।

मुष्ट (मू० क० कृ०) [मूष्+कृत्] चुराया हुआ—स० ५१२०,—ष्टम् चुराई हुई सर्पति ।

मुष्टि (पु०, स्त्री०) [मूष्+कृत्] १ भीषा हुआ हाथ, मुट्ठी—कृपाभंगेय विधिदे निबिडोऽपि मुष्टि—रघु० ११५८, १५१२१, शि० १०५५२ मुट्ठीबर, जितना एक मुट्ठी में आये, हवाभाकमुष्टिपरिबधितक श० ५१४, रघु० ११५५५, कु० ७५६९, मेघ० ६८३ मूठ, दस्ता ४ एक विशेष शोक, (= एक पल के बराबर) ५ पुरुष का निग । सम०—बेश्—धनुष का बीच का भाग, बहु भाग जो हाथ से पकबा जाता है, शूलम् एक प्रकार का शूल, जूडा, —पातः मुक्केबाजी, अंबः १ मुट्ठी बाधना २ मुट्ठीबर,—पुष्टम् मुक्केबाजी, पृथेबाजी ।

मुष्टिकः [मुष्टिर्गोषण प्रयोजनस्य कन्] १ सुनार २ हाथों की विविध स्थिति ३ एक रासल का नाम, कम् मुक्केबाजी, पृथेबाजी । सम० अन्तकः बलराम का विशेषण ।

मुष्टिका [मुष्टिक+टाप्] मुट्ठी ।

मुष्टिन्धसः [मुष्टि+धे+अप्] मुष्] बच्चा, बालक, विष्णु ।

मुष्टीमुष्टि (अव्य०) [मुष्टिभि मुष्टिभि प्रहृत्य प्रवृत्तं मुष्टम्] मुक्केबाजी, पृथेबाजी, हस्ताहस्ति मुष्ट ।

मुष्कः राई, काली सरसो ।

मुष् [दिवा० पर० मुस्त्यति] फारना, बिभक्त करना, टुकड़े करना ।

मुष्कः, सम् [मूष्+कृत्] १ मत्का, गदा २ मूलक (बावल कूटने के काम जाता है)—मुष्कनिधिमि च पातकाले मुष्टुर् शाति कलेन हुक्तेन—भृश० ११५,

मूष्० ६१५६ । सम० भाष्यः बलराम का विशेषण, उल्लसकम् मुष्की वीर शरल ।

मुस्तानामुस्तति (अव्य०) [मुष्ने मुस्तने प्रहृत्य प्रवृत्तं मुष्टम्] मुसल या बराही से लगना ।

मुस्तन्मि (पु०) [मुस्त+मि] १. बलराम का विशेषण २ शिव का विशेषण ।

मुस्तय (वि०) [मुसल+यत्] गदा से चुर-चुर किये जाने अथवा मार दिये जाने योग्य ।

मुस्त [चुरा० उच० मुस्त्यति ते] डेर लगाता, इकट्ठा करना, सभह करना, सचय करना ।

मुस्ताः,—सम्,—स्त [मुस्त+क, क्तिधा टाप्] एक प्रकार की धाक, मोषा विश्वम् क्रियता बराहतीतिर्मुस्ता-क्षति. पन्कवे—श० २१६, रघु० ११५९, १५११९ ।

सम०—अष्टः अश्वः मुवार ।

मुसम् [मूष्+रक्ष्] १ मुष्की २ बाणु ।

मुष् (पिवा० पर० मुष्ति, मूष् वा मुष्ट) मुष्गाना, मुष्ति होना, केटना नष्ट होना, बेहोश होना—इष्टम् इष्टमाह्वं ता स्वरभेष ममोह क. मट्टि० ६१२१, ११२०, १५११६ २ उडिम होना, बिहूल होना, बबराना ३ मुष्ट बनना, अह होना, मोहित होना ४ मक्की करना, भूल होना—वेर० (मोहयति ते) १ अह करना, मोहित करना—आ मुष्स्तुम् अन्त-नन्यकम्ना या० १३३२ २ अस्तम्यस्त करना, बबराना, उडिम होना—अम० ३१२, ५११६, परि—, बबराना जाना, लसकाना हो जाना (वेर० जा०) फुलसाना, बहकाना, लसकाना—मट्टि० ८१६३, प्र—, बडीमुत होना, मुष् होना, बि—, अन्त्यस्थित होना, बबराना, उडिम होना, बिहूल होना—अम० २१७२, ३१६, २७ २ मुष् होना वा मोहित होना, सम्—, १ न्याकुल होना २ मुष् या अज्ञानी होना (वेर०) मोहित करना, अडीमुत करना—अचर-मपुस्वन्वेन उचोहिता गीत० १२ ।

मुष्टिर (वि०) [मुष्+किरच्] मुष्, मुड, अड, रः १ कामधेय २ मुष्, मुष्ट ।

मुष्प (अव्य०) [मुष्+गतिच्] बहना, लपातार, निरतर, बार बार—बीषाभङ्गाराम मुष्टुत्पति स्वन्वे दत्तमुष्टिः स० ११७, २१६ (सुत अर्धे में प्रायः शिल्पं कर पिवा जाता है) मुष्टुम् १. बार बार, फिर फिर, प्राय बहना—कुर्वां क्षिन्वानेऽपि क. कृत्ति मुष्टुम् २. कुछ समय या लक्ष के लिए, बोही डेर के लिए—मेघ० ११५, उत्तरोत्तर बाष्पधर्मी में 'अब, अब' एक बार, दूसरी बार' अर्थ को प्रष्ट करने में प्रयुक्त होता है—यदुत्तरुते बाना मुष्टु पति बिह्वका, मुष्टुलक्यते गीता मुष्टु श्लोति रोचिती बुजा०, मुष्टा० ५११ । सम०—बाष्प,

बन्धु (नपु०) पिष्टपेषण, पुनरुक्ति, बन्धु (पुं०) भोटा।

मुहूर्तः—संज्ञ [हृत् + क्त वातो पूर्व भूट् च] 1 एक क्षण, समय का अल्पभाग, निमित्त—नकाश्वरानीकमुहूर्तला-
च्छने रघु० ३।५३, सप्रभाभरेखेन मुहूर्तराणा
—पद्य० १।१९४, मेघ० १९, कु० ७।५० 2 काल, समय (मूत्र या अक्षुभ) 3 अद्वितीय विन्दु का काल, —ते ज्योतिषी।

मुहूर्तकः [मुहूर्त + क्त] 1 निमित्त, क्षण 2 अद्वितीय विन्दु का काल।

मू (भ्वा० पर० भवते) बाधना, जकडना, कसना।
मूक (वि०) [मू + कृच्] 1. मूँगा, मौन, चुप्पा, वाक्-
शून्य मूक करति बालक, मूकशब्द (काननम्)
—कु० ३।४०, लघीयिष्य शीघ्र चिदादशकाम—गीत०
७ 2 बेचार, दीन, दुःखी, क 1 मूँगा—शौनाम्क
—हि० २।२६ (गतांतर), मनु० ७।१४९ 2 बेचारा, दीन 3 मछली। सम०—अन्त्या दुर्गा का एक रूप,
—आजः चुप्पी, मूकता, वाक्शून्यता।

मुष्किलम् (पुं०) [मूक + इयन्च्] मुनापन, मुकता, चुप्पी।

मूढ (भू० क० कृ०) [मूह् + क्त] 1 बड़ीमूत, मोहित 2 उद्विग्न, व्याकुल, विह्वल, मुझमूझ से हीन—कि कर्तव्यतामयः 'कलीय कर्तव्य की मूढ से हीन व्यक्ति' इसी प्रकार 'हीनमूढ' मेघ० ६८ 3 नाशयक, मूर्ख, मन्दबुद्धि, जड़, अज्ञानी—अल्पस्य हेतोर्बहु इत्युष्किलम् विचारमूढ प्रतिभासि मे त्वम्—रघु० २।५७ 4 भ्रान्त, भ्रममूर्ख, प्रतापित, विचकित 5 अपक्व-
जन्मा 6 समर्थोपायक, इः मूर्ख, इच्छ, मन्दबुद्धि, अज्ञानी पुत्र—मूढ परप्रत्ययनबुद्धि नामसि० १।२। सम०—आत्मन् 1 मन से बड़ीमूत 2 निर्बुद्धि, जड़, मूर्ख, —यस्य मूत गर्भं, —आजः अक्षुभ्वाज, गलत, विचारण, गलत धारणा, बेवक, बेवक्य (वि०) निर्बुद्धि, मूर्ख, अज्ञानी—अवयच्छति मूढभेदान प्रिय-
नाथ इति शक्यमिति रघु० ८।८८, शौ०, बुद्धि, —सति (वि०) निर्बुद्धि, जड़, मूर्ख, लीलाज्ञाया
—कि० १।३०, —सत्य (वि०) मोहित, दीवाना।

मूत (वि०) [मू + क्त] 1 बाधा हुआ, करता हुआ 2 बुरी किया हुआ।

मूत्रम् [मूत्र + घञ्] मूत्र, पेशाब, नप्यु मूत्र सम्यु-
ज्ज—मनु० ५।५६, मूत्र चकार मूत्रा, लघुका की
सम०—आश्रातः मूत्रसंबन्धी रोग, —आश्रातः पेट के नीचे का स्थल जहाँ मूत्र नरा रहता है, अन्धक दे०
'मूत्रमय',—इच्छन् पीडा के साथ मूत्र का जाना, मूत्रमरण, मूत्र २ पेशाब का पीडा देकर जाना,
—शौचः अशुभोद्य, पीडा, —सत्यः मूत्र का साथ कम

हाना, जठर; रज्जु मूत्र रुक जाने से पेट की सूजन,
—शेष मूत्रसंबन्धी रोग, निरोधः मूत्र का रुक जाना,
—घनतः मद्यमांश, पच्यः मूत्रनलिका, परीक्षा मूत्र-
निरीक्षण, मूत्र की परीक्षा करना, पृथग् पेट का
निष्काश भाग, मूत्राशय, मास्यः मूत्रनलिका मूत्रदाय, बन्धक (वि०) अधिक पेशाब लाने की दवा, मूत्रक, श्लेष्मः, सन्मूत्रसंबन्धी पीडा, सण पेशाब जाने में रुकावट, पीडा के साथ रक्त पेशाब जाना।

मूत्रमति (ना० वा० पर०) पेशाब, लघुपाका करना - तिष्ठन्मूत्रमति महा०।

मूत्रल (वि०) [मूत्र + ला + क्] पेशाब लाने वाली (दवा), मूत्रघटक औषधि।

मूत्रित (वि०) [मूत्र + इत्च्] मूत्र के रूप में निकलना हुआ।

मूर्च्छ (वि०) [मूह्, मूर, आदेशा] जड़ मन्दबुद्धि, बुद्ध, मूढ, अज्ञान से 1 मन्दबुद्धि, मूढ न तु प्रतिनिविष्टपूर्वजनचित्तमाराधयेत्—मत्तं ७।६, ८, मूर्च्छंलक्ष्यपरार्थिन मा प्रतिपादयिष्यमि विग्रम० 2 एक प्रकार का लोबिया। सम० मूधम् मूर्च्छता, जडता, अज्ञानता।

मूर्च्छन् (वि०) (स्त्री०—नी) [मूर्च्छन् + शिच् + ल्युट्] 1 बड़ीमूत करने वाला, जडता या बेहोमी पैदा करने वाला, (आयदेव के एक बाण का विशेषण) 2 अज्ञाने वाला, वर्धन करने वाला, बल देने वाला, —सम् 1 मूर्च्छिन् हीना, बेहोया हीना 2 (सर्गो० में) स्वरा-
रोहण, स्वरविषयास, स्वरो का नियमित आरोहणारोहण, सुखर स्वरसंधान करना, लयपरिवर्तन करना, स्वरलाभजन्य, स्वर्गाभूप्ये—स्फुटीमबद्धामविशेष-
मूर्च्छन्ताम् सि० १।१०, मूर्च्छोभय स्वयमपि कृता मूर्च्छना विस्मरन्ति मेघ० ८६, वर्णनामपि मूर्च्छना-
न्तरयत् तार विराटे मुहु, मूच्छ० ३।५, सप्त स्वरा-
स्वपी शामा मूर्च्छनास्यैकविंशति - पञ्च० ५।५४ (मूर्च्छा या मूर्च्छना की परिभाषा क्रमास्वरानां सप्तानामारोहणारोहणम्, सा मूर्च्छोप्युच्यते शमस्था एता सप्त सप्त च, अधिक विवरण के लिए दे० सि० १।१० पर मस्ति०)।

मूर्च्छा [मूर्च्छ] (भावे) जड़ + टाप्] 1 बेहोशी, सजा हीनता— रघु० ७।४४ 2 अल्प अज्ञान या व्यामोह 3 पातु कृक कर सत्य बताने की प्रक्रिया, —मूर्च्छा गती मूर्तो का निर्वसन धारदोऽन रस—आमि० १।८२।

मूर्च्छालि (वि०) [मूर्च्छा + लच्] बेहोया, अचेत, बेतना-
रहित।

मूर्च्छित (मू० क० कृ०) [मूर्च्छा जाता अस्व-इत्च्, मूर्च्छ + क्त वा] 1 बेहोया, सजाहीन, बेतनारहित 2 मूर्ख, जड़, मूढ 3 बढ़ाया हुआ, वधित 4 प्रचर

किया हुआ, तीव्र किया हुआ 5. उज्ज्वल, व्याकुल
6. बरा हुआ, 7 पूका हुआ ।

मूर्त्ति (वि०) [मूर्च्छ + क्त] 1. बेहोश, सजाहीन 2 जब, मूढ़ 3. शरीरधारी, मूर्तिमान्—मूर्त्ती विष्णुस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गमूष.—श० ११३६, प्रसार इव मूर्त्तस्ते स्पर्शं स्नेहाइंसीतल—उत्तर० ३१२४, रघु० २।६९, ७।७०, कु० ७।४२, पच० २।९९ 4 भौतिक, पाचिब 5. ठोस, कड़ा ।

मूर्त्तिः (स्त्री०) [मूर्च्छ + क्त] 1 निश्चित आकार और सीमा की कोई वस्तु, भौतिक तत्त्व, इच्छ, सत्त्व 2 रूप, दृश्यमान आकृति, शरीर, आकृति, मुद्रा० २।२, रघु० ३।२७, १४।४५ 3 मूर्तिमत्ता, शरीरधारण, प्रतिबिम्ब, स्पष्टीकरण—कण्ठमन्व मूर्त्ति उत्तर० ३।४, पच० २।१५९ 4 प्रतिमा, प्रतिमूर्ति, पुतला, मूर्त 5 सौन्दर्यं 6 ठोसपना, कड़ापन । सम०—अर, संश्वर (वि०) शरीरधारी, मूर्तिमान् उत्तर० ९, -५. प्रतिमा का पुजारी, जो किसी देव प्रतिमा के पूजाकृत्य में लगाया गया है ।

मूर्त्तिवत् (वि०) [मूर्त्ति + वत्सु] 1 भौतिक, पाचिब 2 शरीरधारी, देहवान्, साकार - सुकुलला मूर्तिमती च सत्किशा—श० ५।१५, ठव मूर्तिमान् महोत्सव कर—उत्तर० १।१८, रघु० १२।६४ 3. कड़ा, ठोस ।

मूर्च्छ (पु०) [मुह्यस्त्वस्मिन्नाहते इति मूर्च्छा—मुह् + क्त], उपचाया दीर्घो बोज्जादाद्यो रमायमस्य) 1 मत्तक, भी 2 तिर,—मतेन मूर्च्छा हरिररहहीदप—शि० १।१८, रघु० १६।८१, कु० ३।१२ 3 उच्चतम या प्रमुख भाग, चोटी, शिखर, शृंग, तिर—अतिष्ठन्मनु-वेन्द्राणा मुद्दिन देवपतिर्वधा—महा० "सब राजाओं के शीर्षभास पर" आदि—मृष्या पर्यंतमूर्च्छि—श० ५।७, नच० १७ 4 (अतः) नेता, मुखिया, मुख्य, सर्वोपरि, प्रमुख 5 सामने का, हराबल, अग्रभाग—त किल सवृणमूर्च्छिं सहायता मयवत प्रतिपद्य महारथ—रघु० ५।१९। सम०—अन्तः तिर का मुकुट,—अभिषिक्त (वि०) अभिमणित, किरीटधारी, यथापि यव पर प्रतिष्ठापित,—रघु० १५।८१ (अतः) 1 अभिमणित या अभिषिक्त राजा 2 क्षत्रिय जाति का पुत्र 3 मन्त्री 4 मूर्च्छाभित्तक (1)—अभिषेकः अभिमणय, प्रतिष्ठापन,—अभिषिक्तः 1 बाह्य पित्त और क्षत्रिय माता से उत्पन्न एक वर्षसकर जाति 2. अभिमणित राजा—अर्धो—अर्धरी (स्त्री०) छतरी, -अः 1 (तिर के) बाल—पर्याकुला मूर्च्छा—श० १।३०, बिललाप किरीशंमूर्च्छा—कु० ४।४, शोककारितके में उस स्त्री ने अपने बाल मोच हाके 2 अवाल, -अवोत्तिष् (नपु०) दे० बहाराख्य वा मुद्रा-भायं—कुण्डः शिरीष

का पेड़,—अतः उसके शाखों का मांड,—केवलम्, साध, मुकुट, शिरोमात्य ।

मूर्च्छन् (वि०) [मूर्च्छि मवः - वत्] 1 तिर पर निष्काम 2 मूर्च्छन् बर्षत् मूर्च्छा से उच्चरित होने वाले बर्षे अ, अ, हृ हृ हृ नृ र और व, अट्टरधाना मूर्च्छा 3 मूष्य, प्रमुख, सर्वोत्तम ।

मूर्च्छन् दे० 'मूर्च्छ' ।
मूर्च्छा, - शी, मुखिका [मूर्च्छ + अच् + टाप्, झीम् वा, मूर्च्छा + कन् + टाप् इत्यम्] एक प्रकार की लता जिसके दोहों से वन्य की बोरी या क्षत्रियों की (कटिमूष) टढ़ापी तैयार की जाती है ।

मूर्च्छा । (म्वा० उभ० मूर्च्छति—ते, जब जमना, युद्ध होना, शिखर होना ॥ (पुत्रा० उभ० मूर्च्छयति—ते मूर्च्छित) पीषा लगाना, उगाना, पालना, उर—उकाडना, बड़ से काटना, मूलोच्छेदन करना—कि० १।४१, बितष्ट करना, विच्छन्न करना, निष्—जड़ से उखाडना, उन्मूलित करना ।

मूर्च्छम् [मूर्च्छ + क्त] 1 जब (आल० से श्री) -तत्पुष्पाणि गृहीभवन्ति तेषाम्—श० ७।२०, या, आसिनो घीतमूलाः १।२०, मूर्च्छन्व्यं बड़ पकड़ना, जब जमना, -बड़मूलस्य मूल हि महइत्तरो स्थिते—शि० २।३८ 2 जब, किसीवस्तु का सबसे नीचे का किनारा या छोर—कस्यादिचदासीइसना तदानीम-इनुत्तमकापित वृषसेधा—रघु० ७।१०, इसी प्रकार 'श्रीभीमले—वेध० ९१ 3 नीचे का भाग या किनारा, आधार, किसी वी वस्तु का किनारा जिसके सहारे वह किसी वस्तु से जुड़ी हो—बाह्योर्मूलम्—शि० ७।३२, इसी प्रकार पादमूल, कर्णमूल, ऊरुमूलम् आदि 4. धारण, शुक—आमूलाच्छीतु-भिच्छामि श० १ 5 आधार, नींव, ज्ञात, जल, उत्पत्ति—सर्वगार्हस्थ्यमूलका—महा०, 'ज्योर्गृही त्वोत्ति-मूलम्—उत्तर० १।६, इति केनायुक्तं तत्र मूर्च्छं मृष्यम्, इसका ज्ञात या प्रभाव मायम किया जाता चाहिये 6 किसी वस्तु का तल या रैर, पर्यंतमूलम्, गिरिमूलम् आदि 7. पाठ, मूल सदर्यं (नाय के चिकित्त) 8 पड़ोस, पास पास, सामीप्य 9. मुख्यतः, मूलपूत्री 10 कुलकमायत सेवक 11 वर्षमूल 12 राजा का अपना निजी प्रदेस—त मूलमकरस्थवः—रघु० ५।२६, मनु० ७।१८४ 13. विच्छेद जो स्पय विच्छेदवस्तु का स्वामी न हो—मनु० ७।२०२, (अस्वानिविच्छेदा कुलम्) 14. ब्याहृत ताकाकों का पुत्र जो सत्पात्र मन्त्रों में से उन्नीचल (पुत्रमन्त्र) है 15. श्रावो, श्राद्ध-कलाह 16. गीपरा मूल 17 अन्विकीं जो विच्छेद स्थिति । सम०—आचार्यत् 1 नाथि 2. जननेशिय के ऊपर एक रहस्य भय वृत्त,—आचम्य

मूली, —आत्मतन्म मूल भावासत्त्वान्, —आशिल् (वि०) को कन्दमूलानि साकर जीवित रहे, —आह्वम् मूली —उच्छेकः पूर्णपत्र, पूर्णविनाया, पूरी तरु उलाह फेला, —कर्मन् (नप०) जाहू, —कारण मूलहेतु, आदि कारण, कु० १११३, —कारिका भट्टी, वृहदा —कृष्णः —कृष्णम् एक प्रकार की तपस्या, केवल जड़ साकर निर्वाह करना, —केसरः नीबू, —गुणः किसी मूल का गुणाक, —जः जड़ होने से उत्पन्न होने वाला पीथा, (अम्) हरा अदरक, —शेकः कस का विशेषण —इष्यम् —धनम् मूलधन, माल, वाणिज्यवस्तु, पूजी, —शाम्भुः लसीका, —निष्कन्तन (वि०) जड़ से काट शकने वाला, —युष्व 'पशुपाल' किसी परिवार का वसप्रवर्तक पुत्र, —प्रकृति. (स्त्री०) साक्यो का प्रधान या प्रकृति, —फलकः कटहल का पेड़, —मदः फल का विशेषण, —मूल्यः पुराना तथा कुलकमानेत् शेक, —मूल्यम् मूलपाठ, —वित्तम् पूजी, वाणिज्य वस्तु, माल, विभुजः रज, शाकट, —शाकिनम् वह शेर जिसमें मूली गाजर आदि मूल-शोधे बोये जाते हैं, —स्वल्पम् 1. आधार, नीबू 2 परमात्मा 5 हवा, वायु, —सौतम् (नप०) प्रधान धारा या किसी नदी का उद्भव स्थान ।

मूलकः, —कम् [मूल + कन्] 1 मूली 2 मध्य जड़, —क एक प्रकार का विष । सम० —पौलिका मूली ।

मूला [मूल + अच् + टाप्] 1 एक पीथे का नाम, सतावर 2 मूल नगर ।

मूलिक (वि०) [मूल + ठन्] मूलमूल, मौलिक, —क. मक, संन्यासी ।

मूलिन् (पु०) [मूल + इनि] वृक्ष ।

मूलिन (वि०) [मूल + इन] जड़ होने से उयने वाला ।

मूली [मूल + लीच्] एक छोटी छिपकली ।

मूलैरः [मूल + एरक्] 1 राजा 2 अटामासी, बालछद्म ।

मूल्य (वि०) [मूल + यत्] 1 उलाह देने योग्य 2 मोल देने के योग्य, —स्वम् 1 कीमत, मोल, लागत —श्रीधरनि स्व प्राणमूल्यवशाति—शि० १८१५, शान्ति० १११२ 2 मन्त्रहरी, किराया या भाडा, वेतन 3. लाभ 4. पूजी, मूलधन ।

मूय् (म्भा० पर० मूयति, मूयित) चुराना, लूटना, जप-हल करना ।

मूय [मूय् + क] 1 वृहा, मूसा 2 मोल लिटकी, मोथा राजनदाव ।

मूयकः [मूय् + कन्] 1 वृहा, मूसा 2 चोर । सम० —अरातिः बिलाव, —बाह्व. गणेश ।

मूयकम् [मूय् + क्त्वाट्] चुराना, चुरके से लिटका लेना, उठा लेना ।

मूया, मूयिका [मूय् + टाप्, मूयिक + टाप्] वृहिया कुठाली ।

मूयिकः [मूय् + किकन्] 1 वृहा 2 चोर 3 चिरीप का पेड़ 4 एक देश का नाम । सम० —अङ्कू, —अश्विनः —रजः गणेश क विशेषण, —अशः बिलाव, —अरातिः बिलाव, —उत्तरः, स्वल्पम् बावी ।

मूयिकार. (पु०) वृहा ।

मूयी, मूयीकः, मूयीका [मूय् + कीच्, मूय् + ईकन्, मियया टाप् च] वृहा, मूसा, मूसी ।

मू (तुदा० आ० — [परन्तु लिट्, लृट्, लृट् और लृङ् में पर०] प्रियते, मृत) मरना, नष्ट होना, मृत्यु को प्राप्त होना, जीवन से बिदा लेना—श्रेर० (मारयति—ते) बध करना, हत्या करना—इच्छा० (मृमूर्धति) 1 मरने की इच्छा करना 2 मरने के निकट होना, मरणासन्न अवस्था में होना, अन्तः, श्वा में मरना, मर कर अनुसंधान करना—रघु० ८८८ ।

मूय् दे० प्रश्न ।

मूय् (दिवा० पर०, चुरा० आ० मूयति, मूयते, मूयित) 1 लूटना, लोचना, उलाहा करना, —न रत्नमन्विष्यति मूयते हि तत्—कु० ५१५५, मता हूता हूर क्वचित्पि परेतान् मूयन्धितुम्—मगा० २५ 2 शिकार करना, पीछा करना, अनुसरण करना 3 कल्प बोधना, यत्न करना 4 परीक्षण करना, अनुसंधान करना—अधिचक्षितमनोनि साधकैर्मन्त्रमान्—मा० ५११, अन्तर्वेषक मूयन्धितुम्—यमितप्राणादिभिर्मूयते—विष्णु० १११, 'अन्तर से खोजा गया, और अनुसंधान किया गया' 5 मागना, याचना करना—एतावदेव मूयते प्रतिपक्षहेतो मा० ५१२० ।

मूय. [मूय् + क] 1 बीपाया, जानवर—नामिषेकी न सत्कार सिंहस्य मियते मूय, विष्णुमावितराज्यस्य स्वयमेव मूयन्तता । दे० नी० 'मूयाचिप' 2 हरिण, बारहसिया—विषवासोपयमादभिप्रगतव छद्म सहते मूया—श० १११५, रघु० ११५६, ५०, आद्यधर्मयोग्य न हन्तव्य—श० ११३, आशेट 4. चन्द्रमा का आरम्भन जो हरिण के रूप में लगा हुआ है 5 कस्तूरी 6 शीब, तलाश, 7 पीछा करना, अनुसरण, शिकार 8 पूछ ताछ, मूयेचना, 9. प्रार्थना, निवेदन 10 एक प्रकार का हाथी 11 मनुष्यों की एक विशिष्ट श्रेणी—मृगे तुष्टा च चिचिणी, वदति मन्वुरवाणी दीर्घनेत्रोऽतिमौ-रुषपलमतिमुदेह. श्रीप्रथेनी मृगोऽयम्—अश्व० 12. 'मृगशिरा' नक्षत्र 13 'मार्गशीर्ष' का महीना 14 मकर राशि । सम० अश्वी हरिणी बँसी बाँसो वाली स्त्री, —अङ्कूः 1 चन्द्रमा 2 कपूर 3 हवा, —अङ्गना हरिणी, अश्विनम् मृगशाला, —अश्वक कस्तूरी, —अश्व

(५०).—अधनः,—अन्तकः छोटा घेर या बीता, लकड़बन्धा,—अधियः,—अधिराजः सिंह,—केसरी निन्द-
रक्षितामुपबन्धो मृगाधिय—सि० २१५३, मृगाधिरा-
जस्य बन्धो निधम्य—रघु० २१५१,—अरातिः 1 सिंह
2 कुता,—अरिः 1 सिंह 2 कुता 3 घेर 4 कुस
का नाम,—अरजः सिंह,—अधियम् (५०) शिकारी,
—आत्यः मकर राशि,—इन्द्रः 1 सिंह—तली मुने-
न्द्रस्य मुनेन्द्रगामो—रघु० २१३० 2 घेर 3 सिंह
राशि—आत्यम् सिंहासन—आत्यः शिव का विशेषण
—अदकः बाज पक्षी,—इष्ट चमेली का एक भेद,
—ईशमा हरिणी जैसी जानों वाली स्त्री,—ईश्वरः
1 सिंह 2 सिंहराशि,—उत्सम्,—उत्समाङ्गम् मृग-
शिरा नखपत्रम्, कालम् उद्यान,—आग्निमी एक
प्रकार का कीचबद्रव्य,—अलम् मृगमरीचिका—स्नामम्
मृगमरीचिका के जल में स्नान करना—अर्थात् अस्ना-
भाषना, बीषणः शिकारी, बहेलिया,—तुष्, तुषा
—तुष्णा, तुष्णिका (स्त्री०) मृगमरीचिका—मृग-
तुष्णाभसि स्नातः, दे० 'कपुष्ण',—बग,—इसक
कुता,—इष् हरिणी जैसी जानों वाली स्त्री—तदीषडि-
स्तारि स्तनयगलमातीमृगदृश—उत्तर० ६१३५,—कु-
शिकारी,—इष् (५०) सिंह,—अरः चन्द्रमा,—धूरः
—धूरकः गीदर,—अपना हरिणी जैसी जानों वाली
स्त्री,—आग्निः 1 कस्तूरी—कु० ११५५, ऋतु०
६१३२, चौर० ८, रघु० १७१२५ 2 हरिण जिसकी
नाभि में कस्तूरी होती है—रघु० ४७५,—आ
कस्तूरी,—पतिः 1 सिंह 2 हरिण 3 घेर,—पासिका
कस्तूरीमृग,—पित्तः चन्द्रमा,—प्रभू सिंह, ब(ब)
शाश्वीयः शिकारी,—अश्विनी हरिणों को पकड़ने का
बाज,—अश्वः कस्तूरी—कुचटटीगटो यावन्मातमिलति
तव तोमैर्मंगमद—गया० ७, मृगमदतिलक लिखति
सपुलक मृगमिष रजनीकरे गीत० ७,—आसा कस्तूरी
का पैला—अश्वः हाथियों की एक श्रेणी, आतुका
हरिणी, भुषः मकरराशि,—युष्म् हरिणों का झुण्ड,
राष् (५०) 1 सिंह—सि० १११८ 2 घेर
3 सिंह राशि, राष्ः 1, सिंह—रघु० ६१३ 2 सिंह
राशि 3 घेर 4 चन्द्रमा—आरिन्,—अलम् (५०)
चन्द्रमा,—रिपुः सिंह,—रौषम् ऊन,—अम् ऊनी
कपडा,—आरुजः चन्द्रमा—अङ्घ्रिः शिरोपित्तमृगरश्चन्द्रमा
मृगमाङ्गल—सि० २१५३,—अः कुपहं,—लेखा
चन्द्रमा में हरिण जैसी शारी—मृग-लेखा—मृगवीच चन्द्रमा
—रघु० ८१५२,—शेषणः चन्द्रमा (—ना—मी)
हरिणी जैसी जानों वाली स्त्री,—आहूः हवा,—आषः
1 शिकारी 2 तारामंडल या नखपत्र 3 शिव का
विशेषण,—आषः छोटा, हरिण का हथका—मृगशावै
समवेधितो वनः—अ० २११८,—शिरः—शिरस् (न००)

—शिरा पाँचवें नखप (मृगशिरस्) का नाम को
तीन तारों का पुंज है,—शोभम् मृगशिरा नाम का
नखपत्र,—(शे) मार्गशीर्ष का महीना,—शोभम् (५०)
मृगशिरा नाम का नखप,—शेषः घेर,—हृ 3
शिकारी ।
मृगया [मृग + युष् + टाप्] कोजना, तलाश करना, पूर-
ताछ, अनुसंधान ।
मृगया [मृग यात्यनया या घञायं क] शिकार, पीछा
करना—मिष्येव व्यसज वदन्ति मृगयामीषुम्विनोष कुत-
स० २१५, मृगयापवादिना माइव्येन छ० २
मृगयाविष, मृगयाविहारिन् आदि ।
मृगयुः [मृग अत्यर्थे युष्] 1 शिकारी, बहेलिया हन्ति
नोपसवस्कोऽपि सयालुर्मृगयुर्मृगान्—सि० २१८०
2 गीदर 3 बहू का विशेषण ।
मृगजम् [मृग + अष् + ङ] 1 पीछा करना, शिकार
—कि० १३१९ 2 निधाना, लक्ष्य ।
मृगी [मृग + ङीष्] 1 हरिणी, मृगी 2 मिरली रोम
3 शिपयों को एक विशिष्ट श्रेणी । सम०—बृह
(स्त्री०) बहू स्त्री जिसकी बाँहें हरिणी जैसी होती
हैं, पतिः कृष्ण का विशेषण ।
मृग्य (वि०) [मृग + ष्यत्] सोने जाने या तलाश किये
जाने योग्य, शिकार किये जाने के योग्य तब मूलम्
मृग्यम् ।
मृज् 1 (म्वा० पर०) मार्जति) शब्द करना ।
11 (अदा० पर०, चूरा० उभ०) माष्टि, मार्जयति—से,
इच्छा० मिमुसति या मिमाजिषति) 1. पेशना,—रघु
डालना, स्वच्छ करना, साफ करना 2. बूहारी देकर
साफ करना (आल० से भी) स्वेदलनाम्यमार्जं सि०
३१७९ 3 चिकना करना, (घोड़े आदि को) सख्तर
से रगड़ना 4 सजाना, अलङ्कृत करना 5. विमेल
करना, पानी से धोना, साफ करना—अङ्गः अङ्गान्य-
मार्जुत्सव मम्युत्सव परस्वधान् अष्टि० १४१२,
(गुद्धान् चक्षु या सोपितवन्त), अज—, 1. मलना,
गुदगुदना 2 धो डालना, अज—पोंछ देना, हटाना,—रघु०
१५३२, शिष्—, पोंछना, धो देना, धरि—, पोंछ
डालना, धो देना, हटाना—(आष्य) त्वामेव पत्याः
परिमायुर्वैच्छत्—रघु० १५३५ 2. मलना, गुदगुदना,
प्र , पोंछ डालना, हटाना, प्रायश्चित्त करना—स्व-
भावसोलेव यज प्रमुष्टम्—रघु० ६१३१, अश्विपत-
लङ्कान् प्रमायुर्कामा—विष्णु० १, मार्जि० ५, शि—,
1 पोंछ डालना, पोंछ देना 2 निमेल करना, स्वच्छ
करना सन्—, 1 बूहार कर साफ करना, विमेल
करना 2 पोंछ देना, पोंछ डालना, हटाना 3. मलना,
गुदगुदना 4 शिपोडना, डालना ।
मृकः [मृग + क] 'मृज्' नाम का आश्रयविशेष ।

मुखा [मू + अ + टाप्] 1. स्पष्ट करना, निर्मल करना, शोभा, महाना-शोभा 2. स्पष्टता, निर्मलता - अट्टि० २।१३, सुट्टि 3. आकार-प्रकार, निर्मल तथा और स्पष्ट मुखानपकल ।

मुखात् (वि०) [मू + क्त] शो डाला गया, स्पष्ट किया गया, हटाया गया ।

मुखा [मू + क] शिव का विशेषण ।
मुखा, मुखासी, मुखी [मू + टाप्, मू + कीप्, पके वासुक्] पार्वती का विशेषण - वाङ्म सुन्दरि कालकूट-वपिषत् मुखी मुखागीपतिः-गीत० १२ ।

मून् (तुवा० पर० मुनाति) बच करना, हत्या करना, नष्ट करना ।

मुखात्कः, -कम् [मू + कालन्] कमल की तन्तुमय जड़, कमल-तन्तु - अङ्गुलि हि मुखालानामनुबन्धन्ति तलाव - हि० १।१५, सूत्र मुखालादि राजह्वरी - विक्रम० १।१९, अतु० १।१९, विक्रम० १।१३, -कम् सुगणित धास की जड़, बरिणमूल । सम - अङ्गु. कमलतनु का टुकड़ा, - तुषत्रम् कमलवृत्त का तन्तु ।

मुखालिका, 'मखासी [मुखाल + क् + टाप्, श्वम्, मुखाल + कीप्] कमलवृत्त या तन्तु - परिमुषितमुखाली-म्यानमङ्गु - भा० १।२२, या, परिमुषितमुखालीदुर्बला-न्यङ्गकानि - उत्तर० १।२५ ।

मुखालिन् (पु०) [मुखाल + णि] कमल ।
मुखालिनी [मुखालिन् + कीप्] 1 कमल का पौधा 2 कमलों का समूह 3 जहाँ कमल बहुनायत से मिलते हैं ।

मू (मू० क० क०) [मू + क्त] 1 मर तुवा, मृत्यु को को प्राप्त 2 मृतक असा, अर्थ, निष्कल मृतो दरिद्र दुःखो मृतं मेषुमप्रबन्, मृतमथोभिय श्राद्ध मृतो ब्रह्मस्वदक्षिणः - पच० २।१५ 3 अस्म किया हुआ, हुआ हुआ - मूच्छा गतो मृतो वा निर्दणं पारदोऽत्र सत् - भाषि० १।२२, -सम् 1 मृत्यु 2 मिक्षा में प्राप्त अन्न, दान या भिक्षा - दे० अमृतम् (८) । सम० - अङ्गु. शब्द, - अष्टः सूर्य, - अशीष्म किसी सबकी की मृत्यु से उत्पन्न अर्पिभ्रता, अशीष्, दे० 'अशीष्', - उङ्गु. समुद्र, सागर, - कम्प (वि०) मृतपान, बेहोश, - गृहम् कम्प, बाट रचना, विघ्न, - शिबसिद्धः जो शशो को कविस्तान में डोकर ले जाता है, - मत्तः, - मत्तः गीदद, - संकलः अत्येष्टि वा और्ध्वदेहिक कृत्य, - संकीचक (वि०) मूर्तों को जिलाने वाला (- नम्, - नी) मूर्तों का पुनर्जीवित करना, (- नी) मूर्तों को जिलाने का मंत्र, गड़ा या टाबीज, - मृतकम् मरे हुए (मृत जात) अर्थ की जन्म देना, - स्तानम् किसी की मृत्यु होने पर स्नान करना ।

मूकः, कम् [मू + क्त] मूर्त शब्द - धृषं ते जीवन्तो-

ऽनहह मृतका मन्दमतयो, न येषामान्त्र्य जयवति जय-
प्राचभारिणि - भाषि० ५।१९, - कम् किसी सबकी की मृत्यु हो जान पर उत्पन्न अशीष् । सम० - अस्तकः गीदद ।

मूतकः (पु०) सूर्य ।
मूतकम् [मू + अल् + णिष् + म्बुल्] एक प्रकार की मिट्टी, पिबोर वा चिकण मृत्तिका ।

मूतिः (स्त्री०) [मू + क्तिन्] मृत्यु, मरण ।

मूत्सिका [मू + तिकन् + टाप्] 1 पिबोर, मिट्टी मनु० १।१८२ 2 ताजी मिट्टी 3 एक प्रकार की गणपुस्त मिट्टी ।

मृत्युः [मू + त्युक्] 1 मरण - आतस्य हि धृषो मृत्यु-
र्ष्वेव जन्म मृतस्य च - भन० २।२७ 2 मृत्यु का देवता यमराज 3 ब्रह्मा का विशेषण 4 विष्णु का विशेषण 5 माया का विशेषण 6 कलि का विशेषण 7 काम-
देव । सम० - तृष्य एक प्रकार का डोल जो और्ध्वदेहिक सत्कार के अवसर पर अजाया जाता है, - भाषकः पारा, - वाः शिव का विशेषण, - धासः मृत्यु या यम का फटा - पुष्पः ईश, गन्ना, - प्रतिषद्ध (वि०) मरणशील, मर्त्य - कला, - ही केला, - बीजः, - बीजः बाल, - राष् (प्र०) मौतका देवता, यमराज, - लोकः 1 मूर्तों की दुनिया, यमलोक 2 मूलोक, मर्त्यलोक - तु० 'मर्त्यलोक - बचनः 1. शिव का विशेषण 2 पहाड़ी कीवा, - मूति (स्त्री०) केकड़ी ।

मृत्युञ्जयः [मृत्यु + जि + ञच्, मृम्] शिव का विशेषण ।
मृत्ता, मृत्तरा [मू + त (स) + टाप्] 1 मिट्टी, पिबोर 2 अच्छी मिट्टी या पिबोर, चिकण मिट्टी 3 एक प्रकार की गणपुस्त मिट्टी ।

मू (कपा० पर० मूनाति, मूदित) 1 निचोडना, दवाना शीचना - मम च मूदित क्षीम बाल्यत्वदङ्गविवर्तने - रेणी० ५।४० 2 कुचलना, रीदना, टुकड़े-टुकड़े र देना, हत्या करना, नष्ट करना, पीस देना, रगड देना, चकनाचूर कर देना - तानमर्दीदलादीच - अट्टि० १५।१५, बालान्यमूनाप्रलिनामभवन् - रघु० १।८५ 3 मसलना, मूदनादाना घिसना, स्पष्ट करना - शि० ५।६१ 4 जीत लेना, जाये बढ़ जाना 5 पोछ देना, रगड देना, हटाना, अति, निचोडना, शीचना, कुचलना, अन्न - रीदना, कुचलना, उच, - 1 निचोडना शीचना 2 नष्ट करना, मार डालना, कुचल देना - यामिकाननुपमच ने० ५।११०, परि - , शीचना निचाडना - परिमुषितमुखाली दुर्बलान्यङ्गकानि - उत्तर० १।२५ 2 मार डालना, नष्ट करना 3 पोछ देना, रगड देना, प्र . कुचलना, चकनाचूर करना, पीस देना, हत्या कर देना, शि , 1 शीचना, निचोडना 2 चकनाचूर करना, कुचलना, पीसना - मनु० ५।७० 3 मार

डालना, नष्ट करना, सम्- , इन्द्रा कर विचोड़ना, चकताबुर करना, पीस देना, हलवा करना ।
मृ (स्त्री०) [मृ + विच +] । पिठोर, मिट्टी, मिट्टी का गारा—आमोष कुमुमभवं मूवेच वते मृवृषं न हि—कुमुमाभिं वाच्यन्ति—मुमा०, प्रभवति सूचिविम्बोदघाहे मर्षिनं मृदा चयः उत्तर० २४४ २ मिट्टी का डेला, चिकनी मिट्टी का लौटा ३ मिट्टी का टीला ४ एक प्रकार की सुगन्धित मिट्टी । वन० रुष्ः मिट्टी की डली या लौटा—करः कुम्हार, कस्त्रियं मिट्टी का बर्तन, मः एक प्रकार की मछली, —चयः (मुच्यते) मिट्टी का डेर,—चयः कुम्हार, वाचम्,— मावहम् मिट्टी का बर्तन, चिकनी मिट्टी के बने पात्र, चिच्छः मिट्टी का लौटा, —बुद्धिः 'आलसो बुद्ध—मया च मत्पिचम्बुद्धिना नयंयं गृहीतम्—श० ५, —लोष्यः मिट्टी का डेला, —कस्तिका (मुच्छकटिका) मिट्टी की छोटी गाड़ी । (मृदक द्वारा लिखित इस नाम का एक नाटक) ।
मृदङ्ग [मृ + अण + चिन्ध] १ एक प्रकार का डोल वा मृद, इकली २ बर्तन । सम्०—कृष्णः कटङ्गल का बृक्ष ।
मृद (वि०) [मृ + अण] १ श्रीदाधील, जिलाधी २ क्षणमद्भार, क्षणिक, अस्थायी ।
मृदा दे० 'मृद' (स्त्री) ।
मृदित (पु० क० कृ०) [मृ + क्त] १ रींसा हुआ, निचोड़ा हुआ—सुलभमिता वाच्यमिता—मत्० २४४ २ कुचला गया, पीसा गया, पीस डाला गया, रोदा गया, मार डाला गया ३ बलक दिया गया, हटाया गया (दे० मृद) ।
मृद्विनी [मृ + ङ + इनि + ङीप्] अन्धी, चिकनी मिट्टी ।
मृदु (वि०) (स्त्री०—ङ, —री) [मृ + ङ] (म० ङ० प्रतीयत्, उ० ङ० ङ्रथिष्ठ) १ चिकना, कोमल, गन्दा, लथोला, सुकुमार—मृदु तीक्ष्णतर मृदुच्यते तदिदं ममय दुष्यते त्वयि—मासिक ३१२, अथवा मृदु वस्तु हिसितु मृदुनेवाचते प्रजातल—रघु० ८१५, ५७ श० ११०, ४१०, २ कोमल, सुकुमार, नम्र न सरो न च भूसा मृदु—रघु० ८१९, बाण कृपायुधना प्रसिसजहार—१४४० 'वसा के कारण कोमल मन वाला' ११८३, श० १११ महर्षिन् दुतामप्यञ्जत् रघु० ५१५४, 'वसाई' कातमूलमिषो नदीरयं पातयत्यपि मृदुलादद्रुमम् ११७६, 'मृदु बीर मन्द पवन भी' ३ कुबल, कमबीर—सर्पया मृदुरथी गवा—हि० ३, तस्मै मृदवोऽभूत् मयर्षां वर—पीडिता—महा० ५, मयपय, सयत्,—ऋः गनिग्रह,—ङु (अञ्ज०) कोमलता से, मन्दस्वर में, मधुर शब्द से—स्वममि मृदु कर्णातिककर श० ११३३, भावते मृदु वैष्णु—गीत० ५ । सम्०—अङ्ग (वि०) कोमल

जर्मी वाला, (—अञ्ज) टोल, जल (—भी) कोमल अथवा वाली स्त्री, —अन्वय्य कोमल अर्थात् नरकामल, अन्वय्यन्वय्य बोला, कीष्ट (वि०) नरक कोठे वाला जिसे हल्के शिरान से दस्त जा जाय,—अन्वय (वि०) मन्द या बलरपूर्ण बाल वाला, (मा) हठी, राजहठी, —अभिन, —अन्व, स्वय, स्वयः (पु०) एक प्रकार के शोचन का वृक्ष,—चय सरकहा या नरकुल,—चयक, चयम् (पु०) नरकुल, जेत, पुष्पः शिरिष का वृक्ष,—कुर्व (वि०) जो भारम में मंच हो, स्निग्ध हो, स्निग्ध तथा सुहावना हो,—चयिन् (वि०) मधुर कोमले चक्रा,—चोमन् (पु०)—चोमकः शरकोष,—स्वर्ण (वि०) छूमे में नरय ।
मृदुचय्य [मृ + ङ + ङी + ङ + क्त] सीना, स्वर्ण ।
मृदुल (वि०) [मृ + लृ + ङ] १ निम्न, कोमल, सुकुमार २ मृदु सरल, साधु,—रघु० १. अल २ अवर की लकड़ी का एक जेद ।
मृद्वी, **मृद्विका** [मृ + ङीप्, पञ्च कन् + टाप् च] अमूर्तों की रेक वा पुष्प—वाच तदीया परिषीम मृद्वी मृद्विका सुचरलां स हृष्ट—शे० ३१६, भाषि० ४१३, ३७ ।
मृदु (भा० उच्य वर्णिते) मीला होना, या मीला करना ।
मृदु [मृ + क्त] सभाम, मृद, लड़ाई—सम्बन्धितमनुक मुचर्षिकमन्वय चयत मृदुमिचिमुपतः कि० १२३९, रघु० १३१५, महावी० ५१३३ ।
मृदुव्य (वि०) [मृ + मृ + ङ] मिट्टी का बना हुआ, रघु० ५१२ ।
मृदु (सुधा० पर० मृद्वति, मृष्ट) १ स्थल करना, हाथ से पकड़ना २ मलना, मुदगुदाना ३ शोचना, चिमर्न, बिचार करना, क्षमि—, स्थल करना, हाथ से पकड़ना, का—, स्थल करना, हाथ लगाया, हाथ डालना (वाच० से भी) ; नवावापामृष्टशोचवाचरि—कि० ५१४, अरण्यमया मृदुराममर्षे—कु० ३१५४, जि० ५१३४ २ अष्टा मारना, का जाना—रघु० ५१९ ३ आचम्य करना, हलका करना; अमृत्ता न पद पटी—कु० २१३१, परा—, १ स्थल करना, मलना, पुनरुत्थाना; परामृष्ट हर्षमदेन पाणिना तदीममङ्ग बुद्धिचक्राङ्कितम्—रघु० ३१६८, जि० १७११, मृच्छ० ५१२८ २ किसी पर हाथ डालना, आचम्य करना, हलका करना, पकड़ लेना—मृच्छ० ११३९, ३ बुद्धि करना, अष्ट करना, कलाकार करना, ४ विचार चिन्तन करना, चिंतन करना—कि त्रिस्तोत्रि वधुं पश्यन्वया परामृष्टि—भाषि० २५३३ ५ मन से शोचना, प्रशंसा करना—अन्वार्थमे विभक्तिकाताय सपुष्टिपदेवतां अन्वकृत्परामृष्टि—काव्य० १, परि—, १ स्थल करना, चरा कृ जाना—सिन्धुधर्तः परि-मृष्टेयकोकम्—पट्टि० १०१५ २ माल करना, वि—,

1 स्वर्ण करना 2 चिन्तन करना, सोचना, विचार करना, मनन करना—युगते हि विमृशकारिण युक्तव्या स्वेष्वेव सपद. कि० २।३०, रामप्रवासे ध्यमसाध दोष जनापवाद सनरेन्द्रमुत्प्लुम्—मृष्टि० ३।७, १२।२४, कु० १।८७, मम० १।८६३ 3 प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, पर्यवेक्षण करना 4 परीक्षा लेना, परीक्षण करना—तदर्थप्रधानिम मा ष शास्त्रे प्रयोगे च विमृशतु—मालवि० १ ।

मृच् i (म्वा० पर० मर्षति) छिद्रकना ॥ (म्वा० उभ० मर्षति—ते) बर्दास्त करना, सहन करना—आदि (प्राय दिवा० उभ०) ॥ (दिवा०, बुरा० उभ०—मृष्यति—ते, मर्षयति—ते, मर्षति) 1 झलना, भोगना, सहन करना, साथ रहना—तत्किमिदमकार्यमनुष्ठित देवेन, लोको न मृष्यतीति—उत्तर० ३ रघु० १६६२ 2 अनुमति देना, इजाजत देना 3 लाना करना, भाग करना, दोषमुक्त करना, क्षमाशील होना—मृष्यन्तु लक्ष्यं बालिगता तातपाश—उत्तर० ६, प्रथममिति प्रेष्य दुहितृजनस्यैकीजरायो भगवता मर्षयितव्यः—वा० ४, आर्षं मर्षय मर्षय रेणी० १, महाभाह्मण मर्षय मृच्छ० १ ।

मृषा (अव्य०) [मृष्+का] मिथ्या, नसती से, असत्यता के साथ, झूठपठ—यद्यन मुहुरीससे न धनिना कृपे न चाटु मृषा—भृगु० ३।१४७, मृषाभाषासिन्धो—भावि० २।२४ 2 अव्यं, निष्प्रयोजन, निरसक। सम०—अव्ययिन् (पु०) एक प्रकार का सारस,—अर्थक (वि०) 1 असत्य 2 बेहूदा (—कम्) असगति, असमाचना,—उत्सम् मिथ्यात्व, झूठ, झूठी उक्ति—तत्कि मन्थसे राजपुत्रि मृषोत्त तदिनि—उत्तर० ४,—ज्ञानम् अज्ञान, अयुद्धि, झूठ,—प्राक्चिन्,—वाचिन् (पु०) झूठा, झूठ बोलने वाला, बाष् (स्त्री०) असत्योक्ति, व्यङ्ग्योक्ति, व्ययकाव्य, ताना,—बाब 1. बसत्योक्ति, झूट, मिथ्या 2 कपटपुत्रं उक्ति, चाप-झूठी 3 श्यग्य, व्यययोक्ति ।

मृषालकः [मृषा+कल+क+क] आम का पेड़ ।
मृष्ट (मू० क० कृ०) [मृच्. मृष् बा+क्त] 1 स्वच्छ किया हुआ, निर्मल किया हुआ 2 कीपा हुआ 3 प्रसाधित, पकाया हुआ 4 छूना हुआ 5 तोषा हुआ, विचार हुआ 6 चटपटा मसालेदार, रसिकर । सम० मन्थः चटपटी और रोचक मथ ।

मृष्टि (स्त्री०) [मृच् (मृष्)+क्तिन्] 1 स्वच्छ करना, साफ करना, निर्मल करना 2 पकाना, प्रसाधन करना, तैयारी करना 3 स्वर्ण, सपर्ण ।

मै (म्वा० आ० मयते, मित, इच्छा० मित्स्ते) विनिमय करना, बदला बदली करना, मि, विनि, विनि-मय या बदला बदली करना ।

मेकः [मे इति कायति शब् करोति मे+कै+क] बकरा ।

मेकलः ('मेकल' भी) 1 एक पहाड़ का नाम 2 बकरा । सम०—अहिजा, कन्वका, कन्वा नर्मदा नदी के विशेषण ।

मेकला [मीगते प्रक्षिप्यते कायमध्यभागं—मी+कल+टाप, गुण] 1 करघनी, तगही, कमरबन्द, कटिबन्ध (आळ० से भी), कोई वस्तु जो बागे और से लपेट सके—मही सागरमेकला 'सागरविट्टित भ्रमण्डल'—रत्नानुविद्धानर्णभवेकलाया दिश मपली भव दक्षिणस्या -- रघु० ६।६३, ऋतु० ६।२ 2 विशेष कर स्त्री की तगही नितम्ब विम्बं मुकुटमेकलं—ऋतु० १४, रघु० ८।६४, मेकलागुणस्य गोत्रस्त्वितिनेषु बन्धनं कु० ४।८ 3 तीन लडो वाली मेकला जो पहले मीन वर्ण के बह्मचारियों द्वारा पहनी जाती है—नु० मनु० २।४२ 4 पहाड़ का इलान,—आमेसक सचरता घना-नु० कु० १।१५, मेघ० १२ 5 कूहा 6 तलवार की मूठ 7 तलवार की मूठ में बयो हुई शीरे की गाठ 8 धोरे की तग 9 नर्मदा नदी का नाम । सम० पवम् कूला, बन्ध कटिसूत्र धारण करना ।

मेकलाल [मयला+अल+अच्] शिव का विशेषण ।

मेकलिन् (पु०) [मेकला+दिन्] 1 शिव का विशेषण 2 धर्मशास्त्र ग्रहण करने वाला बह्मचारी ।

मेघः [मेहति वर्दति जलम्, मिह+घञ, कुत्वम्] 1 बादल,—कुर्वन्जनमेघका इव दिशो मेघ समुत्तिष्ठते मृच्छ० ५।२३, २, ३ आदि 2 देव, मनुष्य 3 सुगन्धित घास धन्म सेलखटी । सम०—अध्वन् (पु०)—पथ,—मार्गं 'बादलो का मार्ग' अन्तरिक्ष,—अन्त घरद् ऋतु—अरि वायु, अरिष्य (नपु०) बोलो—आश्वय्य सेलखटी,—आश्वय्य शरित का जाना, बरसात, आश्वय्य सपन मोटा बादल, आश्वय्य मेघो की गर्जन,—आनन्दा एक प्रकार का सारस, आनन्विन् (पु०) मोर,—आलोक बादलो का दिलाई देना मेषालोके भवति सुविनोऽप्यन्यथाध्वनि वेत—मेघ० २, आश्वय्य आकाश, अन्तरिक्ष,—उदयम् वृष्टि,—उदय बादलो का घिर जाना, कफः बोलो, कल वृष्टि, वयो ऋतु,—यजन्म, यजोना चित्तकः चालक पत्नी, जः बटा मोटी, आत्मन् 1 बारलो के सपन समृद्ध 2 सेलखटी,—बीषण,—बीषणः गतक पत्नी, स्वोत्सि (पु०, नपु०) बिजली, इम्बर बादलो की गरज,—दोषः बिजली,—हारम् आकाश, अन्तरिक्ष,—माघः 1 बादलो की गरज, यदयवाहृट 2 बरस क विशेषण 3 रावण के पुत्र इन्द्रजित् का विशेषण ० अन्वुत्सिन्, अन्वुत्सकः मोर, चित् (पु०) सवयन का विशेषण,—निर्वोचः

बादलो की गरज, धँसितः, भाला बादलों की धोपी, पुष्पम् 1 पानी 2 ओला 3 तदियों का पानी, प्रसवः पानी, कुलिः बज, कष्यकम् अन्तरिक्ष, आकाश, भालः, मालिन् (वि०) बादलों से घिरा हुआ, धीनि घुष, पूछो, -रवः गरज, -बर्षा नील का घोषा, बर्षन् (नपु०) अन्तरिक्ष, बर्षिः बिजली, बाह्वः 1 इन्द्र का विशेषण अथवा स्व मेघाभिः मेषबाह्वः सि० १३१८ 2 शिव का विशेषण, -बिष्णुजितम् 1 गरज, बादलों की गड़गड़ाहट 2 एक छन्द का नाम दे० परि० १, -वेष्मन् (नपु०) अन्तरिक्ष, सार एक प्रकार का कपूर, कुह्व (पु०) मार, स्तनितम् गरज ।

मेघदूत (वि०) [मेघ करोतीति दू + अच्] बादलों को पैदा करने वाला ।

मेघक (वि०) [मच् + वृन्, इत् व] काला, गहरानीला, काले रंग का कुर्वेणञ्जनमेघका इव दिवो मेघ समुत्तिष्ठते मूळ० ५।२३, उभर० ६।२५, मेघ० ५९, क । कालिमा, गहरा नीला वर्ण 2 मोर की पूँछ (पल) की आँख (चदा) 3 बादल 4 धूर्त्ता 5 चुनक 6 एक प्रकार का रत्न, -कम् अथकार । सम० आपषा पमुना का विशेषण ।

मेदु (भ्वा० पर भेटति, मेदनि) पागल होना ।

मेदुणः आँखों का पेड़ ।

मेठ 1 मय 2 हाथी का रजवाल, महावत ।

मेठि, मेथि 1 सभा, स्थाप 2 खनिहान में गड़ा हुआ सभा जिसमें बँल बाधे जाते हैं 3 माघ मँग आदि बाधने का मुद्रा 4 घाटी के ब्रम की महारने के लिए बल्ली ।

मेठ् [मिद् + वृन्] मेठा, मेप, हुम् पुरुष की जननेन्द्रिय, लिय (गम्य) मेदु चोन्मादशुक्राभ्या हीनं स्त्रीव स उच्यते । सम० धर्मन् (नपु०) लिय की तुपाही का चमड़ा -ज निव का विशेषण, -रोग लिय सबधो रोग ।

मेठुक [मद् + वृन्] 1 भुजा 2 लिय, पुरुष की जननेन्द्रिय ।

मेष्ठ, मेष्ठ हाथा का रजवाल, महावत ।

मेठ मेठुक मय, मेठा ।

मेठ् ए० मेठ ।

मेथ (भ्वा० उभ० मेथति ते) 1 विनना 2 एक दूध से मिलन हुआ (आ०) 2 बुरा भला कहना - जनना, समझना 5 चोट मारना, सति पहुँचाना, ज्ञान से मार डालना ।

मेथिका, मेथिनी [मेत् + वृन् + टाप्, इत् व, मेथ + विनि] डीपु एक प्रकार का घास, मेथी ।

मेथ् [मेदते स्निह्यति - मिद् + अच्] 1 चर्बी 2 एक विशेष प्रकार की वर्णसंकर जाति 3 एक नाग राक्षस का नाम । सम० अम् एक प्रकार का मूल, -भिष्कः एक पतित जाति का नाम ।

मेथकः [मिद् + वृन्] अर्ध जो सराव खीचने के काम आता है ।

मेथस् (नपु०) [मेदते स्निह्यति - मिद् + असुन्] 1 चर्बी वसा (शरीर के सान धातुओं में से एक जिसका पेट में विघटन होता माना जाता है) मनु० ३।१८२, याज्ञ० १।४४ 2 मांसलता, शरीर का मोटापा - मेद-वृद्धेदकुशोदर लघु भवत्युत्थानयोग्य मधु - मा० २।५ । सम० -अर्धुवर्ष एक मोटी रसोली, -कृन् (पु०, नपु०) मांस, -द्विष्ः मँद यस्त मांश या रसोली, -अच्, -तेजस् (नपु०) हरी, -पिष्कः, चर्बी का डला, -वृद्धिः (स्त्री०) 1 चर्बी की वृद्धि, मोटापा 2 फोतो का बड़ जाना ।

मेथस्विन् (वि०) [मेदस् + विनि] 1 मोटा स्थूलकाय 2 मजबूत, हृष्टपुष्ट सि० ५।६४ ।

मेथिनी [मेद + वृनि + ङोप्] । पृथ्वी न मामवति स-द्वीपा रत्नसुरपि मेथिनी - रघु० १।६५, अश्वत्थ वसु नितान्तमृजला मेथिनीमपि हरन्त्यरातयः - कि० १३।५३ 2 जमीन, नुमि, मिट्टी 3. स्थान, जगह 4 एक कोष का नाम । सम० - ईशः - पति राजा, इव पूल ।

मेथुर (वि०) [मिद् + धृच्] 1 मोटा 2 बिकना, स्निग्ध मृदु 3 ठोस, सघन मा० ८।११, फूला हुआ, भरा हुआ, उका हुआ (प्राय करण के साथ या समास के अन्त में) - मेथेमेदुरमम्बरम् - गीत० १, मकरन्दसुन्दर-गलमन्दाकिनीमेदुर (पदाविद्या) - ३ ।

मेथुरित (वि०) [मेदुर + इत्च्] मोटा, कुनाया हुआ, सघन किया हुआ - उत्तर० १ ।

मेथ (वि०) [मेद + यत्] 1 चर्बीयुक्त 2 सघन मोटा । मेथ् (भ्वा० उभ० दे० 'मेप' ।

मेथः [मिथ्यते इत्यते पन् अच् - मेप्, -घञ्] 1 जग जैसा कि 'नग्मेध' में 2 यज्ञीय पशु, यज्ञ में बलि दिया जाने वाला पशु । सम० - अः विष्णु का विशेषण ।

मेथा [मेप् अच् + टाप्] (ब० सं० मं स् दुस्, तथा नकारात्मक अ पूर्व जाने पर मेथा का बदल कर 'मेथस्' रूप रह जाता है) 1 धारणात्मक शक्ति, (स्मरण शक्ति की) धारणाशक्ति धीरार्थभावती मेथा अमर० 2 प्रजा वृद्धि भ्रम० १०।१४, मनु० ३।२६३, याज्ञ० ३।१७४ 3 सार्वज्ञी का एक रूप - यज्ञ । सम० - अतिथिः अनुमति का एक विद्वान् भाष्यकार, षडः कालिदास का विशेषण ।

मेथावन् (वि०) [मेथा + मनुप् अक्म्] वृद्धिमान समझदार ।

मेथाविन् (वि०) [मेथा + विनि] 1 बहुत समझदार अच्छी स्मरणशक्ति वाला 2 वृद्धिमान समझदार प्रजावान् - ए० 1 विद्वान् पुरुष, अति विद्यामयन 2 तोता 3 धातक पेड़ ।

मेदि २० 'मेदि' ।

मेघ (वि०) [मिध्+घञ्] मेघाय हित यत् वा] 1. यज्ञ के लिए उपयुक्त—यज्ञ० १११५५, मनु० ५१५५
2. यज्ञ सबधो, यज्ञीय—मेघोनावेनेवे, रघु० १३१५,
3. विशुद्ध, पुष्पसौल, पवित्रात्मा, रघु० ११८५,
३१३१, १४८१, —घ्नः 1. बकरा 2. बर का पेड़
3 जो (मैलिनी के अनुसार), —घ्ना कुष्ठ पीषो के नाम ।

मेघना [मन्+घञ् अकारस्य एत्वम्] 1 एक अक्षरा (शकुन्तला की माता) का नाम 2. हिमालय की पत्नी का नाम । सम०—अलम्बा पार्वती का नाम ।

मेघा [घान्+घञ्, नि० साधु] 1 हिमालय की पत्नी का नाम—मेगा मुनीनामपि माननीया (उपमेमे) कु० १११८, ५१५ 2 एक नदी का नाम ।

मेघाक्षः [मे इति नाद्योऽप्य] 1 मोर 2. बिल्व 3 बकरा ।

मेघिका, मेघी (स्त्री०) एक पौधा जिसे सहृदी कहते हैं (इसके पत्तों से लाल सा रस निकाला जाता है, जिससे कि जगुलियों के नाभून्, पेटों के तले तथा हाथ की हथेलियाँ रंगी जाती हैं) ।

मेघ् (घ्ना० वा०) मेघते) जाना, हिमना-जुलना ।

मेघ (वि०) [मा (मि)+यत्] 1 नापने योग्य, जो नापा जा सके 2 जिसका अनुमान लगाया जा सके 3. पहचाने जाने के योग्य, श्रेय, जो जाना जा सके ।

मेघः [मि+घ्] उपास्थानों में वर्णित एक पर्वत का नाम (ऐसा माना जाता है कि समस्त ब्रह्म इसके चारों ओर घूमते हैं, यह जो कहते हैं कि मेघ सोने और रत्नों में भरा हुआ है) —विश्वमेघं परमिसाकृतं—नी० १११६, स्वात्मन्येव हमाप्यहो महिमा मेघं मे रोचते—भर्गु० ३१५१११ श्वाश्याला के बीच का गुरिया 3 हार के बीच की मणि । सम०—आमन् (पु०) घिच का विशेषण, —अमन् तुकुवे के आकार की बनी एक आकृति ।

मेघक [मेघ+कन्] घुप, घुनी ।

मेघः [मिल्+घञ्] मिलान, एकता, सलाप, समवाय, समा (मेलक) भी ।

मेघानम् [मिल्+गिध्+न्युट्] 1 एकता, सबोध 2 समाज 3 मिश्रण ।

मेघा [मिल्+गिध्+अञ्+टाप्] 1. मिलना, समागम 2 समवाय, समा, समाज 3 सुवर्ण 4 नील का पौधा 5 स्वाही, मशी 6. संगीत की माप, स्वरधाम । सम०—अमृकः, —अमृन्, —अम्वः, —अम्वः—अम्वः कलम शान, दात ।

मेघ् (घ्ना० वा०) मेघते) पूजा करना, सेवा करना, टहल करना ।

मेघः [मिधते अयोऽप्य स्पष्टते—मिध्+अञ्] 1 मेघा,

मेघ 2 मेघ राशि । सम० अम्वः इन्द्र का विशेषण, अम्वः एक ऊनी कबल या घुस्सा, पालः—पालकः गडरिया, —कौत्स्य मेघ या बकरे का मास, घुचम् मेघों का रेवड़ ।

मेघा [मिधतेऽप्य मिध्+अञ्+टाप्] छोटी इलायची ।
मेघिका, मेघी [मेघ+कन्+टाप्, इत्वम्, मेघ+घीप्] मेघ (मादा) ।

मेघः [मिध्+अञ्] 1 लघुपाका करना, मूत्र करना 2 मूत्र 3 मूत्र सबधो रोग 4 मेघा 5. बकरा । सम० घ्नी हल्दी ।

मेघानम् [मिध्+न्युट्] 1 मूत्रोत्सर्ग करना 2 मूत्र 3 लिम ।

मेघ (वि०) (स्त्री०—घी) [मिध्+अञ्] 1 मित्रसबधो 2 मित्र द्वारा दिया गया 3 बोस्ताना, कृपापूर्ण, लोहावर्धपूर्ण, कृपालु मनु० २१८७, भग० १२१७ 4 मित्र नाम के देवता से सबध रखने वाला (जैसा कि 'मूहते') कु० ७१६, प्र. 1 ऊँचा या पूर्ण बाहुल्य 2 एक विशेष वर्णसंकर जाति मनु० १०१ २३ 3 मुदा, घी 1 मित्रता, दोस्ती, सद्भाव 2 पविष्ठ मन्त्र वा साहचर्य, मिलान, सपन, प्रत्येक श्चुटिकमलाभोदमौरीकथाय मेघ० ११ 3 अनुराधा का नक्षत्र, अम्व 1 मित्रता, दोस्ती 2 मलोत्सर्ग करना—मनु० ६१५० 3 अनुराधा नाम का नक्षत्र, (इसो अर्थ में 'मैत्रभम्' शब्द भी) ।

मेघकम् [मेघ+कन्] मित्रता, दोस्ती ।

मेघावधकः [मिधय बहगएव इ० सं०, मिधस्यानङ्; मित्रावगण+अञ्] 1 वात्स्यिक का विशेषण 2 अवस्य का विशेषण 3 यज्ञ के प्रतिनिधि श्चुन्विजो में से एक ।

मेघावधमि [मित्रावगण+इञ्] 1 अवस्य का विशेषण 2 वधिष्ठ का विशेषण 3 वात्स्यिक का विशेषण ।

मेघेय (वि०) (स्त्री०) घी) [मैने मित्रताया साधु, मेघ+इञ्] दोस्त या मित्र से सबध रखने वाला, दास्ताना, —कः एक वर्णसंकर जाति का नाम ।

मेघेयकः [मैनेय+कन्] एक वर्णसंकर जाति का नाम मनु० १०३३१ ।

मेघेयिका [मैनेयक+टाप्, इत्वम्] मित्रो या मित्रराष्ट्रों में सधर्ष, मित्रवृद्ध ।

मेघ्यम् [मिध्+अञ्] मित्रता, दोस्ती, मैत्री ।

मैत्रिकः [मिधिलायां मत्र—अञ्] मिथिला का राजा रघु० ११३२, ४८, —घी मीठा का नाम रघु० १२१९ ।

मैत्रुण (वि०) (स्त्री०—घी) [मिधुनेन पितृत्वम्—अञ्]

1. मृगमय, मुदा हुआ 2. विवाहसूत्र में माहड 3. सधोय से सबध रखने वाला, —कन् 1. रति श्रीका,

समो, -मृत् मैथुनमप्रवृत्तम् पंच० २।१४ 2. विवाह
3. मिलाप, सयोग। सम०---कषः मैथुनोन्माह की
उत्पत्त्या,--बसिन् (वि०) महावासी, -वैराग्यम् स्त्री-
मयोग से विरक्त।

संयुक्तिका [मैथुन + यु + टाप्, इत्यम्] विवाह द्वारा
मिलाप, वैवाहिक सम्बन्धन।

संवाचकम् (नपु०) समस, वृद्धि।

संवाकः [वेनकाया भव अच्] हिमालय और मेला के पुत्र
(एक पर्वत) का नाम, यही एक ऐसा पर्वत था
जिसके डैने मयूर से मिश्रता होने के कारण अशुभ्य
रहे जबकि इन्हें जोर दूधरे पर्वतों के बाजू काट
शक्त, नु० कु० १।२०। सम स्वल् (स्त्री) पार्वती
का विशेषण।

संवाक (पु०) मधुवा, माहीगीर।

संवेः (पु०) एक राक्षस का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मार
दिया था। सम० हनु (पु०) कृष्ण का विशेषण।

संवेद्य, -स्य, संवेद्यकः, -कम् [विग दशम्ये भव -इच्]
एक प्रकार का मादक पद्य अधिपजनिय कपुभि रीत-
मैत्रेयिणाय पि० १।१।५१, एता० ३४।

संविन्द [विन्द -अच्] मधुमक्खी, भोग।

संवेत्तम् (नपु०) जिनो जलवा की उगरी हुई आल।

संश्ल [श्ल० पर०, चुरा० उ०] मांशुनि, मांशुयनिने)
1 छोड़ना स्वतन्त्र करना, मुक्त करना, मुक्ति देना
2 डोका करना, झालना, बिगाड़ना 3 बलपूर्वक
मौलना 4 डालना, फेंकना, उड़ालना 5 डमकाना।

संश्ल [श्ल० - घञ्] 1. मुक्ति, छुटकारा, बचाव, स्वतन्त्रता
मात्रुता तब दन्धे मांशे के प्रवर्धित का०, मेघ०

६१, लक्ष्यमाक्षा गुणार्थन रघु० १।३२० चुराया
व पूरा मांशम् - १।३।१९, 2 उद्धार, परिचाय,

माचन 3 परममुक्ति, आशामयन अर्थात् पुनर्वन्ध के
बन्धन से आत्मा की मुक्ति, मानवजीवन के चार

उद्देश्य में से अन्तिम दे० अर्थ, अथ० ५।२८,
१।३३०, रघु० १।०।८८, मनु० ६।३५ 4 मृत्यु,

5 अब पुनन अबलपन, निरुता श्लथनीमंमंरपय-
माक्षा-कु० ३।३१ 6 डीमा करना, मोक्षना, बन्धन-

मुक्त करना वैश्वमोक्षोत्पत्तिकानि मेघ० ९९
7 डमकाना, निराना, बहाना बाधमोक्ष, अक्षमोक्ष

8 निघाना लपाना, फेंकना, हागना बाधमोक्ष
घ० ३।५ 9. बन्धनना, छितराना 10 (किसी

अपि का) परिशोध करना 11 (श्रीशिव से)
प्रणयन पर की मुक्ति। सम०---कषः मोज

प्राप्त करने का साधन,--वेधः प्रतिष्ठ वीनी यात्री
ह्यनसाय के माध अयहूत होने वाला विशेषण,

-वैराग्य पूर्व,--दूरी कोची मायक नयरी का विशेषण।

संश्लयम् [मोज + म्युट्] 1. छोड़ना, मुक्त करना, परम

मुक्ति, स्वतन्त्रता देना 2 उद्धार, छुटकारा 3 डीका
करना, मोक्षना 4 छोड़ना, परिचाय करना, त्याग
देना 5 डमकाना 6 अपव्यय करना।

सोष (वि०) [मूह + ष अच् वा, कुषयच्] 1. व्यर्थ, व्यर्थ-
हीन, निष्फल, लाभरहित अलफल--वाष्पना सोष
वरमनियुने नाथये लब्धकामा-मेघ०६, सोषयति
कलमस्य वेष्टितान्--रघु० १।१।१९, १।४।५५, अथ०

१।१२ 2. निषेधय, निष्यवोजन, अनिधित 3 छोड़ा
गया परिपक्व 4 झाली,--अः बाध, बेरा, साधुवन्धी,

--अम् (अव्य०) व्यर्थ, बिना किसी प्रयोजन के,
बिना किसी उपयोग के। सम०---कर्मन् (वि०)

अनुपयुक्त कार्य में व्यय,--दुष्प्रा बांश स्त्री।

सोषोनिः साधुवन्धी, बाध।

सोषः [मूच् + षच्] 1. केले का पीना 2. शोषाम्बन वा
सिंहम्बन का पेय,--आ 1 केले का वृक्ष 2 कपास

का पीना 3 नील का पीना,--अम् केले का फल।

सोषकः [मूच् + ष्यच्] 1 मकल, तन्वासी 2 परममुक्ति,
छुटकारा 3 केले का पीना।

सोषय (वि०) (स्त्री०-शी) [मूच् + म्युट्] छोड़ने वाला,
स्वतन्त्र करने वाला,--अम् 1 छोड़ना, मुक्त करना,

स्वतन्त्र करना, मोज 2 मुक्त उतारना 3 विवहृत
करना, उत्सर्जन करना 4 किसी कर्तव्यधार वा अच्

का परिशोध करना। सम०---कृष्णः कषा, (कपड़ा
जिससे रूप बल आदि जाना जाय)।

सोषयिन् (वि०) [मूच् + षिच् + षच्] छुड़ाने वाला,
स्वतन्त्र करने वाला।

सोषातः [मूच् + षिच् + अच् = सोष + अट् + अच्] 1. केले
का मुदा वा दम 2 चन्दन की लकड़ी।

सोषकः, -कम् [मूट् + ष्यच्] बटी, बोली,--अम् बुद्धा वात
की दो परिधायी जो श्वाह के बबलर पर ही जाती हैं,

(अन्तकुणपथइवम्)।

सोष्टयिन् (मूट् + ष्यच् वा० मूट् + ष्यच् + (माने)क) [मूट् + ष्यच्]
जब कभी बातचीत चलती है वा अन्वयार्थका होकर

मायिका काल आदि कुरेती है तो उस समय चुप-
चाप बिना हड्डी के अपने दिव के प्रति स्नेह की

अभिव्यक्ति। उल्लेख मणि ने इसकी परिभाषा की
है -- कालन्मरकतवाती वृष्टि उद्भवावहितः।

शकटधमयिकावयव सोष्टयिन्वतीवैते ॥ दे० सा०
२० १४१ भी।

सोषः [मूच् + षच्] 1 जाम्ब, प्रकलता, पूर्व, सुधी
यथावथायथ मोक्षस्व- उत्तर० २।१२, रघु०

५।१५ 2 महाअय, मुषधि। सम०---अव्यः वाय
का पेय।

सोषक (वि०) (स्त्री०-आ, शी) [सोषयति-मूच् + षिच्
+ ष्यच्] छुड़ाना, आन्वयव, प्रकलताव्यय,--अ-

—कम् मिडाई, लड्डू --पात्र० ११२८९, —कः एक वर्ष तक जाति (साथ पति और गृह माता से उत्पन्न) ।

मोक्षम् [मुद् + स्वट्] १ हर्ष, प्रसन्नता २ प्रसन्न करने की क्रिया ३ मोक्ष ।

मोक्षयन्तिका, मोक्षयन्ती; मुद् + यिच् + यन् + ङीप् - मोक्षयन्ती + क्त् + टाप्, ह्रस्व) एक प्रकार की चमेली ।

मोक्षिन् (वि०) [मुद् + यिनि] १ प्रसन्न, मुग्धी, युवा २ प्रसन्नता-दायक, आनन्दप्रद, ली ३ नाना प्रकार (अभोध, मन्त्रिका, गृही) के पीपों के नाम २ कस्तूरी ३ मादक या लीची हुई घराब ।

मोरटः [मूर + अट्] १ मोटे रस वाला एक पीप २ लोखी बर्राई पाप का दूष, —टम् गले की जड़ ।

मोकः [मुप् + मज्] १ चोर, मुट्टेरा २ चोरी, लूट ३ मूठकमोद, चोरो, लडा ले जाना, हडपना (आप से भी) —न पुनमोपमर्हयुषामजना —मूठ० १, इष्टि-मोये प्रसोय —मो० ११ ४ चुटई हूः सर्पात् । सम० हृत् (पु०) चार ।

मोकरः [मूः + म्बुक्] मुट्टेरा, चोर ।

मोषयम् [मुप् + म्बुट्] १ चटना, चमोदना, चोरी करना, हडपना २ काटना ३ मूट करना ।

मोषा [मुप् + ज + टाप्] चोरी, लूट ।

मोह [मूह + पञ्ज्] १ बेतना की हानि, भ्रूलि होना, नि सत्ता, बेदुसी मोहलानवर्गन्मृष्ये म्बुने म्बु-माना—विश्व० ११८, कृ० ३१३ २ चमराहट, गमोह, उड्डिलना, अव्यवस्था—पञ्जाबा न पुनमोह-येव वास्यमि पाश्चर—मम० ४१२५ ३ मूर्खता, अज्ञान, दीवानापन निवीरिंरुंन मोहानुदुपेनामि मागम् २५० ११२, ज० ३०२५ ४ मूर्ति, मून, अमूर्ति ५ आन्वय, अचम्मा ६ कष्ट, पीडा ७ शत्रु को कला ज्ञा शत्रु का पराजय करने में प्रयत्न की शाय ८ (दर्शन० में) व्यापार या मय को पराजयने में अवरोधक है, (अथक अन्तार मनुष्य का सामाजिक पक्षधो की साम्यधिकता में विध्वंस होता है, और वह विषय मुझे मे मति करने का अर्थन हो जाना है) । सम० कलिक मोहा और अमोहक ज्ञान, निहा अर्थाविवचन कश्च व्यामात्रक शत्रु,—राशिः (स्त्री०) प्रलय की गत शत्रु नि समान विध्वं नष्ट हा ज्ञानया, ज्ञानम्बु विध्वा मिडान्म या मूः ।

मोहम् (वि०) (मि००-जी) [मूह + यिच् + ण्वट्] १ अजीवन करने वाला २ अजीवन करने वाला, उड्डिल करने वाला विह्वल करने वाला ३ व्यापारक, चमराजक ४ आकरक, न ३ मिह का विशेषण २ काम के पाप बाधो में म पर नगना, म्बु १ अजीवन करना २ मूल करना, पयना देना, विह्वल

करना, ३ अज्ञता, बेहोशी ४ दीवानापन, व्यामोह, मलगी ५ फुसलाना, प्रलोभन करने के लिये म्बु-टाना । सम० अक्षयम् एक ऐसा अज्ञान-अपन जो उस व्यक्ति का जिस पर कि चलाया जाय, म्बुत् कर ले ।

मोहकः [मोहन् + के + क] मूँच का महीना ।

मोहित (मु० क० इ०) [मूह + क्त] १ अजीभुन किया हुआ २ चमराया हुआ, विह्वल ३ व्यामोह, आहट्ट, म्बु किया हुआ, फुसलाया हुआ ।

मोहितो [मूह + यिच् + यिनी + ङीप्] १ एक मन्त्ररा का नाम २ मनोहारिणी स्त्री (अमृत बाटते धमप राजसा को उगने में विष्णु ने यही रूप धारण किया था) ३ एक प्रकार का चमेली का फूल ।

मोक (कृ) मिः (पु०) कोका—उत्तर० २१२९ ।

मोक्षिकम् [मुक् + क्त् + इत्] मोक्षी मोक्षिक न गये गये मुपा० । सम०—आचमनी मोक्षियों की लठी - यमिका मोक्षी की बालो म्बुने बाली स्त्री,—शाम्बु (नपु०) मानियों की लठी—प्रसन्न मोक्षिया का उन्म देते बाली मोषो—मूर्खता (स्त्री०) मोक्षिको की मोषो, सर, मानिया की लठी, हा शत्रु ।

मोक्षयम् [मूः + यज्] मुगापन, मुकता, मोन ।

मोक्षरि [मूक्षर + इज्] एक कुक का नाम - पर गद मोक्षरिणि हलाचनम् का० ।

मोक्षयम् [मुक्षय् + भाव व्यञ्ज्] १ वापुसीयना, बहु भाषिना २ वाली मानदाभि, मुडा आशय ।

मोक्षयम् [मुक्ष + व्यञ्ज्] पूर्व शक्ति, शक्तिपटा ।

मोक्षयम् [मुक्ष + व्यञ्ज्] १ मुकता, मुकता २ कलादीना सन्कता, भावापन ३ लाक्ष्मी, मोक्षयम् ।

मोक्षयम् [मोक्ष + अण्] कले का फल ।

मोक्ष (वि०) (स्त्री०) जी [मूः + अण्] मूः की धाम का बना हुआ, क मूः की धाम का पना ।

मोक्षी [मोक्ष + ङीप्] मूः की धाम की तीन - १११। यनी शाशय की गयी—कृ० ५११०, यनु० ११२ । सम०—निवृत्तयम्,—अक्षयम् मूः की धाम का यनी कटिमुत्र सहनता, उपनयन सम्पन्न,—यनु० २०३१, २० ।

मोक्षयम् [मूः + यज्] १ अज्ञान, अर-रि मुकता २ मरकतन ।

मोक्षयम् [यमभ्येदम् अण्] मूः की भाता ।

मोक्षिकः [मोक्ष + उक्] हलवाई ।

मोक्षयिनि [यमभ्येद + इज्] कोका ।

मोक्षयिनी (वि०) [मूक्षय + यञ्] (वि०) ३ मानिया (मूः) शोने के उपरकत हो ।

मोक्षयम् [मूः + यज्] अण्] मुक्ती, मुकभाष, मोन मर्षाच-माधयम्, मोक्षय्यत् 'शत्रु हिलाज' मोन कलाचर 'श्रीय को माला म्बुभाषी' । सम० मुडा म्बु धाम को अधिर्षिच, —अक्षय् म्बु रत्ने की प्रिया ।

मोक्षिन् (वि०) (स्त्री०-मौ) [मोक्ष + इति] रूप रहने की प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, बंधु, भूक, - अर्थ० १२।१९ पुं० एक पुण्यशील ऋषि, तस्मात्सी, शाशु ।

मोरलिकः [मूरज + ठञ्] मूदन बनाने वाला ।

मोर्यम् [मूर्य + घञ्] मूर्खता, बुद्धयन्, अज्ञता ।

मोर्यैः [मुर्याया अपत्यम् मूर + ञ्] चन्द्रगुप्त ने भारत के राजाओं का एक बन् मोर्ये नवे राजनि मूरा० ५।१५, मोर्यैःहिण्ड्यापिचिरर्षा प्रकल्पिताः महा० (३३ सप्तमे में 'मोर्यै' शब्द के अर्थ में विद्वानों में मतभिन्नता है) ।

मोर्षी [मुर्याया विकार अच् + ङीप्] १ बन्धु को डोरी ---मोर्षीकियाहो भुज श० १।१३, मोर्षी बन्धुषि बालना रघु० १।१९, १।८८, कु० ३।५६ २ मर्यादा की बनी लपटी (अग्निषो के बाण्य किये जाने वाला मनु० २।५२) ।

मोल (वि०) (स्त्री०-ला-मौ) [मूल वेति मूलादागतो वा प्रत्ये] १ मूलमूल, मौलिक २ प्राचीन, पुराना, (पश्चात् प्राति) बहुत समय से चली आती हुई ३ म-बुल्लोद्वय उच्च कुल में उत्पन्न - गीर्दियों में गजा की मेढा में पया हुआ, प्राचीन काल में पदाब्ज, प्राग्बलिज, मनु० ७।५४, रघु० १२।५७, ल-पुत्राया वा बलकामयान मनी-रघु० १२।१२, १५।१०, १५।८ ।

मोलि (वि०) [मल्लगुहुरभव इज्] प्रधान, प्रमुख, संपन्न-अभिन्नप्रसिद्धता मोलिना मोरयेण, भाषि० १।१२१, लि० १. प्रधान, विरांगमि मोली वा रक्ष्याञ्ज्वायम् वैशी० ३।६० रघु० १३।५९ कु० ५।७२ २ रिमो बन्धु का मर या चांटी, उच्चतम विन्दु, उत्तर० २।२० ३ अवाकबुध, लि० (पुं० या स्त्री०) १. मात्र, किरोट, मुहुट-भाषि० १।७३ २ मर को चांटी के बाल, मिथा जटापौलि कु० ५।१५ जटाजट मलि० ३ मोड़ी, केवाविन्याय वैशी० ५।३४ लि०-मौ (स्त्री०) पृथ्वी । सम० मलिः-रक्षम् मुहुट की मलि मुहुट में मगा रथ, अक्षयम् मिगंमुपय, मुहुडम् मात्र, किरोट ।

मोलिक (वि०) (स्त्री०-मौ) [मूल + ठञ्] १. मूलमूल २ मूल, प्रधान ३. परिचा ।

मोय्यम् [मूर्य + अच्] मूल्य, कीमत ।

मोय्या [मूटि गृहण्य अस्या षीडायाश्च - मूटि + ञ] मूके बाजी, पूरे बाजी, मूटाभूटि मूठबड़े ।

मोय्यकः [मूटि + ठञ्] बट्वाघ, ठग, धूर्त ।

मोय्यल (वि०) (स्त्री०-मौ) [मूल + अच्]

१. मूलाय को भाति बना हुआ, मूल के आकार का २ [मूल आधि] जो बटाओं से लगा बाघ ३. (पर्वे आदि) जो गदा बुद्ध से सचष्ट ही ।

मोय्यती, मोय्यलिकः [मूलतं + अच्, ठञ् वा] श्लोठिनी ।

म्या (म्या० पर० प्रथमि, भ्रात) १. (मन में) दोहराना

२. परिचय पूर्वक याद करना ३. स्मरण करना, आ- १. शोचना, मनन करना-यादाभ्युत्थयन्मारात्समायत्तम्

भाषि० ५।०२ २ परपरासुकर दे देना, निर्धारित करना, उल्लेख करना, शोचना, बोधना त्यागाम- न्नि प्रकृति पुरुषार्थप्रवर्तिनीम् कु० २।१३, ५।८१, ६।३१ ३ अव्ययन करना, शोचना, याद करना

यद्बुद्धा सम्प्राप्ताभ्याम् कु० ५।१५, अटि० १७। ३०; कथा १ भाषति करना २. निर्धारित करना, निर्दिष्ट करना, संक्षिप्त धर्मसूचकारा समा- न्नि उत्तर० ४ ।

म्यात् (मं० कं० कृ०) [म्या + क्त] १ दोहराया गया २ याद किया गया, अव्ययन किया गया ।

म्यम् (म्या० पर० प्रथमि) १. रचयना २ देर लपाना, सचय करना, इकट्ठा करना ३ लेप करना, रचयना, मयना ४ विषयन करना, मिलाना ।

म्यात् (मं० कं० कृ०) [म्या + क्त] १ दोहराया गया २ याद किया गया, अव्ययन किया गया ।

म्यम् (म्या० पर० प्रथमि) १. रचयना २ देर लपाना, सचय करना, इकट्ठा करना ३ लेप करना, रचयना, मयना ४ विषयन करना, मिलाना ।

म्यत् (मं० कं० कृ०) [म्या + क्त] १ दोहराया गया २ याद किया गया, अव्ययन किया गया ।

म्यम् (म्या० पर० प्रथमि) १. रचयना २ देर लपाना, सचय करना, इकट्ठा करना ३ लेप करना, रचयना, मयना ४ विषयन करना, मिलाना ।

म्यत् (मं० कं० कृ०) [म्या + क्त] १ दोहराया गया २ याद किया गया, अव्ययन किया गया ।

म्यम् (म्या० पर० प्रथमि) १. रचयना २ देर लपाना, सचय करना, इकट्ठा करना ३ लेप करना, रचयना, मयना ४ विषयन करना, मिलाना ।

म्यत् (मं० कं० कृ०) [म्या + क्त] १ दोहराया गया २ याद किया गया, अव्ययन किया गया ।

म्यम् (म्या० पर० प्रथमि) १. रचयना २ देर लपाना, सचय करना, इकट्ठा करना ३ लेप करना, रचयना, मयना ४ विषयन करना, मिलाना ।

म्यत् (मं० कं० कृ०) [म्या + क्त] १ दोहराया गया २ याद किया गया, अव्ययन किया गया ।

म्यम् (म्या० पर० प्रथमि) १. रचयना २ देर लपाना, सचय करना, इकट्ठा करना ३ लेप करना, रचयना, मयना ४ विषयन करना, मिलाना ।

म्यत् (मं० कं० कृ०) [म्या + क्त] १ दोहराया गया २ याद किया गया, अव्ययन किया गया ।

म्यम् (म्या० पर० प्रथमि) १. रचयना २ देर लपाना, सचय करना, इकट्ठा करना ३ लेप करना, रचयना, मयना ४ विषयन करना, मिलाना ।

म्यत् (मं० कं० कृ०) [म्या + क्त] १ दोहराया गया २ याद किया गया, अव्ययन किया गया ।

म्यम् (म्या० पर० प्रथमि) १. रचयना २ देर लपाना, सचय करना, इकट्ठा करना ३ लेप करना, रचयना, मयना ४ विषयन करना, मिलाना ।

म्यत् (मं० कं० कृ०) [म्या + क्त] १ दोहराया गया २ याद किया गया, अव्ययन किया गया ।

म्यम् (म्या० पर० प्रथमि) १. रचयना २ देर लपाना, सचय करना, इकट्ठा करना ३ लेप करना, रचयना, मयना ४ विषयन करना, मिलाना ।

म्यत् (मं० कं० कृ०) [म्या + क्त] १ दोहराया गया २ याद किया गया, अव्ययन किया गया ।

म्यम् (म्या० पर० प्रथमि) १. रचयना २ देर लपाना, सचय करना, इकट्ठा करना ३ लेप करना, रचयना, मयना ४ विषयन करना, मिलाना ।

विस्फट (वि०) [स्फेच्छ् + क्त नि० साध्] 1 अस्फुट बोला हुआ (मानो बर्बर लोभो ने बोला हो) 2 अस्फट असभ्य (बर्बर), भतस्कूल 3 कुम्हलाया हुआ, मुझाया हुआ.—ष्टम् अस्फुट या अस्फुट भाषण ।

स्फुच्, **स्फुञ्च्**, **वे० स्फुच्**, **भुञ्च्** ।
स्फेच्छ् या **स्फेच्छ** (म्वा० पर०), **चुरा०** उभ० स्फेच्छति, स्फेच्छति, **लिट्**, **स्फेच्छति** अव्यवस्थित रूप से बोलना, अस्फुट स्वर से बोलना, या बर्बतापूर्वक बोलना ।

स्फे.च्छः [स्फेच्छ् + घञ्] 1 असभ्य, अनार्थ (जो मस्कूल भाषा न बोलता हो), जो हिन्दू या आर्य पद्धतियों का पालन न करता हो), विदेशी,—घाञ्छा स्फेच्छप्रसिद्धिन्मु विरोधादर्शने प्रति—जै० न्या०, स्फेच्छान् मुञ्चयते—या—स्फेच्छनिबन्धनिषण क० पनि करवाल्गम्—मोत० ? 2 जाति से बहिष्कृत नीच मनुष्य, बौधायन 'स्फेच्छ' शब्द की परिभाषा देना है—मोनासभादको धस्तु विरुद्ध बहु भाषने सर्वाचार-विहीनश्च स्फेच्छ इत्यभिधीयते 3 पापी दुष्ट दुष्ण,—छम् ताबा । मम० आत्सव्य ताबा,—आश. गेह्रं—आत्सव्यम्—मुलम् ताबा—कव्य लट्मुन, —जाति (स्त्री०) असभ्य, जगली (बर्बर) जाति, पहाड़ी, बर्बर,—बैशः,—सपञ्चलम् बहु देश जहाँ जनाः नाग

(बर्बर) रहते हैं, विदेश या असभ्य देश मनु० २१२३, —भाषा विदेशी भाषा,—प्रोक्कः गेह्रं,—(—मन्) जो,—भाष् (वि०) बर्बर जाति की या विदेशी भाषा बोलने वाला ।

स्फेच्छित (पू० क० ह०) [स्फेच्छ् + क्त] अस्फुट रूप से या बर्बतापूर्वक बोला हुआ,—तम् विदेशी भाषा 2 व्याकरण विरुद्ध शब्द या भाषण ।

स्फेट्, **स्फेद्** (स्फेट् इ ति) पाण्य होना ।

स्फेच् (म्वा० वा० स्फेक्ते) पुञा करना, सेवा करना ।

स्फे (म्वा० पर० म्वायति म्वात) मुझांना कुम्हलाया म्वायना भूकहाया—भामि० १३३६, सि० ५१८३ 2 बक जाना, निहाल होना, आत्म या ममान जाना एषि मम्मनुने मणिदृष्टिर्भाषितौ रघु० १११५, भट्टि० १४६३ 3 उदास या निम्न होना, उन्माहहीन या हतात्म्याह होना मम्मनी माय विधादन काव्य० १०, म्वायते मे भना हीदम्—महा० 4 पनला या कुञ्जाय होना 5 झोला होना, मष्ट होना परि 1 मुझांना, कुम्हलाया, परिम्मानमुञ्चार्थयम् कु० २१० रघु० १४५० 2 निम्न या निम्नमात्रित होना, प्र 1 मुझांना, कुम्हलाया 2 उदास या निम्न होना 3 निहाल होना 4 मर्दान या मन्दा होना, मेला होना ।

य

य [या + इ] 1. जो चलना है या गतिमान है, जान वाला, मन्ता 2 बाकी 3 हुआ, बापू 4. मिलाप 5 सहा 6 जी ।

यक्त् (यक्त्) **जियर** (वहले पांच बचने में उन मन्त्र का कोई स्मृ नहीं होता, कर्म०, द्वि० व०, के पश्चात 'यक्त्' शब्द का ही यह वैकल्पिक रूप है) ।

यक्त् (यक्त्) [य मयम करानि इ क्विप् मुक् च] **जियर**, या तद्वान प्रभाववालिता । मम०—आलिप्तका तैलवांन् (भीरे के आकार का एक छाटा या कीड़ा) । **बर्बरम्** जियर की वृद्धि, कोय जियर को इकने वाली जिल्लो ।

यक्ष [यक्षणे-यज्ञ् + (कर्मणि) घञ्] एक देवदेवि विशेष जो धनमपति के देवता कुबेर के सेवक है तथा उसके कोय और उद्यानों की रक्षा करत है यक्षानमा यक्षपति धनेश यक्षनि वै प्रायमादादिभ्यना हरि०, मेष० १, ६६, भग० १०१०३, १११०० 2 एक प्रकार का भूत-जैत 3 इन्द्र का महल 4 कुबेर, —की यक्ष वाति की स्त्री । धम०—अधिच, —अधिपति,—इन्द्रः

यक्षा का राजा कुबेर, आचार्य जर्जर का पुत्र, कर्बक एक प्रकार का लय विमर्से करुण, अंग, कम्पूरी और कर्कोल समान भाषा में डाल जाने है (कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार चन्दन और मेमर भी इनमें सम्मिलित किये जाते हैं (कर्पूरायुक्तमनुरीक-स्फोर्णैयंसकर्षमः अमर०, कुम्हलायायुक्तमनुरीक कपर कदम तथा । महासुयन्त्राभियन्त नामः यक्ष कदम ॥), **यक्षः** यक्ष या भूत प्रेतारि की बाधा से दूख व्यथित, लक्षः बटवृक्ष, यक्षः यूल, लखान, रत्त एक प्रकार का मासक पेय, राष् (५०) —राक्षः कुबेर का नाम, राक्षिः दीपशाला का उम्वय **यिषः** यक्ष जैसा अर्धजो जो विगुलधनमपति को म्वायी हो परन्तु स्वयं कुष्ठ न करे ।

यक्षिणी [यक्षः + णि + ङीप्] 1 यक्ष जाति की स्त्री 2 कुबेर की यक्षी का नाम 3 दुर्गा की सेवा में रहने वाली यक्षिणी 4 एक जन्मदा (इसका सन्तप मर्त्यलोक वासिधो से कहा जाता है) ।

यक्ष्यः, **यक्ष्यन्** (५०) [यक्ष् + मन्, मीप् वा] 1 केंद्रो

-- रसः, -रेलस् (नपु०) सोम, बरह्म शूकरावतार में विष्णु, बलिः, -रुली (स्त्री०) सोम की बेल या पीया, बाह् यज्ञ के लिए तैयार की गई या घेरी गई भूमि, -बह्मन्ः विष्णु का विशेषण, -बुधः बृहस्पति, -बेवि, -बी (स्त्री०) यज्ञ की बेदी, शरभम् यज्ञकाल या अस्वायी छप्पर जिसके नीचे बैठकर यज्ञ किया जाय, शाल्वा यज्ञ का कपड़ा, शेष, धम् यज्ञ का अवाशिष्ट--यज्ञस्य तथामृतम् मनु० ३।२८५, -श्रेष्ठा सोम का पीया, -सर्वम् (नपु०) यज्ञ में उपस्थित जनमण्डली, -संभारः यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री, -सारः विष्णु का विशेषण, -सिद्धि (स्त्री०) यज्ञ की प्रति, -सुखम् दे० यज्ञोपवीत, सेन राजा इन्द्र का विशेषण, -स्वाधुः यज्ञ का सम्पन्न, -हृत् (पुं०) -हृत् शिव का विशेषण।

यज्ञिकः [यज्ञ + इत्] हाक का पेट।

यज्ञिय (वि०) [यज्ञाय हित् -य] 1 यज्ञमन्त्रो, यज्ञोपवृत्त, वा यज्ञपरक 2 पुनोत्, पवित्र, दिव्य 3 अर्चनीय, पुत्रनीय 4 भक्त पुण्यशील, य 1 देव, देवता 2 तीर्थरायण, इन्द्र। मम० देव यज्ञो का देव कृष्णामरुतु चरति पुनो यज्ञ स्वभावन, स यज्ञो यज्ञिया देसा स्नेच्छदेवस्तत् पर मनु० १।०३, शाल्वा यज्ञमण्डपः

यज्ञीय (वि०) [यज्ञ + छ] यज्ञ संबंधी, य गृह्य का पेट। मम०--बहुधा यज्ञ विकल्प नामक पद।

यज्ञन् (वि०) (स्त्री०-उभरी) [यन् + कर्त्तृन्] यज्ञ करने वाला, पूजा करने वाला, अर्चना करने वाला आदि, (पुं०) 1 जा वेदविहितरिधि के अनुसार यज्ञान्ठाल करना है, यज्ञों का अन्वयान्ता-न्यायान्त्र, पाश्चि १५ यज्ञा म्पु० ६।६६, १।८४, ३।३९, १८।११, कु० १।८६ 2 विष्णु का नाम।

यन् (म्वा० आ० यन्ते, यति) 1 यत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना, उद्योग करना (बहुधा मप्र० या नुमुप्रल के साथ) सर्व, कल्पे बर्तित यन्ते लब्ध्-मर्षान् विदुस्वो विक्रम० ३।१ 2 प्रयास करना, उम्कुक या आनुत् हाता, उन्कच्छत होना-या न यवी त्रियमथयधूम्यः मान्तरामदना यतमान्त्र सि० ६।४५, रघु० १।० 3 हाथ धर मान्ता, जिम्नर उद्योग करना, धम करना 4 मातृधानी बगना, मन्तरदार रहना-मम० २।६०--वे० (यानयति-ते) 1 लौहाना वागिम करना, बचना देना, हरजाना देना, फेर देना 2 पूजा करना, तिन्दा करना 3 प्रोत्साहन देना, प्राय दूकना, मजीब बनाना 4 सनाता, दुर्ना करना, परेशान करना 5 तैयार करना, विस्तार में कार्य करना, आ - 1 प्रयास करना कोशिश करना 2 बदोसे पर रहना, निर्भर रहना,

(आध० के साथ)--यय स्वध्यायतपित्ते यथावी० १।४५, निम्- , वे० 1 लौहाना, फेर देना--विर्वा तय हस्तन्यायम्--विक्रम० ५, मनु० १।११६ 2 बचना देना, वापिस करना, प्रतिभ्रमा करना --रामलक्ष्मणयोर्वैर स्वयं निर्यायामि वै -रामा०, प्र , चेष्टा करना, प्रयत्न करना, प्रयास करना, प्रति , चेष्टा करना (वे०) फेर देना, वापिस करना दे० निम् पूर्वक यत्, रम् , सधर्ष करना, तर्क वितर्क करना देवामुगा वा एपु लोकेषु मयेतिरे।

यत् (यु० क० कृ०) [यत् + वत्] 1 प्रविष्ट, दमन किया हुआ, नियमित, पराभूत 2 सीमित, मयन, मर्यादित, तम् महान्त इन्द्रा हावी को एड लगाना। मम० आत्मन् (वि०) मय अपने को अनुत्तमित करने वाला, स्वसयन, श्रितेन्द्रिय, (तन्मै) रागमने रोषयित् यन्स्व कु० ३।१६, १।४५ आहार (वि०) पिलाहारी, मयमी, इन्द्रिय (वि०) त्रितेन्द्रिय, पवित्र, धर्मात्मा, जित्त, अन्तः मानस (वि०) मन का वह में रखने वाला, आन् (वि०) मिनधायी, मौनी, मोनाकलो दे० वापय इत् (वि०) 1 प्रविज्ञा का यत्न करने वाला, अपा इत् का पूरा करने वाला, दृढ प्रविज्ञ।

यत्नम् [यत् + म्पुट्] चेष्टा प्रयत्न।

यत्न (वि०) (नपु० मपु०) [यत् + उत्तरन्] 1 यत्न सा (बहुधा म मे)।

यत्त (वि०) (नपु० रम्) [यत् + उत्तरन्] जा : म मे)।

यत्तम् (अध्य०) [यत् + त्तिन्] (बहुधा मययथाया सर्वनाम 'यद्' के अण० के ऊपर में प्रदत्ता। 1 यत्त से (अर्थिक या वस्तु वा उन्मत्त मय दृग्) इत्त जगह न, जिस स्थान न या जिन दिशा म यत्त वा, आनमधोपमानम् मपु० ५।४ (यत्त यत्तान्ति म म) यत्तयत्त भयमास ह्येवावी ना कन्वाप्यन्तम मनु० ३।१८९, 2 जिस कारण, जिस लिये 3 क्योंकि, मुँक, के कारण से, इस लिये कि उताव र्त्त परमार्याना हार न वेत्ति तूज यत्त एषमायव नाम कु० ५।७५, मपु० ८।७६, प्राय महर्कवी 'यत्त' के साथ, रघु० १।६।६ 4 जिस समय से लेकर - जव से कि ५ तार्किक, जिससे कि (यत्तस्ततः 1 इत्त किन्ती जगह मे, किन्ती भी दिशा से 2 बाहे दिशा व्यक्ति से 3 बाहे जगह, चानो भी, किन्ती भी दिशा मे, मनु० ६।१५, यतो यतः 1 बाहे जिन जगह मे 2 बाहे जिन से, किन्ती भी व्यक्ति से 3 बाहे जगह, बाहे जिस दिशा में यथोक्तन पदवर्तनीर्जितवनं -स० १।२४, भव० ६।२६; यत्तः प्रवृत्ति जिस समय

से केकर । सम० भष (बि०) जिससे उत्पन्न, क्लृप्त (बि०) जिससे जन्म लेने वाला, या जिससे उत्पन्न ।

पति (सब० बि०) [यद् परिमाथे षति] (रूप केवल बहुवचन में कर्त्त० और कर्म० यति) जिनसे, जिनकी आज्ञा, जिनसे कि ।

पति. (स्त्री०) [यम + पितन] १ प्रतिपक्ष, गोक. नियन्त्रण २ गकना, डहगना आगम ३ विस्मयन ४ सयोत में विगम ५ (उन्द० में) विधायन - यतिजिह्वोत्-विधायमस्थान कर्मभिरन्वयेन मा विच्छेदेविगमाद्यौ पदेनांच्या निजन्तरया छ० ६, अन्वयेपाना इवेण विभिनयनिवृत्ता सगया क्रीडिनेयम् ७ विचक्षा, -ति सन्नायो जिससे सगया का त्याग दिया है और अपना इन्द्रिया का वश में कर दिया है यथा इन्द्रात्तस्मात् तथा ज्ञान विना यति भासि० ५१३१९ ।

पतित (१२०) [पत. क्त] खेटा की गई, प्रयत्न किया गया इतिहास की गई, प्रयास किया गया ।

पतिन् (२५) [पत + इति] म-दासा ।

पतिनी (पतिन + णी) विधवा ।

पत्न्य (पत. नास्) पत्नी । प्रयत्न खाटा प्रयास कर्त्तव्य उद्योग करने को पति न विदुष्यति काश्च इति १० प० ३१ २ मेरुत्तन, अजा मनायास, इयवमात् ३ दम्बम्, उर्यात् सायनायना जगत्पत्न्या-मर्यात् पत्न्यवत् दृष्टवती रथ. १५५, यतिनायमायास इति—मा० १ १ विडा कट्ट धम, कतिनात् तराङ्गनिर्माणवदो विनातुर्दीश्ये उत्पद्य इवाम पत्न्य. कु० ११०० ३५६, २२० ३१९ ।

पत्र (१२०) [पत्र. वृत्] १ जडा, जिस स्थान में त्रिपत्र सेव मां (श्री) बनाने पर द्विपत्रम ने० ५१०७ तु० ५१० ४० २ जब जैसा कि तब कानि में ३ पूर्ति क्योंकि, परम, जग (सप्तपत्र त्रयो वती यत्र यत्र घनमत्र नत्र वीड तर्क० यत्र यत्र वाह जिस स्थान में सर्वत्र, यत्रकुत्र यत्रयत्रयत्र क्वापि । त्रयो वती, वाहे त्रिम इति २ जब कभी

पत्न्य (बि०) [पत. + ण्य] जिस स्थान का, जिस स्थान पर रहना हुआ ।

पथा (अस्य०) [यद् प्रकाने पाल्] । १ स्वयं रूप में प्रयत्न होने पर इसके निष्पत्तिक अर्थ है (क) कश्चित्तरात्रि के अनुसार यथाज्ञानपरिनि महाराज 'जैसा कि महाराज आज्ञा करते हैं' (ख) नामन, जैसा कि आज्ञा जाता है मत्तयानुषन्ते ५० १, उत्तर० २१५ (ग) जैसा कि, जो प्रार्थित (मुज्जासोक्त तथा मयाजना के विज्ञ वा मुखक) आमीरिय इधरधस्य गृहे यथा धी १०४

—उत्तर० ५१८, कु० ५१३५, प्रयासप्रभव काल स्वधीन-पतिका यथा (न मुखति) काव्य० १० (५) जैसा कि उवाहकस्वरूप, -मुष्टान्तन यत्र यत्र बुगन्तत्र तत्र बहिष्-यथा म्हाजसे तर्क०, पथ० ११२८८, (४) प्रत्यक्ष उक्ति को आरज करने के समय प्रयुक्त, अन्त में चाहे 'पति' ही या न हो कश्चित्तरात्रि हावय एव यथायथा-भोगन्त्याकनस्येति—मा० १, विदित मल्ल ते यथा स्मर. क्षमन्त्यात्तहने न मा विना कु० ५१३६, (स्त्री०) जिससे कि, इतिहास कि- दस्यो त चौरसिह यथा व्यापादयामि पथ १ २ तथा के सहवतिव्य मे प्रयत्न होकर 'यथा' के निष्पत्तिक अर्थ है: (क) जैसा, जैसा (इस अवस्था में तथा के स्थान में 'एव' और 'तद्वत्' भी बहुधा प्रयुक्त होते हैं) यथा बुधन्त्या क्रमम्—या यथाबोज तदाहनुय-भग० ११२९ (इस अवस्था में सबंध की समानता का अधिक आश्चर्यजनक और प्रभावशाली बनाने के लिए 'एव' शब्द यथा के साथ, अथवा दोनों के साथ जोड़ दिया जाता है)—यत्रयनु-च्छेपि यथेव शान्ता धिया तनुजास्य तथैव नीता—उत्तर० ५११६, न तथा वाक्ये स्मन्थो (या लीतम्) यथा वाचिनि वाक्ये, (इतना-जितना, जैसा कि)—कु० ६१००, उत्तर० २१४, चिकम० ४१३३, इम अर्थ में 'तथा' का बहुधा साथ कर दिया जाता है, तब उस अवस्था में 'यथा' का अर्थ उपर्युक्त (न) में दिया हुआ है, (ख) तर्क जिससे कि (यही 'यथा' जिसमें और तथा 'कि' का सूचित करता है)—यथा तन्पुत्रजयौष्णान न भवति तथा निर्वाह्य मा० ३, तथा प्रयत्नेया यथा नोपहस्यते जर्न का०—१०१, नम्यान्मुच्ये यथा नान सविधा १ यथा-हूमि रथ० ११०२, २६, ३१६६ १५१६८, (ग) क्योंकि इतिहास, क्योंकि, अत—यथा इतामुत्पावते-रति कलकल-ध्रुतस्तथा तर्क्यामि इति मा० ८, कधी-कधी'यथा' को लुप्त कर दिया जाता है—मत्र मत्र नदान पकनस्थानुकुलो यथास्वाम् मविष्यन्तेनयनमुभय में भवन्त क्लयाका—मेथ० ९ (५) यदि -ती, जन्मे विद्वान्म से कि, बडे निष्पद्य मे (उक्ति और अनुरोध का दुह रूप) वाक्यम कर्मनि सगो व्यधिकारो यथा न मे तथा विपश्यते देवि मामनघर्त्तन्यार्त्तमि रथ० १५१८१, यथा यथा—तथा तथ्या—जितना अधिक—उतना ही—जितना कम—उतना ही यथायथा धीबनमनि-चक्राम तथा, तथावर्धतास्य सताप—का० ५९, मनु० ८१२८९, १०१३३, यथा-तथा किमी रीति मे, किमी भी ईश से, क्वाकश्चित् किमी न किमी प्रकार । (विशे० अन्वयीभाव सयाम के प्रथम पर के रूप में प्रयुक्त होकर 'यथा' का प्राय अनुवाद किया जाता है, के अनुसार, के अनुसार, तदनुसार, तदनुकूप, के अनुपात से, अधिक न होकर, से समस्त सम्य नीचे, - संक्षेप, - संक्षेपः

(अभ्य०) ठीक-ठीक अनुपातनुक्य में,—अधिकारम्
 (अभ्य०) अधिकार या प्रमाप के अनुसार, अधीष्ट
 (वि०) जैसा पदा हुआ वा अभ्यन किया हुआ है,
 मूलपाठ के समनुक्य,—अनुपूर्वम्—अनुपूर्वम्, अनुपूर्व्यां
 (अभ्य०) नियमित क्रम या परंपरा में, क्रमशः, यथा-
 क्रम,—अनुपूर्वम् (अभ्य०) 1 अनुभव के अनुसार
 2 पूर्वानुभव के अनुक्य,—अनुक्यम् (अभ्य०)
 यथार्थ समनुक्यता में, उचित रूप से,—अभिप्रत
 —अभिमत, अभिसन्धित, अधीष्ट (वि०) जैसा
 कि चाहता था, जैसा कि इरादा था वा इच्छा की
 थी, इच्छा के अनुकूल,—अर्थ (वि०) 1 सचाई के
 अनुक्य, सत्य, शास्त्रिक, सही—दीप्येति धामाभ्य
 यथार्थभाषी—रघु० १४।४४, इसी प्रकार 'यथार्था-
 नुभव' (सही वा गुप्त प्रत्यक्ष ज्ञान) और 'यथार्थ-
 बन्ता' 2 रूप अर्थ के समनुक्य, अर्थ के अनुसार सही
 ठीक, उपयुक्त, सार्थक—कर्मिण्यन्वित्र नामास्य (अर्थति
 सम्बन्ध) यथार्थमरिनिप्रदात् रघु० १५।६, सूचि सद्य
 शिवुपाल ता यथार्था—शि० १६।८५, कि० ८।३९
 कु० १।१६ 3 योग्य, उपयुक्त (बंध—अर्थत)
 सत्यतापूर्वक, सही, उचित प्रकार से, अक्षर (वि०)
 सार्थक, अक्षरस सत्य वि० १।१, भाषाम् (वि०)
 जिसका नाम अर्थ की दृष्टि में सही है वा पूर्णत
 सार्थक है (जिनके कार्य नाम के अनुक्य है) ध्रुव-
 सिद्धेरपि यथार्थानाम् मिद्रि न मन्थते—मालवि०
 ५, परतयो नाम यथार्थानाम्—रघु० ६।२१, अर्थ-
 गुणचर (यथार्थवर्ण के स्थापन पर)—अर्थ (वि०)
 1 गुणों के अनुसार अधिकारी 2 सम्बन्धित, उपयुक्त
 न्यायोचित, अर्थ—गुणचर, द्वा अर्थम्, अर्थतः
 (अभ्य०) गुण वा योग्यता के अनुक्य—रघु० १६।
 ४०,—अर्थम् (अभ्य०) 1 अधीष्ट के अनुक्य
 2 गुण वा योग्यता के अनुक्य,—अवकाशम् (अभ्य०)
 1 कर्म वा स्थान के अनुसार 2 जैसा कि अवसर
 हो, अवसरानुकूल, अवकाशानुकूल, अधीष्टानुकूल
 3 ठीक स्थान पर प्रालम्भमुक्यं यथावकाशं विनाय
 —रघु० ६।१५, अवस्थम् (अभ्य०) वस्था वा परि-
 स्थिति के अनुकूल, आस्थात (वि०) जैसा कि पहले
 उल्लेख किया गया है, पूर्वोक्तिस्त,—आस्थातम्
 (अभ्य०) जैसा कि पहले बतलाया गया है, आस्था
 (वि०) मूल, प्रद, (अभ्य० तम्) जैसा कि कोई
 बाया, उसी रीति से जैसे कि कोई बाया यथागत
 मातलिसारार्थमयी—रघु० ३।६७,—आधारम् (अभ्य०)
 प्रथा के अनुसार, जैसा कि प्रचलन है, आस्थातम्,
 —आस्थातम् (अभ्य०) जैसा कि वेदों में विहित है,
 —आरम्भम् (अभ्य०) आरम्भ के अनुसार, नियमित
 क्रम वा अनुक्रम में,—आस्थातम् (अभ्य०) अपने रहने

के अनुसार, प्रत्येक अपने अपने विचार के अनुसार,
 —आस्थातम् (अभ्य०) 1 इच्छा वा आशय के अनुसार
 2 करार के अनुसार, आशयम् (अभ्य०) आशय
 वा किसी व्यक्ति के भाविक जीवन के विधिष्ट के
 अनुसार, इच्छा, इष्ट, इष्टित (वि०) इच्छा
 वा कामना के अनुसार, अपनी इच्छि के अनुकूल,
 यद्येष्ट, जैसा कि चाहता गया हो वा कामना की गई
 हो, (अभ्य० अष्टम्, अष्टम्, तम्) 1 इच्छा वा
 कामना के अनुसार, इच्छा वा मन के अनुकूल रघु०
 ४।५१ 2 जितनी आवश्यकता हो, मन कर कर
 यद्येष्ट द्रुमवे मांसम् पौर० ३, इष्टितम्
 (अभ्य०) जैसा कि स्वयं देखा हो, जैसा कि वस्तु
 प्रत्यक्ष किया हो, उक्त, उचित (वि०) जैसा कि
 ऊपर कहा गया है, पूर्वोक्त, उपपूर्वोक्तिस्त यथात्मना
 सन्तना पच० १, यथोक्तव्यापारा वा० १, रघु०
 २।७३, उचित (वि०) उपयुक्त, उचित, यार्थिक,
 योग्य (अभ्य०—तम्) ठीक-ठीक, उपयुक्त रूप से,
 उचित रूप से, उदारम् (अभ्य०) नियमित क्रम वा
 परंपरा में, क्रमशः, सर्वतोऽप्यधीनारम् मा० २०
 ७२९, उत्साहम् (अभ्य०) 1 अपनी शक्ति वा
 ताकत के अनुसार 2 अपनी पूरी शक्ति से, उद्युक्ति
 (वि०) जैसा कि वर्णन किया गया है वा संकेतित
 है, (अष्टम्) वा उद्बोधम् (अभ्य०) संकेतित रीति
 से, उपबोधम् (अभ्य०) मन वा इच्छा के अनुसार,
 उपबोधम् (अभ्य०) जैसा कि परामर्श वा अनुदेश
 दिया गया है, उपयोग्यम् (अभ्य०) आवश्यकता वा
 कार्य की दृष्टि में, परिस्थिति के अनुसार, काम
 (वि०) इच्छा के अनुक्य (अभ्य० अर्थ) शक्ति के
 अनुकूल, इच्छा के अनुक्य, मन भर कर यथाकामा-
 चिन्तावानाम् रघु० १।६, ६।५१, कामिन्
 (वि०) स्वतंत्र, प्रतिबन्धरहित,—कालः ठीक वा
 सही समय, उचित समय—रघु० १।६, (अभ्य०—अम्)
 ठीक समय पर, समयानुकूल, सीसम के अनुसार,
 —सोमपूर्वोच्चारण यथाकालं स्वप्रपि—रघु० १७।५१,
 कृत (वि०) जैसा कि मान लिया गया है, किनी
 नियम वा प्रथा के अनुसार किया गया, प्रथानुकूल
 —मनु० ८।१८३,—कर्मन्,—कर्मण (अभ्य०) ठीक
 क्रम वा परंपरा में, नियमित रूप से, सही रूप में,
 उचित रीति से—रघु० ३।१०, ९।२६, कर्मन्
 (अभ्य०) अपनी शक्ति के अनुसार, जितना समय
 हो,—कालावि०)मूर्ख, अज्ञानी अर्थ, ज्ञानम् (अभ्य०)
 व्यक्ति की अधिक से अधिक जानकारी वा दृष्टि के
 अनुसार, अज्ञानम् (अभ्य०) पद के अनुसार, परि-
 ष्ठा के अनुसार,—सद्य (वि०) 1 सत्य, सही
 2 परिशुद्ध, सदा, (अभ्य०) किसी वस्तु के विवरण वा

विशेषताओं का आभ्यास, विवरण मूलक वा सूत्र रूपक, (अभ्य० - अभ्य०) 1 वचार्थ, सूत्रमत्या 2 सही तीर पर, उचित रूप से, जैसा कि बस्तुतः बात हो, - विधि, - विधान् (अभ्य०) तब विधानों में, - निविधि (वि०) जैसा कि पहले उल्लेख ही चुका है, जैसा कि ऊपर विशेषता बता दी गई है--यथानिदिष्ट-व्यापार सभी--आदि, -व्यापार (अभ्य०) व्यापार, सही रूप से, उचित रीति से--मनु० १११, धुरम् (अभ्य०) जैसा कि पहले था, जैसा कि पूर्व अक्षरों पर था, -पूर्व (वि०), पूर्वक (वि०) जैसा कि पहले था, पूर्ववर्ती--रघु० ११४८, -अन्व-अन्वयम् (अभ्य०) 1 जैसा कि पहले था--मनु० १११८७ 2 कब वा परंपरा में, कबय -उत्ते माया यथापूर्वम् -याज्ञ० ११३५, -प्रवेक्षम् (अभ्य०) 1 उचित वा उपयुक्त स्थान में--यथापदेश विनियोगितेन--कु० १४५, आसञ्जवासात यथापदेश कठे मुचम्--रघु० ५८३, ७३६ 2 विधि वा निदेश के अनुसार, -प्रधानम्, -प्रधानतः (अभ्य०) पर या स्थिति के अनुकूल, पूर्वमतिता के अनुसार--आलोकमात्रेण सुरा-नखान् मन्नावयामात यथाप्रधानम्-कु० ७४५६, प्रधानम् (अभ्य०) साधन्यं के अनुसार, अपनी पूरी शक्ति से, -श्रान्त (वि०) परिस्थितियों क अनुसार, -श्रावितम् (अभ्य०) प्रायः के अनुसार, -कल्पम् (अभ्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के साथ, अपनी शक्ति से, -जानम्, -जान्तः (अभ्य०) 1 प्रत्येक के भाग के अनुसार, ठीक अनुपात से 2 प्रत्येक अपने अधिक स्थान पर--यथाभागमवस्थिता मग० १११ 3 ठीक स्थान पर यथाभागमवस्थितेति रघु० ६११, भूतम् (अभ्य०) जो कुछ ही चुका उसके अनुसार, सर्वादि के अनुसार, तत्पत्तः, यथावत्, -सुधीय (वि०) ठीक सामने देखने वाला (सर्व० के साथ) (मुच०) यथासुधीय सीताया पुत्रवै बहु लोभयन्-मट्टि० १४८, -अव्यम् (अभ्य०) 1 यथा बोध, जैसा कि बोध्य है, यथावत् (वि०) ८१२ 2 नियमित रूप में, पृथक् पृथक् एक एक करके बीचबची मुत्तासर्वा विप्रकीर्ती यथावत् ता० ६० १३७ सुचम्, -सौम्य (अभ्य०) परिस्थितियों के अनु-कूल, यथासौम्य, उपयुक्त रूप से, बोध्य (वि०) उपयुक्त, बोध्य, उचित, सही, -कल्प, -दधि (अभ्य०) अपनी पक्षय वा दधि के अनुसार, -कल्प (अभ्य०) 1 रूप वा दर्शन के अनुसार 2 ठीक-ठीक, यथावत्, यथाबोध्य, -कल्प (अभ्य०) जैसे कि तथ्य है, यथावत्, विद्वत् रूप से, सचम्, -विधि (अभ्य०) नियम वा विधि के अनुसार, ठीक-ठीक, यथावत् यथाविधिद्विगताभीमा--रघु० ११६, संवस्कारोच-

प्रीत्या मंधिलेयो यथाविधि--१५१२, ३७०, -वि-क-वम् (अभ्य०) अपनी भाव के अनुसार से, अपने तापनों के अनुसार, -वृत्त (वि०) जैसा कि हो चुका है, किया गया है, (-तत्) सामयिक तथ्य, किसी घटना की परिस्थितियों वा विवरण, -कल्पित, -कल्प्या (अभ्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के अनुसार, जहाँ तक मजबूत हो, -क्षारकम् (अभ्य०) बर्मेसाओं के अनुसार जैसा कि बर्मेसाओं में चिह्नित है मनु० ६१८८, -कृतम् (अभ्य०) 1 जैसा कि तुना है, या बताया गया है 2 (कथावृत्ति) बौद्धिक विधि के अनुसार, कल्पम् अक्षरकार शास्त्र में एक अक्षरकार यथासम्भवे कथेयं कथिकायां समन्वय--काव्य० १०- उवा० कम् विधि विधानि च जय रज्जय मज्जय यन्त्रा० ५१०७, (-कल्पम्), संक्षेप (अभ्य०) सफा के अनुसार, कमज, सफा के सफा-याज्ञ० ११२१, -कल्पम् (अभ्य०) 1 उचित समय पर, करार के अनुसार, सर्वममल प्रचलन के अनुसार, संक्षेप (वि०) अल्प, जो हो सके, सुक्ष्म (अभ्य०) 1 मनु वा इच्छा के अनुसार 2 आगम से, मुचपूर्वक, इच्छानुकूल, विशिष्टे सुख हो, -अङ्गु निधाय करणोर यथासुख तं सहायवायि यन्मानुत पक्षताञ्चो--वा० ३१२२, रघु० ८४८, ४६३, स्वामं सही और उचित स्थान, (अभ्य०) नम् उचित स्थान पर, ठीक-ठीक, स्थित (वि०) 1 सामयिक तथ्य वा परिस्थितियों के अनुसार, जैसी कि स्थिति हो मट्टि० ८१८ 2 सचम्, उचित रूप से, -कल्प (अभ्य०) 1 अपने अपने कर्म से, कथयः अध्यासते वीरमृगो यथास्वम्-रघु० १३१२२, कि० १४४३ 2 बौद्धिक रूप से-रघु० १७६५, 3 ठीक ठीक, यथावत्, सही रूप से । यथावत् (अभ्य०) [यथा+वत्] 1 ठीक ठीक, ज्यों का त्यों, यथावत्, सही रूप से, प्राय विशेषण के अक्ष के साथ अध्यापित्वा गाविसुगो यथावत्--मट्टि० २१२१, लियेयथावत्प्रहृष्टेन--रघु० ३१२८ 2 विधि वा नियम के अनुसार, जैसा कि विधानों द्वारा चिह्नित है, -ततो यथावत् चिह्निताम्बराय--रघु० ५११९, मनु० ६१२, ८१२४ । कम् (सर्व० वि०) [कम्+वि, शित्] (कर्त्त०, ए० व०, पु० प, स्त्री० वा, नृप० यत्-इ) सर्वसंबोधक सर्वनाम जो जीन ता, बी कुछ (क) इसका उपयुक्त सहसंबंधी 'तत्' है, -यस्य बुद्धिबलं तस्य, परन्तु कर्त्री-कर्त्री 'तत्' के स्थान पर इत्म्, अत्म् वा एत्म् को भी प्रयुक्त किया जाता है, कर्त्री कभी 'यत्' उच्य अर्थात् ही प्रयुक्त होता है, तथा उसके सहसंबंधी सर्वनाम का मान प्रकरण से ही कर लिया जाता है, दोनों संबंध-

बोधक सर्वनाम बहुधा एक ही वाक्य में प्रयुक्त किये जाते हैं। यदेव रोचते यस्मै भवेत्तस्य मुन्दरम् (क) जब इस शब्द की आवृत्ति कर दी जाती है तो इसका अर्थ होता है 'समष्टि' तथा इस शब्द का अनुवाद होता है 'जो कोई' 'जो कुछ', इन अवस्था में सह-सवधी सर्वनाम 'तद्' की भी आवृत्ति की जाती है—यो यः शस्त्रं विभ्रति स्वभुजनुक्त्वात् पाण्डुरीना भूमनाम् शोषाभस्तस्य तस्य स्वर्वाभं जघताभनकमपाग्नकोऽग्रम् - वेणी० १३० (ग) जब 'यद्' का किसी प्रधान-वाचक सर्वनाम या उससे व्युत्पन्न किसी और शब्द के साथ जोड़ दिया जाता है, साथ में निपात 'चिद् चन, वा या अति' लगे हो या न लगे हो, तो इसका अर्थ होता है 'कुछ भी' 'चाहे जा कोई' 'काहें', येन केन प्रकारेण जिस किसी प्रकार से, किमो न किमो प्रकार से तत्र बुधापि यो वा को वा, य कश्चन आदि, यत्किञ्चिदेतद् 'यह ता केवल मुच्छ शब्द है। यानि कानि च विचारिण आदि, (अव्य०) अवश्य के रूप में 'तद्' नामा प्रकार में प्रयुक्त होता है 1 किसी प्रत्यक्ष या आश्रित वाक्य का आरम्भ करने में अन्त में चाहे 'नि ही या न हा' सर्वार्थ्य जनप्रवादा यमशमपदमनुव्रज्जातीनि का० ७३—तस्य कदा-निश्चिन्ता सदात्रा यस्मिन्स्वयुवादिचलनीया वनव्यापक—पच० १ 2 क्योंकि क्वि चिन्माचरित लत नवया म 'यदिय पुनरुत्पादुनेत्रा परि-वृत्तायम्बुवी मवाद्य दृष्टा विभ्रम० ११२०, या-कि-श्रयण भ्रष्टव्या न वपुि पय न शिष्ययेव यत्—महा० १११८, रघु० ११०३, ८५, इस अर्थ में 'यद्' के पदवाचक समाक मरुमभ्रष्टे तद् या नत आता है, दे० नै० ३०१६६। सम० अपि (अ००) यद्यपि, अगर्षे क्व यन्वा यदपि भवन-भ्रम० २७.—अर्षेण्,—अर्षे (अव्य०) 1 जिस निम्न, जिस कारण, जिस वास्ते, जिस हेतु, थ्यवना यदर्थमस्मि हरिणा भवसकाल प्रेषित म० ६, कु० ५१५० 2 क्वि, क्वाकि नून देव न तस्य हि पुरुषेभानिहनिनुम्, यदर्थे यत्नललेन न लभे विपना विभ्रा महा०, कारणम्, कारणान् (अव्य०) 1 जिस निम्न, जिस कारण 2 क्वि क्वाकि,—हुने (अव्य०) जिस निम्न, जिस वास्ते, जिस पर्य या वस्तु के निम्न,—अविध्य, आर्यवादी (क) कहता है 'जो दोता है वह हागा' - पच० १३२८ का (अ००) अथवा, वा,—नैतद्विद्य कुर्यादा मर्यादा यदा ज्येम यदि वा नो ज्येयु भ्रम० २१६ (आप्य-कार बहुधा इस शब्द को विकल्पार्थं चलाने समय प्रयुक्त करते हैं), क्वक्व सात्तिका सत्यम् (अव्य०) निश्चय ही, सचाई ही यह है कि सत्य

सम्बन्ध—अमङ्गलाद्यसया भी वचनस्य यस्तस्यम् कपित-मिष मे हृदयम्—वेणी० १, मुद्रा० १, मुच्छ० ४। यथा (अव्य०) [यद्काले दाप्] 1 जब, उस समय जब कि, यथायथा जब कभी, सर्वव्यपक उची समय, ज्योही, यथाप्रभृति तथाप्रभृति जब से लेकर ... तब से लेकर 2 यदि वचन वचन यथा करीबिदये दोषो यस्तस्य किम्—मर्तु० २१२३ 3 जब कि, क्वि, यत् 1 यदि (अव्य०) [यद्+विच्+इत्, विधीय] 1 अगर, यो (दयामुक्क, और इस अर्थ में प्राय विधिनिह के साथ प्रयोग, परन्तु कभी-कभी यविध्यस्तान अथवा भवेत्मानकाल के साथ भी, प्रायः इनके पर्यायत् 'नति' और कभी कभी 'तत्' तदा, तत् वा अत्र का प्रयोग किया जाता है) प्रायैस्तपोभिरव्याभिमत मदीये कृप्य षटेन मुहुदी यदि तरुत्त म्यात्—मा० ११०, बदति यदि किञ्चिदपि दन्तलचिकीमुदी हरति दन्तिमिरमति योग्यम्—गीत० १०, यन्ने हुने यदि न सिध्यति को०५ (कम्प०) दाय हि० प्र० ३५ 2 चाहे अगर

वद प्रथोये स्फुटचन्द्रतारका विभासरी यद्यस्तान कल्पने—कु० ५१६४ 3 अगर्षे कि, जब कि 4 यदि कदाचित्, शायद—यदि तादेव विपना शायद अग एमा कर मर्षे पूष स्पृष्ट यदि निल भवेदङ्गमिभ्त वेति मेघ० १००, वाञ्छ० ३१०५, (यद्यपि) हालाकि, अगर्षे—मि० १६१८ भ्रम० १०८ श० ११३१ यदि वा या, यदा ज्येम यदि वा ना ज्येयु—मम० २१६ भ्रं० २०८३, या शायद कदा चित्, भले ही, प्राय निश्चयार्थक सर्वनाम म भी आश्चर्यकान्तमात्र आशय अभिव्यक्त कर दिया जाता है उत्तर० ११२०, ६५५।

यत् [यद्+उप०] जस्य द [यत्न प्रयत्न गता ह] नाम, ययानि और दवयाने का ज्येष्ठ पुत्र याः १ का वग प्रयत्न। मम० कुलोद्भव-नव्यन—धेठ कृप्य का विशेषण।

यद्दृष्टा [यद्+दृष्ट्+अङ्, टाप्, 1 मनन करने, स्वेच्छा, (कार्य करने की) स्वच्छता 2 यदाय घटना, इस अर्थ में प्रायः कर्मण० एक व० में प्रयोग होता है और 'घटनावश', सर्वोपकार' शब्दों से बना जाय किया जाता है किन्तर्गमयुत्त यददृष्टताग शंत्तु का०, देखने का मयाग हुआ आदि चिन्-टिपेनयक यद्दृष्टायाऽज्ञाना भूतप्रभावा ददुग्धे तान्ता रघु० ३१०२, विभ्रम० १११०, कु० १११६। मम० अविद्य ऐच्छिक अथवा स्वपुनस्कृत मार्गः सचाय 1 अकस्मान् बार्तालाप 2 स्वनमना अथवा सर्वोपकार मिलन, घटनावश मिलान।

यद्दृष्टात् (अव्य०) [यद्दृष्टा+तन्निम्न] अकस्मान घटनावश, मयाग से।

यन्तु (पुं०) [यन् + तुन्] 1 निदेशक, राज्यपाल, शासक
2 बालक (जैसे कि हाथी का, हाथी का), कोच-
वान हाथि—यन्ता राज्याभ्यन्तर्गतयन्त्रम् रघु०
७।३०, अथ यन्तारमाविष्य धूर्वात् विद्यामयेति छ
१।५४ 3 महाबल, हस्ति बालक, हस्तारोही ।

यन्त्र (म्भा० पुं०) उभ० यन्त्रिणि ने) नियंत्रण में
करना, दमन करना, रोकना, बाधना, कसना, बाध्य
करना यापयंत्रितपीलस्यबलाकारकचक्रं १५०
१०।४७, मि , 1 दमन करना, नियंत्रण में
करना बेटियां बालका 2 कसना, बाधना, यन्त्र ,
रोकना, नियंत्रण में करना, ठहराना - सयन्त्रितो यथा
रघु शा० ७ ।

यन्त्रम् [यन् + अच्] 1 जो नियंत्रण करता है, या करता
है, धूम्री, अन्ना, महारा टेक जैसा कि 'गृहयन्त्र' में
(इस शब्द के दोषे उद्धरण देखिये) 2 बंदी, पट्टी,
कसना, कठबन्ध या बन्धि, बन्धे का तन्मा 3 वास्तो-
पयानी उपकरण विशेष कर दुहा उपकरण (विप०
पत्र) 4 कोई भी उपकरण या यन्त्र, यन्त्र,
साधन, सामान्य उपकरण - कृषयन्त्रम्-यन्त्रम् १०।५९,
'कर्म' में पानी निकालने वाली 'मशीन' इसी प्रकार
'नौक', 'जल' आदि 5 चतकनी, कुटी, नाला
6 नियंत्रण, बल 7 लाबीज, एक रहस्यमय उपाधि
का रसायन जो नाबीज की शक्ति प्रयुक्त किया
जाय। मय० उष्णक चक्री का पाट, कर्मचक्रा
एक प्रकार का जादू का चिटारा, कर्मचक्र (पुं०)
कलाकार, शिल्पकार, गृहम् १ देशी का कोल
५ निर्माणशास्त्र, शिल्पशास्त्र - वैश्वित्तम् जादू का क-
नब जादू-नाला, बृह (वि०) (हार) कुटी या चत-
कनी जिसमें लगी हुई है, साक्ष्य यन्त्रमूलक कोई
नया - यन्त्रक, युक्ति यन्त्रचालित युधिया, या
पुस्तक जिसमें होरी या तार आदि कोई ठोसी कल
नया है। जिसमें कि पुरानी नाचे, प्रवाहः पानी की
एक हथियार यन्त्र १६।४९, —आमः एक लगी
ए पतनाका, अर. कोई तार या अन्त्र या किसी
रथ द्वारा छाया जाय ।

यन्त्रक [यन् + क्तृ] 1 जो कन्-युद्धों से सुपारंगिन हो
2 कुशल यान्त्रिक, —कम् १ पट्टी (आयु० में)
३ तैयार

यन्त्रकम् —या [यन् + क्तृ, रित्रां टाच् च] 1 नियंत्रण,
दमन, रोक-धाम करयन्त्रयन्त्रुत्तरान्ते अक्षितकम्बु-
पुटेन पक्षति, -ने० २।२, विन्त्यन्त्र, प्रविन्त्र, रोक
होयन्त्रया तस्ययन्त्रयन्त्रुत्तरान्ते अक्षितकम्बु-
नादि कु० ७।३५, रघु० ७।२३ ३. यन्त्रा, हाथिया,
—निधि ह्योनकुशययन्त्रया तमरागमयथात् प्रतिबन्धनी
—ने० १।१० 4. बल, बाध्यता, नियंत्र, कट, पीडा

या वेदना (जो विषयता से उत्पन्न हो) —अकमन-
युपकारयन्त्रया मालि० ५ 5 अत्रिरक्षा,
6 पट्टी ।

यन्त्रक्री, यन्त्रिक्री [यन्त्र + क्रीच्, यन्त्र + क्रीच्]
पत्नी की छोटी बहन, छोटी सखी ।

यन्त्रिकृ (वि०) [यन् + कृ, यन्त्र + कृिनि वा] 1 (पौडा
आदि) जो जीव व साथ से सुसुप्त हो 2 पीड़क,
सनाने वाला, 3 जिसने ताबीज बाधा हुआ हो ।

यन्त्र (म्भा० पर०) यन्त्रति, यत्, इच्छा० यियसति) 1.
रोकना, दमन करना, नियन्त्रण करना, बध में करना,
ठहराना, ठहराना, बन्द करना—यच्छेद्राक्षयनसी प्रक.
—कठ०, यथचित्तानम्—मय० ४।२१, रे० यत्
2 प्रदान करना, देना, अर्पण करना—मे० (यमयति-ते)
नियंत्रण करना, रोकना आदि, या , 1. विस्तार
करना, लबा करना, फैलाना,—यन्त्रम् पाणिमान्यच्छेत्
—मि० ५, स्वाङ्गमायच्छमान—श० ५ (पदान्तर)
2 ऊपर खींचना, बाधित खींचना,—आयन्त्रयति कुशा-
उद्गम्, मि० ५, राणामुच्छनमायनीत्—मट्टि० ६।११९
3 नियन्त्रित करना, सामना, दवाना, (स्वात आदि)
रोकना—यन्त्रु० ३।२१७, १।११००, यात्र० १।२४,
अग्राहं मेना, (जा०) लम्बा बड़ जाना 5 पहण
करना अधिकार करना रखना—विद्यायायच्छमाना-
।प्रस्तमभिरनुमामा—मट्टि० ८।४६ 6 के जाना,
नेत्रक करना, उच्—, (प्राय जा०) 1 उठाना, ऊपर
करना, उपन करना—बाहु उच्छय—श० १, परस्य
दम नोच्छेत् यन्त्रु० ६।१०४, रघु० १।१७, १।५
२३, मट्टि० ४।३१ 2 तैयार होना, प्रस्थान करना,
आरंभ करना, (सप्र० या तुमुर्भत के साथ) उच्छेत्
माना यमनाय भूत्—रघु० १६।२९, मट्टि० ८।४७
3 प्रयाग करना, घोर प्रयाग करना—उच्छेत्ति
वेद्यम्—मि० ५ 4 शासन करना, प्रबन्ध करना,
हकूमन करना, उच् (आ०) १ विवाह करना
प्रवाणिय समवाविमायुपावस्त श० ५,
(मना) आरमानुष्ठा विधिनोपयोगे कु० १।१८
रघु० १६।७ वि० १५।७ 2 पकड़ना, सामना,
मेना, स्वीकार करना, अर्पण करना शक्यायु-
पायसन जितव्याति—मट्टि० १।१६ १।१७, ८।३३
3. प्रकट करना, मकेल करना—मट्टि० ७।१०१,
वि - 1 नियन्त्रित करना, दमन करना, रोकना, बल
में करना, शासन करना - प्रकृत्या नियता स्वभा-
-मय० ७।२०, (सुता) शत्राक मेना न निबन्धु-
द्यतात् कु० ५।५, 'उत्ते हटा नहीं मका' आदि
2 दवाना, निर्वाह करना, रोचना, (स्वात आदि)
यन्त्रु० २।१९२ न कथंचन दुर्वादि प्रकृति स्वा
नियच्छति यन्त्रु० १०।५९, 'न बहता है न कुपता

हैं' आदि 3 दान करना, देना—को न कुले निवपनादि निवच्छतीति—घ० ११२४ 4 सजा देना, वष देना निवन्त्यभ्यत्र रात्रिभ मनु० ११२१३ 5 विनियमित करना या निर्देशित करना 6 प्राप्त करना, अर्थात् करना—तालजत्राप्रवासेन मोक्षमार्गं नियच्छति—याज्ञ० ३१११५ मनु० २१९३ 7 धारण करना (प्रेर०) 1 नियमित करना, वष में करना, विनियमित करना, रोकना, दण्ड देना—नियमयसि विमार्गप्रस्थितानात्तदण्ड घ० ५१८ 2 बाँधना, कसना घि० ७५५, रघु० ५५७३ 3. मर्यादित करना, हलका करना, विश्राम देना कु० ११९१, शिल्पि—, दमन करना, नियंत्रण रखना, भग० ११२४, लघु 1 नियंत्रित करना, दमन करना, रोकना, नियंत्रण में रखना (आ०)—भग० ११३६, मनु० २११०० 2 बाधना, रूढ़ करना, कसना, बंदी बनाना—बाधर या न सवधो भट्टि० १५५०, मालवि० ११७, रघु० ३१२०, ४२ 3 एकत्र करना (आ०)—वीहीन्स-यच्छते—विद्या० ५. बन्ध करना, भेदना भग० ८१२२ ।

बन्धः [यत् + धञ्] 1 सवत करना, नियंत्रित करना, दमन करना 2. निग्रहण, सयम 3 आत्मनिग्रहण 4 कोई महान् नैतिक कर्तव्य या धर्मसाधना (विप० नियम)—तप्त येमेन नियमेन तपोऽमूर्ध्व—ने० १३१६, यम वीर नियम की निम्न प्रकार से विव्रता दर्शाया गई है—शरीरशासनोपेत इत्ये यत्कर्म तद्यम, नियमन्तु स यत्कर्म नित्यमापनुताधनम् अमर०, दे० कि० १०११० पर मल्लि० श्री, यमो की मर्यादा बहुधा दस बहुकाई जाती है, परन्तु मिश्र मिश्र भेदकों ने उनके मिश्र मिश्र नाम दिये हैं—उदा० ब्रह्मचर्य दया क्षान्तिर्दान सत्यमकस्वता, अहिंसाप्रति-यज्ञाभ्युय दमश्चेति यमा स्मृता याज्ञ० ३१३१३, या जानुश्रत्य दया सत्यमहिंसा क्षान्तिरार्जेवम्, प्रीति प्रसादो माधुर्य मार्दव च यमा दया। कभी-कभी यम केवल पाप ही बताये जाते हैं—बहिहा सायवचन ब्रह्मचर्यमकस्वता, अस्तेयमिति पर्वेय दमास्त्वानि क्षान्ति च 5 बांध प्राप्ति के आठ बंधों का साधनों में पहला साधन। आठ भग यह है—बधनियमासनाशायाभयप्रत्याहात्वारत्नाध्यानसमाध-भोष्टाचरानि 6. मृत्यु का देवता, मृत्यु का मृत रूप, यह सूर्य का पुत्र माना जाता है—दत्तात्रेय स्वयि यमादि दण्डवारे उमर० २१११ 7. यमल-बर्धा-रुण्य इति यमो च (अर्थात् नकुलसहृदेवो) कवीच मारुति—देवी० २१२५, वनवापर्वच यमेष जगत्तो व्यच्छता मता मनु० ११२२६ 8. जोई में एक—बन्ध बोधा, जोड़ी। लम० अन्वयः अनुचरः

यम का सेवक या टहलुआ, कल्पकः 1 शिव का विशेषण 2 यम का विशेषण कल्पकुरः यम का सेवक, मृत्यु का दूत, कौकः विष्णु—म (वि०) अन्य से जुड़ना, यमल भ्रातरी जाया यमजी उमर० ६, दूत, 1 मृत्यु का दूत 2 कौवा, द्वितीया कालिक शुक्ला दूज जब बहन बनें माइयो का सत्कार करती है, माईदूज, तु० भ्रातृद्वितीया, बानी यम का निवास स्थान नर सवारान्ते विव्रति यमपानीजव-निकाम् भर्तुं ३११२२, यक्षिनी यमता नदी, क्षालना मरणोपरात पापियों को यम के द्वारा दी जाने वाली पीडा (कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग 'भौषध घाननाए' या 'भौर पीडा' प्रकट करने के लिए भी किया जाता है), रघु० (पु०) यम, मृत्यु का देवता, सदा यमराज की न्यायसभा, सुवर्ण एक भवन जिसमें केवल दो कमरे हो, एक का मूढ़ पश्चिम को तथा दूसरे का उत्तर की हो ।

यमकः [यम + स्वार्थे क्] 1 प्रतिबन्ध, रोक 2 यमल या ब्रह्मर्षी 3 एक महान् नैतिक या धार्मिक कर्तव्य दे० यम,—कम् 1 दाहरी पट्टी 2 (अल० में) एक ही श्लोक में किसी भी स्थान पर शब्दों या अक्षरों की पुनरावृत्ति परन्तु अर्थ की विभक्ता के साथ, एक प्रकार की लय (इसके कई भेदों का बयन काव्या० ३१२५२ में किया है) आवृत्ति वर्णमहात्मोच्यम यमक चिदु काव्या० १५६१, २१२, सा० दे० ६४० । यमन (वि०) (स्त्री० शीक) [यम् + ल्युट्] सपत्नी, दमन करने वाला, भासक आदि,—यम् 1 सयम करना, दमन करना, बाँधना 2 ठहरना, बचना 3 विराम, विश्राम, न मृत्यु का देवता यम । यमनिका [यमन + क्त + टाए, हलम्] पगडा, ओट, नु-जवनिका ।

यमल (वि०) [यम + ल + क] जोड़वा, जोड़ी में से एक, ल हा की मर्यादा, लो (दि० व०) जोड़ी, लम् — ली मिथन, जोड़ी ।

यमलत् (वि०) [यम + ल्युट्, कत्वम्] जिसने अपनी वासनाओ पर सयम कर लिया है, आत्म नियंत्रित—यमवनाभवता च धृति स्थित रघु० १११ ।

यमलाल (अव्य०) [यम + लालि] यम के हाथों में, यमकी शक्ति में, यमलाल् इ मृत्यु की सौधना ।

यमना [यम् + उनन् + टाए] एक प्रसिद्ध नदी का नाम (जो यम की बहन बानी जाती है)। लम० आत् (पु०) मृत्यु का देवता यम ।

यमातिः [यस्य हायोरिव याति वचन रचयनिर्घस्य] एक प्रसिद्ध कण्डवरी राजा का नाम, नृधुष का पुत्र, [यमाति ने सुषुप्तधर्म की पुत्री देववानी से विवाह किया। देवों के राजा वृषपर्वा की पुत्री क्षमिष्ठा

राशो के रूप में देवयानी के साथ गई, क्योंकि इतने किसी समय देवयानी का अपमान किया था और अपमान की क्षति पुत्रि के लिए आज क्षमिष्ठा की देवयानी की वैविका बनना पड़ा (दे० देवयानी) । परन्तु ययाति को इस राशि से प्रेम हो गया, फलतः उसने युव रूप में उससे विवाह कर लिया । इस बात से निराश होकर देवयानी अपने पिता के पास बसो गई और उससे अपने पति के आचरण की शिक्षावत की । वृक्षाचार्य ने ययाति को प्राक्कालिक बाधक तथा असक्तता से घल्ल कर दिया । ययाति ने जब बहुत अनुनय-विनय किया तो प्रसन्न होकर वृक्षाचार्य ने ययाति को अनुमति दे दी कि वह अपने बूढ़ापे को जिस किसी की दे मकदा है यदि वह मेना स्वीकार करे । उसने अपने पाँचों पुत्रों से वृक्षा, परन्तु सब ने छोटे पुत्र का छोड़कर किसी में भी बड़ाया लता स्वीकार नहीं किया । फलस्वरूप ययाति ने अपना बूढ़ाया पुत्र को देकर उसकी बचानी ले ली । इस प्रकार इन समृद्ध यौवन की पाकर ययाति फिर विषयवासनाओं तथा आसौंद प्रमाद में व्यस्त रहने लगा । इस प्रकार का कम १०० वर्ष तक चला परन्तु ययाति की तृप्ति नहीं हुई । आखिरकार, बड़े प्रयत्न के साथ ययाति ने इस बिलामी जीवन को छोड़कर, पुत्र की बचानी उसको बाँटित कर दी और उस राज्य का उत्तराधिकारी बना स्वयं पवित्रजीवन बिगाने तथा परमात्मचिन्तन करने के लिए बन की प्रत्यान किया ।

ययावर - यायावर दे० ।

ययि, बी (पु०) [या + ई, क्तिन्, पाताङिभम्]
1 अरवभेय या अन्य किसी पत्र के उपर्युक्त घोडा-सि०
१५।६१ २ पाड़ा ।

यहि (अध्य०) [यद् + हिम्] 1 जब, जब कि, जब कभी 2 क्योंकि, यत, चूँकि, (इसका उपर्युक्त सह-सम्बन्धी 'तहि' या 'एतहि' है परन्तु अल्पसंख्यक साहित्य में इसका विश्व प्रयोग है) ।

यज् [य् + ज्] 1 जी यथा प्रकीर्ण न भवति शालय मुच्छ० ४।१० २ जी के दाने या जी के दानों का मार ३ लम्बाई की एक नाप एक अंगुल का १/६ या १/८ ४ हाथ की लम्बाइयों में बना जी के दाने का चिह्न जो बनबान्य, प्रजा, और सौभाग्य का चूचक है । मय०—अङ्गुलः प्रदोहः जी का मन्त्र या पत्नी,—आद्यजम् जी की सेती का पहरा फल, क्षार, बवाक्षार, शीरा, लज्जी, सूक्ष्मः—सूक्ष्मः जी की मूली को जला कर उसकी राज से तैयार किया गया क्षारीय तमक, लज्जी,—सुरम् जी की शराव, यजयज् ।

यजम् [य् + यज्] 1 चीन देश का निवासी, युवान देश का वासी 2 विदेहो, जगनी—यजु० १०।४४ (आज-कल इस शब्द का प्रयोग युवलमान और यूरोपियन के लिए भी किया जाता है) ३ यज्वर ।

यजमाली [यजमाना लिपि यवन + आनुङ् क्त्वे च] यवनों की लिपि या लिखावट ।

यजमिका, यजनी [य् + यज् + जीप् = यजनी + क्त + टाप्, ह्रस्वः] 1 यजमानकी, चीन देश की स्त्री या युवलमाली,—यवनी नवनीतकीयन्मारी—जग०, यजनी-युवपधाना तेषु यजमद न म् पु० ४।६१, (नाटकों से ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व काल में यवन राजाओं राजाओं की दासियों के रूप में नियुक्त की जाया करती थी विशेषकर राजाओं के बन्धु और तन्वत को समालने के लिए, न० एष बाणासहस्राभिर्देवकीभिः प्रियत इत एवायच्छति प्रियवन्त्य—ग० २, प्रियव्य प्राङ्गुहस्ता यवनी ल० ६, प्रियव्य चापहस्ता यवनी—विष्म० ५ आदि) २ परदा ।

यजमन् [य् + जमन्] बास, चारा, चरायाहो का पास यजमन्चम् पच० १, याज० ३।३०, यजु० ७।७५ ।

यजाम् (स्त्री०) [यजेते मिथयते - य् + आम्] यजाम्ना का माद, चावलो के माद की काजी, या जो आदि किसी और अन्य की काजी यजाम्बिर्लज्जया—सुपु०, यजाम् कल्पते यजाम् - महा० ।

यजामिका, यजानी [हुटो यवो यवानी—यज् + जीप्, आनुङ्, फले क्त + टाप्, ह्रस्वः] यजवायन ।

यजिष्ठ (वि०) [यजन् + इत्, यवादेशः] कनिष्ठ, सबसे छोटा, छः सबसे छोटा भाई, कनिष्ठ भ्राता ।

यजोव्यम् (वि०) [यजन् + ईयन्तु यवादेशः] छोटा, बच्चा,—पु० १ छाटा भाई २ पुत्र ।

यजम् (नपु०) [यज् स्तुती अजुन् वातो यद् च] प्रसिद्धि, ब्यापि, कीर्ति, विद्युति - विस्तोयने यशो लोके तैलविन्दुनिर्वाग्मिन्—यजु० ७।१४, यजसु तस्य परतो यशोवने—रघु० ३।४८, २।४० । सम०—
-कर (वि०) (यजस्कर) कीर्ति देने वाला यजसवी (यजस्व) ८।२८७,—काव्य (वि०) (यजस्व) 1 प्रसिद्धि प्राप्त करने का इच्छुक २ उष्णाकाशी, महत्वाकांक्षी,—अजम्, क्षरीरम् प्रसिद्धि के रूप में क्षरीर, कीर्तिदेह,—यजः क्षरीरे मय मे दयात्—रघु० २।५७, रघु० १।५७, मत्तु० २।३४,—इ (वि०) (यजो) कीर्तिकर (इ) चारा (इ) नन्द की पत्नी और कुञ्ज की पाकक माता का नाम,—कव्य (वि०) (वि०) कीर्ति ही विश्वास बन है, ब्यापि में समृद्ध, अत्यन्त विद्युत्—अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियाणात् यजो-वनात् हि यजो वरीय,—रघु० १५।३५, २।१,—अङ्गः

यस्यैषी दोल,—शेष (वि०) जिसकी केवल स्वाति
 शेष हो, शिवाय कीति के जिसका और कुछ न बचा
 हो,—अर्थात् मृत्युव्यक्ति, तु० कीर्तिशेष, (ब) मृत्यु ।
 यस्यस्य (वि०) [यससे हित—यत्] 1 सम्मान या कीर्ति
 की ओर ले जाने वाला—मनु० २।५२ 2 विभूत
 प्रसिद्ध, विख्यात ।

यस्यसिन्धु (वि०) [यसस् + सिन्धि] प्रसिद्ध, विख्यात,
 विभूत ।

यष्टि,—यष्टी (स्त्री०) [यञ् + क्तिन्, ति० न मप्रसारणम्] ।
 1. लकड़ी, लाठी 2. सोटा, गदका, गदा 3. खप्पा, मनुन,
 स्तम्भ 4. अड्डा—जैसा कि 'यस्ययष्टि' में 5. वृत्त,
 सहारा 6. ऋते का डटा जैसा कि 'यष्टयष्टि' में
 7. इच्छ, वृत्त 8. शाखा, टहनी 'कर्मयष्टि' स्पृष्ट-
 कोरकेव—उत्तर० ३।५१, इसी प्रकार 'यष्टयष्टि'—कु०
 ६।२, सहकारयष्टि आदि 9. होरी, यष्टी (जैसे मोतियों
 की) हार,—विष्णुय या हारमहायैनिश्चया बिलोल्-
 यष्टि प्रविशुलचन्द्रनम् कु० ५।८, रघु० १३।५
 10. कोई लना 11. कोई मो पतली या मुकुमार बन्यु
 ('यारी' अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों के पञ्चान्त
 समाप्त के अन्त में प्रयोग)—न वीथ्य वेधयुगली सरसा-
 यष्टि कु० ५।८५, ज्योतिष से तर मुकुमार अथो
 वाली' । मनु०—श्रुतः गदाधारी, लाठी रखने वाला
 —विवाह मंत्र आदि पत्नियों के बँदने का अड्डा
 —ब्रह्मेसया यष्टिनियामयज्ञान् रघु० १६।१८
 2 लहे हुए इधो पर स्थिर कबूतरी का घर या छतरी
 —श्रावण (वि०) 1 निर्बल, शक्तिहीन 2 प्राणहीन ।

यष्टिक [यष्टि + कन्] टिटाहरी पत्नी ।

यष्टिका [यष्टिक + दाप्] 1 लाठी, डटा, सोटा, गदका
 2 (एक लडका) मोतियों का हार ।

यष्टी दे० यष्टि ।

यष्टु (पुं०) [यश् + तृप्] पूजा करने वाला, यज्ञमान ।
 यत् (स्त्री०) दिवा० पर० यमति, यम्यति, यम्त) प्रयास
 करना, कोशिश करना, परिश्रम करना । प्र० (याम-
 यति—ने कष्ट देना, आ—1 प्रयास करना, कोशिश
 करना, श्रेष्ठा करना मुद्रा० ३।१८ 2 बका देना,
 षक जाना—नायस्थसि तपस्यन्ती मट्टि० ६।६१,
 १।५५, प्र०) कष्ट देना, सताना, पीडा देना
 प्र , प्रयास करना, कोशिश करना ।

या (अदा० पर० यति, यान्) 1 जाना, श्रितना—बुझना,
 चमना, आगे बढ़ना—यद्यौ तदीयामवनाम्ब बाह्यान्तम्
 रघु० ३।२५, अन्वययो मध्यमलोकाय २।१६
 2 बढ़ाई करना, आक्रमण करना मनु० ७।१८३
 3 जाना, प्रयाण करना, कूच करना (कर्म० या सत्र०
 के साथ ज्ञपवा 'यति' के साथ) 4 मुजर जाना,
 वार्त्तन होना, बिदा होना 5 नष्ट होना, बीजल

होना—यान्तनवार्त्तन च विवेक भूमि० १।६८,
 आद्यक्रमेण हि यनानि भवन्ति यान्ति मृच्छ० १।१३
 6 मुजर जाना, बीजना (यमय का)—यौवममनि-
 वति यान्ति कु कम्ब० १० 7 टिकना 8. होना
 घटित होना 9 जाना, घटना, होना (प्राय प्राय-
 वाचक सत्ता के कर्म० के साथ) 10 उपन्यासिच
 सभालना न त्वस्य सिद्धौ याम्यसि संभ्यापार
 मयमना कु० २।५४ 11 सँभुनमबध स्यापिन
 करना 12 प्रार्थना करना, याचना करना 13 कुँवना,
 खोजना ('यम्' की भक्ति 'या' के अर्थ भी मयुक्त
 मन्त्रा वाच्य के अनुशासना प्रकार से बदलते रहते
 हैं—उदा० अथे वा आये आये चलना, नैतुत्व करना,
 मार्ग दिखाना, अथो वा इवना, अस्त वा छिपना,
 अम्न होना हीन होना उच्ये वा उदय होना नाश वा
 नष्ट होना, निराग वा सो जाना च वा पद प्राप्त
 करना, चार वा पात्र जाना, स्यामी होना, पात्र क-
 जाना, आगे बढ़ जाना, प्रकृति वा फिर स्थापित
 अवस्था को प्राप्त करना, लक्ष्यो वा हलना होना
 वरुं वा उच्ये वे होना, अधिकार में आना, बाध्यता
 वा स्वीकृत वा निर्दिष्ट होना विपर्यय वा परिचरि-
 होना का बदलना शिरसा चारी वा भूमि पर मि-
 भ्रुकला आदि) प्र० (यार्यति—न) 1 चलना
 आगे बढ़ाना 2 घटाना, दूर टाकना—रघु० ५।२१
 3 अय करना (यमय) बिनाशा—नाककोरि
 विरया—यत्तय विरयान् भूमि० १,
 4 सहारा देना, पालनपोषण करना दुष्का
 (शियामनि) जाने की इच्छा करना, जाने का हला
 अग्नि — 1 पात्र जाना, अधिकरण करना, उन्मत्त
 करना 2 आगे बढ़ना अग्नि —, चले जाना, प्राय
 बढ़ना चष विचलना कुनोर्त्रयाम्बमि कर्ति
 मन्ते परिधि मट्टि० ८।१०, अथ 1 अनुनय
 करना पाठे जाना (आद्य—ने भी) अनुवायमनि-
 त्तया म० १।२९, कु० ५।११, मट्टि० ३।२
 2 नकल करना, बराबर करना स किलतययम-
 रात्राना रश्मिपुंशः—रघु० १।२०, १।६ सि-
 १।१३ 3 मार्ग चलना, अनुसृत, क्रमश चलना
 अथ , चले जाना, बिदा होना, वार्त्तन होना
 अग्नि , पहुँचना, जाना नजदीक होना अग्निपौय
 शिवाचलमृच्छि,मम- कि० ५।१, रघु० १।२
 2 पशुपु करना, आक्रमण करना—रघु० ५।२
 3 लम्ब करना आ 1 जाना, पहुँचना निक
 होना 2 पहुँचना, प्राप्त करना, भूगतता, किता भी
 अवस्था में होना, खव, तुला, नाशम् आदि, अथ
 1 पहुँचना, निकट जाना—कि० ६।१६ 2 (किती
 विषय अवस्था को) प्राप्त होना मृत्यु, ननुगा

कर्म आदि, भिक्षु—, 1. निकरना, बाहर जाना - -रघु० १२८३ 2. मुकदमा, (समय) बीतना, बरि—, चारों ओर घूमना चक्कर काटना, प्रदक्षिणा करना, प्र. 1 चक्का, घाना—अन्तर्गत नवरत्नवैद्य-व्रतप्राप्ति-मू० १२७ 2. प्रयाग करना, कृष् करना, प्रति, वापिस जाना, बीटना - -रघु० ११७५, १५१८, ८१०, प्रबुद्ध—, (बाहर स्वल्प) उठकर मिलना, अभिवादन करना, उत्कार करना—दानवर्मा-नर्ष्याभाषाया दूरतत्परपद्यो विरि कु० ६५०, मेघ० ०२, रघु० १४९, विभिक्षु—, बाहर जाना, निकर जाना, में से चले जाना—प्राचास्तव्या विभिषंद्, —सम् 1 चले जाना, रिदा होना, धर्म पार कर लेना का० १५८ 2. जाना, प्रविष्ट होना तथा शरीरगति विहाय जीर्णत्वम्यानि सयाति नवानि वेष्टी भय० २१२२ 3 पहुँचना ।

याग [यञ् + यञ्, कुम्भ] 1 उपहार, चक्र, बाहुति 2 कोई भी ब्रह्मण्डल जिसमें जाहूँटियाँ ही प्रायं - -रघु० ८१० ।

याच (भा० आ० याचते—विरल प्रयोग—याचति याचित) मागना, याचना करना, निवेदन करना, प्रार्थना करना, अनुरोध करना, अनुरोध-विनय करना (द्विकर्म० के याच) बलि याचते वसुधाया मित्रा० फिर प्रणिनाय यादयोपरिस्वामनायास्तस्य—रघु० ८१५, भट्टि० १४१०५ (उत्तमं कर्म पर इस धाम् के अर्थों में कोई महान् परिश्रम नहीं होता) ।

याचक [यञी-की] [याच् + क्त] भिक्षुक, मिसारी, आवेदक—नृपादिगि लघुम्बुलमूलादिपि च याचकः—सुभा० । याचनम्,—ना [याच् + क्त] मित्रया दाप् च 1 मागना, याचना करना, निवेदन करना, 2 प्रार्थना, अनुरोध, आवेदन याचना माननाभाव, बन्धुतामममनाफला-अवतिः रघु० १११०८ ।

याचनक [याचन् + क्त] मिसारी, अभिवोक्ता, आवेदक ।

याचिष्णु (वि०) [याच् + इष्णुच्] भील मागने पर उत्साह याचनाशील, मागने के स्वभाव वाला ।

याचित (यु० ङ० ह०) [याच् + क्त] मागना क्या, निवेदन किया गया, याचना किया गया, अनुरोध किया गया, प्रार्थना की गई ।

याचितकम् [याचित + क्त] भिक्षा में प्राप्त वस्तु, उपहार जो हुई कोई वस्तु ।

याचना [याच् + नञ् + टाप्] 1. याचना, याचना करना 2 भिखारीय 3 प्रार्थना, निवेदन, अनुरोध—याचना योवा हरयाविगुने माधने लक्ष्यकामा—मेघ० ६ ।

याचक [यञ् + क्त] 1 यज्ञ करने वाला, यज्ञ करने वाला दुरोहित 2 राजकीय हाथी 3 नदी-नाल हाथी ।

याचकम् [यञ् + क्त] यज्ञ का संचालन या यज्ञ-पथन कराने की विद्या—यजु० ३१६५, ११८८ ।

याचकेशी [याचतेन + क्त + ङीप्] द्रोणदी का विष्णुवरक नाम ।

याचिक (वि०) (स्त्री०—की) [याचय हित, यज्ञ प्रयोजन-मन्त्र वा उक्त] यज्ञसंबन्धी, कः यज्ञ कराने वाला, या यज्ञ करने वाला, या यज्ञ करने वाला दुरोहित ।

याच्य (वि०) [यच् + क्त] 1. व्याज करने के योग्य 2 यज्ञ संबन्धी 3 जिसके लिये यज्ञ किया जाय 4 याच्य द्वारा जो यज्ञ करने का अधिकारी माना है,— क्तः यज्ञकर्ता, यज्ञसम्पापक,— क्तः उपहार या दक्षिणा जो यज्ञ कराने के उपसक्य में प्राप्त हो ।

यात (यु० क० क०) [या + क्त] 1 यत्र हुआ, प्रयात, चला हुआ 2 युवरा हुआ, विस्तृत हुआ, दूर गया हुआ (दे० या)।—सय 1 चाल, गति 2 प्रयाग 3 मृत-काल । सय०—सयम्, —बालम् (वि०) 1. बावी, इस्तेमान किया हुआ, विकृत, परिवर्तन, जो विग्नक हो गया है अवातयाय कयः दश० 2 कन्धा, अक्ष-पका (भोजन आदि)—यातयाम चतस्र गृति पर्वणित च यन्-मय० १७१२० 3 जीर्ण, चला हुआ, चिसा-हुआ—

यातकम् [यच् + क्त] 1. प्रतिकार, बदला, प्रति-कोष, प्रतिशिक्षा अर्थात् किं 'वेरयातन' में 2 प्रतिहिंसा, वेरलोचन, या 1. प्रतिशोध, क्षतिपूर्ति, बदला 2 सनाय संधोधन, वेदना 3 यम के द्वारा पापियों को दोष यातना, नरक की कष्टना (य० य०) ।

यातुः [या + तु] 1 बावी, बटोही 2 हवा 3 समय, यु०, न्यु० मृतपंत, पिशाच, राजन । सय०—सय मृत-पंत, पिशाच, भट्टि० २१२१, रघु० १२१५ ।

यातु (स्त्री०) [यत् + क्त] कृत्रिम] चिट्ठी या देवराणी ।

याता [या यत् + टाप्] 1. चाला, गति, सकर, कहावी० ६११, रघु० १८१६ 2. सेवा का अर्थ, चवाई, आक्रमण धार्मिकीं वृत्ते गति यायायाचा गहीरतिः - यजु० ७१८१, पथ० ३१३, रघु० १७५६ 3 तीर्थपटन बना तीर्थयात्रा 4 तीर्थ यात्रियों का समूह 5 उत्सव, पर्व, किसी उत्सव का उत्कार का अन्तर—कात्प्रियावाचक्य याचाप्रसङ्गेन—या० १, उत्तर० ६. कुम्भ, उत्सवयात्रा, वृत्ता लक्षु वापावि-बुद्धं वासुदी—या० ६, ६१२ 7. सरक 8. जीवन का अन्तारा, शीतका, निवाह, यात्रायात्र इतिद्वय—यजु० ४१३, क्षीरान्तापि च ते न प्रतिश्वेदकयः - यजु० ३१८ 9 (यम का) बीटना 10. संभवहार - याता वैच हि क्षीरिणी—यजु० १११८८, लोच-नाया वेची० १, यजु० १२७ 11. रीति, उपय,

तरकीब 12 प्रथा, प्रचलन, वस्तु, रीति—एबोविता लोकयात्रा नियत स्त्रीमुखी: परा - मनु० ११२५, (लोकचार—कुन्द०) 13 वाहन, सवारी।

बाह्यिक (वि०) (स्त्री०—की) [बाया+उठ्] 1 यात्रा करता हुआ 2 किसी यात्रा या जन्दीलन से सम्बद्ध 3 जीवन-धारण की आवश्यक सामग्री 4 प्रचलित, प्रधानकाल, -क: यात्री, -कम् 1. प्रयाण, जमियान या बड़ाई 2. बाह्य सामग्री, (यात्रा के लिए) रसद, सम्भरण।

बायातयम्बु [ययातय+व्यञ्] 1 वास्तविकता, सचार्थ 2 न्याय्यता, औचित्य।

बायाधर्म्यम् [यथाय+ध्मञ्] 1 वास्तविक या सही प्रकृति, सचार्थ, सच्चा चरित्र - न सति यायाधर्म्यविद पिना-किन - कु० ५।७७, रघु० १०।२५ 2 न्याय्यता, उच्यव्यक्तता 3 उद्देश्य की प्रति या नियमप्रदा।

बायक: [यदोरपरयम् अन्] यद्दु की सतान, यद्बन्धी।

बायल (मपु०) [याति वेगेन—या+अनुत्, हुयागम्] कोई भी विशालकाय जलजन्तु, समुद्री जानवर—यादासि जलजन्तव—अम०, बध्नी यादसामहम्—अम०, १०।२९, कि० ५।२९, रघु० १।१६। सम० बलि:—नाब. (यादासां पति, यादासां नाथ श्री) 1 समूह, 2 बन्ध का नाम—रघु० १७।२१।

बायुज (वि०) (स्त्री०—की), बायुज, बायुज (वि०) (स्त्री० श्री) [यद्+युज्+क, विभु, कम् वा, आठम्] जिस प्रकार का, जिसके समान, जिस प्रकृति का, जैसा।

बायुजिक (वि०) (स्त्री०—की) [यद्+उठ्] 1 ऐच्छिक, स्वत स्फूर्त, स्वतंत्र 2 आकस्मिक, अप्रत्याशित।

बायम् [या प्राये न्यट्] 1 जाना, हिलना-डुलना, चलना टहलना, सवारी करना जैसा कि गजयानम्, उष्ट्र० रघु० आदि 2 जलयात्रा, यात्रा—समुद्रयानकुसुमा—मनु० ८।१५७, यात्र० १।१५४ 3 जमियान करना, आक्रमण करना (राजनीति के छ मुर्षों में से एक)—अहितान् प्रथमीतस्य रणे बायम्—अमर०, मनु० ७।१६० 4 जन्म, परिजन 5 सवारी, बाहन, गाड़ी, रथयाण सम्भार कोहरम्—रघु० १५।४५, १३।६९, कु० ६।७६, मनु० ५।२००। सम० बायम् बहाव, नौका, -मध्य बहाव का टूट जाना, -बुद्धम् गाड़ी का बाणा भाग, गाड़ी का वह भाग जहाँ नूका बांधा जाता है।

बायनम्, -ना [या+निष्+व्युट्, पुकागम्, क्रिया टप् ब] 1 जाने देना, हाक कर बाहर निकालना, निष्काशन, हटाना 2 (किसी रोग की) चिकित्सा या प्रयाण 3 समय बिताना जैसा कि 'कालयाण' में

4 विलम्ब, दीर्घसूचता 5 सहारा, निर्वाह 6 प्रचलन, प्रथास।

बाय (वि०) [या+निष्+व्युट्, पुकागम्] 1 हटाये जाने के योग्य, निकाले जाने के योग्य अथवा अस्वीकार किय जाने के योग्य 2 नीच, तिरस्कारणीय, मामूली, अनाधिक्य। सम०—बन्धम् चिकित्सा या पालकी, बोली।

बाय: [यम्+अञ्] 1 निरोध, बँध, नियन्त्रण 2 पहर, दिन का आठवाँ भाग, तीन बँटे का समय—परिष-माध्यामिनीयामात्रसारमिष केतना—रघु० १७।१, इसी प्रकार बायपत्नी, पिधामा आदि। सम०—बोधः 1 मुर्दा 2 बन्धा या चरियाल जिससे राज के पढ़ने की टनटन होती है—मन्त्रध्वनिवाग्मित्रियामुर्ध—रघु० ६।५६, यमः प्रत्येक बन्धे के लिए निर्दिष्ट कार्य—वृत्ति (स्त्री०) पहरा देना, चौकीदारी करना।

बायकम् [यमल+अन्] बोड़ी, मिथुन।

बायकती [याम+अनुत्, बायम्, कीप्] रात - कि० ८।५६

बायि, -की (स्त्री०) [याति कुजान् कुजान्तरम्—या+मि, कीप् अ, 1. बहल (दे० बायि)—वि० १५।५० 2. रात।

बायिक [यामे नियुक्त याम+उठ्] पहरेदार, रात का पहर पर नियुक्त, चौकीदार—नै० ५।११०।

बायिका, बायिनी [बायिक+टाप्, याम+इनि+कीप्] रात—संधिता [बध्बलि विदुर्गति सविनरति दिनति यामिन्य, यामिनर्नति दिनानि च मुमुक्षुभवशीलन मनसि -काम्य० १०।] सम० बलिः 1 कदमा 2 कपूर।

बायुज (वि०) (स्त्री० श्री) [ययुना+अन्] ययुना में सबब, या निकसा हुआ, या ययुना से उत्पन्न यम् एक प्रकार का जहन, मुर्दा।

बायुनेच्छकम् [ययुना+इच्छकम्] सीसा राग।

बाय्य (वि०) [यम्+व्यञ्] 1 दक्षिणी-द्वार रथयुगो-व्यम् - बट्टि० १।७।५ 2. यम से सबब रमने वाला या यम से मिलता जुलता। सम०—अबन्धम् दक्षिणायन, मकरसंक्रान्ति—उत्तर (वि०) दक्षिण में उत्तर का जाने वाला।

बाय्या [याम्य+टाप्] 1 दक्षिणदिक् 2 राशि।

बाय्यकम् [यम्+यद्+उठ्] द्वार २ फल का अनुष्ठान करने वाला, जो रुमातार यज्ञ करता रहता है—इन्द्रायीन—श यायजूक लहू मिश्रमुर्ध—बट्टि० २।२०।

बाय्यवर (वि०) [युन-युन याति देवात्तर यच्छति ना+यद्+वरम्] परिश्रमशील साधु, सन, योगीयन पुण्यकलेन प्राये प्राणवर्धनीयं बाय्यवर्धनीयम् - बट्टि० २।२०, महाभारतसंनिवृत्तवर्धनि यायाधुले

—बासरा० ११३३ (यहाँ 'याबावर' एक कुक का नाम है) ।

यावः—यावत्,—कम् [यु + अच् + अन् = याव + कम्] 1. जो से तैयार किया हुआ आहार 2. काम, साल रत, महावर—अन्वये स्म परिचयनयायाया यावकेन विद्यतापि मन्वया—सि० १०१९, १५१३३, कि० ५४० ।

यावत् (वि०) (स्त्री०—सौ) [यु + वत्, यावत्] ('यावत्' का महत्वबधी) 1 जितना, जितने ('जितने' के लिए यावत् तथा 'उत्तरे' के लिए तावत् का प्रयोग होता है) पुरे तावन्तनेवास्य तनोति रथिराठवम् । दीषकाकमलोन्मयो यावत्यावैष साप्यते—कु० २३३३, ने यु यावन्त एवावी तावारच दपसे स है—रम्० १२१, ५५, १०३७ 2 जितना बड़ा, जितना विस्तृत, कितना बड़ा या कितना विस्तृत यावान्तरे उपपाने सर्वतः सन्वतादके, नावावन्वेषु वेनेषु बाह्यमन्व विवागत भय० २१४६, १८१५५, 3 तक, समस्त (यहाँ दोनों मिल कर मयष्टि या माकव्य का अर्थ प्रकट करते हैं)

—यावद्दत् तावद्भूक्तम् गन्० अन्व०, 'यावत्' अकेला प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) यहाँ तक, तक, पर्यन्त, जब तक कि, (कर्म० के साथ)—तयवयाग शान्तु पुत्रगोत्रेक्षण उत्तर० ७, अजिनमयसि यावद्वसम्भारित चित्रकारेमासिञ्जितम् उत्तर० १, संपकोटर यावत् पथ० १ (ख) तभी, ठीक उसी समय, इसी बीच में (तुरन्त किये जाने वाले कार्य को इतनी शान्ति) —नदुयावत् गृहिणीमाहूय मणीकमनुतिष्ठासि ख० १, यावदिमां छायामाश्रित्य प्रतिपामयामि ख० ३ 2 यदि यावत् और तावत् मिलकर प्रयुक्त हो तो निम्नांकित अर्थ प्रकट होता है (क) इतनी देर कि, इतने समय तक कि, —यावद्विस्तोपार्जनसप्तम्याश्रित्यपरिचारे रस्त—मोह० ८ (ख) ज्योंही, अभी-जबही, इसी समय—एकस्य दुःख्य न यावदस्त पञ्चाभि... तावद्विदुतोष सम्पत्सित मे हि० ११२०४, येष० १०५, कु० ३१०२

(घ) जबकि, उसी समय तक आशयवाचिनी यावद्वैशेष्याहनुपावने तावदाहंपृष्ठा क्तिन्तां वाजिन ख० १, प्राय 'य' के साथ भी प्रयोग जब कि 'यावत्' का अर्थ होता है 'इतने पूर्व कि' आशयेने सरतो मोत्यतन्ति तावदेतेभ्यः प्रवृत्तिरवममयिन्त्या चिकम् ४ (घ) जब, जिस समय यावदुपाय निरीक्षते तावद् हंसोऽज्जोकिता—हि० ३ । सम० अन्व०—अन्वयात् (अन्व०) जन्त तक, आशीर तक,—अर्थ (वि०) आशयकता के अनुसार, उत्तरे जितने कि अर्थ प्रकट करने के लिए आशयक है (अन्व०)—यावदर्थपदां शान्तेयकाशय माधवः विरारय—सि० २१३३, (अन्व०) अर्थवत्) 1. उतना जितना

उपपत्ती हो 2 तभी अर्थों—वयमपि च विरायीमझे यावदर्थम्—अर्थ० ३१० (पाठांतर),—इच्छम्, —ईषितम् (अन्व०) यथेच्छ, इच्छा के अनुसार, —इच्छम् (अन्व०) आशयकता के अनुसार, कितना आशयक ही,—अन्व०—शीघ्रम्,—शीघ्रम् (अन्व०) जीवन भर, जीवनपर्यंत, आजीवन,—अन्व० (अन्व०) अपनी शक्ति के अनुसार, कितना अधिक से अधिक मर ही,—अन्वित उक्त (वि०) उतना जितना कहा जा चुका है,—याव (वि०) 1. इतना बड़ा, इतना विस्तृत, यहाँ तक व्यापक ही—कु० २१३३ 2. नगण्य, गुच्छ, मामूली,—अन्व०,—अन्वित (अन्व०) यहाँ तक शयम ही, अपनी शक्ति के अनुसार—इसी प्रकार 'यावत्तरवम्' ।

यावत् (वि०) (स्त्री०—सौ) [यवन् + अच्, यु + विच् + ल्यट् वा] यवनों से संबंध रखने वाला, न बंधे-छावनी भाषां प्राप्ते कथ्यतेरपि—सुभा०,—क सोधान ।

यावत्तः [यवत् + कम्] 1 घास का डेर 2. चारा, खाद्य-मायसी ।

यावत्की (वि०) (स्त्री०—सौ) [यष्टि प्रहरणस्य—ईकृत्] लाठी या सोटे से सुसज्जित,—कः लाठी से सुसज्जित योद्धा ।

यावत्कः [यस्कमयापत्यम्—यवत् + अच्] निष्कटकार का नाम ।

यु । (अशा० पर०) दौलत, युत, प्रेर० यावयति, इच्छा० नियन्त्रित या व्यूषति) 1 सम्मिश्रित होना, मिलना 2. मिश्रण, गूथगूथ करना ।

॥ (युही० पर०) युवाति) अलग-अलग करना ।
॥ (कथा० उ० प० युवाति, युनीते) बाँधना, अकड़ना, सम्मिश्रित होना, मिश्रण ।

प्र , धामना, अनुष्ठान करना, स्थिति - , मिथय करना—अन्वोय्य स्म व्यतिवृत्त शब्दाभ्यं शब्दस्तु यीषयान्—अष्टि० ८६ ।

युक्त (यु० क० इ०) [यु + क्त] 1. सम्मिश्रित, मिला हुआ 2. अकड़ा हुआ, युए में यौता हुआ, साथ-साथान से मतङ्ग 3 युक्त किया हुआ, सुव्यवस्थित 4 सहित 5 सुसज्जित, युक्त, तैयार हुआ, सहित (समास में वा करण० के साथ) 6 चिहर, तुला हुआ, यौग, व्यस्त (अर्थ० के साथ) 7 कर्मप्रापय, परिचयी 8 कुशल अनुभवनी, चतुर 9. योग्य, उचित, ठीक, उपयुक्त (संब० वा अर्थ० के साथ) 10. आधिकारी, यौक्तिक (अन्व०)—कतः श्लाघा यो परब्रह्म परमात्मा से तापुज्य प्राप्त कर सका है,—कल्प जोड़ी, जडा वा युग्म । सम०—अर्थ (वि०) समझदार, विवेकी, सार्थक,—अर्थवत् (वि०) जिसे किसी कर्तव्य कर्म पर

कमला गया है,—कम्ब (वि०) म्यापौचित संघ देने वाला—रघु० ४८८,—कम्ब (वि०) सावधान,—कम्ब (वि०) योग्य, उचित, सायक, उपयुक्त (सब० या अर्थि० के साथ)—अन्वय अथ प्रयोषो युक्तक्यामिद तत्र—शं० ११७, अनुकारिणि पूर्वोक्तो युक्तक्यामिद रविषि—२१२६।

युक्ति. (स्त्री०) [युज्+क्तिन्] 1 मिलाप, समय, सम्मिश्रण 2 प्रयोग, इस्तेमाल, काम में लाना 3 जुए में जोतना 4 व्यवहार, प्रचलन 5 उपाय, तरकीब, योजना, युगत 6 कपटयोजना, कूटयुक्ति, दाब-बैच 7 औचित्य, योग्यता, सामञ्जस्य, संगति, उपयुक्तता 8 कौशल, कला 9 तर्कना, युक्ति, दलील 10 अनुमान, निगमन 11 हेतु, कारण 12 कृत्रमदृष्टता, रचना अथ कल्पित बाधोयुक्ति शां० ११३ (विधि में) सभावना, परिस्थिति की गणना या विशेषता (समय, स्थान आदि की दृष्टि से)—युक्तिप्रतिभ्याचिह्नसवधानेयहेतुभिः पाठ० २१२२, २१२२ 14 (नाटको में) घटनाओं की नियमित व्यवस्था, मु० शां० २०-३४२ 15 (अल० में) किसी के प्रयोजन या अभिकल्प की प्रवृत्तय अथवा प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति 16 कुशल हाथ, योग 17 जानु में जोत मिलाना। सम० कम्बम् हेतुको का वर्णन, कर (वि०) 1 उपयुक्त, योग्य 2 सिद्ध—ज्ञ (वि०) तरकीब या उपायो में कुशल, आधिष्ठाकर कुशल, युक्त (वि०) 1 उपयुक्त, योग्य 2 विषयत्व, कुशल 3 स्थापित, सिद्ध 4 तर्कयुक्त।

युगम् [युज्+घञ् कुन्वम्, युभाभवे] 1 जुवा (पु० नो इम अर्थ में)—युग्यायत बाहु रघु० ३१२४, १०१७, जि० ३१६८ 2 जोड़ा, दम्पती, युगल कुम्बोर्ध्वेन नरसा कलिना जि० ११७२, स्तनयुग शं० ११९३ 3 श्लोकांश विषयों दो चरण होते हैं, युग 4 सृष्टि का युग (युग चार है कृत या मय्य, त्रेता, द्वापर और कलि प्रत्येक की अवधि क्रमशः १७२०००, १२९६०००, ८६४००० और ४३२००० वर्ष हैं, चारों की मिलाकर ४३२०००० वर्ष का एक महायुग होता है) ऐसा माना जाता है कि युगों की उत्पत्तिर घटती हुई अवधि के अनुसार आर्गनिक और नैतिक शक्ति भी मनुष्यों में बराबर गिरती गई है, समयत इसीलिए कृतयुग की स्वर्णयुग और कलियुग को लौहयुग कहते हैं) धर्मसंस्थापनाधीन सभ्यताय युगे युगे भग० ४८, युगधनपरिवर्तान्—शां० ७१४ ५ पीढ़ी, जीवन,—आ सप्तमाद्युगान् मनु० १०१६४, जात्युक्तयो युगे ज्ञेय पञ्चमे सप्तमर्तयि वा शां० ११९६, युगान्—जन्मनि मिला०) 6 'चार' की मध्या की अभिव्यक्ति, 'बाहु' की

सख्या के लिए विरलप्रयोग। सम० अन्तः 1 जुए का किनारा 2 युग का अन्त, सृष्टि का अन्त या विनाश युगास्तकालप्रतिवृत्तात्मनो वर्णयति सख्या सचिकासमासत शि० ११२३, रघु० १३१६ 3 मध्याह्न, दोपहर, अर्धदिः सृष्टि का अन्त या विनाश शि० १०४०, शीलकः जुए की कीकी पाश्चात् (वि०) जुए के पास जाने वाला, जुए में जुतने वाला बैज, बाहु (वि०) लम्बी नुजाओ वाला—कु० २१८।

युगम्बरः—रम् [युज्+लृप्, मु] गाड़ी की जोड़ी जिसके साथ जुआ कर दिया जाता है।

युगम् (अब्ध०) [युज्+लृप्+किवृत्] एक ही समय, मय एक मास, सब मिलकर उसी समय कु० ३१२ प्राय समाप्त में शां० ४१२।

युगलम् [युज्+कलृप्, कुन्वम्] जोड़ा दम्पती बाहु हस्त चरण आदि।

युगलकम् [युगल+कन्] 1 जोड़ी, 2 श्लोकांश, जो दो मिलकर पूरा श्लोक या वाक्य बनाए, दे० युग।

युग्म (वि०) [युज्+मक्, कुन्वम्] सम०—युगमास युवा जायते विप्रयोऽयमासु रात्रिषु, तस्माद्युगमासु युवायी सविदोदात्ते स्त्रियम्—मनु० ३४८, पाठ० ११७१ 1 जोड़ी, दम्पती, दे० अयुगम् 2 समय, मिलाप 3 (नदियों का) समतल 4 जुड़ावा 5 श्लोकांश जिन दो से मिलकर पूरा एक वाक्य बने—द्राम्या युग्मनि प्रोक्तम् 6 मिथुन राशि।

युग्य (वि०) [युगाय हित—यन्] 1 जोतने के योग्य 2 जुटा हुआ, साक सामग्री से मजद 3 सींचा गया जैसा कि 'अव्ययुयो रय' में, यह जुटा हुआ या सींचने वाला जानवर, विशेषत रथ का घोड़ा—हरिदयुग्य रथ तल्पे—प्रजिघाय पुरन्दर—रघु० १२८४।

युग् 1 (सब०) उभ० युगन्ति, युहन्ते, युक्त) 1 सम्मिलित होता, मिलना, अनुपेक्षत हाता, संबद्ध होना, जुड़ना—तमर्षमिब आरत्या मुनया बोधुम्हर्षि—कु० ६१७९, दे० कर्मशा० नीचे 2 जोतना, जीन कसकर समद करना, लगाना—भानु सङ्घुक्नतुरङ्ग एव शां० ५४, भग० ११२४ 3 सुसज्जित करना, यु युक्त करना जैसा कि युवायुक्त में 4 प्रवृत्त करना, काम में लगाना, इस्तेमाल करना प्रशस्त करना (अर्थि० के साथ) 5 निदेशित करना, (मन आदि का) स्थिर करना, जमाना 7 अपना ध्यान लक्षित करना—मन समयम् मन्थितो युक्त भासीत मत्पर—भग० ६१२४, युष्मन्निव सहायान्—१५ 8 रखना, स्थिर करना, जमाना (अर्थि० के साथ)

१ तैयार करना, सुव्यवस्थित करना, सम्मिलित करना, युक्त करना 10 देना, प्रदान करना, साधर उपनिहित करना—आशिष प्रयुक्ते, कर्मबा० (युक्त्वे) 1 सम्मिलित होने के योग्य—रिषिपीतजला तपस्यस्य पुनरोर्षेण हि युज्यते नदी कु० ४।४४, रघु० ८।१७ 2 प्राप्त करना, स्वामी होना—इष्टेन युज्यन्व-सं० ५, महाशी० उ. रघु० २।६५ 3 योग्य या सही होना, सम्पुष्टि होना, उपयुक्त होना (अधि० या मन्त्र के साथ) या वयस्य युज्यते मृषिका ता मृत्यु भावेन तथैव सर्वे भार्या पांडिता मा० १, नैतोक्ष्यस्वापि प्रभुष त्वपि युज्यते—हि० १ 4 तैयार होना—ततो युद्धाय युज्यन्व भव० २।३८, ५० 5 तुल्य जाना, सीन होना, निर्देशित होना—मनु० ३।७५, १५।३५, कि० ७।१३ 1 प्रेर० (प्रायश्चित्ते) 1 सम्मिलित होना मिश्रणा एक्य करना—रघु० ७।१२ 2 उपहार देना, समर्पण करना, प्रदान करना—रघु० १०।५६ 3. निवृत्त करना, काम पर लगाना, इस्तेनात करना—सन्निवर्तयतेभ्यःभूम-पथ० ६।१७ 4 मूकना, जिज्ञो और निर्देशित करना पाषाणधारयति योजयते हिना—मनु० २।७० 5 उत्तेजित करना, प्रेरित करना, भड़काना 6 सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 7 तैयार करना, सुव्यवस्थित करना सुसज्जित करना इच्छा० (युक्त्वाति-ने) निर्दिशित होने की इच्छा करना, बोलने की इच्छा करना, देने की कामना करना, अनु- (भा०) 1 पूछना प्रश्न करना—अन्वयुक्त मुकुण्डवर्ण जिने रघु० ११।१२, ५।१८, वि० १०।६८ 2 परीक्षण करना, त्राप करना मनु० ७।७९, अर्थि (भा०) चेष्टा करना, काम में पिक जाना 2 आक्रमण करना, धावा करना भ्रमन्तमनिवास्तुयुक्त्वा-दश० 3 दोषादीपण करना, दोषी ठहराना मनु० ८।१८३ 4 अधिकार बनाना, माण प्रस्तुत करना (जैके कि किसी कानूनी अभियोग में)—विनाशितकरोशेन देव यद्यभियुज्यते-विष्णु० ४।१७, याज्ञ० २।९ 5 कहना, बोलना उद्—
उत्तेजित करना, सम्मिलित करना 2 कोशिष्य करना, प्रथाम करना भ्रमन्तमनिवास्तुयुक्त्वा-दश० 3 तैयार करना, उप- (भा०) 1 इस्तेनात करना, काम में लगाना—वाङ्मन्ययुक्त्वा-वि० २।९३, पञ्चमयुक्तान्युक्तानः बहुपययुक्त समीक्ष्य तत्फलम् रघु० ८।२१, मासिण ५।१२ 2 चक्राना, स्वाद्य देना अनुभव करना (आश० से भी) रघु० ८।४५, मरि० ८।३९ 4 उपशोष करना, कामा—मनु० ८।४०, वि (भा०) 1 निवृत्त करना, प्रतिनिवृत्त करना, भावेद्य देना (अधि० के साथ)—दशानि विषेवदिवसे स वरा-विद्युक्त्वा—मा० १।५, महापुरुषार्थी तत्र भवान् कावचप. य इषामाचयकर्म निवृत्तते सं० १, कु० ३।१३, रघु०

५।२९ 2 सम्मिलित होना, मिश्रणा 3 निवृत्त करना भाविष्ट्य करना। (प्रेर०) 1 सम्मिलित करना, मिश्रणा, से युक्त करना, प्रथाम करना—कु० ४।६२ 2 बोलना, सनद्ध करना, 3 उक्ताना, प्रेरित करना—मनु० १।१, प्र—(भा०) 1 इस्तेनात करना, काम में लगाना—अन्वयपि च गिर नस्तपत्रोभोत्रयुक्त्वा—रघु० ५।७५, मङ्गुले साधुभाषे च सतिस्तेतयुक्त्वा—मनु० १।७।२६ 2 निवृत्त करना, काम में लगाना, निर्देशित करना, भावेद्य देना—मा मां प्रयुक्त्वा कुक्षीतिनोपे—मनु० ३।५४, प्रायुक्त्वा गन्धे यत् कुक्षरे ताम्—३।५१, कु० ७।८५ 3 देना, प्रदान करना, अर्पण करना—अशिष प्रयुक्ते न हाहिनीम्—रघु० ११।६, २।७०, ५।३५, १५।८ 4 हिलना-मुलना, गतिदेना—अक्षय-युक्त्वा (बाहलता)—रघु० २।१० 5 उत्तेजित करना, प्रेरित करना, प्रेरणा देना, हाकना—कु० १।२१, मनु० ३।३६ 6 तरफ करना, करना—रघु० ७।८६, रघु० १७।१२ 7 रमच प्र प्रतिनिधित्व करना, अर्पण करना, नाट्य करना—उत्तर रामचरितं तत्रैवात प्रयुज्यते उत्तर० १।२, परिवर्ति प्रयुज्यन्तस्व मम कु० १- 8 इस्तेनात करने के लिए उधार देना, (यत्र भाषि) व्याज पर देना—मनु० ८।१४६, वि (भा०) 1 छोड़ना, परिश्रय करना—वि० २।४६, रघु० १३।३ 2 अनप-अलग करना—पुरी विमुक्तो विमुक्तो कृपाक्षी कु० ५।२६ 3 टीका करना, सिद्धि करण, सिद्धि, 4 इस्तेनात करना, व्यव करना 2 निवृत्त कर काम में लगाना 3 बंदना, अनुभावन करना, बिन त्या करना—अपेक्षे विनियुक्तारामा कच न श्राव्यसि प्रभो—कु० २।३१ 4 विमुक्त करना, अलग करना, तत्पु, सम्मिलित होना (कर्मबा० में)—तत्रोक्तस्ते स्वेष क्युर्नेहिना रघु० ५।२५, (प्रेर०) विसाना, सम्मिलित करना।
॥ (म्वा० चुरा० पर० मोक्षति, योक्षयति) योजना, विसाना, बोलना दे० अत्र युज् ।
॥ (विबा० भा० युज्यते) नम को हकेप्रित करना (युज् के कर्मबा० रूप के लक्ष्य)।
युज् (वि०) [युज्+विजन्] (सवाय के मत में) 1. युक्त हुआ, मिश्र हुआ, युक्त हुआ, सीधा जाता हुआ 2 तम, अविचल, पुं० 1. सम्मिलक, जो जोड़ देता है, मिश्रा देता है 2. अधि भूमि, जो अपने भाषणी वाक्-समाधि में लक्ष्म रखता है 3. बोद्ध, कर्त्ता (संज्ञक) में नृ० भी।
युज्यन्तः [युज्+सानच्] 1. हुकमे वाका, रचयत् 2. यह हाहाय जो परततया से क्षान्ज्य श्राव्य करने के लिए योग्याभाव में अल्पते ।
युज् (यु० क० इ०) [यु+ज] 1 युक्त हुआ, सम्मिलित,

मिसल हुआ 2 से युक्त या सहित—जैसा कि 'पुनःपुनः-युक्तो कर' में ।

युक्तम् [युत्+कन्] 1 जोड़ी 2 मिलाप, मिश्रता, मैत्री 3. विवाहोपहार 4 स्त्रियों की एक प्रकार की वेश-भूषा 5 स्त्रियों के वस्त्र की किनारी या झालर ।

युक्तिः (स्त्री०) [यु+क्तिन्] 1 मिलाप, समय 2 सुसज्जित होना, 3 स्वाभिव्यक्त प्राप्त करना 4 जोड़, योग 5 (अर्थोक्ति में) मयुक्ति, दो प्रश्नों का स्पष्ट योग ।

युद्धम् [युष्+क्त्] 1 सभाम, समर, लड़ाई, भिदन्त, युद्ध-भेद, सघर्ष, द्वन्द्व बल केय जाती युद्ध युद्धमिति उत्तर० ६ 2 (अर्थोक्ति में) लड़ो का सघर्ष या विरोध । सम०—अवसावम् युद्ध की समाप्ति, सुलह, —आवाधे संन्यासिता का युद्ध उन्मत्त (वि०) युद्ध के लिए पावल, रथोन्मत्त, —कारिन् (वि०) लड़ने वाला, सघर्षशील, —भू, —भूमि (स्त्री०) रणक्षेत्र, मार्ग, सैनिक कूटबाल या छत्रबल, युद्ध-नियम विक्रमवादी, —रक्ष्य रणक्षेत्र लड़ाई का अवसाद—बीर 1 बौद्धा, युद्धबीर, बल 2 (अल० में) सैन्यविक्रम में उत्पन्न बीरता का मनोभाव, बीर-रस दे० सा० द० २३४, 'युद्धबीर' के नीचे रग०, —सार. पांडा ।

युष् (विद्या० आ०) युष्ते, युद्ध लड़ना, सघर्ष करना । विवाद करना, युद्ध करना—भग० ११२३, अट्टि० ५१०१, शैव०—(सौधयति-ने) 1 लड़वाना 2 युद्ध में सामना करना या विरोध करना—रघु० १२१० इच्छा० (युष्स्वते) लड़ने की इच्छा करना, नि-मल्लयुद्ध करना, विरोध करना, प्रति-युद्ध में सामना करना, विरोध करना ।

युष् (स्त्री०) [युष्+क्विप्] सभाम, जग, लड़ाई, युद्धभेद—निधालयिष्यन् युष् यानुष्ठानान्—अट्टि० २१२१, सर्दालि वाक् पदुता युष् विक्रम - अर्जु० २१६३ ।

युष्मत् [युष्+आनप् स च क्तिन्] योद्धा, क्षयिय जाति का युष्मत् ।

युष् (द्विवा० पर०) युष्ति 1 मिटा देना, विलुप्त करना 2 कष्ट देना ।

युष् [या+यङ्+ङ्] योद्धा ।

युष्मत् [युष्+मत्+अङ्+टाप्] लड़ने की इच्छा, विरोधी इरादा ।

युष्मत् (वि०) [युष्+मत्+उ] लड़ने की इच्छा वाला युष्मत्.—ती (स्त्री०) [युष्मत्+ति, ङीप् वा] लक्ष्मी स्त्री, लक्ष्मी माता (बाहे मनुष्य की ही या किसी पशु की ही) सुश्रुतविद्यारम्भ किल मूनेगपत्यम्—छ० १०८, इनी प्रकार 'इयमयुष्मति' ।

युष्मत् (वि०) (स्त्री—युष्मति, ती, युष्मी—य० ब०

—युष्मीयत् या क्लीयत्, उ० अ०—युष्मिष्ठ या कनिष्ठ) [यौतीति युष्, यु+कनिष्] 1 तरुण, जवान, बरफ, परिपक्वभावम्भा की प्राथ 2 हृष्ट-युष्, स्वस्थ 3 श्रेष्ठ, उत्तम । यु० (कान्० युष्, युष्मन्, युष्मन्, कर्म० ब० व० युष्, करण० ब० व० युष्मि अदि) 1 जवान आदमी, तरुण,—सा युष्मि स्थिप्रमि नावबन्ध शशाक प्राणीनतया न वक्तुम्—रघु० १८११ 2 छोटी मन्तान (बड़ी मन्तान प्रीनित रहने हुए) —जीर्णान् तु वक्ष्ये युष्मा पा० ४।१।११३ (दे० इस पर मिदा०) । मम०—कालि (वि०) (स्त्री०-ति, स्त्री) जवानों में ही जांच - अरत् (स्त्री०-ती) जवानों में ही बुरा बिसाई देन वाला, समय से युष् युष्मा हो जाने वाला, राज् (पु०) - राज् प्रत्यक्ष उन्नाधिकारी, गत्याधिकारी राजकुमार राजा का उत्तराधिकारी पुत्र, (अती) नृपण चके युष्मज्जशब्दभाक्—रघु० ३।२५ ।

युष्मद् [युष्+मदिक्] मध्यमपुरुष के पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रातिपदिक रूप (कान्०) यष् युष्मा युष्मत् तु, तुम् (बई महाकों के आरम्भ म पद्वत्) ।

युष्मद्वाद्, वा (वि०) । युष्मद् + दुग् + क्विन्, आशयम् । तुम्हारी तरह ।

युष्, —का [यु- कन्, दीर्घ, शिष्या टाप्] यु मन् १।४५ ।

युष्तिः (स्त्री०) [यु+क्विन्, ति० दीर्घ] मिश्रण, मिश्रण सभाम, सघर्ष, करोमि की बहिस्तान मिश्रण प्राणिमिदृश—अट्टि० ३१६९ ।

युष्मत् [यु+यक् युष्म० दीर्घ] रज, लड़ाई, भेद, लोकी श्रेष्ठ (जैसे कर्म पशुओं का) -स्त्रीरग्नेयु महावीर्यी प्रियतया युष् तेषां दाश- विक्रम० ५।०५, ग० ५१५ । मम० महा प, वति 1 किसी दार्ता या रज का नेता 2 किसी रेवड या मोह (प्राय हाथियों की) का मुखिया, विद्यालयाय शशी—गजयुष्मत् युष्कामवल्लकी विष्म० ४।२४ ।

युष्मिका, युष्मी [युष् युष्मन्मन्ति अन्त्या—यष् ट् + टाप्, युष् + अष् + ङीप्] एक प्रकार की चर्मकी, युष्मी, रेश्मा या इमका फूल युष्कामवल्लकी—विक्रम० ५।२४, मेघ० २६ ।

युष् [यु+यक्, युष्म० दीर्घ] 1. यक्ष की स्त्रिया (यक्ष प्राय जैम या कश्चि बल की लक्ष्मी से बनाई जाती है) जिसके साथ क्वि दिवा जाने वाला पशु, देव के मध्य बीच दिवा जाता है अनेक्यने सायुष्मनेन वैदिका स्वधान-युष्मत् न युष्मत्किना कु० ५।०३ 2 विश्व-स्मारक, विश्वोपहार ।

युष्मः—यष्, युष्मत् (पुं०, लृप्०) [युष् + क, क्विन्] वा । रमा, शोक, शोका, मट्ट का रसा ('युष्म' शब्द के

पहले पाँच बचनों में कोई रूप नहीं होते, कर्म० हि० ब० के परचाय 'वृ' के स्थान में विकल्प से वृषम् हो जाता है ।

योग ['वृ' शब्द का कर्षण० का एक बचनांत रूप जो क्रियाविशेषण की भाँति प्रयुक्त होता है]
1 जिससे, जिसके द्वारा, जिस लिए, जिस कारण से, जिसके साधन से कि तत्प्रेम मनो हर्षमल स्वाता न श्रुमलाम् - रघु० १५।१४, १५।७४ 2 जिससे कि दर्शय त शौरसिंहं येन व्यापादयामि वच० ४ 3 अँकि, क्योकि ।

योगम् [वृ + ष्णु] 1 शोरी, रस्सी, तस्मा, रज्जु 2 हुल के जूए की रस्सी 3 बहु रस्सी जिसके द्वारा किसी वस्तु को गाड़ी के घोड़े से बाँध दिया जाता है ।

योगः [वृञ् भावाद् वाच्य, कृष्णम्] 1 बोकना, मिकाना 2 मिलाप, समाप, मिश्रण, उपरान्तो लयिन, समुप-यता रोहिणी योगम्—स० ७।२२, मृगमहता महते दुषाय योग - कि० १०।२५, (वा) योगस्तत्रितो-पदयोगिवासु रघु० १०।१५ 3 अर्पणं म्यसे, सबब तमइकप्रातोप्य शरीरयोगैः सुखैर्निषिञ्चन्मामिवा मृत त्वधि रघु० ३।२६ 4 काम में लगाना, प्रयोग, इमेवाल - एनस्पाययोगेसु लक्ष्माला परिचिनुम् - मनु० १।१०, रघु० १०।८५ 5 पद्धति, रीति, कर्म, साधन—कथायोगेन बुध्यते—हि० १, 'बातपील के कर्म में, 6 कर्म, परिचार्य (अधिकतर समाज के कर्म में या अपा० के साथ) रक्षायोगादयमपि तप प्रत्यह लब्धमानि—स० २।१४, कु० ७।५५ 7 जुआ 8 बाहुन, सवारी, गाड़ी 9 जिग्जवक्कर, कर्मच 10 योग्यता, अधिपत्य उपपन्नता 11 व्यवसाय, कार्य, व्यापार 12 दास-सेव, जालसाजी, कूट काल 13 तरकीब, पाठना, उपाय 14 कोपित उन्माह परिचय, प्रत्यवसाय - मनु० ७।४४ 15 उपचार, चिकित्सा 16 इन्द्रजाले, अभिचार, भ्रमयोग, जादू, जादू-टोना 17 लब्धि, अवधि, अभिग्रहण 18 धन दोहन, इच्छ 19 नियम, विधि 20 दग्धय, सबब, निर्गमित भावेय या संयोग, एक शब्द की दूसरे शब्द का निर्देश 21 निर्देशन, या कर्म की दृष्टि से मन्त्र व्युत्पत्ति 22 शब्द के निर्बचनमूलक अर्थ (वि० प्रहि) 23 गभीर आचिन्तन, मन का गहनरीकरण परमात्मचिन्तन, जिसे योगदर्शन में 'चिन्तनचिन्तिरोध' कहते हैं,—सती सती योगचिन्त-पेदा कु० १।२१, योगेनामे समुपयाम्—रघु० १।८ 24 पालत्रकि द्वारा स्थापित दर्शन पद्धति को सांख्य दर्शन का ही दूसरा नाम मन्वता जाता है, परन्तु व्यवहारतः यह एक पृथक दर्शन है (योगदर्शन का मुख्य सिद्धांत उन उपायों की शिक्षा देना है जिसके

द्वारा मानव आत्मा पूर्ण रूप से परमात्मा में विकस्य और इस प्रकार मोक्ष की प्राप्ति हो जाय । इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गभीर आचिन्तन ही मुख्य साधन बताया गया है, इस प्रकार के योग या मन के अन्वेषीकरण के समुचित अन्वयत के लिए विस्तार के साथ नियमों का प्रतिपादन किया गया है) 25 (अंक में) योग, सकलन 26 (ज्योति० में) समुचित, दो ढ़ाँों का योग 27 तारापुञ्ज 28 विशेष प्रकार का ज्योतिषीय सङ्घ-विभाग (इस प्रकार के बहुधा २७ योग विभागे पूर्व हैं) 29 किमी नक्षत्र पुञ्ज का मुख्य तारा 3० प्रसिद्ध, परमात्मा की पवित्र शोच 31 योगिया, गुणधर 32 डोही, विद्यावा-चाटी । सम० संज्ञक योग की प्राप्ति के साधन (यह गिनती में बाँट हैं, नामों के लिए दे० वम 5.) —आचारः 1 योग का अन्वयत या पालन 2 बुद्ध के उस संप्रदाय का अनुयायी जो केवल विज्ञान या प्रज्ञा के साधक अग्निताप को ही मानता है,—आचारी, 1 जादू का शिल्पक 2 योग दर्शन का अन्वयक,—आचमनम् जालसाजी से गरी अन्वयकान्वा—मनु० ८।१६५,—आचम्य (वि०) [सुखमाचिन्तन में नियम, —अचम्य सुमयाचिन्तन के अनुरूप अग-स्थिति,—इन्द्र—इन्द्रः 1 योग में निष्ठात या सिद्धहृत् 2 चिन्ते अतीतिक अलि सम्पादन कर ती है 3 जादूकर 4 देवता 5 शिव का विशेषण 6 दायकत्व का विशेषण, ज्ञेयः 1 मानव की सुरक्षा, सपत्ति की देखभाल 2 दुर्घटनाओं से सपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए शुक, बीमा 3 कल्याण, कुशलार्थ, सुरक्षा समृद्धि—तेषां निष्ठाविपुक्तानां योगक्षेत्रं ब्रह्मव्यूहम्—मनु० १।२२, गुणाया मे जनया योगक्षेत्रं बह्वन -वातवि० ४ 4 सपत्ति, लाभ, फायदा (पु०, मनु० हि० ब०, श्री—मे, मनु० ए० ब० कम्) (सपत्ति का) निग्रहण और प्ररक्षण, उपलब्धि और सुरक्षा, दुरागे का प्ररक्षण तथा नृपन का अनिग्रहण (जो पहले से अज्ञात हो) अन्वयकानो योग स्वातु शनो सम्पत्त्य पालन दे० वाङ् ० १।१०० और उक्त पर विज्ञा०, पूर्वम् जादू का पूर्व, जादू की शक्ति वाजा पूजा, कल्पितमनन योगपूर्वचिन्तिगोचरं चन्द्रपुत्राय—मृगा० २,—साक्या,—साता नक्षत्रपुञ्ज का मुख्य तारा,—अन्वय 1 योग के सिद्धांतों का साधारण 2 जालसाजी से युक्त उपहार, कारण कलत्र भक्ति, मननसाधन — वाचः शिव का विशेषण,—विज्ञा अर्धचिन्तन और अर्धनिश्चित अन्वय, साधारण और निज्ञा के अर्थ की स्थिति अर्थात् समृद्धि—योगिनां कल्पय वच-बंध० १, हि० १।७५, मनु० १।४१ २ बुद्ध के ज्ञान में

विष्णु को निद्रा—रघु० १०।१५, १३।६, षट्शु
 भास्वमासि के अक्षर पर स्यासिदो द्वारा पहना
 जाने वाला वस्त्र जो पीठ से लेकर घुटनों तक शरीर
 को ढक लेता है,—वस्तिः विष्णु का विशेषण, अस्म
 1 शक्ति की शक्ति, भावचिन्तन की शक्ति, अलौकिक
 शक्ति 2 जादू की शक्ति,—बाष्वा 1 योग की जादू
 जैसी शक्ति 3 ईश्वर की सर्वोत्त शक्ति जिससे कि
 देवता के रूप में मृत घरा की रचना की जाती है
 (भागवत सर्वनामायां शक्ति) 3 दुर्गा का नाम,—रङ्ग-
 नारसी, षष्ठ (वि०) बहु शब्द जिसके निर्वचनमूलक
 अर्थ भी हैं, साथ ही उसका विशेष परंपरागत अर्थ
 है, उदा० 'पंचक' इसका श्रुत्यतिव्यय अर्थ है
 'कीचड़ से उत्पन्न होने वाला कोई भी पदार्थ'
 परन्तु प्रचलन या परंपरा के प्रयोगानुसार इसका
 अर्थ 'कीचड़ में उत्पन्न किसी वस्तु' अर्थात् 'कमल'
 में प्रतिबद्ध हो जाता है, तु० 'आतपत्र' छतरी,
 —रौषभा एक प्रकार का जादू का लेप जिसके स्नानों
 से मनुष्य अदृश्य और अशेष हो जाता है तेन च
 परितुष्टेन योगरौषभा मे दत्ता—मच्छ० ३,—वसिष्ठा
 जादू का लेप या बली,—वाहिनू (५०, न्यु०)
 वीरधियो को मिलाने का माध्यम—उदा० बहुव
 — नानाश्रमायकत्वान्च योगवाहिं पर मधु सुवर्ण०,
 —बाही 1 रेश, सज्जी 2 मधु 3 पारा,—विष्णुः
 घोसे की बिकी,—विष्णु (वि०) योग का जानकार
 (५०) 1 सिद्ध का विशेषण 2 योगाभ्यासो 3 योग-
 सिद्धांतों का अनुवासी 4 जादूकार 5 द्वापरयो के बनाने
 वाला, —विष्णान् बहुधा एक स्थान पर जुड़े हुएों की
 अलग-अलग करना, विशेषत मूष के अर्थात् की अलग
 अलग करना, एक ही नियम के दो तीन टुकड़े करना
 (महाभाष्य में पतञ्जलि ने इसका बहुत प्रयोग किया
 है—उदा० अदसो मातु पा० १।१।२२), अस्तस्य
 योगकर्मन्,—समाधिः आत्मा का मूढ भावचिन्तन में
 योगहीना—नमस परमापदव्यय पुल्ले योगसमाधिना
 रघु—रघु० ८।२५, योगविधि ८।२३, सातः सव
 रोगों की एक दवा, रामबाण, सर्वव्याधिहर,—लेखा
 भावचिन्तन का अभ्यास करना ।

योगिन् (वि०) [यु०+चिनुन्, योग+इति वा] 1. से
 युक्त, या सहित 2 जादू की शक्ति से युक्त, ५०
 1 चिन्तनशील बहुताया, अन्त, मन्वासी—संवाच्ये
 परमवह्नो योगितामप्यनाम्यः पच० १।२८५, ब्रह्म
 योगी किञ्च काशीवीर्यं—रघु० ६।३८ 2 बाहुवर,
 योगी, बावीर 3 योगदर्शन के सिद्धांतों का अनुवासी,
 —नी 1 बाहुवरी, अविचारिका, बोधधान, वाचाचिनी
 2 भक्तानी 3 सिद्ध या दुर्गा की सेविकायां की
 टोसी (बहु गिफती में डाठ माने जाते हैं) ।

योगेश्वर (न्यु०) सीसा, राम ।

योग्य (वि०) [योग्यर्थात् यत्, यु०+य्युत् वा] 1 लायक,
 उचित, उपयुक्त, योग्यता-प्राप्त योग्यो ज्य दृष्टवते
 नर 2 योग्य, उपयुक्त, योग्यताप्राप्त, सक्षम, बल
 (अधि० सत्र०, सत्र० के साथ तथा समास में प्रयुक्त)
 3 उपयोगी, सेवा करने के योग्य 4 योग्य वा भाव-
 चिन्तन के योग्य, —व्यः युक्ति या तरकीबों का कल-
 यिता, —व्या 1 अभ्यास, व्यवहार,—अपर प्रणिधान-
 योग्यता मत्त पचसरीरगोचरान् रघु० ८।१९, इमी
 प्रकार 'भावायोग्या' काव्या० २।२४३, चतुर्विधा
 अस्वयोग्या वाहि 2 सैनिक कवायद, अभ्यास,—अस्म
 1 सवारी, नाडी, वाहन 2 चन्दन की सड़की 3 रोटी
 4 दूध ।

योग्यता [योग्य+तत्+टाप्] 1. सामर्थ्य, सक्षमता न
 युद्धयोग्यतामय पर्याय सह राक्षसे—रामा०
 2 अनुकृपता, वीरचित्य 3 समुपयुक्तता 4 (न्या० में)
 ज्ञान की अनुकृपता या स्वयं, शब्दों द्वारा सकेतित
 वस्तुओं के पारस्परिक संबंध की असंगति का अभाव
 —उदा० 'बहिना विचरति' में योग्यता नहीं है, इसकी
 परिभाषा यह है —एकपदार्थोऽन्यपदार्थसमगो योग्यता
 —त० की० ।

योग्यम् [यु० यावौ स्मृट्] 1 बोधना, मिलाना, जोड़ना
 2 प्रयोग करना, स्थिर करना 3 तैयारी, व्यवस्था
 4 व्याकरणसम्मान रचना, साधनात्म्य 5 आठ पाती
 मील अथवा चार कोम की दूरी की माप न योजन-
 कर्त्त दूर बाह्यमात्रम्य मूलका -हि० १।१८६
 6 उत्तरेजि करना, बढकाना 7 मूल का सकेतकारण
 भाव (...योग), वा 1 समय, मिलान, मध्य
 2 व्याकरणसमय साधनात्म्य । सम० मन्वा
 1. कस्तुरो 2. व्यास की माता सत्यवती ।

योग्यं दे० योग्यम् ।

योग्य [यु०+अप्] 1 योद्धा, सैनिक, लड़ाकू, सहाय्यदा-
 योग्य योग्युक्तः महा० 2 मद्यम, मद्यार्थ । मय०
 —अनाटः, रघु सैनिकों का निवास, सेन्यावास
 वारक, अर्थः सैनिकों का कानून, सेन्यार्थि या
 नियम, अर्थः लड़ाकू निपाहिदों की पारस्परिक
 सम्बन्ध, बाहुला ।

योग्यम् [यु० यावौ स्मृट्] सवाम, मद्यार्थ, मूठमेढ ।
 योगिन् (५०) [यु०+गिन्] योद्धा, निपाही, लड़ाकू ।
 योगिन् (५०, स्त्री०) [यु०+गि] 1. योधी, अर्थवेदी,
 मय, सिद्धों की धननेन्द्रिय 2. अन्वत्थान, मूलस्थान,
 उद्योग, मूल, जनसायक कारण, निर्धार, जीवारा
 वा योगि सर्वदेवतां ता हि लोकम्य निर्धिति
 उत्तर० ५।३०, कु० २।९, ४।४३, उत्पन्न या उदित
 के अर्थ में प्रयोग प्रायः समास के अन्त में मय०

५।२२ ३ मान ४ मानास, स्थान, मान्य या पात्र, जासन, भाषार ५ घर, माद ६ कुल, वीध, वीज, जय, अस्तित्व का रूप - जैसा कि 'मनुष्ययोनि, पत्नि', पशु' आदि ७ जस। इयं - कृष्णः बन्धुस्थान या गर्भाशय का मूल, - व (वि०) गर्भाशय से जन्म लेने वाला, जरायुज, - देवता पुर्वाधानपूर्वी मजप, - शंकरः ब्रह्मेदानी का अपने स्थान से हट जाना, - रश्मिकम् रजःसाय, लिङ्गम् मग्राङ्गुर, पिङ्गु, - शंकरः सर्वत्र अन्तर्जातीय विवाहों से उत्पन्न बर्ष शंकर आदि।

योनि दे० योनि।

योनिम् [यु + इत्] १ मिटाता, विकल्प करता २ कोई वस्तु जिससे मिटाया जाय ३ विकलता, चरचरहट ४ उत्पीडन, बलाघार, भ्रष्ट।

योधा, योधिन् (स्त्री०), योधिता [यति मिथीयवति-यु + श + टाप्, योधाति युवाद्यम् यु + श्रति, योधिन् + टाप्] स्त्री, लडकी, लडकी, नवान स्त्री - यच्छरीरानां रमणवर्माणि याचिता तत्र नक्त - मेघ० ३०, शि० ४।८२ ८।२५।

यौक्तिक (वि०) (स्त्री० - की) [युक्तिज्जायत उक्तु] १ उपयुक्त, योग्य, उचित २ तर्क समत, तर्क का हेतु पर आधारित ३ तर्क, अनुमेय ४, प्रचलित, प्रधानकूल, कः राजा का आगेवादिज सखी - यु० 'नर्मोर्षि'।

योग [य + अच्] योगदर्शन के सिद्धान्तों का अनुवायी। योगपत्रम् [युगप् + ध्वञ्] समकालिकता, सफलता-यिकता।

योगिक (वि०) (स्त्री० - की) [यौग + उक्] १ उपयोगी, सेवा के योग्य, उचित २ प्रचलित ३ व्युत्पन्न, निर्वचनमूलक, सत्यव्युत्पत्ति के अनुकूल (विप० कृ या परम्परागत) ४ उपचार परक ५ योग संबंधी, योग से व्युत्पन्न।

योग्य (वि०) (स्त्री० - की) [युते विवाहाकाने अधियत् यु] किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति जिस पर प्रकृता एकान्तः अपना ही अधिकार हो, ऐसी सम्पत्ति जिस पर यहाँ पर उक्त ही एकान्त अधिकार हो - विभागभाषना सेवा बृहोवैश्व शीतकैः - पाठ०

२।२५९ - क्व १. निधी सम्पत्ति २. स्त्री का पदेव, स्त्रीयत (विवाह के अन्तर् पर कन्या को उपहार में दिया गया वन) - मातुस्तु शीतकै वत् स्वायु कुमारी नाम एव वः क्व० १।२११।

यौक्तिक [यु + यु = योयु + अच्] एक प्रकार की भाष। यौक (वि०) (स्त्री० - की) [यौग + अच्] लडाकू, लड़ने-वाला।

यौग (वि०) (स्त्री० - की) [यौगितः यौगित् सवन्धात् वा भावउच् - अच्] १. शीतर २. वैवाहिक, विवाह संबंधी - क्व० २।१०, - क्व विवाह, वैवाहिक सम्बन्ध - क्व० २।१८० - १।

यौगिक [युवादीनां क्वः - अच्] उरगियों या बवान रियवों का समूह - अवन्युत् विद्योऽपि शीतकैर् सङ्ग-शौकतीनिगामयुक् - मेघ० २।५१ २. तक्षी स्त्री का मूल (शीतकै आदि) तक्षी स्त्री होने की बरतना - यदो किमुक्षीयत् वृष्टि उन्नि युष्ठीकता - शीत० १०, (शुक्रवृत्तरी क्वम्)।

यौगिक [युवी जाकः अच्] १ बवानी (बाध० से जी) हाथ्य, तफाई, चरचरता - युष्ठात्स्य च शीतकैश्च च श्लो मन्वे क्वधी स्थिता - विक्र० २।७, शीकोऽन्वत्सिगामयुक् रवु० १।८, १।९ दिन-शीकोऽन्वत् - १।१२० २. बवान व्यक्तियों का शीतकै कर सम्पत्तियों का समूह। इयं - क्वत् (वि०) क्वन्धी में क्वन्ध होने वाला, क्वी बवानी होना कु० १।१५५, - क्वन्धः क्वन्धी का उचार, शिक्की हुई बवानी, - क्वी १. बवानी मर अधिवान २. बवानी में सङ्कल्पकन अधिवेक, - क्वन्धम् १. बवानी का शिङ्ग २. शीतकै, काण्ड ३. रियवों के कुच।

यौगिकम् [यौगि + क्व] बवानी। यौगिकः [युगाम्य + अच्] युगाम्य का पुत्र मान्यता। यौगिकम् [युगाम्य + ध्वञ्] युगाम्य का पर वा अधिकार, शीतकैऽपि विक्रः, (युगाम्य पर का मुकुट प्राप्त किने हुए)। यौगिक (वि०) (स्त्री० - की), यौगिकीय (वि०) [युग्य + अच्, अच्, वा, युगाम्य आदिः] युगाम्य, भाषका।

र [ग + श] रमि २. नर्ती ३. श्रेय, इच्छा ४. फल, गति।

रु [र्या० पर० रूति] हिलना - मुझना, श्रेय से चलना, बाली करना - र ररुहकमुवरेण - यदु० १०१

१।५।८, श्रेर० (रुहसि - ते - कुक के अनुसार शुरा० इयं) १. क्वी से चलना, श्रेरवा सेवा २. चलना ३. चलना ४. यौगिक।

रुहिकी (स्त्री०) [रुह + क्विन्] फल, श्रेय।

रह्नु (पु०) [रह्+अनुन्, हुक् च] 1. बाल, वेग, रघु० २।३४ सि० १२।७, सि० २।४० 2 आनुरता, प्रबन्धता, उत्कण्ठता, उद्यता ।

रत्न (पु० क० क०) [रत्न् करणे क्तः] 1. रवीन्, रगा हुजा, हुलके रग बासा, रग लिप्त्—आधाति बासात-परस्वसाम्—रघु० ६।६० 2 माल, गहरा माल रग, मोहित्यर्थ, साध्य तेज प्रतिनवबवापुष्परक्त रवान मेघ० ३६, हवीप्रकार रक्ताशोक, रक्ताशुक आदि 3 मूष, सानुराग, अनुरक्त, प्रेमासक्त—अमर्मेन्नी-मूष पश्य रक्ताशुभ्यति चन्द्रमा—चन्द्रा० ५।१८ (यहा यह द्वितीयाय भी रक्ता है) 4 म्रिद, बल्लभ 5 सुहावना, आकर्षक, मयूर, सुखद - शोभेयु समुच्छति रक्तामासा गीतानुग बास्मिन्नुवाचम्—रघु० १६।६४ 6 खेल का शोकीन, खिलाड़ी, क्रीडाप्रिय,—स्त 1 माल रग 2 कुमुदम्,—स्ता 1 माल 2 गुजा का पौधा,—स्तम् 1 रघिर 2 ताडा 3 जाकराम 4 सिन्दूर । सम०—अक्ष (वि०) 1 माल जाँघो बाला 2 इरावना (-कः) 1. भैया 2 कर्तुर,—अक्षः मूगा,—अयः 1 अटल 2 मङ्गलग्रह 3 सुवर्णमण्डल वा चन्द्रमण्डल,—अभिर्भन्वा-आलो की सूजन अंबरम् माल वस्त्र (-उः) गेव्हा कम्पचारी परिभाषक,—अर्बुव रवीणी,—अशोकः माल फूलो वाला अशोक वृक्ष—मालवि० ३।५,—आधारः चमडी, माल,—आश (वि०) माल दिखाई देने वाला, आशयः एक प्रकार का आशय जिसमें रघिर रहता है तथा जिससे निकलता रहता है (हृद्य, तिल्ली और जिगर आदि),—अपलम् मालकमाल,—अपलम् मेघ, माल मिट्टी,—अच्छ, अचिन्त् (वि०) मयूरकण्ठवाला (पु०) कोयल कव., कंबकः मूगा, कनकम् माल कमल -अपलम् 1 माल चन्दन, जाफरान, केसर,—अपलम् सिन्दूर,—अवि (स्त्री०) रघिर की कं करना,—अङ्गुः विह,—अपुचः तोडा,—अपु (पु०) कर्तुर,—आनु 1 गेव या हलाल 2 ताडा—अ-पिशाच, मृत-प्रेत,—अपलम्: अशोकवृक्ष, वा जौक —आतः नखत्या,—आव (वि०) माल पैरों वाला, (-वः) 1 मालपैरों का पत्नी, तोडा 2 यद्वर 3 हाथी,—आविन् (पु०) अटलम्,—आविनी जोक,—अविष्म् 1 माल रग की कुन्डी 2 नाक और मुह से रक्तवाव होगा,—अप्रेहः मूष के साथ रक्त का निकलना,—अपन् मांस,—अशोक,—अशोकम् रघिर निकलना,—अटी,—अटी मेघक, अटीः 1. माल 2 जनार का पेठ 3 कुमुदम्,—अर्ष (वि०) माल रग का (के) 1 माल रंग 2 वीरबहटी नामक कीडा (-अम्) सोना, अलम्,—अलम् (वि०) माल रग की रस गुजा धारण किये हुए,

सारस,—आसनम् सिन्दूर,—अशोकः एक प्रकार का सारस, अलम्कम् माल कमल,—आरम् माल चन्दन । रत्नक (वि०) [रत्त+कत्] 1 माल, 2 सानुराग, अनुरक्त, स्नेहशील 3 सुहावना, विनोदप्रिय 4 रक्त-रञ्जित—क 1 माल रग की वेधामुखा 2 सानुराग व्यक्त, मृत्कार-मिय पृथक् 3 खिलाड़ी । रत्नित (स्त्री०) [रत्न्+कित्] 1 सुहावनापन, प्रियता, आकर्षण, लावण्य 2 आसक्ति, स्नेह, निष्ठा, नक्ति । रत्नितका [रत्नित+कन्+टाप्] गुजा का पौधा या इसका बीज जो तोलने (एक रत्नी) के काम आता है । रत्नितम् (पु०) रत्त+इमनिच्] मलाई ।

रत्न (म्बा० पर० रसति, रत्नित) 1 रत्ना करना, शोकीवारी करना, देखभाल करना, गहरा देना, (पशु आदि) पालना, राज्य करना, (पृथ्वी पर) शासन करना—अभानिमा प्रतिवृत्ति रत्नानु—श० ९, आत्मसि कियदुम्बो मे रत्नति शीर्षकिपाक इति—श० १।१३ 2 मुरगित रत्नना, (मेघ) न सोलना --हृद्य रत्नति 3 सन्धारण करना, बचाना, बचा कर रत्नना (बहुधा अपा० के साथ) अलम्ब बंध निशेत लम्ब अजेदबलयात्—हि० २।८, आपदमें धन रसेत् हि० १।४१, रघु० २।५०, १।१७७ 4 टालमटूल करना—मूढा० १।२, (अग्नि, परि सन् आदि उपसर्ग जोबने पर इस वातु के अर्थों में कोई विशेष परिचय नहीं होता) ।

रत्नक (वि०) (स्त्री—अिका) [रत्+ञ्ज्] चौकीसी रखने वाला, रत्ना करने वाला—क रत्नबाला, अवि-भाषक, शोकीदार, गहरेदार ।

रत्नम् [रत्+ञ्ज्] रत्ना करना, बचाव, संधारण, चौकीसी, देखभाल आदि ('रत्नम्' भी) की रात, मगाम ।

रत्नम् (गु०) [रत्ननेतुधिरत्नात्, रत्+अनुन्] मूल-भेद पिशाच, भूतना, बैताल—अनुवेक्ष सहस्राणि रत्ना नीमकमेषाम्, प्रथमच हृष्यन्तारिवमुच्यन्ती रत्ने हता -उत्तर० २।१५ । सम०—ईकः, आशः राजव का विशेषण अलनी राधि,—अपलम् राजसों की मग ।

रत्ता [रत्+भावे अ+टाप्] 1. बचाव, संधारण, चौकीसी मयि सृष्टिहि लोकानां रत्ता युष्मा स्वर्गियता—कु० २।२८, सि० १८।११, श० १।१४, रघु० २।४, मेघ० ६३ 2 देखभाल, सुरक्षा 3 चौकीसी, गहरा 4 ताबीज या गण्डा, परिदशी, जैसे कि नीचे 'रत्ताकरम्' में 5 अवि-भाषक देवता 6. अलम्, राज 7 रत्ताचन्दन, पृथ्वी (विशेषकर आश्व पूर्णिमा के दिन कलाई में बांधी जाने वाली गेधम या कुत की बोटी) ताबीज या लपट के रूप में (इस अर्थ में 'रत्ती' शब्द भी प्रयुक्त है) । सम०—अचिकुतः चित्ते अरक्षण या अवीक्षण कायं

सुपुर्द किया गया है, अथवाक या सातक अथवा राज्य-
पाल 2. लखनायक, मजिस्ट्रेट 3. मुख्य आस्थापिकायी
अधेक्षकः 1 कुली, द्वारपाल 2 अन्नपुर का पहरेदार
3 गाहू, लीहा 4. नाटक का पात्र अभिनेता, -कण्वः
कण्वकम् तबीब की इजिबा, गण्ड, जातु की
इजिबा जहो रखाकरकमन्त्र मणिवर्णने न दुषयते
-स० ७, -मूहम् प्रकृति का गूह, - रक्षागुहयता वीया
प्रयादिष्टा इवाभवन्-रघु० १०।५९, -बाधः एक
प्रकार का भोजन, -बाध, -गुणः पहरेदार, चौकी-
दार, प्रारक्षी, -प्रवीणः बहु दीपक जो मृत प्रेत से बचाव
के लिए जलता हुआ रखा जाता है, -भूषणम्, -भवि,
-रत्नम् एक प्रकार का आभूषण जो तबीब की
शानि मृत प्रेतादि की बाधा से बचाव के लिए पहना
जाता है ।

रक्षिन्, रक्षित् (वि०) [रक्ष् + क्त्वि, चिनि वा] बचाने
वाला, चौकसी करने वाला, राज्य करने वाला - नै०
१।१ (पु०) 1 रक्षा करने वाला, सारक्षक, बचाने वाला
2 चौकीदार, मन्तरी, प्रारक्षी -अपे परमार्थ इव वा
नाम रक्षिण मन्थ० 3 ।

रघु [अथवा प्राणवीमान प्राणति-सम् + कु, न शोष,
सव्य १] एक प्रसिद्ध मूर्यवर्मी राजा, विकीप का पुत्र
और अज का पिता (ऐसा प्रतीत होता है कि इसका
नाम रघु (रघु वा रघु -जाना) है इस कारण पडा हो
सर्वाङ्ग समके पिता में बहुत पहिले ही जान लिया कि यह
उसका पिता के ही पार नहीं जायगा अथि मूह में
अपने मनुष्य को भी परान्त कर देगा-नु० रघु० ३।२।
अपने नाम की सार्वकला के अनुसार उसने दिग्बिजय
आरम्भ किया, सप्तस्र ज्ञात भूमिभक्त का बन्धक लगाया
और कीर्ति तथा विजयपोहार के साथ कायित आया ।
वा कर अपने विधवावन्त बन्धु का ब्राह्मोजन किया और
रक्षिणा में ब्राह्मणों को सार्वभ्य दे डाला, तथा अज को
अपने राज्य का उन्मत्तधिकारी घोषित किया । सम०
कनन, -अथा-यति-अंश-सिन्धु राम के विधोषण ।

रघु (वि०) [रमने तुष्यति र्गु + क्] 1 अथम, दृग्ग
नगता, अभागा, इयनीय 2 मन्वर, -कः विस्तारी मन्द-
नाम्य भूवा, भूवाते, भूखमरा-प्रेतरघु -ना ५।१९,
भूमिनि वा 'भूखमरी बाला' पञ्च० १।२५।

रघु [र्गु + क्] हरिण, कुरङ्ग, कृष्णसार मृग नै०
१।८३ ।

रङ्गः [रङ्ग भावे षञ्] 1. रङ्ग, वर्ण, रङ्गने का मत्तला
रङ्गकप या रोमन 2. रङ्गमंच, नाट्यशाला, नाट्यगृह
बन्धना, सार्वजनिक बानोदशकी-जैसा कि रङ्ग-
विष्णोपनाम्ने-सा० १० २८१ 3 अथा-अवन,
चोतुर्वा-जहो रापबद्धचित्तुपिरामिजितः इव सर्वतो
रङ्गः-स० १, रङ्गस्य श्वेतिला निवर्तते नवैकी

यथा नृत्यात्, पुष्कस्य तथात्मानं प्रकाश्य विनिवर्तते
प्रकृतिः -श्वे० 5. रणशेष 6 नाचना, बाना,
अभिनय 7 बानोद, यनोविनो 8 नृत्याया 9 स्वर का
अनुनासिक उच्चारण-हरणम् कर्मवत्कर्मम् रवीशेति
निदर्शनम्-विद्या० १०, इसी प्रकार २६, २७, २८,
ग न्ग् रां, टिन । सम०-अङ्गणम् बन्धना,
नाचपर, -अन्तरणम् 1 रङ्गमंच पर प्रवेश 2 अभि-
नेता वा नाट्यपात्र का व्यवसाय, -अन्ताराक-अन्तारिणम्
(पु०) अभिनेता, नाटक का पात्र, -आधीनः 1. अभिनेता
2. चित्रकार, इसी प्रकार, अन्धीनिम् (पु०), -कारः
-धीनः चित्रकार, रणशेष, -धुरः 1. अभिनेता,
नाटक का पात्र 2. सामी, अन् सिन्धु, -वैभवा
श्रीरा तथा सार्वजनिक बानोद-प्रहार की शक्तिशाली
देवता, -द्वारम् 1 रङ्गशाला का द्वार 2. किसी नाटक
का मत्तलापरण वा प्रस्तावना, -भूतिः (स्त्री०) आक्षिप्त
मान की पूर्णमा की रात, -भूमिः (स्त्री०) 1. रङ्गमंच,
नाट्यशाला 2. अनाथा, रणशेष, श्वेवः रङ्गशाला,
-बालु (स्त्री०) 1. काक, साकरङ्ग, महाहर, इसे
पैदा करने वाला कीरा 2 कुटनी, वृत्ति, -अनु (अपु०)
रङ्गशेष, बालः अनाथा, बाधा जहो नाटक नाच आदि
होते हैं, -बाधा नाचपर, नाट्यगृह, नाटकपर ।

रन् (स्वा०) उम० रन्थि-ते) 1 जाना 2 शीघ्र जाना,
अस्ती करना-द्वारम्-द्वारम्-द्वारम्-महि० १।५।१५ ।

रन् (स्वा०) उम० रन्थि-ते, रन्थि 1 व्यवस्थित
करना, सज्जित करना, तैयार करना, बना लेना, रचना
करना-पुष्पाणां प्रकारः मितेन रन्थितो नो कुम्बवाद्या-
दिभि-अथक ५. रन्थति अथन सन्धकलनयनम्-गीत०
५ 2 बनाना, रूप देना, कार्यान्वित करना, रचना करना
पैदा करना-सापारिकस्वरन्थिते न्ययने-रघु० ११।७५,
मायुं सन्धविदुना रन्थितुं साराबुधेरीहते-अर्जु०
२।६, मीको वा रन्थयाजनिम्-वेणी० ३।४०
3 जिकना, रचना करना, (किसी कृति आदि को)
एक करना-अन्धकारादीं यनवापो विषयबुध्यादिरन्थ-
अथ० २६, सा० ३।१५ 4 रचना, स्थिर करना,
अमाना-रन्थति चिह्ने कुरसककुमुभम्-गीत० ७, कु०
४।१८, ३४, स० ६।१७ 5 अङ्कित करना, सजाना
शेष० १६ 6. (मन को) लमाना, सा -अवस्थित
करना, चि- 1. अवस्थित करना 2. रचना करना
3 कार्यान्वित करना, पैदा करना, बनाना-शेष० १५,
भाभि० १।३ ।

रन्थम्-ना [रन् + मुच्, चिन्वां टाप्] 1 व्यवस्था,
तैयारी, विन्यास-अभिवेक, सधीत भाषि 2 बनाना
सर्वन करना, उत्पन्न करना-अन्ये कश्चि रन्थना
अननाशकीना-भाभि० १।६९, इसी प्रकार-भुङ्कति
रन्थना-शेष० १५ 3 सम्पन्नता, वृत्ति, निष्पत्ति,

कार्योपयम—कुच मम वचन सत्वरचनम्—गीत० ५, रघु० १०।७७ 4. साहित्यिक रचना या सृजन, निर्माण, सचना—सहित्यता वस्तु रचना ता० द० ४२२ 5 बाल सन्ताना 6 सैन्यध्यक्ष 7 मन की सृष्टि, कृत्रिम उद्भावना ।

रज्ज्: दे० रजम् ।

रज्ज्वः [रज्ज् + श्वल्, नलोप] शोवी ।

रज्ज्वान्—श्री [रज्ज् + टाप्, ङीष् वा] शोचन ।

रज्ज्वत् (वि०) [रज्ज् + ज्ञत्, नलोप] 1 नादी के रज का, शोदी का बना हुआ 2 उज्ज्वल - तम् 1 शोदी - कुशील रजतमिरमिति ज्ञान भ्रम कि० ५।६१, नै० २२।५२ 2 स्वर्ण 3 मोतियों का आभूषण या माता 4. शक्ति 5. हाथी शीत 6 नक्षत्रपुत्र, तारा-धनुः ।

रज्ज्विन्—श्री (स्त्री०) [रज्ज्वतोऽत्र, रज्ज् + क्विन् वा ङीष्] रात—हरिहरमियाजी रजनिरिदानीमियमपि यापि विरा-मन्—गीत० ५। सम० कर चन्द्रमा कर रात की घूमने वाला, पिशाच, वेताच, - जलम् आम, घण्ट, - शक्ति, - रज्ज्व चन्द्रमा, - मुसल सन्ध्या, माय-काल ।

रज्ज्विन्ध्व (वि०) (यह दिन) की रात बैसा बीते या रात बैसा दिखाई दे - मट्टि० ७।१३ ।

रज्ज्वत् (पु०) [रज्ज् + क्वत्, नलोप] 1 बल, रेणु, पर्य-धन्यास्तदनुसृतसा मस्मिनीभवन्ति श० ७।१७, जालोद्भवैरपि रजोभिरलघवीषा १।८, रघु० १। ४२, ६।३२ 2 फूल की रेणु या परमाणुवाक्शो-धररजोमदुरैरुत्सवाः (पद्या) -श० ४।१०, मेघ० ३३, ६५ 3. सुर्ष किरणों में फैले हुए कण, कोई भी छोटा सा कण तु० मनु० ८।१३२, याज्ञ० १।३६२ 4. बूटी हुई मूत्रि, कृत्रिमोष्ण शेत 5. अन्धकार, अन्धेरा 6 मस्मिन्ता, आशेष, शेष, शक्ति या मान-सिक् अन्धकार—अपने परमर्षयति हि धृतबन्धोऽपिर-योनिमीकित्वा रघु० १।७४ 7 तब अकार के शक्ति-धर्मों के घटक गुणों अथवा तीन गुणों में से दूसरा - (इससे दो गुण हैं सत्य और तमस, जीवजन्तुओं में बड़ी भारी क्रियाशीलता का कारण 'रज्ज्व' लक्षणा जाता है, यह गुण मनुष्यों में बहुतायत में पाया जाता है जैसे कि बैकतामी में सत्य तथा राज्यों में तमस पाया जाता है), अन्तर्गततापस में रजसोऽपि परं तप - कु० ६।१९, मन्० ६।२७, या० १।२० 8. रज्जवान्, चतुर्भुज मनु० ४।४१, ५।६९ । क्व - - कुच: दे० (7) ऊपर, लज्ज्वत् (वि०) रज और तम दोनों गुणों के प्रभावित, शोक: - क्व, - कुच: 1. मीमंसा, मासक 2. 'श्री' का पुतला यह प्रकट करने के लिए कि यह व्यक्ति गुच्छ है,

नग्य है, इस शब्द का प्रयोग किया जाता है, -श्री-नम् प्रथम बार रजोधर्म का होना, सबसे पहला रज साध, -कम्: रजोधर्म का कर्म हो जाना, -रज-अन्धेरा, कृत्रि रजोधर्म की विस्तृत दशा, हर-मेल हटाने वाला' शोदी ।

रज्ज्वान् [रज्ज्वतोऽपिन्-रज्ज् + ज्ञवान्] 1 बादल 2 आग्या, दिव ।

रज्ज्वत् (वि०) [रज्ज्वत् + क्वत्] 1 मैला, बल से भरा हुआ - रघु० १।१६०, मि० १।५६१, (यहा इनका अर्थ 'रजोधर्म में होने वाली' भी है) 2. आशेष या शेष में भरा हुआ - मनु० ६।७७, -कम् मेला, सा 1 रज्ज्वला स्त्री रज्ज्वला परिमक्षिनाशर्षणम मि० १।७६१, राज० ३।२२९, रघु० १।१६० 2 विचार के योग्य कन्या ।

रज्ज्वः (स्त्री०) [तुन् + उ, अनुभाषण धातोऽन्लोप आशयकारण्य जलक कर्त्तव्यां कृत् कर्त्तार] 1 रम्भा, डोरी, मुग्ली 2 कपोला स्मरण से निकलने वाली स्त्राय 3 निषेधों के निर की नादी । सम० बालकम् एक प्रकार का जपनी मन्त्र, इनो प्रकार रज्जुबाल - येडा मुग्ली में बनी हुई टोडगी ।

रज्ज्वत् (वि०) उच्यते-रज्ज्विन्-ने, रज्ज्विन्-ने, रज्ज्व-कर्मणा रज्ज्वते, इच्छा० विरज्ज्वति 1 रये जाने क योग्य, मान रज से रचना, मास होना, चमकना, काप रज्ज्वन्मूषी उत्तर० ५।२, नेत्रे स्वय रज्ज्वत् -५।६६, नै० ३।१२०, ७।६, २२।५२ 2 रचना, हुनका रज तथा रशीन बनाना, रजलेप करना 3 अक्षररत्न होना, भक्त बनना (अधि० के साथ) देवानिय नियधरादय स्यवती कृपाहरज्ज्वन नयेन विदग्धेषु नै० १।३।६ सा० द० १११ 4 मुख होना, प्रभावक होना, स्नेह की अनुभूति होना 5 प्रसन्न होना, अनुपुष्ट होना, खुश होना - प्रेर० (रज्ज्वति-से) 1. रचना, हुनका रचना, रशीन बनाना, मास करना, रजलेप करना -सा रज्ज्वत्वा शरणी कृताशोः कु० ७।१०, ६।८१, कि० १।४७, ४।१२ 2 प्रसन्न करना, तुष्ट करना, मानना, अनुपुष्ट करना ज्ञानलक्ष्मणद्वय शब्दा नर न रज्ज्वति - मनु० २।३ (इस अर्थ में रज्ज्वति' भी दे० कि० ६।२५) स्तुतु कुचकुचयासौ मथिनवरी रज्ज्वत् तब हुनचरम् गीत० १० 3 मेल करना, मेल लेना, अनुपुष्ट रहना मनु० ७।१९ 4. हरिच का शिकार करना (इस अर्थ में केवल 'रज्ज्वति') अनु- 1 मास होना, वि० १।७ 2 स्नेहशील होना, चमक होना, अनुपुष्ट बनना, प्रेम करना, पसन्द करना (अधि० के साथ कर्म० के शी) पंच० १।१०१, मनु० १।१०१ 3. जुग होना मन्० १।१२६ अन्- 1 अक्षररत्न होना, क्लेशहरिण होना,

(अप्रा० के साथ, नवहीनावपरमते जन. - कि० २।२२ २ टीका होना, विषयं होना स्वाहापरमता-पर. स० १।५, अ०- १ प्रकृतवस्तु होना, उपर्युक्ते अवधारणम् - युद्धा० १ २ हृषके रंग का होना, रगीत होना - सि० २।१० ३ कण्ठवस्तु वा विषयवस्तु होना सि०- १ रवरीष्ट होना, वलिन होना, षट्पि या महा होना - केना अपि विरग्यते नि स्नेहा कि न तेवका - प० १।८० (यहाँ यह द्वितीयाधे भी एकता है) १ अतनुष्ट होना, निरिष्ट होना, नापसव करना, बूधा करना - चिदानुरक्तोऽपि विरग्यते जन - मुष्क० १।५३, या चिन्तनामि सतत अपि वा विरक्ता-मर्तु० २।२, मर्तु० १।८।२, श्वार मे विरक्त होना, साधारिक आशक्तियों का छोड़ देना।
 रज्जु [रज्जुति-रज्जु + चिप + ध्वन्] १ चिपकार, रज-नेपक, रजनेब २ उत्तेजक, उद्दीपक, -कम् १ लास चन्दन २ सिन्दूर।

रजम् [रज्यतेजने-रज्जु करणे ल्यट्] १ रज करना, हलका रजना, रजलेव करना २ रज, रज ३ प्रसन्न करना, मूस करना, सन्तुष्ट रहना, मूल होना प्रसन्नता देना - राजा प्रजाजनकमवधये - रज्जु० ६।२१, तर्बैव नाऽनुरजन्तौ राजा षड्धितरजनात् - ४।२ ४ लास चन्दन की लकड़ी।

रज्जो [रज + जो] नील का पीप।
 रट् [भा० पर० रटति रटित] १ बिल्लाना, पीतकार करना, बीजना, छन्द करना, दहावना, चिबाड़ना - योग्यधारणियु चिबा - मर्तु० १।५।०, पपात गजसो भुमी रराट ष मवकरम् १।५।८ २ जोर से बीजना, उद्दीपना करना ३ प्रसन्नता से बिल्लाना, प्रसन्न करना भा०- पुकारना, बिल्लाना - प्रियमहृषर-मपस्तेवानुरा षकभाष्यारटति - स० ५।

रटम् [रट् + ल्यट्] १. छन्दन की छिन्ना, चिमाना, जोर से बाधाव देना २ प्रसन्नता का पीतकार, पद्यपी।

रम् [भा० पर० रपति, रचित] म्मिपि करना, टनटनाना, मूकानाना, समनाना (पायकेव भाषि का) - रण-द्विराणद्वयना नवस्वतः वृषाभिन्नप्रभुविमंभले त्वरे सि० १।१०, बरधरपितमविमनुपुरवा परिपूरितसुरत-वितानम् - मीठ० २।

रम् - कम् [रम् + कम्] १. संभाम, उमर, युद्ध, लड़ाई रम् प्रकृते तव भीमः पल्लवराजसोम - रज्जु० १।०२, नषोर्बिषितयोरासीमृद्विनिशरये रजः युवा० २ युद्धकेव, -कः १. शब्द, शोर २ शारणी बनाने का वज ३ गति, बाध। रम० - क्वम् युद्ध का अगला भाग, -भीम युद्धकेव, वजस लक्ष्यार, मयैव शोभित श्मोष रणोपाति प्रबन्धक - मर्तु० १।५।६, -भीमकम्, -कम् युद्धकेव, -अपेक्ष (वि०) युद्ध

से मायने बाधा, प्रयोधा - स बनार रणमेलो कम् क-द्वारवस्थिताम् - कि० १।५।३३, -अतोवम्, -कुम्, युष्मिः सैनिक दौल, मार बाधा, -कम्पम् युद्ध में प्रदत्त विष्णु, -सितिः (स्त्री०) - केवम्, -कु (स्त्री०), युष्मिः (स्त्री०), स्वाम् युद्धकेव, -युष् युद्ध में आये रहना, युद्ध का बार - छाते भाषणितोमे महनि रज्जुको को मयसायकाश - वेणी० ३।५, शिव (वि०) युद्ध का शोकीन, लड़ाव, -वतः हाथी - युष्मन्, -युष्मन् (पुं०), शिरम् (मर्तु०) १ युद्ध का अगला भाग, लड़ाई का मुख्य बार - स० ६।३०, ७।२६ २ सेना का अग्रभाग, - रजः हाथी के दाँतों के मध्य का फालका, रजः युद्धकेव, - रजः बाध, मच्छर (कम्) १ प्रकल इच्छा, उत्कण्ठा २ शोई हुई वस्तु के लिए बंध, -रजकः, -कम् १. पिता, वेदकी, क्षेत्र, (किन्तो शिव वस्तु के लिए) कष्ट वा क्लेश (श्रेय से उत्पन्न) रज्जुनकविन्दु विज्जुदाशोयानम् - मा० १।५।१, उमर० १ २ श्रेय, इच्छा (कः) कायकेव, - कम्प मास बाधा, सैनिक लगीत बाधा, - शिवा सैन्यविज्ञान, युद्धकला, या युद्ध विज्ञान, कृष्णम् शोर-युद्ध, तुयुष्-युद्ध, -सम्पत् युद्ध की सामग्री, सैनिक शान्त-शान्त बहुमः मित्र, सहायक, -संभः विजयसमारक; विजयचिह्न।

रणकार [रम् + कर्त्, व० ट०] १. लड़काहट, छन-सनाहट या छनछन की आवाज २. (पक्षिपक्षों का) धनधनाना।

रन्वितम् [रम् + कम्] लड़काहट, टपटप, छनछनाहट या छनछन की आवाज।

रजः [रम् + र] १ बहु पुष्प को पुष्पहीन मरे २ संवर वृक्ष, -डा फूटदरबी, पुष्पकी, रियों को लंबोचित करने में निदापरक शब्द - रजे रचितमरिचि - संघ० १।१९२, (पाठान्तर) व्रतिकृत्वाद्युष्मतां शया शया-दुर्बलिनोम्, केवोष्वाङ्कय तां रजो गजम्पेव निवोद्य प्रयो० २ २ बिबाध स्त्री - रजा सौम्ययोवराः कृति मया मोद्गनाइवामिगिता - प्रयो० ३।

रज (पुं० क० कृ०) [रम् + क्त] १. प्रसन्न, वृक्ष, युद्ध २. प्रसन्न वा वृक्ष, स्नेहशील, वृष्ण, अनुपल ३. युवा हुआ, व्यस्त, सज्जन, (दे० रज्जु), -कम् १. प्रकृतता २. सैन्य, शयोग - रज्जु० १।५।२३, २५, वेप० ८९ ३ उपस्य इतिव। उम० - अन्वी वेवाय, रजी, -कम्प (वि०) काम्य, कामासक्त, -अङ्गः कोमल, -अङ्कियम् १. दिन २ आनन्द के लिए स्थान, -कीकः युवा, - कृष्णम् कामासक्त अस्ति की सैन्य के लक्ष्य की पीतकार, -अरः कीटा, -सामिन् (पुं०) स्नेहकापी, कामासक्त, -साकी कुट्टी, हूटी, - मारीकः १. पिपरी २ कायकेव, यदन ३ युवा ४. सैन्य के लक्ष्य की

कामार्थं व्यक्ति की यो-नी ध्वनि,— बंधः मैत्रुण, सभोग,
—द्विषकः 1. स्वियों की कुलताकर उनसे बलात्कार
करने वाला 2. विलासी ।

रतिः (स्त्री०) [रत् + क्तिन्] 1. आनन्द, सुखी, सन्तोष,
हृद्य—या० २११ 2. स्नेहशीलता, प्रियता, अनुराग,
आनन्दानुभूति (अर्थ० के साथ) पापे रति मा कृपा
—अतु० २१७७, स्वयंप्रिय रति—२१६२, रत्तु०
११२३ कु० ५१६५ 3 प्रेम, स्नेह, सा० व० डारा की
यई परिभाषा—रतिर्मनोज्ञकुलेऽयं यत्न प्रवणायितम्
—२०७, तु० २०६ से भी 4 सम्भोग का आनन्द—
शास्त्रिण्योपकथाहिनी विगमिता याता स्वदेव रति
—मुष्क० ८१३८, इसी प्रकार 'रतिमर्षस्वम्' दे० नी०
5. मैत्रुण, सभोग, सहवास 6 रतिवेदी, कामदेव की
पत्नी—साक्षात्काम नखमिष रतिमर्षिणी माधव यत्
—या० १११६, कु० २१२३, ४४५५, रत्तु० ६१२
7 योनि, अण० सम०—अणुत्तु—कुहर योनि, अण०
—अणुत्तु—अणुत्तु—अणुत्तु 1 कीडा गृह 2 चकला,
रतीसाग 3 योनि, अण०—अणुत्तु: कुलाने वाला,
व्यभिचारी,—वृत्तिः—ती (स्त्री०) प्रेम का संदेश ले
जाने वाली—कु० ४११६,—वृत्तिः—प्रिय,—रत्तुः
कामदेव, अर्थ नाम मनागवतीकर्मि रतिरमणबाध-
भाष्यरत्तु या० १, रत्तुति स्फुट रतिपतेरिषवः विलासी
बहुत्वल्पलासयुक्त सि० ११६६, रत्तुः सभोग का
आनन्द, लब्ध (वि०) कामी, कामसक्त, कामुक,
—कर्षस्वम् रतिक्रीडा का अत्यन्त रस, अत्यन्त
—कर व्यापुम्बत्वा विवर्ति रतिसर्वस्वधरत्तु—स०
११२४ ।

रत्तुम् [रत्तु + म्, तात्प्रायेण] 1. अर्थ, आभूषण,
होरा—कि रत्तुम्बदा मति—मासि० ११८६, न
रत्तुम्बिष्यति मृष्यते हि तत्तु—कु० ५१४५, (रत्तु
निन्ती में पांच, नौ वा चौदह बलासे जाते हैं—दे०
सम्ब ५५२२, नवरत्तु, और चतुर्विंशत्तरत्तु) 2. कोई
भी मृत्युवान् पदार्थ, क्रीमती कृमाला 3 अपने प्रकार
की अत्यन्त वस्तु (समाप्त के अर्थ में) जाती जाती
बहुकुल्य तद्वलमभिधीयते—मत्स्य०, कन्यारत्तु-
मयोनिजन्म धवतामासे बयं चाविनः—महावी०
११३०, इसी प्रकार पुष्प, स्त्री०, अपत्यं जाति
4. बुद्धक । सम०—अणुत्तु (वि०) रत्तु में से बढ़ा
हुआ,—आकारः 1. रत्तु की आन 2. समुद्र—रत्तु
स्वयेव बहुव्ययव्ययैरहित रत्तुकर एक किन्तु—विक्रम०
१११२, रत्तुकर दीप्य—रत्तु० १३११,—आलोकः
अर्थ की कान्ति,—आलोक्य,—आलोक्य रत्तु की हार,
—अलोक्य मूला, अलोक्य (वि०) रत्तु वा अर्थों से
बढ़ा हुआ,—अर्थः समुद्र (—अर्थ) पुष्पी,—दीप्यः,
—अर्थिकः 1. रत्तु का बना दीपक 2. रत्तु जो दीपक

का काम, दे० अर्थस्तुवान्मिष्यममिष्य प्राप्य रत्तु
प्रदीपान्—देव० ६८,—अणुत्तु हीरा,—रत्तु (पु०)
आन, रत्तुः 1. रत्तु का डेर 2. समुद्र,—आणुत्तु मेरु
पर्वत,—रत्तु (वि०) रत्तु को उत्पन्न करने वाला
रत्तु० ११६५,—रत्तुः वृत्तिः (स्त्री०) पुष्पी ।

रत्तुः (पु०, स्त्री०) [रत् + क्तिन्, यच्] 1. कोहनी
2 कोहनी से मूटडी तक की दूरी, एक हाथ का
परिमाण (पु०) बन्द मूटडी (यह शब्द 'अरति' का
ही भ्रम प्रतीत होता है) ।

रत्तु [रत्तु + क्तिन्] गाड़ी, जलसी
गाड़ी, यान, वाहन, विशेषकर बुद्धरथ 2 नायक
(रत्तु) 3 रत्तु, 4 अथवा, भाव, अण 5 शरीर, तु०
मारामान रत्तु विदि शरीर रत्तुव तु कठ०
6. नरकुल । सम०—अणुत्तुः गाड़ी का दूरा—अणुत्तु
1. गाड़ी का कोई भाग 2 विशेषकर गाड़ी के पहिये
—रत्तु रत्तुम्बिता विवर्ते—रत्तु० ७१४१, स० ७११
3 अर्थ, विशेषकर विष्णु का,—अणुत्तु इति रत्तुगम-
सतत विमर्षि भुवनेष स्वयेति—रत्तु० १५१२६ 4 बुद्धार
का आन 'आणुत्तु', 'आणुत्तु', 'आणुत्तु (पु०) बचना,
अणुत्तु—रत्तुगनामन् विवर्ते रत्तुगनामिषिबवा,
अथ त्वा पुष्कति रत्तु अणुत्तुवर्तवत्—विक्रम०
४११८, कु० ३३३७, रत्तु ३१२४, (कविमय के
अनुसार अणुत्तु रात होने पर अणुत्तु से विवर्त हो
जाता है, फिर मूर्धाव होने पर उनका मेघ होता है)
'आणुत्तुः विष्णु का नाम,—ईशः रत्तु रत्तु कर युद्ध
करने ब.जा बोद्धा,—ईशा,—आ गाड़ी का जोड़ा
(गाड़ी में सवने वाली सबसे लम्बी दो लकड़ियाँ जिन
पर गाड़ी का सारा ढांचा बनाया जाता है)।—अणुत्तुः,
—अणुत्तुः रत्तु का वह स्थान जहाँ सारथि बैठता है,
आलोक्य का आसन,—अणुत्तुः—अणुत्तु रत्तु का समुद्र,
—अणुत्तुः रत्तु के रत्तु की व्यवस्था का अधिकारी,
—अणुत्तु गाड़ी बनाने वाला, बुद्ध, पहिये घटाने वाला
रत्तुकार रत्तुका भाषा सजारा धिरसावहत्—पच०
४१४५,—अणुत्तुः,—अणुत्तु (पु०) रत्तुवान्, सारथि,
—अणुत्तुः—रत्तु गाड़ी की बाहुली—अणुत्तुः रत्तु का
अणुत्तु,—अणुत्तुः रत्तु का टुकड़ा—रत्तु ११५८,
—अणुत्तुः डोली, पालकी,—अणुत्तुः (स्त्री०) रत्तु के
बादो मोर लगा लोहे या लकड़ी का ढांचा जिससे रत्तु
की किसी से टकराने पर रत्तु हो सके,—अणुत्तुः
अणुत्तुः 1. रत्तु का पहिया 2. चकला—अणुत्तु रत्तु का
इधर उधर घूमना, रत्तु का उपयोग, रत्तु पर सवारी
करना—अणुत्तुवत्तुवत्तुवत्तु—उत्तर० ५,—अणुत्तु (स्त्री०)
गाड़ी के जोड़े की बाहुली,—अणुत्तुः (स्त्री०) रत्तु के
पहिये की नाह या भाषि,—अणुत्तुः रत्तु के अणुत्तु का
नाम वा आसन,—अणुत्तुः रत्तु का आन-आसन, रत्तु

बाधित,—बहुलकच,—बाधा रच में देव प्रतिमा स्थापित कर जलस निकालना (ऐसे रच को प्रायः मनुष्य स्वयं नीचते है),—बुद्धन् गाड़ी का अगला भाग,—बुद्धन् 'रथों का युद्ध' वह युद्ध जिसमें घोड़ा रथों पर बैठ कर युद्ध करते है,—कर्मन् (नृन्),—कीचिः राजमार्ग, मुख्य सड़क,—छात्रः 1. रथ का घोड़ा 2. सारथि,—क्षिति (स्त्री०) वह जगह जिस पर रथ युद्ध की पताका लहटाती रहती है,—आत्मा पाशोपर, गाड़ियों रखने का स्थान,—सप्तमी माघशुक्ला सप्तमी का दिन ।

रथिक (वि०) (स्त्री०—की) [रथ+इन्] 1 रथ पर सवारी करने वाला 2 रथ का स्वामी ।

रथिन् (वि०) [रथ+इति] 1 रथ में सवारी करने वाला, या रथ हाकने वाला 2 रथ को रखने वाला या रथ का स्वामी—(पु०) 1 गाड़ी का स्वामी 2. वह यात्रा जो रथ पर बैठ कर युद्ध करता है—रथ० ७३३७

रथिष, रथिर (वि०) [रथ+इन्, इरच् वा] दे० ऊ० 'रथिन्' ।

रथ्य [रथ बहुवि यन्] 1. रथ का घोड़ा पावतयमी मुगजवालायवेय रथ्याः—आ० ११८ 2 रथ का गऊ भाग ।

रथ्या [रथ्य+टाय्] 1 गाड़ियों के जाने जाने के लिए सड़क, राजमार्ग, मुख्य सड़क—नृशोभ्याः सविष-भगतीरथ्याया पर्वतन्मय मा० ११४ 2 वह स्थान जहाँ कई सड़कें मिलती हो 3 गाड़ियों या रथों का समूह—सि० १८३३ ।

रथ् (म्बा० पर० रथति) 1 टुकड़े टुकड़े करना, काटना, 2 कुचचना ।

रथ् [रथ्+अच्] 1 टुकड़े टुकड़े करना, कुचचना 2 दांत, (हाथी का) दाँत—यातास्त्वेन पराश्रयन्ति द्विरथानि रथा इव—भावि० ११५१ । सभ० अथवायच् दाँत से काटना,—अनय रथकथनम्—गीत० १८,—अथः, अथः ।

रथन् [रथ्+स्यट्] वति । सन०—अथः मोठ ।

रथ् (विद्या० पर० रथ्यति, रथ्, प्रेर० रथ्यति, इच्छा० रिरथिष्यति वा रिरथ्यति) 1. घोटा पहुँचाना, जति पहुँचाना, सताप देना मार डालना, मच्छ करना—अर्धं रथितुमारथे—अष्टि० ११२९ 2 जोवन बनाना (माना) पकाना या तैयार करना ।

रथिषेवः [रथ्+निष्+रथिषेव] रथिषेव-कर्म० स०] एक बन्धवही राजा, मरत के बाद छठी पीढ़ी में (यह अत्यन्त पुण्यात्मा और उदार व्यक्ति था, उसके पास अथार बन्धवसि भी जो हमने बड़े २ बलों के अनुष्ठान में अथ वी०) उसके राज्य में यज्ञ में वसि

दिये बने तथा उसकी रथों में उपयुक्त किये गये पशुओं की इतनी बड़ी संख्या थी कि उनकी कालो से शक्ति की नदी निकली मानी जाती है, इती नदी का नाम में 'रथिषेवती' नाम पद गया—तु० मेघ० ४५, और तदुपरि अलि०) ।

रथ्युः [रथ्+तुन्] 1 रास्ता, मार्ग 2. नदी ।

रथ्यन्, रथिषः (स्त्री०) [रथ्+स्यट्, इत् वा, नृमायम] 1 वसि पहुँचाना, सताप देना, मच्छ करना 2 पकाना ।

रथ्यन् [रथ्+रथ्, नृमायम] 1 विवर, छेद, गर्त, गूँह खाई, दरार—रथ्यिष्यन्मन्मन्मन् प्रवेधा—रथ्० १३५६, १५१२, नासाप्ररथ्यन्—मा० १११, कीच-रथ्यन् मेघ० ५७ 2 (क) बलहीन स्थान, वह जगह जहाँ आक्रमण किया जा सके—रथ्योपिपा-तिनोऽनर्थाः स० ६, रथ्योपिष्यन्नायां द्विषाया-मिषतां यथी—रथ्० १२११, १५११७, १७३११, (ख) वृत्ति, दोष, कथो। मय०—अथेवित्, अन्-थारिन् (वि०) कुहरों के कमबोर स्वकी को कुड़ने वाला नृच्छ० ८१५७,—अथः पुःहा,—अथः शोभना या पोला दाँत ।

रथ् (म्बा० बा० रथते, रथ्, प्रेर० रथयति-ते; इच्छा० रिच्छते) मारम करना, मार जाना,—1 मारम करना घूक करना, काम में लय आना, विष्मेशरी से लेना प्रारम्भते म सङ्ग विष्मभयेन नीचै अर्त्न० २१२७, बारमन्लेप्रवेधायां सुभा०, अष्टि० ५११८, रथ्० ८१४५ 2. व्यस्त होना, सोत्साह होना—सि० २१९१, परि, कीली मरना, क्षतिभूत करना इत्युक्तवत् परिरथ्य शोभ्यां—कि० १११८०, भावि०-११५५, कु० ५१३, सि० १७२, सन्—, 1 कुम्भ होना भाव विभोर होना, प्रभावित होना 2 कुपित होना, उत्तेजित होना, क्रोधोत्पन्न वा चिद्विचिदा होना (प्रायः सताप लय प्रयुक्त)—रथ्० १११६ ।

रथ्युः (नृन्) [रथ्+अतुन्] 1 प्रचष्यता, उत्साह 2 बल, सामर्थ्य ।

रथ्यत् (वि०) [रथ्+अतुच्] 1 प्रचष्य, उद्य, बीरव्य, प्रबल 2 प्रबल, बहन, उत्कट, क्षतिघाली, तीक्ष्ण, तीव्र (उत्कच्छ बाधि) रथ्यया नृ विषत्तद्विषया—कि० ५११, रथ्० ११६१, मुद्रा० ५१२४,—सः 1 प्रचष्यता, बीरव्यता, उन्नता, बीरघाता, वेध, क्षातुरता, उत्कटता—आजीवु के कीरवचनेन बासा मुद्रुधंभात्सप-यथाकल्पन्ती—भावि० २११२, त्वदभिरथरवचनेन बलन्ती—गीत० ६, सि० ६११, ११२१, सि० ११४७ 2. उत्तमकल्पन, साहित्यकला, अथवाची—अतिरमककृतानां कर्मवासाविषयैर्भवति हृद्यवराही अल्लभ्यो विपाकः—अर्त्न० २१९१ 3. क्रोध, आदिष,

कोय, बीचपटा 4. सेद, बोक 5. हर्ष, बानन्द, सुधी—
 मनसि रसखिचये हरिस्वयतु सुखेते—गीत० ५ ।
 रघु (मन० जा० रमते, परमनु वि, बा, परि उपरिषं लयने
 पर पर०, ल) 1 प्रकृत होता, सुख होता, हर्ष
 मानना, सुख होता—रुद्रि रमते—भा० ३।२—मनु०
 २।२२३ 2 हृषित होना—अखन होना, मानने
 मानना, स्नेहशील होना (कर्म० और बधि० के
 साथ) कोलापाङ्गुर्बिद न रमते लोचनेर्बिन्वतीप्रति
 —मेष० २७, म्यवेष्ट वदबर्बनरत्त नीती भट्टि०
 १।२ 3 खेलना, खेदा करना, प्रेमात्मिक बनना,
 जी बहलाना, - रावधिया कौशिक्यो रमते नश्ये, सह
 —भासि० १।२२६ (सह) सुखरा अर्षे नी संकेतित
 है) भट्टि० ६।१५, ६।७ 4 मनोम करना—सा तपु-
 येन सह रमते—हि० ३ 5 रहना, ठहरना, टिकना
 प्रेर०—(रमयति-ते) प्रसन्न करना, सुख करना,
 समुत्प करना—इष्का० (रिखते) खीसा करने
 की इच्छा करना—वि० १५।८८, बसि—हर्ष मनाना,
 प्रतन या माननित होता, अत्यनुरक्त होना—भट्टि०
 १।७, मष० १।८।५, जा, (पर०) 1. मानन्य
 लेना, सुधी मनाना भट्टि० ८।५२, १।३३
 2 ठहरना, बचना, छोड़ देना (बोझना आदि), समाप्त
 करना—मनु० २।७३, उच—, (पर० नीर मा०)
 1 कना, अन्त करना, समाप्त करना—सङ्गताभूपरताम
 च लम्बा—वि० १।४५, १।३।६९ 2 कना, बचना
 —अथाप्रभापुपत मस्यने स्वां महाराथा—मष०
 २।३५, भट्टि० ८।५४, ५५, वि० ४।१० 3 चुप
 होना, शांत होना, मष० ६।२०, 4 करना—रं
 उपरत, परि—, (पर०) प्रसन्न होना, सुख होना
 —भट्टि० ८।५३, वि—, (पर०) 1 अन्त होना,
 समाप्त होना, अवनान होना अविहितवतभाया
 रात्रिरेव म्बरमोत्—उत्तर० १।२० 2. कना, अन्त
 होना बचना, छोड़ देना (बोझना आदि)—एतावपुष्पा
 विरते मुनेने—रघु० ३।५१, वि० २।१३, प्राय. अया०
 के साथ, हा हुन्त किमिति वित्त विरघत माहापि
 विनयेम—भासि० ४।२५, उत्तर० १।३३, लघु—
 (मा०) प्रसन्न होना, हर्ष मनाना—भट्टि० १५।३० ।

रघु (वि०) [रघु+अघु] मुहावना, मानन्यप्रद, कोयबचक,
 आदि,—कः 1. हर्ष, सुधी 2 प्रेमी, पति 3 कामदेव.
 रघुञ्च [रघे कठ] हीन । लघु—अर्थकः हीन ।
 रघुञ्च (वि०) (स्वीची—) [रघुयति-रघु+विघु+अघुट]
 मुहावना, लघोचबचक, मानन्यप्रद, मनोहर— भट्टि०
 ६।७२,—कः 1 प्रेमी, पति २ अर्थक राजा रघुनाथ
 विलास्य—रघु० १।४।२०, वेध० ३७.८७, दु० ४।२१,
 वि० १।५० 2 कामदेव 3 उषा 4. अर्थकोच
 —अघु 1 क्रीडा करना 2. प्रेमात्मिक, जी बहलाना,

केलिधीरा 3. रति, मैघुन 4. हर्ष, उल्का 5. कूहा,
 पुट्टा ।
 रघुञ्च, रघुञ्चो [रघु+अघु+अघु वा] 1 सुन्दर लक्ष्य
 स्त्री, लता रघुञ्चो तेष भ्रमरकुलरघुञ्चो न रघुञ्चो
 भासि० २।५० 2. पत्नी, स्वामिनी—भोगः का
 रघुञ्चो विना—मुना० ।
 रघुञ्चो (वि०) [रघुयति-रघु आधारे अनीयत्] मुहावना,
 मानन्यप्रद, मिय, मनोहर, सुन्दर स्मित वैतरिक्यु
 प्रकृतिरघुञ्चोय विकसितम् भासि० २।५० ।
 रघुञ्चो [रघुयति रघु+अघु+अघुट] 1 पत्नी, स्वामिनी
 2 लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी तथा धनदोस्त की देवी
 3 धन । लघु०—कान्तः,—वाचः, पतिः विष्णु का
 विशेषण,—वेधः तारकीन ।

रघुञ्चो [रघु+अघु+अघुट] 1. केले का पीया—विजित-
 रघुञ्चोऽयम्—गीत० १०, पिबोवदभ्रगतलपीवरा-
 ने० २।२।४३ २।३७ 2 गौरी का नाम, नलकुबेर की
 पत्नी जो इन्द्र के स्वर्ग में अत्यन्त सुन्दरी मानी जाती है
 —नक्ष्मसुवर्गेन सुन्दरी किमु रघुञ्चो परिचायिता परम्,
 तस्वीमारे विष्णुदेव तां धनदापत्यतपकलसतीम्
 ने० २।३७, मष० ३८८ (वि०) (स्वी०-घ-कः)
 केले के आन्तर भाव के समान अथात्रो माना या
 वाली—वि० ८।१९, रघु० ६।३५ ।

रघुञ्चो (वि०) [रघुयति रघु] 1 मुहावना, मुन्दर, मानन्य
 प्रद, अधिकार—रघुञ्चोऽप्येवमना किञ्चा मयवनेक
 क० १।१३ 2 सुन्दर मिय, मनोहर—सावित्रमनु
 विद्वैतैवमेनापि रघुञ्चो ज० १।२०, ५।२, म्य
 धर्म्यक नाम का सुख,—अर्थकः बीयं ।
 रघु (मन० जा-रमते, रमित) जाना, हिमना-भूजना ।

रघुञ्चो [रघु+अघु] 1 नदी की धारा, प्रवाह,—अनुकुञ्च-
 इतिहृत्तये तीयमाराम गच्छे—मेष० २० 2 बल,
 बाह, वेध उत्तर० ३।२५ 3 उल्काह, उल्का,
 उल्कटा, उल्का ।

रघुञ्चो [रघुञ्चो रघु+अघु] काति ला+क रत्त
 +कम्] 1. ऊनी बरत, कंबल 2 एक माना
 बुधतिरल्लक-अल्लकमाहो बुधति को न वया ल-
 केतन 3. एक प्रकार का हरिण ।

रघुञ्चो [रघु+अघु] 1 कल्प, बीज, बीकार, हृष्ट, (मा-
 वती की) पिचाङ्क 2. घाता, (पक्षियों की) बृजतलनि
 —रघु० १।२९ 3. जनसमाहट 4. मन्त्र, कोलाहल
 घटां. सुवचं वाप्ये आदि ।

रघुञ्चो (वि०) [रघु+अघु] 1. अंधन करने वाला, पिचाङ्क
 वाला, बीजने वाला 2. अन्धकारक, अन्धकारमान-
 —अर्थकःअन्धनीः सुञ्चं रघुञ्चोऽन्धं तनुम् भट्टि०
 ७।१४ 3. तील, तण्ड 4. बचक, बलियार,—कः 1 ऊँ
 —वि० १२।२ 2. कोचक,—अघु पीतक, काँसा ।

रामः [४+६] सूर्य-सहस्रगुणमुलपट्टमादने हि रत्न रविः
 रत्न० ११८८। सम०—कात्थं सुविक्रमाम्बि, -क, -
 -समयः, पुत्रः, पुत्रः १ वसिष्ठ २ कर्म के
 विशेषण ३ दालि के विशेषण ४ वैषण्यवत् कर्म के
 विशेषण ५ दम के विशेषण ६ सुवीर के विशेषण,
 -विभ, -वारः, वासरः, -वासरत्न रत्नार, वाविल्य-
 वारः, -संक्रान्ति (स्त्री०) सूर्य का एक राशि के
 दूसरी राशि में प्रवेश ।

रत्ना, रत्ना [अञ् + वृच्, रत्नादेश] १ रत्नी, होरी
 २ राश, लगाम ३ कटिबन्ध, कमरबन्ध, स्त्रियों की
 करचनी रत्नतु रत्नापि तव धनवचनमण्डले घोषकतु
 मन्मथनिवेशम्-गीत० १०, रत्न० ७१०, ८१७७,
 मथ० ३५ ४ जिह्वा भाषि० १११११। सम०
 --उपमा उपमा अमकार का एक भेद, यह उपमाओं
 की एक श्रृंखला है जिसमें पूर्व उपमेय, बाधे चलकर
 उपाधान बनता जाता है दे० सा० ६० ६६४ ।

रत्नि [अञ् + वि धातोः, रत् + नि वा] १ होर, होरी,
 रत्नी २ लगाम, रास, मुक्तेषु रत्निषु निरापठपूर्व-
 काया श० ११८, रत्निमयमनान् स० १
 ३ मात्र, इट्ट ४ किरण, प्रकाश किरण-स० ७१६,
 नं० २१५५, इसी प्रकार 'द्विमरत्नि' आदि । सम०
 कलाय चम्बन लडिनी की मोतियों की माला ।

रत्निम् (प०) [रत्निम् । मनुर्] सूर्यः ।
 म् । [म्वा० ५२० रत्नि, रत्ति] १ बहाडना, हूह
 करना, चिन्ता, नीचता करीब कल्प पक्ष रत्न
 रत्न० १६७८, जि० ३१८८ २ लब्ध करना,
 कामाह्वय करना, टनटन करना, लनलन करना
 राजयोगिनियमनाय रत्ति स्थील दक्षोदुम्ब्रि
 वेपी० ११२५, रत्नतु रत्नापि तव धनवचनमण्डले
 गीत० १० ३ प्रतिदर्शन करना, मूचना ।

"(चू०) उभ० रत्निने, रत्ति) चरना, स्वार सेना
 मुड्रीका रत्ति भाषि० ४११३, जि० १०२७ ।

रत् [रत् + अच्] १ सार, (बुझो का) दूध, रत्, इक्षुरत्
 कुमुदमन् आदि २ तरल, द्रव कु० ११७ ३ पानी
 --सहस्रगुणमुलपट्टमादने हि रत्न रवि रत्न० १११९
 भाषि० १११४ ४ मदिदा, वाराह-वन्० २१४७७,
 ५ घृत् एक माषा, भूराक ६ चम्बा, रत्, स्वाद
 (भा० से भी) (वैदिक दसों के २४ वृत्तों में
 से एक, रत् स. है -कटु, अम्ल, कषुर, कषय,
 तिक्र और कषाय) परायत्त, प्रीतिः कर्षण रत्
 वेत्त पुत्र्य -मृदा० ३१४, उत्तर० २१२ ७, घटनी,
 मिषं ममात्ता ८ कोई स्वादिष्ट पदार्थ-रत्न० ३१४
 ९ किसी वस्तु के लिए स्वाद या रसि, पसन्दनी,
 दन्ता इष्टे वस्तुव्यक्तिरत्नाः श्रेयराशीभवति
 -मेघ० ११२ १०, प्रेक्ष, स्नेह, --जराका वनेष्वहावीं

रत्, -उत्तर० ११३९, प्रसरति रत्नी निर्बुतिचन ६१११,
 'मेघ की अनुभूति-कु० ३१३७ ११ बालम्, प्रसजता,
 सुवी-रत्न० ३१२९ १२ मावम्, अत्रिकर्षि, तीन्द्रं
 सावम् १३, अचरत्, भाव-भावा १४ (काव्य
 रचनाओं में) रत् -मबरत्तर्षिणं निर्मितियावर्षी
 भारती कमेवंपति काव्य० १, (रत् श्राय माठ
 है--मुकुमारहासकम्परीश्रीरत्नमाकाः। बीमस्ता-
 द्भुलपंजी केवल्दी नाट्ये रत्ता स्मृता ॥ परन्तु कभी
 कभी 'वांश' रत् को जोड़ कर नौ रत् बना दिये
 जाते हैं,--निर्धेयवापिभाषोऽस्ति शाश्वतोऽपि नवमो रत्
 काव्य० ४; कभी कभी दसवां रत् "त्सम्" और
 मिष्ठा दिया जाता है। प्रत्येक काव्यरचना के रत्
 भावस्वक घटक हैं, परन्तु बिम्बभाव के मदानुसार
 'रत्' काव्य की भाषा है। शायं रत्तायकं काव्यम्
 --सा० ६० ३) १५ मत्, मार, तपम्, सर्वोत्तम
 भाव १६ शरीर के लटक द्रव १७ रीमं १८ पारा
 १९ विष, बहुरोला पेय, जैसा कि 'श्रीधरसत्तापिण'
 में २० कोई भी व्यक्ति या वास्तुसंबन्धी मन्त्र ।

सम्--अञ्जन्म् रत्नी, एक प्रकार का अंबन,
 --अम्लः अम्लवेत्,--अम्लम् १ अम्ल, कोई भी
 बोध को बुझाने को रोक कर जीवन को लम्बा
 करे,--निजित्तमसायमरत्निं नन्वेनोपेयं लज्ज
 इव-रत्न० २ (बाल०) अम्ल का काम देने
 वाला अम्ल को मन को मूल्य भी करे हाथ ही
 हृष्टि भी करे, जानन्दानि हृष्ट्यैकरत्तापानि
 मा० ६१८, मनसश्च रत्तापानि - उत्तर० ११३६, बोध
 कर्म आदि ३ रत्निदि, रत्नाय षेष्कः पारा,
 -अञ्जन्म् (दि०) १ रत्नीला, रत्तार २ तरल,
 द्रव, आभासः किसी रत् का बाह्यरूप या केवल
 प्रतिनि २ किसी रत् का अनुपपन्न स्थान पर वर्णन,
 --वाक्वाहः १ मत् या रत् आदि चलना २ काव्य-
 रत् की अनुभूति, काव्य सौन्दर्य का प्रत्यक्षोकारण
 जैसा कि 'काव्यामृतसत्तावत्' में,--इत्थाः १ पारा
 २ पारसमणि, चिन्तामणि (कहते हैं कि इसके स्पृशं
 से लोहा सोना बन जाता है), उज्ज्वलम्,--उज्ज्वलं
 मोती,--कर्मन् (नपु०) उन वस्तुओं को तैयार करना
 जिनमें पारा इस्तेमाल किया जाता है, केसरम् कपूर,
 कण्ठः, कम् सोधान की तरह का लुप्तवृद्धा रौप्य,

रत्तपम्,--इह (दि०) १ रत्तों का ज्ञाता २ जानम्
 मनाने वाला, कः राव, सीता अच् कश्चि,--न
 (दि०) १ जो रत् की उत्तमता को परम्ता है, जो
 स्वाद जानता है, सांसारिकेषु न मुक्तेषु बन् रत्ताः
 --उत्तर० २१२७ २ वस्तुओं के तीन्द्रों को पहचानने
 में लक्ष्य (-कः) १ स्वाद का जानकार, भावुक, विन्-
 चक, काव्यमज्ञ, कवि २ रत्तिदि का ज्ञाता ३ पारे

के योग से बनने वाली औषधियों के तैयार करने
 काला वैद्य, (-भा) जिह्वा, भासि० २१५९, तेष्क
 (नपु०) रुचिर—इ: वंश,—धातु (नपु०) पारा,
 —प्रत्यय: कोई भी काष्प्यरचना, विषोच कर नाटक,
 —कृत: नारियल का पेड़, —अङ्ग रत का टूट जाना
 या अक्षरोच, अक्षु रूचिर,—राज: पारा, बिष्म
 मरिचा की बिक्री, —शास्त्र रससिद्धि का विज्ञान,
 —सिद्ध (वि०) 1 काष्प्य-सम्पन्न, रसवेत्ता अर्थात् ते
 मुकृतिन रससिद्धा कवीश्वरा - मत्० २१५४ 2 रस-
 सिद्धि म कुण्ड, सिद्धि, (स्त्री०) रससिद्धि में
 कुशलता ।

रसनाम् [रस् + ल्यट्] 1. कन्दन करना, बिलाला,
 सिंघाड़ना, शोर मचाना, टनटन करना, कोलाहल
 करना 2 बादलों की गड़गड़ाहट, बादलों की गरज
 3 स्वाद, रस 4 स्वाद लेने की इन्द्रिय, जिह्वा
 --इन्द्रिय रसाहक रसन जिह्वाश्रवति --वर्क०, भय०
 १५१९ 5 प्रत्यक्षीकरण, गुणानुभवविषेण ज्ञान सर्व-
 ऽपि रसनाद्रसा—सा० २० २४६।

रसना दे० रसना । सम०- रद पत्नी, लिङ्ग (पु०)
 कुत्ता ।

रसवत् (वि०) [रस + ल्युट्] 1 रसेदार रसोन्मा
 2 स्वादिष्ट, मसालेदार, मजेदार, मुरम मसामुख-
 बुल्लस्य इह एव रसवत्कने, काष्प्याभूतस्वाभावः सम्पर्क
 संज्ञके सह 3 तर, सीमा, पानी से आदि 4 मनो-
 हर, मानदार, प्राजल, परिष्कृत 5 भावों से भरा
 हुआ, बोधोला 6 स्नेहसम्पन्न, प्रेमपूरित 7 नाश्री
 रसिक, —सौ रसोदि ।

रसा [रस् + अच् = टाए] 1 निम्नतर नारकीय प्रदेश,
 नाक 2 पृथ्वी, भूमि, मिट्टी--भासि० ११५९, रसम्प
 पुद्गरज्जता रसाग्मारसाग्ना - नला० २११० 3 जिह्वा ।
 सम०- रसम् 1 पृथ्वी के नीचे सान पाताला में से
 एक, दे० पाताल 2 नीचे की दुनिया, कर्मक, राज्य
 यानु रसात्त पुनरिद न प्राकृतु कामये भासि०
 २१६३ जातिर्थातु रसादलम् अर्जु० २१३९ ।

रसालः [रसमालाति-आ + ला + क, ष० तं] 1 आम
 का पेड़, -मुञ्जा रसालकुमुमानि समाश्रयन्ते - भासि०
 १११० 2 मन्ना, ईश, -सा 1 जिह्वा 2 वह दही
 जिसमें शक्कर तथा मसाले मिला दिए गये हों
 3 'दुर्ग' बाल, दूध 4 बगुरों की बेल या अणुर,
 -सम् लोभान ।

रसिक (वि०) [रसोऽप्यस्य ठन्] 1 मसालेदार, मजे-
 दार, स्वादिष्ट 2 मानदार, कर्तन, सुन्दर 3 जाहीला
 4 उत्तमता (। रस की पहचानने वाला, स्वादबुद्ध,
 गुणग्राही, 'बेबेचक-तद् वृत्त प्रकटति काष्प्यरसिका'
 शार्ङ्गलिकीश्रितम्-यत० ४० 5 आनन्द लेने वाला,

सुखी मनाने वाला, प्रसन्नता अनुभव करने वाला,
 भक्त (प्राय समाम में) - इय मालती भगवता सद्गुण-
 मयोलसिकेन वैषदा मन्यन्तेन मया च तुम्ह दीयते
 -- मा० ६, इसी प्रकार 'कामरसिक'-भर्तु० ३१११२,
 परापरकाररसिकस्य-मूष्य० ६१९९, -कः 1 रसिया,
 गुणग्राही, सहृदय पुरुष तु० अरमिक 2 स्नेहग्राहारी
 3 हाथी 4 घोडा, का 1 ईश का रस, गव, मीसा
 2 जिह्वा 3 स्वयो की कण्ठनी- दे० 'रसाता' भी ।
रसित (पु० ऋ० ऋ०) [रस् + क्त] 1 चम्पा हुआ
 2 रस या मनोभाव से युक्त 3 मूलम्मा बड़ा हुआ,
 तम् 1 शराब या मरिचा 2 फलन, दहाइ, गरज
 बिषाह, कोलाहल, शोर-हेरम्बकण्टरमितप्रतिमानमनि
 -- मा० ११३ ।

रसोच [रसेनेकेन ऊन] लहसुन तु० लपुन ।

रस्य (वि०) [रस् + यत्] रसवाला, मजेदार, मुग्धतु
 शक्तिर रस्या स्निग्धा स्विरा हृष्टा आशान
 सात्त्विकप्रिया भय० १७३६ ।

रह, (स्वा० ष०, वुरा० उ०) रहति, रह्याति ले
 रहत) छोड़ देना, त्याग देना, परिचाय करना
 तिलाजति देना, छोड़कर अलग हो जाना रहयणा
 पशुपतायति - कि० २१४४ ।

रहस्यम् [रह् + ल्यट्] छोड़ कर मान जाना, परिचाय
 कर देना, अलग हो जाना सत्कारान्त समय पर
 वा रहस्यमे केन सम्भार पदम् नलो० २१४६ ।

रहस्य (नपु०) [रह्, असुन] 1 एकान्ता एकान्तवाय
 अकल्पान, एकाकीपन, निर्जनता रघु० २१३, १५,
 ९०, पच० ११३८ 2 उजवा हुआ या मृदमान स्थान
 छिपने की जगह 3 भेद की बात, रहस्य 4 सँघ-
 मभाषा 5 गुप्त इन्द्रिय (अध्य०) गुपचाप, श्रान
 बधा कर, गुप्त रूप से, एकान्त में, निर्जनस्थान में
 अत परीक्ष्य कर्तव्य विधेधात्मकृत रह ७०
 ५१२४, प्राय मवास में-वृत्त रह प्रथयमप्रतिपद्यमाने
 ५१२३ ।

रहस्य (वि०) [रहसि रस-यत्] 1 गुप्त, निर्वा
 प्रच्छन्न 2 भेदभरा, स्व्य 1 भेद (आल० से भी)
 --स्यय रहस्यभेद कृत - विक्रम० २ 2 रहस्य से
 भरा जादू, मंत्र, (अभ्यसर्बंभी) भेद, गुप्त बात-गरज
 त्यापि वृम्भकात्म्यानि-उत्तर० १ 3 आश्चर्य का
 भेद वा रहस्य, गुप्त बात -रहस्यं साधुनामरुपि
 विमृष्ट विबद्यते उत्तर० २१२ 4 गुप्त वा गोपनीय
 सिद्धा, एक रहस्यमय सिद्धान्त -प्रकलोपि मे मया
 वेति रहस्यं श्रोतुलमम्-मम० ४०३, मयु० २११५०,
 (अध्य०-स्वयम्) गुपचाप, गुप्तकप से-यज० ३।
 ३०१ (यहाँ यह विशेषण के रूप में भी मसमा में
 सचना है) । सम०-साक्ष्यवित् (वि०) भेद की बात

बनाने वाला—रहस्यशास्त्रीय स्वस्ति मुकु कर्णान्ति-
चर—श० ११२६, -मेक-विशेषः किंती जेद या
गुण बाल का लोचना, -बल्य 1 गुण प्रतिज्ञा या
याचना 2 जादू के उन्मत्तत्वों पर अधिकार प्राप्त
करने के लिए एक रहस्यमय विज्ञान ।

रहित (सू० क० कृ०) [रह्-कर्मणि कृ] 1 छाटा गया,
छाड़ दिया गया, परिवर्तित, सम्परिवर्तित 2 विष्णु,
यक्ष, वञ्चित, हीन, के बिना (कर्म० के साथ या
संभाव ४ अन्त में रहिते निष्प्रतिप्रति प्राम०
१:५०, गुणरहित, सपररहित आदि 3 अकेला,
एकाकी, सव् घोषनीयता, परदा या ओट ।

रा (प्रदा० पर० गति, राज) देना, अनुदान देना, मन्मथ
करना—रा रातु दा दुष्कृतवतो भावुवाना परभ्यरात्
काव्य० ७ ।

राजा (रा; र-टाप्) 1 पुत्रिमा का दिन, विशेषरूप
में रात्रि राक्षस भोजन कलाविशेष्य राकाधना
म्लान्ति भासि० ७:३२, ५४, ९६, १५०, १६९,
१७१, २:११ 2 पुत्रिमा की अविद्यायी दशो 3 वह
जगत् जिसे असी रजाधर्म होना कारण हुआ है
४ राजता, साज ।

राक्षस (रि०) (स्त्री०-सौ) [रक्ष्म इदम् अणु] दैत्य
या राक्षस में मन्मथ रखने वाला, पैशाची, निशाचर के
संज्ञाचर वाला उन्म० ५:३०, भय० ५:१२, -र
1 राशाच, भूनास, बैताल, दानव, पैताल 2 हिन्दु-धर्म-
शास्त्र में प्राणिप्रायश्चित्त विवाह के बाद भेदों में एक
प्रकार जिसमें दुराहित के सम्बन्धियों को यज्ञ में परास्त
कर कन्या को बलात् उठाकर ले जाया जाता है
राक्षसो मुद्रहरणान्-राज० १:१६, सु० मन्० ३:३०
भा (इसी रूप से कृष्ण हकिमणी को उठा लाया था)
3 उद्योगविषयक एक योग 4 नन्द राजा का मन्त्री,
जो मुद्रागणेश नाटक में एक प्रधान पात्र है, सौ
गिधाचित्री ।

राजा दे० राजा (कराचित् अणुट रूप है) ।
राज [रज्ज् भावे घञ्, ललोपकुत्ते] 1 वनं, रज,
रजक वस्तु 2 लाल रङ्ग, लालिमा, अचर किलोप-
राज-श० १:२१ 3. लाल रङ्ग, लाल रङ्ग की लाल,
महावर, -राज्ये बालाककोबलन कुतप्रबालोऽमलउ-
कार-कु० ३:१०, ५:११ 4 प्रेम, प्रणयोपाद, स्नेह,
प्रीतिविषयक या काम-भावना, मलिनोऽपिरामपुर्णार्ण
-भासि० १:१० (बहुं इत्का अर्धं लाली भी है) ।
-अथ मन्वन्तमन्तरेषु कीपुष्टोऽस्या दृष्टिराजः श० २,
दे० 'पञ्चराज' भी 5 भावना संवेग, सद्गान्धुति, हित
6 हर्ष, आनन्द 7 श्रेष्ठ रोष 8 विद्या, सौम्यं
9 सवीत के राग या स्वरधाम मकराण छ. है प्रैर-
कीविकरवेक द्विष्टोऽनी शोपकमलाः । योगी योग-

राज्येव रागा, वञ्चित कीतिता—मरत । बुरा देसकों
में पित्र-भिन्न नाम बतलाये हैं, प्रायेक राग के अनुक्य
उनके साथ छ छ. रागिनियां होती हैं, इस प्रकार सबको
मिलाकर सवीत के अनेक राग हो जाते हैं) 10 सवीत
की सगति, सवीतप्राप्त्यं—हरासिम गीतरागेण हारिणा
प्रथमं हृत-श० १:५, अहो रागपरिखाहिती गीति-श०
५ 11 जेद, शोक 12 लालच, ईर्ष्या । सम०—
आलस्य (वि०) जोशीला, घूर्ण 1 मंत्र का बल्य 2 मन्दूर
3 माख 4 हाली के उन्मथ पर एक सुधरे पर फेंका
जाने वाला गुनाल या अकार 5 कायवेध,—इत्यम्
रखने वाला पदार्थ, रङ्गनेत्र, रङ्ग,—अथ भावना का
प्रकटीकरण, (नाना प्रकार संवेगों के) उपयुक्त वर्णन
में उपग्रह हवि- भावा भाव' नृत्ति विषयाद्वागबन्ध,
स एव—मालवि० २:९, -सुव्(पु०) लाल,—सुवम् 1
1. रङ्गित घाता 2 रंगानो घाता 3. रंगानु की डोरी ।

रागिन् (वि०) [रा; इति] 1 रङ्गित, रङ्गा हुआ
2 रङ्ग करने वाला, रङ्गनेत्र करने वाला 3 लाल
4 भावना और आवेश में पूर्ण, जोशीला 5 प्रेमपूरित
6 सावेग, स्नेहशील, ध्यानानुरागपूर्ण, अविच्छादी,
नान्वदिन (समाप्त के अन्त में), (पु०) 1 चिचकारी
2 प्रेमो 3 स्नेहवाचारी, कामासक्त, शी 1 सवीत
के स्वरधाम की विकृतियां त्रिनमें से नीच या छलोल
भेद गिनाव जते हैं 2 स्वीरिणी, पृथ्वी, काम्यो ।

राज्य [रफागोऽण्यम् अणु] 1 रघुपत्नी, यशु की मना
विशेष्य रज्ज 2 एक प्रकार का बड़ा मन्थ-भासि०
१:५५ ।

राज्य (वि०) (स्त्री०-सौ) [रज्जोऽणु विकारो वा लला-
मवातन्वात् अणु] रज्जु नाम की हरिण जाति से
सम्बन्ध रखने वाला, या इसके बालों में बना हुआ,
ऊनी विष्माक १:८:११, अणु 1 हरिण के बालों
में बनाया हुआ ऊनी कपडा, ऊनी, बल 2 कम्बल ।

राज् (अभा० उ०) राजति-ते, राजित) 1 (क) चमकना,
जगमगाना, झानवार या सुन्दर प्रतीत होना, प्रमथ
होना—रेवे प्रथमयोष मा—अणु० १:१७, राजन् राजते
वीर्यैरिबानिा वैष्यदत्ते मूक काव्य० १०, रघु०
३:७, कि० १:२४, १:१६ (ख) प्रतीत होना, झलक
दिखाई देना,—नोबालमस्किराकनीव रेवे बुनियरम्परा-
कु० ६:५९ 2. हृत्कृत काना, भासन करना—प्रे० (राज-
वित्-ते) चमकाना, रोशनी करना, उज्ज्वल करना ।
मित्-प्रे० चमकाना, रोशनी करना, उज्ज्वल करना,
अलकृत करना, देदीपमान करना दिव्यालम्बुदुष-
दीर्घादिचिवापीराजितयं षडु- उतर० ६:१८,
नीराजयति भूषाका पादपीजान्तुसुखम्—प्रबो० २
2. झारती उठारना, नीराजन करना (पूजा वा श्रमण
की दृष्टि के कारण जलते हुए दीपकों के धाक को बुझाना)

—नानायोधसमाधीर्षी नीराजितहृद्यपिपि —काम० ४६६
 वि०— 1 चमकाना, —भासि० ११८८ 2 दिखाई देना,
 प्रतीत होना रघु० २।२०।

राज् (पु०) [राज् + क्त] राजा, सरदार, युवराज।
 राजकः [राजन् + क्त] छोटा राजा, मामूली राणा, —कम्
 राजा या राणाओं का समूह, प्रभुसत्ता प्राप्त राजाओं
 का समुदाय - सहते न जनीऽप्यथ किंवा किम् लोका-
 विक्रमान् राजकम्—कि० २।४७, शि० १।४।३।

राजत (वि०) (स्त्री०—ती) [रजत् + क्त] चांदी का,
 चांदी का बना हुआ, शि० ४।१३, —सम् चांदी।

राजन् (पु०) [राज् + क्तिन्, रज्यति रज्य् + क्तिन् नि०
 वा] 1 राजा, शासक, युवराज, सरदार या मुखिया
 (तल्लुप समास के अन्त में 'राजन्' का बदल कर
 'राज' बन जाता है) बगराज, महाराज आदि
 —तथैव सोऽम्बदन्वो राजा प्रकृतिरञ्जनात्—रघु०
 ४।१२ 2 सैनिक जाति का पुरुष, क्षत्रिय शि०
 १।४।४ 3 मुषिष्ठिर का नाम 4 इन्द्र का नाम
 ५ चन्द्रमा—भासि० १।१२६ 6 यज्ञ। सम०

—अज्ञानम् राजकीय कबहरी या दरबार, महल का
 आंगन, —अधिकारिन्, अधिकृत 1 राजकीय अधि-
 कारी या अधिकार 2 न्यायाधीश, —अधिरोषः, —इष्टः
 राजाओं का राजा, सर्वोपरि राजा, प्रमुख प्रभु,
 सम्राट्, —अनकः 1 पहिला राजा, छोटा राणा,
 2 एक प्रकार की उपाधि जो पहले पूजनीय विद्वानों
 और कवियों को दी जाती थी, —अपसह अयोग्य या
 पतित राजा, —अधिकेकः राजा का राजनिलक, —अहम्
 अंगर की लकड़ी, एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी,

—अह्णम् राजकीय सम्मानसूचक उद्धार, —आज्ञा
 राजा का अनुशासन, अध्यादेश, अपवा आदेश,
 —आभरणम् राजा का आभूषण, —आर्षिन्, —ती
 राजकीय बनावटी, राजन्यायिणी, उपकरणम् (३०
 ३०) राजकीय साधन-सामान, राजविज्ञ, अष्टि
 (राज अष्टि या राजाष्टि) राजकीय ऋषि, मन्-
 मयान राजा, क्षत्रिय जाति का पुरुष जिसने अपने
 पवित्र जीवन तथा साधनात्मक जीवन से ऋषि का पर
 प्राप्त किया हो। जैसे पुरुंजवा, जनक और विश्वामित्र,

—करः राजा का दिया जाने वाला धनक-कार्यम्
 राज्य का कार्य, —कुमारः युवराज, —कुम् 1 राजकीय
 परिवार, राजा का कुटुम्ब 2 राजा का दरबार
 3 न्यायान्त (राजकुले कथ, या निविद्ध (प्रेर०)
 न्यायान्त में किसी के किराज अभिप्राय चन्दना,
 या नालिग चन्दना) 4 राजा का महल 5 राज,
 महाराज (बालके की सम्मानसूचक शीर्षक), गविन्
 (वि०) राज्यधीन या राजाधिकार में होने वाली
 सम्पत्ति आदि (जिस सम्पत्ति का कोई उत्तराधिकारी

न हो), —गृहम् 1 राजकीय निवास, राजा का महल
 2, मगध के मुख्य नगर या राजधानी का नाम (जो
 पाटलिपुत्र से लगभग ७५ या ८० मील की दूरी पर
 स्थित है)।—विज्ञम् राजविज्ञ, राजाधिकार
 या राजाधिकार, —सत्कः, हास्यी सुपारी का पेड़, —अष्टः
 1 राजा के हाथ का डंडा 2 राज शासन या राजा-
 विकार 3 राजाद्वारा दिया गया दण्ड—अन्तः
 (दन्ताना राजा) बागें का पत नै० ७।४६, —इतः
 राजपुत्र, राजा का प्रतिनिधि, —प्रोहः राजा के
 विपक्ष विपदासपात, राजसत्ता के विपक्ष आन्दोलन,
 राजविद्रोह, —हार् (स्त्री०), —हार्पु राजा के महल
 का मुख्य द्वार या फाटक, —हार्किः राजमहल का
 तहसीबीवान्, —धम् 1 राजा का कर्तव्य 2 राजाओं से
 सम्बन्ध रखने वाला नियम या विधि (श्राय ३० ३० में)

—धान्यम्, —धानिका, —धानी राजा का निवास
 स्थान, मुख्य नगर, राजधानी, शासन के कार्यालय का
 स्थान, —रघु० २।२०, —धृ (स्त्री०), धृरा शासन का
 उत्तर दायित्व या भार, —नभः, —नीति (स्त्री०)
 राज्य का प्रशासन, सरकार का प्रशासन, राजनय,
 राजनीतिज्ञता, नीतिम् पत्रा, मरकत मणि, —धृ
 पहिला हीरा, —पथ, —पद्वति (स्त्री०) = राज-भाग
 दे०, पुत्र 1 राजकुमार, युवराज 2 क्षत्रिय, सैनिक
 जाति का पुरुष 3 बुधवृद्ध, बुढ़ी राजकुमारी, पुरुषः
 1 राजा का सेवक 2 मन्त्री, प्रथम राजा का सेवक
 (—यम्) राजा की सेवा (अधिक मूढ़ 'राजप्रिय'),
 बीजिन्, बध् (वि०) राजा की मन्तान, राज-

वगत्र, भूत राजा का सिपाही, मूषः 1 राजा
 का सेवक या मंत्री 2 कोई सरकारी अधिकारी,

श्रेष्ठ राजा का शीशक, माना, श्रेष्ठ राजा का
 विपक्षक या शत्रुहर्ता, याचकर, मन्त्रिन् (पु०)
 राजा का सलाहकार—आर्यं 1 मुख्य मार्ग, मुख्य मंत्रक,
 राजकीय या मुख्य पद, मुख्य गन्ना या प्रधान मार्ग
 2 राजाओं की कार्य-विधि प्रणाली, या रीति, बुद्धा
 राजा की माहुर, धम् (पु०) अथराग, कुपकुसीय
 क्षयराग, तपश्चक, —राजयक्ष्मणः राजनियमों का मन्तान-
 मन्वस्यथा नृनाम् रघु० ११।२५, राजयक्ष्मेव
 रागाणा ममृष्ट स महीमृताम् शि० ०।१६ (इस
 शब्द की व्याख्या के लिए दे० मल्लि० इस पर और
 शि० १।३।९ १८), —धान्य राजा की सवारी,
 पालकी, श्रेष्ठ 1 जन्म के समय छोटी और नखत्रों
 का ऐसा संकल्प जिससे उस व्यक्ति के राजा होने
 का सबेले मिले 2 धार्मिक विष्णु का एक सत्त्व
 योग (राजाओं द्वारा अर्ज्यास करने योग्य) जो हठ
 योग (दे०) जैसे और कठोर योगों से निम्न है, रज्जुम्
 चांदी, रक्तः 1 प्रयुक्त राजा, सर्वोपरि प्रभु, सम्राट्

2. कुबेर का नाम—अलक्षायिचिरमन्चरो राज-
राजस्य दम्भी—मेघ० ३ 3. कम्प्रा, रौतिलः
(स्त्री०) कांठा, पुष्प, लक्षणम् 1 मन्व्य के शरीर
पर कोई ऐसा चिह्न, जो उसकी भावी राजकीयता
को प्रकट करे 2 राजकीय चिह्न, राजचिह्न, राज-
संकेत,--अश्वनी,श्रीः (स्त्री०) राजा का लीलाय या
समुद्रि, (देवी का मूर्तकम्) राजा की कीर्ति या
महिमा—रघु० २१७,--बंशः राजाओं का वंश,
- बलाशक्ती राजाओं की बलाशक्ती, राजाओं का बल-
विकरन्, शिवा 'राजकीय नीति' राजा का नीतल,
राज्य की नीति, राजनीति (सु० राजनय) इसी प्रकार
'राजसालम्',--विहारः राजकीय शिक्षालय,--आसनम्
राजा का अनुशासन, शृङ्गम् सुनहरी डबो का राज-
कीय छाना,--संखम् (स्त्री०) न्यायालय,--सखम्
महल, सर्व्वः काली सरसो, सायुष्मन् प्रभुसत्ता,
- सारसः मोर, सुष,--यम् एक बृहद यज्ञ जिसका
अनुष्ठान बभूवर्षी राजा (इसमें तक्षक राजा लोग
भी भाग लेते हैं) इसलिए करत हैं जिससे कि प्रकट
हो कि उनका राजतिलक बिना किसी विरोध के सर्व-
सम्पत्ति से हो रहा है--राजा हैं राजसूत्रेण्डवा
अवति--सत०, सु० 'सम्राट' से श्री, स्वम्, घोडा,
स्वम् 1 राजकीय संपत्ति 2 राजा की दिया
जाने वाला सुन्क, मालमुञ्जारी, हुंसः पराज (स्वेत-
रग का हंस जिसकी बोध और दावें लाल हो)
सपत्यन्ते अवति अमनो राजहस्ताः महाया, मेघ०
११, हस्तिम् (पु०) राजकीय हाथी अर्थात् पाही
तथा सुन्दर हाथी ।

राज्य (वि) [राजन् + क्त] काही, राजकीय,--अ-
1 क्षयिण जाति का पुत्र, राजकीय व्यक्ति--राज्यान्
स्वरुनिवृत्तमेन्द्रमेने-रघु० ४८७, ११२८, मेघ०
४८ 2 अष्ट वां पुत्र्य व्यक्ति ।

राज्यम् [राजय + क्त] क्षयिणी या योद्धाओं का
सम्बन्ध ।

राज्यम् (वि०) [राजन् + मन्वु, बन्वम्] न्यायप्रणयन या
उत्तम राजा द्वारा शासित (देश के रूप में, यह राज्य
राज्यम्--केवल राजा से युक्त--अथ से चित्र
है) मुरारि देवो राज्यान् स्थात् नलोऽप्यत्र राज्यान्
अप०, राज्यानीमाहुरनेन मूर्तिम् रघु० ६१२२,
काव्या० ३१६ ।

राज्य (वि०) (स्त्री०-श्री) [राजा निर्मातृ-अन्]
राज्यम् से प्रभावित या संबद्ध, राजीव से युक्त
-ऊर्ध्वं गच्छन्ति सख्यस्याः मध्ये तिष्ठन्ति राजना
मघ० १४१८, ७१२, १७१२ ।

राज्यात् (अन्व०) [राजन् + शक्ति] राज्य में सम्मिश्रित
या राजा के अधिकार में ।

राजि-श्री (स्त्री०) [राज् + श्नी वा शीप्] भारी, रेखा,
पतित, फलार--सर्वे पश्चिमराजराजितिकेनाकारि
शोकोतरम्--शक्ति ४४४, राजराजि--रघु०
२१७, कि० ४१५ ।

राजिका [राजि + क्त + टाप्] 1 रेखा, पतित, फलार
2 अंड 3 काली सरसो 4 सरसों (एक परिमाण,
मोक्ष) ।

राजिस, [राज् + इक्ष्] सारों की एक सरल जाति जिसमें
विष नहीं होता--कि महोरजितसिपिचिको राजिते
गह्व प्रवर्तते-रघु० ११२७, सु० 'बृहम्' ।

राजीष [राजी शकटाजी अस्तस्य च] 1 एक प्रकार का
हरिण 2 शारस 3 हाथी,--कम् नील कवल, कु०
१४६ । सग०--अक्ष (वि०) कवल बँदी बाँधों
वाला ।

राजी [राजन् + शीप्, अकारलोप] राजी, राजा की पत्नी ।

राज्यम् [राज्ञो भावः कर्म वा, राजन् + क्त, लोपोऽन्]
1 राजकीयता, प्रभुसत्ता, राजकीय अधिकार--राज्येन
कि तद्विपरीतवृत्तः--रघु० २१५३, ४११ 2 राजधानी,
राज्य, साम्राज्य रघु० ११५८ 3 हनुमत्, राज्य,
शासन, राज्य का प्रशासन । सग० अक्ष्यम् राज्य
का सचिवायी सदस्य, राजसंशासन की शासक
(श्री), यह बहुधा बात कतनाई जाती है--स्वाम्य-
मायसुक्तीषराष्ट्रयुर्विभक्ति च--अप०, अधिकारः
1 राज्य पर अधिकार 2 प्रभुसत्ता का अधिकार,
अक्षरयम् हृदयना, अक्षर हृदय करना, अक्षि-
शेकः राजा का राजतिलक या सिंहासनारोहण,--अपः
यह सुक्त जो एक अश्विनस्य राजा द्वारा दिया जाता
है, अक्ष (वि०) नदी से उतारा हुआ, सिंहासन-
भूत, - लक्ष्म शासनविज्ञान, प्रशासन पद्धति, राज्य
का शासन या प्रशासन मुद्रा० १, -पूरा, -भाः
शासन का युवा, सरकार का उत्तरदायित्व या प्रशा-
सन,--अक्षः प्रभुसत्ता का विनाश, श्लेषः उपनिवेश
बनाने की इच्छा, प्रादेशिक वृद्धि की इच्छा,--अक्ष-
हृत् प्रशासन, सरकारी काम-काज,--सुखम् राजकीय-
मायुर्वे ।

राज्ञा (स्त्री०) 1 आमा 2 बंगाल के एक जिले का नाम,
उनकी राजधानी--गीर् राष्ट्रमनुत्तम निरुपमा तथापि
राज्ञापुत्री प्रभो० २ ।

राजि-श्री (स्त्री०) [राजि सुख भय वा रा + शिप् वा
शीप्] रात--राजिवंता मतिवता वर सुख्य अख्याम्
रघु० ५६३, दिवा काकराज्जीता राजी तरपि
मन्वान् । सग०--अटः 1 वेतास, पिपास, भूत-वेत
2 चोर, अन्व (वि०) जिसे रात को चिन्नाई न
है,--अटः अन्व,--अटः ('राजिष' की) (स्त्री०
-री) 1. निशाचर, डाकू, चोर 2 पहरदार, मारुकी,

श्रीकीर्तिर 3 विद्याप, भूल, प्रेत-(त) मात वने रात्रि-
वरी दुदोके-मट्टि० २१२३, -बर्षी 1. रात में इषर
उपर घूमना 2 रात की होने वाला कार्य या संस्कार,
-अम् ताग, नक्षत्रपूज, -अस्मत् शोष, -आगर
1 रात की पहरा देना, रात को आगने रहना,
रात में बैठे रहना-रघु० १११३४ 2 कुता, -तरा
आधी रात, मध्यरात्रि-पुष्पम् कुम्भ (जो रात
की ही सिलता है), -घोष रात का आ जाना, रक्ष,
-रक्षकः पहरेदार, रक्षबाण, -रक्ष अक्षकार,
पना अक्षरा, -बास्वत् (नपु०) 1 रात की वेद्यभूषा
2 अक्षर विषय रात का अंत, दिन का निकलना,
पी कटना, प्रमान का प्रकाश-वेद - वेदिन् (पु०)
मूर्ति ।

रात्रिनिवन्, रात्रिनिवा (अन्व०) [इ० म०] रात दिन
लगातार, अनवरत - रात्रिनिव गन्ववत् प्रयाति
-स० ५१४ ।

रात्रिमन्थ (वि०) [रात्रिम् + मन् + मन्] रात की भाँति
दिखाई देने वाला (जैसे दुग्धिन या मेघाच्छादिन
दिन हो) तु० 'रात्रिमन्थ' ।

रात्र (पु० क० इ०) [रात्र् कर्त्तरि कर्मणि वा क्त]
1 आराधित, प्रशोधित, मनाया गया 2 आराधित
सम्पन्न, निष्पन्न, अनुपिन्न 3 पक्काया हुआ, (पाना)
गुआ हुआ 4 तैयार किया हुआ 5 प्राप्त किया हुआ
हासिल किया हुआ 6 सफल, सौभाग्यशाली, प्रसन्न
7 जायु की लक्ष्मि से पूर्ण, दे० रात्र् । मम० -अन्न
सिद्ध या स्थापित तन्त्र, प्रदक्षिण उत्सवहार या सभाई,
अग्निम विषय मिश्रान्त, मत २३३वैवाशिकरादान्त
नित्यगमनेर्षिनव्य इवीदानीमुत्पादयाम - घारी०,
अन्तित (वि०) प्रदक्षिण, प्रमाणा द्वारा स्थापित,
तर्कसिद्ध ।

रात्र् । (म्वा० पर० गणानि, रात्र्, इच्छा० गिराधीन
पञ्चु भागना चाहता है के निम्न निम्नानि) । रात्रो
करना, मनाता, प्रसन्न करना 2 मन्त्र करना, कार्य
किस करना, पूरा करना, अनुष्ठान करना, निष्पन्न
करना 3 प्रगुप्त करना, तैयार करना 4 क्षिप्रता
करना, नष्ट करना, मार डालना, उखाड़ना वातरा
भूवगत श्रेष् -मट्टि० ११११९ ।

11 [दिवा० पर० गणानि, रात्र्] अतुकूल या दगाडे
हाना 2 मन्त्र, या पूर्ण हाना 3 मकन हाना काम-
याप हाणा, मन्त्र हाना 4 तैयार होना 5 मार
डालना, नष्ट करना, प्र० [रात्र्कर्त्तरि-ने] 1 रात्रो
करना 2 मन्त्र करना, पूरा करना, अन् - आग-
पना करना, पूजा करना, मनाता, अम् 1 नष्ट
करना, टैम पहुँचाना, पाप करना (सि० वा अधि०
क माय, अथवा स्वतंत्र रूप से) यमिन्-कर्मिण्यपि

पूजाहुँपराराड शुक्रतन्वा- स० ४, अपराडोऽपि तत्र
भवत कृत्वस्य-स० ७ 2. बूक जाना, लक्ष्यवेध न
कर सकना, शि० २१२७ 3 सताया, चोट पहुँचाना,
सतिप्रदान करना-न तु द्रोध्यस्यैव सुभगमपराड युक्तिषु
स० ३१९, आ-०, आगपना करना (प्र००)
1. रात्रो करना, मनाता, प्रसन्न करना परेषां शैतानि
प्रतिदिनमारोप्य बहुधा भर्तु० ३१३६, २१४, ५
2 पूजा करना, सेवा करना मेष० ४५, वि-०, चोट
पहुँचाना, क्षिप्रता करना, नष्ट करना, टैम पहुँचाना,
-कवासमभिहारं विराध्यन् क्षमेन क -शि० २१३३,
विवाह एव भवता विग्राह बहुधा च न -२१४१ ।

रात्र् [रात्रा वा रात्रो रीषोभासी रात्री, सा अग्निम्
अग्नि -रात्री ऽ अण्] वैरात्र्य का महीना ।

राधा [राधोति साधयति कार्याम् -राध् ऽ अच् ऽ टाप्]
1 मन्त्रि, मन्त्रना 2 प्रसिद्ध गौरीका जिस पर
कृष्ण भगवान का हवा अन्वारा बा (इसकी छपायीनि
का अर्पण ने अपने गीतगोविन्द की रचना द्वारा अमर
कर दिया है) तदिय राधे नृधु प्राप्य गोवि० १
3 अधिरथ की पत्नी तथा कर्ण की पालिका पाना
का नाम 4 विद्याया नाम का मन्त्र 5 विद्वती ।

राधिका दे० राधा ।

राधेयः [राधा ऽ इक्] कर्ण का विशेषण ।

राध (वि०) [राध् कर्त्तरि षष्, वा वा] 1 सुखान्त,
आनन्दर, उपरायक 2 सुन्दर, प्रिय, मनाह
3 मन्त्रि, धूमिल, सजाया 4 श्वेत्, -न 1 गोत्र पसिद्ध
अस्त्रिया का नाम-(क) जम्बदग्नि का पुत्र परमशक्ति
(ख) तमुदव हा पुत्र इत्यराम जो इत्यम का भूः रा
(ग) दाम्य और कौमन्वा का पुत्र राधचन्द्र या
मौरागम गमयण का नायक । [वर राध बानव
हो य ना विचरामिन्, दशरथ की अनुभूति तक
वक्ष्यन् भवत राध का, राजसो मे अपने यज्ञो
की रक्षा करने के लिए अपने आश्रम में जे गये ।
गम ने अन्याय ही उन सब राजसो का छत्र
धियाया और पुरस्कार के रूप में शक्ति न की
वमपुत्रपुत्र अम्न प्राप्त किये । उसके परदातु नाम
विचरामिन् के माय बनेक की गन्धशाली शिविवा
न्याग गये, यज्ञो जिव के धनुष का झुंझने का आश्रय
रुदक कवचर दिव्याकर सीता में विद्यार किया और
वायिन् अयाग्या जा गये । यह देखकर कि गम न
गम का उपयुक्त अधिकारी हो रहा है दशरथ
उसे अपना पुत्रात्न बनाने का निश्चय किया, परन्तु
टैम राधशक्ति के दिन दशरथ की धियगन्ती केंद्रका
ने, अपनी दुष्ट दामो मन्थरा के द्वारा मन्थराये ताल
पर, दाम्य का आने ही पूर्व प्रतिज्ञात वेदनात पुत्र
करने के निम्न रहा, एक में उम्मेने राधका लौहत त्र

का निर्वासन तथा दूसरे से अपने पिय पुत्र बरल का युवराज के रूप में राज्याभिषेक होगा। राजा को इस बात से अत्यन्त चिन्ता होगी, उसने डैकेयो को उन दुष्ट भाग्यो से हटाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु अन्त में उसे झुलना पड़ा। तुरन्त ही आजाकारी पुत्र राम अपनी सुन्दर लक्ष्मण पत्नी सीता तथा भक्त भ्राता लक्ष्मण के साथ निर्वासित होने को तैयार हो गये। उनका निर्वासन काल बड़ी-बड़ी घटनाओं से भरा हुआ है, दोनो भाइयों ने कई शक्तिशाली राजसौ को का नाम लमाय कर दिया, फलतः रावण की इशानि मजक उठी। दुष्ट रावण ने भारीभकी महावला से राम की शक्ति का देखने के लिए उसकी प्रिय पत्नी सीता का बलात्कृत्य करवाया। सीता का पता लगाने के लिए अनेक निष्कल पुष्पाञ्जो के पंचाल इत्यादि नामों से यह निश्चय किया कि सीता लका में है, और फिर उसने राम को प्रेरित किया कि लका के ऊपर बढ़ाई की जाय तथा दुष्ट रावण को मौन के घाट उतारा जाय। बाबरों ने समुद्र को पार करने के लिए एक पुल बनाया जिसके ऊपर ने अपनी असक्य सभा के साथ पार होकर राम लका में प्रविष्ट हुए तथा उसे जीन कर सब राजसौ समेत रावण का बन्धु किया। उसके पंचाल राम अपनी पत्नी सीता तथा अन्य युद्ध-विद्या के साथ, विजयपताका फहराते हुए बाकिम ब्रह्माणा आये जहाँ बलिष्ठ ढांग उनका राज्यान्वय किया गया। राम ने बहुत वर्षों तक मायापूर्ण राज्य किया उसके पंचाल कुन युवराज बनाया गया। राम, विष्णु भगवान का मानकी अवतार माना जाता है ० ब्रह्मदेव-विनाराम दिव्य रत्नो टिककपनि-रामनीय दामन्तमीनिर्जाल रामनाय। कजन्त पुनरनु-गिच्छन्त जय समदीश हन्—मौन ० १। मय ० अनुज एक प्रसिद्ध सुचारक, पशन्ती मप्रदाय के प्रकर्णक तथा कई पुनःकी के प्रमेदा बेषण्ड, अययन्त (यम्) 1 राम ह माहमिक काव 2 वाल्मीकिप्रणीत एक प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें सारा काव्य २०००० श्लोक हैं। गिरि: एक पहाड का नाम—(बके) निगणक्यावायकयु वरानि रामनिपथिमेषु—मेष ० १.—चन्द्र, भद्र, दशम १ पुत्र राम का नाम—दूत, इत्ययान का नाम, लक्ष्मी देवताका लक्ष्मी, राम की अपनी सेतु राम का पुत्र भाग्य और लका की सितासे नामा राम का पुत्र जिने आजकल 'राम्म' शिष्ट' करने हैं।

मेष ०—उम् | रम् | अ. ३, पाशवद्वि | हीय ।
 रामनीयक (वि०) १२०० को) [रामनीय-| बृज]
 प्रिय, सुन्दर मुख, कर्म प्रियता, सीतल मा राम-
 नीयकनिचररथदेवता का भा० ११२१, ११६७,

लक्ष्मीस्तन एव मणिहारावलिारामणी...ने० २।
 ४४, कि० ११३३ ४४।
 राम्या [रमतेज्या रम् करने पञ्ज] 1 सुन्दरी स्त्री,
 मनोहारिणी तरुणी—अथ गमा विकसलमुखो बभूव
 भाषि० २१२६, २१६ 2 प्रिया, पत्नी, युवस्वामिनी
 —रम् ० १२१२३ १४१२० 3 स्त्री,—रामा हरन्ति हृदय
 प्रसन्न तराणात्—रुद्र० ६१२५ 4 नीच जाति की स्त्री
 5 सिद्ध 6 हीय ।
 राम्य [रम्मा+यम्] बीम की लाठी जिसे इन्द्राचारी या
 संन्यासो रखते हैं ।
 रामः [र+यम्] 1 अन्दन, चोकरा, चीक, दहाव,
 किसी जानवर की चिन्ताइ 2 शब्द, अग्नि—मूरव-
 वाद्यराव—मालवि० ११२१, यमपुत्रारम्—गीत०
 ११।
 राम्य (वि०) [रावयति भीषयति सर्वात्—र+यिच्+स्युट्]
 राम्य (वि०) [रावयति भीषयति सर्वात्—र+यिच्
 :स्युट्] अन्दन करने वाला, चीकने वाला, दहावने
 वाला, चीक के कारण रोने धोने वाला, या एक
 प्रसिद्ध राक्षस, लका का राजा, रामसौ का दुश्मिना
 (रावण के पिता का नाम बिष्वा तथा माता का
 केतोनी या कंकरी था, इसी लिए वह कुबेर का
 मौनेला भाई था। युवन्मय शूचि का पीच होने के
 कारण वह पीनस्य कहलाता है। बल रूप से
 लड्डा पर पहले कुबेर का अधिकार था, परन्तु रावण
 ने उसे वहाँ से निकाल दिया उसने लका को अपनी
 राजधानी बनाया। उसके दोन सिर (इसीलिए
 वह द्वाघोष, दम्बदन, आदि कहलाता है) और बीस
 भुजाएँ थी, कुछ के अनुसार उसकी टाँगें भी चार थी
 (तु० रम् ० १२१८८ और उम पर मल्लि०) ऐसा
 वर्णन मिलता है कि रावण ने इन्द्रा को प्रमत्त करने
 के लिए दस हजार वर्षों तक कठोर तपश्चर्या की,
 और प्राणि हजार वर्षों के पंचाल अपना सिर इन्द्रा के
 आगे प्रस्तुत किया। इस प्रकार उसने नौ सिर
 प्रस्तुत किये और दसवा सिर प्रस्तुत करने तथा ही
 था कि इन्द्रा ने प्रमत्त होकर बरदान दिया कि उसकी
 मृत्यु न मनुष्य ढांग होगी और न देवता इन्द्रा ।
 इस शक्ति से सम्पन्न होकर वह बड़ा अत्याचार करने
 लगा, अपने लोगों का सब प्रकार से मारता आरम्भ
 किया। उसकी शक्ति इतनी अधिक हो गई कि
 देवता भी उसके परेन नीकरी की भाँति उसकी सेवा
 करने लगे। अपने अपने समय के प्राय सभी
 राजाओं का जीन लिया, परन्तु कार्तवीर्य ने उसे
 कारावार में शक्त दिया अब कि रावण ने उसके देघ
 पर आक्रमण किया। एक बार उसने कैलास पर्वत
 उठाने का प्रयत्न किया, परन्तु शिव ने ऐसा दबाया

कि उसकी अनुपिया कुचल गई। फलतः उसने शिव की एक हवारा बर्ष तक इतने ऊँचे स्वर से स्तुति की कि उसका नाम रावण एव गया, और उसे शिव ने उस पीड़ा से मुक्त कर दिया। परन्तु यद्यपि बहु इतना बलवान् और अजेय था, तो भी उसका अन्तिम दिन निकट आ गया। राम—जिनहोंने इस राक्षस का वध करने के लिए ही विष्णु का अवतार मारुत किया था,—अपना निर्वासित जीवन अथल में रहकर बिता रहा था। एक दिन रावण ने उसकी पत्नी सीता का अपहरण किया और उससे अपनी पत्नी बन जाने का अनुरोध करने लगा—परन्तु उसने रावण की शर्तों का ठुकराया और बहु उसके यहाँ रहती हुई भी पतिव्रता, सती साम्नी बनी रही। अन्त में राम ने अपनी शानखेला की सहायता में लका पर चढ़ाई की और रावण तथा उसकी सेना का काम तमाम किया। बहु राम का उपप्लुत शत्रु था और इसीलिए बहु कहावत प्रसिद्ध हुई—रामरावणयोर्द्धम् रामरावणयोर्विद्धम् ।

राक्षसि [रावणस्यापत्यम्—इज्] 1 इन्द्रजित् का नाम, —रावणिरथाप्यथो योद्धमारुतश्च महौगत. अट्टि० १५७८, ८९ 2 रावण का कोई पुत्र—अट्टि० १५७९, ८० ।

राक्षि [अन्तते व्याप्नोति—अप्+इज्, वातोऽनामसश्च] 1 डेर, अवार, सङ्घ, परिमाण, समुदाय धनराशि, तोयराशि, यशोराशि आदि 2 अक्ष या सख्याएँ जो अक्षयित की किसी विशेष प्रक्रिया के लिए प्रयुक्त की जायँ (जैसे जोड़ना, गुणा करना आदि) 3 ज्योतिष्यक, बारह राशियाँ। सम०—अध्विष् कुण्डली में किसी विशेष धर का स्वामी, अक्षय तारामण्डल, बारह राशियाँ, अथम् वैराशिक गणित,—अक्षः किसी राशि का भाग या अय, - अथम् सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रहों का राशियुक्त में से होकर मार्ग अर्थात् किसी ग्रह का किसी राशि पर रहने का काम ।

राष्ट्रम् [राष्+ष्ट्रम्] 1 राज्य, देश, साम्राज्य—राष्ट्र-दुर्गबलानि च—अमर०, मनु० ७।१०९, १०६१ 2 जिला, प्रदेश, देश, मण्डल जैसा कि 'महाराष्ट्र' में—मनु० ७।३२३ अधिवासी, जनता, प्रजा—मनु० १।२५४,—ष्ट्र—ष्ट्रम् कोई राष्ट्रीय या सार्वजनिक सङ्घ ।

राष्ट्रिकः [राष्ट्र+ठक्] 1 किसी राज्य या देश का वासी मनु० १०।६१ 2 किसी राज्य का शासक, राज्यपाल ।

राष्ट्रीय, राष्ट्रीय (वि०) [राष्ट्र मय च] राज्य से सम्बन्ध रखत वाला, - व 1 राज्य का शासक, राजा—जैसा कि 'राष्ट्रियपाल' में, मूषक० ९ 2 राजा

का साला (राज्ञी का भाई) युत राष्ट्रियमुखात् यावदभ्युत्थीयवर्त्तनम् सा० ६ ।

राष् [स्वा० वा० रासते] कवन करना, विस्तारना, किस्-किलाना, मन्व करना, हुह करना ।

रासः [राष्+घञ्] 1 होइल्ला, कोलाहल, शोरगुल 2 अन्व, ध्वनि 3. एक प्रकार का नाच जिसका अभ्यास, कृष्ण और गोपिकाएँ करती थी, विशेषतः बुन्दावन की गोपियाँ उसज्य रासे रस मण्डलीम् देखी० १।२, रासे हरिश्चिह्न विहितविलास स्मरणि मयो मम इत परिहासम् गीत० २, १ भी । सम०—अथवा, मण्डलम् श्रीदामुलक नाच, कृष्ण और बुन्दावन की गोपिकाओं का सर्लालकार नाच ।

रासकम् [रास+कन्] एक प्रकार का छोटा नाटक दे० सा० ८० ५४८ ।

रासनः [रासेः अभाच्] गथा, गर्वण ।

राहित्यम् [रहित+घञ्] बिना किसी वस्तु के रहना, अभाव, किसी वस्तु का न होना ।

राहुः [रह्+उच्] एक राक्षस का नाम, विप्रचिन्त और सिद्धिका का पुत्र इनील्लि एक बार यह वैदिकेय कहलाना है (जब तमूप्रथम के परिणाम स्वरूप समुद्र से निकलना अथुन वैशलाओं को परीक्षा जाने लगा तो राहु ने वेध बदलकर उनके साथ श्वय भी अयन पीना बाह। परन्तु सूर्य और चन्द्रमा की इस प्रयोजन का पता लगा तो उन्होंने विष्णु की इस बालाकी का ज्ञान कराया। फलतः विष्णु ने राहु का मिर काट डाला, परन्तु बुकि बोधा या अयन बहु बच चुका था, तो उसका मिर अमर हो गया। परन्तु कहते हैं कि पृथिवी या अभावस्था का वे दोनों बन्द जीय मयों की अब भी मगाने रहते हैं नु० अर्न्० २।३४ । ज्योतिष में राहु की केतु की मानि समझा जाता है, बहु आठवाँ ग्रह है, या चन्द्रमा का आराही शिरोबिम्बु है) 2 ग्रहण, या सन होने का क्षण । सम०—अक्षयम्,—अक्ष, —अक्षयम्, संक्षय (बाँध या सूर्य का) ग्रहण,—अक्षयम् राहु का जन्म अर्थात् (बाँध या सूर्य का) ग्रहण यात्र० १।१४६ मनु० ६।११० ।

रि i (गुदा० पर० न्विर्वात, गीण) जाता, हिलना-बुलना ।

ii (अथा० उत्र० दे० 'री') ।

रिष्ण (मू० क० क०) [रिष्+ण] 1 क्षात्री किया गया, शाक किया गया, रिताया गया 2 क्षात्री, सृण 3 से रहित, बर्ज्यत, के बिना 4. जोखला किया गया (जैसे हाथ की अंजलि) 5 दर्शत्र 6 धिक्कत, विदुक्त (दे० रिष्), -लम् 1 क्षात्री स्थान, क्षुण्यक निर्वाणो 2. बमल, उजाड, विद्यावान् । सम०—राणि, हस्त (वि०) क्षात्री हाथ बाजा, (कूल आदि के) उपहार

ते रहित बहुवचि देवीं प्रेतिगुमरितापाणिर्बन्धादि
माशुचि० ४ ।

रिक्तक (वि०) [रिक्त+कन्] दे० 'रिक्त' ।
रिक्ता [रिक्त+टाप्] चात्रमास के पक्ष की चतुर्थी,
नवमी वा चतुर्थी का दिन ।

रिक्तवच [रिप्+वच्] 1 शय्यमाग, उत्तराधिकार में प्राप्त
सम्पत्ति, मरने के पश्चात् विरासत में छोड़ी हुई
सम्पत्ति - विधवेरत् मुता रिक्तोर्ध्व रिक्तवचं
समम् - याज्ञ० २।११७, मनु० १।१०४, - ननु मर्ग-
रिक्त रिक्तवर्हति - भा० ६ 2 सम्पत्ति बनवोक्त,
सामान मनु० ८।२७, 3 सोना । तत्र० भाष्य-
वाह्य, - भाषिन् (पु०) - हृत्, - हारिन् (पु०)
उत्तराधिकारी ।

रिक्त, रिक्त (मुदा० पर० रिक्तृति, रिक्तृनि) 1 रेंना,
दबे पाँच चलना 2. मर्याति ने चलना ।

रिक्तवच, रिक्तवच [रिक्तन् + (ण्) - स्यट्] 1 रेंना,
पेट के बन् चलना (मुदलियों चलना) 2 (सदाचार
में) विचलित होना, उन्मत्तगोभी होना ।

रिष् (रुधा० उभ० रिष्कित, रिष्के, रिष्क) 1 वाली
करना, रिताना, साफ करना, निर्मूल करना - रिष्-
ष्चि जलधेस्तोयम् - अट्टि० ६।३६, आविभूति क्षिति
तस्ता रिष्वात्नेव रात्रिः - विष्क० १।८ 2. बन्धित
करना, विरहित करना (प्राय मू० क० डू०) दे०
रिष्, क्षति ।, भाये बड़ना, प्रगति करना, पीछे छोड़
दना (कर्म वा० में और अर्था० के साथ) - मू तु
गृहीणीहीन काल्पारदतिरिष्धते - पंच० ४।८१, हि०
४।३१, मग० २।३६, भाषः कर्मातिरिष्धते "उपदेश
ने निदर्शन उत्तम है" एखांपल इव बेटर ईन प्रिसेप्ट
Example is better than Precep)
- बद्, 1. भाये बड़ना, पीछे छोड़ देना, प्रगति करना
2. बड़ाना, विस्तार करना, - अस्ति बड जाना, पीछे
छोड़ना लुतिभ्यो अतिरिष्धते इवामि चरितानि ते
- मू० १०।३० ।

॥ (म्वा० चुरा० पर० रेक्षति, रेक्षति, रेक्षत 1 विमल
करना, धिक्का करना, बलम-बलन करना 2. परि-
त्याग करना, छोड़ना 3 सम्पत्ति होना, मिलना,
भा -, तिक्कीटना, खेल-खेल में चलना - आरेषित-
भूचतुरं कटाई. - डू० ३।५ ।

रितिः [रि+टिन्] 1. एक प्रकार का वाजा 2 शिब के
एक सेवक (नग) का नाम-मू० 'भुञ्ज (ने) रितिः' ।
रिपु, [रिप्+उन्, पूर्वा० इवन्] मनु, दुश्मन, प्रतिपक्षी ।
रिप् (मुदा० पर० रिष्कति, रिष्कति) 1. कटकटाने का लम्ब
करना 2 बुरा भला कहना, कलकू लगाना ।
रिप् (म्वा० पर० रेक्षति, रिष्क) 1. क्षति पहुँचाना, चोट
पहुँचाना, डेस पहुँचाना तस्वेहाधी न रिष्कते-बहा०,

डेस यावास्तां मार्गस्तेन गच्छन् न रिष्यते मनु०
४।१७८ 2 मार डालना, नष्ट करना अट्टि०
१।११ ।

रिष्क (पू० क० डू०) [रिप् + क्त] 1 क्षतिग्रस्त, चोट
पहुँचाना हुआ, 2 जमागा, - क्त्वं 1 उत्पात, क्षति,
डेस 2. बर्किस्यत, दुर्नाय 3 विनाश, हानि 4. पाप
5. सौम्य, समृद्धि ।

रिष्किः (रुधी०) [रिप् + क्तिन्] दे० ऊ० 'रिष्क्य', - पु०
उत्तमार ।

री 1 (दिवा० वा० रीयते) टपकना, बूद-बूद बिरना,
रिजना, पशीजना, बहना ।

॥ (रुधा० उभ० रिषाति, रिषीते, रीष-वेर० रेपयति-दे)
1. बाना, हिलना-जुलना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त
करना, मार डालना 3 हू हू करना ।

रीष्या (रुधी०) 1 सिन्ध, सिङ्की, कलक 2 गर्म, हवा

रीषकः (पु०) मेर टप्प, रीठ की हड्डी ।

रीष्ठा [रिष् + क्त + टाप्] अनादर, तिरस्कार, अपमान ।

रीष (पू० क० डू०) [री + क्त] टपका हुआ, बहा हुआ,
बूद-बूद करते बिरा हुआ ।

रीतिः (रुधी) [री + क्तिन्] 1 हिलना-जुलना, बहना

2. क्षति, कर्म 3 बारा, नदी 4 रेखा, सीमा
5 प्रबोधी, संव, तरीका, मार्ग, बोधी, विद्या, प्रकिया-
- रीति विरासतमुत्पत्तिकरीं तदीयां भाषि० ३।११,
कर्मरैषा विहिता रीति - मोह० २, उन्तरीत्या, जन-
सेष रीष्या ब्राहि 6 रिवाज, प्रथा, प्रचलन 7 बोधी,
भाष्यकियन्त - परस्यटना रीतिर-जुसस्था विद्येयवत् ।
उपकर्षी रसादीनां सा पुन स्यान्नुतुविया । बंदनीं
चाच नीधी च पाञ्चमी माटिका तथा - भा० ८०
१२४-५ 8 पील, कासा (इत अर्थ में 'रीती' भी)
9 सोहो का संघ, मुर्दा 10 धानु के तल पर लगा
आरेव ।

४ (मदा० पर० रीति, रवीति, र्त) कवन करना, हूह
करना, चिन्ताना, पीछाना, जोर से बोलना, दहाडना
(अस्तिचोर्षो क) मनमाना, धब्ब करना कर्म कर्त्त
किमपि रीति क्षतीविषिण्य-हि० १।८१, अट्टि० ३।१७,
१।२२, १।२१, वि 1 कवन करना, विनाश करना
शोक में रोना - ननु महर्षीं दूरे मत्वा विरीति समु-
त्पुनः विष्क० ४।२०, अट्टि० ५।५४, चतु० ६।२७,
2. बोलाहूक करना, सोर मचाना न त विरीति न
चापि च डोकोले - पंच० १।७५, श्रीर्षेण्यम् गृह्य
विरीति कपाट - मूच्छ० ३, एते त एव विरदो
विष्कम्भयुरा - उत्तर० २।२३ ।

रुष्क (वि०) [रुष् + क्त, नि० रुष्क्य] उज्ज्वल, चमक-
दार, रुष्क होने का भावुक्य-वि० १।१७८, - रुष्कम्
1. सोना, 2 लोहा । तत्र० कारक तुनार, - रुष्कम्

(वि०) सोने के कलमों से युक्त, सोना बढा हुआ, —आहुत दीपाधार्य का नामान्तर ।

रक्षिण्य (पुं०) [रक्ष् + णि] भोष्मक के अन्त पुत्र तथा रक्षिणी के भाई का नाम ।

रक्षिणी [रक्षिण्य + णी] विदग्ध के राजा भोष्मक की पत्नी का नाम (रक्षिणी की ताराई रक्षिणी के पिता ने शिशुपाल से हर दी थी, परन्तु रक्षिणी गुप्त रूप से कृष्ण से प्रेम करती थी। उसने कृष्ण को एक पत्र भेज कर प्रार्थना की कि उसका अपहरण कर लिया जाय, बलराम सहित कृष्ण जाया और रक्षिणी के भाई की पृष्ठ में परास्त कर रक्षिणी को उठा कर ले गया। रक्षिणी से कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का जन्म हुआ) ।

रक्ष (वि०) = रक्ष, दे० ।

रक्ष (पुं० क० कृ०) [रक्ष् + क्त] 1 टूटा हुआ, नष्ट अर्थात् 2 अर्थात्कृत 3 भुका हुआ, बर्हीकृत 4 क्षति परत, चोट पहुँचाया हुआ 5 रोपी, बीमार (दे० रक्ष्) । रक्ष० - रक्ष (वि०) जिसका आक्रमण टोक दिया गया हो, जिसका भावा विफल कर दिया गया हो ।

रक्ष् (स्त्री० मा०) रोचते, रक्षित) 1 चमकना, सुन्दर या शानदार दिखलाई देना, जगमगाना - रक्षिरे रक्षिरे-सखिप्रभवा - सि० ११४६, ननु० ३१६२ 2 पसन्द करना, (अन्य व्यक्तियों से) प्रसन्न होना, (बन्धुओं से) प्रसन्न होना, रक्षिकर होना, (प्रसन्न व्यक्ति के लिए अन्न० तथा वस्तु के लिए रक्ष्) - न खजो रक्षिरे रमणीय - सि० ९१३५, मदेव राचते यस्मै भवेत् तन् तस्य सुन्दरम् हि० २१५३, कई बार व्यक्ति के लिए सब० - दाहिदाम्नामरणादा मरण मम रोचते न दाहिदाम्-मृच्छ० ११११, प्रेर० - (रोचयति-ने) पसन्द कराना, रक्षिकर या सुहाबाना करना - कु० ३११६, - इच्छा० (रु-रोचिषते) पसन्द करने की इच्छा करना, रक्षि, पसन्द करना, रक्षिकर होना - पर्यायिरोचते भवते - विक्रम २, प्र - 1 बहुत चमकना 2 पसन्द किया जाना, वि० चमकना जगमगाना - रघु० ६१५, १७११६, मट्टि० ८१६६ ।

रक्ष, रक्षा (स्त्री०) [रक्ष् + क्तिन्, रक्ष् + टाप्] 1 प्रकाश, उज्ज्वलता, - सप्तदासु यत्र च रक्षकानां गता - सि० १३५३ ११२३, २५, शिवरामजितव कि० ५१४३, मेघ० ४४ 2 रक्ष्, रक्षि (समास के अन्त में) बलवन्मुखरघस्तानकान् रघु० ८१५३, कु० ३१६५, कि० ५१४५ 3 रक्षिर्रक्षि, इच्छा ।

रक्षक (वि०) [रक्ष् + क्तृन्] 1 रक्षिकर, सुन्दर 2 क्षुधा-वर्षक या मूल बढ़ाने वाली (जीवधि) 3 तीक्ष्ण, बपरा, कः 1 नीव् 2 कस्तूर, क्त् 1 दित 2 माने का सावधान विधेयकर हार 3 पीष्टिक या पाचनशक्ति-वर्षक 4 भावा, हार 5 काला त्वक ।

रक्षा दे० 'रक्ष' ।

रक्षि (स्त्री०) [रक्ष् + क्ति] 1 प्रकाश, कान्ति, आभा, उज्ज्वलता, - रक्षिमिन्दुदले करोत्पात्र परिपुन्येन्दुपरिमही-पतिः - सि० १६१७१, रघु० ५१६७, मेघ० १५ 2 प्रकाश किरण - जैसा कि 'रक्षिचक्षु' में 3 रक्षि, रक्ष्, सौन्दर्य बहुधा समास के अन्त में - परतक रक्षिर्बहुलप्रकृरक्षि - सि० ९१२९ 4 स्वाद, मखा - जैसा कि 'रक्षिचर' में 5 तुस्वाद, भूष, सुधा 6 कामना, इच्छा, मृषी, - स्वधरक्षा स्वेच्छा से, सुधी से 7 अक्षिर्रक्षि, स्वाद - विभार्थसायाध्व रक्षि स्वकान्ते - भाषि० ११२२५, 'अक्षिर्रक्षि या प्रेम' - न स सितीषी रक्षये बभूव, शिवरामजित लोक - रघु० ६१३०, नाट्यं शिवरामजितस्य बहुधाप्येक समाराधनम मालवि० ११४, 'सलगत' 'व्यस्त' या अनुरक्त' के अर्थ में प्रयोग बहुधा समास के अन्त में 'हिमाश्ल' के भा० ५१२९ 8 प्रयोगमाद, किन्ती की जान म लक्ष्मीपति। सभ० - कर (वि०) 1 स्वादिष्ट, चण्डदा मखेदार 2 इच्छा का उपजक 3 पाचनशक्तिवर्षक पीष्टिक, - भाषुं (पुं०) 1 सुयं - सि० १११७२ ११।

रक्षि (वि०) [रक्षि रति ददाति - रक्ष् + क्तिन्] 1 उज्ज्वल, चमकदार, प्रकाशमान, जगमगाना, दम-रक्षिगन्ध - बी० १४, कर्मरक्षिगन्, रत्नरक्षिगन् आदि 2 स्वादिष्ट, मखेदार 3 मधुर, लजित 4 क्षुधा-वर्षक, भूष बढ़ाने वाला 5 पुष्टिदायक, बलवर्ध, - रा 1 एक प्रकार का पीला रंग 2 बन्धविषेय र० परिशिष्ट १, - रक्ष् 1 केशर 2 लीला ।

रक्ष्य (वि०) [रक्ष् + क्यप्] उज्ज्वल, प्रिय प्रादि दे० 'रक्षि' ।

रक्ष् (नृदा० ण्य० कृत्वि, क्यप्) 1 नोड कर रूबने-रूबने करना, नष्ट करना - रघु० ११६३११२१७३ नोट० ८१६२ 2 पीटा देना, क्षति पहुँचाना, अस्वस्थ करना, रोमरुपना करना रावचस्मैश्च रोक्ष्मणि कथया आम-विच्छा मट्टि० ८१२० 3 भुक्ता ।

रक्ष्, रक्षा (स्त्री०) [रक्ष् + क्तिन्, रक्ष् + टाप्] 1 नः अक्षिधन 2 पीरा, मलाप, वातना वेदना अक्षिध-भाषि मक्ष्मन्मुनेमो कश्चात्कृष्मिभयानो मे ण ३१८, नर कक्षा हृदयप्रमाथिनी मामवि० ३१०, मरुप हजापरिमम् ६१३ बीमारी, व्याधि, रोग - रघु० ४९१५२ 4 कषावट, अम प्रयान, कर्त १ मम० प्रलिच्छ्या मिनकार या रोग की चिकित्सा इलाज, चिकित्सा का व्यवसाय, - जेधच्छम् औषध, लघन (नपुं०) पिटा, मल ।

रक्ष्, - रक्ष् [रक्ष् + इ, रक्ष् + अच् या] सिर रहित 'रा' परबन्ध, कर्मन् - वेल्स्रैरव लक्ष्मन् रक्षिन् रक्षिणी विषम भूषम् - उत्तर० ५१६, मा० ३१६७ ।

रक्ष्य [रक्ष् + क्त] कर्मन्, किलकिलाना, यहाकना, पाव

करना, बोलनाहक, (पक्षियों का) कूबना, (मक्षियों का) भवभगना, पक्षि, हल, कोकिल, बलि। मय- कः भविष्यवक्ता, नवमी, -व्याख. 1 कूट-कृत 2 स्थाय।

ख (अदा० पर० रोदिदि, दित, - इच्छा० ददिवचि) 1 कृत्य करना, राना, बिलाप करना, शोक मनाना, शीत बहाना - निराशारा हा रोदिदि कथय केवाविह पुरः-गणा० ४, अपि प्राचा रोदिदि अपि दक्षतिवचस्य हृदयम् उमर० १।२८ 2 हूह करना, दहाडना, चिल्ला मारना, प्र- , कूट कूट कर रोना।

खनम्, दक्षितम् [हृ + ह्यट्, क्त वा] रोना, कन्दन करना, बिलाप करना, शोक में राना-बोना अत्यन्तमाधी-दुदिन वनेत्री - रघु० १।१६९, ७०, मय० ८८।

खट् [खू० क० हू०] [हृ + क्त] 1 अवच्छेद, बाधापक्ष, विरोधी 2 घेरा हाला हुआ, घिरा हुआ, घेरा हुआ।

खट् (ख०) [रोदिदि-हृ + क्त] प्रयाणक, भयकर, दरावना, धीरघ्न, -कः 1 दक्षमूह विधोष, (गिनती में ग्राहक), ऐसा माना जाता है कि मकर या शिव क ही यह अपकृत रूप है, निव स्वयं ह्य समूह के पूर्वपाठ है खडाभा सखरकारिभ- भग० १०।-३, खडाभास्य मूर्धान लनहुकागसमिन कू० २।२६ 2 निव वत नाम। सम० खल एक प्रकार का वध (शत्रु) इसी वृक्ष के फल के बीज, जिनसे राशायना बनाई जाती है -अरयाडुल्ल अहमन्तु भवेत् खडाशमाने वृक्षम् काथम् १०, आशान्- 1 खट् का निराशयत्व, कैलाश पर्वत 2 बारायसी, 3 खडमान नृ० विपुसधपोषर।

खडो [खट् + ईप् आन्क्] खट् की गर्वी, पांशों का नामान्तर।

खट् (अदा० उम० दण्डि, मट्टे, दट्ट, इच्छा० ददन्वचि -) 1 अवच्छेद करना, उडराना, गिरफ्तार करना, राना, विरोध करना, बिध्न डालना, बाधा डालना, मना करना इद शण्डि मा पद्यमना-कृत्रलसदृपदम् विदम० ४।२१, खडाभोके नृपपनिधे-मेष० १० ११, प्राणागतनाती ह्यभा०-भग० ६।२९ 2 धामना नशाय करना, (विग्ने में) बचाना कीनावन्त कुमुदसुगुण प्रापणा इन्द्रनाभा सध-पाति प्रेषि हृदय विप्रयोगे खण्डि, मेष० १० 3 बन्द करना, गाला लगाना, राकना, भेडना, बन्द कर देना अर्थ० के साथ, परन्तु कभी-कभी दोकर्म० के साथ -अट्टि० १।३५, बब खण्डिनाम्-विद्या० 4 बाधना, रोधित करना -व्याख० शान्तमहालयानुमिगर्मी रोद्ध मनुजुमय-मनु० २।६ 5 घेरा डालना, घेरना नाकबन्दी करना - एचन्तु वासपथटा नगरं मदीया

- मुद्रा० ४।१७ अक्षय्य पवन साकेत-वा-नाथ-मिकान् - महा०, अट्टि० ४।२१ 6 छिपाना, डकना, बोलना करना, गुप्त करना 7 अत्याचार करना, सताना, अत्यन्त कष्ट देना, मनु, [बहुधा प्रयोग ऐसा होता है मानो धातु दिया की है] 1 अवच्छेद करना, अन्वयस करना-मनु० ५।६३ 2 प्रेम करना, अनुभक्त होना--स्वयमेवमुच्छते-कि० ११।७८, नानुरोत्स्ये त्रयस्तस्मी - अट्टि० १६।२३ 3 आज्ञा मानना, अनुसरण करना, अनुक्य होना-नियति लोक इवानुच्छते-कि० २।१२, अनच्छस्य नन्द-केतोर्वचन- उतर० ५, महचनमनुच्छते वा भवान् कि० १८। 4 स्वीकृति देना, महमत होना, अनु-मोदन करना 5 प्रेरित करना, दबाव डालना, खट्, 1 रोकना, अटकाना-श० २।० 2 बन्दी बनाना, कैद करना, बन्द करना (कभी-कभी दो कर्मों के साथ) -शोक विममवाशम् अट्टि० ६।९ 3 घेरा डालना, ज्य, 1 अवच्छेद करना, बिध्न डालना--उपस्थाने नपोजुच्छानम् श० ४ 2 तथा करना, दुष्की करना, काट देना पीरान्तपोवनमूपस्थानि श० १ 3 पार कर लेना, दबा देना रघु० ४।८३ 4 कैद करना, बन्दी बनाना, निरन्वय में रकना 5 छिपाना, छुप लेना, नि 1 अवच्छेद करना, रोकना, विरोध करना बन्द करना व्यक्षयवासाय पत्न्याम् अट्टि० १७।६९ १६।२०, मूच्छ० १।२२ 2 बन्दी बनाना, कैद करना - मनु० ११।१०६, मग० ८।१२ 3 डकना, छिपाना -मनु० १६।६६, अट्टि०, अवच्छेद करना, नि-विरोध करना, अवरोध करना 2 विचार करना, हयडना 3 भिन्मय का होना, लम् 1 अवच्छेद करना, अटकाना, रोकना स चेलु पति सख्य पशुविर्षा रथेन वा मनु० ८।२९ 2 ०।। डालना, फकावट डालना, राकना--रघु० २।६३ 3 बुद्धापूर्वक धामना, मूखलावच्छेद करना तुषामिव लघुलक्ष्मीर्नैव तास्य-खण्डि अर्जु० २।१० 4 अधिकार में करना, बन्धन अविग्रहक्य करता, एकडवा -मनु० ८।२३५।

खटिर् [हृ + क्तिच्] 1 लह 2 बाफला, केसर, ट मगलघट्ट। सम० -अज्ञः भूत पीने वाला राजस, भूत-भेद-आमयः रक्तधार, - शक्तिम् (पु०) पिताश।

खट् [शक्ति क + ह्यट्] एक प्रकार का हरिच- रघु० १।५१, उ२। १।

खट् (मुद्रा० पर० दक्षि) [खट् पहुँचाना, जान के धार डालना, नष्ट करना।

खलम् (खि०) [हृ + शान्] [खट् पहुँचाने वाला, अवधि-कर, (शब्द आदि जो) बुरे लगे।

खम् (दिवा० पर० दक्षति-विरलप्रयोग-कथ्यते, दक्षित, कट्) क्मना, नाराज होना, शूभ्य होना-तदाकथ्यवच

बंध - मट्टि० १७५०, मामुहो मा स्त्रोमुना
- १५११, १५२०।

॥ (भा० पर० रोहित) 1 चोट पहुँचाना, सति
पहुँचाना, भार झलना 2 नाराज करना, झताना।

बध्, बधा (स्त्री०) [बध् + धिप्, बध् + टाप्] कौष, रोष,
मुत्सा, -निर्वन्धस्त्रातयथा रघु० ५५२, प्रह्वन्ध-
निर्वन्धया हि सन्त - १६५०, १९२०।

बध्, (भा० पर० रोहित, ब्ध) 1 उगना, फूटना, अकुलित
होना, उपजना - स्वरामप्रवाल - मालवि० ५१, ५१,
केसरैर्यस्वी - मेघ० २३, छिन्नोऽग्नि राहति तह
- अर्तु० २१८७ 2 उपजना, विकसित होना, बढ़ना
3 उठना, ऊपर चढ़ना, उन्नत होना 4 पकना, (अण
आदि को) स्वस्थ होना - प्रेर० (रोचयति ते,
रोहयति - ते) 1. उगाना, बीजा लगाना, भूमि में
(बीज) बँधेना 2 उठाना, उन्नत करना 3 सीपना,
सुसुंद करना, देखरेख में देना, - मृगवन्धुतरीपितथिय
- रघु० ८१११ 4 स्थिर करना, निश्चित करना,
जमाना - रघु० १५२२, इच्छा० (इच्छति) उगाने
की इच्छा करना, बधि , चढ़ना, तबार होना,
सकारी करना रघु० ७३२७, कु० ७५२ (प्रेर०)
उन्नत होना, ऊपर उठाना, बिलाना - रघु० १९५५,
अण -, नीचे जाना, उतरना स० ७१८, भा -,
चढ़ना, तबार होना, पकड़ लेना, सकारी करना,
(भा पूर्वक रह, धानु के अर्ध प्रयुक्त सत्रा के अनुसार
विभिन्न प्रकार के होने हैं - उदा० प्रतिज्ञाम् आच्छ,
वचन देना, प्रतिज्ञा करना, मुक्तम् आच्छ, समानता के
स्तर पर होना, समय आच्छ, बोधिय उठाना,
सन्दिग्धावस्था में होना आदि), (प्रेर०) 1 उन्नत
होना, उठाना 2 रखना, जमाना, निर्देशित करना
3 बढ़ना, बोधना, आरोपित करना 4 (धनुष पर)
प्रत्यक्षा बढ़ाना 5 नियुक्त करना, कार्य भार सौंपना,
प्र , उगना, अकुलित होना न पर्वतार्ध नलिनी
प्ररोहति मृच्छ० ६१७, बि -, उगना, अकुर
फूटना रघु० २१२६, मृच्छ० ११९ (प्रेर०) (अण
आदि का) स्वस्थ होना, सन् , उगना, रघु०
६५७।

बध्, ब्ध (वि०) (समास के अन्त में) [बध् + धिप्, क
वा] उना हुआ वा उत्पन्न, जैसा कि 'यदीकह' और
'यक्रेकह' में।

बधा [बध् + टाप्] दुर्ग धाम, दूधवा।

बधा (वि०) [बध् + अण] 1 कुरदरा, कठोर, (स्पर्श या
शब्द आदि) जो मुह न हो, क्सा - क्सास्वर शाश्वति
वायवोऽयम् मृच्छ १११०, कु० ७१७ 2 कर्त्तव्य
(स्वाद) 3 ऊबड़-खाबड़, बसत, कठिन, कर्कश
4 दृष्टित, मलिन, मेला रघु० ७१००, मुदा० ५५

5 कुर, निर्दय, कठोर - नितान्तक्यामिनिबेधनीयम्
- रघु० १५५३, स० ७३२, पच० ५११

6 नीरख, मुना हुआ, सूखा, बीरान स्निग्धव्यामा
स्वचिदपत्तो योषाभोगक्याः - उत्तर० २११५,
(क्योहि - , ऊबड़-खाबड़ करना, मेला करना, मिट्टी
कपड़ना)।

बध्वायम् [बध् + ल्युट] 1 मुत्साना, पतला करना
2 (आयु० में) (शरीर की) वेद को बटाने की
चिकित्सा।

बध् (धू० क० इ०) [बध् + क्त] 1 उगा हुआ, अंकुरित,
फूटा हुआ, उपजा हुआ 2 जन्मा हुआ, उत्पन्न
3 बढ़ा हुआ, बृद्धि को प्राप्त, विकसित 4 उठा हुआ,
चढ़ा हुआ 5 विलीन बसा, स्थूलकाय 6 विकीर्ण,
दूर उभर केला हुआ 7 विविध, श्रात, श्यापक
- श्रातकिल्ल प्रायत इत्युदय अत्रत्य शब्दो मुक्तेषु क
रघु० २५३, (यहाँ शब्द का अर्थ योग्य है)।
8 सर्वजनस्वीकृत, परंपराप्राप्त, प्रचलित, सर्वधि
(शब्द या अर्थ, वि०) यौगिक या निर्बचनमूलक अर्थ)
- व्युत्पत्तिरहित शब्दा कदा अत्युदयनाय नाम
क्यमपि च व्युत्पत्ति सि० १०१२३ 9 निश्चित
निश्चित किया हुआ।

बधि (स्त्री०) [बध् + धिन्] 1 उगना, उपजना
2 अन्न, पदार्थ 3 बृद्धि, विकास, चर्चन, प्रवृत्ता
4 ऊपर उठना, चढ़ना 5 प्रतिष्ठि, श्याति, बढ़ना
- सि० १५०६ 6 परम्परा, प्रथा, परंपरागत रिवाज
- मास्वाद् कठिंबनीययो, 'बधि' से प्रथा अधिक रह
वती है 7 सामान्य प्रचार, साधारण व्यापकता या
प्रचलन 8 शर्बमान्य अर्थ, शब्द का प्रचलित अर्थ
- मुत्सार्थबाधे मत्तयो कठितोऽय प्रयोक्तव्य - काय०
२।

बध् (धू०) उभ० - क्ययति - ते, कपित 1 क्य बनाना,
पढ़ना 2 क्य पर कुर रसप्रच पर जाना, अभिनय
करना, भावभाव प्रदर्शित करना - रत्नेय विकल्प - स०
१३ चिह्न लगाना, ध्यान पूर्वक पालन करना,
देखना, नजर डालना 4 मात्स्य करना, दूना
5 ब्यापन करना, बिचार करना 6 तप करना, निश्चय
करना 7 परीक्षा करना, अन्वेषण करना 8 नियुक्त
करना, बि - , विकसित करना, क्य विनाचना।

बध् [बध् + क, भावे अच् वा] 1 लक्षक, आहति,
मृत विक्रय क्यवन्त वा पुमान्निबेध भुञ्जत - पच०
११५३, इसी प्रकार 'कुक्य' 'सुक्य' 2 क्य या रग का
प्रकार (बैज्ञानिकों के शरीरक मुर्तों में एक) - बसुप्रान
प्राज्ञाविमान् मुनो क्यम् - लक्ष० (यह छ प्रकार
का है - सुकल, कुम्भ, शीत, रक्त, हरित और कर्कश
यदि 'बिच' को जोड़ दिया जाय तो सात हो जाते

३. कोई भी वृत्त पदाथं वा वस्तु 4 मनोहर रूप वा आकृति, सुन्दर सूरत, सौन्दर्य, कावच, कालिय—मानवीय कथं वा स्वादय रूपस्य संभव—श० १। २६, विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम्—भर्तृ० २।२०, रूप अत्र हन्ति भावि 5 स्वाभाविक स्थिति या दशा, प्रकृति, गुण, लक्षण, युक्तत्वं 6 इय, रीति 7 चिह्न, बेहरा-मोहरा 8 प्रकार, भेद, जाति 9 प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया 10 सादृश्य, समरूपता, 11 नमूना, प्रकार, बलत 12 किना क्रिया या शक्ता का व्युत्पन्न रूप, विभक्ति या लकार के चिह्न से युक्त रूप, 13 'एक' की मर्यादा, मणित की एक इकाई 14 पूर्णांक 15 नाटक, खेल, दे० रूपक 16 किसी वृत्त की बार बार पढ़ कड़ कर या कठम्व करके पारगट होने की क्रिया 17 मधेशी 18 ध्वनि, शब्द, ('रूप का प्रयोग बहुधा समास के अन्त में होता है यदि निम्ना-कित अर्थ हो—'बना हुआ' 'से युक्त' 'के रूप में' 'नामत' 'सूत शकल में' 'तपोवन धन परमरूप सत्ता')। सम० अविशेष्यः ज्ञानेन्द्रियो द्वारा किमी पदाथं के रय रूप का प्रत्यक्ष करना, अविशेष्यहिन (वि०) काम करते हुए एकठा गया, मोके पर एकठा गया—आजीवा बेव्या, रडी, गणिका,—आशयः अत्यन्त सुन्दर व्यक्ति, इन्द्रियमोक्ष, रमरूप की प्रत्यक्ष करने वाली इन्द्रिय, उल्लस्य ललित रूपों का समूह श० २।१०, —कार, —कृत् (पु०) मुक्तिकार, शिल्पी तत्त्व अन्तर्हित गुण मूलमत्त्व, धर (वि०) रूप धरे हुए, छद्यवेशी, भावकः उक्त, भावकम् रूप की उत्कृष्टता, चाफता, विषयः विख्यात, पारारिक रूप में विकृत परिवर्तन, भावित्म् (वि०) सुन्दर लक्षण, संपर्कः (स्त्री०) रूप की उत्कृष्टता, सौन्दर्य की बुद्धि, सौन्दर्यातिरेक ।

रूपक | रूप + क्तम्, रूप + क्त वा] विशेष सिक्ता, रयवा रूप 1 लक्षण, आकृति, मूल, (मयास के अन्त में) 2 कोई वर्णन वा प्रकटीकरण 3 चिह्न, बेहरा-मोहरा 4 प्रकार, जाति 5 नाटक, खेल नाट्य-हानि (नाट्य रचनाओं के प्रमुख दो श्रेणों में से एक, इय, इनके फिर जाने दस श्रेणें हैं, इनके अतिरिक्त इमक और अवांतर भेद हैं जो गिनती में अष्टादश हैं तथा 'रूपक' नाम से चिह्नतात है) —दृश्य तथाभि-नेय तदुपरोपाय रूपकम्—ना० द० २०२, २०३ 6 (अल० में) अर्थों के मेटाफर (metaphor) के अनु रूप एक अलकार जिसमें उपमेय की उपमाय के टोकर मयुक्त रूप वणित किया जाता है—नदुपकमश्रेणो य उपमा नायमपयोः—भाष्य० १० (विचरण के लिये देखो यही स्थान) 7 एक प्रकार का लोल । सम०—भावाः सपीत में विशेष-अमय,—अव्यः भावकारिक वा रूपकोक्ति ।

रूपकम् [रूप + क्त] 1 सादृश्य वर्णन वा भावकारिक वर्णन 2 विशेषण, परीक्षा ।

रूपकम् (वि०) [रूप + मत्सु, भावम्] 1 रनरूप वाला 2 धारीरिक, दृष्टिक 3 सहरौर 4. मनोहर, सुन्दर, —सी सुन्दरी स्त्री ।

रूपिन् (वि०) [रूप + इति] 1 के लयस दिखाई देने वाला 2 सहरौर, मुक्तिमान् 3. सुन्दर ।

रूप्य (वि०) [रूप + यत्] सुन्दर ललित, — व्यम् 1 बादी 2 बादी (वा सोने) का सिक्का, मुद्रांकित सिक्का, क्यवा 3. बुद्ध किया हुआ सोना ।

रूपः (स्वा० पर० क्यति, क्यति) 1 अलकृत करना, सजाना 2 पोतना, चुपड़ना, मणित करना, लीपना (चिट्ठी भादि से) ।

॥ (पुरा० उत्र० क्ययति—ते) 1 कोपना 2 कट जाना ।

रूपित (पु० क० कृ०) [रूप + इत्] 1 अलकृत 2 पोता हुआ, इका हुआ, बिछाया हुआ 3 चिट्ठी में लखेवा हुआ 4 चुपड़वा, उजब लखब 5 कटा हुआ, चूर्ण किया हुआ ।

रे (अव्य०) [रा + मे] संबोधनात्मक अव्यय — रे रे लकर-मुद्राधिकारिणो वानपदा शं० ३ ।

रेखा [रिन् + अच् + टाप्, लस्य र] 1 लकीर, चारी, मदर्खा, दानरेखा, रामरेखा भादि 2 लकीर की भाग, अन्वाध, लकीर इतना—न रेखाभाषयति ध्यतीः र्भू० १।१७ 3 पक्षि, पारस, लकीर, शेषी 4. आलेखन, स्परखा, विचारक लक्ष्य रेखाया किचिदन्वित शं० ६।१६ 5. भारतीय ज्योतिषियों की प्रथम वाय्वांतर रेखा जो लका से उर्ध्व होतो हुए येक पूर्वत एक सिधी हुई है 6 पूर्वता, सन्तोष 7 शोका, आलसाजी । सम० अर्थः रेखाय, हाविभासा के भात, देशान्तरीय पात, अन्तरम् प्रथम वाय्वांतर रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी, किसी स्थान का देशान्तर,—आकार (वि०) परम्परा प्राप्त, रेखाय, धारीदार, —वर्षितम् ज्योतिषि ।

रेख दे० 'रेखक' ।
रेखक (वि०) (श्री०-चिह्ना) [रेखयति रिन् + भिन् + क्तम्] 1 रिख करने वाला, निमेल करने वाला 2 दस्तावर, मुद्रम्वन (अस को डीला करने वाला) 3 फेफड़ों को साती करने वाला, शवास की बाहुर फेंकने वाला,—कः 1. शवास का बाहुर निकालना बहिःश्वसन, निःश्वसन विशेष कर एक लक्ष्णे से (विप० बुरक अर्थो अतः स्वसन, शान अन्तर से जाना और कुम्भक, शवास को जहा का सहा टोकना) 2 बलिदान वा पिचकारी 3. जवाकार, खौर, —कम् दस्तावर, बिरेचन ।

रेखणम्, -ना [रिच् + ल्युट्] 1 रिक्त करना 2 घटाना, कम करना 3 शान बाहर निकालना 4 निर्मूल करना 5 मूल बाहर निकालना ।

रेखित (वि०) [रिच् + णिच् + क्त] गिताया गया, साफ किया गया, लम् घोड़े की दुल्की वाला ।

रेणुः (पु०, स्त्री०) [रीचते, णु नित्] 1 धूल, धूलकण रेत आदि -तुरगपुत्रहतस्त्रया हि र्णुं यत् १।३२ 2 पराग, पुष्पगज ।

रेणुका [रेणु + क + क + टाप्] ब्रह्मन्त्रि की पत्नी तथा परशुराम की माता दे० जमदीय ।

रेतस् (नपु०) [री + अमुन्, गृह् च] वीथ, घातु ।

रेप (वि०) [रेप् + घञ्] 1 निरस्तकण्ठीय, नीच, अधम 2 कूर, निष्ठुर ।

रेफ (वि०) [रिच् + अच्] नीच, कमीना, निरस्तकण्ठीय, -कः 1 कवन ध्वनि, गडगडध्वनि 2 'र' लक्ष 3 प्रथमयोग्याद, अनुराग ।

रेफट [रेप् + अट्] 1 मूषर 2 बीस की छड़ी 3 बखडर ।

रेफतः [रेप् + अन्च्] नीचू का पेट ।

रेवती [रेवत + वीप्] 1 मन्दाहमवा नक्षत्रजु जगमे बनीस तारे होते है 2 बलराम की पत्नी का नाम -सि० २।१६ ।

रेवा [रेव + अच् + टाप्] नर्मदा नदी का नाम, -रेवा-रोधासि वेनगीतस्तले वेद ममुकच्छने -वाच्य० १, रघु० ६।८३, मेघ० १९ ।

रेव [रेवा० आ० रेवते, रेविन्] 1 दहाहन, हह करना, किलकिलाना 2 शिपहिनाना ।

रेवणम्, रेवा [रेव + ल्युट्, रेप् + अ + टाप्] दहाहन, शिपहिनाना ।

रे (पु०) [राते ई] (कान्० रा गावौ राव) दीप्त, सम्पत्ति, धन ।

रैवत, रैवतक [रेवत्या अदुरो देज -मेवो + अण् रैवत + कन्] दारका के निकट विद्यमान पहाड, (इस पहाड के विवेचन के लिये दे०, सि० ६) ।

रोक्म् [र + कन्] 1 छिद्र 2 नाव, जहाज 3 हिलना हुआ, लहराना हुआ ।

रोग [रच् + घञ्] रजा, बीमारी, व्याधि, मनोभ्रम या आधि, अवसन्ता मनापपत्ति कमपथ्यभुज न रोगा -हि० ३।११७, भोगे रोगभवम अर्जु० ३।३५, सम० आश्वत्थम् शरीर, -आत्तं (वि०) रोगघस्त, बीमार, शक्तिः (स्त्री०) रोग का उपपन्न या विकृता, हूर (वि०) चिकित्सापरक (-रच्) औषधि, -हृतिन् (वि०) चिकित्साविषयक, (-णु०) वंश, बाकट ।

रोक्क (वि०) [रच् + घञ्] 1. सुखद, ठिककर 2 भ्रम

बढ़ाने वाला, सुघोलेजक, -कम् 1 भूल 2 मन्थानि की दूर करने वाली कोई युक्ति कारक औषधि उही-पक, पीथिक 3. कांच की बुझिया या अन्य बनावटी आभूषण बनाने वाला ।

रोक्क (वि०) (स्त्री० ना० नौ) [रक् + ल्युट्, रोच-यति वा] 1 प्रकार करने वाला, रोषनी करने वाला, जमया देने वाला 2 उज्ज्वल, शानदार, सुन्दर, प्रिय, मुलावना रंगकर मट्टि० ६।७३ 3 सुधावर्धक, -न भ्रम बढ़ाने वाली औषधि, -न्म् उज्ज्वल आवाज, अन्तरिक्ष ।

रोक्कना [राचन + टाप्] 1 उज्ज्वल आवाज, अन्तरिक्ष 2 सुन्दरी स्त्री 3 एक प्रकार का पीलावर्ण -मोरोचनया रघु० ६।१५, १।७५, सि० १।१५१ ।

रोक्कमान (वि०) [रक् + मानच्] 1 चमकदार, उज्ज्वल 2 प्रिय, सुन्दर, भनाइर, लम् घोड़े की गदन के बालों का गुच्छा ।

रोक्कित् (वि०) [रक् + इण्] 1 उज्ज्वल, चमकीला, चमकदार, देदीयमान 2 छैन-लडोका, घटकीले कपडों वाला, प्रयुक्तवदन 3 लडावर्धक ।

रोक्कित् (नपु०) [रक् इति] प्रकार, जाना उज्ज्वलना, आला सि० १।५ ।

रोक्कन् [रक् + ल्युट्] 1 रोना, दे० मदन 2 आसु ।

रोक्क (नपु०) (स्त्री० द्वि० व० -रोक्कती) [रक् + अमुन्] आकाश और पृथ्वी रक् ध्वजभरण स्थानितरादयोकर -वेधो० ३।२, वेदान्त्यु घमादिके पुष्य व्याज्य स्थित रोदसी-विक्रम० १।१, सि० ८।१५ ।

रोष [र्य + घञ्] 1 राजना, पकड़ना, हकाने दालना सि० १०।८२ 2 अवरोध, टहराना, बाधा, रोक प्रविधेय, दवाला -प्रागादसि प्रतिहतना स्मृतिरोधकसं यत् ७।३२, उपलगाय -कि० ५।१५, वाज० २।२०० 3 बन्ध करना, रोकना, नाकेबंदी करना, वेग टाठना प्राणिगणमसजिष्ट सा पुगो -रघु० १।१५२ 4 बोध ।

रोषन, [र्य + ल्युट्] बुधघर, लम् टहराना, रोकना, बन्दी बनाना, नियंत्रण, रोक धाम ।

रोषस् (नपु०) [र्य + अमुन्] 1 तट, पुस्ता, बाँध-बद्धा रोष पन्नकभुया गृहघनीय प्रसाहम् विक्रम० १।८, रघु० ५।४०, मेघ० ५१ 2 किनारा, ऊचा तट -रघु० ८।३३ । सम० बन्ध, बन्दी 1 नदी 2 वेग से बहने वाली नदी ।

रोषः [र्य + र्] एक प्रकार का मूल, लोघ्रवृष, प्र, भ्रम् पाप, भ्रम् अपराध, दाति ।

रोषः [रह् + णिच् + अच्, ह्रस्व ष] 1. उमाना, बोना 2. रीच मगाना 3. बाल-सि० १९।१२० 4 छिद्र, गड्ढर ।

रोषणम् [रु+षिष्+रुट् ह्रस्व प] 1. सीधा बड़ा करना, बनाना, उठाना 2. पीच लगाना 3. स्थाप होना, 4 (इय भावि पर) स्थाप्यप्रय औषध का प्रयोग।

रोषकः [रोमन्+कन्] 1 रोम नाम का मगर 2 रोम-वासी, रोम नगर का निवासी (इ० व० में)। सम० पत्थरु मगर मगर. विद्वान्तः पीच मूत्र सिद्धान्तो मे से एक (रोमवासियो मे प्राप्त होने के कारण ही सम्भवत इसका यह नाम पडा)।

रोषम् (तप०) [रु-मनिन्] मनुष्य और वन्य जीव जन्तुओ के प्रारं पर होने वाले बाल, विशेषण, छोटे-छोटे बाल, इन्हे बाल मन्० १।१८६, ८।११६। सम० अङ्क बाल का चिह्न, विभ्रती रवेनरोमाङ्कम् - र्व० १।८३, अञ्जः (हृषीतिरेक, विभीषिका या आञ्जम् आदि में युक्त, रोमेटे बडे होना हृषीदन्-तत्रोपादिभ्यो रोमाञ्जः रोमविष्मा सा० ६० १५७, अञ्जित (वि०) हृषं के कारण पुण्डित, अन्तः ह्रस्वो की पीठ पर के बाल, शाली, -आर्वालिः, ली (स्त्री०) रोमो की पक्ति जो पेट पर ठीक नाभि के ऊपर को गई हो-शिक्षा धूम्रमयं रग्नि-मनि रोमावलिबन्-आञ्ज० १०, ३० 'रोमराजि' भी, -उञ्जकः, -उञ्जे (शरीर पर) बालो का बड़ा होना पुलक, रोमाच कु० ७।७७, कुक्, षम्, गन्, चमडो के ऊपर के छिद्र त्रिनमें रोप उगे हो, नम्यपिंड, केसरम्, -केसरम् मूराञ्ज, चमर, -पुलकः रागेटे बडे होना, हृषीतिरेक बोर० ३४, भूमिः 'बालो का स्थान' अर्थात् बाल, चमडो, -एञ्जन् रोम-कृ, राजि, -ञ्जी, लता (स्त्री०) पेट पर ठीक नाभि के ऊपर रोमावली गराज नन्वी नवरो (लो)-मराजि-कु० १।३८, शि० १।२२, -विष्कारः, विष्किया, -विष्केः पुलक, रोमाच, -कि० १।४६, कु० १।१०, हुकेः बालो या रोमटो का बडे होना, पुलक वेपथुष्य शरीरे मे रोमहृषण्य जायते - भग० १।२२, हृषण्य (वि०) पुलक या रोमाच करने वाला, रोमेटे बडे कर देने वाला, विष्मथोत्पासक-एतानि सन्धु सर्वभूतरो (लो) महृषणानि उत्तर० २, लषाव-मिममथोषमद्भुत रोमहृषणम्- अण० १।८७४ (-कः) मूल का नामान्तर, अ्यास का एक तिष्य जितने धोनकमुनि को कई पुराण मुक्याये से, (-अम्) शरीर पर रोमेटे बडे होना, पुलक।

रोषणम् [रु+षिष्+रुट् ह्रस्व प] 1. सीधा बड़ा करना, बनाना, उठाना 2. पीच लगाना 3. स्थाप होना, 4 (इय भावि पर) स्थाप्यप्रय औषध का प्रयोग।

रोषकः [रोमन्+कन्] 1 रोम नाम का मगर 2 रोम-वासी, रोम नगर का निवासी (इ० व० में)। सम० पत्थरु मगर मगर. विद्वान्तः पीच मूत्र सिद्धान्तो मे से एक (रोमवासियो मे प्राप्त होने के कारण ही सम्भवत इसका यह नाम पडा)।

रोषम् (तप०) [रु-मनिन्] मनुष्य और वन्य जीव जन्तुओ के प्रारं पर होने वाले बाल, विशेषण, छोटे-छोटे बाल, इन्हे बाल मन्० १।१८६, ८।११६। सम० अङ्क बाल का चिह्न, विभ्रती रवेनरोमाङ्कम् - र्व० १।८३, अञ्जः (हृषीतिरेक, विभीषिका या आञ्जम् आदि में युक्त, रोमेटे बडे होना हृषीदन्-तत्रोपादिभ्यो रोमाञ्जः रोमविष्मा सा० ६० १५७, अञ्जित (वि०) हृषं के कारण पुण्डित, अन्तः ह्रस्वो की पीठ पर के बाल, शाली, -आर्वालिः, ली (स्त्री०) रोमो की पक्ति जो पेट पर ठीक नाभि के ऊपर को गई हो-शिक्षा धूम्रमयं रग्नि-मनि रोमावलिबन्-आञ्ज० १०, ३० 'रोमराजि' भी, -उञ्जकः, -उञ्जे (शरीर पर) बालो का बड़ा होना पुलक, रोमाच कु० ७।७७, कुक्, षम्, गन्, चमडो के ऊपर के छिद्र त्रिनमें रोप उगे हो, नम्यपिंड, केसरम्, -केसरम् मूराञ्ज, चमर, -पुलकः रागेटे बडे होना, हृषीतिरेक बोर० ३४, भूमिः 'बालो का स्थान' अर्थात् बाल, चमडो, -एञ्जन् रोम-कृ, राजि, -ञ्जी, लता (स्त्री०) पेट पर ठीक नाभि के ऊपर रोमावली गराज नन्वी नवरो (लो)-मराजि-कु० १।३८, शि० १।२२, -विष्कारः, विष्किया, -विष्केः पुलक, रोमाच, -कि० १।४६, कु० १।१०, हुकेः बालो या रोमटो का बडे होना, पुलक वेपथुष्य शरीरे मे रोमहृषण्य जायते - भग० १।२२, हृषण्य (वि०) पुलक या रोमाच करने वाला, रोमेटे बडे कर देने वाला, विष्मथोत्पासक-एतानि सन्धु सर्वभूतरो (लो) महृषणानि उत्तर० २, लषाव-मिममथोषमद्भुत रोमहृषणम्- अण० १।८७४ (-कः) मूल का नामान्तर, अ्यास का एक तिष्य जितने धोनकमुनि को कई पुराण मुक्याये से, (-अम्) शरीर पर रोमेटे बडे होना, पुलक।

रोषणम् [रु+षिष्+रुट् ह्रस्व प] 1. सीधा बड़ा करना, बनाना, उठाना 2. पीच लगाना 3. स्थाप होना, 4 (इय भावि पर) स्थाप्यप्रय औषध का प्रयोग।

रोषकः [रोमन्+कन्] 1 रोम नाम का मगर 2 रोम-वासी, रोम नगर का निवासी (इ० व० में)। सम० पत्थरु मगर मगर. विद्वान्तः पीच मूत्र सिद्धान्तो मे से एक (रोमवासियो मे प्राप्त होने के कारण ही सम्भवत इसका यह नाम पडा)।

मे रोमो मे युक्त, पक्षमदार या ऊर्ध्वमिद, -कः 1 येड, मेडा 2 कुत्तो, मूखर।

रोषका [रु+षण्] अ+टाप् प्रचरञ्जन, अत्यन्त बिलग मूठघन मसोको भुविरो इदावान् बहि० ३।३२।

रोषकः [रो+कञ्+अच्] भीष लक्ष्मा रोमभ्यामली केडावालं वल०, भाषि० १।११८।

रोषः [रु+षण्] क्रोध, कोप, मुस्ता रोषोऽपि निर्मल-धियो रमणीय एव भाषि० १।७१, ४४।

रोषण्य (वि०) (स्त्री०-ञ्जी) [रु+षण्] क्रोधी; विह-चिदा, मुस्सल, आबेसी, कः 1 कपोटी 2 वारा 3 बजर पडी हुई रिहाली बयोन।

रोह [रु+अच्] 1 उठान, उठार, महार्इ 2 किसी चीज का ऊपर उठाना (जैसे वि एक छोटी सक्का की बडी सक्का बनाना) 3 वृद्धि, विकास (बाल०) 4 बली और, बकुट।

रोहणः [रु+रुट्] कका के एक पहाड का नाम, -अन्त लकार होने, सघारी करने, बढ़ने और स्वयं होने की क्रिया। सम० इकः, चन्दन का पेड।

रोहणम् [रु+अच्] वृत्- ली कता।

रोहि [रु+इन्] 1 एक प्रकार का हरिण 2 भाषिक / पुष्य 3 वृक्ष 4 बीज।

रोहिणी [रु+इन्+ङीन्] 1 लाल रंग की माय 2 माय-शि० २।२।४० 3 चौथा नक्षत्रपुत्र (जिसमें पीच तारे है) जिसकी भाङ्कति 'वाडी' की है, टल की एक पुत्री को चन्द्रमा की अश्वत्थ भिय बनिनी है-उपरागान्ते शशिन सम्पुनता रोहिणी बोधम् श० ७।२२ 4. बसुधेय की एक पत्नी तथा बलराम की माता का नाम 5. तरण कन्या जिसे अजी रषोचर्न होना आरत्र हुआ है नववर्षी च रोहिणी 6. विजयी। सम० पतिः, -शिवः, -अलकः एष्य 1. शंठ 2 चन्द्रमा अलकः 'वाडी' की भाङ्कति का रोहिणी नक्षत्रपुत्र-रोहिणी अलकवर्धनमन्वषयोऽङ्कनति धिरो-ऽप्या वाडी एष्य० १।२१३ (=बराह० ४७।१४)।

रोहित (वि०) (स्त्री०) रोहिणी, रोहित्ता [रु+इन् रुच को वा] लाल, लालरुच कः, -तः 1. लाल र्व 2 लोमडो 3 एक प्रकार का हरिण 4. मछली की एक जाति, तम् 1. धिर 2 बाघरान, केहर। सम० अष्यः अश्वि।

रोहितः [रु+इन्] 1. एक प्रकार की मछली 2. एक प्रकार का हरिण।

रोहिण्यम् [रु+अञ्] 1. कठोरता, सुसाधन, अनुपवा-ऊयन 2. बुरदुराण, कर्कषता, कुरता प्रतिपधरी-व्यम् - र्व० ५।१८, निधेय० १४।१८।

रौह (वि०) (स्त्री०-डा, डी) [रु+अच्] 1. 'रु' बीडा प्रचंड, विहङ्कित, दुस्वीय 2. नीचण, बर्द, बगानक,

अवनी, —इ: 1. शत्रु का उपश्लक्ष 2. गर्मी, उत्कण्ठा, तरपणी, जोष, मन्त्र वा भीषणता का बनीबाज दे० छा० द० २३२ या काव्य० ५, —अच् 1. जोष, जोष 2. उल्लास, भीषणता, बर्बरता 3 गर्मी, उत्कण्ठा, सुव्यंताप ।

रीच्य (वि०) [रच्य+अच्] चांदी का बना हुआ, चांदी, चांदी बैला,—अच् चांदी ।

रीर्य (वि०) (स्त्री०-बी) [रर्य+अच्] 1 'रर्य' मूय की बाल का बना हुआ—रच् १।३१ 2. बराबना,

भयानक 3 बालबाही से भरा हुआ, बेईमान, -यः 1 बर्बर 2 रू नरक का नाम—मन् ४।८८ ।

रीहिण्यः [रोहिण्य+अच्] 1 चन्दन का वृक्ष 2 बटवृक्ष ।

रीहिण्यः [रोहिणी+अच्] 1 बछड़ा 2 बलराम का नामांतर 3 बुधग्रह,—अच् पत्ता, भरतमणि ।

रीहिण्य (पु०) एक प्रकार का हरिण ।

रीहिण्य [रह्+टिण्य, पातोष्य वृद्धि] दे० 'रोहिण्य',—अच् एक प्रकार का बास ।

क

कः [की+ट] 1 इन्द्र का विशेषण 2 (अन् ० में) लघु, ह्रस्व मात्रा 3 पाणिनि द्वारा प्रयुक्त (दश लकारों के लिए) परिभाषिक शब्द, जो दश काल तथा अवस्थाओं को प्रकट करते हैं ।

कच् (पूरा०) उच० लाकयति ते) 1 स्वाय देना 2 श्राप करना ।

कक्यः [कच्+अच्] 1 मस्तक 2 कपाली धाबकों की बाल ।

कक्यः, कक्यः [कच्+अच्, उचत् वा] बबहर का पेड़, —अच् बबहर का फल ।

ककुटः [कच्+उटच्] मूषपर, सोटा ।

कक्यक [कच्+क+क, रक्य+कै+क, रक्य लक्ष्य वा] 1 लाल, महावर 2 पिचड़ा, जीर्ण कपड़ा ।

कस्तिका [कस्तक+टाप्, ह्रस्व] छिपकभी ।

कम् 1 (इवा० जा०) लयने, ललित) प्रत्यक्ष करना, समझना, अवलोकन करना, देखना ।

॥ पूरा० उच० लक्षयति ते, कश्चिन् ॥ 1 देखना, अवलोकन करना, निरखना, जात करना, प्रत्यक्ष करना—आयंयुक् धृन्वृद्धय इव लक्षणे-विक्रम० २, रच् १।७२, १।१७ 2. चिह्न लगायना, प्रकट करना, चरित्रचित्रण करना, कहेते करना सर्वप्रथम-प्रमुक्ति बोजलक्षणलक्षिता—मन् १।३५ 3 परिभाषा करना—इदानी कारयं लक्षयति—आदि 4 गीण रूप से कहेते करना, जोष अर्थ में शार्यक करना—यथा गगा सन्धः क्रोतसि सबाध इति तट लक्षयति तद्वत् यदि तटेऽपि सबाध स्यात्प्रथमोक्त नक्षयते काव्य० २, अथ गोशब्दो बाहीकार्यं लक्षयति—सा० द० २ 5 लक्ष्य करना 6 ख्याम करना, नादर करना, सोचना, अर्थ, बकित करना, देखना, वा—, देखना, प्रत्यक्ष करना, अवलोकन करना—आलक्ष्य दत्तमुमुक्षान्—स० ७।१७, नातिपवीतबालम्ब

नक्षुशोरस भोजनम्—रच् १।५।८, उच—, 1 देखना, अवलोकन करना, निगाह डालना, अकिन करना, मम्मगुपलक्षित भवत्या—सा० ३ 2 अकिन करना, चिह्न लगायना—आश्र० १।३०, २।१५१ 3 प्रकट करना, मनोमोल करना 4 अतिरिक्त उपलक्षण होना, बन्तुष अतिव्यक्त की अपेक्षा अधिक समिपित्त करना नक्षयसम्बन्धे उपोत्ति-शास्त्रमुप लक्षयन् मनु० ३।१६२ पर कुल्ल० 5 मनन करना विचारकोटि में लाना 6 ख्याल करना, मानना कि—, 1. अवलोकन करना, ध्यान देना, देखना 2. चरित्रचित्रण करना, अन्तर प्रकट करना 3 आकुल होना, अकिन होना बबरा शाना—निर्वाणारविन्द शितानि मालम्ब बलाग्नि—उत्तर० ६, लघु 1 अर लोकन करना, प्रत्यक्ष करना, देखना, ध्यान देना आश्वयंसर्षेण लक्षयते मनुष्यालोक, श० ३ मलक्षयते न छिदुरोऽपि हार रच् १।६।२०, ध्यान नहीं दिया जाता-यथा ज्ञान नहीं होता' ८।४० 2 परीक्षण करना, सिद्ध करना, निर्धारित करना—हेम्न मलक्षयते ह्यनो विदुर्द्वि इयामिकाऽपि वा—रच् ० १।१० 3 मुनना, जानना, समझना 4 चरित्रचित्रण करना, अर्थ बताना ।

कक्य [कच्+अच्] 1 ली हुआ 2 (इ अर्थ में पु० भी) —इच्छति चांदी सहस्रं सहस्री लक्षवीतीते—मुना०, प्रया मलान्मु विज्ञेया—आश्र ३।१०० 2 चिह्न, चरित्रादी लक्ष्य निशाना—अप्यजपदाकाते लज बन्धा—मुद्रा० १ 3 निधान, निशानी, चिह्न 4 देखा, बहाना, जान-साही, छपचेस, बीना कि 'कक्षमुत्प' में 'मुत्पूठ माया हुआ' । तय०—अधीकः जालों की सम्पत्ति का स्वामी । कक्य (वि०) [कच्+अच्] अग्रपक्षकय से मुक्ति करने वाला, गीण रूप से अधिकव्यक्त करने वाला, कम् ही ह्वार, एक लाल ।

लक्षणम् । लक्ष्मणेनैत-लक्ष्मणं कथं स्पृष्ट 1 चिह्न, निधानी, निधान, सकेत, विधेयता, भेद बोधक चिह्न, -बभ्रुदुन्दु कलहमलक्षणम् - कु० ५१०७, अनार्यो हि कार्योना प्रथम इन्द्रिलक्षणम् मुग्धा० अथालोपो भविष्यन्त्या कार्यनिर्दिष्टि लक्षणम्-रघु० १०१६, १०१६७, गर्भलक्षणम् -श० ५, पुण्ड्रलक्षणम्, शीघ्रवर्ता का चिह्न या पुण्ड्र-योलक इन्द्रिय 2 (राम का) लक्षण 3 विद्ययण, स्त्री 4 परिभाषा, यथायं वर्चन 5 गणेर पर भाग्य-सूचक चिह्न (यह गिनती में ३० है) -द्राविणलक्षणो-पेन 6 (शुभाशुभ भाग्य का सूचक) शरीर पर बना कोई चिह्न क्व तद्विषयस्य स्वयं पुण्ड्रलक्षणा- कु० ५१३७, केश्यावहा भर्तृरलक्षणम्-रघु० १६१५ 7. नाम, पद, अभिधान (प्रायः समास के अन्त में) -विद्विद्यालक्षणा राजधानीम् - मेघ० २५, तै० ३०१६ 8 श्लेष्मता उन्कपं, अन्कष्टं जैमा कि 'आहितलक्षण' -रघु० ६१३१ में (यहाँ मन्त्रि० इस शब्द का अनुवाद करता है 'प्रख्यातपुत्र' और अग० का उद्धरण - तुल्ये प्रतीते तु कुललक्षणाहितलक्षणी-दना है) 9 उद्वेग, क्रियाशेष या लक्ष्य, ध्येय 10 (कर आदि का) निश्चिन्त भाव-मनु० ८१४०५ 11 रूप, प्रकार प्रकृति 12 कन-यतिवर्षा, कार्यप्रणाली 13 कारण, हेतु 14 मिर, शीघ्रक, विषय 15 बहाना, छद्मरूप (= लक्ष) प्रयुक्तलक्षण -मा० ७.-कः मारस.-भा 1 उद्वेग, ध्येय 2 (अन्त में) शब्द का परोक्षप्रयोग या गौण सार्थकता, शब्द की एक शक्ति, इसकी परिभाषा इस प्रकार है -दुःस्वार्थ-वापे तदोपे ऋद्धिोऽप्यवसानान्, अयाप्योऽप्यन यना लक्षणारापिनिक्रिया काव्य० ८, २० मा० ६० १० मी 3 हुस। सम० अन्वित (वि०) गुणलक्षणों में युक्त.-अ (वि०) (गणेर पर विद्यमान) चिह्नों की व्याख्या करने में लक्ष्य, -श्लष्ट (वि०) अभाषा, दुर्भाष्यवस्तु, लक्षणा ज्ञानलक्षणा, दे० - सन्धिपार-दाय लयाना, कलंकित करना ।

लक्षाय (वि०) [लक्षण + यत्] 1 चिह्न का काम देने वाला 2 अच्छे लक्षणों में युक्त ।

लक्षायत् (अव्य०) [लक्ष + धात्] लाय-लाय करके बर्षात् बढ़ी लक्ष्या में ।

लक्षित (पु० क० ह०) [लक्ष + क्त] 1 दुष्ट, अवलोकित चिह्नित, निगाह डाली गई 2 प्रकट किया गया, सकेतित 3 चरित्रभित्त, चिह्नित, अन्तर बनाया गया 4 परिभाषित 5 उद्दिष्ट 6 परोक्ष रूप से अभिव्यक्त सकेतित, इशारा किया गया 7 पूछताछ की गई, परीक्षित ।

लक्ष्मण (वि०) [लक्ष्मण + अण्, न वृद्धि] 1 चिह्नों से युक्त 2 लुभकभावों से युक्त, लोभाच्छास्त्री, अच्छी किस्मत वाला 3 समृद्धिदात्री, फलता-फलता - च

1 सारम 2 मुनिमा नामक पत्नी से उत्पन्न दशरथ का एक पुत्र (बचपन में ही लक्ष्मण राम में इनका अधिक अन्तर्गत था कि वह उसकी बरपाशा में जाने की तैयार हो गया । राम के चौदह वर्ष के विधवात काल में घटित घटनाओं में लक्ष्मण का बड़ा हाथ था । लक्ष्मण के युद्ध में उनमें कई बलवान् राजाओं की, विशेष कर रावण के पुत्रों में अत्यंत शक्तिशाली मेघनाद को मार डाला । सबसे पहले तो स्वयं लक्ष्मण ही मेघनाद की शक्ति का शिकार हुआ, परन्तु हनुमान् द्वारा लाई गई मन्त्रीवन वृद्धि के उपयोग से लुपेण बंध ने उसे फिर जीवित कर दिया । एक दिन काल साधु के बेश में राम के पास जाया और कहा कि "जो कोई उनकी एकान्त में वार्तालाप करने हुए कभी देख ले तो मुरटत उनका परिग्राम किया जाना चाहिए" यह बात मान ली गई । एक बार लक्ष्मण ने राम व सीता की एकान्तता में भंग डाल दिया, फलत लक्ष्मण ने अपने भाई राम के बचन को 'स्वयं शत्रु' में छपाय लगा कर सत्य सिद्ध बनके दिया दिया (दे० रघु० १५१२-५, उस का विवाह क्रमिला में हुआ, तथा अगव और बन्द केतु नामक दो पुत्र हुए), -भा हस्तिनी, -अन् 1. नाम अभिधान 2 चिह्न, सकेत, निधानी । सम० -प्रभूः लक्ष्मण की माता मुनिमा ।

लक्ष्मण (पु०) [लक्ष्-मन्त्रिन्] 1 चिह्न, निधान, निधानी, विद्यापना शि० ११३०, कि० ११२८, १८६६, रघु० १०१३० कु० ७१३३ 2 चित्ती, धम्मा -मन्त्रिमन्त्रि द्विभाषीः लक्ष्मण लक्ष्मी तनोति -श० ११२०, मा० १२२५ 3 परिभाषा पु० 1 सारस पक्षी, 2 लक्ष्मण का नामान्तर ।

लक्ष्मी. (स्त्री०) [लक्ष् + ई, मृत् + च] 1 लोभाय, समृद्धि, धनदीप्तता सा लक्ष्मीरूपकृष्ते यथा परेषाम् - कि० ८१८, तुषाणिक लक्ष्मीरूपकृष्ते तान् सचचन्द्रि भर्तु० २१३७ 2 लोभाय, अच्छी किस्मत 3 एकलता, सम्पन्नता उत्तर० २१२८ 4 सौन्दर्य, धिक्ता, अनुग्रह, लाभ्य, आशा, कान्ति -मन्त्रिमन्त्रि द्विभाषीः लक्ष्मी तनोति श० ११२०, मा० १२२५, ५१३९, ५२, ११२, कु० ३१२९ 5 लोभायदेवी, समृद्धि, सौन्दर्य, लक्ष्मी चिह्न की पत्नी मानी जाती है (देवायुती द्वारा अनृत प्राप्त के लिए मनुजमचन किये जाने पर अथ वृत्त्यवान् राजा के हाथ लक्ष्मी भी समुद्र से निकली) -द्वय गेहे लक्ष्मी उत्तर० ११३८, रावकीय या प्रभुशक्ति, उपनिवेश, राज्य (यह बहुधा राणी की सपनों के रूप में मानी जाती है, और राजा की राणी के रूप में इसका वर्तवर्चन किया जाता है) - तामेकवायी परिवारपरीरी साञ्चीरुपि त्यक्तवतो नृपस्य, बहस्यसचष्टुक्तु लक्ष्मी देवे लक्ष्मी-

रहितेव लक्ष्मी—रघु० १५।८६, १२।२६ 7 नायक
की पत्नी 8. भोती 9 हृदयी । सम०—ईशः 1 विष्णु
का विशेषण 2 आम का वृक्ष 3 नमूठ या भाय-
शास्त्री पुष्य.—कालः 1 विष्णु का विशेषण 2 राजा.
—बृहस्पति काल कमल का फूल, सततः एक प्रकार का
ताड़ का वृक्ष.—भायः विष्णु का विशेषण.—पतिः
1 विष्णु का विशेषण, 2 राजा विहाय लक्ष्मीपति-
लक्ष्म कार्मुकम् कि० १।४४ 3 सुगरी का पेड़,
लौन का वृक्ष.—गुणः 1 घोड़ा 2 कामदेव का नाम-
न्तर.—दुष्णः काल.—बृहस्पत् लक्ष्मी के पूजा करने का
कृत्य (बृहस्पति को विवाह करके घर लाने के परचात
दुष्टों द्वारा दुलहन के साथ मिलकर किया जाने
वाला अनुष्ठान), पूजा कानिकामा की अमावस्या
के दिन किया जाने वाला लक्ष्मीपूजन (मूल्य रूप में
साहूकार और व्यापारियों के द्राग जिनका कि
वाणिज्यवर्ष, आज के दिन समाप्त होकर नया वर्ष
आरम्भ होता है), -कलः बिल्ब वृक्ष, रमण विष्णु
का विशेषण.—वसतिः (स्त्री०) लक्ष्मी का निवास
काल कमल का फूल, बार-बृहस्पतिवार, श्रेष्ठ
तारपीन.—सखः लक्ष्मी की हृषा का पात्र.—सहजः
—सहोदरः चन्द्रमा के विशेषण ।

लक्ष्मीकृत (वि०) [लक्ष्मी + कृतम्, कत्वम्] 1 सौभाग्य-
शास्त्री, किम्बत बाला, अच्छे भाग्य वाला 2 दौलत-
मर, धनवान्, समृद्धिशाली 3 मनोहर, प्रिय
मुन्दर ।

लक्ष्म्य (स० क०) [लक्ष् + म्यत्] 1 देखने के योग्य,
अवलोकन करने योग्य, दृश्य, अवलम्बीय, प्रत्यक्ष
जानने के योग्य—दुर्लभचिह्नता महता हि वृत्ति—कि०
१।७।२३ 2 मकेतित या अभिज्ञेय (करण० के माय
या समास में)—दूरालक्ष्य दुरपलभपुत्राकासा ता-
पाने—मेघ० ७५, प्रवेपमानाधरलक्ष्यकोपया कु० ५।
७५, रघु० ४।५, ७।६ 3 आतम्ब या प्राप्य, नुराग
लगाने योग्य—कु० ५।७।२. ८१ 4 चिह्नित या
निमित्त किया जाता 5 परिभाषा के योग्य 6 उद्दिष्ट
किये जाने योग्य 7 अभिष्यक्त किया जाना या परोक्ष
रूप से प्रकट किया जाता 8 सवाल किये जाने योग्य,
चिन्तनीय, लक्ष्य 1 उद्देश्य, निशाना, चिह्न,
बादमात्री, उद्दिष्ट चिह्न, (आक्ष० वे श्री)
—उत्कर्षं त च धनिना यदिव्य मिष्यन्ति
लक्ष्ये चले—इ० २।५, दृष्टि लक्ष्येषु बन्धन्
—मुद्रा० १।२, रघु० १।६१, ६।११, ९।६७, कु० ३।४७,
६४, ५।४९ 2. निशान, निशानी 3 वस्तु जिसकी
परिभाषा की गई है (वि० लक्षण) —लक्ष्यकदेवे
लक्ष्यवस्थापतेनमव्यति—तर्क० 4 परोक्ष या गौण
वर्ष को लक्षणा शक्ति से प्रतीत हो, बाध्यलक्ष्यव्य-

व्या अर्था—काम्य० २ 5 बहाना, बृठमूठ, छपपेय
द्वानी परोक्षे कि लक्ष्यमुत्तमत् परमार्थमुत्त-
मिद इय मूच्छ० ३, ३।१८, कल्पं प्रथममना
समीनिमित्तालक्ष्येण प्रतिपद्यमव्यति चकार—शि०
८।३५, रघु० ६।५८ 6 लक्ष, ली हूबार । सम०
—कम (वि०) ध्वनि आदि अर्थ जिनकी प्रमाणी
(गौरव से) प्रत्यक्षज्ञेय है.—श्रेष्ठः—वैद्यः निशाना
लगाना—कि० ३।२७.—मुत्त (वि०) बृठमूठ सोया
हुआ, ह्व (वि०) निशाना मारने वाला, (१०)
बाण, तीर ।

लक्ष्, लक्ष्ण (म्भा० पर० लभति, लक्ष्मति) जाना, हिम्ना
जुलना ।

लक्ष् (म्भा० पर० लगति, लग्) 1 लग जाना, दृष्ट
रचना, निपकना, जुड़ जाना—ध्यामाप हृत्स्य करा-
नवाधेयमन्दाधलक्ष्या लगति स्म पदवान्—ने० ३।८,
गमनमय कथं लग्ना निरुध्य माय—मा० ३।७
2 स्थलं करना, सपर्क में आना कर्ण लगति वायस्य
प्राणैरग्यो विद्यव्यते—पच० १।३०५, यथा यथा
लगति शीतघान—मूच्छ०, ५।११ 3 स्थलं करना,
प्रभावित करना, लक्ष्य स्थान तक जाना—विदिनेकृति
हि पृष्ठ जने सपदीयता लक्ष् लगति गिर
—गि० ९।६९ 4 मिल जाना, मर्मिमलित होना,
(रेशा आदि) काटना 5 ध्यानपूर्वक अनुपम्य करना
अनुसर्षित होना, बार में बटित होना,—अनार्षित
सघत लम्ना—पच० १ 6 निष्पन्न करना, बटकाना,
(विभी को) धप्ये में लगाना—नच दिनानि कनि-
चिन्त्यविग्यनि—पच० ६, मुझे कुछ दिन बर्तौ लग
जायेंगे, अब—, जुड़ जाना चिपक जाना—रघु०
१६।६८, भा—, जमे रहना,—भा७।० २।५०,
चि चितकना, लग जाना, जुड़ जाना ।

॥ (दुरा० उभ०—लागयति—ने) 1 स्वाद लेना
2 प्राप्त करना ।

लगाइ (वि०) [लग् + प्रलच्, हलद्यो ऐक्यत् इ] प्रिय
मनाकर, मुन्दर ।

लगित (पु० क० क०) [लग् + क्त] 1 जुड़ा हुआ,
चिपका हुआ 2 सखट, अनुसक्त 3 प्राप्त, उपलब्ध ।

लगुइ, लगुइ, लगुल- [लग् + उलच्, परो लप्य इ, 7
वा] मुद्दर, छोटी, लाठी, सोटा ।

लग्न (पु० क० क०) [लग् + क्त] 1 जुड़ा हुआ, चिपका
हुआ, सटा हुआ, दृष्ट धामा हुआ—लगावियते गवा-
वली लग्ना—चिकम० १ 2 स्थलं करना, हाक में
आना 3 अनुसक्त, सखट 4 चिपटा हुआ, जुड़ हुआ
माय लग्ना हुआ 5 काटना, (रेशा आदि की)
मिलाना 6 ध्यानपूर्वक अनुसक्त करना, आसक्त या
निकटवर्ती 7 ध्वनि, काम में लग्ना हुआ 8 गुण

(रे० लृ०)।—लृ० 1. जाट, बारन 2 मदीमल हाकी, —लृ० 1 लपकं विन्दु, विषाखेयन-विन्दु, बहु विन्दु वहाँ कि सितित और कान्ति-नृत या बहुपय मिलते हैं 2. क्षान्ति वन का विन्दु जो एक समय सितित या ग्राम्योत्तर-रेखा पर होता है 3. बहु जल जिसमें सूर्य का प्रवेश किसी राशि विशेष में होता है 4. बारह राशियों की आकृति 5. सुन या सोनाय्य प्रव सण 6 (सत) कार्याक्रम का उचित समय । सम० —अहः, विमन्, विषसः, —बहसः, सुमदिन यद्योति-वियों द्वारा (विषाहादि सत्कार के लिए) बताया गया शुभ समय, —बहसम् शुभ नक्षत्र, —बहसम् राशिषक, —बहसः शुभ महीना, —सुद्विः (स्त्री०) किसी धर्मकृत्य के अनुष्ठान के लिए बताया गये मुहूर्त की मांगसिक्ता ।

लम्बकः [लम् + कन्] प्रनिम्, उदागत, बहु जो उदागत करे ।

लम्बिका [लम् + कन् + टाप्, इत्यम्] लम्बिका का अपभ्रंस रूप, रे० ।

लम्बयति (ना० वा० पर०) 1 हलका करना, मार कम करना (वा०) —नितास्तुर्षी लम्बयिष्यता वृश्च-रपु० १३।३५ 2 कम करना, घटाना, घीसा करना, म्यून करना—विष्म० ३।१३, रपु० ११।६२ 3 लुब्ध नमनाना, तिरस्कार करना, घृणा करना—कि० २।१८, महात्वाहीन या नगण्य समझना—कि० ५।४, १३।२८ ।

लम्बयि (पु०) [लम् + क् + लृटि] 1. हलकापन, मार का उभाव 2 लम्बता, क्षयता, नगण्यता 3 लुब्धता, जोषापन, नीचता, कमीनापन—मनुष्यतामुल्लोको लम्बिमा प्रलकर्मणि मां निरोजयति - का० 4 नासमयी, छिछोरपन 5 इच्छानुसार अत्यंत लम्बु हैं; जाने की कर्त्वीक शक्ति, धाट सिद्धियों में से एक ।

लम्बयि (वि०) [अयमेवाभिनिययेन लम् + क् + लृटि] हलके से हलका, निम्नतर, अत्यंत हलका ('लम्' शब्द की उ० व०) ।

लम्बयिन् (वि०) [अयमेवो भतिशयेन लम् + ईप्सुन्] अपेक्षाकृत हलका, निम्नतर, बहुत हलका ('लम्' शब्द की उ० व०) ।

लम् (वि०) (स्त्री०) — लृ०, लृ० [लम्बे कुः नलोपपत्] 1 हलका, जो भारी न हो—तुषारपि लम्बस्तुलस्तु-लादिषु च वापक—तुषा०, रिक्त सर्वो भवति हि लम् तुषारा गौरवाय—मेघ० २० (यहाँ शब्द का अर्थ तिरस्करणीय भी है) रपु० १।६२ 2 लुब्ध, अत्य, म्यून—पच० १।२५१, वि० १।३८, ७८ 3 हलक, लम्बित, सामाहिक लम्बसंवेद्यता सरस्वती-रपु० ८।७७ 4. शुद्ध, तुषाराय, नगण्य, महात्वाहीन कायस्य इति लम्बी माया—मुद्रा० १ 5. नीच,

बचय, विष, तिरस्करणीय—वि० १।२६, पंच० १। १०१ 6 अत्यंत, दुर्बल 7. मोक्ष, मनुष्यदि 8 फूर्तीका, वृक्ष, चपल, स्फूर्त व० २।५ 9. ठेक, तुल्यामी, स्मृति—किष्कि पल्वात् इव लम्बयति—मेघ० ११, रपु० ५।५५ 10. तरल, जो क्षिप्त न हो—रपु० १।१६५ 11 लुब्ध, तुषार्य, हलका (मोक्ष) 12 हलक (येके कि लम्बः शायम् से स्वर) 13 मृगु, मन्व, कोयल 14. मुसुर, इक्षिकर, बाँझनीय—रपु० १।१२२ ८० 15 विप, मनोहर, सुन्दर 16 विन्दु, स्वच्छ अन्व० 1. हलकेपन से, अत्यन्त से, अनाद्यपूर्वक 2 शीघ्र, फूर्ती से, लम्ब लम्बयिता—अ० ४, लम्बे उठा हुआ, (लृ०) 1. काका अय, या विशेष प्रकार का अन्व 2 समय की विशेष माप । सम०—लम्बिन्—लम्बार, वि०) बोझ खाने वाला, पित्तबीजी, मिठाहारी,—उल्लिः (स्त्री०) अविश्वसित का लम्बित प्रकार,—उत्पान, —लम्बयान (वि०) फूर्तीका, तुल्यगति से कार्य करने वाला,—कञ्ज (वि०) हलके वारीर बाणा, (क) बकटा,—कल (वि०) शीघ्र पग रखने वाला, उल्की चलने वाला,—कञ्जिका कटोरा, छोटी साट,—शोषकः छोटी जाति का वेष्ट,—विप, —सेल्लु,—लम्बु,—हृष्य (वि०) 1. हलके मन वाला, नीचहृदय, अत्यन्त का, कमीने दिल का 2. मनुष्यदि 3 चपल, लम्बित,—अल्लुः अना पत्नी,—अना विना शीघ्र का अग्र, किशानिया,—अविन् (वि०) अनायास पिचन जाने वाला,—लम्ब (वि०) तुषार्य,—लम्बः एक प्रकार का कदव का वृक्ष,—प्रवाल (वि०) 1. (बर्ष बादि) बोझ से विह्वलाभ्यापार से उन्मत्त 2. निद्रलसा, बालवी,—लम्बः,—लम्बरी (स्त्री०) एक प्रकार का वेर, लम्बः नीच बोलि या लम्ब वर में अन्य,—शोषणम् हलका मोक्षन,—लम्बः एक प्रकार का तीतर,—लुलम्ब समीकरण की राशि का म्यूनतर मूल,—लुलम्ब मूली, लम्बम् एक प्रकार तुषारित जड़, लत, बीरलमूल, बालम् (वि०) हलके बीर निर्देश बह्य वाप्य करने वाला,—विष्म (वि०) ठेक उठाने वाला, शीघ्र पग उठाने वाला,—वृत्ति (वि०) 1. बरपजन, नीच, वृष्ट 2. शुद्ध, मनुष्यदि, कुम्बपरिष्ठा, दुर्बुत्,—केलिन् (वि०) भारीक विधाना लम्बाने वाला,—हलक (वि०) —लः (वि०) 1. हलके हाथ का, लम्ब, बल, विशेष २ रपु० १।६३ 2. लम्बि, फूर्तीका, (सः) विशेषक वा कुलक मनुष्य ।

लम्बता, —लम्बु [लम् + क् + टाप् + लृप् + लृटि] 1. हलकापन, जोषापन 2. छोटापन, बोझापन 3. नगण्यता, महात्वाहीनता, तिरस्कार, मर्षा का उभाव —इन्द्रोन्नि लम्बतां वाति स्वर्ग अन्वाधिकीर्षुः 4. अय-यान, पित्तहर—पच० १।१५०, २५१ 5. किना-

शीलता, पूर्ण 6 संश्लेष, सक्तिपता 7 सुगमता, सुविधा 8. नासमयी, निरर्थकता 9. स्वच्छाचारिता ।
सखी [सख् + स्त्री] 1. कोमलागिनी स्त्री 2 हलकी गाड़ी—सि० १२।२५ ।

सख्का [सख् + अच्, मू० ख] 1 रावण का निवास और राजधानी, वर्तमान सोनान टापुर या तखली राजधानी उस समय की लका है, परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार यह लका सीलोन के वर्तमान टापुर से कहीं अधिक बड़ी थी । मूलरूप से यह माल्यवान् के लिए बनाई गई थी 2. अविचारिणी स्त्री, रबी, बेवना 3 शाखा 4 एक प्रकार का अनाज । सम०—अभिषिः—अभिषति,—ईशः,—ईश्वरः,—नाचः, वलि लका का स्वामी अर्थात् रावण या विनीषण,—अरि राम का विशेषण,—वाहित् (पु०) हनुमान् का विशेषण ।

सख्कनी [सख् + ल्यट् + स्त्री] लगान की बत्ती (लोहे का बना यह भाग औं मुँह में रहता है), मूखरी ।

सख्कः [सख् + अच्] 1 लगानपत्र 2 सख सम्राज 3 प्रेमी, आर (उपपत्ति) ।

सख्कुम्भ [सख् + ऊलच् + पु०] जानवर की पूँछ, मु० 'कामुलम्' से ।

सख्प [म्भा० उभ०] लक्ष्मि-ते, लक्ष्मि-त, इच्छा० छिल-क्ष्मि-वति-ते । 1 उल्लसना कृपा, छलांग लगाना 2 सवारी करना, बड़ना - अल्पे चालक्ष्मिपु शीलान्—सि० १५।३२ 3 परे चले जाना, अतिक्रमण करना—सख्पते स्म मुनिरेव विमानिन्—ने० ५।४ उपवास करना, जनसहन करना 5 सूचना, सूख जाना (पर०) 6 हाट्टा मारना, आक्रमण करना, ला जाना, क्षति पहुँचाना—पल्लवान् हरिणो लक्ष्मिनुमागच्छति—मालवि० ४, प्रेर० या चुरा० उभ० । लक्ष्म्यति—ते । 1 ऊपर से बड़ जाना, छलांग लगा देना, परे जाना—सागर लक्ष्म्येणे क्लेशयेन सख्पिन—यहा०, मनु० ५।३८ 2 तव कर देना, बल कर पार कर लेना (हूरी आदि) रघु० १।५।७ 3 सवारी करना, बड़ना - रघु० ५।५२ 4 उल्लसण करना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना—रघु० १।९ यात्र० २।१८७ 5 सट्ट करना, अपमान करना, निरादर करना, उपेक्षा करना - हस्त इव मूर्तिमयिनो यथा यथा लक्ष्यति सख सुजनम्, वर्षणमिष ह कुपते तथा-तथा नियम-च्छायम्—वास० 6 रोकना, बिरोध करना, उहराना, टालना, हटाना - भाय न लक्ष्म्यति कोऽपि विधि-प्रवीणम्—सुभा०, मू० ५।२ 7 आक्रमण करना, हाट्टा मारना, अतिप्रल करना, चोट पहुँचाना—रघु० १।१६२ 8 भागे बड़ जाना, पीछे छोड़ देना, अपेक्षा-कृत अधिक श्रमकना, रहस्यरक्त करना,—(वच) जल-पयकाश्च तदवधिमिषयथा भवन्पुंसंक्ष्मिपु ममोच्छत

—रघु० ३।५८ 9. उपवास करवाना 10 धनकना 11 बोलना, अभि - , 1 परे चले जाना, ऊपर से छलांग लगा देना 2 उल्लसण करना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना, उच्—, 1 पार जाना, पार कर लेना, परे चले जाना—सि० ७।७५ 2 सवारी करना बड़ना 3. उल्लसण करना, अतिक्रमण करना—मुद्रा० १।११०, सि० १२।५७, वि - , 1 पार जाना, उल्लसण पार करना, यात्रा करना—निवेद्ययाभास विलक्ष्मिताभ्या—रघु० ५।५२, १६।३२, सि० १०।२५ 2 उल्लसण करना, अतिक्रमण करना, बाहर कदम रखना, अवहेलना करना, उपेक्षा करना—यान् प्रवृत्ते समय विलक्ष्म्य कु० ५।२५, रघु० ५।५८ 3 अतिक्रमण की मोचा का उल्लसण करना—रघु० ९।७५ 4 उठाना, बड़ना, ऊपर जाना—कि० ५।१, ने० ५।२ 5 छोड़ देना, परिस्थाय करना एक ओर फेंक देना—मनोबन्धनाभ्यरमान् विलक्ष्म्य मा—रघु० ३।५ 6 भागे बड़ जाना, पीछे छोड़ देना - इति कर्पोत्पल प्रायस्ताव दृष्ट्या विलक्ष्म्यते—काव्या० २।२२५ 7 उपवास करना ।

सख्पम् [सख् + ल्यट्] 1 छलांग लगाना, कूटना 2 उल्लस कर चलना, यात्रा करना, पार जाना, चलना, गतिशील होना - सुवनेष पथि श्रीप्रलक्ष्मनाः—वट० ८ 3 सवारी करना, बड़ना, उठाना (आल० से भी) नभोअक्षयण—रघु० १६।३३, जनाग्रमूकने परलक्ष्मनोत्सुक—कु० ५।१५, उच्छ्वपद प्राप्त करने को इच्छुक 4 यात्रा बोलना, एकाएक आक्रमण द्वारा दुर्गारि हथिया लेना, अधिकार में कर लेना—जैना कि 'दुर्गलक्ष्मणम्' में 5 भागे बड़ना, परे चले जाना, बाहर कदम रखना, उल्लसण, अतिक्रमण 'आशालक्ष्मण' नियमसख्पनम्' आदि 6 अवहेलना करना, कृपा करना, निरस्कार पूर्वक व्यवहार करना, अपमान करना—प्रतिपातलक्ष्मण प्रमाट्टकाया—वि० ३, मालवि० ३।२० 7 अप्यावाचरण, मान-हानि, अपमान 8 . अविष्ट, क्षति, जैना कि आनपण-क्ष्मणम् में ९ 9 उपवास करना, सवय—सि० १०।५ (यहाँ इसका अर्थ छलांग भी होता है) 10 चोरे का एक कथय ।

सख्पति (पु० क० क०) [सख् + पति] 1 ऊपर से कूटा हुआ पार गया हुआ 2. यात्रा द्वारा पार किया हुआ 3. अविमान, उल्लसण किया हुआ 4 अवज्ञात, अपमानित, अनादृत (दे० 'सख्प') ।

सख् [म्भा० पर० लक्ष्मि] विद्वान् लगाना, देवना, पु० 'सख्' ।

सख् : (पुत्रा० वा० लक्ष्मते) लज्जित होना ।

11 [म्भा० पर० लक्ष्मि] कर्माकित करना आदि, दे० 'सख्ज' म्भा० ।

111 [पुत्रा० पर० लक्ष्मति] 1 दिखाई देना, प्रतीत

होना, चमकना 2 डकना, छिपाना (कुछ विद्वानों के मतानुसार इसी अर्थ में 'लाजयति' रूप भी बनता है) ।

लज्ज (लुञ्ज् + अञ् + लज्जित) लज्जित होना, घमिदा होना ।

लज्जका [लज्ज् + अञ् + कञ् + टाप्] जलसी काल का पीषा ।

लज्जा [लज्ज् + अ - टाप्] 1 धर्म—कामानुरागां न भय न लज्जा - सुभा०, विहाय लज्जाम् - रघु० - २४०, कु० ११४८ 2 शर्मीलापन, विनय - शुकुमारलज्जा निरूपयति—सा० १, कु० ३१७, रघु० ७१२५ 3 छुईमुई का पीषा । सम०—अभिलस (वि०) विनयशील, शर्मीला, —आश्चर्य, —कर (वि०) स्त्री०—रा, —री) लज्जाजनक, धर्मेनाक, अकानिपक, कलकी, शील (वि०) शर्मीला शालीन, —रहित—कुम्भ, —हीन (वि०) निर्लेज्ज, डोट बहवा ।

लज्जात् (वि०) [लज्जा - भावञ्] विनयशील, शर्मीला पु० स्त्री० छुईमुई का पीषा ।

लज्जित (लु० क० कृ०) [लज्ज् - क्त] 1 विनयशील, शर्मीला 2 लज्जा हुआ, लमिदा ।

लज्जुः । (स्त्रा० पर० लज्जति) 1 बालक लगाना, गिन्दा करना, बदनाम करना 2 भ्रमना, समना ।
। (कुरा० उ० लज्जयति—ने) 1 क्षतिग्रस्त करना, प्रहार करना मार डालना 2 देना 3 बोलना 4 मज्ज या धक्किलानी होना 5 निवास करना, 6 चमकना ।

लज्ज् [लज्ज् + अञ्] 1 पर 2 धोनी की लाज या चिनारा जो पीछे कमर में टांग लिया जाता है लु० कता ० पुंछ ।

लज्जा [लज्ज् + टाप्] 1 धार 2 व्यभिचारिणी स्त्री 3 शरमी का नामान्तर 4 निद्रा ।

लज्जिका [लज्ज् - षञ् + टाप्, इत्यञ्] रथी, वेध्या ।

लज् (स्त्रा० पर० लज्ति) 1 बालक बनना 2 बालको की तरह व्यवहार करना 3 डकनों की भाँति तोतली बातें करना, मुन्धाना 4 कन्धन करना, रोना ।

लज् [लज् + अञ्] 1 मुर्ख, बूढ़ 2 बूटि शीघ्र 3 लुटेरा ।

लज्क [लज् + कञ्] ठग, बर्मास, पात्री, बुष्ट ।

लज्म (वि०) [प्राकृत 'लज्म' शब्द से मज्ज, स्वयं 'लज्म' शब्द भी इस 'लज्म' से ही बना प्रतीत होता है] लावण्यमय, मनोहर, सुन्दर, आकर्षक, प्रिय, —अतिशयना कालो मज्जलसनामोममुलन - मर्तु० ३१२, (पहला भाष्यकार 'लज्म' का अर्थ 'सलासण्य' करते हैं), तस्या पारलक्ष्येति शोभते लज्मधुव - विक्रमा० ८१६, विद्वन्ने इत शब्द को इसी पुलक में जोर हीन स्थानों पर प्रयुक्त किया है जहाँ इसका अर्थ 'तशी स्त्री' या 'सुन्दरी स्त्री' प्रतीत

होता है—उवा० कि वा वर्णनया समस्तलज्जाल-इकारतामेष्यति—८१८६, अन्वयंलावण्यनिधानमुनिर्न कल्प लोभ लज्मा लनोति—११९८ केवाभर्वावर्षर्षैर-भाना पिच्छतामिष जगाम लमिषम् १११८ ।

लज्जुः (पु०) बुष्ट, बर्मास, दे० 'लज्क' ।

लज्जः [लज्ज् + कञ्] 1 घोडा 2 नाचने वाला लज्जा 3 एक जाति का नाम, —इषा 1 एक प्रकार का पक्षी 2 मन्तक पर बालों का घूँघर, अलक 3 चिड़िया, गोरैया 4 एक प्रकार का बाद्ययन्त्र 5 एक लक 6 आकान, केमर 7 व्यभिचारिणी स्त्री ।

लज् । (स्त्रा० पर० लज्ति) श्लथना, झोडा करना, हाव-भाव रखलाना ।

। (स्त्रा० पर०, कुरा० पर० लज्ति, लज्जयति) 1 फेंकना, उछालना 2 कलक लगाना 3 जीभ लप-लपाना 4. तंग करना मताना ।

।। (कुरा० उ० लज्जयति—ने) 1 लाठ प्यार करना, पुचकारना, दुलाना 2 मताना ।

लज्म (वि०) [प्राकृत शब्द] सुन्दर, मनोहर ।

लज्जुः—लज्क दे० ।

लज्जुः, लज्जुकः (पु०) एक प्रकार की मिठाई, लज्जु, मोदक (चीनी, आटा, जो आदि पदार्थों को मिलाकर बनाये हुए गोल गण्ड पिष्ठ) ।

लज्ज् (स्त्रा० पर०, कुरा० उ० लज्जति, लज्जयति—ते) 1 ऊपर की उछालना, ऊपर की ओर फेंकना 2 बोलना ।

लज्जम् [लज्ज् + कञ्] पिष्टा मल ।

लज्जु [समवत फेव् भाषा के लौड्रज (Loirdes) शब्द का आधुनिक रूप] लज्जन ।

लज्जा [लज्ज् + अञ् - टाप्] 1 बेल, कौमने वाला पीषा लताभाषेन परिशतमस्या रूपम् - विक्रम० ४, कठेय मनज्जमनापल्लवक रघु० ३१७, (विशेष रूप से 'भूजा' 'मी' 'विजली' आदि अर्थों को प्रकट करने वाले शब्दों के साथ समान के अन्त में, लीम्बई, कोमलता तथा पतलेपन को प्रकट करने के लिए प्रयोग - भूजलता बाहुलता, भूलता, विद्वलता, इसी प्रकार लज्जु, अलक' आदि, तु०, कु० २१६४, वेध० ४७, शुकु ३१२५, रघु० ११४५) 2 ताका 3 विजम् लता 4 'बाबरी लता 5 कस्तुरी लता 6 हुटर वा कोर्र का सहाका 7 मोतियों की लती 8 सुडुमार स्त्री । सम०—अलम् कृत, —लज्जुलम् एक प्रकार की ककड़ी, —अर्कः हरा प्याज, —अलकः हाथी, —अलम्कः नाचते समय हाथों की विशेष मुद्रा, — उद्वलकः लता का ऊपर की चहुना, —अरः नाचते समय हाथों की विशेष मुद्रा, - कस्तुरिका—कस्तुरी कस्तुरी की बेल, —मुद्गः, —हृत् लतामुद्ग, लताकुम्भ—कु० ४१४१—सिद्धः

—रखनः साय, —सकः 1. साल का वृक्ष 2 सतरे का पेड़, —पल्लवः तटवृक्ष, —प्रसन्नः लताशयुः रघु० २।८, —मलयम् लताशयुः, लताशयुः, —मयिः मृगा, —मन्थपः लताशयुः लताशयुः, —मृगः बन्दर, —बाधकम् अक्षु, बंधुवा, —बन्धयः, —अयुः लताशयुः, —वृक्षः नारियल का पेड़, —वेद्यः एक प्रकार का रतिषय, सभोग का प्रकार, —वेद्यनम्, —वेद्यनकम् अलिङ्गन का प्रकार ।

मलिका [सता + कन् + टाप्, इत्यम्] 1 छोटी लता, बेल 2 मोतियों की लकी ।

मलिका [सत् + तिक्न् + टाप्] एक प्रकार की छिपकली ।

मन् (म्भा० पर० लपति) 1 बोलना, बातें करना 2 चायें चायें करना, ची ची करना 3 कानाफूसी करना -- कपोलकलं मलिका लपितु किमपि मृत्तिका गीत० १, प्रेर० -- (सापयति-ते) बातें करना, मन् , बोहराना, बार बार बातें करना, खप-मुकरना, स्वीकार नहीं करना, इन्कार कर देना --सामयलपति --विद्वा० 2 छिपाना, डकना, ब- , 1. बातें करना, बातेंलाप करना 2 बातें करना बोलना 3 चाय चाय करना, ची ची करना ख- , और से मुकरना, प्र- , 1 बातें करना बोलना --बन्धो है वेदीति (वेदीति) प्रतिपद्यमन् प्रलपितम् --सा० ३० ६ 2 यें ही बोलना, अनगल बातें करना, चाय चाय करना, ची ची करना, लक-बक करना, निरर्थक बातें करना, वि- , 1 कहना, बोलना 2 बिलप करना, छोक मनाना, क्रन्दन करना, रोना बिलपान विकीर्णपूर्वजा कु० ४।४, बिललाप स शापनाद्यय- रघु० ८।४३, ७०, मट्टि० ९।११, सामिहृ द्या कि बिलपामि गीत० ३, विप्र , क्षयवा करना, विरोध करना, वादविवाद करना, तु तु मैं मैं करना, सन्- , 1 बातें करना, बातेंलाप करना सलपनी प्रवसमाज्ञा- --इश० 2 नाम लना, पुकारना ।

मन्थम् [सत् + म्थट्] 1 बातें करना, बोलना 2 मुख ।

मलित (मू० क० इ०) [सत् + क्त] बोला हुआ, कहा हुआ, ची ची किया हुआ, सन् वाणी, आवाज ।

मन्थ (मू० क० इ०) [सन् + थत्] 1 हासिल किया, प्राप्त किया, अवाप्त 2 लिखा, प्राप्तकिया 3 प्रत्यक्ष-ज्ञान प्राप्त किया, शोध पाया 4 उपलब्ध किया (भाग जाति में), ६० मन्- बन्धु जो प्राप्त कर लिया गया, वा मुद्रित हो गया -- लब्ध रशेदबसयात् हि० २।८, रघु० १९।३। सम०--अन्तर (वि०) 1 जिसमें कोई अक्षर प्राप्त कर लिया है 2 जिसकी कहीं पहुँच हो गई है या प्रवेश मिल गया है रघु० १६।७, --अक्षरगत, अक्षरर (वि०) 1 जिसे किसी बात का अक्षर मिल गया है 2 (कोई भी बात)

विषे (कार्य के लिए) शोध मिल गया है --सम्भाव-काशा में प्रार्थना स० १ 3 जिसने कृतज्ञ प्राप्त करली है, जिसे अक्षरगत का समय मिल गया है, इसी प्रकार 'लब्धगत', --आलम्ब (वि०) जिसने कहीं पर जमा किया है, या कोई पद प्राप्त कर लिया है मावि० १।१७, --उद्यय (वि०) 1 बन्धुलिया हुआ, उपलब्ध, उचित लब्धोदया चात्रमसीव लेखा -- कु० १।२५ 2 मनुश्रिवाली, या उलान --सप्तमो लब्धोदय 'उसकी उन्नति मुन्दारी बढ़ीसत हुई', --काय (वि०) जिसे अभीष्ट पदार्थ मिल गया है कीर्ति (वि०) विद्युत, प्रसिद्ध विख्यात, --वेत्तम्, --संज्ञ (वि०) जिसे होना आ गया है, जिसकी बेहोशी दूर हो गई है, --बन्धुम् (वि०) उन्नत, पैदा, --नायम् --शब्द (वि०) विद्युत, विख्यात, नाश प्राप्त की हुई वस्तु का नाश लब्धनाशो यथापुं, प्रत्ययम् 1 प्राप्त की हुई वस्तु को मुद्रणपूर्वक रखना 2 मुद्रण को दान वा धनसमर्पण - मनु० ७।५६ पर कुल्ल०, लब्ध-व्य (वि०) 1 जिसने ठीक निशाने पर आवाज किया है 2 अल्पप्रयोग में हुआ, --बन्ध (वि०) विद्याम्, बुद्धिमान् चिन्त स्वदीये विषये समानानु सर्वेपि ताका किल लब्धवर्णा --गमप्र० 2 प्रसिद्ध, विभूत, विख्यात मूळ० ४।२६, 'बाध' (वि०) विद्याना का बाध करने वाला --कुम्भ-लब्धमपि लब्धवर्णाकान् दिदेश मनये सलक्षमणम् रघु० १।१७, विद्धि (वि०) विद्याम् गिलित, बुद्धिमान्, सिद्धि (वि०) जिसने अभीष्ट पदार्थ (सफलता) या पूर्णता प्राप्त कर ली है ।

मन्थि (मन्थी०) [सन् + क्तिन्] 1 अधिकतम, प्राप्ति, अवाप्ति 2 नाम, आवाज 3 (गान्) में) मन्थनकल मन्थिप्रय (वि०) [सन् + प्रिक्, यत्] प्राप्त, अवाप्त, उपलब्ध ।

मन् (म्भा० जा० मन्थने, लब्ध) 1. हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना, अवाप्त करना लभते विक-तामु नैलमपि बलन पीडयन् - अर्णु० २।५, चित्तय पाषाणधर्ममन्थि दिवाग्ने सि० १।१४, रघु० १।२९ 2 रचना, अधिकार में लेना, कब्जे में हुना 3 लेना, प्राप्त करना 4 पकड़ना, लेना, बन्धोचना रघु० १।३ 5 मातृम् करना, मुकाबला हुना यत्किञ्चिन्लभने पथि 6 बसूल करना, उपाहना 7 आना, मीचना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, समझना अयम्...मनयदेव मन्थते भाषा० ९, अयमलभधाम मनु० ८।१९९ पर कुल्ल० 8 (किसी बात को करने के) योग्य हुना ('मुमुक्षु' के साथ) मन्थमपि न लभ्यते, नापनी लभ्यते कर्तुं लोके वेद्यावरे (संज्ञासंज्ञा) के साथ मन्थ होकर 'लम्' के बन्धों में तबन्मुक्त परिवर्तन हो जाता

है, उदा० धर्मलक्ष्मी धर्मश्री होना, धर्म धारण करना, यह लक्ष्, आर्यलक्ष् वरू अमाना, प्रभाव रखना, दे० 'पद' के नीचे, आखिर लक्ष् पदा रखना, प्रविष्ट होना, निर्मेज्जर बेनामि मोपदेव रघु० ६।६६, मन पर प्रभाव नहीं पडा, बेतमा लक्ष्, सजा लक्ष् होश में आना, जन्म लक्ष् पैदा होना, कि० ५।४३, दर्शन लक्ष् भेट होना, माहात्मकार होना, दर्शन करना स्वाभ्य लक्ष् स्वभ्य होना, आराग्य में होना) - प्रेर० (लम्भवति -ते) 1 प्राण्य करना, जिहाना कि० २।५८ 2 देना, प्रदान करना, अर्पण करना मोदकगणक माहात्मक लम्भव विक्रम० ३३ कष्ट उठाना । प्राण्य करना, लेना 5 मान्य करना, मोदना इच्छा० (लिम्बते) प्राण्य करने की इच्छा करना, प्रबल मान्यता रखना अन्वय चंब लिम्बे-दि० २।८ आ 1 मर्याद करना सामाज्यार्थकोशेष वा मन० ५। ८०, अर्द्धि० १४।११ 2 प्राण्य करना, हासिल करना, पहुँचाना -यैत यवाम वपुर्गतिगता कानिमाहात्म्ये ते मेघ० १५ (पाठान्तर) 3 मार डालना, (यज्ञ में पशु का बलिदान करना -गदम पशुपालम्भ-याज्ञ० ३।२८०, उष 1 ज्ञानता, समग्रता, देवता प्रत्यक्ष ज्ञान प्राण्य करना पद्य० १।३६ 2 निष्चय करना, मान्य करना कृति यदुपलभ्यम् उन्न० १ नरवल एनायुपलभ्ये श० १ 3 हासिल करना, प्राण्य करना, अर्पण करना उपयोग करना, अनुभव प्राण्य करना उपलब्धमुच्यन्ता इत्य वपुषा भ्वेन निवात्र-निर्वाति कु० ४।६२, विक्रम० २।१० रघु० ८।८०, १०।१ १८।१, मन० ११।१३, उषा 1 कम्पनमाना, बुरा भला कहना, बधती बान कहना, बरी वादी मुनाना पवाधर्गकम्पारिणुकपात्मनी योवनमुपालम्भ्य मा किमुपालम्भे श० १, कु० ५। ५८, रघु० ७।४४, नि० १।६०, प्रति-1 बसूल करना, फिर से उपलब्ध करना 2 हासिल करना, प्राण्य करना, शिष्य-1 ठगना, धोखा देना, शीश में पुन हासिल 2 बसूल करना, फिर से प्राण्य करना 3 अर्पण करना, अनादर करना, लक्ष् हासिल करना ।

लम्बन् [लम् + ल्युट्] 1 हासिल करने की क्रिया, प्राण्य करना 2 प्रत्यय (पक्षानने) की क्रिया ।
 लम्बः [लम् + ल्यप्] 1 दौलत, धन 2 जो निर्वेदत करता है, निर्वेदक, -सद्य, चाडे को वाचने की हस्तौ (पु० भी) ।
 लम्ब्य (वि०) [लम् कर्मणि यत्] 1 प्राण्य होने के योग्य, पहुँचने के योग्य अर्पण होने या प्राण्य करने के योग्य प्राण्यलम्बे फले लोभाद्वाहुरिब धामन -रघु० १।३, वि० कु० ५।१८ 2 विभने के योग्य -कु० १।४० 3 योग्य, उपयुक्त, उचित 4 सुयोग्य ।

लम्बकः [लम् + क्वन्ट्, रथ लत्त्वम्] प्रेमी, आर (उपपत्ति) ।
 लम्बट् (वि०) [लम् + अट्, वृष्, रथ ल] 1 लालची, लोभ्य, माहायि 2 विपयो, विलासी, कामुक, भ्रमरनी, इन्द्रियपरायण, टः स्नेहभाचारी दुर्बलरिष, दुर्गचारी ('लम्पाक' शब्द भी इसी अर्थ में) ।
 लम्बः [लम् + घञ्] कूट, उछाल, छलांग ।
 लम्बलम् [लम्ब + ल्युट्] कृपना, उछलना ।

लम्ब्य (धा० वा० लम्बते लविन्) 1 लटकना, टागना, बोलामान होना शूचयो ह्य लम्बन्ते महा० 2 अनुपक होना चिपकना, महारा लेना, क्षासित होना-लम्बिने सदमि लता प्रिया इव शि० ७।७५, प्रस्थान ते कश्चपि सखे लम्बमानस्य भावि-वेद्य० ६१ (यहा लो का अर्थ है 'नीचे लटकता हुआ' वा 'कन्ना का महारा लिये हुए') 3 नीचे आना, इदना, (सुयं भादि का) लम्प होना वा इदना, नीचे गिरना लम्बमाने दिवाकरे-नि० १।३०, कि० १।१, त्वद-धरन्वनलम्बिनकप्रबलमकम्बलय प्रियलोचने नी० १० (= गलित्) 4 पीछे गिरना वा पडना, पिछड़ना 5 विलस करना, उठरना 6 ध्वनि करना प्रेर० (लम्बयति-ते), 1 हराना, नीचे लटकाना 2 ऊपर लटकाना, स्थगित करना 3 बिछाना, (हाथ भादि) फैलाना करेण बाण्यनलम्बिते रघु० १३।२१, को लम्ब्येदाहरणाय हस्तम् ६।७५, अथ-1, लटकना, लटकाना, स्थगित होना -कनकभूषणलावकनिमी -मुद्रा० २ 2 नीचे बूब जाना, उतरना 3 धामना, मुदना, झुकना वा सहारा लेना, पालनपोषण करना -दण्डकाण्डमथलम्ब्य स्थित श० २, यथी तदीया-मवलम्ब्य चाङ्गुलिम्-रघु ३।२५ 4 धामना, सहायता, पालनपोषण करना, जीवित रहना (आल० से श्री) ले लेना ह्यनेन तस्मात्तलम्ब्य वास रघु ७।१, कु० ३।५५, ६।६८, हृदयं न त्ववलिम्बितुं शामा -रघु० ८।६० 5 निर्भर रहना, टिकना-स्वयहारोऽयं धार-दत्तमवलम्बने मूष्ण० १ अर्द्धि० १८।४१ 6 सहारा लेना, आश्रय लेना, भरोसा करना, शैर्बकलम्ब्यं बर्षं वा साहस्य ते काम लेना, -किं स्वातन्त्र्यमवलम्बते-श० ५, आभ्यस्वमिष्टेऽथवलम्बतेऽर्जुं कु० १।५२, शि० २।१५, आ 1 आराध करना (किन्ती के सहारे) झुकना 2 लटकना, स्थगित होना विक्रम० ५।२, 3 हृषियाना, पकड़ना-अचालम्ब्य धनु रामः-अर्द्धि० ६।३५, १४।१५ 4 पालनपोषण करना, धामना, उत्तर हासिल्य लेना आधोरपालम्बित-रघु० १८।३९ 5 निर्भर होना-तयात्तलम्ब्य रसोदगमान्-सा० ६० ६३ 6 सहारा लेना, आश्रय लेना, हाथ पकड़ना, धारण करना -अनुवेधार्थंतालम्ब्य न विधीविधा-मुद्रा० २।२०, कि० ७।३४, उष-1, अदा होना, शीमा लडा

होना,—वादेमकेन वापने द्वितीयेन च भूतले, तिष्ठाद्यभ्यु-
स्वामिन्तस्तावद्वीर्यमिति भास्कर मूच्छ० २।१०
वि०— 1 लटकना, लटकना, स्थगित होना मू०
१०।६२ 2 बस्त होना, बीज होना (सूर्यादि का)
3 उहरना, पिछडना, रह जाना—कु० ७।१३,
4 देर करना, मन्दगति होना—विस्मितकर्म काल
निमाय स मनोरथे—रघु० १।३३, कि विलम्ब्यते त्वरित
त प्रवेद्यथ—उत्तर० १।

लम्ब (वि०) [लम्ब्+अच्] 1 नीचे की ओर लटकना
हुआ, झूलता हुआ, लम्बमान, दीर्घायमान पाण्डुरो-
ग्रमसापितलम्बह्वार—रघु० ६।१०, ८४, मेव०
८४ 2 लटकना हुआ, अनुपकन 3 बड़ा, विस्तृत
4 विलीन 5 लंबा, ऊँचा,—कः 1 लम्बमापक
2 सह-अल-रेखा, किसी स्थान के ऊर्ध्वविन्दु और दृग्-
विन्दु का मध्यकर्त्ता थाप, अक्षरेखा का पूरक । सम०
—उत्तर (वि०) बड़े पेट वाला, लीटवाला, स्थूलकाय
भारीभरकम (रः) 1 गणेश का नामानर 2 भोजन
मट्ट, -बीजः (सम्बो-बी-भ्यः) ऊँट,—कर्मः 1 गधा,
2 बकरा 3 हाथी 4 बाज, शिकरा 5 पिनाच,
रासस,—उत्तर (वि०) मोटे पेट वाला, भारीभरकम,
—पथीभरा वह स्त्री जिसके स्तन भारी हो और
नीचे की लटकते हों,—सिक्क (वि०) जिसके नितब
भारी और उभरे हुए हों ।

लम्बकः [लम्ब्+कन्] (धा० में) 1 लम्बरेखा 2 अक्षरेखा
का पूरक, (धा० में) सह-अक्षरेखा ।

लम्बकः [लम्ब्+ल्यट्] 1 शिव का विशेषण 2 कफ-प्रधान
प्रकृति, मू० 1 नीचे लटकना, निर्मल रहना, उतरना
आदि 2 सालर 3 (चन्द्रमा के) देशान्तर में स्थान-
भ्रम 4 एक प्रकार का लंबा हार ।

लम्बा [लम्ब्+टाप्] 1 दुर्गा का विशेषण 2 लक्ष्मी का
विशेषण ।

लम्बिका [लम्ब्+ल्यन्+टाप्, ह्यच्] कोमल तानुका
लटकता हुआ मांसल भाग, उपजिह्वा, कण्ठ के अन्दर
का कोबा ।

लम्बित (म० क० क०) [लम्ब्+कत्] 1 नीचे लटकना
हुआ, झूलता हुआ 2 स्थगित 3 दबा हुआ, नीचे गया
हुआ 4 मरारा गिये हुए, अनुपकन (रें० लम्ब) ।

लम्बुषा (स्त्री०) सात लक्षियों का हार ।

लम्बः [लम्+षञ् नृन्] 1 सिद्धि, अवधि 2 मिलाप
3 पुन प्राप्ति 4 लाभ ।

लम्बनम् [लम्+ल्यट्, नृन्] 1 सिद्धि, अवधि 2 पुनः
प्राप्ति ।

लम्बित (म० क० क०) [लम्+कत्, नृन्] 1 उपार्जित,
हासिल, प्राप्त 2 दरा, 3 मुभारा हुआ 4 नियुक्त,
अप्यक्त 5 सयोग 6 कड़ा गया, मरौचित ।

लम् (धा० आ० ल्यप्ते) जाना, झिलना-झूलना ।

लम्ब [लो+अच्] 1 विपकना, मिथिल, लम्बा 2 प्रच्छन्न,
छिपा हुआ 3 मगलन, पिपकना, धो-ध 4 अर्धमन,
विषटन, कुपाना, विनाग, लम्ब या विषटिन होना,
मट्ट हुआ 5 मन की लीनता, यत्न एकाग्रता अनप
भक्ति (विगी भो पदार्य के प्रति)—लघ्वन्ती शिवकल्पिय
लयवगादा मानमध्यगतता—मा० ५।२, ३, प्यानलयन
—गौ० ४ 6 मयोग की लम् (लौन प्रहार की
—इत, माय और विलंबित)—त्रिसत्ये सत्येतित्रि
पार्णिनि—रघु० १।३५, पादप्यासां लयानुप
—मा० १० २।७ 7 मयोग में विश्रान 8 आराप
9 श्रियाम म्यान, आराप, निबाम—अन्वया—शि०
५।५७, 'कोटि शिखर निबाम न म्बने हुए, धूमने हुए'
10 मन की शिथिलता, मानसिक अकर्मण्यता
11 आलस्य । सम०—आरम्भ,—आलम्भ, पात्र,
अभिनवा, नर्तक, कालः (मृष्टि का) प्रलयकाल,—सत
(वि०) विषटिन, पिपकना हुआ,—पुत्री नदी, अभिनयो,
नर्तकी ।

लम्बकम् [ली+ल्यट्] 1 अनुपकन होना, झुटना, विपकना
2 विश्राम, आराम 3 विश्रामस्थल, घर ।

लम्बं (धा० पर० लर्जनि) जाना, झिलना-झूलना ।

लम्ब (धा० उभ० लजनि—ले) खेलना, शोभा करना
इत्यादिना, क्रिजोल करना पनमकलातीव बानरा
लजनि मूच्छ० १।८, शत्रुकला एक वन्या लकाय
५।२८ ।

॥ (धृग० उभ० या पेश० लाजयति ले लाजिनः
खेलने की प्रेरणा देना, पुष्पकारणा, लाज-पार करना
हुलाय करना प्रेरणापिपन करना लाजने बहवा
दोषाभ्यासने बटवा गुणा, तस्मात्पुत्र च शिष्य च
लाजयेत् नु लजयन्तु मुभा० कु० ५।१५) इच्छा
करना ।

॥ (धृग० उभ० लाजयति ले) 1 लाजप्यार
करना, मूच्छ० १।२८ 2 जीम लजपवाना 3 इच्छा
करना ।

लम्ब (वि०) [लम्+अच्] 1 श्रीहासकन, विदार श्रिय
2 लजपवाने वाला 3 अजिजाबी, इच्छुक । सम०
बिह्व—लजजिह्व, जीम से लजप करने वाला ।

लजन्तु (वि०) [लम्+ल्यन्] 1 खेलने वाला, विहार करने
वाला 2 लजकाला हुआ । म० बिह्व (वि०)
(लजजिह्व) 1 जीम से लजपवाने वाला 2 दर
भीषक (ह्यः) 1 कुता 2 ऊँट ।

लजन्तुम् [लम्+ल्यट्] 1 श्रीहा, खेल, आमोद, रगोनी
2 जीम बाहर निकालना ।

लज्जना [लज्+ल्यट्+टाप्] स्त्री,—वाट नाकलाक-
लजनाभिर्गविरलगत रिरसके वि० १५।८

2 स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3 जिह्वा । सम०--प्रियः
ददक का पेड़ ।

सल्लसिका [सल्लना + कन् + टाप् इत्वम्] छोटी स्त्री, अभागी
स्त्री - काम्या० ३५० ।

सल्लसिका [सल् + सन् + डीप् + कन् + टाप्, ह्रस्व]
1 लकी माला 2 छिपकमी ।

सल्लक [सल् + प्राकन्] पुत्र का स्त्रिय, जननेन्द्रिय ।

सल्लटम् [सल् + अच् इत्थ ल, सल्लमटिन् अट् + अच् वा]
मन्त्रक लिखितवापि सल्लटे प्राञ्जित् क समर्थ
- हि० १।२१, न० १।१५ । सम०--अल्ल भिव का
विशेषण, तदम् मन्त्रक का इजान, माथा, -षट्,
वृत्तिका 1 मन्त्रक का सपाट तल 2 (नेत्रग) सिरो-
केटन, चिमूकट, सिर की चोटी, केरावय, -लेखा
मन्त्रक की रेखा ।

सल्लटकम् [सल्लट + कन्] 1 मन्त्रक 2 सुन्दर माथा ।

सल्लटलाप [वि०] [सल्लट + लप् + ल्यप्] 1 (मन्त्रक)
को जलाने या लपाने वाला सल्लटलपसलपति लपन
मा० १, उतर० ६, 'सुयं ज्ञानं टीकं सिर पर कथक
ग्राहं' -सल्लटलपसलपति -स्य १।३५ 2 (अन)
बहुत पीडाकार -निषित्वाटन्यपतिट्टाक्षरा न०
१।३३८, -घः सुयं ।

सल्लटिका [सल्लट + कन् + टाप्, इत्वम्] 1 मन्त्रक पर
पढ़ना जाने वाला आभूषण, टीका 2 मन्त्रक पर
चन्दन का या अन्य किसी सुगंधित वर्ण का तिलक
कृ० ५।५५ ।

सल्लटल [वि०] उग्रन और सुन्दर मन्त्रकवाला ।

सल्लाय [वि०] (स्त्री० - की) [सल् + शिष्य, इत्थ ल्यप्,
तम् अस्मिन् अम् + अच्] सुन्दर प्रिय, मनोहर,
- भव मन्त्रक का आभूषण, टीका, सामान्य अलंकार
(इस अर्थ में पृ० भी) -अहं तु सामाध्यात्मलाभमूला
पकुन्तलाभिहित्य श्रुत्वाभि -घ० २, सि० ५।२८
2 कोई भी श्रेष्ठ वस्तु 3 मन्त्रक का तिलक 4 चिह्न,
प्रतीक, तिलक 5 श्रद्धा, पताका 6 पत्ति, माला,
रेखा 7 पृष्ठ 8 अजान, घरदन के बाग 9 प्राधान्य,
मयांश, सौन्दर्य 10 मीग, -घः चोडा ।

सल्लायकम् [सल्लाय + कन्] कुली का पत्रता जा मन्त्रक पर
धारण किया जाता है ।

सल्लायन् [सल् + इदन्] 1 अलंकार, आभूषण,
2 (अत) कोई भी अपने प्रकार की श्रेष्ठवस्तु
-कन्याललाभ कमनीयमज्जय लिप्सी -स्य० ५।६४
'कन्याओ में श्रेष्ठ वा अलंकारमूल' 3 सरा पताका
4 साम्प्रदायिक चिह्न तिलक, मकेल, प्रतीक
6 पृष्ठ ।

सल्लित [वि०] [सल् + ल] 1 श्रीशामक, लेलने वाला,
इलाने वाला 2 श्रुतारप्रिय, श्रीशायि, स्वेच्छा-

धारी, विषयामक 3 प्रिय, सुन्दर मनोहर, प्राबल,
- सन्धीयाललितललनेरयोत्साप्रायेरकुश्रिभविष्यमि
(अर्थकैः) उतर० १।२०, विषय मृष्टि ललिताना
विषयु -स्य० ६।२७, १५।३९, ८।१, मा० १।१५,
कृ० ३।७५, ६।६५, मेघ० ३२, ६४ 4 मुद्रावना,
लाभ्यवयव, शक्तिर, बहिषा -प्रियमिया ललिते
कलाविधौ -स्य० ८।६३, सदसिनेव अलितानिनयस्य
शिशा -मालवि० ६।१, विक्रम० २।२८ 5 अशोष्ट
6 मृदु, कोमल सि० ३।६४ 7 परचराला हुवा,
कम्पायमान, -स्य० 1 क्रीडा, रगनेली, नेत्र 2 श्रुतार
परक विनाद, यतिशक्ति, मित्रयो में प्रीति विषयक
हावभाव - सि० ९।७९, कि० १०।५० 3 मोन्दर्य,
लाभ्य, आरपण 4 कोई भी प्राकृतिक या स्वाभा-
विक क्रिया 5 सगलता, मोलाजान । सम०--अर्थ
(वि०) सुन्दर या प्रीतिविषयक अर्थ वामा वित्रम०
२।१४, षड (वि०) प्राबलरचनामुक्त -प्र० ३,
प्रहृष्टः मृदु वा कोमल आघात ।

सल्लिता [सल्लि + टाप्] 1 स्त्री 2 स्वेच्छाचारिणी
स्त्री 3 कन्दूरी 4 दुर्गा का एक रूप 5 विभिन्न
छन्दों के नाम सम, पञ्चमी आश्विनमुखल का पाचवीं
दिन, - सप्तमी भाद्रपद के शुक्लपक्ष का सातवां दिन ।

सल्लः [ल + अच्] 1 उज्ज्वल, उल्लुचन 2 कडाई,
(पके अनाज की) लाकनी 3 अनुभाग, टुकड़ा, लच्छ,
कवल या पाग 4 कण, रूंद, गीत, मयांश, घोडा (इस
अर्थ में प्राय समास के अन्त में -अल्लसल्लय - मेघ०
२०, ७०, आचामति स्वेदलसल्लं सुमे ते -स्य० १, ३,
६।५७, १६।६६, अशु० १५।१७, अमृत० -कि० ५।४४,
भूषेपलसमीलवकीने दास इव गीत० १।, इक्षी
प्रकार नृणं, अपराधं शानं, सुखं धनं वादि
5 ऊन, पलम 6 क्रीडा 7 समय का सुकम विभाग
(- एक निषेध का छटा भाग) 8 किसी मित्र राशि
जस 9 (ज्योति० में) घान 10 हानि, विनाश
11 राम का एक पुत्र, यमल (कोडवा) में से एक -
दूग्ने का नाम कुश था, लव का अपने भाई
कुश के साथ दाम्पतिक मुनि के हाग वालनपोषण
हुवा, महाभ्यल वादि स्थानों में पाठ करने के लिए
दोनों को महा कवि हाग रामायण की शिक्षा दी गई,
(इस नाम की श्यपति के लिये दे० स्य० १५।३२),
स्य० 1 मीग, 2 आयफल, स्य० (अर्थ०) कुछ,
कोडा मा -लवमयि लवज्जे न रमते -सरस्वती० १ ।

सल्लयः [ल + अच्] मीग का पीथा हीपालराजील-
लवहसपुत्रे -स्य० ६।५७, ललित लवहसलला परि-
धीनन कोयल लवयसरीरे ६, १, -स्य० लीध ।
सम० -कलिका लीध ।

सल्लयकम् [सल्लय + कन्] लीध ।

सबब (वि०) [सू+स्युट्, पू०० नत्वम्] 1 शारीर, सलाना, नमकीन 2 प्रिय, मनोहर, भा: 1 सारी स्वाद 2 नमकीन पानी का समुद्र 3 एक राक्षस का नाम, मयुका पुत्र. यह शत्रुज के द्वारा मारा गया था रघु० १५१२, ५, १६, २६ 4 एक नरक का नाम, जम् 1 नमक 2 समुद्री नमक, लूण 3 हृदयि नमक 1 सं०-अल्लकः शत्रुज का विशेषण,—अश्विः सारी समुद्र, "अम् समुद्रीनमक,—अम्बुराशिः समुद्र,—आमोनि बेला लवणाम्बुराशि—रघु० १३१५, विष्णु० १११५, अम्बु (पु०) समुद्र—रघु० १२७०, १७५५, (नपु०) नमकीन पानी,—आकटः 1 नमक की मात्रा 2 नमकीन जलाशय अर्थात् समुद्र 3 (आल०) लावण्य की मात्रा—आकथ्य. समुद्र, उत्तमम् 1 तथा नमक 2 यज्ञसार,—उद् 1 समुद्र 2 नमकीन पानी का समुद्र,—उद्बक,—उद्बधिः—अलः समुद्र,—सारम् एक प्रकार का नमक, वेहः एक प्रकार का मृषरोग, समुद्रः नमकीन समुद्र, सागर ।

सबषा [सवण+टाप्] कानि, सौन्दर्य।

सबषिचम् (पु०) [सवण+इमिचिप्] 1 नमकीनपना लावण्य 2 सौन्दर्य, मनोहरता, चाकला ।

सबबम् [सू भावे कर्मणि च ल्युट्] 1 लुनाई, लावनी, (पके अनाज की) कटाई 2 काटने का उपकरण, दरानी, हँडिया ।

सबली [सव+ला+क+डीप्] एक प्रकार की लता,—यथा लव्यः पालिलितलवलीकल्पलिन उतर० ३५० ।

सबिचम् [स्यतेजने+सू+इज] काटने का उपकरण, दरानी, हँडिया ।

सब् (सुरा० उभ० लसयति ते) किसी कला का अभ्यास करना, तु० 'लस' ।

सब् (सु) कः,—सम् [अथे उन्नत्, लघरच] सहजुन,—रसिलरसागममहितां गण्ठेनोपेय लसुन इव सं० (=भामि० १८१), यद्—सीरम्यलसुन—भामि० ११३३ ।

सब् (म्भा० विधा० पर० लयति, लयति, लपित) बाहना, इच्छा करना, साक्षात् होता, उत्सुक होना (प्राय 'अवि' उत्सर्ग के साथ), अवि—, बाहना, इच्छा करना, साक्षात् होता—मानुषानिमिलयति—भट्टि० ५५२२, तेन दत्तमनिकेशुरङ्गनाः—रघु० १९१२३ ।

सबित (पु० क० कृ०) [लप्+स] बाहा हुआ, भाञ्जित ।

सब्बः [लप्+वृ] नाटक का पात्र, अभिनेता, नट, नर्तक ।

सब् (म्भा० पर० लसति, लसित) 1. चमकना, दमकना,

जगमगाना,—मुक्ताहारोप लसना हुसतीव स्तनद्वयम्—काव्य० १०, कर्वाणि चरणद्वय सरसलसदलकलकराय—गीत० १०, अमर १६, नै० २२५३ 2 प्रकट होना, उगना, प्रकाश में आना 3 आलिंगन करना 4 खेलना, किलौल करना, उद्यम-कूट करना, माचाना प्रेर० (लाभयति ते) 1 चमकना, घोषा बजाना, झलकृत करना 2 नचाना 3 कला का अभ्यास करना, उच् , 1 कीडा करना, खेलना, लहगाना, फरकडाना वि० ५५७७ 2 चमकना, जगमगाना, देदीप्यमान होना—उत्पलमकाञ्चनकुण्डलाग्रम्—वि० ३५५, ३३, ५११५, २०५६६ 3 उदित होना, उगना मि० ४५८८, ६१११, मा० १३८८ 4 फूँक मारना, मूलना, विस्फोर्ण होना, (प्रेर०) रोजनी करना, उज्ज्वल करना, धरि—, चमकना, मुन्दर लगना, वि—, 1 चमकना, जगमगाना, देदीप्यमान होना,—विपति च विलासत नद्विदुविलसति चन्द्रमसो न यद्दन्त्य—भट्टि० १०६८, मेघ० ४७, रघु० १३७६ 2 दिखाई देना, उदय होना, प्रकट होना प्रेम विलसति महलदहो वि० १५१५, ९१ ८७ 3 कीडा करना, मनोविनोद करना, खेलना, किलौल करना,—कापि धपयाम यमुदियुगा विलसति यमनिर्गच्छकुणा गीत० ७, हरिश्चिद् मन्थचपुनिकरे विलासिनि विलसति कोकिले गीत० १, 4 अविन करना, बूँटना, प्रविष्ण्विन करना ।

सत्ता [ससनि-लम्+अच्+टाप्] 1 जाकरान, केसर 2 हत्ती ।

सत्सिका [सम्+अच्+कन्+टाप् इश्यम्] बृक सार ।

सत्सित (पु० क० कृ०) [लम्+स] खेला, कीडा की, दिखाई दिया, प्रकट हुआ, इधर उधर उछल कूट करने वाला, दे० 'लस' ।

सत्सीका [लम्+डीप्+कन्+टाप्] 1 बृक 2 पीप, मवाद 3 ईप का रस 4. टीके का रस ।

सत्सृ (म्भा० सा० लज्जते, लज्जित) 1 धमिन्दा होना, लज्जा अनुभव करना (बहुधा करण० या तुमुन्त के साथ)—स्वीयत प्रहलन्कथ न लज्जसे—रत्न० २, भट्टि० १५३३ 2 धमिन्दा, लज्जाना प्रेर० (लज्जयति—ते) लज्जित करना—रघु० १९१५, वि—, धर्मिका, या विनीत होना, सकोष करना—यथाशुक्राक्षेप विलज्जितानां—कु० १११५, रघु० १५२७ ।

सत्स (वि०) [लप्+स] 1 आलङ्कृत, मूषपाशवद् 2 दस, कुशल ।

सत्सकः [सत्स+कन्] वनुष का मध्यभाग, वह भाग जहाँ हाथ ठे पकड़ा जाता है ।

सत्सकिम् (पु०) [सत्सक+इति] वनुष ।

सत्सरिः—री (स्त्री०) [सिन् इत्येण इव हिष्यते ऊर्ध्व-पयनात् स+इ+इत्, पञ्जे डीप्] सहर, उरण, बड़ी

लहर, झारु—करेबोरिस्थानसे जननि विषयस्तां
लहरय—गया० ४०, इमा वीचमहरी जगन्नाथेन
निर्मिताम्—५३, इसी प्रकार जानन्द, तपसा, मुषा
आदि ।

ला (सदा० पर० लाति) सेना, प्राप्त करना, ग्रहण करना
महात्मना—सम्बु अज्ञान्—मट्टि० १५१२, १५१३ ।
लाकुटिक (वि०) (स्त्री०-की) [लकुट प्रहरणमस्य ठक्]
लाठी या सोटे से मुसज्जिन, कः सन्तरी, पहरेदार
पञ० ४ ।

लासकी (स्त्री०) सीता का नाम ।

लास्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [लक्षणया बोधवति
ठक्] 1 वह जो चिह्न या निधानो से परिचित हो
2 विशिष्ट, सकेतक 3 गीत अर्थ रखने वाला, गीत
अर्थ में प्रयुक्त (शब्द आदि—लक्षक जो वाक्य और
व्यक्त से भिन्न हो)—स्थापनाको लास्यिक सम्बो-
दाय व्यञ्जकत्विका—काव्य० २ 4 गीत, निरूप्य
5 पारिभाषिक.—कः पारिभाषिक शब्द ।

लास्य (वि०) [लक्षण यति ज्य] 1 चिह्न सबधी,
सम्बोधोपेक 2 लक्षकों का ज्ञान, लक्षण या सकेतो
की व्याख्या करने के योग्य ।

लासा [लक्ष्यतेजसा लक्ष+अच्, एधो० वृद्धि] एक
प्रकार का लास रंग, महाशर, लाक्ष (प्राचीनकाल में
यह निचबो की एक प्रसिद्धिमान सामग्री थी, वे इससे
अपने पैर के तन्बे तथा मोष्ठ रंगी थी, तु० 'अल
कम्') कहते हैं कि बीरबहूटी नामक कबीरे में अक्षया
किमी विशेष बूझ की रास से यह रंग तैयार किया
जाता था)—निष्पत्तेश्वरगोपमोचकुम्भो माझारस
केनचित् (तरणा)—शं० ४१५, श्रुतु० ११३, कि०
५१३ 2 'बीरबहूटी' जिससे यह रंग बनता है ।
सम० तथः क्लमः एक बूझ का नाम, पलास, डाक
प्रसाधः—प्रसाधनः सास मोघबूझ, रक्त (वि०)
लास से रया हुआ ।

लासिक (वि०) (स्त्री०-की) [लासा+ठक्] 3 लास
से संबंध रखने वाला, लास से बना हुआ या रया
हुआ 2 एक लास (सम्बन्ध) से संबंध ।

लास्य (म्वा० पर० लासति) 1 मुझ जाना, नीरस होना
2 ललकृत करना 3 पर्याप्त होना, लज्जित होना
4 प्रदान करना 5 टोकना ।

लास्यिक (वि०) [लस्य+ठक्] दे० 'काकुटिक' ।

लास्य (म्वा० ला० लासते) बराबर होना, पर्याप्त होना,
लज्जित होना ।

लास्यम् [सधोर्वाय, अच्] 1 बल्यता, झुझता 2 लज्जता,
हलकापन 3 अधिचार, विकल्पता 4 अल्प्यता
5 अनादर, बूझा, अनादर, अपरिच्छा—तेषां लास्य-
कारिणी इतदियं स्थाने स्मृति विभु—मुद्रा० ३११५,

मग० २१३५ 6. पूर्ति, वृत्ती, वेग 7 क्रियाधीनता,
दसता, तत्परता—हस्तलास्यम् 8 सर्वतोमुखी प्रतिमा
—वृद्धिलास्यम् 9. सद्येय, (अध्ययित की सज्जयता)
10 (कविता में) भाषा की कमी ।

लास्यलम् [लस्य+अच्, एधो० वृद्धि] 1 हल 2 हल कः
शकल का जहतीर 3 ताक का बूझ 4 शिष्य, लिग,
5. एक प्रकार का फूल । सम०—अः—अः सिमान,
—अः—हल का लट्ठा, हलत,—अः—अः बरतार का
नामान्तर,—पद्धतिः (स्त्री०) बूझ, हल से बनी रेखा,
सीता,—आकः हलकी फाली ।

लास्यलित् (पु०) [लास्यल+इति] 1 बलराम का नाम
—अन्वेषिता समरविजयो लास्यली या सिबेवे—मेघ०
४९ 2 नारियल का पेड़ 3 साप ।

लास्यली [लास्यल+अच्+कीय] नारियल का पेड़ ।

लास्यलीला [लास्यल+लीला] हलस, हल का लट्ठा ।

लास्यलम् [लस्य+उत्थल्, वा० वृद्धि] 1. पूंछ 2. शिपन,
लिग ।

लास्यलम् [लस्य+उत्थल् एधो०] 1. पूंछ—लास्यलम्बल-
नारः रणापातम्—'स्वा पिष्टदत्त कुन्ते—वृत्त०
२१३, कुता पूछ हिलाता है 2. शिपन, लिग ।

लास्यलित् (पु०) [लास्यल+इति] बन्तर, झरूर ।

लास्य, लास्यम् (म्वा० पर० लासति, लास्यति) 1 कलक
समाना, निम्ना करना 2 भूतना, तलना ।

लास्य [लास्य+अच्] गीला धान,—आः (ब० ब०) मुना
हुआ, या तारा हुआ धान (स्त्री० भी) —(ठ)
अवाकिरन्नालस्ता प्रभूनेराचारलावेरिपु—वीरकथाः
—रघु० २११०, ५१२७, ७१२५, कु० ७१९९, ८० ।

लास्यम् (म्वा० पर० लासति) 1 भेद करना, चिह्नित
करना, विशिष्ट बनना 2 सबाधा, असकल करना ।

लास्यलम् [लास्य कर्मणि ल्यट्] 1 चिह्न, निदान, विधानी,
विशिष्टताघोषक चिह्न—नयापुदानीकमुहूर्तलास्यने
(धनुषि)—रघु० ३१५३, प्रायः समास के अन्त में
'चिह्नित' 'विशिष्टीकृत' अर्थ बतलाने के लिए—जाटः
य देवस्य तथा विद्याहमहोत्सवे हाहसलास्यलस्य
विक्रमांश० १०१२, रघु० ५११८, १५१८४, इसी
प्रक. श्रीकण्ठरसाञ्जन' वा० १, 'श्रीकण्ठ' विशेष्य
को धारण करते हुए 2 नाम, अधिधान 3. शब्द,
बन्धा, अर्पणीत का चिह्न 4. चरित्र का कर्षक
(काला बन्धा) कु० ७३२५ 5 सीमान्त ।

लास्यलित (वि०) [लास्यल+इति] 1 चिह्नित, अन्तरवृत्त,
विशिष्ट 2. नामी, नामक 3 चिह्नित 4. मुसज्जित ।
लाट (पु०, ब० ब०) एक देव और उसके अधिवासियों
का नाम—एष च (लाटानुवाच) श्रावेष लाटव-
धियस्वात्काटानुवाचः—शा० द० १०,—दः 1. लाट
देव का राजा 2. पुराने बीबीबीयं बरच 3. कपड़े

4 बच्चों जैसी भाषा। सम०—अनुप्रासः अनुप्रास अलंकार के पाँच भेदों में से एक, शब्द या शब्दों की पुनरावृत्ति उसी अर्थ में परन्तु विभिन्न प्रयोग के साथ, सम्मत् ने उसका सोदाहरण निरूपण किया है—
 शब्दस्तु सादानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रत उदा०
 बदन बरवधिप्यास्तस्या, साथ सुधाकर सुधाकर नव
 न पुन कलङ्कविकलो भवेत्—या—यस्य न तविषे
 दयिता दबदहनस्तुहिनदीधितस्तस्य, ग्रम्य च तविषे
 दयिता दबदहनस्तुहिनदीधितस्तस्य काव्य० १।

साटक (वि०) (स्त्री०—टिका) [साट्+कुन्] साट देना से सबद्ध।

साटिका, साटी [लट्+भृल्+टाप्, इत्वम्, साट्+अच्+ओष्] रचना, की एक विशेषी सी—दे० सा० दे० १२१ 2 एक प्राकृतिक बोली का नाम दे० काव्या० १३५।

साट् (पू० उभ०) लाटयति ते) 1 लाटप्यार करना, पुचकारना, दुलारना 2 कलङ्कित करना, निन्दा करना 3 फेंकना, उछालना—तु० 'लट्'।

साठनी (स्त्री०) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी ।
सात (मू० क० कू०) [सा+क्त] लिया, ग्रहण किया।
सात् [लप्+घञ्] 1 बोलना, बातें करना 2 किल-किलाना, तुलना कर बोलना।

सावः, सावक [लृ+घञ्, पृषो०] एक प्रकार का लवा पत्थी, बट्टर।

सावुः (वूः) (पू०) एक प्रकार की लोकी, तुमही।
सावुकी (स्त्री०) एक प्रकार की सारंगी।
सावः [लभ्+घञ्] 1 उपलब्धि, शक्ति, अर्वादि, अधिग्रहण—यारोत्पायमात्रेण शुद्धिलाभमन्यत—रघु० १२।१०, स्त्रीरत्नलाभम्—७।२४, ११।१२, लयमप्य-वतिष्ठते स्वसन् यदि जन्तुर्न लाभवानसौ—रघु० ८।८० 2 तथा, मुनाफा फायदा मुक्तदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ भग० २।३८, यात्र० २।२५१ 3 मुसोपभोग 4 लट का माल, विजित प्रदेश 5 प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी, संबोध। सम० कर, कृन् (वि०) सामकारी, फायदेमद,—लिप्सा लाभ की इच्छा, लोभुपता, लालच।

सावकः [लाभ+कन्] फायदा, मुनाफा।
सावककम् [ला+क्विप्, ला आदीयमाना मज्जा सारो यस्य व० सं०, कृप्] एक सुगन्धकृत घास विशेष की जड़, बस, वोरचमूल।
साम्यदधम् [लभ्यट्+घञ्] सम्यदता, कामुकता, भोगासक्ति।
सालम् [लत्+स्युट्] 1 दुलारना, माइ प्यार करना, पुचकारना मुतलालनम् आदि 2 मुष्ट करना, आवश्यकता से अधिक स्नेह करना, आत्मीयजन,

अत्यधिक मात्प्यार—सालने बहबो दोषास्ताइने बहबो गुणा—दे० लत्।
सालस (वि०) [लस्+यद्, लृक् द्वित्वम्, अच्]
 1 अत्यंत लालायित, बहुत इच्छुक, आतुर—प्रधाम-लालसा का० १४, ईशानसद्वर्शनलालसाना—कु० ७।५६, वि० ४।६ 2 आनन्द लेने वाला, मत्त, अनु-रागी, लीन—विलासलालसम्—गीत० १, शोक, मृगया आदि।
सालसा [लस् स्पृहाया यद् लृक् भावे अ] 1 प्रबल इच्छा उत्कण्ठा, बड़ी अभिलाषा, उत्सुकता 2 याचना, निवेदन, अर्घ्यचना 3 संद, शोक 4 रोहद, गर्भिणी स्त्री की इच्छा।
सालसीकम् (नपु०) घटनी।
साला [लत्+णिच्+अच्+टाप्] लार, घूक भर्त्स० २।१। सम०—**लवः मक्कड,—लवः 1** लार बहाना 2 मक्कड।
सालाटिक (वि०) (स्त्री० की) [सलाट प्रभोर्नाल पश्यति ठञ्] 1 मस्तक पर स्थित या मस्तकसंबन्धी 2 भाग्य से मिलना या भाग्य पर निर्भर रहने वाला प्रातिसु लालाटिकी उट्टर 3 निकम्मा, नीच, कमीना, कः 1 साधान सेवक (घा० जी अपने स्वामी की मुखमुद्रा से समझ लेता है कि अब क्या क्या करना आवश्यक है) 2 निडरता, लारवाह, निर्धक व्यक्ति 3 एक प्रकार का आलियन।
सालाठी [ललाट+अच्+ओष्] मस्तक, माथा।
सालिक [लाला+ठञ्] भैया।
सालित (मू० क० कू०) [लत्+णिच्+क्त] 1 दुलार किया गया मात्प्यार किया गया, लालन किया गया, अत्यंत स्नेह किया गया 2 सत्यपथ से विचाराया गया 3 प्रेम किया गया, अभिमलित,—तम् आनन्द, प्रेम, हर्ष।
सालितकः [सालित+कन्] लावला, दुलारता, प्रिय, स्नेह-मात्रन।
सालितकम् [ललित+घञ्] 1 प्रियता, लावण्य, सौन्दर्य, आकर्षण, माधुर्य, दक्षिण पदकालियम्—उट्टर 2 प्रीति विषयक हाव भाव।
सालिन् (पू०) [लत्+णिच्+घिनि] बहुकानेवाला, फुल्लाने वाला।
सालिनी [सालिन्+ङीप्] स्वेच्छाचारिणी स्त्री।
सालिका (स्त्री०) एक प्रकार की माला, हार।
साव (वि०) (स्त्री०-की) [लृ कर्त्तरि घञ्] 1 कानें बाला, मुनाई करने वाला, उभाइनेवाला—मुगामुषिमा-कम्—रघु० ११।४३ 2 उत्पाटन करने वाला, एकत्र करने वाला 3 काट कर विगाने वाला, मारने वाला, मष्ट करने वाला—घट्टि० १।८७,—**कः 1** काटना 2 लबा नामक पत्थी।

सावकः [सु+भृज्] 1 काटने वाला, खर-खंड करने वाला 2 सावनी करने वाला, एकत्र करने वाला 3 सवा, बटेर ।

सावक (वि०) (स्त्री०-की) [सवकं सम्कृतम् अण्] 1 नमकीन 2 सवक से युक्त, सवक द्वारा सम्कृत ।

सावकिक (वि०) (स्त्री०-की) [सवकं सम्कृतं ठण्] 1 नमकीन, नमक से प्रसाधित 2 नमक का व्यापारी 3 श्रेय, सुन्दर, सावक्यमय—वि० १०३२८. (यहाँ इसका अर्थ 'नमक का व्यापारी' भी है), क नमक का व्यापारी, अण् सवक-वाच, नमक का बतलन ।

सावक्यम् [सवक+घञ्] 1 नमकीनपना 2 सौन्दर्य सम्बोधन मनोहृता तथापि तस्या सावक्यं स्वया किञ्चिद्व्यतिरिक्तम् शब्० ६१३३, कु० ७३१८, शब्द० में 'सावक्य' की परिभाषा सूत्राकल्पे साध्यासात्मन-रविमानन्तरा प्रतिमानि यदस्मिन् तत्सावक्यमिहोच्यते । सम० अक्षितम् विवाहिता स्त्री की निन्दा सम्पत्ति को विवाह के अन्तर्गत पर उमे अपने पिता या सास से प्राप्त हुई हो ।

सावक्यमय, सावक्यकम् (वि०) [सावक्य+मयट्, मनुप् वा] श्रेय, मनोहर ।

सावक्यकः [सु+वाचक] प्रथम के निकट एक चित्रे का नाम ।

साविक [साव+ठक्] मेषा ।

सावुक (वि०) (स्त्री०-वा, -की) [सव्, उकल] लोहप, सोमी सालकी ।

सावः [सम्+घञ्] 1 कटना खेजना, उखलना, नाचना 2 प्रेमालिप्त, कोन कोड़ा 3 शिष्यो का नाच, गल-नीला 4 रमा, शो-न ।

सावक (वि०) (स्त्री०-सिपा) [सम्+घञ्] 1 खेपने वाला, किलोल करने वाला, विहार करने वाला 2 इधर उधर घूमने वाला, कः 1. नर्तक 2 घोर 3 बालियन 4 शिष्य का नामान्तर, अण् शोषारा, दूर ।

सावकी [सावक+की] नर्तकी ।

साविका [सम्+भृज्+टाप्, इत्यम्] 1 नर्तकी 2 देव्या, स्नेहभाषारिणी या श्लेषभाषारिणी स्त्री ।

सावस्यम् [सम्+घञ्] 1 नाचना, नृत्य, —सावसे शास्वति कथं सावस्यमनुना...वाचा विनाको यय-भावि० ४१४२, रघु० १६१४४ 2 माने बचाने के साथ नाच 3 वह नृत्य जिसमें प्रेम की भावनाएँ विभिन्न हाथ नाच तथा अर्थावधारों द्वारा प्रकट की जाती हैं, स्वः नट, नर्तक, अभिनेता, स्वा नर्तकी ।

सिञ्जुष [सञ्+उच, प्रो० इत्यम्] दे० 'लज्जुष' ।

सिञ्जा [सिञ्ज्+किल्] 1 स्त्रीक, बूझों के जड़े 2 अल्पत सूक्ष्म नाप (को बार या आठ चतुरेणु के बराबर

मानी जाती है) —आत्मान्तरयते मानो यन्म्याणु दुष्यते रज्ज्, तैश्चतुर्मिर्मैस्त्रिंशसा, या, अन्तरयणोऽप्यो विज्ञेया सिञ्जाका परिमाणत मनु० ८१३३, दे० याज्ञ० ११३६२ मी ।

सिञ्जिका [सिञ्जा+कन्+टाप्, इत्यम्] लृङ् ।

सिञ्ज (मुदा० पर० लिखति, कश्चित्) 1 लिखना, लिख रचना, अन्तरकथन करना, रेखांकन करना, उलकीर्ण करना,—असिक्केषु कश्चित्कश्चिदेव शिरसि मा सिञ्जि मा सिञ्जि मा सिञ्ज उज्जट, ताराखरैर्यामसिते कठिन्या निष्ठाऽसिञ्जद् ध्योनि तम प्रथस्तिम्—नै० २२१५४, याज्ञ० २१८७, शब्० ७१५ 2 रेखाचित्र बनाना, रेखा कीचना, आलेखन, चित्रित करना, रङ्ग भरना—मृग-मदतिरिक्त लिखति सपुलक मृगयिष्य रज्जिनके पीत० ७, मत्साधुष्य विरहृतनु वा भावमयम् लिखन्ती—मेघ० ८५, ८०, कु० ६१४८, स्थिरवा पाथी लङ्गलेसां लिखेत्—काव्य० १० 3 सूरचना, रचना, चिसना, फाड़ देना न किञ्चिद्वृत्ते धरयेन केवल लिखेत् वाचाकुल-सोचना मृगम् कि० ८१४, मूर्त्ता दिवसिमासोकीन्—मट्टि० १५१२२ 4 (शय्यकिया) करना, आल काटना 5 स्पष्ट करना, खरोच पैदा करना 6. (पत्नी की मति) धोँरे मारना 7 चिकना करना 8 स्त्री के साथ सहवास करना, आ—, 1 लिखना, चित्रित करना, रेखाएँ खीचना मश० ११३१ 2 रङ्ग भरना, चित्र बनाना—आनिचित इव सर्वतो रङ्गः—श० १, स्वाभ-लिष्य प्रथयकुपिताम्—मेघ० १०५, रघु० १९११९ 3 सूरचना, छीलना, उड़ , 1 सूरचना, छीलना, फाड़ना, शोषा लगाना शि० ५१२०, मनु० ११२३ 2 पीन डालना, रोगन करना—त्वष्टा विवस्वतमिमेक्ष-सिञ्जेत्—कि० १७४८, रघु० ६३२२, शब्० ६१६३ रङ्ग भरना, लिखना, चित्रित करना—कु० ५१५८ 4 खोदना, काटकर बनाना, प्रति, उत्तर देना, जवाब देना, बचने में लिखना, शि—, लिखना, अन्तरकथन करना 2 रेखांकन करना, रङ्ग भरना, चित्रित करना, चित्र बनाना

सिञ्जकति रक्षि कुरङ्गमयेन भवन्तमसमधूरतम्—पीत० ४३ सूरचना, छीलना, फाड़ना—मन्य सव्या-यमानो सिञ्जकति सयनादुचित स्या सूरजे—काव्य० १०, व्यक्तिसञ्च-चतुष्टेन पञ्चती—नै० २१२, पाषेण ह्यं विकिलेक्ष पीठम्—रघु० ६११५, कु० २१२३ 4 रोगन, अमाना—दि० ४१०२ पाठान्तर, सञ्—, सूरचना, छीलना ।

सिञ्जन्म् [सिञ्ज्+स्युट्] 1 लिखना, अन्तरकथन 2 रेखांकन रङ्ग भरना 3 सूरचना 4 चित्रित दास्यवेणु, मेघ या हस्तलेख ।

सिञ्जित (पू० क० इ०) [सिञ्ज्+किल्] सिञ्जा हुआ, रङ्ग भरा हुआ, सूरचा हुआ भावि दे० सिञ्ज्—सः चिषि या अनेसाव्य के एक प्रयोज का नाम (अथ के साथ

द्वय नाम का उल्लेख मिलता है),—तन् 1. लेख, दस्तावेज 2 कोई पुस्तक या रचना ।

लिपुः [लिपु+ङ] 1 हरिण 2 भूख, दृढ़,--तपु० हृदय ।

लिङ्ग (भ्या० पर० लिङ्गति) जाना, हिलाना-जुलना ।

लिङ्ग 1 (भ्या० पर० लिङ्गति, लिङ्गित) जाना, हिलाना-जुलना, भा-आ,लिङ्गन करना, परिचरण करना ।

11 (पुरा० उभ० लिङ्गवति-ने) रङ्ग भरना, विहित करना 2 किसी सजावट की उसके लिङ्ग के अनुसार रूपरचना करना ।

लिङ्गम् [लिङ्ग+अच्] 1 निधान, चिह्न, निधानी, प्रकृष, बिल्सा, प्रतीक, विभेदक चिह्न, लक्षण—वतिपापिय-लिङ्गधारिणी—रघु० ८।१६ मुनिदोहदलिङ्गदर्शी १।४।१, मनु० १।३०, ८।२५, २५।२ 2 अवास्तविक या मिथ्या चिह्न, वेध, छापबेष, घोसे में डालने वाला बिल्ला—लिङ्गमंद सवृत्तिभिन्नास्ते रघु० ७।३०, क्षणकालिङ्गधारि मद्रा० १, न लिङ्ग पर्यकारणम्—हि० ४।८५, दे० नी० लिङ्गिणु 3, लक्षण, रोग के चिह्न 4 प्रमाण के साधन, प्रमाण, सवृत्त साक्ष्य 5 (तर्क० में) किसी प्रतिज्ञा का विषय 6 लिङ्गचिह्न 7 योनि गुणा पूजास्थान गुणियु न च लिङ्गम् न च वय उत्तर० ४।११ 8 पुत्र्य की जननेन्द्रिय, शिपन

9 (भ्या० में) स्त्री वा पुरुषवाची शब्द पहचानने का चिह्न, लिङ्ग 10 शिवलिङ्ग 11 देवमूर्ति, प्रतिमा 12 एक प्रकार का सबय या अभिपूषक (जैसे कि सयोग, वियोग और साहचर्य आदि) जो किसी शब्द के किसी विशेष सदर्थ में अर्थ निश्चित करने का काम देता है उदा० कुपितो मकरध्वज में कुपित शब्द मकरध्वज शब्द के अर्थ का 'काम' के अर्थ में बंधे कर देता है काव्य० २, तथा तत्सानीय भाष्य 13 (वेदाङ्ग० में) सूच्य शरीर, दृश्यमान स्थल शरीर का अविनश्य मूल शरीर, तु० पंचकोष । सम०

—अधम लिङ्ग की गण, सुगरी,—अनुशासनम् व्याकरण विषयक लिङ्ग ज्ञान, वे दिव्य जिनसे शब्द के लिङ्गों की ज्ञान मिलता है, —अर्धमन् शिव की लिङ्ग के रूप में पूजा,—वेह—शरीरम् नूतम शरीर दे० लिङ्ग (१३) ऊपर,—शारिन् (वि०) बिलाषारी—माजः

1 विशिष्ट चिह्नो का कोष 2 शिपन का न रहना 3 दृष्टिशास्त्र का अभाव, एक प्रकार का व्यक्तियों का रोग, परामर्शी (तर्क० में) विचिह्न की दृढ़ता या विचारना (उदा० 'अनि' का सूचक चिह्न 'पूर्वा' है),—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण, अं या 'लिङ्ग' अर्थात् शिवजी की पिण्डी की स्थापना, बंधन (वि०) पुत्र्य की जननेन्द्रिय में उतनेना पैदा करने वाला,—विषयंयः लिङ्गपरिवर्तन,—दुस्तिः (वि०) पाकट से भरा हुआ, दुस्ति धनं के कापी में पाकट करने

वाला,—वेदी वह आचार जिस पर शिवलिङ्ग स्थापित किया जाता है ।

लिङ्गकः [लिङ्ग+कं+क] कणिक वृक्ष, फेंप का पेड़ ।

लिङ्गम् [लिङ्ग+ङ्] बालिङ्गन करना ।

लिङ्गिन् (वि०) [लिङ्गमस्त्यथ इति] 1 चिह्न या निधान रखने वाला 2 विशेषणयुक्त 3 बिल्सा वा निधान रखने वाला, दिखाई देने वाला, छापबेषी, पाखडी, कुटे बिल्ले लगाने वाला (समाप्त के अन्त में) 3 शक्तिलिङ्गी विदित समाययी यक्षिष्ठर इंतवने बनेचर—कि० १।१, इसी प्रकार 'लिङ्गिन्' 4 लिङ्ग से युक्त 5 मूक शरीरधारी 1—पु०, ब्रह्मधारी, बाह्यण सत्यासी पञ्च ४।३९ 2 शिवलिङ्ग की पूजा करने वाला 3 पाकटवादी, बना हुआ मकट, सत्यासी 4 हाथी 5 (तर्क० में) प्रतिज्ञा का विषय ।

लिपिः—वी [लिपु+ङ्, डीपु वा] 1 लीपना, पोतना 2 लिपना, लिखावट 3 लिखित अक्षर, बर्ण, बर्ण-माला—यवनाल्लिप्याम्—वा०, लिपेयंषावत् इहोनेन वाङ्मय नदीमुखेनैव समुद्रमाविशत्—रघु० ३।२८, ४६ 4 लिखने की कला 5. (अक्षर, दस्तावेज, या हस्तलेख आदि) लिखना—अथ दरिद्रो ब्रह्मिनि वैश्वी लिपि ललाटेऽर्धचन्द्रस्य आश्रिताम्—ने० १।१५, १३८ 6. लिपिकला, लेखांकन । सम०—अः 1 पत्रपत्र करने वाला, सफेदी करने वाला, राज 2 लेखक, लिपिक 3 उत्कृष्टक (उभरा हुआ लिखने वाला, नकलाखी करने वाला) ('लिपिकर' भी),—आर लेखक, लिपिक, अ (वि०) जो लिख सकता है, ग्यासः लिखने या नकल करने की कला,—कलमम् लिखने का पट्ट या तस्मा, काला बहु स्कूल जहाँ लिखना सिखाया जाय, सत्त्वा लिखने का सामान या उपकरण ।

लिपिका [लिपि+कन्+ङ्] दे० 'लिपी' ।

लिपत् (भू० क० इ०) [लिपु+ङ्] 1 लीपा हुआ, पाना हुआ, साना हुआ, ढका हुआ 2 धान लगा, बिगड़ा हुआ, दुषित, मलिन 3 विषययुक्त, (बाण आदि) गृह में बुझाया हुआ 4 खारा हुआ 5 जूड़ा हुआ, मिला हुआ ।

लिपकः [लिपु+कन्] अक्षर में बुझा टीर ।

लिपत्ता [लिप+तन् शब्दे ज] 1 श्राप करने की इच्छा, भावि० १।१२५ 2. भावितावा ।

लिपु (वि०) [लिपु+ङ्+ङ] श्राप करने का इच्छुक ।

लिपिः—वी (स्त्री०) [लिपु+ङ्, वा० लय व] दे० 'लिपि' ।

लिपिकरः [लिपि करति कृ+ङ्, पु०] द्वितीयायाः अनुत् ।

लिपिक, लेखक, लिपिकार ।

लिप्यु (सुधा० उप०) लिप्यति-ने, लिपु 1. लीपना, पोतना

खानना—लिम्पतीव तयोऽङ्गानि—मूच्छं १।०४ २ इक देना, विद्या देना—सि० ३।४३ ३. दान खानना, दूषित करना, मलिन करना, कलंकित करना, क्लृप्तित करना—य कदापि स लिप्यते—यच्छं ८।६६, न मा कर्माणि लिम्पति—भग० ६।१४, १८।१७, मनु० १०।१०६ ४. प्रज्वलित करना, सुलभाना—नस्यालिपित शाकाणि स्वान्त काष्ठमिव ज्वलन्—मट्टि० ६।२२, भनु—लीपना, पीतना वपुरम्बलिपन इच्छु—सि० १।५१ १५ २. इक देना, फँसाना, घेर लेना रच्छु० १०।१०, यं ७।७, अक्ष—लीपना, पीतना (कर्मबा०) फूल खाना घमडी बनना, उन्नत होना, भा—, १ लीपना पीतना—उत्तर० ३।३९, ऋतु० ६।१० २ दूषित करना, दाह लगाना, उच्च—, पक्ष्या लगाना, मलिन करना, भग० १३।३०, वि—, लीपना, पीतना, मलना, कु० ५।७९, मट्टि० ३।००, १५।६, सि० १६।६२ १

लिम्प [लिप् + म, मू] लेप, पीतना, मालिश ।
लिम्पट (वि०) [लम्पट, पृथा०] कायामक, विषयी, —ट. व्यभिचारी, दुष्टचरित्र ।

लिम्पाकः [लिप् + भाकन्, पृथा०] १ नीरु या बकोलेने का बूझ २ गया, कम्ब बकोतरा, नीरु ।

लिम्पु (मृदा० पर० लिपति) १ खाना, हिसना-जुलना २ चाट पहुँचाना—दे० रिच्छु ।

॥ (विद्या० उभ० लिपयति—) छोटा होना, घटना ।
लिप्ट (य० क० कृ०) [लिप् + क्त] जो छोटा हो गया हो, घट गया हो या मूत्र हो गया हो ।

लिप्य [लिप् + वच्] अभिनेता, नतक ।

लिष् (अ० उभ० लेडि, लाडे, लीडे, इच्छा०) निालक्षति ने) १ चाटना कपाले द्वारोऽय पद्य इति करालेडि ललित—काव्य० १९, भासि० १।१९, कि० ५।३८, सि० १।६० २ चाट जाना, चक्कना, घुट-घुट से पीना, लप-लप करके पीना नै० २।९९, १००, अक्ष—, १ चाटना, लपलप करके पीना, बोझा बोझा करके चक्कना—अवस्थाशास्त्रीयतन्त्र—योग० ५०, वेणी० ३।५, भासि० १।१११ २ चबाना, खाना दर्जगर्भायिनीडे यं १।७ मूच्छं १।९, भा—, १ चाटना, लपलप करके पीना २ घायक करना, भाषण पहुँचाना—नेत्याम्यमालोडिमिवाभामुरास्त्री—रच्छु० २।३० ३ (श्रीको से) बहण करना, देलना,—न याम्या-मानोडा परम्पणीया तव मनु—योग० ३२, उच्च—, घनकाता, वर्षण द्वारा चिकना बनाना, राघवना यदि शाणोत्कीड—भर्तु० २।६४, परि—, लष्—, चाटना—मट्टि० १३।४२ ।

ली (भा० पर० लयति) पिचकना, विपटित होना ।
॥ (च्छा० पर० लिपति) १. जुड़ जाना २. पिचकना—प्राय 'वि' उपसर्ग के साथ ।

॥ (विद्या० भा० लीयते, लीन) १ चिपकना, दुड़ता पूर्वक जमे रहना, जुड़ जाना भासवि० ३।५ २ भूजपासे में बाधना, आगिनन करना ३. लेटना, बिधाय करना, टेक लेना, उड़लना, रहना, दुबकना, छिपना, लुकना (भूज्जाङ्गना) लीपन्ते मुकुलान्तरुषु शनर्कं सजातलज्जा इव—लस० १।२६, रच्छु० ३।९, यं ६।१६, कु० १।१२, ७।२१, मट्टि० १८।१३, कि० ५।२६ ४ विचटित होना, पिचकना ५ चिप-चिपा, लसलसा ६ लीन हो जाना, भक्त या अनुरक्त होना, माधवयनितजवितिलकवयादिव भाषयया त्वयि लीना गीत० ६ ७ नष्ट होना लाप होना,—प्रेर० (लापयति ते) लापयति-ने, लीपयति-ने लापयति-ने) पिचकना, विचटित करना, लस बनाना, लकना ('लापयते' रूप सम्मान या सम्मानित करने के अर्थ में प्रयुक्त होता है—जटाभिलषयते—पूज्याभियच्छति—कु० पा० १।३।७०), अक्षि—, १ जुड़ना, चिपकना—रच्छु० ३।८ २ इक लेना, ऊपर फेंका देना—पश्चादुच्चैर्नृ-जतस्वन मण्डलेनाभिलीन मेघ० ३८, भा—, १ बस जाना, छिपना, दुबकना, चिपकना, विक्रम० २।२३, २ जुड़ना, चिपकना—रच्छु० ५।११, वि—, ३ चिपकना, जमे रहना, लेट जाना, आराम करना, बस जाना, उत्तर पक्षना मिलित्वे मूर्ध्नि मूधोऽज्यं मट्टि० १६।७६, ७।५ २ दुबकना, छिपना, जपने कापको छिपा लेना, मृगाश्वये न्यलेतव—मट्टि० १५।३२ निशि रहसि निलीय—गीत० २ ३ अपने कापको छिपा लेना (अरा० के साथ)—मातुनिषीयते कृष्ण-दिवा० ४ मरना, नष्ट होना, प्र—, १ लीव होना, विचटित होना, गल जाना—आत्मना कृतिना च त्वमात्मन्येव प्रलीयस—कु० २।१०, राधाश्रमे प्रलीयन्ते तर्षेवाप्यकलमलके भग० ८।१८, मनु० १।५४ २ नष्ट होना, सोप होना ३ नाश को प्राप्त होना, नष्ट होना, वि—, १ जुड़ना, चिपकना, जमे रहना २ विधाय करना, बस जाना, उत्तर पक्षना—पुरोऽज्यं यावन्न भुवि व्यलीयत सि० १।१२ ३ विगलित होना, पिचक जाना, लीन होना महावीर० ६।६०, ७।१४ ४. लाप होना, मोक्षक होना ५. नष्ट होना, लष्, १ चिपकना, जुड़ना २ लेट जाना, बस जाना, उत्तरना ३ दुबकना, छिपना ४ पिचकना ।

लीच्छा (स्त्री०) लीव, पकाव, दे० लिखा ।
लीड (य० क० कृ०) [लिह् + क्त] चाटा गया, चुसकी की गई, चक्का गया, चाया गया आदि०, दे० 'लिह्' ।
लीन (य० क० कृ०) [ली + क्त] १. जुड़ा हुआ, चिपका हुआ, चुसा हुआ २ दुबकना हुआ, छिपाया हुआ, प्रच्छन्न ३ विधाय करता हुआ, टेक लगाये हुए

4 पिपला हुआ, विगलित मा० ५।१० 5 गुणक से बिलीन, या निगलित, गहरा जुड़ा हुआ नटा साधने लीना भवति 6 अन्न, छोटा हुआ 7 ओखल लान (दे० ली०) ।

लीला [ली + विष् + लिय लाति ला + क वा] 1 खेल, श्रौडा, विनोद, दिलबहाला, आनन्द, मनोरजन क्लम यद्यो कन्दुकलीलयापि या कु० ५।१९ (प्राय समाप्त के प्रथमखण्ड के रूप में प्रयुक्त) लीला कमल, लीलाशुक आदि 2 प्रीतिविवेक मनोविनोद, स्वेच्छाचारिता, रतिकोडा, केलिक्रीडा—उत्पटलीलायति रघु० ७।७, ६।२२, ५।७०, क्षुभ्यति प्रसभ-महो विनामपि हेनोलीलाभि विष्णु सति कार्णे रमण्य—सि० ८।२४, मेघ० ३५, (उज्ज्वलनीलमणि ने इत अर्थ में 'लीला' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है—अप्राप्तबलभ्रममायमनाविकाया सत्या पुनोऽत्र निश्चितविनोदवृत्त्या । आलापवेद्यतिहास्य विलोकनाद्यैः प्राणवगानुक्रमिमाकल्पयति लीलाम् ॥) 3 आसानी से, सुविधा, श्रौडामात्र, बच्चों का खेल—लीला जवान आसानी से मार डाला 4 दोन, आमास, हावमात्र, छवि—य समाति प्रायविनाकिली—रघु० ६।७२, 'पिनाकी की भाति दिललाई देने वाला' 5 मोदय, मास्य, साक्ष्य—सुहृत्कालिक मण्डनलीला—गीत० ६, रघु० ६।१, १६।७। 6 बढ़ाना, छपवण, डोय, बनाइत यथा लीलामनुष्य, लीलानट । सम०—अ (आ) मारः—रघु०—गृहम्—गैहम्—वैद्यम् (नपु०) आनन्द-मवन रघु० ८।९५, अङ्ग (वि०) ललित अंगों वाला,—अन्नम् अम्बुजम्—अरविशम्—कमलम्,—तामरसम्,—पद्मम् 'कमल-विलीना' कमल का फूल जो बिलोने की भाति हाथ में लिया हुआ हो—रघु० ६।१३, मेघ० ७५, कु० ६।८६, अक्षतारः (विष्णु का) पृथ्वी पर मनोरजन के लिए उतरना, उछानम् 1 प्रमोदवन 2 देवन, इन्द्र का स्वयं, कर्हः 'श्रीशामय कर्ह' तु० प्रथम कलह,—पुत्र (वि०) विशुद्ध मनोहर, अनुष्यः कपटी मनुष्य, छप-वद्यो,—मास्यम् श्रौडामात्र, केवल खेल, बच्चों का खेल, अनायास, -रतिः (स्त्री०) मनोविनोद, श्रौडा, —बापी आनन्ददायकी,—शुकः आनन्द के लिए पाला हुआ तोता ।

लीलायितम् [लीला + यिष् + क्त] खेल, श्रौडा, मनोरजन, आनन्द ।

लीलायत् (वि०) [लीला + यिष् + क्त] श्रीशामय, बिलारी, ली 1 मनोहर या लयच्छवटी स्त्री 2 मृगारत्रिय या स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3 दुर्वा का नाम ।

लूक् (अव्य०) पाणिनि द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो प्रत्ययों का लोप करने के लिए काम में आता है । **लुञ्च्** (श्वा० पर० लुञ्चति, लुञ्चिन्) 1 तीडना, लीचना, छीलना, काटना 2 उख देना, उखाड़ देना, लीच डालना ।

लुञ्च-—बभम् [लुञ्च् + घञ्, ल्यट् वा] छीलना, उखाड़ना ।

लुञ्चित (यु० क० कृ०) [लुञ्च् + क्त] 1 छीला हुआ 2 तीडा हुआ, उखाड़ा हुआ, फाड़ा हुआ ।

लुट् (श्वा० आ० लोटन) 1 मुकाबला करना, पीछे बकेलना, बिराज करना 2 चमकना 3 कष्ट उठाना, ॥ (सुग० उभ० लोटवति-ने) 1 बोलना 2 चमकना

॥ (श्वा० दिवा० पर० लोटति, लुटधति) 1 लोटना, जमीन पर लुटकना नु० लुट् 2 सबड होना, 3 अपहरण करना, लूटना, लुटावना (समवत् 'लुप्' या 'लुष्ट') ।

लुट् (श्वा० पर० लोटति) उधार करना, उखाड़ देना ।

॥ (श्वा० आ० लोटने) 1 भूमि पर लोटना, इधर उधर कर्बट बदलना, मुड़मुड़ी खाना, लुटकना, इधर उधर घूमना—मनिर्लसति पादेय काच शिरसि धारंन हि० २।६ लुटति न मा हिमकरकरभेन - वीण०

७ द्वाराऽय प्रत्याक्षीणा लुटति स्तनमण्डले अवस १००, अट्टि० १४।५४ मासि० २।७६, प्र—, वि—, लोटना, लुटकना, आदि, अट्टि० ५।१०८ ।

लुठयम् [लुट् + यट्] लाटना, लुटकना, इधर उधर घूमना ।

लुठित (यु० क० कृ०) [लुट् + क्त] लोटा हुआ, लोटना हुआ या जमीन पर लुटकना हुआ ।

लुट् (श्वा० पर० लोटति) हस्त देना, लुञ्च करना, बिलोना, आलोकित करना—प्रे० (लीडवति ते) हस्त करना, बिलोना, बिलोकित करना (इसी अर्थ में 'वि' उपसर्ग के साथ प्रयुक्त)—सि० ११।८, १९।९९ ।

॥ (तुदा० पर० लुटति) 1 लुटना, चिपकना 2 डकना ।

लुट् (श्वा० पर० लुटति) 1 जाना 2 चुराना, लुटना, लसोटना 3 लंगड़ा या बिकलाय होना 4 आसानी या सुस्त होना ।

॥ (श्वा० पर०, चुरा० उभ० लुटवति-ने) 1 मूटना, लसोटना, चुराना 2 अक्षत करना, घुसा करना ।

लुप्यच्छ (वि०) (स्त्री०—क्षी) [लुप् + शकच्] चोरी करने वाला (आल० से भी) लुटेरा, शक—उत्पलाना हृदयलुप्याकी परिश्रककामार्ग निवारयति काव्य० १०, वा सिनसकुनय केय लुप्यकता बालरा० ५ ।

लुप् (श्वा० पर० लुपति) 1 जाना 2 हस्त देना, लुञ्च करना, गति देना 3 मुस्त होना 4 लंगड़ा होना 5 मूटना, लसोटना 6 मुकाबला करना ।

सुदृकः [सुद्र् + क्वृत्] सुदरा, द्राक्, धोर ।
 सुदृकम् [सुद्र् + क्वृत्] सुदरा, सुदरा, चुराना, - यदस्य
 इत्या इव सुदृकनाय काव्याचरौ प्रयुजीभवन्ति
 विक्रमाक ११११ ।

सुदृका [सुद्र् + अ + टाप्] 1 कूट, मसोट 2 सुदृक-मुद्रक ।
 सुदृका [सुद्र् + बाकृत्] 1 सुदरा 2 कौरा ।
 सुदृक, डी (स्त्री) [सुद्र् + इन्, सुद्रि + डीप्] सुदरा, सुदरा, इकीनी हालना ।

सुदृ (चुरा० उभ० सुदृधाति-ने) सुदरा, सुदरा इकीनी
 हालना ।

सुदृका [सुद्र् + इन् + कन् + टाप्] 1 गोल पिडी, गैट
 2 उचिन चाल चलन ।

सुदृकी [सुद्रि + डीप्] उचिन वा शासन चालचलन ।

सुदृ (इशा० पर० सुदृधाति) 1 प्रहार करना, घोट
 घुसाना, घार डालना 2 घुगटना, पीड़ित होना,
 कष्ट उठाना ।

सुदृ (इशा० पर० सुदृधाति) 1 पवडा देना, विमिन
 करार 2 विमिन हो जाना या घबडा जाना ।

० (चुरा० उभ० सुदृधाति-ने, सुदृ० 1 शरना, भग करना,
 काट देना, नष्ट करना धनिपन्न करना अनुभव
 करना मति सुदृधाति ने० ६।१०५ 2 अग्रहण
 करना, बहिष्कृत करना ठगना, सुदरा 3 छीन लेना,
 झगडा घार लेना 4 लोप करना, दबा देना, भोजन
 करना समाका (सुप्यने) भग होना टूट जाना
 2 घुगटना नष्ट होना, भोजन या लोप होना,
 (इशा० में) प्रेर० (सोधाति-न) 1 तोड़ना, भग
 करना, उल्लंघन करना, अपकार करना 2 घुग
 नावा उठाना करना विपुल करना रघु० १०१२,
 उन्ना० (सुदृधाति, तर्कनिर्वाह)-उद्वलन मोलुप्यने
 या सुदृधाति अच-प्र- अरुण करना, नष्ट
 करना वि० 1 नोड देना मी० २ भग कर देना
 काट देना 2 छीन लेना लमाटना नष्ट
 करना उठा कर भाग जाना 3 विगाडना 4 नष्ट
 करना बर्बाद करना, भोजन करना-प्रियमया-विनु-
 पार्लोमन् कु० ४।- मरा के निप्रा ब्राह्मण हा मरा
 उन्ना० ३।०८ २ पीड देना मिटा देना ।

सुदृ (मू० क० कृ०) [सुद्र् + क्त] 1 टूटा हुआ, भंग,
 धाँसना, नष्ट 2 मोटा हुआ, बहिष्कृत रघु०
 १०।५६ 3 मुटा गया, ठगा गया 4 हटाया गया,
 लोप किया गया, भोजन या लोप हुआ (मू० में)
 5 भुग से रहा हुआ, उपसित 6 अग्रहारातीन,
 अग्रहण अग्रबन्धन उत्तर ३।३३, दे० सुद्र् सुद्र्
 चुराई हुई मारति, सुट का मान । मय० उक्ता
 बहिन या म्यन पर उपमा बहिन बह उपमा जिससे
 उपमा के आशयक चारों ओर में से एक, दो, अथवा

तीन पर सुट हो गये हों-ने० काव्य० १० उपमा के
 अन्वय, - एव (वि) म्यन परों से सुट, विरोध-
 क्त्वा (वि०) आदकर्म से विरहित, - प्रतिज्ञा (वि०)
 जिससे अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी है, श्रद्धाहीन, बिनास-
 धारी, प्रतिज्ञा (वि०) तर्कनाशक से हीन ।

सुदृ (मू० क० कृ०) [सुद्र् + क्त] 1 साक्षी, सोबी,
 सोम्य 2 इच्छुक, साक्षयित, उत्सुक यथा वनसुदृ,
 साक्षय्य और सुपसुदृ धारि में, म्बः 1 शिकारी
 2 स्वेच्छाचारी, लभ्य ।

सुदृकः [सुद्र् + क्त] 1 शिकारी, बहिनिया, मृगवीनस-
 उद्वाना तुषावन्सनापिहितमृगीनाम्, सुदृक पीचर-
 पिमुना निष्कारणकौरिपो जगति मते० २।६१
 2 सोबी वा साक्षी सुष्य ३ स्वेच्छाचारी 4 उत्तरी
 गीसाई का एक नेत्रको तारा ।

सुदृ (इशा० पर० सुदृधाति, सुदृ) 1 साक्ष्य करना,
 साक्षयित होना, उत्सुक होना (सम्प्र० वा अर्ध० के
 साथ) तथापि रामो सुदृने म्वाव 2 रिशाना सुदृ-
 काना ३ पचन जाना, बिसिन्त होना, मटकना-मैर०
 (सोप्रधाति-ने) 1 ललचना, साक्षयित करना,
 उत्कण्ठित करना-सुदृने बहु सोप्रधन् ऋटि० ५।
 ४८ 2 हाथन को उत्तेजित करना ३ फुसलाना,
 बहुकाना, प्रकोभत देना, बाहुकृत करना-सोप्रधाति-
 नयन वनधासुकेलकानुपधेतिनिधि रघु० १५।
 २५ 4 अल्पव्यस्त करना, अव्यवस्थित करना, व्यस्त
 करना, प्र, ललचना या इच्छुक होना (प्रेर०)
 रिशाना, बाहुकृत करना, फुसलाना, वि- अव्यवस्थित
 या अल्पव्यस्त होना ऋटि० ५।६०, (प्रेर०) रिशाना
 फुसलाना, बाहुकृत करना म्पर यावत् विभोम्यसे
 विधि कु० ४।२०, बहूनासनमधिक व्यसोभयन्
 (सुधे) - रघु० १५।१० 2 बहुलाना, यमोरजन
 करना, रिशाना क्व इति विभोप्रधाति-ता० ६ ।

सुदृ (इशा० पर०, चुरा० उभ० सुदृधाति, सुदृधाति ने)
 सताना, तब करना ।

सुदृकः [सुद्र् + क्वृत् + टाप्, इक्ष्व] एक प्रकार का
 वाद्ययंत्र ।

सुदृ (इशा० पर० सोधाति सुदृधि) 1 सोटना, इधर-उधर
 सुदृकना, इधर उधर घूमना, कर्णटे बदलना-सुनि-
 नुदृष्टि मदादिब चम्पले-वि० १८।६, वि० ३।०२,
 १०।२६ 2 रिशाना, हरकत देना, सुध्व करना, कना-
 धमान करना, अव्यवस्थित करना 3 हडाना, कुचलना
 -दे० नी० 'सुध्वित, प्रेर० (सोधाति ने) रिशाना,
 धानित करना वि० १।५, सा- बरा कृता
 साक्षि० २।०, वि- 1 इधर उधर चक्कर काटना
 2 रिशाना देना, कनाधमान करना 3 अव्यवस्थित
 करना, अस्तव्यस्त करना, (सोबी को) छितारना ।

मुलाय, मुलाय [लृट् पञ्चम्ये क, तथाप्नोति अच्] प्रेता, -सुरविषयपरिकी चित्रकाये ललाय ।

मुलित (मू० क० कू०) [लृट् + क्त] 1 हिलाया हुआ, करघट बदला हुआ, इधर उधर लुठका हुआ, कम्पायमान, लहराता हुआ-सुरालयप्रतिनिमित्तमम्हर्षे-सोतस नौलुकिंत बन्धने २५० १६३४, ५९२ अशान्त किया हुआ, दु खित-लुलितकरन्वो ममकरे - बेणी० ११३ 3 अन्धबन्धित, (बाल) छितराय हुए ७८५ ४ १४ 4 दबाया हुआ, कुचला हुआ, क्षिप्रस्त ५० ३१२७ 5 दहाने वाला, मर्मस्पर्शी, अनतिलुलितग्या-वातांक (कनकलयम्) -श० ३१४ 6 पका हुआ, मुका हुआ--अलसलुलितगुम्वात्पञ्चसजातसंदात् (अयकानि) -उत्तर० ११ २४, मा० १११५ ३६ 7 प्राजल, सुन्दर वन लुलितपल्लवम् मट्टि० १५५ ।

मुल्य (म्वा० पर० लोषति) दे० 'मुल्य' ।

मुल्यकः [छ्ये अमच् नित् मुल्य च] मदीयत हाथी ।

मुल्य, (म्वा० पर० लोहति) लालच करना, उल्लुक होना, मालायित होना । नू० 'लुभ' ।

मु (कृधा० उभ० लुनाति लुनोति, लून - प्रेर० लवयति -ते, इच्छा० लुसयति ते) 1 काटना, कतरना, बटकी से पकटना, विपुक्त करना, विभक्त करना, तोड़ना, लुनाई करना, (फूल) चुनना -सगमनज्या-मलनाय विदोवम् -२५० ३१५९, ७४५५, १२४४३ -पुरीमवस्कन्द मनीहि नन्दनम्-शि० ११५१, कीर्तित कार्करिख लनपूर्व पच० १११८७, कु० ३१६९, बभ० ११८० 2 काट देना, पूर्णतः नष्ट कर देना विभक्त करना-लोकानलावीद्विजिताश्च नश्य-मट्टि० २५२१, भा , आहिस्ता से उखाड़ना-कु० २४४१, चित्र- , काटना, छांटना, उखाड़ देना-उत्तर० ३१५ ।

मुता [लृ + तृट् + टाप्] 1 मकड़ी 2 चींटी । सम० -लण्ट, मकड़ी का जाल, मकटकः 1 लमूर 2 एक प्रकार का चमेरी का फूल ।

मुलिका [मुता + कन् + टाप्, इधश्च] मकड़ी ।

मुल (मू० क० कू०) [लृ + क्त] 1 काटा गया, छाटा गया, विपुक्त किया गया, काट दिया गया 2 मोड़ा गया, (फूल जादि) चुने गये 3 नष्ट किया हुआ 4 कर्तव्य किया गया, कुतरा गया 5 धाव्य किया गया, -तन्म पृष्ठ ।

मुल्यम् [लृ + मल्य्] पृष्ठ । सम० चिष, महरोमी पृष्ठ बाका बहु जानवर जो अपनी पूँछ में एक मात्रता है ।

मुल्य (म्वा० पर० मूर्च्छति) 1 चोट पहुँचाना, क्षिप्रम्न करना 2 लुटना, इकट्ठी इकट्ठा करना, चुनना ।

मुल्य [लिङ् + पञ्च] 1 लिखावट, दम्भावेश, (निम्नो-प्रकार का) लिखा हुआ दम्भावेश वचन उवाच्य न

मेमेति नोतरविद मुद्रा मवीया यन मुद्रा० ५१९८, निर्धारितोर्मे मेमेते बलुक्का गन्तु वाचिमां वि० २१७०, अनतमेव- कु० ११७, मन्मवलेम ५० ३१ २६ 2 देव, मुर । सम० अधिकांशम् (पु०) पत्र लिखने का कार्य भागवाहक, (राजा का) सचिव, अहं एक प्रकार का ताड़ वा बुध, अष्टम इन्द्र का नामांतर, पञ्चम्, पञ्चिका 1 पत्र में लिखा कहिला, पत्र, लेख या लिखावट 2 लक्ष्य वा पट्टा दम्भावेश (विधि), श्लेष लिखा हुआ म्प्रेमा, -हार -हारिन् (पु०) पत्रवाहक ।

मुल्यक [लिङ् + कृत्] 1 लिखने वाला लिपिक 2 ले-कार 2 चित्रकार । सम० दोष, प्रमाद, लिपिक की भूल-भूक, लिपिवाह की वृत्ति ।

मुल्य (वि०) (स्त्री० -नी) [लिङ् + कृत्] लिखने वाला कितने मुल्यने वाला आदि, -नः एक प्रकार का नर-कुल जिसके शब्द बनते हैं, -तम् 1 लिखन प्रीति रति करना 2 लुचवना, छींटना 3 चना, मर्दा करना 4 पतला करना हवा या हृदय शरणा 5 नाटय (लिखने के लिए) - नी 1 कर्म लिखने के लिए नरकुल, नरकुल का कर्म 2 अम्यम् । सम, साधनम् लिखने की सामग्री या उपकरण ।

मुल्यिक [लिखत - इत्] पत्रवाहक ।

मुल्यिनी [किय् + कृत् - स्त्री] 1 कर्म 2 अम्यम् ।

मुला [लिङ् + अ + टाप्] 1 रेखा, पारो, लकीर, बलिष्ठ वागदलवेषयोर्म कु० ११८७ कु० ७११, १००० कि० १६१२, मेघ० ६६, विद्युत्प्रेता १५००० मदेत्या आदि 2 लकीर सीमा या मष्ट रजि चोरी पारो 3 लिखावट, रखावट, आगत ११७, -पारिर्त्यराविर्गिणु निरा उर्ते नि कर, मि ३, ८३२ ३, दुःख का चींटा, पारो की चम, मन्मो-वाटमसिच लया कु० ११-५, २१३६ कि० १०० ५ अकृति, समानता, छाया, निशान उचित मन्मो मन्मोरादलेखा कि० ५१०० 6 माट, रिना, मन्मो-शास्त्र 7 चींटी ।

मुल्य (वि०) [लिङ् + ल्यम्] अकित किये जाने के पार लिखे जाने योग्य नग भूने जाने योग्य, मन्मो १००० याग, अम्य 1 लिखने की वृत्ता 2 लिखना प्रति लिपि करना 3 लेख पत्र दम्भावेश, हृत्मेव 4 मन्मो-लेख ५ चित्रण, रेखाकरण 6 चित्रित आश्रित मन्मो-आकृष्ट, हुत (वि०) लिख लिया गया १००० कर गया गया, शत (वि०) लिखित, लिखा गया

मुल्यिका स्त्री, मुल्यिका, पत्रम्, पत्रकम् 1 पत्र दम्भावेश 2 ताड़ का पत्र, प्रमङ्ग दम्भावेश

मुल्यम् लिखने का म्यान ।

मुल्यम् (नप०) लिखा, मल ।

लेल-लम् (पु०, लु०) बाँध ।
 लेप (झा० आ० सेले) 1. जाना, हिलना-जुलना
 2 पूजा करना ।

लेप [लिप् + घञ्] 1. सीपना, पीतना, मलिन्य करना
 -पाठ० १।१८८ 2 उबटन, मन्हुम, मन्हुम 3 पल-
 लार करना (सफ़ेदी करना या बुना पीतना)
 4 हाथों की पोछन 3 हाथों में चिपके मोहन का
 अवयव। जब कि भाइ में सबसे पहले तीन पुस्तकों को
 चिन्, पित्तमह और प्रपित्तमह-को भाइ में
 आहुतियाँ प्रस्तुत करने के पश्चात्, (प्रपित्तमह के
 पश्चात्, यह पोछन तीन पुस्तकों को प्रस्तुत की
 जाती है अर्थात् चौथी पाचवीं और छठी पीढ़ी के
 चिन्मुन्य पुस्तकों को) -मेरनाजकमुपधि विद्यादा-
 विष्णुमणि 5 पञ्चा, राज, उपरा, काम्य 6 नैतिक
 अपवित्रता, पाप 7 भोजन। सम० कर: पल्लार
 करने वाला, सफ़ेदी करने वाला, ईट की चिवाई
 करने वाला, -माहित्, ब्रह् (पु०) चौथी, पाचवीं
 और छठी पीढ़ी के चिन्तक चौथी पुस्तक मनु०
 १।२१६ ।

लेक- [लिप् + लृट्] पल्लार करने वाला, राज, सफ़ेदी
 करने वाला ।

लेक [लिप् + लृट्] पुप, लखना, -म्व 3 मलिन्य करना
 पीतना, सीपना पाठ० १।१८८ 2 पल्लार, मन्हुम
 3 बुना, सफ़ेदी 4 मार, मोटाई ।

लेप (वि०) [लिप् + घञ्] सीपे या पीने वाले के पोष्य,
 -घञ् 1 सीपना पीतना 2 डालना, धुनि बनाना,
 आर्या या प्रतिकल्प बनाना। सम० -हृत् (पु०)
 1 प्रपिताकार 2 ईट का रङ्ग लवाने वाला, (स्त्री)
 वह स्त्री जिससे उबटन का लेप किया गया वैसादिक
 के मरीच मुखाभिन किया हुआ है ।

लेपयत्री [लेप + यत्र + ट्रीप्] धुनियाँ बुतली ।
 लेपायना [लेपा इञ्चर्त्त क्यञ् - जान् - टाप्]
 प्रमि की मान जिज्ञासा में के रूप ।

लेपित् [लिह् + ड, लृक्] इच्छादि, लन अर्च् । मर्त्, माप ।
 लेपित् [लिह् + ड, लृक्] इच्छादि, लन मापत् ।
 1 तर्त्, माप 2 शिव का विशेषण ।

लेप [लिप् + घञ्] 1 बोझ या दुकहा, अश कष्ट, अन्
 आप्तनु लुप्त भाषा, स्मेरा (पाठ० स्वेर) -सेरीमिपु
 -या० २।४, अमरारिक्ती - कु० ३।३८, इती प्रकार
 भिन, गुण् भादि 2 सम्य की माप (दो कलाओं
 के बराबर 3 [सम० में] एक प्रकार का अलकार जिम
 में इष्ट का अर्थके के रूप में तथा अर्थिक का इष्ट के
 रूप में वर्त्तन विद्यमान होता है, रस० में इसकी परि-
 माणा गुणान्तिपित्तमन्वला दोषान्तेन दोषस्येत्-
 माधतया गुणान्तेन च वर्त्तन लेप, उवाहरणों के लिप

दे० उत्पत्तीय (प्रतिष्ठ होता है कि यन्मद ने इस
 प्रकार को 'विशेष' के साथ मिलाना है-दे० काव्य
 १०, 'विशेष' के शीघे तथा भाष्य) । लप-अल (वि०)
 मुखावभाष, संकेतित, बभोक्ति द्वारा वृत्तित ।

लेषा (स्त्री०) प्रकाश, रोशनी ।
 लेष्य [लिप् + लृट्] देना, सिट्टी का लीना । सम०-लेषना:
 वह उपकरण जिससे होते छोड़े जाते हैं ।

लेसिक (पु०) गजारोही, हाथी पर चढ़ने वाला ।
 लेह [लिह्, - घञ्] 1. चाटना, चाबकन, बीसा कि 'लघुनी
 वेह'-मट्टि० १।८२ में 2. चबाना 3 चाट, चटरी
 4 भोज्य पदार्थ ।

लेह्यम् [लिह् + लृट्] चाटना, जिज्ञासे काचमन करना ।
 लेहित् [लिह् + इक्] मुखाभा ।

लेह्य (वि०) [लिह् + लृट्] चाटे जाने या चाट कर चापे
 जाने के पोष्य, जीभ से कपकप पीने के बोध्य, -हृत्
 1 कोई भी चाटकर चाई जाने वाली वस्तु (वैसे कि
 कोई पोष्यपदार्थ), चाट 2 भोजन,

लेह्यम् [लिह्यन् इष्ट-लिङ्ग + लृट्] अवाह्य पुराणों
 में से एक पुराण का नाम ।

लेहित् (वि०) (स्त्री० स्त्री) [लिङ्ग + इक्] 1. फिरी
 जिज्ञा या निशास पर निर्यत या तत्संबंधी 2. अनुचित,
 -कः प्रतिभाकार, धुनिकार ।

लेह्य ([झा० आ० चोकने, भोक्ति] देवता, नवर शकना,
 प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, अच - देवता, विद्याह डालना
 -नीलकोशमन्वोके ददि विद्या सूच्येय कि लुच्यत्
 -मनु० ०.१३, आ-देवता, विद्याह डालना, प्रत्यक्षज्ञान
 प्राप्त करना - मट्टि० २।२४ ।

1 (पुत्र० उभ० या प्रेर० लोचयति- ले, भोक्ति)
 1 देवता, विद्याह डालनी, विहारना, प्रत्यक्षज्ञान
 प्राप्त करना 2 जानना, जानकार होना 3 चमकना
 4. बोधना, अच-; 1 देवता, विहारना, विद्याह
 डालना - परिष्कामावबोध (पाठकों में) 2. मानस
 करना, जानना, निरीक्षण करना-अचभोकर्यादि
 कियदवधिष्ट मन्वा-शु० ४. 3 परलता, मनस
 करना, विमर्त् करना-कु० ८।५०, रघु० ८।१४,
 आ , 1 देवता, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, विहारना,
 विद्याह डालना 2 अवाह्य करना, विचार करना,
 प्यान देना गुणविद्य प्रत्यक्षज्ञानकोकाम, -मनु०
 ३।६१ 3 जानना, मानस करना 4. अभिवादन करना,
 बधाई देना, वि , 1 देवता, विहारना, विद्याह
 डालना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना विमोक्ष मुदोक्ष-
 धरिचित्तं तथा महात्मन स्मेत्युचो अधिष्ठाति -कु०
 ५।३०, रघु० २।११, ३।५१ 2 लताया करना, ईडना ।

लेह्य [लिह्यतेऽती लोक् + घञ्] 1 बुझना, सोचना,
 चिन्तन का एक प्रकार (स्वल्पक यदि कहा जाए तो

लोक तीन हैं—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक, अधिक विस्तृत वर्गीकरण के अनुसार लोक चौदह हैं, सात ही पृथ्वी से आरम्भ करके ऊपर क्रमशः एक दूसरे के ऊपर अर्थात् 'भूलोक, भ्रूलोक, स्वर्लोक, महर्लोक, अनलोक, तपोलोक, और तप्त या ब्रह्मलोक, तथा अन्य सात पृथ्वी से नीचे की ओर एक दूसरे के नीचे—अर्थात् अताल, विनाल, मत्तल, रमातल, तलानल, महातल और पाताल) ५ भूलोक, पृथ्वी इहलोक 'इस संसार में' (विप० परम) 3 मानव जाति, मनुष्य जाति, मनुष्य—लोकानिग, लोकोत्तर इत्यादि 4 प्रजा, राष्ट्र के व्यक्ति (विप० राजा) स्वमुख-निरतिशय विद्यते लोकहेतु १० ५१७, २५० ५१८ 5. समुद्रय, समुद्र, समिति आकृष्टलीकान् मत्स्योक्तात्मान् २५० ११२, शाश्वत नेत्र क्षिप्रपाल-लोकः—७३ 6 अंश, इलाका, जिला प्रान्त 7 सामान्य जीवन, (संसार का) सामान्य व्यवहार—लोकवत् लोकावैक्यम् ब्रह्म २१३३, यथा लोके कदाचिदाप्येवस्य राज शारी० (इसी उच्य के और अन्य स्थल) 8 सामान्य लोक प्रचलन (विप० वैदिक प्रयोग या वाग्म्या—बेसोक्ता वैदिक शब्दा विद्या लोकाव्य लौकिका, प्रियतदिता दाक्षिणात्या, यथा लोके वेदे भेदि प्रयोग्ये यथा लौकिकवैदि-केजिनि प्रवृत्तने महा० (और अन्य अनेक स्वानो पर)—अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रविन पुष्पान्म—अ० १५१८ 9 इष्टि, स्थान 10 सात या चौदह की संख्या 1 मम० अतिग (वि०) असाधारण, अति-प्राकृतिक, —अतिशय (वि०) संसार के लिए अष्ट, असाधारण, अधिक (वि०) असाधारण, असामान्य, सर्वे पवित्रगजाजिनलिकेनाकारि लोकाधिकम्—भामि० ५१४५, वि० २१४७, अधिकः 1 राजा 2 सुर, देव, —अधिकतः संसार का स्वामी,—अनुरागः 'मनुष्य जाति से प्रेम' विश्वरमे, साधारण जिनैयिका, परोपकार, अस्मत्त्वं परलोक' दुमरी मुनिया, भाषी जीवन २५० ११९९, ९१५, लोकान्तरं मन्,—प्रान् मरना, अपवाहः मव भागो में बदनामी, सार्वजनिक विन्दा लोकापवादा ब्रह्मनाम्नी मे २५० १४४०, —बन्धुव्यः लौकिकत्या, —अपत्यः नागरण का सामांतर, अलोकः एक काल्पनिक पहाड़ जो इस पृथ्वी को बंदे हुए हैं और निर्मल जल के उस समुद्र से परे स्थित हैं जिन्मे सात महाद्वीपों में से अन्तिम १५ को बंद रक्ता है, इस लोकांशक ने परे और बन्धकार है, और इस ओर प्रकाश है इस प्रकार यह पहाड़ इस दुःखदायक संसार का अन्धकार के प्रवेश के विनाश करगा है- प्रकाशकाप्रकाशक लोकांशक इवाचक - २५० ११८८, (आगे की

व्याख्या के लिए दे० मा० १०१७९ पर डा० भाष्यारकर का नोट), (कं.) दृश्यमान और अदृष्ट लोक, आचार सामान्य प्रचलन, सार्वजनिक या साधारण प्रथा, लोकव्यवहार, आत्मन् (५०) विद्य की आत्मा, अतिः 1 संसार का आरंभ 2 संसार का रक्षिता,—आपत्त (वि०) नास्तिकताप्रवर्धी, अनार्यवाद संबंधी, (—त.) भौतिकवादी, नास्तिक, धार्मिक दर्शन का अनुपायो, (तम्) भौतिकवाद नास्तिकता, (इमेके वर्णन को सर्वदर्शनमग्रह के प्रथम अध्याय में देखिये)।—आधत्तिक नास्तिक, अनार्य-वादी, —ईश. 1, राजा (संसार का प्रभु) 2 ब्रह्मा 3 पारा उच्यते (स्त्री०) 1 कृतावन, लोकोक्ति 2 सामान्य चर्चा, लोकमत उत्तर (वि०) असाधारण असामान्य, अप्रचलित लोकोत्तरा च कृति भामि० ११६९, ७०, उत्तर० २१७, (२] राजा, एकदा स्वर्ग की इच्छा, कष्टक कष्ट देने वाला या दुष्ट पुत्र, मानवजाति का अतिशय ३० कष्टक, लक्षा सर्वप्रिय कर्ताजी, कर्तुं, कृत (५०) संसार का रक्षिता, शाका परगण से लोगों में शाया जाने वाला गान, चक्षुस् (तपु०) मूर्ख, कारिणम् लोकव्यवहार, अनेकी लक्ष्मी का विशेषण जिन् (५०) 1 बुद्ध का विशेषण 2 संसार का विजेता, —अ (वि०) संसार का जानने वाला, अष्टेष्ट बुद्ध का विशेषण,—तत्त्वम् मनुष्यजाति का ज्ञान, तन्मन् अनन्य, सुचारुः सपुर, अयम, अची सामर्थिक रूप में शीली शक्ति, —उत्पन्नलोककथककथं २५० १४३३, इत्यन् स्वर्ग का दरवाजा, —भानु संसार का विशेष प्रकार का विभाजन, भानु (५०) शिव का विशेषण, भास् 1 ब्रह्मा 2 विष्णु 3 शिव 4 राजा, प्रभु 5 बुद्ध, मेतु (५०) शिव का विशेषण—च, पाल दिक्पाल लीलाःप्रियत तमश भर्ता मरुता इष्टमना मत्स्योक्तात् विष्णु० २१८, २५० २१७५, २१८९, १३१७८, (लोक पाल विष्णो में आठ है—दे० अष्ट दिक्पाल) 2 राजा, प्रभु,—पक्ति (स्त्री०) मनुष्यजाति का आदर, साधारण आदरणी-यता, पक्तिः 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 राजा, प्रभु,—पथाः, पद्धति (स्त्री०) साधारण व्यवहार, दुनिया का तरीका,—पितामह ब्रह्मा का विशेषण,—प्रकाशः सूर्य,—प्रवाहः किबदली अपवाह, सर्वसाधारण में प्रचलित बात, प्रतिष्ठ (वि०) मुजात, विश्वविख्यात,—बन्धु,— ब्रह्मन् सूर्य,—बाह्य, बाह्य (वि०) 1 संसार से बहिर्जन, बिगडरी से सारिज 2 दुनिया से निम्न, सनकी अनेका (—ह्यः) मानिष्यन् व्यक्ति, सर्वथा मारी हुई या प्रचलित प्रथा, भानु (स्त्री०) का

विशेषण, मार्गः लोकसम प्रथा,—बाबा 1 दुनिया के सामने, लौकिक जीवनचर्या, लोकव्यवहार—एक किस्म लोकप्रथा महावी० ७, वाचद्वय सत्सारास्त-स्यसिद्धेय लोकप्रथा—वेणी० ३ 2 सांसारिक अस्तित्व, जीवनचर्या मा० ४ 3 आजीविका, दूति, —रत्न राजा, प्रभु, —रत्नजन्म जनता की मनुष्य करना, सर्वप्रियता, रत्नः जनश्रुति, मार्भजनिक चर्चा, लोचनम् सुयं—बचनम् मार्भजनिक किबरली, अकबाह,—बाब किबरली, सामान्य चर्चा, मार्भ-जनिक अकबाह—मां लोकवादअकबाहहामी —रत्न० १५६१,—बाता किबरली, अकबाह, विद्विष्य (वि०) जिससे सब लोग घृणा करते ही, जिसे लोग पसंद न करते ही, विधि 1 कार्य विधि का प्रकार, लोक में प्रचलित प्रक्रिया 2 सत्सार का रचयिता, विद्युत (वि०) दूर दूरतक महादूर, जगद्विख्यात, प्रसिद्ध योगात्री,—बृहत् 1 लोक व्यवहार, सत्सार में प्रचलित प्रथा 2 इधर उधर की बातें, गपवाण, बृत्तान्तः, व्यवहार 1 लाकाचार, लोकरीति, साधारण प्रथा—ता० ५ 2 घटनाक्रम,—श्रुतिः (स्त्री०) 1 जनश्रुति 2 विश्वविख्यात शक्ति, संकरः सत्सार की साधारण अव्यवस्था,—संशुद्ध 1 समस्त विश्व, 2 लोककल्याण 3 लोगों की प्रकाई चाहना,—साक्षिन् (पु०) 1 बड़ा का विशेषण 2 अग्नि—सिद्ध (वि०) 1 नामों में प्रचलित, रिवाजी, प्रथागत 2 लोक या समाज द्वारा स्वीकृत,—विधितः (स्त्री०) 1 विश्व का अस्तित्व या संचालन, सांसारिक अस्तित्व 2 विश्वनियम,—हास्य (वि०) सत्सार द्वारा उपहसित, उपहसित, लोकनिन्दित, हित (वि०) मनुष्य जाति के लिए कल्याणकारी, (तम्) जनसाधारण का कल्याण ।

लोकम् [लोक + ल्यट्] देकना, दर्शन करना, निहारना ।
 लोकव्युष्य (वि०) [लोक + व्युष्य + क्, मुमासय] सत्सार में भ्रान्त या सत्सार को अरुनवाला, लोकव्युष्य परिश्रमे-परिगृहीतव्य काशमोररजस्य कटुताऽपि नितामताम्या --श्रमि० ११७ ।
 लोच [म्या० आ० लांस्ते] देकना, निहारना, प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना, निरीक्षण करना । (पूरा० उभ० या प्रेर० लोचयति-ते) दिखलाना, जा- , 1. देखना, प्रपञ्चज्ञान प्राप्त करना 2 विचारना, विमर्श करना, चिन्तन करना, लोचना आलोचयन्ती विस्तरामममां दक्षिणोत्तरे—प्रट्टि० ७३५ । 'बु० उभ० लोचयति-ते) 1 बोलना 7 चमकना ।
 लोचम् [लोच + ल्यच्] लोच ।
 लोचकः [लोच + ल्यक्] 1 मूर्ख पुरुष 2 अक्षि की पुतली 3 दीक की कानिष्ठ, काजक 4 एक प्रकार का

काग का कुंडल 5 काका या नाका बधुमुखा 6. बन्धु की डोरी 7 तिलों द्वारा मलक पर बाण किया जानेवाला आभूषण, टीका 8 मांसपिण्ड 9. लोच की केंचुकी 10 कुरीतार चमकी 11 भी जिसमें लुगिया पड़ी हैं 12 केल का पीचा ।
 लोचनम् [लोच् + ल्यट्] 1. देखना, दृष्टि, दर्शन 2 जोख —शोषामामान् गमय चतुरो लोचने मोक्षयिष्या—येच० ११० । मय० लोचकः--वचः, मार्गः दृष्टि परान, दृष्टिभेज ।
 लोह् [म्या० पर० लोहति] रागक या मूर्ख होना ।
 लोहः [लुह + ल्यच्] भूमि पर लोहना, लुहकना ।
 लोह् [म्या० पर० लोहति] रागक या मूर्ख होना ।
 लोह्यम् [लोह् + ल्यट्] अग्रान्त करना, उद्भिन्न करना, शालोहित करना ।
 लोच्यारः [लचण + ल्यच् + ल्यच्, पुषो०] गमक का एक प्रकार ।
 लोचः [लु + ल्यच्] 1 लोच 2. निदान, चिह्न, निशानी ।
 लोच्य [लु + ल्यच्] बुराई हुई सम्पत्ति, लुट का नाम, लोच्य (लोच्येण) गृहीतव्य कुम्भीककल्याणित वा प्रतिवचनम्—विचम० २ ।
 लोचः [लोचः [लोचति लोचयन्, लुच् + ल्यच्] काग वा लखेद फुली वाला बुद्धि विशेष—लोच्युम् साम्प्रतः प्रकृतम् -रत्न० २१९, लोच्येण सातव्यत कोप्रवाभुवा ३१२, कु० ७१९ ।
 लोचः [लुच् + ल्यच्] 1. हुटा लेना, बचना 2. हासि, विनाश 3 उन्मूलन, अपाकरण, (प्रवाजी का) उन्मादन, अनशान, अप्रचलन 4 उल्लंघन, अतिक्रमण रत्न० ११७ 5 अभाव, अलकला, अनुपस्थिति रत्न० ११८ 6 मूक-मूक, लुट—लुहयन्ते लोचि-स्यात् काव्य० १० 7 अरुचि, वर्णनीय (म्या० में), अदर्शन लोच—पा० १११५ ।
 लोचनम् [लुच् + ल्यट्] 1. उल्लंघन, अतिक्रमण 2 बुद्ध-मूक, लुट ।
 लोचः, लोच्युम् [लुच् + ल्यच् + ल्यच् + टाच्, लोचः + भाषुडा कर्म० लो०] विचरनेवा की एक कथा, अगस्त्य मुनि की पत्नी (कहा जाता है कि विश्विष्य यन्त्रो के अस्तित्व सूचक भागों से मुनि में स्वयं लुह कथा का, निर्वाण किया वा जिससे कि उसे अपने मनोनिष्क पत्नी मिल लखे : उनके पचात् इले बुध-बाप विचरंराज के लुह में पत्नी दिया गया वहाँ यह राजा की पुत्री के रूप में पत्नी रही । बाद में अगस्त्य मुनि के साथ इसका विवाह हो गया । लोच्युम् में अगस्त्य मुनि से कहा कि मुझ से संबंध रखने के लिए विद्युक्त बनरति प्राप्त करो । तदनुसार मुनि पहले तो राजा भुल्येम् के पास गया, वहाँ से फिर

और राजाओं के पास, इस प्रकार बहु अत्यन्त पनाइय
राजस इन्वल् के पास गया, और उसे परास्त कर
उसकी विपुलधनराशि से अपनी पत्नी को सन्तुष्ट
किया ।

शेषकः, **शेषकः** [शेषन् + अश्वत् + अश्वत्] एक प्रकार का गीदड़, भृगुगाल ।

शेषाशः, **शेषाशकः** [शेषाशकुशोभाय चकितमसनाति
शेष + अश्वत् + अश्वत्, शेष + अश्वत् + अश्वत्] गीदड़,
कोमड़ ।

शेषिन् (वि०) [श्वत् + शिन्] 1 जतिपत्न्य करने वाला,
नूकसान पशुधारी वाला 2 लज्ज गेने वाला ।

शेषवन् [श्वत् + वन्] दे० 'शेषवन्' ।

शेषः [श्वत् + श्वत्] 1 शेषपत्ता, शालका, शालक,
अतिपत्ता—शेषवन्शेषवृत्तेन किम् भन्त् ० २।५५
2 इच्छा, उत्कण्ठा (सर्व० के साथ या समास में)
—कङ्कणस्य तु शेषेन—हि० १।५, आननगर्भोभोभात्
—मेघ० १०५ । सम०—अश्वित (वि०) शेषप,
शालका, कोमड़ी, —विश्वः शेषपत्ता इ० अभाष
—हि० १ ।

शेषवन् [श्वत् + श्वत्] 1 प्रलोभन, लक्ष्यवाना, वरदाना,
कुसलाना 2 मोना ।

शेषवर्षी (वि०) [श्वत् + अनीवर] कुसलाने वाला
प्रलोभन देने वाला, कायक, इसी प्रकार 'शाम्भ' ।

शेषः (पु०) वृष्ट ।

शेषाकित्त (पु०) [शेषक + इति] एक पक्षी ।

शेषन् (नपु०) [श्वत् + श्वत्] मनुष्य और जानवरों
के शरीर पर उगने वाले बाल—दे० रोमन् । सम०
—अश्वः—'रोमाश्व' दे०— अश्वितः,—श्री, आश्वितः,
—श्री,—राजि. (श्री०) छाती में लेकर नाभि तक
हाला की पंक्ति—दे० रोमावती आदि,—कण्यः शरयोश,
—श्रीशः, श्रु, युका,—कृष,—सर्त, —रअश्व,—विश्व-
रन् शाल में छिद्र,—अश्वः दूयित यज,—अश्वि. शानो
में बनाया हुआ तावीज,—वाहित् (वि०) पशुधारी,
—शेषवन् (वि०) युलकित करने वाला, रोमाश्व पैदा
करने वाला,—सारः पशु, श्वे,—हृषण,—हृषिन्
—दे० रोमहर्ष,— हृषु (पु०) हृषण ।

शेषसा (वि०) [शेषगति सति अश्व शेषन् + श]
1 शानो शाना, ऊनी, शान्तरा 2 ऊनी 3 शान्ता
वाला,—शः भेद, भेदा, शः 1 शेषवती 2 गीदड़ी
3 लसुर ४ काशीम । सम०—आश्वितः यशविलाय ।

शेषाशकः [शेषन् + अश्वत् + अश्वत्] गीदड़, गृगाल ।

शेष (वि०) [शेष + अश्व, श्वत् न, श्वत् + श्वत्] १
1 हिलना हुआ, मोटना हुआ, कापना हुआ, शोणय-
मान, धरधराता हुआ, बहना हुआ, लहराता हुआ (जैसे
कि बाल, बलक) परितस्फुरन्शेषो मित्राद्यजिह्वं जग-

जिघरस्तन्मित्रान्तवर्जित्—कि० ३।२०, शोकाशुकस्य
पवनाकुलिताशुकान्ताम्—वेणी० २।२२, शोलापाङ्के,
शोचने मेघ० २७, रघु० १।८।३ २ विश्वम्
अशान्त, बेचैन, परेशान ३ बचल, बचल, पवित्र, अस्थिर
वेग शिव सश्वयोषकड स्वभावलोलेत्य
यम प्रमथम् रघु० १।४१, इसी प्रकार कु० १।४३
४ अश्वारी, नखर—श० १।१० ५ आनुर, उत्सुक,
उत्कण्ठित (श्राय मयाम में,—अश्वे श्लो करिकलनको
य पुरा पेषितोऽनुम्—उत्तर० ३।६, कर्म शालः
कपयिन्नुमदानस्यशोभोभात्—मेघ० १०३, शि०
१।६१, १।८।१, १०।६६, कि० ४।२०, मेघ० ११,
रघु० ७।२३, १।३३, १६।५६, ११,—शः 1 लक्ष्मी
का नाम २ विजली ३ जिह्वा । सम० अश्वि
(नपु०) बचल नेत्र, अश्विका बचल नेत्रों वाली
स्त्री,— जिह्वु (वि०) बचल जिह्वा में युक्त, शान्तवी,
—श्लो (वि०) अश्वत् वरधराने वाला, नदीव
बेचैन ।

शेषुप (वि०) [श्वत् + अश्वत्, पु०० मस्य व] बहुत
उत्सुक, अत्यन्त ईच्छुक, आकांक्षित शालवी अश्विन-
सुशुक्रानुप-व तथा परिच्छद्य चूलमजरीम्, कल्पवन्-
निशापनिवृत्ता मधुकर विमृताश्वेया कथम् ज०
५।१, मित्रश्वदाभाषणशालुप मयः शि० १।६०,
रघु० ११।२६— या शालका, उत्कण्ठा, उत्सुकता ।

शेषुभ (वि०) [श्वत् + अश्वत्] अत्यन्त शालमायकन,
शालवी दे० 'शालुप' ।

शेषुष्ट [श्वत् + अश्वत्] डेर लगाना, अवार लगाना ।
शेषुष्टः, **श्वम्** [श्वत् + अश्वत्] डेला मिट्टी का लोटा,—५२-
इधंपु लाट्टवन य पर्यायि स पथ्याति, समलाट्टकाडचन
रघु० ८।२१,— श्वम् लोहे का माँची, जग । सम०
—अश्व,— अश्वः— नश्व डेरों को फोड़ने वा उतारन,
पटेका, हेरा ।

शेषुष्ट [श्वत् + अश्वत्] डेला, मिट्टी का लोटा ।

शेषुह (वि०) [श्वत् + अश्वत्, श्वत् + ह] १ शाल, शाल रग का
२ गाँव का बना हुआ, शास्त्रमय ३ शेषे का बना
हुआ, हृ-हृत् १ तावा २ लोहा ३ इमाल ४ कोई
पानु ५ शोभा ६ शक्ति ७ शक्तिवार मनु० १।३०-१
८ मछली पकड़ने का काटा,—हृः शाल अक्षरा हृम्
अक्षर की लकड़ी । सम० अश्वः शाल बकरा,—अश्वि-
सारः, अश्विहारः 'शोराज' में मित्रता युक्तता एक
सैनिक-माकार, अश्वमत् शोभा,—कामतः लाहमणि,
पुष्पक, कारः सुहार,— शिह्वम् अश्वे का जग,—अश्वक.
सुहार, अश्वमत् रेतने से निकला हुआ शेषे का पूरा
गाँव का जग, अश्व १ कांसा २ शेषे का बुरादा,
—अश्वक कवच,— शिन् (पु०) हीरा,—अश्विन्
(पु०) सहाया,— शालः शेषे का हाथ,—पुष्पः एक

प्रकार का बनना, ककपत्नी, प्रतिष्ठा 1 घन
2 लोहमृत्ति, बड़ (वि०) लोहे से युक्त या जिसकी
नोक पर लोहा जडा हो, - मुस्तिका लाल मानी,
रजसु (नपु०) लोहे का जग, घोषा, राजसु
बादी, -रजसु माना, -अरजसु: लोहे की मलान
लक्षणयः सुहागा, संकरसु नीले रंग का इत्यात ।

लोहल (वि०) [लोहमिव लानि-ना-; क] लोहे का बना
हुआ 2 अस्पष्टवाची, तुगला कर बोलने वाला ।

लोहिका [लोह+ठन्-टाप्] लोहे का पात्र ।

लोहित (वि०) (स्त्री०)-लोहिता, लोहिनी [रह्-
+इत्च्, रस्य ङ] 1 लाल, लाल रंग का, लला-
सारविनाशलोहितलोहे बाहु घटोलोपपात-ना०
११०, कु० ३१२, मुहुरचक्रवत्सलवनाहिनीभिरुर्ध्व
पिपासाभि शिनिनादलीहा कि० १६५३

2 ताबा, ताबे से बना हुआ, 3 1 लाल रंग,
2 मगल बड़ 3 माप 4 एक प्रकार का हरिण
5 एक प्रकार के बावल, -ता प्राय की सान जिह्वाको
से म एक-सम् 1 ताबा 2 रजिस् घनु० ८१८८,
3 हाफनाम कमर 4 घुनु 5 लाल बन्दन 6 एक
प्रकार का बन्दन 7 इन्द्र घनुष का अयुग रूप । मम०
मरु 1 लाल रंग 2 एक प्रकार का लीप
3 कायल 4 विष्णु का विद्यापय अङ्गप मगस्रह,
- अयसु (नपु०) ताबा, अशोक (वाट फटा का)
प्रधान वृक्ष, -अश्व भाग, -आनम नेत्रज, ईलज
(वि०) लाल रंगी वादा, उद् (वि०) लाल या
शिर 3 ममान लाल पानी वाला कल्लाह (वि०)
१५५५ लोहे कावा लय रजिस् का ताबा, पीकः
आन का शिवापण चन्द्रमस् रेमर, ज्ञाफ.गान, -पुथ्यक
अन. का वृक्ष मुस्तिका लाल लरिया, वेर
शानप्रश्म-लाट हमर का फुल ।

लोहितक (वि०) (स्त्री०) निष्का; [लोहित-कन्]
लाट, क 1 लालमार्ग, शि० १३१५- 2 मगल
बड़ 3 एक प्रकार का बावल कम्पु माना ।

लोहितमन् (पु०) [लोहित+इमनच्] लालिमा,
लाकी ।

लोहिनी [लोहित, डीप् नकारस्य नकार] बड़ स्त्री
। नमका चमरी लाल रंग की हो ।

लोहायनिक [लोहायनयोने वेद वा लोकायत+ठक्]
अर्वाकमदानुयाम्यो, नात्मिक, अनीधरबादी, शौतिक-
बादी ।

लौकिक (वि०) स्त्री० लौः [लौके विदित प्रिययो हितो

वा ठन्] 1 सासारिक, दुनियावी, भौतिक, पार्थिव

2 साधारण, सामान्य, प्रचलित, मामूली, गवारू

उत्तर० १११० 3 दैनिक जीवन संबंधी, सामान्यत
माना हुआ, सर्वप्रिय, प्रयागत-मु० ७१८८

4 सामयिक, बर्धनिरपेक्ष (विप० आये, वा शास्त्रीय)

मनु० ३१२८२ 5 जो वैदिक न हो, सासारिक (सब
या उनका वर्ष) वाक्य द्विविध वैदिक लौकिक व

तर्क० (वे० लोके ८ के नीचे उद्धृत महा०)

6 ससार से मजब रखने वाला-वेदा कि 'ब्रह्मलौकिक'
ये, -काः (ब० ब०) सामान्य मनुष्य, ससार के लोग,

कम् कोई साधारण लोकाचार । मम० ब्र (वि०)

लौकिक्यवहार को जानने वाला, लोक प्रथाको से
परिचित-अनीकमोजि सन्ता लौकिकता बयम्

- हा० ४ ।

लौक्य (वि०) [लोके मय लोक+व्यञ्] 1 सामारिक,
दुनियावी, ऐहिक, मानवी 2 सामान्य, मामूली,
रिवाजी ।

लौह (स्त्री०) पर० लौहनि पागल या मूर्ध होता ।

लौहस्यु [लौहस्य भाव व्यञ्] 1 चबलना, अस्थिरता,
चाञ्चल्य 2 उत्सुकता, उत्कण्ठा, लालच, लालसापूर्वता,
अल्पन प्रययोभाद वा अभिलाषा, जिह्वालीत्यात्

पत्र० १, रघु० ७६१, ११७६, १८३०, कु०

६१२० १

लौह (वि०) (स्त्री०) लौ [लोह+अण्] 1 लोहे का
बना हुआ, लोहा 2 ताश्मय 3 धातु का बना

4 ताबे के रंग का, लाल, -हम् लोहा, भट्टि०

१५५४, हा कडाही । मम० -आस्यम् (पु०)-सु-

(स्त्री०) बायमर, कडाही, कडाह, -कारः महार,
कम् लोहे का जग, कम्प. कम् लोहे की बेटी,

उडीर, आश्वसु लोहे का पात्र, -बलम् लोहे का जग,
- अरजसुः लोहे की सनाल ।

लौहित [लोहित+अण्] शिव का विष्णु ।

लौहित्य [लोहितस्य भाव व्यञ्, स्थाय्य व्यञ्, वा] एक
नदी का नाम, ब्रह्मपुत्र चक्रमे तीर्थलौहित्ये तस्मिन्

प्राग्भ्योतिषेधर रघु० ८१८१, (यहां मस्कि० बिना
किमी प्रमाण के कहता है तीर्थ लौहित्या नाम नदी

सेन), - स्म्यु लाकी ।

लौ, लौ (कथा०) पा० स्थिनाति, स्थिनाति) बिलना,
धम्मिभिल होना, भेलबोज करमा ।

लौ (कथा०) पर० स्थिनाति) जाना, हिलना-बुलना,
पहुँचना ।

कः [वा+क] 1 बापु, हुआ 2 बुआ 3 बचप 4 समाधान 5 संबोधित करना 6 मालिकता 7 निवास, आवास 8 समुद्र 9 व्याघ्र 10 कपडा 11. राहु, - बन् बचप (वेदिनी) -अव्यं १० कीर्ति, के समान 'वेसा कि' मनी बोधुत्य लभते प्रियो वासतरी मम- सिद्धा० (यहाँ सव्य 'ब' जपवा 'वा' हो सकता है) ।

बंधः [बधति उद्विगिरति बध+ध तस्य नेषम्] 1 बंध-बन्धुबंधुबंधुबंधि निर्गुण कि करिष्यति-हि० प्र० २३, बधनको गुणवान्नि सपविषेधेन पूज्यते पुरुष. भाषि० १।८० (यहाँ 'बध' का अर्थ 'कुल या परिवार' भी है) देव० ७९ 2. जाति, परिवार, कुटुम्ब, परंपरा-य जाती येन जातेन माति बंध समुप- निम्- हिं० २, बन् बन्धुप्रभवो बन्-रघु० १।२, दे० बंधकरम्, बधस्थिति ऋदि 3. लाठी 4 बासुरी, मुल्की, अन्नवीजा या विपचीनाश्-कृजिङ्करापावित- बधकृत्य-रघु० २।१२ 5. सवह, सवाल, समुच्चय (प्राय एक समान वस्तुओं का) -सायुक्ता स्वपन्द- बधचक्रे रघु० ७।३९ 6 आर-पार, सहवीर 7 (बास में) जोड़ 8. एक प्रकार का ईस 9 रीढ़ की हड्डी 10 साल का वृक्ष 11 लम्बाई नापने का एक विशेष माप (यस हाथ के बराबर) । सम० -सङ्घम्, अङ्कुर 1 बास का किनारा 2 बास का जन्मदा, -अनुकीर्तयम् बधाबली, -अनुष्मः बधाबली, -अनुष्मरितम् एक परिवार या कुल का परिचय, -आबली, बधालिका, बधविबरण, -आह्वः बसलोचन -कथिनः बासो का झुरमुट, -कर (वि०) 1 कुल- प्रवर्तक 2 बधान्यापक-रघु० १।३११ (-र) मुल- पुरुष, कर्पूररीचना, रोचना, लोचना बसलोचन, तवाशीर, - हन् (पु०) कुल सहायक, वा बधप्रवर्तक, -अन् बधपरंपरा, -शीरी बसलोचन, -धरितम् कुलपरिचय, -चिन्तकः बधाबली जानने वाला, छेत् (वि०) किसी कुल का अविम पुरुष, -ज (वि०) 1. कुल में उत्पन्न-रघु० १।३१ 2. सत्कुलोद्भव (-जः) 1 प्रजा, सत्तान, शौण्ड 2. बास का बीज (-अम्) बसलोचन, गतिम् (पु०) नट, ममसंग, -नाबि(ली) का बाग की बनाई बासुरी, -नायः किसी बध का प्रधान पुरुष, -नेत्रम् ईस की जड़, -बन्धम् बास का पता (ः) नरकुल, बन्धक 1 नरकुल 2 पीडा, यन्त्रे का द्येते प्रकार, (-कम्) हुरताक, -परंपरा बधानुष्म, कुलपरंपरा, पुरकम् यन्त्रे की जड़, -श्रीष्य (वि०) ज्ञानुबधिक (-अम्) ज्ञानुबधिक भूमति, -सधवीः (स्त्री०) कुल का सौभाग्य, बिसति (स्त्री०) 1 परिवार, मन्तल 2 बांसी का झुरमुट, -सर्परा बसलोचन, सत्ताका बीणा में लगी बाँस

की लूटी, स्थितिः (स्त्री०) कुल की अधिष्ठाप्रता रघु० १।३११ ।

बंधक [बन्ध+कन्] 1 एक प्रकार का गधा 2 बास का जोड़ 3 एक प्रकार की मछली, -कम् जग्न की लकड़ी ।

बंधिका [बन्ध+ठन्+टाप्] 1 एक प्रकार की बासुरी, जग्न की लकड़ी ।

बंधी [बन्ध+बन्धु+ङीष्] 1 बासुरी, मुरली -न बन्धी- मत्तासीदम्वि करमरोजाद्विधाकिताम्-ईस० १०८, कसरिपोष्यपोहसु त बोध्यायामि बन्धीर्य गीत० ९ 2. शिरा या बमनी 3 बसलोचन 4. एक विशेष टोल । सम० बन्धः-धारिन् (पु०) 1 रूप्य व विशेषण 2 बन्धी बजाने वाला, ।

बंध्य (वि०) [बन्धे भव वन्] 1 मुख्य शहरीने मे मयव रखने वाला 2 मेरुदण्ड से सबंध रखने वाला 3 परिवार से सबंध रखने वाला 4, अच्छे कुल में उत्पन्न, उनम कुल का 5 बधाघर, बधाप्रवर्तक, -इषः 1 मन्तल २ बर्ती (ब० ब०) इतरेति रघोर्वेश्या -रघु० १।५ ३. 2 पूर्ववत्, पूर्वपुत्रा -नून मात पर बध्या पिण्ड- विच्छेददशिन रघु० १।६६ 3 परिवार का काई सदस्य । आरारा, शहरीने 5. मुजा या टाग की हड्डी 6 शिष्य ।

बंध दे० बह ।

बन् दे० बन् ।

बकुल दे० बकुल ।

बन्ध् (म्बा० जा०-बन्धकने) जाना, श्रियना-युग्मा । बन्धत्स्य (म० क०) । बन्, तन्धन् । कते जाने या जाने जान के योग्य, बाल रिपे जाने या प्रकपन व योग्य नन्दि यकलय न बन्धधम (महा० मं अने १ बार) 2 किसी विषय में कते जाने के योग्य 3 गते- णीय दूषणीय, निन्दनीय 4 नाच, दुष्ट, कमीना 5 स्पष्टव्य, उत्तरदायी 6 आश्रित, -अव्यम् 1 बंधना भाषण 2 विधि, नियम, मिथान्त वाच्य 3 कलक, निन्दा, भ्रंशना ।

बन्धु (वि०, वा पु०) [बन्धु+तृच्] 1. बंधने वाला बाण करने वाला, बन्धा 2 वाक्पटु, प्रवक्ता कि करिष्यन्ति बन्धार श्रोता यत्र न विद्यते, दुर्दुरा एव बन्धारस्तत्र शीज हि शोभनम्-मुया० 3 अपपाप- ध्याक्याना 4 विद्वान् पुरुष, बुद्धिमान व्यक्ति ।

बन्धुम् [बन्धु अनेन बन्धु-करणे ष्टुन्] 1 मुत्र 2 बेहरा -यद्वन्न मुद्रुरीजेते न पतिनां कृते न चाटन्मुया भर्त् ३।१७३ 3. बन्धु, शीष, बंधु 4 आरम्भ 5 (आप की) नोक, किसी पात्र की टोंटी 6 एक प्रकार का बन्ध 7 अनुष्टुप् से मिलना-जुलना एक अन्व. दे०

सा० व० १६७, काव्या० १२९। सम०—आत्मः
सारः—सुरः दंतः, नः बाह्यणः, —सत्त्वम् मुह
से बजाया जाने वाला बाधयन्त्र, —बलम् तालु,
पदः परदा, —रथश्रम मुलविवर, —वरीरथः
भाषणः—बोधिन् (वि०) चरपरा, तीक्ष्णः—बातः
सत्ता, —बोधनम् 1 मुह साफ करना 2 नीव,
चकोतरा, —बोधिन् (नपु०) चकोतरा (पु०) चकोते
का वृक्ष ।

बध (वि०) [बद्ध् + रन्, पु०] नलोप] 1 कुटिल
(आत्म० से भी) मुका हुआ, टेढ़ा, चक्करदार, बुभा-
वदार—बद्ध यन्त्रा यदपि नवत प्रस्थितस्योत्तराक्षाम्
येष० २७, कु० ३२९, 2 गोलमोल, परोक्ष, टाल-
मटल, मच्छलाकार, बुभा किरा कर बात कहना,
अर्थक या छन्दिक (भाषण) किमैतरेक्यभिते
—रत्न० २, बन्नाधारचनारमणीय मुद्रका प्र-
वृत्ते परिहास- वि० १०।१२ दे० 'बकोक्ति' भी
3 छलेदार, महारियेदार, मुद्राले (बाल) 4 प्रति-
नामी (गति जादि) 5 बेईमान कामसाध, कुटिल
स्वभाव का 6 क्रूर, बालक (ब्रह्म जादि) 7 छन्द
साधन की दृष्टि से मुह (दीर्घ)।—कः 1 बन्नाधार
2 तानिचह 3 शिव 4 त्रिपुर राक्षस, —कम् 1 नदी
का मोह 2 (पह का) प्रतिमान । मय० बद्धम्
टेढा, अवयव य० 1 हन 2 चक्रवा 3 सौम्य, —उत्पिः
(स्त्री०) एक अलंकार का नाम जिसमें टालमटोल
करने वाली बात या ठो संक्षेपपूर्ण हन में कड़ी बानी
री या म्बर बहान करे। मन्मट इसकी परिभाषा इस
प्रकार देता है—यदुक्तमप्यथा वाक्यमन्यवाप्येन
याप्येन, श्लेषेण वाक्या वा श्रेया ता बकास्तिस्तथा
द्विधा—काव्य० ९, उदाहरण के लिए मुद्रा० का
आरम्भिक श्लोक (धन्या केश सिन्धवा) देखिए
2 बाधसुल, कटाक्ष श्रयण—बुधन्बुधोपमदुश्च कवि-
राज इति त्रय, बकोक्तिमार्गनिपुणावचनपूर्वो विद्यते
न वा 3 कृत्विन, ताना, कष्ट क्षेत्र का पेड़,
कष्टक क्षेत्र का वृक्ष, —बद्धः, बद्धकः कटार,
टेढ़ी तलवार, गति, गतिम्बु (वि०) । टेढ़ी बाल
बानी, चक्करदार 2 आत्मज्ञान, बेईमान, —पीकः ऊँट
—बद्धः तोता, मुक्कः 1 तमोल वर विक्षेपण 2 तोता,
—बद्धः मुक्क, बुद्धि (वि०) —श्रेणी बोध वाला,
ऐषाताना 2 विह्वलपूर्ण दृष्टि श्यने बाला 3 ब्राह्म
करने वाला, (स्त्री०) निगच्छी निगार, तिर्यग्बुद्धि,
मकः 1 तोता 2 तीक्ष्ण पुरुष, बालिकः उल्फ,
—पुष्क, पुष्किलः कुला, पुष्कः डाक वृक्ष,
बालिकः, लोभकः कुला,—भाषः 1. टोशान
2 भाषा, बकः मुक्क ।

बध्म (पु०) मृत्य, कीमत् ('अवधम' के बदले) ।
११२

बधिन् (वि०) [बध् + धिन्] 1 कुटिल 2 प्रतिनामी
(पु०) जैन वा बुद्ध ।

बधिमन् (पु०) [बध् + इमनिच्] 1 कुटिलता, बकता,
2 बाधसुल, टालमटोल, सदिधता, चक्कर, बुभाव,
(बाधी की) परोक्षता,—बद्धन्नाभुवसोत्तम व च
मुधास्पन्वी गिरा बधिना गीत०, ३ 3. वृत्तता,
बाधाकी, मक्कारी ।

बधोष्टिः, बधोष्टिका (स्त्री०) [बध् ओष्ठो यस्य
ब० स०, कप् + टाप् इत्वम्] मूत्र मुखकान ।

बध् (म्बा० पर० बलति) 1 वृद्धि को प्राप्त होना,
बढ़ना 2 शक्तिप्राप्ती होना 3 बूढ़ होना 4 तबित
होना ।

बध्मन् (नपु०) [बह् + भवन्, कुट् च] छाती, हृदय,
सीना बघाटवला परिणद्धकम्बर—रघु० २ ३४ ।
मय०—कः—बह्, बध्ः (बकोक्ति), बकोबह्,
बकोबह्) स्त्री की छाती भागि० २।१७, 1 बलम्
(बल वा बलः स्वल्पम्) छाती वा हृदय ।

बध्, बध् (बधति, बधति) जना, जिलता-जुलना ।
बघाह् [भाएरिभते अववाह्] इत्यत्र अकारलोप] दे०
'बघाहाह' ।

बद्धकः [बद्ध् + क्] नदी का मोह ।

बद्धका [बद्ध् + टाप्] बांधे की जैन की जगली मेंडी ।

बद्धकिलः [बद्ध् + इलच्] कौटा ।

बद्धि [बधि + क्तिन्, इतिवात् धातोर्गम्] 1 (किमी
जानबार या भवन की पत्तनी), (कुछ लोग इन शब्द
को स्त्रीलिंग बनाते हैं) 2 छत का शहतीर 3 एक
प्रकार का बाध यन्त्र (इन दो अर्थों में नपु० भी) ।

बद्धन् [बह् + क्तुन्, नृन्] गंगा नदी की एक शाखा ।

बद्धम् (म्बा० पर० इह्यति) 1 जाना 2 लगवाना, लगडा
कर चलना ।

बद्ध्याः (ब० व०) [बद्ध् + अच्] बगल प्रथम तथा
उसके अधिवासियों का नाम बद्धानुस्त्राय तथा
नेता नीलाधमोदनाम्—रघु० ४।१६, रत्नाकर समा-
रम्भ ब्रह्मपुत्रान्गम विदे, बद्धदेश इति शोभत, —प.
1 कपास 2 बैसन का पौधा—कम् ! सीमा 2 रागा ।
मय० अरिः हनुताल, कः 1 पीतल 2 त्रिपुर,
जीवनम् नदी, शुभश्रवण कामा ।

बध् (म्बा० आ० बन्धते) 1 जाना 2 तेजी से चलना,
3 आरम्भ करना 4 निन्दा करना, दूषित
करना ।

बध् (ब्रदा० पर०) (आधंघानुक लकारों में आ० भी,
कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि साधंघानुक लकारों में,
अनुपुण्य बहुवचन के रूप मेंही होते हैं, तथा कुछ
के अनुसार मसस्त बहुवचन में बन्ति, उक्तम्) 1
करना, बालना—वेदाध्यायिच बलि काव्य० १०,

(प्राय दो कर्मों के साथ) - सामुच्चल प्रायमप्यभिध्या - रघु० १५१६, कभी कभी 'भाषण' अर्थ को इतनासे वाले लक्ष्यो के साथ दूसरी विभक्ति में - उवाच श्यामा प्रथमोदित वच रघु० ३१५०, २१५९, क एव वचतेत भाषयन् रामा० २ वर्णन करना, बयान करना रघुनामव्यय वच्ये - रघु० ११९ ३ कहना, समाचार देना, घोषणा करना, प्रकथन करना

उच्यतां महचनान् सारथि - श० २, मेघ० ९८ ४ नाम लेना, पुकारना - तदेकसप्तदशगुण भन्वन्तर-मिहोच्यते मनु० ११७९, प्रेर० - (बाधयति ते) १ बुलवाना २ निगाह डालना, पढ़ना, बखलोकन करना ३ कहना, बोलना, प्रकथन करना ४ प्रतिज्ञा करना, इच्छा० (वचसति) बोलने की इच्छा करना, (कुछ) कहने का इरादा करना, अनु-वाद में कहना, भाषित करना, पाठ करना, (रे०) - मन में पढ़ना - नाममुद्राक्षारव्यनुवाच्य - श० १, निम् १ अर्थ करना, व्याख्या करना वेदा निर्वेक्युक्तमा २ वर्णन करना, बोलना, प्रकथन करना, घोषणा करना ३ नाम लेना, पुकारना, प्रति - उत्तर में बोलना, जवाब देना, प्रतिवाद करना न चेतद्रुह्य प्रतिवचनमर्हसि - कु० ५१४९, रघु० ३१४८, वि , व्याख्या करना, सम - कहना, बोलना ।

वच [वच् + अच्] १ तोता २ सुर्ग, या १ मीना पक्षी २ एक सुगन्धित जड़, चम् बोलना, बात करना ।

वचनम् [वच् + ल्यट्] १ बोलने, उच्चारण करने वा करने की क्रिया २ भाषण, उद्धार, उक्ति, वाक्य - ननु वक्तुविद्योषनि स्पृहा गुणगुहा वचने विपरिचय - कु० २१५, प्रीत प्रीतिप्रमूहवचन म्वागत व्याजहार मेघ० ४ ३ बोहरना, पाठ करना ४ मूल, वाक्य विन्यास, नियम, विधि, धार्मिक प्रत्ये का सन्दर्भ - शास्त्रवचन, त्रितयवचन, स्मृतिवचनम् आदि ५ आदेश, हुक्म, निर्देश, 'महजनात्' मेरे नाम से अर्थात् मेरे आदेश से ६ उपदेश, परामर्श, अनुदेश ७ धावना, प्रकथन ८ (व्या० में) (वर्ष का) उच्चारण ९ शब्द की यथायंता - अय यथाश्च शब्द मेघवचन १० (व्या० में) वचन, (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन इस प्रकार वचन तीन होते हैं) ११ मुक्ता अदरक । सम० वचक्यः प्रस्तावना, आमन्त्र, कर (वि०) आज्ञाकारी, आदेश का पालन करने वाला, - कारिन् (वि०) आज्ञा पालन करने वाला, आज्ञाकारी, च्च-प्रवचन, धारिन् (वि०) आज्ञाकारी, अनुवर्ती, विनीत, - वट्ट (वि०) बोलने में चतुर, चिरोच, विविधों की असङ्गति, विरोध, पाठ की अननुकूलता, -सल्लु सौ भाषण, अर्थान् बार बार घोषणा, पुनरुक्त

उक्ति, स्थित (वि०) 'वचने स्थित' जो आज्ञाकारी, अनुवर्ती ।

वचनीय (वि०) [वच् + अनीयर्] १ कहे जाने, बोले जाने वा बयान किये जाने के योग्य २ निम्ननीय, बुधधीय, - चम् कलक, निम्ना, निर्मत्सना न काम-वृत्तिर्बचनीयमीजते कु० ५१८२, वचनीयमिदं श्च-वस्मित रमय स्वामनुयामि यद्यपि-५१२१, भवति योजयितुर्बचनीयता - पद्य० ११७५, कि० ९१२९, ९५, मूच्छ० ५१११,

वचरः (पु०) १ मुर्ख २ बदमाश, नीच, शठ, दुष्ट ।

वचस् (पु०) [वच् + अच्युत्] १ भाषण, वचन, वाक्य, - उवाच श्यामा प्रथमोदित वच - रघु० ३१२५, ४७, इत्यव्यभिचारि तद्वच कु० ५१३६, वचलज प्रयोक्त-व्य यद्योक्त समते फलम् मुभा० २ हुक्म, आदेश, विधि, निषेधाज्ञा ३ उपदेश, परामर्श ४ (व्या० में) वचन । सम० कर (वि०) १ आज्ञाकारी, अनुवर्ती २ हुमरो की आज्ञा पालन करने वाला, - च्चः प्रवचन, - वट्टः कान, प्रवृत्तिः (स्त्री०) भाषण करने का प्रयत्न श० ७१७ ।

वचसाभ्यतिः [वचसा वाचा पति. वच्छया अनुच्] वृथ्पति का विशेषण, गूढ रह ।

वच् । (व्या० ५१० वज्रिण) ज्ञाना, हिलना-बुलना, इधर-उधर घूमना । :: (जुग० उभ०) भावयन्ती काष्ठछाटकर ठोक करना, संपार करना २ बाण की नोक में पर लगाना ३ ज्ञाना, हिलना-बुलना ।

वच्ञ - च्चम् [वच् + रन्] १ वच, बिजली, इन्द्र का शस्त्र. (कहते हैं कि इन्द्र का वच्ञ दर्वाचि की हृद्यिया में बना था) - आसमन-मयिनिप मुरा सकलवैरा नि देवैरस्थायिभ्यो धनुषि विजय पौरुहने च वच्ञे - ग० २११५ २ इन्द्र के वच्ञ जैसा कोई भी धातक या बिनाशकारी हृद्यियार ३ हीरो की शक्ति, मणि माणिक्यो को बीधने का उपकरण - मणी वच्ञममूल्यीणं धृष्टये वास्ति मे गति रघु० ११६ ५ हीरा, वच्ञ वद्या रणि कठोरणि मुद्गनि कुमुदादिप उत्तर० २१५, रघु० ६११९ ५ काँजी, च्च १ एक प्रकार का मैनिकम्पूत्र २ एक प्रकार का कुल नामक धास ३ अनेक पौधों के नाम, - च्चम् १ इम्प्यात २ अन्नक ३ वय जैसी या कठोर भाषा ४ बालक, वच्ञ्या ५ आवला । सम० - अच्ञः नीप, - अच्ञासः अनुप्रस्थगुणन, - अस्ति इन्द्र का वच्ञ, आच्छः हीरो की मान, रघु० १८१२१, - आच्यः एक बहुलप पावर, मणि, - आयात १ बिजली का प्रहार २ (अत आल० से) आक-सिक धक्का या लकट, - आच्यः इन्द्र का हृद्यियार - अच्युतः हुनुमान् का विशेषण, बीसः वच्ञ, बिजली, वच्ञ की शक्ति - जीवितं वचकीकम् मा० ९१३७,

दु० उत्तर० १५७, आरम्ब रिहाली मिट्टी,—भोफः—
 इन्द्रगोप्य वीरचतुर्दी, बच्चुः गिह, चरन्तु (पु०)
 वीहा, चित्तु (पु०) गवड,—अवलम्बन्, अवाला
 बिजली,—तुष्कः 1 गिह 2 बच्छर, डोस 3 गवड
 4 गमेड, -कुष्य नीलम, इच्छुः एक प्रकार का
 कीडा, इत्सः 1 मुहर 2 बूहा,—ब्रह्मण एक बूहा,
 -बेह, बेहिन् (वि०) दूड शरीर वाला, बरः इन्द्र
 का विशेषण—बज्रधरप्रभाव—रपु० १८१२, -नामः
 कृष्ण का (मुद्रमंन) चक्र, विद्योष,—विष्णोष- बिजली
 की कड़क, पाणि. इन्द्र का विशेषण—बज्र मुमुक्षु-
 त्रिह बज्रपाणि रपु० २५२, यत्सः बिजली का
 गिरता, बिजली का आघात,—मुष्कन् निल का फूल
 भुम् (पु०) इन्द्र का विशेषण, बलिः हीरा,
 कडा पत्थर भन्तु० २५६,—मुष्ति इन्द्र का विशेषण,
 रवः मुहर,—लेष एक प्रकार बडा कडा मीमेट,
 बज्रलोषडित्तना मा० ५१०, उग्र० ६ (इन्क
 बाग मे बनने वाले पदार्थ के लिए द० ब्रह्म०
 म० ५३) -गाहक बज्रधर,—ब्रह्म एक प्रकार
 का वैदिक ऋह. शम्भु माही नामक जानवर,
 मार (वि०) पत्थर की भांति कठोर, बिजली
 हा उल्लिखिताना, अपमान कडा—बज्र व निगित-
 लयना बज्रमाग जगन्ते ज० ११०, त्वमपि
 इन्द्रगणायब्रह्ममाहा करीणि ३३,—मुष्ति, - षी
 -म्याः) हाँ की मुर्द,—ब्रह्मपत् पत्थर जेमा
 बडा टिल ।

बिद्यन्त (पु०) [बज्र + इति] 1 इन्द्र- तनु ब्रह्मण एव
 शेरमंडलशब्दने द्विपता यदस्य पक्ष्या—बिक्रम०
 १५, रपु० ५२४ 2 उल्लङ् ।

बच्चुः—का. पर० बच्चरिः, 1 जाना, पहुँचना—बच्चुश्चचा-
 त्तवर्तिम्—भट्टि० १४०४, अि०६ 2 घुमना
 3 स्फुरार-रज जाना, मिमर जाना प्रे० (बच-
 त्त-ने) 1 टालना बचना विवसकना, बिदचना
 अर्चि व-चरति, अकञ्चयत मायावच म्बनायाभिरं-
 र्णाम् भट्टि० ८५३ 2 ठगना, चाला देना, चाल-
 नागा ठगना (आ० मानी जाती है, पर बहुधा पर०
 मी) -मुर्गास्वामिवचञ्चन्त—भट्टि० १५१५, कथमप
 वचनपमे जलभुगतपसमशरञ्चयतुत्तम् वीत० ८,
 (कथन) बच्चवन्तु प्रवराप म रपु० १५१७, कु०
 ५१०, ५१६, रपु० १२५३ 3 बचित करना, दरिद्र
 करना रपु० अट ।

बच्चक (वि०) [बच्चु + चिच् + ध्वञ्] 1 बालभाज,
 बालभाज, बक्कार 2 ठगने वाला, घोसा देने वाला,
 क. 1 बदमाश, ठग, उचक्का 2 गीदड़ 3 छहँदर
 4 गालू नेहला ।
 बच्चति (पु०) बलि, भाप ।

बच्चकः [बच्चु + अच्] 1 ठगना, बदमाशी, घोसा,
 चालाकी 2 ठग, बदमाश, उचक्का 3 कौशल ।

बच्चकन्तु,—ना [बच्चु + स्तुट्] 1 ठगना, 2 दाकपंच, घोसा,
 जालसाजी, घोसाबेदी, चालाकी बच्चना परिहृतंभ्या
 बहुदोषा हि हर्षरी—मुष्क० १५८, स्वर्गभिसन्धि-
 मुकत बच्चनामिव मेनेरि—कु० ५५७ 3 भागा, भ्रम
 4 हानि, क्षति, अक्षयन—दृष्टिपाठबच्चना—मा० ३,
 रपु० ११३६ ।

बच्चित (पु० व० क०) [बच्चु + क्त] 1 प्रतागित, ठगा
 गया 2 विरहित,—ता एक प्रकार की पहेली या
 ब्रह्मोक्क ।

बच्चुक (वि०) (स्वी०—की) [बच्चु + उक्त्] घोसे से
 पूर्ण, बालभाज, बक्कार, बेईमान,—कः गीदड़ ।

बच्चुल [बच्चु—उल्लच्, पुषी० बच्च ज] 1 बेंत या नरकुल
 —शामञ्जुबच्चुल्लाना व ताप्यमृनि नीरुध्रानां
 निबुलानि भरितटानि—उत्तर० २१२३, या, मञ्जुल-
 बच्चुल्लकुञ्जगत विचकयं करेण दुकले—गीत० १ 2
 एक प्रकार का फूल 3 अक्षोकवृक्ष 4 एक प्रकार का
 पत्थी । सम० इक्षुः अक्षोकवृक्ष,—श्रियः बेंत ।

बट् । (म्भा० पर० बटति) घेरना ।

1) [च्वा० उभ० बटयति—ते] 1 कहना, 2 बौटना,
 विभाजन करना 3 घेरना, घेरा डालना ।

बट [बट् + अच्] बट का पेश-अय व चित्रकूटपार्यायिनि
 कर्मणि बट इत्यो माथ उत्तर० १, रपु० १३५३
 2 छोटी सुक्ति या कौडी 3 छोटी गैर, गालिका,
 बटिका 4 गोमयक, मृत् 5 एक प्रकार की टोटी
 6 बोगी रस्सी (इस अर्थ में तपु० मी) 7 रूप-
 सादृश्य । मम—बज्रम् ध्वेत तुलसी का एक भेद
 (त्रा) चमेसी,— बालिम् (पु०) यक्ष ।

बडक [बट् + वन्, बट् + म्बन् वा] 1 बाटी, एक प्रकार
 की गोंदी 2 छोटा चिक, गैर, गोली, बटिका ।

बडर. [बट् + अरन्] 1 मुर्दा 2 बटाई 3 फाडी 4 चोर,
 लुटेरा 5 रई का बडा 6 सुर्गात भास ।

बडाकार, बडारकः (पु०) शोरा, शोरी ।

बटिक [बट् + इत् + क्त] शोरज का मोहरा ।

बटिका [बट् + इत् + क्तु + टाप्] 1 टिकिया, गोली
 2 शतरज का मोहरा ।

बटिन् (वि०) [बट् + इत्] शोरीदार, बर्तुलाकार—पु०
 = बटिक ।

बटी [बट् + अच् + कीप्] 1 रस्सी या शोरी 2 गोली,
 बटिका ।

बट् : [बटति अत्यवसन्नम् बट् + उः] 1 छोरकर, लड़का
 जवान, चिओर (बहुधा बड़ेकी के 'चैप—chap
 या फेलो—fellow छब्ब के छाना प्रयोग)
 चपलोअय बट् : ब० २, निवार्यतामि किमप्यथ बट्

पुनर्विषयः स्फुरितोत्साहः—कु० ५।८२, तु० 'बट्'
से नी २ बहुवचारी ।

बटुकः [बट् + कन्] १ छोकरा, लडका २ बहुवचारी
३ मूख, बूढ़ ।

बट् (स्वा० पर० बटति) १ बलवान् या शक्तिशाली होना
२ मोटा होना ।

बट्टर (बट् + अर्त्) १ मन्दबुद्धि, जड़ २ दुष्ट, रू
१ मूख या बूढ़ २ बदमाश, या दुष्ट ३ बंध या
डाक्टर ४ जल-पात्र ।

बडभिः—भी दे० बलभि, भी ।

बडवा [बल वाति बल + वा + क + टाप्, डलयोरन्त्यान्
लस्य डत्वम्] १ पंथी २ अश्विनी नाम की जन्मरा
जिसने पंथी के रूप में मृत्यु के द्वारा अश्विनीकुमार
ताम के दो पुत्र उत्पन्न किये थे दे० सजा ३ दामी
४ वेश्या रचो ५ ब्राह्मण जाति की स्त्री, द्विजयो-
पितृ। सम० अजि, अनल समुद्र के भीतर
रहने वाली अज, मुख १ मगध के भीतर रहने
वाली अज २ जिन का नाम ।

बडा [बट् + अच् + टाप्] एक प्रकार की राटी ।

बडिजम् [बलिनो मत्स्यान् इयति नाशयति शो + क,
लस्य डत्वम्] दे० 'बडिज' ।

बट्ट (वि०) [बट्ट - रक्] विशाल, बडा, महान् ।

बन् (स्वा० पर० बन्ति) बन्द करना, ध्वनि करना ।

बणिज् (तु०) [वणाजने व्यबहति पण् + इजि पण्य
व] १ सौदागर, व्यापारी—व्यापार के बलवीविकाये
त ज्ञानपण्य बणिज् बर्तन्ति मार्क० १।१० २ तुला
राशि (स्त्री०) पण्यवस्तु, व्यापार। सम० कृमन्
(तपु०)—किया क्रयविक्रय, व्यापार—अन १ सामुद्रिक
रूप से व्यापारी बन् २ व्यापारी, सौदागर, पण्य
१ व्यापार, क्रयविक्रय २ सौदागर ३ बन्विये की
दुकान, आपणिका ४ तुलाराशि, वृत्ति (स्त्री०)
व्यापार, क्रयविक्रय भर्तु० ३।८१—सायं व्यापारियो
का दल, टीली ।

बणिजः [बणिज् + अच् (स्वा०)] १ सौदागर, व्यापारी
२ तुला राशि ।

बणिजकः [बणिज् + कन्] सौदागर, बन्विया ।

बणिव्यं, बणिव्या [बणिज् + यन्, रिषया टाप् च] व्यापार
क्रयविक्रय ।

बण्ट (स्वा० पर०, चुग० उभ० वण्टति, वण्टयति
—ने) बाटना, अग बनाना, विभाजन करना,
हिंस्र करना ।

बण्ट [वण्ट् + घञ्] १ भाग या खण्ड, अग, हिंस्रता
२ टूटाई का दना ३ अविवाहित पुरुष, कुँआरा ।

बण्टकः [वण्ट् + घञ्, स्वायं क] १ बाँटने वाला, वितरण
करने वाला २ क्लरक ३ भाग, अग, हिंस्रता ।

बण्टलम् [वण्ट् + ल्युट्] विभाजन करना, अग बनाना,
बाँटना या विभक्त करना ।

बण्टाल, **बण्टाल** [वण्ट् + आलच्, पक्षे पृथो० टस्य डत्वम्]
१ शूरवीरो की प्रतियोगिता २ कुदाल, कुर्पा ३ नाव ।

बण्ट (स्वा० आ० वण्टते) अकेले जाना, बिना किसी को
साथ लिए चलना ।

बण्ट (वि०) [वण्ट् + अच्] १ अविवाहित २ टिगना
३ विकलाङ्ग, ठ. १ अविवाहित पुरुष, कुँआरा
२ मेवक ३ टिगना ४ भाला, नेत्रा ।

बण्टर [वण्ट् + अर्त्] १ बॉम का आवेष्टन, बॉम का
माटा पना २ ताव का तथा किमलय ३ (बकरे को)
बाँधने के लिए रस्सी ४ कुना ५ कुन की पंछ
६ बादन ७ स्त्री की छाती ।

बण्ट । (स्वा० आ० वण्टते) १ बाँटना, हिंस्र करना,
अग बनाना २ घंटा, चारो ओर से आवेष्टित
करना । ॥ (चुग० उभ० वण्टयति—ने) हिंस्र
करना, बाँटना, अग बनाना ।

बण्ट (वि०) [वण्ट् + अच्] १ अपाङ्ग, अपाङ्गि, विक-
लाङ्ग २ अविवाहित ३ नपुंसक बनाया हुआ, रू
१ बड़ आदमी जिसकी सतना हो चुकी है या जिसकी
अनेन्दिय के अग्रभाग को इकने वाला चमडा नहीं
है २ बिना पंछ का बँल, डा व्यभिचारिणी स्त्री
—तु० 'रण्डा' ।

बण्टर [वण्ट् + अर्त्] १ कञ्जस, मकलीचूट २ हिजडा ।

बन् (वि०) एक प्रत्यय जो स्वामित्व की भावना की
प्रकट करने के लिए 'यज्ञाशब्दों के साथ लगाया
जाता है—उदा० धनबन्धु - धनराष, रूपबन्धु मुन्दर,
इसी प्रकार भगवन्, भाम्बन् आदि, (इस प्रकार बने
हुए शब्द विशेषण होते हैं) २ मू० क० कु० के
आधार से 'बन्' लगा कर कर्तृवा० का रूप बना
लिया जाता है—इत्युक्तवन् प्रनकाराज्यायम् -रघु०
१।६।३ ३ अण्य० 'समानता' और 'मातृत्व' अर्थ का
प्रकट करने के लिए सजा या विशेषण शब्दों के साथ
'बन्' जोड़ दिया जाता है उदा० आत्मकर्मव्यवसायि
य पश्यति म पश्यति ।

बन् [वन् + क्] दे० बत ।

बन्त [अवन्त् + अच् वा घञ्, भावृरिते 'अव' इत्यस्य
अकारलोपः] दे 'अवन्त' कर्पोल्लिखितोत्पन्न
—गीत० २ ।

बन्तोका [अवन्त् लोक यस्या—अवस्य अकार लोप] बॉम
या निम्नलान्त स्त्री, बहु शाय या स्त्री जिसका किसी
दुर्घटनावश गर्भपात हो गया हो ।

बन्त [वन् + इ] १ बछडा, किसी जानवर का बच्चा,
नवाश वन्तमिव लोकधम् पुत्राय—भर्तु० २।५६,
य सर्वशोला परिक्लप्य बन्त—कु० १।२ २ लडका

पुत्र, (यह शब्द इस अर्थ में बहुधा सर्वोपन के रूप में प्रयुक्त होता है, वास्तव्य शानक शब्द 'मेरे प्रिय' 'मेरे लाल आदि शब्दों में व्युत्पन्न) - अथि वल्ल कृत् कृत्प्रतिविनेयेन विमपराद्ध बनेन—उत्तर० ५ 3 सनान, बच्चे, जीवकला 'त्रिकके बच्चे जीविन हा' 4 वर्ष 5 एक देव का नाम (इसकी राजधानी कौशाभा की जहाँ उदयन राज्य करता था) 6 उनके अथिवासी,—स्ता 1 बछिया 2 छोटी लड़की 'बन्ने मोते' (बेटी मोता) आदि, -स्त्वम् छाती। मय० अक्षी एक प्रकार की ककड़ी,—अथन भेड़िया, ईश —राज बन् देव का राजा, लक्ष्णे इति च बल्लगज-पुत्रिण मादृपे च दशा बपम् -नाम० १- काम (वि०) बच्चा को प्यार करने वाला, (या) वह माप जा बछड़े में मिलने की प्रवृत्ति जानलता स्थनी है,—नाम 1 एक वृक्ष का नाम 2 एक प्रकार अयन बटार विष, - बाल बछड़ों का पालने वाला, कृष्ण या बालगम,—शास्त्रा गोपाल।

अस्त्रक [बन् + कृत्] 1 नन्दा बछड़ा बछड़ा 2 बच्चा 3 कुटुम्ब नाम का पौधा - कम् पुष्पकमील।

बल्लतर [बन् + तरप्] वह बछड़ा जिसमें अभी हाल में दूध चूषना छोड़ा है, ब्रह्मन् वेन त्रिकव ऊपर अभी दूध चूस रही रक्का गया है महोत्सवा बन्तर स्पु-निव रघ० ३:३०, - ही बछिया, कलार प्राचिया-नाम्नानाम्य बल्लनरी वा महोत्स वा निक्षेपनि पुत्रोपेधन उत्तर० ४।

बल्लर [बन् + मन्] 1 वर्ष यात्रा १:२०५ 2 विष्णु का नाम। मय० अस्त्रक कामान वा महीना अणम् वह ३ण जो वर्ष का समाप्ति पर वापिस किता जाय।

बल्लक [वि०] [कम् लाति ला + कृ] 1 बच्चों को प्यार करने वाला, बच्चों के प्रति स्नेह शील जैसा कि बालका भेनु, माना 2 स्नेहशील, अतिप्रिय, स्नेहगुरागी, दयालु,—कृष्णायमनद्वल्लक ब्व स मपदि-वत्यम् हुला- मा० ८:८, ९:१६, रघु० २:६९, ८:११, इसी प्रकार अरुणामनवत्सल 'दीनवत्सल आदि, लघु घास से प्रेरित अग्नि, ला अपने बछड़े का प्यार करने वाली माय,—कम् स्नेह, प्यार।

बल्लकमति [मा० या० पर०] उत्कृष्टा पैदा करना, उत्तुक् बनाना, स्नेहयुक्त करना - नृनमपया या बल्लममति हा० ७।

बल्ला, बल्लिका [बन् + टाप्, कन्सा + कृ + टाप् इत्थम्] बछिया, बहरी।

बल्लिमम् [पु०] [बल्ल + इमनिप्] बचपन, कौमार्य, उम-रती अवधि।

बल्लिय [बल्ल + छ] गोप, ग्वाला।

बल् (म्बा० पर० बदलि, परन्तु कुछ अवधों में तथा कुछ उपमगों के साथ अ०, दे० ती०, उदित, कर्म वा० उछने, इच्छा० विवर्धयति) 1 कहना, बोलना, उच्चारण करना, सर्वापित करना, बाँट करना—बद-प्रदापि स्फुटकशतराका विभाबरी यक्षकनाय कल्पते—कु० ५:६४, बदता बर—रघु० १:५९, 'बाकुपटुजी में प्रमुक्तम' 2 धोषणा करना, कहना, समुच्चार दना, सूचित करना या गोश्रादि बदलि स्वयम् 3 किसी के विषय में कहना, वर्णन करना, भय० २:२९ 4 अकित करना, निर्धारित करना, बधाना मन्० २:१९, ६:१४ 5 नाम लेना, पुकारना बदलि बध्यावर्धनाय पर्वेषय दीपक बुधा—बन्दा० 6 मनेन करना, आश्रय देना कृत्प्रतामप्य बदलि मपद -कि० १:१६ 7 स्वर ऊंचा उठाना, कन्दन करना, मानन करना' कोकिल पचमेन वदति, बदलि मधुरा वाच—आदि 8 हासियारी या प्रबोधिता दर्शना, किसी विषय पर अधिकारी होना (आ०) शस्त्रे बदने, पाणिनिबंदते—दोप० 9 बमकना, उज्ज्वल या देदीयमान दिखलाई देना (आ०), मट्टि० ८:२७ 10 उद्याप करना, घेटा करना, परिश्रम करना (आ०) श्रेणे बदने सिद्धा०, प्रेर० (वादयतिने) 1 कहलवाना 2 शब्द कृतवाना, बाजा बजाना—श्रीधामिव वादयन्ती—विक्रम० १:१०, वादयते मृदु वेधुम्—गीत० ५, अन्- 1 बोलने में नकल करना, बाहुगाना (गिर न) अनुवदति लुकन्ते मञ्जू-वाकुपञ्जरम् -रघु० ५:१०६ 2 प्रतिध्वनि करना, गूत्रना (पर० और आ०) अनुवदति शेषा 3 अनु-मादन करना (उमो मनाभाव की प्रतिध्वनि करके) शि० २:६७ 4 नकल करना (आ०) मट्टि० ८:२९ 5 समर्थन के रूप में आर्पित करना, अर्प- (सदेव आ० परन्तु कभी कभी पर० भी) 1 बुरा भला कहना, गाली देना, जिन्दा करना शि० ३:६१९, मन्० ४:२३६, कभी कभी मन्त्र० के साथ—मट्टि० ८:१५५, 2 न बचाना, 3 जितना विरोध करना, अहि- 1 अहिभयक करना, उच्चारण करना, मृत्यु या बजन रचना यद्वाचाजम्बूदित येन वाचम्बुद्धे, नदेव हृद्य स्व विद्धि नेद यदिदमुपासने केन०, 2 नयस्कार करना, अभिवादन करना, (प्रेर०) प्रणाम करना—अथवर्षाभिवादाने,अथ- (आ०) 1 लुभाना, चापलुकी करना, फुसलाना—मट्टि० ८:२८, 2 मनाना, अनुकूल करना परि- 1, गाली देना, जिन्दा करना, बुरा भला कहना, प्र- 1, बोलना, उच्चारण करना 2 बातें करना, सर्वोचित करना—मट्टि० ७ २४ 3 नाम लेना, पुकारना 4 छपाल करना, सोचना, प्रसि- उत्तर में बोलना, जबाब देना—रघु०

३।४ 2 बोलना, उच्चारण करना 3. दोहराना वि- (आ०) 1 झपट्टा करना, विवाद करना-परस्पर विवादयानी झगटारी 2 भिन्नमत का होना, प्रतिकूल होना, विरोधी होना-परस्पर विवाद-मानानी धारणा-हि० १ 3 (न्यायालय आदि में) दृढ़ता पूर्वक कहना, -विधि- (पर० आ०) बारविचार करना, कलह करना, झगडा करना -बहि० ८।४२, विस्मृ 1 असगत होना, भिन्न मत का होना 2 असफल होना (प्रेर०) असगत बनाना लम् 1 1 बर्त कराना, प्रबोधित करना 2 मिलकर बोलना, वार्तालाप करना, प्रवचन करना 3 समरूप होना, अनुरूप होना, समान होना (करण० के साथ) -अस्य मूख सांताया मुखचन्द्रेण सवदयेव-उत्तर० ४ 4 नाम लेना पुकारना = बोलना, उच्चारण करना (प्रेर०) 1 परामर्श करना, सहाह-महावरा (करण० के साथ) करना 2 शब्द करवाना, वाद्य-यंत्र बजाना, संग्र, (आ०) (मनुष्यों की तरह) जैसे स्वर से या स्थल बोलना सप्रवचने श्राद्धाणा -मिद्धा० 2 क्रन्दन करना, क्रन्दन ध्वनि का उच्चारण करना (पर०)-अननू यवदन्ति कुक्कुटा महा० ।

बध (वि०) [वद् + अच्] बालने वाला, बामं करने वाला, अन्ध्रा बोलने वाला ।

बधन्तु [वद् + अच्] वेहरा आर्योद्विबुलवदना व विमोचयन्ती श० २।१०, इसी प्रकार 'सुवदना' कमलवदना आदि 2 मूख बढने विनिर्वसिना भूजड्यां पिशुनाता रमनामिवेषाघाश-भासि० १।१११ 3 पठ्ठ, छवि, दर्शन न अगला भाग 5 (किमी) माता का) पट्टा शब्द । म० अलक्ष ला० ।

बधन्ती [वद् + अच् + ङीप्] भाषण, प्रवचन ।

बधन्त्य (वि०) [वद् + अच्] अन्य, पुरा० ह्रस्व] दे० 'वदान्य' ।

बधर [वद् + अच्] दे० 'बदर' ।

बधाल [वद् + क, अच्] अच्] 1 ववण्डर, भवर 2 एक प्रकार की जमेने मछली ।

बधावर (वि०) [अचल वरति -वद् + अच्, नि०] 1 बालने वाला, दाकट्ट 2 बालुनी, बाबाल ।

बधन्त्य (वि०) [वद् + आत्य] 1 मारा प्रवाह से बोलने वाला, बाकट्ट 2 मानुष्य बोलने वाला 3 उदार, दयालु, दानमाल मनु० ४।२२६, म्व दार या दानपाल व्यक्ति, दाया, अय्यदार व्यक्ति-भिरसा वदान्यमुख मादरमेन बर्तन् मुग्गरवः-भासि० १।१२, या- तस्मै वदान्यमुखे तत्रे नपाज्जु-१।१३ नै० ५।११, रघु० ५।२४ ।

बधि (अस्य०) (बाधप्रमास का) हृष्णपक्ष, ज्येष्ठश्रदि (विष० मुदी) ।

बधा (वि०) [वद् + यत्] 1 कहने के योग्य, वृषण देने के

योग्य तु० बध 2 कुलपक्ष (बाधप्रमास का एक पक्ष बधपक्ष = हृष्णपक्ष), -अस्य भाषण, इचर-उचर की बातें करना ।

बध् (आ० पर०) बधनि मारना, कतल करना (श्रीकिक या शास्त्रीय संस्कृत में इसका प्रयोग केवल लक्ष व आधीलिङ् में 'हन्' धातु के स्थान पर होता है) ।

बध- [हन् + अच्, बधादेश] 1 मार डालना, हत्या कतल, विनाश-आत्मनो बधमाहर्ता वधायी बिहृण-स्कर --विष्णु० ५।१, मनुष्यवध मानवहत्या, पशुवध आदि 2 आघात, प्रहार 3 लकवा, 4 लाप, अन्तर्धान 5 (गणित में) गुणा, म० - अक्षयम् विष, अह्ये (वि०) फाली के दण्ड का अधिकारी -उद्यत (वि०) 1 हत्या संबंधी 2 हत्याग, कानिल उपाय-हत्या की तरकीब, कर्माधिकारिण (वि०) फाली पर लटकाने वाला, जन्दाव, जीविन् (पु०) 1 शिकारी 2 कमाई, इच्छ 1 पारसीक दण्ड (हुटर आदि लगाना) 2 कार्या, भूमि (स्त्री०) -स्वामी (स्त्री०) -स्वाम्य 1 फाली की जगह 2 बृचडमाना, - स्वस्म- फाली मूख० १० ।

बधक- [जन बधन्, बध च] 1 जल्लाद, फाली पर लटकाने वाला 2 कानिल, हत्यागार ।

बधन्तु [वध + अचन्] धातुक हथियार ।

बधिचम् [वध + चम्] 1 कामदेव 2 कामोन्माद, कामानुभवा ।

बध्, बधुका [वध्, नि० ह्रस्व] 1 वृषवध्, मृग 2 युवती स्त्री ।

बध् (स्त्री०) [उघण विन्वेहान् पतिष्ण वर + उघणः] 1 दुर्गति हर म बध्या सह राजमार्ग पर ध्वजछापनिवास्ताणाम्-रघु० ७।८, १९, ममान् मनुष्यगुण बध्वर विरम्य वाच्य न गत प्रहाराणि श० ५।१९, कु० ६।८२ 2 पत्नी, भार्या ३प नर्तनि व बधौश्चकाचनबर्ध्वाग्नि- कु० ६।८९, रघु० १।९ 3 वृषवध् एवा च रघुकुलमहनराणा वः उलर० ८, ४।१६, तथा वधुस्वयमि नार्नि पाषिवाणाम् १।९ 4 महिला, पत्नी, स्त्री-नर्तिका मूखवर्धनिके विद्यामिति विलसति तेलिपरे गी० स्वयंशासि विरुचयनामवचना न वधुस्वयमि 'उपुषाणि धिच - कि० ६।४५, नै० २०।४७, मेष० १० ७७ ६४ 5 अपने में छोटे रिज्जेदार की पत्नी, नार्ने में छात्र स्त्री 6 किमी भी पशु की मादा मृगवध (पत्नी) व्याघ्रवध्, गजवध् आदि । म०-गृह प्रवेश-प्रवेश दुर्गति का अपने पति के घर में सर्व प्रथम प्रवेश समारंभ, अन्न पत्नी, स्त्री, बधः (विवाह व बध्माय पर) कन्या पक्ष के मांग, -अवध्व दुर्गति की वधुया वैवाहिक पाशाक ।

बहुली [अल्पवयस्का बहु -- बहु + लि + लीच्] 1 तबली, स्त्री, नदयुवती -- एक बनुटीमारोप्य वायु बहायुष गच्छति महावीर० ५।१०, गौरववृटीबुद्धलकोराम (कृष्णारण्य) -- भाषा० १, पुत्रवधू ।

बधु (वि०) [बधुर्ग्रहेति बधु + यत्] 1. मारे जाने के योग्य, हत्या किये जाने के योग्य 2 जिसे प्राण दण्ड की आज्ञा मिल चुकी है 3. वारिषिक दण्ड दिये जाने के योग्य, वारिषिक रूप में दण्डण, -- ध्यः 1 छिकार, मृत्यु की तराज में मुद्रा० १।९ 2. बधु० । बधु० बटह बट्ट डोल जो किसी की फासी पर लटकते समय बजाया जाय । -- भू., -- भूषिः (स्त्री०)

बधुलम्, स्थानम् फासी पर, बाला फूलों की माता जो फासी पर लटकाने के लिए तैयार व्यक्तियों को पहनाई जाय ।

बध्या [बध्यः टाप्] वध हत्या, कतल ।
बध्रम् [बध्य ऋट्] 1 चमड़े का तम्बा -- जि० २०।५० 2 मोता, श्रो चमड़े की पट्टी ।
बध्रकः [बध्र + यच्] जुता ।

1 (म्बा० पर०) वनति 1 ममान करना, पूजा करना 2. महायज्ञ करना 3 गण्ड करना 4 व्यापन या व्याप्त होना ।

11 (म्बा० उभ०) वनति, वन्दते 1 याचना करना, कहना, प्रार्थना करना (दि० ६० पानु मानी जाती है) -- वायुदादिना नैव बालका वन्दते जलम् 2 मौज करना, प्राण करने की चेष्टा करना 3 जीवन, स्वाभिन्न प्राप्त करना ।

11 (म्बा० पर०) वरा० उभ० वनति, वानवति-ते 1 अनुबहू करना, महायज्ञ करना 2. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 3 ध्वनि करना 4. विष्वास करना ।

बन्धु [बन् + अच्] अन्वय, जगत्, वृक्षों का मूलमूट -- एकौ बन्धु पतने वा बने वा -- भर्तु० ३।१२०, बनेर्ज्ञे दोषा प्रमर्शन् गमिषाम् 2 बन्धु, मूल, मूलक, मूलक वरारी में उभे हुए एकल या अंग पौधों का समूहव्यय, -- निबन्धिना पञ्चवनायोनीणां पृथ० १६।१६, १।८९ 3. आश्रमस्थल, निवासस्थान, घर 4 फौजारा (पानी का) शरण ; पानी -- जि० ६।७३ 6. लकड़ी, काष्ठ (समान) में प्रथमव्यय के रूप में इसका प्रयोग 'जंगल' 'वन' 'वन' अर्थों में होता है उदा० वनवराह, जनकपत्नी, वनगुणम् आदि । सप० अन्विः दावानल, -- अज जंगली बकरा, -- अजः 1 किसी जंगल की सीमा या दामन रघु० २।५८ 2 बन्धुवैज्ञ, जंगल -- उत्तर० २।२५, -- अन्तराम 1 दूसरा जंगल 2. जंगल का भीतरी प्रदेश विक्रम० ४।२९, अन्विष्या जंगली हस्ती, -- अन्विष्या साल मिट्टी, वेध या साल लडिया, -- अन्विष्या मरजमनी, आन्वुः बरगोश, -- आन्वुः

एक प्रकार का लोबिया, -- आन्वुः जंगली मदी, अन्वुः अन्विष्या, आन्वुः जंगली बकरा, -- आन्वुः जंगल में जाका, वानप्रस्थ, बनिन का तीसरा आश्रम, आन्वुः (पु०) वानप्रस्थी, सन्व्यासी, तपस्वी, आन्वुः 1 वनवासी 2 एक प्रकार का पहाड़ी कौवा, -- अन्वुः गैदा, -- अन्वुः जंगली कपाल का पीया, -- अन्वुः दावानल, -- अन्वुः (पु०) 1 वनवासी, जंगल में रहने वाला 2 सन्व्यासी, तपस्वी 3 जंगली जानवर, जैसे बि बन्दर, सुअर, -- कपाल वन-गिष्पती, -- अन्वुः जंगली केला, करिन् (पु०) कुम्भारः, -- गजः जंगली हाथी, कुम्भुटः जंगली मूष, -- अन्वुः जंगल का एक भाग, -- अन्वुः जंगली बेल, गहनम् मूलमूट, जंगल का समान भाग, वृक्ष भेदिना, जलम् मूलक, जंगली हाथी, -- बोधर (वि०) बन्धु-बन्धु जंगल में जाने वाला, (रु०) 1. शिकारी 2 वनवासी (रु०) वन जंगल -- अन्वुः 1 देवदर का वृक्ष 2 अंग की लकड़ी, -- अन्विष्या, -- अन्विष्या

एक प्रकार की चमेरी, अन्वुः जंगली चम्पा का पीया, अर (वि०) वनवासी, वन में बिचरने वाला, वन देवता, (रु०) 1. वनवासी, वन में रहने वाला, जंगली आदमी उपन्यस्यविनविषादधिष्य सतय-उक्ते वनचरा वनविम-विन् ६।२९, मेघ० १२ 2 वन्य पशु 3 आठ बेगों वाला शरयु नाम का एक काल्पनिक जन्तु, अन्वुः जंगल में घूमना वा निवास, छायाः 1 जंगली बरतार 2 सुअर, अ 1 हाथी 2 एक प्रकार का मृगवियन घास 3 जंगली नीव का पेड़ (अन्वुः) नीलकण्ठ, -- अ 1. जंगली अदरक 2 जंगली कपाम का पीया -- अन्विष्य वनवासी, जंगली आदमी -- अ. दावल, आन्वुः दावानल, -- देवता वनदेवी,

जगत्-परी, रघु० २।१२, १।५२, ए० ४।६, कु० ३। ५२, ६।२९, अन्वुः जंगली पेड़, -- आरा वृक्षावलि, छायाधार मार्ग, अन्वुः (रु०) गाव, जंगली बेल की माता, पानुल, शिकारी पार्वन्वुः जंगल के आम गाय का धीस, वनप्रदेश, पुष्पम् जंगली फूल, पुरकः जंगली नीव का पेड़, प्रवेशः नपम्निजीवन का आरम्भ, अन्वुः अन्विष्यका वा पठार में स्थित जंगल, -- अन्विष्य कोपल, (अन्वुः) दाङ्गोली का पेड़, अन्विष्य, -- अन्विष्यः जंगली भोर, -- अन्वुः जंगल की अन्विष्य-अन्विष्यका गोमर्षी, हाय -- अन्वुः जंगली चमेरी, बाला जंगली फूलों की माता जैसे कि श्रीकृष्ण पहनने में रघु० १।५१, इसका वर्णन है आजामूलभिनो माता सर्वान् कुम्भोज्ज्वला । मध्य स्तूलकदम्बाश्वा वनपाण्डि कीर्तिना ॥ अन्वुः कीर्तण का विशेषण, अन्विष्य (पु०) कृष्ण का एक विशेषण वीरमयीरे दम्पतीरे अन्विष्ये बने वनवासी -- नील-

५, तब विरह बनमाली सखि सीदति गीत० ५,
—बासिनी द्वारका नवर का नामांतर, - वृष् (वि०)
जल डालने वाला, -रघु० ११२२, (पु०)—वृत्तः
बादल,—बुधः एक प्रकार की मृग,—घोषा जगली
केला, रत्नकः वन का रखवाला,—राजः सिंह,
धनुं कमल का फूल,—सखीः (स्त्री०) 1 जगल
का आभूषण या सौंदर्य 2 केला—रत्न जगली बेल,
सता दूरीकृता लल्लुगणघानलता बनलनाभि—श०
१११७, -बह्नि,—हुताशयः दावानल, बासः 1 जगल
में रहना, वन में बास श० ४११० 2 जगली या
यायाभरीय (धूमकचह) जीवन 3 बनवासी, वृ में
रहने वाला,—बासन. यधबिलाव, बासिन् (पु०)
1 जगल में रहने वाला, बनवासी 2 तपस्वी इसी
प्रकार 'बनस्मायित्', बीहि जगली पावल, शोभ-
दन् कमल, इवन् (पु०) 1 गीदह 2 व्याध
3 यधबिलाव,—सख एक प्रकार की बाल, मधूर
—सख,—सबासिन् (पु०) बनवासी सरोजिनी (स्त्री०)
जगली कपास का पीघा, ख 1 हरिय 2 तपस्वी
स्था वरघद का पद, स्वली जगल, जगल की
भूमि, खम् (स्त्री०) जगली फूलों की माला ।
बनर (पु०) दे० 'वानर' ।
बनस्पति । [बनस्पति, 1 न० मुट्] 1 एक बड़ा जगली
वृक्ष, विशेषकर वह जिसे जिना वीर आये फल लगता
है 2 वृक्ष, पेड़, नवाशु विष्णु नरसलगायको बनस्पति
वृक्ष इवाकभय्य कु० ३७४ ।
बनापु [बन + इप् + उप्. वन्. आद्यच् वा] एक जिले
का नाम रघु० ५१७३ । सम० ज (नपु०)
बनापु में उन्मत्त घाडा आदि ।
बनिः (स्त्री०) [बन् + इ] कामना, इच्छा ।
बनिका [बनी + कन् + टाप्, ह्रस्व] छोटा जगल, जैसे कि
'अयोधवनिका' ।
बनिता [बन् + कन् + टाप्] 1 स्त्री, महिला बनिनेति
वदयता लोका सर्वे वदन्तु ते, युना परिणामा मेय
तपस्येति मन भम—भाभि० २११७, पियत्रबनिता
—मेघ० ८ 2 पत्नी, गृहस्वामिनी—बनेवराणा बनिता-
मत्तानाम् कु० ११०, रघु० २११९, 3 कोई
भी प्रियमी स्त्री 4 किसी भी जानवर की मादा ।
मम०—डिष् (पु०) स्त्रीद्वेषी, मित्रयो से घृणा
करने वाला,—बिलास निचयो का इच्छानुकूल
मनोरजन ।
बनिन् (पु०) [बन् + इनि] 1 वृक्ष 2 सोम लता 3 बान-
प्रस्थ, तीसरे वाशय में रहने वाला ।
बनिष् (व०) [बन् + इण्] मागने वाला, याचना
करने वाला ।
बनी [बन् + डीप्] जंगल, अरण्य, (बृक्षों का) गुल्म वा

शूरभूट अबनीतल्केव शापु मय्ये न वनी वाधवनी
बिलासहेतु—बन० ।
बनीयकः, बनीयकः [बनि याचनाभिधृति - बनि + क्यप्,
+ वल्] भिक्षुक, मापु—बनीयकानां स हि कल्प-
ग्रह. नै० १५१६० ।
बनीकियुक्तः (ब० व०) [बने कियुक् इव, सत्यभ्या अल्लु]
जगल में कियुक्' अन्यापाम ही मिलने वाला पदाध ।
बनीचरः [बने चरति—चर् + ट, सान्भ्या अल्लु] जगल में
रहने वाला, र 1 बनवासी, जगल में रहने वाला
आदमी बनेचराणा बनितासल्लानाम्—कु० १११०
११२ 2 मन्वासी, तपस्वी 3 अन्य पशु 4 बनेदेवता,
बनमानुष 5 पिशाच ।
बनीव्यः [बन् इव्य, व० न०] एक प्रकार का आम ।
बन् (भ्या० आ० बन्ते, वदित्) प्रणाम करना, सादर
नमस्कार करना अर्थात्प्रति प्रदान करना—जगल
पितरो बन्ते पाश्वती परमेस्वरी—रघु० १११, १३१७,
१४५५ 2 आराधना करना, पूजा करना 3 प्रणाम
करना, स्तुति करना, अर्पण . प्रणाम करना, सादर
नमस्कार करना—रघु० ११८१ ।
बन्क [बन् + क्यल्] प्रणाम ।
बन्धः [बन् + अच्] प्रणामक, आरग्य या भाट, स्तुति
याचक ।
बन्धम् [बन् + क्यल्] 1 नमस्कार, अर्पणवादन 2 धडा
सत्कार 3 किसी वाह्यकारि की (अरग्यपर्यं करने
हुए) प्रणाम 4 प्रणाम, स्तुति—भा 1 पूजा, अचना
2 प्रणाम, भी 1 पूजा, अचना 2 प्रणाम 3 याचना
4 मृतक को पुनर्जीवित करने वाला शोधधि । मम०
माला, भासिका कितों द्वार पर लगाई गई
फूलमाला ।
बन्धीय (वि०) [बन् + अनीयर] अर्पणवादन के योग्य,
सत्कार के योग्य, या इतराल, गौरवना ।
बन्धा [बन् + अच् + टाप्] भिक्षुणी, भीष्क याचने वाला
स्त्री ।
बन्धाव (वि०) [बन् + आम्] 1 प्रणाम करने वाला
2 अर्थात्, सम्मानपुष्प, किरीत, शिष्ट-पद्मनुहाना
महाभूमिबदाव मुद्गा० ७, नपु० प्रबन्धा ।
बन्धिन् (पु०) [बन् + इन्] 1 स्तुति याचक, आरग्य भाट
अथवा (भाट या आरग्य एक विशिष्ट जाति है) श
आश्रय पिता और बृह माता की मन्तान है) 2
बंदी, कैदी ।
बन्धी (स्त्री०) [बन्धि + डीप्] दे० बन्धी । मम० पाल
कारागृह, जेलर ।
बन्ध (वि०) [बन् + क्यल्] 1 सत्कार के योग्य, अर्पण
2 सादर नमस्कारणीय रघु० १३१७८, कु० ६१८२,
मेघ० १२३ स्तुत्य, वलाध्य, प्रणामणीय ।

बंध [बन् + रत्] पूजा करने वाला, भक्त,-- इत् सप्तद्वि ।
 बंधुर (वि०) दे० 'बन्धुर' ।

बंध्य, बंध्या दे० बन्ध, बंध्या ।

बन्ध (वि०) [बन्ने अक्ष. धा०] 1 जगल से लकड़ रखने वाला, जगल में उगने वाला या उत्पन्न, जगली कल्पविकल्पयामास बन्धामेवाय सविधाम्--रत्० ११४, बन्धानां मार्गसाहित्याम्-४५ 2 बंधर, जो पालतू या घरलू न हो रत्० २१८, 3७, ५१४, न्व जगली जानवर,--न्यष् जगली पंदावार (जैसे कि फल, मूल आदि) रत्० १२१२०। सम०

इतर (वि०) पालतू, घरलू, - वध,-- हीन जगली हाथी ।

बन्धा [बन्ध + टाप्] 1 विशाल जगल, झुरमुटों का समूह 2 जलराशि, बाढ़, जल-प्रलय ।

बन्ध (भा० उभ०) बंधपति, बधने, उन्न, कर्मबा० उपाते, इच्छा० विवर्धति ते) 1 बीजा, (बीज) विवर्धना, पौधा लगाना यथेरिणे बीजमुपस्था न बन्धा लभते फलम्--मनु० ३।१८२, न विद्यानिधिने कथेत्--२।११३, तावदा बाने बीज तावद् लभते फलम् शुभा०, कु० २५, मा० ६।७३ 2 फेंकना, (तामा) डालना 3 जन्म देना, वेदा करना 4 बुनना 5 मूँडना, बाल काटना (प्राय वैदिक), घेरे० (बाधयति--ने) बाना, पौधा लगाना, भूमि में डालना, आ 1 विधेयना, इधर उधर फेंकना 2 बाना 3 यज्ञ आदि में मूर्च्छि देना उष्, उडेयना मि 1 (बीज) इधर-उधर विवर्धना 2 (जाहुति) देना, विशेषतः पित्रो को न्यय पिण्डास्तन

मनु० १।२१६, (स्मरमद्रिष्य) निको सहकार मजरी कु० ४।३८ 3 बाल चटाना, यज्ञ के पशु का वध करना निष्-- 1 विधेयना, (बीज आदि) डिनगना 2 प्रस्तुत करना, वेदा करना - भोविष्यायाम्-प्रागनाय कन्धरी वा महाज्ञ वा निबंधिन पृष्टमेधिन उत्तर० ४ 3 तर्ज करना विशेषकर पित्रो का ४ अनुष्ठान करना प्रति-- 1 बीजा 2 पौधा लगाना, जमाना, रोपना उत्तर० ३।४६, मा० ५। १० 3 जमाना (ग्यादिक) ब्रह्मा, प्र--, फेंकना बानना प्रस्तुत करना मट्टि० १।९८।

बन्ध [बन् + रत्] 1 बीज बीजा 2 मूँडना, काटना 3 बाने वाला 3 मूँडना 4 बुनना ।

बन्धम [बन् + म्यट्] 1 बीज बीजा 2 मूँडना, काटना मनु० १।१५१ 3 बौर्य, युक्त, बीज भी 1 नाई की टुकान 2 बुनने का उपकरण 3 तन्तु धागा ।

बन्धा [बन् + टाप्] 1 बन्धी, बसा-यात्र ३।१६ 2 छिद्र, गंध 3 बन्धी, दीमको द्वारा बनाया गया मिट्टी का टीला । सम०-- कुत् (पु०) बसा, मज्जा ।

बन्धिकः [बन् + इलच्] प्रजापति, पिता ।

बन्धु (पु०) सुत, देवता ।

बन्धुवन्तु (वि०) [बन् + उति + मत्तु] 1 मृत, देह-धारी, धारीधारी--इत्ये जगदीशुजा मुनि स बन्धु-ध्यानिव पुष्पसत्त्व --कि० २।५६ 2 सुन्दर, मनोहर, पू० विश्वेश्वरों में से कोई एक ।

बन्धु (मपु०) [बन् + उति] 1 (क) धारी, देह (न्यर) बधुवा स्वेन निवोधिष्यति--कु० ४।४२, नव बध कातमिद बधुवध- रत्० २।४७, वि० १०। ५०, (ख) रूप, आकृति, मूल या छवि--लिखित-बधुपी सप्तधर्मो ब दृष्ट्या--मेघ० ८०, परिष-अनजतुष्यबधु बृहत्० ३।२५ 2 रस, प्रकृति मनु० ५।९६ 3 लोचन, सुन्दर रूप या छवि । सम० बधु, प्रकृत रूप की ओच्छता, ईश्वरितक लोचन--सप्तशतीव बधुर्लने--कु० ३।५० बधु प्रकृतव्यय नृद रत् २५० ३।३४, मि ३।२, बर (वि०) 1 मृत 2 सुन्दर बध तः से पुने बाना तरल रस ।

बन्धु (पु०) [बन् + तुष्] 1 (बीज का) बाने वाला, पौधा लगाने वाला, किसान, , बाने न्यवर्धयिता बधुर्गुणमेतेते--महा० १।३, मनु० ३।१८ 2 पिता, प्रजापति 3 कवि, अन्त स्कृत या उपरहित छवि ।

बन्ध,--इत् [उपाते ज्ञ बन् + रत्] कुंजराधीर मिट्टी की टीका, गारे की मिनि-वेलाप्रचलया (अर्धेत्) रत्० १।३० 2 तटबन्ध या टीका (त्रिमम कि लीह या हाथी टक्कर लगाने हैं) रत्० १।४७ दे० नी० बघकीडा 3 किमी पहाड़ या चट्टान का डलान बृहच्छिलाप्रचनेन बससा--कि० १।४० 4 चोटी, शिखर, अधिव्यका--तीक्ष महाशतमिवाध चरन्ति बसा ति० ४।९८, ३।३७, कि० ५।३६, ६। ७ 5 नदीतट, पाथ, किनारा, वेलातट, ध्वज प्रतेननुप्रयनयाम्--कि० ६।४, ७।११, १।५८ 6 किमी प्रचन की नीर 7 शहरपनाह या कुंजराधीर से एक नहर का पाटक 8 नाई 9 बरत का व्यास 10 बंग 11 मिट्टी का टीला (जिसको कि हाथी या नाई टक्कर मारे)-- प्र पिता, प्रत् सीता । सम०

बन्धिकाः (बिनी पहाड़ या नदी आदि के) तट-बन्ध पर टक्कर मारना कि० ५।४२, तु० 'तटाघात' चिन्ता, कीडा किमी टीके वा तटबन्ध पर हाथी (वा नाई) का टक्कर मार कर बिहारा करना--बन्धिकासलवततटेटु रत्० ५।४४, बघकीडापरिलत मजप्रेक्षणीय ददर्ये मेघ० २ ।

बन्धिः [बन्, किन्] 1 लेत 2 समूह ।
 बन्धी [बधि, कीप्] मिट्टी का टीला, पहाड़ी ।

बध (म्भा० पर० बधति) जाना, हिलना-जुलना ।
बध् (म्भा० पर० बधति, बध, प्रेर० धामयति, धमयति, परन्तु उपसर्गयुक्त होने पर केवल 'धमयति') ; बधन करना, बध् देना, मूँह से बाहर निकालना—रक्त बाधनियुम्बुं—भट्टि० १५१६२, १११०, १४३० 2 बाहर भेजना, उडेलना, बाहर करना, उद्गीरण करना, बाहर निकालना, उत्सर्जन करना (बाल० से भी) किमान्नेयधावा विकृत इव तेजासि बधति—उत्तर० ६११५, शं० २७, ग्ध० १६१६६, मेघ० २०, अविकितगुणाग्रि सत्कविमणिति कर्णुं बधति मधुधारां—दाम० 3 बाहर फेंकना नीचे डाल देना—बालनालय—रघु० ७६६ 4 अस्वीकृत करना, उच्च—1 बध् देना, उडेलन करना 2 कैं करना, भेज देना, उडेल देना—उद्दामेन्द्रनिका मूकिलमनाविधोरवा—रघु० १२१५, मुद्रा० ६१३३ ।
बध [वध् + जप्] कैं करना, बधन करना, बाहर निकालना ।
बधच् : [वध् + अथच्] 1 कैं करना, उडमन, चुकना 2 हाथी के हाग अपनी मूँह में फेंका गया पानी ।
बधनम् [वध् + न्यट्] 1 कैं करना, उलटी 2 बाहर सोचना, बाहर निकालना, जैसा कि 'स्वर्गाभिष्वन्द-बधनम्' में, रघु० १५१२२, कु० ६१३७ 3 उलटी लानेवाली 4 आहुति देना न गाया—भी जोक ।
बधनीया [वध् + अनिघट् + टाप्] मक्ली ।
बधि [वध् + इत्] 1 आग 2 ठग, वदमाय-बि (म्बी०) 1 धोमारी, बी मुषकलाता 2 उलटी लाने वाली (श्रीपथि) ।
बधी [वधि + ङीष्] उलटी करना ।
बंधारकः [व० न०] लघुश्री के गभने की आवाज ।
बध्,—भी [वध् + क्, बधि + ङीष्] चिड्डी । सम०—कृदम् वधी ।
बध् (म्भा० प्रा०—बधने) जाना, हिलना-जुलना ।
बधन् [वध् + न्यट्] बुनना ।
बधत् (लघु०) अन् + अमुन्, बीभावः । 1 आय जीवन का कोई काल या समय, गुणा पूजास्नान मृण्णु न च लिङ्ग न च वय उमर० ६१११, नच वय—ग्ध० २७३, पथिमे वयमि—११११, न वन् वरन्ने-जमा हेतु—पथि० २७३८, उज्जमा हि न वय मधीधये—रघु० ११११, कु० ५१२६ 2 अवार्ता, जीवन का प्रथम अंश—बयागिने कि बनिनाबिहास मुभा० इसी प्रकार 'अनिकान्तवयः 3 पक्षी—स्मार्त्तीया मयसे वय वय—न० २७७, मृगयोगवयोपणि वयम् ग्ध० १५३, २११, मि० ३५५५, १११७७ 4 कौवा—वच० ११७३ (यहां इसका अर्थ 'पक्षी' भी हो सकता है) । सम०—अतिथ अतीथ (बि०) (उद्योगिग

बादि) बडी आय का, बूहा, जीर्ण, शक्तिहीन,—अधिक (बि०) (बयोधिक) आय में अधिक, बयोवृद्ध, वरिष्ठ अथवा (बयोअथवा) जीवन की एक अवस्था, आय की मात्र,—मा० ११२९,—कर (बि०) स्वास्थ्य धनवाला, जीवन की वृष्ट करनेवाला, आय बढ़ानेवाला गत (बि०) 1 वयस्क 2 बयोवृद्ध परिपथि, परिपथाम आय की परिपथभावस्था, बयोवृद्धता—प्रधाणम् 1 जीवन का मात्र या लम्बाई 2 जीवन की अवधि,—बृद्ध (बि०) बयोवृद्ध) बूरा, बडी आय का,—सन्धि 1 जीवन के एक काल में दूसरे काल में मकमल—वयो वय सन्धय 2 वयस्वता, परिपथकल्पना (वयस्क होने का बाल),—रथ (बि०) (वय स्म-रा-वयस्व) ; वयान 2 वय प्रांत, बालिग 3 उमराल पकिनचाली (—रथा) मक्ली, महेली,—हृदि (वयहादि) 1 जवानो का ह्दय २ जीवन का ह्दय ।
बधस्य (बि०) [वयसा तुल्य गत] ; समान आय का 2 समामायिक,—रथः मित्र, सखा, साथी (प्राय समान ही आय का) —रथा मक्ली, महेली ।
बधन् [वध् + उन्] 1 जान, बढिमता, प्रत्यक्षज्ञान वं प्रथि 2 मन्त्रि (उपादिमत्रो में इम शब्द का इमा अर्थ में पलिङ्ग भी बनताया गया है) ।
बधोषस् (प०) 'वयो वयन इगति -वयम्—या थमि। यवा या या' व्यक्ति ।
वयोवयम् ; वयमा र्गामिव] सीसा
बर् (चु०) उभ० वयन्ति न, व या व या प्रेर० वप) मयिना, चुनना, छाटना, लोच करना,—इ० 'व' ।
बर् (बि०) ; व नर्णि अप] 1 श्रेष्ठ उत्तम सुलभतम या अथत सुलभतम्, छाटा हुआ बर्हिा (सब० या प्रथि०) के माप अथवा ममान के अन्त में) बरता वर ग्ध० ११५९, वेदविदा वरने-५१३३, ११, ५६, कु० ६१२८ नृवर, तद्वरा, मयिवरा आर् 2 अपलकृत अच्छा, दूसरे में अच्छा, अथिमा पारिपो रग. गन्० ११३०३, यत्न० १३५१ २ 1 चुनने की छानने की थिया 2 छोट, तुमर 3 बरदान, आर्गिकोद, अनुग्रह, बर् व या वा व व माताः पौलायिने दे वृ व व वृथीव्य ग्ध० १५१ अथलव्यवर्धोर्दीर्घ—कु० २७३०, ('बर्' और 'वर्' अर्थिन का अन्तर जानने के लिङ्ग हे० 'आर्गिण') 4 भेट, उपहार, परिमार्थिक पुग्ग्दर—० कामना, इष्वा ० मचना, अनुग्रह 7, मुद्रा, पमि—बर् बरवत वया ६० वप (०) के नीचे भी 8 पालिषहर्गामी विवा-हार्मी 9 स्त्रीजन, दुहृ 10 ज्ञापिता 11 कामुक कामात्मक 12 विधिवा,—रथ् ब्रफरान, केमर, (वय की वृक्क देविधे) । सम०—अय (बि०) उत्तम वप

गाला (—क) हाथी (,—भी) हथ्थी, (,—कम्)

1. सिर 2. उत्तम भाग 3 प्रायक कण 4 योगि, 5 हृदी वारपीनी.—अंगना कमनीय स्त्री—अह् (वि०)

बर जाने के योग्य,—आशीर्षक (पु०) ज्योतिषी,—आरोग्य (वि०) सुन्दर कुन्ती बाना (—सु) उत्तम सवार (—हा) सुन्दर स्त्री,—आशिः—आशिः, आशानम्

1 उत्तम घोड़ी 2 मुख्य आसन, अम्मान की कुन्ती 3 भीनी गुलाब,—अशः,—कः (स्त्री०) सुन्दर स्त्री

(शा०) सुन्दर जवाबों से युक्त स्त्री), अशुः इन्ध का विशेषण,—अश्वत्थम् 1. एक प्रकार की अश्वत्थ की लकड़ी 2 देवदारु, चीर का पेड़,—अशु (वि०) सुन्दर अवयवों वाला (स्त्री०) अशुः सुन्दर स्त्री—अशानु-

रपवासी नैब दुष्टा लक्षा मे—किष्कः ४।२२,—अशुः एक प्राचीन मूलि का नाम—रु० ५।१,—अश्वः गीम का पेड़ अ (वि०) 1 बर देने वाला, बरदान प्रदान करने वाला 2 मयकत्रय (कः) 1. उपकारी 2 मित्रवर्ग (हा) 3 नदी का नाम मालवि० ५।१ 2. कुमारी, कम्पा, ४. बलिष्ठा कुलहिन के पिता-द्वारा इन्हें की दिया गया उपहार,—अश्वम् बर प्रदान करता इन्धः अगार का वृक्ष,—अश्वत्थः इन्धे का वृक्ष,

फलः (विदाह में) इन्धे के रस के लोग -रु० ५।८४,—अश्वत्थम्,—आशा विवाह सम्भार के लिए इन्धे का अमृत के रूप में कुलहिन के घर की ओर फेंक करना, फलः आशियल का पेड़, आशिकम्

अकारण, केसर,—अश्वत्थिः,—सी (स्त्री०) सुन्दर लक्ष्मी स्त्री,—अशिः एक कवि और वैद्याकरण का नाम (त्रिभुव्याशिव राजा के बरबार के नवरत्नों में से एक, दे० नवरत्न, कुछ लोग पाणिनि के सुभों पर प्रसिद्ध वार्तिककार कात्यायन से इनकी अभिप्राय सिद्ध करते हैं),—अश्व (वि०) जिसने बरदान प्राप्त कर लिया है (अः) अश्वक वृक्ष,—अश्वत्था सात, इवम्, अश्वम्

मोता,—अशिनो 1. उत्तम और सुन्दर रत्नयुक्त वाली स्त्री 2 स्त्री 3 हल्दी 4 लाल 5 लक्ष्मी का नामांतर 6 दुर्गा का नामांतर 7 सरस्वती का नाम 8. 'प्रियम्' नाम की लता,—अश्व 'इन्धे की माता' वह माता की कुलहिन, इन्धे के रस में डालती है ।

बरक [बु+बुर्] 1. इच्छा, प्रार्थना, बर 2 घोडा लाने की एक प्रकार, कम् 1 नाथ की इकने की चावर 2 नीलिमा, अशोका ।

बरह [बु+अर्ह] 1. हंस 2 एक प्रकार का अनाथ 3. एक प्रकार की बर, विह,—आ,—ही 1. हृत्तिली, नक्षत्रविधि-संज्ञा उपनिषदों—ने० १।१३५ 2 विह, बर वा उसके प्रकार - मो वयस्य एते क्षत्रु हास्या आरु अर्धकल्पती वरदा भीता इव गोपालवारका कुराण्ये वयमान न काश्चित् तत्र-तत्र लक्ष्मी-मुष्क० १,—अशु कृद का वृक्ष,

बरकम् [बु+बुर्] 1. डाँटा, चुनना 2 मानना, वाचना करना, प्रार्थना करना 3 बेचना, बेरा डालना

4. डकना, परदा डालना, प्रस्ता करना 5. कुलहिन का चुना,—अः 1. परकाटा, क्लीक 2 पुत्र 3 वयस नामक वृक्ष 4 वृक्ष इह लिषवचन बरणा-बग्ना करिषां मुदे मनकमानकदा. वि० ५।२५

5 ऊँट । अम०—आला,—अशु दे० बरकम् ।

बरकली (अधिक प्रचलित रूप=बाराणसी)—वे० ।

बरक [बु+अर्क] 1 समुदाय, बर्न 2 मूह पर निकली कुत्ती 3. बरामदा 4 बाल का डेर 5. शोका (अवि-रामीयम्) बरकलम्बुक इव बुरमूक्षिण्य पातित-मुष्क०

में 'बरकलम्बुक' शब्द का अर्थ समिवाच है, इसका अर्थ प्रतीत होता है 'ऊपर अटकती हुई वा उभरी हुई बीघार' जो यह बीर ऊपर उठाई गई तो उसका लुप्तता जाना निश्चित है; यही बात तुषकार के विषय में है जिसकी आशार्थ अर्थवत् अंशों उठी परन्तु केवल किरासा में परिणत होने के विषय ।

बरकक [बरह+कम्] 1 मिट्टी का टीका 2 हाथी की पीठ पर बना होता 3 बीघार, 4. मूह पर मुहाला ।

बरब [बरह+दाप्] 1. बर्नी, कृती 2. एक पत्नी—आरिका 3. बीघक की बर्ती ।

बरका [बु+अर्क+दाप्] कीटा, (अमरे का) रसना वा पत्नी, वि० १।१४४ 2. चोड़े या हाथी का संघ ।

बरम् (अर्थ) [बु+अर्] अशोकाक, केसर, अश्वत्थ, अधिक अश्वत्थ, कभी कभी यह अश्वत्थ के साथ प्रयुक्त होता है—अमृतमय पुलिननाथसंघनाहर विरोचोपरि सन महात्मनि—वि० ५।८, परन्तु इस शब्द का प्रयोग बहुधा बिना किसी छत के होता है, 'बरम्' प्राय उस शब्द के साथ प्रयुक्त होता है जिसमें अपेक्षित वस्तु विद्यमान है; तथा 'न ब' 'न तु' और 'न पुन' उस शब्दके साथ विना किसी वस्तु विद्यमान है जिसकी अपेक्षा पूर्ववर्ती की प्रयुक्ता ही गई है । (धोनी कौट० में 'रथ्ये वाते है'), बरं भील कार्य न च अचनकत् यकत्.....बरं विज्ञाशित्यं न च परत्नान्तरानुपपन्नं हि० १, बरं अत्यन्तारी न पुनरवमानानुपपन्नः—तथैव०, कभी कभी 'न' का प्रयोग 'च, तु, भी' पुन.' के बिना भी होता है—आज्जना मोधा बरयधिपुणे नावणे अश्वत्था—अर्थ० १ ।

बरक [बु+अर्कम्] एक प्रकार की बरं, विह,—आ 1. हृत्तिली 2 एक प्रकार की विह, बरं ।

बरा [बु+अर्+दाप्] 1. पिच्छा 2. एक प्रकार का सुगन्ध इन्ध 3. हल्दी 4. पार्वती का नाम ।

बरक (वि०) (स्त्री०—भी) [बु+अर्कम्] वैशाका, वय-नीच जात, नक्षत्राय कुन्ती, अमाना (बहुधा दया दिकाने के लिए प्रयुक्त) लम्बा न कुलत् कुलत् बल

बराकोप्रमानित - पच० १, तरिकमुग्जिहानजीविना
बराकी नानुकरणसे - मा० १०, -क १ गिव २ सघाम,
पुद्द ।
बराहः [बराह्यमटलि अद्+अण्] १ कौडी २ रस्सी,
डोरी ।
बराहक [बराह+कन्] १ कौडी-प्राण कालवगटकोर्ण
त मया तुष्णोऽभूता मूष मा- -भन्० २।४ २ कमल
फूल का बीजकोप ३ डोरी, रस्मी (इस अर्थ में 'नपु०
भौ) । मम० - रजस् (पु०) नाग केसर नामक वृक्ष ।
बराहिका [बराह्+कन्+टाप्, इत्वम्] कौडी - भावि०
२।४२ ।
बराहकः [बु+घानच्] इन्द्र का विशेषण ।
बराहली दे० बाराहली ।
बराहकम् [ब+क+ध्वन्] गेरा ।
बराह, बराहक. [बु+आत्स् स्वार्थे कन् च] लौग ।
बराशिः-तिः [बरम् आबरणमनुत्ते बर+अण्+इत्, वं
श्रेष्ठे अस्यते सिष्यत्वे -बर+अण्-इन्] मोटा
काडा ।
बराहः [बराय अमीपटाय मुन्नादिकाभय आहनि
भूमिन्-आ+इन्+ठ] मूबर, बंधिया किया गया
मूबर, -विशेष क्रियता बराहनिभिर्मुन्नाहनि पक्वले
-हो० २।६ २ मंडू ३ बेल ४ बादल ५ मगामच्छ
६ शुकगाकृति में बना मैनिक स्वर ७ विष्णु का
तीसरा बराह-अवतार- -मु० कर्मनि दशनशिवारे
धरणी तब लाना शक्ति कलकू कलेव विमाना ।
बेहाव पुनमुकरक्य त्रय त्रयोदश द्वरे नीत० १
४ एक विशेष मात १ बराहमिहिर का नामान्तर
१० अठारह पुराणों में से एक । मम० - अवतार विष्णु
का तीसरा अवतार, बराहवतार, -कच वागहीकर,
एक ज्ञाह पदार्थ, - कर्षे एक प्रकार का बाण,
- कश्चिद्वा एक प्रकार का अस्त्र, - कल्प बराहवतार
का समय, बहु काल जब विष्णु का बराह का अवतार
धारण किया, सिहिर एक विख्यात उपनिषद्ना,
बृहन्महिता का प्रणेता (गार्वा बिक्रमाश्रय की गार्वा-
स्यता के तवरत्नों में से एक), - भृश गिय का नाम ।
बरिष्म (पु०) [बर+इदमतिच्] श्रेष्ठता, सर्वोपरिता,
प्रमुखता ।
बरिषति (सि) त [बरिषम् (स्या)+इतच्] पूजा गया,
सम्मानित, अर्चित, मकूल ।
बरिषत्वा [बरिषत् पूजाम् करणम्-बरिषत्+क्यच्
+अ+टाप्] पूजा, सम्मान, अर्चना, मकिल ।
बरीच्छ (वि०) [अभेयपामनिशयेन वर उरुर्वा उरु
+इच्छन् बरादेक उरु की उ० अ०] १ सर्वोत्तम,
अत्य श्रेष्ठ, आत्यत पुण्य, प्रमुख २ अत्यन्त विशाल,
उत्तम ३ अत्यन्त विस्तृत ४ मुख्यत, -च्छः १. तितिर

पक्षी, तीतर २ मन्त्रे का पेट, छद्म् १ तावा
२ मिव ।
बरो [बु+अण्+डोप्] १ मूर्त की पत्नी छाया
२ शतावरी नाम का पौधा ।
बरोयस् (वि०) [अभयनयोगनिशयेन वर उरुर्वा उरु
+इयमुत् बरादेक, उरु की म० अ०] । अयसकृत
अच्छा, अयिष श्रेष्ठ, अचिमान्य २ अयुत्तम, वरन
अच्छा मा० १।१६ ३ अयसकृत वडा, चांग या
विस्तृत ।
बरी (लौ) बरे [व-विषय=वर, ई वच ईवरी, लौ
उदादि दा+क-ईवरे, वला चामो ईवरेवच, कर्म०
न०] बेल मीट ।
बरोयु [वर श्रेष्ठ द्रु यस्व, एयो०] कामदेव का नाम ।
बरुट (पु०) श्लेच्छ जाति का नाम ।
बरुट (पु०) एक नीच जाति का नाम ।
बरुषा [बु-उत्तम्] १ आदि. का नाम (बृहया 'मित्र न
माथ यक्त होकर) २ परवर्मी पीगणितना; वे
अनुसार) समुद्र की अधिष्ठात्री देवता पारिपम दिशा
का देवता (हाथ में पाग लिए हुए) यामा गार्वा
बरुषा यति माये मथ्यान्व अय पररुज्जतनाम
बरुषा यादमाहव- भल० १०।२९, प्रनाथी बरुण
पति - -महा० अतिर्यक्तमस्य बरुषम् दिशा भृशम व-
रुणदनुयायकर शि० १।३ ३ समुद्र ४ अन्तरिक्ष ।
मम० अयसह अयस्य का विदोषण, - आम्बुका
मदिग (समुद्र में निवसने के कारण इसका वर नाम
पडा) - आलय, - आवास. समुद्र पारा धारिदाल
लोक १ बरुण का समार २ जल ।
बरुषानी [बरुण+डोप्, आनुक] बरुण की पत्नी ।
बरुषम् [बु+उत्थ] उत्तरीय वस्त्र, दुग्दु ।
बरुषम् [व-उत्तम्] १ एक प्रकार का लकड़ी का बना
आवरण जो रथ की टक्कर हो जाने पर रथ की
रक्षा करे (इस अर्थ में पु० भौ) बरुषा रथगुण्डिमों
निरोधने रथस्थितिम् २ कवच बरुण ३ हाथ ४
वग. नृसुष्यव, ममवाय, व १ कौशल २ बाल ।
बरुषिन् (वि०) [बरुष+इन्] १ कवचगारी, बलरगुल
२ अगामुनि या ब्रह्मांड जगत्वे मे सुगुत्रित अ-
नियेकरथेन बरुषिना जितवत किल नय्य धनुर्भने
- -रु० १।१ ३ बरुषाने बाला, आशय देने बाण
४ गाथी में बंठा हुआ, पु० १ रथ २ अधिरथक,
प्रतिरथक, -भी सेना स्थितिमसिनामूल्यध्वनी
जगाम बरुषिनी शि० १-१७७, रथ० १२।५० ।
बरेष्य (वि०) [बु+एव्य] १ अभिलषणीय, वाछनीय,
पात्र बरणीय-अनेन वेदिच्छति मुह्यमात्र पाणि
बरेष्येन रथ० ६।२४ २ (जत) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ-
तम, प्रमुख, मुख्यतम, मुख्य-वेधा विधाय पुनवक-

मिनेनुविच दुरीकरोति न कथं विद्युषा वीरष्य -शामि०
२।१५८, न-मिनुवरेष्य धर्मा देवस्य धीमहि ऋक्
३।२१।१०, रघु० ६।८६, मटि० १।४, कु० ७।१०,
अथुं ज्ञाकगत, हेमन् ।

बरोट [बराणि श्रेष्ठानि उदानि दन्तानि यस्य क० म०]
बरोषे का पीषा - टम् मरुत् का पूल ।

बरोल [व + शीलच्] बर, भिड ।

बर्कर [बृक् + अन्] 1 भेड या बकरी वा बच्चा येवना
2 बकरा 3 कोई पालतू जानवर का बच्चा 4
आमाद, श्रीठाविहार, मनारजन । सम० बर्कर.
बमडे की रम्मा या तम्मा जिनसे बकरी या भेड
वादी आये ।

बकराट [बर्कर परिग्रामम् अटति गच्छति बर्करः अट्
+ अण्] 1 निगछी नबर, कटाह 2 स्त्री के चुचा
पर उसके प्रेमी के नक्कासती के चिह्न ।

बहुट (पु०) शील, अगला, बटपनी ।

बर्ष [वृत् + घञ्] 1 श्रेणी प्रभाग समूह, दण्ड समूह
जानि, मरुदः (एक समान वस्तुओं का), व्यपेधि
योग्यत्वं परिचयम् - रघु० २।६ १।१३, इसी प्रकार
वीर्यम्, नक्षत्रवर्ग आदि 2 टोली, पक्ष, कु० ३।३३
3 प्रवय 4 एक स्वातंत्र्य वर्गीकृत पद्वनसूत्र यथा
मन्वत्वं ननस्पतिवर्ष आदि 5 वर्षमासा मे व्यञ्जना
का समूह 6 अनुभाग अध्याय, या पुनक का परि-
च्छेद 7 विशेषकर्म के आवेष्ट के अध्यायानर्जन अव-
भाग सूक्त 8 पान दो समान अन्तरी का गुणफल
9 मासार्थः । सम० -अन्यथम्, उल्लसम् पाचों वर्षों में
न प्रत्येक का अन्तिम वष अर्थात् अनुनायिक अक्षर,
घन वष का घनफल पक्षम्, सूक्ष्म वषमय,
नरु अक जियक घान म की वर्गाक वने - वर्ष, वर्ष
का वर्ष ।

बर्षा (स्त्री०) गुणन, घान ।

बर्षात् (अव्य०) [वृत् + घञ्] समूहा में श्रेणीवार ।

बर्षाडि (वि०) [वृत् + छ] किसी श्रेणी या प्रवर्ग में सबद्ध,
य महाराठी ।

बर्षे (वि०) [वृत् भव वत्] एक ही श्रेणी का, -अः
एक ही श्रेणी या दण्ड में सबद्ध, सहयोगी, सहपाठी,
सहाध्यायी (शिक्षा में) या यस्य वृज्यते भूमिका ता
नरु भावेन नवीव सर्वे बर्षा, ताजिनः मा० १, शि०
५।१५ ।

बर्षे (स्त्री० आ० वर्चसे) चमकना, उज्ज्वल या आभा-
युक्त होता ।

बर्षम् (पु०) [वृत् + धनुन्] 1 बीरे, बल, शक्ति
2 प्रकाश, शक्ति, उजाला, आभा 3 रूप, आकृति,
शक्त 4 विद्या, मल । मय० -धृत्ः कोष्ठ बद्धता,
कम्ब ।

बर्षत्क [वृत् + क्] 1 उजाला, शक्ति 2 बीरे
इ विद्या ।

बर्षत्सम् (वि०) [वृत् + विति] 1 शक्तिवाली,
बीरवासी, शक्ति 2 देदीप्यमान, उज्ज्वल, तेजस्वी ।

बर्षे [वृत् - घञ्] छोड़ देना परित्याग ।

बर्षितम् [वृत् - घञ्] * छोड़ना, त्याग, निराश्रयि
2 बेगम्य 3 आकाश, बहिष्करण 4 बोट, क्षति,
हत्या ।

बर्षित् (अव्य०) निहारण, बाहर करके, सिखाय
(महास के अन्त में) गीतमांवरैन्निग निष्कृता
मा० ६, कु० ३।३२ ।

बर्षित (पु० क० इ०) [वृत् + क्त] 1 छोड़ा हुआ,
अपमाना हुआ 2 परिश्रयक, उन्मत्त 3 बहिष्कृत
4 बर्षित, विरहित, होन श्रेया कि 'गुणवर्जित' में ।

बर्षे (वि०) [वृत् - घञ्] 1 टाल जाने के योग्य, बि-
काय जाने के योग्य 2 बहिष्कृत किये जाने के योग्य
या छोड़े जाने के योग्य 3 छाड़कर, विहाय के, ।

बर्षे (घृत्) उभ० वर्णयति -ने वर्णिते 1 रग करना,
रंगन करना, रंगना यथा हि भरता वर्णवर्णयन्वा-
यनस्तनुम् मुमा० 2 बयान करना, वर्णन करना,
व्याख्या करना, लिखना, चिपित करना, अंकित
करना, निक्षण करना - वर्णित जयदेवन हरेरेव
प्रणनेन गीत० ३, कि० ५।१० 3 प्रशंसा करना,
स्तुति करना 4 घेमाना, चिन्तन करना 5 रोगशी
करना, उप- बयान करना, वर्णन करना निष् -
1 ध्यान में देखना, माबधानता पूर्वक अंकित करना
2 देखना, निहारना ।

बर्षे [वृत् - घञ्] 1 रग, रंगन -अल सुदृस्त्वमपि
अविता वर्णमात्रेण कृष्ण - मेघ० ४९ 2 रंगन, रग,
दे० बर्षे (१), 3 रग, रूप, शीघ्र्ये,
स्वध्यादात् उल्लसवन्ते शाङ्गिणी वर्णचोरे - मेघ० ४६,
रघु० ८।४२ 4 मनुष्य श्रेणी, जनजाति या कबीला,
जाति (मुख्य रूप से शास्त्र, क्षत्रिय, वैश्य तथा क्षुद्र
वर्ण के लोग) वर्णानामानुष्यर्थे - वाति० ३ शक्ति-
इर्णानामप्यमपकृष्टोऽपि सञ्जते - श० ५।१०, रघु०
५।१९ 5 श्रेणी, बल, जनजाति, प्रकार, जाति यथा
कि 'सर्ववर्ग अक्षरम्' में 6. (क) अक्षर, वर्ण, ध्वनि
में वर्णविचारसामर्थ्ये चिकम् ५, (ख) शब्द,
मात्रा -मा० ६० ९ 7 क्वाति, क्षीति, प्रसिद्धि,
विशुद्धि राजा प्रजाजनलक्ष्यवर्षे रघु० ६।२१
8 प्रशंसा 9 वेदाभूषा, लबाध 10 बाहुरी छवि,
रूप, आकृति 11 बाहर, दुपट्टा 12 इकने के किये
इकन, चपनी 13 किसी विषय का प्रयोजित में,
गीतकम् -उपासवर्षे चरिते पिनाकिनः कु० ५।५६,
'पीतिष्वात्' अर्थात् याद का विषय बना हुआ

14. हाथी की मूल 15 गुण, धर्म 16 वर्धनुष्ठा
 17. अनाद राशि ईश्व 1. केसर, जाकरान 2 रग-
 वार उबटन या सुगन्धद्रव्य । सम० अंका लेखनी,
 —अपत्यः जातिष्पुत्र—अपेत (वि०) जातिष्पुत्र,
 जातिष्पुत्र, पतित बन्धुः एक प्रकार का संघिया,
 —आयनः किसी अक्षर का जोड़ना अर्थवर्णमात्रसं-
 सिद्धा०, आत्मन् (दु०) शब्द,—अचकम् एतौ न
 पानी रघु० १६।००,— कृषिका यथा,—कमः
 1. वर्ण व्यञ्जना, रसो का कम 2 वर्णमाला—आरकः
 कितेरा, श्लेषः हाडान्, तुसि,— तुसिका,—तुसी
 (स्त्री०) कुची, कितेरे का वृक्ष,— इ (वि०) रगसाज
 (—इम्) हाथहस्त्री—बायी हस्त्री—भूतः पत्र,—कर्मः प्रत्येक
 वाति के विविष्ट कर्तव्य,—वातः किसी अक्षर का जोड़
 हो जाना,—वृष्यम् पारिजात का फूल,—वृष्यकः पारिजात
 —अर्धः रग की भेटटा, प्रतापम् अक्षर की
 लकड़ी,—वातु (स्त्री०) लेखनी, वैसिल कुची,—वातुका
 सत्त्वदी,—वाला, रसिः (स्त्री०) अक्षरों की
 यथाक्रमपूर्वी, वर्णमाला,—वसिः,—वसिका (स्त्री०)
 रग भरने की तुलिका, विपर्ययः वर्णों का उलट केर-
 (अर्थे) निहो वर्ण विपर्ययात्—सिद्धा०, विसाक्षिणी
 हस्त्री, विकीर्णकः 1 श्रेष्ठ लताकर घर में बसने
 वाला 2 साहित्य खोर (शा० लक्ष्योर)—बुलम्
 वर्णों की गणना के आधार पर विनियमित छन्द या
 मूरा (वि०) मात्रामूरा), व्यञ्जस्थितिः (स्त्री०)
 वर्णव्यञ्जना, वर्णविभाग,—विज्ञा वर्णमाला सिद्ध-
 काना,—श्लेषः हाडान्,—संयोगः एक ही वर्ण के लोगों
 में विबाहसंबन्ध होना,—संकरः 1 अन्तर्जातीय विबाह
 के कारण वर्णों का सम्मिश्रण 2 रसो का मिश्रण
 —विशेष्य वर्णसंकर,—का० (दु०) दोनो अर्थ अभिप्रेत
 है) वि० १४।३०, संवासा, सत्वाभ्याः वर्णमाला ।

व्यक्तः [वर्णयति—वर्ण + क्तृ] 1. मुकाबरण, नकाब
 अभिनेता की वेदाभूषा 2 चित्रकारी, चित्रकारी के
 लिए रग वि० १६।६२ 3 रगलेप या कोई उबटन
 के रूप में प्रयुक्त होने वाली वस्तु - एतौ पिष्टतमाल
 वर्णकनिर्मैरालियममनोबरे मूच्छ० ५।४६, अष्टि०
 १६।११ 4. भाट, धारण, स्तुतिपाठक 5. चन्दन
 (वृक्ष) —का 1 कस्तुरी 2. रगलेप, चित्रकारी
 के लिए रग 3. उत्तरीय वस्त्र, हुट्टा, कम् 1
 रगलेप, रग, वर्ण शा० १।१५ 2. चन्दन 3 परिच्छद,
 अन्धाय, प्रथमाय ।

वर्धनम् वा [वर्ण + वृद्ध] 1. चित्रकारी 2 वर्धन,
 जालेखन, चित्रण—स्वभावावस्थितम् विज्ञाये स्वधिया-
 क्यवर्धनम्—काव्य० १० 3. जितना 4 वक्तव्य,
 उक्ति 5. प्रवृत्ता, सत्ताव (—वा केवल इषी
 अर्थ में) ।

वर्धति [वृन् + धति, वृद्ध] जल ।
वर्धति [वर्ण + अर् + अच्] 1. चित्रकार 2 गायक 3
 जो अपनी भावीविका अपनी पत्नी के द्वारा करता है,
 स्त्रीकृताधीय ।
वर्धिका [वर्णो अक्षराणि लेख्यन्तेन सत्यस्या ङ्] 1
 अभिनेता की वेदाभूषा या नकाब 2 रग, रगलेप
 3 स्थाही, मनी 4. लेखनी, वैसिल । सम०—परिचहः
 स्वाग नरना या नकाब धारण करना तत प्रकार
 नायकस्य मालतीवल्लभस्य माधवस्य वगिकापरिचह
 कथम् - मा० १ ।

वर्णित (मू० क० ङ्) [वर्ण + ण] 1 विनित 2 वर्णन
 किया गया, बयान किया गया 3 स्तुति की गई,
 प्रशंसा की गई ।

वर्णित् (वि०) [वर्णोऽस्यस्य इति] (समास के अन्त में
 प्रयुक्त) 1 इन रूप वाला 2 जति से सबब रखने
 वाला—दु० 1 चित्रकार 2 विपिकार, लेखक 3
 बहूपारो, दे० बहूपारित्,—अपार वर्णो—कु० ५।६६,
 ५२, वर्णधमायां गुरुषे स वर्णो विचक्षण प्रस्तुत
 माचक्षणे—रघु० ५।१९ 4 इन धार मुख्य वर्णों में
 से किसी एक वर्ण का व्यक्ति । सम० लिङ्गित्
 (वि०) बहूपारो की वेदाभूषा धारण किए हुए, या
 उनके चिह्नों को धारण करने वाला स वर्णाक्षरों
 विहित समाययी युक्तिधर इतवने वनेच
 कि० १।१ ।

वर्णिकी [वर्णित् + ङीप्] 1 स्त्री 2 चारों वर्णों में से
 किसी एक वर्ण की स्त्री 3 हन्दी ।

वर्णः [वृ + ण्, निप्] सुपं ।

वर्ण्य (वि०) [वर्ण + ण्यन्] वर्णन करने के योग्य (प्रकृत
 और प्रस्तुत शब्दों की भाति यह 'वर्ण्य' शब्द जो
 काव्य शब्दों में प्राय प्रयुक्त होता है,—शब्दं केसर,
 जाकरान ।

वर्तः [वृन् + वृत्] [प्राय समास के अन्त में] जीविका,
 वृत्ति—वैता कि 'कल्पवर्तम्' में । सम० कवचम्

वर्तक (वि०) [वृन् + वृत्] जीवित, विद्यमान, वर्तमान
 अ 1 बटेर, लका 2 बोझे का मुण, कम् एक
 प्रकार का पीतक या बाँसा ।

वर्तका,—की [वर्तक + टाप्, ङीप् वा] बटेर, लका ।

वर्तन (वि०) [वृत् + वृद्ध] 1 टिकाऊ, रखने वाला
 ठहरने वाला, विद्यमान 2 स्थिर, मः ठिगना, बोन
 —नी 1 मार्ग, सवक 2 जीना, जीवन 3 पीमना
 पूर्ण बनाना 4 लुकना,—सम् 1 जीना, विद्यमान
 रहना 2 ठहरना, बटे रहना, निवास करना 3 वर्ण,
 गति, बौने का डग या तरीका,—स्वरसि च तदुपा
 मोष्वाभयोर्बोर्बोर्बानि—उत्तर० १।२६, (वहौ लख का
 अर्थ 'बाबास हा निवास' भी है) 4 जीवित रहना

जीवनयापन करना (समान के अन्त में) 5. आजी-
विका, जीवन निर्वाह, वृत्ति 6 जीवन निर्वाह का
साधन, वृत्ति, व्यवसाय 7 बालचपन, व्यवहार,
आचरण 8 मजदूरी, वेतन, भाडा 9 व्यापार, लेन-
देन 10. लकडा 11 गोलक, गैद ।

वर्तनि: [वर्तन्तेऽप्या जना, वृत् + णि] 1 भारत का
पूर्वी भाग, पूर्ववर्ती प्रदेश 2. मुफ्त, प्रसादा, स्तोत्र
—ति: (स्त्री०) मार्ग, सड़क ।

वर्तमान (वि०) [वृत् + शानच् मुक्] 1. मौजूद, विद्य-
मान 2 जीना हुआ, जीवित रहने वाला, समसाम-
यिक—प्रथितयगाया भासकविसोमिलकविभिश्चावीना
प्रबधानतिकम्प्य वर्तमानकवे कालिदासस्य क्रियाया
कथ पठिष्यो बहुमान—मालवि० १ 3 मूढना,
चक्कर काटना, धुम जाना—क (व्या० में) वर्तमान
काल—वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवृद्धा—ग० ३।३।१३३ ।

वर्तक: [वर्त + क् + ऊक] 1 पोखर, झोंड 2 रैबर,
बबबर, जलावन 3 ढोबे का पोसला 4. डारपाल
5 नवी का नाम ।

वर्त:—नीं (स्त्री०) [वृत् + इन् वा डीप्] 1. कोई भी
कियेटी हुई गोल वस्तु, पन्नापी, बही 2 उबटन,
मन्डम, ब्रीलों का लेप, काजल, अग्रगम (गोली या
टिकिया के रूप में)—सा पुनर्वम प्रथमदर्शनात्प्रभृत्यमृत-
धर्तिरिव चक्षुषोरानन्दमृत्पादयनी मा० १, इयम-
भनवर्तिनयवो उन्नर० उ३० १२६. कर्पूरवर्तिरिव
लावननागहोत्री—भासि० ३।१६. विड० १ 3 दीपक
की बनी मा० १०।४ 4 (घपड़े की) झालर,
फन्डे, किनारी 5 जाड़ू का लैप 6 वर्तन के चारों
आर का उभार 7 अरहोत उपकरण (रत्ननाल आदि)
8 घारी, रेखा ।

वर्तिक [वृत् + तिकन्] बटेर, लवा ।

वर्तिका [वृत्ते तिकन् + टाप्] 1 चिहने की सूची तदुप-
नय चित्रकलक चित्रवर्तिकाश्च मा० १, अगुलि-
शरणाग्रवर्तिकम् ग्य० १०, १२६. 2. दीपक की बली
3 रग रगलेप 4 बटेर, लवा ।

वर्तित् (वि०) (स्त्री०—नीं) [वृत् + णिति] (बहुधा मयाम के
अन्त में) 1 डटा रहने वाला, होने वाला, सहारा लेने
वाला, टिकने वाला, स्थित 2 जाने वाला, वसितीयल,
मूड़ने वाला 3 अविनय करने वाला, व्यवहार कर
ने वाला 4 अनुष्ठाता, अभ्यास करने वाला ।

वर्ति (नीं) २ [वृत् + इत्च्, पठे पूर्वो० दीर्घ] बटेर, लवा
वर्तिष्णु (वि) [वृत् + ण्णच्] 1 चक्कर काटने वाला

2. वर्तमान, डटा रहने वाला 3. वर्तुलाकार ।

वर्तुल (वि०) [वृत् + उल्च्] गोल, कुण्डलाकार, मण्ड-
लाकार—क: 1. एक प्रकार की शाक, मटर 2. वैद्य,
—कम् मूल ।

वर्तुलम् (नपु०) [वृत् + मनिन्] 1 रास्ता, मडक, पथ, मार्ग
पगडडी—वार्थे भासोन्धजाधु—मेग० ३९, पारसी-
कान्ततो जेतु प्रनस्ये म्बलवर्तुना, 'स्वल्पमार्गं से'
भाकासावर्तुना 'भाकाता के मार्ग से' 2 (आळ०)
रोति, मार्ग, सर्वनाम्नत तथा निर्धारित प्रचलन, प्रच-
लित रीति या आचरण कथ—यम वर्तमानुमन्वति
मनुष्या वार्थे सर्वस मय० ३।२३, रेखाभासमपि
कुण्डलादायनोर्वर्तुनेन परम्, न ध्वनीय प्रयास्तस्य
नियनुर्नियन्तव—रघु० १।१० (यहाँ पर शाब्दिक
वर्थ भी अर्थमें है), अहमेत्य पतयवर्तुना पुनरका
वयिनो भवाति ने कु० ४।२०, 'वर्तुने के डग से'
3. स्थान, कर्म के लिए क्षेत्र न वार्थे कर्मविधिपि
श्रीयोपताम् कि० १।४।१४ 4 लक 5 धार, किनारी ।
सम० घात. मार्ग से व्यतिक्रम,—अवः,—बंधक
पलको का एक रोग ।

वर्तुलिनः—नीं (स्त्री०) सड़क, रास्ता ।

वर्ध् (चुरा० उभ०) वर्धयति—ते, वर्धापयति नीं) 1 काटना
बोटना, मूडना 2 घुरा करना ।

वर्ध: [वर्ध् + अच्, घञ् वा] 1. काटना, बोटना
2 बड़ाना, बूढ़ि या समृद्धि करना 3. बूढ़ि, बड़ोतरी,
बंम् 1 सोना 2 सिद्ध ।

वर्धक, वर्धक, वर्धयति (पु०) [वृष् + णिच् + झल्,
वर्ध् + क्च् + टि, वर्ध् + अच् + कन् + इनि] बड़ई ।

वर्धन [वृष् + णिच् + झट्] 1 बड़ने वाला
उगने वाला 2 बड़ाने वाला, विस्तृत करने वाला,
आवर्धन करने वाला, क 1 समृद्धिवाता / बहु दात
जो दात के ऊपर उगता है 3 शिव का नाम—नीं
1 बूढ़ारी, झाड़ू 2 विशेष आकार का जलघट, नम्
1 उगना, फलना फूलना 2. विकास, बूढ़ि, समृद्धि,
आवर्धन, विस्तार 3 उन्नति 4 उल्लास, मजीबता
5 शिष्या देना पाठन-शोधन करना 6. काटना,
बोटना जैसा नि 'नापिबर्धनम्' में ।

वर्धवान् (वि०) [वृष् + शानच्] विकसित होने वाला,
बड़ने वाला कः 1 एरड का पौधा 2 एक प्रकार
की पहेली 3 विष्णु का नाम 4 एक जिले का नाम
(इसी का शीघ्र वर्तमान वर्धवान् मानते हैं),—क,
—नम् 1 एक विशेष मूल की तस्तरी, उन्नत,
2 एक रहस्यमय रेखाचित्र 3 बहु भवन विस्फा
दलिन की ओर काई डार न हो, या एक जिले का
नाम (वर्तमान वर्धवान्) । सम० घुरम् वर्धवान्
नामक नगर ।

वर्धवात्मकः [वर्धवान् + क्त्] एक प्रकार का पाथ, तस्तरी,
इकन, चन्वी ।

वर्धयिष्यु [वर्ध् छेद करोति वृष् + णिच् + झप् ततो
वाये ल्यट्] 1. काटना, बोटना 2. नाकच्छेदन वा

तत्सवधी कोई उत्सव 3 जन्मदिन का उत्सव 4 कोई सामान्य उत्सव जब सम्पत्ति की बचलकाभनार्थ तथा बचावयो की अभिव्यक्ति की जाती है ।

वर्धित (बु० क० क०) [वृ + धि + क्त] 1 विकसित बढ़ा हुआ 2 विस्तृत किया हुआ, विस्तार बनाया हुआ ।

वर्धित्यु (वि०) [वृ + धि + क्त] विकसित होने वाला, बढ़ने वाला, फलने फूलने वाला ।

वर्धन् [वृ + धन्] 1 चमड़े का तस्मा या पट्टी 2 चमड़ा 3 सीसा ।

वर्धिका, **वर्धी** [वर्ध + कीच्, वर्धी + कन् + टाप्, ह्रस्व] चमड़े का तस्मा या पट्टी ।

वर्धन् (नपु०) [आवृणोति अवन्-वृ + मनिन्] 1 कृषक, जिरहकस्तार-स्वहृदयममेति बर्धे करोति सजल-निलीदलजालम्-गीत० ४, रघु० ४।५६, मृदा० २।८ 2 छाल, बलकल, पु० क्षत्रियों के नामों के साथ लगने वाला एक प्रत्यय -यथा चरुवर्धन्, प्रहारवर्धन् पु० दास । सभ०-हर (वि०) 1 कवचधारी 2 इतना बढ़ा जो कवच धारण कर सके (अर्थात् युद्ध में भाग लेने के योग्य) -सम्भविवीनमथ बर्धहर कुमारम्-रघु० ८।१४ ।

वर्धण (पु०) नारङ्गी का पेड़ ।

वर्धि (पु०) मात्स्य विशेष, वामी मछली ।

वर्धित (वि०) [वर्धन् + इत्थक्] जिरहकस्तार पहले हुए, कृषक से मुसज्जित ।

वर्धे (वि०) [वृ + यत्] 1 चुने जाने या छाटे जाने के योग्य पात्र 2 मर्यातम्, सर्वश्रेष्ठ, मुख्य, प्रधान (बहुधा समास के अन्त में) अर्थात् स कृतिपथे किरातवर्धे कि० १२।५४-सं कामदेव-वर्धे 1 वह कन्या जो स्वयं अपना पति बरख करे 2 कन्या ।

वर्धंत दे० 'वर्धंत' ।

वर्धन्ता दे० 'वर्धन्ता' ।

वर्धर, (वि०) [वृ + वरच्, वृच्] 1 हुकलाने वाला 2 बल वाला हुआ, रः 1 बर्बर देश का वासी 2 वृद्ध, प्रलापी मूर्ख 3 जातिभ्रष्ट 4 बुचबाले शक 5 श्रियादारी की शनकार 6 नृत्य की एक भावभूषा -रः-री 1 एक प्रकार की यन्त्री 2 बनतुलसी -रः 1 पीला चन्दन 2 सिन्धूर 3 ओषध ।

वर्धरकम् [वर्धर + कन्] एक प्रकार की चन्दन की मकड़ी ।

वर्धरीकः [वृ + ईकन्, इत्यम् अन्त्यात्स्य] 1 बुचबाले शक 2 एक प्रकार की तुलसी 3 एक शाही विशेष ।

वर्ध् (वृ०) रः [वृ + वृच् पत्ते वृच्] एक वृक्ष विशेष, बबूल, कीकर ।

वर्धे, **वर्ध्** [वृ + धावे वच्, कर्तरि अच् वा] 1 वर्धा, वारिण, वृष्टि की बीछार विद्युत्स्तनितवचच्-मन्० ४।१०२ मेघ० ३५ 2 छिन्नकना, उत्तराच, फेकना,

बीछार सुरभि सुरभिमुक्ताम् पुष्पवर्धे पपात रघु० १२।१०२, इसी प्रकार वरवर्ध, शिलावर्ध, तथा काञ्चवर्धे आदि ३ वीर्यपात । वपे, साल (प्राय नपु०) इयति वर्षाणि तथा सहोपक्रम्यस्तीव इतमा-

सिधारम्-रघु० १३।६७, न वधर्षे वर्षाणि इददत्त दशमालास-दश०, वधभोग्येष धापेन-मेघ० १

5 वृष्टि का प्रमाण, महाद्वीप (इस प्रकार के प्राय नौ महाद्वीप गिनाये गये हैं 1 कुश 2 हिरण्यव

3 रम्यक 4 हलावृत् 5 हरि 6 केतुमाला 7 महाश्व 8 किन्नर और 9 भारत) एतद्वृक्षमुक्ताभारत

वर्धमद्य मय बनने वधे-शिव० १।५ 6 भारतवर्ष,

हिन्दुस्तान 7 बादल (हिमचन्द्र के अनुसार केवल पु०) ।

सम०-अव, -अवक, -अव, -अव, महाना, मास, -अव (नपु०) वारिण का पानी, -अवृत्तम् दस हजार वर्ष

-अर्धम् (पु०) मयनप्रद, -अवसाम्य सन् चतु, -अधोव, यदुक, -आवधः पौर, -उपल भोला, -कर

बादल (-री) शीतुर, -कोष्क, -व 1 मास, महाना 2 ज्योतिषी, -गिरि, -पर्वतः 'वर्ध-गहाड' अर्थात्

बहु पर्वतशृङ्खला जो वृष्टि के भिन्न भिन्न प्रभावों को एक दूसरे से पृथक् करती हैं, -व (वि०) ('वर्धे' की

वत् बरसात में उत्पन्न, -वर् 1 बादल 2 त्रिजटा अन्त पुर का रत्नक, साजा, -वर्धार्त् ४० ४, (इसी अर्थ में

वर्धवर्धे शब्द भी हैं), -वृणः वर्षा का सम्बन्ध, -प्रतिबन्ध मुखा, अनावृष्टि, प्रिय वानक पत्नी,

वर्ः त्रिजटा अन्त पुर का रत्नक, साजा, वृष्टि (स्त्री०) जन्मदिन, -क्षालम् दानास्त्री नौ वर्ष, -सहस्रम् एक हजार वर्ष ।

वर्धक (वि०) [वृ + क्तृ] बढ़ाने वाला ।

वर्धन् [वृ + न्यट्] 1 वृष्टि, वर्षा 2 छिन्नकना, बीछार, (आल० से भी) इत्यवर्धेणम्, 'वन की बीछार या घन बनेरना' ।

वर्धन्ति (स्त्री०) [वृ + अन्ति] 1 वृष्टि 2 यज्ञ, यज्ञ सम्बन्धी कृत्य 3 क्रिया, काम 4 टिकना, रहना, टट रहना, बतन ।

वर्धा [वृ + अच् + टाप्] (प्राय स्त्री०, ब० व०) 1 वर-सात, वर्षाचतु, वर्षावायु शोष्ये पचानियच्छन्ता

वर्धायु स्वर्णिलेयव-वाङ् ३।५२, वृष्टि० ७। 2 वारिण, वृष्टि (इस अर्थ में एक वचन) । सम०

-कावः बरसात, वर्षाचतु, इसी प्रकार 'वर्धामय', -काशीन (वि०) वर्षा में उत्पन्न या सबब राने

वाला--वृ (पु०) 1 मंत्रक 2 एक कुवि विशेष, इन्द्रगोप, -शू, स्त्री (स्त्री०) मंडकी या डोटा

मंत्रक, -रावः 1 वरमान की गल 2 बरसात ।

वर्धिक (वि०) [वर्ध + धिक्] बरसने वाला, बीछार करने वाला, कम् अवर की मकड़ी ।

बविसम् [वृप् + स] वृष्टि, वर्षा ।

बविस्य (वि०) [वृत्तिशयेन वृद्धः, वृद्ध + इच्छन्, बविसिक्-
वृद्ध की उ० अ०] 1 अत्यन्त बड़ा बहुत बड़ा 2
अत्यन्त बलवान् 3 विहासलतय, अत्यन्त विलम्ब ।

बविस्यम् (वि०) स्त्री०-की) [अममनयोरतिशयेन वृद्ध
वृद्ध + ईदयन्, बविसिक्, वृद्ध की व० अ०] 1. अपेक्षा-
कृत बड़ा, बहुत बड़ा 2 अपेक्षाकृत बलवान् ।

बव्यक (वि०) (स्त्री०-की) [वृष् + उक्तञ्] बरतने वाला,
जलमय, पानी डालने वाला - बव्यकस्य क्रियम् कुम्भी-
प्रनेरवृद्धस्य परिहायम्वयम् सि० १४।४६, अट्टि०
२।२७ । मम० अन्व०-अव्युः वारिस करने वाला
बादल ।

बव्यम् [वृष् + मन्] शरीर, दे० नी० ।

बव्यम् [वृष् + मन्ति] 1 शरीर, देह 2 माप, ऊँचाई
— बव्यं द्विपाना विचकत उष्णकर्मनेष्वेभ्यश्चिरमाच-
चक्षिते—सि० १२।६४, रघु० ४।७६ 3 सुन्दर या
मनोहर रूप ।

बह्, बहं, बह्यं, बहिय, } दे० बहं, बहं, बह्यं, बहिय,
बहिन, बहिस्य } बहिन, बहिस्य ।

बल (इवा० आ०) मूलने -- परन्तु कभी कभी 'बलनि' भी,
बलित) 1 जाना, पहुंचना जन्नी करना, अन्योऽप्य
सम्बन्धितेन बलते महावी० ६।४१, प्रथमिन परि-
रक्षुमपागता बवन्ति बलितेविनपध्या सि०
६।३१, ६।११, ११।४२, स्वदभिमग्गरभसेन बलती
पतिनि पदानि कियति बलनि—गीत० ६ 2 हिम्मा-
जुलना, मुझना, घुम जाना - बलितकथर मा०
१।२९ 3 मुझना आकृष्ट होना, अनुरक्त होना
हृदयमदये तस्मिन्नेव पुनबलते बलान् गीत० ७,
नली० ३।५ 4 बढ़ाना बलमुपनिबन्ना मा० १०
१।१६, अमन् कन्पन्त्येवजितविष्णाकुलमया बल-
द्वारा राधा सम्मिदमुषे सहचरो—गीत० १ 5
ठकना, घेरना 6 डका जाना, घेरा जाना वा फिर
जाना, बि . इधर-उधर सरकना, इधर-उधर मुड़-
कना निम्नवति कृपति वेल्कति विचकति निम्नवति
बिलोकयति तियक्—काव्य० १०, अन्व०, 1.
मिलाना, मजबूत करना 2 मजबूत करना, जोड़ना
(बहुधा क्तात् अन्व० - दे० सम्बन्धित) ।

बल, दे० बल ।

बलस्य, दे० बलस्य ।

बलस्यः, -अन्व [अवबलस्य इत्यथ भागुरमते अकारलोप.]
कमर ।

बलस्यम् [बलु माये स्यट्] 1 सरकना, मुझना 2 बर्तुकाकार
घूमना 3 (ग्यो० में) बहु की बन्धवति ।

बलसि, -की [बलस्ये भाष्पाद्यते बल + सिक् वा डीप्]
('बहसि, -वी' का प्रयोग भी कनेक बार होता है)

1 इलया छन, लकड़ी का बना छप्पर का ढांचा
—बलुजमिनिनि मूर्तेर्बलस्य सदित्यपारायता—विश्वम०
३।२, मालवि० २।१३ 2 (घर का) सबसे ऊँचा
भाग, दृष्ट्या दृष्ट्या भवनबलभीतुयवातायनस्था

—मा० १।१५, मेघ० ३८, सि० ३।५३ 3 लीराष्ट्र
प्रदेश के अन्तर्गत एक नगर का नाम—जिन
लीराष्ट्रबु बलभी नाम मयरी—दण०, अट्टि० २२।३५ ।

बलस्य [अवबलस्य इत्यथ भागुरमते अकारलोप.] दे०
'बलस्य' ।

बलस्यः, [बन् + अयन्] ककण, बाजुबद - बहिलि, विसद
वितकितलबलसया जीवति परमिहृ तव रतिकलया
गीत० ९, अट्टि ३।२२, मेघ० २, ९०, रघु० १३।
२१, ४३ 2 लम्बा, कुंठन घ० १।३३, ७।११
3 विहासित स्त्री की करवनी 4 बूत, परिधि (प्राय
समाप्त के बल में) भ्रान्तप्रबन्ध दण० वेदाधप्रव-
क्याम् (उर्वीम्)—रघु० १।३०, दिव्यलय—सि०
९।८ 4 दाढ़ा, निकुञ्ज यथा क्तावमममवप' में,
कः 1 बाघ, ज़ातनन्दी 2 मलगण्ड रोग (बलभी कृ
ककण बनाना, बलभी भू करवनी या ककण का काम
देना) ।

बलसित (वि) [बलस्य + इतप्] चिरा हुआ, घेरा हुआ,
स्येता हुआ ।

बलस्य दे० 'बलस्य' ।

बलसिक् दे० 'बलसिक्' ।

बलस्यक दे० 'बलस्यक' ।

बलसि, की (स्त्री०) (बलिस-की भी लिखा जाता है)
[बल + इन्, पठे डीप्] 1 (बाल पर) बलिकन या
झुरी बलिसिर्मममाकानम् 2 पेट के ऊपरी भाग
में बमडे पर पड़ी बलिकन, झुरी, निकुञ्ज, (विलेप कर
लिपथों के सह एक लीपथ का विज्ञ मयसा जाता
है) मध्येन सा वेदिल्लिमममया बलिसिक् वाह बमार
बाला क० १।३९ 3 छप्पर की छत की बदेरी ।
सम० अन्व (वि०) बुधर बाला, बुधरगले बालो बाला
—कुमुयोत्सचितान् बलीमृतात्पलस्यम् बु यदकतबाल-
कान् रघु० ८।५३, -सुष्क, -अवयः बहर, मा०
९।३१ ।

बलिस्यः, कम् [बलिस + कम्] छप्पर की छत का किनारा,
बोलती ।

बलिस (भू० क० क०) [बल + इन्] 1 गलिशील
2 हिना-जुका, घूम हुआ, मुड़ा हुआ 3 चिरा हुआ,
लिपटा हुआ 4 झुरीदार कि० १।१४ ।

बलिस, बलिसि (वि०) [बलिस + न (य) वा] झुरीदार,
सिकुञ्जदार, झुरियों के रूप में आकुंचित, जिसमें
झुरियाँ पड़ी हुई हों, पिचपिला—सि० ६।२३ ।

बलिस्यम् (वि) [बलिस + मनुप्] झुरीदार ।

बलिर (वि) [बल्+किरिच्] जैनी बाल बाला, ऐंवा-
छामा, कनयो से देखने वाला ।

बलिचक्रम्—शी [बलि+चो+क, बलिघ+डीप्] मछली
पकड़ने का काँटा ।

बलीकम् [बल्+कीकल्] छपर की छत का किनारा,
ओलती - सि० ३१५३ ।

बलूकः [बल्+ऊक] एक पत्राविशेष,—कम् कमल की
जड़, बिस ।

बल्लू (वि०) [बल्+लृच्, ऊह] बलवान्, हृष्टपुष्ट,
शक्तिशाली ।

बल्लू (पूरा०) उभ० बल्लयति-ने बोलना ।

बल्लूकः—कम् [बल्+क, कल्प्य नेत्रम्] 1 वृक्ष की
छाल—स वल्कवासि तवापुना हरन् करोति मन्व न
कथ धनजय—कि० ११३५, रघु० ८।११, अट्टि०
१०।१ 2. मछली की खाल की परत वा पपड़ी
३ भाग, लख । सम०—तद्यः बृक्षबीशेष, - लोप्रः
लोप्र वृक्ष का एक भेद ।

बल्लूकः, -जम् [बल्+कल्लृच्, कल्प्य नेत्रम्] 1 वृक्ष की
छाल 2 वल्कल से बनाई गई पोशाक, छाल से बने
वस्त्र—इयमधिकमनाज्ञा बल्लूकेनापि तन्वी श०
१।२०, १९, रघु० १२।८, कु० ५।८, ह्रैमवल्कला
—६।६, 'मनुहरो छालवस्त्र धारो' (पु० वीरपरि-
ग्रहा कु० ६।१२) । सम० सवीत (वि०)
छालवस्त्रधारि ।

बल्लूकम् (वि०) [बल्+मनुप्] मछली (जिसके शरीर
पर पपड़ी है) ।

बलिष्ठस् [बल्+इलच्] काँटा ।

बल्लुकटम् (मपु०) छाल, बककल ।

बल्लू (भ्या० उभ० कन्वायि ते, वलित) हिलना-जुलना,
जाना, उधर उधर घूमना, सि० १२।२० 2 कूटना,
उछलना, चौकड़ी भ्रमना, छाना मार कर चलना,
मरट दौड़ना (आल० में भी) -पच० १।१६
३ नाचना—मनु० ३।१२।१ सि० १८।५३ 4 प्रसन्न
होना—अट्टि० १३।२८ 5 खाना, सि० १६।२९
6 अकड़ कर चलना, डींग मारना—भासि० १।३२ ।

बल्लुम् [बल्+ल्युट्] उछलना कूटना, मरट दौड़ना ।
रघु० १।११ ।

बल्ला [बल्+अच्+टाप्] लगाम, राम आलाने गृह्यते
हस्ती बाजी बल्लामु गृह्यते मूच्छ० १।५० ।

बल्लित (पु० क० कृ०) [बल्+लृच्] 1 कूटा हुआ
छलाय ललाई हुई, उछला हुआ 2 गतिशील किया
गया, मचाया गया—काव्या० २।७३, -तम् 1 मरट
दौड़, दौड़ की एक प्रकार की दौड़ 2 अकड़ कर
चलना, छेकी बघारना, डींग मारना निमित्ताद-
पराद्धोपनिष्कस्येव बल्लितम्—सि० २।२७ ।

बल्लु (वि०) [बल्+वरणे उ गुक् च] 1 प्रिय, सुन्दर,
मनोहर, आकषक - रघु० ५।६८, सि० ५।२९, कि०
१८।११ 2 मधुर भासि० २।१३६ 3 मूक्यवाग्,
—स्युः बकरा । सम०—अत्रः एक प्रकार की बंगली
दाल ।

बल्लुक [बल्+कम्] मनोहर, प्रिय, सुन्दर—कम् 1 चम्प
2 मूक्य 3. लकड़ी ।

बल्लुकः [बल्+ऊक] गीदड़ ।

बल्लुम्बिका [बल्लु+कम्+टाप्, हल्च्] 1 तैलघोर
2 पेटी, डब्बा ।

बल्लु (भ्या० आ०) जाना, निगलना ।

बल्लिकः—बल्लिकि (पु०, मपु०) दे० 'बल्लिक' ।

बल्ली [बल्+अच्, मूक्य, वि० कीच्] चिट्ठी । सम०
कूटम् बाभी, दीमकी द्वारा बनाया मिट्टी का
टीला ।

बल्लीकः—कम् [बल्+ईक, मूट् च] बाभी, दीमकी से
बनाया गया मिट्टी का टीला,—धर्म गणै सधिन्या-
इत्योक्तमिव पुस्तिका मुभा०, मेघ० १५, श०
७।११, —कः 1 शरीर के कुछ भागों का सूख जाना,
श्रापी पीठ 2 बाल्लीक कवि । सम०—धीर्ब एक
प्रकार का मुरमा (जो अजन की भाति प्रयुक्त किया
जाता है) ।

बल्लु (भ्यु) लृ (पूरा० पर० बल्लुयति) 1 काट
झालना 2 निर्मन करना ।

बल्लू (भ्या० आ० कालसे) 1 डकना 2. डका जाना
3 जाना, हिलना-जुलना ।

बल्लू [बल्+अच्] 1 बादर 2 ती गुज्राजो के बगबर
भार (बहन) 3 बूझा बाट जो बेंड़ या दो गुजा
के बगबर होता है (आपु० में) 4 प्रतिशेष ।

बल्लुकी [बल्लू—कृच्+डीप्] डीगा अजधयाम्कानि-
तकलकीमुणसतोक्कलागुष्टनकाशुमिप्रया—सि० १।९,
५।५, ऋगु० १।८, रघु० ८।११, ११।१३ ।

बल्लुत्र (वि०) [बल्लू+अच्] 1 व्याघ्र, अभिलषित,
प्रिय 2 सर्वोपरि—अ 1 ड्रेमी, पति मा० ३।८,
नि० ११।३३ 2 कृपापात्र, -पच० १।५३ 3 अजी-
जक, अथर्ववेजक 4 मूक्य मोप 5 उत्तम बाबा (सुम
नरणा में युक्त) । मपु०—आषाढीः वैष्णव संप्रदाय
के प्रतिष्ठ प्रवर्तक का नाम, बाकः साईम ।

बल्लुभासितम् [बल्लु+भास+कम्] मुरलान्त का
आसन विशेष, रतिबध, पु० 'पुष्पावति' ।

बल्लुरम् [बल्+अरुन्] 1 जगर की लकड़ी 2 निरुद्ध
3 मुरमूट ।

बल्लुरी—री (स्त्री०) [बल्+अरि वा कीच्] 1 वेत,
लना—अनगायिनि लक्ष्मणसे राजभने पलनाय बल्लुरी-
कु० ५।३१, तमोबल्लुरी—मा० ५।१६ 2 मंढरी ।

बलवः (स्त्री०-बी) [बल + वा + क] दे० 'बलवः' शि० १२।३१ ।

बलितः (स्त्री०) [बल् + इन्] 1 कता, बेल—भूनेशय भुंजगबलितकवसनाइजुता जटा. मा० १।२ 2 पत्नी। मम० इकी एक प्रकार का पास।

बल्लो (स्त्री०) [बल्लि + लीच्] बेल, घुमावदार पीथा, कता। मम०—अच्छ विचं—बुझा: सान का बूझ।

बल्लुच् [बल् + उल्] 1 निकुञ्ज, पर्णशाला 2. वन-स्थली, झुरमुट 3 मजरी 4 अनजुता खेत 5 रेवि-स्तान, जगल, उबाड़ 6 वृषा मास।

बल्लरम् [बल् + ऊर्न्] 1 वृषा मास 2 (जगली) मूजर का मांस,—रम् 1 झुरमुट 2 उबाड़, वीरान 3 अनजुता खेत।

बल्ल् (म्भा० आ० बल्लेते) 1 प्रमुख हाता, सबौलम हाता 2 इकता 3 बार हालना, खोट पहुँचाना 4 बोलना 5 देना।

॥ (पूरा० उ०) बल्लयतिने) 1 बोलना 2 बम-कना।

बल्लिक, **बल्लीक** दे० **बल्लिक** **बल्लीक**।

बल (वदा० पर० बल्लि, उगिण) 1 चाटना, इच्छा करना आत्मना करना नि स्वो बल्लिपान एनी दगा-जन्म—शान्ति० २।१५. अमी हि कीर्णप्रमक भवम्प ज्ञाय सेनात्ममुशन्ति देवा—कु० १।१५. श० ७।७० 2 अनुपह करना 3 बमकना।

बल (वि०) [वल् कर्त्तरि अच् भावे अच् वा] 1 अधीन, प्रभावित, प्रभावण, नियन्त्रण (प्राय समाज में) शाकबध, भुस्यबध आदि 2 आज्ञाकारी, विनीत, अनुवर्ती 3 विनम्र, बधीहून 4 सरण, आकृष्ट 5 आहू द्वारा बध में किया हुआ,—शः—शाम्प 1 अभिलाषा, बाह, इच्छा 2 गन्ध, प्रभाव, नियन्त्रण, स्वायत्त, अधिपत्य अधीनता, दीनता, स्ववय 'अपने अधीन स्वतन्त्र, परबध दूसरो के प्रभाव में'—अनयत् प्रमुशान्तसपदा बधमेका नृपीननरात्—रघु० ८।१९. बल मी,—आमी अधीन करना, बल में करना जाँत लेना, बलं बलु,—ह,—वा, अधीन होना, मार में हट जाना, दब जाना, विनीत होना न वृषो बध बधिनामुत्तन तनुमुह्लिष्ठि—रघु० ८।१० कसो हू या बधीहू बध में करना, हाथी होना, जीत लेना, मूख करना, आहू से बल में करना, बल्लत् (अप०) क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'गन्धि के डारंग' 'प्रभाव के डारंग' 'के कारण' 'प्रयोजन से' अर्थ प्रकट करता है, देवबलान, बायुबदान्, कायंबदान् आदि 3. पाकत्, रहने वाला 4 जन्म. श. देवब्राह्मी का वास्तव्यान, बल्लेता। मम०—अज्ज, बलित् (इसी प्रकार 'बसवत) (वि०) आज्ञाकारी, दूसरे की

इच्छा का बसवर्ती, विनीत, अधीन (पुं०) सेवक,—आडबक: सुस,—किष्वा जीतना, अधीन करना—ब (वि०) अधीन, आज्ञाकारी—मत्तु० २।१४ (भा) आज्ञाकारिणी पत्नी।

बलबद (वि०) [बल + बद् + लच्, मम्] आज्ञाकारी, अनुवर्ती, विनीत, अधीन, प्रभावित (धा० तथा बाल०) कोपय कि नु करमोय बलबदात्तम् मामि० ३।९, २।३३६, १५७, नै० १।३३, सा बदेयं मुख्यं व-बावदबदनमनगनित्वासम् गीत० ११।

बलका [बल + क + क + टाप्] आज्ञाकारिणी पत्नी।

बला [वल् + लच् + टाप्] 1 स्त्री, बबला 2 पत्नी 3 पुत्री 4 ननद 5 गाय 6 बौध स्त्री 7 बध्या गाय 8 हृषिनी स्त्रीरत्नेषु प्रभोर्वेष्टी प्रियतमा मूधे तथेय वशा—विष्णु० ४।२५।

बलि [वल् + इन्] 1 अधीनता 2 सम्मोहन, मनभ्र-म्यता (नपु०) बधवता।

बलिक (वि०) [वल + ल्] धूम्य, रहित,—का अवर की लकड़ी।

बलिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [वल् अल्पम्य इति] 1 शक्तिशाली 2 नियन्त्रण में, बधीभूत, अधीन, विनीत 3 जिसने अपनी विषयवासिनाओ पर विजय प्राप्त कर ली है, जितेन्द्रिय (सत्ता शब्द की भांति श्री प्रयुक्त)—रघु० २।७०, ८।९०, १९।१, ध० ५।७८।

बलिसी [वलिन् + लीच्] धर्मोक्त, वैधी का पेट।

बलिर [वल् + किरच्] एक प्रकार की मिर्च,—रम् समुद्री-नमक।

बलिष्ठ दे० 'बलिष्ठ'।

बलय (वि०) [वल् + यत्] 1 बध में होने के योग्य, नियन्त्रणीय, भासित होने के योग्य—आयवर्षयैवि-षेयान्ना प्रमादमविगच्छति—मय० २।६४ 2 बधीभूत, विभ्रित, सत्ता हुआ, विनीत—अग० ६।३६ 3 प्रभावे या नियन्त्रण में, अधीन, आश्रित, आज्ञाकारी—तथ्य पुत्रो भवेद्वय्य समुद्रो धारिकि स्यः हि० प्र० १८, (प्राय समाज में) (मन) हृदि स्वयत्वाय्य समाधि-वग्यम् कु० ३।५०,—शः सेवक, आश्रित,—इया विनम्रा या आज्ञाकारिणी पत्नी -य इष्टान्गमिय देवी धाम्यम्बेयानुवर्तते उत्तर० १।२ (जिसका भाषा पर पूरा आश्रयण है),—वयम् लीय।

बल्यका [वल् + क + टाप्] दे० 'बल्य'।

बल (म्भा० पर० बल्लि) क्षति पहुँचाना, खोट मारना, बध करना।

बलद (अभ्य०) [वल् + डप्] किसी देवता को आहुति देते समय उच्चार्य किया जाने वाला शब्द (देवता के लिए स्र० के साथ) इन्द्राय बलद, पूष्णे बलद

आदि । मय०—कर्म (प०) पुरोहित जो 'वपट्' का उच्चारण करके आहुति देना है, कार वपट् शब्द का उच्चारण करना ।

वक्त्रम् (म्वा० आ० वक्त्रेण) जाना, हिलना-जुलना ।

वक्त्रवत् [वक्त्र-अवयव] एक वयं का बड़का ।

वक्त्रवती, **वक्त्रवती** (स्त्री०) [वक्त्रप+ती+विभक्त्+ङीप्, शाक्य, वक्त्रव+इति+ङीप् पत्वम्] वह माय जिसके बड़के बहून वडे हों गये हैं, चिर प्रसूता, बहुत दिनों की व्याधो हुई ।

वक्त्र १ (म्वा० प०० वमनि-कर्मो कर्मा-वसते, उचिन्) १ रहना, बसना, निवास करना, ठहरना, डठे रहना बास करना (शाय अधि० के साथ, परन्तु कभी कभी कर्म० के साथ) भीष्मगीरे यमनातीरे वमनि वने वनमाली-गीत० ५ २ हाता, विद्यमान होना, मौजूद होना, वमनि हि प्रेमिण गुण न वस्तुनि कि० ८१७, यथाकृतिनश्च गुणा वमन्ति, भूति धीर्ज्ञीर्षुनि कीर्तिर्वसे वमनि नालसे—मुभा० ३ वेग में चलना, (समय) बिताना (कर्म० के साथ, प्रेर० बसना, आवास देना, आवाह करना इच्छा० (विवत्सनि) रहने की इच्छा करना, अधि०, (कर्म० के साथ) १ रहना, बसना, निवास करना, बस जाना यानि विश्वामहृत्परिचरमध्ववात्मन् उत्तर० ३१८, बाल्यात्परामिष दशा मदनोऽप्रयुक्तम—रघु० ५।६३, ११।६१, मि० ३।५९, मेघ० ०५, भट्टि० १।३ २ उत्तरना या अडहे पर बैठना अन्त०, (कर्म० के साथ) निवास करना, आ०, (कर्म० के साथ) निवास करना, बसना—विभाषामने सता कियार्थे विद्यमान० ३।७, मनु० ७।६९ २ कार्यवाही प्राग्भर करना—मनु० ३।२ ३ व्यय करना, (समय) बिताना उच्य०, १ रहना, ठहरना (इस अर्थ में कर्म० के साथ) २ उपवास रचना, अनशन करना—मनु० २।२०, ५।२०, (आल० से भी) उपोषिताभ्यामिष नेत्राभ्या पिबन्ती—दश०, मि०, १ रहना, निवास करना, ठहरना—अहो निवत्सनि मम हरिषाङ्गनाभि—शं० १।०७, निवत्सिप्यसि मय्येव—मय० १२।८ २ मौजूद होना, विद्यमान होना.—रघु० १।३१ ३ अधिकार करना, बसना, अधिकार में लेना, निवृत्त, रह चुकना, अधात् (किसी विशेष काल) की समाप्ति तक जाना, प्रेर०—निर्वासित करना, बाहर निकाल देना, देश निकाला देना,—रघु० १५।७७, धरि०, १ निवास करना, ठहरना २ रात बिताना—दे० वर्णवित, अ०, १ रहना, निवास करना २ विदेग जाना, यात्रा करना, घर में बाहर जाना, देखाटन करना—निषाय वृत्ति माघाया प्रवसेकार्यवाश्रम—मनु० १।७४, रघु० ११।४, (प्रेर०) देशनिकाळा देना, निर्वासित करना प्रति०, निकट

रहना पास में होना, वि०, परदेश में रहना (प्रेर०) देश निकाला देना, निर्वासित करना भट्टि० ६।१५,

विप्र०, देखाटन करना, घर में बाहर जाना—रघु० १२।११, सम्भ०, १ रहना, निवास करना २ साथ रहना, साहचर्य करना—मनु० ६।७, याज्ञ० ३।१५।

॥ (अदा० आ० वमने) देखाटन, यात्रा करना—वमने परिधमर बसना—शं० ७।०१, मि० १।३५ ग्य० १०।८, कु० ३।५६, आ१, भट्टि० ६।२०, प्रेर०

(शास्यार्थि-ने) परनवाना, वि०, मुसविज्जन करना—भट्टि० १५।३ वि०, यात्रण करना, परनना—भट्टि० ३।० ।

१ (दिशा० प०० वमयानि) १ सोया होना २ दूर होना ३ स्थिर करना ।

१ (वृत्त० उ०० वमयानि-न) १ बाटना बाँटना, काट हाकना २ रहना ३, केना, स्वीकार करना ४ काट पहुँचाना, टपना करना ।

१ (धृत्त० उ०० वमयानि-त) मुसविज्जत करना मुसविज्जत करना ।

वसति,—ती (स्त्री०) [वस+तिनि वा ङीप्] १ रहना निवास करना, टिके रहना आश्रयण वमनि वक्त्र—मय० १, 'असता निवास स्थिर किया' शं० ५।१ २ घर, आवास, निवास, वासस्थान—न्याय तर्क हृत्प वसति पञ्चबाषाणु बाण—प्रथम० १।००, शं० ०।१६ ३ आश्रय, आश्रय प्राप्त (आल०) कु० ६।३७, देवी प्रकार 'विनयवसति' 'वर्मवसति' ४ निर्धार, पहाव ५ ठहरने और आगम करने का समय अर्थात् रात्रि, तस्य प्राग्वशादिका बभूव धर्मतियं—रघु० १५।११, (वसति-रात्रि, मत्स्य०) 'उसने रात को विधाय किया, निष्ठा बसनीधिविन्ता—७।३३, ११।३३ ।

वसतम् [वस+स्यट्] १ रहना, निवास करना, ठहरना २ घर निवास स्थान ३ प्रसाधन करना शरत् शरण करना, कपडे पहनना ४ कपड़, कपडा, परिधान, कपडे बमने परिधुमने बसना—शं० ७।२१, उग्रयं वा मलिनवमने सौम्य विधिष्य बीनाम् मेघ० १६, ६१ ५ कपधनी, तपशी ।

वसत, [वस+अच्] १ वसत चतु, बहार का शीतम (बैश और वैशाख यह दो मास वसत चतु के होते हैं) मधुमाघद्वी वसत-मुषु०, सर्व प्रियं चादन्य वसन्ते—चतु० ६।२, विहर्गति हृदिगिह मरुववमन गी० १ २ मृतं वा मानवीकृत वमन त्रौ कामदेव का साथी भान्ता जाना है—मुहूद वरा वसत कि स्थिनम्—कु० ६।२७ ३ पश्चिम ४ बैश्व सौतला । मय०—उत्सव वनन्तोत्सव, वसन्त चतु की रमरोसिया (यह आनन्दवमन पृथके बैश्व की पूर्णम को होती—उत्सव के बहतर पर मनाये जाते हैं) ।

१ रहना, बसना, निवास करना, ठहरना, डठे रहना बास करना (शाय अधि० के साथ, परन्तु कभी कभी कर्म० के साथ) भीष्मगीरे यमनातीरे वमनि वने वनमाली-गीत० ५ २ हाता, विद्यमान होना, मौजूद होना, वमनि हि प्रेमिण गुण न वस्तुनि कि० ८१७, यथाकृतिनश्च गुणा वमन्ति, भूति धीर्ज्ञीर्षुनि कीर्तिर्वसे वमनि नालसे—मुभा० ३ वेग में चलना, (समय) बिताना (कर्म० के साथ, प्रेर० बसना, आवास देना, आवाह करना इच्छा० (विवत्सनि) रहने की इच्छा करना, अधि०, (कर्म० के साथ) १ रहना, बसना, निवास करना, बस जाना यानि विश्वामहृत्परिचरमध्ववात्मन् उत्तर० ३१८, बाल्यात्परामिष दशा मदनोऽप्रयुक्तम—रघु० ५।६३, ११।६१, मि० ३।५९, मेघ० ०५, भट्टि० १।३ २ उत्तरना या अडहे पर बैठना अन्त०, (कर्म० के साथ) निवास करना, आ०, (कर्म० के साथ) निवास करना, बसना—विभाषामने सता कियार्थे विद्यमान० ३।७, मनु० ७।६९ २ कार्यवाही प्राग्भर करना—मनु० ३।२ ३ व्यय करना, (समय) बिताना उच्य०, १ रहना, ठहरना (इस अर्थ में कर्म० के साथ) २ उपवास रचना, अनशन करना—मनु० २।२०, ५।२०, (आल० से भी) उपोषिताभ्यामिष नेत्राभ्या पिबन्ती—दश०, मि०, १ रहना, निवास करना, ठहरना—अहो निवत्सनि मम हरिषाङ्गनाभि—शं० १।०७, निवत्सिप्यसि मय्येव—मय० १२।८ २ मौजूद होना, विद्यमान होना.—रघु० १।३१ ३ अधिकार करना, बसना, अधिकार में लेना, निवृत्त, रह चुकना, अधात् (किसी विशेष काल) की समाप्ति तक जाना, प्रेर०—निर्वासित करना, बाहर निकाल देना, देश निकाला देना,—रघु० १५।७७, धरि०, १ निवास करना, ठहरना २ रात बिताना—दे० वर्णवित, अ०, १ रहना, निवास करना २ विदेग जाना, यात्रा करना, घर में बाहर जाना, देखाटन करना—निषाय वृत्ति माघाया प्रवसेकार्यवाश्रम—मनु० १।७४, रघु० ११।४, (प्रेर०) देशनिकाळा देना, निर्वासित करना प्रति०, निकट

१ (दिशा० प०० वमयानि) १ सोया होना २ दूर होना ३ स्थिर करना ।

१ (वृत्त० उ०० वमयानि-न) १ बाटना बाँटना, काट हाकना २ रहना ३, केना, स्वीकार करना ४ काट पहुँचाना, टपना करना ।

१ (धृत्त० उ०० वमयानि-त) मुसविज्जत करना मुसविज्जत करना ।

वसति,—ती (स्त्री०) [वस+तिनि वा ङीप्] १ रहना निवास करना, टिके रहना आश्रयण वमनि वक्त्र—मय० १, 'असता निवास स्थिर किया' शं० ५।१ २ घर, आवास, निवास, वासस्थान—न्याय तर्क हृत्प वसति पञ्चबाषाणु बाण—प्रथम० १।००, शं० ०।१६ ३ आश्रय, आश्रय प्राप्त (आल०) कु० ६।३७, देवी प्रकार 'विनयवसति' 'वर्मवसति' ४ निर्धार, पहाव ५ ठहरने और आगम करने का समय अर्थात् रात्रि, तस्य प्राग्वशादिका बभूव धर्मतियं—रघु० १५।११, (वसति-रात्रि, मत्स्य०) 'उसने रात को विधाय किया, निष्ठा बसनीधिविन्ता—७।३३, ११।३३ ।

वसतम् [वस+स्यट्] १ रहना, निवास करना, ठहरना २ घर निवास स्थान ३ प्रसाधन करना शरत् शरण करना, कपडे पहनना ४ कपड़, कपडा, परिधान, कपडे बमने परिधुमने बसना—शं० ७।२१, उग्रयं वा मलिनवमने सौम्य विधिष्य बीनाम् मेघ० १६, ६१ ५ कपधनी, तपशी ।

वसत, [वस+अच्] १ वसत चतु, बहार का शीतम (बैश और वैशाख यह दो मास वसत चतु के होते हैं) मधुमाघद्वी वसत-मुषु०, सर्व प्रियं चादन्य वसन्ते—चतु० ६।२, विहर्गति हृदिगिह मरुववमन गी० १ २ मृतं वा मानवीकृत वमन त्रौ कामदेव का साथी भान्ता जाना है—मुहूद वरा वसत कि स्थिनम्—कु० ६।२७ ३ पश्चिम ४ बैश्व सौतला । मय०—उत्सव वनन्तोत्सव, वसन्त चतु की रमरोसिया (यह आनन्दवमन पृथके बैश्व की पूर्णम को होती—उत्सव के बहतर पर मनाये जाते हैं) ।

काल. वसन्त की लहर, वसन्त ऋतु.—**वीरिण्य** (पु०) कोयल, का 1 बासन्ती या माघकी लता 2 वामन्ती बहल-पत्रल, दे० वामन्तीपत्र, सिलक कम्प वसन्त ऋतु का अलंकार—कुल्ल वसन्ततिलक तिलक बनाया छद्० ५. (कं. का. कम्प) एक छद का नाम, दे० परिनिष्ट १, कृत 1 कायल 2 चैत्र का महीमा 3 हिरवांश राग 4 आम का वृक्ष, हुली भृगुवल्ली का फूल, -हुं, -हुक्-आम का वृक्ष, पंचमी माघ शुक्ला पंचमी, वष्, सख नामदेव के विशेषण ।

वसा [वम् + टाप्] 1 मेघ, वन्धी, मंत्रा, पलुमंत्रा, पलुत्रा के मुद्दे की चर्बी—मंत्रा० शि० ८, पशु० १५। १५ 2 काष्ठ तेल या चर्बीवाला श्राव 3 मन्त्रिकः । मय० **वाशय**, **वाशयक** मू०, **छटा** मंत्रा—**वाशिय** (पु०) कुना ।

वसि [वम् + इत्] 1 कपटे 2 निवास आवास ।

वसित (भू० क० क०) [वम् [णञ् - भ]] पहना हुआ धारण किया हुआ 2 निवास 3 (अनाज आदि) समूहीन ।

वसिरम् [वम् + किरच्] समुद्री नमक ।

वसिष्ठ (वसिष्ठ) भाँ सिन्हा जाता है । 1 एक विख्यात मुनि का नाम, मुंबईवा राजाजी का कुल पुराजिन, कई वैदिक मुक्ता के लिए, सिद्धोप वर ऋग्वेद के मातृव मूल क, ब्राह्मणार्थिन प्रतिष्ठा तथा पालिक के आदेश प्रतिनिधि, विद्याभ्यस के उनकी समानता करने का बहुत प्रयत्न किया श्रीर इमी कायल नामवन्धी अनेक उपाख्यात प्रचलित गये तु० विद्याभ्यस 2 स्मृति के प्रणेता का नाम । कर्मा-व भी ऋषि के नाम पर ही इसका नाम वसिष्ठ स्मृति लिया जाता है ।

वसु (नपु०) [वम् + उन्] 1 शील, धन स्वयं प्रदये-ज्य सुर्गोपम्युता वसुधामातृव्य वसुति मतिनी कि० १।१८, व० १।३१, १।५ 2 मणि, रत्न 3 माना 4 धानी 5 अम्बु इक्षु 6 एक प्रकार का नमक 7 एक उदरी-विशेष वदि (पु०) । एक देव समूह (इस अर्थ में व० व०) जा गिनती में आठ है । भाप 2 ध्रुव 3 सोम 4 धर या पृथ्वी—अनिल 6 अमल 7 प्रपुत्र और 8 प्रभास, कर्मा-कर्मा भाप के स्थान में 'अह' की स्थिते हैं । परा पुत्रव माघपञ्च महाचर्वाभिलोजक प्रत्ययवच प्रभासवच वमहा-पञ्चविंशि त्यूनाः 2 आठ की संख्या 3 कुबेर 4 शिव 5 अग्नि 6 बृह 7 सरावर 8 आठ 9 उवा सायने की रम्भा १० दण्डोर् 11 प्रकाश की किरण—निरकाश यद्विभवेनवच विषया-व्याप्यपरिमहिष्ठा - वि० १।१०, विविचरमुमयाये

मनमापरयोधी— कि० १।१६, (दोनों अवस्थाओं में 'वसु' शब्द का अर्थ धन दीकत जो है) 12 मूयं—स्त्री० प्रथम, किरण। सम०—**वो** (बी) **वसारा** 1 इन्द्र की नगरी अमरावती 2 कुबेर की नगरी अलका 3 एक नदी का नाम जो अलका या अमरावती से संबद्ध है, **कीर**,—**वसि**: मित्रक, वा पुष्पी, देव, कृष्ण के पिता और मूर के पुत्र का नाम एक वृक्षही, भूः, कुतः **वसु** के विशेषण देवता, इत्या धनिता नाम का मन्त्र, **वसिष्ठा** एकदिक,— का 1 पुष्पी वसुधेवमयेत्यता त्वया—पशु० ८।८१ 2 मूमि कु० ६।६, 'वसिष्ठा राजा' धर पहाड़ **वसुधे** १।३ 'ममरम्प' वसण की राजधानी **वारा**,—**वारा** कुबेर का राजधानी—**वसा** अण की मान जिह्वाओं में से एक,—**वसा** अग्नि वा विशेषण, देवसु (पु०) अग्नि, अंधधृम् 1 तयाः हुवा नाना 2 चोटी,—**वेष** कर्म का नाम स्वामी कुबेर की नगरी का विशेषण ।

वसु (पु०) क [वम् + क् + क] आक का पीघा,—**कम्** 1 समुद्री नमक 2 शिल्पीन लक्षण ।

वसुधारा [वसुति धारयति—वसु + व + णिच् + वच् + टाप् + मू] पुष्पी, नानारत्ना वसुधरा - पशु० ६।३ ।

वसुधत् (वि०) [वम् + वसुप्] दीकतमद, धनवान् ही पुष्पी वसुधया हि नृपा कर्त्तव्य—पशु० ८।८२, पं० १।२५ ।

वसुध [वम् + सा + क] मुर, दबना ।

वसुरा [वम् + ऊरच् + टाप्] देवता रडी गणित ।

वसू (स्त्री० आ०) वरकने जाना शिल्पा-मृत्ना ।

वसूय दे० 'वसूय' ।

वसूयवती दे० 'वसूयवती' ।

वसूयविका (स्त्री०) विच्छु ।

वसु [वृ० उन्] कर्मपति-ने 1 क्षति पहुँचाना, हुना करना 2 प्राणना, निषेदन करना, धाकना करना 3 ज्ञाना हिलना—जुलना ।

वसु [वम् + अच्] आवागमनात् स्त. वक्रा दे० 'वसु' ।

वसुकरम् [वसु + क + क] क्षुद्रिण लक्षण ।

वसुति (पु०, स्त्री०) [वम् + ति] 1 निवास, आवास, टिकना 2 उदर, पेट का भाग स नीचे का भाग 3 वेष्ट 4 मूत्राणव 5 पिच्छकारी, एनीम। मय० **वसु** मूत्र,—**शिरसु** (नपु०) 1 एनीमा की नली, --**श्रीवसु** (पूजनीय साप. कर्म की) मूत्र बजाने वाली देवा ।

वसु (नपु०) [वम् + तुन्] 1 कस्तुत विशदाम कीच, शालाबिक, शालाबिकना कस्तुन्यवत्ताराप्राजाजान् 2 कीच, पदार्थ, सायरी, इक्षु, मासला—**अवसा**

मुद्र बस्तु हिसित् मुद्रुनेवारभते कृतातक—रपु०
८।४५, कि बस्तु चिद्वन् मुद्रे प्रदेयम् ५।१८, ३।५,
बस्तुनीटोप्यनादरः—सा० ६० ३ धनदीकत, सध्पति,
वैभव 4 सत, प्रकृति, नैसर्गिक वा प्रथान गुण
5 सामान (जिससे कोई बस्तु बन सके), सामग्री,
मूलपदार्थ (आल० से भी) आकृतिप्रत्ययदेवेनामनु-
बस्तुका सनावयामि मालवि० १ 6 (नाटक की)
कथावस्तु, किसी काव्यकृति की विषयवस्तु, कालि-
दासप्रथितवस्तुना नवेनाभिज्ञानचकुललास्यन नाटके-
नेपथ्यातव्यमस्माभि - श० १, अथवा महत्सु पुरुष-
बहुमानात्—विक्रम० १।२, माधीनमस्किमा बस्तु-
निर्देशो वापि तन्मयम्—सा० ६० ६, बेणी० १
7 किसी बस्तु का मुद्रा 8 योजना, कपरेखा। सम०
—अथवाः 1 वास्तविकता की कमी 2 तुम्पति की
हानि, अन्वयवन्तु ओसाई या झाबफूक अथवा अभि-
चार के द्वारा (नाटको में) किसी उपकृत्य की रचना
—सा० ६० ४२०, अथवा, दम्भी के अनुसार उपमा
का एक भेद, दम्भी द्वारा निरूपित लक्षण राजनीतिवित्त
के कथन नेने नीलोत्पले इव, इय प्रतीयमानेकधर्मा
बस्तुपूर्वक सा - काव्या० २।१६, (यह एक ऐसी
उपमा की बात है जहाँ साधारण धर्म का लोप हो
गया है),—अर्थात् (वि०) उपकृत पदार्थ के साथ
अव्यक्त, उपकृत सामग्री पर अर्पित रघु० ३।२९,
—आरम्भ किसी विषय की केवल कपरेखा या ढांचा
(जिसे बाद में विकसित किया जा सके)।

बस्तुतम् (अव्य०) [बस्तु, तम्] 1 दृग्जल, वास्तव
में, उच्यते, बाकी 2 अनिवार्यत, यथार्थत तत्त्वत
3 इसका स्वाभाविक फल यह है कि सब बात भा
यह है कि, निस्सन्देह।

बस्तुम् [बस्तु + वत्] धर, जावामस्थान, निवासस्थान
पि० १।३।३३।

बस्त्वं [बस् + व्त्वं] 1 परिधान, कपडा, कपड़े, पहनावा
2 बेधानुया, पादाक। सम० अथारः—रम्—पृष्ठम्,
तन्त्र—अथारः,—अत कपड़े की किनारी वा कप
की आलर,—कुट्टिमम् 1 तन्त्र 2 छनरी,—अधि
पंती वा साडी की बाँठ (जो माथि के निकट कपड़े
में लपटा जाती है), तु० नीति,—निष्ककः घोषी,
—परिधानम् कपड़े पहनना, वस्त्रधारण करना,
—वृत्तिका मुद्रिका, पुतलिका, बूत (वि०) कपड़े
में छाना हुआ—वस्त्रपुत पिठेजलम्—मनु० ६।५६,
—अथारः,—अधि (पृ६) दर्जी,—योनिः कपड़े का
उपादान (कपास आदि),—रक्षणम् कुम्भ।

बस्त्वन् [बस् + न] 1 भाडा, मजदूरी (इस अर्थ में पु०
भी) 2 निवासस्थान, आवासस्थान 3 बं न, इव्य
4 वस्त्र, कपड़े 5 धमडा 6 मूख 7 मृत्यु।

बस्त्वन् [बस् + न] करवनी, पटका या हागडी।

बस्वता [बस्व चर्म सीमाति—सिम् + व + टाप्] कपडा,
स्नायु।

बह् (बुरा०) उभ० बहति—ते) उज्ज्वल करना, चम-
काना, रोसानी करना।

बह् (म्भा०) उभ० बहति ते, उज्ज, कर्म० उज्जते) 1 ले
जाना, नेतृत्व करना, धारण करना, बहन करना,
परिवहन करना, (प्राय दा कर्म० के साथ) अज्ञा
धाम बहति, बहति विधिद्वय या हवि—श० १।१, न
च ह्य्य बहन्विति—मनु० ४।२४० 2 डोना, आगे
चलाना, दहा कर ले जाना, फकेलना—अस्मति या
तीरनिवातयथा बहुयथीध्यामान राजधानीम्—रघु०
१।३।६, त्रिभानस बहति यो गगनप्रविष्टाम् श०
७।७ रघु० १।१।० 3 आकर लाना, ले जाना
—बहति जलमियम् मुद्रा० १।४ 4 धारण करना,
सहाग देना धाम लेना, जीवन रहना—न गर्दभा
वाजिधर बहति मूच्छ० ४।१७, गाने वापिद्वितीये बहति
रघुवरा की मययावकाश—बेणी० ३।५, 'अब मेरे
पिता हराबल का नेतृत्व कर रहे हैं, बहति भुवद
येभी वीर फणाकलम्बिताम् अम् २।३५, श०
७।१७, मेघ० १।७ 5 उठाकर ले जाना, अपहरण
करना—अदे भुग बहति (पाठांतर—'हरति') एवम्
कि मिव्—मेघ० १।४ 6 विवाह करना—यदुद्रुदा
धारणराजराय्या—तु० ५।७०, मनु० ३।३८ 7 रचना,
अधिकार में करना, भारबहन करना बहति हि
पनहायं पथानुन वरीरम्—मूच्छ० १।३१ शरी
विषयगन् पटीरजम्भा भाषि० १।७४ 8 धारण
करना, उद्विग्न करना, दिखाना—लक्ष्मीवारा मकरनय
यवामकम् कि० ५।१० ९।७ 9 मृद ताकना,
मेडा करना, देखभाल करना—मन्वाया में जनना
योगधर्म वरुण्य—माथर्वि० ४ तेषां निर्यामिपकाना
बालेभ्य बहाय्यहम्—श० ९।२२ 10 भुगनना
टटोलना, अनुभव करना, भाषि० १।५४, इत्ये प्रकार
—दुःख, शर्त, शोक ताप आदि 11 (इस अर्थ में तथा
निम्नांकित अर्थों में अर्थात्क) धारण किया जाना, ले
जाया जाना, चलने रहना, बहते अन्वीषरों बहतम्
—मूच्छ० ६, उन्वाय पुनरुद्बहम्—का०, पृ० १।१३
२९। 12 (नदी आदि का) बहना—अथानुद्बहमानम्
—महा०, परीचकाराय बहति नद्यः—तुवा० ३। 13 (हा
का) चलना, मर बहति मासल—राम०—बहति
मलयसमीरे मदनमुपनिवाद्य वीत० ५, डेर० (बाह्यमति
—ते) 1 धारण कराना, निजबाना, मंगलाना, ले
जाया जाना 2 होकना, ठेलना, निदेश देना 3 आर
पार जाना, धारणन करना महाभारते राजप
शिवाभि रघु० १।१।२, अथवा ब्राह्मेयधर्मोपम्

मेघ० ३८४ उपयोग करना, ले जाना—घट्टि०
 १४२३, इच्छा० (विद्यमानि—ने) ले जाने की इच्छा
 करना, अर्थात् , चुनौतना, (समय) बिलाना, मुख्य
 रूप से प्रेर०, भा० १।१३, रघु० १।१००, अथ— 1 होक
 कर बुर भगा देना, हटाना, बुर ले जाना रघु० १३।
 २२, १६।६ 2 छोड़ना, त्यागना, तिलाजलि देना
 रघु० ११।२५ 3 घटाना, व्ययकल्पन करना, भा—,
 1 पूरी तरह समाप्त देना 2 जन्म देना, पैदा करना
 प्रकृत होता या झुकना— बीरमावहति मे स मयति
 रघु० ११।७३, भा० १।४३ 3 बहन करना, कर्मों में
 करना, रखना और० १८ 4 बहना ० प्रयोग
 करना, उपयोग करना (प्रेर०) (देवता का) आवाहन
 करना, उच्च , 1 विवाह करना पाणिनीयबृह-
 १बृह० रघु० ११।५४, मनु० ३।८, अष्टि० २।४८
 2 ऊपर उठाना, उल्टन होना 3 सभालाना, जोषित
 रखना, त्रैके उठाना, सहारा देना—रघु० १६।६०
 4 भ्रमणना, अनुभव करना 5 अधिकार में करना,
 रखना, पहनना, धारण करना, पु० १।१९, विक्रम०
 ४।४० 6 समाप्त करना बुरा करना, उच्च—,
 1 निकट जाना 2 उपक्रम करना, आरम्भ करना,
 सि—, सभासे रखना, जोषित रखना, सहारा देना
 हेदानुव्रत अर्थात् बहने गीत० १, निम्न—, 1 समाप्त
 होना 2 अवलंबित होना, की महामता से निर्वाह
 करना, (प्रेर०) समाप्ति तक ले जाना, पूरा करना,
 समाप्त करना, प्रवचन करना—भा० ३, बरि , उरु-
 कना, अ , बहन करना, ले जाना, जोषिते रहना
 2 बहा ले जाना, ले जाना, बहन करने जाना—अष्टि०
 ८।५२ 3 सहारा देना, (भार) बहन करना,
 4 बहना 5 लिखना 6 रखना, अधिकार में करना,
 स्पर्श करना या सहस्र करना, वि - , विवाह करना,
 भा , 1, ले जाना, धारण किये जाना 2 मसकना,
 समान, दे० प्रेर० 3 विवाह करना, दिखाना, प्रदर्शित
 करना, प्रस्तुत करना, (प्रेर०) मसकना, या मालिश
 करना भा० ३।२१।

बह् [बह् + कर्त्तरि अच्] 1 बहन करने वाला, ले जाने
 वाला, सहारा देने वाला 2 बँक के कचे 3 सवारी
 यान 4 विशेष करके घोडा 5 हवा, वायु 6. नार्स
 सबक 7 नव, नाला 8. बार झोल की भाष ।

बहूत. [बह् + अणच्] 1 यानी 2 बँक ।

बहति: [बह् + भति] 1. बँक 2 हवा, वायु 3 मिष,
 परामर्शदाता, सहायकार ।

बहती, बह्वा [बहति + डीप्, बह् + टाप्] नदी, सरिता ।

बह्नुः [बह् + अणु] बँक ।

बहन्म् [बह् + झट्] 1 ले जाना, धारण करना, होना
 2 सहारा देना 3 बहना 4 गाड़ी, यान 5 भाष, बोली ।

बह्लः [बह् + अणु] 1 वायु 2 मिष ।

बह्व (वि०) दे० 'बह्ल' ।

बह्विचम्, बह्विचकम् बह्विणी [बह् + इच, बहिव + अणु,
 बह् + इनि + डीप्] बोली, बेसा, भाष, मिश्री,—प्रत्य-
 क्त्यव्ययत क्रियायि बह्विचम्-इत्-०, प्रथम पयोधिजनने
 वृत्तवासि वेद बह्विचबह्विचपरिमलेत्-गीत०१ ।
 बह्विन् दे० 'बहिव' ।

बह्विष्णु (वि०) [बहिव + अणु] बाहरी, बाह्यप्रभवकी ।

बह्वेचकः (पु०) बह्वे का पेट, विभोजक का वृक्ष ।

बह्विः [बह् + नि] 1 अग्नि अणुमें पतितो बह्वि स्वयमे-
 बोधशाम्यति मुधा० 2 पाचनशक्ति, आमाशय का
 रस 3 हाजिरा, भूय लगन 4 यान । मम० कर
 (वि०) 1 अन्तर्दृष्ट 2 पाचनशक्ति को उद्दीप्त
 करने वाला, सुधारक, —काण्डम् एक प्रकार की
 ज्वर की लताही, बह्-घृ, लोडान, —नार्स 1 बाय
 2 समी या जैबी का वृक्ष, तु० अग्निवर्ग, —दोषका,
 कुसुम का पेट, लोथम् की, —लिङ्गः हवा, वायु,
 रेतम् (पु०) शिव का विशेषण, लोथम्, लोथकम्
 तावा, बर्षम् लाक रग का कुमुद, रत्नोपल,
 बल्लम् रास, लोथम् 1 सोता 2. चना—लिङ्गम्
 1 केसर 2 कुसुम, लक्ष हवा, संक्षकः चिचकवृक्ष ।

बह्वम् [बह् + अणु] 1 गाड़ी 2 यान, सवारी, —द्वारा एक
 मृत्ति की पत्थी ।

बह्विक, बह्वीक दे० बह्विक, बह्वीक ।

बा (अच्) [बा + शिच्] 1 विकल्प बोधक अव्यय, या,
 परन्तु समुक्त में इसकी स्थिति त्रिषु है, या तो यह
 प्रत्येक लक्ष्य या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है, अथवा
 अन्तिम के साथ, परन्तु यह बाधक के आरम्भ में कभी
 प्रयुक्त नहीं होता, तु० 'ब' 2 इसके विम्बकित अर्थ
 हैं (ब) और, भी, बायुर्वा यहो वा—नण०, अर्थात्
 ले जाता स्मरति वा नानन् उत्तर० ८, (ब) के
 समान, जैसा कि जाता मन्वे मुदिनमयिता पियणी
 बान्धकपायम्—मेघ० ८३, यमी बोधक्य स्वैते
 सिद्धा०, हृदो गर्भेति शान्तिरपितयत्तो दुर्वीचोना वा
 शिषी -मुष्क० ५।६, भास्वि० ५।२२, शि० ३।६३,
 ४।३५, ७।६४, कि० ३।२३ (य) विकल्प
 से— (इस अर्थ में बहुधा इसका प्रयोग व्याकरण
 के नियमों में जैसा कि पाणिनि के सूत्र—होता है)
 दोषो नो वा चित्तविगमे—पा० १।४।९०, ९३
 (य) सभावन (इस अर्थ में 'बा' बहुधा प्रसवाचक
 सर्वनाम और उनसे व्युत्पन्न 'इव' 'याम' जैसे शब्दों
 के साथ जोड़ दिया जाता है तथा 'समवत्तः' वा
 'कथाचित्' शब्दों से उसे अनुवृत्त किया जाता है
 —कस्य बान्धवस्य बन्धसि मया स्वातन्त्र्यम् का०,
 परिचरतिन सहारे दूतः को वा न बाधते—पञ्च०

१।२३, (८) कभी-कभी केवल प्राप्ति के लिए ही प्रयत्न होता है ३ जब 'वा' की पुनरुक्ति को जाती है तो इसका अर्थ होता है या-या-सा वा क्षमास्त-दोषा वा मुनिर्वैलमयो मम-कु० २।६०, तदथ परिध्यानुरीवाद्या उदात्तकषाभस्फुरीवाद्या नवनाटक-वर्धनकुसुमहस्तादा भवत्कुरवचन दीयमान प्रायवे-विक्रम० १, (अथवा या, कुष्ठ-कुष्ठ, अन्यथा दे० 'अं' के नीचे, न वा नहो, न तो, न, यदि वा अग, अन्यथा, कि वा कि, क्या, जाया कि आदि ।

वा (स्वा० अदा० पर० वाति, वान या वान) १ हुवा का चलना वाना वाना विदि रिदि न वा सप्तधा सप्तभिन्ना-वेणा० २।६, दिश प्रसेदुमंरुं वा मुष्वा -रपु० ३।१६, मप० ४२, अट्टि० ७।१, ८।६१ - जाना, ठिकना-बुलना ३ प्रहार करना, घाट पहुचाना, क्षतिग्रस्त करना प्रेर० (वापयति-ने) १ हुवा चलवाना २ वाजयति न हुलना, जा- , हुवा का चलना-बढ़ा बढ़ा भित्तिकासम्प्लिन्नावा-वावात्मानगिष्वा विरति-कि० ५।१६, अट्टि० १।५।७, निष्- १ लिलना २ ठडा होना, खाल होना, (आल० से भी) बपुर्वेलादीपवर्धनें निर्वंवा -शि० १।६५, स्वयि दत् एव तस्या निर्वानि मनी मनीभववर्धकिते मुभा० ३ फुक मारना, वृजना, लिप्यभ होना-निर्वाणवोपे सिम् नैक दानम्, निर्वाणभूयिष्ठ-वधाय्य वीय मधुस्यवपे त्पुयुंणेन कु० ३।५२, शि० १।४।८५, (प्रे०) १ फुक मारना, वृजाना २ शान करना, मर्मी दूर करना क्षीतल करना-रज० ३।११, रपु० १५।५६ ३ रिज्ञाना, मान्यना देना, आराम पहुचाना रपु० १०।६३, प्र, शि, हुवा का चलना-वापुर्विवाति हृदयानि हृत्प्रगणाम् कनु० ६।२२ ।

वाज (वि०) (स्त्री० शी) [वाञ्+ञञ्] वास का बना हुआ, शी वनलोचन ।

वाजिक [वाञ्+ठक्] १ वाज काटने वाला २ बासुरी बजाने वाला, बासुरिया ।

वाकम् [वक्+अञ्] वागमा का तमुह या उद्दान । वाकुल ट० वाकुल ।

वाक्यम् [वक्-प्यत्, न्यत् च] १ वक्तृता, वचन, वचनव्य उक्ति, कथन श्रुत्य वे वाक्यम् 'येने वचन मुने', वाक्ये न मनिप्लने 'आज्ञा पालन नहीं करता है' -शि० २।२५ २ वाक, उपवाक्य (किसी विचार का पूर्वावधारण)-वाक्य स्यादोपवाक्यासासितिवचन एवाव्यय-सा० ट० ६, धीत्वार्थी च प्रवेहाक्ये समाने तद्धिने तथा-काव्य १० ३ तक, अनुवाक्य (तर्क में) ४ विधि, नियम, सूत्र । सम०-अर्थः वाक्य का अर्थ, 'उपमा दण्डी के अनुवाक्य उपमा का

एक वेद-दे० काव्य० २।४३, -वाक्यः वार्ताण्य, वाचनीय, प्रवचन, -अक्षयम किमी उक्ति या तर्क का निराकरण, -पदीव्य भर्तृहारे द्वारा रचित एक पुस्तक का नाम, -वदति (स्त्री०) वाक्य बनाने की रीति, वाक्यविन्यास, लेखनीयता, -प्रवचः १ पुस्तक, सबड रचना २ वाक्य प्रवाह, -प्रवोचः वक्तृता को काम में लाना, भाषा का उपयोग, श्रेयः निश्च उक्ति, विधिप्र वक्तव्य मुद्रा० २, रचना, विन्यासः वाक्य में शब्दों का रूप, शब्द योजना, वाक्यरचनाविचार, श्लेषः १. किसी बात का अवशिष्ट भाग, पूरा न किया गया या अपूर्ण वाक्य लघोवाक्यापेक्षे इत वे वाक्य शेष विक्रम० ३२ न्यून पर वाक्य ।

वाक्य [वाचा इयति वच्छति, वाच्+ञ्+अञ्] १ श्रुति, मुनि पुष्पाय्या २ विद्वान् वाद्यम्, विद्यार्थी ३ बुर, बौर, भुरगा । मान, मिलनी ५ वाचा, ठकावट ६ विधिवाचि ७ बहवानल ८ बेंडिया ।

वाचा (स्त्री०) लगाम ।

वाचुरा [वा श्रितो उर्य् ग् च] अटकेदार निजडा, जाल पाय फन्दा जानीदार फन्दा -को वा दुजेन-वायुगम् पतिन श्रेमेण ५, न पुयान्-वच० १।१।६६ । मय० ब्रुति जगनी जालघरी को पैकड कर प्राप्त होने वाली आलोचिका (-वि) बहुलिखा, गिकारी । वाचुरिक [वाचुरा+ठक्] बहुलिखा, गिकारी, शरण पकड़ने वाला रपु० १।५३ ।

वाचिन् (वि०) [वाच् अच्ञञि विमिनि वाच्य क] १ वाक्यट, वाक्यचतुर २ वासुरी ३ लब्धाव्ययपुणं, अलम्बान् १० १ प्रवचना मुक्कना-अनिर्लोहित-कायंन्य वाग् उ वाचिमनो वृषा शि० २।३७, १००, कि० १।६।६ पच० ६।६६ २ वृत्त्यनि का नाम ।

वाच्य (वि०) [वाच् वच्छति-यच्+ञ्] १ कम वाक्यने वाला, मिनभायी २ मरय बोझने वाला, च्छः विनय लक्षणा ।

वाक् (पु०) मधु । वाक् (स्वा० पर० वासति) अंशगा वरना, उच्छा करना ।

वाक्यव्य (वि०) (स्त्री०-दी) [वाच्-व्यट्] १ शब्दों में एकल रपु० ३।०८ २ वाच्यो या वक्तवो म सर्वना रलने वाला यनु० १।५०, अम० १।७।१० ३ शया से एक-३ वाक्यट, अलकारपुं, वाच्यवाच, वम १ वाच्यो भाषा-म्वरन्वज्जमैर्वादिनिर्देशनिर्देशी ममन्त वाद्यम्य ध्यात वैदाक्यमिव विष्णुता-छाट० १ कु० ७।१०, शि० २।३० २ वाचिमना ३ वाक्य वाग्, दी मग्गदी देवी ।

वाच् (स्त्री०) [वच्+विचय दीधोऽप्रमाग्य च] १ वन प्रश्ट पशवनी (वि०० अर्थ) वाच्यविच

मन्मथनी वाग्यप्रतिपत्तये रघु० १।१२ वचन, वाग,
 भाग, वाणी-वाचि पुण्यापुण्यहेतवः - मा० ४, लौकिक-
 काया हि मायनायवर्षं वाग्यवचनैरेत. स्वर्गोपा पुनरा-
 धाना वाचसर्षोऽनुधावति उत्तर० १।१०, विनिश्चि-
 तासौमिनि वाचसायदे सि० १।१०, 'यत्र वचनं करो',
 निमाजिन कथा' १४०, रघु० १।५९ शि० २।१३,
 २३, कु० २।३ वाणी शब्द - अशरीरिणी वाग्य-
 चरु-उत्तर० २ मन्मथवावा - रघु० १।५३ उक्ति,
 इत्यन्तः ५ भर्गोमा प्रतिज्ञा ६ पदाश्रय, कलाप,
 लोकोक्ति ७ विद्या की देवी मन्मथनी । मम० अर्थ
 (वाग्यं) शब्द शीघ्र उमका अर्थ - रघु० १।१३ उ०
 ६०, - **आद्यम्बर** (वागाडम्बर) शब्दाडम्बर, वाग्जाल,
 आद्यन्तु (वागजन्तु) (वि०) शरीर में युक्त
 उत्तर० २ ईश (वाणीय) । मुखला, वाग्पुट
 २ देवताश्री के मुख बृहस्पति का विशेषण ३ शब्दा
 या विशेषण कु० २।३ (-शा) मन्मथनी का नाम,
 - **ईश्वर** (वागाश्वर) । मुखला, वाग्पुट २ शब्दा
 या विशेषण (-री) वाणी की देवता मन्मथनी देवी,
 जयम (वाग्पुत्र) बालने में प्रथम, वाक्पुट या
 विद्या पुत्र कलह (वाक्काय) श्रगहा, उत्पान,
 और (वाक्बीर) पत्नी का भाई, मुख-
 (वाग्पुट) एक प्रकार का पत्नी. मुक्ति, - मुक्तिः
 । शरीर-न आदि) राजा का पाददात-वाहक-पु०
 वाग्नेयवर्ष वाग्निम् - **बाधल** (वि०) (वाक्चयल)
 बाधन करने वाला निरर्थक और अत्यन्त दाने करने
 वाला **बाधक्यम्** (वाक्-वाग्नेयम्) निरर्थक दाने
 वह हम वाग्पुत्र छलम (वाक्चयलम्) शब्दों के द्वारा
 ईशानी का पुत्र उत्तर वाग्नेय-मदा० १, - **बाधम्**
 (वाग्-बाधम्) वागाडम्-पुत्र अमार बाने सि०
 १।१. **इबर** (वाग्इबर) । निम्नतर उक्ति
 २ करे वाग् **इह** (वाग्इह) । भर्गोनापुत्र वचन
 शब्द कटपत्त, सिन्धो २ बोलने पर नियन्त्रण, शब्दों
 या वचनों पर राह कु० बिन्द. **इष** (वाग्इष)
 (वि०) प्रतिज्ञान मन्त्र, जिमकी मलाई हो चुकी
 हो, (प्र) मन्त्र या मलाई हुई कला. **ईश्वर**
 (वाग्ईश्वर) (वि०) वचना में दण्ड अर्थात् कम
 बोलने का **इत्यम्** (वाग्इत्यम्) आद्य - **हाद्यम्**
 (वाग्हाद्यम्) मलाई, **हुद्य** (वाग्हुद्य) (वि०) १ वाणी
 देने वाला बट्ट ब्रह्मन्, अशरीरभाषी २ व्याकरण
 की दृष्टि में अणुद भाषा वाक्यने वाला (ष्ट)
 । निन्दक. इह शब्दाप प्रियका उपनयनलकार
 शीक मय्य व न हुवा ही, **देवता**, **देवी** (वाग्देवता,
 वाग्देवी) वाणी की देवता मन्मथनी देवी वाग्देवता-
 या मन्मथनायने मा० ६० १, **दोष** (वाग्दोष)
 १ (अर्थबिकर) शब्द का उच्चारण वाग्दोषात्

यदंमो हन - हि० ३ २ अणुद, मानहानि
 ३ व्याकरण की दृष्टि से अणुद भाषण, - **निबचन**
 (वाग्निबचन) (वि०) वचनी पर जातिव रहने
 वाला, निबचय (वाग्निबचय) मूह के वचन से
 पत्नी, विवाह-मविद्या, पिच्छा (वाग्निपिच्छा) (अने
 वचनी या प्रतिज्ञा) के प्रति भक्ति या श्रद्धा. - **पटु**
 (वि०) (वाक्पटु) बालने में कुशल, वाक्चतुर,
 - **पति** (वि०) (वाक्पति) वाक्चतुर, अलकार-
 युक्त, (सि) बृहस्पति का नाम (इस लक्ष में 'वापसा
 पति का भी प्रयोग होता है), - **पाक्क्यम्** (वाक्पा-
 क्यम्) १ भाषा की ककमता २ शब्दा द्वारा
 अपमान, अपशब्दयुक्त भाषा, मानहानि, **प्रबोधनम्**
 (वाक्प्रबोधनम्) वचना में अभिव्यक्त किया गया
 आदेश, **प्रवीर** (वाक्प्रवीर) वचनी द्वारा उक्तवाता,
 अर्थकाने वाली या उपालम्भयुक्त भाषा, - **प्रलय**
 (वाक्प्रलय) शर्मिता, - **वचनम्** (वाग्बचनम्)
 भाषण बंद करना, रूप करना अन्तः १३, **असौ**
 (हि० व० - वाक्प्रमत्तौ) - **दंडित** भाषा में) वाणी और
 मन. **वाचम्** (वाग्वाचम्) केवल वचन, - **मुद्यम्**
 (वाग्मुद्यम्) किमो वचनता का आरम्भ या प्रस्तावना,
 वाचम् भ्रमिका - **शत** (वि०) (वाग्शत) जिसमें
 अपनी वाणी का नियन्त्रित कर लिया है या दमन
 कर लिया है, मोनी यत्र (वाग्मय) जिसमें अपनी
 वाणी का नियन्त्रित कर लिया है मनि, **श्रुति**, - **शयः**
 (वाग्मय) मूक पुत्र **मुद्यम्** (वाग्मुद्यम्) शब्दों
 की लड़ाई, मन्मथमय वाग्द्विवाद या चर्चा, विवादा-
 न्मद विषय, **वक्ष** (वाग्बक्ष) १ कठोर (वक्ष
 की भांति) शब्द अत्रह दाकणो वाग्बक्ष - उत्तर० ?
 २ कठोर भाषा, - **विबन्ध** (वाग्बिन्दय) (वि०)
 बालने में कुशल (व्या) मध्यभाषिणी और मनोहा-
 रिणी, **विबन्ध** (वाग्बिन्धव) शब्दों का भंडार,
 अर्थन्यायिक, भाषा पर आधिपत्य - मा० १।२६,
 रघु० १।१, **विज्ञान** (वाग्बिज्ञान) शक्ति या
 प्राज्ञ भाषा - **व्यवहार** (वाग्ब्यवहार) मौलिक
 विचारविमर्श प्रयागप्रधान हि नाट्यशास्त्र किमप
 वाग्ब्यवहारण मातवि० ? **व्यथ** (वाग्ब्यथ)
 शब्दों का ज्ञान **व्यापार** (वाग्ब्यापार) १ बोलने
 की रीति २ भाषणहीनी या अस्मान. संवध. (वाग्-
 मयम्) भाषण या बोलने पर नि प्रण ।

वाच [वच् - लिच् - अच्] १. एक प्रकार की मछली
 २ मदन माय का पौधा ।

वाचध्वज (वि०) [वाचो वाचध्वज यच्छति विर्यति - वाच्
 ध्वज - अच् - नि० - अच्] जिज्ञा को रोकने वाला,
 पूर्ण जितलक्ष्मता रखने वाला, रूप रहने वाला, मोनी,
 स्वस्वभावी - उपस्थिता देवी तत्राचययो भव - **विष्णु** ०

३, विद्वानो बहुधातले परबन् इत्याद्यानु वाच्यमा
—शानि० ४।४२, रघु० १३।४४,—मः मौन रहने
वाला मनि ।

बाध्यक (वि०) [वक्ति अविद्यात्वा बोधयति अर्थात् वच्
+धनुल्] 1 बोलने वाला, बोधना करने वाला,
व्याख्यात्मक 2 अभिव्यक्त करने वाला, अर्थ बतलाने
वाला, प्रत्यक्ष संकेत करने वाला (शब्द के रूप में,
'लाक्षणिक' और 'अर्थक' से भिन्न) दे० काव्य० २
3 मौखिक—कः 1 बकना 2 पाठक 3 महत्त्वपूर्ण
शब्द 4 दूत ।

बाधनम् [वच्+धिच्+त्पठ्] 1 पढ़ना, पाठ करना
2 बोधना, प्रकथन, उच्चारण जैसा कि 'स्वस्ति-
बाधन' 'पुण्याहवाचनम्' में ।

बाधनकम् [बाधन+कन्] पहेली, बुझावला ।

बाधनिक (वि०) (स्त्री०-की) [बाधनेन निर्बलम्—ठक्]
मौखिक, शब्दों में अभिव्यक्त ।

बाधस्पतिः [बाध पति +व्यञ्जलुक्] 'बाणी का स्वामी',
देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण ।

बाधस्पत्यम् [बाधस्पति+व्यञ्ज्] बाक्यट्टनायक भाषण,
बकना, प्रभावशाली भाषण—तद्वृत्तित्वं कृत्स्नित्वं
व्यस्य प्रमायते हि० ३।१६ (=मि० २।३०) ।

बाधा [बाध्+आप्] 1 बाधना 2 धार्मिक दण्डों का
पाठ, वृत्त ३ शपथ ।

बाधाट (वि०) बाध्+आटच्, नस्य न कः] बावुनी,
बावाल, बहुत बाने करने वाला बहरे बाधाट
—वेणी० ३, महाबीर० ६, भट्टि० ५।२३ ।

बाधात्म (वि०) [बाध्+आलच्, वस्य न कः] 1 बोला-
हलपूर्ण, शब्दायमान, क्रन्दनशील 2 बावुनी, बकवास
करने वाला, दे० बाधाट १।४० ।

बाधिक (वि०) (स्त्री०-का-की) [बाधाकृत बाध्+ठक्,
नन कः] 1 शब्दों से युक्त या अभिव्यक्त बाधिक
पाठक्यम् 2 मौखिक, शार्मिक मौखिक रूप से अभि-
व्यक्त,—कम् 1 मदेण, मौखिक या शार्मिक समाचार
—शार्मिकमप्यायं सिद्धार्थकाच्छेदव्यमिति निबि-
तम्—बुद्रा० ५, निर्धारितेर्वै लेखेन सल्लक्या सन्
बाधिकम् मि० २।७० 2 समाचार, बार्ता,
खबर ।

बाधोपनि (वि०) [बाधोपनि यस्य दे० ल०, वष्टपा
अनुक्] शोचने में कुगन, बाक्यट्ट, —श्लिः (स्त्री०)
'शब्दों का कम' बाधना, अभिज्ञान, भाषण—अथ
सन्निव्य बाधोपनिः—भा० १ ।

बाध्य (वि) [वच्+कर्मणि ब्यन्] 1 करे जाने वा बत-
नाय जाने के योग्य, संबोधित किये जाने योग्य—बाध्य-
मववा मद्रवनाय गात्रा—रघु० १।४६१, 'पेरी और
से राजा को कहिए' 2 अभिधानीय, बुधबाधक,

विशेषक 3 अभिव्यक्त (शब्दार्थ आदि) तु० लक्ष्य
भ्यम् 4 दूषणीय, निन्दनीय, शठने-फटकारने योग्य
—शि० २।१६४, हि० ३।१२९,—कम् 1 कलक,
निन्दा, सिद्धकी—प्रमदायन् सन्निव्य' गुणा नृपति
सन्निव्य काव्यदर्शनात् रघु० ८।७२, ८४, बिरस्य
बाध्य न वन प्रजापति—स० ५।१५, मि० ३।५८
2 अभिव्यक्त अर्थ जो अभिधा द्वारा प्राप्त हो, तु०
लक्ष्य, भ्यय्य, अपि तु बाध्यवैचित्र्यप्रतिभासादेव
बाह्यताप्रतीतिः—काव्य० १० 3. विवेक 4 क्रिया की
बाध्यता (कर्मबाध्य या प्राक्बाध्य) । सम०—अर्थ,
अभिव्यक्त अर्थ,—विद्यम् अथम काव्य के दो
भेदों में से एक, इसमें काव्य सौन्दर्य
प्रकार युक्त तथा उद्भावना युक्त विधानों की
अभिव्यक्तता में निहित है (विप० गद्य विज्ञ, दे०
'विष' भी, बच्चम् कठोर और कर्कोश भावा ।

बाधः [वच् + घञ्] 1 बाध, ईना 2 वृत्त 3. वाण का
पत्र 4 वृद्ध, लडाई 5 ध्वनि, अम् 1 धी 2 धाद
या और्ध्वदैहिक क्रिया के अवसर पर प्रदान किया
गया विष्ट 3 भोज्यमासरी 4 जल यज्ञ की पूर्ता-
हुति का मन्त्र । मम० पैशः, धम् एक विशेष
पत्र का नाम,—सम् 1 विष्णु का नाम 2 शिव का
नाम,—श्लिः मूर्धः ।

बाधस्नेहः [बाधनेन मूर्धस्य छात्र बाधमति +दक्]
गुल्म यजुर्वेद या बाधनेयो महिला के प्रणेता याज-
नव्य का नाम ।

बाधसनेयिन् (पु०) [बाधसनेव +इनि] 1 गुल्मयजु-
र्वेद के प्रवर्तक तथा प्रणेता याजवल्क्य मनि का नाम
2 गुल्मयजुर्वेद का अनुयायी, बाधसनेयि श्रमदाय ने
सम्बन्ध रखने वाला ।

बाधिन (पु०) [बाध +इनि] 1 बोधा-न सर्वथा बाधि-
युर रहनि—सूक्त० ४।१७, रघु० ३।६३, शतपु
६७, मि० १।८।१ 2 बाध 3. पहेली 4 यजुर्वेद की
बाधनेयिशाखा का अनुयायी । सम०—सूक्त होम-
माहहार,—भक्तः छोटी मटर,—भोजनः एक प्रकार
का भोजिया, मेघः अथवेध यज्ञ,—शास्त्रा अस्तबल,
पृथगात् ।

बाधोकर (वि०) [बाध +कृ +ङ् +अच्] कामकेलि
इच्छाओं का उद्दीपक ।

बाधोकरण [बाध +कृ +ङ् +स्युट्] कामोद्दीपको
द्वारा कामनाओं को उत्तेजित या उद्दीपित करना ।

बाधु (म्रा० पर०) बाधित, बाधित अभिधाया करना,
बाधना न महत्त्वानस्य न मित्तवृत्तय प्रियाणि
बाध्ययुधि मनीहिनुम्—हि० १।१९, अमि
सच्, कामना करना, अभिलाषा करना, इच्छा
करना,—भट्टि० १७।५३ ।

बांछन् [बांछ् + स्तुट्] कामना, इच्छा करना ।
 बांछा [बांछ् + भ + टाप्] कामना, इच्छा, अभिलाषा,
 —बांछा सञ्चलनसमये मत् ० २।१२ ।
 बांछित (मू० क० कृ०) [बांछ् + क्त] अभीष्ट, इच्छित,
 —सम् अभिलाष, इच्छा ।
 बांछिन् (वि०) [बांछ् + णिनि] 1 अभिलाषी 2
 विलासि ।
 बाटः—बाट् [बट् + घञ्] 1. बाटा, चिरा हुआ भूभाग,
 अहाता—स्वबाटकुण्डलिकव्ययद्वय —दश०, इसी
 प्रकार देस०, रमशान० आदि 2 उद्यान, उपवन,
 फलोद्यान 3. सबक 4. तट पर लगाया गया लकड़ी के
 तलों का बाध 5 अन्न विधेय । सम०—बाणः
 बाह्य मी में पतित बाह्य द्वारा उत्पन्न सन्तान
 —दे० मनु० १०।२१ ।

बाटिका [बट् + ष्वल् + टाप्, इत्थम्] 1 वह मूषध
 जहाँ पर कोई भवन बनाना हो 2 फलोद्यान, बगीचा
 —अये दक्षिणेन वृक्षबाटिकावालाप इव धूपते—स०
 १, इसी प्रकार पुष्प०, अक्षीक० आदि ।

बाटी [बाट् + ङीप्] 1 वह मूषध जहाँ पर कोई भवन
 बनाना है 2 घर. बाकास स्थान 3 अहाता, बाटा
 4 उद्यान, उपवन, फलोद्यान बाटीभूमि क्षिति-
 भूभाग—आय० ५ 5. सबक 6. पानी रोकने के
 लिए लकड़ी के तलों का बाध 7 एक प्रकार का
 अन्न ।

बाट्या, बाट्यालः, बाट्याली [बाटी + यत् + टाप्, बाटी
 + अल् + अच्, बाट्यालय + ङीप्] एक पीथे का
 नाम, अतिबला ।

बाट् (म्बा० आ० बाटने) स्नान करना, पीता लगाना ।

बाडपः [बडवाया अपत्य बडवाना समूहो वा अच्]
 1 बडवानल 2 बाह्य, - बन् धोडिमी का समूह ।
 सम०—अभिन्, -अनकः समुद्र के भीतर रहने वाली
 जात ।

बाडधेय [बडवा + डक्] 1 तांड 2 घोडा, बी (पु०,
 डि० व०) शानो अश्विनी कुमार ।

बाडध्वन् [बाडव + यन्] बाह्यमी का समूह ।

बाड दे० 'बाड' ।

बाध दे० 'बाध' ।

बाधि (स्त्री०) बध् + इच्] 1 मुनना 2 जुलाहे की
 लकड़ी, करना ।

बाधिक [बधिन् + अच् (स्थाई)] व्यापारी, सीधगर ।

बाधिक्कन् [बधिन् + क्तञ्] व्यापार, बनिज, लेन देन ।

बाधिनी [बध् + णिनि + ङीप्] 1 बतुर और बूतें स्त्री
 2 गर्वकी, अधिनेत्री 3. वत्त स्त्री (शा० या आल०
 क्त से) शूद्रादिभ्य स्वेच्छाधारिणी स्त्री—रघु०
 ६।७५ ।

बाधी [बध् + इच् + ङीप्] 1 नायक, यवन, नापा
 —बाधेका समलकरोति पृथक् वा सम्कृता बाधेते
 —मनु० २।१९ 2 बोलने की शक्ति 3 ध्वनि,
 भावाज-केका बाधी अपूरण्य—अमर० इसी प्रकार
 आकाशबाधी 4 साहित्यिक कृति वा रचना—अहाणि
 या कुड विद्याभयानादेण भासस्यधम्ममदसा सहसा
 अनामान् मग्गिं ४।४१, उत्तर० ७।२१ 5.
 प्रथमा 6 विद्या की देवी सरस्वती ।

बाध् (पुरा० उम० वातयति—ते) 1 हवा का चलना 2
 पसा करना, हवादार करना 3 सेवा करना 4
 प्रसन्न करना 5 जाना ।

बात (मू० क० कृ०) [वा + क्त] 1. बहो हुई 2 इच्छित
 या अभीष्ट, पथित,—तः 1 हवा, वायु 2 वायु का
 देवता, वायु की अधिष्ठात्री देवता 3 शरीर के तीन
 दोषों में से एक 4 गठिया, सन्धिबंधन । सम०—अट
 1 वातमूत्र, शारङ्गिमा 2 सूर्य का घोडा,—अंड
 फोतो का रोम, अरकोपबृद्धि,—अतिशारः शरीरगत
 वायु के विकृत होने से उत्पन्न वैशिश,—अध्वम पसा,
 —अन्यः पोडा, (मन्) 1 लिटकी, शरीरका—मा०
 २।११, कु० ७।५९, रघु० ६।२४ १३।२१ 2. बलिन्व,
 शारङ्गमूत्र 3 मडवा बडव, अन्वः शारङ्गिमा,—अति-
 एरध का वृक्ष, अन्वः बडव तेज चलने वाला बीट,
 —आयोडा इन्दुरी,—अति (स्त्री०) मकर, आहत
 (वि०) 1 हवा से हिलाया हुआ 2 गठिया रोम से
 प्रसन्न,—आहतिः (स्त्री०) हवा का प्रचद झोंका,
 बृद्धिः (स्त्री०) 1 वायु की अधिकता 2 गया,
 मूत्रगर, लोहे की स्याम से जटित लठी,—अध्वन्
 (मू०) पाद मारना, कुडमिक्ता मूत्ररोग जिसमें
 मूत्र पीडा के साथ बूब-बूब उतरता है,—कुम्भः हाथी
 का गडम्बल, केतुः घूल, केतिः 1 प्रभरतयत्त
 बातचीत, प्रेमियों की कानाफूसी 2 प्रेमी या प्रेमिका
 के शरीर पर नम तत,—बुल्लः 1 जीवी, बडव 2
 गठिया,—अवरः विधाक्त वायु से उत्पन्न मूत्रर
 प्पकः बादल, पुष-भीम, हनुमान्,—पोष,—पोषकः
 पमास का वृक्ष, डाक का पेड़,—प्रकोपः वायु की
 अधिकता,—प्रणी (पु०, स्त्री०) तेज चलने वाला
 हरिण,—बडलो मकर,—धुमः वेग से दौड़ने वाला
 हरिण,—रक्तम्,—सोमिन्तम् टीपण गठिया,—रक-
 मकर का वृक्ष,—रक्मः 1 तुकाण, प्रचद हवा, बाधी
 2 इन्धनपत्र 3 रिचवत,—रौषः—अवाधिः गठिया का
 रोम, -बलिः (स्त्री०) मूत्ररोकना,—बृद्धिः (स्त्री०)
 अरकोप की सूजन, सोम्य पेड़, कुम्भ उतर पीडा
 के साथ अफारा होना,— लारधिः बाध ।

बातक [बात + क्त] 1 उपपत्ति, जार 2 एक पीथे का
 नाम ।

बास्तकम् (वि०) (स्त्री०—नी) [बातोऽनिवायितोऽस्ति अस्य बात + इनि, कुक्] गतिमा रोप से प्रत्य ।
बास्तकम् [बातमभिमुखोक्त्य अत्रति वृष्ठात्—बात + अञ् + क्त, मुञ्] तत्र रोहिते वाला होकर ।
बातर (वि०) [बात + रा + क्] 1 तुफानी, झझामय 2 तेज, बुद्धि : सम०—अप्यय 1 बाण 2 बाण की उड़ाव, भीरु के लक्ष्य तक पहुँचने की दूरी, शरणागम 3 चोटी, शिवर 4 आरा ० पागल या नदी में उड़ान पुरा 6 तिष्ठन्त्या 7 मगल वृक्ष, चीड़ का पेड़ ।
बातक (वि०) (स्त्री०—नी) [बात रोपभेद लाति ला + क्] 1 तुफानी, झझामय 2 हवा में फला हुआ—स्यः 1 वायु 2 घना ।
बास्तापि (पु०) एक राक्षस का नाम जिसकी अपत्यय न का कर पवा निया : सम० द्विप (पु०) --सुवन - ह्नु (पु०) अपत्यय के विशेषण ।
बाति [वा + तिक्त्] 1 सयं २ वायु हवा 3 चन्द्रमा : सम०—स, —गम वेगन ('वातिगण' शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है) ।
बातिक (वि०) (स्त्री०—की) [बातादायन + टक्] 1 तुफानी, हवा, झझामय 2 गतिवाग्रस्त, मन्थिबात से पीड़ित 3 पागल, -क वायु की विकृत अवस्था में उत्पन्न श्वर ।
बातीय (वि०) [वात + छ] हवादार, यम् भान का माह ।
बातुल (वि०) [वात + उल्ल्] 1 वायु राग से प्रत्य, गतिवा पीड़ित 2 पागल वायुप्रकोप के कारण विमकी वृद्धि ठिकाने न हो : शि० २१-६, -क भंवर ।
बातुलि [वा + उलि, वुट्] बहा चमगीदह ।
बातुल (वि०) [वात + ऊल्ल्] दे० वातुल ।
बातु (पु०) [वा + ल्] हवा, वायु ।
बास्या [वाताना समूह यत्] तुफान अस्य, भंवर, तुफान वा झझामय वायु वायुवाति कर्णोऽहो ददा द्यादवच्छदानयो दुसह भासि० १११३, स्प० १११, १६, कि० ५१३९, वैशो० २१२१ ।
बास्तकम् [वन्म + वृष्ण्] वृष्टयो का समूह ।
बास्तक्यम् [वन्मक्य भाव ष्यञ्] 1 [वाने बच्चो के प्रति] स्नेह, वन्मकता सुकुमारता न पुत्रबास्तक्य-भावाकल्पित—कु० ५११४, पतिवास्तक्यात्—स्प० १५१८, इसी प्रकार भावों 'प्राजा' शरणागत' आदि 2 आश्रयण या पक्षपात ।
बास्ति—नी (स्त्री०) गृह स्त्री की ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न पुत्री ।
बास्त्यायनः [वस्तस्य गोत्राण्य-वस्त् + यञ् + फक्]

1 कामसूत्र (रतिनाश्रय पर लिखा गया एक ग्रन्थ) के प्रणेता 2 मायमन्त्र पर किये गये भाव्य के प्रणेता ।
बाव [वद् + घञ्] 1 बानें करना, बोलना 3 भावण, वचन, बात सामान्यतः सकास्यम्य तस्य प्रथम्य दीपका शि० २१५४, इसी प्रकार 'रतिव्याद' गीत० ८, मास्यवाद आदि 3 वक्तव्य, उक्ति, आशय—अवत्य-वादायन बहुत बहिष्पत्ति पराशिता—भय० २१२५ 4 बर्षेन, वृत्त—शाकुनशास्त्रीनिर्दिष्टास्तवादात् मा० ३१३ 5 विचार विमर्श, विचार, वादविवाद, तर्क विमर्क— बहते तादे जायते नान्वबोध सुभा०, गीमा' मनु० ८१-६५ 6 उत्तर 7 शक्ति, कल्पना 8 प्रदीपन उत्साहर, सिद्धान्त परब इदानी पर भाष्यकारागारद निराकराणि पाशो० (तथा पुस्तक के अन्य विभिन्न स्थलों पर) 9 ध्वजन, उक्ति 10 विद्वय वृद्धाह 11 [विमर्श] अभिप्राय, मर्तिका : सम० अन्ववादी (पु० द्वि० ३०) 1 उक्ति शीर उत्तर अभिप्राय तथा उमका उतर दावाशेषण तथा उमका बचाव २ वादविवाद शास्त्राय, -कर, ह्नु (वि०) विवाद करने वाला -प्रत्य (वि०) विवादार्थक विवादायन— वाद प्रयोग विषय, ध्वञ् (वि०) इत्येवमादि उतर देने में विपुल उक्तिप्रयोग प्रतिवाह शास्त्राय पुत्रम् विवाद तर्कविमर्क, विवाद तर्कविमर्क विचर्गवमसो वाचवविचारिता ।
बावक [वद् + तिक्त्, वृत्] बजाने वाला ।
बावनम् [वद् + तिक्त् -वत्ये] 1 रति कला 2 बारा बावकपः ।
बावर (वि०) (स्त्री०—री) 1 शरणागता शरण्य, विकार वादरा अणु - शरण्य प्र युक्त वा शरण्य में निमित्त वा कारण हा शीर हम् मूनी कला ।
बावरंम [वाट + ण्य + क्त, तिक्] वाट का वेद गुजर वा वृत्त ।
बावरण्य दे० 'बादरण्य' ।
बावाल [वात ला + क पृष्ठात्] उर्मम मच्छरी ।
बावि (वि०) [वादवति ओहसत्-वात्-वर् + वृत् + तिक्त् + ङञ्] वृद्धिमान, विद्वान् कुपण ।
बावित (मू० व० कु०) [वृत् + तिक्त् + ष] 1 उदर्धान कराया गया, बुद्धवाया गया 2 उजाया गया, ध्वनि किया गया ।
बाविञ्जम् [वृद् + तिक्त्] 1 बाजा तैः ०-१०० 2 शरीर ।
बाविन् (वि०) [वृद् + तिक्त्] 1 बोलने वाला, बानें करने वाला, प्रवचन करने वाला 2 दुर्दुहापुच्छ करने वाला 3 तर्क-विमर्क करने वाला, विपत्ती मया० ५११०, स्प० १०१०, 3 दावाशेषण करने वाला अभिप्रायका 4 आश्रयता, आश्रयण ।

बाबिलः (पु०) विद्वान् पुरुष, शक्ति, विद्याध्ययनी ।
बाबन् [बन् + गिष् + क्त] 1 जाबा 2 बाजे को ध्वनि
 रघु० १६/६४, (बाघध्वनि मन्त्रि) । सम०—**बाबः**
 संगमन, भांडम् । बाबो का समूह, बाघ यत्रो का
 देव 2 मृदंग आदि बाजे ।
बाष्, **बाध**, **बाधक**, **बाधन-ना**, **बाधा** दे० 'बाध, बाध,
 बाधना-ना, बाधा' ।

बाष् (पु) बसम् [बष् (पु) + ष्, कृत्] विवाह ।
बाष्नीयसः [- बाष्नीयम्, यथो०] वंश ।
बाज (नि०) [बज् + अच्] 1 बिजा हुआ, 2 (हवा से)
 मूला हुआ, मूक 3 जपकी नम् 1 मूला फल
 (पु० भी) 2 (हवा का) चलना 3 बीज, 4
 लड़कना हिलना-डुलना 5 मधु इन्ध, लुणत् 6
 बूझी का समूह या मूर्च्छन 7 बनना 8 तिनकी ने
 बनी चट.ई 9 पत्र की दोवार में छिद्र ।

बाजश्च [बाज् + च] पतनमेव पतिते यथा क] 1 अपने
 चौरात होकर क नीचे जाकर में प्रविष्ट बाद्यण
 2 वेगवो माध 3 मयूक् बल 4 पलाश वृक्ष, इन्ध ।
बाज [बज् + अच्] नवमवर्षि का आदिक गानि मुहूर्त्ति ग - क
 11 विद्वान् नरा वा। बहुर लम्ब । सम० **बाज**
 नदी बकरा, -**बाजाल** प्राय नामक वृक्ष इन्ध
 मूवीय या हनमान शिष्य विद्वान् (अर्जुन) का पद ।
बाजन्, **बाज** -**बाज** जो बहता लाता ग्ना क] तुलसी
 11 शीघ्र (आली तुलसी) ।

बाजस्वप्य [बाजस्वपि प्यञ्] कृ वृक्ष जिनका फल
 उसका भक्षण या उपर्य होना है उदा० आम का पेड़ ।
बाज [बाज् + टाप्] बहते लका ।
बाजाय [बाज् + टाप्] भाग्य के उत्तर-पश्चिम में
 स्थित देश । सम०—**बाज**, बनाय पाडा अर्थात् बनाय
 रस में उत्पन्न होता ।

बाजीरः [बज् + ईरन् - अच्] एक प्रकार का वेन—मरानि
 बाजीरकृष्ण मूल रघु० १३/२५, मेघ० ६१ मा०
 २/१० रघु० १३/२०, १६/०१ ।

बाजीरक [बाजीर + कन्] मूत्र नामक नाम, एक प्रकार
 का पद ।

बाजेयम् [बज् + यञ्] एक मुहूर्त्त घाम, मोघा ।
बाजम् (पु० क० कृ०) [बज् + क्त] 1 कं की गई, मुका
 गया 2 उमला गया, प्रसन्न, उड्डेना हुआ । सम०
 -**बाज** हुआ ।

बाजि (स्त्री०) [बज् + क्तिन्] 1 वन 2 प्रलेप, उमाल ।
 सम० **बाज**, ब वसन कराने वाला ।

बाज्या [बज् + यञ् + टाप्] उपवनो वा जगती का समूह ।
बाय [बाय् + षञ्] 1 बीज बीना 2 बूतना 3 क्षीरकर्म
 करना, बाल मुचना मनु० ११/१०८ । सम०—**बाय**
 जुगाहे का करवा ।

बायम् [बाय् + गिष् + ल्युट्] 1 बूतना 2 मुन, क्षीर ।
बायसि (पु० क० कृ०) [बाय् + गिष् + क्त] 1 बोया हुआ
 2 मूडा हुआ ।

बायि, **बी** (स्त्री०) [बाय् इच् वा क्षीप्] कुर्वा, बावरी
 का वस्तुन आनाकात्र जलागय बापी
 चास्मिन्करकतिलान्। रघु० १३/२५—मेघ० ६६ ।
 सम० ह् चानक पत्ती ।

बाय (वि०) [बाय् + ण, प्रथवा बा + ण्] बायीं (विप०
 दायाँ) विलोचन दक्षिणमन्त्रेण नभाष्य तद्वचिनवास-
 नेना—रघु० ७/८, मेघ० ७८, ९६ 2 बायं अत्र स्थित
 वा विद्यमान—बायवबाय नरति मयूर चानकन्ने मयूर
 -मेघ० ९ (बायवे क्रिया विशेषण के रूप में इसी अर्थ
 को प्रकट करता है उदा० बायनेना वदतलमय-
 वजनः मर्वायना मेकते काण्य० १०) 3 (क)
 उलटा, विपरीत, विपरीत, प्रतिकूल -**बाय**
 कायस्य बाया पति गीत० १२ मा० १/८, मद्रि०
 ६/१७, (ख) विपरीत-कार्य करने वाला, विपरीत प्रकृति
 का, मा० ४/१८, (ग) कुटिल, बकप्रकृति, दुराचारी,
 हठी, -**बाय** ४. कुट, बुद्धि, अथम, नीच, कमौना
 कि० ११/१४ 5 शिव, सुन्दर लाजस्यमय देवा कि
 'बायलोचना', **बा**: 1. मन्वी प्राणी, जन्तु 2 शिव,
 3 प्रेम का देवता, बायदेव 4 साँप 5 जोड़ी, ऐन,
 स्त्री की छाती, -**बाय** धनदोहन, जायदाद । सम०

बायारः—**बाय**: नरतिक मत में प्रतिपादित अनु-
 ष्ठानपद्धति, अथवा बाय जिसका धुमाव दवाई बौर से
 बाई बाग को गया हो, उध, -**बाय** (स्त्री०) सुन्दर
 जहाजो वाली स्त्री **बाय** (स्त्री) (मनोरंज बासो से
 मुक्त) स्त्री, -**बाय**: 1 एक मुनि का नाम 2 शिव का
 नाम—**बाय**का मनोरंजो बासो वाली स्त्री—**बाय**कास्य
 शयिनीस्ता स्त्रुवे वनलोचना:—**बाय**० १०, रघु०
 ११/२३, शील (वि०) कुटिल वा बक प्रकृति का
 (क) कायदेव का विशेषण ।

बायक (वि०) [बाय + कन्] 1 बायीं 2 विपरीत,
 विपरीत—मा० १/८ (यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) ।

बायन (वि०) [बाय् + गिष् + ल्युट्] 1 (क) कद में
 छोटा, टिठाना, बीना छलबासनम् वि० ३४/१२
 (ख) (अ) स्थल, लूक, बोडा, लवाई में कम—
 बायनाशिव वीपनाजनम् रघु० ११/१६, कच कच
 नाति (दिवानि) ब बायनाति—**बा** २२/५७ 2 विगत,
 नष्ट -**बा** वि० १३/१२ 3 कुट, नीच, छोटा,—**बा**:
 1 बीना, टिठाना—**बाय**नाम फले लोभादुदाहृतिय
 बायन रघु० १/३, १०/६ 2 विष्णु का पतिवा
 अवनार जब उन्नीने बलि गल्लत को विनष्ट करने के
 लिए बीने के रूप में जन्म लिया, (दे० बलि)—**बाय**ति
 विक्रमवे शतिमत्पुतबायन पदनक्षीरजतिचतयबायन

केवल धृतवामनकथ जय अगदीस हरे गीत० ?
 3 दक्षिण दिशा का विक्रमाल हामी 4 पाणिनि के
 सूत्रों पर काशिकावृत्ति नामक भाष्य के प्रणेता
 5 अकोट नामक बृहत् । सम० अकृति (वि०)
 डिगना, पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण ।
 बालनिका [बामनी + क्तु + टाप्, ह्रस्व] डिगनी स्त्री ।
 बालनी [बामन + नीप्] 1 बाली स्त्री 2 घोड़ी 3 एक
 स्त्रीविशेष ।
 बालकूर [बाम + क्तु + रक्] बाली, शीमको हाग बनाया
 गया मिट्टी का डेर ।
 बाला [बामति लोन्धयम् - बम् + जप् + टाप्] 1 स्त्री
 2 मनोहारिणी स्त्री—बामि० ६।३९, ६२ 3 गौरी
 4 लक्ष्मी 5 सरस्वती ।
 बालित (वि०) [बाम + इलप्] 1 सुन्दर, मनाहर
 2 घमड़ी, अहंकारी 3 नालक, कपटपूर्ण ।
 बाली [बाम + नीप्] 1 घोड़ी—अष्टाष्टुबामोपातः त्रितार्यं
 रघु० ५।३२ 2 गौरी 3 हथिनी 4 गौरकी
 बालः [वे + बन्] वृत्तता, गीता । सम०—बह्—अपहृत् का
 कर्ता ।
 बालकः [वे + क्तु] 1 जलाहा 2 डेर समुच्चय, सपः ।
 बालकम्, बालकम् [वे + निच् + क्तु, बामन + वन्]
 नैवेद्य, उन्नव के अवसर पर किसी देवता वा श्राद्ध
 को दिया गया मिष्टान्न, उपवास रम्भा आदि ।
 बाल्य (वि०) (स्त्री०—बी) [बाल्य + अच्] बाल्य में
 सबद्ध या प्राण 2 हवाई ।
 बाल्यवीच, बाल्यव्य (वि०) [बाल्य + छ, यत् वा] हवा में
 सम्बन्ध रखने वाला, हवाई । सम०—पुराणम् एक
 पुराण का नाम ।
 बाल्य [बयोऽयच् जिन्] 1 कौवा - बलिनिव परिभाक्त्
 बापसास्तकयति—सुच्छ० १०।३ 2 मुगन्धित अगर
 की लकड़ी, अणुकाष्ठ 3 तांगीन । सम०—अराति,
 —अरि, उल्लू, —आह्ला एक प्रकार मध्य प्राक,—इन्
 एक प्रकार का लम्बा घास ।
 बाल्यः [बा उच् यक् च] 1 हवा, पवन—वायुविद्युनयति
 बम्बकपुरेणून् - कवि० (इसकी उत्पत्ति के लिम्
 दे० मनु० १।७६—सात पवनमान हैं—आश्च प्रवह-
 पर्वव मंत्रहचोइहलत्वा, बिम्बहक्य परिवह दग्गवह
 इति क्रमान् 2 वायुदेवता, पवनदेवता 3 जीवन
 के लिए महत्त्वपूर्ण पांच प्रकार का वायु मितावा सया
 है प्राण, अपान, ममान, व्यान और उदान 4 वात-
 प्रकोप, वातरोग में प्रसूता । सम० आम्बयम्
 आकाश, अन्नरिज, —केतु पुल, —कोकः पञ्चवीधरी
 कौला,—स्यः अकारा (बा अनपच के कारण हुआ
 ही),—सुम्भः 1 आधी, सुफान 2 अवर, वीधरः
 पवन का पराज, —इस्त (वि०) 1 वातरोग में इस्त,

जिसे अकारा हो गया हो 2 दक्षिणा रोज से इस्त,
 - वात, तम्ब, -सम्ब, पुष, सुतः, सुतः
 हुनमान् वा शीम के विशेषण,—बाकः बादल,—विज्ज
 (वि०) वात प्रकोप से पीड़ित सन्धी, पाण्ड, उन्नर,
 —पुराणम् अठारह पुराणों में से एक,—कम्भ 1 जोला
 2 इन्द्रयन्त्र, भक्ष, बलम्,—सुष् (पु०) 1 को
 केवल वायु पीकर रहे, सन्धी 2 सौप—सु० पवना-
 न, रोवा राधि, सन्ध (वि०) वायुप्रकोप के
 कारण अस्वम्ब,—रघु० १।६३,—बर्त्सन् (पु० मनु०)
 आकाश, अन्नरिज, बाह् ब्रजा, बाहिनी धिरा,
 घमनी, शरीर की नाडी, वेध,—सम् (ब०)
 पवन को भाति तेज,—सन्ध, सन्धि (पु०) वायु ।

बार (सपु०) [वृ - निष् + निष्प] जल भासि० १।३०।
 सम०—असन्धम् जलाशय,—किटिः (बा किटि)
 सम, चह मिनो वा हस व बादल,—बरम् 1 जल
 2 रेशम 3 भाषण 4 आम का बीज 5 बोहे के
 मरदन की शैली 6 सज,—वि समुद्र,—अधम् एक
 प्रकार का नमक, पुष्पम् (बा तुष्यम्) लौह—अट
 मगरसच्छ, परिमान,—सुष् (पु०) बादल, सन्धि
 समुद्र, बट किल्ली, नाब, सन्धम् (बा सदनम्)
 जलाशय, टकी,—स्य (वि०) (बा स्थान) जल में
 विद्यमान ।

बार [वृ - घञ्] 1 आबरव, चावर 2 मृदाय, बड़ी
 सन्धी जैना कि 'बारयुवति' में 3 डेर परिमाण
 4 देवह, कष्टा जि० १।८।५ 5 मन्नाह एक वा
 दिन गया बुधवार, शनिवार 6 समय, बागो वा
 कस्य वायु समापात पक्ष १, रघु० ११।१८
 बड़ेबी के 'टाइम्स' Times सप्ता की भाति बहुधा
 ब० ब० में प्रयुक्त, ब्रह्मचारण बहुत बार, कलिचाराण
 किलनी बार 7 अरमर, पीका 8 दरबार, ९।२
 9 नदी का सामने को गट 10 सिध, रम् 1 परिग
 गाव 2 जलोच, जल का डेर । सम० अवात—न.गे,
 पृथति (स्त्री०), शीथिन् (स्त्री०), बनिता,
 विलासिनी,—सुम्भ्यी,—स्त्री मणिका, बाबा
 स्त्री, वेध्या, पुरुरिया, रघी—रम् १।१०
 अवार० १६,—बीरः 1 पत्नी का भार, सात
 (वि०) के अनुसार 2 बरबालिन 3 कवी 4 ब
 -युद्ध का बाधा (यह अर्थ बेरिजोकोस में दिये हा
 है) वृ (वृ) वा कले का वृष, -मुक्ता प्रवात वेध्या
 - वा (वा) वः, अन्व कश्च, बिरह इन्धर—रघु०
 १।८५,—बाधिः 1 बाधुरिया, मरली बजाने बाध
 2 बारिध-मुद्गल 3 बर् 4 व्यापारीय (- जि)
 वेध्या, बाली वेध्या, वेधा 1 वेध्यावृत्ति, र्दी का
 व्यवसाय 2 वेध्याओ का समुदाय ।
 बारक (वि०) [वृ + निष् + भून्] इकावट शम्भे

बाला, विरोध करने वाला, —क १ एक प्रकार का पीछा 2 मामला पीछा 3 पीछे का कदम, कच्चा 1 पीछा होने का स्थान 2 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, हवाइर ।

बारहिन (पु०) [बारह + हिन] 1 विरोधी, धनु 2 मन्द 3 वृष लक्ष्मी से युक्त एक पीछा 4 वह मन्थामात्रा का कवल पत्ते काकर रहता है ।

बारक. (पु०) पत्नी ।

बारम [वृ + अण् + पिच्] किसी बाकू का दस्ता या लकड़ार की मुठ ।

बारहम् [व + गिच् + अटच्] 1 वेन 2 नेरो का समूह, टा अभिनय ।

बारम (वि०) (स्त्री०-गी) [वृ + गिच् + म्यट्] गाने वाला, मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला, अशुभ शोकना, अशुभ हालता व अर्थविनाशकारी वाद्यनाम्न मन्त्रं १११० 2 अकावट, विघ्न 3 मुकाबला, विरोध 4 प्रतिरक्षा, मन्त्रा, प्रस्ता, —क 1 शायी -व अर्थविनाशकारी वाद्यनाम्न मन्त्रं २११०, कृ० ५१००, मू० १२१०३, सि० १८१५६ 2 कवच, ब्रह्महन्तर । मन्त्रं बुधा, —सा, —कल्पना केने का वृत्त, —साधुव्यर्त्तननापुर का नाम ।

बारम्भी २० [बाराम्भी]

बारम्भास्त (पु० मन्त्रं) एक नगर का नाम ।

बारम्भ [वृधा प्रण ' बमने का नगमा]

बारम्बार (ब०) [वृ + जम्भ् टिभ्] प्राय, वहुधा, बार बार, फिर फिर —बारम्बार विरयति दुनाम्दनाय शरणपुर —मा० ११३५ ।

बारम्बा [बार + बा + क + टण्] 1 बर, जिह 2 हृषिनी, पु० बरटा ।

बारम्भी [वृधा व बनी व नयी नडागदूरे प्रवा इत्यर्थे अण् + क्तिप्, पुषा० सापु] बनारम का पावन नगर ।

बारम्बिचि [बारं क्रमना निचि बण्ड्यलकृ म०] मन्द ।

बारहू (वि०) (स्त्री०-ही) [बारह + अण्] सूकर से सम्बद्ध, —मुद्रा० ८११९, वास० ११५९, —हू 1, सूकर 2 एक प्रकार का वृक्ष । मम० —कल्प कर्मणान् कल्प (जिममें हय रह रहे हैं) का नाम, —पुराणम् अडागह पुराणी मे से एक ।

बारहू [बारह + हीप्] 1 सूकर 2 पृथ्वी 3 'बारहू' के रूप में विष्णु प्रगथान की शक्ति 4 माप । सम० —कंठः महाकाव, मंठी ।

बारि (मपु०) [वृ + इण्] 1 जल तथा जलम् अनि-पेल नरो कार्यविधिका मुधा० 2 तरल पदार्थ

3 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, हूवेर, —रि, —री (स्त्री०) 1 हाथी को बाधने का तन्मा—बारी बारी समरे बारधानाम् सि० १८१५६, मू० ५१५५

2 हाथों को बाधने का रस्ता 3 हाथियों को पकड़ने का गूदहा या पिचग 4 बदी, ऊँची 5 अलाप 6 सरस्वती का नाम । सम०—ईशः समुद्र, —उज्ज्वलम् कमल, शोक-शोक, कर्षुः एक प्रकार की मछली,

इलीय, कुम्भक, पिचारा, गुणटक का पीछा—किलीः शोक, —कावटः जलाप, —घर(वि०) जलघर (—ः) 1 मछली 2 काटि प्रकृत्यु ज (वि०) जल में उत्पन्न, (कः) 1 कमल—सि० १५१०२ 2 कोई भी द्विकोपीय (अण्) 1 कमल सि० ५१६६ 2 एक प्रकार का नमक 3 एक प्रकार का पीछा, शौरमुवर्ण

4 लीय, लक्ष्मः बादल, —त्रा छत्री —इ बावल —विणर बारिद बारि इवातुरे—मुधा० मासि० ११३० (बम्) एक प्रकार का गन्धद्रव्य, —इः बावक पत्नी, —हरः बादल—नवभारतभारतदेशीयिभक्तिव्यम् व विरातरत्नम्—विक्रम० ८१२—बारा वृष्टि की बीछार, —धिः समुद्र—शांतिमुनामलया दिदुक्षु ली-

—मीत० १२, नाथ 1 समुद्र 2 वदन का विशेषण 3 बादल, —निधिः समुद्र, पथ—पथ 'समुद्र यात्रा' मलयाका, —प्रवाहः शरण, जलधारा, मत्सिः,—मृष, —रः बादल,—वन्नम् अलघटिका, रहट । मालावि० २१३३, रथः डोली, नाथ, चढनी—रासिः 1, समुद्र मरोवर, शूम् कमल, —बासः कलाक, शराव बेचने वाला, —बाहू,—बाहून्, बादल,—सः विष्णु का नाम,

सन्नय 1 लीय 2 अवनविशेष 3. वन की सुगन्धित जड़, उषीर ।

बारि (मपु० क० कृ०) [वृ + पिच् + क्त] 1. हटाया हुआ, मना किया हुआ रोक हुआ 2 प्रतिरक्षण, प्रतिरक्षित ।

बारी २० (स्त्री०—बारि) ।

बारीकः [बारी + इट् + क] हाथी ।

बारक [बारयति रिप्ठु वृ + लण् + उण्] विरजकुबर, बगी हाथी ।

बारकः (पु०) अरबी (कह टिकटो जिस पर शव रख कर हमसानमूमि में ले जाया जाता है) ।

बारक्य (वि०) (स्त्री०—गी) [वरणम्येदम्—अण्] 1 वदन-सन्धी 2 वदन को सादर समर्पित 3. वरण को दिया हुआ —मः भारगवर्ध के नौ प्रभावों या लक्ष्यों में से एक,—कम् पाती ।

बारक्यिः [वरण + इण्] 1 अगस्त्य मनि 2 मूय ।

बारक्यि [वरण + डीप्] 1 पश्चिम दिशा (वरुण के द्वारा अविच्छिन्न दिशा) 2 कोई सदिरा-वयोपि शीतकीहृत्से बारक्यीत्यन्वीयते—हि० ३१११, पथ० ११२०८,

(यहाँ दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) कु० ६१२
3 यतोभयम् नामक नक्षत्र 4 एक प्रकार का दान,
दूध। सम० कल्लभ वषण का विशेषण।

वाद्य [क्। विच्। उंउ] गद्य वाचि का प्रधान। ड,
कम् 1 जल्प का मेल या इत 2 वाच का मेल
3 वाच में से पानी उल्लेख कर बाहर निकालने का
वर्तन।

वादेयो बवाल के एक भाग का नाम, श्रीराल गजराजी।
वाधे (वि०) (स्त्री०-रीं) [वृ।-अण्] वृथा में युक्त
- अन् प्रत्यय।

वाचिक [कम् उज्] लिपिभार, लेखक।
वाचिक, **वाचिक** (स्त्री०) **वाचिकिन्** (पुं०) } [क्।
वाचिकी (स्त्री०) **वाचिकु** (पुं०, स्त्री०) } +कानु
अण् वाचिक वाचिक उच्चा इति वा, वृत्-कानु
उच्चा वृद्धिश्च क्-कानु, वृत्ति वैगम का पीडा।

वाचिका (स्त्री०) चंद्र कथा।
वाचं (वि०) [वृत्ति + अण्] 1 स्वस्थ, श्रीराल ननुस्म
2 उरु, कमजोर, मारपीत 3 व्यवसायी **वाचं**
1. न्याय, अज्ञात स्थिति संबंध या बलमवेष्टि
गन्तु २०० ५१२, ११५२, स पुष्ट संबंध वाचं-
माल्यदान ता वचिणम्-१५५२, वि० १६८ 2
कुमवता उरु-अवयव उच स्वयानमन्वे-१६०
१३३६ ३ नुमी वचं।

वाचा [वाच + टा] 1 उरुका, उंउ रज्या 2 यमाचार
उरु, दूध उच मादभ्यात का वाचा-रम०
६ ३ वाचिणो वाचि । शेषा वैद्य का अर्थमाय
रम० १३० वा० १०५०, वाच० ११.१० ६
वैद्य का वाचा। रम०-अर्थ, वाचिण उरु, रम,
या उरु-वाच-वृत्, उरु 1 दूध 2 उचमाय वाच-
वती वाचिणो उच उच वाचा, -वृत्ति ता वचो क
वाचमाय ३ वाचिण उरु, -वृत्ति उरु वाचा-
विवाह।

वाचापिच [वाचिणमवयव] यमाचारउरु उरु,
भेदिया, वाचुव।

वाचिक (वि०) (स्त्री०-रीं) [वाचि उच] 1 यमा
चार मन्त्री 2 यमाचार उच वाचा 3 व्यापारमयक,
काय मन्त्री-क 1 इत वैद्य 2 विवात
(वैद्यक का अर्थ), काय एक व्याख्यापक
वैयक्तिक विम को उच, अनुक्त या रिची अर्थी
वाच को व्याख्या करता है अथवा विद्या छुटी हुई
वाच का उरु देता है-उचानुदुःखावस्थिका
(चित्त) वाचि यु वाचिकम विद उच वाचिक के
मुखा पर वाचाप उच विविक्त व्यापारमय विम
के लिए विशेषकर में प्रयुक्त होता है।

वाचिक, [विचहृत् + अण्] अर्थों का नाम-कु० १५५१।

वाद्यकम् [वृदाना समूह इत्य भाव कर्म वा मुज्]।
1 वृदाना-विनिर्णयव्याख्यानि गोबने वृत्त वा
वाद्यकशाभि कलकलम्-कु० ५१६६, रम० ११८ नै०
११३३ 2 वृदाना की वृत्तला 3 वृदा का समुदाय।

वाद्यवपम् [वाद्यं + अण्] 1. वृदाना 2 वृदा के का
वृत्तला।

वाद्यैषि **वाद्यैषिक**, **वाद्यैषिन्** [पुं०] [०-वाद्यैषिण
पुं० कलाय वृत्तवै उच वृत्ति, ना पयवृत्ति
वृत्तिरुक् वाप्यौ वाद्यैषि वाद्यैषि इति] मुद्रा-
व्याज पर स्पष्ट देने वाला।

वाद्यैष्यम् [वाद्यैषिन् + अण्] मुद्रा, अर्थमा उच वा
इद में ज्यादा व्याज।

वाद्यैष्य, **वाद्यैषि** [वाप्य + अण्] उच्चा का, चमके का नाम।

वाद्यैष्यण [वाद्यैषि नामिका अर्थ इ० म० नामिका
नया देय, वाद्यम्] वैद्य दे० 'वाद्यैष्य' में।

वाद्यैष्यम् [कम् + अण्] कवच में मुद्रावृत्त धर्मों का
समुदाय।

वाद्यम् [वृ + अण्] आसीवार्थ अर्थमा (६० व०) मन्त्र-
वाद्यमाय।

वाद्येण [वचना - अण्] टाप् नील रम की मन्त्र।

वाद्ये (वि०) (स्त्री०-पीं) [वाच + अण्] 1 उरु
संबंध करने वाला 2 वाचिण।

वाद्यिक (वि०) (स्त्री०-पीं) [वाच उच] 1 उरु
संबंधी वाचिक मन्त्राग्राह्यवर्तन स्पष्टी-रम०
६१३ ३ माकाय, प्रतिवा वृत्ति होने वाद्य, ३
एत वर्य वृत्त करने वाला-माकायका यमाय मन्त्र
विचरें उचवाचिकी, उचा प्रकार वाद्यि मन्त्र-वाद्य
११२०८-अन् जरा वृत्ति।

वाद्यिका [वाचिका विद्या पद्यो अण् वृ + टा]।

वाद्येय [वाचि - टक] 1 वाचि का यमायत 2 रिमो
रम में कृण ३ वाच के वाचिक का नाम।

वाद्ये, **वाद्यैष्य**, **वाद्यैषि**, **वाद्यैष्य**, **वाद्यैष्य**, **वाद्यैष्य**, **वाद्यैष्य**
वाद्यैष्य, **वाद्यैष्य**, **वाद्यैष्य** } वाच वाचक।

वाद्यैष्य दे० 'वाद्यैषिक'।

वाद्यि [वाद्य केमो वाचि वाच + इज्] प्रसिद्ध वाचरम
वाद्यि में उचके उंचे भाई मुद्रा के उच्चतमाय
रम के उच माय वाच।
(वर्षमें गेया मिकला है कि, वाचरम वाचि उच उच
वृत्तवाच या, कवच है कि उचके वाचण हा उच व,
उचके कवचें मया, उच उच अर्थी काय म रम
विद्या। उच वाचि वृत्ति के भाई का मायने में
किर वाचि उचवाचि म वृत्त वाच ना उचक वा
मुद्रा में वाचि का वृत्त में मया जाय, उचके विद्या-
मय उचवाचि विद्या। उच मय वाचि वाचि वाच।

अण० १।४४ 3 आवास, रहना, घर 4 जगह, स्थित
5 कपड़े, पोशाक। सम० अ(आ) वार,—रम्,
—गृहम्, वेधम् (नपु०) घर का आन्तरिक अंग,
विशेषतः शयनागार धर्मसनादिभिः वास्तुगृह नरद-
उत्तर० १।३, विक्रम० १, कर्षी बहु कमरा जहा
सार्बजनिक प्रदर्शन (नाच, कुटी, तथा अन्य प्रति-
योगिताएँ) होते हैं, साङ्गम् अन्य मुद्रित
मन्त्रों में यज्ञ पात्र, भवनम्, भविरम्, स्वम्
निवासस्थान, घर, वटि (स्त्री०) पक्षियों के बँटने
का डंका, छतरी, अट्टा, वेणी० २।१, मेघ० ७५,
-योग एक प्रकार का मुद्रित चूर्ण, सञ्जा—
वासक मन्त्रा दे० ।

वासक (वि०) (स्त्री०) का -सिका [वास् + णिच् +
कन्] 1 मुद्रित करने वाला, मुद्रासि करने
वाला, छपाने वाला, पुप दन वाला 2 बनाने वाला,
आकार करने वाला, कम् करने, कपड़े। सम०
—सञ्जा सञ्जिका वह रत्न जो अपने प्रेमी का
स्वागत, मन्तार करने के लिए अपने आपका वस्त्रा-
लकार से भूषित करनी तथा घर को छाक मुयरा
रखनी है, विशेषतः उस समय जब कि प्रेमी का मिलन
नियत किया हुआ हो, भारी नायिका नायिका का
मंद साहित्यपूर्ण परिभाषा देना है कुम्भे बदन
पत्नी (या तु) मन्त्रिते वाग्धर्मानि, या तु वासक-
सञ्जा स्याद्विदितप्रियमयमा १००, भवति विद
विनि विनितालज्जा विनापि रादिनि वासकसञ्जा
मन्त्र० २ ।

वासल [वास् + अन्] गधा ।
वासलेय (वि०) (स्त्री०) -यो [वसन्ने हित माधुवा
इत्] निवास करने के साथ, यौ गत ।

वासन् [वाग् + ण् + क्] 1 मुद्रित करना, मुद्रासि
करना 2 घुसाना 3 निवास करना, टिकना 4
आवासस्थान निवासस्थल 5 काँडे पात्र, आधार,
टिकरी, समूह, बनन आदि वाङ्म० २।६५,
(वासन निशेषाधारमूत मपुदविक मपुद षष्ठादि-
पुत्र) 6 जान 7 कम्, परिपात्र 8 मिलाक,
लिफाफा ।

वासता [वास् + णिच् + वृच् + टाप्] 1 स्तूति में प्राप्त
ज्ञान, तु० भावना 2 विशेषतः अपने पहले शुभाशुभ
कर्मों का अनुमान में भय पर पड़ा हुआ सम्कार
जिनसे सुख या दुःख की उत्पत्ति होती है 3 उन्मत्ता,
कल्पना, विचार 4 मिया बिचार, अज्ञान 5 अवि-
द्या, इच्छा, तर्क —समाश्रयलाभइशुभला—गीत०
३ 6 आदर, भवि, मादर मायना तथा (पक्षिणा)
मये मम तु महती वासता वातकेयु—भाषि० ४।१३ ।
वासत (वि०) (स्त्री०) ती [वसन् + अच्] 1 वसन्

कालीन, माघमी, बहारा के समय, वसन्त में उत्पन्न
2 जीवन का बल, जवान 3 परिश्रमी, साधक
(कर्मव्यपामन में),—तः 1 ऊँट 2 जवान हाथा
3 काँडे भी ब्रह्मण्ड जन्तु 4 कौयल 5 दक्षिणी एक
मलय पहाड में चलने वाली हवा तु० मलय मनी-
6 एक प्रकार का लोडिया 7 कपट, दुगाधारी, ती
1 एक प्रकार की चमेरी (मुद्रासि फुलो म नटा
४४) वसन्ने वासन्तीकुमुमकुमारैरथयवे—गीत० ५
2 बड़ी पीपल 3 जहाँ का फूल 4 कामदय के
सम्मान में मनाया जाने वाला उत्सव, न-
वमशोमव ।

वासतिक (वि०) (स्त्री०) ती [वसन् + टक्] वसन्त
ऋतु में मजद—क 1 नाटक का बिदुत व
रत्नका 2 अभिनेता ।

वासर रम्, मुल वामसि जतान् वाग् + अच्] (मन्त्र-
का) एक दिन। सम० सप्तः प्रातः वास ।

वासव (वि०) (स्त्री०) ती [वसुन्ने स्वयं अण, वसन्
मन्त्रय अच् वा] इन्द्र मन्त्रवी पाशुना प्रमत्त
दिगपामिन् का०, वासवीना वसुनाम मेघ० ६

का इन्द्र का नाम कु० ३।२, रघु० ५५। सम०
बला 1 मुख्य की एक रचना 2 का 1 पाणिना
में वर्णित नायिका (इस कवि) का नाम बिदु ३
काँडे विविध प्रकार म करने है। कामाग्नि-
के अनुसार वह उत्कृष्टिनी के महाराजा वसुनाम
की पुत्री थी जिसका अग्रहण करने के हा उद्गार
किया था। श्रीराम् उमे प्रद्योत राजा की पुत्री का
है (दे० मन्त्र० २।१०) और मन्त्रि० वा टाका व
अनुसार प्रद्योतन प्रियदुहितर अमराकाज उमे
वह उत्कृष्टिनी के राजा प्रद्योत की पुत्री थी।

भवभूति बत है कि उसके पिता ने उसकी सगा
राजा मजय के साथ की थी, परन्तु उमने राज
बापकी उद्गत की सेवा में अर्पित किया (२० म-
०) । परन्तु मुकम् की वासवदत्ता का वम
कहानी में काँडे मनाया नहीं है। उमका नाम
अवश्य एक ही था। भवभूति के अनुसार उपक मन्त्र
ने उसकी सगाई पुष्पकेतु के साथ की थी, पर
कदम्बेनु उमे अणुत्त कर ले गया। वह मन्त्र ३
'वासवदत्ता' नाम की कई नायिकाएँ ही ।

वासवी [वासव + डीप्] व्यास की माता का नाम ।

वासव (नपु०) [वस् + आच्छादने अणि णिच्] २५
परिपात्र, कपड़े वासासि जीवन्ति यथा (वराह
नरानि गृह्णाति नरोऽजगति भ्रम० ३।२२, ५।
३।२, मेघ० ५५ ।

वासि (पु०, स्त्री०) [वस् + इच्] बसुला, छोटी कुन्दा
केरी, तिः निवास, आवास ।

वाहित (पु० क० इ०) [वाह् + क्त] 1 बुझावित, वा सुनावित 2 विदोषा, ठर किया हुआ 3 मसालेदार, मसाला डाला गया 4 कपड़े पहने हुए, बरफों से नरकित 5 जनसंकुल, आबाद 6 विष्णुगत, प्रसिद्ध, तन् 1. पहियों का ककरव वा घूबना 2 ज्ञान -पु० वाचना (२) ।

वाहिला [वाह् + क्त + टाप्] दे० 'वाहिला' ।
वाहि (वि०) क्त (वि०) (स्त्री०—की) [वाहि + सिट्]
[-अप्] बहिष्कृत सबकी, बहिष्कृत द्वारा रचित (बहिष्कृत) जैसा कि 'वाहिवेद का हस्तबि' मन्थन, -कृत बहिष्कृत की सन्धान ।

वाहु [मर्बोऽप बसति-वन् + उञ्] 1 आधा 2 विद्वान्ना, परमात्मा 3 विष्णु ।

वाहुकि, वाहुकेयः [वसुक् + इज्, इज् वा] एक विष्णुगत नाम का नाम, नावगात्र (कहते हैं कि यह कश्यप का पुत्र था) —कु० २०२८, भग० १०१२८ ।

वाहुदेव [वसुदेव्यात्पुत्रम् वाप्] 1 वसुदेव की मनात 2 विशेष रूप से कृष्ण ।

वाहुरा [वस + उरञ् + टाप्] 1 पृथ्वी 2 रात 3 स्त्री 4 उमिनी ।

वासु (स्त्री०) [वाह् + ऊ] गवणी कन्या, कुमारी, (पुत्रगत नाटको में प्रयुक्त) —एषासि वासु विगमि गुणैना मृच्छ० ११११, वासु प्रबोह—मृच्छ० ।

वास्त ० वास्त ।

वास्तव (वि०) (स्त्री० की) [वास्तु + अच्] 1 जलती, मग्ना, सारयुक्त 2 निर्धारित, निश्चित, —अच् कीर्षी निश्चित वा निर्धारित वात ।

वास्तवा [वास्तव + टाप्] प्रभाव, उपा ।

वास्तविक (वि०) (स्त्री०—की) [वस्तुतो निर्बन्त ठक्] सक्ता, असली, साक्षात्, यथाथं विपुद्ध ।

वास्तिकम् [वस् + ठक्] बकरी का मयूह ।

वास्तव्य (वि०) [वस् + तव्यत्, विप्] 1 निवासी, वासी, रहने वाला —पूरेज्य वास्तव्यकुटुंबिता ययु सि० ११६६ 2 रहने के योग्य, वास करने के योग्य —अच् 1 आवासी, रहने वाला, निवासी—नावाधि-यतवास्तव्यो महाजनसमाच—भा० १, -अन्व 1. रहने के योग्य स्थान, घर 2. बसति, निवासस्थान ।

वासु (पु०, मपु०) [वस् + तुप्] 1 घर बनाने की अर्थ, भवनप्रवृत्त, अर्थ 2 घर, आवास, निवास मूमि, —रिचरिचये वासु कि न वीच. प्रकाशयेत्—बुधा० मपु० ३१८९ । अम०—वाचः घर की आभारविना रचते समय किया जाने वाला यज्ञाभ्युपान ।

वास्तेव (वि०) (स्त्री०—की) [वासि + इज्] 1 रहने के योग्य, निवास करने के योग्य 2 वेद सबकी ।

वास्तोष्मिः [वास्तो पतिः, वि० वचका अन्तु, वाचच्]

1 एक वैदिक देवता (घर की आभारविना की अविष्णुजी देवता मानी जाती है) 2 इन्द्र का नाम ।
वास्त्व (वि०) [वस्त्व + अच्] वस्त्व से निर्मित, —एच कपड़े से डकी हुई गाड़ी ।

वास्त्व दे० 'वाच्य' ।

वास्तेवः [वास्तेव हित वाच्य + इक्] 'नासकेयार' नाम का वृक्ष ।

वाह् (म्भा० भा० वाहते) प्रयत्न करना, चेष्टा करना, उद्योग करना ।

वाह् (वि०) [वह् + वञ्] धातु करने वाला, ले जाने वाला (समाप्त के अन्त में) जैसा कि अब्बाह, और 'तोयबाह्' में, ह्- 1 ले जाना, धारण करना 2 कुली 3 नीचने वाला जानवर, बाधा होने वाला जानवर 4 घोड़ा रघु० ४१५९, ५१३३ ११५२ 5 मारि—कु० ७३१६ 6 मेसा 7 गाड़ी, यान 8 भुजा 9. वायु हवा 10 एक मायविशेष जो दस कुप वा चार भार के तुल्य होती है बाहो भारचतुष्टय । सम०—हिष्णत् (पु०) जैसा, अर्थः घोड़ा ।

वाहक [वह् + क्त] 1. कुली 2. गडवाला, गाड़ीवान् वाहक 3 घुड़ सवार ।

वाहकम् [वाहयति-वह् + चिच् + ल्युट्] 1 धारण करना, ले जाना, होना 2 (घोड़े आदि की) होकरना 3 गाड़ी, किसी प्रकार की सवारी मपु० ७३७५, नै० २२१५ 4 नीचने वाला या सवारी का जानवर, जैसा कि घोड़ा स दुष्प्रापयमा प्रापदाभय धानवाहन रघु० ११४८, १२२५, ६० 5 हाथी ।

वाहकः [न वहति नमच्छति, वह् + अच्] 1 पननाला, जलमार्ग 2 बड़ा नाम, अजगर ।

वाहिकः [वाह् + ठक्] 1 बड़ा डोल 2. बैलगाड़ी 3 बौद्ध होने वाला ।

वाहितम् [वह् + चिच् + क्त] गरी योज ।

वाहित्वम् [वाहिन् + स्वा + क्त] हाथी के मस्तक का कलाट से नीचे का भाग ।

वाहिनी [वाहो अस्त्यस्या इति क्रीप्] 1 सेना, वासिच प्रयुयने न वाहिनीम्—रघु० १११६, १३१६६ 2 अज्ञाहिनी सेना जिसमें ८१ गजराही, ८१ रवारोही, २४३ अवारोही तथा ४०५ पदाति सम्मिलित है 3 नदी । सम० विशेषः सेना का पहाड़, विद्वार, —वतिः 1 सेनापति, सेनाध्यक्ष 2. (नवियों का स्वामी) समुद्र ।

वाहीक दे० 'वाहीक' ।

वाहक दे० 'वाहक' ।

वाह्य दे० 'वाह्य' ।

वाह्यिः (पु०) एक देश का नाम, (आधुनिक बल्ल) । सम० कः बल्ल देश का घोड़ा ।

वाह्य (ह्यै) कः (पु०) 1. एक देश का नाम (आधुनिक बल्लभ) 2 बल्लभ देश का घोड़ा, बल्लभ देश में पला घोड़ा, —कम् 1 जाकरान, केसर 2 गुंग ।

वि (अन्) [वा + डण्, म च विन्] 1 धानु और सजा शब्दों के पूर्व जुड़ कर एकका निर्माण में अर्थ होता है —(क) पूर्वकृत्य, विशेषतः (ग) आर अलम्-अलम्, दूर गये आदि) यथा विदूतः विद्, विवल् आदि (ल) किसी काम का उत्पन्न गरा को खरीदना, विक्री वेंचना, स्मृ याद करना विष्णु भगवान् (म) प्रभाव यथा विभावः विभाव (न) विगि-पटता यथा विविग् विभोग विविन्, विरेन (ङ) विभेदोक्त्यन्त व्यवच्छेद (ञ) अतः अन्वयता यथा विद्या, विद्वन् (ट) विनाश यथा विश्वः विनाश अभाव यथा विनी, विनयन (ठ) विहार, यथा विहार, विहार (ड) नात्रता-विश्रम 2 सदा या विशेषण शब्दों में (को कि विद्या में गये हुए न ह्रा) सूकर (च) निम्नांकित अर्थ प्रकट करना है (ज) निवेद्य या अभाव (गंभी) चरम्या में एकका प्रयोग अधिकतर उन्ही प्रकार जाता है जैसे कि अ वा 'निर्' का, अर्थान् उसके लिये वर यहही प्रमाण बनता है—विपत्ता, अनुम् दर्दि (ल) वीर्यता महता यथा विकराल (म) वैविध्य-यथा विविच (ष) अन्तर-यथा विकक्षण (ङ) वृत्तिरता-यथा विविच (च) वैपरोत्य, विरोध यथा विद्याम् (छ) परिचयत-यथा विकार (ज) अन्वेषित यथा विक्रमन् ।

वि (पु० स्त्री०) [वा + टण्, म च विन्] 1 पत्नी 2 घोड़ा ।

विद्या (वि०) (स्त्री०-शी) [विद्यति - इट्, ने लाय] बीसवाँ, अथ बीसवाँ भाग ।

विशक (वि०) (स्त्री०-की) [विद्यान् - घृत्त निराय] बीस ।

विशतिः (स्त्री०) [द्वे दश परिमाणमय्य नि० विट्] बीस, एक बोरी। मम० ईश, ईशित् (पु०) बीस गोधों का दायक ।

विष्णु [विष्णु क अल मुख वा पत्र] ताजा भायो माय का दूध ।

विकचक, -त्तः [वि + कच् + अटन्, अणच् वा] म च वृक्ष विशेष (जिसकी लकड़ी में धुआ बनने है) —रघ० ११।२५ ।

विकच (वि०) [विकच् + ञच्] 1 जिला हुआ फूल हुआ, बला हुआ, (जैसा कि फूल आदि, -विकचक-पुष्पवर्णिक-वि ६।२१. २५० १।३० 2 फँसाया हुआ, बसोरा हुआ भासि० १।३ 3 बाला म धनु, —चः 1 बीदसायु 2 केतु ।

विकट (वि०) [वि + कटच्] 1 विकराल, कुसूप 2 (क) दुःख, भयानक, शोषण इत्यादिना - पृथुलाटनदधिति विकट भ्रुकुटिना केपी०१, विधुमिव विकटविनुद-दन्तलनालितामृतधारम्—मौ० ५ (ष) दास्य मन्त्रः खंर 3 बड़ा, विस्तृत, विशाल, प्रगल्भ व्यापक —अम्भाविडम्बिकटोदरपरनु चापम्—उत्तरः १०५, आरगिट्ट विकटने विवोदुवससवे कुचमण्डल मया -वि० १०।४२, १३।१०, मा० ७ 4 घबराई अस्मिन्नी विकट परिक्वामनि उत्तर०९, महावीरः ५। 5 गुन्डर मूच्छ २ 6 खोरी चढावे हुए 7 म ५ शकल वदन हुए, टम् फोडा, अर्ध या स्त्रीको ।

विकल्पन (वि०) कच् + स्पृट् 1 शोभी बधान्ने बाजा शीत मानने वाला, आत्मबलाया करने वाला अन्तः प्रथमा करने वाला विद्यामोक्षविकल्पना भनान् मन्त्र० ३, रघ० १।३।३० 2 व्यापारिक पुर्वक प्रथमा करने वाला, -न्म् 1 दयोक्ति, धौस जमाना 2 ध्यात्रा कि मिथ्या प्रथमा ।

विकल्पा (वि०) कच् + टाप् शोभी बधान्ना, हीन अ-मन्त्राया, दयोक्ति 2 प्रथमा 3 मिथ्या प्रथमा -दयोक्तिः ।

विकल्प (वि०) [विशेषण कर्मा वस्य-प्रा० व०] 1 दास्य नि अभाव देने वाला 2 अस्थिर, चञ्चल ।

विकार [विकर्षयन् इत्यन्तारादिकमनेन-वि] कृ ; अण् ; बीमारी, राग ।

विकरण (वि०) [वि + कृ + लृट्] क्रियात्मकतायुक्त निर्विकार (अनुपयी), क्रिया के रूपों की रचना के समान गानु गैर लकार के प्रत्ययों के बीच में रचना करने वाला व्याघोचक चिह्न ।

विकराल (वि०) [विशेषण कराल प्रा० सं०] अण् उदावना या भयानक, भयपूर्ण ।

विकण (वि०) [विगिट्टी कर्त्तौ यस्य प्रा० व०] एक वृक्षकी राजकुमार का नाम भग० १।८ ।

विकलने [विशेषण कर्त्तव्य यस्य प्रा० व०] 1 मूर्ध्—उत्तरः ५ 2 मदार का पौधा 3 बह पुत्र जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हा ।

विकल्पन (वि०) [विगिट्ट कर्त्तव्य यस्य प्रा० व०] अर्थात् गीत में काय करने वाला, मूर्ध् अर्थ या प्रतिनिधित्व कार्य तापकर्म भग० १।१७, मनु० १।२२६। मन् क्रिया अर्थ कार्य, अधार्मिक आचरण, स्म (वि०) प्रतिनिधित्व कार्य को करने वाला दुर्गन्धी में प्रयत्न ।

विकल्प (वि०) [वि + कृ + घञ्] 1 अलम्-अलम् रेगावने करना, स्वतंत्र रूप से बीचना 2 तीर, बाण ।

विकल्प (वि०) [वि + कृ + स्पृट्] कामधेय के पाँच बाणा म

से एक, -अन् 1 रेखाकन, लीचता, अलग-अलग लीचता 2 तिरछा फेंकना ।

विकल (वि०) [विगत कलो यत्र प्रा० ब०] 1 किसी भाव या अंग से बहिष्कृत, सदोष, अपूरा, अपाहृत, विकलाय कृत्रिमिकेन्द्रिया—भा० २१०७, मन्० १६६, उत्तर० ४१२४ 2 बुरा हुआ, जन्म 3 मन्व, विरहित आरामाधिपतिविकेकिकला भा० १। -१, मू० ७७० ४१४१ 4 विरुद्ध, कमबोर, उन्माह, जन्म, हतायाह स्थान, अवमत्र, न्यूनित्वात् -कर्मिनि विवीदिमि रोदिमि विकला विहर्मिनि युद्विनमत्रा तव मकला -गी० ९, विरहेण विकलहृदया -भा० २१०७, १६४, श्रुतिपुत्रे पिरुक्लविकले -गी० १०, उत्तर ३१३१, पा० ७११, ९१२ 5 मूर्च्छा हुआ, शीघ्र । मम० अथ (वि०) अधिका या कम अथा बाला, इन्द्रिय (वि०) जिसकी ज्ञानेन्द्रियों दुर्बल या विकृत है, बाह्यिक, लूला-लगरा ।

विकला [विगत कलो यस्या-या० ब०] कला का मातृवा भाग ।

विकल्प [वि + कल्प + घञ्] 1 सन्देह, अनिश्चय, अनिश्चय, मकोच मन् सिधेने नियोगेन म विकल्पपर-वन्व रघु० १७४९ 2 लक्ष, मुद्रा ३ कृ-पञ्च, कला मायाविकल्परचिने रघु० १३१७ ४ उरण्मनश्चता, (अ० में) वैकल्पिक 5 प्रकार म० 6 अपूर्विक, मूल, अज्ञान । सम०-उपहार वैदलिक पुस्तकार, बालम् जाल की तरह का अनि-श्चय, दुविधा ।

विकल्पन्व [वि + कल्प + म्यट्] 1 सन्देह में पड़ना 2 इच्छा की कृष्ट 3 अनिश्चय ।

विकल्प्य (वि०) [विगत कल्पयो मन्व प्रा० ब०] निष्पन्न, व महारिच, निवोध ।

विकला (सा) [वि + कल् (स्) + अन् + टाप्] बगानी बगोड ।

विकल्प [वि + कल् + अच्] चन्द्रमा ।

विकल्पित (यु० क० कृ०) [वि + कल् + क्त] विकला हुआ, (ग) मुला हुआ या फूला हुआ भा० ११०० ।

विकल्प्य (इष) र (वि०) [विकल् + बरच्] 1 मुला हुआ, फुला हुआ कुपोष्यैरथ अलास्योपिता यदा रमन्ते कनमा विकल्पन्ते सि० ४१३३ 2 ऊँच स्वर वाला (रवि आदि) जो स्पष्ट सुनाई दे, उदधीयल वैकुला-कारवहवाद्यम् विकल्पस्वरत्वे - वै० २१५ ।

विकार [वि + कृ + घञ्] 1 रूप या प्रकृति का परिवर्तन, अमान्तरण, प्राकृतिक अवस्था से व्युत्पन्न, मु० विकृति 2 परिवर्तन, बदल-बदक, सुधार—पथ० ११६४ 3 बीमारी, रोग, व्याधि विकारं लक्ष परमार्थोच्चावाजातरणः प्रतीकारस्य म० ४, कु०

२१३८ 4 मन या अभिप्राय का बदलना—मूर्च्छयमी विकाराः प्रायेणैवमनेषु—पा० ५११९ 5 भावना, संवेग—उत्तर० ११३५, ३१२९, ३६ 6 विज्ञान, उलोचना, उद्देग सि० १७२३ 7 विकृत रूप, आ-कुचन (मृगमुदा, हावभाव आदि) प्रथममूर्खविकारै-होसयामास युद्धम् कु० ७१२५ 8 (साध्य० में) जो पूर्वयोग या प्रकृति में विकर्षित हो । मम० हेतु प्रत्यानन, कुसलाता, उद्देग का कारण—विकारगृही मनि विक्रियन्त वेदा न वेदासि न त्व यीरा कु० ११५९ ।

विकारित (वि०) [वि + कृ + णिच् + क्त] परिवर्तित, पथप्रष्ट, छटाबागपल ।

विकारित् (वि०) [वि + कृ + णिच्] परिवर्तनशील, स्विक तथा अन्य मन्कारो को प्रथम करने वाला, -अवधि भूयते कदपर्जा विकारि च योवन्म् मा० १११७ ।

विकाल, विकालक [विघट काल प्रा० सं०] सप्या, साध्यकालीन घटपुटा, दिन की समाप्ति ।

विकालिका [विज्ञान काला यथा प्रा० ब०] पानी में रचना हुआ छिद्रयुक्त ताश्चलना वा कथञ्च पानी भग्ने के द्वारा समय का अकन करता है—रु० मानरगदा ।

विकारा [वि + कल् + घञ्] 1 प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिग्बलाया 2 विकलता, फूलना (इत अर्थ में प्राय विकारा लिखा जाता है) कु० ३१५९ 3 सुला वीधा मातं - कि० १५१२ ४ देखा मातं—कि० १५१२ 5 हर्ष, आनन्द—कि० १५१२ 6 उन्मुकता, प्रबल उत्कटा सि० ९, ११, (यही उत्कटा अर्थ मिलना, भी है) 7 एकान्तवास, एकाकीपण, घुनापण ।

विकाराक (वि०) (स्वा०) विकारा [वि + काश् + म्यट्] 1. प्रदर्शन करने वाला 2 बोलन वाला ।

विकाराणम् [वि + काश् + म्यट्] 1 प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिग्बला 2 विकलता, (फूलो का) फूलना ।

विकाराणि (सि) म् (वि०) (स्वी०—नी) [वि + काश्] (स्) + णिनि] 1 दिखाई देने वाला, बमकने वाला 2 फूलने वाला, मुकने वाला, मिलने वाला ।

विकारा [वि + कल् + घञ्] 1 लिलन, फूलना—दे० उ० विकारा ।

विकाराणम् [वि + कल् + म्यट्] फूलना, मुकना, विकलता ।

विकारि [वि + कृ + अर्] 1 बिगारा हुआ भाग या बिगारा हुआ मन्हा दुकरा 2 जो फायदा या बखेतरा है पत्नी -ककोनीफलत्रिधियुग्मविकारिव्याहारिचस्तद्भुको भाषाः मा० ६११९ 3 कर्षा 4 वृक्ष ।

विकारणम् [वि + कृ + म्यट्] 1. बखेतरा, इधर उधर फेंकना छितराना 2 दूर-दूर तक फैलना 3 फट्ट डालना 4. हिंसा करना 5. ज्ञान ।

बिकीर्णं (भू० क० कृ०) [वि + कृ + क्त] 1. बखेरा हुआ छिताराया हुआ 2 प्रसृत 3 विस्तृत। सम० केश, —**बुधैर्ण** (वि०) बालों को मोचने वाला, बालों को बिखेरने या उलझ-गुलझ करने वाला, —**जम्** एक प्रकार का सुगन्ध ।

बिभृशः [विगतो क्रुश यस्य प्रा० व०] विष्णु का स्वर्ण ।
बिभृशान् (वि०) [वि + कृ + शान्] 1 परिवर्तित होने वाला, या परिवर्तन करने वाला 2 प्रसन्न, लुप्त, हूट ।

बिभृशः [वि + कृ + श्] अन्वया ।

बिभृशन् [वि + कृ + श् + ट्] 1 गटरुप्य करना, कलत्र्य करना 2 (अनर्द्धिया या नलों में) गूड़घृहाहट ।

बिभृशन् [वि + कृ + श् + ट्] तिरछी छितान, कटाश ।

बिभृशिका [वि + कृ + श् + ट् + ट् + ट्] नाक ।

बिभृश (भू० क० कृ०) 1 परिवर्तित, बदला हुआ, सुघारा हुआ 2 रोणी, बीमारी 3 क्षतविधन, विक्षिप्त, जिसकी मूलन बिगड़ गई हो 4 अक्षय्य अपूरा 5 आवेशग्रस्त 6 पराहृमल, उदा हुआ 7 बीबल 8 अनौष्या, असाधारण (दे० वि पूर्वक ह्)। —**त्सु** 1 परिवर्तन, सुघार 2 और भी बिगड़ जाना, बीमारी 3 अक्षय, अणुष्या ।

बिभृति (स्त्री०) [वि + कृ + क्त] (अभिप्राय, मन, रूप आदि का) बदलना चित्तबिभृति, अणुलौकिक सुवर्णत्व बिभृति 2 अस्वाभाविक, अचानक घटित होने वाली परिवर्तित, सुबंदना मरण प्रकृति शरीरिणा बिभृतिर्विभृतियुच्यते बुधै रघ० ८।८७ 3 बीमारी 4 उल्लेखना, उद्देश, आश, रोष कि० १३।५६, शि० १५।११, ४०, दे० 'बिकार' और 'बिकिया' भी ।

बिभृष्ट (भू० क० कृ०) [वि + कृ + क्त] 1 अलग-अलग पसोटा हुआ, इधर-उधर बीबा हुआ 2 आकृष्ट, खींचा हुआ, किसी की ओर आकृष्ट 3 विस्तारित, फैलाया हुआ 4 शब्दायमान (दे० वि पूर्वक ह्) ।

बिभेक्ष (वि०) (स्त्री० शी) [विकीर्णः केलायस्य प्रा० व०] [बिखरे बालों वाला 2 बिना बाला का गया (सिर), शी 1 डोले बालों वाली स्त्री 2 बालों के सुत्य (गञ्जी) स्त्री 3 घोड़ी, या बालों की छोटी छोटी लटों का मिला कर बनाई हुई चोटी, घोड़ी ।

बिभोष ष (वि०) [विगत कोषो यस्य प्रा० व०] 1 बिना भूसो का 2 बिना म्यान का, बिना ढका हुआ —कि० १७।४५, रघु० ७।४८ ।

बिभृ [वि + कृ + क्त] तरण हापी ।

बिभ्रमः [वि + कृ + म्] 1 कदम, डग, पग —श० ७।६, तु० शिविषम 2 कदम 'जा, चलना 3 पकड़ लेना, प्रभाव डाल देना 4 वारता,

शोष, नायक की बहादुरी, अनुप्रेक्ष, शब्द विभ्रमा-लकार विभ्रम० १, रघु० १२।८७, १३ 5 उज्ज-विभ्री के एक प्रसिद्ध राजा का नाम — दे० परि० २ 6 विष्णु का नाम । सम० —**अक्षीः** अक्षित्य दे० विभ्रम, कर्मन् (तु०) धूरवीरता का कार्य पराक्रम के करणव ।

बिभ्रमणम् [वि + कृ + म् + ट्] (विष्णु का) एक डग उज्जयि विभ्रमणं बलिमद्भूतवासन गीत० १ ।

बिभ्रमिन् (वि०) [वि + कृ + मिन्] पराक्रमी, धूर-वीर पू० 1. सिंह 2 नायक 3 विष्णु का विशेषण ।

बिभ्रमः [वि + कृ + म्] बिक्री, बेचना मनु० ३।५४ ।

सम० अमृशः बिक्री का लक्षण करना, —**वपम्** बिक्री का पत्र, बीनासा ।

बिभ्रमिक, **बिभ्रमिन्** (पु०) [विक्री + इकन्, गिनि वा । व्यापारी, विक्रेता, बेचने वाला ।

बिभ्रमः [वि + कृ + म्] शोष, रेफादेश] शोष ।

बिभ्रान्त (भू० क० कृ०) [वि + कृ + क्त] 1 वेतक गया हुआ, डग रक्खे हुए 2 शक्तिशाली, धूरवीर बहादुर, पराक्रमी 3 बिभ्रशी, (अपने शत्रुओं का) पराग्न करने वाला, —**त्** 1 धूरवीर, योद्धा 2 सिंह, **त्सु** 1 पर, डग 2 घोड़े की सरपट चाल 3 धूर-वीरता, बहादुरी, पराक्रम ।

बिभ्रान्त (स्त्री०) [वि + कृ + क्त] 1 कदम रन्तता, डग चलना 2 घोड़े की सरपट चाल 3 धूर-वीरता बहादुरी, पराक्रम ।

बिभ्राम् (वि०) [वि + कृ + म्] बहादुर, बिभ्रणो, पु० सिंह ।

बिभ्रिया [वि + कृ + श् + ट्] 1 परिवर्तन, सुघार, बदलना—**वमप्रप्रुद्विजनितात्मबिभ्रियात्**—रघु० १०। ७।, १०।१७ 2 बिसोम, उल्लेखना, उद्देश जाण जाना अथ तेन निष्कृष्ट बिभ्रियाविभ्रित कलमेतद नभम् कु० ४।४१, ३।३४ 3 कोष, मन्त्र, अग्रमन्त्रा —**साधो प्रकोपितस्वापि मनो भाषति बिभ्रियात्** —मुमा०, लिंगभूद. सप्तविभ्रियास्ते—रघु० ३।३० 4 उज्जट, अविष्ट कु० १।२९ (बिभ्रियायै के-ल्योप्यादायाय 'रोष' मस्ति) 5. (मोक्षे ह्यपारि) धूनना, वाक्कुचन वा (मोक्षो की) विकुचन अत्रिणि याया विरतप्रसवैः कु० ३।५७ 6 आत्मिन आन्दोलन बीसा कि 'रोषबिभ्रिया' में विभ्रम० १। १०, 'रोमाच होमा' 7. अकस्मात् रोमघटतता, बीमारी 8 उल्लसण, (उचित कर्तव्य का) बिगाड़ देना, रघु० १५।४८ । सम० उज्जटा इक्षी द्वारा बनिन उज्जा का एक मोक्ष दे० काव्य० २।४१ ।

बिभृष्ट (भू० क० कृ०) [वि + कृ + क्त] 1 शोकात् किया, बिभ्रान्ता 2 कडोर, धूर, निर्दय, शब्द

1. सहायता प्राप्त करने के लिए कदम करना, दुहाई देना 2 गाली ।
विशेष (वि०) [वि+की+यन्] वेशने के योग्य, (कोई वस्तु) विक्री कर दो जाने के योग्य ।
विशोभानम् [वि+भू+यन्] 1 चित्तलाना, चोत्कार करना 2 गाली देना ।
विश्वस (वि०) [वि+श्व+यन्] 1 मयमीन, भद्रका हुआ, चौका हुआ, मन्त आचकाज घनजम्बुविकल्पा - रघु० १९।४८, कु० ५।११२ उपरोक्त सि० ७।४३, मधु० ३७ 3 रोगघ्न, पास्त कि० १।६ 6 विशुद्ध, उल्लेखित, बचराया हुआ, विह्वल स० ३।२६ 5 दुखी, कष्टघ्न, सन्तप - वि० १२।६३, कु० ५।३९ 6 ऊन, हुआ, अशुभवान् मृगयाविकल्प नन स० २७ हकानेवाला, पञ्चकालनेवाला प्रस्थानविकल्पनेरवन्तानां स० ५।३ ।
विकल्प (भू० क० कृ०) [वि+कल्प+क] 1 अत्यत भोग्य, पूरौ तरुत भोग्य हुआ 2 मूर्खता हुआ, मूका हुआ 3 पुराना ।
विकल्प (भू० क० कृ०) [वि+कल्प+क] 1 अत्यत कष्टघ्न, दुखी 2 चावल, नष्ट किया हुआ, ध्वम् उच्चाग्न दाव ।
विकल (भू० क० कृ०) [वि+कल्+क] फाट कर अलग अलग किया हुआ, धावल, बोट टूटचाया हुआ, अघातघ्न ।
विशभ [वि+भू+यन्] 1 शाली, वीक जाना 2 ध्वनि ।
विशिन (भू० क० कृ०) [वि+शि+क] 1 विशेरा हुआ, इधर उधर फेंका हुआ, छिनटाया हुआ, डाला उठा 2 अलग करना, पदभ्यून करना 3 भेजा गया, भेजित 4 भ्रान्त, भ्राजुक्त, विभ्रम्भ 5 निराकृत (दे० वि पूर्वक शिप्) ।
विशोषक (पु०) 1 शिव के शेषकण का मुखिया 2 देवनाग ।
विशोर [निगिष्ट विगत वा शीर मय्य प्रा० ङ०] मदार का पौधा ।
विशेष [वि+शिप्+यन्] 1 इधर-उधर फेंकना, बखेरना 2 हाथना, फेंकना 3 कर्तव्य निर्वाह करना (वि० सहर) रघु० ५।४५ 4 भेजना, भेजण 5 ध्यान हटाना, हठबन्दी, भ्राजुक्ता - मा० १ 6 बटका, भय 7 नर्क का निराकरण 8 भूवीध बखेरना ।
विशेषयम् [वि+शिप्+यन्] 1, फेंकना, डालना, निकाल बाहर करना 2 भेजण, भेजना 3 बखेरना, छितराना 1 हठबन्दी, भ्राजुक्ता ।
विशोभ [वि+भू+यन्] 1 हिलाना, हलचल, आन्दोलन, बौचि रघु० १।४३ 2 मन की हलचल, ध्यान हटाना, ललबली 3 हल, लचर ।

विश, विशु, विश्व, } [विगता नासिका मय्य -० स०
विशु, विशु, विश्व } नासिकाया लु, श्व, लु, लु, व
वा आदेशः] नासिका से रहित, बिना नाक ।
विश्विधत् (भू० क० कृ०) [वि+श्व+यन्] 1. टूटा हुआ, विकल किया हुआ 2 दो लक्ष्मी में किया हुआ ।
विश्वान्तः (पु०) एक प्रकार का नाम ।
विश्वरः (पु०) 1 राक्षस, विदाह 2 बोर ।
विश्वस्त (भू० क० कृ०) [वि+श्व+यन्] 1. प्रख्यात, विशुत, प्रसिद्ध, महाहूर 2 नामधर, नामधारी 3 स्वीकृत, माना हुआ ।
विश्वसिः (स्त्री०) [वि+श्व+यन्+विन्] प्रसिद्धि, कीर्ति, यश, नाम ।
विश्वानम् [वि+गम्+यन्] 1 गिनना, लगन, हिमाव लपाना 2 विश्वाना, विश्वरविनिघ्न करना 3 कृष्ण का परिशोष करना ।
विश्व (भू० क० कृ०) [वि+गम्+यन्] 1 जिसने प्रयाण कर लिया है, जो बन्ना गतः 2 जो अलग किया गया है, विमुक्त 3 मृतक 4 विरहित, मृत्यु, मृतन (समाप्त में) विमानत 5 लोया हुआ 6 मुपका, अखाट । सम० - - - जोलंबा वर ली जिसे बन्ना होना (या रजोघर्म होना) बन्द हो चुका हो, -कल्प (वि०) निराप, पवित्र, -श्री, वि०) निर्भय, निडर, - लक्षण (वि०) भाग्यहीन अशुभ ।
विश्वम्भः [विहृष्ट गणो मय्य व० स०] इयुदी नाम का पेड़ ।
विश्वः [वि+गम्+यन्] 1 प्रख्यात करना, अन्तर्धान, समाप्त, अन्त - चारुनृत्यविग्ने व तन्मूकम् रघु० १९।१५, इतिविगम मानवि० ५।२०, वृत्तु० ६।२२ 2 परिष्ठाप करणविगमात् - वेध० ५५ (देहत्यागम्) 3 हानि, नाश 4 मृत्यु ।
विश्वरः (पु०) 1 नमन करने वाला सन्तानी 2 पहाड 3 बहु पुण्य जिसमें भोजन करना त्याग दिया हो ।
विश्वरुम्भम् - भा [वि+यहृ+यन्] [विश्वरुम्भम्] निन्दा, कलक, मर्मना, अपशब्द देवी० १।१२ ।
विश्वहित (भू० क० कृ०) [वि+यहृ+यन्] 1 विन्दित, फटकारा हुआ, गाली दिया हुआ 2 निररकृत 3 दोषी उहाराया गया, बुरा मन्का कहा गया, प्रतिविद्ध 4 नीच, दुष्ट 5 बुरा, बधभाष ।
विश्वित (भू० क० कृ०) [वि+यल्+यन्] 1 बूद बूद हुआ हुआ, मन्द मन्द नि सूत 2 अन्तर्हित, गया हुआ 3 अथ परित 4 पिपला हुआ, मूना हुआ 5 तिर-तिलर हुआ 6 डोला किया हुआ, खोला हुआ विकम् ५।१० 7 मूना हुआ, विश्वर हुआ, अस्त-अस्त (बाक नावि) (दे० वि पूर्वक 'गम्') ।
विश्वानम् [विहृष्ट वान प्रा० स०] 1 निन्दा, भोसना, मान-

विद्यमान (वि०) [वि + धृ + ल्यट्] 1 स्पष्टदर्शी, दीर्घदर्शी, साक्षर 2 बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान् २५०-५११, 3 विद्योक्त, कुशल, योग्य - २५० ११६९, क- विद्वान् पुत्र्य, बुद्धिमान् आदमी न दत्वा अस्पृशित्वा पुत्र्येणद्विषाणम् म० ११७१।

विद्यमान् (वि०) [विद्यन् चिन्तय वा चक्षुष्यम्] अथा, दृष्टिहीन 2 व्याकुल, उदाम।

विद्यय [वि + धि + ञप्] 1. लाज, दूँढ, नलास उमर० ११२३ छानबीन, तहकीकात।

विद्ययन्म् [वि० + धि + ल्यट्] शोधना, छानबीन करना।

विद्ययिका [विशेषण अर्थने पाणिपाठस्य ल्यक् [विदायनेः] न्या वि + चर् + ल्यट् - टाप्, इत्यम्] सूत्रणी, विमरिका, लाज।

विद्ययित्वा (वि०) [वि चर् + क्त] लेप किया हुआ, मला हुआ, मारिजा किया हुआ।

विद्यय (वि०) [वि + धृ + लज] 1 इधर उधर घूमना वाया (इत्यने वाया, घग्वागने वाया, नदन्वचाने वाया, बचन 2 अभिमानी, घमडी।

विद्ययन्म् [वि + धृ + ल्यट्] 1 स्पन्दन 2 अतिक्रम 3 अस्थिरता, बचलता 4, अभियान।

विद्यार्थ [वि + धृ + क्त] 1 विषय, विनियम, चिन्तन, साध-विचारमाध्यमिनेन वेधना-कु० ५१४० 2 परीक्षा, विचारविमर्श, गवेषणा, नत्कार्यविचार।

3 (किसी बात की) शोध-पठनात्मक मन्त्र० ११८३ 4 निर्णय, विवेचन विवेक, तर्कना विद्यामयट् प्रनिभापि मे श्वम् २५० २१८३ 5 विपक्ष्य १५५१-२५ 6 चयन 7 संवेह सकाच 8 दूरदर्शिता, सनकता।

मम० अ (वि०) निश्चय करने के योग्य, निर्णायक, -नू (स्त्री०) 1 न्यायाधिकार, न्यायमान 2 विशेष कर पत्र की न्यायासन, झील (वि०) विचारगुण, मन, दूरदर्शी, -स्वस्त्वम् 1 न्यायाधिकरण 2 नकसगन पर्चा।

विद्यार्थक [वि० + धृ + ल्यट्] छानबीन या तहकीकात करने वाला, न्यायाधीश।

विद्यार्थम् [वि + धृ + धि + ल्यट्] 1 चर्चा, चिन्तन, परीक्षा, पर्यालोचन, अन्वेषण 2 संदेह, सकोष।

विद्यार्थका [वि + धृ + धि + ल्यट् + टाप्] 1 परीक्षण, विचारविमर्श, गवेषणा 2 पुनर्विचार, साध-विचार, चिन्तन 3 संवेह 4 दर्शनशास्त्र की शीर्षांगपद्धति।

विद्यार्थि (न० क० कृ०) [वि + धृ + ल्यट् + क्त] 1 सोचा गया, पुस्तक की गई, परीक्षा की गई, विचारविमर्श किया गया 2 विधिगत, विद्यार्थि।

वि- न०, स्त्री०) विधीः (स्त्री०) [वि + धृ + ल्यट् + क्त] विधि, विधि + शीघ्र] श्वट्, तरण।

विधिहित्वा [वि + धि + ल्यट् + क्त] 1 संवेह, शक 2 भूल, चूक।

विधित (प० क० कृ०) [वि + धि + क्त] लाजा, नलाया की गई।

विधित्वा (स्त्री०) [वि + धि + क्त] दूँढना, शोध, तलाश करना।

विधिष (वि०) [विशेषण विधय, प्रा० सं०] 1 रण-विरता, निनकवर्ग, चित्तोदार, यन्त्रेदार 2 नानाविध, बहुविध 3 गालिज 4 मुन्दर, प्रलोभक क्वचिद्विधिष जल्पयमदिरम् - नृ० ११० 5 आचर्ययम्न, अचरे वाला, अजीब-अविचलिताना ही विधिषो विधाक -जि १११८० प्रम्-1 बहुगुणी गृह 2 आचर्यः म० -अथ (वि०) जिनकवे-दारी वाया, (-क) 1 मोर 2 व्याघ्र, हेह (वि०)-ममोहण दरी वाला (हृ) बादक, रूप (वि०) विधिष प्रकार का, बीधेः एक चन्द्रवती राधा का नाम, (यह सत्यवती नामक पत्नी ने उत्पन्न राधा जन्तु का एक पुत्र तथा भोग्य का मौतका भाई था। जब विष्णुनामाख्या में इसकी मृत्यु हो गई तो इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र (विवाह होने से पहले ही उत्पन्न) व्याम की बुलाया और नियाम की विधि से विधयवीर्य के नाम पर मन्तानन्यादान के लिए प्रार्थना की। व्याम ने माना की आज्ञा का पालन किया और पत्न अम्बिका तथा अम्बावती (उमके भाई की विधवा पत्नियाँ) में इसका धनराष्ट्र और पाटु का क्रम हुआ।

विधिष (वि०) [वि + धि + क्त] लेप किया हुआ, मला हुआ, मारिजा किया हुआ।

विधिष (वि०) [वि + धृ + लज] 1 इधर उधर घूमना वाया (इत्यने वाया, घग्वागने वाया, नदन्वचाने वाया, बचन 2 अभिमानी, घमडी।

विधिषन्म् [वि + धृ + ल्यट्] 1 स्पन्दन 2 अतिक्रम 3 अस्थिरता, बचलता 4, अभियान।

विधिषार्थ [वि + धृ + क्त] 1 विषय, विनियम, चिन्तन, साध-विचारमाध्यमिनेन वेधना-कु० ५१४० 2 परीक्षा, विचारविमर्श, गवेषणा, नत्कार्यविचार।

3 (किसी बात की) शोध-पठनात्मक मन्त्र० ११८३ 4 निर्णय, विवेचन विवेक, तर्कना विद्यामयट् प्रनिभापि मे श्वम् २५० २१८३ 5 विपक्ष्य १५५१-२५ 6 चयन 7 संवेह सकाच 8 दूरदर्शिता, सनकता।

मम० अ (वि०) निश्चय करने के योग्य, निर्णायक, -नू (स्त्री०) 1 न्यायाधिकार, न्यायमान 2 विशेष कर पत्र की न्यायासन, झील (वि०) विचारगुण, मन, दूरदर्शी, -स्वस्त्वम् 1 न्यायाधिकरण 2 नकसगन पर्चा।

विधिषक [विधिष + क्त] मायाधर का देह - कम् आचर्य, नागपुत्र, अचम्भा।

विधिषयक [वि + धि + ल्यट् + क्त] 1 शोध 2 गवेषणा 3 श्रुतीर।

विधीष (वि०) [वि + धृ + क्त] 1 अचिह्न, व्याज 2 शक्ति।

विधेत्त (वि०) [विनाया वेत्ता इत्य प्रा० सं०] 1 वेत्तार-रहित, निर्जीव, अचेतन, मूक 2 प्राणहीन।

विधेत्त (वि०) [विद्यन् वेत्ता इत्य प्रा० सं०] 1 सत्ता-हीन, मूक, अज्ञानी 2 आकुल परब्रह्मा हुआ, उदास।

विधेत्वा [वि + धृ + क्त] 1 सत्ता-हीन, मूक, अज्ञानी 2 आकुल परब्रह्मा हुआ, उदास।

विधेत्वा [वि + धृ + क्त] 1 सत्ता-हीन, मूक, अज्ञानी 2 आकुल परब्रह्मा हुआ, उदास।

विधेत्वा [वि + धृ + क्त] 1 सत्ता-हीन, मूक, अज्ञानी 2 आकुल परब्रह्मा हुआ, उदास।

विधेत्वा [वि + धृ + क्त] 1 सत्ता-हीन, मूक, अज्ञानी 2 आकुल परब्रह्मा हुआ, उदास।

११ (पूरा० उ०) विच्छयति० १ चमकना २ बोलना ।
विच्छन्न- विच्छन्नकः [विशिष्ट छन्दोऽभिप्रायो यस्मिन्
-न० स० पद्ये क्व च] महल, विद्यालयवन जिसमें
कई लक्ष या मंत्रिजल हो ।

विच्छन्नक [वि + छद् + क्तुल] महल, प्रसाद, दे० ऊ०
'विच्छन्न' ।

विच्छन्नम् [वि + छद् + ल्युट्] कैं करना, उकटी करना,
उगलना ।

विच्छरित (भू० क० कृ०) [वि + छद् + क्त] १ कैं
किया हुआ, उगला हुआ २ जिसकी अवज्ञा की गई
हो, जिसकी उपेक्षा की गई हो ३ टूटा-फूटा, न्यूनीकृत ।

विच्छाय (वि०) [विगत छाया मय्य - प्रा० व०] निप्रथम,
मुचला, -रत्न० ११२६-४ मीय, म्म ।

विच्छ्रिति (न्त्री०) [वि + छिद् + क्तिन्] १ काट डालना,
काट देना -रत्न० ३१११ २ बाटना, अलग-अलग
करना ३ अन्वर्तन, अनुपमिति, लोप ४ विराम
५ धरती को उबटन या रङ्गलेप ने रङ्गना, रङ्ग-
विषय, महाभार-भा० ७३५, शि० १६१८ ६ शीता
(पर आदि कौ) हय ७ कविता में विराम, कति
८ विशेष प्रकार की शृङ्गाणिय माकभिया, जिनमें
बेशभूषा के प्रति उपेक्षा भी सम्मिलित हो (जयने
स्मृतिगत मीर्यके अर्थात्त के कारण) -स्तोत्राध्या-
करणरचना विच्छ्रिति कानिषोपकृत् सा० व०
१३८ ।

विच्छ्रित (भू० क० कृ०) [वि + छिद् + क्त] १ काटा
हुआ, काटा हुआ २ मोटा हुआ, पथक् किया हुआ,
विभक्त, बियुक्त अर्थे विच्छन्नम् सा० ११२ ३
हृन्क्षेप किया गया, रोका गया ४ अन्ध किया गया,
बन्द किया गया, क्षमाम किया गया ५ बितकबरा
६ गुप्त ७ उबटन आदि रमलेय में पोता गया (दे०
वि पूर्वक छिद्) ।

विच्छ्रित (भू० क० कृ०) [विच्छ्रु + क्त] १ उका
गया, ऊपर ले के पोताया गया, पोता गया २ उका गया
३ शीघ्र गया, रागा गया ।

विच्छ्रेय [वि + छिद् + क्त] १ काट डालना काटना,
विभक्त करना, विद्याय -सा० ६१११ २ तोड़ना-शि०
६५१ ३ रोक, हन्त्राण्य, विराम, बन्ध कर देना
विच्छ्रेयमाय मुचि म्मु कथाप्रथम का०, पिद्-
विच्छ्रेयदिन रत्न० १६६ ४ हटाना, प्रतिपेय
५ फूट अननक ६ पुस्तक का अन्वय या परिच्छेद
७ अन्वय, अन्वय ।

विच्छ्रित (भू० क० कृ०) [वि + छद् + क्त] १ अब
पतित, नाच गिया हुआ २ विच्छ्रापित, पतित ३
स्वनिष्ठान, पचावर्षितल ।

विच्छ्रिति (न्त्री०) [वि + छद् + क्तिन्] १ अब पतन,

पथक् होना विधोय २ ह्रास, लय, पतन ३ विचलन
४ गर्भस्राव, असफलता जैसा कि 'गर्भविच्छ्रुति'
में ।

विष्णु १ (पूरा० उ०) वेदेकित, वेदिकते, विष्णु १
विष्णुत करना, विभक्त करना २ वेद करना, अन्तर
पहचानना, विवेचन करना (प्राय वि पूर्वक, तथा
विपूर्वक विष् के समान) ।

११ (पूरा० उ०) विजते, विनक्ति,
विष्णु १ हिलना, कापना २ विद्युब्ध होना, जय से
कापना ३ डरना, भयभीत होना-ब्रह्म विष्णु
कुररीव भूय -रत्न० १६१८ ४ बुझी होना, कष्टग्रस्त
होना, प्रेर० (वेदयति ने) बास देना, डरना,
भा, डरना, अन्व, भयभीत होना, डरना (प्राय
अप० के साथ, कभी कभी मर० के साथ) तीर्थशानु
डिजने मद्रा० ३५, यमालोडिजने लोका लोका-
न्योडिजने च य मय० १२५, अट्टि० ७१२ २
मिन्न या कष्टग्रस्त होना, दुःखी होना न मद्रूप्योपिय
प्राप्य नोडिजने प्राप्य भाप्रियम् अग० ५१२० ३ डरना
(अप० के साथ) औचितादुडिजमानेय सा० ३
मनो नोडिजने तप्य दहलोप्यमहनिचम्, उडिजनि
गु सतारादमारारासम्बेदिन कवि० ४ डरना
कष्ट देना, (अ०) १ काट देना, नग करना कृ०
१५ ११ २ डरना ।

विष्णु (वि०) [विगतो जने यस्यात् व० स०]
अकेला, सेवानिवृत्त, एकाकी, बन्ध एकान्त स्थान,
मुनमान स्थान (विष्णुने निजी रूप से) ।

विष्णुनम् [वि + छद् + ल्युट्] जन्म प्रसृति प्रथम ।

विष्णुन् [वि० या पू०] [विच्छ्र जन्म यन्म प्रा०
व०] डरामी, जो अर्थेकर से उत्पन्न हुआ है ।

विष्णुपिष्णु [विष् + क, पिष् + क, कर्म० स] गारा
शीघ्र ।

विष्णु [वि + जि + क्त] १ मीनना, हरना, परान्त करना
२ जीत, फलज नय यात्रा-वि० १०३५ रत्न० १२५
कृ० ३११९, य० २१६ ३ देवताओं का स्व, शिष्य
४ अर्थेक का नाम मद्रा० नाम की श्रावणा
करना है-अभिप्रायि मशाम यदर वृद्धमुद्राम् नाराज्य
विनिवर्तयि तेन मा विजय विदु ५ यत् का
विनोपय ६ नृहृत्पति की वधा का प्रथम वय ७ अल्प
क मरक का नाम । मय० अक्षयुषाय [अथ वी
माधन या उपाय, कुजरः लडाई का हाथी पर
पांचमी लडी का हार, विजय, सता का विजय डाल,
मगरम् एक नगर का नाम, मरक, मन् विजान
मैतिक डाल, -सिद्धि (न्त्री०) लक्ष्मणा, जीत फल ।

विष्णुत (पू०) इन्द्र का नाम ।
विष्णुत [विजय + टाट्] १ वृत्ता का नाम २ उत्तरी तीर्थ

कात्री में से एक - मूद्रा० १११ 3 एक विशेष विद्या जो विश्वाविष ने राम को सिखाई थी भट्टि० २१२ 4 भाग 5 एक उन्सव का नाम—विजयोत्सव, दे० नी० 6 हृत्पत्नी । सम० उत्सवः दुर्गादेवी के सम्मान में उत्सव जो आदिन रातका दशमी के दिन मनाया जाता है, इसको आदिनयुष्का दशमी ।

विजयिन् (पु०) [वि + जि + इनि] विजेता, जीतने वाला । विजयन् [विजता जरा स्मात् - प्रा० ब०] वृक्ष का तना । विजयः [वि० + जय् + बज्] 1 बाल कलरव, ऊटपटांग या मूर्खतापूर्ण बाल 2 सामान्य वार्ता 3 दुर्भावनापूर्ण या विद्वेषपूर्ण भाषण ।

विजयित (पु० क० कृ०) [वि + जय् + क्त] 1 कहा गया, जिनसे बालों की गई 2 भोली भाली बाल, बाल मुलम तुतलाहट ।

विजयत (पु० क० कृ०) [विजय् ज्ञात जय यत् - प्रा० ब०] 1 नीच कुलोत्पन्न, वर्णसंकर 2 उत्पन्न, जन्मा हुआ 3 कथान्वित, -ता माला, मातृका बहु स्त्री विजयके अन्वये सन्तान हुई हो ।

विजयति (स्त्री०) [विभिन्ना जातिः प्रा० सं०] 1 मित्र मूल या जाति 2 मित्र प्रकार, जाति, या कुटुम्ब । विजयतीष (वि०) [विजयति + छ] 1 मित्र प्रकार या जाति का, अस्मान, विषय 2 मित्र वधों या जाति का 3 विन्दी जूनी जाति का ।

विजयिष्वा [वि + जि + सन् - अ + टाप्] 1 जीतने की विजय प्राप्त करने की इच्छा 2 जागे बढ़ने की इच्छा, प्रगतिस्पर्धा, प्रतियोगिता, महत्वाकांक्षा ।

विजयिषु (वि०) [वि + जि + म् + उ] 1 जीत का इच्छुक, विजय करने की इच्छा वाला—यद्यपे विजिगीषुणा—रघु० ११७ 2 प्रतियष्की, महत्वाकांक्षी,—बु 1. मोड़ा, बुरकीर 2 प्रतिद्वन्द्वी, समरान्, प्रतिपक्षी ।

विजयसात् [वि + ज्ञा + मत् + सा] स्पष्ट जानने की इच्छा ।

विजयत (पु० क० कृ०) [वि + जि + क्त] पराजित किया हुआ, जोता हुआ, जिनके ऊपर विजय प्राप्त की गई हो, हराया हुआ । सम० जयन्तम् (वि०) जिसने अपनी वासनाओं का दमन कर दिया है, जिसेन्द्रिय, -इन्द्रिय (वि०) जिसने इन्द्रियों का दमन कर दिया है, या नियन्त्रण कर लिया है ।

विजयः (स्त्री०) [वि + जि + क्त] जीत, फल, विजय—काव्या० ३१८५ ।

विजयिन् - मन् (स-सन्) [विज् + इन्च्, इलच् वा] घटनी (काजी मिश्रित) ।

विजयिष्ठा (वि०) [विशेषण विजय - प्रा० सं०] 1 कुटिल मुका हुआ, मूद्रा हुआ—कि० ११२१, रघु० १११/२५ 2 वैदमान ।

विजयुक्तः [विज् + उल्च्] शात्मिक या देवल का देव ।

विजयन्मन् [वि + मन् + स्युट्] 1 मूढ़ काबला, जन्माई सेना 2 और जाना, कमी जाना, किलना, उन्मत्त होना, बनेपुं शायतनमल्लिकार्जुन विजयमोक्षोपायिषु कुङ्कमलेषु - रघु० १६५७ 3 बिलालाना, प्रबंधन करना, खोलना 4 फैलाना 5 मनोरंजन, आनोद-प्रमोद, रंगरेलियां ।

विजयन्मिषत (पु० क० कृ०) [वि० + मन् + क्त] 1. मूढ़ काबा, जन्माई की—मूच्छ० ५१५१ 2 उद्घाटित, विकसित, फैलाया हुआ 3 प्रदर्शित, दिखाया गया, प्रकट किया गया—रघु० ७१५२ 4 दर्शन दिये गये 5. सेला गया,—सम् 1 कीडा, मनोरंजन 2 अभि-लाया, इच्छा 3 प्रबंधन, प्रदर्शनी—ब्रह्मनामिषु चित-मेतत् 4 हृत्प, कर्म, आचरण—भा० १०१११ ।

विजयन्मन् - सन् [विज् + इन् (इन् - बलबोरजेः) + सच्] 1 एक प्रकार की घटनी, दे० 'विजयुक्त' 2 तीर, बाण ।

विजयन्मन् (मपु०) दारपीनी ।

विजय (वि०) [वि + ज्ञा + क] 1 जानने वाला, प्रतिभा-वान्, बुद्धिमान्, विद्वान् 2 चतुर, कुशल, प्रवीण, -अ. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष ।

विजयत (पु० क० कृ०) [वि + जय् + क्त] साहर रखा गया, प्राथित ।

विजयति [वि - जय् + क्त] 1 साहर उठित या समा-चार, प्राथना, अनुरोध 2 घोषणा ।

विजयत (पु० क० कृ०) [वि + ज्ञा + क्त] 1 चिहित, जाना हुआ, प्रत्यक्ष ज्ञान किया हुआ 2 विख्यात, विद्युत, प्रसिद्ध ।

विजयानम् [वि + ज्ञा + स्युट्] 1 ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, मनुष्य,—विज्ञानमय कोश, 'प्रज्ञा का म्यान' (आत्मा के पाँच कोषों में से पहला) 2 विवेचन, अन्तर पटुचालना 3 कुशलता प्रवीणता -प्रयोगविज्ञानम् -अ० ११२ 4 सांसारिक या लौकिक ज्ञान, सांसारिक अनुभव से प्राप्त ज्ञान (विप० 'ज्ञानम्' बहु वा परमालंबिषयक ज्ञानकारी)—मम० ३१५१, ७१२, (मम० का समस्त वातर्वा अन्वय प्राण और विज्ञान की ध्यास्या करता है) 5. व्यवसाय, नियोजन 6 सगीत । सम० इष्वरः वायव्यम् स्मृति की मिलाकरा नामक टीका का प्रणेता, वाचः व्यास का नाम, वासुदेवः बृह्म का विशेषण, वाचः ज्ञान का सिद्धान्त बृह्म द्वारा मिलाया गया सिद्धान्त ।

विज्ञानिक (वि०) [विज्ञान + क्त] बुद्धिमान्, विद्वान् दे० 'विज्' ।

विज्ञापकः [वि + ज्ञा + पिच् + क्त, पुत्रागम] 1 मूचना देने वाला 2 अभ्यापक, सिद्धक ।

विद्यालयम्, -ना [वि + ज्ञा + णिच् + ल्यट्, पुकायम्]

1 विद्या उक्ति या सहाय, प्रायना, अनुरोध - काल-
प्रयुक्ता शब्द कार्यविद्विद्विद्याना भन्तु सिद्धिमनि
—क० ७१२३, रघु० १७४० 2 सूचना, वर्णन
3 शिक्षण ।

विद्यापति (मू० क० क०) [वि + ज्ञा + णिच् + क्त, पुकायम् :] 1 विद्यानायक कहा हुआ या सहाय दिया हुआ 2 प्राप्त 3 समुच्चिन 4 शिक्षित ।

विद्यापतिः [वि + ज्ञा + णिच् + क्तित्, पुकायम्] दे० 'विद्यापति' ।

विद्यायाम् [वि + ज्ञा + णिच् + यत्, पुकायम्] प्रायना —उत्तर० १ ।

विद्यार (वि०) [विगतो ज्वरा प्रत्य-ब० सं०] ज्वर मे मुक्त, चिन्ता या दुःख से मुक्त ।

विद्यावारम् (न्य०) औषो की सफेदी, तैलो का श्वेत भाग ।

विद्योक्ति, की (स्त्री०) [विद् + क्त, पया० मायु] देखा, पकित ।

विद् (म्वा० पर० वेदति) 1 ध्वनि करना 2 अभिप्राय देना, दुर्बलन कहना ।

विद [विद् + क] 1. अर, पार, उपपति—मा० ८।८, शि० ४०४८ 2 लट, कानुन 3 (नाटकी में)

किसी राजा या कुप्रचरित्र युवक का नायो, किसी ऐसी वेषया का नायो, जिसका गायन, सजीन तथा कविता दिग्गज की कला में कुशलता प्राप्त हो, नायक पर आश्रित परामर्शदात्री हा विदुषक का नाय करे—दे० मू० ३०७ ३८ 4 ध्वनें डय : गाथ, इत्यन्ती 6 चूहा 7 खेर या खरिर् का पत्र 8 नागनी का पत्र 9 पल्लवयुक्त शाखा । मय० भाषिकम् एक प्रकार का अतिउपदार्य, मानामानी, लक्षणम् राज-नायक नयक ।

विद्वद् [विद्योपेय उपयोके बध्यते इति वि : टक् ; यञ्] 1 विद्विद्या-धर, कवचन का दग्ना 2 मनने ऊचा विरा, कला या कानुन, ऊचाई- अयमेव महापार विदक—मा० १०, विक्रम० ५१३१ ।

विद्वद्वकः [विदक + क्वत्] दे० विदक ।

विद्वद्वित (वि०) [वि + टक् + क्त] विद्वित, मुद्राकित ।

विद्वय [विट विन्ताय वा यति प्वति—पा + क] 1 शाखा, (कला या वृक्ष की) टरनी कामलविटपानु-कारिणी बाहु मा० १०९, ३१, यदनेन तदन पानिन कविता तद्विद्वयधिनः कला रघु० ८।४३, शि० ४।४८, कु० ६।४१ 2 शाही 3 गया अकुन या किलय—शि० ७।५३ 4 गुन्य, झूठ, सुरम्य 5 विस्तार 6 अक्षय पटल ।

विद्वयिन् (पु०) [विद्वय + इति] 1 वृक्ष परितो वृष्टापक विद्वयिन सर्व भाषि० १।२१, २९ 2 वटवृक्ष, गुजर । मय०—मूयः बन्दर, लगूर ।

विद्वय (वृ०) क् (पु०) विष्णु या कृष्ण का रूप (सर्वा शान्त में स्थित पडरपुर में इस रूप की पूजा होती है) ।

विद्वद् (वि०) दूरा, दृष्ट, अघम, नीच ।

विद्वर (पु०) वृहस्पति का नाम ।

विद् (म्वा० पर० वेदति) 1 अभिप्राय देना, दुर्बलन करना, दूरा भला कहना 2 जोर से बिल्लना ।

विद्वम् [विद् + क] एक प्रकार का कृमि नमक ।

विद्वम, -गम् [विद् + अणच्] एक प्रकार का शाक, वायविद्वग (कृमिनाशक औषधि के रूप में बहुत प्रयुक्त) ।

विद्वम्ब [विद्वम्ब + अद्] 1 नकल 2 तुली करना, तान करना, कष्ट देना ।

विद्वम्बन्म्, मा [विद्व + ल्यट्] 1 नकल 2 छापेना, उलट्टा ३ धाँसेबाजी, जालसाजी 4 क्लेश, म्लान ५ पीडन करना, दुःख देना 6 निरास करना 7 मजाक, उपहास, परिहासविषय इय ४ उज्या उरुना विद्वम्ब कु० ५।३०, अगनि त्वयि बास्वीमर प्रमदानामयुना विद्वम्बता ४।१२ ।

विद्वक्षित (मू० क० क०) [विद्व + क्त] 1 अनुकरण किया गया, नकल किया गया, परिहास किया गया मजाक बनाया गया 3 उगा गया 4 क्लेश पहुँचाया गया मलन किया गया 5 हताश किया गया 6 नीच कमीना, दीन ।

विद्वारक [विद्वार - क्त, ल्यट् २] विद्वार ।

विद्वाल, **विद्वालक**, (मू०) दे० विद्वार, विद्वालक ।

विद्वीयम् [वि + वी + क्त] प्रतियोगी की एक उद्योगिनोण दे० वीन ।

विद्वुल [विद् + कुलन्] एक प्रकार की बेन ।

विद्वरलम् [विद्वर - लन् + क्त] शीतल, नीलम ।

विद्वी (स्त्री) अम् (पु०) [विद् व्यापकम् ओजो मय व० म०] इय का नाम, दे० 'विद्वीजम्' ।

वितल [वि ; तन् + धञ] 1 पक्षियों का गिरना 2 रमसी, भुङ्कना, जाक या उड़ीर आदि श्रवण अनेन पत्-पत्ती कीट किये जाय ।

वितक [वि + तद् + क्त] 1 हाथी 2 एक प्रकार का नाम या शब्दवनी ।

विनका [विनर + टाप्] 1 सर्वोच आशेष, निराशय विद्व, नेपथ, घोषा तक, निरर्थक तकवितक—स (अन्) प्रनिरक्षस्यापनाहीनी विनका गीन० 2 मृदु वीर दोषपूर्व आलोचना 3 चम्पक, लुना 4 मृगुन, गुप ।

वितत (मू० क० क०) [वि + तन् + क्त] 1 कला

हुआ, विस्तार किया हुआ, विछाया हुआ 2 भाग्य, विद्याल, विस्तीर्ण 3 सम्पन्न, निष्पन्न, कार्यान्वित
—विनयपत्र छ० ७।३४ 4 डका हुआ 5 प्रसूत
—दे० वि पूर्वक तनु, सन् कोई भी ऐसा उपकरण
त्रिमयें तार लगे हो बोया आदि। मम कथन्
(वि०) जिसने अपने धनुष को पूरी तरह नान
लिया है।

विनयि (स्त्री०) [वि+तन्+विन्] 1 विनयार, प्रसार
2 परिमाण, सग्रह, दुःख, श्रुष्ट 3 रेखा, पक्ति—मा०
१।४७।

विनय (वि०) [वि+तन्+कृषन्] 1 झुठ, मिथ्या—आज
मनो न मचना विनय विलोकनम् वेणी ३।१३,
५।६१, रघु० १।८ 2 अर्थ, निरर्थक—यथा विनय-
प्रयत्नं मे।

विनय (वि०) [विनय+यत्] मिथ्या, द० ऊार।
विनयु (स्त्री०) [वि+तन्+र, टुट्] पत्राव की एक
नया का नाम, विनयता या श्रेष्ठ नदी।

विनयु (पु०) अन्धता धारा स्त्री० विचदा।

विनयन् [वि+तु+त्युट्] 1 पात्राज 2 उग्रहार, दान
3 छात्र देना, त्याग करना, निराजक देना।

विनक [वि+तर्क+अच्] 1 पक्ति, दशोक अनुमान
2 अन्दाज अटकल, कल्पना, विषयान् निर्धारणपुष्पा-
धकनोकुमारो हाडु तदीयाविति मे विनकं—कु०
१।४१ 3 उल्लास, विनयन भन्० ३।६५ 4 सन्देह,
वि० ६।५, १।३२ 5 विचारविनिमय, विचारविमल।

विनकय [वि+तर्क+त्युट्] 1 तर्क करना 2 अटकल
रचना, अन्दाज लगाना 3 मन्वेह 4 तर्क विनकं।

विनकि, की विनकिका (स्त्री०) [वि+तर्क+इन्
+कि]—कीचू, विनकि+कन्+टाप्। 1 आगत में
बना हुआ पीकोर चन्दरा 2 छम्भा, बरामदा।

विनकि, -की, विनकिका (स्त्री०) दे० विनकि अर्थात्।

विनयम् [विशेषण तन्म—आ०भ०] पृथ्वी के नीचे स्थित
मान लगे में से हुलंग—दे० पाताल या लोक।

विनयता (स्त्री०) संज्ञा की एक नदी जिसको मृतानी
...।।।।। कहते हैं तथा जो बाजकल 'श्रेष्ठ' या
'विनय' के नाम से विख्यात है।

विनयति [वि+तन्+ति] बारह अनुष की सम्पाई की
माप (हाथ को पूरा फैला कर अर्द्ध से कमो अनुष्ठी
तक की दूरी)।

विनय (वि०) [वि+तन्+च] 1 शाही, रीता 2 तार-
3 हुनोलाह, उदास—रघु० ५।८८ 4 बुद्ध, जड
5 दुष्ट, परित्यक्त क, सन् 1 फैलाना, प्रसार
करना, विस्तार करना—वि० १।१२८ 2 साधिवाना,
बदोश—विशुक्लेकाकनकसिंहरवीरवीरवितामं ममाश्रु
विश्रम० ५।१३, रघु० १५।३९, कि० ३।४२, वि०

३।५० 3 गद्दी 4 सग्रह, परिमाण, समवाय—कि०
१।७६१, मा० ६।५ 5 यज्ञ, आहुति—वितातप्येष्वेव
तव मम व सोमे विविग्मृत—वेणी० ६।३०, ३।१६,
वि० १।६।१० 6 यज्ञ की बंदी 7 अटु, मोसम, मन्
ब्रह्मकाय, विद्याम।

वितातकः, कम् [वितात+कन्] 1 प्रमाण 2 डेर,
परिणाम, सग्रह गति वि० ३।६ 3 प्राप्तिवाना,
बंदीवा 4 मास नायक वृत्त। -

वितीर्थ (पु० क० ह०) [वि+तु+कन्] 1 पार किया
हुआ, पास से गुजरा हुआ 2 दिया हुआ, अर्पित,
प्रदत्त वि० ७।६७, १।७६५ 3 नीचे गया हुआ,
अवनतित रघु० १।७७४ डोया गया 5 दमन किया
गया, जीत लिया गया (दे० वि पूर्वक तु)।

विनुकम् [वि०+तु+कन्] 1 'विनुककम्' नामक प्राक,
मुम्ना 2 दीवाल नाम का पीथा, सेवार।

विनुककम् [विनुक+कन्] 1 पनिया 2 तृणिया, क-
तामरुकी नामक पीथा।

विनुष्ट (पु० क० ह०) [वि+तुप्+कन्] असन्नुष्ट,
अप्रवर्ध, सन्नाप में शून्य।

विनुष्ण (वि०) [विनात नृणा यस्य प्रा० ब०] -दृच्छा से
मुक्त, सन्नुष्ट।

विष् [वृ०] उ०० विनयति ते, कुष्ठ के मतानुसार
वितापयति—ते भो) पुरस्कार देना, दान देना।

विष् (पु० क० ह०) [विट् लाभे+क्त्] 1 पाया, लीजा
2 लब्ध, ब्रह्मण ३ परीक्षित, अनुमति— विष्वात,
प्रसिद्ध, सन् 1 धन दीप्त जायदाव, संपत्ति, द्रव्य
2 दक्ति। मम० आराम,—उपार्जनम् धन का
अधिग्रहण,—ईश कृतेर का विशेषण, भग० १०।२३,
मनु ७।४, ३ दानो, दाता,—आजा संपत्ति।

विषत् (वि०) [विष्+तुप्] धनवान्, दीक्षितमद।

विषि (स्त्री०) [विट् क्तिन्] 1 ज्ञान 2 निष्पेय,
विशेषण, चिन्तन 3 त्याग, अधिग्रहण 4 सहायता।

विषाल [वि+अप्+पञ्] अय, लटका, प्रास या डर।

विस्तनः [विट्+विश्वेद, सन्+अच्] डेल, मोर।

विष् (व्या० आ०) वेष्टते) आर्षता करना, निषेध करना।

विष्कुरः [अप्+उरच्, सप्ततारण च] 1 राहस्य 2 चोर।

विष् (अदा० पर०) वेति या वेद, विहित, दृष्टा० वि-
दिष्टि) 1 जानना, समझना, सीखना, मात्स्य करना,
निष्कम्प करना, लीजना अकेलकणतोयस्य विष्वा
हसिगत कश्चु—मट्टि० ८।१०६, ४ मोहोश्च कश्चम
सन्नु वेत्तु देव पुराणम् वेणी० १।२३, ३।३९, मा०
५।२७, ब्रह्म० ४३५, १८।१ 2 महसुल करना,
अनुभव करना मुद्गा० ३।४ 3 मूह ताकना, सम्मान
करना, मानना, जाना, समझना विट्टि व्याधिभ्याल
बल लोक लोचकृत च समलम् मोह० ५, यय०

- २।१७, रघु० ३।२९, मनु० १।२३, कु० ६।३०, प्रेर०
 —(विद्ययति-से) 1 जतलाना, बुचना देना, सूचित
 करना, अवगत करना, बताना 2 अध्यापन
 करना, व्याख्या करना,—वेदाथर्वस्वानवेदयत्—सिद्धा०
 3 महसूस करना, अनुभव करना—मनु० १।२।२३,
 भा०—, (प्रेर०) 1 घोषणा करना, कहना, प्रकथन
 करना—किमिति नावेदयति अथवा किमावेदिते—
 वेणी० १, रघु० १।२।५५, कु० ६।२१, अट्टि० ३।४९
 2 प्रदर्शन करना, दिखाना इगित करना—आवेदयति
 प्रत्यासन्नमानवमप्रजातामि बुभानि निमित्तानि का०
 3 प्रस्तुत करना, देना, वि—, (प्रेर०) 1 बताना,
 समाचार देना, सूचित करना (सा० के साथ)—रघु०
 २।६८ 2 अपनी उपस्थिति की घोषणा करना—रूप
 नारमान निवेदयामि—भा० १ 3 इगित करना,
 दिखलाना—दियवरत्वेन निवेदित वयु—कु० ५।७२
 4 प्रस्तुत करना, उपस्थित होना, भेट भडाला—मनु०
 २।५१, पाञ्च० १।२७ 5 देश देश में तोपना, दे देना,
 प्रति—(प्रेर०) समाचार देना सूचित करना, सम्—,
 (भा०) जानना, सावधान होना—अट्टि० ५।३०
 ८।१७ 2 पहचानना, (प्रेर०) जतलाना, प्रत्यक्ष ज्ञान
 करना—अट्टि० १७।१३।
- 11 (विद्या० भा० विद्यते, वित्) होना, विद्यमान होना
 —अप्रापाना कुले जाते मांय पाप न विद्यते मूच्छ०
 १।३७, नासतो विद्यते मावो नाभावो विद्याय सन-
 भय० २।१६ (तु० 'व्यु') ।
- 111 (तुदा० उभ० विदति—ते, वित्) 1 हासिल करना
 प्राप्त करना, अवाप्त करना, उपलब्ध करना—एकम-
 प्यास्थित सम्पदुभयोविदते फलम्—मग० ५।४,
 पाञ्च० ३।१९२ 2 मासूम करना, खोजना, पहचानना,
 यथा वेदुमहस्रेयु वर्गो विदति मातरम्—सुभा०,
 कु० १।६, मनु० ८।२०९ 3 महसूस करना, अनुभव
 करना—रघु० १।४।५६, मग० ५।२१, १।१२४, १।८।
 ४५ 4. विवाह करना—मनु० १।६९, अनु०—, 1 हासिल
 करना, प्राप्त करना 2 भगतना, अनुभव करना,
 महसूस करना—प्राय मद्रथे कि वा सतापमनु विदति
 —भा० २।११२, गीत० ४ ।
- 1५ (रुधा० आ० विते, वित् या वित्त) 1 जानना,
 समझना 2 मानना, लिहाज करना, समझना—न
 नृवेत्तृति लोकोऽय विते मा नियमराक्रमम्—अट्टि०
 ६।३९ 3 मान्य करना, भेट होना 4 तक करना,
 विमर्द करना 5 परीक्षण करना, पूछनाछ करना ।
- १५ (बुधा० आ० विते) 1. कहना, प्रकथन करना,
 घोषणा करना, सावधान देना 2 महसूस करना, अनु-
 भव करना 3 रहना (निष्कालित लोको में बाहु के
 विभिन्न रूपों का उल्लेख है) वेति सर्वाणि शास्त्राणि

- मवंस्तस्य न विद्यते विते धर्मं सवा लङ्कितेषु
 पूषा च विदति ।।
- विद्य् (वि०) [विद् + क्तिप्] (समास के अन्त में) जानने
 वाला, जानकार, वेदविद् आदि, (पु०) 1 बुध्पह
 2. विद्वान् पुष्य, वृद्धिमान मनुष्य (स्त्री०) 1 ज्ञान
 2 समझ, बुद्धि ।
- विद्य [विद् + क] 1 विद्वान् पुष्य, वृद्धिमान मनुष्य,
 पहिजन 2 बुध्पह, वा 1 ज्ञान, अधिगम
 2 समझारी ।
- विद्यश् [वि + धृ + घञ्] चटपटा भोजन जिसके स्थान
 से प्यास अधिक लगे ।
- विद्यथ (पु० क० कृ०) [वि + दृ + क] 1. जला
 हुआ, आग से भस्म हुआ 2 पका हुआ 3 पका हुआ
 4 नष्ट किया हुआ, गला-भरा 5 चतुर, कुशाग्रबुद्धि,
 निपुण, सूक्ष्मदर्शी 6 धूर्त, कलाभिन्न, चतुराकारी
 7 अनजला या अल्पपना,—व्य० 1 वृद्धिमान या विद्वान्
 पुष्य, विद्याध्ययनी 2 स्वेच्छाचारी, —व्या नाजाल,
 चतुर स्त्री, कलाविद् स्त्री ।
- विद्यथ [विद् + क्तिप्] 1 विद्वान् पुष्य, विद्याध्ययनी
 2 श्यामी, मृनि ।
- विद्यर [वि + दृ + क्तिप्] तोड़ना, फटना, विदीर्ण होना
 —रथ् काटदारी नाद्यपाटी, कफारी वृक्ष ।
- विद्यर्षा (पु०, ब० व०) [विद्याना दर्शा कुशा यत्]
 1 एक जिले का नाम, आधुनिक बरार—अग्नि विद्यर्षा
 नाम जलपट—दश०, अग्नि विद्यर्षेयु पथपथ नाम
 नगरम् मा० १, रघु० ५।४०, ६०, वै० २।५०
 2 विद्यर्ष के निवासी, क्ते 1 विद्यर्ष वैश्या का राजा
 2 प्रुषी या मद्रर्षि । सम० आ, लजया,
 राक्षसया,—सुबुध् विद्यर्ष-राज की पुत्री दमयन्ती
 के विशेषण ।
- विद्यत् (वि०) [विषट्टितानि दत्तानि यय वि + क्त
 + क] 1 टुकड़े टुकड़े हुए, आरपार बीरा हुआ
 2 बुना हुआ, (फूट आदि) बिना हुआ, क 1
 विभक्त करना, अलग अलग करना 2 फाटना टुकड़े
 टुकड़े करना 3 टोटी 4 पहाड़ी आवनुम, लम् 1
 बीस की सपथियों की बनी टोकरी, या लकड़ी
 डालियों की बनी कम्प्यू 2 बनार की छाल 3 टहनो
 4 किसी द्रव्य की फोक ।
- विद्यत्तम् [वि + दृ + क्तिप्] अथ अथ करना, फट
 कर अलग अलग करना, काटना, विभक्त कर ।
- विद्यर [वि + दृ + घञ्] 1 फाड़ना, चीरना, लथ लथ
 करना 2 सघाम, युद्ध 3 (किसी नदी याद तापन
 १।) प्रप से बहना, जलप्रापन ।
- विद्यारकः [वि + दृ + क्तिप्] 1. फाड़ने वाला, घटने वाला
 2 नदी की धार के मध्य में स्थित वृक्ष वा बट्टल

(जो नदी के मार्ग को विनयन कर दे)

3 किसी नदीक नदी के पाट में पानी के लिए बनाया गया छिद्र ।

विदारणः [वि + दु + णिच् + ल्यट्] 1 नदी के मध्य में स्थित बट्टान या बूझ (जिसमें नाव बाँध दी जाय) 2 सगराम, युद्ध 3 कालिकार या कलियार का बूझ, या सगराम, युद्ध, बन्ध 1 फाटना, लखड लखड करना, चीरना, छिन्न करना, तोड़ना—शून्य सभे ध्वजविदारण बच—मुद्रा ० ५१६, युवजन्तुदर्याविदारणममिजनमठचिकिमुकराणे मीन ० १, किं १४। ५४, (यहाँ 'विदारण' विशेषण का कार्य करना है) 2 कट देना, मलान देना 3 बच, हत्या ।

विदाकः [वि + दु + णिच् + उ] छिपकली ।

विदित (भू० क० कृ०) [विद् + क्त] 1 ज्ञात, समझा हुआ मोला हुआ 2 मुक्ति 3 विद्वान्, विद्वान्, प्रसिद्ध युवनाविदिते बसे—मेघ० ६४ प्रतिज्ञान, इकरार किया हुआ, —तः विद्वान् पुण्य, विद्याभ्यसनी, —तम् ज्ञान, सुचना ।

विदिस् (स्त्री०) [विद्म्यो विगना] दो विपणों का मध्यवर्ती बिन्दु ।

विदिशा (स्त्री०) दशार्थ नामक प्रदेश की राजधानी (वर्तमान भेलमा नगर) तथा (दशार्थना) विद्व प्रविनविदिशाकलाशा राजधानी—मेघ० २४ 2 मायाका प्रदेश की एक नदी का नाम 3 = विदिस् २० ।

विदीर्ष (भू० क० कृ०) [वि + दु + क्त] 1 फाटा हुआ, लखड लखड किया हुआ, विदारण किया हुआ, फाट कर मोला हुआ 2 आना हुआ, फैलाया हुआ (दे० विदुर्षक 'दु') ।

विदु [विद् + कु] हाथी के गडबल का मध्य भाग, हाथी का ललाट, (रहसिबुधमध्यभाग) ।

विदुर (वि०) [विद् + क्तृत्] बुद्धिमान्, मनीषी, सः बुद्धिमान् वा विद्वान् पुण्य 2 बूने हाथकी, बहुवचन-कारी 3 पाण्डु के छोटे भाई का नाम (जब सत्यवती को ज्ञात हुआ कि ब्यास द्वारा उनकी दोनों पुत्रवधुओं में उत्पन्न दोनों पुत्र सारीरिक रूप से विद्वान् के बन्धोय हैं क्योंकि वृतराष्ट्र मन्त्रा वा तथा पण्डु वीला एव असत्यव वा—तो उसने उन्हें एक बार फिर ब्यास की सहायता मानने के लिए कहा । परन्तु ब्यास मृगि की तपोभय उच दृष्टि से भयभीत होकर बड़ी विचराने अपनी एक बाली को माने बन्ध पहना कर उनके पास भेजा और वही बाली विदुर की माता बनी । यह अपनी बड़ी बुद्धिमान् सचाई और धोर निष्कलता के कारण प्रसिद्ध है । यह पाठवर्ग से विशेष स्नेह रखते थे, तथा कई

बार उन्हें अनेक लक्ष्यस्त विपत्तियों से बचाया) ।

विदुषः [वि + दुष् + क्त] एक प्रकार का काथा, भेन 2 मोक्षान की तरह का एक उपनिषद् चरमन् ।

विदुषी (भू० क० कृ०) [वि + दु + क्त] कष्टप्रसन्न, सतन, दुःखी (दे० वि पूर्वक 'दु') ।

विदुर (वि०) [विशेषण दूर प्रा० सं०] जो बहुत दूर हो, दूरस्थित—सन्निहितुरातरधावतन्वी रघु० १३।४८, - रः पहाड का नाम जहाँ से वैशुपमणि निकलती है—विदुरभूमिनेवमेघसुब्बापुडुप्रया रत्नसालाकयव—कु० १।२४, द० इम पर तथा जि० ३।१५ पर मल्लि० विदुरम्, विदुरेण, विदुरताः, विदुरत् वाद्य किया विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुंकर 'दूर से' 'दूरी पर' 'दूर' अर्थ को प्रकट करते हैं । सम० न (वि०) दूर दूर तक फैला हुआ, —बन्धु वैदुर्य मणि ।

विदुष्यक (वि०) (स्त्री०—की) [विदुष्यमिन् म् पर वा—वि + दुष् + णिच् + क्तृत्] 1 दूषित करने वाला, मलिन करने वाला, झूठ फैलाने वाला, ध्रष्ट करने वाला 2 बदनाम करने वाला, माली-मालीक बकने वाला 3 रमिक, मत्सरा, ठिठालिया—कः 1 हनोड, भाड, परिहासक 2 विशेषण नाटक में नायक का विल्ली-बाज साथी और अन्तरंग मित्र जो अपनी अनोखी बेशर्मा बातचीत, हास्यभाव, मूकमुद्रा आदि से तथा अपने आपकी परिहास का पात्र बना कर उल्लास में बुद्धि करता है, सा० द० ७९ पर दीर्घ विदुष्याया कुमुदमसनाद्यभिष कर्मवपुषेजभाषाई, हास्यकर कलहुरनिर्विदुषकः स्यात्सकमेजः 3 स्नेहसाधारी, लपट ।

विदुष्यकम् [वि + दुष् + ल्यट्] 1 मन्त्रिीकरण, झूठ्याचार 2 दुष्चरन, झिडकी, परिवाद ।

विदुःशितः [वि + दु + क्लिन्] क्षोभन, मलिन ।

विदेश [विप्रकृष्टो देश प्रा० सं०] हुनरा देश, प्रदेश अथवा विदेशमधिकेन जितस्तदप्रदेशोपमया कुण्डन—जि० १।४८ । सम० - क (वि०) विदेशी, प्रदेशी ।

विदेशीक (वि०) [विदेश + क्त] प्रदेशी, विदेशी ।

विदेशः (पुं० व० व०) [विपतो देहो देहवधो मस्य—प्रा० सं०] एक देश का नाम, प्राचीन मियला (दे० परि० ३)—रघु० ११।३६, १०।३६ 2 इस देश के निवासी,—ह विदेश का शिला, —हा विदेश ।

विद्वन् (भू० क० कृ०) [व्यच् + क्त] 1 बौद्धा हुआ, पूजा हुआ, चायन, छरा मोका हुआ 2 पीटा हुआ, कथाज्ञत, बोधाहृत 3 कैका मया, निर्देहित, प्रेषित 4 विरोध किया गया 5 मिलना जुलना, —जन्म चाय । सम० - कर्ष (वि०) बिलकै काज छिदे हैं ।

विद्वान् [विद् + क्तृत् + टप्] 1 ज्ञान, समपन, विज्ञान, विद्वान्—(ता) विद्वान्मन्त्रनेमेघ प्रसाधिविमुर्द्धति

—रूप० १।८८, विद्या नाम नरस्य कर्मधिक प्रच्छन्न-
गुल मनम् भर्तुं० २।२०, (कुछ विद्वानों के मना-
नुसार विद्या चार है—आर्वाधिकी यथा वातां
इदानीन्दिष्य वाच्यती काम०, कि० २।६, इन चारों
में मनु० ७।४३ पाचवी विद्या—आत्मविद्या का
और चौदह देना है। परन्तु विद्या माधारणत चौदह
मानी जाती है—अर्थात् चार वेद, छ वेदान्त, धर्म,
मीमांसा, तर्क या न्याय, और पुराण—दे० चतुर
के तीसरे अनुदेश विद्या, तथा मी० १।६) २ यथाय
ज्ञान, अध्यात्म ज्ञान—उत्तर० ६।५, तु० अग्निशा
३ ज्ञातृ, मन्त्र ४ दुरादिषो ५ ऐन्द्रमालिक कुशलया ।
सम०—अनुपालिन—अनुलेखिन (वि०) ज्ञानादायन करने
वाला, आगम, —अज्ञसम्—अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करना,
विद्या ग्रहण करना, अध्ययन, अर्थे ज्ञान की प्राप्ति,
—अधिष्णु (वि०) छात्र, विद्याभ्यासना, शिक्षा—आत्मव्य-
विद्यात्म्य, महाविद्यालय, विद्यामन्दिर, उपार्जनम्
= विद्यार्जनम्, —कर्म विद्वान् पुराण, वष्य, वष्यु
(वि०) अपने ज्ञान एव शिक्षा के लिए प्रसिद्ध, देकों
सम्बन्धी देवी, —वनम् विद्याशाला दौलत, घर (स्त्री०
सू०) एक देव्याग्नि विमेष, अर्पदेवता,—प्राप्ति
—विद्यार्जन, लाभ । १ ज्ञान की प्राप्ति २ ज्ञान के
द्वारा प्राप्ति किया गया मत आदि, विहीन (वि०)
निरक्षर, अज्ञानी, —बुद्ध (वि०) ज्ञान में वडा हुआ,
विद्या में प्रवर्तिनीति, व्यवसयन, व्यवसाय ज्ञान
की प्राप्ति ।

विद्युत् (स्त्री०) [वितेयेण ज्ञानेन चि-वृत्त्+विष्यु] विद्युत्
विद्युत् वानाय गतिश्च विद्युत्—महा०, मय०
३८, १७५ २ वज्र । मय० उन्मेष विजली की
कोश, —विद्युत् एक प्रकार का जलन,—ज्वाला,—द्यौत
विजली की कोश या कति दामन् (ननु०) वज्र
गति में युक्त विजली की कोश या चमक, पाल
विजली को गिरना या प्रारण, प्रियम् तागा, —रुना,
लेखा (विद्युत्कला, विद्युत्-ना) १ विजली की कील
या सतर २ बकानिर्घोष या कुटिल विजली ।

विद्युत् (वि०) [विद्युत्-मपुर्] विजली में मुक्त
—मय० ६८, (पु०) वायु कृ० ६।० ।

विद्योतन (वि०) स्त्री० नी) [वि+वृत्+णिवृत्] १
प्रकाश करने वाला, बमकाने वाला २ मोटाहण
निरूपण करने वाला न्याय्य करने वाला ।

विद्यु [अयु+वृत्, दानदिस, मयप्रमाणम्] । फाड़ना,
वण्ड खण्ट करना, उड़ करना २ टगार, छिद्र,
विचर ।

विद्युधि [विद्यु+धि] पीपराज छोडा ।

विद्युच [वि+वृत्+अर्] १ मय ज्ञाना, उडान, प्रणयार्जन
२ आनक ३ प्रवाह ४ रिचलना, चलना ।

विद्युत (वि०) [वि+वृत्+अर्] नीद से जागा हुआ,
उदबुद्ध ।

विद्युत्कणम् [वि+वृत्+णिवृत्] १ भगाना, लदेकना,
होक कर हुए कर्ना, परास्त करना २ चलाना,
पिघालना ।

विद्युत् [विद्युत्कणम्] १ मृगे का वृक्ष (साय एव के मृक्य-
वान् मृगे (मार्गयो) का पैदा करने वाला) २ मृगा
प्रवाह तथापरम्पणम् विद्युत्कणम्—रूप० १३।१३
कु० १।८६ ३ कायल या किमलय । सम० सता
१ मृगे को शांता २ एक प्रकार का मधुद्वय,—सतिहा
'मलिका' नामक एक मधु द्वय ।

विद्युत् (वि०) [विद्युत्+वृत्] (कर्त्त०, ए० व०, पु०)
विद्वान्, स्त्री० विद्वयी, नपु० विद्वते) १ ज्ञानने
वाला (कर्म० के साथ) आनन्द ब्रह्मणा विद्वान्
न विवेचि कदाचन, तत्र विद्वानपि तापकारणम् रूप०
८।७६, कि० १।१३० २ बुद्धिमान्, विद्वान् (पु०)
विद्वान् मन्यथा वा बुद्धिमान् व्यक्त, विद्याभ्यासना
कि वस्तु विद्वान् गुरवे प्रदेयम् २पु०५।१८। मय०
कल्प, देशीय,—देश्य (वि०) विद्वत्कल्प, विद्व-
देशीय विद्वत्कल्प) पाडा पडा किया, कम विद्वान्
जन्त (विद्वग्जन) विद्वान् या बुद्धिमान् गुरव,
मृति ।

विद्युत् (पु०) विद्युत् [वि+विद्युत्+विष्यु क वा] मनु
दुग्धन—विद्युत्कणम् ननुव भर्तुं० २।७७ मय० ३।६०
याज० १।१६० ।

विद्युत् (पु० क० कृ०) [वि+विद्युत्+क] यथाय
अनीयित कुंमन ।

विद्युत् [वि+विद्युत्+क] १ वस्तुतः पूजा, कुमा
मन० ८।६८ २ निरस्करणीय धमण्ड, गहो (मान
हानि)—विद्युत्प्राग्भित्तप्राप्त्याश्चि तवैश्वानर—भायन ।

विद्युत् [वि+विद्युत्+क] १ पूजा करने वाला
पुरु, श्री रायपुर्ण स्वभाव की स्त्री, कम् पूजा
और अर्चना देना करना २ अर्चना, पूजा ।

विद्युत्, **विद्युत्** (वि०) [विद्युत्+णिवृत्, नृच वा]
पूजा करने वाला, धनदायुर्ण (पु०) पुणक, मय ।

विद्युत् (पु०) १ विद्युत् २ विद्युत् ३ विद्युत् ४ विद्युत्
२ सम्मान करना, पूजा करना ३ राज्य करना
ध्यान करना, प्रशामन करना ।

विद्युत् [विद्युत्+क] १ प्रकार, किम्प यथा बर्तव्य
तानाविद्युत् में २ दान, नीति, रूप ३ तह (ममान ४
अन में, विमेष कर प्रको के पचवान) विद्युत्
अर्थविद्युत् आदि ४ हाथियों का आहार . मय० ६
६ छेपे करना ।

विद्युत्कणम् [वि+वृत्+णिवृत्] १ द्विजाना, विद्युत्कणम्
२ चर्याहार, कपकपी ।

विषया [विद्यतो वयो यस्या मा] रात्र, वेदा सा नारी
विषया जाता गृहे रोजिनि सत्यति सुभा० । सम०
—आवेद्यम् वेदा स्त्री मे विवाह करना, साम्नि
जो विवाह स्त्री मे सम्पादन करना है ।

विषयम् [वि + धृ + ध्वत्] बरघराहट, विज्ञान ।

विषय (पु०) सर्वं सृष्टि का उत्पादक ब्रह्मा ।

विद्या [वि + धा + क्तिष्] 1 इय, रीति, रूप 2 प्रकार,
किम्ब 3 समृद्धि, सम्पत्ता 4 श्रावो पाठो का चारा,
साध पदार्थ 5 छेद करना 6 क्रियावा, मजदूरी ।

विद्याम् (पु०) [वि + धा + क्तिष्] 1 निर्माणा, स्रष्टा
—कु० ७३६२ स्रष्टा, ब्रह्मा—विद्याता भद्र नो
विततु मनीशाय विद्ये—मा० ६१७, रघु० १३२५,
६११, ७३५ 3 अनुदाता, दाता, प्रदाता—कु०
१५३ 4 भाग्य, देव—हि० ११५० 5 विषयकर्मो
6 कामदेव 7 मदिरा । सम० आयुष् (पु०)
1 सृष्टि की चमक, रूप 2 सृज्यमूर्त्तौ कूल,—भू-
नाद का विशेषण ।

विद्यान् [वि + धा + ल्यट्] 1 कम मे रचना, व्यवस्था
करना 2 अनुष्ठान, निर्माण, करण,—कार्यन्वयनेपथ्य-
विद्यान्म् स० १, आशा १ यज्ञ ३ सृष्टि,
रचना रघु० ६११, ७३५, कु० ७६६ ५ नियो-
जन, उपयोग, प्रयास प्रतिकारविद्यान्म् रघु०
८१० 5 नियम करना, शिक्षण करना, आदेश देना
6 नियम, उपदेश, अध्यादेश, धार्मिक नियम या
विधि, निवेद्य—मनु० १११४८, मन० १६१४
१७३५ 7 इय, रीति 8 साधन या मन्त्रीक
9 हाथियों का आहार (जो उन्हें मदीनमन करने के
लिए दिया जाता है) विद्यानस्यवितदानमोर्धने
का० (यहाँ विद्यान का अर्थ नियम भी है)
नि० ५१५ १० धन डौलत 11 पीडा, वेदना,
मनाप, दुःख 12 मनुना का कार्य । सम० म., म
वृद्धयाम् या विद्यान् पुरुष युक्त (वि०) वेदविधि
के अनुभव, या अनुकूल ।

विद्यानकम् [विद्यान् + कम्] दुःख, कष्ट, पीडा ।

विद्यायक (वि०) (स्त्री०—विद्या) [वि + धा + ध्वत्]

1 अमरबद्ध करने वाला, अक्षरस्थान करने वाला
2 बनाने वाला, निर्माण करने वाला, सम्पन्न करने
वाला, कार्यान्वित करने वाला 3 रचना करने वाला
4 अक्षरस्थान करने वाला, शिक्षण करने वाला,
निर्माण करने वाला 5 अर्पण करने वाला, सौंपने
वाला, (किसी की देव देव में) हुवाले करने वाला ।

विधि [वि + धा + क्ति] 1 करना, अनुष्ठान, अभ्यास
रूप, कर्म ब्रह्मध्यानात्मसवविधिका धामनिशा मन्त्र
मनु० ३१४१, योगविधि रघु० ८१२०, लखा-
विधि—मा० ११५२ प्रजापती, रीति, पद्धति, साधन,
११८

इय पञ्च० १३७६ 3 नियम, समादेश, कोई विधि
जो करने किसी बात को लागू करती है (यह 'विधि'
शब्द नियम और परिणामों से मिले हैं) विधिबन्ध-
तमप्राप्ती ' वेद विधि या नियम, अध्यादेश, निवेद्य,
कानन, वेदाशा धार्मिक समादेश (विप० 'अर्थवाद'
अर्थात् व्याख्यापरक उक्ति जिसमें आख्याय और
वृत्तान्तों का चित्रण हो दे० अर्थवाद) श्रद्धा विन
विधिश्चेति नियम नममागतम् मा० ७३२९, रघु०
२१६५ कोई धार्मिक कृत या संस्कार, धार्मिक
रथ, संस्कार—म चेत् स्वय कर्मसु धर्मचारिणा
त्वमतरायो भवति ध्युतो विधि—रघु० ११५५,
१३५ 6 व्यवहार, आचरण 7 दगा विक्रम० ५
8 रचना, बनावट सामर्थ्यविधी कु० ३२८,
कल्याणी विधिषु विचिन्ता विद्यान् कि० ७७
9 सृष्टा 10 भाग्य, देव, किम्बत विधी कामारमे
मय समृद्धिर्था परिचति मा० ५१५ 11 हाथियों
का साध पदार्थ 12 काल 13 डाक्टर, वैद्य 14
विष्णु । सम० म (वि०) कर्मकाण्ड का शाखा
(म) कर्मकाण्ड में निष्ठात ब्राह्मण, कर्मकाण्डी,
बुद्ध बहिलि (वि०) नियत, विहित, इष्टम्
नियमों की विधिबद्धता, विधि या समादेश की विधि-
नन्ता, पूर्णव्यम् (अर्थ०) नियमानुकूल, प्रबोध-
नियम का व्यवहार, बोध-भाष्य का श्ल या प्रमाण,
कम् (स्त्री०) मरत्यती का विशेषण, हीन
(वि०) नियम शून्य, अनधिकृत, अनियमित ।

विधित्वा [वि + धा + तन + प्र + टाप्] 1 सम्पन्न
करने को इच्छा 2 आयोजन, प्रबोजन इच्छा ।

विधित्सित (वि०) [वि + धा + त् + क्त] किये जाने
के लिये अभियेन, तम् इरादा, अभिप्राय, आयो-
जन ।

विष्णुः [व्यष् + कु] 1 चन्द्रमा, सविता विषवति
विष्णुरपि सवितरति दिनति यामिन्य काव्य० १०
2 कुर 3 पिशाच, दानव 4 वायुपिचलपरक बाहुति
5 विष्णु का नाम 6 ब्रह्मा । सम० अर्थः चन्द्रमा
की कलाओं का ह्रास, इष्टन पक्ष का समय, एकर
(विबर नी) मज्ज, कटार, शिवा राक्षसी
नक्षत्र ।

विष्णुत दे० 'विष्णुत' ।

विष्णुतिः (स्त्री०) [वि + धृ + क्तिष्] हिलना, सधाम,
बरघराहट वेताव्यपिचर वो वदनाधुयत पातु
की १७५५ मा० १११ ।

विष्णुमन् [वि + धृ + क्तिष् + ल्यट्, नृट्, पथो० ह्रन्]
1 हिलना, प्रमत्ता, विक्षुब्ध होना 2 कर्णवी पर-
बराहट ।

विष्णुमुखाः [१५५ तुपति पीडयति- विष्णु + तुट् + ल्यट्,

भम्] रङ्ग - विभूषित विप्लव दतदलनमालितामृत-
वारम् यौत ४, नं० ४०४१, सि० २१६१ ।

विधुर (वि०) [विनाश घृ. कार्यभारो यस्मात् प्रा०
ब०] 1 दुःखी, विरक्षस्त, कष्टबल, शोककुल,
दयवीर्य—मा० २३, ११११, उत्तर० ३१८, १५११,
कि० १११२६ 2 जिससे प्रेम करने वाला कोई न
रहा हो, शोकप्रस्त, पत्नी या पति की विरहबधा में
व्याकुल—मयि च विधुरे भाव काला प्रवृत्तिपराश-
मुख—विक्रम० ४१२, विधुरा ज्वलनानिसर्जनात्
मा प्रापय पत्सुरनिक्म्—कु० ४१२२, सि० ६१२९, १२।
८ 3 बुद्ध, वञ्चन, विरहित, मुक्त—मा वै कलक-
विधुरो मधुगननधी—भासि० २१५ 4 बिराधी,
बैरी, शत्रु—पद्य० २१८१, र-रदुवा-रम् 1 लटका,
भय, चिन्ता 2 पति या पत्नी से विभोग, पेमो या
प्रेमिका द्वारा शोककुलना ।

विधुरा [विधुर+टाप्] वही जिसमें बीनी व ममाले डाले
हुए हो ।

विधुवनम् [वि+घृ+स्यट्, कुटादिवात् साधु] हिमना,
बरबरी, कपकपी ।

विधुत (भू० क० कू०) [वि+घृ+क्त] 1 झिला हुआ,
उपलभ्युक्त हुआ, नरमित 2 परशरणा हुआ 3 उवडा
हुआ, भिटाया हुआ, हटाया हुआ 4 अस्थिर 5 परि-
त्यक्त,—सम् विरक्ति, अर्थवि ।

विधुति (स्त्री०) विधुवनम् [वि+घृ+क्तिन्, वि+घृ
+णिच्+स्यट्, नृङ्] हिमता, बरबरी, कपकपी
विशेष ।

विधुत (भू० क० कू०) [वि+घृ+क्त] 1 पकड़ा हुआ
बाधा हुआ, ग्रहण किया हुआ 2 विभुक्त, अलग-अलग
रखा गया 3 धारण किया गया, कब्जे में किया
गया 4 रोका गया, नियन्त्रित किया गया 5 सगर
दिया गया, प्ररमित, मरमिण (दे० वि पूर्वक घृ)—सम्
1 आदेश की अवहेलना 2 अयलोच ।

विधेय (स० कू०) [वि+धा+यच्] 1 किये जाने के
योग्य, अनुष्ठेय 2 विहित या नियत किये जाने के
योग्य 3 (क) आश्रित, निर्भर अथ विधिबिधेय
परिचय—भा० २११३ (ख) अधीन, प्रभावित निय-
न्त्रित, दमन किया गया, पराजित किया गया (शाय-
समाप्त में) निद्राविधेय नरदेवमन्यम् २५० ७१६२,
समाध्यमानस्येहृत्वेनाभिसंधिना विधेयीहृत्प्रति मा०
१, भा० २१६४, मूला० ३११, सि० ३१२०, रघु०
११५४ 4 आकाशकारी, आत्मवीर्य, अनुत्तरी, वन्द्य,—
अविधेयैश्चि यसा गौरिचैति विधेयताम्—कि० ११।
३३ 5. (स्त्री०) विधेय—(कठों के सबंध, कही
गई बात) होने के योग्य-अथ मिय्याप्रहितम्
नानुवाच अथि तु विधेयम्—काव्य ७, यम् 1. जो

किया जाना चाहिए, कर्तव्य,—कि० १६१२२ 2 प्रतिज्ञा
या प्रत्यापना की उक्ति, व सेवक, भूष्य । सम०
अविधेय रचनासवकी दीप जिससे विधेय आश्रित
नियति का हो याच या उसका अर्थ कायम किया
जाय—अविभूत प्राधाम्येनानिदितो विधेयांशो यथ
—काव्य० ७, उदा० उय स्यात पर देवो, आत्मन्
(तु०) विष्णु, ज्ञ (वि०) जो अपना कर्तव्य जानना
है—पद्य० ११३३७, यम् 1. सम्पन्न किया जाने
वाला उद्देश्य 2 कर्ता के सबंध में कही गई उक्ति
विधेय ।

विधुतः [वि+घृन् + घञ्] 1 बरबादी, विनाश
2 शून्यता, अर्थवि, नागम्यगो 3 अभाव, अपराध ।

विधुवसिन् (वि०) [वि+घृन्+सिन्] वनाद जाने
वाला, टुकड़े टुकड़े हो जाने वाला ।

विधुस्त (भू० क० कू०) [वि+घृन्+क्त] 1 बरबाद
हुआ, विनष्ट 2 इधर उधर बिभेगा हुआ छिनराया
हुआ 3 अस्पष्ट, घुघला 4 प्रहलययल ।

विधुत (भू० क० कू०) [वि+नम्+क्त] 1 झुका हुआ
नवा हुआ 2 अवनत हुआ, लटका हुआ, झुका हुआ
ग० ३१११ 3 डूबा हुआ, अवलतन 4 झुका हुआ,
कुटिल, बक 5 विनीत, सिष्ट (दे० वि पूर्वक नम्) ।

विधुता [विधुत+टाप्] 1 अलग और गड़बड़ की माना या
कटाप की पथ पत्नी थी—दे० महाभ 2 एक प्रकार
की टांकनी । सम०—नवम्, मुल, सुम् नमर या
अलग के विग्रहण ।

विधुति (स्त्री०) [वि+नम्+क्तिन्] 1 नमना, झुक्ना,
नीचे की होना 2 विनय, विनयता 3 प्रार्थना ।

विधुव [वि+नम्+अच्] 1 ध्वनि, कासाहल 2 एक
बुल का नाम ।

विधुवनम् [वि+नम्+स्यट्] झुकना, नमना, मिर और
कचे झुका कर चलना ।

विधुव (वि०) [वि+नम्+र] 1 झुका हुआ, झुक कर
चलना हुआ कि० ४१३ 2 अवलतन, डूबा हुआ
3 विनयशील, विनीत ।

विधुवकम् [विधुव+क्त] 'सगर' बुल का फूल ।

विधुय (वि०) [वि+नी+अच्] 1 हावा हुआ, फेंका
हुआ 2 गुप्त 3 अशिष्टाचारी, क 1 विद्वेष, अनु-
तामन, अनुदेश (अपने कर्तव्योपे में) नैतिक प्रशिक्षण
—रघु० ११०४, मा० १०१५ 2 औषधिव, शिष्टाचार
सुधीलता—भा० ११२९ 3 सिष्ट आचार्य, मज्जना-
चिन व्यवहार, सत्परिच, अक्का चलन—रघु० ६७७,
मा० १११८ 4 शाकीलता, विनयता—मुद्गु शास्त्र
आर्यसुत्र गतेन विनयशाहारम्येन—उत्तर० १, विदो
दवायि विनयम्, तथापि नीचैर्विनयवस्तुयम् २५०
१३२४, १०७१, (यहाँ मलिक) 'विनय' शब्द का

अर्थ 'हृदयवर्ध' बतलाता है जो हमारे मतानुसार ब्रह्मावधारक है) 3 यज्ञा, विष्टता, संज्ञाय 6 सदा-चरण 7 शीघ्र लेना, दूर करना, हटाना—वि० १०। ८२ 8 विजयें अर्पनी इन्द्रियो को बध में कर लिया है जिन्दिग्रय 9 व्यापारी, भौदायर। सम०—अवकल (वि०) झुका हुआ, विनम्र, ह्राहिन् (वि०) शासनीय, आशाकारी अनुवर्ती,—वाष् (वि०) मुहुभाषी, मिलनसार,—स्थ (वि०) विनयशील, शानी।

विजयन्म् (वि० + नी + स्मृट्) 1 हटना, दूर करना—वेय० ५२ 2 विद्या, शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुशासन।

विजयन्म् [वि + नञ् + स्मृट्] नाश, हानि, विनाश, लोप,—क उस स्थान का नाम बढ़ो नरस्वनी नदी देत में मूछ हो गई है—तु० यन्० २०११।

विजय (भू० क० कृ०) [वि + नञ् + क्त] 1 ध्वस्त, उच्छिन्न, बर्बाद 2 भासन, लज 3 विगटा हुआ, अष्ट।

विजय (वि०) (स्त्री०—ता,—सौ) [विजाना नामिका यन्त्र, नामिकाग्रन्थ नमादेश] विना नाक का, नाकर्गहत—प्रट्टि० ५१८।

विना (अथा०) [वि + ना] बगैर, विनाय (कर्म०, करण० वा ज्ञा० के साथ) यथा तान विना राशी यथा मान विना नय, यथा दाय विना हस्ती तथा ज्ञान विना गति भासि० ११११६, परैविना मरा भानि सद अजन्तविना, कट्टुबनैविना काय्य मानस विषये-विना ११११६, विना बाह्वन्तस्मिन् विना मवनास मुद्रा०७, वि० २१९, (विना कृ छोडना, एश्व्याय करना, विरहित करना, बहिष्कृत करना—अर्ध-नेन विनाकृता गति कु० ८०१, काय मे विरहित) : सम०—उचित (स्त्री०) एक अलकार जिसमें विना काश्य की दृष्टि म मुन्दर डग से प्रयुक्त होता है,—विनायंमन्त्र एव विनाफिन्—रत्न०, २०, काश्य० १० भी।

विनादि, विनादिका [विना नादि नादिका का गया] नमय का एक भाग जा षो को माठवें भाग में बराबर टानी २, एक पल या चौबीस सेंकड।

विनायक, [विशिष्टो नायक प्रा० म०] 1 (बापाओ के) जगने वाला 2 मणेश 3 बृद्ध धर्म का देवकृप अध्यापक 4 गहड 5 रुकावट, अडचन।

विनाश [वि + नञ् + क्त] 1 ध्वस्त, बर्बादी, भारी गति, घब 2 हटाना। सम०—अन्वक (वि०) नष्ट होने वाला, मग्ने के लिए तैयार, कर्मन्, बलिन् (वि०) लीन होने वाला, नष्ट होने वाला, लज्जामयुर विषयेषु विनाशपर्यन्तु विदिवश्वेन्द्विनि स्मृहाड मन् २५० ८१०।

विनाशन्म् [वि + नञ् + क्त + स्मृट्] विनाश, बर्बादी, अन्वयन्,—क विनाशक, विनाशकर्ता।

विनाहः [वि + नह् + घञ्] घुर्र के मूह का उकना। तु० बीनाह।

विनिक्षेप, [वि + नि + क्षिप् + घञ्] फेंक देना, भेज देना।

विनिष्णुः [वि + नि + ष्णु + अच्] 1 निवृत्तन करना, धमन करना, बध में करना मग० १३१७, १३१६, यन्० ११२६३ 2 पारस्परिक विरोध वा अर्थान्तर-न्यास।

विनिह (वि०) [विगता विहा यस्य—प्रा० व०] 1 निहा-रहित, जगा हुआ (आत्म० संभो) रघु० ५१६५ 2 मुकूलित, झूला हुआ, मिला हुआ, फूला हुआ—विनिहमदाररबाक्यागुली कु० ५१८०।

विनिपात [वि + नि + पत् + घञ्] 1 अथ पतन, गिराव 2 भारी अवपात, कष्ट, बुराई, हानि, बर्बादी, विनाश—विशेषधटाना भवति विनिपात पतमनः—यत्० २१० (यहा यह 'प्रथम अर्थ' भी प्रकट करना है) कि० २१३४ 3 शय, मृत्यु 1 नरक, नारकीय यन्त्रणा—ल० ५ 5 घटना, घटित होना 6 पीडा, दुःख 7 अनादर।

विनिमय, [वि + नि + मो + अच्] 1 बदला-बदली, वस्तु के बदले वस्तु का लेन-देन—काय विनिमयेन—माकवि० १, मपरिनिमयेनेभो दधनुर्भुवनवदयम्—रघु० ११२६ 2 न्यास, बरोहर, अमानत।

विनिमेषः [वि + नि + मिष् + घञ्] (आवों का) झपकना।

विनिमित्त (भू० क० कृ०) [वि + नि + यत् + क्त] निय-जित, रोका गया, प्रतिबद्ध, विनिमित्त—यथा विनि-यनाहार तथा विनियतवाष् आदि य।

विनियमः [वि + नि + यत् + अच्] नियन्त्रण, प्रतिबन्ध, रोक।

विनियन्त (भू० क० कृ०) [वि + नि + यत् + क्त] 1 अलप किया हुआ, डीला, विच्छिन्न 2 अलपत्त, नियन्त 3. ब्यबहुत 4. समाधिष्ट, विहित।

विनियोगः [वि + नि + यत् + घञ्] 1. अलप होना, बुझा होना, विच्छिन्न होना 2 छोडना, त्यागना, लिलाञ्जलि देना 3 काम में लगाना, उपयोग, प्रयोग, नियन्त्रण—बभूव विनियोग साधनीवेतु वस्तुषु रघु० १७१६७, प्राणायामे विनियोग 4 किसी कर्मन्ध पर लगाना, कार्याधिकार, कार्यभार—विनियोग-प्रनाश हि किकरा प्रमविष्णुषु—कु० ६१२२ 5 उका-वट, अडचन।

विनिर्धयः [वि + निर् + धि + अच्] पूर्ण विजय।

विनिर्धयः [वि + निर् + धि + अच्] 1 पूर्ण रूप से निव-दारा या निर्णय, पूरा फैसला 2 निरन्धय 3 निमित्त निमित्त।

विनिर्धयः [वि + नि + र् + धि + घञ्] आहूत, बुद्धता।

विनिर्णित (भू० क० कृ०) [वि + निर् + मा + क्त]
1 बनाया हुआ, निर्माण किया हुआ 2 बना हुआ, रचा हुआ ।

विनिवृत्त (भू० क० कृ०) [वि + नि + वृत् + क्त]
1 लौटा हुआ, वापिस आया हुआ 2 छूटा हुआ, घमा हुआ, एका हुआ 3 (मेवा) मुक्त, फारिग ।

विनिवृत्ति (स्त्री०) [वि + नि + वृत् + क्त] 1 विद्यालय, स्कूल, हटाना - शकाम्बसुयादिनिवृत्तये - २५० ६१४
2 अन्त, अवसान, समाप्ति ।

विनिश्चयः [वि + निश् + चि + अच्] 1 स्थिर करना, तय करना, निश्चय करना 2 फैसला, एका निश्चय ।

विनिश्चयात् [वि + नि + चय + अच्] कठिनाई से साम लेना, आह भरना, आह, गहरी साँस ।

विनिश्चये [वि + निश् + चि + अच्] बुर चुर करना, कुचलना, पीस शकना ।

विनिश्चित (भू० क० कृ०) [वि + नि + चि + क्त] 1 आहत, धासल 2 मार डाला हुआ 3 पूरा तरह पराम्त किया हुआ, - ल. 1 कोई बड़ा वा अनिवाय सभट, जैसे कि भाय-दीप से या देवात् आपद्वस्त होना 2 अपचमुक्त, घुमकेतु ।

विनीत (भू० क० कृ०) [वि + नी + क्त] 1 हार के जाया गया, हटाया हुआ 2 सुप्रशिक्षित, अनुशासित 3 अक्षुब्ध, आचरणशील 4 सुशील, विनम्र, विनीत, सौम्य 5 सिद्ध, शांति, सौख्यपूर्ण 6 प्रेषित, निर्वाजित 7 पालतू, सचाया गया 8 शोभा, सरल (वेशभूषा आदि) 9 आत्म सबधो, जितेन्द्रिय 10 सजा प्राप्त, दक्षि 11 शासनीय, शासन किये जाने के योग्य 12 प्रिय मनोहर (दे० वि पूर्वक नी), ल. 1 सचाया हुआ पोडा 2 व्यापारी ।

विनीतकम् [विनीत + कम्] 1 गाड़ी, सवारी (शोली आदि 2 के जाने वाला, वाहक ।

विनेतु (पुं०) [वि + नी + तुन्] 1 नेता, पथ प्रदर्शक 2 अध्यापक, शिक्षक २५० ८११ 3 राजा, शासक 4 सजा देने वाला, दण्ड देने वाला अथ विनेता दृष्टान्तम् - महावी० ३१२६, ४११, २५० ६१३९, ४१२३३ ।

विनीतः [वि + नृत् + अच्] 1 हटाना, हुर करना - अम विनीत 2 मनोरञ्जन, दिल बहलाने, कोई भी रोचक या रञ्जकारी व्यवसाय प्रायःपतै रमणबिरहद्वयगानां विनीता मेघ० ८७, शं० २१५ 3 खेल, शोभा, आनन्द-प्रमोद 4 उत्कृष्टता, उत्कृष्टता 5 आनन्द, प्रसन्नता, परिपूर्ण - विलयविनीतोद्य-बुलम् - उत्तर० ३१३०, जनयतु रसिकजनैश्च मनाम-रतिरसनामविनीदम् गीत० १२ 6 एक प्रकार का रतिवध ।

विनीतवन् [वि + नृत् + अच्] 1 हटाना 2 मनोरञ्जन आदि - दे० विनीत ।

विन्दु (वि०) [विद् + उ, तुनामन्] 1 मनीषी, बुद्धिमान् 2 उदार, - - हुः पूर्व, दे० 'विन्दु' ।

विन्ध्य [विदपानि कराति अयम्] एक पर्वत श्रेणी जो उत्तर भारत का दक्षिण से पृथक् करती है, यह सान कुन पर्वतो मे म एक है, यह मध्यदेश की दक्षिणी सीमा है, दे० मनु० २।२१, (एक उपाख्यान के अनुसार विन्ध्य पर्वत को मेघ पर्वत हिमालय पहाड़) म डेरयां हुई । अतः उसने सूर्य मे माय की कि तिम प्रकार वह मर के चारो ओर घूमता है, उस प्रकार जमे विन्ध्य के चारो ओर घुमना चाहिए, सूर्य में विन्ध्य पर्वत की शीघ टुकरा दी । फलतः विन्ध्य पर्वत ने ऊपर को उठना आरम्भ किया जिसमे कि सूर्य और चन्द्रमा का मार्ग रोका जा सके । देवताओं में आनक उस गया, उन्होंने अगस्त्य मुनि से महायज्ञा मागी । अगस्त्य विन्ध्य पर्वत के पास गया और उसमे निवेदन किया कि जरा नीचे झुक जाओ जिससे कि मुझे दक्षिण में जाने का मार्ग मिले, और जब तक मैं वापिस न आऊँ, इसी प्रकार झुके रहा । विन्ध्य पर्वत ने इस बात का मान लिया (क्योंकि एक कर्म के अनुसार अगस्त्य मुनि विन्ध्य पर्वत का मुक्त माना जाता है) परन्तु अगस्त्य फिर दक्षिण से वापिस न लौगा, और विन्ध्य को मेघ जैसी उत्पलना न मिल सके । 2 शिकारी । मम०-अवधी, विन्ध्य महावन, - कटः कटनम् अगस्त्य ऋषि के विशेषण वासिन्तु पुत्रोपाकरण व्याधि का विशेषण, (की दुतां का विशेषण ।

विष (भू० क० कृ०) [विद् + क्त] 1 ज्ञान 2 हासिन, पाप्न 3 विचार विमर्श किया हुआ, अनुमति 4 रक्षा हुआ, निर किया हुआ 5 विवाहित (दे० विद्) ।

विषक [विन् + क्त] अगस्त्य का नाम ।

विष्यत्स (भू० क० कृ०) [वि + नि + अच् + क्त] 1 रक्षा हुआ वाला हुआ 2 बड़ा हुआ, फर्मा जमाया हुआ वा मरजा सचाया हुआ 3 स्थिर 4 कबड 5 समाप्त 6 उपस्थित किया गया, प्रस्तुत 7 उमा किया हुआ निश्चित ।

विष्याम [वि + य्त् + अच्] 1 शौचमा, जमा करना 2 धरोहर 3. कमपूर्वक रचना, समजन, निपटार, अक्षरविष्यात् अक्षर उक्तोर्ण करना - अक्षररस्तेषाम् - प्रबन्धविष्यात्सर्वैर्ग्यनिश्चि - बाह०, किसी धन्य की रचना 4 सच सचाया 6 स्थान, आधार ।

विषिस्तु (वि०) [वि + ष्त् + क्तु + अच्] 1 पूर्ण रूप न पका हुआ, परिपक्व 2 विकसित, (पूर्वद्वयो के परिणाम स्वक्य) पूर्णता को प्राप्त ।

विषय (वि + पच् + क्त) 1 पूर्वकृत् से बना हुआ, परि-
पत्र 2 विकसित, पूर्ण अवस्था का प्राप्ति कि०
६।१६३ पकाना हुआ ।

विषय (वि०) | विकट पक्षी यस्य प्रा० ब० | बेंगी,
गुजरापुर, प्रतिफल, विकट, कि० 1 मनु, विरोधी,
प्रतिरोधी - रघु० १०।७५, सा० ११।५९ 2 वह
जाने प्रियकी तुलना के साथ प्रतिद्विष्टता पक्ष नहीं
हा - रघु० १०।२० 3 जगद्गुरु कि० १।७।४३
+ (नकं मे) नकारात्मक दुष्टाल, विपक्षियों की आर
म दिया गया दुष्टाल (अर्थान् बहु पक्ष जिसमें साध्य
नो अभाव ही), निविचलनाप्याभाववान् विपक्ष
- नकं०, मुद्रा० ५।१० ।

विषयक, **विषयी** | विषयः क्व; टाप् | 1 चीना
2, वेले, श्रीग, प्रवीरजन ।

विषय, **विषयकम्** | वि + पच् + क्त, स्यट वा | 1 विक्री
मनु० ३।१५२ 2 छाटा व्यापार ।

विषयि, **शी** (स्त्री०) | विषय् + इत्, विगणि; शीष्
+ बाह्य + प्रथमी, हाट, - हा हा नवयति भन्मधस्य
विगणि वीषागणभाक्त्वर पञ्च० ८।३८, सि०
५।२४ २क० १०१ 2 विक्री के लिए रखना हुआ
जड़ सामान राशिक्रय, व्यापार-मनु० १०।११६।
विषयिन (पु०) | विगणि इति व्यापारी, सौदागर,
दुकानदार कि० ५।४५ ।

विषयि (स्त्री०) | वि + पच् + क्तान् | 1 मकट दुर्भाग्य,
अन्ये प्राग्ग्यात, आकल मगनी च विरतो च
५। मकटकाला मुद्रा० 2 मनु, विनाश अनि
नववर्तना कर्षणाभाविनेभर्षान् हृदयदात्री शन्य-
प्या विपाक - मनु० २।९९, रघु० ११।५९, वेणी०
१।५, मिमलेकविर्षान् नृलिनी रघु० ८।१५ 3 वेदना,
याता सि (पु०) श्रेष्ठ पराति, पैरल-विपाही -
वि० १५।१६ ।

विषय | विकट पन्था - प्रा० ब० | धरी सहक कुमारी ।
(प्रा० नया आल०) ।

विषय (स्त्री०) | वि + पच् + क्विच् | 1 मकट, दुर्भाग्य,
आशा, दुःख तरबनिकपराधा नु सेवा (विधाणा)
विर हि० १।२१० 2 मनु, मिहादवापद्विपद
ममत्, रघु० १८।३५। मम०-उद्धरन्ध-उद्धार,
मसीजन से राहत, विरति से मुक्ति, कालः अख-
दकता का समय, सकट-काल, मसीजन, दुःख
(वि०) अभावा, दुःखी ।

विषया - वै० 'विषय' ।

विषय (पु० क० कृ०) | विरय - क्त | 1 मरा हुआ
2 मूल मट 1 अभावा, कटपल, दुःखी, मसीजन-
दा 4 शीष् 5 अयोग्य, अक्षय (वै० वि पूर्वक
पच्) - अः शीष् ।

विपरिचयनम्, **विपरिचयः** | वि + परि + मन् + ल्यट्,
घञ्, वा | 1. परिचयन, बदलना 2. अन्वयिचयन,
रूपान्तरण ।

विपरिचयस्य | वि + परि + क्त + स्यट् | इवर उषर मृदना,
सकृत्कना ।

विपरीत (वि०) | वि + परि + इ + क्त | 1. प्रतिवर्तित
विरास्यन् 2. प्रतिकूल विरोध, प्रतिवर्ती, औघा-रघु०
२।५३ 3. अमृष्ट, विषयविकट 4 विप्या, अमय
-भाषि० २।१७७ 5. अननुकूल उन्मटा 6 अण्यन्,
उन्मटे इग से अभिपय करने वाधा 7 अर्चिचर,
अवृष, स एक रतिवच, सा 1 दुर्बचिग्रा अमनी
पत्नी 2 पुत्रपत्नी स्त्री। मम० कर-कारक-कारिन्
कृत् (वि०) कुमारी, विकट इग से काय करने
बाना - वि० १५।६६ - कैसल - मति (वि०) जमवा
दिमास फिर गया हो, रत्तम् रतिश्रिया का उन्मटा
आसन, पु० 'पुष्पायित' ।

विषयकः | विधिप्याति पचानि यस्य प्रा० ब० | पलाश
का वृक्ष, डाक का पेड़ ।

विषयं | वि परि + इ + अच् | 1 वैपरीत्य, व्यतिक्रम,
अधोपन - आहिता अवयवयवोत्ति मे उलाध्य मृद
परमेष्ठिना त्वया रघु० ११।८६, ८।८९, नभस
मृष्टतागम्य रात्रेर्वि विषयं (न भाजनम्) कि०
१।१४५, विषयं मे तु शा० ५, यदि अन्था हुआ
यदि इसके विपरीत हुआ 2. (अभिप्राय, वेग आदि
बदलना - कथयत्ये प्रतिविषयं करिषी एकविधाव-
सोचति - कि० २।६, इमी प्रकार 'वेयविषयं' - पच०
१ 3 अथा, अनन्तित्व मयदाकापविषयेशी
कु० ७।४७, त्यामे उलाधाविषयं रघु० १।२२
4 लाप, हानि निहा मन्नाविषयं कु० ६।४४,
'मुसबध न रहना' २ पुष्प विनाश, ध्वम 6 विनिमय,
अदल बदल 7 वृत्ति, उत्सवन, भुन, कुफ का कुच
समझना 8 मकट, दुर्भाग्य, उन्मटा भाग्य 9. धनुना,
दुःखनी ।

विषयस्त (पु० क० कृ०) | वि + परि + क्त + क्त |
1 परिर्णित, व्युत्क्रान्त, उन्मटा हुआ इत विषयस्त
सत्रति शीषको उन्मट० १ 2. विरोधी, प्रतिकूल
3 भूल से धास्तविक समझा हुआ ।

विषयस्य | वि + परि + इ + क्त | 1 उन्मटापन, वैपरीत्य,
वै० 'विषयं' ।

विपर्यय | वि + अन् + क्त | 1 परिवर्तन, वैप-
रीत्य, व्यतिक्रम - विषयस्य शानो धनविगमभावाः क्षिति-
कृत् उन्मट० २।७७ 2 विपरीतता, अननुकूलता
यथा 'दिवविपर्ययान्' में 3 अन्त परिवर्तन, अन्त-
बदल - प्रबहकविषयसिमायाता - पृच्छ० ८ 4. वृत्ति
भूल ।

विषयम् [विषयल पलं येन—प्रा० ४०] अय, समय का अत्यंत छोटा प्रभाग (जो पल का साठवां या छठा भाग समझा जाता है) ।

विषयव्ययम् [विशेषण पलायनम्—प्रा० स०] दौड़ जाना, विभिन्न दिशाओं को भाग जाना ।

विषयविकल्प (वि०) [विषयकृष्ट चिन्तेति वेत्ति ज्ञानव्यति का—वि + प्र + चित् + विवृणु, पूर्वा०] विद्वान्, बुद्धिमान्— विषयविकल्पे विद्वान्यरेण गुरुषु गुरुप्रियम्—रघु० ३।२९, पु०— एक विद्वान् वा बुद्धिमान् पुरुष, मुनि— अस्ति ते सम्यक्ता विषयविकल्पा मनायन वाचि निवेशयति ये—कि० १४४ ।

विषाक : [वि + पृ + पञ्] 1 शान्ता पकाना, भाजन बनाना 2 पाषाणवित्त 3 पकाना, पक्वता, परिपक्वता, विकास (आल० भी)—अभी पृथक्तरुत्तम निराह्वता यता विषाकैक फलस्य शाकस्य—कि० ४।२६, वाचा विषाको मम—भाषि० ४।४२, भेरे परिपक्व पूर्ण विकसित अथवा गौरवाविति शब्द 4 परिणाम, फल, नतीजा, पूर्वजन्म अथवा इस जन्म के कर्मों का फल, अहो मे दास्यतेर कर्मणा विषाक—का० ३५४, मयैव अन्धानरपातकाना विषाकविष्कर्मन्वरप्रमहा रघु० १४।६२, मर्तुं २।९९ महावी० ५।५६, 5 (क) अवस्थापरिवर्तन उत्तर० ४।६, (ख) असमाहित बान वा घटनाव्यतिरिक्त, भाग्य का पलटा खाना दुःख, सफट, उत्तर० ३।३२, ४।१० 6 कटिनाई, उलझन 7 रसास्वाद, स्वाद ।

विषाटनम् [वि + पट् + शिच् + श्पट्] 1 लण्ड लण्ड करना, फाड़ कर तोलना 2 उन्मादना 3 अपहरण ।

विषाट (पु०) एक प्रकार का लडा नीर ।

विषादम्, विषादहृत् (वि०) [विशेषण पाण्डु, पाण्डुर प्रा० स०] विषम, पाला, कि० ५।६, जि० ९।३, इसी प्रकार 'विषादहृत्' जि० ४।५, रत्न० २।४ ।

विषादिका (स्त्री०) 1 पेर का एक रोग, विवाई 2 प्रहेलिका, पहली ।

विषाम्, विषाता (स्त्री०) [पाश विमोचयति वि + पृश् + विवृणु, वि + पृश् + शिच् + श्पट् + टाप्] पदाव की एक नदी, वर्तमान व्याप्त नदी ।

विषिनम् [वेपते अना अत्र वेपु + इतन, ह्वम्] जगल, जन, नाटिका झुरमुट—वृक्षावन विषिनि ललित कितानानु सुमानि यथास्य गोत० ११, विषिनामि प्रकाशानि शक्तिमन्वाच्यन्कार म—रघु० ४।३१ ।

विपुल (वि०) [विशेषण पोषति वि + पुल् + क] 1 विशाल, विस्तृत, आपल, विस्मर्ण, चौड़ा, प्रसन्न विपुल नितम्बदेशे—मालवि० ३।७, निरामि तनु- 1 वपुःश्वर सप्यदेशे—गुच्छ० ३।२२, इसी प्रकार विपुलम् पृष्ठम्, विपुल कुलि 2 बहुत, पुष्कल, पर्याप्त,

—कि० १८।१४ 3 गहरा, गणा—महावी० १।२, रोमाञ्चित, पुलकित जि० १६।३, (यहाँ 'प्रथम' अर्थ भी घटना है, कः 1 मेरु पर्वत 2 हिमालय पर्वत 3 समान्तीय पुष्प । सम०—छाया (वि०) छायादार छायायाम्,—अथवा विशाल कुल्हो वाली स्त्री - मति (वि०) मनीषी, प्रभावान्,—रघुः मत्ता, टैल ।

विपुला [विपुल टाप्] पुष्पी ।

विपुष [वि + पू क्यप्] 'मूज' नामक फल ।

विप्र [वप् + श्च + पृषा० अत इत्यम्] 1 ब्राह्मण, उद्गम्य दे० 'ब्राह्मण' के अन्तर्गत 'मनि, बुद्धिमान् पुष्प 3 शैल का पत्र । मय० श्लेषि—ब्राह्मि दे०, काष्ठम् कर्ई का पीथा, प्रियं पलाश का वृक्ष, वा०, समानम् यादृशी वा अमाय वा धर्मपरिपट स्वम् ब्राह्मणों की मपति ।

विप्रक [वि + प्र + कृ + पञ्] दूरी, फासला ।

विप्रकार [वि + प्र + कृ + पञ्] 1 अपमान, कटु व्यवहार, दुर्वचन तिग्मकारयुक्त व्यवहार—कि० ३।५५ 2 क्षति, अपराध 3 दुष्टता 4 विरोध, प्रतिषेधा 5 प्रतिहिंसा ।

विप्रकीर्ष (वि०) [वि + प्र + कृ + क्त] 1 इधर उधर फैलाना हुआ, गिरने बिगने बिना हुआ, बिभेरा हुआ 2 डोला, न-बाग आदि बिभेरे हुए 3 प्रसन्न विद्याया हुआ 4 चौड़ा, विस्तृत ।

विप्रकृत (मू० क० कृ०) [वि + प्र + कृ + क्त] 1 अज्ञान जिसे टैल पहूलाई गई है, घायल 2 अपमानित जिस गाली दी गई है जिसेने साथ कटुव्यवहार किया गया है 3 जिसमें विरोध किया गया है 4 प्रतिहिंसित जिसमें बदला ले किया गया है (दे० विप्र पूर्व० कृ०) ।

विप्रकृति (स्त्री०) 1 क्षति आघात 2 अपमान आघात कटुव्यवहार 3 प्रतिहिंसा, बदला ।

विप्रकृष्ट (मू० क० कृ०) [वि + प्र + कृ + क्त] 1 शीघ्र चला गया, हटाया हुआ 2 कामले ल हुए का, दूरदर्शी 3 मुदीर्ष, लम्बा किया गया विस्तारित ।

विप्रकृष्ट (वि०) [विप्रकृष्ट + क्त] दूरदर्शी, कामले पर ।

विप्रतिकार [वि + प्रति + कृ + पञ्] 1 प्रतिषेधा विरोध, बचनविरोध 2 प्रतिहिंसा ।

विप्रतिपत्ति (स्त्री०) [वि + प्रति + पृश् + क्त] 1 पारस्परिक असवति, प्रतिघोषता, लघर्ष, अग्रहा, विरोध (मर्तों का वा हितों का) 2 असहमत, आपत्ति 3 हेराही, बुराहाट 4 पारस्परिक सम्बन्ध परिचय, ज्ञानपहूचान ।

विप्रतिपन्न (मू० क० कृ०) [वि + प्रति + पृश् + क्त]

1 परस्परविषय, विरोधी, अमहत्त्व 2 बचवाया हुआ, भ्याकुल, हैरान 3 मुकाबले का, विवादग्रस्त 4 परस्परसंयुक्त या सम्बन्धः ।

विप्रतिषेधः [वि + प्रति + विष + घञ्] 1 नियन्त्रण में रहना, बंध में रहना 2 समान रूप से महत्त्वपूर्ण दो बातों का विरोध, दो समान हितों का संघर्ष — हरिविप्रतिषेध तमाचक्षते विप्रक्षण छि० २१६, (तुल्यबलविरोधी विप्रतिषेध मन्त्रि०) 3 (व्या० में) दो नियमों का (जिनसे दो विप्र नियमों के अनुसार व्याकरण की दो विप्र प्रक्रियाएँ सम्भव हो) संघर्ष, समानरूप से महत्त्वपूर्ण दो नियमों की टक्कर विप्रतिषेधे पर ज्ञायम् पा० ११६२, इम पर दे० काशिका या महाभाष्ये 4. रोक, बचन ।

विप्रति (सौ) साह [वि + प्रति + सृ + घञ्, पसे दीर्घ] 1 पड़नावा, छि० १००० 2 शोध, राश, सूचना 3 दुष्टता अविष्ट ।

विप्रवृत्त (भू० क० क०) [वि - प्र + वृत् - क्त] दूगन, विकृत, मलिन 2 घट्ट ।

विप्रवृत्त (भू० क० क०) [वि + प्र + वृत् + क्त] 1 वाया हुआ, लुप्त 2 अर्थ, निरर्थक ।

विप्रवृत्त (भू० क० क०) [वि - प्र + वृत् - क्त] 1 च्चनय छोड़ा हुआ, भागा दिया हुआ, भुला आया हुआ 2 गाली का निशान बनाया गया, चन्दन में दावा गया 3 बदलना पाया हुआ ।

विप्रवृत्त (भू० क० क०) [वि - प्र + वृत् - क्त] 1 पथक दिया हुआ, विपथक, निच्छिन्न 2 अलग होना, अनुपस्थित पथ० 3 मुक्त किया हुआ, रिक्त किया हुआ अस्मिन्, विरहित विना (समाप्त में) ।

विप्रयोग [वि + प्र + वृत् + घञ्] 1 अनैक्य पारंभव, विना अलगाव, वैसा कि शिप में : विप्रयोग प्रेमियों का वि-ग्राह-भा नृ.व अलगगर्भ १ वरुणा विप्रयोग भय० ११५, १० रघु० ११५० १६६६ : कण्ठ अमरमनि ।

विप्रवृत्त (भू० क० क०) [वि - प्र + वृत् - क्त] 1 धाया दिया गया, ठगा गया 2 निगम किया गया 3 बाट पड़नाया गया, क्षतिग्रस्त, ब्या वह स्त्री जो अपने प्रियतम का विषय स्थापन पर न पाकर निराश हो गई हो (काव्यधर्मों में) बहिन एक नायिका) -मा० ६० ११८ पर ही गई परिभाषा पिय कृष्णाणि कृष्णेन यस्या नायानि सनिधिम् । विप्रवृत्तेति भा श्रेया निरात्मवचसालिना ॥

विप्रवृत्त [वि + प्र + वृत् + घञ्] 1 धोखा, छल, चालाकी -कि० १११२७ 2 विप्रवृत्त विद्या उक्तिवा या झूठी प्रतिज्ञाओं से छलना 3 कलह, अमहत्त्वति

4. अनैक्य, पार्थक्य, अलगाव 5 प्रेमियों का विरोध - सुशुभे शिष्यजनस्य कातरं विप्रवृत्तपरिचरिणो वचः रघु० १११८, वेणी० २१२६ (अम० में) विप्रवृत्त शूयार (सर्वमें नायक नायिका के विरुद्ध-जन्म सत्याय जादि का संघर्ष किया जाता है) शूयार के दो मुख्य अर्थों में से एक, (विप० संशोध) -अपर (विप्रवृत्त) अमिलाव विरुद्धों प्रवाससापेक्षुक इति पचविष काव्य० ४, यूनोरयुक्तयोर्बाधो युक्तयोर्बाधवा मिष । अमोष्ट्यालिङ्गनादीनामनवातो प्रवृत्त्ये । विप्रवृत्त स विप्रये उन्मत्तनीलमणि, गु० सा० ६० २१२, तथा ज्ञाये ।

विप्रवृत्त [वि + प्र + वृत् + घञ्] 1 व्यर्थ या निरर्थक बात, बचवास, अनाप-अनाप निम्नः 2 पारस्परिक वचनविरोध, विरोधी उक्तिवा 3 अगदा, तु-तु मै-मै 4 अपनी प्रतिज्ञा छोड़ना, बचन पूरा न करना ।

विप्रवृत्त [विशेषण पश्य प्रा० सं०] पूर्ण विनाश या विघटन, लुप्तनाम, विद्याकल्पेन यस्या वेद्याना भूय-माम्नि, इदानीय विवर्तना स्वापि विप्रवृत्त कृत - उतर० १६ ।

विप्रवृत्त (भू० क० क०) [वि + प्र + वृत् + क्त] 1 अफ-हूत, छोना हुआ 2 बाधापूर्ण, हन्तसोर किया गया ।

विप्र, शोभिन् (प०) [वि + लृप् + शिच् + णिनि] वा वृद्धों के नाम, अशोक और चिकित्सक ।

विप्रवृत्त [वि - प्र + वृत् + घञ्] परदेश में रहना, विदेश में विवास करना (अपनी जन्मभूमि से दूर रहना) ।

विप्रवृत्तिका [विशेषण प्रत्ये यस्या वि - प्रत्य + क्य - टाप्, इत्यम्] स्त्री ज्योतिषी, जो भाष्य की बातें बनायावे ।

विप्रवृत्त (वि०) [वि - प्र + वृत् + क्त] उन्मत्त, विरहित ।

विप्रिय (वि०) [वि प्रो क, इङ्] अवचिकर, जो पसन्द न हो, वा मुन्द न हो, जो स्थाविर न हो, बस अनाप्य, अनिष्ट, अवचिकर कार्य मनसापि न विश्रिय मया कृतपूर्वं तव कि जइमि माम् रघु० ८१२, कु० ६०, कि० ११२९, मि० १५११ ।

विप्रवृत्त (स्त्री०) [वि - वृत् + क्विप्] 1 (पानी या किसी अन्य द्रव की) बूद सताप नबबलविधुयो गृहीत्या मि० ८१० स्वेदविप्रवृत् २१८ 2 चिह्न, चिन्दु, चन्दा ।

विप्रवृत्त (भू० क० क०) [वि - प्र + वृत् + क्त] 1 पर-देश में रहना, जन्मभूमि से दूर होना, अनुपस्थित 2 निर्वासित, देशनिकालाप्राप्त रघु० १२११ । मम० अतुंका वाह स्त्री जिमका पनि परदेश गया हुआ है ।

विप्रवृत्त [वि + वृत् + अच्] 1 बहना, इधर-उधर दहलना, विभिन्न दिशाओं में बहना 2 विरोध, अपरिचित,

3 हैरानी, व्याकुलता 4 तुल्य, हयामा, हस्ता-मुस्ता
 मालवि० १ 5 निर्वनीकरण, वह सशाम जिनमें
 लुटपाट खूब हो, शयु मे भय 6 बलान् लुटपाट
 7 हावि, चिन्ता—सर्बविप्लवात् रघु० ८।६१
 8 आपदा, आपकाल अथवा मम भाग्यविप्लवात्
 —रघु० ८।४७ 9 मृषण पर जमी हुई धूल या जय
 अपर्बजितविप्लवे ख्यौ मनिगदरौ इवाभिद्वयने
 —कि० १।२६, [यहाँ 'विप्लव' का प्रमाणार्थ
 अर्थात् लक्षणाव भी है] 10 अनिजगण, उल्लखन कि०
 १।१३ 11 अनिष्ट, सकट 12 पाप कुल्ला, पापयया।

विप्लवा- [वि + प्लु + घञ्] 1 जलप्राशन, बाइ 2 उा-
 द्रव 3 घोड़े को सरपट दौड़।

विप्लव (भू० क० कृ०) [वि + प्लु + क्त] 1 जो इधर
 उधर बह गया हो 2 दूबा हुआ [समान, वायुमन्,
 चिनारो मे जलर होकर बहा हुआ 3 रैगन, परेजान
 4 विप्लव, उत्राटा, दुहा 5 मृण जोलन 6 अप-
 मानिन, अनादुन 7 बर्बाद 8 निरोहित, विकर्णित
 9 दुर्भार, लम्पट, दुर्गचारी, लच्छा 10 विपरीत
 उलटा 11 मिथ्या, झूठा उलन० ४।१८।

विप्लव दे० 'विप्लव'।

विकल (वि०) [विगत फल यन्त्र प्रा० ब०] 1 फल-
 रहित अनुपयोगी, व्यर्थ, प्रभावशून्य अलाभकर—मम
 विकलमेतदनुसूयमधि योवन सौत० ७, अगता वा
 विकलेन कि फलम् रघु०, शि० १।६, कु० ७।६६,
 मघ० ६८ 2 बेकार, निरर्थक।

विषय [वि + वन् + घञ्] 1 कोष्ट बदना 2 क्कावट।

विषाधा [विशिष्टा ज्ञाना-शा० म०] 1 शीश, वेदना, नाना,
 मानसिक कष्ट।

विबुद्ध (भू० क० कृ०) [वि + बुच् + क्त] 1 उदाया हुआ,
 जगया हुआ, जागरक प्रा० २ फुलाया हुआ,
 मजरीयका, पूरा खिला हुआ 3 चतुर, कुशल।

विबुध [विशेषण बृधने बुध + क्त] 1 बुद्धिमान वा
 विद्वान् वृष्ण, अदि, मृति सन्ध गा-जमीन मे
 इत्याहुविबुधा जना पच० २।४३ 2 मुर, देवता, -
 अमभूयो विबुधस्य परमप भट्टि० १।१, गोप्यार
 न विषीना महपति महेश्वर विबुधा मुभा०
 3 चाँद। मम०—अविपति, इय, विषयः इन्द्र
 का विशेषण, द्विष, शत्रुः राज्ञो विक्रम १।३।

विबुधानः [वि + बुच् + घञ्] 1 विद्वान् वृष्ण
 2 अध्यापक।

विबोध [विबुध + घञ्] 1 जागरण, जागत रहना
 2 प्रायसमान, खोजना 3 बुद्धि परिभा 4 जग
 जाना, सचेन, हाना, अन्० मे ३३ या ३६ अविचारी
 भावो मे से एक, -निदानासोत्तर जायमानो बोधो
 विबोधः—रु०।

विप्लव दे० 'विप्लव'।

विप्लव (भू० क० कृ०) [वि + प्लु + क्त] 1 बाटा हुआ,
 विभाजित की हुई (मपति आदि) 2 बटा हुआ, स्वार्थ
 की दृष्टि मे अलग अन्ध किया हुआ, 'विप्लवा जालर'
 मे 3 नुदा किया हुआ, जलन किया हुआ, भिन्न
 किया हुआ,—शि० १।३ 4 विभिन्न, विविध 5 सेवा-
 निवृत्त, एकान्तवासी 6 नियमित, मर्यादित 7 विभू-
 पित (२० वि पूर्वक भञ्)।— क्तः काविकेय।

विप्लित (शब्द०) [वि + प्लु + क्त] 1 बाटना,
 प्रभाग, विभाजन बटवारा 2 पापेय, स्वार्थ मे अन्-
 गाव 3 हिम्मा, दायभाग 4 (श्या० में) सजा शब्दो
 क माथ लगा कारक या कारक चिह्न।

विभय [वि + भृ + घञ्] 1 टटना, अस्विभग 2 उह-
 राना, अकराध, पडाव भय० २।२६ 3 झुकना,
 (भीहा आदि का) मिझाडना भूविषयकुटिल व
 वीक्षित—रघु० ११।३७ 4 भिन्न, भुरी 5 पण, सीढ़ी
 रघु० ६।३ 6 फूट पडना, प्रकटीकरण -विविध-
 विभार विभयम् गीत० ११।

विषय [वि + भृ + अच्] 1 शीलन, बन, सम्यगि—ब्रजवृत्
 विभवयु ज्ञान्य मन्तु नाम श० ५।८, रघु० ८।६०
 2 नाकल यक्ति, पराक्रम, बहूपन एवावात्म्य
 मर्त्याभव विक्रम० ३, वासिष्णु मा० १।२०
 रघु० १।१, कि० ५।२१ 3 उन्नत अवस्था, पर
 प्रतिष्ठा 4 गहरा 5 मोक्ष, मृतिन।

विभा [वि + भा + क्विप्] 1 प्रकाश, ज्ञाना 2 प्रकाश,
 किशो 3 मोक्षयें। मम० कर मूर्धे—बन बन लग
 लेत्र पुत्रा विभाति कर—काव्य० १० 2 पदार
 का शीका 3 कष्टमा, बहु 1 मूर्धे 2 जनि रक्षि
 एयामि ननु विभावनी—कु० १।३६, रघु० ३।२७
 १०।८३, मघ० ३।१ 3 चन्दना 4 हाटना, अलग अलग
 करना, पायकर (श्या० में यह एक गुण माना जाता
 है) —कु० २६, मघ० ३।२१, 5 अर्धा 6 अन्तभाग।
 मम०—कल्पना शिम्बो का नियत करना—यज्ञ० २।१६०

विभाग [वि + भृ + घञ्] 1 प्रभाग विभाजन अग
 (दायभाग आदि का)—महाभ्यक्ष विभाग स्थान
 मनु० १।१२०, २१०, याज्ञ० २।११६ 2 शा
 भाग 3 भाग वा हिस्सा 4 हाटना, अलग अलग
 करना, पायकर (श्या० में यह एक गुण माना जाता
 है) —कु० २६, मघ० ३।२१, 5 अर्धा 6 अन्तभाग।
 मम०—कल्पना शिम्बो का नियत करना—यज्ञ० २।१६०
 धर्म दायभाग की विधि, बटवारा का कानून,—परिभा
 विभाजन श्री इत्यादि, भाङ् (पु०) पहले से बटा
 हुई सम्यगि का हिस्सेदार याज्ञ० १।१२२।

विभाजनम् [वि + भृ + क्विप् + क्त] बटवारा, वि-
 रण्य करना।

विभाव (वि०) [वि + भृ + क्विप्] 1 अगो में
 विभक्त किये जाने के मोक्ष, बाँटे जाने के भाग
 2 विभाजनवीच।

विभासम् [वि + भा + क्त] प्रभाव, पी फटना ।

विभाषा [वि + भू + घञ्] मन या शरीर की किसी विशेष स्थिति में विकसित करने वाली दशा, रस-भाव की उद्बोधक स्थिति, तीन मुख्य भावों में से एक (दूसरे दो हैं—अनुभाव तथा स्वविभाषीभाव) तथा-सुद्बोधकालीके विभाषाः काव्यनाट्ययोः—का० इ० ५१, (इसके मुख्य अन्तर्गत भेद हैं—आलम्बन और उद्बोधक—दे० आलम्बन) 2 मित्र, परिचय ।

विभाषणम्,—भा [वि + भू + णिञ् + न्यट्] 1 स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान, या निश्चय, विवेक, निर्णय 2 विचार विमर्श, गुणवच, परीक्षा 3 प्रत्यय, कल्पना,—भा आल में) एक अलकार जिसमें बिना कारण के काव्यों का होना बर्णित होता है—क्रियाया प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिविभावना- काव्य० १० ।

विभाषरी [वि + भा + क्तिप् + क्तीप् + आदेश] 1 रात-अन्तर्गत घटकल्पेदुग्धहला विभाषरी कथय कथ मन्वि-यति -भाषार्थि० ६१५, ५१७, कु० ५४४ 2 हस्ती 3 कुटीनी 4 वेदया 5 वामाचारीणी स्त्री 6 गुणरा स्त्री, कान्तरी ।

विभाषिन (भू० क० इ०) [वि + भू + णिञ् + क्त] 1 प्रकटीकृत, स्पष्ट रूप में दर्शनीय किया हुआ 2 मान जाना हुआ, निश्चिन किया हुआ -3 देखा हुआ, माना हुआ + निर्णयित, विवेचन किया हुआ 5 अनु-विन मकेनित 6 सिद्ध, सम्बन्धमनः सम० एकदेश (वि०) जिसके भाष एक भाग का पना लगाया गया अर्थों वा (विभाषाद्वय विषय के) एक भाग के संबंध में आराध्या गया गया विभाषिनकदेशेन देय परिचयजनन - विषय० ६१३ ।

विभाषा [वि + भाष + भ + टाप्] 1 इप्सित वस्तु, विकला 2 नियम की वैचलिकता ।

विभाषा [वि + भाष् + भ + टाप्] प्रकाश कान्ति, प्राभा ।

विभिन (भू० क० इ०) [वि + भि + क्त] 1 तोड़ा हुआ, विभक्त किया हुआ, लखट लख किया हुआ बोधा हुआ, घायल 3 दूर हटाया हुआ, भगाया हुआ निर बिन्दर किया 4 हैमन, परेशान व्यकुल, 5 डर उबर डाला हुआ 6 निराश किया हुआ 7 विविध, नागविकार के 8 विभिन्न मिलाया हुआ, चित्तव्यग, रगविरगा -विभिन्नवर्णों सहसायजेन मुख्य-रथा वृत्ति स्फुरन्त्या जि० ६१४, (दे० वि पूर्वक भिद्), अः गिञ् का नाम ।

विभोत, लम्, विभोतक, कम्, } विशेषण भोज
विभोतकी विभोता } विभोत - कन्, विभो-
तक + क्तिप्, विभोत + टाप्] एक वृक्ष का नाम,
बड़ेका, (जिसका में से एक) बड़ेका का पेड़ ।

विभोतक (वि०) [विशेषण भोजयते- वि + भी + णिञ् + क्तुल् वृक् आगम] बटावना, भाग या भय देने वाला ।

विभोषिका [वि + भी + णिञ् + क्तुल् + टाप्, वृत्तायाम्, ह्य च] 1 भात 2 बरानों के साधन, हीका (विभोषी को बराने के लिए फूल का पुतला, वृत्तु) -यदि तं सति सखेव केयमप्या विभोषिका—उत्तर० ५१२९ ।

विभु (वि०) (स्त्री०—भु,—स्त्री) [वि + भू + इ] 1. ताकनवर, वलितहाला 2 प्रथम, सर्वोपरि 3 योग्य, समर्थ (नुमन्त के साथ) —(चनु) पूरयित् भवति विभव तिसरमणिकच-कि० ५४३ 4. आत्मसम्पत्ती, धीर, वितेन्द्रिय—कमपरमवशा न चित्रकुर्वन्विभु-मपि त यदमी स्वर्गाति भावा—कु० ६१५ 5 (स्या० में) तिव्य०, सर्वव्याप० अर्धवत्,—भुः 1. अन्तर्गत 2 आकाश 3 काल 4 आत्मा 5 स्वामी, शासन, प्रभु, राजा 6 सर्वोपरि शासक भवा० ५१४, १०१२ 7 लेखक 8 बड़ा 9 शिव—कु० ७३१ 10 विष्णु ।

विभुज्ज (वि०) [वि + भुज् + क्त] बक, भुका हुआ, टेंडा, कुटिल ।

विभुतिः (स्त्री०) [वि + भू + क्तिन्] 1 ताकत, शक्ति, बहूपन—सि० १४५, कु० २१६ 2 समृद्धि, कल्याण 3 प्रतिष्ठा, उच्च पद 4 मन, प्राचुर्य, महिमा, कान्ति अहा राजाधिपराजमणिक विभुति—मुद्रा० ३, २५० ८३६ 5 दौलत धन—रघु० ४१९, ६७६, १०४३ 6 अतिमानव शक्ति (इसमें जाट शक्तियाँ सम्मिलित हैं अणिमन्, लचिमन्, प्राप्ति, प्राकाम्यम्, महिमन्, ईशिता, वशिता और कामा-वसायिता) —कु० २११ 7 कबो की राक ।

विभुषणम् [वि + भूष् + न्यट्] अलकार, सजावट, -विशेषतः सर्वविधा समाजों विभूषण जीवनव्यक्तितानाम् अन्० २१७, रघु० १६८० ।

विभूषा [वि + भूष् + भ + टाप्] अलकार, सजावट, —सपेदे धामसलिलोद्गमो विभूषा—कि० ७५, रघु० ४१५४ 2 प्रकाश, कान्ति 3 सौंदर्य, भाषा ।

विभूषित (भू० क० इ०) [वि + भूष् + णिञ् + क्त] अलङ्कृत, सुशोभित, सुसूषित ।

विभूत (भू० क० इ०) [वि + भू + क्त] सभाया गया, सहाया दिया गया, सहायित या संरोपित ।

विभूषाः [वि + भूष् + घञ्] 1 निरनः, टूट पड़ना 2 ह्यान, भय, बर्बादी 3 चदान ।

विभूषित (भू० क० इ०) [वि + भूष् + क्त] 1. बहुकामा गया, फूलगाया गया 2 बहित, विरहित ।

विभूषण [वि + भूष् + णञ्] 3 हजर उचर दृक्कण

धूमना 2 भ्रमण, फेरा, हथर उभर लुब्धकना 3 मृष्टि, भूल, गलती 4 उतावली, अन्धबन्धा, हठबन्धी, पक्षबन्धी विशेषतः प्रेम के कारण उत्पन्न मन की अनिश्चरता
 -चित्तवृत्तनवस्थान भ्रूङ्गारादिभ्रमो भवेत् 5 (कतः) हठबन्धी के कारण अलकारादिक का उल्टा-सीधा पहनना -विभ्रमस्त्वत्वाज्जाते भूषास्थान विप्रबंधः, दे० कु० १४४ तदुपरि मल्लि० 6 रघुरेकिया, कामकेलि, आनन्द-प्रमोद मा० ११२६, ११३८ 7 सोनद्वयं, लालित्य, लावण्य - मं० १५१२५, उत्तर० ११२०, ३४, ६४, सि० ६४६, ७१५, १६६४ 8 सन्देश, आशका 9 सनक, बहुम ।
विभ्रमा [वि+भ्र्+भृ+टाप्] बुझाया ।
विभ्रमत् (भू० क० कृ०) [वि+भ्र्+क्त] 1 विरा हुआ, पडा हुआ, अनग किया हुआ 2 जीव, लुप्त, पतित, बर्बाद 3 मोक्षल, अन्तर्हित ।
विभ्राम् (वि०) [वि+भ्राय्+क्विप्] चमकीला, दीप्तिमान्, प्रकाशमान ।
विभ्रस्त (भू० क० कृ०) [वि+भ्र्+क्त] 1 चक्कर खाया हुआ 2 विकृष्ट, व्याकुल, अन्धबन्धित, हठ-बढ़ाया हुआ 3 भ्रम में पडा हुआ, भूल करने वाला । सम० मयन (वि०) विलोक्तवृष्टि, चक्कर खांकी वाला, झील (वि०) 1 जिसका चित्त अन्धबन्धित हो 2 नवों में बुर, मतवाला, झ 1 नन्बर 2 नृप-मण्डल या चन्द्रमण्डल ।
विभ्रान्तिः (स्त्री०) [वि+भ्र्+क्तान्] 1 चक्कर, फेरा 2 हठबन्धी, मृष्टि, गडबडी 3 उतावली, अन्धबाजी ।
विभ्रत (भू० क० कृ०) [वि+भ्र्+क्त] 1 अनाहृत, असम्मत, भिन्न मत रखने वाला 2 विषम, अनपगत 3 अनाहृत, अपमानित, उपेक्षित, त्त वायु ।
विभ्रति (वि०) [विभ्रत् विगत वा मतिर्यस्य प्रा० ब०] मुर्छा, प्रज्ञाप्राप्य, मुड, -ति (स्त्री०) 1 अनाहृत, असहमति, मतविभिन्नता 2 अर्चि 3 जड़ता ।
विभ्रत्तरम् (वि०) [विगत मत्सरो यस्य -प्रा० ब०] ईर्ष्या से मुक्त, ईर्ष्यारहित भ्रम० ४१२२ ।
विभ्रत् (वि०) [विगत मरो यस्य प्रा० ब०] 1 नरो से मुक्त 2 हृषेणुत्, ईर्ष्याल ।
विभ्रान्तः, विभ्रान्तः (वि०) [विभ्रत् मरो यस्य, परो कृप्, प्रा० ब०] 1 उदात्त, विषय, अचल, निभ्र, म्लान - उत्तर० ११७ 2 अनमना 3 हैरान, परेशान 4 अप्रसन्न 5 जिसका मन वा भावना बदली हुई हो ।
विभ्रान्त्यु (वि०) [विगत मन्यस्य प्रा० ब०] 1 क्रोध से मुक्त 2 शोक से मुक्त ।
विभ्रान्तः [वि+भी+भृ] विनिमय, बदला-बदली ।
विभ्रान्तः [वि+भृ+भञ्ज्] 1 बुरा करना, कुचलना, चकना बुर करना 2 मसलना, रगड़ना -विभ्रं-

सुरभिर्बहुलावलिना सत्वन्धि० ३, रघु० ५६६५ 3 स्पर्श 4 उद्वेग जादि शरीर पर मरना 5 सत्राम, युद्ध, लड़ाई, जिदल विभ्रंसेना भूमि-मन्तराद्य -उत्तर० ५ 6 विनाश, उजाड़, -रघु० ६६२७ 7 मूर्ध और चन्द्रमा का मेल 8 रहण ।
विभ्रंसेन [वि+भृ+भृ] 1 पीतले बाला, बुरा करने वाला, चकनाबुर करने वाला 2 मन्ध इश्यो की पिसाई 3 रहण 1 मूर्ध और चन्द्र का मेल ।
विभ्रंसेनम्, -ना [वि+भृ+भृ] 1 बुरा करना, कुचलना रीटना 2 आपस में मसलना; रगड़ना 3 विनाश, हत्या 4 मन्ध इश्यो की पिसाई 5 प्रहण ।
विभ्रान्तः [वि+भृ+भञ्ज्] 1 विचार विनिमय, मोष विचार, परीक्षण, चर्चा 2 ठकेना 3 विपरीत नियोग 4 सकोच, सहेश 5 पिछले दुष्कायुध कर्मों की भ्रन के ऊपर बनी छाप, दे० बालना ।
विभ्रान्तः [वि+भृ+भञ्ज्] 1 विचार, विचारविनिमय 2 अपौरुता, असाहय्यता 3 अमनोष, अप्रसन्नता 4 (नाटकों में) नाटकीय कथा बनने की मरुत प्रगति में परिवर्तन, किसी प्रेमाभ्यास के मरुत प्रकम में किसी अदृष्ट दुष्टता के कारण परिवर्तन सा० द० ३३६ पर इसकी परिभाषा यह है—अत्र मय्यकलापय उद्भिभो गर्भतोऽधिकः, प्रापाथी सातरोपयं म विनाश इति स्मृतः दे० मूत्रा० ४१३, (अतः सब अर्थों के लिए बहुधा विभ्रंसेन लिखा जाता है) ।
विभ्रत वि०, [विगतो मनो यस्यान् -प्रा० ब०] 1 पावत्र, निर्मल, मलरहित, स्वच्छ (जाल० से भी) 2 माघ, शुभ्र, स्फटिक जैसा, पारदर्शी (जैसे जल) विभ्रत जलम् 3 श्वेत, उज्ज्वल, -सम् 1 शारी की फण्ट 2 तालक मेलसङ्घी । सम० शालम् देवता के लिए बढ़ावा, -मणि स्फटिक ।
विभ्रान्तः, सन् [विभ्रत् मत्स्र-प्रा० स०] अत्रान्त माय (जैसे कुत्तो का) ।
विभ्रान्त्यु (स्त्री०) [विभ्रत् माता—प्रा० स०] मौतली मां । सम० - कः मौतली मां का बेटा ।
विभ्रान्तः, मन् [वि+भृ+भञ्ज्, वि+भा+भृ] 1 अनाहृत, अपमान 2 भ्राप 3, मुझ्गान, आनमान (बाकाश में धुंधले बाला) यह विभ्रान्त विराह मान रघु० १३११, ७५११, १२११०४, कु० २१५, ७४०, विष्णु० ४४४३, कि० ७१११ 4 माघ, मधारी रघु० १६६८ 5 कजरा, शानदार कमरा या सभाभवन—रघु० १७१६ 6 (सात मणिको का) मरुत -नेवा नौना सततगतिना मद्भिमानापमुरी मेघ० ६९ 7 कोड़ा । सम०—बाहिर, पात (वि०) नुब्यारे में बैठ कर बजने वाला, राकः 1 शंठ श्योमयान -उत्तर० ३ 2, श्योमयान का सत्वालक ।

विधानना [वि + मन् + निष् + म् + टाप्] अनादर, निरादर, अपमान, प्रतिष्ठा भंग विधानना मुञ्च कुत पितृमुद्दे कु० ५।४३, अमनप्राप्त्य विधानना वधाचिन्त् —रघु० ८।८ ।

विधानित (म० व० क०) [वि + मन् + निष् + क्त] अनादर, निरादर ।

विधानी [वि + मन् + प्रा० व०] 1 वराह भद्रक 2 गुणव, दुरावगन्ध, अनैतिकता 3 झाड़ू । सम० —वा अमली स्त्री विधानीगायाश्च रुचि स्वकाने —भावि० १।१२५— वाचिन्त्, प्रस्थित (वि०) अमदाचारी—श० ५।८ ।

विधानीकम् [वि + मन् + स्मृट्] दृढता, स्थायता, मज्जा करना ।

विधिन्, विधिन्धत् (वि०) [वि + धिष् + अच् क्त वा] निष्ठा हुआ, सम्पन्न, मरुद्भवद्वय किया हुआ (कर्म० के साथ या मयास में—नभिविधिना नार्येष्व—महा०, दयायोगिहृ कान कान न तममि बीडाविधिषो र्म यीन० ५ ।

विधुन् (म० क० क०) [वि + युष् + क्त] 1 आकार किया हुआ, रिखा किया हुआ, स्वरन्ध किया हुआ, 2 परिष्कृत, छाटा हुआ म्यादा हुआ, पीछे रहा हुआ 3 स्वल्प 4 जोर से कैंका गया, (वन्दुक से) नापा गया ५ अतिव्यक्त । सम० कठ (वि०) कन्दन करने वाला, फूट फूट कर राने वाला ।

विधुन्ति (स्त्री०) [वि + युष् + क्तन्त्] 1 रिखाई, छुटकारा 2 बियाग 3. मांश, उद्धार ।

विधुन् (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [वि + युष् + क्तन्त्] सम सम्य प्रा० व०] 1 मूत्र बाँधे हुए 2 पराङ्गम्य, अनिच्छुव विरुद्ध —ने खूदाग्रि प्रथममुक्तनापेलया मश्रवाय, प्राणो मित्रे भवति विमन्ः किं पुनयंस्त्वान्मे मेघ० १७.०७, (रघुणा) मन परम्बोविमलप्रवृत्ति रघु० १५।८, १५।८ 3 वायु - हि० १।१३० 4 रहित, मुक्त (मयाम में) करुणाविमलेन मृत्याना हस्ता त्वां कट वि न मे हृतम् रघु० ८।६७ ।

विधुष्य (वि०) [वि + मुह् + क्त] अव्यभिचिन धरणाया हुआ, व्याकुल ।

विधुर (वि०) [विनाया मुद्रा यन्ध प्रा० व०] 1 विना माहुर नगा 2 बुन्ना हुआ, मुकुण्डिन, जिला हुआ ।

विधुः (म० क० क०) [वि + मुह् + क्त] 1 धरणाया हुआ, व्याकुल 2 बहकाया हुआ, लुभाया हुआ, कुमलाया हुआ ३ वध ।

विधुः (म० क० क०) [वि + मुह् + क्त] 1 मला हुआ, पोछा गया, साक किया गया 2 मोचा हुआ, विचार किया हुआ, चिन्तन किया हुआ ।

विधुः (वि + मोह् + क्त) 1. रिखाई, मुक्ति, छुटकारा 2 गोली दायता, निशाना लगाना 3. मुक्ति ।

विधुः (वि + मोह् + स्मृट्) 1. छुटकारा, रिखा मुक्त करना 2 गोली दायता 3 त्यागना, छोड़ना, परित्यक्त करना 4 (अच्छे) देना ।

विधुः (वि + युष् + स्मृट्) 1 कौल देना, बूझा हुआ लेना 2 रिखाई, स्वतन्त्रता 3 छुटकारा, मोक्ष ।

विधुः (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [वि + मुह् + निष् + स्मृट्] 1 रिखाना, प्रलोभन देना, झाड़ूट कराना, —प; क्यू मरक का एक प्रभाग, क्यू छुल्लाना, मुद्राना, झाड़ूट करना ।

विधुः, क्यू दे० 'विम्ब' ।

विधुः दे० 'विम्बक' ।

विधुः [वि + अट् + अच्, लक० परकपम्] राई का पीसा ।

विधिना दे० 'विधिका' ।

विधा, बी (स्त्री) [वि + अच् + टाप्, बीच् वा] एक देव का नाम ।

विधित दे० 'विधित' ।

विधु (पु०) सुपारी का पेड़ ।

विधुन् (नपु०) [वि + युष् + क्त] न विरमन्ति - वि + युष् + क्तप, म लोप, तुकागम । आकाश, अन्तरिक्ष, निरभ्रश्याम—पदवीषयप्युल्लत्वाद्द्विपति बहुतर स्तोक्-मुध्यां प्रयाति- श० 1।७, रघु० ११।४० । सम०—सगा 1 स्वर्गीय सगा 2 आकाशपणा,—धारिन् (वि + युष् + क्तानि) (पु०) नील,—भूतिः (स्त्री०) अक्षर, मतिः (वि + युष् + क्तानि) धृवं ।

विधुः (पु०) पत्नी ।

विधुः [वि + युष् + अच्] 1 प्रतिबन्ध, रोक, नियन्त्रण 2 दुःख, पीडा, कष्ट 3 विराम, पडाह ।

विधात (वि०) [वि + युष् + क्त] 1 वृष्ट 2 माहुरी, निर्लेख, डोह ।

विधाव दे० 'विधव' ।

विधुः (म० क० क०) [वि + युष् + क्त] 1 विच्छिन्न, पृथक्कृत, अलग किया हुआ 2 जुदा किया हुआ, परित्यक्त 3. मुक्त, बर्धित (कर्णा० के साथ या मयास में) ।

विधुः (म० क० क०) [वि + युष् + क्त] विधुः, विरहित, वञ्चना विक्रम० ४।१८ ।

विधुः [वि + युष् + क्त] 1 बुझाई, विच्छेद,—अयरेक-पदे तथा विधुः सतुसा षोपलत मुमुक्षुो मे—विष्म० ४।३, स्वर्गोपस्थितविधुःस्य तपोवनस्यापि समकथा दुश्चले० म० ४, सचने मूढमरति हि सङ्घियोग कि० ५।४१, रघु० १२।१०, शि० १२।६३ 2. अभाव, हानि ३ अक्षरकल ।

विधुः (वि०) [विधुः + क्त] विधुः—(पु०) कक-वाक ।

विधुः (वि०) [विधुः + क्त] 1 अपने पति वा प्रेमी से

विद्युत् स्त्री, —भूक्षितिःस्वसितैः कश्चिन्नीची निरर्णोपस्य ता विद्योमिनीति—भासि० ४।१५ 2 एक छन्द या वृत्त का नाम (ब० परि०?) ।

विद्योभित्त (भू० क० कृ०) [वि + युञ् + पित् + क्त]
1. अलग्नाया हुआ 2 युदा किया हुआ, वञ्चित ।

विद्योमि, —नी [विधिषा विद्युदा वा योमि प्रा० सं०]
1. माता अन्य 2 पुरुषों का गर्भोणय (मनु० १२।७ पर कुल्लू०) 3 हीन या फलकपूर्ण अन्य ।

विरक्त (भू० क० कृ०) [वि + रज् + क्त] 1 बहुत लाल, लाजिमा से युक्त -रघु० १३।६४ 2 बदरग 3 अनु-रागहीन, स्नेहयुक्त, अप्रमथ-भर्तृ० २।० 4 सामारिक गव या कालका से युक्त, उदासीन 5 आवेश पूर्ण ।

विरक्तिः (स्त्री०) [वि + रज् + क्त] 1 विसर्जित में परिवर्तन, असन्तोष, असन्तुष्टि, स्नेहयुक्तता 2 अल्पमात्र 3 उदासीनता, इच्छा का अभाव, सामारिक लाभता या आसक्तियो से युक्त ।

विरक्तमन्त्र—भा [वि + रज् + क्त] 1 क्रम अल्पस्थानय —शि० ५।११ 2 रचना करना, सरचना 3 निर्माण करना, मुञ्जत करना 4 मा हृष्य-रचना करना, सफल करना ।

विरक्ति (भू० क० कृ०) [वि + रज् + क्त] 1 क्रम से रक्ता गया, बहना गया, निर्मित, नैवार किया गया 2 चटित किया हुआ, सरचना किया हुआ 3 लिखा हुआ, साहित्य-रचना किया हुआ 4 काट-छाट किया गया, सञ्चार गया, परिष्कृत किया गया, अनाह-सिगार किया गया 5 धारण किया गया, पहनाया गया 6 अज्ञा गया, बैठना गया ।

विरक्त (वि०) [विगत रजो यन्मान् प्रा० ब०] जिस पर शूल या गर्भ न हो, जिसमें राग न हो, —अ-विषण का विभोयण ।

विरक्तम्, **विरक्तम्** (वि०) [विगत रज यन्मान् यस्य वा प्रा० ब०] 1 जिस पर शूल न पड़ी हो, राग रहित शि० २०।८ 2 जिसका रजोधर्म आना बंद हो गया हो ।

विरक्तम् [विरक्तम् + कृ + टाप्] वह स्त्री जिसको रजोधर्म आना बन्द हो गया हो ।

विरक्त, **क्ति** [वि + रज् + क्त, इन् वा, मुम्] इच्छा ।

विरक्तः (पु०) एक प्रकार का काण्य अणु, अणव का मूल ।

विरक्तम् [विविधो रजो मूल यस्य—प्रा० ब०] एक प्रकार का युगन्धित घास, तु० बीरण ।

विरत [वि + रज् + क्त] 1 बन्द किया हुआ, रुका हुआ (अप्रा० के साथ) 2 विद्यालय, घना हुआ, ठहरा हुआ 3 समाप्त, उपसङ्गत, समाप्ति पर विरत येयदुनिवृत्तयः रघु० ८।११ ।

विरतिः (स्त्री०) [वि + रज् + क्त] 1 बन्द करना, ठहरना, रोकना 2 विश्राम, अवसान, पति 3 सासा-रिक वास्तुओं के प्रति उदासीनता भर्तृ० ३।१० 4

विरत [वि + रज् + क्त] 1 रात घाम 2 गर्व का छिपना ।

विरत (वि०) [वि + रज् + क्त] 1 छिडने में युक्त, जिसके बीच में अलग रहें, पाला, ओ सचन न हो सदा हुआ न हो विपर्याय यतो धनविरतभाव सितिक्रमात्—उत्तर० २।७, अरवि विरलभक्ति-स्तान पुष्पापहार रघु० ५।१४ 2 पतला, कोमल 3 हीन, विरक्त 4 निराला, दुर्बल अन्वटा,—पथ० १।२९ 5 कम, छोटा (सक्या वा परिभाषा मञ्ची) नप्य किमपि काश्याना जानाति विरता भूषि—भासि० (।११३. विरता तपच्छयि—शि० १।३ 6 दुर्बली, दूरस्थ, लम्बा (समय या दूरी आदि),—कम् दही, यमाया हुआ दूध, लम् (अन्व०) कटिनादि में, कभी कभी, जो बहुतायत में न हो, नहीं न बराबर । सम० जानूक (वि०) भन् प्रवी, जिसके पुटने में अधिक दूरी हो,—इवा, एक प्रकार की लपसी ।

विरत (वि०) [विगत रजो यस्य प्रा० ब०] 1 स्ना-रहित, फीका, नीरस 2 श्रिय, अश्रियक, पीडाकार-नामकाचित विरमान् यस्या विरमान् वनात्परे विर-मन्—भासि० १।७ 3 कृ, निदय,—स पीडा ।

विरह, [वि + रज् + क्त] 1 विछोड़ किया 2 विरो धन प्रेमियो की जुदाई—सा विरह नव दीना गीत० ४, क्षणमपि विरहं तुग न मेह मदव, मथ० ८ १० २९, ८५, ८७ 3 अनुपस्थित 4 अभाव 5 उज इना, परिग्याय, छोड़ देना । सम० अमल विद्या-गामि,—अक्षय्या विद्योगदद्या,—आर्त्त,—उत्कण्ठ, उत्सुक (वि०) विद्या का कष्ट भागने वाला; विद्या के कारण दुःखी,—उत्कण्ठिता वह स्त्री है अपने पति या प्रेमी के वियोग में दुःखी है काव्यरूप में बणित एक नायिका—दे० मा० १० ११ । अक्षरः विद्या की बढ़ना या उबर ।

विरहिणी [विरत + ङीप्] 1 अपने पति या प्रेमी से विद्युत् स्त्री 2 मजहुरी, भाडा ।

विरहित (भू० क० कृ०) [वि + रज् + क्त] 1 छाडा हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ 2 विरक्त 3 अकेला एकाकी 4 हीन, सुख, मुक्त (बहुधा नयात में) ।

विरहित् (वि०) (स्त्री०) **विरहिणी** [विरह + ङीप्] अनुपस्थित, अपनी प्रेमी या प्रेमी से विद्युत् होने वाला,—तुयति युवतिजनेन मम सखि विरहितमनस्य दुरन्ते—गीत० १ ।

विरता: [वि + रज् + क्त] 1 रंग का बदलना 2 वृत्तिपरिवर्तन, स्नेहभाव, असन्तुष्टि असन्तोष,—

विनायकारणेषु परिहृतेषु मूलां १ ३ अक्षि, इच्छा म डीना ४ सामाजिक कामनाओं के प्रति उदासीनता, राग के मुक्ति ।

विराज् (प०) [वि + राज् + क्तिष्] । मोदयं, आगा २ क्षीय ज्ञान का मुख्य ३ ब्रह्मा की प्रथम तन्मात्र, मु० मनु० १।३०, तन्मात्र विराजत्काल जग् १०। १०।५, (यदा 'विराज्' को युक्त म उत्पन्न बनलाया गया है) ४ क्षीर, स्वो० एक वैदिक द्रव या छन्द का नाम ।

विराज २० 'विराज' ।

विराजित (म० क० कृ०) [वि + राज् + क्त] । वेदा-व्यमान, प्रकाशित २ प्रदक्षि, प्रकटीकृत ।

विराट् [विद्योया गतो यत्] । भारतवर्ष के एक जिले का नाम २ मध्य देश के एक राजा का नाम । शास्त्र वेदान्त न एक पर तत्र इस राजा की सेवा में छापवेम में उत्तर अपने अज्ञान ज्ञान का समय (विद्या) । तत्र उनके निर्वाचन का उत्तरों वर्ष था । विराटराज की कन्या उलगा का विवाह प्रथिमथ म हुआ । उलगा परीक्षित् की माता थी । श्रीराम ने उलगापुत्र में सुप्रिष्टिज् के बाद रावण की वधवार मनायी । मम० का एक प्रकार का घटिया हीरा, पवन (नपु०) महाभाग का बोधा वर्ष ।

विराट् [विराट् + क्त] घटिया प्रकार का हीरा, हीरा का घटिया प्रकार ।

विराजित (प०) [वि + र्ज् + क्त] । हार्थी ।

विराट् (म० क० कृ०) [वि + राय् + क्त] । १ विराट् अक्षि २ कृति अभिव्यक्त, धृतापूर्वक व्यवहृत, उदरग धारि वि पूर्वक राय् के बीच ।

विराध् [वि + राय् + धञ्] । १ वराध २ मनाता, मन्त्रन करना, छेदछाद ३ राग के द्वारा मारा गया एक बलवान् राक्षस ।

विराधम [वि + राय् + मत्] । १ विरोध करना २ बाट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना पहुँचाए करना ३ पाठा बदना ।

विराध् [वि + र्ज् + धञ्] । १ रचना, बन्द करना २ मन् ममान्त्र, उपसहार रजनिगदासीमियमनि नापि विराधम् मीन० ५, उत्तर० ३।१६ मा० १।३० ३ यति, उदरना ४ आवाज का कला या धवना मूच्छ० ३।५ ५ एक छोटी निरक्षी मक्षी को प्यजन के नीचे लगाई जाती है, प्राय वाक्य के अन्त में, हृत्पिच्छ ६ किल्ला का नाम ।

विराध वे० 'विराध' ।

विराध् [वि + ध + धञ्] । कोलाहल, शोर, ध्वनि - आमाकवाह्य बयना विराधे - रत्न० २।९, १।५।३१ ।

विराधिन् (वि०) [विराध + धिन्] । रोने वाला,

चिल्लाते वाला, शोर मचाने वाला २. विकल्प करने वाला, -भी १ रोने या चिल्लाते वाली २ जाड़ ।

विरिष्ठा, विरिष्ठाः [वि + र्ष् + क्त, म्पृट् वा, मृष्] ब्रह्मा ।

विरिष्ठाः [वि + र्ष् + क्त, म्पृट्] । ब्रह्मा - विक्रम० १।४५, नै० ३।४६, मि० १।९ २ विष्णु ३ शिव ।

विराण् (म० क० कृ०) [वि + म् + क्त] । १ टुकड़े टुकड़े हुआ २ विनष्ट ३ मुका हुआ ४ टूटा ।

विराण् (म० क० कृ०) [वि + ह + क्त] । १ बीजा हुआ, चिल्लाया हुआ २ गुंजायमान, पीलापुर्ण, -तम् । १ किम्बदन्ता, बीजना, बहायना आदि २ चिल्लाहट, ध्वनि, शोर, कायाहल, घोष ३ गाथा, त्रिभुजनाया, कृपना, गुंजाना परभ्रुविक्रम कल वया प्रतिषध-नीकृतमभिरीदुयम् श० १।९ ।

विषय, -इम् (प०, नपु०) । १ बोधना करना २ जोर से चिल्लाता ३ स्तुतिररक कविता पद्यधमयो राजम्लुनिविद्ययुक्तो मा० ६० ५००, नदनि मरुतनिन परिमन्निन वाजिमान, पदनि विरहा-वकी मक्षिमक्षिने वन्दित -रम० ।

विषदितम् [विषद + क्त] । जोरजोर से राता बोना, विनाश करना उत्तर० ३।१० (पाठान्तर) ।

विषय (म० क० कृ०) [वि + षय् + क्त] । १ बाधित, राधा गया विराध किया गया, इकावट डाली गई २ घेरा हुआ, कैद में बन्द किया हुआ ३ विपरीत, घेरा हुआ, ताकेबन्दी की गई ४ विपरीत, अग्रगन बेमेल, अग्रम्बद्ध ५ प्रतिकूल, विरोधी, गुणों में विपरीत ६ पराका विरोधी, वैपरीय को मित्र बनने वाला (जैसा कि लक० में 'हेतु') उभा० शब्दों नियम हनकम्बत् लक० ७ विरोधी, उलटा, धनुनागुण ८ अग्रनकल, अनुपयुक्त, ९ प्रतिविधि, वजित (भोजन आदि) १० अशुद्ध, अनुचित, दुष् १ विरोध, वैपरीय, अघृता २ बेमेल, असह-यति ।

विकल्पान् [वि + क् + म्पृट्] । १ कला करना २ नकाशा को रोकने का कार्य करने वाली (बीषधि) ३ कलक, निम्ना ४ अधिवाप, कोषना ।

विक (म० क० कृ०) [वि + क् + क्त] । १ वेपना हुआ, अकुशल हुआ मूच्छ० १।९ २ उत्पन्नता, उपजाया हुआ, उत्पन्न किया हुआ ३ उभा हुआ, अधिवाधित ४ मुकुलित, सिगा हुआ ५ चड़ा हुआ, सवारी की हुई ।

विक्रय (वि०) स्त्री० या, स्त्री [विक्रत रूप मय्य श्रा० ४०] । विक्रयित, कुपक, बदलाक, बदलते पन्थ० १।१४६ २ आवाहकिक, विकटा-न्तर ३ विकल्पक, विकल्पकों वाला, -कम् ४ कुसित

रूप, दुःखता 2. रूप, स्वभाव या परिच की विभिन्नता । सम० अक्ष (वि०) ग्रीही शंखो बाला वपुर्विकृपाशम् कु० ५।१०. (कः) विच (विचम लक्ष्मा की शंख होने के कारण) -दूता वक्ष मनसिच औषधयति वृषोव वा, विकृपाश्वय अयिनीस्ता-सुषे कामलोचना - रिट्ट० १।२, कु० ६।२१, -करवृत्त 1. वदसूरत बनाया 2 क्षति पहुँचाना, -वक्षम् (पु) विच का विचोषण, रूप (वि०) ग्राह, बंधन ।

विकल्पम् (वि०) (स्त्री० वी) [विदृष्ट रूपवन्ति अल्प -विकल्प +इति] ग्राह, कुक्ष, बहसूरत ।

विक्रेकः [वि + रिच् + क्त्वा] 1 मलाशय को रिक्त करना, साफ करना 2 विक्रेक, जुकव की दवा ।

विक्रेकम् वे० 'विक्रेक' ।

विक्रेकित (वि०) [वि + रिच् + पिच् + क्त] घट नाक किया गया, घट निर्मल और रिक्त िया गया ।

विक्रेकः [विक्रिप्यो देसो अल्प वि + रिच् + अच्] 1 नदी, सरिता 2 'र' अक्षर का अभाव ।

विक्रीकः -कम् [वि + क्त्वा - घञ्, अच् वा] रि.२, सूरराज, दरार, का प्रकाश की क्रिया ।

विक्रीकनः [विचोषण रोषणो वि + हच् + ल्युट्] 1 सूर्य 2 चन्द्रमा 3 अग्नि 4 अज्ञान के पुन और क्षति के पिता का नाम । सम० -सुत, क्षति का विचोषण ।

विक्रीकः [वि० -घच् + घञ्] 1 प्रतिरोध, रक्षावट, विघ्न 2 नाकेबंदी, बेरा, आबरण 3 प्रतिबन्ध, रोक 4 असंगति, अक्षरद्वेषता, परस्परविक्रीक 5 अर्थ विक्रीक शेषम् 6 समुद्रा, दुग्धमयी -विक्रीको विद्याल -उत्तर० ६।११, पच० १।३३२, रघु० १०।१३ 7 कर्मह, असह्युक्ति 8 सफट, दुग्धार्थ 9 (अक्ष० में) प्रतीयमान असंगति जो केषल शार्थिक हो, तथा सर्वत्र को ठीक से अभिव्यक्त करने पर स्पष्ट हो जाय, इसमें परस्पर विक्रीको प्रतीय होने वाले शब्द (जो बन्तुत बैसे न न हो) सम्मिलित रहते हैं, बन्तुको का ऐसा वर्णन करना जो मित्रो हुई प्रतीय हो, परन्तु बन्तुत हो भिन्न भिन्न, (इस अलकार का भाग और सुबुध ने बहुत उपयोग किया है -पुण्यवन्धि परिभाषा, इण्णोऽप्यनुवर्षण, भरतोपि दाबुज्ज. आदि उदाहरण प्रसिद्ध हैं) मन्मट ने इसको परिभाषा दी है -विराध सोऽविक्रीकऽपि विदृष्टत्वेन यद्वा -काव्य० १०, इत अलकार का नाम विक्रीकाभाव भी है । सम०-उक्तिः (स्त्री०), वक्षन्तु परस्परविक्रीक, विक्रीक, क्षारिण (वि०) भ्रगवा करने वाला, क्वत् (वि०) विक्रीको (पु०) शब्द ।

विक्रीकम् [वि + हच् + ल्युट्] 1 बाधा डालना, विघ्न डालना, रक्षावट डालना 2 बेरा डालना, नाकेबंदी

करना 3 प्रतिरोध करना, मुकाबला करना 4. परस्परविक्रीक, असंगति ।

विक्रीकम् (वि०) (स्त्री० वी) [वि। हच् + पिति] 1 मुकाबला, करने वाला, प्रतिरोध करने वाला, अवरोध करने वाला 2 बेरा डालने वाला 3 परस्पर विक्रीको, प्रतिद्वन्द्वी, असंगत, तर्कात्के श० १ 4. विद्वेयी, दाबुतापुत्री, प्रतिकूल विरिधिसम्बन्धित- पूर्वमस्तरम् कु० ५।१७ 5 भ्रगवाङ्ग-पु० शब्द शि० १६।६८ ।

विक्रीक (ह) शब्द [वि + क्त्वा - ल्युट्] (शार आदि का) भरना इषाविरापण नेत्रम् श० ६।१८ ।

विक्षुः (तुदा० पर०) [विक्षिण] 1 इकना, क्षिपना 2 लोडना, बाटना 11 (चुरा० उभ०) वेनयति -ने) पैकना, धकेलना ।

विक्षुम् वे० 'विक्षु' ।

विक्षु (वि०) [विक्षु + अच्] 1 जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो 2 व्याकुल, बिह्वल 3 आश्चर्यम्वित, अचभ में पडा हुआ 4 अजिज्ञ, क्षमिदा, अज्ञान गोत्रेषु स्तमितस्नेहा भवति च श्रोडाविनम्र- पिचरम् - श० ६।५, अनाथा, अन्तः ।

विक्षु (वि०) [विगत लक्षण वय्य-शा० क०] 1. जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो 2 विघ्न, इनर 3 अनाथा, अनाचार्य, अन्तः 4 अशुभ लक्षणों से युक्त शब्द अर्थ या निरर्थक स्थिति ।

विक्षु (पु० क० ह्र०) [वि, लक्ष् - क्त] 1 विधुत, प्रयत्नहीन, दृष्ट, आश्चर्य 2 विवेचनीय 3 उद्भिन्न, घबराया हुआ, बिह्वल, व्याकुल प्रकृतिपि नाराज ।

विक्षु (वि०) [वि + ल्युच् - क्त] 1 बिपटा हुआ, बिपका हुआ, अकर्मजन, बका हुआ श० ७।२५, शि० ९।२० 2 डाला हुआ, स्थिर किया हुआ, निर्दिष्ट कु० ७।५ 3 बिगत, बांटा हुआ (मय आदि) 4. पतला, छरहरा, मुकुमार -अर्थन सा वेदिकल्प- मध्या कु० १।३०, विक्रम० ४।३०, शब्द कम्प 2. कम्प 3. ताराचकल का उदित होना ।

विक्षु (वि०) [वि + ल्युच् + ल्युट्] 1 अतिक्रमण करना, लोप आना 2 अपराध, अतिक्रमण, क्षति ।

विक्षु (पु० क० ह्र०) [वि + ल्युच् + क्त] 1 पाप या परे गया हुआ, दुःखया हुआ 2 अतिक्रान्त 3 आगे गया हुआ, जाने बड़ा हुआ 4. पराप्त, पराजित ।

विक्षु (वि०) [विगता अजया यय्य शा० क०] निर्भ्रज, बेगने ।

विक्षु (वि०) [वि + ल्युच् + ल्युट्] 1. बाँटे करना 2 विक्रमी बाँटे करना, बहकना, बहकना 3. विलाप करना, रोना-धोना, -विक्षुपणविक्रीकोऽप्यनुकम् -उत्तर० ३।३० 4 कीकट, लक्ष्मण ।

विलासितम् [वि+लप्+कत] 1 विलाप करना, कन्दन
2 रोहन ।

विलम्बः [वि+लम्ब+घञ्] 1 लटकना, दोलायमानता
2 भीषणता, देरी, दीर्घसूत्रता ।

विलम्बवान् [वि+लम्ब+व्युट्] 1 लटकना, निर्भरता
2 देरी, टालमटोल न कुछ निश्चिन्त नवनविलम्ब-
नम्—गीत० ५, या लम्बाये विफलं विलम्बनवती
रम्योऽभिसारलय—तदेव ।

विलम्बिका [वि+लम्ब+व्युल+टाप्, इण्वम्] कम्बी,
कोष्ठकटना ।

विलम्बित (म० क० कृ०) [वि+लम्ब+कत] 1 लट-
कना, निर्भरता 2 लम्बवान्, लटकाने वाला 3. आश्रित,
मुग्धबद्ध मन्त्र, दीर्घध्वनी, आलसी ३ मन्त्र, भीषा
[मगीन में काक आदि] ४० वि पूर्वक 'लम्ब'—लम्
देरी ।

विलम्बित् (वि०) (स्त्री०—नी) [विलम्ब+णिनि]
1 नीचे लटकता हुआ, निर्भर, लटकना—नवाम्बुभि-
र्भूषितविलम्बितो वना श० ५।१२, अलङ्कारविलम्ब-
वशाचरोपचङ्गा शि० ५।२०, ५९, कु० १।१४, कि०
५।९, मृ० १५।८४, १।८२५, वृ० ५।१३ 2 देर
करने वाला, टालमटोल करने वाला, मन्त्र रहने
वाला—अवनि विभक्तिवि विवर्तितलम्बा विलम्बति
रोदिनि वासकसञ्जा गीत० ६ ।

विलम्ब [वि+लम्+घञ्, मुम्] 1 उदारता 2 अँट,
दान ।

विलम्ब [वि+लम्+अप्] 1 विषटन, विफलता 2 विनाश,
मृत्यु, अन्ते उतर० ७ 3 मरान का विषटन या
विनाश, (विलम्ब वम् पूल जाना, अन्ते ही जाना,
मरान हो जाना विवसान्निविषमयनद्विलम्बम्—शि०
१।१७ ।

विलम्बन् वि+लम्+व्युट्] 1 पल जाना, विफल जाना,
पोल या विषटन 2 जग लग जाना घुषी या जाना
3 हटाना, दूर करना 4 पलना करना 5. पलना
करने वाली औषधि ।

विलम्ब (शब्द वि०) (स्त्री०—नी) [वि+लम्+लृप्]
1 बमकने वाला, प्रकाशमान, उज्ज्वल 2 बमकमान
वाला, सहसा चौधने वाला 3 लहंगाने वाला 4 कीड़ा-
श्रित, विनोदप्रिय ।

विलम्बन् [वि+लम्+व्युट्] 1 बमकना, बमकमाना
बमकना, जगमाना 2 कीड़ा करना, हठमाना,
बोचले करना ।

विलसित (म० क० कृ०) [वि+लस्+कत] 1 दमकला
हुआ, बमकला हुआ, जगमाना हुआ 2 प्रकट हुआ,
प्रकटोक्त 3 कीड़ाप्रिय, स्वेच्छाचारी,— लम् 1. दम-
कला, जगमाना 2 बमक, दमक—रोषीयुवां मुहुर-

म्ब हिरण्यवीना मासस्तद्विलसितानि विदम्बन्वति
कि० ५।४६, मेघ० ८१, विष्णु० ४ 3 दर्शन,
प्रकटीकरण— जैना कि अहातविलसितम् आदि में
4 कीड़ा, खेल, खरौली, सानुराग हावभाव ।

विलासः [वि+लप्+घञ्] कन्दन, शोक करना, रोदन,
कराहुना—ककास्वीणां पुनश्चने विलासाचार्यक छरे-
रम् १।२।७८ ।

विलासः [वि+लप्+घञ्] 1 विलाप 2. उपकरण,
यन्त्र ।

विलासः [वि+लप्+घञ्, 1 कीड़ा, खेल, मनोरंजन
2. केलियरक मनोविनाश. दिलबहालावा, प्रसन्नता
जैना कि 'विलासमेवमेव—रम् ८।१४ में, इसी
प्रकार विलासकानम्, विलासद्विरम् आदि 3. ललित
अभिनय, खरौली, अनुराग, कम्बुकला, सुन्दर भाव,
रतिबोधक कोई भी विचोचित हावभाव श-
२।२, कु० ५।१३, शि० १।२६ 4 काव्यिक
लील्यं, चाकला; नाच्य मा० २।६ 5 बमक,
दमक ।

विलासलम् [विलसु+लित्+व्युट्] 1. कीड़ा, खेल मनो-
रंजन 2 कामुकता, खरौली ।

विलासलसी [विलास+मनुप्+कीप्, मस्य व] स्वेच्छा-
चारिणी या कामक स्त्री—रम् १।४८, चतु०
१।१२ ।

विलासिका [वि+लप्+व्युल्+टाप्, इण्वम्] प्रेमलीला
से पूर्ण एकाङ्की नाटक, इसकी परिभाषा मा० ८०
५५२ पर इस प्रकार दी है भुङ्गारवर्णकका
दशलास्यासलस्युता, विदूषकचिटास्या व पीठमरेण
भूयिता । हीनां गर्भविषसांभ्या सधिभ्यां हीनतायका ।
स्वल्पवृत्ता मुनेपथ्या विसृताता ता विलासिका ॥

विलासिन् (वि०) (स्त्री० स्त्री) [विलास+इति] कीड़ा
युक्त, मोलापर, खरौली में स्थित, कामुक, बोचले
करने वाला, रम् ६।१४, वं० 1 विचयी, मोला-
सकता, रतिकम्बन, उपमानमभूद्विलासिनां करण यत्न
कातिमरया कु० ४।५ 2 अग्नि 3 चक्रमा 4 ज्ञाप
5. कृष्ण वा विलु का विशेषण 6 विष का विशेषण
7. कामदेव का विशेषण ।

विलासिनी [विलासिन्+अनीप्] 1 रमणी 2 हावभाव
करने वाली स्त्री,—हरिश्चि मुग्धवृत्तिकरे विला-
सिनी विलसति केलियरे गीत० १, कु० ७।१९,
शि० ८।७०, रम् १।१७ 3 स्वेच्छाचारिणी,
देवता ।

विलिखन् [वि+लिख्+लृप्] बुरघना, कुदेरना,
विलाना ।

विलिख (म० क० कृ०) [वि+लिप्+कत] लोपना हुआ,
घोटा हुआ, चुपका हुआ

विशेष (मू० क० छ०) [वि + लो + क्त] 1 विपकने वाला, विपटा हुआ, बन्धक 2 अर्द्धे पर बँठा हुआ, बसा हुआ उभरा हुआ 3 ससक्त, सस्यो 4 विपला हुआ, चुला हुआ, मलाया हुआ 5 अन्तहित, ओसल 6 वृत्, नष्ट ।

विशेषणम् [वि + लुप् + ल्यट्] फाड़ डालना, छीलना ।
विश्लेषणम् [वि + लुट् + ल्यट्] लुटना, टाका डालना ।
विश्लेष्य (मू० क० छ०) [वि + लुप् + क्त] 1 तोडा हुआ, फाड़ा हुआ-पत्र० २।२ 2 पकड़ा हुआ, छीना हुआ, अपहरण किया हुआ 3 लुटा हुआ, टाका डाला हुआ 4 विनष्ट, बर्बाद 5 बिगाडा हुआ, तोडा-फोडा हुआ ।

विश्लेषकः [वि + लुप् + क्त] चोर, लुटेरा, अपहर्ता ।
विश्लेषित (मू० क० छ०) [वि + लुप् + क्त] 1 इधर उधर घूमने वाला, अस्थिर, हिला हुआ, लुढ़का हुआ, घबराहारा हुआ 2 कमरगिहत, कमधुन्य गलित कुसुमदलविलुङ्गितकेषा -गीत० ७ ।

विश्लेष्य (मू० क० छ०) [वि + लु + क्त] कटा हुआ, काट डाला हुआ, चोरा हुआ, काट कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ ।

विश्लेषनम् [वि + लिप् + लिच् + ल्यट्] 1 सूरचना, सुरेदना, गूडना 2 लोदना 3 उलाटना ।

विश्लेष [वि + लिच् + यञ्] 1 उबटन, मत्हम 2 चूना 3 जिपाई-मुनाई ।

विश्लेषणम् [वि + लिप् + ल्यट्] 1 लीपना, पोतना 2 मन्त्रन, उबटन, कोई भी शरीर पर लेप करने के पद्य मुग्धनिव पदार्थ (केसर व चन्दन आदि) -पान्यन मुरभिकुसुमवपविलेपनादीनि का० ।

विश्लेषणी [विलेप + ङीप्] 1 मुग्धनिव इष्यो से मुवासित स्त्री 2 मुवेधा 3 चावल का माड ।

विश्लेषिका, **विश्लेषी**, **विश्लेष्य** [विश्लेषी + क्त + टाप्, ह्रस्वः] विलेप + ङीप्, वि + लिप् + व्यञ् । चावल का माड ।

विश्लोकणम् [वि + लोक् + ल्यट्] 1 देखना, निहारना, नुट्टि डालना कि० ५।१६ 2 नुट्टि, निरीक्षण --सि० १।२९ ।

विश्लोकित (मू० क० छ०) [वि + लोक् + क्त] 1 देखा गया, निरीक्षण किया गया, समीक्षित, निहारा गया 2 परीक्षित, चिन्तन किया गया, --तम् दृष्टि, तद्वर --स० २।३ ।

विश्लोक्यम् [वि + लोक् + ल्यट्] अक्षि रघु० ७।८, कु० ४।१, ३।६७ । तम० अन्व० (नृ०) आ० ।

विश्लोक्यम् [वि + लोक् + ल्यट्] विशुद्ध होना, दोषायमान होना, हिल-चुल, मन्थन करना सि० १।४।८३ ।

विश्लोषित (मू० क० छ०) [वि + लोष + क्त] हुलाया हुआ, बिलोया हुआ, हिलाया हुआ, विमुग्ध, तम् बिलोया हुआ सूच ।

विश्लोषः [वि + लुप् + यञ्] 1 ले जाना, अपहरण करना पकड़ना, लुटना 2 शोष, हानि, नाश, अर्थहीन ।

विश्लोषणम् [वि + लुप् + ल्यट्] 1 काट डालना 2 अपहरण 3 नष्ट करना, विनाश ।

विश्लोषः [वि + लुप् + यञ्] आकर्षण, फुललाहट, प्रलोभन ।

विश्लोषणम् [वि + लुप् + लिच् + ल्यट्] 1 मोह लेना, ललचाना 2 रिशाना, प्रलोभन, फुललाना 3. प्रथमा सुशामद ।

विश्लोष (वि) (स्त्री० - षी) [वितान लाम यञ्-प्रा० व०] 1 अत्यक्त, प्रतिकूल, प्रतिनाम, विपरीत, विरुद्ध 2 प्रतिकूल क्रम में उत्पन्न 3 विपक्षा हुआ, म. विपरीत क्रम, प्रतिनाम 2 कुला 3 मांग 1 वरुण, भृष् रष्ट, कुर्गे से पानी निकालने का यन्त्र । मय०

उत्पन्न अ. - जाल, बर्ष (वि०) प्रतिकूल क्रम म उत्पन्न अर्थान् गेभी माता से जन्म लेना जो पिता की अपेक्षा उच्च वर्ण की हो - मू० प्रतिनामक भी **विप्या** - **विधि** 1 प्रतिकूल क्रम 2 प्रतिनाम विद्यम (गणि० में) **विद्वु** हाथी ।

विश्लोषी [विश्लोषः + ङीप्] अश्लो ।

विश्लोल (वि०) [विशेष्य लोल-प्रा० म०] 1 दालायमान कापना हुआ, घबरा करने वाला, अस्थिर, हिलने वाला, बचल, घबरा उधर उधर लड़कने वाला पुननाम **विश्लोलशीलिनम्** त्क० ८।१९, सि० ८।८ १५।६० - ०।१०, वेण० २।२१, त्प० ३।८१ १६।६८ 2 श्लोका विशेष्येन **विश्वेरे टा** (जाल आदि) उत्तर० ३।६ ।

विश्लोहित [विशेषण वर्जित प्रा० म०] ५३ का नाम - **विश्व** दे० - विन्दः ।

विश्व दे० - विन्दः ।

विषया [वच् - मन् - भ + टाप्] 1 शालन का इच्छा 2 अभिलाषा, इच्छा 3 अर्थ, आशय 4, इष्टारा प्रयाजन ।

विषयित (वि०) [विषया + इतच्] 1 कहे जाने या वग जाने के लिए अधिष्टित - **विषयिते** शतृन्वयनुवाचजन यनि - म० ३ । अर्थयकल, अभिधेन, उत्पन्न ३ अभिलषित इच्छित 4 प्रिय, तच् 1 प्रयाजन अभिप्राय 2 आशय, अर्थ ।

विषयु (वि०) [वच् + यन्] उ । बालने की इच्छा वाला - कु० ५।८३ ।

विषयसा [वितान क्रमा यस्या प्रा० व०] विना गदर की गाय ।

विषय [विक्रमा विशयो वा वच् हनन गतिर्वा यञ् प्रा० व०] 1 बाधा डाने क लिये **बुद्धा** 2 माम, महत् 3 बाधा, भार 4 जनाह का महत्त्व 5 चढा ।

विषयिकः [विषय+ङ्] 1 बोझा ढोंनी बाधा, कुली 2 फेरी बाधा, मायाय लगा कर डेकने बाधा ।

विषयम् [वि+य्+ञ्] 1. धरार, छिद्र, रज्ज, लोखलापन, रिक्तता-बन्धकार विषय टीकायने ताडकोरित स रामसायक रघु० १११८, ११६१, ११७० 2 अनाभ्यास, अनासक, बीष की जगह ल० ७७३ 3 एकान्त स्थान कि० १२३७ 4 शेष, वृद्धि, ऐव, कमी 5 विच्छेद, घाव 6 'ने' की लक्ष्या । मम० -नासिका बसरी, बसी, मुरली ।

विषयम् [वि+य्+ङ्] 1 प्रघर्षन, अभिष्यजन, उद्घाटन, मोलना 2 अनागत करना, भुला छोडना 3 विद्वान्, व्याख्या, बुद्धि टीका, भाष्य ।

विषयम् [वि+य्+ङ्] छोडना, निकाल देना, परिचाय करना यात्र० ११८१ ।

विषयिण (भू० क० ह०) [वि+युञ्+ङ्] 1 छोडा हुआ, परिचयक 2 परिहृत 3 अर्थिक, विरक्ति, के विना (प्राय ममाथ में) 4 प्रदत्त विवरण ।

विषयं (वि०) [विगत वर्णो लम्-प्रा० व०] 1 विचारण का निष्पन्न, ताप, क्रीडा नरेन्द्रमार्गद्वि 2 प्रपदे विषयभाव सत् अर्थियाण - रघु० ६१६० 3 क्रिम पर कोई रज न चडा हा निर्मल, प्रा० ३११६, 3 शीघ्र, दुष्ट 4. अज्ञानी, पुत्र निरक्षर सँ जनि-नरिष्कन, शीघ्र जनि स मन्वथ रजने बाधा ।

विषयं [वि+य्+ङ्] 1 गाल चक्कर खाना, चारो तरफ घूमना अथवा 2 आगे का मुड़कना 3 पीछे की मुड़कना लोटना 4 नृत्य 5 बदलना, मुधारना रूप में परिचयन बदली हुई दशा या अवस्था-गन्धर्वदा यन्त्रादुस विवर्तयितिरास रामायण पाणिनाय उत्तर० ८, एको रस कृष्ण एव विविधमेवार्द्रादुस एवक पृथगिवाश्रयने विवर्तयति उत्तर० ३१६०, महावी० ११५७६ (वेदान्त० में) एक प्रतीयमान भ्रान्तिजनक रूप, अविद्या या मानव की भ्रान्ति स उपपन्न मिथ्या स्य (यह वेदान्तियों का एक विषय मिथ्या है जिनके अनुसार यह मयन्न मयार ज्ञान माया है मिथ्या और भ्रान्तिजनक रूप जब कि ब्रह्मा वा परमात्मा ही वास्तविक रूप है, जैसे कि माय रंगों का विवर्तन है, इसी प्रकार यह मयार उस पर ब्रह्मा का विवर्तन है, यह भ्रान्ति या माया मयज ज्ञान अथवा मिथ्या ये ही दूर होती हैं न० भवभूति विद्याकल्पेन मरुता यथात्मा भूयमासि, ब्रह्मणीय विवर्तना स्वानि विवर्तन कृत - उत्तर० ६१६ 7 डेर, मयन्वय मयज, मयभाव । मम० ब्राह्म वेदान्तियों का मिथ्या कि यह दृश्यमान मयार माया है केवल ब्रह्मा ही एक वास्तविकता है ।

विवर्तयम् [वि+युञ्+ङ्] 1. चक्कर खाना, कानि, १००

अथवा 2 इधर उधर लुढ़कना, कपटें बदलना - छ० ५१६ 3 पीछे लुढ़कना, लोटना 4 नीचे की लुढ़कना, उतरना 5 विद्यमान रहना, पुत्र रहना 6 ससम्मान अविवाहण 7 नाता प्रकार की साराथी व विचारियों में से गुजरना 8 परिचयित दशा-उत्तर० ४११५, मा० ५७३ ।

विषयवन् [वि+युञ्+ङ्] 1 बड़ना 2 वृद्धि, वर्धन, बढ़ती 3 विष्कार, बन्धुदय ।

विषयिण (भू० क० ह०) [वि+युञ्+ङ्] 1 बडा हुआ, वृद्धि की प्राप्त 2 प्रगत, प्रोन्नत, वाम बढ़ाया हुआ 3 सत्पुत्र, सत्पुत्र ।

विषय (वि०) [वि+युञ्+ङ्] 1 अनियमित जो वक्ष में न किया गया हो 2 मात्सर, आश्रित, अश्रीन, दूसरे के नियंत्रण में, असहाय-परीना रक्षोभि धयति विवक्षा कार्जि वक्षाम् मामि० ११८३, मुद्रा० ६१८, सि० २०१५८, सि० ११७७०, महावी० ६१३०, ६३३ बेहोश, जो अपने आपको काहू में न रख सके विवक्षा कामवधुविबोधिना-कृ० ४११ 4 मृत, मृत-उपलब्धवर्ती विषयभ्यन विवक्षा शापनिवृत्ति-कारणम् रघु० ८८८२ ५ सत्पुत्रापी, सत्पु की मायाका वाने बाधा ।

विषयस्य (वि०) [विगत वक्षन यस्य प्रा० व०] मया, विवक्ष्य, मं ज्ञेन साधु ।

विषयवत् (ए०) [विशेषण करने आख्यायति-वि+युञ्+ङ्] 1 सुव-मनुष्य 2 सुव-त्वष्टा विषयवत्सिबो-ल्लिखेत् कि० १७५८, ५१६८, रघु० १०३०, १७, ४८ 2 अरुण का नाम 3 वर्णनाय मनुष्या नाम 4 देव 5 अक का पीषा, मदार ।

विषयः [वि+युञ्+ङ्] प्राय की सल जिह्वाओं में से एक ।

विषयकः [विशिष्टो वाको यस्य प्रा० व०] न्यायाधीश, नु० 'प्राइविटाक' ।

विषयः [वि+युञ्+ङ्] (क) बलह, प्रतिभोगिता, मयर्थ विषय, शास्त्रार्थ, विचारविमर्श, वाद-विवाद, झगडा, झगट-अल विवादेन-कु० ५१८३ एतयोविवादे एव मे न टोकने-मालवि०१, एकाध्वर प्राथित-योविवादे' रघु० ३१५३ (स) नर्क, तर्कता, चर्चा 2 बचन विरोध एष विवाद एव प्रयाययति-श० ७ 3 मुकदमेबाजी, नर्कनाश, कानूनी सचर्च, सीमाविवाद विवादपरम् आदि, परिभाषा इस प्रकार की गई है ऽणादिवायकलहे द्वयोर्बहुतरस्य वा विवादो व्यवहारस्य दे० व्यवहार' र्भी ८ उच्य-कृत, ध्वनन ५ वादेश, आशा-रघु० १८१३३ । मप०-अर्थि (ए०) 1 मुकदमेबाज 2 वादी, अधीशक्ता, प्राथियोक्ता-एवम् कलह का शीर्षक, -बस्तु (न०) कलह का विषय विचारणीय विषय ।

विवादिन् (वि०) [विवाद+इनि] 1. कलह करने वाला, तर्क विचार करने वाला, तर्कप्रिय, कलहशील
2. (कानूनी पहलू पर) विवाद करने वाला—यु०
मुद्राभेदविवाद, कानूनी अभिव्यक्ति में भाग लेने वाला।

विचारः [वि+च्+घञ्] 1 मूढ़, विस्तार 2 बसरो का उच्चारण करते समय कण्ठ का विस्तार (एक अक्षरतर प्रयत्न, वि० संघार, दे० पा० १।१।९ पर सिद्धा०)।

विचारः, **विचारसन्** [वि+च्+घञ्+घञ्, स्पृट् वा] देश निर्वासन, देशनिकास, निष्कानन, रामस्य मान-मसि दुर्बल्यमंविचारसोताविचारसन्पटो कथया कुतस्ते—उत्तर० २।१०।

विचारित (यु० क० कृ०) [वि+च्+घञ्+क्त] देश से निर्वासित किया गया, देश निकाला दिया गया, निष्कासित।

विवाहः [वि+बह्+घञ्] धार्मी, ब्याह (हिन्दू स्मृति-कारों ने जाट प्रकार के विवाह बताया है बाह्यो ईवस्तयैवायं. प्राजापत्यस्तयानुत्., याचयौ राक्षसयचैव वैशाखस्थाष्टोत्थम मनु० १।२१, दे० याज्ञ० १।५८, ११ भी, इन ऋषी की ब्याख्या के लिए उस शब्द को देखो। सम०—चतुष्टयम् चार पत्नियों से विवाह करना,—बौद्धा विवाह संस्कार या कर्म।

विवाहित (यु० क० कृ०) [वि+बह्+घञ्+क्त] ब्याहा हुआ।

विवाह्य [वि+बह्+घञ्] 1 अमाना 2 दूल्हा।

विचिन्त (यु० क० कृ०) [वि+चिञ्+क्त] 1 विपुला, पुष्पकृत, अलगाया हुआ, बेसुध 2 अकेला, एकाकी, निवृत्त, विलस्य 3 एकल, एकी 4 प्रभिन्न, विवेचन किया हुआ 5 विवेकशील 6 पवित्र, निर्दोष रत्न० १।२१,—स्तम् 1. एकान्त स्थान, निर्जन स्थान शि० ८।७० 2 अकेलापन, निजता, एकान्तस्थान—स्ता भाग्यहीन या अभागी स्त्री, जो अपने पति को प्यारी न हो, दुर्भया।

विचिन्त (वि०) [विचोपेण विन् वि+चिञ्+क्त] अत्यन्त सूक्ष्, या बरा हुआ १५० १।८।१३।

विचिञ्च (वि) [विभिन्ना विष्ठा मय्य—शा० क०] नाग प्रकार का, विभिन्न प्रकार का, बहुसंघी, विचलरूपी, प्रकीर्ण मनु० १।८, ३९।

विचोतः [विशिष्ट वीत मवादिप्रकारस्थान यत्र—शा० क०] चित्त हुआ स्थान, बाधा, जैसे चरागाह।

विच्युत (यु० क० कृ०) [वि+च्युञ्+क्त] छोटा हुआ, परित्यक्त, सपरित्यक्त।

विच्युता [विच्युत+टाप्] बहू स्त्री जिसको उसका पति प्यार नहीं करता, तु० 'विच्युता'।

विच्युत (यु० क० कृ०) [वि+च्युञ्+क्त] 1 प्रदासित,

प्रकटीकृत, अभिव्यक्त 2 स्पष्ट, सामने सुना हुआ 3 सुना हुआ, अनाबुल, नगा पका हुआ 4 बोला, प्रकट किया हुआ, मग्न, उदाहृत 5 उदाहृत 6 भाष्य किया गया, ब्याख्या की गई, टीका की गई 7 वितारित, फैलाया गया 8 विस्तृत, विस्तार, प्रदान। सम० अन्न (वि०) बड़ी बड़ी बोलो वाला, (शः) मुर्गा, डार (वि०) सुने बरबाको वाला कु० ४।३६।

विच्युति (स्त्री०) [वि+च्युञ्+क्तिन्] 1 प्रदर्शन, प्रकटीकरण 2. विस्तार 3 अनावरण, व्यक्तीकरण 4 भाष्य, टीका, वृत्ति, बाष्पांतर।

विच्युत् (यु० क० कृ०) [वि+च्युञ्+क्त] 1 मुड़ कर आया हुआ 2 मुड़ना, चक्कर काटना, लड़कना, भ्रम।

विच्युत्स (स्त्री०) [वि+च्युञ्+क्तिन्] 1 मुड़ना, भ्रम, चक्कर 2 (ब्या०) उच्चारण भ्रम।

विच्युद्ध (यु० क० कृ०) [वि+च्युञ्+क्त] 1 विकसित 2 बढ़ा हुआ, आर्षित, ऊँचा किया हुआ, बढ़ाया हुआ, शीघ्र (शोक हर्षादिक) 3. विपुल, विस्तार, प्रच्यु।

विच्युद्धि (स्त्री०) [वि+च्युञ्+क्तिन्] 1 बढ़ना, बचन, बढ़ना, विकास यद्यः शरीरावयवा विच्युद्धिम् रघु० १७।५९, विच्युद्धिमप्राप्तवते वसुनि १३।५, इसी प्रकार शोक हर्षे जाति 2. समृद्धि।

विवेकः [वि+विञ्+घञ्] 1 विवेचन निर्वाण, विचारणा, विज्ञता,—काश्चपि यान्तस्तवापि च विवेकः भाषि० १।६८, ६६, ज्ञानोऽप्यञ्जलवर तावकः। विवेक—१६ 2 विचार, विचारविमर्श, गवेचन। यस्मिन्नाविवेकस्तस्मिन् यत्काश्चप्य मोक्षायानम् गीत० १२, इसी प्रकार द्वैत धर्म 3 भेद, अन्तर, (शे वस्तुओं में) प्रभेद नीरक्षीर विवेके हृत्सात्म्य त्वमेव तनुषे चेत् भाषि० १।५३, मट्टि० १७।६० 4 (वेदान्त० में) दृश्यमान जगत् तथा अदृश्य आत्मा में भेद करने की शक्ति, माया या केवल बाह्य रूप से वास्तविकता को पृथक् करना 5 साथ ज्ञान 6 अनायास पात्र, जलाधार। सम०—अ (वि०) विवेकशील, विवेचक,—ज्ञानम् विवेचन करने की शक्ति, कुशम् (यु०) सूक्ष्मदर्शी पुरुष, वरषो पुनर्विमर्श, विचार, चिन्तन।

विवेकिन् (वि०) [विवेक+इनि] विवेचक, विचारवान् विवेकशील, यु० 1 व्यापकर्ता, मुण्दोपविवेचन 2 दार्शनिक।

विवेक्य (यु०) [वि+विञ्+तृच्] 1 व्यापकारी 2 शक्ति, दार्शनिक।

विवेचकम्,—ता [वि+विञ्+स्पृट्] 1. मुण्दोपविचारणा 2. विचारविमर्श, विचार 3 कैवल्य, निर्णय।

विद्योद् (पु) [वि + बह + तुच्] बुद्धा, पति ।
विष्कोक शं० विष्कोक-विष्कोकस्ते मृतविप्रियोः वामंपानी
बन्धु - उ० शं० ४३ ।

विष्णु-उ० पर० विष्णति, विष्टः 1 प्रविष्ट होना,
जाना, शामिल होना विशेष कश्चिच्छब्दस्मरणयोग्यम्
-कु० ५१३०, रघु० ६१२०, १२, मेघ० १०२,
भग० ११२९२. 2 जाना या पहुँचना, अधिकार में जाना
किसी के हितसे में पढ़ना-उपदेश विष्णु शस्त्रप्रोत्सेका
कोशलेष्वरम् रघु० ५१३० 3 बैठ जाना, बस जाना
4 बस जाना, आवास हो जाना 5 स्वीकार करना,
उत्तरदायित्व लेना, प्रेर० (बोधयति-ते) बुझाना,
प्रविष्ट कराना - इच्छा० (विचिन्तयति) प्रविष्ट होने
की इच्छा करना अनु - 1 सम्मिलित होना
2 किसी का अनुमनन करना, बाद में प्रविष्ट होना,
अनुग्रह सम्मिलित होना (आन० से) दूसरे की
इच्छानुसार अपने आप को डालना, यद्यप्य मय्य हि
यां भावस्तस्य तस्य हित नर, अनुग्रहिय मेधावी
निप्रमायवस नयेत् -यच० ११६८, अधिधि
(आ०) 1 सम्मिलित होना, अधिकार करना
2 सहारा लेना, अधिकार कर लेना अधिनिविष्टते
सन्नामं मिद्धा०, अथ तावत्सेव्यादभिनिविष्टते
-मुद्गा० ५१२२, प्रटि० ८१८०, आ 1 प्रविष्ट होना
-रघु० २१२६ 2 अधिकार करना, कब्जे में ले लेना,
कब्ज कर लेना 3 पहुँचना 4 किसी विशेष स्थिति
पर पहुँचना, उच - 1 बैठ जाना, आसन ग्रहण करना
भग० ११४६ 2 डेरा डालना 3 स्वीकार करना,
अम्लन करना -आयुर्पात्रवर्गानि 4 उपवास करना
प्रटि० ७१७५, वि - (आ०) 1 बैठ जाना, आसन
परन करना -नवाह्वययाभयपुर्यधिकान् (आसने)
-सि० १११९ 2 पड़ाव डालना, डेरा लगाना
रघु० १२१६८ 3 प्रविष्ट होना, रामशाळा न्यबिस्त
-मटि० ६१२८, ६१२३, ८१७, रघु० ९१८२
4 स्थिर किया जाना, निविष्ट किया जाना सुयं
निविष्टदुष्टि -रघु० १५६६ 5 अस्त होना, अनु-
पन्न होना, तुल जाना, अन्वेषण करना -धुनिप्रामा-
यनी विद्वान्ब्रह्मर्षे निविष्टेयं वे मनु० २१८ 6 बिबाह
करना (निविष्ते के स्थान पर), (प्रेर०) 1 जमाना,
निविष्ट करना, (अन. चित्त) लगाना, भग० १२१८
2 स्थित करना, करना, रखना रघु० ६१२६, ६१३९
७६३ 3 बिठाना, स्थापित करना रघु० १५१७
4 बीज में स्थित कराना, बिबाह कराना-शं०
७१२९. 5 (सेना आदि का) डेरा डालना रघु०
५१४२, १६३७ 6 रेखांकन करना, चिह्नित करना,
चित्र बनाना -चित्रे निविष्टय परिचरिपयसत्त्वयोगी
-शं० २१९, माकवि० ११११ 7 छिन्न लेना, उत्कीर्ण

करना-विष्म० २१२४ 8 सुसुई करना, सीपना
रघु० १९१४, मित् - 1. सुशोभयोग करना
-अथास्त्रावती निविष्टति प्रयोगम् रघु० ६१३४,
निविष्टविषयस्नेह स यथातमुपेवियाम् रघु० १२१६,
५१५१, ६१५०, ९१३५, १३१६०, १५१८०, १८१३,
१९१४७, मेघ० ११० 2 अलकन करना, आसुरित
करना 3 बिबाह करना, प्र - 1 प्रविष्ट होना
2 आरम्भ करना, शुरु करना, (-प्रेर०) प्रस्तुत
करना, प्रवेष्टा के रूप में आगे आये चलना,
विधि, रचना जाना, बिठाना जाना, (प्रेर०)
1 स्थिर करना, रखना कु० १५४५, रघु० ६१६३,
मयुरसि कुचकनक विविधेशय-गीत० १२ 2 बसाना,
नई बस्ती बसाना-कु० ६१३७, लम् - 1 प्रविष्ट
होना 2 सोना, लेटना, आराम करना-सविष्टः
कुशययने निशा निनाथ रघु० ११९५ मनु० ४१५५,
७१२२५ 3 सहवास करना, मँदुन करना -शोभशर्तु-
नियता स्त्रीषा तस्मिन् युष्मासु सविष्टे-शां०
११७९, मनु० ३१४८ 4 सुशोभयोग करना, लगना-
1 प्रविष्ट होना, प्रटि० ८१२७ 2 पहुँचना 3 बन
जाना, तुल जाना, सति, (प्रेर०)-1 रखना, करना
2 स्थापित करना, ऊपर करना-रघु० १२१५८ ।

विष्णु (पु०) [विष्णु + विष्णु] 1 तीसरे वर्ण का मनुष्य,
ब्रह्म 2 मनुष्य 3 राष्ट्र, स्त्री 1 राष्ट्र, प्रजा
2 पृथ्वी । मम०-बन्धुत्व सामान, व्यापारिक भाव,
पतिः (विशापति' भी) राजा, प्रजा का स्वामी ।
विशाम् [विष्णु + क] कमल की गद्दी के तन्तु, रेशे-नु०
विशु । मम० अन्धकारः एक प्रकार का पीसा, भद्र-
चूब, कड़ा सातर ।

विष्णुद (वि०) (स्त्री०-दा, स्त्री) [वि + षद् + अट्] 1
बड़ा, विशाल, बृहत् -विष्णुदो वधनि बाणपानि
प्रटि० २१५०, सि० १३३४ 2. मजबूत, प्रबल,
सक्तिशाली ।

विष्णु [विशिष्टा विमता वा सङ्का -प्र० सं०] इर,
जाग हुआ ।

विश्व (वि०) [वि + षद् + अच्] 1. स्वच्छ, पवित्र,
निर्मल, विशाल, विशुद्ध-योगनिदानविशारे पावन-
रवलीकने रघु० १०१४, १९३९, रत्न० ३१९,
कि० ५११२ 2. सकट, विशुद्धमेत रङ्ग का-निर्वा-
तहारगुणिकविशयद हिमानं रघु० ५१७०, कु०
११४०, ६१२५, सि० ९१२९, कि० ५१२३ 3. उज्ज्वल,
बदकीर्ती, सुन्दर-कु० ३१३३, सि० ८१७० 4. साक,
स्पष्ट, प्रकट 5 शान्त, निविष्टन आराम सहित-जातो
मनाय विशद प्रकाम (अन्तरात्मा) -शं० ५१२२ ।

विश्वः [वि + षो + अच्] 1. सर्वज्ञ, अनिश्चयता, अधि-
करण के पात्र अर्थों में से सुन्दर 2. शरत्, सहारा ।

विद्वान् [वि + धृ + अच्] 1 टुकड़े-टुकड़े करना, काट उठाना 2 बच, हत्या, विनाश ।

विद्वान्स्व (वि०) [विगत शब्द परमात् प्रा० व०] कट और चिन्ता से मुक्त, सुरक्षित ।

विद्वान्स्वम् [वि + धृ + स्वप्] 1 वध, हत्या, पशुघेप - उत्तर० ४५५ 2 बर्बादी, -न 1 कटार, टेंडे फल की तलवार 2 तलवार ।

विद्वान्त (भू० क० कू०) [वि + धृ + क्त] 1 काट, हुआ, चीरा हुआ 2 उजड़, अशिष्ट 3 प्रसन्न, विख्यात ।

विद्वान्तु (प०) [वि + धृ + तुच्] 1 हत्या करने वाला या बलि के लिए बध करने वाला व्यक्ति 2 बाणाल ।

विद्वान्तुः (वि०) [विगत धात्व् वयच्] विना हथियारों के, अस्त्ररहित, जिसके पास बचाव के लिए कुछ न हो ।

विद्वान्तुः [विद्याभ्यासधने भव - विद्यात्वा + अच्] 1 बालि-येस का नाम महावी० २३८ 2 धनुष से नीचे छोड़ने समय की स्थिति (इसमें धनुषीगी एक पग पीछे तथा एक जरा आगे करके खड़ा होता है) 3 भिक्षुक, आवेदक 4 लुकुवा 5 शिव का नाम । मम० - ऊ नागी का पेड़ ।

विद्वान्तुः दे० विद्याय (2) ।

विद्वान्तुः [विशिष्टा धात्व् प्रकारो वयच् - प्रा० व०] (प्रायः द्विवचनान्त) सालहवा नशाज जिसमें दो तारे सम्मिलित होते हैं - किम्प चित्र यदि विद्वान्तुः धात्वकत्वत्वा-मनुचरते - श० ३ ।

विद्वान्तुः [वि + धृ + क्त] बारी-बारी में माना धन पकड़नेवाले का बारी-बारी से पहना रत्न ।

विद्वान्तुः [वि + धृ + णिच् + न्] 1 टुकड़े-टुकड़े करना काटना 2 हत्या, वध ।

विद्वान्तुः (वि०) [विद्यात् + वा + क ल्यप्] 1 चतुर, कुशल, प्रबोध, विश्व, जानकार (प्रायः मध्याम में) - मधुदान विद्वान्तुः रघु० ११२५ ८१३ 2 विद्वान्, बुद्धिमान् 3 महाहर, प्रविष्ट 4 महासा भ्रातृ के का. - ब. बहुलवृद्ध, मोलमिगे का पेड़ ।

विद्वान्तुः (वि०) [वि० शाल्यच्] 1 चिन्तन, वधा, हृत् नक फला हुआ, प्रसन्न, व्यापक, चौड़ा, गर्जविशाल-रीय भूविद्याल वि० ३५०, ११२३, रघु० २१०१, ६१३२, मय० ११२१ 2 समृद्ध भगवन् - श्रीविद्याला विद्यालाम् - मय० ०० 3 प्रबुद्ध श्रीमान महान्, उगम, प्रख्यात, ल 1 एक प्रकार का हर्षण 2 एक प्रकार का पत्थी, ल 1 उजड़वनी नगर का नाम पूर्वोद्विष्टामनस्य पूर्वा श्रीविद्यालाम् - मय० ३० 2 एक नदी का नाम । मम० अल (वि०) बड़ी-बड़ी आँसो वाला, (- ल) शिव का विशेषण (श्री) पार्वती का विशेषण ।

विद्वान्तुः (वि०) [विगत धात्व् वयच् प्रा० व०] मुकुट

रहित, विना बोटी का, विना नोक का, - ल 1 धाण, माचर मनसिनिविशिलप्रयतिव भावनया स्वदि श्रीना-गीत० ४, रघु० ५५०, महावी० २३८ 2 एक प्रकार का नरकुल 3 एक लोहे का कौवा ।

विद्वान्तुः [विदिश + टप्] 1 कान्वा 2 नकुवा 3 मुट्टे या पिन 4 बारीक बाल 5 राजमार्ग 6 नाई की पत्नी ।

विद्वान्तुः (वि०) [वि + धृ + क्त] तीव्र नीक्षण ।

विद्वान्तुः [विदिश क्यप्] 1 मन्दिर 2 आध्यात्मिक, पर ।

विद्वान्तुः (भ० व० कू०) [वि + धृ + क्त] 1 विश्लेषण स्वल्प 2 विशेष अमान्य, असाधारण, प्रवेदक 3 विशेषगुणगण्य, लक्षणयुक्त, विशेषतायुक्त, विश्वार ४ श्रेष्ठ सरोजन, प्रमुख, उत्कृष्ट, बहिष्ठा । मम० अर्जुनवार रामानुज का एक सिद्धान्त त्रयस्य अनुसार ब्रह्म जी प्रकीर्त मारुप तथा चाम्पिय मना माने जाता है अर्थात् मूल्य दाता एक ही है बुद्धि (स्त्री०) प्रवेदक ज्ञान, प्रवेदीकरण - कण (वि०) प्रमुख या श्रेष्ठ रंग का ।

विद्वान्तुः (भू० व० कू०) [वि + धृ + क्त] 1 श्वेत शि-किया हुआ, तोड़कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2 मर्त्या हुआ कुम्हलाया हुआ 3 मिरा हुआ, कू० ५१०८ 4 भिक्षुका हुआ, सकुचिन, या शिखी जिसमें पद गटे हो । मम० पत्थः नोप रा १२ मणि (वि०) जिसका शरीर नष्ट हो गया है, अजग १० ५१०८, (वि) काम देव का विशेषण ।

विद्वान्तुः (वि०) [वि + धृ + क्त] 1 दुःख किया हुआ स्वच्छ 2 पवित्र, निव्यमन, विष्णाय 3 वेदक-नियन्त्रक 4 मन्त्र, पद्याय 5 मद्रक्षा वृक्षा-०, उमानदार लरा मा० ३१६ विनात ।

विद्वान्तुः (स्त्री०) [वि + धृ + क्त] 1 परिवर्तन शक्तिरूप नदगमसंगमवाय कल्पते ध्रुव चिन्ताम स्मरजा विष्णुदय कू० ५१०९, मय० ६२२, मम० ६१०९, ११५३ 2 पवित्रता, पूर्णपवित्रता, - रघु० ११००, १२०८ 3 धायाध्व, यथायथा 4 धर्मकार भूलमुधार 5 ममानता, समता ।

विद्वान्तुः (व०) [विगत धृत् वयच् प्रा० व०] विद्यावशी जिसके पास बर्छी न हो - रघु० १५५५ ।

विद्वान्तुः (वि०) [विगत श्रुथत्वा वयच् प्रा० व०] 1 जा श्रुतता में न बधा हो (शा०) 2 विश्रुतलि-अविपक्षित, अप्रतिबद्ध, निरकुल, बेरोक-गि० २०१०-मामि० २११७ 3 सब प्रकार के दैनिक बधनों में मुक्त, सम्पद भ्रम० २५११ ।

विद्वान्तुः (वि०) [विगत शेषा यन्मात् - प्रा० व०] 1 बनीव 2 पुष्पक, प्रचूर रघु० २११४, ल 1 विवेचन, विवेकीकरण 2 प्रवेद, अन्तर निवेद्यः

विशेष भर्तुं ३१५० ३. विशिष्टतायुक्त अन्तर, अनोखा चिह्न, विशेष गुण, विशेष वता, वीर्यशब्द, प्रायः समान से प्रयुक्त तथा 'विशेष्य' और 'अनीक' शब्दों से अनूदिन सं० ११६४ अञ्जा मोह, रोग में मोह, अर्थात् अपेक्षाकृत अञ्जा परिवर्तन - अस्ति में विशेष - सं० ३, 'अह अपेक्षाकृत अञ्जा हूँ' 5 अवयव, अय-पुषोप लावध्वनयान विशेषान् कु० ११०५ ७ जानि, प्रकार, प्रभेद, भेद, इय प्राय समान के अत में, -भूतविशेष उत्तर० ४, परिप्लविशेषान् पच० १, ऊदनीविशेषा कु० ११३६ 7 विविध उद्देश्य, नाना प्रकार के विवरण (ब० व०) - मेघ० ५८, ६४ 8 उतमता, श्रेष्ठता, भेद, प्राय ममान क अत में, उतम, पूष्य, प्रमथ, उकृष्ट अनुभाव-विशेषान् रघु० ११३७, वसुविशेषण क० ५१३१, रघु० २१७, ११५, कि० ११५८, इसी प्रकार आहूति विशिषा 'उतम रूप' अतिविशेष 'पूष्य अतिवि' आदि 9 अनोखा विशेषण, नौ द्वयो में त प्रत्येक की प्रायवत विभेदक प्रकृति 10 (तक० में) वैयक्तिकता (विप० सामान्य) अनुठाणन 11, प्रवण, वण 12 मन्त्र पर मन्त्र या केसर का तिलक 13 बहु गन्ध जो किसी अन्य शब्द के अर्थ को सीमित कर देता है, दे० विशेषण 14 प्रसाह्य का नाम 15 (अल० में) एक अक्षर का नाम जिसके तीन भेद बनाये गये हैं, यम्यट ने इसकी परिभाषा यह दी है - बिना प्रसिद्धाचारप्रयोगस्य व्यवस्थिति, एकात्मा यगपद् वृत्तिकारानेकगोचरा। अन्तप्रकुचने कार्यमसाध्या-न्यस्य वस्तुन. तथैव करण केति विशेषस्त्रिविध स्मृन काव्य० १०। सम० अतिशेषाः विशेष अतिरिक्त नियम, विशेष विस्तारित प्रयोग, - उक्तिः (तरी०) एक अक्षर जिसमें कारण के विद्यमान रहन हुए भी कार्य का होता नहीं पाया जाता विशेषातिरिक्तत्वध्वे कारणेषु फलावच काव्य० १०, उदा० हृदि स्नेहलासो नाम्भूत्सर्वदीपे ज्वलत्परिपि, अ, सिद् (वि०) 1 भेदों को जानने वाला, गुणधर्मविशेषक, पारसी 2 बिहारी, बुद्धिमान् भर्तुं ० २१३, लक्ष्मण, - लक्ष्मण विशेष या लक्ष्यदर्शी चिह्न, - वचनम् वि पाठ या विधि, विधि, या स्वम् विशेष नियम।

विशेषक (वि०) [वि + शिष् + क्तृत्] प्रभेदक, क, कम् 1 एक प्रभेदक विशिष्टता या लक्षण विशेषण 2 ध्वनन या केसर का माथे पर लगा तिलक - साहित्य ३१५ ३ रंगीन उद्भूत तथा अन्य सुगन्धित पदार्थों से मूख या शरीर पर रेखांकन करना - स्नेहोद्वयम् किमुपयोगनाता चके पदम् पचविशेषकेय-कु० ३१३३, रघु० ११२९, वि० ३१६३, १०११४, कम् तीन

श्लोको का समूह जो व्याकरण की दृष्टि से एक ही वाच्य बनता है द्वाभ्या युग्ममिति प्रोक्त इति श्लोकीविशेषकम्, कलायक चतुभिः स्यात्तद्वृत्तं कुलक स्मृतम्।

विशेषण (वि०) [वि + शिष् + क्तृत्] गुणवाचक, कम् 1 विभेदन, विशेषण 2 प्रभेदन, अन्तर ३ वह गन्ध जो किसी दूसरे शब्द की विशेषता प्रकट करता है, गुणवाचक शब्द गुण, विशेषण, (विप० विशेष्य), (विशेषण तीन प्रकार का बताया जाता है व्यावर्तक विशेष्य और हेतुगर्भ) 4. प्रभेदक लक्षण या चिह्न, ५ जानि, प्रकार।

विशेषणत् (अव०) [विशेष + तत्] श्लेष रूप में, स्वयं तीर में।

विशेषित (यु० व० क०) [वि + शिष् + क्तृत्] 1 विलक्षण 2 परिभाषित, जिसके विवरण बता दिये गए 3 3 विशेषण के द्वारा जिसकी भिन्नता दर्शा दी गई है 4 श्रेष्ठ, बढ़िया।

विशेष्य (वि०) [वि + शिष् + क्तृत्] 1. विलक्षण होने के योग्य 2. मुख्य, बढ़िया, व्यवहृ शब्द जिसे विशेषण के द्वारा सीमित कर दिया गया हो, वह पदार्थ जो किसी दूसरे शब्द द्वारा परिभाषित या विशिष्ट कर दिया गया हो, यथाशब्द, विशेष्य नाभिधा गच्छेत्सीगणितविशेषणे - काव्य० २।

विशोक (वि०) [वि + शोक् + क्तृत्] शोक 3 शोक से मुक्त, प्रमत्त, क शोकक वृत्त, - का शोक से छूटकारा।

विशोचनम् [वि + शूच + क्तृत्] 1 शुद्ध करना, स्वच्छ करना (आल० में) - राजकटक विशोचनोद्यत विक्रम० ५१२ 2 परिवर्तनकर्म निष्पन्न या दोषग्रहित होना 3 प्रायश्चित्त, परिशोधन।

विशोच्य (वि०) [वि + शूच + क्तृत्] परिष्कृत किये जाने के योग्य, निर्मम या शुद्ध किये जाने के योग्य।

विशोचनम् [वि + शूच + क्तृत्] शुभाना, शुष्कीकरण।

विश्वजनम्, विश्वान्जनम् [वि + श्वज् + क्तृत्, परो णिच्] प्रधान करना, सम्पन्न करना, अनुदान, उपहार, दान-विभाजनात्स्वान्यपयम्बिनोनाम् - रघु० २१५४।

विश्वम् (यु० क० क०) (विश्वस्व भी) [वि + श्वज् + क्तृत्] 1 बन्द किया गया, विश्रान्त किया गया, सीपा गया 2 विश्रान्त, निडर, भरोसा करने वाला - मुद्रा० ३१३ 3 विश्वजनीय, भरोसे का 4 विश्वक, नीय, शान्त, निश्चिन्त 5 बुद्ध, स्थिर 6. नम्र, विनीत 7 अग्रपथिक, बहुत ज्यादा - अन्वय (अन्व०) विश्रान्त-पूर्वक, निर्भीकता के साथ, बिना डर व संकोच के - विश्वम् क्रियता बराहृत्तमि मुस्तासति पच्यते - सं० २१६।

विश्रामः [वि + श्रम् + अच्] 1 आराम, विश्रान्ति 2 विश्राम, विश्राम ।

विश्रामः [वि + श्रम् + घञ्] 1 विश्राम, भरोसा, अन्तरण विश्राम, पूर्णं भविष्यता या अन्तरगतता - विश्रामादुरसि निपत्य कम्बजिद्रा-उत्तर० १।४९, मा० ३।१ 2 मूल बात, रहस्य विश्रामेभ्यस्मत्परीकरणीया - का० 3 आराम, विश्राम 4 स्नेहविकृत परिपूष्ठा 5 प्रेम-कलह, प्रीतिविषयक अगदा 6 हत्या । सम०

आश्रयः आश्रयम् मूल वातालाय, वातालाय, चाश्रयः - भूमिः, स्थानम् विश्राम करने के योग्य पदार्थ या व्यक्ति, विषयस्त, विश्रयसनीय व्यक्ति ।

विश्रयः [वि + श्रि + अच्] शरण, आश्रयस्थल ।
विश्रयस् (पु०) पुत्रकथ्य के एक पुत्र का नाम, जो कौनसी से उत्पन्न रावण, कुमकथ्य, विभीषण और शूर्पणखा का पिता था, कुबेर के एक पुत्र का नाम जो उसकी पत्नी इटाविडा से उत्पन्न हुआ था ।

विश्रयान्तः (पु० क० कृ०) [वि + श्रम् + शिच् + क्त] प्रदान किया गया, अर्पित किया गया निःशेषविश्रा-णितकोशजातम् रघु० ५।१ ।

विश्रान्तः (पु० क० कृ०) [वि + श्रम् + क्त] 1 बन्द किया हुआ, रोक़ा गया 2 आराम किया हुआ, विश्राम किया हुआ 3 सोम्य, शान्त, स्वस्थ ।

विश्रान्तिः (स्त्री०) [वि + श्रम् + क्तान्] 1 आराम विश्राम 2 रोक, बन्द ।

विश्रामः [वि + श्रम् + घञ्] 1 रोक, बन्द 2 आराम, शैन विश्रामो हृदयस्य यत्र उत्तर० १।३९ 3. शान्ति, मौम्यता, स्वस्थता ।

विश्रायः [वि + श्रु + घञ्] 1 चुना, टपकना, बहना (विश्राय के स्थान में) 2 स्थानि, कीर्ति ।

विश्रयः (पु० क० कृ०) [वि + श्रु + क्त] प्रस्थान, लम्प-प्रस्थि, यथास्वी, प्रसिद्ध 2 प्रसन्न, आनन्दित, सुहा 3 बहना हुआ ।

विश्रयति (स्त्री०) [वि + श्रु + क्तिन्] प्रसिद्धि, श्रवाति ।
विश्रयत् (वि०) [विशेषण क्लथ प्रा० सं०] 1 दीना, विश्रयि, सुला हुआ, -रघु० ६।७३ 2 म्पनिहीन, निस्तेज ।

विश्रयष्टः (पु० क० कृ०) [वि + श्रिष् + क्त] विपुक्त, पुष्यकृत, अलग अलग किया हुआ रघु० १२।७६ ।

विश्रयैः [वि + श्रिष् + घञ्] 1 अलग-अलग, वियोजन 2 विशेषतः प्रेमिया अथवा पति-पत्नी का विच्छाद 3 वियोग तनयाविश्रयैरुसै स्त्र० ४।५. धरण रविदक्षिणैः-रघु० १।३२ ४ अभाव, हाति, धाकाबन्धा ५ धरार, छिद्र ।

विश्रयन्ति (पु० क० कृ०) [वि + श्रिष् + शिच् + क्त] अलग किया हुआ, विपुक्त, चुना किया हुआ ।

विश्व (सा० वि०) [विश् + व] 1 सारे, सारा, समस्त, सार्वभौमिक 2 प्रत्येक, हरेक, (पु० ब० ब०) दस देवों का समूह (यह विश्वों के पुत्र समझे जाते हैं, इनके नाम हैं बसु सत्य धनुर्दश बाल कामा पति कुश, पुरुखा मादवापच विश्वेदेवा प्रकीर्तिना -

श्वम् 1 मणुष्यं मृष्टि, समस्त सत्तार इद विश्व पाण्ड्यम्-उत्तर० ३।३०, विश्वमिन्द्राण्य कुलधन पालयिष्यति क भार्गि० १।१२ 2 सूला अदरक, मोठ । सम० आश्रयः (पु०) 1 परमात्मा (विश्व की आत्मा) 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 विश्व का विशेषण—अथ विश्वामने गौरी हृदिदेश मिथ सतीम् कु० ६।१ 4 विश्व का विशेषण, - ईश्वर, ईश्वरः 1 परमात्मा, विश्व का स्वामी 2 शिव का विशेषण, कद्रु (वि०) दुष्ट, नीच, दुर्वन, (इ)

1. शिकारी कुत, मृगयाकुक्षुर 2 मन्वस्य, कम्बन् (पु०) 1 देवा का शिल्पी, तु० खट्व 2 मृग्य का विशेषण, आ, मृग्य, मृग्य की पत्नी सखा न विशेषण, कृत् (पु०) 1 मख प्राणियों का छत्रटा 2 विश्वकर्मा का विशेषण—केतु अतिच्छ वा विशेषण, यष. प्याज, (-श्वम्) लावान, गुग्गुल, यषा पृथ्वी, कम्बु मालवजाति, ज्योतिष,—अथ (वि०) मानवमात्र के लिए हितकर, मनुष्य जाति के उपयुक्त, मख मनुष्यों के लिए लाभकर—भट्टि० २।६८, २।१२७, कित् (पु०) 1 यज्ञ विशेष का नाम

रघु० ५।१ 2 मरण का पाप, देव विश्व (पु०) के नीचे दे०, शारिणी पृथ्वी, शारिण (पु०) देव - माष विश्व का स्वामी, शिव का विशेषण, पा (पु०) 1 सब का रक्षक 2 मृग्य 3 चन्द्रमा 4 अग्नि पावनी, प्रकृति तुलसी का पोषा, पान् (पु०)

1 देव 2 मृग्य 3 चन्द्रमा 4 अग्नि का विशेषण भुम् (वि०) गर्वोभाक्ता, सब कुछ भाने वाला (पु०) इट का विशेषण, शेषकम्पु मृग्या अदरक मोठ, श्रुति (वि०) सब रूपों में विद्यमान, मव व्यापक, विश्वव्यापी,—मा० १।३, पौनि. 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विश्व का विशेषण, - राश्व, राज विश्वप्रभु, कष (वि०) सर्व व्यापक, सर्वत्र विद्यमान (प) विश्व का विशेषण, (यश्च) अजर की लक्ष्मी,

-रेतुत् (पु०) ब्रह्मा का विशेषण, वाह (वि०) (स्त्री०) विश्वशीर्षी) सब कुछ होने वाला, मख का भरण पापण करने वाला, सहा पृथ्वी, सुम् (पु०) - ब्रह्मा का विशेषण, छत्रटा प्रायेण मानवभावो गुणाना पराङ्मुखी विश्वमृज प्रकृति - कु० ३।२८, १।४९ ।

विश्वंकरः [विश्वं सर्वं करोति प्रकाशयति- कृ + ट, द्वितीयाया अलक] औस, (कुछ के अनुसार-न्य०) ।

1 देव 2 मृग्य 3 चन्द्रमा 4 अग्नि का विशेषण भुम् (वि०) गर्वोभाक्ता, सब कुछ भाने वाला (पु०) इट का विशेषण, शेषकम्पु मृग्या अदरक मोठ, श्रुति (वि०) सब रूपों में विद्यमान, मव व्यापक, विश्वव्यापी,—मा० १।३, पौनि. 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विश्व का विशेषण, - राश्व, राज विश्वप्रभु, कष (वि०) सर्व व्यापक, सर्वत्र विद्यमान (प) विश्व का विशेषण, (यश्च) अजर की लक्ष्मी,

-रेतुत् (पु०) ब्रह्मा का विशेषण, वाह (वि०) (स्त्री०) विश्वशीर्षी) सब कुछ होने वाला, मख का भरण पापण करने वाला, सहा पृथ्वी, सुम् (पु०) - ब्रह्मा का विशेषण, छत्रटा प्रायेण मानवभावो गुणाना पराङ्मुखी विश्वमृज प्रकृति - कु० ३।२८, १।४९ ।

विश्वंकरः [विश्वं सर्वं करोति प्रकाशयति- कृ + ट, द्वितीयाया अलक] औस, (कुछ के अनुसार-न्य०) ।

1 देव 2 मृग्य 3 चन्द्रमा 4 अग्नि का विशेषण भुम् (वि०) गर्वोभाक्ता, सब कुछ भाने वाला (पु०) इट का विशेषण, शेषकम्पु मृग्या अदरक मोठ, श्रुति (वि०) सब रूपों में विद्यमान, मव व्यापक, विश्वव्यापी,—मा० १।३, पौनि. 1 ब्रह्मा का विशेषण 2 विश्व का विशेषण, - राश्व, राज विश्वप्रभु, कष (वि०) सर्व व्यापक, सर्वत्र विद्यमान (प) विश्व का विशेषण, (यश्च) अजर की लक्ष्मी,

-रेतुत् (पु०) ब्रह्मा का विशेषण, वाह (वि०) (स्त्री०) विश्वशीर्षी) सब कुछ होने वाला, मख का भरण पापण करने वाला, सहा पृथ्वी, सुम् (पु०) - ब्रह्मा का विशेषण, छत्रटा प्रायेण मानवभावो गुणाना पराङ्मुखी विश्वमृज प्रकृति - कु० ३।२८, १।४९ ।

विद्यमान् (अन्व) [विद्य + तसौल] तब और, संपन्न, सब जगह भादि० १।३०। स्व० मुक्त (वि०) सब और मुक्त किये हुए—सम० १।१५।

विद्यमान् (अन्व) [विद्य + मान्] सर्वत्र, सब जगह।

विद्यमान् (वि०) [विद्य विभक्ति विद्य + म् + लप्, मुञ्] सब का भरणपोषण करने वाला, १। 1 सर्व व्यापक प्राणी, परकारमा 2 विष्णु का विशेषण 3 इन्द्र का विशेषण, ४ पृथ्वी विश्वभरता भगवती भवतीमसूत उत्तर० १।९, विश्वभरतापतिलभुनरनाथ तर्वातिके नियतम्—काम्ब० १०।

विद्यमानोय (स० कृ०) [वि + इवम् + अनौवर] 1 विद्यमान किये जाने के योग्य, विद्यमानपात्र, जिस पर भरोसा किया जा सके 2 विद्यमान उत्पन्न करने के योग्य स० २, मासि० ३।७।

विद्यमान् (मु० क० कृ०) [वि + इवम् + क्त] 1 जिस पर विश्वास किया गया है, निष्ठ, जिस पर भरोसा किया गया है 2 विद्यमान करने वाला, भरोसा करने वाला 3 निष्ठ, विश्वास 4 विद्यमान के योग्य, जिस पर भरोसा किया जा सके।

विद्यमानायाम् (पु०) [विद्य विभक्ति पालयति - विद्य + या गिच् + अनुन्, पूर्वदीर्घ] देव, सुर।

विद्यमानः [विद्य + नन्, पूर्वपदवीर्ष] सविता का विशेषण।

विद्यमानिन् [विद्य + मिच्, विद्यमाने मिच् यत्त्वं ० ४०, पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घ] एक विद्यात ऋषि का नाम। यह काव्यकुञ्ज का राजा होने के कारण ऋषिय का, इसके पिता का नाम तापति था। एक बार यह मुग्धा के लिए बुधना-बुधना वसिष्ठ ऋषि के आश्रम में पहुँचा, वहाँ अनेक यौगों को देख कर उसने जनन घन रात्रि देकर भी उनको लेना चाहा और न मिलने पर बलात् उनको छीनने का प्रयत्न किया। इस बात पर एक महान् तपस्वी हुआ, और राजा विद्यमानिन् पूर्ण-रूप से परास्त हो गया। इस पराजय से विद्यमानिन् अत्यंत दुःख हुआ और साथ ही वसिष्ठ के शाश्वतत्व की शक्ति से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि वह शाश्वतत्व प्राप्त करने के लिए बोर तपस्या करता रहा। यहाँ तक कि रात में उसे अन्नस्य राज्ञि, ऋषि, महर्षि और ब्रह्मर्षि की उपाधि मिली, परन्तु उसे सन्तोष न हुआ क्योंकि वसिष्ठ ने अपने प्रसन्न से उसे ब्रह्मर्षि नहीं कहा। विद्यमानिन् हजारों वर्ष तपस्या करता रहा, तब कहीं आकर वसिष्ठ ने उसे ब्रह्मर्षि कहा। विद्यमानिन् ने कई बार वसिष्ठ की उपाधि करने का प्रयत्न किया, उदाहरणतः वसिष्ठ के ही पुत्रों को विद्यमानिन्ने मोन के घाट उतार दिया, परन्तु वसिष्ठ तब भी नहीं पसराया। अन्तिमरूप से ब्रह्मर्षि बनने से पहले विद्यमानिन् की शक्ति बहुत

अधिक थी, उदाहरणतः उसने विष्णु को स्वर्ग में जाने, इन्द्र के हाथ से सुन-सेपकी रक्षा करने, तथा ब्रह्मा की शक्ति पुनः क्षुब्ध की रचना करने में अत्यधिक बल का प्रदर्शन किया। यह ज्ञानक राम का साथी और परमार्थ वाता था, इसने राम को अनेक आश्चर्यजनक ज्ञान प्रदान किये।

विद्यमानुः [विद्य + अनु, पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घ] एक कवच का नाम।

विद्यमानः [वि + वदम् + वञ्] 1 भरोसा, प्रत्यय, निष्ठा, विश्वास—दुर्जन विद्यवादीति नैत्रविद्यवासाकारणम्—स० १।१४, रघु० १।५१, हि० ५।१०३ 2 मोद, रहस्य, गोपनीय सभाचार। सम०—अन्तः, अन्तः विद्यमान की गोद देना, बोझा देनी, द्रोह, शक्तिम् (पु०) बोझा देने वाला मनुष्य, दोही, वाक्क, शक्ति, स्थानम् भरोसे की वस्तु, विद्यमानोय या भरोसे का मनुष्य, विश्वासी दुक्क।

विष्णुः 1 (बृहो० उ०) वेदेष्टि, वेदेष्टि, विष्ट) 1. बेरना 2. फैलाना, विस्तार करना, व्यापक होना 3 सामने जाना, मुकाबला करना (परिनिष्ठित संस्कृत में इसका प्रयोग बहुत ही होता)।

11 (अभा० पर० विष्णोति) विद्युत् करना, अलग-अलग करना।

111 (अभा० पर० वेजति) छिड़कना, उड़कना।

विष्णु (स्त्री०) [विष् + विष्णु] 1 मत्त, विष्टा, और 2 फैलाना, प्रसारण 3 लखी जैसा कि 'विट्पति' में। सम०—कारिका (विट्कारिका) एक प्रकार का पथी, अहः (विट्पह) कोष्ठबद्धता, कवच, —अरः, बराहः (विट्चर, विट्बराह) पापुत्र या पात्र का सूचक, - लक्षणम् (विट्क्षणम्) एक प्रकार का औषधियों में प्रयुक्त होने वाला मक्क, लङ्गः (विट्सङ्ग) कोष्ठबद्धता, कवच, —सारिका (विट्सारिका) एक प्रकार का पथी, मैना।

विष्णु [विष् + क] 1 अह, हलाहल (इस अर्थ में 'पु०' भी कहा जाता है) विष् भवतु या भूदा फटाटोपी भयङ्कर—पच० १।१०४ 2. जल, विष् जलधरे पीत मुर्छिता पत्रिकाङ्गना—चन्द्र० ५।८२, (यहाँ दोनों अर्थें अभिप्रेत हैं) 3 कमलजम्बी के तन्तु या रेशे 4 लोभान, एक सुगन्धित द्रव्य का सोद, रस, गन्ध। सम० अन्तः,—विष् (वि०) विप्लवा, जहरीला, अङ्कुरः 1 बर्षी 2 विष् में बुझा गीर, —अन्तः विष् का विशेषण, —अन्तः,—अन्तः (वि०) विघनायक, विघनिवारक औषधि, आत्मनः,—आत्मन्, आत्मन्, नाथ, —आत्मन् (वि०) अहुर बचने वाला, कुम्भः अहुर से भरा हुआ बर्षा, —कुम्भिः अहुर में पसा हुआ कीटा, —आत्मन् ६ न्याय के अन्तर्गत, —अन्तः मैना,

—कः बादल (इम्) सुतिया,—इत्तकः साँप,—इर्जन-
मूर्च्छकः,—मृत्युः एक पत्नी (इसे पत्नी कहते हैं),
—बरः साँप—बार्मि० ११७४, °मिल्कः निम्नतर
प्रदेश, साँपों का बिल,—पुष्पम् नील कमल, प्रयोग
अहर का इस्तेमाल, जहर देना,—भिषग्, —बैद्यः
विद्यनाथक बीषधियों का विद्वान्, साँपों के काटने
की चिकित्सा करने वाला—सप्रति विषबैद्याना कर्म-
मालवि० ४,—मन्त्र १ साँप के काटे का विष
उतारने का मन्त्र २ सपेरा, बाजीगर,—बुद्ध. जहरीला
पेड़, विषबुद्धोऽपि सधर्म्यं स्वयं छलुमसाम्प्रतम्
—कु० २१५५, °भ्याय म्याय के नीचे देखो,—बेसः
अहर का संचार या प्रभाव,—शाम्क कमल की जड़,
—दूकः,—भृङ्गिन्, सूक्ष्म (५०) भिद, बरं,
—दुह्वय (वि०) विषाक्त दिलवाला अर्थात् दुष्टद्वय,
मलिनाराम।

विषवत् (भू० क० ह०) [वि+सञ्ज्+क्त] १ दुइता-
पूर्वक जमा हुआ, सटा हुआ २ चिपटा हुआ, चिपका
हुआ।

विषवद्भम् [विशेषण पदम्—प्रा० सं०] कमलकण्ठी के तन्तु
या रेशों।

विषवण्य (भू० क० ह०) [वि+सद्+क्त] विन्न, मूह
लटकाने हुए, उदास, दुःखी, निरुसाह, हताश। सम०
—मूक, क्वल (वि०) उदास दिखाई देने वाला,
—कृष् (वि०) उदासी की अवस्था में पडा हुआ।

विषय (वि०) [विणोः विच्छेदो वा सम—प्रा० सं०] १ जो
सम या समान न हो, भ्रष्टरग, ऊबड़-खाबड़ पक्षिय
विषयेष्वप्यचलना मुद्रा० २११, पञ्च० १६४, मेघ०
१९२ अनियमित, असमान—मा० ११४३ ३ उच्चा-
वच, असम ४ कठिन, समझने में दुष्कर, आश्चर्य-
जनक कि० २१३ ५ अगम्य, दुर्गम कि० २१३
६ मोटा, स्पृश ७ निरञ्ज—मा० ४१२ ८ पीडाकर,
कष्टदायक—भर्तृ० ३११०५ ९ बहुत मजबूत, उकट
—मा० २१९ १० अतन्त्रक, अमानक मूच्छ०
८११, २७ मुद्रा० ११२८, ११० ११ बुरा, अनिकूल,
विपरीत—पञ्च० ४१६ १२ अजीब, अनोखा, अनु-
पम १३ बेईमान, कलापूर्ण,—मन्त्र १ असमता
२ अनोखापन ३ दुर्गम स्थान, चट्टान, यद्दशा भारि
४ कठिन या अतन्त्रक स्थिति, कठिनाई, दुर्गम्य,—
मुल्ल प्रमत्त विषयमिच्छित्ता का रत्नानि पुष्पानि पुरा-
कुणानि भर्तृ० २१९७, भग० २१२ ५ एक अलकार
का नाम जिसमें कर्म कारण के बीच में कीई अमोक्षा
या अघटनीय सबब दर्शाया जाता है यह चार
प्रकार का माना जाता है वे० काव्य०, का० १२५
व १२७,—मः विष्णु का नाम। सम० अक्ष,
—विषयः,—मन्त्रः,—नेत्रः,—श्रीकन्तः तिच के

विशेषण,—अन्वय अनोखा या अनियमित आहार
आयुषः,—इयुः—घातः कामदेव के विशेषण,
कारकः अननुकूल चतु, चतुरकरः,—चतुर्भुजः
विषय कोण वाला बहुभुजा,—छबः सत्पथ नाम
का पेड़, छबरः कर्म कथ नया कभी अधिक होने
वाला दुष्चार,—कवली, दुर्भाष्य, विषागः सम्पत्ति
का असमान वितरण,—स्व (वि०) १ दुर्गम स्थिति
में होने वाला २ कठिनाई में रहने वाला, अघाता।
विषयिन् (वि०) [विषय+इत्थञ्] १ ऊबड़-खाबड़ किया
हुआ, असम, कठिन २ मिकुचन वाला, त्पोरीदार
३ कठिन या दुर्गम बनाया गया।

विषयः [विशेषणति स्वत्यक्तवा विचरिण सबजन्ति
—वि+सि+अच्, परबम्] ज्ञानेन्द्रियो द्वारा प्राप्त
पदार्थ (यह पाँचों ज्ञानेन्द्रियो के अनुरूप पितृती में
पाँच हैं रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द जिनका
संबन्ध कर्मस बलि, जिह्वा, नाक, त्वचा और कान
से हैं)।—श्रुतिविषययुगा वा स्थिता भ्याष्य विषयम्
श० ११२ २ लौकिक पदार्थ, या वस्तु, मामला,
नेत्र-देन ३ ज्ञानेन्द्रियो द्वारा प्राप्त मानव, लौकिक
या मेषुनसम्बन्धो उपभोग्य सामान्यक पदार्थ (शब्द
ब० व० मे)। यौक्ते विषयैपिणाम्—मू० ११८,
निषिद्ध विषयवन्हे— १२११, ३१००, ८११०, ११११९,
विषय० ११९, भग० २१५९ ४ पदार्थ, वस्तु, मामला,
जात—नाथो न ज्ञामुविषयान्तराणि—मू० ७१२
८१८९ ५ उर्द्वष्ट पदार्थ या वस्तु, चिह्न, निशान
भूविष्टमव्यविषया न तु द्वांष्टर्या श० ११ः१,
मि० ११४० ६ कार्यक्षेत्र, परास, पहुँच, परिधि
—मीमिषेरपि पणिनामविषये तत्र प्रिये क्वाभि प्रा
—उत्तर० ३१४५, सकलवचनानामविषय—मा०
११३०, ३६ उत्तर० ५११९, कु० ६१३७ ७ विभाग,
क्षेत्र, प्रान्त, भूमि, तत्त्व सर्वबौद्धिकम्याम्बवहायैवैव
विषय विक्रम० ३ ८ विषयवस्तु, आलोच्य विषय,
प्रमग,—भार्मि० १११०, इती प्रकार 'भृङ्गान्विषयिका
व्यय' ऐसी पुस्तक जिसमें प्रौढविषयक जाता का
उल्लेख हो ९ व्याकरण प्रमग या विषय, शीषक,
अधिकरण के पाँचो अर्थों में पढ़ना १० स्थान,
जगह—परिचयविषयेषु मीडमुक्ताः कि० ५१३५
११ देश, गच्छ, राज्य, प्रदेश, महल, साम्राज्य १२
तरण, आश्रय १३ शान्ति का समूह १४ रेनी, पति
१५ शौर्य, शूक १६ धार्मिक अनुष्ठान (विषय की
भावना, के विषय में, के महत्त्व में, इस भावने में के
बारे में, बाह्य—या नगरे, पुस्तकविषय में सृष्टि-
क्षेत्र वातु—मेघ० ८२, स्त्रीया विषये, धनविषये
आदि)। सम० अविषयिः १ सांसारिक विषय
वातनाओं में आसक्ति कि० ६१४४, इती प्रकार

अभिवाद्य - कि० ३११३, -आत्मक (वि०) सामा-
रिक पदाओं में प्रकृत, आत्मक, - विरल (वि०)
विश्ववामनाओं में लिय, विपरी, विलासी, इन्द्रिया-
मग्न, आत्मल उल्लेखा, विरलित. (स्त्री०),
- प्रथम श्रोत्रिकान, कामात्मिक. प्रायः उन पदाओं
का समूह को शान्तिविद्यो द्वारा जाने जाते हैं, -सुखम्
इन्द्रियात्मिक, विपरीययोग्य ।

विषयविन् (पु०) [विषयान् अन्तः प्राप्नोति - विषय-+
अन्-+विन्] 1 इन्द्रियमूला में लिय, भोगविन्, यो
2 नकार के कायो में लिय अनूप 3 कामदेक 4 रात्रा
5 शान्तिदिश ० शोचिनपदादी ।

विषयिन् (वि०) [विषय-+इति] इन्द्रियसुखमदयो,
पारोक्षिक, पु० 1 सामाजिक सुख, विषयो, दुःखि-
दान अदमी 2 रात्रा 3 कामदेव 4 भोगविलासी,
लक्ष्य पद्य० १११६६, पा० ५, लु० 1 शान्तिदिश
2 शान्ति ।

विषयः (पु०) जन्-हत्याहृत ।

विषयः (वि०) [वि-सह-+पत्] 1 मज्ज करने के
योग, जा प्रधान किया जा सके अविश्वस्यमानेन
पुत्रिणाम् पु० ११०० लु० ११०० 2 जो बसना जा
गने जो निर्णीत किया जा सके अनु० ८१०६५,
मज्ज पद्य ।

विषा [वि-+अन्-+टाप्] 1 विषदा, मज्ज 2 प्रतिभा,
गमय ।

विषयः, अन्, को [वि-+अन्, म्पिना शीप्]
1 मीन मारितममीनक-परिशील पाशानाम् पुच्छ-
विषयशीलः अनु० २१२, कर्षाशयि विषयम्
गर्षाशयानाम् २१५-२१५ 2 शर्षा या भूमर के
गम-गना प्रभुशरीरि विषयविन्ना प्रकाश गुच्छ-
गिना अनाः क्षमत् वि० ७१२, मि० ११६० ।

विषयिन् (वि०) [वि-+इति] 1 सोपी बासा या शरी
बासा, पु० 1 वह जानकर विन्ने मज्ज हो या दान
बाहर निकले हो 2 शरीर वि० ६१६३, ६१७७
1 सौह ।

विषयः [वि-सन्-+पञ्च] 1 विन्नाश, उदासी,
उत्साहहीनता, रज, शोक महावि मा कुम विषादम्
प्राप्ति० ४१४१ विषादे कर्त्तव्ये विदधति अत्रा
प्रयत्न मूरम् अनु० ३१३५, लु० ८१५४ 2 निराशा,
हताशा, वैराग्य, विषादप्रतिनिमित्तम्-लु०
३१६० (विषादविषय, भोग उपायाभावनायो) ।
3 पकान, म्मल अकम्पा, मा० २१५ ४ मज्जना,
प्रदना, पञ्चादीना ।

विषयिन् (वि०) [विषाद-+इति] 1 विन्ना, उन्निम
2 उदास, विषयः ।

विषयः [वि-+अन्-+अच्] सौप ।

विषयः (वि०) [वि-+अन्-+इति] 1 विषयः, जरीया ।
विष् (अध्वा०) [विष्-+ङ्] १ ही भयान भागो में,
समान रूप में 2 भिन्नतापूर्ण, विविध प्रकार से
३ समान, सद्यः ।

विष्पत् [विष्-+प-+क] दो मयन्विन्नु जहाँ पर सूत्र
विष्पत् रखा को पार करता है ।

विष्पत् [विष्-+वा-+क] मेघगति या मुलागति का
प्रथम विष्पत् विष्पत् सूत्र माग्दीय या वास्तविक विष्पत्
में प्रविष्ट होता है, विष्पदीय विष्पत् । नमः-छाया
मध्याह्निकाल में धूपधरी के छत्र को छाया, विष्पत्
विष्पदीय दिन, रक्षा विष्पदीय रक्षा, -सकान्तिः
(स्त्री०) सूत्र का विष्पदीय भाग ।

विष्पिका [वि-+सू-+कृ-+टाप्, पठम्, इत्यम्]
हीजा ।

विष्पः (पु०) उभ० विष्पयति ते 1 बच करना, मोट
पहुँचना, सतिमल करना (इन अर्थ में केवल आत्म-
नेपदी) 2 देखना, प्रत्यक्ष करना ।

विष्पत्, [वि-+सू-+अच्, धावन्] 1 गतिरहित
होना 2 जाना, गमन ।

विष्पत् [वि-+सू-+अच्] 1 अक्षरीय स्वाध्याय,
शाखा 2 दन्वाजे की साकल, चटकनी 3 घर में
बसा पाखीर 4 धोपी, लम्ब 5 बुझ 6 (नाटक) में
नाटकी के अंको के पद्य में सप्यरग का इच्छ को हो
मज्जना या विष्पत् के पात्रों द्वारा प्रदर्शित किया
जाना ७ तथा जिसमें घोनाओं के सामने अंको के
अन्तराल में तथा बाहर में होने वाली घटनाओं को
सूत्रों में कह कर नाटक की कथावस्तु के अवातन
भाषो का नाटक की मुख्य कथा से मज्जना स्थापित
कर दिया जाता है । साहित्यदर्पण में इसकी विष्पत्-
कित परिभाषा की गई है कृतपरिष्काराणां कथा
शाया निरन्तरक । सङ्घटनार्थम् विष्पत् आदावकस्य
रक्षित । मज्जने मज्जनाया वा पात्राणां सप्रयोजित ।
पद्य स्वात् स तु लक्ष्मीं शीघ्रमप्यवकल्पित २०८
७. कृत का अर्थ ८. शोचिणी की विष्पत् मुद्रा
९ विष्पत्, लम्बाई ।

विष्पत्के दे० विष्पत् ।

विष्पत् [विष्पत्-+इत्यम्] शाखावृक्ष,
बसकट ।

विष्पत् (पु०) [विष्पत्-+इति] द्वार की अर्धता,
साकल या चटकनी ।

विष्पत् [वि-+कृ-+क, मुट्, पठम्] 1 इतर उचर
समेरना, पाद हाकना 2 मुद्रा 3 पत्नी, तीतर की
जाति का पत्नी-छायापरिकरमाषधिकरमुखाकृष्ट-
कीटलक्षकः उत्तर० २१९ ।

विष्पत्, -कम् [विष्-+कृ-+ङ्] संसार, सुख- पु०

- ३।२०. तु० विविष्टप [वि०] हारिन् [वि०] जो सवार की प्रशंसा करता है भर्तु० २।२५ ।
- विषयज्ञ** (भू० क० कृ०) [वि + स्तम्भ + ज्ञ] 1. पक्का जमाया हुआ मनी माति आश्रित 2 टेक लगा हुआ, सहारा दिया हुआ 3 अवयव, सहाय 4 लकवा के रोग के इस्त, गतिहीन ।
- विषयशः** [वि + स्तम्भ + शञ्] 1 पक्की तरह से जमाना 2. अवरोध, रुकावट, बाधा 3 मूषावरोध, मलावरोध कोपठबद्धता 4 लकवा 5 डहरना, टिकाव ।
- विष्टरः** [वि + स्तम्भ + ऋप्, पत्यम्] 1. आसन, (स्तूल, कुर्सी आदि) - रघु० ८।१८ 2 तड, परत, बिस्तार (कुश आदि बास का) 3. मृट्टीभर कुशाभाम 4. पज में बद्धा का आसन 5. बुझा 1 सम० भाष् [वि०] आसन पर बंटा हुआ, आसन पर बिगड़मान - कु० ७।७२, -अथर्व (पु०) विष्णु या कृष्ण का विशेषण - शि० १।४।२ ।
- विष्टिः** (स्त्री०) [विष् + क्तिन्] 1 व्याप्ति 2 कर्म, व्यवसाय 3. भाषा, भवदूरी 4 बेवार 5 प्रेषण 6 नरकवास ।
- विष्टलम्** [विष् + ल्यन् + प्रा० ल०] दूरवर्ती स्थान, फासने पर स्थित ।
- विष्टा** [वि + स्था + क + टाप्, पत्यम्] 1 मल, नीद, पाखाता, -मनु० ३।१८०, १०।११ 2 पेट ।
- विष्णुः** [विष् + नृक्] देवत्रयी में दूसरा, जिसको मन्त्र का पालनविषय सीपा गया है, (सम कर्तव्य को मित्र मित्र अवतार धारण करने मन्त्र किया जाता है, अवतारों के विवरण के लिए दे० अन्वारा) इस शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है यम्माद्विदवमिष सर्वं तस्य शक्त्या महामन, तस्मादेवोष्यते विष्णु-विष्णुपानो प्रवेक्षनात् - 2 अग्नि 3 पुष्पात्मा 4 विष्णु-स्मृति के प्रणेता । सम० काशी एक नगर का नाम, -कर्म-विष्णु के पय, मुक्त-बाणधर का नाम, -सैतन्य एक प्रकार औषधियों से बनाया गया तेल, -ईश्वर्या प्रत्येक पक्ष (चान्द्रमास के) की एकादशी और द्वादशी, पशु 1 जाकास, अन्तरिक्ष 2 वीर-सामर 3 कमल, पत्नी गया का विशेषण, -पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण, श्रौतः (स्त्री०) विष्णुपूजा की स्थापित रखने के लिये ब्राह्मणों की अनुदान के रूप में दी गई शुक्ल से मुक्त मूषि, रथः मरुड का विशेषण, रिणी बटेर, मवा, लोकः विष्णु का मंदार, -अल्लखा 1 मधुमी का विशेषण 2 तुलसी का पीथा, -बाह्यन, बाह्य गण्ड के विशेषण ।
- विष्णवः** [वि + म्यन् + घञ्] बड़कन, स्पन्दन, बरु-बक होता।

- विष्णुहार** [वि + म्कुर + गिष्, उकारस्य ज्ञात्वम्] 1 बन्दुप की टंकार 2 घनबाराहट ।
- विष्य** (वि०) [विशेषण वध्य. विष + यत्] विष देकर मारे जाने योग्य, जिसको जहर देकर मार दिया जाय ।
- विष्यन्** [वि + म्यन् + घञ्] बहना, टपकना ।
- विष्य** (वि०) पीशाकर, क्षतिकार, उत्पातकारी ।
- विष्यन्**, **विष्यन्** (वि०) [विष् + अञ्जति विष् + अञ्जित्] (कर्तु०, ए० व० पु० विष्यन्, स्त्री० विष्णी न्यु० विष्यन्) 1 मर्बन जाने वाला, सर्वव्यापक, विष्यन्मोहः म्ययति कथ मन्दभाग्यः करोमि उत्तर० ३।७८, मा० १।७० 2 भागों में अलग अलग करने वाला 3 मित्र, (विष्यन् गन्ध किया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो इस का अर्थ है 'सर्वत्र' 'सर्वत्रो' 'बारे तरफ' - कि० १।५।१९, पञ्च० २।७, मा० ५।४, १।२५) । सम० - सेव (विष्यन्केन, वा विष्यसेन) विष्णु का विशेषण मायमाय कर्मजसम्बन्धित्वकेनेविनद्वयान-पयोधे शि० १०।५५ विष्णुकेन स्वननुभवितात्सर्वं लोकप्रतिष्ठाम् रघु० १।५।१०३, शिवा लक्ष्मी का नाम ।
- विष्यन्मन्**, **विष्यन्** [वि + म्यन् + स्पृट्, घञ् वा, पत्यन्त्ये] भोजन करना, खाना ।
- विष्यन्** (द्वय) च् (वि०) (स्त्री० विष्यन्तीकी) [विष्णु + अञ्च + क्तिन् अदि आदेश] सर्वत्र, सर्वव्यापक, विष्यन्तीकीविशिष्टम् संन्यर्षीकी - शि० १।८।२५, विष्यन्तीक्या भुवनमभिदो भागते गण्य भामा भासि० ६।१८ ।
- विस्** । (दिवा० पर० विम्यति) हाकना, फेंकना, भेजना ।
: (स्वा० पर० वेसति) जाना, हिलना-जुलना ।
- विस्** दे० 'विम' ।
- विस्तयुक्त** (भू० क० कृ०) [वि + स्तम् + युञ् + क्त] अलग-अलग किया हुआ, पृथक् पृथक् किया हुआ ।
- विस्तयोगः** [वि + स्तम् + युञ् + घञ्] अलग-अलग होना विद्या, विद्योग ।
- विस्तंशः** [वि + स्तम् + श् + घञ्] 1 घोला, प्रतिभा भग करना, निराशा 2 असमति, असह्यता, असम-मति 3 बचनविरोध ।
- विस्तंशविष्** (वि०) [विस्तंश + इति] 1 निराश करने वाला, घोला देने वाला 2 असमति, निरोधात्मा 3 मित्र मत रखने वाला, असह्यत रघु० १।१।७ 4 जालसाज, धूर्त, मक्कार ।
- विस्तंशुल** (वि०) [वि + स्तम् + श्वा + उलच्] 1 अश्वार, विशुद्ध 2. अश्व ।
- विस्तंशुड** (वि०) [वि + स्तम् + श्वा + उलच्] 1 अश्वार, विशुद्ध 2. अश्व ।

मयानक, इरावना—मा० ५।१३-नु० विसकट,
-- इः 1 सिंह 2 इग्री की वृक्ष ।

विसंगत (वि०) [वि+सम्+गम्+क्त] अयोग्य,
असम्बद्ध, बेमेल ।

विसर्गि. [विद्यद् सन्धि, - प्रा० स०] अनभिमत मन्थि
या सन्धि का अभाव (यह साहित्यरचना में एक
शेष माना जाता है) दे० काण्य० ७ ।

विस्तारः [वि+सु+अच्] 1 जाना 2 फैलाना, विस्तार
करना 3 मोड़, समुच्चय, रेषड, लहंगा 4 वही
राशि, देर मा० १।१७ ।

विसर्गः [वि+सृज्+घञ्] 1 भेज देना, उद्गार
२ गिराना, उडेलना, बृह-बृह करके गिराना रघु०
१५।३८ ३ डालना, फेंकना 4 प्रदान करना, भेंट, दान
--आदत्त द्वि निमगण्य मनां वारिमुवाभिव-रघु० ५।८६,
(वही) दाबे हा अर्थ 'उडेलना' भी है) 5 भेज देना,
विमर्जन 6 परिग्याग, छोड़ देना 7 उलज्वल, मलम्याग
जैसा कि 'पुरीय विसर्ग' में 8 जुटाई, विभाग 9 मोड़
10 प्रकाश, उदगति 11 विसर्ग में एक प्रतीक, जो
स्पष्ट रूप से महाप्राण है तथा जो बिन्दु () लगा
कर प्रकट किया जाता है 12 सूर्य का दक्षिणावतन
13 लिङ्ग, गिल्ल ।

विसर्जनम् [वि+सृज्+घट्ट्] 1 उद्गार, वेपथ, उडे-
लना--समतया बहुवृद्धिविसर्जने-रघु० १।६
2 प्रदान करना, भेंट, दान -रघु० १।६ 3 अज्ञायाग,
सन् ६।५८ ४ डाल देना, त्याग देना, परिग्याग
करना-रघु० ८।२५ 5 भेज देना, बिदा करना
6 (बेचना को) बिदा करना (विप० बाकाहूत)
7 किसी विशेष अवसर पर साई का छोड़
देना ।

विसर्जनीय (वि०) [वि+सृज्+ञनीयर्] परिग्यकन विपे
जाने के योग्य,--कः=विसर्ग () दे० ।

विसर्जित (भू० क० कृ०) [वि+सृज्+गिच्+क्त]
1 उद्गीर्ण, उगला गया 2 प्रदान 3 छाड़ा गया,
त्याग दिया गया, परिग्यक्त 4 भेजा गया, प्रेषित
5 बिदा किया गया, तितर-वितर किया गया ।

विसर्गः [वि+सृप्+घञ्] 1 रेंगना, सरकना 2 इधर
से उधर जाना और जाना 3 फैलाव, संचार--उत्तर०
१।३५ 4. किसी कर्म का अग्रप्रयात्त या अनपेक्षित
फल 5 एक प्रकार का रोग, सूखी झुंझी । सम०
--अन्व० नीय ।

विसर्गणम् [वि+सृप्+घट्ट्] 1 रेंगना, सरकना, जाने
गाने चलना 2 प्रसारण, फैलाव, विस्तारण ।

विसर्गि, विसर्गिका दे० उ० विसर्ग () ।

विसर्ग दे० 'विसर्ग' ।

विस्तारः [वि+सृ+घञ्] 1 फैलाना, बिछाना, प्रसारण

2 रेंगना, सरकना 3 मछली,--रघु 1. मछली
2 बहरीर ।

विस्तारिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [वि+सृ+चिदि]
1. फैलाने वाला, प्रसार करने वाला 2 रेंगने वाला,
सरकने वाला, पू० मछली ।

विसिनी दे० 'विसिनी' ।

विसिक्त दे० 'विसिक्त' ।

विस्तुरिका [वि+सृच्+भृत्+टाप्, इत्थम्] हुंवा ।

विस्तुरकम्,--जा [वि+सृच्+घट्ट्] बुक, शोक ।

विस्तुरितम् [वि+सृच्+क्त] पक्कासाप, दुःख,--सा बुकार,
अर ।

विस्तृत (भू० क० कृ०) [वि+सृ+क्त] 1 फैलाया हुआ,
विस्तृत किया हुआ, प्रसारित किया हुआ 2 विस्तार-
रित, ताना हुआ 3 कहा हुआ ।

विस्तृण्वर (वि०) (स्त्री०-री) [वि+सृ+स्वरच्, गृच्]
1 इधर उधर फैलाने वाला, व्याप्त होने वाला -विस्-
त्वरंरवहावा रजोमि-सि० १।११ 2 रेंगना, सरकना ।

विस्तुरण (वि०) [वि+सृ+स्वरच्] 1 रेंगने वाला,
सरकने वाला, जाने गाने चलने वाला--विस्तुरण्वेविस्-
हृत्--वेणी० ५ ।

विस्तृष्ट (भू० क० कृ०) [वि+सृ+क्त] 1 उद्गीर्ण,
उगला हुआ 2 उत्पन्न, निस्तृत 3 डालफाया हुआ,
टपकाया हुआ 4 भेजा हुआ, प्रेषित--रघु० ५।१९
5 बिदा किया गया, जाने दिया गया, कार्यभार से
मुक्त किया गया-रघु० २।९ 6 निकाल बाहर
किया गया, फेंका गया 7 दिया गया, प्रदत्त, स्वीकृत-
धामेष्वात्मविस्तृष्टेभू रघु० १।५८ 8 परिग्यक्त,
उन्मुक्त, हटाया गया (दे० वि पूरकं सूच्) ।

विस्त दे० 'विस्त' ।

विस्तारः [वि+सृ+अच्] 1 विस्तार, फैलाव 2 सुकम
विकारण, व्योरेवार वर्णन, सुकम व्योरे सहि-
जम्याप्यतोऽप्येव हास्यस्यावंगरीकस, सुविस्तारता
वाको भाष्यमना मभवत् मे सि० २।२५ (विस्तरेण
विस्तरेत्, विस्तरेत्) व्योरेवार, विस्तारपूरकं, पुरी
तद्द से, सुकम विकरण सहित, पुरी विशेषताओं के
साथ--अनुलिमुद्राधिगम विलद्रेण धोनुमिच्छामि-मुद्रा०
१, मग० १०।१८) ३ सुविस्तारता, प्रसार--अर्ज
विस्तरेण 4. बहुतायत, परिमाण, समुच्चय, सख्या
5 विस्तार, तह, स्तर 6 मास, तिारा ।

विस्तारः [वि+सृ+घञ्] 1 फैलाव, विस्तृति, प्रसारण-
प्रार्तविस्तारभाजाम्--मा० १।२७ 2 आयाव, भीड़ाई
--विनोककथ्यो बहुदुपुत्रता प्रकामविस्तारकत् हृदिभ्य-
रघु० २।११, मग० १०।१० ३ फैलाव, विस्तृण्वण,
विशालता--मध्य वयाम स्तन इव भूवः शेषविस्तार-
पाद्--वेध० १८ 4 विकरण, पूरा व्योरा--कथ्योऽपि

तावच्छ्रुतविस्तारः कियताम्—शा०७ ६ दूत का व्यास 6 शारी 7 नूतन पल्लवो मे दूत पत्र की शाखा ।

विस्तृषं (भू० क० ह०) [वि + स्तृ + क्त] 1. बिछाया गया, फैलाया गया, विस्तार किया गया 2 चौड़ा, विस्तृत 3 बिछाल, बड़ा, विस्तारयुक्त । सम०—**वर्षम्** एक प्रकार की जड़, मानक ।

विस्तृत (भू० क० ह०) [वि + स्तृ + क्त] 1. प्रसारित, फैलाया गया, विस्तारयुक्त 2 चौड़ा, फैला हुआ 3. विपुल 4 सुविस्तर, लम्बा-चौड़ा ।

विस्तृतिः (स्त्री०) [वि + स्तृ + क्तिन्] 1 विस्तार फैलावट 2 चौड़ाई, फासला, विद्यालया 3 वृत्त का व्यास ।

विषण्ट (वि०) [वि + षण् + क्त] 1 सोचा, साफ, सुबोध 2 प्रकट, स्पष्ट, सुव्याक्त, खुला, प्रत्यक्ष ।

विष्कार [वि + ष्कृ + क्त] 1 बर-बराहट, कम्पन, बड़कन 2 धनुष की टकार ।

विष्कारित (भू० क० ह०) [विष्कार + क्त] 1 बरपरी पैदा की गई 2 कम्पमान, बरपराता हुआ 3 टकार-युक्त 4 विस्तृत किया हुआ, फैलाया हुआ 5 प्रकटित प्रदर्शित ।

विष्कुरित (भू० क० ह०) [वि + ष्कृ + क्त] 1 बर-बराते वाला, कम्पने वाला ? सुजा हुआ, विस्तारित ।

विष्कुरिमा [वि + ष्कृ + इ = विष्कृ तादृश लियमञ्जलि अस्] 1 अंग की चिनगारी अग्नेर्वर्णलो विष्कुरिमा चिप्रनिच्छेत्—शारी० 2 एक प्रकार का विष ।

विष्कुर्यं [वि + ष्कृ + अच्] 1 दहावना, गर-जना, कड़कना 2 बरान की गरज, बिजली की कड़क 3 बिजली जसी कड़क, अकस्मात् आभास या आधान-समय अन्त्यावस्थातकाना विषाकविष्कुर्यं प्रसङ्ग—रघु० १४:६३ 4 (लहरो का) अग्रशील होना, लहरो का उठना—महाभारतविष्कुर्यं मुनिविषयो—रघु० १३:१२१ ।

विष्कुरितम् [वि + ष्कृ + क्त] 1 दहाव, बरकार 2 कड़कना 3 कड़क, परिणाम भन्व० २:१०५, ३:१४८ ।

विष्कुरिः—डा [वि + ष्कृ + षञ्] 1 फोड़ा, धुँध, रसीली 2 शीतला, शक ।

विष्यः [वि + षि + अच्] 1 आश्चर्य, ताज्जुब, अचम्भा, अचरज—दुष्य. प्रब्रज्याग्नेर्विष्यते सहाविज्याम्—रघु० १०:५१ 2 आश्चर्य या अचम्भे की भावना, जिससे अचभूत रस की निष्पत्ति होती है, शा० ६० २०७ पर इक्षुकी परिभाषा की गई है विधिषेयु पदाधिपु लोक-सीमातिवर्तिषु, विष्कास्त्वेतौ वस्तु त विष्यय उदा-हृत 3. चमंड, अविमान,—तप आरति विष्ययात्

—मनु० ४:२३७ 4 अविषय, मन्वेह । सम०—**आकुक्**, **आकिष्ट** (वि) आश्चर्ययुक्त, अचरज से भरा हुआ ।

विष्यवगम (वि०) [विष्यव गच्छति -विष्यय + गम् + लृच्, मृच्] अचरज से भरा हुआ, आश्चर्यजनक ।

विष्परणम् [वि + स्तृ + ष्टृ] भूल जाना, विस्मृति, रमति का न रहना, निसर जाना - शा० ५:१२३ ।

विष्वापण (वि०) (स्त्री० - षी) [वि + ष्मि + णिच् + ष्टृ, पुकागम, आत्वम्] आश्चर्यजनक,—म- 1 काम-देव 2 बाल, घोला, भ्रम,—मम् 1 आश्चर्य पैदा करना 2 कोई भी आश्चर्यजनक वस्तु 3 गंधर्वों का नगर (पु० भी कहा जाता है) ।

विस्मित (भू० क० ह०) [वि + स्मि + क्त] 1 आश्चर्य-यमित, शकित, मोहकशा. हक्काबक्का 2 उलटपुलट किया गया 3 धमशी ।

विस्मृत (भू० क० ह०) [वि + स्मृ + क्त] भूला हुआ ।

विस्मृतिः (स्त्री०) [वि + स्मृ + क्तिन्] भूल जाना, बिस्तार देना, अस्मरण ।

विस्मेर (वि०) [वि + स्मि + रन्] चौचक्का, आश्चर्य-यमित, शकित ।

विस्मृ [वि + र्क्] कर्कषे भास की गण के समान गण । सम०—**गधि** हुरलात ।

विस्मत्,—सा [वि + ष्मृ + षञ्] 1 नीचे गिरना 2 अथ, शीघ्रतर, कमजोरी, निर्बलता ।

विस्मसन (वि०) [वि + ष्म + ष्टृ] 1 पतनशील या बिन्दुपानी—अग्नीमोहिनोतिपूषेनचलमन्दारविस्मसन—गीत० ३ 2 खोलने वाला, डीला करने वाला नीचीनिलयन कर काश्य० ३—**मम्** 1 अथ पतन 2 बहना, टपकना 3 मोहना, डोला करना 4 रेचक, दस्तावर ।

विस्मय, **विस्मयं** २० विधम्ब, विधम्भ ।

विस्मता [वि + ष्य + क + टाप्] क्षय, निर्बलता, अर्ज-रता ।

विस्मत्त (भू० क० ह०) [वि + ष्मृ + क्त] 1 डीला किया हुआ 2 चुनब, बलहीन ।

विस्मयः, **विस्मयः** [वि + ष् + अच्, षञ् वा] बहना, भूँद भूँद टपकना, बूना, रिमना ।

विस्मयणम् [वि + ष् + णिच् + ष्टृ] रक्त बहना ।

विस्मृतिः (स्त्री०) [वि + स्मृ + क्तिन्] बह जाना, बूना, रिलना ।

विस्वर (वि०) [विषट् विगतो वा स्वरो यस्य शा० ४०] बेसुरा ।

विह्वल [विह्वलया गच्छति गम् + ड, वि०] 1 पकी—मेघ० २८, ऋतु० १:२३ 2 झाल 3. बाण 4 सुयं 5-चाँद 6 नलक ।

विह्वलः [विहायसा यञ्छति—गम्+ञच्, मृन्] 1 पत्नी
-रघु० १।५१, मनु० १।५५ 2 बायल 3 बाण
4 सूर्य 5 चन्द्रमा । सम० इन्द्रः,—ईश्वरः,—राजाः
गवहः के विशेषण ।

विह्वल्यः [विहायसा यञ्छति—गम्+ञच्, मृन्, विहा-
देशः] पत्नी (गृह् दीपिका) मदकलोलकलोलविह्व-
यसा—रघु० १।३७, मनु० १।३९, हि० १।३७ ।

विह्वयसा, विह्वयिका [विह्वय+टाप्, विह्वय+कन्+
टाप्, इत्यम्] विह्वयी, बहु बास जिसके दोनों सिरों
पर बाँस बाँध कर लटका दिया जाता है ।

विह्वल (मू० क० ह्र०) [वि+ह्व+क्त्] 1 पूरी तरह
आहत, बध किया गया 2 चोट पहुँचाई गई 3 अप-
हृद, विरोध किया गया, मुकाबला किया गया ।

विह्वलितः [वि+ह्व+क्त्] मित्र, साथी, —(स्त्री०)
1 हाया करना, प्रहार करना 2 असफलता 3 परा-
जय, हार ।

विह्वलन् [वि+ह्व+क्त्] 1 हाया करना, प्रहार
करना 2 चोट, क्षति 3 अपहृद, हकावट, अपह्वन
4 दाँ घुनने की घुनकी ।

विह्वः [वि+ह्व+क्त्] 1 अपहृण्य करना, हटना
2 विधोष, विडोह ।

विह्वयन् [वि+ह्व+क्त्] 1 दूर करना, अपहृण्य
करना 2 लैर करना, हवाबोरी, इधर उधर टहलना
3 आभोद-भ्रमोष, मनोरञ्जन ।

विह्वः (पुं०) [वि+ह्व+क्त्] 1 भ्रमणशील 2 कुटेरा ।

विह्व [विगिच्छे हर्षे प्रा० न०] बहुत अधिक
प्रसन्नता, उन्मास ।

विह्वलन् विह्वलितम् विह्वलतः [वि+ह्व+क्त्, क्त
धञ्, वा] मन्द हसी, मुस्कान ।

विह्वल (वि०) [विगल, हल्लो यस्य प्रा० न०]

1 हल्लरहित 2 बकराया हुआ, व्याकुल, परामृत,
सकिण्हीन किया हुआ, मा० १, रघु० ५।५९
3 अवफल (उपयुक्त कार्य करने के लिए) अज्ञान,
रजा विह्वलचरणम् मालवि० ४ 4 चिहान्,
दृष्टिमान् ।

विह्व (अव्य०) [वि+ह्व+क्त्, नि०] स्वर्न, बंकुण्ड ।

विह्वलित (मू० क० ह्र०) [वि+ह्व+क्त्] 1
पुकारणम्] 1 परिच्छेद करवाया गया 2 लोड मरोड
कर निकाला गया, छुड़ाया गया, लम्ब में ट. दान ।

विह्वल्य (पुं० मपुं०) [वि+ह्व+क्त्, नि० दृष्टि,
आकाश, अन्तरिक्ष वि० १६।४३, (पुं०) पत्नी
—ने० ३।१९ ।

विह्वल्य दे० 'विहायस' ।

विह्वारः [वि+ह्व+क्त्] 1 हटाना, दूर करना 2 लैर
साटा, हवाबोरी, अपह्व, लैर करना 3 कीडा,

बोक, मनोविधोष, मनोरञ्जन, आभोद-भ्रमोष,
बिलास—विहारशीलानुवर्तेय नागि रघु० १६।२६,
७६, ५।४१, १।६८, १।३८, १।३७ 4 प
रकना, कदम बढ़ाना,—दरल-दरचरणविहारल-गीत०
११, कि० ५।१५ 5 शक्ति, उद्योग, विशेषतः
प्रमोदकन 6 कान्वा 7 जैनमन्दिर या बौद्धमन्दिर,
मठ, आश्रम या सत्साराय 8 मन्दिर 9 मानिन्द्रिय
का नृह्व विस्तार । सम०—गृह्य प्रमोदकन,
दासी सत्यासिनी, चिञ्जुषी ।

विहारिका [विहार+क्त्+टाप्, इत्यम्] बौद्धमत ।

विहारिन् (वि०) [विहार+इति] मनोविनोदी या
हिलबहलाका करने वाला—मगपाविहारिण-स० १ ।

विहित (मू० क० ह्र०) [वि+धा+क्त्] 1 किया
हुआ, अनुष्ठित, कृत, बनाया हुआ 2 अमरुद किया
हुआ, स्थिर किया हुआ, सुस्थबन्धित, नियोजित,
निर्धारित 3 आदिष्ट, बिधान किया हुआ, समाधिष्ट
4 निमित्त, सरन्धित 5 रक्ता हुआ, बना किया हुआ,
6 मुराजित, सम्पन्न 7 किये जाने के बोध
8 चितरित, बाटा गया (दे० वि पूर्वक वा),—तम्
आदेश, आजा ।

विहितः (स्त्री०) [वि+धा+क्त्] 1 अनुष्ठान,
क्रिया, कर्म 2 अपस्था ।

विहीन (मू० क० ह्र०) [वि+हा+क्त्] 1 छोटा
गया, परिच्छेद, त्याग गया 2 क्षुण्य, रहित, शून्य
(शाय समस्त में) विद्याविहीन यत् भवेत् २।२०
3 अथम, नीच, कमीना । सम०—भारति घोषि
(वि०) नीच घर में उत्पन्न, नीच कुल में पैदा हुआ ।

विहित (मू० क० ह्र०) [वि+हा+क्त्] 1 कीडा की,
जोला हुआ 2 फूलाया हुआ, लम्ब स्थियों द्वारा मेम
प्रदक्षित करने को दस रीतियों में से एक दे० हा०
४० १२५, १४६, (इस अर्थ में 'विहित' भी लिखा
जाता है) ।

विहितः (स्त्री०) [वि+हा+क्त्] 1 हडाना, दूर
करना 2 कीडा, मनो विनोद, विहार 3 प्रसार ।

विह्वल्यः [वि+ह्व+क्त्] क्षति पहुँचाने वाला ।

विह्वल्यम् [वि+ह्व+क्त्] 1 क्षति पहुँचाना, बायल
करना 2 असफलता, पीसता 3 कष्ट देना 4 पीडा,
दुःख, सताना

विह्वल (वि०) [वि+ह्व+क्त्] 1 विह्वल्य,
अज्ञान, व्याकुल, बकराया हुआ रघु० ८।३७
2 डरा हुआ, सन्नत 3 उन्मत्त, आपे से बाहर
4 कष्टप्रस्त, दुःखी—कु० ५।४ 5 विद्याधरुर्न 6 गला
हुआ, पिचका हुआ ।

वी (अव्य० पर०) [वि+ह्व+क्त्] 1 जाना, हिलना-जुलना 2 पहुँचाना 3 व्याप्त होना

4. लामा, पहुँचाना 5. फेंक देना, झालना 6. खाना, उपभोग करना 7. प्राप्त करना 8. गर्वधारण करना, उत्पन्न करना 9. पैदा होना जन्म लेना 10. चमकना, सुन्दर होना ।

बीक: [अच् + कन्, बी आवेशः] 1 वायु 2 पत्नी, 3 मन ।

बीकसा दे 'विकसा' ।

बीकस्व [वि + ईञ् + अच्] 1 दुष्ट पदार्थ 2 अच-भा, आरक्ष्य, -ल, -आ, देखना, ताकना ।

बीकषणम्,—आ [वि + ईञ् + क्त्वा] देखना, निहारना, दृष्टि डालना ।

बीकितस्व [वि + ईञ् + क्त्वा] दृष्टि, झलक ।

बीक्य (वि०) [वि + ईञ् + क्त्वा] 1 जने जाने के योग्य 2 वृष्य, वृष्टिगोचर, -इत् 1 नरक लट, अग्निना, पात्र 2 घोडा, इत्थम् 1 देवे जान के योग्य कोई भी वस्तु, वृष्यमान पदार्थ 2 आरक्ष्य, अ-वभा ।

बीक्यत [वि + ईञ् + क्त्वा + टाप्] 1 जाता, हिलना-जुलना, प्रगति 2 घोड़े का कदम 3 नाव 4 समय, मिलन ।

बीचि: (पुं, स्त्री०) **बीची** [वे + ईचि, द्विच बीचि — बीच्] 1 सहर-समुद्रबीची चलकरमाया — पञ्च १११४, १०० ६१५६, १२११००, मेघ ० २८ 2 जल-पति, बिचाबुधिया 3 आनन्द, प्रसन्नता 4 विश्राम, अवकाश 5 प्रकाश को किरण 6 स्वल्पता । सप० —मात्स्य (पुं) समुद्र ।

बीची दे० बीचि ।

बीच् 1 (स्था० आ० बीचते) जाना ।

11 (चुरा० उच० बीचयति ते) पला करना, पला करके ठेका करना ल बीच्यते मरिचमरिचि तालवृत्ते —मूळ० ५११३, कु० ०१४२, अथि—, उच—, परि—, पला करना ऋतु० ३१६, स० ३ ।

बीच बीचक, बीचल, } दे० बीच, बीचक, बीचल,
बीचिक बीचिन्, बीच्य } बीचिक, बीचिन और बीच्य ।

बीचन: [बीच् + क्त्वा] 1 चक्रवाक 2 एक प्रकार का बकोर, मत् 1 पला करना कु० ४१३६ 2 पला ।

बीडा [वि + ईट् + क् + टाप्] 1 लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा, गुल्ली (लगवै एक बालकल) जिनको लकड़े के डहा मार कर लेते हैं, गुल्ला हडा ।

बीटि, बीटिका, बीटी [वि + ईट् + इन्, म च क्त्वा, बीटि + क्त्वा + टाप्, बीटि + बीच् हा] 1 पान की बेल, 2 पान लगाना 3 बचन, गीट, पवि (पहले जाने वाले वस्तु की) 4 बोली की लती अमर २३ ।

बीबा [वेति वृद्धिमात्रपणच्छति—बी + न, नि० वाच्यम्] 1 सारली, बीबा मुकीभूताया बीबायाम् का०, मेघ० ८६ 2 बिल्वी । मम० आक्षेपः मारद का

विशेषण,—**बष्प:** बीबा की गर्दन—भादि० १।८०,—**बाष्प:** बलक. बीबा बजाने वाला ।

बीत (भू० क० कृ०) [वि + ई + क्त] 1 गया हुआ, अनहित 2 जो बला गया, बिदा हो गया 3 जिसको जाने बिदा गया, डोला, उन्मुक्त 4 बलमाया हुआ, विमुक्त किया हुआ 5 अनुमोदिन, पसंद किया गया 6 युद्ध के अयोग्य 7 पामतु, गालत 8 मुक्त, गुन्य (बहुधा समास में) बीतयित, बीतस्य, बीतनी, बीतयक आदि,—स. हाथी या घोडा जा युद्ध के अयोग्य हो या सपाया न गया हो,—तम् (हाथी की) अकृपा से गोदना नया पैरो से प्रहार करना,—बीतबीतभया मागा कु० ६।३१ (पाठानर-दे० इस पर मलिन) सि० ५।६७। मम० इत्थं (वि०) निनाम, विनीत,—भय (वि०) निर्भय, निडर (बः) विष्णु का विशेषण, मल (वि०) पवित्र, निर्मल, राय (वि०) 1 इच्छारहित कु० ६।६३ 2 निगवेश, मोक्ष, ज्ञान 3 विभवं, बिना रन का, (प) एक ऋषि जिसने अपने रागों का दमन कर लिया था,—श्लोकः (अशोकः) अशोक वृक्ष ।

बीतसः [विशेषण बहुद्वेव तस्ये भूयाने वि + तस् + क्तन्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 वीरता या जाल जिसमें पत्नी या अन्य वस्तु समाया जाते हैं 2 चिद्विषाघर, विकार के पशुओं को पालने का स्थान ।

बीतनी (पुं, द्वि० व०) [विशिष्ट तनोति - वि + तन् + अच्, पूषा० दीर्घः] गले के जलन बजल के पात्रं ।

बीति [बी + क्त्वा] बीडा,—वि (स्त्री०) 1 गति, बाल 2 पैदावार, उपज 3 मुक्तोपभोग 4 बीजन करना 5 प्रकाश, कान्ति । सप०—होश्चः 1 क्षति 2 मृत् ।

बीचि,— बी (स्त्री०) [विच + इन्, क्त्वा, पूषा०] 1 मरक, मार्ग, कि० ७।१३ 2 पवित्र, कताग 3 हाट, आपणिका, मद्यी में दुकान सि० १।३२ 4 नाटक का एक भेद । इसकी परिभाषा स० ८० निम्नादिन है बीच्यःमेका भवेद्वद् द्विचिदेकाप्य कल्प्यते, आकाशभापित्तेस्तेर्निचिचत्वा प्रयुक्तिमाधित । मूषयेद्भूरि भूङ्कार किञ्चिदन्वयारसाविति । मूष-निर्वहय मन्थो अर्थप्रकृतयोऽपिक्ता, ५२० ।

बीचिका [बीचि + क्त्वा + टाप्] 1 मरक आदि 2 चित्र-शाला, चित्रकारी (जिन पर चित्र चित्रित किये जाते हैं) चित्रागार, चित्रावली—भायंस्व वरिचमय बीचिकायामालिपितम्—उत्तर १ ।

बीच (वि०) [विशेषण इत्थने - वि + इन् + क्तन्, उप-सर्गस्य दीर्घः] निर्मल, स्वच्छ, शुद्ध 1 आकाश 2 वायु, त्वा 3 अग्नि ।

बीमाह [वि + नह् + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] कुर्वां का
उक्कन या मणि ।

बीषा (स्त्री०) विषकी ।

बीषा [वि + भाष् + घञ् + अ + टाप्, ईत्थम्] 1 परि-
ध्याप्ति 2 (नेरलये प्रकट करने के लिए) छब्
द्विक्रित—घषा नृक्ष वृत् सिर्घात इति बीष्याया
द्विरिति 3 सामान्य पुनर्वक्ति ।

बीष् (म्बा० आ० बीभते) सेवी भारता, बीष भारता ।

बीर (वि) [अने १क बीभावच १] वीर, बीर 2 ताकन-
वर, शक्तिशाली, २ 1 शूरवीर, योद्धा, प्रजेता
बीर्येण सप्रति नव पुत्र्यावतारी बीरो न यम्
भयवान् भूयानन्दनोऽपि उत्तर० ५।३४ 2 (आल०
में) बीरभावना, बीरत्व, इसके बाद भेद (दानव,
धर्मवीर, दयावीर और युद्धवीर) किये गये हैं, स्पष्टी-
करण के लिए दे० इन शब्दों को 3 अभिनेता 4 आग
5 पक्ष को अग्नि 6 पुत्र 7 पति 8 अन्न वृक्ष
9 विष्णु का नाम, रघु 1 नरकुल 2 विषं
3 चावल का माह 4 उशीर का जड़, अम 1 सम०
आत्मतन्त्रम् 1 निररात्री गन्दा 2 युद्ध में योषिय
से नग पद 3 छोटी हुई भागा, -अलनम् 1 योगा-
भ्यास करते समय एक विशेष मुद्रा, परिभाषा के लिए
दे० पर्यक (३) 2 एक घूटा मोक कर बैठना
4 सतरो की चौकी, ईक्ष्,--ईष्वर 1 शिव के विशेष-
वच 2 महान् बीर, उच्च- बहु बाह्य जो यजामि
में आहूति नहीं आना, अभिज्ञान न करने वाला
आशय,--बीटः मुञ्च संनिक, अच्यवित्ता 1 रणन्य
2 सहाय, युद्ध, तपः सर्वान्पुत्र, -बन्धम् (पु०)
कामदेव,--पलम् (अम्) एक उत्तेजक वा श्वापहारक
तेज जो मैनिक लोग युद्ध के आरम्भ या अवसान पर
पीन है, अहः 1 एक शक्तिशाली शूरवीर जिसे शिव
ने अपनी बेटाओं से निकाला था दे० 'एष' 2 माता
दूजा योद्धा 3 अश्वमेध यज्ञ के उपयुक्त बाधा
4 एक प्रकार का मुनिव्रत धाम,--मुद्रिका पैर की
गच्छा अंगुली में पहना जाने वाला छन्दा, रज्ज्व्
(नपु०) शिखर, एत 1 बीरता का माह 2 साम-
रिक भावना,--रेणु श्रीमसेन का नाम, चिन्माक-
पृष्ठ से बन लेकर हवन करने वाला,--वृक्षः 1 सर्वत्र
वृक्ष 2 बिलाले का वृक्ष,--वृ (स्त्री०) शूरवीर
पुत्र की माता (इसी प्रकार बीरप्रत्था, प्रभू,
प्रसक्ति), शैष्ण्य अह्वय,--एकस्थः मैसा--हृत्
(पु०) 1 बहु आशय विभक्त दैनिक अभिज्ञोष करना
छोड़ दिया है 2 विष्णु ।

बीरवम् [वि + ईर + स्पृष्ट] एक मुनिव्रत धाम, उशीर
(विष्णुकी अर्धे)--अह--शिवलता प्रदान करने के लिए
प्रसूता होती हैं) ।

बीरवी [बीरव + ङीप्] 1 तिरछे चितवन, कटाक्ष
2 गहरा स्थान ।

बीरवः [बीर + तरप्] 1 महान् वीर 2 बाण,--रम् एक
प्रकार का मुनिव्रत धाम, उशीर ।

बीरव्यः [बीर + वृ + लष्, भृम्] 1 मोग 2 बन्ध पशुओं
के साथ लड़ाई 3 बन्धों की जाकेट ।

बीरव्य् (वि०) [बीर + यणुप्] शूरवीरो मे भरा हुआ,
—ती बहु स्त्री धिसका पति और पुत्र जीवित हो ।

बीरा [बीर + टाप्] 1. शूरवीर पुत्र्य की स्त्री 2 पत्नी
3 भागा, गृहिणी 4. मृग नामक एक गन्धद्रव्य,
5 शराव 6 अना की लकड़ी 7. केले का पेड़ ।

बीरिष्य् दे० 'ईरिष्य' ।

बीरिष्य्,--वा (स्त्री०) [क्रियेण लृटि अयान् वृत्तान्
-वि + ष् + षिञ् वसे टाप्, उपसर्गस्य दीर्घः]
1 लहकहाने कानी लता ल्वा प्रयागिनी बीरिष्य्
--मट्टि०, आहोस्वितसरो ममापचित्तिविष्टिभितो
बीरिष्याम् य० ५।१, कु० ५।३४, रघु० ८।३६
2 शाका, अकुर 3 कटपे पर ही रहने वाला
पौधा 4 बल, लता, हीरी--कि० ५।१९ ।

बीरिष्य् [बीर + यत्] 1 शूरवीरता, पराक्रम, महादुरी
--बीरिष्यायेण कृतावयव --कि० ३।४३, रघु०
२।४, ३।६२, १।१०८, वेणी० ३।३ 2 बल, सामर्थ्य
3 पुत्रव 4 ऊर्जा, बुद्धता, साहस 5 शक्ति, समता
य० ३।२ 6 (जीवियों की) अच्युता, अतिवीर्य-
वतीय शेषमें बहुस्त्रीयसि दृश्यते तुय कि० २।२४,
कु० २।४८ 7 लुक, बीर्य--कु० ३।१५, पच० ४।५०
8 कामा, कान्ति 9 गौरव, महिमा । सम० अः
पुत्र,--प्रवतः बीर्ये का शरण या स्थान ।

बीरिष्य् (वि०) [बीर्य + यणुप्] 1. मजबूत, हृष्टपुष्ट, बल-
वान् 2 अच्युत, अयोध ।

बीरिष्यः [वि + वृ + घञ्, वृद्धपमावो दीर्घवच] 1 बीरता
होने के लिए जूझा, बहरी 2 बोझा 3 अनाज का
बहार भरना 4 मार्ग, सड़क ।

बीरिष्यिकः [बीरिष्य + ङ्] बहरी होने वाला ।

बीरिष्यः [वि + हृ + घञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1 जैन विहार
वा बीरिष्यठ 2 देवालय ।

बुद्ध् (म्बा० पर० बुद्धति) छोड़ना, परित्याग करना ।

बुद्ध् (पु०) उम्, बुद्धवति-ते) 1 शीट पहनाना वच
करना 2 नष्ट करना ।

बुद्ध् (वि०) [बु + त् + उ] पसन्द करने का इच्छुक ।
बुद्ध् दे० 'बुद्ध' ।

बुद्ध् (वि०) [बु + ष्ट] छोटा हुआ, घना हुआ ।

बु (म्बा०, स्बा०, कषा० उम्, ब्राह्मि-ते, वृषीति-भृत्ते,
वृषीति-वृषीते, वृत्, कर्षा० विषते) 1 शक्ति, धृत्ता,
पसन्द करना--वृत् तेनेनेच प्राक्-कु० २।१६, बहार

रामस्य वनप्रयाणम्—मट्टि० ३१६ २ अपने लिए चुनना (भा०) गुणते हि विमुग्धकारिण गुणलब्ध्या स्वयमेव सम्पद—कि० २१३०, रघु० ३१६ ३ विवाह के लिए बरण करना, प्रथम-प्राथना करना, प्रथमवाचना करना—महावी० ११२८, अथर्व० ३१४२ ४ प्राथना करना, निवेदन करना, याचना करना ५ इकना, छिपाना गुप्त रखना, परदा डालना, लपेटना—मेघवृंशचन्द्रमा—मृच्छ० ५११४ ६ बेरना, लपेटना मट्टि० ५१ १०, रघु० १२१६१ ७ परे हटना, दूर करना, नियंत्रण करना, रोकना ८ विघ्न डालना, विरोध करना, बहकन डालना, प्रेर०—(वारयति-ते) १ इकना, छिपाना २ (किसी वस्तु से) बाध कर लेना (अप्रा० के साथ) ३ रोकना, हटाना, नियंत्रण करना, दबाना, जाच पकताल करना, विघ्न डालना—शक्यो वारयितुं बलेन हृतमुक्—मनु० २१११, इच्छा० वृषयति-ते, विविरयति-ते, विविरयति-ते, चुनने की इच्छा करना, धच , मोलना (प्रेर०) इकना, छिपाना अप्रा०, लोचना आ०, १ इकना, छिपाना, गुप्त रखना आबुनोदारमनो रन्ध रन्धेषु प्रहरन् रिपुन् रघु० १०३ ६१, मट्टि० ११२४ २ चुनना, ब्याप्त होना मग० १३१३३, मनु० २११४४ ३ चुनना, इच्छा करना ४ निवेदन करना, प्राथना करना ५ बेरना, नाके बंदी करना, रोकना—रघु० ७३११ ६ दूर रखना मट्टि० १४१०९, वि०, चेरना डालना, बेरना मट्टि० १४१ १६, (प्रेर०)—परे हटना दूर करना, आगे फेरना (अप्रा० के साथ) पावाप्रियास्वयिन योजयते द्वितीय—मनु० २१७२, मिष् , (बहुधा काल रूप) प्रथम होना, समुष्ट या समुप्त होना निर्वंकार मधुनीदिय-बर्ष—शि० १०३३, दे० निर्वन्, वरि - , बेरना, प्र- १ डाकना, लपेटना प्राचारिष्वरित शोषी द्विपना वृक्षा समन्तत मट्टि० ११२५ २ पहनना, धारण करना ३ चुनना, छांटना, प्रा- , पहनना, धारण करना, वि- , ३ इक देना, उठरना २ मोलना—कु० ४१२६ ३ तह लोचना, भ्रष्टाचार करना, भेद लोचना, प्रकट करना, प्रदर्शन करना म० १११, कु० ३११५, रघु० ११८५, मट्टि० ७७७३ ४ विद्याना, ब्याषा करना, स्पष्ट करना—महावी० २१४३ ५ फीलाना, मासि० ११५ ६ चुनना क्विि- , (प्रेर०) रोकना, दूर हटाना, दबाना विनय विनिवार्य मा० १११८ मन्- , १ छिपाना, इकना, प्रच्छन्न करना—मुहु- रहुग्लिमवृत्ताशरोष्ठम्—भा० ३११५, २१०, रघु० १, २०, ७३३० २ दबाना, नियन्त्रण करना, विरोध करना मट्टि० ११२७ ३ बन्द करना । ॥ (चुटा० उम० वरयति-ते) १ बरण करना, चुनना—वर वरयते कन्या माता विलम्ब पिता मृतम्—पद्य०

३१६७ २ विवाह के लिए पसन्द करना ३ याचन करना, प्राथना करना, निवेदन करना ।
 वृह, वृहित दे० 'वृह' वृहित ।
 वृक्ष (प्रा० आ० बर्कते) पकड़ना, लेना, ग्रहण करना ।
 वृक्ष [वृ+कृ+] १ भेषिया २ लकड़बन्धा ३ पीठ ४ कौषा ५ उल्लू ६ मुटेरा ७ क्षत्रिय ८ तारपीन ९ गण्डहस्त्यों का मिश्रण १० एक राक्षस का नाम ११ एक वृक्ष का नाम, वक्रवृक्ष १२ जठराग्नि । सम० अराति- , अरिः कुला- , उदरः १ ब्रह्मा का विशेषण २ द्वितीय पांडव राजकुमार भीम का विशेषण मग० १११५, कि० २११,—ब्रह्मा कुला, वृषः १ तारपीन २ मिश्रण- , चुनने की वृद्ध ।
 वृष्क- , वृक्षा १ वृष्य २ गुरां (इत अर्थ में द्वि० व०) ।
 वृष्य (भू० क० कृ०) [वृष्+कृ] १ कटा हुआ, बाटा हुआ २ फाटा हुआ ३ मोटा हुआ ।
 वृष्य (भू० क० कृ०) [वृष्-कृ] स्वच्छ किया गया, साफ किया गया, निर्मल किया गया ।
 वृष् (प्रा० आ० वृक्षे) १ स्वीकार करना, चुनना २ इकना ।
 वृष् [वृष्+कृ] १ पेश—आत्मापराधवृक्षाणा फलाग्न्या- नि देहिनाम् । सम० अक्षय १ बड़की की पौरमी २ कुम्हाड़ी ३ बड़ का पेड़ ४ पिदाल वृक्ष, अम्ल आमडा, - आलस्यः एक पत्ती, - आवासाः १ एक पत्ती २ सन्यासी, आश्रयित् (पु०) एक प्रकार का छोटा उष्ण, कुष्ठकटुः जगती मृगां क्षिप्रं विदुज, वृशो का समूह, - वरः वन्द्य, - छाया वृक्ष की छाया (यम्) मयन छाया, वृद्धनं वृशो का (पाडी) छाया, - वृष्य नागपीन माषः बड़ का पेड़, - विवासाः वाद वाद—पाक बड़ का पेड़ मिष् (स्त्री०) कुम्हाड़ी—वर्कटिका गिलहरी, - वारटिका, बाडी उद्यान उपवन, श छिनकली, - शायिका गिलहरी ।
 वृषक [वृष्+कृ] १ छोटा पेड़—कु० ५११८ २ पड़ ।
 वृष् (रथा० पर० वृष्कणि) छांटना, चुनना ।
 वृष् (अदा० प्रा० वृक्षे) टाल जाना, कतराना, परि- त्याग करना ।
 ॥ (रथा० पर० वृष्कणि) १ टाला जाना, कतराना, छोड़ देना, परित्याग करना २ चुनना आमाश्रयणम् वृष्क मरणां स्वर्गवृक्षस्य भागः ३ प्रायश्चिन करना, पीछ डालना, निर्मल करना तमसे गेन पिता वृक्षानिपत्यस्तेनितदहसंनम्—मनु० ११७० ४ मृत्ना, आश्रय केना ।
 ॥ (प्रा० पर०, वृष्० उम० बर्कते, बर्कयति-ने वरिज) १ कतराना, टाल जाना २ छोड़ना, परित्याग करना ३ निकाल देना, एक ओर रख देना ४ अल्प रखना ५ टुकड़े टुकड़े कर देना (काबरहस्त्य से उद्घा)

निष्ठाकित पद्य धातु के विभिन्न रूपों का चित्रण करता है। कृष्णिक दृष्टिसे लग बृहते व बृहते सह, बर्धयनाभेवायते स बर्धयति दुर्जने, अथ—1. मष्ट करना 2. समाप्त करना 3 जोड़ना, त्याग देना—रघु० १७।१९, कि० १।२९ 4 उड़ेलना, फेंकना—शि० १।३।७ आ—, 1 मुकना, मुड़ना,—आधर्य्यं शाखा सद्य व यामा—रघु० १६।१९, १३।१७, आधर्य्यं दृष्टो—अथ० ४६ 2 प्रस्तुत करना, देना रघु० १।६२, ६७, ८।१६, कु० ५।३४ 3 परास्त करना, जीतना, परि—, टाल जाना, कृत्रगना, वि— 1 कृत्रगना, टाल जाना 2 विरहित करना, बर्जित करना।

ब्रूमनः [बृजे ऋ] 1 बाल 2 पुत्रगले बाल,—मन् 1 पाप 2 सकृत् 3 आकाश 4 घेर, बाधा, विरोधन एक गोचरभूमि।

बृक्षि [बृजे इतन् क्ति च] 1 कुटिल, प्रका हुआ, बक 2 दुष्ट, पापी, क- 1 बाल, पुत्रगले बाल 2 दुष्ट पुरुष—वृष्णि क्विने समम्—कवि०,—मन् 1 पाप,—सर्वं ज्ञानफलमेव ब्रिजिन मनश्चिपसि- भग० ५।३६, रघु० १।५।७ 2 पीडा दुःख (इत अर्थ में रघु० भी माना जाता है)।

बृष् (नना० उ०) बर्जानि, वृणोते) क्षाना उपयोग करना बृष् ! (दिवा० आ० वृषणे) 1 चुनना, पसन्द करना- तु० यावत् २ विनश्यत करना, बर्जना।

- i. (धृग० उ०) बर्धयति—ने) बधकना।
- ii. (मवा० आ०) गर्तने, पग्गु लुद्ध, लुद्ध, लुद्धया लुद्ध लकार में एव मनन में पर० भी, वृक्ष) 1 होना, विद्यमान होना, उठे रहना, मौजूद होना, जीते रहना, टिके रहना इद में मनसि वर्तते—श० १, अथ विषयेऽस्माक महत्कुपुहल वर्तने पक्० १, मराःकुलनाक कषय रे कष वर्तनाम् धामि० १।३, केवल मयोत्रक के रूप में बहुधा प्रयुक्त, अनोच्य हरिना हरीशच वर्तने ब्रजित—श० १ 2 किसी विशेष दशा या परिस्थिति में होना—परिच्छेदे वामि वर्तनाम्य—का० इमी प्रकार दुःखे, हर्षे, विवादे—वर्तते 3 होना, घटित होना, आ पडना, सामने आना—सीता देव्या कि वृक्षिपर्ययिन् काचिपद्यवने—उत्तर० २, मास प्रव्रति वर्तते पथिक रे इवालापर सम्यनाम् सुना०, 'अब मायकाय हो गया है' 'शृङ्गार० ६, भग० ५।२६ ४ चलते रहना प्रगतिशील रहना—सर्वथा वर्तने वज—मनु० २।१५, निर्वाचिप्रियया वदते—भट्टि० २।३७, रघु० १०।५६ ५ मथानि या संपोषित होना, जीवित रहना, जीते रहना (आन० से भी)—फलमूलवारिर्भिवंशाना—का० १७२, मनु० ३।७७ 6 मुड़ना, मुड़कते रहना, चक्कर खाना—वायविय

लोकयात्रा वर्तते—वेणी० ३ 7 अपने भाग को कार्य में लगाता, काम में लगना, आरम्भ करना (अधि० के साथ)—प्रगवान् कारयय धारकते इच्छति वर्तते—पा० १, इतरो इहने स्वकर्मणां वृते ज्ञानभयेन बहिष्वा रघु० ८।२०, मनु० ८।३।४६, भग० ३।२२ 8 कर्तव्य निधाना, व्यवहार करना, आचरण करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना (प्राय अर्थ० के साथ या स्वतन्त्र रूप से) आर्योऽस्मिन् विनयेन वर्तताम् उत्तर० ६, कविनिसर्गसौहृदेन भरतेषु वर्तमान मा० १, औदासीन्येन वतिदुम्—रघु० १०।२५, मनु० ७।१०४, ८।१७३, ११।३० 9 कार्य करना, विशेष प्रकार का आचरण करना—साप्ती वृनि वर्ति 'अह मत्कार्यं मे प्रवृत्त होता है' 10 अर्थ रखना, अभिप्राय बतलाना, अर्थ में प्रयुक्त होना—पुण्यसमीपस्ये चन्द्रमणि पुण्यशब्दो वर्तते—पा० ४। २।३ पर महाभाष्य (प्राय कोश) में इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है) 11 प्रवृत्त करना, प्रेरित करना (सप्र० के साथ)—पुषेण कि क्ल यो वै पितृदुःखाय वर्तते 12 महाराज देना, आश्रित होना—प्रेर० (वर्तयति—ते 1 प्रवृत्त कराना 2 चुनाना, चक्कर खाना श० ७।६ 3 (अन्ध-अन्ध) घुमाना, घेरे घेरे बड़लना, घुमा कर फेंकना—भट्टि० १।५।३७ 4 कार्य करना, अभ्यास करना, प्रदर्शित करना— मा० १। ३२ ५ सपन्न करना, निबटाना, ध्यान देना, मङ्ग डालना मीष्टिकारमिष्टिक कुतोचित काचन स्वय-मवर्तयाममा—रघु० १।५४, महाशी० ३।२३ 6 बिनाना, (समय जादि) गुहारना 7 जीवन निर्वाह करना जीते रहना, किय० २।१८, रघु० १२।२० 8 वर्धन करना, बढान करना—इच्छा० (विद्यन्सति, विवतिपते), अति—, 1 परे जाना, बागे बड जाना, मा० १।२६ 2 आगे निकल जाना, संप्रोक्त होना कि० ३।४०, शि० १।५।५९ 3 उत्कृष्टत करना, बाहर कदम रखना, अतिक्रमण करना—शि० ६।१९ 4 उपेक्षा करना, अन्हेलना करना मनु० ५।१६ 5 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, नाराज करना 6 पराजित करना, बर्हीभूत करना 7 (समय का) बिनाना 8 विलय करना, डेरी करना—मनु० २।३८, मनु—, 1 अनुसरण करना, अनुसर होना, अनुकूल कार्य करना प्रमुषितमेव हि अनौजुवर्तते—शि० १।५।४१, मा० ३।२ 2 अनुत्पन्न करना, दूसरे की इच्छा के अनुसार अपने अलगको बनाना, दूसरे के द्वारा पथप्रदर्शन प्राप्त किया जाना 3 ब्रजाजानना 4 धिलना-मुलना, नकल करना 5 प्रसन्न करना, खुश करना 6 (ब्या० में) किसी पूर्ववर्ती सूत्र से आवृत्ति प्राप्त करना (प्रेर०) 1, मुड़ना 2 अणुयम

करना, आशा मानना, अर्थ—, 1 मूट जाना, पीठ मोड़ना तम्बाखापानवर्तत दूरकटा नीचे लघवी प्रतिकूलदेवात्—रघु० ६१५८, ७३३३ 2 व्यत्यस्त या व्युत्कान होना, उलटा हो जाना—कि० १२१४९ 3 मूँह नीचे कर लेना मा० ३११७, (प्रेर०) एक बोर हो जाना, झुकना मा० ११५०, कि० ४११५, अर्थ , 1 पहुँचाना, जाना, निकट होना, समीप होना, मुड़ना इत एवाभिवर्तते—श० १, रघु० २११० 2 आक्रमण करना, याबा बोलना, टट पड़ना—कि० १३३३ 3 आरम्भ करना, (दिन), निकलना 4 सर्वापरि होना, नबने ऊपर होना 5 होना, मौजूद होना, घटित होना, आ—, 1 चक्कर खाना 2 बाणिस आना—रघु० ११८९, २११९ 3 घम जाना, 4 बेचैन होना, चक्कर खाना—मा० ११४१, उद्- 1 चरना 2 उदित होना, बढ़ना 3 घमड़ी या अभिमाना होना 4 उमरना, बहु निकलना—उद्भूत क इव सुखायत् परेषाम्—शि० ८११८, मू३० ३१८, रघु० ७५५६, अर्थ , 1 पहुँचना 2 लौटना शि , 1 बाणिस आना, लौटना न च जिम्नादिव मलिक निवर्तते मे ततो हृदयम् श० ३११, कु० ५३०, रघु० २१४३, अर्थ० ८११८, १५१४ 2 भाग जाना, पलायन करना—भट्टि० ५११०२ 3 मूट जाना, आर्षं फेर लेना—रघु० ५१०३, ७५६१ 4 अलग रहना प्रमोद्य निवर्तन समयास्य भ्रमणान् मनु० ५१४९, १५५३, भट्टि० १११८, निवृत्तमासस्तु जनक—उत्तर० ४ 5 मुकन होना, बच निकलना भग० ११३९, 6 बोलना बन्द कर देना, एक जाना, उठर जाना 7 हट जाना, अन्त होना, बन्द हो जाना, अन्तर्षण होना—भग० २१५९, १५१२२, मनु० ११११८५, १८६ 8 रुकवाना, निकलवाना, (प्रेर०) 1 लौटाना, बाणिस भेजना रघु० २१३, ३१५७, ७५४४ 2 बाणिस लेना, दूर रहना, मूट जाना, मन फेर लेना रघु० २१२८, कु० ५१११, शि० , 1 समाप्त होना, अन्त होना, भट्टि० ८१६९ 2 संपन्न होना—रघु० १७६८, मनु० ७११६१, 3. रुक जाना, न होना,—भट्टि० १६६६, (प्रेर०) 1 सम्पन्न करना, निष्पन्न करना, समाप्त करना, पूरा करना—रघु० २१४५, ३१३३ ११३०, चर—, लौटना, बाणिस आना, चरि , 1 घुमना, चक्कर खाना कु० १११९ 2 इधर-उधर भ्रमण करना, इधर-उधर आना जाना 3 बदलना, विनिमय करना, बदला-बदली करना 4 पीठ मोड़ना रघु० ४१७२, विक्रम० १११७ 5 होना, आ पड़ना—मा० ११८ 6 सीप होना, नष्ट होना, लुप्त होना—मा० १०१६, प्र—, 1 भागे चलना, चलते जाना, प्रगति करना, पंच० ११८१ 2 उदित होना, उत्पन्न होना, फूट

निकलना 3 होना, घटित होना, आ पड़ना 4 आरम्भ करना, शुरू करना, (प्रायः तुमुप्रन्त)—हस्त प्रवृत्त समीपक—मालवि० १, कु० ३१२५ 5 प्रयास करना, बोर लगाना—प्रवर्तता प्रकृतिहिताय पाणिब- श० ७३३५ 6 अमल करना, अनुसरण करना पंच० ११११९, 7 कार्य में लगना, व्यस्त होना, श० १, कु० ५१२३ 8 करना, कार्य में लगना—श० १, 9 व्यवहार करना 10 व्याप्त होना, विद्यमान होना—राजन् प्रजाम् ते कश्चिदपचार प्रवर्तते—रघु० १५४७ 11 ठीक उतरना 12 बिना रुकावट के प्रगति करना, फलना-कूलना, भग० १७२४, मनु० ३१६१, (प्रेर०) 1 प्रगति करना, जारी रखना—मू३० १ 2 मुष्पात करना 3 जारी करना, स्थापित करना, बुनियाद रखना 4 हाकना, प्रेरित करना, उकसाना, उद्दीप्त करना 5 उत्पत्ति करना प्रगति करना, प्रतिनिधि—, 1 पीठ मोड़ना, लौटना—मल्लेच पुन प्रतिनिवृत्त श० ११२९, विक्रम० १ 2 चक्कर काटना, शि , 1 मुड़ना, लुड़कना, चक्कर काटना, घुमना मा० ११४० 2 एक आर ही जाना, झुकना—रघु० ६११६, श० २१११ 3 होना, घटित होना, शिनि—, 1 लौटना 2 एक जाना, अन्त होना श० २१५९, मनु० ५१७ 3 हाथ खींचना, मूट जाना, अलग रहना—देवनाम्, मुद्दान् आदि विपरि- चक्कर काटना (आल० से भी) भग० १११०, अर्थ- , 1 लौटना, बाणिस मुड़ना—वेन वय कश्चपि व्यपबन्तते—मा० १११८ 2 हाथ खींचना छोड़ देना उत्तर० ५१८, अर्थ- , 1 बाणिस होना, मुड़ना बहुमुखा व्यावर्तमाना द्विधा—रत्न० ११२ 2 मुड़ना, हटाना, उलट होना—विषयव्यावृत्तकौमुदल—विक्रम० ११९, (प्रेर०) प्रतिबन्ध लगाना, सीपित करना, निकाल देना, गिरफ्तार करना—नु शब्द पूर्वपक्ष व्यावर्तयति शारी० अपवाद इत्यर्थमयं व्यावर्तयितुमीश्वर रघु० १५१७, शब्द , 1 होना, घटित होना—ने यदीका समुपना पंच० १ 2 पैदा होना, उदय होना, फूटना, निकलना 3 घटित होना, आ पड़ना 4 सम्पन्न होना ।

वृत् (वृ० क० कृ०) [वृ+क्त] 1 छाँटा गया, चुना गया 2 डका गया, चर्चा हुआ गया 3 छिपाया गया 4 बेरा गया, लपेटा गया 5 सहमत या सम्मत 6 किराये पर लिया गया 7 बिगाड़ा गया, विषाक्त किया गया 8 सेवित, सेवा किया गया ।

वृत्तिः (स्त्री०) [वृ-क्लिन्] 1 छाटना, चुनना 2 छिपाना डकना, मुष्प रखना 3. याचना करना, निवेदन करना 4. अनुरोध, प्रार्थना 5 बेरना, लपेटना 6 झाड़बडी, बाड़, बाड़ा-नेच० ७८ ।

वृत्तिकर (वि०) [वृत्ति + कृ + ट, मृत्] बेनेने वाला, लपेटने वाला, —रः विककत नाम का पेड़ ।

वृत्त (भू० क० कृ०) [वृत् + क्त] 1 जीवित, विद्यमान 2 घटित, समुत् 3 सम्पूर्णित, समाप्त 4 अनुष्ठित, कृत, किया गया 5 गुजरा हुआ, बीना हुआ 6 गोल, कर्णालाकार—रघु० ६।३२७ वृत्ता, स्वर्गपथ 8 वृद्ध, म्बिर 9 पठित, अधीन 10 व्यत्यय 11 प्रसिद्ध (द० वृत्)। स. कछुवा, -सम् 1 बात, घटना 2 इतिहास, वर्तन रघु० १५।६४ 3 समाचार, खबर 4 प्रवर्तन, पेशा, जीवनवृत्ति, व्यवसाय—सता वृत्तमनुष्ठिता—मनु० १०।१२७ (पाठान्तर) ७। १२२, याज्ञ० ३।४४ 5 आचरण, व्यवहार, रीति, कर्म, कृत्य, जैसा कि मद्दत या दुर्वृत्त में 6 माधु या नय आचरण्य पञ्च० ४।२८ 7 माना हुआ नियम, प्रचलन या कानून, प्रथा, इस प्रकार के नियम या प्रचलन का पालन करना, कर्तव्य, रघु० ५।३३ 8 गोल बेरा, वृत्त की परिधि 9 छन्द, विशेषकर मात्राओं की गणना के आधार पर विनियोजित (विप० जाति) द० परि० १। सम०—अनुपूर्व (वि०) गोल गुंथाकार,—कु० १।३५,—अनुसार 1 विहित नियमों की अनुकूलता 2 छन्द की अनुकरण, अन्तः 1 अवसर, घटना, बात अन्तर्गत्यककृतान्तर्गत पदाहुता म्य श० १, रघु० ३।६६, उत्तर० २।१७ 2 समाचार, खबर, गुप्तकार्यों को न बतलाना विक्रम० ६, रघु० १।८।३ 3 बेरा, इतिहास, कथा, आभ्यास, कठानी 4 बिषय, प्रकरण 5 प्रकार, क्रम 6 रूप रीति 7 अवस्था, दशा 8 कुलयोग, समाप्ति 9 विश्राम, अवकाश 10 गुण, प्रकृति—इवार्थ, कर्कटी मन्वृत्त, सग्दा,—शक्ति (नपु०) एक प्रकार का पथ जो पढ़ने में पथ जैसा आनन्द दे, बृद्ध,—धील (वि०) मुद्रित, जिसका मुद्रन सम्कार हो चुका हो—उत्तर० २, पुष्प. 1 बेत, बानी 2 मिरस का पेड़ 3 कम्ब का पेड़, फल 1 बेर, उभार का पेड़ 2 अन्तर का पेड़, अन्तः (वि०) जिसने शास्त्र विज्ञान में पाठ्य प्राप्त कर लिया है—अष्टि० १।१९।

वृत्ति [वृत् + क्त] 1 अभिप्राय, सत्ता 2 टिकना, रहना, रच, किसी विशेष स्थिति में होना जैसा कि विरुद्धवृत्ति या विपक्षवृत्ति में 3 अवस्था, दशा 4 कार्य, गति, कृत्य, कार्यवाही गर्तन्मयधाम-निर्गमवृत्ति रघु० ३।६३, कु० ३।७३, श० ४।१५ ५ रूप, प्रणाली, श० २।११० आचरण, व्यवहार, बालचलन, कार्यपद्धति—कुर प्रियसखीवृत्ति सपनीजने श० ४।१८, मेघ० ८, बेतसोपनि, वक्रवृत्ति आदि 7 पेशा, व्यवसाय, काम-वधा, रोजगार, जीवन-धर्म (भाष० सत्ता के अन्त में)—बायें के वृत्तिवृत्तान्त्

—रघु० १।८, श० ५।६, पञ्च० ३।१२५ 8 जीविका, संपादन, जीविका के उपाय (बहुधा समास में)—रघु० २।३८, श० ७।१२, कु० ५।२८, (जीविका के विभिन्न उपायों के लिए द० मनु० ४।४६ 9 मजदूरी, भाडा 10 क्लियासोलना का कारण 11 सम्मानपूर्वक बर्ताव 12 भाव्य, टीका, विवृति मद्दति सन्निवन्धना शि० २।११२, काशिकावृत्ति आदि 13 चक्कर काटना, मुद्रना 14 किसी वृत्त या परिधि की परिधि 15 (व्या०) जटिल रचना जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता पड़े 16 शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा किसी अर्थ का अभिप्राय, संकेत अथवा व्यञ्जना की जाय (यह शक्तिवा अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना के नाम से विख्यात) 17 रचना की शैली (यह चार है—कैफ़ीकी, भागी, सात्वती और आग्नेयी)। सम० अनुप्रास एक प्रकार का अनुप्रास, द० काव्य० ९, उपायः जीविका का उपाय,—कथित (वि०) जीविका के अभाव में अल्पत दुखी मनु० ८।६११, चक्रम् गत्र चक्र पञ्च० १।८१,—छेद, जीविका के साधनों से वञ्चित,—अन्तः—बेकसम् जीविका का अभाव—पञ्च० १।१५३, स्य (वि०) 1 किसी भी स्थिति या निष्पत्ति में रहने वाला 2 मटाचारी, अच्छा बर्ताव करने वाला, (स्य) छिपकली, गिरगिट ।

वृत् [वृत् + र्त्] 1 एक राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था (बह अन्धकार का पूर्णरूप माना जाता है), द० इन्द्र 2 बादल 3 अन्धकार 4 शत्रु 5 ध्वनि 6 पर्वत। सम०—अरि—द्वि (पु०) शत्रु—हृत् (पु०) इन्द्र के विरोध—कृद्विपि पक्षिच्छिदि वृषधरो कु० १।२०, वाचा हरि वृषहण म्मिते—७।४६ ।

वृथा (अव्य०) [वृ + धात् क्त्थ] 1 बिना किसी अभिप्राय के, व्यर्थ, निरर्थक, बिना किसी लाभ के, (बहुधा विशेषण की शक्ति से मुक्त) व्यर्थ यत्र क्पात्तसम्बन्धि में वीर्यं हरीणा वृथा—उत्तर० ३।४५, दिव यदि प्रार्थयते वृथा आसते—कु० ५।४५ 2 अनावश्यक रूप से 3 पूर्वज्ञता से, आलस्य पूर्वक, बेलगाम 4 शक्य तरीके से, अनुचित रूप से (समास के आरम्भ में वृथा शब्द का अनुवाद 'व्यर्थ', 'निरर्थक', 'अनुचित, मिथ्या या आसली, किया जा सकता है)। सम० अट्टया अलसता के साथ टहलना, साधोद भ्रमण करना,—आकारः मिथ्या रूप, सानी तमशा,—कथा बेहरी बान, अन्वन्त् (नपु०) अलाभकर ा व्यर्थ जन्म,—शान्ति बहु उपहार जो प्रतिज्ञात होते पर भी न दिया गया हो,—भक्ति (वि०) दुर्वृत्ति, मूर्ख, मांस्य बहु मास जो देवताओं

या पिनरो के लिए अभिप्रेत न हो, भाविम् (वि०) पिथ्या भापी, -ध्वम् कर्ण नेट्टा या कष्ट उठाना ।

वृद्ध (वि०) [वृष् + क्त] (स० अ०) ज्यायस् या वर्षीयस्, उ० अ० ज्येष्ठ या वर्षिष्ठ) 1 बड़ा हुआ, वृद्धि की प्राप्ति 2 पूर्णविकसित, बड़ी उम्र का 3 वृद्धा, वर्षीवृद्ध, बहुत बड़ी का वृद्धास्ते न त्रिधाग्नीय-चरिताः उत्तर० ५।२५ 4 प्रगत या विरहित (समाप्त के अन्त में), तु० नयोवृद्ध धर्मवृद्ध, ज्ञान-वृद्ध, आणमवृद्ध 5 बड़ा, विशाल 6 एकाग्रित, मज्जित 7 बुद्धिमान्, विद्वान्, ङ्ङः 1 वृद्धा अस्मिन् हेयङ्ग-वीनमादाय धांपवृद्धानुस्थितान् ५० १।१५, १।८, मेघ० ३० 2 योग्य या आदर्शगीय पुष्ट 3 मृत्ति, मत्त 4 नराज, ङ्ङ् नुमुत् ५। म०-अङ्गुलि (स्त्री०) पैर का बगुआ, बरबका बुडागा, आहार प्राचीन प्रथा, उष बड़ा वेत, -काकः पहाड़ी कीवा, -सामि (वि०) मूलकाय माटे पैठ वाला, -भाष बुडाभा, -सत, प्राचीन स्त्रीगीयो १। उपदेश, याहल आम का पेड़, अश्वत् (पु०) इन्द्र का विजयधन, -सध वृद्धजनों की समा, सूत्रकम् मर्द का गलहा कपाम न गाला, इन्द्रतूल ।

वृद्धा वृद्ध + टाप्] 1 वृद्धी स्त्री 2 वजा (स्त्री) ।
वृद्धिः [वृष् + क्तिन्] 1 विकास, बड़ोपरी, वर्धन, सम्बर्धन पुषीय वृद्धि इन्द्रियवर्धोपिदिगन्वृषेयादिवालकन्दमा रघु० ३।२२, तथावृद्धि, ज्ञानवृद्धि आदि 2 (चन्द्रमा का) वर्धित होना, चन्द्रमा की कलाओं का बढ़ना, पर्यायीतस्य नुरेहिमासो कलाक्षय, श्लाघ्यतरो हि वृद्धे रघु० ५।१६, कु० ७।१ 3 धन की वृद्धि, सम्पत्ति, धनवृद्धता—पथ० २।११२ 4 सफलता, बहावत, उन्नति, प्रगति परिवृद्धिमत्सि मनो हि मानिना—शि० १५।१ 5 दीप्त, जायदाद 6 डेर, परिमाण, समुच्चय 7 सूच, व्याज, मरला वृद्धि, चक्रवृद्धि 8 सूदसोरी 9 लाभ प्रापदा 10 अर्कोय की वृद्धि 11 शक्ति या राजस्व 1। विस्तार 12 (व्या० में) स्वरो का समा करना 1। वृद्धि, अ, इ, उ, ऋ (वाहो ह्रस्व हो या दीर्घ) 5। र लु की क्रमस जा, ऐ, औ, आर् और आल् में बदलना 13. परिवार में, (प्रसन्न के कारण) उत्पन्न अवीच, जननाद्योच । म०- -आसीचिन् (पु०) सूदसोरी, मातृकार, व्याज पर रूपया उधार देनाला, -बीचमम्, -बीचिका सूदमाती, साहकारी, -इ (वि०) उपरिष्ठ को उन्नत करने वाला, पथम् एक प्रकारका उन्नत, धाङ्गम् पुत्रजन्मादि के उन्नतों पर पिनरो का श्राद्ध, नावीमुख श्राद्ध ।

वृष् ! (स्वा० आ०-परन्तु मृद, लृट्, लृङ्, लृङ् और मज्जल में पर०, वर्धने, वृद्ध, इच्छा० विवृत्तानि या

विबधिपते) 1 विकसित होना, बढ़ना, विस्तृत होना, मज्जत या बलवान् होना, कलना, समृद्ध होना-अयो-न्यजनसरभो वृष्वे वादिनोरिव-रघु० १२।१२, १०।७८, मनत्रये वर्धति वाटरात्रि—मुष्मा०, मट्टि० १।१३, ११।२६ 2. भारी रखना, टिकाऊ रखना 3 उठना, बढ़ना 4. बघाई का कारण होना—(प्राय, शिल्पा' के साथ) शिल्पा धर्मगलासवागमेन पुष्-मूलदशनेन चापुष्पात् वर्धते शा० ७, 'धर्मपत्नी के विक्रमे के उपलक्ष्य ये आपकी बघाई हो, प्रेर० (वर्ध-पति-ते, वर्षापयति—भी) 1 विकसित करना, यवान्, वृद्धिप्लन करना, उंचा उठाना, उंचा करना, उन्नत कला वर्षार्थान्थ नङ्कटानुवृत्तेवातुरेणुभि रघु० ५।७१ 2 समृद्ध करना, यथास्वी बनना, विस्तारण करना, बघाई करना हि० 3।२ 3 तथाई देना, अभिनन्दन करना (इस अर्थ में वर्षापयति) अभि—, विकसित होना बढ़ना—शीघ्र श्रांशोऽप गयी भूयो भूयोऽपवर्धते त्रियम्—काश० १०, परि प्र धि, विकसित होना, बढ़ना, समृद्ध होना सम्—, बढ़ना, रघु० ५।१ ।

1 (पुत्र० उ०) वर्धयति—ते) 1 बाधना, चमकना ।

वृषसाज [वृष छन्दसि असानच, क्तिन्] मनुष्य ।
वृषसाज् [वृष् + अमानच्] 1 मनुष्य 2 पता 3 वम, कार्य ।

वृणम् [वृ + क्त, ति० मृम्] 1 किसी फल या पत्ते का डटल, डडो—वृणाकृतलय हर्गति पुष्पमनोकहानाम रघु० ५।६९ 2 घटोकी 3 लन की डोही या अन्नभाग ।

वृणत्क, **कौ** [वृण + अक् + अण्] बैंगन का पौधा ।
वृणित्का [वृण + क्तन् + टाप्, इत्वम्] छाला डटल ।

वृणन् [वृ + दन्, नृम्, नृषाभावि] 1 समुच्चय, ममूह बड़ी सख्या, दल-जन्मगमलिनन्दैर्घडिभक्तोद्वाहय रघु० १२।१०२, मेघ० १९, इसी प्रकार अन्न 2 डेर, परिमाण ।

वृणा [वृन् + टाप्] 1 पवित्र तुलसी 2 गाकुल के निकट एक वन । म०- अरुणम्, वनम् गाकुल के निशट गक अगल—वृन्दारण्ये वमनिर्गुना केवल उमहेत् पदा० ३।५१, रघु० ६।५०,—कौी तुलसी का पौधा ।

वृन्दार (वि०) [वृन् + ऋ + अण्] 1 अधिक, बड़ा विशाल 2 प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ 3 गृहावना, आकर्षक, सुन्दर ।

वृन्दारक (वि०) (स्त्री०-का, -रिफ्त) [वृन् + आरकन्-पठे टाप्, इत्वम् च] 1 अधिक, बड़ा, बहुत 2 प्रमुख, उत्तम, श्रेष्ठ 3 गृहावना, आकर्षक, सुन्दर, मना 4 आदर्शगीय, सम्माननीय,—काः 1 देव, सुर,

भित्तौ बुद्धारथ नतनिखिलबुद्धारकृत् भ्रादि० ४५५
2 किसी भी बीज का मुख्य (समास के अन्त में)
दे० (२) अक्षर ।

बुधियुक्त (बि) [अपभ्रंशवर्तिगणने बुन्दारक इत्यन्तु,
बुन्दारके 1 अर्थत बड़ा या विशालत्व 2 अर्थत
मनोहर, सुन्दरत्व ।

बुन्दीयस् (बि०) [बुन्दारक की य० अ० अपभ्रंशवर्तिगण-
ने बुन्दारक + ईयसुन्, बुन्दारके 1 अपेक्षाकृत बड़ा,
विशालत्व 2 अपेक्षाकृत मनोहर, सुन्दरत्व ।

बुध् (दिवा० पर० बुधयति) छोटना, चुनना ।

बुधा [बुध् + क] बुद्धा, —का एक औषधि, अर्धना, शम्भु
अदरक ।

बुध्निष्क [बुध् + किन्त्] 1 बुध्निष्क 2 बुध्निष्क रागि
3 कीकड़ा 4 कान्धबुद्धा 5 बसइवा, गोबर का कीड़ा
6 एक रोएदार कीड़ा ।

बुध् : (आ० पर० बर्धति, बुध्) 1 बर्धना (बहुधा
‘इन्द्र’ ‘पद्मेय’ या बारह आदि सत्यं क शब्दों के साथ
वर्तों के रूप में, या कभी-कभी भावात्मक रूप में)
—इन्द्रशक्यपति न बर्धय दशशातां दशा०, काल बर्धन्तु
मया, गर्जं वा वर्धं वा शक्यं मूच्छ० ५१०१, मेधा
वर्धन्तु गर्जन्तु मूच्छन्तवर्धनिमेव वा—५११६ 2 बारिश
करना, उडेलना, बौछार करना—वर्धतीवाञ्जय नभ
- मच्छ० ११३४ इसी प्रकार—शरबुध्तिम् कुमुदबुध्ति
व्यति आदि 3 बरसाना डलकाना 4 अनुदान
देना, अर्पण करना 5 तर करना 6 पैदा करना,
उत्पन्न करना / सवोपरि शक्ति रखना 8 प्रहार
करना, घात मारना, अग्नि—, 1 बौछार करना, बर-
साना, उडेलना, छिड़कना १५० १८४, १०५८
2 प्रदान करना, अर्पण करना, प्र—, बरसाना, बौछार
करना—वर्धायमर्धति पुण्यं प्रबुध् इव केसर—राम०
(—उत्तर० ६३३६) ।

11 (बु०) आ० बर्धयत्) 1 शक्तिशाली या प्रमूख होना,
2 उत्पन्न करने की शक्ति रखना ।

बुध् [बुध् + क] 1 सौध—बसपदस्तम्भ बुधेण गच्छत
—कु० ५१८०, मेघ० ५२, २५० २३५, मनु० ११२३
2 बुध राशि 3 किसी वर्ग का मुख्य या उत्तम,
अपने दल का सर्वश्रेष्ठ (समास के अन्त में) मुनि-
पुत्र, कपिपुत्र आदि 4 कामदेव 5 मरुबुध या
व्यापाम शील व्यक्तिक 6 कामाशुत्र, रतिप्रथा में बलि
चाग प्रकार के पुस्तकों में से एक दे० रति० ३७
7 शम्भु, विपत्ती 8 बुद्धा 9 शिव का नदी देव
१० नैतिकता, न्याय 11 बुध्, सत्कर्म या पुण्यकार्य—न
सप्राप्ति स्याद् बुधवर्तितानाम्—कीर्ति० ११६२, (यहाँ
‘बुध्’ का अर्थ सौध भी है) 12 कर्म का नामान्तर
13 विष्णु का नाम 14 एक विशेष औषधि का नाम

—बुध् मोर का पक्ष । सम० अक्षक शिव का विशेष-
ण २५० ३१२३ 2 पुष्पावना, सद्गुणी 3 मिलावा
4 पत्र, —का छोटा डोल, अक्षकः शिव का विशेषण

—अक्षकः विष्णु का विशेषण, आहार विलास,
—अक्षकः मृत पुरुष के नाम पर दाग क मार
छोड़ना, —अक्षकः—अक्षकः विनाश, अक्षकः 1 शिव का
विशेषण—२५० १११४ 2 गणेश का विशेषण

3 सद्गुणी, पुष्पावना, —पतिः शिव का विशेषण,
पद्मेन् (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 एक राक्षस
का नाम जिसने असुरनाथं शक्य की सहायता में बहुत
दिनों तक देवाजनों से लड़ते किया, इसकी पुत्री
ममिन्दा का विवाह ययाति के साथ हुआ—दु०
ययाति और देवयानी 3 बर, भिरद, भासा इन्द्र
और देवनागों का आवास—अर्धतु अमरगती,
—सोचन विनाश, बाह्य शिव का विशेषण ।

बुध्प [बुध् + बुध्] अर्धकाय, अर्ध या कान् ।

बुध्प (पु०) [बुध् + कनिन्] 1 मांड 2 बुधराशि
3 किना वगै का मुलिया—ग्रहाको० ११७ 4 बौजस,
सौध पाठा 5 पीडा, शोक 6 पीडा के प्रति अलक्षणा
7 इन्द्र का नाम—बुधेव सीता तदवग्रहनाम्—कु०
५१६१ ८०, २५० १०५२, १७७७ 8 कर्म का
नाम 9 अग्नि का नाम ।

बुध्प [बुध् + अन्व क्तिष्] 1 मांड 2 कोई भी नर
जालवर 3 अपने वगै का मुलिया (समास के अन्त
में) द्विजबुध्प—रत्न० १५, ५१२१ 4 बुधराशि,
5 एक प्रकार की औषधि—पु० अक्षक 6 हाथी का
कान 7 कान का बिबर । सम०—पति, —अक्षकः
शिव के विशेषण—२५० २३६, कु० ३६२ ।

बुध्प (स्त्री०) [बुध्प + ङीप्] 1 विधवा 2 कवच ।

बुध्प [बुध् + कल्प्] 1 बुध् 2 धाडा 3 लहसुन 4 पापी,
दुष्ट, अधमी 5 जाति में बहिष्कृत 6 चन्द्रगुप्त
का नाम (विशेषतः चाणक्य द्वारा प्रयुक्त—दु०
मुद्रा० अक्ष १, ३) ।

बुध्प [बुध्प + कन्] तिरस्करणीय बुध् ।

बुध्प [बुध्प + ङीप्] 1 वाग्द वगै की अविवाहित
कन्या, रजस्वला होने पर भी विवाह न होने के
कारण पिता के घर रहने वाली कन्या—पितृगृहे च
यः नाथी रजः पश्यत्यसंस्कृता, भ्रूणहत्या गिनुस्तस्या-
ना कन्या बुध्पती स्यात् 2 रजस्वला 3 बाह
स्त्री 4 सद्योजात बच्चे की माता 5 बुध् की पत्नी
या बुद्धा स्त्री । सम०—पति बुध् स्त्री का पति,
सिध्प बुद्धा स्त्री के साथ समांग ।

बुध्प (स्त्री०) बर, भिरद ।

बुध्प [बुध् + बुध्, बुध्, यात् + ङीप्, नुम्] 1 मनोम
करने की इच्छा वाली स्त्री (बुध्प में कर्म० के साथ,

—रघुनन्दन वृषस्थली शूर्पणखा प्राता—महाभो० ५, भट्टि० ४३०, रघु० १२३६ २ कामाक्षता या कामानुरा स्त्री ३ गर्भसौ हुई गाय।

वृषाकपायी [वृषाकपे पत्नी—वृषाकपि + क्रीप्, ऐ आदेश] १ लक्ष्मी का विशेषण २ गौरी का विशेषण ३ शची का विशेषण ४ अग्नि की पत्नी स्वाहा का विशेषण ५ सूर्य की पत्नी ऊषा का विशेषण।

वृषाकपि [वृष. कपि अग्न्य—ब० स०, पूर्वपददीर्घ] १ सूर्य का विशेषण २ विष्णु का विशेषण ३ शिव का विशेषण ४ इन्द्र का विशेषण ५ अग्नि का विशेषण।

वृषायण (पु०) १ शिव का विशेषण २ गोय्या चिह्निका।

वृषिन् (पु०) [वृष—इति] मोर।

वृषी (स्त्री०) सन्ध्यामी या ब्रह्मचारी का ज्ञान (कुल घाम से बना हुआ)।

वृष्ट (भू० क० इ०) [वृष् + क्त] १ बरना हुआ २ बरना हुआ ३ बीछार करना हुआ, उड़ेलना हुआ।

वृष्टि (स्त्री०) [वृष् + क्त] १ बारिश, बारिश की बीछार आदिः राज्यायते वृष्टिः कृतेऽन्वत् ननु प्रजा - मनु० ३।७६ २ (किमी भी मनु की) बीछार अन्ववृष्टि—मनु० ३।५८, पुणवृष्टि २।६०, इमी प्रकार शरं धनं उपलब्ध आदि। मम० काल-वस्तात का समय, - बीबन (वि०) बारिश द्वारा मिथिल (प्रदेश), नु० देवनातक, भू मेंढक।

वृष्टिस्तु (वि०) [वृष्टि + मनुप्] बरने वाला, बर-साती, (पु०) बादल।

वृष्टि (वि०) [वृषे नि कृष्ण] १ धर्मभ्रष्ट, पावकी २ झूठ, कौपावित, (पु०) १ बादल २ मेडा ३ प्रकाश की किरण ' कृष्ण के किमी पुत्र का नाम ५ कृष्ण का नाम ६ इन्द्र ७ अग्नि। मम० सर्व कृष्ण का विशेषण।

वृष्य (वि०) [वृष् + क्यप्] १ जिसके ऊपर वरम मके, बीछार की जा मके २ कामोद्दीपक, वाजीकरण, पुष्प बढ़ाने वाला, ध्व, माष, उडद।

वृष्ट, **वृहत्**, **वृहत्तिका** दे० वृह, वृहत्, वृहत्तिका।
वृहती [वृह + अति + क्रीप्] १ नाग की बीणा २ जलोम की संख्या ३ दुपट्टा, चागा, आभरण ४ गायण आशय (जैसे जगदाशय) दे० 'वृहता' भी। म०—एति वृहस्पति का विशेषण।

वृहस्पति दे० 'वृहस्पति'।

वृ (रुपा० उभ०) वृषानि, वृषाने, वर्षा १ मंदा० वृषान, इच्छा० वृषीनि, वित्पिबिने) छाटना बुनना (दे० वृ १)।

वे (म्वा० उभ०) वयनि-ते, उव, वेर० वाययनि-ते) १ बुनना सिताशुवर्णवनि म्म नद्वर्ण—ने० १।१०

२ बाल बुनना, पोषे लगाना ३ सोना ४ बुनाना, रचना, लची करना प्र—, १ बुनना २ बुनाना, कसना ३ बुनाना, स्थिर करना ४ परस्पर बुनना, सम्पन्न करना, दे० 'प्रोत'।

वेकट: (पु०) १ हंसोका २ जोड़ी ३ युवा पुत्र।

वेग [विच् + पञ्] १ आवेग, लोभ २ गति, प्रवेग, शीघ्रता ३ विशोभ ४ अनियोगनीयता, प्रकष्यता, क्ल ५ प्रवाह, धारा जैसा कि 'अभ्युवेग' में ६ तेज, वियाजीलता, सकल्प ७ शक्ति, सामर्थ्य,—मदनज्वरम्य वेगान् का० ८ श्वाह, किमा (विष—आदि का) प्रभाव उत्तर० १२६, विक्रम० ५।१८ ९ शीघ्रता जटदात्री, आकस्मिक आवेग पञ्च० १।२० १० बाल की गति—कि० १३।०६ ११ प्रेम, प्रणयो-न्माद १२ आत्मिक भाव का बाह्य प्रकट होना १३ ज्ञानन्द, प्रमत्तता १४ मलत्वाग १५ वृष, शीघ्र, मम० अश्लि १ आधी का शोक विक्रम० १।४ २ प्रकष्य वायु,—आवृत्त १ अकस्मात् वेग का अवरोध, गति को रोकना, २ मलाबरोध काट-बढ़ना, मक्षतः श्लेष्मा, कफ, -बाहित् (वि०) म्फने, तेज - विचारणम् गति का रोकना, सर लक्षर।

वेगिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [वेग + इनि] तेज, वृत्त दुतामी, प्रकष्य, कुर्तीका (पु०) १ हजका २ बत—नी नदी।

वेकट (पु०) एक पहाड़ का नाम, वेकटाचल।

वेष्ठा [विच् + अच् + टाप्] माडा, मजदूर।

वेष्टन् [विष्ट - अच्] एक प्रकार का चन्दन।

वेष्ठा [वेष्ट + टाप्] कियती, नाव।

वेष्णु, **वेष्णु** (म्वा० उभ०) वेणुनि-ते, वेणुनि-ते) १ ज्ञान हिलना-जुलना २ ज्ञानता, पहचानना, पर्यय करना ३ विचारविमर्श करना, सोचना ४ जना ५ शत्रु बताना।

वेष्णु [वष्णु + अच्] १ नावक जाति का पुत्र नु० मनु० १०।१९, वणाणा भाइयादयम्—१०।४९ २ पशु राजा का नाम, अङ्ग का पुत्र और स्वायम्भुव मनु का वंशज (जब वह राजा बना तो उसने सर्व प्रका की पुत्रा व यज्ञादि का वन्द करने की घोषणा कर दी। यज्ञिया ने इसका वडा शिरोध किया, परन्तु जब जपन उनको एक न सुनी तो उन्होंने अविर्गाना कुलात्न की पत्नी से उसकी हत्या कर दी। अब देण में कोई शासक न रहा। जब उन्होंने एक मूलक शरीर को जपा को मसला, तब उनमें से एत निपाद निकला ज्ञा शरीर का शिष्टा तथा चौडे मूल वाला था। उसके परचात् उन्होंने उसकी रक्षण भूजा की तथा अहो से अथ्य पृष् (दे० पृष्) का

जन्म हुआ। पद्यपुराण के अनुसार यह प्रसी भाति शासन करने लगा, परन्तु बाद में यह जैन-नास्तिकता में पल गया। यह भी कहा जाता है कि उसने वर्णव्यवस्था में गणवर्गी फैलाई, तु० मनु० ७।५१, १।६६-६७)।

वेणा [वेण + टण्] एक नदी का नाम (जो कृष्णा नदी में जाकर मिलती है)।

वेणिका—बी (स्त्री०) [वेणु + इन्, डीप् वा] 1 गुणो हुए बाल, बालों की मीठी, —नरकृष्णी वेणिकार्याया भूष —सि० १-१७५, मेघ० १८ 2 बालों की एक अनलक्षण बाटी जो पीठ पर लटकती रहती है (कहा जाता है कि उसी मित्रया लेनी छोटी करती है जिनके पति घर [र न हो] यनाश्रित्येन न्यूनमेन यक्षा म्बय वशिष्ठिनायमाने—पु० १४।१२, अवलोकनि मा शास्त्रादि—मेघ० १९, कु० २।६१ 3 अनवच्छिन्न प्रवाल, भाग, मरिचा जलवेनिरम्बा वेना यदि प्रेक्षितुमानि काय—रघु० ६।४३, मेघ० २९, तु० श्रित्तपो गण्ट की भी 4 दो या अधिक नदियों का समम 5 गाया यमना और सरस्वती का समम 6 एक नदी का नाम। म०—अथ गृध्रे ह्यु ह्य बाल, मीठी रघु० १०।४७, वेणनी जोर, —वेणिनी कधी, —सहार 1 बालों का गुण नर मीठी बनाना वेणी० ६ 2 भद्रनाशपणक एक नाटक का नाम।

वेणु [वः - उन्] 1 गीत, मन्त्रोपेयि विदो वेणुवेणुरेव 1 वन्दनम् मुभा०, रघु० १२।४१ 2 नरकुल 3 वसन्त, मुरली नामयमेन कृतमकेन नादपने मृदु वेणुम्—गीत० ५। म०—अ—ब्राम का बीज, अथ वांगुरो बजाने वाला, मुरलीवाला, विस्तृति ईव, —उच्छि वीम की लकरी, —बाध, —बाधक मुरली वाला वांगुरो बजाने वाला, बीजम् वीम का बीज।

वेणुकम् [वेणु कम्] ब्राम की मठ वाला अकृत।

वेणुम्बु [वेणु - उन्नत्] राजा मिषं।

वेणु (व) ड (पु०) हाथी प्राणि० १।६७।

वेणुम् [अन् + वन् + वीभावः] 1 किराया, मजदूरी, मीन, तनकशाह, वृत्ति—रघु० १७।६६ 2 आजीविका, जीवननिर्वाह का भाषण। म०—अथाम्बु, —अथाम्बुम् (नपु०), अथाम्बुया 1 पारिश्रमिक या मजदूरी न देना 2 मजदूरी न मिलने के कारण किया गया प्रयत्न **वीचिम्** (पु०) वृत्ति पाने वाला, ऐतनिक।

वेणु [वः - उन्नत् नृड व वीभावः] 1 नरसक, नरकुल, ब्रत—अथिभित्तवेध वेणुसम्भवननाथन मा म्भ नरसथा: सि० १६।५३ रघु० १।७५ 2 मीट, बिजीन।

वेणनी [वेणम् + डीष्] नरसक,—वेणसोतकले—काव्य० १।

वेणुम्बु (वि०) (स्त्री०—ही) [वेणु + इमनुप, मस्य व] जहाँ नरकुल बहुतायत से पाये जायें।

वेणुसः [अन् + विष्, वी भावः, तल् + वच्, कर्म० स०] 1 एक प्रकार की मृत्योनि, पिशाच, प्रेत, विशेषकर शव पर अधिकार रखने वाला भूत—मा० ५।२३, सि० २०।६० 2 द्वारपाल।

वेणु (पु०) [विद् + वच्] 1 ज्ञाता 2 ऋषि, मुनि 3 पति, पाणिग्रहीता।

वेण [अन् + वल्, वी भावः] 1 वेन, नरसक 2 साठी, छठी, विशेष कर द्वारपाल की छठी,—नामप्रकीर्णपित-हेमवेण—कु० ३।४१। म०—आत्मन् वेत की नवी गरी,—धर,—धारक 1 द्वारपाल 2 वासाधारी, छठीबदरदार।

वेणकीय (वि०) [वेण - उ, कुक्] वेणवहुल, जहाँ नरकुल बहुत पाये जायें।

वेणवती [वेण + मनुप + डीष्] 1 स्त्री द्वारपाल 2 एव नवी का नाम—मेघ० २४।

वेणिम् (पु०) [वेण + इनि] 1 द्वारपाल, दरवान 2 बीबदार।

वेणु (स्त्री० आ० वेणुने) प्रायणा, निवेदन करना, कहना।

वेणु [विद् + वच्, अथ वा] 1 ज्ञान 2 आध्यात्मिक या धार्मिक ज्ञान, हिन्दुधर्म के धर्मग्रन्थ (मूलरूप में केवल तीन वेद से ऋग्वेद यजुर्वेद, और सामवेद शिन्धे मन्मत्तकल्प में 'अथो' कहते थे, परन्तु बाद में 'अथर्ववेद' उनके साथ जोड़ दिये गए। प्रत्येक वेद 2 भाषा है—मन्त्र या मरिचा पाठ तथा ब्राह्मण भाग। हिन्दुओं की निरी धर्मनिराता के अनुसार वेद अपौरुषेय (जो पृथको द्वारा की गई रचना न हो) हैं, क्योंकि वह परमात्मा से प्रकट हुए या सुने गये हैं, इसीलिए उन्हें 'ऋनि' कहते हैं, उनके विगोचर 'स्मृति' अर्थात् जो पाठ रक्ते जाय या जो पुरुषों की कृति हो, दे० 'ऋनि' तथा 'स्मृति' भी इसीलिए बहुत से ऋषि जिनका नाम वेद के मूलको मे मन्त्र है 'उष्टार' देखने वाले कहनाते हैं उन्हें 'कलाज' या 'अष्टार' अर्थात् रचयिता नहीं कहा जाता) 3 कुशा धाम का पुष्पा मनु० ६।३६, ६ विष्णु का नाम। म०—अथम्बु 'वेद का अर्थ' एक प्रकार के वच्य भी मनोच्छाण, आत्म्या और मन्त्रानुमे में पद्य-नत्र सही विनियोग में महायता देने के लिए प्रयुक्त होते हैं अत वेदाध्ययन में महायता है, (वेदात विनयी में छ है 1 शिवा, अर्थात् उच्चारण-विज्ञान 2 उष्टत छन्द शास्त्र, 3 व्याकरण 4 निरुक्त अर्थात् वेद के कठिन शब्दों को निबंधनपरक व्याख्या 5 यमोतिप अर्थात् महाप्र-विद्या या योगतज्ज्योतिष और 6 कल्प अर्थात् कर्म-काण्ड या अनुष्ठानपद्धति), —अथिभयः, अथम्बुम्

धार्मिक अभ्ययन, वेदाध्ययन, अध्यापकः वेद का पढ़ाने वाला, धर्मगुरु, -अन्तः 1 'वेद का अन्त' (वेद के अन्त में जाने वाली) उपनिषद् 2 हिन्दुओं के छ मुख्य दर्शनों में अन्तिम दर्शन (वेदान्त) इसलिए कहलाता है कि यह वेद के अन्तिम ध्येय और कार्य-लेख की शिक्षा देता है, या इसलिए कि वह उन उपनिषदों पर आधारित है जो वेद का अन्तिम भाग हैं), (दर्शन की इन पद्धति को कभी-कभी 'उत्तरमीमांसा' के नाम से पुकारते हैं, यही जैमिनि की पूर्वमीमांसा का उत्तरार्थ, या अन्तिम भाग है, परन्तु व्यवहारतः यह एक स्वतंत्र शास्त्र है, दे० मीमांसा, यह हिन्दुओं के 'सर्व सत्त्विक ब्रह्म' के सर्वप्रकारों का प्रवर्तक है, इनके अनुसार ममत्त विरय एक ही अनारि शक्ति अर्थात् ब्रह्म या परमात्मा का सखिष्ट रूप है, दे० 'ब्रह्मन्' भी) १०, ११, वेदान्त दर्शन का अनुयायी, -अन्तिम् (पु०) वेदान्त दर्शन का अनुयायी, -अर्च-वेदों का अर्थ, -अध्वरार वेदों का प्रकटीकरण, अर्थात् ईश्वरीय सदेव - आदि (नपु०), -आदिबन्धी -आदिबोधन 'ब्रह्म' की पुनोत्पत्ति, उक्त (वि०) शास्त्रसम्मत, वेदविहित, कौलेयकः विद का विशेषण, -गर्भः 1 ब्रह्म का विशेषण 2 वेदों का ज्ञाना ब्राह्मण, ३ वेदों को जानने वाला ब्राह्मण, -प्रथम, प्रथी सामुद्रिक रूप से तीनों वेद, -निम्बकः नास्तिक, पागण्डी, श्रद्धाहीन (जो वेद के स्वरूप तथा उनके अतीशेषेयत्व पर विश्वास नहीं करता है), -निम्बा अविश्वास, पागण्ड, -वारण वेदों में वारण ब्राह्मण, ब्राह्म (स्त्री०) वैदिक पुनोत्पत्ति, गायत्रीमंत्र, बचनम्, -बाधयम् वेद का मूलपाठ, बधनम् आकरण, -बासः ब्राह्मण, -बाह्य (वि०) वेद के विरुद्ध, जो वेद में उल्लेख न हो, बिम्ब (पु०) वेदविचार ब्राह्मण, -विहित (वि०) वेदों में जिसका विधान पाया जाय, व्यस्य ध्यास का विशेषण जिनमें वेदों को वर्तमान रूप दिया है, दे० व्यस्य, -सत्यासः वेदों के कर्मकाण्ड का त्याग।

वेद्यमन्त्र, वेदना [विद् + मन्ट्] 1 ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान 2 मानना, सर्वेदन 3 पीडा, सताप, क्लेश, अघि -अवेदनात् कुलियश्रुतानाम् कु० ११२०, ११० ८१५ ५ ४ अधिग्रहण, दौलत, जायदाद 5 विवाह -मन्त्र ३१४४, २१६५, पाठ ११६२।

वेद्यारः [वेद + ऋ + अण्] गिरमित।

वेदि [विद् + इन्] विद्वान् पुरुष, ऋषि, पंडित, वि, -वी (स्त्री०) 1 यज्ञकार्य के लिए तैयार की हुई भूमि, वेदी 2 वेदी विशेष जिसके मध्यवर्ती किनारे परस्पर मिले हुए हो-अर्धेय सा वैदिकसम्प्रदाय-कु० ११३७

(कुछ लोग इस शब्द का अर्थ इस स्थान पर 'माह' की अगुड़ी' समझते हैं 3 किती मण्डिर या महुल का चौकार रहन 4 मुद्रा-अगुड़ी 5 सरस्वती 6 भूलपत्र, प्रवेष्टा। सम०—आ दौपदी का विशेषण, श्यांवि यह राजा द्रुपद की यज्ञवेदी, के मध्य से उत्पन्न हुई थी।

वेदिका [वेदी + कन् + टाप्, ह्रस्व] 1 यज्ञभूमि या वेदी 3 बहुराज उपक्रममत्तभूमि (जो प्रायः कर्कश्यों के लिये ठोक की गई हो—सप्तपर्णवेदिका— ५०१, कु० ३१४४ 3 आसन 4 वेदी, डेप, टीला, मन्दावि-नीसंकतवेदिकभि—कु० ११२९, 'वेदी या देव के टीले बना कर 5 आगम में बीच में बना चौकार चक्रवर्ता 6 मनामन्त्र निकुञ्ज।

वेदिम् [वि०] [विद् + गिन्] 1 शाता जैना कि 'कुल-वेदिम्' में 2 विवाह करने वाला, (पु०) 1 जानकार 2 अध्यापक 3 विद्वान् पुरुष ४ ब्राह्मण का विशेषण। वेदी दे० 'वेदि (स्त्री०)।

वेद्य [वि०] [विद् + यत्] 1 ज्ञान होने का भाग्य 2 व्याख्येय या शिक्षणीय 3 विवाहित होने में योग्य। **वेद्य** [विष् + घञ्] 1 छेद करना, बीधना, छिद्र पकाना 2 घायल करना घाव 3 छिद्र मृदाई 'गा गन् 4. (मृदाई की) गहराई १ समय की माप विशेष।

वेद्यकः [विष् + क्तुन्] 1 नरक के एक प्रभाग का नाम 2 कपूर, कम् बाउ में विद्यमान नाग।

वेद्यन्तम् [विष् + न्यट्] 1 छेदने या बीधने की क्रिया / प्रवेशन, छेदन 3 मृ-वीकरण, वेद्यन 4 पृथाना घायल करना 5 (मृदाई की) गहराई।

वेद्यनिका [वेद्यनी + इन् + टाप् ह्रस्व] एक नेत्र नाम, काना उपकरण जिनमें मणि या सींग आदि म छिद्र किये जाते हैं बर्मा।

वेद्यनी [वेद्यन इण्] 1 हाथों का कान बीधने वाला उपकरण 2 एक नेत्र नोक का सींग व मणि आदि को बीधने वाला उपकरण बर्मा।

वेद्यन् (पु०) [विधा + अमृन्, मृण] 1 स्रष्टा- मा० ११२१ 2 ब्रह्मा, विधाता ३ वेद्य विरय नन मन्ना-भूतसमाधिना ११० ११०९, कु० २११६, ५१६१ 3 गीण सृष्टिकर्ता (जैमिनि कि ब्रह्म में उत्पन्न दश प्रजापति) कु० २११४ ४ विद्य 5 विद्य 6 सृष्टि 7 मदार का पीषा 8 विद्वान् पुरुष।

वेद्यसम् [वेद्यम् + अण्] अगुड़ी की जड़ के नीचे का हवेनी का भाग।

वेद्यस (अ० क० इ०) [वेध + इतच्] बीधा १३३ छिद्रित।

वेद्य (म्भा०) उभ० वेदनि—ते) दे० वेण्।

वेद्या दे० 'वेद्या'।

वेत् (म्वा० आ० वेपने, वेपित्) कापना, हिलना, धर-
बागना, खरजना हुनाञ्जलिबेपमान किरौटी, -मन्०
११३२५, रघु० १११६५, प्र. धरबागना, घडकना,
कापना - कु० ५१०७, ७४६।

वेपन् [वेप + अणुच्] धरघरी, कापकी, (स्तनो का)
हिलना अर्थात् स्तनवेपम् जनयति इवाम प्रमाणा-
धिक श० १३०, शि० १२२, ७३, रघु० १११
२३, कु० ४१३, ५१८५।

वेपन्म [वेप + न्यट्] धरघरी, कापकी।
वेप, वेपल (घ०, न्य०) [व - मन्, यिन्त् वा] करघा,
लहड़ी महाभियेत्न महारूपरो बट्टम - न० ११२०,
दुरीवेमादिकम तर्क०।

वेर, वम् [वन् + न्, वीभावः] १ गरीर २ केसर
जाकारान ३ वेगन।

वेरट (घ०) नीच मुख्य, छाटी जाति का पुण्य, वम्
वेर का फल।

वेल् (म्वा० वल् वेल्नि) १ जाला, हिलना-जुलना
२ हिलना, डबर् उपर धमना कोपना।

॥ (चुरा० उत्र० वलयति से) मध्य की मथना
करना।

वेल् [वेल् + अच्] उधान, काटिका।
वेल् [वेल्, टाप्] १ मन्म वेरोपलसुवापमादिष्टोऽन्मि
श० ६२ जून् अचरन ३ विधाम का अन्तराल,
अवकाश ४ अहर, प्रकाश धारा ५ समुद्र तट,
समूही किलाग वेल्निनाय पमा भूवज्जु रघु०
१०१५-१५, ३३०, ८१८० १३३३, शि० २१३५,
५१८६ ६ सीमा तटवन्दी ७ भाषण ८ बोझानी
९ मरुत मन् १० समुद्र। मन्० कुलम् नास्रविन्
नामर जिला, मूलम् समुद्र-तट, वलम् समुद्रिकानर
का हगल।

वेल् (म्वा० वल् वेल्नी) १ जाला हिलना-जुलना
२ हिलना हानाः टार ग्प हिलना भासि०
११५, शि० ७३२।

वेल्म वेल्मन् [वेल् - घञ, न्यट् वा] हिलना
गलिशील हाना २ (भूमि पर) लोटना।
वेल्मन् [वेल् - हल अच् गुण०] जगट
दुराकारी।

वेल्मि (म्वा०) [वेल् - इन् [लत्, वल् न० वल्नि]।
वेल्मि (भ०, क०, ह०) [वेल्न् वा] १ कापमान
धरघरने वाला, हिलना हुना २ टोडा-मेडा, लम्
१ जाला, चलना-पिरना २ हिलना।

वेवो (प्रदा० आ० वेवोने) १ जाला २ प्राण करना
१ सम्भरण करना ३ बन्बनी हाना ४ व्याप्त करना
५ रात देना, फेरना ६ जाला ७ कामना करना,
बाहना (शास्त्रीय माहित्य में विरल प्रयोग)।

१२३

वेव [विन् + वञ्] १. प्रवेगडा २ अन्त प्रवेस,
पेटना ३ धर, आवासस्थल ४ वेव्याओ का धर,
चकला, -तृणजननहायदिचन्पना वेव्यास, मूच्छ०
११३१ ५ पोशाक, वस्त्र, कापडे (इस अर्थ में 'वेव'
भी लिखा जाता है) - मृगयावेवघारी, -विनीतवेव
-श० १, कृतवेशे केववे गीन० ११। सम०
-वापम् मृगजन्मी फूल, -घारिन् (वि०) छप-
वेवो, काटरूपयार्गे, -गारी, बलिता वेव्या - गूडा०
३११०, -वात वेव्याओ वा धर, चकला।

वेवक [वेव + कन्] धर।

वेवलम् [वेव + ल्यट्] १ प्रवेस करना, प्रवेगडा
२ धर।

वेवल् [वेव + ल्यट्] १ छोटा तालाब, पालर २ जाग।
वेवर् [वेव + र + क] लखन।

वेवम् (न्य०) [वेव + यिन्त्] धर, निवासस्थान,
आवास, भवन, महल - रघु० १६१५ मेघ० २५,
मन्० ४३३, १८५। सम० कर्मन् (न्य०) धर
बनाना, कलिङ्ग एक प्रकार की चिरैया, लकुल-
छल्लन्, भू, (स्त्री०) बहु स्थान जहाँ धर बनाना
है, अवननिर्माण के लिए मूल्य।

वेवम् [वेव + धन्, वेवाय हित वा यत्] वेव्याओ
का धर, चकला।

वेव्या [वेवन् पद्यपोषण नीचति वेव्, यन् + टाप्]
बाजासू म्पी, रडो, गणिका, रमेल मूच्छ० ११२२,
मेघ० ३० यात्र० ११४१। मन्० -वावाये १ बहु
पुरुष जा वेव्याओ वा स्वामी हो, उर्जे रमता हो
२ भद्रवा ३ लौहा, गीड, वाप्यः वेव्याओ का
वास्तव्यल चकला, -लम्नम् व्यधिबार, रडोबासी,
मूहम् चकला, बल रडो, वन् मीग के लिए
रडी का डी जाने वाली मजदूरी।

वेव्य (घ०) लखन।
वेव दे० वेव।

वेवन् [वेव + न्यट्] अधिहृत वन्, न्यामित्, काजा।
वेव् (म्वा० आ० वेवने) १ घेरा, अडाना बनाना, घेरा
डालना, लपेटना २ बाँधी देना, मरोडना ३ वस्त्र
पहनना। घेरे० (वेव्यति से) १. घेरना २ घेरा-
बन्दी टालना, आ , तह करना, परि , सम् -पर-
न्पर तह करना, लपेटना, मरोडना, उमेडना।

वेव् [वेव + घञ्] १ घेरा, घिराव २ बाधा, बाध
३ पगडी ४ मोद, रात रस ५ तागपीन। सम०
बस एक प्रकार का बाम, सार तागपीन।

वेव्क [वेव् + कल्] १ बाधा, बाध २ लौकी, -कम्
१ पगडी २ बादर, कबादा ३ मोद, रस
४ तागपीन।

वेवन्म [वेव् + ल्यट्] १. लपेटना, बाँधी बाँध से बँधना,

पौरावन्दी करना, —अङ्गुलिषेष्टनम्, 1 अङ्गुठी
2 कुडलिन होना, गोल मरोड़ी लेना, —रघु० ४।३८
3 लिफाका, लपेटना 4 ओढ़नी, डकना. मजूक० पगड़ी,
बिभूकुट - अस्पृष्टालकषेष्टनी रघु० १।४०, शिरका
षेष्टनशोभिना—८।१२ 6 बाडा, पेर - कीडासीउ
कनकदलीषेष्टनप्रेषणीय - मेघ० ७७ 7 तगड़ी, कमार-
बन्द 8 पट्टी 9 बाहरी कान 10 गुगुल 11 नृत्य
का विशेषे मूद्रा ।

षेष्टनकः [षेष्टन + कन्] सभोग के अवसर की विशेष
अपस्थिति ।

षेष्टित (भू० क० ह०) [षेष्ट + षन्] 1 घिसा हुआ,
घेरा हुआ, चारों ओर से लपेटा हुआ, बन्द किया
हुआ 2 लिपटा हुआ, बरुमो से मुगुजित किया हुआ
3 उहराया हुआ, रोक़ा हुआ, विघ्न डाला हुआ
4 घेरावन्दी किया हुआ ।

षेष्ठा, **षेष्ठी** : [षिपे ष] जल, पानी ।

षेष्ठा. दे० 'षेष्ठा' ।

षेष्टारः [षेम् + अरन्] लष्कार—शि० १२।१९ ।

षेष्ठ (वां) **षारः** [षेम् + षु + अच्] गर्म मसाला, (जीरा,
राई, मिर्च, अदरक आदि के योग से तैयार किया
गया मसाला) ।

षेहू (म्वा० वा० वेहूले) दे० 'बेहू' ।

षेहूत (स्त्री०) [विशेषेण हृत्ति गमम्—वि + हृत् +
अति] बास गी ।

षेह्वारः [= बिह्वार, पुषो०] एक देश का नाम, बिह्वार ।

षेह्व, (म्वा० पर० षेह्वने) जाना, दिलना-मुकना ।

षे (म्वा० पर० चापति) 1 सूचना, धुक्क होना
2 म्लान, निदास, अवमग्न ।

षे (अथ०) [वाः ई] स्त्रीकृति या निम्नवर्णाद
अपत्य (नि मग्नेह, मूषमूष, वस्तुतः) परन्तु केवल
पुरुक के रूप में प्रयुक्त आपां वै तर्ग्यनव मनु०
१।१०, २।२१, ३।६९, ११।७७. यह कभी कभी
सम्बोधन के रूप में भी प्रयुक्त होता है तथा कभी कभी
अनृत्य को प्रशंसा करता है ।

षेभान्तिक (वि०) (स्त्री०—की) [विभान्तिक + अच्]
श्रोग में माल किया हुआ ।

षेकसम् [धियोगेण कर्माति ध्याप्पोति—अच्] 1 एक
मात्रा या यज्ञोपवीत की भांति एक कर्ष के ऊपर से
तथा दूसरे कर्ष के नीचे में पारण की जाती है
2 उत्तरीय बन्ध, धागा, आड़नी ।

षेकसकम्, **षेकसिकम्** [षेकस + कन्, ठन वा] यज्ञोपवीत
की भांति बायें कर्ष के ऊपर तथा दायें कर्ष के नीचे
में पहनी जान वाली मात्रा ।

षेकटिक. (पु०) ओहरी ।

षेकतेजः [विकनेनस्यापत्यम् - अच्] कर्ण का नाम ।

षेकस्यम् [विकस्य + जच्] 1 ऐच्छिकता 2 सदाय,
सदिम्बता 3 अनिश्चय, असमयम् ।

षेकसिक (वि०) (स्त्री०—की) [विकस्य + ङच्]
1 ऐच्छिक 2 सदाय, मसदाय, अनिश्चिन, अनिर्णीत ।

षेकस्यम् [विकाल + ध्यञ्] 1 मुट्टि, कमी अचूरापन
2 अङ्गमङ्ग, विकलाङ्ग या पूरा हुआ 3 अक्षमता
4 विक्षोभ, हुडबुडी, उतौयता, 5 अतस्मिन् ।

षेकारिक (वि०) (स्त्री०—की) [विकार + ङच्] 1 विचार-
विषयक 2 विकारशील 3 विकृत ।

षेकालः [विकाल + अच्] तीसरा पहर, मध्याह्नोत्तर काल,
सायंकाल ।

षेकालिक (वि०) (स्त्री०—की) **षेकालीन** (वि०)
[विकाल + ङच्, ष वा] सायंकालमन्थनी वा साय-
काल के समय घटित होने वाला ।

षेकुतः [विकुष्ठाया मायायां भव अच्] 1 विष्णु का
विशेषण 2 इन्द्र का विशेषण 3 तुलसी का पौधा,
—अथ 1 विष्णु का स्वर्ग 2 अशक। मम० चतु-
वैशी कालिकमुक्ता बीरस. —लोक विष्णु की दुनिया ।

षेकुल (वि०) (स्त्री०—ली) [विकृत + अच्] 1 परि-
बर्तित 2 बदला हुआ, -- तम् 1 परिवर्तन, बदल-बदल,
हेर-फेर 2 अर्थात्, जगुणा, धिनोतापन 3 अवस्था
या मूलतः वास्तु में परिवर्तन, विकल्पता आदि न०
४।५ * अगस्त्युन कारो भिन्नित्युक्क पटना
तत्पनोपपवनादि षेकुल प्रेष्य रघु० १।१६० ।
मम० विचित्रे दुर्गता, दयनीय दत्ता, कष्टदस्त्र-बैकुल
विचलंदाभय - मा० १।१९ ।

षेकुलिक (वि०) (स्त्री०—की) [विकृत + ङच्] 1 परि-
बर्तित, मगोचिपित 2 विकृत मन्थनी (साम्य० म०)

षेकुल्यम् [विकृत - ध्यञ्] 1 परिवर्तन, अरुद-अः
2 दुःखद स्थिति, दयनीय दत्ता : अमुना ।

षेकाल्यम् [विकाल्या दीर्घानि विशानिः अच्] एक
प्रकार का रत्न ।

षेकस्य, **षेकस्यम्** [विकस्य + अच्, ध्यञ् वा] 1 गडबडा,
विश्राम, पबराहट 2 कुल्लड, हुल्लचन 3 कष्ट, दुःख,
शोक, रज म० ८।६, बेणी० ५, मृच्छ० ३ ।

षेकरी [विशेषेण क गति-रा + क + अच् + ङीप्] 1 सत्य
उच्चारण, ध्वनि-उत्पादन, हे० कु० २।१७ पर मन्त्रि०
2 वाक्यशक्ति . वाणी, भाषण ।

षेकानस (वि०) (स्त्री०—की) [विज्ञानमन्त्र इदम-अच्]
किन्नी बालग्रन्थ, मन्वासी, या सिद्ध आदि में सत्य
— वैश्वानर किमला इतमाप्रदातायु म्वापारगाः
मदनस्य निपेक्षितव्यम् म० १।७७, लः जैगणी,
बालग्रन्थ, नीमने आश्रम में वास करने वाला ब्राह्मण
- रघु० १।८०, मट्टि० १।६९ ।

षेक्यम् [विमूष + ध्यञ्] 1. मूष या विशेषण का अर्थ

2. सद्गुणों का अभाव, ब्रुटि, दोष, कमी 3 गुणों की भिन्नता, विविधता, विरोधिता 4 बहिष्कार, तुच्छता 5 अकुशलता।

वैचल्यम् [विचक्षण + ध्यञ्] बौगन्, निपुणता, प्रवीणता।

वैचल्यम् [विचलित + ध्यञ्] शाक, मार्तण्डिक विकलता, अकलौष -मा० ३११।

वैचल्यम् [विचलित + ध्यञ्] 1 विविधता, विभिन्नता 2 बहुविधता 3 अचरज 4 विममयात्प्रादकता जैमा कि 'वाच्यवैचल्य' में, काव्य० १० 5 आश्चर्य।

वैजयन्तम् [विजयन्त + अण्] धर्म का अन्तिम नाम।

वैजयन्त [वैजयन्ती + अण्] 1 इन्द्र का महत् 2 इन्द्र का झन्डा 3 ध्वज, पताका 4 धर।

वैजयन्तिका [वैजयन्ती + ठक्] झन्डा उठाने वाला।

वैजयन्तिका [वैजयन्ती + कन् + टाप्, ह्रस्व] 1 झन्डा, पताका (आन्० से भी) -मघारिणीव देवस्य मकर-केनोर्जादित्रयवैजयन्तिका काव्यात्मनवन्ती -मा० १ 2 एक प्रकार की बोनियों की माला।

वैजयन्ती [वि + जि + लृप् = विजयन्त + अण् + डीप्] 1 झन्डा, पताका -मनपरिष्कारहविनामवैजयन्ती-मा० ३१५ 2 बह्नु 3 माला, हार 4 विष्णु का हार 5 एक शब्दकोश का नाम।

वैजयन्तम् [विजयन्त + ध्यञ्] 1 ज्ञानि या प्रकार की भिन्नता 2 ज्ञानि या वर्ष की भिन्नता 3 अचरज 4 ज्ञानिबहिष्कार 5 बद्धचक्री, स्वेच्छाधारिणी।

वैजिक (वि०) दे० 'वैजिक'।

वैजानिक (वि०) (स्त्री०-की) [विज्ञान-ठक्] यजुः, कुलान, प्रबोधि।

वैजान् दे० 'वैजान्'।

वैज [वैज् + अण्, उकारस्य लोप] धाम का कार्य करने वाला।

वैज (वि०) (स्त्री०-की) [वैज् + अण्] 1 धाम से उगलना या धाम का बना हुआ, -कः 1 धाम की छड़ी 2 धाम का कार्य करने वाला, बर्मांड, भी बगवतोत्तन, भग््न धाम का क० या बीज।

वैजविक [वैजव् + ठक्] मुरली बजाने वाला, बोंसुरी बजाने वाला।

वैजवित् (प०) [वैजव् + इति] सिक् की उपाधि।

वैजिक [वैजा + ठक्] बीजा बजाने वाला।

वैजुक [वैजुक + अण्] मुरली बजाने वाला, बामुरी बजाने वाला, -कन् अकुस दे० 'वैजुक'।

वैजानिक [विजय + ठक्] मांस विभेदा।

वैजविक [वितच्छा + ठक्] वित्तभावादी, स्वर्ध विबाद करने वाला, छिद्रान्वेयी।

वैजानिक (वि०) (स्त्री०-की) [वैजयन्त + ठक्] वैजयन्त

से निर्वाह करने वाला, -कः 1 वैजयन्त लेकर काम करने वाला, अधिक 2 वैजयन्त भोजी (कर्मचारी)।

वैजविक, -भो (स्त्री०) [वितरेण दानेन लघ्वते -वितरेण + अण् + डीप्, एते पूर्वा० ह्रस्व] 1 नरक की नदी का नाम 2 कलिङ्ग देश की नदी का नाम।

वैजय (वि०) (स्त्री०-की) [वैजयन्त + अण्] 1 वैज से मन्वन्व रत्नने वाला 2 नरकुस जैसा अर्धाण् अपने से अधिक शक्तिशाली धनु के सामने घूटने टुक देने वाला -जैमा कि 'वैजयती वृत्ति' रघु० ४:२५, पञ्च० ३:१९।

वैजय (वि०) (स्त्री०-की) [विज्ञान + अण्] यज्ञीय, पवित्र, वैजानास्था बह्नुयः पाषयन्तु -मा० ५:१३, -अण् 1 यज्ञीय कृत्य 2 यज्ञीय आहुति।

वैजानिक (वि०) (स्त्री०-की) [विज्ञान + ठक्] दे० 'वैजान'।

वैजानिक [विविधस्तालस्तेन व्यवहरति -ठक्] 1 भाट, चारण 2 आदुर, बाबीणर, विसेपरक बहु जो वैजाल का भक्त हो।

वैजक (वि०) (स्त्री०-की) [वैज + कृत्] वैज से एक, नरकुस का।

वैज. [वैज + अण्] बुद्धिमान् मनुष्य, विद्वान् पुरुष।

वैजव्यम्, वैजव्यी, वैजव्यम् [विदय + अण् = वैदय + डीप्, विदय् + ध्यञ्] 1 कौशल, धनता, प्रवीणता, निपुणता -अहो वैजव्यन् -मा० १, प्रबन्धविन्यास-वैदव्यविधि -वाच०, शि० ४:१०६ 2 कर्मस्थान में कौशल, सोच्यं मा० १:४३ 3 बुद्धिमाना, स्कृति, यजुर्गाई -रत्न० २ : २ बुद्धि।

वैजव्यं [विदयं + अण्] विदयं देग का राजा -भी 1 दमयन्ती 2 रुक्मिणी 3 रचना की विशेष शैली, शा० द० में वीं सूई परिभाषा -मायुर्वेद्यञ्जकैर्वैर्वै रचना ललितारिम्भका। अक्षुत्तरस्पृष्टिर्वा इदर्वी रीतिरिच्छते ॥ ६२९, इन्धी न बढी मधुमता पूर्वक पीठो गीति से इसकी विभिन्नता दर्शायी है -दे० काव्या० १:४१-५३।

वैजल (वि०) (स्त्री०-की) [विदलम्ब विकार विदल -अण्] 1 वैज से टहनियों से बनाया हुआ, -कः एक प्रकार की रोटी 2 कोई भी दाल का अनाज, -अण् 1 भिक्षुओं का कमवहटा भिक्षायाज 2 बाँध या टहनियों की बनी श्लिषा, या आसन।

वैजिक (वि०) (स्त्री०-की) [वैज + अण्] 1 वैज से व्युत्पन्न या वैजों के समानुकर, वैदवियगक 2 पवित्र, वैदवित्त, चरारिणा -कु० ५:१३, कः वैजो में निष्पात झाडण। सप० धासः वैज का अस्पृशान् रत्नने वाला, कठजानी, जिसे वैज का अर्था जान गे।

बंदुको (स्त्री०) **बंदुप्यम्** [विद्मत् + अण् + डीप्, विद्मत् + अण्] आन, अधिगम, बुद्धिमत्ता ।

बंदूप (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [विद्मत् + अण्] विद्मत् से उत्पन्न या लाया गया, **बंदूप** बंदूप मणि, नीलम — कु० ७१०, पं० ३१४५ ।

बंदेदेश (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [विदेश + टञ्] दूसरे देश से संबंध रखने वाला, अन्य देश का और उसी में लाया हुआ, —क अन्य देश का व्यक्ति, विदेशी ।

बंदेदेशम् [विदेश + अण्] विदेशीय विदेशी होने ।

बंदेह [विदेह + अण्] 1 विदेह देश का राजा 2 विदेह का रहने वाला 3 व्यापारी वेद 4 ब्राह्मण स्त्री में वेद पुरुष में उत्पन्न मन्त्र मन्० १०११, हा (पु०, ब० ४०) विदेह देश के राष्ट्रजद, —ही मीना —वेदहिन्याह दय विदेह म् ० ११३३ (पं०) 'बंदेही' शब्द का अन्तिम स्वर ह्रस्व कर दिया गया है ।

बंदेहक [वेदेह + कन्] 1 व्यापारी 2 वेदह (१) ।

बंदेहिक [विदेह + टक्] गौरागर ।

बंदे (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [बंद + यत्] 1 बंद मन्त्रवादी, आध्यात्मिक 2 आर्यवंद मन्त्रवादी, आर्यवंद विषयक, छ [विद्या अस्ति अन्य विद्या + अण्] 1 विद्या पुरुष, विद्यावान्, पण्डित 2 आर्यवंदाचार्य चिकित्सक वेदायनतर्गिभाविन मूत्र न प्रदाय इव बायमन्यमान रूप० ११५३ वेदानामानुर धेयान् मुच्य० 2 वेद ज्ञान का पुरुष, जो वर्णमन्त्र समझा जाना है (वेद स्त्री में ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न मन्त्रान्) । मन्० क्रिया वेद का व्यवसाय चिकित्सक के रूप में व्यवसाय, भाष 1 धन्वन्तरि 2 शिव ।

बंदेक [बंदे + कन्] वेद, चिकित्सक कम् चिकित्सा-विज्ञान ।

बंदुल (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [विद्मत् + अण्] विद्मत् से मन्त्रद्वय या उत्पन्न, विद्मत् वत्पद वेदा उदात्त कर्मविशेष्यम् - विक्रम० ६१२ उभर० ५१३ । मन्० अग्नि, अन्न बर्हि विहरी का आन ।

बंद (वि०) (स्त्री०-स्त्री) **बंधक** (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [बधि + अण् टक् वा] 1 मन्त्र क अक्षा, व्यवस्थित, चिकित्सा, कर्म, अक्षयिपद 2 शत्रुना बधि या कान्त समत ।

बंधयम् [विधम् + अण्] 1 अग्रगणना अग्रता 2 अग्र गुण का अन्तर 3 कर्मस्थ या आदार का अन्तर 4 वैपरीत्य : अवेचना, अतीयाह अत्याग 6 पापवह ।

बंधये [विधा + टक्] विधा का पुरु ।

बंधयम् [विधा + अण्] विधापन, कु० ६१ मातृवि० ५ ।

बंधयम् [विधृ + अण्] 1 शोभावस्था 2 बिलोभ परधरी, मिहिन ।

बंधे (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [बधि + टक्] 1 नियमानुसूल, विहित 2 पूर्व, बुद्ध, अद. वा: भूत्, अकर्मि-प्रल-पन्थे बंधेयं श० ०, विक्रम० २ ।

बंधेय [विनाश + टक्] 1 गद्य, —बन्धेय इव विनाश-मन्त्र —का०, रूप० ११५९, १६१८८, भग० १०३० 2 अण् ।

बंधिक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [विनाश + टक्] 1 शिष्टता, मोक्षद, मदान्तरण या अनुज्ञामनमन्त्रवादी 2 शिष्टता-कार का व्यवहार करने वाला, क सामयिक रथ ।

बंधायक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [विनाशक + अण्] गणेशमन्त्रवादी श० ० १११ ।

बंधायक [अन्तय लक्षणमधिकृत्य कृतो प्रथम विनाश टक्] 1 बौद्ध संप्रदाय क दर्शन-सिद्धान्त 2 उग्र सम्प्रदाय का अनुयायी ।

बंधाधिक [विनाश + टक्] 1 राम 2 मकड़ी 3 ज्यातिरी 4 बौद्ध के सिद्धान्त 5 उग्र सिद्धान्तों का अनुयायी ।

बंधीतक दे० 'बिहीतक' ।

बंधरीत्यम् [विपरीत + अण्] 1 विरोधिता विरोध 2 अमर्षिता ।

बंधुप्यम् [विद्मत् + अण्] 1 विद्या, विद्यात् 2 पुत्रजनना, बहुतायत ।

बंधयम [विधा + अण्] निष्कलना, इच्छलना ।

बंधोधक [विधा + टक्] 1 लोकोदाय 2 विनोदक ज्ञा: गत म मने बाला का, पत्नी देन समय समय का वापना कल्पे अज्ञाता रहता है वि० १०५१ ।

बंधुम्, विद्मत् + अण्] 1 उल्लस, पद, महिमा पवन शमक, उद-वाट, दौलत 2 शक्ति, भाव वि० १२३३ ।

बंधविक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [विधाया + अण्] ऐच्छक, वैराग्यक ।

बंधुम् (पुं०) वेणु का बंधु, क ।

बंधुजम्, [विधा + अण्] मर्गी उपवन या उद्यान ।

बंधयम्, [विधा + अण्] 1 मन्त्र, अन्वय 2 ना मरती, अक्षि ।

बंधनयम् [विधन् + अण्] 1 मन का उन्मत्त, मानसिक अवसाद, शाक, उदात्त - ज० ६ 2 राम ।

बंधात्र, **बंधात्रेय**, [विधा + अण्, टक् वा] मोक्ष-म. का वेदा ।

बंधात्रा, **बंधात्री**, **बंधात्रेयी** [विधा + अण्, डीप् वा विधाये + डीप्] मोक्षेयी या की बंटी ।

बंधातिक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [विधा + टक्] 2 यात में प्राचीन, —क: यगनिहारी ।

बैभुष्यम् [विभुष् + ध्वञ्] 1 वृंह मोहना, पलायन, प्रत्यापत्तेन 2 अर्थात्, जन्मुत्पा ।

बैभयः [विभय + अण्] बदला, विनिमय ।

बैषयम्, वैषय्यम् [वैष्य + अण्, ध्वञ्, वा] 1 व्यवसाय, वैश्वेनी, धरादहृष्ट 2 अन्वय भक्ति, मन्वकीनता महावी० ७३२८ ।

बैष्यम् [व्यर्थ + ध्वञ्] व्यथना, अन्यादकना ।

बैष्यिकरणम् [व्यधिकरण + ध्वञ्] निम्न स्थानो मे हानि का भाव, दे० 'व्यधिकरण' ।

बैष्यकरण (वि०) (स्त्री० षो) [व्यकरणमधीने केनि वा अण्] व्यकरणविषयक, व्यकरणमन्वयी — श व्यकरण जानने वाला बैष्यकरणीय गीताउपपाद-भूया क्व यातु मन्वया मुभा० । मम०—बाह्य जिसे म्याकरण का अच्छा ज्ञान न हो, भाव्य जिसकी पत्नी व्यकरण की जानने वाली हो ।

बैष्यत्र (वि०) (स्त्री० षो) [व्यात्र + अञ्] 1 चीत की तरह का 2 चीत की माल न टका हुआ प्र चीने की माल म टकी हुई चाडी ।

बैष्यत्वम् [विद्यान् + ध्वञ्] 1 माहस, अविनय, निर-वृत्ता अयदाभूषण युमा क्षमा लज्जेव वापिनाम् पराक्रम परिश्रे बैष्यत्व मुरनेगिब-गि० २४४ 2 उदाहरण अस्मद्वयत्न ।

बैष्यिक [व्यामय्य अण्वय्य आस + इङ्, अवह् आदेश, यकात्पूर्वै गैष्] आस का पुत्र ।

बैष् [शीरम्य भाव अण्] 1 विराध, मनुता पुढमने वैषयम्, हाह, प्रतिपाक्ष कालह दान्ये वैराग्यनि यानि नादानम् मुभा०, अज्ञानहृषोच्य वैरीभक्ति मोहद्वम् श० ५१२३, 'वैरभाव य परिणत हा खता है,' विषय वैर सामर्थे तराउरी य उदासते, प्रतिप्योदविष्य बधे मंग्ते तेषिभास्यम् मि० २ ।

२२ 2 मृगा 'निमा 3 धारवीरता पराक्रम । मम० अनुबन्ध वाचना का आरम अनुबन्धित् (वि०) वाचना की ओर ते जाने वाला - आतङ्क अरुनद्वय, -आनुबन्धम्, उद्धार, -विशेषनम्, -प्रति-धिया, -प्रतीकार -वाचना, -शुद्धि (स्त्री०), -साधनम् वाचना का बदला, बदला उना प्रतिहिमा कर, कार, कृत (पु०) गन् - भावः मनुतापूर्ण खेवा रक्षित् [वि०] वाचना का निवारण करने वाला ।

वैष्यत्वम् -व्ययम् [विरक्त + अण्, ध्वञ् वा] 1 सासा-रिक् आत्मकियों के प्रति उदासीनता, इच्छा का अभाव 2 अमममता, भावसम्पत्ती अर्थात् ।

वैरद्विकः [विरद्भ्य विराग विषयमर्हति ठक्] जिसने अपनी सब इच्छाओं एवं वासनाओं का दमन कर दिया है, मन्वासी, वैरागी ।

वैरत्वम् [विरल + ध्वञ्] 1 म्यूनता, विरलता 2 वीला-पन 3 मुहुता ।

वैराग्यम् दे० 'वैराग्यम्' ।

वैरागिक, वैरागिन् (पु०) [विराग + ठक्, विराग + अण् + टनि] बहु मन्वासी मिलने अपनी सब इच्छाओं और वासनाओं का दमन कर लिया है ।

वैराग्यम् [विराग्य भाव ध्वञ्] 1 सामाजिक वास-नाओं व इच्छाओं का उभाव, सासारिक बधनों से उदासीनता, विरक्ति भग० ६१३५, १३१८ 2 अत-मृत्ति, अमममता, अमनाय काम प्रकृतिवैराग्य मह धर्मयित् शम रघु० १७१५५ 3 अर्थात्, तापमार्दगी 4 रज्ज साक, अकर्मस ।

वैरात्र (वि०) (स्त्री० षो) [विरात्र - अण्] बह्या-मववी—उप-० २ ।

वैराट (वि०) (स्त्री० षो) [विराट + अण्] विराट सवयी—ठ. एक प्रकार का मिट्टी का कीटा, इन्द्रगोप ।

वैरिन् (वि०) [वैर - टनि] विरोधी, मनुतापूर्ण (पु०) गन्, -शीघ्र वैरिणि बधमायु निरालज्योऽनु नु केवलम् भग० २१२१, भग० ३१२७, रघु० १२१०४ ।

वैर्य्यम् [विर्य्य - ध्वञ्] 1 विरक्तता, कुम्पना रघु० १२१०० रूपो की विभिन्नता या वैरिधय ।

वैरोचन, वैरोचनि, वैरोचि [विराचन्वाणयम् अण्, इङ् वा विराच + ध्वञ्] विराचन के पुत्र वनि राक्षस के विषय-प ।

वैरक्षय्यम् [विरक्षय्य भाव - ध्वञ्] 1 आर्यर्थ 2 वैपरीत्य विराध 3 अमर, वेद ।

वैर्य्यम् [विरक्ष - ध्वञ्] 1 उन्मत्त महबद्धी 2 अस्वाभाविकता कुचिमत वैरक्षय्यमन्म कुचिय या अतपूर्वक की गई मुम्कान 3 लज्जा 4 वैपरीत्य, व्य-क्रम ।

वैरोच्यम् [विक्रम - ध्वञ्] विरोध, अत्यन्त, वैपरीत्य ।

वैर्य्य (वि०) दे० 'वैर्य्य' ।

वैर्य्यिक [विरयः + ठक्] 1 जेरो वाला आधात्र लगा कर बचने वाला 2 (वैर्य्य मे रज्ज रज्ज) भाग होने वाला ।

वैर्य्यम् [विरयण्य भाव - ध्वञ्] 1 रग या चेहरे की आभा का विकर्षण, कोरपण, निषमना 2 विमि-प्रना विविधता 3 जालि मे विबलना ।

वैर्य्यतः [विरयन्तोऽण्वयम् अण् - 1 मानवी मनु०, जो यन्मान यग का अधिष्ठाता है मनु के नीचे दे० वैर्य्यन्ते मनुनाम मानवीयो धनोविषाम् रघु० ११११ उता० ६११८ 2 यम रघु० १५१५ 3 दानिद्रह, - लम् विरयन्तः के पुत्र मानवी मनु, द्वारा अधिष्ठान कर्त्तमान युग या मन्वन्तर ।

वैर्य्यन्ती [वैर्य्यन्त + ङीर्] 1 दक्षिण दिशा 2 यमूता नदी ।

विवाहिक (वि०) (स्त्री० की) [विवाह+ठक्] विवाहसंबन्धी, विवाहविषयक, विवाह के कारण होने वाला कु० ७१२,—क.—कम् विवाह, यादी,—क पुत्र वधू का स्वयंवर, या दायद का स्वयंवर।

विवाहम् [विवाह+ठक्] 1 स्वच्छता, निर्मलता (आत्म०) 2 स्वच्छता 3 सफेदी : शालि, (मन की) स्वच्छता।

विवाहम् [विवाह+अण्] 1 विनाश, हत्या, वध—कु० ४१३३, उदार० ४१२४, ६१४० 2 दुःख, सत्याप, पीडा, कष्ट, कठिनाई—उपरोषविषयम्—मुद्रा० २, मा० १३३५।

विवाहम् [विवाह+अण्] 1 अनुरथा 2 रात्रकीय शासन।

विवाहः [विवाह+अण्] 1 चाण्डवर्ष के दूसरा महीना (अथैल-मई) 2 रई का उष्ण दूनरकालवशा क्षिप्रविवाहवर्षे कलशिमूर्तिविपरीत बलवत्ता सोडव्यति—सि० १११८, कम् वाण चलाते समय की एक मुद्रा, दे० 'विवाह'—की वैवाह्य नाम की पूजाया।

वैवाहिक (वि०) [विवाह+ठक्] वैवाहिकी द्वारा अग्रजन्—वैवाहिकी कलाम् मुष्क० ११३, वैवाहिकी द्वारा अग्रजन् कलाम्—क. जा वैवाहिकी के माहृत्वयं मे रहता है, शुक्लार-माहृत्वयं मे पाया जाने वाला एक नायक, कम् वैवाह्यति, वध्याकी की कलाएँ।

वैवाहिकम् [विवाह+ठक्] 1 भेद, अन्तर 2 विवाह-पटता, विनियोग, अनुठापन—वैवाहिकान्यमर्षं या वीधयैःसार्धंमभवा—सा० द० ७७ 3 अष्टता—सा० द० ७८ 4 विविष्टलक्षणपपता।

वैवाहिक (वि०) (स्त्री०—की) [विशेष पदार्थभेदवि-क्षण्य हुना अन्व—विशेष+ठक्] 1 विशेषता युक्त 2 वैवाहिक दर्शन के निदानों से संबन्ध रखने वाला, कम् छः जिन्दगीदर्शनान्ता में मे एक दर्शन त्रिमकं प्रयोः कयाद मे, गौतम के न्यायदर्शन से इनकी निरन्तरता इस बात से है कि इसमें मान्य के वजाय क्वचि गान तन्को का विवेचन है तथा 'विवाह' पर विशेष बल दिया गया है।

वैवाहिकम् [विशेष+ठक्] अष्टता, प्रमृता, मरानमता।

वैध [विध+ठक्] स्त्रीय वर्ण का पुण्य, इनका व्यवसाय व्यापार और कृषि है विद्वान्वाय पशुम्यवध कृष्यादावकीच मुचि, वैदाव्यवन्मप्य स वैध इति मञ्जिन पद्य०। सम० कर्मम् (नप०)

वैध (स्त्री०) वैध वा व्यवधय या वैधा, व्यापार, खेती आदि।

वैधवः [विशेष+ठक्] 1 धन का स्वामी कुंवर,—विवाहिन यस्या यतितापकाया मनाहस वैधव-

वश्य लक्ष्मीः—भासि० २११० 2 राघव का नाम। सम० आलय,—आवासः। कुंवर का आवासस्थल 2 बह का वृक्ष,—उद्ययः बह का पेड़।

वैधवेध (वि०) (स्त्री०—की) [विशेष+अण्] विवे-देको से सम्बन्ध रखने वाला,—वध् 1 विवेदेको को प्रस्तुत किया गया उपहार 2 सभी देवताओं को भेंट (भोजन करने से पूर्व विश्वेदेव यज्ञ में आहुति देकर)।

वैधानर [विधान+अण्] 1 अग्नि का विशेषण,—रत्न काण्डवन्-कृताच्यवनटी दूरेज्जु वैधानर—भासि० ११५७ 2 अठारिण, अह वैधानरो भूत्वा प्राणिना देहमाश्रित। प्राणापानसमायुक्त पचाम्यन्न चतु-विधम् (वेदान्ता) 3 परमात्मा।

वैधासिक (वि०) (स्त्री०—की) [विधास+ठक्] विध-वनीय, योगनीय।

वैधव्यम् [विध+ठक्] 1 अग्रमता 2 अरुदरापना, कठोरता 3 असमानता 4 अन्त्याप 5 कठिनाई, विपत्ति, सकट 6 एकाकीपन।

वैधिक (वि०) (स्त्री०—की) [विध+ठक्] 1 किसी पदार्थ-सम्बन्धी 2 विषयों में सम्बन्ध रखने वाला, वासनात्मक, धार्मिक, क. नामो, लभ्यत।

वैधित्यम् [विध+ठक्] 1 त्रैलोक्य विधुति—अण्। भग्नीवन धाहुतिया की रात्र।

वैधु [विध+ठक्] 1 अग्रजिह, ब्राह्मण 2 रत्न, वायु 3 लाक, विष्णु का एक प्रभाव।

वैधुष (वि०) (स्त्री०—की) [विधु+अण्] 1 विष्णु सम्बन्धी, म्प० ११८५ 2 विष्णु की पूजा करने वाला, क. नील मरुत्वयुग्ं आधुनिक हिन्दू-संप्रदाया में म एक, दूसरे दा है शिव और शानक, कम् भग्मी-कृत आहुतिया की रात्र। नम० पुराणम् अठाठ पुराणों में मे एक पुराण।

वैधानिष [विशेषण भगनि विचारं—कम्प स लय रिमा रिन्—अण्] मठली।

वैहायल (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [विहायम् अण्] एव मे विहायल, शर्वाइ।

वैहाय (वि०) [विशेषण जिह्वेन-विः] हृ प्यन—अणः त्रिभवे हर्मी हिन्दगी की जाय, जिसे उपहारन १। विश्व कलाया जाय (त्रै न पत्नी का भाई, या मरुगाय का कोई रिन्नेदार)।

वैहासिक [विहास करानि-विहास+ठक्] हसिकता, विद्वपक।

वैह [वा+उठ्] 1 एक प्रकार का तीप 2 एक तरह का मछली।

वैही [वैह+हीप्] पक्ष का चौथा भाग।

वैह (प०) [व+ठक्] 1 होने वाला, कुली 2 नेत्र

3 पति 4 साह 5 रथवान् 6 लीचने वाला घोडा ।

घोट (पु०) इउठ, बूल ।

घोर (वि०) [अवनिभयमुद्रकं यथ-आ० ब०, उदकस्य उदा-
देश, भागुरिमते अकारा लोप-] नर, वीला, आइं ।

घोरास्य [घोर आइं सन् अलति घोर-अस्-अच्]
 अर्थन-मउली ।

घोर (ल) क [अवनल लेवन काते उरो यस्-आ० ब०,
 कप्, अश्म्य अकारलोप, पूषो० नलोप पहले रलघोर-
भेद] निर्गिकार, लेखक ।

घोरहः [को इति ग्टनि भूङ्गा यन-वा + रट् + क] कुव का
 एक भेद ।

घोष [घुष् + अच्] गुल्फ, रमगण ।

घोषाह्व (पु०) एक प्रकार का घोडा ।

घोड (वि०) दे० 'घोड' ।

घोषट् (अञ्ज०) [उद्भनजेन हवि बह् + षौषट्] पितरो
 या दवा को प्राहुति देन समय प्रयुक्त किया जाते,
 वायु उद्धार या नाकेतिक घण्ट ।

घोषक [विशिष्ट प्रयो यस्-आ० ब०, कप्] पहार ।

घोषक (वि०) [विगतम् अलुक यस्-आ० ब०] बरच-
होन, विकरत्र, मवा-कि० ११२४ ।

घोषक [वि + अच् + अच्] घुं, ठग, जैसा कि 'अच् +
अच्' 'बचन मार' 'बठमयूर' ।

घोषनम् [अच् + अच्] उवा, घोषा देना ।

घोषत (भू० क० कृ०) [वि अञ्ज + शत] 1 प्रकटीकृत,
 प्रदीप्त 2 विकसित, रचित कु० २१११ 3 स्पष्ट,
 प्राट् नाफ, मारल, मिश्र, विनाद रूप से विद्यमान

4 विशिष्ट, विदित, विख्यात 5 अकेला समुप्य
 6 बुद्धिमान्, विद्वान् कर्म, अञ्ज०) स्पष्ट, स्पष्ट
 रूप से माधुर्य पर, विरिचन रूप में । सम०

घोषितम् अरगिन, बुष्टाच वह माषी जिसने
 पटना अपनी ओरों में दगी है गयाह, - राक्षिः ज्ञान
 ऋक रूप किल्ल का विरोधन, -विष्णव (वि०) लक्षित
 प्रदीप्त करने वाला

घोषिक (स्त्री०) [वि + अञ्च् क्विन्] 1 प्रकटीकरण,
 दूष्यमानना, विवाद प्रत्यक्षज्ञान, -राज ममअमेवाचरो-
नरघोषिकोऽप्यति-माधुवि० 1 स्मृशब्दवि० - मेघ०
 १० 2 दूष्यमान मृतन, ग्राहटना, विवशता घ० ७१८
 3 भेद, विवेचन, -न सन्ध, धोनुमर्हेनि सरसद्व्यक्तित-
तेनच - रघु० १११० ४ वाचनिक रूप या प्रकृति,
 सन्धविच, -न इह ने प्रपवात्तुं ध्वनि विद्वदंका न शब्दवा-
 -नय० १०११ ५ वैचलिकता (वि०) जालि शब्द०
 ८११८ 6 अकेला समुप्य, पुष्य 7 (व्या० में) लित
 8 विभक्ति में प्रयुक्त प्रत्यय ।

घोष (वि०) [वि + अच्] अर्पति वि + अच् + रक्]
 1 व्याकुल, विस्मित, उन्नाट 2 अर्पितुन, भयभीत

3 किमी कार्य में याभिप्राय व्यक्त (अधि० या करण०
 के साथ अथवा ममाल में) - रघु० १७१७, महावी०
 १११३, ४१२८, कु० ७१२, उत्तर० ११२६, भाषि०
 ११२३, सि० २१७१ ।

घोष्य (वि०) [विगत वा अञ्च् यस् प्र० ब०] 1 देह-
हीन 2 अङ्गहीन, विकल्प, विकलाङ्ग, अपाह्व,
 लज्जा, -य 1 लज्जा 2 मैत्रक 3 ज्ञान पर पडे
 काले घण्टे ।

घोष्यस्यम् (नपु०) लज्जाई का अण्यन छोटा माप, अणुन
 का ६० वा अण ।

घोष्युष (वि०) [वि + अञ्च् + अच्] 1 व्यञ्जना ध्वनि
 द्वारा ध्वनि, परोक्षसङ्केत द्वारा सूचित 2 ध्वनि
 (अर्थ), यस् उपलब्ध अर्थ व्यञ्जकध्वनि, परोक्ष
 सङ्केत (विष० वाक्य 'युक्तायं' और श्लेष 'गौण वा
 सङ्केतित अर्थ') - इदमन्वयमिति ध्वनि व्यञ्जके वाक्यात्
 ध्वनिर्वचं कथित वाक्य० १ ।

घोष्य (पुढा० पर०) विचिन्ति, कर्मवा० विच्यते) ठगना,
 धोखा देना, चान चलना ।

घोष्यः [वि + अच् + घञ्] पवा ।

घोष्यनम् [वि + अच् + अच्] पवा, निवृत्तिव्यञ्जनम् - रि०
 २११६५, रघु० ८१८०, १०१५२ नु० 'वातव्यञ्जन' ।

घोष्यञ्जक (वि०) (स्त्री०) जिह्वा] [वि + अञ्च् + अच्]
 1 स्पष्ट करने वाला, सङ्केतक, बनकने वाला, प्रकट
 करने वाला 2 अर्थ को उपलक्षित वा ध्वनि करने
 वाला (शब्द), (विष० वाचक और नास्तिक),
 कः 1 नाटकीय हावभाव, सामरिक भावों को उप-
 युक्त हावभाव द्वारा प्रकट करने वाला बाध सङ्केत
 2 सङ्केत, प्रतीक ।

घोष्यञ्जनम् [वि + अञ्च् अच्] 1 स्पष्ट करना, सङ्केत
 करना, प्रकट करना 2 चिह्न, निधान, सङ्केत
 3 स्मारक वा० १ 4 छापवेश परिधान - सि०
 २१५६, तपस्विव्यञ्जनतेषां आदि 5 अञ्जन
 अक्षरे 6 लिङ्गचोक्त चिह्न अर्थात् स्त्री वा पुरुष का
 परिचायक अङ्क 7 अक्षिकार-चिह्न, विल्ला 8 वय-
 स्तना का चिह्न 9 दाढ़ी 10 अङ्क, सदस्य 11 विषं
 मसाला, घटनी, मिठाई हुई वस्तु नै० १९११०४
 12 तीनों वाक्यशक्तिधो में अंतिम जिमेमें अर्थ उप-
 लक्षित वा ध्वनि होता है, दे० अञ्जन का (N)
 (इस अर्थ में यह 'व्यञ्जना' भी लिखा जाता है) ।
 सम० उच्य (वि०) वह जिमेके पश्चात् व्यञ्जना
 अक्षर आता है, लक्षिः व्यञ्जन धर्मा का प्रयोग
 वा सम्लेप ।

घोष्यञ्जना दे० ऊ० 'व्यञ्जन (12) ।

घोष्यञ्जत (भू० क० कृ०) [वि + अञ्च् + शत] 1 साफ
 किया गया, प्रकट किया गया, सङ्केत किया गया

2 चित्रित, मित्र, चित्रित 3 मुद्राव दिया गया, व्यतित ।
अव्ययम् अव्ययम् [इन् + वृत्तु, वृत् + वा विशेषेण न इत्यङ्] अव्यय का पठ ।
व्यतिकरः [वि + अति + कृ + अच्] 1 मिथश्च, अन्त मिथश्च, इकट्टा मिला देना तीर्थं नोव्यतिकरभवे जहनुकन्याभरत्यो -रघु० ८।१५ व्यतिकर इव भीमस्तोमसो वंद्युत्पन्न -उत्तर० ५।१२, मा० १।५० 2 सम्पर्क, मिलान, सम्मिलन मालवि० १।४, मि० ४।५३, अ२८ 3 स्पष्टता कु० ५।८५ 5 घटना, सम्भूति, वृत्तान्त, वस्तु, मामला एवविधे व्यतिकरे -एगो बात होने पर 6 अवसर 7 मुसीबत, मकट 8 पारम्परिक सम्बन्ध, पारम्परिकता 9 विनि-मय, बदलाववन्ती ।
व्यतिकोषे (मू० क० कृ०) [वि + अति + कृ + क्त] 1 मिला हुआ, मिथित 2 संयुक्त ।
व्यतिक्रम [वि + अति + क्रम् + घञ्] 1 अनिक्रम्य, विचलन, भटकना 2 उल्लंघन, भंग, अनुच्छेदान -यथा 'यद्विदु व्यतिक्रम -रघु० १।३१ 3 अवहेलना, उपेक्षा, भूल 4 वैपरीत्य, उलट, अवस्था 5 पाप दुर्बल्यम्, उर्म 6 आपत्काल दुर्भाग्य ।
व्यतिक्रान्त (मू० क० कृ०) [वि अति + क्रम् + क्त] 1 पार किया गया, अनिक्रमण किया गया, उल्लंघन किया गया उपेक्षित 2 शीघ्र, विपर्यय 3 बीता हुआ, गुजरा हुआ (समय) ।
व्यतिरिक्त (मू० क० कृ०) [वि अति + रिक् + क्त] 1 विपुल, अल्प अल्पनिश्चयेयसम्बन्धरीगत -का०, कृ० १।३१, ५।२० 2 आगे बढ़ने वाला, नबीकट्ट होने वाला, आगे निकल जाने वाला 3 प्रत्याहृत, रोका हुआ 4 अन्वयाया हुआ ।
व्यतिरेक [वि + अति + रिक् + घञ्] 1 भेद, अन्तर 2 विषय 3 निष्कारण, अपवर्जन 4 श्रेष्ठता, आगे बढ़ जाना, आगे निकल जाने वाला 5 वैषम्य अन्वयायाया 6 (नर्क० य) अन्वय (विप० अन्वय) उदा० 'यत्र वदित्वाग्निं तत्र यश्चो जालि' यद्, व्यतिरेक व्याप्ति का उदाहरण है 7 (अल० में) एक अर्थिकार जिसमें किसी विशेष दशाओं में उपमाया की अपेक्षा उपमय की श्रेष्ठतर बताया जाता है -उपमायाघट-न्यस्य व्यतिरेक म एव म' काव्य० १० ।
व्यतिरेकित् (वि०) [व्यतिरेक + इति] 1 भिन्न 2 आगे बढ़ जाने वाला, आगे निकल जाने वाला 3 बाहर निकालने वाला, अपवर्जन करने वाला 4 अभाव या अनन्वय दशानि वाला जैसा कि 'व्यतिरेकित् किङ्कम्' में ।
व्यतिरिक्त (मू० क० कृ०) [वि + अति + कृ + क्त]

1 आपस में मिला हुआ, पारस्परिक संबंधयुक्त, मृदुलावट या एकत्र जुड़ा हुआ ? अन्त मिथित
 3 अन्वयान्तीय विवाह करने वाला ।
व्यतिशयः [वि + अति + शब्द + घञ्] 1 पारम्परिक सम्बन्ध, अन्यान्यसम्बन्ध 2 अन्त मिथश्च 3 संयोग, या मिलाप ।
व्यति (ती) हार [वि + अति + हृ + घञ्], पक्षे उपमयस्य इकारस्य दीर्घ] 1 अदन-बदल विनिमय 2 पारम्परिकता, अन्त पारिचर्येन रघु० १०।१३ ।
व्यतीत (मू० क० कृ०) [वि + अति + इ + क्त] 1 गुजरा हुआ, गया हुआ, बीता हुआ, पार किया हुआ -रघु० १।५।१४ 2 मृत 3 छोटा हुआ, परिहृत, चिन्तित 4 अवज्ञान ।
व्यतीपात [वि + अति + पत् + घञ्], उपमयस्य दीर्घ] 1 मधुवा प्रयोग, समुपेक्षितपदन 2 आगे उपान, भारी मकट को मुचिन करने वाला अपाङ्कन 3 अनादर, निस्कारण ।
व्यत्यक्त [वि + अति + क्त + अच्] 1 पार करना 2 विरोध वैपरीत्य 3 व्यपन्न कम् व्युत्क्रान्ति 4 अन्त परि-वर्जन, रूपान्तरण 5 अवरोध, प्रहयच ।
व्यत्यस्त (मू० क० कृ०) [वि + अति + अस् + क्त] 1 व्युत्क्रान्त, विपर्यय 2 विपरीत, विरुधी 3 अन्त व्यत्यस्त लपित -भावि० २।८८ 4 विप्रेषित उम प्रकार रक्की हुई (दी वस्तु) क्रियमे एक दूसरी का काटनी हा व्य-व्यस्त पाद, व्यत्यस्त भूद आदि ।
व्यत्यास [वि + अति + अस् घञ्] 1 व्युत्क्रान्त विपरीत या क्त 2 विरोध वैपरीत्य ।
व्यष्ट (इत्वा० शो० व्यष्टे, व्यष्टिन) 1 प्राणान्वित शरीर पोषित होता, कष्टग्रस्त होता, विरुध्य या अज्ञान होता -विश्वभारती नाम जयने इति ।कणभारत-मन्त्रेण उन्त० ०, न विरुध्यं तस्मा मन वि-१।२, २६ 2 आन्दोलित होता, दोलायमान होना-वि० ५।११ 3 कापना 4 अपधीन होना 5 मूलना, शूक होना, श्रे० (व्यष्टयति-न) पीडा देना, कष्ट देना नाराज करना, दुःखी करना उन्त० १।२० प्र व्यत्यस्त क्त होता भव० १।१०० ।
व्यष्टक (वि०) (स्त्री० व्यष्टिका) [व्यष्ट + णिष् + क्त] ; पीडाजनक, दुःखद, कष्टकर कि० २।६ ।
व्यष्टयन् [व्यष्ट + यन्ट्] पीडा देना, मलाना ।
व्यष्टा [व्यष्ट + अङ् + टाप्] 3 पीडा वेदना, आधि -ता 4 व्यष्टा प्रसक्तकालकृतावस्था -उन्त० १।२० १।१२ 2 अर, आनक चिन्ता -व्यत्यष्टयन्वयाया तद्व्यष्टयाम् -रघु० १।१२३ 3 विश्रांति, प्रशान्ति 4 शान्ति ।

व्यथित (भू० क० कृ०) [व्यथ् + क्त] 1 कष्टघ्न, दुःखी, पीडित 2 आतङ्कित 3 विभूष्य, अज्ञान, वर्धन ।

व्यथ (दिवा० पर० विध्यात्, विद्ध) 1 बीषणा, पाट पहुँचाना, प्रहार करना, छुरा भौंकना, मार डालना अधिनाराम् विष्वाध द्विषन् स तनुनिष शि० १२।१०, विद्धमात्र - रघु० ५।५१, १।६०, १४।१०, मर्दि० ५।५२, १।६६, १।५।६९ 2 मृगाम् करना, छिद्र करना, आगार बीषणा 3 मरना, मरुडा करना, मरु - , 1 बीषणा, चोट पहुँचाना, घायल करना 2 मृगना घेना 3 बहना, जटित करना-दे० अनुविद्ध, व्यथ - , 1 करना, डालना, उछालना-महावीर० २।२२ रघु० १२।६६ 2 बीषणा हृदयम-दान् मे पक्ष्मलास्या कटाक्षैर्यद्वहनमविद्ध वीनमृग-निव च मा० १।२८ 3 मृगना, परिनिवृत्त करना आ - , 1 बीषणा 2 फेंकना डालना २० आविद्ध, परि - , व्यथ , बीषणा घायल करना ।

व्यथ (व्यथ् - , अच्) 1 बीषणा, टुकड़े टुकड़े करना, प्रहार करना जि० ७।२४ 2 आघात करना, घायल करना, प्रहार 3 छिद्र करना ।

व्यथकरणम् [वि + ग्रथि कृ - - - व्युट्] निप्र आघात या मार पर भौंकित करना (जैसा कि 'आपिकरण बहु-शक्ति' में, अर्थात् बहु बहुरीति मराम जहाँ पहला पर उपर पर स निराल निप्र कायक का ही, यदि तला का विग्रह बन्क तथा जाय उदा० चक्रवाणि कटमौलि आदि ।

व्यथ्य [व्यथ् ; व्यन्] बीःवारी के पीछे रा टीला, निशाणा, लक्ष्य ।

व्यथ्य [विद्ध अच्चा प्रा० म०] कुमार्ग, बुरी सड़क । व्यथनाथ [विगिट् अनुनाद प्रा० म०] प्रतिध्वनि, ऊँची गूँस ।

व्यथन [विगिट् अलगा यन् - प्रा० ब०] 1 पिशाच यज्ञ आदि एक प्रकार का अनिष्टकारिण प्राणी ।

व्यथ (चुरा० उभ० व्यपयति - ने) 1 फेंकना 2 घटाना, बरबाद करना, कम करना ।

व्यथकृष्ट (भू० क० कृ०) [वि + अच् + कृप् + क्त] एक ओर लीका हुआ, दूर किया हुआ हटाया हुआ ।

व्यथगत (भू० क० कृ०) [वि + अच् + गम् + क्त] 1 गया हुआ, विमोजित, अज्ञान में व्यथगत, भर्त्से २।१, मेष० ७६ 2 हटाया हुआ 3 गिराया हुआ ।

व्यथयन् [वि + अच् + गम् + अच्] विमर्जन, अज्ञपति ।

व्यथयन् (वि०) [विगता अपत्रया यन् प्र० ब०] निर्वृत्त, डीठ ।

व्यथयित् (भू० क० कृ०) [वि + अच् + यिच् + क्त] 1 नाभाङ्कित 2 बलवत्या गया, प्रकृत किया गया,

द्योतिन 3 बहाने वा छुल के रूप में प्रतिपादित किया गया ।

व्यथयेत् [वि + अच् + यिच् + यञ्] 1 निरूपण, संदेश, सूचना 2 नामकरण, नाम रचना 3 नाम, अभिधान, उपाधि एव व्यथयेनामात्र - उत्तर० ६।६, परिचार, वश, -अथ कोऽप्य व्यथयेत् - ग० ७, व्यथयेनामात्रि-यित् किञ्चिद्देते अनमिम च पातयितुम् ग० ५।२० 5 कौनि, यद्य, प्रसिद्धि 6 बाल, बहाना, दाँव, उपय 7 जाल्मायी, बालाकी ।

व्यथयेत् (भू०) [वि + अच् + यिच् + यञ्] छगिया घोषेबाध ।

व्यथरोषयम् [वि + अच् + छ् + णिच् + न्युट् ह्रस्व प ।] 1 उन्मूलन, उखाड़ना 2 अज्ञाना, हटाना, दूर करना 3 काट डालना, फाड़ डालना, नाह लेना बृकोप तन्मै स भूय मुरनिष्य प्रमहा मेघव्यापारोपादि रघु० ३।५६ ।

व्यथाकृतिः (स्त्री०) [वि + अच् + आ + कृ + कित्] 1 निष्कामन, दूरीकरण, निकाल देना 2 मुकृता ।

व्यथाश्च [वि + अच् + इ + घञ्] अन्त, लोप, समाप्ति, - कृ० ३।३३, रघु० ३।३७ ।

व्यथाश्रय [वि + अच् + आ + शि + अच्] 1 उलगाधि-कारिता 2 शरण लेना महारा जैना, भगोना करना भव० ३।१८ 3 विमोह होना यहाँ रामव्याश्रय राम० ।

व्यथेक्षा [वि + अच् + ईच् अच् + टाप्] 1 प्रत्यागा आशा 2 मित्रात्र विचार रघु० ८।२६ 3 पारम्परिक मन्त्रन्त्र, अर्थोन्वाश्रय 4 पारम्परिक मित्रात्र 5 व्यथहा 6 (आ० मे) दा नियमों का पारम्परिक प्रयोग ।

व्यथेत (भू० क० कृ०) [वि + अच् + इ + क्त] 1 विभूषण अलगाया हुआ 2 गया हुआ, विमर्जन, (प्राय समान में व्यथेतकम्यथ, व्यथेनभू, व्यथेनहृष आदि ।

व्यथोद (भू० क० कृ०) [वि + अच् + उच् + क्त] 1 निकाला गया, हटाया गया 2 विपरीत, विरोधी कि० ४।२२ 3 प्रकटीकृत, प्रदर्शित बलाया गया ।

व्यथोह [वि + अच् + ऊह् + घञ्] निकालना दूर करना, अलग रखना ।

व्यथि (श्री) चार [वि + अभि ; चर् + घञ्] 1 दूर धले जाना, विचलन, समामो हाह देना कुमार्ग का अनुकरण करना मन्त्रमयमनित व्यथिचारविच-जिनम् हि० ३।१६ भग० १।५६ 2 अतिक्रमण, उन्मथन मनु० १।०।४ 3 अशुद्धि, जर्म, पाप 4 विच्छेदना, अलग होने की माध्यम्य 5 अचर्चित, अनास्था, प्रति-पत्नी में अविश्राम, पतिव्रत या पत्नी-

कृत का अभाव, अविचारानु भूत स्त्री लोके प्राप्नोति
 वर्याणाम् - मनु० ५११६४, ब्राह्मणः कर्मणि पत्यो
 अविचारो भवा न वे - रघु० १५१८१, वाङ् ० १७११
 6 असगनि, अनियमितता, अपवाद 7. (तर्क० में)
 जाभासी हेतु, हेतुवासा, साध्य के न होने पर भी
 हेतु की विद्यमानता ।

अविचारिणी [अविचारिन् + ङीप्] अवती स्त्री,
 परतुरूपामिनी स्त्री ।

अविचारिन् (वि०) [अविचार + इनि] 1. भटका
 हुआ, मूला हुआ, पचभ्रष्ट, भ्रान्त, निश्चय भंग करने
 वाला 2 अनियमित, असंगत 3. अस्तव्य, मिथ्या - दे०
 अविचारिन् 4. अज्ञानी, जो बह्मचारी न हो,
 परस्त्रीवादी, (पु०—अविचारिण्यः सचारीभाव,
 सहकारी भाव (विप०) स्वाधी भाव) यद्यपि स्वाधी
 भाव की भांति यह सहकारी भाव रस का कीर्त
 आचारभूत रूप नहीं बनाते, फिर भी यह प्रबहमान
 रस के पोषक हैं, अतः प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप से यह
 रस की पुष्टि करते हैं । इनकी सख्या लैलीस या
 लौलीस है, इनकी मथना के विष्ट दे० काव्य० ४,
 कारिका ३१-३४, सा० दे० १६९, या रस० प्रथम
 आनन, तु० विभाव और स्वाधिभाव की ।

अव्यं । (पूरा० उच० अव्ययति—ते) 1. जाना, हिलना-
 जलना 2 अव्य करना, प्रदान करना, अर्पण करना ।
 1) (जा० उच० अव्ययति ते) जाना, हिलना-जलना ।
 11) (पूरा० उच० अव्ययति—ते, अव्ययति ते भी)
 1 फेंकना, डालना 2. हाँकना ।

अव्य (वि०) [वि + इ + अव्] परिवर्तनीय, परिणाम-
 शील, विचारवान्—तु० अव्यय, कः 1 (क) हानि,
 लोप, विनाश—आपाद्यते न अव्ययन्तरायं कश्चिन्म-
 हर्षेतिविधि तपस्तत—रघु० ५५, १२३३, (स)
 लागत समाना, त्याग—शाक्यव्येनापि मया विधेय
 —सा० ४१४, कु० ३१२३, क्वाट्ट, अहचन—रघु०
 १५३०, 3. सब, ह्रास्य, पराजय, अघपन 4. अर्चे,
 मूष्य, परिन्वय, विनिश्चय, प्रसोध, (विप०) ज्ञाय
 भावे दुःख व्येरे दुःख विधर्षा, कष्टसंभव - पच०
 १११३, आध्यात्मिक अव्य करताति 'अपनी आश में
 अधिक अव्य करता है'—रघु० ५११२, १५१३, मनु०
 ९१११ 5 अव्यय्य, पिबूकसर्षी । सम०—वर
 (वि०) मुकहस्त से लर्चे करने वाला,—वराहमिह
 (वि०) कृष्य, कवृत्, कर्मवीकृत्, शील (वि०)
 अतिव्ययी, किबूकसर्ष,—सूक्तिः (स्त्री०) हिसाब
 चुकाना ।

अव्ययन् [अव्य + त्यट्] 1. लर्चे करना 2. बर्बाद करना,
 विनष्ट करना ।

अव्ययि (पु० क० कृ०) [अव्य + क्यु] 1. अव्य किया

गया, लर्चे किया गया 2. बर्बाद किया गया,
 अयच्छन्त ।

अव्यं (वि०) [विगतोऽर्थो यस्मान्—शा० व०] 1. अनु-
 पयायी, निरर्थक, विफल, अलाभकर अव्यं यत्र
 कपीन्द्रसक्यमपि मे—उत्तर० ३१६५ 2. अर्थहीन,
 निरर्थक, बेकारी ।

अव्यलीक (वि०) [विविशेषेण अलनि - वि + अल् + क्रीकृन्]
 1 मिथ्या, झूठा 2 कुमिसल, अनियमित, अनुपद 3 जो
 मिथ्या न हो—मि० ५११,—कः 1 स्वच्छाचारो
 2 गात्र, लोभदा,—कम् कारो भी अग्रिय या अनुपद वस्तु,
 अग्रियता—इत्य गिा प्रियता इव मोक्ष्यलीका । अथवा
 मूलनयम्य नदा व्यलीका मि० ५११ 2 वेचैर्ना वा
 काव्य, पीडा, दाक या रज का कारण मूल्य इद-
 यात्रव्यादशब्दकीकर्मणु न य० ७१८८, क० ११
 १९, कु० ३१०५, रघु० ६१८७ 3 दाग, अगवरा,
 अतिक्रमण, अनुचित काय, मय्यर्थाकर्मधर्मा निवन्
 प्रस्थित मपदि कोपदेते—कि० ११६५, मि० ९१८८
 रत्न० ३१५ 4 जालमात्री, बाल, धावा पक्ष १।
 १२०, २४२ 5 मिथ्यापन 6 अत्यन्त बेगरीज ।

अव्यकलनम् [वि + अव् + कल् + त्यट्] 1 विद्यम
 2 (गणि० में) घटाना, एक गणि में से दूसरी गणि
 कम करना ।

अव्यकोशलम् [वि + अव् + कृत् + त्यट्] तु तू में में,
 आपस में गर्लान्तयोः ।

अव्यच्छिन्न (पु० क० कृ०) [वि अव् + छिद् + ङ]
 1 काट डाला गया, चीरा गया फटा गया 2 विद्यवा
 विभक्त 3 विविष्ट किया गया, विविष्ट 4 अतिन,
 विमलस्य—शरीर तावार्दटापेव्यवच्छिन्ना फटाबरा
 - काव्य० ११२ 5 अवच्छिन्न, बाधित ।

अव्यच्छेदः [वि + अव् + छिद् + षन्] 1 काट डालना
 फाट देना 2 विभाजन, विवाजन 3 बाग फाट करना
 4 विनिष्टाकरण विभेदक, विविष्ट ० वैश्य,
 वैशिष्ट्य 7 निर्धारण 8 अद्भुत वाग्ना, गौर छाटना
 9 किमी पुष्पक का अणु या अनुभाग ।

अव्यक्षा [वि + अल् + या + अङ् + टाप्] 1 अव्यक्त
 2 आद, परी, अट्टान 3 छिपाव, दुराज ।

अव्यक्तम् [वि + अव् + या + त्यट्] 1 हस्तलोक,
 अन्त लोप, विवास 2 अवराध, दृष्टि से मूल रचना
 - दृष्टि विमानव्यवधानमुक्ता पुन मद्रश्चातिवि
 मनिधने रघु० ३३४४ ८. छिपाव, अन्वयान
 5 परी, अव्यक्त 6 इकता, आवरण- कु० ३१६८
 7 अन्तराल, अवकाश 8. (व्या० में) किमी अक्षर या
 मात्रा का बीच में आ पडना ।

अव्यक्तव्य (वि०) (स्त्री०—यिका) [वि + अव् + या
 त्यट्] 1 बीच में आ पडने वाला, आवरण, देकने

बाला 2 अरुच करन बाला, छिपाने बाला 3 मध्यवर्ती ।

अवधि: [वि + अव + धा + क्ति] आचरण, हस्तक्षेप आदि, दे० अवधान ।

अवसाय: [वि + अव + धा + क्ति] 1 प्रयत्न, चेष्टा, ऊर्जा, उद्योग, धैर्य - करीतु नाम नीतिज्ञो अवसाय-वितस्तत हि० २।१४ 2 सकल, प्रस्ताव, निर्धारण - मन्दीचकार मरणव्यवसायवृद्धिम् - कु० ४।४५, 'अरुने के सकल का विचार' भग० २।४१, १०।३६ 3 कृत्य, कर्म, क्रिया - अवसाय प्रतिपादयिष्युः रघु० ८।६५ 4 व्यापार, नौकरी, वाणिज्य 5 आचरण, व्यवहार 6 उपाय, कृत्ययुक्ति, कुशल 7 शोभी बचाना 8 विष्णु ।

अवसायिन् (वि०) [अवसाय + इनि] 1 ऊर्जस्वी, उद्योगी, वाणिज्यी 2 दृढ़ मस्ती, धैर्यवान् ।

अवसिन् (मू० क० क०) [वि + अव + सि + क्त] 1 प्रयास किया गया कोशिश की गई, - ग० ६।९ 2 जिम्मेवारी ली गई, 3 सकल्प किया गया, निर्धारित, निश्चित 4 प्रकल्पित, आधोक्षिक 5 प्रयत्नशील, दृढ़ निश्चयी 6 धयवान्, ऊर्जस्वी 7 उगा गया, छला गया, - तन्म् निश्चयन, निर्धारण ।

अवस्था [वि + अव + स्था + क्त] 1 मगजन, क्रमस्थापन, निरादर - यथा वर्णधम अवस्था 2 स्थिरता, निश्चिन्ता, रघु० ७।५६ 3 दुःखता, दुःख आधार - आजह्नुस्तुत्तच्छन्णी पृथिव्या स्थानरिवादधि-यमवस्थाम् - कु० १।३३ 4 सबद्ध स्थिति निश्चित नियम, कानून, अधिविध आदेश, निर्णय, कानूनी सहाह, कानून की स्थिति घोषणा (विशेष कर सदस्य मन्त्रों पर या जहाँ विरोधी पाठों का समजन मन्त्रा हो 6 सहमति, सविदा 7 अवस्था, दशा ।

अवस्थानम्, अवस्थिति (स्त्री०) [वि + अव + स्था + क्तृट्, क्लिन् वा] 1 क्रमस्थापन, समाधान, निर्धारण, फैसला 2 नियम, विधान, निश्चय 3 स्थिरता अवन्ता : दुःखता, धैर्य 5 विधाय ।

अवस्थापक (वि०) (स्त्री० - पिका) [वि + अव + स्था + क्ति] 1 क्रमस्थापन करने वाला, उपयुक्त कर्म में रखने वाला, समजन करने वाला, स्थिर करने वाला, व्यवस्था करने वाला, फैसला करने वाला 2 वह जो कानूनी सहाह देता है 3 प्रबन्धक (सर्वमान प्रबन्धी) ।

अवस्थापकम् [वि + अव + स्था + क्ति + क्तृट्, पुक्] 1 क्रमस्थापन, उपयुक्त समजन 2 स्थिर करना, निर्धारण, निश्चय करना, फैसला करना ।

अवस्थापित (मू० क० क०) [वि + अव + स्था + क्ति]

स्त, पुक्] कथबद्ध, विविधन आदि, 'वाक् - कु० ५।६८ ।

अवस्थित (मू० क० क०) [वि + अव + स्था + क्त] 1 क्रम में रक्ता हुआ, समजन, क्रमवियमल 2 निश्चित, स्थिर - कि अवस्थितविषया क्षात्रधर्मा - उभ० ० ५ 3 छेला किया गया, निर्धारित, कानून द्वारा घोषित 4 एक ओर रक्ता हुआ, विद्युत् 5 निकाला हुआ (रस आदि) 6 आधारित, अवलम्बित । मम० - विभाषा निश्चित इच्छा ।

अवस्थिति (वि०) [अवस्था + क्त] 1 अवचरण, दर्ताव, कर्म 2 मामला, व्यवसाय, काम 3 पेशा, पधा 4 लेनदेन, काम-काज 5 वाणिज्य, तिजागत, बीदा-गरी 6 रुपये पैसों का लेनदेन मूदसारी 7 प्रचलन, प्रथा हस्तुः, रिवाज 8 सवन्ध, मेलजोल पथ० १।७९ 9 न्यायालयों या अदालतों कार्यविधि, किसी अधिभाग या मामले की छान-बीन, न्याय प्रशासन, - अवहारग्लनाह्णपति, जल लक्षणा अवहारग्लवा पुच्छति - मूच्छ० ९ 10 कानूनी सहाह, अधिभाग, नादिस, कानूनी मुकदमा, मुकदमेवाजी, अवहारोद्य वाददत्तमभ्यस्तते, इति लिख्यता अवहारग्लव प्रथम पाद, केन सह मम अवहार, मूच्छ० ९, रघु० १७। ३९ 11 कानूनी कार्यविधि का शीर्षक, मुकदमेवाजी का अवहार । मम० - अह्नाम् दीवानी और फौजदारी कानूनों का समूह, अधिगस्त (वि०) अधिर्गजित, रोगारोपित, - आस्तम् न्यायाधिकरण, न्यायालय - रघु० ८।१८, ज 1 जो व्यवसाय को समझता है 2 बन्धक युवा, बालिन, 3 जो न्यायालयीय कार्य-विधि में परिचित हो, - तन्म् आचरणम्, मा० ४, - ब्रह्मम् आच, न्यायिक जाच-पट्टाल, पथम् अवहार विषय, - वार 1 कानूनी कार्यवाही की वार अवस्थाओं में से कोई सी एक 2 बोधी अवस्था प्रपत्ति निर्णयपाद प्रिमम् अवस्था या फैसला बतलाया गया है, मामला 1 कानूनी प्रक्रिया 2 न्यायप्रशासन या न्यायालयों के निर्माण में सहाय्य रखने वाला कोई भी कर्म या विषय, (इसके तीस शीर्षक गिनाये गये हैं), - विधि: कानून का नियम, विधिप्रसंहिता, विधयः (इसी प्रकार - पथम् - मार्ग, - स्थापनम्) कानूनी कार्य-विधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात विषय कानूनी कार्यवाही करती चाहिए, बादयोग्य विषय (यह विषय अदालत है, इनके नामों की जानकारी के लिए दे० मनु० ८।४-७) ।

अवहार (मू०) [वि + अव + ह + क्तृट्] 1 किसी व्यवसाय का प्रबन्धकर्ता 2 नासिद्ध करने वाला, अधिर्गजित, भारी या मुद्दाई 3 न्यायाधीश 4 साथी, मनी ।

अवहार [वि + अव + ह + क्तृट्] 1 आचरण, दर्ताव, कर्म 2 मामला, व्यवसाय, काम 3 पेशा, पधा 4 लेनदेन, काम-काज 5 वाणिज्य, तिजागत, बीदा-गरी 6 रुपये पैसों का लेनदेन मूदसारी 7 प्रचलन, प्रथा हस्तुः, रिवाज 8 सवन्ध, मेलजोल पथ० १।७९ 9 न्यायालयों या अदालतों कार्यविधि, किसी अधिभाग या मामले की छान-बीन, न्याय प्रशासन, - अवहारग्लनाह्णपति, जल लक्षणा अवहारग्लवा पुच्छति - मूच्छ० ९ 10 कानूनी सहाह, अधिभाग, नादिस, कानूनी मुकदमा, मुकदमेवाजी, अवहारोद्य वाददत्तमभ्यस्तते, इति लिख्यता अवहारग्लव प्रथम पाद, केन सह मम अवहार, मूच्छ० ९, रघु० १७। ३९ 11 कानूनी कार्यविधि का शीर्षक, मुकदमेवाजी का अवहार । मम० - अह्नाम् दीवानी और फौजदारी कानूनों का समूह, अधिगस्त (वि०) अधिर्गजित, रोगारोपित, - आस्तम् न्यायाधिकरण, न्यायालय - रघु० ८।१८, ज 1 जो व्यवसाय को समझता है 2 बन्धक युवा, बालिन, 3 जो न्यायालयीय कार्य-विधि में परिचित हो, - तन्म् आचरणम्, मा० ४, - ब्रह्मम् आच, न्यायिक जाच-पट्टाल, पथम् अवहार विषय, - वार 1 कानूनी कार्यवाही की वार अवस्थाओं में से कोई सी एक 2 बोधी अवस्था प्रपत्ति निर्णयपाद प्रिमम् अवस्था या फैसला बतलाया गया है, मामला 1 कानूनी प्रक्रिया 2 न्यायप्रशासन या न्यायालयों के निर्माण में सहाय्य रखने वाला कोई भी कर्म या विषय, (इसके तीस शीर्षक गिनाये गये हैं), - विधि: कानून का नियम, विधिप्रसंहिता, विधयः (इसी प्रकार - पथम् - मार्ग, - स्थापनम्) कानूनी कार्य-विधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात विषय कानूनी कार्यवाही करती चाहिए, बादयोग्य विषय (यह विषय अदालत है, इनके नामों की जानकारी के लिए दे० मनु० ८।४-७) ।

अवधारक [वि + अव + हृ + ध्वल्] विक्रान्त, व्यापारी, सौशरार ।

अवधारिक (वि०) (स्त्री०—का,—की) [अवधार + क्तृ] 1 अवसाय सम्बन्धी 2 अवसाय में लगा हुआ, अन्त्यासप्राप्त 3 व्यायात्मसम्बन्धी, कानूनी 4 मुक्तमेवाह 5 प्रचलित, मूढ या प्रधानमार ।

अवधारिका [वि + अव + हृ + ध्वल् + टाप्, इत्त्वम्] 1 रिक्राज, प्रथा 2 आदृ 3 इगुदी का वक्ष ।

अवधारित् (वि०) [अवधार + इति] 1 अवसायो कर्मयोग्य, अन्त्यासप्राप्त 2 अन्याय में अन्त्या, मुक्तमेवाह 3 चित्रप्रचालित, प्रधानमार ।

अवहित (भू० क० कृ०) [वि + अव + धा + क्त] 1 अद्य अन्त्या रेक्या प्रथा 2 किसी अन्त्याज्ञान वस्तु के कान्या विपक्ष किया गया वि० ३१८५ 3 बाधित रोकता गया, अरुद्ध अरुचने में यत्न 4 दण्डित म अन्त्या क्षियाया हुआ, मुक्त - जितका निरन्तर सम्बन्ध न हा 6 क्षिया गया मन्त्र 7 भा हुआ जोहा हुआ 8 भाग बढ़ा हुआ, भागे निकला हुआ 9 विपक्षी, विरोधी ।

अवहित (स्त्री०) [वि + अव + हृ + क्तिन्] 1 अन्त्या, प्रक्रिया 2 कर्म, सम्पादन ।

अवधाय [वि + अव + अ + क्त] 1 विधायन, विरलेपण (अवधायी का) पृथक्करण 2 विघटन 3 आचरण विघटन 4 हन्तक्षय, अन्त्याज अट्टकुवाहनसम्बन्धा-उपि 5 अउचन क्वाउट 6 मेषु, सम्भाय 7 पवित्रता, —धम् दीप्ति, आभा ।

अवधायिन् (पु०) [अवधाय + इति] 1 बिलामी, स्वेच्छा-चारी 2 कायादीषक, वाजीकरण ।

अवधेत (भू० क० कृ०) [वि + अव + ट + क्त] 1 विधा-कृत, विनिवृत्त 2 भिन्न ।

अवधि (स्त्री०) [वि + अ + धिन्] 1 वैयक्तिकता, एकाकीपन 2 विवरणशील कौशल 3 (बेदान्त० में) गमयित को उनके पृथक्-पृथक् अवधयो के रूप में देखना, एक अक्ष (विष० मर्मणि) ।

अवधत् [वि + अ + ध् + क्तृ] 1 फेंक देना, हूर कर देना, विधायन, विभाजन 3 उल्लंघन, अव्यक्तमान 4 जानि विनाश, पराजय, पतन, रोग, दुर्बलपक्ष अन्त्या-व्यसनम्—पक्ष० ३, स्वबलव्यसनं वि० १३१५ 5 (क) विपत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, अनिष्ट, सकट, अभाग्य—अज्ञातमर्त्यव्यसना महर्न कुणोपकारेव रतिर्बहुव कृ० ३७३, ४३०, १५०, १५५ (म) आ-पन्ता, आवश्यकता—स मुहूद् व्यसने य स्वात्—पक्ष० १३०७ 'आवश्यकता पटने पर जो मित रहे वही ५० है' 6 (मूर्ध् आदि का) अन्त्या हाना तेजोद-गय वृषणद् अन्त्यातेत्याभ्याम् श० ४११, (यहाँ

'व्यसन' का अर्थ 'पतन' भी है) 7 दुर्धसन, दूरी लन, बुरा जाहल मिथ्यैव व्यसन तदति मृषामासिद्दु किनाः पुन य० ६५६, न्यु० १८१४, यार्ज० १३०५ (इस प्रकार के दुर्धसने दन वतये मथे हैं मनु० ३१४७—८) सनातनीलक्ष्मणेपु सन्ध - मुभा० 8 मलयना, मुट जाना, परिश्रमपूर्वक आर्माकन शियाया व्यसन भर्त० २१६०-३ 9 बहुत ज्यादा आरं टाना 10 नुन, पा 11 दण्ड 12 अव्योथता, अन्त्या 13 निरपल प्रयत्न 14 हवा, वायु - नम० अतिभार भारी अन्त्ये या सकट १५० १६६८ आन्ध्र, —आन, पीडित (वि०) मरुटम, दुग म फला हुआ ।

अवधित् (वि०) [अवध + इति] 1 किसी दुर्धसन म दन्त दुर्धश्चि 2 अभाग्य भाग्यहीन 3 किसी काप में अन्त्या मलय (प्राय ममास में) ।

अवधु (वि०) [विनाश अवध प्राणा वध प्रा० व + निश्चिन् माक ५०३३] ।

अव्यस (भू० क० कृ०) [वि + अ + क्त] 1 हाली हुआ फेला हुआ उछाला हुआ मा० ५१२३ 2 निर-विणर किया हुआ विनेग हुआ उलगा ५१० 3 इटाया हुआ डूर फेला हुआ ५ विपुल, विवक्त -उतगया हुआ विक्कम० ५०३ 5 पृथक् रूप में विकारित, एक एक टुक्रे पक्ष—कि पुनव्यसने—उत्त० ५ तरिफ कि व्यन्मर्षा विनाशने—कु० ५१० 6 मन्त्र, मन्त्रमर्षित (मन्त्र आदि) 7 बहुवच 8 इटाया गया, निचला गया 9 विक्षुब्ध, कण्टमय अव्यवस्थित 10 कमाजित, प्रव्यक्त, विरुध्धलित 11 उलटाया हुआ उल-मूलत किया हुआ 12 विन-वांम (अनुपान आदि) ।

अव्यस्यार (प०) श्रापी के गृहधर्मो स म का निरालय ।

अव्यकरणम् [अव्यक्रान्ते ध्युनाशने शब्दा येन—वि + आ + कृ + क्तृ] 1 विघ्न, विक्लेशण 2 व्याकरण सम्बन्धी शब्द-पृथक्करण-शक्ति, छ वेदायो में से एक, व्याकरण सिंह व्याकरणस्य कर्तुररररररररररर श्रियात् परिणने—पक्ष० ०३३३ ।

अव्यकारः [वि + आ + कृ + क्तृ] 1 अन्त्याकरण, रूप परिवर्तन 2 विकल्पता ।

अव्यकीर्ण (भू० क० कृ०) [वि + आ + कृ + क्त] 1 विनेग हुआ उचर उधर फेला हुआ 2 अन्त्याकरण किया हुआ ।

अव्यकुल (वि०) [विरोधण आकुल—श्रा० म०] 1 विरुध्ध विभिन्न, खरागा हुआ, किस्मिअ विरुध्ध, धार-अ्याकुल, बाण 2 आतंकित, उद्विग्न, प्रथमीत वृष्टिआकुलोकुल गीत० ४ 3 भरापूर, पिग हुआ 4 सलज, व्यल आलीके से निपतति पुरा मा

बलिब्याकुला वा मेघ० ८५ 5 दणकने बाला, इषर
उषर त्रिजुल करने बाला -उत्तर० ३१४३ ।
व्याकुलित (वि०) [वि + आ + कुल + क्त] विजुम्भ,
 हतबुद्धि, भवगाया हुआ, उद्दिन खादि ।
व्याकृति (स्त्री०) [वि + कृ + क्त] 1 जाल-
 मारी, छपपेस, घोषा ।
व्याकृत (सं० क० क०) [वि + कृ + क्त]
 1 विनिर्णय, विवृणन 2 व्याख्यान, स्पष्ट किया गया
 3 विकृत, व्याकृत, विगाडा हुआ, विकल्पित ।
व्याकृति (स्त्री०) [वि + कृ + क्त] 1 विषय
 2 विदलपण, व्याख्या 3 रूप परिवर्तन, विचार
 4 व्याकरण ।
व्याकरोत (घ) (वि०) [वि + आ + कृ + क्त]
 1 कुलाया हुआ, यक्षुम्भित, पुणित, मुकुलित - व्या-
 कायकोकनरता दधते नमिन् - शि० ४१६२ 2 विकल्पित
 - अर्थ० ३११७ ।
व्यासेय [वि + आ + क्षि + घञ्] 1 इषर उषर
 उल्लानता 2 अवरोध, रुकावट 3 बिलम्ब - अख्या-
 लोपो अर्थव्यन्ता कार्यमिदृति अक्षयम् - २५०
 १०१६ । उल्लानत ।
व्याख्या [वि + आ + ख्या - अच् + टाप्] 1 व्याख्यान
 वर्णन 2 स्पष्टीकरण, विवृति, टीका भाष्य ।
व्याख्यात [वि + आ + ख्या + क्त] 1 कथित, कथित
 2 स्पष्टीकृत विवृत, टीकायुक्त ।
व्याख्यातृ (पुं०) [वि + आ + ख्या + क्त] व्याख्याकार,
 भाष्यकार ।
व्याख्यातृ [वि + आ + ख्या + क्त] 1 समूहन, वर्णन
 2 भाष्य, वक्तृता 3 स्पष्टीकरण, विवृति, अर्थकरण,
 टीका ।
व्याघटनम् [वि + आ + घट् + क्त] 1 बिलोना, मथना
 2 ग्राहना, धर्षय ।
व्याघात [वि + आ + हृ + क्त] 1 ग्राहना 2 ध्वस्त,
 प्रहार 3 विघ्न, रुकावट 4 बध्न विरोध 5 एक
 अक्षर जिसमें पञ्चम विराधो फल एक ही कारण
 में उभयत्र दिखाये जाते हैं, पञ्चम इसकी परिभाषा
 निम्नांकित करना है नृष्या माथिन केनाप्यपरेण
 नन्द्यथा । तर्षे यथिधीयेन म ग्राहान इति स्मृत ॥
 काव्य० १०, उदा० दे० विद्व० ११२, या विकृपास
 के नीचे दिया गया उद्धरण ।
व्याघ्र [व्याधिप्रति-वि + आ + घ्रा + क्त] 1 दाघ,
 बीना 2 (मगम के अन्त में) सञ्चालन, प्रसूय, सूक्ष्म
 असा कि नरव्याघ्र या पुरुषव्याघ्र में 3 लालरुप
 का एरुड का पीषा, श्वी मादा बीना व्याघ्रीव
 तिष्ठति जग परितरन्वीयती अर्थ० ३११०९ । सम०
 मत्तः शातक पक्षी, -आस्यः शिलाव, मत्त, मत्त

1 बाघ का पत्नी 2 एक प्रकार का मन्त्रद्वय
 3 यरीच, नखलन, -नायक, गौरव ।
व्याधः [व्यधति वधाव्यन्वहारयत् अपत्यन्वति अनेन - वि
 + अच् + घञ्] 1 बीमा, बाल, छन्द, अलगाती
 2 कला कौशल प्रख्याज मनाहर वसु, पा० १११८,
 स्वाभाविक रूप से प्रिय 3 बहाना, अपवेष, आभाम
 ध्यानव्याजमपेय १ नाग० १११, २५० ४ २५, ५८,
 १०१६ ११६६ ५ वृत्ति, बाल, कृत्यकित व्या-
 नाथसन्वितिनमेकलाति - २५० १३१८० । सम० - उल्लि.
 (स्त्री०) एक अन्तर्द्वार जिसमें किमो कारण ६
 स्पष्ट फल वा जानबूझ कर कोई दूसरा कारण बताया
 जाता है, जहाँ वास्तविक भावना का कोई दूसरा
 कारण बताकर छिपा लिया जाता है दे० काव्य०
 १० 'व्याघ्रीकित' के नीचे 2 वरोध म कुल, व्ययोजित,
 - निम्ना उल्ल वा काट का की गई निन्दा, सुप्त
 (वि०) झुठमड साया हुआ, स्तुति (स्त्री०) अर्थो
 के 'आदरितो' (1...) में मिलना झुलना एक
 अन्तर्द्वार जिसमें व्यक्त की गई प्रथमा में निन्दा
 तथा प्रत्यक्ष निन्दा से स्तुति उपरहित दर्शा है - व्यात्र-
 म्नुतिर्मुने निन्दा स्तुतिषो हरिग्यया - काव्य० १०
व्याध [वि + आ + अह + अच्] 1 मास भक्षा बालव,
 अम कि बीना, शेर आदि 2 बदमाज, मुठडा 3 मीर
 4 इन्द्र तु० 'व्याध' ।
व्याधि (पुं०) एक प्रसिद्ध वैद्यकरण ।
व्यात (सं० क० क०) [वि + आ + दा + क्त] चिन्त,
 फैलाया गया, फैलाया गया ।
व्यातपुक्षी [वि + आ + अति + उञ्] गिच् + अच् + ङोप्]
 जलविहार, जलकोटा ।
व्याह्वानम् [वि + आ + दा + अच्] गानना, उद्घाटन ।
व्याह्वितः [विद्योपेण आदिशति स्वे स्वे कर्मणि निवाजयति
 - वि + आ + दिश् + क्त] विष्णु वा विमोक्षण ।
व्याध [व्यध् + घञ्] 1 निकारी, बहोदिया (जाति से या
 पेशे के कारण) 2 दुष्ट मनुष्य, प्रथम पुत्रण । सम०
 भोतः हरिण ।
व्याधावः, व्याधावः [व्याध् + अच् + ङिच् + अच्] इन्द्र
 का वध ।
व्याधि [वि + आ + घा + क्त] 1 बीमार, रोग, रुका,
 अन्वखान (प्रत्य धारोक्त - वि०) आधि अधान्
 मानसिक रोग दुःख, चिन्ता आदि - निगुलनबीरजेनम
 सततव्याधिम्नोतिरन्तु ते सि० १६१११ (यहाँ
 'व्याधि' का अर्थ 'आधि' में सूक्त' भी है) तु० आधि
 2 काडः सम० कर (वि०) अस्वास्थ्यकर, -द्वस्त
 (वि०) रत्नकान्त, बीमार ।
व्याधित (वि०) [व्याधि मन्त्रातोऽप्य इन्च्] रोगा-
 कान्त, बीमार ।

व्यापृत (पू० क० क०) [वि + आ + पू + क्त] झरोडा हुआ, कोपता हुआ, धरधरता हुआ ।

व्यापित [व्याप्ति सर्वस्रोत व्यापारति वि + आ + अन् + अप्] स्रोतस्व पाँच श्रावों में से एक जो समस्त शरीर में व्याप्त है ।

व्यापस्य [वि + आ + न् + अत्] मेषुन का एक विशेष प्रकार, रनिकथ ।

व्यापक (वि०) (स्त्री०-पिका) [विशेषण आप्ति वि + आप + क्त] १ फेला हुआ, बहुवाही, प्रसारी, विलुप्त रूप में फेलेने वाला, सर्वनाम्नो-नियन्पूर्व-स्यम्नाम्न व्यापका मद्रिमा हरे-कु० ६।३१ 2 विद्यासत महत्ता, -क नितान महत्ता या अन्तहित विमोच, कम् नितान महत्ता या अन्तहित गुण ।

व्यापति (स्त्री०) [वि + आ + प् + क्त] 1 बर्बादी, मकट, दुर्भाग्य-मनु० ६।२० 2 स्थानापन्नता 3 मनु० रपु० १२।५६ ।

व्याप्य (स्त्री०) [वि + आ + प् + क्त] 1 सङ्कट, दुर्भाग्य, भर्तु० ३।१०५ 2 राग 3 विष्टुङ्गलता, विलिखित 4 मनु०, निघण्टु ।

व्यापनम् [वि + आ + प् + ल्युट्] फेला, पैठना, सर्वत्र फेला जाना ।

व्यापन (पू० क० क०) [वि + आ + प् + क्त] 1 दुर्भाग्य-प्रसत, बर्बाद 2 विकल, उलट गया (सर्वसाव हो गया) 3 चाट लगा हुआ, धायल 4 मृत, उपरल, मरा हुआ जैसा कि 'अव्यापन' में 5 विलिख, विकृत (स्थानापन्न, परिश्रित) ।

व्यापारः, व्यापारकम् [वि + आ + प् + णिच् + घञ्, ल्युट् वा] 1 हत्या, वध 2 बर्बादी, विनाश 3 दुर्भाग्य, देव ।

व्यापारित (पू० क० क०) [वि + आ + प् + णिच् + क्त] 1 मध किया हुआ, कतल किया हुआ, बिनष्ट किया हुआ 2 बर्बाद, पायल, चोटिल ।

व्यापारः [वि + आ + पू + घञ्] 1 नियोजन, संलग्नता, व्यवसाय, घन्ना तत प्रविधान यथोक्तव्यापारा लङ्कृतता श० १, कु० २।५४ 2 प्रयोग, काम रपु० २।४ 3 पेशा, वाणिज्य, व्यवसाय, कार्य यथा 'व्यव्यापार' में 4 कर्म, क्रिया, निष्पादन 5 कार्यपद्धति, प्रक्रिया, क्रय, प्रभाव-प्रस) शपार-रोषि मन्त्रस्य निषेधित्वम्-स० १।२७, सत्यायुधेने प्रनान् विमन्त्रशपारमारमन्त्रि नायकानाम् कु० ७।१२, विक्रम० ३।१७ 6 ऊपर गन्ना जाने वाला, -मालवि० ४, १४ 7 उद्योग, प्रयत्न --आर्याय-रुक्मी तत्र व्यापार कर्ममर्हति कु० ६।३२, 'उक्त दिशा में कार्य करने के लिए प्रयत्न होगी' (व्यापारं ह 1 भाग लेना 2 प्रभाव डालना 3 हाथ डालना

-जैसा कि 'व्यव्यापारेषु व्यापार यो वरः कर्तुमिच्छति पञ्च० १।२१) ।

व्यापारित (पू० क० क०) [वि + आ + पू + णिच् + क्त] 1 काम पर लगाना हुआ, स्थापित, निर्माजित, नियुक्त रपु० २।३८ 2 रक्का हुआ, निश्चित, जमाया हुआ वेणी० ३।१९ ।

व्यापारिन् (पु०) [व्यापार + इनि] 1 बिभंता, व्यापार करने वाला 2 व्यवसायी ।

व्यापिन् (वि०) [वि + आप् + णिनि] 1 व्याप्य होने वाला, अपूर्ण करने वाला, अधिकार करने वाला (समान के अन्न में) 2 सर्वव्यापक, सहविलुप्त, निगाना सहपर्ता 3 आवरक (पु०) विष्णु का विशेषण ।

व्यापित (पू० क० क०) [वि + आप् + क्त] 1 काम में लगा हुआ, व्यस्त, निर्माजित (अधि० के साथ) 2 स्थापित, निश्चर किया हुआ-(पु०) कर्मकारी मन्त्री ।

व्यापुतिः (स्त्री०) [व्याप् + क्तित्] 1 काम में लगाना व्यस्त करना, व्यवसाय स्वस्वव्यापितमन्मानसतया भाषि० १।५७ 2 प्रकाय, कर्म 3 चेष्टा 4 पेशा, व्यवसाय दे० 'व्यापार' ।

व्याप्त (पू० क० क०) [वि + आप् + क्त] 1 पारो ओर फेला हुआ, पैठा हुआ, व्यापक, विस्तार किया हुआ, आच्छादित, बका हुआ 2 व्यापक, सर्वत्र फेला हुआ 3 भरा हुआ, पूर्ण 4 चारों ओर से झरोटा हुआ, घिरा हुआ 5 स्थापित, जमाया हुआ 6 प्राप्त किया हुआ, अधिकृत 7 समसा हुआ, सम्मिलित 8 नितान सप्तक (तर्क० में) 9 प्रसिद्ध, विख्यात 10 फुलागा हुआ, बिछाया हुआ ।

व्यापितः (स्त्री०) [वि + आप् + क्तित्] 1 प्रसार, फेलाव 2 (तर्क० में) विषयतः फेलाव, नितान सहवर्तितता, किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप में पिका होना-यथ-यथ प्रवृत्तयः स्यान्निर्दिष्ट साहचर्यं नियमो व्यापितः-तर्क० 3 सार्वजनिक नियम, विषयव्यापकता 4 पूर्णता 5 शक्ति । सम० ४४ सार्वजनिक सहवर्तितता का बोध, अन्वय सार्वजनिक सहवर्तितता की जानकारी ।

व्याप्य (वि०) [वि + आप् + क्त] व्यापकता के योग्य होने वाले के योग्य, व्यक्त (तर्क० में) अनुमान प्रक्रिया का विज्ञान (- हेतु, साधन) ।

व्याप्यत्वम् [व्याप्य + ल्व] निरपता । सम० अतिदि (स्त्री०) अचरी अटकक, अपूर्ण अनुमान ।

व्याप्युक्ती - व्याप्युक्ती (रे०) ।

व्याप्यः-व्याप्यम् [वि + आ + अम् + घञ्, ल्युट् वा] एक भाग विशेष, जब दोनों हाथ पूर्ण रूप से दोनों ओर

कैलाय हो ता हावा को अमुनिया के कोरो के बीच को हूरी ।

व्याधिष (वि०) [वि+आ+धिष+अच्] मिला हुआ मि+अ, गडूड-अडूड किया हुआ ।

व्याधोह [वि+आ+धुह+अच्] 1 प्रयोगात् 2 व्याकुलता, परेशानी, बेचैनी कमभ्यासममृजित त्रिभिर्भिन् व्याधातकाहाह यौ० १०, काव्या० ३।१०१ ।

व्याधत् [वि+आ+धत्+अच्] 1 लम्बा, विम्बन युवा युग्मध्यायनबाहुरमन्-रथ० ३।३० 2 फुलाया हुआ, खुला हुआ 3 जिसने व्याधाय किया है, अनुशिष्ट 4 व्यसन, काम में लगा हुआ, अक्रिय 5 कठोर, दुः 6 मजबूत, महल आयाधिक 7 नाकाबन्ध, शक्तिशाली 8 महारा कु० ५।५४ । व्याधत्तम् [व्याधत्+त्त्वं] पुट्टी का विकास ता० २।४ ।

व्याधाम [वि+आ+यम्+अच्] 1 विन्तार करना, कैलाय 2 कमरन, शारीरिक व्याधायो का अन्धत्त - वि० २।१४ 3 यकान, श्रम । प्रवल्, वेष्टा 5 बाण्डू, मयप 6 पूरी की माप विशेष (: व्याम दे०) ।

व्याधायिक (वि०) (स्त्री० की) [व्याधाय+ठक्] मन्त्रविद्या-विषयक, शारीरिक कमरन यकचो ।

व्याधोष [वि+आ+धुष+अच्] नाट्यसाहित्य में एक प्रकार का मुक्ताकी नाटक, मा० २० ५३४ पर इसकी निम्न परिभाषा दी हुई है—व्याधोषनिवृत्तौ व्याधोष स्वन्मन्त्रोन्नयनयत् । शीनो मंत्रविमयोभ्या नरैर्बहु-मिगमिथिन । एकाकण्ठ भवेदम्पीनिमित्तममरोदय । कीशिकीवृन्निगहिन । प्रव्यामन्मन्त्र नायक । राजपिरथ दिव्या वा भवेद्वीरोद्धतथच ॥ हास्यपृष्ठमारचान्तेभ्य इतो आह्वयितो रत्ना ॥

व्याल (वि०) [वि+आ+अल्+अच्] 1 दुष्ट, दुर्बलनी - ० ताडिपा यन्त्रिकमन्त्रिण्य शि० १।२८, यता ग्गालमिवापगृह कि० १।३।५ 2 बुरा, पाण्डु 3 ऊँच भीषण, बर्बर कि० १।३।४, लः 1 लुनी हाथी व्यालं काक्युत्पातनमुनिरनी रोदधु समुग्ममते भ्रुं० २।६ 2 शिकार का जामवर 3 मीप-हिं० ३।२९ न. बाघ, मा० ३।५ 5. लीला 6 राजा 7 ठग, बदमाश 8 विष्णु । मम० बज्जु, - मकः एक प्रकार की बूटी, प्राहू, प्राहिन् (पु०) सपेरा, - मुराः 1 जदकी जामवर 2 शिकारी चीला, कयः मित्र का विशेषण ।

व्यालकः [व्याल+कन्] दुष्ट या लुनी हाथी ।

व्यालम्ब [विशेषण आत्मन्ते वि+आ+लम्ब+अच्] एक प्रकार का एरु का पीघा ।

व्याल्लोक (वि०) [वि+आ+ल्लोक्] अच्, उपत्यक ।

1 कापने वाला, बरबराने वाला 2 अन्वयविधत, अन्व-व्यन व्याल्लोक केजशतः यौ० ११ ।

व्याल्लोकम्बम् [वि+आ+ल्लोक्+अच्+ल्लोक्] घटाना । व्याल्लोकी, व्याल्लोकी [वि+आ+ल्लोक्+अच्+ल्लोक्] +अच्+अच्+अच्+अच्] परस्पर दुर्बन्धन कहना, आपस की शान्तिशोच ।

व्याल्लोकाः [वि+आ+ल्लोक्+अच्] 1 घेरना, लपेटना 2 फलित, धमक, बरकर माना 3 फटी हुई अर्थात् श्रापे को निकली हुई नाचि ।

व्याल्लोकं (वि०) (स्त्री०- लिका) [वि+आ+ल्लोक्+अच्+ल्लोक्] 1. लपेटने वाला, घेरना डालने वाला 2 निकालने वाला, अपभ्रंजन करने वाला, विघ्नक करने वाला 3 बूटने वाला 4 मोंह माने वाला ।

व्याल्लोकम्बम् [वि+आ+ल्लोक्+अच्] 1 घेरना, लपेटना 2 बूटना, बूटना चक्करलाना कि० ५।३० 3 रस्ती बादि का बोल लपेट, पट्टी ।

व्याल्लोलित (पु० क० क०) [वि+आ+ल्लोक्+अच्] लकीया हुआ, इतित, विह्वल्य ।

व्याल्लोहारिक (वि०) (स्त्री०-की) [व्याल्लोहार+ठक्] 1 अन्वयय लवची, प्रयोगात्पक 2 कान्ती, वेष 3 प्रचायत, प्रचलित 4 प्रमात्यक-नु० प्रतिभासिक-क पराचर्चदाता, यची ।

व्याल्लोहारी [वि+आ+ल्लोहार+अच्] विच्+अच्+अच्+अच्] पारस्परिक बन्ध, केन देन ।

व्याल्लोहारी [वि+आ+ल्लोहार+अच्+अच्+अच्+अच्] पारस्परिक अन्धता, एक दूसरे की हसी उठाना ।

व्याल्लोसिः (स्त्री०) [वि+आ+ल्लोक्+अच्] 1 आचरण, परदा हासना 2 विकास देना, विकासमान ।

व्याल्लुत्त (पु० क० क०) [वि+आ+ल्लोक्+अच्] 1 हटाया हुआ, काणित किया हुआ—व्याल्लुत्ता वापर-स्वेभ्यः बृती तत्करता रिचता-रथ० १।११, विक्रम० १।२ विष्णुन किया गया, बलगा हटाया हुआ 3 विकास हुआ, एक ओर रफता हुआ 4 चक्कर लाया हुआ, मुड़ा हुआ 5 खेपेटा हुआ, चिरा हुआ 6 रुका हुआ, उपरत—कु० २।६५ 7 कबकर टुकड़े टुकड़े किया हुआ ।

व्याल्लः [वि+आ+ल्लोक्+अच्] 1 विलक्षण, विभाजन 2 समात का विशुद्ध वा विशेषण 3 कलनाय, पृथक्ता 4 प्रसार, फैलाव 5 अर्थ, शोर्षा 6 वृत्त का व्यास 7 उन्धकारशोच 8 अन्वयता, नकलन 9 अन्वयतापक, संकल्पिता 10. एक प्रसिद्ध अच्चि का नाम (यह परा-धर का पुत्र था, लक्ष्मी इतकी यता थी) (लक्ष्-वती का कल्पु के साथ विवाह होने से पूर्व इतक

जन्म ्या वा) और जन्म होते ही वह बन में चला गया। जहाँ यह सानप्रभ्य होकर पौर तपस्याधना में लीन रहा जब तक कि इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र विधिबोधों की विधाया पत्नियों में सन्तान उपलब्ध करने के लिए उसे बड़ी बुलाया। इस प्रकार वह पाण्डु, धृतराष्ट्र और विदुर का पिता था। पहले पश्य यह रम का बाला होने तथा एक द्वीप पर सत्यवती में जन्म लेने के कारण 'कुण्डिपायव' कहलाया, परन्तु बाद में इसका नाम व्यास तथा कथों कि इनने हा बंदो क मन्था का जन्मवद कर वर्तमान रूप दिया। 'विक्रान्त वेदान्तम्यास तपसाद्ब्रह्मज्ञान इतिरमृत'। ऐसा विद्वान विद्या ज्ञाना है कि इसी ने महाभारत को रचना कर उसे गणपति द्वारा लेखवद करवाया। अठारह पुराणा तथा ब्रह्मसूत्रों का रचयिता भी इसी को माना जाता है, यह नाम चित्रवीरिया में से एक है नून चित्रवीरिया) 11 वह ब्राह्मण जो सार्वजनिक रूप से पुराणा की रक्षा करता है।

व्यासकत (मू० क० कू०) [वि + आ + सञ् + क्त] 1 जा हुआ पूर्वक उठा गये 2 जडा हुआ लया हुआ, मुला हुआ व्यन्त, (अर्थ) 3 निम्कत, यत्र किता हुआ अन्य किता हुआ 4 परेमान, व्याकृत, घबराया हुआ।

व्यासङ्ग [वि + आ + सञ् + क्त] 1 मटा होना, उठ गटना, तुडा गटना 2 एकनिठना भक्ति-आदि १।०१, 3 मार्गव्यम अन्वयन 4 ध्यान 5 पृथक्ता, नयाग।

व्यासिद्ध (मू० व० कू०) [वि + आ + सिध् + क्त] 1 प्रतियिद रजिन 2 त्रियिद्वपण, चारी का मात।

व्याहृत (मू० व० कू०) [वि + आ + हृ + क्त] 1 अवगद, राका हुआ 2 हटाया हुआ, पीछे डकेना हुआ 3 विकल फिरा हुआ, निराग वि० ३।५० 4 व्याकुल घबराया हुआ, भ्रमरहित; सम० अर्थात् रचना का एक दण्ड दे० बाब्य० ७।

व्याहरणम् [वि + आ + हृ + ल्यट्] 1 बोलना, उच्चारण करना 2 प्राणय, बर्णन।

व्याहार [वि + आ + हृ + पञ्] 1 प्राणय, बोलना, बचन उतर० ४।११, ५।२९ 2 आवाज, स्वर, ध्वनि मालवि० ५।११।

व्याहृत (मू० क० कू०) [वि + आ + हृ + क्त] कहा हुआ, वाला हुआ उच्चारण किया हुआ।

व्याहृति (स्त्री०) [वि + आ + हृ + क्तिन्] 1 उच्चारण, प्राणय बचन न हीयवव्याहृतव कदाचित्पुण्यानि साके विपरीतमर्थम् - कू० ३।६० 2 वक्तव्य, अभिव्यक्ति-मूलार्थव्याहृति भा हि न क्तिन् अन्वेषित

—रघु० १०।३३ 3 सन्या करते समय प्रतिदिन प्रत्येक ब्राह्मण द्वारा उच्चारण हुँद्वर परक शब्द विद्योय (पह आहृतिर्या तोन है—पूर, भुवम्, तथा स्वर जितका 'आःम्' के परवान् उच्चारण किया जाना है कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार आहृतिर्या जिनती में मान है)।

व्युच्छित (स्त्री०), **व्युच्छोय** [वि + उच् + क्त] - क्लिप्त घञ् वा] काट डालना, उन्मूलन, पूर्ण विनाश।

व्युत्क्रम [वि + उच् + क्त + घञ्] 1 अतिक्रमण, विचलन 2 उलटा क्रम, बैपरिणय 3 अव्यवस्था गदबदी।

व्युत्क्रान्त (मू० क० कू०) [वि + उच् + क्त + क्त] 1 अतिक्रान्त, उल्लंघन किया गया 2 जा बिना हा गया हा, छाड़कर चला गया हो चीत गया हो।

व्युत्क्रान्तम् व्युत्क्षिति (स्त्री०) [वि + उच् + क्त + क्त] 1 महान् विद्याकलाय 2 रिमी के विकट लडे होना, विरोध, कक्षावट 3 स्वतन्त्र क्रम, मनोज-कुल कार्य 4 (योग० में) शक्ति मनासाय की पूर्ति या भावान्मक मनन 5 एक प्रकार का नृत्य 6 (हाथों की) उठाना शि० १।८।२६

व्युत्पत्ति (स्त्री०) [वि + उच् + क्त + क्त] 1 मूल उत्पत्ति 2 अन्वयन निर्वचन 3 पुरी प्रयोगता पुरी ज्ञानकार्य ४ रिदना, ज्ञान व्युत्पत्तिर्यावर्तिन कोविदादि न रजिदना क्रमा ज्ञानान्म विरम० १।१५ १।१६०।

व्युत्पन्न (मू० क० कू०) [वि + उच् + क्त + क्त] 1 उत्पादित, पैदा किया गया 2 निर्वचन द्वारा निर्मित ४ व्याकरण द्वारा नियन्त्र, निरूपन (शब्द) जिसके निर्वचन का पता लग गया हा (विद्य० अन्व यन्न या मल) ५ पुरा किया गया, सम्पन्न किया गया मगरवी० ४।५० ९ पुरी तरह प्रयोग, विद्वान् परिष्ठन।

व्युत्स (मू० क० कू०) [वि + उच् + क्त] किये, भाः निर्गोया हुआ।

व्युत्सत (मू० क० कू०) [वि + उच् + अच् + क्त] पर और फेका हुआ, अम्बीहृत्, पूर किया हुआ।

व्युत्स [वि + उच् + क्त + घञ्] 1 एक और फेरना अम्बीहृत् 2 (का० में) निकाल देना 3 प्रतियेप 4 उपेक्षा, उदासीनता 5 हत्या, विनाश शि० १।५।३७

व्युत्सवेश [वि + उच् + क्त + घञ्] व्यास, बहाना।

व्युत्सर्वम् [वि + उच् + क्त + क्त] विनाश, पतन, समाप्ति -

व्युत्सव [वि + उच् + क्त + अच्] 1 विनाश का अभाव 2 अभागिन 3 पूर्ण विनाश (यहाँ 'वि' का अर्थ 'तीव्रता' है)।

भ्रष्ट (भू० क० कृ०) [वि + उष्ट + क्त] 1. भ्रष्टाया गया 2. पीछी, प्रभात 3 जो उज्ज्वल या स्वच्छ हो 4 बसा हुआ, —भ्रष्ट 1 पी फटना, प्रभात—सि० १२५ 2 दिन 3 फल ।

भ्रष्टिः (स्त्री०) [वि + षत् + क्त] 1 प्रभात 2 समृद्धि 3 प्रभात 4 फल, परिणाम ।

भ्रू (भू० क० कृ०) [वि + ब्रू + क्त] 1 कुलाया हुआ, विकसित, विशाल, व्यापक ब्यूहोत्सवी भू-स्कन्ध —रघु० ११३ 2 दुःख, सटा हुआ 3 फलबद्ध, व्यवस्थित, (सेना आदि) सुवियस्त—मग० ११३ 4 अव्यवस्थित, फलहीन 5 विवाहित । मम० कङ्कट (वि०) कर्वाण, जिरह बकर पहले हुए ।

भ्रूत (वि०) [वि + भू + क्त] 1 अन्तर्लित, सीया गया, पूंषा गया ।

भ्रूतिः (स्त्री०) [वि + भू + क्त] 1 भ्रूनाई, सिलाई 2 भ्रूनाई की मजदूरी ।

भ्रूह [वि + ऊह + षत्] 1 सैनिक विन्याय—मनु० ७१८७ 2 सेना, दल, टुकड़ी —भ्रूहभुनो तावितरे-तरस्मान् भ्रूह जय बापुसुरभ्यबस्यम् रघु० ७५५ 3 बहोमता, समता, समुच्चय, सग्रह 4 भाग, अंश, उपशीर्ष 5 शरीर 6 तरंग, निर्माण 7 लक्षणा, लक्षं । मम० बालिभः (स्त्री०) सेना का पिछला भाग, —भ्रूहः, —भ्रूहः सैनिक भ्रूह को तोड़ देना ।

भ्रूहम् [वि + ऊह + षत्] 1 सेना को व्यवस्थित करना, सेना को फलबद्ध करना 2 शरीर के अंगों की मरचना ।

भ्रूडि (स्त्री०) [विगता ऋडि—प्रा० म०] 1 समृद्धि का प्रभाव, बुरी किम्वद, कुर्वाण्य (विगता ऋडि-ऋडि) जैसा कि यवनाना भ्रूडिर्द्वेषनम्—सिद्धा० ।

भ्रूः (म०) उभ० भ्रूयति ते, ऊह, प्रेर० भ्रूयति ते, इच्छा० विन्यासनि 1 इकना 2 सीना ।

भ्रूकारः (म्यो + कृ + ऋ) लुहार ।

भ्रूयन् (नृ०) [भ्रूः + यन्] 1 श्राकाश, अन्तरिक्ष —अथर्ववेद अथवायता नु भ्रूयते यद् भ्रूयन्ति विष्णुर्वेदे —शाम्ब० १०, वेप० ५१, रघु० १२१७०, मै० २२५५ 2 जल 3 सूर्य का मन्दिर : अथकः मम०—अथकम् बारिवा का पानी, बीज, —केकः—केकिल्ल (पू०) शिव का विशेषण, —यथा स्वर्गीय यदा, शारिण् (पू०) 1 देव 2 पत्नी 3 मन्त्र, महात्मना 4 ब्राह्मण 5 गारा, मन्त्र, —भूय-बायल, —नासिकाया एक प्रकार की बटेर, सदा, संकरम्, —सकलम् सदा, पताका, —मुसुर-हवा का झोंका, —घामम् दि०सवारो, माकासवाय, —सम् (पू०) 1 देव, सुर 2 कवचं 3 भूल-वेत, —स्वामी पुत्री, —स्युम् (वि०) गमनचुंबी, अत्यन्त डँबा ।

भ्रूम् (म्यो + पर० व्रजति) 1. बाना, चलना, प्रगति करना, —नाबिनीलेश्वर्यं भ्रूम्—मनु० ५६७ 2. पारना, पहुँचना दर्शन करना—नामकं शरणं ब्रह्म—मग० १८१६ 3 बिना होना, सेवा से विभूत होना, पीछे हटना 4. (समय का) बीतना—इयं व्रजति यामिनी एव नरेव निहारस्यु—विष्णु० ११७५, (यह धातु प्रायः यम् या या धातु की भाँति प्रयुक्त होती है), मनु—, 1 बाघ में जाना, अनुगमन करना—मनु० १११११ कु० ७३८ 2 बन्ध्या करना, सम्पन्न करना 3 सहारा लेना, आ—, जाना, पहुँचना, परि—, भिन्न या साथ के रूप में इधर-उधर घूमना, संघाती या परिशायक हो जाना, प्र—, 1 निर्वासित होना 2 सांसारिक वासनाओं को छोड़ देना, यही माधम में प्रथित होना, अर्थात् तन्पाती ही जाना—मनु० ६३८, ८३६३ ।

भ्रूः [भ्रू + कृ] 1 समुच्चय, सग्रह, देवद, समूह —नवराजो वीरजनस्य तस्मिन् विद्युत् सबांनुपतीशिवेभुः—रघु० ६७, ७१७, वि० ६१६, १५१३ 2 म्वाली के रहने का स्थान 3 गोष्ठ, गीशाका—सि० २६५ 4 मायात, विद्यामन्थल 5 सड़क, मार्ग 6 बायल 7 मधरा के निकट एक जिला । मम०—भ्रूयन्, भ्रूयतिः (स्त्री०) ब्रह्म में रहने वाली स्त्री, ब्याकन —भूमि० २११६५, —भ्रूयन् गोशाका, किशोरः—नाय०, —भ्रूयन्, —भट्ट, —भल्लभः कृष्ण के विशेषण ।

भ्रूयन्म् [भ्रू + षत्] 1 भ्रूमना, फिरना, यात्रा करना 2 निर्वासन, देना निकाला ।

भ्रूयन् [भ्रू + षत् + टाप्] 1. ताप या जिज्ञे के रूप में इधर-उधर घूमना 2 जासूस, हथका, प्रत्यान 3 शेर, समुदाय, जनजाति या कबीला, सत्राय 4 रणभूमि, नाट्यमाला ।

भ्रूः (म्यो + पर० व्रजति) भ्रूयि करता ।

॥ (भ्रू + उभ० व्रजति—ते) बोट पहुँचाना, धायन करना ।

भ्रूय, ब्रूयन् [भ्रू + षत्] 1 बाघ, सत, उच्च, बोट —रघु० १२५५ 2 कोश, नापूर । मम०—भ्रूयिः बोल नामक मन्त्र, —भ्रूय (वि०) बाघ करने वाला, (पू०) सिलाये का देव, —विशेषण (वि०) बाघ करने वाला—स० ४११३, —भ्रूयन्म् बाघ का हाथ करना तथा पत्नी बंधना, —हृः एदं का लीना ।

भ्रूयति (वि०) [भ्रू + षत्] धायन, बिसके शरीर का गई हो—उत्तर० ५३३ ।

भ्रूय, ब्रूयन् [भ्रू + षत्] 1 प्रथि या साथना का धार्मिक कृत्य, प्रतिज्ञा का पालन, प्रतिज्ञा, पक्ष-बन्ध-स्वीय ब्रह्मनिशारम्—रघु० १३१७, २५, २५, विष्णु विश्व पुराणों में अनेक जगों का वर्णन किया गया है,

परन्तु उनकी संख्या निविद्यत नहीं हो सकी क्योंकि बराबर मये मये बलों की रचना प्रतिदिन होती रहती है यथा सत्यनारायण इत 2 सकल्प, प्रतिज्ञा, वृद्ध निरपच—सौष्ठव् भवनव्रतः सधुनुद्वैय प्रतिरोपयन्—रघु० १७।४२, इसी प्रकार 'सत्यव्रत, वृद्धव्रत' इत्यादि 3. भक्ति या आस्था का पदार्थ, भक्ति, जैसा कि पतिव्रता (पतिव्रत यस्या सा)—यान्ति देवव्रता देवान् पितृन् यान्ति पितृव्रता—अथ० १।२५ 4 संस्कार अनुष्ठान, अभ्यास, जैसा कि 'अर्चव्रत' में 5 जीवन-वर्षा, वाचरण, बालचलन—ग० ५।२६ 6 अभ्या-देवा, विधि, निवाम 7 वज्र 8 धर्म, करतब, कार्य ।

सप०—आचरणम् किसी प्रतिज्ञा का पालन करना, --आविष्टा: (किसी शिव के) बालक का यज्ञोपवीत संस्कार, --इषव्रातः किसी प्रतिज्ञा का पूरा करने के लिए अवनान करना, --ब्रह्मणम् किसी धार्मिक अनुष्ठान को पूरा करने के लिए सकल्प लेना, --धर्म ब्रह्मचारी, देवशिष्याधी-दे० ब्रह्मचारिन्, धर्म इ उपर्यं का पालन करना, --धारणम्, वा उपवास शीलता या प्रतिज्ञा की सकल संतोषि, --भङ्गः 1 मरुत्य तोड़ना 2 प्रतिज्ञा तोड़ना, --विद्या उपपन्न सन्तार के मन्सर पर विद्या मांगना, --सौषणम् प्रतिज्ञा को तोड़ना, --वैकल्पम् किसी धार्मिक सकल्प का अर्थात् न जाना, --संशयः इत की शंका लेना, --स्वात्मकः बह्मराज्य विद्यते ब्रह्मधर्म आधम की अवस्था को पूरा कर लिया है अर्थात् ब्रह्मधर्म नामक प्रथम आधम-दे० स्नातक ।

कृतति, ली (स्त्री०) [प्र० नन् + क्ति च, पूर्वो० ष्य व क्तति + क्तिच्] 1 बेल, लता - पाषाणकूटवर्तनिबन्धा-ह्रगसजातपात्र श० १।३३, रघु० १।१। 2 कैलाश, विस्तार ।

कृतिम् (वि०) [कृत् + इति] प्रतिज्ञा पालन करने वाला, भक्त, पुण्यात्मा, (पूर्व०) 1 ब्रह्मचारी 2 सत्यान्वी, भक्त-श० ५।९ 3. यो वज्र का उपक्रम करता है-दे० 'यजमान' ।

कृत् दे० 'इष्टम्' ।

कृत् दे० 'इष्टम्' ।

कृत् (तुदा० पर० कृषवति, कृत्, प्रेर० कृषयति-ने, इच्छा० विवशिवचति या विवशति) 1 काटना, काट डालना, काड़ना, चीरना 2 बाधक करना ।

कृत्कम्. [कृत् + कृत्] 1 छोटी भारी 2 भारीक देनी बिसे सुनार काम में लाते हैं--कृत् काटना, काड़ना बाधक करना ।

कृत् (स्त्री०) [कृत् + कृत्] हवा का झोका, नुफानी हवा, झंझावात ।

कृत्: [कृत् + कृत्, पूर्वो० माप्] समुदाय, देवद्व, समुच्चय -कृत्पाकानां कृत्-गंगा० २५, रघु० १।२।५, शि०

५।३५, लम् 1 शारीरिक श्रम, मजदूरी 2 दैनिक मजदूरी 3 यथा-कथा कार्य में नियुक्ति ।

कृत् (वि०) [कृतेन जीवति-मान + कृ] दैनिक-मजदूरी से अधिक बलाने वाला, किराये का मजदूर, सेलदार, मस्वी वाला ।

कृत्: [कृत् + कृत्] 1 प्रथम तीन वर्षों में से किसी एक वर्ष का पुष्य जा मुख्य संस्कार या शोधक कृत्यों का अनुष्ठान न करने के कारण पतित हो गया है (जिसका उपनयन संस्कार नहीं हुआ), जातिबहिष्कृत भवस्था हिं द्राव्याधमपतिनयासुष्य परिचरपरिचापसनेह गमा० ३० 2 नीच पुष्य, अधम पुष्य 3 विशेष नीच जाति (गुणपिता और शत्रिय माता की सन्तान) का पुष्य । सम०—कृत् जो अपने भाषका 'कृत्' कहता है,--स्तीकः उपयुक्त संस्कारों का अनुष्ठान न करने के कारण छीने गये अधिकारों को फिर से प्राप्न करने के लिए किया गया यज्ञ ।

कृत् (कृत्पा० पर० कृत्पाति-कीपाति) छाटना, चुनना, चु० 'कृ' ।

11 [कृत्पा० आ० कृत्पाते, कृत्पा] 1 जाना, हिलना-जुलना 2 चुना जाना ।

कृत् (वि०) पर० कृत्पाति) 1 लजित होना, शर्मिन्दा होना 2 फेंकना, डालना, भेज देना ।

कृत्, --कृ [कृत् + कृत् + कृत् + अ + टाप्] 1 लज्जा शोडादिवातशमयगतिविकल्पे शि० ३।४०, कृत्पा-कृत्पाते मे स (शब्द) मरति-रघु० ११।३ 2 विनय, लज्जाशीलता शि० १०।१८ ।

कृत् (मू० क० कृ०) [कृत् + कृत्] लज्जित किया गया शर्मिन्दा, लज्जाशील ।

कृत् (स्वा० पर०, कृत्पा० उभ० कृत्पाति, कृत्पाति-ने) लजि पहुचाना, हुया करना ।

कृत्, [कृत् + हि कृत्पा] 1 बाधक, जैसा कि 'बहुवीरि में 2 बाधक का दाता । सम०—अवारम् धान्यापात्र लती, काष्ठकम् मसूर की दाल,--राविकम् पना कृत् या कागनी बाधक ।

कृत् (तुदा० पर० कृत्पाति) 1 इकना 2 इकट्टा होना 2 एकत्र करना, सचय करना 4 हुकना, नीचे जाना ।

कृत् (स्वा० पर०, उभ०) दे० 'कृत्' ।

कृत् (वि०) (स्त्री०-नी) [कृत् + कृत्] 1 बाधक न योग्य 2 बाधक के साथ बोया हुआ, कृत् बाधक का भेद, बहु खेत जिसमें बाधक बोये जाने चाहिए ।

कृत् (कृत्पा० पर० कृत्पाति-कृत्पाति) विद्यम प्रयोग-भे०-कृत्पाति) 1 जाना, हिलना-जुलना 2 गन्ध-पात्र करना, धामे रखना, निर्बाह करना 3 छाटना, चुनना ।

कृत् (कृत्पा० उभ० कृत्पाति-ने) देलना ।

स

सः [सो + इ] 1. काटने वाला, विनासकर्ता कि० १५।
५५ 2. शस्त्र 3 शिव, —सम्प आत्मन्—मनु० २।१६।
संयु (वि०) [सं + युज् अन्त्यङ्—सम् + युज्] प्रसन्न,
समुच्च भट्टि० ६।१८।

सम् [सम् + व] 1 प्रसन्न, भाग्यशाली—(पु०) 1 ठीक
दिशा में हल चलाना 2 इन्ध का खज 3 मूलक का
मित्र जो सोहे का बना होना है।

सम् (म्वा० पर०) सम्मान, सत्त्व, कर्मबा० शास्त्रेण
1 प्रशंसा करना, स्तुति करना, अनुमोदन करना
—साम्प साम्प्रति मूनानि ससमुत्तारान्त्वजम्—राम०
मग० ५।१ 2 कहना, बयान करना, अभिव्यक्त
करना, प्रकथन करना समुचित करना, पोषणा
करना, विवरण देना (सप० या कभी तब० के साथ
अथवा स्वतंत्र कर में) शस्त्र मीना परिदेवनात्मन्-
रुद्रिण शासनमसमाय—रघु० १।४८३, न मे हिंसा
दामनि किचिदोस्मितम्—३।५, २।६८, ५।७०, ९।७३
१।१८६, कु० ३।६०, ५।५१ 3 सकेंन करना, कह
रखना, जताना—य (अशोक) सावज्ञो माधवश्री-
नित्यो मे पुण्यं शमव्यादर त्वाप्रयत्ने—मालवि० ५।८
कि० ५।२३, कु० २।२२ 4 अर्पित करना, पाठ
करना 5 खाट मारना, क्षति पहुँचाना 6 बुरा भला
बहाना, बदनाम करना, अर्धि— 1. अर्धिमाप देना
2 दोषारोपण करना, तिन्या करना बदनाम करना
पात्र० ३।०८६ 3 प्रशंसा करना, आ—(प्राय जा)

1 अगा करना, प्रत्याशा करना, इच्छा करना अमि-
त्याया करना—स्वकार्यसिद्धि पुनराशासते—कु० ३।
५७, सप्राम काशसमिरे—अट्टि० १।६।७०, ९० मनोर-
धाप नामो कि बाहो प्रत्यन्ते वृथा—श० ७।१३,
२।१५ 2 आशीर्वाद देना, सदिच्छा प्रकट करना,
मपलकामना करना एष ते देवा आशास्तु मुञ्च०
१, गज मित्र मावरत्नम् मुण्डारिव्याघ्रामे करभे-
रबाहो. रघु० १।५।५० 3 कहना, बर्षन करना
—आशयना वापगीति वृथाके कार्ये त्वया न प्रतिपन्न-
ह्यम्—कु० ३।१५ 4 प्रशंसा करना 5 दोषहराना,
प्र—, मराहना, स्तुति करना, अनुमोदन करना, मुञ्च-
नवन करना, उलाषा करना—होराशामुखनि प्रशंसते
—गीत० १, यच्छ वाचा प्रशस्यते—मनु० ५।१२७,
प्राशंसनीय निशाचरः—अट्टि० १।२।६५, रघु० ५।२५,
१।७३६।

समन्तम् [सम् + स्पृज्] 1 प्रशंसा करना 2 कहना, बर्षन
करना 3 पाठ करना।

समा [सम् + व + टाप्] 1 उलाषा 2 अभिलाषा,
इच्छा, आशा 3 दोहराना, बर्षन करना।

सायत (मू० क० कृ०) [सो + यत्] 1 विचकी रसाय

की गई हो, स्तुति की गई हो 2 बोला गया, कहा
गया, उक्त, घोषित 3 अतिक्रमित, इच्छित 4 विरक्त
किया गया, स्थापित, निर्धारित 5 जिस पर मिथ्या
दोषारोपण किया गया हो, कल्पित।

साम्नि (वि०) [सम् + इति] (प्राय समास के अन्त
में) 1 उलाषा करने वाला 2 कहने वाला, घोषणा
करने वाला, समुचित करने वाला, प्रजापती दोह-
रासिनी ते—रघु० १।५।५५ 3 सकेंन करने वाला,
पहले से कह रखने वाला मूर्धान जतनुकारस्यनि-
—कु० २।२६, प्राशंसामिद्धिसासिनि रघु० १।५२,
पि० १।७७ 4 सकुन बताने वाला, अभिव्य कथन
करने वाला—रघु० ३।१५, १।२।९०।

सम् 1 (म्वा० पर०) सम्कोटि, सत्त्व 1 योग्य होना,
सक्षम होना, सबल होना, अमल में लाना (प्राय
'युज्'प्रदान के साथ, प्रयुक्त होकर 'सकता' अर्थ प्रकट
करना)—अदधीयन् वसुधधनत्रय्य साक्षात्परावृत्त-
पल्लवाधि—रघु० १।३।२५, अट्टि० ३।६, येष० २०
कभी कभी कर्म० या सप्र० के साथ—मनु० १।१।१५५
2 महन करना, बर्दान्त करना 3 सक्तिप्राप्ती होना
कर्मबा० समर्थ होना, सम्भव होना, व्यवहार के
योग्य होना (निष्क्रान्त मुमुक्षुत की कर्मबा० का
अर्थ देना) तत्कृतु उच्यते 'यह किया जा सकता
है', इच्छा० (साक्षात्) 1 समर्थ होने की इच्छा करना
2 सोचना।

॥ (दिवा०) उ००—सम्पत्ति—ने, शक्त 1 समर्थ
होना, अमल में लाने की शक्ति रखना 2. सहन
करना, बर्दान्त करना।

सम्कः [सम् + क्] 1 एक रासा (विशेषतः 'सास्त्रि-
वाह्य', परन्तु इस शब्द के सही अर्थ तथा लोच के
विषय में अभी तक विद्वानों में मतभेद नहीं हो सका)
2 काल, सम्बन्ध (यह शब्द विशेष रूप से सास्त्रिवाह्य-
सम्बन्ध के लिए ओ कौस्तुभ से ७८ अर्थ के पद्यवात्
आरम्भ हुआ, प्रयुक्त होता है), काः (पु० ब० व०)
1 एक देश का नाम 2. एक विशेष जन्-जाति या
राष्ट्र का नाम (मनु० १०।४४ में 'पौष्टक' के साथ
इस शब्द का भी प्रयोग मिलता है) सम०— अमलकः,
—अरिः राधा विक्रान्तित्व के विशेषण जिसमें शकी
का अनुकन किया, अमः सकसकत् का अर्थ, कर्तुं,
—कृत् (पु०) तत्कृत् का प्रत्येक।

सकटः—सम् [सम् + कट्] गाड़ी, उकटा, भार डोने की
गाड़ी—रौहिणी सकटम्—पंथ० १।२।१३, २।११, याम०
३।५२, इः 1 सैनिक स्यूहविशेष—मनु० ७।१८७
2. एक विशेष प्रकार की तोक जो एक गाड़ी-पर
बोला था २००० पल के बराबर है 3. एक राक्षस का

नाम जिसे कृष्ण ने अपने बचपन में ही, मार डाला था ४. त्रिनिवा नामक पेड़ । सम०—अरिः- हृन् (पु०) कृष्ण के विशेषण,—आहुत्ती रोहिणी नामक नक्षत्र (इसका आकार 'मकट' जैसा होता है), -बिल्व अलकुरुकुट ।

मूषकटिका [मकट+कृत्+कन्+टाप्, ह्रस्व] छोटी गाड़ी, बिलौना-गाड़ी जैसा कि 'मूषकटिका' में ।

मालम् (नपु०) माल, बिछा, विशेषकर आमबरो का माल, लौद गोबर आदि (इस माल के पहले पाँच बचनों में कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व० से आगे विकल्प से मङ्गन् आयेन हो जाता है) ।

मालकः [मङ्+कल्क] १ भाग, अण, हिम्सा, टुकड़ा, लम्ब (इस अर्थ में नपु० भी) उपमकलमेन दूदक नामधानां मुद्रा० ३।२५, रपु० २।६६, ५।३० २ बकक, छिलका ३ (मछली की) माल, परत ।

मालवित (वि०) [माल+इतच्] मलय-लम्ब किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ ।

मालवित् (वि०) [मकल+इति] मछली ।

मातारः (पु०) राजा की रजेल का भाई, राजा की उस पत्नी का भाई जिससे विधिवपूर्वक विवाह न किया गया हो, अनुद्धा भ्राता (इसका वर्णन बहुधा मिथिन मिलता है, नीच कुल में जन्म लेने के कारण मूर्खता, चमड़े, आदि अथवापों के विद्यमान रहते हुए भी राजा का सामना होने के कारण इसे उच्चपद मिल जाता है, बृद्धकरचित मूषकटिक नाटक में यह प्रमुख भाग लेता है, मिथ्या यथा, हलकापन तथा खोटापन इसके चरित्र का विशेषण है, बार-बार उसके उच्चमन्वन्ध का उल्लेख, उसकी उपहासास्पद मूर्खता, एव प्रमाद तथा अपनी इच्छा की पूर्ति न होने पर नायिका का बला बोटने की क्रूरता इसकी योग्यता के परिचायक हैं सा० व० ८१ में इसकी परिभाषा दी गई है मद्मूर्खतायिमानो दुष्कुण्ठीरव-संयुक्तः । सोऽयमनुद्धाभ्राता रात्र इवाम् गकार इयुक्ता ॥

मातुम् [मङ्+उतन्] १ पत्नी—शकुनोच्छिद्यम्—यात्र० १।१६८ २ पक्षिविषय, नील, गिद्ध, -कम् १ सगुन, कलाश, दूभापात्र चलाने वाला चिह्न सि० ९।८३ २ शकामुचक सगुन । सम०—म (वि०) सगुनों को बान्ने वाला, शकम् सगुनों का ज्ञान, भवितव्यता, होमहार,—शास्त्रम् बहु शास्त्र जिसमें सगुनसम्बन्धी विचार किये गये हैं, सगुन शास्त्र ।

मातुनि [मङ्+उनि] १ पत्नी—उत्तर० २।२५, मनु० १।२।६३ २ गिद्ध, नील, वाज ३ मुर्गा ४ माघारराज मुचल का एक पुत्र, पतंगपु की पत्नी गाधारी का भाई, इस प्रकार यह दूबोधन का नामा वा । इती

ने पाँचवो को उलाड़ने के लिए दूबोधन की अनेक दुरनियोजनाओं में महायता दी । आजकल इस नाम का प्रयोग उस दुर्गुन विनेनरो के लिए होता है जिसका परामर्श बर्बादी का कारण बने । सम० ईश्वर गकट, प्रया पक्षियों को पानी पिलाने की कृिद बावः १ पक्षी को कृञ्ज २ मुर्ग की बांग ।

मातुनी [मङ्गुन+डोप्] १ चिड़िया, गौरिया २ एक पक्षिविषय ।

माकुल- [मङ्+उत्त] १ एक पक्षी—असम्वापिचकुलनी-इतिषित विश्वरूपायामपलम् पा० ३।११ २ नीलकट पक्षी ३ पक्षिविषय ।

माकुलकः [माकुल+कन्] पक्षी ।

माकुलला [मङ्गुनी लापते—ला घञर्थे क+टाप्] विषा-मित्र ऋषि की तपस्या मग करने के लिए इष्ट द्वारा भेजो गई मेनका अलग में उत्पन्न विश्वामित्र को पुत्री (जब मेनका स्वयं गई तो वह इन बन्धी का एकान्त जगल में छोड़ गई, वही पक्षियों ने इसका पालन पोषण किया, इसी लिए इसका नाम माकुलला पड़ा । बाद में वह महर्षि कश्यप का भित्री । कश्यप ने उसे अपनी पुत्री की भाँति पाला । जब आश्विं करला हुआ दुष्यन्त कश्यप ऋषि के आश्रम की ओर आया तो वह माकुलला के लाक्षण्य में आकृष्ट हो गया । उसने माकुलला को अपनी पत्नी बनाने के लिए उसे रात्री कर उससे शाश्वत विवाह कर लिया (दे० दुष्यन्त) । माकुलला में एक पुत्र पैदा हुआ, इसका नाम भरत था, यह चक्रवर्ती राजा बना, इसी के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा ।

माकुलि- [मङ्+उति] पक्षी कलमचित्रत्त गव्युक्तः क्वगन्तु माकुलव उत्तर० ३।२४ ।

माकुलिका [मङ्गुलि- कन्+टाप्] १ पक्षी—उत्तर० १।१५ २ पक्षिविषय ३ टिड्डी, झीपूर ।

माकुल, ली [मङ्+उलच्] एक प्रकार की मछली । सम०—अधरी एव अदीवृती, कटकी वा कृटी अनेक एक प्रकार की मछली ।

माकुन् (नपु०) [मङ्+कृन्] मन, बिछा, विशेषकर आमबरो की लौद, गोबर आदि । सम० करि (पु०, स्त्री०)—करी बछड़ा,—माहृत्कारिर्वैल-विदा० । हारम् मुद्रा, मण्डार, पिच्छ, पिच्छक गोबर का सोका शष्पाश्वयि पक्षिनि शकुनिपक्षकानाम मात्रान् उत्तर० ४।२३ ।

माकवरः, माककरि [मङ्+किप्, कृ+अप्, कर्म० सं०] बैल, गाँध ।

माकवरी [माकवर-+डीप्] १ मूढ़ी २ कन्वती, मेघना ३ नीच जाति की स्त्री ।

मास्त (पु० क० क०) [मङ्+स्त] १ योग्य, मक्षय, नमर्ष

(सम्ब०, अर्थ० वा तुमुप्रत्यय के साथ) -बहवोऽयम् ।
कर्मण्यप्यस्य वैशी० ३, नन्योपकारे लक्ष्मन्स्य कि
बोधन् किमुताम्यया—न० २ मन्वन्त, ताकतवर,
शक्तिशाली ३ धरादण्ड, समृद्धिशाली --स्य० १११९
४ सार्थक अभिव्यञ्जक (गण्ड) ५ जन्तु, प्रजावान्
६ प्रियवादी ।

शक्ति. (स्त्री०) [शक् + क्तिन्] १ बल, योग्यता,
शारिता, सामर्थ्य, ऊर्जा, पराक्रम देव महत्य कुक्ष
पीत्यभ्याम्यथाकथा -पञ्च० १३९१, जाने मोन क्षया
शक्तौ रूप० ११२२, इमी प्रकाश यथाशक्ति, म्-
शक्ति आदि, गच्छशक्ति (इस के नाम लक्ष्य है
१ प्रभुशक्ति या प्रभावशक्ति राजा की जाने प्रत्यय
पदार्थ) २ मन्वन्ति नामात्मन की शक्ति तथा
३ उवाह शक्ति 'मंत्रशक्ति' राज्य नाम शक्ति-
शक्त्यायम् ददा०, विभायना शक्तिशिवमच्छयम्
-रूप० ३११३, ६३३, १३६३ शि० २१०६
२ स्वभावशक्ति, कार्य शक्ति या प्रतिभा--शक्तिनि-
पुणना साकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणम् कार० ११, दे०
नन्वन्तोय व्याख्या ३ देव की शक्ति शक्ति, यह
शक्ति देवपत्नी मानी जाती है, देवी, दिव्यता (इसकी
गिनती विविध प्रकार से की जाती है कही आठ कही
ती भी और कही पचास तक) म अदिति पत्नियुद्ध
शक्तिमि शक्तिनाय-मा० ५११, ता० ७३१५ ५ एक
प्रकार का अन्ध--शक्तिपञ्चमसिधियन गाण्डीविनोबन्धु
वैशी० ३, नती विवेक पीलम्ब्य शक्त्या वसति लक्ष्मणम्
रूप० १२१०० = बर्ही, नेहा, दूत, भाला
६ (न्या० में) किसी पदार्थ का उसके शीघ्र गम्य
में सम्बन्ध ७ काम्य की अनाहित शक्ति निम्ने कार्य
की उत्पत्ति होती है ८ (काम० में) पञ्चमशक्ति या
शक्त की अर्थशक्ति (यह सध्या में तीव्र है) अभिधा,
लक्षणा, व्यञ्जना सा० ६० ११ ५ अभिधाशक्ति,
पारदर्शक (विष० लक्षणा और व्यञ्जना), १० स्त्री
की जननेन्द्रिय, भग, प्राक्समप्रदाय के अनुवादयो द्वारा
पुत्रिन पित्रिकिञ्च की स्त्री । ता०० अर्थ उद्योग
तथा श्रम के फलस्वरूप प्राप्त; नदा गरीर का पदवीने
से नर होना, अर्थक, अर्थशक्ति (वि०) सामर्थ्य का
प्यान रखने वाला,--कुम्भम् शक्ति को कुम्भिन करना,
-ग्रह (वि०) १ बल या अर्थ की प्राप्ति करने वाला
२ बर्हीचारी, (-ः) बल या अर्थ का शीघ्र अथवा
शरदशक्ति का शान ३ बर्हीचारी, भाजाचारी ४ शिब
का विशेषण ५ कारिकेय का विशेषण,--आहूक (वि०)
गण्ड के अर्थ की स्थापना या निर्माण करने वाला,
(-कः) कारिकेय का विशेषण, ब्रह्म राज्यशक्ति
के लक्षक तीन लक्ष --दे० शक्ति (२) ऊपर, -वर
(वि०) मन्वन्त, शक्तिशाली, (-ः) १ बर्हीचारी

२ कारिकेय का विशेषण, शक्ति, भूत (पु०)
१ बर्हीचारी २ कारिकेय का विशेषण, पातः शक्ति
शय, पराजय, बुद्धकः शक्ति, बुद्धा शक्ति की पुत्र,
--बैकल्प्य शक्तिशय, दुर्बलता, अक्षमता--श्रीय (वि०)
शक्तिहीन, निर्बल, बलराहित, मनुष्यक हेनिक, भाला
चारी, बर्हीचारी ।

शक्तितः (ब्रह्म०) [शक्ति + तमिन्] शक्ति के अनुगार,
सहायोग्य, यथाशक्ति ।

शक्त्, शक्त्व (वि०) [शक् + क्त] मिष्टभाषी,
प्रियवादी ।

शक्त् (स० कृ०) [शक् + यत्] १ मन्वन्, कियामक,
निम्ने जाने के योग्य, (प्राय मुमुक्षुत के साथ) शक्यो
वाग्दियु शक्ति हुष्युक् नतु० ६१११, रूप० २११९,
५४ २ कार्यान्वयन के योग्य ३ कार्यान्वयन में मन्वन्
४ प्रत्यक्ष कर्ता तथा, अभिहित (स्यदायं आदि)
- गन्धोऽर्जोऽभिषया श्रेय सा० २० ११११ समाभ्य
(कभी-कभी शक्यम्) शब्द कर्मका० में तुमुप्रत्यय के साथ
विशेष के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, उन समय
मुमुक्षुत का शान्तिव्य अभिप्राय प्रकट में होता है
एव हि प्रणयवती मा गन्धमुनेसिन् कुपिता
--माशक्ति० ३१००, शक्य अभिव्यक्तशक्तिः शक्ति
पवन
० ३१६, विमुक्तय गन्धमगन्धमजिना--मुभा०,
सा० १८११ । मन्व० अर्थ शान्त्य अभिहितार्थ ।

शक्त् [शक् + क्त] १ इन्द्र- एक कृती मनुक्षेपु योग्य
शक्त्वात् पाचते कुबल० २ अर्जुन का वृक्ष ३ कुट्टक
का वेष्ट ४ उल्लू ५ ज्येष्ठा नक्षत्र ६ बौद्ध की
सक्या । सय०--अज्ञानः कुट्टक का वृक्ष, आक्यः उल्लू,
--आत्मकः १ इन्द्र का पुत्र जयन्त २ अर्जुन,--अज्ञान-
मन्, -उल्लूकः भाद्रपदपूर्णाका इन्द्रांशु की इन्द्र के
सम्मान में बनाया जाने वाला उन्मत्त, पर्व, शीघ्र
एक प्रकार का बाल कौदा, मु० इन्द्राशु-जः,
जातः कौदा,--शक्ति, शिक्त् (पु०) राक्षस के
पुत्र मन्वन्त के विशेषण, हुष्य, देवराज का वृक्ष,
-धनुस्, शरसलम् इन्द्रधनुस्, ध्वजः इन्द्र के
सम्मान में स्थापित शरा, पर्यायः कुट्टक का वृक्ष,
शक्यः १ इन्द्र का वेष्ट २ देवराज वृक्ष, प्रथम
इन्द्रप्रथ, अक्षयम्,--धनुषम्, बालः स्वर्ग, वैकुण्ठ,
मूर्धन् (नपु०) शिक्त् (नपु०) बावी, शक्यीक,
-लोकः इन्द्र का सारा,--आह्वयम् शान्त, शाश्विन्
(पु०) इन्द्र का वृक्ष, शक्तिः इन्द्र का स्वभाव,
मन्त्रिक का विशेषण, -सुतः १ जयन्त का विशेषण
२ अर्जुन का विशेषण, ३ शक्ति का विशेषण ।

शक्त्नी [शक् + क्तीप्, आनुष्] इन्द्र की पत्नी, शक्ती ।
शक्तिः [शक् + क्तिन्] १ कारल २ इन्द्र का शक्य ३ पहाड़
४ शक्ती ।

शक्यः [शक्+यन्, र] शीघ्र, बल, तु० शक्यः ।

शक्नु [शक्+ञ्] शक्यं कर्त्तुं 1 सदेह करना, अग्नि विद्यत होना, सकोष करना, सदिग्ध होना - शक्नु जीवति वा न वा - रा० 2 डरना, भय होना, बल होना (अथा० के साथ) - नाशाङ्कित् विस्वत - मट्टि० १५।३९ - अनाङ्कित् मन्त्रेण शक्नुते म्पश्च सर्वत - तुना० 3 शका करना, अविश्वास करना, भरोसा न करना स्वदोषिर्भवेति हि शक्नुतो मन्युष्य मूच्छ० ४।२ 4 सोचना, विश्वास करना, उल्लेखा करना, कल्पना करना, सप्रथ समझना, शका करना, डरना त्वय्यात्मने नयनमुपरिस्पर्धि शक्नु मृगाण्या - मेघ० १५, नाह पुनस्तथा त्वयि यथा हि मा शक्नुते भीरु विक्रम० ३।१४, मट्टि० ३।२६, नै० २०।४२ 5 आक्षेप करना, अपनी शका या ऐरागन उठाना - अमेद शक्नुयेते, (शतुभा विवादात्पथ भाषा में प्रयुक्त) - न च ब्रह्मण प्रभाशान्तगम्यत्वं शक्नुन् शक्यम् सर्व०, अग्नि , 1 शका करना 2 सदिग्ध या अनिश्चयी होना - मनु० ६।६६, आ , शक्नु करता, भरोसा न करना सदेह रजना मट्टि० २।११ 2 सन्देह करना, विश्वास करना सोचना - आङ्गुशसे यस्मि तस्मिन् अस्मिन् अस्मिन् - जा० १।२८, शि० ३।१७२ मट्टि० ६।६ मनु० ७।१८५ 3 डरना, आशका करना, अतिगमन पुन, आशङ्कन - रघु० १२।१२, पञ्च० १।३, १२ 4 आक्षेप करना, सदेह करना अत एव न शक्यमव्यय आत्यशरणात्तन्मायाङ्कित्तम्यम् शारी० (तथा कुछ अन्य स्थानो पर), धरि 1 शका करना, विश्वास करना, उल्लेखा करना पत्रेऽपि सञ्चारिणि शान्त्वा परिशङ्कने - गीत० ६ 2 सदेह करना, सदेहमील होना 3 डरना, भयभीत होना, रघु० ८।१८, शि 1 शका करना, डरना, सदेहमील या शकालु होना, - विशङ्कने भीरु पत्तोऽश्वीरुणाम् - श० ३।१४, मतीमपि आनिकुलस्यथा ज्ञानोऽप्यथा भर्तुर्मती विवाङ्कने ५।१७ 2 तथा का चिन्तन करना, उल्लेखा करना, कल्पना करना विशङ्कमाना रमित कपाजि जनादेन दृष्टवैतदाह - गीत० ७ ।

शङ्क [शङ्क+ञ्] शक्यं बल, (गारी) शीघने वाला बल ।

शङ्कर (वि०) (स्त्री० रा, री) [श सुब करोति -ङ्+अच्] आनन्द या समृद्धि देने वाला, श्म, मङ्गलप्रद, -रः 1 शिव 2 विश्वात आचार्य और तन्त्रप्रणेता शरणाचार्य दे० परि० २, री 1 शिव की पत्नी पार्वती 2 मंत्रिष्ठा, मजीठ 3 शमीवृक्ष ।

शङ्का [शङ्क+ञ्+टाप्] 1 सदेह, अनिश्चितता 2 सकल्प-विषय, दुविधा 3 आशका, अविश्वास, अनिष्टशका, अपाशका, अविष्टशका आदि 4, डर,

आशका, शय, आशक - आशककर्मवैभक्तिका नामा-प्सरा प्रेषिता श० १, कर्केयोपाकमेवाह - रघु० १२।२, १३।४२, मेघ० ६९ 5 आशा, प्रत्याशा 6 (भान्त) विश्वास, आशका, (मिथ्या) धारणा-अवमपि शिरस्यस्य शिप्ला धनोऽप्यहित्कृया श० ७।२४, कुर्वन् बभूवजनमन स शशाङ्ककाङ्काम् - नि० ५।४२, हरितनृणांशुगमाङ्कया ५।४८ ।

शङ्कित (मू० क० क०) [शङ्क+क्त] 1 सदिग्ध, आशका-युक्त, बल 2 शकालु, आशका करने वाला, अवि-श्वासपूर्ण 3 अनिश्चित, सदिग्ध 4 भयपूर्ण, शक्य, आशकित (दे० शङ्क) । मम० - चित्त, -बन्धु (वि०) भीरु, कातरहृदय 2 शकाकुल, अविश्वासपूर्ण 3 सदिग्ध ।

शङ्कित् (वि०) [शङ्क+इति] सन्देह करने वाला, शका करने वाला, डरने वाला, विश्वास करने वाला (समान के अत में) त्वयुवावन्तंशङ्कित् मे मन - रघु० ८।५३, अतिस्नेह पापशाकुं श० ४ ।

शङ्कुः [शङ्क+उण्] 1 नेजा, बर्छी, नुकीली कील, शक्ति, कटार, (शयः समान के अत में) - शोकशङ्कुः शक-रूपी कटार' अश्विन् तीक्ष्ण एव हृदयविदारक शय - उत्तर० ३।२५, रघु० ८।९३ 2 मूँटा, मन्वा स्तम्भ, सुल या नोकदार छत्र 3 कील, मेख मूँटी रघु० १०।१५ 4 शाय की तीखी नोक, कौटा या अकडा 5 (कटे हुए वृक्ष का) तना, पेठ का टूँठ, मुहा पेठ 6 शरी की मूँट 7 बारह अणुल की माप 8 गज, मापने का डहा 9 (ज्यो० में) लबरेका वा ऊँचाई 10 सौ लरब या एक नील की मन्वा 11 पत्तो के रेखे 12 बन्मीक, बमी 13 पुस्य की जननेन्द्रिय 14 एक प्रकार की मछली, तनुका 15 राक्षस 16 शिव, 17 पाप 18 जलधर, विशेष कर कम्बुहम 19 शिव 20 मास का पेंठ । मम० कर्त्त (वि०) जिसके काम शङ्कु के समान लवे और नुकीले हो, (बँ.) गथा - लक्ष् - बृहत् साल का पेंठ ।

शङ्कुला [शङ्क+उलच्] 1 एक प्रकार का बाकू या श बार बाधा नक्षत्र 2 मोता । मम० - शङ्क मरोले से काटा हुआ टुकड़ा ।

शङ्कुः, -भम् [शङ्क+ञ्] 1 शय, शोभा - न घनेशान् मृगशति शङ्कु शिखिमुकुतमयतोऽपि पञ्च० ५।११० शङ्कुन् वच्म पृथक् पृथक् - भ्रम० १।१८ 2 मस्तक की हड्डी, कु० ७।३३ 3 कनपती की हड्डी 4 हाथों के दोनो दाँतों के बीच का भाग 5 दम नील की मन्वा 6 सैनिक डाल या मास्कबाजा 7 एक प्रकार का पञ्चदश, नली 8 कुंभर की नर्बन्धिया में ये एक 9 एक गजस शिखरी विष्णु में शय शाला वा 10 एक स्मृतिकार (स्मिन्ति के शय

नयून नाम का उल्लेख) । सम०— ब्रह्मन् शक
में डाला हुआ पानी, कारः, कारकः शककार नाम
को एक बर्णसक आदि, घरी, घर्षी (मन्त्र पर
लगाया गया) चन्दन का तिलक चूर्णम् शक को
पीस कर बनाया गया चूरा, शकः, शक्यः एक
प्रकार का योद्धा श्रममें शक भी बलवान् है, श्वः
—श्व (पु०) शक बजाने वाला, श्वनिः शक की
भाषा (कभी-कभी, परन्तु प्रायः जातक या निराशा
की शोकक श्वनि), श्वन्तः चन्द्रमा का कलक,—श्व्
(पु०) श्विन् का विशेषण, श्वः शक्तिवाक, श्वर,
श्वन्तः शक्यश्वनि ।

शक्यः—कम् [शक + कम्] 1 शक 2 कनपटी की हड्डी,
क (शक्य का बना) कथा—शि० १३।४१ ।

शक्यन्कः, (—क) एक छाटा शक या घोषा ।

शक्त्विन् (पु०) [शक् + इति] 1 समुद्र 2 चिन्मू 3 शक
बजाने वाला ।

शक्त्विनी (शक्त्विन् + स्त्री) काम याचक के नेत्रको के अनु-
सार स्त्रियों के किये गये चार भेदों में से एक, रति-
सम्बन्धी में लिखा है शीर्षातिदीर्घपदाना वरमुन्वरी
या कामोपभोगरसिका गुणशील्युक्ता । रेखापदण च
निभृषितकण्ठदेशा समीपकेन्द्ररसिका किञ्च शक्त्विनी सा-
६, तु० शिषिणी, हुस्मिनी और पण्डिनी भी
2 प्रताप्या, अन्तरा, परी ।

शक् (म्हा० आ० शक्यते) बोलना, कहना, बलवान् ।

शक्चिः—ची (स्त्री०) [शक् + इत्, शक्चि + स्त्री] इन्द्र की
पत्नी रघु० ३।१३, २३ । सम०—पति,—श्व्
(पु०) इन्द्र के विशेषण ।

शक्च्य (म्हा० आ० शक्च्यते) जाना, हिलना-जुलना ।

शट् (म्हा० पर० शठति) 1 बीमार होना 2 घाटना,
विप्लव करना ।

शट् (वि०) [शट् + श्च] शट्टा, अम्ल, कसेला ।

शटा [शट् + टाप्] सप्ताहों के उल्लेख बाल-तु० बटा ।

शठि (स्त्री०) [शट् + इत्] कपूर का घोषा, जामा
हथेली ।

शट् (म्हा० पर० शठति) 1 धोखा देना, ठगना, जाल-
साजी करना 2 चोट मारना, मार डालना 3 कष्ट
उठाना ।

- 1 (चूरा पर० शठयति) 1 समाप्त करना
- 2 बलमान छोड़ देना 3 जाना, हिलना-जुलना
- 4 आकली या सुलल होना 5 धोखा देना, ठगना
(इन अर्थ में 'शठयति') ।

शठ (वि०) [शट् + श्च] 1 शशाक, शोशोवाक, जाल-
साज, बेईमान, कपटी 2 बुद्ध, दुर्गता, छः 1 श्व-
मास, छय, पूर्ण, मकरान् वन् ४।१०, वग०
१८२८ 2 शूटा या शोशोवाक प्रेमी (को एक स्त्री

के प्रति प्रेम प्रदर्शित करता है) परन्तु इन किसी बृहदि
स्त्री में रमाया रहता है) —प्रथमसि सठ सुचिन्मिते
बिहित कौशबस्तकस्तथ—रघु० ८।४९, १९।३१,
माकवि० ३।१९, सा० ६० 'शठ' की इस प्रकार परि-
भाषा देता है—शठोऽप्येकैक ब्रह्मजायो य इति यथा-
रुद्रायो विप्रियमन्वथ गुरुमाचरति—७४ 3 गृह,
दुर्ग 4 मध्यम, विभाषक 5 शत्रु का घोषा
6 आकली पुष्प, सुलल श्वित, —छम् 1. शोहा
2 केसर, आकलान ।

शाम् [शम् + श्च] सप्त, पटसन । सम०—सुजम् 1 सप्त
की बनी शोरी या रत्नी 2 सप्त का बना जूत
3 रत्नियाँ, शोरियाँ ।

शम्बः [शम्च + श्च] 1 नृपति, हिजडा 2 शक्ति 3 छोटा
हुआ शक्ति,—शम् सपह, सन्मुख्य—तु० पंथ या
सपथ की ।

शम्बः [शाम्यति शाम्यमानोत्—शम् + इ] 1 हिजडा,
नृपति 2 अन्त पुर में रहने वाला दहलुआ, पुष्पसेवक
(हिजडों या शिष्या किये गये पुस्तकों में से चुना हुआ)
3 शक्ति 4 छोटा हुआ शक्ति 5 पागल आवनी ।

शम्भु [दया दयात् परिशामयन्—शम्भु + श, वा आदि-
नि० साधु] ली की सख्या—निम्बो बन्धि शम्भु
—शाम्भित ० २।६, शतमेकोऽपि सधर्तुं प्रकारस्त्वो शम्भुर्
पथ० १।२२१ ('शत' शब्द किसी भी किण के बहु-
वचनात् सता शब्दों के साथ एक शब्द में ही प्रयुक्त
होता है—शत वरा, शतं याच, या शत गृह्णीत, इस
दशा में यह सख्यावाचक विशेषण माना जाता है,
परन्तु कभी कभी शिवचक्र तथा बहुवचन में भी प्रयुक्त
होता है—दे शाने, दया शतामि भावि । सभ० के सजा-
शम्ब के साथ भी प्रयुक्त होता है—गर्वा शम्भु,
समाप्त के अन्त में यह अपरिचित रूप में रह सकता
है भव भर्ता शरच्छतम्, या श्वक कर 'शती' हो
जाता है तथा शोचनेमाचार्य की कृति 'आर्यसिद्धांती'
2. कोई भी बड़ी सख्या । सम०—अस्त्री 1. राशि,
2. दुर्गदेवी, अङ्कः शक्ति, अङ्कका विशेषण मुद्गर,
—अस्त्रीः बुद्धा आवनी,—अरुण, आरुण इन्द्र का
वज्र,—आलकम्, वमशान, श्वरिस्तात, शम्भुः
1 बह्ना 2 चिन्मू, कृष्ण 3 चिन्मू का हाथ
4. शीतल और शक्ति का पुत्र, वनकराव का पुत्र-
पुरोहित—उत्तर० १।१९, शम्भु (वि०) की सर्व
शक्त शक्ति रहने वाला या टिकने वाला, आकली,
—आशक्तिम् (पु०) चिन्मू, शूकः 1 ली के ऊपर
वाहन करने वाला, 2 ली शक्ति का शायक मनु०
७।११५,—शुभः एक पहाड़ का नाम (कहते हैं कि
यहाँ पर लोग पाया जाता है), —श्व् शोभा,—श्वम्
(श्वम्०) ली दूधा,—शक्ति (वि०) ली शर बाला,

(दि) इन्द्र का बन्ध, (स्त्री०) एक अरब या सौ करोड़ की संख्या, कुछ इन्द्र का विशेषण—रघु० ३।३८, लक्ष्मण सोना,—वृ (वि०) सौ गायों का स्वामी, —वृष, वृषित (वि०) सौगुणा बना हुआ—विष्णु० ३।२२, वृषिः (स्त्री) दुर्वा घास, —स्त्री 1 एक प्रकार का वृषण जो अरब की भांति प्रयुक्त किया जाय (कुछ विद्वानों के मतानुसार यह एक प्रकार का राकेट है, परन्तु दूसरों के मतानुसार यह एक प्रकार का विशाल पत्थर है जिसमें लोहे की बालाकार जड़ी हुई है यह लम्बाई में 'चार ताल' है—राजस्थानी व चतुस्ताला लोहकण्टकसचिता, या, अथ कण्टकसङ्घना राजस्थानी महीनी शिला) रघु० १२।१५
2 विष्णु की माता 3 गये का एक रोग चिह्न-विश्व का विशेषण, —तारका,—भिषज्,—भिष्वा (स्त्री०) सौ तारिकाओं का पुत्र शाभिवा नामक नक्षत्र, —ब्रह्म सन्नेह गुलाब,—वृः (स्त्री०) पंजाब की एक नदी जिसका वर्तमान नाम सतलज है,—धान्य (पु०) विष्णु का विशेषण, 'शा' (वि०) सौ धारों वाला, (—रघु) इन्द्र का बन्ध,—वृतिः 1 इन्द्र का विशेषण, 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 स्वर्ण,—वृषः 1 मोर 2 सारस 3 कूट-बड़ई पक्षी, 4 तोता या तोते की जाति, (शा) स्त्री (कम्) कमल—नाभुसकृतसत-पवनिम (आनन्दम्) बहल्ला—भा० १।२९, 'शोभिः ब्रह्मा का विशेषण,—कर्मण मूले शतपथोनि (सभावा-यामास) कु० ७।३६,—पञ्चः सूर्यवर्द्ध,—वृष, पाश (वि०) सौ पैरों वाला, —पक्षी कालवज्रा, —पथम् 1 वह कमल त्रिमयें सौ पत्रधियें हो 2 श्वेत कमल,—वर्षम् (पु०) बीम (स्त्री०) 1 शक्तिवत माय की 'पुत्रिया 2 दुर्वा घास 3 कटुक का पौधा, 'ईशः शुक, वृह—श्रीचः (स्त्री०) अरवैश की बमेली, वृषः,—वधुः 1 इन्द्र के विशेषण, कि० २।२३, मट्टि० १।५, कु० २।६४, रघु० १।१३ 2 उल्लू, वृष (वि०) 1 जिसके सौ रास्ते हो 2 सौ द्वार या मूँह वाला—विशेषकथाओं प्रवृत्ति विनिपात शतमुख—मत्तु० २।१०, (अहो शम्भ का (?) अर्थ भी है) (—कम्) सौ रास्ते या द्वार, (—की) कुहारी, झाड़, —कृता दुर्वा घास, वृषका,—वधम् (पु०) इन्द्र का विशेषण,—वृषिकः सौ लक्षियों का द्वार, कृता ब्रह्मा की एक पुत्री (जो ब्रह्मा की पत्नी भी मानी जाती है, अपने पिता के साथ इस स्थितिचार के परिणाम स्वरूप उसने स्वाम्यम्भ मनु का जन्म हुआ),—वर्षम् की बरस, शताब्दी, वैश्विन् (पु०) एक प्रकार का सदमिशा शाक, भोजक,—सहस्रम् 1 सौ ह्वार 2 कई ह्वार वर्षम् एक बड़ी संख्या,—साहस्र (वि०) 1 सौ ह्वार से युक्त 2 सौ ह्वार में भोज लिया हुआ,

हुवा 1 विजयी, कु० ७।२९, मृच्छ० ५।४८

2 इन्द्र का बन्ध।

शतक (वि०) [शत+कन्] 1 सौ 2 सौ से एक, कम् 1 शताब्दी 2 सौ स्त्रियों का संघ जैसा कि नीति, 'बंराय' और भृङ्गार, 'अपार्' नीति जादि विपयक सौ श्लोकों का संग्रह।

शतसप्त (वि०) (स्त्री०—वी) [शत+सप्त] सौषी।

शतथा (अग्र०) [शत+था] 1 सौ तरह से 2 सौ भागों में या सौ टुकड़ों में 3 सौगुणा।

शतशस्त्र (अग्र०) [शत+शस्त्र] 1 सौ सौ करके 2 सौ बार—शतश शस्त्रे—प्रबो० ३, मनु० १२।५८ सौगुणा, 3 सौ तरह से, विविध प्रकार से, नाना प्रकार से—मत्त० १।१५।

शतिका (वि०) (स्त्री० कौ), शप (वि०) [शत+शु] यत् वा 1 सौ से युक्त—याज्ञ० २।२०८ 2 सौ से सम्बन्ध रखने वाला 3 सौ से प्रभावित 4 सौ में भोज लिया हुआ 5 सौ से बरला किया हुआ 6 प्रति-शत शुल्क या ध्यान देने वाला 7 सौ का मूषक।

शतित् (वि०) [शत+ति] 1 सौगुणा 2 असम्बन्ध—सु० सौ का स्वामी ति श्वो बन्धे शत शनी वशयत शानि० २।६, पञ्च० ५।८२।

शभिः [शप्+विप्] हाथी।

शम्भु [शप्+भृन्] 1 पराप्त करने वाला, विनाशक, विजेता 2 दुःखन, बंटी, प्रतिपक्षी—अथा शम्भु व मित्रे व यमोनामेव भूपयम्—सुभा० 3 राजनीतिक प्रतिद्वन्द्वी, पक्षीय का प्रतिद्वन्द्वी राजा। मत्त० उप-जाय-दुष्मन की गुपचप कानाफूसी, शम्भु का विधा-वधानी प्रस्ताव, कर्मण, कर्मण, निवर्द्धन (वि०) शम्भु का दमन करने वाला, शम्भु की जीतने वाला या शम्भु की नष्ट करने वाला,—श्वः 'शम्भु' की नष्ट करने वाला 'मुनिभा का पुत्र होने के कारण लक्ष्मण का यमलज्जारा, राम का भाई। इसने 'लक्ष्मण' नामक राजस का बन्ध किया, मन्वृत्त की बहाया। मुवाहु और बहुकृत नाम के इसके दो पुत्र थे दे० रघु० १५,—पञ्चः 1 शम्भु का पुत्र या दल 2 प्रति-पक्षी, विरोधी, विनाशकः शिब का विशेषण,—इत्या शम्भु की हत्या,—हृन् (वि०) शम्भु का बन्ध करने वाला। शम्भुशब्दः [शप्+वि+शप्, मृन्] 1 हाथी 2 एक पहाड़ का नाम, गिरधार पर्वत। शम्भुशपः (वि०) [शप्+तप्+शप्, मृन्] शम्भु शम्भु की परास्त करने वाला या नष्ट करने वाला। शम्भुरी (स्त्री०) रात।

शम्भुः (स्त्री०) पर० (परन्तु सार्वभौतिक लकारों में मा०)

—श्रीपते, शम्भु 1 पतन होना, नष्ट होना, नृशमि, कुम्भनामा 2 शम्भु—श्रेर० (शाश्वति-श्रे) 1 शूरीनाम।

डेकना 2 शापयति-से (क) गिराना, नीचे फेंक देना, काट शकना सि० १४८०, १५१४ (ख) बच करना, नष्ट करना ।

१) श्वा० पर० शपति० शाला (श्राय 'श' पूर्वक) ।
शप [शप्+शप्] श्राय, शापकात्री (फल मूल आदि) ।
शपिः [शप्+शप्] 1 हाथी 2 बाघ 3 कर्बुज, --हि (स्त्री०) शिवकी ।

शपः [शि०] [शप्+श] 1 जाने वाला, शतिथील 2 पतनशील, नम्बर, क्षय होने वाला ।

शपन्तेः (अथ०) [शप्+अक्] शपे शपेः दे० शपे ।

शपिः [शो+अपि क्रिष्ण] 1. शनिग्रह (सूर्य का पुत्र, जो काले रंग का व काले बरमे से सृजित बतलाया गया है) 2 शनिवार 3 शिव । शप० शप् काली शिव, --श्रवीषः शिव की (साध्यकालीन) पुत्रा जो कुलपक्ष की शपथकी की शनिवार का पत्नी पर की जाती है, --शिवः नीलमर्शी, शार, --शारः शनिवार का दिन ।

शपन्ते (अथ०) [शप्+अप्, पूर्व० नृक्] 1. आहिस्ता से, धीमे, चुपचाप 2. प्रथम क्रम, घोड़ा घोड़ा करके बरमे-संश्रित्युच्छ्वेत्-कु० ३१५९, मनु० ११२१७ 3 उपरीतर, उपर्यक्त क्रम में मनु० ११२५, 1 मृदुता से, नरमोक्ते 5 सुती के साथ, बालस्य-पूर्वक शपेः शपेः आहिस्ता से, आहिस्ता आहिस्ता । शप०- शर (शि०) गने शपेः शपेने शाला वा बन्धने शाला शनैश्चाम्ना पाशाम्ना रेवे श्रमणीय मा-शपु० १११७, (बहाई इस्का अब 'शपि' की है) (रः) शपिग्रह

शपन्तु [श मगलान्तका तनुसेत्य-श० स०] एक चन्द्रबन्धो राजा जिसने गया व शत्यवती से विवाह किया । गया का पुत्र भीष्म था, तथा शत्यवती के चित्रावर और शिषिणीय नामक दो पुत्र हुए । शोष आश्रम ब्रह्मचारी हुआ, तथा इसके छोटे भाई निम्ननाम स्वर्ण शिषार, १० 'भीष्म' ।

शप् (श्वा०, शिवा० उम० शपति-ते, शप्यति-ते, शप) 1 अभिघाय, सरापना, कोसना अक्षय्यव मापवीति ताम्-रघु० ८१०, शोऽभूत् परामुप नृमिपति क्षपाय (बृहः) ११७८, ११७७ 2. शपय लेना, कसव उठाना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना, शी-ष्य बाना (श्रायः प्रतिज्ञात 'शप०' तथा प्रतिज्ञाता के लिए करण० प्रयुक्त होता) -मरतेनापना चाह शपे ते मनुवातिषय । यथा श्वेदेन नृप्येयमते राम-विवाहनात् ११०, कर्मरहिः प्रयोग होने पर शपथबस्तु में करण० तथा शिके द्वारा शपथ की जाय उसमें शप० प्रयुक्त होता। शप्य शपयि-ते पाठकबस्तुन-का०, षट् २२ श्रवण विद्ववानोती

शीलायै स्वरक्षांशुलः शटि० ८१७४, ३३, कभी कभी 'शप्' का सवातीय कर्म के अनुसार प्रयोग होता है -सहस्रयोजी शपयामशप्यत्-शटि० ३१३२ 3. कलकित करना, बचकाना, दुरा-जला कहना, गाली देना (शप० के साथ या स्वतन्त्ररूप से)-शिवदुम्यव-शपस्तथा शटि० १७४४, प्रतिशपयतव केचय. शपमानाय न वैदिमनुजे शि० ४१२५, -श्रेर० (शपयति-ते) शपथद्वारा बंध लेना, शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करना-शपितोऽपि गोवाहायकाम्यया मूच्छ० ३, मा० ८ ।

शपः [शप्+अप्] 1. अभिघाय, सरापना, कोसना 2. शपथ, शीगन्ध ।

शपथः [शप्+अपन्] 1 कोसना 2 अभिघाय, आशोक, फटकारा 3 शीगन्ध, कसय जाना, शपय लेना या दिल्बाना, शपथोक्ति-आमोदी न हि कस्तुर्धा शपथेनानुशाम्यते-शामि० ११२२०, मनु० ८१०९ 4 शपथपूर्वक अनुशोच, शीगन्ध से बानना-मा० ३१० ।

शपन्म् [शप्+स्युट्] दे० 'शपथ' ।

शप्य (शु० क० ङ०) [शप्+क्त] 1 अभिघाय 2 जिसमें शीगन्ध लागी है 3 दुरा मला कहा गया, दुर्बन्धन कहा गया (दे० शप्) ।

शप्यः-कम् [शप्+अप्, पूर्व० पत्य क] 1 सुप्त 2 कुल की जड़ ।

शप्यरः (स्त्री० री) [शक राति-रा+क] एक प्रकार की छोटी चमकीली मछली-मोषीकर्तु बटुलशफरीइतैमप्रेक्षितानि-मेघ० ४०, शि० ८१२४ कु० ४१३९ । शप०-अशियः 'द्वीप' नामक मछली ।

शप (श) रः [शप्+अरन्] 1 पहाड़ी, अत्यन्त, शीघ्र, जगती-राजन् युञ्जाम्फालाना अज इति शबरा नैव हार हरति काव्य० १० 2 शिव 3 हाथ 4 जल 5 एक शास्त्र विधेय या धार्मिक पुस्तक 6 मीनाला के प्रसिद्ध नायकवार, री 1 भीलनी 2 राम की बनस्य प्रकट एक भीलनी । शप० आशयः जगती, पहाडियों और भीलों का विनाशस्थान, --श्रीश्र जगती शोण का वय ।

शप (श) ल (शि०) [शप्+अल, शपथ] 1. बन्धेदार, रत-विरथा, चितकबरा-रघु० ५१४४, १३१५६, महाशीर० ७२२६ 2 नामाङ्कन, बन्धे भागों में विभक्त, लः शानाङ्कार का रण, --का, --की 1 बन्धेदार या चितकबरी थाय 2. कामधेय, --कम्पानी ।

शप्य (शु० उम० शप्यति-ते, शप्यन्ते) 1 शपन करना, शोर मचाना 2. कोसना, कुलाना, बाबाद देना -विततमुद्रुकराव. शप्यन्त्या शपयिः परिपलति शिवा० ३३ हक्या शालमूय-शि० ११४७ 3. शप

जना, पुकारना अत एव सागरिकेत शब्दो रत्न०
४, अग्नि- नाम रत्नता, प्र , व्याख्या करना, सम् ,
बुलाना ।

शब्दः [शब् + धञ्] १ ध्वनि (श्रोत्रेन्द्रिय का विषय,
आकाशमूत्र, रघु० १११२ २ आवाज, कलरव
(पक्षियों का वा मनुष्यादि की का), कोलाहल, वि-
स्वाप्तोपममादभिप्रगतय शब्द सहूलो मृगा श०
१११४, मन्- १११३, श० ३११, मनु० ४।११३, कु०
१।४५, ३ शब्दे की आवाज बाधजब्द पच०
२।२४, कु० १।४५ ४ ध्वनि, शब्द, सायंक ध्वनि,
शब्द (परिभाषा के लिए दे० महाभाष्य की प्रस्तावना)

एक शब्द सम्प्रयोजित सम्बद्ध प्रयुक्त स्वर्थ लोके
काममूत्रभवति, इसी प्रकार 'शब्दायै' ५ विकारीशब्द,
सज्ञा, प्रातिपदिक ६ उपाधि, विशेषण -यस्याध्वस्त
गिरिताराशब्द कुर्वन्ति बालव्यजनैश्चमर्थ-कु० १११३,
श० २।१४, नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक् रघु०
३।३५, २।५३, १४, ३।४९, ५।२२, १।८।११, विक्रम०

१।१ ७ नाम, केवल नाम जैसे कि 'शब्दपति' में
८ शाब्दिक प्रामाणिकता (न्यायिकों के द्वारा 'शब्द
प्रमाण' माना जाता है) । सम० अतीत (वि०)
शब्दों की शक्ति से परे, अनिर्वचनीय अविच्छिन्नम्
कान, अस्वप्नहारः (शब्दव्यूनता की पूरा करने के लिए)
शब्दपति, -अनुष्ठानम् शब्दों का गालन अर्थात्
व्याकरण, अर्थ शब्द के अर्थ (श्री-द्वि० व०) शब्द
बीर उसका अर्थ अदोषी शब्दायै- काव्य० १,
अलङ्कार नष्ट अलङ्कार/ जो अपने शब्द सौन्दर्य
पर निर्भर करता है, तथा जब उसी अर्थ की प्रकट
करने वाला दूसरा शब्द रत्न दिया जाता है तो उसका
सौन्दर्य क्षुप्त हो जाता है (वि० अर्थात् छूटा) उदा०
दे० काव्य० २, आश्वमेय (वि०) शब्दों में भेदा
जाने वाला मयाचार मेघ० १०३ (ध्व्) मौखिक
या शाब्दिक मन्देश, आश्वमेद बागजान, बाकप्रपच,
शब्दाधिक्य, अतिशयोक्तिपूर्ण शब्द, आधि (वि०)

'शब्द' से आरम्भ होने वाले (ज्ञान के विषय) रघु०
१०।२५, कौश्लः अविधान, शब्दसप्रह, पत्त (वि०)
शब्द के अन्दर रहने वाला, शब्द १ शब्द पकबना
२ कान, धातुवैभूय शब्दों की निपुणता, बाधपूट्ना,
विभक्त कविता की अल्प श्रेणी के दो उपप्रभेदों
में से एक (अवत या अवम) (इस प्रकार के काव्य
में सौन्दर्य उन शब्दों के प्रयोग में है जो कर्णमत्त
होते हैं, 'विभ' के अन्तर्गत दिया हुआ उदाहरण
देखो), शौरः शब्दचोर साहित्यचोर, तन्मात्रम्
ध्वनि का सूत्रम तत्त्व, -वृत्तिः नायमात्र स्वामी, १ का
प्रभु-अनु शब्दपति मिलेरहू स्वधि मे भावनिबन्धना
रति-रघु० ८।५२, -वाग्निम् (वि०) शब्द मूल कर

ही अनुष्व निशाना लगाने वाला, शब्दवेधी, निशाना
लगाने वाला-रघु० १।७३, अस्वल्प शब्दिक या
मौखिक प्रमाण, शेष. मौखिक साक्ष्य में प्राप्त ज्ञान
शब्दम् (नपु०) १. वेद २ शब्दों में निहित भा-
ष्यात्मिक ज्ञान, आरम्भा या परमावस्थसम्बन्धी ज्ञान
उत्तर० २।७ ३ शब्द का मूत्र, 'स्फोट',
शेषिन् (वि०) शब्दवेधी निशान लगाने वाला
(पु०) १ अर्जुन का विशेषण २ पूजा ३ एक प्रकार
का भाण, शौचिः (स्त्री०) वातु, मूल शब्द, -विद्या,
प्रासम्यम्, शास्त्रम् शब्दशास्त्र अर्थात् व्याकरण
-अनन्तपार किञ्च शब्दशास्त्रम्-श्व० १, शि० २।११२,
१४।२४, शिरोच. (शास्त्र में) शब्दों का शिरोध,
शिवोचः ध्वनि का एक रस, -वृत्ति (स्त्री०)
साहित्य शास्त्र में शब्द का प्रयोग, शेषिन् (वि०)
ध्वनि सुनकर ही शब्दवेधी निशाना लगाने वाला
दे० 'शब्दपतिम्' (पु०) १ अर्जुन का विशेषण
२ एक प्रकार का भाण, शक्ति (स्त्री०) शब्द की
अभिव्यञ्जक शक्ति, शब्द की साधकता-दे० शक्ति,
शुद्धि (स्त्री०) १ शब्दों की परिव्रता २ शब्द
का शब्द प्रयोग, -श्लेषः शब्द में अनेकाधता, वृषयंकता
(यह अलङ्कार 'अर्थश्लेष' में इसलिए भिन्न है कि
इसके सपट्ट शब्दों को हटाकर समानार्थक शब्दों
की रच देने मात्र में शिष्टता नष्ट हो जाती है,
जबकि 'अर्थश्लेष' अर्थात्विगत ही रहता है शब्द-
परिवृत्ति सहस्रमर्थश्लेष) -अपहः शब्दकोश, शब्दावली,
शौचम्यम् शब्दों का शिवित्य, शक्ति शौरि प्राञ्जल
शैली शौचम्यम् अभिव्यक्ति की साधकता ।

शब्दम् (वि०) [शब् + स्युट्] शब्द करनेवाला, ध्वननशील
मत् ध्वनन, कोलकूल करना, शब्द करना २
आवाज, कोलाहल । पुकारना, बुलाना ४ नाम
लेना ।

शब्दायते (नामघातु आ०) १ कोलाहल करना, गोर
करना शब्दायन्ते दूरधनिर्ले कीचकता पुत्रंभाषा
-मेघ० ५९ २ ध्वन करना, दहाइना, चिल्लाना,
पीं पी करना अर्थ० ५।५२, १७।९१ ३ बुलाना,
पुकारना एते हतितानुपुराणिन श्वचः शब्दायन्त
श० ४, मृदा०।. मृच्छ० १, वेणी० ३ ।

शक्ति (पु० क० इ०) [शब् + क्त] १ ध्वनित, आवाज
निकाली गई, (अध्वयथादिक) बजाया गया २ कृश
मया, उन्मत्तारण इया गया ३ बुलाया गया, पुकारा
गया ४ नाम रत्न मया, अविहित ।

शब् (अव्य०) [शब् + शिच्] कल्याण, आनन्द, समृद्धि,
स्वास्थ्य को हासिल करने वाला अव्यय, आशीर्वाद
या मंगल कामो प्रकट करने के लिए प्रयुक्त (स०
या सर्व० के ाच) ३ देवपताय देवपताय इ

(शाब्दिक पत्रों में शुभ समाप्तिसूचक प्रयोग - इति शाब्) । सम० - कर दे० धानु के नीचे, शक्ति (वि०) आनन्द प्रदान करने वाला, मंगलमय, शुभ पाक 1 लाल, महाहर, लाल रंग 2 पकाना, परिष्कृत करना, भू दे० धानु के नीचे ।

शब्द : (विद्या० पर० शाब्दिक, शान्त) 1 शान्त होना, चुप होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना शाब्देत्यव्यप-कारेण नोपकारेण दुर्जेन - कु० २।४० रघु० ७।३, शान्तो लब्ध - उत्तर० १।७ 2 घमना, ठहरना, समाप्त होना - चिन्ता शाशय सकलाऽपि सरोहृहाणाम् -- भाषि० ३।३, न जानु काम कानानामुपभोगेन शाब्दिक मनु० २।२४, 'मन्तुष्ट नही होता' 3 शांत होना, बुझना - शाशय बृष्ट्यापि बिना श्वापिन् रघु० - २।२४, उत्तर० ५।७ 4 काम समाप्त करना, नष्ट करना - मांर शालना (इसी अर्थ में कथा० जी) - वे० (शमयति-ते, पान्तु देवना अर्थ में 'शामयति ते' दे० शब्द 1) 1 प्रसन्न करना, उपशमन करना, शान्त करना, बीरज देना, सांत्वना देना, दास्य श्वापाना क सीतलै शमयिता बधनेत्यशापिम्

भाषि० ३।३, श० ५।७ 2 अन्त करना, राकना - कु० २।५६ 3 हटाना, परे करना - प्रतिकूल देव शमयितुम् श० ? : दमन करना, पान्तु बनाना, हटाना, झीनना, परान्त करना शमयति गजानन्यान् गन्धर्विष कलभोर्जि सन्-बिक्रम० ५।१८, रघु० १।१२, १।५९ 5 मार डालना, नष्ट करना, बध करना - वेणी० ५।५ 6 शान्त करना, बुझाना

मेष० ५३, हि० १।८८ 7 त्याग देना, इकना, घमना, उच . 1 शान्त करना - मट्टि० २०।५ 7 घमना, ठहरना, बुझना 3 हट जाना, बोलना बन्द होना परे रहना, बुझ जाना - प्रशान्त वाक्का-म्बु उतर० १ 5 मुझाना, कुम्हलाना (वे००)

1 शांतना देना, प्रसन्न करना, शान्त करना, - मनु० ८।३९१ 2 दूर करना, बुझाना, शीतल करना, दबा देना - त्यामासार-प्रशमितकनोपलब्धम् - मेष० १७ 3 हटाना, अन्त करना - तम् (अपचार) अन्विष्य प्रशमयेत् - रघु० १।५।७ 4 झीनना, परास्त करना, शमीभूत करना - मुच्छ० १०।६० 5 प्रतिष्ठित होना, शमयन करना, स्वस्थचित होना प्रशमयति विवाह कल्पसे रजसाय - श० ५।८, सम् 1 शान्त करना 2 निराकृत होना, बुझना, लुप्त होना - सर्व समाप्तोश्च मे - मट्टि० १।८।३ 3 हट जाना ।

॥ (धुरा० उच० शाब्दिक-ते) 1 देवना, निगाह डालना, निरीक्षण करना 2 बतलाना, प्रदर्शन करना, सि . 1, देवना, अवलोकन करना 2 नुनना, काम देना विद्यामय श्रियसक्ति - मा० ७।३ ।

शब्द : [शब् + धञ्] 1 मुकता, शान्त, शंभ 2 विश्राम, ठहराव, आराम, निवृत्ति 3 वासनाओं पर प्रतिबन्ध या अभाव, मानसिक शान्त, विरक्ति - सगरतेऽम्बर-तेजसि शब्दिके रघु० १।४, कि० १०।१०, ११।४८, शि० २।९४ श० २।७, भग० १०।४ 4 निराकरण, लक्ष्यकरण, उन्मथन, शनोधीकरण, (शोक, व्यास, मूक आदि का) प्रशमन - शमयुपायानु मयापि चित्त-दाहः उत्तर० ६।८, शमयेत्यति मम शोकः कथ नु वल्ले श० ४।२० 5 शान्त, अंसा कि 'शमोप-न्याय' वेणी० ५ 6 (सवार की समस्त भ्रान्तियों व आसक्तियों से) मोक्ष 7 हाथ । सम० - अन्तकः कामधेव (मानसिक शान्ति को नष्ट करने वाला), - पर (वि०) शान्त, मूक, विषयविरागी ।

शब्दः [शब् + अथच्] 1 शान्ति, स्थिरता, विशेषत मानसिक शान्ति, आवेशभाब 2 परामर्शदाता, मन्त्री ।

शब्दम (वि०) (शब् + शी०) [शब् + शिच् + स्त्वट्] शमन करने वाला, दमन करने वाला, बगीभूत करने वाला आदि, - मम् 1 प्रसन्न करना, निराकरण करना, दास्य श्वापाना झीनना, उन्मथन करना 2 स्वर्ग, शान्त 3 अन्त, ठहराव, समाप्ति, विनाश 4 चोट पहुँचाना, घायल करना 5 बल के लिए पशुबध करना, पशुबध 6 निराल जाना, बधना, - कः 1 एक प्रकार का हरिण, बारहसिया 2 मृत्यु का देवता, यम । सम० स्वम् (शब् + शी०) 'यमवस्था' यमुना नदी का विशेषण ।

शब्दनी [शमन + शप्] रात । सम० शब्दः (शब्) रासक, पिशाच, भूत-प्रेत ।

शब्दकम् [शब् + कल्च्] 1 मल, शीद, विष्टा 2 अप-विषता, गाद, तलीछ 3 पाप, नैतिक मलिनता ।

शब्दित (यु० क० कृ०) [शब् + शिच् + क्त] 1 प्रसन्न किया गया, निराकृत, दास्य श्वापाना गया, शांत 2 पीया किया गया, चिकित्सा की गई, मारविषयक किया गया 3 विश्राम दिया गया 4 शान्त, शीघ्र परिमित किया गया, मनु किया गया ।

शब्दित् (वि०) [शब् + शिच्] 1 शीघ्र, शान्त, प्रशान्त 2 जिसन अपने आवेशों का दमन कर लिया है, आरधनिश्चित मट्टि० ७।५ ।

शब्दी (शब्दि) [शब् + श्, शी० वा] 1 एक बृज (कहा जाता है कि इसमें भाग रहते हैं) अग्निपर्वा शब्दी-शिव श० ४।२, मनु० ८।२४७, ब्राह्म० १।३०२, 2 फली, छोटी, तैय । सम० शब्दीः 1 शब्दि का विशेषण 2 बाह्य, अग्निहोत्री बाह्य, - बान्धव्य कृतियों में उत्पन्न वा दास्य आदि, द्वितीय शब्द ।

शब्दनी [शब् + पा + क्त] बिजली ।

शम्भू : (श्म + पर + शम्भति) आना, हिलाना-बुलाना ।

॥ (घृ + पर + शम्भयति) सचय करना, डेर लगाना ।

शम्भ (श्म + श्भ्) 1 प्रसन्न, भाव्यशाही 2 बेचारा, अनाथा, - श्मः 1 इन्द्र का बच्चा 2 मुसली का कोड़े का बना छिर 3 कोड़े की जञ्जीर जो कमर के चारो ओर पहनी जाय 4 नियमित रूप से हल चलाना 5 जुते हुए खेत में हल चलाना (शम्भक दोबारा हल चलाना) ।

शम्भरः [शम्भ + श्वर] 1 एक राजस का नाम जिसे प्रद्युम्न ने मार गिराया था 2 पहाड़ 3 एक प्रकार का हरिण 4 एक प्रकार की मछली 5 युद्ध, - रघु 1 जल 2 बादल 3 दौलत 4 संस्कार या कोई धार्मिक अनुष्ठान । सम-अरि, सुभयः प्रद्युम्न या कामदेव के विशेषण, अक्षुर-श्वर नामक राजस ।

शम्भरी [शम्भर + शी] 1 माया, जादू 2 स्त्री जादू-रत्नी ।

शम्भकः, -कम् [शम्भ + कल्च्] 1 तट, किनारा 2 पाशेय, मागव्यय, राहस्य 3 स्पर्धा, ईर्ष्या ।

शम्भली [शम्भल + शी] कुटनी ।

शम्भू, शम्भुक, शम्भुकः [शम्भ + उच्, शम्भ + कन्] द्विकोपीय घोषा ।

शम्भुकः [शम्भ + ऊक] 1 द्विकोपीय घोषा 2 शम्भू 3 घोषा 4 हाथी की मूँड़ की मोक 5 एक बृद्ध (इस राम ने उसकी जाति के लिए वज्रित साधना का अभ्यास करने के कारण मार डाला था, दे० उत्तर० २, तथा रघु० १५ ।

शम्भः [शम्भ + श्] 1 प्रसन्न मनुष्य 2 इन्द्र का बच्चा ।

शम्भली [शम्भ + शी] हूती, कुटनी ।

शम्भू (वि०) [शम्भ + भू + श्] आनन्द देने वाला, समृद्धि प्रदान करने वाला-भू, 1 शिव 2 ब्रह्मा 3 ऋषि, ऋषेय पुत्र 4 एक प्रकार का मिट्ट । सम० - तमयः शम्भुकः, -भुतः कालिकेय या गणेश के विशेषण, श्रिया 1 दुर्गा 2 आमल को, -अस्त्रभम्भू श्वेत कमल ।

शम्भा [शम्भ + यत् + टाप्] 1 लकड़ी की छड़ी या घुंठी 2 बड़ा 3 जूए की कील, सिक्का ' एक प्रकार की शीश 5 पत्नीय पात्र ।

शय (वि०) (श्मी - या, शी) [शी + श्च्] लेटने वाला, सोने वाला, (प्रायः समास के अन्त में) -रात्रिजागरपरौ शिकाशय - रघु० १९।३८, इसी प्रकार उत्तानशय, पार्श्वशय, वृषेशय, विलेशय आदि, -शः 1 नींद 2 विस्तरा, शय्या ' शय ' सोने विशेषत अक्षर 5 दुर्बल, फौसना, अविशाप ।

शयण (वि०) [शी + शयन्] निद्रानु, सोने वाला ।

शयण (वि०) [शी + शयन्] निद्रानु, सोया हुआ, -थ 1 मृत्यु 2 एक प्रकार का सोप, अक्षर 3 मछली ।

शयणम् [शी + श्यट्] 1 सोना, चिद्रा, लेटरा 2 विस्तरा, शय्या - शयनस्थो न युक्तीति मनु० ४।१४, रघु० रघु० १।१५ विक्रम० ३।१० 3 मेषन, सभोय । सम० श (श्) शाय, रघु, -मृत्यु शयनकल, सोने का कमरा, एकादशी आषाढ़ शुक्ला एकादश (एम दिन विष्णु भगवान् चार मास तक विश्राम के लिए लेट जाते हैं), -सक्ती एक शय्या पर साय सोने वाली सहेली स्थानम् सोने का कमरा, शयनकल ।

शयनीयम् [शी + अनौयर्] विस्तरा, शय्या, - परिशय्य शयनीयमथ मे रघु० ८।१६ कान्तामन्यु शयनीय गिलातल ते - उत्तर० ३।२१ (इसी अर्थ में शयनीय-कम्) ।

शयानक [शी + शानच् + कन्] 1 गिरगिट 2 एक सोप, अक्षर ।

शयान् (वि०) [शी + शानच्] निद्रानु, नन्दानु, आनसी शि० २।८०, कृः 1 एक प्रकार का सोप, अक्षर 2 कुत्ता 3 गीदड़ ।

शयित (भू० क० कृ०) [शी कर्त्तृि क्त] 1 सोने वाला, विश्रान्त, सुप्त 2 लेटा हुआ ।

शयुः [शी + उ] बड़ा सोप, अक्षर ।

शय्या [शी आकारे श्यप् + टाप्] 1 विस्तरा, बिछौना -शय्या भूमिलम् शान्ति० ४।९, मही रथ्या शय्या मनु० ३।७९, रघु० ५।१६ 2 शौचान, नथी करना । सम० अश्वज, बाल राजा के शयन-कक्ष का अधीशक, उत्सङ्गः पलंग का एक पार्श्व, -शत (वि०) 1 पलंग पर लेटा हुआ 2 गोरी, गृहम् शयन-कक्ष, रघु० १६।१ ।

शर [श्रु + श्च्] 1 बाण, तीर -श्व व निजिननिपाता वज्रसारा शरान्ते म० १।१० 2 एक प्रकार का सफेद नरकड़ा या चास शरकाश्रयाशुवपशम्भला -मालवि० ३।८, मुनेन शीला शरपाशुदरेण रघु० १।२।६, शि० १।१।३ 3 कुछ जमे हुए बूध की मर्दाई, मलाई 4 बोट, क्षति, धाव शीघ्र की शय्या, रघु पत्नी । सम० अश्वकः शरिद्रा तीर, अश्याः तीरदात्री, -शरालम्, शायम् भनु, कमान रघु० ३।५२, कु० ३।६५, शालेष तीरो की वर्षा, -शरीरेय, शायवः भनु, -शायवः तरकम् -आहत (वि०) जिसके तीर लगा हो, -ईषिका शाय, इष्टः शाय का बल, शोधः बाणों का समूह, शायवर्षा काण्डः 1 नरकुल की डही 2 बाण की लकड़ी, बाल शय से लक्ष्यवेध करना, तीरदात्री, शम्भू राजा मकलन -शम्भू (पु०) कालिंदेय का विशेषण -रघु० ३।२८, -शालम् बाणों का समूह या डेर

कृपाता, अ. 1. रोग 2 काम, प्रयोज्यमात्र 3. काम-
देव 4 पुत्र, सन्तान—कि० ४।३१, —सुख्य (वि०)
समान अर्थात् उतना प्रिय जितना अपना शरीर,—बन्ध
1 शारीरिक बंध ? कार्य-साधना (बैसा की तपस्या
में), बुद्ध (वि०) शरीरधारी, पतनम्, पातः
मृत्यु, मोल, —पाक (शरीर की) कृमता,—बद्ध
(वि०) शरीर से युक्त, शरीरधारी, शरीरी—कु०
५।३०, बन्ध. 1 शारीरिक बाधा रघु० १६।२३
2 शरीर से युक्त होना अर्थात् शरीरधारी प्राणी का
जन्म—रघु० १३।५८—बन्धक. सशरीर प्रतिभु,—आज
(वि०) शरीरधारी, शरीरी (पु०) जन्म, शरीरधारी
प्राणी,—भेष (आरक्षा में) शरीर का विधांग, मृत्यु,
—घटित (स्त्री०) पतला शरीर, मुकुमार, दुबला-
पतला, —आजा आजीविका,—विधोत्सवम् आत्मा का
शरीर से छुटकारा, मर्ति, धृति. (स्त्री०) शरीर
का पालनपोषण—रघु० २।४५,—बैकल्पम् शारीरिक
रोग, बीमारी, व्याधि मनुष्या व्यक्तिगत सेवा,
—सस्कार 1 व्यक्ति की सजावट 2 नाना प्रकार
के मुद्रिसंस्कारों के अनुष्ठान द्वारा शरीर को निर्मल
प्रार्थना,—सर्पति (स्त्री०) शरीर की समृद्धि, (अब्ध)
स्वास्थ्य,—पाद. शरीर की दुर्बलता, कृमता—रघु०
३।२, स्थिति (स्त्री०) 1 शरीर का पालन-पोषण
—रघु० ५।९ 2 भोजन करना, पाना (का० में बहुधा
प्रयुक्त) ।

शरीरकम् [शरीर + कम्] 1 देह 2 टोटा शरीर,—क
आत्मा ।

शरीरिणी (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [श + इवि] शरीर-
धारी, शरीरयुक्त, शरीरी—कृष्णस्य मूर्तिरथवा
शरीरिणी किंरुह्ययेव वनेमिनि जानकी उपर०
3।४, मालवि० १।१० 2 जीवन (पु०) 1 कोई भी
शरीरधारी वस्तु (चाहे ब्रह्म ही चाहे केवल) शरी-
रिण्या स्वावरज्यमाना मुवाय तज्जन्मदिन बभूव—कु०
१।२३, रघु० ८।४३ 2 सजीव प्राणी 3 मनुष्य
आत्मा (शरीर से युक्त)—रघु० ८।८९, भग०
२।१८ ।

शरकरा [शु + करन् + जन् + इ + टाप्] कबयुक्त बीनी,
सिन्धी ।

शरकरा [शु + करन् + टाप्] 1 कदपुलक बीनी 2 ककरी,
रोही, बजरी मून्ध० ५ 3 ककरीना कप 4 शालू
से युक्त भूमि, रेत 5 टुकड़ा, अन्न 6 ठीकरा,
7 कोई भी कड़ा कण जमा कि 'जलसर्करा', पानी
का कण अर्थात् ओला 8 पथरी का रोल । मम०
उदकम् कार्दमिधिन जल, बीनी डाल कर मीठा
बिजा हुआ पानी, सलसी वंशाथ मुकला सलसी के
दिन मनाया जाने वाला अनुष्ठान ।

शरकरिण (वि०) (स्त्री०-स्त्री) शरकरिण (वि०) [शरकरा
+ ठक, इलम् वा] ककरीला, बजरीदार, किरकिरा ।

शरकरी (स्त्री०) : नदी 2 कल्पनी, मेसला ।

शरकः [शु + कम्] 1 अथानवायु का त्याग, अफारा
(इत अर्थ 'म नपु० भी होता है) 2 दल, समूह
3 सामर्थ्य, शक्ति ।

शरकेशु (वि०) [शरक + श्वा + लृच्] अफारा उत्पन्न
करने वाला,—ह उडव या माप की दाज ।

शरकणम् [शु + कण् + टाप्] अथानवायु को छोड़ने की क्रिया ।

शरकं (स्त्री० पर० शरकंति) 1 जला, हिलाना-जुलना
2 क्षतिघटन करना, मार डालना ।

शरकं (पु०) [शु + मनिन्] ब्राह्मण के नाम के आगे
जाओ जाने वाली उपाधि यथा विष्णुशरकं, तु०
वर्मेन्, दान, गुण (नपु०) 1 प्रसन्नता, आनन्द, सुखी
—त्यजन्त्यमृत्युर्गर्भं व मानिनी बर त्यजन्ति न त्वेकम-
याचित इत्यम—ने० १।५०, रघु० १।१९, भर्तु०
३।९७ 2 आशीर्वाद 3 घर, आभार (इस अर्थ में
बहुधा वैदिक) । मम० इ (वि०) आनन्ददायक
(—इ) विष्णु का विशेषण ।

शरकरः [शरकं + रा + क] एक प्रकार का परिधान,
बस्त्र ।

शरका [शु + क्त + टाप्] 1 राशि 2 अगुली ।

शरकं (स्त्री० पर० शरकंति) 1 जाना 2 बोट पहुंचाना
आदि पहुंचाना, मार डालना ।

शरकः [शु + क] 1 शिव—रघु० ११।९३ कु० ६।१
2 विष्णु ।

शरकरः [शु + श्वरन्] कामदेव, रम् अन्धकार ।

शरकरी [शु + शरिन्, शीन्, वलोर व] 1 राम गाँव
पुनरिति शरकरी रघु० ८।५३, ३।२, १।१९३, सि०
१।१५ 2 हन्दी 3 स्त्री । मम० ईसा चन्द्रमा ।

शरकशी [शरकं + शीप्, आन्क्] शिव की पत्नी पार्वती ।

शरकरीक (वि०) [शु + ईकन्, द्विवादि] उपद्रवी, घृ०
—कः पुत्र, पात्री, दुर्बल ।

शरकः (स्त्री० आ० शरकेशे) 1 हिलाना, हरकन देना
सुख्य करना 2 क्षिपना ।

11 (स्त्री० पर० शरकति) 1 जाना 2 तेज दीटना ।
11 (पु०) आ० आनन्दते) प्रसन्ना करना ।

शरकः [शु + अक्] 1 मीरा, बछी 2 मेघ 3 भुगी नाम
का शिव का एक नाम 4 बड़ा, लम्ब साही का रण
(कुछ के अनुसार पु० भी) ।

शरकः [शु + कन्] मक्कर, मकरा ।

शरकः [शु + अक्] 1 राजा, प्रभु ।

शरकः [शु + अक्] 1 टिट्टा, टिट्टी पा० १।२२

2 पतला कौरव्यवादाथेऽस्मिन् क एष अन्धमान
वेणी० १।१९, सि० २।११७, कु० ४।४० ।

शलकम् [शल् + कल्] साही का काटा, भी 1 साही का काटा 2 छोटी साही ।

शलाका [शल् + आक, टाप्] 1 छोटी छड़ी, बूँटी, रण्डा, कील, टुकड़ा, पतला त्रिकोण—अपस्कारात्मक-शलाका—भा० १ 2 त्रिकोण (कील में मुर्दा बाजने की) सलाई—अज्ञानात्मक शोकस्य ज्ञानात्मकत्वसाक्षात्कारः । यजुःकर्मोक्ति येन तस्मै पाणिनेये नमः ॥ शिक्षा० ५८, कु० ११४७, रघु० ७८ 3 बाण 4 शीप, नेत्रा 5 एक शोकदार शल्योपकरण (बाण की पहलवाई नापने के लिए) 6 छतरी की तीली 7 हृद्यप पैर की अंगुलियों की जड़ की) हड्डी—यात्र० ३८५ 8 अकुर, कुनगी, कोपल—कु० १२४ 9 रज मग्ने की कूची 10 दंत साफ करने की कूची, दंत-कुटेदनी 11 साही 12 शरीर दांत या हड्डी का बन्ध-बन्धा संकेत का जापताकार (पासा) टुकड़ा । सम०—चूर्ण (शलाकाचूर्ण) उपवशा, ठा, परि (अन्व०) जूए में मगहूम पासा पढना, तु० परि, अक्षपरि ।

शलाद् [शल् + श्वाद्] अलपका, दुः कन्-विशेष ।

शलाघोसि, (पु०)—जेट ।

शलकम्, शलकम् [शल् + कन्, कल् वा] 1 मछली का बरतल या छिलका यजु० ५११५, यात्र० १ । १०८ 2 बरतल, छाल (बूझो की) 3 माण, अना, लण्ड ।

शलकस्मिन्, शलकम् [शलकन् (शलक) + इनि] मछली ।

शलम् [श्लो० आ० शलने] प्रथमा कर्मा ।

शलसिन्, —सी (स्त्री०) [शल + मलच् + इन् परो ङीए] रोगी हुई का वृक्ष, समल ।

शल्यम् [शल् + यत्] 1. बर्छी, नेत्रा, मात 2 बाण, तीर, शल्य-निदानमुद्धारयताभ्रुत् रघु० ११०८, शल्य-शोभन् ११७५, शं० ६१९ 3 काटा, मपची 4. मेख, पुटी, घृणी (उपसृक्त चारो अर्थों में पु० भी होता है) 5 शरीर में चुंसा हुआ कोई पीडा कारक काटा आदि अज्ञातशल्यम्—उत्तर 1, ३३५ 6 (अन्व०) हृदयविदारक शोक या किन्हीं तीव्र पीडा का कारण—उज्ज्वलविदारकशल्य कल्पित्यामि—वा० ७ 7 हृदयी 8 कठिनार्थ, कष्ट 9 पाप, कुर्म 1० विष, श्वः 1 साही, शाऊ चूहा 2 कटेदार शाही 3 (बापु० में) शायिकिस्ता में लपचियों का उखेदना 4 बाइ, सोमा 5 एक प्रकार की मछली 6 शरणा का राबा, पाइ की द्वितीय पत्नी माटी का चार्ड, नकुल और महर्षेय का नामा (महाभारत के युद्ध में उसने पाइयो की ओर से लड़ने का विचार किया परन्तु दुर्योधन ने चालाकी से उस पर प्रमाथ डाल कर उसे अपनी

ओर कर लिया, अन्ततः वह कौरवों की ओर से लड़ा । कर्ण के सेनापति बनने पर वह उसका सारथि बना, और कर्ण की मृत्यु हो जाने पर उसे गौरव सेना का सेनापतिव शिका । एक दिन तक उसने सेनापतिव का भार सभाला, परन्तु दूसरे दिन युधिष्ठिर ने उसे भीत के भाट उतार दिया । सम०

शरिः युधिष्ठिर का विशेषण, साहरणम्, उद्धरणम्, उद्धार, शिका,—शाकम् काटा या फास आदि निकालना, शल्यशास्त्र का बहु भाग जो शरीर से असतत सामग्री को उखाड़ फेंकने से सबब रहता है,—शकः शाऊ चूहा, लौलम् (नपु०) साही का काटा, हृत् (पु०) निरया, निराने वाला ।

शल्यक [शल्य + कन्] 1 शीप, नेत्रा, तलाज 2 लपची, फास, काटा 3 शाऊ चूहा, साही ।

शल्यकः [शल्य + कच्] मूतक, —शल्यक बकल, छाल ।

शल्यकः [शल्य + कन्] वृक्ष, शीप वृक्ष,—अन्व बकल, छाल ।

शल्यशील [शल्यक + शीप्] 1. साही 2 एक वृक्ष विशेष जो हाथियों को बहुत प्रिय है—पु० उत्तर० २१२१, ३१६, मा० ११६, विश्व० ५२३३ । सम०—इक्षु वृष, लोबान ।

शल्यः [शल् + कन्] एक देश का नाम, दे० 'शान्व' ।

शम् [श्वा० पर० मर्चति] 1. ज्ञाना, पहुँचना 2 बदलन परिवर्तन करना, क्पात्तर करना ।

शम्, शम् [शल् + शच्] साध, मुर्दा शरीर—यजु० १०५५, शम् जल, शाल्यकम् मूतक शरीर का जावरण, दफन,—शाल्य (वि०) मुर्दा साकर जीने वाला—अष्टि० १२१७५,—शाल्य कुमा शाल्यम्, —श्वः मुर्दा होने की गाथी, अरथी, एक प्रकार की पालकी जिसमें मूतक शरीर रख कर दमशान भूमि में से जाने हैं ।

शम्बर, शम्बर दे० शम्बर प्रकल ।

शम्भान् [शम् + श्वानन्] 1 पाकी 2 मार्ग, सबक, —शम् कश्चित्तान्, शम्भान्शान् ।

शम्भ [शम् + शच्] 1 कल्पोद्य, लच्छा—यजु० ३१७७०, ५११८ 2 चन्द्रमा का कलक (जो मरतीश की आकृति का समझा जाता है) 3 कामशास्त्र में शक्ति पार प्रकार के पुरुषों में से एक भेद । ऐसे मनुष्य के लक्षण ये हैं मृदुवचनमुञ्जित कोमलांग सुकेश, सकलमुञ्जितान् शल्यवादी शयोऽशम्—शब्द०, दे० रति० ३५ भी 4 कोश वृक्ष 5 शील नामक मृगद्वारा गौड । सम०—अन्व 1. चार 2 कपूर 'अन्व' (वि०) अर्धचन्द्राकार मित्र वाला (बाण आदि) 'शुक्तिः चन्द्रमा का विशेषण 'शिक्षा चार की कला, चन्द्रकला,—अन्वः 1 शाल्य, श्वेत् 2 पुत्रजय के पिता इक्ष्वाकु का एक

गत प्राहुं सतुप धान्यमुच्यते—दे० 'उदुल' मी 3 गुण । सम० श्लेषम् अन्न का श्वेत, अन्नक (वि०) अन्नहारी, अनाज माने बाणा, अन्नहारी अनाज की बाण, —वास्तिन् (वि०) त्रिपटा श्वेत द्वारा भरा सुहा ही,—वास्तिन्, श्वेत (वि०) अन्न या धान्य से परिपूर्ण, सुकम् अनाज का मिर्दा,—श्वत् (स्त्री०) अनाज की बहुतायत, सम्भ (स्व) टा टाल का वृक्ष, साम का पेड़ ।

शाक, कम् [पचयते भावतुम्—पक्+चम्] शाक, माग-भाजी, खाद्यपत्र, फल या कन्द जो शाक की भाँति उपयोग में आवे जाय- विल्लीखरो वा जगदीश्वर वा मनोरथान् परिपूर्ण समर्थ, अन्वे-न [पात्रे परिशील्यमानं शाकपत्र वा स्वात्मवेषाप वा म्यात् जय०,—कः] 1 शक्ति, सामर्थ्य—ऊर्जा 2 सागरी का वृक्ष 3 पिररीय का वृक्ष 4 एक शक्ति का नाम—दे० एक 5 वर्ष, विलीयन यादिवाहन मयःपर । सम०—अङ्गुल्यु मितं, जम्बूय महादा इत्यतः आश्वः सागरी का वृक्ष, (क्यम्) शाकभाजा आहार जाकभाजी माने बाणा (इत्यस्मिन् शाक्य शक्ति रखने वाला), चुल्का इमनी, शक, सागरी का वृक्ष, पत्रः 1 मुद्गोत्तर भार के बराबर मात्र 2 मुद्गोत्तर शाकभाजी,—वास्तिः अपने नाम से वध बनाने का लीकोन, दे० मध्यमदलापिन्, -प्रति (अव०) बोधी ली बनपति,—शीय धान्य—वृक्ष सागरी का पेड़ आकम्, शाकिकम् नाम भाजी का श्वेत, रमोई के शीय शक्तिवा का उद्यान ।

शाकट (वि०) (स्त्री०—टी) [शकट+अम्] 1 गाड़ी मजदूरी 2 गाड़ी में बैठकर जाने वाला, -ट 1 गाड़ी खोचने वाला शैल 2 इनेध्यात्मक वृक्ष (नप०) श्वेत नु० शाकसाकटयु ।

शाकटायन [शकटसायन्धम् १५८+पक्] भाषा-विज्ञान और व्याकरण का पहिल त्रिकोण। पाश्चिमी और शाकटने कई बार उल्लेख किया है नु० व्याकरणे शकटस्य च लोकम् विष० ।

शाकटिक (वि०) (स्त्री० ली) [शकट+इक्] 1 गाड़ीसम्बन्धी 2 गाड़ी में बैठकर जाने वाला ।

शाकटीय [शकट+अम्] गाड़ी में बसने योग्य बोन, बोन मुका के समान बोन की शैल ।

शाकल (वि०) (स्त्री० ली) [शकल+अम्] टुकड़े से सम्बन्ध रखने वाला,—कः शून्धेद को एक शाकल, इन शाकल के अनुयायी (ब०ब०) । सम० शास्त्रि-प्राच्यम् शून्धेद का प्राग्निभाष्य, शाकल शून्धेद का परम्परागत पाठ जो शाकल शाकल में प्रचलित है ।

शाकल्यः [शकलसायन्धम् चम्] एक प्राचीन वैद्याकरण विदका उल्लेख पाश्चिमी में किया है (कहा जाता है

कि इसी ने शून्धेद के पद-पाठ को व्यवस्थित किया था) ।

शाकलरी (स्त्री०) प्राकृत का एक निम्नतम रूप, शकल द्वारा बोला गई बोली जैसा कि मुष्ककटिक में ।

शाकिकम् [शाक+इक्] श्वेत जैसा कि 'शाकशाक्ति' में । शाकिली [शाक्ति—शीप] 1 साग-भाजी का श्वेत 2 दुर्गा-देवी की शक्ति (जो एक पिशाचिनी या परी समझी जाती है) ।

शाकुल (वि०) (स्त्री०—ली) [शकुल+अम्] 1 पक्षियों से सम्बन्ध रखने वाला—मनु० ३।२६८ 2 समुद्र सम्बन्धी 3 शकुलसम्बन्धी ।

शाकुलिक [शकुलेन पलिषपादिना शीवति ठक्] बहोल्या, शिबीमार—मूच्छ० ६, मनु० ८।२६०, कम् शकुलों की व्याख्या ।

शाकुलेष [शकुनि+इक्] छोटा उल्क ।

शाकुलक [शकुलता—अम्] मल्ल का मातृपरक नाम (शकुलता का पुत्र) कम् कालिदास का अर्थज्ञान शाकुलक नामक नाटक ।

शाकुलिकः [शकुल+ठक्] मज्जना, मज्जनी मारने वाला । शाकलरः [शाकल+अम्] शैल ।

शक्ति (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [शक्ति+अम्] 1 शक्ति-सम्बन्धी 2 दिव्यशक्ति की स्त्री प्रतिभा से सम्बन्ध रखने वाला, शतः शक्ति-पूजक (शासन लोभ प्रायः दुर्ग) के उपासक होते हैं, दुर्गा ही दिव्यशक्ति की स्त्रीमूर्ति है, अनुष्ठान पद्धति दो प्रकार की है, पवित्र अर्चन दक्षिणाधार तथा अपवित्र अर्चन (वामाधार) । शाक्तिकः [शक्ति+ठक्] 1 शक्ति का पूजक 2 बह्नी-धारी, भाक्ता रखने वाला ।

शाकतीक [शक्ति+इक्] बह्नी रखने वाला, माताधारी । शाक्तेकः [शक्ति+इक्] शक्ति का उपासक । शाक्तः [शक्+चम्, शक+अम्, यत्] 1 बृद्ध के कट्टम् का नाम 2 बृद्ध । सम० शिशुकः शीघ्रिबन्धु, युक्ति, शिष्टः बृद्ध के विशेषण ।

शाक्री [शक्+अम्+शीप] 1 इन की पत्नी लक्ष्मी 2 दुर्गादेवी ।

शाक्यरः [शाक्य+अम्] शैल, नु० 'शाक्यर' । शाक्य [शाक्यति शक्य व्याख्याति—शाक्+अम्+टाप्] 1 (बृद्ध आदि की) हाकी शाक्य—शाक्यम् शाक्य—रघु० १५।१९ 2 ब्रजा 3 दक्ष, अनुभाष, मूढ + किलो कायं का नाम या उपनाम 3 सम्बन्धवान्, शाक्ता, पत्र ४ परम्परा प्राप्त वेद का पाठ, किली मज्जहाय द्वारा अन्धतापान परम्परागत पाठ तथा शाक्य शाक्ता, शाक्यतापन शाक्ता, शाक्यक शाक्ता आदि । सम० शाक्यकः दे० 'शाक्य' के सम्बन्ध, शक्यम्, वृद्ध नगराज्यक, नगर परिवार, शिष्ट

शरीर के हाथ, कन्धा आदि छोरों में सुजन, -भृत् (पु०) वृष, श्रेयः (वेद की) शास्ताओं का अलग, --कृष्णः 1 अन्ध, तमूर 2 गिरहूरी, रश्मि अर्पनी शास्ता के प्रति प्रेक्ष करने वाला, बहु वाताय जिनमें अपनी वैदिक शास्ता को बदल दिया है, रथ्या गली, बीधिका ।

शास्ताकः [शास्त्रा + का + क] एक प्रकार का वेद वाणीय ।
शास्त्रिन् (वि०) [शास्त्रा + इनि] 1 शास्त्राचार्य आत्म० में भी 2 शास्त्राओं से युक्त, शास्त्राय 3 (वेद के) किसी सम्प्रदाय विशेष में सम्मन्वय रखने वाला--(पु०) 1 वृक्ष मा० १११५ 2 वेद 3 वेद की किसी भी शास्त्रा का अनुयायी ।

शास्त्रोत्, शास्त्रोत्कः [शास्त्र + ओटल, शास्त्रोत् + कन्] एक वृक्ष, वेद--कर्म्य भी कथयामि देवज्ञानक मा विदि शास्त्रोत्कम्--वाच्य० १० ।

शास्त्रुर [शास्त्र + अच्] वेल ।

शास्त्रुरि [शास्त्रुर + इच्] 1 कार्तिकेय 2 योगेय 3 अग्नि ।
शास्त्रिक [शास्त्र + ठक्] 1 शास्त्रकार, शास्त्र को काट कर उसकी बीजें बनाने वाला 2 एक वर्षमासकुर जति 3 शास्त्र बनाने वाला--वि० १५१०२ ।

शास्त्र, शास्त्री [शास्त्र + अच्, शास्त्र + शीच्] 1 वर्षक, कपडा 2 ज्योत्स्न, माडी ।

शास्त्रक,--कम् [शास्त्र + कन्] 1 वर्षक, कपडा अथवावस्त्र, माडी -पच० ११६४४ ।

शास्त्रयम् [शास्त्र + व्यञ्] [वेद]माली, उल, कपट, बाल्याही, जालयाही, हुकर्म--आक्रमण शास्त्रयमिहितो य -मा० ५१०५, मुद्रा० १११ ।

शास्त्र (वि०) [श्री०] शी [शशेन निर्द्वैतम् - अच्] मन का बना हुआ, पटसन का बना हुआ,--क 1 कसौटी--मात्रि० ११०३, मन्० २०४६, 2 मान रखने वाला लम्बर 3 आरा 4 चार पायों की मोड़, पम् 1 मोटा कपडा, बोरे या रेशे के बने बाने का कपडा 2 मन का बना वस्त्र मन० २१६१ १०८७ । मम०--आश्रीक शम्भुविमर्शा, चिकित्सागर ।

शास्त्रि [शास्त्र + इच्] एक पीथा जिनके देवों में लम्ब बनता है, पट्टा ।

शास्त्रित (पु० क० हू०) [शास्त्र + शिच् + क्त] मान पर रक्ता हुआ, पीठा हुआ, (शास्त्र पर रत्न पर) पैनाया हुआ ।

शास्त्री [शास्त्र + शीच्] 1 कसौटी 2 मान 3 आरा 4 मन का बना वस्त्र 5 पटा कपडा, बिचरा 6 छोटा पर्दा या लम्ब 7 अविशेष, हाथ या आँख आदि में मकेज करना ।

शास्त्रीय् [शास्त्र + रीच्] शोक नदी का तट, शोक नदी का नुवाय ।

शास्त्रिय्य [शास्त्रि + यच्] 1 एक श्विय जिनमें विधि-शास्त्र पर अन्य लिखा 2 शिवयुक्त, शैल का वेद 3 अग्नि का रूप । मम० शीघ्र्य शास्त्रिय्य का परिहार ।

शास्त्र (पु० क० हू०) [श्री० + क्त] 1 पीठक किया हुआ, पैनाया हुआ 2 पल्ला, दुकान 3 दुर्वैत, कमठार 4 सुन्दर भलाकर 5 प्रथम फलना-चलना,--शे धमूर का पीथा लम्ब आनन्द प्रसन्नता, लुगी मजिनी-जनप्रतिभागायम्--दीप० १० । मम०--उदरी कुशोदरा पदकी कमर शोभी श्रीः मि० ५१०२, रथ० १०१ ६१--शास्त्र [वि०] लेश नाक वाला, शीघ्र शोभदार । शास्त्रुभ्यम् [शास्त्रु + भ्ये] परने भयम् अण् । 1 माना,--वि० ५१० १०१ ६१३० १ शय्या ।

शास्त्रुश्रीभ्यम् । शास्त्रुभ्यम् + अच् । मुष्णं, शोभा ।

शास्त्रयम्, शास्त्र-यिच् लङ्-स्मृट् 1 पैनाया लेश करना 2 काटने वाला बिनाशाकर्ता रथ० ३१६ ३ विराना या लट्ट करना 4 कुम्हारकाट पीठा करना ५ पल्ला या छोटा टोला पल्लयम् ६ मुष्णक कुम्हारना ।

शास्त्रयक,--की । शास्त्रयत् + अच् + कन् । शिद का पल्ला शास्त्रयीच, [शास्त्रा दुर्वैतः पल्ला शीघ्री (श्या -व०) म०, एक प्रकार की मीनिका ।

शास्त्रयान (वि०) [श्या० नी] । शास्त्रयान कीरत अण् । लृट् लो म मात्र दिता मन्त्र ।

शास्त्रय (वि०) [श्री०-१] शत्रु - अण् । 1 जन्मना रथ० ६०० 2 विराटी, शास्त्रुतापुत्र, श दुर्जन लि० १६६६, १११०, वही० ५११ श्राद्ध० ५० ८१ मि० ११० मुद्रा० १०२, कर् 1 शास्त्रुता मन्त्र 2 लक्ष्म, दुर्जनो अवागावः शत्रव रथ० ।

शास्त्रयीय (वि०) [शास्त्रु + यि] 1 शास्त्रुवरी 2 शिषी शास्त्रुपुत्र ।

शास्त्रु 1 शास्त्र-यच् । छोटी बान 2 शीघ्र । मम० हरिलः लम्ब गये पास के शास्त्रु हरियाली नृनि बह शिषि तिस पर हरियाली छा हाई है ।

शास्त्रुक (वि०) [शास्त्रा मन्त्रक अण्] 1 लक्ष्मण 2 बहो नई पास, या हरी हरी बान उग आट ३ हरा भगा, मन्त्र, हरियाली में युक्त, ल, मम बान में युक्त श्रुति, हरियाली, अणमात्र मम गाइकम् शास्त्रि ।

शास्त्रु [श्या० उभ० शीघ्रयानि-व -विचित्र का म मम का इच्छा० रूप, मल अर्थ में प्रयुक्त] लेश करना पैनाया ।

शास्त्रुः [शास्त्र - अच्] 1 कसौटी 2 मान का कपडा मम०--शास्त्रु 1 शम्भुत पोतने का लम्बर 2 शिषी याच परने ।

शाब्दिकः [शब्द + ठक्] शब्दों का व्यापार ।
शब्द (श्) क, [शब्द + अच्] द्विकीर्णय शब्द ।
शाब्दिक (शि०) (स्त्री० शी) [शब्द + अच्] शि-
 क्तवन्तों अथु शब्दछक्ति शब्दों वनतेगन्तु भुधाने
 कर्ता १ श० ११५९, - ३ १ शिबोपायक २ शिब
 की का हृष ३ कुर ४ एक प्रकार का तिप - बम्
 देवदास मूक ।
शाब्दिकी [शाब्दिक + टाप्] १. पावनी २ एक पीडा,
 भीषणता ।
शाब्दिक [शो + श्चुत्] १ शब्द २ उपहार, दू० शब्दक ।
शाब् (श्) उभ० उभ० शाब्दिकि में १ मुद्रक करना
 २ कमजोर होना ।
शाब् (शि०) [शाब् + अच्, घृ - पञ्च वा] विनयवदा
 बन्धेदार चिन्तीदार, शब्दक, १ १ रचिष्ठा रग
 २ हरा रग ३ हवा, वायु ४ पनग्न वा माहारा
 गोट भन्ते ३१२९ ५ क्षति पहुँचाने वाला, अपाय
 करने वाला ।
शाब्दक [शाब्द + अच् + उभ०] १ शब्दक पक्षी
 २ शो ३ शी ४ श्चि ५ श्चि, नू शब्दक ।
शाब्दिकी [शाब्द + शीप्] एक शक्ति शब्द विशेष को गज
 से बनाया जाता है, नु० शारीरी ।
शाब्द (शि०) [शब्द + अच्, अच्] १ पनग्न से मर
 रहने वाला, शाब्दकीर्ण, इम अर्थ में स्त्री० - शाब्दी
 है । विमलशारदबन्धिनचन्द्रिका - भाषि० ११११३,
 ११० १० २ शक्ति ३ नया, नूतन ४ अनुभव-
 हीम शीतिषिया ५ शिर्षे शाब्दीका लज्जाल
 ५ शकानु, साहसहीम, ३ १ शब्द २ शाब्दकीर्ण
 शीमारी ३ शाब्दकीर्ण घृष ४ एक प्रकार का
 शिबिया या उड्ड ५ बकुल का वृक्ष शीलशिरी, - शी
 कातिक धाम की गुणिया, - बम् १ बनाइ धान्य
 २ श्वेन कमल, बा १ एक प्रकार की शीमा या
 शारदी २ सुता ३ शब्दकीर्ण ।
शाब्दिक [शब्द + उच्] १ शाब्दकीर्ण रंग २ शा-
 क्ताकीर्ण घृष या शर्मा, कम् शब्दकीर्ण या शक्ति
 शब्द ।
शाब्दीय (शि०) [शब्द - छ] शाब्दकीर्ण, पनग्न
 मन्थनी ।
शाब्दि [श् + इच्] १ पनग्न का माहारा, गोट २ छोटी
 शो ३ एक प्रकार का पत्ता, रि (स्त्री०)
 १ शारिक पक्षी, मैना २ शान्दाडी, बाल ३ शर्मा
 की शूठ । मय० - श्च, - शकल, - शकल, - कम् शब्द
 श्लेष की विमाय, ।
शाब्दिका [शब्द + कन् + टाप्] १ एक पक्षी, मैना
 २ पनग्न शब्दकीर्णों को बनाने वाला गज ३ श-
 रद मन्थना ४ शब्दों का मोहरा, गोट ।

शारी [शारि + डीप्] एक पक्षी मैना ।
शारीर (शि०) (स्त्री० - री) [शरीर + अच्] १ शरीर
 में सबड शारीरिक, शैतिक २ शरीरधारी, मुक्तिमान्,
 १ शरीरधारी, जीवात्मा, मानवात्मा, वैयक्तिक
 आत्मा २ शिठ ३ एक प्रकार की शीपि ।
शारीरक (शि०) (स्त्री० शी) [शरीर + कन् +
 अच्] शरीर मन्थनी, - कम् १ मुक्तिमान् शीष,
 शीष के स्वरूप की पुष्ठा (ब्रह्ममूत्रो पर शङ्कराचार्य
 द्वारा किया गया भाष्य) । मय० सुबम् शैदान्त
 दर्शन के मूक ।
शारीरिक (शि०) (स्त्री० - शी) [शरीर + ठक्] शैतिक
 शरीर मन्थनी, शीपि ।
शारक (शि०) (स्त्री० - शी) श्च - उच्, [अशिप्टक
 शार पहुँचाने वाला उड्डाणः ।
शारक शर - अच् कन; शानेदार चमकीला पार
 शिपिनी ।
शारक (शि०) (स्त्री० - शी) [शरक + अच्] १ चीनी
 का बग हुडा, शारकामिथिन २ पशुनीमा, ककरीमा
 १ ककरीमा श्वान २ हृष का भाग, पशुनी
 ३ शारक ।
शारु (शि०) [शारु - अच्] १ शीम का बना
 हुना शीम शाना २ श्चुंशरी, अनुप में सुवर्जन
 - श्चि० ८११३३ श्च - अच् १ श्चु २ शिपु का
 वनम् । मय० - श्चम् (श्चु०), - श्च, शक्ति - धू
 शिपु के शिपुशान ।
शारु (श्चु०) [शारु - इचि] १ शीमदाइ, पनग्न
 २ शिपु का शिबोयण श्चमशारुशारु श्चुंशरी
 शारु - श्चु० १५४ १२, ३०, शेष० ४६ ।
शारु (श्चु - उच्, उच्) १ श्चारा २ शीमा ३ शान
 ४ एक पक्षी ५ (मयाम के अन्त में) प्रथम या पञ्च
 पृथ, अशनी - शैना कि ' श्चारा' में, नू० कुर १
 मय० - श्चम् (श्चु०) श्चारा की शारु, - शिपुशान
 १ शीमे की शारु - कम्पनीय पमायन शिचन
 श्चुंशरीशिपुशान - शीम० ६ २ श्चु या श्चु ६०
 परि० १ ।
शारु (शि०) (स्त्री० - शी) [शारु + कन्] १ शि-
 क्ताकीर्ण - श्चु० ८५४ २ उड्डाण, शारुशर, - श्चु
 शार, श्चु श्चरी, - शी गत ।
शारु (श्चु०) श्चु - शारु १ श्चामा करता, श्चुशाम
 करना २ श्चकना ३ श्चुगि होता - शि० ५४४ पर
 शिपु ४ कुरुना ।
शारु [श्चु + अच्] १ एक श्चु (बका संवा, शीर शानदार,
 - श्चु० ११३८, शि० १४४ २ श्चु, श्चु, श्चु० ११३,
 श्चुनी ३ श्चु, श्चु ४ एक प्रकार की श्चुनी
 ५ श्चु शक्तिशालु । मय० श्चु शिपु मयान्

की आदमी प्रस्तरमूर्ति जैसा कि विद्वान्मन, 'विदि
पर्वत का नाम, 'सिद्धा शास्त्रशास्त्र (अथ-अ-निर्वाह-
मानस्य का प्रकाश, रात्र रघु० १:१३, भस्मिका
1 गुहिया, पुनलिका, मृति-विद्व० १, नै० २:८३
2 वेदाय, रवी, -अथवी गुहिया, पुनलिका, -वेष्ट: सात
के देश से निकली गल, मु० 'सात', -सात 1 उच्छ्रुट-
वृक्ष 2 वृषि ।

शास्त्र [शास्त्र + वन् - इ] शोध वृक्ष ।

शास्त्रा [शास्त्र + अन् - टात्] 1 कृष्ण, प्रशोक, वैडक,
अथवा-मुद्गैविशाखीय भूरिशास्त्री -वि० ३:१०, इसी
प्रकार भगीतशास्त्रा, रमशास्त्रा आदि 2 वार, शास्त्राण
-रघु० १६:४१ 3 वृक्ष की मुख्य शाखा 4 वृक्ष
का जटा । मय० -अभिषार, रघु विद्वि का अन्वारा-
-मय: गीडक, -वृक्ष 1 कुला भासि० १:१०
2 अथिया हरिश्च 4 विन्वी 5 गीडक 6 अन्वरा ।

शास्त्रक (पु०) पाणिनि ।

शास्त्राक्षिन् (पु०) [शास्त्रक - इन्] 1 आत्मा अथवा बाया
बर्छोचारी 2 बर्छा 3 माई ।

शास्त्रातुरीय [शास्त्रातुर - अं] पाणिनि का विशेषण (अत्र
अत्र 'शास्त्रातुर' होने के कारण 'शास्त्रोत्तरीय' भी
लिखा जाता है) ।

शास्त्राण [शास्त्र - अन् - अण्] 1 बीजा, मीठी 2 रजरा ।

शास्त्रि [शास्त्र - निजि] शास्त्र - न शास्त्रे अन्वयवर्तिना
वन्तु। मयपेक्षते मुद्रा० १:१३ यथा प्रकीर्त्ता न
मानी शास्त्रयः सूक्त० ४:१६ 2 गणविद्या । मय०
शोधक: -अन् शास्त्र (उच्छ्रुटन प्रकार का)
-शोधक शास्त्र के अर्थ की अथवाकी करने वाली
स्त्री, रघु० १:२०, अर्था: शंभु शास्त्र का आटा
विद्यम् अटिक अथवा शास्त्र का अर्थ, -शास्त्र:
शास्त्र का एक विषयण शब्दा अथवा नाम से
लिखा ३० में एक मयस्वर आरम्भ हुआ, -शोध-
1 पम्/विद्या पर अन्वयवर्तिना 2 बर्छा, -शोधिन्
(पु०) शोधक ।

शास्त्रिक [शास्त्रि - ई - क] 1 जुगहा 2 मार्गकर,
शुक्ल ।

शास्त्रिन् (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [शास्त्रा + इनि] (बहुधा
मयान के अर्थ में) 1 सङ्घ, वृक्ष, सन्धक, बम्बोला,
बपकार-वि० ८:१३, ५५, अर्थि० ४:२ 2 चरेन् ।
शास्त्रिणी [शास्त्रिन् - ङीप्] 1 वार की स्वाधिवी, मृष्टिनी
2 छन्द का नाम दे० परि० १ ।

शास्त्रीय (वि०) [शास्त्रा - अण्] 1 शिवाय, मन्त्रशास्त्रीय
धर्मशा, मन्त्रशास्त्र नियमशास्त्रीय अथवा-भास्त्रि०
४, रघु० १:८८, १:१०, वि० १:१८३ 2 मन्त्र,
मयान, म: मन्त्रक (शास्त्रीकी छ विनयी अनामा,
विनय करता) ।

शास्त्र: [शास्त्र - उण्] 1 मेषक 2 एक प्रकार का मय
इन्व, लु (ननु०) कुम्हिली में पड़ ।

शास्त्र (शु) अण् [शास्त्र - अण्] 1 कुम्हिली की वर
2 जयकल, क: मेषक ।

शास्त्र (शु) १: [शास्त्र - अण्] मेषक ।

शास्त्रिण्य [शास्त्रि - ङ्] 'शास्त्रिणी का अर्थ ।

शास्त्रोत्तरीय: [शास्त्रोत्तरे पात्रे अथ - उ] पाणिनि का
विशेषण - दे० शास्त्रातुरीय ।

शास्त्रक [शास्त्र - अण्] 1 ऐमल का पेड़ 2 मू-मन्त्रक
के मान बड़े लच्छो में से एक ।

शास्त्राक्षि: [शास्त्र - अक्षि] 1 मेल का पेड़ - भासि०
१:११२ मय० ८:२६ 2 मू-मन्त्रक के मान बड़े
लच्छो में से एक 3 मन्त्र का एक मेष: सम० स्व.
मन्त्र का विशेषण ।

शास्त्राक्षी [शास्त्राक्षि + ङीप्] 1 हैमक का पेड़ 2 पाला
कोर का एक वटा 3 नरक का एक मेष: मय०
वेष्ट, वेष्टक मयल के पेड़ का गीर ।

शास्त्रक [शास्त्र - क] 1 एक देव का नाम 2 शाब्द देव
का शास्त्र ।

शाब्द (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [शाब्द - अण्] शाब्दम्बन्धी,
(किसी निर्देशक की) मय से उतरा - अथवा शाब्द-
माशिक मयिष्येय विशेषण - मय० ५:५९, ११ 2 मूरे
रङ्ग का मूरे गीरे रङ्ग का अ किरी अन्वरा
का छोटा लच्छा, कुम्हिल, मृगशीला अथवाशाब्दक
स्व अथ पर:शाब्दमाशिक अथवा मयविशील अत्र
-म० १:८८, मयराजरात्र रघु० १:१३, १:८१३ ।

शाब्दक [शाब्द - क] किसी भी अर्थ रघु का अर्थ ।

शाब्दक दे० 'शाब्द' ।

शाब्दगत (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [शाब्द + गत - अण्] निष्प,
मयान, अथवाशाब्द शाब्दकी अथा राजा०
। - उतर० २५ 'अथिष्यक वर्यो के लिए' 'अथा
के लिए' अथवा अनामी अथवा के लिए' उतर०
५:३ रघु० १:४१४, -म: 1 निष्प 2 अथ 3 सूई,
मम् (अर्थ) निष्प, निष्पार, अथा के लिए ।

शाब्दगतिक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [शाब्दगत + टक्] निष्प,
म्यादी अथवा, मयान-शाब्दगतिक विशेषण, 'नैसर्गिक
विशेष' ।

शाब्दशली [शाब्दगत - ङीप्] पुष्पी ।

शाब्दशुक्ल (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [शाब्दशुक्ल + अण्] माल
(या मय) शशी ।

शाब्दशुक्लम् [शाब्दशुक्ली + टक्] गुरिषो का देर ।

शाब्द (अथा) पर० शास्त्रि, सिद्ध 1 अथवा मय अथवा,
मयान अथवा अथवा, अथिष्यक (एक अर्थ में शाब्द
विशेष) है) शाब्दशुक्ल अथ शास्त्रि-विद्या०, अर्थि०
१:१०, अथिष्यक अथिष्यक अथ अथवा - अथ०

२।७ 2 राज्य करना, शासन करना, -अनन्यशासना-
 मुर्वीं वासासैकपुरीविष-रघु० १।३०, १।०१, १।१८५,
 १।५७, वा० १।१५, अट्टि० ३।५३ 3 आशा देना,
 समाहित करना, निवेश देना, हुकम देना -रघु०
 १।२३५, कु० ६।२४, अट्टि० १।१८ - कहुना
 सम्भार देना, सुचित करना, (सप्र० के साथ)
 सम्भिभावाधान वृत्त कश्मणायारिष्यन्महत् - अट्टि०
 ६।२७, मनु० १।१८२ 5 उपवेश देना-स किसना
 शाब्द न शास्ति योजयिष्यम् कि० १।५ 6 आदेश
 देना, राजाशा कानु करता 7 वष्य देना. सवा देना,
 निर्वोध बनाना, मनु० ५।२७५, ८।२९ 8 सवाता,
 बसोभूत करना, महावी० ६।२०, अमु० 1 (क)
 उपवेश देना, मेरित करना-मु० ५।५, (ख) अध्यापन
 करना, शिक्षण प्रदान करना, आशा देना, आदेश
 करना- रघु० ६।५९, १३।७५, अट्टि० २०।१७
 2 राज्य करना, शासन करना 3 सवा देना वष्य
 देना-वेणी० २ 4. प्रथमा करना, स्तुति करना,
 आ- (इष्टुवा आ०) 1 आशीर्वाद देना, आशीर्वाद
 उच्छ्वासान करना, सुकृष्णसा आशास्ते- वा० ५,
 उत्तर० १ 2 आशा देना, आदेश देना, निवेश देना
 (इस अर्थ में पर०) अट्टि० ६।८ 3 इच्छा करना,
 आशय, आशा करना, प्रत्याशा करन -सर्वमन्मि-
 श्वरमाशास्महे वा० ७, आशासन तन शास्तिमन्-
 रवीमहाशयम्-अट्टि० १।७१, ५।१९, मनु० ३।८०
 4 प्रस्ता करना, इ , 1 अध्यापन करना, शिक्षण
 देना, उपवेश करना, अट्टि० १।१।१ 2 आदेश
 देना, समाहित करना-प्रशासि यमया कार्यम्
 मार्कण्डेय० 3 राज्य करना, शासन करना, प्रमु
 बनना-छा प्रशासि त्तिकाशेचिकाशम् नै० ५।२४,
 मनु० ६।७६, ५।१२ वष्य देना, सवा देना 5 प्राथना
 करना, याचना करना, नमना करना, (आ०)-इद
 कश्चिपु पुष्येवा नमनाशक प्रत्याम्हे उत्तर० १।१
 (प्रापुसंक शास के अर्थ में प्रयुक्त) ।

शासनम् [शास् + लृट्] 1 शिक्षण, अध्यापन, अनु
 शासन 2 राज्य, प्रभुत्व, न्यायक अनन्यशासना-
 मुर्वीं-रघु० १।३०, इसी प्रकार 'अग्रनिशासनम्'
 3 आशा, आदेश, निवेश-सप्तमिर्वाय इष्य्य शासन
 प्रमाणाकृतम्--वा० ६, मनु० ३।९९, १।८३, १।८
 १८ 4 राजकीयानि, अधिनियम, राजशा 5 विधि,
 नियम 6 अद्वार, राजा डाग दान की हुई भूमि,
 अधिकार-पत्र, यह था शासनस्थान योजयिष्यामि
 -पथ० १, पाठ० ७।२८०, २९ 7 पट्टा, कल्पवृक्ष,
 लिखित समझौता 8 आदेशों का नियन्त्रण (समाज के
 अर्थ में प्रयुक्त 'शासन' का अर्थ है, वष्य देने वाला,
 विनासक, या शाक बना स्मरशासन, पाकशासन) ।

सम०-वष्यम् 1 बहु शासनपत्र जिस पर मुद्रान की
 राजाशा शीरी पाई हो 2 बहु कायत्र जिस पर कोई
 राजाशा अंकित हो. शास्त्रि (पु०) राजभूत, मवेश-
 वाहक रघु० ३।१८ ।
 शास्ति (पु० क० इ०) [शास् + क्त] 1 राज्य किया
 गया, शासन किया गया 2 दण्डित ।
 शास्तिन् (पु०) [शास् + लृट्] 1 राज्य करने वाला,
 शासक 2 वष्य देने वाला-म० १।१५ ।
 शास्तु (पु०) [शास् - लृट्, इच्छाभार] 1 अध्यापक,
 शिक्षक 2 शासक, राजा प्रमु 3 विना 4 बुद्ध या
 जैन धर्म का गुरु, आचार्य ।
 शास्त्रम् [शिष्यनेजने-शास् + लृट्] 1 शास्त्र, समावेद,
 नियम, विधि 2 वेदविधि, धर्मशास्त्र की आशा
 3 धार्मिक पन्थ, वेद, धर्मशास्त्र, वे० ती० धर्मशास्त्र
 4 विद्याविभाग विज्ञान इति मुद्रणय शास्त्रम्
 -अम० १।५०, शास्त्रेव्यक्तुकिता वृद्धि -रघु०
 १।१९, प्राय समाज के अर्थ में शिष्यशासनक शास्त्र
 के पर्याय या उस विषय पर सम्यक्त-अध्ययन का
 लक्षण अर्थात् वेदान्त शास्त्र, न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र,
 अलंकार शास्त्र आदि 5 पुस्तक, पन्थ लक्ष्मी प-
 थिरेनम्बकाः मुद्रानात्र शास्त्रम्-पथ० १ 6 मिथुन
 (विप० प्रथमे या अध्याय)-शास्त्रि० १ । मनु०
 -अतिशय्य अवनुच्छान्त् वेदिक विधिदा वा
 उच्छेदन धार्मिक प्रामाणिकता की अत्युत्कृता अन्
 शास्त्र वेदविधि का शासन या नदनुकरण अतिर
 (वि०) शास्त्रों में निष्ठा, अर्थः 1 वेदविधि वा
 अथ 2 वैदिक विधि या शास्त्रीय दक्षकथ, आशयम्
 वेदविधि का शासन, उक्त (वि०) शास्त्रविधि न
 विहित, शास्त्रों की आशा, वेष, कानुनी, कार, हुन
 (पु०) 1 किसी धर्मशास्त्र का रचयिता 2 पन्थ
 प्रणेता - श्रोत्रि (वि०) शास्त्रों में निष्ठा, मन्थ
 दिक्ताड पाठक, हनुका अध्यापन करने वाला 3 शरी
 पन्थवशादीं शब्दम् (मनु०) व्याकरण (शास्त्रों का
 ममजन के लिए अर्थ), श, शिष् (वि०) शास्त्रों
 का ज्ञानकार, शास्त्रम् धर्मशास्त्र का ज्ञान, वेद की
 ज्ञानकारी, सम्बन्ध शास्त्रों में अंगन सवाई वीर
 लम्, शस्तिन् (वि०) धर्मशास्त्रों का ज्ञान - वष्य
 (वि०) धर्मशास्त्रों में विहित या उक्त वृष्टि
 (श्री०) शास्त्रीय दृष्टिकोण, शक्ति, शास्त्रों का
 अंग या उत्पत्तस्थान, शिक्षासन्, शिक्षिः शास्त्रों
 शिक्षि, वेदाशा, -विद्यतिलेखे, -विरोध 1 शास्त्रीय
 शिक्षियों का शास्त्रनिक विरोध, शिक्षि-विधान का
 अवनयन 2 वेद विधि के विपक्ष वाचरण, विपुत्र
 (वि०) अध्यापन के पराङ्मुख-पथ० १ शिक्ष
 (वि०) शास्त्रों के विपरीत, अर्थ, वेदकान्ती,

अनुपमि (स्त्री०) धर्मशास्त्रों का जन्मदाता, शास्त्र में प्रवीणता, सिद्धि (पु०) कारभारदेव, सिद्ध (वि०) धर्मशास्त्रों के प्रयागानुसार स्थापित ।

आदिपत्न्य (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [आदिपत्न्य इति] शास्त्रों में अग्नि, कुशल (पु०) शास्त्रों में पारंगत, सिद्धान् पुरुष यहाँ परित ।

आत्मोप (वि०) [आत्मोप इति] 1 वेदविहित, शास्त्रानुसारित 2 वैज्ञानिक ।

आत्म्य (वि०) [आत्म्य इति] 1 मित्रतासे जाने पाप, उपदेश दिये जाने याप 2 विनियमित या शासित दिये जाने के योग्य 3 दन्तनीय, दृष्टार्ह ।

आ (स्त्री०) उभ० गिनानि, गिनाने । नेत्र करना, पंजाग 2 कृपा करना, उल्ला करना । उल्लेखित करना 4 भावपान होना । शीघ्र होना ।

आ ; आ विभ० । 1 भाङ्गलिकता, स्वस्वाम्यता 2 स्वस्वता, सौम्यता, आग्नि अमन-नेत्र 3 आश का विशेषण ।

आप्या [आिष पानि-आिष-पा+क, पु० वापु] 1 शोषण का पेश 2 अक्षयक वक्ष ।

आप्यु (वि०) [आप्युः कु, पु०] सुप्त, आलसी, अरुचिक्य ।

आप्यम् [आिष-वक्, पु०] योग, पु० आप्यम् । आप्यम्, आप्यम् [आप्यं यत् कुशाग्रम् आि आदित-आिष्य-टापु] 1 (स्त्री०) म बना हुआ) छोका, शोना 2 बहनों पर मरका कर ले जाय जाने वाला शोष ।

आप्यन् (वि०) [आप्यन्, पिच्-क] छोके में मट-नाया हुआ ।

आपि (स्त्री०) आ० गिनाने विहित) शीघ्रता, अध्ययन करना ज्ञानार्जन करना अधिपतापक्ष पितृदेव अन्व-व्-रु० ११३१ ।

आपिक (स्त्री०) आपिका, आपिका [आिष्-पिच्-क्यत्] 1 शीघ्रने बना 2 अध्यापक, सिद्धान्त वाला—अप्योमव (अर्थात् पिशा और शंकादि) वापु म आपिकताया दृष्टि अनिष्टापरिवर्तय एव—आपिक० १११६ ।

आप्यम् [आिष्-स्युट्] 1 शीघ्रता, अधिपत, ज्ञानार्जन 2 आशयन, सिद्धाता ।

आप्यमात्र [आिष्-आिष्य] आप्य विद्याधी, विद्या-प्यामी ।

आप्या [आिष्-वाक्+टापु] 1 अधिपत, अध्ययन, ज्ञानविद्यार्थ्य रूप० ११६३ 2 किसी कार्य को करने के योग्य होने की दृष्टता, आप्याता होने की दृष्टता 3 अध्यापन, आप्य, प्रशिक्षण कर्मकारिण्यमा-

ध्याय काव्य० १, अनुपम्य तत्र प्रविष्टान्शिखया—रु० ३१२५, मालवि० ५१९, रघुविजा 'युद्ध-विज्ञान' 4. छ. वेदों में से एक दिवके द्वारा शिवों का सही उच्चारण तथा शिव के नियम शिक्षाये जाते हैं । विनय, विनयता । मय० अरु ।

1 अध्यापक, आपिक 2 ध्यान, मरु इन्द्र का विशेषण, आपिक (स्त्री०) कुशलता ।

आपिक (पु० क० क०) [आपि + क्त, पिशा ज्ञानार्ज्य-आर० अन्व०] अधिपत, अधीन 2 अध्यापित, सिद्धाया गया—आपिकान्पितृन्वम् म० ५१२१ 3 प्रशिक्षित, अनुशासित । मयाया हुआ, विनय-शील 5 कुशल, चतुर 6 विनीत, मन्त्राधोक्त । मय० अक्षरः आपि, आप्युष (वि०) हृषिकारि के संचालन में अधिप ।

आपिक [आपिानयति-अन्व-इ, अ० परकपम्] 1 मृदुः सम्बन्ध के अवसर पर र्णः गई पिशा, चोटी, या शोने पादों में छोड़े गये शाल, काकपत्र 2 मोर की पूँछ ।

आपिकक [आपिक इव-कन्] 1 बृहत्कर्म प्रकार के अवसर पर मिर पर रकमी गई चोटी 2 सिर के पार्श्वभागों में छोड़े गये शाल (अधियों के शिष्ट यह चोटी शीन या पौष हाथी है) उत्तर० ५१२९ 3 कलमी, शाली का बुच्छ, चूड़ा या सेहर 4 मन्दुर पुच्छ ।

आपिककः [आपिकम्+कं+क] मुरी । आपिकिका दे० आपिक (१) ।

आपिकिक्य (वि०) [आपिकार्ज्यस्य इति] कलमीदार, आपिाधारी (पु०) 1 मारु-नदति स एव बहुलकः आपिकी-उत्तर० ३१२८, रूप० ११२९, कु० ११२५ 2 मुरी 3 बाल 4 मोर की पूँछ 5 एक प्रकार की चनेली 6 चिन्त 7 हुएके के एक पुष्प का नाम (आपिकी मूलरूप से स्त्री का, क्योकि बड़ा में शीघ्र से बरसा चुकाने के लिए हुएके के पर अन्य तिया (दे० बरसा) । परन्तु अन्य से ही उस क्यमा की पुष्पक में बोधका की गई और पुष्प की शक्ति ही उसकी आपिा-रीक्षा हुई । समय पाकर उसका विवाह द्विगन्धर्वों की पुत्री से हुआ, परन्तु जब द्विगन्धर्वों को ज्ञान हुआ कि मेरा भाग्यता ती सचमुच स्त्री है तो उसे बड़ा दुःख हुआ, इसलिए उसने इन बोसा दिये जाने के कारण हुएके की राक्ष-धारी पर चढ़ाई करने की सोची । परन्तु छिछरी ने एक अवसर में रह कर चोर नकसा की, और किसी उपाय से उसने अपना स्वीच यह को देकर उसका पुष्पत्व करने में सफल किया और इस प्रकार हुएके के अन्तर आए हुए लक्ष्य को टाला । बाद में शहा-

भारत के युद्ध में भीष्म पितामह को मारने का एक साधन बना। जब जर्जुन ने शिवजी को अपने घोड़ा के रूप में आगे कर दिया तो भीष्म पितामह ने स्त्री के साथ युद्ध करने से हाथ खींच लिया। बाद में अक्षयधामा ने शिवजी को मार डाला।

शिवशक्तिनी [शिवशक्तिन् + स्त्री] 1 मोरनी 2 एक प्रकार की चमेली 3 दुपट की चुन्नी वे० ऊ० शिवशक्तिन्।

शिवरः, रम् [शिवो अस्त्यस्य-अरप् क्रालोपः] 1 चोटी, पहाड़ का सिरा या शृंग - अशाम गौरी शिवर गिरा-शिवरत् कु० ५१७, ११४, मेघ० १८ 2 बूझ का सिर या चोटी 3 कलमी, बूझा 4 तलवार की नोक या धार 5 चोटी, शृंग, शीर्षबिन्दु 6 काय, वगल 7 बालों का कटा होना 8 जरबो चमेली की कली 9 एक साल की भानि मणि। मय०-बासिनी दुर्गा का विशेषण।

शिवरिणी [शिवरिन् + स्त्री] 1 नारीरत्न 2 चीनी विहित बही जिसमें मंगल पत्रे हों, श्रीमद् 3 रोमावली या बज्र म्बल में बलकर नाथि को पार कर जाती हैं 4 एक छन्द का नाम दे० परि० १।

शिवरिन् (वि०) (स्त्री०-भौ) [शिवरमन्वय इति] 1 चोटी वाला, शिवापारी 2 नुकीला, शिवरगुफ - शिवरिद्वाना मेघ० ८५, (पु०) 1 पहाड़ - इतच्छ शरणाधिता शिवरि वा मणः शोभे न० २१०६, मय० १३, रघु० ११२७, ७० 2 पहाड़ी दुर्ग 3 बूझ 4 टिटिदरी 5 अनापाम का रोवा।

शलाका [शि-भक् तस्य नेत्रम्, पु०] 1 शिर की चोटी पर शालों का गुच्छा मुद्रा० २१३०, शि० ४१५०, मा० १०१६ 2 चोटा, शिवापारिन् 3 चूड़ा, कलमी 4 चोटी, शिवरः, शीर्षबिन्दु कि० ६१७ 5 नेत्र विगा धार, नोक या विगा श० ११४, भासि० १० 6 जरब नर उरग श० ११४ 7 जनि उदाया प्रभावश्रया शिवरम् शीप कु० ११२८, रघु० १०३७ 8 प्रकार की किरण कु० २१२८ 9 मोर की कलमी १० तड़ावकन ब्रह्म ११ शाला (विशेष कर में जर वरुडनी दुई) १२ प्रधान या मुखिया १३ कादःअरः। मय० सब शीपाधार, शोवट, -बरः शारः, -अम् मार का पत्र, शारः मोरः, बलिः चशामय, नक्षत्र 1 तार 2 मुन्नी, बर कटवक का पत्र, -अम् (वि०) नुकीला कलमीदार, (-न) मोर बूझ शीपाधार, शोवट -बुद्धिः (स्त्री०) प्रश्रितित बरिने शाला श्यावः।

शिलाकः [शिला - शालम्] मार की कलमी।
शिलाकम् (वि०) [शिला - मनुष्य] 1 कलमीदार 2 शालामय, (पु०) 1 दीपक 2 जग।
शिलिन् (वि०) [शिला अस्त्यस्य इति] -1 नुकीला

2 कलमीदार, शिवापारी 3 धमकी (पु०)
1 मोर-पत्र० ११५५, शिवम्० २१२३ शि० ६१५०
2 जनि रिपुरिज भजोतबासाज्य शिवोव शिमानिल गीत० ७, पत्र० ६११०, रघु० ११५६, शि० १५१७ 3 मुर्गा 4 शाल 5 बूझ 6 शोपक 7 मोर 8 चोटा 9 पहाड़ १० श्रापण ११ मोर १२ केतु १३ नील तो सन्ना १४ शिवक बूझ। मय०-अम्भन् -श्रीवम् मुखिया, नीला शोवा एका 2 कानिकेय का विशेषण 2 बूझ शिवम्भु मुखम् मोर की पूँछ, दुप, -बूझः बाग्दुनिया बरक गोल लोकी, -बाह्यः कानिकेय का विशेषण शिवा 1 शाला 2 मोर की कलमी।

शिवुः [शि + अक् मूक् च] 1 भागानाजी 2 महिजन का पेट।
शिवुः, (म्वा० पर०) शिवनि) जाना, हिजना-अनुपना।
शिवुः, (म्वा० पर०) मूचना।

शिवुशब्द [शिवुः + शालक, पु०] 1 पपरः शाय 2 बलमन कक, -अम् 1 नरक की मीन, शिवर 2 शाले का जग 3 शीसे का बरतन।
शिवुशालक कम् [शिवुः + अलक] नानिकायम्, शिवर क कक, बलमय।

शिवुः (म्वा० अदा० आ०, वृत्त० उच०) -शिवुःअने, शिवर शिवुशायि म, शिविजन्) टनरनाना इलननाना शरवशाना - शि० १०१६०।

शिवुः [शिवुः - शका] टकार, इलननाशर, टनरन या मनसन का ध्वनि विशेषकर श्रावर् २दि मयना की शका।

शिवुशक्तिका (स्त्री०) कटियब, काधनी।
शिवुका शिवुः + अ - टाप्] 1 टकार प्रकार भा० 2 धनुष की डारि।

शिवुजल (पु० क० क०) [शिवुः क] टहुत शि० १ तम् टकार, (श्रावर् आदि गहना शी) शका कजित गजशुभाना मेद म्पुर्णशिवुशब्द शिवम् ६१२०।

शिवुजनी [शिवुः शिवि + स्त्री] 1 धनुष की डार 2 श्रावर् म्पुर्ण (पैरा में पलना जाने वाला गहना)।
शिवुः (म्वा० पर०) शोटीन्) मुष्क समझना, पु० २२० शिवुशार करना।

शिवुः (पु० क० क०) [शी - क] 1 नेत्र शिवा २ पैनाया हुआ 2 पनला, हुआ 3 शीका टूटा शाय दुर्बल बरकीत। मय०-अवः कटा, शारा (वि०) नेत्र धार नाम, बूझः 1 जी 2, मेहूँ।

शिवुः (स्त्री०) मनमन्त्र भाष का पदी दे० मयन, शिवि (वि०) [शि + शिवि] 1 श्वेत 2 काया १३० १५१८ - शिः अर्बुक्क। मय०-अम्भः 1 ११

—रघु० ३।४९, ६६, अयोध्याविरस्ताया—४।६६
 2 सिर की टोपी, पगड़ी, —धरा,—धिः शीवा, सरयन,
 सि० ४।१२, ५।६५,—वीर्या सिर ददे कल नाशयक
 का पेड़, ब्रह्मसम् सिर पर पहनने का आभूषण
 —कधि 1 मलक पर धारण करने का रत्न 2 बुद्धा-
 मधि 3 विद्वान् पुत्रयो के लिए सम्मानघोनक उपाधि,
 —समेन् (पु०) सुभर,—सासिन्, पु० शिव का
 विद्यापण,—रत्नम् शिरामणि,—रत्ना मिरददे, छह,
 (पु०) रह, (शिरसिहृह-बह भी) सिर के दाह
 —ऊनु० १।४, कु० ५।९, रघु० १।५।१६,—बसिन
 (वि०) मुनिया (पु०) मूल्या, प्रयात के रूप में रहने
 वाला, बलम् मिरय, वेष्ट,—वेष्टनम् सिर पर
 पहनने का मन्त्र, पगड़ी, शूलम् मिरयद,—हारिन्
 (पु०) सिर का विशेषण ।
 शरसिन् (शिरसि रन्—ऽ मयस्या अङ्क) सिर के
 वाल,—शि० ७।६२ ।
 शिरस्त्वम् (शिरस्+त्वं) 1 लोहे का टोंग 2 पगड़ी,
 टोपी ।
 शिरस्त्वा (शिरस्क-टाप्) पालकी ।
 शिरस्त्वम् (अव्य०) (शिरस्+त्वं) सिर में कु० ३।४९,
 मत्० २।१० ।
 शिरस्व (वि०) (शिरसि भव यन्) सिर सबधो या सिर
 पर स्थित,— इय स्वच्छ केत ।
 शिरा (शु+क-टाप्) नविका के आकार की गर्भर की
 बाहिका नाडी, कृत् की नाडी, स्तनबाहियो नाडी ।
 मम०—पत्र, रुग्णिव, कंधवृक्ष बृत्तम् सोमा ।
 शिराल (वि०) (शिरा-लच्) स्नायवी, शिरापुन, शिरा-
 बहुल ।
 शिरि, (शु+कि) 1 लवण 2 बंध करने वाला, कणल
 करने वाला 3 दाग 4 टिड्डो ।
 शिरोध (शु+ईत् क्विप्) शिरा का पेड़, बध शिरम्
 का फूल (यह मुहुमागा का नमूना मयज्ञा जाता है)
 —शिरोपुत्राधिकमोकुमारो बहु नदीपारिनि म विनक
 —कु० १।६१, ५।६, रघु० १६।६८, मेघ० ६५ ।
 शिरम् (शुदा० पर० शिरसि) शिरोधन, शिरा धुनना,
 बाले इच्छा करना ।
 शिरः, लम् (शिर+क) शिरोधन, बाले धुनना,—दे० मनु०
 १०।११२ पर कुल्ल०। सम०—उच्छ 1 शिरावृत्त
 2 अनियमित बसि ।
 शिरा (शिर+टाप्) 1 पत्थर चूना 2 चक्की 3 चौबट
 की नीचे की लकड़ी 4 लदे की चंटी 5 कदग,
 रक्तवाहिका 6 मन शिरा, पैनीक 7 कपूर ।
 सम० अच्छः 1 छिद्र 2 बाँध, बाँध 3 चौबारा,
 बटारी, आसक्त्य लोहा,—आसिक्का बुडाली, बगिया,
 —आरम्भा काष्ठद्वकी, बंसी केका, आसक्त्य

1 पत्थर का आसन, चौकी आदि 2 शैलेय गन्धद्वय,
 गुग्गुलु, आह्वम् शिवायन्,— उच्छयः पहाड़, शिरा
 चूना—रघु० २।३४— उच्छयः शैलेयगन्धद्वय, गुग्गुलु
 उच्छुबम् 1 शैलेयगन्धद्वय 2 बटिया किन्द हो
 चन्दन की लकड़ी, शोक्म् (पु०) गन्ध का विशेषण
 —कुट्टक पत्थर चोड़ने की यंत्रो, टाकी, कुमुमभ,
 पुण्यम्, शैलेय गन्धद्वय, अ (वि०) शिरावृत्त
 शिरिददद्वय (—अम्) 1 शिवाजीन 2 शैलेयगन्धद्वय
 3 पटुल 4 सोडा, काई मो शिरोधन पत्रा
 जनु (नपु०) 1 शिरागोन 2 मेह शिरिद्वयो
 रदु शिरावृत्त 3 शालुः 1 बटिया शिरिद्वय 2 म
 3 मरुद शिरावृत्त पदाय, पदु, पत्थर से शिरा
 शिर पर बंटा बाँध, शिरावृत्त—पुष्प,—पुष्पक मया
 योगने का लता शिरा, शिरा प्रसिद्धि (म्या०)
 प्रसर मृत्त कलकम् पत्थर की शिरा प्रथम
 शैलेयगन्धद्वय,— शोध मलमला की छत्रो टाकी—रत्न
 1 शैलेयगन्धद्वय 2 धूप, बलकम् एक प्रकार का
 काई जो पत्थर पर जब जाती है, बसिद्वय (म्य०)
 1 पत्थर की सर्वा 1 आलोकी ब्राह्मि,—वेष्टन
 (नपु०) गुला, पत्थर की दरार, श्याधि शिरावृत्त ।
 शिरि (शिर+कि) भुवंबुध (स्त्री०) चौबट की नीचे
 की लकड़ी ।
 शिरिन्ध, (शिरिन्+दा+क पुषो० मम्) एक प्रकार की
 मछली ।
 शिरी (शिरि डीप्) 1 दरवाजे की चौबट का नीचे
 की लकड़ी 2 एक प्रकार का मुकौट कौबड़ा 3 लक
 की चाटी 4 भाला 5 बाल 6 कपड़ो में सेरी ।
 सम० बुध शीरा—विजिपशिरीयुष्पपाटलिपट्टका
 म्यरदुपबिलाले—गीत० १, रघु० ६।१७ 2 शिरा में
 कुमुमघटि—शिरीयुष्पमनोहरान्धनचपादिभ प्रर
 बवात् बन्यानि—का० २०५, या युगदिना
 शम्भुपाद्वयिने शिरा शिरीयुष्पपाटलिपट्टका
 १।११, (शानो मरुतो में शब्द (1) तथा (2) प्र
 में प्रयुक्त हुआ है) 3 मत्त ।
 शिरीगन्ध (शिरी शरति श्+क पुषो० मम्) 1 एक
 प्रकार की मछली 2 एक वृक्ष,— इम् 1 कुमुमा
 मयि की छतरी, जैला कि 'उच्छिरीगन्ध' में 2 हने र
 वृक्ष का फूल—अधिपूरिगन्ध शिरीगन्धमयिभि—मि०
 ५।३२, या, अजिनामलाशिरि शिरीगन्धे—ऽ
 3 बोला ।
 शिरीगन्धम् (शिरीगन्ध+कम्) कुकुरमुला, मूव, शीप
 की छतरी ।
 शिरीगन्धी (शिरीगन्ध+डीप्) 1 मृत्तिका, मिट्टी
 2 कंधवा ।
 शिरम् (शिर+कम्) 1 कला, कलितकला, शिरि

हमा, (इस प्रकार की कलाएँ चौंसठ विनाई गई हैं) 2 (किसी भी कला में) कुशलता, कारीगरी —आलसि० ११६, मच्छ० ३१५ 3 विदग्धता, वदता 4 काव्य, सांगीतिक श्रम या काव्य 5 इत्य, अनुपपन्न 6 यक्षीय कथना लुभा । सम० कर्त्तव्य (पु०) —किष्का कोई भी सांगीतिक श्रम, दलकारी, —कार, —कारकः, —कारिण्य दलकार, कारीगर, —आत्मन्, —आत्मा कारखाना, निर्मात्री, शिल्पविद्यालय, शिल्पग्रह, आत्मन् 1 कला विषय पर (बाह्य मन्दिन हा या सांगिक) लिखा गया वच 2 शिल्पविज्ञान । शिल्पिन् (वि०) [शिल्पः इति] 1 ललित या सांगिक-कला मन्त्रो 2 सांगिक, यक्षन् (पु०) 1 दलकार कलाकार, कारीगर 2 जो किसी भी कला में प्रवीण हो ।

शिल्पिन् (वि०) [इत्यत्र पापम्-सो+कन् पु०] 1 मृग, मानसिक, लीलायुक्तानी-इय शिवायां निवर्तनवादिनि - कि० ४१२१, ११३८, ११५० ११५३ 2 स्वप्न, प्रत्य, मनुष्य लीलायुक्तानी शिवायि कर्त्तव्यकर्त्तानि शिवायन् ११५० ५१८, (अनुपपन्नानि 'आत्मा' शिवायने मन्त् पन्थान 'भगवान् आरकी याथा सफल वत्'-इ त्रिपुत्रो के तीन प्रधान दत्ताओं (त्रिमूर्ति) में से तीसरा देव जिसका कार्य सृष्टि का महार करना है जिस प्रकार ब्रह्मा का कार्य उत्पन्न तथा विष्णु का सृष्टि-रक्षण है एका देव कृत्तव्य वा शिवा वा —मनु० २११५ 2 पृथ्वी की जननेन्द्रिय, शिवान 3 मृग इहो का योग 4 वर 5 भोज 6 मनुष्य का शोषण का श्रेष्ठा 7 मृग, देवता 8 पारा 9 मृगान 10 काना चतुरा, शी (पु०, वि०) शिव और पार्वती कि० ५१४०, —अन्त् 1 मनुष्य, कन्याण, मदन आनन्द नर कर्मनि बनता शिवम् . नै० २१६२ २२० ११०, ११५० 2 परमानन्द, मानसिकता 3 मोक्ष 4 जल 5 मनुष्यी नमक 6 शेषा नमक 7 मृदु माहाता । सम० —अत्मन्-पडाह १०.—आत्मकम् शेषा नमक —आदिभक्तः 3 पुत्र ममाचार माने शमा 2 भविष्यवचता, आत्मन्ः 1 शिव का आत्म 2 काम लुप्तता (पुम्) 1 शिव मन्दिन 2 परमान, —इतर (वि०) अन्त्, दुर्भावार्थ-शिवेतर-काव्ये काश० १, कर ('शिवकर्' भी) (वि०) मानसप्रदायक, मरुतप्रद, —कीर्तनः श्वी का नाम, पति (वि०) मनुष्य, मानसिन्, —कर्मकः मनसग्रह, तालि (वि०) जिसका अन्त कर्मदायकारी हो, आनन्दप्रदायक, मरुतप्रद प्रथम कृत्तनाञ्ज फलम् शिवनाशिशेष मरुत् मा० ५१७ 2 मृग, शी ५१२० ५ ही —आ पुननात्मन्पुत्रा, शिवायानिदिभि १५१५, (तिः) सांगिकता, आत्मन्, अत्मन्

विष्णु का चक्र, वायु (पु०) देवदास का पेड़ बुधः बल का पेड़, —द्विच्छा केली का पेड़, —आयुः पारा, बुरम्,—दुरी बनास, बारायसी,—पुरात्मन् अटारह पुराणों में से एक, शिवः 1 म्फटिक 2 म्फ नाम का पेड़ 3 चतुरा, अत्मकः अर्जुनवृक्ष,—राज-आत्मी बाराणसी,—राशिः (स्त्री०) काल्पनिक चतुर्दशी म्फ शिव के मन्थान में कटोरत का पाथन किया जाता है शिक्कम् शिव जिसकी पिठी या लिंग के रूप में पूजा होती है, लोकः शिव का मन्थान —अत्मन् आत्म का दूध,—आ) पार्वती, बाहनः मोह, बीजम् पारा, शोकर 1 चार 2 चतुरा —सुन्दरी दुर्गा का विशेषण ।

शिवक [शिव+कन्] 1 वह ब्रह्मा त्रिमके नाम प्राय ही शक्ति पद्म बाधे जाते है 2 वह सदा जियने पद्म अपना शरीर रगदना है, पद्मों के शरीर को लज्जानने के लिए ब्रह्मा ।

शिवः [शिवः+दाप्] 1 पार्वती 2 मोहनी अहासि विद्वा-मसिने शिवायर्त्त कि० ११३८, इरेण्ड इति शिव-शिव शिवाया कल्पक —आदि० ११३०, ११५० ११५०, ११६१, ११७३ 3 गण्ड 4 शमी (शैवी) का वृक्ष ५ शिवाया 6 दुर्वाचित बुध 7 पीला रंग 8 इन्द्रो, मन्० इतरातिः कुला, —शिव बकरा, फला शमी (शैवी) का वृक्ष, फलम् गादड का रोना कि० ११३८ ।

शिवानी [शिव+श्रीप् आनुष्] शिव की पत्नी पार्वती । शिवायुः [शिव+आयुष्] मोहड ।

शिविरि (वि०) [शिव+शिरि-नि] टटा मोहन तरं बना हुआ कुछ गदुन-दुनकःशिविशिवानरेण करेण प्याचरे गीत० १२, १५, १५५, १६३, १६४५, —र-रम् 1 आम मुधार या पात्रा—पद्याना शिवाय-द्रुवम् अना मन्वे शिवायर्त्ताना पविनी आत्मकपाम् —मेष० ८३ 2 शारे का मोसम, (शिव और काल्पन को) मर्दी-कण्ठे स्वर्णिन शंभुशिव शिविरे पुष्पाकि-लाना शम्पु श० ५१३ 3 शक, मोतलना । मन्० अन्त्,—कर,—शिरिन्,—शिविन्,—रविः चन्द्रया —बुध इव शिविराशो-विषम० ५१५१, शिविरिदिर-काल्पना शिवारोर्त्तमसाय शि० १११०१, शिविरिदीवि-दिना रज्ज्व श्नु० ३१२, आत्मन्, अचलना, शारे का जल, बलन श्नु स्वहनमन्त शिवाय-पन्ध (पुष्पायुष्प) —कु ३१६१, उर्वाहित शिवाय-मन्थिया ११५१ —आत्मः, लवयः शारे की श्नु,—अन्त्, शिवि का विशेषण ।

शिवः [श+क, सन्-द्रुव, शिवम्] 1 आत्म, कल्या, शिवाय शिवाया का—उत्तर० ४१११ 2 किसी भी आनन्द का ब्रह्मा (ब्रह्मा, पिप्पला, शोना आदि)

श० ११४, ७१४, १८३ आठ या सोलह वर्ष के कम आयु का बालक । सम०—कर्म—कर्मन्मन् वल्के का रोना, कर्मन्मन् एक प्रकार की मल्लिका, पाल दम-पोष का पुत्र तथा बेदि देश का राजा (विष्णुपुराण के अनुसार यह राजा पूर्वजन्म में राक्षसी का राजा पापी शिष्यकामिपुत्र था जिसे नरसिंह का रूप धारण कर विष्णु ने मार गिराया था। उसके पदचान् इमने दम सिर वाले रावण के रूप में जन्म लिया, और राम ने इसको मार डाला। फिर इसी ने दमपोष के घर जन्म लिया और विष्णु के अष्टम अवतार कृष्ण भगवान् ने भीर भी अधिक निष्ठुरता के साथ निरन्तर द्वेष रक्ता रहा (दे० शि० १) जब युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में यह कृष्ण ने मिला तो उसे बूना भला कहने लगा। कृष्ण ने अपने मुदगत चक्र में इसका सिर काट डाला। इसकी मूर्त्यु ही, माघशरि के प्रसिद्धकाव्य का विषय है), हनु, (पु०) कृष्ण का विवेक्षण, मार मंत्रनाम का उक्तजन्म बाहक, —बाहक जगती बकरा ।

शिशुक [शिशु+कृन्] 1 वाता, वस्त्रा 2 हर्मि भी जानवर का बच्चा 3 वृक्ष 4 रंग ।

शिशुम्, शिशुम् [शिशु+मन्] नक्ष् डवम् पुण्य की जन्मोन्दिप किङ्ग यात्र० ११३, मनु० १११०४ ।

शिशिवान (वि०) शिशु+वन् । मन् । आनक, मना लुभ शिवम्, रक्षास्य उकार 1 पवित्र आचरण वाला सदगुणी, पुण्यात्मा 2 दुष्ट, पापी ।

शिशु (भा० पर०) शेषानि चेट पदवाना मार डालना ।

॥ (भा० पर०) चुरा० उम० शेषानि, शेषानि—ने) अवशिष्ट छोड़ देना, बना देना ।

॥ (दशा० पर०) शिशु, शिशु 1 बारी छाटना, बना रखना, अवशिष्ट छोड़ना 2 दूसरी में शिथलता करना—श्रे० (शेषानि—ने) छोड़ना, जब बारी छोड़ना, पीछे छोड़ना (श्रे० कर्म० में) मन्त्रवेद नीकार इत्यादि—श्रे० ५११५, कियदवशिष्ट रहना श० ४, निद्रामयीम्न कियदवशिष्टम् महावी० ६, श० ७२, उक्, बाकी छोड़ना

—दे० 'उच्छिष्ट', परि—, अवशिष्ट छोड़ना (श्रे० भी—प्रविता करेणुराशेषानि मही—भावि० ११४३, वि—, 1 शिशुट करना, शिथलता देना, विशेष रूप से कहना, परिधाय करना 2 भेट करना, विवेचन करना 3 बहाना, डोका करना, बुद्धि करना, महार करना पुनःकार्यविवर्तनदात्म्या विधिग्राह्य विविनिष्ट मनोकदम्भा—भा० ४४५, उत्तर० ६३५ (कर्म०) 1 शिथ होना श्रे० १७६० 2 अपेक्षाहून अपेक्षा या ठेके दम का होना आगे बढ़

जाना, भेष्ट होना, (अप० के साथ) अपेक्षाहून बढ़िया और दूसरों से अपेक्षा होना मनु० २८३ ३२०३, (श्रे०) आगे बढ़ जाना भेष्ट होना—पुत्र० ४४६, मालवि० ३१५ ।

शिशु (शु० क० ह०) [शाम्+कृन्, शिशु+कृन् वा] 1 छोटा हुआ, बना हुआ, अवशिष्ट, बाकी 2 शिशु, समादिष्ट 3 प्रशिक्षित, शिक्षित, अनुशिष्ट 4 सहाय हुआ, पालन, वषय 5 बुद्धिमान्, विद्वान् शि० ५१३ 6 मद्गुणसंपन्न, मानवीय 7 शिष्ट, नम्र 8 मन्त्र, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, पुण्य, प्रमुख, —छटः प्रमत्त या पुत्र स्वकि 2 बुद्धिमान् पुत्र 3 परामर्शना । सम० आचार 1 बुद्धिमान् मनुष्यों का आचरण शिष्टाचरण, सम्भारिण,—छटा विद्वान या श्रेष्ठ पुत्रों की सभा, राज्यसभा ।

शिशु (श्री०) [शाम्+कृन्] 1 राज्य पापम 2 आज्ञा, आदेश 3 मन्त्र, वषय ।

शिशु [शाम्+कृन्] 1 छात्र, चला विद्यार्थी शिष्यभेद शशि वा श्याप्रत्यय भा० ० 2 कथ, शिष्या । सम० परम्परा बना का उक्त कर्म, किसी मुक्त-मन्त्रदाय की परंपरिण शिष्यमार्ग

शिशु (श्री०) छात्र का शोधन, अभ्यास ।

शिशुः, शिशुक [शिशु+कृन्, शि० मन्] शिष्य गण्यद्वय ।

श्री (अप० भा०) शोभे, शयित, कर्मबा० शयने हुवा० शिशुशयिते) 1, शेटना, शेट जाना, विधायक बन आरम्भ करना, इनपक्ष शरणाधिपति शिष्यता बना शोभे—मनु० २७६ 2 सोना, शोभा ३ न शि नि शि शोभे-शोभे बधम ममानता मृग्य । अवश मृग्य शोभा निकट आसति जाह्नवी जलनी शि० ५३०, मनु० ३७७, कृ० ५१२, श्रे० १०४३

श्री (भा० पर०) शोभे, शयित, कर्मबा० शयने हुवा० शिशुशयिते) 1, शेटना, शेट जाना, विधायक बन आरम्भ करना, इनपक्ष शरणाधिपति शिष्यता बना शोभे—मनु० २७६ 2 सोना, शोभा ३ न शि नि शि शोभे-शोभे बधम ममानता मृग्य । अवश मृग्य शोभा निकट आसति जाह्नवी जलनी शि० ५३०, मनु० ३७७, कृ० ५१२, श्रे० १०४३

श्री (भा० पर०) शोभे, शयित, कर्मबा० शयने हुवा० शिशुशयिते) 1, शेटना, शेट जाना, विधायक बन आरम्भ करना, इनपक्ष शरणाधिपति शिष्यता बना शोभे—मनु० २७६ 2 सोना, शोभा ३ न शि नि शि शोभे-शोभे बधम ममानता मृग्य । अवश मृग्य शोभा निकट आसति जाह्नवी जलनी शि० ५३०, मनु० ३७७, कृ० ५१२, श्रे० १०४३

श्री (भा० पर०) शोभे, शयित, कर्मबा० शयने हुवा० शिशुशयिते) 1, शेटना, शेट जाना, विधायक बन आरम्भ करना, इनपक्ष शरणाधिपति शिष्यता बना शोभे—मनु० २७६ 2 सोना, शोभा ३ न शि नि शि शोभे-शोभे बधम ममानता मृग्य । अवश मृग्य शोभा निकट आसति जाह्नवी जलनी शि० ५३०, मनु० ३७७, कृ० ५१२, श्रे० १०४३

श्री (भा० पर०) शोभे, शयित, कर्मबा० शयने हुवा० शिशुशयिते) 1, शेटना, शेट जाना, विधायक बन आरम्भ करना, इनपक्ष शरणाधिपति शिष्यता बना शोभे—मनु० २७६ 2 सोना, शोभा ३ न शि नि शि शोभे-शोभे बधम ममानता मृग्य । अवश मृग्य शोभा निकट आसति जाह्नवी जलनी शि० ५३०, मनु० ३७७, कृ० ५१२, श्रे० १०४३

श्री (भा० पर०) शोभे, शयित, कर्मबा० शयने हुवा० शिशुशयिते) 1, शेटना, शेट जाना, विधायक बन आरम्भ करना, इनपक्ष शरणाधिपति शिष्यता बना शोभे—मनु० २७६ 2 सोना, शोभा ३ न शि नि शि शोभे-शोभे बधम ममानता मृग्य । अवश मृग्य शोभा निकट आसति जाह्नवी जलनी शि० ५३०, मनु० ३७७, कृ० ५१२, श्रे० १०४३

श्री (भा० पर०) शोभे, शयित, कर्मबा० शयने हुवा० शिशुशयिते) 1, शेटना, शेट जाना, विधायक बन आरम्भ करना, इनपक्ष शरणाधिपति शिष्यता बना शोभे—मनु० २७६ 2 सोना, शोभा ३ न शि नि शि शोभे-शोभे बधम ममानता मृग्य । अवश मृग्य शोभा निकट आसति जाह्नवी जलनी शि० ५३०, मनु० ३७७, कृ० ५१२, श्रे० १०४३

श्री (भा० पर०) शोभे, शयित, कर्मबा० शयने हुवा० शिशुशयिते) 1, शेटना, शेट जाना, विधायक बन आरम्भ करना, इनपक्ष शरणाधिपति शिष्यता बना शोभे—मनु० २७६ 2 सोना, शोभा ३ न शि नि शि शोभे-शोभे बधम ममानता मृग्य । अवश मृग्य शोभा निकट आसति जाह्नवी जलनी शि० ५३०, मनु० ३७७, कृ० ५१२, श्रे० १०४३

श्री [श्री+शिवम्] 1 शिवा, विधाय 2 शान्ति ।

१६। (म्भा० वा० शीकरो) 1. तर करना, छिड़कना
2 धरने धरने जाना, हिलना-डुलना।

॥ (म्भा० पर०, चुरा० उभ० शीकति, शीकयति-ते)
1 कोच करना 2 आड़े करना, नीला करना।

तेकर [शीकृ + करन्] 1 बायुप्रेरित छोटे, सूक्ष्मपृष्टि,
शीघ्रतर, तुगार-हु० १।१५, २।५०, रघु० ५।५०,
१।६८, कि० ५।१५ 2 अलक्ष्य, वृष्टिकल्प-गतम्-
रिचयानां भारिपभोदरणां पिपुनयान् रचसे शीकर-
स्मिन्ननेमि-स० ७।७, रघु० १।७।०, -रघु 1 सरल-
वत् 2 दस वृक्ष की रास।

तेप्र (वि०) [सिद्ध + रन्, ति०] कुर्तीका, खारिल,
खबर-विद्यार्थ्याणि प्रवृत्तधारणोः विक्रम० ५।०,
प्र (उपनि० में) प्रहोषण, प्रम् (अभ्य०)
कुर्ती न, तडो से, जन्मी मे। सम०-उप्यः (उपनि०
में) प्रप्रयाग, कारिन् (वि०) कुर्तीका, चुन्,
-कोपिन् (वि०) चिद्विषया, कोषी, केसर, कुला,
वृद्धि (वि०) शीघ्रवृद्धि वाला, तड वृद्धिवाला,
सकुल (वि०) तड जाने वाला, पैर कुर्ती से
रचन वाला-घट० ८, वैश्विन् (पु०) तड पनुंर।

तीप्रन् (वि०) [तीप्र + र्नि] मन्वर, कुर्तीका।
तीप्रथ (वि०) [तीप्र + थ] चुन्त, -थ 1 विष्णु 2 शिव
[निन्दया की लडाईं]।

प्रथ [तीप्र + थ] चुन्ती, तीप्रता।
शीत (सञ्च०) आकस्मिक पीडा या आनन्द को प्रति-
पन्न करने वाली ध्वनि (विशेषकर आनन्दवैक की
वह ध्वनि जो सम्बोधन के समय होती है)। सम०
-कार, -कृन् (पु०) उपर्युक्तध्वनि, मिसकारी।

शीत (वि०) [श्वे - क्त] 1 ठण्डा, शीतल, जमा हुआ,
नर कुमुदगतत्वं शीतरविमार्थमिन्दो-ज० ३।०
2 मन्द, सुन्द, उदासीन, आसली 3 अमल, सुन्द
रत, त. 1 एक प्रकार का नरकुल 2 नील का
वृक्ष 3 जाड़े की धनु, (नपु० जी) 4 कपूर, तम्
1 ठण्डक, शीतलता, सर्दी आ शीत बुद्धिनाचल्य
करना-नाम्य० १० 2 जल 3 शारकीनी। सम०
अनु 1 चाँद बरफेपत्री तब सप्यय वरपर
शीतानुवृत्तवृत्तने कावद० १० 2 कपूर, अक्षः
मयूरा के पकवाने या उनमें डब हो जाने का रोग,
पायनिया, अक्षिः हिमालय पहाड़, -अकम्प (पु०)
चन्द्रकालागमि, -कालं (वि०) ठंड से ब्याकुल, जाड़े
से ठिठुरा हुआ, अलक्ष्य, पानी, कालः जाड़े की
धनु, सर्दी का शीतल, कालीय (वि०) जाड़े में
हाने वाला, उच्छ्रः, -अकम्प एक प्रकार की धार्मिक
माथना, अकम्प सफेद चन्दन, -अः 1 चाँद 2 कपूर,
अकम्पः 1 शीतक 2 दर्पक, शीथिलिः चाँद, -अकम्पः
शिरीष का वृक्ष, शिरस का पेड़, पुन्यकम्प शीत

गन्धद्रव्य, प्रथः कपूर, यन्तुः चाँद, -शीथः एक
प्रकार की मल्लिका, अकम्पः, शरीषिः, रश्मि,
1 चाँद 2 कपूर, -रम्यः शीतक, अकम्प (पु०) चाँद,
अकम्पः नूला का पेड़, शीथकः बर का पेड़, -शिव
शमीवृक्ष, शीथी का पेड़, (अकम्प) 1 संवातक
2 मुतागा, -अकम्पः जी, स्वर्णं (वि०) ठण्डक लुंवाले
वाला।

शीतक (वि०) [शीत + कन्] ठण्डा, दे० 'शीत', क.
1 कोई ठण्डी वस्तु 2 जाड़े की धनु, सर्दी का शीतक
3 मन्वर, शीथंशुभी 4 आनन्दित, निरिचयन 5 विष्णु।

शीतल (वि०) [शीत लानि-ला + क, शीतमस्त्यस्य लच्
का] ठण्डा, शीतलानुप ५, मरु, (ठण्ड के कारण)
जमा हुआ (आल० से भी) अतिशीतलमयम्भ
कि धिननि न चपूत-मुग०, महर्षि पद्भुव शीतल
मम्यगाह-विक्रम० ६।१२ क- 1 चाँद, 2 एक
प्रकार का कपूर 3 एक प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान,
-अकम्प 1 ठण्डक, टण्डापन 2 जाड़े की धनु
3 शीतयान्द्रव्य 4 सफेद चन्दन, ज चन्दन 5 मोती
6. तृनिवा 7 कमल 8 शीतल नामक मूल। सम०
अथः अकम्प वृक्ष, -अकम्प कयल, -अथः-अकम्प चन्दन,
-अकम्प माष सुक्का छट।

शीतलकम्प [शीतल + कम्] सफेद कयल।
शीतला [शीतल-ला] 1 बेचक 2 बेचक (शीतला)
की अविच्छादी देवता। सम० पुञ्जा शीतला देवी
की पूजा।
शीतली [शीतल + ली] बेचक।
शीला दे० 'शीला'।

शीतानु (वि०) [शीत न सहते शीत + प्रानुन्] सर्दी
से ठिठुरना हुआ, जिसे सर्दी लग गई है, जाड़े के
कारण कट पाया हुआ शि० ८।१९।

शीथ दे० 'शीथ'।
शीथ (पु०, नपु०) [शी + थक्] 1 कोई भी प्रासुत
मदिरा अगुरी सराब 2 सराब। सम० अकम्पः
बहुल वृक्ष, शीथिलिरी का पेड़, प-पानकी।

शीथ (वि०) [श्वे + क्त] 1 जमा हुआ, पनीभूत, म.
1 जड, वृद्ध अजगर।

शीथ (म्भा० वा० शीथते) 1 मोक्षी उपारता 2 अनालता,
कहना, शोभना, (कबने ?)।

शीथः [शीथ + थत्] 1 शिद 2 शिव।

शीर [शीथ + र्क] अजगर दे० 'शीर'।

शीथं (पु० क० कृ०) [थ + क्त] 1 कुम्भलाया हुआ,
मुताया हुआ, सडा हुआ 2 सूखा, सुक 3 टटा फूटा,
पूर पूर हुआ 4 हुबला-नलता, कृम (दे० वृ), -अकम्प
एक प्रकार का लव इन्ध्र। सम० अकम्पः, -अकम्पः
1 यम का विशेषण 2 अनिबद्ध का विशेषण, -अकम्पः

कुम्हूकाया हुआ पता (इसी प्रकार शीर्षपत्रम् (शे.)
नाम का पेड़, कुम्हू तरबूज ।

शीर्षि (शि०) [शृ + शिष्य] विनाशकारी, जापानपत्ता,
अनिष्टकर, शक्तिकर ।

शीर्षन् [शिरसु पृथगे० शीर्षदिस, शृ + क मुक् ष वा]
1 शिरशीर्ष सर्पो ब्रह्मान्तरे बंध कर्ष०, मुटा०
१।२१ 2 काला जगर । मम० अश्वतोषः केवल
शिर ही बन्धा हुआ, —आत्म्यः शिर का कोई भी टोप,
—श्रेयः शिर काट शान्ता, श्रेय (वि०) जिसका
शिर काट डालना चाहिए, शिर काट कर मारे जाने के
योग्य —उत्तर० २।८, २५० १।५।११, रत्नकम् लोहे
का टोप ।

शीर्षक [शीर्ष + कन्] गहू का विशेषण, कम् 1 शिर
2 शीपही 3 जोहे का टोप 4 शिर का वस्त्र, (टोपी,
टोप आदि) 5 व्यवस्था, निर्णय, न्यायालय का
निर्णय ।

शीर्षक्य [शीर्षन् + यत्] साक तथा मुलभे हृत् शिर के
बाल, —अध्य 1 लोहे का टोप 2 टोप, टोपी ।

शीर्षन् (नपु०) [शिरसु लब्धस्य पृथगे० शीर्षन् आवेश]
शिर, (इस शब्द के पहले शीर्ष बन्धों में कोई रूप
नहीं होते, कम० हि० ब० के पश्चात् 'शिरसु' या
'शीर्ष' को विकल्प से आवेश हो जाता है) ।

शीर्ष् [म्बा० पर० शीर्षति] 1 सम्पत्ता करना, अजी
भक्ति सोचना 2 सेवा करना, सम्मान करना, पूजा
करना 3 सम्पन्न करना, अभ्यास करना ।

11 (बुरा० उभ० शिष्यवति-ले) 1 सम्मान करना,
पूजा करना 2 बार बार अभ्यास करना, प्रयोग
करना, अध्ययन करना, चिन्तन करना, ध्यान करना
—श्रुतिशास्त्रमपि मूय शीलित भारत वा भार्मि०
२।३।५, शीलवति मूनय मुचीलनाम् कि० १३।४३
3 धारण करना, पठना—वल सवि कुञ्ज मनिमि-
पुञ्ज शीलय नीलनिधोलम्-गीत० ५ 4 जाना दर्शन
करना, बार बार जाना—पदनुबन्धनाय निशि गृह-
मपि शीलितम् शीत० ३, स्मरणना मपरि शील्य
शोपमौलिम्—भार्मि० २।४, अनु , परि , बार
बार अभ्यास करना, सुधाना, चिन्तन करना—शब्द-
च्छुत्प्रोप्रीय भगमा परिशीलितोभिन—राज० ।

शील [शील + श्लृ] अजगर, कम् 1 स्वभाव, प्रकृति,
चरित्र, प्रवृत्ति, शक्ति, भाव, प्रथा समाजशीलव्य-
मनसु सख्यम् मुभा०, 'अनुसक्त' 'दुःख्यस्त' 'प्रवच'
'जीव' 'अम्यात' आदि बर्षे प्रकट करने के लिए
बहुधा समास के अन्त में प्रयुक्त, कम्हूशील 'कलह
करने के लिये भाव बाला' 'सगहाल' भावशील चिन्तन-
शील, इसी प्रकार दान', मृगया', दया', पुण्य',
आशासन' आदि 2 आचरण, व्यवहार 3 अभ्या

स्वभाव, अच्छी प्रकृति शील पर मूषपम्—अनु०
२।८२ पद्य० ५।२ ३. सव्युच, नीतिकता, सदाचरण,
सज्जोवन, श्रुतिता, ईमानदारी—शीर्षन्त्याश्रुपतिवि-
नश्चति .. शील बलीपासनात्—अनु० २।४२, १९,
तथा हि ते शीलमृदारदर्दने तपस्विनामप्युपदेशना
गतम्—कु० ५।११६, कि० १।१२५, रघु० १०।३०
5 सोनिय, मुनिय रूप । मम० कच्छन्तु श्रुतिता
या नीतिकता का उत्सव—पद्य० १, बरिरीम् (पु०)
शिल्प का विशेषण,—बन्धा श्रुतिता का उत्सव,
श्राव्ये शीलवचना—मुक्छ० १।४४ ।

शीलन्म् [शील + ल्यट्] 1 बार बार अभ्यास, प्रयोग
अध्ययन, सवधनं 2 निरन्तर प्रयोग 3 सम्मान करना
सेवा करना 4 बन्ध रहना ।

शीलित (पु० क० क०) [शील + क्त] 1 अभ्यास,
प्रयुक्त 2 धारण किया हुआ 3 बार-बार किया
हुआ, देना हुआ 4 सुधास 5 युक्त, सहित,
सम्पन्न ।

शीलम् (पु०) [शील + क्तनिर्] अजगर ।
शुशुमारः ['शिशुमार' का श्रष्ट रूप] मूस नामक
जल जन्तु ।

शुक (म्बा० पर०) योक्ति) जाना, हिलना-जुलना ।

शुक [शुक + क] 1 तोता—आत्मनो मुषदोपेण बध्नेते
शुकसारिन्ना—मुभा० । तुर्गनातप्रकृतिरे पशोर्हेतिका-
मतेः । शिवर्षोनातिरि कर्णेभ्यं यन्निगि शुक
काव्या० २।९ 2 निराम का पेड़ 3 श्याम का एक
पुत्र (कहा जाता है कि 'शुक' शब्द के शीर्ष में
उत्पन्न हुआ था, जब बुताशी नाम की अम्बरा मुनी
के रूप में इन पृथ्वी पर धूम रही थी तो उन्होंने
देख कर श्याम का शीर्षपात हो गया था । शुक
जन्म से ही दार्शनिक था उसने अपनी वैदिक शक्ति
पटला में स्वर्गीय अम्बरा रम्भार के नाम माते पर
प्रेरित करने के प्रयत्न प्रयत्न का मकसद प्राप्त
मुकावला किया । कहते हैं कि उसी में राजा
परीक्षित को भागवत पुराण सुनाया । अत्यन्त काव्य
साधक के रूप में उसका नाम किचन्दनी को तरह
प्रसिद्ध हो गया,—कम् 1 कण्डा, बरन 2 लोहे का
टोप 3 पगड़ी 4 बरन की किलारी या मगड़ी ।
मम०—अवधः अनार का पेड़,—तक,— हुक मित्त का
पेड़ माल (शि०) शोमे बैसी नाक बाला, अस्त्रिका
गोले की नाक बैसी नाक, शुक्ल-लक्षक, पुष्य ।
—श्रिय शिरस का पेड़,—पुष्पा प्रायुज का पेड़—अन्तः
अनार का पेड़, बाहः कामदेव का विशेषण ।

शुक्त (पु० क० क०) [शुष् + क्त] 1 उज्ज्वल, निपुण,
स्वच्छ 2 अन्न, लड़ा 3 कर्षण, खरबरा, कर्ष,
कठोर 4 सव्यस्त, युवा हुआ 5 परिष्कृत, एकाकी,

काम्य 1 काम 2 काजी 3 एक प्रकार का छद्म
 नरम पदार्थ, (मिर्का आदि) ।
 कर्मित (स्त्री०) [कृष् + कर्मन्] 1 मीप का माल
 —मानी की मीप पार्श्वबोधयन्त गुमानर ब्रजति
 (अन्वयमाधुनू) । अन्वितर तन्मदुस्मृती मुक्ताफलता
 पयारस्य—मार्कंडे० ११६, अ० २१६३ रघु० १३१३
 2 मय 3 छाटी मीप, पुट्टा 4 बाँगी का एक
 भाग 5 बाँडे की छाती या मदन पर) पर बाला
 का धृष्य मि० ५१६, दे० उम पर मर्मल० 6 एक
 प्रकार का मन्त्रका 7 दो कर्म के समान विरोध
 कालः मय०—उत्पुत्र अन्व मोना, पुत्रव्—बेकी
 मोती की मीप का लाल—बन्व मानी का मीप,
 शीतव्य मोती ।

कर्मिका कृत्वि - कन् टाप् ; मानी का मीप, मोपी ।

कर्म कर्मन् + कृष् + कृष्णम् । 1 कुम्भह
 2 अर्थमा कृष्ण कर्मन् अयन्त जादू के मोके से पट्ट
 में बने हुए गहना का पुनर्जीवन कर दिया वा है०
 'कर्म' शब्दार्थों की 'वर्णानि' 3 उपेक्षमाण 4 अग्नि,
 अम 1 मीप गुमान् पुनर्जीवके शुक्रे स्त्री
 अन्वितर कर्मिका मन्० ३१६* ५१६३ 2 किसी
 भा वस्तु का मय । मय० अङ्ग मय, - कर
 (वि०) मय का भाव सम्बन्धी, (ए०) मयिनी में
 उक्त शब्दों मन्त्र, मार, कर्मन् भूधरा, गुना
 - शिष्य गहय ।

कर्म, कृष्ण (वि०) । कृष् + कृष्ण + कृष्ण प ।
 1 कर्ममन्त्रों 2 मय या बाव को बढ़ाने वाला ।

कर्म (वि०) । कृष् + कृष्णम् । मन्त्रे कर्म, १
 उपेक्षक हैमा कि 'मन्त्रापाङ्ग' में, कर्मः 1 मन्त्र
 का 2 वाङ्मय का उपेक्षक या मूरी पत्र 3 मय,
 कर्म 1 शरीर 2 आत्मी की मन्त्रों में होने वाला
 रस मन्त्र 3 शारा सम्बन्ध 4 (मन्त्री) शरीर ।
 मय०—अङ्ग अथाङ्ग मय (मानी के इतन कोष
 १०६ ६ अर्थमा) अन्वितर मन्त्रमन्त्रे स्वाध्यायीकृत्य
 कर्म। मय० २ उपेक्षक एक प्रकार का छद्म
 मय, मय—उपेक्षा मन्त्र मीने, कर्मकः एक प्रकार
 का मन्त्र कुम्भह, कर्मन् (वि०) शूद्राशरी, मद्गुपी,
 कुम्भन् मन्त्रे कोष, धातुः मन्त्रिया विद्वा, - कर्म
 मय का मूरी पत्र, - कर्म (वि०) कर्म सम्बन्धी,
 —वाच्य सारत

कर्मक (वि०) [कर्मक + कन्] मन्त्रे, - कः 1 मन्त्रे द
 र्त, 2 वाङ्मय का मूरी पत्र ।

कर्मक (वि०) । कर्मन् + कृष् + कर्मन् ।

कर्मिका (वि०) । कर्मिका + कृष् + कृष्णम् । 1 मन्त्रों की 2 मन्त्रेदार शीली
 3 उपेक्षक शब्दों की 4 मन्त्रों की मय का शीला ।
 कर्मिकन् (ए०) [कर्मन् + इयन्ति] उपेक्षणा, मन्त्रे की ।

कृष्णः [कृष् + कृष्ण] 1 मय, हवा 2 प्रकाश, शक्ति
 3 अग्नि ।

कृष्ण [कृष् + कृष्ण] 1 वर का पेश 2 वेवरी
 मय का पेश 3 अन्तर या दूर, किपाद ।

कृष्ण [कृष् + कृष्ण] 1 मन्त्र कर्मों का मय 2 जी या
 अन्तर की शक्ति, किपाद ।

कृष्णन् (ए०) [कृष्ण + इति] वर का पेश, वदव्य ।

कृष्ण (मन्त्रे) [कृष्ण + कृष्ण] चिन्तन होता, दुःखी होता,
 प्राक इत्यादि विचार करना—अरोदीशकर्मोऽप्री-
 म्याह पाणिग्रन्थान् मन्त्रि० १५३१, २११६,
 मय० १६१५ 2 मन्त्र प्रकट करना, पठना, मय,
 अन्व, मोक मनाना, विचार करना, मन्त्र प्रकट करना
 मन्त्र मन्त्रिकात्मान् मन्त्रोक्तिनि पठिना मय०
 ११३३ मय० २१११, वेणा० ५१६, उत्तर० ३३२,
 परि - , विचार करना, शोक मनाना ।
 ३ (दिवा० उम० अर्थमा) १ 1 चिन्तन होता,
 दुःखी होता 2 मन्त्र होता 3 चयनता 4 स्वच्छ
 या निर्मल होना 5 कुम्भलाना मूर्तता ।

कृष्ण, कृष्ण (स्त्री०) [कृष् + कृष्ण, टाप् वा] मय, शोक,
 कष्ट, दुःख—विचलकरण पादकृष्णः कृष्ण पतिवृत्त
 —उत्तर० ३३२, काम शीतनि मे नाथ इति सा विजयी
 कृष्णन्—मय० १२३५, ८१२, मय० ८८, म० ५१८८ ।

कृष्ण (वि०) [कृष् + कृष्ण] 1 चिन्तन, विचार, स्वच्छ
 मन्त्रकृत्यमय कृष्णमान् - कि० ५१३३ 2 स्वेत,
 कि० २८१८ 3 उपेक्षक, चयकदार—अन्वितर कृष्ण-
 विम्बोद्भाह मन्त्रिने मूरी चय—उत्तर० २१५
 4 मद्गुपी, पवित्राया, पुष्पाया, निष्पाय, निष्कर्मक
 अथ मू कर्मि कृष्णवत्मायन् - क० ५१२०, पय,
 मूकरोपिनार इक्षरा—रघु० ३१५६, कि० ५१३३
 5 पवित्रीकृत, निर्मल किया कृष्ण, पुनीत बनाया
 हुआ—रघु० १८८१, मय० ५१३१ 6 ईमानदार,
 मरा, निष्ठावान्, सत्त्वा, निरकल—मय० ११००
 7 मूरी पश्चात्, - कि० 1 स्वेत कर्म 2 पवित्रता,
 पवित्रीकरण 3 भावना, मद्गुप, महता, मन्त्राय
 4 मन्त्रा उपाध्यायः 5 शूद्राशरी की मया 6 पवि-
 त्राया 7 शूद्राशरी 8 शीत मय—उपवयी विचलन्-
 वमन्त्रिका कृष्णशरी विरसोरमयपर मि० ६१२२,
 ११५८ मय० ३१३, कु० ५१२० 9 उपेक्षक शीर
 मन्त्राद के अग्निने १० निष्ठावान् या सत्त्वा विष
 ११ मय १२ मन्त्रा १३ अग्नि १४ मूनार रस
 १५ मन्त्राद १६ विचक वृत्तः मय०—मयः पवित्र वद-
 वृत्त, मन्त्रि मन्त्रिक मन्त्रिका एक प्रकार की
 चयनी नदमन्त्रिका— शीतव्य (ए०) मन्त्रा, कर्म
 (वि०) पुष्पाया, मद्गुपी,—निष्ठा (वि०) मय
 मन्त्रका शाला कु० ५१२०, रघु० ८१८८ ।

मुचिस् (नपु०) [मुच् + इन्च्] प्रकाश, कान्ति ।
मुच्य (भ्वा० पर० मुच्यति) 1 स्नान करना, महाना-
थाना 2 तिबोहना (रख) निकालना 3 अर्क लीचना
4 बिलोना ।

मुहीर [= शीटीर, पुषो०] शीर नायक ।
मुह् (भ्वा० पर० गौहति) 1 बाधा डालना जाना, रुका-
वट डाली जानी 2 लखडवाना, लगडा होना
3 मुकाबला करना ।
॥ (चुरा० उभ० गौहयति-ने) मुह्य होना, आलसी
होना, मन्द होना ।

मुह्य (भ्वा० पर० चुरा० उभ० मुह्यति, मुह्ययति-ते)
1 पवित्र करना 2 सूचना, दे० मुह् (1) भी ।
मुहि-डी (स्त्री०), मुह्यम् [मुह्य् + डीप्] मुहि + डीप्,
मुह्य् + यत्] सोड, मुखा अररक ।

मुह्य [मुह्य् + अच्] 1 मद्यमाने हाथी के गवधम्बल से
निकलने वाला रम 2 हाथी की सूँड ।

मुह्यक [मुह्य् + कन्] 1 शराव लीचने वाला कलाल
2 एक प्रकार का सैनिक सजीन या वाद्ययन्त्र ।

मुह्या [मुह्य् + टाप्] 1 हाथी की सूँड 2 लीची हुई शराव
3 मद्यपानगृह, मद्यमाला 4 कम्बु डब्दी 5 बेरिया,
रडी 6 कुटनी, हूनी । सम० —पानम् मदिगातय
शरावताना ।

मुह्यार [मुह्य् + क् + अच्] 1 शराव लीचने वाला
2 हाथी की सूँड या नागावधि-महावी० १।५३ ।

मुह्यवाल [= मुह्यार, रजवारवेद] हाथी ।

मुह्यिका [मुह्य् + क् + टाप्, इञ्च्] दे० 'मुह्या' ।

मुह्यिन् (पु०) [मुह्य् + णिन्] 1 शराव लीचने वाला,
कलाल 2 हाथी । सम० भूषिका इत्युत्तर ।

मुह्यि, मु (स्त्री०) मगल्ल नदी तु० 'गनद्' ।

मुह्य (भु० क० क्) [मुच् + क्] 1 विघट, विघल,
पिकिरीकृत-अल शदम्भमणि भविना वर्णमाशेष कृष्ण
-मेघ० ४९ 2 पुनीन, अकनुनिय, पावि, निर्दोष
-अनयोपन मुह्यति शालेन वपुर्वेव मा रपु०
१।५।७, १।६।४ 3 खेन, उज्ज्वल 4 निष्कन्क,
वेदाय 5 मोला-भावा, मीमा-मादा, निर्दोष 6 ईमा-
नदार, वरा 7 सरी, अमुदिगित्त, यथायं 8 ऋच
पुकाया गया, कर्षं अवा किया गया 9 केवल, माय
10 सरल, विमुट, अनमिधित, (विप० मिथ्य)
11 अद्वितीय 12 अचिकुन 13 पनाया हुआ, तेज
किया हुआ 14 अननुनासिक, -इ, शिष का विशेषण,
-इम् 1 कोई भी विमुट 2 विमुट मुरा
3 मेषा नयक ३ काली मिर्च । सम० अस्स राजा
का अन्तपुर, रनवाल, अन्तर महल --गुडालतुर्गम-
मिद दुराशम्भकामिनी यदि अतस्य --० १।१७,
कु० ६।५२, शारिन् (पु०) अलतपुर का लेवक,

कचुकी उतर० १, 'पालक, रसक अन्तपुर का
रवशाका, अतस्यम् (वि०) मुडाम्ना, ईमानदार
-ओषन (मुडोवणः) विष्णयन् सूड का पिना 'मुन-
वुड अंतस्यम् विमुट, प्रतिमा, प्रजा संघ' तथा
शो, --भाष, शति (वि०) विमुटमना, निर्दोष,
ईमानदार ।

मुडि (स्त्री०) [मुच् + णिन्] 1 विमुटना, स्वच्छता
2 नयक, कानि --मुकामुणमुटयोऽपि (चन्द्रपादा)
-रपु० १।६।२८ 3 पात्रना, पुष्पयोल्ला --नीथां
भियेकजा मुडिमावधाना महीहित - रपु० १।८।
4 पत्रिकारण, श्रायचित्त, परिशीलन, प्रायचित्त
परक कृय - शरीरव्यागमाशेष मुडिलामममगत
-रपु० १।२।१ 5 पत्रिकारणमुलक वा प्रायचित्त
परक मन्कार 6 (पण) परिशील्य 7 प्रतिष्ठा,
प्रतिपात्र 8 सुटकार, (शोष इना मिड) निर्दोषता
9 मन्कार यथाशंसा, पायातथ्यना 10 समाधान
मयोप 1 व्यवकलन 12 दुर्गा । सम० पथप
ऐमी मू अमने अमुट शब्द मुड क्यो मतिन निम
गये ही - प्रायचित्त के द्वारा हुई शक्ति का
प्रमाणपत्र ।

मुच्य (पिबा० पर०) - मुच्यति, मुह्य० 1 मुह्य या पवित्र
होना, (आज० मे भी) मुह्योर्मुह्यन् वाच्य नदी
वेदेन मुह्यति । अद्विगर्भाणि मुह्यन्ति मन मयम्
मुह्यन्ति मनु० ५।१०८-९ २ मुह्यति होना, अकम्प
होना, पात्र होना तिथिरेव वाचल्यं मुह्यन्ति-महा-
3 स्पष्ट किया जाना, मदेह दूर करना - न मुह्यन्ति
मे अन्तरामा-मुह्यन् ८ 4 व्यय किया जाना (सच)
पुकाया जाना व्यय मुह्यति पच० ५, १२०
(शोषयति - ते) 1 पवित्र करना, निर्दोष करना
थो हालना 2 (अच्) परिशील्य करना, चुकाना
थरि . वि -- सच् --, पवित्र किया जाना, रप०
१।२।१०४, मनु० ५।६।४ ।

मुच्य (नुरा० पर० मुच्यति) जाना, हिमना-मुकना ।

मुच्य-शेषः (च) [मुच् इव संक वस्य --अल्लु म०]
एक वैदिक ऋषि, अजीतर्ष का पुत्र (तिनये शाय
में बनाया गया है कि राजा हरिश्चन्द्र ने निम्नलान
होने के कारण यह प्रतिज्ञा की कि यदि मुझे पुत्र
लाभ हुआ तो मैं बचप देवता के लिए अर्कही दान
दे दूंगा । अल में उसके घर पुत्र ने जय लिया
उसका नाम रोहित रक्खा गया । राजा अपनी
प्रतिज्ञा को किसी न किसी बहाने टाकता
रहा । अन्त रोहित ने भी शीघ्रों के बदले अजीतर्ष
के मन्त्रम पुत्र मुच्य शेष को अपने स्थान पर दान
दिये जाने के लिए शरीर दिया । परन्तु हाक
मुच्य शेष ने विष्णु, इन्द्र तथा अन्य देवताओं की स्तुति

कमरे अपने आपकी मूर्त्ति से बना लिया । उसके पश्चात् विस्वामित्र ने उस लकड़े को अपने कुल में मोद के लिये और उसका नाम रक्खा 'देवराज' ।

मुलकः [मूल + क] मूल + क्त] मूलबल में उपग्रह एक क्षुब्ध का नाम 2 कुला ।

मुलासी (सी) र [मुनासीरो वायुमूर्त्ति जय म्म इति अन्] 1 इष्ट का विशेषण 2 उल्लू ।

मुनि [मूल + इत्] कुला ।

मुनी (मूनी) (स्त्री) (स्त्री) इत्] कुलाया कुम्बुनी ।

मुनीर [मुनी + र] कुलाया का मयुह ।

मुष (म्हा) (स्त्री) उभ० मुष्पति --ते, मुष्पति--ते । 1 पवित्र या विदम्य होना 2 निर्मल करना पवित्र करना ।

मुष्पु [मुष् + प] रत्ना बाय ।

मुष्टः (स्त्री) आ० साधन) 1 नमकना पाण्डुर होना मुष्ट 2) महाहर दिवादि देना--मुष्ट प्रोथम मनेन प्रथमम इत्ययम- उभ० १, रघु० ८।६ 2) लाभकर प्रती होना मूल ति द्याः-मूष्म प्रायते मुष्म० ५।० 3) उपपन्न होना, साक्षा देना पश्य होना (म० ६ म० ५)--आमष्ट इत्येवंपात्र ज्ञानेन नाम कर्मद्वारा उभ० १ प्र० ० (मि. १० न) महाप, महाप, अमष्टन करना परि वि बवराण पाण्डुर दिवादि देना ।

मुष्ट (वि०) [मूष् + क] 1 बधकीर, उज्ज्वल 2 मुष्ट महाहर अष्टमे मुष्टे मुष्टवन्मदीये नु० १.२५ ३) मासिक, बीजाशोषाकी, प्रमत्त मर्मादि 1) 2) प्रमत्त अष्ट, मर्मादी ५६० १ ३५८--अम् पाण्डुरता कस्याप, अस्मा भाव्य, प्रमत्तना, मर्मादि मा० १।० ३ 2 अन्कार 3 अन् 1 एक प्रकार का मुष्पित लकड़ी । मम--अन्तः शिव का विशेषण, --अन् (वि०) मुष्टर (सी) 1 मुष्टर स्त्री 2 कामदेव की पत्नी तीन अशोषा मुष्टरा स्त्री,--अमुष्पु मुष्प-दुष्, अन्-रुग् आचार (वि०) पवित्र आचरण वाता, महापारी--आगत्य मयोऽय स्त्री--इत्तर (वि०) (वि०) 1 वग आचर 2 अमम आचार्यायक, उरक (वि०) त्रिका अल आनन्दः उरक स्त्री--अर (वि०) काम्याकर, मननप्रद--अवेम् (म०) पुष्पवायु मष्पम् एक मष्पवायु, वीर,--इत्तः अन्कल पद, ५ इत्पञ्च स्त्री मुष्टर दोषा जाती,--अन्-अम् मूष् मूष् मूल मूल बडी--वर्ता मुष् महापार, शान्त मूष् की मुष्पति कर्म वाता मष्पइत्त, शान्त (वि०) मूष्पुष्क, मयल की मुष्पना देने वाला--रघु० ३।१६ स्त्रीकी 1 वर भवन बडी पत्नी का अन्वय होना हो, वरमुष्ति 2 मयलमुष्ति ।

मुष्पु (वि०) [मुष्प + पति --पु] 1 नमकवय, बीजाशय- १२९

मुष्क, माष्पशाकी, मयलाश्वित--अधिक मूष्पु मूष्पुना द्विजनेन इत्येव सवातम् --रघु० ८।६, अदि० १।२० ।

मुष्कुर (वि०) [मुष् + क + क्त, मुष्] 1 कस्यापकारी 2 आनन्दवर्धक ।

मुष्पामुष्क (वि०) [मुष्प + मु + पित् + उक्त्] सजाया हुआ, मूष्पित, अलकुल, उज्ज्वल ।

मुष्पा [मुष् + टाप्] 1 कान्ति, प्रकाश 2 शीतल 3 इच्छा 4 पीलाग, मोरोचन 5 गमी वृक्ष 6 देवसभा 7 दूह 8 त्रिगुण लता ।

मुष्प (वि०) [मुष् + क्त] 1 बधकीला, उज्ज्वल, देवीप्यमान 2 श्वेत पशुति पितापुत्र, क्षत्रियुष्प श्वेतपति पीत-काम्य० १०, रघु० २।६९, अ 1 श्वेत रग 2 बदल (म०), अम् 1 बीरो 2 अन्धक 3 संवा नमक 4 कसीय । मम० अम्, अरः 1 चट्टा 2 कुर, रक्ति चट्टा ।

मुष्पा [मुष् + टाप्] 1 वया 2 स्फटिक 3 बालोचन ।

मुष्पि [मुष् + पित्] ब्रह्मा का विशेषण ।

मुष्पु (म्हा) पर० मुष्पति) 1 बधकीला 2 बोलना 3 आघात पहुँचाना, क्षति पहुँचाना ।

मुष्पु [मुष्प + क्त] एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गा ने मार डाला था । मम० क्षातिनी, क्षतिनी दुर्गा का विशेषण ।

मु (शु) र (वि०) आ० मूर्त्ति) 1 चोट पहुँचाना, मार डालना 2 डूढ़ करना, स्थिर करना, ठहराना ।

मुष्क (चुरा) उभ० मुष्कपति ते) 1 लाभ उठाना 2 उदा करना, देना 3 रचना करना 4 कठना, बर्धन करना 5 छोड़ना ग्यायना, परित्यक्त करना ।

मुष्कः कम् [मुष्क + क्त] 1 पुत्री, कर, महामुल, मोक्षामुष्क विशेषणः वर कर वा राज्य द्वारा चाट वा मार्ग आदि पर लिखा जाता है--क मुष्ठी हत्येवमुष्क मुष्कमूर्त्तिवातिमाश्वमात्--हि० ३।१२५, मनु० ८।१५९, पात्र० २।१० 2 किसी बीजे को पक्का करने के लिये दिया गया मलाङ्क वन 3 (कन्या का) विष्क मूष्, कन्या के पिता को कन्या के बन्धे दिया गया वन पीडितो दुहितुमुष्ककाम्यया --रघु० १।१५०, न कन्याया पिता विद्वात् मुष्ठीमाष्ककाम्यपि अन्० ३।५१, ८।२०४, १।१३, १८ 4 विवाहोपहार ' विवाहो निश्चित करने के लिये दिया गया वन, दहेज ५ वर पक्ष की ओर से दुल्हिन को दिया गया उपहार । मम० वाहूक, वाहूत्तु (वि०) मुष्क-मह-कर्ता, अः 1 विवाहोपहार देने वाला 2 वाष्पत विवाहायी, अन्त, अन्तम् मुष्क बना करने की बध, मुष्पिक ।

मुष्कम् [मुष्क + क्त, पुष्पो] 1 सुतीकी, रस्सी, डोरी 2 ताँबा ।

मुन् (स्व्) (प्रा० उच० शब्द-व्य-वर्ति- -ते) देना, प्रदान करना 2 भेजना, तितर बितर करना, 3 मापना ।

मुन्वम् (स्वम्) [श्व्+अन्] 1 गम्भी, डोरी 2 ताबा 3 पंजीय कर्म 4 जल का सामीप्य, जल का निकट-वर्ती स्थान 5 नियम, कानून, विधिसार, -स्था, -स्त्री दे० ऊपर ।

मुष् (स्वी०) [श्व्+ष् लृक्, द्विवादि+क्विप्] माता ।
मुष्क (वि०) [श्व्+सन्, द्विवादि+ष्क्] सावधान, आजाकारी, क. सेवक, टहलन ।

मुष्कचम, मा [श्व्+सन्+इवादि+स्यट्] 1 मुनने की इच्छा 2 सेवा, टहलन 3 आज्ञाप्रतिज्ञा, कृतव्य-परायणता ।

मुष्का [श्व्+सन्, द्विवादि+अ+टाप्] 1 मुनने की इच्छा--अनएव मुष्काया मा मुन्वयति मृदः० > 2 सेवा, टहलन 3 कर्तव्यपरायणता, आज्ञाप्रतिज्ञा 4 सम्मान 5 बोलना, कहना ।

मुष्क (वि०) [श्व्+सन्, द्विवादि+उ] 1 मुनने का इच्छुक 2 सेवा या टहलन करने की इच्छा वाला 3 आज्ञाकारी, सावधान ।

मुष् (दिवा० पर०) श्रुयति, शुक 1 मुचना, शुक होना मुक्त होना--मुष् शुक्यमान्ये पितृनि मृतिसं म्वाडु मुनिर्भर्त्स ३११२ 2 मुष्ना जाना, प्र००। शाप-वतिना 1 मुष्नाता, मुष्नाता, मुक्त होना 2 हुन करना, उद्- , परि । 1 मुष्नाया जाना, मुष्नाता अट्टि० १०४१, भग० १०२९ 2 म्लान होना, कुम्हलाना, मुष्नाता, वि, सम्, मुष्नाया जाना ।

मुष्, मुष्णी [श्व्+क, श्व- -दोर्] 1 मुष्ना मुष्नाता 2 बिल, मृगप्र ।

मुष्ि [श्व्+कि] 1 मुष्नाता 2 मृग, त्रिद 3 मीर के विचने दान का घोडा मीर ।

मुष्िर (वि०) [श्व्+किन्] छिद्रमुक्त, मृधमय-क 1 आग 2 बुद्धा, रम् 1 मिद 2 अन्तरिक्ष 3 हवा या पृक से बजने वाला बाज ।

मुष्िरा [श्विर+टाप्] 1 नदी 2 एक प्रकार का मृदव्य ।

मुष्िक [श्व्+इन्, म+क्वि] हुवा, बाय ।

मुष्क (प० क० क०) [श्व्-क] 1 मुष्ना, मुष्नाया हुवा शाखाया मुष्क करिष्यामि-पञ्च० 2 मुष्ना हुवा म्लान 3 इवीदार, सिकुडन का 1 हुवा 4 मृद मृद, व्याजमुक्त, नकली कायिन म्, धने कर्मो-कृद्वि शुकर्मवत् च मुष्क्रेयि शि० १०१६ 5 रिक्त, अर्थ, अनुरागी अनुत्पादक मान्दि० 6 निगाधार, निष्कारण 7 बुरा लगने वाला कठार -रम् नानुगत इयाव मुष्का निरमीरयेत् नन्०

११३५ । सम०--**मुष्क** (वि०) कृपाकाय, (श्री) शिपकली, **मुष्क** बहु अनाज जिसमें से मुष्का अन्न नहीं किया गया, ककह 1 अर्थ या निराधार शब्द 2-बनावटी शब्द--मुष्ना ३- बेरम् निराधार वेर, क्क बहु बाध को अन्धा हो गया है, बाध का चिह्न ।

मुष्कल, -कम् [शुक+ला+क] 1 मुष्ना मात्र 2 मय ।
मुष्क [श्व्+तन्, क्विप्] 1 मुष् 2 आग 3 बाय, हुवा 4 पत्ती, -कम् 1 पराक्रम, मायार्थ 2 प्रकाश, कानि ।

मुष्कन् (प०) [श्व्+इ, मणिप्] अग्नि- शि० १४०० - (नप०) 1 मायार्थ, पराक्रम 2 प्रकाश कानि ।

मुष्क, -कम् [श्वि- -कम्, मृप्रमारणम्] 1 जो की बात, जदी 2 पीथा के करे मण, वृत्त वक्तु मर्ष-आमि० शि० 3 तक मिरा, नरु किलार ४ मुष्कामला कक्या एक प्रकार का चिरीला काश । मम० -कोट, -कोटक एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रोश मरु हो, काल्प्य कोरु भी ऐसा अणु ज वाला टुक मों से निकलता है (जो आदि), पिबि शी, -शिम्बा, -शिम्बा, -शिम्बा इतने कल्पकम् ।

मुष्क [शुक+कम्] 1 एकार का अक्ष 2 मुष्कामला कक्या ।

मुष्क [श्व इत्यम्लेन गन्ध कानि श्व्+क अन् मुष्क गच्छ दम्भ भट न हद गिहा मया ह्य पीरगा एव जामनि मिदशुक्योवबलम्--मुष्क मम० इष्ट एक प्रकार का घास मीषा ।

मुष्कल मुष्कल कल्पे ददाति -शुक-ला-क-अग्नि० शि० ।

मुष् [श्वि- -कम्, श्व्+क अन् व, शीप्] जोये का 1 पृथक्, हिन्दुना के बार मुष्क जहाँ में से अग्निम ज् का पृथक् । कहा जाता है कि वह पृथक् वा इष्ट व पौं म उदपर हुआ--पृथुषा मुष्ना अत्राय । 1१ १०१०, १०१२, मनु० ११८३, उमक मुष्क कल्पे जेव उष्कवर्णा की सेवा करना है मु० मन० १०१० मम० **मुष्किलम्** मृद का दैनिक अनुष्ठान, उष्क मृद के स्थान में श्रुतिम ज्क, -कृष्कम्, -मम मृद न कर्मन्, -श्विः श्याव, श्रेष्यः शीरी उष्कवर्णा व ३ किमी एक वर्ण का पृथक् ज्ञा मृद क उष्क १ -मुष्किल (वि०) यही शिषकात् मृद गृह्यतः।-ताक वा मृद के लिए यक्ष का संचालन करना ३ वर्ण मृदशरीरी या मृककर्म, -लेखकम् मृद की मी मृद मृद का सेवक बनता ।

मुष्क [श्व्+कम्] एक राजा, मुष्ककर्मि का प्रमाण प्रतीति ।

सुहा [सुह + टाप्] सुह वर्ण की स्त्री । सम०—बायीं
त्रिदली पत्नी सुहवर्ण की हो,--केवलम् सुहवर्ण से
विवाह करना--सुह. (किसी भी जाति के पिता द्वारा)
सुह माता का पुत्र ।

सुहावी, सुहावी [सुह + डीप् पक्षे जातक] सुह की पत्नी ।
सुह (सु० क० ह०) [वि० - क्त] १ सुहा हुआ २ अचिप
उगा हुआ, समृद्ध ।

सुहा [वि० अचिपण्ये क्त, मय० दीर्घञ्च] १ सुह गायु,
बटो, उपशिक्षिका २ सुहइवाना ३ कार्य की वस्तु
(जैसे कि घर सुहवर्णों का कुछ सामान) जिसमें नीच
हिमा होती हो (यह विनयी में पौष है--वृष्ण, चक्री
इत्यादि, आकाश और जलवायु)--पञ्चम सुहा सुहमन्व्य
वृष्णो वेद्यनुसक्तः । कश्यपी चाककुम्भकश्च
पञ्चु वाहनम्--सन्० ३१६८ ।

सुध (वि०) १ सुधासे प्राणिकषाय हिन रहस्यम्यानराज्
२ १ । रिक्त, शाली २ सूना (दूध, तथा चिनचन
प्राणि क शिपु से उत्पन्न) रामनमलस सुधा दृष्टि
या० ११३ दे० नी० सुधद्वय ३ अविद्यमान
४ सुकाल, निर्मल, अविश्वत शीतल-सुधेयु सुधा न के
हास० ७ अर्द्ध ६१, उत्तर० ५३८, या०
५०० ५ शिपु उदास अनाहीन वाया अनाय
महासिद्धि सुधविद् क० १३५ वि० १३१०
५ निराम्य गहन, अचिपण्य, शिथिल अनायकस
। कर्म० के माय वा समास में अतीतकृत्यांसे में
सुधे० या० ५ दायीं शान अथि ७ तदर्थ
विद्वि ९ अर्धहीन, निर्मलक सि० ११५
१० शिवर तथा--अथम् १ विविधता रिक्त, शोष-
मान २ आकार, अन्वित ३ निष्कृत् विद् ४ अन्वि-
वीनता (पूर्व, अर्धीय) अविद्यमानता--दुयल
या विद्वद ने० १०१ १ मय० अथः वाचयन्
नरद्वय--अथम्-अथम् (वि०) अयमथक भयकन-
पुल, धरम १५० अथा-अथा, उदास, विरलेध
सुधे० वाय ५२ शानिक निजान्त हो (जोर ईश्वर
अदि) इहो भी उदास का गता श्रीकार नही करना
बीड समन, अविद् (दु०) । शानिकः बीड
हृष्य (वि०) । अयमथक विद्यमान ५, या० ५
२ सुधे विव शाना, जो दूसरे पर किसी प्रकार का
नदेर न करे ।

सुधा [सुध + टाप्] १ शोषता नरकुण २ शान्ति स्त्री ।
सु (प्रा० उभ० सुवर्तिनी) १ शीघ्र के कार्य करना,
सोपानाती हुआ १ इवम उद्योग करना ।

सु (वि०) १ सु० अन्व, बहादुर, शीघ्र पराक्रमी, ताक-
तवर-सु-यु सुधा न के शान्ति ७, १ १, सुधा
यादा, पराक्रमी २ सिंह ३ सुधर ४ सुधे ५ मास
का पर ६ कुण का शारा, एक शारव । सम०—श्रीः

निरम्कणीय योडा, महावीर० ६१३२,--वाल्म्य
अधिवान, अहकार, सेव (पु० ब० ब०) मधुरा के
निकट एक देव या उस देव के अधिवासी - रघु०
६।४५ ।

सुरभः [सु + स्वट्] सुरन नामक एक काश्मिक, कर्ष ।
सुरभम् (वि०) १ आशान सुर भयने-सुर + मन् + क्त्वा,
मन्] वा स्थिति अपने आपकी पराक्रमी समझना है ।

सुर्यः [सु + प ऊप्य विन्] छात्र, यैः दो श्रेण का
शोक । सम०—अर्थः हाथी,--महा, श्री (महा
के स्थान पर) जिसके नाम छात्र जैसे लगे पौड़े हों,
राक्षस की बहन का नाम (यह राम के सीमन्त पर
सुध होकर उनसे विवाह करने की इच्छा करने
मानी ; परन्तु राम ने कहा कि मेरे माय मो मेरी
पत्नी हैं, अच्छा हो कि सुध लक्ष्मण के पास जावो ।
परन्तु जब लक्ष्मण ने भी उसकी प्रार्थना न मानी
तो वह शक्ति राम के पास आई । इन बात पर
सीता की हृषी जा गई । फलत सुधेनता ने अपने
आपको अत्यधिक अवमानित समझकर बहता सेने की
इच्छा मशीतल कर धारण किया और सीता को शान्ति
के लिए दौरी । परन्तु उन्नी समय लक्ष्मण ने उनके
बान और नाक काटकी और उनका क्त विवाह दिया
--रघु० १५।३० ६०)।--वातः छात्र की हिताने
से उत्पन्न हुआ--शक्ति, हाथी ।

सुर्यो [सुर् + डीवः] छोटा छात्र वा पञ्जा २ सुरेनता ।
सुर्, सुक्ति (पु०, स्त्री०) सुक्तिता, सुर्षी [सुट् ऊपि
अस्ति अस्या पक्षे अन्व, सुर्षि--कन्--टाप्, सुर्षि
श्रेण] १ लोहे की बनी प्रतिमा २ कन, निहाई ।

सुम् (पथा० प०) सुर्षिणः १ बीमार हुआ २ कासाह्व
करना ३ गडबड करना, विवाइना ।

सुष-अन्व, सुष् - क] १ पैना या लोकार हृषिवार,
सुकीला कटा मेका, बहो, भाका २ शिव का चिह्न
१ माहे की समान्य (शिव पर मान पूजा जाता है)
सुष मरुत सुष्मन्-सु० अथ सुष् ५ एक सुष्म जिसके
महारे अथारिष्या की सुष्मी की शान्ति की--(विश्वम्)
स्वन्वेन सुष् हृदयेन शास्त्रम्-सुष्म० १०।११, कु०
५।३ ५ तीक्ष्ण वीरा ६ उत्तराशुन ७ सुष्मिा, बीडो
वै एवं ८ सुष् ९ अथवा, अथ (सुष्मक लोहे की
समान्य पर रख कर भूना) । मय० अथम् सुष्मक
की शोक, शक्ति (स्त्री०) एक प्रकार का शाल,
सुष्, अथम् लोहे का इगारा, लोहे का बुरा जो
लोहे की श्रेणके के निकलता है अन्व (वि०) शास्त्र
जीवित, वेदमाहुर, अथम्, अथ, अथिन्--सुष्,
शक्ति, सुष् (दु०) शिव के विशेषण अधिवान-
अथिन् सुष्मामरिषिस्वाम्--सि० ५।१५, रघु०
३।३८, अन्व, एरुष् का शीका, -स्व (वि०) सुष्मी

पर बढ़ाया गया, हल्की एक प्रकार का जी, -हस्त भालाधारी ।

सुलभः [सुल+भ] अधिकल बोधा ।

सुखा [सुख+टाप्] 1 अत्रादिषो को सुखी देने की स्तूना 2. बेया ।

सुखाकृतम् [सुख+कृ+ङ+क] भुना हुआ मास ।

सुखिक (वि०) [सुख+ठन्] 1 सुखाधारी 2 समाज पर

भुना हुआ, क मरगोष, कम् भुना हुआ मांस ।

सुखिन् (वि०) [सुखमस्त्यस्य इति] 1 बर्छीधारी दुर्जने

सबका सुखी-रूप० १५५ 2 उदरगुल से पीकित

(पु०) 1 बर्छीधारी 2 करगोष 3 गिव कुर्बन्

सन्ध्याबलिपटहना सुखिन. क्वाकनीयात् -मेघ० ३६,

कु० ३५७ ।

सुखिन. [सुख+इत्तन्] बरगय का पेड़ ।

सुख्य (वि०) [सुख+यन्] 1 समाज पर भूवा हुआ

-स० २ 2 सुखी पान के योग्य स्वयं भूना हुआ

मास ।

सुख् (भ्या० पर० सुखति) 1 पेश करना, उत्पन्न करना

2 जन्म देना ।

सुखात्तः [= भूयात्] गीदर - दे० 'भूयात्' ।

सुखात्त [सुखं ताति-आ+क, पूर्वो०] 1 गीदर 2 टग,

धर्म, उपस्का 3 मोर 4 कुट्ट प्रकृति, कटुभाषी

5 कृष्ण । सम० केसिक एक प्रकार का बर, -जम्बू,

-बु (स्त्री०) एक प्रकार की ककड़ी, बीरा, -बोसि:

गीदर की धरति में जन्म देना, क्कः शिव का

विशेषण ।

सुखात्तिका, सुखात्ती [भूयात्+ठीङ्, पक्षे कन्+टाप्

ह्रस्व] 1 गीदरी 2 कोयरी 3 पलायन, प्रयासतेन ।

सुख्क-का, -कम् [सुख्कान् प्रयास्यान् स्वल्पते अनेन,

पूर्वो०] 1 लोहे की डम्बीर, बेबी 2 डम्बीर,

हृकरी (आल० भी) -घट्टि० ११९०, नीलाकटाल-

मासासुख्कामिः -रस०, मनावातलाघट सुख्काम्

गीत० ३ 3 हाथी के देटी को हारने की डम्बीर

-स्तम्बेरना सुख्कामकविगते-रूप० ५१७, कि०

७३१ 4 कनर की देटी, ककरी 5 हाथने की

डम्बीर 6 डम्बीर, बेबी, वरगया । सम०-अथकम्

यमक यककुर का एक मेर दे० कि० १५४२ ।

सुख्ककः [सुख्क+क] 1 डम्बीर 2 डेट ।

सुख्कलित (वि०) [सुख्कला+इत्तन्] डम्बीर में बकहा

हुआ, बेबी पहा हुआ, बेबा हुआ ।

सुख्कन् [सु+यन्, पूर्वो० मुन् ह्रस्वच] 1 सीप-बन्ध-

रिदानी महिषस्तम्बम् सुख्काह्व कोसति दीपिकायाम्

-रूप० १५११, महात्मा महिषा निवासस्थितं सुख्क-

म् हुलाकितम्-स० २५२ 2 पहाड़ की चोटी-अदे

सुख्क हुरति पषम कि स्थितियुक्तीनि-मेघ० १४,

५२, कि० १५४२, रूप० १३१२९ 3 मयन की

चोटी, दुर्बी 4 उजुपता, डोलाई 5 प्रभुता, स्वामिक,

सर्बोपरिता, प्रभुभता सुख्क स दुर्बानिन् इति परे-

वामान्प्रकृत न यन्वे न तु दीर्घाया रूप० १५६२,

(यहाँ शब्द का अर्थ सीप की है) 6 चरपुडा, चरि

की मोरक 7 चोटी, मोर, अथमाय 8. (पैस गावि

का) सीप जो फूक मार कर बजाया जाता है

9 पिचकारी बघावके काम्पन सुख्कमुने-रूप०

१५७० 10 कामादिक, अथिलापोषय 11 निशाप,

चिह्न 12 काल । मय० अक्षरम् (गी आदि

पद्यो के) सीपों का मध्यबर्ती स्थान, -उच्चय अंबी

चोटी, अ बाण (अम्) अथर की लकड़ी, -प्रहारिन्

(वि०) सीप में मारने वाला, शिव शिव का विशेष-

ण, बोहिन् (पु०) बगक वृक्ष -वेरम् 1 बरसान

मिर्जापुर के निकट गंगा के किनारे बना हुआ एक

नगर-उत्तर० ११२ २. अथरक ।

सुख्क, -कम् [सुख्क + कन्] 1 सीप 2 कदना की

मोर, चरपुडा 3 कोई भी मोकीली बन्तु 4 पिच-

कारी रूप० १ ।

सुख्कम् (वि०) [सुख्क + मनुर्] चोटीवाला -- (पु०)

पहाड ।

सुख्कारक, सुख्कारक [सुख्क प्रघात्यम् अटति -- सुख्क + अट्

-अन्] 1 एक पहाड 2 एक पीपा कम्, कम्

चौराहा ।

सुख्कार [सुख्क कामोद्रेकमुच्छ्वयनेन नः -अन्] प्रघारक,

कामोत्साद, रनिगम (काश्चरबनानी में बगिन आड

या नौ प्रकार के रनो में सबसे पहला रन यह दो

प्रकार का है-समोय सुख्कार और बिप्रलय सुख्कार]

सुख्कार सकि मुनिमानिब सभो मृषी हरि श्रीबलि

-गीत० १. (इसकी परिभाषा यह है -युग स्थिया

स्थिया पुसि समोय प्रति या मृष्ट । म सुख्कार इति

स्वात कीडाएदिहाकम् ॥ दे० सा० ६० २१०

भी) 2 प्रेम प्रघायाभाद सभोमेच्छा विक्रम० २१९

3 सुख्कारिक सभोसापो के उदयुक्त देश, ललित

बेसभुषा 4 मैथुन, सभोय 5 हाथो के अरीर पर

बनाय गए सिहूर के निशाप 6 चिह्न, रन् १ सीप

2 सिहूर 3 अथरक 4 सरीर या बन्धो के लिए

सुगन्धित दुर्ष 5 काला अण । सम०-केसा कामा-

मुरलित का मकेल -रूप० ६१२, बोधितम् प्रेमा-

काय, प्रथरकया, -सुखकम् सिहूर, बोधिः कामदेव का

विशेषण, रसः साहित्यशास्त्र में बलित सुख्कारक,

प्रथरक, -पिचिः, -बैशः प्रेमासापो के उदयुक्त बेस-

भूपा (जिसे पहन कर प्रेमी अपने पिच में मिलता है) ।

-लहाकः प्रेमसाधारण में सहायक व्यक्तित, सर्व-

साधिव ।

शुद्धरक्तः [शुद्धार + क्त] प्रेम, कर्म निरुद्ध ।
 शुद्धरित (वि०) [शुद्धार + रित्] 1 प्रेषादिष्ट, प्रय-
 योग्य 2 सिरु में लाल 3 अलङ्कृत, सजा हुआ ।
 शुद्धरिपु (वि०) [शुद्धार + रिपु] शुद्धारिपु, प्रेषा-
 सत्ता, प्रयोग्यमल (पु०) 1 प्रयोग्यमल, प्रेषी
 2 लाल 3 हाथी 4 बेशुभता, सजावट 5 गुणारी
 का वेद 6 पान का बीजा दे० 'ताम्बूल' ।
 शुद्धि [शुद्धि, पु०] ह्रस्व] आसुषणों के लिए सोमा
 (स्त्री०) गिरी मछली ।
 शुद्धिकर्म [शुद्ध + क्त] एक प्रकार का विष, का एक
 प्रकार का भूर्बन्धन ।
 शुद्धिः [शुद्ध + इत्] भेदा, वैशा ।
 शुद्धिको [शुद्धिन् + को] 1 नाय 2. एक प्रकार की
 मन्त्रिका, मोतिया ।
 शुद्धिन् (वि०) (स्त्री०) शी [शुद्ध + इत्] 1 सीमा
 बाधा 2 तिथाभारी, चाँदी वाला, (पु०) 1 पहाड़
 2 हाथी 3 वृक्ष 4 सिक् 5 सिक् के एक सण का
 नाम शुद्धी शुद्धी गिट्टीमनुषी - अमर० ।
 शुद्धी [शुद्ध + डी] 1 आसुषणों के लिए प्रयुक्त किया
 जाने वाला सोमा 2 एक औषधि-मूल, काकडामिरी,
 अनार 3 एक प्रकार का विष 4 गिरी मछली ।
 सभ - अलङ्कृत गहना बनाने के लिए मछली ।
 शुक्ति (स्त्री०) [शु + क्त] तन्व न, हुम्बरध]
 अक्षुष, प्रताप ।
 शृत (मू० क० इ०) [शृ + ण] 1 पकाया हुआ
 2 उखाया हुआ (पानी, दूध आदि) ।
 शृत् [श्रा० वा० - परन्तु शृत्, शृत् और शृत् में
 पर० भी आते] अपान बाध छोड़ना, पाद मागना ।
 ॥ श्रा० उभ० शर्षति - ने) 1 आई करना,
 पीका करना 2 काट शालना ।
 ॥ (श्रु० उभ० शर्षति - ने) 1 प्रथम करना,
 2 नेता, ग्रहण करना 3 अपमान करना (पाद मार
 कर) नकल करना मजाक उठाना ।
 शृत् [शृ + क्त] 1 बुद्धि 2 गुहा ।
 शृ (क० पर० भ्रुवाति शीर्ष) 1 काक शालना, टुकड़े
 टुकड़े की शालना 2 चाँट पहुँचाना, प्रति ध्वस्त करना
 3 मार शालना, नष्ट करना कि० १४१३,
 कर्मवा० (शीर्षते) 1 चिबड़े-चिबड़े होना, कुम्हलाना,
 पुराताना, बर्बाद होना, अन्व - बहुरण से भावना
 (कर्मवा०) भ्रुवाति, कुम्हलाना-भ्रुवि वा सर्वलोकस्य
 विशीयते बनेअवा - भ्रु० २१०५ ।
 शोकरः [शिक् + अन्, पु०] 1 पूजा, कल्पी, पुषो
 का सत्रण, शिं पर कपटी हुई शाला - कर्वाकि वा
 स्यादश्वेनुशोकरपुं कु० ५१२७, ७१२२, नक्षत्र
 विकारेण स्यादश्वकुम्हलस्तवकृत्पितृते शोकरं

विश्रुतीय - शि० ११४६, ३१५०, मन्ववेद्यशोकरीभूता
 पुष्यपुरी नाम नारी - दश० 2 किरोट, मुकुट,
 ३ चाँटी, श्रुग 4. (मगल के अन्त में प्रयुक्त) किसी
 भी श्रेणी का सर्वोत्तम वा प्रयुक्ततम 5 शोका का श्रुव
 विशेष, - रन् शीग ।
 शोष, शोषत् (पु०) शोषः, कर्म, शोषम् (म०)
 [शी + ण्, शी + अणुन्, पु०, शी + क्त, शी + क्तुन्,
 पु०] 1 शिथ, पुरुषकी जननेश्रिय 2 अशुभ
 3 पूछ ।
 शोषाकि, शी, शोषाकिका (स्त्री०) [शोषाः शयन-
 शान्तिः अन्वयो यच्च - इ० म०, शोषाति - शंप्,
 क्तु - टाप् वा] एक प्रकार का पीषा, निर्गुम्बी,
 नीलिका, नील तिषुवार का पीषा ।
 शोषुवी [शी + शिष् = शो यो हू न् मुष्ठाणि - शी + ण्
 - क + शंप्] बुद्धि, मगल ।
 शोष् (श्रा० पर० शोषति) 1 शाना, हिलना-मुलना
 2 काँपना ।
 शोषः [शृकृणते भति शोने - शी + ण्] 1 शीप 2 शिथ
 3 ऊषार्ई, उन्मुषा 4 शानन्व 5 शोका, कबाधा,
 - क्व 1 शिग 2 शानन्व । मम० - शिः 1 शृष्-
 शान् कोष विद्या शास्त्रप्रमेयार्ह शोषशिल्पेऽपि रश्
 मायुं मयु० २११४, सर्वं कामा शोषशर्षिभित
 वा स्त्रीणां सर्वां पुरुषाणां च पुसाय - भा० ६१८
 2 बुद्धे के नी कोषों में से एक ।
 शोषकम् [शी + शिष् + क्त] शूत तन्व बलते श्त् + ण्]
 शोषे शी शानि हरे त्ग का पदार्थ जो पानी के ऊपर
 उग जाता है, काई 2 एक प्रकार का पीषा ।
 शोषशिली [शोषक - इत् + शीप्] नदी ।
 शोषाकः दे० 'शोषन' ।
 शोष (वि०) [शिष् + ण्] कषा हुआ, बाकी, कल्प सव
 - श्वेषिषोऽप्यनुयायिष्यन् - रण० २१४, ६१४, १०३०,
 शेष० ३०८०, मयु० ३१४, कु० २१४, इत सर्व में
 श्राव, सनात के अन्त में - अक्षितशेष, प्राप्तिशेषोच,
 शारि - क, - क्व 1 कषा हुआ, बाकी, अवशिष्ट
 श्वेषोऽपि शेषोच श्रापिशेषस्तर्षे च । पुणश्च
 शर्षते वसतास्तस्य श्वेषे न शारिरेत् - वाय० ५०, अक्ष-
 शेष - शेष० २८, शिवाशेषे कु० ५१५७, वायव-
 शेष - शिष्म० ३ 2 छोटी हुई कोई बात, या मूली
 हुई बात, ('वशिषोच' बहुधा माध्याकारों द्वारा उलना
 को पूरा करने के लिए किसी आवश्यक मूल पर ही
 पुति करने के विहित प्रयुक्त होता है) 3. बचाव,
 मुक्ति, शान्ति, - कः 1 परिपाम, प्रयाग 2 अन्त, सवा-
 लि, उपबहार 3 मृत्यु, विनाश 4. एक विशिष्ट
 नाम का नाम, जिसके एक हवार फलों का होना
 कड़ा जाता है, तथा जिस का वर्णन शिष्णु की

द्वया के रूप में, या समस्त सत्ता को अपने
 तिर पर सम्भाले हुए मिलता है—कि शेषस्य
 प्रत्यक्षा न वदुषि श्या, न शिष्येष्वेव यत्—मुद्रा०
 २।१८, कु० ३।१३, ६।६८, मेघ० १।१०, रघु०
 १०।१३३ बलराम (जो शेष का अन्तार माना
 जाता है, या फूल तथा अन्य चक्रावा जो मूनि के
 सामने प्रस्तुत किया जाता है) और उसके पुण्य
 अवशेष के रूप में पूजा करने वालों में बंट दिया
 जाता है—श० ३, कु० ३।२२, - बन् उच्छिष्ट अन्न,
 चक्रावे का अवशेष (शेषे क्रिया) विशेषण के रूप में
 प्रयुक्त होता है, इसका अर्थ है—1 अन्न में, आहारकार
 2 अन्य विषयों में। म०० अन्नम् नूदन, अवस्था
 नुदाया,—भाषा: शेष, शरी, भीक्षकम् नूदनलाया,
 —रात्रि, रात का शेष: पहर,—अन्नम्,—आश्विम्
 (पु०) विष्णु के विशेषण।

शेषः [शिवा केव्यर्थात् अण् वां 1 शिवा अर्थात् उच्चारण
 वास्तु का 'ष'ने वाला विद्यागी जिन्में वेदाध्ययन
 अभी अभी आरम्भ किया है 2 नौसन्धिया, तब-
 शिष्य ।

शेषिक [शिवा -ठक्] शिवाशास्त्र में उपपन्न ।
 शेष्यम् [शिवा -यत्] अधिगम, प्रवीणता,
 शेष्यम् [शीघ्र + व्यञ्ज्] कुली, सम्पन्नता,
 शेष्यम् [शीत + व्यञ्ज्] ठण्ड, शीतलता आवास—शैत्य
 द्वि मत्सा प्रकृतिशैत्यम् - रघु० १।६६, कु० १।३४ ।
 शेषिक्यम् [शिषिक - व्यञ्ज्] 1 शीषण, नरकी
 2 मन्थरता 3 दीर्घसूत्रता, अनवधानता 4 कपडारी
 शीकता ।

शेष्यः [शिनि -इक्] सारथिक का नाम ।
 शेष्याः (पु०, व० व०) [शिनि + वञ्ज्] शिनि की
 सन्तान, शिनि के बच्चे ।
 शेष्य दे० 'शैव्य' ।

शेषः [शिवा + अण्] 1 पर्वत, पहाड़—शेषे शैले न
 मानिष्य भौतिक न गजे गजे—पाण० ५५ शैली
 मलयदर्वुने—रघु० ६।१२ चट्टान, बड़ा भारी
 पत्थर,—अण् 1 मुद्राया धूप, गुग्गुलु 2 शिलाजाल
 3 एक प्रकार का अन्न । म००—अन्न एक देवा
 का नाम,—अण् पहाड़ की चोटी,—अटः 1 पहाड़ी,
 बसन्त 2 किन्ती देवमूनि का पुत्रारी 3 सिंह
 4 स्टाटिक,—अधिप,—अधिप्रायः, इन्द्र,—वसि,
 —राजः हिमालय पर्वत के विशेषण, आश्वय्य शैले-
 तस्य इव्य, धूप,—अण्कः पहाड़ की ढलान,—तस्यम्
 एक प्रकार का बन्दन,—अण् 1 शैल्यगन्ध इव्य,
 धूप 2 शिलाजीठ,—का, सतवा,—पुत्री,—सुता
 पार्वती के विशेषण—अत्राप्य प्रागम्य परित्ततस्य
 शैलतस्ये—काठ० १०, कु० ३।१८,—अण् (पु०)

शिव का विशेषण,—अः कृण्व का विशेषण,—विशालः
 शैलेयगन्धइव्य, धूप,—अणः शैल का पेश,—शिविः
 (स्त्री०) पत्थर काटने का उपकरण, टाकी,—रघु०
 मुद्रा, कन्दरा,— शिविरम् समुद्र,—सार (वि०) पत्थर
 की तरह गबल, चट्टान की तरह दुई कि० १०।१४ ।
 शैलकम् [शैल + कम्] 1 शैलेयगन्ध इव्य, धूप 2 शिला-
 जीठ ।

शैलाधि [शिलावस्थापण्यम्—शिलाय, इज्] शिव का
 गण, नन्दी ।

शैलाश्विम् (पु०) [शिलाश्विना मुनिना प्रथम नटद्वयमधीयते
 —शिलाश्वि -श्विनि] अधिनेता नर्तक ।

शैलिक्यः [शिलि शालमन्थस्य—श्ल, शैलिक्य + यञ्ज्]
 पाकघटा, टाकी इव ।

शैली [शान्तेव स्वार्थे व्यञ्ज् शीप्य ललाय] 1 व्याकरण
 सूत्र की मूलिल बुलि 2 अधि कि या अर्थकरण
 का एक प्रकार प्रायेणाचार्याचार्यामिव शैली यन्त्राधि-
 प्रायमपि परादेशशिवि वर्णयन्ति - मयु० १।६ पर
 कुण्ड० 3 व्यवहार, काम करने का ढंग, आचरण
 ढंग ।

शैल्यः [शिल्पवस्थापण्यम्—शिल्प्य -अण्] 1 अधिनेता
 नर्तक आ शैल्यगन्ध—शैली० १, एते पुराया सर्व-
 मेघ शैल्यजन व्याहारिन्—तदव, अत्राप्य शैल्य
 इवम् भूमिवाग् शि० १।१९ 2 काश्चि-कुशल
 —बेण्डबासे का तापक सर्वांग सन्धता का प्रथान
 3 सर्वांग सन्धता में नालचार्य 4 धुनें 5 बल का पर ।

शैलिक [शैल्य तद्वृत्तिव्य अन्वेषा—ठक्] 1 अधिनेता
 का व्यवसाय करना हा ।

शैलेय (वि०) (स्त्री० शी) [शिलाया अय शिला
 : इक्] 1 पहाड़ी 2 चट्टानों में उत्पन्न 3 पत्थर
 की तरह तथा पथरीला,—शः 1 सिंह 2 अयर,—अण्
 1 पर्वत पथद्वय धूप शैल्ययःशैलि शिलाजालानि
 —रघु० ६।५१, कु० १।५५ 2 मुद्रागत गान 3 सेवा
 नमस् ।

शैल्य (वि०) (स्त्री०—श्या) [शिला + यञ्ज्] पथरीला,
 त्वम् चट्टान जैवी कठोरता कठोरता ।

शैव (वि०) (स्त्री० शी) [शिवा देवतास्य अण्]
 शिवसम्बन्धी, व 1 शिल्पका के तीन मुख्य मन्त्रदायों
 में से एक 2 शैव मन्त्रदाय का पुरुष,— अण् अठारह
 पुराणा में से एक पुराण का नाम ।

शैलक [शी + कल्प्] एक प्रकार का जलीय पीसा, पथ-
 काट, सेवार, भार, बोका—शः शिल्पमनुविष्ट शैवसंनारि
 रम्यम् श० १।०— अण् एक प्रकार की मुद्रागत
 लकीरी ।

शैवलिनी [शैव्य + इलि + शीप्य : श्वी]
 शैवाल दे० 'शैवल' ।

छोत्रः [शोत्र + इत्] 1. कुल के चार बाहों व से एक
2 पाउप लेना का एक षोडा, एक राजा का नाम
3 षोडा ।

छोत्रवत् [शोत्रोर्ध्वः वत्] बचपन, बाल्यावस्था (मोक्ष
वर्ष से तीसरे का समय) - बौद्धवाग्भूति पाणिना शिव्याम्
उत्तर० १।८५, लौकिकेऽथर्वविद्यानाम्-१५० १।८।

छोत्रार (वि०) (स्त्री-रौ) [शोत्रार + अत्] चारे के
मीसम से संबन्ध रखने वाला, -रः काय रग का
पालकपत्नी ।

छोत्रोपाध्यायिका [शोत्रोपाध्यायः । इत्] शिक्षावस्था
के छात्रों को पढ़ाना ।

छो (रिया० पर०) व्यति, दाग या गिन, कर्षण० पापने
-देर० प्रादपति, इच्छा० शिक्षामति । 1 पेंनाता,
नह करना 2 पटना करना कड़ा करना नि-
नह करना ।

शोक [शूच + घञ्] अकर्मण्य, रज, दुःख, काट विनाप
रुदन, वेदना—अनात्मवापचन पश्य शोक -१५०
१।१०० भग० १।६। सम० अग्निः, अल-
शोक कर्षी आत्मा—अध्वनीक रज को दूर करना—अभि-
भूय, आकुल, आश्रित्य, उपभूत, चिहुल (वि०)
काटपन्न वेदनायत्न, -चर्षी शोक में लीन, मात्र
अनात्मन पराधय, कासक (वि०) शोक से
रुना, पादाभिनन्दन—चिकल (वि०) शोकाकुल, -अनात्म
शोक का कारण ।

शोचनम् [शूच + ल्यट्] रज, अकर्मण्य चिन्तन ।
शोचनीय (वि०) [शूच + कर्त्तव्य] विनाप करने योग्य,
चिन्त्य, शोच्य, दुःखद ।

शोच्य (वि०) [शूच + ल्यट्] 1 शोचनीय, विनाप
करने योग्य, चिन्तनीय, दचनीय ए० ३।१०
2 कमीना दुःखार्थ ।

शोचित् (नपु०) [शूच + इति] 1 प्रकाश, ज्ञानि,
चमक 2 ज्ञानाः। सम०—केल (शोचिष्केरः)
अग्नि का विसोप ।

शोटीयम् [शूटीय - ल्यट्, 'शोटीयम्' इति साधु] परा-
क्रम, शीघ्र, शूरायोग्य ।

शोड (वि०) [शूड + अत्] 1 शूर्त् 2 कमीना, अधम
3 आलसी, मुल्य -ड 1 शूर्त् 2 विकर्म्या, आलसी
3 अधम या कमीना पुत्र्य -र्त्, ठम् ।

शोष् (इत्) पर० प्रागति) 1 जाना हिलना-जुलना
2 नाल होना ।

शोष् (वि०) (स्त्री-वा, ली) [शोष् + अत्]
1 नाल, महग्न नाल रज हल नाशका रग -अप्या-
नाशनद्वयनाभिनशोभगगिनहनमदिवदति कचान्नव
देवि शोष् -वेत्त० १।२१, मुद्रा० १।८, कु० १।७
2 मास के रग का, नाशियापुष्प भूरा, -अः 1 शोहित

वम्, नाल रग 2 जाग 3 एक प्रकार का नाल रग
का मन्ना, ईस 4 कुम्भेन चाड़ा 5 एक दरिया का
नाम जो गोंडवाना से निकलकर पटना के निकट गया
में गिरने हैं—प्रत्ययदीप् पाणिबवाहिनी भा भागोरीषी
शोष् इषोत्तरहू—१५० ३।१६ 6 मगलहृद् नु०
शोहित, लम् 1 शीघ्र 2 शिदुरः। सम० अन्वः
एक प्रकार का बादल जो प्रलय के समय उठता है,
अन्वम् (पु०)—उपलः 1 नाल एतद् 2 नाल,
एक मासिक, अन्वम् नाल रग का कमल,—एतम्
नाल नामक मासिक, पद्मरागमणि ।

शोषित (वि०) [शोष् + इत्] 1 नाल, शोहित, रक्त
वर्ण का, -अम् 1 शिदुर उपस्थिता शोषितपारणा
ये-ए५० २।१९, वेत्त० १।२१, मुद्रा० १।८ 2 केसर,
जाफरान । सम०—आशुष्यम् केसर, जाफरान,—अहित
(वि०) रक्तारजिन, उपलः पद्मरागमणि—अन्वम्
नाल चदन, -अ (वि०) शिदुर पीने वाला, -पुष्प
बागामुर का नगर ।

शोषितम् (पु०) [शोष् + इत्] लामिमा, लाम्नी ।

शोषः [शू + घञ्] सूजन, स्फोटि। सम० अम्, -अत्
(वि०) सूजन को दूर करने वाला, सूजन वा स्फोटि
को हटाने वाली औषधि, शिदुर पुनर्नवा, रोषः
हाथ पाँव शक्ति में सूजन होने का रोग अन्वीदर,
-ह्नु (वि०) सूजन हटाने वाली दवा (पु०)
भिलाषी ।

शोष [शूच + घञ्] 1 सुद्धिमत्कार 2 मसोपन, ममाधान
3 अलभयनाद, (इत्) परिशोष 4 प्रतिहिता,
प्रतिदान, वेदना ।

शोषक (वि०) (स्त्री-का, चिका) [शूच + पिच् + क्त]
1 सूद करने वाला 2 रेचक 3 मसोपन करने वाला

शोषण (वि०) (स्त्री-ली) [शूच + पिच् + ल्यट्] सूद
करने वाला, स्वच्छ करने वाला, -अम् 1 सूद करने,
स्वच्छ करना 2 मसोपन, (अण) परिशोषण करना
3 पचास निशोरण 4 अवापणी, बेबाकी, अल चकाना
5 प्राचिपत्त, परिशोषण 6 शानुषो को नाक करना
7 प्रतिहिता, प्रतिदान, अम् 8 (मणि० में) स्व-
कलद 9 तुलिया 10 मल, विद्धा ।

शोषकः [शोषण + क्त] दद-न्यायालय का एक अधिकारी,
मच्छ० ९, कीबदारी अदालत का कलमर ।

शोषणी [शोषण + ङीष्] भाद, बहारी ।

शोषित (पु० क० ङ०) [शूच + पिच् + क्त] 1 सूद
किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2 मच्छुत 3 छाया
हुआ 4 मसोपित, मसोहित 5 अण परिशोष किया
हुआ चकाना हुआ 6 बदला किया हुआ, प्रतिहिता
की हुई ।

शोष्य (वि०) [शूच + पिच् + ल्] सूद किये जाने के

योग्य, सक्तुत क्रिये जाने के योग्य 'यत्न' परिशोध क्रिये जाने के योग्य, —घञ्: अभिवृत्तस्यक्ति, बहु पुरुष जिसने मगधे हुए आरोप से अपने आप को मुक्त करना है।

शोकः [शु-+फल्] मुञ्ज, अर्बुद, रमली, शोष । मम० जिष्, —हृत् (पु०) मिलाके का पीषा ।

शोभन (वि०) (स्त्री०-भौ) [शोभने-वृत् + ल्युट्] 1 चमकीला, शानदार 2 मनोहर, सुन्दर, लावण्यमय 3 भद्र, सुभ, शोभाय वाली 4 खूब मनोवा हुअर 4 सदाचारी, पुण्यात्मा, नः 1 शिव 2 ब्रह्म 3 अच्छे परिणामो को प्राप्ति के लिए यज्ञानि में दी गई आहुति, —वा 1. हन्दी 2 मुन्दर या सती स्त्री कु० ४।४४ 3 एक प्रकार का पोल रंग, गौरीचना, —वम् 1 सौन्दर्य, कान्ति, रीति 2 कमल ।

शोभा [शुभ + अ + टाप्] 1 प्रकाश, कान्ति, दीप्ति, चमक 2 (क) वैभव, सौन्दर्य, शक्ति, शान्ता, लावण्य —वपुर्भित्तवम्पा पुत्यति स्वा न शोभाम्—श० १।१९, मेघ० ५२.५९ (ख) वैमर्गिक सौन्दर्य, (पर्वने प्रादि की) गरिमा, —अशिशोभा रघु० २।०३ 3 अन्कार, ललित अभिव्यक्ति शोभैव मन्त्रात्पुष्पकुभिलाभ्भांयि वर्णना शि० २।१०३ 4 हस्ती 5 एक प्रकार का रंग, गौरीचना । मम० —अञ्जन एक अन्धन उपयोगी वृक्ष, मीठुजना ।

शोभित (पु० क० कृ०) [शुभ् + शिच् + क्त] 1 अलङ्कृत चारु, मनोवा हुआ 2 सुन्दर, शिव ।

शोकः [शुच् + फल्] 1 मूचना, मूचानन हृदयोरपिक्ल-काम्—कु० ६।२९, इसी प्रकार आम्बुशाय कृडशाय 2 क्लेशना, कुम्भदान—गौरीशोष, कुमुदशाय आदि 3 क्लेशमय क्षः या अग्रमंग मशोषणाद् रसादीना शोष इत्यभिधीयते मुञ्ज० । मम०—सअब्जम् पिप्यना-मुञ्ज ।

शोचन (वि०) (स्त्री०-भौ) [शुच् + ल्युट्, श्रियदा ईप् च] 1 मूचना, मुक्त करना 2 मूचना, क्लेश करना, —न कामदेव का एक भाग, कम् 1 मूचना, मुक्त होना 2 मूचना, रसाकर्षण, अवशोषण 3 नि शोचन, क्लान्ति 4 क्लेशना, कुम्भदाहट 5 मोह ।

शोचित (पु० क० कृ०) [शुच् + शिच् + क्त] 1 मूचनाया गया 2 क्लेश हुआ, कुम्भदाहट हुआ 3 परिशुद्ध ।

शोचिन् (वि०) (स्त्री०-भौ) [शुच् + शिच् + शिन्] 1 मूचाने वाला, कुम्भदाहट हुआ, शोच होने वाला ।

शोचन् [शुच् + अण्] गानो की लार, मन्त्रो का शब्द ।

शोच्य (वि०) (स्त्री०-भौ) [शुचिन् + ङण] अञ्ज, मित्रके का ।

शोचितक (वि०) (स्त्री०-भौ) [शुचिन् + टक्] 1 यन्त्रो से सम्बन्ध रखने वाला 2 बहटा, मित्रके का, लडाकी ।

शोचितकेयम्, शोचलेयम् [शुचिका + टक्, शुचिन् + टक्] मोतो ।

शोचितकेय [शुचिका + टक्] एक प्रकार का विष ।

शोच्यम् [शुचन् + ल्यञ्] स्वतन्त्रा, मफेदी, स्वच्छता ।

शोच्यम् [शुचिर्भाष अण्] 1 पवित्रता, स्वच्छता—अथ० १।१४० 2 मन्त्रयाग के कारण दूषित व्यक्तित्व का शुद्धीकरण विधीयत किमी निकट सम्बन्धी की शपथ होने पर (मौक-व्यवहार के अनुसार निश्चित मन्त्र पर शोकमें प्रादि करा कर) दूष्ट होना 3 स्वच्छ होना, निर्मल होना 4 मन्त्रयाग करना 5 मरणान, ईमानदारी । मम० आचारः कर्मण् (नर्०) कल्पः दूष्टि विषयक सम्कार, कृपः मण्डल, लोचालय ।

शोच्येय [शुचि- टक्] मोठी ।

शोद (म्वा० पर० शीदति) घमण्डी या अहकारी होना । शोदोर (वि०) [शीद ट्] 1 घमण्डी, अहकारी २ 1 शम्भोर, भ्रमल घोडा 2 घमण्डी अन्वय 3 मन्वासी ।

शोदीर्यम्, शोच्यीर्यम् [शोदोर (शीदोर) + ल्यञ्] घमण्डी अभिमान, हर्ष ।

शोदति (म्वा० पर० शोदति) दे० 'शोद' ।

शोद्ध (वि०) (स्त्री०-भौ) [शुद्धाया मृगयाशर्मिभ्य अण्] 1 शराजी लेखक पंथे का शीदित, सदाय 2 उन्नतित, मन्त्राना नय मे कर (श्राव०) प्र-तिशुक्तिविपुत्र न वेचित मानशास्त्र—वेद० ५।२२ अभिमान से कर, पनखंडः 3 शुद्ध, स्व (श्रि०) के साथ या ममान में । अशुद्धिषे दामर्शन-श्रि० ।

शोद्धिक, शोद्धिन् (पु०) [शुद्धा मृग पण्यमग्य टक् उदि ना] शरभ शीचने बलदा बलदा शरभ शिकना मृगशोकी की-भौ कलादी, शरभ शिकनी पयाति शोदिरीश्रम शारुणीयप्रियायान शि० ३।११ ।

शोद्धिकेय [शुद्धिना + टक्] शरभ ।

शोद्धी [शुद्धा शरभर मृगशरभ श्रिदि प्रमना शुद्धा + अण् ईण्] मज्जिनी ली, बही पीपक ।

शोद्धीर (वि०) शुद्धा शरभिन् अण् शुद्धा—ईण् + अण्] 1 घमण्डी अभिमानो 2 उन्नत, उन्नत ।

शोद्धोरितम् [शुद्धोरन इज्] : वृत्त का विशेषण, शुद्धोरन का पुत्र ।

शोड (वि०) (स्त्री०-भौ) [शुद-अण्] शूद्र सम्बन्धी, इ शूद्रा स्त्री का पुत्र शिवका पिता (नील बर्णी में से) विभी भी बर्ण का हा—दे० मनु० १।१९० ।

शोडम् [शुदा + अण्] शरभशिकने से शुद्धा हुआ शोष ।

शोडक [शुदक + अण्] एक मज्जि, शरभ श्रिदिशाम्य तथा अन्य अनेक देविक मन्त्राजो के उल्लान ।

शौचिक । श्रुता शौचिकप्रस्थान प्रयोजनमथ्य ऽण् ॥ कर्माई,
—छाटना गरिबदासि मुरये, शौचिनो गुरुवाकनिका-
मिब—उत्तर० १५५ २ बहेलिया, बिडीमार
३ शिकार, आकेट ।

शौकः [शौकार्यं हितम् शौका + अण्] १ देवता, दिव्यता
२ सुपारी का पेड़ ।

शौभाञ्जनः [शौभाञ्जन + अण्] एक वृक्ष का नाम, दे०
'शौभाञ्जन' ।

शौभिक [शौभ श्यामपुर शिन्धुमय्य शौभ + टक्]
१ मदारी, श्राशौर २ शिकारी, बहेलिया इति
चिन्तयतो हृदये । एकस्य मयदासि शौभिनं पर-
भासि० १११११ ।

शौरसेनी [शूरसेन + अण् + ङीप्] एक प्रकार की प्राकृत
भाषी का नाम ।

शौरि [शूर + ङ्] १ कृष्ण या विष्णु २ बलराम
३ शनिग्रह ।

शौर्यम् [शूर्य्य भाव स्वञ्] १ पराक्रम, शूरता हीरता,
—शौर्यं वैरिणि वस्त्रयाग निदानवर्षोऽन्नु म केवलम्
भर्त० २॥३९, नये च शौर्यं च कर्मान् मयट—शुभा०
२ मासधर्मं शक्ति, ताकन ३ युद्ध और तिखाफ
निक घटनाओं का सम्मिश्रण पर अभिनय कर ता तु०
'आग्भटी' ।

शौक, शौचिकक [शुकने नदादानेऽधिकृत अण, टक् वा]
बुगों का अधोलोक इलाकाधिकारी ।

शौचि [शिच] क [शुक] टक् [शौच] के बर्तन बनाने
वाला, कसेरा ।

शौच (वि०) (श्री० शौ) [शवन + अण्, टिन्वा]
कुत्ता म मरन्य रखने वाला कुक्कुटमवपी, बच्
१ कुत्तो का झुर २ कुत्तो का स्वभाव ।

शौच (वि०) आगामी कृत् मरन्यो ।

शौचन (वि०) (श्री० - शौ) [शन, अण्] १ कुक्कुट
मरन्यो २ कुत्ते के गुणों से युक्त, -नय १ कुत्त का
स्वभाव २ कुत्ते की मरति ।

शौचलिक (वि०) (श्री० - शौ) [श्वम् - ङ्, नट्
क] आगामी कृत् मरन्यो वा आगामी कृत् तव
ठहरने वाला, एकदिवसीय, अण्द्रीयो ।

शौचक [शुकल; अण्] १ मास विधेयः २ मास-
भक्षी, शम्भु मूक मास का मृत्यु ।

शुभ्रु दे० श्री० 'शुभ्रु' ।

शुभ्रुम् (श्री० पर० ऽध्यात्मिनः) १ उपकथा श्रितता
बहना, बुना—शि० ८१६३, शि० ५१२९ २ श्रवणा,
उपकथा, कथना कथेयता, शि - बरना रिमता
उपकथा निश्चयान्तो मुनन्तु कवरीचिन्तयो यावदेव
-भा० ८१७ ।

शुभ्रो (शुभ्र) त्, शुभ्रो (शुभ्र) तन्म् [शुभ्रु (शुभ्र) न्
१३०

+ षञ्, श्वट् वा] रिमता, बहना, शक्ति होना,
बुना ।

शुभाशम्भु [श्रुता श्रुता दोनेऽण् - श्री + आनप्, शिष्ण्,
अथवा श्वन्तु शब्देन शौच श्रौत, नय्य शान शयनम्]
शुभ्रव्यान, उद्विग्नान, शवशाट् श्वान, मरघट—राज-
द्वार शमभाने च शिन्धुपट्टिन म शान्धय शुभा० ।
मम० - शक्ति, मरघट की आण, -आशयः कश्चिन्मान,
शौचर (वि०) ममान में धूमने वाला - यत्न० १०।

३९ - निवासिन, बसिन् (पु०) भूत, -आश्र-
वासिन् (पु०) शिव के विद्योपण, - वैश्वम् (पु०)

१ शिव का विशेषण २ भूत-प्रेत, वैश्वम्
अधिक विरक्ति, श्रममान भूमि के टपान में उन्नत
अथवा समान श्यामी की भावना, -शुक्त, -शम्भु
श्रमान भूमि में स्थित लोहे या लकड़ी की मुली
कु० ५॥३३, शाश्वतम् भूत-प्रेतों की वन में करने
क लिय श्रमान में त्रिक मन्त्रों की साधना
करना ।

शुभ्रु [श्रु०] [श्रु प० मूक अयेने लक्ष्यतेऽनन्त भू ;
कु] दाही-मंथ उपार्थि कथाश्रमशुभ्रु कथनालाश्रया-
नयन श्य० १५॥५० । मम०—शुभ्रुदा दाही का
बटना, श्रु० १३॥३१, -शुभ्री दाहीपूठ वाली
श्री लक्षक नाई ।

शुभ्रुल [वि०] [शुभ्रु - लभ्] दाही मूक श्यावा, शुभ्रु-
शरा भन्त्यापवर्जितेश्या गिरासि शुभ्रुशुभ्रुही
(नगण्य) श्रु० ६१३३ ।

शुभ्रीन् (श्री० पर० ऽधीमर्ति) अधि श्रपकता पलक
मारता अये मरकाना ।

शुभ्रीमम् [शुभ्रीन् + श्वट्] शौच नीचता, पलक श्रप-
कता ।

शुभा [शु० क० कु०] [श्रु + क्त] १ गया हुआ २ अथा
हवा पिशाचुल ३ परमभूत, चिकता, साह
४ सिक्कटा हुआ, सूखा भत्न० २॥४८, नम्
पूत्री ।

शुभा [वि०] [श्रु + षक्] १ बाला, पहण नीला, काठे
रग का प्रयास्यार्थिबौद्ध कुम्भक श्यामावदाता-
श्याम-मानसि० ३५, विक्रम० २१७ कुम्भकशयनश्या-
मन्तिन्य -उत्तर० ५१११, शेष० १५, २३ २ भूरा
४ गजरा-हरा म । काका रय २ शरल ३ कोषक

४ प्रथम में श्रमता के बिनारे स्थित बरमर का पेड़
अथ च कालिन्दीतटे बट् स्वामी नाम - उत्तर०
१, माऽय बट श्याम इति प्रतीक - श्रु० १३॥५३,
-शम्भु १ मग्नी नमक २ काली विष्णु । सय०
अङ्क (वि०) काला, (शः) बुध ग्रह, कथः
१ शिव (नीलकण्ठ) का विशेषण २ शीर, -कर्म-
अननम यज्ञ के उपयुक्त घोड़ा, - श्वक नमाल बुध,

—भास्, —बधि (वि०) बमकीला काला, —मुषरः कृष्ण का विशेषण ।

श्यामक (वि०) [श्याम + लच्, ला + क वा] काला, गहरानीला, सोबला, निशितश्यामलसिन्धुमयी शक्ति. बेणी० ४, वि० १८१३६, उमर० २१२५. —स १ काला रंग २ काली बधिं ३ भीरा ४ बटवृक्ष ।

श्यामलिका [श्यामल + कन् + टाप्, इन्धम्] नील का पीषा ।

श्यामलितम् (पु०) [श्यामल + इत्यधिच्] कालिमा कालान्न श्यामा श्यामलिमानमानवत् श्री मान्द्रे मयीकूर्चकं — विट्० ३११ ।

श्यामा [श्याम + टाप्] रात, विशेषतः काली रात —श्यामा श्यामलिमानमानवत् श्री साप्रमैंगीकूर्चकं — विट्० ३११ २ छिह, छाया ३ काली स्त्री ४ स्त्री विशेष (मै० ३१८ पर मल्लि० के अनुसार 'यौवनमप्यस्या' - शि० ८१३६ मेघ० ८२, या, शीते मुसोष्णसवारी शीघ्रे या मुखशीतला । तन्मकाबल-कालीमा सा स्त्री श्यामेति कल्पते अट्टि० ५११८ तथा ८१०० पर एक टीकाकार के अनुसार) ५ निम्नमान स्त्री ६ शाय ७ हन्दी ८ मादा कायल ९ त्रियमुलना—मालवि० २०३, मेघ० १०४ १० नील का पीषा ११ तुलसी का पीषा १२ कयल का बीज १३ यमुना नदी १४ कई पीषा का नाम ।

श्यामाक [श्याम + कन् + अच्] एक प्रकार का अन्न, घान्त, साक्षा वाकल (न) श्यामाकमोटिगिखितका अन्नानि —श० ४११३, (श्यामाकं श्री) ।

श्यामिका [श्याम + कन् + टाप्] १ कालिमा इलायना —कु० ५१२१ २ मन्दिना छाटायन (घान्त अदिना का) —देम्य मन्धवले इत्यन्ते विन्दुडि श्यामिकापि क —रघु० १११० ।

श्यामित (वि०) [श्याम + इत्यच्] काला बिद्या हुआ, कृष्ण रंग का किया हुआ कलटा ।

श्यामक [श्ये + कालन्] पत्नी का भाई, माला ।

श्यामक [श्याम + कन्] १ पत्नी का भाई २ माला ।

श्यामकी, श्यामिका, श्यामी [श्यामक + क्रीप् + टाप् इन् वा, श्याल + क्रीप्] पत्नी की अन्न, माली ।

श्याम (वि०) [स्त्री० वा, स्त्री] [श्ये + कन्] कृष्ण, गहरा भूरे रंग का, काला, घुमुर, धूपेला २ श्याम के रंग का, भूरा, क भूरा रंग । सव०—तेल्ल आम का रङ्ग ।

श्वेत (वि०) [स्त्री०-ता, -ता] [श्वे + इत्यच्] मफेट —तः श्वेत रंग ।

श्वेत [श्वे + इत्यच्] १ मफेट रंग २ मफेदी ३ बाज, गिकरा ४ हिला, प्रबधना । मय०—करधम्, —करधिका : अलग चित्ता पर दाह करना २ बाज

की भाँति हफट कर शीघ्रता से किसी काम में लगना, श्वित्, — श्वीष्ण (पु०) बाघ की पंख कर तथा उले बेच कर शीघ्र निर्याह करने वाला ।

श्वे [श्वे० आ० श्यापो, श्याम, शीत वा शीत] १. श्यामा, हिलना-जुलना २ जम जाना ३ मूल जाना, कुम्ह-लाना आ . मुम जाना रघु० १०३१७, १० 'श्रास्थान श्री' ।

श्वेतपाला [श्वेतन्य पातोऽत्र अच्, मुन् च] बाज की भाँति झपटना गिकार, श्रावेट ।

श्वोष्कः, श्वोष्कः [श्वे + शोषा (वा) क] एक मूत्र का नाम, माना पाश ।

श्वक् [श्वे० आ० धक्कुते] जाना, रेंवना ।

श्वङ्ग [श्वे० पर० श्वङ्गति] जाना, हिलना-जुलना, रेंवना ।

श्वच् [श्वे० पर० श्वच् उभ० अथति, श्रावयति-ने] देना, प्रदान करना, अर्पण करना (श्राव वि पूर्वक) रघु० ५११ ।

श्वत् [अर्थ०] [श्वीन् इति] एक प्रकार का उपमर्ग जो 'श' धातु के पूर्व में लगना है, १० 'श' के अन्त्यन्त ।

श्वत् [श्वे० पर०, श्वे० पर० अथति अथयति] बोट पहुँचाना अति पहुँचाना, मार डालना ।

॥ (श्वे० पर० पर० श्वत् उभ० अथति, श्रावयति-ने) १ बोट पहुँचाना, मार डालना २ खोजना, शीना करना, खनन करना मूल करना ।

॥ (श्वत् उभ० अथयति-ने) १. प्रयत्न करना, खनन रहना २ निर्बल होना, कमजोर होना ३. प्रसन्न होना ।

श्वधन्व [श्वच् + धन्वत्] १ मारना, बिलान करना २ खालना, शीना करना, मूलन करना ३. प्रयत्न, चेष्टा ४ बाधना, खनन में डालना ।

श्वद्वा [श्व + वा + अङ्ग + टाप्] १ श्राय्या, निरठा, बिडवान, भरोमा २ देवीसन्देशों में विद्याम, कामिक निष्ठा —श्वद्वा विम विधिश्चेति चिन्तय तन्मयागम —श० ७१२७, रघु० २११६, अम० ६१३ १३३ ३ शान्ति मन की स्वरथना ४. कनिष्ठना, परिश्रय ५ आर्य, मर्यादा ६ प्रबल या उकट इच्छा—न्यायि श्वेविश्वरहस्यसूत्राः श्वद्वा विद्याभ्यासि सवेतोऽत्र विक्रम० १११३, मालवि० ६११८ ७ दोहर, गर्भवती स्त्री की इच्छा ।

श्वद्वात् (वि०) [श्वद्वा + प्राथच्] १ शिरवाह करने वाला, निष्ठावान् २ इच्छुक्, (किसी वस्तु का) अभिलाषी, लु (स्त्री०) दोहरवती, गर्भवती स्त्री जो किसी वस्तु की कामना करे ।

श्वच् [श्वे० आ० अथते] १ बुलं होना २ निहाल या विधाम होना ३ शीना करना, विद्याम करना ।

॥ (श्वे० पर० अथयति) १ शीला करना, खनन करना मूलन करना २ मूल प्रच्छन्न होना ।

अन्वः [अन्व् + वञ्] 1 डीला करना, स्वतन्त्र करना
2 डीलापन, 3 विष्णु ।

अन्वन्वम् [अन्व् + न्वट्] 1 डीला करना, सोचना 2 चोट
पहुँचाना, भार डालना, बिनाश करना 3 बोधना,
अन्वय में डालना ।

अन्वन्वत्-आ [आ + न्विच् + न्वट्] उबलवाना, गरम करना ।
अन्वित (यु० क० कृ०) [आ - न्विच् + क्त] गरम किया
गया या उबलाया गया, ता मोद, काजी ।

अन्व् (दिवा० पर०) आम्पति, आन्व) 1 चेष्टा करना,
उद्योग करना, मेहनत करना, परिश्रम करना 2 तप-
स्वर्षा करना, (तपस्या के द्वारा) इन्द्रियदमन करना
—किञ्चिन्न आम्पति गौरि-कु० ५१५० 3 दान
होना, पकना, परिधान होना—रतिआन्वा खोल
रजतिरसपी गाडमूर्ति-काव्य० १०, शि० १६३८,
भट्टि० १४११० 4 कटघरन होना, दुकी होना
—यो वृन्दानि त्वग्पति पति धाम्मता प्रोषितानाम्
—मेघ० ४९, प्रेर० (ध-आ-मर्पति-ने) पकाना,
परि, अन्वयन एक ज्ञाना-श० १, वि- 1 विश्राम
करना, आराम करना, ठहरना कु० २१९, 2 बसना,
बन होना, दे० 'विश्रान्त' भी रघु० ११५६,
उत्तरवाना बनाना ।

अन्व् [अन्व् + घञ्] न वृद्धि 1 मेहनत, परिश्रम, चेष्टा,
श्रयान् अन्व महोपास नव श्रयेश-रघु० २३३४,
जातानि हि वुन मन्व्य कश्चिरेक कवे अन्वम्-मुभा०
-रघु० १६१७५, यनु० ११२०८ 2 पकावट, पकाना,
परिधान, जिनयन्ते स्म तद्योषा मधुविश्रयश्रमम्
—रघु० ६३५, ६७, मेघ० १०१५६, कि० ५१२८
3 बट्ट, दुख 4 तपस्या, साधना, इन्द्रियदमन,—दिव
विश्र प्राशयमे वृषा श्रम कु० ५१६५ 5 व्यायाम,
विश्रयन मैत्रिक व्यायाम, करायद 6 धार अध्ययन ।
मय० अन्वम् (नपु०)—अन्वम् पनीना कश्चित्
(वि०) पका-मादा, साव्य (वि०) परिश्रम द्वारा
सम्पन्न होन योग्य, कट्टसाध ।

अन्वत् (वि०) (स्त्री०—आ. भी) [अन्व् + वृच्] 1 परि-
श्रमी, मेहनती 2 नीच, अधम, कमौना,—आः 1 मन्वामी,
मरुत, माप 2 बौद्धभिज्ञ, आ. भी 1 भक्तिनी,
भिज्ञानी 2 लाक्ष्मण्यमी स्त्री 3 नीच खति की स्त्री
4 बगाली मदीठ 5 जटामात्री, बाणछट ।

अन्वम् (पदा० आ० अन्वते, अन्व) 1 उपेक्ष होना,
अनाश्रयान होना, लापरवाह होना 2 गलती करना,
वि- 1, बिस्वास करना, आरोप्य करना—दे० 'विश्रयन्' ।
अन्वः, अन्वन्वत् [अन्व् + अन्व्, न्वट् वा] शयन, पनाह, पचना,
आशय ।

अन्वः [अन्व् + अन्] 1 सुनना, जैसा कि 'सुलभाव' में 2 कान
3 किसी शिकोप का कर्ण ।

अन्वत्-अन्वम् [अन्व् + न्वट्] 1 कान—घनति मनुष्य समूहे
अन्वन्वति दधाति गीत० ५ 2 किसी शिकोप का
कर्ण, आ,—आ इस नाम का नक्षत्र (जिसमें तीन तारे
सम्मिलित हैं), अन्व 1 सुनने की क्रिया,—अन्वन्-
नुचयम् मय० ११ 2 अध्ययन 3 स्वाति, कीर्ति
4 जा सुना गया या प्रकट हुआ, वेद, इति अन्वत्वात्
'वेदिक पाठ ऐसा हाने के कारण' 5 दोस्त । सम०
इन्द्रियम् आन्वेन्द्रिय, कान,—अन्वत् कान का भास-
विन्न, शोचर (वि०) अन्वन्वत्तास के अन्वन्वते (रः)
सुनाई देने की सीमा तक, यथा 'अन्वन्वत्तासरे तिष्ठ,
अर्थात् यहाँ तक सुनाई देना रहो वही तक रहो,—अन्व-
विश्वः कान की पहुँच, अन्वन्वत्तास बुनालेन
अन्वन्वितप्रतिनिधा रघु० १४१८७, वाक्विः—भी
(स्त्री०) कान का निरा,—सुख्य (वि०) कर्ण-
सुखद ।

अन्वत् (नपु०) [अन्व् + अन्ति] 1 कान 2 स्वाति कीर्ति,
3 दोस्त 4 सुकन ।

अन्वन्वम् [अन्वन् + वन्] स्वाति, कीर्ति, विधुति ।

अन्वन्वत्-अन्व [अन्व् + आण] यत्र में जति दिव्ये जाने के
बाग्य पत्त ।

अन्विष्ठा [अन्व् स्वाति यन्ति अस्या अन्व + मनुष्य, इष्टति
मनुष्यो मन्व] 1 पतिष्ठा नाम का नक्षत्र 2 अन्वत्ता
नाम का नक्षत्र । सम० अन्वन्वत् ।

आ (अदा० पर०) आति, आण या गृह, प्रेर० अन्वयति—ने)
पकाना, उबलाना, भाजन बनाना, परिपक्व करना,
पकना ।

आण्य (वि०) [आ - क्त] 1 पकाया हुआ, भोजन बनाया
हुआ, उबाला हुआ 2 आँ, गोला, तर ।

आण्य [आण्य + टाच्] काजी, यवान् ।

आह्व (वि०) [अह्वा हेतुयेनान्वत्य अह] निष्ठावान्,
विश्रयन करने वाला, इम् 1 मृतक सम्बन्धियों की
दिवाङ्मूल आत्मादी के सम्मान में अनुष्ठेय संस्कार,
अन्वयेति संस्कार—अह्वत्ता दीयते यस्मात्सप्याह्वत्ता
निगद्यते, यह तीन प्रकार का है—निम्ब, वैमिलिक
और हाव्य 2 अधोवैदिक ग्राहृति, आह्व के अन्वसर
पर उपहार या भेंट । सम० अह्वम् (नपु०)—निम्बा
अन्वयेति संस्कार, इत्तु (पु०) अन्वयेति संस्कार
करने वाला, अः अन्वयेति आहृति या आह्व भेंट
करने वाला विन्व,—नन्व उत स्वर्गीय सम्बन्धी की
बन्ती जिसके सम्मान में आह्व किया जाय,—देवः,
—देवता 1 अन्वयेति संस्कार की अन्वयेति देवता
2 यम का विशेषण 3 विश्रयन दे० 4 पिता,
प्रजनक, भूज,—शोक (पु०) विवङ्गत्, पूर्व कुल्य ।
आह्विक (वि०) (स्त्री०—भी) [आह्वेत्, आह्वत् ताह्वयं
प्रकालेनास्त्वय्य वा ऽह्व] आह्व सम्बन्धी अधोवैदिक

भेद की स्वीकार करने वाला, - कम् धाट के अवसर पर दिया गया उदाहरण ।

धाट्रीय (वि०) [धाट् + छ] धाट सम्बन्धी ।

धातु (मू० क० कु०) [धृ + क्त] 1 बका हुआ, पका-मादा, बलान्त, परिश्रान्त 2 शान्त, मौढ्य, - ल, मन्दाती ।

धाति (स्त्री०) [धृ + क्तिन्] क्ताति, परिश्रान्ति वकावट ।

धातु [धाम् + जच्] 1 मास 2 मस्य 3 अस्थायी साजत ।

धाद्य [धि + घञ्] आशय, वनाव, शरण, महारा ।

धाव [धृ + घञ्] सुनना, कान देना ।

धावक [धृ + घञ्] 1 श्रोता 2 छाप शिष्य-श्रावकाव-स्वभावम् मा० १०, अर्थात् छात्रावस्था में 3 बौद्ध-विभु बौद्ध मन्त्र, महात्मा 4 बौद्ध भक्त 5 पक्षपट्टी, 6 कौवा ।

धावण (वि०) (स्त्री०-भौ) [धवण + ञच्] 1 हान सम्बन्धी 2 धवण नक्षत्र में उपग्रह, क माघन का महीना, (जुलाई-अगस्त में आने वाला) 2 पाण्डवी 3 छपवेदी 4 एक वैद्य मन्दाती जिसकी उपरम में अन्न जाने मार डाला, बाद में उनके माला-पिला ने धवण का श्राप दिया कि वह अपने पुत्रों के वियोग से दुःखी होकर होकर मरेगा ।

धावणिक (वि०) [धावण + ञच्] धावण मास सम्बन्धी - क माघन का महीना ।

धावणी [धवणं नक्षत्रं एकना दीर्घमासी - धवण + ञच् - ङी] 1 धावण मास की पुनिया 2 एक वार्षिक पर्व जिस दिन यज्ञोपवीत बदले जायें, सलीनों, गद्यावधन ।

धावलिः, स्त्री (स्त्री०) गंगा नदी के उत्तर में राजा भावस्त द्वारा स्थापित एक नगर ।

धावित (वि०) [धृ + णिच् + क्त] कटा हुआ, मुनागा गया, वर्णन किया गया ।

धाव्य (वि०) [धृ + णिच् + यत्] 1 सुने जाने के बोध (विप० दृश्य) 2 जो मुना जा सके, गप्ट ।

धि (म्ब० उभ०) धवति ने, धिन, धे० धायति -ने, इच्छा० निधीयति -ने, निधियति-ने) जानत, पहुँचना, महाराग लेना, बीड होना बचाव के लिए पहुँच होना -य देश श्रयते तमेव कुकुरे बाहुप्रना-पाजिनम्-हि० ११७१, रघु० ३१७०, १९११ 2 जाना, पहुँचना, भुगतना, (अवस्था) धारण करना परीना रत्नोपि श्रयति विवद्या कामणि दणाम् मासि० ११८३, विवेकदर्शकम् कथम् अगश्रिव -रघु० ३१३२ ३ निकटता, श्रवना, आश्रित होना, निभर रहना-उत्तर० ११३० 4 निवास करना,

बचना 5 सम्मान करना, सेवा करना, पूजा करना 6 सवन करना काम पर लगाना, 7 सलन करना, अनुपस्थ होना । ध्वि - 1 निवास करना 2 सवारी करना, चरना, जा - 1 सहारा लेना, आशय लेना, अवसम्भ होना, विक्रम० ५११७, भट्टि० १५१११ 2 अनुभव करना - रघु० ४१३५ 3 गरण लेना, निवास करना, बसना--रघु० १३१७, पच० ११५१ 4 आश्रित होना, मनु० ११७७ ५ पार जाना, अनुभव प्राप्त करना, भुगतना, धारण करना एकी रते वरुण एव निमित्तवेदाङ्गिष्णु पृथक् पृथगिवा-श्रयते विवर्तन् - उत्तर० ३१५७ 6 अडे रहना, अडे रहना 7 धुनना छानना, पसन्द करना 8 सहायन करना, मदद करना, उच् - ऊपर उठाना, उभन करना, उँचा करना, उषा - - पहुँच या अवलम्ब हुआ, भग० १५१०, उत्तर० ११३०, लघु - 1 पहुँच हुआ, महाराग होना शरण में जाना सहायता के लिए पहुँचना 2 अवलम्बित होना, आश्रित होना -उत्तर० ३११० मा० ११८४ ३ हासिल करना, प्राप्त करना 4 अभिगमन करना, सम्भोग के लिए पहुँचना 5 सेवा करना ।

धित (मू० क० कु०) [धि + क्त] 1 गया हुआ, पहुँचा हुआ, शरण में पहुँचा हुआ 2 धिक्का हुआ, महाराग किया हुआ, बीडा हुआ 3 सपुष्प, सर्भित्तान्त, सबड 4 बचाया हुआ 5 सम्मानित, मेवित 6 अनुपेची सहकारी 7 आच्छादित विद्याया हुआ 8 वृक्ष, पुत्रि० ०, मयवेन, पकावित 10 सहित, मपत्र ।

धिति (स्त्री०) [धि क्तिन्] अवलम्ब, सहारा, पहुँच ।

धियव्य (वि०) 1 अपने आप की याच्य मानने वाला 2 धमटी ।

धियापति (पु०) धिव का विशेषण ।

धिष् (म्ब० प०) धपति अलगा ।

धी (कृदा० उभ०) धीयति, धीयते) एकाना बोझ बनाना उबालना, रोग्य करना ।

धी (स्त्री०) [धि + णिच्, नि०] 1 धन, शीलत, प्राचय, समृद्धि, पुष्कलता अर्धवर्ष धियो मूलम् रामा०, माहस धी, प्रतिवसति-मूष्क० ४, 'मौभाग्यं बंरा पर अनुपहृ करता है'-मनु० ९१३० 2 राक्षसता, ऐश्वर्य, राजकीय धनशीलत-कि० १११ ३ गौरव महिमा, प्रतिष्ठा- धीसलस कु० ७४६१, अर्थात् महिमा या गौरव का चिह्न 4 मौख्य, चारुता, कालिय, कानि (मुम्ब) कर्मभयिष्य दधी कु० ५१०१, ७३२२, रघु० ३१८, कि० ११७५ 5 धन, क्य, कु० २१२ 6 विष्णु की पत्नी लक्ष्मी की धन की देवी है, -आर्याविय दशरथाय वृहे धवा धीः-उत्तर०

४६. घ० ३।१४, सि० १।१ 7 गुण, श्लेषना
 8 सञ्जावट 9 बुद्धि, समग्र 10 अतिमानव शक्ति
 11 मानवजीवन के तीन उदेष्यों की समष्टि (यमं, अर्थ, और काम) 12 सरल वृक्ष 13 बेल का पत्र
 14 हीरा 15 काल (श्री) शब्द सम्मान मुचक
 पद है या पूज्य व्यक्तियों तथा देवों के नामों
 के पूर्व लगाया जाता है - श्रीकृष्ण श्रीगण, श्री
 बाल्मीकि, श्रीजयदेव, कुछ प्रसिद्ध ग्रन्थों के पुन भी
 जिनका विषय धार्मिक है - श्रीभागवत, श्रीरामायण
 आदि, किसी पात्रवृत्ति या पञ्चादिक के आरम्भ में
 श्रीमहाशरण के रूप में प्रयुक्त होता है, माघ ने
 अपने 'शिवापारम्भ' काव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम
 श्लोक में इस शब्द का प्रयोग किया है, जिस प्रकार
 भारवि ने 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया है।
 म०० आहुत्यू कमल, ईश. विष्णु का विशेषण
 -कण्ठः 1 शिव का विशेषण 2 भवभूति कवि का
 विशेषण - श्रीकण्ठपरमाञ्जन -उत्तर० १, सख
 कुबेर का विशेषण. - कर. विष्णु का विशेषण (-रत्न)
 माल कमल, करकाम्प केमली, कण्ठः विष्णु का
 विशेषण, कार्त्तिक (पु०) एक प्रकार का कार्तुहिमा.
 कण्ठः -इय् चन्दन की लकड़ी श्रीलक्ष्मिचिन्मपन
 मुत्तपति -हि० १।१७, गणितम् एक प्रकार का
 छोटा नाटक. - शर्मः 1 विष्णु का विशेषण 2 तलवार
 बहू पहिया की वाली घिमने की कुण्डी, धन्य
 लक्ष्मी देवी, (गः) शीघ्र मराना. - चण्ड 1 मूल
 भूयच्छन 2 इन्द्र के रथ का पहिया, शः काम का
 विशेषण. - इ कुबेर का विशेषण, इति- कर.
 विष्णु के विशेषण, तपस्व् एक नगर का नाम
 -मन्थनः राम का विशेषण. निक्षेपः. - निवसतः
 विष्णु के विशेषण. -पतिः 1 विष्णु का विशेषण
 सि० १।१९ 2 राजा, प्रभु. -पथः मुख्य सड़क,
 राजमार्ग, वर्षम् कमल, -पर्वतः एक पहाड़ का नाम
 मा० १, विष्णुः तारपीन, पुष्पम् लीन, कस
 बेल का पत्र (अन्) बेल का फल, -कला, -कली
 1 नील का पीछा 2 आमलकी, अंबला. -अम
 (पु०) 1 चाँद 2 घोड़ा, बल्लभः लहनुन, मुहा
 बंधनों का विशेष तिलक जो मस्तक पर लगाया
 जाता है, -मूर्ति (स्त्री) 1 विष्णु या लक्ष्मी की
 प्रतिमा 2 कोई भी प्रतिमा. -मुक्त, -मुत्त. - 1 सीमा
 व्यवसायी, प्रलभ 2 बनवान्, समृद्धिवाली (श्राय
 पुष्पों के नामों के पूर्व लगाया जाने वाला सम्मान
 लुचक पद, -रत्नः विष्णु का विशेषण, -रत्नः 1 तार
 पीन 2 राम, -सकः 1 विष्णु का विशेषण, विष्णु
 की छाती पर बालों का घुघर या चित्तुविशेष-प्रजा
 नुक्तिप्रधीवत्त कर्षणीविजयवर्षणम् रत्न० १०।१०,

'अन्तः' कार्त्तिक, 'भूत्, 'लक्ष्मन्, 'साञ्जन, (पु०)
 विष्णु के विशेषण कु० ७।२२, बसन्तिम् (पु०)
 एक घोड़ा जिसकी छाती पर बालों का घुघर होता
 है, भरः, बल्लभ विष्णु के विशेषण. - बल्लभः
 लक्ष्मी का शिव, सीमाव्यवसायी या मुन्धो व्यक्ति,
 बल्लः 1 विष्णु का विशेषण 2 मित्र का विशेषण
 3 कमल 4 तारपीन. - बालस् (पु०) तारपीन,
 वृक्ष 1 बेल का पत्र 2 अरकन्धूल 3 चाँद के
 मस्तक और छाती पर बालों का घुघर, बेधः
 1 तारपीन 2 राम, संज्ञम् लीन, सहोवर चन्द्रमा,
 सुवसन् एक वैदिक मुक्त का नाम, हरि विष्णु
 का विशेषण, हस्तिनी मूर्धमन्वी फूल का पीछा।
 शीघ्र (वि०) [श्री] मनुष्यः 1 दीनमन्द, बनवान्
 2 मुन्धो, सीमाव्यवसायी, समृद्धिवाली, फनना-फनना
 3 मुन्दर, मुतावना, मुन्दर कि० १।२ 4 विष्णवान्,
 प्रसिद्ध कीर्तिवाली, प्रतिष्ठित (प्रसिद्ध और सम्मान
 नित पुरुष या वस्तुओं के नामों में पूर्व आदर्शमुचक
 शब्द (पु०) विष्णु का विशेषण 2 कुबेर का विशेष
 ण 3 मित्र का विशेषण 4 तिलक वृक्ष 5 अश्वत्थ-
 वृक्ष।
 शील (वि०) [श्री शक्ति अन्य लक्ष्] 1 बनवान्,
 दीनमन्द 2 सीमाव्यवसायी, समृद्धिवाली 3 मुन्दर
 4 विष्णवान्, प्रसिद्ध।
 श् 1 (श्या० पर०) अर्थात् श्रावण, हिस्सना, बुलना-नु० 'कु'
 11 (श्या० पर०) भूपति, धूल 1 सुनना, (ध्यानपूर्वक)
 ध्यान करना, बात देना भृगु से मावर्षण वच
 विक्रम० २, कर्नात वाश्यायन पदपदानाम्-भट्टि०
 २।१०, मदेश मे तदनु जलद श्रोत्वामि, श्रीशेषयम्-मृष०
 १३ 2 अचिपम करना, अध्ययन करना-उपसर्गवर्षि-
 व्यकरण भूयते पच० १ 3 मावधान होना, आज्ञा-
 मानना (इतिभूयते)-(ऐसा सुना जाता है अर्थात् बेदों
 में इसका विधान है, ऐसा धर्मविधि), प्रेर० (धाव-
 यति-ते) सुनाना, समाचार देना, कहना भयान करना
 -इच्छा० (धुमधने) 1 सुनने की इच्छा करना
 2 सावधान होना, आज्ञाकारी होना, हुकम मानना
 -पच० ४।७ 3 सेवा करना, सेवा में उपस्थित
 रहना-सुधुपच्य गच्छ्-श० ४।१७, कु० १।५९,
 मनु० २।४८, अन्व०, 1 सुनना मनु० १।१००,
 तद्यथानुवृत्ते-पच० १ 2 मुन्दरम्परा से श्राप,
 अभि- 1 सुनना 2 ध्यान देकर सुनना, आ- 1 सुनना
 2 प्रतिज्ञा करना (व्यक्ति में श्रम०)-आज्ञ० २।१९६,
 तु० पा० १।४।५०, उप- 1 सुनना 2 जाना,
 निषय करना-केचिना हतामूर्धवी तारदाधुमधुष्य
 दान्यवर्षेना सदाविष्टा विक्रम० १, धरि- 1 सुनना,
 प्रति- 1 प्रतिज्ञा करना (उक्त व्यक्ति में तत्र० चित्तके

लिए प्रतिज्ञा की जाय—तस्यै प्रतिश्रुत्य रघुप्रवीरस्त-
दोषितान्—रघु० १४२१, २५६, ३६७ १५४,
वि० मुनना (प्रायः क्तात् रूप प्रयुक्त), सम् मुनना,
प्यान जया कर मुनना—सश्रुधीनि न चोक्तानि
-भट्टि० ५११९, ६१५, (परन्तु अकर्मक प्रयोग में
जा०)—हिताग्र य सश्रुधते स कि प्रभु० हि० ११५।

मुनिष्ठा (स्त्री०) शौरा, सज्जो, भार :

भूत (भू० क० क०) [भू०+त] 1 मुना हुआ, प्यान लगा
कर श्रवण किया हुआ 2 बणित कर्णोपर 3 अधि-
गत, निर्धारित, ममसा गया 4 मुज्ञात, प्रविष्ट,
विख्यात, विश्रुत रघु० ३१००, १०६१ 5 नामक,
पुकारा हुआ, तम् : मुनने का विषय 2 जा देवी
सदेव से मुना ग-1, अर्थोन् वेद, पवित्र अधिगत,
पुनीत ज्ञान—अनुप्रकाशम् रघु० ५१० 3 सामान्य
अधिगत, विद्या, प्रायः श्रुतेनैव न कुञ्चलन (विभाषि)
भृ० २१७१, रघु० ३१०१ ५१०२, पच० २११६७,
५१६१। मम० अथयन्तु वेदो का पड़ना,—अन्वित
(वि०) वेदा का ज्ञाना अर्थ मौखिक रूप में या
ब्रह्मो की कहा गया तथ्य, क्वीति (वि०) प्रविष्ट,
विश्रुत, (पु०) 1 उदार अर्थित 2 शिष्य श्रुति
(स्त्री०) श्रुतन की पत्नी, - देवी सखम्बरी, - - - - -
(वि०) मुनी हुई बाल का याद रखने वाला, मेधावी।
भुतवत् (वि०) [भूत+वत्] वेदज्ञाना, वेदवेत्ता, वेदज्ञ
रघु० ५१७८।

भूतिः (स्त्री०) [भू०+क्तिन्] 1 मुनना कर्तव्य घट्टन
मिति धुने—मृ० ११७, रघु० १२७ 2 कान, -धुति
मुखभ्रमरस्वनगीतय—रघु० ११२५, ग० १११, वे० १
३१२३ 3 विचारण, अकवाट, समाचार मौखिक
मवादा 4 ध्वनि 5 वेद (विषय मदेव होने के कारण)
विष० म्भूति—दे० 'वेद' के अन्वयः 6 वैदिकपाठ
वेदमत्र, - इतिव्यते या इति धुति 'मेना वेद कहना है'
7 वेदज्ञान, पुनीतज्ञान, पुत्र अधिगत 8. (सर्गात् में)
मलक का प्रभाव, स्वर का अनुसौग या अन्तरा-
-वि० १११०, ११११, (दे० नन्मानीय मिल्क०)
9. श्रवण नक्षत्र। मम० अनुप्रास अनुप्राय का एक
वेद—दे० काव्य० ९, -उत्पत्, -उचित (वि०) उद-
बिहित, -कट- 1 सांप 2 तापचर्या पायश्चित्त माधना,
-कट्ट (वि०) मुनने में बड़ना) कर्णकट्ट, अम-
चुर ध्वनि, (यह रचना का एक दोष माना जाता है),
-कौशलम्, -ता प्राचीय विधि, वेदविधि, -कौशिका
धर्मशास्त्र, विधिहितान, -कौशल वेदविधियों का परम्पर
विरोध या निष्कर्षता, - - - - -
(वि०) मुनने वाला,
विश्रंसम् वेदों का माध्य, - - - - -
-मालि० ५११, -प्रसाधन (वि०) कर्णप्रिय, -प्रसा-
धम् वेदों की प्रामाणिकता या स्वीकृति, यथार्थम्

कान का बाहरी भाग, - - - - -
कान की जड़, - - - - -
किमपि श्रुतिमूले गीत० १ 2 वेद का संहितापाठ,
-मूलक (वि०) वेद पर आधारित, -विषयः 1 मुनने
का विषय, अर्थोन् ध्वनि—स० १११ 2 कर्म पराप्त
एतत्प्रायेण श्रुतिविषयमापत्तितमेव - का० 3 वेद
का विषय 4 धार्मिक अध्यादेश, - - - - -
- - - - -
-स्मृति (स्त्री०) (हि० व०) वेद ओ धर्मशास्त्र।

भूष [भू० क] 1 यज्ञ 2 यज्ञीय श्रुता।
भूषा [भूष+टाप्] 1 यज्ञीय चमय, पु० श्रुता। मम०
- - - - -
- - - - -

धेही [धे०] राणीकरणाय होक्ते—धेणी+होक्-इ,
पया०] (गणि० में) निप्र ज्ञानीय उध्यो को मिलाने
के लिए गणनाय नंद। मम० कल श्रेणी का योग
जोड़।

धेयि (पु०, स्त्री०) धेणी (स्त्री०) [धे+यि, वा हीप]
1 गद्या, श्रुतया, पवित्र, तरङ्गश्रुतया श्रुतिविवरण
धेयि रना—वेणी० ११०८ न पट्टाश्रुतिभिरैव पट्टुत्र
यज्ञोक्तसङ्गमरि प्रकाराने -कु० ५१९, मेप० २८, २५
2 इल, सचय, समह उपर० ६ 3 आचार्या का
सच, मिलियाका सचपट, निगम 4 बाक्ता, बाकटी।
मम० धेयी (पु०, व०) व्याकरणिक या
शिक्षणकार-सचो के नियम, रीतियां बादि।

धेयिका [धेयि+कन्+टाप्] मन्त्र, वेदा।

धेयस् (वि०) [अतिशयेन प्रशस्त्यम्—इत्यम्, धादेव]
1. अपेक्ष-रुत प्रच्छा करियम्, अष्टरुत्र बर्षनाइक्षण
वेद—इ० ३१२, मय० ३१२५, २५ 2 मर्वाणय,
आपणम 3 अधिक सुखी या मोभावशास्त्री 4 अधिक
आनन्ददायक, प्रियतर (पु०) 1 मयवृण, पुत्रकर्म,
नेतिक गुण, धार्मिक गुण 2 आनन्द, मोभावय मयवृ,
गुण, कल्याण, शयोर्बाद, गुण परिष्कार पूर्ववर्षी-
रिण श्रयो दुःख नि परिक्रमेते ग० ३११३, प्रवि-
कल्पानि हि श्रेय पुत्रपुत्राव्यक्तिकम् रघु० ११०९,
उत्तर० ५१०७, ७१०८, रघु० ५११४ 3 गुण अर्थवृ
ग० ३ 4 माइ, मुक्ति। मम अधिन (वि०)
1 आनन्द का शब्दक, आनन्द का इच्छुक 2 हितेयी,
-कर 1 आनन्दप्रद, अनुकूल 7 प्रगलमय, गुण,
परिष्कार, मुक्ति प्राप्त करने की शक्ता।

धेष्ठ (वि०) [अतिशयेन प्रशस्त्यम्, इत्यन् धादेव]
1 मर्वाणय, श्रेयस्य धेष्ठ, प्रमुक्तता (मर्ब० या
अधि० के साथ) 2 श्रेयस्य प्रमद या समृद्ध 3 प्रिय-
तम, अत्यन्त प्रिय 1 मयवे अधिक पुराता, बुद्धम,
कः 1 वाङ्मय 2 राजा 3 कुञ्जर का नाम 4 विलम्ब
का नाम, कम्बु नाय का रूप। मम०—आशयः
1 मन्व्य के धार्मिक जीवन का सर्वोत्तम आशय अर्थात्
गृहस्थाश्रय 2 गृहस्थ, धाक् (वि०) हाथी।

शोचिन् (वि०) [शोच + क्त] शोचते अस्ति इति । किसी व्या-
पारस्य वा शिथिलस्थान का प्रयास वा अथवा—निशेपे
पक्षिते हृष्ये शोचती स्तीति स्वदेवनाम्—यच० १:१४।
शै (म्भा० पर० शोचति) 1 श्वेद जाना, पत्नीना निक-
लना 2 पकाना, उबालना।
शोचु (म्भा० पर० शोचति) 1 एकच करना, इंद्र कमाना
2 एकच होना, संघट होना।
शोच (वि०) [शोच + क्त] विकलांग, लगदा,—कः
एक प्रकार का रोग।
शोचा [शोच + टाप्] 1 काची 2 शबच नक्षत्र।
शोचिन्,—भी (स्त्री०) [शोच + इत् वा ङीप्] 1 कल्हा,
नितम्ब, बृहद शोपीभारालम्बनयना—मेघ० ८७
शोपीभारालम्बयति तनुनाम्—काण्ड० १० 2 लज्जक,
मार्ग । सम० लताः कण्ठो की हलान्त, -फलकम्
1 विशाल कल्हे 2 नितम्ब, -विष्णुम् 1 गोल कल्हे
विशाल० ५:१८ 2 कज्ज-पदा, वृषभम्—1 येकला
2 कज्ज से लटकनी हुई लज्जकार का लम्बन।
शोचस् (नप०) [शू + अमुन् हुट् च] 1 कान 2 हाथो
का सूँड 3 ज्ञानेन्द्रिय 4 सँतान, प्रयास ('शोचस्'
के स्थान पर) । सम० रश्मिन् सूँड का विचार,
नचना—मेघ० ४२, ('शोचस्' भी विना जाना है)।
शोचु (प०) [शू + क्त] 1 मुचने वाला 2 छात्र।
शोचस् [प्रगल्भेन—यु कर्त्तव्यं + क्तुम्] 1 कान—मर्त्त०
०:७२ 2 वेदा में प्रवीणता 3 वेद । सम० वेद
(वि०) कान से प्रश्न करने के योग्य, प्दानपूर्वक
मुचने क योग्य तदत्र म तदनु कल्प शोचामि श्राव,
पयम् मेघ० १३, -युक्त्वा कान की उच।
शोचिषि (वि०) [छन्दो वेदप्रयोगे वेदि वा छन्दस् + च,
आचारवेग] 1 वेद में प्रवीण या अभिज्ञ 2 शिष्य,
अनुयायिन होने के योग्य,—य विद्वान् शाश्वत, धर्म-
ज्ञान में सुविज्ञ अन्वया हाहायणी श्रेय मस्कारेन्द्रिय
उत्थते । विद्यया यानि विश्वत्रिभिर्बोधिष्य
उच्यन्—मा० १:५, रघु० १६:१५ । सम०—स्वम्
विद्वान् शाश्वत की मर्यादा।
शोच (वि०) (स्त्री०—भी) [शूती विहितम् अणु] 1 कान
से मज्ज रचने वाला 2 वेदमञ्चरी, वेद पर आधारित,
वेदविहित,—सम् 1 वेदविहित कोई भी कर्म या अनु-
ष्ठान 2 वेदप्रतिपादित कर्मकाण्ड 3 यज्ञानि की
समारम्भ करना 4 तीनों यज्ञानियों की समष्टि
(अर्थात् चारंपर्य, जाहन्वीय और दशिन) । सम०
कर्मन् (नप०) वैदिक कृत्य, कृष्यम् वेद पर
आधारित सूत्रप्रणो का मज्ज (श्रावकालय, माभ्यापन
और कार्यायन आदि के नाम से क्षयिहित)।
शोचम् [शोच + (स्वाद्ये) अणु] 1. कान 2 वेदों में
प्रवीणता।

शोचद् (अय०) [शू + ङीष्] विकलत माला या देवो
को उद्वेग करके यज्ञानि में श्राद्धति रीते मयप
उच्यारित होने (शोका जाने) वाला अय्यय, यु०
शचट् वा शोचट्)।
शोचन् (वि०) [शिथ + क्त, नि०] 1 शोचल, मुटु,
होम्य, शिथल (शय्य आदि) 2 चिकना, चयकदार,
शि० ३:४६ 3 स्वल्प, नुचल, पतला, सुकुमार
4 सुन्दर, लाम्ब्यय 5 शिथल, ईमानदार, लज्ज।
शोचन् [श्लथ + क्त] सुगारी, सुपीफन।
शोचन् (म्भा० जा० श्लथन्ते) जावा, हिलना—युक्ता।
शोचन् (म्भा० जा० श्लथन्ते) जावा, हिलना—युक्ता।
शोच (कृ०) उच० श्लथयति ते) 1 शिथिन या ढीला-
डाला होना 2 सुबल या बलहीन होना 3 शिथिल
होना, ढीला होना विधाय करना (आल० भी)
श्लथयितुं लज्जामलनाङ्गना न सहसा सहसा कृतयेयम्
—शि० ६:५७, परिभाषनेद् श्लथयितुमशक्यं यन्
यथा—मंथा० ३७ 4 चोट पहुँचाना, सानि पहुँचाना।
श्लथ (वि०) [श्लथ + क्त] 1 बिना बँधा, बिना
बकड़ा 2 शिथिल, विधाय, मुला हुआ, फिलना हुआ
—युनाच्छ्लथ हरति पुष्पमनोकानाम्—रघु० ५।
३७, १५:२६ 3 बिभरे हुए (रीते डाले) । सम०
—उच्यन् (वि०) जिनमें अपने प्रथम डोके कर दिने
हो, कश्चिन् (वि०) ढीला-डाला, नीचे लटकना हुआ,
हु० ५:५७।
श्लाघ (म्भा० पर० श्लाघति) श्लाघ्य होना, प्रशिक्ष
होना।
श्लाघ (म्भा० जा० श्लाघते) प्रशंसा करना, स्तुति करना
संगठना, गुणगात करना श्लाघा श्लाघते पूर्वं
(मुच) पर (दाप) कष्टे नियच्छति—सुभा०, यथैव
श्लाघ्यते यज्ञा पाठेन परमेष्ठिन हु० ६:७० (कुष्ठ
लोग यज्ञा श्लाघ्यते के स्थान पर 'श्लाघते'
पाठ समझने हैं और अगला अर्थ घटाते हैं)
2 शोभी बचाना, चयड करना, श्लाघिष्ये केत की
बन्धनेय्यपुनर्निमुनल मष्टि० १६:४ 3 सुभायद
करना, कुसलाकर काय निकालना (सं० के शाष्)
गोपी कृष्णाय श्लाघते सिद्धा०, मष्टि० ८:७३।
श्लाघयन् [श्लाघ + क्तुट्] 1 प्रशंसा करना, स्तुति करना
2 सुभायद करना।
श्लाघा [श्लाघ + अ + टाप्] 1 प्रशंसा, स्तुति, सरहना,
—कर्म—अप्रशयोर्भा काय श्लाघा—वेपी० २ 2 श्लाघ-
प्रशंसा, शोभी बचाला—हृते अरति गाङ्गये पुरस्कृत्य
शिवश्चिन्मन्, या श्लाघा पाठपुपाणा तेषांस्माक
प्रशिक्षति—वेपी० २:४ 3 सुभायद 4 शोभा
5. कामना, इच्छा । सम०—विष्णवेः शीघ्र मारणे का
अभाव, त्यागे पक्षा विषयवः रघु० १:२२।

स्लाघित (भू० क० कृ०) [स्लाप् - स्त] प्रशङ्ग किया गया, स्तुति किया गया, सगहा गया ।

स्लाघ्य (वि०) [स्लाप् + घञ्] 1 प्रशमनीय, योग्य - उत्तर० ६१२, १३२ आदर्शगीय, श्रेष्ठय ।

स्लिक्तुः [स्लिप् + क्तु, घृषो०] 1 काष्णिक, लघट 2 दाम, आश्रित (नपु०) नवग्र विद्या, फॉन्डन भाषातिथ ।

स्लिक्तव्युः [स्लिक् + व्यु, घृषो०] 1 लघट 2 सेवक ।

स्लिक्त्वाः [स्ला० पर० स्लेपनि] जलना ।

॥ (दिवा० पर० स्लिप्यति स्लिप्यत्) आश्रित बनना, स्लिप्यति वृद्धि प्रलघरकाल्य स्लिप्यगत इति तिथिरयनलक्ष्य गीत० ६ 2 जमे रहना, चिपके रहना, इटे रहना 3 नवकन होना सम्मिलित होना 4 प्रहण करना, लेना मममता नै० ३१६० आ - उप - आश्रित बनना, परिग्रहण करना, वि - 1 विपुक्त होना, दूर होना 2 फट जाना, फट कर उड़ जाना, भट्टि० १६१६३, (प्रेर०) अणु-क्षण करना, वेध० ७ लम् , 1 इटे रहना, चिपके रहना 2 सम्मिलित होना, मिश्रना ।

॥ (चुरा० उभ० स्लेपयति -) जाहना सम्मिलित करना, मिलाना ।

स्लिष्ठा [स्लिप् + श् + टाप्] 1 आश्रित 2 चिपकना, जुड़ जाना ।

स्लिष्ण्ट (भू० क० कृ०) [स्लिप् - क्त] 1 आश्रित 2 चिपका हुआ जुड़ा हुआ 3 टिका हुआ टका हुआ 4 उलप में घुसने, दो अर्थों की सम्भावना में घुसने अथ विपदादय प्रसदा स्लिष्ण्टा - वाश्व० १० ।

स्लिष्यति (श्वो०) [स्लिप् - विन्त्] 1 आश्रित 2 परिग्रहण ।

स्लीपयन् [श्वी० वक्त वृत्तिवक्त परम् अस्मान्, घृषो०] मुझी हुई टांग या कुला हुआ पैर, फीलापैर । मम० प्रथम आम का पैर ।

स्लीक (वि०) [श्वी० अतिव अत्य - लप्, घृषो०] 1 भाग्य-घानी समृद्ध, दे० शील, 2 शिष्ट नु० अस्लीक ।

स्लेष [स्लिप् - घञ्] 1 आश्रित 2 चिपकना, जुड़ना 3 मिश्रण, मगम, मयक - निरन्तरव्यवस्थापना वा० (पहो इतमे अगमा अर्थे नी घटित होता है) 4 अनेकार्थे शब्द प्रयोग, एक में अधिक अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग, द्व्यर्थक, किन्ती शब्द या वाक्य की दो या दो से अधिक अर्थों की सम्भाव्यता, (यह एक अलकार समझा जाता है, कवि इसका बहुत प्रयोग करते हैं, परिभाषा के लिख् दे० काव्य० कर्तिका ८४ तथा ९६) -आश्रयिण न श्लेषकश्चैत्रय्या श्लोकद्वयार्थं सुविधा भवा किम् - श्वी० ३१९९, दे० शब्दश्लेष' भी । मम० - अर्थः अनेकार्थं शब्द प्रयोग,

द्व्यर्थक शब्द प्रयोग, श्लेषक (वि०) श्लेष कर टिका हुआ (शा० - आश्रित) ।

स्लेषकः [स्. घञ् + क्तु] कफ, अलगाय ।

स्लेष्यक (वि०) [स्लेष्यन् + जत् + इ] कफ में उत्पन्न, काकमूलक ।

स्लेष्यन् (पु०) [स्लिप् - मनिन्] कफ, बलमय, कफ की प्रकृति । मम० अतिशयः कफविचार में उत्पन्न पेशिज, गंगाई श्लोकम् (नपु०) कफ की प्रकृति, -कफा श्वी० 1 श्लेषका, एक प्रकार का मोगिया 2 केनकी देखा ।

स्लेष्यन्त (वि०) [स्लेप्यन् + लप्] कफ प्रकृति का, बलमयी ।

स्लेष्यात, स्लेष्यातक [स्लेप्यन् + जत् + अच्] पक्षे वन् च । एक वृक्ष श्लेष, निर्माई का पेड़ ।

स्लीक (शा०) श्रा० श्लोकने 1 प्रसना बनना, पठ रहना बनना छन्दोबद्ध बनना 2 अचल बनना 3 त्यागना, छाड़ना ।

श्लोकः श्लोक - अथ [1 कविनामय प्रशमन, स्तुती बनना 2 स्थावर मनु० ३१६ 3 क्वाति प्रमादि विभूति, या, यथा 'पुण्यश्लोक' में 4 प्रथमा का विषय 5 किराती, कर्ताव्य 6 पक्ष, कविता मपु० १४१० 7 अनुपपन्न छन्द में कोई पद्य वा कविता ।

श्लोक् (श्वो० पर० स्लेपनि) एकत्र करना इकट्ठा करना होना पु० श्लोक् ।

श्लोक् [स्ला० अथ] सगहा मृग्य, चिप गत ।

श्लोक्त्वाः [स्ला० श्रा० वृद्ध] जाना, शिपना जुड़ना ।

श्लोक्, श्लोक्त्वाः [श्रा० श्रा० श्वचन वृद्धयन्] 1 जाना शिपना-जुड़ना 2. खुला होना, बँह जाना फटना दरार हो जाना ।

श्लोक् (श्रा० श्रा० परबने) जाना, शिपना-जुड़ना ।

श्लोक् (चुरा० उभ० श्वचयति ने) 1 शिपना करना (पु० के प्रदानमा श्वचयति) 2 (श्वचयति - ने) (र) जाना, शिपना-जुड़ना (श्) अलकृत करना (प) समाप्त करना समाप्त करना (कुछ के मतानुसार इन अर्थों में केवल श्वचयति) ।

श्लोक्त्वाः (चुरा० उभ० श्वचयति ने) शिपना करना ।

श्लोक् (पु०) [स्लिप् + कनिन्, जि० (कृन्) श्वा, श्वानो, श्वान वार्धे० इ० इ० लुत्, श्वी० श्वी०] कुगा वहा यदि चिपके राजा त कि नामानुपपानतम् मुभा० अर्ध० २३१, मनु० २१२०१ । मम० श्लोक्त्वाः (पु०) शिपारी कुलों को फाकने वाला, मयः कुलों का श्लोक्, श्लेषकः 1 शिपारी, 2 कुगा को शिपान वाला, कुर्तः श्लोक्, मयः कर्मिता मादयी, नीच व्यक्तित, श्लेषक, श्लेषक बहु रात श्लेषमें कुणो भीकते ही, वच् (पु०) श्लेषः 1 श्लेषिणी शौर

पतित ज्ञानि का पुत्र्य, ज्ञानिबलिपुत्र, चादाल, - भागि०
 ४६३ २ कुला का मिलाने वाला, बध्म् कुले का
 पर, बाकः ज्ञानि से बलिपुत्र, चादाल यवा०
 २९, फलम् मृदा नीच या चकोतग, अकः
 अक्षर क पिना का नाम, ओष गोदर, यध्वम्
 कुली का मृद, कृत्ति (स्त्री०) कुले का शीघ्र,
 (बहुधा नीचगो) की मरणा इमसे की जाती है। - तथा
 भाष्यवार्त्तिणी कुलाधिप स्वातेद वदति विदु मुद्रा०
 ३१८, मनु० ८१६ २ ज्ञेयावृत्ति, मेवा मनु० ४१४,
 भाष्य. १ निवारो ज्ञानवर २ बाध ३ बीता,
 ज्ञान (पु०) निवारो ।

इषध् (धृ०) उभ० अकर्मणि - त) १ जाना, हिन्द्या-
 मुलना २ बीघना, मृगाय करना, छिद्र करना ३ दग्-
 द्धाता में रहना ।

इषध् [इषध् + अच्] गध, विवर, - विष्णु० ११८,
 कि० १४३३ ।

इषध्. [धि + अच्] मृजन, माग, वृद्धि ।

इषध्. [धि + अच्] मृजन प्रायः ।

इषधीषी [धि + ईष + डीप] बीमारो रोग ।

इषध् (धा०) पर० अकर्मणि) दोरना, फूली से जाना ।

इषध् (धृ०) उभ० अकर्मणि त) कठना, बर्जान
 करना ।

इषध् (धा०) पर० अकर्मणि) बीघना दे० इषध् ।

इषध् [इ याच् अन्तुन आशु + अच् + उरच् पूवा०]
 समुद्र, पत्नी या पति का पिता - मनु० ३१११५ ।

इषध् [इषध् + कन्] समुद्र ।

इषध् [इषध् + कन्] १ साता
 पत्नी या पति का भाई २ पति का छोटा भाई,
 देवर ।

इषध् (स्त्री०) [इषध् + ऊङ्, उकार अकारसाय ।]
 माय, पत्नी या पति की माँ - रघु० १६१३३ ।

सप० - इषध् (पु०) द्वि० व०) माय और समुद्र ।

इषध् (धा०) पर० अकर्मणि, इषध् (स्वमित्) १ साय
 मेना, मास निकालना, मास बीघना म कर्मकारज-
 स्त्रेव इषधप्रति न जीवति द्वि० २१११ रघु० ८१८३
 २ आहू करना, होपना, ऊँचा साथ मेना, स्वसिति
 विहगवर्षे षत् ११३३ ३ कु-कार करना, बरदि
 करना, प्रेर० (इषधप्रति ने) साय दिलाया, जीवित
 रखना, जा . १ साय मेना, महावीर० ५१५१
 २ साय लेने मगना, माहमी बनना, हिम्मत करना
 देव० ३ पुनर्जीवित करना अष्टि० ११५५
 (प्रे०) साधना देना आगम देना प्रसन्न करना
 क्व - . १ साय देना, बीना बेणी० ५११५, मनु०
 ३१०० २. उत्साह बर्जान, जी उठना, हिम्मत साधना
 कि० ३१८, सि० १८१८ ३ कुम्भा, सिलना,

(बीसे कमल का) सि० १०१५८, ११११५ ४. होपना,
 पहना साय मेना - अष्टि० ६११००, १४१५५ ५ ऊँचा
 साय मेना, घडकना ६ उन्मुक्त होना, नि निष्-
 , आह भगना, ऊँचा साथ मेना, वि- , विवाह
 करना, भरोसा करना, विश्वास रखना (प्राय अवि०
 के साथ) - पुत्रि विवर्धनि कुत्र कुमारी - ने० ५१११०
 - कु० ५११५, (कमी कर्म) सब० के साथ) २ सुरक्षित
 रहना विभय या विषयत होना - विद्यापके पक्षिगर्भे.
 समन्तात् अष्टि० ८११०५, लम्बा - , साहसी होना,
 हिम्मत बाधना, डारव रखना (प्रे०) साधना देना,
 मोक्षार्थित करना, उत्साह बर्जाना ।

इषध् (अध्व०) [आशासि लघः पूवा०] १ जाने वाला
 कल, - बरनाथ कपोत न श्यो मयूर - मुद्रा० २ अविद्य
 स्थान (समाय के आरंभ में) । सप० - कृत् (वि०)
 (स्त्रीभूत) नष्ट होने वाला - स्वकीय, स्वकीय (स्त्री-
 सीय, स्वाधसीयत्) (वि०) प्रसन्न, क्षुभ, भाग्यशाली,
 (नपु०) प्रसन्नता, सीमाय, - अक्षय (स्व. श्रेयस्)
 (वि०) प्रसन्न, समृद्धि, (सम्) १. प्रसन्नता, समृद्धि
 २ ब्रह्मा या परमात्मा का विशेषण ।

इषध्. [स्वमित्पनेन - इषध् + ल्युट्] १ हवा, वायु - स्वसन-
 सुरभिगधि - सि० १११२१ २ एक रासम का नाम
 जिसे इन्द्र ने मार विरावा का , मनु० १ स्वात, साथ
 मेना, सास निकालना इषधनवलितपम्कभाबरोष्ठे
 कि० २०३२, गम० २१४, (वही वह प्रथम वर्ष
 भी प्रकट करना है) सि० १५५२ २ आहू करना
 कि० २१४५ । सप० - - इषधः साय, ईषधः
 अर्जुन वृक्ष, उत्सुक साय, - अवि० (स्त्री०) हवा
 का शोका ।

इषधित (पु० क० कृ०) [इषध् + क्त] १ साय लिया
 हवा, आहू भरी हुई २ साय लेने वाला, सत्
 १ साय मेना, साय निकालना २ ऊँचा साथ मेना ।

इषध् (वि०) (स्त्री०) बी) इषधय (वि०) [इषध्
 + टप्, मुट् इषध् + ग्यप् वा] भावानी कल से
 संबंध रखने वाला, मावी, आगे जाने वाला ।

इषधर्ष [मुन कर्म प० त०, अन्वेषाद्यपीति दीर्घ] कुले
 का काम ।

इषधर्षिका [स्वधर्षेण चरति - इषधर्ष + टप्] कुले
 रखने वाला, कुले पाल कर अपनी धीमिका बसाने
 वाला ।

इषधः [पुनो दन्त व० त०, अन्वेषाद्यपीति दीर्घ] कुले
 का शोका ।

इषध [इषध् + अच् न टिलोप] कुला । सप० - सिद्धा
 कुले की बीध, बहुत हल्की नीध, - बँसली कृद् कुले
 का मुराजा ।

इषध (वि०) (स्त्री०) बी) [पुन इष धावत् अन्वेषत्

कृष्ट, कः 1 हानि, विनाश 2 अन्व 3 नेत्र, अव-
शित 4 मोक्ष ।

पट्टक (वि०) [पट्टमि नीनम् - पट्ट + क्तृ] छ गुना,
-कम् छ की मर्मटि सामपट्टक, नम्र पट्टक
आदि ।

पट्टक्य दे० बोद्धा ।

पट्टक [मन् + ट, पुगो० पट्टकम्] 1 मोर 2 नयमक
(विश्व-विश्व लेखकी ने नयमका के १४ से ० तक
अनेक पेट लिखे है) 3 मयूर, मयूरचय, मयूर डेर,
गति, (इस अर्थ में नय० भी) कल्पवृक्षपत्नीन पट्ट-
पदीयेन कल कुम्भकमलचपरे तुलाकपाभवन्नाम्-वि०
१११५ न० अर्थ भी ।

पट्टकः [पट्ट + क्तृ] नयमक, द्विजहा ।

पट्टकाली [पट्ट + अन् - अन् + लीप] 1 नायक, जाहू
2 आभिरुचिणी का अमरी स्त्री ।

पट्टक [मन् + ट, पुगो० पट्टकम्] 1 नयमक, द्विजहा,
पट्टक १।-१५ 2 नयमकमि निबन्ध निबिह
पट्टे अमर० । सम० लिख-कथ निभ, बहु लिख
ओ उग न मके ।

पट्ट (सक्या० वि०) [हा + चिक्र पुगो०] (नेत्रल
४० व० में प्रयुक्त क्त० पट्ट, मर० पम्पाम्) छ-मन्०
१११६, ८४०० । सम०-अक्षीण (पट्टक्षीण) पट्टलः ।

—अक्षय मर्मटि रूप में पट्टक किये गये शरीर के छ
भाग इसे आठ भिगापय पट्टकितरमुष्ये
2 वेद के छ अंग मरायक भाग गिना कर्त्वी
व्याकरण निकरन छन्दसा विदि । प्वागियामयन
चैव पट्टकौ वेद उच्यते, दे० चैवाम १ छ गुण
वस्तुएँ अर्थात् गामाता से प्रपन्न प्र पदाथे-गामुत्र
गोमय हीर मगिदिधि च राचनता । पट्टकमेतन्मामन्य
पतिन मर्देदा गुवाम् अहृष्टिः (पट्टकश्लिः) भोग,
अधिक (वि०) (अधिक) वर विमसे छ अधिक
तो मा० ५११, अनिज (अधिक) देवक्य बीड
महात्म्या, —अक्षीत (वि०) (अक्षीत) छधासीवी
अक्षीति (स्त्री०) (अक्षीति) छधासी, अहृ-
(अहृः) छ दिन का समय या अवधि मानन
अवधः, —अवनः (अवानन, अवनकन, अहृकन)
कार्तिकेय के विशेषण पट्टकनापीनपयोचरान्मु नेता
बन्तानिब कलिकान्मु २५० १६१२, आम्प्याय
(अहम्प्याय) छ तन, अहम्प्य (अहृकनम्) मर्मटि
रूप से बहूण किये हुए छ मन्त्रो —पनकोन स मरिच
पट्टकपुमदाहृतम्, कर्म (वि०) (अहृकर्म) छ कामो
से मुना गया, अर्थात् बकता और शता के अतिरिक्त
किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा भी मुना गया एक से
अधिक बीताओ की सुनाया गया (परासर्ग, मेघ
आदि) —अहृकर्मो भिलने मन्त्र पच० ११९९, (कै)

एक प्रकार की बीधा, कर्मम् (नपु०) (अहृकर्मम्)

1 ब्राह्मणों के लिए विहित छ कर्त्तव्य—अव्यापन-
अभ्ययन यजन वाजन तथा । दान प्रतिपहृचैव
पट्टकर्मविश्रजनन मन्० १०१५ 2 छ कर्म जो
ब्राह्मण की शीविता के लिए विहित हैं उन्हे प्रति-
बन्धी भिक्षा मण्डप पशुपासनम् । कृषिकर्म तथा
केति अहृकर्मविश्रजनन 3 जाहू के छ कारतव
शान्ति, कर्त्तारण, स्तम्भन, विद्वेष, उष्णाटन तथा
माग्न 4 शोभाभासमबधी छ क्रियाएँ—धीनिर्वस्ती
तथा नेती (नीलिकी) गटकन्ताया । कपालमार्ती
पैनादि पट्टकमार्ति समाधरेत् ॥ (पु०) ब्राह्मण,
—कोष (वि०) (अहृकोष) १. छ कार्यों में युक्त
(कम्) 1 पट्टक्य, छ कौनिय 2 इन्द्र का बन्ध,
पत्नम् (अहृकनम्) 1 छ. देवों की बीवी 2 बहु
जवा जिसमें छ बेल बोले जाय (कभी कभी अन्य
जानवरों के नाम पर) उदा० हृत्ति, अक्षय छ
हापी छ पात्रे आदि, —कृष्ण (वि०) (अहृकृष्ण) 1 छः
पुत्रा 2 छ विशेषणों में युक्त (कम्) 1 छ गुनों
का समुदाय 2 किसी राजा की विदेशनीति में प्रयो-
ज्यता छ उपाय दे० गुण' के अन्तर्गत (२१),
नु० 'पट्टक्य' के साथ भी, अक्षि (वि०) (अहृ-
अक्षि) गिणगामुल, अक्षिका (अहृकक्षिका) छटी,
आभाहृत्वी, अक्षम् (अहृकक्षम्) शरीर के छ
रहस्यमय अंग (युवाधार अधिष्ठान, मण्डिपुर अना-
दन, किमुड और काजा), —अक्षयिष्ठम् (अहृकक्षयि-
ष्ठम्) छधासीन, अक्षय (अहृकक्षय) 1 मयमक
2 टिहरी 3 नुं, —कः (अहृकः) भारतीय स्वराधाय
के दान धार्मिक स्वरा में से चौथा स्वर (कुछ के
अन्तर्गत पहला) क्योंकि यह स्वर छ अर्धो से अल्प
है नासाकन्दमूरस्तान् विज्ञा दन्ताश्च सस्युक्तम् ।

पट्टक सजायते (पट्टक्य सजायते) अस्मात् तस्मात्
पट्टक इति स्मृत, कहते हैं कि मोर के स्वर से यह स्वर
मिलता-जुलता है, —पट्टक रीति मयूरस्तु -वार०
अहृकन्यादिनी केका द्विवा भिक्षा विष्वक्चिधि-
-रपु० ११३९ - विज्ञात् (स्त्री०) (अहृकविज्ञात्)

छधासी (अहृकविज्ञात्) (वि०) छधासी, —अक्षयम्
(अहृकक्षयम्) हिन्दु देवों के छ मुख्य शासन
नाम्न, योग, व्याय, वैशेषिक, शीमाशा और
वेदान्त, —अक्षयम् (अहृकक्षयम्) छ प्रकार के गर्वों की
समष्टि अक्षयुर्न महोर्न गिरिपुर्न तर्षेव च ।
मनुव्यसुर्न मयूरुर्न अमनुवर्नितिक्रमात् मक्षीः
(अक्षयवतिः) छधासी, अक्षयाम् (स्त्री०) (अहृ-
अक्षयाम्) छ-पन, अक्षय (अहृकक्षयः) 1 शौरा-न पट्टक
तथास्त्रीनपट्टक न अहृकक्षयौ न अक्षयः अः कक्षम्
महि० २०१९, कु० ५१९, नपु० ६१९९ 2 नुं

भक्तिविः आम का वृक्ष, भानवकर्मन असोक या किकिरान वृक्ष, ब्व (वि०) जिस की डोरी भीरी से बनी है (जैसे कि कामदेव का धनुस्) —दाय-
व्यापार म बहुति भयान्मन्थः पटपञ्चम स्य० ७३,
प्रियः नामकेदार नाम का वृक्ष, वरी (वृक्षव्री)

1 छ पवित्रयो का श्लोक 2 भवरी 3 वृ, —प्रज्ञ
(वृक्षप्रज्ञ.) जो छ विषयो मे सुपरिचित है अर्थात्
चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) या मानव-
जीवन के उद्देश्य और लोकप्रकृति, वहाप्रकृति—धर्मार्थ-
काममाश्रेय लोकलत्वार्ययोरपि । पट्मु प्रज्ञा तु पन्थासौ
पट्प्रज्ञ परिकीर्तित ॥ 2 विन्मारी, कामासक्त पुरुष

विष्णुः (वृक्षविष्णुः) विष्णु का विशेषण, आम
(वृक्षभाग) छटा भाग, १ भाग १० २।१२, मनु०
७।३३, ८।३३, भुज (वि०) (वृक्षभुज) 1 छ
है महायक जिनमें, छ कानो बाला, (ज) पटकोण
(आ) 1 दुर्गा का विशेषण 2 तरुज, आमः
(वृक्षामास) छ महीने का समय, काविक (वि०)

(वाष्पार्थिक) छमाही, अर्धवार्षिक, वृक्ष (वृक्षवृक्ष)
कार्तिकेय का विशेषण रघु० १।७६३, (आ) तर-
वृक्ष, —रत्नवृ—रत्नः पु० ब० १०। (पट्टवृक्ष आदि)
छ रत्नो की समीप दे० रत्न के अन्तगत, रात्रम्
(वृक्षरात्रम्) छ रात्रो का समय या अर्धदि, वरीः
(वृक्षवरीः) 1 छ वस्तुओं को समष्टि 2 विशेष रूप
मे मान्य के छ वाक्, (पट्टिपुंजी करते है) काम
कोपलवा लोभा मयमात्रो व सुन्दर : हुनासिपद्वर्ग-
जयते—वि० १।२, अष्टाष्ट पद्वर्गम— अट्टि० १।२,
विशति (स्त्री०) (वृक्षविशति) छमोन (वृक्ष-
विश छमोनवरी), विश (पट्टविश) (वि०) छ
प्रकार का, छ गुना रघु० ६।२०, वट्टि (स्त्री०)
(वृक्षवट्टिः) प्रायः,—सप्तति (पट्ट-सप्तति)
छहतर ।

वट्टिः (स्त्री०) [पट्टगुणित दगति वि०] माठ मनु०
३।७३, वाज ३।८६, लक्ष माठवाः मय० -भाग-
सिद्ध का विशेषण,—वृक्ष माठ वर्ष हैः आय का प्राची
जितके मन्दर से मट बूना है योजनी (स्त्री०)
माठ बीजन का विन्मर या दास, सञ्जलन माठ
वष की अवधि या समय, —हासल 1 माठवर्ष की
आय का) हायो 2 एक प्रकार का चावल ।

वट्ट (वि०) (स्त्री०) वट्टी [पन्था गुण्य प् - वट्ट,
वृक्ष] छटा, छटा भाग —पट्ट तु क्षेत्रजस्याथ प्रदद्या-
त्पुत्रादुदात्त मनु० १।१६६ ७।३०, पट्टे भ्राते
विक्रम० २।१, रघु० १।७३८ मय० अक्ष
1 माताम्य छटा भाग—वाज० ३।१५, 2 विशेष कर
उपज का छटा भाग जिनको कि रात्रा अपनो प्रज्ञा से
नुमिन्न के कर में रहण करता है उपन्यसिच्छामि

तपोभक्तु वट्टासुम्भो इव रक्षिताया—रघु० २।
१६, (उपज के विषय विषय भेद जिनके छटे भाग का
अधिकारी राजा है, मनु० ७।१३१-२ में बताया गया
है) वृक्षि उपज के छटे भाग का अधिकारी राजा,
पट्टाश्वत्थेऽपि वसं मृष—वा० ५।४, अक्षय छटा
भोजन, काम तीन दिन में केवल एक बार भोजन
करने वाला, जैसा कि प्रायश्चित्तवचन किया
जाता है ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

वट्टी [पट्ट : हीप] 1 चान्द्रमास के किसी पक्ष की छठ
2 (व्या० में) सती विभक्ति या सम्बन्ध कावक
3 कायावली के रूप में दुर्गा का विशेषण, जो
मालह विष्णु मानकाम में से एक है । मय०
सप्तकृष्ण छठी विभक्ति के साथ वाला तपुपुत्र
ममान ऐम ममान में विरह करने पर पहला पर
मदिर गट्टी विभक्ति का होता है, वृक्षमन्, वृक्षा
शालय उपग्र होने के छठे दिन छठी देवी की पुजा
करता ।

बुः [बु + ड, पुषो० वत्सम्] प्रसूति, प्रजनन ।
 बोधक (बि०) (स्त्री०- स्त्री) [बोधकम् + ड]
 सोलहवाँ- मनु० २।६५, ८९।
 बोधकम् (सक्या० बि०) ब० व०, मोलह । तम०-अङ्कः
 गुण्यह, -अङ्क (बि०) एक प्रकार का गुणद्वय,
 अङ्गसङ्घ (बि०) छ अमूल की चौड़ाई का, -अङ्गि-
 केका, अङ्कित (पु०) गुण्यह, -अङ्किते गल,
 -उपचार (पु०, व० व०) किसी देवता की
 अङ्गजलि अर्पित करने की सोलह रीतिगण, जिनकी
 गिनती यह है-आसन स्वामन पाद्यधर्मसामयनी-
 यकम् । मध्याह्निकस्नान वसनाचरणानि च ।
 मधुपुष्पे वृषदीपे तैवेष्ट वन्दन तथा, कला चण्डमा
 की सोलह कराएँ, जिनके नाम यह हैं- अमृता
 मानदा वृषा मुष्टि- तुष्टी रनिर्भूति । शशिनी
 चन्द्रिका कान्तिज्योत्स्ना श्री. प्रीतिरेव च । अङ्गदा
 च तथा पुष्पीभृता बोधक वें कला, बुद्धा दुर्गा की
 एक मूर्ति, -मातृका (स्त्री०) ब० व०, मोलह दिव्य
 माताएँ जिनके नाम निम्नांकित हैं- गौरी पद्मा
 शशी मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा
 स्वाहा मानरो मोक्षदाताः । तांभिः पुष्टिर्भूति-
 लुष्टि कुन्देकामदेवता ॥
 बोधकधा (अध्य०) [बोधक + धा] मोलह प्रकार से ।

बोधक (बि०) (स्त्री०- स्त्री) [बोधकम् + ड]
 सोलह भागों से युक्त, सोलह गुना बोधकको
 देवतोपचार ।
 बोधकम् (पु०) [बोधकम् + इति] अग्निष्टोम यज्ञ
 का कथान्तः ।
 बोधा (अध्य०) [ध + धाच्, धप उत्कम्, धस्य ध्त्वत्]
 छ प्रकार से । तम०- व्यासः यज्ञ पढ़ने हुए गरीर
 स्थानों के छः प्रकार, - बुद्धः छ गृह बाला, कार्तिकेय,
 -श्रीश कनोर्बनितपोदायुज सतिथि बोधा सा
 हाटकगिरे - अरथ० ७ ।
 ब्धि (भ्या० विद्वा० पर० ष्ठीभति, ष्ठीभति, ष्ठपूत)
 1 बुद्धता, मूर्ह से लक्षार निकालना, 2 राज टपकना,
 -भट्टि० १२।१८, ति, 1 प्रक्षेपण करना, निकालना,
 धकेलना म० ४।४, रकु० २।३५ भट्टि० १४।१००,
 १७।१०, १८।१४, काव्य० १।१५ 2. मूर्ह से लक्षार
 निकालना मनु० ४।१३२, पाठ० ३।२१३ ।
 बोधिभम्, ष्ठेकम् [ष्ठीच् + लृट्, ष्ठिच् + लृट्]
 1 बुद्धता 2 मार, मुक, लक्षार ।
 ष्ठपूत (भू० क० क०) [ष्ठिच् + लृट्, ष्ठिच् + लृट्]
 लक्षार हुआ ।
 ध्वक्, ध्वक् (भ्या० आ० ध्वक्ते, ध्वक्ते) जाना,
 हिलना-जुलना ।

स

स (अध्य०) स, मन्, मन्व या सन्, और एक अक्षरा ।
 समान शब्दों के स्थान पर आदेश होने वाला उपसर्ग,
 जो विशेषण अक्षरा क्रियाविशेषण बनाने के लिए
 मात्रा शब्दों के साथ समान में प्रयुक्त होकर निम्नांकित
 अर्थ प्रकट करता है (क) के साथ, चिन्ता कर, के
 साथ साथ, सम्यक् होकर, युक्त, सहित सपुत्र,
 सभार्य, समुत्पन्न सधन, सरोज्यम्, सकोपम्, सहारि आदि
 (ख) समान, सद्गुण, सखर्षम् 'समान प्रकृति का',
 इसी प्रकार सञ्चारि, सवर्ष (घ) बही, सोधर, सपक्ष,
 सपित्र, सनामि आदि, (ङ) 1. सौ 2. सान्, हुआ
 3 पक्षी 4 'सङ्घ' सांख्य सवीत स्वर का संक्षिप्त
 5 शिव का नाम 6 शिल्प का नाम ।
 संकः [सं + सं + ड] कला, गंजर ।
 संकम् (स्त्री०) [सं + सं + क्विच्] युद्ध, संधान,
 लड़ाई य सवति प्राण्यिवाशिकीक रण० १।३०२,
 ७।३९, ८।१०, कि० १।१९, छि० १।११५ । सं०
 बर राजा, राजकुमार ।
 संकत (भू० क० क०) [सं + सं + क्त] 1 रोक

हुआ, रवामा हुआ, बल में किना हुआ 2 अक्षरा
 हुआ, एक स्थान पर शीघ्र हुआ 3 बहियों से जकड़ा
 हुआ 4 कन्धी, कौटी, कागवाली-रकु० ३।२०
 5 उद्यत, तैयार 6 अक्षरस्थित, दे० सन् युक्त 'सन्' ।
 तम०-अश्वत्थि (बि०) जिसने विषय प्राप्तता के
 लिए हाथ जोड़े हुए हैं, -आत्मन् (बि०) जिसने मन
 को धरा में कर लिया है, नियमितमना, धारमनिष्ठी ।
 आहार (बि०) मिताहारी, -अश्वत्थर (बि०)
 जिसका घर सुख्यस्थित हो, जिसके घर का साधन
 सब क्रमपूर्वक रहता हो, कैलन्, मन्व (बि०)
 मन की नियन्त्रण में रखने वाला, प्राण्य (बि०)
 जिसका वक्षस विवक्षित किना हुआ है, प्राणायाम का
 अर्थात् करने वाला, -सन् (बि०) मुक, नीन रखने
 वाला, मितवाही ।
 संकत (बि०) [सं + सं + क्त] 1. सङ्घ, तपत्र,
 तैयार महावीर० ५।५१ 2 साधन, लतई ।
 संकः [सं + सं + क्विच्] 1 प्रतिबंध, रोकथाम, विघं-
 धन-धोत्रादीनीन्द्रियाध्यन्ते संवसाभिन्नुद्धति-अस०

४।२६, २७ 2 मन की एकाग्रता, योग की अतिम स्थान ब्रह्मचारी को प्रकट करने वाला शब्द—आरणा-त्थानसमाधिबिषयसत्तरङ्गस्यमगदवाभ्यम्— सर्व०, कु० २।५९, 3 धार्मिक व्रत 4 धार्मिक भक्ति, तपसाधना, —सा० ४।१९ 5 दयाभाव, करुणा की भावना ।

संशयबन्ध [सम् + यम् + ल्यट्] 1 प्रतिबन्ध, रोकधाम 2 अंत कर्षण श० रं 3 बाधना—उत्तर० १ विक्रम० ३।९ 4 कैंद 5 आरमात्सर्प, नियन्त्रण 6 धार्मिक व्रत वा आचार 7 चार घटो का बर्ण,

—कः नियामक, शासक,—नी गम की नगरी का नाम ।
संशयित (भू० क० कृ०) [सम् + यिच् + क्त] 1 निराश्रित 2 बद्ध, बंधी से जकड़ा हुआ 3 निराश्र, रोका हुआ ।

संशयित्वा (वि०) [सम् + यम् + क्तिन्] दमन करने वाला, रोकने वाला, निराश्रित करने वाला—(यू०) जिसने अपने आश्रयो को रोक लिया या निवृत्त में कर लिया, ऋषि, तन्त्रियों रचु० ८।११, भण० २।६१ ।

संशयः [सम् + या + ल्यट्] शंका, शक्य 1 साध-साध जाना, मिलकर चलना 2 याधा करना, प्रगति करना 3 सब को उड़ा कर ले जाना ।

संशयः [सम् + यम् + बज्] शंके 'संशय' ।

संशयः [सम् + य् + बज्] नेह्रुं के आटे का मिश्रण हुआ—मनु० ५।७ ।

संशुक्त (यू० क० कृ०) [सम् + युञ्ज् + क्त] 1 मिला हुआ, जुड़ा हुआ, सम्मिश्रित 2 सम्मिश्रित, मिला हुआ, संयुक्त 3 सहित 4 मयन, से युक्त 5 अभिश्रित, बना हुआ ।

संशुभः [सम् + युञ्ज् + क्, जन्त्य न] 1 सर्वोन्नत मिलाप, मिश्रण 2 लडाई, संधान, युद्ध, मन्थन—मयूने मायू-वीने समुद्रत प्रमहेत क कु० २।५३, रचु० ९।१० ।
सम० शौण्डिभम् मिश्रता, मन्थन या युक्त सतवा मायूकी बात पर कथन ।

संशुचि (वि०) [सम् + युञ्ज् + क्तिन्] मरुद्ध, मन्थन करने वाला शि० १।४।५५ ।

संशुच्य (यू० क० कृ०) [सम् + युञ्ज् + क्त] 1 मिला हुआ, एकत्र जोड़ा हुआ, मरुद्ध 2 मयन, सहित, दे० सम् पुर्वक 'य' ।

संशुचिः [सम् + युञ्ज् + बज्] 1 सर्वोन्नत, मिलाप, मिश्रण, संधान, मिलना-जुलना, धनिकता मयाशा हि विद्यो-मन्थ मनुष्यनि सत्रबम् मुना० 2 जोड़ना, (वैद्यिकों के औषधीय गुणों में से एक) 3 जोड़, मिलाना 4 मन्थ आभरणसंशुचो—सा० ९ 5 दो राजाओं में किसी एक से मयन उद्देश्य के लिए मिश्रता 6 (आ० में) मयन व्यञ्जन 7 (यो० में)

दो शारिकाओं का मिलन 8 शिब का विशेषण ।
सम०—वृषकथम् अनित्य सर्वतो का पार्ष्ण्य,—विश्वम् साध-साध मिलाकर जाने से रोग उत्पन्न करने वाला साधनपार्ष्ण्य ।

संशुचिन् (वि०) [संशुचि + इति] 1 मिलाया हुआ, सम्मिश्रित 2 मिलने वाला ।

संशुचिन्म [सम् + युञ्ज् + ल्यट्] 1 मिलाप, एक साथ जोड़ना 2 मयन, संधान ।

संशुक्त (यू० क० कृ०) [सम् + युञ्ज् + क्त] 1 रचीन, काठ 2 आश्रयार्थ, प्रणयान में दम्ब 3 कूट, विद्विवा, शोषानि से जलता हुआ 4 मोहित, मन्थ 5 साधकमय, सुन्दर ।

संशुक्त [सम् + युञ्ज् + क्त] प्रसन्न, देल-भास, सधारण ।
संशुक्तम् [सम् + युञ्ज् + ल्यट्] 1 प्रसन्न, सधारण 2 उत्तरदायित्व, नियंत्रण ।

संशुक्त (यू० क० कृ०) [सम् + युञ्ज् + क्त] 1 उत्तमजित विद्वान् 2 प्रबलित, समृद्ध, कूट, मोषण 3 बलित 4 युना हुआ 5 अभिभूत ।

संशुक्त [सम् + युञ्ज् + क्त] 1 आरण 2 हुल्लह, शक्यता, उद्यता, प्रचरवता श० ७ 3 विश्रांभ, उत्तमता, हुडबडी कु० ३।४८ 4 ऊर्जा, उत्साह, उत्कण्ठा—रचु० १।२०६ 5 कोप, रोष, कोप—प्रति-पातप्रतीकार संशुक्तं महामनसम् रचु० ४।६ १।३६, विक्रम० २।२१, ६।२/७ चरव, आकार 7 साध और जलन (कोड़े कुमी की) । सम०—संशुक्त (वि०) जो वृत्त के कारण कठोर हो गया हो, रस (वि०) अग्रत कूट, वैश्व-शौच की उद्यता ।

संशुक्तम् (वि०) [संशुक्त + इति] 1 उत्तम जित, विभूत, हुडबडी से युक्त शि० २।५ 2 कूट, प्रकृति, रोसाशुद्ध 3 चमडी बहुकारी ।

संशुक्तः [सम् + युञ्ज् + क्त] 1 रगत 2 प्रयोजनार्थ, अजररिक्त 3 रोष, कोप ।

संशुक्तम् [सम् + युञ्ज् + ल्यट्] 1 प्रसन्न करना, मेल करना, युवां जाति के द्वारा युद्ध करना 2 मयन करना 3 प्रकूट या बहुन मयन ।

संशुक्तः [सम् + युञ्ज् + क्त] 1 मूलनपाश, हुल्लातुल्ला, शौर्युक्त 2 कोलाहल ।

संशुक्त (यू० क० कृ०) [सम् + युञ्ज् + क्त] जो टुकड़े टुकड़े हो गया हो, चूर-चूर, क्षिणितम् ।

संशुद्ध (यू० क० कृ०) [सम् + शुद्ध् + क्त] 1 रोका गया बाधित, मरुद्ध 2 रुका हुआ, धरा हुआ 3 बेगुना हुआ, बेचिन्, उपरुद्ध 4 डंका हुआ, क्षिणा हुआ 5 अस्वीकृत, अटकाया हुआ, दे० सम् पुर्वक 'य' ।

संशुद्ध (यू० क० कृ०) [सम् + शुद्ध् + क्त] 1 साध-साध

उपा हुआ 2 किनामित, बाब मरा हुआ, बीसा कि 'संभवना' में 3 फूटा हुआ, मकुर निकला हुआ, मुकुलित, उपजा हुआ रघु० ६।४७ 4. पका बना हुआ, बिलकी अब दूढ़ ही गई ही 5 साहसी, बरोसे का ।

संशोच [सम् + श्च + भञ्] 1 पूरी क्वाबट वा चिपन, खरबन, रोक, रोक पास 2 भेटवदी, पेरना 3. बंधन, बेदी 4 फेंकना, डालना ।

संशोचनम् [सम् + श्च + भञ् + क्त्विट्] क्वाबट, उहराना, रोकना ।

संशोचयन् [सम् + श्च + भञ् + क्त्विट्] निशान लगाना, पहुँचाना, चिपन करना ।

संशय (मू० क० इ०) [सम् + श्च + क्त] 1 शकित, सटा हुआ, सतत, जुड़ा हुआ 2. गुन्धममृत्वा होना, भिड़ जाना ।

संशय [सम् + श्च + क्त] 1 सेटना, सोना 2. बूझ जाना 3 प्रलय ।

संशयनम् [सम् + श्च + क्त] 1 बूझ जाना, चिपन करना 2 बूझ जाना ।

संशयित (मू० क० इ०) [सम् + श्च + क्त] साध लगाया हुआ, ध्यान किया हुआ ।

संशयः [सम् + श्च + क्त] 1 समाधान, बातचीत, प्रवचन 2 गोपनीय या गुप्त बातें, अंतरिम बातलाप, 3 (नाटक में) एक प्रकार का मवाद, सम्भाषण ।

संशयकः [संशय + क्त] एक प्रकार का उपकरण, महा-दायक प्रकार का, दे० सा० २० ५४९ ।

संशोड (मू० क० इ०) [सम् + श्चिह् + क्त] पाटा हुआ, उपद्रुन ।

संशोड (मू० क० इ०) [सम् + श्चि + क्त] 1 चिपका हुआ, जुड़ा हुआ 2 साथ साथ मिलाया हुआ 3 छिपाया हुआ, गुप्त रक्खा हुआ 4 दूहला हुआ 5 निकुटा हुआ, शिकन पडा हुआ । सन० - कर्ष (वि०) शिमके कान नीचे लटके हो, -भावज्ञ (वि०) जिनमना, उदास ।

संशोडनम् [सम् + शोड् + क्त] बाधा डालना, बखरक करना ।

संशय (अन्व०) [सम् + श्च + क्त] 1 वर्ष 2 विशेष कर विषयादित्य वर्ष, (बोलीस्ताब् से ५९ वर्ष पूर्व मारम्भ हुआ बा ।

संशयः [संशयित् श्चोडोड - संशय + क्त] 1 वर्ष 2 विषयादित्याब् 3 शिव । स० क० शिव का विशेषण, शक्ति (वि०) एक वर्ष में पूरा बकर कर देने वाला (सूर्य) । रचः एक वर्ष में बुरा होने वाला मार्ग ।

संशयनम् [सम् + श्च + क्त] 1 शक्तिमान करना, बिल

कर बाँटें करना 2 समाचार देना 3 परीक्षण, बवाल करना 4 बाहु बन्ध के द्वारा बन्ध में करना 5 मन, शमीब ।

संशयः [सम् + श्च + क्त वा श्च] 1 इकन 2 समझ 3 शरीरन, सफोचन 4 बाँध, सेतु, तुल 5 एक प्रकार का हरिच 6 एक राक्षस का नाम - दे० खबर, रघु 1 छिपाव 2. सहनशीलता, आरामियचन 3. जल 4 बौद्धों का एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान ।

संशयनम् [सम् + श्च + क्त] 1 आबरन, बाष्पादन 2 छिपाव, दुराव - मा० १ 3 बहाना, छपवेश दे० 'सबर' भी ।

संशयनम् [सम् + श्च + क्त] 1 आरम्भकारण 2 उप-योग करना, सा जाना ।

संशय [सम् + श्च + क्त] 1 मुड़ना 2 बुझना, विनाश 3 समाच का निवृत्तकारण प्रलय - महावीर० ६।२६ 4 बादल 5 (जल से मरा हुआ) बायल 6 सत्कार में प्रलय होने पर उठने वाले सत्त बारणों में से एक 7 वर्ष 8 लघु, समुन्धय ।

संशयकः [सम् + श्च + क्त] 1. एक प्रकार का बादल 2 प्रलयानि, विश्वप्रलय के समय संसार की भस्म करने वाली आध - इतोर्षि ब्रह्माण्डः सह समसंयतकै - प्रतु० २।७ 3 बरखनल 4 अमराय का नाम ।

संशयिकम् (मू०) [संशयक + इति] अमराय का नाम ।

संशयिका [संशयक + टाप्, इत्यम्] 1 कनक का बना परा 2 पराग केसर के पास की पंखड़ी 3. दीप सिंहा आदि (दीपदे-सिंहा - ताट०) ।

संशयक (वि०) (स्त्री० - किका) [सम् + श्च + क्त + क्त] 1. पूर्ण विकसित करने वाला, बढ़ाने वाला 2. साकार करने वाला, स्थापन करने वाला (अन्व-मत्तो का), वादिव्यकारी ।

संशयित (मू० क० इ०) [सम् + श्च + क्त + क्त] 1. पाला-बीजा हुआ, पालन-पोषण किया हुआ 2. बढ़ाया हुआ ।

संशयित (मू० क० इ०) [सम् + श्च + क्त] 1. साथ मिला हुआ, मिलाया हुआ, मिलित मा० ६।५ 2. तर किया हुआ, - मा० ४।९ 3. संशय, संकुल 4. टटा हुआ उचितोपलक्षणसम्पन्नविश्याः (अन्व-वि० ६।४ ।

संशयित (वि०) [सम् + श्च + क्त] पचयित किया हुआ, सम् भूति मा० ५।२९ ।

संशयकः [सम् + श्च + क्त] विकार करने का ल्याव, शाय, बस्ती ।

संशयः [सम् + श्च + क्त] वायु के सत्त मार्गों में से तीसरा मार्ग ।

संघारः [सम् + वृ + घञ्] 1. मिलकर बोलना, बात चीत, बातचीत, कथपरकचन, मुहावरी० १।१२
2 चर्चा, वादविवाद 3 समाचार देना 4 सूचना, समाचार 5. स्वीकृति, सहमति 6 समनुकूलता, मेल-जोल, समानता, साम्य —कसबादान्ध सभायदनया पुष्ट दध०, (माह) चित्ताकर्षी परिचित इव श्रोत्र-संघारमेति मा० ५।२०।

संघाविम् (वि०) [सवाप + इनि] 1 बोलने वाला, बातचीत करने वाला 2 सद्गुण, समान, मिलता-जुलता अनुकूल —वहजयवादिनी केका —रघु० १। ३९, अस्मदङ्गसवादिप्याह उतर० ६।

संघारः [सम् + वृ + घञ्] 1 आचरण, आन्ध्रादन 2 बर्णोच्चारण के समय कण्ठारिकी का मकोचन मन्त्र उच्चारण (वि०) विचार) 3 न्युताता 4 प्रखण, सरासय 5 सुगन्धस्वाधन ।

संघातः [सम् + वृ + घञ्] 1 मिलकर रहना 2 समाज, मन्थनी —पच० १।२५० 3 धोनु व्यवहार 4 घर, आवास स्थान 5 मनोरञ्जन के वा मना आदि के लिए मूला मेदान ।

संघाहः [सम् + वृ + घञ्] 1 ले जाना, डोना 2 मिलकर दवाना 3 मातिस करना, मुट्टी भरना 4 वह नौकर जो मातिस करने वा मुट्टी भरने के लिए रक्खा गया हो ।

संघाहकः [सम् + वृ + घञ्] मातिस करने वाला, दे० ऊपर संघाह (4) ।

संघाहकम्—मा [सम् + वृ + घञ् + क्त] 1 बोझ डोना, उठाकर ले जाना 2 मातिस करना, मुट्टी भरना, उतर० १।२५, मा० १।२५ ।

संघिष्णम् [सम् + घिष् + क्त] अलग किया हुआ, विशिष्ट ।

संघिन्य [सम् + घिष् + क्त] 1 विमुक्त, उतोजन, अशान्त, उद्विग्न, हठब्रह्मया हुआ जैसे कि 'संघिन्य-मानस' में 2 प्रसन्न, मोत ।

संघिष्णत (पु० क० क०) [सम् + घिष् + क्त] विरगविदित, सबके द्वारा माना हुआ, सर्वसम्पन्न ।

संघितः (स्त्री०) [सम् + घिष् + क्त] 1 ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान चेतना, भावना इतरब्रह्मया मुक्तसंघिनि स्मरणीयाऽनुनातनी—कि० १।१३५, १।१३२ 2 मयस, बुद्धि 3 पशुचान, प्रयासचरण 4 (साकना का) सोमनस्य, मानसिक समसौया ।

संघिद् (स्त्री०) [सम् + घिष् + क्त] 1 ज्ञान समझ, बुद्धि—कि० १।१४२ 2 चेतना, प्रत्यक्षज्ञान मा० ६।१३ 3 इकरार, बचन, सविदा, अनुबन्ध, प्रतिज्ञा—रघु० ७।२१ 4 स्वीकृति, सहमति 5 माना हुआ प्रचलन, विहित प्रथा 6 सहाय, मुद्र, सहाई 7 वृद्ध

की ललकार, प्रदरी-सकेत 8 नाम, अभिधान 9 धिङ्ग, सकेत 10 प्रमन्न करना, बुझ करना, तुष्टीकरण सि० १।१३७ 11. सहाय्युक्ति, सहाय देना 12 मनन 13 बातचीत, सहाय 14 भाग । मय०—व्यतिष्णः प्रतिज्ञा भाग करना, सविदा का उल्लेखन ।

संघिदा [संघिद् + टाप्] करार, प्रतिज्ञा, ठेका ।
संघिदात् (वि०) जानने वाला, प्रतिपाद्याही 2 सामनस्य पूर्ण ।

संघित (पु० क० क०) [सम् + घिष् + क्त] 1 जाना हुआ, समझा हुआ 2 पहचाना हुआ 3 बुद्धिमान, विद्वान् 4 सोचा हुआ 5 समार 6 उपविष्ट, मयसोया बुझाया हुआ दे० मय् पूर्वक विद्, तम् करार, प्रतिज्ञा ।

संघिदा [सम् + घि + घा + मङ् + टाप्] 1 व्यवस्था, उपक्रमण, आयोजन—रघु० ७।१७, १।१७ 2 जीवन धारण का ढंग, जीवनचर्या के साधन—रघु० १।९७ ।

संघिधानम् [सम् + घि + घा + ल्यट्] 1 व्यवस्था, प्रक्रमण मा० ६ 2 अनुष्ठान 3 आयोजन, रीति 4 कृप्य ५ (कथाचरन्तु में) घटनाओं का क्रम—मा० ६ ।

संघिधानकम् [संघिधान + क्त] 1 (कथाचरन्तु में) घटनाओं का क्रम, किसी नाटक की कथाचरन्तु—इहो संघिधान-कम्—उतर० ३ 2 बज्जल कर्म, अनाधारण घटना ।

संघिधान्य [सम् + घि + घा + ल्यट्] 1 विनाशन, बाटना 2 भाग, अश, हिम्सा ।

संघिधाविम् (पु०) [संघिधात् + इनि] सहभागी, हिम्सेदार, माओधार ।

संघिष्ट (पु० क० क०) [सम् + घिष् + क्त] 1 सोटा हुआ मेटा हुआ रघु० १।१५ 2 साथ-साथ चला हुआ 3 मिलकर बँटा हुआ 4 बन्ध पहने हुए, कपड़े धारण किये हुए ।

संघोषणम् [सम् + घि + ङिष् + ल्यट्] सब विद्याओं में देखना, सोच, कोई हुई कानु की लकाश ।

संघोत (पु० क० क०) [सम् + ष्ये + क्त] 1 बन्धों से मज्जिन, कपड़े पहने हुए 2 ढका हुआ, निपटा हुआ अधिष्ठातिन 3 अलङ्कन 4 लपेटा हुआ, ढेरा हुआ, बन्द किया हुआ, परिदेष्टिन ५ अविद्वान् ।

संघुक्त (पु० क० क०) [सम् + घृ + क्त] 1 भागा हुआ, उपभुक्त 2 लुप्त ।

संघृत् (पु० क० क०) [सम् + घृ + क्त] 1 ढका हुआ, आच्छादिन मुद्रमूर्तिगतवाधरीष्ट (संघृत्) —मा० ३२६ 2 प्रच्छन्न, गुप्त मा० २।११ 3 छप्य 4 मयाज, धन्य, मुग्धित 5 अक्काज धान, एकान-मयी 6 संकुचित, सीधा हुआ 7 बलपूर्वक छोना हुआ, अका किया हुआ 8 षण हुआ, पूर्ण 9 सक्ति, दे० मय् पूर्वक वृ, तम् 1 घृत्न स्थान, एकाल स्थान

गोपनीयता 2 उच्चारण का एक प्रकार । सम्०
आकार (वि०) जो अपनी आन्तरिक भावनाओं
का बाहर प्रकट नहीं होने देता है, जो अपने मन के
निचारे का अंश पता नहीं देता, अन्ध (वि०) जो
अपनी योजनाओं को गुप्त रखता है—रघु० ११२० ।
संभृतिः (स्त्री०) [सम् + भृ + क्तन्] 1 आकरण, आच्छा-
दन 2 छिपाव, दबाव, गुप्त रखना कि० १०१४४
3 गुप्त प्रयोजन, अविश्वसि ।

संभृत (भू० क० कृ०) [सम् + भृ + क्त] 1 हुआ, घटा,
बटित हुआ 2 भरा गया, सम्पन्न 3 संचित, एकस्थान
पर गोभीरुन 4 बीता हुआ, गया हुआ 5 बका हुआ
6 मुहरिजित,—सः बकन का नाम ।

संभृतिः (स्त्री०) [सम् + भृ + क्तन्] 1 होना, घटना
बटित होना 2 निष्पत्तना 3 आवरण ।

संभृष्टि (भू० क० कृ०) [सम् + भृ + क्त] 1 पूर्ण-
कमिष्ठ, बड़ा हुआ, पूर्ण वृद्धि को प्राप्त 2 ऊँचा या
कड़ा हुआ, बका बिताली 3 सम्भृष्टिहाली, बिलसता
हुआ, फनता फुलता हुआ ।

संशेषः [सम् + शि + घञ्] 1 विशेष, हृदबन्धी, उत्ते-
जना महावीर० ११२२ 2 प्रचर गति, औद्योगिकता,
प्रचरता उत्तर० २१२६, मा० ५१६ 3 शक्ती,
बाल 4 नष्टपाने वाली पोशा, बेचना, शीघ्रता ।

संशेष [सम् + शि + घञ्] प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञानकारी,
बेचना, भाषना ।

संशेष्यः [सम् + शि + घञ्] 1 प्रत्यक्षज्ञान,
ज्ञानकारी 2 शीघ्र अनुभूति, भाषना, अनुभूति,
भोगना दुःखसमवेदनायैव राम वैनन्वयमित्यम्—उत्तर०
११६० 3 देना, आत्मसमर्पण करना—भृश०
११२३ ।

संशेष्यः [सम् + शि + घञ्] 1 निडा, विश्राम रघु०
११९ 2 स्थान 3 आमन (कुर्सी प्रादि) 4 संभृत्,
गयाग या गतिवश विशेष ।

संशेष्यम् [सम् + शि + घञ्] संभृत्, मनोम ।

संशेष्यम् [सम् + शि + घञ्] 1 आकरण, परिच्छेदन
2 संशेष, कपडा, परिधान 3 उगरीय वस्त्र जि०
१८१५९ ।

संशेष्यः [सम् + शि + घञ्] 1 मरेह, अनिश्चिति कप-
कता, लकीर, मनसु में सद्यमेव पाहुने—कु० ५१
४६, स्वल्पम्, सद्यमेवत्येव भेदा न हि उपपद्यते

- भय० ६१९२ 2 लका, सक 3 मरेह, वा अनिश्चय
(स्वा० में) व्यापकधर्म में बंशित सलह भेदों में से एक
—एक धर्मिकविषयनाशयवकारक ज्ञान सत्ता 4 दर,
सतरा, जोखिम न सद्यमेवपाहुने नये भद्राणि
पश्यन्ति—हि० ११७, याना पुन सद्यमप्येव—मा०
१०१६३, कि० १३१६६, केकी० ६१ १ 5 सभापना ।

सम्० आत्मन् (वि०) मरेह करने वाला, सकाराण,
आत्मन्,—उपेत, एष (वि०) मरेहपूर्व, अनि-
श्चित, अस्थिर, क्त (वि०) अनरे में पडा हुआ
- न० ६,—छेद मरेह का विचारण, निर्णय,
छेदिन् (वि०) मरी मरेहों को मिटाने वाला,
निर्णयात्मक—स० ३ ।

संशेष्यः, संशेष्यम् (वि०) [सम् + शि + घञ्], सद्य
+ आत्मन्] मरेहपूर्व, अस्थिर, अनिश्चित,
पथत ।

संशेष्यम् [सम् + शि + घञ्] वृद्ध का आरम्भ, आर-
म्भ, कड़ाई, धारा ।

संशेष्यः (भू० क० कृ०) [सम् + शि + घञ्] 1 लेख
किया हुआ शोभित किया हुआ 2 लेख, शीघ्र
3 मरवा पूरा किया हुआ, किमाश्रित, निष्पन्न
4 निर्भीक, मुनिश्चित, निर्धारित, निश्चित । सम्०
—आत्मन् (वि०) जिसका मन सर्वथा परिपक्व या
अनुगायत है, क्त (वि०) बिलने अपनी प्रतिज्ञा
पूरी कर की है ।

संशुद्ध (भू० क० कृ०) [सम् + शु + क्त] 1 पूरी
नरह सद्ध किया हुआ, पकित 2 पालित किया हुआ,
सम्पन्न 3 प्रायश्चित्त के द्वारा बिम्बु किया हुआ ।

संशुद्धिः (स्त्री०) [सम् + शु + क्तन्] 1 नितान्त
परिशीकरण, भय० १५१ 2 स्वच्छ करना, विमल
करना 3 सशोधन, समाधान, परिशोधन 4 स्वच्छता,
सफाई 5 (शुद्ध का) भुगतान ।

संशोधयन् [सम् + शु + क्तन्] परिशीकरण, स्वच्छता
आदि ।

संशुद्धम् (नपु०) [सम् + शु + क्त] दाव-पेच, जाहू-
गरी, इन्द्रजाल, मरीचिका—न० जाहूसर ।

संशुद्धः (भू० क० कृ०) [सम् + श् + क्त] 1 सङ्-
घित, सिकुड़ा हुआ 2 जमा हुआ, ठिठुरा हुआ
3 स्पष्ट हुआ 4 अवसन्न ।

संशुद्धः [सम् + शि + घञ्] विश्रामस्थल, आवास स्थान,
निवासस्थान, वासस्थान—परस्पर विरोधित्योरकस्यव-
दुर्बन्धम् विक्रम० ५१४४, रघु० ६१४१, इन अर्थों में
प्रायः सप्तम के अन्त में 'साय रतुने बाला' 'सबद्ध वा
विषयक' 'निर्दोषतासार'—ज्ञानिकुलकसधयाम्—स०
५११७, नीलस्यव—रघु० १६५७, मनोबोधिया
दिसिमीलिकस्यव—कु० ५१६०, द्विसधया प्रीतिवधाय

सध्मी - १।४३ एकार्थसध्दमभयो प्रयोगम्
 - आसक्तिं १ २. प्ररक्षण वा शरण की सोच, शरण
 के लिए दोबना, मिथता करना, पारस्परिक प्ररक्षण
 के लिए सध्दति होना, राजनीति में बंधित छ उपयोग
 में से एक, वे० 'गुण' के अन्तगत भी, मनु० ७।१६०
 ३ आश्रय, शरण, आश्रय, प्ररक्षण, एनाह- अन्वयानि
 सध्दयुग्मे गजभन्ने पतनाय बल्लरी कु० ४।३१
 मेघ० १७, पच० १।२२ ।

संशयः [सम् + श् + अच्] १ ध्यानपूर्वक सुनना २ प्रतिज्ञा,
 करार, वादा ।

संशयणम् [सम् + श् + ल्यट्] १ सुनना २ कान ।

सशित (भू० क० कू०) [सम् + शि + क्त] १ शरण में
 गया हुआ २ सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ ।

संश्रुत (भू० क० कू०) [सम् + श्र + क्त] १ प्रतिज्ञान,
 करार किया हुआ २ भली भाँति सुना हुआ ।

सश्लिष्ट (भू० क० कू०) [सम् + श्लिप् + क्त] १ बाधा
 हुआ, साथ साथ मिलकर हुआ, जुड़ा हुआ, मयुक्त
 २ आश्रित ३ संबद्ध, साथ साथ जुड़ा हुआ ४ मटा हुआ,
 सम्पर्सी, समकन ५ सुभोजन, युक्त, श्रित ।

सश्लेषः [सम् + श्लिष + घञ्] १ आश्रित, परिश्रम्य
 २ मिलाप, मन्थ, मयक ।

सश्लेषणम्-भा [सम् + श्लिष्य + ल्यट्] १ मिला कर
 भीचना २ साथ साथ बांधने का साधन ।

ससक्त (भू० क० कू०) [सम् + सञ्च् + क्त] १ साथ
 जुड़ा हुआ, चिपका हुआ २ ब्रवा हुआ, मलग्न,
 भासकर, मटा हुआ ३ साथ मिलाया हुआ, शृण्णला-
 बद्ध, पान पान मिला हुआ ग्य० ७।२४ ४ निकट,
 आसन्न, मटा हुआ ५ अर्थबन्धित थिका हुआ,
 मिश्रित, गड़बड़गड़ किया हुआ यदम् बन्धुनयो-
 मुक्तसमपत्तकेक मा० १।५, कलिन्दकन्या मधुरा गणा-
 दीप गङ्गादिमन्सनत्रनेत्र भानि ग्य० ६।४८, मा०
 ५।११ ६ डटा हुआ मुला हुआ ७ साथ, सहित
 ८ अकटा हुआ, प्रतिबद्ध । मम० धनसु (वि०)
 विमका मन कियो विषय पर ब्रवा हुआ हो, युध
 (वि०) जूए में जुटा हुआ, जोन कमा हुआ- वि०
 ३।३ ।

ससक्तिः [सम् + सञ्च् + क्तित] १ मटे रहना, घनिष्ठ
 मिलन या लगन कि० ७।२७ २ घनिष्ठ मयक,
 साथीप्य ३ आपसी मेलजोल, घनिष्ठता, घनिष्ठ परि-
 चय - शि० १।६७ ४ बाँपना, बिका कर अकटना
 ५ भक्ति, (किमी कार्य में) दुष्यन्तता ।

ससद् (स्त्री०) [सम् + सद् + क्विप्] १ मभा, यम्मितन,
 मडल -ससद्जुवाठे पुश्याधिकारे कि० ३।५१, छात्र-
 ससदि लज्यकीर्ति -यच० १, २, ३ १६।२ २ न्याया-
 लय मनु० ८।५२ ।

ससरणम् [सम् + सु + ल्यट्] १ जाना, प्रगति करना,
 चकर कर काटना २ सत्तार, सांसारिक जीवन, लौकिक
 सना धीमचक्रकममडलमीधम्यालससरणमतापित -
 मूर्त्त -आदि० ४।६ ३ जन्म और पुनर्जन्म ४ तेना
 का निर्वाण कृच ५ युद्ध का आरम्भ ६ राजस्यार्थ
 ७ नगर के दरवाजो के सरोप की धर्मशाला ।

ससर्गः [सम् + सृज + घञ्] १ सन्निधय, लगन, मिलाप
 २ सप्यकं, मगति, साहचर्य, समाज ससर्गमुक्ति
 बलेपु अर्तु० २।६२, म० २।३ ३ साथीप्य, मयस्य
 ४ मेल-जोल परिचय ५ मयून, सभोग मनु०
 ६।७२ ६ सह-अस्तित्व, घनिष्ठ संबन्ध । सय०

अभाव अभाव के दो मुख्य भेदों में म एक, मापेश
 अभाव जो तीन प्रकार का है (प्रथमाय पूर्वकर्मी
 अभाव, प्रथमभाव आपाती अभाव, और अय-ना
 भाव निरपेक्ष, जनमिन्द्र) दोष साहचर्य या
 मगति के विशेषकर कुसगति के फलस्वरूप उत्पन्न होने
 वाली बुराई या दोष ।

ससर्गिन् (वि०) [सम् + इति] मयुक्त, बिला हुआ,
 (पु०) महत्तर, साथी ।

ससर्गणम् [सम् + सृज् + ल्यट्] १ सन्निधय २ छोड़ना,
 परिग्राह्य करना ३ लारी करना, लुब्ध करना ।

ससर्ष [सम् + मृप् + ल्यट्] १ मरकता रंगना २ मय-
 मास, और का महीना जो शयमास वाले वर्ष में
 होता है ।

ससर्षणम् [सम् + मृप् + ल्यट्] १ मरकता २ अधानक
 आक्रमण, महमा धारा ।

ससर्षिन् (वि०) [सम् + इति] मरकते रंगना रंगने
 वाला, कु० ७।८१ ।

ससारा [सम् + सद् + घञ] मभा ।

ससाराः [सम् + सृज् + घञ] १ मार्ग गठना २ सामागिक
 वाहनबक, परमनिर्गेष जीवन लौकिक विद्वती,
 दुनिया अमा ममार उत्तर० १ मा० ५।३०,
 ससारधन्वमुषि कि सागमावर्तिसमाधना धूमयने
 -अव० २०, या, परिश्रितिन ससारे मृत को वा न
 जायते-यच० १।२७ ३ आवागमन, ग्यन्तान्तर, क्रम-
 परपरा ४ सामागिक अय । मम० -गणनम् आवागमन
 -यच. कायदेव का विमेषण, सारं । १ लौकिक
 बातों का क्रम, सामागिक जीवन २ योनिमय
 अग्रहार, लोक, - बोधनम् ऐदिक जीवन से दक्षिण ।

संसारिन् (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [ससार + इति] लौकिक
 दुनियावी, दृष्टान्तरायामी पु० १ लवीर शरना
 जीवजन्तु २ जीवधारी, जीवात्मा ।

ससिद्ध (भू० क० कू०) [सम् + सिध् + क्त] १ सर्वथा
 निरुपन्न, पूरा किया हुआ २ जिसे दोष की शिद्दि
 प्राप्त हो गई है, युक्त ।

संज्ञिः (स्त्री०) [सम् + सिच् + क्तिन्] 1 पूर्णता, पूर्ण निष्पन्नता स्वमुच्छ्रितस्य शब्दस्य सतिष्ठिर्हरितोव-
गम्—भाष०, कु० २।१३ 2 कैवल्य, मोक्ष—संज्ञि
पदाय गता—भव० ८।१५ ३।२० 3 प्रकृति, नैसर्गिक
वृत्ति, अद्वैत्या या गृह 4 प्रणयोन्मत्त या नष्ट में
वृत् स्त्री ।

समुच्चयम् [सम् + सूच् + क्तिन्] 1 प्रकट करना, सिद्ध
करना 2 सूचित करना, कहना 3 संकेत करना, भेद
बोधना अर्थस्य समुच्चयम् 4 भ्रमना, शिष्टकना ।

सन्निः (स्त्री०) [सम् + न् + क्तिन्] 1 मार्ग, पारा,
प्रकाश 2 लौकिक जीवन, समाश्रयक 3 देहान्तरग्रामन,
आश्रयग्राम-किं मा विनाशयति मन्मत्तिलनचप्ये—भाषि०
४।३० सि० १।५३ मु० 'ममता' ।

सन्पृष्ठ [मू० क० कृ०] [सम् + सूच् + क्त] 1 मिथिन
किया हुआ, साथ साथ कियाया हुआ, सम्मिलित
किया हुआ 2 साक्षीकारो की भाँति साथ साथ सबद्ध
3 प्रजात 4 पुनर्वक्त 5 फेसा हुआ, 6 निमित्त
7 मध्यस्थ बन्धो स मुच्यजित ।

सन्पृष्ठा-सम् [सम् + सूच् + क्त + ता (शब्द)] 1 सभा,
सम 2 (विधि में) आधिक्य हित की दृष्टि से बहु
बाधको को वैश्विक पुनर्मिलन (जैसे कि पिता और
पुत्र का अथवा भगवि के विद्याजन के परधान
भाष्यो का) ।

सन्पृष्टिः (स्त्री०) [सम् + सूच् + क्तिन्] 1 सभ्य,
विनाय 2 साहचर्य, मेल-मेल, सहभागिता साक्षीकारो
3 एक ही परिचय में मिलकर रहना दे० सन्पृष्ठा
(2) 4 मग्न 5 मध्य करना, जोड़ना 6 (सा०
में) एक ही मध्य में दो या दो से अधिक अलकारो
का म्वद्वय रूप से सह-अभिव्य- विधोऽन्येस्येतेषा
(सहाध्यायीद्वारायाद्) स्थिति सन्पृष्टिश्च्यने -सा०
६० ५५८ ।

सन्पेक्ष [सम् + सिच् + क्त] शिष्टकना, जल से तर
करना ।

सन्प्रेम् [मू०] [सम् + कृ + क्त] 1 जो मुद्राजित करता
है—माना बनता है, या किसी प्रकार की तीयारी
करता है—मनु० ५।५१ 2 जो अभिप्रेत करता है,
पहल करता है उभर० ७।१२ ।

सन्स्कार [सम् + कृ + क्त] 1. पूर्ण करना संस्कृत
करना, पालिका करना, (भाषि) प्रवृत्तसंस्कार इवा-
धिक बजो—रघु० ३।१८ 2 संस्क्रिया, पूर्णता, व्या-
करण की दृष्टि में (शब्दो को) विशुद्धता—कु०
१।२८ (यही मन्त्रि० 'व्याकरणव्या श्रुद्धि' लिखा
है) २५० १५।७५ 3 शिक्षा, अनुशीलन (मानसिक)
परिचालन—निर्णयसंस्कारविनीत इत्यस्ती नृपण चक
मुबराजशब्दाच् रघु० ३।३५, कु० ७।२०

4 तीयार करना, आनन्दना 5 आना बनाना, शोध्य
पदार्थ तीयार करना 6 मृदार, सबावट, झलकार
—स्वभावाबुध्दर वस्तु न संस्कारमपेक्षते—दृष्टात् ०
५१, सा० ७।२३, मुद्रा० ०।१३ 7 अभिमनजन, अन्त-
श्रुद्धि, पवित्रीकरण 8 छाप, रूप, सौधा, कायंवाही,
प्रभाव—यद्यपे भाजनं सज्य संस्कारो नाम्यथा यद्यत्
—हि० प्र० ८, भर्तु० ३।८५ 9 विचार भाव, प्रत्यय
10 मन स्थिति या धारिता 11 कार्य का प्रभाव,
किमी कम का गुण रघु० १।२० 12 अपनी पूर्व-
जन्म की वासनाओं को पुनर्जीवित करने का गुण,
छाप डालने की शक्ति, वैशेषिकों द्वारा माने हुए
बीबीस मुहूर्तों में से एक (यह गुण तीन प्रकार का
है—साधना, वेग और स्थिति-स्थायकता) 13 प्रत्या-
स्मरणसक्ति, स्मरण—संस्कारमात्रजन्य ज्ञान स्मृति
—तर्क० 14 श्रुद्धिसंस्कार, पुनीत कृत्य पुष्पसंस्कार
—संस्कारार्थं गरीर्य—मनु० २।६६, रघु० १०।७९
(यनु बारह संस्कारो का उल्लेख करता है—दे०
मनु० २।२७, कुछ केसक इस सख्या को सोलह तक
बढ़ाते हैं) 15 आधिक कृत्य या अनुष्ठान 16 उप-
नयन संस्कार 17 अनपेक्षित संस्कार 18 मात्रक
चयनके में काम जाने वाला पदार्थ, श्रावो—सा०
६।१९, (यही 'संस्कार' का अर्थ 'साधना' भी है) ।
सम०—पुत (वि०) 1 पुष्पकृत्यो द्वारा श्रुद्धि किया
हुआ 2 शिक्षा या अन्य संस्कारो द्वारा पवित्र किया
हुआ, श्रुद्धि बलित,—श्रीम (वि०) बहु द्विज को
संस्कार हीन हो, अथवा जिसका उपनयन संस्कार
न हुआ हो, और इस लिए जो श्राव्य (पवित्र, मानि-
बहिष्कृत) हो गया हो—मु० 'श्राव्य' ।

संस्कृत [मू० क० कृ०] [सम् + कृ + क्त] 1 पूरा
किया गया, परिष्कृत, मात्र कर चयकया हुआ,
आवृत्त—वाच्योका समलकरोति पुष्य या संस्कृता
वाच्येते—भर्तु० २।१९ 2 कृत्रिम रूप से बनाया गया,
सुरक्षित, सुनिश्चित, सुसम्पादित 3 तीयार किया गया,
संबारा गया, सुसंस्थित किया गया, पकाया गया
(शोखन) 4 अभिमनित, पुनीत किया गया
5 साधारिक जीवन में दीक्षित, विद्याहित 6 स्वच्छ
किया गया, पवित्र किया गया 7 अलङ्कृत किया गया,
सजाया गया 8 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम,—तः 1. व्याकरण
के नियमों के अनुसार शिष्ट किया गया सज्य, निवृत्त
व्युत्पन्न शब्द 2 द्विजाति का बहु ध्यात् विरसका
श्रुद्धिसंस्कार हो चुका हो 3 विद्वान् पुष्य,—जन्
1 परिष्कृत या अन्यत परिधातित भाषा, संस्कृत भाषा
2 आधिक प्रचलन 3 च्छाया, आहुति (बहुधा
वैशिक) ।

संस्क्रिया [सम् + कृ + क्त, इयच्, टाप्] 1 श्रुद्धिसंस्कार

- 2 अभिमन्त्रण 3 औषधवेदिकक्रिया, जन्मवेष्टि संस्कार ।
- सस्तम्भः** [सम् + स्तम्भ् + घञ्] 1 सहारा, टेक 2 दुर्ग करना, सबल बनाना, जमाना 3 विराम, यति 4 ब्रह्मना, लकवा ।
- सस्तपः** [सप्त + स्तु + अप्] 1 शय्या, पलम, बिस्तर नवपास्तवसमन्वयति ते म्भु० ८।५७ नवपास्तवस- स्तरे यथा स्वयिष्यामि तनु विराजामी - मु० ४।३४ 2 यज्ञ ।
- सस्तपः** [सप्त + स्तु + अप्] 1 प्रशंसा, स्तुति 2 जान- पड़वाना, धनित्पना, परिचय गणा श्रियवेद्रीयकता न सम्भव - कि० ६।२५, नवैर्गुणैः सम्प्रति समन- स्थिर तिरोहित प्रेम धनायमर्थिय ६।२० शि० ७।३१ ।
- सस्तपः** [सप्त + स्तु + घञ्] 1 प्रशंसा, स्तुति 2 सम्म- लित स्तुतिपाठ 3 यज्ञ में स्तुति पाठक शास्त्रणी क र्त्तव्य का स्थान ।
- सस्तुत** [सु० क० कृ०] [सम् + स्तु + क्त] 1 प्रशान्त, जिसकी स्तुति की गई हो 2 भिक्षक प्रशंसा किया गया 3 सम्मन, सहादी 4 धनित, परिचित ।
- सस्तुतिः** (स्त्री०) [सप्त + स्तु + क्तिन्] प्रशंसा, स्तुति ।
- सस्तथा** [सप्त + त्थे + घञ्] 1 सचय, राशि, सथात 2 सामीप्य 3 ऊँचा, प्रसार, बिस्तार 4 धर, निवासस्थान, आवास सप्तथासमेव मच्छाव मा० १।५ 5 परिचय, मित्रो या परिचितो की बालचीन ।
- सत्त्व** (वि०) [सप्त + त्वा + क्] 1 उड़ने वाला, हटा रहने वाला, टिकाऊ 2 रहने वाला, विश्रयान, धीरुद, स्थित (मांस के अन्न में) शिष्टा किया कस्य चिदाद्य- सत्त्वा मार्क० १।५६, कु० १।६०, मा० ५।१६ 3 पालतु, घरेयु बनाया हुआ, मधारा हुआ 4 स्थिर, अपल 5 ममान, नष्ट, मृत, स्वः 1 निवासी, वास्तव्य 2 पट्टीसी, स्वदेशवासी, 3 गुणधर ।
- सत्त्वा** [सप्त + त्वा + अङ् + टाप्] 1 सथात, मभा 2 स्थिति, प्राणी की अवस्था या दशा 3 रूप, प्रकृति - रपु० १।१३ 4 सथा, व्यवसाय, रहने-सहन का सथा हुआ तरीका पुक् मत्त्वात्थ निबन्ध मन० १।२१ 5 शूद्र और उच्चिन्न आश्रय 6 अन्न, पुति 7 विग्रह, यति 8 हाति, विनास 9 प्रन्व 10 अन्- कृपा 11 राजकीय आज्ञा 12 नोम यज्ञ का एक रूप ।
- सत्त्वात्मन्** [सप्त + त्वा + त्पुट्] 1 सचय, राशि भाषा 2 प्राथमिक अर्थों की समष्टि 3 सकलप, विनाम आकृतिरवयवसम्मानविधेय 4 नप आकृति, दर्शन, मूरत, सल्ल स्त्री सत्त्वान् चत्स्यस्तीर्थवागा- दुहितव्यंवा ज्योतिरेक जगाम- मा० ५।२९, मनु०

१।२६१ 5 सरचना, निर्वाण 6 पट्टीस 7 आवास का सामान्य स्थल, सार्वजनिक स्थान 8 स्थिति अवस्था 9 कोई स्थान या जगह 10 बीरता 11 निशान, चिह्न, विशेषक चिह्न 13 मृत्यु ।

सत्त्वात्मन् [सप्त + त्वा + त्पुट्] 1 एक स्थान पर रहना, सचय करना 2 जमाना, विधारेण करना, विनियमित करना कुर्वीत यथा प्रत्यक्षमर्थे सत्त्वात्म- न्य - प्रनु० ८।४२२ 3 स्थापित करना, पुष्ट करना 4 नियमित करना, दमन करना, मा 1 नियन्त्रण, दमन 2 शान्त करने के उपाय, सम्पापना पिपनरा विग्नानुगाम्य मूच्छ० १।३ ।

सत्त्वित (पु० क० कृ०) [सप्त + त्वा + क्त] 1 मास मास अडा होने वाला, 2 विश्रयान, ठहूरने वाला नियोगसत्त्वित - पथ० १।१२ 3 मरा हुआ मिला हुआ 4 मिलना-जुलना, सथान 5 सक्ति, गयीकृत 6 स्थिर, जमा हुआ, स्थापित 7 अन्वत्त करार रक्खा हुआ, प्रलंबनी 8 अचल 9 नेका हुआ पुन किया हुआ, अन्न तक निष्पन्न, समाप्त शं० 10 मन उपरान् १० सम् पुर्वक स्यात् ।

सत्त्विति (स्त्री०) [सप्त + त्वा + क्तिन्] 1 मास-मास होना, मिल कर रहना 2 सटा होना, निकटता सामीप्य 3 निवासस्थान, आवासस्थान, विश्रयान् यथा नदीनदा सथे मागने यान्ति सत्त्वितिम् मन्० ६।१० 4 सचय, शेर 5 अवधि कालान्तर्षि मन्० १।४३ 6 अवस्थान, स्थिति, जीवन की दशा 7 प्रति बध 8 मृत्यु ।

सत्त्वित् [सप्त + त्पुट् + घञ्] 1 सपत्न, छुना अभिमन मिश्रण 2 सुभा जाना, प्रजातिगत होना 3 पत्यश्रयान सिद्धत ।

सत्त्वित् [सप्त + त्पुट्] अच + डीष् एक प्रकार का सच बुलन पीषा ।

सत्त्विक [सत्त्वक स्थान- स्फुरज दम्य प्रा० क०] 1 मेंडा 2 बायल ।

सत्त्वित्, **सत्त्वित्** [सप्त + त्पुट्] - घञ्] सचय दृष्ट ।

सत्त्वित् [सप्त + त्पुट्] याद करना, मन में आना ।

सत्त्वित् (स्त्री०) [सप्त + त्पुट् + क्तिन्] याद उपरान्तरण सम्मतिर्भव सत्त्वित्प्रकार कि० १।८।७ ।

सत्त्वित्, **सत्त्वित्** [सप्त + त्पुट् + घञ्, घञ्] 1 ब्रह्म- टपकना विनास 2 मरिता 3 तर्पण का अवधारणता 4 एक प्रकार का चडावा या तर्पण ।

सत्त्वित् (पु० क० कृ०) [सप्त + त्पुट् + क्त] 1 मिलकर साधात किया हुआ, फायल 2 बन्ध, अवकट 3 सुप्रथित, दुवतापूर्वक बड़ा हुआ 4 मित्राकर जोडा हुआ, मिथना में बधा हुआ कि० १।१९, 5 सम्बन्ध

सकल (वि०) [करणया सह ब० सं०] कोमल, दयाल।

सकल (वि०) (स्त्री० स्त्री, -णी) [कण्ठेन खवणेन सह—ब० सं०] 1 कान बाला, जिसके कान हो 2 मुन्हे डाला, खोना।

सकल (वि०) [कर्मणा सह क० सं०] 1 कर्मयोग या कर्मकर्ता 2 (ग्या० में) कर्म रखने वाला, (क्रिया) कर्म से युक्त।

सकल (वि०) [कलया कलेन सह वा—ब० सं०] 1 भाग्य सहित 2 सब सम्पत्ता पूरा, पूरा 3 सब अका संयुक्त, पूरा (जैसे कि चाँद) यथा 'सकलेन्दु-मुक्ती मे' मरु या मरु स्वर वाला। मय० बण० (वि०) (मयान पर या वाक्य) क शीर म वर्णा से युक्त अर्थात् समष्टात्, (अर्थात् क+ल+ह) मल० २१४६।

सकल (वि०) [कलेन सह ब० सं०] यत्त सबन्धो कृप्या मे युक्त, वेद के कर्मकाण्ड का अनुष्ठाना, -मनु० २१६०-१७५ गिव।

सकाकाल [कार्काकल सह ब० सं०] इच्छीम तरका मे मे एक तरक दे० मनु० २१८९।

सकाम (वि०) [कामेन सह—ब० सं०] 1 प्रेमपूर्ण प्रयोजनन, प्रिय 2 कामनायुक्त कामो 3 सम्बन्ध, युक्त, युक्त, काम इदानीं सकामो यत्—श० ४ मय० (अर्थ०) 1 प्रयत्नपूर्वक २ मयाप के माप 3 विश्रामपूर्वक निम्न,येत।

सकाल (वि०) [कालेन सह, ब० सं०] मनु के अनुकूल समयवर्धित, लम्ब (अर्थ०) कालानुरूप, समय से पूर्व, ठीक समय पर लक्ष्ये।

सकाल (वि०) [कार्थेन सह—ब० सं०] दान देने वाला, दान प्रप्तुन, निकटवर्ती, ज उपस्थित पशुम सामीप्य (सकालम्, सकालम् कि० वि० की भाति प्रयुक्त, 1 निकट 2 निकट से पास से)।

सकृत् (वि०) [सह मयान कृत्वि यथ्य ब० सं०] एक ही काल से उत्पन्न, एक ही माना मे जन्म लेने वाला, सहोदर, (भाई भाई)।

सकुल (वि०) [कुलेन सह ब० सं०] 1 उच्चवयस से सम्बन्ध रखने वाला 2 एक ही कुल में उत्पन्न 3 एक ही परिवार का 4 सर्पाकार, ल 1 रिक्त, शर 2 एक प्रकार की मछली, मछली।

सकुल्य [ममाने कुले भव सकुल+यत्] 1 एक ही परिवार का 2 एक ही गोश का पशु दूध का विशेषदार, जैसे कि चौधो, पावनी, छठी या सातवी, आठवी अथवा नवी पीठी का 3 दूधनी रिलेदार।

सकुल (अर्थ०) [एक मूत्र, मूत्रक आदेश, मुखा लोप] 1 एक बार मूत्रदो निपतति मूत्रकन्या

प्रदीयते। सकुलदा वदानीति श्रीभ्येतानि सता सकुल मनु० ५१७ 2 एक समय, एक अवसर पर, पहले एक दफा—सकलप्रणयोग्य अत्र श० ५ 3 सुरजन 4 माघ साध-पु०, स्त्री० मल, विष्टा (श्राय) 'सकुल' शिवा जाता है। मय०—सर्था 1. लक्ष्मर 2 एक ही बार गर्भवती होने वाली स्त्री—प्रसन्न कौवा - प्रसूता, प्रसूतिका 1 वह स्त्री जिसके केवल एक ही सन्तान हुई हो 2 वह माय या केवल एक ही बार ज्यै हो,—कला केले वा कुल।

सकल (वि०) [कौशेन सह—ब० सं०] 1 याम, देने वाला, याममात्र - क. ठग, धनः।

सकौष (वि०) [कौषेन सह—ब० सं०] 1 यद् कृपित एम् (अर्थ०) क्रोधपूर्वक, गुस्सा से।

सकल (पु० क० कु०) [सक+ल] 1 शिवाका मुद्रा लया हुआ, सफुल 2 मयनप्रथम, अथवा, अनुकूल शोकोन मकरासि क कदव वैरिण मोगिपुत्र-मनु० २१५ 3 अयाया हुआ, अहा हुआ श० २११० 4 सम्बन्ध रखने वाला। मय०—वेर (वि०) 1 शक्यता मे प्रवृत्त, शक्यतापर विराय करने वाला—श० २११४।

सकिला (स्त्री०) [सकृत्+किलनः] 1 गुणके स्थल 2 मेल सङ्गम, यौवन उदारनयनस्यविला लता नाम कि० ५१६ 3 अनुराग बन्धुमेल प्रकित (किनी बन्धु के प्रति)।

सकलु (पु० ब० सं०) [सकृत्+लुन-लुक्] 1 मनु जो के भूत कर फिर पीस कर बनाया हुआ आटा, वी म तैयार किया गया आज़ल भिद्रासकलुभरव सप्रा 1 वय वीन समीहायहे—मनु० २१६६।

सकिय (मप०) [सकृत्+कियत्] 1 उषा/समाय २ उषा पूव तथा मंग शरद के पंचमास या उषा समाय म नूनना अभिषेक हा ता सकिय का बदल कर सकय २१ जाता है २० पा० ५१६०१ 2 उषा 3 गाड़ी का सट्टा।

सकिय (वि०) [क्रियया सह—ब० सं०] फर्माता तानिधीन।

सकल (वि०) [कार्थेन सह—ब० सं०] जिसके पास अवकाश हो।

सकिल (पु०) [सह मयान क्वापत क्वा+किल नि-] (कनु० मला, मलायो मयाय कर्म० मयाय मयायो मय०, ग० व० मयुत् अथ० ग० व० मयो) 1 मय मायो, महारथ, मयामाया श्रायया मयम मयमे २ उलप० ५१२० मकीनिव श्रीरपुश्रीश्रीकीन कि० ११० (मयाम के अन्त में सारि मय बदल कर मय हो जाता है इतिनामकानाम् - कु- ११२०, मयिबमय- मयु० २१००, २१६० २१६५ मद्रि० १११)।

सखी [सखि + स्त्री] सहयोग, सहचरी, नायिका की सहयोगी, -सुर्यानि युवतिजनेन सखि सखि विरहितजनस्य दुग्धे गोत्र० १ :

सख्यम् [सख्यर्थात् यत्] 1 मित्रता, पतिपत्नता, मैत्री, सुमुहूर्त्तं मन्त्रं रास्यम् समाजव्यसने हरी रघु० 121 ५७, संमानशौल्यमनेनैव सख्यम् मुभा० 2 समानता, स्याः निज ।

सख्य (वि०) [गणेश सह - ब० म०] दल जन सहित उपस्थित, सखि गिह का विशेषण ।

सखर (वि०) [गणेश सह - ब० म०] किरिया जहरीला, -र एक मूययणी राजा ; (यत्र बाहुगुण्य का पुत्र था, यत्र महिन पैदा होने के कारण इसका सखर पड़ा क्योंकि इसकी माता को इनके लिए की दुग्धने पत्नी ने बिय दे दिया था । सुर्यानि नाम की इसकी पत्नी ने इसके मातृ हृदय पुत्र हुए । इसने ००, यत्र सफलता पूर्वक मन्त्र प्रकिये, वस्तु जब भीषी बल होने लगा तो इन्द्र ने इसका घोड़ा उठा लिया और पालाज लोक ले गया । इन बात पर सखर ने अपने मातृ हृदय पुत्र का पाशा इतने का आदेश दिया, जब इस पुत्री पर पाश का फास न लगा तो वह पालाज में जाने के लिए इस पुत्री को छोड़ने लग, ऐसा करने पर समुद्र की सीमानी बर गई और इसी लिए वह 'साखर' के नाम से विख्यात हुआ १० रघु० 1213, जब उन्हें कालि कृषि के दग्धन हुए तो उन्होंने उस पर पाशा नृप न बंधे आरण्य ललाकार दूर भना कहा । ६ षि नं गण १० वे पाठ हृदय पुत्र मुदान अमर हो गए । फिर कई हृदय बर्ष के पश्चात् उनकी का वंशज भगीरथ गंगा की पालाज लोक ले जाने में सफल हुआ वहा उसने उनको भस्म का गंगा जल में डीब कर पवित्र किया तथा इस प्रकार उनकी आत्माओं को स्वर्ग में विजबाया ।

सखर्ष - सखी सह समानो गर्भो यस्य - ब० म०, समाने गर्भे धर यत् का महादेव भाई महावीर० ६१७७ ।

सख्य (वि०) [गणेश सह - ब० म०] 1 गुरुवान् गुरो मे युक्त 2 अन्वेषणो मे युक्त, सख्यो 3 भौतिक 4 (धनस्य की प्राप्ति) हेतु मे सुसम्पन्न, ज्यायुक्त 5 साहित्यिक गुरो मे युक्त ।

सखी (वि०) [सह समानो गणेशस्य - ब० म०] एक ही कुल में उत्पन्न बन्धु, रिश्तेदार, अ 1 एक ही पूर्वज की संज्ञान, म० ७ 2 एक ही कुल का, धाड, पिच्छ, तर्पण साथ करने वाला व्यक्ति 3 दूर का रिश्तेदार 4 परिचार कुल बत ।

सखि (वि०) [सखि + क्तिन् वि० गि, महस्य स] साथ-साथ, मिलकर भोजन करना ।

सख्य (वि०) [सख + कट्, सख् + कट् + अच्] का

1 सकरा, सिद्धका हुआ, नीडा, सकीण 2 बभध, अगम्य 3 पुत्र, भरा हुआ, जडा हुआ, सागरदार - सकटा क्वाडिगामीना रासकायैर्वृक्षम्वता - महावीर० ५:४३, उत्तर० ११५, दम् 1 भोडा रासा, सकीणं पाठो, तत्र दर्पो 2 क्रीडा, दूराता, जीविम, इर, यतना सकटैश्च विपण्यया - का०, सकटे हि परीक्षयते प्राजा शुगायच सखर बचा० ३१५३ ।

सख्य (वि०) [सख् + कट् + टाप्] समालाप, बानबोत ।

सखर (वि०) [सख् + कट् + अच्] 1 सम्मिश्रण, मिलावट, अन्तर्मिश्रण म० ० 2 साथ मिलान, येल 3 (जागिया का) मिश्रण या अन्वेषण, अन्तर्जातीय अर्थे विवाह विरुद्धा परिणाम मिश्रजातिया है विषयु वणेश्वर का०, भग०, म० ० मनु० १०:१०० 1 (अन०) दा या दा म अधिक आश्रित अनकार का एक ही मन्त्र में मिश्रण ; विप० समुद्रि जिनमें अन्तकार मन्त्र ही हान है अविद्यावि-जुषामयस्य ह्यैर्हित्व तु मन्त्र - बाल्य० १०, वा - अज्ञानिभ्यश्चन्द्रकीना नष्टकाश्रयस्मिन् । साधक्यन्ते व यवति मकराशिरस्य पुन मा० ६० ७५७ ७ पुल बुहारन कृडाकारकट, ही डे० नी० गकारी ।

सख्य (वि०) [सख् + कट् + ल्यट्] 1 मिलकर लीखने की क्रिया, सिद्धवन 2 आकषण 3 हल चलाना, बह निकालना सखरनाम का नाम - मकराशान्त् पर्यन्त ग ति मकरयन्तं यवा हरि० ।

सख्य (वि०) [सख् + कट् + अच् (भाव)] 1 सखह, मख 2 जोड़ ।

सख्य (वि०) [सख् + कट् + ल्यट्] 1 डर लगाने का क्रिया 2 सपकं सगम 3 टक्कर 4 परीक्षा, रिखा 5 (गण० में) धारा, जाड ।

सख्य (वि०) [सख् + कट् + क्त] 1 डर लगाना तथा बहू लगाना तथा सखित किया गया 2 साथ साथ मिलाया गया, अन्तर्मिश्रण 3 पकडा गया, हाथ में लिया गया 4 बाधा लगा ।

सख्य (वि०) [सख् + कट् + घञ, पुण, रण्य ल] 1 इच्छा-छक्ति, कामनाशक्ति, मानसिक दुहता - क काम सकल्प - दा० 2 प्रयोजन, उद्देश्य इरादा, विचार 3 कामना, इच्छा सकल्पमाशौचिनसिद्धयन्ते - रघु० १५:१७ 4 चिन्तन, विचार विषय, उपदेश, कल्पना तत्सकल्पं गतिरतिवदन्तमभ्यस्यन्ति साधम् - मा० १:३५, पूर्वकं सख्युत्पत्तौ नृजसमं नृ नीनोर्पति प्रया विवद्विम् - श० ३:४ 5 मन हूय, - पा० ७:१२ 6 कौर्त्तौ धार्मिक कृत्य करने की प्रतिज्ञा 7 किसी ऐच्छिक पुण्यकार्य से फल की आशा । म० - क, - कल्प (पु०) बोधि: कामवेध के विशेषण

-भवन्म ह्युपयोगे-मालवि० ४, कु० ३१२६.-क्य
(वि०) 1 ऐच्छिक 2 दृष्टा के अन्वय ।

सङ्कुच (वि०) [सम् + कृ + उक्तञ्] 1 अङ्घ्रि, चक्षु, परिचलनदीक, अविचिन 2 अनिचिन, मरिचि 3 बुरा, दुष्ट 4 निर्बल, बलहीन, कमजोर ।

सङ्कार [सम् + कृ + घञ्] 1 घृत्, ब्रह्मण कृडाकम्पक 2 ज्वालामा के चटस्थने का शब्द ।

सङ्कारी [मकार + झेप्] बहु लडकी त्रिमका कौमार्य अथो अथो मग हुआ हो, नई दलहिन ।

सङ्काय (वि०) [सम् + काय् + अच्] 1 मद्य, समान, मिलना-जुलना (समय के अन्त में) अर्थात् 'सिन्धु' 2 निकट, पास, नजदीक 3 1 दशम उपस्थिति 2 पद्यीय ।

सङ्कितः [सम् + किल् + क] जलनी हुई लवरी, जलनी हुई मसान ।

सङ्कीर्ण (भू० क० ह्र०) [सम् + कृ + क्त] 1 माघ माघ मिलाया हुआ, अनुसंधित 2 अद्ययन्वित, विभिन 3 बिम्बा हुआ, फोला हुआ, अचानक भरा हुआ 4 अम्पल 5 दान बराना हुआ, नष्ट म पूर हि० ४।१३ 6 वर्णनकर कानि का, अपवित्रकुटु या मकरजानि में जन्मा हुआ " श्रामी, दोगला 8 तय, सङ्कुचित, खं 1 मत्ता जानि हा काचिन 2 सिन्धु 3 बहु शायी शिशु समक से मद बराना हो, मन्महावी-कम् कटिनाई । मय० काति, योनि (वि०) वर्णनकर, टायनी नरन का (प्रेम कि लचनर), -वृद्ध अवस्थित लहारी लयकूल ।

सङ्कीर्णम्-जा [सम् + कृ + णिच् + घृत्, ईचय] 1 प्रसमा करना, मराहता स्तुति करना 2 (किना देवता का) पशोपान करना 3 भजन क कर में किनी देवता के नाम का अर्थ करना ।

सङ्कुचित (भू० क० क०), मय० कुच् + क्त] 1 विकारा हुआ, मरिान किना हुआ लक्ष्मण मङ्कुचित यथा यत् विक्रमाक० १।१३ 2 सिकुचन वाचा, श्रिया पत्रा हुआ 3. दका हुआ, बद किया हुआ 4 धारणा ।

सङ्कुच (वि०) [सम् + कृ + क्त] 1 अद्ययन्वित 2 आकार, अचानक भरा हुआ, पूर्ण-नलवनागपह-सङ्कुचापिग्यानिष्पदी कदमसर गति -घृ० ६।१०, मा० १।२ 3 विकृत 4 अमगल, लम्बी शीत, समष्ट, मोडभाड, मघर, छत्रा, लर-पहत परिजनय सङ्कुचने विधितयाया तम्भासायोरुत्थिम्-भा० १ 2 अद्ययन्वित लहारी, लयकूल 3 अवसन वा परम्पर-विग्राही भाषण-उदा०-वाचश्रीकमल योनी, बह्मचारी व मे पिता । माया तु मय कथ्येव पुत्रहीन पितामह ॥

सङ्कुच. [सम् + किल् + घञ्] 1 इवारर, इमिय

2 मितान, अचष्टा, मुद्राक-मद्रा० १ 3 इतिपरक चिह्न, निशानी पतीक 4 महरात, ममिमलन सङ्कुचो मुहूर्त जानी मुगदवचिमात् व मा० ६० १२

5 प्रेमी प्रेमिका का वा स्पर्िक ठहराच, नियुक्ति, (प्रेमी वा प्रेमिका के रिश्ते का) निरिष्ट स्थान मायमेन कृतमङ्गेन वादयेते मुनु बण्णु शीत० ५

6 (प्रेमियों का) मिलन-स्थल, समागम-स्थान कामाचिनी तु वा यानि मकेन मामिसारिका अमर० 7 प्रतिबन्ध, पानं 8 (स्था० में) माक्षण विवृति, मूत्र । सम्० - वृहम्, --विकेतनम्, --स्वान्-म् निरिष्ट स्थान, प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान ।

सङ्कुचक [सङ्कुच + क्त] 1 सहरान, मम्मिलन 2 नियुक्ति, निर्देशन 3 प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान ४ बहु प्रेमी वा प्रेमिका जो मिलने के लिए समय वा स्थान का मकेन करे सङ्कुचके चिन्तयति प्रहरो बिलाइ मृच्छ० ३।३ ।

सङ्कुलित (वि०) [सङ्कुच + इत्थच्] 1 ठहराया हुआ, मित-कर निश्चानुसार निर्धारण, साक्षान्केनित यात्र-मभिधने म वाचक काव्य० 2 आयन्वित, बुझाया हुआ ।

सङ्कुचः [मय् + कुच + घञ्] 1 सिकुटना, सिकन पडना 2 लोचण, न्योकोकल, मोचना 3 तान, भय 4 बट करना, मूदना 5 बाधना 6 एक प्रकार की मछली, कम् केनर, डाकगन ।

सङ्कुचनम् [मय् + कृच् + म्यट्] आ कूल का नाम ।

सङ्कुचम् [मय् + कृच् + घञ्] 1 सहरान संगमन, माय जाना 2 मरुजिन, यात्रा, स्थानालम्प, प्रगति 3 किमी बहू का एक अतिबन्ध म हुनरी राशि में जाना 4 मगन करना यात्रा करना म अम 1 कटिन वा मकरायात 2 मनु वृत् नदीमायेप च तथा मकमानवसादवेत्-मद्रा० १ किमी लय की प्राति का माघन, नामध सङ्कुचिण्य हरा०, सा-प्रतिचि स्वयंमङ्कचम्-यच० ६।० ।

सङ्कुचमयम् [मय् + मय + म्यट्] 1 मगमन, सहरान 2 मरुजिन, प्रगति, एक विन्दु से दुसरे बिन्दु पर जाना 3 मय्य का एक राशि में बुरारी राशि में जाना 4 मय्य के उत्तरायण में प्रवेश करने का दिन 5 मय्य ।

सङ्कुचल (भू० क० ह्र०) [मय् + कृ + क्त] 1... में म गया हुआ, अत्यन्त हुआ 2 अत्यन्तारित, स्थल, मरुजिन -उत्तर० १।१३ 3 पकरा, वृत्त 4 प्रति कलिन, प्रगतिवित 5 विधिः ।

सङ्कुचलित (स्था०) [मय् + कृ + किल् + क्त] 1 सममन, मय 2 एक बिन्दु से दुसरे बिन्दु तक का मार्ग, अचस्थानर 3 मय्य वा किमी और बह्मचु का एक राशि के

दूसरी गति में जाने का कार्य 4 स्थानान्तरण, (किसी दूरी में की) नीपना—सागिनः। प्रथमो मण्डपमण्डकान्त्यय — उत्तर० ३१६ 5 (अपना जान दूसरे तक) हस्तात्मरित करना, दूसरी की) विद्यादान की शक्ति — विद्या दे दार्थियन्त क्रियासङ्क्रान्तिमात्रण — मालवि० ११८, विद्या क्रिया करविद्याममन्वा मण्डकान्तरण्यय विद्योयुक्ता— ११६ 6 प्रतिमा, प्रतिदिन 7 विषय ।

सङ्क्राम दे० 'सम' ।

सङ्क्रोधनम् [सम् क्रोड् + क्युट्] मिल कर खेदना ।

सङ्क्रमेण [सम् + क्रिन्द् + घञ्] 1 तरी, नमी 2 गर्मी-धान के पश्चात् प्रथम घाम में सञ्चिन् हाने वाला रस जिसमें धूप के आर्थिक रूप का निर्माण होता है ।

सङ्क्रम्य [सम् + क्रि + अच्] 1 विनाश 2 पूर्ण विनाश या उन्मूलन 3 हानि, बर्बादी 4 अन्त 5 प्रलय ।

सङ्क्रान्तिः (स्त्री०) [सम् + क्रिप् + क्तिन्] 1 साथ साथ देवता 2 भावना, मतेरण 3 फेंकना भेजना 4 धाम म रहना ।

सङ्क्रान्त [सम् + क्रिप् + घञ्] 1 साथ साथ फेंकना 2 भीषणा छोटा करना 3 लापव, मरुति 4 निवाह, माया 5 फेंकना, भेजना 6 अपहरण करना 7 किसी अन्य शक्ति के कार्य में सहायता देना (सञ्चयेण, सञ्चयेत् (कि० वि०) वाह अजगो में, मङ्गल कार्य, मन्त्रेण मे) ।

सङ्क्रमणम् [सम् + क्रिप् + क्युट्] 1 द्वेष लगाना 2 छोटा करना, लम्पकरण 3 भेजना ।

सङ्क्रोश [सम् + कृम् + घञ्] 1 आन्दोलन, कपकपी 2 बाधा, हलचल - मूच्छं १ 3 उथल पुथल, उलट पुलट 4 घमट, अहंकार ।

सङ्क्रम्यम् [सम् + क्य + ञ्] मन्त्राय यद् सहाई मङ्कमे द्विवा ३१२२ चकार विक्रम ११६३ ३० वंशो ३१५५, मि० १८३० ।

सङ्क्रम्या [सम् + क्य + अह् + टाप्] 1 मलता, गिनती, द्विवाह लगाना मङ्कस्थासिद्धो धर्मरथकार १४० १६४७ 2 अर्क 3 अकबोयक 4 जाह 5 हेतु, समझ, प्रज्ञा 6 विचार, विमर्श 7 नीति; सम् - अस्ति, अस्ति (वि०) अमन्थ, अनगिनत, गणनातीत, बाधक (वि०) मन्था बोधक (क०) अक ।

सङ्क्रम्यात् (सं० क० इ०) [सम् + क्य + क्त] 1 गिता गदा 2 द्विवाह लगाना गदा गिता हुआ, तम् अक, ता एक धरा; ३ पारेली ।

सङ्क्रम्यात् (वि०) [सङ्क्रम्य + यत्] 1 सङ्क्रम्या वाला 2 हेतु न युक्त ३० विद्वान् पुत्रक ।

सङ्क्र [सङ्क्र भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मन्त समन (वैशे नदिवी का) 3 स्पष्ट,

सम्पर्क 4 सगति, साहचर्य, मैत्री, अनुपम सता सङ्क्रि सङ्क्रि कथमपि द्विपुष्येन अस्ति—उत्तर० २११, संश्लेषणस्य सगति में रहना, मङ्कमे में रहना,—मूयाः मर्ग सङ्क्रमणुप्रवर्तित मूया० ७ अनुगति, श्रौति, अभिलाषा—ध्यायतो विषयान्पुस सङ्क्रम्येपुत्रायो — मम० २१६२ 6 सासायिक विषयो में आसक्ति, मनुष्यो के साथ साहचर्य दोमंभ्यान्पुष्यतिवधयति यति सङ्क्राम् मने० २४४२ 7 मूठभेद, लडाई, श्रौति ।

सङ्क्रमिका [सम् + क्रम + क्युट् + टाप्, इत्वम्] शब्द वा अनुपम प्रवचन ।

सङ्क्रल (सं० क० इ०) [सम् + क्रम + क्त] 1 मिला, हुआ, मूडा हुआ, साथ साथ आया हुआ, साहचर्य से युक्त 2 एकत्रित, सञ्चिन्, मयोजित, सम्मिलित 3 प्रथमस्थिति में जाहट, विवाहित 4 मैथुन द्वारा मिला हुआ 5 साथ साथ भरा हुआ समचित, युक्तियुक्त, मवादी सं० ३६ 6 से युक्त (वैशे कि यही मे) 7 घिकनवाला सिक्का हुआ, दे० मम् पुत्रक 'धम्', तम् 1 मिलाप, सम्मिलन, मैत्री,—विक्रम० ५१२४, म० ५१२३ 2 मन्त्राज, मङ्कली 3 परिचय, मित्रता, अतिपटना—कृ० ५१३१ 4 सामञ्जस्यपूर्ण वा सुसगत वाणी, यक्तियुक्त टिप्पण ।

सङ्क्रान्तिः (स्त्री०) [सम् + क्रम + क्तिन्] 1 भेक, मिलना, समन 2 समन, महयोगिता, साहचर्य, पारस्परिक मैत्रिक मनी हि अन्धान्तरसङ्क्रान्तिम् १४० ३१५ 3 मैथुन 4 यौन करना बार बार आना-जाना 5 योग्यता, उपयुक्तता, प्रयाग्यकता, सगत, सम्बन्ध 6 युष्पटना, देवयोग, आकस्मिक घटना 7 ज्ञान 8 अधिक जानकारी के लिए पृच्छा ।

सङ्क्रान्त [सम् + क्रम + क्युट्] 1 मिलना, मेल विक्रम० ५१३०, १४० १२१६, ९० 2 साहचर्य, सगति, सहयोगिता, पारस्परिक मैत्रिक — जैता कि 'सङ्क्रि समन' में 3 सम्पर्क, स्थल—१४० ८१४४ 4 मैथुन वा रति-क्रिया अथ तते तिष्ठीति सङ्क्रयोस्तु सं० ३११६, १४० १९१३३ 5 (नदिवी का) मिलना, सम्बन्ध स्थान सङ्क्राममनवी सङ्क्रम 6 योग्यता अनुकूलन 7 मूठभेद, लडाई 8 (यही का) मयोग ।

सङ्क्रमणम् [सम् + क्रम + क्युट्] मिलना, मेल, दे० 'सङ्क्रम' ।

सङ्क्रम [सम् + क्रम + क्युट्] 1 सतिहा, करार, —सथेति तस्यासिद्धि प्रतीत प्रथमहीसङ्क्रमचरमया १४० ५१२६, १३१०, १३१०५ 2 स्वीकृति, हाथ में लेना 3 मोटा ३ सन्धान, मूडा, लडाई—अतस्त्वमृषीशता मूहुर्मूहत् सङ्क्रासावरणतीति १४० १६५३ 5 ज्ञान 6 नियम जाना 7 दुर्भाग्य, सङ्कट 8 विष ।

सङ्क्रमः [सङ्क्र भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मन्त समन (वैशे नदिवी का) 3 स्पष्ट,

सङ्क्रमः [सङ्क्र भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मन्त समन (वैशे नदिवी का) 3 स्पष्ट,

सङ्क्रमः [सङ्क्र भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मन्त समन (वैशे नदिवी का) 3 स्पष्ट,

सङ्क्रमः [सङ्क्र भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मन्त समन (वैशे नदिवी का) 3 स्पष्ट,

सङ्क्रमः [सङ्क्र भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मन्त समन (वैशे नदिवी का) 3 स्पष्ट,

सङ्क्रमः [सङ्क्र भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मन्त समन (वैशे नदिवी का) 3 स्पष्ट,

सङ्क्रमः [सङ्क्र भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मन्त समन (वैशे नदिवी का) 3 स्पष्ट,

सङ्क्रमः [सङ्क्र भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मन्त समन (वैशे नदिवी का) 3 स्पष्ट,

सङ्क्रमः [सङ्क्र भावे घञ्] 1 साथ मिलना, सम्मिलन 2 मिलना, मन्त समन (वैशे नदिवी का) 3 स्पष्ट,

से दूसरा है, जोर जब गाये दूहने के बाद चलने के लिए से जाई जाती है ।

सञ्जना: [सम् + जन् + क्त] प्रबन्ध, समासाय, बलशोचि ।
सञ्जन् (वि०) [सञ्ज + चिन्तु] 1 सञ्जना, मिला हुआ 2 अनुपत्त, प्रकाश, स्नेहयोग—शं० ५१११, रघु० १९११६, मालवि० ५१२, मीमं० ३१२६, ५११२५ ।

सञ्जीत (भू० क० इ०) [सञ्ज + वृत् + क्त] मिलकर गाया हुआ, सहगान, सम्मिलित कण्ठों से गाया हुआ, -तत् 1 सामूहिक गान, बहुत से कण्ठों से मिलकर गाया जाने वाला गान, -अणु सुकण्ठयो गन्धर्व्यं सञ्जीतं सह-मर्त्तुका—माय० 2 गायन, मधुर गायन, विक्षेपत बहु गायन जो नृत्य तथा वाद्ययन्त्रों के साथ साथ जाय, भिन्नाल युक्त गान गीत साथ नर्तन च अथ सञ्जीतमन्थने, किमप्यदस्या परिषद धृतिप्रसादनत सञ्जीतात् शं० १, मच्छ० १३ संगीत गोष्ठी, सहस्रगोत्रे 4 नृत्य बाध के साथ गाने की कला—मर्त्तु० २।१२। सम० अर्थ 1 संगीत प्रदर्शन का विषय 2 संगीतशास्त्र के लिए आक्षेपक नामश्री या उपकरण—मेघ० ५६,—आला गायनालय,—मा० २,—आश्वत्थ गानविद्या ।

सञ्जीतकम् [सञ्जीत + क्त] 1 संगीतगोष्ठी, सुरताल से बजत गान 2 सांस्कृतिक मनोरंजन जिसमें नाच-गाणा हो ।
सञ्जीव (भू० क० इ०) [सम् + ज् + क्त] 1 सम्मत, स्वीकृत 2 प्रतिज्ञात ।

सङ्ग्रह: [सम् + ग्रह् + अच्] 1 एकदना ग्रहण करना 2 मुट्टी बीचना, चवुल, पकड़ 3 स्वागन, प्रवेश 4 सर-क्षण, प्ररक्षण—तथा सामधानना च कुयदिन्द्रियस्य सङ्ग्रहं मनु० ७।११४ 5 अनुग्रहण, प्रमाणा, आदर-सत्कार करना, पालन-पोषण करना मनु० ३।१३८, ८।३११ 6 भरना, सङ्ग्रह करना, एकत्र करना, संघष करना—तं कृतप्रकृतिस्तद्ग्रहं रघु० ११।५५, १७।६० 7 सासन करना, अतिथि लगाना, निवन्धन करना 8 राशौकरण 9 सौजन्य 10 सङ्गृहीतम् (एक प्रकार का 'सवोध') 11 सम्मेलन करना, अवधारणा 12 सकलन 13 सारास, मार, संक्षेपण, मारसङ्ग्रह—सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये मधु० ८।११, इसी प्रकार 'तं सङ्ग्रहं' 14 जोड़, राशि, समष्टि करण कर्म कर्तेति विधिष कर्मसङ्ग्रह—मधु० १८।१८ 15 टालिका, हूची 16 अङ्गारगृह 17 बयल, केटा 18 उल्लेख, हवाला 19 बह्वचन, उच्चारण 20 वेध 21 विष का नाम ।

सङ्ग्रहणम् [सम् + ग्रह् + अच्] 1 एकदना, ले लेना 2 सहारा देना, प्रोत्साहित करना 3 सकलन करना, संघष करना 4 मङ्गल-मङ्गल करना 5 भरना, बडना—वनकर्मणसङ्ग्रहणोचित (मणि)—पद्य० १।७५

6 मँबुन, स्वीसभोग 7 अन्धकार मनु० ८।६, ७२, बाह्य० २।७२ 8 आला करना 9 स्वीकार करना, प्राप्त करना, -औ वैषिच ।

सङ्ग्रहीतु (पु०) [स + ग्रह् + तुच्] सारथि ।

सङ्ग्रहणम् [सङ्ग्रहणम् + अच्] रत्न, गूढ, लक्ष्य—सङ्ग्रहणाङ्गुण-भागतेन भवता चापे समारोपिते—काव्य० १०। मय०—विम्बु (वि०) युद्ध में जीतने वाला,—पद्मह. युद्ध में बड़ाया जाने वाला एक बड़ा भारी हाथ ।

सङ्ग्रहाह [सम् + ग्रह् + घञ्] 1. हाथ डालना, ले लेना 2 बलात् छीन लेना 3 मुट्टी बीचना 4 तलवार की मुठ ।

सङ्ग [सम् + ह् + अच्, टिलोप, घञ्] 1 समूह, सङ्घ, सम्बन्ध, इच्छ जैसे कि महाविषसङ्ग, मनुष्यसङ्ग 2 एक साथ रहने वाले लोगों का समूह । सम० शरिम् (पु०) मछली—जीविम् (पु०) किराये का मजदूर, कुली वृत्ति (स्त्री०) सचटनवृत्ति ।

सङ्गटना [सम् + वृट् + णिच् + युच् + टाप्] साथ साथ मिलना, मेल, सम्मेलन—रत्न० ४।२० ।

सङ्गट [सम् + वृट् + अच्] 1 सभर्षण के एक साथ बिसना, रसदना मरुतस्त्रयसङ्गटजन्मा (दवाग्नि) मेघ० ५३, मा० ५।३ 2 सङ्कर, षटपट, मुठमंड शि० २०।२६ 3 भिन्नता, सभर्ष 4 मिलना, सम्मिलन, टक्कर या स्पर्धा (जैस कि पत्थियों की) रघु० १४।८९ 5 आलिंगन—हुए एक बड़ी मना बेल ।

सङ्गटनम्—दना [सम् + वृट् + अच्] 1 बिना कर रसदना, सभर्षण 2 टक्कर, षटपट 3 घनिष्ठ सभर्ष, मनाब < सभर्ष, मेल, चिपकाव 5 पहलवानों का पारम्परिक लियटना 6 मिलना, मुठमंड ।

सङ्गसम् (अभ्य०) [सम् + ज्ञम्] मुँहों में, दल बनाकर ।

सङ्घर्ष [सम् + वृच् + घञ्] 1 दो चीजों की रगड़, वृष्टि 2 पीस डालना, बुरा करना 3 टक्कर, षट पट 4 प्रतिद्वन्द्विता प्रतिस्पर्धा, धेयुष्टना के लिए होड़,—नम्याश्च मम च किमिच्छिष्यसङ्घर्षे दण० नाटयाबा-र्वयोर्महांत ज्ञानसङ्घर्षो बाल धारुचि० १५ इध्या, डाह 6 सारकता, मन्व मन्व बहुना ।

सङ्घाटिका [सम् + वृट् + णिच् + भूल् + टाप्, इत्थम्] 1. ओहा, टप्टी 2 हुती, कुट्टी 3. गध ।

सङ्घाटकः—कम् [विधाया पुषो०] नाक का मल, सिपक ।

सङ्घात [सम् + ह् + क्त] 1 तथ, मिलाप, समाज 2 मनुशाय, ममबाय, सम्बन्ध, उपायसङ्घात इष प्रवृद्ध—रघु० १४।११, कु० ४।६ 3. बध, हाथ 4 कप 5 सम्मिश्रणों का निर्माण 6 मरक के एक प्रभाग का नाम ।

सङ्घटित (वि०) विस्मित, भयभीत,—सङ्घ (अभ्य०) कांते हुए, चीक कर, चीकना होकर, विस्मित होकर ।

सञ्चारिण (वि०) (स्त्री०-बी) [सम् + चर + गिति] ।

- 1 राशिशील, गमनीय-सञ्चारिणी नगर वेपथेव-मा० १, कु० ३१५४, ६१६७
- 2 पर्यटन, भ्रमण
- 3 परिवर्तन-शील, अस्थिर, क्वाल
- 4 दुर्गम अगम्य
- 5 अणभ-गुर जैसे कि भाव, दे० नी० 6 प्रभावशाली
- 7 आनुवंशिक, वंशपरम्पराप्राप्त (रोग आदि)
- 8 कृत का रोग
- 9 प्रबोधन, पू० 1 बापु, हवा
- 2 पूप 3 बहु क्षणभंगुर भाव जो स्वामी का शक्ति-सम्पन्न करता है दे० व्यभिचारिणु ।

सञ्चारी [सम् + चर + य + रीय] गुजरा की भाड़ी ।

सञ्चित (पू० क० ह०) [सम् + चि - क्त] 1 रेंग लगाया हुआ, सगुहील, जोरा गथा इकट्ठा किया गया 2 रफ्तार गया, जमा किया गया 3 गिना गया, गणना की गई 4 भरा हुआ, समृद्ध, युक्त 5 अधिक, अधिक 6 मजबूत, धिक्का (जैसे कि अंगल) ।

सञ्चिन्तितः (स्त्री०) [सम् + चि + क्तिन्] सद्यः सञ्चय ।

सञ्चिन्तय [सम् + चिन्त + क्त] विचार, विचार ।

सञ्चय [सम् + चय + क्त] पूर पूर करना ।

सञ्चय (पू० क० ह०) [सम् + छद् + क्त] 1 निपटा हुआ, हटा हुआ, छिपा हुआ 2 बरत रहने हुए ।

सञ्चयनम् [सम् + छद् + णिच् + क्त] इकना, छिपाना ।

सञ्चय (आ० पर० मज्जित, सत्त, इकागान या उकारान्त उपसर्ग के लगाने पर शानु का म् बदल कर व् हो जाता है) 1 सलान होना, जुड़े रहना, चिपके रहना, -सुप्यणिच् पू मनेयकदेव्यु पकरेणव (समञ्चु) -रपू० ४१४७ 2 अकडना कर्मबा० (सञ्चयते) सलान होना, चिपटना, जुड़े रहना प्रेर० (सञ्चयतिने) --इच्छा० (सिसकानि), अनु- 1 चिपकना, चिपटना 2 जुड़ना, साथ होना -सुप्यङ्ग० व व्यभिचय दुख शानिककारणम् । अनुपकने सदा देहे महा० उत्तर० ४१४, (कर्मबा०) चिपटना, जुड़ जाना (आल० से बी) -कर्मपूते व मनसि नमसीव न शानु रबीज्जुव-ज्येते -रपू० ६१४, १८११०, अच- , निरुचिचन करना, संलान करना, चिपटना, सँकना, रलाना-सि० ५११६, ७११६, ११७, कु० ७१२३ 2 शीपना, सुपुर्ण करना, निचिष्ट करना, (कर्मबा०) 1 सम्पर्क में होना, मिलने रहना-सुपू० ११५४ 2 अस्त होना, नुल जाना, उलपु-होना, आ- 1 अकडना, अमाना, जोड़ना, मिलापना, रलाना-बापमातृक कर्ते कु० २१६४, स० ३१२६ (नुचे) भूव व भूमेयीअल्लभ्य -रपू० २१७४ 3 अविद्यान करना, प्रेरित करना कि ११७४ 3 सिपुर्ण करना, निचिष्ट करना 4 चिपटना, कने रहना सि- 1 अने रहना, चिपटना, शाल किया जाना, रलाना जाना-कर्ते लयप्राप्तिसक-वाहं कु० ३१७, रपू० ११५०, १११००, १११५५

2 प्रतिबिम्बित होना-कु० १११०, ७३३६ 3 सलान होना प्र 1 चिपटना, जुड़ना 2 प्रयुक्त होना, अनु-करण करना, प्रयुक्त किया जाना, सही उतरना, ठीक बँटना इतनेतराणव प्रसज्येते, सँघमनेपुंघे नेचमग्य प्रसज्येते-शारी० 3 सलान होना, लयापवनी प्राप्त-जन् दश०, अस्ति , मिमाना, साथ-साथ जोड़ना, अग्नियजति पदाधानान्तर कीपय हेतु उत्तर० ६११० ।

सञ्चय [सम् + चय + क्त] 1 कड्या का नाम 2 गिब का नाम ।

सञ्चय [सम् + चि + अच्] पुनराट्ट के मारण का नाम, (सञ्चय ने कीरवो और पाण्डवों के झगडे में शान्ति-पूर्ण सम्झौता कराने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु निष्फल रहा; इसी ने अवे राजा पुनराट्ट का मरा-भारत के युद्ध का विवरण सुनाया-तु० अग० १११७

सञ्चय [सम् + चय + क्त] 1 शालीनाप 2 अन्वयस्थित इतनीच, उकवाद करना, गडबडे 3 शोरगुल, हंगामा ।

सञ्चयनम् [सम् + चय + क्त] चतु गाल, आपने सामने के चार घरो का समूह जिनके बीच में आगन बन गया है ।

सञ्चय [सञ्चय + टाप्] बकरी ।

सञ्चयनम् [सम् + चीय + क्त] 1 साथ साथ रहना

2 जीवित करना, जीवन देना, पुनर्जीवन, पुन मजी-कना 3 इकठ्ठी करके मने में एक नरक दे० सपू० ४१८२ 4 चार घरो का समूह, चतु गाल, --भी एक प्रकार का अमून (कहते हैं कि इमर्क मवन में मृतव भी पुनर्जीवन हो जाता है) ।

सञ्चय (वि०) [सम् + हा + क्त] 1 जिनके घटन चलने समय आपम में टकराने हा 2 हास में आया हुआ

3 नामशाला, नामक दे० नी० महा ४ अच् प्रकार का पीला सुगन्ध काष्ठ ।

सञ्चयनम् [सम् + हा + णिच् + क्त] पुकागमः, इच्छः) हुगा, बच ।

सञ्चय [सम् + हा + अच् + टाप्] 1 बेचना, हास--सञ्चय सञ्च, आपय या प्रीणियत् किं बेतन्य प्राप्त करना, हास में आना 2 जानकारो, समझ 3 वृद्धि, वर 4 सकेत, इतिहास, निदान, त्राह भाव--सुभाषितोका-गुलिसञ्चयेव मा चापनादीनि गणान् स्यवीधीत्--कु० ३१४१ 5 नाम, पद, अधिधान, इस अर्थ में प्राय समास के अन्त में-इन्दुवियुक्ता सुखत् अन्वजी -अ० १५१५ 6 (आ० में) 1 विषय अर्थ रखने वाला नाम वा सत्ता, व्यक्तित्वाचक सत्ता 7 'प्रत्यय' का परिभाषिक नाम 8 गायत्री मन्त्र, दे० गायत्री 9 विषयकर्ता की पुत्री और सुयं की पत्नी, सय, यत्री और योनी अधिवासी कुमारों की माता, (इस विषय में

एक उपाख्यान प्रसिद्ध है, बहने है एक बार सजा अपने पिनुगूह जाने की इच्छा करने लगी, उसने अपने पति सूर्य से अनुमति मांगी, परन्तु वह न मिल सकी। सजा ने अपनी इच्छापूर्ति का दृढ़ निश्चय कर लिया, अतः अपनी दिव्यशक्ति के द्वारा उसने ठीक अपने ही एक स्त्री का निर्माण किया, जो मानी उसकी छाया थी। और इन्हीं गिन उनका नाम छाया रखा। उस निर्मित स्त्री को अपने स्थान पर रख कर वह सूर्य को बिना बताये अपने पिनुगूह चली गई। बाह में सूर्य के छाया ने नीम बालक उत्पन्न हुए (दे० छाया)। छाया मूल पूर्वक सूर्य के साथ रहती जब सजा बापिन आई तो सूर्य ने उसे घर में नहीं रक्खा। अपमानित और निराश होकर सजा ने बोड़ी का रूप धारण कर बिदा की पत्नी पर दमन ले ली। समय पाकर सूर्य को वस्तुनिर्वाण का पता लगा, उसने जाना कि उसकी पत्नी बोड़ी के रूप में घुमती है। फलतः उसने भी बोड़े के रूप धारण कर अपनी पत्नी से समागम किया। उसमें उसके अश्रितनी कुमार नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। सम० अक्षिकाः एक प्रधान नियम त्रिमके अनुसार तदन्यतम नियमों का विशेष नाम रक्खा जाता है, और वे सब नियम उससे प्रभावित होते हैं। विषय विशेषण—सुख धनि का विशेषण।

सम्मानम् [सम् + श्ना + म्यट्] जानकारो, समक।

सम्भाषणम् [सम् + भा + शिष् + म्यट्, पुक्] 1 सूचित करना 2 अध्यापन 3 बच, हृष्या।

सम्भाषणम् (वि०) [सम्भा + शतुप्] 1 मन्थन, होक में आया हुआ, पुनर्जीवन 2 नाम बाका।

सम्झित (वि०) [सम्झा + इत्] नाम बाका, नामक, नाम धारी।

सम्झित् (वि०) [सम्झा + इति] 1 नामधाना 2 जिसका नाम रक्खा जाय।

सम्झु (वि०) महने जानूनी यस्य—ब० म०, जानुष्याने ज्ञुः जिसके घटने चलते समय टकाते हो।

सम्झ्वर [सम् + झ्वर् + अच्] 1 अतिताप, दुःख 2 गर्मी 3 शप।

सद् (स्त्री०) पर मटलि) बांटना, भाष बनाना।

॥ (चुरा० उ०० साटयति—ते) प्रकट करना, प्रदर्शन करना म्यट् करना।

सद्वन्, सदा [सट् + अच् + टाप् वा] 1 नम्याती की जटायु 2 (मिह की) अद्यान—पुशा० ७१६, सि० ११४० 3 सुअर के सजे बाल विचननुद्धतसटा प्रतिहनुमीधु—रचु० ११६० 4 सिता, घोटी। सम०—अच्छुः मिह।

सद् (चुरा० उ०० साटयति ते) 1. अति पूर्वधाना,

मार डालना 2 बलवान् होना 3 देना 4 लेना, 5 रहना।

सद्गुणम् [सद् + गुणम्] प्राकृत भाषा का एक उपपदक, उदा० कर्पूरमञ्जरी—दे० शा० द० ५४२।

सद्वा (स्त्री०) [सद् + व, पूर्वो०] 1 एक पक्षिबिधेय 2 एक वाद्ययंत्र।

सद् (चुरा० उ०० साटयति—ते) 1 समाप्त करना, बुरा करना 2 अचुरा छोड़ देना 3 जाना, हिनता-नुसना 4 अलङ्कृत करना, सजावना।

सत्समूहम् [= सत्समूह, पूर्वो०] सत् की घनी बोटी या रस्ती।

सत्त्वं दे० 'पदम्'।

सत्त्विकः [= सत्त्व, पूर्वो०] चिमटा या सडाही।

सत्त्विकम् [सत् + वी + क्त] पक्षियों की चिचि उड़ानों में से एक, दे० 'वीन'।

सत् (वि०) (स्त्री०—) [सती + शतृ, अकारभोयः]

1 बर्तमान, विद्यमान, मौजूद—सत्तः स्वतः प्रकाशते गुणा न परतो नृणाम् भावि० ११२० घ० ७१२२

2 वास्तविक, असली, सत्य 3 अच्छा, सत्त्वमत्तपान, बर्माया या सती—सती बोधविद्युष्टेहा—कु० ११२१, घ० ५१३० 4. कुलीय, योग्य, उच्च, जैसा कि 'सत्कुलम्' में 5 ठीक, उचित 6 सर्वोत्तम, श्रेष्ठ

7 आत्मानवीय, आचरणीय 8 बुद्धिमान्, विद्वान् 9 मनोहर, सुन्दर 10 दृढ़, स्थिर,—(पुं०) महपुत्र,

सत्पुत्री व्यक्त, अवि—आवात हि विचाराय सतां वारिणामिब—रचु० ४८६८, अविस्तं परकावङ्कता सता मधुरमातिशयेन बधोऽमृतम् भावि० ११११३,

पर्व० २११८, रचु० १११०, (समु०) 1. जो वस्तुतः विद्यमान हो, सत्ता, अस्तित्व, सर्वविरपेक्ष सत्ता,

2 वस्तुतः विद्यमान, सच्चाई, वास्तविकता 3 यह, जैसा कि 'सत्सत्' में 4 बहू या परमात्मा, (सत्त्व आचर करना, सम्मान करना, सत्कार करना)।

सम० असत् (सत्सत्) (वि०) 1 विद्यमान और अविद्यमान, मौजूद, जो मौजूद न हो 2 असली और नकली 3 सत्य और मिथ्या 4 भला और बुरा, ठीक और गलत 5 पुण्यात्मा और दुष्ट (सु०) ६०

ब०) 1 अस्तित्व और अस्तित्व 2 सच्चाई और बुराई, ठीक और गलत, 'विवेकः सच्चाई और बुराई में अथवा सत् और दुष्ट में विवेक, 'अस्तिहेतुः सच्चाई और बुराई में विवेक का कारण—सत्तः

शतुवर्हीति सत्सत्त्वमिहेतुः—रचु० १११०, —आचारः (सत्साचारः) 1 सत्त्वमहत्कार, शिष्ट आचरण 2 मामी हुई रत्न, परंपरागत धर्म, स्वरपातीत प्रथा मनु० २११८, असत्त्वम् (वि०) पुत्री, गड,—असत्त्व उचित वा अच्छा बचान,—असत्त्व

सम० असत् (सत्सत्) (वि०) 1 विद्यमान और अविद्यमान, मौजूद, जो मौजूद न हो 2 असली और नकली 3 सत्य और मिथ्या 4 भला और बुरा, ठीक और गलत 5 पुण्यात्मा और दुष्ट (सु०) ६०

ब०) 1 अस्तित्व और अस्तित्व 2 सच्चाई और बुराई, ठीक और गलत, 'विवेकः सच्चाई और बुराई में अथवा सत् और दुष्ट में विवेक, 'अस्तिहेतुः सच्चाई और बुराई में विवेक का कारण—सत्तः

शतुवर्हीति सत्सत्त्वमिहेतुः—रचु० १११०, —आचारः (सत्साचारः) 1 सत्त्वमहत्कार, शिष्ट आचरण 2 मामी हुई रत्न, परंपरागत धर्म, स्वरपातीत प्रथा मनु० २११८, असत्त्वम् (वि०) पुत्री, गड,—असत्त्व उचित वा अच्छा बचान,—असत्त्व

सम० असत् (सत्सत्) (वि०) 1 विद्यमान और अविद्यमान, मौजूद, जो मौजूद न हो 2 असली और नकली 3 सत्य और मिथ्या 4 भला और बुरा, ठीक और गलत 5 पुण्यात्मा और दुष्ट (सु०) ६०

ब०) 1 अस्तित्व और अस्तित्व 2 सच्चाई और बुराई, ठीक और गलत, 'विवेकः सच्चाई और बुराई में अथवा सत् और दुष्ट में विवेक, 'अस्तिहेतुः सच्चाई और बुराई में विवेक का कारण—सत्तः

शतुवर्हीति सत्सत्त्वमिहेतुः—रचु० १११०, —आचारः (सत्साचारः) 1 सत्त्वमहत्कार, शिष्ट आचरण 2 मामी हुई रत्न, परंपरागत धर्म, स्वरपातीत प्रथा मनु० २११८, असत्त्वम् (वि०) पुत्री, गड,—असत्त्व उचित वा अच्छा बचान,—असत्त्व

(सन्०) 1 मुच्युक्त या पुष्यकार्य 2 सन्पुष्य, पाच्यता 3 भातिष्य, काच्यः बाय, चील, कारः 1 कृषा तथा भातिष्यपूर्णं व्यवहार, कार्यादुक्त स्वागत 2 सम्मान, आर 3 वेसभाल, ध्यान 4 भोजन 5 पर्ब, बायिक त्योहार, कुच्यन् सक्तुल, उत्पन्न कुल, कुलीन (वि०) उत्पन्न कुल में उत्पन्न, उत्पन्नकुलोत्पन्न, कुल (वि०) 1 भलीभाति या उचित इत् से किया गया 2 सत्कार पूर्वक स्वागत किया गया 3 पूज्य, प्रतिष्ठित, सम्मानित 4 पूजित, अलङ्कृत 5 स्वागत किया गया, (सः) शिव का विशेषण, (सब) 1 भातिष्य 'सन्पुष्य, भातिता —कृति, (स्त्री०) 1 सादर व्यवहार, भातिष्य, भातिष्यपूर्णं स्वागत 2 सन्पुष्य आचार, —विष्या 1 सन्पुष्य, मलाई—मकुललां मूति स्त्री च सतिक्त्या-सं ५११५ 2 धर्मधना, सन्पुष्य, पुष्यकार्य 3 भातिष्य, भातिष्यपूर्णं स्वागत 4 पिप्टाचार, अविचारण 5 शुद्धिसत्कार 6 अदोषि सत्कार, औद्योगिक किया, गतिः (स्त्री०) (सन्पुष्यः) उत्पन्न स्थिति, भाग्य, स्वर्गयुक्त, —बुध (वि०) अच्छे गुणों से युक्त, पुष्यप्रभा, (कः) पुष्यकार्य, उगमना, मलाई, नैकी—अरिष्य, अरिष्य (वि०) (सन्पुष्यः) —(क) सहाचारी, ईमानदार, पुष्यप्रभा, चर्चाया मूनु सन्पुष्य—मर्ग २१२५, (सन्०) 1—सहाचारी, पुष्याचरण 2 अद्भुतको का इतिहास—सं १, चारा (सन्पुष्या) हत्वी—विष् (सन्०) (सन्पुष्य) पर-माया, अज्ञाः सत् और चित्त का भाग, अज्ञान्य (पु०) सत् और चित्त से युक्त आत्मा अज्ञान्य 'सत् या अतिव्य, ज्ञान और हर्ष परमात्मा का विशेषण, —अनः (अन्यतः) अत्र पुष्य, पुष्याया, —अन्य कमल का मया पत्ता, अचः 1 अच्छा मर्ग 2 कर्तव्य का सम्मान, सुडाचारण, पुष्याचरण 3 शास्त्र-विहित मित्रात, —अरिष्यः बोधय स्थिति से (ज्ञान) ग्रहण करना, —अनः यज्ञ में ही जाने वाली शक्ति के लिए उत्पन्न पशु, मुचाह यज्ञीय शक्ति, —आन्य पापय स्थिति, पुष्याया, अर्चः बोधय आदाला के प्रति अनुग्रह की शक्ति, बोधयस्थिति के प्रति उदारता का अर्थ, 'अविष् (वि०) पात्रता का विचार कर दान भादि देने वाला, —अनः 1 अना पुष्य, बोधय पुष्य 2 बहु पुष्य को अतिरों के सम्मान में सजी विहित कर्मों का अनुष्ठान करे, —अतिपन्नः (उर्क० में) पीछ प्रकार के श्रेष्ठाभासों में से एक प्रति अनुष्ठान हेतु, बहु हेतु जिसके विपक्ष में अन्य मन्त्र भ हेतु भी हैं, उदा० 'सद्य नित्य है श्वो कि बहु अर्थ है, —अन्य अतिपन्न है सर्वोक्ति यह उपपन्न हुआ है, —अनः अनार का पेश, अचः (अन्यतः) 1 यता, विद्य-

मायता, अतिव्य 2 अनुस्थिति, अतिव्यकता 3 सन्पुष्य, अच्छा स्वभाव, नोजन्य 4 यता, साधुता, —आयुः (सन्पुष्यः) धर्मपरायण भाता का पुष्य, —अचः (सन्पुष्यः), जिसका केवल अतिव्य माना जाय, पीछ, आत्मा, अचः (सन्पुष्यः) अद्भुतको का सम्मान, अविष् (सन्पुष्यम्) विद्याभाषण शिव, अच्यति (स्त्री०) सती साध्वी स्त्री, अच्य (वि०) अच्छे कुल का, कुलीन, —अच्य (सन्०) अचिकर तथा मुच्य भाषण, —अच्य (सन्०) 1 अच्छी वस्तु 2 अच्छी कथावस्तु—विचन० ११२, —अच्य (वि०) मुनिगिन, बहुधुन, अच्य (वि०) 1 अच्छे व्यवहार का, सदाचारी, पुष्याचरण करने वाला, अर 2 विष्णु गोल, अनुष्ठाकार सन्पुष्य सन्पुष्यसत्त्व क्य प्राणीयं कायति—गीत० ३, (यहाँ) दानो अर्थ अतिपन्न है, (सन्०) 1 सहाचारी, पुष्याचरण 2 अच्छा स्वभाव, नोचक प्रकृति, —अन्यतः, सन्पुष्यम्, सन्पुष्य, —अच्यति, अच्यतः, अने अच्यतों का असाज या अद्भुत, अने अच्यतों का असाज या अच्यतों, अने अच्यतों की असाज—तथा अच्यतियापेन मुर्कं दाति प्रतीत्याय वि० १—अच्यतों सही प्रयोग, —अच्य (वि०) अच्छे विष् जिसके सहायक है, (क) अच्छा साथी—अर (वि०) अच्छे रम वाला (र) 1 एक प्रकार का वृक्ष 2 कवि 3 अच्यकार, —हेतुः (अद्भुत) निर्दोष अच्यत वैद्य कारण ।

सत्त (वि०) [सन् + सत् + क्त, सय अन्वयलोग] निरतर नित्य, सदा रहने वाला, सत्तत्त्व, —सत् (अर्थः) लगातार, अविच्छिन्न रूप में, नित्य, सदा, प्रमेजा - सुलभा पुष्या राजन् सत्त प्रियवादिन—राज० ; सप०—स—अति बाध—अतिपन्नसे सत्तत्त्वतीन सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों कायों—इवा०, सत्तत्त्वः सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों में से एक १५, अच्यत नीता सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों में से एक १५, अच्यत्त्व (वि०) 1 सदैव अतिपन्न 2 अच्यतः ।

सत्तत्त्व (वि०) [सत् + क्त + क्त, सय अन्वयलोग] निरतर नित्य, सदा रहने वाला, सत्तत्त्व, —सत् (अर्थः) लगातार, अविच्छिन्न रूप में, नित्य, सदा, प्रमेजा - सुलभा पुष्या राजन् सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों कायों—इवा०, सत्तत्त्वः सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों में से एक १५, अच्यत नीता सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों में से एक १५, अच्यत्त्व (वि०) 1 सदैव अतिपन्न 2 अच्यतः ।

सत्तत्त्व (वि०) [सत् + क्त + क्त, सय अन्वयलोग] निरतर नित्य, सदा रहने वाला, सत्तत्त्व, —सत् (अर्थः) लगातार, अविच्छिन्न रूप में, नित्य, सदा, प्रमेजा - सुलभा पुष्या राजन् सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों कायों—इवा०, सत्तत्त्वः सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों में से एक १५, अच्यत नीता सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों में से एक १५, अच्यत्त्व (वि०) 1 सदैव अतिपन्न 2 अच्यतः ।

सत्तत्त्व (वि०) [सत् + क्त + क्त, सय अन्वयलोग] निरतर नित्य, सदा रहने वाला, सत्तत्त्व, —सत् (अर्थः) लगातार, अविच्छिन्न रूप में, नित्य, सदा, प्रमेजा - सुलभा पुष्या राजन् सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों कायों—इवा०, सत्तत्त्वः सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों में से एक १५, अच्यत नीता सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों में से एक १५, अच्यत्त्व (वि०) 1 सदैव अतिपन्न 2 अच्यतः ।

सत्तत्त्व (वि०) [सत् + क्त + क्त, सय अन्वयलोग] निरतर नित्य, सदा रहने वाला, सत्तत्त्व, —सत् (अर्थः) लगातार, अविच्छिन्न रूप में, नित्य, सदा, प्रमेजा - सुलभा पुष्या राजन् सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों कायों—इवा०, सत्तत्त्वः सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों में से एक १५, अच्यत नीता सत्तत्त्वः अतिपन्न अर्थों में से एक १५, अच्यत्त्व (वि०) 1 सदैव अतिपन्न 2 अच्यतः ।

स] सहाय्याधी, साथ अध्ययन करने वाले सहकारी ।

सतीक्ष्ण [सती + क्ष्ण् + ष] 1 बाण 2 हवा, वायु 3 मटर, दाल (स्त्री० भी) ।

सतेर [सत् + एर, तान्नादेश] मूली, शोरकर ।

सत्ता [सत् + त्त् + टाप्] 1 अस्तित्व, विद्यमानता, होने का भाव 2 बहुस्थिति, वास्तविकता 3 उच्च-तम जाति या साम्राज्य 4 उलमता, झेप्टता ।

सत्त्वम् [बहुधा सत्त्वं - लिखा जाता है, मन् + ष्ट] 1. यज्ञाय अर्वाध हो प्राय १३ से १०० दिन तक होने वाले यज्ञों में पाई जाती है 2 यज्ञभाष 3. ब्राह्मि, चडावा, उपहार 4 उदारता, बदाभ्यता 5 सत्गुण 6 पर, निवासस्थान 7 भाषण 8 धनदीलत 9 प्रगल्भ, बल कि० १३:१, 10 ताकाब, पोस्तर 11 जालमायी, ठगना 12 सत्त्वगुह, बाधम, बाधय-न्याय । सम० अक्षय्य (सत्) यज्ञों का चलने वाला दीघ कार्यकाल ।

सत्त्वा (अव्य०) [सद् + त्त्] के साथ, मिल कर, गठित । सम० ह्य् (पु०) इन्द्र का विशेषण ।

सत्विः [सद् + वि] 1 बादल 2 हाथी ।

सत्विष्णु (पु०) [सत्त्वं + इति] जो निरन्तर यज्ञ-नुष्ठान करता रहता है, यज्ञो गृहस्थ जि० १:१३:२ ।

सत्त्वम् (प्रथम दश अर्थों में पु० भी होता है) [सती भाव सत् + त्व] 1 होने का भाव, अस्तित्व, सत्ता 2 कृति, मूलतत्त्व 3 स्वाभाविक धरित्र महत्त्व 4 जीवन्, जीव प्राण, जीवनी शक्ति, प्राण-शक्ति 5 सिद्धान्त शं० २:१ 3 वेदना, मन, ज्ञान 6 भूष 7 तत्कार्यं यस्तु, सत्पति 8 मूलतत्त्व, जैमि कि पुष्पी, वायु, अग्नि आदि 9 प्राणकारी जीव, जानदार, जन्तु, -बन्धात्, विनेष्यन्विण्णुत्सन्धात् - रघु० २:१८, १५:१५, शं० २:१० 10 भूत, प्रेत, पिशाच 11 भद्रता, सद्गुण, झेप्टता 12 सचाई, दानविवृता, निरचय 13 सामर्थ्य, ऊर्जा, माहय, बल, शक्ति, अन्तर्हित शक्ति, बहुतत्त्व विसेले पुत्रय बनना है, पुत्रवार्थ किमामिच्छि सत्त्वे प्रवर्ति भद्रता नोपकरणे - मुग्धा - रघु० ५:३१, मुग्धा० ३:२२ 14 बुद्धि-मत्ता अक्षी सनक्ष 15 भद्रता और सुचिता का सर्वोत्तम गुण, साधिका, (देहों तथा स्वर्ग्य प्राणियों में यह बहुतायत से पाया जाता है) 16 स्वाभाविक गुण या लक्षण 17 उन्ना, नाम । सम० अनुत्त्व (वि०) मनुष्य के सहज स्वभाव या अन्तर्हित धरित्र के अनुसार - मनु० २:३० 2 आने साधन या सपत्ति के अनुसार रघु० ७:३२, (यही मूलि० स्वाध्याय प्रकथानुक्रम उक्त्युक्त प्रतीत नहीं होती), - उद्देशक 1. भद्रता के गुण का साधिका 2 साहस वा सामर्थ्य

में प्रयुक्तता, स्वल्पम् धर्म के लक्षण - वा० ५,

- विस्मयः वेतना की हानि, विहित (वि०)

1. प्राकृतिक 2 सद्गुणी, पुण्यात्मा, सारा, -सत्त्विकि (स्त्री०) प्रकृति की परिचयना या सरोपन, -सत्त्विकि (वि०) सद्गुणों में यत्न, पुण्यात्मा, -सत्त्विकि

1 बल या सामर्थ्य की हानि 2 विस्मयिनाश, प्रलय, -सारः 1 सामर्थ्य का मार, असाधारण साहस

2 अत्यन्त शक्तिशाली पुरुष, -स्व (वि०) 1 अपनी प्रकृति में स्थित 2 पशुओं में अन्तर्हित 3 सतीव

4 सद्गुण विविध, उत्तम, झेप्ट ।

सत्त्वमेवम् (वि०) [सत्त्वं + एत् + विच् + लच्, मम्]

पशुओं या जीववारी प्राणियों को इराने वाला ।

सत्त्व (वि०) [मते हिनम् - सत् + यत्] 1 सत्त्वा, दानविक, असली, जैसा कि सत्यव्रत, सत्यवच में

2 ईमानदार, निष्कपट, सत्त्वा, निष्ठावान् 3 सद्गुणसम्पन्न, सारा, स्वः ब्रह्मज्ञाक, सत्त्वोक्त, भूमि के ऊपर मान लोगों में सबसे ऊपर का लोक - दे० लोक

2 पीपल का पेड़ 3 राम का नाम 4 विष्णु का नाम

5 नदीमुख धारा की अधिष्ठात्री देवता, -स्वम्

1 सचाई - मोनात्म्य विधिस्थले - मनु० २:१८, स्वयं

बु 1 मय बोलना 2 निष्कपटता 3 भद्रता, सद्गुण, सुचिता 4 सत्य, प्रतिज्ञा, शरीर दुःशक्ति - सन्धात्

गृहमलोपयन् - रघु० १२:१, मनु० ८:११३ 5 सचाई, प्रदमित सच्यता वा कवि 6 चारों युगों में पहला युग, स्वर्णयुग, मन्वयुग 7 पानी, -स्वम् (अब्य०) सत्त्व-मुच, वस्तुतः, निरसदेह, निरध्वय ही वस्तुतन्मन् - मन्व

यापति ते पादपुङ्गवर्षेते - शं० कु० ६:१११ मम०

अनृत (वि०) 1 सच और मिथ्या - सन्धात्ता च

पक्षवा - हि० २:१८३ 2 सच प्रतीत होने वाला परन्तु

मिथ्या (-सत्, -ते) 1. सचाई और झूठ 2. झूठ और

सच का अन्वय प्रथम व्यापार, वागिज्य मनु०

५:६, ६, अभिसन्धि (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पूरी

करने वाला, निष्कपट, -उत्सर्षः 1 सचाई में प्रयुक्तता

3 सत्त्वों झेप्टना, -उच्च (वि०) सत्त्वमायी, -उच्च-

सात्त्विक (वि०) प्रार्थना पूरी करने वाला, -सात्त्वः सत्य

का प्रेमी, सत्त्व एक शक्ति का नाम, -वर्षिम् (अब्य०)

सचाई की देखने वाला, सत्यता की अत्यन्त वाला,

बल (वि०) सत्य के गुण में समुद्र अत्यन्त सत्त्वा

भूमि (वि०) परम सत्त्वमायी, -पुण्य विष्णुकोक,

-भूत (वि०) सत्यता में परिच किया हुआ (जैसे कि बलन) सत्यपूना बदेहायी - मनु० - ६:४६, -वर्षिम्

(वि०) बाढ़े का गबका, अत्यन्त वचन का वास्त

करने वाला, आत्मा सत्त्वान् की पुत्री तथा कुण्ड

की प्रिय पत्नी का नाम, (इसी सत्त्वभावा के निष्प

कृष्ण ने इन्द्र से बुद्ध किया, तथा मन्वयुग से पारि-

जात वृक्ष लाकर उसके उद्यान में लगाया), युष्मन् स्वर्णयुग्, दे० ऊ० सय्य (६) बच्चत् (वि०) सय्य-बादी, सय्यनिष्ठ, (पु०) 1 सन्त, श्रुति 2 महान्या (नपु०) नचार्ह, ईमानदारी, बच्च (वि०) मत्स्यभाषी (छम्) मचार्ह, ईमानदारी, बाष् (वि) सय्यबादी, सत्यनिष्ठ, सग्रा (पु०) 1 सन्त, महान्या, श्रुति, कौवा, बाष्पय् मत्स्यभाषण, सग्रायण, बाष्पिन् (वि०) 1. सत्यभाषी 2 निष्कपट, स्पष्टभाषी, सग्रा, ज्ञान, सग्रा, -संच (वि०) 1 बादे का पक्का, अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, सत्यनिष्ठ, ईमानदार, निष्कपट, भाषणय् शपथग्रहण, संकास (वि०) प्रयास, नृजाइया वाला, देखने में ठीक जचता हुआ, सयास ।

सत्यकृत् [सय्य + कृ + क्त, युष्] सत्य करता, बारा पूरा करना, सोदे या सचिदी की पत्नी पूरी करना 2 बयाने की रकम, अग्राह दिया गया धन, ठेके का काम पूरा करने के लिए बयाने के रूप में दी गई अधिम गति कि० ११५० ।

सत्यवत् (वि०) [सय्य + वत्] सत्यभाषी, सत्यनिष्ठ, पु० एक यज्ञ का नाम, सावित्री का पति, श्री एक भयूर की लटकी जो परमेश्वर मृति के महबाम में व्याप्त की माया देवी, मुक्त, व्याप्त ।

सत्या [सत्यमस्ति अग्रा मय्य अच् + टप्] 1. सचार्ह, ईमानदारी 2 मोना का नाम 3 दीपरी का नाम, -वि० ११५० 4 व्याप की माया मय्यवती का नाम 5 दुर्गा का नाम 6 कृष्ण की पत्नी मत्स्यभाषा का नाम ।

सत्यवधय [सय्य + वधिन् + क्त, पुकासय] 1 सत्यवधय करना, सत्य का पालन करना 2 (किमी सचिदा या सोदे आदि की) अर्पे पूरी करना ।

सत्र २० 'मन्त्र' ।

सत्रय (वि०) [सह ययया-ब० म०] लज्जाशील, चिन्तनी ।

सत्राचिन्त् (पु०) निष्ण का पुत्र तथा सय्यभाषा का पिता (सत्राचिन्त् का मूर्ध में स्पमलक नाम की मयि प्राण दुई थी, और उमने उसकी अर्पणे कष्ट में पहन लिया था । बाद में सत्राचिन्त् ने इस मणि को अपने भाई प्रयेन को दे दिया प्रयेन से यह मणि शानरराज जाचवान् के हाथ लयी, जब कि उमने प्रयेन का बध किया । फिर कृष्ण ने जाचवान् में यद किया और उसे परमान कर दिया । अत जाचवान् ने अपनी पुत्री के साथ यह मणि कृष्ण को दे दी । दे० जाचवान् । कृष्ण ने इस मणि का इसके मूक अधिकारी सत्राचिन्त् का दे दिया । सत्राचिन्त् ने भी कृष्णव्रता के कारण यह मणि, अपनी पुत्री सय्यभाषा समेत कृष्ण को ही अर्पण कर दी । उसके पश्चात् एक बार जब इस

मणि के साथ सय्यभाषा अपने पिता के घर विद्यमान थी तो अक्षर नामक यादव के ब्रह्मकाने पर, जो स्वयं इस मणि को लेना चाहता था सय्यवत्पत्नी ने सत्राचिन्त् का हाथ डाला और वह मणि लेकर प्रक्षर को दे दी । उसके बाद कृष्ण ने सय्यवत्पत्नी को मार डाला । परन्तु जब उन्हें पता लगा कि वह मणि तो अक्षर के पास है तो उन्होंने कहा कि एक बार वह मणि सब लोगों को दिखा दी जाय तथा फिर अक्षर ग्रहे ही उस मणि को अपने पास रखे) ।

सत्वर (वि०) [सह त्वरया ब० म०] फुर्तीला, दृढ-गामी, चम्प, -रम् (अव्य०) शीघ्र, जल्दी हो ।

सत्वरार (वि०) [सह सूरकारेण] बहु मनुष्य जिसके मूँह में जानने समय चूक निकले, र. बात के साथ मूँह में चूक निकलना ।

सृ (अव्य० पर० - कृड के अनुसार नृदा० पर०-सीदति मत्र प्रविं की छाहका अन्व इकारान्त तथा उकारान्त उपसर्ग के लक्षण पर मद् के म् का वृ हा जाता है) 1 बैठना, बैठ जाना, आराम करना, लेटना, लेट जाना, विश्राम करना, घम जाना, अमदा मेदुरेक-स्मित् निगन्धे किष्का निरे-मट्टि० १५८ 2 बचना, गाने लगाना तेन च विदुषा मध्ये पङ्के गौरिव मोदसि हि० प्र० २४ (यहाँ इस शब्द का अं. -स-भी है) 3 जीना, गूना, बसना, काम करना 4 विश्र होना, देशीत्याह होना, निराश होना, हत्या होना, भयनासा में डूब जाना भास हू जय नाथ हू मारुति राधा वामनूह गीत० ६ 5 स्नान होना, नष्ट होना बर्दाह होना, छोड़ना, नष्ट होना

-विग्रहाया मीना मकलमवशा मोरति जलत् -हि० २१०३ ४५० ३६६ हि० २१३० 6 दुखी होना पीडित होना, कष्टयक्त होना, अवहाय होना वि० १३६०, मनु० ८१२ 7 बाधित होना, बिचल पृथ होना, धन० ११२ 8 स्नान होना, स्नान्य होना, बधा हुआ होना, निहाय होना, अवसन होना -मोदति में हृदय का०, सीदति घम माषाणि मय० ११०८ 9 जाना, प्र० (सादयति ने) 1 बिडाना, आराम करना इष्का० [सिप-त्यति] बैठने की इच्छा करना, अच् . 1 निडास होना, मुक्ति होना, बिचल होना, गन्ने से हट जाना कर्मिणी पङ्कमिकावमोदति कि० २१६, ४१०, मट्टि० ६१२ 2 भुगना, उपेक्षित होना 3 ह्ना-त्याह होना, धाप्न होना 4 नष्ट होना, छोष होना, समाप्न होना -नाम्युष्टवसयो बन्धु कृष्वाय नाथवी-रति, - (रे०) 1 अवसान करना, ह्नात्याह करना, बर्दाह करना-नाम० ६५ 2. हू करना, हुटाना -ब्रीमुषयमात्रमवमवधति प्रतिकटा छ० ५१६ ३ नष्ट

करना, धार डालना, आ- 1 नीचे बैठना, निकट बैठना 2 घाल में रहना 3 पहुँचना, उपगमन करना, पास जाना—हिंमालयम्यालम्यालसाद—कु० ७।६९, सि० २।२ रघु० ६।४ 4 अक्षमाग्न मिलना, प्राप्त करना, निर्माण करना रघु० ५।६०, १।१२५ 5 भूग तथा—अट्टि० ३।२६ 6 मुठभेद होना, आक्रमण करना 7 रखना, (प्रेर०) 1 दुर्घटना होना, पाना, हासिल करना, प्राप्त करना,—अमरागणनालेक्यमासाद्य—रघु० ८।०५ 2 उपगमन करना, पास जाना, पहुँचना, अधिकार में करना नक्ष स्वस्थानमासाद्य गजेंद्रमपि कर्मणि—पद्य० ३।८६ मेघ० ३६ अट्टि० ८।३७ 3 एकत्र लेना—अनेन रूपवेगेन पूर्वप्रस्थित बैनसेवधम्यासाद-येयम् विक्रम० १ 4 मुठभेद होना, आक्रमण करना—अट्टि० ६।१५, अर्जु- 1, इबना (आल० से भी), बर्बर होना, शीघ्र होना—उत्पीदेयुग्मिमे लोका—भग० ३।२४ 2 छोड़ देना, त्याग देना 3 बिरोह के लिए उठना, (प्रेर०) 1 नष्ट करना, उन्मूलन करना उल्लासने जतिधर्मा भग० १।४२ भनु०

१।२६३ 2 उलटता 3 मनना, मालिस करना, उष- 1 निकट बैठना, पहुँचना, पास जाना उत्सेहुदंसा-पोरम् अट्टि० १।१२, ६।३५ 2 सेवा में प्रस्तुत रहना, सेवा करना आक्रमणायवेस्तीस्तीरपसेदु प्रसापका—रघु० १।३०२, सि० १।३।६ 3 बड़ाई करना, सि 1 नीचे बैठ जाना केना विधाय करना उल्लासु जिशिर निपोरति नरासुंमालनाले जिली विक्रम० २।२३ 2 इबना, विफल होना, निराश होना, प्र 1 प्रमत्त होना, कृपालु होना, मगनप्रद होना—प्राय तुमुधत्त के साथ नमाल-पञ्चान्तगामु रन्तु प्रसीर शब्दन्तनवस्वकीषु - रघु० ६।६६ 2 आचरन्त होना, परिशुष्ट होना, समुष्ट होना—निमित्तमुद्रिय हि म प्रकुप्यति भूष स तस्या-गमे प्रसीरति पद्य० १।२८३ 3 निर्मल होना, स्वच्छ होना, स्पष्ट होना, बसकता (शा० और आ०)

दिश प्रमेदुमंमनी वधु मुखा रघु० ३।१४, प्रसता-दोदयादरम कुम्भयानिमेंहीरम ४।२१ 4 फल आना, सफल होना, कामयाब होना—क्रिया हि कल्प-पहिता प्रसीरति—रघु० ३।२९, दे० प्रसभ, (प्रेर०) 1 राखी करना, अनुबह प्राप्त करना, प्राचीन करना, निवेदन करना तस्मात्प्रथम्य प्रणिधाय काय वृत्तादये स्वाहृहीषवीष्यम्—भग० १।१।४४, रघु० १।८८, पाद्य० ३।२८३ 2 स्पष्ट करना चेत प्रसादवति भनु० २।२३, सि 1, इबना, धक जाना, 2 होता होना, निडाल होना, कष्टग्रस्त होना, चित्र होना, निराश होना, नाउत्सीर होना—निलपति हसति विधीदति रोविनि बन्धति मुञ्चति तापम् भीत० ४,

भग० २।१, अट्टि० ३।८९, रघु० १।७५, प्रेर० 1 निराश करना, होतास करना 2 कष्टग्रस्त करना, पीड़ित करना।

सह [सद् + अच्] वृत्त का फल।
सहसक [सद्येन सह कच्, ब० सं०] ककडा।
सहस्रध्वजः [सदश बदन यय्य ब० सं०] बयमे का एक भेद, कक पत्ती।

सबन्धम् [सद् + न्यट्] 1 घर, महल, भवन 2 स्थान होना, क्षीण होना, नष्ट होना 3 अवसाद, श्रान्ति, क्लान्ति 4 हानि 5 यज्ञ-प्रदान 6 दय का आवागमन स्थान।
सद्य (वि०) [सद् दयया - ब० सं०] कृपालु, मुकुमार, दयापूर्ण, यम् (अब्य०) कृपा करके, दया करके।

सद्यम् (न्यु०) [सीदप्ययाम्-सद् + अङि] 1 ज्ञान, आवागम, घर, निवासस्थान 2 सभा—पदुकिना मरो-भ्रानि सद स्वानुवैविना—भासि० १।११६, प्रनु० २।६३ 1 मय०—सत्त (वि०) सभा में बैठे हुआ, —रघु० ३।६६ मुहूर्त महा-प्रदान, परिशुष्ट-कला रघु० ३।६७ 1

सद्यश्च [सदसि साद्य समति वा यद्] 1 सभा का सभासद् या सभा में उपस्थित व्यक्ति, सभा का मेम्बर (पद्य, जुरी का सदस्य) 2 यात्रक, यज्ञ में ब्रह्मा या सहायक कृत्विज् प्र० ३।

सदा (अब्य०) [सर्वगमन् काले सर्व + दाच्, सादेस] हमेशा, सर्वदा स्थित्य सदैव। सम० आनम्ब (वि०) मदा प्रसन्न रहने वाला, (क) शिव का विशेषण, मति 1 वायु 2 सूर्य 3 शाश्वत आनन्द, भोज, तोषा, मीरा 1 कन्तोषा नदी का नाम 2 वह नदी जिसमें सदैव पानी रहता है, बहती हुई नदी, —हान (वि०) सदैव उपहार देने वाला, (वह हाथी) जिसके सदैव मद बहता हो—पद्य० २।७९ (—सः) 1 मद बहाने वाला हाथी 2 गन्धर्विण, 3 हज्ज के हाथी का नाम 4 यमेश, शतः एक पत्ती, सज्जन् कल (वि०) हमेशा फलने वाला (कः) 1 देव का वेद 2 कष्टहृत् का वेद 3 गुजर का वेद 4 मारियका का वेद, बोधिसू (पु०) कृष्ण का विशेषण, शिक्षः शिव का नाम।

सद्यश्च (स्त्री०—श्री), सद्यश्च, सद्यश्च (स्त्री० श्री) (वि०) [समान दर्शनमस्य दग् - सत, विधन् कच्, वा, समानस्य सादेश] 1 सभात, मिलता-जुलता, तुल्य, अनुकूप (सब० या अधि०) के साथ अथवा समान में प्रयुक्त 2 शीघ्र, मन्चित, उपयुक्त, समानरूप जैसा कि प्रस्तावमदूश्च कायश्चम्—हि० २।५१ 3 योग्य, ठीक, सोभाशर धृतस्य कि तसद्यश्च कुतस्य रघु० १।४६१, १।१५।

सद्येन (वि०) [सह देसेन ब० सं०] 1 किसी देश का

स्वामी 2 एक ही स्थान से सम्बन्ध रखने वाला
 3 भासप्रवर्ती, पक्षीनी ।
सद्यः (सद्यः) [सौर्यत्यमित्त्वं सद् + मन्तिन्] 1 घर,
 मकान, आवासस्थान - चकितनतनताङ्गी सद्य सद्यो
 विवेश - भासि० २।३२ 2 म्यान, जगह 3 मन्दि
 4 बेदी 5 जल ।
सद्यः (अव्य०) [मनेऽङ्ङि - नि०] 1 आज, उसी दिन
 - सबादीना पयोऽप्येषु सद्यो वा ज्ञानेने दधि, पापस्य
 हि फल सद्य - सुभा० 2 नुग्न, तत्काल, फौरन
 अकस्मात् - चकितनतनताङ्गी सद्य सद्यो विवेश
 - भासि० २।३२, कु० ३।१०, मेघ० १६ 3 जाल
 ही में, कुछ ही समय पीछे, जैसा कि सद्यो हुताग्नीन्
 - श० ४ मे । सम० काल, वर्तमान काल,
 - कालीन (वि०) हाल ही का, - जात (वि०)
 (सद्योजात) अभी पैदा हुआ, (त) 1 बहुरा
 2 शिक का विशेषण, - चालिन् (वि०) शीघ्र गन्त
 होने वाला, नदरन् मेघ० १०, बुद्धि, शीघ्रम्
 तत्काल की हुई बुद्धि ।
सद्यक (वि०) [सद्य + कन्] 1 नूतन, अभिनव
 2 तात्कालिक ।
सद् (वि०) [सद् + ष] 1 विद्याम करने वाला, ठहरने
 वाला 2 जाने वाला ।
सद्यश्च (वि०) [सद् इत्येन व० म०] सद्यश्चाल, कलहप्रिय,
 विवाहपूर्ण ।
सद्यश्च (सद् + चश्च : अथच्) गाँव ।
सद्यर्मन् (वि०) [समानो यमोऽप्य सद्यर्मः अन्तिच्, व०
 स०] 1 समान गुणों में युक्त 2 एक जैसा करनेवाला
 3 उसी रीति या सम्प्रदाय का 4 समान
 मिलना-जुलना । मन० चारिणी वेष स्त्री, शान्तीय-
 रीति में विवाहमन्त्र में इष्ट स्त्री ।
सद्युमिषी दे० ऊ० 'सद्यर्मचारिणी' ।
सद्युमिन् (वि०) (स्त्री० ऋ) [सद्युमोऽग्नि अव्य
 सद्यर्मन् + इति, व० म०] दे० 'सद्यर्मन्' ।
सद्युष् (पु०) [सद् + इतिच्, इत्य ष] बँक, साँझ ।
सद्युषी [सद्युष् + ङीष्, अलाप, दीर्घ] मखी, सहेली,
 अनुरण महली मर्दु० ६।३ ।
सद्युषीम (वि०) [सद्युष् + म, अलाप, दीर्घ] साथ
 रहने वाला, सहचर ।
सद्युष्यम् (वि०) (स्त्री० सद्युषी) [महाऽन्वति सद्
 + अन्च् + चिक्त्, सौप्रि प्रायेण] साथ चलने वाला,
 सहचर, साथी, पु० - सहचर (पति) - वि० 1।४४ ।
सन् (सन् + वट्, तना० उभ० मन्ति, सन्वेति, सन्ते,
 सात्, कर्मका० सन्त्येते, साधते, इच्छन्) सिमानिपति,
 सिपाही 1 श्रेय करना, पसन्द करना 2 पूजा
 करना, सम्मान करना 3 प्राप्त करना, अधिपत

करना 4 अनुग्रह के साथ प्राप्त करना 5 उपहारी
 से सम्मान करना, देना, प्रदान करना, बितरण
 करना ।
सन् [सन् + अच्] हाथों के हाथों की फफफाहट ।
सन्त् (पु०) [सन् + अति] बहुरा का विशेषण - (अव्य०)
 सदा, नित्य । सम० - कुमारः बहुरा के चार पुत्रों
 में से एक ।
सन्सुष दे० 'सद्युष्' ।
सना (अव्य०) [सदा, नि० दस्य न] हुंसेना, नित्य ।
सनात् (अव्य०) [सना + अच् + चिक्त्] सदा, हमेशा ।
सनातन (वि०) (स्त्री० -नी) [सदा + ट्पूल्, सुद्,
 नि० दस्य न] 1 नित्य, निरन्तर, शाश्वत, स्थायी
 एव धर्म, समाज - 2 बुद्ध, स्मिन्, निश्चित
 उल्ल० ५।१० 3. पूर्वकालीन, प्राचीन, क पुरा-
 नत पुष्य विष्णु समाजत पितामृपागमत् स्वधम्
 मर्दु० १।१ 2 शिक का नाम 3 बहुरा का नाम,
 नी 1 लक्ष्मी का नाम 2 दुर्गा या पार्वती का
 नाथ 3 मारुती का नाम ।
सनाथ (वि०) [सद् नाथेन व० म०] 1 स्वामी
 वाला, प्रभु या पति वाला - स्वया नाथेन देवद्वी
 सनाथा इत्येव वनेने गमा० 2 जिसका कोई अधि-
 भावक या प्ररक्षक हो मनाथा इदानी धर्मचारिण
 - ग० १ 3 कच्चा किया हुआ, अधिकांश किया
 हुआ 4 सम्पन्न, सहित, युक्त, समेत, पूर्ण, प्राय
 मयाम र्म मनाथाश्च इव प्रतिभाति स० १
 मिलानकमनाथो मनामथश्च - विक्रम० १, मेघ० १८,
 कु० 3।१८, रघु० १।४२, बिक्रम० ४।१० ।
सन्तधि (वि०) [समाना नाधिर्मस्य व० स०] 1. एव
 ही पद का सहोदर 2 रिश्तेदार, बच् 3 समान,
 जिलना-जुलना - सन्तधर्ममनाधिर्मसि - दस्य० 4 स्नेह-
 गीत - वि 1 मना आई, नखीकी रिश्तेदार
 2 रिश्तेदार, बच् [वि० १।३।१ 3 रिश्तेदार को
 मान पीछी के अनवयन हो ।
सनाथ्य [सनाधि + यन्] सात पीढ़ियों के भीतर एक ही
 वंश का रिश्तेदार ।
सति [सन् + इत्] 1 पूजा, सेवा 2 उपहार, दान
 3 अनुरोध, मादर निवेदन (स्त्री०) नी इत् अर्थ में ।
सतिशीघ्रम्, सतिशीघ्रम् [सद् तिप्ठी (ष्) वेत् व० स०]
 बहु भाषण जिसमें बृहत् से बृहत् निकले, ऐसी बोली
 जिसमें बृहत् उल्लेख ।
सती [सति + ङीष्] 1 सादर अनुरोध 2 दिवा 3 हाथों
 के हाथों की फफफाहट ।
सतीष्ट (स्) (वि०) [सथान नीवमन्त्यस्य - व० म०]
 1 एक ही पीछे में रहने वाला, साथ-साथ रहने
 वाला 2 निकटस्थ, सतीष्टवर्ती ।

सप्त [सम्+त-] दोनो हाथ जुड़े हुए, अवलोकित, सहलोक ।
सप्तसप्तम् [सम्+तप्+स्यट्] ताना, ध्वज्य, लगने की बात ।

सप्तम् (पू० क० ङ०) [सम्+तन्+क्त्] 1 फँसना हुआ, विस्तारित 2 विष्णुहित, अनवरत, अनवच्छिन्न, निर्यातित 3 टिकाऊ, निर्य 4 बहुत, अनेक.—सम् (अध्य०) सदेव, अन्तार, निर्य, निरंतर, आरभत ।

सप्ततिः (स्त्री०) [सम्+तन्+क्तिन्] 1 विद्याना, फँसना 2 फासना, प्रहार, विस्तार—स० ७।८ 3. अनवच्छिन्न पक्षित, अविश्राय प्रवाह, श्रेणी, पराम, परम्परा निरन्तरता—चिदात्मनोतिरनुब्रालनिबिड-स्यनेव अन्ता शिवा श्रा० ५।१० कुमुदसन्तानिसन्तान-सक्तिम् - द्वि० ६।१६ 4 निर्यता, अविच्छिन्न निरन्तरता—रघु० ३।१ 5 कुल, वध, परिवार 6 सन्तान, प्रजा—सन्तानि. दृष्टव्यया हि परनेह च सर्वमे रघु० १।६९ 7 डर, राति (बलम्) महता मन्निममहता विहन्तुम् - कि० ५।१० १

सप्तपथम् [सम्+तप्+स्यट्] 1 गरम करना, प्रखनित करना 2 पीड़ित करना ।

सप्तम् (पू० क० ङ०) [सम्+तप्+क्त्] 1 गर्म किया हुआ, प्रखनित, माल-गरम, चमकता हुआ 2 दुःखी कष्टग्रस्त, पीड़ित शेष००। मय० अस्त् (नपु०) माल-गरम मोहा.—सप्तम् (नपु०) जिसे सात तने में कठिनाई हो ।

सप्तमम् (नपु०) सप्तमसम् [सन्तत तमा श्रा० स०, पक्षे अच्] सर्वव्यापी वा विषयव्यापी संस्कार, योर अव-कार—निषज्जयन्ततयमे पराशयम् - नै० १।१८, सि० १।२२, ऋट्टि० ५।२ ।

सप्तशतम् [सम्+तर्षे+स्यट्] सप्तशताना, शतना-व्यटना ।

सप्तसप्तम् [सम्+तप्+स्यट्] 1 सन्पुट करना, सन्पुट करना 2 सुग करना, प्रखन करना 3 जो सुखी हो देने वाला हो 4 एक प्रकार का शिष्टान्त ।

सप्तानः, सप्त [सम्+तन्+क्त्] 1. विद्याना, विस्तृत करना, विस्तार, प्रहार, फँसना 2 नैरन्तरे, अनव-च्छिन्न पक्षित वा प्रवाह, परम्परा. अनवच्छिन्नता अक्षिन्नात्मसन्ताना कु० ६।६९, सन्तानवाहीनि दुःखानि उत्तर० ५।८ ३ परिवार, वध 4 प्रजा, अलाय, बाल-बच्चा—सन्तानाधिपि विषये रघु० १।२५, सन्तानकायाय रामे— २।६५, १८५२ 5 इन्द्र के स्वर्गीयिन पौत्र ब्रह्मो में से एक ।

सप्तानकः [सन्तान+क्त्] इन्द्र के स्वर्गीय पौत्र ब्रह्मो में से एक ब्रह्म वा उसका पूत्र—कु० ६।४६, ७।३, सि० ६।६ ।

सप्तानिका [सम्+तप्+भ्रस्+टाप्, इत्थम्] 1 केन

शाम 2 मलाई 3 मकड़ी का जाला 4 चाकू या तलवार का फल ।

सप्तानम् [सम्+तप्+क्त्] 1. गर्मी, प्रवाह, जलन मा० ३।४ 2. दुःख, सताना, भ्रूपतना, पीडा, बैदना, व्यथा सन्तापसन्ततिमहाह्वयसनाय तस्यानासकमेतदन-पेक्षित हेतु केव मा० १।२३ श्रा० ३ 3. मायेव, रोष 4 पञ्चासाय, पछतावा पञ्च० १।१०९ 5 तपस्या, तप की वकान, शरीर की साधना—सन्तापे दिशन्तु दिवः शिवा प्रसक्तिम्— कि० ५।५० ।

सप्तापनम् (स्त्री० शौ) [सम्+तप्+णिच्+स्यट्], जलन, दाह, मः कामदेव के पौत्र बाणो में से एक, - सन् 1 अज्ञाना, झुलमना 2 पीडा देना, कष्ट देना 3 अक्षेय उत्प्रेक्षित करना, जोष भरना ।

सप्तापित (पू० क० ङ०) [सम्+तप्+णिच्+क्त्] गरम किया हुआ, कष्टग्रस्त, पीड़ित ।

सप्तितः [सम्+क्तिन्] 1 अन्त, विनाश 2 उपहार—तु० सति ।

सप्तभिः (स्त्री) [सम्+तुप्+क्तिन्] पूर्ण सतोष ।

सप्तोषः [सम्+तुप्+क्त्] 1 शान्ति, परितुष्टि, सबर, सन्तोष एव पुष्कस्य पर निधानम्—मुधा 2 प्रसन्नता, सुखी, हर्ष 3. अशुद्ध या तर्षनी अशुद्धी ।

सप्तोषणम् [सम्+तुप्+णिच्+स्यट्] प्रसन्न करना, परितुष्ट करना, आराम पहुँचाना ।

सप्तवक्त्रम् [सम्+त्वच्+स्यट्] जोड़ना, त्याग देना ।

सप्तवक्त्रः [सम्+त्वच्+क्त्] डर, भय, आतंक ।

सप्तवक्त्रः [सम्+द्वच्+क्त्] 1 चिपटा, सन्ध्यामी 2 म्बरो (वा बर्षी) के उच्चारण में दाँतो की भीचना 3 एक नरक का नाम ।

सप्तवक्त्रः [सद्+क्त्] चिपटा, सिद्धासी ।

सप्तवर्षः [सम्+द्वप्+क्त्] 1. भिस्कार नशी करना, उबन करना, फल में रक्तना 2 सङ्घ, भिक्षाप, विधाय 3. संवति, निरन्तरता, -निर्यातित सप्तव, सप्तमता सप्तवर्षुडि विराम्—नीत० १ 4 सरचना 5 निबध, साहित्यिक कृति—रसवाधाधरनामा सदभोज्य चिर चयन्तु—रस०, उत्तर० ४ ।

सप्तवर्षम् [सम्+द्वप्+स्यट्] 1 देवना, मयलोका, नडर हाडना 2 ताकना, टकटकी लगा कर देखना 3 मिलना, एक हुस्वे को देखना 4 दृष्टि, दर्शन, निगाह 5 खयाल, ध्यान ।

सप्तवर्षम् [सम्+शौ+स्यट्] 1. रस्सी, डोरी 2. मूलका, बेडी, मः हाथी का बंडस्यक जहां से मद बहता है ।

सप्तवर्षिता (वि०) [सप्तान+इत्थम्] 1. बड़, कसा हुआ 2 बेडी में बकटा हुआ, अंधकलित ।

सप्तवर्षिणी [सप्तानं इत्थन यथाय् अव-सन्तान+णि+डीप्] गोष्ठ, मोक्षाला ।

सम्बाध [सम् + दु + धञ्] भगवद्, प्रत्यावर्तन ।
सम्बाह [सम् + बह् + धञ्] ब्रह्म, चक्रभोग ।

सम्बन्ध (भू० क० कू०) [सम् + बन्ध् + क्त] 1 सना हुआ, डका हुआ 2 भ्रातृक, सम्बन्धायक, अनिश्चित - जैसे कि 'सद्विषय मति-बुद्धि' में 3 भ्रान्त, बिभ्रल - या० ११२ 4 सघक, प्रज्जालस्य 5 अन्ध-बन्धित, अस्पष्ट, दुःख (जैसे कि बाधक) 6 अंतरनाक, जोशिम से भरा हुआ, असुरक्षित 7 विपन्न ।

सम्बन्ध (भू० क० कू०) [सम् + दिष् + क्त] 1 मकेलित, इतित किया हुआ 2 निर्दिष्ट 3 उक्त, बतित मूचित 4 बाधा किया हुआ, प्रतिज्ञान, दृ जिये मदेक पहुचने का कार्य योपा गया १, मदेकवाहक, दूत हत्कारा, मदिष्टाये, दम् मूचना सभाधार खबर ।

सम्बन्ध (वि०) [सम् + दो + क्त] बद्ध, भूयलित, बेटी में जकडा हुआ ।

सम्बी [सम् + बी + ध + ङीप्] मटोला, छोटी भाट, गय्याकुवा ।

सम्बोध (वि०) (स्त्री०-जो) [सम् + दीप् + णिष् + स्तुट्] 1 मुलगाने वाला, प्रव्यक्ति करने वाला, भदकाने वाला उत्तर० ३ 2 उद्दीपक उत्तर० ४-क 1 कामदेव के नाच बाणों में से एक-सम् 1 मुलगाना, प्रव्यक्ति करना 2 भदकाना, उद्दीपन करना अन्व-सन्दीपनमात्रु कुर्वते अत्रु० ११२० ।

सम्बोध (भू० क० कू०) [सम् + दीप् + क्त] 1 मुलगाया हुआ, प्रव्यक्ति किया हुआ 2 उत्तेजित, उद्दीपित 3 नबकाया हुआ, चकमाया हुआ, प्रयोदित ।

सम्बुद्ध (भू० क० कू०) [सम् + बुध् + क्त] 1 कल्पित किया हुआ, मलिन किया हुआ 2 लुप्त, कमीना ।

सम्बुधधम् [सम् + बुध् + णिष् + ल्युट्] मलिन करना, धष्ट करना, विपन्न करना, खराब करना ।

सम्बेड [सम् + दिष् + धञ्] 1 सुचना, सभाधार, खबर 2 मदेश, मवाद मन्देश से हर धनपतिकोबधिमेधितम् मेध० ७, १३, २५० १२५३, कु० ६१२ 3 आडा, भादेस--अनुठिनां नुगे मदेश ५० ५१ सम० अर्थ. सदेश का विषय, बाष् मदेश, इष्ट 1 मदेशवाहक, दूत 2 दूत, राजदूत ।

सम्बेह [सम् + बिह् + धञ्] 1 मजब, अनिश्चिन्ता, शका, - अथ क मन्देश 2 जोशिम, खतरा, डर जीवित-मन्देशोलामारोपित का०, अथाईने श्रुति समन्देश-हि० १ 3 (अन्० शा० में) इस नाम का एक अलकार विममे दो वदावों की बन्धित समानता के कारण भ्रान्ति से एक वस्तु की रूप बन्तु मयस स्थिया जाय (इस अलकार को ममट तथा अन्य कुछ विद्वान् 'ससदेश' नाम से भी पुकारते हैं) मन्देशस्तु येंदोक्ती नदनक्ती च मशय--काष्० १०, उदा० २० मा०

११२. (गाढातर), विक्रम० ३१२ । सम० शोका अनिश्चित का मूना, शका की स्थिति, सुविधा, असमजस ।

सम्बोह [सम् + बुह् + धञ्] 1 बूध दूतना 2 किसी बन्तु की मर्याद, समुन्धय, डेर, राशि, सचात कुन्दया-कन्दयबिदु सम्बोहवाहिना मास्नेनोलाग्यति मा० ३ भासि० ४१९ ।

सम्बाध [सम् + दु + धञ्] भगवद्, प्रत्यावर्तन ।

सम्बा [सम् + धा + अङ् + टाप्] 1 मिलाप सारथयं 2 बन्धित येन प्रगाड नबध 3 स्थिति, दशा 4 वादा, प्रतिज्ञा अनुबन्ध, सम्बिदा तवरा सम्भावित मय-मन्ध ग्यु० १४५२, महाबीर० अ० ८ 5 मीमा, १४ 6 स्थिरता, स्थैयं 7 सध्या 8 मधमथान ।

सम्बाधम् [सम् + धा + स्तुट्] 1 मिलाता, जोडना 2 येन, मयम मन्धय-यदध विधिधन भवति कृतसम्भानमिध नम्-ना० ११५, कु० ५१२०, २५० १२५१० ३ मियध, (ओगीय-आदि का) सम्मियध 4 पुनश्चरार, जीर्णोद्धार 5 टीक बैठाना, जमाना (जैम कि मनुष की हारी पर बाण का साधना) तन्मायकुनसम्भान प्रतिमहर सायकम् ५० ११११, सि० २०१८ 6 मेषां, येन, दाल्मी येन-मिलाप मूषुधरमन्धयमेधा हुम्भानस्य दुर्जेनो भवति हि० ११२२ (वहो इमका अर्थ 'मिलाना या जाडना' भी है) 7 जार एणिय पादबन्धुया सन्धाने लम्क-सुध० 8 अथना 9 निरेतन १० सभा-लना ११ (मदिरा का) आमवन १२ मदिरा या उसका कोई घेद १३ पीने की इच्छा उत्तेजित करने-वाली पटपटी कीयें १४ अघार आरि बनाना १५ रक्त-यावरायक शोधयियों के द्वारा ल्घा की सिकुहन १६ कौचो ।

सम्बानित (वि०) [सम्भान + इत्थप्] 1 मिलाया हुआ, मय मय नम्बी किया हुआ २ बाधा हुआ, कसा हुआ ।

सम्बि [सम् + धा + ङि] 1 येन, मयम, सम्मियध, मन्धय मन्धये माला मुची बका छेदाय कर्तरी मुना०, मेध० ५८ २ सविदा, करार ३ यिधता, मयट्टन, मंत्री येन-मिलाप, मन्धियध सुलहतामा (विदगनीति में प्रयोग्य छ उपायों में से एक) कति प्रकारा मन्धोनां भवति--हि० (हि० ५१०६-१२५ तक कई प्रकारों का बर्णन किया है), शकुनां न हि मरदायान्मिदयेनापि मन्धिना हि० ११८८ ४ जोड, (पौराणिक) सम्भान कुत्तयानु-धावनकाधिधतसन्धे- ५० २ ५ (बस्त्र की) तह ६ छेद, बिबर, दरार ७ बिधेयता मुरय, वा संघ जो पौर किमी मकान में घुसने के लिए बनाते हैं -ब्रह्मघाटिका परितरे मन्धि हात्वा प्रविष्टोऽपि अन्धम-

कम्-मू० १, मन्० १२७६ ८. पार्ष्वम्, प्रथम 9 (धा० में) संहिता, उन्मत्तारम् की सुवन्ता के लिए ध्वनिपरिवर्तन की प्रवृत्ति, सर्वाधिकार 10 अन्तराल, विश्राम 11 सकृत् काल 12 उपयुक्त अन्तर 13 युगांत-काल 14 (ना० में) प्रनाम या जोड़ (यह संधिवां विनली में पश्च है- हा० द० ३३०-३३२) कु० ७१९ 15 अग, स्त्री की जन-नेन्द्रिय । मन्० अक्षरम् सम्यक्त स्वर सन्धिस्वर, (ए, ऐ, ओ, औ), शौरः धर में सेंध लगाने वाला, बहु धार जो धर में पाइ लगता है, -शैवः (दीवार आदि में) छिद्र या सुरास करना, अन्व मादक मदिरा, - शौचक, जो अन्न में की कमाई से जीवन-निर्वाह करता है (विशेषतया जैसे कि दलाल) अर्थात् स्त्रियों को पुरुषों में भ्रमा कर जीविका अर्जन करने वाला, - हृषणम् मधि या मुलह का भंग कर देना अरिष् हि विजयाचिन जितीमा विपद्यति मोपधि सन्धि-दूषणानि - कि० १५५, -कम्प जोड़ी का उत्तक -वा० २, कम्पन् स्त्र्याम्, कम्पार, गिरा, मङ्गल, - मूलित, (स्त्री०) किसी जाड़ का सबंध टूट जाना, विषह (पु०, हि० व०) शांति और युद्ध अधिकार, विदेश विभाग का मन्त्रालय, - विषमत्तः मधि की वातचीन करने में निपुण, बिम्ब (पु०) सधि की वातचीन करने वाला, - बैला 1 सध्या-काल 2 कोई भी सधिकाल, -ह्रासक धर में सेंध लगाने वाला ।

सन्धिः [सन्धि + कन्] एक प्रकार का उन्तर ।
सन्धिको [सन्धिक + टाप्] (मदिरा का) आनयन ।
सन्धित [वि०] [सन्धा + इत्थ] 1 धिन्याया हुआ, जोड़ा हुआ 2 बढ़, कमा हुआ 3 सप्ताहित, पुनर्मिलित, मिश्रण में भावद 4 स्थिर किया हुआ, ठीक बँटाया हुआ 5 आपस में मिलाया हुआ 6 अचार वाला हुआ, प्रगथित, सम् 7 अचार 2 मदिरा ।
सन्धियो [सन्धा + इति + शीप] । समर्पि हुई गाय (या तो माठ में समकन या उसके द्वारा गाभिन गाय) 2 अगमय दुर्गा जाने वाला गाय ।
सन्धिका [सन्धि + का + क + टाप्] 1 शीत में किया हुआ छिद्र, गदरा, विवर 2 नरो 3 मदिरा ।
सन्धुध्वजम् [सन्धु + ध्वज + क्] 1 मुलमता, प्रव्यलित होना 2 उन्मत्तन करना, उदोपन ।
सन्धुसित (भू० क० क०) [सन्धु + सन्धु + क्त] मुलगा हुआ, प्रशस्तन, प्रशस्तगा हुआ ।
सन्धेय [वि०] [सन्धु + या + क्त] 1, प्रभाये जाने या जोड़े जाने के योग्य 2 पुनर्मिलित होने के योग्य मुजनस्तु वनकपटवद दुर्गदधामुसन्धेय हि० ११२ 3 जिसके साथ सन्धि की जा सके 4 जिस पर नियाना लगाया जा सके ।

सन्ध्या [सन्धि + यत् + टाप्, सम् + ध्व + क्त + टाप् वा] 1 मिलाप 2 जोड़, प्रथम 3 प्रातः वा सायंकाल का सन्धिवेला, सुटपुटा - अनुगमवती सन्ध्या दिवसमन्त-पुन-स्वर । बहु देववर्तिविष्वा तवापि न समायम काव्य० ७ 4 प्रातः काल 5 सायंकाल, सास का समय 6 द्यु का पूर्ववर्ती समय, दो युगों का मध्यवर्ती काल, मन्० ११६९ 7 प्रातः काल, मध्याह्न काल तथा सायंकाल की शास्त्रण द्वारा प्रार्थना—मन्० २१६९, ४१३ 8 प्रतिष्ठा, वादा, 9 हृद, सीमा 10 चिन्तन, मनन 11 एक प्रकार का फूल 12- एक नदी का नाम 13 बह्या की पत्नी का नाम । सम्० अक्षम् 1 सायकालीन वादक (पूर्व की सुनहरी वाता में युक्त) सन्ध्याधरेखं बहुतराया प० ११९४ 2 एक प्रकार की माल सधिया, तैर, -कासः 1 सध्या का समय 2 सास, सन्धिम् (पु०) शिव का विशेषण, कुन्वी 1 एक प्रकार की धमेली 2 जायफल, -कम्पः रासल, -रासः सिधुर, -रासः (कई विद्वान् यहाँ 'बारास' शब्द को रखते हैं) बह्य-का विशेषण, -कम्पन् प्रातःकाल और मध्या काल की प्रार्थना ।

सप्त (भू० क० क०) [सद् + क्त] 1 बँटा हुआ, बासीन लेटा हुआ 2 बिभ्र, दु की, उदास 3 म्लान, विघ्नान्त 4 दुबल, निरसाक्त, कमजोर 5 शीण, छोटा हुआ 6 नष्ट, सुटा 7 स्थिर, गतिहीन 8 सिकुटा हुआ 9 सटा हुआ, निकटस्थ -क पिपाल नामक वृक्ष, चिरीकी का पेड़, म् घोड़ा सा, जल्पमात्रा ।

सप्तक [वि०] [सप्त + कन्] नाटा, छोटेकद का । मय० -इ- पिपालवृक्ष ।
सप्तत (भू० क० क०) [सप् + तम् + क्त] 1 सुका हुआ, नतया या प्रवच 2 उदास 3 सिकुटा हुआ ।
सप्ततर [वि०] [सप् + तरत्] अथशास्त्र दोषा विषम्य (जैसे कि स्वर) ।

सप्ततिः (स्त्री०) [सप् + तम् + क्तिन्] 1. प्रभिवादन, सादर प्रणाम, सम्मान 2 विनयना 3 एक प्रकार का पक्ष 4 ध्वनि, कोलाहल ।

सप्तद्व (भू० क० क०) [सप् + त्व, + क्त] 1 एक साथ मिलाकर कटिबद्ध 2 कर्वावित, सुसज्जित, बन्धारवद 3 व्यवस्थित, तैयार, युद्धके लिए उद्यत, सन्धात्य में पूर्णतः सुसज्जित, -नवजलधर सप्तद्वोऽथ न द्युमिशा-वर विक्रम० ४११, मेघ० ८ 4 तलार, उद्यत, निमित, मुद्यवस्थित -कुसुममिष सोपनीय धोवन-मङ्गुप सप्तद्वम् - श० १०-१ ७ किमी मी वन्मु स युक्त 7 धानक 8 निगान मलज्ज, -सांशपर्यो, विक-टम्ब ।

सप्तयः [सप् + यी + क्त] 1 सचय मनुष्य, परिष्ठाप सध्या 2 पृष्ठभाग (किली मेना का) पृष्ठभाग ।

सखहन्म् [सम् + नह् + ह्यट्] 1 तैयार होना, सखद होना, अस्वास्थ्य से मुतञ्जित होना 2 तैयारी 3 कस कर बांधना 4 उद्योग, प्रयत्न ।

सखाह् [सम् + नह् + धञ्] 1 आत्मे को अस्वास्थ्य से मुतञ्जित करना, यद्य के लिए तैयार होना, कषच पहनना 2 युद्ध जैसी तैयारी, मुतञ्जा 3 कषच, बल्लर अस्त्रिकली सर्वास्त्रदुष्टबाधवाहदारण । कष जीबेज्जगत्त स्त् सखाहा मञ्जता यदि कोमि० १३३६, कि० १६१२ ।

सखाह् [सम् + नह् + धञ्] युद्ध का हाथी ।

सखिकषः [सम् + नि + हृष् + धञ्] 1 निकट लीचना, समीप लाना, 2 पडोस, सामीप्य, उपनिषत् - उत्क-
च्छते च युष्मत्सखिकषस्य - उत्तर० ६, ३१७६, रघु०
७१८, ६१९० 3 मन्वय, रिम्तेदारी 4 [म्याय० मं]
इन्द्रिय का विषय मं मन्वय, (यह छ प्रकार का है) ।

सखिकषेणम् [सम् + नि + हृष् + ह्यट्] 1 निकट लाना 2 पहुँचाना, समीप लाना 3 सामीप्य, पडोस ।

सखिकृष्ट (पु० क० कृ०) [सम् + नि + हृष् + क्त] 1 समीप आया हुआ 2 समीपकर्मी, मटा हुआ, विक-
टस्थ, ३ षट् सामीप्य, पडोस ।

सखिचयः [सम् + नि + चि + अच्] मग्न मन्वय ।

सखिचान् (पु०) [सम् + नि + चा + णच्] 1 निकट जाने वाला 2 जमा करने वाला 3 बोरगे का माल केन वाला मनु० ११३७८ 4 न्यायालय में लागो का परिवय कराने वाला अधिकारी ।

सखिचान्त्य, सखिचि [सम् + नि + चा + ह्यट्, कि वा] 1 मिलाकर रखना, साथ साथ रखना 2 सामीप्य, पडोस, उपनिषत् - ने० २५३ 3 दृष्टिगोचरना दर्शन 4 आधार 5 प्रवृत्त करना कप्य भार लेना, 6 सम्मिश्रण, समष्टि ।

सखिचान्त्य [सम् + नि + चा + धञ्] 1 नीचे गिरना, उतरना, नीचे आना 2 एक साथ गिरना, मिलना, - कि० १३१५८ 3 टक्कर, सपर्क 4 मेल, साथ, सम्मिश्रण, मिश्रण, विविध मन्वय धृष्टयोऽति मन्वय-
मदना सखिचान्त्य कर मेव - मेव० ५ १ सधान, मग्न सम्बन्ध, सख्या - नानारत्नज्योतिषा सखिचान्त्यं कु०
१३६ 6 आना, पहुँचाना 7 [बाध, पित कप] नीलो दोषो का एक साथ विगडना जिससे कि विषय ज्वर हो जाता है 8 सर्वात् में एक प्रकार का समय, ताल । सम० - ष्वट्: तीनों दोषो के विषय जाने पर उत्पन्न होने वाला मीषय ज्वर ।

सखिचयः [सम् + नि + चि + धञ्] 1 कस कर बांधना 2 सखच, आसक्ति 3 प्रभावकारिता ।

सखिचि (वि०) [सम् + नि + चा + क्त] सधान, सद्म (समास के अन्त में प्रयुक्त) खुनु० १३३१ ।

सखिचोमः [सम् + नि + चि + धञ्] 1. मेल, अनुप्रास 2 निरुक्ति ।

सखिचोमः [सम् + नि + चि + धञ्] अरधन, स्यावट ।

सखिचुलि (सत्री) [सम् + नि + चि + चित्] 1 बापसी - श० ६१०, रघु० ८५९, १०१२ 2 हटना रचना ३ निग्रह, महिष्णता ।

सखिचेश [सम् + नि + चि + धञ्] 1 गहरी पेंठ, उत्कट भक्ति या अनुराग, मलमत्ता 2 सखच, मन्वय, मद्यान ३ मेल, मिलाप, व्यवस्था रक्षणीय ण्य व सुमनसा सखिचेश मा० ११९ 4 स्थान, जगह, स्थिति, अवस्था कु० ७३२५, रघु० ६११९ 5 पटोम सामीप्य 6 रूप, आकृति उद्गमगरीर सखिचेश मा० ३, निरुक्तिप्रवेश - का० 7 शोषणी, रहने की जगह - रघु० १५७६ 8 उपद्रवस्थानो पर आसन देना, विद्याना - कियतां ममावमसखिचेश - उपर० ७ 9 बीच में रखना 10 नगर के निकट भूला मैदान जहाँ लोग मनोरंजन, व्यायाम आदि के लिए एकत्र होते हैं ।

सखिचित (पु० क० कृ०) [सम् + नि + चा + क्त] 1 निकट रखना गया, पास पडा हुआ, निकटस्थ, मटा हुआ, पडोस का स० ५ 2 निकट, समीप, नजदीक ३ उपनिषत् - अति सखिचितोऽप्य कुल्पति - श० १, हृदयसखिचिते मा० ३१२ 4 जमाया हुआ, रक्खा हुआ, जमा किया हुआ 5 उधत्त, तप्यर मू० १ 6 उहना हुआ, मन्वर्तनी । सम० - ष्वट् (वि०) त्रिमका विन्यास निकट ही ही, सखचयुर नखरः अस्यायो काय सखिचितताय - प० २१२ ७१ ।

सख्यसन्म् [सम् + नि + अच् + ह्यट्] 1 त्याग, (हृषिहारः) डाल देना 2 पूर्ववैराग्य, विरक्ति न च सख्यसनादेव मिदं ममपिपच्छति मग० ३५ 3 लीपना, सुपुटं करना ।

सख्यसत् (पु० क० कृ०) [सम् + नि + अच् + क्त] 1 डाला हुआ, नीचे रक्खा हुआ 2 जमा किया हुआ 3 लीपा हुआ, सुपुटं किया हुआ 4 एक ओर डाला, छोटा हुआ, त्यागा हुआ ।

सख्यसत् [सम् + नि + अच् + धञ्] 1 छोड़ना, त्याग करना 2 सासातिक विषयो तथा अनुप्रासो से पूर्ण वैराग्य, सांसारिक बाधनाओं का विलक्षण, अम० ६१२, १८१२, मनु० ११११५, ५१२०८ 3 बरोहर, निक्षेप 4 मेल में धर्त लगाना 5 शरीर स्थानना, मय 6 बटावानी, बालच्छद ।

सख्यसिन् (पु०) [सम् + नि + अच् + चित्] 1 जो त्याग देता और जमा कर देता है 2 जो सखर और हमरी आमलियों का पूर्वज त्याग कर देता है ।

बैरागी, बीबे आद्यम में स्थित शास्त्रानुसंगेय स
निश्चयन्यासी यो न द्वेषित न कांक्षति भग० १।३
3. भोजन का त्याग करने वाला, त्यक्तआहार,
-भङ्गि० ७।७६ ।

सत् (स्वा० पर० सपति) 1 सम्मान करना, पूजा करना
2 सबब ओढ़ना ।

सपक्ष (वि०) [सह पक्षेण—ब० स०] 1 पक्षी वाला,
द्वैतो वाला 2 पक्षवाला, दम्बवाला 3 एक ही पक्ष
या दल का 4 बन्धु, समान, सद्बन्ध—(आल०) दलद्-
शास्त्रानिर्देशमभरसपक्षो भणितय मासि० २।७७
5 जिसमें अनुमान का पक्ष या साध्य विषय विद्यमान
हो, ज 1 समर्थक, अनुगामी, पक्षपाती, हिमायती
2 मजानीय विद्वेदार्थ—मासि० ४ 3 (सकं०
में) साध्यपक्ष का दृष्टान्त, समान उदाहरण—निश्चय-
साध्यवान् सपक्ष सकं० ।

सपक्षः [मह एकार्क पतति पत् + न, महस्य स] सद्बु,
विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी—रघु० १।८ ।

सपत्नी [समान पति यस्या ब० म० स्त्रीपु, न कादेश]
1 प्रतिद्वन्द्वी या सहपत्नी, प्रतिद्वन्द्वी पृथ्वी, सीत
(एक ही पति को दूसरी पत्नी) - दिवा सपत्नी भव
दक्षिणय्या रघु० १।६३, १।४८६ ।

सपत्नीक (वि०) [सपत्नी + कप्] पत्नी सहित ।

सपत्न्यकरणम् [सह पत्रेण सपत्न + शब् + कृ + ल्यट्]
1 इस प्रकार बाण मारना जिसमें कि बाण का पुत्र
दाग भाग शरीर में घुस जाय 2 अत्यन्त पीडाकारक
मु० निष्पन्नकरणम् ।

सपत्न्यकृति (स्त्री०) [सपत्न + कृ + क्त + कितिम्]
वेरना, पीडा, अप्यन्त कष्ट या मन्नाप ।

सपथि (अथ०) [सह + पद् + इत् महस्य म] नुरत्न,
साग भर में, फौरन, तत्काल सपथि मरदानलो
दरानि मय मानसत् गीत० १०, कु० ३।७६, १।४ ।

सपथी [सत् + पृ + क्त + अ + टाप्] 1. पूजा, अर्चना,
सम्मान—सोऽह सपथीविधिभाजनेन रघु० ५।२२,
२।२२, ११।३५, १३।५६, शि० १।१४ 2 सेवा,
परिचर्या ।

सपथि (वि०) [सहापदेन ब० स०] 1. पैरो वाला
2 एक चौपाई बड़ा हुआ ।

सपथिः [समान पितृ मूलपुरुषो निषापो वा यस्य ब०
स०] समान पितरों को पिण्डदान देने वाला, एक
समान पितरों को पिण्डदान देने के कारण संबंधी,
बन्धु भाइ० १।५२, मनु० २।२४७, ५।५९ ।

सपथिभारकम् [सपथि + क्त + ल्यट्] समान पितरों
के सम्मान में किया जाने वाला विशेष भाइ का
अनुष्ठान, (सह भाइ किसी बन्धुबंधु की मृत्यु के
एक वर्ष पश्चात् किया जाता है, परन्तु भावकस

बहुधा मृत्यु में बारहवें दिन ही किया जाने लगा
है) ।

सपीथिः (स्त्री०) [सह एकत्र पीथि पानम्—पा + क्तिन्]
साथ साथ पीना, मिलकर पीना, सहान ।

सपथक (वि०) (स्त्री—का, स्त्री) [सपत्नीना समूह
सपत्न्य + क्त] 1 जिसमें सात सम्मिलित हो 2 सात
3 सातवा,—क्य मात वस्तुओं का महह (कविता
आदि का) ।

सपथकी [सपथिः स्वरं इव कापिण्य शब्दापत्ते सपत्न्य
+ क्त + क + शब्] स्त्री की कर्णवी या नगदी ।

सपथिः (स्त्री०) [सपत्न्यगिना दर्शति - नि०] सत्तर,
तेषु (वि०) सत्तरवर्ग ।

सपथ्या (अथ०) [सपत्न्य + घाप्] सात गुण, सात
प्रकार में ।

सपथ्यम् (स० वि०) [सदैव बहुवचनान्—कर्त्त० व कर्म० मन्त
[सप् + तनिन्] मात । मम० अङ्ग (वि०) दे०
नी० सपत्न्यकृति, अथिष् (वि०) 1 मात जिह्वा या
श्री बाला 2 बुरी अथि वाला, अक्षय दृष्टि वाला,
(पु०) 1 अग्नि 2 गनि, सपीथिः (स्त्री०) मताही,
अथम् सतकोन, अथ-सूर्य, बाह्य-सूर्य,—अह-
मात दिन अर्थात् एक हफ्ता, सत्तम् (पु०) बड़ा
का विशेषण, श्रुधि (सपथिः) (पु० ब० व०)

1 सात श्रुधि, अर्थात् शरीरि, अथि, अथिग, पुत्रस्य,
पुत्रह, ऋतु और वसिष्ठ 2 सपथि नामक नक्षत्रम्
(सात तारों का समूह जो उपर्युक्त सात श्रुधि को
जाते हैं), श्वाशरिणम् (स्त्री०) सेनालिम्,—विष्णु-
-अथाः जाय,—सपु, यज्ञ शि० १।४६, विष्णु
(स्त्री०) सेनीय,—इत्यु० वि० महह,—श्रीथिः अग्नि

श्रीवा पृथ्वी का विशेषण, शायु (पु० ब० व०)
शरीर के सपथक सात मूलनरक अर्थात् अनरक,
शधिर, मात, चर्बी, हृद्दी, मज्जा, शीर्ष, मक्षिः
(स्त्री०) सत्तापे,—शारीरकम् अथिणिक का एक
रसाथिच जिसके द्वारा शरीरविषयक प्रविष्यकचन
किया जाता है,—बन्ः (इसी प्रकार सपथ्यक,
सपथ्यत्र) एक वृक्ष का नाम, पथी विवाह में सात
पथ चक्रना (हुन्हा और दुलहित विवाह संस्कार के
अवसर पर सात पथ मिलकर चलते हैं—इतके बार
विवाहसम्बन्ध बढ़ते जाते हैं), प्रकृतिः (स्त्री०
ब० व०) राज्य के सात सपथक अन्—स्वाम्यमाय-
सुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च अमर०, दे० प्रकृति श्री,
-माः सित्त का वेद, मुषिक, मोष (वि०)

सातमधिक अथा (जैसे कृमि),—राज्य सात
रात का समय, विषतिः (स्त्री०) सत्ताइस, विष
(वि०) सातवना, सात प्रकार का,—अन्तम् 1 सात
ही 2 एक ही मत (स्त्री) सात ही स्त्रीओं का महह,

-सप्ति मूयं का विशेषण - सर्वस्वै समग्रैस्त्वमिव
नृपपूर्णेदीप्यते सप्तसप्ति - मालवि० २।१३ ।

सप्तम (वि०) (स्त्री०-मी) [सप्ताना पुरण- सप्तन
+उट, मट्, मत्] सातवा, मी (स्त्री०) 1 सातवी
विभक्ति (व्या० में) अधिकरण कारक 2 चांद्रहर्ष
के कियो पक्ष का सातवा दिन ।

सप्तम्या (स्त्री०) एक प्रकार की चमली ।
सप्ति [सप्, ति] 1 जूआ 2 घाटा—जबो रि मत्
परम विभषणम् - मुभा० -वे० सप्तमत्ति० बी ।

सप्तम्य (वि०) [सह प्रमयेन व० म०] स्मैरी, मित्रतापूर्ण ।
सप्तम्य (वि०) [प्रत्ययेन सह व० म०] 1 विश्राम
रमने वाला 2 निश्चल, विश्रम्य ।

सफर-री [सप् अरन् पा० पय्य क] छोटी चमकीली
मउली नु० शकर ।

सफल (वि०) [सहकृतेन व० म०] 1 फला के पूर्ण
फल देने वाला उपजाऊ (आल० में भी) 2 सम्पन्न
पूरा किया गया, कामयाब ।

सक्य (वि०) [सह कथन-व० म०] 1 त्रियने नाथ
निकट सम्बन्ध हो 2 मित्रवत्त मित्रता के गुण में
बधा हुआ, धु रिन्ददार का राधब ।

सकलि [सहवल्लिना व० म०] पाथकालीन झटपुटा
गोधुदियेना ।

ससाय (वि०) [सह वायवा व० म०] 1 आयातपूज
-पोटा, गयल ।

सहाय्यार्थम् [समान इच्छापस सह्य म] सहायिनी
(एक में गुण के गिण्ट होने के कारण) ।

सहस्राचारिन् (पु०) [समान बह्य वेदपहणकालीन व्रत
वर्गिन बर् : गिति समानस्य म] 1 महाश्री (समान
अभ्यसन या समान साधना करने वाला) 2 सहस्री,
मशानुभूति रमने वाला व्यक्ति दुससहस्राचारिणी
नगरीका बह गना का०, हे श्रमनसहस्राचारिनि
यदि न मुद्य नन श्रानुमिच्छामि - मुद्रा० ६ ।

सभा [सह भाति अर्भाट्टा-देववार्धमेकर पत्र वृह]
1 जतमा, रंगिप, गुणसभा गणितसभा बारिन्-
वान् - पच० १, न हा मभा गत्र न मनि वृद्धा
-ति० ? 2 गर्भानि सभाव, सम्मिलन वरी
मस्था 3 गन्विट्कल या मभा भवन 4 ग्यादानप
३ मार्वात्रिक ब्रह्मना 6 ब्रूआ गाना 7 काई भी
स्थान जहाँ लोग प्राय आते जात हां । सम०
आस्तावर 1 सभा में महायक 2 मनाय्, वलि
मभा का अग्रवक्ष, मभागति 2 जूए का अहवा चलाने
वाला, पूजा दर्शको के प्रति सम्मान प्रदर्शना, सप्
(पु०) 1 दाना मभा या ब्रह्ममें महायक 2 मभा-
मद्, मेम्बर, 3 अदानन की पक्ष,यत का सदस्य, जूरी
का सदस्य ।

सभाय् (पुरा० उभ० सभाजयति मे) 1 अभिवादन
करना प्रथाम करना, नमस्कार करना, अर्द्धाञ्जलि
अर्पित करना, बधाई देना स्नेहात्मभात्रियनुयेय,
उत्तर० १।७, वि० १३।१८, वा० ५.2 ममान
करना, पूजा करना आदर करना 3 प्रमन्न करना,
मुन करना 4 सुन्दर बनाना, अमृकृत करना, 5 ताना
-उत्तर० ४।१९.5 प्रदर्शन करना ।

सभायम् [सभाय्+सुट्] 1 (क) प्रथाम करना,
अभिवादन करना, नमस्कार करना, पूजा करना
-वि० १३।१८ (ख) न्यायन करना, बधाई देना
रपु० १३।४ १४।१८ 2 गिष्टला, गिष्टाचार,
विनम्रता 3 सेवा ।

सभायम् [सह भावनेन व० म०] गिब का नाम ।

सवि (मी) क [सभा शून प्रयोजनस्य ईक] जूए
का अर्द्धा चलाने वाला, जूआ सेलाने वाला अयम-
म्याक पूर्वसभिको माधुर इत एवागच्छति मूच्छ०
३, वाज० २।१३९ ।

सस्य (वि०) [सभायां माधु - यत्] 1 सभा में सबध
रमने वाला 2 मनाज के योग्य 3 संकृत, परिष्कृत,
विनीत 4 सुशील विनम्र गिष्ट रपु० १।५५, कु०
७।७९ ५ विश्रम्य, विरमनीय ईमानदार स्य
1 मूखनिदर्शक 2 सभाय् 3 सभानित कुल में
उत्पन्न 4 ब्रूआ-वाले का मवालय ५ श्वमृह के
सवालयक का सेवक ।

सस्यया सस्य [सस्य +तल : टाप् ख वा] विनम्रता,
सुशीलता कुशीलता ।

सस्य (व्या० पर० समति) 1 विश्रम्य या अश्वरथिभन
हाना 2 विश्रम्य या अश्वरथिभन न हाना ।
३ (वृ० उभ० समयान मे) विश्रम्य होना ।

सस्य (अव्य०) [सोः इय] धानु या इत्यन शब्दा में पुत्र
उपसर्ग के रूप में लग कर इसका निर्मातक पद है
(क) के साथ मिल कर, साथ साथ पथा मयम,
मभापण, सया, मयज् आदि में (ख) कभी कभी यह
धातु के अर्थ को प्रकट कर देता है और इसका अर्थ
होता है 1 बहुत, विष्कुल, खूब, पूर्णत, अत्यन्त
-यथा सनु मनाय, मयस्य, मयास, मयाय आदि
2 मयास में मजा शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होकर इसका
अर्थ है कभी कभी, मयास, एक जैसे यथा 'सयर्ष' में
3 कभी कभी इसका अर्थ होता है निश्च, पूर्ण, मया
कि 'सयस्य' में ।

सस्य (वि०) [सय : अथ] 1 बरी मयक 2 मयास,
जैसा कि 'ममलाट्टहावन' में रपु० ८।७१, अग०
२।३८ 3 के मयास, सेवा हो, मिलना-जुक्तता, करण०
या सबध० के साथ अथवा मयास में, -पुण्यकली दूरि-
द्रोपि नेचरैरपुणं मत् -मुभा०-कु० ३।१३, २३.

4 ममान, समस्त चौरस समदेशवर्तितस्ते न दुरा-
सदो ऽविर्गानि ४० १ 5 समसम्प्रा, 6 विपक्ष
व्याप्युक्त 7 व्याप्योक्ति, ईमाद्यार, खरा 8 भला
मद्गुरुण मयत्न 9 माभाय, मामूनी 10 मय्यवर्ती,
बीब का 11 बीबा 12 उपपन्न भुविजाजनक 13 नटम्भ,
अचल, निगवय 14 यत्, प्रत्येक 1: सारा, पूर्ण,
समान, पूरा — **सम्** ममान-संदात, चौरस देश (१०
१:११) — **सम्** (अव्य०) 1 मे, के माय, मिलकर,
महित, (क० १० के माय) आदो निकम्पनि मम
हरिणात्तनानि - म. १:३, २५० २:२५, ८:६३,
१६:३ 2 एव ममान एका सर्वाणि भूतानि घरा
प्रायते ममम् मन् १:३११ 3 के ममान, इमी
कान्, इमी रीति म एव १:१०८ 4 पूर्णत
5 युगल, एकते माय, मव मिल कर, उमी समय
माथ माथ-नव यथा दत्त धनेमदा व स्वद्विप्रयोगाय मम
विमुटम् २५० १:३३ ६:६, १०:६० १:६१ १

सम्—अज्ञ ममान भाग हारिन् (५०) मद्दत्त-
भागी अन्तर (वि०) ममानान्तर-आधार 1 ममान
या एक देगा आनरण 2 उचित व्यवहार, —उचकम्
आया द्वाी हीर अग्य गानो मिदक्कर बनावे गई
छाल मटडा उपला उपाय अन्तकार का एक भेद
कल्या मय, 1 उपान्त कन्या विवाह के माय।
काने गेमा बयारका विदने कर्ण एक ममान हा,
काने गेी मयय वा: लभ, सम् (अव्य०) उमी
ममा ममान कानीन वि०) ममवयम्, ममगण
विष, कौल्य गय, माय, क्षेत्रम् अयानि० मे।
नसत्रो के एह विशेषकम् का विशेषण आत स-न
मदाई, ममानान्तर अनुभङ्गो मे वदो हुई आकृति
सम्बन्ध एक जैसे पार्थो मे बना हुए, अनुभङ्ग
(वि०) गगे (सम् ममभुज अनुभङ्गण, अनुभुञ्ज
—अम् विपयमोण मयचनुभुज चित्त (वि०)
1 मम-मम एक ममान प्रताम्बिच 2 उपामीन
छेद, छेदन (वि०) वः निश्र जिनके इय ममान
हा, आति (वि०) ममान जाति वा वर्ग का, आ-
स्थानि —चिभुज, अम् ममभुज विकोण, इहोत
—इहिन (वि०) ममान कर मे देखने वाला निष्पन्न,
—विद्याविनयसप्तमे प्राज्ञणे गवि इस्थिति मुनि वीच
इवणे च पण्डिता ममदग्नि —म० १:११३ बुद्ध
(वि०) दुमगे के दुम को अपने बैसा दुब समझने
वाला, (दुमगे मे) मत्तानुमति रखने वाला, दुम मे
मायो, कु० ५:६, 'सुख (वि०) मुनि और दुब
वा मायो म० ३:१२, दुग्, दुग् इष्टि (वि०)
व्यापारगठित बुद्धि (वि०) 1 निष्पन्न 2 नटम्भ,
नि मय, भाव (वि०) एक-मी प्रकृति या गुण रखने
वाला (क) ममानता, मुत्तया, मय्यकम् (अ०)

मे) मुख्य खडी रेखा, —सय (वि०) एक ममान युक्त
वाले 'द्विजित (वि०) इतके रव वाला, - रंश: एक
प्रकार का रीचव, रेख (वि०) सीधा, प्रकृष्या
यद्गु नदधि ममरेव नयनयो —म० १:१९, सख्यः
—सम् विषम अनुभुञ्ज कश्च: एक ही जाती का,
—वर्तिन् (वि०) मममन्सक, पञ्चातरहित (५०)
मृप वा देवता, यमराज, बुधम् 1 यह छद जियके
वारी चरण समान हो 2 द० 'मममन्स',—वृत्ति
(वि०) चीर, गभीर —वेध: वीध के दबे की गहराई,
शोधनम् ममीकरण के प्रदो मे एक सी गधि का
दोनों ओर घटाना मय्यवकलन, सन्धि, एक ममान
मनी एव मान्मिष्यापन, मुक्ति (स्वी०) विचरिन्ना
(कल्पान् मे अवसर पर मय्यन् वराचर चिरनिडा
मे विर्तन हा जाने है),—स्व (वि०) 1 बराबर,
एक रूप का 2 समानक, इयवान 3 ममान, —स्वस्वम्
ममनल मयि ।

समञ्ज (वि०) [अन्तो मयीपम् मयस + अञ्] अन्तो
के मानने मोहद उर्गनीय वर्तमान, —सम् (अव्य०)
की उपस्थिति मे, देखने देखने जितों के मानने
- कु० ५:१ ।

समष्ट (वि०) 1 मय मकल यथा म्यामभायुद्धत- मम्
-घट, - ३] मय, पूर्ण, ममस्त पूरा—मालवि०
२:१३ ।

समष्टा [मम् + अञ् + टाप्] मजिष्ठा मजीठ ।

समस्त [मम् + अञ् + अ] 1 पद्यों का सुच, गधिया
का गोल लट्टा रवेद 2 पद्यों की मन्ता, अम्
उपान अन्प ।

समष्टा [मम् + अञ् + क्य + टाप्] 1 समिलन, समा
2 मयानि, यद कोति ।

समञ्जस (वि०) [मय्यक् अञ्ज औचिथ यश् व० म०]
1 उचित, नकेमयन, ठीक, योग्य 2 मही, मय,
यथाथं 3 स्पष्ट, बोधमय बैसा कि अनमञ्जस,
मद्गुणमयन, भला, व्याप्योचिन—भूषाचिस्वदप
ममञ्जस जन्म वि० १०:१२ 5 अन्वयत, अनुभुन
6 स्वम्भ सम् 1 औचिक, योग्यता 2 यथायोग्य
3 मय्यो गवती ।

समता, सख्य [म- तत् + टाप्, ल्वा] 1 एकतापन,
एकपता 2 समानता, एक बैसापन 3 बराबरी
4 निष्पन्नता, समता, समतां मी, ममान व्यवहार
करना मन् १:१२८ 5 मन्तपन 6 पूर्णता
7 माताम्यता 8 ममानता ।

समतिक्रम [मम् + वृत्ति + क् + घञ्] उल्लेखन, मूल ।

सम्यक् (वि०) [मम् + अति + क् + क] बोला हुआ
गया हुआ २५० ८:७८ ।

समष्ट (वि०) [मद् मदेन - व० म०] 1 नष्ट मे च्,

बोधय 2. मय के कारण मस्त 3 प्रणयोनमत, -उत्तर० २।२०।

समचिक (वि०) [सम् + चिक - प्रा० सं०] 1 अतिशय 2 अत्यंत अधिक पुष्कल, बहुत अधिक - उत्तर० ५, कम् (अध्य०) अत्यंत, अधिकता के साथ।

समधिपयाम् [सम् + अधि + यम् + ह्यट्] आगे बढ़ जाना, पार कर लेना, जीत लेना।

समध्य (वि०) [समानः अध्या यस्य - ब० सं०] साथ यात्रा करने वाला।

समनुमानम् [सम् + अनु + ज्ञा + ह्यट्] 1 हमी भ्रमना, स्वीकृति देना 2 पूर्ण अनुमति, पूरी सहमति।

समन्व (वि०) [सम् + वन् + ब० सं०] 1 हर दिशा में मौजूद, विद्वन्व्यापी 2 पूर्ण, समस्त, स. सोमा, हृद, मयादा (समन्वम्, समन्वतः, समन्वत् किया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करते हैं 'सब ओर से' 'सब ओर' 'सब ओर' पूर्णरूप से, 'पूरी तरह से'। मम० कुष्मा मूहर, स्त्री, -पञ्चकम् कुक्षोभ या उसके निकट का प्रदेश - बेबी० ६, भद्रः बद्ध भवयान्, - भूम् (पु०) आग।

समन्व (वि०) [सह मन्वना ब० सं०] 1 दोककुल 2 रोपपूर्ण, सट।

समन्वयः [सम् + वन् + इ + यञ्] 1 निर्दिष्ट वस्त्रपरा या क्रम 2 मरुद्ध अनुक्रम, पारस्परिक सम्बन्ध, तात्पर्य, तत्सु सम्बन्धवात् ब्रह्म० १।१।८, त च नदयताना पशाना ब्रह्मन्वयवियेषे निश्चिने मन्वये अन्तरकल्पना युक्ता जागे० 3 सयोग।

समन्वित (भू० क० कु०) [सम् + वन् + क्त] 1 सबद्ध, प्राकृतिक रूप में बाँध 2 अत्यंत 3 सहित, युक्त, भरा हुआ 4 बल।

समन्वित्युक्त (भू० क० कु०) [सम् + वन् + क्त] 1 बाँधवस्तु 2 ग्रहण वस्तु।

समन्वित्याहारः [सम् + वन् + वि + आ + ह् + घञ्] 1 मित्राकर उल्लेख करना 2 साहचर्य, साथ 3 गुरु का साहचर्य या सामीप्य, जब कि उक्त शब्द का अर्थ स्पष्ट रूप से निश्चित कर लिया गया हो।

समन्वितरणम् [सम् + वन् + क्त] 1 पहुँचाना 2 जोड़ करना, कामना करना।

समन्वित्हासः [सम् + वन् + ह् + घञ्] 1 साथ-साथ ले जाना 2 आवृत्ति 3 अतिरिक्त, फालतु।

समन्वित्तम् [सम् + वन् + क्त] पूजा करना, अर्चना करना।

समन्वित्हासः [सम् + वन् + आ + ह् + घञ्] साथ रहना, साहचर्य।

समन्व [सम् + वन् + क्त] 1 काल 2 अवसर, मौका 3 योग्य काल, उपयुक्त काल, या अनु, ठीक वक्त

कु० ३।२५ ५ करार, समझौता, सविदा, पहले से किया गया ठहराव मिथ समयात् - ब० ५ 5 रुद्धि, प्रथा 6 बालकपाल का सम्पादित नियम, सम्कार, लोकप्रचलन कि० १।२८, उभर० १ 7 कवियों का अभिमनय (उदा० बादलों के दर्शन में प्रेमी और प्रेमिका का वियोग हो जाता है) 8 नियुक्ति, स्थिरीकरण 9 अनुबन्ध, शर्त - विक्रम० ५ 10 कानून नियम, विनियम याज्ञ० ३।१९ 11 निर्देश, आदेश, निर्देश, विधि 12 आपत्काल, नकटकाल 13 गणप 14 संकेत, इंगित, इशारा 15 सीमा, द्रव 16 प्रदक्षिण उपमहा, मिद्वान, मतवाद बौद्ध, वैशेषिक 17 अल, उपमहा, समानि 18 सफलता, समृद्धि 19 कष्ट का अल। मम० - अन्वित्तम् ऐसा समय जब कि न मूर्त दिखलाई देता है त तारे अनुवर्तित् (वि०) सामी हुई प्रथा का पालन करने वाला, अनुवर्तित, उचितम् (अध्य०) अवसर के अनुकूल जैसा मौका हो, - आहार लोकप्रचलन चलन, सामी हुई प्रथा, किया बरग करना, - अन्वित्तम् किसी समयके का पालन करना, सवि या करार - न समयपरिग्रहण सम ते - कि० १।८५, अन्वित्तः प्रतिज्ञा ताडना, उँके का उल्लंघन या भंग, - अन्वित्तारित् (वि०) प्रतिज्ञा या बचन मय करने वाला।

समया (अध्य०) [सम् + आ] 1 ठीक, अनु के अनुकूल, ठीक समय पर 2 निर्दिष्ट समय पर 3 बोध में बँ अन्तर, (दो के) बीच में 4 निवृत्त (कर्म) के साथ समया मौर्धमित् - दशा०, शि० ६।३३, १५।९, तल० ५।८।

समय, रस [सम् + वन्] सधाम, पुढ, लडाई, कर्णदोषिणी मगरमगराङ्कमुल्लोभ बन्धि बेची० ३।

मम० उद्देशः - भूमि रणक्षेत्र, सुवृत्त (पु०) शिरस (सु०) पुत्र का अध्याय।

समयवन्त् [सम् + वन् + ह्यट्] पूजा, अर्चना, आराधना।

समयवन्त् (वि०) [समः अट् + क्त] 1 कष्टवस्तु, पीडित, पायाल 2 पुष्ट निर्धोत।

समयवन्त् (वि०) [सम् + अर्ध + अच्] 1 मजबूत, शक्ति-वाली 2, मसम, अभ्युत्थान, पात्र, योग्यता प्राप्त प्रतिग्रहमन्वोपि - मनु० ५।१८९, याज्ञ० १।२।३ 3 योग्य, उपयुक्त, उचित मज्जुसुल्लसमेक राधच, प्रत्युपगत मन्ववन्त् - रघु० १।१०९ ४ योग्य या समर्थित बनाया हुआ, तैयार किया हुआ 5 समानार्थी 6 मार्थक 7 मन्वित उद्देश्य या बल रखने वाला, अनिबलगाली 8 गाल-गामे विद्यमान 9 अर्थवत् सबद्ध, - र्कः 1, (व्या० में) सार्थक शब्द 2 सार्थक वाक्य में मित्रा कर रखत हुए लब्धो की सतकित।

समर्पणम् [सम् + अर्ष + ण्यत्] अर्पण की लक्षणी ।
 समर्पणम् [सम् + अर्ष + ण्यत्] 1. संस्वापन, पुष्टि करना, तादृश करना, 2 रक्षा करना, सहारा देना, स्थापना मित्र करना—स्वित्तेभ्येतु समर्पणम्—आश्व० ७ 3 बर्णन करना, विभाजन करना 4 अनुमान लगाना, विचार करना, निदान करना 5 विचार-विषय, निर्धारण, किसी वस्तु के अधिस्थानीयत्व का निर्णय करना 6 पराजिता, मष्कता, वन, धरिता 7 ऊर्जा, बँध 8 भेदभाव दूर कर फिर समझाना करना, कलह दूर करना 9 बाधण ।

समर्षक (वि०) [सम् + अर्ष + ण्यत्] 1 बरदाता 2 समुद्र करने वाला ।

समर्षणम् [सम् + अर्ष + ण्यत्] देना, हस्तगतत्व करना, सीपना, हवाले करना ।

समर्षण (वि०) [सह सर्षणिया ष० सं०] 1 सीमित, बंधा हुआ 2 निकटवर्ती, समीपवर्ती 3 बुद्ध्यापारो, अधिष्ठत की सीमा के अन्दर रहने वाला 4 सम्मान-पूर्ण, शिष्ट ।

समर्ष (वि०) [मनेन सह ष० सं०] 1 मंका, मन्दा, मलिन, अपवित्र 2 पापपूर्ण, कम सुटीय, मल विष्टा ।

समर्षकारः [सम् + अर्ष + क्त + षण्] शतक का एक मंड (शा० ष० ५१५ में निम्नांकित परिभाषा की गई है— वृत्त समर्षकारे नु क्वात् वेदानुवाक्यम् । समयो ऽभिवासांस्तु प्रयोऽङ्कः ॥)

समर्षताः [सम् + अर्ष + ता + षण्] 1 उत्तर 2 बाट-बूँट से किसी नदी या पुष्पस्थानीय में उत्तरा नाम—समर्षतारसर्वसर्वस्त—वि० ५१० ।

समर्षस्या [समा तुभ्या बवस्या षा नम + अर्ष + स्या + ञञ् + टाप्] 1 निश्चित अवस्था 2 समान तथा वा स्थिति ष० ४ 3 अवस्था या दशा—रघु० ११५०, भाषवि० ४१० ।

समर्षस्थित (व्यु० क० कृ०) [सम् + अर्ष + स्या + क्त] 1 स्थिर रहता हुआ 2 स्थिर ।

समर्षस्थिः (स्त्री०) [सम् + अर्ष + भाष् + क्तान्] शक्ति, मजिष्ठकृष्ण ।

समर्षाः [सम् + अर्ष + इ + अच्] 1 सम्मिश्रण, मिश्राण, संयोग, समष्टि, सहस्र-सर्वाविधानामेककल्पेवामा-यतन किमुत समर्षाः—का०, बहुतामयसारार्था समर्षावो हि दुर्बल—बुवा० 2 तन्मा, समुच्चय, राशि 3 वनिष्ठ संघर्ष, संघर्षित 4 (देवे० में) प्रवादित मिश्राण, अधिष्ठित तथा अधिष्ठक संयोग, अनेक लक्षणाया वा एक वस्तु का दूसरी में अधिष्ठित (जैसे पदार्थों की वृत्त, अंगों की वृत्त), वैशेषिकों के शास्त्र पदार्थों में से एक ।

समर्षाणि (वि०) [समर्षाण + टि] 2. वाचक रूप से संबद्ध 2 समुच्चयवाचक, बहुलसम्बन्ध । षण०—कारणम् अनेक कारण, उपादान कारण (वैशेषिक दर्शन में बणित तीन कारणों में से एक) ।

समर्षण (व्यु० क० कृ०) [सम् + अर्ष + इ + क्त] 1. एकत्र आये हुए, मिले हुए, जुड़े हुए, सम्मिलित 2. वनिष्ठता के साथ संबद्ध, सम्बन्धित, अनेक रूप से समुक्त 3. बड़ी संख्या में समाधिष्ठित वा सम्मिलित ।

समर्षिष्ठ (स्त्री०) [सम् + अर्ष + क्तान्] समुच्चयवाचक शक्ति, एक जैसे अंगों का समुह, अवयवों की सम-तत्त्वात् से युक्त अवयवों का युग्म है (विष्० व्याधि) समष्टिरीय सर्वेषां स्थानतात्प्रात्ययेवमात् । उप-धायात्सम्भे नु क्वात्वे व्याधिप्रधाना ॥ षण० ।

समर्षणम् [सम् + अर्ष + ण्यत्] 1 एक साथ बिकाना, सम्मिश्रण 2 समुक्त करना, समस्त (समाप्त वृत्त) सर्वों का निर्माण 3 संकुचित करना ।

समस्त (व्यु० क० कृ०) [सम् + अर्ष + क्त] 1. एक जगह, शका हुआ, सम्मिलित 2. समुक्त 3. किसी पदार्थ में युक्तः व्याप्त 4. संक्षिप्त, संकुचित, संक्षेपित 5. शारा, पूर्ण, पूरा ।

समस्या ' सम् + अर्ष + ण्यत् + टाप्] 1 पूर्ण करने के लिये दिया जाने वाला रूपा का चरण, कविता का वह भाग जो प्रति के लिए प्रस्तुत किया जाय—कः श्रीपतिः का विषया समस्या—बुवा० । इस प्रकार 'सामर्थ्यादि समुक्तौ' 'अधोर्ध्वविस्तारम्' 'पुरोक्तम् पुरोधाव' पक्षिणां 'येन' सर्वं पुराः शिष्यां से पूर्ण हो जाती है । 2. (अतः) समुह की पूरा करना—वीरिय तथा बुद्ध्या कदाचित्कवीयन्पर्यवर्तन् समस्याम्—वी० ७८२, (समस्या = संघटनम्) ।

समा [सम् + अर्ष + टाप्] (शायः ष० ष० में अर्धोः, परन्तु प्राणिनि द्वारा एक वचन में ही समुक्त-उदा० कर्ता सम्या-या० ५१२१२) सर्वं—समाप्ती परिपक्वताः समा कश्चित्—रघु० ८१२२, समर्थवत्पूर्ववैभवा रासं श्रावणवत्समाः—१२१४, १९१४, महावीर० ५१४१, अश्व०—से, साथ बिना कर ।

समार्थनीया [समां सर्वान् विभाषते प्रकृते—स प्रत्यये वि०] बहु पाप को प्रतिबन्ध आती है और बहका देती है ।

समार्थकम् (वि०) (स्त्री०—की) [सम् + भा + कृ + क्तान्] 1. आकर्षक 2. दूर तक वचन लेनेवाला, वा प्रचार करने वाला, वृ० प्रकृत गंध, दूर तक फैली बंध ।

समार्थक (वि०) [सम् + भा + कृ + क्तान्] 1. बरा हुआ, भागीनी, श्रीरु-भाव से युक्त 2. समुक्त, व्यवस्था हुआ, बहिन, हृदयवाता हुआ ।

समार्थता [सम् + भा + कृ + क्तान् + टाप्] 1. बंध, शक्ति, शक्ति 2. मान, अधिष्ठाता ।

पाठा तक जाता है) —समानोदकभावनु विभक्तौ-
चतुर्दशान् ३० मनु० ५।६० भी, उच्यते: एक पेट
मे उपजन्, सहादर भाई, —उच्यते एक प्रकार की
उपमा है० काव्या० २।२९, काव्य—कालीन(वि०)
एककालिक, समकालीन शोध =सगोत्र, एक ही
गोत्र का, हुःक (वि०) मनुजुमुनि रत्नने बाणा,
धर्मन् (वि०) एक ही प्रकार के गुणों से युक्त, महानु-
भूतिदसोक, गुणों को मराहने बाणा मा० १।६,
यन् श्वर का बही उच्यप्रथम शक्ति (वि०) एक
मी शक्ति बाणा।

समानयनम् [सम् + आ -नी + म्युट्] माय मन्ना, मरह
करना, मचालन।

समाय [समा आया यस्मिन् इ० म०] देवताओं के प्रति
यज्ञ करना या आहुति देना।

समायसिः (स्त्री०) [सम् + आ + ग् + क्तिन्] 1. मिथ्या,
मूढभेद 2 बुद्धिहीन, आध्यात्मिक घटना, अकर्ममात्
मूढभेद समार्यानिदष्टेन कंसिना दानवन-विषम० १,
क्रियासमार्यानिदष्टिनामि रघु० ३।२३, कु०
३।७५।

समायक (वि०) (स्त्री०-पिका) [सम् + आ + क् + क्त]।
समाप्त करने वाला, सम्पन्न करने वाला, पूरा करने
वाला।

समायकम् [सम् + आय - स्युट्] 1 पूर्ति, उपहार, समाप्ति
करना मनु० ५।८८ 2 अधिग्रहण 3 मार डालना,
नष्ट करना 4 अनुभाव, अध्याय 5 महान मनन।

समायक (पुं० क० इ०) [सम् + आ + य + क्त] 1 प्राण,
जवापन 2 शक्ति, हुआ 3 आयन, पहुँचा हुआ
4 समाप्त, पूर्ण, सम्पन्न 5 प्रवीण 6 सम्पन्न 7 दुःखी,
कष्टग्रस्त 8 बंध किया हुआ।

समायकम् [सम् + आ + पर + णिच् + स्युट्] सम्पन्न
करना मूल रूप देना।

समाय (पुं० क० इ०) [सम् + आय + क्त] 1 पूर्ण किया
हुआ, उपमहृत पूरा किया हुआ 2 चतुर।

समायत्ता [समात्ताय अस्ति यथापिनि—समायत् + अत्
+ अच्] प्रभु, पति।

समायतिः (स्त्री०) [सम् + आय + क्तिन्] 1 अन्न, उप-
हार, पूर्ति, समाप्त करना 2 निष्पन्नता, पूरा करना,
पूर्वता 3 पुनर्निष्ठन, मतभेद दूर करना, विवाद को
समाप्त करना।

समायसि (वि०) [समायि + डन्] 1 अस्मि, समायक
2. समायिका 3 जिसने कोई काम पूरा किया है कः
1 समायक 2 जिसने वेदाध्ययन का पूर्ण पाठ्यक्रम
समाप्त कर लिया है।

समायत्त (पुं० क० इ०) [सम् + आ + क्त + क्त]।
1. भाङ्गस्त, भाङ्ग से हुआ हुआ 2 भरा हुआ।

समायकम् [सम् + आ + आय + स्युट्] समायक, भारी-
भार रघु० ६।१६।

समायकम् [सम् + आ + म्ना + स्युट्] 1. भावति, इच्छेत्
2 मन्ना 3 परम्परा प्राप्त पाठ।

समायकः [सम् + आ + म्ना + ष] 1 परम्परागत पाठ,
अनुभूति 2 परम्परागत (सम्) संवह—अप्यसति
पशुमामान्नाये पठधने—उत्तर० ४ 3 साक्षि पर-
म्परा, अनुभूति पाठ, सस्वर पाठ, निर्देशक 5. शोध,
सप्रति, संवह अक्षरसामान्य शिक्षा ० ५७,
(अर्थात् अ से ह तक की वर्णमाला जो चिह्न की रूप
से पाणिनि को प्रदत्त हुई)।

समायः [सम् + आ + इ + अच्] 1. पहुँचना, आना 2. सर्वत्र
करना।

समायत (पुं० क० इ०) [सम् + आ + य + क्त] शीघ्र
हुआ, बढ़ाया हुआ, लका किया हुआ।

समायक (पुं० क० इ०) [सम् + आ + य + क्त]।
1 साध जाँझा हुआ, मरह, सम्यक्त 2 कृतकफल,
मज्जन 3 तैयार किया गया, उद्यत 4 यत्न, शक्ति,
भरा हुआ, शक्ति, अशक्ति 5 जिसको कोई कार्यभार
सौंप दिया गया है, नियुक्त किया हुआ।

समायत (पुं० क० इ०) [सम् + आ + य + क्त] 1 सम्यक्त,
सम्बद्ध, साध मिलाया हुआ 2 सम्युक्त, एकच किया
हुआ 3 सक्षि, युक्त, सज्जन, अशक्ति।

समायकः [सम् + आ + य + क्त] 1 यत्न, सम्बन्ध,
सधोप 2 तैयारी 3 चतुर पर (बाध) साधना
4 संवह, डेर, सम्यक्त 5 कारण, प्रयोजन,
उद्देश्य।

समारम्भ [सम् + आ + रम् + क्त, म्] 1 आरम्भ,
शुक् 2 साहसिक कार्य, उपरसाधिकपूर्व कार्य, काम,
कर्म—अभ्युदया समारम्भा तस्य गृह विप्रेचिरे
—रघु० १।७३, मनु० ३।१९ 3 अतराग।

समारम्भम् [सम् + आ + रम् + स्युट्] 1 समुष्ट करने
का साधन, प्रसन्न करना, सुखी नाट्य चिन्महोर्ध-
नस्य बहुधाप्येक समारम्भम्—भाषि० १।१२ देवा,
दहक, - रघु० २।५, १।८।१०।

समारोपकम् [सम् + आ + ष + णिच् + स्युट्, पुच्]।
1 अशक्ति करना, रखना 2 सौंप देना, हस्ताके
करना।

समारोपित (पुं० क० इ०) [सम् + आ + ष + णिच्
क्त पुच्] 1 बढ़ाया हुआ, सवार किया हुआ
2 (चतुर आदि) ताभा हुआ—भवता चापे समारो-
पिते काव्य० १० 3 रखना गया, सौंप करवाई गई,
ठहराया गया 4 सौंपा गया, हस्ताके किया गया।

समारोपः [सम् + आ + ष + क्त] 1. बढ़ना, ऊपर
जाना 2. सवारी करना 3. सहायत होना।

सवात्मन्यम् [सम्+आ+सम्+स्युट्] टेक बनाता, संहारा लेता, बिचटे रहता ।

सवात्मिन् (सम्+आ+सम्+गिन्) लटकने वाला, संहारा लेने वाला,—औ एक प्रकार का घास ।

सवात्मन्यम्, सवात्मन्यम् [सम्+आ+सम्+स्युट्] वा, युम्] 1 पकड़ना, छीनना 2 यज्ञ में बलि-यज्ञ का व्यवहार करना 3 शरीर पर अश्रावण व उबटन आदि का लेप करना—मञ्जुसमासमन्त्र विरचयाम्—श० ४ ।

सवात्मन्यम् [सम्+आ+स्युट्] 1. बापसी 2 विशेष कर वैशाख्ययन समाप्त करके ब्रह्मचारी का घर शपित माना ।

सवात्मन्यम् [सम्+आ+अव+इ+अच्] 1. साहचर्य, संबंध 2 अविच्छेद संबंध दे० । यथाय 3 समष्टि 4 सम्बन्ध, सत्ता, डेर ।

सवात्मन्यम् [सम्+आ+स्युट्+अच्] निवास स्थान, घर रहने का स्थान ।

सवात्मिन् (यु० क० ङ०) [सम्+आ+अच्+क्त] 1. पूर्णतः प्रविष्ट, पूर्णतः अधिकृत, व्य. ल 2 छीना हुआ, परामृत, एकाधिकृत 3 प्रेतादिष्ट 4 सहित 5 निश्चित, निश्चर किया हुआ, मिटाया हुआ 6 युजिदिष्ट ।

सवाप्तम् (यु० क० ङ०) [सम्+आ+इ+क्त] 1. परिचरयित, बेरा डाला हुआ, चिरा हुआ, छोड़ा हुआ 2. पूर्वा पका हुआ, घूबट से आम्नादित 3 गुप्त, छिपाया, हुआ 4 प्रसित 5 बद किया हुआ 6 रोका हुआ ।

सवाप्तम्, सवाप्तम् [सम्+आ+स्युट्+क्त, पसे कन् च] बहु ब्रह्मचारी जो अपना वैशाख्ययन समाप्त करके घर लौट आया है ।

सवाप्तम् [सम्+आ+विप्+अच्] 1 प्रविष्ट होता, साथ रहता 2 मिलना, साहचर्य 3 मम्मिलित करना, समेक 4. वृत्तमा 5 प्रेतादिष्ट 6. प्रणवोन्माद्य, माचो-ट्रेक ।

सवाप्तम् [सम्+आ+वि+अच्] 1 प्रलान या पनाह भुंजना 2. शरत्, पनाह, प्ररक्षण 3 शरत्पगृह, भावयन्स्थान, घर 4. भावात्मन्यम्, निवास ।

सवाप्तम् [सम्+आ+स्युट्+अच्] प्रयात भासि-गम् ।

सवाप्तम् [सम्+आ+स्युट्+अच्] 1 जी में जी जाना, आशय की साँस लेना 2. राहण, प्रोत्साहन, उत्साही 3. आस्था, विश्वास, भरोसा ।

सवाप्तम् [सम्+आ+स्युट्+विप्+स्युट्] 1 पुन-वीक्षित करना, प्रोत्साहन, आशय देना 2 डालन बंधना विष्णु० २ ।

सवाप्तम् [सम्+अच्+अच्] 1 समष्टि, मिलाप, सम्मिश्रण 2 सम्बरचना, समाहार, मिलाना (समाप्त के मुक्त चार मेघ हैं इन्द्र, तपुष्प, बहुवीहि और अश्वयोमाव) 3 पुनर्मिलन, मत्तमेव दूर करना 4 सवत्र, सवाप्त 5 पूर्णता, समष्टि 6. सिद्धयन्, सहित, सजिप्तना, (सवाप्तम्, सवाप्तम्: शोभे में, सञ्जेप से, सवाप्त के साथ—एषा धर्मस्य को यानि समाप्तम् प्रकीर्तितः—यनु० २।२५, ३।२०, भग० १३।१८, समाप्तं स्युताम्—विष्णु० २) । सम०—इक्षितः (स्त्री०) एक अक्षकार विकृती परिभाषा सम्प्रत नै निम्नांकित ही है—परौक्षितं चैकं विष्टम् समाप्तम्—काण्व० १० ।

सवाप्तम् [स्त्री०] सवाप्तम् [सम्+आ+स्युट्+क्त] 1 मिलाप, मयुक्त करना 2 जमाना, रक्षना 3 सपक, मम्मिश्रण, मयं च ।

सवाप्तम् [सम्+आ+स्युट्+स्युट्] 1 मिलाना, मयुक्त करना 2 जमाना, रक्षना 3 सपक, मम्मिश्रण, मयं च ।

सवाप्तम् [सम्+आ+स्युट्] 1 पूर्णतः त्याग देना 2 सुपुं करना ।

सवाप्तम् [सम्+आ+स्युट्+विप्+स्युट्] 1 पूर्णतः 2 प्राप्त करना, मिलना, अवाप्त करना 3 जिष्ण्वन् करना, कार्यान्वित करना ।

सवाप्तम् [सम्+आ+इ+स्युट्] सवृत्त करना, सवत्र करना, मम्मिश्रण, सचय करना ।

सवाप्तम् (यु०) [सम्+आ+इ+अच्] 1 जो सवत्र करने में सम्मिलित हो 2 (कर आदि का) सवत्रक, अना करने वाला ।

सवाप्तम् [सम्+आ+इ+अच्] 1 सवत्र, समष्टि, सवाप्त—मा० ९ 2 सम्बरचना 3 सम्पत्ति या वाक्यो का सयो-जन 4 द्विगु और इन्द्र सवाप्त का समष्टिविवायक एक उपमेद 5 सञ्जेपच, सकोपच, सहित ।

सवाप्तम् (यु० क० ङ०) [सम्+आ+आ+क्त] 1 मिलाना गया, साथ जोड़ा गया 2 समर्थित, तय किया गया 3 इकट्ठा किया गया, मयुक्त, (अन् आदि) प्रयात 4 एकविष्ट, सीत, सकेचित्त 5. सवाप्त 6 सहसत ।

सवाप्तम् (यु० क० ङ०) [सम्+आ+इ+क्त] 1 मिलाया गया, सवाप्त, सवाप्त 2 सुच्छ, आर्थिक, बहुत 3 बहुम किया गया, स्वीकृत, किया गया सञ्जेप किया गया, कय किया गया ।

सवाप्तम् (स्त्री०) [सम्+आ+इ+क्त] सक्तन, सञ्जेप ।

सवाप्तम् [सम्+आ+अच्+अच्] श्रीगी, सक्तकार । सवाप्तम् [सम्+आ+अच्+अच्] 1. पुकारना, सक्तकारना 2. सवाप्त, युद्ध 3 मक्तयुद्ध, दो व्यक्तियों में होने

वाला युद्ध 4 मनोरजन के लिए आनवरों को भजाना, आनवरों की लड़ाई पर सार्थ लगाना—वाञ्छ २।२०३, मन् १।२२१ 5 नाम, अविधान ।

समाह्वान् [समा आह्वान् यत्वाः ब० स०] नाम, अविधान, छि० ११।२६ ।

समाह्वानम् [सम् + आ + ह्वे + ल्यट्] 1 मिलकर बुलाना, संबोधन 2 ललकार, ध्वनीती ।

समिधम् [समि (सम् + इ + धि) + कम्] माला, बन्धन ।

समित् (स्त्री०) [सम् + इ + भिष्पृ] सधाम, युद्ध —समिति पतिनिपाताकार्थेन नै० १२।७५ ।

समिता [सम् + इ + क्त + टाप्] सेहूँ का जाटा ।

समिति [सम् + इ + क्तिन्] 1 मिलना, मिलान, साहचर्यं 2 सभा 3 देवद, लडा—कि० ४।३२ 4 सधाम, युद्ध—स० ५।१४, कि० ३।१५, छि० १६।१३ 5 साधुध, मयला 6 अर्वाधन ।

समितिक्रम्य (वि०) [समिति + वि + क्त्वं, भृत्] युद्ध में विजयी ।

समिधः [सम् + इ + धक्] 1 मधाम, युद्ध 2 आग ।

समिद्ध (पु० क० कृ०) [सम् + इन् + क्त] 1 सुधयाथा युद्धा, असाया हुआ 2 आग लगाई हुई 3 प्रभञ्जित, उनेत्रित ।

समिध् (स्त्री०) [सम् + इन् + भिष्पृ] लकड़ी, इधन, विशेष कर यज्ञार्थ के लिए क्षत्रियाण, राजिदा-हत्याय -स० १, कु० १।५७, ५।३३ ।

समिध् [सम् + इन् + क्] आग ।

समिध्मन् [सम् + इन् + ल्यट्] 1 आग बुलमाना 2 इधन ।

समिध् [= समीर, पुरो०] धाम्, हुआ ।

समीक्षन् [सम् + ईक्] मधाम, युद्ध,—छि० १५।८३ ।

समीकरणम् [असम क्षिपतेऽनेन—सम + चि + क् + ल्यट्] 1 पूरी क्षमनीय 2 दर्शनसास्त्र की साकर पद्धति छि० २।५९ ।

समीक्षा [सम् + ईक्ष् + क्त + टाप्] 1 अनुसंधान सोच 2 विचार 3 अभीर्भाति विरीक्षण, समालोचना 4 सम्यक्, बुद्धि 5 नैतिक मत्त्व 6 अविधायं सिद्धांत 7 दर्शनसास्त्र की भीमांसा पद्धति ।

समीचः [सम् + इ + चट्, क्तिन्] समुद्र ।

समीचकः [समीच + कम्] रतिशिका, मैथुन ।

समीची [समीच + क्] 1 हरिणी 2 प्रवृत्ता ।

समीचीन [सम् + अच् + भिष्पृ + क्] 1 ठीक, सही 2 मत्त्व युद्ध 3 योग्य, समुचित 4 सुसंगत, मत्त्व 5 सवाई 2, जीवित्व ।

समीचः (पु०) सेहूँ का धारीक मेडा ।

समीचि (वि०) [समाश्च अचीष्टो भूतो भूतो वाची वा—समा

+च] 1 अधिक, सालाना 2 एक बर्ष के लिए भाँचे पर किया हुआ 3, एक बर्ष का ।

समीचिका [समा प्राय प्रभूते समा + च + कम् + टाप्, इत्थम्] प्रतिबंधं भ्याने वाली गाय ।

समीचि (वि०) [समता भाषो यन्—अच्, आठ इन्धम्] निकट, पास ही, सटा हुआ, नजदीक, -भम् सामीप्य, पड़ोस (समीपम्, समीपता, समीचे (कि० वि०) निकट, सामने, की उपस्थिति में—अत समीचे परिणेतुरि-ध्यते स० ५।१७ ।

समीरः [सम् + ईर् + अच्] 1 हुआ, धाम् धोर-समीरे यमनातीरे गीत० ५. 2 समीक्ष, जैही का पेड़ ।

समीरकः [सम् + ईर् + ल्यट्] 1 हुआ, धाम्—समीरणो मोदयिना भवेति व्याख्यानने केन दूनायनस्य—कु० ३।२१, ५।८ 2 साँस, 3 धापी 4, एक पीचे का नाम, मरुत्क, धम् केंकना, मेवना ।

समीहा [सम् + ईर् + अ + टाप्] प्रबल इच्छा, चाह, प्रबल उद्योग ।

समीहित (पु० क० कृ०) [सम् + ईर् + क्त] 1 अनि-लपित, इच्छित, अनोच्छे 2 आरम्भ,—सम् कामना, अभिप्राया, इच्छा ।

समुद्रधम् [सम् + उद् + ल्यट्] डालना, बहाव, प्रसार ।

समुद्रध्व [सम् + उद् + वि + अच्] 1 समूह, मधान, सर्वाटि, राशि, युद्ध 2 समूह या भाषणों का समूह दे० 'ब' 3 एक अलकार का नाम काव्य० १० (११५) के ११६ कारिकाएँ तक ।

समुद्रध्वर [सम् + उद् + ध्व + अच्] 1 चबना 2 चलना, यात्रा करना ।

समुद्रध्वेः [सम् उद् + ध्वि + घञ्] पूर्ण विनाश, सम्पूर्ण-न्मूलन, उखाड़ देना ।

समुद्रध्वेः [सम् + उद् + धि + अच्] 1 उत्तुयता, ऊँचाई 2 विरोध, ध्वृत्ता ।

समुद्रध्वज [सम् + उद् + धि + घञ्] उत्तुयता, ऊँचाई ।

समुद्रध्वजिताय, समुद्रध्वजातः [सम् + उद् + इवस् + क्त, घञ्, वा] गहरी साँस लेना, पीचे साँस लेना ।

समुद्रिगत (वि०) [सम् + उद् + क्त] 1 त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ 2 जाने दिया गया 3 मुक्त ।

समुद्रिर्षः [सम् + उद् + क्त्वं + घञ्] 1 उपरि 2 अपने आगको ऊपर उठाना अपनी जाति की अपेक्षा किसी अन्य ऊँची जाति से सम्बन्ध रखना—भृत्० ११।५६ ।

समुद्रिष्ठाः [सम् + उद् + कम् + घञ्] 1 ऊपर उठना, चढ़ाई 2 औचित्य की भीमा का उल्लंघन करना ।

समुद्रिष्ठीयः [सम् + उद् + क्त्वं + घञ्] 1 ओर से चित्ताना 2 धारी कोमाहूक 3 कुटरी ।

समुद्रिष्ठी (वि०) [सम् + उद् + ल्वा + क्] 1 उठता हुआ,

बागना हुआ 2 उगा हुआ, उत्पन्न, जन्मा (समास के अन्त में) -अथ नवानसम्पत्त योतिरेविरथ धी रघु० 1994, भग० 38273 3 धटित होने वाला, उत्पन्न ।

सम्प्राप्तम् [सम् + उद् + स्था + ल्यट्] 1 उठना, जानना 2 पुनरुज्जीवन 3 पूरी बिक्रीकासा, पूरा आराम 4 (बाघ आदि का) भरना, स्वस्थ होना मनु० 12120, बाह० 21222 5 रोग का चिह्न 6 उद्योग में लगना, परिश्रमयुक्त घन्टा जैसा कि 'सम्पूय सम्प्राप्तम्', में - मनु० 1214 ।

सम्पूयलम् [सम् + उद् + प् + ल्यट्] 1 उठना, ऊपर चढ़ना 2 प्रयाण, चेट्टा ।

सम्पूरिताः (स्त्री०) [सम् + उद् + पद् + क्तिन्] 1 पैदा-वार, जन्म, मूल 2 घटना ।

सम्पूरिञ्ज, सम्पूरिञ्जस (वि०) [सम् + उद् + पिञ्ज् + अन्, कल्च् का] अव्यय उद्भिन् या घवरापा हुआ, अव्ययस्थित, -ञ्, -सः 1 अव्ययस्थित मेना 2 भारी अव्ययस्था ।

सम्पूयक [सम् + उद् + म् + अच्] महान् पर्व ।

सम्पूयकः [सम् + उद् + म् + षञ्] 1 परिग्याण छोड़ना 2 दारना, डालना, प्रदान करना 3 मलापाग करना बिच्छा करना - मनु० 14160 ।

सम्पूयारणम् [सम् + उद् + म् + षिच् + ल्यट्] 1 हाक देना 2 पीछा करना, पिचारा करना ।

सम्पूयक (वि०) [सम् + उद् + म् + अच्] 1 अव्यय स्थित, अतुर, अधीर विरोधि सम्पूयक - विश्वाम० 1100, रघु० 1103, कु० 4156 2 उन्कटित उत्पन्न, शोकान्त 3 शोकपूर्ण, खेदजनक ।

सम्पूयक [सम् + उद् + षिच् + षञ्] 1 ऊँचाई, उन्नति 2 मोटापन, माटापन ।

सम्पूयक (भू० क० ह०) [सम् + उद् + अञ्च् + क्त] उठाया हुआ, ऊपर लीखा हुआ (जैसा कुए में पानी) ।

सम्पूयक [सम् + उद् + इ + अञ्च्] 1 बढाई, (मूय) का उदय होता 2 उगना 3 सञ्च, सम्पूयक, सन्धा, धैर, -साधयन्तिमित्थ सम्पूयक मन्थो वा गुणानाम् - उत्तर० 619, 4 सविशेष 5 सत्पुर्ण 6 राजस्व 7 प्रयाण, चेट्टा 8. मध्याम युद्ध 9. दिन 10 मेना का पिछला भाग ।

सम्पूयक [सम् + उद् + आ + ग् + षञ्] पूर्ण ज्ञान ।

सम्पूयक [सम् + उद् + आ + चर् + षञ्] 1 उचित व्यवहार या प्रचयन 2 सन्धीन करने की उपयुक्त गति 3 प्रयोजन, इरादा, क्यरेखा ।

सम्पूयक [सम् + उद् + अच् + षञ्] मद्य, सम्पूयक आदि, दे० 'सम्पूय' ।

सम्पूयक [सम् + उद् + आ + ह् + ल्यट्] 1 उद्योग-या, उन्धारण करना 2. निवर्तन ।

सम्पूयक (भू० क० ह०) [सम् + उद् + इ + क्त] 1 ऊपर गया हुआ, उठा हुआ, चढा हुआ 2 ऊँचा, उन्नत 3 पैदा किया हुआ, उगा हुआ, उत्पन्न 4 सहज किया हुआ, सचित, सम्पूयक मञ्जुश्रीयोगचपादय सम्पूयक सर्वो गुणाना गण रत्न० 1165 सहित, सम्पूयक ।

सम्पूयक [सम् + उद् + ईर् + ल्यट्] 1 कष्ट टालना, बोलना, उन्धारण करना 2 दुहराना ।

सम्पूयक (वि०) [सम् + उद् + ग् + ष] 1 उगने वाला चढ़ने वाला 2 पूर्ण व्यापक 3 आवरण वा इक्कन में पकत 4 पक्षिही से पकत, -ह्वा 1 टका हुआ मनुक 2. एक प्रकार का कृषिम लोको-दे० लोके 'सम्पूयक' ।

सम्पूयक [सम्पूय + क्त] 1 एक इका हुआ मनुक या पेटी वा० 2 एक प्रकार का इमोक जिमके दो गन्धो की ध्वनि समान हो परन्तु अथ पृथक-पृथक हो-उदा० कि० 14116 ।

सम्पूयक [सम् + उद् + ग् + षञ्] 1 उठान, चढाई 2 उगना, निकलना 3 जन्म, पैदागण ।

सम्पूयक [सम् + उद् + म् + ल्यट्] 1 वमन करना, उगलना 2 शो उमस दिहा प्राय, उन्नी 2 उठाना, उन्नत करना ।

सम्पूयक [सम् + उद् - वी - क्त] उँचे स्वर से बाना जाने वाला गीत ।

सम्पूयक [सम् + उद् + षिच् + षञ्] 1 पूर्णत निरदम करना 2 पूर्णविबरण, बिभिष्टीकरण निरदेश करना ।

सम्पूयक (भू० क० ह०) [सम् + उद् + ष् + क्त] 1 ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उन्नत 2 उन्नतित, इडबडाया हुआ 3 घमड़ में फुला हुआ, थपथी, अविभाली 4 अशिष्ट अमन्य 5 ष्ट डोत ।

सम्पूयक [सम् + उद् + ह् + ल्यट्] 1 ऊपर उठाना ऊँचा करना 2 उठाना 3 बाहर लीक मेना 4 उद्धार मुक्ति 5 निवारण सम्पूयकउन्न 6 (किनारे) से बाहर निकालना 7 हाणा हुआ या उगला हुआ भोजन ।

सम्पूयक (भू०) [सम् + उद् + ह् + ष्] मोचक, मुक्तिदाता ।

सम्पूयक [सम् + उद् + म् + अच्] अव्य, उन्नति ।

सम्पूयक [सम् + उद् + ग् + षञ्] 1 ऊपर उठाना 2 बहा प्रयाण, चेट्टा 3 मया सह पोटध्वनीमनुय-सम्पूयके भग० 1122, सम्पूयक कार्ये 1 उपक्रम, समारम्भ 4 धावा, चढाई ।

सम्पूयक [सम् + उद् + य् + षञ्] मोचक चेट्टा, ऊँचा ।

समुद्र (वि०) [मद्र मुद्रा - २०० सं०] मुहुर बर, मुहर लगा हुआ मुद्रांकित - समुद्री गेज, - इ [मद्र]
 उद् + ग - क [१] सागर, महासागर २ गिब ना विद्योपण ३ बार की सफाया । मय० अम्लम्
 १ समुद्रतट २ त्रायफल, - अक्षत १ कराम का पीषा, अम्बरा पृथ्वी, अक्ष, जास, १ मयःमण्ड २ एक बड़ी विशाल मछली ३ गम का पुद्, कक, फेन समुद्रभाग, म (वि०) मयद्र पर घूमने वाला, (म) १ समुद्री व्यापार करने वाला २ समुद्री वायु करने वाला, समुद्र में घूमने वाला इसी प्रकार 'समुद्र-वायिन्-वायिन् आदि, (म) नदी गृहम् समुद्री ९ दिना के लिए जल म बगा हुआ भवन - समुद्र अम्लप यदि का विद्योपण, नवनीतम् १ बन्द्या २ अमन, मुषा, मेखला, रमना, बलना पृथ्वी, पानम् १ समुद्री यात्रा २ पान, ज्ञान, चिन्ता, पाषा समुद्र के समुद्र यात्रा, वायिन् (वि०) दे० समुद्रत, वायिन् (स्त्री०) नदी, बहिष्कृत चरदान्त लुभगा गया नदी ।

समुद्रह [मद्र + उद् + वह् अच्] १ डोना २ उठाने वाला ।

समुद्रह [मद्र + उद् + वह् + घञ्] १ डोना २ विवाह ।

समुद्रह [मद्र + उद् + बिद् + घञ्] बड़ा डर, आनक नाम ।

समुद्रवम् [मद्र + उद् + म्युट्] १ आरंभ २ गीलापन, सोल, नदी ।

समुद्र (वि०) [मद्र + उद् + क्त] गीला आरंभ ।

समुद्रत (भू० क० कृ०) [मद्र + उद् + नम् + क्त] १ ऊपर उठाया हुआ, ऊँच किया हुआ २ ऊँचाई उतुगना, (मानसिक भी) ऊँचा उठना मतम घिबरागा वा सदुषी ते समुद्रति कु० ६।६६, रघु० ३।१० ३ प्रसूचना, ऊँचा उठ वा मरविता, उल्लास उतने मह मन्त्रेण को न याति समुद्रतिम्, स जाता यत्र शान्तं याति इषा समुद्रतिम् मुषा० ४ उपरि समुद्रि, वृद्धि, मकलना विनिपातोऽपि सम समुद्रते - कि० २।३४, वा प्रकृति क्लृप्ता महोपम महते नाम्बमसुभति गया - २।२। ५ चमर अभिमान ।

समुद्रत (भू० क० कृ०) [मद्र + उद् + तह् + क्त] १ उभत, उच्छिन्न २ सुजा हुआ ३ पूरा ४ घमरी, अभिमान, अमहत्त्वहीन ५ आरामाभिमान, पण्डित-मय्य ६ बधनमुक्त ।

समुद्रतः [मद्र + उद् + नी + अच्] १ हाविल करना प्राप्त करना २ घटना, बात ।

समुद्रतलम् [मद्र + उद् + म्ल् + म्युट्] जड़ से उखा-इना, मधुलोच्छेदन, पूर्ण विनाश ।

समुद्रतलः [मद्र + उद् + गद् + अच्] पट्टी, सपक ।

समुद्रतलम् (अव्य०) [मद्र + उद् + म्ल् + म्युट्]

१ विन्दुल इच्छा के अनुसार २ प्रसन्नतापूर्वक ।

समुद्रयोग [मद्र + उद् + म्युट् + घञ्] मेषुत, सभोय ।

समुद्रयोगे [मद्र + उद् + विम् + म्युट्] १ भवन, जावन, निवास २ बिठाना ।

समुद्रस्था, समुद्रस्थानम् [मद्र + उद् + स्था + अक्, म्युट्]

मया १ वृद्धि, मधीप जाना २ साधीय, निकटता

३ डाना, भा पटना, घटना ।

समुद्रस्थितिः - 'समुद्रस्थानम्' दे० ।

समुद्राजनम् [मद्र + उद् + अर्ज + म्युट्] एक साथ प्राप्त करना एक समय में ही अभिग्रहण ।

समुद्रेत (भू० क० कृ०) [मद्र + उद् + ह् + क्त] १ मिल कर साथ हुए एकत्रित, इच्छते हुए २ पट्टीका ३ मन्त्रित, महित, युक्त ।

समुद्रोद् (भू० क० कृ०) [मद्र + उद् + वृद् + क्त]

१ ऊपर गया हुआ, उठा हुआ २ वृद्धि को प्राप्त

३ निकट भावा गया ४ निर्वाचित ।

समुद्रन्तः [मद्र + उद् + अन्त + घञ्] १ अत्यन्त चमक

२ अति हृष, आनन्द ।

समुद्र (भू० क० कृ०) [मद्र + उद् + (वृद् + क्त)]

१ निकट लाया गया, एकत्रित २ सहित, समुद्रोत्

३ गपटा हुआ ४ सहित ५ सद्योजात, को तुल्य

पैदा हुआ हो ६ साल बहीकृत, शान्त किया हुआ

७ एक सुका हुआ ८ निर्मल, स्वच्छ ९ साथ ही

बहन लिया गया १० नेतृत्व किया गया, सञ्चालित

किया गया ११ विवाहित ।

समुद्र, समुद्र, समुद्रक [सगरी ऊरु यस्य - प्रा० ब०]

एक प्रकार का हरिण ।

समुद्र (वि०) [सह मुलेन - ब० सं०] जड़ो समेत जैसा

'समुद्रघानम्' 'पुष्पक' से उल्लाह कर, जड़ समेत

शाखाओं को उखाड़ देना ।

समुद्र [मद्र + उद् + घञ्] १ समुद्रचय, मधुह, सथात,

ममथि, मकना - जनसमूहः विघ्नतमुद्, पवसुद्, अदि २ रेवड, टोली ।

समुद्रतम् [मद्र + म्युट्] १ नाच पिलाना २ सत्रह,

गति ।

समुद्रती 'मद्र + उद् + म्युट् + डीप्] बुहारी, श्राव ।

समुद्र [मद्र + उद् + म्युट्] एक प्रकार की यज्ञानि ।

समुद्र (भू० क० कृ०) [मद्र + म्युट् + क्त] १ समुद्रि-

गाली, फलतः-पुलता हुआ, बरा-बरा २ प्रसन्न,

प्रसन्नगाली ३ सम्पन्न, शीलतय ४ भरः पूरा,

ऐश्वर्यं 3. धन, दौलत 4. बाहुल्य, पुष्कलता, प्राचुर्यं
यथा 'धनधान्यसमृद्धिर्यु' में 5. तापित,
सर्वापरिता।

समेत (मू० क० क०) [सम्+आ+इ+क्त] 1 साथ
जाया हुआ या मिला हुआ, एकजित 2 समुक्त,
सम्मिश्रित 3 निष्कट आया हुआ, पहुँचा हुआ 4 से
युक्त 5. सहित, सम्मिश्रित, युक्त, के साथ 6 टक्कर
साया हुआ, भिडा हुआ 7 सहमत।

सम्पत्तिः (स्त्री०) [सम्+पद्+क्तिन्] 1 सम्पत्ति, धन
की बढ़ती, संपत्ती च विपत्ती च महतामैकरूपता
—तुभा० 2 सफलता, वृत्ति निष्पन्नता 3 पूर्णता,
श्रेष्ठता—जैसा कि 'कामसम्पत्ति' में 4 प्राचुर्य, पुष्कलता,
बाहुल्य।

सम्पृष्ट (स्त्री०) [सम्+पद्+विभृच्] 1 धन, दौलत
—नीता विचोलाद्गुणैर्न सम्पृष्ट—कु० ११२२, आपन्नानि
प्रशामकला सम्पृष्टो धनमानाम्-मेष० ५३
2 सम्पत्ति, ऐश्वर्य, फलता-फलना (विप० विपद् या
आपद्)—ते भूया नृपते कलत्रमिरे सन्त्यस्तु आपानु
च—भृडा० १११५ 3 सीमाय, आनन्द, किम्मत
4 सफलता, वृत्ति, अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति—शा०
७३० 5 पूर्णता, श्रेष्ठता, जैसा कि 'कामसद' में
—शि० ११२५ 6 बनाइयात, पुष्कलता, बाहुल्य, प्राचुर्य,
आधिक्य—तुषारमुष्टिसनपद्यसम्पृष्टाम् कु० ५१२७,
रघु० १०५९ 7 कोश 8 लाभ हित, वरदान
9 सद्गुणों की वृद्धि 10 मजाबट 11 सही उप
12 मोतियों का हार। सय०—बद, राजा, -बिचि-
क्यः हितो या सेवाओ का आदान-प्रदान—रघु० ११२६।

सम्पन्न (मू० क० क०) [सम् पद्+क्त] 1 सम्पृष्टिवाली,
फलता-फलता, धनाढ्य 2 भाग्यशाली, सफल, प्रसन्न
3 कार्यान्वित, साधित, निष्पन्न 4 पूरा किया गया,
पूर्ण कर दिया गया 5 पूर्ण 6 पूर्णविक्रमिण, परिष्कृत
7 प्राप्त किया गया, हासिल किया गया 8 लुट,
छड़ी 9 सहित, युक्त 10 हुआ हुआ, घटित, प्र
साध का विशेषण, सम् 1 धन, दौलत 2 स्वादिष्ट
भोजन, मधुर और मजेदार भोजन।

सम्परायः [सम्+परा+इ+ञच्] 1 मन्थन, मूठभेद,
सधाम, युद्ध 2 सफट, दुर्भाग्य 3 भाषी स्थिति,
भविष्य 4. पुत्र।

सम्पराय (वि) कम् [सम्पराय + कन्, उन् वा] मूठभेद,
सधाम, युद्ध।

सम्पर्कः [सम्+पृच्+ञच्] 1 मिश्रण 2 मिलाप, मेल-
जोल, स्पर्श—प्राचीन नाविकत मुन्दरीया सम्पर्कमाशि-
ञ्जितनूपुरेण कु० ११२६, मेष० २५, विक्रम० १।
१३ 3 यन्त्रणी, सम्पर्क, साथ त मूर्खजनमम्यकं
सुरेन्द्रभवनेष्वपि—भद्र०—२।१४ 4 मंडन, सभोज।

सम्पा [सम्पर्क अर्थाकत पतति—सम्+पत्+ङ+टाप्]
विजकी।

सम्पाक (वि०) [सम्पर्क पाको वय्य वय्यत्वात् वा—आ०ब०]
1 सुताकिक, बुध बहुत करने वाला 2 बालाक,
बन्धता पुरडा 3 सम्पट, बिलासी 4 बोडा, अल्प,
—कः 1 परिष्कृत होना 2 आरम्भक युद्ध।

सम्पाट [सम्+पट्+विभृच्+ञच्] 1 विभुर्ष की बड़ी
हुई मूत्रा से किसी रेशा का मिलना 2 लज्जा।

सम्पातः [सम्+पत्+ञच्] 1 मिल कर गिरना, सह-
गमन 2 आपस में मिलना, मूठभेद होना 3 टक्कर,
भिडना 4 अक्षपतन, उतरना मय० ११२०
5 (पक्षी आदि का) उतरना 6 (तीर की) उठान
7 जाना, हिलना-डुलना 8 हटाया जाना, हटाना
धनु० ११५९ 9 पक्षियों की उड़ान विशेष तु०
शौन 10 (बढ़ावे का) अवशिष्ट अंश, उपशिष्टः।

सम्पातिः [सम्+पत्+विभृच्+इन्] एक पौराणिक पत्नी,
सहड का पुत्र, अटाय का बड़ा नारी।

सम्प्राक् [सम्+पद्+विभृच्+ञच्] 1 वृत्ति, निष्पन्नता
2 अभिप्रेक्षण।

सम्प्राशनम् [सम्+पद्+विभृच्+स्युट्] 1 निष्प्राशन, काया-
न्यसन, पूरा करना 2 उपार्जन करना, प्राप्त करना,
अवाप्त करना 3 स्वाच्छ करना, साफ करना, (मृति
आदि) तैयार करना, मनु० ३।२२५।

सम्पृच्छित (मू० क० क०) [सम्+पिच्छ्+क्त] 1 राक्षीकृत
2 तिकुरा हुआ।

सम्पीडः [सम्+पीड्+ञच्] 1 विचोडना, भीषना
2 पीडा, यातना 3 विचोड, बोधा 1 मंत्रना निवेदन,
जाने जाने हाँकना, प्रबोधन सम्पीडकृतजजनेत्
तोयदेव् कि० ७।१२।

सम्पीडनम् [सम्+पीड्+स्युट्] 1 विचोडना, मिलाकर
दाजना 2 प्रेषण 3 दण्ड, कक्षाघात 4 अकोलना,
सुख होना।

सम्पीतिः (स्त्री०) [सम्+पा+क्तिन्] मिल कर पाना,
सहपान।

सम्पुट [सम्+पुट्+क्त] 1 गह्वर—स्वात्वा सागरस्युक्ति-
सम्पुटगत (पुट्) सम्पीनिक कायते धनु० २।६७,
(पादात्तर) काव्या० २।२८८, ऋतु० १।२१ 2 रत्न-
पेटी, डिब्बा 3 कुदणक कुल।

सम्पुटक, **सम्पुटिका** [सम्पुट्+कन्, सम्पुटक+टाप्, इभ्यम्]
सद्रुक, रत्नपेटी।

सम्पुर्ण (वि०) [सम्+पूर+क्त] 1 भरा हुआ 2 सारे,
सारा ३० पूर्ण, कम् बगारिवा।

सम्पुक्त (मू० क० क०) [सम्+पृच्+क्त] 1 एकीकृत,
मिश्रित 2. सङ्कल, सयद, वसिष्ठ, संवध से युक्त
—वागधाविष सम्पुक्ती—रघु० १।५ 3. स्पर्श करना।

सम्प्रदायानम् [सम् + प्र + अन् + चिन् + स्तुट्] 1 पूर्ण
मात्रेण 2 ज्ञान, महलाई-बुलाई 3 अन्-प्रसय ।

सम्प्रवेणु (पुं०) [सम् + प्र + णी + तच्] शासन, व्यापा-
धीय ।

सम्प्रति (सम्०) [सम् + प्रति + इ० सं०] अब, हाल
में, इस समय अथि सम्प्रति देखि वचनम् - कु०
५१८ ।

सम्प्रतिपत्तिः (स्त्री०) [सम् + प्रति + पद् + क्तिन्]
1 उपगमन, पहुँच 2 उत्पत्ति 3. साम, प्राप्ति, उप-
लब्धि 4 करार ० मानना, स्वीकार कू लेना
—मुहा० ५१८ 6. किसी तथ्य को मानना, ज्ञान
में बिच्छे प्रकार का उत्तर 7 धारा, आक्रमण
8 घटना 9. सहयोग 10 करना, अनुष्ठान ।

सम्प्रतिरोधकः सम् [सम् + प्रति + ध् + धञ् + कन्]
1 पूरा अवरोध 2 कँद, जेक ।

सम्प्रतीक्षा [सम् + प्रति + ईच् + ब्ध + टाप्] आशा
रुगाना या बाँधना ।

सम्प्रतीत (भू० क० कृ०) [सम् + प्रति + इ + क्त]
1 बापित आया हुआ 2 पूर्वत विचवास दिलाया हुआ
3. प्रमाणित, माना हुआ 4 विश्रुत 5 सम्मान पुण ।

सम्प्रतीति [सम् + प्रति + इ + क्तिन्] 1 पूरा निश्चय
2 कार्यपालन, प्रमिदि, स्थानि, कुक्यानि कु०
३५१ ।

सम्प्रत्यक्ष [सम् + प्रति + इ + अच्] 1 दृक् विषयास
2 करार ।

सम्प्रदायम् [सम् + प्र + दा + स्तुट्] 1 पूरी तरह से दे
देना, हुवाने कर देना 2 उपहार भेंट, दान 3 विवाह
कर देना 4 चतुर्थी विभक्ति द्वारा अभि-
व्यक्त अर्थ ।

सम्प्रदायीयम् [सम् + प्र = दा + अनौयर] भेंट, दान ।

सम्प्रदायः [सम् + प्र + दा + धञ्] 1 परंपरा, परंपरा
प्राप्त सिद्धान्त या ज्ञान परंपरा प्राप्त विज्ञा
—उत्तर० ५१२५ 2 धर्म-विज्ञा की विशेष पद्धति,
धार्मिक सिद्धान्त जिसके द्वारा किसी देवताविषये की
पूजा बतलाई जाय 3 प्रचलित प्रथा, प्रचलन ।

सम्प्रदायम् [सम् + प्र + धा + स्तुट्] निषध करना ।

सम्प्रचारणम्—का [सम् + प्र + चिन् + स्तुट्] 1 विचार
2 किसी वस्तु का औचित्य या अनौचित्य निर्धारित
करना ।

सम्प्रवचः [सम् + प्र + पद् + क] पर्यटन, भ्रमण ।

सम्प्रतिष्ठा (भू० क० कृ०) [सम् + प्र + भिद् + क्त]
1 कटा हुआ, चिरा हुआ 2 मद में मत्त ।

सम्प्रबोधः [सम् + प्र + बुद् + धञ्] हृद्यनिरिक, उत्सास ।

सम्प्रबोधः [सम् + प्र + बुद् + धञ्] हानि, विनाश,
पुष्करज, अकमाव ।

सम्प्रवचम् [सम् + प्र + वा + स्तुट्] विवाह ।

सम्प्रबोधः [सम् + प्र + बुद् + धञ्] 1. सद्यो, निकट
सम्बन्ध, सद्योवन, सचकं—(अकस्व) उन्मत्तप्रस्था-
उपसम्प्रबोधोपात्—रघु० ५१५, मातृवि० ५१३ 3. सद्यो-
वक कभी, बचन वा वकदन—एतेन बोधवति भूषण-
सम्प्रबोधोपात्—युष्मत् ३११६ 3. संबन्ध, निर्भरता
4 पारस्परिक संबन्ध या अनुपात 5. सवृत्त श्रेणी वा
क्रम 6 मैत्र, सभोग 7 प्रबोध, 8. बाहु ।

सम्प्रबोधिन् (वि०) [सम् + प्र + बुद् + चिन्] साय
साध मिलने वाला, पुं० 1. मेधापक, सद्योवक,
2. बाकीगर 3 कल्पट 4 बुस्ती, यादू ।

सम्प्रबुद्धम् [सम् + प्र + बुद् + क्त] अच्छी बर्षा ।

सम्प्रबन्धः [सम् + प्र + धञ् + क्त] 1. पुरी वा चिष्टतापूर्ण
पूज-टाछ 2 पूष्ठा, पूज-टाछ ।

सम्प्रसादः [सम् + प्र + सम् + धञ्] 1. प्रसादन, सुखी-
करण 2 अनुग्रह, हृपा 3 हानि, सौम्यता 4 विस्वास,
भरोसा 5 आर्या ।

सम्प्रसारणम् [सम् + प्र + सम् + चिन् + स्तुट्] वृ, रु, लृ,
के स्थान पर क्मत्त इ, उ, ऋ वा लृ को रखना
इत्यथ सम्प्रसारणम्—पा० १११५५ ।

सम्प्रहार [सम् + प्र + ह् + धञ्] 1 पारस्परिक प्रहार
2 मूठभेद, सघाम, युद्ध सचकं—उत्तर० ६१७ ।

सम्प्राप्ति (स्त्री०) [सम् + प्र + आप + क्तिन्] निष्पत्ति,
अभिप्रेय ।

सम्प्रीति (स्त्री०) [सम् + प्री + क्तिन्] 1. अनुपाय, स्नेह
2. सद्भावना, मैत्रीपूर्ण स्वीकृति 3 हर्ष, उत्सास +
सम्प्रेक्षणम् [सम् + प्र + ईच् + स्तुट्] 1 अवेक्षण, अवलोका
2. विचार करना, गवेषणा करना ।

सम्प्रेषः [सम् + प्र + इप् + धञ्] 1 भेजना, बहलिनी
2 निषेध, समादेश, आज्ञा ।

सम्प्रेषणम् [सम् + प्र + उच् + स्तुट्] मार्चन, बल के छीटें
देना, अभिमतित बल छिड़कना ।

सम्प्रेषः [सम् + प्ठ + धञ्] 1 प्लावन, बलप्रसन्न 2 सहार
3 बाढ़ 4 बर्बाद हो जाना 5 विच्छेद, तहसतहस ।

सम्प्रेषः [सम् + प्ठ + धञ्] 1 प्लावन, बलप्रसन्न 2 सहार
3 बाढ़ 4 बर्बाद हो जाना 5 विच्छेद, तहसतहस ।

सम्प्रेषः (पुं०) कोषपूर्ण सचकं, दो कुछ व्यक्तियों की पार-
स्परिक मूठभेद को अभिव्यक्त करने वाली घटना—दे०
मा०द० ३०५, ४२०, उदा०—माचक नीर अचोरवटके
मध्य मूठभेद—मा० ५ ।

सम्प्रेः (म्बा० पर० सम्प्रति) जाना, हिलाना-मुलना ।

1: (पूरा० उभ० सम्प्रति-से) सचकं करना, सचक
करना ।

सम्प्रेक्ष [सम् + अच्] सेत को दूसरी बार बोटना (सम्प्रेक्ष
दो बार हक चलना) दे० 'सम्प्रे' प्री ।

सम्प्रेक्ष (भू० क० कृ०) [सम् + अच् + क्त] 1. संशयित,

मिलाकर बाधा हुआ 2 अनुरक्त 3 मयक, नुहा हुआ, मद्य रत्न वाता 4 मिला ।

सम्बन्धः [सम् + बन्ध् + घञ्] 1 सर्वान् मिलाय, माह्वयं 2 रिस्ता, रिस्तदारो 3 छठी विभक्ति या सबष कारक के अर्थस्वरूप सबष 4 वैवाहिक सम्पर्क—कु० ६।२९, ३० 5 मित्रता का सबष, मैत्री, सम्बन्धमा-भाष्यपूर्वमाह—रघु० २।५८ 6 योग्यता, औचित्य 7 समृद्धि, सफलता ।

सम्बन्धक (वि०) [सम् + बन्ध् + क्तृ] 1 पिता रत्नने वाला, सबष रत्नने वाला 2 योग्य, उपयुक्त, कः 1 मित्र, अन्ध या विवाह के कारण बरा सबष, एक प्रकार की शान्ति ।

सम्बन्धिन् (वि०) [सम्बन्ध + गिति] 1 मद्य रत्नने वाला 2 समस्त, नुहा हुआ, अर्माहित 3 अच्छे गुणों में युक्त—पु० 1 विवाह के काल स्वकृप वनी दम्पिता—उत्तर० ५।९ 2 रिस्तेदार, बन्धु ।

सम्बर [सम् + बरन्] 1 बरिष, पुक 2 एक हरिण विशेष 3 प्रकृत्य के द्वारा मारा गया राक्षस दे० सम्बर और प्रसून 4 पहाड़ का नाम, -रम् 1 प्रतिबन्ध 2 जल । सम०—अरि, -रिपु कामदेव ।

सम्बल, **सम्** [सम् + कल्] पापेय, यात्रा के लिए सामग्री, मार्गव्यय, सम् गानो ।

सम्बाध (वि०) [सम्बन्ध बाधा यन्-आ०ब०] सकुल, भीड़ से युक्त, अवच्छिन्न, सकीर्ण सम्बाध वृद्धयि तद्वन्धुव वरम्—शि० ८।२, अयोनि मन्वावबर्धम्—रघु० १२।५७, क 1 भीड़ का होना 2 दबाव, घिसार, घोट,—सन्सम्बाधमरो ज्ञान च—कु० ६।२६ 3 रुकावट, कठिनाई, भय, विघ्न कि० ३।५३ 4 नरक का मार्ग 5 रर भय 6 भय, योनि ।

सम्बाधनम् [स + बाध् + ल्यट्] 1 रोकना, अवरोध 2 भीचना 3 मुकद्दार, फटक ४ योनि, भय 5 सुली, या सुली की नोक 6 द्वारपाल ।

सम्बुद्धिः (स्त्री०) [सम् + बुध् + क्तिन्] 1 पूर्ण ज्ञान या प्रत्यक्षज्ञान 2 पूर्ण चेतना 3 पुकारना, बुगाना 4 (ब्या० में) सर्वोपध कारक एह इहवदत् म्बुद्धे—पा० ६।१।६९ ।

सम्बोधः [सम् + बुध् + घञ्] 1 ब्याख्या करना, निर्देश देना, सूचित करना 2 पूर्ण या सही प्रत्यक्षज्ञान 3 भेचना, फेंक देना 4 ज्ञान, विनाश ।

सम्बोधनम् [स + बुध् + गिन् + ल्यट्] ब्याख्या करना 2 सर्वोपध करना 3 मन्त्रान कारक (किमी की बुझाने के लिए प्रयुक्त शब्द) विशेषण भाषि० ३।१३ ।

सम्बलित (स्त्री०) [सम् + मज् + क्तिन्] 1 हिस्ता लेना, अधिकार करना 2 वितरण करना ।

सम्बन्ध (भू० क० कृ०) [सम् + बन्ध् + क्त] छिन्न-विघ्न, नितर-वितर, सम् शिव का विशेषण ।

सम्बन्धी [सम् + बन्ध् + क्तिन्] नृती, कुटनी दे० शम्भली ।

सम्बन्धः [सम् + भू + अच्] 1 अन्ध, उत्पत्ति, फूटना, उगना, अस्तित्व प्रियस्य मुहुदो यत्र मम तत्रैव मभवो भूयान् मा० ९, माधुघोषु कथ मायादस्य कल्प्य सम्बन्ध शं० १।२६, भग० ३।१४, (इस अर्थ में प्राय समास के अन्त में प्रयुक्त)—अप्सर, सम्बन्धेवा—शं० १ 2 उत्पादन, पालन-पोषण—मनु० २।२२७ (इस पर कुल्लु० की टीका देखा) 3 कारण, मूल, प्रयोजन 4 मिलाना, मिलाप, सम्मिश्रण 5 मन्वावर्षा समयो हि विद्योपास्य मसूचयति सम्बन्धम् सुभा० 6 मयमुकुलना, मणति 7 अनुकूलन, उपयुक्तता 8 कारण, पुष्टि 9 धारिता 10 ममानता (एक प्रमाण) 11 परिचय 12 हानि, विनाश ।

सम्भार [सम् + भू + घञ्] 1 एकत्र मिलाना, सयह करना 2 तैयारी, वाजपेो आबन्धक इन्धुर्, अपतित वस्तु, उपकरण, किसी कार्य के लिए आवश्यक वस्तुएँ, नविशेषयत् पुत्रान्मभारो मया मन्वाधानीय मा० ५, रघु० १२।४, विक्रम० २ 3 बन्धव, मष्टक, उपदान 4 समुच्छय, ईर, राशि, सत्ता, तैमा कि वाजपयमभारं मे 5 पुराता 6 दौलत, धनाङ्कणता 7 मन्वारण, पालन-पोषण ।

सम्भावनम्, -ना [सम् + भू + णिच् + ल्यट्] 1 विचारना, विचारविमर्श करना रघु० ५।२८ 2 उद्गायना, उपदेश—सम्भावनमधीप्रेक्षा प्रकृतमय सत्वेन यत्—आश्व० १० 3 विचार, कल्पना, चिन्तन 4 आदर सम्मान, मान, प्रतिष्ठा सम्भावनमगुणमेवेहि तमीरवराणाम् शं० ७।३ 5 सम्भयता 6 योग्यता, पर्याप्तता कि० ३।३९ 7 मन्वाणता, योग्यता 8 सदेह 9 स्नेह, प्रेम 10 श्रानि ।

सम्भाषित (भू० क० कृ०) [सम् + भू + णिच् + क्त] चिन्तित, कल्पित, विचारित विचार होयैषु सम्भा वित का० २ 2 प्रतिष्ठित, सम्मानित, आदरित—भर्तृ० २।२४ 3 उदात्त, योग्य, पर्याप्त, पुकन 4 मन्वह ।

सम्भाषः [सम् + भाष् + घञ्] मन्वाणाय—मनु० २।१९५, ८।३६४ ।

सम्भाषा [सभाष् + टाप्] 1 प्रवचन, मन्वालाप 2 अभिवादन 3 आत्यधिक सबष 4 कारण, सर्वादा 5 मन्वेत—वाङ्, यद्घोष ।

सम्भूति (स्त्री०) [सम् + भू + क्तिन्] 1 अन्ध, उद्भव, उत्पत्ति मनु० २।१४७ 2 सम्मिश्रण, मिलाप 3 योग्यता, उपयुक्तता 4 शान्ति ।

सम्पत् (मू० क० कू०) [सम् + म् + क्त] 1 एकपिप
मग्रीन, मकेंद्रित 2 उच्चन, सैयार, मन्वित, मन्त्रित
3 मुर्खाजित, मयन, मूफ, संहित 4 रम्भा हुआ,
जमा किया हुआ 5 पूर्ण, पूरा, सम्पन्न 6 अर्थ,
अर्थान 7 ले जाया गया, बहन किया गया 8 पापिन
9 उत्पापित, पैदा किया गया ।

सम्पत्तिः (स्त्री०) [सम् + म् + क्तिन्] 1 मयट 2 नैयारी,
माव-भावान, मायघी 3 पूर्णता 4 सहाग, सघारण,
पोषण ।

सम्भेदः [सम् + भिद् + घञ्] 1 टटना, टुकड़े-टुकड़े करना
2 मिलाप, मिश्रण, सम्मिश्रण - आक्षेपितमिस्रसम्भे-
दम् - मा० १०।११, ह्योद्विगमभेद उपनत - मा० ८
3 मिलना (जैसे निगाहो का) 4 समम, (दो मिलियो
का) मिलन नदुनिष्ठ पागसिन्धुसम्भेदमवगाह
नरीरिमेक श्रिधराय, अद्यप्येव महानिष्ठा सम्भेद-मा०
८, मधुमतीविद्युसम्भेदपावन ९ ।

सम्भोग [सम् + भूञ् + घञ्] 1 आनन्द लेना, मजे लेना
म सम्भोगलता श्रिय मुभा० 2 कब्जा, उपयोग,
अधिकृति मनु० ८।००० 3 रति रम, भोग, मह-
वाम - सम्भोगान्ते मम मधुचिदाः हन्मम-गहनानाम्
-मध० १५ 4 लम्पट, गाड़ - शृगारम् का एक
उपभेद, दे० 'शृगार' के अन्तर्गत ।

सम्भ्रम [सम् + भ्रम + घञ्] 1 मुहता, आश्चर्येन धक्कर
हाटना 2 जन्मदात्री, उदावली 3 अव्यवस्था, विक्षोभ,
हड़बड़ी कु० ३।८८ 4 डर, आतंक, भय, शं० १,
हि० १५।२ 5 घृति, भूल, अज्ञान 6 उन्माह, किना-
गिल्ला 7 आदर, श्रद्धा मृदुपुपगत सम्भ्रमविधि
भन्० ०।६३, नव बीर्षवन कश्चिच्छास्त्रि मयि

सम्भ्रमः-गमा० । सम्भ्रं ज्वलित (वि०) विक्षोभ से
उत्तेजित, -भूत् (वि०) धक्काया हुआ, हड़बड़ाया हुआ ।

सम्भ्रान्त (मू० क० कू०) [सम् + भ्रम् - क्त] 1 आर्बन्त
2 हड़बड़ाया हुआ, बिभ्रन्, विभ्रित, व्याकुल ।

सम्पन्न (मू० क० कू०) [सम् + मन् + क्त] 1 सहज
स्वीकृत, माना हुआ 2 पण्ड किया हुआ, श्रिय,
श्रियलभ 3 मवान मिलना-जुलना 4 मयाप किया
गया साक्षा गया, विचारता गया 5 अत्यन्त जादू,
मामानिन, प्रांगडित, तम् सहपति, दे० सम्पति ।

सम्पत्ति (स्त्री०) [सम् + मन् + क्तिन्] 1 सहर्षति 2 सम्-
नूकलता, पतिपता, अनुपोधन, सम्पत्ति 3 अभिलाषा,
इच्छा 4 आरम्भज्ञान, आत्मा की जानकारी मत्त्वज्ञान
5 मयाप, आदर, प्रतिष्ठा कश्चिक १४ सम्पत्ति-
बिषी मममन्तुभिर्मुनिनामधीःतस्य हि० १०।२६
6 प्रेम, स्नेह ।

सम्पन्नः [सम् + मन् + क्त] अनिहर्ष, मधी, प्रमत्ता हि०
१५।७७ ।

सम्पन्नः [सम् + मन् + क्त] 1 वायव में विद्यमान, धर्षण
2 जमघट, मोह, जमाव यद्योपतरकल्पोऽनुसम्प-
दस्तत्र मज्जनाम् - रघु० १५।१०१, मा० १० 3 कुच-
मना, पैरो से रीतना 4, मशाम, मुष्ट ।

सम्पातुर = सम्पातुर दे० 'सत्' के अन्तर्गत ।

सम्पातः [सम् + मन् + क्त] मय, नशा, पागलपन ।

सम्पातः [सम् + मन् + घञ्] आदर, प्रतिष्ठा, -भम् 1 माप
2 तुलना ।

सम्पातकः [सम् + मन् + क्त] शाब्दे वाका, बुहारी देने
वाला, मनी ।

सम्पातनम् [सम् + मन् + क्त] 1 बुहारना, याचना
2 विमेल करना, भाक करना, झाड़ना ।

सम्पातनी [सम्पातन + टोप्] झाड़, बुहारी ।

सम्पत्ति (मू० क० कू०) [सम् + मान् + क्त] 1 माया
हुवा नापा हुआ 2 ममान माप, विस्तार वा मूत्य का,
मम, बीसा ही, बराबर मिलना-जुलना कान्तासम्भि-
नतयोपदेशयुजे - का० १ रघु० ३।१६ 3 इतना
बड़ा जितना कि 'गृह्यता हुआ 4 समरूप ममनूकल,
नमानुपातिक 5 मे पम्न, मुसजित ।

सम्पित्त, सम्पित्त (वि०) [सम् + मिष् + क्त] 1
1 परस्पर मिलना हुआ, अन्तर्मिथित ।

सम्पित्तः [- सम्पित्त, पञ्च] रम्य ल । इन्द्रका विशेषण ।

सम्पित्तम् [सम् + मील + क्त] (फूल आदि का) बन्ध
होना, डकना, लपेटना ।

सम्पुल (वि०) [स्त्री० - का, की] समुमीन (वि०) [सगत
मूय येन - प्रा० व०] सर्वेषु मयस्य दर्शन - समपुल
-त्, सम सम्पुल्य अन्वलाप वि०] 1 सामने का,
ममल स्थित, आगने सामने, अभिमुखी, सामना
करने वाला- काम न निरुद्धि मदाननसम्पुली सा-
शं० १।१२, रघु० १५।१६, शि० १०।८६ 2 मठभेद
करने वाला मुकादमा करने वाला 3 स्वस्थ ।

सम्पुलित् (प०) [सम्पुल्यस्य अस्ति सम्पुल + इति]
दर्पण, घोडा आदिना ।

सम्पुलनम् [सम् + मृष्ट + क्त] 1 मुछा, बेहोशी
2 जमना गाडा होना 5 गाडा करना, बड़ाता
' उर्वाह 5 विषयव्याप्ति, मह-विस्तार पूर्ण व्याप्ति ।

सम्पुल (मू० क० कू०) [सम् + म् + क्त] 1 शक्ती शक्ति
वृह्, ग गया, याजा-घोया गया 2 छना हुआ, छाना
हुवा ।

सम्पुलनम् [सम् + मिल् + क्त] 1 परस्पर धिलना, मिलाप
2 मिश्रण 3 एकत्र करना, मयह करना ।

सम्पुह [सम् + मृह + क्त] 1 बगराहट, अव्यवस्था,
- प्रेषोमाह 2 मुछा बेहोशी 3 जमाव, मुर्खती
4 आकर्षण ।

सम्पुहलम् [सम् + मृह + क्त] 1 बंधपुह करना,

बहीकरय, शः कामदेव के पाँच बाणों में से एक
कु० ३१६६ ।

सम्यक् सम्यक् (वि०) (स्त्री०) —सम्योधी [सम्+अञ्च्
+सिक्त्, समि बाहोषे पक्षे नलोप] 1 साथ जाने
वाला, साथ रहने वाला 2 सही, युक्त, उचित,
यथोचित 3 बुद्ध, अर्थ, यथार्थ 4 सुशासना, सचिकर
— किं च कुलानि कवीना, निसर्ग-सम्पत्ति रञ्जयतु-
रस० 5. बही, एककूप 6 सब, पूर्ण, समस्त—(अभ्य०
—सम्यक्) 1 के साथ, साथ-साथ 2 अच्छा, उचित
रूप से, सही ढंग से, सुदृढापूर्वक, सचमुच सम्य-
विषयमाह शं० १, नन० २१५, १४ 3 यथावत्,
यथोचित ढंग से, ठीक-ठीक, सचमुच 4 सम्मान पूर्वक
5 पूरी तरह से, पूर्णतः 6 स्पष्ट रूप से ।

सम्राज्य (पु०) [सम्यक् राजते-सम्+राज्+सिक्त्] 1
सर्वाधिपति प्रभु, विजयराट, विजयत बहु शो अन्य
राजाओं पर शासन करता हो तथा जिसने राजसूय
यज्ञ का अनुष्ठान कर लिया है—वेनेष्ट राजसूयन
मण्डलस्येववर्षय य । शांति यश्चाज्या राजः स
सम्राट् अमर, रघु० २१५ ।

सम् (म्भा०) भा० सम्बन्धे जाना, हिलना-भुलना ।
सम्बन्धः [सम्बन्ध+यत्] एक ही वर्ग या जाति का ।
समोधि (वि०) [समाना योनिरेव्यं व० स०, समानस्य
सारेष्वे] एक ही कोश का, एक ही वर्ग से उत्पन्न,
सहोदर,—तिः 1 लगा या सहोदर भाई 2 सरोता
3 झर का नाम ।

सर (वि०) [स्+अच्] 1 जाने वाला, गतिशील
2 रेचक, दस्तावर—रः 1 जाना, गति 2 बाण
3 नातक, बही का चक्का, मलाई 4 नमक 5 लड़ी,
हार—अय कण्ठे बाहु विशिरमन्वो योनिस्तकर
उत्तर० ११३९ २९ 6 जल्पपात,—रम् 1. जल
2 झोल, सरोवर । सम०—जलस्यः सारस, कम्
ताजा मक्खन, नवनीत तु० शरज ।

सरकः-कम् [स्+सुन्] 1 सबक राजमार्ग की
अनवरत पकित, 2 मदिरा, उष सुरा—बकम्ब सह
पुरिप्रजनेत्यथासिद्धि सरक महीतु—वि० १५।
०, १०१२ 4 पीने का बर्तन, शराब पीने का
प्यास, कटोरा—ति० १०१२० 5 तेज शराब का
वितरण,—कम् 1 जाना गति 2 नाकाब सरोवर
3 स्वर्ण ।

सरथा [सर मधुविषेणं हन्ति-सर+हन्+इ वि०] मधु-
मयी,—तस्तार सरथाभ्यान्ते स लीडपटभैरिव
—रघु० ४६३, ति० १५१३ ।

सरङ्गः [स्+अङ्गृच्] 1 ऋणुमाद, शीपाया, 2 पक्षी
सरङ्गु-का (स्त्री०), सरङ्गका [सहरजसा-व० स०,
पञ्जे कम्+टाप्] रजस्वला स्त्री ।

सरद् (पु०) [स्+अटि] 1 हवा, वायु 2 वायव
3 छिपकली 4 पशुपत्नी ।

सरटः [स्+अट्] 1 वायु 2 छिपकली—लूता हि सर-
टाना च तिरश्चा चाम्बुचारिणाम्—अनु० १२१५७ ।

सरतिः [स्+अटिन्] 1 वायु 2 वायव ।

सरट् [स्+अट्] छिपकली, गिरिजा ।

सरण (वि०) [स्+अण्] 1 जाने वाला, गतिशील
2 बहने वाला,—अम् 1 प्रगतिशील, जाने वाला,
बहुगशील 2 जगहे का नग, मन्थ ।

सरणिः-मी (स्त्री०) [स्+नि] 1 पय, मार्ग, सड़क,
रास्ता—आनन्द० १८ 2 कम, बिधि 3 लीची अमकरण
पत्ति 4 कण्ठरोग ।

सरथः [स्+अथच्] 1 पक्षी 2 अम्यट, दुग्धरिच व्यक्तित
3 छिपकली-धुनं 5 एक प्रकार का अलंकार ।

सरथ् [स्+अथच्] 1 वायु, हवा 2 वायव 3 जल
4 बसत श्नु 5 अति 6 अम का नाम ।

सरथिः (पु०, स्त्री०) [सह रतिना व० स०] एक
हाथ का माप, तु० रति या अरति ।

सरथ (वि०) [यमानो रथो यस्य रथेन सह वा-व० स] 1
एक ही रथ पर सवार,—कः रथ पर सवार घोड़ा ।

सरथस (वि०) [सह रथमेन व० स०] 1 वेगवान्,
कुशिला 2 प्रवण्ड उष 3 ओषधपूर्व 4 प्रवण्ड,—सम्
(अभ्य०) अत्यंत वेग से ।

सरथा [स्+अम+टाप्] 1 देवों की मुतिया 2 दक्ष
की पुत्री का नाम 3 रावण के भाई विभीषण की
पत्नी का नाम ।

सरथु [स्+अय्] वायु, हवा, सु-वू. (स्त्री०) एक
नदी का नाम जिसके तट पर अयोध्यामवरी स्थित
है—रघु० ८१५, १२११, ९३, १४३० ।

सरथ (वि०) [स्+अलच्] 1 लीचा, अलक 2 ईमानदार,
भरा, निष्कपट, निष्कल 3 लीचासावा, भोला भासा,
स्वाभाविक—सरथे साहसराज परिरु-भा० ६१०,
अथ सरथे किञ्च मया भगवन्था सक्थम्—२,—कः
1 बीट का वृक्ष विशद्विज्ञानो सरथमुमाचाम् कु०
११५, मेघ० ५३, रघु० ४७५ 2 बाण । शय०
अङ्गु सरल वृक्ष का रस, बिरोधा, तारपीन. इयः
मुग्धित बिरोधा ।

सरथ् दे० शरथ् ।

सरथु (नपु०) [स्+असुन्] 1 सरोवर, नाकाब, पाकर,
पानी का विवाल तस्का—सरतामसिच शारर—अप०
१००१ 2 जल । सम० अम्, अम्यम् (नपु०)
—अम् (सरोवर, सरोवरम्, सरोवरम्) अरतिम्,
सरसिबहम् कनल-सरसिबहम्विद्धं शीरकेनापि रम्यम्
—रः १२०, सरोवरम्विद्युच पाशांस्तयोविद्युन्
रत्न० १३०,—विष्णो, वैश्विनी 1 कनक का पीचा

बाला, हिलने-डूल्ने वाला—यूका मन्दविस्तारिणी
—पत्र० ११०५२।

सर्विष् (सर्व०) [सर्व् + षि] पिशलाया हुआ पन, वी
(पन और सर्पिष् के अन्तर को जानने के लिए दं
जाय)। मय०—समग्र पुनरावर्ण मान समुद्री
में ये एक।

सर्विष्मत् (वि०) [सर्विष् + मत्] घी (में प्रमाचित)
यक्त।

सर्व (स्वा० पर० सर्वति) जाना हिलना-डूल्ना।

सर्वे [सर्व् + मत्] 1 चाल, गति 2 आवाज।

सर्व (स्वा० पर० सर्वति) पंख पड़वाना क्षतिग्रस्त
करना, बच करना।

सर्व (वि० वि०) [सर्वस्मिन् विद्यमानि सर्वम् हन्० व०
व० पु०, सर्व्] 1 मय, शरीर—उपपत्तिपर्यन्त सर्वं
एव दृग्गति—हि० २०० रिक्त सर्वो भवति हि लक्ष्
पूर्वोना पौरवाद् भय० २००१३ 2 पुन समन,
परा,—सर्वं 1 विष्णु का नाम 2 मित्र का नाम।
मय०—अङ्गम् मयम् शरीर, अङ्गोष्ण (वि०) मयम्
शरीर में स्थान वा रोम-बकारी सर्वाङ्गोष्ण शरीर
मुग्ध हिम विक्रम० ५१११, अपिष्कारिन् (पु०)

अध्यक्ष लघीशरु, अश्रीम मय प्रकार के अन्न
को पाने वाला सर्वान्माजिन आदि, आकारम्
(समान में) सर्वथा पुन रूप से, पूरी तरह से,
आत्मन् (पु०) पुन आत्मा, मयकल्पना सर्वथा,
पूरी तरह से, पूर्ण रूप से, ईश्वर मयका मयभी
—व, साविन् (वि०) विश्वभाषी, सर्वव्यापक,
जित् (वि०) सर्वत्रेण अत्रेण, ज्ञ-विद्य (वि०)

सर्व कुछ मानने वाला, सर्वज्ञ (पु०) 1 मित्र का
विशेषण 2 ब्रह्म का विशेषण, दम्भ (वि०) मय
का दमन करने वाला, दुनिवार, नामन् (सु०)

सजा के स्थान में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का समूह
—भाषाशा पार्वती का विशेषण, रत्न दास्य, विदोवा
सर्विन् (पु०) पावनी, छपपेशी डाली व्यापिन्
(वि०) मन्त्र व्यापक करने वाला, वेदन् (पु०)
सर्वम् श्रिया में देख कर ज्ञानुत्पान करने वाला,
—सहा (भवसहा भी) तुम्हो, स्वम् 1 प्रत्येक
सम्, 2 किसी व्यक्ति की मयम् मरणा, जैसा कि
'सर्वत्रयत्' में, इत्यम् ' मागे मरणा का अपहरण
या लुप्ती 2 हिमा कम् का भवोय दं मा० ११२४,
६१२, मा० ८१६, मरि० ११६३।

सर्वकुल (वि०) [सर्व + कुल ; वृत्, लृत्] सब कुछ
नाश करने वाला, सर्वत्रैवराज सर्वगुणा भवशरी
भक्तिव्यर्जित मा० ११०२, मरि० ६१०, वृत्, पुट,
वदमास।

सर्वत्र (अव्य०) [सर्व + त्रि] 1 प्रत्येक दिशा से,

सर्व ओर से 2 सब ओर, सर्वत्र, चारा ओर 3 पुणन
सर्वथा। मय०—साविन् (वि०) 1 सर्वत्र गृह्य
रत्नेन बोधा कु० ११२२, मय 1 चिन्म का नय
2 वाम 3 एक प्रकार का चित्रकाल्य- उदा० कि०
१५१०५ 4 मन्त्र या मन्त्र विज्ञके शरीर और द्वार
हो (इस अर्थ में मय० भी) (ज्ञ) नर्तकी, नटी
—मुल (वि०) मय प्रकार का, पूर्ण, असोमित—उ०
५१०५, (ज्ञ) 1 मित्र का विशेषण 2 ब्रह्मा वा
विशेषण कु० २१२ (चागे और मुल किये हुए)
3 परमात्मा आत्मा 5 ब्राह्मण 6 माय
7 स्वर्ग।

सर्वत्र (अव्य०) [सर्व + त्रि] 1 प्रत्येक स्थान पर,
सब जगहों पर 2 हर समय।

सर्वथा (अव्य०) [सर्व + थात्] 1 हर प्रकार से सब
तरह से उत्तर० ११५ 1 विन्दुल, पूर्णन (प्रा०
नडागणक) 3 पूर्णत, बिल्कुल, निराल 4 सब
मयम।

सर्वथा (अव्य०) [सर्व + थात्] सब समय, सर्वत्र,
द्वेषा।

सर्वथी दे० 'शरथी'।

सर्वथा (अव्य०) [सर्व + थात्] 1 पुणन, सर्वथा, पूरी
तरह से 2 सर्वत्र 3 सब ओर।

सर्वार्थी दे० 'शरार्थी'।

सर्वेष [सर्व् + षण् मुक्] 1 सर्वो मय मयंपराभाषि
परिच्छिन्नां तपति मुधा०, मा०—१०१६
2 एक छोटा वाट 3 एक प्रकार का विष्।

सर्व (स्वा० पर० मरुति) जाना, हिलना-डूल्ना।

सर्वम् [सर्व् + मत्] जल।

सर्वज्ञ (वि०) [सर्वज्ञता मह व० स०] विनीत,
नज्जानीत।

सर्विसम् [भवति मरुति विमम् सर्व् + इल्ल्] पानी,
मुषामालिनापराजा ३० ११३। मय० सर्विन्
(वि०) व्यासा, ब्राह्मण नाभाब, गाल, पानी की
टकी,—इत्यम्-वदनाल—उपलब्ध-उल्लापान, प्रवद
वाड, किय 1 अत्येवैत सम्कार के अन्तर पर
शवस्थान 2 जलपंचन, उदकविद्या,—अम् कथम्,—विधि,
ममूट।

सर्वीक (वि०) [सहोलीया व० स०] श्रीबाघील,
स्वस्वभाषा' प्रयागप्रिय।

सर्वोक्ता [मय, तका मय इति मनीक तुस्य भाव
तत् + टाप्] एक गी लोक में लोग, किसी विशेष
देवता के साथ एक ही स्वर्ग में निवास (मुक्ति की
पार प्रकार का अवस्थाभा में ये एक)।

सर्वलोकी [सर्व् + लुक्, लृक्] 1 एक प्रकार
का पेट, सन्दाई का पत्र, दे० 'सर्वलोकी'।

सम्भः सु० अच्] 1 मोचन का निकालना 2 बढावा, लता 3 वज्र 4 मूर्ध 5 चाद 6 प्रजा, षच् 1 पात्री 2 कुली से लिखा गया मन्त्र ।

सम्भम् [सु (शु) + म्भृत्] 1 सोम रस का निकालना या पीना 2 वज्र—अथ न मन्वाना वीक्षित. रघु० ८।१५, मा० ३।२८ 3 स्नान, शुद्धिपरक स्नान 4 जनन, प्रसव, बच्चे पैदा करना ।

सम्भम् (वि०) [ममान् बभौ ग्यञ् - ब० स०] एक ही आय का प० 1 सम्भवयन्क, सम्भार्यायिक 2 एक ही आय के माथी म्भी० म्भो, म्भेनी ।

सम्भ. (प०) 1. मित्र का नाम 2 जम्भ ।

सम्भम् (वि०) [ममाना बभौ ग्यञ् ब० म०] 1 एक ही रस का 2 एक ही वृत्त ध्वन्य का, ममान, मिथता-जुलना पुर्वोर्धितिरिह मादन्मुधासवर्णा—सि० ४। २८, मेघ० १८, रघु० ९।२१ 3 एक ही जाति का 4 एक ही प्रकार का, एक जैसा 5. एक ही वर्णमाला का, एक ही स्थान में (सागिन्द्रियो द्वारा) उच्छ्वासात् किये जाने वाले बर्ण—मुष्पाव्य प्रथत्त सवर्णम् पा० १।१।२ ।

सम्भक्तम्, सम्भक्त्यक (वि०) [स्र्त् विकल्पेन - ब० स० पञ्च कर्त्] 1 ऐच्छिक 2 सद्विध 3 कर्त्ता और कर्म के अन्तर को गृह्णानने जाना जाना और श्रेय के भेद का ज्ञानन वाला (विप० निविकल्पक) ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् विधरेण ब० म०] 1 शरीरघारी, देहघारी 2 नायक, अर्थवाला 3 सधर्पण, अवशाल ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् विकल्पेन विकल्पेन वा - ब० म०] विचारवान्, कर्म, शंम् (अभ्य०) विचार-पूवक ।

सम्भिक्ष (वि०) (म्भी० म्भी) [सु - भृच्] जनक, उत्पादक, फल देने वाला—सम्भिक्षो कामाना यदि जयति जगति भ्रवन्ती गता० ७३, प० 1 मूर्ध उदेति सविना माद्यन्माद्य गामान्यमेति ब० काव्य० ७ 2 मित्र 3 इन्द्र 4 मद्यार का पेय, अर्क वृक्ष ।

सम्भिक्षी [सवित् - डीप] 1 माता कु० १।२४ 2 माय ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् विधया ब० म०] 1 एक ही प्रकार या रस का 2 निकट मटा हुआ, समीपी मूर्धो मूय सम्भिक्षनरीरव्याधा पर्यटनम्—मा० १।१५ षच् मासीप्य, पटोम—ग्यञ् न सविधे दमित्ता दवद्रहन्—शुद्धिदीपितितस्य काव्य० ९, किमासेव्य पुना सम्भिक्षनसद्य द्रुमगित - १०, मे० २।४७, सि० १।५९, भाषि० २।१८२ ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् विनयेन - ब० म०] विनीत, विनय, -षच् (अभ्य०) विनयपूर्वक ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् विधयेन ब० म०] श्रीशायक, चिन्तामयकम् ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् विधयेन ब० म०] 1 विधिष्ट

गुणो से युक्त 2 विधोय, अमाधारण 3 विधिष्ट, छास—उत्तर० ४ 4 प्रमुख, श्रेष्ठ, बढ़िया 5 विमलक्षण (सम्भिक्षेयम्, सम्भिक्षेयः) (वि० वि०) विधोय कर, छास और से, अयत्—अनेन धर्मै सम्भिक्षेयमथ मे विधर्वसार प्रतिभाति मामिनि कु० ५।३८, प्राय. समास में—कु० १।२७ रघु० १६।५३ ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् विनयेन - ब० स०] विचार सहित, मूर्धम्, पूर्णम्, रम् (अभ्य०) विचार के साथ, विस्तार पूर्वक ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् विनयेन ब० स०] आरधर्वा-न्वित, अर्धसे युक्त, चकित ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् वृद्धया ब० म० क्] जिसका व्याज मिले, व्याज से युक्त ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् वेणेन ब० म०] 1 सजा हुआ, अनकृत, वेणमूषा से युक्त 2 निकट, समीपवर्ती ।

सम्भिक्ष (वि०) [सु + य] 1 बायाँ, बा. : हाथ 2 दक्षिणी 3 चिरोपी, पिछडा हुआ, उलटा 4 सही, - षच् (अभ्य०) जनेऊ का बायें कंधे पर लटकते रहना मु० आसत्य । सम० इतर (वि०) सही, ठीक, साक्षिन् (प०) अर्जुन का विमोक्षण निमित्तमात्र मूय सम्भिक्षावर्त्त—भय० १।१३३, (महाभाग्य में नाम की व्याख्या निम्नांकित हैं उन्ही में दक्षिणी पापी मारीकस्य विकल्पेन । मेन देवमनुष्येषु सव्य सापीनि मा विदु ॥) ।

सम्भिक्ष (वि०) [व्यपेक्षया महु ब० म०] सयकत, निर्भर—मनेहृत्त्व निमित्तमव्यपेक्षप्रति विप्रतिष्ठिभैतम्—मा० १. उत्तर० ६ ।

सम्भिक्षारः [स्र्त् व्यभिचारेण - ब० स०] (तर्क० में) हेतुभावस के पीछे मूय्य भेदों में से एक, साधारण मध्यपद, व्याख्या के लिए दे० 'अनेकान्तिक' ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् व्यायेन - ब० स०] 1 चालवाच 2 बहुकामयत, रसासिदार, चालक ।

सम्भिक्षार (वि०) [व्यपारेण सह ब० स०] व्यस्त, व्यापत, कार्य में नियुक्त ।

सम्भिक्ष (वि०) [शीघ्रया मह - ब० म०] 1 सज्जालीक शनिना ।

सम्भिक्ष (प०), सम्भिक्षः [सव्ये निष्ठनि-सव्ये + स्वा + ङ्च्, क वा, षक्त् स०, पाथम्] सारथि, रथ हाँकने वाला ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् मत्वेन - ब० म०] 1 कार्टदार 2 बर्ही या कार्टों में विद्या हुआ ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् मत्वेन - ब० म०] मय्य से युक्त, अप्रोपादक—स्वा मूर्धमूली फूल का एक भेद ।

सम्भिक्ष (वि०) [स्र्त् मत्वेन - ब० स०] शारी-मूळ बाका, स्त्री० बहु स्त्री जिसके दाईं मूळ सिखाई दे ।

सथोक (वि०) [प्रिया सह-ब० सं०, कृ०] 1 समृद्धिवाली, सौभाग्यवाली 2 प्रिय, सुन्दर ।

सह् (भदा० पर० सक्ति) योग ।

सहस्र (वि०) [सह सहस्रेण ब० सं०] 1 जीवन शक्ति से युक्त, ऊर्जाशील, बलवान्, साहसी 2 गर्ववती, स्वा गर्ववती स्त्री ।

सहस्रेह (वि०) [सह सहस्रेण-ब० सं०] मरिच्य-ह एक अलंकार का नाम दे० 'सन्देश' ।

सहस्रम् [सम्+स्यट्] पशुपतेय, यज्ञोपपन्न का वध ।

सहस्रम् (वि०) [सहस्र्या सह-ब० सं०] सध्यासकधी, साधकाशील ।

सहाय्य (वि०) [सह साधयेन ब० सं०] आतंकित, डरा हुआ, भीत ।

सह्य दे० सञ्ज ।

सह्यम् [सह+यत्] 1 अनाज, अन्न-(एतानि) सस्ये पुर्वे अठमिण्डरे प्राणिना तावन्वित-पद्य० ५।९७ दे० 'शब्द' भी 2 किसी भी पौधे का फल 3 शान्त 4 सद्गुण, सुवी । सम०-इष्टि (स्त्री०) फल एक ज्ञाने पर मये अन्न से किया जाने वाला यज्ञ-प्रश्न (वि०) उपजाऊ-भारिन् (वि०) अन्न को नष्ट करने वाला, (पु०) एक प्रकार का चूहा धूम्र-सम्बन्धः साल का पेड़ ।

सह्यक (वि०) [सह्य+कन्] अपने गुणों से युक्त, युक्तान्वित इत्याद्य, प्रशंसनीय, ३ 1 अलंकार ? सङ्घ 3 एक प्रकार का मूल्यान्तःपथर ।

सह्येद (वि०) [सह स्येदेन ब० सं०] पत्नी से तर, प्रसन्न, -सा वह कन्या । अमका हाल में ही कीर्त्याय-भय हुआ ही ।

सह् । (दिया० पर० सहाति) 1 सन्तुष्ट करना 2 प्रसन्न होना 3 सहन करना, झेलना ।

1) (आ० भा०-सह्ये, मंत्र, नि, परि, वि आदि इका-गान्त उपसर्गों के पञ्चान सह्, के स का भ्रंशंय प ही जाता है, यदि सह् के ह् को ड नहीं हुआ) (क) झेलना, सहन करना, भुगतना, यम याना-बलो-ल्लाया मोदा-अन्० ८।६, पद्य सट्टेन भ्रमरस्य येनच भिन्नेषुपुत्र न पुत्र पतयिष्य-कु० ५।६, इसी प्रकार दुःख, क्लेश आदि-स्यु० १०।८०-११।५२, भट्टि० १०।५९ (ख) 1 सहन करना, अनुमति देना, -प्रकृतिः सलु मा महासल सह्ये नान्यसम्प्रति यथा-कि० २। २१, मेघ० १०५, स्यु० १४।६३ 2 क्षमा करना, सहनेना-वारकार मयंतस्यापराध मांड-हि० ३, ब्रह्म० ११।४४ 3 प्रतीक्षा करना, यत्न करना-द्विधा-ध्यानाभ्यंति मोक्षार्थम्-स्यु० ५।२५, १५।४५ 4 सहन करना, सहारा देना, डकेलना श० ३ 5 जीवना, परालन करना, विरोध करना, मुकाबला करना

6 दबाना, रोकना 7 योग्य होना (पुम्) के साथ), प्रेर० (सह्यवति-ने) 1 पारण करवाना, भुगतवाना 2 धारण करने या सहारा देने के योग्य बनना-गुर्वपि विरहसु खमासाधस्य सह्यवति श० ६।१६, इष्ट्या० (मिसहित्वते) सहन करने की इच्छा करना, उद्घ्, 1 योग्य होना, शक्ति या ऊर्जा रखना, साहस्य करना, दिलेरी दिखाना तवान्वाति न च कर्तुममहे-कु० ५।६५, "मे पसद नर्ती कान्ता" आदि भट्टि० ३। ५४, ५।५४, १४।८९, शि० १४।८३ 2 (क) प्रयास करना, प्रयासित होना कि० १।२६ (ख) दावत बचाना, विघट्टन न होना, हिम्मत न हारना भट्टि० १०।१९ 3 आगम में होना कु० ५।१६ ५ आगे बढ़ना प्रयाण करना (इष्ट्या०) उकसाना, उद्बद्ध भट्टि० १।६९, परि-, सहन करना भट्टि० १।७३ ४-, 1 सहन करना, झेलना-न तेजस्वनेभ्यो प्रसृतमप-रेषा प्रमहते उत्तर० ६।१४ 2 याचना करना, मुकाबला करना, पछाहत्या-सपदे साधयेन तमुद्यत प्रसहेत क कु० २।५७ 3 चेष्टा करना, प्रयास करना 4 योग्य होता ५ दक्षिण का ऊर्जा रखना-दे० 'प्रमत्त' भी, वि-, 1 सहन करना, झेलना स्यु० ६।६३, ८।५६ 2 मुकाबला करना, सामना करना, विरोध करने के योग्य होना-स्यु० ६।६९ 3 योग्य होना ' अनुमति देना इ इष्ट्या करना, पसद करना ।

सह् (वि०) [सह्ये-सह-अब्] 1 सहन करने वाला, झेलने वाला, भुगतने वाला 2 वीर 3 योग्य-दे० 'असह' ह् भगवित का पहलाना, ह्, ह्य् शक्ति, सामर्थ्य ।

सह् (अण०) 1 के साथ मिलकर, साथ-साथ, सहित, से युक्त (कण०)-गणितान् मय याति कीमती सह सधेन तद्विप्रसीयते कु० ६।३३ 2 साथ मिलकर, एक ही समय, युगल्य् अन्तोदयो महेश्वरी कुच्छे नृपति-द्विषाम् नृभा० । सम०-अध्यायिन् (पु०) मह-पाठी, -अर्थ (वि०) सामानाधिक्य (कं) सामान या स साय उद्वेग्य, अस्ति, (स्त्री०) अलंकार(सायन में एक अलंकार का नाम सा महातिन महासर्थ्य बला-देक द्विवाचकम्-काव्य० १०, उदा०-एतत् भूमौ मह मैत्रिकायुनि स्यु० ५।६१, उद्वेग-पुण्डुटी, -उद्वेग-एक ही पेट से उत्पन्न, मया माहं विक्रमाक० १।२१, उक्त्वा उपमा का एक भेद, उद्घ्, उद्वेगः विवाह के समय गर्भवती स्त्री का पुत्र (हितुचर्मसास्त्री) से दक्षिण शरह प्रकार के पुत्रों में से एक), काण (वि०) 'ह्' की ध्वनि से युक्त नल० २।१४, (रु) 1 सहयोग 2 व्याप का पेट क इदानी महत्कारान्तरेण पल्लवितामिन्मुक्तालता सहते-भा० १, सविष्णवा एक प्रकार का सेत, कारिन्, कुम् (वि०) सहयोग

देने वाला (पु०) सहप्रशासक, सहकारी, सहकर्मी - हस्त (वि०) सहयोग दिया हुआ, से सहायताप्राप्त, यथाम् 1 साथ जाना 2 किसी स्त्री का अपने मृत पति के शरीर के साथ अलगा, बिचबा का सही होना चर (वि०) साथ जाने वाला, साथ रहने वाला उत्तर० ३१८ (ए) 1 साथी, मित्र, सहभागी 2 पति 3 प्रतिभू (स्त्री० री) 1 सहैली 2 पत्नी, सखी, चरित (वि०) साथ रहने वाला, संवा में उपस्थित रहने वाला, साथ देने वाला, चार 1 साथ रहना 2 नरमति, मामनस्य 3 (लक० में) हेलु के साथ साथ का अनिवायन साथ रहना चारिन् दे० 'सहचर', अ (वि०) 1 अनजन्मा, स्थाभाविच, अनजन्म 2 आनुवंशिक (अ) 1 मत्ता माई 2 नैसर्गिक स्थिति या स्थिति, चरि, नैसर्गिक वान्, चिचम् नैसर्गिक दोष, जत (वि०) प्राकृतिक दे० सहज, -चार (वि०) 1 सपत्नीक 2 विवाहित, -बैचः पतिव्रता का कान्त आता, नकुल का ब्रह्मर्षि माई जो अश्विनोत्सवारी को कुप से माई के पेट से उत्पन्न हुआ, पर पानव-भौधर्य का एक आदर्श माना जाता है, धर्म समान करने, चारिन्(पु०)पति, चारिन्नी 1 पत्नी, रीच पत्नी 2 सहकर्मी धोषुषोचिन्, धोषुचिन् (पु०) सत्ता बचपन का मित्र, सगो-टिया घर, चारिन् (पु०) मित्र, हिमायती, अनुयायी, धू (वि०) नैसर्गिक, सहजान रत्न० ११०, भोजनम् मित्रा के साथ बैठ कर भोजन करना, अरण्य दे० सहजान, युष्कन् सगो साथी (युद्ध में साथ देने वाला), -वसति, बास, मिलकर रहना भद्रवसिपुत्रेण ३ प्रियाया कृत इव मुखचिलो-चिन्पट्टा - ग० २३३ ।

सहता, सम् [सह + सम् + टाप्, र्व का] मित्राय, मातृवये ।

सह्य (वि०) [सह् + ल्यट्] सह्य करने वाला, सेनेने वाला, -वत् 1 सह्य करना, सेनना 2 सहिष्णुता, सहनशीलता । सह्य (पु०) [सह् + अङि] 1 सखिज का, पहीना पि० ६१४७ १६१४३ 2 बड़े की शत्रु नपु० 1 शक्ति, साहस, सामर्थ्य 2 बल, हिमा 3 विजय, जीत 4 कान्ति, धर्मक ।

सहसा [सह + सो + डा] 1 बलपूर्वक, उबरपत्ती 2 उतावली के साथ, अथाप्य, बिना बिचारे सहसा बिदधीन न क्रियामिबिके परकारदा पदम् - कि० २३० 2 अचम्भात्, अचानक साहस मके सह-सोत्पन्नहि - रपु० १३१११ ।

सहस्रान्तः [सह् + असान्त्] 1 मोर 2 यज्ञ, आहुति । सहस्र [सहस्रे ब्रह्मण हिन सहस्र + पत्] पीप मास, सहस्रभागीष्वब्रह्मणस्तथा - कु० ५१२९ ।

सहस्रम् [समान हसति - हस् + ट] हजार । सम० - अंशु, - अर्थिः, कर, चिरच, -दीपिति, - बालम्, - पाथ - नरीचि, रथिम् (पु) सुय-अ० ७१५, रपु० १३१४४, मुद्रा० ६११७, अक्ष (वि०) 1 हजार अक्षों वाला 2 वागकक, सख्य (अ) 1 इन्द्र का विशेषण पुरुष का विशेषण चक्र० १०१६० 3 विष्णु का विशेषण, काष्ठा मर्षेव हुब, - ह्यम् (अव्य०) हजार बार, व (वि०) उदार, चाटः विष्णु का चक्र - पथम् कथम् रपु० ७१११, - बाहु 1 राजा कार्तवीर्य का विशेषण 2 बाण राक्षस का विशेषण 3 शिव का (कुछ के अनुसार विष्णु का) विशेषण, भूजः - भूषन् - मौलि (पु०) विष्णु का विशेषण - रीपुम् (नपु०) कबज, - शीवी हीन - शिखरः विष्णु पर्वत का विशेषण ।

सहस्रधा (अव्य०) [सहस्र + धाच्] हजार भागों में, हजार प्रकार से - दीपे कि न सहस्रधाहृन्धवा रामेण कि हुकरम् उत्तर० ६१४० ।

सहस्रशस्त्रं (अव्य०) [सहस्र + शस्त्रं] हजार-हजार करके । सहस्रम् (वि) [सहस्र + इति] 1 हजार से युक्त हवारी, - सहस्री लक्षमीहते-पथ० ५१८२ 2 हजारों से युक्त 3 हजार तक (दूरमाना जावि)-मनु० ८१७७, पु० 1. हजार मनुष्यों की टोली 2 हजार सेनिकों का सेनापति ।

सहस्रम् (वि०) [सह् + सप्तुप्] समर्थ, शक्तिशाली । सहा [सह + अच् + टाप्] 1 पृथ्वी 2 धोकुवार का पीवा केतकी का पुल ।

सहायः [सह एति-सह् + इ + अच्] 1 मित्र, साथी-सहाय-साध्या प्रदियान्ति सिद्धय - कि० १४८४, कु० ३१२१ 2 अनुयायी, अनुयायी 3 'सधि' द्वारा बताया गया मित्र 4 सहायक, अधिभावक 5 चक्रवाक 6 एक प्रकार का ग-ब्रह्म 7 शिव का नाम ।

सहस्यता - स्य् [सहाय + सम् + टाप्, र्व का] 1 साथियों का समूह 2 साथ, मित्राय, मैत्री 3 सहायता, मदद - कुमुदात्तरणे सहायता बहुधा भौधय मनस्यसाधयोः कु० ५१२५, रपु० ९११९ ।

सहायस्यत् (वि०) [सहाय + सप्तुप्] 1 मित्रों से युक्त 2 मित्रता में आबद्ध, सहायवान् सहायता प्राप्य ।

सहाटः [सह + ष्ट + अच्] 1 आम का पेड़ 2 चित्र का नाश, प्रलय ।

सहित (वि०) [सह + इत्थच् सह् + क्त, हितेन सह वा स + धा + क्त] सहता या देवित, साथ-साथ, साथ-साथ, से युक्त - परब्रह्मणिसमाययोः प्राव सहित इहा वर-स्वतीजता रपु० ८१४, तम् (अव्य०) साथ-साथ, के साथ ।

सहित्नु (वि०) [सह् + त्नु] सहन करने वाला, सहनशील सहित्नु ।

सहित्नु (वि०) [सह् + इत्नुच्] 1 सहन करने के योग्य झूलने में समर्थ—रविकिरणसहित्नुःकलेशलेवीरभिलम्—म० २।६ 2 समयाशील, तितिक्षु, सहनशील मुकुरस्तकामसहित्नुना रिपुकमूलयित्नु महानपि—कि० २।५० ।

सहित्नुता, —स्वच् [सहित्नु—तल + टाप्, त्व वा] 1 वहन करने की शक्ति, महारा देने की शक्ति 2 अमा शीलता, तितिक्षा ।

सहृदिः [सह् + उरिन्] मूर्ख, स्त्री० पृथ्वी ।

सहृद्य (वि०) [सह् हृदयेन—ह० म०] 1 अच्छे हृदय वाला, हृद्यता, कहवाशील 2 निष्कपट, य- 1 विद्वान् वृक्ष 2. (तुषी की) सराजना करने वाला, रसिक, त्रिभुक्तान् इत्यपदेश कवे सहृदयस्य च करोति काव्य० १, पान्कजसंशयमे सहृदयपरीणा कल्पिये—रत्न० ।

सहृदय (वि०) [हृदयस्य तेन काल्प्यकारणम्, सह हृदयेन—ह० म०] अट्य, सदिग्ध, लम् दृष्टता आहार ।

सहृदय (वि०) [सह हृदयेन—ह० म०] क्रीडाशील कल्पि-परक, विनाशिय ।

सहोदः [सह् ज्ञेन—ह० म०] बुराये गये सामान के साथ पकवा गया ब्राह्म ।

सहोद (वि) [सह् + ओद] अछा, श्रेष्ठ, —र. भवन, महान्मा ।

सहृ (वि०) [सह् + पठ्] 1 वहन करने के योग्य, महारा दिये जाने के योग्य, महान करने योग्य अपि सहा ने क्षीरोक्षेपना—मृदा० ५, मान्वि० ३।६ 2 महान किये जाने योग्य, झले जाने योग्य कथ तुष्णी सद्यो निरुत्पिदिदन्ते तु विरह—उत्तर० ३।६४ 3 महान करने योग्य 4 महान करने में समर्थ, महान करने के योग्य 5 समर्थ, शक्तिशाली,—हृदः भारत की नात प्रधान परबन्धेणियों में एक समुद्र से कुछ दूरी पर पक्षिची घाट का कुछ भाग, सहादिशेणी—गया स्वोत्पान्ति०प्राचीनमहाभारत इवार्णव—रत्न० ४।५३ ५२, कि० १८।५, हृद 1 स्वार्थ्य, आगेथ्यताय 2. महायता 3. पुनरुत्ताय यति ।

सा [सा + इ + टाप्] 1 लक्ष्मी का नाम 2 पार्वती का नाम ।

सांघातिकः [साघा + टञ्] मनुह-ध्यापारी, पौनस्यित्नु, सुदरी ध्यापार करने वाला पञ्च० १।३१६ ।

सांघुणी (वि०) [सघुन साधु क] पृथमवर्षी, रघु-शाल २३० १।३३०, विक्रम० ५, क भारी योद्धा, पृथुकुलक सैनिक—कृ० २।५७ ।

सांघातिकम् [सघु + इ + पिति—सराघिन् + अच्] अंधी आकाश, भारी कोलाहल—उत्पत्ता कटपुनामभूतय माराघिग कुबंते—मा० ५।११, अटि० ७।६२ ।

सांघातर (स्त्री० स्त्री), सांघातरिक (स्त्री—की) (वि०) [सघुनर—अच् टञ् वा] सांघिक, साफाना, क उपाधि, वैद्यक ।

सांघातिक (वि०) (स्त्री० की) [सघाट + टञ्] 1 (सोपचार में) प्रवर्धित 2 विवाहशल,—क-नातिक, नैयातिक ।

सांघातिक (वि०) (स्त्री०—की) [सघुति + टञ्] ध्यायक, अनीतिक (बटना या तन्त्राधिक) ।

सांघात्यक (वि०) (स्त्री० की) [सघाट + टञ्] 1 मन्दाय 2 अतिविषम, अतिधरमि ।

सांघातरिक (वि०) (स्त्री०—की) [सघाट + टञ्] दुनि-पावी, लौकिक—सासारिकेषु च सुश्रेष्ठे यद रमजा—उत्तर० २।२२ ।

सांघातिहिक (वि०) [सघुति + टञ्] 1 प्राकृतिक, स्वत-विद्यमान, मनुह, अस्तित्व 2 स्वभावन पक्ष, स्वत-सुन ३ स्वयंभूत 4 अतिप्राकृतिक साधन में प्रभा-विः । म०० इक स्वाभाविक उरलता (विप०) नैमित्तिक—प्रतिद) केवक रमसवधी ।

सांघातिका [सघान + टञ्] सभानदेशीय, एक ही देश के निवासी ।

सांघातिक्त्तम् [सघ् + कु + पिति + अच्] सामान्य प्रवाह या सान्निः ।

सांघातिक (वि०) (स्त्री० की) [सहवन + टञ्] । शरीरिक, वर्णिक ।

साकम् [सक०] यद अकति अक + अच्, सादेता] 1 क मण्य साथ मित्रपर सक० के साथ) —धान्ति मुकुरते साक स्वयंसाता नरावृद्धा ममि० २।३३०, १।६ 2 पूर्वी मध्य युगान्त, एक ही समय ।

साकल्पम् [सकल् + टञ्] सवति, सम्पूर्णता, किसी कन्दु का संपूर्ण या पूर्ण भाग यावत्साकल्पे—नय० ३।१९, (साकल्पदे) पूर्णतः, पूर्ण परह से पूर्ण रूप से सन् १२।५६ ।

साकूत (वि०) [सह् साकूतेन ह० म०] 1 सांघिप्राय, सायंक, अर्धराता साकूतियाम् गीत० २, साकूत कचनम् साद 2 सपयोजन ३ सुचारु प्रिय, श्रेष्ठता वाली तम् (अथ०) । अर्थः, सायंकवत्पूर्वक जैसा कि साकूत या निर्दण्य में 2 साकूतय ३ साकू-कता के साथ, सांघिकतापूर्वक ।

साकैतम् [साकै + टञ्] ह० म०] अगोष्ठा कमरी का नाम—भाकेतनायाऽऽसिपि प्रत्यम् रत्न० १।४।११, १।३।५, १।८।३५, अरण्यचन साकैतम्—महा०, तः (पु०, ह० इ०) अथाप्या निवासी ।

साकेतक [साकेत + कन्] अयोध्या का निवासी ।

साक्युक्तम् [सक्युता समाहार सक्त्-उक्त] मुने हुए अथ वा मातु का देर, कः जी ।

साक्षात् [अभ्य०] [सह + अक्ष + आनि] 1 के सामने, आगे के सामने दृश्य रूप में हुआ, स्पष्ट रूप से 2 व्यक्तिगत, वस्तुतः, मूर्त रूप में साक्षात्प्रियामुप-गतामपराध पूर्वम् श० ६१६, ११६ 3 प्रत्यक्ष, (समाप्त में प्राय 'सारी-साक्षात्सम, या मुक्त, बोधा-तत्साक्षात्प्रतिवेद्य साक्षात् मा० ११११ (साक्षात् 'अपनी ओंके से देवता, स्वयं प्राप्त जना) ।

साम०—करणम् 1 दृष्टिगोचर करना 2 इन्द्रियप्राप्त बनाना 3 अनुश्रवितव्य प्रत्यक्षज्ञान, —करण प्रत्यक्ष-ज्ञान, समस, जानकारी ।

सामिन् [वि०] (स्त्री०—की) [सह अणि अन्त्य, साक्षाद् इप्ता साती वा सह + अक्ष + इनि] 1 देखने वाला, ज्योत्सना करने वाला, सबूत देने वाला, पु० गवाह, बयेशक, चरमदीह गवाह, प्रामां देखने वाले याता, फल रूप सामिन् दृष्ट्यर्थम् कु० ५१५ ।

साध्यम् [साञ्जित् + ध्यञ्] 1 गवाही, साक्ष्य - तमेव साक्षात् विवाहसाक्ष्ये न्यु० ७१० 2 अनि-प्रमाण, साध्यपत्त ।

साक्षेप [वि०] [सह आक्षेपेण व० म०] जिसमें आक्षेप या व्यय भरा हो, दुर्बलव्ययम् ।

साक्षेय [वि०] (स्त्री०—की) [सहि + इञ्] 1 मिथ-मन्वयी 2 मैत्रीपूर्ण गीहसंपूर्ण ।

साक्ष्यम् [सहि + ध्यञ्] मिथता, मैत्रीत्व ।

साक्षर [सक्षरेण निर्बन्ध—अण्] 1 समूह, उदरि साक्षर साक्षरोपम (आल० से भी) दयासागर, विद्यासागर आदि, तु० सगर 2 चार वा सात की संख्या 3 एक प्रकार का हृदिग । सम० अनुकूलक [वि०] समूह के बिनादे स्थित, अन्त [वि०] समूह की सीमा से पवन, जिसने सब ओर समूह छाया है, अम्बर, सैवि, मेखला पृथ्वी, आलय वदन का नाम, —अन्तम् समूहीनमेव, —वा गया, —साक्षिणी नदी ।

सामिन् [वि०] [सह अणिना व० म०] 1 अग्नि सहित 2 यज्ञाग्नि रखने वाला ।

सामिन्क [वि०] [सह अग्निना व० म० कन्] 1 यज्ञाग्नि रखने वाला 2 अग्नि से संबद्ध कः यज्ञाग्नि रखने वाला गृहस्थ ।

साक्ष [वि०] [सह अक्षेण—व० म०] 1 समस्त 2 अति-रिक्त समेत, अपेक्षाकृत अधिक रखने वाला ।

साक्षुर्वच [सक्षुर + ध्यञ्] मिथत, मिथतय, गृह्यमहद किया हुआ या मिलिया हुआ बोध ।

साक्षुल [वि०] (स्त्री०—की) [सक्षुल + ध्यञ्] बौद्धा सफलन से उत्पन्न ।

साक्षुल्यम्, क्या जनक के भ्राता कुमभवद की राजधानी का नाम ।

साक्षुलिक [वि०] (स्त्री०—की) [सक्षेण + उक्त] 1 प्रती-कारक, संकेतपरक 2 व्यवहार-सिद्ध, रीत्यनुसार ।

साक्षुल्येक [वि०] (स्त्री०—की) [सक्षेण + उक्त] सक्षिल, सक्षुलिन, उाटा किया हुआ ।

साक्षुल्य [वि०] [सक्षुल्य—अण्] 1 मर्या मन्वयी 2 आकलन कर्ता, गणक 3 विशेषक ० विचारक, साक्षिक, तर्क कर्ता—रव गणि-सर्वभाक्षुल्यार्थो योगिता र्व परायणम् - महा०—अन्त्य—अण् छ हित्नु दर्शनी में से एक जिसके प्रयोग कथित मूनि माने जाते हैं (इस साक्ष्य का नाम 'साक्ष्य दक्षान' इस लिए पया कि इसमें पृथ्वीम तत्त्व या सत्य सिद्धांतों का वर्णन किया गया है, इस साक्ष्य का मुख्य उद्देश्य पृथ्वीसर्व तत्त्व अर्थात् पुरुष वा आत्मा—को अन्त्य शीघ्रत तत्त्वों के सुद्ध ज्ञान द्वारा तथा आत्मा की उनसे सम्बन्धित चिन्तना दर्शाकर, उसे साक्षात्क बचनों से प्रकृत करना है ।

साक्ष्य धारण साक्ष्य को निर्वाच्य प्रदान या प्रकृति का विकास मानता है, जब कि पुरुष (आत्मा) सर्वथा निरल्प एक निष्क्रिय दर्शक हैं । सक्षेयसाक्ष्य होने के कारण वेदान्त से इसकी समानता, तथा विश्लेषणपरक न्याय और वैशेषिक से चिन्तना कही जाती है । परन्तु वेदान्त से चिन्तनाही सब से बड़ी बात यह है कि साक्ष्य धारण दो (दो) सिद्धांतों का समर्थक है जिनको वेदान्त नहीं मानता । इसके प्रतिरिक्त साक्ष्यधारण परमाणु को विश्व के अन्त और नियन्त्रक के रूप में नहीं मानता, जिसकी कि वेदान्त पुष्टि करता है, कः साक्ष्य साक्ष्य का अनुपायी भय० १५५, ५१११ सम० प्रत्यक्ष, —सूक्ष्यः विषय के विश्लेषण ।

साक्षुल्य [वि०] [सह अक्षुः—व० म०] 1 अर्थात् सहित 2 प्रत्येक भाग से पूर्ण 3 सहायक अंगो से युक्त ।

साक्षुल्यिक [वि०] (स्त्री०—की) [सक्षुल्य + उक्त] सहाय वा सप से संबंध रखने वाला, साक्षुल्ययोगी, कः दर्शक, अतिवि, नवात्मक ।

साक्षुल्यक [सक्षुल्य + अण्] विचार, मिलन तु० समम् ।

साक्षुल्यधिक [वि०] (स्त्री०—की) [सक्षुल्य + उक्त] गृह सबको बोधा, जन्तु, सैविक, साक्षरि—उत्तर० ५१२, कः सेनाप्यक्ष, सेनापति ।

साक्षि [अभ्य०] [सक्ष + इण्] टेबेल से, तिरलेपन से, तिर्यक्, चकमति से, टेडे-टेडे,—साक्षि शोचनमूर्त नवमती कि० १५४, १०५५, (साक्षीक मीमांसा, एक ओर मुकाना, टेडा करता निवाय साक्षीकसाक्ष्यकः—न्यु० ५१४, कु० ३ ८, साक्षीकरीत्यात्मन्य—आत्मवि० ५१४ ।

साक्षुल्य [वि०] [सह अक्षुः—व० म०] 1 अर्थात् सहित 2 प्रत्येक भाग से पूर्ण 3 सहायक अंगो से युक्त ।

साक्षुल्यिक [वि०] (स्त्री०—की) [सक्षुल्य + उक्त] सहाय वा सप से संबंध रखने वाला, साक्षुल्ययोगी, कः दर्शक, अतिवि, नवात्मक ।

साक्षुल्यक [सक्षुल्य + अण्] विचार, मिलन तु० समम् ।

साक्षुल्यधिक [वि०] (स्त्री०—की) [सक्षुल्य + उक्त] गृह सबको बोधा, जन्तु, सैविक, साक्षरि—उत्तर० ५१२, कः सेनाप्यक्ष, सेनापति ।

साक्षि [अभ्य०] [सक्ष + इण्] टेबेल से, तिरलेपन से, तिर्यक्, चकमति से, टेडे-टेडे,—साक्षि शोचनमूर्त नवमती कि० १५४, १०५५, (साक्षीक मीमांसा, एक ओर मुकाना, टेडा करता निवाय साक्षीकसाक्ष्यकः—न्यु० ५१४, कु० ३ ८, साक्षीकरीत्यात्मन्य—आत्मवि० ५१४ ।

साक्षुल्य [वि०] [सह अक्षुः—व० म०] 1 अर्थात् सहित 2 प्रत्येक भाग से पूर्ण 3 सहायक अंगो से युक्त ।

साक्षुल्यिक [वि०] (स्त्री०—की) [सक्षुल्य + उक्त] सहाय वा सप से संबंध रखने वाला, साक्षुल्ययोगी, कः दर्शक, अतिवि, नवात्मक ।

साक्षुल्यक [सक्षुल्य + अण्] विचार, मिलन तु० समम् ।

साक्षुल्यधिक [वि०] (स्त्री०—की) [सक्षुल्य + उक्त] गृह सबको बोधा, जन्तु, सैविक, साक्षरि—उत्तर० ५१२, कः सेनाप्यक्ष, सेनापति ।

साधिव्यम् [साधिव्+व्यञ्] 1 मन्थालय, मन्थिव 2 मन्थि-
मन्थल, प्रसासन 3 मन्थी ।

साध्याव्यम् [साध्यात्+व्यञ्] 1 जाति की समानता, धर्म,
श्रेणी या प्रकार की समानता 2 जाति का सम्बन्ध,
समजातीयता ।

साध्यान् [सह अञ्जनने ब० सं०] छिपकली ।

साष्ट (पूरा०) उभ० साटयति-से] बलवाना, प्रकट करना ।

साटोष (वि०) [सह आटोपिन-ब० सं०] 1. घमड़
में भरा या फूला हुआ, अहङ्कारी 2 तौरबधाती,
शानदार 3 उभरा हुआ, बड़ा हुआ (जैसे पानी में)
पच० १. -घमड़ घमड़ के साथ, हेकड़ी के साथ,
अकड़ कर, इठला कर, रोव से ।

सात् (अभ्य०) तद्वि का एक अर्थय जो किसी शब्द के
साथ इसलिये जोड़ा जाता है कि शब्द से अविहित
वस्तु के साथ किसी वस्तु का पूर्ण परिवर्तन हो जाता
है, या वह वस्तु पूर्ण रूप से तबदील या उसके निय-
म में हो जाती है, अन्वयसात् भू विष्णुकुल रास बन
जाना, अग्निसात् हुवा मालाबि० ५, अन्वयसात्कुल-
वत् पितृपियः पञ्चसात्त्व वसुधा मसागराम्-रघु०
११।८६, विभज्य मेरुर्न यद्विसात्कृत नै० १।१६,
इसी प्रकार ब्राह्मणसात्, राजसात् आदि-सि०
१।४।३६ ।

सात्त्विक्यम् [सत्त्वं+व्यञ्] निरन्तरता, स्थाविरत्व ।

सात्तिः (स्त्री०) [सन्+सिन्] 1 भेंट, उपहार, दान
2 श्राद्ध करना, ह्रासिल करना 3 सहायता + विनाश
5 अन्न, उपसहार 6. तेज या तीव्र वेदना ।

सात्त्विक, सात्त्विक्य [सत्त्वं+स्यु, सात्त्विक-कन्] यदर ।

सात्त्विक (वि०) (स्त्री०-की) [सत्त्व-ठञ्] 1 वायु-
विक, आवयवक 2 सत्य, अचली, प्राकृतिक
3 ईमानदार, निष्कपट, अच्छा 4 सद्गुणी, मिलनसार
5 बलशाली 6 सत्त्वगुण के युक्त 7 सत्त्वगुण के
सबड़ या उत्पन्न-ये च सात्त्विका भावा-अथ० ७।१०,
१।।१६ 8 आन्तरिक भावनाओं के उत्पन्न (जैसे
प्रेम आदि में) आन्तरिक तद्गुरिसात्त्विककारिण-
पालार्थयोगार्थक विविध साम्यधर्माभिरानीत् मा०
१।०६. कः (आन्तरिक) भावनाओं या संवेगों का
बाह्य नकेन, काव्य में भावों का एक प्रकार (भाव
जाट है: स्तन्य स्वेदीय रोमाञ्च स्वरजङ्गीय
वेपथु । वैचर्यमधुप्रलय इत्येते सात्त्विका म्यूता ॥
-मा० द० १।६ 2 बाह्य 3. बड़ा ।

सात्त्विक [सात्त्विक+इञ्] यदुपशी पांडा जो कृष्ण का
. सारथि था तथा जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों
का पक्ष लिया ।

सात्त्विक्यतः, सात्त्विक्येभ्यः [सात्त्विकी०+अच्, इक् वा] व्यास
मुनि का मातृपरक नाम ।

सात्त्व्य् (पु०) [सात्त्वयति मुक्तयति-सात्+क्विप्, सात्
परमेस्वर, स उपास्यतेन अस्ति अस्व-सात्+सुप्,
मत्स्य ब] [कृष्ण आदि का] अनुयायी, उपासक ।

सात्त्वत् (पु०) 1 विष्णु का नाम 2 बलराय का नाम
3 जाति में बहिष्कृत संघ का पुत्र, साः (पु०, ब०
ब०) एक जाति का नाम-सि० १६।१४ ।

सात्त्वती (स्त्री०) 1 चार प्रकार की नाट्यशैलियों में से
एक-दे० सा० द० ४१६ 2 सिद्धार्थ की माता
का नाम सि० २।११ ।

सात् [सद्+घञ्] 1. बैठना, बसना 2 क्लान्त,
यकाबट उचितोक्सायमनिषेप्यन् सि० १।७।७
3 शीपना, बुकला-पललापन, कृशता-शरीरनाश-
दमप्रभृताया रघु० ३।२ 4 श्वस, श्व, शीप,
विनाश, विधाति-यतिविश्वमसादनीरवा-रघु०
८।५६, दलदोः ३।२४ 5 पीडा, सताप 6 श्वसना,
पाषण्डता ।

सात्त्वन् [सद्+णिच्+त्युट्] 1 घकाना, क्लान्त करना
2 नष्ट करना 3 यकाबट, क्लान्त 4 चर, विनाश-
स्थान ।

सात्वि [सद्+इच्] 1 सारथि, रथवान् 2 योद्धा ।

सात्विन् (वि०) [सद्+णिच्+णिनि] 1 बैठा हुआ
2 यकाने वाला, नष्ट करने वाला, पु० 1 बुद्धसवार
2 हाथी पर सवार या रथ में बैठा हुआ ।

सात्त्विक्यम् [सत्त्व+व्यञ्] 1 समानता, मिलता-जुलता-
पन, समकल्पता सति पुनर्नामधेयसात्त्विक्यानि ब० ७,
तवाशिसात्त्विक्य प्रवृत्तये-कु० ५।३५, ७।१६,
रघु० १।८०, १५।६७ 2 प्रतिनिधि, आलोचकिय
प्रतिभा-मन्वाद्यस्य विरहानुत्तु भा बाधनस्य लिखन्ती
मेघ० ८४ ।

सात्त्वत् (वि०) [सह आद्यन्नाभ्याम् ब० सं०] पूरा,
समस्त ।

सात्त्वक्य (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [सत्त्वक्य+इच्] वीर्य
होने वाला, जिसमें विषय न हो ।

सात्त् 1 (स्वा० पर० भाष्योक्ति) 1 पूरा करना, समाप्त
करना, संपन्न करना 2 जीतना ।

. 1 (दिका० पर० साध्यति) पूरा किया जाना, निष्पन्न
किया जाना, श्रेष्ठ 1 निष्पन्न करना, कार्यान्वित
करना, बटिन करना, सम्पन्न करना-अपि सात्त्व
साध्योन्मित नै० २।६२, कु० २।३१, रघु० ५।२५
2 पूरा करना, समाप्त करना, उपसहार करना
3 उपलब्ध करना, श्राव्य करना, गाना-रघु०
१७।३८, मनु० ६।७५ 4 साहित करना, सिद्ध करना
5 दमन करना, पराजित करना, जीतना (सद् आदि
का), बस में करना-न हि सात्त्वा न दानेन न मेरेन
च पाण्डवा, लक्ष्म सात्त्वियन्तु महा० 6 बार

डालना, नष्ट करना सुधीवाण्टकमासेतु साधयिष्याथ
ह्यपरिम्—मट्टि० ७३११ 7 सखडना, जानना
8 चिकित्सा करना, स्वस्थ करना 9 जाना, अलग होना,
अपने रास्ते लगना, साधयान्महविश्वमन्त्रु ते-रघु०
१११९१, ४० ११७-प्रायेण ध्वन्यक साधिमैरैरुं प्रमु-
ज्वले-सा० ६० ३१४ 10. (शुच की मांति) उवाहना
11 पूर्ण कर देना, प्र- (प्रेर०) 1 भाये बढ़ना,
उन्नति करना 2 निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना
3 उपलब्ध करना, प्राप्त करना पराभूत करना,
दखाना 5 स्वस्थ धारण करना, सजाना, सम्
1 सकल होना (मा०) 2 निष्पन्न करना, पूरा करना
—मनु० २१०० 3. नुरिष्ठ करना, प्राप्त करना
4 बस जाना 5 पुन प्राप्त करना मनु० ८१५०
6 नष्ट किया जाना या चुकता किया जाना—मनु०
८१२३ 7 नष्ट करना, माग डालना 8 दुखाना ।

साधक (वि०) (स्त्री०)—बका धिका [साध् + धृञ्,
सिध् + धिच् + ध्वञ् साधारण वा] 1 सपन्न करने
वाला, पूरा करने वाला, कार्यान्वित करने वाला, पूर्ण
करने वाला 2 दक्ष, प्रभाषाशाली—कु० ३१२२
3 कुशल, निरुप 4 जानू से कार्य में परिणत करने
वाला, ऐन्द्रबालिक 5. सहायक, मन्दागार ।

साधन (वि०) (स्त्री०-औ) [सिध् + धिच् + ह्यट्, साधा-
देश] निष्पन्न करने वाला, कार्यान्वित करने वाला,
—ध्व 1 निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, अनुष्ठान
करना जैसा कि 'स्वायंसाधनम्' में 2 पूरा करना,
सम्पन्नता किसी पदार्थ की पूर्ण अवधि प्रजाप-
साधने ही हि पर्याप्तोद्यतकार्यकी रघु० ४११६
3 उपाय, तरकीब, किसी कार्य को सम्पन्न करने को
नदबीर सगीरमाद्य ल्लु धर्मसाधनम्—कु० ५१३३,
५७, रघु० ११९, ३१२, ४३६, ६२ 4 उपकरण,
औसकर्ता, कुठार छिद्रिकियासाधनम् 5 निश्चित
कारण, श्रोत, सामान्य हेतु 6 करण कारक 7. उप-
करण, औजार 8 वन, सामग्री 9 मूल पदार्थ, तब-
टक तब 10 सेना या उसका अर्थ—मनु० ५११०
11 सहायता, मन्दा सहारा 12 प्रमाण, सिद्ध करना,
प्रदर्शन करना 13 अनुमान की प्रक्रिया में हेतु, कारण,
जो हमें किसी परिणाम पर पहुँचाने—साधने निश्चित-
परवचन घटित बिभ्रन् सपले निश्चि, व्यावृत्त च विपद्यतो
अथि यस्तसाधन सिद्धये मुद्रा० ५११० 14 दमन
करना, जीत देना 15 जाग्रत से बच में करना
16 जानू या मंत्र से किसी कार्य को निष्पन्न करना
17. स्वस्थ करना, चिकित्सा करना 18. बच करना,
बिनाश करना क्ल च तस्य प्रतिसाधनम्—कि० १४
१७ 19 सहायन, प्रसादन, तुष्टीकरण 20, साहू
जाना, कूच करना, प्रस्थान 21. अनुभवन, पीछे चलना

22 साधना, तपस्या 23 मोज प्राप्त करना 24 औषधि
निर्माण, भेषज, जड़ी-बूटी 2 (विधि में) कूच भादि
की प्राप्ति के लिए आदेश, बर्ताना करना 2; खीर
का कोई अवयव 27 निम्न, निम्न 28 जीवी, ऐंद्र
29 दौलत 30 मैत्री 31 साध, फायदा 32 सब की
दाह किया 33 मृतकसंस्कार 3; धनुषी का मारण
या जारण । सम० -श्विवा समापिका किया, - चम्ब
लिखित प्रमाण ।

साधनता, -स्वम् [साधन + तन् + टाप्, स्व वा] उपायवता,
उद्भवपुति का अर्थात् होना -प्रतिकूलतामुपगतने हि
विषी विफलत्वमेति बहुसाधनता—सि० ११६ ।

साधना [सिध् + धिच् + टाप्, साधारण] 1 निष्प
प्रता, पूरा करना, प्रति 2 पूजा, अर्चा 3 सहायन,
प्रसादन ।

साधनः [साध् + धृञ्, अन्तारेक] भिक्षुक, भिखारी ।
साधर्म्यम् [सधर्म + ध्यञ्] 1 समानता, कर्मत्व की एकता,
अपानधर्मता पञ्चम लोकपालामान्म, साधर्म्ययोगत
रघु० १७१७ 2. प्रकृति की समानता, समान
परिण, समता, मनुषी की समानता साधर्म्यमूपाभा भेदे
- काव्य० १०, अथ० १४१२, भाषा० १२ ।

साधारण (वि०) (स्त्री०-भा, औ) [सत धारणया-ध०
स० सधारण + अच्] 1 (सो वा दो से अधिक अंको में)
समान, समुच्च, -साधारणोऽय प्रथम-सा०३, साधा-
रणी मूषकमुष्मायाः—कु० ११४३, रघु० १६१५, विश्व०
२११६ 2 सामुची सामान्य साधारणी न श्लु वावा
अवस्थ-अव० १०, 3 सार्वजनिक, विश्वव्यापी 4 मि-
थित, मिला-जुला मवात उपकृतासाधारण परिणोष-
मनुष्याधि-स० ४, बीज्यते स हि सपुन स्वामयाधा-
रणाधिक—कु० २१४२ 5 तुल्य, समुच्च, समान
6 (तर्क में) एक से अधिक निदर्शनों से सबद्ध,
हेतुभाषा के तीन प्रमाणों में से एक, अनेकानिक,
—ध्व 1 सामान्य वा सार्वजनिक नियम, सार्वजनिक
विधि वा नियम 2. प्रतिपत्त वा निश्चित मूल ।
सम० क्वम् सपुस्त मर्णित, —स्त्री सामान्य स्त्री,
वेत्या, रबी ।

साधारणता, स्वम् [साधारण + तन् + टाप्, स्व वा]
1 सामुदायिकता, विश्वव्यापकता 2 समुक्त हित ।

साधारण्यम् [साधारण + ध्यञ्] समानता—दे० साधा-
रणता ।

साधिका [सिध् + धिच् + ध्वञ् + टाप्, इत्थन्, साधा-
देश] 1 कुशल वा निरुप स्त्री 2 गहरी नींद ।

साधित (भू० क० क्त०) [साध् + क्त] 1 निष्पन्न,
कार्यान्वित, अर्थात् 2 पूरा किया हुआ, समाप्त
3 सिद्ध, प्रकृत 4 प्राप्त, उपलब्ध 5 उन्मुक्त
6. बच में किया हुआ, बचन किया हुआ 7. पूरा किया

हुआ, पुनः पात्र 8 दक्षिण 9 दाहिना 10 (दह वा सुमराना) दिमा हुआ ।

माचिन्तम् (वि०) [साधु + इमचिन्त्] ब्रह्मा, श्रेष्ठता, उत्तमता ।

साचिष्ठ (वि०) [साधु या बाह्य को उत्तमात्म्या अति-पायेन साधु - इच्छन्] 1 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, उच्चित्तम 2 अत्यंत मजबूत कठोर या दृढ़ ।

साधोयम् (वि०) [साधु + ईयन्तु, उकारलाप, साधु या बाह्य को मध्यमात्म्या] 1 अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ भावित् १।८८ 2 कठोरतर, अपेक्षाकृत मजबूत ।

साधु (वि०) (स्त्री० - धु - ध्वी) [साधु + उत्, मध्य० अ० साधीयस, उत्त० अ० साचिष्ठ] 1 उत्तम, श्रेष्ठ, पूर्ण यद्यत्साधु न चित्ते स्थानिकपाये नन्दनवादा वा ६।११, जागतिर्नोपादित्तुना न साधु मन्वे प्रयोगविज्ञाना १।२ 2 योग्य, उचित यही जैसा कि 'साधु-वृत्त, साधुसाधार' में 3 सुधी, पुण्यात्मा, सम्माननीय, पवित्रात्मा 4 (क) कृपालु, दयालु मधु० २।२८, पृथ० १।२४३ (ख) शिक्षाचारी (अधि० के माधु) मानत्रि साधु - सिद्धा० ' गृह्य पवित्र, गौरव युक्त या श्रेष्ठ (जैसे कि भावा) 6 मुक्तकर, दीक्षकर, मुहावता अनाहंमि सन्तुमसाधु साधु वा-कि० १।४ 7. मन्त्र, कुशील, मन्त्रुकाञ्चन, -धुः 1 मन्त्रपुत्र, पुण्यात्मा -रथ० ११।५५, २।६२, मेघ० ८० 2 अर्थ, मूर्ति, मन -साधो प्रकीर्णित्वापि मन्त्रा नावाति विधिषाम् मुञ्जा० 3 सौभाग्य कि० ३। ७३ 4 जैनसाधु 5 सूत्रकार, महाजन (अव्य०) 1 अच्छा, बहुत अच्छा, शाबास, बडिदा साधु गीतम् वा० १, साधु रे पिलकान्तर साधु -मालवि० ४ 2 काफ़ी, बस। मय० -बी (वि०) अच्छे स्वभाव का, -बाहः 'शाबास' की ध्वनि, 'अग्य' की ध्वनि -सि० १।८।५५ -दुस्त (वि०) 1 अच्छे बालबलन का, खरा, मद्दुपको-प्रावेश साधुवृत्तानाम-स्थापित्यो विपत्तय -अर्थ० २।८५ (यही दूसरा अर्थ भी प्रचलित है) 2 मन्त्र गोल-गोल किया हुआ (स) सुधी (सधुधी) (सधु) अच्छा आचरण, मद्दुप, पाकलन, सबाई, ईमानदारी, इसी प्रकार 'साधु वृत्ति' ।

साधुत्वं [मह आधतेन अ० स०] 1 हाट, तुफान 2 छटपटी 3 मोरो का झुंड ।

साम्य (वि०) [साधु + यिच् + यत्] 1 कार्यान्वित होने योग्य, निष्पन्न होने योग्य, किया जाने योग्य साधुये निश्चिन्तियोग्याम हि० २।१५ 2 जो हो सके, जो किया जा सके, साम्य 3 सिद्ध किये जाने योग्य, प्रदर्शनीय मान्यमान्यमान्यां साम्य त्वां प्रति का कथा -रथ० १०।२८ 4 स्थापित करने

योग्य, पूरा किये जाने योग्य 5 अनुस्यूय, उपमहाय, -अनुमान ननुपन साध्यासाधनवाचिन् -काव्य० १०, बहो होने के योग्य, वद्यम्, वेद्य -कु० ३।१५ 7 जिसकी बिक्रिया हो सके 8 बंध किये जाने योग्य, बिलम्ब किये जाने योग्य, ध्य दिव्य प्राणिया का एक विशेष अर्थ - तु० मनु० १।२२, ३।१५ 2 देवता 3 एक मन्त्र का नाम, ध्यम् 1 निष्पन्नता, पूर्णता 2 वह बात जो अमो सिद्ध की जाती है, प्रमाणित की जाने वाला वस्तु 3 (तक० में) प्रस्ताव का विशेष अनुमानपरिक्रिया की बड़ी बात -साध्य निश्चिन्तमन्वयेन घटितम् , यत्नाद्य मन्वयमेव नुप्यम्भयो परो विदव न धनु मूढा० १।१० अत्राथ माद यत्नं मा ब्रह्मण को रुमो, -सिद्धि (स्त्री०) 1 निष्पन्नता 2 उत्तमतर ।

साध्वता [साधु + तन + टाप्] 1 मत्वाचता, साधवता 2 (राग का) अच्छा किये जाने की स्थिति में होना । सम० -अच्छेवैकम् प्रिय का ये किनां क मृग्य का पना सये, सक्षण की शानकारी है। या मद्दु यत्नं का पना चल ।

साध्वतम् [साधु + अत + अच्] 1 इत, आतक, भय, बास, -कुसुमनन्दसाध्वतात् -कु० २।२५, ३।१५ 2 आरुप 3 विशील, नरपत्यस्ता ।

साध्वी [साधु + ङीप्] 1. मती म्भो 2 पीछता स्त्री 3 एक प्रकार की बड़ ।

सान्ध्य (वि०) [मत्र आनन्देन अ० स०] प्रमत्त, मृदा । सान्धि [मन् - इत्, अमुक्] सोमा, सुकर्ण । सान्धिका, सान्धिका, सान्धी [मन + , ध्नुः टाप्, इत्यम्, सान्धी - कन् + टाप्, ह्रस्व , सान्धी + ङीप्] पीपती, दौलुगी ।

सानु (प०, नपु०) [सन् + ङुण] 1 चाटी, लम्ब शैल-तान्ता -सानुनि मय्य सन्धोकोरौनि कु० १।५, मेघ० २, कु० १।६, वि० ५।३६ 2 पहाड़ की चाटी पर सतल मृत्ति, पटार 3 अमुका, चकुर 4 बन्द, जगल 5 सडक 6 गन्तर, बिन्दु किनारा 7 चट्टान 8 हवा का सोका 9 विद्वान् पुक्त्र 10 सुय ।

सानुत्वं (प०) [सानु + मत्पु] पहाड़, -ती एक अल्पता का नाम वा० ६ ।

सानुकोल (वि०) [सन्धोकोल मन्त्र - अ० स०] दगानु, कठगाकर ।

सानुमय (वि०) [सद् अनुन्वेन अ० स०] मध्य, धिच्छ ।

सानुमन्थ (वि०) [मन् अनुमन्थेन - अ० स०] क्रमबद्ध, प्रविच्छिन्न ।

सानुम्राध (वि०) [सद् अनुम्राधे - अ० स०] आतकन, अनुम्रक, प्रेम में मूढ ।

साम्प्रयत्नम् [सम् + लृ + लृट् + क्] एक कठोर जन
—शु० मन्० ११२१२२ ।

साक्षर (वि०) [सह अन्वयेण ह-सं०] 1 अनर वा
अवभासयुक्त 2 होना ।

साप्ताहिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [सप्ताह + ठक्]

1. फेरने वाला, विमोचक (जैत कि वृष)
2 सप्ताहसंबंधी 3 सप्ताह नामक वृक्षसंबंधी,—क
वह साक्षर वा सप्ताह की वृक्ष से विवाह करता
चाहता है ।

सास्य (पुं०) उ०० मानवार्थान् ते) शान्त करना, सुख
करना, मुक्त करना, शांति बंधाना, आराम पहुँचाना
—भट्टि० ३१२३ ।

सास्य, सास्यम्,—वा [सास्य + घञ्, स्यूट् वा] 1 सुख
करना, शान्त करना शांति बंधाना 2 सुख करना,
मु० वा शान्त करना 3 कुपार्थ वा शांति बंधाने
वाक शब्द 4 सुख 5 अविवाहन एक कुलसंबंध ।

सास्योपनि [सास्योपनि + इत्] एक ऋषि का नाम
(विष्णुपुराण के अनुसार वह कृष्ण और बलराम के
आचार्य थे) सुवर्धनाम् उग्रहीन अपने पुत्र की
विधे पंचजन नामक राक्षस उठा कर पानी में धुस
गया था, ब्रह्मिण माँगा । श्रीकृष्ण ने पानी में बोला
लगाया । वहाँ उस राक्षस का मार डाला, और
सह के पुत्र को लेकर उनके सुवर्ध कर दिया ।

सास्युत्थिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [सास्युत्थि + ठक्]
देवान ही देखते हैं वे बाला, ताकात्मिक,—कम् ताका-
त्मिक परिधाय ।

सास्य (वि०) [सह अन्वयेण—हं सं०] 1 पालपास, छाटहवा,
अदन्तगल 2 भाटा, धन, शोध, गाढ़ा दुग्धमि-
र्निष्ठ सास्यमुदायवशा जि० ४१०८, ६४, १११५,
२५० ३४११, कर्तु० ११२० 3 मूच्छा बना हुआ,
ममहीत 4 हृत्पुष्ट, मधुवन, हृत्कण्ठा 5 आत्यधिक,
बहुत, मकर सास्यान्दस्यमिहृदयप्रसवेधेव सिक्त
उत्तर० ६१०० 6 उग्र, शंकर, प्रचण्ड—भ्यात्पान्तरा
सास्यहृत्कण्ठानाम्—२५० ७१११, शि० ११३७
7 विकला, नैकात्ता, विषयिवा 8 निजाय, मृदु,
सौम्य 9 मूलकर, कर्षिकर,—हः राशि, डंर ।

सास्यिक [सन्धा मुराधावन शिष्य वेति—ठक्] कलाज,
साराय भीचने वाला ।

सास्यविधायिक, [सास्यविधाय + ठक्] विदेश धरती (राज्य-
सन्धि) (आ सधि और विवाह का नियम करे) ।

सास्य (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [सास्य + क्] सामकालीन,
सास्य-संबंधी साम्य केव प्रथिनवत्तवामुत्तरगत बंधान,
वेध० ३६, वि० ५१८, २५० १११६०, शि०
१११५ ।

सास्यहिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [सस्यह + ठक्]

1 कवचधारी 2 सत्य उठाने के लिए कहने वाला,
मुट्ट के लिए तैयार होने को प्रोत्साहन देने वाला
—शि० १५१०२,—कः कवचधारी ।

सास्यः [सम् + नी + ध्यत्, नि०] शीयुक्त कोई पदार्थ
को आहुति के रूप में अग्नि में डाला जाय—शि०
११४११ ।

सास्यम् [समिध + ध्यञ्] 1 पशुत, सामोप्य - बदान-
मनेदुसासिधत मा० ३५ 2 उपस्थिति, हाथरी
—२५० ४१६, ७३, कु० ७३३१ ।

सास्यसिक्त (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [समिध + ठक्]
1 विविध 2 अति 3 कृ, पित्त, वायु नीलो ही
शेष शिक्के विकृत हो गये हैं—कु० २४८८, पच०
११२३ ।

सास्यसिक्त [सन्धात प्रयोजनमस्य—ठक्] 1 अपने धार्मिक
जीवन के बोधे आश्रय में विद्यमान शास्त्रान् देखो
सन्धासिन् 2 साधु ।

सास्य (वि०) [सह अन्वयेण हं सं०] आनुवंशिक ।

सास्य (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [सपत्नी + क्] सौतेली
पत्नी से उत्पन्न, स्याः (पुं० हं सं०) एक ही पति
से मित्र मित्र परिवारों के बन्धे ।

सास्यम् [सपत्नी + ध्यञ्] 1 सौतेली पत्नी की दशा
2 प्रतिद्वन्द्विता, महात्माकाशा, मनुता,—स्य 1. सौतेली
पत्नी का पुत्र 2 स्यु ।

सास्यराज (वि०) [सह अपराधेन—हं सं०] अपराधी,
भ्रम करने वाला, मूर्खराम ।

सास्यस्यम् [समिध + ध्यञ्] समान पितरों का पिहदान
के उत्तर, बन्धुता, रक्तसम्बन्ध ।

सास्य (वि०) [सह अपेक्षया—हं सं०] सिहाज करने
वाला, निर्बेर ।

सास्यव (वि०) (स्त्री०—स्त्री) सास्यवती (वि०) [सप-
पय + क् + क्त्वा वा] सात पय साय-साय चलने से
बनी हुई (मैत्री)—यतः सतां सप्तपयिणः सङ्गत प्रती-
धिभिः सास्यवतीनमुच्यते—कु० ५१३१ (यहाँ द्वितीयार्थ,
अधिक अच्छा लयता है, पच० २४४३, ४११०२,
कम्, मम् 1 विवाह के अक्षर पर हुता व
दुहित्तन द्वारा यज्ञानि की सात प्रवर्षिणाएँ करना
(सह विवाहसम्बन्ध को अटूट बना देती हैं) 2 मित्रता,
पनिष्ठाता ।

सास्यवती (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [सपत्न्युप + क्] सात
पौद्यों तक फेंका हुआ—मन्० ३१२४६ ।

सास्यवत् [सकल + ध्यञ्] 1 सफलता, उपयोगिता,
उपजाऊपन 2 सात, फायदा 3 कायवासी ।

सास्यी (स्त्री०) एक प्रकार का अणुर ।

सास्यसुव (वि०) [सह अन्वयसुवया—हं सं०] साह करने
वाला, ईश्वर्यम् ।

साम् (चुरा० उभ० सामयति-ते) लुप्त करना, डाइस बनाना, तसल्ली देना ।

सामकम् [समक + कम्] मूल शब्द, कः साण, (बहु पत्थर जिम पर औदार तेज किये जाते हैं) ।

सामघी [समघ्य भाव ध्यञ् स्त्रीत्वपञ्च ङीपि यलोप] 1 सामान का मस्रह, या सघात, उपकरण, घर का सामान भर्तुं० ३११५५ 2 सामान, माल-असबाब ।

सामघ्यम् [समघ + घ्यञ्] 1 समघता, पूर्णता, समुत्पन्न, समष्टि -प्रायेण सामघ्यविधौ गुणान्तरात् पराङ्मुखी विघ्नसूत्रं प्रवृत्ति -कु० ३१२८ 2 अनुचरसम्यं, नोकर-चाकर 3 उपकरणों का समूह, औजारों का भण्डार 4 भण्डार, सामान ।

सामञ्जसम् [समञ्जस + यञ्] 1 योग्यता, समति, औचित्य, तु० असमञ्जस 2 यथावृत्ता, सुदृता ।

सामन् (न्यु०) [सो + मन्तिन्] 1 लुप्त करना, शान्त करना, आराम पहुँचाना, तसल्ली देना 2 सुलह करना, शान्ति के उपाय, समझौता-बाँटा करना (राजा के द्वारा अपने शत्रु के प्रति किये जाने वाले चार सामनों में सबसे पहला) -सामदम्भी प्रसन्नानि नित्य गार्दुभि-सूदये-मनु० ७११०९३ शान्तिदायक या मृदु उपाय, शान्त या डाइव बनाने वाला औजार, मृदुवचन -पञ्च० ४१२९, ४८ 4 मृदुता, कोमलता 5 शब्दाब्द सूक्त या प्रथमात्मक शान्त सप्तसामोपयोगी त्वाम् -रघु० १०२१, भग० १०३५ 6 सामवेद का मंत्र 7 सामवेद (सूर्य से उत्पन्न कहा जाता है -तु० मनु० ११२३) । सम० - उच्चरः हाथी, - उचचारः, - उचापः, मृदु और शान्ति देने वाले उपाय, कोमल या शान्त युक्तियाँ, च. सामवेद के मंत्रों का शायन करने वाला शास्त्र, - अ. अस्त (वि०) 1 सामवेद से उत्पन्न 2 शान्ति के उपायों से उद्भूत (-अ, -त.) हाथी -सि० १२१११, १८३३, धीमि 1 शास्त्र 2 हाथी, बाघ, कृपावचन, मधुरशब्द, -सि० २१५५, -वेचः चारों में से तीसरा वेद ।

सामन्त (वि०) [सामन्त + अन्] 1 सीमावर्ती, सरहदो, पड़ोसी 2 विदग्धपापक, स- 1 पड़ोसी 2 पड़ोस का राजा 3 मौरिक, कर देने वाला राजा सामन्त-मौलिकमिर्जातपावरीठम् विक्रम० ३११९, रघु० ५१२८, ६१३२ 4 नेता, नायक, - तम् पड़ोस ।

सामयिक (वि०) (स्त्री०-की) [समय + ठञ्] 1 प्रधा-नुसारी, परम्परागत 2 समत, प्रतिज्ञात 3 कटार के अनुकूल, नियत समय का पालन करने वाला, -देवि, सामयिका भवाम् मालवि० १ 4 समय पालक, वस्तु का पाठव्य 5 शत्रु के अनुकूल, समय पर होने वाला -कि० २११० 6 नियत समय पर होने वाला 7 अस्थायी । सम० -मनाचः अस्थायी अनतिस्थ ।

सामय्यम् [समय + घ्यञ्] 1 शक्ति, बल, धारिता, ताकत 2 उर्ध्व की समानता 3 अर्थ की एकता 4 पर्याप्त योग्यता 5 शब्दार्थ सन्नि, शब्द की अर्थमूलक शक्ति 6 हित, लाभ 7 दीकत ।

सामवायिक (वि०) (स्त्री०-की) [समवाये प्रसृत ठञ्] 1 किसी सवह या सघात से संबद्ध 2 अट्ट सम्बन्ध से उक्त, - क मन्त्री, पार्षद ।

साम्प्राजिक (वि०) (स्त्री०-की) [समाज-समावेशण प्रयो-जनस्य ठञ्] किसी सभा से सम्बद्ध, कः किसी सभा का सदस्य सभा में रक्षक तब हि तत्प्रयोगो-देवाश्रयभवात् साम्प्राजिकानुपास्यते मा० १ ।

सामानाधिकरन्वम् [समानाधिकरण + घ्यञ्] 1 उसी दशा या स्थिति में होता 2 सामान्य पद, कार्य या प्रशासन, ममान सम्बन्ध (जैसे कि कारक का) 3 एक ही पदार्थ से सम्बन्ध होने की स्थिति ।

सामान्य (वि०) [समानस्य भाव घ्यञ्] 1 समान, साधारण -सामान्ययोगे प्रथमावरणम् - कु० ७१४४, आहानिद्राभयमेषुत च सामान्यमेतत्सुभिर्निराणाम् सुभा०, रघु० १४६७, कु० २०६२ सदाश, मुख्य, समान 3 सामुन्नी, औत्तमदर्श का, बीच का - भर्तुं० २१७४ 4 सुलह, नाचीव, नायक 5 समस्त, मध्य, -स्यम् 1 समुदाय साधारणता, विश्वसाधकता 2 सामान्य या सघटक गुण साधारणलक्षण 3 समष्टि, समस्तता 4 भेद, प्रकार 5 अनुकूलता 6 समानता, समता 7 साम्बन्धिक कार्य 8 साधारण उचित -उक्तिरर्थान्तरत्वात् स्यात्सामान्यविशेषात् - मग्ना० ५११० 9 (अल० में) एक अलकार जिसकी परिभाषा मग्नाट ने निम्नांकित क्लिप्ता है -प्रस्तुतस्य वक्ष्येन गुणसाम्बन्धिकत्वात्, एकात्म्य इत्येते बोधात्सामान्यमिति मृतम काब्द० १० । सम० - साम्नाम् नाकर्तव्यक व्यापक बोधात् का ज्ञान, -सक्तः मध्यस्थिति, -सक्तम् व्यापक परिभाषा - इति इत्यसामान्य-नक्षणाति तर्क०, बलिता सामान्य स्त्री, वेद्या, शास्त्रम् साधारण नियम ।

साम्प्रासिक (वि०) (स्त्री० की) [समाज + ठञ्] 1 सामुहिक, ममान को सम्बन्धे वाला, समुच्चपात्मक 2 सहज, सशिक्षित 3 सामान्यसद्वर्ती, कम् सब प्रकार के समाजों का बर्ण हुन्द्र साम्प्रासिकस्य च भग० १०३३ ।

सामि (अन्व०) [साम् + इन्] 1 भाषा, अर्थात् अनुप -अभिधीष्य सामिकृतमयन धनी कण्डवनीविगल-दधुका स्थिय -सि० १३३१, रघु० १९११६ 2 कलकनीय, मीच, निधनीय ।

सामिचनी [सम् + इन् + स्युट्, ति०] 1 एक प्रकार के प्राचीनानय त्रिकोण पाठ यज्ञानि प्रबन्धित करते

समय या समिचाएँ हुवन में डालते समय किया जाता है ।

सामौषधी (स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति ।

सामौष्यम् [समीय + ष्यञ्] पकोल, निकटता, ब्राह्मन्ता, प्कः पदोशी ।

सामुद्र (वि०) (स्त्री०) डी [समुद्र + अण्] समुद्र में उत्पन्न, समुद्रसंबंधी जैसा कि 'सामुद्र लक्षणम्' में, -इः भाषिक, समुद्रवासी, -इण् १ मयूरी नमक २. समुद्रस्नान २ शरीर का बिल्लू ।

सामुद्रकम् [सामुद्र + कन्] समुद्री नमक ।

सामुद्रिक (वि०) (स्त्री०-की) [समुद्र + ठञ्] १ समुद्र से उत्पन्न, समुद्रसंबंधी २ शरीर के बिल्लू से संबद्ध (जो भूभाष्य फल के सूचक समझे जाते हैं), क सामुद्रिक विद्या का ज्ञाता, जो शरीर के नक्षत्रों का देखकर बुभुक्षुभ फल का कथन करे, -कम् हस्तरेखाओं को देखकर सुभाष्य फल कहने की विद्या ।

साम्प्रदाय (वि०) (स्त्री०-की) [सम्प्रदाय + अण्] १ बृद्धसंबंधी, सामुद्रिक २ परलोक संबंधी, भावी, -अ । यन् १ सचप, अग्रहा २ भावीजीवन, भवितव्यता ३. परलोक प्राप्ति के उपाय ४ भावी जीवन संबंधी पुष्क ५. पुष्का, गवेषणा ६ अनिश्चय ।

साम्प्रदायिक (वि०) (स्त्री०-की) [सम्प्रदाय + ठञ्] १ सामुद्रिक २ सैनिक, सामुद्रिक महत्त्व का ३ विपत्तिकारक ४ परलोकसंबंधी, कम बृद्ध, लडाई, सचपं शि० १८१, कः लडाई का रत्न । सम० क्वकः सामुद्रिक महत्त्व का व्युत् ।

साम्प्रत (वि०) १ योग्य, उचित, उपयुक्त - बेणी० ३१३ २ समत, - तम् (अव्य०) १. अब इस समय हुन स्थान जोधस्य साम्प्रत देखा बेणी० १ २ तत्काल ३ ठीक प्रकार, उचित रीति से, जूतु के अनुकूल ।

साम्प्रतिक (वि०) (स्त्री०-की) [सम्प्रति + ठञ्] १ वर्तमान काल संबंधी २ योग्य, उचित, सही उत्तर० ३ ।

साम्प्रदायिक (वि०) (स्त्री०-की) [सम्प्रदाय + ठञ्] परम्पराप्राप्त विद्यात से संबद्ध, परम्पराप्राप्त, क्रमागत साम्प्रः [सह सम्बन्ध - व० ङ०] शिब का नाम ।

साम्प्रतिक (वि०) (स्त्री०-की) [सम्प्रत्य + ठञ्] समय से उत्पन्न, कम संबध, रिशतेदारी मिथता ।

साम्प्रती [सम्प्र + अण् + टोण्] जाहूगामी ।

साम्प्रथी [सम्प्रथ + अण् + डीण्] १ काल लोडयुक्त २ सचयता, प्रभावना ।

साम्प्रथम् [सय + ष्यञ्] १ बगबरी, समता, समतलता -कु० ५१३१ २. समतलता, मिलना-जुलना, सादृश्य -स्पष्ट प्रापस्ताम्यसूचीचरस्य शि० १८३८, शि० ११५५, कि० १०५१ ३ गुण्यता ४ साम्प्रथ

५. अन्तराभाष, विष्णुसंपातिता, एकमत्त्व -येवा साम्प्रथं स्थितम् मनः मन० ५१११ ।

साक्षात्पथम् [सिधाय + ष्यञ्] १ सिधय प्रभृता, साक्षात्मीन-राज्य - साक्षात्पथसिनी भाषा कुलस्य व लक्ष्य व -उत्तर० ११२३, रघु० ४१५ २ पुर्णशिष्यत्व, प्रमुर्य ।

साक्षः [सो + षञ्] १ अन्त, समाप्ति, अवसान २ दिन की समाप्ति, सध्या ३ बाण । सम०--अहम् (पु०) (साक्षात्) साक्ष, सध्याकाल प्राणि० २१५७ ।

साक्षकः [सो + षञ्] बाण तत्सायुक्तसन्धान प्रतिसहृ सायकम् शं० ११११ २ तलवार । सम०--पुरुकः बाण का पक्षीका प्राण--सप्तसाहस्रिण सायकपुङ्ख एव रघु० ३२११ ।

साक्षन् [सो + स्पृट्] किसी घट की लडाई (देशान्तर रेखा) को साक्षन्ती-विषयीय विद्यु से मापी जाती है ।

साक्षन्त्व (शि०) (स्त्री०-की) [साय + टपुल, तुट्] सध्या-संबंधी, सायकाल, -सायन्तनं सवनकर्माणि सप्रवृत्त -शं० ३१२७ ।

साक्षम् (अव्य०) [सो + अण्] सायकाल के समय, प्रयत्ना प्रातःसन्धेत् साय प्रत्युद्भववेदिपि रघु० ११९०। सम० काक-सध्या, साक्ष, सध्याम् १ सुयं का क्षिपता २ सुयं, -संध्या १. सायकालीन झटपुटा २ सायकालीन प्राप्तिना ।

साक्षिम् (पु०) [साय + इत्] बृहसवार ।

साक्ष्यम् [सयज + ष्यञ्] १ अनिष्ट मेल, समक्यता, सीलता विद्योक्त देवता में (भुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक) २ साक्ष्य, समागत ।

सार (वि०) [सु + षञ्, साद् + अण् वा] १ आबस्यक २ सर्वात्म, उच्चतम, श्रेष्ठ-मुद्रा० ११३३ ३ वास्तविक, सध्या, असली ४. प्रबद्धत, बलवान् ५ टोस, पुर्णत सिद्ध, -रः-रघुः प्रथम चार अर्थों के अतिरिक्त संबंध पु० १ सत्, सत्य - स्नेहस्य लक्ष्मणी प्रथमस्य सार मा० ११९, असारे बल ससारे सारनेत-चतुष्टयम्, कायवा भास ततां सज्जो गयाम् समुपेच-नम्-अर्थ० १५ २ निष्ठीर, रस ३ यज्ञा ४ वास्तविक सवाई, मुख्यविद्यु ५ बुद्धी का रत्न, सोद जैसा कि बदिगसार का सर्वसार में ६. सारांश, संक्षेप, संक्षिप्त मयह ७ सामर्थ्य, बल, शक्ति, ऊर्जा--सार धरित्री-धरण्यस्य च -कु० १११७, रघु० २१७५ ८ पराक्रम, शीघ्र, साहस -रघु० ४१७९ ९. बुद्धता, कठोरता १० पत, लौकिक-रघु० ५१२५ ११ अत्युत्त १२ ताका मकनन १३ हुडा, भाव १४ मलाई, दही की मलाई १५ रोय १६ यज्ञार, वीण १७. मृत्यु, भेदता, उच्च-तम प्रत्यक्षज्ञान १८ सारत्त्व का मोहरा १९. सोवे का बिना छुना जगाम्भवस्त इव्य २० अर्थेजी के कलाई-

मेष (Climax) नाम अक्षर से चिह्ना जलना एक अक्षर—उत्तरोत्तरमुक्तयो भवेन्मार पराधि काव्य १०. रम् १ जल २ मोयला, औचय ३ जगल, साइ-असाइ ४. इस्पात, काहा । सम०—असार (वि०) मुख्यवान् और निर्भय मज्जुत और दुर्बल, (-रम्) १ मुख्य और निर्भयता २ मूल-पदाय और रिक्तता ३ सामर्थ्य और कमजोर, गण्य चन्दन की लकड़ी, -शेषः शिष्य जी का नाम अन् ताजा मरफत, -सः केले का पेड़, वा १ सस्वती का नाम २ दुर्गा का नाम, -बुधः खैर का पेड़, भङ्ग-बल की हानि—भाष्कः १ एक प्राकृतिक बलन २ समान का घट्टा, पथसामथी ३ उपकरण—लोहर्ह इत्यादि ।

सारधम् [साध्यानि निर्वृतम्—अण्] मधु, यहर ।

सारङ्गम् (वि०) (स्त्री०—सी) [सु+अङ्गम्+अण्] चित्त-कवरा, रथविदाता, वा १ रथविदाता रथ २ चित्र-मूय कुरूप—एष राजेश दुष्यन्त सारङ्गेनाभिरहया-वा० १५३ हरिण—सारङ्गस्थो जलजम्बूक सुचरिष्यन्ति मायम् मेध० २० (यहाँ 'हाथी' या 'घनर' के अन्वय नहीं अवै केना ठीक है) ४ सिंह ५ हाथी ६ घीना ७ कोयल ८ सारस ९ राजस १० मोर ११ छत्री १२ बाल १३ परिवान १४ बान १५ पाव १६ शिष का नाम १७ कामदेव १८ कयल, १९ काण २० वन्य २१ चन्दन २२ एक प्रकार का बाघयन् २३ जानूषण २४ सोना २५ पृथ्वी २६ रान १७ प्रकार ।

सारङ्गिक [सारङ्ग हन्ति—ठक्] बहेलिया, चिहोदार ।

सारङ्गी [सारङ्ग+कीर्ण] १ एक प्रकार का बाद्ययन्, गितार, वायलिन २ चित्तीदार हरिण ।

सारथ (वि०) (स्त्री०—सी) [सु+थिच्+एट्] भेजना, बहाना, -सः १ वैश्व २ वैश्वी देव, -सम् एक प्रकार का सन्धय्य ।

सारथा [सु+थिच्+युच्+टाप्] घातुओं की विषय कर पारे की एक प्रकार की प्रक्रिया ।

सारथि, थी (स्त्री०) [सु+थिच्+अनि एधे डीप्] १ नहर, नाली, पतनाला, जलमार्ग २ एक छोटी नदी ।

सारथ्य [सु+थिच्+अथ] साथ का बन्ध ।

सारथ (अन्) [सार+तसिक्] १ धन के अनुसार २ अनुसूचक ।

सारथि [सु+अथिच् सह रथेन सारथ घोषक तत्र निवृत्ताः इन् वा] १ रथवान्—ए सारथी न रथया रथेन न च सारथिना भूत—रम्० १७८, मानसि-सारथिर्वी १५७ २, साथी, सहायक रथ० १। ३० ३ समुद्र ।

सारथ्यम् [सारथि+अथ्यम्] रथवान् का पद, सारथीवान् का पद ।

सारथ्ये [सरमा+ठक्] कुला,—थी [सारथ्ये—डीप्] बुनिया ।

सारथ्यम् [सरल+अथ्यम्] सरलता (आल० से भी) मोघापन, ईमानदारी, सरापन ।

सारथ्य (वि०) [सार+मनुप्] १ तरथयुक्त २ उप जाड ३ रथीना ।

सारस (वि०) (स्त्री०—सी) [सरस इवम् अण्] मरोध मयवी, काव्या० ३१४, नलोद० २१०, -सः १ सागस, (कुछ विद्वानों के अनुसार 'हंस')—विभि-द्यमाना विमसार सारसानुदस्य तीरेषु सारङ्गमवति कि० ८३१, सि० १७५, १२५४, मेघ० २२, रम्० १५१२ २ पक्षी ३ चन्द्रमा,—सम् १ कनन २ स्त्री की तयवी ।

सारस (स) मय [सार+मत्+अच्] १ तयवी, कश्यवी—सारथन महानदि—कि० १८३२ २, सैनिक पटी ।

सारस्थल (वि०) (स्त्री०—सी) [सारथ्वी देवनाम्, सरलता इव वा अण्] १ सरथ्वी देवी से मयद २ सरथ्वी नदी से मयद रखने वाला—कुवा तनामविषममपाम् सीम् सारस्थलीनाम्—मेघ० १९ ३ सारपट्ट, -सः १ सरथ्वी नदी के अथ पाव का प्रदेश २ सारथन जालि का एक मेष ३ किन्चद, -साः (पु० व० व०) सारथ्यत देश के निवासी—सम् भाषय, सारपट्टत,—शुङ्गारसारथ्यमन गीत० १२ ।

सारसः [सार+सा+सा+ठक्] शिक का पीसा ।

सारि,—री (स्त्री०) [सु+इप्] १ सारथ का मोहरा, गोट २ एक प्रकार का पक्षी । सम०—कम्कः सत-रथ सेलने की विज्ञात ।

सारिका [सगति पञ्चनि—सु+अण्+टाप्, इवम्] एक प्रकार का पक्षी, मना—आयमो मुक्तदोषेण अथ्यले सारुकारिका—मना०, सारिका पञ्चरत्नाय—मेघ० ८५ ।

सारिन् (वि०) (स्त्री०—सी) [सु+थिनि] १ जाने वाला, सहाग सेने वाला—इत्ययुक्त, सारथ्याम् ।

सारथ्यम् [सक्य+अथ्यम्] १ रथ की सतता, समानता, सादृश्य, सकथता, मिलना-जुलना—वा० ५ २. देव में लीगता (मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक) ३ (सारको में) कथसारथ्यबन्ध अथ में किवा जान वाला (कोषार्थि) स्यसहार—सा० व० ४५४ ४ किमी पदार्थ की या उनसे मिलती जुलती दूरत को देस कर आरथ्ये ।

सारथिकः [सार+थेठ उठो यव, सारोष्ट्र, देवनेव तत्र मय—सारोष्ट्र+ठक्] एक प्रकार का विष ।

सार्धक (वि०) [सह अर्थेन - ब० सं०] १' रोका हुआ, अचरक, अचरक वाला रघु० ११०१।

सार्ध (वि०) [सह अर्थेन - ब० सं०] १ अर्थयुक्त, सार्धक २, सोहोष्य ३ समानार्थक, समानार्थक २ उपवागी, कामलायक ३ बंधवान्, बंधुलतमद, मालदार, -भीः १ बन्धवान् पुत्रक २ सोधामगो की टोकी, व्यापारियों का दल सार्धः स्वरं स्वकीयेषु केवलेषु निबध्नादिषु - रघु० १७।६४, दे० सार्धबाहू ३ दक्षः लहरी, रेवड (एक ही शक्ति के जानवरो का) -अथ कशाचिर्न-रितस्ततो भ्रमद्भिः सार्धः अष्टः कचनको नामोष्टो वष्टः पच० १ ५ सचय, मधक - अर्थिसार्ध - पञ्च १, स्वया चन्द्रमला शालिसन्धीयते कामिबन्धनसार्ध - सं० ३ ६ तीर्थयात्रियों की टोकी में से एक। मय० क काफले में पला हुआ, -बाहूः काफले का नेता, व्यापारी, सोधामग सं० ६।

सार्धक (वि०) [सह अर्थेन - ब० सं० कर्] १ अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण २ उपयोगी, कामलायक, कामदायक।

सार्धधत् (वि०) [सार्ध + धत्] १ अर्थयुक्त, अर्थपूर्ण २ बहुत साधियों से युक्त।

सार्धिकः [सार्ध + ठक्] व्यापारी, सोधामग।

सार्धं (वि०) [सह आद्येन - ब० सं०] गीला, भीगा, तर, सोला।

सार्धं (वि०) [सह अर्थेन - ब० सं०] जिसमें आधा बढ़ा हुआ हो, जिसमें आधा जुड़ा हुआ हो, जिसमें आधा अधिक हो - 'सार्धशतम्' आदि।

सार्धं (अर्थ०) [सह + धृ + अच्] साथ-साथ, के साथ, के साथ में (करण के साथ) - बत मया सार्धं-मसि प्रपथ - रघु० १४।६८, मय० ४।४३, अष्टि० ६।२६, मेघ० ८९।

सार्धं (पौ०) [सार्धं देवताज्म्य सार्धं + अच्, ध्वञ् वा] श्राद्धेना नाम का लज्जपत्र।

सार्धिक (वि०) (स्त्री० - की) , सार्धिक (वि०) (स्त्री० - की) [सार्ध + अच्, ठक् वा] की में तला हुआ, भी मिश्रित।

सार्धकामिक (वि०) (स्त्री० - की) [सर्वकाम + ठक्] प्रायक इच्छा को शांत करने वाला, समस्त कामनाओं को पूरा करने वाला कि० १८।२५।

सार्धकालिक (वि०) (स्त्री० - की) [सर्वकाल + ठक्] निम्न, सामान्य, सर्वत्र रहने वाला।

सार्धकालिक (वि०) (स्त्री० - की) सार्धकालीन (वि०) (स्त्री० - की) [सर्वजन + ठक्, कञ् वा] सर्वजन व्यापक, विश्वव्यापी, सर्वत्र-चारण संबंधी।

सार्धकञ् [सर्वक + अच्] सर्वज्ञता, सब कुछ जानना।

सार्धिक (वि०) (स्त्री० - की) [सर्वक + ठक्] प्रत्येक स्वामी का, सामान्य, सब स्वामी या परिस्थितियों से

सबसे गमने वाला - बीसा कि 'सार्धिको नियम', में।

सार्धकालिक (वि०) (स्त्री० - की) [सर्वकाल + ठक्] संपूर्ण कालों में व्यवहृत होने वाला मय विकरण स्थानों के पश्चात् काल के समस्त रूप में घटने वाला, अर्थात् चार गण और चार अक्षरों के साथ प्रयुक्त होने वाला, कञ् चार लकारों (सट्, लोट्, ङक्, लिङ्) के निकटि प्रत्यय (या लिट् तथा आक्षीपिक को छोड़ कर और ममी लकारों के विभक्तिभिन्न और 'धृ' ध्वनि से प्रकट होने वाले विकरण)।

सार्धकालिक (वि०) (स्त्री० - की) [सर्वकाल + ठक्] १ सभी मूलकार्यों का प्राणियों से संबंध रखने वाला २ सभी जीवधारो जन्तुओं से युक्त।

सार्धकालिक (वि०) (स्त्री० - की) [सर्वकाल + अच्] समस्त धरती से सबड या युक्त, विश्वव्यापी, -कः १ सहाय, अक्षरती राजा - नामाश्रय सहस्रे नुवर नृपतयस्त्वायुषा सार्धकालीया - मदा० ३।२२ २ कुंभर की विद्या, उभर विद्या का दिक्कुञ्जर।

सार्धकालिक (वि०) (स्त्री० - की) [सर्वकाल + ठक्] सब लोकों का ज्ञात, समस्त क्षमा में ध्यात, सार्धकालिक, विश्वव्यापी अन्तःसामप्रदायान्मु क्तमयो सार्धकालिकः सं० १।१३।

सार्धकालिक (वि०) (स्त्री० - की) [सर्वकाल + ठक्] १ प्रत्येक प्रकार का, हर तरह का २ प्रत्येक जाति या वर्ग से सम्बन्ध रखनेवाला।

सार्धविभक्तिक (वि०) (स्त्री० - की) [सर्वविभक्त + ठक्] किसी शब्द की सभी विभक्तियों में घटने वाला, सभी विभक्तियों से सबड।

सार्धवेदतः [सर्ववेदत + अच्] जो किसी यज्ञ वा अन्य पुण्यकार्य में अपना समस्त धन दे देता है।

सार्धवेद्य [सर्ववेद + ध्वञ्] सभी वेदों का ज्ञाता शास्त्रज्ञ।

सार्धं (वि०) (स्त्री० - की) [सर्व + अच्] नारों का बना हुआ, वस्त्र सरसों का तेल।

सार्धि (वि०) समान स्थान, वस्तु, या पद से युक्त स्थान अधिकार रखने वाला।

सार्धिता [सार्धि + तल् + टाच्] १ पद अधिकार व अक-स्थाओं में समानता २ अक्षि में तथा अन्य विषयानुओं में परामर्श से समानता, मुक्ति की चार अवस्थाओं में से अन्तिम अवस्था ब्रह्मदे ब्रह्मगणितना (श्र-ज्योति) - मय० ४।२३२।

सार्धकञ् [सार्धि + ध्वञ्] कौंचे बर्णों की मुक्ति।

सार्धक [सत् + धञ्] १ एक वृक्ष का नाम, या उनकी टाल २ वृक्ष - यथा 'कल्पसाल' 'समानता' में

३ किसी मयव की चारविधारी वा फली, परकोटा

४ नील, दीवार ५ एक इकाई की मछली (समानों के लिए देवी 'साल' के अन्तर्गत)।

साकनः [सत् + चिच् + स्फुट्] साक वृक्ष की रस ।

साक. [सात्. शोकारोक्ति अस्था: - सात् + अच् [टाप्]

1 दोवार, फसील 2 घर, मकान - दे० शाका ।

सम० - कसरी 1 घर, में कार्य करने वाला 2 बन्दी (विशेष कर बहु जो बृद्ध में एकड़ लिया गया हो)

कक - दे० 'शालाक' ।

साकारम् [सात् + क् + अच्] दोवार में बड़ी बूटी, 'बैकेट' ।

साकरः [सत् + उरच्, गिरच्, वृद्धि] मेंडक दे० 'साकर' ।

सालेयम् [सात् + अच्] सोया मेघो दे० 'शालेय' ।

सालीयम् [समानो लोकोप्य - व० स० सलाक + प्यञ्]]

1 उसी लाक या सत्तार में दूसरे के साथ रहना 2 उसी स्वर्ण में किसी देवता के साथ रहना ।

साल्य [साल्य + अच्] 1 एक देण का नाम उसके जिवा-सियों का नाम (इस अर्थ में व० व०) 2 एक गणम का नाम जिसको विष्णु ने भार गिराया था : सम० हृत् (पु०) विष्णु का विशेषण ।

साल्विक. [साल्य + ठल्] सारिका नामक पक्षी, मैना ।

सात् [3 + घञ्] लक्षण ।

सात्क (वि०) (स्त्री० - चिका) [मु + षल्] उगादक, जन्म देने वाला प्रसवसम्बन्धी, क जानकर का कच्चा (दे० 'सावक') ।

सात्काम (वि०) [सह अवकाशेन व० म०] जिसको अवकाश हो, अवकाशवाक्य, छात्री, शम् (अव्य०) अवकाशवाक्य, अपनी मुविधानुकूल ।

सात्कृत् (वि०) [अवशेषेण सह - व० म०] 'अवशय' चिह्न से युक्त ।

सात्कृ (वि०) [सह अवशया व० म०] पूछा करने वाला, निरम्काप्युक्त, अपमान अनुभव करने वाला ।

सात्कृष्ण [अवशय सह व० म०] मन्वासी के द्वारा प्राप्य ।

सात्कृष्ण (वि०) [अवशय सह व० म०] 1 प्यान देने वाला, दलपित्त, मद्यत, सबरदार 2 चौकस 3 परिश्रमी, नम् (अव्य०) सात्कृष्णता से, प्यान पुत्रक, चौबस होकर ।

सात्कृषि (वि०) [सह अर्थाथना व० म०] सीमापक, सीमित सम्पत्तिका, परिष्कृषित, सात्कृष्ण सात्कृषि स्थावरगिम्मे यज्ञोपयज्ञेभ्यु मार्गवि मुसा० ।

सात्कृ (वि०) (स्त्री० - षी) [सत्त्वं अच्] नैना सबनी में युक्त या सबद्ध - क 1 वज्रमान, जो वज्र में पुनः प्रति का हरण करता है 2 वज्र का उपहार, बहु मन्काग जिसके द्वारा वज्र की पुनर्प्राप्ति ही जाती है 3 वज्र का नाम 4 तीस तीर्थरिहस का नाम 5 सुवीर्य से सुवांस्त तक का दिन 6 विषय वर्ण ।

सात्कृष्य (वि०) [सह अवशयेन व० म०] भाग्य या

अथो से बना हुआ—सात्कृष्यसे भातिरपन्नम् न ह्यविद्याकल्पितेन रूपभेदेन सात्कृष्य वस्तु सपद्यते शारी० ।

सात्कृ [सवरेण निवृत्त अच्] 1 दोष, कपराच 2 पाप, दुष्टता, जर्म 3 जोष वृत्त ।

सात्कृष्य (वि०) [सह आशयेन व० स०] 1 वृद्ध, युक्त, रहस्य 2 उकाहुआ, बन्द ।

सात्कृष्य (वि०) (स्त्री० - षी) [सवर्ण + अच्] एक ही रग का, एक ही जाति का, एक ही रग या जाति से सबद्ध - क आठवे मनु का मातृपरक नाम, दे० सार्वाणि सम० कृष्णम् 1 एक ही रग या जाति का चिह्न 2 त्वचा, भाव ।

सात्कृषि [सवर्णा : इजा] आठवे मनु का मातृपरक नाम (मृग की पत्नी सवर्णा से उत्पन्न) ।

सात्कृष्ण्य [सवर्ण - घञ्] 1 रग की एकता 2 किसी धेरो या जाति की एकता 3 आठवे मनु द्वारा ज्वि-पित्त मन्वन्तर ।

सात्कृष्ये (वि०) [सह अवशयेन] अधिधानपूर्व, चमवी, इक इवान, पम् (अव्य०) घमट से, हेकडी के साथ, अत्कागर्भक ।

सात्कृष्ये (वि०) [सह अवशयेन - व० म०] 1 अव-सात्कृ से युक्त जिसम कुछ बाकी बचे 2 अपूर्ण, अधुग असमाप्त ।

सात्कृष्ण्य (वि०) [सह अवशयेन - व० म०] 1 चमवी, परिश्रित, उ-कृत शानदार 2 माहमी दुर्दान्तचयी 3 दन्ता मयुक्त, अच् (अव्य०) दुर्दान्तचय के साथ, दुर्दान्तपुत्रक सात्कृ के साथ ।

सात्कृहेल (वि०) [सह अवशेषतया व० स०] तिग्मकार-पुत्र निरादर कर्म वाला, पूछा करने वाला, लम् (अव्य०) निरादर के लक्षण, पूनापूर्वक ।

सात्कृषिका [मु + कृत् ; टाप्, इत्तम्] शर्द, प्रभव के समय प्रयुता की देखभाल करने वाली ।

सात्कृषि (वि०) (स्त्री० - षी) [सत्त्वं + अच्] 1 मृग सबधी 2 मृग की मत्तान, मृगवध से सबद्ध, (गवाडा क) सम्पत्तिपेदीपित्त भूमिवासे उत्पन्न० १।५० 3 गावधी मध में युक्त, कः 1 सूर्य 2 धूम, तर्भ 3 श्राद्ध 4 शिव का विशेषण 5 कर्ण का विशेषण, - कम् यज्ञोपवीत मन्काग (इसका 'सात्कृष्यम्' नाम इसी लिये पडा कि इस मन्काग में कृष्णरूप से गावधी मध का जोप करना पड़ता है, उनी समय यज्ञोपवीत धारण किया जाता है ।

सात्कृषी [सात्कृष + षी] 1 प्रकाश की किरण 2 स्यादेद का एक प्रसिद्ध अर्थ (इसका नाम 'सात्कृष्यं' सूर्य की प्रकी-रित करने के कारण पडा) इसे गावधी भी कहते हैं । अधिक जानकारी के लिये दे० 'सत्कृषी' 3 यज्ञोपवीत

संस्कार 4 ब्राह्मण की पत्नी 5 पार्वती 6 कश्यप की पत्नी 7 शास्त्रवेदा के राजा सत्यवान् की पत्नी (सावित्री) राजा अश्वपति का एकमात्र सन्तान थी। यह इतनी सुन्दर थी कि वे सब बर या उसे पालने की इच्छा में बहो आये उसकी अभिराम कान्ति से इतने परकित हुए कि बापिस ही लौट गये। विवाह योग्य अवस्था होने पर सावित्री का बर न मिल सका। अन्त में उसके पिता ने उसे कहा कि अब तुम स्वयं जाओ और अपना इच्छा के अनुसार बर लूओ। सावित्री ने बेसा हो किया, और बर चुन कर वह पिता के पास बापिस आई और कहने लगी कि मैंने शास्त्र वेदा के राजा दुष्यन्त के पुत्र सत्यवान् का चुन लिया है। राजा दुष्यन्त उन दिनों अपने राज्य में निकलकर दिये गये थे—अपनी महारथिणी समेत अब बादरम्य जीवन बिता रहे थे। नगर मूमि भी धूमने हुए उस समय आ गये थे, जब उन्होंने सुना तो राजा अश्वपति तथा सावित्री का कदा कि मुझे तुम्हारे चुनाव पर खेद है, क्योंकि यशोग-स-उत्तम सब प्रकार से तुम्हारे योग्य है परन्तु उसकी आयु अब केवल एक वर्ष और बाकी है अब उसका चुनाव ज्ञान भर के लिए वैधव्य तथा कष्ट का भार देने है। उनके मार्गदर्शन ने उसके मन का बदलने का धार प्रदान किया परन्तु उस उच्चराम्या सावित्री ने कहा कि मैंने निश्चय अब नहीं बदल सकता। तबन्तार समय पर उसका विवाह सत्यवान् से हो गया। विवाह के पश्चात् सावित्री ने अपना सब राजसी आभूषण, बहुमूल्य आभूषण तथा कस्त्रादिक उत्तार दिये और अपने बड़े मास-असुर को सेवा करने लगी। अथवा बाहर से उसकी मूख-मूढा से कुछ प्रकट न होना था, वह प्रसन्न हो रहती थी। परन्तु वह नगर के बचन अभी तक नहीं भूली थी। उसे दिन बातत देख न सगी। और अन्त में वह दुर्भागिनीय दिवस त्रिय दिन सत्यवान् का प्राणालाना था निकट आ गया। उसने मन में सत्यका कि अभी तीन दिन और बाकी है, इन तीनों दिनों में कहीं-कहीं बत सत्यवान् बरगी। उसने बत किया और चौथे दिन जब सत्यवान् यज्ञ की समिपार्थि केने के लिए प्रगत करने की नैयाग हुआ तो सावित्री भी उस समय साथ साथ गई। कुछ समिपार्थि एकत्र करने के पश्चात् सत्यवान् यह कर बैठ गया। और अपना मिर सावित्री को छानी पर रख कर सी गया। उसी समय यमराज आता और सत्यवान् की आत्मा को लेकर दक्षिण की ओर चम पीछा किया। सावित्री ने यह सब देखा और यमराज की पीछा सावित्री। यमराज ने सावित्री को बताया कि सत्यवान् की आयु समाप्त हो चुकी है। परन्तु पतिव्रता

सावित्री ने यमराज से ऐसे कथन स्वर में प्रार्थना की कि यमराज ने उसे सत्यवान् के प्राणों का छुड़ा कर और कोई बर मानने के लिए कहा। सावित्री को अनन्य व्यक्ति पूर्व पातिव्रत धर्म पर मूढ्य होकर अन्त में यमराज ने सत्यवान् के प्राण भी लौटा दिये। यह प्रसन्न होकर बापिस आई और दबा कि सत्यवान् माने पहरी निद्रा में जाग गया है। उसने सत्यवान् का मांस घटना बता दी। तथा ब होना अधम में वापिस आ गये। छीद्र ही उसके धमरुत सुधमन ने यमराज के द्वारा दिये गये बरों का फल पाया। सावित्री पातिव्रत धर्म का उच्चतम आदर्श माना जाती है। बड़ी बड़ी स्त्रियां आज भी विवाहित तस्वीं का आजीवोत्त (अन्यथाविधि भ्रम) देना है तथा उनके मानने सावित्री का आदर्श पूरा करने के लिए उसका उदाहरण रचनी है। सम० पत्ति-परिच्छेद पहल तीन वर्षों में ये किमी एक वर्ष का पुरुष जिनका समय पर यशोगवीन संस्कार न हुआ हो, तु० श्राव्य क्कम् स्पेष्टमाम के सुकनत के अन्तिम तीन दिना का उन त्रिने जाये लकनार्थ विनाइ रूप में वैधव्य में बनने के लिए रखनी है।

साविष्कार (वि०) [सह साविष्कारेण—अ० म०]

1 घमरी, अक्षर 2 प्रकट।

सासत् (वि०) [सह सासत्तया ब० म०] कावना और उत्कृष्टा से पुण, इच्छुक, आशावान्, प्रत्यागी,—सम् (अव्य०) कावना पूर्वक आशा से।

सासङ्ग (वि०) [सह सासङ्गात् ब० म०] ट० अनुभव करने वाला, आगम करने वाला, डरा हुआ, चकित। सासङ्गश्च (पु०) एक छाटी त्रिपकली।

सासृकः (पु०) मत्सकजल, मासना।

सासृच्यं (वि०) [सह सासृच्येण ब० म०] 1 आसृच्यं जनक, विलक्षण 2 आसृच्यं चकित, धम् (अव्य०) आसृच्यं के साथ, अद्भुत प्रकार से।

साथ (श) (वि०) [सह जयथे—] 1 काम या किनारों में युक्त, कोणदार 2 क्षीयु में भरा हुआ, रोता हुआ।

साथुवी [साथ ध्यायति साधु + ध्वं—किप्, सप्रसारण] साथ, पति या पत्नी को माना।

साध्याङ्गम् (अव्य०) [सह साध्याङ्गे ब० म०] सदा दण्डवत् सेत कर (शरीर के अङ्ग अंगों से पृथ्वी को छुकर—दे० 'अष्टय' के अन्तर्गत 'अष्टया प्रसाध')।

सात्त (वि०) [सह सात्तेन] अनुशरीरों—कि० १५१५।

सासुतु (वि०) साथ धारण करने वाला—कि० १५१५।

सासृच्य (वि०) [सह अनुसृच्येण] साह करने वाला, ईर्ष्यालु, तिरस्कारपूर्वक,—अव्य० (अव्य०) साह के साथ, गेयपूर्वक तिरस्कार के साथ—अ० २१२।

सात्ना [सह + न, चित् बुद्धि] साथ या बैल का सह-

कम्बल, - या सास्नादिभस्त्र लक्षणम्-तर्क०, रामन्य-
मन्थरक्षत्पुत्रसास्नासांघर्षके निर्भीसदलकेषां, रीक्षकेषां
शि० ५१६२ ।

साहचर्यम् [सहचर + व्यञ्] साध, साधीयता, साथ रहना,
साथ साथ बसना, सहस्यता कि न स्वर्यय यवकेष
नो विद्यापरिग्रहाय नानादिग-नवासिना साहचर्यमासीत्
-मा० १, कु० ३१२१ रघु० १६७८, बेनी० ११२०,
शि० १५१२४ ।

साहसम् [सह + णिच् + ल्यट्] सहन करना, भुगतना ।

साहसम् [सहसा यत्नेन निर्वृत्य अण्] 1 प्रचम्बता, बल,
मूढबलसौट भन्० ७१४८, ८१६२ कोई भी घोर
अपराध (जैसे कि डाका, बलात्कार, मूढ-बलसौट
आदि महापातक), जघन्य अपराध, अश्रमधर्मपरक
कार्य 3 कृता, अत्याचार शि० १५९५ 4 हिम्मत,
दिलेरी, उग्र धीर्ष-साहसे श्री प्रविभवति-मच्छ० ४
5 साहसिकता, उदात्तचयन, औद्यत्य, अविमृश्य-
कारिता, भावसिक कार्य तरपि साहसाभासम मा०
२, किमपरमती निर्व्यंघ्र यकारपणसाहसम् १११०,
कि० १७४२ 6 सहा, दण्ड, जुमाना (इम अर्थ में
पु० भी), २० मनु० ८११३८, याज्ञ० ११६६, ३६५ ।
सम०-अशु 1 गज्जा विक्रमादित्य का विशेषण
2 एक कवि का विशेषण 3 एक कामकार का विशेष-
ण -- अष्टादशमधियु (वि०) उतावली या जन्मबाजी
करने वाला, ऐकरसिक (वि०) निम्नान प्रचम्बता
पर नुत्ता हुआ, भीषण, क्रूर, कारिण्य (वि०) 1 दिलेरी,
बेधक 2 बन्दहाज, अविबेकी साम्राज्य (वि०)
त्रिमये माह्रम परिचायक ४ कृष्ण हा ।

साहसिक (वि०) (स्त्री० कौ) [साहसे प्रवृत्त ठक]
1 बहुत अधिक डार लयाने वाला, नृशम, प्रचम्ब,
उत्पीडक, क्रूर, मूढ-बलसौट करने वाला 2 हिम्मती,
दिलेरी, निर्भीक, विचारायन्, उद्वन न सहासिम्
साहसममार्हकी शि० १५९५, केचित् साहसिकारि-
लाचरमिति वेदु कु० ३११४ पर मल्लि० 3 दण्ड-
मूढक, दण्डमूढक, कः 1 हिम्मतवर, दिलेरी, उद्यमी
-पद्य० ५१३१ 2 आतनायी भयकर, भीषण या
किञ्च विविधजोबाहादुरप्रियेति साहसिकाना प्रवाद
मा० १ साहसिक मल्लेय ५ 3 मुटेरा, मूढ-
मार करने वाला, डाक ।

साहसिम् (वि०) [साहस-प्रति] 1 प्रचम्ब, उग्र, भीषण,
क्रूर 2 हिम्मती, दिलेरी, जन्दहाज, जायकुर्नी ।

साहस (वि०) (स्त्री०-कौ) [सहास + अण्] 1 हजार
से सबंध रखने वाला 2 हजार से युक्त 3 एक
हजार में बाल निपात हुआ 4 प्रति हजार दिया हुआ
(आय आदि) 5 हजार गुना, कः एक हजार
सैनिका की टुकड़ी, - अन्व एक हजार का समूह ।

साहायकम् [सहाय + वृण्] 1 सहायता, साहाय्य, मदद
सकुलाचित्पयस्वय साहायकमुपेयिष्यात् रघु०
१७५२ 2 सहचरन्व भैंसो, नौहादर 3 विधमरनो
4 सहायक सेना ।

साहाय्यम् [सहाय + व्यञ्] 1 सहायता, मदद, सहाकार
2 सौहाय्य, भैंसो ।

साहित्यम् [सहित + ष्यञ्] 1 साहचर्य, भाईभारो, मेल
मिलाप, सहयोगिता 2 साहित्यिक या आलकारिक
रचना-साहित्यसङ्गीतकलाविहीन सासातरम् पुष्प-
विद्यागहीन भन्० ३१२२ 3 रीतिशास्त्र, काव्य-
कला-विश्लेषक० ११११, साहित्यदर्पण आदि 4 किसी
बन्धु के उत्पादन या सम्पन्नता के लिए सामर्थ्य का
सह (सदृश्य अर्थ) ।

साह्यम् [सह + व्यञ्] 1 सहायता, मेल, साहचर्य, सहयोग
2 सहायता, मदद । सम० कृष् (पु०) साधी ।

साह्यक [सह आह्येन क० सं०] जानबरो की लड़ाई
करा कर जुझा लेकना ।

सि (स्वा० कृपा० उभ०) सिनाति, सिन्दुने, सिनाति
सितीने 1 बाघना, ककना, जकदना 2 ज्ञान में
फँसना ।

सिह् [हिम् + अच्, पुषो०] 1 शेर (कहा जाना है कि
इस शब्द की व्युत्पत्ति 'सिम्' धातु से हुई है पु-
अवेष्टाशास्त्रमाहसि मिश्रो वर्णविषययात् सिदा०
न हि सुपत्ये सिह्येयं अविशानि मये मृगा-मुखा०
2 सिंह राशि का चिह्न 3 (समय के जन्म में
प्रयुक्त) सर्वानय, सर्वो म प्रयत्न, उदा० रचयित्,
पुनर्माहः । सम० अक्षयोकनम् शेर का पीछे मुड़
कर देखना, व्याध् मिहावकीकन का व्याप, बन्धु
का प्राय, पुत्रवर्ती और पारवर्ती संबंध बनवाने के
लिए प्रयुक्त, बराबरी के लिए 'भ्याय' के अन्वर्तन
देना, -आत्मनम् रजमरी, मन्थन का आसन, (न-)
एक प्रकार का रजिबय, अस्त्र हाथों की विशेष
स्थिति, -स शिर का विशेषण, -सत्सम् अरजि, मुष्कः
एक प्रकार की घाड़ला, हस्तुः शिर का विशेषण,
हर्ष (वि०) शेर की भांति गर्वीला, -अश्वि-भायः
1 शेर की दहाद कु० १५६६, मूष्क० ५१२९
2 मूढ-अर्जि, ललकार, हास्य मुख्य दरवाजा, -घात
रथा पार्वती देवी, लोका एक प्रकार का सभोग,
साह्य, शिष का विशेषण, -सहस्रक (वि०) 1 शेर
की भांति भयङ्कर 2 सुन्दर, (मन्) शर का मार
हालना ।

सिह्यकम् [सिहोऽज्यस्य लच्] 1 दिल 2 पीठक 3 बन्क,
बुल की छात 4 लघुऽङ्गो (शाय-क०-ब०) --सिह्येय
प्रयोगच्छन्ना विक्रमवदरुद्रिनु फलकासादवन्-रत्ना०-
१.- काः (पु० ब० ब०) कका देवासी लीग ।

सिंहलकम् [सिंहल + कन्] सका का द्वीप
सिंहानम् (कम्) [सिङ्घ + आनच्, पृ०] 1. सोहे का जग
2. नाक का मल ।

सिंहिका [सिंह + कन् + टाप्, इत्यच्] राहु की माँ । सन्०
-तन्वत्, पुनः-पुनः-पुनः राहु के विशेषण ।

सिंह्री [सिंह + ङीष्] 1. खेरी 2. राहु की माता का नाम ।

सिक्ता [सिक् + आच् + टाप्] 1. रेतीली जमीन 2. रेत
(प्रायः ४० व० में) —कषत् सिक्तायुः सैलमपि पल्लत
पाठयन्—अर्थ० २५३ 3. बबरी, पचरी (एक रोय) ।

सिक्तिक (वि०) [सिक्ता + इत्थच्] रेतीला, —अर्थ० ३१३८।

सिक्त् (भू० क० कृ०) [सिक् + क्त] 1. छिन्नाका गया,
पानी से नीला किया गया 2. तर किया गया, नीला
किया गया, भिगोया गया 3. मजिद, दे० 'सिक्' ।

सिक्चः [सिक् + चक्] 1. उबले हुए चावल 2. भात का
पिद—शामोप्युग्मिसिक्चोर्न का हानि करिषी भवेत्
—मुस०। क्चम् 1. मद्यमिक्षियों से बनाया गया
मद्य 2. नीस ।

सिक्चम् दे० सिक्चम् ।

सिक्च. (पु०) स्फटिक. धीमा ।

सिङ्घ (वा) कम् [सिङ्घ + आनच्, पृ०] 1. नाक का
मल 2. सोहे का जग ।

सिङ्घिणी [सिङ्घ + णिनि + ङीष्, पृ०] नाक ।

सिक् (गुटा० उ०) सिक्चिने, सिक्ता (हकारान्त और
उकारान्त उपमाओं के पश्चात् सिक् के लु को व हा
जाता है) 1. छिद्रकना, छोटी-छोटी बूँदों में बबेरना
भट्टि० १९१३ 2. मीचना, तर करना, भिगोना,
मीचा करना मद्य० २६, मनु० ९, २५५ 3. उडेलना,
उत्पन्न करना, निकालना, डालना ग्घ० १६१६६

4. भाना, बूँद-बूँद टपकाना, डालना ज्ञाक्षप चिया
हरनि सिक्चनि वाचि मत्यम्—अर्थ० २१३३ 5. उडेल
देना प्रम्पुल करना अन्यथा निमादक में सिक्चनम्
ल० ३, प्रै० (मेचयनिने) छिद्रकना, इच्छा०

(सिग्मिनिने) छिद्रकने को इच्छा करना, अग्नि
1. छिद्रकना, उडेलना, मीचना, मीला करना,
खीझा करना (अल० से भी) —अथ क्युरियेकम्
तान्द्राभोगीस्रीयु सि० ७७५७ भट्टि० ६१२१

१५३ 2. लेप करना, मस्कारिण करना, नियत करना
(सिग् पर अल के छोटे देकर) मुकुट पहनाना, गम्वा-
मिषेक करना, पदासीन करना—अग्निर्गर्भमिद्विष्य
गश्च स्वे पदे ग्घ० १९११, १७१२३, विक्रम०

५१३३ (प्रे०) ताश् पहनना, गम्वाही पर बिडाना
आ—, छिद्रकना (प्रे०) छिद्रकवाता, उडेलवाना

—लज्जामिचपैलैण कश्चे धोत्रे च पाचिव मनु०
८१२७२, उब्—, छिन्नकना, उडेलना, फैलाना (कर्मशा०)

1. वेद बचावित होना, ज्ञान उपलब्ध, ऊपर की ओर

फेंक जाना 2. फूल जाना, उबल होना, अहकार
पुन्य होना न तस्योत्तिषिषे मन—ग्घ० १७५३

3. बाधित होना—मनु० ८१७०, (प्रे०) चयद से
भरना, मि, छिद्रकना, उडेलना, ऊपर डाल देना,
अन्तर डालना ग्घ० ३१२६, स० ५१२३, कु० २५७७

2. बर्भयुक्त करना—निष्क्रियभावकीयता लता कीन्दी
च संतंयु विक्रम० २५५, (यहा पहला अर्थ भी
अभिप्रेत है), परि—छिद्रकना, उडेलना ।

सिक्चः [सक् + अच्, क्त्वि] वन्ध. कपडा ।

सिक्चिष्ठा [सिक् + इत्थच्, पृ०] पीपलामूल ।

सिक्चः [= सिञ्चः, पृ०] बाण्डु के बने भाण्डु गी की
अक्षर ।

सिक्चिस्तम् [= सिञ्चित, पृ०] अन्नसहता, अन्नकार
—शान्तिमुधिर्मुदुरसिञ्चितायि—कु० ११३५, विक्रम०
५११५ ।

सिङ्घ (ध्वा० पर० सेटनि) बधना करना, पूजा करना ।

सिक्त (वि०) [सी (सि) + क्त] 1. सफेद 2. बया हुआ,
कसा हुआ, अकटा हुआ, बेही पका हुआ 3. थिरा
हुआ 4. अव्यमित, मयाप्य, लः 1 सफेद रय 2. चान्द-
नास का शुक्ल पल 3. युक्च 4. बाण, —सम् 1 चोरी

2. चन्दन 3. मूनी । मम० अथ. काटा, अथान्तः
मोर, अथः, —अथन् कपूर, अथः स्वेनवन्धवादी

सन्धासी, —अर्थक सफेद तुलसी, अथः अर्चन का
विशेषण, अक्षित बलराज का विशेषण आदि रात्र,
दुग्, भासिका कोकला, सिन्धुही, हस्तर (वि०) जो

स्वेन न हो अर्थात् काला, —उत्पुण्य सफेद चन्दन,
उपलः स्फटिक, उपला मिथी, चीनी, —अटः

1. चन्द्रमा 2. कपूर, धातु चाक, लडिया, रक्षिः
बाध, भासिन् (पु०) अर्चन का नाक, सखेरा चीनी

सिक्चिष्कः गेहूँ, —सिक्चम् सेंधा नमक, —पुनः जी ।

सिक्ता [सिन् + टाप्] चीनी, शक्कर, —सिक्तेन हुने रसने
मितापि निष्कापये हंसकुलावनम ने० ३१९५, भावि०

५१३३ 2. उपोत्सवा 3. मनोरमा स्त्री 4. यदिरा
5. सफेद हुए 6. चमेरी, बेला ।

सिक्ति (वि०) [सा + क्तिच्] 1. सफेद 2. काला, —सिः
सफेद या काला रण । मम०—कम्क, —वाण्डु दे०

सिक्चिष्क, सिक्चिष्ठा ।

सिङ्घ (भू० क० कृ०) [सिङ्घ + क्त] 1. सम्पन्न, कावा-
न्वित, अनुष्ठित, अवाप्त, पूर्ण 2. प्राप्त, उपलब्ध,
अवाप्त 3. कामयाव, सफल 4. बसा हुआ, स्थापित

नेसविनी मुग्निश्च कुमुदस्य मिद्धा मुग्नि सिक्चिर्न
चरमेरवलावनानि उपर० १११५ 5. साधित, प्रया-
पित तन्मादिदिग्ध प्रत्यक्षप्रमाणानि सिङ्घन्-सर्व०,

मनु० ८११७८ 6. वैश, व्याप्य (वैशे कि सिक्चः)

7. लय माना हुआ 8. फैलना किया हुआ, निर्णीत

(जैसे कि कोई कानूनी अधिनियम) 9 दिया गया, मुहताया गया, (चूने आदि) बुकता किया गया 10. पकाया गया, (भोजन) बनाया गया 11 परिपक्व, पका हुआ 12 सर्वथा तैयार किया गया, मिश्रित, (बनस्पति आदि) एक पकाई गई 13 (कपया आदि) तैयार 14 बस में किया गया, जीता गया, (जाड़ू के द्वारा) खरीन किया गया 15 हथौड़ा किया गया, मफलप्रद बना हुआ 16 पूर्णतः विजय या दख, प्रवीण जैसा कि 'रससिद्धम्' 17 सम्पादित, (साधना आदि के द्वारा) पवित्रीकृत 18 युक्त किया हुआ 19 अकौकिक शक्ति से युक्त 20 पावन, पवित्र, पुण्यात्मा 21 लिम्ब, अविनष्टकर, नित्य 22 विख्यात, विभूत, प्रसिद्ध 23 उज्वल, छान-छार,—इ 1 अर्पणिय प्राची को अर्पण पवित्र और पुण्यात्मा माना जाता है विशेष रूप से देवयोगि विशेष जिसमें आठ सिद्धियाँ हो—उद्देविता मृष्टिभिराश्रयान्ते भूतजाणि यस्यात्पवति सिद्धाः—कु० १।५ 2 अतदुष्टि प्राप्त सन् च्चि या महतामा (जैसे कि त्याग) 3 कोई भी सत, च्चि या महतामा—सिद्धावेस—रत्ना० १ 4 जातुपर, ऐन्दुजालिक 5 कानूनी मुकदमा, बदालती जाँच 6 मुद, इच्छु समुद्री नमक 7 सम० अस्तः 1 सर्वसम्पत्त फल 2 किसी तर्क का प्रदर्शन उपसहार, किसी प्रश्न का सर्वसम्पत्त रूप, सही तथा तर्कसंगत उपसहार (पूर्वपक्ष के निराकरण के पश्चात्) 3 प्रमाणित तथ्य, मानी हुई सच्चाई, गढ़ान्त, मत 4 निर्वायक साक्ष्य के आधार पर अबलवित कोई माना हुआ मुनपाठ का प्रन्थ, 'कोटि' (स्त्री०) युक्तिगत बिन्दु जो तर्कसंगत उपसहार माना जाता है, 'वक्षः' किसी युक्ति का तर्कसंगत पार्ष्व,—अक्षम् पकाया हुआ भोजन,—अर्ध (वि०) जिसने अपना अचौष्ट सम्पत्त कर लिया है, सफल (—वी०) 1 सफेद सरसो 2 शिव का नाम 3 महाराजा बुद्ध का नाम,—आस्तम्ब सर्वसाधना में विशेष प्रकार की बैठने की स्थिति,—अङ्गना, —मयी,—छिन्नुः स्वर्णना, आकाशगना,—अङ्गु विशेष प्रकार का पायसपत्र, मनोविश्लेष,—अक्षम् काँची, —अङ्गु पार,—वक्षः किसी श्रितिका का सर्वसम्पत्त तथा तर्कसंगत पहलु,—अधोक्षः सफेद सरसो,—धोकिम् (पु०) शिव का विशेषण,—रत्न (वि०) लज्जित, शानुभव (सः) 1. पारा 2. रसायनज्ञाना सङ्कल्प (वि०) जिसने अपना अचौष्ट सिद्ध कर लिया है, तेषः क्रातिकेय का नाम,—त्यागी च्चि की बटकी है या पार (ऐसा अपना बाँटा है कि इस रत्न से इच्छानुसार शीघ्र शान्त किया जा सकता है और फिर भी यह शीघ्र के भरपूर रहता है) ।

सिद्धता,—स्वम् [सिद्धि+तन्+टाप्, ल् वा] सम्पन्नता, पूर्णता, पूरा करना ।

सिद्धिः (स्त्री०) [सिद्ध्+कित्] 1 निष्पन्नता, पूर्णता, संपत्ति, पूरा होना, (किसी पदार्थ को) पूर्ण अर्थात्—किमासिद्धि सत्त्वे अवति महता नोपकरणे—स्वामि० 2 सफलता, संप्रद्वि, कल्याण, कुशल-शेम 3 स्थापना प्रतिष्ठा 4. प्रमाणन, प्रदर्शन, प्रमाण, निर्विवाद परिणाम 5 (किसी नियम या विधि की) वैधता 6 फँसला, निर्णय, व्यवस्था (किसी कानूनी मुकदमे की) 7 निर्विचलित, सत्कार्यता, शुद्धता 8 अदा-यगी, (चूने का) परिशोध 9 तैयार करना, (श्रीवधि आदि का) पकाना 10 समस्या का समाधान 11 तत्पन्ता 12 नितान्त पवित्रता या विभूजना 13 अतिमानव शक्ति—यह मिनलो में आठ है—अणिमा अधिमा प्राप्ति प्राकाम्य महिमा तथा, ईशित्य च बगित्य च तथा कामावसायिता 14 जातु के द्वारा अतिमानव शक्तियों को प्राप्त करना 15 विलक्षण कुशलता या खमता 16 अक्षमा प्रभाव या फल 17 मुक्ति, मोक्ष 18 समक्ष, बुद्धि 19 छिपाना, अन्तर्धान होना, अपने आपको अदृश्य करना 20 जातु की जाडाँडे 21 एक प्रकार का घेत 22 दुर्गा का नाम । सम०—इ (वि०) सफलता या सर्वोपरि आनन्दान्तिक देने वाला (—वः) शिव का विशेषण, शशी दुर्गा का विशेषण, योग्यः इहाँ का विशेष प्रकार का शुभ संयोग ।

सिन्धु (विद्या० पर०) सिन्धुति, सिद्ध, प्रेर०—साधयति या सेवयति—इच्छा० सिन्धुस्ति 1 तत्पन्न होना, पूरा होना यन्ने कृते यदि न सिन्धुति कोऽप दाष हि० प्र० ३१, उद्यमेन हि सिन्धुति कार्यादि न मनोरथे ३६ 2. कामयाव होना, सफलता प्राप्त करना सिन्धुति कर्मन् महत्त्ववि यन्निरोधवा—वा० ७।६ 3 पदुषणा, आघात करना, सही पचना—वा० २।५ 4 अचौष्ट पदार्थ प्राप्त करना 5 सिद्ध होना, प्रमाणित होना, वैध होना यदि बचनभाषेर्वाचि-पय सिन्धुति हि० ३ 6 व्यवस्थित या अभिनिर्णीत होना 7 सर्वथा तैयार किया हुआ या उपकृत हुआ 8 विश्रित या जीता हुआ होना—यच० २।३६, प्र०—, 1 सम्पन्न होना, कार्योचित होना, सफल होना शरीरयाचापि च ते न प्रसिष्येदकर्मणः—अय० ३।८, तत्पत्ते प्रसिन्धुति यन्० १।१२३१ 2 उपकृत्य वा अवाप्त होना 3 विख्यात होना, ३० 'प्रसिद्ध', सम्—, 1 पूरा किया जाना 2 सर्वथा तत्पन्न वा सिन्धुति होना, पूरी तरह अनुष्ठित होना 3 आनन्दान्तिक प्राप्त करना, प्रथम होना—अप्येनेष तु सतिष्येद्वाङ्मनो नाम संसय—अय० २।८७ ।

11 (म्वा० पर०) सेवति, सिद्ध, इकारान्त उकारान्त

सीक : (म्वा० वा० सीकते) 1 छिन्नकना, छोटी छोटी बूँद करते बसेरना 2 जाना, हिलना-चुनना ।

11 (म्वा० पर०, चुरा० उप सीकति, सीकयति—ते) 1 उतावका होना 2 सहिष्णु होना 3 रणार्थ करना ।

सीकरः (सीकयते सिन्धेत्येति—सीक+अर्न्) 1 फुहार बर्षा, बलकम पचना, सूँधी पचना 2 छोटे पानी की छोटी छोटी बूँदें, दे० सीकर ।

सीता [सि+त पुषो० दीर्घ] 1 हल के चलाने से श्वेत में बनी हुई देवा, मूड, हल की फाल से खुरी हुई देवा 2 खुरी हुई या लूखवाली भूमि, हल से खोनी हुई भूमि—जैसे सीतां मदबभहसगाम् कु० ५।६१३ कृषि, श्वेती ज्ञेया कि 'सीताद्वय' में 4 भिषिका के राजा जनक की पुत्री का नाम, राम की पत्नी का नाम [इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि राजा जनक ने इसे हल की फाल डाला बने लूख से प्राप्त किया] बात यह थी कि सन्तान प्राप्ति की इच्छा से राजा ने एक वज्र का आरम किया था, उसकी तैयारी के समय उसे हल चलाने समय सीता मूड में ग मिली। इसीलिए 'अर्धादिश' वा 'परापुत्री' इसके विशेषण हैं। राम के साथ सीता का विवाह हुआ, उनके साथ बह वन में गई। जब राम उस वन में से उठा कर ने गया और उसका सतीत्व बग करने की चेष्टा करने लगा तो सीता ने उसके डम टुट प्रत्याख की वृथा के साथ टुकर दिया। जब राम का इन बात का पता लगा कि सीता लका में हैं, तो उसने नका पर चढ़ाई की, रावण और उसकी सेना का मार कर सीता को उद्धार किया। राम के ड्राम पत्नी के रूप में फिर से स्वीकृत किये जाने से पूर सीता की भीषण अभि-नारीका में से गुजरना पड़ा। यद्यपि राम का उसके मसीख पर पूरा विश्वास था फिर भी लोकवाद के कारण उन्होंने सीता का परिचाय कर दिया। सीता इस समय यमकी थी। बान्नाकि ऋषि के रूप में अपने प्ररक्षक का पा सीता उन्ही के ब्राह्मण में रहने लगी बड़ी कुषा और सब नाम के दा पुत्रों को जन्म दिया बान्नाकि मुनि ने बन्धो का पालन पोषण किया। अग म बान्नाकि क ड्राग सीता राम का गौर दी गई। 5 एक देवी का नाम, इन्द्र की पत्नी 6 उमा का नाम 7 लक्ष्मी का नाम 8 गंगा की चार धाराओं में से एक (पूर्वी धारा) 9 मरिचा। मय०-इष्यम् श्रेनी के उाकरण, कृषि के औडार मनु० १।२००—पति रामचन्द्र का नाम,—कस कुहरे की बेल, (—कम्) कुम्हडा।

सीतलकः (प०) मटर ।

सीत्क,र, सीकृति (स्वी०) [गिन्+रु+पञ्, क्तिन्

वा] सोच ऊपर सीकने का शब्द, सिलकारी, (बाहू भरने या सरीसे से छिदरने के समय सी-सी करना या मर्मर श्विति)—यथा शब्दाचर तस्या ससीत्कार-विधानम्—-विश्रम० ४।११ ।

सीत्थ (सि०) [सीता+थत्] बोते गये या हल की फाल से बने लूखों से माया गया, ल्थम् बावक, धान्य, अन्न ।

सीधम् (नपु०) बालस्य, सिधिकाता, मुली ।
सीधु (पु०) [सिध्+उ, पुषो०] राम या मूड से बनाई हुई धारा, ईल की मरिचा स्फुरदधरसीधने तब बदन-बन्दमा रोचयति सोचनचक्रोग्म् गीत० १०, सि० १।८७, रघु० १६।५२। मय०-मन्थ, बहुलपथ, मीलमिरी का पेड़, पुष्प-1 कदम्ब का मूड 2 मौन-मौरी का पेड़, रस आम का पेड़, सस मीलमौरी का पेड़ ।

सीधम् (नपु०) गुदा, मलद्वार ।

सीध (पु०) गाथ की शक्य का पञ्-गाथ ।

सीधम् (स्वी०) [सि+मन्ति, सि० दीर्घ] 1 सीमा, तट, दे० सीमा सोमानम-पापतयोऽप्यजन्म सि० ३।५७, दे० 'नि सीधम्' भी 2 अर्धकाथ सीधिम पुष्कलका हल सिद्धा० ।

सीधस्त [साम्+स्त लक० परश्चम्] 1 सीमारथा, सीमान्त 2 मिर के बालों की विभाजक रेखा मिर की माग जिसके दाया बाँग बाल विभक्त हो-नायने च स्वपुण्यवज यत् तोप वपुनाम् मेघ० ६५, सि० ८।६९, महावीर० ५।१८१। मय० उल्लस्यम् 'शाला का विभाजन' बाण्ड सम्कारों में से एक जिसकी स्थित्यो गर्भोधान क शीघे, छडे या जाटवे मर्दान में मनाती हैं ।

सीधस्तक [सीधस्त+क] विशेष प्रकार के नरक का अधिवासी, कम् सिन्दूर ।

सीधस्तयति (ना० वा०, पर०) 1 शाला का अजत-अजस करण 2 माग निकालना मना सोमस्तयन्त—कीर्ति० ५।४६ ।

सीधस्तल (सि०) [सीधन्त् सिध्+क] 1 (बाण आदि) विभाजन 2 मीय निकाल कर अलग किये हुए मया सोमस्तियेकोका (पदेशा) सि० ३।८०, म्याङ्गनामिनमन्द्रकईमन्त् (पथ) सि० ४।१८ ।

सीधस्तिली [सीधन्त्+इति+इति] स्त्री, महिला या स्म सीधस्तिली वाऽविजययोपुत्रोपमम् शि० २।७, मय० ११०, मट्टि० ५।२२ ।

सीधा [सीधन्+दाप] 1 हर, मर्यादा किताब, डार, मरुच्छ 2 मंत्र, तब खादि की सीमा पर मंगम पापक टीला या मंड सीमा प्रति समुमाने विचार

—मन्० ८।२४५, याज्ञ० २।१५२३ चिह्न, सोमान्त
 4. किमारा, तीर, समुद्रतट 5. त्रिभिः 6. नीचनी,
 पाग (जैसे कोपकी की) 7. सिद्धाचार या मोति की
 सीमा, अधिपत्य की मर्यादा 8. उच्चतम या अधिकतम
 सीमा, उच्चतम विन्दु, चरमसीमा सीमाव पदासन
 कीमास्य अट्टि० १।६ 9. संत 10. घोषा का पृष्ठ
 भाग 11. अष्टकोट। सम० अक्षिणः पदोमो राजा,
 —अक्षः 1. सीमारैला, शीर, मरुह 2. अधिकतम
 सीमा, 'सूक्तम्' 1. पूर्व की सीमा का पूजन 2. इरात
 के आने पर गाँव की सीमा पर दूध का स्फाण.
 —अनन्तकृतम् अतिक्रमण करना, सीमा पार करना,
 मरुह स्थापना, निषेध सीमान्त या सीमारैला
 के विषय में कानूनी निर्णय,—किञ्चुत् सीमा चिह्न, भू
 चिह्न,—अक्षः सीमा तबको प्रगण, अक्षिणः सीमा
 रैलाओ के अन्तर्गत का फैसला, विधातः सीमावन्धी
 प्रगण या मुकदमेबाजी, अक्षे सीमावन्धक प्रगणों से
 मन्व स्वर्गें बाह्य कानून,—अक्षः बहु वेद जो सीमा-
 रेखा का काम दे रहा हैं,—अक्षिः दो सीमाओं का
 मिलन।

सीमिक [स्वम् + किनन्, सम्प्रसारण, दोषेभ्य] 1. एक
 वृत्तविषय 2. बायी 3. बिजेट्टी या ऐसा ही छोटा
 काई अन्तु।

सीर [मि + र्क, पृषा०] 1. हल सव्. सीरोंकवन्-
 मुरति अथमावद्य मालम् मेघ० 2. मूर्ध 3. आक या
 मदार का पीछा। लव० अक्षः जनक का विशेषण,
 —वाचिः,—मूर्ध (प०) इतराम के विशेषण, जो
 हल में पशु की ज्ञानता, या हल में मूर्ति पशु की
 जोड़ी।

सीरक [सीर + कन्] दे० 'सीर'।

सीरिन् [प०] [सीर + इति] बरतार का विशेषण जि०
 २।२।

सीरक्यः ष (प०) एक प्रकार की मछली।

सीरक्यन् [मि + स्वट्ट, नि० वीचं] 1. सीना, तुल्यता, टांका
 लगाना 2. जोड़, सम्बन्धना (जैसे कोपकी की)।

सीरणी [सीरक्यन् + णीच] 1. मूर्ध 2. निवर्तन का अन्धि-
 चोप।

सीरक्यन्, सीरक्यन्, सीरक्यक्यन् [मि + क्विप्, पृषा० वीचं
 = सी, सी + क्य = व, वी + क्य कर्म० सं; सीस
 + कन्, सीस + चक] सीसा, -वाकवि० ५।१२४,
 याज्ञ० १।१९०।

सीरुक्यः [= मिठुक्य, पृषा०] सेवक (बाइ लगाने का एक
 कोटदार पीछा)।

सु। (म्बा० उच० मुनति-रे) बाणा, हिलना-मुक्ता।

॥ (म्बा० उच० पर० स्रति, सीति) क्षिति या सर्वा-
 परि सत्ता धारण करना।

॥ (म्बा० उच० मुनोति, मुनते, मुत, इकारान्त या उका-
 रान्त उपसर्गों के पश्चात् वातु के सू को मूर्धन्व व हो
 जाता है) 1. नीचता, रखा कर उस निकलना
 2. अक्षे नीचता 3. उद्वेगना, छिडकना, तपण करना
 4. यज्ञानुष्ठान करना, मास्यक करना 5. स्नान
 करना, इच्छा० (मुपसृति-ने)। अक्षि- 1. सीमारक
 निकलना 2. मिलाना, मिचन करना, नष्टकरना
 करना वाणि वैवाभिवृद्धने पुण्यफलकें सुप्रेः—मन्०
 ५।१० 3. छिडकना अट्टि० १।९०, उच०—उत्तंविन
 करना, विमुक्त्य करना, प्र- १. पैदा करना, अन्व देना।

सु (अच०) [सु + इ] एक निगान जो कर्मधारय और
 बहुव्रीहि समास बनाने के लिए सत्रा कर्मों से पूर्व
 जाता जाता है, विशेषण और क्रियाविशेषणों में भी
 जुड़ता है। निगानिक इसके अर्थ हैं 1. अक्षय,
 मला, अष्टय तथा 'मुगन्धि' में 2. सुन्दर, मनोहर—यथा
 'मुग्धयथा, सुकेतो वादि' में 3. सुव, सर्वथा, पूरी
 तरह, ठोक प्रकार से सुवीचमस्य सुविचक्षण
 सुव सुभासिता स्वी नृपति सुवेति। सुदोर्धकावे-
 प्रीप न याति विचिन्तय- हि० १।२२ 4. ज्ञानो
 ने, नुरत यथा सुकर और सुवर्ग' में 5. अधिक,
 अत्यधिक, बहुत अधिक—यथा 'सुराक्षक और
 सुदीर्घ' वादि। सम० अक्ष (वि०) 1. अच्छी
 जोषो बाला 2. उग्र और तेज अवी बाला,—अङ्ग
 (वि०) सुदीर्घ, मनोहर, प्रिय,—अच्छ (वि०) दे०
 लक्ष के नीचे, अल (वि०) जिसका मत यथा ही,
 अच्छी समर्पित बाला, अक्ष्य, अक्ष्यक (वि०) दे०
 -ल के नीचे, अलित,—अभिसक्त दे० लक्ष के नीचे,
 -आकार, -आकृति (वि०) मुनिमित्त, मनोहर,
 सुन्दर, ज्ञान दे० लक्ष के नीचे,—आयस (वि०)

इडा धानदार व प्रसिद्ध वि० १५।२२,—इच्छ
 (वि०) प्रती भक्ति किया गया वज, 'कुत् (प०)
 अग्नि का एक रूप, उत्तल (वि०) अच्छा शोला
 हुआ, सुव कहा हुआ—अथवा सुवत् सत् केनाति-वेपी०
 ३, (—अक्ष्य) अच्छी या समझदारी की उलित
 —नेतु शास्त्राति वः अलान् पवि लतां सुवी सुभास्य-
 न्दिचि अट्टि० २।९, २५० १५।१९२ 2. अधिक मन्व
 या सुवत् यथा 'मुक्कसुव' वादि, 'वेतिन् (प०)
 मन्वपटा, वैदिक अदि, 'वाप्य (स्वी०) 1. मन्व
 2. स्तुति का सव्, अलितः (स्वी०) 1. अच्छा या
 सोहावेपूर्ण प्राचय 2. अच्छा या वातुपूर्ण क्वक
 3. सुद वाक्य, उत्तर (वि०) 1. अतिवेध 2. उत्तर
 दिया की ओर, अक्षय (वि०) सुव प्रयत्न करने
 वाला, वचनानी, पूर्णता, (—अक्ष्य) प्रथक अक्षय वा
 उद्योग,—अक्ष्य,—अक्षय (वि०) विस्तृत वाक्य,
 दीवाना,—अक्षय (वि०) जिसके पास अक्षय

जासान हो, उपकार (वि०) अच्छे उपकरणों से युक्त, कच्चा, मुकली,—कच्चा: 1 प्याज 2 बान्ना, कचान्ना, सकरकच आदि कद 3 एक प्रकार का घास, —कच्चाक: प्याज,—कर (वि०) (स्त्री० रा—री) 1 जो जासानी से किया जा सके, किपात्मक, कार्य, —कच्चा मुकर, कच्चा (अध्यावसितुयु) दुकरम्—बेनी० ३, 'करने को अरोसा करना जासान हूँ' 2 जिसका प्रथम जासानी से किया जा सके, (रा) सुधील गी, (—रम्) शान, परोपकार,—कच्चा (वि०) 1 जो अच्छे कार्य करता है, पुण्यात्मा, प्रजा 2 सन्धिय, परिश्रमी, (पु०) विश्वकर्मा का नाम, कच्चा (वि०) (वि०) (घन को) उदारता पूर्वक देने तथा मनुष्योपयोग करने में जिसने कोटि अहित कर ली हो, कश्चिन्म (वि०) 1 सुन्दर बूटो से युक्त 2 सुन्दरता के साथ युवा हुआ, (पु०) शौर, कुम्भक प्याज,—कुम्भार (वि०) 1 मृदु, सुकुमार, कोमल 2 सौन्दर्ययुक्त तपन, (—र) 1 सुन्दर युक्त 2 एक प्रकार का पान्ना,—कुम्भारक: 1 सुन्दर सदन 2 'शालि' शालक, (कच्चा) तयासपन,—कच्चा (वि०) 1 प्रजा करने वाला, उपकारी 2. परिचायता, गुणसम्पन्न, धर्मरमा 3. बुद्धिमान्, विद्वान् 4 भाग्यशाली, किस्मत वाला 5 अच्छे यज्ञ करने वाला, (पु०) 1 कुशल कर्मकर 2. त्वष्टा का नाम,—कृत् (वि०) भली-भाति किया हुआ 2 सर्वथा किया हुआ 3 कृत्र किया हुआ या सुरक्षित 4 जिसके साथ कृपापूर्वक व्यवहार किया गया हो, सहायता दिया गया, मित्रता के लक्ष में बाध 5 सत्पुत्री, धर्मात्मा, परिभाषा 6 भाग्यशाली, किस्मत वाला, (तम्) कोई भी भला या अच्छा कार्य, कृपा, अनुग्रह, सेवा—जादो कस्यचित्पाप न चैव सकृत् विम भग० ५।१५, मेघ० १७ 2 सत्पुत्र, नैतिक या धार्मिक गुण—स्वर्पाभिसन्धि-सुकृत भस्मनामिभ मेदिने कु० ६।४७, तन्त्रिन्यायन सुकृत तवेति—रम्० १४।१६ 3 सोभाग्य, भाग्यलिकता 4 प्रतिफल, पुत्रकार,—कृति: (स्त्री०) 1 कृपा, सत्पुत्र 2 मपस्था करना,—कृतिन् (वि०) 1 प्रलाई करने वाला, कृपापूर्वक व्यवहार करने वाला 2. सत्-गुणसम्पन्न, परिभाषा, प्रजा, धर्मात्मा—सत्त. सन्नु निरापद सुकृतिता कीतिविधर वर्मताम् हि० ४। १३२, भग० ७।१६ 3 बुद्धिमान्, विद्वान् 4 परोपकारी 5. भाग्यशाली, किस्मत वाला,—कृत् (स्त्री०) १: यमलक का पेड़, कच्चा 2. अग्नि का नाम 2 शिव का नाम 3 हनु का नाम 4. अग्नि शरीर बहण का नाम 5 बूटों का नाम,—र (वि०) 1 सबीली चाल चलने वाला 2 शोभन, लजित 3 सुभाग्य—पञ्च० २।१४१ 4. शोचन्य, जासानी से नमझे जाने योग्य (वि०)

दुर्ग) (—रम्) 1 विपदा, मल 2 प्रसन्नता,—रत्त (वि०) 1 भली-भाति किया हुआ 2. भली-भाति प्रदान किया हुआ, (स्त्री०) बुद्ध का विशेषण, कच्चा: 1 सुवान्, अच्छी गध, गणद्वय 2 गन्ध 3 व्यापारी, (—रम्) 1 बन्दन 2 जीग 3. नील कमल 4 एक प्रकार का सुगन्धित घास (—रत्त) पवित्र पुतली, कच्चाक: 1 गन्धक 2 लाल सुवर्मा 3 सत्तरा 4 एक प्रकार की लौकी, सन्धि (वि०) 1 मधुर गन्ध वाला, सुवावृदार, सुरजित 2 सत्पुत्री से युक्त, परिचायता, (—रत्त) 1. गणद्वय, सुवर्ग 2 परमार्था 3 एक प्रकार का मधुगन्ध वाला आम (—रत्त—रत्त) 1. पिप्पलायक 2 एक प्रकार का सुगन्धित घास 3 रनिया, 'चिकित्सा 1 बायकल 2 शोभ, सन्धिष्ठी: 1. वृष 2 गन्धक 3 एक प्रकार का (शाममती) शालक, (—रत्त) तनेद कमल,—रत्त (वि०) 1 बहई जासानी से पहुँचा जाय, मुलत्र 2 जासान 3 हरन, शोचन्य, चक्षुषा चक्षुष्याय को अस्पृश्यादि भयंके से बचाने के लिए बनाया गया धरा, 'कृति: दे० ऊपर का लक्ष, गृह (वि०) (स्त्री०—ही) सुन्दर धरा वाला, भली भाति रहने वाला—सुगृही निर्गृही कृत्वा पञ्च० १।१९०, गृहीत (वि०) 1 भली भाति एकठा हुआ, अच्छी तरह समझा हुआ 2 सन्धित रूप से या सुमर रीति से प्रयुक्त, 'अच्छम् (वि०) 1 बहु विषयका नाम धार्मिक रूप से किया जाय, या विमका नाम जेता (बलि, युधिष्ठिर आदि) गुण समझा जाय, प्रात स्मरणीय, सम्प्रामपूर्वक नाम लेने की रीति को छोड़न करने वाला लक्ष्य सुगृहीत-नाम्न भट्टगोपालस्य वीर मा० १,—कृत्: स्वादिष्ट और या निबामा जीव (वि०) अच्छी घरेलू वाला, (—रत्त) 1 नायक 2 हथ 3. एक प्रकार का हस्त 4 सुधीय जो शालि का भाई है (कच्चा की बात मान कर राम सुधीय के पास गये। सुधीय ने बतलाया कि किस प्रकार उसके भाई बाकि ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया। साथ ही अपनी पत्नी का उद्धार करवाने के लिए राम से सहायता मांगी। स्वयं सुधीय ने यह प्रतिज्ञा की कि मैं भी जायकी पत्नी सीता का उद्धार करवाने में आपकी सहायता करूँगा। फलतः राम ने बाकि को मार विराधा, सुधीय को राजगृही पर बिठाया। तब सुधीय ने अपनी धारम सेवा बाब अक्षर राम का साथ दिया जिससे कि राम ने राजक को मार कर सीता का उद्धार किया।, 'ईक्ष: राम का नाम,—रत्त (वि०) बहुत पैसा हुआ, शान्त,—रत्तम् (वि०) अच्छी भाँसी वाला, भली भाति देखने वाला, (पु०) 1 विवेकशील, या बुद्धिमान् व्यक्ति, विद्वान् युक्त 2 युक्त

का पेड़, चरित, चरित्र (वि०) अच्छे आचरण
 वाला, सिध्दाचारवृत्त (-तन्, -म्) 1 सदाचार,
 अच्छा चालचलन 2 गुण तब सुचरितमङ्गलीय नून
 प्रयत्न -श० ६।११, (-ना, -आ) सदाचारिणी,
 पतिव्रता, और सती साध्वी स्त्री, -चिरम् 1 राम-
 चरिया, एक पत्नी 2 नीलकण्ठ, चिरा एक प्रकार
 की लौकी, चिरता वहनचिन्तन, यन्त्रीर, -चिरम्
 (अभ्य०) दीर्घ काक एक, बहुत देर तक, चिरम्
 (प०) गुर देवता, कनः 1 भला पुत्र, सदनधी,
 परांपकारी 2 सज्जन, -कल्पता 1 भलाई, नेकी,
 परांपकार, मदगुण-दोषवर्षस्य विभूषण सुजनता-अंत०
 २।८२ 2 मने पुष्पां का समूह, अम्बु (वि०)
 मत्कुलोत्पन्न, कुलीन, -वा कीमती नयनयोर्वचतः सुबन्धा
 -मा० १।३४, -बन्धः अच्छी बांधी, -बात (वि०)
 1 उच्छकुलोत्पन्न 2 सुन्दर, प्रिय मा० १।१६,
 र्ण० ३।८, -तन् (वि०) 1 सुन्दर शरीर वाला
 2 अत्यन्त सुन्दर, दुबला-पतला 3 कृष्णकाय, दुबल-
 शरीर, (स्त्री० - नु -म्) कोयलाजू, सुन्दरशरीर
 -एना सुन्दर मुख से तन्व पयस्वी हेमकटमना
 -विभम० १।११, -तन्व (वि०) 1 जो धोर तस्या
 करता हो 2 आतिथ्य तापयक (प०) 1 मन्दासी,
 भक्त, साधु, बैरागी 2 सुधै, (सु०) कठोर साधना
 -तराम् (अभ्य०) 1 अविशङ्कत अच्छा, अधिक
 श्रेष्ठ हरा से 2 अत्यन्त, अधिक, अत्यधिक, बहुत
 ज्यादा-तथा दुहिना सुतग मन्विषी स्फुरत्प्रभामण्डला
 ककाले कु० १।१७, सुतग दायिण र्ण० २।५३,
 ४।१, ५।२४ ३ और अधिक, और भी ज्यादा
 - मध्यम्यतन्वा न ते चेत्यपि मम सुतरामेव राजन्
 मनोऽग्नि-भर्त० ३।३०, तर्बन् कोयल, -तन्वम्
 1 अत्यन्त गहराई भूमि के नीचे सात मंकी में मे
 एक, दे० 'पाताल' 2 किसी बड़े भवन की बुनियाद,
 - निष्कल मूने का पेड़, सौम्य (वि०) 1 बहुत
 तेज 2 अत्यन्त तीव्र 3 बहुत पीडाकारक, (अभः)
 1 सहिष्णु का पेड़ 2 एक मृत्पि का नाम नाम्ना
 सुनीलधारचरितेन दान्तरु र्ण० १३।४१, "अक्षयः चिच
 का विद्योषण, - तीर्थः 1 अच्छा मुक, 2 तिम का नाम,
 -सुज्ज (वि०) बहुत ऊँचा या लंबा, (-कः) कारियल
 का पेड़, अक्षिण (वि०) 1 अत्यन्त निष्कण्ट क शरा
 2 बहुत उदार, मन्त्र में मूच दक्षिणा देने वाला-यच०
 १।१०, (-भा) दिल्लीय राजा की पत्नी कः नाम,
 तस्य दाक्षिण्यकर्मन नाम्ना मणधवाभा 1 पत्नी सु-
 क्षिणोऽवासीन् र्ण० १।११, ३।१, इक्षः बेंत, इत्
 (वि०) (स्त्री० स्त्री) अच्छे दाती वाला, -बन्कः
 1 अच्छा दांत 2 अमिनेता, मंतक, नट, (स्त्री)
 पवित्रमोत्तर दिशा की दिक्करीणी, ब्रह्म (वि०)

(स्त्री०-ना, -नी) 1 प्रियदर्शन, सुन्दर, मनोहर 2 जो
 आसानी से दिखाई दे (कः) 1 विष्णु का पत्र,
 जैसा कि 'कृष्णोपसुदर्शन' का० 2 तिम का अभय
 3. गिद्ध, (-म्) अन् द्वीप का नाम, इक्ष्मा
 1 सुन्दर स्त्री 2 स्त्री 3 आदेश, आज्ञा 1 एक
 प्रकार की बूटी, वा (वि०) वषेट्ट, इक्ष्मन् (वि०)
 जो उदारता पूर्वक देता है (प०) 1 बाहल 2 पहाड़
 3 समुद्र 4 इन्द्र के हाथों का नाम 5. एक दग्धि
 बाहल का नाम जो अपने मित्र कृष्ण से मित्रने के
 लिए मूने पावलों की गेट लेकर, द्वारकापुरी गया
 था तथा जिसे भीकृष्ण ने फिर चलवाप्य और कीर्ति
 से सम्पन्न किया, -बायः 1. भगवतिक उपहार
 2 विविष्ट अक्षरों पर दिशा ज्ञाने वाला विमो
 उपहार -विष्णु 1 मानसप्रद सुभ दिवस 2 अच्छा
 दिन, अच्छा मोलन (विप० सुदिन), इसी प्रकार
 'सुदिनाहम्' इसी अर्थ में, शीर्ष (वि०) बहुत लंबा
 या विस्तृत (कः) एक प्रकार की लकड़ी-कुम्भ
 (वि०) अत्यन्त दुष्प्राप्य या किरल, दूर (वि०)
 बहुत दूर स्थित या दूरवर्ती (सुदूरम् 1 बहुत दूर
 2 बहुत ऊँचाई तक, वायविक, सुदूरम् दूर में,
 फासले में), -सूक्ष्म (वि०) सुन्दर आँसु वाला,
 (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, -कम्बु (वि०) बड़िया बन्दु
 की धारण करने वाला, (-प०) 1 अच्छा तीरदात्र
 या बन्दुधारी 2 विश्वकर्मा का नाम बर्भन् (वि०)
 कर्तव्यपरायण (स्त्री०) देव परिचर, देवभवा, धर्मा,
 -धर्मा देवताया मयावृष्टीरितालोका सुधर्मायवमा
 तभाम्-र्ण० १।२।२८, -धी (वि०) अच्छी समझ
 वाला, बुद्धिमान्, बन्दुर, प्रतिभाशाली, (-धी)
 बुद्धिमान् या प्रतिभाशाली पुत्र, विद्वान् पुत्र्य या
 पतिव्रत, (स्त्री०) अच्छी समझ, भला ज्ञान, ब्रह्मा,
 -उपस्थाः 1 एक विशेष प्रकार का महल 2 कृष्ण
 के सेवक का नाम, (इक्ष्म) बरगाम का सुन्दर,
 - उपास्था 1 स्त्री 2 उमा या उसकी कोई सती
 3 एक प्रकार का रत्नक, मन्वा स्त्री, मयः 1 अच्छा
 चालचलन 2 अच्छी नीति, मन्व (वि०) सुन्दर
 शरीर वाला, (कः) हरिण, (-वा) 1 सुन्दर
 आँसु वाली स्त्री 2 सामान्य स्त्री, वाय (वि०)
 सुन्दर नाभि वाला 2. अच्छे नाह या केन्द्र वाला,
 (-कः) 1 पहाड़ 2 मंत्रका पहाड़, विष्णु (वि०)
 बिल्कुल अकेला, निजी, (अभ्य० तम्) पुत्रधार,
 क्षिपे-क्षिपे, सट कर, निजी रूप में, निष्कलः चिच
 का विमोषण, - नीति (वि०) अच्छे आचरण वाला,
 सिध्दाचार वृत्त 2 नन्न, विनयी (तम्) 1. अच्छा
 चालचलन, सिध्द आचरण 2 अच्छी नीति, दूरदृष्टि
 नीतिः (स्त्री०) 1. अच्छा आचरण, सिध्दाचार,

श्रीचन्द्र 2 अच्छी नीति 3 ध्रुव की माना का नाम,
 —शौच (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, सदाचारी, धर्मात्मा,
 सदाशील, भला, (—ब) 1 बाह्य 2. शिवालय का नाम,
 —शुद्ध (वि०) बिल्कुल काला, या नीला, (—कः)
 अन्तर का वेद (—कः) सामान्य मन का पोषा, मेघ
 (वि०) मुन्दर आंशु बाला, —पक्व (वि०) 1 अच्छा
 पका हुआ 2 सर्वथा परिपक्व या पका हुआ (—कः)
 एक प्रकार का सुगन्धित आम, पत्नी वह स्त्री
 त्रियका पनि भरपूरुष हो, पक्व 1 अच्छी गन्धक
 2 मृदामं 3 अच्छा चालचलन पवित्र (पु०)
 (रु०) ए० व०—मुग्धा (वि०) अच्छी मंडक, पक्व
 (वि०) (स्त्री०)—कौं—कौं 1 अच्छे पत्नी बाला
 2 मुन्दर पत्नी बाला, (—कः) 1 मूर्ख की किरण
 2 अर्वादिभ्य चण्डि के पक्षिदा जैसे प्राणी, देवगन्धर्व
 3 अतीतिक पक्षी 4 गण्ड का विशेषण 5 मृग
 —वर्ण, वर्षी (स्त्री०) 1 कमला का समूह
 2 कमला के भग तास 3 गन्ध की माना का नाम
 पर्वण्य (वि०) 1 बहुत विस्तार युक्त 2 सुयोग्य
 —वर्ण (वि०) अच्छे जाहो या संधियों वाला,
 त्रियमे वटन के जाह या ग्रन्थिया हा. (पु०) 1 ब्रह्म
 2 बाण 3 मृग देवता 4 विशेष चान्द्र दिवस
 (प्रयोक मान को पुणिया, अमावस्या, अष्टमी और
 कर्तुको) 5 यथा,—पाक्व 1 अच्छा या उपयुक्त
 बर्तन, योग्य भाजन 2 योग्य या महान् व्यक्ति, किसी
 पद के समुपयुक्त व्यक्ति, सर्वत्र उपयुक्त, पाक्व (स्त्री०)
 पाक्व—पक्षी अच्छे या मुन्दर पैरो वाली, पाक्व
 पाकड का वेद, पक्ष, पीतल ताडर, (—कः) पाक्व
 मुहुत, (—पुंसो) वह स्त्री त्रियका पनि प्रका व्यक्ति
 हा. पुष्प (वि०) (स्त्री०)—क्या, क्वी) अच्छे
 फूल वाला, (क्व) मृगे का वेद (क्व)
 1 लीन 2 स्त्रीरज, —प्रकक स्वम्ब विचार,—प्रतिष्ठा
 मदिग, प्रतिष्ठ (वि०) 1 मनी-भानि बहा हुआ
 2 बहुत प्रसिद्ध, विद्वान्, कीर्तिशाली, विख्यात,
 (क्व) 1 अच्छी स्थिति 2 अच्छा मान, प्रसिद्धि,
 स्थिति 3 स्थापना, निर्माण 4 मूर्ति आदि की
 स्थापना, अभियेक, प्रतिष्ठित (वि०) 1 मनी-भानि
 स्थापित, 2 अभिविधन 3 विख्यात, (—कः) नुबर
 का वेद, प्रतिष्ठा (वि०) 1 सर्वथा परिशीलन
 2 किसी विषय का अच्छा ज्ञानकार, प्रतीक (वि०)
 1 मुन्दर आकृति बाला, प्रिय, मनोहर 2 सुन्दर
 स्वर बाला, (क्व) 1 कामवेद का विशेषण
 2 शिव का विशेषण 3 पवित्रमोक्ष दिशा का
 दिग्गज, प्रयत्नम् अच्छा ताल, प्रव (वि०) बहा
 प्रतिभाशाली, वहास्वी, (क्व) अनि की हात
 जिह्वाभो में से एक, प्रवात्म 1. बुध प्रनात, मय-

मय प्रात काल दिष्टधा मुप्रभातमस यदय देवो
 दुष्ट उत्तर० ६ 2 प्रात काशीन ऊया, प्रयोग
 1 अच्छा प्रकथ, भली-भाति काम में लाया जाना
 2 दस्ता,—प्रवाह (वि०) अनि कथनाभय, कुना-
 निधि, (क्व) शिव का नाम, शिव (वि०) अत्यन्त
 प्रिय, अधिकार, (क्व) 1 मनाहारिणी स्त्री 2 प्रेयसा,
 फल (वि०) 1 अत्यन्त फल देने वाला, बहुत
 उत्पादक 2 बहुत भाग्य, (क्व) 1 अन्तर का
 वेद 2 बेरी का वेद 3 एक प्रकार का लक्षिया,
 (—कः) 1 कद्दू, लौकी 2 केले का वेद 3 भूरे
 रग का अन्तर, क्वथ मिल, फल (वि०) अत्यन्त
 पक्वितशाली, (—कः) शिव का नाम शिव (वि०)
 वा आमाजी मे समझा जाय, (—कः) भला समाचार
 या उपदेश, बहुपक्व 1 कानिचय का विशेषण 2 यज्ञ
 मे चरण किये गये सोलह पुराहितो में एक,—अम
 (वि०) 1 अत्यन्त भाग्यवान् या समृद्धिशाली, प्रसन्न,
 सौभाग्यशाली, अत्यन्त अनुग्रहीत 2 प्रिय, मनोहर
 मुन्दर, मनोग्य न तु शीघ्रस्वैव मुप्रमपगण्ड
 मुनिवृ—ग० ३१०, कृ० ४३४, मृ० १११८० मा० ९,
 ३ मुहावना, कृपा, अधिकार, मन्त्र—अवधमभग
 मालवि० ३४४, श० ११३ 4 प्रियतम, हृद,
 स्नेही, प्रिय—मुग्धि मुभय वश्यन् म त्वामुपेत्
 कृपायेनाम् गी० ५ ५ श्रीमान्, (—कः) 1 मुहावा
 2 अशोक वृक्ष 3 चणक वृक्ष ४ लाल कटमंडरा
 सदाबहार, (—कः) अच्छा भाग्य शान्ति, सुप्रकथम्
 (वि०) अपने आपको सौभाग्यशाली मानन वाला
 सुशील हिनकर बाबाल मा न खन् सुभगमयभाब
 कर्गनि मेघ० १४, भला 1 पति की प्रियतमा,
 प्रेयसी 2 सम्मानित मां 3 वनमालिका 4 हन्दी
 5 तुलसी का पोषा, कृष्ण पतिप्रिया पत्नी का पुत्र
 मङ्ग नागियल का वेद, मङ्ग (वि०) अत्यन्त
 या सौभाग्यशाली, (—कः) विष्णु का नाम (हा)
 बनगम और कृष्ण की बहुत का नाम जिसका विवाह
 अर्जुन के साथ हुआ था । उनसे अर्जुन्य नाम का
 पुत्र पैदा हुआ,—वाचिन् (वि०) 1 भली भाँति कहा
 गया, सुन्दर रूप में कहा गया 2 मुन्दर साधन
 करने वाला, वागी, (क्व) 1 सुन्दर भाषण,
 वाग्मिता, अधिकार—श्रीभर्तृ मुभावितम्—मृ० ३१२
 2 नीतिवाक्य, मुक्ति, समुपयुक्त कथन मुभाषितेन
 गीतेन युवतीनां च नीलया । मनी न जिह्वते वय-
 न् न है मुक्तोऽथवा वयः मुवा० ३ अच्छी उक्ति
 बालादपि मुभाषित (शाङ्गम्)—विद्वन् 1 अच्छी
 विद्या, सकल याचना 2 अन्न की बहुतायत, अनाज
 वास्त्यादिक की प्रचुर राशि, अन्नचरण,—पू (वि०)
 सुन्दर भीह बाला (स्त्री०)—पूः) मनोह स्त्री (दस

मन्द का संबोधन—ए० ब०—सुभू. बधता है; उत्पु.
 भट्टि, काकिदास और अथर्वतुति जैसे केतकों ने सुभू.
 का प्रयोग किया है सु० भट्टि० ६१११, सु० ५१४३,
 मा० ३१८, मति (वि०) बहुत बुद्धिमान् (स्त्री०
 -ति) 1 अच्छा मन वा स्वभाव, हृषा, परीपकार,
 लीहावे 2 देवी का अनुग्रह 3 उपहार, आशीर्वाद
 4 प्रार्थना, सूक्त 5 कामना, इच्छा 6 कर्म की
 पत्नी का नाम जो साठ हजार पुत्रों की माता थी,
 -मदन आम का मूल, कर्म, कर्मण्य (वि०)
 पदवी कर्मर दासा, कर्म्या, कर्म्य, मनोरम स्त्री,
 मन (वि०) बहुत आकर्षक, शिव, सुन्दर (क)
 1 गेहें 2 पत्नी (मा) पुत्रों से अमी बनेली,
 मनम् (वि०) 4 अच्छे मन दासा, अच्छे स्वभाव
 का, उदार 2 लव प्रसन्न, सपुष्ट, (पु०) 1 देव,
 देवता 2 विद्वान् पुत्र्य 3 वेद का विद्यार्थी 4 गेहें
 5 नीम का वृक्ष (स्त्री०, नपु०) कुछ विद्वानों के
 अनुसार केवल ब० ब० में प्रयोग) फूल स्वर्गीय
 एवं व सुमनसा मनिवेश—मा० १, (यहाँ सख्या १
 में दिया गया विशेषणार्थ अन्य भी अधिकृत है) -कि
 सेकने सुमनसा मनसापि गन्ध कस्तुरिकाबन्धनसहितयुता
 मृगेण रस०, सि० ६१६६, अन्नः शेष, अन्नम्
 नावफल, मित्रा दत्तारथ की एक पत्नी और लक्ष्मण
 तथा गणपति की माता का नाम, -सुख (वि०) (स्त्री०
 -सा, श्री) 1 सुन्दर चेहरे वाला, शिव 2 सुखा-
 वना 3 निर्दलित, आतुर कि० ६१४२, (क)
 1 विद्वान् पुत्र्य 2 मन्द का विशेषण 3 पक्षी का
 विशेषण 4 शिव का विशेषण, (कम्) मनुष्य की
 मरिच (मा श्री) 1 सुन्दर स्त्री 2 दर्शन,
 -सुखम् गाजर, शेषम् (वि०) अच्छी कसब कसने
 वाला, बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली (पु०) बुद्धिमान्, पुत्र्य,
 मेरु 1 'सुमेरु' नाम का पर्वत पर्वत 2 शिव का
 नाम, कस्तुरि सुन्दर दास, अच्छी चतुस्रह, -सोमः
 दुर्पोषन का विशेषण, -रत्नम् 3 वेद 4 एक प्रकार
 का मांस का पेय, रत्नः 1 कल्पः रथ 2 संहर
 षालुः मेरु, -रत्नम्: सुवारी का वेद, -रथ (वि०)
 1 मति प्रमोदी 2 श्रीशशील 3 अतीव सुन्दर
 4 कर्मभाव, सुकुमार, (कम्) है अती सुन्दर,
 अदानम् 2 लक्षण, कर्म, रति, -रत्नम्: सुवारी
 बालवतिता—मत् २१४४, अतीव सुन्दर सुवारी
 2 शिरोमूषण, शिर की आरत, अतीव सुन्दर
 अमान् कु० ११११, -रत्न (स्त्री०) अतीव
 बिलास, बालम्, मत्, -रथ (वि०) १. शशील
 दासा, रत्नीना, पक्षेदर 2 सुन्दर 3 अतीव
 (रत्ना), (क, कम्) विष्णुका पत्नी (क)
 पुत्रों का नाम, -रथ (वि०) १. अन्नम् कर्म

हुवा, सुंदर, मनोहर—सुकपा कन्ना 2 बुद्धिमान,
 विद्वान् (- व) शिव का विशेषण, -रथ (वि०)
 अच्छी आवाज वाला—कि० १५११६, (- म्) टोन,
 कल, -सक्य (वि०) 1 सुम व सुन्दर कर्मों से
 युक्त 2 भाव्याशाली, (कम्) 1 गिरीशम, सुपरी-
 शेष, निर्धार्थ, निरवधान 2 अच्छा वा पुत्र चिह्न,
 कर्म (वि०) 1 जो आसानी से मिल सके, सुभाष,
 प्राप्य, सुकर—न सुलभा सकलेन्दुमयी व ना विष्णु०
 २१९, इयमसुलभवस्तु प्राथनां दुतिवारम्—२१६
 2 तत्पर, अनुकूल बना हुआ, योग्य, उपयुक्त—निन्द-
 सुत्परशोषमोसुलभो साक्षारह. केनापि—श०
 ४५ 3. स्वार्थिक, समुपयुक्त—यानुभवासुलभो
 लभिसा—का०, शेष (वि०) जो धीरे धीरे हो
 बाय, जो आसानी से मरकाया जा सके, सोक्य
 (वि०) सुन्दर बालों वाला, (-म.) हरिण, (-मा)
 सुन्दर स्त्री, -सोहकम् पीनल, -सोहित (वि०)
 यहूरा मान, (ता) मति की सात विद्वानों में
 से एक, -कर्मम् 1 सुन्दर चेहरे वा मूल 2 बुद्ध
 उपचारण, कर्मण्य, -कर्म्य (नपु०) बालिमा,
 -कर्म्यः— का लज्जी, शार,—कर्म दे० कर्म के
 शीघे, बहु (वि०) 1 तहनशील, लहित् 2 बर्त-
 यान्, श्रेयसं वाला 3 जो आसानी से के बाया वा सके,
 -पारिणी 1 विवाहित वा एकान्त्री स्त्री जो अपने
 पितर के घर रहती है 2 विवाहिता स्त्री जिसका पति
 जीवित है, विष्णुत्त (वि०) बहुदुर, साहसी, दुर
 (-लम्) शीर्ष,—विन् (पु०) विद्वान् पुत्र्य, बुद्धि-
 मान् बालि (स्त्री०) बुद्धिपती वा चतुर स्त्री,—विः
 कर्म: दुर का लेशक, -विन् (पु०) राधा, -विष्णुः
 कर्म: दुर का लेशक ('वीमिपल्ल' का कर्मूद रूप)
 (-लम्) कर्म: दुर, रतिमत्,—विष्णुत्त विवाहित
 स्त्री,—विन् (वि०) अच्छी प्रकार का, -विष्णु
 (अन्व०) आसानी से,—विष्णुत्त (वि०) अमी-पति
 अधिपति, विन्द, (ता) कुलीय दास, -विष्णु
 (वि०) 1 अमी पति रत्ना हुवा, अच्छी तरह बना
 पिला हुआ 2 सुकर्मिक, सुलभा, साक्षात्कारी से
 सुलभ, पत्नी-पति कर्मण्य—सुविद्वानोपपत्ता मासेय
 न विष्णुत्त विष्णुत्त—श० १, कर्मण्यकल्पवर्ष-
 कर्मण्यरे अन्वुत्तित् ४० १, की (की) व
 (वि०) अच्छी शीघी कसब (-क) 1 शिव का
 लक्ष 2 कर्मण्य (-कम्) कसब शीघ, कौटिल्य
 शाली,—की (वि०) १. मति कर्मण्य 2 कर्मण्य
 कसब, सुकर्मिक पदाशाली, (कम्) 1 अतिशय
 2 सुकर्मिक की कसबकस ३ वेद का कर्म, (- श्री)
 कर्मण्य कसब,—कर्म (वि०) १. विष्णुत्त कसब,
 कसुकी, वेद, यज्ञ,—अति लक्ष सुकर्मिकी कम्-

सन्देशपथा सरस्वती—रघु० ८।७३ २ अञ्जा गोल
मुन्दर कर्तुलाकार या गोल मुन्दरति सुवृत्तेन सुवृष्टे-
नातिहारिणा । मोदकेनापि कि तेन निष्पत्तिस्यैव
सेवया,—या सुमुखोऽपि सुवृत्तोऽपि सन्नामं पतितोऽपि च ।
मृदा पादलनोऽपि व्यथयत्येव कष्टक (यहाँ
सभी विशेषण दोहरे अर्थों में प्रयुक्त किए गए हैं)

—बेज (वि०) १ शांत, निष्कल २ विग्न, निरन्ध
(—कः) विकृत पर्वत का नाम,—कल (वि०) धार्मिक
वृत्ते के पालन में दृढ़, सर्वथा धार्मिक तथा सद्गुणी,
(—कः) ब्रह्मचारी (—ता) १ मुन्दर पत बालो साम्नी
पत्नी २ शरील गाय, तीथी गाय जिसका दूध आसानी
से निकाला जा सके,—कल (वि०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, पसन्दी,
प्रशसनीय,—कल (वि०) सुसाध, जासान, सरल
—कल्यः खदिर वृक्ष,—कल्यम् अदरक,—कलित (वि०)
शरीर-भाति नियंत्रण में, सुनियंत्रित,—कलित (वि०)
सुविज्ञानप्राप्त, प्रशिक्षित, अच्छी तरह सहाया हुआ,
—कलित जनि (—का) १ मोर की शिक्षा २ मुर्ग की
कलगी,—कलित (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, मिलनसार
(—का) १ यम की पत्नी का नाम २ कृष्ण की जाठ
प्रेयसियों में से एक,—कल (वि०) १ अच्छी तरह
सुना हुआ २ वेदज्ञ,—कल (—तः) एक आयुर्वेद पद्धति का
प्रणेता, जिसकी कृति, परक की कृति के साथ-साथ
आज भी भारतवर्ष में प्राचीनतम आयुर्वेद का प्रामा-
णिक ग्रन्थ माना जाता है,—कल्य (वि०) १ अली-
भाति कमबद्ध, सयुक्त २ अली-भाति उपयुक्त मा०
१, क्लेशः आलियान या धनिष्ठ मिलाप, सवृद्ध
(वि०) देखने में शक्तिकर,—कल्य (वि०) सुनिर्देशित
(जैसा कि बाण), सल्ल (वि०) १ जो आसानी से
सहन किया जा सके २ महनशील, सहिष्णु (—हः)
शिव का विशेषण,—सार (वि०) अच्छे रस वाला,
रमीला (—रः) १ अच्छा रस, सत या अर्क २ मस-
मता ३ लाल फूल का लखिरवृक्ष, स्व (वि०)

१. समुपयुक्त, अच्छे अर्थ में प्रयुक्त २ अच्छे स्वास्थ्य
में, स्वस्थ, सुखी ३ अच्छी या समृद्ध परिस्थितियों में,
समृद्धिशाली ४ प्रसन्न, भाग्यशाली, (—कल्यम्) सुख
की निश्चित, कल्याण सुख्ये को वा न पश्चिन—हि०
३।२। (इसी अर्थ में सुस्थित)—कल्यता, स्थितिः
(स्त्री०) १ अच्छी वंशा, कुशल श्रेय, कल्याण,
आनन्द २ स्वास्थ्य, रोगोपशमन, स्थित (वि०)
प्रसन्नता पूर्वक मुस्काने वाला, (—ता) प्रसन्नवदना,
हंसमुख स्त्री,—स्वर (वि०) १. शरीला समुद्र स्वर
वाला २ उच्च स्वर, श्लि (वि०) १ निरान्त योग्य,
या उपयुक्त, समुचित २ श्लिङ्कर, श्लेषकर ३. शौहा-
संपूर्ण, स्नेही ४ सत्पुष्ट (—ता) जनि की सात
विज्ञाओं में एक, हृद् (वि०) कृपापूर्वक हृदय वाला,

हादिक, मंत्रीपुत्रं, प्रिय, स्नेही (पुं०) १ मित्र सुहृद
पदय बसत कि स्थितम्—कु० ५।२७, मन्दापत्ने न
कम् सुहृदाभ्युपेतोऽप्येकृष्या मेघ० ४० २ मित्र,
श्रेय मित्रो का विशेषण, श्रेयश्चम् सद्गुणवपुषं सम्मति,
हृद् मित्र, हृद्मि (वि०) १ मुन्दर हृदय वाला
२ प्रिय, स्नेही, प्रेमी ।

सुख (वि०) [सुख + अच्] १ प्रसन्न, आनन्दित हर्ष-
पूर्ण, सुख २ शक्तिकर, मधुर, मनोहर, सुहावना
दिश प्रवेष्टुमंलो बहु सुखा रघु० ३।१५ इसी
प्रकार—सुखश्रवा निम्बना—३।१९ ३ सद्गुणी,
पुत्राणाम् ४ आनन्द लेने वाला, अनकूल धा० ७।१८
५ आमान—कु० ५।४९ ६ योग्य, उपयुक्त,
—सुख १ आनन्द, हर्ष, सुणी, प्रसन्नता, आराम
—यदेवोपेतम् हु शासुख तदमनराम् विष्णु०
३।२१ २ समृद्धि बद्धेन सुखेण लयोरनुशय सर्वान्व-
द-चामु यम् उत्तर० १।२९ ३ कुशल श्रेय, कल्याण,
स्वास्थ्य—देवी सुख प्रष्टु गना मालवि० ८
४ चैन, आराम, (दुःखादिको का) प्रथम (प्राय
समाप्त में प्रयुक्त—यथा सुखशयन, सुखोपविष्ट
मुखाशय आदि) ५ सुविधा, आसानी, सहूलियत
६ स्वर्ग, वैकुण्ठ ७ जल, सख्य (अव्य०) १ प्रस-
न्नता पूर्वक, हर्ष पूर्वक २ मनुमान, स्वस्थ—सुख-
मान्ता अनाम (अनवान् आपको स्वस्थ तथा मनुमान
रक्षते) ३ आसानी से, आराम में—अमज्जानकिय-
स्कन्ध सुख स्वपिनि शौर्गिह—काव्य० १० ४ अना-
यास, आराम—अत्र सुखमाराध्य मुल्लनरमाराध्यने
विशेषज्ञ मत्तं० २।२ ५ वस्तुतः, इच्छा पूर्वक
६ सुपचाप, शान्ति पूर्वक। सम०—आश्वारः स्वय
आत्मन् (वि०) स्थान के लिए उपयुक्त, आशय
—आशय तव सहाया हुआ या सीधा घोड़ा, आरोह
(वि०) जिस पर चढ़ना आसान हो—आत्मिक (वि०)
मुदयान, प्रिय, मनोहर,—आशु (वि०) आनन्द की
ओर ले जाने वाला, सुहावना सुखकर, आशु बरण
का नाम,—आशक, ककड़ी,—आश्वि (वि०) १ मधुर
स्वादयुक्त, मधुर रसयुक्त २ शक्तिकर, आनन्ददायी
(—कः) १ सुखकर रस २ (सुख का) उपभोग,—उत्सव
१ आनन्द मनाना, मङ्गी, उत्सव, आनन्दोत्सव २ पति
—उत्सवम् परम पत्नी उत्सव आनन्द की अनुपति
या सुख का उपय, उत्सव (वि०) फल में सुखदायी
उत्सव (वि०) जिसका उत्सवार्थ हर्ष के साथ या
सुख से हो सके, उपविष्ट (वि०) आराम में बैठा
हुआ, सुख से बैठा हुआ, एषिम् (वि०) आनन्द
पाहने वाला, सुख की अविनाश करने वाला, कर,
—कार, शक्ति (वि०) आनन्द देने वाला, सुख-
कर, सुहावना,—च (वि०) सुख देने वाला, (—चा)

इन्द्र के स्वर्ग की वाराणसा, (बन्) विष्णु का आसन, —बोध. 1. सुख सवेदना 2 आसानी में प्राप्य ज्ञान, —भाषिण, भाष् (वि०) प्रसन्न, —ध्व, ध्वति (वि०) कानों को मीठा, कर्णमयूर, —कि० १४३, —सङ्गुन सुख का साथी, स्वर्ग (वि०) छुने में सुखकर ।

सुत (सू० क० कू०) [सु+त] 1 उड़ला गया 2 निकाला गया, या निबांठा गया (जैसे कि मांमरस) 3 जन्म दिया गया, उपाहित, वेदा किया गया, —त 1 पुत्र 2 राजा । सम० आत्सव्य. पोता, (—जा) पोती उपसि (स्त्री०) पुत्र का जन्म, —निश्चिषेष्म् (अव्य०) 'जा सीधे पुत्र में प्राप्त न हो' 'पुत्र की भाँति' रघु० ५१६, —बन्करा मात पुत्रो की माना, स्नेहः पिनुप्रेम, कामन्या ।

सुतवत् (वि०) [सुत+वत्] पुत्रों वाला । पु० पुत्र का पिता ।

सुता [सुत+टाप्] पुत्री, —नमर्षमिव भारत्या सुतया यासुपर्शसि कु० ५१७ ।

सुति [सु+तित्] सामरस का निकालना ।

सुतिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [सुत+इति] बन्धे वाला या बन्धो वाला, (पु०) पिता ।

सुतिनी [सुतिन्+नीप्] माता तेनाम्बा यदि सुतिनी रवाइद बन्ध्या कीदृशी भवति—मुद्रा० ।

सुतुम् (वि०) अच्छी आवाज वाला ।

सुत्या [सु+त्यप्+टाप्, तुक्] 1 सोमरस निकालना, या नेवार करना 2 यज्ञोप आहुति 3 प्रसन्न ।

सुत्रासन् (पु०) [सुत्तु जायते सु+त्र+अनिन्, पूषो०] इन्द्र का नाम ।

सुत्स्य् (पु०) [सु+स्रन्ति, तुक्] 1 सोमरस को उपहार में देने वाला या पीने वाला 2 वह ब्रह्मचारी जिसने (यज्ञ के आरम्भ में या पूर्वाहुति पर) आचमन और मंत्रों का अनुष्ठान कर लिया है ।

सुवि (अव्य०) [सुत्तु दीप्यति सू+वि+वि] चान्द्र-मास के शुक्लपक्ष में सु० 'चाँद' ।

सुष्माचार्यः (पु०) पतिव्रतस्य का सवर्णा स्त्री में उत्पन्न पुत्र—सु० मनु० १०।२३ ।

सुषा [सुत्तु पीयते, पीयते वे (वा)+क+टाप्] 1 देको का पेय, पीयुष, अमृत निषीय वस्य सितरिषव कया तवाशियन्ते न सुषा सुषामपि—ने० १।२ 2 कूलो का रस या मधु 3 रस 4 जल 5 गया का नाम 6 सफेदी, पलनर, चुना—कौलामागिरिणैव सुषामितेन शकारेण परिवृता—शा०, रघु० १६।१८ 7 ईंट 8 बिजली 9 सेहूडा । सम० अशुः 1 चाँद 2 कपूर, 'रसम् मीठी, अङ्ग, आकार, बाधारः चाँद, —बोधिन् (पु०) पलनर करने वाला, ईंट की बिनाई करने वाला, गर, इव. अमृत के समान

तरलद्रव्य, —ध्वलित (वि०) पलनर किया हुआ, सफेदी किया हुआ, विधिः 1. चाँद कपूर, अथवम् चूने लिया-मृता मकान, विधिः (स्त्री०) 1 पलनर की हुई दीवार 2 ईंटों की दीवार 3 पीपवो मुदित या रोपहरबाद,—सुष् (पु०) मुर, देव—सुतिः 1 चाँद 2 यज्ञ, आहुति—सुष् ईंट वा पत्थरों का बना मकान 2 राजकीय महल, —स्यः अमृतवर्षा,—सुष् (पु०) बद्धा का विशेषण, बन्तः 1 चाँद 2 कपूर, बन्ता एक प्रकार की ककड़ी,—सित (वि०) 1 चूने जैसा सफेद 2 अमृत जैसा उज्ज्वल 3 अमृत से भरा हुआ अमृतीचरम् यज्ञोप हरिकान्त सुषामित कि० १५।४५, (यहाँ पर इस शब्द का प्रथम और द्वितीय अर्थ भी पड़ता है), सुतिः 1 चाँद 2 यज्ञ 3 कमल—सुष् (वि०) अमृतमय, अमृत बहाने वाला—मनु० २।६, क्वा तासुजिह्वा, कोमल ताल का लटकना हुआ मांसल भाव, हृदः नरुड का विशेषण, दे० 'गवर्द' ।

सुषितिः (पु०, स्त्री०) [सु+षा+शित्] कुल्हाड़ा ।

सुषार [सुष् नालमस्य—शा० ब०, लस्य र] 1 कुतिया की ओरी 2 सीप का अर्धा 3 विधिया, घोरंवा ।

सुषाली (स्त्री) [सुष् नाली (षी) रम् अन्नसंनय सस्य प्रा० ब०] इन्द्र का विशेषण ।

सुष् (पु०) एक राक्षस, उपसुद का भाई, यह दोनों भाई निकुम्भ राक्षस के पुत्र थे (उन्हीं ब्रह्मा से एक वर मिला था—कि वे जब तक स्वयं अपना बध न करें, मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे) । इस वरदान के कारण वे बड़ा अत्याचार करने लगे । अन्त में इन्द्र को विनोदना नाम की अप्सरा सेवती पड़ी—विश्वके लिए शय्या करते हुए दोनों ने एक दूसरे को मार डाला ।

सुषार (वि०) (स्त्री०—री) [सुष्+अर] 1 प्रिय, मनोर, मनोहर, आकर्षक 2 सवर्षा, रः कामदेव का नाम,—री मनोरम स्त्री, एका भार्या सुन्दरी वा दरी वा—मनु० २।११५, विद्याचरसुन्दरीनाम्—कु० १।७ ।

सुसत (सू० क० कू०) [स्वप्+सत] 1 सोया हुआ, सोता हुआ, निद्रावस्त—न हि सुप्तस्व सितृस्य प्रविशन्ति युष्मे मृषा—हि० प्र० ३६ 2 लकवा मारा हुआ, स्तम्भित, सुध, बेहोश दे० स्वप्,—सम् निद्रा, यही निद्रा । सम०—स्यः 1 सोता हुआ व्यक्तित्व 2 मन्थराधि, सान्त्वन, —स्वप् (वि०) अर्थात्-वस्त, लकवा मारा हुआ ।

सुसित (स्त्री०) [स्वप्+सित्] 1 निद्रा, सुस्ती, ऊप 2 बेहोशी, लकवा, स्तम्भ, जाबध 3 चिपकाव भरौसा ।

मुषः [सुष्टु सोमनेत्र - सु + मा + क] 1 चांद 2 कपूर
3 आकाश, - मन्म पूम् भासि० १।८४।

सुर. सुष्टु गति ददात्यभीष्टम् - सु + रा + क] 1 देव,
देवता सुराग्रप्रियदाद् देवा - सुरा इत्यभिचिह्नुता
राम०, मुषदा तर्पयते सुरान् पितृपुत्र - विक्रम०
३।७ रघु० ५।१६ 2 ३३ की सखा 3 नृप 4 ऋषि,
विद्वान् पुरुष। सम० - अङ्गना दिव्यामना, देवी,
अप्सरा - रघु० ८।७९, - अर्षिषः इन्द्र का विशेषण
अरिः 1 देवो का मन्, राक्षस 2 मीघूर की
चीची, अहंम् 1 सोना 2 केसर, जाफरान, - आचार्य
बृहस्पति का विशेषण, - आप्सा 'स्वर्गीय नदी' गङ्गा
का विशेषण, - आत्म्य 1 मेरु पर्वत 2 स्वर्ग, वैकुण्ठ,
- इज्य बृहस्पति का नाम, - इज्या पवित्र तुलसी,
इज्य, ईजा, ईषरः इन्द्र का नाम, - उत्तम
1 मूर्ध 2 इन्द्र, - उत्तर चन्दन की लकड़ी, ऋषि
(सुरभि.) दिव्य ऋषि, - अर्षिषः, - काश, विरक्तमा
का विशेषण, - काम्यकम् इन्द्रधनुष, - मूष, बृहस्पति का
विशेषण, पालको (पु०) इन्द्र का नाम, - अर्षिषः
ब्रह्मा का विशेषण, त्वच, स्वर्ग का वृक्ष, कल्पवृक्ष
तोषक कौस्तुभ नाम की मणि, - बाष्प (नपु०) देव-
दार वृक्ष, - बोधिका गंगा का विशेषण, बुधुषो पवित्र
तुलसी, द्विच 1 देवो का हाथी 2 ऐरावत, द्विच
(पु०) राक्षस रघु० १०।१५, कनुष् (नपु०)
इन्द्रधनुष, - सुरधनुष इन्द्राक्षर न नाम शरासनम्
विक्रम० ४।१, - वृष- शारपीन, राल, तिम्बला
गंगा का विशेषण, - पतिः इन्द्र का विशेषण, पचम्
आकाश, स्वर्ग, - पर्वतः मेरु पहाड़, - वाष्पः स्वर्ग
का वृक्ष, जैसे कि कल्पतरु, - द्विचः 1 इन्द्र का
नाम 2 बृहस्पति का नाम, मूषम् देव के साथ अन-
न्यरूपता, देवत्वग्रहण, देववारीपण, मूषम् देवदारु
वृक्ष, - सुवृत्ति (स्त्री०) दिव्य तक्षी, अप्सरा, - सारिका
माली, हामुरी, लोके स्वर्ग, कालम् (नपु०)
आकाश, कल्मी पवित्र तुलसी, - बहिष्पु, वीरम्
- वृम् (पु०) अनुर, दानव, देव, लक्षम् (नपु०)
स्वर्ग, वैकुण्ठ, - सारिन्, लिष्पु (स्त्री०) गंगा - सुर-
सरिषिच तेजो बहिर्निष्पन्नमसाम् - रघु० २।७५,
- सुवरी, स्त्री दिव्यामना, अप्सरा विक्रम०
१।३।

सुरङ्गः, वा [?] 1 लेप 2 अन्न कृष मार्ग, मकान के
बीचे कीटा हुआ मार्ग - ऐकाचारिकेण तक्षी सुरङ्गा
कारयित्वा - दश०, सुरङ्गया बहिरपमतेषु गुप्ताम्
- मृता० २, ('सुरङ्गा' भी लिखा जाता है)।

सुरभि (वि०) [सु + र्भ + इत्] 1. मधुर गन्ध युक्त,
मूषमूषार, सुगन्ध युक्त पादलक्ष्मणसुराजिनवनशाता
श० १।३, मेघ० १६, २०, २२ 2 मुहावना,

हृत्कार 3 बमकीला, बमोहुर तां सौरभेयीं सुरभि-
यंशोभि 4 प्रियतम, मिषतनुव 5 विख्यात, प्रसिद्ध
6 बुद्धिमान्, विद्वान् 7 नेक, मला, जि 1 सुगन्ध,
सुगन्, सुवास 2 जायफल 3 माल वृक्ष की राल, या
कोई भी राल 4 चम्पक वृक्ष 5 शमी वृक्ष 6 कदव
का पेड़ 7 एक प्रकार की सुगन्धित घास 8 बमल
शत्रु विक्रम० २।२०, (स्त्री०) 1 सोबाज का
वृक्ष 2 तुलसी 3 मोतिपा 4 एक प्रकार की सुगन्ध,
या सुगन्धित पीथा 5 मरिचा 6 पृथ्वी 7 वायु
8 मन्दि देने में प्रसिद्ध वायु मुता तवीया सुरभे
हृत्वा प्रतिनिधिम् रघु० १।८१, ७५ 9 मातृकाजो
में में एक, (नपु०) 1 मधुर गन्ध, मुनाम, सुगन्
2 गन्धक 3 सोना। तच० 'सुरभि' सुगन्धित मन्थन,
सुगन्धकार की, - विक्रम 1 जायफल 2 लौंग 3 मुपारी
बाघ, कामदेव का विशेषण, मात्त बसत शत्रु,
मूषम् बसत शत्रु का आरम्भ

सुरभिका [सुरभि + कृन् + टाप्] एक प्रकार का केला।

सुरभिम्बत् (पु०) [सुरभि + मत्सु] अग्नि का नाम।

सुरा [सु + र्भ + टाप्] 1 मरिचा, शराब - सुरा में मलमप्रा-
नाम् - मनु० १।१३३, शोधी पृष्ठी च माथी व वित्रया
चित्रिया सुरा २४ 2 जल 3 पान-पात्र 4 मणि।
सम० आकार शराब लीचने की भट्टी, आसीन,
आसीनिम् (पु०) कलाज, - आत्म्यः मरिचामय
मद्यशाला, उब, शराब का मद्युद्ध, बहु मरिचा भर
कर रक्सा हुआ जर्जन, अन्ध शराब की दुकान के
बाहर टंगा हुआ ब्रह्मा, प (वि०) 1 शराबी,
मद्यप 2 मुहावना, हृत्कार 3 बुद्धिमान्, ऋषि
पालम्, पालम् मरिचा या शराब का पीना
पात्रम्, शोष्णम् शराब का प्याला, या गिलास
- भावः शमी, फेन, - क्वचः (शमीर पैदा होने के
समय) मरिचा के ऊपर उमने वाला फेन, - क्षणायम्
मरिचा लीचना।

सुरभं (वि०) [सुष्टु यशोऽज्य- प्रा० ब०] 1. अच्छे
रंग का, सुन्दर रंग का, बमकीले रंग का, उज्ज्वल,
पीला, सुनहरा 2 अच्छी जाति या बिरादरी का
3 अच्छी स्थिति का, धार्मिक, विख्यात, - श्री 1 अच्छा
रंग 2 अच्छी जाति या बिरादरी 3 एक प्रकार का
यज्ञ 4 दिव्य का विशेषण 5 चतुरा, बंम् 1 सोना
2 सोने का सिक्का (पु० भी) मन्वह दश सुवर्णम्
प्रपञ्चयि - मूष० २ 3 तोलह मासों के बराबर
सोने का तोल या १७५ सेन के लगभग (पु० भी)
4 धन, शौच, ऐश्वर्य 5 एक प्रकार की पीले चन्दन की
लकड़ी 6 एक प्रकार का मेह। सम० - अग्निष्वाकः इन्द्रा
श्रीर पुनित्ति पर उस जल के छोटें देने जिसमें सोने
का टुकड़ा डाला हुआ हो, - कर्षणी केले का एक

प्रकार,—कर्म, कार,—कृत् (पुं) सुवार,—गणितम्
गणित में हिसाब लगाने की एक विशेष रीति,
—बुधित (वि०) सोने से भरा-पूरा उदा० मुबर्-
पुणित्वां पृथ्वी विचिन्वन्ति यद्यो जना । सुवर्ष कल-
विद्यया यथा जानाति सेवितुम् पृ० १४५,—बुध
(वि०) सोना चढा हुआ, सोने का मूल्यमा यदा
हुवा, बाणिज्यमन्विय यदायं विशेष, सोनाप्राप्ती,
—सूची पीली वृही,—कृष्क (वि०) सोने और
चांदी से भरपूर, रेलम् (पुं) गिव का विशेषण,
बर्षा हन्दी, विद्ध जिम्मेन आद्रु मे माना प्राप्य
कर लिया है,—स्तेष्व् सोने की चोरी (प्राय महापातकी
में से एक) ।

मुबर्कम् [मुबर् + कन्] १ पीतल, कामा २ सोना ।

मुबर्कम् (वि०) [मुबर् + मत्पु] १ मुनहरा २ मुनहरे
रग का, सुन्दर, मनोहर ।

मुबध (वि०) [मुष्टु सम सर्व उम्मात् प्रा० व०]
अप्यन प्रिय वा सुन्दर, बहुत मुबकर,—सा परम
सौन्दर्य, अत्यधिक आमा या कामीन कुवव-वुमुम
बपनामुबध—वीण० उ, मुयमावियये परीक्षण विविल
पद्यमभाजि तन्मुभात् नै० २३३, भासि० १।
२६ २।१२ ।

मुबधी [मु + मु + अच् + डीप्] १ एक प्रकार की लोकी
२ काला बीरा ३ बीरा ।

मुबाध (पुं) गिव का विशेषण ।

मुबि (स्त्री०) [मुप् + इन्, पुग० शम्य स] छिद्र,
सूराय, तु० गवि ।

मुबि (बी) म (वि०) [मु र्पे + मक्, सम्प्रसारण,
पुग०] १ शीतल, ठंडा २ मुबकर, गचकर, म
१ शीतलता २ एक प्रकार का माप ३ चन्द्रशान-
मः ।

मुबिधर (वि०) [मुप् + कश्च्, पुग० शम्य स] १ छिद्रों
में पूर्ण, स्वाभला, मरुद्ध २ उन्मत्तग में मन्द, रम्
१ छिद्र, रग्ध, सूराय २ काई भी बाजा जी हवा
में बने ।

मुब्वि (स्त्री०) [मु + व्वच् + क्तिन्] १ बहरी या
प्रागड जिहा प्रागड विश्राम २ भारी बेशाबी, प्रथमिक
भ्रान्त अविचारमिका इ बीजमाक्तरव्यापयन्-
निरेव्या परमेश्वराश्रया मायामयी महासुपुनियस्था
स्वरूपप्रतिबोधार्थिना शरने मसागिणी जीवा—ब्रह्मसुभ
पर गारी० भाष्य १४५।३ ।

मुब्वि [मुप् + म्वा + क] मुय की प्रधान क्रियाओं में से
एक, म्वा गरीय की एक विशेष नाडी या इडा
नवा विमला नाथ की बाहिजाश्री के मध्य में
द्वित है ।

मुष्टु (अध०) [मु + ष्टा + कु] १ अच्छा, उत्तमता के

माप, सुन्दरता से २ मयठ, बहुत म्यादह सुष्टु
सोभने आर्कसुष्टु एवेम विनयमाहात्म्येन उत्तर० १
३ सचमुष्टु, ठीक,—कव्य सुष्टु प्रयुक्त—सर्व०,
अपवा सुष्टु वाक्विरयुष्यते ।

मुषधम् [मु + ष्ठ्, मुष्टु] रग्गी, डोरी, रन्गु ।

मुष्टाः (पुं, व० व०) एक राक्षस का नाम—आमा
सर्गतिन मुष्टीवृत्तिवाधित्य वेतसीम्—रघु० ४।३५ ।

मु [अदा० रिवा० आ०—सुते, सुवते, सुत] उत्पन्न करना,
पंदा करना, अन्य देना (आल० से प्रो) अमृत का
नामवपुषधोन्वम् कु० १।२०, कीर्ति सुते दुष्कृत
या हिनसि उत्तर० ५।३१, इ—, उत्पन्न करना
पंदा करना, अन्य देना ।

॥ (मुदा० व० मुवति) १ उल्लेखित करना, उक्ताना,
प्रतिन करना २ (शुच का) परिशोध करना ।

मु (वि०) [मु + क्तिष्] (समास के अन्त में प्रयुक्त)
उत्पन्न करने वाला, पंदा करने वाला, फल देने वाला
(स्त्री०) १ अन्य २ माता ।

मुक् [मु + क्त्] १ बाध २ हवा, वायु ३ कमल ।

मुकर [मु + करन्, क्ति] १ बगल, मुकर—दे० मुकर
२ एक प्रकार का हरिण ३ कुम्हार, री १ मुबरी
२ एक प्रकार की काई, सेवाल ।

मुक्म [मुक् + मन्, मुक् च नेट्] १ बागिक, महीन,
आणविक—आकाशस्त्वमुदी० यन् मुक्म दृश्यते रज
२ बोहा, डोटा—इदमुपहितमुक्मशब्धिना स्कन्धदेहे
ग० १।१८, रघु० १।८५९ ३ बारीक, पतला,
कामल, बहिया ४ उत्पन्न ५ लेख, तीक्ष्ण, बेबी
६ कलाभिन्न, चालढाड, पूर्ण, प्रवीण ७ यथायं, यथा-
गन्ध, विष्कल तही, ठीक,—कम् १ अन्य, २ केतक
का पीया ३ गिव का विशेषण,—कम् १ सर्वव्यापक
मुहम तस्व, परमत्मा २ बारीकी ३ मन्वायिगो द्वारा
प्राप्य नीव प्रकार की मन्विगो में से एक, तु० सावध
४ कलाभिन्नता, प्रवीणता ५ आलमाडी, पीया
६ बारीक धारा ७ एक जलकाय का नाम जिसकी
परिभाषा मन्मत ने इस प्रकार की है कुतोऽपि
नक्षित मुक्मोऽप्यप्योऽप्यग्ने प्रकाशयेत् । धर्मल केनचि-
द्यत तन्मुक्म परिच्यते ॥ काव्य० १० । सप०

एषा सोटी इलायकी, लक्ष्मण पोस्त, लक्ष्मण
१ पीपल, पीपली २ एक प्रकार का घास, बहिला
मुक्मदृष्टि होने का भाव, तीक्ष्णता, अप्रदृष्टि, बुद्धि-
मानी—बहिलम्, दृष्टि (वि०) १ तेज नबर वाला
ध्येन जैमी दृष्टि बाला २ बारीक विवेचनकर्ता
३ तीक्ष्ण, तेज मन वाला,—बाध (नपु०) लक्ष्मी का
पतला लता, फलक, देह,—बारीकृ लिय बारीक
की मुक्म पच महाभूतो ने वृत्त है,—बध १ बतिया
२ एक प्रकार का मयणी बीरा ३ एक प्रकार का

लाभ करना 4. बहल का वेष्ट 5. एक प्रकार की तरली, — वहाँ एक प्रकार की तुलसी, — विष्णुजी बनपीपली — बुद्धि (वि०) तेज बुद्धि वाला, प्रखर, बुद्धिमान, प्रतिभावाली, (स्त्री०—ह्रिः) तेज बुद्धि, मूलम प्रतिभा, मौलिक प्रपत्तता, — बलिष्कम्, — का मच्छर, दास, — मानम् यथायं माय, सही से गणना (विप० ल्युल-मान—जिसका अर्थ है—सुखी माय, माटी माय) — शर्करा बारीक बबरी, रेत, बालुका, — शालि एक प्रकार का बारीक चावल, बट्टचरण. एक प्रकार की नू, जमज् ।

सूच (बुरा० उभ० सूचयति—ने, सूचित) 1 बीघना 2 निदेश करना, इंगित करना, बतलाना, प्रकट करना, सावित करना—त्वा सूचयिष्यति तु मास्वसम्-द्रुशोऽयं (गन्ध० सूच० १।३५, वेध० २१, स० १।१४ 3 भेद जोलना, प्रकट करना, प्रकटाफोड करना—स ज्ञानु सेव्यमानाऽपि गुणद्वारी न सूचयते ग्यु० १।७५ 4 हावभाव व्यक्त करना, अभिनय करना, इशारों से सूचित करना वामाश्रित्यन्त सूचयति, रथवेग सूचयति—आदि 5 पता लगाना, मूल भेद जानना, निश्चय करना : ब्रह्मि, दिखलाना, संकेत करना अमन्यत नल प्राप्त कर्मचेष्टाभिः सूचित—महा०, प्र.—सम्, संकेत करना, सूचित करना सर्वोमो हि विद्यात्मन् समुचयति ममम् सूचता० ।

सूच [सूच + अच्] कुशा का नुकीला अक्षुर या पत्ता ।

सूचक (वि०) (स्त्री०—विष्वा) [सूच + क्त] 1 संकेत पारक, संकेत करने वाला, सिद्ध करने वाला, दिखलाने वाला 2 प्रकट करने वाला, सूचित करने वाला, — क 1 वेधक 2 सूई, छिद्र करने या सोने के लिए काई उपकरण 3. सूचना देने वाला, कहानी बतलाने वाला, बदनाम करने वाला, भेदिया 4 वर्णन करने वाला, पढ़ाने वाला, सिखाने वाला 5 किसी मण्डली का प्रबन्धक या प्रधान अभिनेता 6 दूध 7 सिद्ध 8 दुष्ट, बदमाश 9 राक्षस, पिशाच 10 कुत्ता 11 कौवा 12 बिलाव 13. एक प्रकार का महीन चावल । सय० बाल्यम् किसी सूचना देने वाले द्वारा दी गई सूचना ।

सूचनम्—ना [सूच भावे ल्युट्] 1 बीघने या छिद्र करने की क्रिया, सूराज करना, छेदना 2 इशारे से बताना, संकेत करना, सूचित करना 3 विषय सूचित करना, भेद जोलना, कलक लगाना, बदनाम करना 4 हाव-भाव प्रकट करना, उचित चेष्टाओं या चिह्नों से संकेत करना 5. इशारा करना, इंगित 6 सूचना 7 पढ़ाना, दिखाना, वर्णन करना 8. नुत भेद जानना, रहस्य का पता लगाना, देखना, निश्चय करना 9 दुष्टता, बदमाशी ।

सूचा [सूच + अ + टाप्] 1 बीघना 2 हावभाव 3 भेद जानना, देखना, दृष्टि ।

सूचि— की (स्त्री) [सूच + इन् वा डोप्] 1 बीघना, छेद करना 2 सूई 3 तब गोक, या नुकीली पत्ती (कुशा आदि की) अभिनयकुशलपुष्पा परिजल मे चरन्मन्—स० १. इसी प्रकार 'मन्ने कुशमूर्तिविद्धे—स० ५।१४ 4 तेज नाक या किसी वस्तु का सिगा क कर प्रमाणेत् पश्याग्नमूचय कु० ५।६२ 5 बलिका की नाक 6 एक प्रकार का सौंकरव्यूह, स्तम् या पक्षि — दृष्णम्भुव नमार्गं यायात् शकतेन वा । बग्राभक-गम्या वा सूच्या वा गृहनेन वा मन्० ७।१८० 7 मयलवृद्ध के पाशों से निमित्त विक्राण 8 शकु म्लूय 9 प्रवेष्टाभ्रा मे संकेत करना, संकेता इशां बतलाना, हावभाव 10 नृपविशार 11 नाटकीय कर्म 12 विषयानक्रमिकाया विषयसूची, 13 पत्राग्न विवर्णिका 14 (व्याज० में) प्रश्न की समग्रता क लिए पृष्ठा का गोना । सय० अष्ट (वि०) सूई की भाँति नाक वाला, सूई के समान तेज नाक रखने वाला, पैना तिया हुआ, (प्रम्) सूई की नाक,—वास्य च हा, कटाहव्याय दे० व्याय क नीचे, ज्ञात म्लूय की सूदाई, शकु, पत्रकम् अनुक्रमिका, विषयसूचि (—क) एवं प्रकार का शाक, मिलाकर सुख केनक दूध भिन्न (वि०) काली के किनारों का मिलना पाण्डुभाषावर्णनवृत्तय केनर्क सूचिभिर्भे वेध० २८, भेद (वि०) 1 जा सूई के द्वारा बाधा जा सके 2 माता मयन घार, गाड़ा, बिल्कुल,—इत्रानाके नर-पतिपत्ने सूचिभेदेऽन्ममोभि 3 म्पञ्चमय, महमघाष्ट, मूच (वि०) 1 सूई जैसे मूल वाला, नुकीली पाँच वाला 2 नुकीला, (—क) 1 पत्ती 2 सफेद कुशा 3 हावा की विशेष स्थिति (—कम्) हीरा, रोमन् (प०) मूलर, बहल (वि०) सूई जैसे मूल वाला, नुकीली चाच वाला, (—न) 1. हाव, मच्छर 2 नेकभा, — शालि एक प्रकार का बारीक चावल ।

सूचिकः [सूचि + क्त] दूही ।

सूचिका [सूचि + क + टाप्] 1 सूई 2 हाथी की नाक । सय०—बर हाथी, — सूच (वि०) नुकील दूध वाला, नुकीले मिर वाला, (—कम्) हाव, सोपी, शाक ।

सूचित (सु० क० कृ०) [सूच + क्त] 1 बीघा हुआ, सूराज किया हुआ, सिद्धित 2 इशारे से बतलाया हुआ, दिखलाया हुआ, सूचना दिया हुआ, संकेतित, इंगित किया हुआ 3 बतलाया गया या हावभावों से संकेतित 4 सभा-घार दिया गया, उक्त, प्रकट किया गया 5 निश्चय किया गया, ज्ञात ।

सूचिन् (वि०) (स्त्री०—की) [सूच + चिन्] 1 वेधने वाला, छिद्र करने वाला 2 इशारा करने वाला,

सूचना देने वाला, संकेत करने वाला 3 बिचड़ सूचित करने वाला 4 रहस्य का पता लगाने वाला (पु०) भविष्या, सूचना देने वाला ।

सूचिनी [सूचिन् + ङीप्] 1 सूई 2 रात ।

सूची दे० 'सूचि' ।

सूचय (वि०) [सूच् + ध्यत्] सूचिन किये जाने योग्य, जताया जाने वाला ।

सूत् (अध०) अनुकरणात्मक स्वरि (जैसे सराटे का शब्द) ।

सूत (सू० क० कृ०) [सू + क्त] 1 जन्मा हुआ, उत्पन्न, जन्म दिया हुआ, पैदा किया हुआ 2 प्रेरित, उद्गीर्ण, तत्त्ववान् सारथि—सून चादद्याञ्चान् पुण्याश्रम-दर्शनं तावदान्मान पुनीमहे—श० १ 2 ब्राह्मणवर्ण की स्त्री में क्षत्रिय द्वारा उत्पन्न पुत्र (इसका कार्य रथ हाकने का होता है)—सन्निपाद्विप्रकन्याया मूनी ब्रवीति जणित मनु० १०।११, मूनी वा मूलपुत्री वा यो वा को वा भवाम्यहम् वेणी० २।३३ 3 बहीजन 4 रथ-कार 5 सूर्य 6 व्यास के एक शिष्य का नाम त, तम् पारा । सम०—तनय० कर्म का विशेषण, राक्ष (पु०) पाग ।

सूतकम् [सूत + कन्] 1 जन्म, पैदागम—मनु० ४।११२ 2 प्रसन्न (या गर्मगम) के कारण उत्पन्न जलोच (जननाशौच),—क,—कम् पारा ।

सूतका [सूत + कन् + टाप्] सद्य प्रसूता, वह स्त्री जिसमें हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, जच्चा,—। ० ५।८५ ।

सूता [सूत + टाप्] जच्चा स्त्री ।

सूति, (स्त्री०) [सू + क्तिन्] 1 जन्म, पैदागम, प्रसव, जनन, बच्चा पैदा करना 2 सन्तान, प्रजा 3 श्रोत्र मूलश्रोत्र, आधिकारण तपसा सूतिरदुतिरापदाम् कि० २।५६ 4 वह स्थान जहाँ सोमरस निकास जाता है । सम०—अशौचम् परिवार में बच्चे के जन्म के कारण अपविष्टता (जो दस दिन तक रहती है),—गृहम् जच्चा घर, प्रसूति-गृह,—भागः (सूती-भाग् श्री) प्रसव का महीना, गर्भाधान के पश्चात् दसवाँ महीना ।

सूतिका [सूत + कन् + टाप्, इन्द्रम्] वह स्त्री जिसके हाल ही में बच्चा हुआ हो, जच्चा । सम० अवारणम्,—गृहम्,—गोहम्,—अभवम् जच्चाखाना, सारी,—रौचः प्रसव के पश्चात् होने वाला रोग, प्रसवजन्म रोग,—कष्टी प्रसव के पश्चात् छठे दिन पूजी जाने वाली देवी विशेष का नाम ।

सूतचम् [सू + उच् + प् + अच्] मदिरा का सींचना या बुझाना ।

सूचा [सू + क्चप् + टाप्, तुच्] दे० 'सूचा' ।

सूच (पूरा० उच० सूचयति-ते, सूचित) 1 भाषना, कलना धाना डालना, नत्वी करना 2 सूच के रूप में या संक्षेप से रचना करना तथा च सूच्यते हि प्रयत्नात् पिङ्गलेन, जैमिनिरपि इदमपि धर्मलक्षणमसूचयत्, आदि 3 योजना बनाना, अभिबद्ध करना, ठीक पद्धति में रखना तन्निपुण यदा निगुष्टायंतूतीकल्पं सूच-यितव्यं—भा० १-३ गिष्ठित करता, डीला करता ।

सूचसूच [अच्] 1 भागा, डारी, रेखा, रस्सी—पुष्पमा-कान्पुङ्गव सूच शिरसि धार्यते—सुभा०, यन्वी बच्च-समूचीर्णं सूचस्येवाति मे गति—रघु० १।४ 2 रेखा, तन्तु—सुरागना कर्षति लब्धिताद्यान्तुम् मृगा-लादिब रावहृमी—विक्रम० १।१९, कु० १।४०, ४९ 3 तार 4 धागे की आटी 5 यज्ञोपवीत, जनेक (जो पहने तीन वर्ष धारण करते हैं)—मिसासूचवान् ब्राह्मणः नरकं 6 पुनःकिका का तार या डोरी 7 सक्षिप्त विधि, गुरु सूच 8 परिभाषा परक सक्षिप्त वाक्य परिभाषा—स्वत्याश्रममन्दिग्य सारबिधिरनो मूचम् । अर्नाभमनवश च तूच सूचविदो विदु ॥ 9 सूचधन्य उदा० मानवकल्प सूच, आपस्तवसूच 10 विधि, धर्म—सूच, आज्ञाति (विधि में) । सम०—आत्मन् (वि०) डोरी या धागे के स्वभाव वाला, (पु०) आत्मा, -आत्मी माना, (जो कष्ट में पहुँची जाय, हार,—कष्टः 1 ब्राह्मण 2 कद्वर, पैड़की 3 सजब पसी,—कर्मन् (नपु०) बड़ई का काय—काट, झुत् (पु०) सूच रहने वाला, कौच,

कौचकः डमरू, डुगडगी,—पिष्टिका एक प्रकार की पिष्टिका जिसका उपयोग बूलाहे धागे लपेटने में कर्ने हैं,—अरक्षम् वैदिक विद्यामन्दिर जिनके द्वारा अनेक सूचधियों का निर्माण हुआ,—अग्नि (वि०) कम धागे वाला वह कपडा जिसमें थोड़े धागे लगे हो, झोला—अथ पट सूचदरिद्रता तत—मृच्छ० २।९,—अट, भार 1 'डोरी पकड़ने वाला' रगमच का प्रबन्धक, वह प्रधान नट जो पात्रों को एकत्र कर उन्हें प्रसिद्धित करता है, तथा जो प्रस्तावना में प्रमुख कार्य करता है—परिभाषा यह है—नाह्यस्य यदनुष्ठानं तत्सूचं स्यात् सवीजकम् । रङ्गदेवतपुत्राङ्कत् सूचधार इति स्मृत ॥ 2 बड़ई, दस्तकार 3 सूचकार 4 इन्द्र का विशेषण, -पिष्टकं बुद्धमन्वी पिष्टिकं का प्रथम लक्ष,—पुष्पः कपाल का पीषा,—भिद् (पु०) दर्वी—भूत् (पु०) सूचधार, -कम्पू 1 'भागा यश्' डरकी 2 जलाहे की लखड़ी, बीषा एक प्रकार की बासुरी—केचनम् जलाहे की डरकी ।

सूचधम् [सूच + ध्युच्] 1 मिला कर नत्वी करना, कम में रखना, कम बद्ध करना 2 सूचों के अनुसार कम-पूर्वक रखना ।

यमन करना (सभी अर्थों में), पीछे जाना, ध्यान देना, पैरों करना 2 पहुँचना, (अपने को) पहुँचना- पूर्वो- विद्यायन्मुखर पुरीम् ३०. तेनोदीयो दिशाम्पु- सरै-५७ 3 अनुष्ठीलन करना, पार करना (प्रेर०) 1 अग्रणी होना बायुत्तरसापत्वीव माम् राम० 2 पीछे चलना, अग्र, 1 अलग होना, निवृत्त होना, बापिस लेना यदपसरति मेघ- काण्ड लम्प्रहर्षम्-पद्य० ३।६३ 2 ओझल होना अल्पघन होना (प्रेर०) भिववाना, पहुँचाना, हटना, बापिस हटना, दूर होक देना अपसारय घनमार -काण्ड० १, मनु० ७।१४९, अग्नि 1 जाना, पहुँचाना - कि० ८।६ 2 मिलने के लिए जाना या आगे बढ़ना (किमी निश्चय म्याल पर), निपट करके मिलना मुन्दगीरभिर्मसार का० ७८, शि० ६।२६ 3 आक्रमण करना, हमला करना, (प्रेर०) निपट करके मिलना, मिलने के लिए आगे बढ़ना क्लमना- नभिसितारविपुषाम् शि० १०।२०, कि० ९।३८, मा० ३० ११५, उद्दि (प्रेर०) दूर भगाना, निकाल देना, उध- 1 पास जाना, पहुँचना, -रघु० १९।१६ 2 सजय रहना, दखान देना-केन्द्रासनावयम्पुम्पुम्पु निब- संभाना-विक्रम० १।३ 3 चर्चा करना, आक्रमण करना 4 आपस में टोका करना, निम्न - 1 चले जाना, बाहर निकलना, निम्नक जाना, निकलना -आगे स्वरकायंकरि मर्षे मम०, उद्यो प्रहार -वसुधात्मनि मूर्तादिवाग्निने शि० १।२५ 2 विदा होना, कूच करना मनु० ६।८ 3 वहना, पसोवना, निम्नता -यो त्रेमकम्प्रम्वरनि मनास म्-रम्य मनु- पयमा रम्य-रघु० ३।३६ (प्रेर०) टाक कर दूर करना, निष्कारित करना वापर निकाल देना परि- , चारो ओर वहना-वन सम्प्रवर्षे पन्थिमार- शैत०, परिमवमुराण-महा० ८ चक्कर काटना, घुमना प्रदक्षिण न परिम्वय-भाय०, (परिभ्रमि- के म्याल पर परिम्वरि-पाठान्तर) जिनो आनिमद्वाग्निव्यम् -सायलि० २।३३, प्र- 1 वर होना, रम्भा, उदय होना, प्रादग्म होना -नागिनावा मनात्र प्रम्वम्वत्र कायकृन्- महा० 2 गे जाना, अगे बढ़ना कैला- निशाय प्रनुना मुक्कः -रघु० ३।३१, २, श्लेषाण- प्रम्वे च मिषवणे -५० 3 फैलना, चारा ओर फैलना कानन कि मासाप्रम्वरि दिशा नेत्र निपत्य -वा३० १० प्रम्वरि निवामये लयप्रम्वि अगेन (इवाग्नि) उरु० १।२५ 4 फैलना, छा जाना, पाना होना पम्वरि परिमारी काण्डय लम्पार मा० १।८७ निवरा निवरा पम्वरि यदपसरति चेनापिसार-उत्तर० ३।३६ ५ विद्याया जाना, विस्तार करना -न मे श्लो प्रम्वर ७० ५ 6 (किमी)

कार्य को करने के लिए) उन्मुख होना, इच्छुक होना, न मे उचितेषु करणीयेषु हस्तपादप्रसरति-अ० ४, प्रसरति मय कार्याभ्ये 7 छा जाना, आरम्भ करना, उपक्रम करना-प्रससार बोसव कथा० १६।८५ 8 लम्बा होना, दीर्घ होना विक्रम० १।२२ 9 पव- रन होना, प्रवल होना-प्रसतार सश्वम् दश०, 10 (समय) बिताना, (प्रेर०) 1 फैलाना, बिछाना मट्टि० १०।४४ 2 बिछाना, विस्तार करना, (हाथ बादि) फैलाना काल सर्वभयान प्रसागितकरो गृह्णानि द्वावादपि पद्य० २।२० ३ फैलाना, बिस्ती के लिए फैलाना-केदार श्रीयोपनि बुद्धधापणे प्रसारित मय्यम सिद्धा०, मनु० ५।१२९ ४ बोझ करना, (आँसु की बूतली को) फैलाना 5 प्रकाशित करना, उद्घोषा पीठना, प्रचारित करना, प्रति, 1 बापिस जाना, लौटना 2 वाचा बोलना, चट जाना, आक्रमण करना, हमला करना- दैव्य प्रत्यम- रैव मयो मल्लिक द्विपुम् हरि० (प्रेर०) पीछे का ओर झुकेलना, बदल देना कनकवलय मय्ये अम्य मया प्रतिसायेते श० ३।१३, शि० फैलाना, बिस्तार होना, प्रसृत होना- चकीचदङ्कलमुप्रशुचो विराम् -शि० ५।८, ९।१९ ३०, कि० १०।५३ (प्रेर०) 1 फैलना, बिछाना 2 व्याप्य होना, सम्- 1 फैलना 2 छिडाना-जलना 3 मिलकर जाना या उठना 4 जाना, पहुँचना-पापान् मय्य मयासाग् प्रेष्यता यानि शक्तु-मनु० १०।७०, (प्रेर०) 1 ऊपर फैलाना 2 घुमाना, चक्कर देना अग्वादिश्रवैरिणो मयाग् यनि चक्रन् प्र० १५।२० ६।

सक [म् । क] 1 हवा, वायु 2 वाण 1 वज्र 4 कण्ड, करार ।

सकष्ट (श्री०) [म् । विक्रम, गुण० तृक् न मः षक् क० सं०] बुद्धली ।

सुकाल [म् । कालन्] दे० 'शुवाल' ।

सुकम्प, सुकम्पी, सुकम्पन् (तपु०) } सुज् । कन्, कनिन
सुकिकम्पी, सुकिकम्पन् (तपु०), सुकम्प, } कर्वाणि वा } मुह का
सुकवणी, सुकवन् (तपु०), सुकिकम्पी, } कितारा सुकिकम्पी
सुसिधन् (तपु०) } परिश्लेषिहन् पद्य० १ ।

सुग् [म् । गृक्] गड प्रकार का वाण या नेत्रा, शिदि- वाण ।

सुवाल [म् । वालन्] दे० 'शुवाल' ।

सुवका (श्री०) श्लो या मणियों मे बना हार, मणियों की सममार्गी लरी ।

सुवक (तुदा० पर० मूर्तिनि, मूट् । 1 रचना करना देना करना, बनाना, प्रथम करना, काम देना अर्धेन

माती तथा स विराजयमान् प्रभु मयु० ११२२, २३, २४, २६, तन्तुनाम स्वत एव तन्तुत् सुव्रति—आरी० २ पहनुना, रसना, प्रयोग में लाया ३ जाने देना, डीला छोड़ना, मुक्त करना ४ उत्सर्जन करना, छितराना, प्रेषित करना, बिखेरना, डालना—अभाङ्गरज कचन स्वत—भट्टि० ३१९७, आनन्द-कीशामिह बाणभृष्टि हियसुति हैमयथी ससर्ब—रघु० १६४४, ८१२५ ५. कहना भेजना, उच्चारण करना, कु० २१५३ ७।४७ ६ फेंकना, डाल देना ७ छोड़ना, छोड़ कर चले जाना, त्यागना, हटा देना ।

११ (दिया० आ० सूच्यते) डीला होना, इच्छा० (सिद्धयति) रचना करने की इच्छा करना । अति—, ११, अर्पण कला—विष्णु० ११५, रघु० ११। ४८ २ त्यागना, पदच्छेद करना ३ उगलना ४ अनुज्ञा देना, अनुमति देना, अग्नि , देना, प्रदान करना, अथ , १ डालना, फेंकना, बोना (बीज) बखेरना, अथ एव सप्तवीथी नाम बीजमयामुज्ज—मनु० ११८ २ डालना, बूद-बूद टपकाना—उत्तर० ३१२३ ३ डीला छोड़ना, अथ , १ उड्डेना, उगलना, निकाल देना,—अथकोटि स्वामिवात्ससर्बे कु० ३१२५, महल्लयुधुमकण्ठमादते हिर रथि—रघु० ११८, उड्डेन देना, बापिस देना वा कौटाना २ (क) छोड़ कर चले जाना, छोड़ देना, परित्याग करना,—रघु० ५१५१, ६४६, कु० २१३६, (ख) एक ओर फेंकना, स्थगित करना—म जायसुसुव्य विवृद-मय्य—रघु० ३१५०, ४१५४ ३ डीला छोड़ना, स्वच्छन्द सुमने देना नुरङ्गमच्छन्दमनल पुन—रघु० ३१३९ ४ हागना, फेंकना, गौली मारना—भट्टि० १४१६५ ५. बोना, (बीज) बखेरना ६ उपहार देना, प्रदान करना ७ बिछाना, बिसार करना ८ हटाना ९ दूर करना १० मिटाना, प्रतिबन्ध नगाना, अथ , १ उड्डेना, (अथ आदि) प्रस्तुत करना २ बीजना, मिलाना, मयुक्त करना, समक करना, संबद्ध करना मुक्त दुकोपसृष्टम् ३ व्याकुल करना, आयाचार करना, मताना—रोमोपसृष्टतद्वर्षमति ममलु—रघु० ८१४४ ४. ब्रह्म लगाना, दान करना, मनु० ४१३७ याज्ञ० ११२७ ५ पैदा करना, क्रियावित करज ६ मष्ट करना, मि , १ स्वतन्त्र करना, करी करना—न स्वामिना निस्त्वोपि शूद्रो शस्यार्हिसुच्यते—मनु० ८१४१४ २ हवासे करना, सोपना, मुनुद करना—तु० विमृष्ट, प्र , १ छोड़ना, त्यागना २ डीला छोड़ना ३ बोना, बखेरना ४ अतिप्रस्त करना, चोट पहुँचाना, शि , १ त्यागना, छोड़ना, तिलाजकि देना—विमृष्ट मुन्दिर सङ्गमसाध्वसम्—मासिक० ४११३, पृथर्वविमृष्टतन्त्र रघु० १६६६,

मामि० ११७८ २ जाने देना, डीला छोड़ना ३ डालना, उड्डेना—रघु० १३१२६ ६. भेजना, प्रेषित करना भोजन द्रवो रथे विषुष्ट—रघु० ५१३९ ५. पदच्छेद करना, जाने की अनुमति देना, भेजना—रघु० ८१११, १४११९ ६. देना—रघु० १३१६७, १८७ ७ भेज देना, डाल देना, बिसार देना, फेंकना—विमृष्टि हिम-गर्भनिमित्युपपुत्रे—श० ३१२ ८ डालना, गिरने देना, प्रहार करना—विमृष्ट शूद्रमती कृपागम्—उत्तर० २१० ९ उच्चारण करना—रघु० १५१६२ १० उतार फेंकना, मन्त्र-विच्छेद करना,—सम्—, १ मिलाता, मिथण करना, समुक्त करना, सयुक्त करना—सस-ज्यते सरसिर्भरणासुचिन्ने—रघु० ५१६९, अलना गल समुज्जम्—एत० २ मिलाता,—सीमिथिना तदनु मसम्भे—रघु० १३१७३, कु० ७७४ ३ रचना करता ।

सुखिआसार { य० न० } सुखी का सार, सोरा, रेह ।

सुखमा (य० ब० व०) एक राष्ट्र या जनपद का नाम ।

सुनिः (स्त्री०) [सु + निक्] अकुल, हाथी की हाकने का आकृष्टा—मदान्धकरिणा दर्पोपसावर्ते सुनि—हि० २१ १६५, मि० ५१५, —नि १ शब्द २ चन्द्रमा ।

सुनि (श्री) का [सुनि + कन् (ईङ्) + टप्] लार, धक ।

सुति (स्त्री०) [सु + क्लित्] १ जाना, सरकना,—मनु० ६१६३ २ गमना, मार्ग, पथ (जाल० से श्री—नेते सुनि पार्थ जानन् घोषी मद्राति कचचन—भग० ८१२७ ३ चोट पहुँचाना, अतिघ्नत करना ।

सुत्वर (वि०) (स्त्री०) री) [सु + वरत्, तुच्] जाने वाला, सरकशील, री १ नदी, दरिया २ माता ।

सुत्वर [सु + अरक्, दुक्] शीप ।

सुत्वाङ्गुः [सु + काङ्, दुक्च] १ हवा, वायु २ अग्नि ३ हरिण ४ इन्द्र का वज्र ५ मृदमरल, स्त्री० नदी, सरिता ।

सृ (मवा०) पर० संपत्ति, सृज्, इच्छा० सिसृक्षति) १ पैसा पेट के बाल चलना, धनी धने सरकना २ जाना, मिलना-जुलना, अनु—, १ पास जाना, पहुँचना निगमन्वसपदाय—भट्टि० ६१२७ २ पीछा करना भट्टि० १५१५९, अथ , १ चले जाना पीछे हट जाना, लोट पारना—सरस्वतिमन्वेन तदमहूनेनाप-संपन्न—उत्तर० ४ २ सरक जाना, घट्ट घट्ट चलना ३ (पेरियो की भाँति) छिप कर देना—उत्तर० १ ४ अलग होना छोड़ना, अथ—, १ ऊपर को उठना २ ऊपर जाना, पहुँचना—सरस्वतिवाहस्रसदसुमन्वर्—रघु० ५१४९, अथ—, १ पहुँचना, निकट जाना मासिक० ११२२ २ हराकत करना, जाना पथ० २१२३ ३ पहुँचना, आनत करना भूषणना—दुग्धम् सुखम्— ४ आरंभ करना न० १-१२०५ ५ आक्रमण

करना, परि- 1 चारों ओर घूमना, छा जाना
 2 इधर उधर घूमना, प्र- 1 आगे जाना, बाहर
 निकलना, आगे जाना, प्रगति करना-भट्टि० १५।
 २ 2 फैलाना, प्रचारित करना, (आल० से भी)
 एवरेष प्रमपंता-महा०, आल० विधिमिब सवत
 प्रसूनम्-उत्तर० १।५०, सि- 1 जाना, प्रवाण
 करना, प्रवति करना-व मुवाहुरिति राक्षमापरस्तत्र
 तत्र विसर्पणं भावया-रघु० ११।२९, ५।५२ 2 इधर
 उधर उड़ना या घूमना 3 फैलाना मनोरामलील
 विधिमिब विसर्पणविरतम् मा० २।१ 4 साथ साथ
 बढ़ना, नीचे गिरना -(आप्पोष) विमपंतु धाराभिर्न-
 ठति धरणी ज्वरकण उत्तर० १।०६ 5 एक-
 चरण होना, बच निकलना 6 छा जाना 7 घूमना,
 घूमना 8 भिन्न भिन्न दिशाओं में जाना सम् ,
 1 हिलना-जुलना--सम्यग्वा मपदि भवन सान्ति
 अजापामो मेघ० ५१ 2 साथ साथ चलना, बढ़ना
 -मेघ० २१ ।

सुपाट. [सू + पाट] एक प्रकार की माप ।

सुपाटिका [सुपाट + ट्रीप + क्त + टाप्, ह्रस्व] पत्थी की
 चोब ।

सुपाठी [सुपाट + ठीप्] एक प्रकार की माप ।

सुप [सू + प + क्त] चरना ।

सुम्, सुम्ब (म्वा० ५२० समंति, सुम्भति) चोट पहुँचाना
 क्षतिग्रस्त करना, बच करना ।

सुम्बर (वि०) (स्त्री०) [सू + बम्बर] गगन वज्र
 वाण, वज्र वाण, -ए एक प्रकार का हथिय ।

सुम्भ (प्र० १० क०) [सू + भ + क्त] 1 रचिन, उत्पादित
 2 उदका हुआ उग्र वा हुआ 3 होना छोटा हुआ
 4 छोटा हुआ, परिश्रम 5 हटाया गया, दूर भेजा
 गया 6 निन्दना दिया गया, निषिद्धि 7 मयकन
 मवड 8 अवित्र, प्रचुर, प्रमत्त 9 अलकृत दे०
 सूम् ।

सुम्भिः (स्त्री०) [सू + भिन] 1 रचना, कार्य भी रचित
 कम्पु-कि मानिमी मांठ श०५, वा सुम्भिः सप्तगुणा
 श०१।१, सुम्भिः शतं धनु-मेघ० ८० 2 समार
 की रचना 3 प्रकृति, प्राकृतिक मर्याद 4-हीला
 छोड़ना, उद्धार 5 प्रदान करना, भेंट 6 गुणों को
 विद्यालयना 7 पदार्थ का अभाव । मम०-गर्भ (५०)
 सपटा, रचयिता ।

सु (इथा० ५२०) मूपाति चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त
 करना, मार डालना ।

सेक (म्वा० आ० सकने) जाना, त्रिपना-जुलना ।

सेक [सिष् + पञ्] छिड़कना, (बसों का) पानी देना,
 -सेक मीकनिगा क्रेण विजित वागम्-उत्तर० ३।१९,
 रघु० १।५९, ८।५९, १६।३०, १७।१६ 2 उद्धार,

प्रसार 3 बोंपाना 4 तपन, बढ़ावा । मम०-पाषण्
 1 पानी छिड़कने का पात्र, जल-वाय 2 होलपी,
 बोका ।

सेकिकम् [सेक + ङिम्] सूजी ।

सेकम् (वि०) (स्त्री०-बम्) [सिष् + नृप्] सीपने वाला
 (पु०) 1 छिड़काव करने वाला 2 पति ।

सेकषण् [सिष् + ष्टुन्] होलपी, सीपने का पात्र ।

सेकक (वि०) (म्वा०-सिका) [सिष् + ष्टुन्] सीपने
 वाला, व बादल ।

सेकनम् [सिष् + न्युट्] सीपना (वृक्षों को) पानी देना,
 -वसमचने द्वे पारपति मे प० १२ साथ, छिड़काव
 3 मन्द मन्द गमना टपना 4 होलपी । मम०
 छट सीपने का बने ।

सेकनी [सेकन + ङीप्] होलपी ।

सेट् [सिट् + ञ्] 1 तपत्र 2 एक प्रकार की ककरी ।

सेतिका (म्वा०) अयाया का नाम ।

सेतु [सि तृन्] 1. मिट्टी का टीला, मेघ किनारा,
 ऊचा मार्ग बाध -तन्निनी जपनेनुबन्धनी ब्रह्मपथात
 इवामि विदुत कु० ४।६, रघु० १६।० 2 पुल
 -वेदिते पथामलदादिभवत मर्मनुना फेनिलमा-
 गशिम रघु० १३।० मन्वेवडादिगदमेतुभि ४।३८
 १२।० कु० ३।५३ 3 सीमाचिह्न, मेघ -मनु० ८।
 २४५ 4 मकुचित मार्ग, दर्गा मकीर्ण गिरिगथ 5 दर,
 सीमा 6 अगता परिनीमा, किमी प्रकार का अवरोध
 -नृपे मारुतपादि मिथेरन् सर्वमेव मुना०
 7 मिथित निरम वा विधि, सर्वमप्यत प्रसा 8 'आम'
 पुनीत प्रसर मन्नाया प्रणव सेतुमन्सेतु प्रणव
 म्पत । सर्वव्यनाकृत पूर्व परम्नाच्च विदीयेन ।
 रात्रिवा० । मम० अथ 1 पुल का निर्माण
 नवाग की रचना दयागने कि बनिनाबिनामो जले
 गने रि त्व मेतुमथ मुना० कु० ४।६ 2 लौक
 भया वा वाः कः मप्यट समुद्रत को दक्षिणी सीमा
 म लवा नर फेनो हुई है (अतः तै नि यदी वह पुल
 ३ किमे नकाग न गम क मित बनाया था) 3 काई
 भी पुल या नवाग, अर्थम् (वि०) 1 कम्पने को
 नोडन वाता 2 क्कावटो को हटाने वाया (पु०)
 एक पुल का नाम, दन्वी ।

सेतु [सि तृन्] 1. मिट्टी का टीला, मेघ किनारा,
 ऊचा मार्ग बाध -तन्निनी जपनेनुबन्धनी ब्रह्मपथात
 इवामि विदुत कु० ४।६, रघु० १६।० 2 पुल
 -वेदिते पथामलदादिभवत मर्मनुना फेनिलमा-
 गशिम रघु० १३।० मन्वेवडादिगदमेतुभि ४।३८
 १२।० कु० ३।५३ 3 सीमाचिह्न, मेघ -मनु० ८।
 २४५ 4 मकुचित मार्ग, दर्गा मकीर्ण गिरिगथ 5 दर,
 सीमा 6 अगता परिनीमा, किमी प्रकार का अवरोध
 -नृपे मारुतपादि मिथेरन् सर्वमेव मुना०
 7 मिथित निरम वा विधि, सर्वमप्यत प्रसा 8 'आम'
 पुनीत प्रसर मन्नाया प्रणव सेतुमन्सेतु प्रणव
 म्पत । सर्वव्यनाकृत पूर्व परम्नाच्च विदीयेन ।
 रात्रिवा० । मम० अथ 1 पुल का निर्माण
 नवाग की रचना दयागने कि बनिनाबिनामो जले
 गने रि त्व मेतुमथ मुना० कु० ४।६ 2 लौक
 भया वा वाः कः मप्यट समुद्रत को दक्षिणी सीमा
 म लवा नर फेनो हुई है (अतः तै नि यदी वह पुल
 ३ किमे नकाग न गम क मित बनाया था) 3 काई
 भी पुल या नवाग, अर्थम् (वि०) 1 कम्पने को
 नोडन वाता 2 क्कावटो को हटाने वाया (पु०)
 एक पुल का नाम, दन्वी ।

सेतुक [सेतु + क] 1 समुद्रत, नवाग, पुल 2 दर्गा ।

सेतम् [सि - ष्टुन्] कम्पन, हलकड़ी, बेटी ।

सेतिकम् (वि०) (स्त्री०-सेतुपी) [मर + सिट् + बन्व]
 बैठा हुआ ।

सेत (वि०) [मर इनेन श० म०] प्रम, मान्ना, जिसका
 कोई स्वामी हो, मेना हो ।

सेता [सि -न + टाप्, छट इनेन प्रभुषा वा] 1 जोर
 -मेतागिच्छदस्तम्भ इयमेवाथनाचदम् रघु० १।१९

2 मद्यम कं देवता कान्तिकेय की मूर्त पत्नी सेना, पौड—नु० देवसेना । सम०—अध्वम् सेना का अग्रभाग, षे सेना का नायक वा नेतापति, अङ्गम् सेना का सघटक भाग (यह विभक्तों में बार ही हल्पवस्त्र-पदात सेनाङ्ग स्वायम्बनुत्पद्यम्)।—बह. 1 मैत्रिक 2 अनुचरवर्ग, निवेश सेना का सिधिर रघु० ५। १९, मी (५०) 3 सेना का नायक, सेनापति, सेना-पक्ष सेनालीनामह स्वन्द भग० १०।२६, कु० १।११ 2 कान्तिकेय का नाम अर्धैतमदेग्नया द्वाष्टाच सेनाप्यभार्गोऽश्विवापुराणे रघु० २।३०, पति, 1 सेना का नायक 2 कान्तिकेय का नाम परिच्छद (वि०) सेना से पिण्ड दृष्टा (रघु० १।१९ में सेना-परिच्छद कर्मो कर्मो एव सा शब्द मशसा गया और तदनुकूल ही अर्थ किंदा गया, पन्तु इनका अलग-अलग दो पद्व समझना ज्यादा अच्छा है), पृच्छम् सेना का पिच्छा भाग, अङ्ग सेना का मूल ही जाना, संबंधा तितर-तितर होना अन्वयव्यति रूप न इधर उधर भागना, मुञ्चम् 1 सेना का एक दम्ना या भाग 2 विशेषतः वह दम्ना जिसमें तीन हाथी, तीन रथ, नौ घोड़े और पन्द्रह पदाति हों 3 नगर फाटक के बाहर बना किल्ला का टीला, योग, सेना की मुख्या, रक्ष, पहरेदार, मन्त्री ।

सेकः [सि + फ] पृच्छ का नियं नु० शेष ।
 सेकन्ती [सिम् + ङि] शेष का मफंद गलाव सेवती ।
 सेर (पु०) एक विशेष भाग, सेर का बट्टा, (लीलावती इसकी परिभाषा की है पाठानुसंधानकालुप्यट्टुहिसल्य नुस्ये कथितोऽत्र सेर) ।
 सेराह (पु०) दुग्ध के समान ध्वेन रग का थोडा ।
 सेष (वि०) [सि + ष] शेषने वाला कमने वाला ।
 सेल् (म्हा० प०० मैलान्) जाना, हिन्दना-मुलना ।
 सेम् (म्हा० आ०) सेवते, सेवित, सेर० सेवयति ते, दच्छा० सिसेविपते नि, पति, वि आदि इकारांत उपसर्गों के पश्चात् सेव का म् बदल कर प्रायः मूर्धन्य प् ही जाता है । 1 सेवा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सम्मान करना, पूजा करना, आज्ञा मानना —आयो भृत्यात्त्वन्नि प्रचलितविभव स्वाभिन् सेवमाना मद्रा० ४।२१, या, ऐश्वर्यादनपतरीश्वरमय लोकोः र्थत सेवते - १।४ 2 अनुग्रह करना, पीछा करना, अनुसरण करना 3 उपयोग में लाना, उपभोग करना कि सेव्यते सुमनसा भवसापि गन्ध कस्तूरिकाजनन-भक्तिभूता मुनेष रस० 4 शारीरिक सुलोपभोग करना—आभि० १।११८ 5 अनुग्रह करना, अनुष्ठान करना मनु० २।१, कु० ५।३८, रघु० १७।५९ 6 सहारा लेना, आश्रित होना, रहना, बार-बार आना जाना, बसना,—तप्य बारि विहाय तीररत्निनी

कारचव सेवते—विश्वम् २।२३, पच० १।१७ पहले देना, रखवाली करना, रखा करना, आ—, उपभोग करना यदायुरनिच्छदमूर्ते किराटीरासेव्यते निश्च-शिक्षिष्विष्वत् कु० १।१५, प्रथातमसेवमाना तिष्ठति — मालवि० १ 2 अभ्यास करना, अनुष्ठान करना 3 सहारा लेना, उष—, 1 सेवा करना, पूजा करना, सम्मान करना, मनु० १।१३३ 2 अभ्यास करना, अनुग्रह करना, ध्यान देना, पीछा करना 3 ब्यस्त होना, उपभोग करना—भग० १५।१५ 4 (किसी स्थान पर) नियं जाना, बसना 5 करना, भागिष्ठ करना, नि—, पीछा करना, अनुग्रह करना, मसन्न करना, अभ्यास करना—श० १।२७ 2 उपभोग करना नियंते भ्रान्तमना विविक्तम्—श० ५।५ कु० १।६ 3 शारीरिक सुख(उपभोग करना—यथा यथा नाभरवेषणा मया पुन स्रगान् तिलरा निषेचिना आभि० २।१५५ 4 सहारा लेना, बसना, नियं जाना—जाना—कु० ५। ७९ 5 उपयोग में लाना, काम में लाना विष्ठा निषेचितमर्पाकयया समर्पति तसंमिति सत्यमथ—शि० १।६८ 6 सेवा में उपस्थित रहना, हाजरी देना 7 नजदीक जाना, पहुँचना 8 भुगतना, अनुग्रह करना, परि—, 1 सहारा लेना 2 उपभोग करना, लेना ।

सेव दे० 'सेवन' ।
 सेवक (वि०) [सेम् + ष्वल्] 1 सेवा करने वाला, पूजा करने वाला, सम्मान करने वाला 2 व्यवहार करने वाला, अनुगामी 3 आश्रित, दास,—क 1 टहलवा, —आश्रित सेवया धनमिच्छद्भिः सेवकै पच्य कि हृतम् । स्वातन्त्र्य पच्छरीरम्य महेस्तदपि हातिनम्—हि० १।२० 2 भक्त, पूषक 3 सीने वाला, दर्वा 4 बोरा, पैसा ।
 सेवधि (अव्य०) दे० 'सेव' के अन्तर्गत 'सेवधि' ।
 सेवनम् [सेम् + ल्यट्] 1 सेवा करना, सेवा हाजरी में सब रहना, पूजा करना—प्राणीष्टात्प्रा मुक्तेभ्येन—रघु० १८।३० 2 अनुग्रह करना, अभ्यास करना, काम में लगाना मनु० १२।५२ 3 उपयोग करना, उपभोग करना 4 शारीरिक सुलोपभोग करना —यत्करीयेकरासेव्ये वृषोः सेवनाश्चिब—मनु० १। १७९ 5 सीना, टीका लगाया 6 बोरा, पैसा ।
 सेवनी [सेवन + ङीप्] 1. सुई 2. सीवन, लघिरेका 3 सधि या सीवन की धति शरीर के अंगों का सधान ।
 सेवा [सेम् + वक् + टाप्] 1. परिचर्या, सिधमत, दासता, टहल सेवा लाघवकारिणी कुनाथिय स्वाने इवमुपति विदु—मद्रा० ३।१४, हीमसेवा न कर्तव्या हि० ३।११ 2 पूषक, शहायि, सम्मान 3 संलग्नता,

भक्ति, चाप 4. उपयोग, अभ्यास, काम में लगना, प्रयोग 5 बार बार जाना—जाना, आश्रय लेना 6 चापलूसी, बहुकामता, बिकने चुपड़े शब्द अल सेवका मध्यस्थता गृहीत्वा भण—(मालीवि० ३। सम० आकार (वि०) दासता के रूप में—विषय० ३।१, कान्हु सेवा में आवाज में परिवर्तन (यह विक्रम० ३।१ में 'मेवाकारा' शब्द का स्थानांतर है), धर्म 1 सेवा करने का कर्मशब्द सेवाधर्म परमगहनो योगिनामध्यायम्—पद्य० १।२८५ 2 सेवा का दायित्व,—अभ्यहृत्, सेवा की विधि या प्रथा।

सेवि (नपु०) [सेव् + इन्] 1 बेर 2 सेव ।
सेवित (सु० क० ह्र०) [सेव् + क्त] 1 सेवा किया गया, जिसकी टहल की गई है, पूजा किया गया 2 अनुगत, अभ्यस्त, पीछा किया गया 3 जहाँ नियम-प्रति जाया जाय, सहारा लिया गया, जहाँ (मोग) बसे हुए हो, जहाँ सगो-साथी हो 4 उपभूक्त, उप-युक्त,—सम् 1 सेव 2 बेर ।

सेविन् (पु०) [सेव् + वृत्] सेवक, दास ।
सेविन् (वि०) [सेव् + णिन्] 1 सेवा करने वाला, पूजा करने वाला 2 अनुगत, अभ्यासी, उपयोगक 3 बसने वाला, रहने वाला, (पु०) सेवक ।

सेव्य (वि०) [सेव् + ष्यत्] 1 सेवा किए जाने के योग्य, टहल किए जाने के योग्य 2 उपयोग में आने के योग्य, काम में लाने के योग्य 3 उपभोग किए जाने के योग्य 4 देस-मास किए जाने के योग्य, पहरा दिए जाने के योग्य,—अव्य 1, स्वाभो (विप० सेवक),—भव तावत्से-व्यादिनिविद्यते सेवकजनम्—मुद्रा० ५।१२, पद्य० १।४८ 2 अवलम्बन, ध्यम् एक प्रकार की जड़ । सम०-सेवकी (पु०, द्वि० व०) स्वामी और नौकर । सं (ध्वा० पर०)—सायति बबदि होना, शीघ्र होना, नष्ट होना ।

सेह् (वि०) (स्त्री० ह्री) [सिह् + अन्] सिह से सबद्ध, सिह सम्बन्धी—भुक्ति सेही कि द्वा प्रतकनक-मालोऽपि लभते हि० १।१७५ ।

सेह्क (वि०) [सिह्ल + अन्] लका सम्बन्धी, लका में उत्पन्न, या लका में होने वाला ।

सेहिक, -सेहिकेयः [सिहिका + अन्, सिहिका + इक्] राहु का मातृ परक नाम ।

सेकत (वि०) (स्त्री० स्त्री) [सिकता सन्त्यत्र अन्] 1 देश युक्त या रेत से बना हुआ, रेतीला, ककरीला—सोयस्ववाप्रतिहृतय सेकत मेनुष्योऽ-उत्तर० ३।३६ 2 रेतीली भूमि वाला, लम्बू नेनीला तट—सुरमज इव माग सेकत पुत्रीक रघु० ५।७५, ५।८, १०।६९, १३।१७, ६२, १३।७६, १६।२१,

सु० १।२९, व० ६।१७ 2 रेतीले तटों वाला द्वीप 3 किनारा या द्वीप । सम० इच्छम् अदरक ।
सेकतिक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [सिकत + ठन्] 1 रेतील तट से संबन्ध रखने वाला 2 घट-बढ़ होने वाला, तरंगित मन्देह की अवस्था में रहने वाला, सन्धेहबीबी, -क 1 साधु 2 सन्ध्यासी, कम्बु मगलमूत्र जो सौभाग्यशाली बनने के लिए कलाई में बांधा जाता है या कठ में पहना जाता है ।

सेकतिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [सिदान् + ठन्] किसी राशाल या प्रदक्षित मत्व से सम्बन्ध रखने वाला 2 जो बास्तविक मर्चाई को जानता है ।

सेकतत्वम् [सेकत + ध्वन्] किसी मेना का मेना पक्षिण सेनाप्यक्षता सु० ३।६१ ।

सेनिक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [सेन या समर्बेति ठक्] 1 सेनासम्बन्धी 2 फौजी, क. 1 सिपाही पणप भूमी सह सेनिकाभूमि रघु० ३।६१ 2 पहरेदार, सतरी 3 सामरिक अग्रह में व्यवस्थित सैन्यसमूह—रघु० ३।५७ ।

सेन्धव (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [सिन्धुनदीसमीपे देशे भव अणु] 1 सिन्धु प्रदेश में उत्पन्न या पैदा हुआ 2 सिन्धु नदी मन्थनी 3 नदी में उत्पन्न + समुद्र सम्बन्धी, सागर सम्बन्धी, सामुद्रिक,—क 1 घोडा, विशेषतः वह जो सिन्धु देश में पैदा हो—सं० १।७१ 2 एक ऋषि का नाम, क, कम्बु एक प्रकार का सेधा नमक—बा (पु०, व० व०) सिन्धु प्रदेश के अधिवासी । सम०-अव्य नमक का डेला, -सिखा एक प्रकार का पत्राङ्ग त निकलने वाला तमक ।

सेन्धवक (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [सेन्ध + क्त] सैन्धव सम्बन्धी, क. सिन्धु देश का कोई आपद्घन व्यक्तित्व जिसकी दस्ता दयनीय हो ।

सेन्धी (स्त्री०) एक प्रकार का माँदरा (मन्थवत वह जो नाह के रम में नैवार की गई हा) नाडी

सेन्धः [सेनाया समर्बेति ष्य] 1 सैनिक, सिपा, नि० ५।२८ 2 पहरेदार, सतरी, अ्यम् सेना, ना की टुकड़ी—म प्रतम्बेऽग्निप्राया हरिमेयेऽनुगत -रघु० १।१६७ ।

सेन्धितकम् [सीमन्त + ठक्] मित्र ।

सेरध्रः, सेरिध्रः [सीर हल चरणि—सीर् + ध्र् + क, ध्र् -सीरन्ध्र ह्रस्वक नस्ये चिन्त्यकर्म सीरन्ध्रः अणु पक्षे इन्धम्] 1 चालू नौकर, किकर 2 एक मिश्र जाति, दस्यु जाति के पुत्र तथा अयोग्य जाति की स्त्री में उत्पन्न मन्वान—सेरिध्र वासुदेवनि गु 1 दस्युयोगिने मनु० १०।३२ ।

सेरिध्री, सेरिध्री [सीर (ऱि) ध्र् + णी] 1 दामो 2 मैत्रिता जो अन्न पुर में काम करे (सीरध्र 1 म

गणित मित्त जाति की स्त्री) 2 स्वतन्त्र स्त्री जो विप्लवकारिणी के रूप में दूसरे के घर बाहर काम करे 3 दौपदी का विशेषण (अज्ञात वाद्य में विराट् की पत्नी सुदेव्या की सेवा करते समय दौपदी ने यह नाम रख लिया था) ।

सैरिक् (वि०) (स्त्री० स्त्री) [सीर + अक्] 1 हल-सम्बन्धी 2 बूटो से युक्त, -कः 1 हल में चलने वाला बैल 2 जाली, इन्धबाहा ।

सैरिभ [सोरे हले नउहने इभ इव सुत्तान्, लक० पर०, सीर + इभ + अण्] 1 भंसा—अवमानित इव कुलीनो दीर्घ निश्चिति सैरिभ—मू० ४ 2 इष्ट का स्वर ।

संबाल दे० 'शेराज' ।

सैसक (वि०) (स्त्री स्त्री) [सीसक + अण्] सोसे का युवा दूधा, सीसा मन्बन्धी ।

सो (दिवा० पर० स्वति सित, प्रे० साययति ते, इच्छा० सिधामति, कर्मवा० नीयते—इकागत्य उक्तागत्य उतागतौ के पदान्त 'सो' के 'स्' की मूबन्ध 'स्' ही जाता है) 1 बच करना, नष्ट करना 2 समान करना, पूरा करना, अन्त तक पहुँचाना, अर्थ—, 1 समान करना, पूरा करना—पुण्यावसिते क्रियाविधी रूप० १११३०, अवगतिमच्छनासि—श० ० 2 नष्ट करना 3 जानना, मष्टि० १९१०० 4 विफल होना, कितारे पर होना (अक०)—अविनिर्माकमपति हीनयदे—वि० १९१३०, अथवा 1 मकल्प करना, निर्धारित करना, मन पक्का करना कथाविधानी दुर्जनप्रवनादध्यावसित देवेन उत्तर० १, अविधातुमध्यवसतो न निरा—वि० ११३६, 2 प्रयास करना दायित्व देना, सम्पन्न करना—मा साहसमध्यवस्य, दश० उक्तं मुक्तामप्य नाम्नुक्तं 3 देवी० ३, 'करने की प्रशंसा कहना—ब्राम्हाण ४ 3 दशोष लेना 4 सोचना, विचार करना पंचेच 1 पूरा करना, समाप्त करना 2 निर्धारित करना, मकल्प करना 3 परिणाम होना, घट जाता, समाप्त हो जाया एव एव सम्बन्धय मच्छागेज्जघोगे सदस-धोपे च पर्यवस्यतीति न पृक् लक्ष्यते काव्य० १० 4 नष्ट होना, सो ज्ञाना शीघ्र होना ५ प्रयत्न करना, पद्य—1 शौर लयाना, हाथ पीच मांगना, कोशिका करना, चेष्टा करना, प्रयत्न करना, आरम्भ करना—ध्रुव न तोलाप्यनपचधाराया शशीकाली छेतुमुचि-र्यवस्यति श० १११८ 2 चिन्तन करना, कामना करना, चाहना—पान न प्रथम अवस्यति जल युष्मा-स्वधीतुषु या—श० ६१३ 3 लयात्तरा चेष्टा करना, परिश्रमी या उद्योगी होना 4 मकल्प करना, निर्धारित करना, निश्चित करना, फैसला करना—ज०

५११८ 5 स्वीकार करना, दायित्व देना कण्व-स्थीयु व्यवसितमिदं इन्धुद्वय त्वया मे मेघ० १८८ 6 करना, सम्पन्न करना 7 विद्यालय करना, विश्वस्त होना, प्रतीत होना 8 विचार-विषय करना, सम्यक् निर्णय करना, आदेश देना मनु० ७११३ ।

सौह (मू० क० कृ०) [सह + क्त] महव किया गया, मृगता गया, बदलित किया गया, श्लेष गया—आदि दे० 'सह' ।

सौमु (वि०) (स्त्री०-द्वी) [सह + क्त] 1 सहजशील बदलित करने वाला, सहिष्णु 2 पक्षिणादी, समर्थ ।

सौत्क, सौत्कण्ड (वि०) [सह उक्तेन, उपकण्डया वा य० स०] 1 अत्यन्त उन्मुक्त, अत्याम आनुर, मादुर, यथा—'सौत्कण्डमालिनीयम्' 2 निप्र 3, शोकानुल, विद्यमान, —ठम् (अव्य०) 1 अत्यन्त उन्मुक्तता के साथ, बड़ी उक्तम् के साथ, प्रादुशीयेव बलाक्या मग्भम सौत्कण्डमालिनीयम् मू० ५१-३ 2 वेदपूर्वक, दुःसपूर्वक ।

सौत्प्रास (वि०) [सह उपमायेन - ब०स०] 1 अनुपिन 2 अतिशयोक्तिपूर्ण 3 व्यंग्यात्मक, व्यंग्यपूर्ण,—स० ३ दृष्टस्य,—सः,—सम्, व्यंग्यात्मक अतिशयोक्ति, व्यंग्यात्मक, व्यंग्यवाक्य, तु० व्याजस्तुति ।

सौत्सव (वि०) [उन्मनेन सह - ब०स०] उन्मत्तयुक्त उच्छाह भरा, हर्षपूर्ण ।

सौत्साह (वि०) [सह उपमाहेन—ब०स०] प्रबल, मज्जि, उत्साही, धीर,—ठम् अर्थ० पृतीं मे उत्साह पूर्वक, सावधानी से ।

सौत्सुक (वि०) 1 निप्र, सम्पन्नने वाला आनुर गाका-निन्द 2 उत्कण्ठित, ला-राहित्य ।

सौत्सुष (वि०) [सह उन्मनेन ब०स०] उन्मत्त, उन्नत, ऊँचा, उन्मुक्त मान्सेर्ष म्कण्ठेर्षे मृदा० ६१३ ।

सौत्सर (वि०) [मद्य यथ, समाप्त्य स] एक ही पेट से उन्नत न, - - - सवा भाई, रा समी रहत ।

सौत्सर्षः [सांहर यत् महादर भार्द, सया भाई (आप० से भी)—भ्रातु संदंशमान्मानमिन्द्रिद्रुच्योनिन - ग० १५१२६, अवज्ञासौत्सर्षः शार्दधम् दश० ।

सौत्शेष (वि०) [सह उद्योगेन ब०स०] प्रबल उद्योग करने वाला परिश्रमी मज्जि, धीर मेहनती ।

सौत्श्रेय (वि०) [सह उन्मनेन - ब०स०] 1 आनुर, आन-काल 2 शोभनित—ठम् (अव्य०) आनुरता के साथ, उतावलेन मे उत्कृतापूर्वक ।

सौत्साह [सु, विष् + सो, नदु - क नह] लज्जुज ।

सौत्साव (वि०) [सह उपमायेन - ब०स०] पावल, शोभाना, आपे से बाहर अदक्षिणत ।

सौत्सकरच (वि०) [सह उपकरणेन—ब०स०] सब प्रकार

के आवश्यक सामान या उपकरणों से युक्त, समुचित रूप में सुसज्जित, इसी प्रकार 'सोपका' ।

सोपव्रत (वि०) [सह उपदेशण व०स०] सकट और उपद्रवों में युक्त ।

सोपथ (वि०) [सह उपधया व०स०] जालसाजी और धोले में भरा हुआ, कपटपूर्ण ।

सोपथि (वि०) [सह उपथिना व०स०] राजमात्र, अथवा कपट के साथ, जालसाजी करने अर्थात् हिंजियाबिलि बिलि, या विद्वानि साधोव साधिवृष्यानि —**हि०** ११८५ ।

सोपव्यस्त (वि०) [सह उपव्यस्त - व०स०] 1 मरटवस्त 2 वस्तुओं द्वारा आक्रान्त 3 घपघपन्त (जैम कि कट व मूय) ।

सोपरोष (वि०) [सह उपरोषेन व०स०] 1 अवकट, बाजावृक्ष 2 अनुपुत्रात, धम् (अव्य०) नावृत्र, नादर ।

सोपवस्त (वि०) [सह उपवर्षण - व०स०] 1 मकटघन्त, तुमोषघन्त 2 अनिष्टमूषक 3 किमी भूत प्रेत में आधिष्ट 4 उपसर्ग से युक्त (व्या० में) ।

सोपवस्त (वि०) [सह उपहासेन व०स०] व्यक्तपूर्ण हसी में युक्त उपालम्भपूर्ण, अव्ययव, सम् (अव्य०) उपालम्भपूर्वक, उलासे के साथ ।

सोपाक [=श्वपाक, पुरा०] पतित जाति का पुरुष, पांडाल, दे० मनु० ११३८ ।

सोपायि (वि०) सोपायिक (वि०) (स्त्री०-त्री) [सह उपायिना - व०स०, एते कर्] 1 किसी शत्रु या सीमा में प्रतिबद्ध, विभिन्न कलाओं से युक्त, मोहित, मर्यादित विभिष्ट (दर्शन० में) 2 विभिष्ट विशेषण से युक्त ।

सोपायम् [उप + अन् + घञ् = उपाय उपरिगतिः मह विद्वमान उपाय एते व०स०] पीढी, सोड़ी का दडा, जीना, मीठी - जारोत्रपार्थ मवयोपनेन कामस्य सोपायमिव प्रयुक्तम् कु० ११३९ । मय० - **पञ्चिका** (स्त्री०), - **पञ्च**, **पडति** (स्त्री०), **परञ्चरा**, **भापे** सोपी, **जीना** वापी **आमिन्** मरकटविद्या-वदुसोपायनमार्गा मय० ७६, ममाकसुदिवभावाय श्वेते तलाप मोपायनमरकटमिव - **रघु०** ३१०, ६१३, १६१५६ ।

सोम [सू + मन्] 1 एक पीछे का नाम, प्राचीन काल के यज्ञों में आहुति देने के लिए अथवा महत्पूर्ण औषधि 2 सोम' नामक पीछे का रस - जिस कि सोमया तथा सोमर्षावित मरुतों में 3 अमृत, देवताओं का पेय पदार्थ 4 चन्द्रमा (पुराणा में चन्द्रमा को अथि श्रुति की श्रुति में उन्नत होने वाला कर्णन किया गया है (मनु० रघु० २१३५), ऐसा भी वर्णन मिलता है कि मनुदमन्वन्त के अवश्य पर चन्द्रमा भी समुद्र से

निकला । पुराणों में वर्णित तलाइस मन्त्र आ पशु की कन्धारे बतलाई गई है, चन्द्रमा की पत्नियां बनी जाती हैं । चन्द्रमा की पत्नीओं के पालिक श्वय की घटना का भी समाधान यह किया गया है कि चन्द्रमा की अमृतमयी कलाओं को विषय देवताओं ने चारी चारी से पी लिया, इसी प्रसंग में एक और कथा का भी आधिकार किया गया है जिसमें बताया गया है कि चन्द्र (रोहिणी (दक्ष की ७७ रज्याओं में से एक) पर विशेष रूप में अनुरक्त था, अतः उसके स्वभूत दक्ष ने इसे क्षयरोग से ग्रस्त होने का ताप दे दिया, बाद में चन्द्रमा की अन्य पत्नियों के बीच में पहले पर यह ताप सीमित कालावधि (पाथिक) में बदल दिया गया । यह भी वर्णन मिलता है कि चन्द्रमा ने बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण किया उसीमें चन्द्रमा का ब्रह्म नामक एक पुत्र पैदा हुआ । यही वृष वाद में राजाओं के चन्द्रवश का प्रबन्ध हुआ, (२० नाम (स्त्री०) 5 प्रथमा की विरग 6 वपुर् 7 तल 8 काय ९ उवा १ कुबेर १० शिव ११ यम १२ भ्रमात के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त) मूय, प्रयात, उलय 'जैना कि न्यास' में - **सम्** १ बावलो की काजो २ आकाश, गगन । मय० **अभिषय** सोमयम का रीतिना, - **अह** सोमवार, - **आम्यम्** लाल कमल, ईश्वर शिव की प्रसिद्ध प्रतिमा सोमनाथ, - **उडुका** नर्मदा नदी **रघु०** ५१५९ (इति लम्बि० ने अमर० का उद्गरण दिया है 'वेदानु नर्मदा सोमोडुका') । **काल** चन्द्रबान्त मणि, शय चन्द्रमा की कलाओं का ह्यम, **एह** सोमयम रवने का पत्र, - **ज** (वि०) चन्द्रमा से उत्पन्न (-ज) वृक्षहू का विशेषण, (-जम्) दूध, **बारा** आकाश, गगन, - **बाष** प्रसिद्ध 'शिव लिंग' या वह स्थान जहाँ पर प्रतिमा स्थापित की गई है [इसी प्रतिमा] की अत्युत्त घन-गति व वैभव ने पञ्जनी के मोहम्मद गौरी को आकृष्ट किया, जिसने १००५ ई० में सोमनाथ का मन्दिर तोड़ा और उसके धरानों को उठा कर ले गया) - **नेपा** मार्ग परिचयवचाराचिन्त पुत्रंगणा व सन्ताप सिधिर-मकराल सोमनाथ किन्चोक ॥ **किष्काक०** १८१८० - **श** - **वा** (पु०) १ सोमयायी २ सोमयाजी ३ पितरो का विशेष समूह, - **पति** इन्द्र का नाम, - **पालम्** सोम-रस का पीना, **पाथिक**, - **पीथिम्** (पु०) सोमरस को पीने वाला ऋषि **केथिन्** सोमयोपिन उदुञ्च-रनामानों ब्रह्मवादिन प्रतिवसन्ति रम मा० १, **पुत्र** - **सू** **सुता**: दूध के विशेषण, - **प्रबल** सोमयज्ञ के पुरोहितां को बरप करने वाला, **रघुः** कुमुद, - **यक्ष**, **यत्न** सोमपुत्र, - **बोधि**: एक प्रकार का पीला और सुगन्धित चन्द्रमा - **रोष**, **लिखी** का

एक विशेष राव, सता कालरी 1 साम का पीथा
2 गोदावरी नदी, बस वृष हाग स्वामिन राजाओं
का कदवय, बार, बार, साय सायबार, बिचयिन्
(पु०) साययन बिचया, बध्, - बार, मकेद बर
का वल, शकला एक प्रकार की ककड़ी, -सम्
कपू, सव् (पु०) पिनरो का विशेषवय सनु०
३।१५५, -सिष्णु, विष्णु का विशेषवय, सुव् (पु०)
सोमय वीचने वाला, मुना नयंदा नदी पु० सोमा-
द्रुष, सुवम् दिव दिव के स्नान का जल निकलने
की माला, प्रदक्षिणा शिवालय की इस तरह परिक्रमा
करना कि माली लायनी न पड़े।

सोमन् (पु०) [सु + मन्] चन्द्रमा।
सोमिन् (वि०) (स्त्री० नी) [साम + इनि] सामयज्ञ का
अनुष्ठान करने वाला, - (पु०) सामयज्ञ का अनुष्ठान।

सोम्य (वि०) [साम यन्] 1 साम के योग्य 2 सोम
की आहुति देने वाला 3 आहुति में साम से मिलता-
जुलता; मृदु, सुशील मिलनसार।

सोम्युच्छ, सोम्युच्छम् [उन्मुच्छेज् उच्छ् उनेज् का सह - ब०
म०] ज्यम्य, तान्वा, वृटकी ठम्, नम् (बन्ध०)
व्यायुपूर्वक, ताने के साथ - उ०१०० ५।

सोम्यन् (वि०) [मह उमेना व० म०] 1 गरम, तप्यं
2 (व्या० में) उमा युत (पु०) उमवर्ष।

सोकर (वि०) (स्त्री० रा) [सुकर + अच्] सुकरसवधी,
सुकर का कि० १-३०२।

सोकर्यम् [सु (सु) कर + यञ्] 1 सुकरपत्नी 2 साक्षानी,
मृषिका सोकर्ये च कार्यस्यानायामे सिद्धया साव-
सिद्धया च वाच्यम् 3 क्रियामकला, सुकरता 4 विपु-
णता, कुसकता 5 किसी सोकरपदार्थ या जीववि की
सरल तरीक।

सोकुमार्यम् [सुकुमार + यञ्] 1 मृदुता, सुकुमारता,
कोमलता - शरीरपुष्पाधिकसोकुमार्या वाह तवीया-
दिनि में बिनकं कु० १००१ 2 उवासी।

सोम्यम् [सुधम + यञ्] शरी की, महानिपता, मृदमता।

सोमशापिनक, सोमशापिक, [सुमशयन एवञ्] सुमशय
(न) ठक् वह पुरुष जो किसी पुरुष में उसके
सुमपूर्वक माने की बात पूछे - भृग्वारीनसुमन्ता
सोमशापिनकानवीन् १पु० १०।१६।

सोमसुप्तिक [सुमसुप्ति सुमेन शयन पुञ्जनि-ठञ्] 1 किसी
अप पुरुष से सुमपूर्वक माने का हाल पूछने वाला
2 चारण, धाट, बन्दी (इसका कार्य राजा या अरबत
समुद्रिशासी व्यक्ति का सुनिपाठ हाग उवासे का
होता है)।

सोमिक (वि०) (स्त्री० की), सोमीय (वि०) (स्त्री०
पी) [सुल + ठक्, छप् वा] सुममगन्धी, आमन्व-
दायक, हर्षप्रद।

सोम्यम् [सुल + यञ्] सुल, प्रसन्नता, सन्तोष, सुविधा,
आनन्द।

सोम्यः [सुगत + अच्] बौद्ध (वृद्ध या सुगत का अनुयायी)
(बौद्ध के चार बड़े सम्प्रदाय हैं - माध्यमिक, शीवा-
निक, योगाचार और वैश्विक) -सोम्यतत्परत्परिवाज-
कायान्तु कामान्वेषा प्रथमां भूमिका भाव एवापीते
मा० १।

सोम्यतिक [सुगत + ठक्] 1 बौद्ध 2 बौद्धभित् 3 नास्तिक,
पाखडी, अविदवासी, कम् अविदवास, पावइवमं,
नास्मिकता, अनोद्वगवाद।

सोम्यत्व (वि०) (स्त्री०-पी) [सुगन्ध + अच्] मवृत्तवन्ध-
युक्त, सुगन्धित, धम् 1 मधुमन्धता, मुवास 2 एक
प्रकार का सुगन्धित तृण, वत्तुण।

सोम्यत्विक (वि०) (स्त्री० का-की) [सुगन्ध + ठञ्]
मधुमन्ध वाला, सुगन्धित, क. 1 गन्ध इष्यो का
विक्रता, गयो 2 गन्धक, - कम् 1 सफेद कुम्भ
2 नील कमल 3 एक प्रकार का सुगन्धित घास,
कत्तुण। माल।

सोम्यव्यम् [सुगन्ध + यञ्] गन्धमाधुर्य, सुगन्ध, मुवास।

सोम्यिक, सोम्यिक [सुचि + यञ्, ठञ्] दूर्वा मन ६।२१६
पर कुन्तुक।

सोम्यम् [सुजन + यञ्] 1 नेकी, कृपालुता, अनार्इ
उ०१०० ३।१३, मुच्छ० ८।३८ 2 मीमा उदारता
3 कृपा, कृपा, अनुकम्पा 4 मित्रता, गाराद, प्रेम।

सोम्यी [सुधा तदाकारोऽस्ति अस्या सुधा - अच् + ङीप्
पु०] मजपीलक।

सोमि, [सु + इञ्] कर्ण का नामान्तर।

सोम्य [सुल + यञ्] सारथि का पद, - न० ६।१०।

सोम्य (वि०) (स्त्री०-जी) [सुत् + अच्] 1 धाने या
शरी से तबध रखने वाला 2 सुममवचो, सुत् में
बगित, सुत् में निदिष्ट क्रः 3 आहण 2 कुत्रिम
घानु जो केवल सुत् में बगित है, नियमित घानुओं
को भाति उसकी कपरबना नहीं होती, योगिक जन्तो
के निमार्ण में ही उमका उपयोग होता है।

सोम्यनिका (पु० व० व०) बौद्धों के चार सम्प्रदायों में
से एक, पु० 'सोम्य'।

सोम्यन्वी [सुभामा इन्द्रो देवता अस्या - सुभामन् + अच्
+ ङीप्] पूर्वेदिशा चकोरनयनाकला भवति दिक्
च सोभामणी बिद्ध० ४।१।

सोम्यन् [सु०] [सोदर + यञ्] भ्रातृन्, भाईपता।

सोम्यन्वी [सुभामा पर्वतभेद तेन एका दिक् सुभाम्
सोभामणी] - अच् + ङीप्, पक्ष पु० माधु। बिबली,

सोम्यन्वी - सोम्यन्वी कनक निकदमित्यन्धमा दशोयोऽनीम्
मेघ० ३९, सोम्यन्वीय जन्मदोदर मधिमनी
मुच्छ० १।३५।

सौम्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [सुभा + ठञ्] स्वीयन, कथा के विषय के अन्तर पर जो धन उसके बाधा दिया या अर्थावधि द्वारा उसे दिया जाता है, और जो अच्छी गिनी अर्थात् हो जाता है, अन् दान या दक्षिणाकायी ।

सौम (वि०) (स्त्री०-की) [सुभाय निमित्त रत्न वा अणु] 1 अमृतपत्र, अमृतसम्बन्धी 2. पलस्तर से युक्त, या पुने से युक्त हुआ,--अणु 1 यह भवन विस्मयें सखी की हुई है, सुपाकित, पलस्तरदार 2. विज्ञानजनन, महान्, बड़ी दृष्टिनी सौधनायुक्तनेन विस्मृत सपिकाय फलनिःस्पृहसुप रत्न० ११२, ७५५, १३१४० 3 चौदी 4 सुधिया पत्थर । सम०--कार 1 पलस्तर करने वाला 2 कल्पन बनाने वाला, कल्पः महान् जेना भवन ।

सौम (वि०) (स्त्री०-की) [सुना + अणु] कलापूर्ण या अमार्थाने से सम्बन्ध रखने वाला,--अणु अर्थात् के घर का मांस । सम० धर्म्यं चौर क्षुद्रता की अवस्था ।

सौमन्थम् [सुमन्द् + अणु] बलराम का मुसल ।

सौमन्थि (पु०) [सौमन्द् + इति] बलराम का विश्वीयण ।

सौमिक [सुना + ठण्] कला, सु० 'सौनिक' ।

सौमधर्म्य [सुन्दर + धञ्] सुन्दरता, मनोहरता, नाकण्ड, कालिय-सौन्दर्यसंगमपदराजिकेतन वा-अ० ११२, कु० १४२, ५४११ ।

सौमधर्म्य [सुमर्ष + अणु] 1 मृदा अदृक्, सौठ 2 अमृत ।

सौमर्ष [सुमर्षा, विनताया अणवम् सुपर्ण + ठङ्] गर्भ का विशेषण ।

सौमिक (वि०) (स्त्री० की) [सुमि + ठङ्] 1 निद्रा-सम्बन्धी 2 निद्राजनक, कम् रात का आक्रमण, सति दृष्ट पर हमला । मम०-पर्वन् (सु०) महाभारत का दसवाँ पर्व जिसमें वर्णन किया गया है कि अश्वत्थामा, कृतवर्मा, द्रुप और कौरवसेना के बने हुए योद्धाओं ने रात को पांडवशिबिर पर आक्रमण कर हजारों सोने हुए सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया, -वध (शर्वभंग) पांडवशिबिर के सैनिकों का रात में महार पागों से अनेकसौमिकवधे पूर्व हुती दीगिना मूच्छ० ३१११ ।

सौमिक [सुवल् + अणु] शकुनि का नामान्तर ।

सौमिनी, सौमिकेयी [सौमन् डीण, सुवला + ठङ्] स्त्रीपुं] सुतराष्ट्र की पत्नी मान्यारी ।

सौम्य [सुन्दु मयंश नाके भादि सु + भा + क + अणु] हृदयवन्द का नगर (कहते हैं कि यह नगर अत्यन्त ही मन्दक रहा है) ।

सौम्यम् [सुमय + अणु] 1 अथवा भाय्य, सौभाग्य 2 समृद्धि, धन, दोलन ।

सौम्य सौम्यम् [सुभद्रा + अणु, उक् वा] सुभद्रा के पुत्र जो-अन्ध का विशेषण ।

सौभ्रमिण्य [सुभ्रम + ठङ्, इन्द्र, विद्वद्भुक्ति] मयमे प्रिय पत्नी का पुत्र ।

सौभाग्यम् [सुभगाया सुवगम्य वा भावः द्यञ्, द्विप-उदि, 1 अथवा भाय्य, अथवा किम्यत, सौभाग्य-साधिता (सुभगत इसमें प्रति-पत्नी का पारम्यान्तिक अन्वय प्रत्यन करना, तथा एक दुसरे के प्रति दूर भक्ति का हाना पावा ज्ञाना है) --(पण्डु) सौभाग्यफल हि वापता कु० ५१२, सौभाग्य ने सुभग विरहा-कथाया अन्वयवन्ती मम० २२, (दोना स्थानों में सौभाग्य) धरः पर ममि० के विराम हने) 2 स्वर्गीय मूल म-सुनि-ना 3 सोम्यं देवकः जामिनः, --(अस्या) श्वेन न सौभाग्यविकोपि ज्ञानम कु० ११३, २५२, ५५६, म्य० १८१२, २२२०, ५१२० 4 साभा उदयना 5 अतिवात (वि०) वैश्वम् 6 अर्थात् मयककायम्, 7 सिद्ध 8 मृताया । मम० - सिद्धम् 1 अथवा भाय्य वा सिद्ध अथवा किम्यत का सिद्ध 2 अतिवात का सिद्ध (मम कि मयक पर सिद्ध का सिद्धक), मत्तु (यत् मूल जो विवाह म वर द्वारा कथा क म म में बाधा जाता है और जिस स्त्री विवाह होने तक पहनता है) विवाह-पुत्र, मयकसूत्र --सुतीया भाग्यसूत्रनाया अर्थ-मानिका, नाक, देवता समन्वयता अर्थविभाषा देवता, वाचमन् विद्याय का शन उदयना म उदयना ।

सौभाग्यवान् [वि०] [सौभाग्य + अणु] पत्नी, पुत्र, सौ विवाहित ममिका की शक्ति, विवाहित मयवा म्वा ।

सौमिक [सौम कामवर्गिण्यु नसिमाण मा-मय्य शाभ + ठङ्] शत्रुता के-दोषात्त्व ।

सौभ्राण्य [सुभ्राण अणु] अथवा भाग्याय भाईबारा, यथा सौभ्राण्यवर्षा वि । ममि० म्य० १६, २ २०१/११ ।

सौमनस (वि०) (स्त्री० मा की) [सुमनस + अणु] 1 आनन्दजनक, नगर 2 पल्लववया पत्नीय, लम् 1 कृपाज्जना, नगरा, म्वा 2 आनन्द, सम्याय ।

सौमनसा [सौमनस + अणु] आनन्द का शिवाका ।

सौमनस्यम् [सुमनस पण्डु] मय का मनाय, आनन्द प्रसन्नता म्य० २५५१२, २३४६० ३ धाष्ट के अन्व-स्य पर श्राद्धण का शिवा मया कथा हा उपहार ।

सौमनस्यवशी [सौमनस्य वश + अणु] हीम्। मालती का नाम ।

सौमनस्य [वाच फल] वः का निपाठक नाम ।

सौमिक (वि०) (स्त्री०-की) [वाय + ठङ्] 1 सौमनस-सम्बन्धी, वायव्य म अनुचित यत् 2 पन्थसासम्बन्धी ।

सौमिनः, सौमिन. [सुमिन्ना + अन्, इन्, वा] लक्ष्मण का विशेषण सौमिनेरपि पवित्राभावविषये तत्र प्रिये नवानि भी उत्तर० ३/६५।

सौमिन्स्व (पु०) कालिदास का पूर्ववर्ती एक नाटककार भासकविश्रीमहाकविमिथ्याधीनाम् मालविक० १।

सौमेषकम् (नपु०) सोमा, स्वर्ण।

सौमेषिक [सुमेधा + ठक्] सुनि, श्रुति, अलौकिक बुद्धि-सम्पन्न।

सौमेषक (वि०) (स्त्री०-की) [सुमेध + कन्] सुमेध सबधी, सुमेध से बाधा हुआ, या प्राण, -कम् सोमा, स्वर्ण।

सौम्य (वि०) (स्त्री०-म्या, -म्यौ) [सोमो देवतास्य नस्येद वा अण्] 1 बड़ सबधी, चन्द्रमा के लिए पावन 2 सोम के सुभो से युक्त 3 सुन्दर, मुखद, शबिकर 4 प्रिय, मृदुल, कोमल, स्निग्ध-सरस्वती मैथिलीहास अण-सौम्या विनाय ताम्-रघु० १/३३६, (इसके सबोधन का रूप 'सौम्य' शब्द श्रोमान् जी 'सम्मान्य' अला मानस' अर्थों को प्रकट करता है—श्रीनासिमि ते सौम्य धिराय जीव-रघु० १/४५९, सौम्येति चाभाष्य यथायथादी -१/४४४, मेष० ४९, कु० ४/३५, मा० ९/२५ 5 सुभ -म्य 1 अथयह 2 श्राद्धण को सम्बोधित करने का मर्मचिन् विवेक्षण आयुष्मान् भव सौम्येति चाभ्यो विराडिवाङ्मने मनु० २/१२५ 3 श्राद्धण 4 सुन्दर का पद 5 लाभ होने से पूर्व की दशा में स्थिर नभयो, रत्नोद्यक 6 अन्तरज जो पेट में जाकर जीर्ण होकर बनता है 7 पृथ्वी के जो सन्धो में से एक, (पु० ब० व०) 1 मृगाशिरा के पांच नक्षत्रों का पूर 2 विनुयमं विशेष - मनु० ३/१९९, सम०--अप-चार शानि उपाय, मनु चिकित्सा, -कृष्णः, छन्द एक प्रकार की धर्म साधना -तु० यात्र० ३/३२२, पाथी मफेर गुलाब, -अह, शान्ति और सुभ ग्रह, धातु कष्ट, लक्ष्मणा, मात्स्य (वि०) जिसका नाम धृतिमधुर हो, सुन्दर हो -मनु० ३/१०, बार, भास्व-उपचार।

सौर (वि०) (स्त्री०-री) [सूर + अण्] 1 सूरज-सम्बन्धी, सोय 2 सूर्य का प्रति या पावन 3 स्वर्गिय, दिव्य 4 मदितासम्बन्धी, र 1 सूर्यापासक 2 शनिग्रह 3 सोय मास 4 सोय दित 5 तुम्बुह नाम का पीया, रत्न (श्रवण से उद्भूत) सूर्यसम्बन्धी मन्त्रों का समूह। सम० मन्त्रम् एक विशेष व्रत जो रविवार को किया जाय, भास्वः सोय मास (जिसमें तीस बार सूर्य उदय हो और तीस ही बार अस्त हो), लोक-सूर्य लोक।

सौरभः [सुभ्यः + अण्] सुभरी, घोड़ा।

सौरभ (वि०) (स्त्री०-भी) [सुरभि + अण्] सुगन्धित,

मम् 1 सुगन्ध वाधि० १/१८, १२१ ३ केसर, काफिरान।

सौरभ्य (वि०) (स्त्री०-भी) [सुरभि + अण्] सुरभि से सम्बद्ध, मः ईल।

सौरभी, सौरभ्यो [सौरभ + औप्, सौरभ्य + औप्] 1 गाव 2 'सुरभि' नामक नाय की पुत्री—तां चौर भ्यो सुरभिर्यसौभि -रघु० २/३१।

सौरभ्यम् [सुरभि + ध्यञ्] 1 सुगन्ध, सुसुव, मधुर-गन्ध-सौरभ्य भुवनप्रवेजि विलिन्म वाधि० १/३८, पुनाना सौरभ्यं मया० ४३, रघु० ९/६९ २ राच-कता, सोम्यं ३ सदाचरण, प्रतिदि, कीर्ति, स्वाति।

सौरभ्योः (पु०, व० व०) एक प्रदेश और उसके अधि-वासियों का नाम, नी दे० सोरतेनी।

सौरभ्यः [सुरभ, + ठक्] स्वन्द का विशेषण।

सौरभ्यम् (वि०) (स्त्री०-भी) [सुरभिन् + अण्] आकाशगाया सम्बन्धी वि० १/३२०, मः सूर्य का घोड़ा।

सौरभ्यम् [सुरभ्य + ध्यञ्] अन्धा प्रसाशन वा राज्य एको यतो सौरभ्यप्रदेशान् सौराभ्यप्रदेशान् विद्वर्त्तन् -रघु० ५/६०।

सौराष्ट्र (वि०) (स्त्री०-ष्ट्रा, ष्ट्री) [सुराष्ट्र + अण्] सौराष्ट्र (सूर्य) नामक प्रदेश सम्बन्धी या वहा से प्राप्त, ष्ट्रः सौराष्ट्र प्रदेश, (पु० ब० व०) सौराष्ट्र प्रदेश के अधिवासी, ष्ट्र्यु पीनल, कासा।

सौराष्ट्रक [सौराष्ट्र + कन्] एक प्रकार का कांसा, सुल।

सौराष्ट्रकम् [सुराष्ट्र + ठक्] 1 एक प्रकार का जहर।

सौरिः [सूर्यस्यैव पुमान् इन्] 1 शनिग्रह का नाम 2 असम नामक वृक्ष। सम० रत्नम् एक प्रकार का रत्न, नीलम।

सौरिक (वि०) (स्त्री०-की) [सुर (रा) (सूर) + ठक्]

1 स्वर्गीय, दिव्य 2 मदितासम्बन्धी, कामनीय 3 मदिता पर नवा कर, सुलक, कः 1 अति 2 स्वर्ण, वैकुण्ठ ३ कलाक, मदिता देखने वाला।

सौरि [सौर + औप्] सूर्य की पत्नी।

सौरिय (वि०) (स्त्री०-भी) [सूर + अण्] 1. सूर्य सम्बन्धी 2 सूर्य के योग्य, सूर्य के उपयुक्त।

सौर्य (वि०) (स्त्री०-भी) [सूर्य + अण्] सूर्य से सम्बन्ध रखने वाला, सूर्य का।

सौर्यम् [सुलभ ध्यञ्] 1 प्राति की सुधिवा २ सुक-रता, सुखमता, सुभवता।

सौमिन्कः [सुल + ठक्] तापकार, कसेरा।

सौभ (वि०) (स्त्री०-भी) [स्व (स्वर) + अण्] 1. अफनी, निजी सम्पत्ति से सम्बन्ध रखने वाला २ स्वर्गीय या स्वर्ण सम्बन्धी, -कम् बाधेय, राजघातक।

सौषधायिक (वि०) (स्त्री०-की) [स्वधाम+ठक्] अपने निजी दाय से सम्पन्न रखने वाला।

सौषर (वि०) (स्त्री०) श्री [स्वर+अण्] 1 फिली प्विन या सरीस के स्वर से तबब रखने वाला 2 स्वरसम्बन्धी।

सौषर्षक (वि०) (स्त्री०-की) [सुषर्षक+अण्] सुषर्षक नामक देश में प्राप्त,—सम् 1 सोषर नामक 2 सखी का भाग, देह।

सौषर्ष (वि०) (स्त्री०) षी [सुषर्ष+अण्] 1 सुनहरी 2 तोड में एक स्वर्णमुद्रा के बराबर।

सौषर्षिक (वि०) (स्त्री०) की [स्वर्षित+ठक्] प्राची-बोदायक, कः कुन्दपुरोहित, या ब्राह्मण।

सोषाध्यायिक (वि०) (स्त्री०-की) [स्वधायय+ठक्] स्वाधायसम्बन्धी, स्वाधायी।

सोषासत्त (वि०) (स्त्री०-की) [सुषान्तु+अण्] अन्ते स्थान पर निमित्त, अन्धी बासप्रथि में युक्त।

सौषिब, सौषिबल्ल [सु+विद्+ङ+अण्] मृत्तु विदन्तु, न सति—न्ता+ङ+अण्] अन्तपुर की स्ववासी पर नियुक्त व्यक्ति सि० ५१०३।

सौषीरम् [सुषीर+अण्] 1 बेंर का फल 2 अजन मुरमा 3 काजी, -र सुषीर देश या वहाँ का अधिवासी ('अधिवासी' के अर्थ में ह० ४०)। मम० -अञ्जलम् एक प्रकार का अजन या मुरमा।

सौषीरक [सौषीर+कन्] 1, बेंरी, बेंर का पत्र 2 सुषीर देश का अधिवासी 3 अयद्वय का नाम, -कम् जो की करनी।

सौषीर्यम् [सुषीर+व्यञ्ज] वहाँ शासीरता या विक्रम।

सौषीर्यम् [सुषीर+व्यञ्ज] स्वभाव की श्रेष्ठता, अच्छा नैतिक आचरण, सदाचरण।

सौषीर्यम् [सुषीर+अण्] न्यायि, प्रसिद्धि।

सौषीर्यम् [सुषीर+अण्] 1 श्रेष्ठता, बलाई, मोन्द्य लातिल्य, सर्वोपरि मोन्द्य—नवाङ्गसौषीर्यमव्यक्तये किरल-नेवय्यो पाषयो प्रवेशान्तु मालोब० १, शरीर-सौषीर्यम् मा० १११७, 'जिम्के शरीर की काटछाट या टोपटोप अच्छी न हो' 2 परमकीयन, वानुयं 3 अधिकता 4 लक्ष्य, इन्कायन।

सौस्नातिक [सुस्नात+ठक्] स्नान मग्नकारी होने के कारणम् में पुछने वाश सौस्नातिको यस्य भवाय-गम्ये म्य० ६१६१।

सौहाय्यं [सुहृद्+अण्] मित्र का पुत्र, ईश्वर हृदय की सज्जता, म्नेह, सद्भाव, मंत्री (सेवमानि) विधाण्य सौहाय्यं सुहृद्भ्यः—म्य० १४११५, सौहाय्यं सुहृदाणि विधेतिनामि—मा० ११६, मेष० ११५।

सौहाय्यं, सौहृदयम्-अण् [सुहृद्+व्यञ्ज, अण् वा, यत् वा] मित्रता, म्नेह यत्सौहृदादयि जना विधिमीभवन्ति

—सुहृ० १११३, ससौजनस्ते किम् ससौहृदयः—विश्व० १११०, मा० ११।

सौहृदयम् [सुहृत्+व्यञ्ज] 1 नृप्य, मनुष्य—सि० ५१६२ 2 पूर्णता, पूर्ति 3 कृपालुता, सद्भावना।

सह्यम् (स्वा० भा० स्कन्दते) 1 कृदना 2 उठाना 3 उठे-लना, उगलना।

सह्यम् (स्वा० पर० स्कन्दति, स्वप्न) 1 उछलना, कृदना 2 उठाना, ऊपर की ओर उठना ऊपर की उछलना 3 चिन्ता टपकना भट्टि० २०१११ 4 पट जाना, छलबना 5 नष्ट होना, समाप्त होना—सकन्दे तप गोश्वरम् 6 विखर जाना, घिसना 7 उगलना हालना, प्रेर० (स्कन्दयति—ने) उठेना, फैलाना आधी की भांति गरमना, उगलना (त्रैम वीयम्बलन)—एक प्रयोजन सर्वत्र नरेन नान्येत्तु बवात्—मन० २११८० ५५० २ छात्र देना, अवहेलना करना, पाम में निकल जाना, अघ—आक्रमण करना, घोषा बोलना आधी की भांति गरमना पुरीमवस्कन्दे लनीति नन्दनम् सि० १५५१, आ—आक्रमण करना, घोषा बोलना आत्मकण्ठव्ययण शार्णैरत्यक्काम्ब त इतम्—भट्टि० १७१८२, परि, इधर उपर उछलना—मेषनाद परिक्कन्दत्तु पत्तिकन्दनमाश्वरिम्। अञ्जनापरिक्कन्दे ब्रह्मपाशेन विष्कुरन् भट्टि० १७७५, प्र—, 1 आगे का उछलना 2 झपट्टा मारना, आक्रमण करना।

॥ (पुरा० उभ० स्कन्दयति—ने) एकत्र करना।

सह्यम् [स्कन्द+अण्] 1 उछलना 2 परा 3 कान्तिकेय का नाम सेनालीनामह स्कन्द—अण० १०१२४, रघु० २१३६ ७११, मेष० ४३ 4 गिर का नाम 5 शरीर 6 राजा 7 नदीदेव 8 चतुर पुरुष 9 मम० पुराणम् अठारह पुराणों में से एक, -बन्धी (स्त्री०) बेंर नाम के छठे दिन कान्तिकेय के सम्मान में पर्व।

सह्यम् [स्कन्द+अण्] 1 उछलने वाला 2 सैनिक।

सह्यम् [स्कन्द+व्यञ्ज] 1 क्षण, बहना 2 रेबन, पेट का चलना, (आने की या नला की) 'गियलना 3 जाना, हिलना-जु-ना 4 मूषना 5 टटक पहुँचा कर रख का अर्थात्।

सह्यम् (पुरा० उभ० स्कन्दयति—ने) एकत्र करना।

सह्यम् [स्कन्दते आक्षेपनेऽसौ सुषेन शास्त्रा या कर्मणि बज्ज, पृषा०] 1 कथा 2 शरीर 3 बृक्ष का तना—तीव्रापाणप्रतिहतसकन्दलम्कदलन—मा० १११८, रघु० ४१७, मेष० ५३ 4 घोषा या बड़ी शक्ति 5 मानव-जान की कोई शाखा या विधात् 6 (किमी पुस्तक का) परिच्छेद, अत्रयय बृहत् 7 किमी सेना की टुकड़ी 8 सैनिक सम्बन्धय समूह 9 जाने-निघो के बीच विषय 10 (बौद्ध दर्शन में) जीवन के पाँच तत्त्वकम्—मर्कवांशशरीरेषु मर्कवाङ्गम्यापञ्चकम्

-वि० २१८ 11 सङ्गम, लङ्काई 12 ताजा 13 करार 14 माला, रास्ता 15 बुद्धिमान् या विद्वान् पुत्र 16 ककपत्नी, बगला । सम० आधारः 1 मेना या मेना की टुकड़ी 2 राजा का निवास, राजधानी 3 गिरि, - उपास्य (वि०) की कचे पर डोया जाय, शान्ति बनाये रखने के लिए की जाने वाली सधि जिसमें अशोभना के विरुद्ध स्वयं कोई फल या शान्ति उपहार में दिया जाय, बाप बहणी, तु० शिष्य । तत्र नाग्यल का पेड़, देशः कथ, इदमुपहित-सुधमप्रियता स्क्न्धदेशे - वा० ११८, परिनिर्वाणम् शरीर के स्कंधी (पाशो तस्को) का पूर्ण लोप या नाश (बौद्ध०) - कस 1 नाग्यल का पेड़ 2 बेल का वृक्ष 3 गुलर का पेड़, बघना एक प्रकार का सोया, मेथी, -मल्लक, ककपत्नी, बगला, - वृक्षः बटवृक्ष, बाहू, बल्लक बोझा होने के लिए मथाया हुआ बीज, नद्वृक्ष बेल, - शाखा पेड़ की मुख्य शाखा या वृक्ष के तने में निकले, -पृच्छ, भ्रम, -स्कन्धः प्रत्येक नया ।

स्कन्धम् (नपु०) [स्कन्ध + अणुत्, प्यो०] 1 कथा 2 वृक्ष का तना ।

स्कन्धिक [स्कन्ध + ठन्] बोझा होने के लिए मथाया हुआ बीज, तु० स्कन्धकार ।

स्कन्धिन् (वि०) (स्त्री० -नी) [स्कन्ध + इति] 1 कथो वाला 2 डालियो वाला, तन वाला, (पु०) वस ।

स्कन्ध (भू० क० हू०) [स्कन्ध + क्त] 1 पतित, नीचे गिरा हुआ, उतरा हुआ 2 रिसा हुआ, बूढ़ बूढ़ टपका हुआ 3 उगला हुआ, फोलाया हुआ, छिड़ाका हुआ 4 गया हुआ 5 मुखा हुआ ।

स्कन्धम् (भा० आ०, स्वा०) कथा० स्कन्धने, स्कन्धानि, स्कन्धानि 1 रचना 2 रातना, छायापट आरना, बाधा डालना, अशरण्य करना, इतना, निर्वाचन 3-श्रे० (स्कन्धयति-ने वा स्कन्धयति-ने, चि-बाधा डालना, अशरण्य करना ।

स्कन्ध [स्कन्ध + धञ्] 1 महारा, धणी, टंक 2 आलस आधार 3 परमेश्वर ।

स्कन्धमसु [स्कन्ध + म्] महारा देने की किया, महारा, धुनी, टंक ।

स्कन्ध (वि०) (स्त्री० -वी) [स्कन्ध + अण्] 1. स्कन्ध-सम्बन्धी 2, निरसम्बन्धी. इम् स्कन्ध पुराण ।

सु (स्वा०) कथा० उभ० स्तुनाति, स्तुनुते, स्तुनाति, स्तुनीने 1 कूट कर चलना, उछलना, चौकड़ा भरना 2 उठाना, उठान करना 3 उठाना, ऊपर बिछा देना भट्टि० १०१२२ 4 पहुँचाना, प्रति, आपना भट्टि० १८१०३ ।

सुम् (भा० आ०) स्तुन्दते 1 कूटना 2 उठान करना, उठाना ।

स्त्रीयिका (स्त्री०) यक्षीयिलेपः ।

स्वम् (भा० आ०) स्वस्ते) 1. काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना 2 नष्ट करना 3 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 4 पतन करना, सर्वथा हरा देना 5 बचाना, बचा करना काट देना 6 दूढ़ करना ।

स्वहनम् [स्वम् + ह्युट्] 1 काटना, काटकर टुकड़े-टुकड़े करना 2 चोट पहुँचाना क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 3. कष्ट देना, दूषी करना ।

स्वाम् (भा० पर०) स्वस्वति) 1 लडलडाना, जोषे मूढ़ गिरना, जोषे गिरना, फिलफना, इगमयाना - स्वस्वति शरथ भूमी स्वस्तं न खादेलमा मही -मूष्ठ० १११३, ५१२४ 2 इगमयाना, महाराना, धरधराना, इगमय होना 3 आशा भंग किया जाना, उल्लंघित होना (किसी आदेश का) - मूष्ठा० ३१२५, रघु० १८१४३ 4 सम्पार्थ से भ्रूण होना - कि० १,३० ० घन्ट होना, उत्तेजित होना कि० १५३, १३५ ६ वृत्ति करना, बंदी मूढ़ करना, हलकी करना स्वन्वी हि करामम्बः मुहूर्त्सवित्सेपितन् हि० ३११३४, (यहाँ यह पदार्थ जहाँ की भी प्रकट करना है) 7 हुकसाना, तुलसाना, एक-एक कर डालना बदन-कमलक शिपो स्वस्वति स्वस्वदसमकत्रायञ्चुदन्वित ते - उत्तर० ४१४, रघु० ११०४, कु० ५१५४ 8 विकल होना, काँट प्रभाव न होना - रघु० ११८३ 9 बूढ़ बूढ़ गिरना, टपकना, चुना 10 जाना, हिलना-चुटना 11 जोड़ल होना 12 एकत्र करना, इकट्ठा करना - श्रे० (स्वस्वति-ने) 1 लडलडाने का कारण बनना, 2 वृत्ति या मूढ़ करना, इगमयाने या कावाडोल होने का कारण बनना - बघनाति स्वपयत् १६ १६ - कु० ८१२, स्वस्वयति वचन मे मधवयञ्जयञ्जम् - ना० ३१८, श्रे०, धककयचका होना - रथा प्रचम्बलनु-स्वापवा भट्टि० १४१८, वि० - चलनी करना, बंदी मूढ़ करना रघु० १११२४ ।

स्वामम् [स्वम् + ह्युट्] 1 लडलडाना, फिलफना, इग-मयाना, जोषे गिर पडना 2 इगमयाने हुए चलना 3 सम्पार्थ से विकलन 4. भारी बूढ़, वृद्धि, काली ; विकलता, निराशा, अलक्षयता 6 हुकसाना, बोलने में मूढ़ या उच्चारण में बधुवृद्धि, एक एक कर डोलना 7 चुना, टपकना 8 टकराना, उल्लंघना - उत्तर० २१२०, महारो० ५१६० 9. आपस में फिलफना, रचडना ।

स्वस्वति (भू० क० हू०) [स्वम् + क्त] 1. लडलडाना, फिलफना, इगमयाना 2 गिरा, पडा 3. धरधराने वाला, महाराने वाला, बटवट होने वाला, क्षतिग्र 4. मजे में बुर, विचकक 5. हुकसाने वाला, एक एक कर

५ पहाड़। सम०—**हरि** (वि०) बुलिवा बनाने वाला, मरौटा बनाने वाला, (रि) अनाज, धान्य, **हरिता** गुआ या मूटा बनाना, प्रचुर या बुलकल मात्रा में विनाश न आल स्तम्भकर्मिणा कम्पुचमगे-अने -मूटा० १३३, धम 1 गुपां। विस्मिन् धास के गुच्छे निगये वाय 2 (धाव) काटने के लिए। दराती 3 निर्वा पात एकत करने का टाकरी धनः दराती, रपा।

स्तम्भेरम् [स्तम्भे वृक्षादीना काष्ठे गुम्भे वा रमते ग्म् +ञ्च्, अट्ट० म०] हायां स्तम्भेरमा मूवरश्चङ्ग-लकपिण्मने -ग्म्० ५१८०, सि० ५३४।

स्तम्भ (म०) ५१०, स्था० ५१५० पर० स्तम्भने, स्तम्भार्ति स्तम्भानि स्तम्भिन, स्तम्भ इकारान्त उकारान्त उपमगां के पञ्चान् तथा अके के पञ्चान् पानु के म का दू हो जाना है। 1 रोकना, बाधा डालना पकड़ना, दवाना -न२५ स्तम्भितश्चापवृत्ति-कण्ठु -श० ६१५ 2 दूर करना कड़ा करना अथवा बनाना 3 जड़ बनाना पकड़नील करना अनन्य बनाना प्राया दरबाने गात्र स्तम्भमे < हने रिये भट्टि० १५५५ 1 टेक लगाना, महाराग देना, धामना, मनाते म्ना० ५ ३३ टोना, सयन होना, अटल होना ० घबरा होना, उन्नत होना, सोना घरेन चाला होना (निम्नाकित शब्दों में पानु क विभिन्न रूप दर्शाये गए) स्तम्भने बुल्य प्राया योनेन धनेन स 1 नान्मानि विधोक्षादि न स्तम्भानि यथाप्यमी 1) प्रेर० (स्तम्भयसि मे) 1 रोकना, परटना 2 दूर या कड़ा करना 3 मति-हानि करना 4 टेक लगाना महाराग देना। सम० अथ 1 सकना, निर्बांर होना प्रकृति स्वाब-ट्टय्य भय० ५१८ 2 अवच्छेद करना 3 महाराग देना टेक लगाना 4 धामना, कोली भरना, ब्रांसिन करना 5 लपेटना, लिफाफे में रखना 6 बाधा डालना, रोकना, पकड़ना, प्रतिबद्ध करना, छद्म - 1 रोकना, एकावट डालना, पकड़ना 2 महाराग देना, टेक लगाना, धाम रखना, उप, सि, रोकना गिरफ्तार करना, धरंथ, चेरना, पंचवटम्भानाभेत-कालापतनम् -मा० ५ वि 1 रोकना, 2 जमाना, पीछा लगाना, बाधित होना आयुष्मिन्ने मन्त्रिणि पाचिषे व विष्टम्भ वादाश्चपतिपठने श्री मूटा० ६१३, सम्भ, (प्रे० जी) 1 रोकना, प्रतिबद्ध करना, निषेध करना प्रयत्नशक्त्यभिभू-बिक्रिपाणा कश्चिदयोगा मनसा बन्धुः—ग्म्० ३३४ 2 मतिहीन करना अनन्य करना ग्म्० ३३० 3 हित्मत्त बाधना माहसत करना, प्रमत्त होना, स्वस्थित करना, संघेत होना -दवि मस्तम्भवयमा-

गम्—उत्तर० ४ 4, दुइ या अटल करना, भय० ३४५, लक्ष्य १, महारा देना, टेक लगाना 2 बसवना देन, शोशाहित करना।

स्तम्भः [स्तम्भ्-ञ् अच्] 1 स्थिरता, कबायन, लकरी, अटलता रक्ता स्तम्भ भवति—विष्कम्भ० १८१२९, मान्यस्तम्भ स्तम्भमकुलमोक्षप्रबन्ध प्रकम्प - मा० २१५, लक्षकम्पोपहितबहिनस्तम्भम्भ्येति गात्रम् - १३५, ५२ 2 बसवना, अटना, जाध, अथम्भता, लक्ष्मा 3 रोक, अवरोध, एकावट—सांजस्यट्टयिधानेन सन्तले स्तम्भकारणम्—ग्म्० १३०९, वाक्स्तम्-नाटयनि मा० ८ 4 निषेधित करना, दमन करना, दवाना—कुनविचलनम्भ प्रतिवृत्तियाम्भ्रविररिपि—अत्त० ३१६ 5 टेक, महारा, आलक 6 स्थण, मन्ना, पील 7 प्रकाश, (बुल का) तन 8 मूटा, जड़ता 9 बाधबुल्यता, अनुनेजनीयता 10 किसी अजीबक यक्ति या जानू से भावना या वक्ति का दमन करना। सम०—**अश्वीषं** किसी लकड़ी में मोद कर बनाई गई (मूर्ति), गर (वि०) 1 मतिहीन करने वाला, जड़ता करने वाला 2 रोकने वाला, (रु) बाध, **कारणम्** अवरोध या एकावट का कारण, -**कुना** विवाह आदि के अवसर पर बनाए गए अथवापी मशयों के स्तम्भों की पूजा।

स्तम्भच्छिन् (पु०) धर्मवहित एक वाद्ययंत्र। **स्तम्भच्छम्** [स्तम्भ् + च्छट्] 1 रोकना, अवरोध करना, एका-वट डालना, निषेधार करना, दवाना, निषेधित करना लोकोक्तोन्मुत्तितकरमांशुभ्रम्भम्भनायम्—उत्तर० ३३६ 2 मतिहीन होना, अकबाहट, जड़ता 3 धाम होना, स्वस्थितता पच० १३६० 4. दुइ या कड़ा करना, दुवता पूर्वक जमाना 5. टेक देना, महारा देन 6 श्विर प्रवाह का रोकना 7 कोई भी चीज को रकनाअवरोधक हो 8 (मन्त्रिक के द्वारा) किसी की वक्ति कुटित करना—द० स्तम्भ (१०)।—**म-काननेष** के पाँच बाणों में से एक।

स्तर (वि०) [स्तु (स्तु) + चञ्] फैलाने वाला, विस्तार करने वाला, डकने वाला, र. 1. कोई भी विछाई हुई चीज, रहा, तह, परत 2 शय्या, फल्य।

स्तरचम् [स्तु (स्तु) + च्छट्] फैलाने की क्रिया, विधरेना, छितराना आदि।

स्तरि (री) मन् (पु०) [तु + इ (ई) मनिच्] शय्या, फल्य।

स्तरौ [स्तु कर्मणि ई] 1 बुआ, बाण 2 वक्षिया 3. बास गाय।

स्तब् [स्तु + ञ्च्] 1 प्रहसा करना, विस्मृत करना, स्तुति करना 2 प्रवृत्ता, स्तुति, स्तोत्र।

स्तब्क (वि०) (स्त्री०—**विष्क**) [स्तु + ञ्च्] प्रचलक,

स्तोता,—क. 1 स्तुति कर्ता, प्रथमा, स्तुति 3. मञ्जरियो का गुच्छा 4 फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता, बबरा, कुसुम-मन्वक 5 किमी पुस्तक का परिच्छेद, या अनुचाप 6 मनुष्यत्व तुं 'स्त्वक' भी।

स्तवम् [स्तु + श्चुत्] 1 प्रथमा करना सराहना 2 सूक्त। स्ताव [स्तु + श्चुत्] प्रथमा, स्तुति।

स्तावक [स्तु + श्चुत्] प्रथमक, स्तोता, चापकम्।

स्तव् [स्वा० आ० लिट्] 1 चढ़ना 2 चावा बीजना 3 विना।

स्तव् [स्वा० आ० लोपेन] विना, बू-बू टपकना, भरना।

स्तविः [स्वम् + इत्, इवम्] 1 रुकावट, अवरोध 2 समूह, 3 गुप्त, गुच्छ, पुत्र।

स्तम्, स्तोम् [दिवा० पर० लिट्] स्तोयति 1 मोला या सर होना 2 स्थिर या अटक होना, कड़ा होना।

स्तम्बि [वि०] [स्तिम्बं कर्त्तुं क] 1 गीता, नर 2 (क) निपटक, निपटक शान्त धुनितमूकनिकातरल वन पर इव स्तिमित्य महोदये—मा० ३१०, (ख) जम्बाया हुजा कटोर, अटक, सतिहो, स्थिर—वाच-स्पति सत्रणि माउटवृत्तीं त्वाशास्वविनास्तिवितो बन्व कृ० ७८७, ७५९, मा० ११२७, रघु० २। २२, ३१७, १३१८, ७९, उत्तर० ६१२५ ३ मया हुमा, बढ—रघु० १७३३ ४ अकही हूँ, लकबाइल 5 मू, कोमल 6 तुल, सनुट। मम० वाम्: शान्त पवन,—स्तम्बि स्थिर संचलन।

स्तम्बितावम् [स्तिम्बिताव] विपना, विशेष्टया, शानि।

स्तोति [स्तु + श्चिन्] 1 यत्र मे स्थानापन शक्ति 2 धाम 3 आकाश अलक्षित 4 जन 5 शिपर 6 इन्द्र का विरोध।

स्तु (अदा० उभ० स्तोति-स्तवर्त्त, स्तुते-स्तुतोमे, स्तुत, इच्छा० तुष्ट्यन्ति-ने, उकारगत या उकारगत उपसर्ग के पश्चात् स्तु कम् का प ग आता है) 1 प्रथमा करना, सराहना स्तुति करना, स्तुतिमान करना—, कीर्तिमान करना शक्ति करना—भाषि० ३१८, मदा० ३१६, अटि० ८१२, १५६०, २११३ 2 प्रथमान करना, भजन गाना, स्तोत्रों द्वारा पूजा करना, शक्ति—, प्रथमा करना, स्तुति करना, प्र—, 1 प्रथमा करना 2 शरण करना, उपक्रम करना प्रस्तुतताम् विवाचकम् मात्कि० १ 3 कारण बनना पैदा करना मा० ५१९ लम्, 1 प्रथमा करना - रघु० १३१६ 2 गंचित होना, जानकार या बलित मध्य वाता हला इव प्रथं मे प्राग 'स्तम्ब प्रयोग) अनेकम सस्तुतमयनया नव नव प्रीतिरुहो करोति सि० ३३११, कि० ३१२, २० सस्तुत' भी।

स्तुक (पु०) वाया की चोटी, ग्रथि या मोड़ी।

स्तुका [स्तुक + टाप्] 1 ब आ की पथि या मोड़ी 2 माद के दानो सींगों के बाच के पुत्रगल बाबा का गुच्छा 3 कृन्त, जया।

स्तुक् [स्वा० आ० स्तावते] 1 उज्ज्वल होना, चमकना, निर्मल स्वच्छ होना 2 मंगलप्रद वा धन वा सुखद होना।

स्तुव [पु० क० कृ०] [स्तु + श्चिन्] 1 प्रथमा किया गया, प्रथम, स्तुति किया गया 2 स्तुतान: किया गया।

स्तुति: [स्त्री०] [स्तु + क्तिन्] 1 प्रथमा, गुणकीर्तन, सराहना, इलाका स्तुति-ग व्यतिरिक्त्यन्त दुराधि परिणामि हे रघु० १०१० 2 प्रथमाकारक मूलक स्ताव रघु० ८१६ 3 चापकबी, गणामद, झूठी प्रथमा—मनाथेगाहृति मा रिम स्तुति परमेष्ठिन- -रघु० १०१० ४ दुर्गा का नाम। मम० - योतम् स्तुतिमान, मूलक कीर्तिमान, पश्च प्रथमा की वस्तु -वाचक: कावगावक, प्रथमिवाचक, भाट चरण, मदेवाहाटक: वाह प्रथमायुक्त भाषण, स्तोत्र, - इत: भाट।

स्तुत्व [वि०] [स्तु + वत्] इलाप्य प्रथमनीव, सरा- हनीय रघु० ४१६।

स्तुत्वः [स्त्री०] [स्तु + क्तिन्] 1 प्रथमा करना 2 प्रसिद्ध करना, स्तुतिमान करना, पूजा करना। 1) (स्वा० आ० स्तावति) 1 प्रथमा देवता 2 छा करना, गुण कर्म: उर्ध्वमत करना।

स्तुव [स्तु + क] यकग।

स्तुम् [स्वा० क्वा० पर० स्तुमानि स्तुमानि] 1 राहना 2 मूल करना, अर्द्धभूत करना 3 विहाल देना।

स्तुप् [दिवा० पर०, वग० उभ० स्तुप्यति, स्तुपयति-हे] 1 उर लगाना, सजिप करना, चट्टा लगाना, एकत्र करना 2 मड़ा करना उठाना।

स्तुप्: [स्तुप् + अव] 1 इर, चट्टा टाका (मिट्टी का) 2 बीड म्मारकानिष्ठ, पावन अवशेषा का (जैने कि बुद्ध के) मन्त के ज्ञा तक प्रकार का लम्बमध्य स्तुपिनिष्ठ 3 चिला।

स्तु [स्वा० उत्तर० स्तुपति, स्तुपते, स्तुत कर्मवा० स्तवते] 1 फैलाना, छितराना, डकना, बिछाना (मट्टी) हस्तार मन्वाश्राने न बीडपटलैरिव -रघु० ४१६३, ७१५८ 2 फैलाना, प्रसार करना, विकीर्ण करना 3 कपेन्द्रा, छितराना 4 कपडे पड़- नाथा, हापना, बिछाना, लपेटना ७ मार शक्यता, धेर० (स्तारयति त) बिछाना, हापना, छितराना

—रवतनाधिकिलदन्तुम संयवेधानस्वरङ्गते—भट्टि०
१५४८, इच्छा० (निम्नोति न)।

॥ (स्वा० पर० स्तुतिनि) प्रमथ करना, मृत्त करना।

स्तु (पु०) [स्तु + क्तिच्] ताग।

स्तुथ (स्वा० पर० स्तुतिनि) जाना।

स्तुति (स्वा०) [स्तु + क्तिच्] १ केशना बिछाना, प्रसार करना २ इतना, कपड़े पहनाना।

स्तुह, स्तुह, (दुःश० पर० स्तुतिनि, स्तुतिनि) प्रसार करना, चोट पहुँचाना भार डालना।

स्तु (कृपा० पर० स्तुतिनि, स्तुतिनि स्तुतिनि, इच्छा० निम्नोति (रो) पति—ने, निम्नोति) डालना प्रसारना आदि, दे० 'स्तु'। अथ—डालना भरना बिछा देना—प्रकल्पना सामयनस्ति रिश—वि० १६।

२०, भा—डकना, बाँध्यादिन करना खु० १५५

उप— १ बछेगना २ क्रम म रचना पर।

१ केशना, रिशार्थ करना, प्रसार करना भट्टि०

१४१७ २ डालना (दा०) में भी। अथ नागयव-

पतिनाति जलनास्तिस्वमासि पतिस्वति—वि० ११८

अतिस्वत परास्तु स्वेन पतिस्वति—कि० १२१८

३ क्रम में रचना वि १ केशना, विकीण

रचना २ डालना प्र० केशना, प्रसार करना

--जैसा कि 'पायाधर्गवस्तारितिक योवतम' ३० १

२ बरना खु० ३१९ ३ केशना प्रसार करना

सम् - १ केशना, बरना--बालमस्तीपदभा--ग०

४३२ बिछाना।

स्नेह [बु० उ०] 'स्नेह का नामधानु-स्नेहनयति-ने)

ब्राना लटना --मनु० ८१३३।

स्नेह [स्तु कति अथ] चार लुटरा--त न स्नेना न

पामिमा इगति न च नयति-- मनु० ७१० तम्

चारी करना बुराना। सम०--विषह १ चारो

को दिया जाने वाला दण्ड २ चारो की राखना।

स्नेप [स्वा० पर० स्नेपने] निम्नता।

॥ (बु० उ०) स्नेपयति-ने) भेजना, फेंकना।

स्नेष [स्निप] घञ्। नयो गीलापन।

स्नेषम् [स्नेनय भाव यत् न लोप] १ चारी, लुट--कु०

२३५ २ बगई हुई वा चुराये जाने के पीछे कोई

वस्तु ३ कोई निरो रण गुण बाँध।

स्नेपन् (पु०) [स्तु गी०] १ चार, लुटरा २ सुनार।

३ स्वा० पर० स्नेपयति) पहना अलङ्कन करना।

स्तुम् [स्तन + अच्] चारी, लुट।

स्तुम्पम् [स्नेनय भाव प्यञ्] १ चारी, लुट, --म्य चोर।

स्तुम्पयम् [स्निपयि + क्यञ्] १ स्थिरता, कठोरता,

अटकना २ उड़ना, मृत्पतना।

स्तोक (वि०) [स्तुच्, घञ्] १ अल्प, पाठा--स्तोके-

नोदनिमायाति स्तोकेनायात्पद्योतम्-पञ्च० ११५०,

स्तोक महदा वनम्--भृत्० २४९ २ छाटा ३ कुछ

४ अरम, नीच--कः १ घोरी भाषा, वृद्ध २ वातक

पक्षी,--कम् (अव्य०) जग सा, अयोधुकन कम

पस्यादधुनत्वादिपति बहुतर स्तोकमुख्या प्रशानि

--या० १७। सम०--वाप (वि०) छोटें शरीर वाला,

छोटा, टिगना, लघु बन्ध, (वि०) उग लुका हुना,

घांसा वा शिथिल या अक्षय--भोगीभारोदलमप-

मना स्तोकनञ्चा स्तनाभ्या मेप० ८०।

स्तोकक [स्तोकाय प्रलविन्धवे कयति छव्यापने स्तोक

+ क + क] वातक पक्षी--मनु० १२१७।

स्तोकाज (अव्य०) [स्तोक + अस] बांदा-बांदा करने,

कमो के साथ।

स्तोतव्य (वि०) [स्तु + तवन्] प्रथमनीय इलाध्य, तारीफ

के लायक--स्तोतव्यगणमप्यत्र केवा न स्यात्प्रियो जन।

स्तोतु (पु०) [स्तु + क्तिच्] प्रसासक, स्तुतिकर्ता।

स्तोतव्यम् [स्तु + क्यञ्] १ प्रशंसा स्तुति २ प्रशानि, स्तुति-

गान।

स्तोत्रिय,--या [स्त्रा + घ, निच्] टाप् च] एक विधोप

प्रकार की कृपा, स्तोत्र का पद्य।

स्तोत्र [स्तुच्, घञ्] १ टोकना, बचक करना २ विराम,

पति ३ निरादर, तिरस्कार ४ सुवर, प्रशानि ५ साम-

वेद का एक प्रभाग ६ अलनिविष्ट।

स्तोत्र [स्तु + मत] १ प्रशानि, स्तुति, सूक्त २ पद्य,

आहुति जैसा कि ज्योतिष्टोम या अग्निष्टोम में

७ मीम द्वारा तर्पण १ सद्य, सद्यश्चय, सख्या, ननुद्ध,

मयान उतर० १५० ५ बड़ी भाषा, डेर भ्रम-

स्तीपारवित्रनाश्चनपुरो घन्ते श्वच रीरवीम्--उतर०

४१० महावीर० ११८ नम् १ सिर २ घन,

दौलन ३ अज्ञान, बाध्य ४ मोहे की लोक वाली छडी।

स्तोत्र्य (वि०) [स्तोम + क्यञ्] इलाध्य, प्रथमनीय।

स्तवान (वि०) [स्व्य + क्त] डेर के रूप में सवित मा०

५११, वेणी० १२१ २ धनीयुत, स्मूल, ठोस

३ मनु, म्निष्य, कोमल, चिकना ४ शब्दायमान,

पञ्च० नम् १ सधनता, ठोसपना, आकार या फलना

यै वदि दधि कुहरभाजायत्र अलकयनामनुशित-

सुर्गणि स्थातमम्भुकतानि मा० ९१६, उतर० २११,

महावीर० ५४१ २ चिकनार्ड ३ अमृत ४ बीलापन,

शाल्म्य प्रतिशानि, वृञ्।

स्तवायवम् [स्व्य + क्यञ्] डेर के रूप में सवित करना, भीड

लगाना, सम्यति।

स्तवैः [स्व्य + इनच्] १ अमृत २ चोर।

स्तव्य (स्वा० उ०) स्तवायति-ने) १ डेर के रूप में एकत्र

किया जाना, इधर-उधर फैलना, विकीर्ण होना

--निशिरकटकाय स्तवायते सल्लकीनाम्--मा०

९१६, २११, महावीर० ५४१ ३ प्रतिशानि, वृञ्।

स्त्री [स्वायते सुक्रीणिते वसाम् स्त्री + कृप् + क्रीप्]

1 नारी, औरत 2 किसी भी जातवर की माता

—गज स्त्री, हरिण स्त्री आदि, शं० ५।२२ 3 पत्नी

—स्त्रीणां भृत्यां समेदारारम्भे पुत्राय—भा० ६।१८, मेघ०

२८ 4 स्त्रीलिङ्ग, या स्त्रीलिङ्ग का कोई शब्द जाप

स्त्रीभूमि—अपर०। सप्त०—अपार०,—रम्भं अन्त पुत्र, जना-

नवाणा, अभ्यस्त- कनुकी, अभिसमन्तम् सत्रांग,

—आश्रीषः 1 अपनी स्त्री के सहारे करने वाला

2 स्त्रियों से बेव्यावृत्ति कराकर जीवनयापन कराते

वाला,—काम 1 स्त्रीसभोग का इच्छुक, स्त्रियों के

प्रति चाह 2 पत्नी को इच्छा,—कार्यम् 1 स्त्रियों का

व्यवसाय 2 स्त्रियों को टहल, अन्त पुत्र की सेवा,

—कुमारम् एक स्त्री और बच्चा—कुतुम्बम् रज खाव

स्त्रियों में रहने-भवाव, क्षौरम् या का दूध—मनु० ५।१९

—ग (वि०) स्त्रियों में सभोग करने वाला, स्त्री

दूध देने वाली गाय,—पुत्र दीक्षा या मन्त्र देने वाली या

पुत्रोद्दिष्टानी,—गृहम्—स्त्र्यागम्, दे०,—घोष- पी

फटना, प्रभात लड़का, छत्र स्त्रीयानी चरितम्,

—जम् स्त्री के कर्म, चिह्नम् 1 स्त्रीत्व का विनि-

ष्टना का कोई निशान 2 स्त्रीपौरि, भय शौर-

स्त्री की फुलवाने वाला लम्पट, जवनी केवल

कन्याओं की जन्म देने वाली स्त्री, जाति (स्त्री०)

स्त्रीवर्ग, माता,—हित स्त्री के व्रत में करने वाला,

लोक का गुण्यम्—स्त्रीनिन्दनार्थमात्रेण सर्वं पुत्र्य विन-

यति—शब्द०, मनु० ६।१११ धनम् स्त्री की

निजी सम्पत्ति विन पर उपरा स्वतन्त्र अधिकार हो

—धर्म, 1 स्त्री या पत्नी का कर्तव्य 2 स्त्रीसम्बन्धी

नियम 3 रज प्राव,—धर्मिणी रजस्वला स्त्री, ध्वज

रिग्यो भी जानवर की माता या स्त्रीवर्गीय, नाथ

(वि०) स्त्री त्रिमयी स्वामिनी हो निबन्धनम्

स्त्री का विशेष कार्य श्रेष्ठ, गुणधर्म, गृहिणी का कथ

—पण्योपलौकित् (पु०) द० ऊार म्हाजीव पर

स्त्रियों में प्रेम करने वाला, काम, लम्पट पिशाची

गक्षमी त्रेयी पत्नी—पत्नी (पु०, हि० व०) 1 पति

और पत्नी 2 स्त्री और पुत्र्य—पु० १।१, पुनस्तक्षणा

पुत्र्य के लक्षणां ने पुत्र स्त्री मर्दाना स्त्री प्रथम्य

(शा० में) स्त्रीवर्ग जोड़ बनाने के लिए जन्म के

अन्त में जुटने वाला प्रथम प्रसङ्ग (अपचित)

सत्राय,—प्रसू (स्त्री०) पुत्रियों की जन्म देने वाली

स्त्री—मात्र० १।१०—प्रिय (वि०) त्रिपुत्री स्त्रियों प्यार

करे (—) आम का पेड़, आच्छः स्त्री द्वारा परमान

दिया जाने वाला बुद्धि (स्त्री०) 1 स्त्री की समझ

2 स्त्री का परामर्श, स्त्री द्वारा दिया गया उपदेश,

—भोग्य सभागा,—सत्र स्त्रीयं 'स, स्त्री का कृपा,

मुक्तय, अज्ञाकृपा,—धनम् पत्नी की भाँति स्त्री,

स्त्री के रूप में महीन या गन्ध—स्त्रीवन्ध केन लोके

विद्यमन्तमय धनमासाय सृष्टम् धप० १।१९१,

—रञ्जलम् पान, नाम्बुल—रत्नम् श्रेष्ठ स्त्री स्त्री-

रत्नेषु मनीषी शियतमा युषे मनेष दत्ता—विक्रम०

६।२५, राख्यम् स्त्रियों द्वारा शासित राज्य या प्रदेश,

स्त्रियम् 1 (शा० में) स्त्रीशाक्तता 2 स्त्रीयान्ति,

ब्रह्म पत्नी के व्रत में रहना, स्त्री की अधीनता,

विधेय (वि०) पत्नी द्वारा शासित, लोक भक्त

अपनी स्त्री को बेटा चाहने वाला म्प० ११।८,

—विवाहः स्त्री के साथ विवाह, ससुरा स्त्रियों का

माय,—सस्त्राय (वि०) स्त्री की आकृति वाला—ग०

५।३९, सपहलम् 1 किसी स्त्री का बलान् आश्रितान

2 श्याभवाग, मनोस्वरक्षण, सख्य स्त्रियों की सभा,

—सम्बन्धः 1 किसी स्त्री के साथ दम्पत्य सम्बन्ध

2 वैवाहिक सम्बन्ध 3 स्त्री के साथ सम्बन्ध,

स्वभावाः 1 स्त्रियों की प्रकृति 2 हीनता हत्या

स्त्री का बच या कानल, हृत्कम् 1 स्त्रियों का बलान्

अपहरण 2 बलान् सभोग, अर्धगजनाद ।

स्त्रीतमा, स्त्रीतमा (स्त्री०) कृतीत स्त्री उत्तम जति की

मुपस्कृत स्त्री ।

स्त्रीता, स्वम् [स्त्री +तल्—टाप्, म् वा] 1 नारीत्व

2 पत्नीत्व 3 स्त्री होने का भाव स्त्रीता ।

स्त्रीण (वि०) (स्त्री० षी) [स्त्रिया टटम षण]

1 माता, स्त्रीशाक्त 2 स्त्रीशासित या स्त्री सत्त्वो

3 स्त्रियों में विद्यमान, जिन 1 स्त्रीत्व, स्त्रियों को

प्रकृति, स्त्रीशाक्तता उत्तर० ६।१२ 2 माता का

विज्ञ, स्त्रीयता श्रेष्ठ वा स्त्रीने वा मम समस्ता।

यान् दिव्या मनु० १।११२ इह १-२-५-पत्नयो

स्त्रीयतिन पदस्थने प्र० ५ नत्त नर्तनर लक्ष्यति

स्त्रीयताकालत -ता० 3 स्त्रियों का समूह ।

स्त्रीयता, स्वम् [स्त्रीण +तल्—टाप् 'व वा] 1 स्त्री

शाक्तता, स्त्रीयता 2 स्त्रियों के प्रति अप्रियत्क,

हृषि ।

स्त्री (०) [स्त्रिया क। (समाग के अन्त में प्रकृत ।

ब्रह्म होने वाला, टटम श्रुता वदा करने वाला,

विद्यमान मौजूद, वर्तमान आदि लटम्, अर्धव

प्रकृतिव्य लटम् ।

स्वकारम् [स्वता, पुत्रा०] सुतारी ।

स्वम् [स्त्री० पर० या श्रे० स्वयति स्वयतिन ।

1 दापता, छिपाना, मूल स्वता परदा इत्यादि

—पराम्भुहृत्वाभाव्यति त्वनगराणि स्वयतिन— मा०

१।१० 2 तुलना, हराण होने, अन्त्य रज अथवा

श्रेष्ठ स्वयिपुत्रोदमोक्तम् वाक्य० १ ।

स्वय (वि०) [स्वयः अच्] 1 ज्ञानमात्र, बेटेमान,

2 परित्यक्त, निर्लज्ज, लापरवाह, शः पुत्र, छनी ।

स्वानाम् [स्वप् + स्वप्] छिपाना, गुप्त रहना ।
 स्वानरम् [स्वप् + अरन्] सुपारी ।
 स्वानिका [स्वप् + अन् + टाप्, इत्थम्] 1 बेहया 2 पान
 की दुकान 3 एक प्रकार की पट्टी ।
 स्वानित (वि०) [स्वप् + क्त] इका हुआ, छिपा हुआ,
 गुप्त रहना हुआ ।
 स्वानी [स्वप् + क + डीप्] पान की बिबिया ।
 स्वान् [स्वप् + उन्] बूबड़, कुबड़ ।
 स्वानिदलम् [स्वप् + इलप्, नृक्, लम्प इ] 1 भूजड़
 (यज्ञ के लिए वीरन व वीरों के दिया हुआ), वेदी-
 तिलेपुष्पी स्पष्टिल एव केवल—कु० ५।१२ 2 बजर
 भूमि 5 देवी का देर 4 सीमा, हृद 5 सीमा चिह्न ।
 नम० श्रायिन् (पु०) (स्वानिदेशात् भी) यह
 मन्त्रायो जा नितो विस्तर के यज्ञभूमि पर माना है,
 —सितकम् वेदी ।
 स्वपतिः [स्वा + क, नम्य पति] 1 राजा, प्रभु 2 वास्तु-
 कार 3 रथदार इईई 4 यागधि ५ बृहस्पति के
 प्रति बलि देने वाला बृहस्पति-यज्ञ करने वाला
 6 अन्न पुर रखने 7 कुबेर ।
 स्वपुट (वि०) [निष्ठाति स्वा + क, स्व पुट यत्]
 1 मन्दपद्मा विपलन 2 ऊर्ध्व-मावड, ऊँचा-नीचा ।
 मय० गत (वि०) विषम स्थानों में रहने वाला,
 कठिनाइयों में घटने अङ्गुस्थादन्विसस्य स्वपुटगत-
 मधि कथ्यमव्ययमिति पा० ५.१६ ।
 स्वल् (स्वा० पर० स्वल्पनि) दुकाना पूर्वक स्थिर रहना,
 अस्थिर रहना ।
 स्वल्म् [स्वल् + अच्] 1 कठोर या तुल्य भूमि सूखी
 जमीन, दुब भू (विप० जल) —भा दुरामम् (समुद्र)
 दीयता टिट्टिभाषद्धानि नो वेत्स्वल्मा स्वा नयामि पच०
 १, इमी प्रकार स्वल्कमालिनी वा स्वल्कवामन् 2 समु-
 द्रत, समुद्रवेला, बाल-नद 3 पृथ्वी, भूमि, जमीन
 4 अणु, स्वान 5 बदन, भूजक, विषा 6 पहाड़
 7 उभय हुआ भूजक, टीका 8 प्रस्ताव, प्रसंग,
 विषय, विचारणीय बात विचार, विचार आदि
 9 यह या भाव (जैसे किसी पुस्तक का) 10 तन्म ।
 मय०—अन्तरम् कोई दूसरी जगह,—अन्तर (वि०)
 पग पर उतरा हुआ, अरविष्णम्,—कमलम्,—कम-
 लिनी पृथ्वी पर उतने वाला कमल मय० ९०, कु०
 १।१३,—अर (वि०) भूधर, (जो जलधर न हो),—अन्त
 (वि०) स्थान से पगित, अपनी पदवी से हटाया
 हुआ,—बेहता स्थानीय या श्राव्यदेवी,—पथिनी नृ-
 क्तमालिनी,—बामं,—बर्धम् (नपु०) भूमि पर बनी हुई
 सड़क—स्वल्कव्यंता (भूमि से), रपु० ४।६०,—विष्णुः
 शीघ्र भूमि पर लका जाने वाला पृथ्वी,—सुधिः (स्वी०)
 किसी भी स्वल् की सुधि भूमि की सफाई ।

स्वला [स्वल् + टाप्] ऊँची की हुई सूखी जमीन बहाँ
 जल के विकास का अच्छा प्रबन्ध हो (विप० स्वली,
 दे० नी०) ।
 स्वली [स्वल् + डीप्] 1 सूखी जमीन, दुब भूमि
 2 भूमि का प्राकृतिक स्वल्, भूमि या भूजक (जैसे
 कि बरस्वल्) —विष्णुवाय विकीर्णयुग्ंजा तपयु तापिच
 कुर्वती स्वलीम्—कु० ४।४ । मय०—बेहता पृथ्वी
 की देवी, भूमि की अधिष्ठात्री देवी—मेष० १०६ ।
 स्वलेशय (वि०) [स्वले गेते शी + कच्, अलुक् म०]
 सूखी जमीन पर सोने वाला,—य कोई भी जल-स्वल्-
 चारी जलधर ।
 स्वलिः [स्वा + विज] 1 जुलाहा 2 स्वर्ग ।
 स्वलि (वि०) [स्वा + लिच्, स्वादेयि] 1 दुब,
 पक्का, म्विर 2 बुड़ा, पृथ्वी, दुराना,—रा 1, बुड़ा दुब
 2 भिक्षक 3 हाट्टण का नाम,—रा बुड़ी स्त्री
 —स्वलिरे का त्वम् अवयमर्क कस्य नयमान्मकर
 दश० ।
 स्वलिष्ठ (वि०) [अतिशयेन स्वल्—स्वल्—इष्टन्
 सम्य नाप] सबसे बड़ा, बहुत हट्टपुष्ट, सबसे अधिक
 विस्तृत (स्वल् की उपमावस्था) ।
 स्वलीयत् [स्वल् + टिमुन्, स्वल्जटन्म्य स्वभावेण] सबसे
 बड़ा अणुशक्ति विस्तृत (स्वल् की मध्यमावस्था) ।
 स्वा (स्वा० पर०) कुछ अवयों में आग्नेयपद में भी
 —निष्ठाति न म्विन, कश्चा० स्वीयते इन धानु के
 पूर्व इकारान्त उच्चारण उपसर्ग आने पर धानु के
 'स्' को ए हो जाता है 1 उका होना—अणुयकेन
 पादेन लिष्टयकेन वृद्धिमान् सुभा० 2 उदरना,
 रते रहना, बहना, रुहना—दामं गृहे वा निष्ठति
 3 वेप वचना, बाकी रह जाता—लको गङ्गदलमिष्ठति
 —पच० ४ 4 विकल्प करना, प्रतीक्षा करना—किमिति
 स्थीयते रा० २ 5 उदरना, उपरत होना, बहना,
 निरक्षेष्ट होता—लिष्टयकेन अणुमधिपनिष्ठाति
 आममधे विक्रम० २।१ 6 एक क्षीर यह जाना
 —लिष्ठन् तावत्पञ्चोत्सायमवृत्तात्—का० (इस
 ब्रह्मांत का ध्यान न कीजिए) 7 होना, विद्यमान
 होना, किसी भी स्थिति या व्यवस्था में होना, (प्रायः
 हृदय के रूप में प्रयोग)—येरी स्थिते दोहचरि दोहवजे
 —कु० १।२, रा० १।१, विक्रम० १।१, काल नयमाता
 निष्ठति—पच० १, मनु ७।८ 8 डटे रहना, अनुकूप
 होना, भाषा मानना, (अवि० के साथ)—आने तिष्ठ
 भन्—विक्रम० ५।२०, रपु०, १।१६५ 9 प्रतिबद्ध
 होना—यदि ते तु न तिष्ठन्सुखायै प्रथमैतिष्ठि—मनु०
 ७।२० ८ 10. निष्ठत होता—न विज १३ तिष्ठन्तु
 मत् सुष्टेण नायवेत्—मनु० ५।२० ४ 11 क्षीयित
 रहना, तांत लेना—भा क एय मधि स्थिते चतुष्टय-

मविमविपुमिच्छति—पुत्रां १ 12. साध देना, सहायता करना,—उपस्थे स्वयमे वैष दुमिसे वनुतकटे । राबादारे स्वयाने व यतिच्छति स बावच—हि० १७३ 13 आशित होना, निर्भर होना 14 करना, अनुष्ठान करना, अपने बापको व्यस्त करना 15. (आ०) सहारा लेना, (मध्यस्थ मान कर उसके पास) जाना, मार्गदर्शन पाना—समय कर्णादिषु तिष्ठते य—कि० ३१३ 16 (आ०) (सुरतालिन के लिए) प्रस्तुत करना, बेध्या के रूप में उपस्थित होना (सम्बन्ध के साथ) गोपी स्मरन्तु हृष्याय तिष्ठते—पा० १३३४ पर सिद्धा०—प्रेर० (स्वायंपति—ने) 1 लडा करना 2 प्रमाना, जडना, स्थापित करना, रखना, प्रस्थापित करना 4 रोकना 5 पकड़ना रोकना—इच्छा० (निष्ठासि) लडे होने की इच्छा करना । बलि—, अधिक होना, बढ़ जाना अत्य-तिष्ठत् दशाकृत्सम्—अधि—, 1 स्थिर होना, अधिकार करना (कर्म के साथ)—अर्थात्त गोत्रविशोऽधिकतम्बी—रघु० १७३, मट्टि० १५३३ 2 अग्र्यास करना (साधना का) कि० १०१६ 3 अन्दर होना, रहना, बनना निवास करना,—पालमविनिच्छति—रघु० ११८०, श्रीत्रयदेवप्रयितनविनिच्छन्तु कष्ट-तदीचिन्तम्—गीत० ११ 4 अधिकार करना, जीतना, पराजित करना, पछाडना—संप्राप्ते मान-धिष्ठासम्—मट्टि० १७३२, १६४० 5 प्राप्त करना—कि० २१३ 6 नेतृत्व करना, सबहुत करना, पालन करना, निर्देश देना, प्रधानता करना द्वापर-द्वाराधिष्ठाय उत्तर० ४ 7 राज्य करना, शासन करना, नियन्त्रण करना—भग० ४६ 8 उपयोग करना, काम में लगाना 9 बड़ना, स्थापित होना, गद्दी पर बैठना—अचिराधिष्ठितराज्यं चापु—मालवि० ११८, अनु०, 1 काम, मरण, कार्यस्थित करना, ध्यान देना—अनुनिष्ठस्वागतो विभोगम्—मालवि० १ 2 पीछा करना, अग्र्यास करना, पालन करना—भग० ३३३ ३ देना, अनुदान देना, किसी के लिए कुछ करना—(यस्य) शोभाशिरस्य स्वयमन्वनिष्ठम्—हु० ११७ 4 निकट लडे होना, अनु० ११११२ 5 राज्य करना, शासन करना 6 नकल करना 7 अपने बापको प्रस्तुत करना अन्—, (शय आ०) 1 रहना, टिकना, डटे रहना—गोप भाष आयेवावतम्—भामि० २१७ 2 नीतीया पकड़ना वृत्तिमूढक भाषानिष्ठे—शि० २३४ रघु० २३१ 2 ठहरना, प्रतीक्षा करना—मट्टि० ८११ ३ डटे रहना, अनुष्ठान रहना—मट्टि० ३१४ 4 जीवित रहना—रघु० ८८० 5 निकषेष्ट रहना, बचना, ठहरना—भग० १३० ०. भा पकड़ना, मिलना, निर्भर होना—अधि

मुष्टिहि लोकाना रत्ना मुष्मास्वकीयता—हु० २१२८ 7 अलग लडे होना, बनाना रखना 8 निश्चित या निर्णीत होना (रेर०) 1 लडा करना, रोकना, पकड़ना बालना 2 प्रस्थापित करना, नीज डालना ३ स्वयं होना, सचेत होना, भा—, 1 अधिकार करना 2 बड़ना, सवार होना—यथा एकस्वयन्व-मास्थिर्वा—रघु० १३६ में ३ उपयोग करना, अन्व-लव लेना, सहारा लेना, अनुसरण करना, अग्र्यास करना, लेना, धारण करना यथाहि मनुजमानिष्ठस्व-नुमुपक मनु० १०१२८, २१३३, १०१०२ (यह अर्थ नाना प्रकार से—मेवञ्च शब्दों के अनुसार बिन्दे माध कि शब्द का प्रयोग होता है, बचलना रहना है—रे० हु० ५१२, ८४ मुद्रा० अ१९, रघु० १७३२, १५७९, हु० १७३२, अ२९, पद्य० ३१२ आदि) 4 करना, सम्पादन करना, पालन करना 5 अग्र्यासा 6 मध्य दाधना 7 दायित्व लेना 8 विशिष्ट इत से आचरण करना, व्यवहार करना 9 निकट लडे होना, उच्च—, 1 लडे होना उठना उठ कर लडे होना—उत्तिष्ठन् प्रथम चाप्य मनु० २१९९, इवा निस्साम्बोन्विनमृषियन् मनु० २६१ 2 त्याग देना, छोडना ३ पलट कर जाना—रघु० १६८३ 4 जाने जाना, उदय होना, आगे बड़ना, फूटना, निकलना—अनुनिष्ठिन् बर्षाना नृपणां स्त्रिय तत्पत्नम्—ह० २१३ 5 उदय होना उगना, सक्रिन् मे बड़ना—शि० २४ 6 मन्त्रित्व होना, उठना, मन्त्रिणीय होना गुरु हृदयदीर्घस्य स्वयन्वनिष्ठि परमम्—अग्र० २३, ३७ 7 वेष्टा करना, कविसिद्ध करना, (आ०) कि० १११३, शि० १८१३ (प्रेर०) 1 उठाना, उपन करना 2 काम करने के लिए उकसाना, उन्-जिन करना, उच्च—, 1 निकट लडा होना, किये में मिलना,—नादमनुपनिच्छिन् पद्य० २१०३ 2 निकट आना, पहुँचना—हु० २६८, रघु० १५७३ ३ प्रतीक्षा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सेवा करना मनु० २४८ 4 पूजा करना, श्रद्धा के साथ उपस्थित होना, सेवा करना, प्रणाम करना (आ०) न प्रत्य-कावन्वमपस्थितामी—मट्टि० ११३, उचिनमृषियत् ण्यमवात्मनपत्नमनुपनिष्ठे—भा० १, रघु० ४६, १०६३, १०१०, १८१२ ५ निकट लडे होना 6 संयुक्त के लिए पहुँचना 7 मिलना, संयुक्त होना यद्वा यमुनामुपनिच्छे—सिद्धा० 8 नेतृत्व करना (आ०) 9 मित्र बनाना (आ०) 10 पहुँचना, निकट विचनना, आनन्दवर्ती होना 11 श्रेयसाधना मे पहुँचना 12 उपस्थित होना (आ०) 13 बलि होना, उपन होना, वरि—, घेरना, चारों ओर लडे होना, सर्व- (रेर०) स्वयन्वनिष्ठ होना, सचेत होना पर्यवत्

पयात्मानम् विक्रम०१, प्र- (आ०) 1 कृष करना, विद्या होना पारसीकास्तनी वेनु प्रमत्ने स्वसकालेना -र०० ४१६० 2 दुकृता पूर्वक लड़े रहना 3 प्रस्थापित होना 4 पहुँचना, निकट जाना (प्रे०) 1 पीछे हटाना 2 जेजना, नितर-नितर करना ती अपनी स्वा प्रति रात्राक्षानी प्रस्थापयामास वगी वशिष्ठ -र०० २१७०, प्रति - 1 दुकृता पूर्वक लड़े रहना, प्रस्थापित होना 2 सहायता किया जाना 3 भाषित या निर्भर रहना 4 उहर्ना, हटे रहना, म्रियत रहना, प्रत्यय- (आ०) विरोध करना, वाचुषम् व्यबहार करना, भाषेय करना (किन्ती नर्क का) अथ केषित प्रयव- तिष्ठन्ने सारो०, भाषि० ११७३, (प्रे०) अपने आपको सचेत या स्वत्म करना, वि (आ०) 1 अक्षय लड़े होना 2 स्थिर रहना, हटे रहना, बस जाना, अक्षय रहना 3 रोकना, विचोर्ष होना, चित्र (आ०) 1 कृष करना 2 रोकना, व्यध (आ०) 1 अग्रय-अग्रय रक्षया जाना 2 कर्मबद्ध किया जाना 3 निश्चिन होना, स्थिर होना, स्थायी होना बच- नीयमित्थ व्यबम्भितम् -कु० ४१२१ 4 आश्रित होना, निर्भर होना, (प्रे०) 1 कर्मबद्ध करना, प्रबध करना, समर्पित करना 2 निश्चिन करना, स्थापिन करना 3 पुषक करना, अग्रय-अग्रय रक्षना, सन् (आ०) 1 बसना, रहना, परस्पर निकटवर्ती होना -तीक्ष्णादुद्दिष्टो मूर्धो परिभ्रमन्नामान् मणिप्यते -मृ३० ३१५ 2 लड़े होना 3 होना, बिद्यमान होना, जीवित होना 4 हटे रहना, साक्षा मानता, मिद्वान्ना का निर्वाह करना -दाग्निघ्रायुस्त्वस्य शोन्ध- ब्रजो वाक्ये न मणिप्यते मूळ० ११३६ 5 पुरा होना मद्य मणिप्यत यजन्तया शौचमिति स्थिति -मनु० ४१९८ (यज्ञपुत्रेण वृष्यते-कुल०) 6 सहाय हो जाना, विष्ण पड जाना-मृ३० ८१११ 7 निश्चेष्ट लड़े रहना, स्थिर हो जाना (प०) अण न गतिप्यति शोचलोक्तः अयोधयाम्या परिवर्तमान -हृि० 8 मरना, मरट होना (प्रे०) 1 स्थापित करना, बसाना 2 रकना 3 स्वस्थित होना, सचेत होना शैबि सत्पापयारामान्-उत्तर० ४ 4 अशोच करना, निर्बंध में रकना-मनु० ९२ 5 रोकना, प्रनिबद्ध करना 6 मार डालना, ललवि- (आ०) प्रदानता करना, धासन करना, प्रसासन करना, अशोच्य करना, ललव (आ०) 1 स्थिर रहना, बधक रहना 2 निश्चेष्ट रहना 3 तत्पर रहना (प्रे०) 1 नीच डालना 2 रोकना, - कृषा - 1 सहना, अग्र्यास करना -तपो महान्प्रयासाय 2 व्यसन करना, सन्धा- दन करना 3 प्रभोष में जाना, काय में बसाला 4 अनुसरण करना, पालन करना मनु० ४१२,

७१४, समु- , 1 बधा होना, उठना 2 मिल कर लड़े होना 3 दृष्टु में उठना, फिर जीवित होना, होश में जाना 4 उदय होना, सुटना, समु- 1 निबट जाना, पास जाना, पहुँचना 2 आक्रमण करना 3 आ पडना, कटिन होना 4 छट कर लड़े होना, संश्र (आ०) कृष करना, विद्या होना, संश्रि- 1 लटकना, भाषित होना, निर्भर होना 2 दुष्ट होना, स्थिर होना :

स्वाप् (वि०) [स्वा+गु, पुषो० पत्त्वम्] 1 दुष्ट, अटल, स्थिर, टिकाऊ, बचक, गनिहीन, पुः 1 चिष का विशेषण- न स्वापु स्थिरमनिशोयमूलको नि धे- यमयाम्नु न विक्रम० १११ 2 टेक, मोल, स्तम्भ कि स्वापुदयमान पुषवः 3 लूटी, कौल 4 पुषवटी का लुठु 5 बर्छी, नेडा 6 वीमको का बोलना, बानी 7 शेषिणि या सुगन्ध इव्य, शोचक (पु०, ननु०) शाखा रहित तना, गंगा डठ्ठ, मुडा पेड, दुट्ट । सम० छेबः बहु जो बर्छों के तने काटना है, जो तने को छोड कर ताक करता है-स्वानुच्छेदस्य केदारनाथु दास्यको मुषम्-मनु० ९१४४, -अवः किन्ती पुषी या पोष को कुछ और ही मसक केना ।

स्वाश्लिः (स्वाश्लि+श्व्) 1 वह स्थायी जो बिना चिस्तर के मृमि पर या यजीय भूख पर मोटा है 2 सापू या शामिक निजु ।

स्वात्म [स्वा+मृट्] 1 बधा होना, रहना, उहर्ना, नेरन्ध, निवास स्थान-उत्तर० ३१३० ३१३२ २ स्थिर वा अटल होना 3 स्थिति, दशा 4 अग्रह, स्वक, (अवन आदि के लिए) मृमि, मन्धित अक्षयाका- मरुषाम्नास्वानापवापरमपि न गन्धव्य-का० 5 मस्थान, स्थिति, अवस्था 6 सचम्, हंसियत 'पितृस्थाने' (पिता के स्थान में या पिता की हंसियत में) 7 आवास, घर निवासस्थान स एष (नक) प्रकृतः स्वानाच्छुनापि परिभ्रुते-प० ३१४६ ० देश, शेष, शिला, नगर 9 पद, दर्शा, प्रणिष्ठा-अवापरस्थाने निशोचित । 10 पदार्थ-मुषाः पुषास्थानं मुषिपु न च लिङ्ग न च वप -उत्तर० ४१११ 11 अक्षर, कात, किय, कारण पराम्मुहृत्स्वाना- थपि कृतैरापि स्वयवति-मा० १११६, स्थानं अरापरिभ्रम्य तदेव पुषान्-मुषा०, पुषी प्रकार कम्ह, कोप, विदार० आदि 12 उचित या उपयुक्त बहू स्थानेष्वेव विदोष्यन्ते मृत्वाक्वाभरणाति च प० ११७२ 1३ उचित या बोध्य पदार्थ-स्थाने कस लज्जति दृष्टिः शालवि० १, दे० पचाने' की 1४ अग्रय का उपधारणस्थान (बहु बाट है- अथी स्वानामि दर्शानापरः कृत्वा धिरस्तथा विद्वाङ्मूळं च दन्तापच नासिडौष्टी च तापू च-सिद्धा० १३

15. वाहन स्थान 16. बैठी 17. नृगम्य प्राण्य
 18 मय के बाद कर्मनिवार प्राप्त होने वाला लोक
 19 (नीति या युद्ध आदि में) दुःखा, आक्रमण का
 भूकाश्मना करने के लिए दुःखता.- मनु० ७।१२०
 20 पड़ाव, डेरा 21 निरक्षेप्य दत्ता उदासीनता,
 22 राज्य के मुख्य अंग, किसी राज्य का स्वयं
 --अधीन सेना, कोष, नगर शौर प्रदेश--मनु० ७।
 ५६ (यहाँ कुल्लू- 'स्वान' का अर्थ करता है "दंड-
 कोषपुराष्ट्रात्मक अनुविधम") 23 साक्ष्य, समानता
 24 किसी वृष्य का भाग या 'उड, परिच्छेद वा अर्धमाय
 आदि 25 अग्निनेता का बन्ध 26 अन्तराल, अन्तर,
 अन्तराल 27 (सर्गो० में) सुर, स्वर के स्थान
 की माथा । सम० अक्षरः स्थानीय राज्यपाल,
 स्वान का अधीक्षक, आत्मन त्प०, हि० व०)
 वेडा हुआ,--आलेख- किसी स्थान पर कीद, कारा
 बन्धन--दु० आमेध--'चित्तक' सेना ५ विधि के लिए
 स्थान की व्यवस्था करने वाला अधिकारी,--अन्त
 र्द० 'स्थानभ्रष्ट'--बाल रक्षवाला, 'पुत्रोत्तर, आरक्षी,
 --अष्ट (वि०) किसी घर में हुंदावा हुंदा- स्थानित,
 पदच्युत वंकार, साहाय्यम् 1 किसी स्थान का
 गौरव या महत्त्व 2 किसी स्थान में जाना देने वाली
 अन्तर्धान पवित्रता या दिशा गुण, योग 'युक्त
 स्थान का निर्देशन इत्यादि स्थानपाठान्त्य पद-
 विक्रममेव च- मनु० १।३३२--स्थ (वि०) 1) 2) 3)
 स्थान पर स्थित, अचल ।

स्थानकम् [स्थान + स्वयं क] 1 अवस्था, स्थिति
 2 नाटकीय व्यापार का एक विशेष स्थल उदा०
 पनाकास्थानक 3. गहर, नगर 4 आन्तराल 5 शराब
 की सवह पर उठा हुआ फन 6 सक्कर पाठ की एक
 रीति 7 यजुर्वेद की नैमित्तीय शाला का अनुवाक
 या प्रस्ताव ।

स्थानत. (अथ०) [स्थान -तमित्] 1 अपनी स्थिति
 या अवस्था का अनुवाक 2. अपने उपयुक्त स्थान में
 3 उक्तराग करने के अंग के अनुवाक ।

स्थानिक (वि०) [स्त्री०-की] [स्थान + उक्] 1 किसी
 स्थान विषय में संबंध रखने वाला, स्थानीय
 2 (व्या० में) जहाँ किसी अर्थ वस्तु के बदले प्रयुक्त
 हो, या उसका स्थानापन्न हो.-क 1 कोई पदाधिकारी,
 स्थानविधेय का रखक 2 किसी स्थान का शासक ।

स्थानिन् (वि०) [स्थानमस्थानि रकश्चने इति]
 1 स्थानराना 2 स्वयंसेवक, स्वामी 3 वह जिसका
 कोई स्थानापन्न हो (पु०) 1 मूलरूप या मूलिच
 तत्त्व, जिसके लिए कोई दूसरा स्थानापन्न न हो-स्वा-
 निवदावेसांजास्विधो-वा० १।१।५६ 2. जिसका
 जाना स्थान हो, अतिष्ठित ।

स्थानीय (वि०) [स्थान + उ] 1 स्थानविधेय से संबद्ध,
 किसी स्थान का 2 किसी स्थान के लिए उपयुक्त,
 यन् नगर, गहर ।

स्थाने (अथ०) ['स्थान' का अर्थ० का रूप] 1. ठीक
 या उपयुक्त स्थान पर, सही उद्य मे, उपयुक्त रूप में,
 ठीक समयमें, समुचित रीति में स्थाने वृत्ता
 भूपतिभि परीतो रथु० 3।१३. स्थाने प्राणा
 काशिता हुपधोना मानसि० ३।१४, कु० ६।६३,
 3।६५ 2 क स्थान में की बजाय के बदले, स्थाना-
 पत्र के रूप में-पालो रवाने इनादेश मुद्राये सम्पदेषात्पु
 रथ० १-१५८ 3 के कारण, क लिए 4. इसी
 प्रकार, भूति ।

स्थापक (वि०) [स्थापयति-स्था + पिय, ध्युत्] स्था
 करने वाला, प्रदाने वाला, नाव स्थापने वाला स्थापित
 करने वाला, विनिर्दिष्ट करने वाला.- क. 1 मय
 के कार्य का निर्देशन सम्यक्-प्रवृत्त मुखधार
 2 किसी देशान्तर का प्रतिगताता, भूति की स्थापना
 करने वाला ।

स्थापकम् [स्थापि - ध्यान] अन्न पुर का रखक, स्थल
 बान्धु विद्या, धननिर्माण कला ।

स्थापनम् [स्था + पिय + क्त, पुत्रात्] 1 स्था करने
 की क्रिया, प्रदाना, नीव स्थापना निर्देश दत्ता, स्थापित
 करना, मुक्ता बनाना 2 विचार का प्रदाना, धन का
 मनेच्छित्त करना, ध्यान, धारणा 3 निर्वाह आश्रय
 4. प्रयुक्त यन्त्रार (उप यंत्रको म्पी का यंत्रव
 पिष्ट में आरम्भकार का प्रथम लक्षण ज्ञान हो, उप
 समय यह यन्त्रार किया जाता है), द० पुनहन ।

स्थापना [स्था + पिय + क्त, टाप्, पुक्] 1 प्रदाना,
 प्रदाना नीव स्थान स्थापित करना 2. व्यवस्था
 करना, विनिर्दिष्ट (नाटक में) यन्त्रक का प्रवृत्त ।

स्थापित (प० क० क०) [स्था + पिय + क्त, पुत्र]
 1 स्थाप्य हुआ, प्रदाया हुआ, अवस्थित, परा हुआ
 2 नीव रखी हुई, निर्दिष्ट 3 उठा हुआ उठाया
 हुआ, स्था किया हुआ 4 निर्दिष्ट विनिर्दिष्ट,
 आदिष्ट, अर्थनियम 5 विधीयित तय किया हुआ,
 निश्चित किया हुआ 6 नियत, जिसका कोई पद या
 कर्मस्थ सीमा गया हो 7 विचारित, जिसका बिनाह
 हो चुका हो-वा० १०।५ 8 बुद्ध, स्थित ।

स्थाप्य (वि०) [स्था + पिय + क्त, पुत्रात्] 1 स्था
 जाने या जमा किये जाने योग्य 2 नीव स्थापने
 योग्य, स्थिर या स्थापित किये जाने योग्य, ध्युत्
 यन्त्रार, प्रदानन । सम०--अधहरकम् शरोहर की
 वस्तु तत्त्व का जाना, अजात में जायतन ।

स्थाप्यम् (नप०) [स्था + पिय + क्त] 1 सामर्थ्य, शक्ति
 स्थैर्य, सेवा कि 'सर्वधर्मात्म' में, द० 'अधरणा

मन् के अन्तर्गत महा० का उद्घरण 2. स्मिन्ना, स्थापितः।

स्थापित् (वि०) [स्था+पिन्ति युक्] 1 मड़ा रहने वाला टिकने वाला, स्थित रहने वाला (समाज के मत में) 2 मढ़न करने वाला, निर्गमर चलने वाला, टिकाऊ, टिके रहने वाला शरीर अर्थात्प्राणि कल्याणस्थापितो युगा—मुभा०, कतिपय दिवसस्थापितो योषमर्थो भर्त्स० २।८०, महाभार ३।१५ 3 बीने वाला, निवास करने वाला, रहने वाला मंय० २३ 4. स्मिन्, दृष्ट, पक्का अपरिचर्यो बीन बदले-रथापी भवति (पक्का हो जाता है) (पु०) 1 नियत या सामान्य भावना, (द० नै०) स्थापिभावः शि० २।८३ (ना०) 1 क्रांति भी टिकाऊ वस्तु दृष्ट स्थिति या दशा। मम० धार्य मन की स्थिर दशा, स्थिरता या मदा रहने वाली भावना, (कृतने से १२२ स्थापिभावः म दा काव्यव्यप विभिन्न रमो की निष्पत्ति पानी है, प्रथम रत्न वा ज्ञाना स्थापिभाव अल्प है) स्थापिभाव विनया में श्रांति या नो है—निष्पत्तिवत्त वाचनक भाषाभाषी भय तथा। ब्रह्मसाधनमपारकैश्वर्यमग्नौ प्राक्तन प्रमोदोपि च सा० ६० २०६, १० स्थापिभाषिभाव, भाव वा विषय भी।

स्थापक (वि०) [स्था+क, कौ] 1 स्थापन करने वाला 2 दृष्ट स्थिर, अचल—कः नाभिक मृत्पिपा या स्थोत्रक।

स्थापकम् स्थापित निर्णय प्रघाघन भाषा घञा 1 दान वाली तस्मरो 2 श्राद्धभाजनपात्र पाकपात्र्य अन्नः मम० अन्नम पाकपात्र की प्राकृति।

स्थापनी स्थाप्य शीघ्रः 1 मिट्टी का घड़ा या हीरी, गणन का अन्न कडावा बटनही—नरि मिसुका, मन्तीनि स्थाप्यो नाधिधीयन्ते सर्वे०, स्थाप्या वैद्वेवं-मया पदानि निष्कलनीमिन्वनेरचन्द्रार्थ भर्त्स० २। १०० 2 मांस तैयार करने के काम जाने वाला विशेष पात्र, पाटपात्र, तुरही के मृदा फल। मम० बाक एक धार्मिक कृत्य जिसका अनुष्ठान गृहस्थ करते हैं, पुरोष्वथ पाक पात्र में जमा हुआ मंस या तुरही, पुष्पाक पाकपात्र में पकाया हुआ चावल 'प्यस्य, द० 'प्याथ' के अन्तर्गत, चिकित् पाकपात्र का शीतरी हिस्सा।

स्थावर (वि०) [स्था+वरच्] 1 एक स्थान पर जमा हुआ, अचल, अस्थिर, अचर, अड (विप० अचर) —शरीराणां स्थावरजङ्गमानां सुभाष्य तन्मन्थविण द्वाभू द्वा कु० १।२३, १।१७ ७३ 2 निश्चेष्ट, निश्चिन्त, अथ 3 निश्चिन्त, स्थापित, रः पहाड़—स्थावरानां हिमाक्षयः—अथ० १०।२५, रच् कोई भी स्थिर

या जड़ पदार्थ (जैसे कि मिट्टी, पत्थर, वृक्ष आदि जो कि बढ़ाती की सातवीं मण्डि हैं) पु० मयु० ४१) —आन्व स मे स्थावरजङ्गमानां समन्वितान्त्वहारस्तुः रघु० २।४४, कु० १।५८ 2 वन्य की शरीर 3 अचल संपत्ति, माल असदाव 4 तुल्य या मो-क्षी प्राप्त संपत्ति। मम० अस्थावरम्, जङ्गलम् 1 चल और अचल संपत्ति 2 क्षेत्र और जड़ पदार्थ।

स्थावरि (वि०) [स्वी०-रा, -री] स्थावरिः अणु] मोटा, दृढ़, रच् दुहाया।

स्थावरा [स्था+त+स्थावरी क] 1 स्थापित करना, शरीर पर सुसन्धित लेप करना 2 पानी का बलबला या कोई तान पदार्थ—शि० १।८।५।

स्थावरा (वि०) [स्था+वृ] शारीरिक बल।

स्थावरा (वि०) [स्था+स्तु] 1 स्थिर, दृढ़, अचल 2 स्थायी, निश्च टिकाऊ, पायदार—शि० २।१३, कि० २।१५।

स्थित (पु० क० कृ०) [स्था+कत] 1 जड़ाहुवा, रहा हुआ, उठरा हुआ 2 अडा होने वाला 3 उठकर अडा होने वाला, उठा हुआ—स्थित, स्थितामूष्मन्ति प्रयाना 'आवेव ता सुपनिन्त्यमच्छतु—रघु० २।६ 4 टिकने वाला, बहारा लेने वाला, जीवित, विद्यमान, मोक्ष स्थित—अन्वा के स्थिताने निर्दिष्ट महा० १।१, मेघ० ७ (प्रयः क्तान्ते के साथ विवेक के रूप में) चिकित्० १।१, स० १।१, कु० १।१ 5 धरित, हुआ हुआ—कु० ४।२७ 6 पहाड़ वाला हुआ, अधिकार किया हुआ, नियत किया हुआ स० १।१८ 7 प्रियान्वित करने वाला, उठा रहने वाला, समनुकृप रघु० ५।३३ 8 निश्चेष्ट अडा हुआ, रका हुआ, उठरा हुआ 9 अडा हुआ, दृढ़नायक बना हुआ कु० ५।८२ १० स्थिर, दृढ़ जैसा कि 'स्थितयो' और 'स्थितप्रश्न' में 11 निर्धारित, दृढ़ निश्चय किया हुआ—कु० ४।१२ 12 स्थापित, समाहित 13 आचरण में दृढ़, दृढ़मना 14 ईमानदार, चर्मावा 15 प्रतिज्ञा या करार का पक्का 16 सहजत, व्यस्त, सक्रियवन्त 17 तैयार, निश्चेष्ट, समीप, तत्त्व स्वयं लडा हुआ (जैसे कि सन्ध)। मम० उपस्थित (वि०) 'रति' सन्ध से युक्त या द्रिष्ट (जैसे कि सन्ध)। कौ(वि०) दृढ़मनस्क, स्थिरमना, सान्त,—वाचयन् सती हुई स्वीयाव द्वारा प्राकृत में पाठ,—अथ (वि०) निश्चय वा सन्धकारी में दृढ़, सब प्रकार के प्रयोग से युक्त, सन्नुष्ट—अथहाति यदा कामान्कथानि राभं मनोयतान्। भाष्यमेवावापना तुष्टः स्थितप्रश्नस्तोष्यते यम० २।५५—अथ (पु०) पक्का वा विश्वासपात्र निश्च। निश्चिः (स्वी०) [स्था+निश्च] 1 अडे होना, खड़ा, टिकना, उठे खड़ा, जीवित होना, उठरना, निवास-

स्थान—स्थिति नो रे दम्बा, क्षणमपि मुदाश्लेषण
 सखे—भाषि० ११५२, रत्नागृहे स्थितिसुखमभिन-
 सुदो स्तनिसखे—उत्तर० ११६ 2. रुकना, रूप
 हाँकर खड़े होना, एक ही अवस्था में रहना प्रस्थि-
 ताया प्रसिद्धता स्थिताया स्थितिभाषे—रूप०
 ११८९ 3 अश्वि रहना, जम जाना, स्थिरता, दृढ़ता,
 लगे रहना, प्रकृति मम भूयानु परमात्मनि स्थिति
 भाषि० ४१०३ 4 हालत, अवस्था, परिस्थिति, दशा
 5 प्राकृतिक हालत, प्रकृति, स्वभाव—अथवा स्थिति-
 ग्रिय मन्वमतीनाम् हि० ४ 6 स्थिरता, स्थायित्व,
 चिरस्थायित्व, निरन्तरता—वगस्थिः परिणामामहनि
 प्रमोदे विक्रम० ५११५, कन्या कुलम्य स्थितये
 स्थितिज्ञ कु० ११८८, रूप० ३१२७ 7 आचरण
 की सुदृढता, कर्मव्यपान्न में दृढ़ता, निष्ठा, कर्तव्य,
 नैतिक सदाचार, शोचित्य रूप० ३१२७, १११५५,
 १२३१, कु० ११८८ 8 अनुशासन का पालन,
 (किमी राज्य में) मुख्यवस्था की स्थापना—रूप० ११२५,
 9 दर्जा, पद, ऊँचा पद या दर्जा 10 निर्वाह जीवन
 का वने रहना—मा० ११३२, रूप० ५१९ 11 जीवन में
 नैर्गन्ध्य, नक्षिणावस्था (मालव को तीन अवस्थाओं में
 से एक)—जगस्थितिप्रत्यवदराहेतु—रूप० ७१४४ कु०
 २१४ 12 गति, विनाम विवर्ति 13 कुशलत्व,
 कल्याण 14 मरति 15 निश्चित निश्चय, अध्यादेश,
 आश्रयित, निश्चिन्तित्व नौनिवाक्य 16 निश्चिन्त
 निर्वाण 17 अर्थ, सीमा, गद 18 बहता, गति-
 हीनता 19 प्रहम की अवधि। मम० स्वयम्
 (वि०) मूल अवस्था में जमाने वाला, पूर्ववस्था का
 प्राण करने की शक्ति रखने वाला, लचीलेपन को
 बाधना करने वाला, क लचीलेपन, पूर्ववस्था को
 पुन प्राण करने की सामर्थ्य।

स्थिर (वि०) [स्था+किन्त्, म० ल० स्वयम्, उ० अ०
 म्येष्ट] 1 दृढ़, स्थिरवृत्ति, जमा हुआ सावधान्यार्थि
 जननान्तर्गृहदादि—मा० ५१०, म स्थानु स्थिरप्रकृति-
 योपमुद्रयो नि धेवमायाम्नु व—विक्रम० १११, कु०
 ११३०, रूप० ११११९ 2 बचल, शान्त, गतिहीन—कु०
 २१३८ 3 दृढ़तापूर्वक जमा उत्तर० ११४०
 4 स्थायी, निष्प, साधन मेघ० ५५, मा० ११२१,
 5 शान्त, सखेत, स्थानचित्त धीर, समीर 6 मीन,
 अनुस्य 7 आचरण में बका, दृढ़ 8 मतल, अडाल,
 दृढ़-नैर्गन् 9 निश्चिन्त, विप्रवाम योग्य 10 कठोर, ठाल
 11 मजबूत, अमूर्द्ध 1२ कडा, निष्कलप, कठोर-
 हृदय—कु० ५१४०, —रू वेव, मुर 2 बल, 3 गहिर
 4 साय = निव का नाम 6 कार्मिकेय का नाम
 7 मोघ या निर्वाण 8 गतिघट (स्थिरीकृ 1 पुष्ट
 करना, मजबूत करना, समर्थन करना 2 रुकना, दृढ़

करना 3 पानत्र करना, लमलकी देना, आगम पूर्ववशात
 —मा०, स्थिरीकृ— 1 स्थिर या दृढ़ होना 2 शान्त
 या धीर होना। मम० अनुस्य दृढ़ आर्माकत बाला,
 स्नेहमिका, अरम्यन्—विपत्, वेतत् धी०—दृढ़ि,
 मति (वि०) 1 दृढ़ता, स्थिर या मकस्य का
 पक्का दृढ़ मकस्य, रूप० ८१०० विनाय धीर, अनुस्य,
 आयत्, शोचिन् (वि०) रोमंजीवो, चिरजीवी,
 आरम्य (वि०) दासिष्य निबन्ध में दृढ़, पर्येयाकी,
 कुटुक 1 लगतार पीसने वाला 2 (बीज्य० में)
 ममान भाजक कथ्य बराकृत छद भाजक वा
 बक्ष, छाया 1 व विषी का छत्रा देने वाला 2 वृक्ष,
 विह्व मरली, शोचिता ममल (नाम्यली) का
 पर,—बण्—साय कुण् 1 बरक वृक्ष 2 कुण् वक्ष,
 मोलमिरा, प्रतिष्ठा (वि०) दृढ़पान्त्र, ग्टी, ब्राह्मी
 2 बचन का पालन करने वाला, प्रतिष्ठा (वि०)
 विराय करने में दृढ़, ग्टी म०—कला कृमाटी,
 —शोचि बडा भारा वक्ष ज्ञा प्राया धीर मम० द,
 योचन (वि०) मदा यथा ग्टने याना 1 म०
 1 विद्यापर ररो 2 विद्याधारा वाक्य, धी (वि०)
 मदा रहने व की ममद्वि वाला मंगर (वि०) प्रविज्ञा
 का पालन करने वाला, मक्का, बल का—की शीहृद
 (वि०) निश्चय में दृढ़, स्वामिन् (वि०) द० या
 अटल ग्टने वाला युक्त ज्ञान रहने शान् (त्रैवा हि
 मयाधि मे)।

स्थिरता, स्वयं स्थिर त्व+दार, स्व का 1 दृढ़ता
 ग्येय विहाङ्गपन 2 दृढ़ और कवशाकी प्रथम योग्य
 मा० ४११८ 3 माकस्य मन की दृढ़ता
 4 अचलता।

स्थिरा [स्ति+राय+पूर्वी।
 स्थुइ (पु०) पर० स्थुइति] दृढ़ता।
 स्थुलम् [स्थुइ अय पु०] दृढ्य ल [एक प्रकार का लक्ष
 त्व]।
 स्थूषा [स्था+श्व, उरनादेश, पु०] 1 धर का मन
 मनुन स्वम 2 शान्त या लडा स्थुषानिश्चलनम्याप
 —पारो 3 लौहवृत्ति या प्रनिमा 4 धन। मम०
 —निश्चलनम्याय ग्याय के लीके देयो।
 स्थुयः (पु०) 1 प्रकाश 2 कष्टता।
 स्थूर [स्था+ऊर्न्] 1 धीर 2 मनुन।
 स्थूल (वि०) [स्थुय+अय म० अ० स्थुवीयम, उ० अ०
 म्यवत्] 1 स्थूल, बडा बलन विमान, महान
 बहुम्युपार्थि स्थुयेन स्थुवीये वरिहृदयवत् सि०
 २१०८ (यहाँ छटा शब्द की धरणा है) स्थुलम्यातन-
 गाय मेघ० १४ १०६ रूप० ६१०८ 2 शान्त
 मोक्ष, हृष्टपुष्ट 3 मजबूत, शक्तिवाली—एवम
 स्थूल स्थिति—का० कर्तव्याई से नाम लया।

4. बेटी, नहा 5. सम्पूर्ण, साधारण, जगती (आत्म० से नी) जैसा कि 'कुलसामान्य' में 6 मूल, वृद्ध, नामधेय 7 भाग्यहीन, सुख, उग्र 8 अथवा, कः कटहल, कन् 1 डेर, राशि 2 तन् 3. पहाड़ की चोटी । सम०—अणम् बड़ी आल जो गुदा के पास तक जाती है,—आत्मः नाप, उच्छ्वस 1 परंतु तब जो निर कर ऊपर-नासक टीने जैसा बन गया हो 2 अनुपेक्षा, कनी 3 हाथी की मध्यम गति 4 गूहासा 5 हाथी के दान का रस, —आय (वि०) मोटा, मोसल, —कौट, — श्वेड, बाण, आयः धनकी, -शालः हितान्, —भी, —मति (वि०) मूल, वृद्ध, -नासः लम्बी जाति का हाकडा —नास, नासिक (वि०) मोटी नास बाणा, (—स, —कः) मुजर, बराह, बह—अणम् मोटा कडा, —पट्ट कपास, चक्ष (वि०) मोटे पैर बाणा, मूत्रे पैर बाणा, (- वः) 1 हाथी 2 स्वीयद रोप से प्रप्त स्थिति, अणः समान (नाम्यनी) का वृक्ष, बाणम् मोटा हिमाव याटा अन्वय लक्ष, अय (वि०) 3 हानशोक, बदान, उदार 2 सम-हदार, विद्वान् 3 आय-हानि दोनों का ध्यान रखने वाला, अज्ञान् बड़ी योगि बाणी स्त्री, —शरीरय शौनिक जी नक्षत्र शरीर (वि०) सूक्ष्म (वि०) शरीर, आटक, आदि मोटा कपडा, शौनिका मुह-निर्घोषिता, छोटी चिकड़ी ब्रह्मका निर, शरीर के अनुपात में दाढ़ा, अट्टक 1 शींग 2 मिठ, —अणम् लघु वृक्ष, बडकण का पैर हस्तम् हाथी की सूँड ।

स्वच्छ (वि०) | स्वत् + क्तु | विन्तु, बज्र, महान्, विद्याल, क एक प्रकार की घास या नरकुल (नरकडा) ।

स्वल्पा, स्वल् [स्वल् + तत्, टप्, ल् वा] 1 क्षिन्ना, विद्यालया बहणल 2 सुन्ना, बहण ।

स्वल्पार्ति (ना० पि० ण०) बड़ा हान, हृष्ट-पुष्ट होना, भांग होना ।

स्वल्पिन् (पु०) | स्वल् + इति | उट ।

स्वल्पे (पु०) | स्वा + इत्यन्ति | दुटना, स्थिरता, अवन्ता, अडिगपल हाथीपास मरना स्वल्पमात्रः—पि० १८१३, न य स्वल्पेन दूरतिमयाधान लब्धवा—पामि० ११३२ ।

स्वेष (वि०) | स्वा + वत् | ब्रह्मणे जाने वाय, रभने जाने योग्य, मिथिल या निर्धारित किये जाने योग्य, —वः (दा धनो के बीच वर्षपास) 1 ब्रह्मणं का हीमला करने के लिए छोटा गया स्वधि विशाक्क, वच, निर्धा-पक 2 पुराहित ।

स्वेषम् (वि०) (स्वी० ली) | स्थिर + इत्यनुत्, स्वादेशः प० अ० 'स्थिर' की | दुग्धर, अघोषाहत बलवान् ।

स्वेष (वि०) | स्थिर + इत्यनुत्, स्वादेशः, उ० अ० 'स्थिर' की | अत्यन्त दृढ़, बलवान् ।

स्वेषम् [स्थिर + एत्यन्] 1 दुग्धा, स्थिरता अचलता, निरचलता 2 निर्गन्ता 3 मन की दुग्धा, मकन, स्वापित्य भग० १३१० 4 महानशीलता 5 कदा-पन, ठोसपता ।

स्वीये, **स्वीयेक** : [स्वृत् + इत्, इकन्, वा] एक प्रकार का गणधम् ।

स्वीरम् [स्वर + अच्] 1 दुग्धा, सामर्थ्य, शक्ति 2 गये या घोड़े पर सारने का पूरा बोझ ।

स्वीरिन् (पु०) | स्वीर + इति | 1 पीठ पर बोझ होने वाला घोडा, लघु घोडा 2 मजदूर घोडा ।

स्वीर्यम् [स्वल् + एत्यन्] बहणन, विद्यालया, हृष्ट-पुष्टता ।

स्वल्पम् [स्वा + लिच् + स्युट्, पुक्] 1 छिड़कना, नह-नाला 2 स्नान करना, पानी में डुबकी लगाना रेवे अर्धः स्वल्पमांडनराईपति,—पि० ५१५७ ।

स्वल् [स्व + अच्] दुगा, गिनता, टपकना ।

स्वल् [स्वा० लिच् + अच्] 1 बहना 2 उपलना (अंते मूत्र से), परिश्रम करना ।

स्वा (अ० पर० स्मृति, स्नान) 1 स्नान करना, नहाना, पानी में डुबकी लगाना मुक्तकाम्यमधि स्नान 2 मुक्तक अंके तब स्नान करने के सम्कार का अनुष्ठान करना, प्रेर० (स्नापयति से, स्नापयति—से) गूहाणा, बीला काना, तर कटा, छिड़कना (तोषी) अनुपेक्षा स्वपयारवृत्, कु० अ १०, निमलस्निपाधरा—पीठ० १२, उत्तर० ३१२३, कि० ५१४४, ४७, पि० २१७, ८१३, मेघ० ४३, इच्छा० | निस्वाधनि स्नान करने की इच्छा करना, अण्—पुण्य के कारण शोक मनाने के पर्याय स्नान करना, नि,—गहरी डुबकी लगाना अर्थात् पारंगत होना, दे० 'निष्वाय' ।

स्वास्तक [स्वा + क्त + क] 1 ब्रह्मचर्य आचमन में बहणन मगान कर अनुष्ठेय स्नान की विधि पूरा करने वाला ब्राह्मण 2 वह ब्राह्मण जो वैशाख्ययन मगान कर अग्नी मरुकुल से होता है और गृहस्थ धर्म में दीक्षित हुआ है 3 वह ब्राह्मण जो किसी धार्मिक विधि की पूरा करने के लिए निज बना हो मनु० ११११ 'पदने गीत वर्णो का कोई पुत्र जो गृहस्थधर्म में दीक्षित हो चुका है ।

स्वात्मन् [स्वा प्राप्ते स्युट्] 1 घोसा, मार्चन करना, पानी में डुबकी लगाना लक्षः प्रविष्टति स्वामीशौचं, कावचप वा० ४ 2 स्नान द्वारा शुद्धि, कोई धार्मिक या सांस्कारिक कार्केन 3 मुक्ति का स्वाय करना ३ कोई, बन्धु जो स्नान या वार्चन में कथ्य जाये । तय० अकारम् स्वानगृह, शौकी स्नान करने की

नाद,—आमा श्वेच्छुनिमा को मनाया जाने वाला पर्व,—अस्मत् स्नात का अर्थ—सकृत् कि पीडित स्नानकर्त्तुं भुक्तं हुतं पयः—हि० २।१०६—विधिः 1 स्नान करने की क्रिया 2 स्नान करने के उपरि नियम या रीति ।

स्नानोद्य (वि०) [स्ना + युज् + क्त] स्नान के लिए योग्य, मार्जन के लिए उपयुक्त, स्नान के समय पहना हुआ अस्त्र,—स्नानीयवस्त्रकियया पयोर्न कोपयन्त्यते—मातृवि० ५।१२,—यच्च जल वा जीव कोर्षे पदायं (जैसे कि उबलता, या सुवासिन पुष्प आदि) जो स्नान के उपयुक्त हो—रघु० १६।२१ ।

स्नायकः [स्ना + यिच् + क्त, पुक्] अपने स्वामी को स्नान कराने वाला या स्नान के लिए मायवी लाने वाला नौकर ।

स्नायकम् [स्ना + यिच् + क्त, पुक्] स्नान कराना, या स्नानकर्ता की दहल करना—मनु० २।२०९ ।

स्नायुः [स्नाति श्वस्यन् दोगाज्या—स्ना + उज्] 1 कबरा, पेशी, नल—स्वल्प स्नायुवसावधेयमिन्द्रि निसीसमय-विद्य वो—मनु० २।२० 2 अनुष्ण की शक्ति । मम०—अर्थम् शोषो का एक विषय दोह ।

स्नायुक [स्नायु + क्त] दे० 'स्नायु' ।
स्नाह, स्नायन् (पु०) [स्ना + यन्, कतिप् वा] गहरा पेशी ।

स्निग्ध (वि०) [स्निह् + क्त] 1 शिथ, स्नेही, शिथिली, अनुष्ण, प्रेमी मा० ५।० 2 चिकना तैलात्त, मनुष्ण, तेल में भोगा हुआ उत्सर्ग्यामि श्वयि तटयने स्निग्धभिस्त्राज्ज्वलाने मेघ० ५९ स्निग्धेशोपयवर्धे—रुद्र, सि० १२।११, मा० १०।५ 3 श्लेषविषया अस्त्रकथा, श्लेषदार, स्निग्धिका 4 उभयानि अस्त्रीना उज्ज्वल, चमकदार कनककिर्णमन्त्राया विष्णु प्रिया न ममोर्वदी—विश्व० ४।१, मघ० २३ उत्तर० १।२३, ६।२१ 5 चिकना, स्निग्धकारा 6 शोका, तर 7 शान्त 8 कृपान, मनु, मोक्ष, मिनलमार—प्रीतिस्निग्धेनपदवधुलोचने पीयमान मेघ० १६ 9 शिथ, लक्षिक, मोहक, रघु० १।१६, उत्तर० २।१५, ३।२२ 10 मोटा, मघन, मटा हुआ—स्निग्ध-च्छायातल्पु वमति रासगीयाधमेयु (यक्ष) —मेघ० १ 11 तुला हुआ, तमाया हुआ, (दृष्टि की भांति) टकटकी लगाये हुए, अर्थः 1 शिथ, स्नेही, शिथ-सदृश, शिथिली—विज्ञे स्निग्धैस्सकृन्मयि हेप्यतां याति किञ्चित् हि० २।१६०, वा, त स्निग्धोऽनुष्णला-शिवारयति य—सुभा०, पद्य० २।१६६ 2 आल एरुध का पीना 3 एक प्रकार का पीठ का वृक्ष—मनु० 1. तेल 2. मोन 3. प्रकाश, आमा 4 मोटा-पन, धुरदुरापन । लघ०—अन्तः लोही अमिन्ति, शिथिली

शिव—स्निग्धजनसिधिवता हि दुःख सह्यवेदन भवति—शं० ३.—लघुत्वा एक प्रकार का आचल जो जल्दी उठता है,—बुध्ति (वि०) टकटकी लगाकर देखने वाला ।

स्निग्धता,—स्निग् [स्निग्ध + तच् + टप्, ल् वा] 1 चिकना-पन 2 शीमता 3 सुकृपारता, स्नेह, प्रेम ।

स्निग्ध्या [स्निग्ध + टाप्] अन्धता, बला ।

स्निह् (विद्या० पर० स्निह्यति, स्निग्ध) 1 स्नेह रक्तमा, स्नेहानुभूति होना, प्रेम करना, शिथ होना (अर्थ० के साथ—वेचसते प्रेम किया जाय)—कनु क्षलु शालेऽग्नि-शौरस इव युष्मे स्निह्यति मे मन—वा० ७, त व स्निह्य-त्यावयो—उत्तर० ६ (यहाँ 'बावयो' लक्षण्य कारक भी हो सकता है) 2 अनुराग ही अनुष्ण होना 3 किसी पर प्रसन्न होना, कृपानु होना 4 शिथविषया होना, अस्त्रकला वा स्निग्धिका होना 5 चिकना वा शीम्य होना, प्रेम (स्नेहवति ते) 1 चिकनी-पुष्टी होने वाला, चिकनाता, चिकने पदार्थों में लेप करना चिकना करना, तेल लगाता 2 प्रेम करना 3 शिथ-द्विष्ट करना, मष्ट करना, मार हाकना ।

स्नु (अदा० पर० स्नीति, स्मृत्) 1 टपकना, स्रवण करना बूद-बूद गिरना, क्षिन्न होना पड़ना शिमा, चना 2 बहना, धार बहना, अ—बह निकलना, उडने देना—प्रमत्तस्मदी उत्तर० ३ ।

स्नु (दु०, नदु०) [स्ना + दृ] 1 पहाड़ का सततत मुझ 2 बाटी, सतह (पहाड़ पर्वत कर्णों में ऐ गन्ध का कोई रूप नहीं होता वर्ष० हि० ६० व पर्वतात् चिकन्य मे यह मान्त् गन्ध के स्वान में प्रयुक्त होता है) ।

स्नु (रथो०) [स्व + क्लिप्] स्नायु कपहरा, पेशी ।

स्नु (वि०) [स्नु + क्त] शिमा हुआ बूद-बूद कर गिरा हुआ बहा हुआ आदि ।

स्नुषा [स्नु + मक् + टाप्] पुत्रवधु अमाश्रित पुत्रमा-यथा श्वयंवेराकिङ्कोन्दिशु शिवा रघु० ८।१६, १५।०२ ।

स्नुह् (विद्या० पर० स्नुह्यति, स्नुग्ध वा स्नुह्) उमटी करना, की करना ।

स्नेहः [स्निह् + क्त] 1 अनुराग, प्रेम, कृपारता सुकृपारता—स्नेहदास्निग्धयोऽपिनात् कारीय प्रतिभानि मे विक्रम० २।४ (यहाँ इमने छटा अर्थ भी पढा है), अमि मे शीघरस्नेहोऽप्येतेषु शं० १ 2 तैला-कला, अनुष्णता, चिकनापन, चिकनाहट (वेवेचिक के अनुष्णार २४ वर्षों में से एक) 3 लकी 4 पर्वी, चना, कोई भी चिकना पदार्थ 5 तेल शिथिलिचिथ स्नेह उ द्यातासुधेविश्वान् रघु० १२।१ पद्य० १। ८७, (यहाँ अर्थ अर्थ भी करता है) रघु० ५।०५

6 शरीरगत कोई भी तरल पदार्थ जैसे कि शीमं ।
 मय० अन्न तेल में मिलीया हुआ, चिकनाया हुआ,
 चर्बी में मिला, अनुपचित. (स्त्री०) लिण्ण या पित्रो
 देना मेल-माल, --वाक. दीपक, - छेदः, बज्जः
 मिथना का दूट जाना, बुध्म् (अव्य०) अनुराग
 पूर्वक, प्रवृत्तिः (स्त्री०) प्रेम प्रवाह—श० ५।१६,
 श्रिय (वि०) जिसे तेल अधिक प्याग हो, (-घः)
 दीपक, भ. इलेप्या, रज्जुः निल, बलिः (स्त्री०)
 तेल की मुई नवाना, तेल का बनीया करना, गुदा के
 मार्ग में पिबकारी द्वारा तेल डालना,--विभक्ति
 (वि०) तेल से मालिया किया गया,--व्यक्ति
 (स्त्री०) प्रेम का प्रकटीकरण, मिथना का प्रदर्शन,
 (अर्थ) स्नेहप्रतिभिरविरह्य मूच्यते वाप्य-
 मूच्यम् मेघ० १२।

स्नेहः (प०) [स्निह् + क्तिन्, वि०] 1 निर
 2 न-दमा 3 एक प्रकार का रोग ।

स्नेहः (वि०) [स्निह् + णिच् + क्त] 1 मालिया
 करने वाला चिकनाया हुआ 2 दूट करने वाला,
 मय् 1 मेल मालिया, चिकनाया, तेल या उबटना
 मयना 2 चिकनाहट 3 उबटना, मिलावकारी ।

स्नेहिल (प० क० क०) [स्निह् + णिच् + क्त] 1. प्रेम-
 तार 2 कृपायु, स्नेही 3 लिपा हुआ, चिकनाया हुआ,
 -क मित्र प्याग ।

स्नेहित् (वि०) (स्त्री०—औ) [स्निह् + णि]
 1 अनुरक्त, स्नेह करने वाला, मित्र सहृदय 2 तैलावन,
 चिकना, चर्बी युक्त (प०) 1 मित्र 2 मालिया करने
 वाला, श्लष करने वाला 3 चिककार ।

स्नेहः [स्निह् + क्त] 1 चन्दमा 2 एक प्रकार का रोग ।
 स्ने (स्त्री० प०) स्नायति पट्टी बांधना, लपेटना, मुहोन्न
 करना, बांधन करना, परिषेधित करना ।

स्नेह्यः [स्निह्य + घञ्] 1 चिकनाहट, स्निघना,
 फिगमन, चिकणपता 2 युक्तमात्रा, श्रियता 3 चिक-
 नायन मुहुता ।

स्नेह्य (स्त्री०) स्ना० स्नयते, स्नयति 1 चरकना, चकचक
 करना अस्पृश्यतादि शब्द च --वृत्ति० १५।२७,
 १६।८ 2 हिलना, कापना, छिड़कना ३ जाना, गति-
 धीक होना, बरि--चककना, कापना, चि , इधर-
 उधर चूमना, सघर्ष करना ।

स्नेह्यः [स्नेह्य + घञ्] 1 चककन, चकचक 2 कपकपी,
 चरचराहट, यति -मनो मन्दस्नेह्य बहिरपि चिरत्सापि
 विमुह्यन् --वर्तु० ३।५।१ ।

स्नेह्यम् [स्नेह्य + क्त] 1 चककना, माही का चककना,
 चरचराहट, कपकपी--बामालिख्यं च सुधवित्वा
 मा० १, इसी प्रकार अर्च, बाहु, धारीर बादि
 2. चरचरी, चककन 3. चकक में जीव का स्फुरण ।

स्नेह्य (प० क० क०) [स्नेह्य + क्त] 1. चरचरीमुक्त,
 छिड़का हुआ 2 गया हुआ,--स्ने माही का स्फुरण,
 चककन, चकचक ।

स्नेह्यं (स्त्री०) स्ना० स्नयते 1. स्नुहा करना, होइ लगाना,
 मुकाबला करना, प्रतिद्वन्दिता करना, प्रतिबोधिता
 करना, अस्पृश्यत् च रापेय--वृत्ति० १५।६५
 कर्त्तव्यह स्नयते वर्तु० २।१६ 2 कलकारना,
 चुनौती देना, उपेक्षा करना, प्रति --, चि --, चुनौती
 देना, कलकारना ।

स्नेह्यी [स्नयं + घञ् + टाप्] प्रतिबोधिता, प्रतिद्वन्दिता,
 होइ--आपानतु बुध् स्नेह्यी सुदधीर्बहुमन्यव २ इत्यां,
 शह 3 चुनौती 4. सयानता ।

स्नेह्यन् (वि०) (स्त्री०—औ) [स्नयं + इति] 1. प्रति-
 द्वन्दिता करने वाला, होइ करने वाला, प्रति-
 बोधिना करने वाला, प्रतिस्पर्धीकाल -ठवाधरस्नयिन्
 विदुम्यु -प० १३।१३, १६।६२ 2. प्रतिस्पर्धी,
 ईर्यान् 3 घमडी. (प०) प्रतिबोधि, समकल
 भाकि ।

स्नेह्यं (चूरा०) स्ना० स्नयते 1 लेना, पकड़ना, फुना
 2 चिकना, सयुक्त होना 3. बासिधन करना,
 बाण्डेयण ।

स्नेह्यः [स्नयं (स्नृच् वा) + घञ्] 1. कुना, सपर्व
 (सभी अर्थों में--तद्विद स्नेह्येभ्य एतन्-श० १।२८,
 २।० 2 सयान (अप० में) 3. सपर्व, मुठमेड
 4 भावना, सवेदना, झुने से होने वाला ज्ञान 5 स्नधा
 का विषय, स्नययोग्यता, स्नेह्यगुण -स्नयन्को वायु
 --तर्क० 6 प्रभाव, रोग, बीमारी का दौरा 7 रोग,
 व्याधि, विकृति, जादि या मनोव्यथा 8. (कृ मे म्
 तक) दोषों वर्गों में कोई वा व्यजन -कादयो मान्ता
 स्पर्श ० उपहार, दान, भेट 10. हुआ, वायु
 11 बाकाया 12. एक रतिबंध,--झी कुलटा, पुरचकी ।
 मय०--अन्न (वि०) स्नयंज्ञान से रहित, सवेदनशून्य
 -इतिचय स्नयं का ज्ञान, वा स्नयंज्ञान ज्ञात करने
 वाली इच्छिप,--उन्नय (वि०) जिसके पीछे स्नयन
 वर्ध हो, उपलब्ध,--व्यतिः पराध परवर -सन्नाय
 बहु तरफ चितका झुने से ज्ञान हो,--सन्नाय सुईमुई
 का पीना वेध (वि०) स्नयं के द्वारा जिसका ज्ञान
 हो- सन्नायिन् (वि०) संभवक, झूठ का,--स्नयन्
 सूर्यबहण वा चंद्रबहण आरम्भ होने पर स्नान,--स्नयन्,
 --स्नयः मंत्रक ।

स्नेह्यं (वि०) (स्त्री०—औ) [स्नयं (स्नृच् वा)
 + क्त] 1. झुने वाला, हाथ लगाने वाला 2. प्रस्त
 करने वाला, प्रभाव डालने वाला,--मः हुआ, वायु,
 - सन् 1. कुना, सपर्व, सपर्व 2. सवेदन, साधकों
 3. स्नयंश्रिय या स्नयंश्रय ज्ञान 4. भेट, दान ।

स्पर्शनकम् [स्पर्शन+कम्] सास्पर्शन में प्रयुक्त 'स्पर्श' का पर्यायवाची शब्द ।

स्पर्शान् (वि०) [स्पर्श+भ्रूण] 1 स्पर्श किये जाने के योग्य 2 मृदु, छूने में शौचकर या कोमल—कु० ११५५ ।

स्पर्श (स्था० वा० स्पर्शते) गीला या ठहर होना ।

स्पर्ष्ट (वृ०) [स्पर्ष्ट+त्] मनोस्पर्शा, शरीर में बिकार, रोग ।

स्पर्श (स्था० उभ० स्पर्शति) 1 अन्नकूट करना 2 दागित ग्रहण करना, संपर्क करना 3 नत्की करना 4 छूना, देखना, निहारना, स्पर्ष्ट दृष्टियोग्य होना, जासूसी करना, भाषना, भेद पाना ।

स्पर्श. [स्पर्श+अच्] 1 भेदिया, गुलबर्, स्पर्शे गनेनैव-वति तत्र विद्विषाम् शि० १७१०, हे० 'आपस्पशा' 2 लडाई, संधाय, युद्ध 3 (पुस्तकार) पाने के लिए) जगली जानबरो से लड़ने वाला, या ऐसी लडाई ।

स्पर्ष्ट (वि०) [स्पर्ष्ट+स्त] जो साफ साफ देखा जा सके, श्वस्त, साफ दृष्टियोग्य, साफ, सरल, प्रकट स्पष्टे जाते प्रत्येक—का० 'अथ सूप खिल गर्द पी' स्पष्टाकृति—रघु० १८१०, स्पष्टार्थ—आदि 2 शान्त-विक, सन्ध्या 3 पूरा खिला हुआ, फुला हुआ 4 साफ साफ देखने वाला,—अच्छ (अर्थ०) 1 स्पष्ट रूप में, साफ तौर पर, साफ-साफ 2 नुस्खबखला, माहम पूर्वक (स्पष्टीकृत) साफ करना, प्रकट करना, व्याख्या खोल कर कहना । सम० यर्था बहु स्त्री जियके गर्म के चिह्न साफ देख पड़े, प्रतिपत्ति (स्त्री०) स्पष्ट ज्ञान, खुद प्रत्यक्षज्ञान,—भाषित, बख्तू (वि०) साफ-साफ कहने वाला, मुहकट, खग, सरल ।

स्पृ (स्था० पर० स्पृशति) 1 मुक्त करना, उद्धार करना 2 पुस्तकार देना, अनुदान देना, प्रदान करना 3 ग्ना करना 4 जीवित रहना ।

स्पृच्छा [स्पृच्छ+कच्] एक जगली पीना ।

स्पृष्ट [तुला० पर० स्पृशति स्पृष्ट] 1 छूना—स्पृशन्ति परमो हन्ति—हि० ३११६, कर्णं परं स्पृशति हन्ति पर समूलम्—पञ्च० ११३०४ 2 हाथ रचना, शपथपाना, छूना—कु० ३१२२ 3 खूब जाना, विषय जाना, अनुकूल होना 4 पानी से बोला या छिड़काव करना मनु० २१६० 5 जाना, पहुँचना—शं० २११६, रघु० ३१६३ 6 प्राण करना, हासिल करना, विशेष स्थिति पर पहुँचना महोद्योगी बल्लरः स्पृशन्ति—रघु० ३१३२ 7 कार्य में परिचय करना, प्रभावित करना, प्रसन्न करना, पक्षीजना, हवीभूत होना मुद्रा० ७११६, कु० ६१५६ 8 तकेल करना, उल्लेख करना—प्रेर०

(स्पृशयति—ते) 1 छूना 2 देना, प्रस्तुत करना—या कोटित स्पृशयता षटोष्ठी—रघु० २१४९, अथ—उपस्पृष्ट, अग्नि—छूना, उच्य—1 छूना 2 शरीर पर पानी के छीटे देना या स्नान करना मनु० ४। १६३ 3 आचमन करना, पानी देना, कुसला करना न मद्यवकन्दयुपास्पृशब्ध—महि० २१११, मनु० २१५३, ५१६३, अथ उपस्पृश 4 स्नान करना—रघु० ५१५९, १८३१, परि०, छूना, लम्, 1 छूना 2 पानी में छिड़काव करना मनु० २१५३ 3 सम्पर्क स्थापित करना ।

स्पृष्ट (वि०) [स्पृष्ट+क्विप्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) जो छूता है, छूने वाला, प्रसन्न करने वाला, बेधने वाला, मर्मस्पृष्ट, हृदिस्पृष्ट आदि ।

स्पृष्ट (प्र० क० ह०) [स्पृष्ट+क्त] 1 छूना हुआ, हाथ लगाया हुआ 2 सम्पर्क में आया हुआ, स्पृष्टी 3 पहुँचने वाला उपयोग करने वाला, विस्तार पाने वाला—अस्पृष्टपुरुषान्तरम् कु० ६१५५ 4 धमन, एकडा हुआ मेष० ६९, अन्नबस्पृष्टम्—रघु० १०११, २ गन्दा, मलिन मनु० ८१२०५ 6 जिह्वा के पृष्ठी स्पर्श में बना हुआ (पाषाणों में से कोई सा वर्ण) अधोऽस्पृष्टा यथास्वीयनेयस्पृष्टा शाल स्पृन्ता । रोषा स्पृष्टा ह्यम् प्रोक्ता निषोधानुप्रदानत-शिला० ३८ ।

स्पृष्टि,—स्पृष्टिका (स्त्री०) [स्पृष्ट+धितन्, स्पृष्टि+कन्+टाप्] छूना, सम्पर्क तदर्थस्य अन्वेषणार्थ-स्पृष्टिकया शापितान्ग्नि—मूक० ३ ।

स्पृष्ट (वृ० उभ० स्पृशयति—ते) कामना करना, आलापित होना, इच्छा करना, उल्लेख होना, चाहना (सप्र० के साथ) स्पृष्टयामि बन्धु दुर्लभितायार्थम् शं० ३, नप स्नेहायार्थि स्पृष्टयन्ती का०, न मैत्रियेय स्पृष्टया-बन्धु भर्षे दिवो भायलकेवतराय रघु० १६१८० मनु० २१४५ ।

स्पृष्टवत् [स्पृष्ट+व्यट्] इच्छा या कामना करने की क्रिया, आलापित होना ।

स्पृष्टवीथ (वि०) [स्पृष्ट+अनीयर्] चाहने के योग्य, अभिलषणीय, स्पृष्टा के योग्य, चाहनीय जहाँ बनानि स्पृष्टवीथवीथ—कु० ३१२० बन्धा स्वमेव जयन स्पृष्टवीथीपिदि मा० १०११, परस्परैव स्पृष्टवीथीयाम् न केरिय इन्द्रवीथीजयित्वा रघु० ७११६, कु० ३१६०, उत्तर० ६१६० ।

स्पृष्टयाम् (वि०) [स्पृष्ट+याम्] इच्छा करने वाला, आलापित, उल्लेख, उत्प्रेक्षित (सप्र० या अर्थ० के साथ) योग्येभ्य स्पृष्टयालकी न हि वयम्—मनु० ३१६६, तपोवनेषु स्पृष्टयालुनेव—रघु० १४१५ ।

स्पृष्टा [स्पृष्ट+अच्+टाप्] इच्छा, उल्लेखता, प्रसन्न

कामना, कामला, ईर्ष्या, अधिकाया - कथमन्वे करि-
ष्यन्ति पुमेभ्य बुषिष स्तुहाम् वेधी० ११२०,
रघु० ८।३४।

स्पृष्ट (वि०) [स्पृ + शिष् + पत्] बाष्पनीय, स्पर्श के
सोम्य - छुः विधीता नीच ।

स्व (क्रमा० पर० स्पर्शति) आघात करना, मार डालना ।
स्पृष्ट (पु०) २० 'स्पृष्ट' ।

स्पष्ट (स्वा० पर० स्पष्टति) कट पडना, फूलना ।
स्पष्टः [स्पष्ट + अच्] माप का फैलाया हुआ कण तु०
फट-टा ।

स्पष्टा [स्पष्ट + टाप्] 1 माप का फैलाया हुआ कण
2 फिटिकरी ।

स्पष्टिक [स्पष्टि + कै + क] बिलौर, काचमार्ग अपगतमने
हि मर्माय स्पष्टिकमपाविष्य रत्राजकगगनमय सुष
प्रविशन्त्यपदेवाणाम् - भा० । सम० - अक्षत मेक पर्वत
अहिः कैलास पहाड, विष् (पु०) कपूर अक्षयन्,
-अक्षयन, -बर्षि(पु०) शिला बिलौर पत्थर ।

स्पष्टिकारि, स्पष्टिकारिका (स्त्री०) फिटिकरी ।
स्पष्टिकी [फटिक + क्रीप्] फिटिकरी ।
स्पष्टि (स्त्रा० पर० स्पष्टति) कट पडना, बिलना,
फूलना ।
॥ (बुग० उभ० स्पष्टयति -ने) मन्थन करना,
पडाक करना, हमी उडाना ।

स्फट दे० स्फुट ।
स्फारणम् [स्फट् - स्पृट्] कापना, धरधराना, धड़कना ।
स्फाल् (स्वा० पर० स्फालति) कापना, धरधराना, धड़कना,
सजना, (बुरा० उभ० या प्रे० स्फालयति -ते)
कपा देना, हिला देना, झा , 1 कपाना, फड़फड़ाना,
हिलाना, हलाना 2 आघात करना, प्रपीडित करना,
अपछार करना आणकालिन यत्नमदाकराणं रघु०
१६।१३, उत्तर० ५।१३ 3 आघात करना, अनिहित
मान उठाना - मि० १।१० 4 (धनुष को) टंकारना ।
स्फारिक (वि०) (स्त्री० - क्री०) [स्फटिक + अण्] बिलौर
पत्थर का, कम्ब बिलौर पत्थर ।

स्फारित (भु० क० कृ०) [स्फट + शिष् + क्त] फाटा
हुआ फटा हुआ, फूला हुआ, विधीषण किया हुआ ।

स्फार्मिः (स्त्री०) [स्फाय् + क्तिन्, बलीप] 1. नुजन,
शोष 2 बुद्धि, बढ़नी ।

स्फाय् (स्वा० आ० स्फायते, स्तीत) 1. मोटा होना,
बड़ा होना, विस्तारयुक्त होना, विशाल होना 2 नुजना,
बढ़ना, फूलना सपूषणे तयो कोप परफायते शम्भ-
काचवम् अट्टि० १४।१०९ -रे० (स्फाययति -ने)
बढ़ाना, विकसित करना, विस्तारयुक्त करना, बड़ा
करना - तावास्फाययति शकतीर्वाश्रायकारितां मुहुः
-अट्टि० १०।४३, ४।१३, १२।७६, १५।९९ ।

स्फार (वि०) [स्फाय् + रक्] 1. विसृत, बड़ा, बढ़ा हुआ,
फुलाया हुआ - स्फारकुल्लकपापीनिषेयन् -आदि-भा०
५।२३, महावीर० ६।३२ 2 अधिक, पुष्कल महा-
वीर० ५।२, मत्सु० ३।२२ 3 ऊँचा (स्वर), ए
1 नुजन, बुद्धि, विस्तार, विकास 2 (मोने में पड़ी
हुई) कुटकी 3 उधार, गिन्दी 4 धड़कना, धरधरी-
युक्त मन्दन, धकधक 5 टंकार, -रम् प्रचुरता,
आविषय, पुष्कलता (स्फारीयु नुज जाना, फूलना,
सैलना, बढ़ना, बुद्धि होना मुस्लिम्या विम्वशीभवन्ति
मुहुद स्फारीभवन्त्यापद मुष्क० १।३६ ।

स्फारण [स्फुट् + शिष् + स्पृट्, स्फागरेण] धरधराट,
पूरण, कपकपी ।

स्फाल [स्फाल् + पञ] धरधराट, धकधक, धड़कन,
कपकपी ।

स्फालनम् [स्फाल् + स्पृट्] 1 मन्दन, धकधक 2 हिलाना-
हलाना 3 रगड़ाना, चिमना 4 कपकपाना, महलाना
(घोरे आदि को), धीरे-धीरे हाथ फेरना ।

स्फिक् (स्त्री०) [स्फाय् + शिष्] बूट, फूला, -अस-
स्फिकपृष्टपिष्ठाश्वरवमुलभायुष्मृतानि अष्वा-भा०
५।१६ ।

स्फिक् (बुरा० उभ० स्फोटयति -ते) 1. थोट पहुँचाना,
सनिधस्त करना, मार डालना 2 चुपा करना 3 प्रेम
करना 4 डकना ।

स्फिक् (बुरा० उभ० स्फिक्कयति -ने) थोट पहुँचाना
आदि दे० अपर स्फिक् ।

स्फिक् (वि०) [स्फाय् + क्तिन्, म० अ० स्फेयस्, उ०
अ० स्फोट] 1 प्रचुर प्रभूत, बहुत 2 बहुत से,
अवश्य 3 विसृत, आवृत ।

स्फीत (भु० क० कृ०) [स्फाय् + क्त, स्फी आदेशः] ।
1 मूत्रा हुआ बड़ा हुआ -वेधी० ५।४ 2 मोटा,
पीन बढ़ा विस्मन्, विशाल 3 बहुत से, असम्ब,
अधिक पर्वानि, पुष्कल, प्रचुर 4 पविष -भाषि०
४।१३ सफल समृद्ध, फलता-फूलता 6 पैनुक गेव
से दस्त (स्फीतीकृत बहा काना, विसृत करना) ।

स्फीतिः [स्फाय् + क्तिन् स्फी आदेशः] 1 बुद्धि बढ़ती,
विस्तार 2 शब्दों, यथेच्छता, पुष्कलता बनधायस्य
थ स्फीति शब्दों में वर्गता मुहे 3 समृद्धि ।

स्फुट् (नुरा० पर० स्फा० उभ० स्फुटति, स्फोटति ते,
स्फुटिति) 1 फट जाना अक्षयन्त् फूट जाना, टूट
जाना, अचानक विधीषण होना, धरार पड़ना, धन होना
हा हा 1 देवि स्फुटति हुदय संक्षेपे देहवन्थ -उत्तर०
३।३८, स्फुटति न सा मयविषयविषयेन गीत० ७,
पट्टि० १५।५६ १५।७७ 2 फूलना, विकसना, फूल
देना, कुसुमित होना - स्फुटति कुसुमितकरे विरहित-
हुदयवल्गवान गीत० ५ पृष् १।३३६ काव्य०

१।१६७ 3. भाग जाना, छोलाय लगाना, वितर-
वितर करना, -तुरख पुस्तुटपीना -भट्टि० १५।१.
१०।८ 4. दृष्टिगोचर होना, निगाह में पडना प्रकट
होना, स्पष्ट होना ।
11 (चुरा० उभ० स्फुटयति-ने) 1 फटना, तरेड
जाना, टूट जाना 2. निगाह में पडना, -प्रेर० स्फोट-
यति-ने, 1 फट कर टुकडे टुकडे होना लहर
होना, सोल कर छाडना, तरेड डालना बाटना
2 प्रकट करना, बतलाना, स्पष्ट करना 3 मोलना
बहाफेज करना 4. चोट पहुँचाना, नष्ट करना मार
डालना 5 पछोडना ।

स्फुट (वि०) [स्फुट् + क] 1 फट पडा टट कर टुकडे
हुआ, टूटा हुआ, लडल 2 बिना हुआ फूला हुआ,
प्रकृतिस्तित स्फुटपरमाणुवलयकुजम् मि० ६।२५
3. प्रकटीकृत, प्रदर्शित, स्पष्ट किया हुआ
4 साफ, स्पष्ट साफ दिखाई देने वाला या व्यक्त
अत्र स्फुटो न बरिचदलद्वार - बाव्य० १. कु०
५।४४, मेघ० ७० कि० १।१४४ 5 प्रत्यक्ष -उत्तर०
२।२८ 6 उबेत, उज्ज्वल धूम-मकलाफल वा
स्फुटविद्रुमस्यम् कु० १।४४ 7 मुक्ति प्रसिद्ध,
-स्फुटनृत्यलीलमभक्तमुक्तो - मि० ९।७० (प्रमित)
8. प्रसारित, विकीर्ण 9 उच्च 10 दृश्यमान, मय्य,
-हम् (अव्य०) स्पष्ट रूप से, बिचलताया, साफ गौर
पर, निरचय ही, प्रकट रूप से । म०० अर्थ (वि०)
1 बोधगम्य, स्पष्ट 2 मार्भक, -तार (वि०) जिनमें
नारे कपी रत्न जडे हुए हो, उल्मस, -कलम् (उवा०
में) 1 किमी विकीर्ण का यथार्थ अंशफल 2 किमी
पश्चात का नुलफल - सार किमी पर या नारे का
वास्तविक मापाम, सुवेगति (स्त्री०) मृग की दृश्य-
मान या वास्तविक गति ।

स्फुटनम् [स्फुट् - स्पृट्] 1 तार कर मालना, फाड़
देना, फूट जाना, फट कर नून जाना 2 प्रसार होना,
सुचना, प्रकृतिस्तित होना ।

स्फुटिः, टो (स्त्री०) [स्फुट् + इत्, पशं वीष्] पंगे की
साल का फट जाना, बटाई, पैरी का दुखना या
नूनन ।

स्फुटिका [स्फुटि + क्त + टाप्] टूटा हुआ छोटा टुकडा,
सर, फाक ।

स्फुटित (पु० क० क०) [स्फुट् + क्त] 1 फटा हुआ,
टूट कर मूला हुआ, लहर-लहर हुआ, तरेड या हुआ
2 मुकुलित, सिला हुआ, प्रकृतिस्तित (अथ कि
फूल) 3 स्पष्ट किया गया, प्रकट किया गया,
दिपकताया गया 4 फाडा हुआ, नष्ट 5 हवी उड़ाया
हुवा । सम०-बहक (वि०) जिसके पैर फँसे हो,
बाहर की निकले हुए चौड़े चपटे पैर बाधा ।

स्फुट्, (चुरा० उभ० स्फुटयति-ने) निरकार करना,
अपमान करना, निरादर करना ।

स्फुम् (गुदा० पर० स्फुग्नि) कृत्वा ।

स्फुट् 1 (म्या० पर० स्फुटयति) सोलना, कुलना ।
11 (चुरा० उभ० स्फुटयति-ने) मलौल करना,
मझाक करना, उपहास करना ।

स्फुष् (म्या० आ० चुरा० उभ० स्फुष्णते, स्फुष्णयति-ने)
दे० स्फुष् ।

स्फुन् (अव्य०) एक अनुकरण परक ध्वनि । कर आग,
-कार स्फुन् ध्वनि, बटबटाने की आवाज ।

स्फुर (गुदा० पर० स्फुरति, स्फुरति) 1 (क) चरगगना,
चरकना (बैमे अष्ट का) शान्तिप्रशाधमस्य
स्फुरति न बाहु कुत कर्मविशास्य ग० १।१५,
स्फुरता शमकेनागि दाशिशव्यमलम्बने मा० १।८
(ख) लिपना, कापना, लरजना, बरधराना स्फुरद
परनासापुतया -उत्तर० १।२०, ५।१० 2 लसंगना,
सपथं करना विश्वास्य हाता हन प्रविष्या करण
स्फुरन्तम् गम० 3 कृच करना, फँसना, आगे उछ-
लना-पुष्कसुंषवा गम० -भट्टि० १।१५ 4 गीळ की
आर उछलना, पण्ट कर आना 5 उछलना पट
निकरना उदगल होना, उठना -पयमे स्फुरति निम० ६
यस ७ दृष्टिगोचर होने लगना दिखाई देने लगना,
प्रकट होने लगना, स्पष्ट दिखाई देना, प्रदर्शित होना
सुलानस्फुरति का हर्षमिच्छति हर् पान्मुच ददन्तु
-महा० १।८ गिचनसर्धरमुषा दृष्टमगणे प्रदाह
स्फुरति निरवसादा क.ति गवा जगाम वीष्० १।
7 दबक उठना, ब्रह्मदगना, बरागी उठना बचकना
सुतरना दिभोमाना - स्फुरति कुचकुचवयोर्धरा
मणिमन्त्रा रज्जवगु नर हृदयदेहाय गी०० १०,
(तया) स्फुरन्प्रधासकलता बवासे कु० १।६,
ग्य० ३।६०, ५।५१, मेघ० १५।२० 8 चमकना,
बिद्योत्पला दिवाता, प्रखल होता प०० १।२३
9 अचानक गल में फुलना, अकस्मात् स्फुरि मे भाता
10 बरधराने हुए चलना 11 बरीडना, नष्ट करना
४०० (स्फुरयति-ने, स्फोरयति-ने) 1 बरधराना
2 बचवाना ब्रह्मगाना 3 फँसना, शल देना, अप
चमक उठना, अग्नि 1 फँसना, बरधीन होना, कुलना
2 जाल डाना, धरि, पडकना, चरकना, धकधक
करना तथा परिस्फुरितवभंभतसाया। उत्तर०
३।२८, प्र- , 1 कडकना, कापना 2 फँसना, प्रसुत
होना - शम्भुन्वयनम् -महा० 3 डूर-डूर तक
फँसना, बिख्यात होना भक्तिवतस्य सुशोरकयः शय
प्रस्फुरति स्फुटम् -मुना०, वि- , 1 चरकना,
कापना 2 सपथं करना 3 चमकना, दबकना
उत्तर० ४ 4 (बन्धु को) लानना, टंकारना

- कृपकः—पृथक् मन्त्रिणम् स्त्री की धीनि, भग,
—अन्व (वि०) कामांघ्र, प्रेममूष, —आसुर - अर्त्त
—उत्सुक (वि०) काम से पीड़ित, कामतप, काम-
दण्ड, आसन्नः लार, कर्मन् (नपु०) कोई भी काम-
कृतपूर्ण व्यवहार, स्वैरकृप, —मुक् विष्णु का विशेषण
—छम्भ भ्रष्टाचिन्तिका, दशा शरीर को कामजन्म
अवस्था (यह दश है), छम्भः 1 पुत्रेन्द्रिय 2 वीरा
णिक मछली 3 एक बाणधर, (अन्व) भग, (-जा)
चाँदनी रात, —श्रिया रति का विशेषण, —भ्रातिल (वि०)
कामोदीय, मोह, कामजन्म महाहीनता, प्रणयो-मार,
लेखनी शारिका पत्नी, —कलत्र. 1 बमत श्रुत का
विशेषण 2 अनिष्ट का विशेषण, —बोधिका बेपया,
रही, —शासनः गिर का विशेषण, सन्न चन्द्रमा,
—सम्भः विलस, पृथ का लिंग, स्वयं. रासभ, गया
—हृ- शिव का विशेषण ।

स्मरचम् (स्मृ + स्मृट्) 1 स्मृति, वाद प्रत्यास्मरण केवल
स्मरणत्व पुनासि पुरुष यत् —रघु० १०।३०
2 चिन्तन करना—यदि हीरस्मरणे सरस मन—गीत० १
3 स्मृति, स्मरणयमित 4 परम्परा, परंपरागत
विधि इति भूतस्मरणान् (विपु० धृति) 5 किसी
देवता के नाम का मन में जाग करना 6 स्मृद म याद
करना, से दकगना 7 काव्यगत प्रत्यास्मरण जो एक
बलकार माना जाता है, इसका परिभाषा है—यथानुभव-
मयंस्मृद दृष्टे तस्मद्गो स्मृति स्मरणम्— काश० १०।
मय०—अनुस्मृतेः 1 हृत्पापुत्रक स्मरण करना, 2 स्मरण
करने की कृपा कु० ६।१०— अथस्मरणकः कच्छप
कच्छवा, अशौचपक्षम् प्रत्यास्मरणो की यमसामयिचना
का अभाव, पक्षी मयु ।

स्मार (वि०) [स्मृ + अन्] कामदेवमवधी स्मार
पुत्रमय चाप बाणाः उपमया अपि । तथाप्यनङ्गमै-
लायव करंगि वशमायन रश् [स्मृ + घञ्]
प्रत्यास्मरण, स्मरणशक्ति ।

स्मारक (वि०) (स्मृ + क्रि०—रिक्ता) [स्मृ + णिच् + क्वत्
दिशया टाप् इणच्] ध्यान दिलाने वाला, फिर याद
कराने वाला,—कम् किसी की स्मृति-शक्ति के अनिप्राय
में सम्पादित कोई सत्त्वा (आधुनिक प्रयोग) ।

स्मारकम् [स्मृ + णिच् + स्मृट्] मनमें जाना, याद
दियाना, स्मरण करना ।

स्मार्त्त (वि०) [स्मृती ब्रीहित, स्मृति अण्यपीन वा अण्]
1 स्मृतिसम्बन्धी, याद किया हुआ, स्मारक 2 स्मृति
के अन्तर 3 स्मृति पर आचारित या स्मृति में
अभिनिहित, सर्वसाक्ष में विहित—कर्मस्मार्त्तविधा-
रानी कुर्वीत प्रपद्य गृही—वाङ् १।३, मन्० १।
१०८ 4 वैश्व 5 अर्थसाधन को यादने वाला 6 मूख
(नैवे कि अवि) . ६ परंपराप्राप्त कर्म का विशिष्ट

आह्वान 2 परंपराप्राप्त कर्म का अनुयायी 3 (स्मृतिवो
के अनुसार चलने वाला एक) सभवाय ।

स्मि (स्वा० आ० स्वयते, स्मित) 1. मुस्कराना, हँसना
(मद मय) काकुत्स्थ इत्यस्मयमाना ज्ञान्—भट्टि०
२।११, १५।८, स्मयमान बहनाम्बुज स्मरामि आभि०
२।२७ 2 सिलना, फूलना पशु० १।१३६, —प्रेर०
(स्वावयति ते) 1 मुस्मान पैदा करना, मुस्कराहट
का जन्म देना 2 हँसना, अपहास करना 3 आश्च-
र्यान्वित करना (इस अर्थ में—स्म्यापयते) इच्छा०
(सिस्मयिषते) 1 मुस्कराने की इच्छा करना ।
उद् . मुस्कराना, हँसना, वि- 1 आश्चर्य करना,
अश्चर्य में आना—उभयोर्न तथा लोक प्राचीम्येन
विस्मिये—रघु० १५।६५, भट्टि० ५।५१ 2 मगझना
3 धमकी, अहम्य होना—न विस्मयेन नयमा—मनु०
४।२३६, (प्रेर०) मुस्मान पैदा करना, आश्चर्यान्वित
कराना, आश्चर्य वा अश्चर्य में आना विस्मयायन्
विस्मितश्चावधुनी रघु० २।३३, भट्टि० ५।५८,
८।४२ ।

स्मित् (चुग० उभ० स्मेद्यति ते) 1 अपमानित
करना, धुना करना, नकलन करना 2 प्रेम करना
3 जाना ।

स्मित (मू० क० कृ०) [स्मि + क्त] 1 मुस्कायक,
मुस्कराता हुआ 2 चुस्काए हुआ, सिना हुआ प्रद-
स्मित छम् मुस्कात, मद हँसी, ललितस्मित मुस्कराहट
के साथ, मन्त्रिसंस्मियन्व यावि । कश्च—बुष् (वि०)
मुस्कायक दृष्टि रखने वाला (स्त्री०) स्मरण स्त्री,
कुर्वन् (अर्थ०) मुस्कराहट के साथ, मुस्कात में
यकन—मत्तविस्मियन्व स्मितपुर्षमाह कु० ७।४० ।
स्मीम् (स्वा० पर० स्मीलति) शयकना, जोश में लगेन
करना ।

स्मृ (स्वा० पर० स्मृचोति) 1 प्रसन्न होना, मनुष्ट
होना 2 प्रशंसा करना, शीतरशा करना 3 जीवित
रहना ।

स्मृ (स्वा० पर०—महाकाव्यो में आ० भी—स्मृ-
रति, स्मृत्—कर्मवा० स्मयते) 1 (क) बाह करना,
मन में रखना, प्रत्यास्मरण करना, मन में जाना,
विहित होना स्मर्त्तन मुस्करानीं नम मोदारो
का स्मरति च तनुषातोप्यावधोर्वास्तीनामि—उत्तर०
१।२५, (ख) मन में पुराकार, मन से बाह करना
बोधना स्वर्गात्मनोऽधीष्टवेषताम् पंच० १, रघु०
१५।४५ 2 किसी देवता के साथ का मन में ध्यान
करना वा मन में जाग करना, वः स्वर्गैस्तुष्टीक्रीडा
न बाह्यात्मनःरति 3 स्मृति में विहित करना वा
अभिनेत्र करना तथा च स्मरति ४ शक्य करना,
शक्य कराना, शोचना, पंच० १।३० 5 शेर के

साथ वाद करना, भागुर होना, उत्कण्ठित होना, अविनाश करना (बहुधा संघर्ष के साथ) स्मृति विधानि न विदुः सुरसुन्दरीभा- कि० ५।२८, कल्पि-
 ज्जुर्त् स्मरति रक्षिके त्व हि तस्य शिष्येति मेघ०
 ८५, मुद्रा० ५।१४, वैर० (स्मारयति-ते, परन्तु अन्तिम
 अर्थ को प्रकट करने के लिए स्मारयति-ते) 1 वाद
 करना, फिर ध्यान दिलाना मन में लाना, सोचना
 —अनेक प्रतिपादितयोगेन स्मारयति में पूर्वादिष्यां
 लौडामिनीन् मा० १, कभी कभी विक्रमक के रूप में
 प्रयुक्त आंगि बन्द्युत्तरीया अतिव्यक्त्याविबन्धुनाम्
 स्मारयन्ति प्रकृती मुद्रा० १, २ एव पुस्वर का
 नयेव स्मारिता वचम् उत्तर० १।१४ 2 सुचना
 देना 3 शब्द के साथ स्मरण करना, लाकावित
 करना, अविनाश वंश करना --कि० १।५६, व०
 १४, इच्छा० (मुस्मृयते) प्रत्यास्मरण करने की
 इच्छा करना, अनु , वाद करना, प्रत्यास्मरण करना,
 मन में ध्यान करना, जप—, मूल ज्ञाना, प्र , मूल
 ज्ञाना, वि—, मूल ज्ञाना—मनुकर विष्णुतोषाणां
 कथम् श० ५।१. (प्रैर०) मुञ्जाना उत्तर० १,
 सन् , वाद करना, चिन्तन करना—स० १८।७६,
 मनु० ४।१४९, (प्रैर०) ध्यान दिखाना, मन में रखना,
 (पाताल) मासद्य तस्मत्पत्नीय मुचमकोक --रत्न०
 १।१३।

स्मृतिः (स्त्री) [स्मृ + षिन्] 1. वाद, प्रत्यास्मरण,
 स्मरणशक्ति अथवाध्याना कारणवृत्तुः कि न दान्
 स्मृति ने बेनी० ३।२१, तस्कारवाचक्यं ह्यसं स्मृति
 —वर्ष०, स्मृत्युपनिषदो इती ही लोको—उत्तर० १
 2 चिन्तन करना, मन में ध्यान करना 3 वाच्य-
 वर्णनात्म, परम्पराशास्त्र वर्णनात्म, स्मृतिचरम् (रीति
 और धर्म से संबंध) (विप० स्मृति) 4 वर्णशोडिता,
 स्मृतिचरम् 5 स्मृति का मूलपाठ, वर्णसूच, धर्म के
 नियम—इति स्मृतेः 6 इच्छा, कायना 7 सत्य।
 स०—अक्षरम् इतरा स्मृतिचरम्,—अनेक (वि०)
 1. मूला हुमा 2 आत्मविषय 3 (अर) अर्थ, अर्थानु-
 —उक्त (वि०) वर्णशास्त्र में विहित, वर्णसूच
 में प्रतिपादित, क्व,—विष्णु, स्मरणशक्ति
 का धारण, स्मृतिचरम्,—सिद्धं च्चु मरणा,—वर्ण० ३।३०,
 १८. अथर्ववेदः स्मृति की धारणाशक्ति, प्रत्यास्मरण
 की धारणता, अथर्व वर्णशास्त्र की इति,—श्लोः
 स्मृति का नष्ट हो जाना, वाद न रहना, रीकः
 श्लोक विस्मरण, स्मृति का मरु—व० ७।१८.
 —विष्णुः स्मृति की दृक्चर, स्वयं वाद न रहना
 —विष्णु (वि०) अर्थ, विरोध 1. धर्म का विप-
 रीत्य, अर्थवशा 2. हो वा हो से अधिक स्मृतियों का
 पारस्परिक विरोध—स्मृतिविरोधं परिदृष्टि—शारी०,

—अक्षरम् 1 वर्णशास्त्र, वर्णशोडिता, वर्णसूच
 2. भाषिक विधान, श्लेष (वि०) उपरत, मृत (कौं
 श्लि) --श्लेषकम् स्मरणशक्ति की पुर्वजना,—अथर्व
 (वि०) वर्णशास्त्रके सिद्ध होने योग्य,—हेतुः प्रत्या-
 स्मरण का कारण मन पर पड़ी हुई छाप, विचार-
 साधुधर्म।
 स्मैर (वि०) [स्मि + रन्] 1. मृतकरणे वाजा विकल्प
 वृद्धोऽथविधित्त्वा महाजनः स्मैरवृद्धो प्रविष्यति
 वृ० ५।३०, भावि० २।४, ३।२, मा० १०।६
 2. शिका हुमा, फुला हुमा, कौला हुमा, प्रकुम्भित,
 अधिकधिकतवदासिस्ववस्वैरारि मा० १।२८,
 3. धर्मो ४. व्यक्त। स०— विनिष्कटः पौर।
 स्वः [स्वम् + क] वास, टीकपति, ठेकी से प्रलम्बा, वेन।
 स्वम् (स्वा०) मा० स्वन्ते, स्वम्, इच्छा— शिवादिचरते,
 शिवादिचरति-ते, इकारान्त उकारान्त उपरान्त के स्वचम्
 स्वम् के लु को वृ हो जाता है। 1. रिक्तता, चूना, टपकना,
 सूँद सूँद गिरना, अहित होना, अर्थ निकालना, बहना
 —अवि दन्धरविन् स्वन्धार्थं मरणं तत्र किञ्चि सिद्धो
 मन्नु मुञ्जनु वृत्ता भावि० १।५ 2. क्षयता,
 उदेलना 3. भागना, दीकना, अनु—अनुना, अवि—,
 1. रिक्तता, बहना 2. शारीर होना, फनी गिरना
 —अविस्वन्धानमेवमेवुत्तरीकिना विरिः उत्तर० २
 3. निरक्षता—उत्तर० ९, वि—, शरि म्हु निरक्षता,
 प्र , मह ज्ञाना, वि , अहना—महि० १।७४।
 स्वः [स्वन् धाने वच्] 1. बहना टपकना 2. ठेकी से
 जाना, चलना 3. शारी, रच।
 स्वः (वि०) (स्त्री—मा, श्री) [स्वम् + स्वृ] 2. कन्धी
 से जाने वाला, हुतधारी, बहने वाला 2. मृत,
 कुटीका, शीघ्रगामी—स्वन्धना मो व सुवरा—कि० १।५।
 १६.—मः पृष्ठ-रच, शारी वा रच—वर्षारथं प्रविष्यति
 नव स्वन्धनाकोकवीतः—व० १।३३ 2. वायु हुवा
 3. एक प्रकार का मृद. शिनिष्ठ, सन् 1. बहना,
 टपकना, रिक्तता 2. ठेकी से जाना, बहना 3. शारी।
 वन०—शारीरः रच में शब्द कर पृष्ठ करने वाला।
 स्वः (वि०) [स्वन्ध + शीम् + कम् + रन्, श्लः] मृद की
 मृदक।
 स्वः (वि०) (स्त्री—श्री) [स्वम् + शि] 1. रिक्तने
 वाला, बहने वाला, टपकने वाला 2. रच से जाने
 वाला 3. शरीरहीन।
 स्वः (वि०) [स्वम् + शीम्] 1. शर, मृद 2. यह शब्द की
 दो कन्धो की एक शब्द कथ है।
 स्वः (पु० व० क०) [स्वन्ध + क] रिक्त हुमा, टपकने
 हुमा, गिरा हुमा।
 स्वम् (स्वा०) वर०, पुरा० वच० स्वन्ति, स्वन्धयति-ते।
 1. कम् करना, और से चिन्तना, दीकना 2. जाना

3 विचार करना, विमर्श करना, चिंतन करना (केवल इस अर्थ में आ०) ।

स्वयमन्त्रकः [स्वम् + स्व + क्त] एक मूल्यात्मान् मणि (कहते हैं कि यह मणि प्रतिदिन आठ स्वप्ने धार दिया करती थी, तथा सब प्रकार के मकट और अपराधुनों से रक्षा करती थी), अधिक वृत्तात् जानने के लिए दे० 'सवा-जित्' ।

स्वधि (बी) कः [स्वम् + इक्क ईकक्] 1 ज्ञातल 2 वामी 3. एक प्रकार का वृक्ष 4 समय ।

स्वधिका [स्वधिक + टाप्] नील ।
स्वस्त (अध्य०) [अस् वातु का विधिविद् में, प्र० पु०, ए० व०] ऐसा हो सकता है शायद, कदाचित् । सम० —**स्वस्** ममावना की उक्ति, मशयवाद् (संज्ञ० में), —**स्वस्ति** (पु०) सत्यवादी, ग्याडाद् वा अनुवाची ।
स्वस्तः दे० 'दशाह' ।

स्वस्त (पु० क० इ) [स्वि + क्त] 1 मुँह से मोया हुआ नदी की किया हुआ, नूना हुआ (आल० में भी) चिन्ता-मन्त्रितन्त्रुना-कनिविदस्वयमे स्वाना प्रिया—मा० ५।१० 2 बीजा हुआ, स बोध ।

स्वस्ति [स्वि भावे क्तिन्] 1 नीना, टाका ग्याना 2 मुँह का काम 3 बीजा बसावनी, कृष्ण 5 मन्त्रि ।

स्वस्तः [स्वि + क्त] 1 प्रकाश की किरण 2 मू० 3 बीजा, बीरा ।

स्वस्तः [स्वि + क्त] प्रकाश किरण ।
स्वोत् : [—स्वन्, पुपो०] बोग, बीजा ।

स्वोम (वि०) [—स्वन्, पुपो०] मुन्दर, मुन्द 2 वृक्ष, बगलप्रद,—**स्** 1 प्रकाश की किरण 2 मूर्ध 3 बीरा,—**स्** प्रसन्नता, आनन्द ।

स्वम् (म्वा० आ० अमने, अन्) 1 गिरना, नीचे गिर पडना—**नास्त्रस्वम्** करिषा देव विपदीश्वेदिलासि—रघु० ४।५८, माधवीर समते हस्तान्—भग० १।१०, अष्टि० १५।१२, १५।११ 2 इबना, बटना, गिर कर टुकड़ों टुकड़ों होना हाहा देवि श्वटनि हृदय समने दशकथ—**उत्तर०** ३।३८, मा० १।१० 3 नीचे लटकना 4 जाना—**मेर०** (अमयतिने) 1. गिरना, बिसरना, भुङ्कना, बाधा जानना—**बातोर्धि** नाशयवदशकानि—रघु० १।१५ 2 चिथिल करना, टोक देना, बि—**बिसरना**, डीका होना, (मेर०) 1. गिरना, गिरने देना,—**बिसरयती** नवकश्चिकारम् दु० ३।१२ 2 डीका करना, चिथिल करना ।

संसः [सन् + संञ्] गिरना, बिसरना ।

संसक्तम् [सन् + क्तिन्] 1 गिरना 2 गिराना, नीचे पटकना ।

संसिन् (वि०) (स्त्री—नी) [सन् + सिन्] 1. गिरने वाला, बिसरने वाला, लटकने वाला डीका होने

वाला, मार्ग देने वाला—**संसे** अस्मि संकहस्तययिता पर्याकुला मुर्धवाः—शं० १।२९ 2 निर्भर, स्वभाव, डीका लटकने वाला ।

संशु, (म्वा० आ० संहते) बिश्वास करना, भरोसा करना ।

संशिक्षन् (वि०) (स्त्री—नी) [सन् + शिक्षिन्, म० अ० सञ्जीयस्, उ० अ० अश्रिठ] हार या गजरा पहने हुए,—**आमुक्ताभरण सार्था ह्यर्षिहृद्गुणान्** रघु० १।२५ ।

सम् (स्त्री०) [सुपने सून् + क्तिन्, नि] मजरा, पुप्यनाभा (विशेषतः बहु जो मस्तक पर धारण की जाय) अथवापि धारयन्नाभ शिखा पुनोभयहितकृया—शं० ७।२४ 2 माता, हार । सम०—**सम्** (सन्धामन्) (नपु०) माता की धधि या माठ, **अर** (वि०) माताधारी वीत० १२ (-रा) एक छद का नाम ।

सम्वा [सन् + वा, नि०] रस्मी, डारी सूच ।

सम्बु (स्त्री०) अथान वायु ।
सम्बन् (म्वा० आ० सम्बन्, सम्बन्) विषयान् करना, ण० 'सम्', वि 1 विषयान् जाना 2 आश्रयण होना ।

सम्ब [सु + अप्] 1. पुना, गिरना, बहना 2 ईद, प्रवाह, मरिना कियुली स्मयपनी मा मन्त्री 1 चक्रवर्धने—**राम०** 3 कीबारा, विज्ञान ।

सम्बन्धम् [सु + बन्ध्] 1 बहना, पुना, गिरना 2, पसीना 2 पृथ ।

सम्बन्ध (वि०) (स्त्री०—**सम्बन्धो**) [सु + धन्] बहन वाला, रिश्ते वाला, बने वाला । म०० सर्वा पर स्त्री ब्रह्मका गर्भ गिर गया हो 2 कुपेटना के कारण गिर हुए गर्भ वाली याव ।

सम्बन्धी [सन् + धीन्] नदी, दरिया—**बापीश्वर** अथ लीण् रघु० १।७१३ ।

सम्बु (पु०) [सु + बुप्] 1 बनाने वाला 2 रक्तने वाला 3 बुद्धिपूर्वकता, बड़ा वा विशेषण—**दा** बुद्धि सत्पराया शं० १।१, **तन्मन्त्रदेहात्मन्त्र**—**७।२३** 4 शिब का नाम ।

सन्त (पु० क० इ०) [सन् + क्त] 1 गिरना हुआ; बिसरका हुआ, नीचे पडा हुआ **सन्तं** सर कारयति स्महस्तान्—दु० ३।५१, **कनकबलय सन्तं अन्त मया प्रतिपाद्येने** शं० ३।१३, **वि०** ५।१३, **मेघ०** १ 2 मनुका हुआ, नीचे लटकना हुआ—**विषाचसन्तम** बौद्धी नृशु० ४।८, **सन्तानावतिधावकाहितान्** वातु भटाशेषयान् शं० १।१० 3. डीका किया हुआ 4. प्युन, डीका पका हुआ 5 **संभ**, नीचे लटकना हुआ 6 **अन्त** किया हुआ । **सम्ब०** **अङ्ग** (वि०) डीके भंगो वाला 2 बुद्धि, बेहोश ।

मस्तर. [मस् + तस्, किन्नाप्रयोग] पक्व या मोक्ष,
(विश्राम करने के लिए) बिछोना शिथिलने मस्तर-
श्यामीय लिपयदा ३०, मन् ० २२०६।

माक (प्रशय) [म्, डाक] कुली से, नेत्री में।
माक [म्, घञ्] प्रवाह, बहाव, रिमना, बँद बँद
टपकना।

माकक (वि०) (स्त्री० शिका) [म् + क् + क्त] बहने
वाला, उड़नेसे बाधा र्थि कर करने वाला - कम्
वाणी मिथं।

मिम् (स्त्री० पर० सोधनि) चाट पड़वाना, मार
झालना।

मिम् (स्त्री० पर० शिम्पनि) चाट पड़वाना, मार
झालना।

मिम् (दिवा० पर० सोधनि, म्) 1 जाना, 2 मूक
जाना।

म् (स्त्री० पर० सवनि म्) 1 बहना, धारा निकलना,
बुना रिमना, बँद बँद करके गिरना, टपकना न
ह निम्बान्मबन्धोदय गम० 2 उड़लना, झकना,
उठने देना अपाठित न भूगटे सोधिय वाप्यमुच्यन्
मट्टि० १५१२, १०१८ 3 जाना झिलना झलना
4 नुना, निम्ब ब्राना कीटना, नट्ट होना कछ
पनन निकलना-सबना इडा नम्याप मिश्रवाध. म्दा।
पदा भाग०, मट्टि० ६१८, मन् ० २१० 5 इधर
उपर सेगना, मक दिशाभा से पड़वाना, प्रकट हो
जाना (भेद आदि) -पेट० (आकषनि-म्) बहाना,
पड़ेना, झलना, बनेना (कन आदि) न गाना-
म्बः स्येदमूक मन् ० ६१६० (उपसर्गों से बहने
हो जान पर धानु के समुभग बहो जय
रहने हैं)।

मूध. (पु०) एक जनपद या जिले का नाम पन्था
मूधमूर्तिपट्टन मिडा०. (रह स्थान पाटलिपुत्र में
हुए हुए) पर कम से कम एक दिन बाधा पर-स्थित
वा) मू० न हि देवदत्त मूधे मनिधोमानस्तदहरेव
पाटलिपुत्रे मनिधावन युपपरत्तक कृपाजनकप्रसङ्ग
-पारी०।

मूधनी [मूध + नी] मन्त्री, देह।

मूध (स्त्री०) [म् + मिध् + चिट् आगमः] लकड़ी का
बना एक प्रकार का चमका जिसके द्वारा पत्थान में
घो की आहुति दी जाती है। मूधा (प्राय डाक वा
खदिर के वृक्षों का बना हुआ)-म् ० ११२५, मन् ०
५११३, पात्र० ११८३। मन् ० प्रथाशिक्षा
बबके की पनामी।

मूध् (वि०) [म् + विध्, तुक्] (प्राय समाज के अन्न
में प्रयुक्त) बहने वाला, गिरने वाला, उड़नेसे बाधा
-सर्वत्र मन्थाम्मन्थने-कु० ११८, ५, शि० ९१८।

मुक्ति (स्त्री०) [म् + क्तिन्] 1 बहना, रिमना, बर्क
निकालना, टपकना, बुना-कीटकानिनीभरसमि-
बंशमन मूदा० ६१३, पर पुत्रासुनिचौरकम्
-कु० १५, म् ० १६६८, कि० ५१४, १६१०,
कीरमुनिमुचय (बाधा) - मेष० १०० म्प्रबहल
या माक २, म्प्रबह, रात्र ३ धारा।

मुक्- [म् + क्, क्तिवा टाप् व] 1 यत्र का चमका
2 निहंर, मग्ना या प्रपातिका।

मुक् (स्त्री० आ०) जाना, पतिनीय होना।

मुक् (स्त्री० पर० सोधनि) 1 उवाचना 2 पसोना जाना
-२० 'म्'।

मुक्त् [म् + त्] घारा, मरिगा। २० मान्म।

मुक्त् (नपु०) [म् + त्ति] 1 (क) मरिगा, धारा
प्रवाह, बलप्रवाह--पुरा मन् मीन पुक्तिमयना तत्र
मरिगा-उत्तर० २१०, मन् ० २१६३ (ख) धार,
प्रवाहिनो--नरवाशामगज्ञाया म्मन्महामदिमने
म् ० ११३८, आनमवाद्यमानस्य प्रनापतरम हि
नन् विक्रम० २५२ मरिगा, नदी, बातधामसि
बाह्वी-मन् ० १०१३ ३ महर ४ मर ५ वारीरस्य
पौषण-मिमा ६ प्रातेन्द्रिय निवृत्त सर्वलोपि
गम० ७ हाथी की मू। मम० -अम्बम्
धानाउन्नम) मुरगा, -ईशः मान्म -एप्रम हाथी
की मूद का छिद्र, नवना सोमोन्द्रप्रमिनिमुचय
हनिभि पौषयान-मेष० ६०, (२० इम पर मरिगा)
(धानास्य' भी पाठान्)। मूहा मधी-सोनीबाई
पथि निकामप्रनामनीय जान मन् प्रथयवान् मू-
दुष्णिकायाम्-म० ६१६५ काशी संकनमीपत्रमिधुना
भावावज्ञा मानिनी -६१६, म् ० ६१५२।

मुक्त्स्य [मान्म -- यद्] 1 शिब का नाम 2 चौर।

मुक्त्स्यती, मुक्त्स्यनी [मुक्त्स्य + त्ति] (विनि)
- छोप, बन्धम्] नदी।

म् (मार्ब० वि०) [म् + इ] 1 अपना, निजी,
(आत्मपत्रक सवनाके रूप में प्रयुक्त)-स्वनिधोय-
म्य कुट- म० २, प्रजा प्रजा स्वा इव नमनिष्ठा
५५, (इम अर्थ में प्राय ममाम में प्रयुक्त-म्यपुत्र,
स्वकनत्र, स्वउच्य) 2 अलदीन, प्राकृतिक, अनाहित,
विशेष, अन्वयेना--भूपर्याये न सन् कर्मन् पुष्पति
स्वामिभ्याम्-मेष० ८०, म० ११८, न तस्य
स्वा भाव प्रकृतिविद्यमानावहतक--उत्तर० ६१५
3 अपनी बालि में सबसे गन्धने वाला, अपनी बालि
का--सुद्वैष भार्या सुद्वैष ता व स्वा व विप म्मुते-
-मन् ० ३१३, ५१०५, -म्वः १ रिसेडार, बंधव
-पथ० २१९, मन् ० २१०९ २ भाया, स्व,
-स्वम् पौषण, सधनि-जैता कि 'मिक्' में।
मन् ० अम्बवः स्वाधयन पदति का अनुवाची,

स्वस्वरम् अपना निजी हस्तलेख, अधिकारः अपना निजी कार्यम् या राज्य—स्वाधिकारप्रत्यय स्व० १. स्वाधिकारपूर्वी—स० ७. अधिकारान्तरं हठयोग में माने हुए छ चको में से एक, अयोग (वि०) 1 अपने पर अधिकार, आर्यनिर्भर 2 स्वतंत्र 3 अपने वश में 4 अपनी निजी शक्ति में—स्वाधीन बन्धनीयतापि हिं बर बढ़ो न सेवाञ्जलि मुच्छ० ३१११ कुञ्जक (वि०) अपनी निजी शक्ति के आधार पर समृद्धिवाली स्वाधीनकुसला सिद्धिमन्त—स० ४. पत्निका, मरुका वह पत्नी जिसका अपने पति पर पूरा नियन्त्रण हो, वह स्त्री जिसका पति पत्नी के वश में हो—अब सा निर्गता बाधा राधा स्वाधीनभर्तुका निजादा रतिकमान्तर फलत मन्थनबाञ्छया—गीत० १२, दे० सा० २० ११२, तथा ज्ञाने,—अप्यायः 1 मन में पाठ करना, मन मन में इसके अर्थ करना 2 वेदों का पढ़ना, वैदिक पाठ, अनुभूतिः (स्त्री०) आर्य अनुभव 2 आत्मज्ञान स्वानुभवेकसारय नमः शांताय तेजसे—भर्त० २११, अन्वत् 1 मन,—भाषि० ४१५, महावीर ७१७ 2 कन्यार, अन्वः अपना निजी हित, स्वार्थ—सर्व स्वार्थ समीपते—वि० २१५५ 2 अपना अर्थ भाषि० ११७९ (यहाँ दोनों अर्थ—अभिप्रेत हैं) ० अनुमानम् निजी अटकल, आत्मनात्मक तर्क, अनुमानके दो मुख्य यथों में से एक, (हूराग हे परार्थानाम) ० विच्छिन्न (वि०) 1 अपने निजी कार्य में चतुर 2 अपना हितसाधन करने में विशेषज्ञ, ० पराजय (वि०) अपनी स्वार्थ सिद्धि करने पर तुला हुआ, स्वार्थी, ० विद्यालः अपने उद्देश्य की मान्यता, ० सिद्धि (स्त्री०) अपना निजी लक्ष्य पूरा करना, ० अक्षय (वि०) अपने अधीन, अपने पर अधिकार मर्त० २१७—इच्छा अपनी अभिलाषा, अपनी इच्छा, ० कृष्ण गीष्म का विशेषण,—उदयः, किसी विशेष स्थान पर किसी स्वर्गीय पिठ या दिव्य चिह्न का उदय होना, उदयिः अचल पर्व, कल्पन वायु, इया, ० क्विन् (वि०) स्वार्थी, कार्यन् अपना निजी कार्य या स्वार्थ,—गतम् (अर्थ०) मन में अपने आपकी, एक ओर (नाट्यमाहा में), छन्द (वि०) 1 अपनी इच्छा रखने वाला, अनिर्धारित, स्वेच्छाचारी 2 बनती, (कः) अपनी निजी इच्छा, छोट करणया मय मर्त्री, स्वतन्त्रता, (रम्) (अर्थ०) अपनी इच्छा या मर्त्री के अनुसार, स्वेच्छाचारिता के साथ, स्वेच्छा से—स्वच्छन्द दलहरविन्द से परन्व विच्छेदो विचयतु मुञ्जित मित्तिना—भाषि० ११५. अ (वि०) आत्मजात, (—कः) 1 पुत्र, बाल 2 स्नेह, पत्नीता, (—अन्व) इतिर, कः 1. वयु, रितेरदार—दत्त प्रसा-

देवान् स्वजनमनुत्तान् स्ववसिता स० ६१८, पंच० ११५ 2 अपने निजी पुत्र, बहुवाचक, अपनी बहुस्त्री, तन्व (वि०) आभाषित, अनिश्चित, आत्मनिर्भर, स्वेच्छापूर्वक, (कः) अथा पुत्रव,—ः अना देव, जन्मभूमि, ० अ ० अन्व अपने देश का भारतीय, अर्थ 1 अपना अर्थ 2 अपना निजी कार्यम् मनु० ११८८—११ 3 विद्ययाना, अपनी निजी शक्ति, कः अपना निजी दल, परस्परान्तर अपना और तनु का देग, प्रकाश (वि०) 1 म्बन स्पष्ट 2 म्बन बम-वदार,—प्रयोक्तव्य (अर्थ०) अपने प्रयत्नों के द्वारा,—अहू 1 अपना निजी योद्धा 2 मरीर रक्षक,—अधः 1 अपनी स्थिति 2 अन्तरित या मूलमूल, प्राकृतिक परिवधान, अन्तर्गत या विविधित स्वभाव, प्रकृति या स्वभाव, यैवा कि स्वभावो दुर्गतिरुम में, इसी प्रकार कुटिल, कुट्ट, मुट्टु—चपल कठोर भादि, ० उन्निः (स्त्री०) 1 म्बन स्कन्ध वस्त्रन 2 (अल० में) एक अस्कार जिसमें किसी वस्तु का यथावत् या विभक्त मितना-मुलना वर्धन होता है स्वभावोक्तिन्तु हिम्नादे स्वकिरास्पर्धनम्—काष्ठ० १०, वा, नाग-वन्ध पराधीनो अथ साक्षाद्विपन्नो—काष्ठा० २१८ एक मित्रान् (वह विद्य, मुलतन्वो की अपने अन्तर्गत मर्त्री के अनुसार, प्राकृतिक तथा आचार्यक पिता का परिचय में और उन्नी के द्वारा इसकी स्थिति है, इसमें परमात्मा की कोई निमित्तकारणता नहीं), सिद्धिः (वि०) प्राकृतिक, स्वतस्कन् अन्तर्गत,—अः 1 शत्रुता का विशेषण 2 सिद्ध का विशेषण 3 विन्तु का विशेषण योनि (वि०) मातृपक्ष का मन्त्री (पु०, स्त्री०) उत्पातस्थान, जो स्वयं अपना उत्पातस्थान हो, (स्त्री०) कोई बहुत या निकटतमव वाली कोई स्त्री, रक्तः 1 प्राकृतिक स्वार 2 किसी का अपना (अविशित) रग या काष्मल रत, आग्नायद, -रत्न (पु०) परमात्मा,—अन्व (वि०) 1 मदान, समकण 2 मुन्दर, मुताकना, शिव 3 विद्यान्, मन्मथार, (—अन्व) 1 अपनी अक्षय या मूर्त, प्राकृतिक स्थिति या दया 2 स्वानाधिक अधिक या अन्व, स्वार्थ विधान 3 प्रकृति 4 विविधित उद्देश्य 5 प्रकार, विद्य, जाति, ० अस्तिः (स्त्री०) तीन प्रकार के हेतुवाशतो में से एक, कः (वि०) 1 स्थितिवाचित 2 स्वतन्त्र, वास्तिनी विधाहित या अविधाहित स्त्री या वस्तक होने पर की अपने पिता के घर ही रहनी रहे,—वृत्ति (वि०) स्वाधनम्बी, अपने प्रयत्नों में ही जीवनवापन करने वाला, ० अन्व अन्ववर्धित, स्वर्जित,—संस्कार अपने विचारों पर उठे रहना 2 आरम्भितता 3 आत्मजीवता,—अन्व (वि०) 1 अपने पर उठे रहना 2 स्वार्थित, स्वाधनम्बी, विच्छिन्न, वृद्ध,

पक्का 3 स्वल्प 4 अक्ला करने वाला, स्वल्प, नीरोप, आराध देना, मुम्ब स्वल्प पदाक्षिप-मा० ८, स्वल्प को वा न पश्चिम-पञ० ११२७, दे० 'अल्पस्व' भी 5 कल्पुट, प्रसन्न. (-स्वल्प) (अल्प०) आराध मे, मुम्ब पूर्वक, पानि मे, स्वल्पम् अपनी अग्रभूमि, अपना निजी आवास स्वल्प-नक्ष स्वस्थान-मानास ग्रन्थमपि कर्षति-पञ० ३१६६, -हस्त अपना निजी हाव या लिखाई, आश्रयमेव, दे० 'हस्त' के अन्वयेन, हस्तिका कुम्हारी-हित (वि०) अपने किं, हिनकर, (-सम्) अपना निजी भाव, अपना कल्याण ।

स्वक (वि) [स्व + अकच्] अपना निजी, अपना ।
स्वकीय (वि०) [स्वत्य इदम्-स्व - अ, कुक् आगत]

1 अपना निजी, अपना 2 अपने परिवार का ।

स्वङ्ग (स्वा० पर० स्वङ्गिनि) नाना, शिकना-मुम्बना ।
स्वङ्गः [स्वङ्ग + अङ्ग] शक्तिगत ।

स्वच्छ (वि०) [सुट् अच् - प्रा० ष०] 1 प्रयत्न साध, पाण्डवी, विद्युद्, उज्ज्वल, अल्पपात्रभासी स्वच्छमण्डिक, स्वच्छ मन्नाकल्प-आदि 2 सफेद 3 मुन्दर 4 स्वस्थ, च्छ-स्फटिक-च्छन्तु भोली ।

सम०-वज्रम मासक मेलवरी, -वाल्कल विद्युद् मारिदा - अक्षि स्फटिक ।

स्वच्छ् (स्वा० आ०) सम्बन्धे इकारान्त उकारान्त उपनमों के पश्चात् स्वच्छ के न् का पूर्वो जाता है । प्राक्-मन करना, कीली धरना-क्याचिदावस्थम चिराय मन्त्रे-भासि० २१७८, पूर्वोत्प्रेक्ष्यत मूयि अक्षे-द्रष्टी-एव० १३७० 2 वेगना, मरोदना करि - आगत्य करना कथे परिच्छिद्यम् वा मवीजन च ग० ८, भासि० २१७८ ।

स्वट् (प्रा०) उभ० स्व (स्वा) प्यति-ते) 1 जाना 2 मरण करना ।

स्वत्यम् (अब्ध०) [स्व + तयिम्] अपने भाग, स्वयम् (विश्वदायक के अर्थ में प्रयुक्त) ।

स्वत्यम् स्व + त्व] अपनी विश्वजातना 2 स्वाधिक, स्वाधिक के अधिकार ।

स्वत् 1 (स्वा० आ०) स्वदते स्वति 1 पक्ष्य क्रिया जाना, मधुर होना, स्वार में रुचिकर होना (तत्र० के साथ)-यत्रदत्ताय स्वदतेऽपु-काशिका, अपा हि नृनाय व वारिचारा स्वात् सुगति, स्वदते सुपाप - नै० ३१२३, स्वदते सुसुवर वनशाम्य शि० १० । २ 2 स्वार देना, रस देना, जाना 3 प्रसन्न करना 4 मधुर करना ।

ii (बुधा० उभ० वा प्रे०) स्वाधरति-ते) 1 चलाया, जाना 2 रस देना 3 मधुर करना, आ 1. चलना, जाना (अ० ते औ) -पनावनास्वाधितपूर्वना-

बुध-एव० ३१५४ 2 उपशोष करता -वेध० ८७ ।

स्वत्यम् [स्वत् + त्यट्] चलना, जाना ।

स्वति (भू० क० इ०) [स्वत् + ति] क्या गया, भाषा गया, सम् उदार, विशेष जो आश्र में पिटरी को विद्यमान करने के पश्चात् उष्णगत होता है और विद्यका अर्थ है भयवान् करे, यह पदार्थ आपकी अक्ला लभे, स्वाधित लभे - -मनु० ३१२५१, २५४ ।

स्वथा [स्वत् + था, पूर्वो० दम्ब व] 1 अपना निजी स्वभाव वा निश्चय, स्वन् स्फूर्ता 2 मृत पूर्वपुरुषो -पिटरी-को प्रसन्न की गई हृषि की आहुति -स्वासासहानपराः म्ब० ११६६ मनु० १११४२, वाञ्छ० ११६०२ 3 मृत पितरों को प्रसन्न किया भोजन 4 अथ वा आहुति 5 माया वा सांसारिक धम, अर्थ० पितरों के सम्मुख आहुति प्रस्तुत करते समय उष्णरित उद्गाय, (तत्र० के साथ) पितृस्व स्वथा विद्याः । सम० कर (वि०) पितरों के निमित्त आहुति देने वाला, यत्र 1 'स्वथा' नाम का पञ्च-पुत्र हि तद्गृह कर स्वथाकारः प्रकन्ते, शिष्य अग्नि, आय, -मुम्ब (पु०) 1 मृत वा देवत्व को प्राण पूर्वपुरुष 2 देवता, देव ।

स्वथिः (पु०, स्त्री०) स्वथिली [स्वथा + थिच्, शिष्यां शीप् च] कुम्हारी ।

स्वत् (स्वा० पर० स्वन्ति) 1 गन्ध करना, कोलाहल करना, -पूर्वा पेशाच सम्बन्ध -अदि० १११३, वेधवः कीचवास्ते स्वुत् स्वन्त्यनिमादना अमर० 2 जाना, प्रे० (स्वन्ति-ते) 1 घुसाना 2 गन्ध करना 3 अलङ्कृत करना (इस अर्थ में स्वानपति) ।

स्वकः [स्वन् + अच्] गन्ध, कोलाहल -विवाधोरस्वना पश्चात् बुद्धये विद्यतेति तात्-एव० १२१२९, अक्ष-स्वन्-आदि । सम० उत्साहः यैः 1 ।

स्वकि [स्वन् + इच्] ध्वनि, कोलाहल ।

स्वकि (वि०) [स्वन् + उच्] ध्वनि करने वाला-जैना कि 'पारिध्वनिक' (जो अपने हाथों से तात्पिकी बजाता है) में ।

स्वकि (भू० क० इ०) [स्वन् + का] ध्वनित, सम्बाध-मान, कोलाहल करने वाला, सम् विजली का शोर, बिजली की चक्कड़ाहट, नु० 'स्तनित' ।

स्वन् (अभा० पर० स्वपिति, सुल, भावना० सुप्यते, इच्छा० सुप्यतिनि) (कभी-कभी स्वा० उभ० स्वपति-ते) कोना, वीर जो जाना, सोने जाना-अर्थजातकिप-स्वक्यः मुक्त स्वपिति गीर्धेहि-काञ्च० १०, इतः स्वपिति केवच सर्व० २१७६ 2 तकिमे का सहायता लेना, विश्वास करना, सेटना, अराय करना 3 तस्वीय होना-भासि० ४११९, प्रे० (स्वापति-ते) सुजाता,

स्वनि (भू० क० इ०) [स्वन् + क्त] ध्वनित, सम्बाध-मान, कोलाहल करने वाला, सम् विजली का शोर, बिजली की चक्कड़ाहट, नु० 'स्तनित' ।

स्वन् (अभा० पर० स्वपिति, सुल, भावना० सुप्यते, इच्छा० सुप्यतिनि) (कभी-कभी स्वा० उभ० स्वपति-ते) कोना, वीर जो जाना, सोने जाना-अर्थजातकिप-स्वक्यः मुक्त स्वपिति गीर्धेहि-काञ्च० १०, इतः स्वपिति केवच सर्व० २१७६ 2 तकिमे का सहायता लेना, विश्वास करना, सेटना, अराय करना 3 तस्वीय होना-भासि० ४११९, प्रे० (स्वापति-ते) सुजाता,

सोने के लिए बपवधाना, अथ—वि, —प्र,—सम्
सोना, सेटना - प्रसृतलक्षण मा० ७, कु० २१४२,
रघु० १११४ ।

स्वप्नः [स्वप्+नञ्] 1 सोना, नीद अकाने बोधितो
आशा प्रियस्वप्नो वृथा भवान्—रघु० १२१८१,
अ११, १२१७० 2 स्वप्न, स्वप्न, सुपना आना
—स्वप्नेप्रजालसपुषाः खल जीवलोकां सान्ति० २१३,
स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु—म० ६१९, रघु० १०१९०
3. शिथिलता, आलस्य, तन्ना । मम०—अवस्था
सुपने की दशा, उपम (वि०) 1 सुपने से मिलना
युक्ता 2 अवास्तविक या (भ्रमात्मक स्वप्न की भाँति)
—कर, —कृत् (वि०) निद्रा लाने वाला, निद्राजनक,
आस्थापक, गृह्यन्,—निकेतनम् सोने का करण,
शयनकक्ष,—शोभः स्वप्नाख्या में होने वाला सुकपात,
—सौगन्ध (वि०) निद्रा जैसी अवस्था में केवल दुष्टि
द्वारा अनुभूत होने वाला—मनु० १२११२२, प्रथमः
निद्रावस्था में भ्रम, स्वप्न में प्रकट होने वाला सप्तर,
—विधारः स्वप्नो की व्याख्या, शील (वि०) जिसने
नीद आ रही हो, निद्राल, ऊपने वाला, सुषिः
(स्त्री०) स्वप्ना की रचना, निद्रावस्था में भ्रम ।

स्वप्नम् (वि०) [स्वप्+नञिङ्] निद्रान्, सोने वाला,
ऊपने वाला ।

स्वयम् (अव्य०) [स्व+अप्+अम्] 1 आप, अपने आप
(निजभाषकता के रूप में प्रयुक्त तथा प्रत्येक पुरुष में
व्यवहार में) यथा में स्वय, ह्य स्वय, बहु स्वय—आदि,
कमी कमी बल देने के लिए और सर्वनामों के साथ प्रयुक्त)
विषयबोधोपि सर्वस्य स्वयं सेतुनवाप्राप्तम्—कु० २१५५
यन्म नाम्नि स्वयं प्रजा मात्स्व नस्य करोति किम्—मुबा०
रघु० १११७, २१५६, मनु० ५१३९ 2 आत्मस्फूर्त
अपने आप, अनायास, बिना किसी कष्ट या श्रेयता के,
स्वयनेवोपहन्त एवाविधा कुलपानवो निःस्नेहा पनाथ
—का० । मम०—अहित (वि०) आत्मार्जित,—अहितः
(स्त्री०) 1 ऐच्छिक प्रकृत 2 सुचना, इतिमाद्य
(विधि में),—एह इमान् ग्रहण कर गता, छाह
(वि०) ऐच्छिक, स्वयं चून कने वाचा, (—ह्) स्वयं
चून लेना, आत्मचुनाय कु० २१७, मा० ६१७, आत
(वि०) जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो, बल
(वि०) अपने आप दिया हुआ, (—ह्) वह सबका
जिसने अपने आपकी दत्तक पुत्र बनने के लिए दत्तक-
माही माता पिता की दे प्रिया, हिन्नु बर्न बारम्भ में
बलित बारह पुत्रों में से एक,—कूः ब्रह्मा का नाम
—हन्मूर्खव्यममर्गयो हन्मिषेवधाना यथाकिञ्चन मत्त
मूर्खनेवामाः मनु० १११,—कूचः 1 प्रथम मनु
2 ब्रह्मा का नाम 3. शिशु का नाम,—कू (वि०)
आप ही आप उत्पन्न होने वाला, (—कू) 1 ब्रह्मा का

नाम 2 बिष्णु का नाम 3 शिव का नाम 4 मनु 'काल'
का नाम 5 कामदेव का नाम, बरः अपनी छाट,
(कुलित हाग अपने बर का) अपने आप चुनाय,
इच्छन्नुष्णं विहात,—बरा वह कच्चा जा अपने पति
का आप चुनाय करतो है ।

स्वर् (बुग०) उच० स्वर्गनिर्णे) शीघ्र निकालना, कणक
लाना, बुरा भला कहना, निरा करना ।

स्वर् (अव्य०) [स्वः+विष्] 1 स्वर्ग, नेकुण्ड जैसा कि
'स्वर्लोक स्वर्ग' में 2 इन्द्र का स्वर्ग और मृत्यु के
पश्चात् पुण्याभावी वा अभावी भावान् 3 आकाश,
अमरिज 4 मृत्यु और धवनारे के बीच का स्थान
स्थान 5 तीता व्याहृतियों में तीमरी त्रिमका उच्चा-
रण प्रत्येक शाश्वत अपनी दैनिक प्राचीना में करता है,
दे० 'व्याहृति' । मम० आस्था ममा 1 गंगा की
स्वर्ग में बहने वाली धारा, मराकिनी 2 पाकायाणा,
छायाय, सति (स्त्री०) सधनम् 1 स्वर्ग में
जाना, भावी आनन्द 2 पृथ्वी सख (स्वर्गद) स्वर्ग
का एक मूस, कृष् (पु०) 1 इन्द्र का विशेषण
2 अग्नि का विशेषण 3 नाभ का विशेषण, मदी
(स्वर्णदी) आकाशगंगा नामक एक प्रकार का
मृत्पश्चात् पत्थर, भङ्गु गहू का नाम तुम्हेतराये
स्वर्गानुचिन्तित चिरेण यन् । त्रिधागामान् प्रथम
तन्मन्त्रिन् स्फुट कलम् मि० २१६९, सुषम्, मृतं,
—अव्यम् आकाश का अर्थ बिन्दु, ऊर्ध्वीबहु,—लोक दिव्य
जान्, स्वर्गलोक, बधुः (स्त्री०) दिव्य कन्या, अस्तर,
बापी गंगा, —वैश्या स्वर्ग की पत्निका, दिव्य पत्नी
अन्यत्र, वैश (पु०, हि० व०) को अविधौकृपाया
का विशेषण, वा 1 नाभ का विशेषण 2 इन्द्र व
ब्रह्म का विशेषण, सिष्णु = स्वर्गना ।

स्वर् [स्वः+अप्, स्व्+अप् वा] 1 स्वर्, कोलाहल
2 आवाज स्वर्ग तन्मन्त्रिन्मन्त्रेण प्रकल्पितायां
त्रिजातवाधि कु० ११५५ 3 मरीच के लुग, पति
नय (सुर मान है) निषादप्रेषणात्प्राप्तवृद्धवपय
पेथना । पञ्चमस्वरोपरी मत्त तन्मरीचकर्मिणाः स्वर्ग
—अमर० 4 मान की लक्षणा ५, स्वर् धारा
6 स्वर्गाशाल (वह मिनरी में तील है) उपाय, अ
हाल और स्वर्गिन 7 इवावधाय 8 मरुटि भग्ना
मन० अंशः माया वा शीघ्राई स्वर् (मरीच० म)।
अस्तरम् की स्वर्गों के उच्चारण के बीच का अर्थ
काश, कर्मण, —उच्छ (वि०) जिसके दाएँ स्वर्ग हो
—उच्छ (वि०) जिसके पूरे स्वर्ग हो, छाव मागम
स्वर्गलोक, स्वर्गों का समूह,—छह (वि०) 1
स्वर्ग में बंधा हुआ वाला, अहितः (स्त्री०) र जी
म् के उच्चारण में अमरिचित स्वर्ग की ध्वनि वर
इन अक्षरों के पश्चात् कोई उच्चारण वा कोई अर्थना

अथन ही (उदा० तर्प का उच्चारण 'परिष' है),
बहु 1 उच्चारण को अस्पष्टता, टूटा हुआ उच्चारण, भाषा का बैठ जाना, — बर्षादि का एक प्रकार की बीमा, कालिका बांगुरी, मुरली, **बुध** (वि०) तपोतमुरी से रहित, बेमुरा, तपोत के ताल मुरी से हीन, संशोधः 1 स्तरा का त्रिज ज्ञाना 2 ध्वनि या स्वरों का मेल —अर्थात् भाषाच—अन्य एवैव स्वस्तीयोग —मूच्छ० १३, उत्तर० ३, पश्चिम कोटिभवा इव स्वस्वयोग भूयते मालवि० ५, महच्छ 1 मुरी के उत्तर-पड़ान का फल न तस्य स्वस्वद्वयं मुरगिरः तिलच्छ ४ ननोत्थनम् मूच्छ० ३५, 2 सागम, सविः स्वरी का मेल, सागम् (प०, ब० व०) यज्ञीय यम में विशेष दिन के विशेषण ।

स्वच्छत् (वि०) [स्वर + मृत्] 1 ध्वनिमुक्त, निगारी 2 मुरीला 3 स्वरविषयक 4 स्वराधान से युक्त, मकर ।

स्वरित (वि०) [स्वरां ज्ञानोऽयं इत्यच्] 1 ध्वनेयत् 2 ध्वनि, स्वर के रूप में बोला गया 3 उच्चारित 4 ध्वनि उच्चारणचिह्न से युक्त, —तः उदात्त (अभि) और अनुदात्त (नीचे) के बीच का स्वर महाहार स्वरित पा० १२।३१, दे० इन पर मिऽ० ।

स्वः [स् + उ] 1 पुं 2 यज्ञीयलक्ष्म का एक अक्ष 3 पत्र 4 बन्ध 5 बाण ।

स्वस्व (पु०) [स्व् + उन्] बन्ध ।

स्वर्गः [स्वर्गित गोयने वे + क, मु + च्च् + घञ्] वैकुण्ठ, इन्द्र का स्वर्ग, बहिरण —अहो स्वर्गोदिकनर निर्वृ तिस्यानम्—ता० ७। मम०—आस्ता स्वर्गो न यथा, लोकत् (पु०) मुर, देव, विरि, स्वर्गो पहाड़, मुषे, — इ, —अव (वि०) स्वर्ग में प्रवेश दिखाने वाला, — हारत् स्वर्ग का दरवाजा, वैकुण्ठ का दरवाजा स्वर्ग में प्रवेश स्वर्गद्वारकण्टपाटिनपट्टवर्-मोदिवी तोपादिन —अर्० ३।१०, बर्हिः, अर्० (पु०) इन्द्र, —लोकः 1 विद्य प्रवेश 2 वैकुण्ठ, —अर्०, इवो (स्त्री०) दिव्य ज्ञान, स्वर्ग की परी, अथवा —स्वर्गस्त्रीणा परिभङ्ग कथ मथेन लभ्यते, —साधनम् स्वर्ग प्राप्त करने का उपाय ।

स्वर्गिन् (पु०) [स्वर्गोऽयस्य योग्यत्वेन इति] 1 मुर, देव, अमरा, स्वर्गवि विनयज्ञ स्वर्गिण श्रीपयाम् न० ७।३४ वैश० ३० 2 मृतक, मरा हुआ पुत्रय ।

स्वर्गीय, **स्वर्ग्य** (वि०) [स्वर्गः + छ, उन् वा] 1 स्वर्ग का, दिव्य, देवी 2 स्वर्ग को ले जाने वाला, स्वर्ग में प्रवेश दिखाने वाला मनु० ४।१३, ५।४८ ।

स्वर्ग्यम् [मृच्छ अर्थां वनी गम्य] 1 सोना 2 सोने का सिक्का । अम० अरि, गपक, —कच, कर्षिका सोने

के सोने, काय (वि०) मुनहरी शरीर वाला, (—घः) गङ्ग का नाम, आरः सुनार, —नीरकम् मेघ पान करिवा, बृहः 1 नीरकट 2 मुरी, —अन् रोगा —वीचिः अग्नि, स्वः मकर, —वाक्यः सुनगा, —दुग्धः चम्पक वृक्ष, अन्ध सोना गिरवी रखना, —मृच्छारः स्वर्गपात्र, मालिकम् सोनामन्त्री नाम का एक कनिष्ठ पदार्थ, —रेखा, लेखा सोने की मकीर, —वन्धिम् (पु०) 1 सोने का व्यापारी 2 मर्याद, —वर्षां हन्वी ।

स्वर् (आ० आ० स्वर्दे) चलना, स्वार सेना ।

स्वत् (आ० पर० भवति) जाना, हिलना-चलना ।

स्वत् (वि०) [मृच्छ अन्प प्रा० छ०, म० अ० स्वप्नी-यत्, तथा उ० अ० स्वल्पिच्छ] 1 बहुत छोटा या थोड़ा मुश्क, निरर्थक 2 बहुत कम । अम०—आहारः (वि०) बहुत कम खाने वाला, संयमी, मिताहारी, —कङ्क बीज का एक भेद कल (वि०) अथवा दुर्बल या कमबोर, —विषयः 1 वगव्य ज्ञान 2 छोटा भाग —अथ अथन कम् सर्व, बरिष्ठा, —बीड (वि०) बहुत कम मज्जा वाला, बेमर्ग, निर्लभ्य, शरीर (वि०) बहुत छोटे कद का, टिमटा ।

स्वत्पच (वि०) [स्वत्प + क्] बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, बहुत कम ।

स्वत्पीयत् (रि०) [स्वत्प + ईन्मुन् 'स्वत्प' की म० अ०] बहुत कम, अपेक्षाकृत छोटा, अपेक्षाकृत सूक्ष्म ।

स्वत्पिच्छ (वि०) [स्वत्प + इच्छन् 'स्वत्प' की उ० अ०] अथन कम यन्त्रे छोटा अथन सूक्ष्म ।

स्वत्पुः [—स्वत्पुः] अपने पति या पत्नी का पिता, इत्यत्र, तु० स्वत्पुः ।

स्वत् (स्त्री०) [सु + अच् + ऋन्] बहुत, ब्रह्मिणी —स्वत्परादाय विदनेदाय पुरमेजाविभुको बभूव रपु० ७।१, २० ।

स्वत् (वि०) [स्व + न् + विभ्] अपनी इच्छानुसार जाने या चलने-फिरने वाला ।

स्वत् (आ० आ० स्वस्वते) दे० 'स्वत्' ।

स्वत्तिल (अथ०) [सु + अच् + क्लिप्, वा अर्थाति विभक्तिरूपकम् अन्वयप, प्रा० छ०] अन्नय, इसका अर्थ है 'सोम, कल्याण ही' शायीर्षीर, जप बमकार, जति सत्रय की मन्त्रसे (अम० के साथ) स्वत्तिल प्रथो अ० २, स्वत्तिलस्तु ते रपु० ५।१७ (शाय अज्ञ-रारण्य में प्रयुक्त) । अम० अन्वयम् 1 समृद्धि के दिखाने वाला उपाय 2 मरण पाठ या प्रायश्चित्त द्वारा पाप को हटाना 3 दास स्वीकार करने के बाद शाह्य का सम्बन्ध करना प्रायश्चित्त स्वत्तिलवत् अन्वय रपु० २।१०, अ, आकः विभ का विशेष-

पय, मुक्ताः 1 पय 2. शङ्ख 3. बन्दी, स्तुति पाठक, —वाचकम्, —वाचकम्, वाचकम् 1 यत्र वा कोई मासिक कार्य आरम्भ करते समय किया जाने वाला एक धार्मिक कृत्य 2. फूलों द्वारा आशीर्वाद या वन्दार्थ देने का विशेष कार्य, वाचकम् बर्धार्थ, आशीर्वाद ।
स्वस्तिकः [स्वस्ति भुवाय हित क] 1 एक मण्डल चिह्न जो किसी शरीर या पदार्थ पर बनाया जाता है (ॐ) 2. कोई मण्डलम् 3. चार भागों का मिलना 4. पुराणों की व्याख्या रूप से छाती पर रखना जिससे कि एक व्यापक (X) चिह्न बने—स्तन-चिह्नविह्वलस्तस्वस्तिकमिह्वंभूमि—मा० ४।१०, शि० १०।४१ 5 एक विशेष मन्त्र का मूल 6 बीराहू से बना हुआ एक चित्रवाकार चिह्न 7 एक तरह का पिच्छक 8 विश्वी, व्यासशारी 9 लहसुन, क.,—कम् 1 एक विशेष रूप का मन्दिर या भवन जिसके सामने चकुरा बना हो 2 एक योगमन्त्र ।

स्वस्तीयः, स्वस्तेयः [स्वस् + छ, इक् वा] मानजा, बहून का पुत्र ।

स्वस्तीया, स्वस्तेयी [स्वस्तीय + टाप्, स्वस्तेय + ङीप्] मानकी, बहून की पुत्री ।

स्वान्तम् [सु + आ + गम् + क्त] सुभागमन, सुखद वगैरानी (सुखत सत्र० में गन्धे हुए व्यक्ति को अभिवादन करते में प्रयुक्त) स्वान्त देख्ये—मासिक० १, (तन्मे) ग्रीक ग्रीतिप्रमुखवचन स्वान्त व्याजहार—वेध० ४, स्वान्त स्वान्तकीकारान् प्रभावेरबलम्ब्य व । यूपवद् युगवाहुम्ब्य प्राप्तेम्ब्य प्राग्गधिक्रमाः कु० २।१८ ।

स्वाङ्किकः [स्वाङ्क + ठक्] डोल बजाने वाला ।
स्वाच्छन्दम् [स्वच्छन्दस्य भाव व्यञ्ज] अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने की शक्ति, स्वच्छन्दता, स्वतन्त्रता—कथाप्रदान स्वाच्छन्दादायुती धर्म उच्यते मनु० ३।३१ (स्वाच्छन्दोन्व, स्वाच्छन्दतः जानक्य कर, स्वच्छा से) ।

स्वातन्त्र्यम् [स्वतन्त्र + व्यञ्ज] इच्छामतिका की स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, —न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति मनु० १।३, न स्वातन्त्र्य स्वचित्प्रिया वाङ् १।८५ ।

स्वस्तित्, —नी (स्त्री०) [स्व + अद् + इत्, पठे ङीप्] 1. सुपुत्र की एक पत्नी 2. तलवार 3. सुम मज्जपुत्र 4. पन्द्रहवां मज्ज जो सुम बना गया है स्वात्यां छागसुचित्तमनुत्तम मन्वीकित्तं ज्ञायते—मनु० २।६०। सम० बीयाः स्वाती का (चन्द्रमा के साथ) बीज ।
स्वस्व् दे० 'स्वव्' ।

स्वस्त्यः, स्वास्त्यम् [स्वस् (स्वास्) + चञ्, ल्युट्, वा] 1. मन्त्र, रत्न 2. वस्त्रता, ज्ञाना, बीजा 3. पक्ष्य करना, मने लेना, उपनोष करना 4. भ्रष्ट करना ।

स्वास्तिवम् (पु०) [स्वास् + इतिवम्] सुस्वायुता, मायुर्ष ।
स्वास्तिष्ठ (वि०) [स्वायु + इच्छन्, 'स्वायु' की उ० अ०] अत्यन्त मयूर, सबसे मीठा कि स्वास्तिष्ठ वयवस्तिवम् सरा सङ्गि समायम् ।

स्वास्तीयम् (वि०) [स्वायु + ईयसुन्, 'स्वायु' की म० अ०] अनेकाङ्कत अधिक मीठा, बहुत मयूर—काष्ठाभ्युत्तरा—स्वाह. स्वास्तीयमृताद्यपि ।

स्वायु (वि०) (स्त्री०—पु०—ङी) [स्व् + उप्, म० अ० स्वास्तीयस्, उ० अ० स्वास्तिष्ठ] 1 मयूर, मुहाबना, पक्षने में अच्छा, हाथकेदार, मज्जदार, शक्तिकर, मीठा—मुक्ता सुव्यापत्ये पिबति शक्ति स्वायु मुरपि—मनु० ३।१२, मेघ० २४ 2. सुखद, शक्तिकर, सुखद शिव, मन्वीहुर (पु०) मयूररत्न, स्वाय की मीठास, मन्त्रा 2 शीत, रात्र, (नपु०) मायुर्ष, मन्त्रा, रत्न—स्विके करोति काष्ठादि स्वायु कागति पवित्र—मुक्ता०,—कुः (स्त्री०) अमूर । सम०—अक्षम् मीठा या बुना हुआ मोहन, स्वास्तिष्ठ लाघ, पन्नास, —अक्षः मनार का पेश,—अक्षः 1. किसी मीठी चीज का टुकड़ा 2. पुत्र, रात्र, —अक्षम् बेर, बन्द, बुद्धम् गावर, —रत्ना 1 शशा 2 तलाचरी बीजा 3 काकोली मूल 4. मरिचा 5 अमूर, —बुद्धम् 1 संघा नमक 2 समुद्री नमक ।

स्वाङ्गी [स्वायु + ङीप्] शशा, अमूर ।

स्वातः [स्वन् + चञ्] स्वित, कोलाहल ।

स्वायः [स्वप् + चञ्] 1 निद्रा, सोना उत्तर० १।३०, 2 गुपना जाना, स्वप्न 3 निद्राकुटा, ऊँचना, आलस्य 4 मन्त्रा, कल्पवायु सुप्त ही जाना 5 किसी एक गारी पर पढ़ाये में अच्छाये या आसिक ब्रह्मवेद्यता, जडना ।

स्वायतेयम् [स्वपनेरागत इत्] घन, हीलत, सम्पत्ति—स्वायतेयकृते मर्षा, कि कि नाम क कुर्वते पच० २।१५६, शि० १।१९ ।

स्वायवः दे० 'स्वायव्' ।

स्वाभाविक (वि०) (स्त्री०—ङी) [स्वभावानाम्, —ङञ्] अपनी निजी इच्छान से सबद्ध, अनपेक्षित, अनपेक्षित, चिरीय, शास्त्रिक—स्वाभाविक चिरीयत्वे तथा विनय-कर्मयाः सुमुच्छे महत्ते तेजी हृषिके हृषिकुंवाय १५० १०।३९, ५।६९, कु० १।३१, काः (पु०), ब० ब०) बीजों का एक सम्प्रदाय जो तन्वी बलुनी की इच्छान के नियमानुसार बनी मानते हैं ।

स्वाभिज्ञा, —स्वम् [स्वाभि + ज्ञा : टाप्, स्व वा] 1 आसिक-पना, प्रयत्न, भित्तिपन के अधिकार 2. एकाग्रता, प्रभुता ।

स्वाभिन् (वि०) (स्त्री०—ङी) [स्व-अस्त्वर्थे-भिन्, शीर्ष] एकाग्रत अधिकारों से युक्त—(पु०) 1. स्वाभी,

मालिक, 2. प्रभु, स्वराधिकारी --रघुनामिन सम्भ-
रिच विक्रमांक० १८११०० 3. प्रभु, राजा, नरेश
4. पति 5 भूष 6 विद्वान् ब्राह्मण, अत्यन्त ऊचे दर्जे
का मालिक पुरुष या सत्त्वामी (इत अर्थ में यह शब्द
प्रायः नाम के साथ जुड़ता है) 7. कालिकेय का
विशेषण 8 विष्णु का विशेषण 9. शिव का विशेषण
10 वात्स्यायन मुनि का विशेषण 11 नरह का
विशेषण : सम० उपकारकः शोभा, कारवन् किरी
राजा या प्रभु का कार्य, पास (पु०, हि० व०)
(पशुओं का) मालिक और रखवाला -मनु० ८१५
—वाचः मालिक या प्रभु की अवस्था, मालिकपना,
—वात्सल्यम् पति या स्वामी के लिए स्नेह,—सङ्ग्रह
1 मालिक या प्रभु की मत्ता 2 मालिक या प्रभु
की बच्चाई, सेवा 1 स्वामी या मालिक की सेवा,
टहल 2. पति का शौर, सम्मान ।

स्वाम्यम् [स्वामिन् + ध्यञ्] 1. स्वामित्व, प्रभुता, मालिक-
पना 2 सपति का अधिकार या हुक 3. राज्य, सर्वो-
परिता, शासन ।

स्वायंभुव (वि०) (स्वी०-भू) [स्वयम् + भू] 1 ब्रह्मा
से वायव्य रखने वाला कु० २११ 2 ब्रह्मा से
उत्पन्न, य. प्रथम भू का विशेषण (क्योंकि वह
ब्रह्मा का पुत्र था) ।

स्वारसिक (वि०) (स्वी०-की) [स्वस् + ठक्] अनर्वागी
रस या माधुर्य से शोचप्रसित (काव्यगत) ।

स्वारस्यम् [स्वस् + ध्यञ्] 1 स्वाभाविक रस या शोचना
का रखने वाला 2 मान्य, योग्यता ।

स्वारस्य (पु०) [स्व + राज् + क्विप्] इन्द्र का विशेषण ।
स्वारस्यम् [स्वस् + ध्यञ्] 1 स्वर्ग का राज्य, इन्द्र
का स्वर्ग 2 स्वप्रकाशमान ब्रह्मा से तादात्म्य ।

स्वारीषिक, स्वारीषिक्य (पु०) [स्वरोषिच अपत्यम् + जम्]
द्वितीय भू का नाम -दे० 'मनु' के अन्वयेतः ।

स्वालोक्यम् [स्वलोक्य + ध्यञ्] विशेष लक्षण, स्वाभा-
विक अवस्था, क्षासित्य, मनु १११९ ।

स्वाभ्य (वि०) (स्वी०-स्वी) [स्वाभ्य + अम्] 1 घोडा,
छोटा 2 कुत्त, कम, लम् 1. बौधायन, छुट्टान
2. लम्बा का छोटापन ।

स्वाभ्यम् [स्वस् + ध्यञ्] 1 आश्रयनिर्भरता, स्वाधयता
2. साहस, हतयकल्पता, विकेरी, दुष्टता 3 तनुकल्पी,
गौरवला 4 समृद्धि, कुशलकोष, मुक्तचैन 5 आगम,
शरीर, हित्यल -लभ्य तथा स्वाभ्यम् व० ५ ।

स्वाभ्य [स्व + भा + क्से + डा] 1. बन्नी देवताओं को बिना
किसी विचार के दी जाने वाली आहुति 2. अग्नि
की पत्नी का नाम (अन्न०) देवताओं के उद्देश्य
के आहुति देने समय उच्चारण किया जाने वाला
शब्द -इन्द्राय स्वाहा अग्नये स्वाहा । सम०-कारः

स्वाहा शब्द का उच्चारण करना—स्वाहास्वाहाकार-
विकसितानि स्वभावानुत्पानि युष्मिन् तानि,—पति,
- शिव भाव,—भूष (पु०) मुर. देव ।

स्विच् (अन्न०) [स्विच् + विच्] प्रसन्नाचक या पुष्क-
पत्रक विपात, प्रायः 'स्वधेह' 'आस्वधे' को प्रकट करता
है, इसका अर्थ है 'क्या' 'हे' 'ए' 'हा, हो, हो' की
ध्वनि 'क्या ऐसा हो सकता है' आदि, इस अर्थ में
नया अतिरिक्तार्थ प्रकट करने के लिए पूरे प्रसन्नाचक
संबन्ध के साथ जोड़ दिया जाता है कास्विचव-
गुणनवती नातिपरिस्पृष्टशरीरलाभ्या व० ५१११,
मंत्र० १५, कभी कभी यह पुष्क रूप से 'वा' और
'अचवा' अर्थ को प्रकट करता है, कभी कभी 'यु' 'उत'
और 'वा' के साथ जुड़कर, दे० कि० ८१३५, १२।
१५, १३१८, १५६०, 'ब्राह्म' के साथ भी ।

स्विच् : (विद्या० पर० स्विच्छति, स्विचित या स्विन्न)
स्वेद जाना, पसीना जाना - स्विच्छति क्षुण्ति केकति
—काव्य० १०, उत्तर० ३१६१, कु० ७५७७, वा०
१३१५, मत्वा पश्यति कपते पुष्ककत्वानन्दति स्विच्छति
गीत० ११ ।

11 (भा० भा० स्वेदने, स्विन्न या स्वेदित) 1. मालिङ्ग
किया जाना 2 विक्रान्ता जाना 3. विस्मय होना
—प्रेर० (स्वेदयति ते) 1 पसीना जाना 3 शर्म
करना ।

स्वीकरणम्, स्वीकारः, स्वीकृतिः [स्व + क्वि + कृ + क्त्वरु
(कृञ्, क्तिन् वा)] 1 लेना, ग्रहण करना 2. हामी
भरना, सहमत होना, प्रतिज्ञा करना, हामी, प्रतिज्ञा
1. वाग्दान, पाणिग्रहण, विवाह ।

स्वीय (वि०) [स्व + क्व] अपना, अपना निजी—लोकालोका-
विभारितेन विहितं स्वीय धिमुदम् यम-सा० द० १७।

स्व (भा० पर० स्वरति, इच्छा० सिप्सरति, मुत्स्वर्ति)
1 लब्ध करना, सत्वर पाठ करना 2. प्रशंसा करना
3 पीडा देना या पीडित होना 4 जाना, अर्थि—,
प्र—, लब्ध करना कम् , पीडा देना (भा०)
वृद्धि० १, २८ ।

स्व (कथा० प० स्वर्णति) शोच पहुँचाना, भार डालना ।
स्वेक (भा० भा० स्वेकते) जाना ।

स्वैशः [स्विद् शाने कम्] पसीना, पछेड, शर्मविहु
—अनुमिलिष्येदेन सुधेरस्रस्रगति-विष्णु० २ । सम०
उद्यम्, उद्यकम्, अन्नम् पसीना, शयकम्,—भूषकः
शीतल मय पवन, ठंडी हवा (पसीना सुखावा),—अ
(वि०) ताप वा भाप से उत्पन्न होने वाला, पसीने
से उत्पन्न होने वाला (युं, अट्टम्य आदि वीथ) ।

स्वीर (वि०) [स्वस्य ईरम् ईरु + अन् वृद्धि] 1. ममताया
आचरण करने वाला, स्वच्छन्द, स्वैच्छयावारी, अति-
यमित, निरंकुश—वदन्ति स्वैरपतिर्भवन्ति सुखसंनि-

नमस्वि स० ५।११. अद्याहूने स्वरवर्तते स तस्या
 र्म् ० २।५ २ स्वतन्त्र, असंकोच, विद्वन्मत्, जैसा
 कि 'स्वैराकार्य' मुद्रा० ४।८ ३ अन्धर, मुद्रु नम्र
 मुद्रा० १।२ ४ सुस्त, मद्र ५ अपनी मर्जी चलने
 वाला, ऐच्छिक, यथाकाम, रम् स्वच्छता, स्वेच्छा-
 चारिता, रम् (अव्य०) १ इच्छा के अनुसार,
 मनपसन्द, आराम से सार्थी स्वर स्वकीयेषु वेदस्वय-
 स्विकारिषु—रम् ० १७।५ ४ २ अपने आप, स्वयं
 ३ वर्ण शरीर, नक्षत्रा पूर्वक, मुद्रुता के साथ उत्तर०
 ३।२ ४ आहिम्ना से, धीमी आवाज में, अग्यट
 (विप० स्पष्ट)—पल्लवात्करं गज इति किञ्च आहूत
 सत्यवाचा वेणी० ३।५ ।

स्वैरता, स्वम् [स्वर ; टाप्, त्य वा] स्वेच्छा-
 चारिता, स्वच्छता, स्वतन्त्रता ।
 स्वैरिणी [स्वैरिन् ; कीप्] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी
 यात्र० १।५० ।
 स्वैरिन् (वि०) [त्वेव इरिन् शीलमस्य - र्व ईर्
 ; णिनि] मनमानी करने वाला, स्वेच्छाचारी,
 अनियमित, निरकुल ।
 स्वैरिप्रो दे० 'संग्रही' ।
 स्वोत्स (पु०) तेलीय पदार्थ मिलकर पीने के बाद उस
 में लगा हुआ (उस पदार्थ का) अंग या तमकट ।
 स्वोच्छरीयम् (नप०) आनन्द, मग्नि (विद्योपकार वाली
 जीवन के विषय में) ।

हृ (अव्य०) [हृ + इ] बलबोधक निपात जो पूर्ववर्ती
 शब्द पर बल देता है, इसका अर्थ है 'लक्ष्य' यथा
 में निश्चय ही आदि, परन्तु कभी कभी इसका उपयोग
 बिना किसी विशेष अर्थ को प्रकट किये केवल पाद-
 पूति के उचित को किया जाता है, विशेष कर वैदिक
 साहित्य में—तस्य ह गत शयां प्रभृत्, तस्य ह परं-
 नारदी गृह उपन्युः आदि—तैत्ति०, यह कभी कभी मन्त्राद्य
 के लिए भी प्रयुक्त होता है, तिग्मकार या उपहास के
 लिए बिरल प्रयोग (पु०) १ पाद का एक रूप
 २ अन् ३ आकाश ४ इति ।

हृत्सः [हृत् + अच्, पुषो०] बर्णागम, भवेत्प्रार्थनाय् हृत्सः
 —सिद्धा०] १ गजद्वय, मृगम्, मृगिणो, कारइव—हमा-
 सप्रति पाच्छवा इव वनादभ्रान्तवर्षा वना - मुच्छ० ५।६
 न शीघ्रते मन्त्राद्यो हृत्समये वको यथा—मुद्रा० २५०
 ३।१०, ५।१२, १७।५५ (इस पंथी का वर्णन जैसा
 कि सम्बन्ध के कथियों ने किया है, अधिकतर काव्या-
 त्यक्त है, उमे ब्रह्मा का वाहन बताया जाता है अ-
 सात के आरम्भ में उमे मानसरोवर की ओर उड़ता
 हुआ बताया जाता है पु० 'यानम' । एक मामाज्य
 कविमयय के अनुसार इस को हृत् और पानी को
 पुष्क-पुष्क करने वाला विशेष शक्ति उपन्न पत्नी
 माना जाता है उदा० सार मतो वाङ्मयवास्य फलम्
 हृत्तो यथा शीरमिवाभ्यमस्यन्त् पश० १, हृत्वा हि
 शीरमादले गमिष्या ब्रह्मेवत्यप स० ६।००, नीर-
 शीरविदेके हृत्सामस्य त्वमेव तनुषे वेत् । विरवमि-
 प्रमुनाय कुलव्रत पात्रविधित्ति क जाति० १।१३
 दे० मनु० २।१८ मी २ परमात्मा, ब्रह्म ३ आत्मा,
 जीवात्मा ४ प्राण वायुओ में से एक ५ पूर्व ६ विश्व

७ विश्व ८ कामदेव ९ राजा जो महत्पाकाशी न
 हो १० विशेष मन्त्रदाय का सन्नासी ११ दीक्षागुरु
 १२ ईश्वर, हृत् से हीन व्यक्ति १३, पूर्ववत् । मभ०
 —अङ्गिः सिद्धर, अविच्छेदा मन्त्रवन्ती का विशेषण
 अविच्छेद चारी, कांता हृत्मिनी, हीनक, एक
 प्रकार का रतिवध,—मिनि (वि०) हृत् जैसी बाल
 चलने वाला राजकीय से शासन कर चलने वाला
 मन्त्रदाय मन्त्रदायिणी स्त्री, मासिनी १ हृत् की
 भी मुन्दर गति वाली स्त्री मनु० ३।१० २ ब्रह्माणी
 —पुल, कम हृत् के मन्त्रायम पर, हाहृत् अन्
 की मकड़ी, माहृ हृत् का कण्ठ, मासिनी मन्त्र-
 दायिणी स्त्रियो का जेद (पत्नी) कर्म, बड़े विद्वत्,
 मन्त्र की भाव और कोषण के स्वर वाली) मुद्रा स्त्री
 गजेन्द्रगमना तन्वी कौकिल्यात्मयवता, नितंबे
 मुखी वा म्याया म्ना हृत्मादिकी, बाल्य हृत्
 की पित्त-कु० १।१०, पुष्यम् (पु०) अकान हमा,
 रम्, बाहृत् ब्रह्मा के विशेषण, —रत्सः हृत्तां का
 गवा, ब्रह्मा हृत्, श्रीमत्सम्, कासीस, शोहृत्सम्
 पीलस, वेणी हृत्ती की पत्नी ।

हृत्सक [हृत् - कन्, हृत् - कं + क वा] १ कारंश्च मराल
 २ पूर्व का आशय, नृपूर, वायवेव सति इव
 अविधमप्रगणपत्तिव्रतसम्पुष्या विशेषम् — वि० ०।
 ३, (वही यह शब्द 'प्रथम अर्थ' में भी प्रयुक्त हुआ
 है, इत्ये अर्थों के लिए देखा जा सकता है) ।
 हृत्सिक्ता, हृत्सी [हृत् + कन् ; टाप्, इन्धम्, हृत् ; कीप्]
 हृत्मती, मया हृत् ।

हृत्तो (अव्य०) [हृत् इत्यव्यक्त महावि—हृत् + ता ; ङी]
 सर्वोपनात्मक अव्यय की आवाज देने में प्रयुक्त होता

है जैसे अंग्रेजी का 'हल्लो' (Hallo) गद्य
इहो विन्दवर्णिकप्रत्यय, सर्वप्रथम रमान्
-बन्दा० १।२ 2 विन्दवर्ण एव अधिमानपुष्पक अन्वय
3 प्रथम शब्दक अन्वय (वाक्यों में इन शब्द का
प्रयोग मध्यम वाच्योद्देश्य वाच्य सर्वोपन के रूप में
किया जाता है इहो आशय या कृष्ण मुदा० १) ।
हृक्कः [हृक् इति अन्वयस्य कायति-हृक् + क + क] हाथियों
की बहाना ।

हृक्का हृक् [हृक् इति अन्वयस्य कवन्तेज हृक् + का + का
(हृक्) सर्वोपनात्मक अन्वयस्य यो किलो दासी या गौरु-
गानी की बहाने में प्रयुक्त होता है हृक् कवन्तेजान्ते
अहम् इति कर्त्तृभावितो रन् ० १ ।

हृक् (म्भा० पर० हृदि, हृदि) चक्रना उज्ज्वल होता ।
हृक् [हृक् + ट, टन्व नेत्वम्] बाजार, हृट मेला । मम०
-बौरकः बह चोर जो बाजार में चीने चुराये
गटकटा, चिल्लासिनी 1 बागवना, बेत्या, रवी
2 एक प्रकार का गद्यव्यय ।

हृत् [हृत् + अच्] 1 प्रवचनता, वल 2 अन्वयाधार, कृ-
नसाट, (हृत्ते, हृत्तम्) (किया विरोधन के रूप में
प्रयुक्त) वनपुष्प, प्रवचनता में, अचलक, दुर्गहृत्पुष्पक
अन्वयात्मिका च कवन्तेजान्ते हृत्तम् परिशुभाममम-
नयनीयन दम०, बाजार, बागवनाम हृत्तेन मधरेत्
व मम० । मम० योग की एक विशेष-
रथि या प्राचिनन व वजन का अन्वयता ('राजयोग'
में प्रियता दिवाने के लिए हृत्का नाम 'हृत्योग'
गया, इसका अन्वयन भी कुछ कठिन है, इसके अनु-
पालन की अनेक रीतियाँ हैं, उदा० एक पैर के बल
बहा होना, हाथों का ऊपर किये रहना, गिर ऊपर
रङ्गके पृथगत करना आदि)।—विद्या बलपुष्पक मन्त्र
करने का विज्ञान ।

हृत्ति [हृत् + इन्, पुषो०] काठ की बेटी ।

हृत्ति (हृत्) क, हृत्ति [हृत् + क्वक्, पुषो०, हृत् + इन्,
पुषो०, कन् वादि] अत्यन्त नीच जाति का पुरुष, भगी
आदि ।

हृत्तम् [हृत् + इ पुषो०] हृत्ती । मम० कन् मज्जा ।

हृत्का (अन्व०) [हृत् + का] सर्वोपनात्मक अन्व० की विन्द
अन्वयो की विन्दयो की बहाने में, या निम्नतर जाति
(भगी आदि) के अधिकारों द्वारा आपस में एक दूसरे
की सर्वोपन करने में प्रयुक्त होता है हृक् हृक्
हृत्तान्ते नीचा बेटी सभी प्रति अमर०, स्त्री० एक
बहा मिट्टी का वर्णन ।

हृत्कका, हृत्की [हृत्का + कन् + टाप्, इन्वच्, हृक् + कीच्]
हारी, मिट्टी का एक वर्णन ।

हृक् (अन्व०) [हृत् + क्] दे० हृत्का (अन्व०) ।

हृत् (म० क० हृ०) [हृत् + स्तो] 1 माग मया, वय

किया गया 2 चोट पहुँचाई गई, प्रहार किया गया,
क्षतिग्रस्त 3 नष्ट, बरबाद 4 बहिष्कृत, हीन, गठिन
5 निगाह भ्रमनाम 6 मुक्ति - दे० हृत्, 'निकामा
'अभिमान' 'वनीय' 'वधम्' जहाँ की प्रकट करने के
लिए यह शब्द शब्द के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त
होता है अनपयुक्तान् हृत्तुम् तत्रति विन्दुम्
म० ६।८, कुर्वाण्येतां हृत्तुम् विन्दुम्—रूप०
१।६५, हृत्तुम् विन्दुम् ही विन्दुको विपाक—वि०
१।१५४ । मम० आश्र (वि०) 1 माग से रहित,
निगाह उज्ज्वल 2 दुर्बल, अक्षय 3 दूर, निर्दय,
4 बाध 5 नीच, हृत्, पावी, अभिमान, दुर्बल,
कष्टक (वि०) काटो से युक्त, चपुभा से रहित
—विद्या (वि०) व्याकुल, चक्रना हुआ, -विष्णु
(वि०) मुद्रा रत्न० ३।१५, ईश (वि०) हृ-
नाय, प्रायहीन, दुर्भाव्यवन्त, -प्रवक्त (वि०) बोध
(वि०) पालिहीन, निर्धर्म, बन्हीन—बुद्धि (वि०)
ज्ञान से बहिष्कृत, बेहोश, ज्ञान, मन्व्य (वि०)
भार्यहीन, बरकिसलत, कुर्वाण्येतां, बुद्ध, अक्षय
(वि०) अक्षयको से विरहित, अनाथा, शोक
(वि०) अक्षयि बचा हुआ, -की, क्वक् (वि०)
जिनका कैवर्ष नष्ट हो गया हो, वल के न रहने पर
जो दरिद्र हो गया हो, सन्व्य (वि०) जिसका अत्र
नष्ट हो गया हो, अयुक्त, निर्धर्म ।

हृत्क (वि०) [हृत् + क्व] हुकी, दुर्बल, दुर्बल नीच,
हृत् (शय, समता के अन्व में प्रयुक्त)—न सत्
विरताम्ने तत्र विवक्ष्यन्तस्वामक्यहृत्केन मुदा० २,
दुषिता एव परिभूता एव रामहृत्केन उत्तर० १, क
नीच पुष्प, कायर ।

हृत्ति (स्त्री०) [हृत् + क्विन्] 1 हृत्ता, विनाम 2 प्रहार
करना पापक कला 3 आघात, प्रहार 4 नाच,
अनफलता 5 मुटि, शोक 6 मुष्ठा ।

हृत्तुः [हृत् + कन्] 1. बरख 2 रोग या बीमारी ।

हृत्ता [हृत् वाये क्वच्] वय करना, माग करना, प्रहार,
कृत, अक्षय वय जैसे अक्षयता, बेहोशा, आदि ।

हृत् (म्भा० आ० हृत्ते, हृत्) पुरीषोपधर्वन, वक्ष्यताप
करना, इच्छा० (विहृत्ताते) ।

हृत्कम् [हृत् + क्वट्] पुरीषोपधर्व, वक्ष्यताप ।

हृत् (अवा० पर० हृत्ति, हृत्, कर्वा०) हृत्ते, प्रेर० चान-
यति—ते, इच्छा० विवक्षति) 1. माग आश्रमा, वय
करना, नाच करना, प्रहार कर देना अक्षय हृत्क-
करविमुक्षनी रथे हृत्ताः उत्तर० २।१५, हृत्तपि च
हृत्तेषु मयन् क्वत् ३।१८ 2. आघात करना,
पीटना—क्वकी क्वक् हृत्तुम्-वृक्षता मां विवृष्टान्ता
नेचरावीच विव्वच्—नासवि० ३।२०, वि० ७।१५
3. चोट पहुँचाना, अति पहुँचाना, कष्ट देना, समान

देना देना कि 'कामहृत' में 4. डाक देना, छोट देना, —मर्तुं २।७७ 5. हटाना, दूर करना, नष्ट करना, —अभौतिकीवनिर्वाणसामय हृतस्य हृति नितरा कुपितो विधाता—मर्तुं २।१८ 6. जीमना, पछाड़ देना, पराकित करना, परास्त करना—विष्णुं सहस्र-वृत्तिरूपे हृत्यमानाः प्राक्ख्यमृतयजना न परित्यजन्ति सुभां 7. विष्णु डालना, डाहा डालना 8 नष्ट करना, बिगाड़ना—किं २।१७ 9 उठाना तुरग-कारहतस्यवा हि देवः प्र० १।३२ 10 गुणा करना (गणित में) 11 जाना (काव्य में इनका इस अर्थ में प्रयोग किरल है, और जब कभी प्रयुक्त होता है तो बहु काव्य का एक दोष माना जाता है) उदा०—कृष हन्ति कुम्भोदरी—सा० ६० ७ वा, नीचान्नेषु स्नानेन समुपाजिनसकृतिः । मृगभोजयिनीमेष हन्ति सप्रति सावरम्—काव्य० ७, (असवर्षम्) दाप वा उवाहरथ), अस्ति—अन्येन क्षतिग्रन्त करना, अन्तर्-बीच में प्रहार करना, अथ , 1 हटाना, पीछे धके-लना, नष्ट करना, बच करना 2 दूर करना, हटाना—न तु खलु तयोर्ज्ञानि शक्तिं कर्णोपगर्हन्ति वा—उत्तर० २।४, प्र० ४।७ 3 आक्रमण करना, बलात् ग्रहण करना, अस्ति—1 प्रहार करना, आघात करना (आमं से मो) पीटना—मा० १।३९, मालवि० ५।३ 2 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रन्त करना हत्या करना, नष्ट करना 3 प्रहार करना पीटना (डोक आदि) भय०—१।१३ 4 आक्रान्त करना प्रन्त कर लेना, परास्त करना, अथ—, 1 प्रहार करना भागना, बच करना 2 नष्ट करना, हटाना 3 (अनाज की भाँति) कूटना, झा—, 1 आघात पहुँचाना, प्रहार, करना, पीटना—कुट्टिममात्रधान का०, किं ७।१७ (आ० माना जाता है जब पीटा जाने वाला अपना ही कोई अंग ही—आपने गिर—विच्छा०, परन्तु भागवि कहना ही आक्रमणे विषम-विशेषतन्मथ अथ—किं १।७६३, अट्टि० १।१५, ५।१०२) रघु० ६।२३, १०।७७, कु० ४।२५, ३० 2 प्रहार करना, (बटो आदि) बजाना, (डोक आदि) पीटना,—अट्टि० १।१७ १।७, मेघ० ६६, रघु० १०।११, उज्जुं 1 उठाना, उमन करना, उँचा करना 2 कूलना, घमडी होना, दे० उठल, उच , 1 प्रहार करना, आघात करना 2 बरबाद करना क्षतिग्रन्त करना, नष्ट करना, बच करना लड्डु पोष-हृत्विच्यते—अट्टि० १।११२, ५।१२, भय० ३।२४ 3 पीकित करना, परास्त करना, परास्त करना, टप-कना शक्तिग्रहण, मुक्तोपहृत, कामोपहृत आदि कु० ५।७६, अर्जु० २।२६, वि , मार डालना, नष्ट करना अट्टि० २।३४, ५।१२, रघु० १।१७३,

पाश० ३।२६२ 2 प्रहार करना, आघात करना, —ताम्रेव सामपंतया विजयन् रघु० ७।१४, मेघ० ७।२७ 3 जीतना, हराता—देव विजयं कुश पोषयना-स्यसम्पत्ता—पद्य० १।३६१ 4 पीटना, (दास आदि) बजाना, अट्टि० १।५२ 5 प्रतीकार करना, निष्कल करना, भ्रम्यास करना रघु० १२।१० 6 (गोप आदि की) चिकित्सा करना 7 अचहेलना करना, 8 हटाना, दूर करना, किं ५।३३६, बरा . 1. जवाबी बाज करना, प्रत्याधान करना, पछाड़ देना, पीछे धकेलना, निवारण करना, परास्त कर देना, लखेव बना—देव पत्नीरुपपगतस राम० 2 आक-मण करना, भावा वापना कटाक्षपगतस वरदण्ड-जम् मा० ७ 3 टक्कर भागना, प्रहार करना, प्रथ 1 बच करना, कलक करना, प्राधानियत रक्षानि पेनाप्लानि बने मय । न ग्रहण्य कथ पाप अथ पुरोपकारिणाम्—अट्टि० १।१० 2 प्रहार करना, पीटना आघात करना मदाप्रश्रवणम् 3 प्रहार करना, पीटना, (दास आदि) रघु० १२।१५, मेघ० ६६ अस्ति—बच करना अट्टि० २।३५, अस्ति—, जवाबी बाज करना कटके में प्रहार करना (न) विषयान्मुद्गुधमना प्रतिहनुमौषि—रघु० १।६० 2 हटाना, परे करना, राकना विरोध करना, मुक्ता-उला करना—तोषयमेवाप्रतिहनुमय विष्णु मनुषोपः उत्तर० ३।१६ प्रतिहर्तविना मिका मचकमौल्य ग० १।१३, मेघ० ३० कु० ५।१८, विष्णु० ३। १ 3 हटाना, लखेवना, डकेलना 4 दूर करना, नष्ट करना पछनु पाप प्रतिवर्ति जयन्त्यास नृपस्य तमे मा० १।१३ 5 प्रतीकार करना उपचार करना, वि 1 बच करना कलक करना, नष्ट करना विष्कल करना, महार करना (अल) मरुता मरति मरुता विहनुम्पु किं ५।१७ 2 प्रहार करना, हा में आघात करना 3 जवाबिय करना बकाहट डानना विनाय करना, मुक्तावना करना विष्कल रक्षानि को कनुच अट्टि० १।१९, रघु० ५।१७ 4 अगवा काज करना इंकार करना क्षय होना रघु० ३।२४ १।१२ ५ विराडा करना, हराता करना, लख . 1. मटा काज मिलना आघम में जारना अगो मरुत -मनु० ३।७१ दूत एव हि मरुत विनामेष च सतगाम्—७।६६ ३० मरुत 2 देर मरुता मरुत करना, मरुच करना 3 मरुतिवत करना, विनाहता 4 मरुच होना १. प्रहार करना मार डालना, नष्ट करना, लखा , प्रहार करना आघात करना, क्षति-ग्रन्त करना ।

हृत् (वि०) [हृत् + चिद्वृत्] बच करने वाला, हत्या करने वाला, नष्ट करने वाला (मराम के अर्थ में प्रयुक्त)

जैसा कि बृहद्गन्, पितृगन्, मातृगन्, ब्रह्मगन् आदि ।
हृन् [हृन् + अच्] क्व, हृत्वा ।
हृन्मन् [हृन् + मन्] 1 क्व करना, हृत्वा करना, आधान करना 2 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना 3 भुजा ।
हृन्-न् (पु०, स्त्री०) [हृन् + उन्, स्त्रीथे वा ऊन्] डोरी, नू (स्त्री०) 1 जीवन वन आधान करने वाली बीज 2 तन्त्र 3 रोग, बीमारी 4 मृत्यु 5. एक प्रकार की जीपथ 6 स्वेच्छाधारिणी स्त्री, देवता । तमः ग्रह इत्य ब्रह्मा, ब्रह्मन् ब्रह्म की उद ।

हृन् (नू) **हृन्** (पु०) [हृन्(नू) + मन्] एक सर्वत्र गतिमान्वाणी वाक्तर का नाम (यह अज्ञाता का पुत्र था, इसके पिता वचन या मन्त्र में, इसी कारण इसे वाक्वित कहते हैं । ऐसा वर्णन मिलना है कि उनमें आधाकारण गति और पराक्रम का जो उमने अपने हृद्यपाराध्य राम की ओर से कई अवसरो पर प्रकट किया । अब रावण सीता को अपहरण करके लका में ले गया तो हृन्मान् ने सद्गुरु पात्र करके उनका पना लनाया तथा अपने स्वामी राम को सुचित किया । लका के महापुत्र में उमने महत्त्वपूर्ण कार्य किया ।

हृन् (अथ०) [हृन् + ण] प्रमथता, हृन्, बीर आकस्मिक हृत्सव्य की प्रकट करने वाला अथर्व, हुत्त जो लब्ध मया स्वात्मन्त्वं सं० ४, हुत्त प्रवृत्त मनीषकम् - भाष्यि० १, 2. कृत्वा, दत्वा - पुत्रक हुत्त हे धानाका - तम० 3. लोक, अक्षयोज - हुत्त विष्ट मानवन्त्वं - उत्तर० १५३, स्वराणि हुत्त स्वराणि - उत्तर० १, काचमन्त्वेन विकीर्तो हुत्त विन्नामनि- मया - सा० ११२, मेघ० १०४ 4 सीमाय, भाषी- वीथ 5 यह बहुधा आरम्भपुत्रक अथर्व के रूप में भी प्रयुक्त है - हुत्त ते कथिष्यामि - राम० । तम०

हृत्तः (स्त्री०) कवचा, बुहुता आदि बोलक लोक, शेष आदि शब्दों का कथन, - काटः 1 'हृत्त' विन्मयादिबोधक अथर्व 2 किसी बर्तित्व की ही जाने वाली जैत-निबीती हुत्तकारेण मनुष्यांस्तर्पयेत् ।
हृन्तु (वि०) (स्त्री०) श्री [हृन् + तुच्] 1. प्रहाङ्कता, बचकता, मनु० ५१३४, कु० २१२० 2. की हुत्ताता है, मट्ट करता है, प्रतीकार करता है, - पु० 1 हृत्पारा कतिल 2. चोर, हुरेदोर ।

हृन् (अथ०) [हृ + हृन्] 1. शेष तथा 2. सिध्दाचार या आधर की प्रकट करने वाला उद्धार ।

हृन्वा (अ) [हृन् + वा + अच् + टप्, पक्षे पुषी०] ताम, वे० आदि पशुओं के बोधने का शब्द, रीचना । तम० एकः रीचमा ।

हृन् (आ०) पर० इवति, इवति 1. बाजा 2. बुजा करना 3. शब्द करना 4. चक बाजा ।

हृन् [हृन् (हि) + अच्] 1 बोधा, मम० ११२४, मनु० ८१२०५ रघु० ५११० 2. एक विशेष धेनी का मनुष्य - हे० 'अथर्व' के अन्वयन 3 'वान' की संख्या 4 इत्य का नाम । तम० - अथर्वः घोड़ों का अवीलक अथर्ववेद अधर्वाधिकत्वाविज्ञान, गामिहोषविद्या, आथर्व अन्वारीही, बुधमवार, - आरौह 1 बुध- मवार 2 बुधवारोही, हृत्त जी, - उत्सव इदिया घोडा, कौविह घोड़ों के प्रबन्ध, प्रविश्रम तथा चिकित्साविज्ञान में परिचित, अ घोड़ों का व्यापारी, माइन, पेलेवर बुधमवार, - हृत्तन् (पु०) श्रेया श्रिय जी, श्रिया मन्त्र का वृत्त, वाट, - वाटक मय्युक्त कर्बीर, कनेर, - वाटकः पावन कनेर, - जैव अथर्वथ यज्ञ-यात्र० ११८१, - बाह्य कुनेर का विमोचन, शाला अस्तबल - आत्तन् घोड़ों की मधान या उनका प्रबन्ध करने की कला, ब्रह्मन् घोड़ों का मगाम शीघ्र कर रोकना ।

हृन्कृत् [हृ + कृ + लृच् + युच्] बालक, रचवान् ।
हृकी [हृन् + कीच्] घोड़ी ।

हृ (वि०) (स्त्री०) रा, - री) [हृ + अच्] 1. ने जाने वाला, हुत्तने वाला, बन्धित करने वाला वेदहर, शीकर 2. जाने वाला, ने जाने वाला, बहण करने वाला कणहरा - कि० ५५५, रघु० १२१५१ 3. पकड़ने वाला, बहण करने वाला 4. मार्कक, मनीहर 5. अथर्वी, दावेदार, अधिगारी - मु० २१११ 6. अधिकार करने वाला, - कु० १५०, 7 बटने वाला, - र 1 शिव, कु० १५०, ३५०, ५०, मेघ० ७ 2. अग्नि 3. तथा 4. श्रावक 5. शिव की शीथे की लम्बा । तम० शीरी शिव की पावती का एक लक्ष्य कथ (अन्वारीमतेस्वर), चन्द्राधिक शिव की शिवायि, चन्द्रा, तेजन् (मनु०) पारा, मेघन् 1. शिव की अग्नि 2. तीन की लम्बा, शीकन् शिव का शीव, पाट, - अक्षरा शिव की शिवा, पारा, लुन्ः स्वन् रघु० ११८३ ।

हृक् [हृ + कृन्] 1. शीरी करने वाला, चोर 2. हुत्त, 3. श्रावक ।

हृक्मन् [हृ + मन्] 1. पकड़ना, बहण करना 2. ने बाजा, हुर करना, हुत्तना, बुत्तना कन्वहरणम् - मनु० ३१३३, रघु० ११७७ 3. बन्धित करना, मट्ट करना, वेसा कि 'श्रावहरणम्' में 4. नाम देना 5. विधाधी को उपहार 6. बुजा 7. शीर्ष, शुक 8. लोभा ।

हृरि (वि०) [हृ + इन्] 1. हुरा, हुरा-नीला 2. शकी, लक्ष के रथ का, लक्ष्मीकुल मुरा, कथित हृरियुध्वं रथं तस्यै श्राविभाव पुरम्बरः रघु० १२१५, ३५३ 3. पीला, रिः 1. शिन्धु का नाम - हृरिर्वैश्वं क-पु-

वानस स्मृत-रघु० ३।५९ २ इन्द्र का नाम
- रघु० ३।५९, ६८, ८।७९ ३. शिव का नाम
४ ब्रह्मा का नाम ५ यम का नाम ६ मृत्यु ७. अश्वत्थ
८ मत्स्य ९ प्रकाश की किशक १० अग्नि ११ पवन
१२ मित्र-भासि० १।५०, ५१ १३ घोडा १४ इन्द्र
का घोडा मत्स्यमतीव हरिणो हरिदश वनेले वाजिन
-शं० १, ७।७ १५ लघु, बन्दर उत्तर० ३।६८,
रघु० १२।५७ १६ कोयल १७ सेवक १८ सीता
१९ माँप २० शक्ती या पीला रंग २१ मोर २२ भर्तृ-
हरि कवि का नाम। मय० अक्षः १ सिंह
२ कुवेर का नाम ३ शिव का नाम, अश्व १ इन्द्र
२ मित्र, काल (वि०) १ इन्द्र का अथ २ मित्र के
समान सुन्दर, केशीय वय देश, यन्त्र एक प्रकार
का बन्दर, बन्दर नम् १ एक प्रकार का पीला
चन्दन (लकड़ी या वृक्ष) रघु० १।५९, १।६०, पा०
७।२, कु० ५।६९ २ स्वर्ग के पाच वृक्षों में से एक
वृक्ष पञ्चमे देवतारणो मन्दाय पारिजात १ मन्दाय
कल्पवृक्षन पुमि वा हरिबन्धनम्-अमर०, १-सप्त।
१. उषाम्ना २ केशर, जाफरान ३ कम्बल वा पगल

तास (कुछ विद्वान् इसे 'हरित' से व्युत्पन्न मानन
है) होम रंग का वस्तु (सप्त) हस्ताय होम०
१, सि० ४।२१, कु० ७।७३, ३३, (स्त्री) दुर्वा
घाम, दूध, तालिका मादसुकका चतुर्थी २ दुर्वा घाम
तुलसी, इन्द्र का नाम, हास, विष्णु का उपनाम,
-विष्णु विष्णु पुत्रा का विशेष दिन, - देव अथवा
नराज, -इन्द्र, हरा रम, -इन्द्र एक पुण्यपीथम्पान, -मेखल
१. विष्णु की अथ २. सफेद कमल, (स) उल्फ,
पद्म वसन्त विष्णु, शिव, १ कदव का वृक्ष
२ हास ३ मूले ४ वालल मनुष्य ५ शिव, (-घम)
एक प्रकार का चदन, शिवा १ लक्ष्मी २ तुलसी
या पीथा ३ पृथ्वी ४ हादमी - मूष (पु०) माँप
मन्त्र, कणक घटर, यना, -मोक्षनः १ केकदा
२ उल्फ-बालक्या १ लक्ष्मी २ तुलसी-बाहार विष्णु-
विष्णु, एकादशी, श्रावण १ पवड २ इन्द्र, 'विष्णु'
(स्त्री०) पूर्वदिशा, -शर, शिव का विशेषण (विष्णु राक्षस
के तीला मरुगे को अम्य करने के लिए शिव ने विष्णु की
जलेने मरकडे की भाति प्रयुक्त किया), -सप्त एक
पर्व, -संकीर्तनम् विष्णु के नाम का कीर्तन करना,
-सुतः सुनु अर्जुन का नाम, -हृत्कः १ इन्द्र रघु०
१।१८, २ मूयं, -हृत्, विष्णु और शिव की एक मयुक्त
देवमूर्ति, हेसि (स्त्री०) १ इन्द्रवृक्ष कथयवलाक-
येयमकुना हरिहेममती (ककुम्भ) - पा० १।१८
२. विष्णु का वक्, 'हेसि' चक्रवाक शि० १।१५।
हरिकः [हरि सजाया कन्] १ शक्ती या भूरे रंग का घोडा
२ चोर ३ नुवारी।

हरिण (वि०) (स्त्री० शी) [हृ + इन्द्रन्] १ पीका,
पीला हा २ काल वा पीला सफेद, -म, १ मूय, मातृ-
मिया (यत्र पाच प्रकार का बनाया गया है)-प्रति-
स्थापि विमोय एकमेवोत्तु शेरवः कल्प्य लक्ष्मी
मरुदेव पुपनयच मुयमनया कालिका०)-अपि प्रसन्न
हरिणेषु म मय हु० ५।३५ २ सफेद रंग ३ हस
४ मूय ५ शिव ६ शिव। मय० अक्ष (वि०)
मयनयन, हरिण जैसा आधा बाया, (-स्त्री) मयनयनी
सुन्दर आधा वाली स्त्री, अक्षक, १ चन्द्रमा २ कणूर
कणकक, -घाम्णु (पु०) बन्दरा, -मयन, मय
मोचन (वि०) हरिणास, मय जैसा आधा बाया
हृदय (वि०) हरिण जैसा दिग वाला, भीय।

हरिणक [हरिण-कन्] छाटा हरिण-वह वा हरिणकाना
अंकित चारिणाजम् पा० १।१०।

हरिणी [हरिण-नीप्] १ मयों मादा हरिण-चकिन-
हरिवाश्रयणा मय० १२ रघु० १।५५, १।६०
२ शिवा के बार भेरी वे म गक (विशिष्टी भी
कहा है) ३ पीने कुल की चमेकी - सुन्दर स्वर्णमृति
५ एक इन्द्र का नाम। मय० इक्षु (वि०) हरिण
जैसा आधा बाया (रत्ना०), मयनयनी-विषमवर्णाद्-
यिने हरिणीदा उत्तर० ३।२०।

हरित् (वि०) [हृ + इति] १ हरा, हरिवाला २ पीला,
पीला मा ३ हरिवाला जिये पीला, (प०) १. हरा वा
पीला रंग २ मूयं का घोडा, लाय के रंग का घोडा-मय
मनीय हरिणो हराशय वनेले वाजिन पा० १ दिशा
हरिङ्गिरेतिनामवधर-रघु० ३।२०, कु० २।६७
३ लक्ष घोडा ४ इक्षु - मूयं ६ विष्णु (पु० मय०)
१ घाम २ दिशा-रघु० ३।२०। मय०-असत् दिशाओं
का जन्म, दिगन्त, भासि० १।६० अक्षरम् शिष
मयेय शिविय दिशाओं मयि० १।१५, अश्व
१ मूय, कि० ५।६६, रघु० ३।२०, १।८।३३ सि०
१।५६ २ मदार का पीथा, अर्ध यम पीडे पत्ता
की हरी हरा कुया अक्षि (हरिगर्भाय) मयन
मयि, यथा शि० ३।६९, यम (वि०) हरिवाली,
हरे रंग का।

हरित (वि०) (स्त्री०-ना हरिणी) [हृ + इन्द्रन्] हरा, हरे
रंग का, हरा-भरा-मयाम्भरा कथयितीरिणी-यशसि
-शं० ८।१०, कु० ५।१६ मय० २१ कि० ५।३८
२ शक्ती, -मः १ हरा रंग २ मित्र ३ एक प्रकार का
घाम। मय० अश्वम् (पु०) १ मरकले मयि, यथा
२ तुपिया, सीला पीथा, -हृत् (वि०) हरे हरे गला का।
हरितकम् [हरिण-कः] १ मय-भाजी २ हरा घाम
शि० ५।५८।

हरिता [हरिण-टाप्] १ दुर्वा घाम २ हरिण ३ भूरे
रंग का अयूर।

हवाह्व.,-सम् देखो 'हाल (वा) हल' ।
हलि [हल् + इत्] 1 बहा हल 2. वृद्ध 3. हवि ।
हलिष् (पु०) [हल् + इत्] 1 हाकी, हलबाहा, किमान
2 बलराम । सम० श्रियः कदव का वृत्त (-या)
भदिरा ।

हलिष्ठी [हलिष् + ठीष्] हलो का समुह ।
हलोपः [हलस्य हित हल - ख] सापीन का पेट ।
हलोषा [हलस्य ईषा - य० त०, शक० परकम्] हल का
दण्ड, हलेश ।

हल्य [हि०] [हल् + यत्] 1 बोलने योग्य, हल चनाये
जाने योग्य 2 कुप्य, विद्वताकृति ।
हल्यप् [हल्य + टप्] हलो का समुह ।
हल्यकम् [हल्य - कम्] बाल कमल ।
हल्यन्तम् [हल्य + स्मट्] सोटना, इधर-उधर करके चलना
(योगे समय) ।

हलोष्ठात् (घञ्) [हल् + क्तिप् लप् (म्) + अच्, षु०
ईत्थम्, कर्म० सं०] 1 अठारके उपर्युक्तों में से एक
(एक प्रकार का एकांशी नाटक जिसमें प्रधान
पायन और नृत्य होता है, तथा इनमें एक पुरुष और
सात या आठ नर्तकियाँ भाग लेती हैं - ना० ६०
५५५ 2 एक प्रकार का बर्तनकार नृत्य ।

हलोष्ठात्तः [हलोष्ठात् + क्त्] घेरा बनाकर भाषना ।
ह्ला [हृ + ख, खे + अच्, सञ्०, षु०० वा] 1 आहुति,
यज्ञ 2 आवाहन, प्रार्थना 3 आह्वान, आमन्त्रण
4 आदेश, समादेश 5 बुलावा, बुला मेजना 6 बुनौती,
सलकार ।

हलन्तम् [हृ + भावे स्मट्] 1 जनि में मामरी की आहुति
देना 2 यज्ञ, आहुति 3 आवाहन 4 बुलावा, आम-
न्त्रण 5 पढ़ के लिए मलकार । सम० आधुत्
(पु०) अग्नि ।

हवनीयम् [हृ + वनीवर] 1. काई भी वस्तु जो आहुति
देने के योग्य हो 2. गरम किया हुआ मक्खन या घी ।

हविषी [हृ + इवन् + ठीष्] हवनकृत्य जो भूमि में खोद
कर बनाया गया हो. (इसमें आहुतियाँ दी जाती हैं) ।

हविष्मत् (वि०) [हविष् + मत्] आहुतिवाला ।

हविष्मत् [हविषे हितम् कर्मणि यत्] 1 कोई वस्तु जो
आहुति के लिए उपयुक्त हो मन्० 3।२५६, १।१७७,
१०६, याज्ञ० २।२३९ 2 गर्म किया हुआ मक्खन ।
सम० - अन्नम् बल के तथा अन्य वस्तु के लक्षण पर
जाने योग्य भोज्य पदार्थ, आक्षिप् - भृष् (पु०)
अग्नि ।

हविष् (नृ०) [हवते इ कर्मणि भवतु] 1 आहुति या
हवनीय द्रव्य - अग्नि विधिपूर्वक या हविष् - सं० १।१,
मन्० ३।८७, ११२, ५।७, ५।१२ 2 गर्म किया हुआ
मक्खन 3. जल । सम० - अन्नम् (हविरन्नम्)

धी या हवनीय द्रव्यो का जाया जाना, (नः) अग्नि,
-वन्था (हविर्गन्था) वनीवृक्ष, जैद का पेट, -नेहृ
(हविर्गन्हृ) यज्ञक अर्धा अग्नि या आहुति की वायु,
भृष् (हविर्भृष्) अग्नि जन्मासितमकल्पना
स्वाहायव हविर्भृष् - रघु० १।५६ १०।८०, ११।
४१, कु० ५।२०, वि० १।२, काव्य० २।१६८,
यज्ञ (हविर्यज्ञ) एक प्रकार का यज्ञ, आक्षिप्
(हविर्वाक्षिप्) (पु०) पुरोहित ।

हव्य (वि०) [इ कर्मणि + यत्] आहुति के रूप में दिया
जाने वाला पदार्थ, -अन्नम् 1 वी 2 देवों की दी
जाने वाली आहुति (विप० कव्य) 3 आहुति । सम०
-आशाः अग्नि, कव्यम् देवों तथा पितरों को आहु-
तियाँ-मन्० १।१४, ३।५७, १२८ आगे पीछे -आहृ,
बाहृ आहृन् (पु०) आहुतियों को ले जाने वाला,
अग्नि ।

हृत् (म्वा० पर०) हसति, हसित) 1 मुसकराना, मन्द
हसी हसना -हसति यदि किंचिदपि बलशक्तिभूयो
हसति दासतिभारमनिषोरम्-गीत० १०, अट्टि० ७।१३,
१।१३ 2 हसी उठाना मञ्जील करना, उपहास
करना (कर्म० के साथ) -यमवायु विद्वर्ष 3 प्रहृ,
अग्नि शायति शकर्मन्काम् नै० २।११ 3 (अनः)
अगे बर जाना अंध होना, दूसरे को पीछे छोड़
देना -यो अहासेव वायुदेवम् -का० वि० १।७१
4 मिनना-बुनना - धिया हसति कथकानि हसियती -
कि० ८।४४ 5 मञ्जील उठाना दिक्कदी करना
6 बुनना बिजना, बुनना हसन्वायुवीचयसुवै
7 चमकाना, माञ्जकर नाक करना -आम्बानुदेव्यति
हसिष्यति पञ्चुबाली मुषा०, प्रेर० (हासयति -ते)
मद हसी हसना कु० ७।१५, अणु - , हवी उठाना
निगकार करना, उपहास करना, अणु - 1 निगकार
करना, बेइशकती करना 2 जाने बड़ जाना, अंध
होना - निषतावहस्येव पुर मयोव अट्टि० १।६,
अणु, उपहास करना, निगकार करना, बुग मला
करना -, तथा प्रवृत्ता तथा मोषहृत्सते अर्ज का०,
बट० १७, परि - , 1. मञ्जील करना, हवी उठाना
2 उपहास करना, बुग-मला करना, (अत) जाने
बड़ जाना, अंध होना , जनाजागमनः परिहसति
निर्वाणवदीम्बु मत्वा० ५, प्र. 1. उपहास करना,
मुसकराना तत प्रहन्वापयव पुरम्बरम् रघु० १।
५१ 3 निगकार करना, बुग-मला करना, मञ्जील
उठाना -हसन् प्रहसन्वेता वदन् वदन्ति च-मुषा०
4 चमकाना, सामकार दिखाई देना, वि - , 1. मुस-
कराना, मन्द मन्द हसना किंचिद्विहसन्वाग्मति वराये
-रघु० २।४६ 2 उपहास करना, बुगमला करना,
अचमान करना - किंचिदि विधीयति रीतिवि विदक्य

विहसति प्रवृत्तिना तत्र विकला—गीत० ९, गीरी-
बन्धुपुत्रविरचनां वा विहसन्नेन कीर्ति—नेच० ५० ।
हस [हस् + ह्यन्] १. हँसी, उहाडा २ उरहस ३. आभोर,
प्रयोग, लुप्री, प्रसन्नता ।

हसन्म् [हस् + ह्यन्] हसना, ठहँका, बट्टहास ।
हसनी [हसन + ह्यन्] उडाक चून्ना, कावरी । -
हसनी [हस् + ह्यन् + ह्यन्] १. उडाक अंगीठी २. एक प्रकार
की मलिनता ।

हसिका [हस् + ह्यन् + टाप्, ह्यन्] अट्टहास, उपहास ।
हसित [हस् + ह्यन्] [हस् + ह्यन्] १ त्रिनकी हँसी की
वर्त हो, हसना २ विकसित, कुना हुआ. - हस् १ बट्ट-
हास २. मझौज, धवाक ३ कायदेव का बन्धु ।

हस्तः [हस् + ह्यन्, न हट्] हाथ, हस्तं ततः हाथ में
बन्ध हुआ वा अधिकार में आया हुआ.—गीतमीहस्ये
विभवेयिष्यामि—सं० ३, (सै गीतमी के हाथ
(हाथ) इमे भेज वीणा) इमी प्रकार 'हस्ते पतिता',
'हस्ते समिहितं कुं' आदि, सयूना दणहस्ता मेघ०
९० (सयू का महाराज लिए हुए), हस्ते छ (हस्तेकृत्य,
हाथों हाथ से पकड़ना, ले लेना, हाथ से ले लेना,
हाथ में पकड़ लेना, अधिकार कर लेना. लोकोक्ति—
हस्तकद्रुण कि हस्ते प्रेषते (हाथ कंधन को आगमी
हाथों) अर्थात् हाथ पर रखनी बन्धु की देखने के लिए
घाँस की आवश्यकता नहीं होती २. हाथी की सूँड-कुं-
१३९ ३ तेरहवा नक्षत्र जिसमें पीच तारे सम्मिलित हैं
हाथपर, एक हस्तपरिमाण. (२६ अयुध वा लगभग
१८ इंच की लंबाई, जो कौहनी से मध्य अंगुली की
नोक तक होती है) ५ हाथ की लिसाई, हस्ताक्षर
- धनीबोधयत् दद्यात् स्वहस्तपरिचिह्नम्—पाठ०
३।१३, स्वहस्तकालसयत्र धामनम्—१।३२० (तारीक
और हस्ताक्षर सहित), धामंतायत्र त्रिधाया स्वहस्त
—विचम० २, (मेरी त्रिधा का आरमभेज), २।२०
(तत आल० से) प्रमाथ, मनेन मृदा० ३ ७ सहा-
नाम, मदर, सहारा.—आत्मानेव कृपाकृपा सुधिरप्रब-
धेर्दंतहस्ता करोति—वेणी० २।२१ ६. उमि. परि-
माण, (बाणों का) सूत्र रचना से 'केम' कच के नाक
—नाम प्रथम हस्तपर कलाधारी कथात्परे अच००,
सति विगलितवर्ण केचहस्तो सुबोधदा. सति कुमुमसनाधे
कि करोयेव वही, विचम० ४।१०.—हस्त्वं यन्मि ।
सम्० अक्षरम् अपने निजी बखर, बनलज, —अयम्
अनुषी (क्योंकि हाथ का तिरा पही होती है)
—अनुषीः शव की कीर्ती सी अनुषि, अयस्यः हाथ से
काय करने का अन्वय, अयस्यः—आयस्यम् हाथ
का सहारा - दणहस्ताअन्वये धारम्भे -रान० (सहारा
दिये जाने पर)—आयस्यम् हाथ में रखना आँसुके
का कल' यह एक वाग्यारा है, और उक्त लयक प्रयुक्त

होनी है वच कमी ऐसी बात का विवेक करना हो तो
विस्तृत स्पष्ट और अनायास ही बोधगम्य हो;—आयस्यः
वस्तामा, हस्तमाथ, (ग्यायनधारय)—विच० ५, सं० ३
—आयस्यम् १. हाथ में बिदा हुआ कर्म २. कर्म
जैसा हाथ. औसक्यम् हाथ की दलना, —किञ्च हाथ
का काय, दलकारी, - तत मासिम् (वि०) हाथ में
आया हुआ. अधिकार में आया हुआ, प्रान्त, सूची
स्व प्राप्तेने हस्तगता पर्यतिः—रघु० ७।६७,
८।१. क्राडः हाथ से पकड़ना, आसक्यम् हस्तकीचक,
—तस्य १ हाथ की हथेली २ हाथों के मूत्र की नोक,
—तस्यः हस्तो बचाना तासिद्यां बजन्ता, - होमः
हाथ से होने वाली वृष्टि, मूल, धारक्यम्—आयस्यम्
(हाथ से) आगत का निवारण करना, आस्यम् हाथ
और पैर, - न ये हस्तपरं प्रवर्तति सं० ४, सुक्यम्
कलाई से पीछे का भाग, —सुक्यम् हथेली का वृष्टमात्र,
- प्राथ (वि०) १ हस्तगत २ उप०००, सुरक्षित,
- प्राथ (वि०) वही आसानी से हाथ पहुँच सके,
जो हाथ की पहुँच में हो—हस्तप्रायस्तथकर्मिती
वागमन्दारक्य—नेच० ७५, —विचम्य प्रारो में उदय
आदि नय इन्नों का लेन, कर्मिः कलाई पर पड़ना
जाने वाला रत्नायुधक, —आयस्यम् १. हाथ की तापरता
वा कुशलता २. हाथ की सफाई, मातीपरी,—अयस्यम्
हाथ से मलना वा मलिन करना—नेच० ९९, —सिद्धिः
(स्त्री०) १ हाथ का धम, हाथ से बिना जाने वाला
काम २ माश, परिचयिक, मझूरी, सुक्यम् कलाई
में धारण किया हुआ मयलसूच वा लयक, कदा
—कु० ७।२५ ।

हस्तकः हस्तक्य [हस्त + क्यन्] १. हाथ की व्यवस्थिति ।
हस्ताहसित (वि०) [हस्त + ह्यन्] बल, कुशल, यशुर ।
हस्तिक्यम् (अथ०) [हस्तैव हस्तैव प्रहृष्ट इव यत्
प्रयत्नं व० सं०, दीर्घ, इत्यम्, अयस्यत् व] हाथ
पारि, हस्ताहसित अथवायमि दस० ।

हस्तिक्यम् [हस्तिनां सनुड - क्यन्] हाथियों का सनुड ।
हस्तित् (वि०) (स्त्री०—की) [हस्तः ब्रह्मास्त्रीअयस्य इति] १. करवत् २. बंधुभावा, - (पुं०) हाथी सनु०
७।१६, १२।४३, (हाथी चार प्रकार के बताये गये
हैं यत्र, यत्र, यत्र और विव) १. तप० अयस्यः
हाथियों का बंधुभावा, आनुष्यैः हाथियों के रीतों की
विचिन्ना से मजबूत इति, २पना, आरीहः यशुपन, वा
हाथी की सवारी करने वाला, कथाः १. विह २. धार
-कर्मः द्यत्र का पीवा, -व्यः १. हाथों की धारने वाला,
—आरिम् (पुं०) पीसवान, —अयः १. हाथी का मन
२. धोवार में गरी हुई सूती (स्यु) १. हाथीप्रांत
२. मूनी, —अयस्यम् मूनी, मयम् पुराडर पर बना
हुआ मिट्टी का बूटा, - कः क्यः पीसवान, हाथी की

सवारी करने वाला—इति लोचयतीव इतिव कश्चि
हस्तिनाकाहृत वचनम्—हि० २।८६, अथः मस्त हाथी
के मस्तक से पूनें नाका नदरतः,—अन्वः 1. ऐरावत
2 गणेश 3 राव का ठेर 4 बल को बौछार
5 कुहरा,—दूष—अथ हाथियों का समूह,—अथैस्व
हाथी की धान, कान्ति, बाहुः 1 पीलकान्त 2 हाथियों
को हांकने का अङ्ग, वदमवन् हाथियों का समूह,
स्नानम् गजस्नान, हाथी का स्नान अथवेन्द्रि-
चित्ताना हस्तिस्नानमिष चिदा हि० १।१८ हस्तः
हाथी की सूत्र ।

हस्तिन (ना) पुरम् [अलक समस्त हस्तिना उदाभ्यन्पेथ
चिह्नित तद्वनवात्] राजा हस्तिन् द्वारा बनाया
गया नगर, (वर्तमान दिल्ली से लगभग ५० मील
उत्तरपूर्व दिशा में, यही वह नगर है जहाँ महाभारत
के कृत्य का केन्द्रीय दृश्य था, इसके अन्य नाम यह
—गजाश्रय, नामसाश्रय, नागाश्रु और हास्तिन) ।

हस्तिनी [हस्तिन् + स्त्री] 1. हाथिनी 2 एक प्रकार की
औषध और गन्धद्रव्य 3. कामशास्त्र में उचित चार
प्रकार की स्त्रियों में से एक (इस स्त्री के होठ,
अगुलियाँ और कून्हे मोटे, तथा स्तन भारी होते हैं,
इसका रंग काळा और कामलिप्ता अधिक होती है,
रसिमजरी में इसका वर्णन इस प्रकार है स्मृताधरा
मूलनिलम्बस्त्रिभ्या स्मृताधर्यानि स्मृत्युवा सुषोला ।
कामोत्सुका गाढरसिप्रिया व नितान्तभोक्त्री—नितवधवा
—अनु हस्तिनी स्यात्—(करिणी मता सा) ।

हस्त्य (वि०) [हस्त-+यत्] 1 हाथ से संचय रखने
वाला 2 हाथ से किया गया 3 हाथ से दिया हुआ ।

हस्तम् [ह+हस्त+अच्] एक प्रकार का पातक विष ।
हहा (पु०) [ह+हा+विष्] एक गन्धर्वविशेष—तु०
हाहा ।

हा (अप्य०) [हा+का] 1. छोटा, उदासी, विषमता को
प्रकट करने वाला अव्यय, आह, हाय, अरे—हा प्रिये
जातिक—उत्तर० ३, हा हा देवि स्पृष्टति हृदय—उत्तर०
३।३८, हा पिन स्वामि, हे मुञ्ज-भट्टि० ६।११, हा
बले मालति स्वामि—मा० १० आदि (इस अर्थ में
'हा' प्रायः कर्म० के साथ प्रयुक्त होता है) हा
कुप्यामकन्—मिदा० 2. आश्चर्य—हा कथ महाराज-
वदमवस्य आनंदाग प्रियवशी मे कौमल्या—उत्तर० ४
3 कौच या सिद्धी ।

हा (सु०) जा० जिह्मि, हान, कर्मशा० हास्ते, इच्छा
जिहामि 1 जाना, हिलना-मुकना—जिह्मीया
विषयता स्पृष्टमिष्ठ अथवाचरथम्—इव ०८,
कि० १।१२३, मलो० १।३८ 2. प्राप्त करना, हासित
करना, अच्—, 1 ऊपर की ओर जाना, (उनी अर्धों
में) उठना—यतो रज. पाणिबभुग्जिह्मि—रघु०

१।६५, आचिर्भूतानुरागः लपमृदमिरेक्षिज्जिहानस्प
भानो मुद्रा० ४।२१, नै० ०२।५५, ५५, उज्जिह्मी
महाराज एव प्रयातो न कि पृ० भट्टि० १।८२७,
'तुम क्यों नहीं उठते हो अपना जीवित होते हो'
काल्याणी लोकाभ्यामिहोति—दश० 'मीयो से एक
घोर उठा' 2 मुद्रा होना, घले जाना—उज्जिह्वान-
जंविता बराकी नामकप्यसे मा० १० 3 उठाना
—शिरसा मुपमग्जिह्मि—कान्या० 4. चढ़ाना, (चिह्मि)
उठाना, सिकोडना—भट्टि० ३।५७, अच्—, नीचे जाना,
उतरना—निजोश्मोगजसयित् जगद्वृहतामुपजिह्मीया न
महीतल यदि हि० १।२१, अच्—, जाना, पहुँचाना,
उपभोग करना—जनात् समहास्त मुद्रम् मलो०
१।५५ ।

11 (अदा० पर० अहाति, हीन) 1 छोड़ना, त्यागना,
परिहार करना,—छोड़ देना, तजना, निलोकार्जि देना,
पदत्याग करना मूत्र जहीहि वनगमत्पत्नां वृत्र सन्मुद्रे
मनसि कित्प्याम् मोह० १, सा म्प्रीवभावाद्यगता
मरम्य तर्वादीप्योरेकतर जहाति मुद्रा० ४।१३, रघु०
५।३२, ८।५२, १२।२५, १४।६१, ८७, १५।५१,
म० ४।१३, मत्त० २।५०, मत्त० ३।५३, ५।११,
१०।७१, २०।१०, मेघ० ४९, ६०, भाषि० २।१०२,
शतु० १।३८ 2 पदत्याग करना, जाने देना 3 मिरने
देना 4 भूल जाना, उलेशा करना, अन्वहेलना करना
5 बचना, बिरदना—कर्म० (हीयते) 1 छोड़ दिया
जाना, कि० १।२।२ 2 विनाश दिया जाना,
अच्छिन किया जाना, मूल्य होना (करण० या अया०
के साथ) - विख्यातो जहे प्राणं भट्टि० १।५।५,
जनयिष्या मुन नम्या इन्द्रायदेव हीयते—तनु० ३।१७,
५।१६१, १।२।१ 3 कम होना, घोडा हो जाना,
प्रायः 'यत्' के साथ 4. घटना, कम होना, मुहूर्ताना,
धीन होना, जाल० से नी) क्षय को प्राप्त होना
अबुद्धो हीयते चन्द्रः समुद्रोऽपि तथादिभे—रघु०
१०।७१, हि० प्र० ४।२ 5 (जैसे मुकदमे में) हार
जाना अथवापुनपुन हीयते व्यक्त्वात्तः—वाङ्म०
२।१९ 6 छूट जाना, भूल जाना 7 कमबोर होना
मेर० (हायति-ने) 1. कुचराना, परिष्कल
करना 2 अन्वहेलना करना, मुकना, अनुच्छान में डेर
करना हि० १६।३३, मत्त० ३।७१, ४२२, वाङ्म०
१।१२१, इच्छा० (विहामति) छोड़ने की इच्छा
करना, अच्, छोड़ना, त्यागना, तज देना - विष्कलय
न वाप्यवदग्दं महत्कामन्यहाय वीरताम्—रघु० ८।५३
अथा—, छोड़ना, त्यागना, अच्, छोड़ना, अच्छिन
होना, परि , 1 छोड़ना, त्यागना, छोड़ कर चल
देना 2 भूल जाना, अन्वहेलना करना—दशोक्ताथपि
कन्यापि परिहाय - मत्त० १२।६२, (कर्मशा०) 1. ब्रह्म

होना, कम होना—आयस्य सुविहितप्रयोगतया न किमपि परिहास्यते—स० १२ बहिना होना—नोक-
त्रियतया न परिशील्यते अन्धा— विक्रम० ३, भाकवि०
२, ३—३. छोड़ना, त्यागना, परित्यक्त करना, तिला-
बलि देना—प्रब्रह्मति यथा कामान्—अप० २५५
३९, मोहयेतीं प्रहास्यते—राम० २. जाने देना, भेकना,
झात देना—अबहु सुवपुष्टिवाग्—वट्टि० १५२३, वि-
, छोड़ना, परित्यक्त करना, त्यागना, छोड़ देना—विहाय
अस्वीयतिस्वयं कार्यं बटाचरः सन् सुतुबीह पावकम्
—कि० १५४, मेघ० ४१, रघु० २४०, ५१६७, ७३,
१७७, १२११०२, १५४८, ९९, कु० २१, (वेर०)
पुरस्कार देना ।

हाङ्गर् [हा बिचास्य पीडायां वा अय राति—ह्र+अङ्ग
+रा+क] एक बड़ी मछली ।
हाहक (वि०) (स्त्री०—की) [हाहक+अण्] सुगहरी,
—अन् सोना । सम०—विहितः नुमेव पर्वत ।

हाहम् [हा करने वस्] पारिवर्तिक, मङ्गदूरी, माड़ा ।
हाहम् [हा+स्त] १ छोड़ना, त्यागना, हासि, अक्षकमता
२ अक्ष निकलना ३ पराजय, हार ।

हासिः (स्त्री०) [हा+सिन्, तस्य सि] १. परिहास्य,
तिलाबलि २. हासि, अक्षकमता, अनुपस्थिति, अनसिदाय
—कविपत् स्फुटालम्कारविशेष्येयं न काव्यस्वहासि
—काव्य० १, 'इत्येवं काव्य की हासि नहीं' ३ हासि,
मुसलान, हासि—शास्त्रोपनिमित्तविषयेन वा हासि
करिषो भवेत्—मुद्रा०, का नो हासि—सर्व०
४ म्युता, कमी—यथा हासि क्रमप्राप्ता तथा
वृद्धि क्रमागता—हरि०, यात्र० २१२०७, २४४
५ अन्हेलना, मूलना, अन्—प्रतिज्ञा, कार्यं
६ नष्ट होना, बर्बाद होना, हासि—कालहासिः—रघु०
१३११६ ।

हासिका (स्त्री०) अणुहाई, मुंवा ।
हास्यः—अणु [हा+स्य] सर्व, —कः १. एक प्रकार का
बाजल २ छिन्ना, ज्वाला ।

हारः [हृ+अण्] १. से जाना, हटाना, पकड़ना २ पहुँ-
चाना ३ बापकर्मण, अलगाव ४ बाहुक, हरकारा
५ मोतियों की माला, हार—हारोऽयं हरिणासीना
मदति स्तनमन्धके—अमर० १००, पाण्डुरोऽयमसापि-
तकम्बहार—रघु० ११९०, ५१५२, ११६१, मेघ० ९७,
अणु० ११४, २१८ ६ संधान, युद्ध ७. (वधि० में)
किसी मित्र का नीचे का धरा ८ भावक । सम०
—आशक्तिः—की (स्त्री०) मोतियों की मङ्गी—तत्पनी-
स्तन एव धोभते पणिहारवकिरामनीवकम्—मं०
२१४४, हारावनीतरकाम्बिचरकाम्बिचराम—नील० ११,
—वृद्धि (वि) का नाला का धारा वा हार का मोती
रघु० ५१७०,—वर्षिकः हार, मोतियों की मङ्गी—एवलि-

पुत्रुषार्वकमतीहरिपठिप्—अणु० २१२५, ११८,
—हारा एक प्रकार का मालाचूर्ण रंग का बण्ड ।

हारकः [हृ+अण्] १. चोर, स्टेप—यात्र० ३१२१५
२. ठग, वृत् ३ मोतियों की मङ्गी ४. (वधि० में)
भावक ५. एक प्रकार की वस् रचना ।

हारि (वि०) [हृ+विच्+इत्] आकर्षक, मोहक, सुक-
कर, मनोहर, —टिः (स्त्री०) १ पराजय २ खेल
में हार ३. वाधियों का समूह, साथवाह । सम०—अन्धः
कोयल ।

हारिणिकः [हरिण+उच्] हरिणों को पकड़ने वाला,
सिकारी ।

हारिष्ठ (यू० क० कृ०) [हृ+विच्+स्त] १. हुरण कराना
हुना, पकड़ाना हुका २. उपहार स्वल्प दिना भया,
अस्तुत किया गया ३. आकृष्ट, —सः १. हरा रण
२. एक प्रकार का कण्टक ।

हारिन् (वि०) (स्त्री०—की) [हारो अन्वयम् इति,
हृ+विनि वा] १ से जाने वाला, पहुँचाने वाला,
डोने वाला २. स्टेपने वाला, हृष्य करने वाला—वाधि-
कुञ्जरणां च हरिण्य यात्र० २१२७३, ३१२०८
३ पकड़ लेने वाला, बाधा पहुँचाने वाला,—अणु०
१२१२८ ४ प्राप्त करने वाला, उपलब्ध करने वाला
५ आकर्षक, मोहक, सुककर, आह्लाकर, मनमधप्रद
—तत्वादि मीतरागेण हरिणा प्रलभ हृत—अ० १५,
सि० १०१२३, ६९, विष्ट्यहारिण्य हरी—अणु०
२१२५ ६ भागे बड़ने वाला, अलगम् होने वाला
७ हार धारण करने वाला ।

हारिः [हरिः+अण्] १ पीला रंग २ कर्षक का वृक्ष ।
हारीतः [हृ+विच्+इत्] १ एक प्रकार का कण्टक
—रघु० ४१५९ २. वृत्, ठग ३. एक स्मृतिकार का
नाम—यात्र० १४५ ।

हार्षम् [हृ+अण्] १. स्नेह, प्रेम
अभयवृत्त्येन अनस्य अन्तुना न वाताहारो न पिडिषा-
ष्टः—कि० ११३१, सि० १९९९, विक्रम० ५११०
२. कृपा, मुकुमारता ३. इच्छाकथित ४. अविप्राय,
अर्थ ।

हार्षं (वि०) [हृ+अण्] १. हृष्य किये जाने योग्य, डोने
जाने योग्य २. सहज किये जाने योग्य, से भावें जाने
योग्य—अणुपया कारपरजहार्यया—कु० ५१७० ३. अन्-
हृष्य किये जाने योग्य, डोने जाने योग्य—रघु०
७१६७ ४. विस्थापित होने योग्य, (हुवा बादि के
द्वारा) से जाने जाने योग्य—रघु० १९१४१ ५. (अन्ने
सकन से) बचामाल होने योग्य कु० ५१८६ उप-
लब्ध किये जाने योग्य, बीते जाने योग्य, आकृष्ट
किये जाने योग्य, विनित्त वा प्रभावित किये जाने
योग्य—अहसि हि अनहार्षं पुष्पचूर्णं अरीरम्—पृष्ण०

१।३१, कु० ५।५३, मनु० ७।२१७ 7 पकड़े जाने योग्य लुट जाने योग्य मनु० ८।५१७, —सं. 1 मणि 2. विभोक्त या बड़े का वृत्त 3 (गणि० में) भाज्य ।

हाक: [हृन् + अल्पस्य अन्, हल एव वा अण्] 1 हल 2 बलराम का नाम 3 मालिकाहल का नाम । सम० —भृन् (पु०) बलराम का विशेषण ।

हाकक: [हाल + कन्] पीले भूरे रंग का घोडा ।

हाल (हा) हलन् [=हृन्हाहृत्, पृथो०] एक प्रकार का चातक विप जो समुद्रमग्न के परिणाम स्वरूप मिला था । (अत्यन्त विपाक्य होने के कारण यह प्रत्येक वस्तु को भस्म करने लगा, इसलिए इसे शिव जी ने पी लिया) अद्वैत गुरु मुदास्वनाभिनि हालहाल मास्म तात वृष्य । मनु मनि भवाद्वादि भूषो भुवनैऽमिन् वचनानि दुर्नेनानाम् सुभा० 2 (अतः चातक विप, वा बहुर, दे० भासि० १।१५, २।७३, पञ० १।१८३, (हालहाल और हालहाल' मी मिला जाता है) ।

हालह्वो, हाल्ला [हालाह्रन् + क्रीप्, हल् + घञ् + टाप्] शराब, —मदिरा—हृत्वा हालामासि मरसा देवोऽनोचनान्—कुम्भ—मेघ० ४४, पञ० १।५८, गि० १०।२१ ।

हालिक: [हलेन वर्तनि हल प्रहरणस्य तस्येद वा ठक् उञ् वा] 1 हलवाला, किसान 2 जा हल चलाये (मैत्रे कि हल में जुता बैल) 3 जा हल के डारा यज्ञ करता है ।

हालिको [हल् + गिति + क्रीप्] एक प्रकार की बड़ी छिपकली ।

हाली [हल् + इप् + क्रीप्] छोटी साली ।

हालु: [हल् + उल्] दाँत ।

हाव: [ह्वे भावे घञ् नि० सम०, हुकरणे घञ् वा] 1. बुलावा, आमन्त्रण 2 स्त्रियों की मन्वरेबाजी जो पुरुषों की ल्यासक भावनाओं की उन्मेषि करती है, (प्रेम की) रंगरेजी, मन्वरेबाध्य हावहारि हमित बचनाना कौशल दुग्नि विकारविशोऽ—सि० १०।१३, जम्पु शरण मनुनु सहावम् अट्टि० ३।६३, (उज्ज्वलमणि ने हाव की परिभाषा विम्बानिक की है—घोषारेषकसयुक्तो भूतेषादिविकामकृन् । भावादीवत् प्रकाशो वा स हाव इति कथ्यते ॥ दे० सा० ६० १२७ मी ।

हाव: [ह्व् + घञ्] 1. उहाका, ह्वो, मुक्करहट्ट भासो हल-प्रचलन० १।२२ 2 हर्ष, लुब्धी, भासो ३. हास्य-ध्वनि, हास्यस, — दे० सा० ६० २०७ 4 व्यर्थपूर्ण ह्वी—रघु० १२।३६ 5. बुलना, विकसित होना, फूलना (कमल भासि का)—कुम्भानि सामर्थ्येव तेषु सप्रेमकवनी स्पकनप्रहासि—अट्टि० २।३ ।

हासिका [ह्व् + ष्वल् + टाप्, घञ्म्] 1 अट्टहास 2 लुब्धी, भासो ।

हास्य (वि०) [ह्व् + ष्वल्] हसने के योग्य, हास्यकारक, रघु० १।६३, स्यम् १ हसो वाहृ० १।८६ 2 लुब्धी, मन्वरेजन, शैशा मनु० १।२२.७ 3 भ्रमक, मग्न 4 व्यर्थ, विरुद्धता, उट्टा, स्म काव्य में बणिप हास्यग, परिभाषा—विज्ञानाकारणाम्येवैष्टाद कुशका-जुनेत् । हास्यो हास्यार्थिभाष (हासो हास्यस्या-विभाष के स्थान पर) इति प्रथमैवैव सा० ६० २२८ । सम० आस्यस्य् हसो वा चोद, हसो उचाने को वन्तु, पश्यो, वामे गिन्तो, दिन्वो—मृदु-नीलिम्बभवनजवा हास्यमार्गे दशास्य विक्रम० १८। १०३, एव हसो वा आयादात्मक र- ६० ऊपर 'हास्य' ।

हासिका: [हसिन् + ठक्] मजाब, या मजारोटी, कम् हाथिया का समूह सि० ५।२० ।

हासिकम् [हसिन्ना भूषेण विद्विष्यत् नवम्—हसिन् + ञ्] हसिनापुत्र नवम् का नाम ।

हाहा (पु०) [हा इति जड जगति—हा + हा + किकप्] एक गन्धक का नाम—(अव०) पाषा, धाक का आचरण का प्रकट करने वाला उपाय (वह कबल 'हा शब्द है केवल वन देने के 'हा' स्वर्गो 'डि' क' दिया गया है) । सम०—कार १ शोक, बिलाप, रोना-धोना 2 यज्ञ का उपाय एव हा हा की ध्वनि ।

हि (अध०) [इमका पाण्य शब्द क आरम्भ मे क की नहीं होना] इमक अत्र इमन्वरीय है 1 इमपि क, वर्यनि (नरकपाल इति का निर्देश करना) —अग्निगिर्मानि यो हि दुहाते मण०, म्पु० ५।१० 2 निमन्वद, निमन्व एव दनप्रयागप्रयाग हि नाटयगान्धम भासि० ११ न हि वसिन्ती दुष्टवा प्राहमयेन मनु ३।१ भासि० ३ 3 उदात्तशब्द रूप, देवा हि वृक्षेभ्य इ प्रकानामव भाष्ये न नापाव वामपरीयत् । मन्वरेणम् कान्मादल हि एव रवि म्पु० १।१८ 4 कर्कश अशुभा (हिना विचार पर बल देने के लिए) मडा हि मन्वरेणापामर्षे ना० १५५ 5 कमी कमी वह केवल वृक्ष की भाँति ई. प्रयुक्त होता है ।

हि (स्वा० पर०) हिनापि, हिन्-येऽ० हावर्षि, इक्ष्वा० विधीयति) 1. भेजना, उदाहाना 2 खान देना पेशना, (गीर) बचाना, (घ-दुष्ट) दावना एव सक्रियता हिष्य अट्टि० १।१३१ 3 उन्मेषि करना भडकाना, उकसाना, 4 नन्द कराना, भागे बडाना 5 लुप्त करना, प्रयत्न करना, उन्मेषि करना 6 खाना, धरति करना, प्र , 1 भेज देना, इकेना 2 कौकल, (तीर) मगना, (अनुक) दाव देना

—विनाशान्तर्य युक्तस्य रक्षणार्थं सहीयते । प्रविभाष
—रघु० १५।०१, भट्टि० १५।१२१ ३ भ्रमेना, प्रेषित
करना, मा० १, रघु० ८।३९, ११। ४९, १२।८६,
भट्टि० १५।१०४ ।

हिम् (म्भा० म्भा० पर०, चुरा० उभ०) हिमति, हिनति,
हिमयति ने, हिसिन् १ प्रहार करना, आघात
करना २ चोट पहुँचाना सति पहुँचाना, नुकसान
पहुँचाना ३ कष्ट देना, मनाप देना—मा० २।१
४ मार डालना, शपथ करना विवृत्त मष्ट बर देना
—कीति सूत्रे दुहृत् या हिनति उत्तर० ५।३१,
रघु० ८।६५, मय० १३।२८, भट्टि० ६।३८, ११।५३,
१५।३८ ।

हिनक (वि०) [हिम् + क्त्वात्] हानिकर, अनिष्टकर,
सतिकर—क १ बवार जानवर, सिकारी जानवर
२ दातु ३ अयस्कंद में निपुण क्षात्रज ।

हिनन्त, भा [हिम् + म्भट्] प्रहार करना, चोट मारना,
बप करना—मनु० २।१०३, १०।४८, मातृ०
१।३३ ।

हिंसा [हिम् + अ + टात्] १ सति उत्पन्न, बगई, नुक-
सान, चोट, (यह तीन प्रकार की माने जाती हैं
—कायिक, वाचिक और मानसिक) अहिंसा
परमा धर्म २ बप करना, शपथ करना, विषम
—रघु० ५।५३, मातृ० ३।११३, मनु० १०।६३
३ लड़ना डाका डालना । सम०—आयच्छ (वि०)
हानिकर, विनाशकारी, कर्मन् (नपु०) १ कोई भी
हानिकर या सति पहुँचाने वाला हृद्य २ दातु का
नाप करने में प्रयुक्त जादू, अस्त्रधार प्राणिन्
अनिष्टकर जंतु,—रत (वि०) उत्पन्न में सलग्न,
शक्ति उत्पन्न करने पर तुला हुआ, सम्पुञ्ज
(वि०) सति में उत्पन्न ।

हिंसातः [हिंसा + त्वात्] १ बाध, चोटा २ कोई भी
अनिष्टकर जंतु ।

हिंसात् (वि०) [हिंसा + आत्] १ हानिकर, उत्पाती,
चोट पहुँचाने वाला २ शालक (पु०) उत्पाती या
जगती कुत्ता ।

हिंसातुक् (वि०) [हिंसात् + क्त्वात्] उपद्रवी या अंधकी
कुत्ता ।

हिंसीरः [हिम् + ईरन्] १ बाध २ पत्नी ३ उपद्रवी
व्यक्ति ।

हिंस्य (वि०) [हिम् + श्यत्] जो सतिपस्त किया जा
सके या मारा जा सके—रघु० २।५७, मनु०
५।४१ ।

हिंस्र (वि०) [हिम् + र्] १ हानिकर, अनिष्टकर,
उपद्रवी, पीडाकर, शालक मनु० ५।८०, १२।५६
२ अयकर ३ क्रूर, भीषण, बर्बर—अः १ भीषण

जंतु, सिकारी जानवर,—रघु० २।२७ २ विनाशक
३ शिव ४ भीम । सम०—सुतः सिकारी जानवर,
—कर्मन् १ विपरा २ दुर्बलितानुर्थं अविनाशो के
लिए प्रयुक्त होने वाला अभिचारमंत्र ।

हिंस्रः १ (म्भा० उभ०) हिंस्रकति—ने, हिंस्रकति १ अत्यष्ट
उच्चारण करना २ हिंस्रकी लेना ।

१ (चुरा० आ०) हिंस्रयते चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त
करना, बप करना ।

हिंस्रका [हिंस्र + क + टात्] १ अत्यष्ट ध्वनि
२ हिंस्रकी ।

हिंस्रकारः [हिम् + ह्यन्व्य कारः] १ 'हिम्' की मन्ध ध्वनि
करना, हुकार करना २ बाध ।

हिंस्रन् (पु०, नपु०) [हिम् मच्छति—गम् + ट्, नि०]
१ ह्रीण का पीसा २ इस पीसे से तैयार किया गया
पदार्थ जो घर में साधपदार्थों में छौंक के लिए
प्रयुक्त होता है । सम०—मिश्रांतः १ ह्रीण के बृक्ष का
चोंट के रूप में २म ३ नीम का पेड़,—कर्मः इन्द्रो का
वृक्ष ।

हिंस्रकः [हिंस्र + क + टात्] १ [हिंस्र + ला + क (कि, ट्ट वा)]
हिंस्रकः [हिंस्र + क्त्वात्]
हिंस्रकम् (पु०, नपु०) [हिंस्र + क्त्वात्]
हिंस्रकौरः (पु०) हाथी के पैरों की बाँधने की बेड़ी या
रस्ती ।

हिंस्रकः (पु०) वह राक्षस जिते भीम ने मारा था,—का
हिंस्रकं का बहन जिनने भीम से विवाह कर लिया
था । सम०—सिन्धु,—सिन्धुवन्, सिन्धु,—सिन्धु (पु०)
नीम के क्षिरोपत्र ।

हिंस्रः (म्भा० आ०) हिंस्रते, हिंस्रत) जाना, घूमना, इधर
उधर फिरना, भा—, घूमना, या इधर-उधर फिरना
—स० २ ।

हिंस्रन् [हिंस्र + म्भट्] १ घूमना, इधर-उधर फिरना
२ सयोग ३ सलज्ज ।

हिंस्रकः [हिंस्र + क्त्वात्—हिंस्रि + क्त्वात्] गयोतिपी ।

हिंस्रि (श्री) ट्ट [हिंस्र + ईरन् (इरन्)] १ समुद्रप्राय
२ पुरुष, मर्द ३ वैजना ।

हिंस्री [हिंस्र + ईरन् + शीर्] दुर्गा ।

हित (वि०) [वा (हि) + ण] १ रत्ना हुआ, डाला
हुआ, पका हुआ २ धामा हुआ, लिया हुआ ३ उप-
युक्त, योग्य, सम्बिल, अच्छा (सम० के साथ)—नीम्बो
हित माहितम् ४ उपयोगी, मायदायक ५ हितकारी,
लाभप्रद, सपूर्ण, स्वास्थ्यवर्धक (सद्य या भोजन
बादि)—हितं यनोहारि च दुर्लभं बध—कि० १।४,
१४।६ ६ मित्रवत्, कृपालु, स्नेही, सद्गत (प्रायः
अधि० के साथ)—सः मित्र, परोपकारी, 'मित्र' जैसा
परामर्शदाता—हितान् य सम्पुष्टे ह किम्रुः

—कि० ११५, हि० ११३०,—सम् १. उपकार, नाम, क्रयदा २. कोई भी उपयुक्त वा समुचित बात ३. कल्याण, कुशल, धर्म । सम०—अनुबन्धिन् (वि०) कल्याणप्रद,—अन्वेषिन्,—अधिन् कुशलामिलायी,—इच्छा सविच्छा, मंगलकामना,—उक्तिः शारीर्य-वर्षक निवेश, सत्परायण, नेक सहाय,—अपदेशः हितकर उपदेश, सत्परायण, नेक सहाय,—एभिन् हितेषु भला चाहने वाला, परोपकारी,—कर (वि०) सेवा या कृपापूर्ण कार्य करने वाला, मित्र-सा व्यवहार करने वाला, अनुकूल,—काम (वि०) हितेषु, मंगलाकारी,—काम्या दूसरे की मंगलकामना, सविच्छा, शारीर्य,—कृत (प०) परोपकारी,—अप्री (प०) मुग्धचर—बुद्धि (वि०) मित्र-से मंगल, सद्भावनापूर्ण,—बन्धन् मंत्रीप्राय परामर्श,—बाधिन् (प०) सत्परायण देने वाला ।

हितक : [हित + क] १ बच्चा २ किसी पक्ष का दासक ।
हितस्तः [हीनस्तामो यस्ताम् - एषः] एक प्रकार का सन्त ।

हितोक्त : [हितोक्त + क्त] १ हिरोक्त, झूठा २ भाषण के सुकल पक्ष में दोषोत्सव के अवसर पर कृष्ण भगवान् की भूमियों को ले जाने वाला हिरोक्त, या दोषोत्सव ।

हितोक्तक, **हितोक्ता** [हितोक्त + क्त, टाप् वा] झूठा, हिरोक्ता ।

हित (वि०) [हि + मत्] ठंडा, शीतल, सर्व, मुपाययुक्त, सोमोला,—कः १ जाड़े की मौसम, सर्व खुनु २ बदमा ३ हिमालय पर्वत ४ चन्दन का पेड़ ५ कपूर,—मन् कुहरा, पाला—रघु० ११४६, ११२५, कु० २११९ २ बर्फ, पाला—कु० ११३, ११, रघु० ११२८, १५१ ६६, १६१४, कि० ५१२३ ३ सदी, ठंडक ४ कमल ५ ताजा मकखन, ६ मीनी ७ रात ८ चन्दन की ककड़ी । सम०—अंशुः १ बदमा,—नेष० ८९, रघु० ५११६, ११४०, १४१८०, वि० २१४९ २ कपूर °अधिष्णन् चादी,—अचक्रः—अधिः हिमालय पहाड़—कु० ११४५ रघु० ५१७९, १४११३, °जा, °लक्ष्मी १. पार्वती २ गया,—अन्वु,—अन्वुत् (मपु०) १ शीतल जल २ मोस-रघु० ५१७०—अन्वितः शीतक वायु,—अन्वुत् कमल,—अरातिः १ मास २ सूर्य,—आमसः जाड़े का मौसम या सर्व खुनु—आसैः (वि०) पाले से ठिठुरा हुआ, ठंड से जमा हुआ,—आलस्यः हिमालय पहाड़—कु० १११, °मुत्ता पार्वती का विशेषण—आलुः—आलुः कपूर, उरुः चन्द्रमा,—करः १ चाँद—कठलि न छा हिमकरकरियेन—गीत० ७ २ कपूर, कूटः १. जाड़े की खुनु २. हिमालय पहाड़,—नीरिः हिमालय पहाड़,—गुः चाँद,

—कः मैनाक पर्वत,—का १. खिरी का पेड़ २ पार्वती,—तंसम् एक प्रकार की कपूर की मसूह,—वीरितिः चन्द्रमा—वि० ११२९—दुषिष्णु बलि ठंड से कष्ट-दायक दिन, ठंड और बुरा मौसम,—दुतिः चन्द्रमा,—दुह (पु०) सूर्य,—अन्वुत् (वि०) पाले से जारा हुआ, कुहरा हुआ या जट्ट हुआ, अन्वुत् हिमालय पहाड़,—रविष (पु०) चाँद,—आलुका कपूर,—धीतल (वि०) बर्फ की प्रति ठंडा,—धीकः हिमालय पहाड़,—धीरिति (एवी०) बर्फ का डेर,—अल्लु बर्फ की शील, ठंडा पानी—मा० ११३१, हासकः दलदल में होने वाला सन्त का पेड़ ।

हितवत् (वि०) [हित + मत्पु०] हिममय, बर्फीला, कुहरा से युक्त,—(पु०) हिमालय पहाड़—रघु० ५१७९, विक्रम० ५१२२ । सम० दुक्तिः हिमालय पर्वत की चाटी,—दुरम् हिमालय की राजधानी आंध्रप्रदेश का नाम,—कु० ६१३३,—सुतः मैनाक पर्वत,—सुता १ पार्वती २ गया ।

हितवो [महत् हिमम्, हित + औप आनुक] बर्फ का डेर, हिम का सपुह, हिमसहृति नगमुपारी हिमालयोपरीमा-साह जिष्णु कि० ५१३८, भाषि० ११२५ ।

हिरण्य [हृ + ष्ट, नि०] १ सोना २ चाँद ३ कीड़ी ।
हिरण्यव (वि०) (एवी०) मुनी [हिरण्य + मयट (वि०)] सोने का बना हुआ, सौन्दर्यो—हिरण्यवो सोनाया प्रतिकृति—उत्तर० २, रघु० १५१६१,—कः ब्रह्मा देवता ।

हिरण्यम् [हिरण्येभ्य ष्वाच् पञ्] १ सोना,—मन्० २१४६, ८१८२ २ सोने का पात्र मन्० २१२९ ३ चाँदी ४. कोई भी मूल्यवान् धातु ५. शीतल, सर्पित ६. चाँद, गुण ७ कीड़ी ८ एक विशेषण ९. साराय १० पतुग १ सम०—कस्य (वि०) सुनहरी कालनी पहनने वाला, अक्षिपुः राजसों के एक प्रसिद्ध राजा का नाम (यह कश्यप और दिति का पुत्र था । यह इतना शक्तिशाली हो गया कि हिमवान् इन्द्र का राज्य छीन लिया और तीनों लोकों को वीरहित करने लगा । इनसे बड़े-बड़े देवताओं की निन्दा की, और अपने पुत्र ब्रह्मा के, विष्णु की ही परमात्मा मानने के कारण माना प्रकार के कष्ट दिये, परन्तु बाद में उसे विष्णु ने तानिहृ का अवतार धारण कर यमपुर भेज दिया—दे० ब्रह्माय), जोषः सोना और चाँदी (चाँदें आनुयुक्त होने हैं या बिना तडा सोना चाँदी)—वर्षः १ ब्रह्मा (क्योंकि वह सोने के अड़े से पैदा हुआ) २ विष्णु का नाथ ३ भूकम्पशील कारण करने वाली आत्मा, इ (वि०) सुवर्ण देने वाला मन्० ५१२३०, (कः) समुद्र, (वा) पुष्पी, नाम-मैनाक पहाड़,—वाह्यः १ शिव का विशेषण २ मोस नदी,—देशम् १. ज्ञान—रघु० १८१२५ २. सूर्य ३ शिव

१ विभक्त या मद्यार का पीना, —बर्मा नदी, —बाहुः सोन दरिया ।

हरिष्य (वि०) (स्त्री०- वी) [हिरण्य + मयट्, नि० मलयं] मुनहरी ।

हरिष्य (अव्य०) [हि० + उक्कि, घट्] १ के बिना, के सिवाय २ में, बीच में ३ निकट ४ बीच ।

हिल् (मुदा० पर० हिलनि) केलिकोबा करना, न्हेच्छा से रमण करना, प्रेमालिप्त करना, कामेच्छा प्रकट करना ।

हिल्ल [हिल + लक्] एक प्रकार का पत्थी ।

हिल्लोक्कः [हिल्लान् + लक्] १ लहर, झाल २ हिवाँल राग ३ धून, सनक ४ एक रत्नबन्ध ।

हिल्लाला (स्त्री०, व० व०) [हिल्लाला, प्यो०] मृगशिरा नक्षत्र के शर के पास के पौष छोटे तारे ।

ही (अव्य०) [हि + क्] १ आश्चर्य प्रकट करने वाला अव्यय ह्यविपलिसिनाया ही विधिषो विपाक - सि० १११५, या - ही चित्र लक्ष्मणोत्तोषे - मट्टि० १५। ३० (इस अर्थ में प्रायः नाटकीय भाषा में इसकी आवृत्ति होती है) २ बकाबट, उदामी, लिप्यता नर्त ।

हीन (भू० क० कृ०) [हा + क्त, तयन इत्यम्] १ छोटा हुआ, परिग्रह्यत, ग्यामा हुआ २ रहित, बन्धित, विद्युक्त, के बिना (करण या समास में) - गुर्मेहीना न शोभन्ते विगन्ता इव विद्युक्ता - मुद्रा०, इयो प्रकार इव, पनि १०२ उन्माह् ३ अर्थात् हुआ बर्बाद ४ नृत्तियुष्, मदीय, हीनाति/कलायो वा तमप्यनवेत्त मनु० ३।५४ २ घटाय हुआ ६ कम, निगनर मनु० ३।१५ ७ नीच, अधम, कमौना, दुष्ट, न ३ मदीय गवाह २ अपराधी प्रतिबादी (नारद पाँच प्रकार के बनाना है अन्व-बादी क्रियादेवी संयम्बायी निरुत्तर । आहुतप्रयलायी च हीन पचविध स्मृत ॥) । सम० अङ्क (वि०) अग्रहीन, विरहाग, अग्रहाण, मदीय पन० ५।१५१, पाने १।२२२, कुल, न (वि०) शंखे कुल में उत्पन्न, नीच परिगार का, - षट्पु (वि०) जो अपने यज्ञविष्ठाण में ब्रह्मेहना करना है, जाति (वि०) १ नीच जाति का २ जाति में बहिष्कृत विरादनी से भादि, पनि, - योधि (स्त्री०) नीधि, कोटि क् अम्भ्याम, बर्ष, (वि०) १ नीच जाति का २ घटिया दर्जे का, बर्षिन् (वि०) १ सदीय बगान देने वाला २ अपलायी ३ मृगा, मूक, लक्ष्मण नीच शक्तियो से मेलनांल लैवा नीच शक्तियों की टहन करणा ।

हीनान् [हीनान्गो यस्मान् - न्यो०] दलदल में होने वाला मजूर का बख ।

हीर [हु + क, वि०] १ सौ २ हार ३ सिह ४ 'नेच-

बलित' काव्य के रचयिता श्री हर्ष के पिता का नाम - रू, - रू १ इन्द्र का अर्थ २ हीरा, (नेचबलित के प्रत्येक सत्य के अन्तिम श्लोक में जाने वाला) । स० - अङ्क. इन्द्र का अर्थ ।

हीरकः [हीर + कन्] हीरा ।

हीरा [हीर + टाप्] १ लक्ष्मी का विशेषण २ चिज्जटी ।

हीरान् [ही विस्मय लानि ला + क] पाँचपे हीरं ।

हीही (अव्य०) [ही + ही] आश्चर्य और प्रमोद को प्रकट करने वाला अव्यय ।

हु (बुद्ध्यो० पर० जुहोति हुन - कर्मवा० हुयते, घेर० हाह-यनि-ने, इच्छा० जुहुयति) १ (हवनकुष्ठ में आहुति के रूप में) प्रस्तुत करना, बिना देवता के यज्ञम में भेंट देना (कर्म के साथ), पत्र करना - वा मन्त्रपुना तनुम्यहोपात् - रघु० १३, ४५, अटपार सन् जुहोति पाकम् - कि० १।४४ हविर्मुह्यि पाकम् - मट्टि० २०।११, मनु० ३।८७, याज्ञ० १।१९ २ यज्ञ का अनुष्ठान करना ३ लाना ।

हु ३ (स्वा० पर० होति) जाना ।

॥ (मुदा० पर० हुदनि) सच्य करना ।

हुह [हुह + क] १ मझा २ चोरों को दूर रखने के लिए लाहे का काटा ३ एक प्रकार की बाइ ४ लोहे का मुद्गर ।

हुहः [हुह - कु०] मेडा-अन्वकी हुहयुजेन पच० १।१६२ ।

हुहक्क [हुह + उक्क] बाण की घड़ी के आकार का बना एक छोटा डोल, नै० १।५।७ २ एक प्रकार का पका, दाण्ड ३ दरवाजे की कुडी ४. नवी में चूर पुरुष ।

-हुहत् (न्यु०) [हुह - उति] १ सौच का राधना २ बमकी का गन्ध ।

हुह्य [हुह्य + क] १ व्याघ्र २ मेडा ३ बुद्ध ४. शायचुकर ५ राजस ।

हुत (भू० क० कृ०) [हु + क्त] १ आहुति के रूप में आम में डाला हुआ यज्ञीय भेंट के रूप में होम किया हुआ २ यज्ञे आहुति दी जाय - वा० ४, रघु० ३।७१, १।३३, - लः शिव का नाम, - लम् आहुति, चडावा । म० - अग्नि (वि०) विमने अग्नि में आहुति हाकी है - रघु० १।६, अलम् - अग्नि-समीरणी नोदयिना भवेति श्वादिस्वस्ते केन हुतात्मनय - कु० ५।१, रघु० ५।१ २. शिव का नाम 'सहस्रः शिव का विशेषण, अलानी काम्युन मात की पूजिया, होदिका, भासः आय - प्रदक्षिणीकृत्य हुन हुतात्म - रघु० २।७१ - अतस्वस्ते (वि०) विमने अग्नि में आहुति दी है भूय (पु०) आय - नैऋत्याचिहृत्य इव ऋषिप्रभृतिष्पुना विक्रम० १।९, उत्तर० ५।९, 'शिवो अग्नि की पत्नी स्वाहा, - ऋः भाय - अनादीर्घ

हीनान् [हीनान्गो यस्मान् - न्यो०] दलदल में होने वाला मजूर का बख ।

हीर [हु + क, वि०] १ सौ २ हार ३ सिह ४. 'नेच-

मन्वे हुनवरागने गृहमिव- वा० ५।१०, सीतासुन्द-
पनी हिय हुनवह गोप० ९, मेघ० ४३, मनु०
१।०७, -होम. वह काशाण जिनने आग में आहुति
दी है, (मन्) तथा द्वा शाक्यम् ।

हुम् (अब्ज०) [हु + हुमि] (मन् क्त से एक अनुकरण-
शब्द ध्वनि) निम्नार्थिन अर्थो को प्रविष्टकों करने
वाला अर्थव 1 पार, प्रत्यागारण- हु आगम्,
- वा- गमो नाम बभूव हु तदवला नीनेति हुम्
2 मन्वेह- बौत्रो हु मंत्रो हुम् 3 स्वीकृति- उत्तर०
५।३५ 4 गोप 5 अह्वि 6 अर्चना 7 घनवाचकता
(आहु व मंत्रां में 'हुम्' का सत्र० के माय प्रयोग
उदा० म्रो कवचाव इम्,) (हुक् 'हुम्' की ध्वनि
करना, दशाडना, चिपाडना, राधना तथा अनुहृक्
'अह्वि में 'हुम्' की ध्वनि करना अनुहृकुने क-
ध्वनि न हि योग्यानुमानि केमरी- सि० १६।२५),
सम० कारः-कृति (स्वी०) 1 'हुम्' की ध्वनि
करना-पुटा पुन पुन कान्ता हुकारिणेव भापते
2 सर्वना, अन्कार आहकाराण्यनि-कु० २।२६,
इकारिणेव धनुय म हि विमानपंडरति वा० ३।१,
रघु० ३।५८, कु० ५।५८ 3 दशाडना, राधना 4 सूअर
का ध्वंगना 5 धनय की टकार ।

हुहं (स्वा० पर० ह्रस्वनि) देहा होना ।
हुम् (स्वा० पर० होमनि) 1 जाना 2 डाना, छिपाना ।
हुनवृक्षी [हुन् + क, द्विजम्, वीप व] वृक्ष के अवमरो पर
महिम्नाओं द्वारा उच्चारण की जाने वाली एक अल्पवट
ह्रस्वनि ।

हुह (ह्र) (पुं०) [हु + हु, नि०] एक गन्धर्व विधेय ।
हुह (स्वा० आ० हुहने) जाना ।

हुम् (न) [हु + नह, सत्र०, पशे पुषो० बन्धम्]
1 अमय, जगली, विदेसी- सद्योभूषितमालहृष-
विहृकप्रस्प.ष नारायणम् 2 एक वीर का निष्का,
(समयव यह हुषो के देग में प्रकलित था),- वा
(पु०, व० व०) एक देश वा उसके अधिवासीयों
का नाम-हूणावरोधाना-रघु० ३।६८ ।

हुत (मू० क० कृ०) [हु + क्त सप्तसारणम्] आमन्त्रित,
मुखावा मया, निमन्त्रित दे० 'हु' ।

हृति (स्वी०) [हु + क्तिन्, सत्र०] 1 बुलाया, निम्नत्र
2 चुनौती 3 नाम-जैसा कि 'हृत्किन्नुक्तिः' में ।

हुम् दे० हुम् ।

हुहृक् [हु हृति रवो वस्व- व० स०] गीवह ।

हुह (पुं०) [=हृह पुषो०] गन्धर्व विधेय ।

हु (स्वा० उभ० ह्रस्विते, हुह, कर्मवा० ह्रिषते) लेना,
डोना, धुँवाँना, जाने जाने चलना (इस अर्थ में बहुधा
विकर्मक प्रयोग)-अर्थां हाथ हृति सिद्धा०, सर्वेश
मे हृर वनप्रतिकोचविश्लेषितस्य-मेघ० ७, मनु०

५।७४ 2 उठाकर ले जाना, अग्रहरण करना, हूरी
पर ले जाना, अष्टि० ५।५७ 3 अग्रहृत करना, उटना,
डाका डालना, बुराना-दुर्गसा जारवमानो हृत्थि-
मोति वाकुम्भ भासि० ४।४५, रघु० ३।३९, कु०
२।४७, अष्टि० २।३९, मनु० ७।२३ 4 विचारण करना,
चिन्तित करना, छान लेना, अग्रहरण करना-जुलातुलम्भ
हृत्ति पुष्पमनोकहानाम् रघु० ५।६९, ३।५४,
अष्टि० १।५११६, मनु० ८।३३४ 5 ले जाना, प्रती-
कार करना, नष्ट करना तथापि हरने ताप कोका-
नामुनयो वन भासि० १।१९, रघु० १।५।०४, मेघ०
२। 6 आकृष्ट करना, मृग्य करना, बीत लेना, प्रभाव
शालना, अधीन करना, बसोबूत करना-चेतो न कस्य
हृते पतिरहुताया-भासि० २।१५७, ये भाषा हृदय
हृत्ति- १।१०३, तथापि गीतराभेय हृत्तिषा प्रसम
हृत वा० १।५, मुषणा अहार चतुरेव कार्यानी
-रघु० १।६९, १०।८३, विष्णु० ४।१०, ऋतु०
६।२०, मय० ६।४४, २।९० मनु० ६।५९ 7 उपलब्ध
करना, उग्रय करना, लेना, प्राप्त करना ततो विश
नृपो हरेत् मनु० ८।३९१, १।५३, स हर्तुं मुषणा-
ताकाम्-दश० 8 रचना, अधिकार में करना
भासि० २।१६३ 9 पराभूत करना, धन करना
अष्टि० ५।७१, सि० १।६३ १० विचारण करना
-मनु० १।१७ ११ बाटना-मेर० (हृत्वाति-ने)
1 उठवा देना, बुझाना, धुँवाँना, (कोई चीज) किसी
के हाथ निरखाना (करण० के कर्म० के साथ)-अर्थ
मूषेन वा अर हृत्पति-मिद्धा०, बीधुनेन स्वकुषा-
समयी हृत्विष्यन् प्रभृतिम्-मेघ० ४, मनु० ८।११४
कु० २।३९ 2 अग्रहृत करना, नष्ट करवाना,
चिन्तित होना 3 पुनःकार देना, इच्छा० (विहीर्षति
-ने) लेने की इच्छा करना । अथवा ,यूनयव की
पुन करना, अम् , 1 नकल करना, मिथना-उल्लना
देहकथेन स्वरेण च रामभद्रमहृत्ति उत्तर० ४
इमो प्रकार कि० १।६७ 2 (अपने माता पिता से)
मिथना-उल्लना (इस अर्थ में आ०) दे० वा० १।३।
२१ वातिक, अथ- , 1 छीन लेना, उठा लेना-पश्वा-
नुपैंगपहनवर कल्पते विषमया चिकन० ३।१
2 पराक्रम्य होना, धुँवाँना-बधनयवहृत्मी (वीरवी)
कु० ७।१५ 3 नटना, डाका डालना, बुराना
4 (किसी को) चिन्तित करना, हूर करना, नष्ट
करना स्व च कीनिमपहृत्तुष्ट-रघु० १।१।४
5 आकृष्ट करना, प्रभावित करना, बौर डालना,
बीत लेना, बसोबूत करना (न) शिष्यता यतमान-
मयाहारम् रघु० १।७, इसी प्रकार 'अपहृत्तिवे क्त
परिधमवप्रितया मिद्धा उत्तर० १, (वेर०)
(हृत्तरो से) अग्रहरण करवाना-कि० १।३३, अथ-

उठाकर ले जाना, हटाना, बन्धक—जाता (प्रेर०) खिलाना, भोजन कराना, जा—, 1 (क) जाना, ले जाना पदेव कसे मदनपयसाहजन्म रघु० ३१९, १५१ ७७ (ख) होना, पहुँचाना मनु० १५५८ 2 निकट जाना, देना अवाधिताहजन्म—जा० ११२५ 3 प्रत्येन करना, लेना, ह्रासित करना मनु० २१ १८२, ७१८०, ८१५१ 4 रचना, धारण करना - भावहनुस्तम्भरणी पृथिव्यां स्थलागनिन्दत्रियस-व्यवस्थाम् कु० ११३३ 6 (यज्ञ का) अनुष्ठान करना स विश्वजिनमाह्वे यज्ञ सर्वस्वदासिणम् रघु० ५१८६, १६१७ 7 बसूल करना, दासिण लेना 8 कारण बनना, पेटा करना, जन्म देना 9 पहनना, धारण करना 10 आकृष्ट करना 11 हटाना, दूर करना—(प्रे०) 1 मगधाना 2 विल-धाना 3 एकत्र करना, परस्पर मिलावना, उच्— 1 बचाना, मुक्त करना, उद्धार करना, छुड़ाना—मा तावदुद्धार शुचो दयिताप्रकृत्या विक्रम० ५१५ 2 सीपना, बाहर निकालना (धरम्) उद्धर्तुर्वीच्छ-प्रसन्नमोद्धतारि रघु० २१३०, ३१६४ 3 उन्मूलन करना, जड़ से उखाड़ना, उद्धार करना नमयाभास नृपानुमुदरार्त् रघु० ८१९, ४१६६, क्षितिममुद्धृतदानव-कष्टकम्—स० ७३३ 4 उठाना, ऊपर को करना, उन्नत करना, (हाथ आदि) फेंकना मनु० ५१६२, ५७० ५ (पूल आदि) मोड़ना 6 अन्वयाद्य करना—सि० ३१७५ 7 बचाना, अन्वयन करना 8 छोटाना, घुमना, उड़त करना—इद पद्य रामायणावुद्धतम्—(प्रे०) बाहर निकलवाना रघु० ९१७५, उच्चा , 1 बर्षन करना, बयान करना, प्रकचन करना कहना बोलना, उच्चारण करना - उदाहरण रुपदा-रण्या गिर—सि० ११२७, मूच्छ० १५५, चिकित्सका शेषमुदाहरन्ति—मालवि० २, मा० १ 2 पुकारना, माय लेना त्वां कामिनो मदनहृत्किामुदाहरन्ति—विक्रम० ५१११, युगान्त्रिनो दसरथ इवदाहृत - भट्टि० १११ 3 मर्षिष बचाना, सोदाहरण निर-पण करना, उदाहरण या चित्र उद्घृत करना, लभ-धातुवच कचमपथा कर्त्त सि० १५१२९, उच , 1 ले जाना, निकट जाना स० १ 2 प्रस्तुत करना, प्रदान करना, उपहार देना—मीषाभाषणवेद्यसमाक-मुपहास्तु—स० २, प्रातृम्यो बलिमुपहर—मूच्छ० १, महावीर० ६१२२, रघु० १५१९ १६१८०, १५१२२, मा० ३३ (अभि के रूप में) प्रस्तुत करना, उच्चा-लाना, ले जाना, भिन्— 1 बाहर निकालना, सीपना, उद्घृत करना—रघु० १५१८२ 2 शय को बाहर निकालना मनु० ५१९१, याज्ञ० ३११५ 3 (शेष की भाँति) दूर करना, धरि . 1 बचाना,

दूर रहना - स्वीकृतिकर्ष परिशुम्बिच्छन्तान्तर्गणे भूयतिः स भूत कु० ३१७५, मनु० ८१४००, किरा- ३१४३ 2 खानना, परिष्कृत करना, छोटाना, तिला-जल देना—कनि न कनिनियदपयवर्धयिष मा परि-हृर हरिप्रतिशयवर्धयाम्—गीत० १ ३ हटाना, नष्ट करना, उत्तर देना, प्रत्याख्यान करना (आखेप व आरोप आदि का) बह्नाम्ये जननो निमित्त कारव प्रकृतिपथेत्यस्य पक्षस्वासेव स्मृतिनिमित्त परिहृतः । नर्कनिमित्त इदानीमाखेप परिहृत्येव—शा० भा०, मेघ० १४, प्र , 1 प्रहार करना, आघात करना, पीटना जनया प्रहरति 'सात मारता हूँ' रघु० ५१ ६८, कु० ३१७००, भट्टि० १७७ 2 घोट पहुँचाना, अतिव्रस्त करना, धावक करना (अभि० क साथ) -जातंवापाय व धरत न प्रहर्तुमनामसि स० ११ ११, रघु० २१६२, ७१५९, ११८८५, १५३३ 3 आच-रण करना, हथला करना 4 फेंकना, झालना, प्रलेप करना (अभि० या स० के साथ) 5 छापा मारना, धि—, 1 ले जाना, पकड़ कर दूर करना, 2 हटाना, नष्ट करना, 3 गिरने देना, (बाँधू आदि) झालना 4 (समय) खिलाना 5 मनोरञ्जन करना, आनन्द-प्रमाद में व्यस्त होना, बेलना विहरति हर्षिहृत् सरसवसन्ते वीत० १, अथ , 1 अचहार करना, अचसाव करना 2 करना, आचरण करना, व्यापार करना 3 जानून को धरण जाना, कचहरो में नासित करना अर्धपतिव्यमहर्षुमधोरवादिप्रियायते—इत०, म्या , रोक्कना, कहना, बनवाना, बर्षन करना, प्रकचन करना कु० २१६२, ६१२, रघु० ११८८३, अथ , 1 जाना, मिला कर सीपना 2 (क) सिकोचना, लक्षित करना, सीपना रघु० १०१२, (ख) गिरा देना लहिप्रतापियम् ४४० 3 साथ साथ जाना, एकत्र करना, सधय करना 4 नष्ट करना, संहार करना (विप० 'सृज्') अम् युगान्त्रो-चितकालानिद्र सहाय लोकान् पुष्कोर्धमतेते रघु० १३१६ 5 सपित लेना, रोक्कना, पीछे सीपना—अग्निमुसे मभि संहृतमोहितम् स० २१११, ६४५, न हि सहृते ज्योत्सना चन्दरवाग्नालवेदमन—हि० ११६१, रघु० ५११९, १२१०३, प्रम० २१ २८ ६ दमन करना, निबन्धन करना, इकाना शेष प्रमो सहृतेति वाग्धरि से मरता चरति कु० ३१७२ 7 कन्व करना, समान करना - सत्ता—, 1 जाना, पहुँचाना, होना एवं एव समाहृति तथा वीकः सहोषधि' भट्टि० १५१०७ 2 सहृ करना, साथ मिलाना, सीपना एव स्वयंवर समाहृतसालो-कम्—रघु० ५१६२, भट्टि० ८१६३ 3 सीपना, आकृष्ट करना 4 नष्ट करना, संहार करना नव० १११

३२ 5 पूरा करना (यज आदि) 6 बाणिस माना, अन्ते उचित स्थान को फिर से प्राप्त करना - मन्० ८।३१९ 7. वसन करना, नियन्त्रित करना ।

हृ (ह्रि) शोषले (ना० मा० भा०) 1 कृत्र होना, 2 लज्जित होना (करण० या सब० के साथ) -श्वयाद्य तस्मिन्निदि दण्डधारिणा कथं न पत्या धरन्तौ हृषीयन्ते नै० १।१३३, दिवांतिगि वज्रायुधभूषणा या हृषीयन्ते शेरवर्तों न भूमि मट्टि० २।३८ ।

हृषी (षि) या [हृषी + क् + अ, टाप्] 1 निन्दा, मर्मना 2 लज्जा 3 कठुषा ।

हृत् (वि०) [हृ + क् + क्, तुप्] (केवल सभास के अन्त में) ले जाने वाला, अवहरण करने वाला, हटाने वाला, उठाकर ले जाने वाला, आकर्षक ।

हृत (भू० क० कृ०) [हृ + क्त] 1 ले जाया गया 2 अपहरण किया गया 3 मन्थ किया गया 4 स्वीकृत 5 विध्वंस, दे० 'हृ' । मन्० अधिकार (वि०) 1 त्रिमहा अधिकार छीन लिया गया है, धाह्य निकाला हुआ 2 अपने उचित अधिकारों से वंचित किया गया, उत्तरोच (वि०) त्रिमहा उत्तरोच बरष (बादर हुपट्टा आदि) छीन लिया गया हो इच्छ, -घन (वि०) घन दोहन में वंचित, -संबन्ध (वि०) बिसका सब कुछ छीन लिया गया हो, बिल्कुल बर्बाद हो गया हो ।

हृतिः (स्त्री०) [हृ + क्तिन्] 1 छीन लेना 2 मृत्ता, खमोटना 3 विनाश ।

हृत् (नप०) [= हृत्, पृथा० नस्य द, हृदयस्य हृदादेशो वा] (इस शब्द के सर्वनाम्भान के कोई रूप नहीं होते, कर्म० द्वि० व० के परचाल हृदय के स्थान में यह रूप आदेश ही जाना है) 1 मन, दिल 2 छाती, दिल, सोना -हृदा हृदि ध्यायतपानमक्षिणोत् कु० ५।५४ । सम० आशयः धोरे की छाती के बाल, -कम्पः दिल की कम्प, घटकन, -नस (वि०) 1 मन में आधीन, सोचा हुआ, अधिकल्पित 2 पाला-पोसा गया, - (सम्) अधिकल्पना, अर्ब, आशय, -वेद्यः हृदयगत -विद्य, इप्, दिल, रोषः 1 दिल का रोम, दिल की जलन 2 शोक, गम, बेचना 3 प्रेम 4. कुमरारिषि, नसः (हृत्सलाकः) 1 हृषिकी 2 अशान्ति, शोक, -लेकाः (हृत्सलेकाः) 1 ज्ञान, तर्कना 2 दिल की पीडा, लेका (हृत्सलेका) शोक, चिन्ता, -बदकः पेट, -शोकः हृदय की जलन, बेचना ।

हृत्कम्पः [हृ + कम्प, हुक् आगम] 1 दिल, आत्मा, मन -हृदय दिग्दर्शकत्वान् कु० ४।२५, इसी प्रकार 'अयोहृदय' -रघु० ९।९, पाषाणहृदय आदि 2 कम्प-स्वल्प, छीना, छाती -बाणभिरहृदया निपेतुषी-रघु० १।१।९ 3. प्रेम, अनुप्रास 4. किसी शोक का रस

या आन्तरिक भाग 5 रहस्य विज्ञान, अर्थ०, मन्० । सम०—आशम्प (पु०) सारत्, -आशिव् (वि०) हृदयविदारक, दिल का बीचने वाला मट्टि० १।७३, -ईसा ईश्वर पति, (आ, रो) 1. पत्नी 2 वृद्धि, कम्प दिल का कांपना, घटकन, शाहित् (वि०) मनमोहक, शौरः जो दिल को या प्रेम को चुगता है शिष्ट् (वि०) हृदय-विदारक, हृदय को बीचने वाला, -शिव्—शेषिव् (वि०) हृदय की बीचने वाला, -श्रुति (स्त्री०) मन का स्वभाव, -स्व (वि०) हृदय स्थित, मन में विराजमान, -स्थानत् छाती, बस-स्थल ।

हृत्पङ्कजम् (वि०) [हृदय + पङ्क, मन् १] 1 हृदय का दहलाने वाला, मर्मस्पर्शी, रोमाञ्चकारी 2 प्रिय, सुन्दर, -मा० १ 3 मधुर, आकर्षक, मुसकर, रचिकर अर्था हृदयकमल परिहास -मा० ३, बल्लकी च हृदयकमलम्पना रघु० १९।१३, कु० २।१९ 4 पोथ, मधुचित 5 प्यारा, कलम, आल का तारा माना हुआ क्व नूने हृदयकमल मन्वा कु० ८।२४ ।

हृत्पद्मान्, हृत्पद्मिन्, हृत्पद्मिन् (वि०) [हृदय + पद्मन्, टन्, शनि वा] कामलहृदय वाला, अच्छे दिल वाला, स्नेही ।

हृदि (श्री) क (पु०) एक यादव राजकुमार । **हृदिस्यम्** (वि०) [हृदि + स्यम् + क्तिन्, अलुक् स०] 1 हृदय का छूने वाला 2 प्रिय, प्यारा 3 रचिकर, मनोहर, सुन्दर ।

हृद् (वि०) [हृदि स्थयने मनोज्ञत्वात् हृद् + यत्] 1 हासिक दिग्गी, मीनरी 2 आ हृदय का प्रिय लगने, निराश, प्रिय, प्रमोद, बल्लभ भासि० १।६९ 3 रचिकर, मुसकर, मनोहर मा० ४, रघु० ११।९८ । सम० मन्वा बल का पेड़ मन्वा कुली से मूव लदा हुआ मानिया ।

हृद् (भा० दिवा० ५२० ह्येति, हृदयति, हृदय वा हृदित) 1 मन्वा होना, जानन्वित होना, प्रमत्त होना, हृषित होना, बाग बाग होना, हर्षयित होना-अद्वितीय उपा-स्थान इन्वा कि कश्च हृदयति-भासि० २।१०५, मट्टि० १५।१०५, मनु० २।५८ 2 रोमाञ्चित होना, रोमटे लड़े होना-हृषितामननुरहा -दश०, हृष्यन्ति रोमकृपाणि महा० ३ महा होना कोई अन्य वस्तु—उदा० लिङ्ग का प्रेम् (हर्षयन्ति-ने) प्रमत्त करना, मूव करना, प्रसन्नता में भर जाना, प्र १ प्रमत्त होना, हर्षोभत होना न प्रहृष्यते प्रिय प्राप्य -भग० ५।२०, १।१३६ 2 रोमटे लड़े होना, (सरोर के बाल) लड़े होना, वि , हर्षयित करना, प्रमत्त होना, मूव होना ।

हृषित (भू० क० कृ०) [हृष् + क्त] 1 प्रसन्न, मूव,

आनीय, उत्साहित, आङ्कारित, ह्योग्रण 2 पुन-
कित, रोमांचित 3. आस्पर्शान्वित 4 झुका हुआ, चिन्त
5 निराश 6 ताबा ।

हृषिकम् [हृष् + ईकृ०] शानेन्द्रिय । सम० इतिः विष्णु
या हृष्य का विशेषण -- भग० १११५ तथा आमे पीछे
(हृषीकापीडित्वाभ्यास्तृप्तादीनां यतो यवान् । हृषीके-
स्तस्यो विष्णो व्याटा देवेषु केचन -- महा०)

हृष्य (भू० क० ड०) [हृष् + क्त] प्रसन्न, हर्षयुक्त
(= हृषित) । सम० चित्त आनन्द (वि०) मन से
प्रसन्न, हृदय में खुश, आनन्दित, रोखन् (वि०)
(हर्ष के कारण) रोमांचित, पुलकित, खल (वि०)
प्रसन्नमूल, -- संकल्प (वि०) सतुष्ट, मुग्धी, हृष्य
(वि०) प्रसन्नमना, प्रफुल्ल, उत्साहित ।

हृष्यि (स्त्री०) [हृष् + क्तिन्] 1 आनन्द, उत्साह,
हर्ष, ज्यो 2. चमत् ।

हे (अभ्य०) [हा + हे] 1 संबोधनपरक अव्यय (भो,
जरे) -- हे कृष्ण, हे दास्य, हे सखि भग० ११४१
हे राजानस्यजत सुकशियेयव्ये विरोधम् - विक्रम०
१८१०७ 2. ईर्ष्या, हेच, डाह प्रकट करने वाला
अव्यय ।

हेष्वा [= हिष्वा, प्यां०] हिषकी ।

हेः [हेत् + घञ्] 1. प्रकोपन 2 बाधा, अक्षय, विरोध
रुकावट 3 क्षति, तः ।

हेः 1 (भ्या० आ०) हृदये भवन्ना करना, अपमान करना,
तिरस्कार करना ।

II (भ्या० पर०) हृदयि 1. घेरना 2 वन्न पहनना ।

हेः [हेत् + घञ्] अक्षय, तिरस्कार । सम० ज.
शोध, अपसम्पत्ता ।

हेषामुक्कः (पु०) घोषो का श्यापीरी ।

हेतिः (पु०, स्त्री०) [हेत् + क्तिन्, नि०] 1 धरन्, अन्न
-- समर विजयी हेतुदक्षिणः -- भृगु० २।४४, रघु० १०।१२
वि० ३।५६, १५।३ 2 आधात, क्षति 3. सूर्य की
किरण 4. प्रकाश, आभा 5 ज्वाला ।

हेतु [हि + तुन्] 1 निमित्त, कारण, उद्देश्य, प्रयोजन
इति हेतुस्तदुद्देश्ये काय० १, भा० १।२३, रघु०
१।१०, मेघ० २५, वा० ३।११ 2. क्षात, मूल -- स
पिता पितरस्तासा केचन अयहेतवः -- रघु० १।१४,
अपने प्राथियो को पैदा करने वाले 3 साधन, उाकरण
4 तर्कयुक्त कारण, अनुमान का कारण, तर्क (पांच
मार्गों से युक्त अनुमानप्राप्तियां हैं इतीय अर्थ) 5 तर्क,
तर्कसाधन 6. कोर्ष भी तर्कयुक्त प्रमाण, या युक्ति
7. साहित्यिक कारण (कृत् विद्वान् इतो को एक अल-
कार भी मानते हैं) -- हेतुहेतुमता साधनमयी हेतु-
व्युत्पत्ते (हेतुना, हेतौ कयो कयो हेतौ भी किय-
विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ

प्रकट करते हैं -- 'के कारण' 'के निमित्त' 'क्योंकि',
(सब० के साथ या समास में प्रयोग सात्वतविज्ञान-
हेतुना, अल्पस्य हेतोर्यं हातुमिच्छन् रघु० २।४७,
विस्मृत कस्य हेतौ -- मुद्रा० १।१ भादि) । सम०
-- अर्थवैशः हेतु का उल्लेख (पचासी अनुमान के
रूप में), भाषाशः यह हेतु जो किसी कार्य का
कारण तो न हो, परन्तु हेतु सा आभासिक हो, कुतर्क,
(यह पांच प्रकार का होता है स्वयंविचार या
अनैकान्तिक, विशद, अधिद, सत्यनिष्ठ और वायित),
उपलक्ष्यः, उपलक्ष्यः कारण देना, तर्क उपस्थित
करना, भाषः तर्कवितर्क, सात्वायः -- सात्त्विक तर्क-
साधन, तर्कयुक्त रचना, स्मृति या श्रुति की प्रामाणि-
कता पर प्रश्नोत्तर रूप में छति मनु० २।११,
-- हेतुयुक्त (पु०, हि० व०) कारण और कार्य, भाषः
कार्य और कारण में विद्यमान संबंध ।

हेतुक (वि०) [हेतु + क्तृ] (समास के अन्त में प्रयुक्त
कः 1. कारण, तर्क 2 उपकरण 3. तादृक ।

हेतुता, स्वम् [हेतु + क्तृ + टाप्, स्व वा] कारणता, कारण
की विश्वमानता ।

हेतुयुक्त (वि०) [हेतु + युक्तृ] 1. सकारण 2. कारणयुक्त,
तर्कयुक्त, पु० कार्य ।

हेतुम् [हि + मन्] सोना, कः 1 काले वा भूरे रय का
बाधा 2 सोने का विशेषण तीक्ष्ण 3 दूध दह ।

हेतुम् (नपु०) [हि + मनिन्] 1. सोना 2. लक 3. बर्ष
4. धतूरा 5 केसर का फूल । सम० -- अङ्ग (वि०)
मुनहरी (श) 1 यक्ष 2 सिंह 3 सुभद्र पर्वत
3. हृदा वा नाभ 5 विष्णु का नाभ 6. चम्पक वृक्ष
अङ्गवन् सोने का राजकुल्य, अग्निः सुभद्र पर्वत,
अम्बोवन् मुनहरी कमल, -- हेताम्भाजप्रतिष्ठ सलिल
मानसत्वादादान -- मेघ० ६२, -- अम्बोवन् मुनहरी
कमल -- तु० २।४४, -- भाङ्गुः 1 जयकी चम्पक का
पाया 2 धतूरे का पीसा, -- कंचकः प्रवाल, यूना, -- कट,
कर्त्, -- काटः कारणः सुभद्र मनु० १।१६१,
वाङ्ग० ३।१४७, -- किञ्चकः नायकेसर का फूल, -- कुम्भः
मुनहरी घटा, कूटः एक पहाड़ का नाभ व० ७,
केतकी केवर्क का पीसा जिसके पीसे फूल होते
हो, स्वर्ण-केतकी, -- मन्थिनी देयुका नायक मन्थर्य,
गिरिः सुभद्र पर्वत, गीरः अशोकवृक्ष, -- ज्व
(वि०) सोने से मटा हुआ, (जम्) सोने का धक्कन,
-- स्वात्मः अग्नि, -- तारुम् सुतिया, -- तुष्यः, पुष्पकः
गुलर, चर्मतः सुभद्र पर्वत, -- पुष्पः, पुष्पकः 1 सघोष-
वृक्ष 2 लोप्रवृक्ष 3. चम्पक वृक्ष, (नपु०) 1. अशोक
का फूल 2 बीनी पुष्पा का फूल, -- व (श) जम्,
योती, यत्किम् (पु०) वृक्ष, -- युष्किा सोमयुती,
स्वर्णयुष्किा, -- रागिणी (स्त्री०) हारो, -- लोचः विष्णु

का नाम, -भृङ्गम् १ एक मुनहरी सीप २ मुनहरी चांटे। सारम् तुतिता, -सूक्ष्म -सूक्ष्म एक प्रकार का हार ।

हेमन्त, -सम् [हि + म, मृद आगम] छ ऋतुओं में से एक जाड़े का मौसम (जो मार्गशीर्ष और पौषमास में आता है) नवप्रबालोद्भवसम्बरस्य प्रमुक्तलोद्भ्र परिपक्वसाक्षि । विनीतपथ प्रपत्सुपारो हेमन्तकाल समपामत त्रिये—रतु० ४।१ ।

हेमन्तः [हि + म् + क] १ सुवार २ कमाटी ३ गिरगिट । हेम (वि०) [हा + म्] स्वाम करने योग्य ।

हेमत् [हि + म्] १ एक प्रकार का मुकुट या ताज २ हल्दी ।

हेमन्तः [हे विभे रम्यति रन् + जन्, अलुक् सं०] १ वर्षोद्य २ अंता ३ पीरोद्धत नायक । सम०-अननी पावनी (वर्षोद्य की माता जी) ।

हेमिकः [हि + र्क, छट आगम] भेदिता, मूलचर ।

हेमन्त-मा [हिन् + म्] अजडा करना, निराहर करना, निरस्कार करना, अपमान करना ।

हेमा [हेद् भावे डस्य मः] १ निरस्कार, अनादर, अपमान सि० ११।३२ २ केलि, झोडा, प्रेमालिखन, दे० ता० २० १२८, दश० २।३२ ३ सुगत की बलवनी इच्छा—प्रौढेच्छमाप्रतिक्रान्ता मार्गमा मुग्गोमये । भृङ्गारसास्वतस्वर्सेहोसा परिकीडिता ॥ ४ आराम, सुविधा—सि० १।३४, हेमन्ता आराम्नी ये, बिना किसी कष्ट या असुविधा के ५ चरिका ।

हेमासुक्कः (पु०) घोड़ों का व्यापारी ।

हेमिः [हिन् + इन्] सूर्य, रथी०, केलिखीडा, मुरतखीडा, प्रेमालिखन ।

हेमन्तः (पु०) यह शब्द कदाचित् कारती या बरवी से लिया गया है 'लटभ' शब्द की भांति इसका प्रयोग भी कन्नड़ बिलहण आदि पञ्चवर्ती साहित्यकारों द्वारा ही हुआ है। उत्कट इच्छा, सीध स्पृहा, उत्कण्ठा—अस्मिन्नामोत्तमन् निबिडास्त्वेषहेमाकनोमामेलेह्नुइह्नुक्वभित्तवकपा मन्तन राजतकमीः—विष्णु० १८।१०१, पु० 'हेवाकिन्' ।

हेमन्त (वि०) [मन्वत इत शब्द का 'हेवाक' से कोई संबंध नहीं] अत्यन्त, तीव्र, उत्कट, प्रबल हेवाकसन्तु भृङ्गारो हावोमिभूविकागकृत्—दश० २।३१ ।

हेवाकिन् (वि०) [हेवाक + इनि] अत्यन्त इच्छुक, उत्कण्ठित (समाप्त में प्रयोग)—जायन्ते महतामत्रो निमयप्रभान-हेवाकिना नि सामान्यप्रहृष्टयोत्पियुवा वाता विपत्ता-विधि कन्हुव ।

हेम् (अध० मा०) हेयते, हेयित) बोधे के भांति हिनहि-मान, रचना, दहाहना ।

हेम्, हेमा, हेमिन्तम् [हि + मन्, हे + म् + टाप्, हे +

+ म्] हिनहिनाहट, रोक, रचाङ्गत्कीडितामवहेव-कि० १६।८ ।

हेमिन् (पु०) [हि + मिनि] बाडा ।

हेहे (अध०) [हे + हे + इ० सं०] सबोधन परक अन्वय जिसका उपयोग बोर से भाषाव देने या बूझने में किया जाता है ।

हे (अध०) [हा : की] सबोधनायक अन्वय ।

हेतुक (वि०) (स्त्री०) की) [हेतु + ठक्] १ कारण परक, कारण मूलक २ तर्क सबधी, विवेक परक,—कः १. तर्कयुक्त हेतुवादी, तार्किक २ मीमांसक ३ तर्क-वादी, अनीदधरवादी, मास्तिक ।

हेम (वि०) (स्त्री० - नी) [हिम (हेमन्) + म्] १ पीतल, जाड़े का, जाड़े में होने वाला, ठंडा २ हिम से उत्पन्न—मृगालिनी हेमिबोधपराम् रघु० १६। ७ २ मुनहरी, मोने का बना हुआ—यायेव हेमं विजि-लेस पीडम् रघु० ६।१५, मद्रि० ५।८९, कु० ६।९, -सम् पाता, जोत, कः शिष का विनेषण । सम० -भूडा, -भूडिका मुनहरी सिक्का ।

हेमन्त (वि०) (स्त्री० - नी) [हेमन्त एव हेमन्ते धनो वा, प्रथ, तन्नाप] १ जाड़े में होने वाला, ठंडा सि० ६।५५, कि० १०।१२ २ जाड़े से सबंध रखने वाला अर्थात् तम्का (जैसे जाड़े की रसें) सि० ६।७७ ३ सर्दी में उगने वाला या जाड़े के उपप्लव हेमन्त-निबसने सुपथ्यमा रघु० १९।४१ ४ मुनहरी, सोने का बना हुआ,—मः मार्गशीर्ष का महीना २ जाड़े की ऋतु (= हेमन्त) ।

हेमन्तिक (वि०) [हेमन्ते काले भव टाप्] १ जाड़े का, ठंडा २ सर्दी में उत्पन्न होने वाला, -कम् एक प्रकार का चावल ।

हेमन्त दे० 'हेमन्त' ।

हेमन्त (वि०) (स्त्री० - ती) [हिमवतो अचुरयधो देव-तस्येव वा अन्] १ बर्फीला २ हिमालय पर्वत से निकल कर बहने वाला रघु० १६।४४ ३ हिमालय पर्वत पर उत्पन्न, पला-पीमा, स्थित विद्यमान या सबंध रखने वाला कु० ३।२३, २।६७, -सम् भारतवर्ष, हिन्दुस्तान ।

हेमन्ती [हेमन्त + डीप्] १ पार्वती का नाम २ रंगा का नाम ३ एक प्रकार की हरद, हरीतकी ४ एक प्रकार की बोरधि ५ सन का पीपल, अन्धी ६ बूरे रंग की किराबिध ।

हेमङ्गवीर्यम् [हो गोवोहात् भवं ह्यङ्गवी + ष, वि०] १ पिछले दिन के दूध से बनाया गया ची, तांबा की हेमङ्गवीर्यप्रदाय घोषपुद्गामुत्पित्तान्—रघु० १। ४५, मद्रि० ५।१२ २ पिछले दिन का बन्धन, तांबा मन्चन ।

होत्रिकः [होत्र + इक्] होत्र ।
 होत्र (पु० व० व०) एक देव और उसके अधिपतिवो का नाम, कः 1 यजु के प्रवीण का नाम 2 अर्जुन कांतोवो (विषके एक प्रकार भुवाएँ भी, और जिसे परशुराम ने मार विराया था) - बंयुवल्हृगुह्यम्व हृहृ-यस्व व कीलियधुहृगुहृहृ - रघु० ११७५ ।
 हो (अभ्य०) [हृ + धे + धो, नि] किनो व्यक्ति को बुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला संबोधनात्मक अव्यय, (हे, अरे) ।
 होय 1 (आ० वा० होयते) उपेक्षा करना, अनारद करना ।
 ii (आ० पर० होयति) माना ।
 होय [होय् + अच्] देना, माथ ।
 होय (वि०) (स्त्री० भी) [हु + यच्] यजमान, हवन करने वाला, - बहति विषयुज या हविषो व होयो य० १११, - (पु०) 1 अश्विन, विशेषकर वह जो यज्ञ में अश्विन के मन्त्रों का पाठ करना है 2 यज्ञकर्ता - रघु० ११६२, ८२, मनु० ११३६ ।
 होयम् [हु + यन्] 1 (बी आदि) कोई भी वस्तु जिसकी हवन में आहुति दी जाये 2 हवन में जली हुई सामग्री 3 यज्ञ ।
 होया [होय + टाप्] 1 यज्ञ 2 स्तुति ।
 होयोयः [होयाय हित होयुनिव वा छ] देवों को उद्देश्य करने आहुति देने वाला अतिव्यय, - यम् यजमय्य ।
 होय [हु + यन्] यज्ञानि में भी की आहुति देना, (शांशुषी द्वारा किए जाने वाले दैनिक पंच यज्ञों में से एक जिसे वैश्वानर कहते हैं) 2 हवन, यज्ञ ।
 यम० अग्निः होय की जाग, - कुष्वम् हवनकुष, - नुरङ्गः यज्ञ का घोडा रघु० ३१३८, चालम् तिल, बृहः होय की अग्नि का घुमा, - अस्मन् (मपु०) हवन की राज, - वैश्व हवन करने का समय य० ४, - आत्मा यजमाना, यज्ञगृह ।
 होयकः दे० होयु 1
 होयः [हु + यन्, मृट् व] 1 तारा हुआ मक्कन, भी 2 जल 3 अग्नि ।
 होयन् (पु०) [होमोऽयस्य इति] होम करने वाला, यजमान, यज्ञकर्ता ।
 होयिष, होय्य (वि०) [होयः छ, यत् वा] होम से संबद्ध आहुति दिए जाने के शोष, हवन संबन्धी, - अय्य भी ।
 होरा [हु + रन् + टाप्] 1 राशि का उदय 2 राशि की अर्धांश का अक्ष 3 एक घंटा 4. चिह्न, देखा ।
 होराक्य [हु + विच्, हं कति - का + क् + क् + टाप्] बसंत ऋतु के माने पर मनाना तथा बसन्तोत्सव, फाल्गुन मास की पूर्णिमा से पूर्व के सब दिन, विशेष

तः गीन या चार दिन (इसी वर्ष को हय 'होनी' कहते हैं) 2 फाल्गुन मास की पूर्णिमा ।
 होरािका, होनी (स्त्री०) होकी का त्याहार, दे० होराका ।
 हो, होही (अभ्य०) [हृ + धे, नि०] संबोधनात्मक अव्यय, हो, अरे, भी ।
 होत्रम् [होत्रु + रन्, अच्] होना नामक अतिव्यय का पद ।
 होत्र्यम् [होत्र + ध्यञ्] तारा हुआ मक्कन, भी ।
 हृयु (अप० वा० हृयुते, हृयुत) 1 से जाना, लुटना, छिपा देना, अज्ञित करना - अध्वनीपत्यं सास्त्राणि यमस्याह्नाष्ट विक्रम्य - अष्टि० १५८८ 2 छिपाना, इकना, राकना, - वा० १ 3 किसी से छिपाव करना (सम्प्र० के साथ) - ओषी हृष्वाय ह्युते - छिद्रा० । अच् - 1 छिपाना, दुपाना मनु० ८१५३, रत्न० २ 2 मुकटना, अशिक्षित को इकार करना, किसी से कोई चीज छिपाना - नृणावकापह्नुतेऽपक्रम् अष्टि० ५१४४, अयह्नुवानस्य अनाय पक्षिनाम् (अथोऽगनाम) नै० ११४९, मि 1 छिपाना, गुप्त कर देना - अष्टि० १०३६ 2 किसी से छिपाना, किसी के सामने मुकर जाना (सम्प्र० के साथ) अष्टि० ८१७५ ।
 ह्यम् (अभ्य०) [यते बहनि नि०] बीता हुआ कल ।
 यम० - यव (वि०) बी कल हुआ वा ।
 ह्यस्तम् (वि०) (स्त्री० भी) [ह्यस् + ट् + यत्, तुट्] बीते रूप से सबब रखने वाला या ह्मरतनी वृत्ति । यम० विद्यम् बीता कल, पिछला दिन ।
 ह्यस्त्य (वि०) [ह्यस् + त्यप्] कल से संबद्ध, (बीते हुए) कल का ।
 ह्यः [ह्यद् + अच्, नि०] 1 गहरा सरोवर, जल का विन्दुन और गहरा ताकाव - नै० ११५३ 2 गहरा छिद्र या बिबर - वि० ५१२९ 3 अभाव का किरण । यम० - यः यगरयच्छ ।
 ह्यिनी [ह्यद् + इनि + ङीप्] 1 नदी 2 बिजली ।
 ह्योयोः [शोकजन्म से अत्यन्त] कुम्भराशि ।
 ह्युत् (आ० पर० ह्युति, ह्युति) 1 गन्व करना 2 छोटा होना ।
 ह्युतिव्य (पु०) [ह्युत् + दनिच्, ह्युतादेव] ह्यकापन, छाटागन, लघुता ।
 ह्यव्य (वि०) [ह्य् + वच्, य० व० ह्योय्यत्, उ० व० ह्युतिष्ठ] 1 लघु, अल्प, छोटा 2 उगना, ऊर में छोटा 3 लघु (वि०) दीर्घ ऊर्ध्वः आत्सव में), कः बीना । यम० - अङ्गु (वि०) छिपाना, छिपु, (कः) बीना, यमः कुक्ष शायक भाव, एवं छोटा वा स्थित कुक्षमायक भाव, - अङ्गु (वि०) छोटी भुजाओं का भाव, - नृत्ति (वि०) ऊर्ध्व में छोटा, छिपाना, बीना ।

ह्राप् (म्भा० भा० ह्रायते) १ शब्द करना २ दहाडना ।
ह्रायः [ह्राद् + घञ्] घोर, आवाह—तुनुवीया ह्राय
—कि० १६८, इसी प्रकार 'वनुहृदि' भादि ।

ह्रायिन् (वि०) [ह्राद् + णिनि] सध्यायमान, दहाडने
वाला ।

ह्रायिणी [ह्रादिन् + ङीर्] १ इन्द्र का शब्द २ विचली
३ गदी ४ मल्लकी नामक वृक्ष ।

ह्रायः [ह्रन् + घञ्] १ शब्द, कोलहल २ घटी, कपी,
शय, अवनति, पतन मनु० १८५, याज्ञ० २१२५
३ छोटी सख्या ।

ह्रिषीयते दे० 'ह्रिषीयते' महाभार० १५१ ।

ह्रिषीया [ह्रिषी + यच् + अ + टाप्] १ मत्स्यना, विन्दा
२ लय, लज्जा ३ दया—मू० ह्रिषीया ।

ह्री (बुद्धो० पर० जिह्मेति, ह्रीम, ह्रीत) १ समीचा,
विनीत होना २ लजित होना (स्वतन् प्रयोग अथवा
अपदान स० के साथ)—जिह्मेत्यायपुत्रेण सह मुक्तमीन
कानुम् य० उ, अयोध्यस्यापि जिह्मेति कि पुन
सहवासिनाम—कि० ११५८, रघु० १५४४, १७१०,
मट्टि० ३१५३, ५११०२, ६११३२—वेर० (ह्रैपयति
—ते) शपिदा करना, (बास) से भी। सकीलुय
ह्रैपयतीश्च कृष्णम् रघु० ६१४५, ह्रैपिता हि बहुवो
नरेभ्यरा—११४०, कि वा आत्मा स्वाभिनी ह्रैपयति
—सि० १८१३ कि० ११५४, १३१५१, वेची०
११७ ।

ह्री (स्त्री०) [ह्रौ + क्विप्] १ लज्जा—लेगीप ह्रीपद-
माधयाना—कु० ३१५०, दारिद्र्याद्भिद्यमेति ह्रीपरि-
पत प्रभवति तेजस मुच्य० १११८, रघु० ४१८०
२ समीचापन, विनय ह्रीतिप्रकथी कवचयुवाच
कु० ७८५ । सम० शित, शूद्र (वि०) लज्जा
से श्रमिभूत या व्याकुल ह्रीमुद्राणा भवति विकल-
प्रेरणा युष्मन्मिष्टि मेघ० ९८, अथवा लज्जा का
अपन—रघु० ७६३ ।

ह्रीका [ह्रौ + क्व् + टाप्] १ समीचापन, लज्जाघोषता,
सकाच २ भीरुता, डर ।

ह्रीशु (वि०) [ह्री + श्, कुक् च] १ समीचा, विनीत,
सकोचशील २ भीरु, कुः १ रंगा २ लाय ।

ह्रीष, ह्रीत (मू० क० ह्रै) [ह्रौ + ष, ष्चै मय्य न्]
१. लजित—वेची० २१११ २ समीचा, विनीत—
३१५३ ।

ह्रीभेरन्—कम् [ह्रिषे कज्याये वेरन् धंङ्गम् अत्य लुहृत्वात्,
दृषो० वा रय्य स] एक प्रकार का गन्ध इत्ये ।

ह्रैप् (म्भा० भा० ह्रैपते) १. बोडे की भांति हिलहिनाना,
रेंकना २ आना, सरकना ।

ह्रैषा [ह्रैप् + अ + टाप्] हिलहिनाष्ट ।

ह्रैप् (म्भा० पर० ह्रैपति) शपना ।

ह्रैपिः (स्त्री०) [ह्राद् + णिनि, ह्रयता] हर्ष,
प्रसन्नता ।

ह्रैप् (म्भा० पर० ह्रैपति) शब्द करना ।

ह्रैप् (म्भा० भा० ह्रायते, ह्रैप, ह्रैपति) १. प्रसन्न
होना, लुप्त होना, ह्रित होना २ शब्द करना, भा ,
प्र , ह्रित होना, प्रसन्न होना, बृक्ष होना ।

ह्रैप्यः ह्रैषकः [ह्राद् + घञ्, श्चून् वा] प्रसन्नता, हर्ष,
उत्साह ।

ह्रैष्यन्म् [ह्राद् + स्पृट्] ह्रित होने की चिन्ता, हर्ष, लृष्टी,
प्रसन्नता ।

ह्रैषिण (वि०) [ह्राद् + णिनि] प्रसन्न होने वाला, लृष्ट
होने वाला ।

ह्रैषिणी दे० 'ह्रादिता' ।

ह्रैम् (म्भा० पर० ह्रैपति) १. आना, हिलना—बुक्का
२ बरचगना, कपना—वेर० (ह्रैपयति—ने, ह्रैपयति
—न, परन्तु पहला रूप उपसर्गबृक्ष) हिलाना, कपकी
पैदा करना । विशेषतः 'वि' पूर्वक ।

ह्रैष्यम् [ह्रै + स्पृट्] १ आनन्द २ अन्दन, सम्भ करना ।

ह्रैष् (म्भा० पर० ह्रैपति) १ कुटिल होना २ आचरण
में देडा होना, उबना, घोसा छाना ३ कथञ्चल,
अतिघस्त ।

ह्रै (म्भा० उभ० ह्रैपति—ने, ह्रैत, कर्षंश० ह्रैते, वेर०
ह्रैपयति—ने, अथवा ह्रैपयति—ने) १ बुलाना— तां
पावतीत्याभिरनेन नाम्ना कन्ध्रियां कन्ध्रयो बुहाव
—कु० ११२६ २ नाम लेकर बुकारना, आवाहन करना,
आवाह देना ३ नाम लेना, बुलाना ४ ललकारना
५. परिग्रहणां करना, हाहाहोरी करना ६. श्रांथना
करना, दाचाना करना, भा , १ बुलाना, निवर्षित
करना—बल्ल । इत् एवाह्वयन्म् उत्तर० ५ २ लल-
कारना (भा०)—ननश्रीराहृत वेदिराध्वरारिम् सि०
२०११, कृष्णवाचुन्माह्वयते मिश्रा०, मट्टि० ८१८,
१५१८५, उच ३ उवा , बुलाना, मट्टि० ८१७,
लम् , शवा , विकर बुलाना ।

सम्पूर्ण

अमूर: [न क्र-न० त०] एक यादव का नाम जो कृष्ण का मित्र और भावा था। (यही वह यादव था जिसने बलराम और कृष्ण को अमूरा में बाकर कस का मारने की प्रेरणा दी थी। उसने इन दोनों को अपने आने का आशय बतलाया और कहा कि किस प्रकार अथर्वी कस ने इनके पिता जानकपुत्रुनि, राजकुमारी देवकी तथा मय्य अपने पिता उपसेन का अपमान किया। कृष्ण ने अपने जाने की स्वीकृति दे दी और प्रतिज्ञा की कि मैं उस राजस की तीन रात के अन्दर मार डालूँगा। कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति में सफल हुआ। दे० 'महाजित्' भी।

अपस्ति: अपस्त्यः । विन्ध्याक्ष्यम् अयम् अयति, अस् + स्तिव् शक०, या अय विन्ध्याक्ष सत्यावति स्त-ष्ठाति, स्त-व-क, या अय कुम्भ नत्र स्थान महतः इत्यस्त्यः] एक प्रसिद्ध ऋषि या मुनि का नाम। ऋग्वेद में अगस्त्य और दक्षिण मुनि मित्र और वनम की मतात माने जाते हैं। कहते हैं कि लावण्यययी अप्सरा उर्वशी को देखकर इनका शीर्ष स्वर्णित हो गया। उनका कुछ भाग एक घड़े में निर गया तथा कुछ भाग जल में। घड़े से अगस्त्य का अणु हुआ अर्षीलिए इसे कुम्भयोनि, कुम्भजन्म, घटोद्भूष, कलश-योनि आदि भी कहते हैं। वर्णन मिलता है कि इसने विन्ध्याक्षल पर्वत की ओ बराबर उठता जा रहा था तथा सुयमण्डल पर अधिकार करने ही वाला था, और जिसने इसके रास्ते को राक दिया था, नीचे ही जाने के लिए कहा। दे० विन्ध्य० (यह आख्यायिका कई विद्वानों के मतानुसार आर्य जाति की दक्षिण देश में विषय और भारत की सभ्यता के प्रति प्रयत्न का पूर्वाभास होती है) हमने नाम एक अन्य आख्यायिका के अनुसार समुद्र का पी जाने के कारण पीताम्बि और समुद्रचूल्क आदि भी थे, क्योंकि समुद्र ने अगस्त्य को कष्ट कर दिया था, और क्योंकि अगस्त्य युद्ध में इन और देवों को सहायता करना चाहता था जब कि देवों का युद्ध कालिय नामक राक्षसों से होने लगा था और राक्षस समुद्र में जाकर छिप गये थे और तीनों लोकों को कष्ट देते थे। उसकी पत्नी का नाम लोपामुद्रा था। वह विषय के दक्षिण में कुम्भ पर्वत पर एक उपोवन में रहता था। उसने दक्षिण में रहने वाले सभी राजसों को निमण्डय में रक्खा। एक उपाख्यान में वर्णन मिलता है कि किस प्रकार हमने वातापि नामक राजस की सा किया जिसने मेंडे का रूप धारण कर लिया था, और किस प्रकार उसके भाई को अपने भाई का बसला भेजे जाया था, अपनी एक वृष्टि से भस्म कर दिया।

अपने वनवास के समय घुमे हुए भगवान् राम, सीता और लक्ष्मण सहित उनके आश्रम में गये। वहाँ अगस्त्य ने इनका बहुत आदर-सकार किया और राम का मित्र, महाहकार और अधिरक्षक बन गया। उसने राम की विष्णु का धनुष तथा बृहत् और वसुधै दी (दे० गृ० १५।५५) उपाधिप में इसे तारा भी माना जाता है नु० गृ० ३।११ भी।

अग्नि: [अङ्गति उच्ये गच्छति अङ्ग + ति, न सोपम्व] अग्नि का देवता। ब्रह्मा का उपेष्ट पुत्र। इसकी पत्नी का नाम स्वाहा है। उसने इसके तीन तन्तान हुई - रावक, पवमान और अग्नि। हरिवंश में इसका वर्णन मिलता है कि इसके वन्य कामे हैं, पत्नी ही इसकी दोषी है, तथा जिससे इसके भावा हैं। इसके रथ में लाल घोड़े मूले हैं। यह मेंडे के साथ या कभी मेंडे पर सवार होता हुआ वर्णन किया गया है। महाभारत में वर्णन मिलता है कि अग्नि का शीर्ष और बिम्ब मवापन हो गया और वह मय्य हो गया, क्योंकि उसने राधा श्वेतकी द्वारा यज्ञ में दी गई आहुतियाँ खा ली। परन्तु उसने अर्जुन की सहायता से सांडववन को निरस्तक अपनी शक्ति फिर प्राप्त कर ली। इन सेवा के उपलक्ष्य में ही अर्जुन को बाणधनुष प्रदान किया गया।

अयः [अय कर्तारि अय्] एक राजस का नाम। यह बक और पूतना का भाई था तथा कस का मेनापति। एक बार कस ने इसे कृष्ण और बलराम की मारने के लिए गोकुल भेजा। उसने वहाँ एक विद्यालय में अय्यार का रूप धारण कर लिया जो बार योजना तथा था। इस रूप में वह स्वामी के भाग में लेट गया तथा अपना मुँह पूरा खोल लिया। स्वामी ने इसे एक पहाड़ी युक्त समझा, वे इसमें घुस गये, सब वीर्य भी इसी में चली गई। परन्तु कृष्ण ने इसे समझ लिया। फलत उसने अन्दर घुसकर अपना शरीर इतना कुसाया कि वह अय्याररूपी राजस टुकड़े-टुकड़े हो गया जब कही इस प्रकार कृष्ण ने अपने तापियों की रक्षा की।

अथर्व [अङ्गं धारति शोधयति भूययति, अङ्ग धति वा, हे वा की + क] धारा नाम की पत्नी से उत्पन्न बाकि का एक पुत्र। जब राध ने समस्त सेना के साथ संका की कृष्ण किया तो अथर्व की राधक के पास शान्ति के दूत के रूप में भेजा गया जिससे कि समय रहते राधक अपनी ज्ञान बचा सके। परन्तु राधक ने बुधापूर्वक उसके प्रस्ताव को टुकरा दिया, फलतः काल का हाथ बसा। सुभीय के पश्चात् किन्दिन्धा का राज्य अथर्व की मिला। सामान्य शोधनास में

वह व्यक्ति जो दो पक्षों के बीच असफल मध्यस्थता करता है, अमद नाम से पुकारा जाता है ।

अंभला (स्त्री०) माधवि या हनुमान् की माता का नाम । वह कुम्भ नामक नगर की कन्या तथा केसरी की पत्नी थी, एक दिन वह एक पहाड़ की चोटी पर बैठे थी, कि उसका बदन अचानक शरीर से हट गया । बावदेवता उनके लीन्द्य पर मुग्ध हो गया, उसने दृश्य शरीर धारण कर अजना से अपनी इच्छापूर्ति की याचना की । अजना ने उससे प्रार्थना की कि आप मेरा सतोस्य नष्ट न करें । बाव ने इस बात को स्वीकार कर लिया, परन्तु कहा कि तुम्हारे शक्ति और कान्ति में मेरे जैसा पुत्र उत्पन्न होगा क्योंकि मैंने तुम्हारी ओर कामवासना की दृष्टि से देखा है । यह कहकर बाव अन्तर्धान हो गया । यह पुत्र ही माधवि या हनुमान् था ।

अधि [अद् + चिन् = अधि] एक महवि का नाम । यह ब्रह्मा की ओर से उत्पन्न होने के कारण ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों या प्रजापतियों में से एक है । इनकी पत्नी का नाम अनसूया था । उसने तीन पुत्र हुए दत्त, दुर्वासा और शंभु । रामायण में वर्णन मिलता है कि राम और सीता, अधि तथा अनसूया के आश्रम में गये । वहाँ उन्होंने उनका सब आचर सत्कार किया (दे० अनसूया) । अधि के रूप में वह सप्त-ऋषियों में से एक है, ज्योतिष की दृष्टि से वह सप्त-ऋषियों में एक तारा है । कहते हैं कि चन्द्रमा इस की ओर से पैदा हुआ नु० रघु० २।७५ ।

अधिति [न दीवने लघुपले ध्यते बहुधात्-यो + क्तिच्] यथा की एक कन्या का नाम जो कश्यप को ब्याहो गई जिस समय विष्णु ने रामनामवाचन ग्रहण किया तो उस समय वह विष्णु की माता थी । वह इन्द्र की भी माता थी । इनके कारण वह उन अन्य देवताओं की भी माता कहलाती है जो अदिनदिन कहलाते हैं ।

अधिष्ठान [न निष्ठ इति ङ० सं०] प्रथम के एक पुत्र का नाम । अग्निष्ठ काम का पुत्र और कृष्ण का पोता था । बाणामुर की पुत्री उषा उसने प्रेम करने लगी थी । उसने जाह्नवी की शक्ति से अग्निष्ठ की कन्ये पिता की नगरी सोमिस्तपुर के अपने ग्राम में मगवा किया । (दे० उषा या विषमेशा) । बाण ने कुछ रत्नक उसे पकड़ने के लिए भेजे परन्तु पराक्रमी अधिष्ठान ने उन्हें छोड़े की वधा से मोत के घाट उतार दिया । अन्त वह जाह्नवी की शक्ति के द्वारा पकड़ लिया गया । जब कृष्ण, बकराम और काम की उमका पत्ता लगा तो वे उसे लेने गये । वहाँ भारी वृद्ध हुआ । बाण की वरधि शिव और स्कन्द सहामता करते थे, तो भी वह परावित हो गया, परन्तु शिव के बीच में पड़ने

से उसके प्राण बच गये । अग्निष्ठ की उसकी पत्नी उषा सहित द्वारका में अपने घर लाया गया ।

अंधकः [अन्ध + क्त्] एक राजा का नाम जो कश्यप और दिति का पुत्र था । इसकी शिव ने हत्या कर दी थी । इसके वर्धन मिलता है कि एक वृद्धा भुवानी और शिव से, २००० अर्घ्य और पैर प । यह अंधा की भाँति चलता था इस लिए नाम उसे अंधक कहते थे, चाहे वह पुष्पं ठोक ठोक दण्ड सकता था । जब उसने स्वर्ग से वाग्जित वृक्ष उखा कर ले जाने का प्रयत्न किया तो शिव ने उसकी हत्या कर दी ।

अभिमन्यु (पु०) अर्जुन के एक पुत्र का नाम । इसकी माता सुभद्रा थी जो श्रीकृष्ण तथा बलराम की बहन थी । जब द्राप को मलय के अन्तर्गत कोला ने 'चक्रवर्त' नाम की क्षितिप सेवीयस्यौत बनाई और वह भी इस आशा से कि आज अर्जुन दूत है, उसके अभिगन्त और कोई पाहच इन व्यक्त का नाव नहीं मकेगा, तो अभिमन्यु अपने चाचा ताउरी का शिववास दिखावा कि यदि आप लग मेरा सहायता करो तो मैं अक्षय हो इस व्यक्त का नाव मालूम । तदनुसार वह व्यक्त प्रसिद्ध हुआ की द्राप के अनेक योद्धाओं का उभने को के घाट उतारन । एक बार तो उभने गंगा घाट पराक्रम दिखाया कि द्राप, कर्ण दुर्योधन प्रादि बड़े बड़े महाशूरी भी उसका मुकाबला न कर सके । परन्तु द्रप बहुत देर तक इस मोक्ष युद्ध का सामना न कर सका, अन्त में पराजित हुआ और मारा गया । वह बटन मन्व्य था । उसकी दो पत्नियाँ थी बलराम की पुत्री कन्यका तथा राजा विशट की पुत्री उत्तरा । जिस समय वह मारा गया उस समय उनका गर्भवती थी, उसमें परीक्षित का जन्म हुआ । परीक्षित ही बाद में हस्तिनापुर की राजपट्टी पर बैठा ।

अभयः [अ + उन्व + चिन्ता न कश्यप न उत्पन्न एक पुत्र सृष्ट था । सृष्ट का उद्देश आशा ही अन्ध बनलावा जाता है । चिन्ता ने समय से पूर्व ही अंधे में अक्षय निकालन, उसकी अन्धी कृष्णों महा बनी थी इस लिए उसका नाम 'अभय' (ऊर्ध्वः) का विचार (पैरा) से होन पर गया । अब अक्षय सुर्व का मारिषि है । उसकी पत्नी श्वेती थी जिसका मरति' और 'व्रदाय' नामक दो पुत्र पैदा हुए ।

अजयत्थाम्बु दे० 'दाय' भी ।
अभिधनीशुभार दे० मर ।

अजयत्थाम्बु अजयत्थाम्बु का बन्धु । कौडी के एक पुत्र का नाम । बाद कृष्ण दाने कर्षिक अधरथम कील से कि उन्होंने अपनी पत्नी की उषा की । इस अवहेलना से शुक्य होकर उसके ब्रह्मण पुत्र ने जा

अभी गर्भ में ही था, अपने पिता की भर्त्सना की। इस बात से क्रुद्ध होकर पिता ने शाप दिया कि तुम आठ अंगों में टूटें जैसे पैदा होगे। एक बार कन्नौड़ में एक बौद्ध ने गर्भ मर्याद और फिर उसमें हाथ जालें पर कन्नौड़ का नदी में डबा दिया गया। युवा अष्टावक्र ने उस बौद्ध की पराम्प किया और अपने पिता की मृत्यु करवाया। इस बात से प्रसन्न होकर पिता ने समगा नदी में स्नान करने के लिए कहा। ऐसा कर वह विस्तृत सरस अगा वाला हो गया।

न्याय

1. **किष्किन्धव्याघ्र** विष में पले बीरने का नीतिवाक्य। यह उन स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जहाँ दुस्तर के लिए धातक होन हुए भी उनके लिए ऐसी नहीं होती जो इसमें अपने और पले है, बशकि वह स्थिति तो उनका स्वभाव बन गया है जैसे कि दिवकृति या विष में ही जन्मा है। विष चाहे दुस्तर के लिए धातक हो परन्तु उनके लिए धातक नहीं होता जो उसी विषैनी स्थिति में पले है।
2. **किष्कलव्याघ्र** विषवश का नीतिवाक्य। यह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यद्यपि उपवास्य या आशातपूर्वक है भी भी उस स्थिति के द्वारा जिनसे उसे बनाया है, नाए किये जाने के साथ नहीं। जैसे कि एक बल चाहे वह विष का ही क्यों न हो वह भी लगाने वाले के द्वारा काटा नहीं जाता।
3. **स्वान्दीपुत्राव्याघ्र** पकने हुए वर्तन में से एक चावल देखने का नीतिवाक्य। देखने में पडे हुए सभी चावलों पर गर्भ पानी का समान प्रभाव पड़ता है। जब एक चावल पका हुआ होता है तो यह अनुमान लगा लिया जाना है कि अन्य सब चावल भी पक गए हैं। अतः यह नीतिवाक्य उस दशा में प्रयुक्त होता है जब समस्त अंशों का अनुमान उसके एक भाग की देख कर लगाया जाय। मगठी में इसे ही कहते हैं "दिनाकन भागाची परीक्षा"।

पञ्चबाहु (वि०) [पञ्च + बाहु] बहुमान—अव० ९। प्रकीर्ण. [प्रा० सं०] कोष, उर्ध्वजना, जावेन।

प्राकार (प०) 1. चतुर्द्वारी, बाह्य, बाह्य 2. चतुर्द्वार चतुर्द्वार नामी दोषा, फनीक जनमेवोर्ध्व मयने प्राकारस्था चतुर्धर - पञ्च० १।२०९।

शाली (स्त्री०) एक प्रकार का काठ का सामग्य अव० २४।

शुद्धिदर [शुद्धि स्थिर - अन्क सं०, चम्बम्] 'वृद्ध में अशुद्धि' पाठको में उर्ध्व राजकुमार। इसे 'धर्म' 'धर्मराज' और 'अज्ञानगु' आदि भी कहते हैं। यह धर्म द्वारा कुली के उन्नत हुआ था। मध्यचतुर्दी की अपेक्षा यह अपनी मर्याद और ईमानदारी के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध था। अज्ञान दिन के महाभाग के पञ्चानु इसे हस्तिनापुर की राजद्वारी पर सत्पाठ के रूप में अभिषिक्त किया गया था। उसके पञ्चानु इसने बहुत दिनों तक धर्मपूर्वक राज्य किया। इसका अधिक विवरण जानने के लिए देखें 'दुर्धर'।

शैशवायन (प०) श्याम के एक प्रसिद्ध गिण्य का नाम। इसने अपने गिण्य पात्रकल्प को कहा कि वह समान यजुर्वेद से तुल्य मुझसे पडा है उसल दो। तदन्तमार उगल देने पर शैशवायन ने अन्य गिण्यों ने तोलन बन कर बह समान यजुर्वेद पाठ किया। उसी लिए यजुर्वेद की उम शाखा का नाम 'शैशवीय' पड गया। पुराणों का पाठ करने में शैशवायन अत्यन्त दक्ष और प्रसिद्ध। कहते हैं कि उसने समस्त महाभाग का पाठ जनमेवय राजा को सुनाया।

हिरण्यक (प०) एक प्रसिद्ध राजन का नाम। हिरण्यकर्मिण का जुद्धर्षी माई। बड़ा म वरदान पाकर बह दंड और अत्याचारी हो गया, उसने पृथ्वी को मरेट किया और उसे लेकर समुद्र की गहराइय में षला गया। अतः अब विष्णु ने ब्राह्मण का अवतार धारण किया, राजन को धमकीय बहूँवाया और पृथ्वी का उद्धार किया।

परिशिष्ट १

संस्कृत छन्दःशास्त्र

परिचय संस्कृत छन्दःशास्त्र का सबसे पहला और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ पितृव्य ऋषिप्रणीत छन्दःशास्त्र है। यह आठ अध्यायों का एक सूत्रग्रन्थ है। अग्निपुराण में भी पितृव्यऋषि पर आधारित छन्दःशास्त्र का पूर्ण विवरण है। और अनेक ग्रन्थ इसी विषय पर विश्व-विश्व विद्वानों द्वारा रचे गये हैं—उदा० बृहत्संहिता, वाणीसूत्रम्, वृत्तरचनम्, वृत्तरत्नाकरम्, वृत्तकौस्तुभौ और छन्दोमञ्जरी आदि। आगे के पृष्ठों में मुख्यतः छन्दोमञ्जरी और वृत्तरत्नाकर के आधार पर ही कुछ लिखा गया है। इस परिशिष्ट में वैदिक तथा प्राकृत छन्दों को नहीं रक्खा गया है।

संस्कृत की रचना या तो पद्य में होती है या पद्य में। काव्यरचना प्रायः इतनी ही होती है। श्लोक वा पद्य में चार चरण होते हैं जिन्हें वा ही अक्षरों की गणना से विनिर्मित किया जाता है अथवा मात्राओं की गिनती से।

पद्य या तो वृत्त होता है अथवा जानि। वृत्त एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में अक्षरों की गिनती और स्थिति के अनुसार निर्धारित किया जाता है। जानि एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में मात्राओं की गिनती के अनुसार निर्दिष्ट किया जाता है।

इन तीन प्रकारके होने हैं—(१) समव्यय—जिसमें श्लोक के चारो चरण समान हो। (२) अर्धसमव्यय—जिसमें प्रथम तृतीय और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण समान हो। (३) और विषमव्यय जिसके चारो चरण असमान हो।

अक्षर (वर्ण) एक ऐसा शब्द है जो एक मात्र में बोला जाय, अर्थात् एक स्वर, इसके साथ बाह्य एक व्यञ्जन हो, चाहे एक से अधिक और बाह्य केवल स्वर ही हो।

अक्षर (वर्ण) लघु भी होता है, पुं भी जैसा कि उसका स्वर हो ह्रस्व या दीर्घ। अ इ उ ऋ और ए ऋ ह्रस्व हैं, आ ई ऊ ऋ ए ऐ ओ औ दीर्घ हैं। परन्तु छन्दशास्त्र में ह्रस्व स्वर दीर्घ माना जाता है जबकि उनके आगे अनुस्वार या विष्णु ही, अथवा कोई सपक्षल व्यञ्जन हो, जैसे कि 'गण' का 'अ' या 'ग'। 'अ, इ, औ' इ इ इके अपवाद हैं। इनके पूर्व का स्वर वरधि एक प्रकार की

काव्यात्मक मूर्त के कारण ह्रस्व रह सकता है, उदा० कु० ७।११, वा वि० १०।१०, तथापि यहाँ पर समानोच्चको ने छन्द को छन्दःशास्त्र के सामान्य नियमों के अनुकूल बनाने के लिए सद्योचन ही प्रयुक्त किये हैं। इसी प्रकार पाठ का अन्तिम अक्षर भी छन्द की अपेक्षा के अनुकूल लघु या पुं माना जा सकता है, यह स्वयं बाह्य कुछ ही हो।

मानुस्मारकच दीर्घव्य विद्ययी च सुकर्मवत्।

वर्ण समीपपूर्वश्च तथा पादान्तप्रीत्य वा ॥

मात्राओं की गणना से निर्धारित होने वाले वृत्तों में ह्रस्व स्वर की एक मात्रा होती है, और दीर्घस्वर की दो मात्राएँ।

अक्षरों की गणना से विनिर्दिष्ट वृत्तों का माप तोन के लिए, छन्दशास्त्र के लेखकों ने आठ 'गण' (अक्षर-गण) की एक युक्ति निकाली है। प्रत्येक गण में तीन अक्षर होते हैं, वे तीनों लघु या पुं होने के कारण एक वृत्त में प्रिय होते हैं। वे गण नीचे लिखे श्लोक में बतलाये गये हैं।

मार्जुगार्जुनस्युच्यते सकारम्,

भारिगुह पुनर्गदितकृषुम्।

ओ गुम्भय्यगता रथसघ्य

सौज्जनात्तु कथिताऽननकृषुम् ॥

भादिभ-यान्मानेप धरणा यानि लाघवम्।

अवस्ता गोचर यानि वनौ तु गुहलाघवम् ॥

प्रतीकाक्षरों में अक्षरव्यय (गुह ५, लघु ५) निम्न निम्न गण निम्न प्रकार से दर्शाये जा सकते हैं—

१ १ १ लघुगण

१ १ १ लघुगण

१ १ १ लघुगण

१ १ १ लघुगण

१ १ १ लघुगण

१ १ १ लघुगण

१ १ १ लघुगण

१ १ १ लघुगण

इस प्रकार 'अ लघु' तथा 'ए लघु' का प्रयोग करना है।

विशेष प्रायेक चरण के अक्षरों (वर्णों) की गिनती व अनुसार मन्त्रण के छन्द शास्त्रियों ने वृत्तों का वर्णन कर दिया है। इन प्रकार के 'लघुवृत्तों' की गणना

अनुनास (क)

बोधियों में रखते हैं जैसे कि समवृत्तों के प्रत्येक चरण में अक्षरों की संख्या एक से लेकर छम्बीस तक पुनः-पुनः हो सकती है। इनमें से प्रत्येक बोधियों में कबू और गूब की पुनः-पुनः मिलन-मिलन स्थिति होने के कारण अक्षर वृत्तों की समाधान हो जाती है। उदाहरणतः छ. अक्षरों के प्रत्येक चरण वाली बोधियों में, (अक्षर चाहे कबू हो या गूब) समाहित संख्या $2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2$ या $2^6 = 64$ होती है, परन्तु प्रयोग में छ. वृत्त भी नहीं आते। यही बात छम्बीस अक्षर वाली बोधियों की है। वहाँ भी वृत्तों की समाहित संख्या 2^{25} या 33554432 होती है। परन्तु यदि हम अक्षरसमवृत्त या विषमवृत्तों की बात देखें तो वहाँ तो समाहित वृत्तों की विविधता अनन्त है। पिगल, लोभावली और नुतरनाकर के अतिम अन्वय में समाहित विविधताओं की संख्या, उनका स्थान, या उनकी निश्चित गणना में किसी एक छद विघ्न की विविधत जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्देश दिए गए हैं। समाहित वृत्तों के इस विस्तृत समुदाय की तुलना में कवियों द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले वृत्तों की विविधता नगण्य है। परन्तु यह नगण्य संख्या भी इतनी अधिक है कि इस परिच्छेद में नहीं रखनी जा सकती। अतः हम यहाँ निम्न क्रम में केवल उन्हीं वृत्तों का वर्णन करेंगे जो बहुत प्रयुक्त किये जाते हैं अथवा जिनका उल्लेख करना आवश्यक है।

- अनुनास (क) समवृत्त
- अनुनास (ख) अक्षरसमवृत्त
- अनुनास (ग) विषमवृत्त
- अनुनास (घ) जाति आदि

शब्द—निम्नांकित परिभाषाओं में गणा का प्रतिनिधिच्य करने वाले म म स और ल ल ग आदि शर्षोक स्वर का बहुधा वृत्त की अवस्था के कारण लोप कर दिया जाता है—उदा०—अन्नम प्रकट करता है म र म न को, इसी प्रकार 'म्या' दखाता है म य को। पहली पंक्ति में हमने वृत्त की परिभाषा दी है, दूसरी पंक्ति में मयचम और यति—विराम अर्थात् श्लोक या चरण का सस्वर पाठ करने में अर्थात् रुकना होता है और जो कि परिभाषा में कल्पकारक द्वारा संकेतित किया गया है—(प्रकाश में अक्षरों अक्षरों द्वारा) प्रकट की जाती है, फिर तीसरी पंक्ति में उदाहरण (इनमें से अधिकतर माघ, भारवि, कालिदास और बंधी की रचनाओं से लिए गए हैं)।

चार शर्षोक के चरण वाले वृत्त (प्रतिच्छेद)

कम्पा

परि० मी वेत्सव्या ।

मन्थ० ग, म

उदा० चान्दमन्था लीका मन्था ।
मन्था क्लृप्ते क्लृप्तेऽनेभ्यः ॥

पाँच शर्षोक के चरण वाले वृत्त (सुप्रतिच्छेद)

पंक्ति

परि० भूमी विधि पक्ति

मन्थ० म, ग, म

उदा० ह्यन सनाथा तनेकपंक्तिः ।
यापुनकल्पे चार चकार ॥

छः शर्षोक के चरण वाले वृत्त गायत्री

(1) समवृत्तव्या

परि० र्था वेत्सव्याम्या ।

मन्थ० ल, म ।

उदा० मृतिमुत्सोराचरवृत्तकम्पा ।
वास्ता मम चित्ते निश्च समवृत्त्या ॥
(2) विद्युन्नेशा (‘वाणी’ भी कहते हैं)

परि० विद्युन्नेशा मी मः ।

मन्थ० म, म (२, २) ।

उदा० धादोन्नी लोकोती वीनीती वी प्रीती ।
एवंते हे हे ते ये नेने देवेसे ॥ काव्य० ३।८९ ।

(3) शक्तिव्या

परि० शक्तिव्या म्यी ।

मन्थ० न, म ।

उदा० शक्तिव्यानाम बचतपनीनाम् ।
अचरनुमाभि मधुरितुरेच्छत्]
(4) लोचरात्री

परि० द्विवा लोचरात्री ।

मन्थ० य, य (2, 4) ।

उदा० हरे लोचरात्री-यना ते यः कीः ।
अन्यत्रतस्य शिरवन्त्यकारम् ॥

सात शर्षोक के चरण वाले वृत्त (उष्णिक)

(1) कुमारलता

परि० कुमारलता ज्युग्या ।

मन्थ० य, स, म (3 4) ।

उदा० मूरारितनुवल्की कुमारलक्ष्मिणा सा ।
ब्रजेचनयनाना ततान् मृदमुच्ये ॥

(2) मयल्लेखा

परि० मली स्वाग्मदलेखा ।

मण० म, स, ग (3 4) ।

उदा० रङ्गे बाहुविरुणाद् इन्दीन्द्रान्वलेखा ।
कान्ताभूमुररात्री कन्पूरोरसचर्वा ।

(3) मधुवती

परि० तनयि मधुमती ।

मण० न, न, ग (5 2) ।

उदा० रविदुहितुलट तत्रकुमुदतति ।
व्याचिन मधुवती मधुमयनमुदम् ॥

आठ वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अनुष्टुप्)

(1) अनुष्टुप्

(इसे श्लोक भा कहते हैं)

इस छन्द के अनेक भेद हैं । परन्तु त्रिसका सबसे अधिक प्रयोग होता है उसके प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं, मापाये सबसे निम्न-भिन्न । इस प्रकार प्रत्येक चरण का पाँचवाँ वर्ण तप छत्रा दीघ, तथा सातवाँ वर्ण (प्रथम तृतीय चरण का) दीघ, एवं (द्वितीय तथा चतुर्थचरण का) ह्रस्व होता है । श्लोक के पद्य गुरु जप सबर लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुष्पाद्याह्रस्व मध्यम दीघमन्वयो ॥

उदा० वासर्षाविव मृक्तेन वागर्थप्रतिपत्तये ।
इतान् पितरो बन्द पात्र गणेशेश्वरी ॥१७०॥११॥

(2) मज्जति

परि० नभलग्ना मज्जति ।

मण० न, न, ल, ग (4 4) ।

उदा० रविमुनागर्गमरे विहरता दुर्मि हृते ।
ह्रजत्रयज्जर्णामिदमाल व्यन्दन ॥

(3) प्रमायिका

परि० प्रमायिका ऋगी स्त्री ।

मण० ज, र, ल, ग (4 4) ।

उदा० गुनानु भक्तिरन्वृता मदा नृनाकि छापधया ।
शुनिर्मातृप्रमायिका भवाम्भूगतिशारिका ॥

(4) माणवक

परि० भातलगा माणवकम् ।

मण० भ, न, ल, ग, (4 4) ।

उदा० शबलपुत्र कपर्देरत्सकुले कलिपत्रम् ।
ध्याय हले मग्मृक्ष तन्दमुत्त माणवकम् ॥

(5) विद्युन्माला

परि० सा मा गा गौ विद्युन्माला ।

मण० म, म, व, ग (4 4) ।

उदा० शशीवल्की विद्युन्माला वर्धभेणो शाकश्याप ।
यन्मिप्राग्ना तापार्श्वये गोमध्यम्ब कृष्णाभ्रोद ॥

(6) सत्राणिका

परि० ग्लौ र्त्री मदानिका तु ।

मण० ग, ल, र, ज (4 4) ।

उदा० पय इष्पसादपधमरित हृत्-तडागतध ।
वी सत्राणिका पयेग मोचिताप मत्तरेण ॥

नौ वर्णों के चरण वाले वृत्त (ग्लौ)

(1) भुजगशिखुमता

परि० भुजगशिखुमता नौ म ।

मण० न न म (7 2) ।

उदा० ज्ज्वलदतिक्तशोका भुजगशिखुमता वाऽऽसीत् ।
मूर्तिपुण्ड्रित नागे ह्रजवनमुखा साऽभूत् ॥

(2) भुजङ्गनङ्गता

परि० मत्रेभूङ्गङ्गनङ्गता ।

मण० म, ज, र (3 6) ।

उदा० तन्म तत्र हृत्तिङ्गनेयमुना भुजङ्गनङ्गता ।
जयमनि बन्धुवाक्यवर्ण सदेव ता हरि ॥

(3) अविषम्य

परि० शास्त्रविषम्य चन्द्रमता ।

मण० भ, म, म (5 4) ।

उदा० शीतपलाभाभागनन्नाम्बिषम्यधोतकका ।
चित्रपदाभा नन्दपुत्राक ननते स्वेरमुञ्ज ॥

दस वर्णों के चरण वाले वृत्त (पदाक्षि)

(1) स्वरितयति

परि० स्वारितयतिच नत्रनौ ।

मण० न, ज, न, ग (5 5) ।

उदा० शरितयतिचन्द्रयतिनिरतिमता विपिनयता ।
मूर्तिपुमा रनिमुखा परिमिता प्रमदीमता ॥

(2) वल्ला

परि० श्रया मना मप्रममप्ट्या ।

मण० म, भ, व, ग (4 6) ।

उदा० पीला वल्ला मधु मधुपानी
कान्तिन्दीये तटवसकुञ्जे ।
उद्दोष्यनाईवज्जलाया
कार्यामला मधुवति चके ॥

(3) एकवल्की (कापकमाला)

परि० एकवल्की सा एव ममता ।

मण० भ, म, न, ग (5 5) ।

उदा० कापमनोवाचये परिपुट्टे
पय्य सदा कलहिषि शक्ति ।

राज्यपदे ह्यस्यविश्वारा
इत्यन्यतो विभ्यः खन्नु तस्य ॥

म्यारह् बर्णों के चरज बाळे वृत्त
(विधुधु)

(1) इन्द्रबन्धा

परि० स्वादिन्द्रबन्धा यदि तौ जगौ य ।
मन्थ० न, त, न, य, य (5 6)
उदा० गो० गिरि सव्यकरेण वृथा
रुष्टेन्द्रबन्धाहविमुक्तावृष्टी ।
यो गोकुल गोपकुल च सुख्यम्
चक्र स नो रक्षन्तु चरणायि ॥

(2) उपेन्द्रबन्धा

परि० उपेन्द्रबन्धा प्रथमं लक्षौ सा ।
मन्थ० न, त, न, य, य (5 6)
उदा० उपेन्द्रबन्धादिविगच्छटाभि-
विभूषणानां सुगिरि बभूवन् ।
म्यरागि मार्यामिणरास्यमानम्
मुग्धमूले मणिमण्डपस्थम् ॥

(3) उपजाति

परि० अन्नलोदीर्घविरक्तस्यभावी
यादौ यदीयाक्षुप्रातस्तथा ।
इत्य किञ्चान्याम्बपि विधिनाम्
बदन्ति जातिविशेषेभ्यः नाम ॥
मन्थ० जब इन्द्रबन्धा और उपेन्द्रबन्धा को एक ही स्मार्क
में मिला देते हैं ता उस उपजाति वृत्त कहते हैं ।
इसके चौदह भेद होते हैं ।
उदा० अक्षयुत्तरस्या विधि बवताया
हिमासयो नाम नगाचिराम ।
पुर्वापरौ तापनिवी बपाद्य
स्थित पृथिव्या इव मानदग्ध ॥ कु० १११ ।
दे० २, ५, ६, ७, १२, १४, १६, १८, कु० ३,
कु० १७ आदि । जब अन्य वृत्त भी एक ही स्मार्क
में मिला दिये जाते हैं ता भी उपजाति ही वृत्त
होता है । उदा० माघ कवि के निम्नलोक में
बधास्य और इन्द्रबन्धा मिला दिए गए हैं ।
इत्य रथाश्वेभनिषादिना प्रणे
गणो नृपाणाम्प तोरणाद्वाह्नि ।
प्रस्थानकालजमवेचकल्पना-
इतस्तथासोपमुर्यताभ्युत्तम् ॥ सि० १२११ ।

(4) होष्क

परि० शेषकमिच्छति यथितयादौ ।
मन्थ० म, म, य, य, य, य (6 5)
उदा० या न यदौ विपनायवचूष्य
सा रतरागमना यतमानम् ।

तत्र सहेह विभक्ति रद् स्वी
मार तरागमनायतयानम् ॥ (१०) ४१५ ।

(5) अक्षरविभक्तिम्

परि० स्त्री स्त्री न न्याद् अक्षरविभक्तिम् ।
मन्थ० य, य, न, य, य (4 7)
उदा० शीत्यं युना श्वबहिततपना
श्रीरुध्मानं दिनविह्वलनराः ।
दोषामन्य विदधति सुरत-
कीडायातथययामपटम् ॥ सि० ४१६२ ।

(6) एषोडशो

परि० राक्षरैर्नंगमं एषोडशो ।
मन्थ० ट, न, र, ल, म (3 8 या 4 7)
उदा० कौशिकेन म किन् शितीश्वरो
राधमयवर्षिवातासात्ये ।
काकपक्षधरमेत्य वाधित-
स्तेजसां हि न बय समीधपते ॥ २५० ११११ ।
दे० कु० ८ बी ।

(7) बल्लोमी

परि० बानार्थीय गथिता स्त्री ठवी य ।
मन्थ० म, य, त, ग, य (4 7)
उदा० ध्याना मुनि शयमन्यभूतस्य
शेषी भागना यदित्ता हेतुमाप्ति ।
मसाराऽस्मिन् दुर्गिन हृति वृत्ताम्
बल्लोमी पौलास्यभा-भोधिमन्थे ॥

(8) शालिनी

परि० माती यो वेष्मालिनी वेवकोर्के ।
मन्थ० य, त, त, य, य, य (4 7)
उदा० अहो हृति शालिनी विषयो
यं वतो कामय च सुते ।
मुक्ति दत्ते सर्वदोषावययाना
पुसा भडा शालिनी विभुशक्तिः ॥

(9) स्वाध्या

परि० स्वाध्या एनवेपुंश्वा य ।
मन्थ० ट, न, म, य, य (3 8)
उदा० वाचयामयतेऽथ नरेभ्यः स स्ववचस्वह्यम मीन्द्रः ।
तावदेव श्रुधिरिन्द्रविदुम् नारथेचिद्वचस्य जयाम ॥
दे० ५११ ॥
दे० कि० २, सि० १० ।

म्यारह् बर्णों के चरज बाळे वृत्त
(बन्धी)

(1) इन्द्रबन्धा

परि० तन्धेन्द्रबन्धा प्रथमाक्षरे नृती ॥
मन्थ० इन्द्रबन्धा विष्णुक बधाश्विक वा बधस्य (दे० बी०
११३१) के समान है, सिवाय इसके कि इसका
प्रथमाक्षर गृह होता है । ट, ठ, ड, न, र ।

उषा० ईश्वरानुभवात्मिनदीर्घीविति ।
पीताम्बुऽशी कषाता तपोपह् ॥
वस्त्रिन् ममज्जु शकमा इव स्वयम्
ते कसकाम्पूरुम्सा मकद्रिप ॥

(2) चन्द्रवर्त्म

परि० चन्द्रवर्त्म विगद्यन्ति रजमर्षे ।
वच० र, म, म, स (4, 8)
उषा० चन्द्रवर्त्म विहित वनतिमिरे
राजवर्त्म रहित जनयमर्षे ।
इष्टवर्त्म तदलकुह सरसे
कुञ्जवर्त्यनि हरिस्तव कुतुभी ॥

(3) ब्रह्मपरमासा

परि० ब्रह्मण्ये स्याज्जलधरमालाम्भो म्भो ।
वच० म, म, स, म (4, 8)
उषा० या मक्ताना कलिदुर्गान्जानप्ताता
तापच्छेदे ब्रह्मधरमासा नभ्या ।
भस्माकारा दिनकरपुष्पीकृ
केलीलोला हरितनूरभ्यात मा व ॥
दे० कि० ५:२३ ॥

(4) जलोद्धतगति

परि० रसैर्जतजसा जलोद्धतगति ।
वच० ज, स, ज, स (6, 6)
उषा० समीरतिधिरि शिरम्भु बलनाम्
सता जवनिका निकाममुक्तिनाम् ।
विभति जनयश्रव मृदमपा-
मपायधबला बसाहृकनती ॥ सि० ४:५५ ॥

(5) सामरस

परि० इह वद सामरसे नजदा य ।
वच० न, ज, ज, य (5, 7)
उषा० स्फुटमुषमामकरन्दमनोजम्
ब्रह्मलज्जानयनातिनिपीनम् ।
तव भुक्तसाधरसे मृशसधो
हृदयतडाग विकीसा ममास्तु ॥

(6) लोटक

परि० वद लोटकमभिषसकारयुतम् ।
वच० स, स, स, स (4, 4, 4)
उषा० स तथेति चिन्तुष्वारमते
प्रतिगृह्य वचो विससर्गे मुनिम् ।
तदलम्भपद हृदि धीकधने
प्रतिपातमिषान्तिरुमस्य मुरो ॥ रघु० ८:९१ ॥
दे० सि० ६:७१ ॥

(7) द्रुतविकल्पित

परि० द्रुतविकल्पितमाह नभो वरी ।
वच० न, म, च, र (4, 8 वा 4, 4, 4)

उषा० मुनिमुताप्रणयस्फुरिरोविना
मम च युक्तमिदं तमसा मन ।
मनसिजेने सखे प्रहरिष्यता
धनुर्ग वृत्तसारसच निवेधित ॥ स० ६ ।
दे० रघु० ९, सि० ६ श्री ।

(8) प्रया

परि० स्वर्गशरविगर्जनेभौ री प्रया ।
वच० न, म, र, र (7, 5)
उषा० ब्रह्मिदुर्भिरभोज पुष्पश्रिया-
मननुरतयेव मत्तानक ।
नरुणपरभूत स्वान रगिणा-
मननुरतये वसन्तानक ॥ सि० ६:६७ ॥
कि० ५:२१ श्री ।

(9) प्रमिताक्षरा

परि० प्रमिताक्षरा सख्यमे वधिना ।
वच० स, ज, स, स (5, 7)
उषा० विहगा कदम्बमुरभाविह या
कथयन्पुनरागमनेकलयम् ।
ध्रमयन्दीन मूर्ध्नाधमयम्,
पवनस्य धनतवनीपवन ॥ सि० ४:६७ ॥
कि० *, सि० ९ ।

(10) युष्मगप्रयास

परि० युष्मगप्रयास यमुर्मिर्कारे ।
वच० य, य, य, य (6, 6)
उषा० धनेनिकुशाना कुशाना प्रवन्ति
धनेरापद मानवा निम्नगर्भि ।
धनेभ्य रा राक्षसा नास्ति लोके
धनाभ्यत्रेयत्र धनाभ्यत्रेयध्वम् ॥

(11) क्षणिकामा

परि० यो यो क्षणिकामा छिन्ना गृह्यकम् ।
वच० न, य, न, य (6, 6)
उषा० प्रहृशामगमौली रगतापलकल्पे
जापप्रतिचिन्ता क्षाणा क्षणिकामा ।
गोविन्दपदाब्जे राजी नक्षराणा-
मान्ना मम चित्ते ज्वाल सखयन्ती ॥

(12) जालोती (पुनर्गात्री कर्तुते ई)

परि० भवति नशावध मालनी वरी ।
वच० न, ज, ज, र (5, 7)
उषा० इह कजवाभ्यन् कैलकानने
मधुरमसौर्गममारसोक्षय ।
कुमुदकृतम्बलपाह विषम-
यतिर्गण्य चम्बनि मालनी गृह्ण ॥
(13) ब्रह्मस्वधिस (शमस्य या ब्रह्मरहित)

परि० ब्रह्मस्वधिस ब्रह्मी वरी ।
वच० ज, न, ज, र (5, 7)

उदा० तथा समयत दहना मनोमयम्
पिनाकिना मयमनोरथा सती ।
निगिन्ध रूप हृदयेन पावती
विषेयु सौभाग्यकला हि चापता ॥ कु० ५११ ।
दे० रघु० ३ भी ।

(14) वैश्वदेवी

परि० बागाश्वैर्विष्णुना वैश्वदेवी मयी यी ।

गण० म, म, य, य (57)

उदा० अर्चामन्येषा त्व विद्याममराणा-
मईतेनेक विष्णुमभ्यर्चनं यस्या ।
तत्राज्ञेषामन्यैषिते प्राविनी मे
भ्रात सपत्नाराधना वैश्वदेवी ॥

(15) अग्निष्ठी

परि० कीर्तिषा चतुरैरिका अग्निष्ठी ।

गण० र, र, र, र (66)

उदा० इन्द्रनीलोपलेनेष या निदिना
दानकुम्भमदवाकइकृता वीयते ।
नम्यमेषच्छवि पीनवासा हरे-
मृतिराप्ता त्रयापारिणि अग्निष्ठी ॥

तेरह वर्षों के चरण बाडे वृत्

(अतिष्ठाती)

(1) कल्पवृक्ष (सिंहनाद वा कुटजा)

परि० मज्जया मयी च कपिन कल्पवृक्ष ।

गण० म, ज, म, म, य (76)

उदा० पयना विहायकुतुके कल्पवृक्षो
इन्द्रकायिनीकमलिनीकृतकेलि ।
जनचित्तहारिकल्पच्छातिनाद
प्रमद तनोतु त्व मन्दननुत्र ॥ दे० शि० ६।७३ ।

(2) लम्बा (बनिका और उत्पलिनी)

परि० गुणगमयतिनी लनी य लम्बा ।

गण० न, न, न, न, य (76)

उदा० इह दुर्गधिगमं किञ्चिदेगमै
मननममतर वणंयदन्तरम् ।
अमुर्धार्तिवर्णिन वेद दिग्भ्याविनम्
पुष्पमिष पर पद्यमोनि पम् ॥ कि० ५।१८।

(3) प्रह्विष्ठी

परि० श्वाशानिर्मनजरना प्रह्विष्ठीयम् ।

गण० म, म, ज, र, य (310)

उदा० दे तेषाश्चक्रकुलिशातपत्रिह्व
मन्नाजश्चरयाम् प्रसादकभ्यम् ।
प्रत्यामप्रयतिमिच्छामुनीयु चक्र
मैलिशकभ्यतमकच्छरेभुवीरम् ॥
रघु० ५।८८, दे० कि० ७, शि० ८ ।

(4) मंजुप्राग्निष्ठी (मृगजिनी, और प्रबोधिता)

परि० सवसा ययी च यदि मंजुप्राग्निष्ठी ।

गण० स, ज, स, ज, य (67)

उदा० यमुनामतीतमेष मंजुप्राग्निष्ठी
तपसस्तनुज इति माधुन्योत्थे ।
स वदाऽबलनिजपुत्रद्विजनाम्
नृपतेस्तदादि समचारि वानर्या ॥ शि० १३।१ ।

(5) वलचम्पूरी

परि० वेदैरभ्रंशो यस्या मनमयूरम् ।

गण० य, त, य, स, य (49)

उदा० वृष्ट्या दद्यान्त्याचरनीयोनि विद्याय
पञ्जाकारो याति पद मुक्तमपामे ।
सन्मयवृष्टिस्तस्य पर यद्यति यन्मन्त्रम्
यश्चापास्ते मायु विषेय त विचने ॥ कि० १८।
०८, शि० ४।४४, ६।७६, रघु० १।७५ ।

(6) श्विषा (प्रभावती)

परि० जगो सजी गिति श्विषा चतुर्धरे ।

गण० ज, ज, स, ज, य (49)

उदा० कदा मूष वरतुम् कारणादुते
तत्रागत जगमयि कोरपात्रताम् ।
अपर्वीय धृक्कतुभ्युपयुष्मता
विभाजरो कश्च कश्च अग्निष्ठी ॥ मालवि० ५।१२ ।
दे० मट्टि० १।१, शि० १७ ।

चौदह वर्षों के चरण बाडे वृत्

(अव्ययी)

(1) अवराक्षिता

परि० ननरसलभुगं स्वरेरपगजिता ।

गण० न, न, र, स, स, य (77)

उदा० यदनवधि मूषप्रतापकृताम्पदा
यदुनिषयचम्पु परैरपरजिता ।
व्यजयत ममरेसमस्तरिपुञ्जम्
स त्रयति जगता गतिर्यदकम्पञ्च ॥

(2) अलंबाया

परि० म्नी म्नी गावजघह्विरितिरसबाया ।

गण० म, न, न, म, य, य (59)

उदा० बोवांमी येन ज्वलति रजयद्याम् शिप्रे
द्वैयेन्द्रे जाता वरधिगिषमलंबाया ।
धर्मस्तिरस्यै प्रकटिततनुमन्मन्त्र-
नाधना बाधा प्रशययतु स कमारि ॥

(3) वष्वा (मजरी)

परि० सजसा यती च सतु येन पष्वा मता ।

गण० स, ज, स, य, ज, य (59)

उदा० स्वययन्त्यम् धमिषतचातकतस्वर
अकदास्तबिपुलिशकानकासंस्वरा ।
जगदीरिह् सुकुरितवाव वामीकरा
सविभु स्वच्छि कपिधयानि चामीकरा ॥

(4) प्रमदा (कुर्गीला)

परि० नञप्रमदा गुरुवच भवति प्रमदा ।
 मण० न, अ, भ, ज, ल, ग (6 8)
 उदा० अन्तिचिरोन्मिदस्य अन्वेत चि-
 न्चितबहुबुदुदस्य पपयोःनुकुनिम् ।
 चिरन्तिकोन्मिदस्य सकला-
 मिह विदधाति घोनकनचोतमरी ॥ मि० ८।४१ ॥

(5) प्रहरणकालिका

परि० तनघनलगिति प्रहरणकालिका ।
 मण० न, न, अ, न, ल, ग (7 7)
 उदा० व्यथयति कुमुमप्रहरणकालिका
 प्रमदवनभवा तव धनुषि तदा ।
 चिद्विषिपदि मे शरणमिह नतो
 मधुधनतुषमरमचिरनम् ॥

(6) मधुधनामा (हनस्येनी या कुटिल)

परि० मधुधनामायादविरमा मयो म्यो मी ।
 मण० म, भ, न, य, ग, ग (4 10)
 उदा० नीनोन्वाय मधुधनामिन्मरमेक-
 रानीलाभिविराचिनपभागा रत्ने ।
 ज्योत्स्नाया ह्यमिह चितरति हृतस्येनी
 मध्येऽप्यङ्ग स्फटिकरजतभित्तिधराया ॥
 मि० ५।३१ ॥

(7) वसन्तलिलका

(वसन्तलिलक, उद्धविषी या मित्राजना)
 परि० उक्ता वसन्तलिलका तमजा जगो ग ।
 मण० न, न, ज, अ, ग, ग (8 6)
 उदा० वायंरुनोन्मिदशिवर परिशेषघोना-
 दाविक्रुनारुषयुग सर एकताऽक ।
 तेजाऽप्यस्य युवायद् अथमाशुवाभ्या
 लोको नियम्येत इवाऽभदमान्नेव ॥ म० ५।१ ॥

(8) बासनी

परि० भातो नो मां नो यदि मदिना वामन्तोयम् ।
 मण० म, न, न, म, ग, ग (4 6 4)
 उदा० भ्राम्यद्भ्रुङ्गो निर्भरमपराकायाद्भ्रुङ्गो
 शीलपङ्कडाद्भ्रुङ्गो भूतपवर्भवेऽन्तोना ।
 नोलाशोना पञ्चवचिलमपञ्चोन्मासं
 कमागानी नृत्यति मद्भुनी बासनीयम् ॥
 पन्द्रह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अतिशब्दरी)

(1) वृषक

परि० वृषक सनादिका पदद्वय विनातिशम् ।
 मण० र, ज, र, ज, र (4 4 4 3 या 7 8)
 उदा० मा सुवर्गकेलक विकाशि म्भुङ्गुरितम्
 पञ्चवागवापत्राळपुर्णोऽनूपकम् ।

राधिका विनकयं माधवाद्य प्रति माधवे
 माहमेति निर्भर न्वया विना कलाविषे ॥

(2) शालिनी

परि० तनमयवयनेय शालिनी शींगिणाके ।
 मण० न, न, म, य, र (8 7)
 उदा० शङ्गिनमयवनेय शीमरी मेघमुक्कम
 जलनिधिमन्त्रा जह मुक्क्यावः ॥
 इति सममृगयामश्रीनमस्तत्र पौरा
 श्रवणस्तृ नृणाणामेकवाच विवद् ॥ २५० ६।८५ ॥

(3) लौलाशेल

परि० लक्ष्मणो विष्णुमालावादी चन्मालाशेल ।
 मण० म, म, म, म, म
 उदा० मा कान्ते पञ्चम्याने पर्याकरो देवे स्वार्थं,
 कान्ते वनत वृत्तं पुनं कष्ट मन्वा लषी वन ।
 लुभाम प्राटवनेदवेना ग्नु कृत् प्राधान
 तन्मादावन्त हर्षम्याने शरपेकान् कर्त्तव्या ॥
 मरम्बनी०

(4) शशिपला

परि० मुनीनचनमनलपुत्रि शशिपला ।
 मण० न, न, न, न, म (अनियम का छाऽ वर मव रः)
 उदा० मलयजतिलकमन्दीराशशिपला
 इत्यमभिलम्बदलिक गगनतना ।
 मगंशत्रयचनहृदयभित्तिनिधि
 अतनून चितरतमम रित्तात्म ॥

सोलह वर्णों के चरण वाले वृत्त

(अष्टि)

(1) चित्र

परि० चित्रसर्गोत्तम रजो रजो रजो च वृत्तम् ।
 मण० र, ज, र, ज, र ग (8 8 या 4 4 4 4)
 उदा० विदुमाहावापरोऽष्टाभिरेषुकाचहृष्ट-
 वन्मवीजनः प्रमदप्रानदपथऽष्टका ह्नु ।
 न्वा मयं वामुदेव पुष्पलजऽपरा देव
 वन्यपुष्पिचकैस मन्मरामि मापसे ॥

(2) वरुचकाजर

परि० प्रमदिका पदद्वय इदिति पञ्चवामरम् ।
 (जरी जरी लता जरी च पञ्चवामर वदेत्)
 मण० न, र, ४, र, ज, ग (8 8 या 4 4 4 4)
 उदा० मुरदमलमपश्ये विशिष्यन्मन्दिने
 मरुडितानममुक्ति सलीलाभि पञ्चवामरम् ।
 मुरागनाभमन्वीररुपञ्चवामर—
 मुराग्वीररीति मदाभ्यन् भजाति तम ॥

(3) शालिनी

परि० नञप्रमदंदा भवति शालिनी मद्भुनी ।
 मण० न, न, अ, ज, र, ग ।

उदा० म्कुन्तु यमाननेऽथ ननु शक्ति नोतिरग्यम्
ननु चरुप्रसादपरिष्कारक कश्चिद्वत् ।
अवब्रजगतिरात्कर्मणाम् म्कुन्तुम्
यननमह स्वर्गं स्वर्गचरिणं स्वर्गानि जित्वायु ॥

सत्रह शर्षों के चरण बाडे वृत्त

(अपठित्)

(1) चिचलेका (अग्निदायिनी)

परि० समजा अथाग य दिह्स्वरेऽंबेति चिचलेका ।
गण० म, म, अ, भ, अ, म, ग (10 7)
उदा० इति पीनदुर्गप्रमथगन्तु सरणि मउजनेन
प्रयमानवगाः सिधायिनी मयमथायमन ।
अचलासा तर्देव यादवानान्द्वारिगयो
सिधायिनीचिचलेकायां ततिषु मवमुदीये ॥
शि० ८१०१ ।

(2) गर्दक (कोकिलक)

परि० परि भवना नजी भजजना मूढ नदटकम् ।
गण० न, अ, म, अ, म, ग, ग (8 9)
उदा० नक्षत्रमालीमबहुलोप्रमदद्वयधरा
सिधायिनीमोऽथाबधतनुनवारिचका ।
अथमन्त्राकषेयमधुना हुरिहेतिमती-
मंदकमनाऽकटककलेर्मन्त्रा ककुभ ॥
शा० १११८, ८०५१३१ ।

(3) पुष्पी

परि० जसौ प्रतयला बभुवहृत्तिवच पुष्पी मूढ ।
गण० अ, म, अ, म, ग, ग, ग (8 9)
उदा० इत स्वर्पति केजाव कुम्भितस्त्रीवशिवा-
मितवच लग्नाधिने सिधायिनी मया संरटे ।
इतोऽपि बहवामन मह सम्यनवर्तकै-
रदो विननमुक्ति मरसह च सिधोर्षेणु ॥
मर्ण० २१०५ ।

(4) कलाकाला

परि० मन्दाभात्याम्बुधिरमनसो नती नौ गव्यम् ।
गण० म, अ, न, न, न, ग, ग (4 6 7)
उदा० गापी भर्गुविराहिवररा कांनविन्वीचराजी
उत्पलेव स्वम्भिनकवनी नि वसन्ती सिधायिनी ।
अवैवाग्ने मरुतिरुगिति ध्रानिहृतीतहवी
तसका गेह श्रदिनि यन्नामम्बुधुम्बु कषाम ॥
पदाङ्क० १ ।
[समग्र मचतुत इसी वृत्त में लिखा गया है]

(5) बंधावपति

परि० दिह्मनिबधायपतिभ भरनमनने ।
गण० अ, र, न, अ, न, ग, ग (10 7)
उदा० दर्पनिर्मलानु पतिने धननिभिरुध्मि
ग्यानिधि रोयभित्तिषु पुर प्रतिफलति मूढ ।

श्रीरामसुखोऽपि रमर्षेऽपहवसनना
काञ्चनकन्दरामु नक्षोर्गिह नयनि रधि ॥

शि० ४१६५

(6) सिधायिनी

परि० रसे इतिचिन्ना यमनमन्ना ग सिधायिनी ।
गण० य, म, न, अ, म, ग, ग (6 11)
उदा० दिगन्ते श्रुपन्ते मयमकिनगडा करटिन
कश्चिन्ना काक्यात्पदममगीला, मनु मया ।
इदानी श्लोकेऽस्मिन्नपमशिशाना पुनरग्यम्
नखाना पाण्डित्य प्रकटयन्तु कस्मिन् मयपति ॥
भासि० ११२ ।

(7) हुरिची

परि० नक्षत्रमन्नाम बद्धवेदेऽपहुरिची मया ।
गण० न, अ, म, र, अ, म, ग (6 4 7)
उदा० मनुनु हृदयान्त्रयादेवस्थानीकमर्षेणु ते
किमपि मनस मनोहो मे तरा मन्बालयूत् ।
प्रकल्पमसाधेयथाया श्रुषेणु हि कृणव
अथमपि शिरस्वन्ध क्षिपता धनोऽवहित्तिहृया ॥
श० ७१२४ ।

अठारह शर्षों के चरण बाडे वृत्त

(पुति)

(1) कुमुदितलाधेहिस्ता

परि० स्वाधुवृत्तन्वर्षे, कुमुदितलाधेहिस्ता न्ती नवी पी ।
गण० म, अ, न, अ, म, ग, ग (5 6 7)
उदा० कीडकाऽम्बोलीकिलनहरीवारिधिरदिशिवाधे
धारीः संकाञ्जु कुमुदितलाधेहिस्ता मन्त्रमन्त्रम् ।
मूङ्गालीपीतेः किलमयकोऽस्मात्तिरित्येकस्मीम्
तन्नाया वेतोः मसतरक चकनाधेयवदार ॥

(2) चिचलेका

परि० मन्दाभात्या नपरकचुपटा कीतिता चिचलेका ।
गण० म, अ, न, अ, म, ग, ग (4 7 7)
उदा० मङ्गुम्भिनम्, अथानि मूढवदां तारक्य वशाही-
वाङ्गुम्भेव इममुपति इथा वसता सा अथाधि ।
नेतावृक्षेषु कचमुषधिमृतामन्त्रेयाभ्युत्तव
शीर्षं तस्या नयनदुग्धमपुष्पिचकैकान्तुतायाम् ।

(3) मन्ध

परि० मन्धचरैस्तु रेफाहितैः सिधैर्हर्षेण्वन्धम् ।
गण० न, अ, अ, अ, र, र (11 7)
उदा० तरणिसुतातरङ्गपन्ने लमीजनाध्वोहितम्
मधुरिपुषावपकवरज सुदुत्पवीततम् ।
मूर्हुरावचधेऽपिऽकलाकलापस्यारकम्,
क्षितिलकान्धन् इव सले मुक्ताय धृत्वावधम् ॥

(4) मारण

परि० इह नपरकमुक्कण्ट नु मारणमामने ।
गण० न, म, र, र, र, र, र (8 5 5)

उदा० रघुपतिरपि आतयेवो विभुर्वा प्रभुः क्विभाम्
 पियसुवृदि विभीषणे संभवस्य विभं वैरिचः ।
 रघिसुतसहितेन तेनाभ्यातः सतीविषया
 भुवविभितविमानरत्नाविषयः प्रतप्ते पुरीम् ॥
 रघु० १२।१००

(5) सार्वलोकिकता

परि० म सो ज सता विनेषः क्षुतिः सार्वलोकिकतम् ।
 मन्० म, स, ज, स, त, स, (12 6.)
 उदा० कृत्वाकसमूने पराश्रमविषि सार्वलोकिकतम्
 मन्त्रके क्षितिभारकारिषु दर र्षैश्चमृतिषु ।
 सतोष परम तु वैशमिर्हो मेलोष्मश्चरन्, ॥
 श्रेयो न स ततोत्पारमहिवा सज्जीविषयत ॥

उत्तरीस वर्णों के चरण बाडे हूत
 (अतिभृति)

(1) मेघविष्कम्भिता

परि० रत्नसंबंधं भोनी रघुपुत्रो मेघविष्कम्भिता स्यात् ।
 मन्० म, न, स, र, र, म (6 6 7)
 उदा० कदम्बामोदाहया विपिनपवन केरुन, कान्तकेका
 विनिद्रा कन्दको दिशि विशि मुषा दर्शु इत्यनारा ।
 निशा नृप्यद्विषुद्विसितलसन्नेवविष्कम्भिता चेत्
 प्रिय स्वाधीनोऽप्री दनुजदलनो
 राज्यमस्मात् किमन्य ॥

(2) सार्वल विष्कीलित

परि० सूर्यासंबंधि म सती सततया सार्वलविष्कीलितम् ।
 मन्० म, स, ज, स, त, स, (12 7)
 उदा० वेदान्तेषु यमाहुरेकमुल्ल व्याप्य स्थित रोदती
 यस्मिन्प्रोत्तर इत्यनन्यविषय सज्जो मवाशर ।
 अन्तर्बन्ध मृषसुनिमित्तमितप्रार्थदिविभूष्यते
 स स्थापु स्थिरभक्तिपयोगमुलभो नि श्वेच्छावास्तु च ॥
 वि० १।१।

(3) मुषधरा

परि० श्री भो गो नो मुषधरे इय क्षुण्णसंज्ञता मुषधरा ॥
 मन्० म, र, म, न, म न, म (7 6 6)
 उदा० वेदाधीनु प्राकृतस्य वदति न च ते विष्ठा निपतिता
 मन्धाहू वीजैःसंज्ञे न तत्र सहजा दृष्टिविचक्षिता ।
 बीप्यानी पाणिमत्त क्षिपसि स च ते
 दग्धो मरति नो
 बारिप्याम्बावदत्त चलयति न ते देह हृदि मू ॥
 मूच्छ० १।२१।

(4) सुरता

परि० श्री मी यो नो मुषधरे स्वर्भुविकरचौराह मुस्ताम् ।
 मन्० म, र, म, न, म, न, म (7 7 5)
 उदा० कायकीशासतुल्लो मधुमयसमारम्भरजसात्
 कालिन्दीकूलकुजे विहरणकुडकाङ्कट्टहृदयम् ।

भोविन्दो बलनीमामचरत्समुषां प्राप्य मुस्ताम्
 बाहुं पीयूषपातै प्रभुःकृतमुषं व्यस्तवती ॥

बीस वर्णों के चरण बाडे हूत
 (कृति)

(1) नीतिकम

परि० सवजा नरो जन्मा यदा कथिता तदा मल नीतिका ।
 मन्० स, ज, म, ज, र, स, म, ग (5 7 8)
 उदा० करतासचञ्चलक कुमालसन्निभधेन यनोरया
 रमणीयेशेनिनादरीज्जुमसमयेन मुक्तावहा ।
 बहलानुरागनिवासरासलम्पुका यवरागिलम्
 विदधी हरि जम् बल्लभोजनचाप धामरनीतिका ॥

(2) सुषवना

परि० श्रेया ललासचक्षुर्भिरभजनयता श्रेयी न मुषवना ।
 मन्० म, र, म, न, म, ज, ल, म (7 7 6)
 उदा० उतु ज्ञानु ज्ञकृष्णं सूतमदस्यमिता प्रत्यग्दिनकिलम्
 दयाभा श्यामापकट्टुमयमिसुखरा कल्पोनमुषवरम् ।
 कोन क्षातावर्षादिभट्टमुषवनेन कर्मादिनगटा
 शीघ्र विन्युग्धोभा मय गजवनेन पास्वलि गतया ॥
 मृदा० १।१६ ॥

इकडीस वर्णों के चरण बाडे हूत
 (अकृति)

(१) पञ्चकावली (नरती, धनयो)

परि० नखनना श्री नरपते कथिता भूषि पञ्चकावली ।
 मन्० न, म, म, ज, ज, म, र (7 7 7)
 उदा० नुरागनाकुम्भ परित परमेस्वर जूजन्मन
 प्रमथितभूभुन प्रथिपच यविनस्य भूष महीभ्रता ।
 पञ्चकावली इवानुभवस्य पुत्र मदन पुर्णधय-
 चिन्तागलिनिको जन्नेनेषेच तदाऽभवदन्तर महत् ॥
 सि० ३।८० ॥

(2) अम्बरा

परि० अम्बराता नयेन विम्विनिवता अम्बरा
 बीनियेपम् ।
 मन्० म, र, म न म, म, म (7 7 7)
 उदा० या मृष्टि अष्टरुगा बहनि विविहृत
 या हरिषो च शंभी
 यं दे कान विषम भुनविषयाम्ना
 या स्थिता व्याप्य विषयम् ।
 यामातु सर्वभूतप्रकृतिरिति यदा शक्तिन प्राणबन्ध
 प्रयथानि प्रयच्छन्नुपरिभवन् अस्माभिःश्रष्टाभिरीत् ॥
 म० १।१।

सार्हस वर्णों के चरण बाडे हूत
 (आकृति)

हृत्ती

परि० श्री गी ताश्चकारो गो गो
 वधुभवनवतिरिति भवति हृती ।

मृगयन्निगमैः सम स्थिता
ब्रजब्रजिता वृत्तचित्तिप्रथमा ॥

(2) उपचित्र

- परि० विषये यदि ही सलया दले
भौ युजिभाद् वृत्तकावुपचित्रम् ।
गण० स, स, ल, ग (विषय चरण)
भ, भ, भ, ग, ग (सम चरण)
उदा० मुरवेरिवपुस्तानुता मुद
हेमनिभागुकचन्दनलिप्यम् ।
गगन भाग्यामिलित यथा
शास्वदनीरघरेष्वाचित्रम् ॥

(3) पुष्पिताषा (औपच्छन्दसिक)

- परि० अयुजि नयुगरेफतो यकारो
युजि नु नयो जरापाव्य पुष्पिताषा ।
गण० न, न, र, य (विषय चरण)
न, ज, अ, र, ग (सम चरण)
उदा० जय मदनवधस्यन्दनान्
अस्तनकृता परिपालयाब्रभुव ।
दाशिन इव दिवातनस्य लेखा
किरणपरिधयचरणा प्रदोषम् ॥ कु० ४।६६ ।

(4) शिबोमिनी (बैतालीय या मुन्दरी)

- परि० विषये सजया गृह सम
सभगा लाज्य गृह शिबोमिनी ।
गण० स, स, ज, य (विषय चरण)
स, भ, र, ल, ग (सम चरण)
उदा० सहसा शिबधीत न श्मिा-
मविवेक परमापदा पदम् ।

मृगते हि विमृगयकारिणम्
मृगलुब्धा स्वयमेव सपद ॥ कि० २।३० ।

(5) शेषवती

- परि० मयगात् समुक्त विषये वेदु
भावेहू शेषवती युजि भावुपी ।
गण० म, स, म, ग (विषय चरण)
भ, भ, भ, ग, ग (सम चरण)
उदा० म्मरशेषवती ब्रजगमा
कंगववशरबैरतिमुग्धा ।
रभसान्ति गुरुन् मधयन्ती
केमिनिकुञ्जगुहाय जगाम ॥

(6) हरिचम्पूता

- परि० मयगात्सलम् विषये गुरु-
पंजि नभो भाकी हरिचम्पूता ।
गण० स, स, स, ल, ग (विषय चरण)
न, भ, भ, र (सम चरण)
उदा० म्फुट्पेनचया हरिचम्पूता
बलिमनाज्जनाटा नरणे मुता ।
सकलमयुज्यागव शांतिनी
विदग्ना हरणि स्म हरेयेन ॥

विशे० अपरबबन या औपच्छन्दसिक बीर बैतालीय या
विद्यामिनी प्राय श्वाति समस्त जाते हैं (३० अनु-
भाग प) । पान्नु कवी कभी मधयोजना में उनकी
परिभाषा दी जाती है, इसी लिए वे यहाँ मृगो के
अन्तर्गत द दिये गये हैं ।

अनुभाग (ग)

विषयवृत्त (असमवृत्त)

इस श्रेणी के अन्तर्गत उच्चता अर्थात्

सामान्य वृत्त कहलाता है ।

- परि० प्रथमे सजौ यदि सतौ च
नसबम् कृताभ्यन्तरम् ।
यथाच मनबलमा स्यरथो
सजसा अगो च नवतीयमुच्चता ॥
गण० स, ज, म, ल (प्रथम चरण)
न, स, ज, ग (द्वितीय चरण)
भ, न, ज, ल, ग (तृतीय चरण)
स, ज, स, ज, ग (चतुर्थ चरण)
उदा० सव दासवस्य वचनेन
शचिरवदनस्त्रिलोचनम् ।

कलान्तरहिनमधिराशयितुम्

विधिवत्तापसि विद्येते चनयव ॥ कि० १२।१ ।

दे० सि० १५ श्री ।

उच्चता का एक और भेद बताया जाता
है जिसके तृतीय चरण में म, न, ज, ल, ग के
स्थान में य, न, भ, ग होते हैं । वृत्तो के
अन्य भेद जिनमें प्रत्येक चरणों के अक्षरों की संख्या
भिन्न-भिन्न होती है, 'पाषा' के सामान्यवृत्तों के
अन्तर्गत बताये हैं । पाषा में भिन्न चरणों की
संख्या बाने बाने के लिए भी यही नाम व्यवहृत
होता है । जहाँ तक 'उच्चतापसि' का संबंध है वे
किसी भी निर्धारित वृत्त के दो या दो से अधिक
चरणों को मिला कर अक्षरसम्पन्न या विषयवृत्त
बना लिए जाते हैं ।

अनुवाक (घ)

शक्ति

(यह छन्द मात्राओं की संख्या से चिन्तयमित किये जाते हैं) ।

(अ) इस प्रकार के वृत्तों की अत्यन्त सामान्य प्रकार 'आर्या' हैं। इसके नीचे अत्रान्तर जेद बताये जाते हैं।

पञ्चा विपुला चपला मुखचपला अवनचपला च ।
गीर्वाणगीर्वाणगीतव आर्यागीर्वाणिवैच आर्याया ॥
इन नौ जेदों में से अन्तिम चार प्रकार ही प्रायः प्रयुक्त होते हैं, इनीके लिए इनका उल्लेख किया जाता है ।

(1) आर्या

परि० पञ्चा पादे प्रथमे द्वारसमात्रालसा तृतीयोऽपि ।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थे पञ्चदश सार्या ॥ ध्रु० ४ ।
इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ होती हैं (ह्रस्व स्वर की एक मात्रा तथा दीर्घ की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं) । दूसरे चरण में अठारह तथा चौथे चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं ।

उदा० प्रतिपक्षेणापि पति सेवन्ते भर्तृवत्सला माध्यम ।
अन्यमन्तिना जगन्नि हि सद्युष्टा प्रापन्नयस्विभम् ॥
मातृवि० ५।१९ ।

गोवर्धन की समस्त 'आर्यासप्तशतौ' इसी छन्द में लिखी गई हैं ।

(2) शीति

परि० आर्यापूर्वांशेऽयम् द्वितीयमपि यदाति यत्र तस्यने ।
छन्दोविदालदानो शीति नाममृतवाणि भावन् ॥
इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ, और दूसरे तथा चौथे चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं ।

उदा० पाटीर तव पटीयाम् क परिपाटोभिमामूरीकर्मम् ।
यन्त्यवतामपि नृणा पिष्टोऽपि ननापि परिममे
पुष्टिम् ॥ भावि० १।१२ ।

(3) उपवीति

परि० आर्यालराधंतुल्य प्रथमांशमपि प्रयुक्त वेत् ।
कारिनि तामुच्यतेति प्रतिभायन्ते महाकथय ॥
ध्रु० ६ ।

इस छन्द के प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ, और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं ।

उदा० तन्वीपुत्रुन्दरीणा राक्षोस्त्रामे मुरारातिम् ।
अस्वारयदुष्कीर्तिः स्वर्गदुरज्ञोदुष्ठा गीते ॥

(4) उच्यवीति

परि० आर्यासकलदिवय विपरीते पुनरिहोऽपीतिः ।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ होती हैं, द्वितीय चरण में पन्द्रह तथा चतुर्थ चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं ।

उदा० नारायणस्य सन्ततमुष्णीतिः सस्वृतिमन्वया ।
अर्चनामासक्तिवृत्तरक्षारक्षारं तरणि ॥

(5) आर्याशीति

परि० आर्या प्रायस्कान्तेऽधिकतनुः सादृक् परार्थमन्वीतिः ।
इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में बीस मात्राएँ होती हैं ।

उदा० सद्युक्ता मुक्तिनोऽस्मिन्नवत्तमन्वरागतान्मदुक् ।
नादेकन्ते रससन्नवत्तमन्वरागतान्मदुक् ॥
सि० ४।११ ।

श्लोक - यह पाँचों जेद कभी कभी लक्ष्योजना में भी परिभाषित किये जाते हैं ।

(आ) शैतलीय

परि० वद्विषमंशोऽपि कदास्तावच सने स्थनीं
निगन्तरा ।

न सयाऽथ परायिता कला शैतलीयेऽन्ते गती गुरु ॥
यह चार चरण का श्लोक है । इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में चौदह तथा आठवाँ चरण में सोलह मात्राओं का, पुनः प्रथम तथा तृतीय चरण में छ मात्राएँ हानी चाहिए। द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में आठ मात्राएँ और उसके पश्चात् रगण (5:5) तथा लघु गुरु (1:5) होने चाहिए। आगे नियम इस बात की अपेक्षा करते हैं कि सप्त चरणों में सभी मात्राएँ ह्रस्व या दीर्घ नहीं होनी चाहिएं, इसके अतिरिक्त प्रत्येक सप्त चरण की (अर्थात् द्वितीय, चतुर्थ तथा छठा चरण) मात्राएँ अल्पे चरणों (अर्थात् तृतीय, पंचम और सप्तम) से सम्युक्त नहीं होनी चाहिएं ।

उदा० कुशल लघु तुभ्यमेव लघु
अवन कृष्ण यदम्बयामहम् ।
उपदेशपरा परेष्वपि
स्वाविनाशापिभलेषु साधवः ॥ सि० १६।४१ ।

(इ) शीपकण्वीय

परि० पर्यन्ते यी तर्धेन शेषशीपकण्वीयस्य सुधीभिदकतम् ।
यह शैतलीय के समान ही है । इसमें श्लोक चरण के अन्त में रगण और क, ग के स्थान में रगण और गगण होने चाहिएं। दूसरे शब्दों में यह शैतलीय ही है, इसमें केवल प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु बोधा हुआ है ।

उदा० अनुपा परलेख नृषराभास्य सद्यन्वयप्राप्तम विभेदे ।
नृषयाद् विभोक्त्वाचकार त्विररसंभेदोऽनुब

महेन्द्रसूनु ॥

कि० १३।१ ।

इसी प्रकार इसी लर्ष के अगले भागम वलोक
में । दे० वि० २० भी ।

यह बात ध्यान में रखने की है कि विद्योपिनी
वा सदरी तथा अपरवचन, वैतालीय की ही विद्यो-
उत्पत्ति है, और पुष्पिताया तथा मातृमारिणी, औप-
प्लव्यविक की । अन्य-शास्त्री वृत्तों की इन दोनों
श्रेणियों का प्रतिपादन मन्वयोचिता तथा मात्रा
बोधना दोनों स्वार्थों पर करते हैं । इसीलिए यह
यहाँ भी दर्शाये गये हैं और अनुभाग (ग) में भी ।

(६) मात्रासम्बन्ध

मात्रासम्बन्ध वृत्त में चार चरण होते हैं, और
प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ । इसके अत्यन्त
साधारण प्रकार में नवौं वर्ष लघु और अन्तिम नवौं
दीर्घ होता है । इसको परिभाषा की है मात्रा-
सम्बन्ध मन्वोऽन्वयः ।

परन्तु मात्राबोध के ह्रस्व या दीर्घ होने के
कारण इस वृत्त के अनेक भेद हो जाते हैं । उदा-

हरण के रूप में, यदि नवौं तथा बारहवाँ वर्ष लघु
हैं, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं, तो चार वर्ष
एच्छिक हैं, तो यह वृत्त मालवसिका कहलाता
है । यदि पाँचवाँ, आठवाँ तथा नवौं ह्रस्व हैं,
और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं तो यह वृत्त
चित्रा कहलाता है । यदि पाँचवाँ और आठवाँ
वर्ष ह्रस्व हैं, नवौं, दसवाँ, पन्द्रहवाँ और सोलहवाँ
दीर्घ हैं तो यह उपचित्रा कहलाता है । यदि
पाँचवाँ, आठवाँ और बारहवाँ ह्रस्व हैं, पन्द्रहवाँ
तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं, तथा सात अतिचित्रा है, तो
यह विश्लोक कहलाता है । कभी कभी एक ही
श्लोक में इन वृत्तों के दो या दो से अधिक भेद
मिला दिये जाते हैं, उस अवस्था में हम उसे पञ्चा-
कुलक वृत्त कहते हैं, उसमें कोई विशेष प्रतिबन्ध
भी नहीं रहता है, केवल प्रत्येक चरण में सोलह
मात्राया का होना आवश्यक है ।

उदा० मूढ जहीहि वनालयतुष्पा

कुच तनुदुद्धे मनसि वितुष्पाम् ॥

दत्तत्रयम निजकर्मोपास

वित्त तेन विनोदय चित्तम् ॥

मोह० १

परिशिष्ट २

संस्कृत के प्रसिद्ध लेखकों का एक यादिक

भाष्यम् एक प्रसिद्ध उपनिषद्, कर्मकाण्ड ४०६ ई० ।

उद्भट—अनकारशास्त्र का एक प्राचीन लेखक । यह काशी के राजा जयपीठ की राज्यसभा का मुख्य पंडित था । इसका काल ७७९ से ८१३ ई० तक है ।

कम्बट पतञ्जलि महाभाष्य पर भाष्यप्रदीप नामक टीका का रचयिता । डाक्टर बुद्धर के मतानुसार यह तेरहवीं शताब्दी से पूर्व नहीं हुआ था ।

कन्हन राजतरंगिणी नामक राजाओं के इतिहास की प्रसिद्ध पुस्तक का रचयिता । यह काशी के राजा जयसिंह का, विमाने ११०९ से ११५० ई० तक राज्य किया मलकापीन था ।

कालिदास—अभिज्ञान शाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालवि-कामिनीय, मृचकटा, कुमारसम्भव, मेघदूत और शत्रु-घट्टा का रचयिता । इसके अतिरिक्त 'नसोषध' तथा अन्य कई छोटे-छोटे काव्यों के रचयिता । कालिदास का मगध प्रदेश अधिष्ठान उल्लेख हमें ६३४ ई० (नन्दसम्राज ५५६ सालों) के शिलालेख में मिलता है । इसमें कालिदास और माणिक्य दोनों को प्रसिद्ध कवि बनवाया गया है । श्लोक यह है—

यथायोषि न वेद्यम्
मिदमर्षाधिकी विवेकना जिनवेद्यम् ।
न विजयता यिकीति
कविनाभिन्कानिकासभारविकीति ॥

इन्हें बरिच के आरम्भ में बाण ने कालिदास का उल्लेख किया है । इसने प्रतीत होता है कि कालिदास बाण से पहले अर्थात् सातवीं शताब्दी के पूर्वर्षि में पहले हुआ था । परन्तु सातवीं शताब्दी से हितना पुत्र इस बात का अभी तक पता नहीं लग सका । मेघदूत के चौदहवें श्लोक की व्याख्या करते हुए मल्लिनाथ ने तिबुल और दिङ्नाय को कालिदास का मयकापीन बताया है । यदि मल्लिनाथ के इस सुझाव को ग्रहण की सत्यता में पूरा-पूरा सन्देह है, नहीं मान लिया जाय तो हमारा कवि कालिदास अवश्य ही छठी शताब्दी के मध्य में रहा होगा । यही काल दिङ्नाय का माना जाता है ।

ए६ बाण और है, यदि इसका ठीक निर्णय हो जाय तो कवि के कर्मकाण्ड का सही ज्ञान हो जाय । यह बात है कालिदास द्वारा अपने अभिभावक के रूप में विक्रम का उल्लेख । यह कौन सा विक्रम है, इस

बात का अभी बुरी तरह निर्णय नहीं हो पाया है । प्रसिद्ध परंपरा के अनुसार यह विक्रम सम्वत् का जो ईसा से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ, प्रवर्तक था । यदि इस विचार को सही समझा जाय तो कालिदास विक्रम ही ईसा से पूर्व पहली शताब्दी में हुआ होगा । परन्तु कुछ विद्वान् अभी इस परिभाषा पर पूर्ण हैं कि कितने ही विक्रम सम्वत् (ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) पड़ते हैं वह कौकर के महापुत्र के काक के आचार पर क्या है । इस युद्ध में विक्रम ने ५४४ ई० में मेघस्था की पराजित किया था । और उस समय ६०० वर्ष पीछे के आकर (अर्थात् ईसा से ५६ वर्ष पूर्व) इसका आरम्भ किया । यदि यह मत स्वीकार मान लिया जाय—विद्वान् लोग अभी इस बात पर एकमत दिखाई नहीं देते—तो कालिदास छठी शताब्दी में हुए हैं । अभी इस प्रश्न का पूरा समाधान नहीं हो सका है ।

कौशिक—काशी के एक प्रसिद्ध कवि, समयमानुका तथा कई अन्य पुस्तकों का रचयिता । यह ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वर्षि में हुआ ।

कण्डर—एक प्रसिद्ध टीकाकार । इसने मालतीमाधव और देवीसंहार पर टीकाएँ लिखीं । यह चौरहवीं शताब्दी के बार हुआ ।

कण्ठायक वंशिक—एक प्रसिद्ध साधुनिक लेखक । उसका प्रसिद्ध ग्रन्थ रघुनाथचरित है जिसमें 'काव्य' विषय का विशेषण है । उसकी अन्य कृतियाँ हैं—मानिनी-विष्णव, पीपे सहरिवा (गंगा, पीपे, मुष्ठा, अमृत, — और कचका) तथा कुछ अन्य छोटी रचनाएँ । ऐसा माना जाता है कि यह दिल्ली के सम्राट् बाहबर्हा के काक में हुआ । इसने अहासीर के राज्य के अन्तिम दिन तथा ११५८ ई० में दारा का अन्धारी राज्य-सिंहारकारोहण देखा होगा । मतः इनका जन्म—और कुछ नहीं तो कार्य काक तो अवश्य—११२० तथा ११६० ई० के बीच में रहा होगा ।

कण्ठेश—वीरघोषिण्य नामक मूलिन वीरिकाव्य का प्रणेता । यह कथाक के शौरभूषि चित्ते के किदुचित्य नामक नायक का निवासी था । कहा जाता है कि यह राजा लक्ष्मणसेन के काक में हुआ जिसकी एकात्मता डाक्टर बुद्धर ने बंगाल के बंग राजा से की है । इसका शिलालेख विक्रम सम्वत् ११७२ अर्थात् १११६ ई०

का मिलना है। अतः यह कवि शारद्वी शताब्दी में हुआ होगा।

वैशम्पैय—यह दशकुमारचरित और काव्यादर्श का रचयिता है छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। साधवाचार्य के मतानुसार यह बाण का समकालीन था।

वसन्तलि—महाभाष्य का प्रसिद्ध लेखक। कहते हैं कि यह ईसा से लगभग १५० वर्ष पूर्व हुआ।

वाचस्पथ—(मट्टनारायण) वैश्वीसहस्र का रचयिता। यह नवी शताब्दी से पूर्व ही हुआ होगा, क्योंकि इसकी रचना का उल्लेख भावन्द्यवर्षण ने अपने ध्वन्यालोक में बहुत बार किया है। यह कवि अश्वतिथर्मा के राज्यकाल ८५५-८८४ ई० (राजतरंगिणी ५।३४) में हुआ।

वाच—हर्षचरित, कादम्बी और बहिरकाशनक का विख्यात प्रणेता। पार्श्वतीपरिणय और रत्नावली भी इसी की रचना मानी जाती हैं। इसका काल विविवाद रूप से इसके अभिवाचक कान्यकुब्ज के राजा श्री हर्षवर्धन द्वारा निश्चित किया गया है। जिस समय हृदय त्याग ने समस्त भारत में प्रथम किया उस समय हर्षवर्धन ने ६०९ से ६४५ ई० तक राज्य किया। हर्षचरित बाण या तो छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ या सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में। बाण का काल कई और लेखकों के काल का अनुमानित्यून उनका त्रिकोण कि बाण ने हर्षचरित की प्रस्तावना में उल्लेख किया है परिष्कार है।

विष्णु—महाकाव्य विक्रमादित्यचरित तथा चोपखाण्डिका का रचयिता। यह सातवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

मट्टि—यह श्रीशंका की पुत्र था। राजा श्रीशंकेन या उसके पुत्र नरेन्द्र के राज्यकाल में श्रीशंका की कल्पना में रहा। अंजन के मतानुसार श्रीधर का राज्यकाल ५३० से ५६५ ई० तक था।

भर्तृहरि—गणकथय और कथयपदोय का रचयिता। तेजस महाभाष्य के मतानुसार यह ईश्वरी शन् की प्रथम शताब्दी के अन्तिम काल में जयवा सुवरी शताब्दी के आरम्भ में हुआ। परंपरा के अनुसार भर्तृहरि विक्रमराजा का भाइ था। और यदि हम इस विक्रम का बही माने तबने ५६६ ई० में श्लेषका का पराजित किया था तब हम समझ लेना चाहिए कि भर्तृहरि छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

भवभूति—महावीरचरित, मानवीमाधव और उत्तरराजचरित का रचयिता। यह विदर्भ का मूल निवासी था, और काणकुब्ज के राजा यशोधर के दरबार में रहता था। कादम्बी के राजा ललितादित्य (६९३ से ७२९ ई०) ने इसे परास्त किया था।

अतः भवभूति सातवीं शताब्दी के अन्त में हुआ। बाण ने इसके नाम का उल्लेख नहीं किया, अतः यह काल सुसंगत है। कालिदास और भवभूति की समकालीनता के उपाख्यान निरे उपाख्यान होने के कारण स्वीकार्य नहीं है।

भारवि—किराताजुनीय काव्य का रचयिता। ६३६ ई० के एक शिलालेख में इसका उल्लेख कालिदास के साथ किया गया है। देखो कालिदास।

भास—बाण और कालिदास ने इसे अपने पूर्ववर्ती बताया है अतः यह सातवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ।

भास्वद—काव्य प्रकाश का रचयिता। यह १-२५ ई० से पूर्व ही हुआ है क्योंकि १-२०६ ई० में न. जयन्त ने काशाप्रकाश पर 'जयन्ती' नामक टीका लिखी है।

भूपर—यह बाण का स्वपुत्र था। हमने अपने कुछ नें मुक्ति पाने के लिए भूपरायण की रचना का। यह बाण का समकालीन था।

भुरारि—अनर्थमाधव नाटक का रचयिता। रत्नावली कवि ने (जो नवी शताब्दी में हुआ) अपने हरविजय ३।६७ में इसका उल्लेख किया है। अतः हम नवी शताब्दी से पूर्व का ही समझना चाहिए।

रत्नाकर—हरविजय नामक महाकाव्य का रचयिता। अश्वतिथर्मा (८५५-८८४ ई० तक) हम कवि के साथवर्षा था।

राजशेखर—काण्यपाठक वालभारत और बिहृदागत भद्रिका का रचयिता। यह भवभूति के परास्त समकी शताब्दी के अन्त में पूरा हुआ, क्योंकि यह मानव शताब्दी के अन्त और समकी शताब्दी के मध्य में हुआ।

राजहर्षिहरि—एक पद्यद्वययातिहर, बृजमण्डितानामक पुस्तक का रचयिता।

विष्णु—देखा कालिदास।

विशालकर—मुद्रारायण का रचयिता। इस नाटक की रचना का काल लगभग मुद्रारायण के अनुसार सातवीं या आठवीं शताब्दी माना जाता है।

अक्षर—वेदव्याख्यान का प्रसिद्ध भाष्य तथा गार्गायण भाष्य का प्रणेता। इसके पूर्ववर्तक वेदान्त शिष्य पर इसका अन्त 'वराह' है। कहते हैं कि १०७८ ई० में अक्षर हुए और ३० वर्ष की उमिर आयु में १०० ई० में परमार्थप्राप्ति हुआ। परमार्थ कुछ विद्वान् लोग (जिनका मतारायण तथा इन्द्राक्षर अक्षरका आदि) ने यह ज्ञान का प्रयत्न किया कि यह छठी या सातवीं शताब्दी में हुआ होगा। मुद्रारायण की रचनाकर देखिये।

वीह्व—यह नैपथ्यचरित का प्रसिद्ध रचयिता है। इनके अतिरिक्त इसकी अन्य आठ हस्त रचनाएँ भी मिलती

है। इसे प्रायः वाग्भटी घटाब्दी के उत्तरार्ध में हुआ मानते हैं। बिस्सन कहता है कि १२१३ ई० में अपने पिता कलसा के पश्चात् श्रीहर्ष राजगृही पर बैठे। अतः रत्नावली नाटिका जो इस राजा द्वारा लिखित मानी जाती है अवश्य अपने राज्य काल के अन्त में १११३ से ११२५ के मध्य लिखी गई होगी। परन्तु 'रत्नावली' को इसके पूर्व का ही मानना पड़ेगा क्योंकि इसका नाम इसके अनेक उद्धरण उपलब्ध है। और इसका रूप इसकी घटाब्दी के अन्तिम भाग में रचा गया।

मुद्राराक्षस भासबचसा का रचयिता। इसका उल्लेख बाण ने किया है। अतः यह सातवीं घटाब्दी के बाद का नहीं। इसने धर्मकीर्ति द्वारा लिखित बौद्धसर्पति नामक एक रचना का उल्लेख किया है। यह पुस्तक छठी घटाब्दी में लिखी गई थी।

हर्ष बाण का अभिभावक। ऐसा समझा जाता है कि रत्नावली नाटक बाण ने लिखा और अपने अभिभावक के नाम से प्रवृत्त कराया।

कुशावती वा कुशावली यह दक्षिणकोशल प्रदेश की राजधानी है और विष्णुवर्धन की महीन घाटी में स्थित है। यह नर्मदा के उत्तर में परन्तु विष्णुवर्धन के दक्षिण में होगा। मन्वन्त यह वहाँ स्थान है जिसे बृहन्नभ्य में हम रामनगर कहते हैं। राजराज्य इस कुशावती के स्वामी का मध्यदेशीय अर्थात् मध्यभूमि या बृहन्नभ्य का राजा कहते हैं।

केकय मिथुदेश की सीमा बनाने वाला केकय एक देश का नाम है।

काल-कावेरी के उत्तरी समुद्र तथा पश्चिमी घाट की मध्यवर्ती भूमि को लकी पट्टी। इस प्रदेश की मुख्य नदियाँ हैं नैजवती, नगावती तथा कालानदी। यह काली नदी ही मुख्य नदी मयली जाती है। इसका उल्लेख २०० १/५५ तथा २०७० २ में किया गया है, यहाँ कालप्रदेश की मुख्य नदी है। केकल प्रदेश वर्तमान कानडा प्रदेश है जिसे के माय मन्वन्त, मलाहार भी कहा हुआ है और कावेरी में पर जब फला हुआ है।

कोशल एक प्रदेश का नाम था रामायण के अनुसार गन्ध नदी के तटा के माय साय बना हुआ है। इसके दो भाग हैं उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल। उत्तर कोशल का नाम 'गन्ध' है और यह ब्रह्माध्या के उत्तरी प्रदेश का प्रकट करना है जिसे हमें गन्ध तथा बहगण्यक मन्मिथिल है। अह तथा दशरथ और राजाओं न इसी राज्य पर राज्य किया। राम की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र कुश ने वा विष्णुवर्धन की मन्वर्ण घाटी में स्थित दक्षिणी कोशल की कुशावती राजधानी में राज्य किया और लक्ष्मण उत्तरी कोशल में स्थित वावली में रहकर राज्य किया।

कोशावी ब्रह्म देश की राजधानी का नाम है। यह नगर इनाहाबाद में लगभग नीम मोल की दूरी पर वर्तमान कोसम के निकट स्थित था।

कोशली-एक नदी (कुमी) का नाम जो उत्तरी भागलपुर तथा पश्चिमी पूर्णिया से जाती हुई दशभवा के पूर्व में बहती है। इस नदी के तटा के निकट कच्छभूषण श्वि का आश्रम था।

कोश वा पुशु-उत्तरी बंगाल। (पुशु मूलका से 'पुरी' के बेलम प्रदेश का कहते हैं)।

कोश एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। वेदियों को दाहल और कँपुर भी कहते हैं। यह लोग नर्मदा के उत्तरी तटा पर बसे हुए थे, यह वही लोग थे जिन्हें हम द्यार्ल कहते हैं। एक समय इनकी राजधानी मिथुरी थी। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि यह लोग मध्यभारत के वर्तमान मन्देश अथवा नरहो थे, कुछ लोग यह समझते हैं कि इनका देश वर्तमान मन्देशिय था। अबलपुर में नीचे भेरा पर

के आलपाम विष्णु और रिश पर्वतों के मध्य में नर्मदा के बिनारे पर स्थित माहिल्यनी नगरी में हैहय वा कालकुरी लोग राज्य करते थे।

कोल एक देश को नाम जो कावेरी के तटा पर बना हुआ है यह मंग्र प्रदेश का दक्षिणी भाग है। यह प्रदेश कावेरी के परे है। पुनकीण्ण द्वितीय ने इस नदी को पार करके हम देश पर आक्रमण किया था। मही देश बाद में कर्णाटक कहलाने लगा।

कल्लयान--(मानव वसति) यह दण्डक के महावन का एक भाग है। और प्रलम्बन नामक पर्वत के निकट स्थित है। प्रसिद्ध पक्षवती (स्थानीय परम्परा के अनुसार इसी नाम का एक स्थान जो वर्तमान नासिक में लगभग दो मील दूर है) का स्थान इसी प्रदेश में विद्यमान है।

कालम्बर-वर्तमान जलन्धर दोराब। शतद्रु और विपाना (मन्मथ और व्याम) में विभिन प्रदेश।

काल्पनी-मलय पर्वत में निकलने वाली एक नदी का नाम। यह बती नदी प्रतीत होती है जिसे आजकल नाइबारी कहते हैं, जो पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान में निकलकर तिवन्बनी जिले में से होनी हुई मयार की खाड़ी में गिर जाती है। १० २४०-५०, और बा० वि० १०१५६।

काल्पलित दे० 'मुद्रा' के अन्तर्गत।

काल्ले प्राचीन काल का एक अत्यन्त जमीन मय प्रदेश। यह सतलुज का पूर्ववर्ती मध्यस्थ था। सरस्वती और सतलुज का मध्यवर्ती भाग भी इसमें सम्मिलित था। उत्तर में लघुपाना और पटियाला हैं तथा मध्यस्थ का कुछ भाग दक्षिण में है।

काल्पु-री-वेद देश की राजधानी 'चन्द्रदुहिता अर्थात् नर्मदा की तरंगों से लक्ष्मणमान' अर्थात् इस नदी के किनारे स्थित। अबलपुर से ६ मील की दूरी पर स्थित वर्तमान निवुर को ही काल्पु माना जाता है।

काल्पु दे० 'अवनि' के अन्तर्गत।

काल्प-एक देश का नाम जिसमें वे द्यार्ल (दहन) नाम की नदी बहती है। यह मालवा का पूर्वी भाग था। इसकी राजधानी विदिशा नगरी थी जिसे वर्तमान धिलसा माना जाता है। यह केकवती वा वेतवा नदी के तटा पर स्थित है, १०० मेघ० २४१२५ और फारबरी। कालिदास ने भी विदिशा माय की एक नदी का उल्लेख किया है जो सप्तवत, वही है जिसे हम आजकल व्याम कहते हैं तथा जो वेतवा में मिल जाती है।

कालि कृत्वा और पीतर नदियों के मध्यवर्ती बंबली के दक्षिण में स्थित कोरोबंरुल का समस्त समथ्रित इसमें सम्मिलित है। परन्तु यदि सीमित

रूप से देखें तो यह प्रदेश कावेरी से परे नहीं फैला है। इसकी राजधानी काशी थी जिसे आजकल काशीघरम कहते हैं और जो मद्रास के ४२ मील दक्षिण-पश्चिम में वेणुती नदी के किनारे स्थित है।

झारखण्ड—दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

मिचल—एक देश का नाम जहाँ गल का राज्य था। इस की राजधानी अलका थी जो अलकानन्दा नदी के तट पर स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तरी भारत का वर्तमान कुमायूँ प्रदेश इसका एक भाग था। यह एक वर्षावर्षत का नाम भी है।

पंचघटी—दे० 'जनस्थान' के अन्तर्गत।

पंचाल एक प्रसिद्ध प्रदेश का नाम। राजसेनर के अनुसार (बा० १० १०१०६) यह प्रदेश गंगा यमुना का मध्यवर्ती भाग था, इसलिए यह गंगा दोआब कहलाता था। दृष्ट के काल में यह प्रदेश चर्मण्वी (चल) के तट से लेकर उत्तर में गयाड़ाग तक फैला हुआ था। भागीरथी का उत्तरीभाग उत्तर-पंचाल कहलाता था। और इसकी राजधानी प्रदिच्छत्र थी। इस प्रदेश का दक्षिणभाग दक्षिणपंचाल कहलाता था जो दृष्ट की मुहू के पंचाल हस्तिनापुर की राजधानी में फैली ही गया।

पद्मपुर—भवभूति कवि को जन्मभूमि। यह नगर नागपुर जिले में पद्मपुर (वर्तमान चौदा) के निकट कही पर बसा हुआ था।

पद्मावती मालवाप्रदेश में सिन्धु नदी के तट पर स्थित वर्तमान मरवाड़ से इसकी एक रूपता मानी जाती है। इसके आस-पास और दूसरी नदियाँ पाग या पार्वती, लघ, और मधुवा हैं जिनका भवभूति ने पाग लावणी और मधुवती के नाम से उल्लेख किया है यह नगर के आसपास बहने वाली नदियाँ हैं। भवभूति के मालतीमाधव का वर्णित दृश्य यह नगर है।

पंथा एक प्रसिद्ध सरदार का नाम जो आजकल पंथानि कहलाता है। इसके निकट ही ऋष्यभूक पर्वत विद्यमान है। इस नाम की नदी मरवाड़ में निकली है, विशेषकर इसका उत्तरीभाग चन्द्रदुर्ग के मध्यवर्ती शिलामरौवर से निकला है। यही सभ्यत मूल पंथा था, और चन्द्रदुर्ग ही ऋष्यभूक पर्वत। बाद में यह नाम इस सरौवर से नदी में परिवर्तित हो गया जो इससे निकली।

पाटलिपुत्र गंगा और घाग नदी के मगध पर स्थित उत्तरी बिहार या मगध में एक महत्त्वपूर्ण नगर। यह 'कुमुदपुर' या 'पुष्पपुर' भी कहलाता था। सस्कृत के कौटिल्यकाश्मिष मध्य नाम का उल्लेख मिलता है। कहते हैं कि मगधय बड़ाहूकी मालती के मध्य में यह नगर एक नदी की बाँक की चपेट में आकर नष्ट हो गया।

पाण्ड्य—भारत के बिल्कुल दक्षिण में स्थित एक देश जो बोलदेस के दक्षिणपश्चिम में विद्यमान है। मलयपर्वत और मालप्रणी नदी का स्थान निविबाद रूप में निरूपण हो चुका है, तु० बा० १० २१११। इस प्रदेश की वर्तमान निरपेक्षी से एक रूपता स्थापित की जा सकती है। रामेश्वर का पावनद्वीप इसी राज्य के अन्तर्गत है। कालिदास ने पाण्ड्यदेश की राजधानी का नाम 'नाग-नगर' बताया है जो सभ्यत मद्रास से १६० मील दक्षिण में वर्तमान 'नागपलम' ही है, तु० १५० ६५९-६६४।

पारलीक पणिया देश के रहने वाले लोग। सभ्यत, यह शब्द उन जातियों के लिए भी प्रयुक्त है जो आता था जो भारत की उत्तरपश्चिमी सीमा में सीमावर्ती जिलों में रहते हैं। इनके देश में 'कामादेय' नाम से घाँघी के आने का उल्लेख मिलता है।

पारियात्र—भाटकी एक मुख्य पर्वतश्रृंखला। सभ्यत यह वही है जिसे हम शिवालिक पहाड़ कहते हैं और जो हिमालय के समानान्तर उत्तर पूर्व में गंगा के दोआब का रखा करता है।

प्रतिष्ठा पुकरास की राजधानी। पुकरास एक प्राचीन काल का चन्द्रवती राजा था। यह स्थान प्रयाग या इलाहाबाद के समान स्थित था। हरिश्चंद्र पुराण में बताया गया है कि यह स्थान प्रयाग के जिले में गंगा नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ था। कालिदास ने इसे गंगा यमुना के मगध पर स्थित बनलाया है। तु० विक्रम ० २।

मगध दक्षिणी बिहार या मगध का देश। इसकी पुरानी राजधानी मिथिला (या राजगृह) थी। इसमें पंच पर्वत विपुलगिरि, राजगिरि, उदयगिरि, सोधगिरि और वैशार (व्याहार) गिरि सम्मिलित थे। इसकी दूसरी राजधानी पाटलिपुत्र थी। पंचवर्षी मन्दिप में मगध का नाम कीकट भी आया है।

मगध या बिहार—घोरापुर के पश्चिम में स्थित देश। कहा जाता है कि पाटन लोग दशार्ण के उत्तर में सीरजेन गया शैलिक के भ्रमण से होने हुए यमुना के तट इस प्रदेश में आये थे। बिहार देश की राजधानी सभ्यत वैशार ही थी जो आजकल जयपुर से ४० मील उत्तर में बैंगल के नाम से विख्यात है।

मगध भारत की मान मुख्य पर्वत श्रृंखलाओं में से एक। इसकी एक रूपता सभ्यत मैसूर के दक्षिण में फैल हुए घाट के दक्षिण भाग से की जाती है जो टाउन कार की पूर्वी सीमा बनाती है। भवभूति ५ नवनाम्नार यह प्रदेश कावेरी से चिरा हुआ है (महाभारत ० ५१३ तथा १५० ५१५९)। कहते हैं कि यही इलायची, काकी मिर्च, चबचब और मुगारो के

इस बहुत पावे जाते हैं। १८५०-५१ में काश्मिरास में बतलाया है कि मन्व्य और हर्दर यह दो पर्वत दक्षिणी प्रदेश के दो बल स्थल हैं। इन हर्दर घाट का बहो भाग है जो मैसूर को दक्षिणपूर्वी सीमा बनता है।

महेन्द्र—भारत को सात मुख्य पर्वतश्रृंखलाओं में से एक। वर्तमान महेन्द्रमाले में इसकी एककला स्थापन की जाती है जो कि महानदी की घाटी से यजम का निष्पन्न करता है। मजबूत इसमें महानदी और सादाबरी का मध्यवर्ती मन्व्य पूर्वी घाट सम्मिलित था।

महोदध (हान्यकुब्ज या गणितगर) यह वहीं प्रदेश है जो यथा के किनारे वर्तमान कन्नौर नाम से विख्यात है। सातवां इलाक़ी में यह नगर भारत का अत्यन्त प्रसिद्ध स्थान था। ५०० बा० १०० १०१८८-८९।

मानस एक सगरावर का नाम है जो हरक में स्थित था, जिस आज बल लहरा बन है। हाटक के उत्तर में उत्तरी कुर्ना का दण्ड है जिसका नाम हरिकर्ण है। पृथक् काल में यह सगरावर विप्रांग के आवास के रूप में विख्यात था। कविता की शक्ति के अनुसार बर्णो कर्ण के आरम्भ से इस प्रविष्टि परी आकर प्राण लय में।

मार्हिष्यनी २० 'बर्द' के अन्तर्गत।

मार्थिला -२० बिदेह के अन्तर्गत।

मूरल -२० 'केरल' के अन्तर्गत।

मरुत अन्वयशक नाम का पर्वत जो मर्मदा नदी निकलती है।

मरु - एक देश का नाम है। मर्मदा के पश्चिम में फैला हुआ था। इसमें रामचन्द्र काच बड़ीदा और ब्रह्मदाबाद सम्मिलित थे। कुछ के मतानुसार सै भी इसी में सम्मिलित था।

मग (समलत) पूर्वी बंगाल का एक नाम (उत्तरी बंगाल का गौड देश में विस्तृत मिर है) मग में बंगाल का समुद्रत भी सम्मिलित है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी समय निपटडा और मेरो पहाड भी इसमें सम्मिलित थे।

मज्जनी—२० सीराण्ड के अन्तर्गत।

मार्होक्ष, **मार्होक्ष** पञ्जाब में रहने वाली जातियों का सामान्य नाम। इनका देश वर्तमान पल्लव है। कहते हैं कि वे पञ्जाब के उस भाग में रहते थे जिसे सिन्धु नदी तथा पञ्जाब की अन्य पाँच नदियाँ सींचती हैं, परन्तु भारत की मुख्य भूमि से यह बाहर था। यह देश चीन और हींग के कारण प्रसिद्ध है।

मिथिल वर्तमान बरार देश। प्राचीन काल में कुण्ड के उत्तर में स्थित यह नगर ब्रह्म राजा के राज्य के

तट से लेकर लगभग मर्मदा के तट तक फैला हुआ था। विद्यालय होने के कारण इसका नाम महाराष्ट्र भी था, ५०० बा० १०० १०१८५। कुञ्जिनपुर जिसे बिदेह भी कहते हैं इस देश को प्राचीन राजधानी थी। इसीका मजबूत साक्ष्य बरार कहते हैं। बिदेह देश का बरदा नदी ने दो भागों में विभक्त कर दिया है, उत्तरी भाग की राजधानी बरारवासी है, तथा दक्षिणी भाग की प्रतिष्ठा।

मिथिला—२० 'द्वाराना' के अन्तर्गत।

बिदेह मगध के पूर्वोत्तर में विद्यमान एक देश। इसकी राजधानी मिथिला थी जो अब मधुवनी के उत्तर में नेपाल में जनकपुर नाम से विख्यात है। प्राचीनकाल में बिदेह के अन्तर्गत, नेपाल के एक भाग के इतिहास में बहुत महत्त्व था। जब सीतामढ़ी सीताकुंड अथवा निरहुन के पुराने जिले का उत्तरी भाग और चम्पारन का उत्तर पश्चिमी भाग कहलाता है, इसमें सम्मिलित थे।

बिहार—२० 'मन्व्य'।

बन्धवध - 'गया' का बल आज कल मधुरा में कुछ मील उत्तर में एक नगर के रूप में बना हुआ स्थान। यह यमुना के बायें किनारे स्थित है।

शक एक जनजाति का नाम जो भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमान पर बनी हुई थी। संस्कृत के श्रेष्ठ साहित्य में इसका उल्लेख मिलता है। मिथिलाम से इसकी एककला मानी जाती है।

शक्तिमान भारत की सात प्रमुख पर्वतश्रृंखलाओं में से एक। इनका मदी स्थिति का अभी कुछ निर्णय नहीं हो पाया है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि नेपाल के दक्षिण में यह हिमालय पर्वत की एक शाखा है।

श्रावस्ती - उत्तरी कोशल में स्थित एक नगर का नाम जहाँ, कहते हैं कि लव राज्य किया करता था। ५०० १५१० में इसीको 'शरावती' का नाम दिया है। अथापत्ता के उत्तर में वर्तमान शक्तिमान से इसकी एककला मानी जाती है। यह नगर वर्तमान का धर्मपुरी भी कहलाता था।

सह्य भारत की सात प्रमुख पर्वत श्रृंखलाओं में से एक। आज कल इसी का नाम सहाय है। पश्चिमी घाट जो मन्व्य के उत्तर में नौकरिगि के लगभग तक फैला है, ही सहाय है।

सिन्धु -२० 'पञ्जाब' के अन्तर्गत।

सिन्धुदेश वर्तमान सिन्ध प्रदेश जो सिन्धु नदी का उत्तरी भाग है।

सुह्य—एक देश का नाम जो दण के पश्चिम में स्थित है। इसकी राजधानी ताव्रमिथ (जिसे ताव्रमिथ, दाम-मिथ ताव्रमिथ तथा नमामिथी भी कहते हैं) की

एकरूपता वर्तमान तमलुक से की जाती है। तमलुक कोसी नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। इस कोसी का नाम ही कालिदास ने 'व पिशा' लिखा है। प्राचीन काल में यह नगर मगध के अधिक निकट बना हुआ था। यहाँ पर डॉ. अंधकाश समुद्री शरारत किया जाता था। सुद्य लोगों को ही कभी कभी राज के नाम से पुकारते थे, (अर्थात् पवित्रों बंगाल के लोग)।

शौराष्ट्र—(आगत) काठियावाड़ का वर्तमान प्रायद्वीप। द्वारका आनन्दनगरी या अम्बिनगरी कन्न्यानी थी। पुरानी द्वारका वर्तमान द्वारका से दक्षिण पूर्व में १५ मील स्थित मछपुर नामक नगर के निकट बसी हुई थी। यह स्थान रेबनल पवन के निकट था। ऐसा ज्ञान होता है कि यही वह स्थान है जिसे जूनागढ़ का निकटवर्ती गिरिजा पर्वत कहते हैं। इस देश की दूरी राजधानी कन्नभी प्रतीत होती है। इस नगर के खडर भावनगर से उत्तर पश्चिम में १० मील की दूरी पर बिल्बी नामक स्थान पर पाये गये हैं। प्रभाव नामक प्रसिद्ध मरोबर इसी देश में समुद्रतट पर स्थित था।

खम्म—पाटलिपुत्र से बाँधी दूरी पर यह एक नगर तथा शिला था। यमुना के पुगले तल के तट पर स्थित वर्तमान 'सुग' से इसकी एकरूपता मानी जाती है।

हरितलापुर 'अम्बिन' नाम का भारतवर्ष में एक प्रतापी राजा था। उमने ही इस प्रसिद्ध नगर का बसाया था। वर्तमान दिम्बो के उत्तरपूर्व में ५६ मील की दूरी पर यह नगर गंगा की एक पुरानी नहर से किनारे बना हुआ है।

हेमकट 'पवशासिद्ध' पर्वत। यह पर्वत उस पर्वत श्रृंखला में से एक है या इस महाद्वीप का मान बर्षों (वर्ष पर्वत) में बान्नी है। बहुत ही ऐसा माना जाता है कि यह पर्वत हिमालय के उत्तर में या हिमालय और मेरु के बीच में स्थित है तथा बिम्बरो के प्रदेश (किपुल्यवर्ष) की सीमा बनाता है। तु० का० १३६। कालिदास इसके विषय में कहता है 'यह पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों से बसा हुआ है और सुनहरी पानी का आग दे' द० श० ३।

—सूनुः स्कन्द, तु० अग्निभू वेतानीरग्निभूगृह
—अय०.—होमी (स्वी०) अग्निहोत्र के लिए उप-
युक्त गाय—ताम्रनिहोमीभूयसो जगद्ब्रह्मवादिन
—भाष० टाट२।

अध्या विदितर नाम का पक्षी ।

अध्क [अध्क + र्क, क्लोपो] पहाड़ की नीक या अगला
भाग—अधकामयु नितान्तपिचङ्गे—वि० १।७, अधक
समय का पूर्ववर्ती भाग नैवेह किचनार आसीत्
—बु० १।२।१। सम० आत्मन्य सम्मान का प्रथम
पद,—उत्सवमें बन्तु का पहला अंश छोड़ कर उसे
ग्रहण करना,—बैसी पटरानी, अधमहिषी,—धाम्य
अनाथ, गल्ला,—विष्णुधाम्य, भविष्य कथन, भविष्य
वाणी करना, पूर्ण नियंत्र,—प्रवाहित जो सबसे पहले
देता है—वेधामधप्रदायी स्या कल्पोपायो त्रिषवद
—महा० ५।१३५।३५,—भाष० पूर्ववर्तिता,—अधक
वायोपयोगी उपकरण,—हार बाह्यो की बन्ती
जिसके एक ओर शिव का तथा दूसरी ओर विष्णु का
मन्दिर हो, हरे अथ हार, हस्त्याय हार, हाग्वन
हाग्वन हारी—यस्य स ।

अध्या [अघे जान, अध + यत् + टाप्] जीवने का वृक्ष ।
अधन (वि०) [न० त०] जी घना या ठोस न हो ।

अध्क + अध्कम् (अकृकृम्) [अध्क कर्त्तरि करणे वा
अच्, अकृ कथ्ये अकृ। पालपत्रादि चित्वादि यस्य
—ता०] पानी, खल ।

अध्कार [अध्क + कार] मर्षात्म योद्धा,—अकका हुकार
विशये तत्र राम लड्डा बा० ग० आठवीं अध्क
शौर्यशेखरकृतिभना जेताधुकारे नै० १२।५६।

अध्कित (वि०) [अध्क + क्त] चिह्नित, छाप लगा हुआ,
सघना किया हुआ कमारिण रावणमर्गा दुर्लभतु-
यष्टि रच० १२।

अध्कम् [अध्क + ग्] जंतु पर्यावरणियों का प्रधान घासिर
घस्य । सम० कम् वर कम् या विविधित व्यवस्था
जिसके अन्तर्गत कर्मकाण्ड की नाता प्रकार की
प्रक्रियायें अपने-अपने मन्त्र के अन्तर्गत मन्त्र वा
जाती हैं,—सं० य० ५।१।१६, अध्क रीपर—अध्क
धारी का वर भाग जो गुदा और अधकाया का
मध्यवर्ती है, भूमि चक्र या तलवार का फलका
—यदङ्गुली बन्तु नै० १६।२२, अध्कोत्था
यका, नू, सहिता पण्ड के अन्तर्गत स्वर और
ध्वजनों का उपचारार्थव्ययक सम्बन्ध—सं० प्रा०,
—मुष्किः शरीर के अध्को का भा जाना ।

अध्कना [अध्क + न + टाप्] शिष्य नामक पोषा जिसमें
मुष्कित द्रव्य या अत्यन्त नैवार किन् जाने हैं ।

अध्कर,—रम् [अध्क + आरन्] जलना हुआ कोयला । सम०
—अध्कोपन्तु कोयला का इजाने या पथर में उधर

हुटाने वाला कोयला,—कर्करि (री) कलने हुए कोयली
पर गकी भांटी रोटी, गौडी, धारिका अगौठी,
—बुध, रक्तकरजवक्ष, बाटी ।

अध्ककारिक [अध्क + रिक] संभवता अभिलेखापिकाकी
(आयकक के Bath Commissioner) जैसा पद)
पञ्जीकार ।

अध्कका [अध्क + इति + क + टाप्] वाणी, प्रशिया ।
अध्कलीवेष्ट [अध्कलि + वेष्ट + क्त] अंगुठी ।
अध्कसो (अ०) कोष या दीकद्यात्मक अर्थव्यय ।
अध्कुरि (नपु०) [अध्क + क्ति] 1 पैर 2 किसी भी वस्तु
का अनुप्रास । सम० कथका जना,—अ गड,— पाव
(वि०) पैर का अगुडा चुमने वाला बच्चा मन्थि,
टम्बना, चिट्ठी की हड्डी ।

अध्कप्रकवारि (नपु०) दीपक के मध्य का उभरा हुआ भाग,
दीप दण्ड ।

अध्कित [न० त० चित् + यच्] पाग, पाण्ड ।
अध्कोपन्तु [न० त० बुद् + लिच् + यच्] अध्वादेग, निदगा-
भाव—दृढकालाताम्रवादिन प्रयागं निव्यममवागन्—मी०
बु० १-१-१२२ ।

अध्क (अ०) प्राणि के प्राक वा मानन करने वाला अर्थव्यय,
अध्कप्रदायि त्र प्राणुमिष्यथे इत्येत मी० ग० १०।१।१
पर ग० आ० ।

अध्कतजल्पकित् (प०) अमकाशक एक टाकाकार का
नाम ।

अध्कोष्ठ [अडा माडा यजे मिकला पत्र ब०] मृदाभ के एक
पुत्र का नाम, यह ऋ० १।६३ मुक्क का कृषि पुत्रा है ।

अध्कवामिद्र [अध्कवामी] सम० १।३०।६८ ।

अध्कनाम भाग्यव्यय का प्राचान नाम भाद० १।१।२०२ ।

अध्करक—रम् [न० ब०] अक्षी अक्षय ।

अध्कनामार्थवर्ति [न जल्यार्थो यश्, हा + गन् न० ब०]
यह पद जे अपने भाव का मुष्कित रचना हुआ
समस्त पद के अर्थ में कुछ बृद्धि करना है ।

अध्कवि पाणिनि का एक पद्य ।

अध्किकेवाध्कम्बल पाणश्या वायेथी अध्कानक जिसका
वीरुधन्वी मे उल्लेख मिलना है ।

अध्कानकम्बुवाध्कम्बल पालकद प्रतिपादक नाम्क ।
अध्कक विप्रचिति के पुत्र का नाम—वि० पु० ।

अध्कजलिका [अध्कजलिङ्ग कथने क् + क + टाप्] मकड़ी
या मिल्दा मूल्का एक कीड़ा । सम० वैशः एक प्रकार
का मुट्ठकीयल जानप्रज्जलिवायेथ नापाकावत वाण्डक
महा० ५।१६।३३ ।

अध्कजल यदु के एक पुत्र का नाम ।
अध्कजहिका [अध्क + जहन् कथ अध्क + जह् + टाप्]
काने की दम्भा मट्ठी ।

अध्कल (वि०) [अध्क + लम् + अच्] ठीका, उष्णु ।

महाकः उत्तम, कुं, --विष्कम्भचतुरश्रमहाकम् -- की०
म० ११३ ।

महाकम् [अट् + आयम्] मूलकाल छांटन करने के लिए
पातु के पुत्रे लगाये जाने वाला 'अ' - वातिक १।
३०१६०४।

महाक हरिण निघ० ।
अणुवर्णानि अथमर्णियायो लोमो के लिए बान्ह लामान्य
प्रतिज्ञाएँ ।

महाक वेद० मासम की छानने की छलनी का छिद्र ।
महाक [अम् + उ, स्वाधे क्तु] नामाकार छन या मुम्बज-
गामने पथबल्लोपिगच्छकैश्च विभूषित - म० पु०
६९।२० ।

महाकम् [न० ब०] बाहुल्य, अनिश्चित भाषा ऐन्द्रसद-
यान्मन्त्रान् -- की० मू० पर शा० मा० ६।४२० ।

महाक (वि०) [न० म०] जा छाटा न हो, बहुत, प्रचुर
वीजप्रभावतः अथननुप्रभाव कि० १६।१६ ।

महाक (वेद०) [अट् आभिच् फेरी देने वाला साधु,
महाक -- न० प्रथो अमसोवा नुरा गुणीत भयं - क०
१।३।३३ ।

महाक [अन् - अयम्] कोष्, कन - टाप् । पटसन ।
महाकम् (अ०) धमामात्र बहून सवेरे नातिकल्प
मानियाय नानिमर्षयिरेने निघने । मच्छेन... मनु०
१।१६० ।

महाकम् (वि०) [प्रतिकल्प कथाम अया० स०] कोरे
ती मार को भी न मानने वाला, उच्छुम्बल ।

महाकम् [प्र० म०] कुला ।

महाकम् [अति कम वन - टाप्] हाथी के कामोन्माद
का शब्द अकम्पा अतिशयान्कम्पाः मज्जपतिग्गि
स्वत्तम अकम्पां हन् मर्षमलान्ति कोधकम्प
- मा० लो० ९।१३ ।

महाकम् [अति कम + क्तिन्] घोषा के बाहर निकल
जाना, उच्छुम्बल ।

महाकम् [प्र० स०] बोधका, मियानी, भूमागुह्रीश्वेय
महान महातिगुह्रीकानिया ग० ५।१२।१५ ।

महाकम् (वि०) [प्र० स०] पूजतया पराजित को
अतिजित कृत्वा - ग० ३।३०।५ ।

महाकम् (वि०) [अतिरिक्ता घेनवा यम् ब० स०] जो
अदिया से अदिया लोभी का स्वामी है ।

महाकम् (पु० मा) छेदे मन्वन्तर के तन्त्रिक समुदाय
के एक ऋषि का नाम ।

महाकम् [अति + पत् + घञ्] अक्ष, विनाश ।

महाकम् [अति + पत् + घञ्] १ स्थपित, चित्त-
वित २ पूर्ण दृष्टा हुआ ।

महाकम् (वि०) अतिक्रमणकारी, बढ़कर रवेरौआकम्पी
करेतिपातुके -- की० ११।५।

महाकम् [प्र० स०] अर्थाधिक धनिष्ठना - की०
अतिपरिचयादवना ।

महाकम् [प्र० म०] १ जमापाण्य रूप से वही भूवादा
वाला २ बोदश्वे मन्वन्तर के तन ऋषि का नाम
३ एक पत्थर का नाम ।

महाकम् [प्र० म०] प्रतिमा विद्या की दृष्टि से मूर्ति
में दो मीन बकिमा या मार मानव० ६।३।०५-६ ।

महाकम् (वि०) [प्र० म०] बहुत तेज चलने वाला
- महा० ३।२०।१।

महाकम् [अत्या० म०] अत्यधिक उमारा ।

महाकम् [अत्या० म०] १ प्राण्य २ बाहुय ३ अन्तर
- महा० ३।५।३।

महाकम् एक पोषा जिसका मेहन बहून दम्भावर होता है ।

महाकम् शय रोम, तर्पिक ।

महाकम् [अत्या० म०] अत्य अपराध दशानिवर्तना-
न्याह मनु० ८।२९।० ।

महाकम् (वि०) [अत्या० म०] १ बहादुर यादा
विद्यमाननिधिष्ठितान् ग० ६।१।८।२८ २ मीमा
का उच्छ्रयन करने वाला महा० ३।२।५।१६ ।

महाकम् (वि०) [अत्या० म०] नुभने मान, शरभ,
कडोय आसनपरिभ्रमण्ट्या शिवा काचोप्रतिवेदना
भाग० ३।१९।२१ ।

महाकम् [अति + क्तु -- क्तिन्] उच्छुम्बल रचना ।

महाकम् [न० न०] घोषो निघ० ।

महाकम् [अत् + क्तु] पर का एक कोना, दे० अक्ष ।

महाकम् + **महाकम्** [अयन्त + अणु + क्तु + अणु] विष्कम्भ
मुकर जाना, पूषा विरोध या निराकरण ।

महाकम् - **महाकम्** (वि०) निश्चित रूप से साध जाने
वाला -- पा० ८।१।१५ वातिक ।

महाकम् (वि०) [अयन्त + घञ्] १ अयन्त यमन-
शोल २ टिकाऊपन ।

महाकम् - **महाकम्** [अतिशयन अयम् विदः निघ + ल्यट्]
हाथियों का एक भेद जो बहुत ही मखेदनील होता
है जरा से दख को भी नहीं भुम्का, प्राञ्जनाहु-
गदण्डेभ्यो दुराहुडिजे हि य, स्पृष्टा का अयनेज्यथं स
मजोऽयमवेदन -- मातङ्ग० ८।१९।

महाकम् (वि०) [अति + क्तु + क्त] फेला हुआ, उकाया
हुआ, दूर परे उकाया हुआ -- पा० ३।१।२८ तरङ्गा-
रत्न कानिका ।

महाकम् [अति] आ + अम् + घञ्] मन्वान, वैराय ।

महाकम् [अति + प्रा - ह् + लिच् + मानच्]
बलपूर्वक दहन करने वाला लोभादेवचतुर्भ्यंभवा-
हारयमाथ की० अ० १ ।

महाकम् (वि०) [न० व०] टीन का बना हुआ,
कल्पात् ।

अभिजात (वि०) [अद् + चिन्त् + जन्, क्त] नीत वर्णों में से किसी एक वर्ण का मनुष्य, द्विज ।

अभी अधि की पत्नी । मम०—अधुरः एक यज्ञ का नाम ।
—जात 1 चन्द्रमा 2 दन्तात्रेय 3 दुर्वासा, भारद्वाजिका अधि धर्मिणा वा भारद्वाजधर्मिणा के साथ वैवाहिक सम्बन्ध ।

अव्यक्त (वि०) [न० व०] स्वच्छाच्छिन्न, अिज पर स्वात् न हा ।

अव्य (अ०) [अव्य =, पण० रत्ताप] मनुज सुचक अव्यय वा प्रायः स्वभाव का आरम्भ में प्रयुक्त होता है । सम० अल (अधान) अव्ययम् (अधानव्ययम्) इतिहास, अव्य, इत्येक पर्याय अधाना धर्मिणः नामा मनु० १:१:१ किमु प्राय विजना, और दन्ना.—तु परम् इत्येक वि शेष ।

अव्ययम् [द्य + यत्, न० व०] अव्य, माया, अव्ययता अद्वयतादानिना पुनश्चाद्वयता गता महा० १:१:१ ५:१६ ।

अव्यय (वि०) [अव्य + उ] हमसे या उससे सम्बन्ध रखने वाला ।

अनुपम (वि०) [अनु + उप न० व०] वह पद जिसकी उपमा (अल्पिम स पूर्ववर्ती) में अ हो ।

अदृष्टकल्पना किसी अज्ञान पदार्थ या विचार की कल्पना करना ।

अदृश्य (वि०) [अद् भू दृश्] 1 अदृश्यम् युक्त 2 ऊर्ध्वार्ध की माग के पास अर्थात् में स एक जहाँ कि ऊर्ध्वार्ध, नीश्वर्ध में दृश्यो हा । तान तु इय तद् द्विगुण आरभन्त कविचम—महा० १:५:—१:५ मम० पचायमम् वाच्यार्थि इति गतिन एक धन्य शान्ति (स्त्री०) 1 अव्यय वा २० का परिभाषा 2 तुलाओं में बँटित एक वस्तु का नाम ।

अद्विकृतकम् [अद् + चिन्त् + क्त वत्] पवनधरोणी ।

अद्वैत (वि०) वा तिसात् न दे, अद्वैत ।

अद्वैतज्ञ [न० व०] दार्शनिक पर अद्वैत जाने वालों की पवित्र का न रहना—कार्याविनाशद्वैतज्ञ कायम्—की० अ० १:१०:१६ ।

अद्वैत (वि०) [न० व०] अविभक्त, अमञ्जु, वनाश्रित ।

अध्याय (वि०) [अद् + ध्य + क्त] आ पक नहीं आरना, योग्य नहीं बघारना अधय कुन्मिन ग्ने प्रत्यक्षवाच्यार्थोदधि नामा० ।

अध्यायक एक काटेहाल पीस, घमाता ।

अध्याय (अध्याय) एक पत्नी के रहन हुनगा विवाह करना ।

अधिकरणम् [अधि + कृ + क्त] 1 वह स्थान जहाँ बहूत नाम एकत्र हा, महा० १:२५:१, ६८ 2 विनाश महा० १:२६:१, ५६ मम०—लेखक (वि०) अधि-

लेखाधिकारी वा रूपपत्र तथा अन्य दस्तावेज अपना देकरके में नैवार करना ही नाश्रि ।

अधिगत [अधि + गम् + घञ्] आनकार का समापन अपनेप्यामि सन्नाय नवाधिगमतामनात् गम० ५:१५:१३० ।

अधिपुष्पिका स्त्रिय वा वृक्ष, पौर ।

अधिपत्निका [अधि + पत् + घञ्] वज की अधिपानी देवता ।

अधिपुष्पक [अधि + पुष् + क्त] मालती का एक प्रकार, धर्मो ।

अधिपुष्पिका [अधि + पुष् + क्त] स्त्रियों का 17 गोपों जिनमें माती रहता है ।

अधिरोष [अधि + रोष + घञ्] टापारोषण करना ।

अधिकथित (वि०) [अधि + कथ् + क्त] अतुलाव्यय रूप में अव्ययन महत्प्रथिभूतिनापुत्राव्ययलेखम्—वि० १:०:६६ ।

अधिजात [अधि वन् घञ्] जन्मभूमि, जन्मस्थान महा० १:१३:५११५ ।

अधिष्ठातम् [अधि स्था ग्यट्] 1 अकम्पा, आघात 2 नाम अधिरोषार्थिपिठानाद्वाद् दुर्योधनस्य च महा० १:१६:१३६ । मम० अधिकारकम् नगर-विषय, नगरपालिका का कार्यालय ।

अधोनिष्ठा हाथों के बामामाद की कृन्तु में नीमगी अकम्पा मान० १:१०:६६ ।

अध्यायनम् [अधि + द ग्यट्] शिक्षा देना, अध्यापन करना हूँवा अध्यायन तथा अध्यापना शनन्तमम महा० १:२:१८:१३ ।

अध्यायलिन (वि०) [अध्याय - ला - अच्, लृट् इति] किसी वस्तु के गानवहद किसी एक ही स्थान पर अध्याय हा जाने वाला महा० १:२:६:१६ ।

अध्यासित (वि०) [अधि आस लिच् वत्] बेटा हुआ, बसा हुआ ।

अध्यासित (वि०) [अधि + वस् + क्त] ठहरा हुआ, गरा हुआ, अधिवास किया हुआ ।

अध्यास [अधि + वस् + क्त] विवाह में एक पत्नीकी स्त्री वा पुत्र अध्यास्येय वा—महा० १:३:४१:६ ।

अध्यासक अध्यास नामक पत्रिका के लिए अधिपत्र नवों का स्थल ।

अध्या (वि०) (वद०) उन्मा ।

अध्या (वि०) [न० व०] अध्याक, बिना बका हुआ—भाग० १:३:३२ । मम० अध्यामी एक वस्तु का नाम—म० पु० ५५ ।

अध्या [न० व०] 1 वाय 2 भूत, पिशाच 3 पदार्थाः, पु० अध्या सम्बन्धे शब्दों पिशाचकायवोदधि ।

अध्याय (वि०) [नास्ति अन्तर व्यवधान, मध्य, अध्याय

यस्य) सीधा, साक्षात् अथवा अनन्तरकृत किञ्चिदेष
निदर्शनम् महा० १२।३०५।१।

अन्य (वि०) [नास्ति अन्य विषयो यस्य] जा किन्ती
और क साथ भाव न ले रहा है, निबिबाध — अनन्या
एतिसी अन्ते सर्वभूतहिते रत - कौ० अ०।

अन्यथा (वि०) [न० ब०] निघर, दूध।

अन्यथक्त (वि०) जा त्यागा हुआ न हा अन्यक्त न
ह्युपनयनानुवृत्त सध्याशयमुपनय-मै० म० १२।१।१२
पर शा० भा०।

अन्यथा (वि०) [न० ब०] यथाव हाण मे एक,
न्याय्य, उचित।

अनभिधातम् [न० त०] 1 अर्थमिदं अर्थ व, अप्रकाशित
2 अकारणमस्मान् शब्द जो प्रमाण मे न आता हा।

अनभिधातकः [न० न०] विनाय करने वाला प्रतिवादी
— न खल भवान्प्रत्यक्षकल्पानभिधातक अवि० १।

अनभ्यस्तर (वि०) [न० ब०] अपरिचित, अनजान,
अनभ्यस्तर-अनभ्यस्तर स्वस्वाभा यदनयनस्य बुधानस्य
—म० ३।

अनराल (वि०) [न० ब०] सीधा, अरक यन्महादय-
गऊनालनकिरीटानयनस्य पुनम् उल० ३।१६।

अनल [नास्ति अल तथोक्तिर्वच्यं, अनलं प्राधान्यं त्वाति
आमत्येन वा] क्लेश, बन्धिया मूढे सनन्दासकटा
कि० ५।२५। सय०—आत्मस्य स्वयं।

अनन्यतासिद्धि [न० ब०] एक पर मे सदा हाकर कटोर
तपस्या करने वाला गात्रद्वया अग्रव्याप्त तथेवान-
वकाशिका म० ३।६।३।

अनन्यकल्पिता (स्त्री०) [अनन्य - कल्प - कित्त] अन-
भावना आशङ्क्यमनीयता।

अनन्यमोल (वि०) [न० ब०] निरवगण निदोष-प्रकृत्या
इत्यापी मीरनरवशील परिचय उल० २।२।

अनन्यछात्रो (स्त्री०) [न० ब०] वह स्त्री जिसके शरीर
क अङ्गों में कोई दोष या घृति न ही, अत देवी का
विशेषण।

अनन्यछात्राय [न० त०] एक प्रकार का रत्न कौ० अ०
१२।१।

अनवर (वि०) [न० ब०] जो अवम न हा, जो घटिया
व हा।

अनन्यवादिन् (वि०) [अन् अन्वाद + दनि] अनभि-
मानो, जो सर्व न करता हा।

अनन्यकण्ड (वि०) वीथा मे पाताल वा अवन्त स्वाकूल
इति लाकयनाकण्ड मोहथात्प्राप्युत्तमं महा०
१२।३३।३५।

अनन्यता (वि०) [अन् + आ + प्रा + क्त] न र्था
हूता ओ हाथ मे न छुड़ा गया हा। अनाप्रात पुत्र
किमलयमलून करत है शा० १।

अनावर (वि०) [न० ब०] नये गिर वाता, जिसके गिर
पर धराही वा टोपी कुछ भी न हा।

अनावरणः [न० त०] मुक्त न करना, आरम्भ न गना।

अनावरीता [न० न०] अनुपयकता प्रयायता।

अनाव्याय (वि०) जा किन्ती नई वस्तु वा अवियक्षण नहा
करता है।

अनाव्यास (वि०) [न० ब०] जिस पर निभय न विदा
जा सक कस्यश्चिदपानायासो धूम्रुप्रामना अवान्
भाग० १।१८।२०।

अनाव्यासम् (अ०) विना माय विण, विन, आगत्य विषे।

अनाव्यास स्त्री० [अन् भा स्था व टाण] अम-
हित्वात् 2 भयान का न जाना येय न अनत्य-ने०
१।८८ पर ना० भा०।

अनिर (वि०) जो देखा या समझ न जा सके—उप्यभि-
ष्टुव पुत्र्य यदुपमदिद यथा भाग० १०।६।८।

अनिचितस्य (कि० वि०) जो ज्ञान का रूप मायन न हा,
अनिमित्त विद्यमानात्पञ्चभूतान् मै० म० १।१।६।

अनिशेषः [अ - नि : मिप् घञ] रनि क्रिया का विनिष्ट
प्रकार, येवून का विनिष्ट आनन।

अनिशेष (वि०) [अन् + ईर् इन् + कृत्] जो विधी
प्रकार की उपलभ्युक्त वा ऊँचनीय न हा —निमित्तं
देवी स्वनिर्गमे ते नु वुद्रमगधयन् महा० १।५।१८।

अनिशेषवत् [न० त०] चुप रहना आर मन बालना
मौ० मू० १०।८।५० पर शा० भा०।

अनित्तभङ्ग एक प्रकार का रथ (आहार की दृष्टि मे रथ
मान प्रकार—अमहत्त्वं प्रभञ्जन निदान, पबन् परि-
पन्, इन्द्रक और अनिल के गिनये गये ई मान०
४३।११२-५।

अनित्तभङ्गवाधि ध्यान का एक विशेष प्रकार व०।

अनिशिष्ट (वि०) [अ - नि विद्या क्] अविशालिन
— कल्प स्वयमनिशिष्ट अवि० १।

अनिष्टर (वि०) जा कटोर न हा, या च न हा।

अनिष्ठ (वि०) जा निगुण न हा, कुशल न हा।

अनित्तम् (वि०) अत्राहृदिकः

अनीकस्वात्मन् [न० न०] वैश्व-वैश्वी कौ० अ० १।२।

अनीकित्त (वि०) [अन् + प्राप् + मन् - क्त] अनाशित्त,
अन्यथाहा।

अनेर्षु (वि०) [अन् + ईर्ष्यं - उल् वयोवा] जा रोगान
न हो, जो हाह न करे भनपुत्रा भूनामाया भूनाहा-
राश्रमीषं महा० १२।२०१।

अनीहू (वि०) [अन् + ईह - अच्] जा प्रधानयोग न हो,
आलसी।

अनुकण्डम् [शा० सं०] कण्ड वा दण्डनी भूमि के साथ-
साथ आधिभूतप्रथममुहुरा कन्दनीकानुकण्डम्
मेष० १।२११।

अनुकूल्यम् [अनु+कूल्+अच्] 1 घटिया स्थानापरिनि-
-धत्तनिमित्तवर्णनकल्पेभ्योनाइत्यन्-ने० १७।१०२ सयान,
एक जैसा प्रसिद्ध श्रममन्त्रुधर्मान् धागात्कल्पव्याश्रित-
व्यवसायवचम् याद० ।
अनुकूलित (वि०) [अनुकूल+इत्+क्] जिसका स्वागत
सम्कार होता है, सम्मानित-मन्त्रिणा नैवाधात्पैव यथा-
हमनुकूलिता -ग० ७।३।६।६ ।
अनुकम् [अनु+कम्-घञ्] दैनिक व्यायाम अथवा
रथायानुकम् महा० १।१।२५२ ।
वनक्षयम् (अ०) हर गान, प्रतिगवि ।
अनुगोता (स्त्री०) महाभाग के पीछे होने पर का एक
शब्द ।
अनुघट्ट (स्त्री०) लम्बाय की ओर में सहलाना, गगनना ।
अनुग्रह [अनु+ग्रह्+अच्] सवक, अनुचर ।
अनुज्ञान (वि०) [अनु+ज्ञा+क्त] शिक्षित, शिक्षाप्राप्त
-शिक्षायाणामितिक कृत्स्नमनुज्ञान मयधहम् महा०
१-३।३।८।८ ।
अनुकट (वि०) [अनु+उत्+कट्+च्] छाटा, धाडा ।
अनुत्ताल [अनु+उत्+तल्+घञ्] मधुर स्वर, स्त्रीला
यान ।
अनुविशम् (अ०) [शा० म०] प्रत्येक दिना में ।
अनुवृष्ट (वि०) [अनु+वृश्+क्] हिनदी अनुसूचन-
इत्या मन्त्रुत्तने पुराहित ग० २।१००।११ ।
अनुष (वि०) [अनु+बुद्+ण्यन्] अनुकमारणोय
ग० ३।१।१०।१० ।
अनुभूयित (वि०) [अनु+भू+यि] अनुभव म कला हुआ
उद्भव ।
अनुभावयम् [अनु+भाव्+ण्यट्] प्राचना, याचना, अनु-
नय यथाव्याप्तनानाथने मिय-ने० १६।६।६ ।
अनुनिगीषम् (अ०) प्राधी रण के समय ।
अनुनेय (वि०) [अनु+ने+यन्] अनुसरणोय, अनुपाल-
नीय ।
अनुपरकृत (वि०) [अनु+उप+कृ+क्, मुद्राणम्]
[अनु+उप+कृ+क्] मन्त्रुत्तने मन्त्रुत्तने किया जा मन्त्रु-
तमन्त्रुत्तनेमन्त्रुत्तनेय मुद्राण् सत्यवादिन ।
मोक्षय मुद्रा भूवा त भवन्मन्त्रुत्तना -महा०
१-१।१।१।१ 2 स्थाव का दूर रणने वाला देह-
व्यागानुपरकृत मन्त्रुत्तने १।०।६ ।
अनुपलभ्य [अनु+उप+लभ्+क्] किसी व्यवस्था का
अनुपालन करना, अपनी बारी में अपना कार्य करना ।
अनुपाल [अनु+पाल्+अच्] (घोड़े आदि पशुओं का)
रक्षक, पालक ।
अनुप्रकीर्ण (वि०) [अनु+प्र+कृ+क्त] पूर्णतः व्यस्त,
आच्छादिन मोक्षोत्तरमन्त्रुत्तनेप्रकीर्णान्-कि० ७।
२ ।

अनुप्रभव [अनु+प्र+भव्] अन्त-मरण का चक्र ।
अनुप्रवच (वि०) [अनु+प्र+व्युट्] अधिकर, सुहावना
-कोणुत्तनेप्रवचना ह्ये जयवतीव मे-महा० १२।३।३।
अनुप्रहित (वि०) [अनु+प्र+धा+क्त] निश्चित,
निपट प्रियेवितानुप्रहितान् मिथेन-कि० १।३।३ ।
अनुभक्ति (वि०) [अनु+भृ+क्ति] पुत्रा किये
गया ।
अनुभू (स्त्री०) [अनु+भू+क्] अनुभव आचरण करना ।
अनुभूयित (वि०) [अनु+भू+क्ति] अनुभवशील
प्रवृत्त ।
अनुभूत (पु०) [अनु+भू+तृच्] भरण पोषण करने
वाला, पालन पोषण करने वाला ।
अनुभूयित (वि०) [अनु+भू+क्ति] सम्कार किया गया,
दिनियुक्त ।
अनुभाषा (स्त्री०) प्रस्ताव, सफल ।
अनुयुक्त (स्त्री०) प्राधान्य करना, याचना करना-धातुगण्ट
महाभाग्य स्वयं मन्त्रुत्तनेप्रवृत्तने महा० ५।३।३।३ ।
अनुयुक्तक (वि०) [अनुयुक्त+अच्] दीर्घान्त, शाह करने
वाला ।
अनुराद्ध (वि०) [अनु+राध्+क्त] सम्पन्न, अक्षय ।
अनुवृष्ट (वि०) [अनु+वृश्+क्त] 1 गन्ना हुआ ।
2 विरुद्ध 3 पालन किया हुआ मानवना दिया हुआ ।
अनुलोम (वि०) [अनु+लाम्+क्त] मोटा जान
वाला, मोटा चलने वाला ।
अनुवाक [अनु+वाच्+क्] बच धडा, कुचय [बाह्य]
धवा का एक अध्याय या प्रमाण ।
अनुविषय [अनु+वि+मि+अच्, एतन्म] अल स्थाव ।
अनुवृत्त [अनु+वृत्+क्त] रूप में प्रयत्न [सेवा करना]
पुत्रा करना मृग पेशानुवृत्तने-ग० ७।३।३।३ ।
अनुशाला (स्त्री०) उत्तम छाटा करना ।
अनुश्रुष्ट (वि०) [अनु+श्रा+क्त] 1 पुराणितान्
मन्त्रुत्तनेय पुराणितान् काव्यमाहा २० १।५।१३
2 पुत्रा गया हिन ननुश्रुष्टान् काव्य मन्त्रुत्तनेयान्
ग० ६।३।३।३ 3 आदिष्ट, निदिष्ट अनुश्रुष्टो-
त्तनेय-पुत्रा मन्त्रुत्तनेय महाश्रुत्तने -ग० १।६।६।६ ।
अनुश्रुष्टि (वि०) [अनु+श्रा+क्ति] साय-साय
फला हुआ ।
अनुश्रुष्टि (वि०) [अनु+श्रा+क्ति] धव टह [प्राप्ता]
म मधुर किया हुआ ग० १।३।३।३ ।
अनुश्रुष्ट (वि०) [शा० म०] [वेत्] जो मध्य के अनुश्रुष्ट
हा मके ।
अनुश्रुष्ट [अनु+श्रा+क्ति] विप्र-विप्र व्यतिष्ठ या
प्रयत्न के अनुश्रुष्ट विप्र-विप्र व्यतिष्ठ करना । इसके
नीचे प्रकार हैं- पदाश्रुष्टि, काव्यश्रुष्टि और
मन्त्रुत्तनेयान्मन्त्रुत्तनेय ।

अनुसन्धानम् [अनु + सम् + धा + स्मृट्] गवेषणा, सोज ।
 अनुसक्ति [अनु + सम् + धा + क्ति] गूढ तास-वे० २।१२१ ।
 अनुसन्धति [अनु + सम् + म् + क्तिन्] अन्व मरण की भाँति ।
 अनुसन्धत्वा (म्भा०) अनुगमन करना, अनुमरण करना ।
 अनुसन्धत्वा (स्वी०) मर्ती प्रथा ।
 अनुसन्ध- (वि०) [अनु + म् + क्त] 1. अनुगत 2 चुन बाधा, टपटप गिरने बाधा- इत्यादिनाः सातृन्नामकण्ठ्याम् रा० ५।५।३५ ।
 अनुसन्धम् (वेद०) [अनु + उच् मन्वादे क निगान् कुन्वम्, पत्] गेह की हड़दी बनेरकीय, मकटवट ।
 अनुसम् (म्भा०) बाह ला देना, भर दना अनुपयामास विदनेऽनुसुती नै० १०।१९ ।
 अनुसम्पद्य (वि०) [नु + सम्] अनेक मन्वाश्री मे एक बहन मे अवबधी से बना हुआ ।
 अनुस- [अनु + न्] अन्तिम अंग, अतीवशुद्ध अन् त्रेजया शाखाद्यव्याजत करवाधीति ब्र० २।६।१ । सम्प० शोध, अपरोप्य, निवन्ता हाड, चक्षुः शकृन्, तथा अभिष्यमूत्रक भाव का जानना की० अ०, -परिच्छेदः श्वेत के उपर कटुं आदि की परत रचना ।
 अनुसन्धि [प०] [अनु + मनुष्, मय्य सम्पम्] दिशाश्री का स्वामी (दिगन्तलागोप्यन्) महा० ३।१९, ३।५ ।
 अनुस- (अ०) [अम + अन्, नृडागमवचः] (इमका प्रयोग धातुश्री के साथ उपमय की भाँति होता है) और इसे पनि माना जाता है) अन्तर, में, भीतर । सम्प० - अङ्गम् (अन्तरङ्गम्) जो अन्तर गनिष्ठ सम्पन्ध रचना है या जिसमे ऊपरी मन्ध न होकर घनिष्ठ मन्ध रहता है अन्तरङ्गबहिरङ्गयोरन्तरङ्ग बन्धीय-मै० म० १२।२।२९ पर शा० भा० -गन्धिन्ध्याय इम न्याय के अनुसार अब एक बात के भीतर दूसरी बात छिपी रहती है जैसे गर्भाशय में यन्त्र, लव इमका प्रयोग होता है-मी० सू० ३०।३।६२ पर शा० भा०, आमुस्यः जो अपने हाथों को बूटो के बीच में रख कर होता है-अन्तर्जनिशया यस्तु भुञ्जते मकलभाजत-महा० ३।५००।७५, -मन्ध (वि०) जिसकी बृष्ट अन्ध की ओर होती है-अन्तर्मत्सा गतनमा-स्वस्थिसे महान् -विषय० १३२, वैश्विक अन्त पुर का अधिकारी-समुद्रमयूरकस्तमर्षिदिक हस्ता-वाशय परिच्छेद- की० अ० १।२१ ।
 अनुसन्ध- [अन्तर् रनि दशति - ग + क्] स्तम्भतल का अङ्गमूल (आधार) से सम्बन्ध करना ।
 अनुसन्ध- [अन्त + ह् + अण्] सद्यिया, गोपाल रा० चि० ।
 अनुस- [अन्त + अण्] 1 जिसे शक्ति से दिव्यां न दे, अथा -अण् सुधाश्वोष्ठी विषय १०१ 2 अन्ध,ट,

धुसला निःशब्दाश्च इवार्थोत्पन्नता न प्रकाशने रा० ३।१।६।१३ ।
 अनुसन्ध- तत्कस्यैव नामक वृत्तक के रचयिता का नाम ।
 अनुसन्ध (वि०) [अप्रमर्णाति अन्-अण्] अण के लाने वाला - अण्यथाद नै० १।७ ।
 अनुस (वि०) [अनु अण्यथादि य] हुसरा, जीर, जिप्र ।
 अनुस-अण्य (वि०) आपसी गारम्भिक दे० अन्योग, अण्येषाः किमी और के बलने अण्यज उक्ति ।
 अनुसन्धः [अनु + अन्] माया, माफा, मय, उवा भागन मात० १६।४३ ।
 अनुसन्धानाम् [अनु + अर्थ + नामन्] जिसका नाम उसके अपने शक्ति के अनुसार यथायं है वथा नाम तथा गुण वाला ।
 अनुसन्ध- (अनु + आ + रन्) (म्भा० आ०) (वेद०) अनुसन्ध करना, अनुसन्धल करना, प्रमत्त करना-अग्नि-मन्वाश्रमायै ।
 अनुसन्धायं (वि०) [अनु + आ + ह् + निष् + पण्] जो किया बाद में की जाय ।
 अनुसन्धव्यक्तिः [प० त०] गीच कुल में उत्पन्न व्यक्ति, प्रथम, आडा लक्ष्मी प्रायश्चान्धवर्जित रा० ।
 अनुसन्धायिन् (वि०) अण्यय वचन, मन्वाश्र ।
 अनुसन्धित (वि०) [अनु + इ + क्त] युक्त, योग्य मयया चान्धितो वेध रा० ५।३।३।३३ ।
 अनुसन्धिक (वि०) [अनु० + ईशा + टक्] द्वितीय, बग अला देखने वाला- प्रजाश्रीशिकया बृष्टया श्रेयो हृक्षय चिन्तितयन्- रा० ७।३।४ ।
 अनुसन्धितम् (अपापितम्) अग्नि, आय ।
 अनु (उप०) [न पाति यस्ति पतन्नाम् पा + ड] धातुश्री न पूर्व उपमय के रूप में प्रयुक्त होता है अर्थ होता है, हास, कमी, विह्वल, विरोध अथा आदि । सम्प० - अङ्गः अन्त, समाप्ति, अस्त (वि०) परिचयत, दूर फेंका हुआ, -आन्धीयं (वि०) दूर फेंका हुआ, आन्धीकृत, -कीर्तिः बदनानी, कलक, कोष (वि०) आच्छादन रहित, म्यान हो पम्ब की हुई कीर्ति कस्तु, -दीक (वि०) 1 जिसे किसी भाव्य या टीका की सहायता ग्रहण न हो 2. (अ + टटिक) विल पर कोई टकना या पशयं न हो, सख (वि०) शालर या मन्वी न लया हुआ (कच) - तथा न्यातम् धायं न धायदगमेव च महा० १३।१०।४।८६, अण्यम् [अप + दे + स्मृट्] नह आस्थाविका विसर्गें भूत और भावी अन्वी का वर्धन हो, वेधः अण, अतीरा - अण्येकः एके लक्ष्ये स्वातंत्र्यद्विनिमित्तयो । शीघर्यं शीघर्येवैवु नि शीघ्रव्यवधयोः-नामा०, - हुसम् शुक कर मायना, दीकना-रा० ५।४।०।२५, सखः अने-

निवना, दुष्टाचरण, -सकल: अन्वय, अनुचित व्यवहार-
 रण रात्रि म्बिरो भूतवा त्वापनयनी महान् - महा०
 ६।१।१०, नी (म्भा०) दुर्व्यवहार करना - शशी
 ि मात्र यनिकमिवाशापनयोधते रा० ६।६।१०,
 लीन (वि०) गुण, छिपा हुआ औपसातमभवत्-
 गतीनय - वि० १।११, -कस्त (वि०) बिना बछड़े
 का कस्त (ना० धा०) ऐसा व्यवहार करना जैसा
 कि बिना बछड़े वाले के साथ किया जाता है, (न
 बछड़ प्यार न निर्देयता), - घर अन्दर का कचरा,
 सुरभित कस्त में १।८।१८ महा० १२।१३५-४०,
 - घम प्रकमान, अग्न बलित (वि०) निलम्बित,
 लटपटा हुआ शर जो बट न हो, द्विज, - श्ल
 (वि०) अग्न म्या; कुं मलन, चतुर्वर्ण अण्ड
 पद पाठ्यमभिसाहित शठक ने में १।७।१६,
 -सूत्र (मुदा०) छत्रना, प्यायना स्थान सहायता,
 आधी, हार मयह, अवाति ।

अपरक्त (अ०) 1 के सामने 2 पश्चिम को ओर ।
 अपरान्त [न० व०] द्विप बायीं ।
 अपरपरम् (अ०) [अपर + अपर] आगे और आगे फिर ।
 अपाठ्य (वि०) [न० व०] जो पढ़ा न जा सके ।
 अपाणिप्रहृणम् [न० व०] कष्टप्रथ ।
 अपावानम् [अप्] आ-दा + वण्ट । खान फारम में
 २-१४१ ।

अपारवार (वि०) [न० व०] असीम अपारवारमज्ञान
 सांभोवीमासापेयम रा० ५।२।८।६० ।
 अपिचन्द्र (वि०) [अपि चन्द्र + क] चन्द्र, वक्रा हुआ गुण ।
 अपिपरिस्मित (वि०) [अपि परि + क्लिप्त + क] अलग
 उन्नीटिन, लय किया हुआ ।
 अपिचिन्त (अ०) प्रत्यक्षक अन्धकार ।
 अपीत (वि०) [अपि + र + क] 1 विष्मिन, अमलानं
 -लोकावपीतान्द दुगे म्बदेहे-भाय० ३।८।१२ 2 मृत ।

अपुति: (म्भा०) [अ, पु + क्तित्] कार्य का पूरा न
 करना ।
 अपुचिन्त (वि०) (पु चीं) त्रिभने विवादिन जीवन का
 अपनी पत्नी के साथ इसमें पहले उपरोध न किया हो
 अपुचीं मायया बाधी बल - रा० ३।८।६ ।

अपुचिकिन्त (वि०) जो पुत्र और प्रकृति के भेद को नहीं
 समझना "पुत्रकृत्य पुत्रकृत्योचिकेक, तदस्यापनीति
 पुत्रकृती, तदन्त्य" नील०, कर्णाभयपुत्रकृते व
 दुष्टार्थस्यापुचकृतिन महा० १२।३०।१।१७७ ।
 अपेहि (अप + एहि + ड लोट, म० ए०) दूर हो, जाओ
 - अन्वयपरि भागोन् - नाग० ।

अपीहित (वि०) [अप + उट् + पिच् + क] 1 हटा
 हुआ, हूर किया हुआ - न व सायधर्मयोहित कचिन्
 - कि० २।७७ 2 बादविवाद में निराकृत ।

अप्रकट (वि०) [न० व०] जो प्रकट या व्यक्त न हो,
 जो स्पष्ट या प्रदर्शित न हो ।

अप्रकृतता [न० व०] बरनामी, अपकीर्ति - महा० १२।
 १५।१५ ।

अप्रबोधित (वि०) [अ + प्र + बूट् + पिच् + क] जिसे
 अविशेषणा या प्रामाण्य न मिला हो, अनादिष्ट ।

अप्रजाल (वि०) [अ प्र + जाल + क] अज्ञान, जो समझ
 में न आया हो - आसीदिष्ट तमोभूतमप्रजालमन्तकम
 मन्० १।५ ।

अप्रतिप (वि०) [न० व०] अनुपयुक्त, -तन्मन्त्रवा
 मन्त्रान्तर कर्म कप्रतिप परे रा० ६।१२।३५ ।

अप्रतिषेध [न० व०] वह आक्षेप जो विरुद्धोपपत्त न
 हो अर्थे निराकरण ।

अप्रतिहत दुवनाश्री का एक प्रकार, अपरात्रित-अप्रतिहत-
 जयन-वैजयन्त काष्ठकान् पुरमध्ये कारयेन की०
 अ० २।४ ।

अप्रकृत (वि०) [अ + प्र + कृ + क] 1 जो किसी कार्य
 में व्यस्त न हो 2 जो मन्थित या प्रतिष्ठापित न हो
 3 अनुपयुक्त ।

अप्रमत्तम् (वि०) [अप्र + मत् + इच्छन्] जो मग्न न
 किया जा सके (त्रिको प्रकाशना में किया जा सके
 अत्रप्रभारप्रमत्तम् वैष्णवम् (अथम्) ५०
 १।५६ ।

अप्राज्ञ (वि०) [न० व०] जो जानकार न हो अज्ञानी ।
 अप्राज्ञेयिक (वि०) [न० व०] 1 जो कोई मुझसे न द
 सके 2 किसी प्रदानविशेष से सम्बन्ध न रखना हो ।

अप्राधाव्य (वि०) [न० व०] जिसका कोई बहन्व न
 हो, मोक्ष ।

अप्रोक्षित (वि०) [न० व०] जहाँ छिद्रका न हुआ हो
 जो पवित्र न किया गया हो ।

अप्रोष्ट एक परिश्रवण, कुबुकुम् ।

अपुनोक्ति [अन्त मसाम] जो जल में पैदा हुआ हो,
 पोहा ।

अवद्वन्द्व (वि०) [अ + वन् + लक्ष्ण] अर्धहीन, जो
 आकरणासम्भन न हो यन्मिप्रतिष्ठाकचवद्वन्द्वमपि
 भा० ० १।५।११ ।

अवका (म्भा०) किसी चिकित्सी की आधार रेखा का छिद्र
 बदा या मूत्र ।

अवाचित (वि०) [न० व०] बाधार्गत, निर्वाध, अवि-
 यम्पित, अनिराकृत ।

अवीच (वि०) [न० व०] 1 मृत्तक, निर्वीच 2 अका
 रण, वा (न० व०) मन पर नियन्त्रण, वा एक
 प्रकार के अन्न, अन्व अनुप्रायक बीज ।

अवयव (वि०) [न० व०] प्रमाणा के हाथ की मुद्रा जो
 अक्षर की रक्षा सूचित करती है । अन्व - अवयवः

रक्षण और हर के देने वाला—स्वर्ग्य पाषिभमवषट्को देवनपण—सी०।

अभक्त (वि०) [अ + भृ + क्त] अविशमान । सम०
भक्तयोग—भक्त्योग, (काव्य) रचना का दाय
—इसके अंतर्गत पाद और अधे का अभिप्रेत मन्त्र
अप्रेक्षित रहना इ अंशे ईशसे एकताशेषे तदा प्रत्नो
मनामत्र मे यत् और तदा का मन्त्र । अन्य
उदाहरणों के लिए द० सा० द० ५३५ पृष्ठ ।

अभक्ति क्रम वा न जाना इति० ७ ।

अभक्ति (वि०) [अ + क्त] 1 अनन्यमन - भ्रष्टे पालना-
मेवामनया नाम जागती रा० ५११६। 2 विमका
बाई भाग न रा० ।

अभिक्षयम् [अभि + क् + क्त] कृषि का एक
उपकरण ।

अभिक्षु (वि०) प्रथम प्राकामा में पक्ष, इच्छक ।

अभिक्षु (प०) [अभि + शि + क्त] पुत्रवन्तु का पुत्र
इति० पुत्रवन्तु के पिता का नाम वि० पु० ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्षा + क्त] ज्ञानकार, ज्ञाना,
ज्ञानने वाला ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] पुत्र,
मदापरा ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] पुत्र से लेकने की
विमान मरा० ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] ज्ञान, मत्तावा हुआ ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] वीर पावन—पटपाद-
नन्धमभयभिक्षु (वि०) रा० ५११६। 2 मन्त्र
—विश्वप्रिया पाद और अर्थ का हेतुकपण, अमयति
—सी० पु० ५३११३ पर भा० रा० ।

अभिक्षु (प०) 1 अमरकाण के एक टीकाकार का नाम
2 योगकामिष्ठमार्ग के रचयिता का नाम ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] उपकृता, भुजा ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] उपकृता, भुजा ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] उपकृता, भुजा ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] उपकृता, भुजा ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] उपकृता, भुजा ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] उपकृता, भुजा ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] उपकृता, भुजा ।

अभिक्षु (वि०) [अभि + क्ष + क्त] उपकृता, भुजा ।

अभिष्णुत (वि०) [अभि + ष्ण + क्त] 1. (भावनाभिषय
से) अभिषन्, उदाहृत 2 स्वीकृत ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] पानपे | विमो बलु
पर अर्थे अधिकार का इच्छक—प्राज्ञकन्यामभिष्ण-
न्यात - की० अ० १५ ।

अभिष्णुत (प०) चासुय मन् के एक पुत्र का नाम ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] पकटा हुआ, जपना
हुआ कर्मण मरदभिष्णुत भाग० ५११६।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रमत्त करना, अनुकूल
करना मरा० ३१३०३१६।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] अपिप्रेषण करना
पानपे पित्रे तन्नामं वयोऽपिप्रेषणमभिष्णुत भाग०
५११६।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] जो अभिष्णुतपूर्वक
वा हेकरी का साथ बोलता है—मरा० १२१८०। ८।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

अभिष्णुत (वि०) [अभिष्णु + क्त] प्रकृत, प्रसिद्ध ।

मच्छन्त्यभिस्त्रीम् प्रति० ३१७ ३ सहायता के लिए जाना ।

अभिहारः [अभि + ह + घञ्] निकट लाना - अभिहारोऽ-धियाने च

अभय सन्निवृत्तिः (स्त्री०) फिर शायिम न आना, अभय-मरण के भय से छूटकारा—मतिस्त्व वीतरायाधामभय सन्निवृत्तये—रघु० १०।२७ ।

अभ्यवचम् (द्विवा० आ०) रखा करना—ततस्तान्म्यवचपन्-कावो यौगन्धरायम्—स्वन० ।

अभ्यवचन्म् (द्विवा० आ०) निरादर करना, तिरस्कार करना ।

अभ्यवचन्ता [अभ्यव + चन् + त्] अपमान करने वाला ।
अभ्यवचहारः [अभ्यव + ह + घञ्] माने के घोष्य, काष्ठ धुषीन्ध्यव्यहाराणि मूलानि च फलानि च रा० ४।५०।३५ ।

अभ्यवचनीय } (वि०) [अभ्यव + चनीय, च्यत् वा]
अभ्यवच } आर्पित करने के घोष्य, अभ्यास करने के लावक, अभ्यास किये जाने के लिये ।

अभ्यवचनम् (वि०) [प्रा० सं०] आकाश के नीचे बिना किसी आशरण के—अहमु सतत तिष्ठेदभ्याकाश निशां स्वपन् महा० १२।२५।१८ ।

अभ्याचक्ष् (म्वा० पु०) १ ध्यान देना २ बोलना ।

अभ्युपगम (वि०) [अभि + उप + ग् + क्त] १ पहुँचा हुआ, पास नवा हुआ २ भय से आस्था के हेतु निकट गया हुआ—अभ्युपगमश्चाल्त्सु तत्र भवानाम्बाश-दत्त इति श्रूयते—मृच्छ० ७ ।

अभ्युः (स्त्री०) ऐरावत हाथी की प्रिया हथिनी प्रेमा-स्वादाश्रम् - हर० ३१।२९, अभ्युवत्सलम् - तै० १।१०८ ।

अभ्युषणी (स्त्री०) [अभ् + षन् + ङीप्] १ बाधनी से युक्त वर्षा ऋतु की लाने वाले २ कुतिका नक्षत्रपुत्र ।

अभु (वेद०) (म्वा० पर०) भय डूब होना, बधुवस्त होना - बराहमिन्द एभुवम् ऋ० ८।७७।१० ।

अभुषित (वि०) [न० ब०] अनलकुल, न सजा हुआ ।

अभुस्तर (वि०) [न० ब०] जो ईर्ष्या न करे, जो बुधा न करे, जो निरीह रहे यथाहाथते विप्रेभ्यस्तत्तृष्ठा-दमस्तर—मनु० ३।२३१, अर्ककवत्सलमस्तरहृत्सु भाग्यम्—नारा० २।१।५ ।

अभुत् (वि०) [भ् - पचाञ्] [न० त०] जो मृत्यु को प्राप्त न हो, अनभुत्तर, - रः (पु०) देव, पुर । स्रम०—बुधः बृहस्पति, बृहस्पति नामक ब्रह्म, - ऋषः 'शालमारुत' का रचयिता, - राक्षः इन्द्र, देवी का स्वामी ।

अभुटी (स्त्री०) स्वर्णिय स्त्री, देवी—अभुटीकवीर्यार-अभुटीयुधवीर्यम्—कुव० १ ।

अभुषित (वि०) [भ् + क्त, न० त०] जो मलता न बुधा हो, जो बधाया न गया हो ।

अभुषीकिला (स्त्री०) मर्मस्थानो पर न आधात करने का युध, दुस्वरो की भाषनाओं को अपने भाषाणों में खेदना (वीर्यकर के ३५ वाक्यों में से एक) ।

अभुषा [न + भा + क] अभावस्थायी । स्रम०—अभुषुः पुत्रश्चा के बच का एक राजा, -सौमवारः बहु सोमवार जिस दिन अभावस्थायी हो, -अभुषुः अभावस्थायी चाके सोमवार को रक्सा जाने वाला वत, - हृष्टः एक मर्षराजस का नाम—महा० ।

अभुषिकम् [न० त०] १ शय्यापूर्ण कार्य, - राजानमिम-मासाद्य मुहुष्चिह्नममिमिकम् - रा० ६।६५।७ ।

अभुषु (वि०) [न० ब०] सीमारहित, अमहदरिद्रघ-समुद्रमन्ता—तै० ६।६५।७ ।

अभुषुंरक्तम् (पु०) कुश का एक पुत्र । इसकी माता का नाम बंदरणी था ।

अभुषु (वि०) [न० ब०] जियने स्थान नहीं किया है—परिमिलच्छेकवसनानामुक्ता राक्षप्रियाम् रा० ६। ८।१०० ।

अभुत् (वि०) [न + भ् + क्त] १ जो मरा हुआ नहीं २ जो अमर है । स्रम० अभुत् एक प्रकार का रत्न—कौ० ज० २।११, अभुत् इन्द्र का घोड़ा, उच्यते शवा, अमताश्रमभुत् पुत्रे पुष्पकम् जि० ०० । ४३, - ईश्वरः (अमृतेश) जिस का नाम—अमृतस्तरम् अमृत सयान भोजन करने से पूर्व आचमन करने का पानी, कर, किरणः अमृत की किरणों वाला, चन्द्रमा, मन्थनः मन्थन जिसमें ५८ तन्म सने हैं ५० पु० २७०।८, माहोष्मिष्व् एक छोटी उपनिषद् का नाम, - विष्णुपनिषद् अथर्व वेद की एक छोटी उपनिषद्, - बुद्धिः चन्द्रमा—आप्यायत्यस्यौ लोक बलनामृतमूर्तिना भाग० ६।१६।९ ।

अभुषोक्तम् [न + भुषा + क्त + च्यत्] सत्य उक्ति मर्दि० ६।५७ ।

अभुषी (वि०) [न० त०] १ अचक २ अथर्व । स्रम०—अभुषी (स्त्री०) (अमोषाशी) दामायणी का नाम, -मन्थिनी शाहा की एक पुस्तक का मूलपाठ, -अर्थ धान्यमयची एक राजा का नाम ।

अभुषराधिकारिन् [अभुषराधिकार + णिनि] राजदरबार का एक बलराधिकारी ।

अभुषरीषकः [अभु + षरीष + क नि० वीर्यं] अर्थात्नित्त वा मृत्यु प्राय उदपाता कुकरोच्छेत्त सर्वेश्वर्यरीषका—महा० १।१५।१६ ।

अभुषु (मृ०) [अभ् + उप्] स्रम, पानी । स्रम० - कण्डः एक अवीर्य पीथा, मिथारा, - कुम्भुकी अवीर्य मुर्ती, - ईश्वर, - देवताम् पुत्रपाठ नक्षत्र, - नायः तपत्र,

—वर्ति बदन, वेगः पानीका बहाव, बाढ़ तथा मदीना बहुधाऽम्बुवेधा—भाग० १११८ ।

अम्बुविनां (स्त्री०) [अम्बुज + विनि + ङीप्] कमल की वेग । सम० कुटुम्बिकम् (पु०) मूर्धे ।

अम्बुध (अ + मय) (वि०) जलयुक्त, जलमय -- न ह्यम्बुधानि तीर्थानि न देवा मूर्च्छिस्वामया भाग० ।

अयन (वि०) [अय + म्यट्] जाने वाला, (प्रयोग प्राय ममन परी में) । सम० कला ग्रहणविषयक विचयन के लिए (मिनटों में) घाघन—सू० सि०, ग्रहः किमी ग्रह की देशान्तरेका जब कि वह ग्रहण विषयक विचयन के लिए मयुक्त की गई है, सू० सि०, परिस्थिति अयन का बदलना अयन-पन्विनिर्धनस्थानस्थेनाभ्यते मी० सू० ६१५३७ पर भा० भा० ।

अयनमाध्य (वि०) जो बिना किसी कठिनाई के सम्पन्न हो जाय ।

अयनोपास (वि०) [अयनः, उपासः] जो बिना यत्न के प्राप्त हो जाय ।

अयनोपसंज्ञास्थानम् (नपु०) वर सभाचार का ऊँच स्वर से उच्चारण करना या अन्धे समाचार का मन्दस्वर से करना अयनोपसंज्ञास्थान नामाश्रित्याश्रय, प्रियमय य मार्के बचनम् सि० ।

अयसु (वि०) [इ, अयसु] जाने वाला, स्पन्दनशील । सम० कल्पय एक प्रकार का अयन जो लाले की जना मन्त्रिया की बौद्धार करता है अय कल्पय-क्रान्त भुजुष्टयुक्तबाहव --भा० ११०००५५, पिच्छ नाय का माला ।

अयोध [न-भूज-घञा] योगस्थान से विचयन, दन-वयना-इध यामनाद भाग० ५१८११६ ।

अयोनि (वि०) [न० ब०] अजात माता-पिता की मन्वान अजाति य विवाहिन य न मन्वेन विचयन महा० १०१००३३३ ।

अयक [द्वयनि य-ठयनेन यः अयुः स्वार्थे कन्] पं.य वा अय ।

अयडा (स्त्री०) लज इवी का नाम गी० ।

अयध्वयन् (नपु०) महाभारत के एक अध्याय का नाम ।

अयध्र (वि०) [न० ब०] प्रियमें छिद्र न हो—मयन पयो-मू० इकरुगता --कि० १५५०० ।

अयध्र (वि०) [न० ब०] गण्यहीन, प्रियमें से कोई धःवाह न निरुह ।

अय (वि०) [न० ब०] 1 आगिक, जो लजित कला का न सहाय गले किमया नाप म्यारदमपुष्काना-पयने नै० 2 प्रियमें हारि मय न हो, नेत्र न हो अयाः पापिद्वगानिनातथमी -दु० च० ५११२ ।

अयसु (ब०) तुल्य, तन्काळ - वर्तिन्ति यवनीत्या ते देव साक पनयरात्— सुक्० ५११२१६६ ।

अयस्य (वि०) [न० ब०] अयिकर, युद्धर ।

अयिकेतिः [य + क्त + केल + इत्] यमुलीका, स्त्रीरमय --अयिकेति यमुलीका स्त्रीरयोवपायि कीटिन --नामा० ।

अयिष्य [य + इष + अरि + घ, वा] कवच, जो शत्रुओं से रक्षा करे (अरिभ्य नायते) नै० १२१७१ ।

अयीष (वि०) पूर्ण, भरा हुआ --स्वरणमयीषतकथः नै० ६१६५ ।

अयष (वि०) [न० ब०] 1 जो रोग को नष्ट करे, रोग नाशक विषेभ्य क्षम सर्वेभ्य कथिकामनया स्वरान् --सु० 2. नीरोग, पीडाहरित ।

अयषकेतुवाहयन् (नपु०) अयन और केतुओं के हाहयन का नाम ।

अयषवराहाराः (पु०) एक वैदिक साहा के अनुवाची - अरण्यवराहारा नाम शास्त्रिन --मै० स० ७११८ पर भा० भा० ।

अयड्ड (वि०) [न + य + क्त] निर्वाप, जिसे रोक न गया हो, विविध ।

अयषसौवर्जनय (नपु०) विवाह सम्कार के अवसर पर की जाने वाली एक प्रक्रिया जिसके अनुसार दुकहन को अयषती तारा दिसाया जाता है ।

अयषसौवर्जन्यायः यह एक न्याय है, इसके अनुसार ज्ञात से अज्ञान की भांति कथिक विज्ञा ग्रहण की ओर प्रकृत किया गया है जैसे अयषती को दिसलाने के लिए पहले किसी और ज्ञात तारे की ओर प्रकृत किया जाय ।

अयष्य (वि०) (न० ब०) यह यज्ञ जिसमें रूप (इयम और देवता) का अभाव हो ।

अयषिन् (वि०) [न + क्प + चिनि] आकाररहित बिना किसी रूप का--बाधावास्तुसंन्यानायप्रभेदानकथिन. रा० ११२११६ ।

अयोरकम् [न० त०] रोग से मुक्त होने की स्थिति ।

अय० [अय + घञ्, कृष्णम्] 1 सूर्य 2 सूर्यकाल मणि अकीर्णयन् स्फटिके--नै० । सम०--ग्रह सूर्य-पहन,--श्रीव इस नाम का एक 'साम'--पुष्पोत्तरम् इस नाम का एक 'साम',--देतोः सूर्य का पुत्र देवत,--सबधम् यवतार ।

अय० [अय + घञा] मृत्य, कीमत् । सम०--अयधय मृत्य कम हो जाना, कीमत् गिर जाना, इधर घिन, --निर्णयः मृत्य निर्धारण ।

अय०नाम् (पु०) अयिष्ठुल से मयब रचने वाला एक ऋषि ।

अयिजित (वि०) [अय + क्त] अयाप्त, उपाजित--न मे पिना-जित किञ्चिद्य यया किञ्चिदयिजितम् । अतिल से हलितोलासे वस्तु पीतायह यमम्--वे० वे० ।

बतित, सीपा गया—विधापितारम्भ इवावतस्थे - कु०
३।१२ ४ अस्ति पूर्वकं = वापित सीपा गया - प्रव्यपित-
न्यास इव - श० ।
अर्धे, —अर्ध[श्च + मन्]। अर्ध का एक रोग २ कविस्तान ।
अर्धः (ब० ब०) स्रवण, कडाककट ।
अर्धबाहू (पु०) [श्च + बनिच् = अर्धन् + बहू + बज्,
न० ब०] बृहन्नवार आगच्छन् सुदन्तगर्वमर्षबाहु
—विष० २४।६५ ।
अर्धलतन (वि०) [अर्ध + तन] न पहुँचने वाला, पच-
बर्ती, प्रकृतिपुरुषयोगिकलाभिर्नायकपामी रूप—
निकवमम्—भा० ५।३।५ ।
अर्ह (वि०) [अर्ह + अच्] योग समर्थ न त्या कुनि
दमशील भूम्य भ्रमभारंनेत्राया—रा० ५।१०।१०० ।
अर्हा [अर्ह + बज् + टाप्] सोना निघ० ।
अलकलाङ्गु (वि०) [अलकन + अङ्गु] अलकना से चिह्नित
है अङ्गु जिसके अलकलाङ्गुनि परानि पादयो
—कु० ५ ।
अलकल (वि०) [न० ब०] जो मयज में न आये—देय
विष्णामहाभायाज्वाधयाअलकला दया भा० १२।६।
२९ ।
अलकलम् (वि०) अजम् लक्षणो से युक्त—अपत्यय प्रहापक-
कुलसमाग टिकाकरण महा० ६।१०-१०१ ।
अलकुरारम्भण्य [न० म०] भृगाव कल, वह स्थान जहाँ
मन्दिर की मूर्तियों का श्राद्ध किया जाता है ।
अलमक (पु०) मंडक, श० 'अत्रिमक' ।
अलमच (वि०) [न० ब०] लवणरहित, बिना नमक की—
महा० १३।११६।१५ ।
अलसगामिनी (स्त्री०) मनोज गति से चलने वाली
महिला ।
अलसिका (स्त्री०) अधिक बार मत त्यागने के परत
उत्पन्न आमस्य या बकान ।
अलसज्जल (A) [न० ब०] निष्कलकं ।
अलसज्जलितः (स्त्री०) मासकूपोपनिषद् पर तीव्रपार की
टीका का अनुर्थ गाद ।
अलसबुधोक्ता (स्त्री०) तुम्ही के आकार की बनी बोधा ।
अलीकम् [अन् + बीकन्] चिन्ता, शोक—अलीक नामस
त्येक श० २।१९।६ ।
अलुप्यवसितम् (वि०) [न० ब०] जिसकी ब्रह्मण कीति
बनी हुई है ।
अलुप्यवसित् (वि०) [न० ब०] जिसकी श्वाति लुप्त नहीं
हुई है, यद्यस्ती ।
अलीककतम् [न० त०] आध्यात्मिक मुक्ति के लिए अवि-
श्रैत शत जैसे ब्रह्मचर्य पात्म, (इस शत की प्रायना
जीतिक सुको के विषय है) चरन्पयोकीचतमवर्ष बने
भा० ८।३।१० ।

अलोमक, अलोमिक (वि०) [न० ब०] चित्तके बाल न
उगते हो, बिना बालों का ।
अलोतः (पु) भीरु भावना का एक छन्द ।
अल्य (वि०) [अल् + प] बोधा, मामुकी, नगण्य (विष०
महा०, सु०) । सम०—अल्यतरम् बहु लज्ज चित्तमें
अलोकाङ्गु बुरे लज्ज से कम बर्ण या धाराएँ हों—पा०
२।२।३५,—नीचकः एक प्रकार का नेहूँ जो छरा
छोटा होता है,—मालिकः एक छोटी बहलीच या
दासान, मान० ३५।१०६,—बुध्य (वि०) जिसमें
धार्मिक मन्य नगण्य हो,—अल्य (वि०) बुद्धक,
बलहीन,—लार (वि०) जिसका फल नहीं के
बराबर हो ।
अल्यकम् (नपु०) बनिये का बीज ।
अल्यक (स्त्री०) बनिये का पीवा ।
अल्यतरम् (अ०) और जाने, जाने हुए—कु० १।१२९।६ ।
अल्यकीलक [अव + कील + कन्] अल्यतर, लुंटी जो अल्यतर
ठीकी गई है—मुत्पिपामावकीलकम्—महा० १५।४५।३ ।
अल्यकल (वि०) [अव + क + क्त] नीचे की ओर बढ़ा हुआ,
नीचे की ओर झुका हुआ ।
अल्यकीर्ण (वि०) [अव + क्त] अल्यवर्णित, अल्यव्यासापेक्ष
—दृष्ट्या तथावकीर्ण तुगादम्—महा० ९।४१।१६ ।
अल्यक (अ० पर०) नीचे गिर जाना, फिलक जाना
सौर्षकव्यमयमागल्यतराण्य—वि० ८।३५ ।
अल्यहृषी (पु०) [न० ब०] दुराहरी, हठी—कर्मव्यवहारीयो
भगवन्विदाम—भा० ५।१०।३० ।
अल्यवदकम् (नपु०) एक प्रकार की माला जो आकार में
छोटी होती बनी जाय—की०, ब० २।११ ।
अल्यबाल (वि०) श० 'अवहृन्' के नीचे ।
अल्यबुध्य (वि०) [अव + बुध्य + क्त] बोधना किया गया,
अवमानना पूर्वक बुनाही की गई ।
अल्यब्राल (वि०) [अव + ब्र + क्त] लूँचा हुआ, घुमा गया
—अवब्रालव्य भुर्धनि—रा० २।२०।१ ।
अवब्रालव्यम् [अव + ब्र + विच् + लृट्] बुधधाना ।
अवब्रारः [अव + ब्र + अच्] सासि—तुरपावचरं त बोध-
यित्वा—दु० ब० ५।६८ ।
अवधि (स्वा० पर०) परलना, चुनना, छोटना ।
अवधिवोका [अव + धि + क् + टाप्] सहह करने की
दृष्ट्या—प्रयथाः सुमुनावधिवोचना—वि० ६।१० ।
अवधूरिः, अवधूरिका धृति, टीका, माध्य, टिप्पणी ।
अवच्छेदा विनोपयक बाल, सीलायुक्त गति—अवच्छेदा
कारि कटाक्षत्य नै० १६।६५ ।
अवच्छेद्य (वि०) [अव + छिच् + पिच् + क्त] अल्य
किये जाने के योग्य, पुनक किये जाने के लयक ।
अवच्छानः [अव + तन् + बज्] तन्तु, सूत—कलाकतामलः
शु० २।२५।२६ ।

अक्षयु (स्त्रा० पर०) पार करना—लघुधात्वोर्भाषां उता-
प्तकाम—भा० ३।२४।३४।

अक्षतरणमङ्गलम् (नपु०) श्राद्धिक स्वागत ।

अक्षतरणिका (स्त्री०) मक्षिण विबरण ।

अक्षतारपुष्पम् (नपु०) अक्षतार लेने का भेद ।

अक्षतारोद्देशः (अक्षतार + उद्देश) अक्षतार लेने का प्रयोजन ।

अक्षतारणम् [अक्ष + तृ + णिच् + क्तृट्] उतार, अक्षतार
पीथ पीलीमहास्तोत्रकादिरशावतारणम्—महा०
१।२।४२ ।

अक्षतम् (वि०) [अक्ष + धा + क्त] तोरने वाला, शतघां विधि-
ज्ञानबधते कि० १५।४८ ।

अक्षधि [अक्ष + धा + क्ति] शासनविषय, अक्षिदेश -व्य यु
भ्रतदेशाज्यधि कृत्वा हरीश्वर—ग० ४।८।१५ । सम०

- ज्ञानम् जैन शास्त्राली में ज्ञान की तीसरी अवस्था
जिसमें हिन्दुवालीन विषयों का ज्ञान भी मनूष्य को हो
जाता है ।

अक्षिण (वि०) [वेद] [अक्ष + धा + क्त] मन्त्र, पत्तिन,
—पित कृषेज्यतिरी देवान् इव—ऋ० १।१०।१७ ।

अक्षधारणम् [अक्ष + धृ + णिच् + क्तृट्] (नाम वा) उच्चा-
रण करना न त्वा देवाम् इत्येव राज्ञः सखाधारणम्
ग० ५।३३।१० ।

अक्षयत् (वि०) [अक्ष + धृ + क्त] 1 समझा हुआ, जाना
हुआ 2 (व० व०) ईदियाँ (साक्ष्य० में) ।

अक्षय्ये (स्त्रा० पर०) निरन्तर करना—सौज्यधान
सुरेणम्—भा० ३।१०।२ ।

अक्षय्याणम् [अक्ष + य्ये + क्तृट्] निरन्तर—यथा तरेमद-
वण्यानिमट् भा० ५।१०।४ ।

अक्षि (स्त्री०) [अक्ष अक्षि] 1 अक्षि, पृथ्वी 2 नदी ।
मम० अ मयक्ष यक्ष, ज्ञा मयि, - भूम् राज्ञा
पराह—सारा केव का पोषा ।

अक्षिण्ठीय् (वि०) पर० [अक्षिण पर वचना अक्षिण्ठी-
वना दणोः ङाभौः छदसपण मनु० ८।२८ ।

अक्षनेय (वि०) [अक्ष ना पराः अनयण्य कर्गवे ज्ञाने
वाय अक्षयमनिश्चिन्नेट् अवगत्य भविष्यति—ग०
३।८९ ।

अक्षनिमुन्दरीकषा (स्त्री०) एक रचना ज्ञा दणो वधि की
हुनि बनाई जाती है ।

अक्षनिका (स्त्री०) 1 वर्तमान उज्जैन नगर 2 उज्जैन
वायिका की वाणी ।

अक्षय्यकोष (वि०) [न० व०] जिसका त्राघ प्रभाव स्थान
वाता है अक्षय्यकोषय विजयनगरपदाम् कि० ५ ।

अक्षयित (वि०) [अक्षय् + क्त] नीचे गिरा हुआ फले-
वशावरणम् ग० ५।२८।१० ।

अक्षयलम् [वेद०] [अक्षय + लम्] पीना भाग्यधातु मति-
युक्तवाणाम्—ऋ० १०।१०।६।१० ।

अक्षयोलिका (स्त्री०) (पत्थर जादि कोई) बन्धु की नगर
की दोषा से नगर पर आक्रमण करने वाले शत्रुको
पर फेकी जाय महा० ।

अक्षयु (स्त्रा० आ०) नीचे छुटाय लगानी—स्वनिगमय-
हाय मप्रतिज्ञा ऋतमधिकर्ममन्वृत्ता म्पद्य भा०
१।१०।३७ ।

अक्षयोलित (वि०) [अक्षयु + णिच् + क्त] जगया हुआ
—गमा गमावित्वायिन् म्पु० १५।२० ।

अक्षयु (वि०) [अक्षयु + क्त] दृष्टा हुआ,
जिसकी हठी टूट गयी हो क्त 1 टाड दना
2 (नाक या शान का) बाधना ।

अक्षयर्षे [अक्ष + मृ + घञ्] 1 मघर्ष, इत्ययक्ष न त्वा
ममागाय म्प्रायमरे ग० ५।१०।६ 2 एक प्रकार
का ऋण ।

अक्षयर्षित् (वि०) [अक्षयर्षे + णिति] इत्याय महात्म-
नन्मय म्प्रायमर्षित ग० ५।१०।६ ।

अक्षयर्षित (वि०) [अक्षयर्षे + णिच् + क्त] 1 बिभटा
हुआ, नष्ट किया हुआ ईद दक्ष बरिषम् भद्रप्राय
मर्षितम् भा० ५।१०।८ ।

अक्षयर्षण (वि०) [अक्षयर्षे + ण] 1 मक्ष यर्षे भूमि
का मन्दा करने वाला अक्षयर्षण मर्षम् भणु०
५।१० ।

अक्षयर्षे [अक्षयर्षे + घञ्] विद्या मक्ष काम प्रयाति
त्रिभुवणमजयणम् भा० ५।१०।१० ।

अक्षयर्षमर्षि (स्त्री०) (शल के) लपटा वा निदण,
—एतन्नाय म्प्रायण न क्वावर्षमर्षिः मम-
दणमर्षिद्विवायन—मौ० मु० ३।१०।११ पर ग० भा० ।

अक्षयर्षणवार (वि०) [अक्षयर्षे + वार] मक्ष यर्षे अक्षा में इत्यय
वर्षा एक नगर इत्ययर्षे वनजाय म्प्रायणम
मौ० मु० ३।१०।११ पर ग० भा० ।

अक्षयर्षी प्रवश्यं मक्ष, क्वाः घञे का बंधने का
रामा—ऋ० ।

अक्षरोह [अक्ष + रोहि + क्त] निवृत्त ज्ञान
म्वारणोः ङाभौः म्पु० १०।१०।१० ।

अक्षयर्षित (वि०) [अक्षयर्षे + क्त] 1 शत्रुको के गिन्ने
म अक्षिण्ठीय नगर 2 अक्षयर्षमर्षित तथा ध्या
य अक्षयर्षे महा० ५।१०।८ ।

अक्षयर्ष (वि०) [अक्षयर्षे + क्त] 1 अक्षयर्षे वक्ष
पाठः ११ ग० ५।१०।१० ।

अक्षयर्ष [अक्षयर्षे + घञ्] बाध करने वाली शक्ति
प्रायः अक्षयर्षे मक्ष यर्षे निवृत्त ज्ञान
५।१०।८ । सम० मक्ष अक्षयर्षे, अक्ष अक्षयर्षे
की महिमाएँ ।

अक्षयर्षित [अक्षयर्षे + णिच् + क्त] 1 मिश्रण म
उत्तरा हुआ, विरकायित पुगृह वारिता मम

राज्यास्त्यावरोरपित-रा० ५।८।१० २ घटाया हुआ, ऊनीकृत इत्येतेषाममाद्यम् पारशालवरोपित-मनु० १।८२।

अवसंतयोग [न० म०] १. दो भिन्न ध्वनियों का मेल २ किसी भी वर्ण से मन्त्र का अभाव ।

अवसंतवाल (वि०) [न० व०] जो चालू समय से कोई सम्बन्ध न रखे ।

अवसन्धित (वि०) [अवसन्ध् + क्त] चिपका हुआ, पकड़ा हुआ, आश्रित-सम्बन्धित्य रसादवसन्धित्य वि० ६।१० ।

अवसेष्ट (वि०) [अवसिठ् + क्त] घटने के योग्य । अवसेष्ठा [अवसिठ् + अ, सिध्वा टाप्] रेखा बौधना, रेखाचित्र बनाया रेखाकृति ।

अवसोकाजः [न० म०] दृष्टि, कटाक्ष ।

अवस्यन्त (वि०) [अवस्य् + क्त] अभिमान-महा० १२ ।

अवस्यु (बपा० पर०) १ टूटा २ चारों ओर बिखर जाना - म तस्या भद्रिमा दृष्ट्वा ममलादवस्योयं रा० १।०।१३ ।

अवस्योषं (वि०) [अव + स्य् + क्त] टूटा हुआ, चूर-चूर किया हुआ ।

अवस्युक्तर (वि०) जिसमें वस्युं शब्द का उच्चारण न हो, जिसमें वेद के साम्यार्थक मन्त्रों के उच्चारण की प्रक्रिया न हो ।

अवसन्न (वि०) [अवसद् + क्त] बसा हुआ, उपर्युक्त मूल नवमन्त्रवसन्नप्रपुं मेनापतिपुं पञ्चसु रा० ५।६।३८ ।

अवसन्नप्रतीक्षित् (वि०) [न० म०] जो किसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा हो ।

अवसन्नप्रतीक्षित् (वि०) [म० म०] जो किसी अवसर की ताक में हो ।

अवसाय [अव + सो + घञ्] या मगान करना है-अवसायो भविष्यामि दुःखस्याप्य कदा म्वहम भट्टि० ६।८१ ।

अवसायक (वि०) [अव + सो + घञ्] विनाशायक-अवसायिण्य मन्त्रो मायकैवसाय-कौकि० १।५।३६ ।

अवसायक [अव + साय् + क्त] (विधि में) दोषारोपण, इलङ्कार ।

अवसायक (वि०) [अव + साय् + क्त] १. बिसरार हुआ, भौना हुआ २ आक्षान्त ।

अवसायः [अव + स्य् + क्त] हाथी के बेहरे का आगे की झार उभरा हुआ भाग मात० ५।८।१२ ।

अवसायम् [अव + स्या + क्त] १ सहारा - योऽवसानमनुग्रह भाग० ३।२०।१६ २ स्थैर्य, स्थिरता -- अलसावसायन परिभाषति - भाग० ५।२६।१७ ।

अवसायत (वि०) [अव + स्या + क्त] जिसमें किसी ने स्थानकर लिया है, (अल) ।

अवस्युम् (म्भा० पर०) सुरटिं भरता, 'सुरटां' करता -महा० ६।१० ।

अवहार [अव + ह् + क्त] जो उठा कर ले जाता है न जो बस्यवाहारा मां करोति मुक्ति यमः मट्टि० ५।८१ ।

अवहृत्ते (म्भा० पर०) (वेद०) पुकारता, बुलाता किसी अव मकलानवहृत्ते ऋ० ५।५६।११ ।

अवहृत्तु (सवा० पर०) फाव देना, छिद्र-निष्ठ कर देना ।

अवार्थित्य (वि०) [अवार्थ् + क्त] नीचे की ओर झुका हुआ ।

अवार्थीन (वि०) [अवार्थ् + क्त] १ जो नीचे निगाह से देखता है दुर्गोचनमवार्थीन राग्यकामुकमानुषम् महा० ८।८।१० २ नीचे, गायो-वृद्धि तस्यापक-योनि मन्त्रावार्थीनानि पश्यन्ति महा० ५।२।५।८१ ।

अवार्थत (वि०) या वार्थतल न हो -मनु० ।

अवार्थतवाच्यम् (नपु०) मूल कथन के कुछ अर्थों को त्याग कर, कथन को हुई उक्ति न च-महावाक्ये अवार्थतवाच्य प्रमाण अस्ति म० म० ६।४।२५ पर शा० भा० ।

अवार्थित (वि०) [अव + र्थ् + क्त] जिसने रोका न गया हो-सम् [अ०] बिना किसी इकावट के । म०-कथावार्थित (वि०) नहीं रोका हुआ अर्थात् बुला हुआ है इति जिसके किम् ।

अवार्थ्य (वि०) [न-वह् + क्त] जो ले जाये जाने के योग्य न हो ।

अविवच (वि०) [न० व०] जो बिला न हो, अर्थात् बन्द (फूल) ।

अविवारित् (वि०) [अव + विवार + क्त] १ जिसमें कोई प-नेन न हो २ स्वाधिकत-म्बाने युद्धे च कुक्षाना-नभीक्ष्वविवारित् -मनु० ३।१६० ।

अविवार्य (वि०) [न० त०] अपरिवार्य अविवार्योऽयम्-व्यये भग० २।२५ ।

अविविधायक (वि०) [न० व०] जिसका मन्त्राव अपरि-वार्य हो, जिसकी प्रकृति न बदले ।

अविविधय (वि०) [न० त०] १. जिसमें कोई हनुचल न हो २ जो जीते न जा सकें अविविधयुनि रक्षानि -रा० ६।५।१३ ।

अविविधित (वि०) [न० त०] अविवक्त, अविवचन ।

अविविध (वि०) [न० व०] अपस्वर रक्षित (गायन) ।

अविविधत (वि०) [न० त०] विफल करने वाले स्वर रक्षित में न हो ।

अविविधय (वि०) [न० त०] १ अनुचल, जो चतुर न हो, २ अनजान, मज्ञानी ।

अविविधय (वि०) [न + वि + क्त + क्त] जो समझा न जा सके, जो समझ से बाहर हो ।

अविच्छिन्न (ब०) [न० ट०] साधारण, सामान्य न विशेष-
केन गलतव्यविच्छिन्न वा पुन -महा० १२।१५२।२२।
अवितर्कित (बि०) [न० ट०] अत्रयथास्त, जिसके लिए
पहले कमी ठरकना न की हो।
अवितर्क्य (बि०) [न० ट०] जिसका अनुमान न लगाया
जा सके।
अविद्यु (बि०) [बद् + विच् + तुच्] प्रत्यय, -आतारमि-
न्द्रविद्यारमिन्द्रम् - म० ना० २०।३।
अविद्यु (ब०) विद्यमानविद्योत्पन्न अन्वय -अर्थ है हृत्, ओह
-अच्छ० १।
अविद्यु (बि०) [न + विद् + विच्] अनजान, अज्ञानी
-अविद्यो भूरितमसो - धाम० ३।१०।२०।
अविद्युक्त (बि०) [न० ट०] निरौह, मोलाभावा -अहित
यापि पुष्य न हिन्दुविद्युक्तम् - रा० १।७।११।
अविद्युक्त (नपु०) [अवि + युञ्ज वा० ३।२।३६ वा०] भेद
का हूय।
अविद्युक्त्य, -भाव (बि०) [न० ब०] (बहु बोल) जिसके
नाक में नकेल न टाकी गई हो।
अविधायक (बि०) [न + विधा + क्त] जिसमें विधि या
आदेश की शक्ति न हो -नहि विधायकाविधायकयो-
रेकवाच्यत्व भवति - मी० सू० १०।८।२० पर
वा० भा०।
अविधेय (बि०) [न० ट०] 1 जो नियम में न जा सके
2 जो सिध्य न बन सके।
अविधायिन् (बि०) [न० ट०] जिसका कमी नाश न हो,
आत्मा।
अविधिर्भवः [न + विनिर् + नी + भव्] अनिर्णय, निर्णय का
अभाव।
अविधीय (बि०) निष्कपट, निर्दोष।
अविधिर्भवः [न० ट०] विरोध का अभाव, सहाय का अभाव,
असन्निध्य स्थिति -अविधयंयाद्विभुद्रम् - सा० का०
६५।
अविधिस्तर्पितः (स्त्री०) [न० ट०] मतिभ्रमता का अभाव
-छन्दस्पर्शपरत्तगन्धेष्विधिरपति इतिप्रत्यय - की०
ब० १।१६।
अविधिबन्ता [न० ट०] एकज रहना, धनियुक्त मिलन।
अविधिहृत (बि०) [न० ट०] (बहु जगल वा मार्ग) जहाँ
किसी के पैर न पड़े हो।
अविधुक्त (बि०) [न० ट०] अत्युमीकृत, अविहृत।
अविधायित (बि०) [न० ट०] जो हिसाब किनाब में न
लिया गया हो।
अविधरत्न (बि०) [न० ट०] विद्याल, स्तूककाय -अविधरत्न-
धनुष सुरेन्द्रप्रयोग कि० १०।२७।
अविधिरक्यायः (पु०) व्याकरण का एक न्याय जिसके
आधार पर 'अवि' को 'अधिक' हो जाता है।

अविधिरहित (बि०) [न० ट०] अविद्युत, जो कमी पुष्य न
किया गया हो -अविधिरहितमनेकेनाङ्गभावा फलेन
- कि० ५।५२।
अविधिरक्य (बि०) [न० ट०] गुप्त, जिसका मुकाबला न
किया जा सके, जिसको रोक न जा सके -अविधिरक्य-
मन्त्रधनुषम् - कि० ६।५०।
अविधिरहितत्वकथ्यता (स्त्री०) उन यन्त्रों की स्थिति जो
अपना शाब्दिक अर्थ प्रकट करने के लिए अविधेय
नहीं होते।
अविधिरहितत्वकथ्य (बि०) [न० ब०] ध्वनि काव्य का एक
भेद जिसमें शाब्दिक अर्थ अविधेय नहीं है।
अविधिरक्य (बि०) [न० ट०] जो किसी वस्तु के विवेचन
की बड़ि नहीं रखता।
अविधिरक्यता [नवि + विच् + युच् + टाप्] विवेक बड़ि का
अभाव।
अविधिरक्य [अव् + गी + अच्] सदेह का अभाव यदि वा
अविधेय नियम - मी० सू० ८।३।३१।
अविधेयत्वकथ्य (बि०) वह कथन जिसमें कोई विशेष विच-
र्य न दिया गया हो अविधेयत्वकथ्यन शब्दों न
विशेषेभ्यस्वस्थापितो अविधिरक्य - मी० सू० ४।३।१५।
अविधिरक्य [न० ट०] विधेयता का अभाव, अविधेयता,
अत्रयय।
अविधिरक्य (बि०) [न० ब०] निरवधार्य, अनिश्चित, जिस
पर कोई प्रतिबन्ध न हो शुभ्य नमस्तेभ्यस्वविधिरक्य-
ष्टये भाव० १०।४०।१२, अविधिरक्येन कि०
१३।२५।
अविधिरक्य (बि०) [न० ब०] 1 जिसका निर्णय करना
कठिन हो -सीमायामविधिरक्याम् - मन्० ८।२।१५
2 जो नहीं न जा सके अविधिरक्यसनेन वृत्तिताम्
- कि० ६।३० 3 जहाँ पर पहुँचना कठिन हो
-अधुनामविधिरक्यम् महा० १५।२०।३३।
अविधिरक्य [न० ट०] विरोध न प्रकट करना, अपनी
प्रतिज्ञा का उल्लंघन करना।
अविधिरक्य (बि०) [न० ब०] अनुहित, बाहरी अथ मूय-
मविहृतस्तत्र कान्तायार्थ - विश्व० ३६।
अविधिर (ब०) हृत 'अहो'।
अविहित (बि०) [न + वि + धा + क्त] जो नियत न किया
गया हो, जिसका विधान न किया गया हो।
अवी (स्त्री०) [अवधायमान लज्जया अच् + ई] रजस्वला
स्त्री - उवादि० ३।१।५।८।
अवीधिरक्योपचयः [अवीध + अच् + युच् + विच् + स्तुर्] स्याधि का विशेष प्रकार।
अवीधिरक्य (बि०) [न० ब०] धारिण के तैयारी किये
बिना आरम्भ करने वाला -अवीधिरक्यमिवाभ्या-
ह्य - कु० १।

अवेक्षणम् (वि०) [अव+ईक्ष्+णानच्] सम्मान देवाने
वाला - अवेक्षणपत्रक मही सभोतामन्त्रसंज्ञक-रा० ५ ।
अवेक्षिष्यु (नि०) [अवेष्ट+विष्+विष्णु] वेदों की न
जानने वाला ।

अवेष्टवित्तम् (वि०) [अवेष्ट+वि+ष्+क्त] जिसका वेष्ट
में विधान न हो ।

अवेष्टना [न+विष्+ष्णु] पीडा का अभाव ।
अवेष्टासम् (नपु०) लज्जाना, लज्जा का भावना रसना ।
अवेष्टोपिक (वि०) [न+विष्णु+ठक्] जो किसी विशेष
परिणाम को इच्छति वांछना न हो, जिसका कोई फल न
निकले - अवेष्टोपिकोऽयं हेतु - बी० सू० ११११११ पर
शा० भा० ।

अव्यञ्ज्य (वि०, [न० व०] 1. निरपराध 2. जिसमें
अग्नि या अन्नप्रदान का अभाव हो (काष्ठ्य में) ।

अव्यतिरेकः (न० ट०) अघोरक्य, निरपराध, (वि०)
[न० व०] जो भूलने वाला न हो, जो कोई त्रुटि न
करे ।

अव्यवहृत्य (वि०) [अव्यवहित्+व्यत्] जिसकी परिभाषा
न की जा सके ।

अव्योद्य (वि०) [अव्यप]+वह+व्यत्] जिसको
मुठलाया न जा सके, जिससे इकार न किया जा
सके ।

अव्ययम् (न० न०) कुशलार्थे, हिन, कल्याण - बुधित्-
मनापुष्कलबोधक सुहृद्योऽयम् - भाग० १०।८३।१ ।

अव्यवहित्क (वि०) [अव्यव+हित्+क्त] न टूटा हुआ,
जिसमें कोई विघ्न न पड़ा हो निर्बाध ।

अव्यवसाय [अव्यव+सो+वज्] निर्वाचक वफित या
नकल्प का अभाव ।

अव्यवसायिन् (वि०) [अव्यवसाय+निनि] आसानी, जो
निर्वाचक बुद्धि से रहित है बहुमानवा ह्यनन्ताश्च
बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् - मन् २।४।१ ।

अव्यविक्रम्यावः (पु०) पु० 'अव्यविक्रम्यावः', यद्यपि
'अवि' का ही 'अविक' बनता है, परन्तु 'अविक' से
'अविक' (बकरी का मांस) जैसा कोई दूसरा शब्द
'अवि' से नहीं बनता ।

अव्यवस्थेयः [न+वि+ष्+आ+क्षिप्+वज्] अनिश्चितता
या आरम्भिक कठिनाई का अभाव - अव्यवस्थेयो अवि-
प्यन्था कार्यसिद्धेहि कथनम् - न्यु० १०।६ ।

अव्यवहृत्यम् (स्त्री०) निष्कण्ट धया, स्वाभाविक सहानु-
भूति अव्यवहृत्यमाप्ति कति० ।

अव्यवहृत्यम् (नपु०) [अव्यव+हृ+क्त] चुप रहना, न
बोलना - अव्यवहृत्यं व्यवहृत्यं च वाहु - महा०
५।३६।१२ ।

अव्यवहृत्यम् (नपु०) [अव्य+क्त] 1. जो लाधा वाय, साध
प्राहुरन्वयान् निराहृत्यैत भासितं च तत् - भाव०
१५४

१।४।४० 2. बहु स्वान् बहु पर कोई लाधा वाला
है - अव्यवहृत्यमिदं च - पा० २।३।६८ ।

अव्यवहृत्यम् - न्यु० [न० ट०] अद्युप वाहुन, बुरा लक्षण - कथ-
यद्यपि तस्योऽस्तस्येऽनुननेन स्वास्ति किन्तेऽपि
- सि० १।८१ ।

अव्यव (वि०) [न+व्यत्+अच्] जो स्वीत न हो, आला-
कारी - अव्यवव्याजस्य च दास्यवैर्यं मायवेद्यम्
- मनु० ३।२४६, इदं ते नापस्काय माघाद्यम्
- मय० ।

अव्यवार्थः (अव्यव+अर्थ) 1. शब्द द्वारा अनभिज्ञत अर्थ
2. बहु अर्थ जो प्रत्यक्ष रूप से वाक्य से प्रतीत (अभि-
हित) न होता हो अव्यवार्थोऽपि हि प्रतीयते - म०
स० ५।१।१४ पर शा० भा० ।

अव्यवत् (वि०) [न+व्यत्+अच्] जो शब्दों से प्रतीत न
होता हो - म० स० ५।१।१५ ।

अव्यवित्तम् (वि०) [न० व०] 1. जो ढीला न हो, कसा
हुवा 2. प्रभावशाली ।

अव्यवित्तर (वि०) [न० व०] मर्म० - कष्ट,
- किरणः, रश्मिः सुषं - नीतोद्युयं सुहृत्सिद्धिर-
वमेकैः - सि० ५।३१ ।

अव्यवित्तम् (वि०) [न० व०] मर्म० - स्वप्नोऽव्यवित्तं
सम् - सि० १।८६ ।

अव्यवित्तम् (नपु०) अवाली प्रसन्न जो कृष्णयजुर्वेद के शास्त्र
काव्यों में विद्यमान है ।

अव्यवसंज्ञकम् [अव्यव+संज्ञ+त्सुट] बुरा समाचार देना ।
अव्यवसंज्ञकः (अव्यव+उपय) [अव्यव+उप+इ+अच्]
अव्यव सूचक लक्षण ।

अव्यवसाय (स्त्री०) एक प्रकार का वाक्य ।

अव्यवसाय (वि०) जो दुःख या शोक से पैदा न हुआ हो,
हर्ष या सुखी से उत्पन्न - अव्यवसायं अद्युधनुधि
- रा० ६।१२५।४२ ।

अव्यवसन् [न+व्यु+त्सुट] अपराध, वृत्ति, दोष - राशेन
यदि ते पापे किञ्चित्कृतमद्योमनम् - रा० २।३।८।

अव्यवस्यः [व० ट०] 1. ओके पठना 2 (छानु पर) पत्थर
पठना ।

अव्यवस्यम् [न+व्यं+क्त] अद्युप का एक प्रकार जो चना
हुवा न हो - बी० व० २।११ ।

अव्यो [न० ट०] दुर्भाग्य, बुरी किस्मत ।

अव्योकरन् (नपु०) [अव्यो+कृ+अच्] अद्युप ।

अव्योः [अव्युते अर्थान् व्यन्तीति महाशयो वा अव्यति
अव्य+अव्यु] शोका । मन्० - वातकाव्यकः
(पु०) शोका के लिए शास का संमरण करने
वाला तथियाकार, - कर्त्तुं कोड़े की देव-रक्ष
करने वाला - तस्यास्त्वयं काकुत्स्थं दृढयन्ता महा-
रथः (अनुमानकरोत्) - रा० १।३।१६७, - औषधः

चना,—सबुरा अस्तबल, विष्णु: मेसा—ग० प्र०,
 —सचमंनं पीडो की भांति बाधरण करने वाला
 अवनसयमंनो हि मनुष्या—की० अ० २१२, सुनम्
 'कोटो को पालने' के विषय पर एक पुस्तक।
 अष्टउरीरथ. [रम्पेलेने—रम्+कणम्] सचचरी डारा
 बीबा जाने वाला रथ।

अवन्त्यः [न पच तिष्ठति इति अवन्+स्था+कृ०पीपल का
 वेद। तय०—आराधनः नयवान् विष्णु जिनकी पीपल
 के मुख के रूप में पूजा की जाती है,—पूजा 'नभी
 देवता पीपल में रहते हैं' ऐसा समझ उसकी पूजा
 करना—मुक्तो ब्रह्मरूपाय भक्तो विष्णुकृपिते, अपत
 शिवरूपाय ब्रह्मराजाय ते नम, प्रब्रह्मणम् याविक
 संस्क्रिया के रूप में पीपल की परिष्का करना।

अवच्छन्न (वि०) [न+पठ+अञि] दे० 'अवच्छलीय'।
 'ईन' प्रायण स्वार्थ को ही प्रकट करता है। अत
 'अवच्छन्न' और 'अवच्छलीय' दोनों शब्दों का एक ही
 अर्थ है।

अवच्छलीय (वि०) [न+पठ+अञि+ईन] जो छ ओंको
 से न देखा गया, अर्थात् केवल दो ही व्यक्तियों के
 द्वारा निर्धारित तथा उन दो को ही ज्ञात (जिममें
 तीसरा व्यक्ति सम्मिलित न हो)।—अम् (नप०)
 रहस्य, गुप्त बात।

अष्टन् (वि०) [अन् व्याप्नो कनिन् गृ० च] आठ
 (मयल शब्दों में 'अष्टन्' के न का लोप हो जाता
 है)। मय० अङ्गम् (अष्टान्) १ आयुर्वेद पट्टनि
 जिममें निम्नांकित आठ अंग होते हैं—इन्द्राभिधान,
 गदनिदधय, कायमौष्य, शय्यकर्म, मृत्निघट विष
 निघट, बालवेद्य और रसायन २ बुद्धि की आठ
 क्रियायें सूक्ष्मा, श्रवण, ग्रहण, धारणा, चिन्तन,
 ऊहापोह, अर्थविज्ञान और तत्त्वज्ञान ३ वागाभ्याय
 के आठ अंग—इम, नियम, ज्ञान, प्राणायास, प्रत्याहार,
 धारणा, ध्यान और समाधि,—अष्टिकाश्रम' सामाजिक
 श्रवस्था में अंकित की आठ स्थितियाँ—जन्, स्वयं,
 धाम, कुल, जेवन, ब्रह्मचर्य, दण्डविनियोग और
 पीरोहित्य, अष्टाशी (अष्टाभ्याशो) १ पार्थिव
 का आचरण २ क्षत्रिय ब्राह्मण, अर्थात् भोजन के
 आठ प्रकार—भोज्य, पेय, शोच्य, लेद्य, श्राय, अर्घ्य,
 निषेय, और अशय,—अष्टाश्र (वि०) आठगुणा
 अष्टापाठ तु गृहस्थ स्तेयं ब्रह्मि किल्बिषम् मने०
 ८१३७.—अष्टाश्रानि छोटे-छोटे आठ हीन—स्वर्ण-
 प्रस्थ, चन्द्राश्रक, आचनेन, रमणक, मन्दरहार्णय,
 पाञ्चजन्य, शिहत और लक्ष्मा,—कुशाक्षता: आठ
 मुख्य पर्वत—नील, निषध, मास्थवन्, मलय, विन्ध्य,
 मन्धरायन, ह्यैकट और हिमालय, सर्वविधियुक्तः
 आठ मुख्य पहाड़, दे० ऊपर,—नम्या: मन्दिरो मे

प्रस्तर मृत्ति की स्थापना के लिए लेई या गारा बनाने
 में प्रयुक्त आठ सुपरिचित द्रव्य—अन्दन, अणप, इक्षवार,
 कोलिजन, कुटुम्ब, वीरज, अटामाशी और गारोचन,
 साम्ब मृत्तिकला में प्रयुक्त होने लला गज जिसकी
 लम्बाई उस मृत्ति के समान होती है जो अपने मुख में
 आठ गुणा होती है,—बेहा स्वयं और मुख्य शरीर
 का गिनती में आठ होते हैं स्थूल, सूक्ष्म, कारण,
 महाकारण, विराट्, तिर्य्य, अध्याकृत और मूलप्रकृति,
 तथा १ आठ सौ—अनन, बामुकि, तपक्,
 कर्कोटक, छल, कृत्तिक पथ और महापथ २ आठ
 दिग्पत—ऐगवत, पुष्टरीक, कामन कुम्पूर, अजल,
 पुण्डत, मार्शमीम और मृदनाश' पक्ष (६०)
 (एसा कमरा या घर जिममें) एक ही और आठ
 मन्त्र लगे हुए हो, प्रकृत्य पांच महाभूत (अग्नि,
 जल, पृथ्वी, आकाश, वायु), मन, बुद्धि और अहंकार,
 प्रथाना राज्य के आठ प्रधान अधिकारी— वैद्य,
 उपाध्याय, मन्त्रि, मन्त्री, प्रतिनिधि, राजाध्यक्ष,
 प्रधान और अमात्य, भंरखा, शिव के आठ गण
 अग्निनाजू, सहार ग, काठ काय, नाभचूड,
 चन्द्रचूड, और महाभैरव भोला मुखमय जीवन के
 आठ तप्य, अन्न उदक ताम्बल, पुष्प अन्दन वन,
 राधा और अलंकार बह्मचर्यम आर्यवेद की
 आठ शीषणियाँ मिला कर तैयार हुआ थी प्रश्न
 श्वाणिय में प्रश्न विचार प्रणाली के लिए अपनाया
 गया एक डग - बन्धु आठ प्रकार का गृहदमोक्ष
 धामर, लोड पीनिका सायक अय, श्रोतान और
 दाल महाराजा आयुर्वेद पट्टनि के आठ र्म
 वैज्ञानयनि हिमम्, पाग, हलाहल हानलाह
 अक्षक स्वर्णमाशी और गोप्यमाशी, रोमा श्रायुर्वेद
 में बलिण आठ प्रधान राय -बाधधार्थाय अरमंरी,
 कुट्ट, मह उदक, भतन्दा अर्ग और मरुहृणो
 बामुका पराशरिण के आठ प्रह्वार हाष्टी,
 महेश्वरी, कोयारो ईर्यनी, बागही, इण्टानी,
 बीररो और चामुष्पा, कुम्भक आठ प्रकार की
 मुनिवाँ-मैनी, दाममयी, लौहो मैव्या, मेक्या मैकनी
 मनामयी और पारमयी, योनिष्प आठ योनिधियाँ
 या पार्वती की महेश्वरी की-मङ्गला, विज्जला, धव्या,
 भामरो, अष्टिका, उष्का, सिद्धा और मङ्गुटा, बने
 एक प्रकार का रेखाचित्र जो किसी विचार मय पर
 पड़ो की यथार्थ विधि दर्शाता है.— सिद्धकः दे०
 अष्टमहाविद्यय -अग्निमा, अष्टिमा, लक्षिमा प्राणि
 प्राकाम्य, ईशिता, इशिता और प्राकाम्य।

अष्टकलाकि [४० त०] किसी व्यक्ति के मुख की राशि
 से आठवीं राशि जो प्राय अनुभूत मानी जाती है।

अष्टात्मक (वि०) [४० त०] (माष्टी) विसर्ग आठ ईल

मृते हो, अष्टाज कपाले हविषि, त्वि व युक्ते—पा० ५।३।४६ बा० ।

अष्टाजस्य [अष्टाजाना तथा महाहार] अष्ट ऋषीं का समूह ।

अष्टावश (वि०) [अष्ट व दश व] अष्टावह । सम०—सप्तमि अष्टावह प्रथान तत्त्व जिनमें महतु, महच्छार, मन, पञ्च तन्मात्रा, पञ्च कर्मेन्द्रिया तथा पञ्च ज्ञानेन्द्रिया गिनी जाती हैं, चक्षुष्य अष्टावह प्रकार का अर्थ है—एकान्युप्रधाम्यादि निष्ठा कङ्कमुकुन्दवका, माया मृदना मनुराज्य निष्ठावा श्याममयपा । मवेधुकाशतोवारा सोडकपोऽथ मनीषका, चणकारकीम काशवेव - धान्याम्बुष्टादशैव तु पर्वणि महाभारत के अष्टावह लक्ष आदि, सभा, वन, विराट्, उद्योग, भीम, द्रोण, कर्ण, शम्पू, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अरवमेघ, आश्वमेधाति, मोमल, महा-प्रत्यानक और स्वर्गारोहण ।

अम् (दिवा० पर०) मृद करना यूयोध बलिनिन्देन नायकेन सुहृद्व्ययत - भा० ० ८।१०.२८ ।

अम् [अम् आधारे क्, अयम्ने मूर्धे किरपा यम्]

1 छिपाना, पश्चिमादि 2 मूर्धे वा छिपाना । सम० निमज्ज (वि०) अन्नाजल के पाँठे छिपा हुआ

विनमज्जसम्भितमलसुव्यं-गु० १५।११, मत्स्यः शिखर, अन्नाजल की चाटी, सव्यः मूर्धे छिपाने का समय, मृग्य का समय—हरशालमत्स्यतयमेषि गनाम् - भा० १।५ ।

अस्मिभीर् (वि०) [अस्मि भीर् च्यप् - पा० २।२।२४ बा०] जिसके पास दुध हो, दुध रखने बासा ।

असक्तकाम [न - सक् + क्त] अधिवास, मलवास, लौह का महीना ।

असवाय्य (वि०) [न + स + यञ् + घ्यात्] जिसके साथ विनयक किसी को रख करने की अनुमति न हो—मनु० ।

असंयोग [न + सृ + षृ + षञ्] 1. सवक का अभाव 2 जो मयुक्त व्यञ्जन न हो पा० १।२।५ ।

असम्भ [न + सृ + षृ + षञ्] निमंभता, निवहता—महा० १।४।८।२ ।

असरोक्ष [न + सृ + षृ + षञ्] अनापात ।

असंरोक्ष (वि०) [न० व०] जो रोक न जा सके, दुमिहार—असंरोक्षसंरोक्षिण्ये - नै० १।५३ ।

असहार्थ (वि०) [न + सृ + हृ + ष्यात्] 1. अर्थेय, जिसका मुकादला न किया जा सके विधिवत् असहार्थ शानिवां प्लवभोत्तम् पा० ५।३।७।५ 2 जिते मार्गच्छत् न किया जा सके ।

असहकचम् [असहृत् + क् + सृत्] सन्धि, बोहराना ।

असहकचः [असहृत् + षृ + षञ्] शत वृ० व० ।

अस्यकी (अस्यी) [असृ + सृ, पा० ५।३।७।२, काशे] 1. यह वा बहु 2. यह दुष्ट—नाशोर्ध समनश्चाय तस्य सोमिषयेऽस्यी—अटि० ५।१५ ।

अस्यसिक्त (स्त्री०) [न + सृ + सृ + क्त] सामान्य साकारिक बातों की ओर मन का लगाव न होना असक्तिरत-निम्बज्ज दुषवारणुहविषु मनु० ३।१९ ।

अस्यस्यरः [न + सृ + ङ + षत्] मिलावट (विशेषकर जातियों में) का अनुभव ।

अस्यस्यसिक्ता (स्त्री०) [न + सृ + कृ + षत्] जो कभी कल्पना न किया हो अस्यस्यसिक्तायेह यदस्मान् प्रवर्तते पा० ३।२।२।४ ।

अस्यस्यस्य (वि०) [न + सृ + य + षत्] निर्बीज, अनवच्छ—कृषि विद्यामस्यस्यताम्—पा० १।७०।१३४ ।

अस्यस्यस्यः [असृ + षा + षि + षत्] अयोग्य व्यक्तित्व से सम्बन्धन ।

अस्यस्यस्यु (नपु०) [क० स०] अधिकमान बीज ।

अस्यस्यस्यिन् (वि०) [असृत् + स्यर + षिनि] जो व्यक्ति किसी वस्तु या बात की असत्ता को स्थापित करना चाहता है ।

अस्यस्यस्युत् (वि०) [न + सृ + सृ + षत्] अतृप्त, अवसन्न अलसुष्टो द्विवो वष्ट—नीति० ।

अस्यस्योक्तः [न + सृ + सृ + षत्] अतृप्त, अवसन्नता ।

अस्यस्योक्तम् [न + सृ + षा + स्युट्] 1 निश्चयसता 2 विल-मता, शार्थक्य ।

अस्यस्योक्तः [क० व०] जो अभाव रूप से नहीं बढ़ता हुआ है ।

अस्यस्योक्त (वि०) [नञ् + सृ + षा + सृ + षत्] जो प्रतीतिगत प्रविष्टित न किया गया हो ।

अस्यस्योक्त (व०) [न + सृ + इ + स्यपृ] न जला कर ।

अस्यस्योक्त (वि०) [न + सृ + अञ् + षिक् + ष] जो सोने न हो, मुट्टियुर्ध ।

अस्यस्युः (स्त्री०) [न + सृ + षृ + षिक्] एकलता का अभाव, किसी भी वस्तु की कमी होना—नाशवाय-वस्योत् पूर्वविशस्युर्दिशि—मनु० ५।१३७ ।

अस्योक्त (वि०) [न + सृ + षा + इ + षत्] जो कभी पूर्णता न हो, अनागत, अनुपस्थित—कश्चिदस्योत्-परिच्छत्—मनु० - १।७० ।

अस्योक्त (वि०) [न० व०] अनुपस्थित, जो निकट न हो ।

अस्योक्तः [न + सृ + षृ + षञ्] निष्कर्मता, निष्काम्यन, कार्य का रूक जाना अस्योक्त करिष्यामि ह्यह वैकोषयवादिषाम्—पा० ३।६५।५९ ।

अस्योक्तः [न + सृ + षृ + षञ्] विद्यते अद्यत शत की शीघ्र में आकर रोक दिया है—उत्तमावाच्यस्योक्तः शार्थक्य-वाच्यता—मी० सू० ३।३।२।२ पर का० भा० ।

अस्योक्तः [न + सृ + सृ + षञ्] सवक का अभाव ।

अव्ययम् (वि०) [न+अम्+भू+अत्] अव्ययम्, अवट-
नीय ।

अव्ययानाम् [न+अम्+भू+भिव्+भूच्+टाप्] अन्मान
का अनाय ।

अव्ययानि (वि०) [न + अम् + भू + भिव् + क्त]
अवयोप्य । अय०—अव्या ऐसी समानता मतलाना जो
अवयव हो ।

अव्ययान्य (वि०) [न+अम्+भाम्+भ्यत्] जिससे बात
करना उचित न हो ।

अव्ययीय (वि०) [न+अम्+भूच्+भिव्+भ्यत्] जो
सहयोग में सम्मिलित होने के योग्य न हो—अनु०
१।२३८ ।

अव्ययीयः [न+अम्+भूच्+भञ्ज्] 1 माना या प्रय से
मुक्ति 2. आरामसंहरण 3. छल जान ।

अव्ययीयम्, अव्ययीयः [अव्ययीयम्] अ+भूच्+भञ्ज्। अचूट
अव्यहार, मलत परिपाटी ।

अव्ययी (वि०) [न० त०] दक्षिण पात्यं ।

अव्ययीयम् [न+अभिव्+भ्यञ्ज्] अव्ययीय, अन्-
परिमित—अव्ययीय कच कृष्ण तनावीयभूमिगन्धन
महा० ३।१५।१ ।

अव्ययीयानाम् [न+अव्ययीय+भ्यञ्ज्] 1 अचूट
2 अनौचित्य ।

अव्ययीयता (स्त्री०) [न+अव्ययीय+अन्+ता] अचूट
अव्यहार करने की अवस्था ।

अव्ययीयानि (वि०) [न+अव्ययीय+अन्] जो लोक-
सम्मत न हो, जो परम्परा के विरुद्ध हो ।

अव्ययीयान् (वि०) [न+अच्+अभ्+भा+भ्यच्] उन्मा
करने वाला, प्रमादी, अपरिपाह ।

अव्ययीयानि (वि०) [न+अच्+अभ्+अन्] जो वाह्य के साथ
काम न कर सके या जो बिना विचारे न करे—न
सहायिण्य वाह्यमहाहृदिकी वि० १।१५ ।

अव्ययीयान् [अभ्+अभ्+टाप्] अव्ययीय यमाने का
अव्यहार ।

अव्ययीयता (स्त्री०) उन्माद का फल दनुमुस्फलिता-
विश्वकण्ठिता—वि० १।१५ ।

अव्ययीयः [न० व०] जो दाहिने हाथ के उन्माद से मार
करता हो महा० १।१५।४ पर नील० ।

अव्ययीयान् (स्त्री०) काली कण्ठ का बोधा ।

अव्ययीय (वि०) [न+अभ्+अन्] (आ० में) अविचारक
प्रतिरक्त कर्तात् रू, प्रभावयुक् - दुर्भावित्त्वम् - पा०
८।२।१ ।

अव्ययीयः [न० व०] वल्ल विषय, बुद्धिपूर्ण राज्ञाय ।

अव्ययीयान् (वि०) [न० व०] जिसने अपने उद्देश्य में लक्ष-
कता न पाई हो ।

अव्ययीयान् (वि०) [अच्+भू+भिव्] जो अपने ही सुयोग-

योग में मस्त हो, सांसारिक विषय बाधनात्मो में मग्न
—अन्ति ससुसुयो लम्बा भाव० १०।१।६७ ।

अव्ययीय (वि०) [न० व०] जिसमें सुदृग् न आती हो ।

अव्ययीय (वि०) [न० व०] जो आसानी से पार न किया
जाय, जिसमें अनायास साफल्य प्राप्त न हो ।

अव्ययीय (वि०) [न० व०] जो बुद्धरुल न हो ।

अव्ययीय [अच्+र, अचुरता स्थानेभू न सुन्दरता, चपला
इत्यर्थ] गलत । अय०—अव्ययीय राजसो का इधर
-अचुरताम्यसापचूचचितस्ते—१० मा० ११,—बुध
1 सुकाश्यां 2 बुध नाम का ग्रह,—बुध, राजसो का
सम्बन्धी देव पुर किलानाति शोभ हि सेतुकेयो-
जुरहुहाम्—वि० २।२५ ।

अव्ययीय (वि०) [न+अच्+भिव्, शस्य स] जिसमें
कोई छिद्र न हो, जो बोधी या कपटी न हो ।

अव्ययीयता [अचूट+अचरी पा० १।२।४२] बहु स्त्री जो
बिना किसी बन्धे की अव्यय दिये ही बुझी हो गई है ।

अव्ययीय (वि०) [न० व०] 1 अन्कारयुक्त 2 अज्ञात, दूर-
स्थी । अय०—एकः वे लोग जो सर्वथा अलग-अलग
रहते हैं अचूटअचरी नाम चरार्थिष्य महाभारति रा०
१।२।३७ ।

अव्ययीय (अनु०) [न+अच्+भिवन्] 1 इधर 2 मगलग्रह
3 आकारान । अय० अच् मगलग्रह,—विषय (वि०)
अन् से अन्वय ।

अव्ययीय [न० व०] अन्वय का अन्वय—न तर्कानि शस्यते
तत्रिभवनानुसन्धेयवा—अनु० २।१६ ।

अव्ययीय (वि०) [न० व०] 1 अचूट 2 जो चमरी न हो,
हलो न हो—महा० ५।१२ ।

अव्ययीय (वि०) [न० व०] जो बोधा न हो, बहुत अर्थिक ।

अव्ययीय (वि०) [न+अच्+भञ्ज्] बिना किसी अन्वा-
हित अन्ध के अन्तोपमनयच य बुध सुचिबरो विदु,
बिना किसी रोक टोक के ।

अव्ययीय [अच्यते शिव्यते-अच्+ट्टम्] 1 फेंक कर मार
करने वाला हथियार 2 तीर, तलवार 3 वनुय ।
अय०—वसिष्णु (वि०) बोली मारने वाला—अय्य
पाठिभिरामृतम् बुध० ५।१०.३७,—बुध जो तीर
के बाता है, तीर धारण करने वाला, अन्वय वनुय,
एक प्रकार का अन्ध जिसके द्वारा तीरों की मार की
जाय—महा० १।५७।१८ ।

अव्ययीय [न+अच्] अन्वाचार्य स्थात या प्रदेय-अन्वयाने-
शोपनावन्मानुकेवाभिरामा मेव० ।

अव्ययीय (वि०) [न+अच्+अच्] अचल, अचौर ।

अव्ययीय (अनु०) [अच्+अचिन्] 1 हृदयी 2 घुंठी, या
जिसी फल की चिन्ता । अय०—अचूटम् एक नरक
का नाम, -अव्ययीय स्नाय, कडवा,—अव्ययीय (वि०)
जो हृदयी की बीज दे, अच्यत कडोर भावस्तीश्वरानि-

वेदिन.—यह० ३।३१२।३.—यसः बीर्ष्वेदिकि क्रिया का एक भाग,—विषय किसी पवित्र नदी में किसी मृतक की अस्थियों को प्रकाशित करना,—आरः, स्नेहः यहा, यन्वा ।

- अस्वाहा (वि०) [न० त०] जिसने स्वान न किया हो ।
 अस्पृष्ट (वि०) [न+स्पृष्ट+कल] जो (किसी कथन से) भावत न हो, (उसके) अंतर्गत न हो—अस्पृष्टपुरुषान्तर (शब्दम्)—कु० ६।७५ ।
 अस्पृष्टव्यवृत्ता (वि०) [न० व०] कुमारी, अज्ञतयोगिनी ।
 अस्पृह (वि०) [न० व०] निरीह, निरिच्छ, जिसने इच्छा न हो ।
 अस्पृष्ट (वि०) [न० त०] जो पूर्ण विकसित न हो—अस्पृष्टाद्यवयवनेदकुन्दरम्—नारा० ।
 अस्विभावः [त० स०] स्वाभिमान, अहंकार ।
 अस्त्य (वि०) [न० त०] १ यार न किया हुआ २ जिसका प्राथमिक अर्थों में उल्लेख न हो ।
 अस्वाधीन (वि०) [न० त०] जो स्वतन्त्र न हो अस्वा-

धीन गदाधिप हर्षयति नरा ब्रूयत्—उ० ३।३३।५ ।
 अस्विन्न (वि०) [न० त०] जिसे बनी वांछि जडाका न गया हो ।
 अस्वेष्ट (वि०) [न+स्विप्+स्वप्] जिसे पत्नीमा आने के उपबन्धत न समझा जाय ।
 अस्त (वि०+हृत्+कल) जो बनाव न गया हो—अस्ततामां प्रवाननेर्वाग्—का० ।
 अहम् (सर्व०) [अस्वद् का कर्त्तृकारक एक वचन] मैं ।
 अम० अह् (पु०) अहंकारी, जो केवल, अपना ही चिन्तन करे—साम्भः अहङ्गुर, यमव ।
 अहिचक्षम् [प० त०] टानिकों का एक प्रकार ।
 अहिचिचिच्छा (स्त्री०) [अहिचि+चि+हृ+अह+टाप्] एक पीछे का नाम जिसके लेखन से चिचि बुर हो जाता है ।
 अहोलाभकर (वि०) [अन्वेऽपि, अहोलाभो वात इति विभ्रम कुर्वाण] पीछे मात्र से ही अनुपठ होने वाला व्यक्तित ।

आ

- आहृत्स्वय (वि०) [अहृत्स्वि+यञ्] मनमास लक्ष्मी ।
 आकम्प (अव्य०) लगे तक । तम० कृत् (वि०) स्वारिष्ट भोगनों से गले तक छिंका हुआ ।
 आकम्पना [आ+कम्+पञ्, टाप्] गिनना, समझ, अनुमान, मूल्य मोजना ।
 आकम्पन् [अ०] बार मुगो के बन्ध की अक्षयि तक, आकम्पनाकम्प } अब तक सवार है तब तक ।
 आकाशका [आ+काश्+अच्+टाप्] अपेक्षा, भाषा—अस्तत्यामाकाशभावा सन्निधानमकारणम्—सं० त० ५।४।२३ पर छा० आ० ।
 आकाशकः, अकम् [आकाशन्ते सूर्यादीनाम्—आकाश्+अञ्] १ आस्मान २ अन्तःस्थि ३ मुक्त स्थान । तम०—यचिकः सूर्य, अहर्बुधिरः अहर्बुध, जो बिना उदये से इधर-उधर देखता है, बुधिका (व० व०) सूर्य सप्रशम के लोग, जो अपना मूह आकाश की ओर रखते हैं, बुधियुक्तम् मूर्खता का कार्य जैसे आकाश की ओर घूँसा उठाना, अर्थ कार्य,—अकम्प बुद्धी हवा में सोना ।
 आकम्पयन् [आ+कम्प+यत्] एक प्रकार का मुद्र-कीटाण—शुफ० ४।१००० ।
 आकम्प [आ+कम्+कल] (प्राय) समास के अन्त में वृत्त] प्रस्तुतीकरण—पु० भवकृतम् ।

आकृतिः (स्त्री०) [आ+कृ+कित्] अकृष्णा वीर ननु की एक कथा का नाम ।
 आकृष्टारम् (नपु०) कुठ साम-अर्थों के नाम ।
 आकृष्टकर्म (नपु०) [प० त०] अतिकार्य—की० अ० २ ।
 आकृष्टकर्मः [प० त०] मुक्तकर्म, आचिचिचम् ।
 आकृष्टकम् [प० त०] रत्न, बड़ाऊ महना ।
 आकृष्टकर्म (वि०) [न० व०] रत्न वीर आकार में कमनीय ।
 आकृत (वि०) [आ+कृ+कल] निर्मित, बना हुआ यहा सम्यक् अर्थाकृते मूहै ष्ट० ८।१०।१ ।
 आकृति (स्त्री०) [आ+कृ+कित्] १ कृत्य २ (अचित) वादत की संख्या ।
 आकृतिवोधः [प० त०] नक्षत्रपुत्र ।
 आकम्बः [आ+कृ+अञ्] १ वन्धुव आकम्बं छारि-फलके सुतेज्जे कामुद्विऽपि य—हेन० २ विचालत पीथा—महा० ५।४०।११ ।
 आकृष्ट (वि०) [आ+कृ+कल] बीषा हुआ, आकृष्टित किया हुआ, ऐसा हुआ ।
 आकृष्टः [आ+कृ+अञ्] विचरिचिचालन, मनुष्येय ।
 आकृष्टकम् (नपु०) [आ+कृ+अञ्] विधेयता का बनाव, नैपुण्य की कमी विचरिचिचालनकी वृत्तान् मूलाकीशकामायेपेठसाम्—सि० १६।३० ।
 आकम्बः [आ+कृ+अञ्] पीछी, पीछी का बडा—केना-कमेय यवनाय स्वर्ण कीकामाकम्बे - वृ० ३।३।६ ।

आकल (वि०) [आ + कल् + क्त] 1. अकलित, तथा हुआ, —न कल् नरके हाराकलं चनस्तानमण्डलम्

- भर्त० १।१७ 2. आकल, चढ़ा हुआ —निर्यंस्तु-
राकल्ला रा० १।१२७।११। तय०—भक्ति (वि०)
यन से परावृत्त, अत्यन्त प्रभावित।

आकलित (स्त्री०) [आ + कल् + क्त] आकलय,
लुटलसोट यो मूलानि यनाकलय्या यवात्कलेष्वाच्
रञ्चति—महा० १।१७।८।

आकलितगिरि, (पर्वतः) [त० स०] आमोद गिरि, आमोद
प्रमोद के लिए पहाड़—आकलितगिरिस्ताने कल्पिता
स्वेयं वेदमनु—कु० २।४३।

आकलित (वि०) [आ + कल् + क्त] 1 स्त्रिय 2 दया
से यमीत्रा हुआ।

आकलितकः [त० स०] 1. पुरातत्त्व और अभिलेखाधि-
कारी 2 लेखाधिकारी कौ० अ० २।

आकलर [अक्षर + कल्] वर्णमाला मखची।

आकलित [आ + कल् + क्त] प्रशिक्षित, ठँसा हुआ।

आकल्यः [आ + कल् + क्त] परास, (तीर की) पहुँच
—सोऽत्र प्राप्तिनवाक्येणम्—महा० ७।१०२।६। मय०
—कृष्णम् उपमा अलकार का वह रूप जिसमें देवन
उपमान ही संकेतित ही।

आकल्यक [आकल्यकति भेदयति पर्यन्तम्—अर्थः इत्यत्र]
इन्द्र। तय०—आय, —कम्, इन्द्रकम्, सुम्, इन्द्र
का पुत्र अर्थात् यजुंन—अनुस्मृत्याकल्यकमुद्रविषय
- कि० १।२४।

आकल्यकाला [व० त०] दलकार या गिल्पी का
कारवाला।

आकल्यकालम् [व० त०] गणेश का नाम।

आकल्यकालम् [त० स०] गिकार या मुग्धा के लिए
राजकीय जगल।

आकला (स्त्री) [आकलायतेऽस्या, आ + क्वा + टाप्]
1. मूलन, गणन—न हि तस्य विकल्प्याक्या वा च यदी-
नया हता—भाष० १।१८।३० 2. सौन्दर्य, यवाजना-
वस्त्रीयु कचिराक्याम् - रा० ७।६०।१०।

आकलास (वि०) [आ + क्वा + क्त] चुकारा गया—सेवा
इवन्तिराक्याता मय० ४।६।

आकलासम् [आ + क्वा + क्त] आरम्भ करने का दृष्ट
शकुन।

आकलासम् (नपु०) [आगत + ल्] उपगत, मूल,
जन्मस्थान।

आकलासम् (वि०) [न० व०] इरा हुआ, भीत।

आकलः [आ + कल् + क्त] 1 जो बाढ़ में जाने वाला
है आनमभयसंयोगे स्यात्—मी० नू० १०।५।१
2 पुत्रा की एक रीति—कव्यानुसङ्ग आचार्यनित्त
सन्निगाताय—भाष० १।१।४ 3 याथा—भाष०

भास्वेतिवास्तुत्तु रा० २।२५।११। तय०—अचान्ति
(वि०) जिसका स्वभाव उत्पन्न होने और फिर नाश
ही जाने का हो, जिसका अन्त्यमरण होता है—आय-
भापायिनोऽगित्या भय० २।२४, - सात्तम्
(नपु०) 1 'आगत' से सबब रखने वाला शास्त्र
2 माण्डूक्य का परिचित, धृतिः (स्त्री०)
परम्परा।

आचलित (वि०) [आचम् + क्त] 1 सीसा हुआ,
(किमी से) शिक्षा प्राप्त प्रकृतितत्त्वैव नियुक्ता-
गमितम् वि० ५।७९ 2 पठित, जिसमें पढ़ लिया
है 3 निश्चय किया हुआ।

आचल्यम् (नपु०) जूना—हृय०।

आचल्यौघिक [अचिञ्च + क्त] अचिञ्च से सम्बन्ध रखने
वाला।

आचल्यौघित (स्त्री०) [व० त०] अचु के प्रथम फल की
आहुति।

आचल्यक [अचु + क्त] घुटनों में नीचे नर पहुँचने वाला
का।

आचल्यक [अचु + क्त] कायने की जमाने वाला
महा० १०।३।१०।

आचल्यक (वि०) [अचु + क्त] विद्विष्टता से मुक्त
वच का नाम आचल्यकम्बद्धे भुजिनेदे नदीगतम्
नाता०।

आचल्यकारकम् (व०) जब तक मन्त्र में चौद और गाने
है अर्थात् मन्त्र व चिह्न।

आचल्यकारक (वि०) [आ + क्त्वा + क्त] - परापूर्वक
- अणु इत्यत्र उच्यते भवन्ति वाचा।

आचल्यकारकम् (व०) [आचयन + वाह + क्त] पानी
निर्वायने वाला, पानी पीने का निकालने वाला, पवि-
ट्टाग।

आचल्यिक (स्त्री०) [आ + कल् + क्त] मुखसृष्टि के
लिए आचयन करना।

आचल्यित (वि०) [आचर + क्त] इसाया हुआ, बना हुआ
देवामन्त्राद्ययैवमवस्थाचरित्त सुभम् रा० १०।५।
१६।

आचार्यकर्म [आचार + क्त + इति] वैष्णव संप्रदाय के
सदस्य।

आचार्यकर्मजलि (स्त्री०) (प्रेष्य करने समय घर के
द्वार पर ही) धार्मिक प्रथा के रूप में पुष्पा का उपहार
मेंट करना।

आचार्यवेदीय (वि०) [आचार्यदेवः + उ] आचार्य से कुछ
दिन पर का (आध्यक्षाधी ने इन उपाधि को उन
विद्वानों के नामों के साथ जोड़ा है जिसकी उक्ति
'मन्त्र' के एक अंश की ही प्रकट करती है)।

आचार्यस्यः [आचार्य + सु + अच्] एकल—अर्थात् एक दिन तक रहने वाला यज्ञ का नाम ।

आचार्यस्यम् [आचार्य + क] १ आचार्य का पद—ताच्छाचार्यक कुर्वन्निव श्रीवशिष्ठसिद्धिनाम्—भा० १।१।०६
२ आचार्य का सम्मान करना चकाराचार्यक तत्र कुलीपुत्रो घनश्याम महा० ७।१४।७। ३ आचार्य-कता या श्याम्याकार का कर्मस्य धृत्यश्चलाचार्यकम् विश्व० २।८९ ।

आचेष्यति (वि०) [आ + चेष् + क्त] उपकाल, बचन दिया हुआ, तन्म कार्य, कृप्य, कार्यकलाप ।

आच्छन्न (वि०) [आ + छ् + क्त] आवृत, ढका हुआ ।

आच्छन्नस्यम् [आ + छ् + क्त + सिच् + स्युट्] विद्यने की बादर ।

आजान (वि०) [आ + जन् + क्त] उच्च कुल में उत्पन्न या ई कविप्रतिभावात् शत्रिय शककर्मणि -- महा० ५।१३।७।३८ ।

आजानिक (वि०) [आ - आज्ञा (जानि) स्वार्थे कन्] आज्ञान, नैसर्गिक आज्ञानिकरणभक्षिता नं० २।५।६ अ० त० ५ ।

आजपाद्यम् [नृ०] पुर्वानाशयरा नक्षत्र ।

आजसम्बन्ध [प० त०] यष्ट का अर्थभाग ।

आजीवितान्त्य (अ०) मरणे तक मृत्युपूर्वतः ।

आज्यपन्न, [प० त०] घी का कटोरा ।

आज्यभोग [प० त०] घी की आहुति का हिस्सा ।

आज्यजाम्यञ्जने (नृ०) वर्ज० द्वि० व०] शीघ्र का अन्नज शेर पैरा का उद्वेगन ।

आज्जालिक [अज्जलि, टक्] अर्घ्यकट के आकार का एक मंत्र ।

आज्जिक [अटन्त्या चरति भवा वा टक्] जगदी जलजालि वा चौघने - कौ० अ० १।१० ।

आज्यपीठ [आ + पृथ् + क् + पीठ० + क्त, चञ्] गटिषा मन्थिषान ।

आज्यकोश [अज्य + अण० कोश] अग्ने का स्थान ।

आज्यस्यम् [ग - नञ्च + घञ्, कुञ्चम्] भस्मा नक्षत्र ।

अजित (वि०) [आ + ज् + क्त] गम किया हुआ, आग में पलाया हुआ ।

आजिष्ठाधिक (वि०) [अजिष्ठा + टक्] अजिष्ठाचतुर, बहुत अधिक ।

आजिष्ठाद्वय (अ०) [निष्ठानि गाव यन्मिन्कावे दोग्य] उत मय्य तक अब तक कि गौर् दूरे जाने के लिए उठनी है [मायका के बाद एक ईद पटा तक] - आजिष्ठाद्वय जपन् नभ्याम् अष्टि० ४।१४ ।

आज्यम् (पु०) [अन् + भनिन्] मानसिक धृष्ट भाववादि-देवा नाम अयमन्थायममव महा० १-२।१६।७।५ । (मन्मथ जगदी में आज्यन् के 'न्' का लोप हो जाता है) । मय०—आज्यन् प्राणा की प्राप्ति होने वाला

पाम मुख, परमानन्द,—अक्षिण्यम् स्वस्वाद्युषम्, अपनी ममानता—आत्मीयत्वम् सर्वत्र यम० १।३२,—अक्षिण्य (नृ०) अपना कर्तव्य, श्लोक्तिः (नृ०) आत्मा की प्रथा, ठेक तुल्य (वि०) अपने में अनुष्ठ—आय-नृत्तयच मानव—अय० ३।१७, अक्षिण्य (वि०) अपने अनुभव से जानकारी प्राप्त करने वाला;—आय-प्रत्ययिक आक्षन्त महा० १२।२४६।१३, नू कामदेव,—अर्थ (वि०) अपने दल या समुदाय से मन्त्र रखने वाला, उद्बाहुना बुद्धिरे मूढराजसर्ग्या - सि० ५।१५, अक्ष्य (वि०) अपने पर ही दुष्टि जमाये हुए—आयसम्बन्ध मन कृत्वा यम० ६।२५, सतसम्बन्धे० आयसम्बन्ध,—स्य (वि०) जो अपने अधिकार में हो—आयस्यम् कुल सामनन्—ग० २।२।१८ ।

आत्यधिक (वि०) [अत्यय + टक्] बिलम्बित, हिममें पड़ल ही ढेर ही गई हा—कृत्यमात्यधिक म्यन्तन् - ग० ५।५।८।४६ ।

आत्यधिकम् [अत्यय + टक्] १ कठिनाई सहक २ अनिवायं कर्नञ्य ।

आत्मीय [अनेकय दक्, निष्ठा झोप] रक्षिणी स्त्री महा० १-१।६५।५४, आत्मीयाश्रमभिमित् मी० म० ६। १।३ पर शा० भा० ।

आत्यधिकम् [अत्यय + अन्] आरभ माण टाना, जादू ।

आत्यष्ट (वि०) [आ + अष्ट + क्त] कुतारा हुआ, बीच माग हुआ हुआ हुआ ।

आदानम् [आ - दा + ल्युट्] पत्राभूत करना, पत्राभूत करना -अथवा मन्त्रस्य ह्युत्तरात्मादाया दुष्टम् महा० १०.०१२ ।

आदानसंज्ञिति (स्त्री०) जैनियों के पांच मिथाना में से एक जिसमें बन्दू को इस प्रकार प्रकृत किया जाता है जिससे कि कोई जोखझपा न हो ।

आदानस्यम् निर्भयता महा० १२।१२०।५ ।

आदि [आ + दा + क्त] १ प्रथम, प्रारम्भिक २ नाम के बात भेदी में से एक—अथ सप्तविंशत्यश्च आदि सप्तविंशत् सामोपानोन् ... चदेति स आदि - छा० २।८।१ । मन०—दीपकम् दीपकालकार का एक भेद (बर्दा किया वाक्य के आरम्भ में हो) -विद्युत्ता आर्षा शन्त का एक भेद, कृष्ण एक प्रकार का पीया ।

आदित्यवर्षास्यम् [प० त०] एक मन्थार जिसमें चार नाम के बन्धों को सूर्य दर्शन कराया जाता है ।

आदित्यपुराणम् एक उपपुराण का नाम ।

आदीनवचने (वि०) [आ + दी + क्त + वा + इ, दुष् + चञ्] पास के शेर में अपने साथी मित्रादी के प्रति दुर्भावित रहने वाला ।

आदेशः [आ + दिष् + चञ्] किसी कार्य को करने का सकल्य, इत—उत्सृष्ट में स्वयं तीव्र आदेश कल्पित

—रा० २।२२।२८। सम०—सूट् जो मात्रा का प्रत्यय करता है उपसर्गस्योऽभिधान्तु—रा० ५।५२।

आधेयिक [आधेय + ठञ्] अधिपत्यता, श्रेयोतिथी—पुण्य आधिक्येऽधेयिकेऽपिवा स्वप्न० १।

आद्यकालिक (वि०) [आदी भवत् काल + ठञ्] केवल कर्त्तव्यता को देखने वाला—आद्यकालिकया बुद्ध्या हरे स्व इति निर्वाहः—महा० १२।३२।१।५।

आध्यात्मिक [अध्या + धृ + ठञ्] कर्त्तव्यता, मृत्याम् दिव्यता युक्ति मूर्त्तता आध्यात्मिकत्वात् सुक० ५।८८०।

आध्यात्म्य [आ + धा + ह्यट्] मेषु—तथापि मृत्युराधानादङ्गप्रत्यय दक्षित भाग० १।५३६।

आधि [आ + धा + क्ति] दम्ब, एतन्मात्रि दापयिष्येऽत्मानेन भय स्वचित्—सक० ५।६५१।

आधिवासिक (वि०) [आधिवास + ठञ्] अधिवास या मन्त्रास से संबंध रखने वाला—करणशक्तिमन्त्राधिवासिकम्—कौ० ब्र० २।७।

आधिरथि [अधिरथ + ठञ्] अधिरथ का पुत्र, कर्म—ह्यधीष्यमाधिरथिर्बिदित्वा—महा० ७।२।१।

आध्वत् (वि०) [आ + धृ + क्त] हिलाय, हुआ, सुगंध—पवनान्धुनन्तान् विभ्रम—रघु० ६।

आधार [अ + धृ + धञ्] किरण, आधार आत्मबाले—अध्वन्व्य च किरणेषु च—नाग०। सम०—अक्षय रहस्यमय वा अलौकिक चक्र जो शरीर के परबन्तों भाग पर स्थित है—संन्यासाधारकके लक्षणमरणाय आर्यास्य विनेचम् नयेत्०।

आध्यात्मिक [आ + ध्या + क्त + क्त + अच्] उपहार, पारितोषिक।

आध्वजः [आ + धृ + क्त] शूल वा ध्वज—अध्यात्मानुष्ठानियतध्यामन्तीत्—नै० १।५।१६।

आध्वान्धकारः [आध्वान् + क्त + अच्] चन्द्रमा,—काष्ठा दधानन्दकर मनस्त भाग० १०।२।१८।

आध्वान्धवीर्यं इंद्रस्यदाय का सत्यापक श्री माधवाचार्य।

आध्वान्धवीर्यो मनीष का एक भेद।

आध्वान्ध—सम् [आ + धृ + धञ्] नाथ।

आध्वान्धुत्वम् [अध्वान्ध + ध्यञ्] सेवक के प्रति नम्रता का व्यवहार—पद्मकुलनिवासादानुबोध्यान्मित्र—हृत्० १।३९।

आध्वान्ध्व (वि०) [अध्व + ध्यञ्] नरक के साथ-साथ चलने वाला।

आध्वान्ध्वत् (वि०) [अध्वपूर्वं + ध्यञ्, + धनुष्] विचित्र, नियत क्रम को रखने वाला।

अध्वान्धवम् [अध्वान्धा + ध्वञ्] दे० अध्वान्धविक।

अध्वान्धविक [अध्वान्धा + ठञ्] अध्वान्ध, सेवक।

अध्वान्धुत्व (वि०) [अध्वान्ध + ठञ्] 1 गीर्ष कायं 2 टिकाङ्क।

आध्वान् (वि०) पर०) नाचना, उछालना—आध्वान्धवित्पिपिनी—अध० ५।३।७।

आध्वान्धुत्वम् [अध्वान्ध + ध्यञ्, प्रत्यय की आध्वान्धुता—स्त्री प्रत्ययति कारुण्य्यादाध्वितेऽध्वान्धुत्वम्—रा० ५।१५।५०।

आध्वान्धुविक (वि०) [अध्वान्धु + ठञ्] अन्धपुर से संबंध रखने वाला।

आध्वान्धुव्री [अध्वान्धु + ध्रु + ठञ्] अन्धपुर की सेविका, नोकरी—नै० १।५।६५ पर नारायण।

आध्वान्धुविक [अध्वान्धु + ठञ्] कञ्चुकी।

आध्वान्धुविक (वि०) [अध्वान्धु + ठञ्] धनुषवेदी के अन्ध कर्त्तव्यता।

आध्वान्धुविक (वि०) [अध्वान्धु + ठञ्] किमी अन्ध विचार-धारा या मर्यादा से संबंध रखने वाला।

आध्वान्धुविक (वि०) कठिनाइयों को पार करने वाला।

आध्वान्धुविक [आध्वान्धु + ध्यञ्] व्यापारिक क्रियाकलाप, आधिष्ठान पिहितानुष्ठान—रा० २।५।८।३।३। मम०—**आधिष्ठान** मन्त्रार, **आधिष्ठान** विध्वान्धुत्वम्।

आध्वान्धुविक बहण का नाम, एक मीमांसक का नाम।

आध्वान्धुविक (वि०) [अध्वान्धु + क्त] कृष्णपत्र से संबंध रखने वाला।

आध्वान्धुविक (वि०) अध्वान्धुविक, अध्वान्धुविक होने वाला।

आध्वान्धुविक (वि०) आध्वान्धुविक की इच्छा से आगे बढ़ना हुआ, (किमा गच्छन्) टूट पड़ने वाला आध्वान्धुविक-निराकरणानुष्ठान—वि० ५।१५।

आध्वान्धुविक (वि०) [आध्वान्धु + क्त] 1 संस्कृत 2 पूजा गया नापट् कर्मविद्वद्भ्याम्।

आध्वान्धुविक [प० न०] एक प्रकार के शार्ङ्गना मध जो भोजन से पूर्व और भोजन के पश्चात् आध्वान्धुविक करने मध्य होने जाने है नै० १।५।२८।

आध्वान्धुविक (वि०) [आध्वान्धु + क्त] आध्वान्धुविक, उपयोगी अध्विष्ठान हयश्रेण मूनेनाप्तोपदेहिना—रा० ५।१०।१०।

मम० अध्वान्धुविक (आध्वान्धुविक) (वि०) विश्वमनीय व्यक्ति पर निर्भर रहने वाला, **आध्वान्धुविक** (आध्वान्धुविक) विश्वमनीय वैदिक साधु, परोक्षआध्वान्धुविक विद्वान् मम० का० ६.—उल्लिखित (स्त्री०) (आध्वान्धुविक) 1 आध्वान्धुविक 2 अध्वान्धुविक 3 आध्वान्धुविक कथन जो प्रदायन मान लिया गया है। अध्वान्धुविक (आध्वान्धुविक) किमी विश्वमनीय व्यक्ति द्वारा दी गई नवीकृत,—आध्वान्धुविक एक प्रकार का यज्ञ।

आध्वान्धुविक (वि०) [आध्वान्धु + ध्यञ्] पवनशोषा, एक प्रकार का धोआ जो पानी में ही उत्पन्न होता है।

आध्वान्धुविक (नपु०) (वि०) अन्ध, पानी पृथिव्याप्यतोबो-निलम्बानि श्वेत० ७।१०।

आध्वान्धुविक [आध्वान्धु + ध्यञ्] पूजा होना, पूजना, मोटा होना।

भाष्यान्व (वि०) [भाष्य + अन्वत्] सन्तुष्ट होने के योग्य, प्रसन्न होने के योग्य ।

भाष्यवच (वि०) [भा + यु + अट्] विस्तारवच, कुछ शालीन, बोझा शिष्ट ।

भाष्युक्त (वि०) [भाष्य + क्त] बहुरूपवत्—अवाङ्मयसम्बन्धो वीज दृष्ट्वा सोममिवाभ्युदत्तम् १।०।७।१०६।१ ।

भाष्युक्त (वि०) [भाष्य + क्त] ईषहृत्, मूलमा हुआ—दिवाकराभ्युदयिभूषणास्पदात्—कु० ५।४८ ।

भाष्यलक्ष (भा + लक्ष + क्त) घेरा, बाधा शार्फिलक-पर्यन्ता पिबन्निक्षुपती नदीम् १।०।१।०।३ ।

भाषीणम् (नपु०) अक्षीण ।

भाषद्वयत्वम् [(वि०) [न० व०] दोलाकार बन्ध बनाने भाषद्वयत्वम्] भाषा ।

भाषन्वर (वि०) [भाषन् + वर] थोड़ा पहरा ।

भाषात्त्वम् (अ०) बच्चे तक, बच्चे से लेकर । मम० शोभात्त्वम् (अ०) बच्चों और श्वाभो ममेन, —बृहत् (अ०) बच्चों से लेकर बड़े तक ।

भाषह्य (अ०) बह्य तक ।

भाषज्ञम् (नपु०) किसी मूर्ति की सुकी हुई मुद्रा ।

भाषात (वि०) [भाषा + त] १. चयनीकर, वैदीयमान २ प्रतीयमान ।

भाषात [भाषात् + चत्] १ मूर्ति डालने के नौ पदाथों में से एक २ एक प्रश्नार्थ का प्रश्न ३ पूजा की एक अव्यापिक रीति विषयं परधर्मवत् भाषाम उपमा ह्यन्, धर्ममेवाभा उच्येता धर्मसोऽप्यधर्मव्यपेन् भाग० ७।१।१।१० ।

भाषात्वर (पु०) निम्नाकिन बारह विषयों का एक मन्त्र पु०—भाषा भाषा दमो दान्म शास्त्रिण शमस्तप, काम श्रोथो मधो मोहो ह्यदमा भाषत्वा इमे—तारा०

भाषिप्रार्थिक (वि०) [भाषिप्रार्थ + क्त] ऐच्छिक, इच्छानुयायी ।

भाषिबन्धवत् [भाषिबन्ध + बन्ध] भाषिबन्ध का पुत्र, पतिव्रत ।

भाषिधीनिक (वि०) [भाषिधीन + क्त] वक्षता से किया गया, सतुगाई से युक्त ।

भाषत (वि०) [भा + भृ + क्त] १ उपजाया हुआ, पैदा किया हुआ भाग० ३।२।१।६ २ भर्य पूरा, स्थिर—भाषुत्तारा मुनिः—भाग० ४।८।५६ ।

भाष्यापार्थिक (वि०) [भाष्यापार्थ + क्त] घर में रखने के योग्य ।

भाष [(वि०) [भा + अन्] अबरक से मिलित चन्द्रा-प्रभाश्र तिलक इत्यादि—नै० ६।६२ ।

भाषयेताः [स० त०] कृषी अवस्था में पीसा गया अन्न ।

भाषयिक्त (वि०) [भा + यन् + क्त] मन्त्र बोल कर पवित्र किया गया शराभासामिन्तानाम् महा०

३।२।२६ । सम० यन्मन्त्रं शोचन् सर्वं यं प्रवृत्त मन्त्र, —विश्वसितः सशोचन् सर्वं को प्रकट करने वाली विश्वसित ।

भाषयिक्तम् (नपु०) [भाषयन् + क्त] १ सम्बोधित करना २, उक्ताय ३ शोचन की विश्वसित ।

भाष्यात्कः (पु०) पहाड़ी स्थान ।

भाषिषाथी (वि०) [अन् टिप्प दीर्घश्च उभयपरित इमि] मास चाहनेवा मा, मास के लिए निवेदन करने वाला ।

भाषुमुक्ति (वि०) [भाषुमुक्त + इत्] थोड़ा सा बुला हुआ ।

भाषुत्तम् [भाषुत् + क्त] कन्धक ।

भाषुतः (पु०) कटोदार वीर ।

भाषोच (पु०) कवि की रचना की अतिम पंक्ति जिसमें कवि का नाम बताया गया हो यथैव कविनामस्यात्त्व भाषोच इतीति—अनीत दासोदर ।

भाषः [अमृतयादियु र्नुदीर्घश्च] भाग का वृक्ष । सम०—अतिम भाग की बुद्धी, भाग का वीर, यन्मन्त्रः अनीत का एक विशेष रूप, कन्धकवल्कलम् भाषो के रस से तैयार किया हुआ एक शीतल वेप ।

भाष्यवल्कलम् [भाष्यवल्क + क्त] इसली भाषि पाँच (वेर, बनार, कर्पूर, इसली और कमारक) फलों के रस से तैयार किया गया एक आयुर्वेदिक पदार्थ ।

भाष्य [भा + इ + अन्, अन् चङ्] भाषदती का शीत—यथैवभाष्यस्यैवर्षम्—महा० १३।१६२।५ । सम०

भाषिन् (वि०) राजन्व-समाहर्ता,—कुम्भम् राजन्व के रूप की० व० २।६, शरीरम् भाष का शरीर की० व० २।६ ।

भाष्यायुषेत्—युषेत् (नपु०) ऐसी स्थिति या अवस्था का होना जैसी पहले नहीं थी ।

भाषत (वि०) [भाष + क्त] सुप्त, सोया हुआ,—तं नायत शोचयदित्याह पु० ४।३।१६ ।

भाषति. (स्त्री०) [भा + या + इति] बस पगपरा, दध-विबरच पीढ़ी—इत्यति सयरो बोधा श्लभाभाविभाषयती—महा० ७।१५।३।१ ।

भाषत्तम् [भा + यत् + क्त] महान् प्रयत्न, श्रमिता का विस्तार न के शक्तिवामस्तं सहिष्यति दुरात्मनाम्—रा० ४।६।६।१ ।

भाषयिन् [भा + या + अट्] बोधे का आयुष्यक ।

भाषुष्यन्तः (पु०) ऋषेय का मन्त्र जो "यो ब्रह्माब्रह्म उच्यते" से आरंभ होता है ।

भाषुष्योः [भाषु प्रबोधनमन्त्र इत्, हु + यन्] सब विशेष विलके अनुष्ठान से मनुष्य शीर्षवीची हो सकता है ।

भाषीवल्क (अ०) एक मोहन की दूरी तक ।

भाषोः (पु०) अशोच का पुत्र मूर्ति शीघ्र ।

भारकुरः (पु०) मधुमक्षी (वेद०) — भारकुरवरेव मध्येर-
येव — ऋ० १०।१०६।१० ।

भारकुरकामान् (नपु०) सामवेद का एक वृत्त ।

भारम्भः [आ + र्भ् + भञ्, भृञ्] १ शुक २ पहला अक्षु ।
सम० — भारम्भश्च क्रियाशीलता के द्वारा ही उत्पादन
की स्थिति — भी० नू० ११।१२०. षष्ठिः किसी
उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य को शुरू करने में शक्ति, शुरु-
आरंभो स्थिति शुरू शुरू में बहुत अधिक उत्साह
दिखानता है ।

भारवर्धिविष्णुः [व० त०] एक प्रकार का ङीक — षष्ठि-
रवितरसनावर्धिविष्णुमभितर सरसवत्सम्भम् मीत०
११।६ ।

भारवाहः [आ + राह् + भञ्] घोर शब्द ।

भारोष् (वि०) [आ + रो + ष] शिल्पकृत मूला हुआ
— भारीक लवनजाल भट्टि० १३।४ ।

भारुष्म् [आ + रु + ष] क्वचन, विलाप, रोना-धाना
— निषेदु शतशतन दाफना दाफभाफता रा० ५।
१०६।३१ ।

भारुष्म [भृत् + ष] आर्यन का पुत्र इवेतकनु ।

भारोष्म [अनेत्य भाव — व्यञ्] राम से मुक्ति, अच्छा
स्वास्थ्य । सम० — अन्वु (नपु०) स्वास्थ्यप्रद अण.
— चिन्तामणिः आयुर्वेद के एक शब्द का नाम
प्रतिबद्धतम् स्वास्थ्य प्राप्त के लिए एक इत ।

भारोष्मिन् (वि०) [आ + रुष् + षिच् + तुञ्] धारण
करने वाला ।

भारुंम् (द०) [आ + अर्हम्] सूर्य तक आकल्पमाकर्महन
भयवप्रमस्ते- भाग० १०।१४।४० ।

भारुष्मिन् (वि०) [न० इ०] श्चभाओ में पिछमान ।

भारुष्मिन् [अर्धे अस्पत्य अण, न्वाय क्] श्चयेव के यशो
में वृद्ध, मामवेद ।

भारुष्मिन् [श्चभाओ अण] सम्भूत भाग, (अधि०) भावने
= सम्भूत भाग में सीधा — देववत्सयादेवे — म० स०
१।१।५ पर गा० भा० ।

भारुं (वि०) [आ + र्भ् + ष] अनुविद्याजनक - आर्ता
यसिन् कामे प्रवर्तित स भारुं काल में म० ६।५।
३० पर गा० भा० । सम० — भारुं जो कठिनाइयों
में घस्त है उनको बचाना ।

भारुंम् [श्चतुरस्य प्राप्ता इति अण] मासिक श्चतुर्भाव,
— शिरिकाया प्रयच्छाम् श्चतुसा आर्यभट्ट ११
१।६।३।५ ।

भारुं (वि०) [आ + अर्ध् + र्भ्, दीर्घश्च] वीला, तर ।
सम० — एषानि जाय ओ वीली लक्ष्मियों द्वारा
सुरक्षित रखी जाती है — परेशाईधाने एषाम्मा
निम्नरन्ति सत०, अर्धोक्ताः उन्माह काल की
दूसरी अवस्था में हामी जब कि उच्छा बृद्धवत् अपने

सद में वीला हो जाता है, — पक्कः बसि, — भावः
१. वीलापन २ कृपा, मुद्रता - अनुभूतोऽप्यस्य इयाई-
भावम् — रघु० २।११ ।

भारुष्मि (स्त्री०) हवा या वीला बदरक ।

भारुंम् [श्च + भृच्] प्रचुरता, बाहुल्य ।

भारुंभारोष्मरुष्म [अनेनारीषयर्भृ + अण] भगवान् शिष के
अनेनारीषवर रूप से सम्बद्ध ।

भारुं (वि०) [श्च + भृच्] १. आर्यावर्त का निवासी
२ योग्य, आदर्शनीय, सम्मानयोग्य । सम० — भा-
वः (भार्या + भावम्) भार्ये जाति की महिला के
पाम समोह की इच्छा में पूर्ववत् इत्यस्यादायिगे
वच० पाठ० २।२१४. श्चुष् (वि०) भार्येवर्तों के
द्वारा अनुभूयित तथा अनुगम, — कति किमकी बुद्धि
बहुत अच्छी है, श्चुष् (वि०) भार्ये जाति की
धारा रोमन वाला, श्चुष् उनम शक्ति में वृद्ध,
अच्छे चीजें धाला, सिद्धान्त आयेभट्टकण पन्थ,
स्त्री आर्यमहिला ।

भारुष्मिन् [श्चोर्ध्व अण, भाप । उक्, तन प्यञ्] ।
आर्येवमं वह पमं किमकी श्चुष्मिने स्थापना की
है ।

भारुष्मिन् (नपु०) एक प्रकार का मूला, प्रवाल — की०
ग्र० २।११ ।

भारुष्मिन् (वि०) [आरुष् + ष] पालन करना हुआ,
— नाका हुआ अनुभवका ।

भारुष्मिन् [भारुष्मिन् - र्भृच्] मन के अनुकूल पमं ।

भारुष्मिन् [भारुष्मिन् - र्भृच्] लगाव या
स्पर्शना का श्चुष् (प्रीति, श्चुष् या र्भृष्मि आदि)
उत्पन्न वा यमिता यमो का गोपाङ्कनामा श्चुष्-
कुष्मत् वा श्चुष्मिन् अण अण्य मुनयानामभारीन्
पदमम भृष्मि — कृष्ण० ।

भारुष्मिन् [आरुष् पञ्, र्भृच्] मरीच की एक मधुर
श्वदि ।

भारुष्मिन् [आ + लय 'णच्' व्यट्] मरीच श्चान्
— केमा एक राग की वनयनाओ का वर्णन ।

भारुष्मिन् [आ + लय 'उञ् क्व - भञ्] एक प्रकार
की मरीचमन्थना मरीचोत्पन्न ।

भारुष्मिन् [आदि जन] मरीचिर्दो ।

भारुष्मिन् [सर्वापित] (वि०) [आयेभ्ये मत् — म० त०]
चिर में लिखित, विविध विनीचरीया महता
हस्तिको बन्धुरायेभ्यममिगा इव रघु० ३।१५ ।

भारुष्मिन् (वि०) [आदिभ्यः प्यच्] श्चुष्मिन् करने
के भाग्य म० ७।६६ ।

भारुष्मिन् [आलोचनेऽस्मिन् भाव' + अच्] धाम, वाचान,
मन्त्रम्य च ये कोटि स्थिता के श्चुष्मिन् — रा०
४।४०।२५ ।

आसीन (वि०) [आसी + ण] बस, सुप्त—प्रमरासी-
नपकुसुम ।
आसीवा [आ + क्ति + ण + टाप्] शत्रुघनी स्त्री—आसी-
वना परिरुत भक्तपीठ कथाचल—महा० १८१०५१९० ।
आसील (वि०) [आसी + ल] शब्द, रसद्विग्न,
बरा सा बबरामा हुआ ।
आसेपन् [आसि + पन् + ट्] १ पानी मिला
हुआ खाटा जिससे बर का द्वार स-या जाता है,
जिससे बर बिलसि भासत है—विष्णुआसेपनराध्वर्य
—श्री० २१२६ २. रगना या सकेयी जापना आसेप-
नदानपिठठा—श्री० १५१२२ ।
आसोक [आसोक + षन्] १ केवल रसों आसोककवि
रामस्य न पथवर्ति स्म हुआ—रा० २१५७२ ।
आसोकक [आसोक + क्त्] वरक, देखन बाका ।
आसपन् [आस + पन् + ट्] १ उद्यमस्थान—यस्य छन्दो-
भय बहु देह आसपन विभो—भाग १०१८० १४५
२ पटसन से निमित्त कपडा ।
आसप [आस + पन्] तान्त्रिकी के मतानुसार कण
की बार-बार आवृत्ति जिससे अनेक कार्य में सिद्धि
प्राप्त होती है—यन्तु आसप्या उपकरणेति स आसप
श्री० स० ११११ पर गा० भा० ।
आसपन् [आस + पन् + ट्] १ कथक कि० १०५९
२ भय, भ्रान्ति ।
आसरीक (वि०) [आस—यक—कत्] छादन, चादर,
बकना—आसरीक० २३ ।
आसपक (वि०) [आस + पक] आसपक ।
आसपनम् [आस + पन् + ट्] बय, आसपनानि कन्वादि
महा० १३१००१२५ ।
आसप्य (वि०) [आस + प्य + ण] बसा हुआ,
आप्य, पूर्ण, भग हुआ ईसावाप्य मिद—ईश० १ ।
आसप्य (धुरा० पर०) (आ पूर्णक भास्) सभ्य करना,
साम युक्त करना—आसप्यना मप्येन—रा०
२१०३ । ४१ ।
आसि (स्त्री०) [असोरेव म्वायं अण्] पीडा, कष्ट,
प्रसङ्गवेदना ।
आसित्त (नना० भा०) आप्य होना,--चोलाकानावि-
नानाया आस० ३१०३७ ।
आसित (वि०) [आसि + त] विश्रमान ।
आसिद्ध (वि०) [आ-; स्य + क्त] पाल-पाल रचना
हुआ, छिडराया हुआ स पाशुरासिद्धिबिमानपत्तिलीम्
—रा० ५१२५३ ।
आसिल (वि०) [आसिलति दृष्टि स्तुर्गाति विल् स्तुलीक
धुवका, अस्यष्ट, को देख न सके ।
आसिर्षत (वि०) [आसि + ष + क्त] प्रकट हुआ हुआ,
आसिर्षतप्रथमदुकुका, कन्धलीरवानुकच्छप्—वेध० ।

आसिर्षक (वि०) [अ० व०] जो वृत्त के रूप में
...बाई दे—विष्णुवति वनुरासिर्षक शम्भुसूनी—कि०
१५१५५ ।
आसिर्षित (वि०) [आसि + ष + क्त] जो वृत्त बना
गिया बना हो ।
आसिष् [आसि + ष] बार-बार प्रार्थना या गीत से
देवा को सम्बोधित करना ।
आसिष्कृतकाम्यम् (अ०) कुर्छों से लेकर कण्ठो तक ।
आसिष्कृत (वि०) [आसि + ष + क्त] स्पष्ट, सुबोध,
सहायकमाध्यकतयं विश्राम्य—रा० ७१८८१० ।
आसिष् (वे०) (अवा० भा०) वसन करना—शु०
२१२८६ ।
आसिष्कृत (वि०) [अ० व०] नगा, तन ।
आसिष्ठा [आसि + ष + टाप्] सीसने की दण्डा,
शाय० ३०१० ।
आसिष्कृति [अ० स०] जो सुख ही (बिना पहले से
बोधे) काय्य रचना कर सके ।
आसिष्कृतकृत [अ० स०] सन्ध्या (बीया आधः
बहुक करना ।
आसिष्कृतकृतम् [अ० स०] महाभारत के पन्द्रहवें पः
का प्रथम अनुभाग ।
आसिष्कृत [आसि + ष + क्त] सांसारिक कष्ट,—हृदितक-
विचारमवाप शान्त प्रथम ध्यानमनायुक्तकारम् अ०
शु० ५११० ।
आसिष्कृतम् [आसिष् + क्त] आसिष्, अनुरक्ति ।
आसिष्कृत (वि०) [आसिष् + क्त] विषयमनोय,
विषयानुपाय ।
आसिष्कृतकृतम् (नप०) शारदीय विष्णु ।
आसि (अ०) (अ०) उदासीनता शैलक जवय ननु
आसि इहपदेकने अर्थनिः नाकप्यपदेकने एव,
श्रीदासीन्येति द्यते । श्री० म० ३१६१२४ पर
शा० भा० ।
आसिष्कृत (वि०) [आसिष् + क्त] अक्षर, बन्द—कर्त-
वीर्यमजासक तज्जल प्राप्य निर्मलम्—रा० ७१३०१५ ।
आसिष्कृत (वि०) [आसिष् + क्त] जिसके साथ कोई
समझौता हो गया है सम्मिलित ।
आसिष्कृत (वे०) बारम्बार करना, पहनना—आसिष्कृत
दिश्य २० ७१६१४४ ।
आसिष्कृत (स्त्री०) [आसिष् + क्त] उत्कलन चक्राहट
न च ते क्वचित्कालनिर्मुक्तं श्रद्धमविपत्ति—महा०
१२५२१७३ ।
आसिष्कृत [आसि + क्त] १ हीवा, हाथी की बीजा और
पीठ का मध्यवर्ती भाग जहाँ हस्त्यांशही बैठता है
२ तटस्थता—श्री० अ० ७१ ३ पाठे के अन्त में
प्रयुक्त शीघ्र । सम० अक्षरकम् शीर्ष ।

भाष्य (वि०) [भास्य् + क्त] ब्यापन, श्राप्य—बाह्यो-
 रासत्रां सोविषाया नवन्—रा० ५।६३।३३। सम०
 —वर (वि०) भासयति ह्रीं च्यते बाळा ।
भास्युद्रागन्तम् (अ०) समुद्र के किनारे तक ।
भासुरागन्तः [भासुरि + गन्] 1 भासुरि की गन्तान
 2 एक बरिचक स्रपदाय ।
भास्येचनक (वि०) [भासिच् + च्यत् + कन्] अत्यंत
 मनोहर जो असीम सतोष के देने वाला हो (उदाहर-
 णत नेत्रासेचनकम्) दे० नैचच० (हिन्दी का
 सस्करण) पृष्ठ ५५९ ।
भास्यरकः [भा + स्य् + च्यत्] विस्तर बिछाने वाला
 —की० अ० १।१२ ।
भास्यारकः [भास्य् + अरच्, स्वाच् कन्] अपीठी में लगने
 वाली बाली, बगला ।
भास्यतीर्थं (वि०) [भास्य् + क्त] 1 बिलवा हुआ फेला
 हुआ 2 इका हुआ ।
भास्यामधु-पदम् [भास्यान् + पद् + क्त] तिहासन राज-
 गृही—नै० १०।५७ ।
भास्येय (वि०) [भास्य् + च्यत्] 1 पद्वेय, जिनके
 पास पद्वेय की जाय, जिससे प्राचेना की जाय
 2 आदरणीय ।
भास्युद् (भ्या० पर०) आवाहन करना, हिमाना ।

भास्योचितम् [भास्युद् + क्त] तासियां बबाना, सव्यात्वं
 से प्रहार करना—भास्योदितनिनावाच—रा० ५।
 ४३।१२, तस्यास्योदित सन्धेन—रा० ५।४।७ ।
भास्युच् (वि०) [भा + सिच् + क्त] मिला कर लीया
 हुआ ।
भास्यु (वि०) [भास्य् + च्यत्] बूझ बहने वाला, बारा
 प्रवाह से रिसने वाला ।
भास्युपयम् (वि०) [न० अ०] बूझ बूझ देने वाली जाय
 —मयाद्ब्रह्मणो रानुपया जवेन—भाष० १०।१३।३० ।
भास्यवित (वि०) [भा + च्यत् + च्यत् + क्त] जिनमें
 स्वाप के लिये हो, अनुधवी—मधु नयनवास्वाचित-
 रसम् ता० ।
भास्यव्य (अ०) [भास्य् + च्यत्] प्रहार करके, मार कर,
 पीट कर। सम०—अच्यम् सककारणे बाळा अत्यन्तम् ।
भाहारलेखम् (नपु०) पात्र, पादर, ।
भाहार्यलोभा (स्त्री०) बनाया हुआ सीन्दर्यं (विप० नैस-
 यिक लोभा) ।
भाहितक [भा + हा + क्त, स्वाच् कन्] भाड़े का —की०
 अ० २।१ ।
भाहुत् (वि०) [भा + ह् + क्त] कुपिय, बनाबटी
 —अहुता हि बिषयकदानना ज्ञानधीतयतन न निज्यति
 —नै० १।८।२ ।

३

इक्षु [इक्षु + क्त] एक प्रकार का बांस—पीप्लिकैरिज्जु-
 सिजे—नै० २०।२१(मारा० भाष्य० इक्षुर्गर्भसिद्धेय) ।
इक्षुभली (स्त्री०) [इक्षु + भली + क्त] कुच्छेन प्रदेश
 में बहने वाली एक नदी ।
इक्षुवारि (सि० क्) [इक्षु + वर + च्यत्] नरकुल, सरकडा ।
इक्षुतकः [इक्षु + तक्य्] कौयला—विदेनुरिक्खलमिवायसाः
 परे—सि० त०, इक्षुतक कारिकाग्निविट् वैज० ।
इक्षु { इक्षु + अच्, लय्य इत्य वा } नामयान में प्रयुक्त
 इक्षु } लोभ नामक लीय ।
इक्षुवास्तः [प० त०] गुणक ।
इक्षुवीकः (पु०) कलन करने वाला चाप ।
इक्षुः (स्त्री०) [इ + च्यत्] 1 ज्ञान 2 चाल, गति
 —स० वि० ।
इक्षुः (वि०) [इक्षि + क्त] गतिवृत्त, चाल रखने
 वाला ।
इक्षुतकप्रोक्षुम् [त० त०] किसी पीराणिक भाष्यान
 या महाकाव्य से ली गई कथावस्तु—इक्षुतकप्रो-
 क्षुम्तिरुद्धा सदाशय, काव्य कल्याणरस्वावि
 —काव्या० ।
इक्षुतः (पु०) एक प्रकार का बांस ।

इक्षुम्बरम् (नपु०) नीलकण्ठ निष० ।
इक्षु (अ०) बिसर, प्रकट, स्पष्ट ।
इक्षु [इक्षु + च्यत् + टाप्] युगधीर्भक्षत्र पुत्र में अरर
 रहने वाला ताग ।
इक्षुरारकम् [इक्षु + च्यत् + टाप् + रन् + च्यत्] विष्णु
 बनारा सकलमुन्दरीयुक्तमिन्दिरारवणसदरन्
 —मारा० ६५ ।
इक्षु [उन् + उ, ओरेरिच्य] 1 चक्रमा 2 अनुस्वार
 की परिभाषा । सम०—सुधी कलम वेण,—अस्मी
 नीय का पीसा, अक्षरिन् एक पीसे का नाम, सुत,
 सुतः सुषामक इह ।
इक्षुकः [इक्षु + क्त] २० 'इक्षुस्यरिन्' ।
इक्षु [इक्षु + च्यत्] २० । देवों का स्वाामी 2 ज्ञाने-
 त्रियों के पीछे विषय । सम०—आधुन्युक् 1 इक्षुच्युक्
 2 हीरा, कालः चारवन्तिने भवन का एक प्रकार
 —मान०—२।१६०।१८, —अः (इक्षुच्युक्) मोतियों
 की माला, कः बालि, कर्म, क्षु (नपु०) मिला-
 जीत, क्षुति चन्दन,—अवति बरिचक क्षुति, लैल
 भाष्यार्थ का विषय, अक्षिणी पावेती,—अः इक्षु को
 प्रसन्न करने के लिये किया जाने वाला बह—श्वोड

स्नाक शीघ्रस्मोषित इन्द्रस्यो मासोत्थ भविष्यति
—वाङ् १.—वाङ्कम् हीरे का एक प्रकार, की० अ०
२।११.—सर्वाभिः शीघ्रहृत्वा मनु० ।
इन्द्रिकः [इन्द्र + च + इत्] १ शक्ति २ ज्ञानेन्द्रिय । सम०
—आरणा ज्ञानेन्द्रियो का निरूपण, — अथकुरुः विषया-
नसित, संशयोः विषयो से सबद्ध ज्ञानेन्द्रियो की
क्रिया ।
इन्द्रकम् [इन्द्र + कम् + न्युट्] इन्द्रकाशेष, वासना - वे तु
इन्द्रकम्ना सोके पुष्पपापविषयिता महा० १२।
३४८।२ ।
इन्द्रकर्मक. (पु०) १ एक पौधा, तावदा एतद् २ पत्थे ।
इन्द्रकम् (वेद०) [इन्द्र + इन्द्रकम्, किरिण्य] शीघ्र लेकने की
विमल—प्रधानेवा इन्द्रिं वर्षमाना—अ० १०।३४।१।
इन्द्रिकविः (पु०) कम्बुकुल के एक शक्ति का नाम जो
अश्वत्थ के कई सुकतो का इष्टा है ।
इन्द्रिणी (स्त्री०) मेधाविधि की पुत्री ।
इन्द्र (पु०) परलोक में होने वाला एक काल्पनिक बृह
- म भाग्यकालीन्य बृहम् कीर्षी० १।५ ।
इन्द्रोपमा उपमा अलंकार जहाँ रचना में 'इन्द्र' शब्द का
प्रयोग हुआ हो ।

इन्द्रोष्वा हाथी की नाक की एक पुतली ।
इन् (तुपा० पर०) किसी काम को बुरा करते रहना,
बार-बार सम्पन्न करना ।
इन्द्रकाशकम् (म०) केवल इन्द्रा द्वारा उचित—इन्द्रकाश
प्रयोः शक्ति ।
इन्द्रकम्बुम् (नप०) १ मानवीकृत इन्द्रा २ इन्द्रकम्बु
माना हुवा शरीर ३ विष्णु शक्ति की शक्ति शक्ति-
भ्यति ।
इन्द्रकामिन् (वि०) [इन्द्र + काम + मिन्] किसी बहुस्य-
काका पुत्री हो गई है—अपुत्रवन्नामविक्रमिन्द्रकामिन्
-रा० १।१७।१७५ ।
इन्द्रिः (स्त्री०) [इन्द्र + इन्द्रिन्] कविता के रूप में एक
परिचय, सप्तहस्तिक अ० १।१६९।१४ पर
भाष्य । सम०—आइए एक विशेष शीघ्रवैदिकि किये ।
इन्द्रिका, इन्द्रोष्वा [इन्द्र गणायी कपुन्, अत इन्द्रम्] एक
काटेदार शीघा—सर्विकारिणीकीकामिनीका परमाङ्क-
वात् रा० २।८।३० ।
इन्द्रुष्वा नील का शीघा ।
इन्द्रुधति (वेद०) प्रथम कला ।
इन्द्रकाशान्वा ईदों का आकार मकार ।

इ

इन्द्रकालम् (पु०) [इन्द्र + म०] शीघ्र एषा नो नैष्टिकी
वृद्धि वर्षाभासोत्थमम् - महा० १।३७।२९ ।
इन्द्रः [इन्द्र + अन्] वायु, हवा । सम० अ०—पुत्र हनुमान् ।
इन्द्रियः (पु०) तनु के पुत्र और दुष्यन्त के पिता का नाम ।
इन्द्रः [इन्द्र + क] परमेस्वर, परमात्मा । सम०—आशात्म्यम्
(इशावास्यम्) ईशानिद्यम् (अपने प्रथमाक्षर के
आधार पर)—मीला (स्त्री०) कर्मपुराण का एक
अनुभाव शब्दः रत्न के धरे की मकड़ी ।
ईशानकल्पः चार युगों का एक चक्र ।
ईशितम् (वि०) [ईशु + तम्] शासन किये जाने के योग्य,
निबन्धन में रखने के योग्य—ईशितव्यं किमस्मानि
—भाष० १०।२३।४५ ।

ईश्वरकालम् (नपु०) एक मूल्य जिसका समस्त शेषकाल
१६१ वर्ष में विभक्त हो जाता है—भाष० ७।४६।४८ ।
ईश्वरकृष्णः (पु०) मातृकारिका का कर्ता ।
ईश्वरार्थ (वि०) [ईशु + अ + श्वत्] जो बोधे से प्रथम
मे सम्पन्न हो सके ईश्वरार्थो बधत्तम्—महा०
५।३७।२६ ।
ईश्वरकम् (वि०) [ईशु + कम् + अ] आत्मी से उपलब्ध
होने वाला—नै० १२।१३ ।
ईश्वरीयः [न० अ०] प्रधान का बृह ।
ईश्वरकः (पु०) फलितशक्ति में शीघा शोण ।
ईशुः (वेद०) [ईशु + अ] स्तुति ।

इ

उष्वा (स्त्री०) श्वशोष, बहालुषा ।
उष्कम् (नपु०) [उष् + कम्] १ जीवन, प्राण—उष्केन
उह्यतो श्वेन मृतक शोष्यते महा—भाष० १।१५।१५
२ उष्काल काण—एतदेवामुष्कनयो हि सर्वाणि
मावाभ्युत्थितानि—शु० १।६।१ ।

उष्कः (पु०) [उष् + कम्] शक्ति—उष्को नाम श्वशोष
शिविकर्षकश्चिदुत्तः—महा० १।२१।२२ ।
उष्कशोषकम् (नपु०) उष्कशोषक का उष्क शब्दका
उष्कः (पु०) [उष्कशोषकः] एक श्वशोषक का
नाम ।

उत्तरम् (नपु०) भारी शील से निकला हुआ तमक, सांभर तमक ।

उद्य (वि०) [उद् + रुन्, परधानादेशः] 1. शीघ्र, दूर, दायव, शीघ्र, प्रपञ्च । तम० - काशी दुर्गा का एक रूप, - मुक्तिः मुक्ति का एक रूप, - पीठम् एक मूर्तिकल्पना जिसमें शीघ्रफल ३६ तम भागों में विभक्त होता है—मान० ७।७. - शीघ्रं हीम, - अथवा दोषहर्षण के पुत्र का नाम ।

उद्यित (वि०) [उद् + क्त] अत्यार्जव, नैसर्गिक उचित व महाबाहु न जही हर्षमारववान्—(उचित = स्वभाव-विद्यम्)—ग० ७।११।३०। तम० ज (वि०) जो अहित को समझता है ।

उद्यव-अथव (उद्यवाव) (वि०) [उत्कृष्ट व अपकृष्ट व] ऊँचानीवा, छोटा-बड़ा ।

उद्यव्ययः शाक्यमुनि का नाम ।

उद्यव्यम् (नपु०) टीन रागा, कमई ।

उद्यव्यं (भा० पर०) उद्यव्यो लया कर देवता, निरर हुंकर देवता—भाग० ६।१६।८८ ।

उद्यवापचयी [उद्यव्य अथवापद्य, द्र० म०] समृद्धि और शय, उत्थान और पतन ।

उद्यवापित (वि०) [उद् + वृ + णिच् + क्त] उन्मादा गया, दूर फेंक दिया गया दमकन्धरो उन्मादिन—भाग० ५।२४।३० ।

उद्यवाप्रसाधस्वानम् (नपु०) शीघ्रतय मरुतदा ।

उद्यवाप्रसाध (वि०) [उद् + वृ + णिच् + क्त] जो शोभा जा रहा है ।

उद्यव्यम् (भा० पर०) मूल ऊपर उठाकर चम्बन करना ।

उद्यव्यस्य (वि०) [व० म०] (मोघ की भांति) अपने पदों को ऊँचा किए हुए ।

उद्यव्यस्य (वि०) [उद् + णिच् + क्त] मुद्रा, अर्वावित्र अनुष्टु उच्छिद्यतर्णय चापेयवम श्रापार शमयप्रियम्—भाग० ।

उद्यव्यस्योदयम् (नपु०) माघ ।

उद्यव्यस्यित (वि०) [उद् + शृङ्ग + इत् + क्त] त्रिगने अपने शीघ्र ऊपर की मोँबे लड़े किए हुए हैं ।

उद्यव्य [उद् + धि + अच्] एक प्रकार का कलात्मक स्तम्भ (मृददायक का ज्ञानमईयम निरालम्ब एव० इति० मृतीय० भाग) ।

उद्यव्यस्यः [उद् + इत् + घञ्] 1 भाग (जैन वि मयूद्र में)—मिन्नीयच्छराने पलायनमूलक्षणम् अ० ०। ८६।४३ 2 बहना, उन्माद शोभा ।

उद्यव्यस्यित् (वि०) [उद् + धाम - णिच्] विभक्त, विभक्त ।

उद्यव्यस्य [उद् + ज्ञान् + घञ्] उने जना उकटकोर ।

उद्यव्यस्यित (वि०) [उद् + शृङ्ग + क्त] जिसने अपने गिर के बाल जटा के रूप में शिला बाँधकर रखने हुए हैं ।

उद्यव्यस्य (स्त्री०) एक प्रकार की शाली ।

उद्यव्यस्य (वि०) [उद्य् + क्त] 1. परित्यक्त - चिदो-जितात्मकताकाटकेन ते-सु० ५ 2 निष्कासित, उद्येवा हुआ—अधिरतोश्चिन्माधिरि—कि० ५।६ ।

उद्यव्यस्य [उद् + टङ्ग + श्यट्] 1 छात्र लगाना, धा अक्षर खादना 2 आधुनिक टाइप करने की क्रिया ।

उद्यव्यस्यिः [त० म०] चन्द्रमा ।

उद्यव्यस्यिम् (नपु०) मृगशीर्ष नक्षत्रपुत्र ।

उद्यव्यस्यिन् (वि०) [उद् + शम्भर - णिच्] जा अमा-धारण रूप से बहुत कालाहल करता है ।

उद्यव्यस्यम् (नपु०) अगुणियों की विशिष्टमुद्रा ।

उद्यम् (नपु०) 1 क्या मुद्रा 2 पानी ।

उद्य (वि०) [वे + क्त] बुना हुआ, भीया हुआ ।

उद्यव्यस्य (ना० धा० पर०) बेचने या आनुर बना देना है मन्त्रिबन्धोस्त्वयितु पदोयमा—गि० १।५.१ ।

उद्यव्य (वि०) [उद् + क्व] त्रिगने बाल मोँबे ऊपर की लड़े हो ।

उद्यव्यस्य (वि०) [श० म०] जा कृषी अवन हाथ में लेकर ऊपर की उठाने हुए हैं ।

उद्यव्यस्यस्य (वि०) [उद्यव्यन निर्गमन कथान्] विनाश में कभी मोँबे कभी ऊपर हुंकर रहने वाला ।

उद्यव्यस्यम् [उद् + हृ + श्यट्] 1 ऊपर का भीचन 2 छीलना उन्माद देना ।

उद्यव्यस्यो [उद्यव्यस्य शीघ्र] एक 'पाकि' का नाम ।

उद्यव्यस्य (वि०) [उद् + हृ + क्त] 1 मुर्दा हुआ-गैरा-व्यवस्थापारम्भकृष्टकिलबधमम् श० ६।१०।५ 2 नाहा हुआ उत्कृष्टपलकमला—ग० ५।१०।१२ (उत्कृष्टानि - वृद्धिभावि) 3 लीचा हुआ—महा० १।१०।१३० ।

उद्यव्यस्य [उद् + हृ + अच्] 1 गिबन, वृत्त-उद्योर्ष-बन्धनान्तिव्य कार्याव्यवस्थित ५ महा० १२।५६। ५१ 2 दृष्ट ।

उद्यव्यस्यित (वि०) [उद्यवाव - णिच्] त्रिगने रिक्तन दी जा मके, आदानी में स्थल उद्यव्यस्यिता मृधावर्षीना बन्धनान्तिव्य न वा गति महा० ७।३३।२० ।

उद्यव्यस्य (ए०) [उद् + उ + घञ्] काष्ठ, कुट्टक का एक प्रकार ।

उद्यव्यस्य (भा० पर०) उद्योक्त कर मन्त्र निवाधना, कर्म०

उद्यव्यस्य ज्ञाना (वि० म०) उद्यव्यस्य किया जाना ।

उद्यव्य (वि०) [उद् + नन् + घञ्] विस्मयचकन, फौला हुआ। मय० - अर्थ (वि०) ऊरगी, निम्नार, उद्यव्य पदुम् कर्म मूद्र धामानपट्ट - (आत् विनामेव इति० मृती० भाग ९), हुबुब (वि०) उद्यव्य हृदय वाला ।

उत्सवम् [उद् + तप् + स्फुट्] वेदीयमान भाव ।
 उत्सव (वि०) [उद् + तप् + स्फुट्] ब्रह्मिणा, श्रेष्ठ, —कः (पु०)
 ध्रुव का सीताला भाई । मयम्—ब्रह्मतात्मन् मूर्तिमत्ता
 का शब्द वा मूर्ति की पूर्ण ऊँचाई के १२० तम
 प्रमाणों को इंगित करने के लिए प्रयुक्त होता है
 — कथम् १०१० । अथर्ववेद अथर्ववेद अथर्ववेद—पान० १२१
 १।१।८, ब्रह्मा पतिव्रता स्त्री हृदयस्यैव शोकाग्नि-
 मत्पत्न्योत्सवव्रतान् मष्टि० १।८७, —शब्दः उत्सवतम
 विद्या श्रान्त ।

उत्सवर (वि) श्रेष्ठ ।
 उत्सवः [उद् + स्तम् + घञ्] भायताकार सरचना
 —महर्ष० ४।७।२१ ।

उत्तर (वि०) [उद् + तप्] १ उत्तर दिशा २ ऊपर
 का, अपेक्षाकृत ऊँचा ३ बाद का ४ अयोध्या का
 —मान० १।३।६७ ५ आगे की कार्यवाही, अगली
 प्रक्रिया उत्तर करने आकार्य—रा० ५।३ ६ माच्छा-
 दन, आचार्य—महा० १।६०।१ । मयम्—अथर्ववेद ।
 (उत्तरागारम्) ऊपर का करना, अथर्ववेद (वि०)
 उत्तर दिशा की ओर मुड़ा है मूह जिसका, —ताप-
 मीचम् नृसिंहनाथनीय उपनिषद् का उत्तर भाग,
 मारायण-पुस्तकालय का उत्तर भाग, —श्रीवि-
 (स्त्री०) उत्तरीय मंडल ।

उत्साह (वि०) उत्साहका, भावुर ।
 उत्सल (वि०) [उद् + सल् + क्त] उग हुआ, भव-
 भीत ।

उत्सवम् [उद् + स्था + स्फुट्] १ मठ, विहार २ मूढ
 करने के लिए तैयार सेना की स्थिति मूढानुकूल-
 आचार उत्सवमिति कीवितम् (सुक्० १।३२५ ।
 मयम्—शौरः कर्मप्रोक्त स्थिति, —श्रीविष्णु (वि०)
 लक्ष्मि, परिचयी ।

उत्सवमिच्छा (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्सव + नि-
 प' (अर्थात् पूरी तरह से और भलीभाँति पकाओ)
 कहा जाय ।

उत्सवप्रयोगः [उ० स०] कर्मित ज्योतिष का एक योग ।
 उत्सवमिच्छा (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्सव (ऊपर
 को उठो) + निपत्त (नीचे उठो)' शब्दों को बार-बार
 कहा जाय ।

उत्सवमन्त्रोच्चारः (शान्ति) [व० स०] अथुन शकुनों से
 बचने के लिए शान्ति के उपायों का अथर्वमन्त्र,
 —श्री० म० २।७ ।

उत्सवः (स्त्री०) (वेद०) [उद् + पद् + पितृन्] १. मय
 —उत्सवमिति ब्रह्मिणा मी०सु० ७।१।३—७ पर
 हा० मा० २. मय विधि, वेद में आचारमूढ अथर्व-
 वेद, इसे उत्सवमूर्ति और उत्सवमिच्छा भी कहते
 हैं—मय० ४।३ ।

उत्सविका [उद् + पद् + पिप् + श्लु] एक बड़ी वृद्धी
 का नाम ।

उत्सविका (वि०) [उद् + पद् + पिप् + क्त] विद्या किना गया ।

उत्साह (वि०) [उद् + पद् + पिप् + श्लु] जो भली
 पैदा किया जाना है—सायब्य उत्साह इवात् मयः
 सु० १।३५ ।

उत्सालिनी [उत्सल + निनि, विद्या श्रेष्ठ] एक लज्जकोल
 का नाम ।

उत्सेवाशयः [व० स०] एक प्रकार की उपमा ।
 उत्सेवाशयः एक कवि का नाम ।

उत्सेवित (वि०) तुलना की गई (जैसा कि उपमा में
 की जाती है) ।

उत्सेवितोपमा उपमा अंतकार का एक भेद ।

उत्सल (वि०) [उद् + पल् + क्त] घृष्ट हुआ, ऊपर को
 उठना हुआ ।

उत्सुक (वि०) [उद् + कुम् + क्त] उद्वेग वीथ, मुस्ताह ।

उत्सुकित्तु (वि०) [उद् + स्फुलित्तु + इत्तु] विद्यार्थी
 स्फुलित्तु निकते, विद्यार्थी उत्सुकने शान्ति ।

उत्सुकः [उद् + सञ्ज् + घञ्, स्वार्थे क्] हाथ की
 विशेष मुद्रा ।

उत्सुक (वि०) [उद् + सञ्ज् + क्त] हृदयमान—उत्सुकता
 पाठ्यशास्त्रियम् महा० १।११।३३ ।

उत्सविः (स्त्री०) [उद् + सञ्ज् + पितृन्] माघ,
 विनायक, शय ।

उत्सवकुचमयम् (वि०) [व० स०] जिसकी कुच परम-
 राई छिन्न-विद्य ही गई हैं—उत्सवकुचमयम्
 मनुष्याणां अनाथिन, मरके नियत वास्त—मय० १।४६ ।

उत्सवोद्भवम् (नपु०) मूर्तिकला का शब्द जो मूर्ति की
 ऊँचाई के अनुसार उसके भाग को प्रकृत करे—
 मान० १।४।११-११ ।

उत्सवमिच्छा [व० स०] मनुष्य के रूप में निष्ठाकी चान्ते
 वाली प्रतिष्ठा, मूर्ति (विप० मूलविद्यार्थ) ।

उत्साहः [उद् + सहा + घञ्] अतिउत्साह, उद्योग ।

उत्साहयोगः [व० स०] अगनी सामर्थ्य वा शक्ति का
 उपयोग करना आरोग्योत्साहयोगेन—मय० १।२१।८ ।

उत्सेकः [उद् + पिप् + घञ्] उत्साह, —आयकमन्त्र
 संश्लेष्य ह्योत्सेकस्य सम्बन्ध—महा० ८।७।१ ।

उत्सुर्लक्ष्मिन् (वि०) [उद् + सुर्वेरी + पिप् + श्लि] जो
 पूर्व निकल जाने पर भी सीता रहता है, —महा०
 १।२।२८।६५ ।

उत्सुः (उत्सुः) (स्त्री०) [उद् + सु (सु) + पिप्] जो
 उत्सुकर शक्ति—मय० ५।४० ।

उत्सु (पुंसा० वर०) अथर्ववेद करना, अथर्ववेद, निश्चित
 करना—आचार्य द्रुपदस्यैव च यज्ञो अथर्ववेदः—
 महा० १।२।१७।१ ।

११३९।१९ 2. आरम्भ, शुक किया गया--प्रमु-
नितवित्त शक्ये-विश्व० २६ 3 उद्बुद्ध, जागा हुआ
तां यत्प्रियवित्त राम सुकोदितमरिच्यम्--रा० ६।

१२११।
उत्थित्वर (वि०) 1. ऊपर जाने वाला, ऊपर उठने वाला
अभिहितमतिर्वेदोक्तदुदिवरचिकम् - विव० १४।
१०६ 2 जाने बड़ने बाका - योयु सीरिवदित्वात्वर
उदेद् वाहृहार्त मजम् - विव० १८।

उठे (उद् + जा + इ - मदा० पर०) ऊपर जाना, उठना,
उभत होना।

उठेविष् (वि०) [उद् + जा + इ (ईविष्)] उगा
हुआ, उद्भूत, जल सत उदेविषान् साध्वता कुले
-- भाग० १०।३।१४।

उद्गद्यगविका (स्त्री०) मुञ्जकिया लेना--का०।
उद्गल (वि०) [न० व०] गर्दन ऊपर उठाये हुए।
उद्गारकमणि [उद् + गु + ष्वल् + म् + इद्] प्रवाल,
मृगा।

उद्गार [उद्गु + षञ्] (समूही) ग्राव। --पविचमेन
तु स वृद्धसा सागरोद्गारत्प्रियम् - रा० ७।३।२।९।

उद्गारक (पु०) एक प्रकार का पत्थी।
उद्गोर्ष (वि०) [उद् + गु + षत्] 1. बान्त, बचन किया
हुआ, निष्पृणोद्गोर्षोर्षात्सादि योमन्निष्प्राययम्।
काव्या० 2 बाहर निकाला हुआ, निष्कानित 3 प्रेरित,
कराया हुआ--काकलीकलकमोद्गोर्षोर्षम्परा--गी०
१।३६ 4 उठता हुआ, किनारे से बहता हुआ
--उद्गोर्षोर्षोर्षो--मै० १।७।३६।

उद्गामन् [उद् + गै + ह्यट्] सामग्रियों के उच्चारण में
एक विशेष अवस्था।

उद्गोलक (वि०) [उद् + गै + षत् + क्] जो ऊँचे स्वर
से गायन करता है।

उद्गृहणन् [उद् + गृ + ष्ट्] बाणों को समुक्त करने
के लिए पिन--तामिषीष्य दिग सर्वा वैष्णुदृषण-
मुत्तमम् रा० ५।६।७।३०।

उद्ग्रीविका [उद् + ग्रीवा + इति + क् + टाप्] पंजो पर
सजे होना उद्ग्रीविकावागमिवाव्यम् (रोमानि)
मै० १।४।५३, कामिनिष्पुनित्पुननीका दर्शनाथ-
मिषोद्ग्रीविकावागमिषेव प्रदीपे--वास०।

उद्गृह्यतम् [उद् + गृह् + ष्ट्] (अत्याहार का) आरण्य।
उद्ग्रीव (वि०) [व० स०] सुहर की भांति जिसके नपुंने
ऊपर को हो--स्फुरदुद्ग्रीवोपवन - विव० २२।१३।

उद्गृह्यत (वि०) [उद् + गृ + षत्] उजया हुआ,
भगत कया०।

उद्गृह्यतामिन् पत्रहवीं शताब्दी का तमिलदेशवासी एक
महान् विद्वान्।

उद्गल (वि०) [उद् + गल् + ष्ट्] काढ़ देने वाला।

उद्गलकामनः [उद्गलक + कम्] उद्गलक की लगना।
उद्गोर्ष (वि०) [उद् + गु + षत्] फटा हुआ।

उद्गोष्कः [उद् + गीष् + ष्वल्] पक्षिबिम्बे।
उद्गोष्का [उद् + गीष् + ष्वल् + टाप्] एक प्रकार की
चिड़ड़ी।

उद्गुष्क (स०) [उद् + गुष् + कत्वा (स्यप्)] तांबेजलिक
रूप से बदनाम करके या दोषारोपण करके - वि०
२।११३।

उद्गुलः (स०) [उद्गु + ल् + षत्] सकेल करके, विशेषरूप
से, मुख्य रूप से, स्पष्टरूप से--एष तुद्गुलः प्रोक्त
--वच० १०।४०।

उद्गुष्कम् [त० स०] वह सम्बन्ध जो कर्त्तृकारक के रूप में
प्रयुक्त है--ये वचनाना इत्युद्गुष्कम्--गी० सू०
६।६।२० पर वा० मा०।

उद्गुष्क (वि०) [उद् + पिष् + षिष् + ष्वल्] सङ्केत
करता हुआ, इति से दर्शाता हुआ।

उद्गुलः (वि०) [उद् + गुल् + षत्] 1. मरपूर, मरा हुआ,
समृद्ध ततस्तु भारोद्धतमेषकल्प--रा० ६।६।७।१४२
2 चमकीला, चमकण होता हुआ, अनीय रजसा
तेन कीलेषोद्धतपान्दुना--रा० ६।५।५।१९।

उद्गुर्ष (वि०) [व० स०] अविज्ञता, प्राप्त्वं--भापूर्यंत
वनेद्गुर्षविशेषैरिवार्षम्--रा० ५।७।५।३६।

उद्गुलः (वि०) [उद् + गुल् + षत्] 1. फेंका हुआ,
उछाला हुआ, उद्गुलमिष सागरम्--महा० ५।१९।३।४
2 अन्वयविन्धित, विचरा हुआ--आसीडिनविषोद्धत
स्वीचन राषमस्य तत्--रा० ५।९।६।६ 3 ऊँचा,
उन्नत देवदासिचन्द्रतर्कम्वाहुविष विद्यतम्--रा०
५।५।६।२९।

उद्गु (= उद् + इ) विद्वल करना, नष्ट करना--
एष त्वां सज्जनात्पद्मद्वाराणि विचरो भव - महा०
५।१८।१२३।

उद्गुलि (वि०) [उद् + गुल् + षत्] हर्ष के कारण
जिसके रोगसे जड़े हो गये हों।

उद्गुलन् [उद् + गुल् + ष्ट्] प्रतीक्षा करना, भासा करना
-- अपि ते साङ्गना भुष्का म्नाः सोद्गुलमान् नृहान्
--महा० १३।६०।१४।

उद्गारकविधिः (पु०) [उद् + हृ + षिष् + ष्वल् + वि
+ वा + षि] देने की या चुनवान करने की रीति
--तत्कल्प कल्पस्योद्गारकविधिर्विधिष्यति-वच० २।

उद्गारः [उद् + हृ + षञ्] 1. लकड़म 2. (जाने के
वचनम्) जो शक्तिमें से बच भाव, उच्छिष्टः। वच०
श्लोकः एक शब्द का भाव, विधानः शेषों के
प्रभाव, विधानः।

उद्गारित (वि०) [उद् + हृ + पिष् + षत्] निष्कानित
मुक्त, छुड़ाया हुआ।

उद्वह (वि०) [उद् + ह्व् + क्त] 1 बीधा हुआ
2 बाधित 3 दूध, सहत, कसा हुआ ।
उद्वह्य (वि०) [उद् + ह्व् + क्त] बधाने वाला,
सहाय करने वाला, सामर्थ्य देने वाला ।
उद्वह्यः [उद् + ह्व् + क्त] सोद कर पुष्य कर देना,
विद्यस्त कर देना ।
उद्व्यू (म्भा० पर०, प्रेर०) विचार करना, सोचना
- विक्रम० १।११ ।
उद्यतायुष (शस्त्र) (वि०) [य० स०] जिसने यस्त्र हाथ
में ले लिया है ।
उद्यत्या (स्त्री०) जंगल में या सूखी लकड़ी में रहने वाली
एक काली चिड़ड़ी, एकोठी ।
उद्यतित (वि०) [उद् + यत् + क्त] काम करने
के लिए जिसे प्रेरित किया गया है ज्ञातनी मय-
मयोद्यतितानाम् - कि० १।६६ ।
उद्यतिका [उद् + या + क्त] माया से बाधित कर जाना ।
उद्योतित (वि०) [उद् + यत् + क्त] उजाया हुआ, एक
चित्र (जैसे कि बादल) ।
उद्योतः (पु०) [उद् + यत् + क्त] 1 चमक, उद्योतित,
उज्वलता, 2 इस नाम का माध्यमी रत्नावली,
काम्यप्रकाश और महाभाष्यप्रदीप पर उद्योतम्ब है ।
उद्योतकः (पु०) महाभाष्यप्रदीप के माध्यकार का
नाम ।
उद्योतम् [उद् + यत् + क्त] चमकने या प्रका-
शित होने की क्रिया ।
उद्योतिका [उद् + यत् + क्त] उद्योत - शिवमहिम्न
स्तोत्र-३० ।
उद्योतक (वि०) [उद् + यत् + क्त] बधाने वाला,
बुद्धि करने वाला ।
उद्योतित (वि०) [उद् + यत् + क्त] उलटी करने
वाला ।
उद्योतः [उद् + यत् + क्त] कुल या वंश में प्रधान व्यक्ति,
पुत्र (जैसा कि 'रघुव्रह्म' में) ।
उद्योतम् (उद्योत + क्त) [उ० स०] विवाह के लिए
पुत्र नक्षत्र । उद्योतम् च विद्याय उद्योतम् मय-
सूदन - भाग० १०।५३ ।
उद्योत (वि०) [य० स०] भिनगारिया या बलिष्क बर-
साने वाला (जैसे कि 'वृक्ष') - उद्योतचतम् वि०
५।२८ ।
उद्योत विकार करते हुए नाथ केना, ४।११।५५५ के कारण
रोने में नाम ले लेकर कथन करना - उद्योतमान
पितर सरामम् - यद्वि० २।३२ ।
उद्योत (पानी छिड़क कर) मनुष्य को होश में लाना ।
उद्योतः [उद् + यत् + क्त] सुपारी - नै० ७।५६ ।

उद्योतक (वि०) [उद्योत + क्त + क्त, भुल, चिनि
उद्योतकारक } वा] चिन्ताजनक, सोच करने वाला, कष्ट
उद्योतकारित } कर या दुःखदायी ।
उद्योतकाम् [उद् + वि + क्त] बधाना, निका-
लना, उठाना रसां गानाया मुह उद्योतकाम् - भाग०
३।१३।५३ ।
उद्योतः [उद् + यत् + क्त] प्रलयकाल - रा० ६।१५।१८ ।
उद्योत (वि०) [उद् + यत् + क्त] उलटा हुआ, उद्यो-
तित, प्रसारित ।
उद्योतः (पु०) नाचते समय हाथों की मुद्रा ।
उद्योतनीय (वि०) [उद् + यत् + क्त] बोलने के
योग्य, कथनमूलक करने के लायक - बाध बढ़ा विरह
विकसे या शिवायाम हित्वा, धापमयान्ते विगलितधुका
ता मयोद्योतनीयम् येष० १२ ।
उद्योत (उद् + वि + क्त + क्त) म्भा० पर०) पुनंत
छोड़ देना, त्याग देना ।
उद्योत [उद् + यत् + क्त] कृष्ण के एक पुत्र का नाम ।
उद्योत (वि०) [उद् + यत् + क्त] ब्रह्मणी, उल्लासपूर्ण,
समाधाय सम्प्राप्ता कर्मसिद्धिप्रदता - रा० ५।
६।५ । सः कालः छाया को माप कर समय
निर्धारित करने की प्रणाली, - कौशिक्या एक प्रकार
का वाद्ययंत्र ।
उद्योत [उद् + यत् + क्त] दल की पुत्री जिसका
विवाह धर्म के साथ किया गया था ।
उद्योत (वि०) [उद् + यत् + क्त] अशुभ, कुला,
मूल, कथन रहित - मन्थयस्य विभोद्योतस्य
नियम् - भाग० ११।१।५ ।
उद्योतः [उद् + यत् + क्त] मुष्टता, हेकड़ी, बीड़र,
बहुकार ।
उद्योत (वि०) [उद्योताना विद्या यस्मात् य० स०]
1. तेजस्वी, देदीप्यमान (जैसे कि चन्द्रमा) - नीचा
निर्मरगमयोसत्वरसंनिविष्टता सप्रा. - कलि०
2 (शान्ति की प्राप्ति) शीघ्रता होने वाला, कैला
हुवा ।
उद्योतम् [उद् + यत् + क्त, ता वा] धागकृता,
उद्योतता] बायते रहना ।
उद्योत (वि०) [उद् + यत् + क्त] सार्वभू के आधार
पर जो अनुमान करने या निर्णय करने के योग्य हो,
- सि० य० १७ ।
उद्योतः (पु०) [उद्योतानो यद्वि० - बला० स०] सतह
पर पड़ा हुआ रत्न - गिरयो विभ्रतुयमनीन् - भाग०
१०।२७।२६ ।
उद्योतम् [उद् + यत् + क्त] विकार देना, - कर्म नतो-
ऽधिरमोद्योतमने स्वपुष्टे - भाग० ११।१।१८ ।
उद्योत (वि०) [उद् + यत् + क्त] 1. बहुर बड़ा, कसा-

भाष्य—उत्पलवेया प्लवगा—रा० ५।६२।१२,
—सम् (नपु०) बधुरे वा कूळ—उत्पलवाशाच हर
स्मारक न० ३।१८ (भा०) ।

उत्पलीम् (म्भा० पर०) उत्पलित होना, सूख होना ।
उत्पलता [उत्पल + ता] भाषाया या प्रत्याया की
विभक्ति ।
उत्पल्य (वि०) [उद् + मूल + क्त] 1 उद्भिन्, सञ्चान्त
2 मूर्ध, मूढ ।

उत्पल्य (कृष्ण० पर०) मरुतना, माण्डिल करना ।
उत्पल्यम् (नपु०) उपमयन सस्कार की एक प्रक्रिया
जिसमें बालक का सिर सूखा जाता है ।

उत्पल्यः [उप + कृप् + ञप्, षच् वा] भाष्यच—तप-
नीयापकल्पम्—भाष० ३।१८।१ ।

उत्पलीचक [उप + लीच् + क्तुं आद्यन्तविषयश्च] बाल
के बालों की उपजाया—विगाटनगरे राजन् कीचका-
दुपलीचकम् (वहाँ 'विगाट' में 'वि + राट' लेख
भी हो सकता है) ।

उत्पल्यः [उप + क्त + षच्] 1 गीर्ष 2 उद्धान 3 म्यव-
हार प्रतिष्ठा ।

उत्पल्यत (वि०) [उप + क्त + षत्] 1 मारज्य 2 अवि-
गत 3 म्यवहृत ।

उत्पल्येक (वि०) [उप + लिप् + म्युज्] मकेत देने वाला,
मुद्राव देने वाला ।

उत्पल्यम् (नपु०) परिशिष्ट का भी परिशिष्ट ।
उत्पल्यम् (म्भा० पर०) पुत्रा करना—सह पत्न्या विद्याकाव्या
नारायणमुपपन्नम्—रा० २।६।१ ।

उत्पल्यन्तुः [उप + न् + ल्यट्] बारपा, स्वीकृति—ब्रह्म-
पत्य हि प्रापन्नमुपपन्नम्—मी० मू० १।२।१२१ पर
शा० भा० ।

उत्पल्यन्ति (वि०) [उप + न् + ल् + षत्] पात जाने
का इच्छुक,—नीचैर्बन्धित्युपनिबन्धितो—वेच० ४४ ।

उत्पल्युद् (वि०) [उप + मूल + क्त] 1 हस्त, जलविहित
—रुप्योपमूढो नष्टयोः कृपयो विचारात्मक—भाष०
५।२८।६ 2 आच्छादित, ढका हुआ कटाधि-
पुष्पिताद्याधिवपुष्पानि हर्षत—रा० ५।१।१ ।

उत्पल्यन् [उप + ल् + ल्यट्] लक्ष्मणी लगीत ।
उत्पल्यन् [उप + ल् + षत्] पायन, नीत ।

उत्पल्यन् (म्भा० पर०) निगलना, इकप करना, ब्रह्मबल
होना ।

उत्पल्यन् (म्भा० पर०) सूचना एवं धर्मस्वयं मूर्धनि चोष-
यन्ती—रपु० १।१।० ।

उत्पल्यन्तु (वि०) कलम बार, बार के बावपाठ ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + ल्यट्] निकट जाना, पहुँचना ।

उत्पल्यन्तु (नपु०) लीच का विशेष विधान ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + षच्] 1 सेवा, पुत्रा 2 शिष्टता,

लीचम् । तप० षडन्तम् आलकारिक रूप से प्रयुक्त
किसी वस्तु के मन्थन का उल्लेख करने के एक प्रकार
का निराकरणयोग्य भाषावी अनुमान, पद्य शिष्टता
का शब्द, औपचारिक उच्चारण ।

उत्पल्यन्तु (वि०) [उप + ल् + षत्] गुल, छिपा हुआ ।

उत्पल्यन्तु (पर०) छिप होना, पकड़ लेना ।

उत्पल्यन्तु (वि०) [उप + जन् + ञ्] घटने के
निकट ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + षत्] 1 उपर की भूमि का कनरा
2 एक प्रकार की लकड़ी की चौकी या स्टूल ।

उत्पलीचन् [उप + ल् + षच्] 1 सरोवर या नदी का नट
2 निकटवर्ती प्रदेश—महा० ५।१५।२।३ ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + षत् + टाप्] पर्वत की नलहटी का
निम्नलेख निरेक्ष्यकारभ्यासिन मत्प्राप्ता श० ५ ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + ल्यट्] प्रकरण, प्रसंग—मी० मू०
६।८।३५ पर शा० भा० ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + षत्] प्रकरण बनाने हुए उल्लेख
करना ।

उत्पल्यन्तु (वि०) [उप + ल् + ल्यट्] देने वाला ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + षच्] अवेदना, लेख करना, चिह्नित
करना—देशोपदेशाधिकरणयोग्यता न० १०।१३ ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + षच् + टाप्] दीमक ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + षच्] 1 मत्प्राप्त साम का छत्रा भाग ।
शा० २।८।२ 2 हासि, छीजन—अप्रत्ययप्रद पद्य
मूर्तो हि किञ्चिद्विधति रा० २।१०।१।६ ।

उत्पल्यन्तु [अन्व० ल०] पार्ष्वहार ।

उत्पल्यन्तु (बुहो० जन्०) बोझा लेना ।

उत्पल्यन्तु [ष० ल०] अन्तिम से पूर्व का लोप ।

उत्पल्यन्तु (वि०) [उप + ल् + ल्यट्] तनाव बढ़ाने के लिए
बाधक में के तारों के अंदर रखे हुए सफाई के
दुकरे—वायोचचार्या व्याख्यान—महा० ५।३५।१६ ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + षत्] 1 तफिया, खेदार
विज्ञान 2 पावदान ।

उत्पल्यन्तु (म्भा० जन्०) पुत्रा करना ।

उत्पल्यन्तु [उप + ल् + ल्यट्] 1 झुकाव 2 देव ।

उत्पल्यन्तु (वि०) [उप + ल् + षत्] आनेवाला, उपस्थित
होने वाला ।

उत्पल्यन्तु (वि०) [उप + लि + षच् + षत्] 1 रक्षित
2 विघ्नित किञ्चिदुपनिबद्ध उत्तर० ७ ।

उत्पल्यन्तु (म्भा० पर०) प्रसन्न करना ।

उत्पल्यन्तु [उप + लि + षच् + षत्] मुख्य लक्षक, प्रभाव
दायी ।

उत्पल्यन्तु [उप + लि + षच् + ल्यट्] डार, बरबादा ।

उत्पल्यन्तु [उप + लि + षच् + षत्] आत्मन, हुसका
—नेवानीकुण्डिनहर्षरत्नयो बन्धुवृत्ति—रा० ६।७।५।२ ।

उपविष्ट (वि०) [उप+वि+विष्+क्त] 1 बेरा
 बालने वाला रहने वाला, अधिकार करने वाला ।
 उपविष्टेः [उप+वि+विष्+क्त] 1 देहात, उपनगर
 2 स्थापना ।
 उपविष्ट [उप+वि+ष्+विष्] तलेनग - भवेत् विष्टया
 करोति अत्रोपविष्टा—आ० १।१।१० ।
 उपविष्टे (इआ० आ०) अपने आपको सलम करना ।
 उपवत् [उप+वी+वत्] (किसी भी धातु में) वीक्षा ।
 उपवत्तम् [उप+वी+वत्] नियोजन, नियुक्ति, अनु
 प्रयोग ।
 उपवीत (वि०) [उप+वी+क्त] 1 विवाहित 2 ब्रह्मचर्य
 आश्रम में वीक्षित ।
 उपनृत् [उप+नृ+क्त] उभा हुआ, लहरो में
 बहा हुआ—दुलभदुपुत्रं—वि० ५।१८ ।
 उपनेत्रम् [उप+नी+त्रम्] ऐनक, चरमा ।
 उपन्यस्तम् [उप+नि+न्य+क्त] यस्म्युद के लय
 हाथों की विष्टिष्ट मुद्रा—रा० ६।५०।२६ ।
 उपपत्ति (वि०) [उप+प+क्त] उपपातक वा किसी
 साधन्य पाप का अपराधी, नग्न्य पाप का दोषी ।
 उपपत्ति [उप+प+पितृ] 1 दुर्घटना, सघात—उप-
 पत्तयान्नेषु लोकेषु च तयो मन्—महा० १२।२८।
 ११ 2 उपवृत्त, तर्कसंगत—उपपत्तिमनुविज्ञानाय नृ-
 नृषु च यत्र नृकोट—वि० २।१ ।
 उपपत्तिरिचयत् (वि०) [उ० ल०] अतिरिष्ट, अत्रमाश्रित ।
 उपपत्तिहकः [उ० ल०] न्यायशास्त्र में कथित विरोध बहूँ
 दोनों विच्छेद उपतिर्वा सिद्ध हो जा सकती है ।
 उपपत्त (वि०) [उप+प+क्त] इच्छानुकूल, अधिकार
 —उपपत्तेषु शत्रुषु कुषु च विधीयते—रा० २।१०।१।१८।
 उपपत्त (वि०) [उप+प+क्त] 1 अनुपाल 2 प्रभाव-
 सायेज 3 सत्ता में आने वाला ।
 उपपत्तम् [उ० ल०] [प्रा० ल०] चन्द्रमा के परिवर्तन से पूर्व
 का दिन ।
 उपपत्तः [उप+प+विष्+पञ्च] अतिरिक्त, लग्न ।
 उपपत्तः [उप+पु+वत्] हृदि, विमलता-मायया विभव-
 विष्टो न वेत् स्मृत्युपकषात्—भाष० १०।८।५।२५ ।
 उपपत्तम् [उ० ल०] अन्वयेत की राजधानी का नाम ।
 उपपत्त (वि०) [उप+पु+क्त] दबाया हुआ, नीचा
 हुआ—वि० ८।१९ ।
 उपपु (बुद्धो) उम०) धारण करना, बहुर करना ।
 उपपुत (वि०) [उप+पु+क्त] सन्तुष्टि, निकट जाया
 गया—सिध्याशोपपुत सेवी—भाष० ८।१५।२९ ।
 उपपेदः [उप+पि+पञ्च] उप प्रमात ।
 उपपवत्त (वि०) [उ० ल०] [प्रा० ल०] अचरत्—मन्-
 स्थापितकवि कवीनामुपवत्तम्—शु० २।२।११ ।

उपपत्तिम् [उ० ल०] [उप+पु+विष्+क्त] 1 अवरपरामर्श
 दाता, वा नगरी 2 उपदेशाहक स्वरथ उप-
 पितुं प्रवृत्तान्त्ववार्ता भाष० १०।७।१।२९ ।
 उपपत्ता [उप+पु+वत्+पु+क्त] अतिरिक्त सिद्धात -
 विषयं परमर्षयत् आनात उपमा छल—भाष०
 ७।१५।१२ ।
 उपपत्तारिचक (पु०) तुलना और संबन्ध का संयोग ।
 उपपत्तम् [उप+पु+वत्+क्त] निष्ठ, निरोध ।
 उपपेदत्तम् [उ० ल०] [प्रा० ल०] (पर्वत के) इलाक पर ।
 उपपत्तम् [उप+पु+विष्+क्त] 1 निकट पहुँचाना
 2 विवाह ।
 उपपत्तः [प्रा० ल०] अशोभयत् अधिकारी-की० न० २।५।
 उपपत्तम् [उप+पु+वत्+क्त] उपपत्तम् उपपत्तम्, उपपत्तम्,
 काम का ।
 उपपत्तम् [उ० ल०] अर्थ, निरर्थक ।
 उपपत्त (वि०) [उप+पु+वत्+क्त] काम में लाने
 के बीच ।
 उपपत्त (वि०) [उप+पु+वत्+क्त] काला
 कर के, सिद्धा कर ।
 उपपत्त (वि०) [उप+पु+वत्+क्त] 1 रयन
 दाता 2 प्रभावदात्री ।
 उपपत्तकोविता (वि०) [उ० ल०] वह स्त्री जिसका
 वाचिक धर्म बन्ध ही चुका है ।
 उपपत्त (इआ० पर०) प्रतिष्ठापन कराना, गुजाना ।
 उपपत्त (वि०) [उ० ल०+विष्, उप आवेत्] अवर, उपरान
 वाद । उम०—उपपत्तं संभावनी सिद्धा का तीसरा
 अर्थ,—सम्पु सतह—कुली मुहूर्त उद का एक
 पत्र,—क (उप) अवर रक्ता हुआ ।
 उपपत्तः [उप+पु+क्त] कैरी, रोका हुआ ।
 उपपत्तः [उप+पु+वत्+क्त] उपपेद, मोप, निकालदेना
 धारणार्थवादि प्राकृतलोपरोधः स्यात्—मी० पु०
 ८।५।१५ । उम० कालिन् (वि०) विमलकारी,
 कलाकट डालने वाला ।
 उपपत्तः [उप+पु+क्त] नकली वस्तु का द्वारा केंकी गर्द
 दोली । उम०—अतिष् (वि०) चपकी पर अनाम
 वीक्षने वाला,—कुक्षिः मोनों की वर्षा ।
 उपपत्तियत्तम् [उप+पु+विष्+क्त+वत्+वत्] न्याय
 चालन का कर्म जो किसी लक्ष का कुतर्क पूर्व निरा-
 करण दर्शाता है—न्या० ६० ।
 उपपत्तः [उप+पु+वत्+क्त, पु० च] देहता, दर्शन
 करना ।
 उपपत्तः [उप+विष्+वत्] नगता, मुग्धता ।
 उपपत्तः [उप+विष्+वत्] प्रतिपाद्यों से सत्र
 आकारण की एक रचना ।
 उपपत्तम् [उ० ल०] [प्रा० ल०] नौप वातु, सोटी वातु ।

(पुं०) आसन एवमुक्त्वार्जुनं तस्मै रथोपस्य उपा
विद्यतु—अथ० १।४७ 2 सतह—त ध्यायत धरोपस्ये
—अथ० ७।१३।१२।

उपस्थानम् [उप + स्था + स्थुट्] न्यायालय का कक्ष
उपस्थानगत कार्याधिनामदारासङ्ग कारयेत्—की०
अ० १।१६।

उपस्थापना [उप + स्था + णिच् + घृच् + टाप्] जैनसाधु
की दीक्षा से संबद्ध संस्कार।

उपस्थितवस्तु (पुं०) [उपस्थित + वच् + तुच्] आनुबन्धता।

उपस्तृत (वि०) [उप + स्तृ + क्त] बहोती हुई, प्रवहण-
शाल—स्वयं प्रदुष्येतेषु गृहीतवस्तुना कि० १।१८।

उपस्थानम् [उप + स्थ् + स्थुट्] उपहार।

उपहासकम् [उपहस् + क्त] दिव्यस्त्री, ह्याम्यपूर्ण
उक्ति।

उपहर्तुं (वि०) [उप + हृ + तुच्] उपहार प्रदान करने
वाला, आतिथेयी।

उपहा (बुहो० आ०) उपरता, नीचे आना—उपाविहीया
न महोतत यदि—गि० १।२७।

उपहार्यम् [उप + हृ + ष्यत्, ष्यत्, णिच् + टाप् च]
उपहारकः [उपहार, भेंट।

उपहारिका

उपहृति (स्त्री०) [उप + हृ + क्तिन्] निष्ठा, प्रकृति।

उपहृत (वि०) [उप + हृ + क्त] आमन्त्रित, बुलाया
गया, आवाहन किया गया।

उपायु (अ०) [उपयना अथावा यन् - व० स०] 1 मन्त्र
आदान में, कान में कहना। सम० अथ. मन ही
मन में मन्त्रों का जप करना, ऋ. यज्ञ में निचाइ
कर निकाले हुए मायगन्ध का परेषण, इन्ध. निजी
रूप से दिया गया दण्ड,—अथः मूत्रं ह्रया।

उपाकृत (वि०) [उप + आ + कृ + क्त] 1 अग्निमन्त्रित
2 उपयोग में लाया गया—यज्ञोपाकृतं वित्तं महा०
१।२।२६।२२।

उपाकृत् (म्वा० पर०) दूट पढ़ना, हुक्मा बोलना।

उपाग्रा (म्वा० पर०) 1 लूचना 2 चूचना (जैसा कि
'गृध्म्युपाग्राय' में)।

उपाङ्ग [प्रा० स०] जैनियों के धार्मिक धर्मों का समूह।

उपासविद्यः [व० व०] जिसने अपनी शिक्षा समाप्त
कर ली है—उपासविद्यो मुच्यन्तिभार्या रघु० ५।११।

उपादानम् [उप + आ + दा + स्वट्] सांख्य शास्त्र में
द्विधत्त चार अत्यवस्तुओं में से एक प्रकृत्युपादान-
काकमागास्या—भा० का० ५०।

उपादान (बुहो० उभ०) (किरी स्त्री) को सतीत्वसंपर्पण
के लिए) कुसुमाना, चरित्रघण्ट पढ़ना।

उपाधिः [उप + आ + धा + क्ति] 1 किसी क्रिया का
गीच उत्प्राप्त, आनुवंशिक प्रयोग 2 स्थापानति,

प्रतिपन्न—उपाधिने मया काव्यो बनवासे मुद्रयित्त
रा० २।१११।२११।

उपाध्मन् [प्रा० स०] अन्धधर्म का सहायक।

उपाध्म [उप + आ + र्म् + अच्] समाधि, भक्त।

उपाध्म (उदा० पर०) किसी बात के लिए रोना।

उपाधित (वि०) [उप + अर्ध् + क्त] 1 उपलब्ध किया
हुआ अर्थात्।

उपाध्म (म्वा० आ०) (बलि पशु के रूप में) मार्गने के
लिए पकड़ना।

उपाधत् (वि०) [उप + आ + धृ + क्त] टका हुआ, मूत्र।

उपाधिमन्त्र (वि०) [उप + आ + धिण् + क्त] त्रिमले
आदिज्ञान किया है, या त्रिमले पकड़ लिया है।

उपाधीन (वि०) [उप + आ + धीन् + क्त] 1 निकट
स्थ, आश्रयस्थ विद्यमान, उपासना करने वाला।

उपधित (वि०) [उप + स्था + क्त] 1 सवार, यज्ञ
हुआ, 2 घटित, प्रस्तुत, आटपका जैसे कि 'व्यस्त
समुपधित' में।

उपाध [उप + अर्ध् + घञ्] दीक्षा, यज्ञोपवीत सम्कार
—उपाधेन प्रव्रतन् उपनयनेन सह प्रव्रतन्—मै०
स० पर पा० भा०। सम०—विद्यकः वैकल्पिन
नरकीर्ष।

उपेधिवत् (वि०) [उप + इण् + वसु + वा० ३।२।१००]
निकट जाने वाला गि० २।११६।

उपेक्षणीय (वि०) [उप + ईच् + क्त] उपेक्षा करने
के योग्य, नजर अन्दाज करने के लायक, परवाह न
करने योग्य।

उपेक्षणीय [ना० धा० पर०—उप + एङ्क + षच्—]
ऐसा व्यवहार करना जैसा कि भेड़ के साथ किया
जाता है—पा० ५।१।१०० पर भाषिका।

उपेक्षणीय [ना० धा० पर०—उप + एङ्क + षच्—]
ऐसा व्यवहार करना जैसा कि भेड़ के साथ किया
जाता है—पा० ५।१।१०० पर भाषिका।

उपेक्ष [अथर्वण्य [व० स०] सामवेद]।

उपास (वि०) [उप + आ + दा + क्त] अर्पण, अर्चित
—उपासविद्यो मुच्यन्तिभार्या—रघु० ५।११।

उपध (वि०) [उप + अर्ध् + क्त] दोनों। सम०—अन्धधिमन्
(वि०) जो दोनों अन्धधर्मों में लागू हो सके,
—अन्धधकारः एक अन्धकार जिसमें अर्ध और ध्वनि
दोनों बट सके, अन्धना दोनों प्रकार की प्रहेलिकाओं
को दहाने वाला अन्धकार, - ध्विन् (वि०) जिसमें
परस्पर—आर्यने दोनो पर विद्यमान हो, बिना एक
अन्ध का नाम,—विध्वन् (वि०) जो न वहाँ का
रहे न वहाँ का, दोनो जगह से अन्धकार,—कथिध्वो-
नयविध्वन्विध्वन्प्रविध्व नयति—अथ० ६।१८,
—स्वात्मक (वि०) जिसने अपना अध्ययन और
ब्रह्मचर्यगत दोनों ही समाप्त कर लिये हैं—अथ०
५।३१ पर कुल्लुक।

उपधत् (वि०) [उप + आ + दा + क्त] अर्पण, अर्चित
—उपासविद्यो मुच्यन्तिभार्या—रघु० ५।११।

उपध (वि०) [उप + अर्ध् + क्त] दोनों। सम०—अन्धधिमन्
(वि०) जो दोनों अन्धधर्मों में लागू हो सके,
—अन्धधकारः एक अन्धकार जिसमें अर्ध और ध्वनि
दोनों बट सके, अन्धना दोनों प्रकार की प्रहेलिकाओं
को दहाने वाला अन्धकार, - ध्विन् (वि०) जिसमें
परस्पर—आर्यने दोनो पर विद्यमान हो, बिना एक
अन्ध का नाम,—विध्वन् (वि०) जो न वहाँ का
रहे न वहाँ का, दोनो जगह से अन्धकार,—कथिध्वो-
नयविध्वन्विध्वन्प्रविध्व नयति—अथ० ६।१८,
—स्वात्मक (वि०) जिसने अपना अध्ययन और
ब्रह्मचर्यगत दोनों ही समाप्त कर लिये हैं—अथ०
५।३१ पर कुल्लुक।

उपधत् (वि०) [उप + आ + दा + क्त] अर्पण, अर्चित
—उपासविद्यो मुच्यन्तिभार्या—रघु० ५।११।

उपध (वि०) [उप + अर्ध् + क्त] दोनों। सम०—अन्धधिमन्
(वि०) जो दोनों अन्धधर्मों में लागू हो सके,
—अन्धधकारः एक अन्धकार जिसमें अर्ध और ध्वनि
दोनों बट सके, अन्धना दोनों प्रकार की प्रहेलिकाओं
को दहाने वाला अन्धकार, - ध्विन् (वि०) जिसमें
परस्पर—आर्यने दोनो पर विद्यमान हो, बिना एक
अन्ध का नाम,—विध्वन् (वि०) जो न वहाँ का
रहे न वहाँ का, दोनो जगह से अन्धकार,—कथिध्वो-
नयविध्वन्विध्वन्प्रविध्व नयति—अथ० ६।१८,
—स्वात्मक (वि०) जिसने अपना अध्ययन और
ब्रह्मचर्यगत दोनों ही समाप्त कर लिये हैं—अथ०
५।३१ पर कुल्लुक।

उपधत् (वि०) [उप + आ + दा + क्त] अर्पण, अर्चित
—उपासविद्यो मुच्यन्तिभार्या—रघु० ५।११।

उपध (वि०) [उप + अर्ध् + क्त] दोनों। सम०—अन्धधिमन्
(वि०) जो दोनों अन्धधर्मों में लागू हो सके,
—अन्धधकारः एक अन्धकार जिसमें अर्ध और ध्वनि
दोनों बट सके, अन्धना दोनों प्रकार की प्रहेलिकाओं
को दहाने वाला अन्धकार, - ध्विन् (वि०) जिसमें
परस्पर—आर्यने दोनो पर विद्यमान हो, बिना एक
अन्ध का नाम,—विध्वन् (वि०) जो न वहाँ का
रहे न वहाँ का, दोनो जगह से अन्धकार,—कथिध्वो-
नयविध्वन्विध्वन्प्रविध्व नयति—अथ० ६।१८,
—स्वात्मक (वि०) जिसने अपना अध्ययन और
ब्रह्मचर्यगत दोनों ही समाप्त कर लिये हैं—अथ०
५।३१ पर कुल्लुक।

उपधत् (वि०) [उप + आ + दा + क्त] अर्पण, अर्चित
—उपासविद्यो मुच्यन्तिभार्या—रघु० ५।११।

उपध (वि०) [उप + अर्ध् + क्त] दोनों। सम०—अन्धधिमन्
(वि०) जो दोनों अन्धधर्मों में लागू हो सके,
—अन्धधकारः एक अन्धकार जिसमें अर्ध और ध्वनि
दोनों बट सके, अन्धना दोनों प्रकार की प्रहेलिकाओं
को दहाने वाला अन्धकार, - ध्विन् (वि०) जिसमें
परस्पर—आर्यने दोनो पर विद्यमान हो, बिना एक
अन्ध का नाम,—विध्वन् (वि०) जो न वहाँ का
रहे न वहाँ का, दोनो जगह से अन्धकार,—कथिध्वो-
नयविध्वन्विध्वन्प्रविध्व नयति—अथ० ६।१८,
—स्वात्मक (वि०) जिसने अपना अध्ययन और
ब्रह्मचर्यगत दोनों ही समाप्त कर लिये हैं—अथ०
५।३१ पर कुल्लुक।

- वास (वि०) जिसके दोनो ओर वास बिछा हो,
- पुच्छ (वि०) जिसके दोनो ओर पूँछ हो
(वि०) जो बाहर और भीतर दोनो ओर देख सके।
उत्तमोत्तमरसतम् (नपु०) शिव को प्रमत्त करने के लिए
विशेष प्रकार का एक धार्मिक व्रत।
उत्पन्नत्वम् (ब० सं०) शेषनाश पर होने वाला विघ्न।
उत्पु (नपु०) [उत् + भुत्] उत्पत्त्य [छाती] छाती।
सम० — कपाटः चौड़ी सबल छाती, — क्षयः तर्पणिक,
छाती का रोग, — स्तम्भः दबा।
उत्पत्तराज्यम् (वि०) [ब० सं०] बड़ा शक्तिशाली।
उत्पत्ता (अ०) [उत् + पत्] नाना प्रकार से—पत्पत्त
भावयोरुत्पत्ता भाव० १।१।४७।
उत्पत्तोत्पत्ता [प० त०] उत्पत्ती का अर्थून को क्षाप,
जिसके फल-स्वरूप बह द्विबड़ा बन गया और यह
स्थिति अज्ञानतास में बहुत उपयुक्त रही। (यह
उक्ति उस अवस्था में प्रयुक्त होगी है जब प्रतीयमान
हासिक घटना लाभदायक सिद्ध हो जाती है)।
उत्पद् (चूरा० पर०) उत्पत्त्ययिनि) बाहर निक देना,
प्रक्षेपण (धातुपाठ)।
उत्पि, उत्प्ली (स्त्री०) सफेद प्याज।
उत्पूक [वत् + क, सम्प्रसारण] एक ऋषि जिसे वैशेषिक
का कर्ता कणाद समझा जाता है।
उत्पूकान्ति (पु०) कौवा।
उत्पुलि (वि०) १ बार से ऋन्दन करने वाला, कोना-
उत्पुम्बु] हलमय विवाहार्थि शुभ अवसरों पर मधुर सम-
वेत गान, विशेषतः स्त्रियों का —ने० १४।५१, अनर्थ०
३।५५।

उत्पुष्प (वि०) [उत्प + व (व) वृ + भृच्, पु० सात्,]
१ अयामक २ पापवन्तः सम० —रसः शीतः।
उत्पुष्क [उत्प + कृ + भृच्] एक प्रकार की तराव।
उत्पुस्तु (म्भा० पर० प्रेर०) हिलाना, लहराना - विह्वला-
शाताम्पुष्पासन्धवज्रम्—कि० १६।३७।
उत्पुस्तुत् (वि०) [उत्प + कृ + भृच्] चमकता हुआ।
उत्पुष्प (वि०) [उत्प + कृ + भृच् + क] शत्रु, प्रसन्न,
व. (पु०) काली निर्वर्ष।
उत्पुटः (पु०) श्वेतर प्रागिशास्त्र तथा यजुर्वेद का भाष्यकर्ता।
उत्पुत् (वि०) [वत् + भृच्] १ सुन्दर २ शिव, प्यारा
३ पवित्र, निष्पाप ४ अस्सील बर्बरेपुच्छी वाचम्
महा० १२।२३५।१०।
उत्पुष्कः (पु०) कशीवान के पिता का नाम।
उत्पुष्पु [ब० सं०] सूर्य।
उत्पुष्पोष्प (वि०) [उत्प + उत्प] अत्यन्त मर्म - उत्पुष्प
पीकरसज—सि० ५।४५।
उत्पु (स्त्री०) [उत्प + भृत्] प्रभात, मोर। सम०
कुरः शीर, —कस्तः मुर्गा, - पतिः अनिष्ट, -
पुष्पा पीपमास में प्रातः काल की जाने वाली उवा
की विशेष पूजा।
उत्पुष्पिचक्रम् (नपु०) योग का एक आयन।
उत्पुष्पाम्ब (पु०) आठ पैर का 'गन्धर्व' नामक एक जन्तु।
उत्पुष्प (ब० सं०) [उत्प + भृच्] ऊट बेंटी लोंको वाला (कोड़ा),
धालि०।
उत्पुष्पीच [उत्पुष्पीचने हितस्ति ईत् + क] १ पक्षी
२ किसी भवन की चौटी।
उत्पुष्प (पु०) कछुवा।

ऊ

ऊकरी (ब० सं०) शैव सम्प्रदाय।
ऊकराज्यम् (नपु०) १ लक्ष्मणयज्ञ भूमि में तैयार किया गया
नगरक २ बख्शार, कल्मीशागा।
ऊक्ति (स्त्री०) [अच् + कृत्] ऊतक, तीन।
ऊन (प० पर०) घटना घटाना।
ऊनार्तिरिक्त (वि०) अत्यधिक या अतिम्यून।
ऊनार्तिकम् (नपु०) [ऊनाब्ध + टच्] वर्ष से पूर्व ही
यनाया जाने वाला आशुद।
ऊनार्तिक (वि०) [ऊनमास + टच्] नियमित धार्मिक
सक्रियाओं के अतिरिक्त जो प्रतिमास आशुद किये जाय
तथा जो दिनों की संख्या गिनकर एक वर्ष के भीतर
ही भीतर मनाये जाय।
ऊन, + ऊनम् (ऊनं ज्ञम्) (नपु०) लुप्त नदरी, छत्रक।
ऊनमासः (पु०) कार्तिक महीना।

ऊनवेध (वि०) [ब० सं०] अज्ञानवृद्धि से युक्त।
ऊन (वि०) [उत् + हा + वृ, पु० ऊर् आर्द्ध]
सीधा, उन्नत, उत्पन्न, - ध्वम् (नपु०) ऊँचाई
ऊपर। सम० —सम् (पु०) अग्नि, —सिक्कः
मस्तक पर आसिमुचक लड़ा तिलक—सूर्यसिद्धिरी-
टमुष्पतिलकप्रोद्गति फाल्गुनात्—नाराय० २।१।
—वृक्ष (पु०) कर्कट, केकडा, -- प्रभातम् शीर्षकम्,
उन्नताश्च, बालम् चमरी हरिण की पूँछ, —शोथः
रीठे का वृक्ष।
ऊनिका [अच् + मि अनेरुच्, स्वार्थे क् टाप् च] चिता।
ऊनम्बु (नपु०) अक्षयवा भोजन।
ऊनम्बुम्बु [ब० सं०] शीघ्र शत्रु।
ऊन्यायम् (नपु०) सामवेद के तीन प्रभागों में से एक।
ऊन्युष्मता (स्त्री०) सामवेदश्रुता का तीसरा अन्वय।

एकमित्तः (—आत्मकः) [ब० त०] शिरष का अन्धा, झीना ।
 एकादशः [ब० त०] अन्धा ।
 एकादशसूत्र [ब० त०] शिव की ।
 एकान्त [वि०] इस पर तुला हुआ, इसमें जीन ।
 एकान्तः [ना + इ + तन्] 1 निःपत्ता, लोभ 2 एक प्रकार की मन्थनी ।
 एकान्तभाव [वि०] [एतद् + मनु + भाष्य] इस स्थान तक, इस भाग का, इस अर्थ तक, ऐसा ।
 एकान्ति [वि०] [ब० त०] कुछ भाष्यवैदिक भाष्यियों का पुत्र्य-त्री इलायची से आरम्भ होती है ।

एकान्तवर्ति [वि०] इलायची की तुल्य तै मुक्त ।
 एक (अ०) [इ + क्त] पुन, फिर—एकसमरप पुनरित्यर्थे भविष्यति—भी० सू० १०-८-३६ पर सा० भा० ।
 एक (म्वा० उभ०) जानना,—एतितु प्रेषितो वातो—बट्टि० ५।८२ ।
 एकिका [एत् + क्त + टाप्] मोहो का सहोदर जिसमें कोई अन्धा या टोपी न हो ।
 एकिक्य [वि०] [एत् + क्त] जिनके लिए प्रयत्न किया जाय, जिनकी कालता हो, जिनके लिए कालावित हुआ जाय ।

दे

एककर्म्यम् [एककर्म + ध्यङ्] 1 कार्य की एकता 2 एक ही फल में अद्यभागी होने की स्थिति - भी० सू० ११। १।१ पर सा० भा० ।
 एककर्म्यम् [एककर्म + ध्यङ्] एक इकाई का मूल्य ।
 एककर्म्यम् [एककर्म + ध्यङ्] 1 पूरा अधिकार 2 अवी-मता ।
 एकान्तम् [एकान्त + ध्यङ्] 1 एकान्तता, निरपेक्षता, एकान्तभाव 2 निष्पत्ता ।
 एकान्तरोपः [ब० त०] समीकरण ।
 एकान्तभावः [ब० त०] अन्वेषण का एक अनुभाव जिसका अन्ता ऐतस ऋषि वा (यह भाग कुन्ताप सूक्तों के पश्चात् आता है ।

एक (वि०) [इत् सूर्यं, तस्य, इदम्—अन्] सूर्यं सबधी—निबन्धं बन्धेन ममानयेन - रा० ष० ६।२५ ।
 एकिक्य [वि०] [इत् + क्त] चरि का उपसक्त नै० १।७६ । सम०—किञ्चिदः दृष्ट का चरि—ऐत्यव-किञ्चिदः सेनर ऐक्यमर्थे चकारित निघमानाम् - मू० ।
 ऐक्य [इत् + क्त] टाटि, डेर ।
 ऐक्यम् [इत् + ध्यङ्] सर्वोपरिता, सर्वोष्णता ।
 ऐक्य [वि०] [इत् + क्त] ईश सबधी ।
 ऐक्यकारणिकः [ईश्वर + क्त + कण + ठक्] एक नैया-विक का भाग ।
 ऐक्यम्यं [ईश्वर + ध्यङ्] सर्वोपरिता, तथा सर्व-व्यापकता की शक्ति - महा० १२।१८४।५० ।

ओ

ओक्थ [वि०] [उत् + क, वि० कस्य क, तस्मिन् वाक्ये—अन् + ड] घर में उत्पन्न या पके (पौ वादि पक्ष) ।
 ओक्थी [ओ + क्त + क्त + औप्] सीमावर्ती अन्ध ।
 ओक्थः [उत् + क्त, पु० ब०] तीन वाक्य विधियों में से एक—भाषा० १०।१४ ।
 ओक्थ [उत् + क्त, कस्य, क्त] देव, बटि—एष ऋषिभक्त सैम्ये एवेन पश्चोवसा—रा० ७।२५।१२ ।
 ओक्थमित्तम् [ना० वा० ओक्थ + क्त + मित्त] साहसपूर्वक पक्ष, हिंस्रता से युक्त व्यवहार ।

ओक्थः [वेद०] तद्विद्या, बहारा, अवलम्बन ।
 ओक्थम् [म्वा० पर०] सँक देना, उजाल देना ।
 ओक्थि [ओक्थ + क्त + क्त] 1 सोम का पीना 2 कपूर ।
 ओक्थः [उत् + क्त] होठ । सम०—अन्वेषण [वि०] जो होठों से आता वा लफे,—कस्यः शरती के कारण होठों का पकनो ।
 ओक्थ [वि०] [ओत् + क्त] ओत्त संवन्धी, जो होठों पर रहे । सम०—ओक्थि [वि०] जो ओक्थमिति से उत्पन्न हो, - स्थान [वि०] जो होठों से उष्णरित हों ।

बी

बीजतेनः [उजतेन + अच्] उपजेन का पुत्र कत ।
 बीज्यम् [उज्य + ध्यञ्] देवान्तर, (सहू की) दूरी ।
 बीज्य (वि०) [उज्य + यच्] उत्तम कुल से संबद्ध, उत्तम कुल में उत्पन्न ।
 बीज्यविकम् [उज्यवर्न + ठक्] बर्न, अण ।
 बीज्यतात्मिकः [उज्यतात्म + ठक्] बीजे के लिए भावनों का संबंध करने वाला अधिकारी—इ० शि० १४५ ।
 बीज्यसिक्म् [उज्यसि + ठक्] लक्षण, स्वभाव—बीज्यसिक्मेन सहजवचनोत्पत्ताः—भाष० ५।१।२१ ।
 बीजीय (वि०) [उदीची + यच्] उत्तरी देश से संबंध रखने वाला ।
 बीज्यवर्णकः [उज्यवर्न + कक्] एक संवाकरण का नाम ।
 बीज्यकः [उज्य + ठक्] 'उदग्' अर्थात् कर का सघ्राहक—बीज्याल० २१० ।
 बीज्यवर्णक (वि०) [उज्यवर्ण + कक्] किसी निवृत्त अधिक के इच्छाकारी उपकुर्वाण से संबद्ध ।
 बीज्याधिः (पु०) उद्वह—भाष० ३।४।२७ ।
 बीज्यवच् [उज्यवि + ध्यञ्] उपजति या जार से प्राप्त होने वाला अर्थ ।

बीज्यवच् (वि०) [उज्यवच् + ध्यञ्] संघ्या जारम होने से बरा पूर्ववर्ती अवयव से संबद्ध—रविमहोदयसम्बन्धः—मै० २२।५५ ।
 बीज्यविकम् [उज्यविक + ठक्] देवक—एव मत्पदानुला-दीपविकिको हूः—प्रतिज्ञा० १ ।
 बीज्य (वि०) [उजा + अच्] उजा संबंधी ।
 बीज्य (वि०) [उज्या विधिः—अच्] 1 सारोदिक—न ह्यस्तस्वरोरुड बन्धम्—महा० ३।१।१३ 2 नैसगिक—शिखीरुडय बन्धम्—महा० ७।३।७।२० ।
 बीज्यवर्णकः [उज्यवर्ण + ठक्] उज विभाष का अधिकारी ।
 बीज्यवच् [बीज्य + अच्] रोकधाय, मुकाबला, -अविशुध निवचनबीज्य जन. - शि० १७।७ ।
 बीज्यविकविकिः (पु०) किसी बीज्य के स्थान में प्रयुक्त होने वाली बड़ी-बूटी ।
 बीज्यक (वि०) [उज्य + ठक्] उट संबंधी ।
 बीज्यक [उज्य + ठक्] 1 उट से प्राप्त (दुष्पारिक) 2 नेनी महा० ८।५।१२५ ।

क

कम् [कं + इ] 1. बाल, केश 2 महिला का कृप 3 बालों का गुच्छा 4 बूध 5 विपत्ति 6 उदर 7 भय ।
 कम् [क उल सेते अच्] जलपात्र ।
 कम्बुज [कम् + ऊय + अच्] योहूला का विशेषण—निषेदिवान् कम्बुः म विष्टरे—शि० १।१६ ।
 कम्बुविन् (वि०) [कम्बु + इति] नेता, स्वामी—आस्य विन्व्य कम्बुवी—महा० १२।२८९।१९ ।
 कम्ब्य [कम् + यच्] मूले धाम की बराबर—प्रथम्यति यथा कम्ब्य विषभानुद्विमापये—रा० १।०।६।८ ।
 कम्ब्या [कम् + यत् + टच्] 1 सेना का धरा 2 प्रति-द्विडा 3 प्रतिडा 4 धरा, अवशिष्ट ।
 कम्बुवासत् (पु०) [कं + वं] बाण—असपान करिष्यन्ति बरल कम्बुवासत्—रा० ५।१२।१०६ ।
 कम्बुवेरी (स्त्री) हरिडा, हल्दी ।
 कम्बुवर्णकम् [कं + वं] किसी बड़े धरा का उपक्रम लूचक मुख्य पुरोहित या मन्थान की कलाई में लूच-बन्धन या कड़ा पहनावा ।
 कम्बुकिः (पु०) बुधविषेय विसर्गें धारयु में कुल अते हैं—पद्मनाबीशान प्रमदवनकम्बुकिरवे—सी० ।

कम्बुलिका (स्त्री०) केवल तिर विगोना, तिर का स्थान ।
 कम्बु [कं + वं + क] घनी बनी हुई बस्ती ।
 कम्बुलिका (स्त्री०) घाने का बना पूर्ण ।
 कम्बुकीय [कम्बु + क] कम्बुकी, जन्तुप्राप्यल ।
 कम्बुकी [कम्बु + इति + ङीप] कम्बुकी ।
 कम् [कम् + अच्] 1 बटाई 2 कम्पा 3 बाण 4 लकड़ी का तम्बा 5 हाथी की कनपटी। सम० कुशिः (पु०) [कं + वं] पग की छत वाली झोपड़ी—कम् (पु०) तिनकी की बटाई बनने वाला,—बुर्न—हाथी की कपटी मन्ना या कामोन्माद की पहली बरम्बा में हा - भू हाथी की कनपटी का प्रदेश—स्वात्मन् धन, जग, बन्ध (पु०) जन्मनुदा-विश्वे—कोके गोपाकमानय कटवकमानयेति यस्मेथा संता यवति न ज्ञानोयने महा० १।१।३, - कम्बु-धन, रिश्वत—उकोकेऽपी कटकम्—नाला० ।
 कम्बुकि (स्त्री०) एक छोटी कटा, बर्छी ।
 कम्बुकी (पु०) हस्तिनी ।
 कम्बुका [कम् + क] घुसा बरक, मोठ ।
 कम्बुका [कम् + पर०] एकत्र करना, बिट्टी से इकठ्ठा ।

कृदारिका (स्त्री०) कृदाई की कुटी ।

कूटः [कूट् + कृच्] एक ऋषि का नाम जो वैशम्पायन के शिष्य थे। सम० — कृष्णक्यू एक उपनिषद् का नाम, — कालिका: कूट और कामन की शारदाई — रा० २।४।३ पर महाभाष्य— वे प थे कठनाम्ना रा० २।३२।१८, — कूटः बकुन्दे की कूट जामा में प्रवीण शास्त्रज्ञ ।

कठिनम् [कठ इन्च्] 1. कुपल—क्ये कठिनकोट व रा० २।४।१० 2. जिट्टी का बर्तन—महा० २।२०।११, 3 कथे पर कमावा हुआ प्रीता या नील जिनमें बंसा होता था— सा० ४।४।१० ।

कठिकलः (पुं०) एक प्रकार का खेव ।

कठुर (वि०) [कूट् + उरच्] कठोर, कूर ।

कठोरित (वि०) [कठोर + इत्च्] कड़ा किया गया, मजबूत बनाया गया ।

कटुली (स्त्री०) एक प्रकार का फूल ।

कटोर एव देव का नाम ।

कण [कण् + अच्] मयूरमण्ड ।

कणवीरक (पुं०) एक प्रकार का वृक्षिवा ।

कण्ठक [कण्ठ् + कृच्] मन दुखाने वाला माषक ।

कण्ठकिल [कण्ठक + इत्च्] बर्तन ।

कण्ठपालः [कण्ठा + पल + अच्] सेवाल का पल, सेरान का पद ।

कण्ड [कण्ठ् + अच्] बसा, कण्ड । सम० कः शार, मुन्नेरपुरकण्डवा: महा० ५।१४।३१, —नल्लम् ४४० की नाली, बीबायदेव, काला, एक राम का नाम का प्रायः बने में होता है, रोषच् भावाव का बम करना ।

कण्डला (स्त्री०) बेल से निमित्त एक टोकरा ।

कण्ठिक (वि०) [कण्ठ् + इत्च्] 1. पीण, हृण, सरावी, 2. बचन, उन्मुक्त कण्ठिकजट्टका से प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा ३ ।

कण्ठोरनिषद् (स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम ।

कलासाय (पुं०) राशे छेकने का कन्द जो कलासायों निर्माणकरय हरति हृदय— मुञ्च० २।५ ।

कम् (बग० उप०) स्तुतिमान करना ।

कण्ठटीका (स्त्री०) रामायणे पर टीका ।

कण्ठला [कण्ठ् + तल्] अर्धचंरीय सेवेरी ।

कण्ठालास (वि०) जो केवल कथा में ही रह गया हो, मृत ।

कदम्ब [कद् + अन्च्] 1. वृक्ष 2. सुदृष्यि— कदम्ब एभि नीचे स्थानितिक बन्धुबुधे । कृपा कद्दूहे बन्धे व नामा० । सम० — कृष्ण एक प्रकार भूवाररत का नाटक—वास्त्या० ।

कदनी [कद + नीच्] केला । सम० — काला 1. एक

प्रकार की ककड़ी 2. एक सुन्दर महिला, — बन्धे केले का वृक्ष ।

कनकम् [कन् + कुन्] सोना, — कः (पुं०) 1. कलाय वृक्ष 2. बहुरे का पीवा । सम० — कदली एक प्रकार का केला जिस के पत्ते बुरे होते हैं किरायेक. कनक-कदलीवेष्टवप्रेक्षणीयः मेघ० ७९, — कानः कुनार, — कृष्ण कपड़ा जिस पर सोने या बरी का काय हुआ हो — पीतं कनकपट्टांमं अस्त तद्वचन वृणम् रा० ५।१५।४५, — कर्षतः मेघ पहाड़ ।

कनकः [कनो दीर्घनिमित्तः सोबा वा पाति स] एक प्रकार का लक्ष्य महा० ३।२०।३४ ।

कनिका: एक राका जो पट्टनी जलानी में हुआ ।

कनिष्ठा [कनिष्ठेन मुना—वृषन् + इष्टन् कनारेक] छोटी पत्नी ।

कनीषिष्णु [कनीन + कन्, इत्च्] कुछ सामान्यों का समूह ।

कनीषत् (पुं०) [वृषन् + ईष्यन्, कनारेक] छोटा नाई — कनयवान्हा शाने कनीयात् प्रवच्य मे रघु० १२ 2 कामोत्पल, प्रेमी ।

कणुः [कन् + तु] प्रेमी ।

कणुराजः [कणुर + राजल्] कलरोट का वृक्ष ।

कण्वर्यः [क कुस्त्रितो दपो वस्त्रात्— व० सं०] काय देव । सम० कन्ः कामदेव की शक्ति, — कर्त्तुः कनयातुरता के कारण होने वाली बर्ती ।

कण्वाकः [व० सं०] जो कन्द अर्धत् वहें साकर जीवित रहता है ।

कणुककणः [व० सं०] बेंबे को उखाटना— शारावधीमनि व कणुकपातलीकानीलायमानमयनाम्—नारा० ।

कण्वका [कण्वा + कन्, ह्रस्वता] दुर्गा ।

कण्वका परलेखरी कण्वा कुमारी की अधिष्ठात्री देवता ।

कण्वत् (वि०) 1 छोटा 2. निम्नतर, नीचे का ।

कण्वतः (पुं०) सबसे छोटा बार्द, सा (स्त्री०) सबसे छोटी बेंबुकी, — ली सबसे छोटी बहन ।

कण्वा [कन् + कृ + टच्] 1 अधिष्ठात्रि कण्वकी वा पुत्री 2. कुमारी 3. दुर्गा । सम० — कृष्कः जो कुमारी कण्वा से हृदयमोह वा जबरजिवाह करता है, — अन्धकम् कण्वकी को जण्वर के रूप में अधिष्ठा, — कलावा पाणिपुत्रर्ज कण्वी स्त्री—मनि कण्वापतत्पाचां—कणा० ।

कण्वककण्वम् [व० सं०] दरवाजा बन्द करना ।

कण्वकिकर (स्त्री०) दरवाजा ।

कण्वकलोभा: [व० सं०] निर्वाण होने पर संवासी की कण्वकलोभा को उसके जन्त जीवन का वृषक है ।

कण्वकुन्धिः (स्त्री०) कण्वर की बेंबी मुट्टी, का तथा हुआ वृक्ष, (काल०) वृक्ष कण ।

कविष्वन् (नपु०) कन्दर की विद्येयता—कपिलमनवस्वि-
तम्—रा० ५ ।

कपिलवस्तु उस नगर का नाम जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था ।
कपिला (स्त्री०) एक नदी का नाम जो कावेरी में
मिलती है ।

कपोतगणित (स्त्री०) [क० स०] अपव्ययी स्वभाव होगा,
अपने भोजन का कुछ भी प्रबन्ध न करना महा०
३।२६।५ ।

कपोलताडनम् (नपु०) अपनी वृष्टि को स्वीकार करने के
चिह्न-स्वरूप अपने गालों को धपपाना ।

कपोलपत्रम् (नपु०) पत्ते से मिलता-जुलता एक चिह्न
गालों पर अंकित करना ।

कपोलपाकिः (—स्त्री) (स्त्री०) गाल का एक पारश्व ।
कबलः [क + बल् (बन्) + बल्] दे० 'कवल' ।

कबलम् (नपु०) हाथियों का एक प्रकार का प्राकृ-
तिक धारा ।

कमल (वि०) [कम् + स्मृट्] प्रेमी, पति उदाचलगृह
सञ्जत कमलिन्या कमलम्यभाष्यत् साहित्य २।१०१ ।

कमला [कमल + ज्व् + टाप्] नारदी, सतरा ।
कमलालः [ब० स०] 1 कमल का बीज 2 कमल जैसी
आँखों वाला 3 विष्णु ।

कमलौका (स्त्री०) छोटा कमल ।
कमल [कम् + कलच्] हाथी की झल, गजप्रावरणे
चव "नाना" ।

कम्प (वि०) 1 जलप्लव 2 प्रमथ ।
कर [कृ + अच्, अच् वा] 1 हाथ 2 टैम, झुन्क । तम०
—कल्पिका (स्त्री०) योग की एक मुद्रा जिसमें
हाथ कट्टए से मिलने-जुलते हो जाते हैं—कृतस्वन्
(वि०) दण्ड, जिसका कठिनाई से निर्वह हो
—सलीकृ हरेणो में रचना, वृत्त की प्रति अञ्जलि
में रचना तत करतवीकृत्य व्यापि हालाहल विपम्
—भाग० ८।७।६३, —बासी 1 चमड़े का बना हुआ
प्याहा 2 जो भिक्षा आने हाथ में ग्रहण करता है
—सर्द, —सर्दी, सर्दक एक पोषे का नाम ।

करकवारि [ब० त०] ओलों का पानी की० ज० १।२० ।
करदामुखम् (नपु०) हाथों की कनपट्टी पर एक छिद्र
जिसमें से हाथों की मरोन्मता के समय तरल पदार्थ
बहता है ।

करधम् (नपु०) [कृ + स्मृट्] धरो की गति के विषय में
वग्राहमिहिर की एक कृति । तम०——अहम् उद्योतिष-
शास्त्र का । क धन्व, विधाकः तृतीय विधाकः
मूकः इति करधमिचितसंयोगान् भी० सू० ३।
३।१२ पर शा० भा० ।

करजः [कृ + अच्] शोध, कलहा ।
करन्व (वि०) [कृ + रन् + कच्] भुना हुआ, तला

हुआ—कामाधिवस्ववि रक्षिता न परमारोहित मया
करन्ववीहानि भाग० ५।१५।३९ ।

कराल (वि०) [कर + आ + ला + क] जिसके दौत
बाहर की निकले हुए हों ।

करालित (वि०) [कराल + इतच्] 1 सताया हुआ
2 आबधित, प्रकर किया हुआ ।

करिन् (पु०) [कर + इनि] 1 हाथी 2 'आठ' की
मस्या । तम०—मुक्ता गोपी,—एतम् तमोय के
समय का विशेष आसन, रतिवन्व—कि० ५।२३ पर
टोका,—मुम्बिका पनसाल, पानी का चिह्न ।

करोष (—क) (स्त्री०) 1 शीघ्र 2 हाथों के दौत
की गठ ।

कचकाकटः [कचना ; कृ + अच्] दयालु, कचना करने
वाला ।

कचका (पु०) गर्दा, गर्दी, मेल, पाप निर्मो निष्कल्प-
स्व धृष्ट इन्द्रो यथाभक्त रा० १।२।१०१ ।

कचकाः (ब० व०) एक देश का नाम रा० १।२०६ ।
कक (वि०) [कृ + क] 1 गन्, मणि 2 नागिनल के
खोल से बनाया गया पाष 3 कज्जल ।

कर्का (स्त्री०) सफेद घोड़ी ।
कर्कण्डू (न्तु) (स्त्री०) [कर्क कल्क उद्यति-धा
+ कृ] दम दिन का भ्रूण—उद्यते नु कर्कण्डू
—भाग० ३।२१० ।

कर्कण्डु (पु०) बिना पानी का कुम्हा उपादि० १।१०
पर भाष्य ।

कर्करेटम् (नपु०) गर्दन से पकनना ।
कर्कश (वि०) [कर्क + श] 1 कर्पा, निवृत्त 2 दुष्प-
सनी, अ [पु०] काले रंग का वस्त्र ।

कर्ण [कर्ण + अच्] 1 दूज की व्यास 2 अनवर्ती प्रदेश,
उपदिशा । तम० अञ्जल (अच्) कर्णपालि,
—कट्ट (वि०), कठोर (वि०), मुनने में कल्पप्रद,
कवायः कान की मवाद-आपीयता कर्णकपाय-
सोषाम्—भाग० २।६।६६, कृत्तिका कानों की शाली,
पुष्टम् कान का विवर, मलम् कान की मेल,
पृष, —विष्णुकर्णमनादभूती दे० म०—मुत्तुर कर्णा-
भूषण, कौतल (नपु०) कान बहने पर कान से
निकलने वाला मल, हृष्यम् पारश्वर्ध बुद्धी ।

कर्णचूरचुरा (स्त्री०) कानाकली, कान में कोई रहस्य की
बात कहना ।

कर्णध्वः [कर्ण + अच् + अच् अलुक्नमात्] 1 कानाकली
करना 2 मवाददाता समूहक तथाप्यर्ध कर्ण अपनयन-
नैव्यथकता की० ।

कर्णरी (स्त्री०) नृत्य का एक भेद ।
कर्णपत्रम् (नपु०) 'कर्ता' की दमनि वाला वस्त्र ।
कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्णमिच्छ (वि०) 'कर्ता' अर्थात् कार्य करने वाले से सखट ।

कर्मवी कर्मरिका [कर्म+रन्] क्रीन्, क्रिया कर्म+टाप्, ह्रस्वश्च एक प्रकार का अन्त, सुरता ।

कर्मरामचारी (स्त्री०) गणेशचरित्र एक नाटक ।

कर्मरत्नः [कर्म+रत्न+अच्] तन्मधारण में बलि स्तुति-मान ।

कर्मन् (नपु०) [कर्म+मन्] 1 कार्य करने की इच्छा -कर्मार्थ कर्मनि कुर्वन्-भाग० ११।३।६ 2 प्रशिक्षण, अभ्यास को० अ० २।२। सम०- ज्ञान (कर्मार्थ) कार्यकर्ता कश्चित् सर्वे कर्मज्ञा रा० २।१००।

५८. अन्तरम् (कर्मरत्नम्) द्वारा कार्य-अपनुक्तिः कर्मपनुक्ति (स्त्री) कर्म का नाश- आस्था (कर्मविधा) कर्म के आधार पर नामकरण, आस्था (कर्मविधेः) अच्छे बुरे कर्मों के फलों का सचयस्थान, गतिः पूर्वहृन् कर्मों की दशा-सुतासुत्री कर्मगति-प्रवृत्ती-सुभाष०, अर्थ- कर्तव्यक्रम पर उपस्थित न रहने के फलस्वरूप हानि-की० अ० २।७, देव, विद्वान् अपने धर्मगुरु हृद्यो के द्वारा देवाय प्राप्त कर लिया है, कामधेयम् कुछ कार्यों के आधार पर नाम रचना प्रवृत्ती अपनी इच्छा से नहीं, - निश्चय- किसी कार्य का निर्णय, - श्रुति कार्य का आभ्यास करने वाली वैदिक उक्ति कर्मभूत परमेश्वरान्-मै० म० १।१५।

कर्मरत्नः (पु०) अदरक जैसा एक मुग्नियत पदार्थ जो शीघ्रियों तथा मुग्न्य द्रव्यों के निर्माण में प्रयुक्त होता है, कषारा ।

कर्म (वि०) [कर्म+चञ्] 1 प्रकार 2 (समासात् में प्रयुक्त) पुनः भरा हुआ दैन्य्य ताम्रायुक्तनम्य गज-रा० २।१३।६। सम०- व्याघ्र, नेतुञा और भादा बीजा से उत्पन्न मकर मूल का जानवर, बाघ ।

कर्मरत्न (पु०) [कर्म+रत्न] कर्म चानी जडुइय कर्म-सं० मध्यशायणिक मन्त्र पर निलक-कलकू-तिलकेऽपि च माना० ।

कर्मरत्नधारः (पु०) व्याघ्र जिसके अन्तः में किसी से सबद्ध विषय उस कार्य का करने का प्रतिबंध करता है ।

कर्मरत्नोपचयम् (स्त्री०) शाल्मली के श्वेत (शोभी), (शोभात्मिका) की रत्नशाली के लिए नियुक्त स्त्री, - सि० ६।४९, ज्ञानकी० ११ ।

कर्मरत्नमानः एक पीथा, करञ्ज ।

कर्म [कर्म+टाप्] 1 हाथी की पूंछ के पास मांसल सही 2 म्बरूप शीलाया दधान-भाग० ११।१।७ 3 मासाकारी शक्ति महत्त्व कालकला-भाग० ११। १।१६। मन्त्र-कारः ललितकलाविद् कलाविज्ञ ।

कर्मरत्नी (स्त्री०) [कर्म+रत्नी] एक प्रकार की शोभा ।

कर्मकारक (पु०) 1 करञ्ज वृक्ष 2 प्रतिबोधेय ।

कर्मिका [कर्म+कर्म+टाप्] सर्वोत्तम कवि के लिए सम्मानसूचक उपाधि ।

कर्मिन् (वि०) [कर्म+इत्थ] 1 विद्वान्, सन्तुष्टि 2 कर्मिन्, अतिविद्यत-एतन्माकारमाशुभ्यै कर्मिन् प्रति-भाति मे-महा० १२।२।७।११ ।

कर्मण (वि०) [कर्म+उपच्] 1 मया, मैसा । सम० धामस (वि०) बहुरीता, बुद्धि (वि०) वृत्ति दृष्टि से देखने वाला ।

कर्मिकपुराणम् (नपु०) एक पुराण का नाम ।

कर्म्यः [कर्म्य+चञ्, आस्था, विद्याद्य-लौकिके सममाचारे कृतकल्पो विचारः रा० २।१।२२। सम० कृत्वा; -तद्यः कोई व्यक्ति या पदार्थ जो प्रचुर मात्रा में नकारे-निगमकल्पतरंगोक्ति कल-भाग० १। १।३-स्वास्थ्य 1, शीघ्रियों के निर्माण की क्रिया 2 विषयज्ञान, अग्रविज्ञान-सुभुत् ।

कर्म्यः [कर्म्य+अच्] 1 ब्रह्मविषय, कथोरा 2 (वि०) मानकर्मण्य, निश्चित नियतसुख-यावन्निश्चयमे-वैल श्रिकलनकर्मण्यै भाग० १।७।६ ।

कर्मनाशक्तिः (स्त्री०) [कर्म+शक्ति] विचार बनाने की सामर्थ्य, विचारों की शोभिकता, मातनाशक्ति ।

कर्म्य (वि०) [कर्म+अच्] लालन कलाओं में दक्ष ।

कर्म्याण (वि०) [कर्म्य+अच्+चञ्] शर्मा, प्रमाणिन, युक्तियुक्त-कर्म्याणी बत मायेय लौकिकी प्रतिभाति मे रा० ५।३।६। सम०-वर्ष्क बहू दोषा जिसका मूल और पैर सफेद हो ।

कर्म्यः (पु०) राजतरंगिणी का रचयिता ।

कर्मि (वि०) [कर्म+इ] 1 सर्वज्ञ 2 बुद्धिमान्-वि० (पु०) 1 विचारक, कर्मिता करने वाला 2 दार्शनिक 3 ब्रह्मा । सम० कर्मिणम् कवि की कल्पना, परंपरा कवियों का अनुक्रम अतिविचित्रकविपरम्परासाहित्य मन्त्र ध्वन्या० १, ह्रस्वम् कवि का वास्तविक आशय ।

कर्मिणम् [कर्मि+णम्] 1 (वेद) बुद्धिमत्ता 2 कवि कीमत् ।

कर्म [कर्म+अच्] शर्मा-कर्मालम्बे वेदति प्रसिद्ध सं० म० १।६।२२ पर मा० मा० ।

कर्मणः [कर्म+अच्] कर्मणः कर्मणः, रसदू पेशा करने वाला निद्राशोरीपरिचितकर्मणः-भाग० २।७।१३ ।

कर्मणः [कर्म+अच्] कर्मणः कर्मणः, रसदू पेशा करने वाला निद्राशोरीपरिचितकर्मणः-भाग० २।७।१३ ।

कर्मणः [कर्म+अच्] कर्मणः कर्मणः, रसदू पेशा करने वाला निद्राशोरीपरिचितकर्मणः-भाग० २।७।१३ ।

कर्मणः [कर्म+अच्] कर्मणः कर्मणः, रसदू पेशा करने वाला निद्राशोरीपरिचितकर्मणः-भाग० २।७।१३ ।

कर्मणः [कर्म+अच्] कर्मणः कर्मणः, रसदू पेशा करने वाला निद्राशोरीपरिचितकर्मणः-भाग० २।७।१३ ।

कर्मणः [कर्म+अच्] कर्मणः कर्मणः, रसदू पेशा करने वाला निद्राशोरीपरिचितकर्मणः-भाग० २।७।१३ ।

कर्मणः [कर्म+अच्] कर्मणः कर्मणः, रसदू पेशा करने वाला निद्राशोरीपरिचितकर्मणः-भाग० २।७।१३ ।

कर्मणः [कर्म+अच्] कर्मणः कर्मणः, रसदू पेशा करने वाला निद्राशोरीपरिचितकर्मणः-भाग० २।७।१३ ।

कर्मणः [कर्म+अच्] कर्मणः कर्मणः, रसदू पेशा करने वाला निद्राशोरीपरिचितकर्मणः-भाग० २।७।१३ ।

कर्मणः [कर्म+अच्] कर्मणः कर्मणः, रसदू पेशा करने वाला निद्राशोरीपरिचितकर्मणः-भाग० २।७।१३ ।

कांस्यम् [कंस + ङ (ईय) + मन्, छलोप] कांसो का बना हुआ, पीतल का बना जल पीने का ब्रह्मपात्र, पिलास ।
सम०—अप्यहो (वि०) दर्शन कर कर दूध देने वाला
—बोहू (वि०), —बोहल (वि०) 'कांस्योपबोह'
—नीलम्, —सौली तुषाञ्जन, कासीस ।

काकः [कं + कन्] 1. कौवा 2. पानी में केवल तिर डूबीकर रहना । मम० अबनी गुच्छा का पीषा, —उदुम्बरः उदुम्बरिका अबनी का पेड़, मूलर, बन्धुः गुलाब-जामुन का पेड़, तुष्यम् विशेष रूप से बनाई हुई बाण की गोद, —तिलका, तुषिकका, —वासा, —वासिका वृक्षों के विभिन्न प्रकार, —वर्षा (स्त्री०) जो कुछ उपलब्ध हो उसी को पीकर रहने की कौबे की भाँटत का अनुकरण करना और केवल निरी आवश्यकता पूरी करना एव भीमूयकाकवर्षया वजन् - भाग० ५१५१६६, संवत्सम् कौबो की रति शिवा जिसको देखने पर प्रामथिलन करना पड़ता है, —स्वाभम् कौबे की शानि स्थान 'रता स्वर्षाः 1 कौबे की घुना जिससे कि फिर स्थान करना पड़ता है 2 मृत्यु के पञ्चांग दत्तवा दिन जब नावान का पिण्ड कौबो को दिया जाता है ।

कार्तिकिक (वि०) [कार्तिका + ठक्] कौटो के मृत्यु का 'रतयत्, अनुपयोगी ।

काकोय (पु०) एक वृक्ष का नाम भीमाञ्जन, शीतवृषा ।
काच [क + पञ्, कुत्वाभाव] बहु मकान त्रिममें दक्षिण दिश ३५० मी और ऊपर चने हो ३० म० ५३१६०१
मम० काचस्तम् और का एकः रोमं, काच विन्दू ।

कार्ष्णिक (पु०) एक विश्व वृक्ष (जा मन्दिर के पास उगा है) ।

काश्वथ [कश् + वा, कश् + उठने में सम्बन्ध रखने वाला ।
कार्श्वकः [र०] मृगयुगल द्वयोः का निवर्तना ।
काश्वथ [म०] पक्षी की भाषणी ।
काञ्चीमुख [म०] 1 तलारी की डार 2 काञ्ची उभय नगरो हो मर्वाड काञ्चीमुखान्पित्तवाय्वोका + वाञ्छात् कश्चञ्चनभाषा—जायकी० १११६ ।

काठक [क + ठक्] [कठ युञ्] कृष्ण मञ्जरी को कठ कहिया म मरुध रखने वाला ।

काञ्चुपुष्पम् (म०) 'कुम्भ' फल ।
काञ्चमायने (पु०) एक वैद्यकल्प का नाम ।
काञ्चानसमयः (पु०) पहले एक वस्तु, शान्ति या देवता म सम्बद्ध समयत प्रकिया पूज करना, फिर दूसरे के समय कि नीमने से इसी प्रकार चलने रहना ।
काञ्चरी (स्त्री०) क्लदी का पीषा मञ्जिण्डा का पीषा ।
काञ्चानसमयः (पु०) काञ्चमायने का श्रौतमूत्र ।
काञ्चवनी बाण प्रयोग एक गद्य काव्य (उपन्यास) ।
कार्श्विकम् [क + शि + क् - अन्] अञ्जन (क् में

लेकर झू की समाप्ति एक जो अक्षर नाम) कादि शान्ताद्यमस्तदवर्षवनी मम० ।

कार्श्विकम् [कश्चित् + श्वञ्] सबसे छोटा होने की स्थिति ।

कास्तनाशकम् (म०) चमड़े का एक भेद की० ३० २१११ ।

कान्तिः [कन् + तित्] लक्ष्मी - रती कान्ति सुभा लक्ष्म - भाग० १०१६५१२९ ।

कान्तिम् (वि०) [कान्ति दिग्म्] भगवाया गया, (युद्धा-दिमें डर कर) भागने वाला, दीकने वाला ।

कापुष्यम् [कुम्भित पुष्यः को कदादेग] नीच व्यति कावर, शीछ आदमी ।

कापेयम् [कपेयि कर्म वा कपि + इत्] बन्दर का व्यवहार या भावत ।

काकाम्यम् [ककय + म्यञ्] बिना तिर के धड़ का होना ।

काकः [कम् + कञ्] 1. इच्छा, भाह 2 स्नेह, मंग 3 मोहन का एक उद्देश्य (पुरुषार्थ) । सम० आश्वय बहु आश्वय जहाँ कामदेव ने तापत्या की थी, — ईश्वरी कामाक्षी त्रिमने शिव में कामोत्तेजना जगाने के निम्न कामदेव का मग धारण किया कार कार्य करने की स्वतन्त्रता अपनी इच्छा क अनुसार काम करना—आयन कामकारी प्रीम पुष्याजमनोत्तर—रा००१२०१११८, कौटि (स्त्री०) 1 इच्छाभा की चरम सीमा 2 अतिमायात्री की परकापटा 3 दक्षिण में काञ्चीपुरी में प्रकृता-चार्य द्वारा स्थापित आध्यात्मिक मय्या लक्ष्म एक रचना, कृति, बहुमम् पान्यन मय में मनाया जाने वाला एक एवं जिसमें शिख के द्वारा काम का कुमला का मन्म कर दिया जाता है, काम 1 दम्भित पदार्थ का अक्षर 2 वेष्वाश्री द्वारा मनाया जाने वाला एक एवं—वर्षा भू वाग्मिष्य केटा या व्यवहार भाह विषय भागों में भाग लेने वाला - कामाना एवा कामभाव करोमि कठ १-२६ ।

कामठक [कमठ] अण, स्वयंकेन्] 1 भूतगण्ड का नाम 2 एक मीन का नाम का 'परिमर्ष' में भयम हो गया था ।

कामन्दकी (पु०) कामन्दकीय नीति का प्रणाल ।

कामला [कम् + लित् : कन्व् + टाप्] कोले का पीषा ।

कामिकामय (पु०) आयम शान्ति का एक ग्रन्थ ।

कामिनी (स्त्री०) [काम + इति + क्रीप्] मारुत शरार ।

कामीकः (पु०) एक प्रकार का मुषारी का वृक्ष ।

काम्बिकः [कम्ब + ठक्] दक्षिण, जों की लक्ष्मी ।

काम्बोजः [कम्बोज + जम्] 1 घस 2 पुत्राय नामक वृक्ष ।

काव्यक [पु०] महाभारत में बर्णित एक बालक का नाम ।
कावित् (वि०) [काय + इति] बड़े आकार प्रकार का,
-समुद्रमाथात् पश्चात् विदुतात् कावितो हुमान् -
महा० १२१११३१६ ।

कायाध्व [कयायु + ध्वञ्] कयायु का ध्वज, मङ्गलार ।
कारकम् [कृ + क्तृन्] १ इन्द्रिय, अथ २ (व्या० में)
कारण में सत्ता और मर्यादा का विद्या का मध्यवर्ती
वचन । मम० चिन्तित-सत्ता और विद्या के
मध्य संबंध स्थापित करने वाली प्रक्रिया ।

कारणम् [कृ + गिष् + ल्यट्] हेतु, निमित्त पूर्व जन्म से
आर्ट हर्ट वृत्ति, पूर्ववामना महा० १२१२११६५
मम० कारणम् (अ०) कर्मस्वरूप—यदि प्रजावितो
यतो लीभकारणकारणम् ग० २१५८१२८ अन्त-
रम् (कारणात्तरम्) १ मित्र प्रसन, परिवर्तन नील
हेतु २ कारण परक हेतु ।

कारणता [कारण + तः + टाप्] कारणपता, हेतुत्व
-प्रत्ययविशेषणामेक कारणता यत् -कु० २१६ ।

कारणक [कार + ण्यक, त० म०] प्रबल के निर्माण
कार्य का प्रयोक्त, काम की देवभाल करने वाला ।

कारण्य (ब० व०) १ एक देश का नाम २ अन्तर्वर्ती
जनि का (पिता प्रायवर्षेय तथा माता वैश्य) पुत्र्य ।

कारण्यम् (त०), मत यायाग ग० ११२४२० ।
कारण्यस्थम् [कृकलास + स्थञ्] छिपकली की स्थिति ।

कारण्यि (स्त्री) कप्रद भाषा ।
कारणिक [कृति का + ण्य] स्कन्द का विशेषण ।

कारणिक [कर्ण + ठक्] कर्णों, धार्येवाज, टा ।
कारणिलम्बुः (सूच्यम्) [कार्पासी + अच् = कार्पासस्तस्य
तन्तु प० त०] कर्णक का पाया ।

कार्यध्वम् [कर्मन् + ध्वञ्, तस्य भाव त्वम्] जागू, टाना
कार्यध्वययमन् रयमंत्-—शि० १०३३७ ।

कार्यान्तिक (पु०) उचाय घण्ट और निर्वाणकार्यों का
अधोक्षक की० अ० ११२२ ।

कार्यान्तिक [कार्यान् + टक्] बर्छी की० अ० २३३ ।

कार्यम् [कृ + क्तृन्] शरीर-—कार्याध्विपथक कललादा
(कार्यशरीर)-—ता० का० ४३ । तम० -अध्वेतिन्

(वि०) किमी विशेष कार्य को करने वाला,
कार्याध्विन् (वि०) शरीर का सहृदा लेने वाला
का० ४३, अन्तम् कार्य में विकला,—अध्वम्

(अ०) किसी प्रयोजन से, किमी काम से ।

कार्यः [कर्मयति आयु कम् + गिष् + अच्] १ साध्य
कारिका में बताये चार पदार्थों में से एक प्रकृत्यु-

पादानकारणमाथाया ता० का० ५० २ तम
का कोई भाग । तम०—अध्वकम् १. कार्याद यात्
कृष्णपता के पहले काठडिन २. काक प्रेरक का स्तोत्र
विलसे शकर की स्तुति की गई है,—आधिकः वैषण्यत

—आकः १. आम का एक भेद, २. एक टापू का
नाम,—अध्वकम् नील कला,—अध्वकी कालकट की

पत्नी, पार्वती,—अध्वकः पतिशाला सीप, जोषक
को समय पर मिले पतले भोजन में ही तनुष्ट है,—अध्वः

जिते मीत ने उर लिया है,—अध्वत् (कलमहीनम्)
बादी या मोना,—अध्वद देरी, विकल्प, वक्तुमर्हति

सुधीय व्यगीत कालपर्यन्त, पुष्पः यमराज का सेवक,
—अध्वः सत्कार का नष्ट करने के अपने प्रवर्ण रूप में

विद्यमान उद, अन्तः कुलम्, एक प्रकार की दास,
—अध्वकिमी मनविद्या जितसे समय की अवधि कम की

जा सके, अङ्क, देरी, विकल्प,—कार्यस्य च कालमङ्क
—रा० ४३२१५३,—अध्वकित्, (- समानुक्त), मूत्र
मरा हुआ ।

कालकृतः (कालमर्षं), सासी की प्रधाने शाली औषध ।
कालम् (वि०) [कल् + गिष् + ल्यट्] नाग करने
वाला ।

कालिका (स्त्री०) [काल + क्तृन्] १ एक प्रकार की माक
भाजी २ तेलन, तेली की स्त्री ३ कुहना घुञ् ।

कालित् (वि०) [काल + इत्क्] मूल, मरा हुआ नाचना
वर्ति कालिना - भाग० १०५१११८ ।

कालिवलः (पु०) १ एक वसन्ती कवि और नाटककार
का नाम २ नदीय और सुनबीच के प्रजेताओं की
भ्राति अन्य कवि ।

कालिय (वि०) [काल + य] १ समय में सबद २ एक
सौप का नाम जिसका कृष्ण ने दमन किया था ।

कालीय (वि०) [काल + य] किसी विशेष कालभाग में
सबद ।

कालेया (पु०, ब० व०) [काली + इक्] कृष्णयदुर्वर
की शाखा या सभ्रहाय ।

काली (पु०) कीटा ।

कालिक (वि०) [काली + ठक्] काली में बना हुआ,
रेसमी बरत, बनारसी कपडा ।

कालिकावित् (पु०) बन्वर्तारि ।

कालेय (वि०) [काली + इक्] काली का, काली से
सम्बन्ध रखने वाला ।

कालकटराशुक (वि०) हीरो का एक भेद की० अ०
२१११ ।

काल्येय (वि०) [कल्पया (अधिति) + इक्] मूर्ध,
मूवद और कार्हु बादियों का विशेषण,—अः (पु०)
दासक, कृष्ण का सारथि ।

काल्य (वि०) कल्पा, जो पका न हो ।
काल्यकलाता [ब० व०] विषया ।

काल्यम् [काय् + ल्यञ्] लकड़ी । तम०—अध्विहेतुम्
पिता में वैदना, पुष्पः लकड़ियों का वट्टा, -कारः
लकड़ियों का शोध ।

काष्ठा (स्त्री०) 1 पीला रंग 2 सारौरीक रूप वा मुद्दा
—काष्ठा भगवतो ध्यायेत्—भाग० ३।२८।१२।
कास्तनगिनी [व० त०] काँती वा इमे का नाश करने
वाली औषधि का पोषा।
कस्तु (नपु०) [क + अहृत्] बह्ना का एक दिन
(= १००० युग)
काह्लारकः (पु०) एक जाति का नाम जिसके लोग पाक-
कियो में सबारियों को डोते हैं।
कि (जुहो० पर०) चिकेति, जानना।
किङ्किरिः (स्त्री०) [कि किरितीति—ङ्+क, स्थिया-इ]
कोयल।
किञ्चन्यम् [किञ्चन + व्यञ्] सपति—किञ्चन्ये
नास्ति बन्धनम् महा० १२।३२०।५०।
किङ्किरम् (नपु०) मिला पानी।
किम् [कु + विभु वा०] समामान शब्दों में प्राय 'कु'
के स्थान में प्रयुक्त होता है, और 'च्छता' 'घटिया-
प' 'दोष वा ह्रास का अर्थ प्रकट करता है। सम०
—कषिका (स्त्री०) मदेह, कषीक, छूते (अ०)
किमालि, —अ (वि०) जो कही 'गपन हुआ हो,
जिसका तीक्ष्णता में अन्त हुआ हो, गुण 'कषण'
नामक काल के ग्यारह भागों में से एक, नु (अ०)
परन्तु फिर भी, ठी भी—किन्तु चित्त मनुष्याणांमि-
त्यमिति में प्रथम - रा० २।५।२३, —धाक (वि०)
अपरिपक्व, अजानी, धाक, आर्येणं धाम्न में दणित
एक जड़ी बूटी, —पुष्क-1 अर्षदेव 2 घटिया मनुष्य,
—राकन्तु बुरा राजा, चिषका निन्दा, बुराई।
किबर (पु०) मगरमच्छ, घटियाल।
किमोय (वि०) [किम् + छ] किम्का, किमये मन्थ रखने
वाला।
किम्य (वि०) [किमिदम्या बोध] (पु० — कियान,
स्त्री० कियतो, नपु० कियत्) 1 कितना अधिक,
कितना बड़ा, कितना 2 कुछ, बोधा सा। सम०
एतन् किम महत्त्व का, अर्थात् तुच्छ, अतिसाधारण,
—भाषः नगम्य, तुच्छ बान।
किराटः (पु०) बेंदमान सौदारप, निर्लेख व्यापारी—भाग०
१२।३।३५।
किरातकः [किर पर्वतमृमि अर्थात् गच्छतीति, स्वायें कन्]
किरात जाति का मनुष्य।
किर्दारवम् [व० स०] समरे का पेड़।
किरकिलितम् (नपु०) हर्षभूषक ध्वनियों।
किराटः (पु०) अमा हुआ दूध।
किरातः (पु०) बीना, कर में छोटा।
किरिचयम् [किरि + टिपन्, बृक्] 1 मकट, पाप विवेक
पुत्र वर्मादि क्षात्रमूर्ति किरिचयत् रा० १।६०।३
2 घोडा, जालघावी।

किरोरः [किम् + भृ + भोरन्, किमोन्वलाप, प्रातीष्टि-
लोप] किसी जानवर का बच्चा, छिपू, बाबक।
कीकट (वि०) [की + कट्, अच्] 1 निर्बल, बेकार
कजूस, लाकबी।
कीकताम्बि (नपु०) [की + कम् + अच् + व० त०] कनो-
स्का, मलमल, रीढ़ की हड्डी।
कीचक [कीच् + क्त्, आह्वयविषयवच] बास जो हवा
भर जाने पर शब्द करना है—कीचका वेणवन्ते स्युः
ये स्वन्त्यमिलोद्गता केशल 'बास' के अर्थ में बहुधा
प्रयुक्त—स कीचकैर्मातृपुत्रैर्गर्भं कु० १।८, रघु०
२।१०।
कीचकचयः [व० त० कीचर । हृत् + अच्, बधादेश]
1 भीम के द्वारा कीचक की हत्या 2 एक नटक का
नाम।
कीट [कीट् + अच्] 1 कीड़ा, सम० अक्षयक (वि०)
काई बन्तु जिसमें कीड़ा लग गया हो, कीड़े से लार्ड
हूँ, उल्कर इमी, -गम कीटाकारकीर्ण कथा०
१०१।-१०।११, नामा, पाचका, -पारी, -माता
(स्त्री०) एक पौधे का नाम।
कीमासा (वि०) [किम्बु - बन्, टिप्, लम्प बोधो नामा-
गमरच] 1 घन्टा जालने वाला 2 निर्बल, दीर्घ
3 मृत्यु हत्या—उपासधानि -माना० 4 कुर।
कीरिदारा (स्त्री०) बूँ।
कीरितीथ, कीरितीथ (वि०) [क्त अतीथ ध्वन् वा] म्युनि
किये जाने के योग्य, जिसके वज वा कीर्ति वा गल
किया जाय
कीरि (स्त्री०) [कृन् + क्त्] 1 वज, ध्यान 2 कृपा
प्रसाद। सम० भाषकच वा केवल भ्यानि वा वज
के ममार में ही कीर्ति है, मृत, स्वप्नः वज वा
भ्यानि के हृय वा वज्जः।
कीरितित्थ (वि०) [कृन् + त्थ] जिसकी म्युनि ही
जानी है।
कीरतः (कीन् + चञ्) 1 जूआरी 2 मूट, दम्ना।
कीरतप्रतिशोकावध (पु०) एक न्याय जिसके अनुसार
किया एक में रक्तों है या प्रतिशक्ता इतरी में रहती
है रा० १।२।६ पर म० भा०।
कीरतसिन्धु [कीरतः + इनि] छिरकिनी, छिरकिट।
कीरतसर्प, (क्विन्) [व० स०] अनामार्ने नाम वः
पोषा।
कु (अ०) [कु + क्त्] बुराई, हान, अवभृत्, पाप, बोधान
और बर्मी को प्रकट करने वाला अव्यय। सम० बर
बुद्धने वाला, अ, बुध मयत्, -कल्यम् मयत्, बाध
(पु०) गीदड, शोचम् दरान्न म भरा प्रदन्, लष
1 एक प्रकार का कर्मक जो पानी बर्करियों के
वालों से बचना है 2 दिन का आठवाँ मुहूर्त 3 पोषा

या भागना 4 मूर्त्त. द्वारम् पिच्छला दरवाजा, कर्णम्
बुरा नाखन, भोवे वा मीले नाम्नुम्, -बीकः वातत राय
-वट्, वटम् बीवर, विचडा, -वाचम् बयोव्य
व्यक्त, -वेकः दक्षिणी भूचविन्दु, -लक्षण (वि०)
कोटे चिह्नो से युक्त, विष्णुः अस्वानप्रयुक्त मन्-
वीरता, वेधम् (पु०) बुरी जायत ।

कुम्भलाभिः (पु०) भूमी या बुरावे से निमित्त आय, कथा०
११०११२ ।

कुम्भुजः [कुम् + विषुप, केन कुट्टित कुट् + क] 1 मूर्त्त,
आय की चिगागे । सम०--अण्वम् मूर्त्त का
अण्डा, -आमः, -अहिः एक प्रकार का शेष, आस-
नम् योग का एक आसन ।

कुम्भित (वि०) [कुम्बा मत इति त० सं०] गर्भस्थ,
-विष्णुपात्र से कुम्भित पुमान्--भाग० १० ।

कुम्भः [कुम् + क] स्तन, उराज, पूषी । सम०--कुम्भः
तस्मा एवमी के स्तन, --कुम्भलम् कली के आकार
का स्तन गोपाङ्गनामा कुम्भदुर्मल वा--कुम्भ०,
कुम्भकुम्भम् स्तन पर गेवी या केसर का फेप ।

कुम्भाराम [व० सं०] पत्नी की विशेष स्थिति जब कि
मगल लग्न में आठवें घर में हो ।

कुम्भार [कुम्भ + र] 1 हाथी 2 निर 3 आम्रवण
4 आठ की मन्था । मय०--अरिः सिंह, द्वारोह
महावत, अन्धः (यन्त्रस्थाप) ज्योतिष का एक
याग त्रिमये चन्द्रमा मया नखन में और मूर्त्त हस्त
नक्षत्र में विगमनाम होता है ।

कुटिल (वि०) [कुट् + इल् + क्] कपटी, बक, टेडा,
भेईमान । सम०--अलकम्, कुलतम् टेडी अलकें,
टेडी जूफे कुटिलकुनल धीमथ च ते ब्रह्म उवीलता
-माय० १०।३५, शिलम् कपटपूर्वमन, टेडा मन
-कुपोषयनिवसिनी कुटिलबलबिद्वेषिधोम-नव रत्न० ।

कुटी (स्त्री०) [कुटि + कीप्] शीघरी ।

कुटुम्बिनी [कुटुम् + इन् + डीप्] 1 गृहिणी 2 घर
की सेविका या नौकरानी ।

कुटुम्बिता, लम् [कुटुम्बिन् + ता. ङ्] 1 पृथक् होने
की स्थिति 2 पारिवारिक एकता या सम्बन्ध 3 एक
परिवार की भानि रहता ।

कुटुम्ब [कुटुम् + इन् + क्] 1 काटना 2 पीसना 3 मुक्ता
बद करके मल्लक के दानों और चपचपाना, यह गणेश
को प्रसन्न करने का विद्वाह है ।

कुटुम्बलः कुदाल, मिट्टी खोदने की काली ।

कुम्भपात (वि०) [कुम्भ + अण् + इन् + क्] मूर्त्त की
साते वाला ।

कुम्भरी [कुम् + कण् + डीप्] एक छोटा पत्थी ।

कुम्भकः (पु०) एक वेश का नाम--अप कुम्भालो बहुभावर
शिय विराजन् नैकविजातिमन्थन जानकी ०० ।

कुम्भः [कुम् + क] पानी का बर्तन, पानी का कटवा ।
सम०--वायम् [कुम्भेन पीयते अण् ऋटो] एक मय
का नाम, वेधिन (वि०) अनाडी, भद्रा, कुहड ।

कुम्भकः [कुम्भ + क्] बर्तन - कथा० ५।५० ।

कुम्भलिका (स्त्री०) कुम्बली, मूल ।

कुम्भलिम् (वि०) [कुम्भल + इति] शोकाकार, -स्रो (पु०)
सुनहारा पहाड ।

कुम्भलिनी (स्त्री०) [कुम्भलिन् + डीप्] योग शास्त्र में
एक नाडी का नाम ।

कुम्भिका (स्त्री०) [कुम्भ + क् + टाप्] एक छोटा
बोहड, पोखर नवा कविडका पा० १।१।५५ पर
य० मा० ।

कुम्भसप्तकम् [व० त०] सात वस्तुएं जो आठ के अवतर
पर मृतक के सम्मानार्थ दान की जायें--यथा शृङ्गा-
पात्र, ऊर्ध्वावस्त्र, रीप्यपात्र, कुशतुप, सवत्सा घेनु,
अपराङ्गकाल, और कुम्भानिल ।

कुम्भसप्तकम् [व० त०] आठ वस्तुएं जो आठ के लिए
दान मानी जाती हैं यथा मध्याङ्ग, शृङ्गापात्र,
ऊर्ध्वावस्त्र, रीप्य, दर्भ, सवत्सा घेनु, तिल और
दोहिय ।

कुम्भिन, (- णिन्) (वि०) [कुम्भ + इत्थि, इति वा]
उन्मुक्त, विद्रामु ।

कुम्भम् (नपु०) पनीला पीषा ।

कुम्भनिमित्त (वि०) किम कारण वा हेतु को लिये हुए
कुम्भनिमित्त शोकस्थे रा० २।७।२० ।

कुम्भला (स्त्री०) नील का पीषा ।

कुम्भकः [कुम् + अण् + क्] रथ-विरगा कपडा ।

कुम्भिः (पु०) उल्लु ।

कुम्भ (पुंग० पर०) सूट बोलना ।

कुम्भमत्त (वि०) [व० सं०] जिसके दाँत कुम्भ फूल की
भानि खेन तथा चमकीले हो ।

कुम्भित (वि०) [कुम् + मत] काप दिलाया हुआ, कुट्ट,
माराज, बोधी ।

कुम्भपीतम् [गुण् + क्यप्, कुम्भ + षीर्षी]
कुम्भेर (वि०) [कुम्भिन बर शरीर मय्य, व० म०]
1 भद्रा, भद्र अङ्गो वाला ।

कुम्भभिः (वि०) प्रकाशपगर्वा की० अ० २।११ ।

कुम्भार् (पुंग० पर०) आग से जेलना ।

कुम्भारः [कम् + आण्, उत उपधाया] एक धर्मशास्त्र
का प्रणेता, रम् (नपु०) विशद सोना । सम०
--दासः, 'जानकीहृत्' का प्रणेता, एक कवि का
नाम, ललिता (स्त्री०) 1 रवरेणी, मृदु कामधीडा
2 एक अण्ड का नाम जिसके एक बरण में सात
मात्राएं होती हैं, --संभवम् कान्तिरामकृत एक काव्य
का नाम ।

कुमारिकापुरम् (नपु०) कन्याओं की स्थायामशाला महा० ४११११२, बघ० २।

कुमालम् (पु०) बालबोध के एक प्रवेश का नाम।

कुम्ब-...म् [की मोतले इति कुम्बम्] 1 सफेद कमल की बन्धोपय होने पर शिल्पा कहा जाता है 2 सल कमल 3 विष्णु का विशेषण 4 कपूर। सम० -आमन्थ (वि०) चन्द्रमा, कम्प्या कमल की सुगन्ध से युक्त महिला।

कुम्भः (पु०) सुजा, जिसके हाथ विकृत हो।

कुम्भकुरीरः (पु०) किराँतों के लिए सिर पर पहनने का बन्ध।

कुम्भः [कु + उम्भ् + भञ्] बड़ा, जलपात्र। सम०-उबरा शिव का एक भूतपात्र, लेखक-रघु० २३१४। -उमक उल्लू का एक भेद, -महा० १३१११। १०१, 'वम्भ' आत्मा, ताक।

कुम्भिनू (वि०) [कुम्भ + इति] बाठ की सख्या।

कुम्भिनो (स्त्री०) [कुम्भिनू + ओप्] 1 पृथ्वी 2 जमाना बाटे का पीषा।

कुम्भीमती (स्त्री०) लवणसुर की माता, रावण की बहू।

कुम्भीमुष्णम् (नपु०) एक प्रकार का घान, वण।

कुरङ्गनाउच्छ्रमः [व० सं०] चन्द्रमा।

कुम्भशाला (ब० ब०) एक देश का नाम।

कुम्भसिन्धुः (पु०) सालसिन्धु, पधारासिन्धु।

कुम्भः [कुम् + क्] 1 बस, परिवार 2 समूह 3 रेवट। सम० अमलवा देवी का विशेषण, -आम्बा, पारि- शार्ङ्ग नाम, बराघातक नाम, -आपीठ, - शंकर परिवार की कीर्ति या देवा, करसिन्धुः आनुषाङ्ग लेखपाल या जयिकारी, -कलङ्क परिवार के जिन अपवसा, -कुम्भालया कील वृष में स्थित, देवी का एक नाम, गरिमा (पु०) कुल का बौरव या मर्यादा बाबा उच्चकुल में उत्पन्न महिला, -कुम्भ (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, सामान (वि०) परिवार की नष्ट करने वाला, - बालकः ज्ञा अपने कुल को कर्णाक्षित करता है, -बालकम् उल्ला, नारङ्गी, - बटः (कुलभट्टः) परिवार का पालनपोषण करने वाला, -बीडः तिलपो वष का मुषिया, - बालं फौला का सिद्धान्त, क्षत्रियः (पु०) बादरगोत्र साक्षी की उपस्थिति-भी० सू० ८१११४२१।

कुम्भसिन्धुः (पु०) कुल का बौरव या मर्यादा बाबा उच्चकुल में उत्पन्न महिला, -कुम्भ (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, सामान (वि०) परिवार की नष्ट करने वाला, - बालकः ज्ञा अपने कुल को कर्णाक्षित करता है, -बालकम् उल्ला, नारङ्गी, - बटः (कुलभट्टः) परिवार का पालनपोषण करने वाला, -बीडः तिलपो वष का मुषिया, - बालं फौला का सिद्धान्त, क्षत्रियः (पु०) बादरगोत्र साक्षी की उपस्थिति-भी० सू० ८१११४२१।

कुम्भसिन्धुः (पु०) कुल का बौरव या मर्यादा बाबा उच्चकुल में उत्पन्न महिला, -कुम्भ (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, सामान (वि०) परिवार की नष्ट करने वाला, - बालकः ज्ञा अपने कुल को कर्णाक्षित करता है, -बालकम् उल्ला, नारङ्गी, - बटः (कुलभट्टः) परिवार का पालनपोषण करने वाला, -बीडः तिलपो वष का मुषिया, - बालं फौला का सिद्धान्त, क्षत्रियः (पु०) बादरगोत्र साक्षी की उपस्थिति-भी० सू० ८१११४२१।

कुम्भसिन्धुः (पु०) कुल का बौरव या मर्यादा बाबा उच्चकुल में उत्पन्न महिला, -कुम्भ (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, सामान (वि०) परिवार की नष्ट करने वाला, - बालकः ज्ञा अपने कुल को कर्णाक्षित करता है, -बालकम् उल्ला, नारङ्गी, - बटः (कुलभट्टः) परिवार का पालनपोषण करने वाला, -बीडः तिलपो वष का मुषिया, - बालं फौला का सिद्धान्त, क्षत्रियः (पु०) बादरगोत्र साक्षी की उपस्थिति-भी० सू० ८१११४२१।

कुम्भसिन्धुः (पु०) कुल का बौरव या मर्यादा बाबा उच्चकुल में उत्पन्न महिला, -कुम्भ (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, सामान (वि०) परिवार की नष्ट करने वाला, - बालकः ज्ञा अपने कुल को कर्णाक्षित करता है, -बालकम् उल्ला, नारङ्गी, - बटः (कुलभट्टः) परिवार का पालनपोषण करने वाला, -बीडः तिलपो वष का मुषिया, - बालं फौला का सिद्धान्त, क्षत्रियः (पु०) बादरगोत्र साक्षी की उपस्थिति-भी० सू० ८१११४२१।

कुम्भसिन्धुः (पु०) कुल का बौरव या मर्यादा बाबा उच्चकुल में उत्पन्न महिला, -कुम्भ (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, सामान (वि०) परिवार की नष्ट करने वाला, - बालकः ज्ञा अपने कुल को कर्णाक्षित करता है, -बालकम् उल्ला, नारङ्गी, - बटः (कुलभट्टः) परिवार का पालनपोषण करने वाला, -बीडः तिलपो वष का मुषिया, - बालं फौला का सिद्धान्त, क्षत्रियः (पु०) बादरगोत्र साक्षी की उपस्थिति-भी० सू० ८१११४२१।

कुम्भसिन्धुः (पु०) कुल का बौरव या मर्यादा बाबा उच्चकुल में उत्पन्न महिला, -कुम्भ (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, सामान (वि०) परिवार की नष्ट करने वाला, - बालकः ज्ञा अपने कुल को कर्णाक्षित करता है, -बालकम् उल्ला, नारङ्गी, - बटः (कुलभट्टः) परिवार का पालनपोषण करने वाला, -बीडः तिलपो वष का मुषिया, - बालं फौला का सिद्धान्त, क्षत्रियः (पु०) बादरगोत्र साक्षी की उपस्थिति-भी० सू० ८१११४२१।

कुम्भसिन्धुः (पु०) कुल का बौरव या मर्यादा बाबा उच्चकुल में उत्पन्न महिला, -कुम्भ (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, सामान (वि०) परिवार की नष्ट करने वाला, - बालकः ज्ञा अपने कुल को कर्णाक्षित करता है, -बालकम् उल्ला, नारङ्गी, - बटः (कुलभट्टः) परिवार का पालनपोषण करने वाला, -बीडः तिलपो वष का मुषिया, - बालं फौला का सिद्धान्त, क्षत्रियः (पु०) बादरगोत्र साक्षी की उपस्थिति-भी० सू० ८१११४२१।

कुम्भसिन्धुः (पु०) कुल का बौरव या मर्यादा बाबा उच्चकुल में उत्पन्न महिला, -कुम्भ (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, सामान (वि०) परिवार की नष्ट करने वाला, - बालकः ज्ञा अपने कुल को कर्णाक्षित करता है, -बालकम् उल्ला, नारङ्गी, - बटः (कुलभट्टः) परिवार का पालनपोषण करने वाला, -बीडः तिलपो वष का मुषिया, - बालं फौला का सिद्धान्त, क्षत्रियः (पु०) बादरगोत्र साक्षी की उपस्थिति-भी० सू० ८१११४२१।

कुम्भसिन्धुः (पु०) कुल का बौरव या मर्यादा बाबा उच्चकुल में उत्पन्न महिला, -कुम्भ (वि०) अपने परिवार को बदनाम करने वाला, सामान (वि०) परिवार की नष्ट करने वाला, - बालकः ज्ञा अपने कुल को कर्णाक्षित करता है, -बालकम् उल्ला, नारङ्गी, - बटः (कुलभट्टः) परिवार का पालनपोषण करने वाला, -बीडः तिलपो वष का मुषिया, - बालं फौला का सिद्धान्त, क्षत्रियः (पु०) बादरगोत्र साक्षी की उपस्थिति-भी० सू० ८१११४२१।

कुम्भः (पु०) एक प्रकार की मछली।

कुम्भसिन्धुः [व० सं०] कुम्भार का वाक।

कुम्भिकः [कु + सिन्धु + भञ्] 1. तीप-महा० १२। १०११० 2. हाथी-कुम्भिकी भूमि-प्राण्य मतङ्गल-भूवज्जुवी -मेदिनी।

कुम्भः (वेद०) टसला, -हृ० ३१५०१२। सम० बाल (वि०) टबने तक बहने-घट० १२।

कुम्भस्य [कुम् + सिन्धु, कुम् मापोऽसिन्धु व० सं०] 1. सिन्धी जलमें बांधे उभले चावल और दाल हो 2. एक प्रकार का रोम।

कुम्भः (पु०) मनरमृति का एक टीकाकार।

कुम्भी [कुम् + डीप्] कुम्भर की लकड़ी का टुकड़ा जो प्लाक के अन्वयन द्वारा मर्षों की सखा गिनने के काम आता है छन्दोस्तोत्रवचनार्थकुम्भु-नामा०।

कुम्भमृतिः [व० सं०] मट्टी भर 'कुम्भ' नाम।

कुम्भिकाः [व० व०] कुम्भिक मृत्ति की मर्यादा।

कुम्भस्यनिर्देशिका (स्त्री०) मन्दी देवी।

कुम्भः [कुम् + क्] कुम्भे में पधा बहना।

कुम्भस्यः (पु०) किसी की बड़े धार्मिक आयोजन में एवं किया जाने वाला हवन।

कुम्भम् [कुम् + उप्] 1. कुल 2 कुल। सम०-अञ्जलिः उदनाकार्य की एक रचना, -हृत्ः कुम्भी में भग्नुर बल - वकः (कुम्भकम्) मयमन्त्री-उदलमहमन्त्रकु-मयमन्त्रे (पु० व०)।

कुम्भपति (कुम्भ-ना० या०, लट्) कुल उत्पन्न करता है, वा कुम्भी में बजाता है।

कुम्भपुरी (स्त्री०) एक पीषे का नाम।

कुम्भस्यति (स्त्री०) पुनता, फालाकी।

कुम्भः [कुम् + क्] बौरवों सिन्धी।

कुम्भकाल [व० सं०] चान्द्रमास का अन्तिम दिन जबकि पन्द्रमा बद्ध हो जाता है।

कुम्भक [व० सं०] 1. भारतीय कोष 2 सकट।

कुम्भकम् [व० सं०] नवा चाँद।

कुम्भस्य [कु + क्] अचल स्थिति।

कुम्भः [कुम् + भञ्] छोटा शिल्पा कुट्ट हि निषादानाम-य उपकारक नामीयाम् भी० सू० ६।१।५२ पर जा० या०। सम० एकमात्र बाल, दास पैष, लेखः नवापटी का बानी दस्तावेज, - लक्ष्यसिन्धु आवीरगत बोधने पर क्व वृत्त एक राशि से दूसरी राशि पर सम्बन्ध करता है, हेम्पु छोटा रोना।

कुम्भः [कु + भञ्, दीर्घश्च] 1 कुम्भी 2 मित्र यथा रोम-कुम्भ, 3 बट। लव० - कट्टः, कलकः कुम्भी बोधने वाला, कलक कुम्भी का बक वा पहिया, कलक मयुक्त-क्षीरिणीकृपदण. दल० ११। स्वाम्य कुम्भ का स्थान।

सुंदरखानम् [म० सं०] गाड़ी में बैठने का स्थान ।
सं० [श्री जल अभियोगोप्य-पूर्वो०] कछुवा । सम०
—आसन्नम् योग की एक विशेष युद्ध, —इराकली
प्राथम्य के शुक्लपक्ष का प्याटवा दिन, —पुराणम्
एक पुराण का नाम ।

सुन्दक (वि०) कछुके जैसा बना हुआ ।
सुनिका [सुं + कन् प्रिया टापु, उपघामा इत्यम्,] एक
बाघदास्य ।

सुनिका [सुं + कन् टापु, इत्यम्] शोभा वा निचला
भाग ।

सु (मना० उभ०) एकत्र करना, लेना—आदने करानि
शब्द मी० मु० ५:१६ ।

सुकरच्छद [व० म०] आग ।

सुकलः (पु०) 1 एक प्रकार का नीलर 2 गाँव प्राणो मे
मे एक ।

सुकु (वि०) [सुना + क्, रक्] 1 कष्टप्रद दुःख-
दायी । सम० अर्ध-केवल छ दिन तक रहने वाली
नपुंसक, सुन् (वि०) तापसी सल्लपन्म् एक
प्रकार का प्रायश्चित्तपरक व्रत ।

सुनम [सु - नम] जादू, टाना । सम०- अर्थ (वि०)
बुनाई । व० म० [त्रिमने अपना प्रयाजन मिद कर
लिया है अथ अथ और कुछ करने में अत्यर्थ है
—सुकुत्रका सुनाय पाद मी० मु० ५:१०-३ पर
१०० वा०, - कर (वि०) —कारिन् (वि०) विग
ग्राह कार्य को करने वाला, निर्वर्धक इतकरो रि
विधितवेक स्वान् - मी० मु० १०:५०-८ पर गा०
भा०, तीर्थ (वि०) त्रिमने सुनाय या आयात बना
दिया, बार (वि०) विवाकिन - सुषम् किये हुए
का अग्रय कर्त्ता, नम् (वि०) कष्ट, नग्राज,
साह चिनक वरा, बारहसिया इत्यर्थात्, -सिद्
(वि०) इतन्न नग्राजधर्मशास्त्र तत्र पादमूल विरम-
येते कुनविदा भाग ० ५:१६, सुषम् त्रिमने मले
की माफ करा ला है,—सुक्कार 1 त्रिमने सोपना-
त्मक सब प्रतिपारं पूरी कर ली है 2 सज्जित,
सँवार ।

सुनम् (वि०) [सु + मत्पु] जिसने कार्य करा लिया
है—इतवानो निप्रिय न मे - कु० ५:३ ।

सुति (स्त्री०) [सु + क्लिन्] 1 बर्गोत्पन्न स्त्रिया,
2 किया 3 बाप, 4 जादुगरनी । सम० साध्मन्म्
प्रयत्न करके सपन्न होने की स्थिति ।

सुषम् [सु + षप्] 1 श्री किया जाना चाहिए, कर्त्तव्य
2 कार्य 3 प्रयोजन । सम० अक्षुष्यम् कर्मन् अक-
र्त्तव्य में (विशेष करना) -सिद्धि (पु०) नियम,
उपदेश,—सौध (वि०) जिसने अपना कार्य पूरा नहीं
किया है ।

सुष्यम् [सुन् + यन्] शालुवार का एक उपकरण—महा०
१:१२५/६ ।

सुष्यम् (वि०) [कृत् + मत्पु] 1 जिसके पास करने
के लिए कार्य है 2 जिससे कोई प्रार्थना की गई है
3 चाहने वाला, प्रबल इच्छुक—रा० ७:१२:१५ ।

सुसगिका [सुन + सुट्ट = सुसग, स्वार्थे कन्, इत्यम्]
एक छाटा चाकू ।

सुषा-सिन्धा (शोकावित) प्राक्कल्पनापरक बात पर
विचारविमल करमा—मं० सं० १:०:२ । ४१ और
५:८:४८ पर गा० भा० ।

सुषा + आकर, सामर, -सिन्धुः (पु०) अत्यन्त कुपान् ।

सुषा (वि०) [सुन् + त्त, नि०] 1 दुर्बल, बलहीन
2 नगण्य 3 निर्धन 4 सुष्ठु । सम० अतिथि
(वि०) जो अपने अतिथियों की भूखा उलटा है
महा० १:०:८:२६,—सुषः जिसकी शीर्ष भूमी गृही
है, ज्य जिसके तीकर भूमे रहते हैं ।

सुसामयसम् (नपु०) ताप ।

सुष (मुदा० पर०) सृजना, विरमण करना ।

सुषिदिष्टः एक प्रकार का बिडा ।

सुषिधारसार, -सुष्टः (पु०) सुषि शास्त्र पर एक सङ्ग्रह ग्रन्थ ।

सुष्य (सु०) [सुप् नट्] 1 काला 2 सुट्ट 3 सुट्ट
4 अनाया (गोत्र) जिसने पोथी कपडा पर चिह्न
लगाया है महा० १:०:२०:१० । सम०- कञ्चुकः
नाल धन सुष्यि (स्त्री०) 1 बाह्यभिया की नाल
2 काला वादन - कुण्ठविमला कृष्णा महा०
५:६:१०, - ताम् एक प्रकार का पोशा जिसका नाल
काला होता है इराकली आवाड के कुण्ठस में
बाह्यहा दिन, शीजम् तरबूज, अस्मन् पारद
शुन्बीय सुसिका 1 कान्डी मिट्टी 2 बाकर ।

सुष्णा (स्त्री०) यमुना नदी ।

सुष्म् (प्रेर०) पहल करना, स्वीकार करना—नातो
अत्यन्तकल्पन्—रा० २:१२:५५ ।

सुषुवाकः, सुष्पु त्रय द्वीप का पश्चिमी भाग ।

सुषारः [सेन जैनन दागोप्य इ० म०] सगीत शास्त्र में
एक राग का नाम ।

सुषारक [सुषार + स्वार्थे कन्] चावल का सेत ।

सुषम् (नपु०) अन्न कुपट्टी में पहला, पीछा, सातवाँ
एक दसवाँ स्थान ।

सुषलसाम्पत्, } धर्मो के नाम ।

सुषलसम्पन् }

सुषलसाहाय्यम् }

सुषलसिद्धावः }

सुषिः (पु० स्त्री०) [सु + इत्] हुँसीधवाक, दिस्तनी,
रगरेली । सम० कञ्चुः हुँसी मवाक में अयका,
—कञ्चलम् आगोव सरोवर,—कञ्चु प्रयोजकन ।

केवलसाहित्यरेखिन् (पु०) न्याय सिद्धान्त के अनुसार अनुमान के केवल एक प्रकार से सम्बन्ध रखने वाला ।

केवलश्रुतम् (नपु०) दर्शन शास्त्र की एक शाखा ।

केवलिन् (वि०) [केवल + इति] (जीव०) जिसने उन्मत्तम ज्ञान प्राप्त कर लिया है ।

केसः [किलम् + जन् को लोपश्च] 1 बालक 2 सिर के बाल । सम०—बाह्यबन्धम् चूटिया पकड़ कर किसी महिला को सींचना एव उसका अपमान करना, —कारण एक प्रकार का यज्ञ, कारिन् (वि०) जो बालों को सवारता है, छत्रिन्, चूटिया देधी, —धारणम् बाल रखना—सूक्ष्मक एक जैन माप का नाम, कपलम् बाल कटवाना, मूषटन कराना—स्पर्शोपणम् अपमान के विह्वलस्वरूप किसी दूसरे की चूटिया पकड़ना—रघ० ३।५६ ।

केसवर्धयिन् (पु०) एक वैवाक्यण का नाम ।

केस्य (वि०) [केस्य + य] 1 बालों की वृद्धि के अनुकूल 2 बालों में लगाया हुआ, - क्लम् (नपु०) सार्वजनिक निन्दा, बदनामी, नोकायावाद ।

केसराल (वि०) [केसर + आलच्] अयाल में समृद्ध, अनुवाह्यत्व में प्रबल ।

केसरिणी [केसर + इति, रिभ्या ङीप्] सिन्धुती, सोरनी ।

कैमर्ध्वम् (नपु०) [किमर्ध्व + व्यञ्] प्रयोजन का अभाव—कैमर्ध्वप्रियमो भवति—पा० १।४।३ पर म० भा० ।

कैमर्ध्वम् [किमर्ध्व + व्यञ्] कारण, प्रयोजन ।

कैमरः (पु०) पतञ्जलि महाभाष्य के टीकाकार वैवाकरण का नाम ।

कैमातकम् (नपु०) एक प्रकार का शहद, मगरा ।

कैमोरध्वम् (वि०) [व० स०] कुमार, किमोरगवत्या का बालक ।

कैकष (पु०) भारतीय नाम ।

कैकष्य (पु०) बनकपीत, जवली कन्तर ।

कैकर्मविकी [कैकर्म + इति + की] लाल कमल व जेक कैकर्मविकीकर्मन्कास्वादकौविद—कथा० २०।७८ ।

कैकिलिकः (पु०) एक छन्द का नाम ।

कैकष्य, वाकः (पु०) किले का सरसक, मङ्गनायक ।

कैकिः (स्त्री०) [कुट्ट + इति + ङीप्] अकम्प, अगणित, —कैक्य-प्रतस्ते युमुतायञ्च घोषा—टा० ५।५१ । सम०—
—होमः एक प्रकार का यज्ञीय अनुष्ठान ।

कैक्यस्यम् (नपु०) उत्तरपूर्व से लेकर दक्षिण पश्चिम तक फैला हुआ सींचनवाला इतके विपरीत ।

कैक्यविदः (पु०) बहु कर्मिय जिसको बाह्यत्व में शूद्र हो जाने का श्राप दे दिया है ।

कैक्यस्यम् (वि०) [व० स०] शीघ्र से उत्पन्न ।

कैयारकम् (वि०) [व० स०] शीघ्र के कारण नाम कैयारकम् निरधारवदसिकोपाम् नील० ।

कैयार (वि०) [कु० + कलच्, मुट्, नि० गुण] मुट्, मूलायम नरम, — कम् (नपु०) रसाम ।

कैयला (स्त्री०) एक प्रकार का छुआरा ।

कैयकित (वि०) [कैयक + क्तच्] कृतियों में आम्हा-रिन् नै० ३।१२२१ ।

कैयकम् [कुम् + क्तच्, स्वार्थे कन्] 1 एक प्रकार का गीब मान० ५।४८५ 2 एक प्रकार का गड़ मान० १०।४१ 3 के फलादिक जा गीब के मन में प्रयुक्त होते हैं ।

कैयः [कुम् + क्तच्, अच् वा] 1 कमल का परिच्छद 2 आम का टुकड़ा 3 बहु प्यान्ना जिसमें मुद्गविराम के सन्निपथ की सम्पादित करने के विह्वल स्वरूप येय पदार्थ डहेला जाता है—देवी कोनामयायनम्—राज० ७।८ । सम०—कैयम् कायागार—भाट्ट च स्वाप-यामाम् तदोये कायवयमनि कथा०—४।१२३ ।

कैयलक [कैय + अन् + क्तच्] बाल ।

कैयलीक [तना० उभ०] पेरना, घेना डालना—कौण्टी कृत्य च न बीम्—महा० ६।१०।१३२ ।

कैयल (वि०) [कौ ह्रस्वि स्थाने अच् प्रथो०] अस्पष्ट बोधनेवाला, — क् (पु०) एक प्रकृत भाषा क वैय-करण का नाम ।

कैयक (वि०) एक प्रकार की दरी, कौ० अ० २।११ ।

कैय [कुञ् + ठच्] कृञ् अर्थात् मगल म मरवा रखने वाला ।

कैय्यम् [कुट्टनी + व्यञ्] कुट्टनी के द्वारा पबनिचा की द्वाराकरण में प्रबल कराना ।

कैय्यम् [कृन्दिन् + व्यञ्] एक छद्मि का नाम ।

कैय्यकम् (प्र०) [कुम् + अच्, मत्पु] विज्ञाना के रूप में ।

कैय्यक 1 सामयिक की एक शाखा का नाम 2 इस शाखा का अनुयायी ब्राह्मण ।

कैय्यार (वि०) [कुमार + अच्] 1 मुख्य मुट्टि, मुख्य अवतार—स एव प्रथम देव कौमार सगंभास्वित भाग० २।३।६ । सम०—तत्कम् अयुर्वेद शास्त्र का एक अनुयाय जिसमें बच्चों के पालनपोषण का वर्णन है,—अस्य ब्रह्मचर्यं द्वयं धारण करना ।

कैय्यः (पु०) 1 रासम 2 वायु 3 शिव 4 अग्नि 5 तपस्या में सलग्न ।

कैय्यमोः [कुम् + अच् + गुण + घञ्, व० त०] कौनों का सिद्धान्त ।

कैय्यमो [कुमाल + अच् स्वार्थे] कुम्हार ।

कैय्यिणी [कृन्दिन् + अच्, रिभ्या ङीप्] मुसहो की स्त्री ।

कैय्यिक [कुञ् + ठच्] गीब गुम्फ, बैरीजा ।

कीर्तिली (स्त्री०) अथस्य मृत्ति की पत्नी ।
कीर्तिलकम् } (नपु०) एक प्राद्वयपद्यम् का नाम ।
कीर्तिलिखि }
कीर्तिलुधः [कुन्तुम + अल्] बोरे की गर्दन पर बान्नी का गुच्छा, अयाल ।
कबरतः (पु०) लका, बहल (पत्नी) ।
कल्पयः [त० म०] यज्ञ के प्रयोजन को पूरा करने के लिए साधनभूत सामग्री—सै० स० ४:१:१० पर प्रा० भा० ।
कल्पकम् [व० त०] यज्ञ का फल ।
कम् (स्त्री० आ०) 1 बहारा बाना 2 दुन्धी होना ।
कम् (पूरा० पर०) रूपवति) श्यष्ट रूप म बोलना ।
कम् [कम् + वच्] 1 पय, कदम 2 वैर 3 बति, भान । सम० - भाषिन् (वि०) उत्तरात्तर, क्रमिक, -भासा, देखा, - शिखा वेर पाठ करने को माना प्रयासिया, योग्य (अ०) नियमित रूप से ।
कर्मव्यवहृत् [कृ + कर्मणि यक् + प्राण्य, स्वाये कन्] साहित्यिक निबन्ध स० म० १:५ ।
किया [क; ग रिङ आदेश इयङ] सञ्चना, कम । सम० - अर्थ (वि०) 1 वैदिक नियम त्रिमके द्वारा किमी कन्यम मे लगने का निर्देश किया जाता है 2 किमी काय के लिए उपयोगी अर्थ कियायं मूलभूत मर्मिकुशास्त्र कु० ५:१:३० आरम्भ-पकाना, सप्रम् चार तन्त्री में मे गक ।
कर्मव्यवहृत् (वि०) [कर्मव्यवहृत्] जो कर्म मूल्य पर कर्म स्वयं कर अधिक कर्म पर बंध देना हे मोटा करने वाला ।
कीर्तनकला (अ०) [कीर्त् + क्त, स्त्रीय क्त, तन्म भाव, वल्] किमी बात का खेद हो कन् की प्रति प्रत्य करना प्रा० ५:१:६:३० ।
कीर्त्ता [कीर्त् + अ + टाप्] 1 मीन म एक प्रकार की माय 2 मन्द हा मंदान । सम० - परिच्छद विज्ञोता ।
कीर्त्तितम् [कीर्त्, क्त] लेल ।
कीर्त्त [कृ + वच्] 1 रहस्यपूर्ण अक्षर 'हृम्' वा 'हृम्' 2 सवत्सरकर्म में ५९ बाँ बयं ('जोयल' भी) ।
कील [कृ + वच्] ४८ मिनट का समय ।
कुर (वि०) [कृ + र्क्] घालो कृ । 1 कठोर, कडा 2 निर्दय 3 कर्मोपवर्तिन-कर्मव्यवहृत्कृपावि-म०बी० १:३५ रम् (नपु०) उल्लास के साथ । सम० - कर्त्तित (वि०) दास्य, प्रयानक ।
कोडकास्ता (स्त्री०) पृथ्वी, परती ।
कोडीह [कोड + ष्व] कृ पना० उभ०] गले लगाना, आभिज्ञान करना ।
कीड (वि०) [कोड + ष्व] 1 सूक्ष्म से संबंध रखने वाला 2 बगहू अवतार से सम्बन्ध रखने वाला ।

कमानकम् (वि०) [व० व०] निद्राक, स्फुटिहीन ।
कोदित (वि०) [क्लिप् + क्लिप् + क्त] मजिन, दुषित ।
कोदकम् (वि०) [क्लिप् + मा + क्त] हुटाटा हुआ, दूर करता हुआ—सूत्रा० ३:२० ।
कोदक (वि०) [क्लिप् + क्त] बुझावारी, कष्टकर ।
कोदक (स्त्री०) पातञ्जल योगशास्त्र में बताई हुई चित्त-मृत्ति का एक भेद ।
कोदक [क्वम् + वच्] स्वनि, स्वन ।
कोदित (वि०) [क्वम् + क्त] 1 उबाला हुआ 2 मर्न, म् (नपु०) आदक पराज ।
कोदक [क्वम् + वच्] निर्णय, मङ्गल्य मन्तु मृत्ति कृतकथा—सूत्रा० १:६४:५१ । सम० - अर्थम् आधा मिनट,—अर्थम्: बोडो का एक सिद्धान्त त्रिमके अनुसार प्रत्येक क्त्तु लगानार लीज होगी रहती है - बीमम् दुग्ध समय ।
कोदक [अर्थम् ममान] एक मिनट में पकी हुई क्त्तु ।
कोदक [व० न०] मधिर, कोमिल ।
कोदित (स्त्री०) [क्वम् + क्लिप्] क्वम् नियत ।
कोद (पु०) [क्व + क्त] रजक ।
कोदक (स्त्री०) [क्व + क्त] वृद्धकला, वृद्धावस्था ।
कोदक [क्वमा ना० प्रा०] चिप् + म्पुट्] लमा मारना । सम० - म्पुट् अमा मारने समय मृत्ति-मान ।
कोद (वि०) [लमा; य] पृथ्वी में रोने वाला, भौतिक पाश्चि (वेद०) ।
कोदक (वि०) [त० म०] यवक्षार म दृश्यभाविन ।
कोदक (नपु०) आद्यवैदिक अठ इत्यो का सङ्ग । इसी प्रकार (कोदक, तथा कोदक) ।
को (स्त्री०) 1 पृथ्वी, परती 2 निद्रा, नीद ।
कोदक (नपु०) बलना जला हुआ म्यान ।
कोदक (पु०) मीमाणा का एक नियम जिसके अनुसार निमित्त को दर्शाने वाले हेतुमत्कारण की रचना इन प्रकार की जाय जिसमे कि इनमें निव्य वा अवि-वायं परिनिश्चित को दूर रक्खा जा सके मी० पू० ६:१:१७-२० पर प्रा० भा० ।
कोदक (अहः) सुवीर्य से न आरम्भ होने वाला धाम् दिव्य ।
कोदक [व० त०] ('यवमान' भी) वह मास जिसमें दो सप्तमियाँ आ पड़ें, और जो किमी मन्थ वा धार्मिक काल के लिए शुभ न माना जाना हो ।
कोदक (पु०) [व० त०] सक्रिय रहने वा होने की इच्छा को सर्वथा नष्ट करने की रीतियों की सङ्कल्पना ।
कोदक [लि + क्लिप्] समुद्रि लिने रोह प्रथम, क्व-वेप—सूत्रा० १:३१:३१० । सम० - अमा चली की मति सहजलीक - चित्तिकाया पुष्करतन्त्रिकाशी—२५०

५.-**स्पर्शः** धरती छना (बैसे कि सस प्रदुन बच्चे में जन्म लेकर धरती हुई)।-**स्पर्श** पृथ्वी या धरती का बर्णना भूमि पर रहने वाला ।
औषधा [शि० क्त - तत् स्त्रिया टाप्] द्रव्य, कृशता तथा बलहीनता की दशा ।
लक्ष (तु० उभ०) 1 शीघ्रता से चलना 2 मर जाना 3 (गणित०) जोड़ना ।
लक्षण (वि०) [शिप् - क्त] 1 फेंका गया, बन्धेरा गया 2 परिष्कृत 3 उपेक्षित । सम०—उत्तरम् ऐसा भाषण जो उन्पर के योग्य न हो - योनि नीच जाति में उपलब्ध ।
क्षिति [शिप् - क्त] रहस्य का बडागाढ (नाटक में) ।
क्षिप्रनिश्चय (वि०) [क० म०] ज़ा शीघ्र ही निश्चय कर लेता है । अथवा सुदोषप्रसूतारम्भ क्षिप्रनिःशय - सम० ३१९७ ।
क्षिप्रनिश्चय (प०) एक प्रकार की मति जो दो महत्वपूर्ण चरों में से पहले का अर्थम्बर में बदल कर हा मकानो है ।
क्षेपणिक [क्षेपण - टत्] मन्त्राह, नाविक ।
क्षीर (१-रम्) [घञ् - ट्ठञ्, उपधात्वात् घग्घ ककार उत्तर व] 1 दूध 2 रस 3 पानी । सम०—उत्तरा ज्वाला ट्ठञ् दूध, त्वम् तासा मकवन कुच्छलस दूधपात्र - बर्णना ५१११/८ उत्तर प्रजिता क फल मन्त्र केवल दूध पीकर निर्वाह करना ।

क्षीरस्वति (भा० पा० पर०) दूध की इच्छा करना - क्षीरस्वति यागवक. पा० ३११/१५ पर० भा० ।
क्षु (कथा० उभ०) कृदवा, उछलना (स्वा० पर० भी) - अथानि च लघोडे च लघोःप्राग्व्यवनेऽपि च । छन्दो लुप्तने चापि वडाऽन्यत्नवापिन इति मद्रुमन् ।
क्षु (वि०) [क्षु + क्त] 1 छोटा 2 सामान्य 3 तुल्य 4 कर 5 गरीब । सम०—सात पिता कः भ्राता, चाचा, - बन्धु लम्बाई नापने का एक यज्ञ, चाबूक-चोला ।
क्षुद्रक [क्षुद्र - कन्] 1 जो तिरस्कार करना है 2 एक प्रकार का बाघ ।
क्षुब्ध [क्षुब्ध - घञ्] 1 बूढ़ 2 लौटा टुकडा 3 गोणा ।
क्षुधाशान्ति भूख शान्त करना ।
क्षुत्शान्ति {
क्षुत् (स्वा० भा०) कृदवा (दे० 'क्ष' भी) ।
क्षुरणक्षयम् (नप०) ज़ा क्षीरकर्म, या हाजामत बनवाने में लिए यमनशय हो ।
क्षुब्धिलता (स्त्री०) [प० न०] कानिबू की कला ।
क्षुब्धता [प० न०] कानिबू का जल या पान ।
क्षुब्ध (तु०) बृहस्पतिमन्त्री का प्रणता एक बर्णना शक्ति ।
क्षीरकवच [क्षीरक - घञ्] मुहमना ।
क्षीरकवचम् (नप०) यज्ञक्षी में बनाया गया भवन ।
क्षोबाध [प० न०] क्षिप्रिज ।

स

समुच्चि (प० स्त्री०) 1 तिरस्कारमूचक अथवा (यमासान में) ऐसा कि 'बैधाकण्ठसमुच्चि (बग) वैधाकण्ठ जो अपने ज्ञान का भल गया) ।
सम्बिका (स्त्री०) भ्रम लगाने वाली औषधि ।
समुद्र (प०) [सट्ट - इच् स्थायं कन्] साट, सायन ।
सङ्घ [सङ्घ - गन्] नव्यार । सम०—धारा नववार का पला, धारासङ्घ अथवा सट्टिन काय - बिछा नववार बनाने की कला ।
सम्घ (वि०) [सट्ट - घञ्] 1 टूटा हुआ, फटा हुआ 2 द्रवित **सङ्घः**—सङ्घ महाद्वीप, महादेश । सम०—इन्द्र दूज का चंद्र सङ्घेऽनुकूलधोरम् (शिवम) बर्णना, साङ्घ-सगौत साङ्घ में पाए ।
सङ्घनसङ्घनायम् (नप०) रघुवन्त एक बेटान साङ्घ का दन्त ।
सङ्घिकोपाध्याय (प०) सङ्घ अथापक, उत्तेजित अथापक साङ्घिकोपाध्याय सङ्घाध अपेटिका बदाति पा० ११११ पर० भा० ।

सङ्घितज्ञान (वि०) [क० म०] जिनमें अपनी प्रजिता नाद हो है ।
सङ्घिन (वि०) [सट्ट - इति] एक प्रकार की शाल, गौड मंग ।
सङ्घोर (प०) द० सङ्घत् ।
सङ्घनाम (प०) 1 घरा 2 बाटन ।
सङ्घना [सङ्घ - तत् स्त्रिया टाप्] पावर, ताप ।
सङ्घ [सङ्घ - क] 1 गया, मन्वर 2 उदर, कटार 3 नीचा गेह 4 मघन 5 कर 6 ६० वर्ष के चक्र में पञ्चमीगवा भव । सम०—सङ्घनसङ्घ, दूर्गा का नीर अधिक करना, सङ्घे नम्, सङ्घे (वि०) मन्वरसङ्घ, सङ्घे (वि०) गया, जयवृद्धि, साङ्घे म्नाडा, -सङ्घे (वि०) गर्भ, प्रचण्ड (आधी, लकड) बायवर्तिलस्यस्योः भाग० ११११/१६ ।
सङ्घक (वि०) जिनकी सहा सुदरनी हो ऐसा (योनी) की० ब० २१११ ।
सङ्घोष्ठी (स्त्री०) एक प्रकार की बर्णनाला ।

सर्वरिका (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।
 सर्वरज (नपु०) नायिक की मिठी, गोला, सोपा ।
 सर्वम् (नपु०) 1 सम 2 शीघ्र 3 कठोरता ।
 सर्वद [सर्व + अट्] एक इस प्रकार की बस्ती जो पर्वत की ललहटी या नदी के किनारे बनी हो और जिसके निवासियों का व्यवसाय प्रायः बगिचें लगाए हुए हो । यह गाँव और नगर के बीच की बस्ती के लक्षणों से युक्त होती है ।
 सर्वद दे० 'सर्वदाट' भीमसेन प्रमथिनादुषोचनवहधिति, शिखा सर्वदकम्पेव कर्ममुलमुपाता नाम० ।
 सर्वित (वि०) [सर्व + इत्] जो सोना बन गया हो ।
 सर्वितर (वि०) [त० स०] जो नगध्व न हो, जो छोटा न हो ।
 सर्वित् (वि०) [सल + इति] सल से युक्त नगडट बाला, सौ (पु०) विष् ।
 सर्विकृत (वि०) [सल + कृ + क्त] अगमानित शास्त्रागस्त्यवा लसीकृत -नाम० ३ ।
 सर्विका } एक प्रकार की मछली ।
 सर्विकर }

सर्वः (पु०) फली, बाण ।
 सर् [सर्व + ट्] टण्] 1 पारंगी 2 पत्नी 3 लक्ष्मी 4 वपुता वीमा दमा कृमला च मे० एकार्थ० ।
 सर्वाणाम् (नपु०) छाया पीना ।
 सर्वाणिक (पु०) नायिक का पट ।
 सर्वाणालः (पु०) सर्वाणाल दण्ड से उत्पन्न एक उत्पन्न नग्न का पीछा गति० ११।३ ।
 सर्वाणिक (पु०) शीघ्रता शीघ्र ।
 सर्वाणी (स्त्री०) एक प्रकार की योगमिठ् जिसके दाहिनी बायीं आंख में उठ सकें एव गलीबिभक्तान् गन्धर्वादिशैलुषा कथा० २०।१०५ ।
 सर् [मिट्] अच्, मे अटिन् अट् अच्] दाम गाँव ।
 सर्वाण (पु०) किसी जानवर के लट्टे में दाने वाला विशेष राग ।
 सर्वाणि (स्त्री०) [स्या + क्तिन्] दर्शनोपपन्न का एक विद्वान्त विकल्प स्यानिवादिनाम् - भाग, ११। १६।०६ ।

व | मे | व | 1 शिव 2 विष्णु - ग. प्रीतोभव श्रीपति-रत्नम् एकार्थ० ।
 वानम् [वचनपरिमन्त् वम् + मृत्, ग आदेश] 1 आकाश, अन्तरिक्ष 2 मृत् 3 स्वर्ग । सम० रोमन्व अमङ्गलि ज्येष्ठ परार्थं, सिद्ध (वि०) आकाश तक पहुँचने वाला दे० अश्रित् ।
 वान्तलसो (स्त्री०) बैंगल भास के मुक्त पत्र का साधारण चिह्न ।
 वाज [वाज् + अच्] 1 हाथी 2 आठ की संख्या 3 लम्बाई गाने का वज्र 4 एक राजस जिसे शिव जी ने मार दिया था । सम० गच्छिका हृषिनी जिसका प्रयोग बसन्ती हाथी को पकड़ने के लिये किया जाता है । खन्वित्वरत्नेन न प्रलोभ्य द्विपविब बन्धविहीनोत्तुकामा न्निव वज्रपथिकेव केरिटासि - ज्ञानकी० १६।५०, श्रीरीहसम् आश्रय मास मे निरयो द्वारा मनाया जाने वाला व्रत, विभीषिका किसी बस्तु की और मृद-मट्ट देवता, राजवृज्र कर न देवता, - पुष्पी एक लता का नाम मज्जुसीमिया फूलामृत्पाटप धूम-नलसाम् ग० ६।१०।१०, बन्धः 1 बुटी जिससे हाथी बांधा जाता है 3 एक प्रकार की समोय मश 3 अग्रीही हाथी का पकड़ने की प्रकिया नाम० ।

वाजित् (वि०) [वाज + इति] गजराही हाथी की मवारो करने वाला ।
 वाजिक [वाज्, गुणो०] 1 पकिया 2 एक प्रकार का जलराश ।
 वाजः [वाज् + अच्] 1 समूह, सघ, समूह, वज्र लट्टा 2 शंभो 3 शिव के अनुचर जिसका अर्थःक्षक मणोय है, उपदेव 4 सभा 5 मण्डल 6. जनि । सम० एतत्पदोर्ध्वः व्याकरणयान् यथा पर, बर्धमान कृत एक ग्रन्थ, - बालकः सेनारति ग० २।११।१ ।
 वाजपतिका मणक, त्रिमर्मे विषय प्रकार के वापिन अट्टा की माग्री ही हुई होती है - राज० ६।३५ ।
 वाजित् [वाज् + क्त] व्यवहार के लिये गजैर स्वा-पयवगिण महत् महा० १०।१०।१० ।
 वाज्याणम् [वाज् + अच् + वाजन्] किसी रचना या विषय की सापेक्ष ऊँचाई ।
 वाजः [वाज् + अच्] 1 गल 2 हाथी की कनपटी 3 बुद्ध-बुद्धा 4 फोडा, रसीली 5 जोड़, गड्ड । सम० - कुपः पहाड़ की लतह, अक्षिका, शेषः कोर गजद्वैर-दान्या शीर्षं जानन्वति - अवि० ० ।
 वाजिक [वाज् + ऊज्] एक प्रकार की मश ।
 वाज (वि०) [वाज् + क्त] 1 गया हुआ बीता हुआ 2 मृत,

व

3. शाठ । लघु० - शालन् (यथायथा) [इ० ल०]
 मृत और मरिचक (का कर्षण) - यथास्थास्य यथा-
 यथा - रा० ७१५१२२, - शालन् (वि०) मन्, नीच,
 - लघुः (वि०) यो अर्पणी यथाकथं का स्थान नहीं
 करता है ।
 शालन् (वि०) [यति + मनुष्य] उपायक, तरकीब या
 रीति का वाक्पार - महा० १२१२६१७।
 शालन् (वि०) [मन् + शरत्, अनुनासिकलोप, गुक् च]
 तैव चलोपे शालन्, - शरत् (पु०) एक प्रकार का घोड़ा ।
 शः [मन् + शच्] 1. कृष्ण के बार्ई का नाम 2 कुबेर,
 3. श्यामस्थ, हृषिकेश - आपुत्रे वन्दे रोगे पुषि कृष्णा
 नृचेऽपि च - भाग० ।
 शक्तिः (स्त्री०) [श् + इ] व्याख्यान, वक्तृता - एव शक्तिः
 कर्मगतिसिद्धये भाग० ११११२११।
 शब्दः [मन् + शच्] 1 मुद्यो में समाप्ता, सम्बन्ध, वन्द्या
 2. शब्दक 3 चन्दन चूरा 4 पदौली । लघु० - हृदितम्
 हृषी जिसकी मधुर गन्ध इतर-उत्तर फैलती है, वह
 नुद्यो में उत्तम हृषी माना जाता है ।
 शब्दकौशिका (वि०) [श० ल०] शैबिका जो गन्ध द्रव्य
 और चन्दन पीत कर तैयार करती है ।
 शब्धि (वि०) [मन् + इ] केवल नामधारी, बहाना करने
 वाला - सोऽपि त्वया हस्तस्तान् त्रिपुणां भ्रान्तमन्धिना
 - रा० ७३२४२९।
 शब्धर्षीकम् (नपु०) [ति० ल०] एरुड का तेल ।
 श (शा) श्वात् (पु०) 1 समीत में नीसरा स्वर, एक
 विशेष प्रकार का राग ।
 शब्दम् [मन् + श्चुट] जानना, समझना नाञ्ज स्वराय-
 यमनं प्रभवन्ति भूयन् भाग० ८१३१६।
 शर्मसंहिता (स्त्री०) शर्म द्वारा प्रथम एक उपायिक का
 ग्रन्थ ।
 शर्मरन् (नपु०) एक प्रकार का घास ।
 शर्मः [श् + शन्] 1 गर्भाशय, पेट 2 भ्रूण, कल्ल 3 अग्नि
 4 आहार । लघु० - श्राहिका (स्त्री०) घासी, दाईं
 काना २४, श्वासः आहार रचना, नीच डालना
 - शालन् नीच का गद्दा, - शंभुः गर्भाशय में द्रव्य
 होता ।
 शर्मिका (स्त्री०) किसी प्रकार के मत्स्य या मनुष्य
 अल्प प्रवेश ।
 शर्मोत्सः } (वि०) [मत्मी अलक समाज] कायन्, मन्-
 शर्मोत्सः } बुद्धि, जड ।
 शसः [मन् + शच्] 1 एक प्रकार की मछली 2 एक
 प्रकार की घास ।
 शसुः (पु०) [मन् + उच्] एक प्रकार का रत्न ।
 शशाब्धः (पु०) एक वर्ष तक रहने वाला मध्याह्न ।
 शश्व (वि०) [शं + श्च] शय में मिलन वाला पदाथ, यो,

दुश् भादि, - श्वम् (नपु०) यथायथम् नाम का एक
 शीत यज्ञ - यथायथम् श्वम् - मै० ल० ८१११८ पर
 शा० भा० ।
 शहन (वि०) [गृह् + श्चुट] 1 गहरा, लचन, चिन्का
 2 समझने में कठिन 3 ऐसा स्थान जो पार न किया
 जा सके ।
 शहरी [गह्वर + शीप्] पृथ्वी ।
 शहुरित (वि०) [गह्वर + इत्] शीन, मन् - याज-
 सेन्दा वच श्रुता इन्धो गह्वुरितोऽभवत् - महा० २।
 ६८४५।
 शह्वेय (वि०) [गह्वर + इच्] गह्वर में, गह्वर पर, या
 गह्वर में उत्पन्न होने वाला, - य भीष्म, यम्
 1 सोता 2. पोषा घास ।
 शह्वरन् (अ०) 1 अधिक कष्ट कर, सटा कर 2 अपेक्षा-
 कृत अधिक महतता से ।
 शह्वरन् (पु०) [श० ल०] मंडक ।
 शह्वरन्ती (स्त्री०) एक प्रकार की भारतीय शनैज ।
 शान्तिशब्दम् [शान्ति + शब्द] लेखाकार का कार्य
 - अश्वत्थे शान्तिशब्दिकार की० अ० २० ।
 शान्ती (स्त्री०) शंशा २७
 शान्तिशब्दम् (नपु०) आकर्षी मवेदन ।
 शान्तिका (स्त्री०) सोनी ।
 शान्तिशब्दा, - शिधा,] समीत की लम्पि कला, समीत का
 - शब्द, - शान्तिम्] शिष्टान्त, शान्तिविज्ञान ।
 शान्तारी [शान्तारोऽप्यथ इज्] 1 एक प्रकार का
 मारक द्रव्य 2 बाईं ओंय की गिरा ।
 शान्तारीषाब् (पु०) एक प्रकार का समीतमान ।
 शान्तीयेम् [शन्भीर + यज] 1 मर्षा 2 उदारता
 3 मनुष्य ।
 शान्तर (पु०) गाजर ।
 शान्तिशब्दिका [शुकर्मेशिन् + ठक्] शुकर्म के धर्म,
 शुकर्म के कर्म्य ।
 शिप् (गिरा) (स्त्री०) [श् + शिच् टाप् वा] 1 बुद्धि
 २० गिर्षी एकाथे 2 मुना हुआ ज्ञान गिरा
 वा जामासि तपसा ह्यननी - महा० १३१५३ (टीका) ।
 गिरा [श् + शिच् टाप् वा] स्मृति (वेद०) ।
 गिरिच [गिरि + चन्] शिब भाग० ८१५१५ ।
 गिरिषाशु (पु०) गोक ।
 गिरिच [गिरि + गत्] गिराने वाला - गिरिचय
 इव वाङ्मनि - भाग० १०१३३३१ ।
 शीतशीतिलम् (नपु०) जयदेव निर्मित एक गीतिकाब्ध ।
 शीतशीतिलम् (नपु०) समीत के सम्बन्ध पाठ के उपप्लवन
 एक महाकाव्य ।
 शीतशीतिल (पु०) विन्तर ।
 शीतः [शं + शिच्] एक मय भास ।

मुद्रिकासम् (नपु०) 'Y' के आकार की एक मुद्रिका जिसके माथ एक बंदी बनी होती है, इससे पहिली पर यन्त्र के टुकड़े फँके जाते हैं इनका नाम है 'योफिका'।

मुद्रिकासम् (नपु०) बन्धुक, नलिका।

मुद्र [मुद्र + अच्] गोली, बटिका—शाब्द० १३११।

मुद्रः [मुद्र + अच्] 1 किसी बन्धु की विशेषता चाहे अच्छी हो या बुरी 2 बागा, बंदी 3. सारी के (सत्य, नञ तथा तम) धर्म। सम० कल्पना किसी वाक्य का अर्थ करने समय वाक्याकारिक भावना को सँभल करना.—आरः (मणित०) मुद्रक, गुना करने वाला.—भौरी अपने उन्नय गुणी से वैशेष्यमान महिला—अनुनासिक गुणगौरि या कृपा भाग्—शि०, भावः किसी अन्य वस्तु की गुणना में शीघ्र पद—परायता हि गुणनाम—मै० स० ४।३।१ पर शा० भा०,—बाहः 1 गीत अर्थ को सूचित करने वाली उक्ति 2 अन्य नकों का विरोध करने वाली उक्ति, —विशाल (वि०) [व० स०] पदार्थ के अन्य पदार्थों में से किसी विशेषता का पृथक् करके दशाने वाला विशेष विशेष नक्षत्र, विन्य प्रकार की विशेषता विशेषः बाहरी ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और अहकार गुणविशेषा बाह्येन्द्रियमनोऽहङ्कारावम्—सा० का० १६, संज्ञः अर्थ गुणों का एक-बीकरण।

मुद्रनिर्गम | प० न० | अर्थात् रोग के कारण कोष बाहर निकल जाना।

मुद्रगृहम् (नपु०) शयनकक्ष, शयनागार।

मुद्राधनम् (नपु०) [कर्म० म०] छिपा हुआ धन।

मुद्रती (स्त्री०) अन्नमुच्छेदनवा महिला, बुढ़ बाली स्त्री।

मुद्र (वि०) [मु + कृ, उत्पन्न] 1 भारी (विप० लघु) 2 बड़ा 3 सम्बा 4 कठिन 5 आदर्शवी 6. प्रथिन-शाली,—शः (पु०) 1 पिता प्रपिता, पितामह, पूर्वज 2 सम्माननीय महापुरुष 3 शिष्यक, अध्यापक 4 स्वामी 5 बृहस्पति। सम०—उपदेश. 1 अध्यापक द्वारा दीक्षा 2 शिष्यकी या बड़ी छात्रा की गई नवीहृत, कृष्ण मार, कुलम् 1 मुद्र का वासस्थान मावाम विद्यापीठ जहाँ अध्यापक और छात्र मिल कर रहें, कुलवास, मुद्रकर्म में रहकर विद्याध्ययन करना,—पुत्रम् 1 शिष्यक का घर 2 बृहस्पति का घर (अन्व-पिका में), भावः महत्त्व, गुण्य, सर्वोन्नः नीच, गुणमय,—बलिता बड़ी के प्रति सम्मान भाव प्रदर्शित करना निवेश मुद्रके राज्य भक्तिमे गुणवलिता—रा० २।१।१।१११, बुक्तिः गायत्रीमंत्र जपमानो मुद्र-धनिम् महा० १३।३६।६,—स्वम् शिष्यक का घर, संपति।

मुद्रिका (पु०) 1 एक उपग्रह (शनि का पुत्र) जो केरल देश में माना जाता है 2 विष से बुरा तीर 3 विनयक —मुद्रिको सम्बन्धमे रसबद्धान्पदेशयोः, पित्रानामे नाना०। सम०—आलः प्रतिदिन का बहु समय जो अशुभ माना जाता है।

मुद्रिका (स्त्री०) गोली—एकार्थि मुद्रिका तत्र नलिका यन्त्रनिर्गता शिब०।

मुद्रकः [मुद्र + कृ, उत्पन्न लः] 1 मुद्राशिविर 2 सैनिक-तम्। सम०—कृष्णम् एक प्रकार का कोंड।

मुद्र (वि०) [मुद्र + यत्] 1 छिपाने के बोध 2 रहस्य, —कृष्णम् (नपु०) गुप्त स्वान-सैपुन तलत धर्म मुद्रा र्वेव समाश्वरेत्—महा० १०।११३।१७। सम०—विद्या गुप्त रूप से और लोगों से गुप्त रख कर—मुद्रमय की दीक्षा देना अथवा अन्व्याप्त करना।

मुद्र (वि०) [मुद्र + कृ] 1 गुप्त, छिपा हुआ 2 वाक्या-रित 3 अदृश्य 4 रहस्य, कृ (नपु०) एक शब्दा-लकार। सम० अर्थ (वि०) वाच्यर जर्व रखने वाला, आलोचकम् कटलेख—की० म० १।१२।

मुद्रावयः (पु०) एक वैदिक ऋषि का नाम (इसका पुराणों में भी उल्लेख है)।

मुद्र (वि०) [मुद्र + कृ] इच्छुक, आशावित, उत्सुक, किसी वस्तु को अन्वयन चाहने वाला मुद्रा वासवि सञ्चालना महा० १।१०।६।

मुद्रिन् (वि०) [मुद्र + इत्] दे० 'मुद्र'।

मुद्रध (वि०) [मुद्र + धत्] जिसे उत्सुकता पूर्वक बहुत चाहा जाय, जिसके लिए प्रबल आसता की जाय।

मुद्र (पु० आ०) स्वीकार करना, प्राप्त करना, ग्रहण करना, लेना, मिलाना लीन करना।

मुद्रम् [वृह + कृ] 1 घर, आवास, भवन 2 पत्नी 3 गृहस्थ जीवन 4 अन्नकुडली का घर 5. (सतरथ आदि श्लेक का) घर। सम० आरम्भः घर का निर्माण,—ईश्वरी घर की स्थापिनी गृहिणी, श्रेतत्,—सत्त्व (वि०) अपने घर की याद करने वाला, जिसका मन अपने घर की ओर ही गया हो,—वाकः (नपु०) घर में लगा सम्बा, स्वम्—व्यपिबन्धे पापव्यापिते स्थित मुद्रदारवत् महा० ६।३,—पति 1 घर का स्वामी 2 गृहस्थ 3 गाँव का मुखिया—मुद्र० =, पिच्छी भौरा, मुद्रम,—पोतकः भवन बनाने के लिए संकलित स्वान,—पोषणम् गृहस्थ का निर्वाह,—वाचनी 1 घर को आद से साक करने वाली 2 बुरारी की मुद्र, आदिम् (पु०) कदुर।

मुद्रकम् [मुद्र + कृ] घर का बनीया, बटिका।
मुद्र (वि०) [मुद्र + कृ] 1 चरत् 2. पालतु 3. प्रव-लघ्व, प्रत्यक्षारोव—स्वेता० १।१३, मुद्रम् (नपु०) चरत् काम, गृहस्थ का यज्ञीय अनुष्ठान। सम०

—सूक्ष्म सूक्ष्म का सकलन जिसमें गुह्य यज्ञो के विधान का वर्णन है जैसे कि आरस्तनगुह्यसूत्र या श्रीधरान गुह्यसूत्र ।

गाहुः [गे + हुन्] 1 गीत 2 गायक 3 मधुपक्षी ।
गाय. (वेद०) गीत (समाप्त में प्रयुक्त होने पर इसका अर्थ है 'स्तुति के योग्य' 'स्तुत्य' जैसा कि 'उच-गाय' में) ।

गो (प०, स्त्री०) [गम् + गो] 1 गन्तु 2 गो 3 बार्द भी पदार्थ जो गो से प्राप्त है 4 आकाश 5 दूध का वस्त्र 6 प्रकाश, किरण 7 ह्रीं 8 स्वर्ग 9 बाण । मम० गृह्यसूत्र गीर्ण पकड़ना, गीर्ण चूरना,—बर्षा पशु की प्रति केवल अपना शैतिक मुख खोजना—विश्विका काकलक, काग,—श्रीध (वि०) गीर्ण्य का व्यवसाय करने वाला, पोषी,—वृष, अर्धवेद का एक शाखा,—पर्वतम् उम पहाड़ का नाम जहाँ पशुनि में तपस्या की थी अरणा०, उत०—१६८,

गोश्रीरः एक जल पत्थी, गण्डमण्ड (वि०) छत्र-हवा, पत्थी कमर वाला,—सूक्ष्म वैदूर्य नामक मणि, गृह्यसूत्र गदायज्ञ में वेनगबाल नाम—महा० १/५८/२३, शौभिका सफेद दूध,—हरम् गाय के शीशु का ब्राह्म,—विश्वानिक गाय के शीशु से निर्मित एक स्वीत उपकरण (इसे 'गृन्' जो कहते हैं)—महा० ६/२५/६,—सावित्री गायत्रीमन्, हरषम् दे० ग्याहृषम् ।

गोम् (बरा० पर०) गोबर में लीपना, गायत्री फेंकना ।
गोमत् (वेद०) [गो + मत्] गोमो में समुद्र स्थान ।
गोमयपयोसौधन्यायः (प०) एक ही वाद्य में उत्पन्न या श्मशुती के गुणों की भिन्नता-रूप दूध और गोबर ।
गोभिन् [गोम् + भिन्] वैद्य—नामित चारुभेकम्—महा० १/२/३३५ ।

गोत्रिकाणः (प०) एक प्रकार का घोंडा (गोत्रिकण) नामक स्थान में पैदा होने के कारण यह नाम पड़ा ।

गोत्री (स्त्री०) नामाष्ट, नामिका के बीच का पर्व ।
गोष् [ग्म् + ष्] बेंस ।
गोष्ठी [गोष् + ष्ठी] गाय ।
गोष्ठीडा (स्त्री०) गेद में खेलना, गद का खेल ।
गोष्ठीविका ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम ।
गोष्ठाश्वम् (नप०) 1 गृहान 2 गणित ज्योतिष ।
गोष्थः मैनाक पर्वन ।

गोष्ठाकः श्रुतवाद पर लिखने वाला प्रसिद्ध लेखक ।
गोष्ठात्मकः (प०) श्रुतवादात्मक के एक गण का नाम ।
गोष्ठा-श्वेदः—श्वेदः (प०) गौह (जो प्राय वृद्धों की दारुओं में पाई जाती है) ।
गोष्ठाकः [इ० स०] 1 शिव 2 श्री चैतन्य देव, अन्य और शायक ।

गोरी [गोर + गोर] 1 एक मातृका 2. एक नदी का नाम 3 रात 4 पार्वती । मम० बुद्धा माघ नाम के शुक्लपक्ष के चौथे दिन मनाया जाने वाला पर्व ।

गोष्टक (वि०) [गुष्टक + अन्] गुह्यकी से सबंध रखने वाला ।

गोष्ठी [गम् + इन्] 1 गुप्तक का कठिन स्थान २-गोष्ठी नदी बरक मुनिर्षद कुमुदलान्—महा० १३/१८० 2 गोष्ठी, जंग-कथा० ६/५/१३५ । मम० ब्रह्मकाः एक प्रकार का जोलाव, इत्यादि ।

गोष्ठीक. [गोष्ठी + कै + क] बोध का अक्षर ।
गोष्ठीकम् (नप०) 1 पीपलासु 2 गुह्यम् ।
गोष्ठीप्रमाणम् [प्रम + ष्ठम् + षान्] प्रमाणम् ४० न० । एक ग्राम का नाम ।

गृह [गृह् + ष्व] 1 वृद्ध की तैयारी 2. अनिधि-गया विद्वय चात्रयः पहावाद्य प्रदीपने—महा १३/१०० ६ । मम०—अश्वरः चन्द्रमा, कुम्भलिनः, चक्रम्, विचित्रः जगत्कुम्भनी, किसी भी समय इहो की बनाई हुई देवा.—शिवसूत्र कठिन ज्योतिष का गणित नाम 'गोष्ठी' सूत्रं.—आरतिवचन ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम, साधकम् ज्योतिष के एक ग्रन्थ का नाम,—स्वर गणित नाम का गृहमा स्वर ।

गृष्ठीकपाठः [ग० न०] अतिमार की श्रौचि ।
गृह [गृह् + ष्व] 1 मुट 2 नकवा ।
गृह्यम् [गृह् + ष्वन्] ज्योतिषो शास्त्र सकलता का विषय ।
गृह्यः [गृह् + ष्वन्] एक ग्रन्थ गृह ।

गृह्य [गम् + मन आदनादेश] 1 गाँव, पत्थी 2 बरा समुदाय 1 समुदाय, सवह । मम०—काव्यस्य पार्ष्णी लिपि गृह्यः गाव का बर्द,— श्रीः (प०) मृग के अन्वचन का नेता, उपदेशता,—बर्षः गाँव की प्रधानीनिर्वाह,—काव्यम् गाँव में उत्पन्न अन्न, पृथ्वः गाँव की मृत्तिया, विद्येय, मनीष का विनिष्ट स्वर मृदुती-मदशामविद्येयमृदुता—शि०,—बृह गाँव का बड़ा बड़ा प्राध्यापकीनृदयनकपा-शिविदशामृदुतां मय० ३० ।

गृह्यवाचिन् (प०) गाँव का आभेयक, गाँव की आर में बोलने वाला । म० २/३/११८ ।

गृह्यकम् (नप०) चन्द्र का एक भेद ।

गृह्य [गि०] [गम् + गिन्] गमं, उतम । श्लोकः (प०) शौच श्च । मम० कल्प उपवन या वाटिका जो गृह्य श्च का विधान स्थल हो कथा० १२/१६५, हास्य मध्यम गृह्य की श्री-श्रुति में हवा में इधर उधर उड़ते हैं ।

गृह्यसूत्र [गि०] पिब + मृदु, पुक, हृष्यवच 1. मुनिना कुम्भकाना 2 विधान काना—शास्त्रोक्तानामुपान्याय-विश्वानर-गोष्ठीविषय—महा० ४/११४ ।

मलिन (वि०) [लं + लिप् + ल, पुद्, ह्रस्वण]
1 मलिन, मलना हुआ, छिटा हुआ हुआ—कि० १४

५४, १५० १५१२८ 2. टुकड़े टुकड़े किया हुआ
—मातृसम्बन्धितबीजा—रा० ७७७७४० ।

बन्ध [बद् + अच्] 1 निर—समाधिभेदे ना निर कृत्-
कृत्य च—मेविनी०, महा० ११५५१३८ 2 मिट्टी
का जलपात्र 3 कुम्भगात्रि। सम० उबरः गनेच
का नाम,—कर्मभूक (नपु०) तान्त्रिक और शास्त्रों
की एक रत्न (इसमें विभिन्न महिलाओं की बोलियाँ
एक बड़े में डाल दी जाती हैं और फिर उपस्थित
महानुभावों में से प्रत्येक एक एक बोली निकालता है,
जवा जिस महिला की वह बोली होती है, उसके साथ
उस पुरुष की सभोग करने की अनुमति है) —बोधि,
—जब, कन्मा अगस्त्य मुनि ।

बटा [बट् भावे बद्ध, मित्रया टोप] लोहे की फेट जिस
पर आवाल करने समय की सूचना दी जाती है ।

बटिकायन्त्रम् (नपु०) विद्युद्गत ।
बटिकायन्त्रम् (नपु०) बटा ।
बटोन्नमम् (नपु०) 1 रट्ट, पत्नी निकालने का यन्त्र
2 अतिमार—भाब० ३११६१०४ ।

बट्टित (वि०) [बट्ट + क्त] 1 नष्टयुक्त, कलहदार
—पञ्च० ६१३ 2 रबाया हुआ, भीषा हुआ,
पीसा हुआ ।

बट्टाच्छर्मा (पु०) 1 शिव का एक मन्त्र 2 एक राक्षस
का नाम ।

बट्टारच (पु०) [ब० न०] 1 बन्दे की आवाज को-
दण्डबट्टारच—हनु० 2 सच की एक जाति—बट्टा-
रच शालमुने बट्टानादे—नाग० ।

बट्टिका (स्त्री०) [बट्ट + क्त, इत्यम्] काग, काकल,
उपविष्ठा ।

बट्टाच्छ [बट्ट + आलच्] हृषी मुक्ति० ५१६६ ।

बट्टिकः [बट्ट + ठञ्] बट्टिवाल, मगरमच्छ ।

बुध (वि०) [ह्रु + मुदा] अय, बनादेशाच्च] 1 सप्तम,
बुध, ठाल 2 मोटा, सटा हुआ 3 पूर्ण विकसित
4 अग्र 5 निर्वाण 6 स्वामी 7 पूर्ण + अयः (पु०)
1 भावन 2 लोहे की गवा 3 बरौर 4 समुच्चय
5 वेद का सत्वर पाठविशेष, कर्मन् (नपु०) 1 घंटा,
जप 2 मोहा 3 काल, बलकाल । सम०—अक
मोटी बजाओं से युक्त महिला कुट्ट बनीय पद्यानि
सनी गर्न—बेनी० २१२०,—अय (वि०) हृषीके
के आवाज के उपयुक्त—भाब० ६१२६१५३,—आयन्
विही रचना का निर्माण का बाहरी भाग,—अर्थितः
कड़ी गोपनीयता ।

बमता, [बज + तल् + ल्] 1. सप्तमता, सटा हुआ
बमताम् 2 दुइटा, ठोसपना ।

बर्बरः (पु०) [बृ + यञ्—भृच् + अच्] मन्दिर का एक
विशेष प्रकार का निर्माण ।

बर्भ (वि०) [बृ + मद्, नि० गुणः] गर्व,—र्भः (पु०)
1 गर्वी 2 शीघ्र ऋतु 3, पत्नी 4 प्रवर्ष्यं तत्कार
5 एक देवता का नाम—बर्भं स्वारातये शोभे
प्रवर्ष्यं देवतामन्तरे । सम०—आतिः पत्नीने से उप्यत्र
जैव, दे० 'स्वेदज' ।

बर्भवातः [बर्भन + आलच्] पीसने वाला, बट्टा, लोडी ।
बर्भन् [बट्ट + लिप् + ल्यट्] बट्टबनी, कुडा ।
बर्भतः [ह्रु + लिप् + अच्] हृष्टर मगना कोशाधिष्-
तत्य कोशाच्छेदे वाट—की० ख० २१५ । सम०
—कर्मन् (नपु०) एक प्रकार का मुष्टरोग, विषयः
अधुन विद, अमनजन से छात्रों मन्त्र ।

बुधकाय, [बुध + क = बुध + अच् (अच्) (बुच्) + क्त]
बुधकाय, कीड़े से साया हुआ, बुध मगा हुआ—कीर्णित
बुधमुक्ता—शाप्यबुधजतकवर्णनमायाध्यात्म ब्रह्मार्थ—वि०
३१५८ ।

बुधवृत्ति (वि०) [बुधबुध + वृत्] बुधवृत्त, बुधवृत्त,
बुधवृत्त ।

बुधवृत्तम् (नपु०) विहोरा पीट कर लयको बधवान
करना मनु० ५१२०९ ।

बुध (वि०) [बु + क्त] 1. छिड़का हुआ 2. चमकीला,
—लम् (नपु०) 1. बी 2. मन्त्र 3. बराय—अनु-
प्यतो बुधपुत्रा—महा० ११९२११५ । सम०—अक
(वि०) बी से बुधका हुआ, बी से युक्त,—अकः
बोनों का एक बड़े चिह्न की की बुधन्व जाती है,
—अकः—आयन् की पीसा—अक (वि०) बी से
बुधका हुआ,—केतुः मन्त्र ।

बुधा [बु + मद्] बर्भ की तावना ।

बुधिन् [बुध + इति] अन्धान्, अनीला ।

बुधा [बुध + अच् + टाप्] 1 (अन्ध की) शीघ्र 2 (स
में) बहिये की गाँव ।

बुधः [बुध + अच्] अन्वर वाट, मनीषारथ—बुधाय
अनुभवान्तर विराणे अष्टरुजान्—उ० ५१ । सम०
—आया आनुकिक अय से नीसलों के स्थान पर
आना, आनुकिक तीर्थ आना, बर्भ शीघ्र अन्ध का
अन्वर, अन्ध युवा या निपली अन्वर,—बुधः अनील

वाते—ईयङ्गवीनमावाय चोषद्वाणुपस्विताम्—रपु० ११५५ ।
 प्रंशु, प्रंशः (वेर०) [प्रंश + श्विप्, अच् वा] सूयं की गमी, चितचिताती वृष ।

प्राथ (वि०) [प्रा + थ] वृषा हुआ, थः—कम् 1 कम् 2 कम् आना 3. ताक । सं०—पुः मय्या, —कम् ताक कथना, चितकना ।

अकीरपुष्पः—अक्ष (वि०) [व० म०] अकीर सेवी अक्षी वाला, सुन्दर अक्षी वाला—अनुषकार अकीरवृक्षा यत् = वि० ६१४८ ।

अक्षम् [कियते अनेन, कृ पञ्चार्थक, नि० द्विवचम्] 1 गाड़ी का पहिया 2 कुम्हार का चाक 3 गोल गोष्ठ्य अन्त 4 तेल का कोल 5 वृत्त । सम०—अक्षः, अक्षम् पहिये का चक्र, अक्षम् एक प्रकार का पत्थर फेंकने का यन्त्र, —ईश्वरी सेनियो की विद्या देवी, सरस्वती, सप्तः परजता हुआ बादल, —अक्षम् कश्मीर के एक राजा का नाम राक्ष० ५१२८७ ।

अक्षयम् [अक्षय + यन्] अक्षी के लिए मन्त्रम् ।
 अक्षयुग्माक्ष (वि०) अक्षिपटा युक्त अग्निसिंघेय करने वाला, अक्षयोन इगित करने वाला—अक्षि० ४११९ ।
 अक्षयुक् [व० म०] एक विशेष प्रकार का शयन ।
 अक्षयुक्त (ना० वा० पर०) इधर-उधर घूमना—अक्षयुक्त अक्षययति चिर बकीरा—ग्रामि० ८१५९९ ।

अक्षुर्, (सं० वि०) [अक्ष + उरन्] (रचना में 'अक्षुर्' का 'र' बचल कर चिपयं, घृ, घ, वा स ही जाता है) चार । सम० अक्षुकः (अक्षुर्जक) एक घाटा जिसके अस्तक पर आने के चार बूचर लहंगाने हो, —अक्षयुक्त (अक्षुष्काण्डम्) (अ०) चारों दिशाओं में, —अक्षयुक्त (अक्षुष्कण्डम्) उमरी हुई बर्गाकार बनी बीनरी—महा० १४१८४३२, शायम् (अक्षुष्काण्डम्) अक्षुष्कान् जिसमें चार (अक्षयुक्त, चारण, प्रयाग और प्रतिकार) भाग होते हैं, शेषः (अक्षुष्कम्) जिसमें चार बड़े बर्राँ अक्षयमेघ, पुष्यमेघ, पितृमेघ और सर्वमेघ का अनुष्ठान सम्पन्न कर लिया है, सब (अक्षुष्कम्) सनक, सनन्दन, सनातन और मनकुमार नाम के चारों रूप चारण करने वाला विष्णु ।

अक्षुष्क (वि०) [अक्षुष्कय चत्वारोऽवयवा यस्य वा कन्] 1. चार की संख्या से युक्त, अक्षुष्क चार पायों वाला स्टूल, चौकी ।

अक्षुष्कपुष्पः [व० ङ०] अक्षय का लेप—दृष्टान्तपञ्चदश-पञ्चमीतल—शंभ० ।

अक्ष (वि०) [अक्ष + श्विप् + र्क] 1. चमकीला, उज्ज्वल, देदीप्यमान 2. कुम्हार,—अक्षः (पु०) 1 फन्दवा, चाँद

2. कपूर 3 गोंग की पुष्प का चन्दा 4 पानी । सम०—अक्षवा एक प्रकार का बोल, कुल्था एक नदी का नाम,—अक्षतिः (स्त्री०) सेनियो का, छटा उपाङ्ग आसाव, अक्षुन्दा, अक्षो छटा ।

अक्षतः (पु०) आयुर्वेद विषय पर प्राचीन ग्रन्थकर्ता मृषत भूमिका ।

अक्षवा (स्त्री०) गाय मी० सू० १०३३१९ पर सा० भा० ।

अक्षेटी (स्त्री०) आश्विन वाम के मुक्कल्प का छटा दिन ।

अक्षयुक्तम् (नपु०) वेद का एक मूल ग्रन्थके प्रत्येक पत्र में न मं की आशुति की जाती है ।

अक्षयुक्ते (पु०) एक तीर्थस्थान जहाँ में मग्गवती नदी निवसती है ।

अक्ष्या (स्त्री०) अक्षुदेव की राजधानी (अक्षयान भागलपुर) ।

अक्षयु (पु०) वस्त्र, सूत्रं—अक्षयुक्तकयम्तनालाक्षयु-दुर्गम शिब० ९५११ ।

अक्षर [अक्ष + अच्] अक्षु, अक्षवा—अक्षयु तयोमहदक्ष-अक्षयुत्तान् सर्वोप्यन्तकक्षयुत्तान्तिनाकाय,—भाग० १०१४१११ । सम० अक्षयु मेघ, कर्क, तुल्य और मकर के अक्षर ।

अक्षर (पु०) भारतीय आयुर्वेद का एक प्रवर्तक तथा अक्षरकहिना का लेखक ।

अक्षयुक्त [अक्ष + अच्] 1 अक्षयुक्त के कई नियमों का पालन करने वाला अक्षयुक्त-महा० ५१३०१३ 2 पर । सम०—अक्षयुक्त आयुधान, अक्षुः एक पत्र जिसमें वेद की शाखाया का वर्णन है ।

अक्षुर्वम् (नपु०) दाँता के कटकटाने का मन्त्र—अक्षि दक्षयुक्तयः शब्दमयम्—सि० ५१५८ ।

अक्षुर्व [अक्षु + अटन्] अक्षि, अक्षिवा ।

अक्षुष्क (पु०) (वेद०) अक्षयुक्त का अक्षयु चारण करनेवाला योडा—अक्षयुक्त अक्षिनी जनाः अक्षु० ८१५३८ ।

अक्षुष्कः (पु० व० ङ०) अक्षय भारत की एक जाति—व० म० १४ ।

अक्षयुक्तः [अक्षयु + अक्षु] एक प्रकार की बखली ।
 अक्षयुक्तः (पु०) कोकिला, भारतीय कोकिल ।

बाहुबन्धु [बाहु + ध् + वत्] एक प्रकार का शीशा का अञ्जन ।

बाहुर् [बाहु + एव, स्थायें अन्] एक छोटा गावद्वय निकाय ।

बाहुल्य [बाहु + ल्य] चारो भुमों को एक समान पृथ्वी की अधिकता में कहते हैं ।

बाहुरीक [बाहुरी + क्य] 1 हन 2 एक प्रकार की रत्नज - कलहस व कार्णव बाहुरीक पुमानयत् नामा० ।

बार [बार एक अर्थ] 1 गनि, बाल, अथवा 2 पैरल में 3 कारणा 3 कारणा 4 इयकरी रेनी 5 पोपल का वृक्ष, प्रियान का पेड़ ।

बार्या (स्त्री०) 1 पथ मग ग्राट ग्राथ बाँरी मरव -- की० अ० ११३ ।

बार्याक [बार नाकमयन बाकोबावय यम्य पया०] दमानमान की बार्याक जाया का अनुवाची ।

बार्थिल्ला [बार्थ मन् + अ ग्थिवा टाप्] दष्ट प्रम लम्ब न कर्यामि बार्थिल्ला दन्त्यानित्र जननाया -- भाग० ५१०१३ ।

बार्थिल्य (वि०) [कियः यन् + उ] बर्तमान बार्थिल्य अथ० १०१११ ।

बार्थिल्यम् [ब० न०] दमदा से नैवाय किया गया वृष या शील ।

बार्थिल्य [बार्थ + क्य] 1 हृदय, मन 2 ज्ञान - चिन्तन चिन्तापूर्णावय बार्थिल्यमि मयत । बार्थिल्य तन्मया वय गद्यमेतन्मनाननम महा० १५५११०३ । मम० अर्थात् (वि०) दिल में प्रकृतित चिन्तापित्तवर्धक - अथ० नैपथ० ११३१, माथ हृदय का स्त्रीमी चिन्ताधमभिर्गाङ्गनदना शि० १०१०८ ।

बार्थिल (स्त्री०) [बार्थ + क्यिन] 1 मार्मिक अथवा -- बाक्रीना व चिन्तीना प्रबलक नतामि ने महा०

१-६३१० 2 बार्थिल्य व वेदिकामयनुचितव उपकल्पित - भाग० ६१६१४८ 3 तप्याव, मनन

चिति बल चित्तमायम् - न० अ० ३११ ।

बार्थिल (वि०) [बार्था + यन्] चिन्ता से लब्ध एवमे बाला चित्तमायाङ्गागमय वायुमानयोऽवस्तु - भा० ६१५८१११ ।

बार्थिल्य [बार्थ + अन्, चि + यन् वा] बल का पुल्ल मयुके तिलके हेमि पथे ननुमकम् नामा० ।

बार्थिल्यनि (पु०) एक प्रकार का छोटा त्रिकोणी दर्शन पर बाला का बड़ा वृक्ष ही ।

बार्थिल्यी (स्त्री०) अनुकामयन्क गन्त यो पक्षियों के बन्धन का प्रकट करना है ।

बार्थिल्य (पु०) दार्थिली ।

बार्थिल्य (पु०) एक प्रकार की बड़ी मछली ।

बार्थिल्य (स्त्री०) [बार्थ + टोष्] शीघ्र ('बार्थिल्य' भी) इन्ही अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

बार्थिल्य [बन् + यन् + टाप्] (पूर्वमोसा मे) प्रयुक्त नामक शेषो बार्थिल्ययुक्त अथ भी० नु० - अ० १०१३ पर भा० भा० १ ।

बार्थिल्ययन्त (नपु०) किसी धार में बृजलाहट होना मुच्यते ११४०१११ ।

बार्थिल्य (पु०) एक गहन का नाम ।

बार्थिल्य अन्ताही की एक उपनदी - तटव बेरिका शोकना नायरी लन्तुवायुक्त कामिकायम - ०११५१६६ भाग० १०१८५-८८ ।

बार्थिल्यिः [ब० न०] पृथ्वी अग्नि यज्ञीय अग्नि - यन्त्र० १६६ ।

बार्थिल्य (वि०) [बार्थ + इक्] केरल प्रदेश के पास 'बर्मा' नामक नदी से प्रान्त गोती की० अ० २१११ ।

बार्थिल्य (पु०) [बन् + यिक् + य् + ट्] एक क्षत्रि का नाम ।

बाहुक [बाहु + क्य + तना० उभ०] तभी की भाँति प्रयुक्त करना ।

बाहुक्य [नपु०] [अन्वयानि - अन्व + अन्वुन्] एक वर्ष, त्योहार के दो भागों के नामों के उन्वयेऽपि ननुमकम् नामा० ।

बाहुक्यार्य [अ०] बिल्कन बनने के लिए, जिससे कि मरुतना न दिने कथा० १२४१ ।

बाहुक्यार (वि०) [अन्वट् + क् + अन्] नट्ट अन्वट्ट करन बाला, क्वरी (स्त्री०) एषा घोषना मन्व्या लोक - अन्व (मन्) ट्यारी प्रथो भाग० ३११८१२६ ।

बाहुक्यारः [अन्वट् + क् + अन्] नाव, ध्वज, विनाय ।

बाहुक्य [अन् + अन्] एक प्रकार का शरावा जिसमें अल - मत तर्कों का प्रयोग किया जाय ।

बाहुक्य [बा + य + टाप्] बाहुक्य वृक्ष पाट का लकड़ भाषान्तर ।

बाहुक्य [बाहु + क्य] 1 प्रथम भूमिछट्टविधानम् की० अ० २१२ 2 स्वान भाग० ६१६१३४

3 आकाश, अन्तरिक्ष - भाग० १२४१३० ।

बाहुक्य [बाहु + य् + ट्] बाहुक्य में एक प्रकार की मन्व - प्रकिया ।

बाहुक्य (पु०) एक प्रकार का अन्व - वृ० म० ८६१३० ।

बाहुक्य [बाहु + यत्] काट, शरीर ।

बाहुक्य (स्त्री०) बलि गाय ।

बाहुक्य (स्त्री०) प्रबल के आचार्यों में बना बन्धकोष्ठ व. तहजाना - कामिकायम० ३११३५ ।

अ

अन्ययुधः [व० म०] भी सकराधाय का नाम ।
 अनयध्वजिका (स्त्री०) इन्द्रासहिता पर भट्टीत्यन्तकृत एक टोका ।
 अनाश्विनम् (नपु०) विष्वक् का एक आश्वयं पण्येदानी जगन्विष्वक्—रा० ७।३४।९ ।
 अनतीपति [प० त०] सासक, राजा जि मत्तकुलो जगनीपतीनाम् कि० ३।१८ ।
 अन्नघाष्य (पु०) पण्डित्वा ।
 अन्नघाष्यम् [प० त०] द्रुम दवा कर भागना ।
 अटपाठ (पु०) वेद मन्त्रों के मूलपाठ को संस्कार पढ़ने को एक रीति ।
 अटपठनम् (प०) 'अटपाठ' की प्रथाओं से वेदपाठ करने में प्रतीक विधान युक्त ।
 अज [अज् + अच्] 1 प्रथमचारी, जीव 2 मनुष्य 3 एक व्यक्ति 4 राष्ट्र, जाति । सम०—आश्वयः विजयकुम्भी वषण के राजा को उपाधि, जिसे ज्ञानाशयी छन्दोविचरिण का प्रजेता समझा जाता है,—अश्व योकोक्ति, कथावत, किंवदन्ती भार महाभारी ।
 अजस्र (वि०) नागों का दमन करने वाला—महासाहो जनभसां जनसह—अश्व० २।२१।३ ।
 अजत् (वि०) [अज् + अत्] सत्यासी (साधारणतः 'अपना वर' प्रयोग प्रचलित) ।
 अज्युवातिम् (पु०) गवेष की मना के एक गद्यम का नाम ।
 अज्युवात्यक (वि०) आयुर्वेद का ज्ञान रखने वाला—इति ते कथयन्ति म्य श्राद्धया अज्युवात्यका—महा० ५। ६।१० ।
 अज्यक [अज् + अज्, नृम्] 1 डोही, विद्यामचारी माधु भी अज्यक माधु इत० 2 अधिधीपचार ५।६ ६।१६ ।
 अज्यतिः (स्त्री०) नरान् की डण्डी ।
 अज्यरि (वि०) (वेद०) महारा देने वाला -मृष्यंज जंभरो मुर्करी तु अश्व० १०।१०६।६ ।
 अज्यम् [अज् + अज्] 1 पानी 2 मुग्धयुक्त अधिष का रोमा 3 गाय का भ्रूण । सम०—अज्यः सर्वा अज्यु, अज्यः शरणा, अज्यरा जोषा, करका,—आश्व मास का एक रोज ।
 अज्युधेयक (वि०) [व० स०] उपचारक अधिषवर्दी रखने वाला—यद् अज्युधेयकम्—अश्व० १।६३।४ ।
 अज्यु (नपु०) [अज् + अज्यु] (वेद०) गति, धाक, शीघ्रता, यथोचित्ये अथो अज्युति—अश्व० ५।२१।८ ।
 अज्युधकम् (नपु०) अज्युधकी, अज्युधिका ।
 अज्युधकः [प० त०] अज्य का अज्य, अज्य से युक्त—दु० प० १।३४ ।

अज्युधकः (स्त्री०) [अज्यु + अज्यु + क्तम्] अज्य मना—अज्युधकधामिषा—महा० १।९०।९ ।
 अज्युधकम् (वेद०) (वि०) सर्वैव अधिष करने वाला—अ ज्युधकम् अश्व० १।१०।३३ ।
 अज्युधकम् [जनराज + अज्यु] प्रमुखा—आश्व० ९।४० ।
 अज्युधुति (पु०) छान्दोग्य उपनिषद् में ब्रह्मिण एक राजा का नाम ।
 अज्युधुधः [अज्युधु + अज्यु] १. रघुनाम ।
 अज्युधुधकम् (नपु०) स्त्रीधन, दहेज ।
 अज्युधुध [अ + अज्यु + अज्यु] 1 अधिष करना 2 धातुओं पर आरंभ की पत्त बढाना ।
 अज्युधुध (वि०) 1 स्तुति के योग्य निरवकाश सजाक-ध्यान्—महा० ९।४९।३ 2 जिसमें तीव्र बार दक्षिणा दी जाय काश्व्यान् विमुग्धजिघासिन्धुर्नमिष महा० ३।२९।१७० पर टोका 3 आभिषोपहार में समष्ट ।
 अज्युधुधम् (नपु०) एक प्रकार का वृक्ष—भाग० ८।२।१९ ।
 अज्युधुध (पु०) कर्मवीर में एक अज्युधुध—विहारमहाहाय व आलोराश्व व निर्वमें राश० १।९८ ।
 अज्यु [अज् + अज्यु] 1 महाभारत का एक विशेषण—देवी मन्वती अज्यु ततो जयमुदीरसेत्—महा० १।१।१ 2 अज्युधुधकारों से पूर्ण विजय अज्युधुध अर्थात् अज्युधुध ३ ७।२३।३ । सम० (अज्युधुध)—अज्युधुध (अज्युधुध) जीत तथा हार, अज्युधुध (वि०) जीतने वाला, विजयी उपलविपरीतकालमपमो अज्युधुध विनिर्दिष्ट व० न० १७।१० ।
 अज्युधुध (वि०) [अ० अ०] विजयने अपने हाथ को अज्युधुध कर लिया है ।
 अज्युधुधः [अज् + अज्यु] एक उपकरण जिसके द्वारा जूते हुए अंत की संवस्तर किया जाता है ।
 अज्युधुधकः (व० व०) एक राष्ट्र का नाम—महा० ९। १५।९ ।
 अज्युधुधर (वि०) [त० स०] जो आत्मनी न हो अज्युधुधरं अज्युधुधरं नदय्याप्यम् न० ३।६३ ।
 अज्युधुधर (वि०) [अज्युधुध + इतज्] 1 म्याकुल-परिधम अज्युधुधरं कि० १०।१० 2 टेडा बनाया हुआ, मुका हुआ (जैसा कि 'अज्युधुधर' में) ।
 अज्युधुधर (व० म०) एक प्रकार का गल-की-अ० २।११ ।
 अज्युधुधर (पु०) मृग्य गरीर, अज्युधुधर भाग० १०।८२।४८ ।
 अज्युधुधिका (स्त्री०) [अज्यु + अज्यु + अज्यु, अज्युधुध] 1 सधोवात पिण्डों की देखभाल करने वाली देवी 2 एक वीच का नाम ।

सचरासः [व० न०] सगरमन्थः ।

साङ्गारिन् (वि०) [साङ्गार + इति] साङ्गार ध्वनि को करने वाला ।

सिः 1 चन्द्रमा की कला 2 सप्तर ।

सिलिक्म् (पु०) एक वृषिण का नाम ।

सौ (पु०) श्रापी ।

सू० 1 ध्रुव तारा 2 समूह 3 अक्षय देव ।

सौ कर्ष का नाम ।

सौ, स्वयं ।

श्रीलिकम् (नपु०) 1 पान आदि रखने का बक्सा, पानदान

2 सोपान, बेला ।

स

सा (पु०) 1 गायक 2 'सरवर' का शब्द 3 सोड 4 शुक 5 पोष की सख्या ।

ट

टङ्कू [टङ्कू + चञ्, वा] 1 टकना टङ्कू/अथो टङ्कूने गुल्फे नामा० 2 (सगीत में) एक प्रकार का माप, 3 टकसाल । मम० वसिः टकसालाध्यक्ष, शाका टकमान ।

टङ्कूल (वि०) [टङ्क + क + क्त] बाया हुआ नाकृष्ट व च टङ्कूल - हनु० ।

टङ्कूलम् [टङ्कू क्त] टङ्कू टनटन ।

टोषर (पु०) छाटा बेला ।

ठ

ठक्कः (पु०) लोहावर, व्यापारी ।

ठिक्का (स्त्री०) जूआपर - कु० - सभापिध्याया किन्-वान् स्थानभागत वचा० १२(१०१) ।

ड

डम्परिन् (पु०) [डम्पर + इति] एक प्रकार का डाल ।

डम्बर [डम्भ + अन्] उम्बम्बर का बाण ।

डिका (स्त्री०) एक बहुत छोटा पम्पदाग कीड़ा (जैस कि पिम्पु) ।

डिम्ब [डिम्ब + वडा] 1 गुजायमान डिम्बर, कालाहम्-

मय बोटी - नै० २२/१३ 2 सगीर - कोष्ठा डिम्ब

डम्बपद् मि० १८/१३ 3 बुधपु, उर गत्र० ३१/०३२ ।

डिम्ब [डिम्ब + अष] पोष का अक्षर, अम्बवा नै० ८/० ।

डेरिका (स्त्री०) छयदर ।

ड

डक्कम् [डक्क - नपु०] डार बन्ध करगता ।

डक्कारी (स्त्री०) दुर्गा की मृत्ति की ताधिक पूजा ।

डोकिन् (वि०) [डोक् + क्त] निकट भाया हुआ ।

त

तक्षम् [तक्ष् + रक्ष्] छात्र, मनुष्य । मम०—कृषिकार
राजसी, उखाती हुई छात्र, विष्णु, छात्र (को बपते
में से छात्रने के परभाव) रहा अबधी, पपरी ।

तत् [तत् + अत्] 1 छलान, कपार, किनारा 2 खित्त ।
मम०—हुक: नदी किनारे का बड़ा पाल: किनारे
का छोड़ कर गिराना, भू. किनारे को घटती ।

तद्विनीयति: [व० त०] नदियों का स्वाधो, समुद्र ।

तच्छूरीष [तच्छू + श्] कीड़ा, कृमि, कीट ।

तत्प्रत्ययान्तः (पु०) मीमांसा शास्त्र का एक नियम
जिसके अनुसार किसी यज्ञ का नाम उसकी सम्बन्धित
के अनुसार रक्ता जाता है ।

तत्पत्न्यम् (नपु०) शरीर महा० १२।२६७।१ । मम०
अध्यास: वास्तविकता का बार बार अभ्ययन एव
तत्पत्न्यासात्—सा० का० ६४, अजिन् (वि०)
अननियत को जानने वाला, भाव प्रकृति, वास्त-
विक सत्ता, —संख्यात्मक साध्य सिद्धान्त का विशेषण
—भाग० ३।२४।१ ।

तत्प्रासादित्वम् (वि०) [तत्प्रा + दाद + इति] वैसा होने का
दावा करने वाला

तत् (सर्व० वि०) 1 किसी अनुपस्थित वस्तु या व्यक्ति
का उल्लेख करने वाला सर्वनाम । मम० अन्ध
(वि०) उसकी छोट कर कोई वृत्ता, अन्ध (वि०)
उसका सहाय करने वाला, —कालीन (वि०) उसी
काल से सम्बन्ध रखने वाला, —द्वेष (वि०) उसी
वेष से सम्बन्ध रखने वाला, अन्ध (वि०) उसी
वृत्त में भाग लेने वाला, अन्ध (वि०) उसी सम्कृत
से जन्म लेने वाला, प्राकृत का एक भेद—तत्प्रवर्त-
त्वयो देहीत्यनेक प्राकृतकम्—काम्य० १, कृप:
(वि०) उसी प्रकार के रूप वाला, तद्विषय, उसका
जाता, किसी विशेष क्षेत्र में प्राधान्यकता रखने वाला,
—सहायक (वि०) उस अर्थ के समान ।

तदावित्तव्यवस्थायाः (पु०) मीमांसा का एक नियम
जिसके अनुसार उत्कृष्ट को उक्ति में आश्रय से
नेकर वह सब विवरण सम्मिलित होता है जिसके
लिए वह दिया जाता है और भाष्य ही अपवादों को
उक्ति अन्त तक उस सभी विवरण पर लागू है
जिसके लिए वह दिया जाता है ।

तद्व्यवहाराय (पु०) ऊपर बताये गये 'तत्प्रत्ययान्तः'
के समान ।

तत्त्वम् (नपु०) सङ्गीत में आवाज को लम्बा करना,
सङ्गीत की गति धीमी करना ।

तन् (वि०) [तन् + जन्] 1 पलना, दुबला, कम
2 सुकुमार 3 बढ़िया, नाजूक 4 पाटा, छोट्टा,
स्वल्प,—(स्त्री०) 1 शरीर, व्यक्ति 2 प्रकृति

3 त्वचा, शाल । मम० उज्ज्वल रंग,—सदृशम्
(तनुकरणम्) पलना करना,—की जोड़े मन वाला ।

तनुकरणम् (नपु०) कलना, तार निकालना ।

तनुकाम्यम् (नपु०) जाना ।

तन्मन् [तन् + अन्] 1 सङ्घी 2 धारा 3 उत्तन सेधी
4 गन्ध, व्यवस्था, तत्कार भादि धार्मिक कार्यों का
नियमित आवेग 5 मन्त्र वात 6 प्रधान सिद्धान्त,
नियत 7 ऐसे कृत्यों का समूह जो अनेक प्रधान कार्यों
में प्रधान हैं—यत्नकृतम् बहुनानुष्करोति तत्तन्म-
मित्युच्यते—मै० म० ११।१।१ पर सा० भा०
2 विषय की व्यवस्था यत् प्रवर्तते तन्मन् महा०
१।४।१४,—अ विशेषण,—मुक्ति किसी एक
व्यक्ति का आश्रयन की० अ० १५ ।

तन्निष्ठाशक्तम् (नपु०) [व० त०] भारतीय बीजा ।

तन्निष्ठा (वि०) [तन् + इच्छ्] प्रशासनकार्य में कुशल
रख निष्ठा सेनापती राज प्रवर्धित—मूल्का
५।१६।१७ ।

तन्तुम् (तप + शतु) शीघ्र शतु—तत्तुम्नादिभिः शेषात्
अग—नै० १।११ ।

तन्तुम् (नपु०) [तन् + अन्तु] 1 रमी, आग, प्रकाश
2 पीटा, कष्ट 3 तपस्या 4 दण्ड । मम०—अर्थात्
(वि०) तपश्चरण के लिए अभिप्रेत—तपोधीय
शास्त्राणां धन गन्धम्—महा० ११।१०६।५, कृष्ण (वि०)
नपश्चरणा के कारण दुर्बल, मूल (वि०) तपस्या
से उत्पन्न,—बृह (वि०) कठोर तपस्या के फलस्वरूप
दृढ़ ।

तन्त (वि०) [तन् + क्त] 1 नम किया हुआ, जला
हुआ 2 पिछला हुआ 3 पीठित, कष्टग्रस्त 4 अन्व-
स्त । मम० कृष्ण,—कृष्ण एक मरक का नाम,

तन्त (वि०) बार बार उबाला हुआ, बार बार
गर्म किया हुआ,—मृदा किसी गर्म जालु की छाप
से शरीर पर किसी विषय सत्य के रूप में अधिकार
बिह्व अंकित करना, कृष्णम्, कृष्णम् दृढ़ की
हुई चारी,—बालुका जाल के गर्म कण ।

तान्तिम् (वि०) [तान् + इति] पीडा पहुँचाने वाला
—कि० ०।४२ ।

तारङ्गनास्त्रम् (पु०) तनुद ।

तारङ्गवती नदी, दक्षिणा ।

तारत्कारणम् (वि०) [व० त०] चम्पल तथा सुवंल
प्रायेन्द्रियों वाला ।

तस्वीकरणम् (नपु०) [व० त०] वृक्ष की कोटर
या कोषार ।

तत्पुनिका] समगीपद ।

तत्पुनिका]

तुम्हा: [तुम् + अच्] दबाव ।
 तोष: [तुप् + षन्] दबाव—मात० ११३१ ।
 तुम्बित्त (वि०) [तुम्बि + इत् + च्] विषकी तोंड फूट
 गई है, मोटे पेट वाला ।
 तुम्बारम् (नपु०) तुम्बा ।
 तुम्बाम्बम् (नपु०) (कोणनापने का) पादपत्र ।
 तुम्बा [तुम् + अङ्] 1 घर की छत के नीचे की ओर
 डलवा लगा हुआ सहलीर 2. तराजू की डंडी । सम०
 अचिरोह्वम्बम् मिलता-जुलता, अम्बुचलम् मादुप्य,
 मादुप्य पर आधागिन अनुमान, चारम्बम् तराजू पर
 रखना अर्थात् तोलना ।
 तुम्ब (वि०) [तुम्बता-जुलता वत्] 1 उभरी प्रकार का,
 रेंगा ही, मिलता-जुलता 2 उपयुक्त 3 अमिश्र, बही
 -स्थम् (अ०) 1 एक माष 2. समान रूप से ।
 सम०—कडा (वि०) ममान, बराबर,—नक्षत्रादि
 (वि०) 1. अब रात और दिन दोनों ममान ही
 2 रात और दिन में कोई भेद न करने वाला,
 निष्प्रास्तुति (वि०) अपनी प्रशंसा या अपप्रशंसा
 दोनों की ओर से उदासीन, तुम्ब (वि०) समान
 रूप का, एक ही कीमत का, धौनि-उसी बंधा का,
 उमी कुल में उत्पन्न,—कम्ब (वि०) ममान जाय
 का, बराबर की उन्न का, लम्ब (वि०) समान
 मन्था का ।
 तुम्बस. (अ०) ममान भागों में, बराबर बराबर ।
 तुम्बि २० तुम्बी, (कविता में 'तुम्बी' को 'तुलमि' भी
 लिख देते हैं) ।
 तुव (तुदा० ११०) षोड षट्पादा, तग करना कष्ट देना,
 पीडा करना ।
 तुषी (स्त्री०) नील का पाषाण ।
 तुषकम् (नपु०) नीला घोषा ।
 तुषकीठी-गुलिका (स्त्री०) नकुवा, कानते समय जिस पर
 लपटा जाता है ।
 तुष्वीवम्ब (ष०) तुष रूप से दिया गया दण्ड—की०
 अ० ११३१ ।
 तुष, तषम् [ति + षच्] ऋषिदे के नीम मन्थों का
 मसूट ।
 तुषम् [तुष्ट + षन्, हलापरच्] 1 धाम 2 तिनका
 3 तिनकों की डनी (चढाई आदि) कोई बस्तु ।
 त्रम० तषथा तिनके की भांति तुषष्ठ समस्तता तुष
 मन्थना गुणगमिषा पनेव्—विक्रमांक० ६१२,
 पुलिका: मानवी यमकाय बरक० ४४४११,—तुष्व
 (वि०) बात खाने वाला, तुष भरी, क्षामः तुषारी
 का वेध, बद्धः एक प्रकार की बिर ।
 तुषता [तुष + तच्] 1 तिनके का तुष, विक्रमापन
 2 वस्तु - वि० १११११ ।

तुष्ण (वि०) (वेध०) [तुष् + षत्] कटा हुआ, फटा
 हुआ ।
 तुष्णता [तुष् + तच्] सन्धोष, तुष्टि ।
 तरपति: [व० त०] तरकी या नारों का बचीबक ।
 तरपितमया [व० त०] यमुना नदी ।
 तारकम् [तु + पिच् + षच्] तारा—शास्त्रार्थहृत्कारकम्
 --नाग० १३१३११ ।
 तेज् (नपु०) [तिच् + अस्तु] 1. शीघ्र 2. पूर्व । अय०
 तुष्ण प्रयातुष्ण, कान्ति का सञ्च ।
 तेजस (वि०) [तेजस् + अच्] राक्षस तुषों के तुष्ण,
 --वैकारिकनीचक्षय तामसतेजस्यै विधा—नाग०
 ३१५१३० ।
 तेजसम् (नपु०) 1. ज्ञानेन्द्रियों का समूह 2. वेतन तुष्टि ।
 तेजिषम् (नपु०) मन्त्रता, जादू, बकता ।
 तेज्योत्थल (वि०) [व० त०] शीघ्र जन्तुओं की तुष्टि से
 सम्बन्ध रखने वाला ।
 तैश्चम् [तिलम्प तत्सदृशस्य वा विकार अच्] 1 तैल
 2 कोदान । सम०—अम्बुका तैलचट्टा मागक कीडा,
 --विष्टम् बकी, चकः, बालिकः तैल पीने वाला
 कीडा, तैलचट्टा, +तुर (वि०) जो तैल से भरा हुआ
 हो अतैलपूरा सुरतप्रदीपा—कु० ११०१ ।
 तोटक (वि०) [तोट + कन्] क्षात्राण, -कः (पुं०)
 मकर का लिप्य, -कम् (षोटकम्) एक कल्प का
 नाम ।
 तीघम् [तु + यत् नि०] 1 घानी 2 पूर्वावाका मन्त्रग्रन्थ ।
 तम० अलि. जलवर्गी जाय, बाइवानक,—अम्बुलि
 दबो और पिगरी को मत्तुण करने के निमित्त अम्बुलि
 भर जल से तृपण करना ।
 तीरजम् [तुर + तुष्, आधारे ल्युट्] 1 डाटवार द्वार
 2 बाहरी दरवाजा 3 अस्थायी बन्धकृत द्वार
 4 तराजू को लटकाने के लिए एक बिकोनीय ढाका ।
 तीरज्यम् [तुष् + ष्यच्] तुष्ठा, नगच्छता ।
 तीरज्जक (वि०) [तुरज्ज + ठक्] बुद्धवार ।
 तीरज्जिक (वि०) [तुष्क + ठक्] तुर्फी भाति से
 सम्बद्ध ।
 त्यक्तविधि (वि०) [व० स०] नियमों का उल्लङ्घन
 करने वाला ।
 त्यक् (नर्व० वि०) (कर्त्त० ए० व० क्) (पु०)
 (वर०) अद्रुप्य सन्ध त्यक्त्वावत्—तै० उ० ।
 त्याजित (वि०) [त्यच् + पिच् + षत्] 1. पश्चित्त
 प्रयोष्यता त्याजितचार्यमाद्यम् कु० ७१४
 2 तिष्काति ।
 तयी (स्त्री०) [य + शीच्] 1. वेदवयी (ऋष्यवृत्ताय)
 2 तिष्ठा 3 विधाहित स्त्री (याता) विष्का पति
 और बन्धे जीवित हैं । अय० क्य (वि०) जो

तीनों (बेदों) से युक्त एकक है, विद्य (वि०) को तीनों बेदों में निम्नात है, -वेद्य (वि०) को तीनों बेदों के द्वारा जाना जा सकता है -प्रतीवेद्य ह्य विपुत्रयाद्य विनयनम् मानन् २, -संवरणम् छिपाने वा मूष्य रक्षने की तीन बातें (स्वररूपोपन, पररक्षणोपन और मन्त्रोपन) अर्थात् अपनी दुर्बलता, मूष्य की दुर्बलता और अपनी नीति ।

वि (स० वि०) [वृ + वि] तीन । सम०—अठ् मूलम् तीन मूल्य चौदाई की मात्र, आर्षेया (ब० व०) 1. तीन पुष्प बहारा, गुप्ता और अवा 2. तीन अक्षियों से युक्त प्रवर, ऋद् (ऋद्मन्) सोठ दीपर और विवेक का सपाहार -हरणम् यत्, वचन और कर्म से युक्त कार्यकलाप, करणी और से तिमना लवा किंवा बर्ग का पापन, -कारणम् अवार कोय नामक वन्य, युवाङ्गत्वात् तीन बार हल से कृष्ट, जिसमें तीन बार हल चल चुका है, ज्ञातम् तीन मलाको (आयफल, इलायची, दारचीनी) का मिश्रण, -वेदि (वि०) जिसमें तीन पुष्टियाँ लगी हों मान० ३।८।२०, -वेद्यकम् नाग्यल, -विदकम् बीदों के तीन धार्मिक पुस्तकों के समूह, -भङ्गम् धारी की ऐसी मूढा जिसमें तीन झुकाव हो, -बह विमुना बहकार, -बलम्, मल मूष और कक तीनों मल, -अव (वि०) ताल में तीन की के बराबर,

कोहकम् सोना, चाँदी और ताँबा तीन धातुएँ, बनी (स्त्री०) (किसी महिला) के पैर की तीन बलियाँ, बनी मुद्रा, कृति यज्ञ, अँदर और अध्ययन के द्वारा जीविका, -सर्कार तीन प्रकार की सरकार, -सखम् (सखणम्) वैशालिक यज्ञ, सर मिला कर उबाने हुए, रूप, तिल और चावल साधन (वि०) तीन प्रकार के साधन जिसे प्राप्त है, साम् (वि०) ऊँह, गृह्य और प्रकृति नाम के तीनों सामों को माने वाला, सुपर्ण, सुपर्णव तीन ऋचाएँ ऋक्० १०।११।३-५ ।

विककम् (नपु०) विकला, विकट और विमद का समिश्रण ।

त्रैराक्षिक (वि०) [त्रिगणि + ठक्] तीन राशियों से सम्बन्ध रखने वाला ।

त्रैवेदिक (वि०) [त्रिवेद + ठक्] तीनों बेदों से सम्बन्ध रखने वाला ।

त्वञ् (स्त्री० पर०) 1 जाना 2 निकुटना ।

त्वस्ता [त्वर + तल्] वीक्षण ।

त्वम् (अ०) [त्वर् + अच्] जल्दी में, वीक्षणपूर्वक ।

त्वष्टि [त्वष्ट् + क्तिन्] बरहस्पति ।

त्वष्टु (वि०) [त्वष्टु + अच्] त्वष्टा से सम्बन्ध रखने वाला ।

त्वष्टुः [त्वष्ट + ङीप्] 'विष्ठा' नक्षत्र पत्र ।

ख

बुद् (तुदा० पर०) 1 इकना, परा इकना 2 छिपाना, मूष्य रखना ।

बोहकम् [बृह + ह्यट्] 1 इकना 2 लपेटना ।

ख

दक्षिण (वि०) [दक्ष + क्त] किसी विषय में दक्ष -दक्षिणी भव कर्मणि महा० १।२।२।१ ।

दंजु (बुदा० बा०) 1 एक मात्रा 2 देकना ।

दम् (स्त्री० प्रेर०) 1 प्रसन्न करना 2 समाप्त बनाना -दक्षान्दिजनमानपुत्र-वि० १।५।३५ ।

दक्षता [दक्ष + अच्, भावे तल्] कुशलता, नैपुण्य ।

दक्षिण (वि०) [दक्ष + ङनच्] अग्रकूल ।

दक्षिणाम्नायः (पुं०) दक्षिणार्ध में सम्बन्ध रखने वाली तांत्रिक संस्थाप की कुलीन पीढ़ ।

दक्षिण (अ०) [दक्षिण + टाप्] 1. दक्षिण की ओर,

दाईं ओर 2 दक्षिणदेश में, -वा (स्त्री०) (यज्ञादि धार्मिक कृत्यों की समाप्ति पर) शाश्वतवर्ष को दी जाने वाली मेट । सम० दक्षिण (वि०) दक्षिणार्ध में सम्बन्ध रखने वाला, -प्रतीची दक्षिण-पश्चिम, प्रत्यम् (वि०) दक्षिण-पश्चिमी, कृतिः (पुं०) पाप का एक रूप ।

दण्डः [दण्ड + अच्] 1 डंडा, लाठी, मुद्गर, पटा 2 हाथी की सूँठ 3 छलरी की मूठ 4 जुरमाना 5 इजल 6 राज्यलक्ष कौ० अ० १।५ 7. आचार्य पीठ - न्यायी दण्डन्य मूलेच्-भाष० ७।१।५।८ । सम०

आधातः उड़े की ओट,--अलम्ब एक प्रकार का आम्र, भूमि पर अल्पा उठ जाना, उल्लम्ब दक्षित करने की धमकी देना,--कलितम् आपने के राज की भाति बार-बार आवृत्ति करना श्री० सू० १०५। ८३ पर शा० भा०,--कलम् दण्डवत् करना, दण्ड देना श्री० सू० ४,--निधानम् क्षमा करना, निष्ठा छोड़ा सा दण्ड मन० ८।५१, बाहिक (वि०) बाह्यविक या शाब्दिक (प्रहार), बारित (वि०) दक्षिण होने के डर में कोई काम न करने वाला, दण्ड के डर में रुका हुआ।
 दण्ड् (वि०) डीठ, माहमी, मुन्ताज् मुन्दीका निनरन् दण्ड् मट्टि० ६।१३।
 दण्ड् (प०) यम का विधेयण।
 दण्ड् [दण् + तन्] १ दंड २ हाथी का दंड ३ बाण की नोक ४ पहाड़ की चोटी ५ बनीस की सफाया।
 दण्ड्--उपनिषद् दण्डो मे दणा हुआ अंगन का अर्थ, बनिखा कभी, बीज प्रहार, (दन्वीन भी) व्यापार हाथी के दंड का कार्य।
 दण्डमयाम् (वि०) [दण् + यञ् + शानच्] निर-धिर विनाशो में चक्कर काटना हुआ कठ० १।२।५।
 दण्डोष (प०) एक राजा का नाम, सिधुवाल का पिता।
 दण्डकः (प०) पञ्चतन्त्र की कथावियों में एक वीरक का नाम।
 दण्डधर्या (स्त्री०) [दण् + त०] घोषा, छल, कपट का आवरण।
 दण्ड् [द् + ञ्] १ चिबुर, कन्दग २ धनु, (स०) जरा सा कुछ। मम० दलित (वि०) जरा सा लूना हुआ, दुहा राष्ट्रीयका दर्दकितनोकीमन्हा-।
 --मौम्यं,--दण्डर (वि०) दौगन्ध, जरा बीमा।
 दण्डलपणम् [दण् + त०] घास काटने का यन्त्र।
 दण्डिकः (स्त्री०) आँसू का अवन।
 दण्ड् [दण् + षि-] दण्ड। मम० क्षीर (वि०) त्रिगमे दण्ड भाग हुए हैं, अन्वे-दण्ड, विगिति बोद्धवम् दण्ड बोद्ध की दूरी।
 दणा (स्त्री०) [दण्-+आह, नि० टाप्] : किसी करके की किलारी, मोट, धवली २ लैग की ढनी ३ आय ४ बकस्या ५ हालत ६ बहो की स्थिति।
 मम० अक्षर-नामः दणा समय-ग० ३।३२।८.
 दण्डम् जन्म पत्नी में निर्दिष्ट किसी विशेष समय का दण्ड।
 दण्ड् (वि०) [दह् + षत्] १ जला हुआ २ शोकघस्त, दुःखी ३ अवगम ४ सूखा। मम०--अधरम् जना पेट, जना पेट, बरीबी मे मारा हुआ,--अन्व-जन् जाने से होने वाला चाव।

दण्ड (वि०) [दा + षत्] दिया हुआ। मम०--दण्ड (वि०) जिसने कोई अवसर दिया गया है,--दुष्टि (वि०) जिसने ध्यान लगाया हुआ है, जो देख रहा है।
 दण्डकर्मिका (स्त्री०) धर्मदानम् वा एक धन्य।
 दण्डतिः (प०) स्वाभिव का परिवर्तन--अण् दण्डति किल्लक्षणक इति-श्री० सू० ४।२।८ पर शा० भा०।
 दण्डकम् (दहन + अहम्) (नपुं०) क्रमिका नक्षत्रपत्र।
 दण्डम् [दा + ष्ट] १ देना २ नींदना ३ उपहार ४ दान ५ हाथी के गडधण्ड में बटने वाला रस।
 मम० परिमिता उदारता, दानशीलता की बीमा, बर्षिन् (वि०) मदोद्यन हाथी।
 देय (वि०) [दा + यत्] सम्पन्न करने योग्य (गार्भ) पन्था देयो बरस्य मम० २।१३८।
 दण्डिकन्धा (स्त्री०) बाह्यीक देय में स्थित एक स्थान का नाम।
 दण्डिकीकः (प०) [दण् + त०] अवार का बीज।
 दण्डी (स्त्री०) माता।
 दण्ड [दा + षत्] १ उपहार २ वैवाहिक उपहार ३ भाग ४ बौनी, बरासत ५ सम्बन्धी, रिपतेदार।
 मम० विधान् संपत्ति का बटवारा।
 दारदण्डिकम् [दण् + त०] विवाह।
 दण्डकल्याणम् (प०) मोह।
 दण्डारः (प०) लकड़गाण।
 दण्डम् [द् + ञ् + उण्] १ कुरता, शीषमता २ कंडार, प्रतिकूल मलय मूष, पुष्प, ज्येष्ठा और मूल।
 दारोदर (वि०) गुण मे सबद्ध, नूना विषयक।
 दण्डिका (स्त्री०) एक प्रकार का बीमो का अवन।
 दण्डी (स्त्री०) [दण् + ञ्] १ दण्डहस्ती २ हस्ती का पीपा।
 दण्डं (वि०) [बी स्त्री०] [दण्ड् + ञ्] १ पध-रीक्षा २ जो पन्धर पर पीसा जाय।
 दण्डान्त (वि०) [दण्डान्त + ञ्] दाण्डिक की उहायता में ध्यास्या किया गया, उदाहरण देकर समझाया गया।
 दण्डाधिक (वि०) [दण्डान्त + ञ्] जो जमा देकर किसी बात की समझता है।
 दण्डकः (प०) एक प्रकार का विष।
 दण्डकः (प०) एक वेदाकरण का नाम।
 दण्डरथ (वि०) [दण्डरथ + ञ्] १ यत्र मे सम्बन्ध रखने वाला -महा० १२।६।३७ पर टीका।
 दण्डरथ (वि०) [दण्डगजन् + ञ्] दण्ड राजाजी से सम्बन्ध रखने वाला।
 दण्डवीकः (प०) [दण्ड गृह्यार्थं विद्यते दण्डपत्ति ईशुदा-

चिन्मयता क्षम्य तज्ज् [उष्ण बर्ष की स्त्री में सुख
 पिता के द्वारा उत्पन्न पुत्र ।
 विष्णुत्वम् (नपु०) [५० त०] तिर्य का कार्यक्रम ।
 विष्णुत्वम् (नपु०) [दिनस्पृह - विष्णु] चान्द्रविद्यत की
 मन्त्राह के तीन दिनों के साथ मेल खाता है ।
 विष्णुत्वानाम् (नपु०) सभ्याकाल ।
 विष्णुत्वो (तना० उभ०) रात की दिन में परिणत करना
 निशा दिवसीकृता पृच्छ० ४१३ ।
 विष्णुत्वानम् (अ०) [६० स०] दिन रात ।
 विष्णुत्वानाम् (नपु०) बौद्धधर्म का एक धर्म ।
 विष्णुत्वो (स्त्री०) गंगा नदी ।
 विष्णुत्वानम् [दिव् + अक्षयानम्] अलम्बित ।
 विष्णुत्वम् [दिव् + अम्] दिशा की भांति होना ।
 विष्णुत्वानम् [दिवा - भास्वम्] विद्याधूल, पाणियों की विन्दी
 जिनसे दिना में विशेष दिशाओं में जाने का प्रति
 पत्तर योग ।
 विष्णुत्वो (स्त्री०) [दिव्] क्त] 1 सकृत्पित, दवाया हुआ
 कृत्वि, उल्लिखित 3 निश्चित, नियत, स्थ
 (५०) समय, - अक्ष् (नपु०) 1 नियत 2 भाग्य ।
 वना० कृत्वि, मृत्प, दृश् न्यायकारी परमात्मा
 वक्ष् तृपानि विष्टदृक् भाग० ५२११२० ।
 वक्ष् (पु०) परमात्मा, - वक्ष् (वि०) जो अपने
 कर्मों का फल भोगता है ।
 विष्णुत्वो (स्त्री०) [५० त०] बघाई, अजिनयन
 नामधाय ।
 वेदान्ता (स्त्री०) [दिव्, वृत् टाप्] तिरिदा अ-वायव्य
 वैश्वीय देवानाम् प्राजा परमं ज्ञानमोक्षमेव मी० म्-
 १०१११ पर मी० ५१० ।
 वेदान्ता (स्त्री०), दान् नल, दुष्मन्ता बलवीरना ।
 वीक्ष् (भा० श्रेय० अ०) श्रित्त करना, प्रोत्साहित
 करना कन्दकारादिशोहनश्रम मी० १११०० ।
 वेदशोभोर्ध्व (नपु०) वेद नमस्कार में पुत्र अनन्तमे पत्र ।
 वेदशोधम् (पु०) नमस्कार ।
 वेदशापम् (पु०) १-५०] पत्र की स्थापना ।
 वेप [दाप्] पत्र ५१ नैप, दापक । मम०
 अक्षुब्ध रूप की जो दीबे की ली, - उल्लिख्यम्
 उबि की ग्राही ब्रह्म दीकट, वेपक रखने की
 लीप ।
 वेप (वि०) [दीप - क्त] 1 तका हुआ, प्रकाशित, मुस-
 गाया हुआ 2 उत्तेजित, प्रदीप्त 3 उत्पन्न - क्तः
 (पु०) 1 मित्र 2 नीच का वेद, - पक्ष् (नपु०) मोना ।
 मम० आक्षय्य लीप, निर्णयः निश्चय एव वास्तविक
 परिणाम, निर्णय (वि०) जिसने अपना पक्का
 निर्णय कर लिया है ।
 वीष्यत्वम् [वीष् + पत् + क्त] 1 मोर की शिखा

2 'वीषक' नाम का एक जलकार, उसी का दूधरा
 नाम ।
 वीष्य (वि०) [वृ + पञ्च, वा०] 1 अम्बा, दूरगामी
 2 देर तक रहने वाला, टिकाऊ 3, महारा 4 अंधा ।
 मम० अषाङ्ग (वि०) बड़े कटाशों से युक्त (दुग्ध)
 - अष्येति (वि०) मित्राह करने वाला, मधेन, माध-
 यान, - अषुत्कः वीषयित, - तमस् (पु०) एक वृषि
 का नाम, वृषेति (वि०) जो देर तक देर विरोध
 रखता है, पक्ष् 1 यथा 2 एक प्रकार का
 महानुत - पृच्छः लीप, वाहु (वि०) लम्बी भुजावा
 वाला, वाष्पका, पंडितान् प्रगमरभ्य ।
 दुष्मन् [दुष् + मन्] 1 अग्रतन्ना कष्ट, पीडा 2 कठि-
 नाई, अनुविधा । मम० अक्षुब्ध विपत्ति, मकट,
 वीषिन् (वि०) कष्ट में जीवन व्यतीत करने
 वाला, - अक्ष् मीन प्रकार का दुष्म आधिभौतिक
 आधिदैविक, और आध्यात्मिक, दुष्मन् (अ०)
 बड़ी कठिनार्थ के साथ, - दुष्मिन् (वि०) 1 जिसे
 दुष्म पर दुष्म उठाने पड़ 2 जो दूसरों के दुष्म
 में दुष्मो हा, लक्ष् (वि०) जो कठिनार्थ में कटा
 या मके ।
 दुष्कृत (वि०) [दुष् + कृ + क्त - क्त] आत्म दक्षिण,
 परेशान मी० १०११३८ ।
 दुष्कृतम् (पु०) ग्रेपी पट्टा या निर की पट्टी ।
 दुष्कृति (पु० स्त्री) [दुष् + कृत् + इ + ५] 1 एक
 प्रकार का बड़ा हाक 2 अक्षु 3 कृष्ण 4 एक
 प्रकार का विष्णु पत्रम् ५ व ५० ५१ ।
 दुर् (अ०) [दुम् का प्रथम बाधा उत्पन्न] १-५५]
 पर उत्पन्न बना फटार या कठिन के नय का
 प्रकट बनने के लिए नाम पद तथा शिखा का क पुत्र
 जाडा माना है । मम० अक्षय्य क्षमता सुख
 पक्ष् अक्षय्य विगुणवत्क, उपायापद, अक्षय,
 (वि०) जिसका गुण अपना कठिन है, अक्षय,
 (वि०) मोक्षार्थिन, अक्षय, हो माना न ५१५ ।
 आक्षय्य (वि०) नियत, धनहीन, प्राधि (पु०),
 1 कष्ट, मार्गसक भिन्ना 2 क्षय, आयुर् (वि०)
 जिसका भरता कठिन हो, जिसकी मनुष्य न किया
 जा मके, आक्षय्यः दुर्धन्य, महाद, - आक्षय्य (वि०)
 जिसे विषयाम न विनाया जा मके जा जिसो प्रकार
 अपने मतानकल न दिया जा मके, आक्षय्य (वि०)
 1 जिसे प्राण्य करना कठिन हो 2 अक्षय, जिसका
 आक्षय्य न किया जा मके 3 जिसका महान करना
 कठिन हो, - अक्षय्य (वि०) या आत्मीय में प्रकट
 न हो मके, उर्ध्व (वि०) जिसका वग परिणाम
 हो, जिसका हाई फल न निकले, उर्ध्वविन् (वि०)
 जो अभाववातना पुत्रक पहुँच रहा है, जो भाववाती

दक्षीणीक्यामिन् (वि०) [दक्षीणीयमान + इति] जो अपने गीर्णवर्ग का अधिमान करता है, पयसी ।

दिव्युक्ता (स्त्री०) [दिव् + क्तृ + टाप्] देवने की उक्ता ।

दिव्युक्त (वि०) [दिव् + क्तृ + उ] जो देवने का उक्ताक है ।

द्वि (स्त्री०) [दिव् + क्तृ + इत्] 1. द्विष्ट 2 आक्ष । सम० अक्षयल, (द्विगुण्यल) कदाक्ष, कनधी, —अक्षय (द्विगुण्यम्) पलक, —निबोलेयम् (द्विगुण्यमीलनम्) जीव विचोर्न, बन्धो का एक बन्ध, अक्षादा (द्वि-प्रसादा) एक नीला पथर जो अत्रन को भाति प्रयुक्त किया जाता है, सचम दुष्टिमिलन, नक्षर मिलना ।

द्व्याम् (पु०) [दिव् + आम् + च्] सूत्रे ।

द्व्यम् [दिव् + क्तृ + इत्] 1 दने जाने वाग्य 2 मन्त्र 3 काव्य का एक बंद जो देवने के उपयुक्त है (विप० ध्वय) । मम०— इतर (वि०) जा दिवाई न दे, —स्थापित (वि०) आकर्षक रीति से रचना हुआ जिससे सभी उसका देख सके दृश्यस्थानितम् द्रुमं— निष्ठाभाष्टम्याजिनम्—कथा० २४।१० ।

द्व्यन्तर (वि०) [व० न०] जिसका बल वा सामर्थ्य प्रमाणित हुआ चका है—द्व्यन्तार्यथ दृक्कार्यके ११० ।

द्विष्ट (स्त्री०) [दिव् + क्तृ + इत्] 1 नक्षर, द्यवा 2 मान-निक रूप म द्यवा 3 जानना 4 आक्ष 5 मित्रान (दे० दमंत्र) । मम०—अक्षाः द्विष्ट की कृपा, द्योन का अनुवर्त—अक्षयल 1 आक्ष का पुनर्नी 2 द्विष्ट-धेय, राग आक्ष द्वारा प्रेषाभिधायि, —अक्षयल-ग्य कीर्तनीय्या द्विष्टग्य व० २।११-१२, —अक्षय गाम्भिर्य अक्षयकन—अक्षयि न निष्कविना अनदीद्विष्टयभेद महा० ३ ।

द्व्यन् (पु०) कवकी का अक्ष का पाठ ।

द्व्यन्तार्यम् [व० न०] नाहा द्व्यन्तार्यलक्षणात्तार्य-म० वी० ६।५२ ।

द्वेष (वि०) [दिव् + प्र + इत्] 1 दिव्य, स्वर्गीय 2 उज्ज्वल 3 पुत्रनीय, माननीय, व. (पु०) 1 देवता 2 वर्षा का देवता 3 दिव्य मनस्य, आच्छाण-इ० नृदेव 4 देव रति का भाई, क्व (नपु०) ज्ञानेन्द्रिय । मम०—अक्षयम् 1 देवो के प्रति उपहार 2 वेद-महा० १।३८।१।१० ५७ टीका, कुसुमम् इलायची, —आलय, आलक्ष्य 1 पहाड की कन्दरा 2 मरीचर 3 मन्त्र का निकटवर्ती आलाय, —आलक्षारी मरीचराम्य में एक रास का नाम, अक्षु मूत्र-वेदों की धंषी को उन्मार पैदा करती है, लक्ष्यम् जन् के उपहार से देवो की कृप्य करना, —देषव्य (वि०) जा देवताओ का अधिकार ही, उनके भाग्य से निष्ठा हो, —देषव्यम् देवो

का रक्ष, विमान, महात्म्य दक्षिणी दिशा में पहले चौदह नक्षरो को नाम,—निष्ठा नास्तिकता, निष्ठा-स्वम् देवताओ को उपहार देने में प्रयुक्त (फल, भागा आदि),—पुरीहितः 1 देवो का अयना पुरीहित 2 कुम्भपति धर,—प्रयुक्तः (वि०) प्रकृति म उत्पन्न (बल आदि), शेषः स्वर्गीय भाग, स्वर्गीय रूप, अक्षा दिव्य अत्र - ता देवतावाचिक बीरघोस्त्रिनीय भाग० १०, शारीः 1 वायु, अन्तरिक्ष 2 युवा देवतागे व दगितम रा० ५।१०, एता परी-लिन का विमेषण,—स्वयम् आच्छाण्य का चिह्न, यज्ञा पर्वत लक्ष्यम् दिव्य सचार्द,—नृः शार्पा कान-भाग० ४।२५।५१ ।

देषितव्य (वि०) [दिव् + तव्यत्] नृए में दीव ५४ लगाने योग्य ।

देषीपुराणम् (नपु०) एक उपपुराण का नाम ।

देषीनागतम् (नपु०) एक महापुराण का नाम ।

देषीभद्रात्म्यम् (नपु०) मार्कण्डेय पुराण का एक भाग जिसे सप्तशती कहते हैं ।

देष [दिव् + अच्] 1 स्थान 2 प्रदेश 3 अंश 4 पालन 5 विभाग 6 मन्वान 7 अण्वादेश । सम० अक्षयम किसी देश में अक्षय करना,—अक्षयक सामाजिक बर्गों देश की प्रशस्ति में वाच्य अक्षय (वि०) जा व्यक्ति कार्य करने के लो स्थान और समय का जानना है, चिह्न (वि०) ठीक तरह से बिना दृष्टा (शोभी) दक्षक की साधक स्थिति क आचार पर बना गाल योग्य ।

देषक [दिव् + अच्] गकनक, आयक, अनुबोधक । सम० पदम् (नपु०) लक्षक, लक्ष्मी ।

देषिककृपापि (स्त्री०) अक्षयिका के रूप में देवो, लालिन का विशेषण ।

देष्य (वि०) [दिव् + तव्यत्] दमित वा सकलित किं जाने के भाव्य ।

देषु-सुम् [दिव् + अच्] 1. काया, शरीर 2. आक्ष 3 रूप । सम० आलक्ष्य सूत्र, —कुम् 1. पौष लम्ब 2 पिता अक्षयग्य देहकुम् भाग० १।३।१० —लम्ब (वि०) शरी शरी, मुर्तेक्षण शायम करन वाला, पालः मृत्यु—मेघ मृत्यु, शायमय शरीर का पालन पोषण करना, चित्तकेयम् मृत्यु—कुम्भः शक्ति,—साए मन्त्रा ।

देषिका (स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा ।

देष (वि०) [दीक्षा + अच्] 'अधीपाद' यज्ञ की दीक्षा देने वाला ।

देष (वि०) [दीप + अच्] दीपक में लक्ष्यम् लम्ब शाला ।

देष (वि०) [देव + अच्] 1 देवताओ के सम्बन्ध रखने

बाला 2 दिव्य, स्वर्गीय 3 भाग्य पर निर्भर। सम०
—इक्ष्व (वि०) बृहस्पति के लिए पुनीत, उच्चा
देव विवाह की रीति के अनुसार विवाहित स्त्री,
छिन्ता भाग्यवाद,—रक्षित (वि०) अन्तर्गत,
नेत्रिक,—रक्षित (वि०) देवों से जितकी रक्षा की
गई है—अरक्षित निष्पत्ति देवराजित—मुद्राप०, शिब्
(पु०) ख्योनिगी, हल (वि०) जिससे देव धृणा
करते हैं, भाग्य का भाग।

देवतस्वित् (स्त्री०) गंगा नदी।

द्वैतिक (वि०) [द्विस + ठक्] एक दिन में दो
घटित हो।

द्वैतार्कर (पु०) 1 दिन यह 2 यम 3 यमुना नदी।

द्वैतिक (वि०) [द्वैत + ठक्] एक के द्वारा गिना
प्रातः।

दोषकम् (नपु०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक परम
में तीन अक्षर और एक गुरु का मिला कर दस
वर्ण ही।

दोषाकर्माक्षतवृत्ति (वि०) जिसका मन द्विबाले की
भानि इत्तर उचर झूल रहा है।

दोषाकर्माक्षतम् (नपु०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा
कुछ ओपयियाँ तैयार की जाती हैं।

दोषात्मले (वि०) अर्निम्बल।

दोस (पु०, नपु०) [दम्पतेऽनेन दम दासिम् अर्थर्वा०]
—दोषण शब्द का विकल्प में द्विभवा विभक्ति के
द्विचन के परमाणु 'दास' आदेश हो जाता है।
1 जूडा 2 किसी वर्ग या निकाय की भुजा 3 अद्यत
देव की माय मान० १०१२०।

दोहबहु लक्षोत्तना (स्त्री०) गर्भवत्या का बाधा—उपेत्य
या दाहदु भगालनाम्—रघु० ३।६।

दोहधरी (स्त्री०) बृहस्पति और शुक धर का चन्द्रमा के
साथ सहाय—आतका के लिए अत्यन्त मङ्गलमय-
समझा जाता है।

दोमन (वि०) [दुर्जन + अण्] दुष्ट पुरुष से सम्बन्ध।

दोमिष्ठम् (नपु०) [दमिष्ठ + अण्] अकाल पड़ना
दुःख होना।

दोषोत्पत् (नपु०) [दुष् + उत्पत्] आजा न मानना।

दोषध्वम् (नपु०) [दुष् + ध्वञ्] दुःख दमिष्ण।

दोहद्विकः [दाहद ठक्] प्राकृतिक दुष्पों का माली
ने० ६।६१।

दुष्य [व० त०] हवाई मार्ग।

दुरलम् (नपु०) सूर्य।

दुर्लम्ब्य (पु०) इन्द्र का घोडा, उर्चर्ष्य था।

दुत-सम् [दिव् + वृत्, ऊह अर्थर्वा०] 1 जूडा खेलना,
पामा से खेलना 2 युद्ध, सशाम 3 जीता हुआ
पारितोषिक। सम० अर्थ. जूडा खेलने के नियम,

—सम्बन्धम् बुधाचर, लेखक जो सूर्य के खेल के
प्राप्तांक लिखता है।

दुोकार (पु०) स्वर्ण, वास्तुकार, लौघडिली।

दुङ्ग,—जून नगर, पुरी राज०।

द्वत् (वि०) [द्वु + क्तु] 1 दोहा हुआ, बहता हुआ
2 बुना हुआ, टपकता हुआ, बूद बूद गिरता हुआ।

द्विः (पु०) (वेद०) ब्राह्मणों को गलाने वाला।

द्विब्रह्मिणुः (पु०) द्विब्र देश का पुत्र, संवत्स्रदाय का
एक सन्त—दवावत्या दत्त द्विब्रह्मिणुरात्वाद्य तत्र
यत्—सौन्दर्य०।

द्विचोषः (पु०) अग्नि, आय।

द्विचोषेयः [व० त०] बन की प्राप्ति।

द्विष्यम् [द्वु + यत्] शत्रुद का मनन जो काम के रूप में
प्रयत्न किया जाता है—द्विष्यशब्दस्तु छन्दोर्षे क्तु
आचरिन्—मै स० ७।२।१४ पर शा० मा०। मम०

द्विषिः धर्म कार्य के लिए प्रयत्न पदार्थ की
परिचिता।

द्विष्टकाम (वि०) वर्धनामिलायी, देवने का इच्छुक
(पाणिनि के अनुसार 'काम और मनस्' के पूर्व 'नुम्'
के 'म्' का लोप हो जाता है)।

द्विष्टकाम् (वि०) दे० 'द्विष्टकाम'।

द्विष्केन्द्रम् (नपु०) अपने अधिकतम वेग के बिन्दु से वह
की दूरी।

द्विष्ठापाक (पु०) काष्ठोष्णी का एक प्रकार जिसमें रचना
सन्न और मधुर हो (विष्० नारिकेलपाक)।

द्विष्ठासक अमुरों की सगव ओ पुष्टिर्धक के रूप में प्रयुक्त
होती है।

द्विषिष्ठ (वि०) [दीर्घ + इष्टन्] सबसे लम्बा, अत्यन्त
लम्बा—ऋ० (पु०) रीछ।

द्विष्ठापक सामवेदियों के सम्प्रदाय के निम्न किन्तिन
धीतमून के कर्ता का नाम।

द्विष्य (वि०) लम्बे पैर वाला।

द्वितानि (वि०) [व० स०] द्वुत गति से जाने वाला।

द्वितध्या दे० दुर्गलिम्बित।

द्विः [द्वु मासात्मयस्य, य] 1. वृक्ष 2 कल्पवृक्ष 3 कुबेर
का विशेषण। सम०—अक्षय्य कालिकार वत्, कालिकार
का पोषा,—अक्षय्य,—अक्षय्यः वृक्षों की वाटिका, कुञ्ज,
—निर्वाहः वृक्ष का रस, लोहान, वासिष् (पु०)
द्वर।

द्विष्ठापः (पु) राधि की अवधि का तीसरा भाग।

द्विष्ठापः (पु) राधि की अवधि का तीसरा भाग।

द्विष्ठापम् (नपु०) [द्वु + अण्, क्तु] समुद्र के किनारे का
नगर जिसमें किनाबन्दी की गई हो।

द्विष्ठाप्य (वि०) आदिष्ठ्य उत्तार करने में उधार।

द्विष्ठाप्यम् (नपु०) एक प्रकार का नमक।

श्रीहिक (वि०) [श्रीहृ+ठक्] सर्वत्र वृत्ता का पाठ ।
 इन्द्रम् [श्री ही सहानिम्बकतो-द्विचन्द्रस्य द्वित्वं पूर्वपदस्य सम्भाव, उत्तरपदस्य नपुंसकत्व-नि०] एक भोज, एकान्त स्थान, - इन्द्रे होतुम् कन्तव्यम् रा० ७।
 १०१११, -आत्मन्: दो व्यक्तियों के मध्य बातलाप,
 -वर्ध (वि०) बहुवीहि सनात बिलके मध्य इन्द्र निहित हो, - इन्द्रम् हर्ष और शोक आदि की परस्पर विरोधी भावनाओं से उत्पन्न हुआ ।
 इर्धनं (वि०) [इर्ध्+थ] दरवाजे पर लगा हुआ ।
 इारम् [इ+णिच्+अच्] १ दरवाजा २ प्रवेश द्वार ३ दरवाजे के नीचे द्वार । सम०-बाहु: (पु०) चौकट, -अरि: किबाड का पट या पल्ला, क्सा सरल ।
 द्वि (स वि०) [द्वि+दि] दो । सम०-बाहु: (पु०) दो बटको द्वारा अनारित, अक्षर (वि०) स्थानातिवृत्त हो, -अत्मन्त (वि०) दो बार बचित, -आहिक (वि०) हर तीसरे दिन होने वाला (बुद्धार) -एकान्तरम् एक मंत्र या दो अक्ष से विमुक्त इपे-कान्तरानु बोलना कर्म विद्यादिन विधिम्-मनु० १०१७, -कर (वि०) दो प्रयोजन पूरा करने वाला, -कार्यान्विक (वि०) दो कार्यापन के मूल्य का, -अक्षरी: बोल में अक्षरी के कारण दो अक्षरहीन

की भ्रान्ति, -अ: बद्धाचारी, आति जिसके दो पत्नियाँ हैं, आत्मन्त: १ दो ओर बैठे बाल २ जिसने अपने बालों को कभी करके दो भागों में बाँट दिया है, बाहु, मनुष्य कथा० ५११५, -आत्मन् सध्या सत्य, -मुनि (अ०) दो मुनि - पाणिनि और कात्यायन, अक्षर दो मूँह वाला सत्य, अर्ध: प्रकृति और पुरुष का अंश, अ्याम (वि०) बारह फूट लम्बा (अ्याम ६ फूट) - अम्, (-अ) (वि०) दो अर्थ प्रकट करने वाला -अवनि व द्विष्टानि आख्यानि मी० सू० ४१२, ४ पर शा० मा० ।
 द्विक (वि०) [द्वि+क] १ दोहरा, दो तरह का २ दूसरा ३ दूसरी बार बचित होने वाला, -क १ कोला २ अक्षरक पक्षी । सम०-पृष्ठ दो कुंभ वाला ऊँट ।
 द्वितीयमानिन् (वि०) जो दूसरे पराशं पर बतला है द्वितीयमायी न हि शब्द एव न न्यु० ३।४९ ।
 द्वेषम् (वि०) घृणा करने वाला ।
 द्वीप्यालिन् (वि०) टापू पर रहने वाला, व ली (पु०) अञ्जरीट पक्षी ।
 द्वीपिकरचम् (नपु०) दो माग करना ।
 द्वैकाल्यम् (वि०) सहासकालता, एककाल्य) दो दिन तक अनुष्ठान चलते रहने की विशेषता ।

द्विचि (अ०) एक अक्ष में, अकस्यात् ।
 द्यम् [द्यु+अच्] १ सभ्यता, शीलत, कोष, रुपया पैसा २ कोई भी मूल्यवान् सामान, श्रियतम कोष ३ कृत्-मार का धन ४ पारितोषिक ५ द्विचिष्ठा नक्षत्र ६ जना का चिह्न (विप० न्यु) । सम०-अवाम्बन् वन बहान करना, -आत्ता (स्त्री०) वन की इच्छा -आत्मन् रुपया पैसा तथा अनाज, -सु: (पु०) द्विचिष्ठी वृक्ष बाका किरीटा नामक पक्षी, सु: (स्त्री०) बहु माता विचके कम्पार्दे ही हों ।
 द्यिन् (वि०) [द्य+इनि] ईश्वर आति -ऊबजा बनिने राजन्-महा० १२।२९१।९ ।
 द्युरात्मन् (नपु०) द्यौरात्मन् में द्यित एक कायिक मूढ़ ।
 द्युर्द्विन् (नपु०) एक माप, २७ अंगुल की माप, एक हस्तपरिमाण की माप ।
 द्युवन् [द्यु+व्+इट्] १ द्युप २ इन्द्रवन् ३ द्यु राधि ।
 द्युवन्तम् (ना० वा०) द्युवन्ताना, निगल बीता ।
 द्यु: [द्यु+अच्] सव्यार । सम०-रन् (नपु०) विप, बहुर ।

द्वरपीतवन् [व०+अच्] बरती की सतह ।
 द्वरपीथिदीक: (पु०) [व०+त०] राजा ।
 द्यरा [द्यु+अच्+टाप्] पृथ्वी, बरती । सम० उच्यन् (पु०) पृथ्वीगत, बरती की सतह ।
 द्वरपीथिन् (पु०) [द्वरिपी+थु+विभच्] राजा ।
 द्यर्ष [द्य+रन्] १ किसी आति के परम्परागत अनुष्ठान, २ विधि, व्यवहार, प्रथा ३ नैतिक गुण ४ लज, सत्ताई ५ बार पुत्रवाची में से एक ६ कर्मव्य ७ न्याय । सम०-अक्षरन् पवित्र मंत्र, आत्मन् का नियम, अन्वेष: धर्मानुष्ठान का बहाना धर्मोपदेशान् त्यज्जतश्च राज्यम् रा० ५।३८, अन्वन् विधि का कर्म, अहम् (नपु०) कर्म जो बीत चुका, आत्-त्मन् रामायण की एक टीका का नाम, - ईजु (वि०) धर्मलाभ प्राप्त करने का इच्छक, - उच्यथिन् (वि०) धर्मवृद्ध, धार्मिक, -अक्षर: धर्म का कपटपूर्ण उत्स-रूपन, -द्विचिष्ठा धर्मविज्ञता का गुणक, परिष्ठाव: धृष्ट में सदाचरण का उद्बोधन, -प्रतिष्ठाक-कपट-धर्म, ऊप धर्म, -अक्षरन् (वि०) पवित्राचरण में मुख्य, -अक्षर (वि०) धार्मिक, गुणी, बाहु (वि०) धर्म से पराङ्मुख, धर्म विरोधी, -द्विचि: आचरण की

पवित्रता, —समय: बीच दाखिल, —सुखम् जैदिविद्वान्
 पूर्वसोमाया पर लिया गया इत्यम् ।
 धर्मम् [धृ + स्वृट्] 1 साम्, धृत्वा 2 हरना, परा-
 जय धर्म वज न प्रत्या। रावणा राक्षसेवर-रा०
 ३३१३ ।
 धानु [धा + तुन्] 1 घटक, अवयव 2 तन्त्र, प्राथमिक
 शब्द 3 रग, अर्क । मय० मन्त्रे, —स्तुष, भ्रम्य रचने
 का पात्र, —धूर्त्तम् पिशा हुआ कनित्र परार्थ, —अस्यस्त
 (वि०) रमायन कायं मे मयम् ।
 धातुक, कम् गिलाडीन ।
 धातु (प०) [धा + तुच्] भाग्य, किस्मत ।
 धातुपुष्पिका (स्त्री०) एक वृक्ष का नाम ।
 धाम्यम् [धान + यन्] अनाज, अन्न । मय० अन्नः मन्दि-
 हान, —धीरः अन्न धराने वाला, वृष्टि मृत्ती पर
 अनाज ।
 धाम्यजिन् (वि०) [धाम्यन्, धान - इति, नलोप]
 भौतिक मत्ता मे विद्याम रचने वाला - वैद्विन् प्रमु-
 भूम् इन्द्रो धाम्यानिना भाग० ३११३८ ।
 धाम्यत् (वि०) [धाम + मन्] गन्तव्यार्थ, मज्जवत
 पुरस्सरा धाम्यना यथायथा कि० १।४३ ।
 धाम्या (स्त्री०) [सामिर्धनी कम् वा समिदाधाने पठ्यते]
 1 यज्ञानि की सुलगने समय गाया जाने वाला
 प्रार्थना मन्त्र 2 इत्यत्र कौशाम्नी निजतापिघटका-
 धारवागमृष्टीयिने-रग० २१६, नै० ११५६ ।
 धारणम् [धृ + णिच् + स्वृट्] पीडा की दान्त करने के
 लिए मन्त्र । मय० धारणम् एक प्रकार का ताबीज ।
 धारणा [धृ + णिच् + यञ् + टाप्] योग का एक अङ्ग ।
 मय० आत्मक (वि०) या अरने बापकी आत्माती
 मे स्मर्यचित या प्रदान कर लेता है ।
 धारण्यम् [धृ + णिच् + इण् + तल्] सहजवक्ति,
 महिष्युता ।
 धारा (स्त्री०) मालवा देश की एक नगरी ।
 धारा [धृ + णिच् + मञ् + टाप्] पानी की धार,
 गिरत हुए किसी तरल पदार्थ । पवित्र 2 बीजा
 3 लगातार पवित्र 4 बड़े मे छिद्र 5 किसी रन्तु का
 किनारा । मय० —आर्त्तं भद्र, फिरकी, —इन्द्र
 राजा भोज, संघत लगातार बांधार, —भीत (वि०)
 धारोण्यं वृष ठडा किया हुआ ।
 धारिक [धर्म + ठक्] 1 न्यायकर्ता 2 धर्माप, कट्टर-
 पन्थी 3 बाजीगर ।
 धारित् (प०) [धाम् + तुच्] पीठने वाला शीर्षधार
 धारितार तुम्, —महा० ११२६५ ।
 धित (वि०) [धा + क्त] 1 रक्का गया, अर्थन किया
 गया 2 सपुष्ट, प्रसन्न ।
 धिक्वात् [धिच् + वच् + क्त्वा] मस्तंतापुत्रं उचित, निम्ना ।

धिक्वित्त (वि०) [धिच् + स्वा + क्त, दे० निधान]
 1 सुस्तुति 2 धार्द में सुरचित - सान्नी बेहायन
 चापि तस्यूर म्युष्टाधिक्वित्त—महा० ३११५३ 3 ठहरा
 हुआ, निश्चित ।
 धी [धे] भाये विषय सप्रसारण च] 1 वृष्टि 2 मन,
 3 विचार 4 कल्पना 5 प्रार्थना 6 यज्ञ 7 (कम-
 कुहमी में) लन से पाँचवाँ घर । मय० - विप्रसः
 वृष्टिभ्रम ।
 धुम्बकम् (मप०) 1 लकड़ी में विद्येय प्रकार का
 दोष 2 वृक्ष के ठने में छिद्र जो उसके लय का
 चिह्न है ।
 धुम्बुरि, रो (स्त्री०) एक प्रकार का बाद्ययंत्र, सरीस-
 उपकरण ।
 धुम्बाहः (प०) बोसा डोने वाला जानवर ।
 धुम्बता [धुर बहति यत्, तस्य भाव, तल्] नेतृत्व ।
 धुम्बकः (प०) लोहात ।
 धुम्बकः जिसे तीनो धुम्बो को पार कर लिया है, जो अब
 भौतिक सुखों से परे पहुँच गया है, सन्नासी ।
 धुम् [धृ + भृच्] 1 मुगम्ब 2 मुगम्बुक्त शब्द वा धुम्बा ।
 मय० —नेम्बु धुम्बलिका, धुम्बे की नली, धितः
 एक प्रकार की सिमेटे ।
 धुम् [धृ + मृक्] 1 धुम्बा 2 वायु 3 कुहरा, धुम् । मय०
 उपहृत (वि०) धुम् के कारण अथा हुआ,
 —निम्बमम् धिम्नी जिम्मे से धुम्बा निकलता है,
 महिषी धुम्, कुहरा, —धीनिः बादल ।
 धुम्बरी (स्त्री०) धुम्, कुहरा ।
 धुम्ब [धृ + मृक् + क्त] 1 धुम् के रग का 2 धुम्
 —कः ऊँट ।
 धुम्बुरित्त (वि०) मिट्टी में लोटने से धुरा हुआ - धुम्बुरि-
 धुम्बुरित्तकामलकुण्डलाधम् कुण्ड० ।
 धृ (म्वा०, तुदा० वा०) हराडा करना, मन करना ।
 धृ [धृ + क्त] सकल्प किया हुआ, धृक्, —रिपुविग्रहे धृत्
 —रा० ४।२७।५७ । मय० - अलोक (वि०) धर्मधी,
 —एकवेदि (वि०) एक कोटी धारी—सि० ७।२१,
 —मर्ष (वि०) गमिषी, —मायस्य पम्के हराये वाला,
 धृमना ।
 धृतिः [धृ + क्त] 1. एक ऊन्द का नाम 2. मठारह की
 सख्या ।
 धृत्केशः (प०) वृष्टधुम्ब के धुम्, का नाम ।
 धृत्केशविन् (वि०) निर्भीक होकर डोलने वाला ।
 धृत् [धृ + क्त] 1 धार 2. धृक् देने
 वाली की 3 धृत्नी 4. धोकी र्थ० सू० ७।५।७ पर
 का० धा० ।
 धेनुका (स्त्री०) 1. हडिनी 2. दुवाक धार 3. उपहार
 4. अर्थ 5. पार्षती ।

श्वे (वि०) [श्वे + श्वत्] कार्य में परिशेष, प्रयोग्य,
- अथाकुल प्रकृतमूलरथेष कर्म वि० ५/१६० ।
श्वर्यम् [श्वर्यम् भाव - श्वर्य] 1 दृढता, सामर्थ्य, दिराऊ-
पन 2 स्वस्थवितता, प्रशान्ति 3 माहम । सम०
-कलित (वि०) धीर, अमृदु-व, क्षुत्ति- शीरज से
पूर्व आचरण ।
शौत (वि०) [श्वत् + क्त] 1 घोषा हुआ, प्रशान्ति
स्वच्छ किया हुआ 2 उज्वल किया हुआ, चमकाया
हुआ 3 उज्वल, चमकीला । सम० अपाङ्ग (वि०)
जिसकी कनधियाँ चमकीली हो, आशयन् (वि०)
पवित्र हृदय वाला ।
शौतेयम् [शौत ; इङ्] मंत्रध्व, पहाड़ी नमक लाहौरी
नमक ।
शौच्य (पु०) एक ऋषि का नाम ।
श्यानविष्य (वि०) श्यान का अभ्यास करने के योग्य ।
श्यानमूत्रा [प० त०] श्यान या चिन्तन करने की विशेष
स्थिति या मुद्रा ।
श्रुम् (वि०) [श्रु + क्] स्थिर, ज्वल, स्थायी, अनिर्वाय,
-शः (पु०) 1 शूरी नामा० 2 श्रुतिप का एक
योग 3 मूलकिन्टु 4 श्रुव तारा, - वम् (नपु०)
निश्चित दिया किन्टु वा (स्त्री०) श्रुप की बोरी ।

सम् - केतुः एक प्रकार की उम्का, दृढ हुआ साग,
- शक्ति निश्चित भाव - मण्डलम् ध्रुवीय क्षेत्र, - शक्ति,
ध्रुवों की पाग, शील (वि०) जियका आवास
निश्चित है ।
श्वस [श्वस् + श्वत्] 1 अथ पनन, हुबना 2 मूल होना,
आगत होना 3 नास, बिनास, लखहर । सम०
अभाव पदाय के बिनाग में उत्पन्न अभाव या
मनाङ्गिना - कारिन् (वि०) 1 नास करने वाला
2 उन्मत्तपन करने वाला ।
श्वस्ताज (वि०) [प० सम्] जिसकी आँखें दृव गई हो
(जैसी कि मृग्य के समय) प्रकीर्णकेण श्वस्ताजम्
भाव० ३/२/३० ।
श्वस्त [श्वत् + अन्] 1 श्वस्त का एक भाग 2 शंका,
3 पुत्र्य व्यक्त 4 श्वस्त की दृष्टि 5 विशु प्रकीर्ण ।
सम० आरौतेजम् शंका फलना, आरौते शंके पर
एक प्रकार की शंकावट, उच्छ्रयः पुनता पावट ।
श्वस्ति (वि०) [श्वस्त + इति] पुन, पावटी - मास०
१२/१५/१८ ।
श्वस्तिनाम् (स्त्री०) 1 शोभा 2 एक प्रकार का लम्बाना
डाल, तासा ।
श्वस्तशालम् शक्ति का आचरण अक्षर का समर ।

न

नष्ट (वि०) [नश् + तुच्] हानिकारक, विनाशक ।
नष्टम् [नष्टम् विकल्पिते ने टया नमनी हुआ शेषा ने
नष्टमा] जाने मरना पर हुआ करने वाला महा०
१/१३०/१५ पर टीका ।
नक्षुक् [नास्त कुल यस्य, ममाने नजो नलोप प्रकृति-
भावान्] नीच कुल में उत्पन्न - नक्षुक् पाप्मनये
सर्वभूक्तुम्हीनयो माना० । सम० ईशः तात्त्विक
पूजा की एक शीत, - ईश्वी शीप नक्षुम्हेवी तथा
विदुन वाम० ।
नक्षतन्त (वि०) [नक्ष + तन्] राशि में नक्षत्र रहने
वाला राग का ।
नक्षत्रेणः [व० म०] कामदेव ।
नक्षत्रलिका (स्त्री०) [व० त०] जल की मक्खी ।
नक्षत्रम् [नक्षत्रिण नक्ष - अक्षन्] 1 तारा 2 तारापुंज,
3 शोभा 4 शताहम शोभाओं की शोभा । सम०
- इष्टि एक यज्ञ का नाम, उषधीक्षिम् (पु०)
शोभानिधि, - शोभा नक्षत्र की शोभावधि, - शोभाः नारी
का प्रदेश ।
नक्षत्रास्तः [व० त०] नाक्षत्र अन्तर्विष्ट करना पञ्चा
धृते देना ।

नशापमा { (स्त्री०) पहाड़ी नदी ।
नशापदी }
नशापच्छना (स्त्री०) वेद्या ।
नशापिन् (पु०) [नशा - इति] नशाप्याल ।
नशापु (नपु०) आसव तैवार करने के लिए उठाया गया
समीर, क्षिप्यन ।
नशापुष्पा (स्त्री०) नशा रहने की प्रतिज्ञा ।
नशापुष्प (पु०) शोभा भाव, शक्ति पाठक ।
नशापुष्प (पु०) शोभा भाव में शक्ति एक भाव ।
नशापुष्प (वि०) नदः मनुष्य । नाटक के पात्र की शक्ति
शक्तिपत्र करने वाला ।
नशापुष्प (पु०) एक प्रकार की मछली ।
नशापुष्प (वि०) [व० त०] मुकुमार, नन्वी लया
शक्तिपत्र नशापुष्प रगत नन्वी नशापुष्पशक्ति
हु० १/३८ ।
नशापुष्प (पु०) एक प्रकार का पत्ती रा० २/५६/१५ ।
नशापुष्प (नपु०) एक प्रकार का नाव ।
नशापुष्प [व० त०] नदी का किनारा, नदी तट ।
नशापुष्प (वि०) [नदी नशापुष्प नु + अक्ष] नदी व ।
पात्र करने वाला ।

नदीनारी: [व० ल०] नदी का जलनारी ।
 नदीनृक्षम् [व० ल०] नदी का नृक्षाना, जहाँ से नदी निकलती है, नदी का उद्गम-स्थान ।
 ननानृषति: [व० ल०] नन्दनृषति की बहून का पति ।
 नन्वक [नन् + वृन्] नन् वन् का नाम की० अ० = १११ ।
 नन्वन् (वि०) [नन् + इत्] नन्दन देने वाला, प्रमत्त करने वाला, न (पु०) 1 पुत्र 2 मेटक.—ना (स्त्री) पुत्री, नन् इन्द्र का नन्दन बन । सम० अन् पीली चन्दन की लकड़ी.— इन्: नन्दन वन का पुत्र, पारिजातवृक्ष, कल्पवृक्ष.— वनम् विषय आदिका, इन्द्र का उपवन ।
 नन्वि: (पु०, स्त्री०) [नन् + इत्] इन्, प्रनयना, सुधी, —वि (पु०) 1 विन् 2 गिब 3 गिब का गण 4 (नाटक में) नान्दी का पाठ करने वाला । सम० देवी शिवामय का एक बाटी—बागरी एक लिपि (लिपिक) का नाम, वृत्राणम् एक उपपुराण, ब्रह्म मित्र ।
 नन्विभुल [नन्विन् + भुल, नन्वीग] बगडि भुनि ।
 नन्वी (स्त्री०) [नन् + वी०] दुर्गा देवी ।
 नन्वि [नन् + इत्] पत्निया ।
 नन्वीक्य (वि०) [नन् + अन्तु प्रथमाभ्यन्देश—इ० म०] अन्वकार्यक, कान्ता ।
 नन्वीवीधी [नन्वन् + वीधी] सूर्य का मार्ग त्वाही मार्ग ।
 नन्वचमल (पु०) [नन्वन् + चमल] 1 एक प्रकार का पत्रपाक 2 बन्दना ।
 नन्वनासिक (वि०) [इ० म०] जगदी जी/ मोटी नाक वाला ।
 नन्वन् [नी + इत्] 1 नेत्रव्य करना 2 निकट ले जाना 3 आँक । सम० अन्वचल 1 आँक का कान्ता 2 कटाक्ष, कनवी, अरिसम् 1 कटाक्ष, कनवी 2 दुष्पात, इष्टिपान, अन् जीम्, बुद्धबन् आँक का गोलक ।
 नर [नृ + अच्] 1 मनुष्य 2 व्यक्ति । सम०—विह्वन् मूँछ, वेध राजा ।
 नरकचतुर्दशी वीणावली का दिन ।
 नरकवात (पु०) नरक में रहना ।
 नराच (पु०) एक छन्द का नाम ।
 नरद्वक: (पु०) एक छन्द का नाम ।
 नरवल्कीव [नरवन् + वल्की, नलोप] 1 प्रेम के आदि-चिह्न 2 नृहाना ।
 नरवल्काप [नरवन् + आत्पा, नलोप] प्रेम वार्ता, आशोद-प्रमोद की बातचीत ।
 नरवल्कि (स्त्री०) [नरवन् + वल्कि, नलोप] हास्यपरक अभिव्यक्ति ।

नरवन् (ना० वा०) रिशाना, दिक् बहुलाना ।
 नरवल्कितम् [नरवन् + क्त] श्लोक, कीडा ।
 नरव (पु०) [नन् + अच्] 1 सवम्बर 2 सम्बाही की भाव जो धार हाव के बराबर होती है । सम०—नुवा एक प्रकार का जतीय अन्तु, पाक राजा नर शत्रु मैयाग किया गया स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ ।
 नरवल्का (स्त्री०) नन्वी ।
 नरवल्की (स्त्री०) [नल + गिनि + कीप्] 1 कम्पन का पीडा 2 कम्पनो से मुचामिन सरोवर 3 पुत्र 4 नयना 5 इन्द्र पुरी, (नरपुरी) सम०—इन्वन्—वन्वन् कम्पल का पता ।
 नरवल्कीय. (पु०) एक टाणु का नाम । यह नरुजा और जलज्जी के समय पर बगल में एक स्थान है जिसे आजकल 'नरिया' कहते हैं ।
 नरवल्काडम् (नपु०) मृग्य के पश्चात् विषय दिनों में अन्-ष्ठित धाड ।
 नरवीधायक: [नव + विन् + भू + धञ्] नया होना ।
 नरवल् (स० वि०) [नृ + कनिन्, वा० मूणः] (इ० व०) नौ, नौ की संख्या । सम०—कन्वाक: नौ कपाल जैसे ठीकरो में पकाए हुए पिण्ड का उपहार, अ (वि०) नौगुणा नौ तह का, अविच्छन्ना (स्त्री०) दुग्धिपि के नौ रूप (सैलपुत्री, बहुवर्गारिणी, बन्दुवष्टा, कृष्णाश, स्कन्दमाता, काश्यायनी, महापौरी, कालरात्रि और मिथिदा),—वाणु: (पु०) नौ वाणु (हेमतीरारना-याच नागरज्जी व तीक्ष्णक) । कम्पक कान्तावीह व धानबो नव कीर्तिता), वन्वन्वन् विचार के विषय में अन्मकुच्छवी में एक अमयक योग अब कि दुष्टहृत् की अन्मराति इस्ते की अन्मराति ने पाँचवें या नवें ही ।
 नरव (वि०) [नन् + क्त] 1 शीघ्र हुआ अन्वित, ओल्लस 2 मृत, अस्त 3 विह्वल, विगष्ट हुआ 4 अन्वित 5 अन्व—वन्व (नपु०) 1 नाता 2 अन्व-पति । सम० अन्व: भाउपन मास की चतुर्थी तिथि अब कि चन्द्रमा का देवना निपिट है, दुग्धि (वि०) अन्वा.— वी (वि०) मूल जाने वाला, ध्यान न देने वाला, वीव (वि०) नपुंसक, पुस्वहीन, क्व (वि०) अदृश्य ।
 नरवाक: (पु०) एक प्रकार का कौवा ।
 नरवक: [न कम् अक बुक्कन्, तन्नासि वच] 1 स्वर्ग 2 अन्तरिक्ष 3 सूर्य । सद०—नदी स्वर्गिय नदी, स्वर्गवा, नारी, अन्वारा,—लोक: स्वर्गलोक, विष्णु-लोक ।
 नरवु: (पु०) वार्षिकी मृनि ।
 नरव: [न वक्कति इति अयः, न अय इति नाम] 1 तीप 2 हाथी 3 बायक 4 विपुल,—वन् 1 टोप 2 बस्ता 3 राजा 4. एक प्रकार का रत्नचम । सम०—अन्वक

(वि०) हाथी पर सवार, -कोट्टु: कर्मा का विशेषण,
 -द्वीपम् भारत बर्ष का एक टापू, मालदीव (स्वी०)
 बहु स्त्री जिसकी सुन्दर स्त्रियाँ आकार प्रकार में हाथी
 की सूई से मिलती जुलती हैं, कर्मा पाव का पीसा,
 -कल्पः एक प्रकार का नाम, विष्णु: गण्ड ।
 मारकः [मर + क्तृ, स्वार्थे कन्] मराने वाला ।
 मारकाः परम्पर विरासी ग्रह ।
 मारुतिः [म० त०] मार्गरेको की विप्लवा, विप्ला-
 वार, शालानता ।
 मार्थनः (पु०) एक बौद्ध सिद्धक का नाम ।
 मार्थीशब्दः (पु०) एक प्रसिद्ध बंगालका नाम ।
 मरुत् [मरु + क्तृ] 1 दृष्य वाक्य 2 नाट्यरचना के
 मुख्य दस मेंसे प्रथम अंग । सम० प्रयत्नः नाटक
 करने की व्यवस्था, प्रयोगः नाटक का अभिनय
 करना, रङ्ग नाटक का रङ्गमञ्च, लक्षणम्, नाट्य-
 रचना विषयक विधि नियम ।
 मरुत् [मरु + क्तृ] 1 नाच 2 नाटक प्रस्तुत करना,
 अभिनय करना 3 नृत्यशला 4 नाटक के पात्र की
 देशभूषा । सम० अङ्गुलि नृत्य के दस भाग,
 आचारम् नृत्यकला, नाचपर, -रासकम् एक प्रकार
 का एकाङ्की नाटक, -कैः नाट्यशास्त्र या नाट्य-
 कला का विज्ञान ।
 मी [मृ + क्तृ + क्तृ = मी + क्तृ] 1 पीपे का
 मलिकामय उच्छल 2 कमल का बालला बाण्ड
 3 शरीर का मलिकामय अंग (जैसे कि विना या
 घमनी) । सम० मरुत् मनुष्य आदि शरीर के
 स्नायुओं के लक्ष्य केन्द्रों का समूह, वायुम् जलघटी,
 -कल्पः उद्योगिय की नाडी घांसा पर एक पुष्पक ।
 मरुत् (नपु०) सिक्का, मुद्राङ्कित कोई वस्तु । सम०
 -वरीक्षा सिक्के का परस्पर, वरीक्षिन् (वि०)
 सिक्को का शस्त्री, परीक्षक ।
 मरुत् [मरु + क्तृ] मीप, प्रार्थना ।
 मरुत् (वि०) [मरु + क्तृ + क्तृ] उच्छ्वस्यने
 के लिये करने वाला ।
 मरुत् (वि०) [मरु + क्तृ] 1 विषय-विषय स्थानों पर,
 निश्चित-विषय रीति से, विविध प्रकार से 2 स्पष्ट रूप
 से, पुष्ट रूप में 3 विना 4 (मयल विशेषणों में
 प्रयुक्त) बहुत में । सम० मरुत् (वि०) जिसके
 बल से आवास या घर है, -मोच (वि०) विविध
 चीजों में सम्मिश्र रखने वाला, कर्मन् (वि०) विषय
 रीति-विधानों वाला, -धाम (वि०) विषय प्रकृति
 वाला ।
 मरुत् (नपु०) विविधता की स्थिति ।
 मरुत् (वि०) । मरुत् + क्तृ] मरुत्, हृदय - लंघा
 विपुलिनि हस्तकेवलकम् - एत० उप० ३१२ ।

मरुत् (वि०) [मरुत् + क्तृ] वायु से सम्बन्ध
 रखने वाला ।
 मरुत् (पु०) एक राजा का नाम, वैश्वल मनु का
 पुत्र, मरुत्रीय का पिता ।
 मरुत्-भी (पु० स्त्री०) [मरुत् + भी, भद्रवाचानादेश]
 1 सूई 2 सूई के समान कोई भी मरुत् - पु०
 1 पहिए की नाह 2 केन्द्र, मुख्य बिन्दु 3 क्षेत्र ।
 सम० मरुत्: कस्तुरी की बू या मरुत्, -कर्मन् मरुत्
 द्वीप के लक्ष्य में से एक ।
 मरुत्: [मरु + क्तृ] 1 देवता 2 मीप नाभोगमात्रया
 हरिणाधिकृत सोम्य वरुणानिच राजनीन् पु०
 म० ६१८८ ।
 मरुत् (वि०) [म० म०] जिसका केवल नाम ही मरुत्
 पाया है मरुत् ।
 मरुत् (म० वा० आ०) 1 नाच का अभिनय
 करना 2 मानियों के जग में केन्द्रीय मरुत् या मीप का
 काम करना ।
 मरुत् [मरुत् आचार्यनि - आ + क्तृ + क्तृ, स्वार्थे अण
 मरुत् आचार्यनि वा] 1 पूर्वदिशा का जाने वाला
 सड़क 2 मीप का, उसके स्थान पर मरुत् के लिए
 पावु की बनी मरुत् या कील ।
 मरुत् (नपु०) एक अन्न का नाम ।
 मरुत् (नपु०) मरुत् का पुष्प मरुत् ।
 मरुत् (वि०) [म० म०] जिसके स्वामित्व अधिकार
 किसी स्त्री के पास हैं ।
 मरुत् (स्त्री०) [म० म०] स्त्रीग्य ।
 मरुत् (नपु०) 1 मरुत् 2 मरुत्, माली ।
 मरुत् (पु०, द्वि० व०) [मरुत् अमय्य यस्य, म० व०
 मरुत् प्रकृतिबद्धाव] दाना अधिनीकुमार ।
 मरुत् (वि०) [मरुत् + क्तृ] मरुत् तक पहुँचने
 वाला (लकड़ी आदि) ।
 मरुत् (पु०) [म० म०] मरुत् का बीजना, मरुत्का-
 वच सम्कार ।
 मरुत् (पु०) मरुत्गुत् प्रान्त में स्थित एक पुष्पस्थान ।
 मरुत् (पु०) मरुत्गुत् मरुत्गुत् का स्थिति, प्राणि-
 बहिष्कृत ।
 मरुत् (वि०) [म० म०] अधिचय रहित ।
 मरुत् (वि०) [म० म०] मरुत्, निर्भय, मरुत्गुत् ।
 मरुत् (वि०) [म० म०] मरुत् रहित, मरुत् कोलाहल
 मरुत् ।
 मरुत् (वि०) [म० म०] मरुत्गुत्, जिसके पास कोई
 मरुत् नहीं ।
 मरुत् (नपु०) [मरुत् मय्ये वि०] 1 मरुत्, मीप
 2, मरुत् 3 मरुत्, विधान ।
 मरुत् (वि०) [म० म०] मरुत्गुत्, मरुत्गुत् ।

निःसंघ (वि०) [ब० सं०] 1 अनात्मक 2 मूल 3 स्वा-
यंरहित ।

निःसंघ (वि०) [ब० सं०] 1 असा 2 बलहीन 3. नगण्य ।

निःसीमन् (दि०) [ब० सं०] सीमा रहित ।

निःस्नेह (वि०) [ब० सं०] 1 कृपा 2 भावशून्य ।

निःस्वयं (वि०) [ब० सं०] निःस्वय, गतिहीन ।

निःस्पृह (वि०) [ब० सं०] 1 इच्छाहीन 2 समुच्छ ।

निःस्व (वि०) [ब० सं०] अर्थहीन, निर्धन ।

निःस्वय (वि०) [ब० सं०] निःस्वय, स्वयं रहित ।

निःस्वय (प०) [नि + स्वयन् + अच्] स्वयं, स्वयं ।

निकटवर्तिन् (वि०) [निकट + वृत् + गिति] निकटस्थ,
जो पास ही विद्यमान हो ।

निकषण [नि + कृष् + व्यट्] दे० 'निकष' कमीटी ।

निकषायित (वि०) [निकष + षयच् + क्त] जो
किसी वस्तु के निकट प्रमाण या कमीटी मान लिया
गया हो (उदा०—वेद्वयनिकषायितेय मन्त्र) ।

निकाश [नि + काष् + घञ्] 1 प्रकाश 2 रहस्य—निका-
शम् प्रकाशो म्यात्मदुःखो र्नासि म्युन नामा० ।

निकृष्टकर्मन् (वि०) [ब० सं०] जो निम्न कार्यों के करने
में व्यस्त हो ।

निकृष्टित (वि०) [नि + कृष्ट + क्त] जिनमें मूढ़ क्रयत
किया हो, शीघ्र भवाणा हो (द्रुषित स्वर से पाठ
किया हो) ।

निकृष्टित (वि०) [नि + अिच् + क्त] निकृष्ट ।

निकृष्टित (अ०) पूंजन, सब मिलाकर ।

निगाह [नि + गृह् + घञ्] सम्बन्ध पाठ ।

निगाह [नि + गृह् + अच्] 1 श्रमिजा स्वनिगममहाय
मप्रतिज्ञा अतमधिकर्षणकर्मो भाग० १।१।३७
2 प्राप्ति—वन्धा मप्रियम् म्युन भाग० १।१।
११।८० ।

निगमनसूचक (नप०) वह सूच जो किसी अनुमान वाक्य
का उपसंहार करता है ।

निगमात् (अ०) माराधन, मधेय म भाग० १०।१३।३१ ।

निगृह् (अ० पर०) उपासन, गुण च्छेदा ।

निगोपचारित् (वि०) [क० सं०] अज्ञात होकर घुमने
वाला ।

निगोप्राहकः (प०) विष्णु ।

निघह् [नि + ग्रह् + अच्] अतिक्रमण—निघह्राड्यंसात्पायां
महा० १२।२४।१३ ।

निघहणम् [नि + ग्रह् + व्यट्] पढ़, मढ़ाई ।

निघ्नान (वि०) [नि + ह्नृ + शानच्] नाशकारी, जो नष्ट
करता है ।

निघ्नित [नि + षि + क्त] बड़कोष्ठ, मलाबद्ध ।

निघ्नक [नि + ष् + क्त] 1 कर्मक 2 मारियक का देह
—नामा० ।

निघ्नकम् (पुं०) कर्मक में कर्म करना, इकट्ठा
—निघ्नो वागो वागो निघ्नकमिति शोलेन निघ्नता
—सौम्य० ।

निघ्नकः [निघ्नन् तन्प्ये कान्ठे— नि + गन् + अच्
1 कन्ठा 2 बीणा का स्वनशील फलक 3 इला
4 चट्टान ।

निघ्नकशिला (वि०) बहुत कठोर, अत्यन्त कड़ा ।

निघ्न (वि०) [नियमेन भव— नि + ग् + क्त] 1 अनवरत
समाप्त, शाश्वत 2 अनवरत 3 निरपेक्ष, शिव
4 आश्चर्यक 5 सामान्य (विप० नैमित्तिक)
सम०—अनुबुद्ध (वि०) सर्वत्र सबद्ध,—अनुबुद्ध
तस्य को नगोपित—अ० सं० ४।१।४५, अविष्णु
(वि०) समाप्तार किन्तो न किन्तो कार्यं मे को
कास्त्वम् (अ०) सर्वत्र, हर समय,—जात (वि०,
समाप्तार उपस्र अद्य वैने निघ्नजात भग० २।२१
बुद्धि (वि०) सभी बातों को सतत या निरन्तर
मानने वाला, भाव शाश्वतता, निरन्तर, सब
एक विचार कि सभी वस्तुएँ सर्वत्र एक सत्ता
रहती हैं ।

निघ्नः [नि + दृह् + घञ्, कृत्वम्] आत्मिक गर्वी
सम० कास्त्वम् (प०) सुषे निघ्नःशामान्यनिघ्नः
चितम् शि० १।२४ ।

निघ्नित (वि०) [नि + वृष् + षिच् + क्त] प्रदर्शित
विहित, प्रमाणित ।

निघ्नित् (वि०) [नि + वृष् + षिच् + गिति] पक्षप्रदर्शन
उदाहरण प्रस्तुत करने वाला सत्ता बुद्धि पुरस्कृत
सर्वोपकनिघ्नितनीम् रा० २।१०।८।१८ ।

निघ्नित् (वि०) [ब० सं०] 'अग्नि' रोग से घलत ।

निघ्नन् (नप०) [निघ्नन् धन वस्त्वम्—इधाम् + क्त
अन्त्यकृदन्ती में सञ्ज से छटी राशि ।

निघ्नन् [नि + धा + व्यट्] बटोहर ।

निघ्नोपकला (स्त्री०) निघ्नोपकला उपमा, ऐसी तुलना
जिसमें निघ्न प्रकट हो ।

निघ्न (अ० पर०) विफल होना, अतिरिक्त अवस्था
ही नष्ट हो जाना (बैने घरोपात) ।

निघ्नक [नि + ष् + घञ्] 1 पत्नी 2 (कच्चे फ
को) पकाना ।

निघ्नत [नि + ष् + घञ्] मिलकर धाना, सवाण
—यातामेव निघ्नतेन ककल नाम प्रायने—महा
१२।३२०।११५ ।

निघ्नोन् (नप०) अफीम ।

निघ्नित (वि०) [नि + बर्ह् + क्त] नष्ट किया गया, हू
किया गया कुल इतार्थोन्मि निघ्नित्हाहा—धि
१।२९ ।

निघ्नित (वि०) [नि + षि (वि) द् + क्त] 1 मुकुर

भारो बनाया हुआ, भीष से युक्त, मोटा 2 दाबकर सटाया हुआ, भीषा हुआ लक्ष्मणभूमिनिबद्धित—बा० रा० ५।११ ।

निभृत (वि०) [नि + भृ + क्त] 1 मरा हुआ 2 युक्त 3 मूक 4 किमीत 5 बूड़ 6 एकाकी 7 निष्क्रिय, आत्मसी। सम०—आधार (वि०) बूड़ आधार का व्यंजिन,—स्थित (वि०) युक्तपद से विद्यमान ।

निव (पु०) लक्ष्मी की कुटी, मेक ।

निमित्त (वि०) [नि + मा + क्त] 1 दे० 'निमित्त' उत्पन्न-वित 2 माया गया ।

निमित्तम् [नि + मिद् + क्त] 1 ज्ञान का साधन—तन्व निमित्तपरीष्ट—मो० सू० १।१।३ 2 कार्य, उत्पन्न—एताव्येव निमित्तानि मुनिनाम् अन्वरेतनाम्—महा० १।११।१६। सम० ऋ (पु०) तुलु के आधार पर अविद्यमानो करने वाला उपोक्ति—मेमित्तिकम् कार्य और कारण, आश्रय केवल उपकरण स्वरूप कारण—भा० १।१।३ ।

निवेद्यान्तरम् [व० त०] एक अण का अन्तराल ।

निम्न (वि०) [नि + म्ना + क्त] 1 गत-ग, नीचा 2 अधम कार्य—निम्नेष्वीहा करिष्यन्ति महा०, ३।११०।२६। सम० अविभूक्त (वि०) निम्नतर स्तर की ओर उठने वाला कु० ५।५ ।

निम्नित (वि०) [निम्न + इत् + क्त] गहरा, डूबा हुआ ।

निम्नपत्रकम् (नपु०) नीम वृक्ष से उत्पन्न पत्र पत्तों—पत्र, फल, लवचा, कल और जड़ ।

निम्नपत्रकम् (नपु०) नीम के पत्र अथ (सन्तान, मूलम्बी, मारगी छद्म या गलन काजरी नीम) ।

निवत्त (वि०) [नि + यत् + क्त] 1 रोका हुआ, बाधा हुआ 2 बाधित 3 (व्या० में) अनुदान सत्रिन उपचरित ।

निवन्तः [नि + यन् + क्त] 1 युक्त रत्नना—मन्त्रस्य नियम कुर्वान् महा० ५।१।११।२० 2 प्रयत्न—महा० २।४६।२०। सम० हेतुः विनियमन का कारण, नियमित रखने का कारण ।

निवृत्त (वि०) [नि + वृत् + क्त] उपयोग में लाया गया, काम पर लगाया गया ।

निवृत्तव्य (वि०) [नि + वृत् + क्त] 1 जिसकी कोई कार्य सीमा या 2 निवृत्त किये जाने योग्य 3 जिस पर अभिमान बनाया जाय—मनु० ८।१०१ ।

निवृत्तः [नि + वृत् + क्त] 1 अपरिचित नियम—तत्र निवृत्तौ क्षिपिते नियम समान इति—मी० सू० १०।६।५ पर शा० भा० 2 नहीं, यथार्थ—कि० १०।१६ ।

निवृत्त (क) (वि०) [निवृ + भव (क)] जो गति बिना कुछ बीच रहे, पूरी पूरी बँट सके ।

निर्विच्छाद (वि०) [व० न०] 1 अवश्य 2 स्वतन्त्र निरनुग्रह (वि०) [व० त०] निर्यय, कृपाशून्य, अकृपाल ।

निरनुनासिक (वि०) जो कर्ण नाक से निरपेक्ष हो, जिसमें नाक की सहायता की आवश्यकता न हो ।

निरनुनासिकम् (नपु०) नागयण भट्ट की एक रचना जिसमें कोई अनुनासिक वर्ण प्रयुक्त नहीं हुआ ।

निरपन्थ (वि०) [व० त०] युक्ता, निराहार ।

निरपन्थाव (वि०) [व० त०] 1 बलवृद्धि 2 जिसमें कोई अणुवाद न हो ।

निरसङ्गतिः (स्त्री०) (काव्य में) अलकार का अभाव, सरलता ।

निरसत्ता (वि०) [व० त०] प्रसन्न, खुश ।

निरासति (वि०) [व० म०] जिसका अन्त दूर नहीं है नियम लघुना निरायन कि० २।१६ ।

निरासम्भ (वि०) [व० म०] मर प्रकार का कार्य करने से मुक्त (अच्छी भावना से), निष्क्रिय ।

निरासर्ष (वि०) [व० त०] स्फुट, स्पष्ट, प्रकट ।

निरस्ययोग (वि०) [व० त०] उपभोग शून्य ।

निरस्यधिक (वि०) [व० म०] जिसमें कोई गर्त न हो, निरपेक्ष ।

निर्वाह्य (वि०) [व० त०] जिसमें शिष्टता या पार्लोचना न हो, अमर ।

निर्वात (वि०) [नि + वा + क्त] युवा हुआ, स्वच्छ किया हुआ—निर्वातदानामलग्नार्थोऽसि रघु० २।४६ ।

निर्वायक (वि०) [व० म०] जिसका कोई नेता न हो ।

निर्वाच (वि०) [व० त०] प्रथम, नामदे निर्वाचक ।

निर्यम्मु (वि०) [व० म०] निरकम्प, निराह ।

निर्याग (वि०) [व० म०] 1 आत्माविश्राम से होना 2 जिसमें स्वाभिमान न हो ।

निर्मल (वि०) [व० म०] अनुपम, जा दिव्य न दे ।

निर्मल (वि०) [व० त०] पुरी तरह कटा हुआ ।

निर्वातस्य (वि०) [व० म०] स्नेहहीन, जिसमें वास्तव्य का अभाव हो ।

निर्विच्छाद (वि०) [व० त०] अनासक्त, उदासीन ।

निर्वसि (स्त्री०) निरपत्रना, निर्यासि ।

निर्वस्य (वि०) [व० त०] निर्लेख, बेधम ।

निर्व्यवधान (वि०) [व० म०] व्यवधानरहित, मुक्त, अनाच्छादित, युवा (स्वान) ।

निर्व्यवस्थ (वि०) [व० त०] जिसमें कोई व्यवस्थ न रहे, इधर उधर भटकने वाला, अवगण सनिवृत्त ।

निर्व्यावृत्ति (वि०) [व० म०] जिसमें कुछ प्राप्ति न हो ।

निर्वीच (वि०) [व० त०] निर्मल, बेधम ।

निरय. [निर + य + अच्] १० 'नियम'—आचारनिरया-
 दोग निरयादिषु साम्यं—रा० ब० २। सम०
 —अर्थम् (न०) मौनिक अस्तित्व—याता गृहे
 निरयवर्त्मनि कला न—भाग० १०।८२।३१।
 निरस्तस्य (वि०) [ब० स०] अनन्य, अनस्य, अन-
 गिनन।
 निराकृत (वि०) [ब० म०] १ निराकरण किया गया
 २ निरंकुत।
 निरकृत (वि०) [नि + कृ + क्त] १ अवश्य २ बरा
 बरा, पूर्ण। सम०—कृति (वि०) कार्य करने में
 निरकी गति अवश्य ही गई है—वाग्निनिरकृतकृत-
 कथम्।
 निरोध [नि + ध् + षञ्] लघु, बद्ध जाना।
 निरूपक (वि०) [नि + रूप + क्त] १ निरूपण करने
 वाला, प्रवचक २ निरूप्य करने वाला, षटक।
 निरूपित (वि०) [नि + रूप + क्त] १ चिह्नित, अंकित
 २ नियुक्त ३ निशाना बनाया गया, दगित।
 निर्याति (स्त्री०) [निर + य् + क्त] १ मूल लक्ष्य
 २ भाठ वसुधों में से एक ३ ग्याहू खोने में से
 एक।
 निर्यात (वि०) [निर + गन् + क्त] १ बहा हुआ
 २ घना हुआ, पिघला हुआ।
 निर्यातयथा (स्त्री०) अनुमान पर आश्रित उपमा—काव्या०
 -१०३।
 निर्यात (वि०) [निर्यात् + क्त] १ घना हुआ, स्वच्छ
 किया हुआ २ प्रायश्चित्त किया हुआ। सम०
 बाह्यलक्ष्य (वि०) जिसके बने या चिह्नो स्वच्छ
 पत्रके चयका दी गई हो—असत् (वि०) स्वच्छहृदय,
 निर्मल मन वाला।
 निर्यास [निर + यिष् + षञ्] करार, प्रतिज्ञा—महा०
 १३।२३।७०।
 निर्यास (वि०) [निर + यिष् + क्त] १ संकेत किये जाने
 के योग्य २ निर्यास किये जाने योग्य ३ उद्योग्य
 + जगत्में परिश्रमा होनी चाहिए। मुद्रापान बह्यहृदया
 अनिर्यासनि ग्रन्थे महा० १०।१६५।३४।
 निर्यासम् [निर + यिष् + क्त] दीर्घ निर्यास, लहरो
 की शक्ति उठना गिरना।
 निर्यास्य (वि०) [ब० स०] जिससे आग्रह पूर्वक कोई
 बात पूछी गई है।
 निर्यास्य (वि०) [निर्या + इति] आग्रह करने वाला।
 निर्यास्यम् [निर + यिष् + क्त] धमकी देना, अप-
 मान्य कहना, झिड़की देना।
 निर्यास्य (वि०) [निर्या + इति] कुचकने वाला,
 दिलोने वाला, पीस डकने वाला।
 निर्या [निर + या + अच्] शून्य, नाप, सम।।

निर्यास्य [निर + या + अच्] बनना, अन्य होना—पूर्व-
 निर्माणबद्धा हि कालस्य गतिरीदृशी—रा० अ०
 १६०।२।
 निर्यास्य (वि०) [निर + या + गन्] बाहर जात हुआ,
 निकलता हुआ।
 निर्यास्य [निर + या + अच्] नगर से बाहर जाने
 का मार्ग।
 निर्यास्य (वि०) [निर्या + क्त] मोक्ष की ओर ले
 जाने वाला।
 निर्यास्य [निर + यम् + यिष् + क्त] सहायक।
 निर्यास्य [निर + युञ् + षञ्] १ पुरा करना, सम्पन्न
 करना, बनाव श्रुतार करना—निर्यास्य भुवधाम्नास्वान्
 सर्वभ्याम् प्रदाय मे—प्रति० १।२६ २ गाय को
 बूँटे से बोधने का रस्ता—भाग० १०।२१।१९।
 निर्यास्य (अ०) [निर + युञ् + क्त] सोचविचार
 कर।
 निर्यास्यम् [निर + यिष् + क्त] स्तुति महा० १।
 १०५।२३।
 निर्यास्य [निर + यिष् + क्त] प्रदान करना, अर्पण
 करना।
 निर्यास्य (वि०) [निर + यिष् + क्त] दुस्साया
 हुआ।
 निर्यास्य (वि०) [निर + यिष् + क्त] बहिष्कृत,
 निष्कासित।
 निर्यास्य (वि०) [निर + यिष् + क्त] बहिष्कार्य,
 देश से निकालने के योग्य।
 निर्यास्य (पुरा० पर०) १ घर में बस जाना २ प्रविष्ट
 होना ३ आगे जाना ४ च्छन परित्योष करना—निर्वे-
 ट्यव्य भवा तत्र महा० ५।१४६।१५ ५ किसी के
 नाच रहना—लक्ष्मणे प्राप्ति निर्यास्यताम् मान०
 १।५।२३।
 निर्यास्य (वि०) [निर + यिष् + क्त] १ घना हुआ,
 चिपका रहा, बूझा रहा २ शिपर में बर्तमान, बंरा
 होने हुए।
 निर्यास्य [निर + यिष् + क्त] १ प्रविष्ट होना—आत्म-
 निर्यास्यार्थे तिर्यग्यममूलकम्—भाग० १०।१०।२६
 २ बढता लेना भाग० १०।४४।३९।
 निर्यास्य (वि०) [निर + यिष् + क्त] हटाया
 हुआ, टोका हुआ।
 निर्यास्य (वि०) जो अभी-अभी समाप्त किया हो।
 निर्यास्य (वि०) [निर + यिष् + क्त] संकेत
 करता हुआ, दिग्दर्शन करता हुआ—स्नेहस्य निर्यास्यकः
 - महावी० ५।६०।
 निर्यास्य (वि०) [निर + यिष् + क्त] १ घायल
 २ चिपका।

निर्वेका [निर + व्याप् + कञ्] 1. अन्धर बस जाना
2. अनादृष्टि ।
निर्व्यथित (वि०) [निर + वि + क्त + क्त] व्यथ किया
गया, होल गया, कमीन ।
निर्व्यूह (वि०) [निर + व्यूह + क्त] 1. सपरव्यूह में
व्यवस्थित 2. लक्ष्य 3. बाहर चलेला गया ।
निर्व्यथित [निर + व्यूह + क्त] उन्मत्त बिल्कुल या अज्ञ ।
निर्व्यूहः [निर + व्यूह + क्त] कुटी-महा० ३।१६०।३९ ।
निर्व्यूहम् [निर + व्यूह + क्त] विग्रह, विधानालय ।
निर्व्यूहः [निर + व्यूह + क्त] घटना ।
निर्व्यूहित् (वि०) [निर्व्यूह + इति] 1. फेंकने वाला
2. एक प्रकार की मुद्रा जो और सब मुद्राओं से
बढ़िया हो ।
निर्व्यूहितः [निर + व्यूह + क्त] छोटा करना, लक्ष्यित
करना ।
निर्व्यूहम् [नि + व्यूह + क्त] घर, आवास, निवास ।
निर्व्यूहम् [नि + व्यूह + क्त] अविद्यमान की का
अर्थ खोजना—भा० १०।११।५९ ।
निर्व्यूहः [नि + व्यूह + क्त] हत्या, बध ।
निर्व्यूहकथाः (पु०) (ब० म०) एक जनजाति का नाम ।
निर्व्यूह [नि + व्यूह + क्त] 1. शीघ्र, जल्द के जाने
2. श्राद्ध के अन्धर पर पितृसंपन्न 3. उपहार । सम०
—अन्धर संपन्न के लिए दोनों हाथों की अन्धरि
में लिया हुआ पत्नी, —अन्धर शीघ्र बाह्य ।
निर्व्यूहक [नि + व्यूह + क्त] प्रतिरक्षक ।
निर्व्यूह [नि + व्यूह + क्त] 1. घर, मकान, आवास ।
सम०—मूषि रहने का स्थान, रक्षक अन्न, अन्धर,
—स्थान रहने की जगह ।
निर्व्यूह (गुदा० भा०) 1. फेंकना, बर्णक का विधान
बनाना 2. (बन को) प्रभावित करना ।
निर्व्यूह (वि०) [नि + व्यूह + क्त] कृष्ट, आर्षित (वि०) ।
निर्व्यूह (गुदा० भा०) 1. भाषित जाना 2. भाष जाना
3. बध निकलना 4. ममान होना 5. मम्यन होना,
मे० बाल छोटे करना ।
निर्व्यूह (वि०) [नि + व्यूह + क्त] बया हुआ, व्यवस्थित,
विनियमित (जैसे कि नृत्य) ; सम०—अन्धर (वि०)
जिसे फिर अकाली दी गई हो, जिसकी अकाली लीट
आई हो ।
निर्व्यूहम् [प० सं०] 1. चन्द्रमा 2. कपूर ।
निर्व्यूहः [सन्म्यक्त समास] निर्व्यूह, राक्षस, पितापुत्र ।
निर्व्यूहः [नि + व्यूह + क्त] समाज, सत्त्व ।
निर्व्यूहम् [नि + व्यूह + क्त] 1. पुरीषोत्सर्जन
2. बाप, इका 3. घटना, घराब, हठ ।
निर्व्यूहता (वि०) [ब० म०] 1. जिसने अपना मन
वका कर दिया है 2. यथाच—जान करने वाला ।

निर्व्यूहः [नि + व्यूह + क्त] मान, सिली, बाध-
प्रसन्न ।
निर्व्यूहस्योत्सर्जनः (पु०) एक नियम जिसके आचार
पर कर्मोचर्य आर सपुत्र्य दोनों ममानों की प्राप्ति
होने पर, पूर्ववर्ती अर्थात् कर्मोचर्य ही बलीयान्त
होता है ।
निर्व्यूहः [नि + व्यूह + क्त] आमुन, लय, अर्क ।
निर्व्यूह (पु०) [नि + व्यूह + क्त] पिता, जनक ।
निर्व्यूहम् (वि०) [निर्व्यूह + इति] 1. प्रत्याख्यान करने
वाला, बर्धन करने वाला 2. जाने बर्धने वाला ।
निर्व्यूहम् [निर्व्यूह + क्त] विद्या, प्रदान, सागनी ।
निर्व्यूह (वि०) [निर्व्यूह + क्त] (सगीत० में) अन्-
धरिता या अन्धरिता (बाणी) ।
निर्व्यूहम् [निर्व्यूह + क्त] दूर भगना,
हटाना ।
निर्व्यूहः [नि + व्यूह + क्त] अन्धर, अन्धरि
सन्धर्योत्सर्जनः [निर्व्यूह + क्त] अन्धरि
सन्धर्योत्सर्जनः—महा० १२।
३४।३० ।
निर्व्यूहम् [नि + व्यूह + क्त] टैलर केने के लिए प्रका
का उपरीक्षण ।
निर्व्यूह (वि०) [नि + व्यूह + क्त] 1. बाहर निकला
हुआ 2. जाने आया हुआ—अन्धरिस्थान एवम्—दु०
सं० ३।३५ ।
निर्व्यूहः [नि + व्यूह + क्त] कराहना, बाह्य करना १०
७।२।१२२ ।
निर्व्यूहित [नि + व्यूह + क्त] अन्धर
पुरा किया गया—माल० ६ ।
निर्व्यूहित (वि०) [निर्व्यूह + क्त] निर्व्यूह ममाने के
छीक में यत्न, अन्धर घटनी आदि महित ।
निर्व्यूह (वि०) [नि + व्यूह + क्त] जिसके ऊपर लुका
गया हो भा० ११।२२।५९ ।
निर्व्यूहः [नि + व्यूह + क्त] बर्धन, कर्मन ।
निर्व्यूह (वि०) [नि + व्यूह + क्त] गतिहीन, अन्धर,
निर्व्यूह, अन्धर (पु०) विद्या का अन्धर—बाणोत्स
देवि निर्व्यूह—१० ३।५।३५ ।
निर्व्यूहम् [नि + व्यूह + क्त] अन्धरिता, अन्धरि बना
विद्यामन्धरन ।
निर्व्यूह (वि०) [ब० म०] विना म्यान का ।
निर्व्यूहक (वि०) [ब० म०] विना किसी चालाकी के,
ईमानदार, अन्धर ।
निर्व्यूह (वि०) [निर्व्यूह + क्त] बली-बलि पकाना
हुआ ।
निर्व्यूहस्य (वि०) [ब० म०] जिने कोई उपदेश न
दिया हो, अन्धर ।
निर्व्यूहम् [ब० म०] अन्धरि, गया, नृत्यन ।

अव्ययिह्व (वि०) [व० सं०] जो शान बहूच नहीं करता है, उपहार नहीं भेजा है ।
 अविद्यावास (वि०) [व० सं०] निरास, हतास ।
 अविद्यावधि (वि०) [व० सं०] जो अज्ञेयी से अजी आता है, नया (कपड़ा) ।
 अविशंकर (वि०) [व० सं०] जिसमें संकड़ न हो, रोड़े आदिबो से मुक्त ।
 अविशु (वि०) [व० सं०] 1. कलात 2. असहिष्णु ।
 अविशुभ (वि०) [व० सं०] अशुभ, साहाय्यहीन ।
 अविश्व (वि०) [व० सं०] अष्टहीन, जिनमें से कोई आशय न निकले ।
 अविश्वस (वि०) [व० सं०] कठोर, कड़ा, कच्चा ।
 अविश्वसिबुध (वि०) [व० सं०] स्वभावतः अनुर ।
 अविश्वस्य (वि०) [वि० + अन् + क्त] मुलगाथा हुआ (जैसे बाण) ।
 अविश्वस्यन् [व० सं०] सुघो का न होना, दोषराहित्य, दापो का अभाव ।
 अविश्वस्यः [वि० + अन् + क्त] गृभ जाना, बुध जाना, दक मारना ।
 अविश्वस्यन् [वि० + अन् + क्त] (सेना की भाँति) कर्म लगाए हुए, शिबिगम्य । नम०—दृष्ट (वि०) कायल हुआ, कुशल ।
 अविश्वस्यन् [वि० + अन् + क्त] 1. मूकर जाना 2. बचन-विरोध, विरोधातिथि ।
 अविश्वस्यन् (वि०) अचन मार्ग का अनुसरण करने वाला ।
 अविश्वस्यन् (न०) अज्ञेयकृत अविश्वस्यन्क मी लोको का अर्थ ।
 अविश्वस्यन् (वि०) [त० सं०] जल में रहने वाला, जल में घुसने वाला ।
 अविश्वस्यन् (स्त्री०) लक्ष्मी ।
 अविश्वस्यन् (वि०) [वि० + अन् + क्त] देवताधर्म के दीप तथा उपाधि में मृगजित्त, प्रभावित ।
 अविश्वस्यन् (व०) राजकीय प्रमाप्तिबो तथा समाचारो का सङ्ग्रह ।
 अविश्वस्यन् (व०) अतिथय प्रेम ।
 अविश्वस्यन् (स्त्री०) [वि० + अन् + क्त], य जोष, पूर्वस्य (अर्थ) कागयार-सीवी स्वाध्यायनागारे धने स्त्री-व्यञ्जनवने माना० ।
 अविश्वस्यन् [नृत् + क्त] हटाना, दूर करना ।
 अविश्वस्यन् (व०) सम्भाव्यता, प्रायिकता ।
 अविश्वस्यन् (अ०) कदाचित्, सम्भवतः ।
 अविश्वस्यन् [व० सं०] (व० सं०) 1. मनुष्य, व्यक्तित्व (वाद-पुत्र हो या स्त्री) 2. मनुष्य-जाति 3. पृथिवी वा द्वा 4. मत्ता । सभ०—कार, प्रत्ययविधय बाधं लीय । अन्ध (वि०) मनुष्यपत्नी

—वाच्यन् बड़ा भवन, बड़ा कमरा,—वाच्यन् पालकी ।
 अविश्वस्यन् [नृत् + क्त, क्त + वा] माघ, अश्विनय ।
 अविश्वस्यन् [व० सं०]—हस्तः नाभते नमय हाथों की स्थिति ।
 अविश्वस्यन् (स्त्री०) योग की एक क्रिया—नाक में डोरी डाल कर मूत्र में से निकालना ।
 अविश्वस्यन् [नो + अन्] 1. अटमल—माना० 2. बकल, बल की छाल—माना० 3. अक्षि । सभ०—कार्यधन जोसो के लिए एक आशु,—अन्ध (वि०) जिसकी अग्नि अधिक प्रकली हो, अग्नि प्रकाने वाला,—वाक्यः जोसो की मूल्य,—अन्धः 1. अक्षि जिन्की सेलना 2. जोसो में बुल होकरना, अन्ध हीप ।
 अविश्वस्यन् [नृत् + क्त] जोसो के लिए उपयुक्त ।
 अविश्वस्यन् (वि०) [व० सं०] जिसकी मृग्य निकट ही है, मरणासन—राज० ५:३१ ।
 अविश्वस्यन् (वि०) उन्मत्तमान, कोणाहल करने वाला ।
 अविश्वस्यन् (नृत् + क्त) मृग्यार भवन, प्रसाधनकला ।
 अविश्वस्यन् (नृत् + क्त) पहिए का चेटा और नामि ।
 अविश्वस्यन् [नो + अन्] 1. ने जाने जाने के योग्य 2. सिखा दिये जाने के योग्य—अनेय अविश्वस्यन्-योग्य—महा० ५:३१ पर टीका ।
 अविश्वस्यन् (व०) करोडपति, कोटपतीस ।
 अविश्वस्यन् [नियम + अन्] योक्तकृत निष्कल का एक काण्ड । सभ०—काण्डः दे० 'नैयम' ।
 अविश्वस्यन् [विद्या + अन्] 1. लयाल, विद्या 2. बन् (पुल जिसकी पत्नी अजी बन् हो) ।
 अविश्वस्यन् (वि०) [निमित्त + ठक्] 1. किसी कारण से सबद्ध 2. बसाधारण । सभ०—अन्ध (नृत् + क्त) किसी विशेष कारण से होने वाला सम्भार (वि०) नियम-कर्म), अन्धः बद्ध में नीन हो जाना, बाध्यय (यद् अथ धार ह्यार वधं के उपगन् होता है ।
 अविश्वस्यन् (वि०) [निश्चयि + अन्] दक्षिण-पदिचय दिशाबो से सबध रखने वाला ।
 अविश्वस्यन् [निश्चय + अन्] चिला मे मुक्त होना ।
 अविश्वस्यन् (वि०) [निष्कर्म + ठक्] लकड़ी काटने वाला ।
 अविश्वस्यन् [निष्कर्म + अन्] भौतिक सुखो के प्रति उदासीनता (बृ०) ।
 अविश्वस्यन् (वि०) [विद्या + ठक्] 1. अक्षिप, उपसहार परक 2. निश्चित 3. उन्मत्त, पूर्ण 4. ज्ञाप्य, अक्षि-वार्—महा० १:१३:२१ । सभ०—अक्षिपारिन् (वि०) जीवनपर्यन्त ब्रह्मचर्य पालन करने वाला ।
 अविश्वस्यन् [नीहार + अन्] कुहरा या बुध मे नववध रखने वाला ।
 अविश्वस्यन् [व० सं०] किलियों में बसाया गया पुल ।

व्यस्तः [नि + व्यस्] 1 सायीव्य, सन्निकटता 2. पचिमी पादसं—रा० २।१८।१२ ।

व्यस्यहः [नि + व्यस + ह्य + ह्यच्] समस्त पाद्व्य के प्रथम लक्ष्य का अन्तिम स्वर जिस पर स्वरानुगत नहीं किया गया है ।

व्यस्त (वि०) [नि + व्यस् + क्त] 1 धारण किया हुआ, बन्ध पहने हुए 2 (स्वर की भांति) मन्दस्वर से युक्त । सम० अस्तव्य (वि०) रख दिए जाने के योग्य, स्थिर किये जाने योग्य, स्थिर (वि०) बाह्य बिल्ल से युक्त ।

व्यस्तः [नि + व्यस् + घञ्] लिखित पाठ्य या साहित्यिक मूल पाठ ।

व्याप [नि + वृ + घञ्] 1 प्रजापती, रीति, नियम,

व्यावस्था 2 अधिकार 3 विधि 4 धर्म 5 व्यापारः हाग उदाहरित निर्णय 6 नीति 7 अष्टाश्र प्रशासन 8 मातृत्व 9 व्यवस्था निर्णय 10 सम०—आगत (वि०) ईमानदारी से प्रा०, आभास मिथ्यातर्क जिससे मत्स्य की शब्दक मानी है, पर मत्स्य का आभास उपेत (वि०) व्यापार 1. मत्स्य, अनु-मति-प्रदान, मही दम स माना हुआ, निवृत्त (वि०) यथासं प्रा० करने वाला,—विद्या, शास्त्रम् लकोविद्या, तत्कालम्,—समष्ट (वि०) युक्तिव्युक्त, तर्कमय ।

व्युत्पञ्चाशत्पञ्च (पु०) ऐसा मूल व्यक्ति जिसमें मान-बना के गुण पदान् प्रनिदान से को कम हो ।

व्युत्पत्ता (स्त्री०) 1 कमी, हीनता 2 घटियापन, अधूरापन ।

प

पञ्,ञ् (म्भा० चुरा० पर०) मष्ट करना ।

पक्षिः [पच् + क्तिच्] पक्षिनीकरण,— धारीरक्षित कर्माणि—महा० १३।२००।३८ ।

पक्ष (वि०) [पच् + क्त, तस्य च] 1 पक्षा हुआ, भुना हुआ, उबाला हुआ 2 पूर्णविकसित । सम० - पक्षाप (वि०) जिसके मनोबोध और विषय सामनाएँ प्राप्त हो गई हैं, पाक्ष (वि०) पक्षे गान वाला, दुर्बल धारीर, क्षीणकाय ।

पक्षिणः [पञ्च् + क्तिन्] 1 एक छन्द का नाम 2 माहन, अयो । सम० पक्ष आनुपूर्व्यं, परम्परा, क्रमिक अनुगमन ।

पक्षिणः (न०) पक्षिणः, लाहनों में ।

पक्ष्मवासरः (पु०) मनिवार ।

पक्ष [पच् + अच्] (वेद०) सुष्यं, दे० ३।५३।११ पर सायय० । सम०—अप्यव्यः सर्वशास्त्र,—विशेषः एक पक्ष का ही विचार करना, किसी का पक्षपात करना, —अर्थः किसी तर्क के बानो पक्षको में विवेक करना, —अर्थः पक्षापात, धारीर के एक पक्ष में लकवा, —अर्थः—बाल पक्षापात, अर्थात् में क्रान्ति, पक्षकः पक्ष ।

पक्षिणोऽर्थम् (नपु०) दक्षिण भारत में एक पुष्प तीर्थ ।

पक्ष्मन् [पच् + मनिन्] 1 मत्स्यस्य सिंहस्य पक्ष्मणि मुसाल्लनासि—महा० ३।२१८।१ 2 (हरिण के) बाल निवृत्तविश्रांज्यलसुखमपहमया—णि० १।८ ।

पक्ष्मन् (स्त्री०) [पक्ष्मन् + पुष् + क्तिच्] जिस स्त्री की पक्षमें अर्थी हैं ।

पक्ष्मणिक (वि०) [पच् + शानच्, म्भा० क्त] अपन याज्ञत स्वयं पकाने वाला ।

पक्ष्मणिका (स्त्री०) हल का एक प्राण ।

पञ्चम् (न० वि०) सर्वत्र दे० व०) [पञ्च् + वनिन्] (समास प 'पञ्चन्' के अन्तिम 'न्' का लोप हो जाता है) पाँच । मत्स्य आगतः—आशयः 1 मिष्ट 2 किसी भी एक विषय में अत्यन्त प्रेम कि 'बेठ पञ्चवान', आशयम्, आयतनी पञ्च देवताः (धूम, अम्बिका, विष्णु, गणपति और वाहुर) का समूह जो दैनिक पूजा में सम्मिलित हैं, उपचार पूजा के पाँच पदार्थ (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और वैशद्य), कृष्णम् दिव्य शक्तिपों के पाँच कार्य-मूर्ति, स्थिति, सहाय, शिरोधान और अनुपद, —आशयः एक छन्द का नाम,—आशयः पाँचों तर्कों की सहायता से स्थिर या जीवित, शक्ति का शरक के ब्रह्म मूलभाष्य पर पक्षपाताचार्य रचित टीका,—राज्यम् (नपु०) 1 आनन्द एक माटक का नाम, दर्शन शास्त्र पर नारद हाग रचित एक ग्रंथ, क्षीणम् सामाजिक आचरण के पाँच नियम जिन का प्रचार बुद्ध में किया था, —पुष्पम् उत्तराण्य, गुणवत्त, दिन, हरिदासर और गिडु अर्थ का मयोग, सिद्धांती (स्त्री०) ज्योतिष के पाँच सिद्धांत ।

पञ्चम (ं०) [पञ्चन् + इट् + मट्] पाँचवा । सम०—आशयः कोयल,—स्वरम् तनीत के स्वर का नाम ।

पक्षिणिका (स्त्री०) पक्षिणः या अक्षिणः पुष्पिका ।

पञ्चीकरणम् [पञ्च + क्वि + कृ + ल्यप्] पाँचों तारों का एक विनये फिर नामा प्रकार क वधायी का निर्माण होता है ।

पञ्च-इन्द्र [पञ्च + क्वि] कण्ठा, वरुण । सम० अश्वत्थः वरुण की गाँठ, आनन्द, -जसरीयम् बुद्धी, चादर, मोदने का वरुण, -बाह्यम् मञ्जीरा, करताल, झाडा, -बाह्यः सुराशिवत पूर्ण ।

पञ्चकम्, -कम् [पञ्च + कलम्, स्वार्यो कन् च] 1 पर्दा, घुपट 2 पेंकट ।

पञ्चलिका (स्त्री०) राशि, धनुष्यव जैसा कि 'धूलिपट-लिका' में ।

पञ्चवेला [प० त०] बहु समय जब कि होल बजाया जाता है ।

पञ्चकरण (वि०) [५० त०] जिसके अंग स्वयम् हैं - सन्देशार्थी सब पञ्चकरण प्राथमिभि प्राणनीया जेव० ५ ।

पट्ट - ट्टम् [पट् + क्त, ट्टभावात्] 1 (लिखने के लिए) लकीरी 2 गजकीय प्रदासि 3 रेशम । सम० अंशुक रोपासी वरुण, कण्व, कण्वनम् सिर पर पगोले बाधना, या मुकुट बाधना ।

पट्टकिल [पट्ट + कन् + इलच्] एक मुखपर का किंगये पर जानने वाला, पट्टेदार ।

पथ [पथ् + क्वि] 1 पथम में सन्तना, दाव सजाकर सन्तना 2 दाव सजा कर, या दाव बंद कर सन्तना 3 दाव पर सजाई हुई सन्तना 4 दावें 5 पैना । सम० अथ साम ग्रहण करना, - फिना 1 दाव पर सन्तना 2 संधर्ष करना, मुकाबला करना ।

पथ्य (वि०) [पथ् + यन्] 1 बचने के साध, चिकित्सा पदार्थ 2 स्यापार, वाणिज्य 3 मूर्ख । सम० -अथ स्यापार, - शस्त्री भाड़े की मेजिका, परिशोता रत्न सत्री, सस्था बतने की दुकान ।

पथकरणम् (नपु०) जन्मकुडनी में सन्त से दूसा, आठवीं, पाचवीं और प्यारहरा स्थान ।

पथिनी (स्त्री) विद्वाना, बुद्धिमता ।

पथ्य, - क (पु०) हीडडा, कबीर ।

पथङ्ग [पथन् गन्धर्ताति गम् + ङ नि०] 1 घोडा 2 सूयं 3 मंद 4 पारा 5 टिट्टा । सम० साव पथो का बन्ना ।

पथङ्गिका [पथङ्ग + कन् + टाप्, इलच्] (स्त्री०) 1 धनुष की शरीरी 2 छोटा पथी 3 मधमलिका ।

पथङ्गवर्ध (वि०) 1 जो तर्जगत न हो 2 काव्य शौच्यं से रहित ।

पथ्यः [पथ् + आक्] बाण का निशान बघाते समय धनुषियों की निशान मुडा ।

पथाका [पथ् + आक् + टाप्] प्रचार, प्रसार - रम्या इति प्राणपत्नीः पथाका - वि० ३१५३ । सम० - बन्ध भवजयटिका, बडे का डडा ।

पथाकिम् (वि०) [पथाक + इति] झडापारी, पुं० एव । पतितगर्भा (स्त्री०) [ब० स०] वह स्त्री जिसका गर्भ-पात हो गया हो ।

पतितमूल (वि०) [ब० स०] लम्पटता का बीजान विनाने वाला, अम्याज ।

पथाकिम् (पु०) पदानि, पैदल सिपाही ।

पथ्यपथ्यः [पथ् + अथ्यथ] पैदल सेना का इलायक, डिपेडियर, उपधमपति ।

पथम् [पथ् + पथ्] 1 पता (बुल का) 2 (कूल की) पत्ती 3 पत्र, पिठोटी 4 पथी का शान् 5 तलवार या चाकू का फल । सम० - लम्पटता स्त्री, यष्टिका, - बाह्यः भाग, लकड़ी भाँडे पीरने का मन्त्र, - न्यासः शान् में तीर लगाना, - विधाधिकता पत्ती की बना टोपी ।

पथल (वि०) [पथ् + लच्] पता से समुद्र ।

पथिकः [पथिन् + क्तन्] मार्ग चलने वाला, बाथी । सम० - अथः एक पाथी, या यात्रियों का समुह ।

पथिन् (पु०) [पथ् + इति] 1 मार्ग 2 यात्रा 3 पगल सम० अथमम् मार्ग में जाने के लिए प्रोन्थ पथार्थ ।

पथम् [पट् + क्वि] 1 पैर 2 पग 3 परचिह्न 4 लिपिका अष्टापर पथस्थाने दसमदेव लक्ष्यते महा० १२ । - २८।४० । सम० - कसमम् चरुण कसल, पैर स्त्री चमन, बालम् पथम् समुद्र, - रथना 1 साहित्यिक कृति 2 शब्द विन्यास, सन्धिः सन्धो का वृत्ति-पथुर मेल ।

पथातिलक (वि०) अतिनम्र, अत्यन्त बिनीत ।

पथीक (तना० उभ०) सर्वमूल निकालना ।

पथम् [पट् + यन्] 1 कसल 2 शरीर की चिधेपस्थिति, पथासन लगा कर बैठना 3 इन्द्रजाल से सबड आठ प्रकार के कोपों में से 'पथिनी' नामक कोप । सम० शिवा 1 लक्ष्यो का विशेषण 2 बरन्नाह की पत्नी मनसा देवी, मुडा तत्पश्चात् का प्रतीक ।

पथ्यः (ब०) [पथ् + यत्] अरुकी लम्बा में । पथ्योक्थक (पु०) एक प्रकार का फोड ।

पथः (पु०) [पट् + रक्] शान मार्ग ।

पथस्यु (वि०) प्रस्ता के योग्य बात प्रकट करने वाला, यज्ञस्त्री ।

पथी (पु०) [पा + ई, इलच्] 1 सूयं 2 पन्थवा । पथोरकः [ब० त०] नदी की धारा ।

पथ (वि०) [पथ् + क्वि, क्व् वा] 1 दूरा 2 दूर का 3 इसके बाव का 4 उन्मत्तर वेध 5 उन्मत्तर,

प्रमुख 6 विदेही 7 प्रतिकूल 8 अग्निम, - रः (पु०) 1 दूसरा 2 रातू 3 सर्वसंयमितान्, रत्न (नपु०) 1 उच्चतम किन्तु 2 परमात्मा 3 मोक्ष 4 शब्द का गणन अर्थ 5 भावी लोक, इससे परे की दुनिया। सम०—अवसन्न (परावपम्) 1 उच्चतम पदार्थ 2 बारास 3 बुद्ध धर्मित, 4 धार्मिक आश्रम, -अर्थ 1 मुक्ति-महा० १२।२८८ १९ 2 दूसरो के लिए उपयोगी पदार्थ मघात-परावत्वात् सा० का० १७, -अर्थ (वि०) दिग्ध—असाहाय्य सख्य पराध्वंस्व—भट्टि० १।९८, -अवसन्नशायिन् (वि०) दूसरे के घर माने वाला, आश्रित (वि०) दूसरा के द्वारा गालिन पोषित, दास, -उद्धृः कोयल, -उत्सर्पणम् दूसरो के निकट जाना, -काल (वि०) भावी समय में मरव्य रहने वाला, -सर्कः भिखारी, भिक्षुक, सत्पणामिन् (वि०) दूसरे की पत्नी के साथ सोने वाला, -परिग्रह दूसरो की मर्पति (जैसे 'रि' पत्नी') प्र० ५, परिभक्त दूसरो से अपमान या निरस्कार प्राप्त करना, पराभिवृत्त (वि०) जो दूसरो के यहाँ भोजन नही करता, फाकस्त (वि०) जो अपने पालन पोषण के लिए दूसरो पर निर्भर करता है—प्राक्कथि, दूसरो के घर गये भोजन की बात करना।
 परवा (ब०) [पर+धाञ्] अणुधा, वरना जोल० ५।१५।
 परम् (वि०) [पर परन्त माति-क] 1 अत्यन्त दूर का, अग्निम 2 उच्चतम, श्रेष्ठतम, महत्तम 3 मुख्य, प्रमुख, प्रधान, -सम् (ब०) 1 अच्छा, बड़ा अच्छा, हा 2 अत्यन्त। म० अक्षरम पुनान अक्षर 'अ', -आयुष्य चक्र नामक ग्रन्थ ग० ६।५/१२, -आयु मन्त्रमय शक्त, -सहृन् (वि०) अत्यन्त रहस्यपूर्ण, -सु पराधामा, परमपुत्र, -परम् (वि०) अत्यन्त श्रेष्ठ राजः महाशक्ति राजा, -सम्बन्ध (वि०) अत्यन्त सफल, -सम्पत्त (वि०) परमादरणीय, अत्यन्त माननीय।
 परम्परयात् (वि०) [त० म०] परम्परा प्राप्ता, प्रमान-सा प्राप्ता।
 परम्परसम्बन्धः (प०) अप्रत्यक्ष सम्बन्ध।
 परम्परित (वि०) [परम्परा इत्थ] शृङ्खला के रूप में, श्रेणीबद्ध।
 परम्पुत्रा (स्त्री०) [त० म०] महाशक्त में बलित अगम्यति।
 परम्परशिलक्षण (वि०) शायम में एक दूसरे का विरोध करने वाला।
 परम्परव्यापृतिः (स्त्री०) आगामी निराकरण, पारस्परिक बहिष्करण।

परम्परे० 'पराव'।
 पराङ्मुख (वि०) [परा+ङ्मुख+क्त] तिरस्कृत, अप्रतिष्ठित, निरादृत।
 पराक्षिप्त (वि०) [परा+क्षिप्त+क्त] उच्चपुत्रण, बलात् दूर किया गया।
 परागः [परा+गम्+ट्] युगान्धित पूर्ण, पुष्करज।
 पराज् (वि०) [परा+अज्+क्विप्] अनादृत, जो दोहराया न गया हो अन्ध्याने पराङ्क शब्दम्य नादर्थ्यात् म० म० १०।५।४५ पर गा० भा०।
 सम०—दृग् (वि०) बहिर्मुखी, जिसने अपनी आंख बाहरी मसान की ओर लगाई हुई है।
 पराधीन (वि०) [पराध+ञ] 1 अन्यायक 2 बाहरी।
 पराधीनम् [परा+धी+ङ्घट्] पीछे की ओर उठना पश्चात्पति पराधीनम्—महा० ८।१।२७।
 पराभक्त (पु०) [परा+भू+ङ्घट्] ६० वर्ष के मरकर पक्ष में चालीसवीं वर्ष।
 पराक्षिप्त (वि०) [परा+क्षिप्त+क्त] फेंका हुआ, दूर भाला हुआ।
 परालेखः (पु०) अन्वी बनाना, कारागार में डालना।
 परिशक्तिम् (वि०) [परि+क्विप्+ङ्घट्] विभक्त, बँटा हुआ।
 परिष्का [परि+क्विप्+ङ्घट्] नदी के प्रवाह का अनुसरण करना। सम०—सहृ बकरी।
 परिष्का (स्त्री०) [प्रा० म०] व्यापार करना।
 परिष्कृत (वि०) [परि+क्षिप्त+क्त] धायन, आहृत।
 परिशक्तिम् (पु० पर०) बुरा अज्ञा कहना - प्रवशाप्याधि-मानात्क्ष परिशिक्षेण राक्षसम्—रा० २।३।०२।
 परिगाह (वि०) [परि+गाह+क्त] बहुत अधिक, अत्यन्त।
 परिशक्ति (वि०) [परि+शक्ति+क्त] 1 श्रेष्ठ रूप या गुण का एक परिशक्ति 2 पुनरुक्त, पुनरावृत्त।
 परिष्कृ [परि+बहु+ङ्घट्] 1 शरीर 2 प्रशासन।
 सम०—पत्थियो की बड़ी लम्बा—परिष्कृतदृष्टेयि हे प्रतिष्ठे—वा० ३।
 परिष्कृष्टा (वि०) [परि+बहु+ङ्घट्] नक्षत्रा तथा शिष्टना पूर्वक सम्भोजित किये जाने के वांछ्य।
 परिष्कृत्य (वि०) [क० ल०] लोहे की शक्ति भारी।
 परिष्कृत्यः (पु०) शीघ्र, दारनासे की शक्ति।
 परिष्का (बहु० पर०) सर्वत्र घुमन करना।
 परिष्कृत्यलक्षण (नपु०) धाड़ के अनुच्छान की विमोच रीति।
 परिष्कारिका [परि+षट्+क्विप्+ङ्घट्] लेखिका शक्ती, सेवा करने वाली लौकिकता।

परिचारितम् [परि + चर् + चिच् + क्त] आचार, प्रबोध ।

परिच्छेदवन्म् [परि + च् + खट्] 1 पतित हुआ, गिर जाना 2 विचलित हुआ, भटकना ।

परिचीर्ष्य (वि०) [परि + च् + ऋ] 1 घिना हुआ, मूरझाया हुआ 2 पचाया हुआ ।

परिचाम [परि + च् + चञ्] 1 परिवर्तन, रूपान्तरण 2 पचाना 3 पक 4 पकना, पूर्णतः विकसित हुआ 5 अन्न, समर्पित 6 बुझाया । सम० चञ् अपच के कारण उत्पन्न उदर पीडा, — चञ् (वि०) समचय समाप्त होने को, — बाह्य विकासवायु का साक्ष्य सिद्धान्त ।

परिचीतिः (स्त्री०) [परि + ची + क्तिन्] विचार ।

परिचोत्थ (वि०) [परि + ची + ल्यप्] 1 जिसका अभी विवाह हुआ है 2 जिसका विनियम होना है ।

परिचोषिन् (वि०) [परिचोष + णिन्] तड़क करने वाला, उन्नीचक, कष्ट देने वाला ।

परिचलि [परि + च् + क्लिन्] घुमने मल्लंग ।

परिचोषित (वि०) [परि + च् + ष + क्त] आलापीयन, उन्मुक, आनुरतापूर्वक प्रबल हँसना करने वाला ।

परिचयम् (भा० पर०) फिरती से उतरना ।

परिचयश्च (वि०) [परि + च् + यच् + क्त] भूनाये जाने योग्य, त्याग दिए जाने के योग्य ।

परिचिष्ट (वि०) [परि + चि + क्त] अनकाया गया, ध्यान दिलाया गया ।

परिचिः [परि + चा + क्ति] 1 दीवार बाहर 2 चन्द्र या सूर्य के चारों ओर घूमना आश्रय 3 सितित्र विद्या । सम० उचाल (वि०) समुद्र ही जिसकी सीमा है ।

परिचोदया (स्त्री०) सताप, संवेद ।

परिचौर (वि०) [प्रा० स०] बहुत गहरा (जैसे स्वर या शब्द) ।

परिच्यंस [परि + च् + चञ्] 1 वषने मकरला 2 घड़ना ।

परिचिन्तित (वि०) [परि + चि + क्त] 1 नितान्त पूर्ण 2 सम्पूर्ण परिनिष्ठितकार्यो हि महा० १२। २२८।१३ ।

परिचिच्छम् (नपु०) मार का पक्ष, बन्द्या, चन्दे को मजकूर की दृष्टि से लगाना—पुञ्जावनतपरिचिच्छम-सम्मुखाय—भाष० १०।१४।१ ।

परिचुम्बिन् (वि०) [परिचुम्ब + क्त] जिसे कोई वस्तु सौंभने पर ही मिलती है ।

परिच्योः [परिच्युच् + चञ्] आन्तरिक गर्मी ।

परिच्योः [परिच्य (च) है + चञ्] तलावट का सामान, चबड आदि राधचिह्न—भाष० ४।३।१ ।

परिचोष [परिचुच् + चञ्] लक्ष्, युक्ति, कारण ।

परिचोष्यम् [परिच्युच् + च + चञ्] गृहत्व की आवश्यकताएँ ।

परिचु (भा० पर०) 1 जाने बड़े जाना 2 सुखा देना, मत्पन्न करना एवमेश्वर्यशामा दाने सपरिचोषयेन्—महा० १२।१९।१९ ।

परिच्योषिषाम् [प० न०] घृणा का पदार्थ, घृणा का पाप ।

परिचोषना [परिचु + चिच् + युच्] 1 घृणा 2 (नाटक०) जिज्ञासा का जगने वाले शब्द ।

परिचुत (वि०) [परिचु + क्त] 1 पराजित, हराया हुआ 2 अपमानित ।

परिचुष्ट (वि०) [परि + च् + क्त] तला हुआ, भूना हुआ ।

परिच्योषित (वि०) [परि + च्युच् + क्त] अलङ्कृत, सुसज्जित, मज्जाया हुआ ।

परिच्योष्यत् (वि०) [च० म०] बाल्य अवस्था का, बच्चा, प्यारी उम्र का ।

परिचोष्यम् [परिचु + क्त] बटकाया, फाड़ना, टाटना ।

परिच्योष्य [परि + च्युच् + युच् + टाप्] प्रविश्य, राक ।

परिच्योष्य (वि०) [परि + च्युच् + क्त] आनन्दित ।

परिच्योष्यन्म् (नपु०) [परि + च्युच् + क्त] 1 ऊपर से फाड़ना 2 अतिक्रमण करना ।

परिच्योष्य (वि०) [परि + च्युच् + क्त] चारों ओर से बाटा हुआ ।

परिचोषित (वि०) [परिचु + चिच् + क्त] उछाला हुआ ।

परिचोष्य (पु०) बसड़ा, राय का बच्चा ।

परि (रो) बाधकता [प० न०] निन्दनीय बात चीत, बदनामी को बाने ।

परि (रो) बाधकर (पु०) [अपवाद, मिथ्यानिन्दा, कलक ।

परिच्योषित (वि०) [परि + च्युच् + क्त] सपटा हुआ, बुझलिया बिना हुआ, लच्छा बनाया हुआ ।

परिच्योष्य (वि०) अक्षय, अनिन्दित ।

परिच्योष्य (वि०) घृने योग्य कथ से क्त बीत ।

परिच्योष्य (वि०) [परि + च्युच् + क्त] 1 घेरा हुआ 2 वेष्टाच्छादित, वस्त्र पहने हुए 3 उपहृत (जैसे वि. योग्य) ।

परि (रो) चोष [परिचु + चञ्] अन्वयस्था, अतिक्रम ।

परिच्योषित (वि०) [परिचु + क्त] 1 एक ओर किया हुआ, हटाया हुआ 2 पूरी तरह भोज किया गया ।

परिच्योष्य (वि०) [परि + च्युच् + क्त] विह्वलित, कटा-छटा, क्षिण्य ।

परिचोष (भा० उभ०) 1 अन्तर्द्वेषित करना, मोड़ना 2 क्षानना ।

परिकैलित (वि०) [परिकैल् + क्त] चिरा हुआ
—आमि० २।१८।
परिकाङ्क्ष [परिकाङ्क् + अ + टाप्] 1 संशय, आकांक्षा
2 आशा, प्रत्याशा।
परिकल्पित (वि०) [परिकल्प् + क्त] सम्प्रेषित, वणित।
परिकल्पना [परिकल्प् + क्त + टाप्, द्विभ्यम्] बिना विचार
आज्ञापान।
परिष्क (शब्) न्कः [परिष्पन्द् + पञ्च्] शीघ्र, पञ्चम् ।
परिष्कम् (अदा० भा०) 1 पृथक् करना, निकाल देना
मै० स० १।१।११ पर शा० भा० 2 गिनना।
परितानम् (नपु०) सामयूषत जिसकी बिरल आवृत्ति
होती है।
परितप्तः [परि + त्प् + य] शिरा, घमनी, बाहिनी।
परितप्तम् [परि + त्प् + यञ्] सङ्ग, समुच्चय।
परितप्तो [परि + त्प् + अच्] 1 रगीन कपडा जो
हाथी पर डाला जाता है 2 यज्ञपात्र।
परितप्त (वि०) [परि + त्प् + क्त] बड़ा हुआ, दूर-दूर
करके टपका हुआ।
परितप्त (वि०) [परि + त्प् + क्त] कामचित, वृथा
हुआ।
परितप्त (भा० पर०) 1 निराकरण करना 2 आवृत्ति
करना 3 पोषण करना।
परितप्तः [परि + त्प् + अच्] 1 त्यागना, छोड़ना
2 हटाएँ, दूर करना 3 निराकरण करना 4 टालना
5 झूठ से मुक्ति। सम० चित्पुत्रि (स्त्री०)
सपत्न्यरक्षण द्वारा परिवर्धन (जैन०)—मु बट् गाय
जो बहुत अधिक दिना के परधान बछटा झूती है।
परिष्क (वि०) [परि + इष् + क्त] वास्तुशिल्पी, उनम,
ब्रह्मिन्—अन्ते परिष्कणने हरये नमस्ते माग०
६।१।४५।
परिष्कणः [क० स०] कठोर शब्दों में व्यक्त किया गया
आक्षेप, ऐतराज।
परितप्तः (पु०) मृगशाय, मरे हुए के समान।
परितप्तः (पु०) मृग का मरण।
परितप्तित् (वि०) [परितप्त + वि + क्विप्] जो विजय
प्राप्त करता हुआ किसी में देखा नहीं जाता है, अवृष्ट-
विजयी।
परितप्तित् (वि०) [क० स०] नदयः, उदासीन।
परितप्तः (पु०) पर्व के रूप में बंल।
परितप्तः [पर्व + आलच्] 1 कियती 2 एकाकी सचर्य।
परितप्तः [इ० स०] पर्वटमिथित बावल।
परितप्तित् (वि०) [क० स०] बीरासन पर चिराजमान।
परितप्तित् (वि०) [क० स०] मोमा पर चिराजमान।
परितप्तः [परि + इष् + क्त] हानि, मास-रक्षणपर्यय - महा०
१।१।१।११।

परितप्तित् (वि०) [परि + अष् + स्था + क्त] 1 पहाड़
डाला हुआ 2 अधिकृत 3 स्वस्थ, शान्त।
परितप्तित् [परि + आ + दा + क्विप्] अन्त, समाप्ति।
परितप्तिकाम (वि०) [क० स०] जिसकी इच्छाएँ पूर्ण
हो गई हों।
परितप्तित् (वि०) [परि + आ + पत् + क्त] छोड़ता
करता हुआ, तेजों के साथ पीछता हुआ।
परितप्तित् (वि०) [परि + आ + म्ना + क्त] विख्यात,
प्रसिद्ध।
परितप्त [परि + इ + अच्] 1 अन्त—परितप्तिकाले चमन्य
प्राची कलिरजायत - महा० ५।७।११२ 2 एक ब्रह्म-
कार का नाम काव्य० १०, चन्द्रा० ५।१०८, सा०
द० ३३३। सम० ऋषः परंपरा का मिश्रित।
परितप्त (वि०) [परि + आ + पत् + क्त] अथवा लम्बा।
परितप्तित् (वि०) [परि + अष् + क्त] रट्टी किया
गया, नष्ट किया गया परंपर्यामितकीर्त्यमपदाम्
—कि० १।४१।
परितप्तित् [परि + उष् + अच् + पञ्च्] 'नम्' के प्रयोग
द्वारा निषेधापेक्षकित्—(अज्ञातपम् जानव) - दे०
मै० स० १०।८।१-४ पर शा० भा०।
परितप्तित् (वि०) [परि + उप + आस् + शानच्, ईन्च्]
1 बंटा हुआ 2 बिग हुआ।
परितप्तित् (वि०) [परि + अष् + क्त] जिसके
ऊपर से रात बीत गई हो, बाकी, जो नाश न हो
(जैसे रात का रक्ता भोजन)। सम० बाष्पम्
बहु बचन जिसका पालन न किया गया हो, टूटी
हुई प्रिन्स।
परितप्तित् (वि०) [परि + अष् + क्त] बासी।
परितप्त [पर्व + अलच्] 1 पहाड़ 2 एक ऋषि का नाम।
सम० उक्तयका पहाड़ की तलहटी में स्थित समलक्ष
मृत्ति- रोषम् (नपु०) पहाड़ी डलान।
परितप्त (नपु०) [पु + अलच्] 1 गठि, जोड़ 2 पोरी,
अस 3 जग 4 अनुभाग। सम०—आलक्षित्।
अनुसिमां चटखाना (अमिताप का चित्तु तमसा जाता
है), चित्तु चटखाना।
परितप्त [पत् + अच्] मूली, छिस्का, - कम् 1. मास 2 ४
कर्व का बट्टा 3. समय की माप 4 एक डीठी लौक।
सम०—अलक्ष् मांस में मिले बावल।
परितप्त [पत् + आलच्] नुगे, तुप, तिनके। सम०
- आलक्ष. तिनकों का बोझ, मूली का भार।
परितप्त (स्त्री०) [पत् + इञ्] हाथी के सल्लक से ठीक
ऊपर का भाग।
परितप्त (वि०) [पत् + क्त] बूझा, चित्तके बाध पक्ष कये
हो, जिसके विर के बाध सञ्चये हो गये हों,—लम्
1 सञ्चये बाध 2 कैच पात। सम०—अलक्ष सञ्चये

संहिता काव्यता के चरणों का जोड़, हीनबलम
 बहु पानी निमका कुछ अण उबाला हुआ हो ।
 पाषाणुलकम् (नपु०) एक छन्द का नाम ।
 पालीवपृष्ठजा (स्त्री०) माषा नाम का घास जो पानी
 के किनारे उगता है ।
 पाण्यवुर्णा (स्त्री०) [प० ष०] मार्गश्यामिनी देवी
 आदि ऋषि नीचाकृत पाण्यवुर्णा नै० २५।३७ ।
 पाप (वि०) [पा+प] 1 बुरा, दुष्ट 2 अभिमान,
 विनाशकारी, अराजक से भरा हुआ 3 नीच,
 अधम । मम ब्रह्म (वि०) नीच कुल में उत्पन्न,
 विनिर्गह दुष्टता को रोचना,— शमन (वि०) पाप
 वर्मों को रोकेने वाला ।
 पापसतिपहारक (पु०) और खाने वाला ।
 पापितम् (नपु०) उदकदान, उपहार में दिया गया जल ।
 पारः [पृ -पञ्ज] 1 नदी का दूनाय किनारा 2 पार
 कर लेना 3 सम्पन्न करना 4 पारा 5 अन्न किनारा
 6 मन्त्रक तन्माद भवाद येन स नीचतु पाप
 --भा० ६।१ २४२ अन्न मर्हिम्न पार ते
 --म० म० । सम०--नेत्र (वि०) जो किसी
 व्यक्ति को किसी कार्य में दख बना देता है ।
 पारतन्त्रिकम् [परतन्त्र+उक्] व्यभिचार ।
 पारमार्थिकता (स्त्री०) परम सत्य का अर्थान्वय ।
 पारमिता [पारम् इत् प्राप्त् -पारमित -अन्तु स०
 निष्ठा टाप्] मयुगं विपत्ति, पूर्वता ।
 पारमेश्वर (वि०) [परमेश्वर+अच्] परमेश्वर में सम्यग् ।
 पारम्यवक्त्रम् [पारम्य+व्यञ्ज] परम्य-प्राप्त अनुक्रम ।
 पारषदम् (नपु०) मद्रथता, किसी मन्त्रा का सदस्य
 बनना । भा० १।१६।१७ ।
 पारावतन्त्री (स्त्री०) सम्बन्धी नदी ।
 पारिपार्थिक (वि०) [परिपार्थ+उक्] 1 पक्षों के
 भाग्य, जो हृद्यम हो सके 2 असमें विकार हो सके,
 परिश्रम ।
 पारिपार्थिक [परिपार्था +उक्] लक्ष्मी मद्रक पर नटने
 वाला, हाक ।
 पारिलवर्षुधि (वि०) [व० ष०] बचल आशो वाला ।
 पारिलवमलि (वि०) [व० ष०] बचल मन वाला ।
 पार्षिक (वि०) [पृष्य+उक्] कठोर, दारुण ।
 पार्ष्वसामिक (वि०) [पार्ष्वसाल+उक्] समाप्ति के
 निकट जाने वाला ।
 पार्ष्वः (पु०) [पृष्य+अच्] 1 एक ऋषि, वैशियों के
 २३ व तीर्थकर का विशेषण 2 पार्ष्वभाग । सम०
 --अपवृत्त (वि०) एक ओर की मुका हुआ (हीरे
 का एक दोष), क्षतिः शरीर के पार्ष्वभाग में
 पीडा, उष्योद्धम् (अ०) इतना हलना कि बिलसे
 पार्ष्वभाग टुकने लगे,—अवकः शिव का एक विशेषण ।

पालिाधिपहः [प० ष०] मना के विशेष श्रेय जाक
 करना ।
 पाकम् [पाक 'तुष्ट] (शस्त्रों को प्राण पर रख कर
 तीक्ष्णनेत्र करना ।
 पाकासविधि [पाका-अप सत्य विधि] हाक
 लकड़ियों से मूलक का दाह मन्त्रार करना ।
 पाकपत्थर (पु०) एक प्रकार का पत्थर ।
 पाकलिक (वि०) [पकल+उक्] क्रिमां विनाश
 मील, विषयुत ।
 पाककर्मि (पु०) [प० ष०] मयुंकरान मणि ।
 पाककालि [व० ष०] जाकान, अभिनिधि, बेमार ।
 पाककावि (स्त्री०) [प० ष०] अग्नि की ज्वाला ।
 पाकित (वि०) [पृ+पिच सन्] पवित्र किया हुआ
 स्वच्छ किया हुआ ।
 पाक्य (वि०) [पृ+पिच +प्यन्] पवित्र किये गये
 योग्य ।
 पासिन् (पु०) [पास -इति] रम्यो, बेटी पासीक-
 मायतामाचकणं जि० १।८।५७ ।
 पाशुपतधतम् (नपु०) पाशपत सिद्धान्तों के लिए कि
 गया उपनाम, धन ।
 पाककज्जम् (पु० ष०) पायल की कक ।
 पिङ्गमूल [व० म०] गजः ।
 पिङ्गलम् (नपु०) गजः ।
 पिङ्गलाक्ष (पु०) चिपचिपा भूक ।
 पिङ्गलिकम् (नपु०) एक प्रकार का मर्दान-उपकारण ।
 पिटकूपाश (पु०) एक प्रकार की छटा मछली ।
 पिठरपाक (पु०) कार्यकारण का मेल ।
 पिठरी (स्त्री०) कटाही, जिसमें कुछ उबाला जाय ।
 पिष्ट (वि०) [पिष्ट+अच्] 1 टास 2 सटा हुआ
 मद्यन । मम० अक्षर (वि०) सपकन व्यञ्जनों
 युक्त मद्यन, निवृत्ति सपिष्ट बन्धुना की समाप्ति
 विन्धुध-अभावस्था का मन्त्राभय विनाश के प्र
 आहुति देना विधम (पु०) अपहरण की रीति
 मदन का तरीका की० अ० २।८।१६ ।
 पितृपतिः (पु०) भाजन-प्रदाता (मोम का विशेषण) ।
 पितृपत्यम् [व० ष०] पितृ, पितृसह तथा प्रपितामह
 पितृभ्रातरपत्न्यम् (नपु०) पितरों की पूजा का वृत्त सम्यग्
 पितृम् [अपि+दो+कत्, अपे अकारलापः] एक तर
 पदाप्यं शरीर के भीतर दकृत म बनता है
 मम० --वर (वि०) पितृ प्रकृति का व्यक्तित्व-
 (स्त्री०) शरीर में पितृमाय ।
 पिघातव्य (वि०) [अपि+धा+तव्यन्, अपेः अणोप
 बन्ध किर जाने के योग्य ।
 पिण्ड (अ०) पहन कर ।
 पिण्यतः (पु०) हीन ।

विषयः (पु०) 1. विषय नाम का वृक्ष 2 कर्मजन्म फल, कर्म का फल—मूत्र० ३:११। सम०—अह 1 एक मूत्रि का नाम—विषयलाट 2 विषय के बन्धने माने वाला 3 विषयवाचना में लिख।

विष (वि०) [पा+अप् विवादेश] पीने वाला नल-च्छायाविवापि दृष्टि- ने० ६:३४।

विशालम् [पिश+ल] 1. माम 2 अत्याम। सम० विषय 1 माम का टुकड़ा 2 विरम्ह्यमूत्रक शब्द जो शरीर को इतित करे, प्ररोह माम का उच्चार, म्बोली।

विशालित (वि०) [विमुनः इतश्] प्रकट किया गया, प्रदर्शित।

विष्ट (वि०) [विप्+क्त] 1 पीसा हुआ 2 गुंटा हुआ। सम० अह (वि०) आटा माने वाला,—पाक पकाया हुआ आटा (रोगी, पुत्री आदि)।

विष्टात [विष्ट्+अत् अप्] भूयन्चिच वृण, अवीर जो हाथी के अवधर पर एक दूधने पर छिद्रक दिया जाता है।

विष्णु (वि०) [इम+मन+उ] 1 छने की इच्छा वाला 2 आचमने करने का इच्छक।

वीर्षाधिकार (पु०) [व० न०] विभी पद पर नियुक्ति। वीर (वृण० उभ०) शब्द करना—भूमिमासिकमृच्छं पञ्चम वीरयत्न सि० १:११।

वीर्याश्रावणम् [व० न०] (प० १०० में) वृह की किमी अग्रम स्थान पर स्थिति।

वीर्य (वि०) [पा+क्त] 1 वीर्या हुआ 2 भिवाया हुआ 3 बाणोक्त 4 छिद्रका हुआ। सम०—उबका वह गाय जो पानी पी चुकी है पीतोदका ज्ञान्वा कठ०—विष्ट (वि०) मोट में हुआ हुआ, शक्ति एक प्रकार का गोप, स्फोट मुञ्जली।

वीर्यश्रावणम् (शाम्भ) (पु०) [व० म०] घटमा।

वृत् (पु०) [पा इममुन] 1 जोरित प्राणी 2 एक प्रकार का नरक—अपराधमिनि ते पुनश्चाणान् महा० १:११, ०:१३। सम० कञ्जम् मानवीर्य, मानवी मूरत।

वृत्कृत् (पु०) द्वितीय शं में चल रहा हाथी मान० ५:३।

वृत्तिका (का) लला (स्त्री०) एक स्त्रीय अन्तरा का नाम।

वृत्-वृत् [वृट्+क्त] 1 नह 2 अजलि 3 दांता। सम०—अञ्जलि दोनो हृषेभियो की मिमा कर प्याले की भांति बना मेवा,—वेम् वृष्टे शानी पी जिसका अभी पुणं बिकास नहीं हुआ है।

वृत्तवत् [वृट्+व्यट्] आच्छादित करना, बचना। वृत्तरोक्त [वृट्+इत्, र्क् वि०] एक वृत्त का नाम।

वृष्ण (वि०) [पु+यप् युवायम, ह्रस्व] 1 पवित्र, पुनीत 2 अच्छा गुणयुक्त 3 मयकमय, यम 4 सुन्दर, मनोज, रोचक 5 मधुर—अम्बु (नपु०) 1 जन्मलम में मातवी घर 2 मेष, कर्क, मुला बीर मन्त्र का संबोध। सम०—विष्ट (वि०) गुणयुक्त, गुणी, ज्ञाता धर्मवि भवन, दात-धर, सचय धामिच गुणो का मग्रह।

वृष्णप्रवर [व० न०] उभेष्ट वृष्ण।

वृष्णसु (स्त्री०) [व० न०] वृष्ण की मां।

वृष्णित (वि०) [वृष्+विप्+क्त] आयात पहुँचाया हुआ, भाग हुआ, नष्ट किया हुआ।

वृष्ण (अ०) [वृ+अट्, उन्वम्] फिर, दोबारा, नये निर से। सम० अन्वय बापसी लौटना कि वा मनीश्रय पुनरन्वयमप्योक्तम्—भाष० ६:१४, ५:३ अन्वय दोबारा चने ज्ञाना, उत्साहलम् फिर उपजाना, पैदा करना, किश बाधुनि करना, दाह-राना,—महा एक प्रकार का भाक जिसकी पिनियां गाल लाल रङ की होती हैं।—स्वात्म दोबारा महाना।

वृष्णा [वृ+म्; अ धर्मोद्विगम्] पवित्र करने की इच्छा।

वृष्णारी (स्त्री०) 'व० न०' नगरवेष्णा।

वृष्णप्रका (स्त्री०) [वृ+प्+रक्, स्वार्थे कत्] वन्ती 'वृष्णकार' [वृष्+क्+घञ्] 1 प्रस्तुत करना, परिष्कार देना 2 अपने आपकी प्रकट करना कर्महेतुवृष्णकार भूतेषु परिवर्तते महा० १:११, १:११।

वृष्णकृत् (अ०) [वृष्+क्त; व्यप्] कृते, के विषय में उल्लेख करके, के कारण।

वृषोअस्तका (स्त्री०) शानरास, मास्ता।

वृषाण (वि०) [वृषा नभम्—वि०] 1 पुराता 2 बड़ा 3 चिना पिटा,—अम 1 बीती हुई घटना 2 विख्यात धार्मिक पुराणों को गिनती में १८ है, तथा म्याह द्वारा रचित माने जाते हैं। सम०—अन्तरम् दूतरा पुराण। प्रोक्त (वि०) 1 पुराणों में कहा हुआ 2 प्राचीनो द्वारा बतलाया हुआ, सिद्धी, वेदः पुराणों का ज्ञान, पुराणों में स्थित पाण्डित्य।

वृषाणाट (वेद०) अनका का विवेचन, बहुतेको को हरानेवाला। वृषीचयेक [वृ+इत्+क्त्थ, +विट्+घञ्] अतिसार, दमन लगाना, मग्रहणी।

वृषुकम्, वृषुकम्पम् (वि०) अचूक, प्रभावशाली।

वृषुकः [वृिरी वीहे चोते की+इ वृषो०] 1 नर, मनुष्य (विप० स्त्री) 2 आया। सम० मानिम् (वि०) अपने आपको साहसी प्रकट करने वाला,—कीर्तिक एक प्रकार का सत्य बिलका प्रयोग चोर में चलाये में करते हैं,—सारः वेष्टतम नः।

पुष्कः [पुष् + क्] पुष्पा, सुद ।

पुलितः (पु०) शिकारी, (ब० व०) एक जगली जानि ।

पुलकः (पु०) एक विधात प्राति का नाम भा० १।२।१।० ।

पुष्ट (वि०) [पुष् + क्त] 1 पाला पांसा 2 फलता फूलता 3 समृद्ध 4 पूर्ण । सम० - अङ्ग (वि०) मोटे अंगी वाला, जिसे अश्वे पदाश भोजन में मिलते रहे हैं अश्वे (वि०) जो अश्व की दृष्टि से पूर्णतः स्पष्ट हो ।

पुष्टिः [पुष् + क्तिन्] बहुत से अनुष्ठानों के नाम जो कल्याण की दृष्टि से किये जाते हैं, पुष्टिकर्म । सम० - मार्ग, बल्यप्राचार्य द्वारा माले गये सिद्धान्तों का समुच्चय ।

पुष्करम् [पुष्क पुष्टि राति-रा क] 1 नीला कमल 2 हाथों के सुँड का किनारा भा० २।२ । सम० - शिष्टरः इन्द्रा, परमेश्वर, शिष्टरा सहस्री देवी - पुष्टि कृषीष्ट मम पुष्करशिष्टराया कनकः ।

पुष्प [पुष् + अच्] 1 फूल 2 पुष्करामणि 3 कुबेर का रथ । सम० - अश्व फूलों का शवट, आस्तरक, -आस्तरणम् फूलों में सजावट करने की कला, सबकी कपाटिका, -पुष्पम् अनुपास प्रलकार का एक भेद ।

पुष्पः (पु०) जाति में बहिष्कृत महिला में शाह्यण हाग उत्पादित मत्तल ।

पुष्पराग [पु० तं०] एक प्रकार की मणि—की० अ० २।१।२।९ ।

पुस्तम् [पुन् + अच्] 1. कोई वस्तु जो गिट्टी, लकड़ी या धातु की बनी हो 2 पुस्तक, हस्तलिपिन, पां-लिपि । सम०—पाकः मु-अभिनेत्यों का मुरला पूर्वेकरने से बना ।

पुस्तकः, -कम् [पुन् + कन्] 1 पाण्डुलिपि 2 एक उभरा हुआ जामूयण । सम० - आसारम् पुस्तकालय, -आस्तरणम् बना, बहु कपडा जिसमें पुस्तकें बांधी जाती हैं, -बुद्धा एक प्रकार की तांत्रिक मुद्रा ।

पुस्तकतुः [ब० स०] पुन का विधेयण ।

पुत्री (स्त्री०) सुपारी का विधेयण ।

पुत्रा [पुन् + अ] आदर, सम्मान, पुत्रा । सम० - अ-करणम् पुत्रा करने का सामान, -पुत्रम् गार्ह्य पुत्रा का स्थान ।

पुत्रः [पुन् + अच्] मवाद, किली फोड़े या फुली से निकलने वाला, पीप । सम० - अकः, बहः, एक प्रकार का मरक ।

पुत्रक (वि०) [पुन् + क्] 1 भरणे वाला, पूरा करने वाला, -क. (पु०) बाइ, अलम्बायन-मिष्णाङ्ग नस्त्वधरामुत्पूरकेन - भा० १।०।२९।३५ ।

पुत्रं (वि०) [पुन् + क्त] सर्वव्यापक, सर्वत्र उपस्थित । सम० - अविच्छेदः एक प्रकार का धार्मिक स्थान जिसका कीलतत्र में विधान निहित है । उत्सङ्गा (वि०) ऐसी गर्भवती जिसके आड़े ही दिनों में बच्चा होने वाला है, आश्वप्रसवा, -प्रक. (पु०) 1 जिसका मान पुर्णत विकसित हो चुका हो 2 ईन सप्रसाय के प्रवर्तक मास का विधेयण ।

पुत्रं (वि०) [पुत्रं + अच्] 1 पहला, प्रथम 2 पुत्री पुत्रदवा 3. प्राचीन, पहला । सम० - अश्वसामिन् (वि०) जो बात पहले बटनी दे -पुत्रावमाविन्यवच बलीपाता अश्वन्यावसाविभ्य -मै० स० १।२।२।३५ पर धा० भा० । -निमित्तम् शकुन, निशिष्ट (वि०) जो पहले ही रचा हुआ है—मन० १।०।८।१, -पुष्पम्, पश्चिम (ब०) पूर्व में निकर पश्चिम तक, शारिन् (वि०) पति (या पत्नी) से पहले मरने वाला, शिष्ट (वि०) जो मृतकाल की बात जानता है शिष्टातिथेय पहली उँकन का विरोध करने वाला कथन, -विहित (वि०) जो पहले ही निर्णीत हो चुका हो ।

पुत्राणुः [पुत्रन् + अन्] दृष्टि का देवता प्राश्वद्र द्रोणसुतां बाणान् दृष्टि पुत्रानुं यथा महा० ८। २।०।२९ ।

पुत्राका (स्त्री०) किसी जानवर का मादा-बच्चा ।

पुत्रात्मनिः (पु०) [ब० तं०] मेनापनि ।

पुत्रम् (ब०) [पुष् + अच्, क्तिन्, मप्रमाणम्] 1 अलग 2 अलग-अलग 3 के बिना के सिवाय । सम० - कार्यम् अलग काम, बनिन् (वि०) जो ईन सिद्धान्त को मानने वाला है, -बीजः मिलाबा, शी-करणम् एक व्याकरणनियम का दो भागों में जुदा जुदा करना ।

पुत्रकत्वनिवेष्टः (पु०) जुदाई पर डटे रहना सध्यावाच पुत्रकत्वनिवेष्टात्—मी० सू० १।०।५।१७ ।

पुत्रिकीकृत (पु०) [पुत्रिकी विभर्त्सति मु + क्तिष्] पर्वत, पहाड़ ।

पुनु (वि०) [पुन् + कु, सप्रसारणम्] 1 बिगल, बिम्बुन 2. प्रचुर पुष्कल 3. बढ़ा, 4 असह्य । सम० - कीर्ति (वि०) दूर-दूर तक विख्यात, - बहिन् (वि०) दूर-दूरी, दीर्घदृष्टि ।

पुन्रि (वि०) [स्व् + जि०] किञ्च पुनो० सलोप] 1 टिगना 2 मुकुवार 3 चिनकवरा, -चिन् (स्त्री०) 1 पितकवरी शय 2. पुत्री ।

पुन्रकः [पुष् + अति = पुष् + कन्] 1 गोल घन्टा 2 थाप की शरणाप ।

पुन्रम् [पुष् + (स्व्) + अच् वि०] 1 पीठ 2 पुन्रक के पत्र का एक पात्र 3 शय । सम० - आश्व. पीठ में

बही तीव्र पीडा, -नामिन् (वि०) स्वामिन्वत्, बनवर,
-साधः मध्याह्न, दोषहर, -भङ्गः युद्ध में लड़ने की
एक रीति ।

पठधम् [पृष्ठ + धम्] १ मेरुदण्ड २ सामसत्रम् ।

पेष्कः [पष् + युष्, इत्यम्] मार्ग में बना यात्रियों के लिए
धारणगृह मान० ।

पेटासः -कम् [टोकरि, पेटो ।

पेटासकः -कम्]

पेष्कः (पु०) मार्ग, रास्ता ।

पेष्कनी [पेक्ष + इनि, स्थियां ङोष्] गोठगोभी, पाठगोभी ।

पेष्कत् (तपु०) [पेषा + क्तिच्] १ रूप २ मोटा ३ जाया
४ सजावट । सम० कारिन् १ भिरे २ सुनार,
-कृत् (पु०) १ हाथ २ भिरे भाग० ७।१।२८ ।

पेषिः (स्य०) [पित् + इन्] छाछ, तक ।

पेषीकृ (सना० उभ०) कुचकता, पास देना ।

पेङ्कक- [पिङ्कल + क्त्] पिङ्कल का पुत्र या शिष्य ।

पेङ्ककम् [पिङ्कल + क्त्] पिङ्कल मूनि कृत् पुत्रिणा ।

पेशावुचीय (वि०) [पितावुच + छ] पिता और पुत्र से
सब प रन्ने वाला ।

पेष्यसाधः [पिप्यसाधः अच्] अधर्षेद की एक शाखा ।

पेषुनिक (वि०) [पेषुन + टक्] मिथ्यानिष्ठात्मक, जपचाद
पत्रम् ।

पोतामित्तम् (तपु०) [पु + तन् - पीत + क्त् + क्त]
१ शिष्य की भाँति आचरण करना २ हाठ और तालु
की सहायता से उच्छ्वसन हाथी की चिंथाइ ।

पोत्रिप्रवर [पु + त्र - पोत्रः इनि - पात्रिन्, तपु प्रवर]
विष्णु भगवान् बाराहानगर शिख्यांशे पोत्रिप्रवर-
बनुधा देव भवता नारायणाय० ।

पोष्यप्रदान (वि०) [पोष्य + प्रदानच्, द्विष्यम्] दार
दार तैरता हुआ लयानार नैरने वाला वा बहने वाला ।

पोष्युचर्चकः (पु०) बिहार प्रदेश का नाम ।

पोष्यवीचिकम् (तपु०) पुत्र जीव पोष्य के बीजों से बना
ताबीज ।

पोरप्रश्न (वि०) [पुरप्रश्न + अच्] स्त्रीबाधी, नारीशालीय ।

पोषकः (पु०) उपवास का दिन ।

प्रअम् (तपु०) निकोश ।

प्रअक (वि०) [अ० स०] जिसके बाल लीचे लंबे हों ।

प्रकाङ्क्षा [प्र + काङ्क्ष + अच्] मूल, बुझना ।

प्रकाशक [प्र + काश् + क्त] ज्ञान । सम० कृत्ः प्रकट
करने वाला, व्यक्त करने वाला ।

प्रकृ (सना० उभ०) विभेक करना, भेद करना -- मोहात्
प्रकृते भवान् - महा० ५।१६।१८ ।

प्रकरः [प्र + कृ + अच्] घोना, मोचना, साफ करना
बधावप्रकरकरणे कर्तेऽन्ती नियुक्ति - विष्णु०
१५४ ।

प्रकरणम् [प्र + कृ + ल्युट्] प्रसन । सम० - कथः समान
भीषित्य और समान कथ के दो लर्क ।

प्रकम् (तपु०) वैपुत्र, लज्जो (बैसा कि कौ० ज० में
कन्याप्रकम्) ।

प्रकृतिः [प्र + कृ + क्तिच्] परम पुत्र्य परमात्मा के आठ
क्य - सम० ७।४ । सम० - कृतिचः सामान्य लघु,
कृत्वाच - (वि०) नैसर्गिक लीन्यं से युक्त,
स्वामाधिक सुन्दर, -भीकनम् यथारोति माहार,
यथावत् भोजन ।

प्रकृतिमत् (वि०) [प्रकृति + मत्तु] १ नैसर्गिक, सामान्य
२ सांख्यिक कृति का महानुभाव रा० २।३।७।१ ।

प्रकृष्या [प्र + कृ + श्] (आयु० में) योग, मुक्ता ।

प्रकृम् (मुधा० पर०) बग से खींचना ।

प्रकृष्यः [प्र + कृष् - पञ्च] चिपचपनीन ।

प्रकृषित (वि०) [प्र + कृष् - शिच् - क्त] केंपाया हुआ,
बाहर निकाला हुआ ।

प्रकृष्य [प्र + कृष् + क्त] चर्चा के विपु पर पहुँचना ।

सम० - विच्छेद (वि०) आरम में ही टका हुआ ।

प्रकृष्यन् [प्र + कृष् - ल्युट्, प्रयागम्] विनाश,
-राज० ।

प्रकृष्या [प्र + कृष् + अच् + टाप्] उन्मत्तता, माना, कान्ति ।
प्रभुभीम् [प्रभु + च्च + प्र्] श्या० पर०) अपने आपकी
याग्य बनाता, पात्रता प्राप्त करने ।

प्रकृष्टः [प्र - कृष्ट - अच्] १ राजसभास्थो को उपहार
- कौ० ज० २।७।२५ २ जोड़ के रखना ३, वृष्टता ।

प्रकृषित (वि०) [प्र + कृष् - क्त] प्रय के कारण बर-बर
कोपाता हुआ ।

प्रकृष्य (वि०) [प्र० स०] प्रकर, अत्यन्त तीव्र । सम०
प्रतापः शक्तिशाली तेज, -वीरक, एक नाटक का
नाम ।

प्रकृष्या [प्र + कृष् + यत् + टाप्] प्रकृष्या ।

प्रकारः [प्र + कृष् - क्त] सरकारी घोषणा, सार्वजनिक
उत्प्रेषण ।

प्रकृषित (वि०) [प्र + कृष् + क्त] चबराया हुआ । - लम्
(तपु०) बिहार, विस्मयन ।

प्रकृष्य (वि०) [प्र + कृष् - अच् + टाप्] गिरणित ।

प्रकृष्यरिचकः [क० स०] नारी अपमान, बडा तिरस्कार ।

प्रकृष्यवीचिकः (पु०) वेदाली के बेश में छिपा हुआ
बीज ।

प्रकृष्या [प्र + कृष् - ल्युट्] अचभंगुर, सह्य में
टूट जाने वाला, मिट्टुर ।

प्रकृष्यकुशल (वि०) प्रकृति कार्य में रुक ।

प्रकृष्या [प्र + कृष् + यत् + टाप्] सखत्तर युद्ध० ।

प्रकृष्यरचम् [प्र + कृष् + ल्युट्] आगोरे रहना ।

प्रकृष्यन् [श्या० आ०] अम्हाई लेना ।

प्रकल्प (वि०) [प्र + क् + लप् + क्त] 1 आधिष्ठ, आशा किया हुआ 2 व्यवस्थित - बुद्धि० ।

प्रज्ञा [प्र + ज्ञा + अच् + टाप्] प्रकृत बुद्धि बुद्धि० । सम० अक्षयम् 1 एक अक्षर का नाम 2 बुद्धि कपी क्षय, -क्षण कर्मक बुद्धि (जैसे चिन्मय), पारमिता पारदर्शी मय बुद्धि०, -साक्षा ज्ञानेन्द्रिय ।

प्रज्ञापित (वि०) [प्र + ज्ञा + पित् + क्त] सुकाया हुआ, समस्कार करने के लिए जिसका सिर सुकाया गया है ।

प्रज्ञाप्य (वि०) [प्र + ज्ञा + प्यत्] योग्य उपयुक्त (वेद्य०) ।

प्रज्ञाभिः [प्र + जि + भा + क्] हाथी को हड़कने की रीति - भाग० १२।६।८ ।

प्रज्ञाचरन् [प्र + जि + च् + षत्] 1 गुणचर भेदना 2 काम पर लगाना, उपयोग में लाना ।

प्रज्ञाचः [प्र + जी + अच्] 1 विद्या 2 मंत्री 3 अनुग्रह 4 विनय । सम० मानः प्रेम के कारण ईर्ष्या, विमुक्त (वि०) 1 प्रेम के विपरीत 2 मंत्री करने में अनुग्रह ।

प्रज्ञाचरन् [प्र + जी + च् + षत्] 1 (वक्त्र) देना 2 (मद्राज्य) स्थापित करना ।

प्रज्ञोत्त (वि०) [प्र + जी + क्त] 1 प्रशस्त किया हुआ 2 कार्यनिष्ठ किया हुआ 3 मित्रताया हुआ 4 लिखा हुआ, रचा हुआ । सम० अग्निः यज्ञ के निमित्त अधिपतिन की गई प्राण, आधः (वं ब०) पवित्र यज्ञ ।

प्रज्ञोत्त (वि०) [प्र - टप्, बुद्] पुराना, प्राचीन । सम० - हृदिस् (नपु०) आहुति देने के लिए अधिप्रेत पुराना थी ।

प्रज्ञोत्त [प्र + ज्ञा + क्त] प्रसार, विस्तार, फैलाव ।

प्रज्ञोत्त [प्र + ज्ञा + अच्] मय की गर्मी, मय ।

प्रज्ञोत्त [प्र + ज्ञा + क्त] अन्तिम वेतनवनी देना की० अ० १।१६ ।

प्रज्ञोत्त (अ०) विचार रूप न, काम नीर से ।

प्रज्ञोत्त (अ०) [प्र + ज्ञा + क्त] 1 मान् के उपलब्ध होकर इसका अर्थ है (क) की आर, की विद्या में (ख) धारित, करने में, फिर (ग) के विद्युत्, के प्रतिकूल (घ) ऊपर 2. शत्रु के पूर्व मय कर इसका अर्थ होता है (क) मजलना, (ख) विद्युत्, विरोध में तथा (ग) प्रतिद्वन्द्विः । सम० अनुग्रह अनुग्रह का एक वेद, -अग्निः मुकाबले का प्रतिपक्षी, -अर्कः झूठ- झूठ का मूर्ख, बनाबटी मूर्ख, -अर्क (वि०) विमुक्त नाडा, आलस्य, मयोग, मरुत, आलस्यः पूज, प्रतिपत्ति, कर्म (नपु०) इन और उपवास, -आरः मज्ज करना -ग० २।३।३ पर टीका सुक्ल (वि०) विरोधी, -विद्या व्यवहार, आचरण न हि यवना सर्वस्य कर्मवेद्य प्रतिक्रिया -ग० ३।१३।६

अक्षय धनु की सेना, -भूतः बदले में भेजा गया बूत या तरेयावाहक, विष्णु विषहृत्, विष को दूर करने वाली औषध, -सूक्तः विरोधी लोड ।

प्रतिपत्त (स्त्री० पर०) उत्तर देना ।

प्रतिपत्तः [प्रतिपत् + अच्] सलकार वा उत्तर देना -आमित्यम्बुत् प्रतिपत्त प्रतिपत्तानि -न० उ० १।८।१ ।

प्रतिपत्तः [प्रतिपत् + गिच् + क्त] 1 गहन की० अ० २।८।२६ 2 नाश, अवमान -भाग० ५।१।३ ।

प्रतिपत्तः [प्रतिपत् + क्त] व्यक्तितगत बनाव श्रुतार ।

प्रतिपत्तः [प्रति + प्रा - अच् - टाप्] निश्चित समझना, कोन्येय प्रतिजानीहित न मे अन्त प्रगप्यति भय० १।३१ । सम० परिपालनम्, -पालनम् अपनी प्रतिपत्त को पूरा करना, -पारणम् अपनी प्रतिपत्त को पूरा करना ।

प्रतिपत्त (नपु०) नाश हुए ।

प्रतिपत्तित (वि०) [प्रतिपत् + गिच् + क्त] कर्मयिन, अष्ट, मिलाबटी ।

प्रतिपत्तितम् [प्रतिपत्ति - यस् अच्] पृथक् नियतीकरण - सा० का० १८ ।

प्रतिपत्तितम् [प्रतिपत्ति - की - अच्] प्रतिरिक्ता, बदला देना ।

प्रतिपत्तित (वि०) [प्रतिपत् + क्त] माफ किया हुआ, पछोटा हुआ ।

प्रतिपत्तित (स्त्री०) [प्रतिपत् - क्त] 1 प्राप्ति अर्थात् 2 प्रत्यक्षीकरण अवैतना 3 यथाच ज्ञान 4 स्वाहृति - आरम्भ 6 संकल्प 7 ममाचार 8 उपाय 9 बुद्धि 10 उद्योग 11 प्रयोग 12 प्रतिद्वि 13 विद्यमाना सम० पराक्रमम् (वि०) ईड, न करने वाला, -प्रवाहम् उत्पन्न पर अरण करना ।

प्रतिपत्तित (पु०) प्रतिपत्त वाले अनुष्ठाय दिन के पड़ना - प्रतिपत्तितशीलम् विशेष ननुता गना रा० ५ ।

प्रतिपत्तित (वि०) [पत्ति + पत् + गिच् + क्त] प्रकट किया गया ।

प्रतिपत्तित (वि०) [प्रतिपत् + गिच् + क्त] चर्चा करने के योग्य, व्यवहार में लाने के योग्य ।

प्रतिपत्तित (वि०) [प्रतिपत् + गिच् + क्त] 1 दिया जाता हुआ, उपहृत किया जाता हुआ 2 व्यवहृत किया जाता हुआ 3 चर्चा के अन्तर्गत ।

प्रतिपत्तित [प्रतिपत् + क्त] पीने का पानी ।

प्रतिपत्तित (वि०) [प्रति प् + क्त] प्रसारित, फैलाया हुआ, प्रदान ।

प्रतिपत्तित (स्त्री०) प्रसारण, प्रत्युत्तर हृदयितम् प्रतिपत्तितम् न० १।१३ ।

प्रतिष्ठा (नयां पर०) 1 उत्तर देना, 2. (आ०) मुकर जाना ।
 प्रतिष्ठा [प्रति + भा + क + टाप्] उच्चाटयना, ध्याना-
 पकयण निद्रा च प्रतिष्ठा चैव ज्ञानाभ्यासेन तत्त्वचित्
 -महा० १२।३७।७ ।
 प्रतिभोजनम् [प्रतिभुञ् + स्युट्] विहित पण्य, नियत
 किया हुआ आहार ।
 प्रतिमानुहम् [प० म०] मूत्रियो का घर ।
 प्रतिमातलिङ्ग [(वि०) व० म०] ज्ञाना हुआ, जागकक ।
 प्रतिमातलिङ्ग (वि०) [व० म०] जिसे (पिछली भूमी
 वार्ता) याद आ गई हो ।
 प्रतियोग [प्रति वृञ् - घञ्] प्रयुग्, प्रयुक्तिवचन
 -व० म० ४।११ ।
 प्रतिषेध [प्रति + बध् + क्] पठ में प्रतिषेध ।
 प्रतिषेध (वि०) [प्रति श्च - क्त] 1 प्रतिषेध, अचि-
 ह्न 2 स्थापन - भाग० १०।३०।३ ।
 प्रतिषेधव्य [(वि०) [प्रति + बध् + क्तम्] 1 उत्तर
 दिने जाने के योग्य 2 शरद्विचार किये जाने के योग्य ।
 प्रतिषेधात्मकम् (भाव० वि०) ध्यान (भावधानी) रचना
 बाहिर ।
 प्रतिषेधक [(आ० म०) विरोधना, निवृत्तयना ।
 प्रतिषेधाहार [प्रति वि - भा + ह् - घञ्] उत्तर, जवाब ।
 प्रतिषेधकम् [(आ० म०) निष्प्रियत, बन्दी मोचन घन ।
 रा० २।५५ पर मल्लि० ।
 प्रतिषेधः [प्रति + शि + क्त] आधम, मठ (जहाँ सदागत
 लगा रहता है) ।
 प्रतिषेधः [प्रति + सिप् + घञ्] 1 विरोधात्मकता का ध्यान
 दिखाना 2 बाधा ।
 प्रतिष्ठा [प्रति + स्था + अङ् + टाप्] इत की पूर्ति ।
 प्रतिष्ठापनम् [प्रति + स्था + सिप् + स्युट्] समर्थन ।
 प्रतिष्ठाया (वि०) [प्रति + स्था + मत् + उ] कड़ी पर बस
 जान का बहुरूप ।
 प्रतिष्ठित (वि०) [प्रति + स्था + सिप् + क्त] पूजा किया
 हुआ महा० ३।८५।११५ ।
 प्रतिष्ठाल (वि०) [प्रतिष्ठाम् + या + क्त] आक्रमणकारी,
 हमला करने वाला ।
 प्रतिष्ठेच्छ [(वि०) [प्रतिष्ठम् + च + क्त] सङ्गृहित किया
 हुआ ।
 प्रतिष्ठकम् [प्रतिष्ठम् + क्त + अच्] [विच्छेद विघटन ।
 प्रतिष्ठकत्वम् [प्रतिष्ठम् + क्त्वा + स्युट्] 1 किसी बात का
 सामान्यतः विचार करना 2 साक्ष्य बर्धन ।
 प्रतिष्ठेच्छाम् [प्रतिष्ठम् + धा + स्युट्] 1 स्मृति, याद
 2 उपचार, चिकित्सा ।
 प्रतिष्ठेच्छातिल (वि०) [प्रतिष्ठाम् + इत् + क्त] समीकृत, बरा-
 बर किया हुआ ।

प्रतिष्ठकम् [(प० म०) किसी भी मंगलमय कार्य के आरंभ
 के अवसर पर हाथ की कलाई में राखी या पड़ोसी
 (दुर्गात कलावा) बाँधना ।
 प्रतिष्ठकम् (अ०) एक-एक करके, एकैकया ।
 प्रतिष्ठत (वि०) [प्रति + ह् - क्त] 1 बीचियायी हुई
 (बाँधें) 2 कुण्डित, दूठा ।
 प्रतिष्ठार [प्रति + ह् + घञ्] आगमन की सूचना देना
 - रा० ७।१।७ ।
 प्रती (प्रति + इ - भाग० पर०) (हनु का) मुद्राबद्ध
 करना, -मन्यमानह् तावच प्रतीया रत्नमुच्यते महा०
 ५।१३०।१३ ।
 प्रतीतत्वम् [प्रति - इ - भागमन्] विश्वस्त, दृढ़ ।
 प्रतीकम् [प्रति + क्त + सि० वी०] 1 चिह्न 2 प्रतिक्रिया ।
 सम० वसंतम् चिह्नपरक मकल्पना ।
 प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च + च, श्लोप, मशोप, दीर्घवच्]
 अल्पमूर्ती, अन्धर की ओर मुड़ा हुआ ।
 प्रतीचीयकम् (नपु०) दीपक अलंकार का एक भेद ।
 प्रतीक्ष्वा (स्त्री०) एक प्रकार की धाया ।
 प्रत्यक्ष (वि०) [प्रथम प्रति] 1 आँसों को जो दिखाई दे,
 दर्शनीय 2 मजबूतीपर, 3 स्पष्ट, साफ् । सम० - पर
 (वि०) प्रथम को ही उच्चतम प्रमाण मानने वाला,
 - विधानम् स्पष्ट विधि, स्पष्ट आदेश, विश्ववीन्
 दृष्टिपरामर्श के अन्तर्गत जाना ।
 प्रत्यक्षरम् (अ०) प्रत्येक अक्षर पर - प्रत्यक्षरत्वेकवय-
 प्रपञ्च वास्तव्य ।
 प्रत्यक्षवच (प्रत्यक्ष् + वचन) (वि०) भाषात्मक, एक
 धाया का भवन ।
 प्रत्यक्षवर्षीयम् (नपु०) शीतवर्षीय पर लिखा गया एक
 शब्द ।
 प्रत्यक्षिन् (स्त्री० चुरा० पर०) 1 बरसे में मजस्तार
 करना 2 स्वागत करना ।
 प्रत्यक्षत्वम् (नपु०) [प्रति + अघि - उच् + स्था + स्युट्]
 अतिथि का स्वागत करने के लिए अपने आसन से
 उठना ।
 प्रत्यक्षः [प्रति + इ + अच्] इन्द्रियों का कार्य - सर्वत्रिय-
 मुद्रावच्छेद सर्वप्रत्यक्षैस्ते प्राण० ८।३।१५ ।
 प्रत्यक्षेणम् [प्रति + अघि + स्युट्] बरसे में मजस्तार करना ।
 प्रत्यक्षेणम् (वि०) [प्रति + अघ + इच् + स्युट्] चिकित्सा-
 कर, सहारकारी ।
 प्रत्यक्षत्वम् [प्रति + अघ + स्था + सिप् + स्युट्] मुद्रा,
 विद्याभित्तायक, स्मृतिवचनक ।
 प्रत्यक्षेण (स्त्री०) [प्रति + अघ + ईच् + बुच् + टाप्]
 पाँच प्रकार के आँसों में से एक (दृष्ट० में) ।
 प्रत्यक्ष (वि०) [प्रति + अच् + क्त] फेंका हुआ, छोड़ा
 हुआ - प्रत्यक्षत्वान्ते भाग० १०।२१ ।

प्रत्याकलानक (वि०) [प्रति + आ + कल् + कानच्, स्वाच् कन्] निराकरण करने की इच्छा वाला, आशेष करने का इच्छुक ।

प्रत्यापन्न (वि०) [प्रति + आ + पन् + क्त] 1 वापिस आया हुआ, फिर से एकत्र किया हुआ 2 बहुकामा हुआ, बहने लूट बन वाला, विपरीत बुद्धिकीय वाला ।
—महा० १२।२९१।८ ।

प्रत्यासक्तिः (स्त्री०) [प्रति + आ + सक् + क्तित्] प्रसन्नता हृषीकलता ।

प्रत्याहारः [प्रति + आ + ह् + घञ्] प्रस्तावना या साम्य, या विशेष भाग (नाट्य०) ।

प्रत्युत्पन्नजातिः (स्त्री०) मूलासहित समीकरण ।

प्रत्युत्पत्ति (वि०) [प्रति + उप + स्वा + क्त] 1 समुहगत 2 एकत्र होना, दबाव होना (जैसे मूत्रोत्सर्ग का)

3 विमुख, विपरीत हुआ—अथेति प्रत्युत्पत्ति बहु० १२।२८, ७।५७ ।

प्रत्युद्ध (वि०) [प्रति + बह् + क्त] 1 प्रत्याख्यान, अस्वीकृत 2 उपेक्षित 3 मान दिया हुआ ।

प्रत्यनकथिः (पुं०) शास्त्रीय कि विशेषण ।

प्रत्यभिषि (वि०) [प्रा० सं०] चतुर, दक्ष, निपुण—तानुषाब् विनीताया मूलपुत्र प्रत्यभिषि - रा० २।१६।५ ।

प्रथा (सूत्रो० उभ०) शृणु परिशील्य करणा ।

प्रथानम् [प्र + धी - स्युट्] सम्पन्न करना, निराकरण करना असरेव हि धर्मस्य प्रधानं धर्म आसुर—महा० १३।५।८ ।

प्रथानकृत्वि (वि०) [प्र + श् + क्त] प्रधाने कृत्वि तं सं] हरिष्ट, उपकारदि समय पर न देने वाला ।

प्रथेत् (पुं०) [प्र + विष् - घञ्] स्वात्म्य के श्रेय में एक भाषा (जैन०) ।

प्रथेह्यम् [प्र + विह - स्युट्] लीयना, पोतना ।

प्रथनाङ्गनाम् [प० सं०] युद्ध का अध्याय ।

प्रथानकारणत्वः (पुं०) नास्त्व का सिद्धांत कि प्रधान ही मूल कारण है ।

प्रथानकारिण्यि (वि०) वी व्यक्ति तास्त्व के प्रधानकारण की मानने वाला है ।

प्रथानविनिष्ठा (स्त्री०) वच कर निष्कल भावने का धर्म ।

प्रथजम् [प्र + थञ् + घञ्] ह्युत्थाप्य वाटायाप (नाट्य०) ।

प्रथजन् [प्र + थञ् + स्युट्] आक्रमण, घाता ।

प्रथुराव (वि०) [प्रा० सं०] अत्यन्त पुराणा ।

प्रथुत्तम् [प्र + थु + स्युट्] वन्धु की डोरी को कुकाना, और बाँध देना ।

प्रथुत्तया [प्र + थु + क्त + टा] प्रथा, बुद्धि ।

प्रथुत्तयि (वि०) [प्र + थु + क्त] टूट कर टुकड़े-टुकड़े हुआ, कुचका हुआ, हराया हुआ ।

प्रथुत्तक (वि०) अत्यन्त सुन्दर ।

प्रथवः [प्र + थु + थ्व] समृद्धि,—प्रनावाधाय मृताना धर्मप्रवचन कृतम्—महा० १२।१०९।१० ।

प्रथा [प्र + भा + थञ् + टप्] पधारायमणि । तन० —विष् (वि०) उग्रवत् कि० १६।५८ ।

प्रथात्करणीयम् [सं० सं०] प्रात काल अनुष्ठेय ।

प्रथम् (वि०) [प्र + थु - णिच् + स्युट्] 1 प्रथम, प्रभाषाकी 2 सूत्रमायक शक्ति, 3 मूल 4 कालने वाला तदस्व तस्य वीरस्य स्वयंमार्गप्रभावनम् रा० ५।१७।८ ।

प्रथाशित (वि०) [प्र + थु + क्त] कथित, उद्धोषित ।

प्रथुत्तमित्त (वि०) स्वामी के समान पहारायमृतमित्तान् —सा० प० ।

प्रथुत्ताशेषः (पुं०) [प० सं०] आदेश के वचन द्वारा उदाया गया आशेष का० २।१३।८ ।

प्रथेत् [प्र + विष् + घञ्] उद्गम स्थान (जैन नदी का) ।

प्रथाविन् (वि०) [प्र + थु + इति] नाडियो में से रनों का उत्पादक ।

प्रथहरा (स्त्री०) वच नामक मृत्ति की पत्नी ।

प्रथहृत् (वि०) [व० सं०] बडा शक्तिवाली, प्रतारी, तेजस्वी ।

प्रथाप्य [प्र + भा + स्युट्] एक प्रकार की माप (सतीत०) । जैसे मूलप्रमाण ।

प्रथाप्यकृत् (वि०) किसी व्यक्ति की शारीरिक शक्ति और ईच्छाशील के अनुकूल ।

प्रथापत् (अ०) [प्रमाण + त्तित्] माप या मोल के अनुसार ।

प्रथमम् (पुं०) निकटतम प्रत्यक्ष ज्ञान की यथार्थता ।

प्रथितिः [प्र + भा + क्तित्] प्रकटीकरण, प्रतिपत्ति ।

प्रथीतः [प्र + थु + घञ्] 1 गुणी पुरुष का ज्ञं उत्साल (जैन०) 2 एक बने का नाम ।

प्रथानवीरवम् [प० सं०] धर्मो की महत्ता, परिश्रम की पहाराई ।

प्रथानात्मन् [(वि०) पुरीत मन वाला, विमने अपने मन प्रथानात्मन्] की संयत कर लिया है । भय० ९।०६ ।

प्रथानाधि (वि०) [व० सं०] मन्मान में हाव बोधे हुए ।

प्रथुत्त (पुं०) चालक, उदकाने वाला, मड़काने वाला प्रेक्ष - प्रथा (अहा० पर०) इत्यत हाता, अपने ऊपर लेना उठाना ।

प्रथुत्त (वि०) [प्रथुत् + क्त] 1 प्रकल्पित, उपाय द्वारा काम चलाया हुआ 2 लीची हुई (जैसे लकड़ार) ।

प्रथुत्तान्तर (वि०) [व० सं०] जितना उपायत लकड़ार किया गया है प्रथुत्तान्तरान्तरविशेषमात्रमात्र न मां पर लक्षितप्रथुत्तिति—कु० ५ ।

प्रयोक्तु (पु०) [प्र + युञ् + कृच्] प्रापक, समाह्वीत ।
 प्रयोमः [प्र + युञ् + कृच्] 1 उपयोग में लाना, इस्ते-
 माल करना, काम 2 यथावत् रूप, सामान्य उपयोग
 3 फेंकना, फेंक कर मात्र करना, (विप० सहाय)
 4 प्रदर्शन, अनुष्ठान 5 अभ्यास, परीक्षणार्थक उप-
 योग 6 प्रशिक्षण काय 7 काय 8. मन्त्र पाठ 9 आरम्भ
 10 योजना, तरकीब 11 माधन, उपाय । सम०
 —बहुमन्त्र व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त करना, चतुर
 (वि०), विपुल (वि०) व्यवहार में प्रयुक्त करने
 में दक्ष, स्वयं अभ्यास करने में श्रेष्ठियार, - प्रत्यक्षम्
 कल्पयन्, विद् (वि०) जो किसी वस्तु के व्यवहार
 को जानता है ।

प्रत्यन्ववाणु (वि०) [व० म०] जिसकी मुद्राएँ
 प्रत्यन्ववाणु] लम्बी हैं ।

प्रत्यर् [प्र + त् + अच्] 1 आध्यात्मिक लय 2 मूर्छा,
 बेहोशी ।

प्रत्यारिषता [प्रत्यार + इति + नञ् + टाप्] प्रेम सबकी
 जानचीन ।

प्रत्युल (वि०) [प्र + लुप् + क्त] लड़ा हुआ ।

प्रत्युत्थ (वि०) [प्र + लुप् + क्त] 1 उग, उभ्रम्भक
 2 मात्र में फसादा हुआ ।

प्रत्योष [प्र लुप् घञ्] मात्र, सहाय ।

प्रत्युषम् [प्र + लुप् + क्त] गृह्य, पैठ ।

प्रत्युषितम् [प्रत्युष + कृच् + क्त] दृष्टा, लुकाय ।

प्रत्युषः [प्र + वृ + घञ्] मूढा आरोप वि० ? ।
 ८८ ।

प्रत्यर (वि०) [प्र + वृ + अच्] 1 मुख्य, प्रधान, श्रेष्ठ,
 उन्नत 2 मन्त्रे बड़ा, र (पु०) 1 बुलावा 2 अग्नि-
 होत्र के अवसर पर बाह्यण द्वारा अग्नि का विशेष
 आवाहन 3 पुर्वज्ञ 4 कुल, वंश 5 गोत्र प्रवर्तक
 ऋषि 6 सन्तति 7 चादर, — रा (स्त्री०) गोदावरी
 में गिरने वाली एक नदी, — रम् (पु०) अक्षर की
 नकरी, चदन । सम०—चातुः मूल्यवान् चातु,
 लक्षितम् एक छन्द का नाम ।

प्रत्यमपर (वि०) परदेस में रहने का स्थान ।

प्रत्यम्य (वि०) [प्र + वृत् + णिच् + ध्यन्] निर्वासित
 किये जाने के साथ ।

प्रत्यम्यव्यम् (पु०) ऐसे स्थान पर सोना जहाँ सिद्धकी
 या मानासनी के हाथ हवा लुब जाती जाती हो ।

प्रत्यभारः [प्र + वि + भृ + घञ्] विवेक, प्रमाण, जाति,
 प्रकाश ।

प्रत्यभारित (वि०) [प्रत्यभार + इत्] परीक्षित, साध-
 नानुसारिक विचार किया गया ।

प्रत्यरत (वि०) [प्र + वि + र् + क्त] जो किसी बात
 से पराङ्मुख हो गया हो, दूर रहने वाला ।

प्रत्येक्ष [प्र + विच् + घञ्] 1 रीति, विन्यास 2 रोजधार
 जेना कि (सुसलप्रवेष्ट) में ।

प्रत्येक्यः (पु०) क्षण, परत, पहुँच ।

प्रत्युत् (वि०) [प्र + वृ + क्त] 1 बहने वाला—प्रत्युत्पुटक
 वायु महा० १४।१६।१२ 2 आघात करने वाला,
 चोट पहुँचाने वाला 3 परिचारित, बुझाया हुआ ।

सम०—कृष्णा (स्त्री०) प्रमुसता—यात्र० १।२६६।
 प्रमुसि [प्र + वृत् + क्त] 1 गुणक (गणित०) 2 उदय,
 उदयम् 3 प्रकट होना 4 आरम्भ 5 आचरण

6 काम, रोजधार 7 प्रयोग 8 सार्थकता, जर्ष
 9. समाचार 10 भाग्य, किस्मत 11. प्रत्यक्ष ज्ञान ।

सम०—पुष्क ममाचारो का अतिकर्ता श्लेषः
 अध्यादेश, विज्ञानम् बाहरो मयार का ज्ञान ।

प्रत्याहारणम् [प्र + वि + आ + हृ + ह्यट्] बाध्यर्षित ।
 प्रत्याहारणम् [ए० त०] उद्योगिक का एक योग जो सत्यास
 त्ने का निर्देश करता है ।

प्रत्युत् (प्रा० आ०) अविध्यवाणी करना ।

प्रत्युत्ताप्य [ए० ट०] अभिनन्दन, व्यथोष ।

प्रत्युत्ति [प्र + लृ + क्त] प्रचार, विज्ञापन ।

प्रत्युत्तम् [प्र + लृ + क्त] शान्ति की स्थापना (किसी
 राजनीतिक संकट के पश्चात्) ।

प्रत्युत् (वि०) [प्र + लृ + क्त, तप्य नञ्] सूचा हुआ ।

प्रत्युत् [प्र + लृ + क्त] 1 सवाल, पूछना, पूछताछ 2 न्यायिक
 पूछताछ 3 विवादात्मक विन्दु 4 समस्या 5 किसी
 पुस्तक का छोटा अध्याय । सम०—कृष्णा पूछताछ
 पर समाप्त होने वाली कहानी, —चाविन् ज्योतिषी,
 आगे होने वाली बात बताने वाला, — विचारः
 अविध्यरुचत विषयक उद्योतिष की एक शाखा ।

प्रत्युत् (वि०) [प्र + लृ + क्त] अत्यन्त आसक्त, किसी
 बात से चिपका हुआ ।

प्रत्युत् [प्र + लृ + घञ्] 1 बड़ापा हुआ प्रयोग
 अन्यत्र इतना व्यापकतासक्ति प्रत्युत्. मी० सू०
 १२।११ पर शा० प्रा० 2 गौण घटना या कथा-
 वस्तु । सम०—सकः तर्कसंगत हेलाभास जहाँ स्वयं
 'प्रमाण' भी सिद्ध किया जाता है ।

प्रत्युत्त (वि०) [प्र + लृ + क्त] सत्ताप्राप्त,
 अस्तित्व में आना हुआ—प्रत्युत्त कर्तुं ज्ञातो प्रस-
 त्तित्ते—मै० १।१६६ ।

प्रत्युत् [प्र + लृ + घञ्] शोचन पचने के पश्चात् उसका
 पोषक रस ।

प्रत्युत्त (वि०) [प्र + लृ + क्त] जो प्रत्यक्ष हो चुका है ।

प्रत्युत्तम् [प्र + लृ + क्त + ह्यट्] रज्जु, रस्सी, बँदी ।

प्रत्युत्त (अ०) [प्र + लृ + क्त] 1 बौत कर 2. अक्षय
 ही, निश्चित रूप से । सम० कर्तुम् (वि०)
 बीचक कार्य करने वाला प्रत्यक्ष रूप से विनाशक ।

प्रत्ययकारः [ब० त०] प्रमुक्तिकाल, बंधना बनने का समय ।
प्रभृति [प्र + भृ + क्तिन्] उज्ज्व, उत्पत्ति, कारण-कि०
४।३२ ।

प्रभु [भ्रा० पर०] 1 विषय होता (जैसा कि शरीर के तीनों दोषों का) 2 अनुसरण करना 3 संप्रसारण अर्थात् अर्थस्वरो को उसके सवादी स्वर में बदलना ।

प्रसक्तः [प्र + क्त + अच्] परास (जैसा कि 'दृष्टिप्रसर' में) ।
प्रसार्तः [प्र + क्त + घञ्] 1 व्यापारी की दुकान 2 (बूल) उद्याना 3 फौजवा ।

प्रसारितवाच्य (वि०) [ब० स०] जिसके अंग बहुत फेले हुए हों ।

प्रसृप् [भ्रा० पर०] छा बाना, फील जाना (जैसे कि कपकार) ।

प्रसक्त (वि०) [प्र + क्तन् - क्त] आश्रान्त, जिसके ऊपर धावा बोला गया हो ।

प्रस्तावग्रहणव्याय. [प० त०] सीमासा का व्याख्याविषयक एक मिथ्यात जिसके अनुसार करण द्वारा प्रतिपादित विषयवस्तु की श्रेयसा कर्म द्वारा विहित बर्णन अधिक प्रबल होता है ।

प्रस्ताक [प्र + क्तु + घञ्] 1 व्याख्यान का विषय, शीर्षक 2 नाटक की प्रस्तावना 3. साम के परिचायक शब्द ।

प्रस्तोतृ (पु०) [प्र + क्तु + तृच्] उद्गमता की सहायता करने वाला यज्ञीय पुरोहित, श्रुतिज्ञ ।

प्रस्तोतः [प्र + क्तुच् - घञ्] मरम, उल्लेख-भाग०
१।११६०६ ।

प्रस्तावम् [प्र + स्था + क्तुच्] 1 दर्शनशास्त्र की एक धारणा 2 धार्मिक प्रस्तावना, प्रवचन - सप्रस्थाता सातधर्मा विधिष्ठा - महा० १।१६४।०० । सम० मङ्गलम् धारणा आरम्भ करते समय मौखिक प्रक्रियाएँ ।

प्रस्तवः [प्र + क्तु + अच्] 1 धारा (जैसे कि रूप की) 2. [ब० व०] क्षीण 3 मृष ।

प्रस्तविकम् (वि०) [प्र + स्तव + इनि] हंडर करने वाला, बराबरी करने वाला ।

प्रस्तकार (वि०) [प्र + स्कर् - घञ्] मूजा हुआ फला हुआ ।

प्रस्तवमूर्च्छ (वि०) [ब० म०] मही पर डोल बजत हो - सर्गीलाय प्रस्तमूर्च्छा मेघ० ।

प्रस्तुति [प्र + क्तु + क्तिन्] आधान, चंग, कणार ।

प्रस्तु (बुद्धी० पर०) छात्र देना, शर जाना ।

प्रस्तु (भ्रा० पर०) मुझना, उन्मुख होना ।

प्रस्तुतकथन (वि०) मंदरा लेकर जानें वाला ।

प्रस्तुतकालिका (स्त्री०) एक छन्द का नाम ।

प्रस्तु [प्र + क्तु + घञ्] 1 वृद्ध 2 हाज (माल में पहनने का) ।

प्रस्तु [ब० स०] लक्ष्मि कद का व्यक्ति, कृदाकर प्रास-

सम्बन्ध - रण० १।० । सम० - प्राकार (वि०) जियकी अंकी दीवारें ही ।

प्राकारधरणी [स० त०] दीवार के ऊपर बना बस्तुरा ।

प्राकारस्थ (वि०) [स० त०] जो फर्वाल पर बसा हो ।

प्राकृतभाषण [क० म०] मातृगण मनुष्य ।

प्राकृत (वि०) [प्राक् + तन्] 1 पुराना, पिछला भन काल का 2 अतीत समय का, पहला, पहले जन्म का, मन् भाष्य । सम० कर्मन् (नपु०) पूर्वजन्म में किया गया कार्य, भाष्य, -कर्मन् (नपु०) पूर्व जन्म ।

प्राकृत्यी [प्रगन्ध + अण् + ङीप्] 1 माहूत 2 दुष्टता ।

प्राकृत्यम् (नपु०) [प्रगन्ध घञ्] प्रगन्धता बीरना चतुरता । सम० बुद्धिः (स्त्री०) निर्णय करने का साहस, न्याय-याहस ।

प्राकृत्यम् [प्रगुण + घञ्] मही म्बानि, यथार्थ दगा दिशा, अनुदेश ।

प्राकृतिका (स्त्री०) जनिषि मकार, पाहूना का स्वागत ।

प्राक् (वि०) [प्र - अण् - क्तिन्] 1 सामने का आगे का 2 पूर्वी 3 पहला । सम० उत्पत्ति (स्त्री०) गण का) पहला दर्शन बचनम् प्राचीन उक्ति पहले का कथन ।

प्राकार (वि०) नामान्य प्रधाता के विपद, माध्याग्न अनगुण भाग मन्वादी के विपरीत ।

प्राकार्ये [प०] [प्रकृत आचार्ये] 1 अ-शासक का अस्था-पक 2 मेधाविकृत अध्यापक ।

प्राचीनमूल (वि०) [ब० म०] जिसकी जड़ें पूर्व िया की आर मही हुई हैं ।

प्राकृत्यवर्तिः (स्त्री०) एक विषय जिसके अनुसार अ' में पूर्व किन्ती विशेष अवस्थाओं में ए अपरिचित अवस्था में रहता है ।

प्राकृत्यवृत्ति (स्त्री०) एक प्रकार का छन्द ।

प्राकृत्यव्यम् [प्रजाति + व्यञ्] 1 प्रजननात्मक शक्ति 2 एक पक्ष का नाम ।

प्राज्ञ (वि०) [प्रज्ञ + क्त + ङीप्] 1 बुद्धिमान 2 समझ-दार, विद्वान् ज्ञ (पु०) 1 बुद्धिमान् या विद्वान् 2 एक प्रकार का ताता 3 अक्षिगत बुद्धिमता 4 गन्धर्व्वर ।

प्राज्ञता [प्राज्ञ + क्त, क्, वा] बुद्धिमता ।

प्राज्ञत्वम् [प्राज्ञ + क्त, क्, वा] बुद्धिमता ।

प्राज्ञः [प्र, अण्, घञ्] 1 शीघ्र जान 2 जागर अत्र । सम० कर्मन् (नपु०) शीघ्र कार्य परिश्रोण (वि०) जिसके शीघ्रता का अन्त निन्द है परिचायक किमी के जीवन की 'मा करता, वचना, कल्पना प्राकृतिया विद्या प्राजापाम का विद्या ।

प्राज्ञ (ब०) [प्र अण्, अण्] 1 पी करने पर प्रधान देना में, तइके, मंवेरे 2 कल मंवेरे । सम० अनुपाक

वह भूत जिससे प्राण सवन का उपक्रम होता है, **ब्रह्म** - प्रधानकारण का उपद्रवाः ।
प्रातिक्रान्तिम् (पु०) मेवक या दूत ।
प्रातिनिधिक [प्रतिनिधि + टः] 1 स्थानापन्न 2 प्रतिना-
 धिकार, प्रतिनिधित्व ।
प्रातोप्यम् [प्रातो + प्यञ्] उद्युता, विद्योप ।
प्रात्यक्षिक (वि०) [प्रात्यक्ष + टः] आँसों को दिखाई देने
 वाला ।
प्रादेशमात्र (वि०) [प्रादेशमात्र + अण्] जग मा, विनाश
 मात्र देने के लिये, ब्रू (भृपु०) एक बालिष्ठ की मात्र,
 पूरा अग्नियों को फेंकाकर अग्नि के किनारे से तर्जनी
 अंगुली के किनारे तक की मात्र - उपविश्य दम्रापि
 शदशमने प्रच्छिन्नानि न मनेन सादिग्यमयु० २०।
प्राप्य (वि०) [प्रगृह्णात्यत्र अण् मगण] 1 यात्रा पर गया
 हुआ 2 पूर्वोदाहरण निर्देशन 3 कथन ।
प्राप्त [प्रकृष्टाज्] 1 किनारा, गाट 2 कान [अथ
 ओष्ठ आदि वा] 3 सीमा 4 अन्तिम किनारा ।
 मम० निवासिन् सीमन्त प्रदेश वा रहने वाला
 भूमी (अ०) अन्त में, अन्तिम कार ।
प्राप्यम् [प्र + आप् + ल्यट्] आख्या विवरण विषय ।
प्रापिर्वाण्य (वि०) [प्र शा + णिन् + क्त] उ
 पहुँचाने की इच्छा वाण्य ।
प्राप्य (वि०) [प्र आप् + क्त] किसी पूर्वोदाहरण के
 अन्तर्गत या पूर्ववर्ती का अनुवाचो । मम० - क्त
 (वि०) वाच्य, उपयुक्त, - प्राप्य (वि०) 1 बुद्धि-
 मान 2 सुन्दर ।
प्राप्यि (स्त्री०) [प्र + आप् + क्त] 1 किसी वस्तु का
 निरोक्षण करने पर लगाया गया अनुवाच 2 (अप्राति०
 में) धारणवा वाच्यवचन ।
प्राप्य (अ०) [प्र + आप् + ल्यप्] प्राप्त करने, उपलब्ध
 करने । मम० कारिन् (वि०) कार्य में निरुक्त
 होकर हा प्रभाववाली, क्त (वि०) अनायास ही
 प्राप्त होने वाला ।
प्राप्यम् [प्र + आप् + ल्यट्] दूय में नेवार किया हुआ भोजन ।
प्राप्यम् [प्रयत्न - व्यञ्ज] पवित्रता, स्वच्छता ।
प्राप्यम् (नपु०) सड़ी हुई जीवन शक्ति, दीपनर जीवन ।
प्राप्यम् (वि०) [प्र + आप् + क्त] आरभ किया
 हुआ, शुरु किया हुआ । मम० - कर्मन्, कार्य
 (वि०) प्रारम्भ अपना कार्य आरम्भ कर दिया है,
 कर्मन् (नपु०) वह कार्य जो फल देने लगा है ।
प्राप्यिन् (वि०) [प्र + आप् + णिन्, क्त] जो अनुदान
 देता है ।
प्राप्य (चर० आ०) आरभ लेना, महारा लेना ।
प्राप्य (वि०) [प्र + आप् + ण्यन्] 1 चाहने योग्य
 2 वाञ्छनीय ।

प्राप्यम् [प्रलय + अण्] प्रलय से सम्बन्ध रखने वाला ।
प्राप्यिक (वि०) [प्रयत्न + टः] वह कम जो किसी कार्य
 पट्टि में सर्व प्रथम अपनाया जाकर बाद में पदचर्या
 मभी कार्यों में अपनाया जाय, जिसमें कि कार्य में
 पट्टि की एकता बनी रहे ।
प्राप्यिक [प्र + आप् + उक्तञ्] बाद-विवाद में प्रति पत्नी ।
प्रासादः [प्र + आप् + षञ्] 1 महल, भवन 2 राज भवन
 3 मन्दिर 4 चतुर्था भाग, जिसमें कि कार्य में
 महल का आन्तरिक कपरा, - शिखर महल की
 चाटी ।
प्राप्यनीच (वि०) [प्र + भा + लो + जनीय] अतिथि की
 अति स्वागत किये जाने के योग्य ।
प्राप्य [प्र + आप् + घूर्ण + क्त] अनिधि, गाढ़ता ।
प्राप्य (वि०) [प्री + क्त] 1 प्यारा, अनुकूल 2 सुन्दर,
 3 अनिलवित 4 भक्त, अनुकूल, प (पु०)
 1 प्रेमी, पति 2 हृदय 3 जामाता, या (स्त्री)
 1 पत्नी 2 महिला 3 छोटी इलायची, - प्र
 (नपु०) 1 प्रेम 2 कृपा, प्रसाद 3 सुन्दर समाचार ।
 मम० - आलापिन् (वि०) मिष्टभाषी, मीठा बोलने
 वाला, आसु (वि०) जिसे अपनी जान बहुत प्यारी
 हा, जीवन को चाहने वाला, कलह (वि०) झग-
 डाल, - बौद्धिता प्राप्ति का प्रेम, - संसहार (वि०)
 मुकदमे बाजी को पसंद करने वाला ।
प्राप्यवद (वि०) [प्रिय ददाति - दा + ण] अभीष्ट और
 सुन्दर वस्तु का दाना ।
प्रीति [प्री + क्त] 1 प्रबल इच्छा 2 मंगल की श्रुति ।
 मम० सयोग, मैत्री मन्थ, सपत्ति मित्रों का
 सम्मिलन ।
प्रीतः [प्र + प्र + क्त] 1 नरक में रहने वाला 2 इस संसार
 में गया हुआ, मृत 3 पितर । मम० - भयन्, एक
 विशेष नरक, - प्राप्य औपदेशिक किया के अवसर
 पर प्रयुक्त किया जाने वाला वर्तन ।
प्रीतान्तरम् (नपु०) (स्त्रियों की ओर) देलना या
 (उन्हें) स्पर्श करना ।
प्रीता [प्र + प्र + क्त + आ + टाप्] कान्ति, आभा प्रेता शिपन्त
 हरितोपभादे भाग० ३:८:२६। मम० पूर्णम्
 (अ) देवभाल कर, जान बूझ कर, प्रयत्नः रय-
 प्रयत्न पर मेला जाने वाला नाटक ।
प्रीताई (वि०) [प्री तं तं] प्रेम से पत्नीका हुआ ।
प्रीतम् (नपु०) एक प्रकार का चमड़ा की० अ०
 २:११:२९ ।
प्रीतम् (नपु०) सौन्दर्य, आवण्य मै० ५:६६ ।
प्रीतम् (स्त्री० पर०) यात्रा पर प्रस्थान करने वाला ।
प्रीतान्तरम् [प्र + उत् + षट् + णिन् + घृष् + टाप्]
 1 (भूतप्रेतादि की) भगता 2 विनाश ।

प्रोतचम (वि०) [व० स०]-बाएँ में दूबा हुआ ।
 प्रोतकूक (वि०) [व० स०]-सलाका पर रफ़ा हुआ ।
 प्रोत्ताम (वि०) [प्र+उत्+कम्]-फँसना हुआ ।
 प्रोत्ताक (वि०) [प्रकर्वोत्ताक--प्रा० स०]-ऊँचे स्वर से बोलने वाला ।
 प्रोत्तर (वि०) [व० स०]-बड़े पेट वाला ।
 प्रोत्थोषि (वि०) [प्रा० स०]-सहराता हुआ, घटबढ़ होना हुआ ।
 प्रोत्थमित (वि०) [प्र+उत्+नम्+णिच्+त्]-उड़ना हुआ, उभारा हुआ ।
 प्रोर्ध् (अदा० उभ०) अन्धी तरह डक लेना, चादर लपेट लेना ।
 प्रोद् (वि०) [प्र+ऊद् वह्+त्] 1 विशाल, बड़ा 2 व्यस्त, बिरा हुआ । सम०--विद्यः साहसी और

विरहात् पाथ स्वी,--बलीरवा सिद्धान्त कीमूरी पर एक टीका ।
 प्रीष्टिः [प्र+वद्+क्तिन्]-शीतुष्य, उत्कटता, (चरित्र की) गहराई ।
 प्रीष्ठा (वि०) अर्थ सम्पन्न, अर्थ युक्त ।
 प्र्लक्ष द्वारम् (नपु०) पाथद्वार, भवन के पक्ष का द्वार ।
 --स० पू० २६४/१५ ।
 प्र्लक्षः [प्र्ल+अच्] 1 एक जलचर 2 एक सबत्तर का नाम । सम०--कृष्णः तीराक की सहायता के लिए बड़े जैसा बतैन ।
 प्र्लक्षित् (वि०) [प्र्ल+णिच्+तृच्]-मल्लाह, नाविक ।
 प्र्लक्ष्यैः (पु०) एक प्रकार का सजीत माप ।

क

कलमरः [कम विभर्ति-भू+अच्] सौं ।
 कलित्पयः (पु०) विष्णु का विशेषण ।
 कलिर्बकः (पु०) तुलसी का एक भेद, सफेद मरवा ।
 कलम्बः (पु०) हरी प्याज ।
 कलम् [कल्+अच्] 1 क्षतिपूर्ति, प्रतिपूर्ति 2 स्तुत्वात्वि, अक्षफल्क 3 उपाय 4 फल ५ परिणाम 6 कृप्य 7 उद्देश्य, प्रयोजन 8 उपयोग, साम्य 9 सम्मान, 10 (नलवार का) फलक 11 तीर की नोक । सम० --अधिकार-परिश्रम का दावा, --अबुधम् यज्ञ का अदृष्ट परिणाम,--उपयोगः फल का आनन्द लेना, --दम्बः 'ग्रहो का मानबकुल पर प्रभाव' विषयक उपातिप वा एक ग्रन्थ,--भाषणा परिणाम का अधिकरण,--युष् (पु०) बन्दर, कृष्णम् (नपु०) फल और जई, बलि (स्त्री०) कपड़े की बनी बनी जिसे धिकना करके अनीमा के लिए गुदा में रक्खा जाता है, स्वाध्यायम् 'सोमलोग्रयम' नामक सस्कार ।
 कलम्बम् [कल्+ङ्] 1 तल्ला, फट्टा 2 टिकिया 3 कुन्हा 4 हाथ की हथौड़ी 5 लाम 6 बाघ का मुंह 7 शर्तिय, श्नुमायव 8 लकड़ी का पट्टा 9 (कपडा बनने के लिए) वृक्ष की छाल-सज आदि । सम०-चरि-वालयम् बरबो के म्य में वृक्षछाल धारण करना ।

कलिः (पु०) [कल्+इ] एक प्रकार की मछली ।
 कल्पुवाष् विष्णायन, कृष्टपना ।
 कालिका (स्त्री०) दास, टुकड़ा --मदुध्यजतमासकालिकाम् नै० १५/८० ।
 काल्पुनेयः [कल्पुनी+इच्] अर्जुन का पुत्र, अयिमय्यु ।
 काल्पुत्रम् व्याकरण का एक ग्रन्थ जिसके रचयिता मान्य-नवाचार्य थे ।
 कालिका (स्त्री०) एक प्रकार का बना हुआ कपडा ।
 कालित् (स्त्री०) [कृल्+क्तिन्] पूँच माग्ना, 'सीसी' शब्द करना ।
 कालिङ्गः (पु०) [प्रा० किङ्ग] उपरम, गर्वी का गेय ।
 काल्पकवल् (वि०) [व० स०] प्रमप्रम्य, गुदा दिव्याई देने वाला ।
 काल्पकः (पु०) एक प्रकार का पत्थी ।
 काल्पकम् (वि०) अक्षयपुर, क्षयकारी, कुनबुने की शक्ति अस्थिर--महा० ३/३५/१० ।
 कालावितम् [सा० वा० काल-वित्-कल्] युष् के पार्श्वबली प्राग से की गई हाथी की कदकपुस्तक वर्धन, पिशाच मान० २/१३ ।
 काल्पकः अडकाय, फोना, मुफ्त ।

४

बन्धः [बन्धु + बन्ध्, पुषो०] बान से धातुओं तथा अन्य लज्जित पदार्थों को निकालने का एक उपकरण ।
 सम०—**बन्धिका**,—**बिन्धी** एक प्रकार की मछली ।
बन्धापी (स्त्री०) एक प्रकार का एक प्रकार की मछली ।
बन्धुः [बन्धु + कन्] 1 लड़का, बच्चा 2 मन्दबुद्धि बालक ।
 सम०—**बैरवः** भैरव का एक रूप ।
बन्धिसम् (मनु०) शस्त्रोपयोगी उपकरण ।
बन्धु (अ०) यथावत उक्त, ठीक कहा हुआ कल्याणी बन गायेयम् रा० ५।३।५।६ ।
बन्धु बन्धी गत्या (सायण के मत से लो करार की बन्ध्या, औरो के मत से एक हजार करोड़) ।
बन्धि [बन्धु + इ] 1 बन्धन, बँद 2 बन्दी, बँदी । सम०—
 -**बहू** बन्दी बनाना, ब्राह्म में ब लगाने वाला
 -**बाह्यम्** (अ०) बन्दी के रूप में ब्रह्म करना,
 -**बाह्य** कारागृह, सुभा वागगना, बेघरा ।
बन्ध (वि०) [बन्धु + क्त] 1 परिग्रहित 2 बन्धा हुआ, 3 भ्रूजकृत 4 प्रतिबद्ध 5 महिन 6 दृढ़ 7 जडा हुआ 8 रचित 9 सकुचित । सम०—**अवस्थिति** (वि०) सतत, अनन्तर, आरार (वि०) व्यसन-पन्न—**बद्धादोऽपि परदारोपरिहो** लम् रा० च० ५,
 -**बन्धक** (वि०) बर्तकाकार, मडली में अवस्थित,
 -**बन्ध** (वि०) जिनसे मूत्र रोक दिया है ।
बन्ध [बन्धु + घञ्] 1 बन्धन 2 केशबन्ध, बाँटला 3 भ्रूलला, बन्धी । सम० **कन्** (पु०) बाँधने वाला, -**मुद्रा** बन्धी की छाप ।
बन्धनम् [बन्धु + क्त] मासांगिकबन्धन (विप० मंजु) ।
 सम० **रक्षितम्** (वि०) कारागृह ।
बन्धनिक [बन्धन + क्त] कारागृह ।
बन्धुः [बन्धु + उ] 1 रिन्देदार, सम्कम्पी 2 एक बूसरे से सम्बद्ध, भार 3 मित्र 4 निवृत्तक, शासक 5 व्योमिष की दृष्टि में मोसरा वार । सम०—**हाथद** रिन्देदार, उतगधिकारी,—**बिन्ध** (वि०) सम्बन्धियों का प्यारा ।
बन्धुवत् (वि०) [बन्धु + इत्] वदन्, मुद्रा हुआ ।
बन्धुवत् (नना० उभ०) मित्र बनाना ।
बन्धुर (वि०) [बन्धु + इत्] 1 नरगत, लहरियादार 2 सुगद, प्रमत्ता देने वाला ।
बन्धुः [भु + क्त, हिल्, बन्धु, उ वा, स्वाँ कन् च] एक नक्षत्रपुंज ।
बन्धुः (पु०) 1 वह हाथी जिनसे दोषे पर्यं में पदापंग कर दिया है मत्त० ५।५ 2 बंधुगता । सम०—
 -**अलका** (स्त्री) वह स्त्री जिनके मस्तक के बुध-
 रासे बाध है ।
बन्धुरीकम् (मनु०) 1. बुधरासे बाध 2 सचेद बन्धन की लकड़ी ।

बन्धुः—**ह्नु** [बन्धु + बन्धु] 1 मोर का पदा 2 पक्षी की पुंज 3 मोर की पुंज 4 पदा 5 बुद्ध । सम०—**बन्धुल** (वि०) बिनसे सिर को पक्ष लगाकर बन्धुत किया हुआ है,—**बन्धु** मोर की पुंज पर बना बाँध बना चित्तु ।
बन्धुवत् (पु०) मीमांसा का व्याख्याविषयक एक नियम जिसके आधार पर गीज जय की अपेक्षा प्राथमिक अर्थ को प्रधानता दी जाती है—**मी०** सू० ३।२।१-२ ।
बन्धुवत् (मनु०) पक्षो से बना बाध, वह लीज जिसमें पर लगा है ।
बन्धु [बन्धु + बन्धु] 1 शक्ति, सामर्थ्य 2 लेना 3 मोटापा 4 शरीर, शक्ति 5 शीर्ष 6 श्वर 7 अदकुर 8 शक्ति का देवता 9 हाथ, कान्ते विष्णुवने शक —**महा०** १।२।३३।८ 10. प्रयत्न । सम०—**बन्धि** (वि०) शक्ति या सामर्थ्य का इच्छुक,—**उपबन्धु** सेना में भर्ती होना—**की०** अ०—**सम्बन्ध** इन्द्र का विशेषण,—**पुच्छकः** कीचा, पुच्छकः हृषिण विशेष, **मुच्छः** सेनापति,—**बन्धित** (वि०) बलहीन, दुर्बल,—**सन्धुवत्** सचकत सेना की भर्ती करना ।
बन्धुः (पु०) न्यून ।
बन्धुवत् (वि०) [बन्धु + मनुप] 1 बलवान्, शक्ति सम्पन्न, प्रबल 2 मत्त, मोटा 3. अधिक महत्त्वपूर्ण 4. सर्वेभ्य (पु०) 1 आठवाँ मुहूर्त 2 श्लेष्मा, कफ, बलगम - लो (स्त्री०) छोटी इकायणी ।
बन्धुः (पु०) 1 एक प्रकार का रोग 2 क्षय, तपैदिक ।
बन्धुः [बन्धु + हा + क्त] 1 बाधन 2 एक पर्वत 3 विष्णु का एक घोडा 4 साप की एक प्रकार ।
बन्धि [बन्धु + इत्] 1 यज्ञ में बाहुति, उपहार 2 भूत यज्ञ 3 पूजा, अर्चना 4 उच्छिष्ट भोजन 5 देवता पर चढ़ाया गया उपहार 6 शुक्ल, कर् 7 श्वर का दस्ता 8 एक प्रसिद्ध राजस का नाम । सम०—**किन्ना** बन्धु पर एक रेखा,—**बन्धुवत्** एक नाटक का नाम जो पार्थिव द्वारा रचित समझा जाता है,—**बन्धुः** (पु०) विष्णु का विशेषण, बिम्बवत् उपहार रूप में बनि देना,—**बन्धुवत्** आय का छटा भाग जो राजा को कर के रूप में दिया जाता है—**अक्षितार** राजान बलिबन्धुगहारायम् मनु० ८।२।८,—**होम** अग्नि में बाहुति देना ।
बन्धीः (पु०) 1 कीचा 2 बालक, पुत, मक्कर ।
बन्धुवत् (अ०) बन्धु की हत्या के इत्य पर ।
बन्धिः [बन्धु + इ, वयोभोद] 1 मृगालय 2 साधर शील से उत्पन्न ममक ।
बन्धिः (पु०) एक प्रकार का बाध जिसकी गीक शरीर से शीघ्रसे समय उली में रह जाती है—**महा०** ७। १८।११ पर प्राण्य ।

बहिष् (ब०) [बह् + इष् + लृट्] 1 के बाहर, बाहर 2 घर के बाहर 3 बाह्यरूप से 4 पृथक् रूप से 5 लिये।
मम० - **अङ्ग** (वि०) बाहरी, दूर से सम्बन्ध रखने वाला - **अन्तरङ्ग** बाह्यरूप से 4 पृथक् रूप से 5 लिये।
 म० १२।२।२९ १२ शा० भा०, -- **बुध** (बहिष्) (अ०) अतिरिक्त या फालतू दिखाई देने वाला, - **पञ्चमाम्** सामवाय में प्रयुक्त सामन्त, **प्रज्ञ** (वि०) जिसकी योग्यता बाह्य पदार्थों की हो, **मनस** (वि०) जो मन से बाहर हो, - **मनस्क** (वि०) जो मानस क्षेत्र की बात न हो, - **भूति** (वि०) जो बाहर बंधा हुआ या रक्ता हुआ हो, **बलिम्** (वि०) बाहर रहने वाला, - **व्यसनिन्** (वि०) लपट, कामुक, इन्द्रियपरायण, **व्य**, - **न्यस्त** (वि०) बाहरी, बाहर का, **कार्य** (वि०) निकाल बाहर फेंकने के योग्य।

बहु (वि०) [बृट् + कृ, नर्त्तय] (बृ, दी, भृयम्, भृषिष्) 1 बहुत, पुष्कल, प्रचुर 2 बहुत से, अमरुप 3 बड़ा, विशाल। **मम०** उपयुक्त (वि०) जो कई प्रकार से काम का हो -- **सारम्** मातृ, - **सौरा** अधिक दूध देने वाली गाय, **सुक** जिसमें अध्ययन बहुत कुछ किया है पशुनु अज्ञो प्रकार नहीं **बोहू** दे० **बहु** सौरा, बहुत दूध देने वाली गाय, **नाडिक** शरीर, काया, **प्रकृति** (वि०) जिसमें क्रियापत्रक नरक बहुत हो (जैसे गमस्त शम्भ), - **प्रज्ञ** (वि०) बहुत बुद्धिमान्, बड़ा समझदार, **प्रत्यधिक** (वि०) जिसके प्रतिभाओं और प्रतिबन्धों अनेक हों, **प्रत्य-बाध** (वि०) जिसके माग में अनेक कठिनाइयाँ हो, **रक्षम्** (वि०) बहुत पूज्य, मरग हुआ, - **बाधित्** (वि०) बहुत बोलने वाला, **शस्त** (वि०) बहुत उत्तम, **सख्यक** (वि०) अनभिन्न, **सख्य** (वि०) जिसके पास बहुत से पशु हों **सहस्र** (वि०) हजारों की संख्या में।

बहुल (वि०) [बृट् + कुलच्, नदाय] (म० - बहीयम्, उ० - बहिष्) 1 माटा, मचन, सटा हुआ 2 बीडा पुष्कल 3 प्रचुर, घण्ट 4 असम्प, अनभिन्न 5 समृद्ध 6 काना, कृपा। **मम०** - **अस्व** एक गाजा का नाम, - **पञ्चसिद्धि** कृपायल का लक्षकार - **कृत्राम्ना** बहुलपरागिनिभिन् मांम्ना - न० २१।१०८।

बाध: [बाध् + घञ्] 1 नीर 2 निशाना 3 बाध की नाक 4 ऐन, जोड़ो (गाय की) 5 शरीर 6 एक राक्षस, बलि का पुत्र 7 एक रुवि का नाम जिसने कामधेनी और हृषिकेशिन् लिये हैं 8 अग्नि 9 पाँच की संख्या का प्रतीक 10 बाध की मर्यादा। **मम०** - **निकुल** (वि०) बाध से विवाह हुआ, **वक** (पु०) एक पत्नी, - **निकुलम्** नर्मदा नदी पर उपलब्ध एक स्वतः पत्थर जिसे सिक्किन् के रूप में पूजा जाता है।

बाधित्: (पु०) एक दार्शनिक का नाम।
बाधाविपत्ति (स्त्री०) [प० त०] भूत प्रेत की पीडा से युक्ति।

बाधक (वि०) [बाध् + क्तुल्] पीडादायक, छेड़छाड़ करने वाला।

बाधयित् (पु०) [बाध् + यिच् + लृट्] बाधा पहुँचाने वाला, हानि पहुँचाने वाला।

बाध्यबाधकता (स्त्री०) अजाचारमन और अत्याचारी की अन्याय्यता, पीडन और पीडक का पारस्परिक प्रभाव।

बाध्यक [बन्ध् अण्] हितैषी - पितृभ्रम्येयप्रोत्थयं तद्गोच-स्थानवान्धव भा० १।१९।३५।

बाह्यस्पर्श [बाह्यगति + लृट्] गजनीति पर लिम्बने शाली की जाया जिसका उन्मत्त कीटिम्ब ने किया है - की० प्र० २।१५।

बाल (वि०) [बल् + ग, बाल् + अच्] 1 बालक, बच्चा 2 अतिरमिन (पुरुष या वस्तु) 3 नवार्ति (जैना कि मूर्ति या उमकी किरणें) 4 अजात, कः (पु०) 1 बन्धा 2 अवयस्क 3 ममं 4 भानामाना 5 पाँच वर्ष का हाथी 6 मारियल। **मम०** - **अरिष्ट** - बन्धो का दोन निकलने का कष्ट, **आव्य** - बन्धो की बीमारी, **बाजारग**, **बिक्रिस्ता** - बन्धो के रोगों का इलाज **बुधबाल** मछली, **भूत**, **आम** का पीषा, - **समोरमा** मिट्टानकीपदी पर लिम्बि गई टीका - **अरक्षम्** ममं की मृग्य - **यति**, **बाधमयासी**, - **प्रत** मन्भुपाय (बीदधमण) का विशेषण।

बालक [बाल + कन्] 1 बालक बच्चा 2 आवयक 3 बन्धु 4 बन्ध 5 हाथी या घोड़े की पूँछ 6 बाल 7 पाँच वर्ष का हाथी - **शि०** ५।४३।

बाला [बाल + टाप्] दुर्गा का विगिण्ट रूप। **मम०** - **अन्ध** - **बालादेवी** का पुत्रीय बध।

बालिजमलि (वि०) बन्धो जैमी छोटी बुद्धि वाला, **बालबुद्धि**।

बाल्येष्टाक एक प्रकार का जाक।

बाध्यक एक अजायक, पैल कृषि का शिष्य, **श्रम्येदशाका** का मन्वायक।

बाध्यविपन्न (वि०) अमिजो से अविभूत।

बालिकम् [बाल् + ठक्] बकरियों का झुंड - रा० २।३७।२।

बाहिरिक: विदेशी, दूरसे देश का न च बाहिरिकान् कुपीन् पुरराष्ट्राधानकान् की० अ० १।५।२२।

बाहु: [बाध् + कृ, हकागदेश] 1 भुजा 2 शक्ति का भाव 3 पशु का अगला पाँच 4 (ज्या० में) समकोण त्रिकोण की बाजार देखा 5 रथ का पोल 6 सूर्य पृथी पर शङ्कु की छाया 7 बारह अक्षु की नाप, एक हाथ की नाप 8 बन्धु का अवयव। **सम०**

—अन्तरम् छातीं - बाह्यन्तरे मद्रुजितं चित्तकीर्णमुने
या—कनक०, सरणम् भूजाओ से तैर कर नदी
पार करना,—विशुद्धम् युद्ध की एक विधा जिसके
अनुसार शत्रु के हाथ की तलवार नीचे गिरवा दी
जाती है, प्रधास्यम् (अ०) भूजायं हिलाना,
सौहृद्मं घण्टी बनाने के काम आने वाला धातु,
—विषद्वन्द्वम्, विषद्विषत्म् मल्लयुद्ध की एक विशेष
युद्ध ।

बाह्य (वि०) [बाह्यभेद, - पञ्च] 1 बाह्य वा, बाहरी
2 जानि बहिष्कृत 3 सावधानिक, ह्य (पु०)
1 विदेशी 2 बाह्यदरी से निकामित 3 प्रतिशोध
संबंध से उत्पन्न मन्तान । मम० अर्थ शब्द का
अनिश्चित, कानून अर्थ, कल बाह्य की ओर का
कमरा, -कर्मण्य बाह्यो मानद्विष, -प्रथम च्चनियों
के उच्चारण के समय बाह्य प्रथन ।

बिडकम् (नपु०) आकान वि० १३३० ।

बिडालवर्तिक (वि०) [ब० म०] पाण्णवी कपटी, धूर्त ।

बिभ्रु [बिभ्रु + उ] 1 ब्रह्म, कण 2 गाल बिभ्रु 3 हाथी
के शरीर पर शरीर निदान 4 शत्रु मित्र
5 (म्या० में) ऐसा बिभ्रु जिसकी मर्यादा बौद्ध
कुछ भी न हो 6 पानी की एक ब्रह्म 7 अक्षर के
ऊपर लया बिभ्रु जो अनुस्वार का कार्य करना है
8 पार्श्वीयता में मित्रता में अन्त के ऊपर शत्रु
बिभ्रु (जो प्रकट करना है कि वह शत्रु मित्रता नहीं
ब्राना आदिग वा) 9 (नाट्य० में) विभिन्न बिभ्रु
जो किसी गीत घटना का आकस्मिक विकास प्रकट
करता है 10 (दशन० में) विच्छिन्न की विभिन्न
व्यवस्था । मम० अत्यंत एक प्रकार की शब्दकीड़ा
—ने १, १२०४, - प्रतिच्छास्य (वि०) अनुस्वार पर
प्राचारिण, - आस्य विष्णु का रूप ।

बिभ्रु [बी + ब्रु, नि०] 1 मूर्ध्नि वा चन्द्र का मंडल
2 कोई भी वाली की भूमि गोल तमिीय बस्तु
3 अग्नि, छाया, अन्त 4 द्वेष 5 संतान 6 तुलिन
पदार्थ (विप० प्रतिबिम्ब) 7 मूर्ति, आकृति 8 मीचा,
उपरा हुआ विष ।

बिभ्रुनी [बिभ्रु + इन् + कीच्] शोध की पुस्तकी ।

बिभ्रुसार प्रयाग के एक राजा का नाम ३, पातमबुद्ध का
समासार्थायक वा ।

बिभ्रुः 1 एक परक वा उपाधि जो श्रेष्ठता का चोतक है
2 स्तुतिपात्र, प्रशस्ति ।

बिभ्रुयम् [ब० म०] अत्यंतमिक गुणा ।

बिभ्रु [बिभ्रु + क] 1 कमलतनु 2 कमल का तनुमय
काय 3 कमल का पीथा । मम०—कर्म कमलतनु
की ऊन, बुद्ध कमलतनुको से बनी रस्ती, प्रकृतम्
कमल फूल, - बर्हिः कमलतनु से बनी बत्ती ।

बिभ्रुयम् कमल का पत्ता ।

बीजम् [बि + जन् + इ, उगमार्थं शीर्ष] 1 बीज, बीज
का दाना 2 बीजानु, तल्प 3 मूल, श्रोत 4 बीज
5 कथाबस्तु का बीज 6 बीजवर्षित 7 सचाई
8 आशय 9 प्राथमिक जनानु का सकलक
10 विशेषण 11 जन्म के समय विष्णु के हाथों की
मुद्रा । मम० अर्द्धिः अर्थ, -अर्थ (वि०) प्रजननार्थी,
निर्वाण्यम् बीज बोना, प्ररोहिन् (वि०) बीज से
उत्पने वाला, -वर्षः बीज बोना, -स्नेहः डाक का
वृक्ष ।

बीजाकुल (वि०) (जेन) जिसमें बीजे के पश्चात् हल
बला दिया जाय ।

बुद्ध (वि०) [बुध् + क्त] 1 ज्ञान 2 जागरित 3 प्रकाशित
4 विकसित, - बुद्धः (पु०) 1 विद्वान् पुण्य 2 (बुद्ध
मानुस्वार) वह व्यक्ति जिसने सत्य ज्ञान प्राप्त किया
है तथा जो स्वयं निर्वाण प्राप्त करने से पूर्व सत्या का
साक्ष का मार्ग बतलाता है 3 परमात्मा ।

बुद्धि (स्त्री०) [बुध् + चिन्तन्] 1 प्रत्यक्षीकरण, समझ
2 प्रज्ञा, मति, मेधा 3 सूचना, जानकारी 4 विशेक
5 मन 6 मति, विश्वास, विचार 7 दुग्दा, प्रयोजन,
अभिकल्प 8 होश में आना, सुखबुध प्राप्त करना
9 साक्ष के २५ पदानों में दुग्दा 10 प्रकृति
11 उपाय 12 अतीति की बुद्धि से पाँचवीं घर ।
मम०—अधिक (वि०) श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त, - क्लेशा
बुद्धि की आगमा पर प्रविष्टता किया, -प्राप्तकी समझ
की स्वच्छता,—बोधः विचार मुद्रता, - कायबल
निर्वाण्यविकार हलकापन, न्यायलक्षणा, नाममयी,
—बुद्धि (वि०) निर्बुद्धि, बुद्धिहीन, बंधनम् बुद्धि
की शक्ति, बुद्धि का ऐश्वर्यं ।

बुभुक्षु (वि०) [बु + भुञ्ज् + उ, भातोद्धिव्यम्] 1 समृद्ध होने
का इच्छुक 2 कल्याण चाहने वाला ।

बुधः (पु०) टोकरी बनाने वाला ।

बुधा (स्त्री०) [बुध् + धाच्] (नाट्य० में) छोटी
बहन ।

बुधय (वि०) (वेद०) प्रबल, बलशाली, बड़ा बुधयन्द्रो
वृष्ट्यन्तरे गमयति मी० सू० १०।१।३२ पर सा०
भा० ।

बुध् [बुध् + धति] 1 बुधा, विशाल 2 बीजा,
प्रधान चिन्तु 3 पुष्पक 4 प्रबल, शक्तिशाली
5 अन्ना, अन्ना 6 पूर्ण विकसित 7 संपन्न, मटा हुआ
8 प्राचीनतम, सबसे पुराना 9 उज्ज्वल 10 स्पष्ट,
(पु०) विष्णु; - ली (स्त्री०) 1. बड़ी बीजा 2. मारव
की बीजा 3 उत्तरीय की संख्या का प्रतीक 4 पीठ कीट
छाती के बीच का आय 5 आशय 6 बायीं 7 मंडल
संज्ञाकार वैषण (नपु०) 1. वेद 2. बुद्धा 3. वैश्विक

ब्रह्मचर्यं सावित्रं प्रजापत्यं च ब्राह्मणं वाचं बृहस्पति-
—वाच० ३।१२।४२। सम० उत्तररत्नामयी एक उप-
निषद् का नाम, —वेत्तम् (पु०) बृहस्पति ग्रह, —वेत्ता
नैतिक देवता विषयक एक ग्रन्थ, —वाचोवीर्यम् एक उप-
निषद् का नाम, —सौमित्रा बराहमिहिर रचित ज्योतिष
का एक ग्रन्थ, —साधन् साधनेय का एक ग्रन्थ —अय०
१०।३५।

बृहस्पतिचक्रम् (पु०) साठ वर्षों (सप्तसप्तरी) का काल ।
बिल (वि०) [बिल+अण्] बिलों में रहने वाला ।

बोधधानः (पु०) बोधों की नाक पर लटकता हुआ बंधा
जिसमें उसका साध पदार्थ रहता है ।

बोधधानः (पु०) एक सूत्रकार का नाम ।

बोधिः (बुध+इत्) 1 पूर्ण ज्ञान या प्रकाश 2 बौद्ध धर्म
की उत्पत्तिक बुद्धि 3 पुरीत बटुम्ब 4 मुर्गा 5 बुद्ध
का विशेषण । सम०—अज्ञन् पूर्ण ज्ञान प्राप्त
करने के लिए अपेक्षित वस्तु ।

बौद्धाचारः (पु०) बुद्ध के रूप में भगवान् का अचरार ।

बन्धः (पु०) 1 मृतं 2 बलान् 3 दिन 4 आक या
मवार का पीया 5 सीसा 6 बोधा 7 शिव या
ब्रह्मा का विशेषण 8 तीर की नाक 9 एक रोग
का नाम । सम०—बन्धन्, —बन्धन्, मूर्धन्यबन्ध ।

ब्राह्मन् (नपु०) [बृह्, +मन्तिन्, नकारस्यकारे चत्तोरत्त्वम्]
1 परमपुरुष, परमात्मा 2 अर्धमासपरक मूकन
3 पुरीत पाठ 4 वेद 5 पुरीत ब्रह्मण ६—एकाक्षर
पर ब्रह्म मनु० २।८।३ ७ ब्राह्मणजाति 7 ब्राह्मण
की शक्ति 8 धार्मिक तपस्चरण 9 ब्राह्मण्यं, सतीत्य
10 मोक्ष 11 वेद का ब्राह्मणभाग 12 धन 13 आहार
14 मन्त्रा 15 ब्राह्मण 16 ब्राह्मण्य 17 आत्मा ।
सम०—विश्विष्यन् ब्राह्मणों के प्रति किया गया

अपराध, —कृद् बड़ा बिहान्, —नीला (स्त्री०) ब्रह्मा
का उपदेश देता कि ब्रह्म० के अनुशासनपूर्वक में विद्या
गया है, —विद्यासा परमात्मा की ज्ञानने की इच्छा,
सम्बन्ध वेद की विद्या, —बुधक (वि०) वेद के
मूलपाठ को दृष्टित करने वाला, पाठः ब्राह्मणकार
के पुरीत ज्ञान का अन्तिम उद्देश्य, —बन्धन् ब्रह्म-
विषयक शक्ति, —विष्णु वेदपाठ करते समय मूक से
निकली बुद्ध की बुद्ध, भूमिजा एक प्रकार की
मिर्च, —मूर्धन्य दिन का आरंभिक भाग, ब्राह्मणेला,
—रात्र उपवास, वाच परमात्मा से संबन्ध रखने
वाला व्याख्यान, भी एक सामयिक का नाम ।

ब्राह्मण्यं (पु०) [ब्रह्मन् + मण्यु] अग्नि का विशेषण ।

ब्राह्मण्युक्तः (पु०) 1 जिसने ब्रह्म के माघ मास्य प्राप्त
कर लिया है (यह सन्ध्यायियों के विषय में कहा गया
हो जो इस शरीर को त्याग देने हैं) 2 वासुधाचार्य ।

ब्राह्मण्यिधि (पु०) ब्राह्मणों, पुरोहितों तथा याजकों के
लिए बनाई गई निधि ।

ब्राह्मण्य (वि०) [ब्रह्म वेद्ययोगी वा ब्राह्म + अण्] 1 ब्राह्मण
विषयक 2 ब्राह्मण के योग्य 3 ब्राह्मण द्वारा दिया
गया, 4 धर्म पूजा विषयक 5 ब्रह्म को मानने वाला
— वा 1 चारों वर्षों में से पहले वर्षों से सबद्ध
2. (पुण्य के मूल में उत्पन्न) ब्राह्मण्य 3 पुरोहित
4 अग्नि का विशेषण 5 अष्टाश्रमियों नक्षत्र, बन्धु
1 ब्राह्मणसमाज 2 वेद का वह भाग जिसमें विश्व
यज्ञों के अन्तर्ग पर मूकनों के प्रयाग का विधान
विलिप्त है, उक्त मन्त्रभाग में विष्णुस्य पुत्रकः है । सम०
अवधोमन् ब्राह्मण्य भाग में विहित विदवा का अन्तर्ग
मन् १०।४३, ब्रह्मन् 'ब्राह्मण्य' नाम, —प्रति-
वेद्य-पशुपती ब्राह्मण्य, —वाच ब्राह्मण्य होने की शक्ति ।

अ

अक्षन् [अक्ष् + क्त] 1 भाग, अक्ष 2 आहार 3 मान,
उत्कृष्ट गुण 4 बलाज 5 पानी में उबाला
हुआ अक्ष 6 पूजा, अर्चा 7 वेदान्त, पारिधायिक 8 एक
दिन का अंशक —अक्ष्य वैवाचिक अक्षल पर्वीत मृत्यु-
वृत्तये—मनु० ११।१०। सम० अक्षः, अक्षन् 7-
हारवाला, बलपानम्, अक्षन् योजन की नैवारी
—आक्षन् दान की तपस्वी, अक्षन् भाल का
मांस ।

अक्षित (स्त्री०) [अक्ष् + क्त] 1 विभाजन 2 शीघ्र
अर्थ, आत्मकारिक अर्थ 3 (किसी रोग के प्रति)
शरीर की उत्पन्नता । सम०—अक्ष्य (वि०) जो
अक्षित के द्वारा प्राप्त किया जा सके, जहाँ यज्ञा शीर

अक्षित से पहुँचा जाय, अक्षित (वि०) जिसमें
अक्षित की मन्थना हो अर्थात् बोधी अक्षित वाला
अक्षित, अक्ष्य (वि०) जो अक्षित के द्वारा
ब्रह्म में किया जा सके ।

अक्ष्य (वि०) [अक्ष् + अण्] माने के योग्य, भोजन के
लिए उपयुक्त, अक्ष्य (नपु०) 1 माने का पदार्थ,
आहार, —अक्ष्यमलक्या, प्रीतिविषयरेव काश्चम्—हि०
१।५५ 2 अक्ष । सम०—अक्ष्यन् अक्षयन और
निषिद्ध भोजन, —अक्ष्यन् सब प्रकार के भोजन
से युक्त ।

अक्ष्य-अक्ष्य [अक्ष् + अ] 1 मृतं 2 बौद्ध 3 शिव का रूप
4 सीमाय, प्रकृता 5 मनुष्य 6 यक्ष, कीर्ति

7 सोमन्द 8 शेषला 9 प्रेम, प्यार 10 कामकेसि, विगा 11 याग 12 गुण, धर्म 13 प्रयत्न 14 अर्धवि, विगाय 15 मोक्ष 16 सामर्थ्य 17 नवतन्त्रितमला 18 प्रेम और विवाह की अविवाही देवता माविद्य 19 ज्ञान 20 इच्छा 21 जगिमा। सम० ईश्व माय का देवता, काम (वि०) संचय के आनन्द का इच्छुक, - वृत्ति (स्त्री०) वेद्यावृत्ति, वृत्ति (वि०) वेद्यावृत्ति से निर्वाह करने वाला।

अवस्थाया आदि शकशायां की सम्मान सूचक उपाधि।

भम्ब (वि०) [भम्ब + क्त] 1 टूटा हुआ 2 हाताय, विकल 3 अवयव, स्थिति 4 तथ 5 खलत 6 हाया हुआ। सम० अविष् (वि०) जिसकी हृद्दिशा टूट गई है, - कश्चर (वि०) जिसका ऊपर का इंधा टूट गया है (कैते रच)। - तासः (सगीत०) एक प्रकार की माय, - अस्तिव्य (वि०) पूरा करने से राकने वाला।

भञ्जः [भञ्ज + क्त] 1 (बुद्ध०) विच में निरन्तर होने वाला क्षय 2 (वेन०) 'खाल' से आरम्भ होने वाला ताकिक सूच।

भङ्गि [भञ्ज + क्त, कृष्णम्, विधायां ङीप्] 1 टूटना 2 हिकला 3 झुकना 4 तरय 5 बाइ 6 विशिष्ट प्रथा, इस शानाभमनाप्यभ्यन्तरीरचितकुलताम् भारत०। सम० भञ्जकम् कृतीति से युक्त भावय, विचारः अपनी बुद्धिवादी को विकृत करना। भङ्गिनी [भङ्गिन् + ङीप्] नदी, दरिया - आरामगौलि-मयिकाभिमङ्गिनीम् नं० १८।१३७।

भञ्जना [भञ्ज, युच् + टाप्] व्याकल। भट्टनारायणः 'वेणोसहाय' नाटक का प्रणेता। भट्टि 'भट्टि काव्य' का रचयिता। भट्टोक्ति एक संवाकरण का नाम।

भन्वुक एक प्रकार की मछली।

भद्र (वि०) [भद्र + क्त, सगीय] 1 अच्छा, प्रसन्न, समृद्ध 2 धाम, मागलिक 3 श्रेष्ठ, प्रमुख 4 कुपान् 5 सुन्दर 6 सुन्दर 7 वाञ्छनीय 8 प्रिय 9 दल। सम० - कल्याः बीड़ो के अनुसार शंभान युच्, - सिद्धिः उपहार के लिए बने पात्र, बाम् (स्त्री०) धुप बघतना, विराह एक छन्द का नाम।

भद्रक [भद्र + क्त] 1 सुन्दर 2 धाम 3 सज्जन - कम् (न्यु०) 1 हैंडने का विशिष्ट आसन 2 अलपुर।

भद्राक्षरकम् सुन्दर, समस्त सिग् मद्रबाना।

भद्राक्ष वि० [भय, क्षान्त्] भोव कायर।

भरः [भृ + क्त] पराक्रम, श्रेष्ठता, प्रमुखता न अन्तु बयना आर्येणाय स्वकार्यसहो भर - वि० ५।१८।

भरतक्षत्रकम् नाटककला।

भरवत् (न्यु०) [भृ + क्त] आवा, कान्ति, बयक।

भर्तव्य (वि०) [भृ + क्त] 1 सहन करने या डोने योग्य 2 माई के योग्य, पालन पोषक दिने जाने के योग्य।

भर्तृ (पु०) [भृ + क्त] 1 पति, 2 स्वामी 3 नेता, सेनापति 4 पालक पोषक, रक्षक 5 सृष्टिकर्ता 6 विष्णु। सम० भित्त (वि०) पति के विद्यय में सोचनेवाला, देवता पति को देवता मानना, लोकः पति का वसार, - दार्यधन (वि०) जिसकी संपत्ति उसके स्वामी द्वारा जस्त की जा सके, हीना पति द्वारा परित्यक्ता।

भस्वः [भृ + क्त] 1 सता, अस्तित्व 2 जन्म, उपज 3 शीघ्र, उत्पन्न 4 सांसारिक सता, सांसारिक जीवन 5 स्वास्थ्य, समृद्धि 6 देवता 7 विघ्न 8 अविघ्न, प्राप्ति 9 श्रेष्ठता। सम० अक्षम् वसार का सबसे अधिक दूरवर्ती किनारा, भङ्गः जन्म मरण से युक्ति, - भावय (वि०) कल्याणकारी, औष (वि०) वसार के अस्तित्व से धरने वाला, - भोगः सांसारिक सुखों का आनन्द लेना, शोचः चद्रमा, - सौमिन् (वि०) श्रौतिक वसार में अनुपस्थ, - संततिः (स्त्री०) जन्म मरण का ताता।

भस्वयु (वि०) [व० ल०] धनवान्, वीर्यवान्।

भस्वम् [भृ + क्त] जनाङ्ग, जन्मकुंडली, जन्म-मरण।

भस्वमन्वत् (वि०) अक्षे सङ्कुल्यो वाला।

भास्वक (वि०) [भवत् + क्त] भाप से सबब रखने वाला भावकीरिण प्रबलकप्रभा है। रा० ५० ७२।

भावी (स्त्री०) कुतिया, भौकने वाली।

भस्वन् (न्यु०) [भस् + मनिन्] 1 राय 2 शरीर पर लगाई जाने वाली अमृत, राय। सम० - अङ्गः एक प्रकार का कम्बुतर, अङ्गुराः शरीर पर भस्म रमाना, - अक्षेयः शरीर पर भस्म लीपना - अक्षेय (वि०) जो केवल रात के रूप में बच गया है, - युष्मन् शरीर पर भस्म पोतना, - वासः कायदेव, बसः राय का डेर।

भा (भदा० पर०) 1 बमकना 2 फुक मारना।

भावी (भा बाहु, कित् लकार, प्र० पु०, ए० व०) 1 बमका 2 प्रसन्न हुआ 3 हुआ 4 हुआ चली - बभी मस्तवान् विकृत स-भदो, बभी मस्तवान् विकृत समृद्ध, बभी मस्तवान् विकृत समृद्धो, बभी मस्तवान् विकृत समृद्धः (समी अर्थों में प्रयुक्त) - भट्टि० १०।११।

भासः [भृ + क्त] 1 शुक - की० म० २।५।१४ 2 चार भाषाधिकों में से एक (शास्त्र०) सा० का० ५० 3 म्यारुट्ट की मस्या 4 भाग, अंश 5 भाग्य, किस्मत 6 बीचई भाग। सम० - अक्ष-

हारिन् जो अपना भाग ले लेता हूँ,—बनम काय,
—पन्नम्—लेख्यम् विभाजन का दस्तावेज ।
हारिन् (वि०) [भाग + हरिन्] अयत्न उपयोगी ।
हारिः एक विष्वात वेदाङ्कण और स्पृशिकार का नाम ।
हास्य (वि०) [हस + ह्यत्, कुलवन्] 1 हाटे जाने के योग्य 2 हिस्रे का अधिकारी 3 भाग्यशाली, किस्मत-
शाला, —स्यम् (नपु०) 1 भाग्य, किस्मत 2 अच्छी
किस्मत, सोभाग्य 3 समृद्धि 4 कल्याण, सुख ।
सम०—संशयः बुरी किस्मत, उन्नति भाष्य का
उदय होगा, खूबसूरत पूर्वफलानुी नदय ।

भाङ्गक बीपदा ।
भाङ्ग (अ०) जखी मे, ठेकी मे ।
भाङ्गनविषयः गलत उपायो के द्वारा मदन करना—को०
अ० २।८।२१ ।
भाष्यम् [भाष + अच्] 1 सामान्य 2 पूर्वी, मूलपत्र
3 वर्तन । सम०—शेषकः वर्तन रचने वाला ।
भाष्यः (अ०) प्रतीति के परिभाषामस्वरूप ।
भाष्य (वि०) [भाष + अच्] सूर्यसंबन्धी ।
भाषुन् यमुना नदी का विशेषण ।
भाष्यः अनेकांशात्मक का एक विष्वात लेखक ।
भाषः [भू + षञ्] 1 बीसा 2 आधिक्य 3 परिश्रम
4 बड़ी राशि 5 किसी पर डाला गया कार्यभार ।
सम०—अन्तरालम् बीसा कम करना,—आकलना
एक छन्द का नाम,—बद्धरश्मि बीसा उठाना, इति
(स्त्री०) भाषकरता करता, बीसा उठाना,—यः लक्ष्मण ।
भाषिका राशि, देव ।

भास्ती 1 वधुता, गवट, वाक्यान्ता 2 वाणी की देवता
3 नाट्यकला 4 किसी पात्र की सम्पूर्ण दमना
5 सन्ध्यामयी के दस भेदों में एक—सोम्यामिन् ।
भास्ति (वि०) [भृगुस्येदम् - अच्] अन्तर्गामी,—त
1 भरतकुल में उत्पन्न (जैसे बिदूर, धृतराष्ट्र, अर्जुन)
2 भास्तिवर्ष का निवासी 3 अग्नि,—सम् (नपु०)
1 भास्तिवर्ष देव 2 संस्कृत का एक महान् काव्य
(इसके लेखक व्यास या कृष्णार्जुन माने जाते हैं)
3 सगीतवाद्य तथा नाट्यकला । सम०—आख्यात्मम्,
इतिहासः, कथा भरतकुल के राजाओं की पहानी,
यद्वाभारत काव्य,—सावित्री एक स्त्रीय का नाम
इमा भास्तिवर्षी प्रातःकालाय य पठेत्—महा०
१।८।१।६४ ।

भास्त्राकः [भास्त्राज् + अच्] 1 मद्वाज रांघ मे संबंध
रचने वाला 2 राजनीति का एक लेखक जिसका
कोटिस्थ मे उल्लेख किया हूँ ।
भास्त्रिः किंगतार्जुनीय काव्य का रचयिता ।
भास्त्रकः 1 अधिशाहीन देव्य कन्या में देवप्राप्य के द्वारा
उपासित पुत्र 2 शक्ति की पूजा करने वाला ।

भास्त्रिक [भू + अच्] अयो तीव्रो, शक्तिव्यवस्था—भार्यवी
भास्त्रिकी वेत्र० ।

भास्त्रिकितकम् दाम्पत्य मन्थम् ।
भास्त्रिकिः सामर्थ्य के एक भाषा ।

भास्त्रः [भू + षञ्] 1 सत्ता, अन्तित्व 2 कल्याण—भास्त्र-
मिच्छति संबंधम्—महा० ५।२६।१९ 3 प्रसन्न-
दोषस्याभावाद्ये तु—महा० ७।२५।६४ 4 भाग्य
5 भासना, अतीत सकल्पनाओं की मूष 6 छः बन्धना
अस्ति, बंधने, विपरिमति आदि । सम० कर्तृक,
भास्त्राक्षक क्रिया, सति (स्त्री) मानवी भावनाओं
को प्रकट करने की शक्ति—भास्त्रनिराकृतीनाम्
प्रतिभा० ३,—वेधित्वम् प्रेमशोक संकेत पा
वेष्टारं, निर्बन्धि भौतिक सृष्टि तां का० ५२,
—मैरिः एक प्रकार का नाच, स्रवत्स्यम् नाना
पकार की भावनाओं का मिश्रण ।

भास्त्रयम् (वि०) जनेहर, मुद्रावना ।

भास्त्रियम् (वि०) [भू + गिच् + त्व्] प्रत्यक्ष, प्रोत्सावक
शोचो भास्त्रियता पुन,—महा० ३।२९।१ ।

भास्त्रित (वि०) [भू + गिच् + त्व्] 1 अधिनिश्चित,
स्थिर किया हुआ गथाओं हुआ 2 अधिकार में किया
हुआ, गृही, पकड़ा हुआ—दुर्गुह् पृष्ठाभित्तम्
—भास्त्र ५।१८।१३ 3 नियम, नीत, पूर्ण—रथाङ्ग-
पानेनूभास्त्रावितम्—भास्त्र १२।२०।४० 4 प्रसन्न,
दुष्ट । सम०—भास्त्र (वि०) स्थय की जाये बढ़ाने
वाला, तथा शीघ्र की सहायता करने वाला ।

भास्त्र्य (वि०) [भू + ह्यत्] 1 भावी 2 जो सम्पन्न हो
नके 3 मिष्ट दाय्य हाता ध्यारं सतिभिर्भास्त्र्यो
नृषाङ्गणतन्त्रिणी मनु० ८।६० ।

भास्त्रयम् आर्पेदत पत्र शुक्ल २।३०९ ।

भास्त्रयमिति वाणी का निष्पन्न (अन०) ।

भास्त्रिय (वि०) [भास् + त्व्] बोलने वाला, बातें करने
वाला ।

भास्त्रयत्त (वि०) टीका या भाष्य का काम देने वाला
—भास्त्रयत्ता अवन्युं के शि० २।२४ ।

भास्त्र एक प्रसिद्ध नाटककार, स्वर्णवामदेवतम् आदि
नाटकों का प्रणेता ।

भास्त्रा [विष् + अ] 1 जीवन निर्वाह का एक माधन
2 योगता । सम०—भुज् (वि०) भिशास्त्रि मे
निर्वाह करने वाला ।

भास्त्रा [विष् + अ] 1 गिवाही 2 भापू 3 सन्ध्यामी
4 अन्नय । सम०—भास्त्र अन्नयता, भास्त्रा ।

भास्त्रिकी कर्मक का एक भेद—की० अ० २।११।२९ ।

भास्त्रि (स्वा० प०) 1 टुकड़े टुकड़े करना, काटना
2 व्याख्या करना—भास्त्रि योषयःसिद्धि साधो
न नः अन्वये नवशापि भेनुम्—भास्त्र ५।१।०८ ।

विद्यालयम् दुग्धनामा, दुग्धकवाना ।

विज (वि०) [विच् + क्त] 1 टूटा हुआ, फाड़ा हुआ, बीरा हुआ 2 पुबक् किया हुआ, बाटा हुआ 3 विधास्त—विन्यस्तित—सन्० १२।३३ 4 रोमाञ्जित (जैसे रोपटे कड़े हुए)—रा० ६।१०।१८ 5 जिसे बूट ही गई है। सम० (वि०) 1 जिसने कानो को बाट दिया है 2 जिसके कान बीच दिखे गये हैं, कुक्कः जिसने अपने अनिवासं कर्तव्य (पितृपुत्र आदि) सम्पन्न कर लिए हैं, —हृत्ति (स्त्री०) भिन्न राशियों का नाम ।

वील (वि०) [वी + क्त] 1 डरा हुआ, बाताझुट 2 डरपोक, कायर 3 भयघस्त । सम०—वाचकः नञ्प्रसङ्गीक वायक, धर्मोला गाने वाला, —वाचिन् (वि०) कातरभाव से व्यवहार करने वाला, —चित्त (वि०) मन में डरने वाला ।

वीलि (वी + क्त) 1 डर, आगड्डा, पास 2 सतरा जोखिय 3 कपकपी । सम० छुल्ल (वि०) डर पैदा करने वाला, छिम् (वि०) डर डूर करने वाला ।

वीय (वि०) [वी + क्त] भवानक, डरावना, भयपूर्ण, —म (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 परमपुत्र 3 भवानक रस 4 दूगरा पावक, म्भू (नपु०) भय, डार। सम०—अञ्जन् (वि०) भीषण क्षीत वाला, चक्कः सूर्यो तद्गृहं पका हुआ भोजन, एव 1 घृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम 2 भीष्मक का एक पुत्र ।

वीय्य (वि०) [वी + क्त] डरावना, भवानक, भयपूर्ण, —ञ् 1 भवानक रस 2 राक्षस, पिशाच, भूतघत 3 शिव का विशेषण 4 अन्तनु के द्वारा मना में उत्पन्नित पुत्र । सम० कर्त्तु महाभारत का छठा पत्र (अध्याय), —स्तवराक्षः महाभारत में शान्तिपर्व के ४०वें अध्याय में निहित भीषण की प्रार्थना ।

वीय्यवाधे (अ०) जाने के द्वारा उपचात ।

वीय्य (वि०) [वी + क्त] 1 विनीत, नत 2 बन्धीकृत, मुड़ा हुआ 3 टूटा हुआ 4 हाताश, विनयीकृत ।

वीय्य [वी + क्त] 1 बाहु, भूजा 2 हाथ 3 हाथों की लूह 4 शक्ति में आहुति का एक पादवं जैसे विभूय में 5 विक्रय का आधार 6 बृक्ष की शाखा । सम०—अङ्कः शान्तिज्ञान, —अर्धवन् निर्वाह के अनुदान, —आकम्पः वास, छाया किसी की भूजाओं द्वारा दिया गया प्ररक्षण, —वीर्य (वि०) प्रथम भूजाओं वाला ।

वीय्य [वी + क्त = वी + क्त + क्त] शीघ्र, तर्प, की आरम्भना नक्षत्र । सम० कस्यः कड़े की शक्ति

कनारि में मोलाकार लिपटा हुआ शीघ्र, —अर्धवन् विष्णु का विशेषण ।

वीय्य [वी + क्त + क्त, वृत्] 1 शीघ्र 2 कार, प्रेमी 3 शक्ति, स्वामी 4 आरम्भना नक्षत्र 5 शकती 6 राधा का बन्धकन विष । सम०—अपस्तम्ब एक छन्द का नाम, कस्यता एक छन्द का नाम, शिबु एक छन्द का नाम ।

वीय्य [वी + क्त] ज्यामिति की आहुति का पादवं । वीय्यवृत्ति (अ०) हाथपाई, हाथों की (लकड़ी) । वीय्यवृत्त [वी + क्त] 1 सत्तर, (सत्तर की सत्ता तीन है या चौदह) विभूयन, वनुरसमुपनादि 2 बरती 3 स्वर्ग 4 जन्तु, प्राणी 5 मानव । सम०—ईश्वरी पार्वती का रूप, —सत्त्व बरती की सतह, —भावन —सृष्टि का कर्ता ।

वी (स्त्री०) [वी + क्त] 1 पृथ्वी 2 विज 3 बरती । सम० कस्या, कस्यन् बरती की छाया, —पृथ्वी एक प्रकार की रकड़ी, वल एक प्रकार का वृह, —वा पृथ्वी की छाया, प्रहण, —विष्णुकुल पशियों की एक जाति—महा० १२।१६।१०,—कस्या भूमि पर सोना, —स्फोट कुङ्कुर्वृत्ता, शीघ्र की छतरी ।

वी [वी + क्त] 1 होने वाला, वर्तमान 2 उत्पादित, निर्मित 3 अनुत्प होने वाला, सत्य 4 सही, उचित, उपयुक्त 5 अतीत, बीता हुआ 6 प्राप्त 7 विहित 8 मानव । सम०—अञ्जन् बीती हुई बात, या निश्चित तथ्य का उल्लेख करना, —अविषङ्ग—अज्ञेयः भूतघत का किसी पर चढ़ना, —वाचिन् (पु०) जो सबसे अधिकमानना करता है, सबसे पूजा करने वाला, —कोटि निरपेक्ष धृन्वता, —कस्या सचाई के साथ, वृक्ष तत्त्वों का गुण, —कनवी सब प्राणियों की दाता, —सम्भाषन् मुहमतरव, —वाचः कीर्तित प्राण-धारियों का सत्त्वक, —वृष (वि०) सभी प्राणियों में रहने वाला, वृत् (वि०) अनुभवो या तत्त्वों का पालनपोषण करने वाला, —वातुका पृथ्वी, —वृत् (पु०) बड़ा का विशेषण ।

वी [(स्त्री०) [वी + क्त] 1 सत्ता, अस्तित्व 2 वन, उपज 3 कस्याम, कुसलमवल, समृद्धि 4 सत्सत्ता 5 वन, दौलत 6 धान, आना, कानि 7 राज । सम० अर्धवन् (अ०) ६।१६ के लिए, वृत् (वि०) कस्यापोषावक ।

वी [(स्त्री०) [वी + क्त] 1 ज्यामिति की आहुतियों की आधाररेखा 2 किसी विष का रेखाचित्र 3 बरती, पृथ्वी । सम०—अन्तनु वृत्ति के विषय में झूठी नवाही, —अर्धवृत्तिका अन्तनु वृत्त का एक प्रकार, —अन्तनु कुङ्कुर्वृत्ता, शीघ्र की छतरी, तन्व भयमचह, —वर्धवन् सर्वभाव, —वर्धक भूमि पर

रथ होने वाला, —अनीकृत (वि०) मृनि बैल
 बराबर किया हुआ, फल के साथ मिलाया हुआ,
 —बलम्, —सुत 1 यथामह 2 नरकासुर ।

मूलम् (वि०) [मू + मूलम्] 1 अनेकाङ्क अधिक
 2 अधिक बड़ा 3 अधिक आनन्दक; सम०—अन्य
 (वि०) बहुत अधिक इच्छुक, —माय वृद्धि, विकास,
 —आयम् अधिकतर अधिकता ।

मूर्ति (वि०) [मू + मूर्ति] बहुत, पुष्कल, असम्प, पुष्कल ।
 सम०—असम्प (अ०) बहुत समय तक, —असम्प
 (अ०) बहुत बार, बार-बार, बुध (वि०) 1 बहुत
 अधिक बढ़ता हुआ 2 प्रति-प्रति के फल देनेवाला,
 —छेना पीसो की एक भाति, —मोक्ष (वि०)
 नामाप्रकार से सुखापयोग करने वाला ।

मूर्च्छा (अ०) [मूर् + मृ] विविध प्रकार से, नामा
 प्रकार से ।

मूषणवासति (नपु० ब० व०) दम्प और आभूषण ।

मू (बहु० पर०) सतुलित रखना, समसतुल्य करना ।

मूक (वि०) [मू + कृ] 1 पालन पोषण किया हुआ
 2 किराने का, कः (पु०) माँके का सेवक । सम०
 —अभ्यापनम् वैतनिक अभ्यापक द्वारा दिया गया
 शिक्षण —मूर्ति: मन्वृरी, पारिधायिक, किराया ।

मूर्ति: [मू + मूर्ति] 1 सहन करना, सहारना, सहारा
 देना 2 अरण्यपोषण 3 आहार 4 के जाना, नेतृत्व
 करना 5 मूखन 6 पारिधायिक । सम० अर्थम्
 निर्वाह के निमित्त, जीविका के लिए ।

मृगु: (पु०) 1 एक मृनि का नाम 2 अमर्दिन का नाम
 3 शुक का विशेषण 4 शुक नामक वृह 5 चट्टान
 6 पठार 7 शिख का विशेषण 8 शुकमार । सम०
 —कच्छ - कच्छम् नर्मदा नदी पर एक तीर्थस्थान,
 —वसन्तम् चट्टान से गिरना, —वसतः चट्टान से कूटना,
 छलाय लगाना, मृजुः एक प्रकार का सरीसृप का
 माप, —अभीष्ट, काम का वृत्त ।

मूषणम् (वि०) कठोर दम्प देने वाला ।

मेष: [मृ + मृ] 1 दाम्य पीडा 2 वही का योग
 3 पक्षाघात 4 सिद्धुना 5 सममज विकीर्ण की
 कर्ष रेखा ।

मेषक (वि०) [मृ + मृ] 1 विशेषक, विभाजक, तोड़ने
 वाला 2 मायक 3 विवेकक 4 देवक 5 (सोतो
 की) मोड़ने वाला 6 पयच्छ करने वाला ।

मेषन (वि०) [मृ + मृ + मृ] 1 तोड़ने वाला,
 विभाजक 2 देवक, —नम् (किसी पशु का) मासा-
 छेदन करना ।

मेषक (नपु०) मीरना ।

मेषक (वि०) [मेष रोगमय अयति-ज + क] स्वम्प करने
 वाला, विकिला किने जाने योग्य, मम् (नपु०)

1 मेषवि 2 उपचार 3 रोपनायक मेष । सम०
 —अरण्यम् मेषविधियों का उपचार करना, कुल (वि०)
 स्वम्प किया हुआ, मेषम् मेषविधियों की स्वास्त्यकर
 कृति ।

मेषः [मृ + मृ] 1 जाना, जा लेना 2 सुखापयोग
 3 वस्तु 4 उपयोगिता, उपयोग 5 सासन करना
 6 उपयोग, प्रयोग 7 सहन करना 8 अनुभव करना,
 संकल्पना 9 स्वीसयोग 10 आनम्प लेना 11 आहार
 12 साथ 13 साथ 14 वन । सम०—मायः पोषक,
 अरण्यपोषण करने वाला, —अयम् किराये का दस्ता-
 वेज, —मृ (वि०) सुखापयोग करनेवाला ।

मेषिवाक्य: [म० त०] छेपनाम ।

मेषवस्तु विकास की सामग्री ।

मेष (वि०) [मृ + मृ] 1 सुखापयोग देने वाला
 2 उदार, दानवीर, —कः (पु०) 1 एक प्रसिद्ध
 राजा का नाम 2 विद्वंसे का राजा । सम०
 —अयम् मेष द्वारा रचित रामायण मयम्, —अयम्
 अन्नाक की भोजविषयक कृति ।

मेषः मेष द्वारा नदी में उत्पादित मृष ।

मेषिवाक्य (नपु०) दासता, सेवकत्व ।

मेष (वि०) [मृ + मृ] 1 प्राणितवन्वी 2 भौतिक
 3 पापक, कः 1 मृत पिशाचों की पूजा करने
 वाला 2 भूतनाथ । सम० विच (वि०) मृ, 1
 दुर्बुद्धि ।

मेषम् [मृ + मृ] 1 अर्थविषयक वस्तु 2 फल
 3 अवन की ऊपर की मजिले मन्त्रोपाद्यमौर्धमेष
 —रा० ५।२।५० ।

मेषी [मेष + मेष] सीता का विशेषण ।

मेषः [मृ + मृ] 1 गिरना, फिलाना, अच-
 पतन 2 हाना, मूर्च्छना 3 नाश, अक्षय 4 दूर भाग
 जाना 5 अक्षय होना 6 (नाट्य० में) उत्तमना के
 कारण बाकसलान ।

मेष (वि०) [मृ + मृ] 1 गिरा हुआ, पतित 2 मूर्च्छना
 हुआ 3 भागकर जो बच गया । सम०—अक्षयकर
 (वि०) जिसने अधिकार छीन लिये मरे हों, पदच्युत,
 मेष (वि०) जो विहित करने करने में अनयन
 रहा, —मेष (वि०) जो अहित से पतित हो गया हो ।

मेष (अ०, वि० पर०) लक्ष्मणाना, अक्षयना ।

मेष (अ०) 1 दिहोरा पीटना 2 अन्वयमित्त करना ।

मेष: [मृ + मृ] 1 छाता, छतरी 2 वृत्त ।

मेषक: [मृ + मृ] 1 मधुमखी 2 मेषी 3 कुम्हार
 का पाक 4 अवान 5 मृदु । सम०—मेषकः मधु-
 मखियों का छाता, —अयम् एक छत ।

मेषरिपु (वि०) [मेषर + रिपु] जो नीला हो गया है
 —अयतिविलनीतमेवमरिपुमरिपुना—दी० २।१०३ ।

बलिः (स्त्री०) [अन् + वृ] मुक्ति, बेहोशी ।
 भाल्ल (वि०) [अन् + ल] १ इधर-उधर घूना हुआ
 २ बहकर बाला हुआ ३ नुका नटका ४ बबड़ाया
 हुआ । सम० - फिल्ल (वि०) मन में बहराया हुआ ।

बू (स्त्री०) [अन् + वृ] गी, गीत की गी । सम०
 - बलिस्तान् बुरक-बुरके साफना, छिन्नकर बेचना,
 - विष्णुनः गीहो को मोड़ना, गीह पड़ाना ।

म

मकर [मं विभ किरति-कृ + अच्] १ मगरमच्छ २ मकर-
 राशि ३. मकर की आकृति का कुम्हल । सम०
 भासन् एक प्रकार का याग का नामन, - बाहून्
 ब्रह्म ।

मकरन्द [मकर + रन् + क, नुमादेश] १ पुष्परस, मधु
 २. चमेली का फूल ३ कोयल ४ सुगन्धयुक्त आम का
 बज ५ (सगीत० में) एक प्रकार का माप ।

मकरन्धिका एक छन्द का नाम ।

मकलक (पु०) १ कली २. दली नाम का वृक्ष ।

मकलुतव्याघ्र (पु०) शिव का विशेषण ।

मकम्ब (पु०) कुसीदक, सुदम्बोर ।

मकम्बेतः (पु०) मगध नाम का देश ।

मकमुक्त (पु०) एक प्रकार का वाद्ययन्त्र ।

मङ्गल (वि०) [मङ्गल् + अल्भ] १ शुभ, सौभाग्यशाली
 २ समृद्ध ३ शौर, - बन्धु (नपु०) १ माङ्गलिकता,
 प्रसन्नता, कल्याण २ राम धतुन ३ आशीर्वाद
 ४. माङ्गलिक सस्कार (जैसे कि विवाह) ५ हल्दी,
 लू (पु०) १ मङ्गलवृक्ष २ अग्नि । सम०
 - माङ्गल् (वि०) शुभ, - अग्नि, माङ्गलिक स्वर,
 - श्रेयी माङ्गलिक अयसने पर बजाया जाने वाला
 ढोल ।

मङ्गलः [मङ्गल् + अङ्गुट] आठ वर्ष का हाथी - मात० ५।९ ।

मङ्गलान्धम् एक प्रकार का नाच ।

मङ्गलान्धः मधुर अग्नि मन्त्री मङ्गलान्धरिब पदभजन
 शेष इत्यालपत्तम् - नाग० १०।९ ।

मङ्गलान्धः एक यज्ञ का नाम ।

मङ्गलान्धीः एक बोधिसत्त्व का नाम ।

मङ्गलान्धरिः [मं लं] १ किसी बर्षसत्र का प्रधान २ मठ
 का अधीक्षक ।

मङ्गलान्धः [मं लं] विविध आध्यात्मिक श्रेणियों से
 सबद्ध कोई रचना ।

मङ्गलः [मङ्ग + अङ्गु] १ रत्न, बवाहर २ आनुषंग ३ सर्वो-
 त्तम पदार्थ ४ बुम्बक ५. कलाई ६. अयस्कान्त मणि
 ७. स्फटिक । सम० - काङ्गलान्धोः उपवृक्ष बलुओं
 का बिल देक, - तुलाकोटिः बड़ाऊ पायजोब, - अथा
 एक छन्द का नाम, - विष्णु (वि०) रामवदित ।

मन्धवातम् (नपु०) जमा हुआ धुल, बूदी ।

मन्धवीडिका परकार के दो वृक्षोत्त ।

मन्धनकालः शृगार (प्रसाधन) समय - नामञ्जय मन्धन-
 कालहाणे - रघु० १३ ।

मन्धनप्रियः (वि०) अलकारप्रिय, आनुषंगों का शौकीन ।

मन्धनम् [मन्ध + कल्भ] १ मोलाकार बलु, पहिया,
 गंगुठी, परिधि २ सूर्य परिवेष्ट, चन्द्र परिवेष्ट ३. सप्त-
 दाय, सप्तह, सेना ४. सभा ५. वस्तुसाकार मति
 ६. वृत्त पटु । सम० - मन्धन (वि०) वृत्त में बैठ
 हुआ, - कविः कठ कवि, तुम्बक कवि, - नाभिः वृत्त
 का केन्द्र, नाकः मडवा, प्रयाणा, - कणः उच्चार ।

मन्धनकम् [मन्धन + कम्] १ नाम विद्या में अर्जित एक
 विशेष मुद्रा २ जातु की शक्तिमें से युक्त एक वृत्त ।

मन्धनम् डाल की मूठ ।

मन्धनकर्षा बाहुओं की शक्ति का एक पीचा ।

मन्धनकर्षिका दे० 'मन्धनकर्षा' ।

मन्धनकर्षा दे० 'मन्धनकर्षा' ।

मन्धनकः [मं लं] मठों में अन्तर, सम्मतिवों की विजता ।

मन्ति [मन् + तिन्] १ बुद्धि, सत्य, ज्ञान, निर्णयशक्ति
 २ मन, हृदय ३. विचार, विश्वास, सम्मति, दृष्टिकोण
 ४ इरादा प्रयोजन ५. प्रस्ताव, लक्ष्य ६ आदर,
 सम्मान ७ इच्छा ८ उपदेश ९. स्मृति १० अहित,
 प्रार्थना । सम० कर्मन् बौद्धिक कार्य, पतिः
 (स्त्री०) चिन्तन क्षम, शब्दम् विचारों का अध्ययन ।

मन्तीका एक छन्द का नाम ।

मन्तीकरणः, - बन्धु १. किसी भवन की बहारदिवारी
 २. झूठी या झूठे ३. चारपाई, पगल ।

मन्त्यः [मन् + त्यन्] १. मछली २. मत्स्य देश का राजा ।
 सम० - मन्त्यम् एक प्रकार का नाच, - भावीकः
 मछियारा, मछली का व्यापार करने वाला, - सन्ता-
 निकः पकी हुई मछली चटनी के साथ ।

मन्थ (वि०) [मन् + थन्] मन्थन किया के द्वारा प्राण,
 मथकर निकाला जाने वाला ।

मन्थः [मन् + थन्] १. शीघ्र २. अन्धधुंधली में सतर्पण कर
 ३. अविधान ४. पातक्यन ५. अत्यन्त भाषेष्ट ६. हाथी
 के मस्तक से तुम्बे वाला रत्न ७. श्रेय, मन्ती ८. वृष्ट,

शराब, 9 मधु 10 शीर्ष 11 सोम 12 मधु । सम०
— यज्ञः यमद का टूट जाना, — यज्ञा एक छन्द का नाम ।

मधुमत् [मधु + मृत्] 1 मया करना 2 उल्लास, हर्षातिरेक, म-1 अन्नकुण्डली में सातवाँ घर 2 एक प्रकार की शरीरमाप । सम०— श्लेषः नदी का आधिक्य, महातिरेक ।

मधिरामबाण (वि०) शराब पीकर घृण, अथवा नदी में ।

मधुकुम्भः शराब की सुराही, सुरा पात्र ।

मधुवीर्यम् छमीर उठाने के लिए औषधि ।

मधुवैतः मद्यो का देण ।

मधुवायः एक सकर जाति ।

मधु (मधु०) [मधु + उ, नम्य घः] 1 शहर 2 फूलों का रस 3 मधुमक्खियों का छला 2 मोम । सम०— पाश्चात्पूर्व, — पाश्चम्य सुरापात्र, मांसम् शराब और मांस, — शस्त्री 1 एक प्रकार का अमूर 2 मोठा गीदू ।

मधुकायधम् मोम ।

मधुवती [मधु + मनुष्य + वीप] 1 एक नदी का नाम 2 एक बेल का नाम 3 'मधु जला मृदायते' से आरम्भ होने वाली तीन नदियाँ ।

मधुराज्यः [म + म] राज ।

मधुराज्यकः कषाय स्वाद, तीक्ष्ण स्वाद ।

मध्यमस्वित्त्व एक नियम जिसके आधार पर मुख्य वस्तु सोमो पात्रों के बीच में रहे जैसे कि द्वार में मणि ।

मध्यमम् सामान्य सर्पण ।

मध्यम (वि०) [मध्ये प्रथम म] 1 बीच का, केन्द्रीय 2 अन्तर्बर्ती 3 मध्यवर्ती, — मः 1 नितान्त बीच का पुत्र 2 रात्रिपाल 3 मंत्र का विशेषण (मध्यमव्यायाम), मधु (मधु०) 1 जो अतिप्रसन्ननीय न हो 2 ग्रहण का मध्यवर्ती बिन्दु । मम मतिः किसी वस्तु की औसत बात, धर्म, (संगोल० में) मध्यवर्ती अर्थ, म्यामोयः भ्रामकृत एक नाटक ।

मध्यमीय (वि०) | मध्यम - छ | बीच का, केन्द्रीय ।

मध्योपवास (वि०) ऐसा वाद्य जिसके मध्यवर्ती अक्षर पर उदात्त स्वर हो ।

मधु (दिवा० नना० जा०) स्वीकार करना, सहमत होना ।

मधु (मधु०) [मधु + मधु] 1 मन, हृदय, समझ, बुद्धि 2 (दशो० में) मज्ञान व प्रज्ञान का एक अन्तर्बर्ती अंग, बहु उपकरण जिसके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों के विषय आत्मा की प्रभावित करते हैं 3 अन्न करण 4 अभिकरण 5 सकल्प । मम०— श्लाघा (वि०) मन में श्रद्धा दिये जाने के योग्य, — श्लाघि मन का अभाव, — धारणम् अनुग्रह की संराचना करना — धर्षायः मध्य के श्रेयश्रीकरण में अन्तिम के पूर्व की

स्थिति (जैन०), — रागः हृदयानुत्पन्न, प्रेम, — समृद्धिः मन का सन्तोष, — संशयः मन का दमन ।

मधुः [मधु + उ] मानसिक शक्तियों देहोऽश्रोत्राज्जा मनसो भूतमाधा - भाग० ६।४।२५ ।

मधुस्त्विति मनुसंहिता, मनु द्वारा प्रणीत धर्मशास्त्र ।

मधुश्लोकाम् [म + उ] पात्रकी, शक्ति ।

मधुश्लोकः मानव की इच्छा ।

मधोश्लोकी दुर्गा का एक रूप ।

मधु [मधु + मधु] 1 विष्णु का नाम, शिव का नाम 2 कामकुण्डली में पौषर्षी घर 3 वैदिक मुक्त 4 वेद का बहु अर्थ जिसमें संहिता सम्मिलित हैं 5 प्राचीन 6 मृत्त योजना 7 नय, नीति । सम० कर्कश (वि०) दुर्गनीति का समर्थक, क्षात्रः रात के जागण के अवसर पर मन्त्री का सम्बर पाठ, रक्षा विधी नीति बिचार या गृह्य को मृत्त रचना, — संबरणम् किन्ती रहस्य, मन्त्रना या नीति को मृत्त रचना, — स्वान्तम् स्थान करने के स्थान पर 'अधमर्षण' मन्त्रो का सम्बर पाठ करना ।

मधु (मधु० कथा० पर०) मिथित करना, मिला देना ।

मधुः [मधु + मधु] 1 मधुना, विज्ञाना, हिसाना 2 मार डालना, नाश करना 3 मिथित पैय 4 रई, बिम्बले का उपकरण, मन्त्रान्तरम् 5 मृत्त 6 अक्षी के दोहे 7 वेद नैराकार के लिए आयुर्वेद का एक योग । मम० विष्णुः मन्त्रान्तरम् ।

मधु (वि०) [मधु + मधु] 1 दोषा, शक्ति, निष्क्रियता, अल्प 2 शीतल, उदासीन 3 मृद, पुर्ण्ड्रि, मृत् 4 मोचा महर, काकला 5 मृद, मुहुत्तरा 6 छाटा 7 दुर्बल, मः (मधु०) 1 शक्ति 2 मय का विशेषण । मम०— भाषणम् मकाय, शिष्यक, कर्मन् (वि०) शाय करने में शिथिल, — धारण (वि०) धने शने बढ़ा जाने वाला, पुष्प (वि०) दुर्भाग्य-घटना, बर्दकिसल ।

मधुमतिः पानी भरने का बड़ा घड़ा ।

मधुमत् [मधु + मत्] 1 मयन 2 छात्रावास 3 मयन 4 शक्ति 5 देवालय 6 काया, शरीर ।

मधुपरा [मधु + उ] 1 अध्यात्माला, ज्ञानजल, तथेया 2 धारणा, चर्चा । सम० धर्म, — धर्मः अध्यात्माला का प्रत्ययकर्ता, धृषणम् धरणी की एक जाति ।

मधुपुष्पम् (मधु०) मधु नामक सुकत जो शब्देद के हलवें मण्डल के ८१ व ८२वें सुकत हैं ।

मधुपुष्पक (वि०) 1 मधुमय 2 कर्मण ।

मधुपुष्पक (वि०) 1 अधुमय 2 अनामक ।

मधुपुष्पक (वि०) येरे प्रति मृत्त ।

मधुपुष्पक (मधु०) मृत्त, मृत्त ।

मधुपुष्पक (मि० कर्म०) 1 नीर 2 एक प्रकार का कृत् 3 एक

कवि का नाम (सुव्यंशतक का प्रयोग) 1 सम०
मूकम् घोर का नाम, विष्कम् घोर का बड़ा ।
मदुरिका (म्बी०) 1 नय, नाक का छल्ला 2 एक बह-
रीना जंतु ।

मदकतथास्य (वि०) एषे जैसा काला ऐसा काला जैसा कि
मदकतथासि भाषा मदकतथासा मत झूठी मदकतथासि
प्राम० ।

मदकम् [म् + क्तृत्] 1 मरना मर्यु 2 एक प्रकार का
विष 3 अबमान 4 जन्मकुण्डली में आठवाँ घर
5 मरण, मरणालय । सम० ब्रह्मा मर्यु का समय,
शोक (वि०) मरण मरणधर्मा ।

मद्रीषि [म् + षि] 1 प्रकाश की किरण 2 प्रकाशक
3 प्रकाश 4 मनुष्यता 5 आग की विभागी । सम०
--षा (मद्रीष्या) ऋषिर्षयं को सूर्य की किरणों
पीकर जीवित रहने हैं --ग० ३:१:२ ।

मद्य [म् - उ] 1 रेसिपलान निरंजल प्रदंस 2 पहाड़, चट्टान
3 कुम्भक नाम का पीषा 4 मद्यान का मद्यान ।
सम० --प्रथमपक्ष पहाड़ में उन्माद लगाना ।

मद्यु (पु०) [म् - उर्नि] 1 बाम् हुआ मदीर 2 प्राय
बाम् 3 बाम् का देवता 4 देवता 5 मद्यक नाम का
पीषा 6 सोमा 7 मदीर्यः । सम० बृद्धा, बुधा
कावेरी नदी ।

मद्यु (पु०) [म् - उ] 1 बोधो 2 योमर्ष (म्बी०)
सकार, पवित्रता ।

मद्यु (नपु०) [म् - मनिन] 1 मगर वा महत्कपुर्ष
नाम (मदीर का दुर्षक वा मुकुमार भय) 2 वृद्धि,
विकल्पता 3 हृदय 4 मज्ज मद्य 5 मद्यु 6 मद्युना ।
सम० --ब्रह्मा मद्युस्थान पर आपान करता, --ब्रह्म
चरि ।

मद्युना [मद्यु (सोमा) + दा + क] 1 सोमा 2 जन्त
3 किनारा, तट 4 बह्ल 5 नैतिकता की सोमा
प्रचलित नियम, प्रचलन 6 अधिपत्य का सिद्धान्त
7 फरार । सम० ब्रह्मः सोमा के मन्दर रहता,
--ब्रह्मणः सोमाविषयक ब्रह्मणः --ब्रह्मिकणः सोमा
का उल्लेखन ।

मद्यु (वि०) [म् - उ - क्त, टिलोर] 1 यैसा, मन्दा
2 आसपी 3 बुद्ध, क्तः क्तु 1 यैस, मन्दयो,
बुध अपवित्रता 2 विद्या, शीट 3 वातुओं का मोर्षा
4 शरीर के मज 5 कपूर 6 कमाया हुआ बघड़ा
7 भाव, विरा तथा कप नासक दोष । सम० --अपहृ
एक नदी का नाम, --पक्षिण्यु (वि०) बुध वा मन्दयो
के मरत हुआ ।

मद्युनामः (सर्वीष) एक प्रकार की माप ।

मद्युत् (वि०) (म० मद्युत्, उ० मद्युत्) [म् - उर्नि]
1 बड़ा, विशाल, विस्तृत 2 पुष्कल, अत्यन्त 3 शीर्ष,

विस्तृत 4 प्रबल, बलवाली 5 महत्त्वपूर्ण, आयस्क
6 ऊँचा, बम्ब, पूज्य । सम० --आद्युत् महान् सार,
बड़ा भारी हृषियार, --श्रीषि (म्बी०) एक आयुध
जनक बूटो, कुम्भ उतम घराना, इन्धः सैनिक,
जन्मा, --कतः बेल का वृक्ष, --व्यतिक्रमः 1 मारी
अतिक्रमण 2 महान् पुत्र का जनार ।

महा (सर्वपारय और बहुश्रीहि समाप्त के आरंभ में 'महत्'
शब्द का स्वाभाविक --इसके कुछ उदाहरण निम्नांकित
हैं) । सम० अतिसः बहुर महाविजेनेब
निदाबज रज कि० १४५९, आरम्भ महान्
कार्य, विशाल वेसाने पर कार्य का आरंभ करना,
आद्युत् देवालय, मन्दिर, तीर्थ स्थान आद्युत्-
आद्युत्वा बहु उदाहरण जिससे महालययत् आरंभ
होता है, --आद्युत्वात् माध और पीप मास का पुनीत
पिपुत्त, आद्युत्वात् महालय पक्ष में आद्युत् करना,
ऊर्ध्व (पु०) समुद्र, --श्रीषि (वि०) अत्यन्त-बागमो
में युक्त, --अत्यन्त बड़ा के ली शर्ष, --अत्यन्त मन्त्रि को
पूजा में गुरुत्वयत् बन्ध, अत्यन्तः ऊँट, --अत्यन्त बहुर-
मिया हृषि, --अत्यन्त बड़े व्याघ्र की एक जाति --अत्यन्त
महान् सक्त, बरकः एक प्रकार की तपस्या, --अत्यन्त
बुरावत् बडागुरु पुराणों में एक पुराण, अत्यन्त एक
वर्तिल सवाल, किसी एक प्रकार का बमडा, --अत्यन्त
मध्य कोष, मद्युत्वात् 1 मद्यु के विजेता विष को
प्रसन्न करने का मद्यु 2 एक अधिपति का नाम, --अत्यन्त
एक बड़ी सवारी (परधर्मी शीट मिश्रण), एक
मैदक, बन्धः (वि०) अत्यन्त पीडाकर, --कतः
1 महा प्रलय 2 परमपुण्य जिसमें सब महाजूल सोन
हा जाते हैं, --किमुना एक प्रकार का कृत्य, --सिधरथिः
काम्युन मास के इन्धणस का चौदहवाँ दिन, सिधरथुजा
का माङ्गलिक दिवस, अत्यन्त रेत, बामु, --श्रीषि
(पु०) एक प्रकार का मनीत मद्यु, --बुधा शीरी ।

महियुत् (नपु०) प्रमूयता, उपनिषत् ।

महियुत् (पु०) [महत् + इयन्निच्] आठ सिद्धियों में से एक ।
महियुत्विनी दुर्धविनी ।

मही [म् - अच् + शीष्] 1 पुत्री, बरती, मूमि 2 मूसरिण,
आयुध 3 देश, राजधानी 4 लम्बात की बाढी
में गिरने वाली एक नदी 5 (ग्रा० में) किसी आङ्गति
की आचाररेखा 6 विशाल देगा 7 माप । सम०
श्रीषा शिषि, --पुष्कल, बरतीलक, मूमि की सतह,
--करीलि बडा बनता है, प्रोसत करता है ।

मही [म् + त, शीष्] 1 मोसल, 2 मङ्गली का
मास 3 फल का मासल भाग, --तः 1. शीषा 2 संकर
जाति, जो मांस बेचती है । सम० --अत्यन्त मांस का
शीपीन, --श्रीषः रसीली, क्तुः मनी शीष, --श्री-
बन्धुत्वात् मांस-मद्युत् का लक्षण ।

बासीयते (ना० वा० पर०) मास के लिए साक्षात्कृत रहना ।
 बासिकवायुः एक प्रकार का क्षत्रिय वायु ।
 बास्यः [बास्य + अन्] 1 मगध देश का राजा 2 साहित्य
 क्षेत्र में काम्यशैली का एक प्रकार ।
 बास्यजुनीया हस्तियाज्ञान पर एक कृति ।
 बास्युवाहिः एक प्रकार का सार्व ।
 बास्यु (स्त्री०) [बास्यु + वृत्, मलोप] 1. माता, जननी
 2 स्त्रियों के प्रति आदर या सम्मान सूचक संबोधन
 3 माय 4 लक्ष्मी या दुर्गा का विशेषण 5 बरटी
 माता । सम०—शेषः माता का शेष, अक्षिः माता
 के प्रति आदर सम्मान, -शास्त्रितः मूर्खव्यक्ति, सोषा
 शारदा, मोक्षु ।
 बास्युषा शीघ्रा की ८ नाडिका, चिरार्ण ।
 बास्युतः (अ०) मातृपरक वज्र की शीर ।
 बास्य (वि०) [बा + अन्] आरम्भिक विषय ।
 बासा [बास + टाप्] 1 परिमाण 2 शय 3 अन् 4 अक्ष
 5 वृक्ष, विचार 6 वन 7 तपस् 8 भौतिक सत्ता
 9. नागरी अक्षरों में स्वरो का चिह्न 10 काल की
 बाकी 11 आभूषण 12 इन्द्रियों का कार्य 13. विकार ।
 सम०—अक्षयुक्तम् समयव एक इष की माप ।

बास्यस्वभावः एक सिद्धान्त जिसमें बड़ा छोटे को दबाता है,
 हर बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है ।
 बास्यवर्णितानुम् आयुर्वेद की एक कृति ।
 बास्यवी पशुओं की बहुतायत ।
 बास्य [मन् + घञ्] 1 आदर, सम्मान 2 धनद, अग्नि-
 मान, बहुकार 3 अन्धमिमान, आत्मवीर्य, मन्
 1 माप 2 तिष्ठित मापवृद्ध 3 आयाग । सम०
 —अन्ध (वि०) धनद के कारण अन्ध, —अर्ह (वि०)
 सम्मान के योग्य, आदर का अधिकारी, —अन्धबन्धू
 प्रतिष्ठा भङ्ग होता, शोच का नाश, —विषय कोट
 बोटो से तोलकर वा मिथ्या मापकर गहन करना,
 ठगना—की० ज० २।८।२६, आर अग्निमान की
 बड़ी मापा ।
 बास्यपुत्रा मानसिक पुत्रा ।
 बास्यन् [मनीरयम्—अन् मुह् च] 1 मानवता, मनुष्यत्व
 2 मनुष्य की परिपक्वावस्था, पूर्ण पुंसत्व । सम०
 —अन्ध मीच पुत्रव, ओछा मनुष्य ।
 बास्यव्याघ्र [व० त०] रोग का बहुनाम ।
 बासा 1. दुर्गा का नाम 2 दक्षता, कला ।

य

बास्यु [य समय करोति कृ + विवृत् तुक् च] जिवर ।
 सम०—वैरिन् (पु०) शीघ्र का एक शीघ्रा, रक्त-
 रोहता ।
 बास्य [यन् + घञ्] 1 देवयोगि विशेष, ओ कुवेर के
 शेषक है 2 मृतप्रेत 3 इन्द्र का मङ्गल 4 कुवेर
 5 पूजा 6 कुता । सम०—युः युजस, शीघ्रान ।
 बास्य [यन् + घञ्] 1. यज्ञ, यज्ञीय लक्ष्यकार 2 पूजा की
 प्रक्रिया 3 अग्नि 4 विष्णु । सम०—आयुष्यम् यज्ञ
 में प्रयुक्त किया जाने वाला उपकरण, —युष्ट कृष्ण,
 —कली यज्ञमान की पत्नी, —सिन्धु वज्र का अन्ध-
 शिष्ट अक्ष-यज्ञशिष्टाग्नि तन्वी मूष्यन्ते सर्वकिम्बर्ध
 —मग० ३।१३, - संस्तर वज्र की देवी की स्थापना
 तथा इष्टकायन ।
 बास्यजोष्यम् 1. सामयुक्त 2. वचन के दोनों पंक्तों का
 प्रतीकात्मक नाम ।
 बास्यन् (वि०) क्रियाशून्य, परिजनी, प्रयत्न करने वाला ।
 बास्यिद (वि०) [व० त०] रूप तन्मै बासा, जिसने
 अपनी शक्ति की निराश्रित रहना है ।
 बास्यैवुष (वि०) [व० त०] जिसने संयुक्त स्थाप दिया है ।
 बास्यैवप्रान्थम् विश्व प्रकार का उपकरण ।
 बास्यैवम् (अ०) बर्ही किटी का नाम बाह्ये, इच्छानुसार ।

बास्यैवाम्बाशय योग की एक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य
 अपने आपको बर्ही चाहे ले जा सकता है ।
 बास्यैवम् (वि०) बर्ही मन्थ्या हो जाय वा मुर्खित हो
 जाय बर्ही ठहर जाने वाला व्यक्ति ।
 बासा (अ०) [यद् प्रकारे बाष्] जिस डग, जिस रीति से,
 जैसे, जिस प्रकार । सम०—अन्धस्त्वम् (अ०) जैसा
 कि बतलाया गया है, वा निर्दिष्ट किया गया है—मया
 यथानुक्तमशदि ते हरे केचित्तम् भाव० ३।१९।
 ३२,—आशयम् (अ०) आचार के अनुसार—
 तां० का० ४१, उद्गत (वि०) आनन्दम्, मूर्ख,
 —उद्गतमन् (अ०) आरोह अनुगत के अनुसार,
 —उपचारम् (अ०) शीघ्रित्व के अनुकूल, शिष्टाचार-
 सापेक्ष, उपविष्ट (वि०) जैसा निर्दिष्ट किया गया
 हो, वा जैसा परामर्श दिया गया हो,—कारणम् (अ०)
 जिस किसी रीति से,—वा० ३।४।२८, -कर्मणित
 (अ०) समुचित रीति से, शिष्टम् (अ०) जितनी
 जल्दी हो सके,—चित्तम् (अ०) अपनी इच्छा के
 अनुसार, सम्भन् (अ०) सम्बन्ध, बास्यव में,
 —अन्धस्त्वम् (अ०) जैसा कि विधान है, जैसा कि मूख
 पाठ में है,—अन्धस्त्व (वि०) जैसा कि बरटी में आना
 गया है,—अन्धस्त्व (अ०) विशेष वस्तु के मूख के

अनुसार, प्रत्यक्षम् (अ०) बोधता के अनुसार
 --प्रतिष्ठात् (अ०) जैसा अनुकूल हो, जैसा कि
 उपयुक्त हो, --प्रस्तावम् (अ०) सबसे पहले उपयुक्त
 अनुसार पर, प्रस्तुतम् (अ०) 1 अन्त में 2 प्रस्तुत
 विषय के अनुषङ्ग, --भुक्त्वा (अ०) बरीयता के
 अनुकूल, --भुष्यम् (अ०) भुष्य के अनुसार, --रत्नम्
 (अ०) रत्न या स्वार्थ के अनुकूल, सम्बन्ध (वि०)
 जैसा कि बन्धुत प्राप्त हो चुका है, विनिश्चयम्
 (अ०) निश्चित प्राथमिकता के अनुसार, --सम्बन्धि
 (अ०) ज्ञान की गहराई के अनुकूल, --सम्बन्धि
 सम्बन्ध के अर्थों के अनुसार - यथासम्बन्धि प्रवृत्ति, यै०
 सं० १११:२६ पर भाष्य, --सम्बन्धि (अ०) परि-
 स्थिति के अनुकूल, --सम्बन्धि चतु के अनुकूल,
 सारम्भ गुण के अनुसार, स्तुत्यम् (अ०) जैसा
 कि अतिरिक्त रीति से कहा गया है, स्व (वि०)
 अपने अपने भाषास या स्वान के अनुसार ।

यथार्थि (अ०) जिस समय से ।

यथार्थक (वि०) जिस सत्ता परक ।

यद्वा (वि०) इच्छानुसार बोलने वाला ।

यथैव (वि०) [यद् + छ] जिसका, जिससे सबद्ध ।

यन्मन् [यन् + मन्] 1 जो रोक्ता, या बोधता है
 2 महारा, पुनी 3 बेदी, हृषिकेशी 4 तन्मन् चिन्ता का
 उपकरण (क्षेत्र) 5 महीन, मयक 6 कुम्भी, ताका,
 धारी 7 प्रसिद्ध, शक्ति 8 तथैव 9 छिद्र करने
 की महीन । सम० --आच्छ (वि०) भूमने वाली
 महीन पर चढ़ा हुआ, भ्राम्यन् सन्मूर्तानि मन्ना-
 स्त्वानि भाषया-भव०, --कोविद यन्कार, महीन
 पर कार्य करने वाला -ग० २।८०:२, --सुत्
 यन्तवार, जहाँ किसी को यन्तवा री जाती है,
 --भारतसुत् यह स्थान जहाँ कीबारा तथा हुआ हो,
 --सुत् गुडिया या पुस्तिका की रचना पर हिकाने
 वाली डोरी ।

यन्मन् [यन् + मन्] 1 हाथ से चलाई जाने वाली
 महीन, सौराष्ट्र 2 मामान का बहान निधीयमाने
 मर्यादित यन्मन्के-कि० १२:१ ।

यन्मिका [यन् + मन्] छोटी मानी, पत्नी की छोटी
 बहन ।

यन्मि (वि०) [यन् + मन्] 1 जहायका हुआ 2 नियमों
 से निर्वाचित या प्रतिबद्ध 3 तथापि को बहाने के
 लिये निकाला हुआ 4 बाहुल्य अथवा यथार्थज्ञा-
 नुसन्धी यन्मितासवा - भा० १०:१९:२३ ।

यन् (वि०) [यन् + मन्] 1. यन्, जोडुवा 2. दोहरा,
 --अ 1. प्रतिबन्ध, नियन्त्रण, दमन 2. आत्मसंयम
 3. कोई नैतिक कर्तव्य (वि०) नियम) 4. योच के
 भाट बज्जों में से एक 5. मूल का देवता 6. शक्ति

7. कौवा 8. 'यो' की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति
 9. ज्ञान 10. बालक, रचना, --सन् 1. जोड़ा
 2. समुक्त व्यवस्था, --की यमुना नदी, --नी (पु०-
 द्वि० व०) 1 युवा, जोडुवा --वृत्ति तयमी यमी
 --कि० १:१६ 2 अभिवनीकुमार । सम० अनुवा
 यमुना नदी, स्व स्वोत्थि का एक अचुन योच,
 --हुन सत्यपणं यन्, षट्, बहिष्कार कर्णों की
 एक पट्टी जिस पर वन, यम के अनुसार तथा नार-
 कीय यतनामों का चित्रण अंकित रहता है -याच-
 केतुं गृह प्रविश्य यमपट् दर्शयन् गीतानि नावाणि
 --मुद्रा० १:१८, --सन्म 1. यम की प्रशस्त करने के
 लिए इत रचना 2. निष्कल यन् विधान--सन्०
 १:३०:७, --सन्म विद्य, यमस्यनामयन्ममाचरत्यथे-
 नमाचचार स. --रा० व० २:१२, --सन्म यम का
 वासंस्थान ।

यन्मकात्म्यम् यमक-प्रधान कविता, यह काव्य जिसमें
 यमक अलंकार की बहुतायत हो ।

यन्मकार्थी दो अर्थों के कृत् (जिनको छन्द ने बंधन में
 उल्लास दिया था) ।

यन्मिका एक प्रकार की मूर्ची छाँटी ।

यन्मिकः एक प्रकार का यन्म जिस पर आघात करने
 समय की सुचना दी जाती है ।

यन् [यन् + मन्] 1 यी 2 महीन का पहला पक्ष 3 पति,
 बाल 4 म्योत्थि का एक योग 5 बह, बेग 6. पुत्र
 उन्मतोदर धीसा 7. एक टापू का नाम । सम० --ईश
 वर्तमान जावा टापू, --वाच एक प्रकार का साध
 पीसा ।

यन्मकार्थे स्वोत्थि के 'ताविक' नाम की छुट्टि का
 विख्यात प्रथेता ।

यन्मिका --यन्मो पर्व ।

यन्म (नपु०) [यन् म् लुटी यन्मू पातो म्पू च]
 1 कीर्ति स्थापि, प्रतिष्ठ 2 पुष्प भवित 3. प्रसार
 4 वन 5 माहार 6 जल 7 विरल मुर्ची का एक
 सङ्घ 8 परोक्ष कीर्ति --भा० उ० १:१८:१३ । सम०
 -- वा कीर्ति प्रदान करने वाला ।

यन्मि: (स्त्री०) [यन् + मित् + मि० + यत्प्रसारयन्]
 1 सफ़ेदी 2 यत् 3 उत्सव 4. सहाय, टेक 5. व्यव-
 दंड 6. डोरी, बाधा 7. हार, कड़ी । सम० --वाक्या-
 दंडे की मार, --उत्सवम् ककड़ी की सहायता से
 उठना, --यन्मू उत्सव की भाषने के लिए म्योत्थि
 का एक साधन ।

यन्मज्ज (अ०) 1. चित्तों, सब से, जिस बात से 2. ताविक,
 चित्तों से ।

या (वदा० पर०) विद्या करता ।

यन् [यन् + यन्, कुलम्] 1. यन्, माहुति 2. उपस्थान

उपहार, प्रदान । सम०—**कष्यक** 1 बुरा वज्रमान
2 जो यज्ञ की विगाइता है,—संभवानम् यज्ञीय
परायं की लेने वाला—पा० ५।२।२४ पर काशिका,
— कृष्णम् यज्ञीय यज्ञीयधीत, जनेऊ ।

वाष्मता [वाष्+तन्] 1 मौनता । 2 साधना 3 प्राथंता
सम०—**शीषिका**,—**शीषिकम्** शिक्षावृत्ति पर जीने
वाला,— बह्व् प्राथंता की ठुकरा देना ।

वायुक वज्रमान, यज्ञ करने वाला ।
वायसेम { शिक्षणरी का पतृक नाम ।
वायसेमि { महा० ७।१४।४४
वाय्वा [यञ्+विष्+यत्+टाप्] बाहुति देते समय
प्रयुक्त किया जाने वाला यज्ञीय नियम ।

वासिक [वास+ठक्] यात्री ।
वायुनारी राजसी, विगाधिनी बन्धन विजयती या तु
वायुनारी—रा० ब० ७।१० ।

वाय नरक में रहने वाला ।
वायन्वरा (वि०) जीवन का मद्भाग देने वाला (साधन)
वायान्वाजम् यात्रा पर जाते समय दिया गया उपहार ।
वायन्वयम् [वायान्वा +व्यञ्] वास्तविक स्वभाव या
प्रयोजन ।

वायन [वा+न्युट्] 1 जलमान, पीठ 2 जन्म-मरण के
बन्ध से मुक्ति का उपाय तु० महापात, हीनमान
3 वायवी रथ, हवाई गाड़ी । सम० **वायन्तरयम्**
गाड़ी की गरी, बंटने का आसन—**गृच्छ०**, **स्वाभिन**
गाड़ी का मानिक ।

वाय (वि०) (स्त्री०—**वी**) [यम+अच्] यम से
सबन्ध रखने वाला—**वाभिपरिचर** वातना—**मुकुन्द०**
१०, **व** (पु०) देवी का मनुष्य—**यामे** परिव्रतो
देवै—**भाग०** ८।१।१८। यम० **वाभिवि** मुर्गा,—**व्यास**
मयय पालक, अष्ट मन्त्र ।

वाभिकाशरः 1. राक्षस 2 उल्म ।
वाभिमिषरः

वाभिसम् मन्त्रग्रन्थ ।
वाभि—**वी**, [वा+वि, डीप् वा] 1 दक्षिणी दिशा
2. मन्त्री नामक नक्षत्र ।

वाचक—**कम्** [वच+अच्, स्वार्ये क्] एक व्रत जिस में
जो श्राकर रहना पड़ता है ।

वाचकम्बकम् (अ०) पढ़ने के समय, शिक्षार्थी अवस्था में ;
वाचकसंपातम् (अ०) जहाँ तक समय हो ।

वाचसिच (वि०) महाँ तक, जिस विन्दु तक, जिस अन्त तक ।
वाचसीविद्या पाठ की विद्या ।

वाचसिक [वचस+ठक्] बहिवारा, वास काटने वाला ।
वृत्त (वि०) [वृत्+कत्] 1. षड्का हुआ, निसा हुआ
बोधा हुआ 2. युग्म में जोड़ा हुआ 3. व्यवस्थित 4. सव-
नेत 5. सचन, त्ररा हुआ 6. स्थिर किया हुआ,

बधारा हुआ 7 सबद्ध 8 सिद्ध, अनुमित 9 सक्ति,
परिचयी 10. (उप०) सयुक्त, निसा हुआ । सम०
—**वेष्ट** (वि०) उचित कार्य में लगन,—**वाभिवि**
(वि०) उपयुक्त बात कहने का । ।

वृक्षकम् [वृक्ष+कम्] बोधा ।
वृक्षम् [वृक्ष+कम्, कृष्, न गुण] 1. षड्का 2 जोड़ा
3 चन्द्रमा की सापेक्ष स्थिति । सम० **वृष्** (स्त्री०)
वृष् की बीज, माघम् जुए की लम्बाई के बराबर
माघ अर्थात् चार हाथ की लम्बाई, बरश्मम् जुए का
कीता या तस्या ।

वृक्षन्वर,—**रम्** गाड़ी की बहु लक्ष्मी जिसमें जुड़ा गया
रहता है ।

वृक्षन्वरा एक देवी योगिनी योगदा याया यागानन्दा
वृक्षन्वरा—**सक्तिता** ।

वृषी (स्त्री०) बहुतायत योग्यवृद्धा सुरमन्दध्या युग्मे
रौमादिक कि **वृक्षवाम्यम्**—**महाभाष्य** ५।१७।३
पर टीका ।

वृष (वि०) [वृष्+मक्] सम, दो से भाग होने वाली
सख्या, **वृष** 1 जोड़ा 2 सप्त, जकगन 3 सप्तम
4 घुमल 5 सिद्धन राशि । सम०—**वाभिवि** (वि०)
जाड़े के रूप में बुझने वाला—**विष्णुका** एक छत्र का
नाम, **वृक्षवाम्य** बोधा में दो मऊदो क विन्दु ।

वृष, { (स्त्री० पर०) छोड़ देना, त्याग देना ।
वृष }

वृषिन् (पु०) [वृष्+इति] एक सकरा जनि ।
वृष, **वृष** (स्त्री० पर०) 1 मृग करना घटक जाना
2 विदा होना, बने जाना ।

वृषम् [वृष्+कम्] 1 लम्बाई, सवाम इष्टन मयधं, मन्त्र
2. यज्ञी का विरोध या लक्ष्य । सम० **अवहारिकम्**
वृष में योगने पर श्राप्त सामर्थ्य, मर्दान, **वाय**—**वृष्**
रथमेरी, वृष का गीत, **सन्धम्** वृष विज्ञान, मैत्रिक
शिक्षा, **व्याज** वृष का माघम्, **वीक्षक** (वि०)
वृष भ्रमकाने वाला,—**व्यातिकम्** वृष कला के निबन्धों
का उल्मचन ।

वृषकम् [वृष+कम्] सवाम, रथ, मन्त्र, लम्बाई ।
वृषिक (वि०) [वृष्+ठक्] लड़ाक, योद्धा, लड़ने वाला ।

वृषि (पु०) [वृष्+त्] योद्धा, विप्राही ।
वृषिन्वर शीता या श्रेष्ठिय की जाति का जन्म, वृष व्याघ्र,
विन्दु ।

वृष (वि०) [वृ+कनिन्] 1 बवाल 2. हृष्ट-मुष्ट
3 उत्तर,वेष्ट(पु० वृष)4 साठ वर्ष का हाथी 5 एक
संस्कार । सम० **वाभिव** बहु युष्ण जिसकी स्त्री
बधाम है, **वृषवानिर्बन्धुव्याधि**, **वर्दरि**० ५।११ ।

वृषि (वि०) सवसे से पूर्व शिक्षके श्राव एक मय
है,—पा० २।१।६७ पर **वाय**,—**वृष्** विष्णु तस्या ।

युक्त [युञ् + क्त, नलोप] अवान, तवण ।
युक्तक (वि०) [युञ् + क्त, न लोप,] तवण,
अवान ।

युक्ति [युञ् + ति] अवान लोकी, तवणो । सम०—दृष्ट्या
पीले रंग की चमेली,—कृष्ण तटनी सिन्धुई ।

युक्तबन्ध (अ०) आपके लिए, आपकी तातिर ।
युक्तदास्य (वि०) या कुछ आपके अर्थात् है, आपके
नियन्त्रण में है ।

युक्तद्वारण्यम् (ध्या०) मध्यम पुत्रव ।
युक्तद्विध (वि०) आप जैसा, आपके तरह का ।

युक्तक (जि०) आपका, आपके सबब रहने वाला ।
युक्तलिङ्गम् १ अ और उसका अर्था (स्त्रीक) २ स्त्रीक ।
युक्तम् [यु + क्त, पूषा० दीर्घ] रवह, लहूहा, समष्ट,
समदाय । सम०—कारिन् (वि०) जो सांख्यिक रूप
से (हाथिया की भाँति) धरता है, किसी रत्न में जो
लटके में,—चरिच्छट (वि०) अपने समूह में अटका
हुआ, कृष्ण रवह, लहूहा ।

युक्त (अ०) [यथ + क्त] रवह में, लटके में, पण्डित में ।

युक् [यु + क्त, पूषा० दीर्घ] १ यथोप सन्धा (जो प्राय
बोध या धैर्य की लक्षणा की जाती है) जिसमें उन्नीस
पक्ष बोध दिया जाता है २ विज्ञानसम्पन्न । सम०
कर्मव्यास यह नियम जिसके अनुसार निर्दिष्ट से
सबसे किसी विवरण का उल्लेख या उपलक्ष्य केवल
उसी विवरण तक लागू रहना जिसमें कि तदतिरि-
क्तत्व ग्राह्य का उपयोग न हो सके—सं० अ० ५।१।
२७ पर दत्त भा० ।

युक् [युञ् + क्त, कृ + क्त] १ आश्रयण - योगमात्रा-
पद्यायाम् शिबक्य विषय प्रति शिब० १३।७,
२ सतत समन्वि लक्षणान् मिलाया—अथि धानन्-
योगेन अस्तिरव्यभिचारिणी—सम० १३।१०
३ समता साम्य—समर्थ वाग उच्यते—सम० २।४०
४ दुष्क के 'ओ' में कृत्कारा—दुष्कययोगविधीय
यामर्शजित्त्वं भव० ५ मिलाया, बाँटना ६ मपके
७ उपयोग ८ परिहाम ९ जुड़ा । सम०—अव्या-
सिन् (वि०) जो योग का अभ्यास करता है,
- अव्यास केवल आर्कामिक सपके के कारण अत्युन्नत
नाम—एवा योगाव्या योगमात्राव्या न युक्तवर्तमान-
प्रतिपत्सन्नव्यायेका मी० सू० १।३।२१ पर
४० भा०—आर्णव प्रथम में परिचरित,—श्लो०
१. समुद्रि, मुरक्षा २ कल्याण, प्रलाई ३ धार्मिक
कार्यों के निमित्त कथित व्यर्णित—सम० १।२।१९,
—अव्यः योग की शक्ति से मुक्त छोटी जातु की
छोटी,—धार्मिक,—धार्मिक, एक प्रकार की प्रकृति,
—वस्तु स्वकरोमर्थ की स्थिति,—धाम्य मुर्छा जाने
वाले पदार्थों से युक्तकारण, पीनक,—कीज्न् योग

का अभ्यास करते समय बैठने की विशेष मुद्रा,
—पुष्कः युत्तर,—यथा योगसुखंरूप्यान् रात्राधि-
तिष्ठति—मी० अ० १।२।१, अष्ट (वि०) जो
योग के मार्ग से दलित हो गया है—सुधीना श्रीमता
मेहे योगप्रवृत्तिप्रमितायो—सम०,—वात्रा परमेस्वर
से सामुप्य प्राप्त करने का मार्ग,—कृष्ण (वि०)
योगमार्ग में सकल—योगयुक्तो धनार्जुन—सम०
८।२७,—वाचनम् युत्त उपाय, कृत्तमित, कृत्तमोजना,
मी० अ०—बाह्यक (वि०) विषयकारी (रसा-
यन०),—विद्या योगशास्त्र,—संनिधिः योगाभ्यास
में पूर्णसाफल्य प्राप्त करना, सिद्धिन्वाय एक न्याय
जिसके अनुसार नाना प्रकार के फलों को देने वाली
एक विशिष्ट प्रक्रिया एक समय में केवल एक ही
फल दे सकती है दूसरा फल प्राप्त करने के लिए
उस प्रक्रिया का पुनः काल से दूसरा प्रयोग करना
पड़ेगा मी० सू० ४।३।२७-२८ पर भा० अ० ।

योगिक (वि०) [योग + ठक्] अभ्यास के लिए अयुक्त
(जैसा कि 'योगिक कार्य' तीरतानी अभ्यास प्राप्त
करने के लिए वस्तु) ।

योग्य (वि०) [युञ् + ष्यत्, योग + यत् वा] १. उपयुक्त,
समुचित २ पात्र ३ उपयोगी, कामकलात्—म्य
(पू०) १ पुष्प नक्षत्र २ भारवाही पशु,—व्यस
१ सवारी, माड़ी २ कन्दन ३ रोटी ४ दूध ।

योग्या [योग्य + टाप्] १ एक देवी का नाम - योगिनी
योग्या योग्या—कलिता २ पूज्यी ३ सुर्व की
पत्नी का नाम ।

योग्यन् [युञ् + ष्यत्] १ जोडना, मिलाया २ तत्परता
व्यवस्था ३ परमाथा ४ अयुक्ती ५. बार बोस की
दूती ।

योग्यित (वि०) [युञ् + णिच् + षत्] १. नृए में मोत हुआ
२ अयुक्त, काम में किया गया ३ मिला, समुक्त
४ सम्पन्न ।

योग्ये [योग्या + इच्] १ जोडा, एक वस्तु का नाम ।

योग (वि०) [योगि + ण्यच्] वस या कुल से तदन्व
रखने वाला ।

योगि [यु + ति] १. श्च्येव की वह भाषारामुत् त्रचा
जित पर 'आम' का निर्माण हुआ २ ताका ३ मूल
कारण ४. ब्रह्म का बोध—योगिर्निष्कारण वैशि-
ष्टिको सर्वभूतमिवाधिपोस्तमित्यर्थ—मी० सू०
२।२५ पर हा० भा० ५ इच्छा—योगिपताम-
कुत्तराम्—सम० १२।२५-२६ । सम०—युक्त-
पर्यायक वा मूलस्थान से अयुक्त पुत्र,—सौतः
१ योगिनकणी विकार २ लोकी अनलोपिय में
कोई दोष,—युक्त (वि०) समय मरण के पक्ष से
कृत्कारा पाये हुए,—युक्त वस्तुधियों द्वारा ऐसी

विशिष्ट आकृति बनाता जो स्त्री की बोलि के मिलती
बुझती हो,— संघर्षम्,— संघर्षि बोलि वा मय को
लिकोइना,— संघर्ष्य युवार्थम् ।

बोधव्यञ्जः } विषया स्त्री के विचार करने वाला, मृतक
बोधव्यञ्जः } व्यति की पत्नी को ब्रह्म करने वाला ।
बोधव्यञ्ज दे० बोधव्यञ्जः ।

बोधव्यञ्ज [बुधव्य + य] मित्र मित्र स्वामी से एक ही
साथ एक वस्तु को देखना—आशियवद्योषव्यञ्ज
बी० नु० ११।५ ।

बीम (वि०) [बीमि + अन्] (समास में) १. मूक स्थान,
उद्गमस्थान—यथानियोगाश्च बहन्ति शोका—महा०
११।१०२।२५ २ यथानियोगस्थारः । अयं—अनुवचनः

एतत्सम्बन्ध,—योगानुबन्धं च समीप्य कार्य—बी०
न० २।१०,—सम्बन्धः दे० योगानुबन्ध ।

बीमिकः [बीमि + क्त] मय्यन वायु, सुहायनी हवा ।
बीमिकम् [बीमि + अन्] ज्वानी, बयस्कता । सम०—भाष्य
(वि०) मिशोर, बयस्क,—उद्धरः १ ज्वानी के आयेक
का भावक उल्लाह २ यौन वेग, काम भासना ३ ज्वानी
की कली का झिलना ४ बयस्कता प्राप्त करना—कण्ठक,
—कण्ठकम्,—विक्रमा बीमनारम्भ का संकेत करने
वाली चेहरे पर छोटी-छोटी क्रिसियां, प्राज्ञः ज्वानी
के किनारे पर,—श्रीः ज्वानी का सीन्दर ।

बीमनीय (वि०) युक्त, उपयुक्त ।
आयुक्ती आयुक्ती का भाव, यथायुक्त ।

२

रक्ता (स्त्री०) कोइ का एक नेद ।
रक्त (वि०) [रक्त् + क्त] १ रङ्गा हुआ, रसीन २ लाल
३ शिव, प्यारा ४ सुन्दर, सुहायना ५ अनुस्वार युक्त
(स्वर),—रक्तः (पु०) १ लाल रज २ मलम ब्रह्
३ शिव,—रक्तम् (पु०) १ शरिर, कुल २ तर्षा
३ आकरान ४ तिस्र ५ बाँधों का एक रोम ६ लाल
पत्तन,—रक्तः (स्त्री०) १ लाल २ बुझा ३ भाव
की बात लपटों में से एक । अयं—अनुवच्यञ्ज
कमलिनी,—कण्ठ (वि०) लाल पत्ती वाला,—कण्ठ
लाल कमल,—श्रीकः १. एक राजस विषको बुर्जा देवी
ने मारा था २. मरार का वृक्ष,—विष्णुः शरिर का
हृदय,—श्रीकः शरिर बुझने वाला,—साम्भः शरीर के
अन्तर मत फट जाने से रक्त बहना ।

रक्त (म्भा० पर०) लाकमान होता, भावकम् होता ।
रक्त [रक्त् + म + टाप्] १ बधाना, रक्ता २ लावधानी,
बुरका ३ शीशोवादी ४ रक्षा लाठीक ५ अस्त्र
६, रक्षाकल्पन, पशुकी ७ लाल । सम०—अतिशय
कमलाई पर लाठीक की शक्ति शीशो यन्त्रे वाली पशुकी,
रक्षाकल्पन,—श्रीकः रक्षा करने की अक्षय्य
शक्तिवि ।

रक्तिकम् [रक्त् + क्त, स्वार्थे क्त्] सुहावा ।
रक्तः पूर्ववच का एक ज्वानी राका, शिविण का पुत्र और
अव का पिता । सम०—अक्षः रक्तवर्ष में सर्वोत्तम,
रक्त,—कारः 'रक्तवर्ष' नामक काष्ण का ज्योति
शक्तिवात ।

रक्तम् (म्भा० पर०) वाला ।
रक्तः [रक्त् + क्तम्] १ रं, वर्ष २ संघ, शीशवात,
भावोव का शार्वरिणक स्थान ३. बीजवर्ष ६ रक्तवर्ष

५ नाचना, गाना, अभिनय करना । सम०—कारः
सुहावा,—साम्भः एक प्रकार का तज्जोत का माप,—
सुहावा,—मात्र, रक्त, कल्पम्,—शक्ति विष्णु के
विशेषण (महास राज्य के श्रीरङ्गम् स्थान पर स्थित
मन्दिर), अक्षि रङ्गमञ्च पर पद्याना, वेदी पर
उपस्थित होता, कण्ठकम् वेदी पर 'आवाहन' उत्तर
बनाता ।

रक्तम् [रक्त् + क्तम्] १ बीजना, उत्पन्न २ बाप में पद
बनाता ।

रक्तिक (वि०) [रक्त् + क्त] भाविकृत, मिलित । सम०
- पूर्व (वि०) जो पहले ही बन चुका है ।

रक्तिकी [रक्त् + क्त + क्ती] स्त्री विष्णुकार ।

रक्तम् (पु०) [रक्त् + अन्] नवीय । १ वृक्ष, गर्द
२ वृक्ष की वृक्ष, पराम ३ कन्वरी ४ आयेक, नीलक
अन्वकार ५ नीलों बुधों में सुहावा ६. भाप ७ बारन
वा वर्षा का वाणी ८ वायु -श्रावणिकं च सुर्वोत्त
तेन सञ्चाम्भते रज—रा० ५।८।१३५ । सम०—वृक्ष
(वि०) रक्तोत्पन्न के वृक्ष, शिव वृक्ष का वारन
-विष्णु (वि०) वृक्ष के पूरे रङ्ग का हुआ—युधि
सुरमरयो विष्णुसम्बन्धः—भाप० १।१।१४ ।

रक्त, क्व [रक्त् + क्त] १ वृद्ध, कदाई २ वृद्धवर्ष ।
सम०—अतिथि वृद्ध बाहर्ण वाला अतिथि—समाप्त
प्राप्तो एवातिथि रक्तम् २।११,—कार्यं वृद्धवर्ष
में लड़ने की रीति,—एवातिथि (वि०) 'रक्त-रक्त' सत्क
करता हुआ,—रक्तिक (वि०) कदाई का रक्तवर्ष
-वृद्ध, शीकः वृद्ध कला में शीवीय ।

रक्तवर्षिणम् (वि०) श्री वैशालीक वर्ष की भाव्य के परम्प
विष्णु ही करता है ।

एतोल्लव कामकेलि श्रुतारा परक शीवा ।

रसवेधैरस्य सम्भोग या मंथन की प्रक्रिया जितमें स्त्री पुरुष की मूर्ति आचरण करती है ।

रसिः [रम्+सिन्] 1 हृषं, बाह्यार 2 आसक्ति, मनु-पान 3 वीजसुख 4. सम्भोग, मंथन 5 कामदेव को पत्नी 6 चन्द्रमा की छठी कला । सम०-शेषः मंथन करने से उत्पन्न यकानट, शकः,—शक्यः मंथन करने की विशिष्ट रीति,—रहस्यम् कोककोक पंडित द्वारा प्रचीत 'कामशास्त्र',—सुन्दरः एक प्रकार का रसिधम ।

रसुः (स्त्री०) 1 दिव्यनदी, स्वर्गांग 2 सत्य से युक्त शब्द या भाषण रसुष्पात् मायभाषक कीया० ।

रसम् [रम्+न, शान्तादेश] 1. रस, जवाहर, मूल्यवान् पत्थर 2 कोई भी अमूल्य पदार्थ 3 कोई भी उत्तम या श्रेष्ठ वस्तु 4 जल 5 चुम्बक । सम०—अङ्गुः मृगा,—अच्छल. आश्चानो में बगित सका में स्थित एक पहाड़,—कुम्भः रत्नी से भरा हुआ घडा, कूटः एक पहाड़ का नाम, सर्प. 1 कुबेर 2 समुद्र,—गर्भगणपति गणपति की एक विशेष मूर्ति,—पञ्चमा रत्नी की कान्ति रत्नपञ्चावाम्बिकामिव प्रकथ्येतत् पुस्तान्—येष०,—धेनु रत्नों के डेर में (दान के लिए) दी जाने वाली प्रतीकार्थक गाय, पञ्चकम् शंख रत्न—मीना, चाँदी, मोती, हीरा, और मृगा,— बरम् सोना ।

रसः [रम्+रुपन्] 1. गाड़ी, बहली 2 वंर 3 अम, भाव, 4 शरीर 5 हृषं, बाह्यार । सम०-आरोहः जो रस पर बैठ कर बड़ा करता है, उदुपः,—उदुपम् रस का डाँचा,—शोक रस के चलने का 'परपर' शब्द,—आरकः गुड़ द्वारा शंखों में उत्पन्न पुष,—शिलासम्,—शिला रस शंखों की कला ।

रसत्तरम् एक साम का नाम ।

रसिन् (वि०) [रस+इति] 1 रस में मगार 2 रस का स्वाधी,— (पु०) 1 अनिय जति का पुरुष 2 रस पर बैठ कर पढ़ करने वाला सोडा ।

रसना [रस+घत्+टाप्] 1 सड़क 2 सड़को का समान स्थान 3. बहुत से रस या शक्तिवाँ । सम०—सुखम् किसी सड़क पर प्रविष्ट होने का द्वार,—सुख रत्नी का कुत्ता ।

रसवः [रत्+स्वट्] रीति ।

रसवम् [रत्+स्वट्] फाड़ना, कुतरना, मूरचना ।

रसा (स्त्री०) गाय ।

रसम् [रत्+रच्, नृगागम्] 1 छिद्र 2 अम्यकुशरी में सन से आठवाँ घर । सम०—भक्ति बोधों या मूर्तियों का छिपाना ।

रसकः [रत्+असच्] विष, अहर् ।

रसकः [रत्+स्वट्, कन्] एक द्वीप का नाम ।

रस्य [रम्+घत्+टाप्] (सपीत०) मृति का एक भेद ।

रस्यः [र+यच्] 1 अँट 2. कीपल 3 मनुष्यकी 4. ध्वनि 5 एक बड़ा शीरा ।

रसिः [र+अच्(र)] 1 सूर्य 2 पवंत 3. मद्यार का पीषा 4 बारहू की सख्या । सम०-इच्छः नारीकी, सतरा,—पञ्चः दिन,—चिम्ब सूर्यमंडल,—साएरि 1 बरष 2 उष काल ।

रसना [अम्+यच्, रसादेश] 1 रसो 2 लनाय 3 तगही । सम०—यवम् कुट्टा,—बाहू रचनाय,—शक्तिम् सूर्य ।

रस [रत्+अच्] 1 (कुलों का) रस 2 तरल पदार्थ 3 मुरा, वेप 4 बूट, (रवा की) मात्रा 5 स्वाद, रस 6 प्रेम 7 प्रेम, अनुराग 8 हृषं, आधेद 9 (साहित्यिक) रस 10 सत, अर्क 11 शीघ्र 12. वार 13 विष 14. गन्ने का रस 15 पिचला हुआ मन्थन 16 अमृत 17. रसा (साक श्रावी का) 18 हृष प्याज 19. सोना 20. छ की सख्या का प्रतीक 21 रसवृक्ष करने का अग विज्ञा भाग० टार० २७ 22 पिचलो हुई शालु । सच०—इजु मग्रा,—अल्पित (अल०) 1 रस की निर्णय 2 सर्वोत्तर रस की उपज,—अन (वि०) रस से भरा हुआ,—शान्त् भयज्यविज्ञान,—तन्मात्रम् रस वा स्वाद का सूर तदव,—निर्वासिः स्वाद का न होना, रसहीनता,—भेद पारे का निर्माण ।

रसना [रत्+यच्] विज्ञा । सम०-अम्य विज्ञा का अचभाग,—सूक्ष्म विज्ञा को अर ।

रसवता [रत्+सत्पु+तत्+टाप्] कला की परल-सा रसवता विद्वता—वासव ।

रसतलम् [र+त०] 1 सात लोकों में से एक, पृथ्वी के नाँचे का लोक, पाताल 2 सम से (अम्यकुशली में) पीषा घर ।

रस्य [रत्+घत्+टाप्] एक देवी का नाम ।

रसमयम् विशिष्ट इति शाला के तीन मुख्य विज्ञान (दिवर, चित् और जिवन्) ।

रहितलम् [र+स०] जिसके ज्ञान्य न हो (अर्थ) को बचने जाता भी बात का आचर न करता हो) ।

रसत् [रसम्+अच्] 1. मृत प्रेत, पिशाच 2 हिन्दुओं में साठ प्रकार के विवाहों में से एक 3 एक सवतर का नाम ।

रस [रञ्+अच्] 1 प्रवचन 2 निर्धनशाका 3. प्रेम, आशेष, दीनभावना 4 शक्तिवा । सम०—वर्धनः एक प्रकार का (सपीत का) मार ।

राधाचरणम् रामायण ।

राधावीर्यम् शक्य की एक रचना, कृति ।

राजन् [राज् + कर्त्तृन्] सोम का पीषा—एन्द्रवच विंशत्य-
हृता राजा वाभिष्टोऽथ - रा० १।१४।६। सम०
—उपसेवा, राजा की सेवा करना, —सुष्ठुम् ऊँचे
द्वेष का रहस्य,—वेद्यम् (वाचस्प) राजकीय दावा,
बहिष्का (स्त्री०) शासककी,—किञ्च राजा से
आश्रीतिका,—प्रसाह राजा का अनुग्रह, बहिष्पी
पटारनी, भारतम् १ (समीत०) एक प्रकार की
माप २ इस नाम का एक शब्द,—राज्यम् कुम्भ का
राज्य,—किञ्चन एक राजविज्ञ, धर्मेषु माही मर्षा,
—कल्पम् राजा का प्रिय व्यक्ति, वृत्तम् राजा का
आचरण,—स्वाधीयः राजा का प्रतिनिधि, काइतराय ।

राज्यम् (वि०) [राजन् + भूम्,] राजकीय, शासी, न्य
सत्रिय जाति का पुत्रव्य। सम० शब्दः सत्रिय ।
राज्यम् [राजन् + भूम्, मत्स्य] १ राजकीय अधिकार,
प्रभुसत्ता २ राजधानी, देस, साम्राज्य ३ प्रदासत
४ सरकार । सम०—बहिर्वेष्टा राज्य की प्रधानता
करने वाली देवता, अग्निभाषकदेव, परित्रिया
प्रदासत, कर्त्तवीः—भी, प्रभुसत्ता की कीर्ति,
स्थिति, सरकार ।

राजिः - { (स्त्री०) [राज् + इन्, क्रीप् वा] १ पवित्र
की { २ काली सरसो ३ चारोद्वार सौर्य ४ क्षेत्र
५ ताल जिल्हा, काकल । सम० कला एक प्रकार
की ककडी ।

राज्यकीयः १ एक आचार्य का नाम २ वैदिक शाखा का
प्रवर्तक ।

राज (वि०) प्रदत्त, अनुदत्त ।

राजिः—भी [रा + जिच्, क्रीप् वा] १ रात २ रात का अर्ध-
कार ३ हल्दी ४ ब्रह्मा के चार रूपों में से एक ५ दिन
रात—मै० सं० ८।१।६ पर जा० भा० । सम०
—आयकः रात का आना, शिबः सूर्य,—नाभः चन्द्रमा
—पुत्रकूः—सर्पिः चन्द्रमा,—सप्तम्याः मीमासा का
एक सिद्धान्त जिसके अनुसार वर्षाचार में वसंत फल
ही ब्रह्म किया जाता है जब कि शिशु में कर्मफल
का वर्धन न किया गया हो ।

राजा [राज् + भृ + टाप्] १ बंगाल महीने की पुणिमा
२ प्रसिद्धता ।

राज (वि०) [राज् + घञ्, ण वा] १ आह्वानपत्र, मुसद,
सुहावना २ सुन्दर, आश्चर्यमय ३ श्रेष्ठ, कः तीव्र
स्वाति प्राप्त व्यक्ति (क) अमरगिण का पुत्र परशुराम
(ख) वसुदेव का पुत्र वलराम जिसका कोई कृष्ण का
(ग) दशरथ और कौशल्या का पुत्र रामचन्द्र, तीता-
राम । सम० कण्ठ मूत्रे का एक भेद, लक्षण,
—लाचरी, लक्षणकी कल्पिका एक उपनिषद् का
नाम,—सीला उत्तरभारत में नवराम के दिनों में
'रामायण' का नाटक के रूप में प्रस्तुतीकरण ।

राजकीयता [राज् + कीय + तल्] शीघ्रम्, भाषता ।
राज्यकम् शीघ्रम्, मनोज्ञता ।

राजा (स्त्री०) एक छन्द का नाम ।

राज्यम् [रा + जिच् + क्त] ध्वनि, स्वप्न—स्वप्ननेभ्यश्च्युता
वीरा राज्ञ्यवितपुत्रोऽन्ता- रा० ७।७।१२ ।

राशिः [अच् + इज्, वातापहायमण्य] १ हेर, मण्ड, सम-
न्वय २ सक्ता (गणित में) ३ उर्ध्वतिष्ठ का धर
जिसमें २५ नक्षत्र समिमलित होते हैं । सम०—सत
(वि०) बीजगणित विषयक, कः उद्योतिष्ठ के एक
धर का स्थायी दे० राशियुधि ।

राश्ट्रकः [राश्ट् + क्त] दे० राश्ट्रिक ।

राश्ट्रिकः [राश्ट् + ठक्] १ किसी देश का निवासी २ राज्य
का शासक ३ राज्यपाल ।

रास [राज् + घञ्] १ कोलाहल २ शोर ३ वक्ता ४ एक
प्रकार का नृत्य ५ भुक्तता ६ भोज, नाटक । सम०
—शैविः बतुलाचार नाच जिसमें कृष्ण और गोपिकार्ण
सम्मिलित होती हैं ।

रासायन (वि०) [रासायन् + अच्] रसायनमन्त्री ।

रासायनिक (वि०) [रासायन् + ठक्] रसायन संबंधी ।

रिक्तोक्त (ना० पर०) १ रिक्त करना, काशी करना
२ ले जाना, चुरा मना २ चले जाना ।

रिच्यजातम् (न्यु०) (किसी मृतक व्यक्ति की) सत्यता
सर्वगत मृत्यु अस्ति ।

रिच्यः [रिच् + क्त] उत्सवात्, ऊषाण ।

रीतिः [री + सित्] नैसर्गिक संपत्ति, स्वाभाविक गुण ।

रुच्य (वि०) [रुच् + भृन्, नि० कृत्वरन्] १ उत्तमजन,
भवकदार २ सुनहरी,—कम्, स्वर्णभूषण २ सुगंधी ।

सम०—आम (वि०) मोने की शक्ति धर्मकीला—भाषी
मुनहरी तस्मिन्, पुञ्ज (वि०) १ स्वर्णेश्वर से प्रदत्त
मुनहरी दास बाला २ मुनहरी बृह दास्य ।

रुचिप्रव (वि०) स्वादिष्ट, भूक्ष लगाने वाला ।

रुचिर (वि०) [रुच् + किरच्] सुहावना, सुन्दर अथ वास्त-
व्य वचनेन रुचिरवदतिस्मिन्नोच्यते कि० १२।१ ।
सम०—अङ्गकः विष्णु का नाम ।

रुचिष्य (वि०) [रुच् + कृष्ण्] भूक्षचर्चक, भूक्ष लगाने
वाला ।

रुच्यः [रुच् + भृन्] चोरी और लचकर के दोष से उत्पन्न ।

रु (वि०) [रुच् + रुच्] १ भयानक, भयकर २ विशाल
—इः १ ग्याह देवगण, जो शिव का ही अणुकुण्ट
रूप हैं, शिव उनमें मुख्य हैं २ अग्नि ३ ग्याह्र की
सख्या ४ यजुर्वेद का सूक्त जिसमें रु की लक्षोबिध
किया गया है । सम० अवायः एक तीर्थकेन्द्र का
नाम,—वायलम् एक लघु शब्द का नाम,—वीणा एक
प्रकार की वीणा ।

रुद्रः अलंकार साधक के एक लेशक का नाम ।

पञ्चा [कृ + क्त + टाप्] पंचा इत्यादि ।
पञ्चमूष (वि०) [ष० सं०] मूषाचरोष से दम व्यक्ति ।
पचिर-—रन् [कृ + किरच्] 1 लाल रंग 2 मगल ग्रह
 3. सुन्द, रत्न 4 अकराण । सम० प्वाचित (वि०)
 कृत् में भीया हुआ ।
पचस्वा [कृ + क्त + टाप्, पाठोद्दिश्यम्] अचरोम करने
 की दृष्टि ।
पचय : [प + अच्, कित्] कृता ।
पद्य (वि०) [र्ह् + क्त] 1 पद्य हुआ, सवार, लदा
 हुआ 2 दूर-दूर तक विस्तार—आमस्ता मुरिय रुदा-
 —कि० ११।१।७। सम० पद्य (वि०) उष्ण कुल
 का.—अथ (वि०) जिसके पाय भर गये हो ।
पदि [र्ह् + क्त + क्त] 1 वृद्धि, विकास 2 जन्म 3 निर्णय
 4 प्रथा, रिवाज 5 प्रचलित जयं ।
पद्म (वि०) [कृ + अच्] 1 कटोर कला 2 लोका,
 पटपटा 3 चिकनाई से रहित (जैसे मोहन) — स
 1 नृच 2 कटोरता, क्लापन, —अम् 1 दही की
 छोटी तह 2 कानी मिचं । सम० भाव कला भाव,
 अमित्रता का स्थान,—आत्मकम् मध् पवित्रयो से
 प्राप्त गहव ।
पदिषित (वि०) [कृ + क्त] कोपादिष्ट, कृत् ।
पद्म (चुग० उभ०) वर्णन करना मविस्मय रूपयती
 नमस्कारान्— कि० ८।२५ ।
पद्म [कृ + क, अच् वा] 1 दूरत, आकृति 2 रग का
 भद्र (काला, पीला आदि) 3 कोई भी दूरय पदार्थ
 4 नैसर्गिक स्थिति, प्राकृतिक दशा १ निष्का (जैसे
 कि पथ्या) । सम०—उपसोच्यम् सुन्दर वा मोहक
 रूप के द्वारा भौतिका लाभ करना मरु० १२।
 २५।५, —अधोष्ण् सोन्दर्यं, स्वर्गती—परिष्कल्पना
 रूप धरना, रूप धारण करना,—आभाषकाव किती
 इकाई की भिन्नो में परिचलित करना, विद्याय,
 किती पूर्णता को भिन्न राशियों में विभक्त करना
 —नृच्यम् एक प्रकार का नाच ।
पद्मम् [कृ + यत्] 1 पदी 2 महाद्वित्त सिक्का
 3 नौवाहन । सम० पौतम् पदी ।
पद्म (वि०) [कृ + अच्] कदवा ।
पद्मामाश्रम् (अ०) पक्षि से भी, रेखा द्वारा भी ।
पद्म (पु०, स्त्री०) [रीयते ष्] 1 मूल, पुन रूप, नेत्र
 2 कुली की रज 3 एक विशेष माप-मात्र । सम०
 —अप्यत्रः पल का उठना,—वर्ष एक बटे तक चलने
 वाली मात्र की बरी ।

पद्मकालम् [प० त०] परपुराण का विशेषण ।
पद्मकामुत्त ।
पद्मत् (मपु०) [रो + अमुन्, लुट् ष्] 1 मोर्य, बीज
 2 धारा, प्रवाह 3 प्रवा, सन्ध्या 4 धारा 5 पाय ।
 सम० लेक संयुत, मधोय,—स्वस्वम्, वीर्य का गिर
 जाना ।
पद्म 1: 'वरर' शब्द 2 'ए' अक्षर 3 शब्द कथे ष
 सामानि समस्तोरफान्—भाग० ८।२०।२५ । सम०
 —विपुला एक छन्द का नाम, लघि 'ए' का श्रुति-
 मकर मल ।
पद्मत् [रेवतो + अच्] 1 बादल 2 पीचवें मनु का नाम ।
पद्मम् [रोक + यत्] रघिर, कृत् ।
पद्म [कृ + अच्] 1 मोमारी, कष्ट 2 रज स्थान ।
 मम० अन्धता रोगी का फूटना, सः शपट,
 रोगियों का चिकित्सक,—आयम् रोग का निदान,
 —श्रेष्ठ दुखार,—अथ रोग का दूर हो जाना ।
पद्म [कृ + अच्] शीरी का नाम करने वाला वा
 कृमि आशुषयो का निमज्जित,—रा० २।८३।१३ ।
पद्म (मपु०) [कृ + अमुन्] 1 तट, किनारा 2 पहाड़
 का इगल (जैसा कि 'पद्मरोधम्' में) ।
पद्म [र्ह् + क्त + क्त, ह्रस्व ष, कर्मणि अच्] 1 रोपण
 करना, पीष लगाना 2 स्थापित करना 3 बाध, तीर ।
 सम०—विष्ठी बाधो से उत्पन्न अग्नि—ने० ५।८७ ।
पद्मि (वि०) [र्ह् + क्त + क्त] 1 पीष लगाई हुई
 2 अडा हुआ रज 3 निधाना बाधा हुआ (बाध) ।
पद्म (मपु०) [कृ + मन्ति] 1 शरीर के बाल 2 पक्षियों
 के पत्र 3 मछलियों की लवचा । सम०—सुषो बालों
 में लगाने की सूई ।
पद्म (वि०) [रोम + क्त] 1. बालो वाला, ऊनी
 2 लवरो के समूह उष्णारण से युक्त ।
पद्मि [रोम + क्त] निकहरी ।
पद्म [रोम + क्त] 1. ऊँचाई 2 वृद्धि, विकास
 3 कमी, अकृत् 4 जननायक कारण ।
पद्मि [रोह + इति + क्विप] 1 लाल रग की मात्र
 2 पीष तारो का पुन—रोहिनी तलज 3 वसुदेव की
 पत्नी और बलराम को माँ 4 विभक्तो 5. एक प्रकार
 का इन्पाठ । सम०—सत्तव, बलराम, बीष रोहिणी
 का चन्दा के साथ संयोग ।
पद्म (वि०) [र्ह् + अच्] 1 छद की भाँति प्रचम्भ
 2. पीषण प्रचम्भ 3 छद विषयक, छद सबधी ।

४

कालम् [सम्+कल्] 1. एक काल 2 चिह्न, निशान
3 विद्याया, बहुता, बोझा । सम०—अर्धकालम् एक
काल पूर्ण के उपहार से पूजा करना,—दोषः मन्दिर
में एक काल दोषक एक प्राण अजाना ।

कालम् [सम्+कल्] 1 चिह्न, संकेतक, टोकन 2 परि-
भाषा 3 शरीर पर सीमास्थानी चिह्न 4 नाम
5 उद्देश्य 6 वैयर्थनियम । सम०—कालम् (नपु०)
परिभाषा ।

काल्या 1 दुर्घोषन की पुष्पी का नाम 2 तोम काल्यशफिनयो
में से एक ।

काल्याया सकेत सकेत सकेत इति, दोष सकेत, एक ऐसा
सकेत जिससे कोई अन्य सकेत मिले म० स० १०।
५।५८ पर शा० या० ।

काल्यम् (नपु०) [सम्+कल्] 1. चिह्न 2 बन्धा
3. परिभाषा 4 मूल्य, प्रधान 5 मोती ।

काल्यी [सम्+कल्, मृट् ष] 1 दोलक, उम्ब्रि, धन
2 सीमास्थ, सुवाङ्मिष्यती 3. तीर्थस्थ, आजा, कान्ति
4 धन की देवता । सम०—काल्याः धन की देवता
का आशुवाँद, अनुग्रह,—आराध्यः विष्णु का विशेषण,
विष्णुः भाग्य का फेर, सनाथ (वि०) सौन्दर्य से
युक्त, सीमास्थानी ।

काल्यम् [सम्+कल्] 1 ध्वज, उद्देश्य 2 चिह्न, टोकन
3. बहु वस्तु जिसकी परिभाषा की गई है 4 नीच
वर्ण, अपत्यज अर्थ । सम०—अधिकारकम् पारितोषिक,
से उठना, गृहः निशाना बंधना,—सिद्धि, अपने
इश्वर्य में सफलता ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] दूध, मांसिक,—काल्य 1 वह
विन्दु जहाँ इष्टपय मिलते हैं 2 कान्तिवृत्त का विन्दु
जो किसी दल काल में क्षितिज या वायुमण्डल रेखा
पर होता है । मम०—पश्चिमा जन्म समय या विवाह
संस्कार के मुहूर्त्तविक विवरण से युक्त एक मांसिक
पश्चिमा, अन्वयपश्चिमा, या विवाह पश्चिमा ।

काल्यः पलकों का एक विशेष रोप ।

काल्यस्तः [स० स०] दण्डकारी ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्, नमोप] 1. हल्का 2 छोटा
3 बोझा, सक्ति 4 मामूली 5 बोझा, अचय,
6 दुर्बल 7 वृत्त, फुटीला 8 इत 9 बाजान 10 युक्त
11. सुखद 12. शिव, सुन्दर 13 सब प्रकार के शरीरों
के युक्त—अनोक्तशायी लघुपदप्रकारः—महा० १।
११५। सम० काल्य (वि०) हल्के डेट बाका
—कौमुदी व्याकरण की एक पुस्तक,—काल्यः सगीत
की माप का एक मंत्र,—कालिका छोटी नदी,
—काल्य (वि०) आशानी से पचन योग्य,—प्रधान
(वि०) नाकार प्रकार में छोटा या, शीघ्रकालिकम्

शौच-वाचिष्ठ का तारसह, सौखर सगीत य
एक माप ।

काल्य (नना० उम०) 1 हल्का करना, बोझ घटाना
2 छोटा करना, घटाना ।

काल्यी (स्त्री०) [सम्+कल्] छोटी, मोटी, कम लम्ब
पुरा बुद्धिमती ष परवात ।

काल्यी [सम्+कल्] लकड़ी या रस्सी जिस पर कपा
मुसाने के लिए सटका दिये जाय ।

काल्यम् [सम्+कल्] 1 सौन्दर्य 2 सच, एकता ।
काल्यम् [सम्+कल्] 1 अतिक्रमण 2 उपवास करण
3 मंत्र, मन्त्राधान ।

काल्यकृति (स्त्री०) लज्जा का मूठ मूठ प्रदर्शन ।
काल्यकः (पु०) हाथी ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 प्राण, अवाप्त 2 नृहीत
3 प्रत्यक्ष ज्ञान प्राण, समझा गया 4 (मात्र करने
के फलस्वरूप) प्राण, उपलब्ध । सम०—काल्य
(वि०) जिसने अनुभूति प्राण कर ली है,—तीर्थ
(वि०) जिसने इच्छर से भाग उठा लिया है,
—प्रसिद्ध (वि०) जिसने कीर्ति प्राण कर ली है,
जिसने अपनी लाज धरा ली है, सम्पानित,—प्रसन्न
(वि०) स्वर्गपतापूर्वक इच्छर-उच्छर बुझने वाला,
प्रसन्न (वि०) अनुग्रह-प्राण, शिव,—कृत (वि०)
विद्याम्, संक्ष (वि०) जिसने मुग्धुव प्राण कर ली
है, जो होश में आ गया है ।

काल्यम् एक प्रकार की विधि ।
काल्य कर्मल का एक भेद ।

काल्य (वि०) (सगीत०) वह नाम जिसकी मय और
ताक सही हो, जिसमें सामञ्जस्य हो ।

काल्यिका मलक के ऊपर पहना जाने वाला एक कामू-
चम झुंवर, मृदापट्टी—काल्यिकाकाल्यिका—(कालिका
विद्यायी स्तोत्र) ।

काल्यम् [सम्+कल्] 1 कामूचन, अकारण 2. एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

काल्य (वि०) [सम्+कल्] 1 मयोरम, सुन्दर 2 सुखद
मुहावना । सम०—काल्य (सगीत०) एक नाम की
मय या माप,—कालिका सुन्दर स्त्री, किल्लरः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, किल्लारः एक
छन्द का नाम ।

कायनी करना । खण०—खण् (वि०) छोटी काटने का इच्छक ।

खण्डः [ख् + खण्] खण का पीछा, —खण् खण । खण० काष्ठिका लोच ।

खण्ड [ख् + खण्, पुं०० फलत्] 1. मन्कीन खण्ड 2 एक राखल का भाग 3 एक बरक का भाग, —खण् 1 मन्क 2 इन्धन मन्क । खण०—खण्डिकान् मन्क की बेनी, —खण्ड मन्कीन खण्डी ।

खण्डित (वि०) [खण + इत्] मन्कीन, मन्कयन्त ।

खण्डवत् (वि०) [ख० ख०] जिसकी छिद्रमें खणकटी है ।

खण्डारण्य महाभर या मन्कत का रत्न—खण्डारण्यमर्षाभासकिया चिह्नो लोच ।

खण्डान् [खण् + खण् पुं०० वृद्धि] 1 हल 2 हल्की लण का बहुव्रीह 3 ताश् का वृत्त 4 वृत्त से फल एकत्र करने का बीज 5 एक फूल का भाग ।

खण्डान् नागिन्य का पेठ ।

खण्डनी केवांच का वृत्त, खणोपल—विप्लवग्रहमङ्गलित्प्रभात एव नन्द्यास्तखन्तनद्रवनिबद्धपुः पथिक जातमन्कीवन इतीरु वयति स्फुट कुमुदहन्तपृष्ठम्य वा प्रमदप्रमदप्रमदलक्ष्मिनिपतेसता साङ्गली—त्राजकी ११ ।

खण्डुन्धालम्ब्य { वृक्ष हिक्का ।
खण्डुन्धालिष्ये

खण्डुषेया खाल का भाव ।

खण्ड [खण + खण्] 1 गडा हुआ धन मन्० १० । ११५ 2 कायदा, भाव । खण०—विष् (वि०) 30 यह मन्कता है कि भाग क्या खोच है —लेभे खण विदा हर ग० ख० ।

खण्डाख अपन्मार, निर्मी ।

खण्ड क्या भागक पत्ती, बटेर ।

खण्डाखक एक हीप का भाग ।

खण्डान् पकडना, इन्धन करना —जोमराङ्कुसलान्नी—महा० ७१।४२।४५ ।

खण्डिक (वि०) [खण + उक्] नाचने वाला—वि० १३।६६ ।

खण्डित (पुं०) [खिन् + ख्] विचकार ।
खिन् [खिन् + ख्] 1 हरिण 2 मूत्र, बुद्ध 3 खिन्, मूनि ।

खिन् [खिन् + ख्] 1 चिह्न विज्ञान 2 प्रतीक, विशिष्टता 2 रोम का मन्त्र 4 गौरीक लता —योगेन बुद्धसमस्तस्यसो खिन् व्यपोहेत् कुशलोद्भवाम्यद्—भाष० ५।५।१३ । खण०—खण्डा खीर खीरों का मन्त्राद्य, —खीक्य 'सिखलिक' मूनि जिन पर विरागभाव है वह खीकी, खण्डवत् खिन् भाव पर ध्याकरण का एक मन्त्र ।

खिन्मूर्त्तिका पृथिवी, छोटी पृथ्वी ।

खिन् [खिन् + इत्] 1 लेप 2 लेख 3 बखर, बर्णनामः 4 बाहरी वृत्त । खण०—खण् (पुं०) मन्केख, विचर, —खण्ड खण्ड ई पर पढ़नी जाने वाली खण्णी, रसायन्य ।

खिन् [खिन् + ख] 1 खिना हुआ, लना हुआ, 2 खारा हुआ, 3 खण्डन, कफ । खण०—खण्डित खिनी हुई पुन्य से पुनश्चित, हल (वि०) खने हुए हाथों वाला ।

खिन्मूर्त्तिका खिन्ने अपने भाव छटवा कर छोटे करा लिए हैं ।

खिन् (पुं० ख०) खोखला, पन्कना ।

खिन् [खण् + खण्] 1 मूटना 2 विरोध करना, भावा डाकना ।

खिन् (भा० में) मूटा होना, विटना, मूक्युक्त होना ।

खिन्की वृद्ध का वन्धन्यान ।

खिन् मन्क का विनारा ।

खिन् खीटा, मन्कीडा ।

खिन् (वि०) [ख् + ख] 1 कटा हुआ 2 लोका हुआ 3 (फल खादि) एकत्र किये हुए । खण०—खण्, —खण्ड विचका पाणों से छुटकारा हो चुका है, —खिन् (वि०) जिसकी पूछ में खिन् मना हो ।

खिन् [खिन् + खन्] 1 खिन्, खिन्त वस्तावेक 2 परमारना, देवता 3. खीरष । खण०—खण्कीखिन् प्रमदान् का सेवक, —खण् इन्त—खण् न लेखप्रभु—भाषि पात्त में २२।११८, —खण्डितम् खिन्कार से की गई मन्वृद्धि ।

खिन्का बोझा खाचात, सहमाना ।

खिन्त (वि०) [खिन् + खिन् + ख] निश्चया गया ।

खिन् (केवल करण कारक—लेखना—के रूप में प्रवृत्त) कायना, खिलना ।

खिन्तक इन्धन ।

खिन् (वि०) [खिन् + ख्] भाव के खिन् से संबंध रखने वाला, —खण् बडाए हुए पुराणों में से एक पुराण का भाग । खण०—खण् खण्णी पुरीहित ।

खिन् [खिन् + खन्] 1 लता, वृक्ष का एक भाग 2 पृथ्वी, भूकोक 3. मनुष्य जाति 4 प्रजा 5 खण् 6 खण 7 वृद्धि 8 वास्तविक स्थिति, प्रकाश —इच्छामि कालेन न वस्य विष्णवस्तस्वामलोकामरन्ध्रं मोक्षम्—भाष० ८।३।२५ 9. विचर, प्रोष्य-मन्तु—उपपत्त्योपलब्धेयु लोकेषु च लभो यश्च—महा० १३।२८।११ । खण०—खण्डः मनुष्य जाति की मन्वृद्धि, —खण्डुस्य लोकागत के अनुसार, खण्डाधारण की भाशाकारिता, —खिन्खिन्त (वि०) खिन्ने कपटा वाले, वनप्रिय, —उपखीलन् मूर्त्तों में दूरी खण्डाई

फैलाना— दण० २१२,—अन्वय (वि०) सवार को बोझ देने वाला, सामाजिक ठग, कर्म सांसारिक कर्मण्य, माघ-सूर्य,—परिष्ठा (वि०) सवार से छिपा हुआ, प्रत्यक्ष सबका विश्वास, विश्व का प्राक्क, अर्त्त (वि०) जनसाधारण का पालक पोषक, — बन्ध सवार के प्रति मन्त्रा रहने की इच्छा मोर्क-वणा— महा० १०१८८५ पर शा० भा०,—राज्य (वि०) सवार को कष्ट देने वाला—रा० ११३११, —अन्वय लोकस्यबहार जिससे सवार की स्थिति बनी रहे, विच्छ (वि०) लोकमत के विपरीत, —विश्वः 1 सवार का अन्त 2 यौव सृष्टि, —संघात जनसमाय,—सुखर (वि०) जिसके सौन्दर्य की सब लोग प्रशंसा करें।
 लोकसत्ता (अ०) लोगों की मन्त्राई के लिए।
 लोकसत्त [लोक + सत्त] 1. दर्शन, दृष्टि, ईश्वर 2 जीव।
 सर०—अन्वय-अर्थ की कोर, भाषणाः शाकी, —आवरणम् पलक,—पक्ष (वि०) देखने में विकराल।
 लोभ [लुभ + घञ्] 1 लालच, लालसा 2 इच्छा, प्रबल चाह 3 विनमय, धराराहट, उलझन। सम०—अभिप्रासिन् (वि०) जो लालसा के कारण भावता है,—मोहित (वि०) लालच से अन्धा।

लोकसत्तः लोकसत्त।
 लोकसिध (वि०) [व० स०] जिसके बालों में जहर मरा हो।
 लोकसम्पन्न- बिल में रहने वाले बन्तुओं की एक जाति।
 लोकसम्पन्न (वि०) अर्थिक की सुनने वाला।
 लोकसम्पन्न भौरा, अमर।
 लोकसम्पन्निका विट्टी की मोली।
 लोकसम्पन्नो (ना० वा० भा०) देले के समान समझना।
 लोहः [लुवतेऽनेन—लु + ह्] 1 लोहा 2 इस्पात 3 लोहा 4 सोना 5 अन्न की लकड़ी। सम०—अधम् लोहे की मोक,—अभिप्रासिन्—अन्वय विट्टुन् बन्तु लोहे का अर्थ, सुखी लोहे की बधिया,—बर्बन्तु धातु की तपतरी में ढका हुआ भावः बर्ही।
 लोहित (वि०) [लुह + ह्यन्, रत्य ल] 1 शीघ्र की पलकों का एक रोग 2 एक प्रकार का मृत्युवाण पत्थर रत्न।
 लोहितय पीतल।
 लौकिक (वि०) [लाक + टक्] 1 सामाजिक 2 सामान्य 3 दैनिक जीवन संबंधी। सम०—अर्थिः सामान्य भाव जो यज्ञ कार्यों में प्रयुक्त न होनी हो, व्याकः सामान्यतः माना हुआ न्याय।
 लोहासत्तम् धातुविज्ञान, धातुकोषण विद्या।

लोकः [लु + ग] 1 मंगल का एक विशेष स्वर 2 बात 3 अहंकार, अभिमान 4 कुल। सम०—अर्थम् बात की दलकारी, इत्यम् बसरी बजाना, धर किसी कुल में उत्पन्न,—अन्वयसिन् सप्तह मातामो का एक छत्र, पात्रस बात की बनी टोकरी, —वाह्य कुल से निकालित,—अन्वयसिन् सायवेद आद्यान का मूल पाठ, लुभ (वि०) सवार में अकेला,—अन्वय बातों का संगल, बर्बन्तः पुत्र,—विस्तारः बरागली—स्वच्छिन् एक छन्द का नाम।

लोकः बन्तु, सबको, अपने कुल का।
 लोभसिन् (वि०) लोभने की इच्छा वाला,
 लोभसिन् (वि०) लोभने का इच्छुक।
 लोभसिन् (वि०) विद्वान्तिक और प्रायोगिक (राज-नीतिज्ञ)।
 लोभ (वि०) [लुभ + ग्न् पुत्रो० लोभ] 1 टेडा, मुडा हुआ 2 गोलमोल, अत्रयत्न 3 धुंधराके 4 बेईमान, कपटी, लालसा, छ—1. अन्वयसिन् 2. अन्वयसिन्, लु 1 (वह की) टेड़ी पाल ३. लोभ का मोड़। सम०

लोकसम्पन्न टोन, अन्त,—इतर (वि०) मोहा, जील, अहंकार,—लुभ, अर्त्त,—लालम् एक विशेष धातोपकरण, रेखा टेड़ी आइन।
 लोहितिका, } धरेंद्री, बात आदि की बनी टोकरी।
 लोहितरी }
 लोहितम् [लु + स्यट्] 1 रोमने की किया 2 बन्तुता 3 पाठ—रत्ना 4 उपदेश, धार्मिक पुस्तक का अर्थ 5 आभा, आदेश 6 परामर्श, अनुदेश। सम०—अन्वयः अन्वयसिन् से युक्त बात, अन्वयसिन् सुखा-धार्मिक बन्तुता, किया भासाकारिता, लोहित (वि०) बात बात का विषय बनाने वाला, लोहितम् शब्दों का आहर करना—लुभन्तुवोरवात्—रा० १,—अर्थिः किसी उक्ति को अर्थार्थ साधकता।
 लोहितः लुभ, लालची।
 लोहितम् (वि०) हाकपटु, रोमने में धतुर—इतीरिते अर्थिः अर्थिःनामना वि० १०११।
 लोभसिन् (अ०) विद्याय उसके की कष्ट दिया है।
 लोहितः [लु + ह्यन्] 1 न्याय, कदाचित 2 धार्मिक

3. वस्तुता, वस्तुत्व, वस्तुत्वव्यति 3. राज्य की वाक्य
व्यति ।
बन्ध [बन् + रन्] 1 बिल्ली, इनर का शब्द 2 रत्न
की सुई 3 रत्न, बन्धहर 4. एक प्रकार का कुण
वात 5 एक प्रकार का शैत्य बन्धु । मय० बन्धुत्व
धारी शर कण्डा, बन्धुत्व (वि०) 'बन्धावध के
चिह्न से युक्ति --- बन्धार (वि०), बन्धुत्व (वि०)
 बन्ध की सकल बाला --- बन्ध एक प्रकार का बीडा,
 - बन्धर सुरभिन् आशयवृत्त, बन्धुः 1 एक प्रकार
का बीडा 2 एक प्रकार की समाधि ।
बन्धकम् [बन्ध + क्त] हीरा, बन्धार ।
बन्धः [बन् + अच्] 1 बन्ध का वेद 2 बन्धक 3 शरत्त
की गोद । सम० बन्ध, -बन्धम्, -बन्धम् बन्ध का
पत्ता ।
बन्धवा [बन् + वा + क + टाप्] 1 घोड़ी 2 एक नवान-
पुत्र जिसे 'घोड़ी के सिर' के प्रतीक से व्यक्त किया
जाता है ।
बन्धिष् (पु०) [रन् + इति, पन्ध व] 1 व्यापारी,
मोहामार 2 मुत्ता राजा । सम० बन्धक बाफला,
- बन्धु उदर, घोषी बाजाग ।
बन्धु [मन्धु] अधिकतर अर्थ में तथा 'योग्य' अर्थ में
लगने वाला मन्धवीय प्रत्यय - मं० म० १६२।५१
पर मा० भा० ।
बन्धु (अ०) विस्मयति श्रोतक अन्वय । 'मुनी' 'वत्'
'धु' अर्थ की प्रकट करता है ।
बन्धु [बन् + त] 1 बन्धु 2 लडका, पुत्र 3 मन्वान,
बन्धवा 4 वध, 5 एक देश का नाम । सम० बन्धु
साहिबी लघु और दीर्घ मात्रा का मध्यवर्ती क्य भय
या अन्तर, बन्धु तीर्थ, घाट, उतार ।
बन्धुव्यति [बन्ध + व्यत् + णिच् + स्त] बन्धु के रूप
में स्वतन्त्र बन्धुव्यतिस्त्वम् योग्यव्यतिस्त्वम्
--- ना०० ।
बन्धुत्वम् [बन्धु + त्वम्] 1 पेंहरा 2 मुल 3 मूरत
4 मामने का पक्ष 5 पहेली राशि 6 भिकीण का
मिश्रण । सम० बन्धुत्वव्यति मूल में मधुरगण से
मुक्त मुरा, --- बन्धुत्व अन्ध, बन्धुत्व मूलादिन्,
कमल केना मूल, - बन्धुः श्याम, सति ।
बन्धुः [ह्यु + अच्, बन्धावध] 1 भन्नागा 2 (बीज० में)
मुक्तकल 3. हत्या, कतल । सम० राक्षिः अन्धाङ्ग
में छटा बन् ।
बन्धि, -कम् कस्तुरी, मूल ।
बन्धुत्वः बहु समय जब कि कन्या दुर्लभिन बन्ती है ।
बन्धुत्वम् नवविवाहित दम्पति ।
बन्धुत्वम् [ब० तं०] लाकरों के बन्धु जो प्रायः
प्राप्त पुत्र की कान्ती देने के समय पहिनाये जाते हैं ।

बन्धु [बन् + अच्] 1 बंगल 2. बुरों का बुर 3. बर
4 उखारा 5. बल 6 लकड़ी का पात्र 7 प्रकाश
की किरण 8 पर्वत । सम० --- बन्धु (वि०) केवल
अल पीकर जीने वाला, उपल गोबर के उपल,
गोहे, --- बन्धि बंगली बड़ी बूटी, - बन्धि कोयल,
हस्त काम नाम का वास ।
बन्धुत्वम् सम्मानपूर्ण अधिवादन ।
बन्धु (वि०) [बन् + यत्] 1 बंगली 2. लकड़ी का
बना हुआ, न्य (पु०) बन्धु --- बन्धुत्वम् इव
नैर्हता --- रा० ३१२।७।२९, सम० --- बन्धि (वि०)
बन्धी उपर पर ही रहने वाला ।
बन्धुत्वम् [बन्धु + त्वम्] 1 बीज बोना 2. हजामत करना
3 शीर्ष 4 बुर, उत्तरा 5. करीने से रचना, व्यवस्थित
करना ।
बन्धु [बन्धु + अच् + टाप्] 1 बर्बा 2 बिल, बिबर
3 दीमकी द्वारा बनी नदी 4 उजरी हुई मांस
नाभि ।
बन्धुत्वम् (वि०) [बन्धु + त्वम्] 1 शरीर धारी 2 बन्धु-
पुत्र 3 अतिविकृत, बन्धि ।
बन्धु [बन्धु + रन्] 1 फसील, परिवार, परकोटा
2 इलाज 3 समुच्चय 4 अवन की नीव ।
बन्धु वाटिका की म्यारी ।
बन्धु [बन्धु + अच्] लाली ।
बन्धु [बन्धु + त्वम्] 1 कर्ई का जीवन 2. वन, सुतली
पट्टा ।
बन्धुत्वम् (वि०) अव्यक्त बालक, घोड़ी भापु का
बालक ।
बन्धुत्वम् [बन्धु + बन्धु] (वेद०) कर्म, कार्य --- विस्मयि देव
बन्धुत्वम् विद्वान् --- इव० १८ ।
बन्धु (वि०) [ब् + अच्] उत्तम, श्रेष्ठ, बन्धिया, बन्धुत्व,
- ब० १ बरदान 2 उपहार पारितोषिक 3 इच्छा
4 प्रायश्चा 5 वान 6 दूहा 7. जामाता । सम०
अरिषि माता - रा० ७।२३।२२, --- बन्धुः बेल,
- इन्धी पुराना घोष 'ध', --- बन्धुत्वम् विवाह सत्कार
का एक भाग जिसके अनुसार दूहे के विभ फिली
विशेष परिवार में तुल्यन की शीघ्र के लिए जाते हैं
- बन्धुः श्रेष्ठजन, बन्धुत्वम् विवाह में सत्कार
की बातें ।
बन्धुत्वम् [ब० स०] मधुरगारी, लकवार रजने शामा ।
बन्धुत्वम् अठारह पुराणों में से एक ।
बन्धुत्वम् (वि०) [ब् + अच् + अच् = बन्धि + अच्] पूजा
करने वाला --- न तन्धिष्यं तन्धिष्यं बन्धिष्यति
--- इव०
बन्धिष्यति (ना० वा० पर०) अनुग्रह करना, कृपा
करना ।

बधनात्मन् [ब० त०] अयदतिन् श्रुति का नाम ।
बधेभ्यः रणेशमाहात्म्य में बलिज का राजा का नाम ।
बधोत्सवम् [ब० त०] अयजनों के आठ समूह ।
बधोत्सवम् 1 अनुनासिक बर्ध 2 ज्योतिष में किसी बह
 विद्या की उच्छ्वाता को प्रकट करने वाला छन्द ।
बधोत्सव (वि०) [बर्ध + च्चि + क्त] बर्धियों में
 विभक्त जिसके समुदाय बने हुए हो ।
बर्धः [बर्ध + अच्] 1 रग 2 सूरत, शक्य 3 अनुष्यो
 की जाति 4 अक्षर, ध्वनि 5 शब्द, मात्रा 6 बस
 7 प्रशंसा 8. बोगा 9 गीतकम् । सम० अनुप्रासः
 अक्षरो का अनुप्रास अलकार, —अक्षरम् 1 निम्न जाति
 2 स्थानापन्न अक्षर, —अक्षरम् छूट —अक्षर
 (वि०) जाति की दृष्टि से अयम ओछा, —सर्पकम्
 ऊनी कालीन, —परिष्वय सर्गीत में दलता, —बेधिनो
 मोटा अनाम, (आमर, कोरों), विषिष्वा 1 अक्षरो
 में परिवर्तन 2 जाति में परिवर्तन ।
बर्धक [बर्ध + क्तृ] 1 वक्ता, बर्धन करने वाला
 2 आदर्श, नमूना ।
बर्धि [बर्ध + इत्] 1 सोना 2 सुगन्ध ।
बर्धन् [बर्ध + स्वट्] 1 होना, रहना 2 ठहरना, बसना
 3 कर्म, गति 4 जीविका 5 जोड़ित रहने का सामन
 6 आचरण, व्यवहार 7 मजदूरी, वेतन 8 तकना
 9 जिससे रमा जाय निहितमूलकवर्तनाभिताभम्
 —कि० १०।४२ 10 बार बार दोहराया गया
 शब्द 11 काड़ा बनाना । सम० —विश्वीय मजदूरी
 बटना ।
बर्धनात्मन् [बर्ध + आनच्] विद्यमान काल, मौजूदा समय ।
 सम० —आश्वेय बर्धनाम का विरोध, —काक मौजूदा
 समय ।
बर्धि [बर्ध + इन्] अस्थिमज्ज के कारक सूचन ।
बर्धिका [बर्ध + ठिक्] पथिका, लाठी—पलाशवतिकाये-
 का बहुत सहताम् पथि महा० १।३।१।८ ।
बर्धित [बर्ध + क्त] 1. नुवा हुआ, लुप्तका हुआ 2. उत्पादित
 निष्पन्न 4 अर्थ किया हुआ, बीता हुआ ।
बर्धिन (वि०) [बर्ध + गिन्] आशा मानने वाला ।
बर्धन् (नपु०) [बर्ध + गिन्] 1. पथ, मार्ग, रास्ता
 2. कमर, कला 3 पलक 4 किनारा । सम०
 —आश्वत्थ माया के परिणामस्वरूप बचान ।
 —बालम् ताक में रहना, ताक में रखना ।
बर्धन् (वि०) [बर्ध + स्व + क्तृ] होने वाला, प्रगति
 करने के लिए तैयार ।
बर्धन् [बर्ध + अच्] बमने का उत्सा या फीटा ।
बर्धो देवता, स्थितिधारिणी स्त्री ।
बर्धक (वि०) [बर्ध + गिच् + स्वट्, स्वायं क्तृ] आङ्गाव-
 कर, हृष्यद, आनन्ददायक ।

बर्धनात् [बर्ध + आनच्] 1 बर्धियों का २४ वीं तीर्थ
 2. पूर्ब विद्या का दिक्पाल हाथी । सम० - ५
 आनीय पर- रा० २।१७।१८ ।
बर्धनात्मक [बर्धनात् + क्तृ] हाथों में दीपक लेकर ना
 चालो की मण्डली ।
बर्धोपनिक् 1 बर्धाई 2 बर्धाई के बिल्कुलव्यप उपहार
 बर्धापिका परिपारिका, नर्स ।
बर्धन् हृमिया रोग ।
बर्ध [बर्ध + क्तृ] 1 बर्धा होना 2 छिन्नकाव 3
 (केवल नपु० में) 4 महाद्वेष 5 बाहल 6
 —रा० ७।७।३।५ पर टीका 7 वातरथान । स
 —कावः बरसात की श्रुत, गन्धः बर्धा की ल
 भूलला, —वर्धय पत्रा, कलेष्वर, रावः बरसा
 मौसम ।
बर्धा [बर्ध + अच् + टाप्] (श्रीलिंग व० व० में प्रय
 बरसान, बर्धा श्रुतु । सम० —अधोक् बर्धा में
 - भू (पु०) 1 मयक 2 इन्द्रवज्र नामक र्
 वीरबहूटी, मन् मोर ।
बर्धासि (वि०) [बर्ध + ईयमुन्, बर्धासि] बहुत ।
 वा पुराना ।
बर्धासि (वि०) [बर्ध + ईयमुन्] बौद्ध करने वा
 —तप क्रमा देवमीडा आनीद्वर्धीयो मही भा
 १०।२०।७ ।
बर्धोर्धोर्धम् [ब० त०] शरीर का बल ।
बलना [बल् + युच्] प्रभाव, फिटान ।
बलितम् [बल् + क्त] काली भिर्ब ।
बलम् अन्न का मयह कर्पकेय बलजान् पुत्रपता—र्
 १।४।७ ।
बलम्: [अव + लभ् + अच्, भागुरियने अकारलोप
 लभ् रेखा ।
बलभित्ति: [म० त०] ऊपर का कमार ।
बलयम् [बल् + अयच्] समुदाय ।
बलि: [बल् + इन्] 1 तह, सुरी (लाल पर) 2 पेट
 ऊपर के भाग में तह 3 चोरी को मूठ रालच्छा
 अचितबलिभित्त्यामरे कलानहस्ता मेघ० ३।
 मय० —बलिम् सुरिया और मफेद बाल (को बु
 का बिल्कु हूँ), —शायः बाल—संघ० १।१० ।
बलक [बल् + क] 1 बूझ की छाल, बकल 2 यज्ञ
 की साल 3 बरख । सम० कूट अमार का
 बालम् (नपु०) बकल की बनी हुई पोधाक ।
बलकलि (वि०) [बलक + गिन्] 1 बकल
 वाला (बृक्ष) 2 बकल से आच्छादित ।
बलक [बल् + अच्, स्वायं क्तृ] करने वाला, ना
 बाह्य ।
बलको - 1 बल + ईच्, वृद् ५] 1 बनी, दीपकों

बनाया गया मिट्टी का डेर 2. घरीर के कुछ भागों में सूजन 3 बायोकि महाकवि । सम०—अ, अज्य अदि बायोकि का विरोधन, — भौमव्, —रति बनी ।

बल्लभमणि कोशकार ।

बल्लभजन स्वामिनी, प्रिया ।

बल्लभ. शाखा, रहनी—अज्यकमूल मुषनादिप्रप्रेममहीप्र-भोगैरिचिकीनबल्लभम्—भाग० ३/८/२५ ।

बल्लभोत्र पान्थम् हविनी को उपयोग में लाकर जगदी हाथी को रकड़ने की रीति मान० १०।० ।

बल्लोक्त (वि०) [बल्ल + क्त + क + क्त] 1 अत्रिभूत 2 वश में किया हुआ ।

बल्लोभूत (वि०) [वल्ल + भू + क्त] आत्माकारी, वश में हुआ ।

बल्लयम् [वल्ल + यन्] 1 जो वल्ल में किया जा सके 2 लीय ।

बल्लना [वल्ल + वृत् + टाप्] एक प्रकार का कठामुषय होर ।

बल्लहस्त (वि०) अग्नि में उग्रहून—प्राग्गयाज्यमसकृद्ब-टकृन्म् वि० १/४/२५ ।

बल्लम [वल्ल + वृत्] 1 घेरा 2 दालचीनी के वृक्ष का पत्ता 3. लपटी (निचियों का एक आभूषण) 4 रचना, निवाम करना । सम०—सखन् तम्, टेट ।

बल्लम्लोकी बांयल ।

बल्लमिह. [व० व०] एक प्रकार का मधुमेह ।

बल्लु [वल्ल + उन्] 1 घी, मूत्र (जैसा कि 'बलोघार' में), 2 घन, दीन, रम्य, जवाहर 3 माना 4 जल । सम० उल्लभ शीघ्र, —धारिणी पर, पृथ्वी, धारः गज्रा, भय भविता नक्षत्र, रोहिष् अग्नि ।

बल्लोघारा टट के निमित्त विष् जाने वाले यज्ञ के अग्न में उग्रहूत हवि की अवनत घाग ।

बल्लि. (पु०, स्त्री०) [वल्ल + नि] 1 बसना, रहना 2 मृनाशय 3 भांगि, पेड़ । सम०—कर्मन् (मपु०) बनीया करना, कोष्ठा मृनाशय, —विलम् मृनाशय का विवर, छिद्र, ग्द ।

बल्लु (मपु०) [वल्ल + लुन्] 1 वास्तुविषया 2 बीज 3 वन-धाम्य 4 सामथी (जिससे कोई वस्तु बनाई जाय 5 अत्रिकल्पना, योजना । सम०—अभात् (अ०) ठीक समय पर, तत्र (वि०) बन्तुगिष्ट, विषयपरक, निर्देशः 1 विषय सूची 2 एक प्रकार की भाग्नी, —पुष्कः नायक—अथवा मद्दलु पुष्प बहु-भागात् विक्रम० १।२, —भाक्ः वास्तुविकता, —भूत (वि०) सारद्वल, लघुपूर्व, लघावं, —विनिष्कः अदल-अदल का ध्यापार, —वर्तिसम् (अ०) परि-स्थितियों के कारण, —शुम् (वि०) अवास्तविक, —विचरि वास्तुविकता ।

बल्लम् (वि०) 1. बायुतम 2. अवेसाकृत वनवान्, 3 थे गान्, अधिक लुम्बु(वि०) सेवान् वनसोऽग्नि स्वाहा तं० उ० ।

बल्लु [वल्ल + अल् + टाप्] बदी, दरिया ।

बल्लुनमङ्क [व० तं०] जहाज का टूट जाना ।

बल्लिष्णु [वल्ल + षण्] 1 किसी, पीठ 2 बौद्धो रथ, वनकार या चतुष्कोण रथ ।

बल्लि [वल्ल + नि] 1 अग्नि 2 अठारामि 3 पाचक अग्नि 4. सवारी 5 यजमान 6. मारवाही जन्तु 7. लीन की सख्या । सम०—उष्वात् वनिमय उष्का,—कीष् दक्षिणपूर्वी दिशा—कोष, दामानि, बल्लम् स्वय अग्नि की पिता में बैठ कर आत्माहृति करना—वीक्षन् शोना, —भारकम् पानी, बल, केशवर्ष केसर, कुकुम्, जाफगन, केश्वर दाहलस्कार, जलदग्धि शिवा, —साक्षिन् जनि का साक्षी करके ।

बल्लितस्तुक्क जाव बना देना, अग्नि में जला देना ।

बल्लि (अ०) अदा० पर०) सूचना ।

बल्लोपवाक्यम् दो ध्वनितों की भावपीठ, बल्लुता और उत्तर ।

बल्लोवाक्यम् तर्क सारम्, न्यायसार ।

बल्लयम् [वल् + यत्, वल् + क्त] 1 बल्लय 2. उक्ति 3 भादेव 4. समाई । सम०—आलम्बः बने-बने शब्दों से युक्त भाषा,—बह् विज्ञान में लकने का होना, —परितमार्ति (स्त्री०) बल्लय की मूर्ति, विवेकः लेखाधिकारी, हिसाब-किताब रखने वाला अधिकारी, सारथिः अधिवक्ता, किसी की ओर से बोझने वाला ।

बल्लिष्णु (वि०) [वल् + षिष्णु वल् + क्त तस्य लोपः] 1 बाकपट्टः 2. शब्दों से पूर्ण (पु०) 1. बला, बोलने वाला 2. बहुस्वति 3. विष्णु 4 होता ।

बल्लु (स्त्री०) [वल् + विल् + दीर्घ] 1 भाषी की देवता सरस्वती । सम०—अपेत (वि०) गुंता,—आलम्बणी 1 सरस्वती के प्रसाद को प्राप्त कराने वाले श्नु मन्त्रों का लम्बू 2. एक वैदिक श्रुति का नाम, उल्लरव बल्लय की समाप्ति या उपसहार,—केलि, —केली बुद्धि की चतुर्धाई के युक्त वास्तुलाय,—पुष्क-कोरी वास्तुपीठ,—वीक्षः विदुषक, डिठोला, —विनिष्णु किसी उक्ति के प्रबोधन या केषान्नी-उष्काकर्म वाक्यनिमित्त विवर सुतरां विविधायां विनिष्णोकार हर्ष० ५, —वल्ः बाणी का पराठ,—बल्लयम् बाणी की चतुर्धाई,—वारीष्कः अधिभक्ति के पराठ को धार कर जाने वाला व्यक्ति, बाणी में पारङ्गुत, —वल्ः (वागमट) 1. वायुर्वेद विषय का प्रसिद्ध लेखक 2 अक्षकार सारथ का एक प्रमेता, विष्णु (वि०) तर्क और बुद्धिवादी देने में प्रवीण, विनिष्णु उचितता

के द्वारा प्रस्तुत,—विस्तारः बाणिवस्तार, बाहुप्रपञ्च, बहुभाषिता, सन्तकञ्च सोपालम् उक्ति, व्ययवाचक,
—सन्धः वातजो बन्तुता, बहुविध भाषण, स्तम्भ
(वि०) जिसकी बाणी चक गर्द है, जो बोल नहीं सकता।
बाणवित्तु (वि०) [वच् + विच् + तुच्] जो स्वस्वर पाठ
की व्यवस्था करता है।
बाणवर्तितः [वृष्ठी अलुक् समाल] 1. बाणी का स्वामी
2 वेद—महा० १४२१।९ 3 एक कोषाकार
का नाम।
बाणवर्तितश्चिन्धाः तन्ववातिक के प्रयोग का नाम।
बाण्य (वि०) [वच् + ष्यत्] 1 बहने जाने योग्य 2 अग्निधा
द्वारा प्रकट अर्थ 3 निन्दनीय। सम० विद्म
(वि०) विशेषणपरक, अतिशय कटोचित, अग्निधा
गणित के द्वारा दुर्बोध उक्ति, बाण्यवाचकः गन्ध जीर
अर्थ की स्थिति।
बाणित (वि०) [बाण + इतच्] पक्ष्यकृत (जैसे कि
बाण)।
बाणित् (वि०) [बाण + इति] 1 पक्षी प्राणिवाजिनिके-
वित्ताम्—महा० ७।१।१६ 2 सात की संख्या।
सम०—गन्धः एक वृक्ष का नाम,— विष्ठा बड़ का
वृक्ष, गुलर।
बाह (वि०) [बट + अच्] बड़ का वृक्ष। ट (पु०)
त्रिला। सम० भृशुकका बाह।
बाह्यहृत्परम् सौह पाठों की दिया जाने वाला चारा।
बाह्यहारकः समुद्री दानव।
बाह्य [वच् + पञ्] ध्वनित—बाणवर्तित् समासकृतम्
—कि० १५।१०। सम०—अन्धः बनने की आवाज।
बाह्य (वि०) [बा + क्त] 1 हवा से उड़ाया हुआ
2 इच्छित, अभिलषित, क्तः 1 बापु 2 बाप की
अधिष्ठात्री देवता 3 गरीर के तीन दोषों में से एक
4 गठिया 5 मोटी की मूत्रक 6 बापु सन्ना, गरीर
से बापु का निकलना। सम०—अहः बराम का पेड़,
अकाल सोप—वातापामोहमिति कि विनाशानुस्य
ध्वान्निजाव मुद्रय स्पृहामन्तान्—रा० ष० ५,
—बाह्यम् एसा भवन त्रिममें दो कमरे हो एक का
मूह दक्षिण की ओर दूसरे का पूर्व की ओर,—अहार
(वि०) जो बाप के हैं। जारे जीवित रहता है,—सोप
सरोर में बापुप्रकांष के कारण हुआ रोग अक्षय
परकार से वांछाकार चिह्न लगाना षट् अहार का
पार, पुरीश केरु में मुक्कबूर नामक स्थान पर
देवता, एष बाण, सन्ध्याः सुधी नामी।
बाह्यव्यय (वि०) [द्वितीय अलुक्] पुक् मानने वाला।
बाह्यसह (वि०) गठिया रोग में ग्रन्थ।
बाह्यिक (वि०) [बाण + टक्] 1 मोटापा या बाणी से
ग्रन्थ 2 मूद्यामदी 3 बाणवित्तु 4 बाणक पक्षी।

बाह्यव्ययनामा भीमसिद्धों के आक्रमण का उत्तर देने
वाला वेदान्त का ग्रन्थ।
बाह्यव्यय [वच् + विचन्] बाह्यव्यय, सद्योत का उपकरण।
सम० क्लृप्त डोलक बजाने की सक्ती।
बाह्यकम् [बाह्य + क्त] सद्योत का उपकरण।
बाह्यव्ययम् हुठ।
बाह्यव्ययम् तैमिरीय साखा का शीतसूत्र।
बाह्यव्ययम् विविध रण का कम्पल।
बाह्यव्ययः जुलाहे की सक्ती।
बाह्य (वि०) [वच् + क्त] 1 उतारा हुआ, युका हुआ
2 उद्भवन किया हुआ 3 गिराया हुआ। सम०
ब्रह्म कुला,— बाह्यम् (पु०) 1 रासज जो विष्टा
पर निवेश करता है 2 वह व्यक्ति जो भोजन के
लिए अपना गोश या बन्धवली का उद्धारण देता है,
बुद्धि (वि०) वह बादल जो पानी बरना चुका
है। मेघ०।
बायो [वच् + इञ्, क्रीच्] बायवी, बड़ा हुआ। सम०
अल्प स्रावक का पानी।
बाय (वि०) [वच् + ण अथवा वा + मन्] 1 बाया
2 उल्टा, विपरीत, विरोधी 3 क्रूर, सटोर 4 हुष्ट
5 मनोरम,—म 1 कामदेव 2 साप 3 छाती, एन,
ओडी 4 निषिद्ध कार्य (जैसे मुरगान), मन्
1 मयति, दौलत 2 दुर्भाय, विपत्ति 3 कमनीय
बन्तु। सम० अक्षुी (स्त्री०) मुन्दर स्त्री, कामिनी,
—इतर (वि०) रायि,— कुलि वार्ध कोय,—मयना
(स्त्री०) मनाहर ओवी वाली स्त्री, स्वभाष (वि०)
उत्तम अरिचयुक्त व्यक्ति—निरीध कृष्णपकृत
गुण्युक्त बायव्यभावा कृष्णा नदाम च भाग०
१।३।६२, हस्त बकरी के गले का निरर्थक स्तन।
बायव्येभ्यम् सामयज समह जिसका नाम उसके प्रवर्तक
अधि कामदेव के नाम पर पड़ गया।
बायव्येभ्यः (वि०) [बायन + च्चि + क्त + क्त] बीना बना
हुआ, कद में छोटा बनाया हुआ।
बायव्येभ्यः वाक्य की विद्या जो कौनो के निरीक्षण से
जानी जाती है।
बायव्येभ्यः हाथों के बेहरे का एक भाग भाग० १०।१।
बायव्येभ्यः 1 जो बापु बाकर जोधित रहता है 2 साप।
बायव्येभ्यः बायुप्रदेश।
बायव्येभ्यः रट्ट, पानी निकालने का यन्त्र।
बायव्येभ्यः पानी की सुट्टी।
बायव्य (वि०) [वच् + विच् + स्वर] हटाने वाली,—कम्
1 हटाना, रोकना 2 चिन्त, बाधा 3 दरबाना,
किराय,—क 1 हाथी 2 कवच 3 हाथी की सूँठ
4 अकुश। सम० कृष्णः एक षट का नाम,
—दुष्णः पीपे की एक जाति।

वारसि: [वार् + सि] समुद्र ।
वारि (नपु०) [वृ + इञ्] 1 पानी 2 तरल वा पिचला हुआ वा बहने वाला पदार्थ । सम०—**वृट:** सौं के चारों ओर की बाईं, पश्चिमा, विष्वः षट्टान का मंडक, --अव-स्य, साम्बन्ध दृष्य ।
वार्षी [वरष + ञ्] शरार का विशेष प्रकार, वार्षी मदिग पीला—भा० १।१५।२३ ।
वार्ष 1 समुद्रतट, समुद्रवेला 2 अग्नि 3 किवाड का वन ।
वार्तावृक्ष } 1 चर 2 फूल 3 नृतवाहक ।
वार्तावन }
वार्ताकर्मन् (नपु०) सेती और मूर्ती पालन का व्यवसाय ।
वार्तापति नियोजक, काम देने वाला, स्वामी ।
वार्तापनीत्याय मीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार विवाह यदि मुख्य सामग्री के साथ उपयुक्त न लगे तो उसे महापक सामग्री के साथ ओषध दिया जाय - भा० सू० ३।१।२३ पर शा० भा० ।
वाहरेन् 1 रेशम 2 जल 3 सलिमावर्त लक ।
वाहैकम् बरमात का दिन ।
वाहैकम् एक प्रकार का नमक ।
वाह्यैकम् 1 एक पत्ती 2 बड़ी बकरी ।
वाह्युकाण्डम् रेत से स्नान करना, शरीर पर रेत मलना ।
वाधात (वि०) शिव, श्रुतिभाजन, स्मृतिभाजन ।
वात [वत् + धञ्] 1 सुगन्ध 2 रहना 3 आवाह 4 एक दिन की यात्रा 5 बामना 6 स्वल्प, आकृति । सम०—**पथेय** आवासरपत्र का परिवर्तन, प्रस्ताव, मरण ।
वातना [वात् + वृत् + टाप्] (कर्मि०) प्रमाथ, प्रचलन ।
वातनामय (वि०) भाव तथा भावनाओं से युक्त ।
वातिल (वि०) [वात् + क्त] पवित्रोद्धत, शोभित, उन्नत मुद्रा या यात्रा ई० २।१।१९ ।
वातरः, -रन् [वात् + अर्] दिन, रः 1 समय, शरीर 2 एक नाम क. नाम । सम०—**कल्पका** रात, कृत्, अक्षि सुवे ।
वातवि 1 इन्द्र का पुत्र यमन्त 2 ज्वन् 3 बालि ।
वातवेध [वातवी + इह] व्यास का नाम—महा० १।१।५९ ।
वातस् [वत् + णिच् + क्त] 1 वरष 2 कन्द 3 पर्वा । सम०—**उपकम्** वरष को निचोड़ने पर उसके निकलना हुआ पानी को प्रेतारामों को ज्वहृत किना जाता है—**वृत्** आधमयाध, वरष प्रदान करने वाला देव ।
वातिलकम् रत्न, शिखर, मूय ।
वातिलक्यारत्नकम् एक रत्न का नाम (यह ज्ञानसाक्षि के नाम से भी प्रसिद्ध है) ।
वातु (पुं०, नपुं०) [वत् + वृत्] 1 भवन बनाने के

निर्मित नियत भूमिसम्पत् 2 कामास 3 समाप्तवन सम०—**कर्मन्** (नपु०) 1 भवन निर्माण करना, भवन निर्माण का प्रारम्भ, आरम्भ वास्तु कला, भवन निर्माण का प्रारम्भ वा अभिकल्प, वैश्या भवन की अभिव्यञ्जनी देवता, विद्या स्थापत्य कला, भवन-निर्माण विज्ञान,--**विद्यात्मन्** भवन उत्पत्ता ।
वातसुक (वि०) यज्ञ भूमि पर अवशिष्ट रही सामग्री उवाचोत्तरतोऽभ्येत्य मयेव वातसुक वपु—भा० १।५।६ ।
वात्स दिवस, दिन ।
वाह [वृ + धञ्] 1 से जाने वाला 2 दुली 3 भार-वाहक 4 घोडा 5 बेल 6 भैया 7 सवारी । सम०—**वार** वृटमवार, विपु भैया, कृत् रवदान, रच को हलकने वाला—**त्ववाहवाहोभितपथेयसक** -ने० १।६६,—**वाहकम्** कपू रा० २।५।२६, **वाहम्** (पु०) अग्नि ।
विराज पक्षियों का राजा, वाज पक्षी ।
विक (वि०) [व० म०] 1 जलशैव 2 यज्ञसन्त ।
विकच (वि०) [विकच् + ञ्] 1 विना हुआ, खुला हुआ 2 फेला हुआ, बसेरा हुआ 3 केशकृत्, 4 चमकीला, देदीप्यमान—**चन्द्रामुविकचप्रकथ**—रा० २।१५।१५ सम०—**व्ही** (वि०) उज्ज्वल ही से युक्त, अनिन्द्य सावध से सम्पन्न ।
विकर्षित (वि०) [विकर्ष + इत्] खुला हुआ, विहा हुआ ।
विकटः क्लेश, -इम् 1 रसोली 2 चन्दन, 3 सफेद सखिया ।
विकृता जलनत धारें ।
विकृतं (वि०) [वि + कृ + वृत्] बाधा डालने वाला—**राजस** व विकर्ता—रा० १।१।१३० ।
विकृच (वि०) [व० क०] कचशील, जिसके पाव डिररु इकर न हो ।
विकृतात्मा [वि + काङ्क्ष + कर्त् + टाप्] 1. निष्पत्ति उक्ति 2 इच्छा न होना 3. तकोच ।
विकर्ष [वि + कृ + ध्यत्] वृह, बहुकार, अविमान ।
विक्राज [वि + काङ्क्ष + वृत्] उज्ज्वलता ।
विकृति (वि०) बड़े पैठ वाला, उमरी हुई तीव्र बाला ।
विकृतर (वि०) जिसमें कोई लम्बी लकड़ी न लगी हो ।
विकृ (तना० उभ०) बदलाना करना, कलकृत् जमाना जमाने इति भाषार्थः --**विकरिष्यन्ति**—रा० २।१।७७ ।
विकृत् (वि०) [वि + कृ + क्त] 1 परिवर्तित, बदला हुआ 2. अपुत्र, कपूरा 3 समाप्तिक 4 वाचकर्म-वचक 5. विकरत, -लम् (नपुं०) 1 परिवर्तित 2. रोग 3. अक्षि 4. बर्षावर्ष—**नपुं०** १।२।४७ 5. दुष्कृत्य—रा०—७।१५।१४ ।

विषट्निताम्बा 1 एक कवयित्री का नाम 2 डा० राघवन रचित 'एकाकी' ।
विष्णु [वि + ङ + क्त] 1 सृष्टा 2 आमास 3 गर्भदाय 4. श्मृपन (आ० में) ।
विष्वक् [वि + क्व + क्त] 1 भोजन में विरक्ति 2 अन्वय ।
विष्णुसोमस्य (वि०) जिसकी सोमाएँ वसित की गई हैं ।
विष् (मुदा० पर०) 1 उडेलना 2 (ठकी सोम) जाह भरना ।
विषि [वि + ङ + क्त] कुछ चीज पितरो को प्रमन्न करने के लिए बसेरो गया चावल ।
विषिरालम् दे० 'विषिर' ।
विष्वक् (आ० आ०) 1 बुविधा का वर्णन करना 2 विचार करना ।
विष्वक् [विष्क् + क्त] 1 उत्पत्ति — भा० ११२५। २७ 2 मान लेना, उचित 3 उपदेश, कल्पना ।
विष्वक् (वि०) [विष्क् + क्त] 1 तन्पर, व्यवस्थित 2 सहाय, कथित 3 विष्वक् ।
विष्वक्सारका धूमकेतु, पुच्छलताग ।
विष्क् (आ० आ०) पराक्रम दिव्याता ।
विष्क् [विष्क् + क्त] 1 बुद्ध स्वर्, उदास स्वरापात 2 जन्म कुण्डली में लग्न से तीसरा घर ।
विष्क्वितम् [विष्क् + क्त] पराक्रम, धीर्य ।
विषिषा [विष् + ष + टाप्] 1 शीत, आघात, हानि 2 लोप ।
विष्क् [वि + षी + क्त] 1 विक्री 2 विक्रयमय्य 3 मण्डी । सम० चम्पू विक्री की दस्तावेज बीच बाजार ।
विष्क् [वि + कीट् + क्त] 1 मेल का संदान 2 खिलना ।
विष्क् (पु०) [विष्क् + क्त] जो महापता की पुकार करता है ।
विष्क् [वि + क्त + क्त] शीघ्र — भा० २।४।१०५ ।
विष्क् [विष्क् + क्त + टाप्] भीषण, कायरता भवति हि विष्क्वता सुपोऽङ्गवानाम् शि० ७।४३ ।
विष्क् (मुदा० पर०) 1 दवाना 2 उछालना 3. (बन्धु) सुकाना ।
विष्क् (वि०) [विष्क् + क्त] विन्नागित, प्रसारित होनाया गया ।
विष्क् [विष्क् + क्त] 1 अवहोना (वेसा कि 'समय विष्क्' में 2 विष्कार ।
विष्क् (वि०) [व० म०] जिसकी धकान दूर हो गई है ।
विष्क् (वि०) [व० स०] निष्प्राण, मृतक ।

विष्क् (वि०) [व० स०] रोग में मुक्त ।
विष्क् (वि०) [व० स०] जिसका आचरण निष्क है, धृतिन आचरण में युक्त ।
विष्क् (पु०) [विष्क् + क्त] को धारण करना, धारो र या मृति धारण करना ।
विष्क् [व० स०] लडाई का इच्छुक ।
विष्क् (पु०) [विष्क् + क्त] पृष्ठ मन्त्री ।
विष्क् [वि + अट् + अट्, पनादेश] 1 मोग 2 अचपवा कोर । सम० — आस (पु०) जा जाने से बचे हुए उच्छिष्ट भोजन को करता है, कीवा ।
विष्क् (वि०) [विष्क् + क्त] बाधाओं को हटाना ।
विष्क् (अदा० आ०) 1 कटना, गोपना करना 2 प्रवृत्त करना 3 मोचना, अटकल लगाना ।
विष्क् [विष्क् + क्त] लोडना ।
विष्क् (वि०) [व० स०] चन्द्रहीन, चन्द्रमा में रहित ।
विष्क् (आ० पर०) 1 करना, धाम खाना 2 भूल हो जाना मलती करना — हविष्य व्यवहारेण वषट्कार मूल्य द्विज — भा० ९।१।१५ ।
विष्क् (वि०) [विष्क् + क्त] भ्रान्त, विचलित — म स्व धर्म विष्क् मन्त्रप्रेर भ्रा० ५।१२।१५ ।
विष्क् (वि०) 1 मूर्ख, 2 निर्णय करने में अज्ञानी ।
विष्क् (वि०) कवयत्री, जिसके पास विष्क् बल्लभ न हो ।
विष्क् (वि०) [विष्क् + क्त] 1 पचष्ट, मरीचाम से भटका हुआ 2 अचकृत, अन्या किया हुआ ।
विष्क् (वि०) [विष्क् + क्त] अन्ध, परिष्कृत, अशुद्ध, — विष्क् शि सक्वस्यट्ट - यो० मू० ६। ७।३८ पर गा० भा० ।
विष्क् (वि०) मरिच, मरुत् पुष्प ।
विष्क् (वि०) [विष्क् + क्त] गया हुआ, सजाया हुआ, रचबिरगा ।
विष्क् [विष्क् + क्त] 1 विचार, चिन्तन 2 देख-भाल, चिन्ता, चिन्तन ।
विष्क् [विष्क् + क्त + टाप्] दे० 'विष्क्वितम्' ।
विष्क् [विष्क् + क्त] मधेयवीर्य ।
विष्क् [विष्क् + क्त] हाथ पैर हिलाना, प्रयास करना ।
विष्क् [विष्क् + क्त + टाप्] 1 प्रयास 2 वति 3. संघर्ष ।
विष्क् (वि०) [विष्क् + क्त] 1 बीग हुआ, फटा हुआ 2 तीका हुआ, बाँटा हुआ 3 चितकचग 4 समान किया हुआ 5 मूल 6 उबलन आदि लेप किया हुआ । सम० — आहुति आहुति देना — भङ्ग करके, औषधसम्पत्ति सम्बन्धीपासना करना जिसका नैर्गत्य भङ्ग हो गया हो — अर्थात् कची करना

कमी न करना, —अंतर (वि०) जिसकी प्रगति में बाधा पड़ गई है, मज (वि०) जिसने सुरापान छोड़ दिया है ।

विच्छेद [विच्छिद् + क्त] भेद, प्रकार ।

विच्छुत्थन् [विच्छुद् + स्तुट्] विखेरना, छिन्काना, बुर-कना ।

विच्छन्न (वि०) [व० सं०] जिसके पहिये न हो, चक-हीन (रथ) ।

विच्छन्ना (वि०) गर्मिणी ।

विच्छन्न (वि०) [व० सं०] जलहीन, जहाँ पानी न हो ।

विच्छन्न (वि०) 1 जीर्णोर्ध्व, टूटा-फूटा 2 विध्यस्त, उच्छिन्न ।

विच्छय [विञि + ञच्] 1 जीत, प्रताह 2 एक विविष्ट मूहमें 3 तीसरा महौना 4 एक प्रकार का संव्यमूह ।

सम०—अभिल (वि०) जीत (फल) से प्रोत्साहित, —इच्छ सेना की एक विशेष टुकड़ी ।

विच्छिन्न (वि०) [व० सं०] जिसकी मूल तथ्य हो गई हो ।

विच्छिहीर्षा [वि + हृ + सन् + ञ + टात्] इधर-उधर घूमने या खेलने की इच्छा ।

विच्छिन्मिका 1. सीस लेने के लिए मूह खोलना 2 जम्हाई लेना ।

विच्छिन्नत [विच्छन् + क्त] 1 जो जम्हाई ले चुका है 2 जम्हाई लेने वाला ।

विच्छिन्ना एक कर्चिणी का नाम नीलोत्पलदलधामा विञ्जिका नामज्ञानता । दूधबे रक्षिना प्रोक्ता सर्व-सुखता सम्बन्धी ॥ (उस कर्चिणी का जब तक यही एक श्लोक उपलब्ध हुआ है) ।

विज्ञानम् [विज्ञा + त्पठ्] 1 ज्ञान का अंग या वृद्धि 2 इन्द्रियातीत ज्ञान ।

विज्ञानिकम् एक बौद्ध लेखक का नाम ।

विज्ञानस्कन्ध बौद्ध दर्शन के पाँच स्कन्धों में से एक ।

विज्ञेय (वि०) [वि ज्ञा + ञ्यत्] 1 जानने के योग्य तन्त्रेय 2 जिसकी जानकारी प्राप्त कानी चाहिए 3 जिसका ध्यान रखना जय ।

विजय (वि०) [व० सं०] जिसमें डोरी या अ्या न हो (धनुष) ।

विजयान्ता 1 हल्दी, हरिद्रा 2 हल्दी का पीसा ।

विजय (वि०) उत्तम, सुन्दर, मनोरम—केयूरकुम्भट-किरीटविटकुचेरी भाग० ३११५१०७ ।

विजय [विट + वा + क] सता, बेस (जैसा कि 'भू-विटय' में) ।

विजयम् (वि०) [वि + ङ् + ञ्यत्] नकल करने वाला—परममन्त्रकर्मविजयम्करात्मन्—परमवि का ठाँववासी ।

विजयम्बन्ध [विजय् + षत्] दिल्ली की पीठ, उपहास की वस्तु ।

वितर्क [वितर्क + ञच्] 1 विषया अनुमान 2 इरादा ।

सम०—कवी अनुमान के क्षेत्र के अन्तर्गत ।

वितान्-वन् [वितन + वन्] 1 साधियाना, चंदोया 2 राशि, डेर 3 बहुतायत 4 अनुष्ठान 5 विभाजित ।

वितानकः [वितान + कन्] राशि, डेर ।

वितार (वि०) [प्रा० व०] 1 जिसमें तारे न हों (भाकाश) 2. दूधकेतु के सीर्षभाग से रहित ।

वितुम् (वि०) [वितु + क्त] वतुष्ट, तपुष्ट ।

वित्तविद्यालयम् मृत्युदान उपहारों का वितरण ।

विद्वत् (वि०) [विद् + क्त] 1 जानने वाला 2 समझदार ।

विद्वित्त्वम् (वि०) [व० सं०] 1. जो अपने मापकी जानता है 2 प्रसिद्ध ।

विद्वुरः [विद् + क्त] वेता, ज्ञाता ।

विद्वुरः दे० विद्वुरः ।

विद्वुषी जानने वाली, समझदार स्त्री ।

विद्वम् (वि०) [विदह + क्त] 1 परिपक्व 2 दस 3 मूरा, ईषरस्त, कुल-कुल लाल 4 बला हुआ, मरणाभूत 5. पचा हुआ । सम०—परिक्व (स्त्री०) क्युर पुष्पों का सम्यक—मृदान्धलयम् एक द्रव्य का नाम, क्वम् (वि०) दाम्नी, शकट्ट ।

विद्वम् दरवाजे की कुञ्जी ।

विद्व (वि०) [व० सं०] जिसके मगजी वा झारक अथवा झिन्तरी न लगी हो, (कवच) ।

विद्वम् । प्रारम्भ का शब्द । 1 विद्या करना 2 प्रथम ।

विद्वुरीति } महाभारत के पाँचवें पर्व में ३३ से ४०
विद्वुरप्रकाशर } तक ब्रह्माय । जहाँ मृतारण्य ने नीति पर व्याख्यान दिया है ।

विद्वुर संख्य (वि०) जो दूर से सुनाई दे ।

विद्वुरिः (स्त्री०) शोषणी के अग्नि या सीधन ।

विद्वेष (वि०) विदेष में उत्पन्न ।

विद्वेषुमितिः (स्त्री०) मोक्ष के कारण अन्न मरण से अर्थात् शरीर से छूटकारा ।

विद्वेषुः [विद्वेष + ञ्यत्] अतिरिक्त-ज्ञान ।

विद्वेषालम्बिकिका हृषीकेश एक नाटक ।

विद्या [विद् + ष्यत् + टात्] 1. दुर्गा देवी 2 सरस्वती देवी 3 ज्ञान, विद्या । सम०—अस्तुर (वि०) जो ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्तमका हो—विद्यातुराचार्य व सुषं न विद्या—नीति—ईशः शिव का नाम, —शोकानुभू, —शोकसंग्रह—शोकसाम्य, पुस्तकालय, —कवन् वाहु की शक्ति, —आम् (वि०) विदित, पढ़ाविद्या, —वैशः ब्रह्मचर्य की किसी विद्विद्यथाका के अन्धापकों की काशकमानुसार सुधी ।

विद्वेषालम्बम् (व०) एक अन्न में, विद्वेषी यैसी ठेकी से ।

विद्योत (वि०) [विद्युत् + घञ्] चकापीय करने वाला, चमकाने वाला ।

विद्युति [वि + दृ + क्तिन्] दौड़ जाना, भाग जाना ।

विद्या (वि०) [वि + दा + क्त, मध्य धात्वम्]

1. ज्ञानरूप, निहारहित 2 गिरास, उदास—इविद्य-विद्यापराजिति—हृष० ७ ।

विद्यव्योम्भी } विद्यान् पुरुषो की सभा चिद्वनस्पदी ।

विद्यत्सवत् }

विद्यत्सभा }

विद्यान (वि०) [दा० व०] निर्धन, धनहीन ।

विद्यमं (वि०) 1. अथर्षी, अन्यायी 2 त्वयंकार्यं जो अच्छे मालय से किया गया हो ।

विद्यमिन् (वि०) [विद्यमं + इति] 1. भिन्न वर्ग से संबंध रखने वाला (विप० सघमिन्) 2 अथर्षी ।

विद्या (बृहो० उभ०) सीन करना, उपभोग करना ।

विद्या [वि + या + क्तिव्] उच्चारण ।

विद्यान् (पु०) [वि + या + तुच्] भाया, भ्राति ।

विद्यालम् [विद्या + लम्] 1. प्रयास, प्रयास 2 उपचार

3. भाग्य, निवर्ति 4. विधि 5 (वाटक०) विभिन्न रसो का सघर्ष ।

विधि [वि + धा + क्ति] 1. उपयोग, प्रयोग 2 अनुष्ठान, अध्यास 3 प्रणाली, रीति, ङग 4 नियम 5. क्रान्त (विप० अर्धवाट) 6 धर्मकृत्य 7 स्वधार 8. आचरण 9 सुष्टि 10. निर्माण 11 भाग्य 12 हाथी का बाहार 13. बंध 14 उपाय, तरकीब। सम० अस्त.

विधिपरक मूल वाट का उपसहारण-क भाग, - अर्थ विधि का आशय, कर (वि०) विधान को कार्य में परिणत करने वाला, -यज्ञ विधिविधान के अनुसार अनुष्ठित यज्ञ, -स्वल्पम विधि का स्वरूप, लोच विधान का अतिरूपम, -विधयं, - विधयस्तं दुर्भाग्य, -विधमिन् (स्त्री०) विधिमिन् के प्रत्यय

-बलात् (अ०) भाग्य से, -विधिव्याट्पूरणपुर्वोत्तम् मेघ० ६ ।

विधु [व्यप् + क्त] 1 चन्द्रमा 2 कपूर 3 रासस 4 प्राय-विद्याद्विती । सम० परिष्कृत चन्द्रग्रहण, मन्त्रकर्म चन्द्रमा का परिवेष, -यज्ञ धान्द महीना ।

विधुर (वि०) [विनाटा पुर्वस्य अच् समा०] 1 विषय, अस्वभाव-प्रतिफलार्थं विधुर-कि० १७।५१२ अस्वत्, अस्वत्त - इयेषु विधुरोर्वः- महा० ७।१५।१५ ।

विधुरित (वि०) [विधुर + क्त] विधुरं, काव्यहीन ।

विधुम् (वि०) [दा० व०] दूर से रहित ।

विद्यारम्भ [विधु + षिच् + क्त] विरस्तार करना, रोचना ।

वि० (वि०) [विधि + क्त, ५] विद्वत्क, फलक-रहित ।

विद्यन् (वि०) [वि + नञ् + क्त] विद्युक्त नया, विद्यमान ।

विद्यमिन् (वि०) [विद्यमं + क्ति] पराजने वाला (साम मन्त्रो के पाठ करने को एक रीति) ।

विध्य [वि + धी + क्त] 1 दब - शीलमूलविद्याय वास्यामि विनय परम् महा० १।१०६।१९२ कार्य-लय ।

विद्यवर्कनेत् (नपु०) [व० त०] निर्देय, शिष्या ।

विद्यालकाल [व० त०] विपति क, समय ।

विद्यालक्षणेत् (वि०) [व० स०] जो नाश का कारण हो ।

विद्यालुत् (वि०) [विद्या + लु + क्त] 1 अन्धत्व, रहित, मूक 2 विद्युत्, एकाकी ।

विद्याभाष. विद्योग-व्यक्त देवादेर् मध्ये राधवाय विद्या-भवम् रा० ७।५।५ ।

विद्यायक [वि + धी + क्त] नेता, अथर्षी ।

विद्यिहत् (वि०) [वि + ति + क्त + क्त] दुर्गबहारघन्त, जाह्न, बिकलीकृत ।

विद्यिव्यमना [वि + ति + नञ् + यञ् + टाप्] मकल्प, निश्चित उपसहार, कुछ स्वीकार करने शेष को निकाल देना

-यै० म० १०।५।५५ पर वा० भा० ।

विद्यिवर्धेत् (वि०) [वि + ति + वर्ध् + क्त] परास्त करने वाला, हराने वाला ।

विद्यिवृत् (च०) उभ० (बाण) खोडना, (बाण) मारना ।

विद्यिव्योक्त (वि०) [वि + ति + यञ् + क्त] काम देने वाला, स्वायी ।

विद्यिव्योग [वि - ति यञ् + क्त] 1 प्रयोग, उपयोग 2 सहमन्त्रक ।

विद्यिवृत् (वि०) [वि + क्त + क्त] 1 पैदा हुआ, निकल जाया 2 संपूर्ण हुआ, पूरा हुआ ।

विद्यिव्येद्यम् [वि + ति + क्त + क्त] उदान, निर्माण ।

विद्यिवृत् (वि०) [वि + ति + क्त] 1 रक्ता हुआ, पड़ा हुआ 2 नियुक्त 3 अडा हुआ ।

विद्यिवृत् (वि०) [वि + क्त + क्त] 1 मुकरा हुआ, न अपनाया हुआ 2 छिपा हुआ, छिपाया हुआ ।

विधी (भा० पर०) दूर रहना, दूर करना—विधीय मय-मारमन्—महा० १।३।१२९ ।

विधीत (वि०) [विधी + क्त] पैदाया हुआ ।

विधीतैव. सामान्य वेद्यम् ।

विधीतः [वि + धी + क्त] विध्य, छात्र विधीतविद्ये-पुत्रा ।

विधीतः } श्रीवाणीत, मनोरजन में व्यस्त, आशोद-विधीतः } प्रिय ।

विधीतः } मनोरजन का स्थान, धन बिहार ।

विधीतः [विधि + क्त + क्त] रक्षता, करना ।

विधीतः [विधि + क्त + क्त] 1 (अस्व) मारल करना 2 शीघ्र में चुकेपना 3 वधि, (अर्थों को) विधि ।

विप्लव. [प्र० व०] 1 निप्लवता, तटस्थता 2 वह दिन जब कि भन्नामा एक पक्ष से दूसरे पक्ष में सफल बनकर जाता है।

विप्राहः [विपद् + प्रह्] एक प्रकार का बाण, तीर विपाट-पञ्जरेण—सि० २०।१७।

विप्राहित (वि०) [विपद् + पितृ + क्त] फाटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

विप्लवः [वि + प्लु + क्त] कार्यभार ग्रहण, व्यापार, व्यवसाय— न तत्र विपण कार्य शरकरद्वयम हि नत्—महा० ३।३३।६६।

विप्राधिपति (व० ल०) क्यविक्रय या व्यापार के द्वारा जीवनिर्वाह करना।

विप्राधिपती (व० ल०) मन्थी, बाजार।
विप्लव्यु (वि०) 1 जिससे व्यवसाय छोड़ दिया है 2 तटस्थ, उदासीन।

विप्रासि [विपद् + क्लित्] अवमान, समान।

विप्रासिवाहः [व० ल०] विप्रासि का सम्यक्।

विप्रासिधीरि (वि०) [व० म०] कान्तिहीन, निष्प्रभ।

विप्रासिधत् (वि०) साहसी, बलशाली।

विप्रास्यः [वि० + परि + इ + क्त] मिथ्याबोध, गलत-फहमी—ईशादोपनिषद् विप्रास्योऽस्मिन्—भा० १।१।३०।

विप्रास्यः [विप्रा + अन् + क्त] 1 ह्रास 2 मृत्यु०। म० उन्मत्ता, उठती उपमा।

विप्रास्य. [वि० + प्लु + क्त] कुम्हलागा, मृत्प्रज्ञा। म० हास्य (वि०) परिश्रम में भयकर,— बोधः अग्नि-मांस, अजीर्णः।

विप्रासिक्त (व०) [व० स०] 1 मृत्यु 2 जगती जन्तु।

विप्रासिक्त (वि०) [प्र० व०] दुस्स्थहीन, जिसमें पीर न हो।

विप्रासिप्रोष (वि०) [व० म०] मन्थी यर्दन वाला।

विप्रासिष्ट (वि०) [वि + प्लु + क्त] जिसे पूरा आहार न मिला हो, जिसे पूरा पोषण न मिला हो।

विप्रासिक्त्य [वि + पू + क्त] सबाध, दुर्गंध।

विप्राः [व् + रन्, अत इत्यम्] भाग्यपद का महीना। म०—बाह्यण माता पिता को बारज सन्तान।

विप्राह (तना० उ०) नियत करना, (साक्षी के रूप में) स्वीकार करना।

विप्राकारः [विप्रा + ह् + क्त] 1 विविधरीति 2. दुष्कृत्य, गलत तरीका।

विप्राकृतिः [वि + प्र + क्त + क्लित्] परिवर्तन।

विप्राकर्षः [विप्रा + कृप् + क्त] 1 शीघ्रकर दूर करना 2. (म्या० में) से व्यवहारों के बीच में कोई स्वर को उन दोनों की शिथिलता दूर कर।

विप्रासिधत् (वि०) [म०] मिथ्या उत्तर देना।

विप्रासिधत् [वि + प्रति + पद् + क्लित्] 1 विरोधी भावना 2. गलती, वृद्धि।

विप्रासिधत् (वि०) [विप्रासि + पद् + क्त] परस्पर समुक्त, आपस में मिले हुए। म०—वृद्धि (वि०) शिथ्या विचार या शरणा रखने वाला।

विप्रासिधत् [वि + प्रति + इ + क्त] अविश्राम,— यदि विप्रासिधत् होय—महा० १३।११।५५।

विप्रासिधत् (वि०) [वि + प्र + क्त] प्रसिद्ध, यशस्वी।

विप्रासिधत् [विप्रा + प्लु + क्त] लग करना, लगाना।

विप्रासिधत् (वि०) [विप्रा + लम् + क्त] 1 अपमानित 2 अतिशयत।

विप्रासीय (वि०) [विप्रा + ली + क्त] तितर-वितर किया हुआ, छिन्न-भिन्न किया हुआ।

विप्रासिधत् (वि०) [विप्रा + ल्पु + क्त] मुगमगः। लुटेरा, शूक।

विप्रासीयः [विप्रा + लोक् + क्त] बहुमिया, चिड़ीमार।

विप्रासिधत् [विप्रा + वद् + क्त] असहमति, मतिभ्रमता।

विप्रासिधत् (वि०) [विप्रा + वत् + क्त] प्रवास के लिए गया हुआ, जो परदेश में भला गया है।

विप्रासिधत् (वि०) [विप्रा + ह् + क्त] 1 पटक दिया हुआ, गिराया हुआ 2. कुचला हुआ, रौंदा हुआ।

विप्रासीय (वि०) [विप्रा + हि + क्त] शिथिल, विरहित।

विप्रासीय (स्त्री०) बोलने समय मुह से निकले धुक के कण।

विप्रासीय [वि + प्लु + क्त] पीठमग, बहलाका का विनाश।

विप्रासीय (वि०) असमय बोलने वाला, हलचलने वाला।

विप्रासीयः [वि + प्लु + क्लित्] विनाश, ध्वस्त।

विप्रासीय (वि०) [व० स०] कन्धहीन, जिसका कोई सगा-सम्बन्धी न हो—प्रातुर्विप्रासीय सुतान् विप्रासीय—भा० ३।१।६।

विप्रासीयः [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विप्रासीय [वि + बुध् + क्त] 1 वृद्धिमान्, विद्वान् पक्ष 2 देवता 3. चन्द्रमा। म०—अनुचरः दिव्य सेवक,—जाघतः देवनिधर,—इतरः राजान्।

विभिन् (वधा० उभ०) अतिक्रम्य करना, उत्पन्न करना ।
विभे- [विभिद् + घञ्] लिङ्गजन, (भौहो) लिङ्गोभवा ।
विभी (वि०) निभय, निबर ।
विभीषण- एक राक्षस का नाम, रावण का भाई ।
विभूषा सर्वोपरि तथा, यश, कीर्ति ।
विभूष (वि०) [वि + भूष् + क्त] मुझा हुआ, मुका हुआ, दमन किया हुआ ।
विभाषणम् [वि + भू + णिच् + स्पृट्] 1 विज्ञान 2 प्रकाश 3. दृष्टि, दर्शन ।
विभाष्य [विष् + णिच् + ष्यत्] विदानीय, विचारणीय ।
विभूति [वि + भू + क्तिन्] 1 लक्ष्मी 2. शोभ्यताएँ—शेखर एता मनवी विभूती --भाष० ५।१।११२ ।
विभ्रंस [वि + भ्रम् + घञ्] 1 अतिशार, बार-बार दस्त आना 2. उलटपटे, अस्तव्यस्तता ।
विमल (वि०) [प्रा० व०] अशुभान से मुक्त ।
विमर्दनम् [वि + मृद् + क्त] 1. सुवन्ध, मुछ्छ 2 परिश्रयण, चबाना, पीसना 3 शयन ।
विमर्दिन (वि०) [विमृ + णिन्] बर्वाहियन्, बनिच्छुक, विमनस्क ।
विमत्सा (वि०) सापथोत्त में बराबर ।
विमानः [वि + मा + क्त] 1 सुखी पालकी 2. जहाज में रहने वाली किस्ती । सम० बह्मः पालकी उठाते बाजा ।
विमत्सुब्धि (वि०) बुरी राह पर बाध रखने वाला, बुरे रास्ते को देखने वाला ।
विमृशित (वि०) [वि + मृश् + क्त] अन्वेषणरहित, शान्त-चित्त, निरपेक्ष ।
विमृशतीमन् (अ०) मोनमन करके ।
विमृशताम (वि०) [प्रा० व०] चाप के प्रभाव से मुक्त ।
विमृशसंभ (वि०) [व० सं०] चबराया हुआ, बेहोश ।
विमृशन् (वि०) [व० सं०] चबराया हुआ, बेहोश ।
विमृशित (वि०) [वि + मृश् + क्त] 1 पूर्ण, सब मिला हुआ 2 असा हुआ, मूर्छा में हस्त ।
विमृश [वि + मृश् + क्त] अनुविन्दन, सोचविचार, --भाष० ५।२।२।२१ ।
विमोघ (वि०) विम्लुल चल रहित, निष्कल ।
विमप्लवाण [व० ट०] बिजली ।
विमप्लवः [व० ट०] अन्तरिक्ष ।
विमलम् (अ०) अन्तराल पर अवकाश देकर ।
विमन् (वि०) [वि + यम् + क्त] चालकरहित, जिसमें चालक न हो ।
विमन् (वधा० वा०) 1. (प्रतिष्ठा) भय करना 2. कटना 3. बटाना ।

विमृष्य [विमृष् + क्त] विमृष्ट होकर, पृथक् एक एक करके स्थगित ।
विमोघनम् [विमृष् + क्त] 1 विधोष 2 बटाना ।
विमोघि मिथ जाति की स्त्री—महा० १३।१४५।५२ ।
विमोघि (वि०) [प्रा० व०] 1 नीच कुल में उत्पन्न 2 अन्वेषणरहित ।
विमोघिन् पत्नी, परिदा ।
विमोघा एक नदी का नाम ।
विमोघाकृति (वि०) [व० सं०] जिसकी प्रजा उदासीन हो, निष्कन्त हो ।
विमोघ (वि०) विस्तृत, विस्तारयुक्त, दूरतक फैला हुआ ।
विमोघा 1 बुरा मार्ग 2 उपमार्ग, छोटी गली ।
विमोघस्य बहु बान या विषय जिसकी खर्चा बन्द हो गई हो ।
विमोघसिन् (वि०) नीरम, उकता देने वाला ।
विमोघ [विमृष् + क्त] ब्रह्माण्ड, विश्व । सम० - कुत (विमृष्टुन्) स्वर्गीय पितरो की एक श्रेणी ।
विमोघ, मम् [प्रा० व०] राज का तीसरा पहलू पृथक् ब्रह्मवाचाय विराय ब्रह्मरक्षाम्—रा० ५।२५ ।
विमोघ (वि०) [वि० + व + णिच् + क्त] शोर-गुल कराने वाला हुन्नागुला यन्त्रवाले बाजा ।
विमोघ (वि०) [वि + णिच् + क्त] जिसे दस्त काल दिये गये हो, शाली काया हुआ ।
विमोघ [विमृष् + क्त] विरेचन, दस्त करवाना ।
विमृ (ग्री०) [वि + मृष् + क्त] शाली पीठा ।
विमृ (वि०) तोरीय, अन्वय ।
विमृष्यन् एक बल शूरा जहाँ उपमेय विम्लुल सयान न हो ।
विमोघ [वि + मृष् + घञ्] 1 कैपरीय, बाधा, विघ्न 2 प्रतिक्रम 3. शत्रुता 4 कलह 5 असहमति 6 सकट । सम० आभास बहु आकार बहु विरोध प्रतीत होता हो, परन्तु अस्तुत, कोई विरोध न हो,--उपमा कैपरीय पर आधारित उपमा, - बरिदार. 1. विरोध का दूर होना, मामलस्य स्थापित होना 2. प्रतीयमान विरोध की व्याख्या ।
विम्ल एक प्रकार का सौप ।
विम्ल (वि०) [वि + म्ल + क्त] (चाब) भरा हुआ, तन्व 2. अकुचित 3 चढ़ा हुआ । सम० बोध (वि०) जिसकी बुद्धि परिपक्व हो गई हो ।
विमोघनम् [वि + मृष् + क्त] प्रकाश, भयक, दीप्ति ।
विमोघिन् [वि + मृष् + क्त] चमकीला उज्ज्वल ।
विम्ल (वि०) [प्रा० व०] जिसका कोई विरोध चिह्न या लक्षण न हो 2 (वीर) जिसका विधाना बृक गया हो ।

विलम्ब (वि०) [विलम् + क्त] 1 लटकना हुआ
 2 विररबद्ध (पत्नी) ।
विलासवधम् [वि + लस + धिच् + क्त] कलाने बालने,
 विलास का कारण ।
विलम्बम् (म्वा० आ०) सहारा लेना, निर्भर करना ।
विलास [विलम् + धञ्] 1 मञ्जीबता, हास्यभाव 2 काम-
 कला, लयटना ।
विलास्य [वि + ली + णिच् + क्त, क्तृच् + क्त]
विलासयन् } शील देना, विलासेना, (पत्नी की प्रति)
 मिला, देना ।
विलम्बु (वि०) [प्रा० व०] मित्र मित्र का ।
विलम्बित (वि०) [विलम् + क्त] मना हुआ, लिया
 हुआ, लया हुआ ।
विलेपिन् (वि०) लम्पदार, पिपका हुआ ।
विलीन (वि०) [विली + क्त] मन में बँटाया हुआ ।
विलोप (प०) [विलोप + णिच् + क्त] डाक, लुटेरा ।
विलोभनीय (वि०) [वि + लुभ् + णीय] ललचाने
 वाला, मुग्ध करने वाला ।
विलोचनवधः दृष्टि श्रेय, दृष्टि का परास ।
विलोभपाठः विपरीत क्रम में मन्त्र पाठ ।
विलोभविधि किसी काम के विपरीत अनुष्ठान का विधान
 करने वाला नियम ।
विषयिनाम्पराधाव्ययम् एक प्रकार का व्यङ्ग्यार्थम् ।
विषयवन् [वि + वद् + क्त] कलह भगवा, मुकदमे
 बाजी ।
विषया [प्रा० सं०] 1 नृजा 2 हथकड़ी, बेडी ।
विषयम् [वि + व् + ञच्] पाला लोकर ।
विषयित (वि०) [विषय + इत्] अननुमोहित,
 अन्वीकृत ।
विषयम् (म्वा० पर०) कदना, उल्लसना, कादना ।
विषयस्त्री (स्त्री०) [विषय + स्त्री] सूर्य देव की
 नागी ।
विषयवन्धम् दुर्लभित की बेधाम्बा ।
विषयक (वि०) [विषय + क्त] जिनमें समझ लिया,
 या मही अनुष्ठान लया लिया विषयक परम्यको
 भाव० ५१२६/१७ ।
विषयिता [विद् + क्त + ञच् + टाप्] जानने की दृष्टा ।
विषयिताव्ययः वरमूमि का अवीकृत ।
विष् (म्वा० क्वा० उभ०) 1 म्यान से तलवार निकालना
 2 कपड़े में (बाकी की) बाँध फाड़ना ।
विष्कृतम् [विष् + क्त] अनाहत, जिसके धाब नहीं हुआ ।
विष्कृतरीष (वि०) अपने पराक्रम का प्रदर्शन करने
 वाला ।
विष्कृत (वि०) [विष् + क्त] वह विपत्ते कोई वस्तु
 से ली आय, वञ्चित, विरहित ।

विष् (म्वा० जा०) क्वान्तर करना उसे सह विपत्तौ
 म्वा० १२/१७४१२२ ।
विषयसंघम् [विष् + क्त] क्वान्तरण ।
विष्कृता [व० सं०] मूर्ति ।
विष्कृतवपरा निर्धय करने में अक्षमलता ।
विष्कृतविरहः अज्ञान, ज्ञान का अभाव ।
विष् (मुदा० पर०) 1 रमयण पर प्रकट होना 2 लक्ष्य
 होना 3 आ पडना 4 (किसी कार्य में) म्लत हो
 जाना ।
विष् (प०) [विष् + णिच्] 1 वस्ती 2 लयति,
 दोलन ।
विष्कृतनीय (वि०) [वि + षच् + णीय] प्रष्टम्,
 पुत्रन के योग्य, शत्रु किसे जाने के योग्य, जिस पर
 शत्रु की जा सके ।
विष्क (वि०) [वि + षच् + ञच्] 1 सुकुमार, मृदु
 2 वस ।
विष्कृतवपरी शत्रु के समाने से उत्पन्न बाणों की स्वयं
 करने की विशेष शक्ती-वृत्ती ।
विष्कृतम् [विष् + क्त] 1. पृष्ठ 2. काटना 3 वध
 करना, हत्या करना ।
विष्कार (वि०) [विष्क + वा + क] 1 प्रवीण 2 बुद्धि-
 मान्, 3 प्रविष्ट 4. साहसी 5. शौचवीर्यवन् षच्
 ऋतु सम्बन्धी 6. वक्तृत्व शक्ति से रहित ।
विष्कृतमुक्तम् उतम परिवार, प्रविष्ट वध ।
विष्कृता [विष्क + टाप्] क्वान्तरण ।
विष्कृतवपरी उप्रति, सुचार ।
विष्कृतवपरी विरोध करतव्य, विविष्ट व्रमंशुव या वर-अनु-
 पदान ।
विष्कृतवपरी एक प्रकार का हेत्वाभास ।
विष्कृतवपरी 1 विष्कृता शालक शब्द 2 सम्मान सूचक
 उपाधि ।
विष्कृतवपरी (अ०) अनुपाल की दृष्टि से निःस्वैभ्यो देव-
 देतेभ्यो दान विष्कृतवपरी — म्वा० ११/२ ।
विष्कृतवपरी निर्मल मन या उज्ज्वल बुद्धि वाला ।
विष्कृतवपरी (नि०) सम्पत्ति, सदाकारी ।
विष्कृति [विष्कृ + क्त] 1. षच् परिशोध करना
 2 वरतिवत् ।
विष्कृतवपरी 'देवी' का विशेषण ।
विष्कृति (वि०) [विष् + क्त] 1. रचना हुआ 2. विष्कृ-
 त 3 विरा हुआ (बर्न जाति) ।
विष्कृतवपरी (वि०) [व० सं०] 1. वक्तृत्व शक्तिहीन,
 मूक 2 मृत ।
विष्कृत [वि + षच् + क्त] धारण करने का स्थान ।
विष्कृतवपरी (वि०) विपत्त या पुष्ट बाणें करने
 विष्कृतवपरी । शाला ।

विषयबन्धुत्वं (वि०) याचित् पूर्वक सोने वाला ।
 विधिः [विष् + धिन्] मृत्यु ।
 विषयगोचर (वि०) सबके लिए सुगम, जहाँ सबको पहुँच हो ।
 विषयशोकः विषयतामा, ईश्वर ।
 विषयव्यारः विषय का सहारा, ईश्वर ।
 विषयवेदाः पितरों की एक अंशों, देववर्ग ।
 विद्वद्भूमिः अंगडियों में पढ़ने वाला कोठा ।
 विद्वत्प्रातः मूत्रकुण्डलता, मूत्रावरोध ।
 विद्वत्पङ्कः ज्योतिषार, दन्तो का लगना ।
 विद्वत्पुत्र (वि०) मक काकर रहने वाला, गुबरान्ता ।
 विद्वत्पत्न्यः पत्नी ।
 विद्यतन्त्रम् विद्यविज्ञान, (सर्पादि विषैले जन्तुओं का विष दूर करने की प्रविष्टि) ।
 विद्यवत् (वि०) [वि + पञ्च् + वत्] 1 अक्षर, विपका हुआ 2 अतिविस्तारित ।
 विद्यावनम् [वि + वच् + विच् + व्भ्युट्] कष्ट देना, सताना ।
 विद्यवन् (वि०) [प्रा० व०] 1 जो पूरा न बँट सके 2 अनु-पयुक्त । सम०—बाध कामदेव,—नेत्रम् शिव की तीसरी आँसु—नेत्रः शिव का एक विशेषण,—वृत्तम् छद जिसके चरण सम न हों ।
 विद्यव्य [वि + सि + अच्, पत्यम्] 1 ज्ञानेन्द्रियों द्वारा मूर्हीत होने वाला पदार्थ 2 भौतिक पदार्थ 3 इन्द्रिय-जन्य आनन्द । सम०—विद्वन्मति किसी बात को मुकर जाना,—पराङ्मुख नैतिक विषय सुसोंसे विमुख ।
 विद्यवीकरणम् [विद्यव + प्त्वि + कृ + स्युट्] किसी वस्तु को चिन्तन का विषय बनाना ।
 विद्यव्य (वि०) [वि + सह + यट्] जीतने के योग्य ।
 विद्याव्य [विष् + कानच्] 1 चोटी 2 चूची 3 अपनी प्रकार का उतमोत्तम ।
 विद्युत्समयः वह समय जब दिन रात का मान बराबर होता है ।
 विद्युत्सम् (स्वा० क्पा० पर०) 1 समर्थन करना, प्रबल बनाना 2 आलस होना, का माना ।
 विद्युत्कार दासों का स्वामी, बेवार में पकड़े मजदूरों का स्वामी ।
 विद्युत्कारिणु बेवार में पकड़ा गया मजदूर जिसे कोई पारिवर्तिक भी नहीं दिया जाता है ।
 विद्युत्कारिणु [विद्युत् + आधिन्] मूखर, जो मल खाता है ।
 विद्युत् [विष् + वृच्] 1 विदेव (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) में दूसरा 2 जिन 3 पावन पुत्र 4 स्तुतिकार 5 एक वस्तु 6 अथवा मलचपुत्र (इसका अतिक्रमणी देवता विष्णु) है 7 वैभ का यहीना । सम०

—काम्ना विभिन्न पीशों के नाम,—हस्त पटीलित राजा का नाम,—बर्होत्तरपुराणम् एक उपपुराण का नाम, त्रिधा 1 तुलसी का पीश 2 लक्ष्मी का नाम—विष्णु के बहरे ।
 विद्यव्यसति (वि०) [विष्यच् + गति] सर्वत्र जाने वाला अथवा विषय में प्रविष्ट होने वाला ।
 विद्यव्यस्यो [विष्यच् + लोप] यवराह, बाघ, विधन ।
 विद्यवृद्ध (वि०) असमान, असमकप ।
 विद्यवृद्ध (वि०) नितात यवराया हुआ ।
 विद्या कमल नाम (= विद्या)
 विद्युत् (सुदा० पर०) (आ० भी) (त्रे०) प्रकट करना, भेद खोलना, (समाचार) प्रकाशित करना ।
 विद्युत्पुत्र [विष् + वृच् + यत्] जो मूलतः किये जाने के योग्य है, मृष्टि, सत्ता का रचना—कालो बसोक्त-विद्युत्पुत्र विमर्गसक्ति भाग० ७११, २२ ।
 विद्युत् [विष् + वृच्] विनाश, मृष्टि का लोप ।
 विद्युत् (स्वा० पर०) कौलाना प्रसारित करना ।
 विद्युत्पितृ [विष् + पितृ] 1 रोगने वाला 2 फूट कर निकलने वाला 3 सरकने वाला 4 फँसने वाला (बैक की प्रीति) ।
 विद्युत्पुत्र [विष् + वृच् + यत्] बृह, कृप ।
 विद्युत्पुत्र [विष् + वृच् + यत्] दहाकना विद्यावना, वा-जना ।
 विद्युत्पुत्र [विष् + वृच् + यत्] 1 फोका, फँसी 2 एक प्रकार का कोठ ।
 विद्युत्पुत्रम् आचर्य का विषय ।
 विद्युत्पुत्र कल्पे मास की गत्य ।
 विद्युत्पुत्र (स्वा०) [वि + हृ + क्तिन्] प्रतिघात, अन-मारण, विफलता, भ्रमशांसा, मनोभि सौहेय प्रपञ्च—विद्युत्पुत्रपुत्रपञ्च कि० १०।११ ।
 विद्युत्पुत्र (अ०) [वि + हा + स्यच्] 1...के अधिक, के अतिरिक्त 2. होते हुए भी 3 सिवाय, छोड़ कर ।
 विद्युत्पुत्र प्रतिघात (वि०) जिसका विचार और निषेध दोनों किये गये हों ।
 विद्युत्पुत्र [वि + हृ + स्युट्] कौलाना, कौलाना ।
 विद्युत्पुत्र [वि + हृ + यत्] (वीणाशा) अग्निपत्र, (गार्हपत्य, गार्हपतीय और बलिष) ।
 विद्युत्पुत्रिणी गोचरनुमि, चरागाह ।
 विद्युत्पुत्रिणी (वि०) [व० सं०] उदास, विनम्रता जिसका मन बहुत ध्याकुल हो ।
 वीरिणोक्त सहरो का उठना, तरंगों से उत्पन्न हलचल ।
 वीरिणोक्तः सारवर्णिक ।
 वीरिणोक्त (वि०) ईश्यां द्वेषादि से मूख ।
 वीरिणोक्त (वि०) पुर्वी, पुत्र का इच्छुक ।
 वीरिणोक्त [व० सं०] बुरीर की पत्नी, मायिका ।

रक्षा [व० त०] शक्ति का दावा, बीरता जन्म कीति ।
 रक्षा (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर अटल, बृद्ध सकल्य वाका ।
 रक्ष [बीर + क्त] 1 'करबीर' नाम का पौधा 2 नायक 3 एक शिवलिंग का नाम ।
 रक्ष् [बीर + यत्] 1. विय 2. लोका 3 पुरुष, जनन - शक्ति 4 बीर, धातु । सम० - आधातम्, गर्धा - धान, - सुम्भ (वि०) चुनौती देकर युद्ध, शक्ति के बल पर धान ।
 रक्षुष [व० त०] सीमापत्ती युद्ध ।
 रक्षिमां [व० त०] ऐसी महक जिसके दोनों ओर बाह मगी हो ।
 र्क्ष [वृ + क्त] 1 रेंडिया 2 मूर्ध ।
 रक्षुत्स 1 रोस 2 गीदड़ ।
 रक्षय [व० त०] जाड़, देवज (बेरजा) ।
 रक्ष् [वृ + क्त] 1 कृपास्तरण 2 अविषयक ।
 रक्ष्य कर्मावध रचना ।
 रक्षुत्त (वि०) सुगों से सम्पन्न ।
 रक्ष्यम् (त्र०) जीविका के लिए ।
 रक्षुम्भ जीविका की व्यवस्था, जीविका का आधार ।
 रक्षम्भ [वृधा + प्रत्यय] केवल एक व्यक्ति के अपने उपभाग के लिए आहार ।
 रक्षिमा [वृधा ; आत्मा] बाल स्त्री ।
 रक्षुषति (स्त्री०) 1 कुट्टिनी 2 दाई, धानी ।
 र्क्षि (स्त्री०) [वृध् + क्त] 1 मायात चौट (युध् हिमायाम्) 2 भूमि का ऊँचा करना 3 लम्बा करना ।
 रक्ष् [वृ ; दन्, म्] गुच्छा, झुड़ ।
 र्क्ष [वृध् + क्त] 1 जल 2 भ्रमनिर्माण के लिए मूलक 3 नरकान्तु 4 शक्ति । सम० - लक्ष्मा मरदानी स्त्री, - लुम्बिन् (पु०) मिट्ट ।
 रक्षयाम् बाल माटी ।
 रक्ष् [वृध् + क्त] 1 नाकने वाका 2 बाल ।
 रक्षीकम् [व० त०] ओष्ठ की आरिता ।
 रक्षिपाल म्वाका, गहरिया ।
 रक्षर सीपद्वय का संविधान ।
 र्क्षि [वेत् + क्त] 1 फिर समुत्त की गई सपति जो पहले से ही हुई थी 2. जल प्रवाह, झरना ।
 रक्षुम्भ बाल का फुट्टा ।
 रक्षुष. बाल का बावक, बासबीज ।
 रक्षुम्भविषयिणी पक्षीस कहानियों की एक कृति ।
 र्क्ष् [विध् + क्त, क्तम् वा] 1 जान 2 विन्दुओं की पृथीत धर्म पुस्तक - अक्षय, यक्षुष, क्षायुष तथा अक्षयैव 3. 'कुक्ष' का गुच्छा 4. विष्णु । सम०

- अक्षययन्त्रम् बहु अवकाश का दिन जिस दिन वेद का पढ़ना निषिद्ध हो, साष्टक (वि०) 1. वेद के विपरीत 2 वेदाध्ययन के लोच से बाहर, - वस. वेदों के विषय में होने वाली बर्तनिक व्यक्तियों की बहुत वेदबाधरता: धर्म नाशयस्तीति वाक्य - भग०, भुक्ति ईश्वरीय धर्म का देवी सदैव ।
 रक्षिनेकला वेदों के चारों ओर को सीमा की बाँधने वाली रस्ती ।
 रक्षे (पु०) [विधा + क्तुन्, गुण] ज्योतिष का पारि - धायिक शब्द जिसका अर्थ है ग्रहों की स्थिति का निर्धारण ।
 रक्षेतिशब्द [व० त०] सीमा का उल्लंघन ।
 रक्षेतिम् (वि०) दिनार से बाहर रहने वाला ।
 रक्षेयस्ति [व० त०] जार, देव्या का पति ।
 रक्षेयानुत्त. [व० त०] देव्या का पुत्र, अर्धेय पुत्र, हुरामी ।
 रक्षेयम् [वेष्ट् + क्त] विद्याम, एक सिरे से दूसरे सिरे तक का सारा फेलाव ।
 रक्षेयिक (वि०) [विकार + क्त] 1. परिवर्तनीय 2 सत्य से सबद्ध - रक्षेयिकस्तीवसत्य तामसपथेत्सहृ विद्या - भाग० ३/५/३० ।
 रक्षेयम् विकार, परिवर्तन ।
 रक्षेयम् [विकृत + क्त] कपट, चोला ।
 रक्षेयम् [विजय + क्त] निर्जयता, एकान्त ।
 रक्षेयम् एक प्रकार का रत्न ।
 रक्षेयानुत्तम् यज्ञविषयक कुछ युध् ।
 रक्षेयिकम् [विदुर + क्त] विदुर का सिद्धांत ।
 रक्षेयिका [व० त०] आयुर्वेद शास्त्र ।
 रक्षेयस्ति: अस्मानता के कोनों पर आधारीत उर्ध्वगत प्राप्ति, हेवाभास ।
 रक्षेय (वि०) [विधा + क्त] रात परक ।
 रक्षेयहारिक (वि०) [व्यवहार + क्त] व्यवहारसिद्ध, कृद, प्रचलित ।
 रक्षेयारण्यदुषि केवल रक्षेयारण्य का विश्वव्यापकोक्त शब्द ।
 रक्षेयितम् [वेर + क्त + क्त] समुदा, द्वेष, विरोध ।
 रक्षेयम् [विद्या + क्त] धर्म या रंश का लोच ।
 रक्षेयस्तिशब्दम् सर्वहृदित एक काव्यरचना ।
 रक्षेयस्तिशब्दम् सातवां मन्वन्तर, वर्तमान समय ।
 रक्षेयम् [विशद + क्त] हिता भाग० ५/५/१५ ।
 रक्षेयस्ति [विवसत् + क्त] विषयवाचन ।
 रक्षेयिक: रक्षेय करने वाला, जिसे कार्य करने के लिए भाष्य होना पड़े ।
 रक्षेयस्तिशब्दम् (साठक०) रवमंचपर लम्बे-लम्बे कण भर कर झर-झर टुकलना ।
 रक्षेय: वावर्त, वेवट, वव्वट ।

अन्तः-विषयत्वेना, भ्रमप्यरेखा ।

अन्तःकर्म (वि०) अनिश्चित, निरंकुश ।

अन्तः [प्रा० अ०] इत्यन्त ।

अन्तर्गमना पत्रा गमना ।

अन्तर्गमना शब्द उच्चारण, स्पष्ट उच्चारण—हीनम्बन्धनया प्रेष्य—रा० २।६।१११ ।

अन्तिका 1 उत्पन्नता, उत्साहट--भाव० २।५।२२
2 विनाश--भाव० १।७।३२ ।

अन्तिकम् [वि + अति + कम् + क्तम्] उत्पन्न, अति-
कम्य—तयोर्म्यतिक्रम दृष्टवा—महा० २।१२।३९ ।

अन्तिकम् [वि + अति + क्तम् + क्तम्] 1 प्रतियुद्ध,
शत्रु से निवृत्त 2 विनिमय ।

अन्तिक (वि०) [अन् + क्त] 1 कष्टघ्नस्त, पीडित
2 सुख, इरा हुआ ।

अन्तिका [वि + अन् + आ + इ + क्तम्] अवगमन, पला-
यन, पीछे हटना ।

अन्तिका [वि + अन् + क्तम् + क्तम्] 1 प्रभाव 2 स्याति ।

अन्तिका [वि + अन् + आ + वि + अन्] आवरणस्थान,
सहारा ।

अन्तिका (भा० पर०) 1 प्रायश्चित्त करना 2 स्वल्प
हुना 3 दूर भगाना ।

अन्तिका [वि०] अनुचित योग सब काले वाला ।

अन्तिका [वि०] [वि + अति + अन् + पिच् + मिच्]
1. कुमारीयानी, कुम्हारिय 2. अस्वायी ।

अन्तिका [वि + अन् + क्तम्] (आ० में) कृपान्तर, दण्ड या
शत्रु का विधित्त में प्रत्यय न्या कर रूप बनाना ।

अन्तिका सर्व काट कर बची हुई राशि, निवस्योप ।

अन्तिका [वि + अन् + क्तम् + क्तम्] विनाश ।

अन्तिका [वि + अन् + क्तम् + क्तम्] (मीमांसा) दुर्क
रचना, विघ्नट रचना ।

अन्तिका (वि०) [वि + अन् + वा + क्तम्] दूर पार का,
दूरवर्ती । सम० अन्तिका शब्दों की एक रचना
प्राचीनी विद्यमें एक दूसरे से विद्युत्त पद्यों की मिला
कर एक शब्द बनाया जाय ।

अन्तिका [वि + अन् + क्तम् + क्तम्] परिव्राज्य ।

अन्तिका [वि०] उत्साह से पूर्ण ।

अन्तिका [वि०] दुर्कनकल्प से युक्त ।

अन्तिका [वि + अन् + क्तम् + क्तम्] निश्चित सीमा ।

अन्तिका [वि + अन् + क्तम् + क्तम्] निश्चित विकल्प ।

अन्तिका [वि + अन् + क्तम् + क्तम्] 1. लहरा 2 पक्षित
के घात या बल 3 व्यापार 4. बुद्धदमा 5 इषा,
रीतिरिवाज । सम०--अन्तिका (वि०) शारी, मुहूर्त,
—वाग्नि (वि०) जो प्रचलन के आधार पर तर्क
करता है ।

अन्तिका [वि + अन् + क्तम् + क्तम्] व्यापारिक केन्द्र-केन्द्र ।

अन्तिका [वि + अन् + क्तम् + क्तम्] 1 दूरी, पार्यन्त
2 प्रवेश, प्रदाना ।

अन्तिका [वि०] साय-साय दुःख योगने वाला ।

अन्तिका [वि०] विपत्ति का घर ।

अन्तिका [वि०] फंसाई हुई पृष्ठ वाला ।

अन्तिका (अ०) बाह्यो को फंसाकर तथा पैरों को पीडा
करके (सहा होता) ।

अन्तिका (तना० उग्र०) अविधवाको करना (दृष्ट०) ।

अन्तिका [वि + आ + क्तम् + क्तम्] 1 भेट, अन्तर
2 अविधवाकी ।

अन्तिका (वि०) (कुल की भाति) जिला हुआ, पूर्ण
विकसित ।

अन्तिका [वि + आ + क्तम् + क्तम्] विरोध, लड़न ।

अन्तिका [वि + आ + क्तम् + क्तम्] जिला-जिला कर
गासियों बना, धरंसेना करना ।

अन्तिका (वि०) जिस पर घी (या तेल) का छोटा
दिया गया हो (इसी अर्थ में अन्तिका (वि०))

अन्तिका (वि०) [वि + आ + पूर्ण + क्तम्] सुदृका हुआ
धक्कर छाया हुआ आभूषणजवत्कुम्हारो से
—नारा० ।

अन्तिका (वि०) [वि + आ + पूर्ण + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

अन्तिका [वि०] [वि + आ + क्तम् + क्तम्] सुदृका हुआ,
धक्कर छाया हुआ ।

व्यासब्रह्मा मृद भीरु व्यास को पूजा जो आषाढ़ी पूर्णिमा का होती है।

व्याससमाप्ती (दि० व०) वैयक्तिक तथा सामूहिक रूप से।
व्यूहागतबीजित (वि०) मृत, निर्जीव।

व्यूहा (व्या० भा०) 1 जीत लेना 2 दूर करना।

व्यूहगत (वि०) [वि + उप + र्म् + क्त] विघ्नान्त, समाप्त, मृत।

व्यूहविभागः सेना को निम्न-निम्न व्यूहों में बाँटना।

व्यूहक (वि०) विजयने एक काम हो।

व्यूहचरत्नम् मूर्ध्नि।

व्यूहसंभवा चित्तकवरी माय।

व्यूहकाला मधुर के आस-पास बोली जाने वाली भाषा।

व्यूहकाला - व्यूह [व्यू + क्, कल्प ट.] मानसिक चिन्ता कलाप इतमित च मानस कर्म उच्यते—गी० सू० ६।२।२० पर शा० भा०। सम०—चारणम् एक धार्मिक इत का चरण करना।

व्यूहकालाः अर्थात्वेद का एक काण्ड।
व्यूहकालाः अतिशयक या अत्यन्त का जीवन।

व्यूहकालम् लकोष एव नम्रतापूर्वक दिया गया उपहार।

व्यूहकालम् भावक की पीषा लगाना।

व्यूहकः पाद, जाड।

श

शब्द (व्या० पर०) उन शब्दग्रन्थों में स्मृति प्राप्त करना जो गायन के लिए निर्धारित नहीं किये गये—अप्रतीतेषु शब्दति - मं० सू० ७।१।१७ पर शा० भा०।

शक्ति (वि०) [शक् + क्त] ध्यान दिया गया या मान लिया गया 'जैसा कि "शक्तिप्रद" में।

शंख (वि०) [शम् + श्वत्] 1 प्रथमा के योग्य 2 ऊँचे स्वर से पठित।

शकटव्यूह एक विशेष प्रकार का मौनिक व्यूह।

शकुलावती 1 भुकीट, केचुआ 2 एक जड़ीबूटी (फटकी)।
शक्तिपञ्चक कालिकेय।

शक्य (वि०) [शक् + श्वत्] श्रुतिमधुर - उषय प्रियवर प्रोक्त - इति हलायुष दस० २।५।

शक्यकान्ठा पूर्व विद्या।

शकुनिविषयो, दोषारोपण करना या सदेह करना।

शकुनराचार्य वेदान्तदर्शन का महत्तम आचार्य, अद्वैतवाद का प्रवर्तक जिनमें ब्राह्मण्य धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए शक्यत की स्थापना की।

शक्यपुत्रकर्म (मधुनक्षत्री या मीढ आदि) कीबो का दक।

शक्यपुत्रता धर्मो वृक्ष, वैडी का वृक्ष।

शक्य [शम् + क्] शक का बना ककच। सम०—आर्षाः पक्ष का शुकवा या गोलाई का मोह, शकुकावर्त, ककच शक से निमित्त कड़ा, जैसा शक्यध्वनि के द्वारा संकेतित सम्य।

शक्य (मपु०) 1 ती 2 कोई बड़ी संख्या। सम०—अश्वः तजवार या डाल जो भी बन्धाशुनो से मुक्तजित हो, चरणा शतपदी, कनकनूरा, -शैवः चल्नी, -मधुषः चन्द्रमा, -शौषधः इन्द्र का विशेषण

शक्य [शम् + क्त] 1. दुष्यन्त, रिपु 2. विवता, हुराने वाला।
शक्य—मिथुन (वि०) शम्भुओं का भाव करने वाला,

—कृष्णम् रिपु का शत्रु, -लज्ज (वि०) शम्भुओं को मारने वाला।

शक्तिचक्रम् 'शक्ति की स्थिति से' शुभाशुभ जानने का एक मानक, चित्र।

शक्ति (वि०) [शप् + क्त] भाप दिया हुआ।

शक्यकरत्नम् शक्य उलगा।

शक्यपुत्रकर्म (म०) शक्य उठाकर (कहना या करना)।
शक्यकः पेटो, बर्तन—हर्ष० ४।

शक्यः [शक्य + शञ्] 1 आराध (श्रुति विधय और आकाश का वृष) 2. ध्वनि, रव (पक्षियों या विभिन्न प्राणियों का) 3. पद, शार्पक शब्द 4. व्याकरण 5. स्थिति लम्बध्वने कीलक्ये—रा० २।६३।११ 6. पुनीत प्रथम (योग्य)। सम०—अज्ञानम् पुनीत प्रथम, -इन्द्रियम् काम, शौचरः श्रावो का विशेषण 2. शक्य, -वेत्त-शक्यम् श्रुतिक विधेता, -संज्ञा व्याकरण का एक पारिभाषिक शब्द, -धा० १।१।१६८, -स्मृतिः (स्त्री०) ज्ञाना विज्ञान।

शक्यक (वि०) शान्त, स्वभाव से शान्तिप्रिय।

शक्यकान्ताः शान्ति के लिए शोचने वाला, शान्ति की शक्यत करने वाला।

शक्यनीच (वि०) [शम् + कनीच] शान्ति देने योग्य, मन को शान्ति प्रदान करने योग्य।

शक्यीकृतः वह शक्य जब कि शक्यी वृक्ष के फल खाता है।
शक्यीकृतम् 1. शिव की श्वाभा 2. स्कन्द का विशेषण।

शक्यी [शम् + शप् + टाप्] 1. लकड़ी या पीछट 2. जूए की कील 3. एक प्रकार की बीषा 4. वज्रपाप 5. एक प्रकार का अत्यधिकतापक उपकरण। सम०—शेवः, -सप्तः इती वहाँ तक कोई लकड़ी फेंकी जा सके।

शयनम् [धी+स्यट्] 1 सोना, लेटना 2. बिस्तार, साठ
3 सहवास, दोनसंबंध । सम०— शालिका सेबिका जो
राजा की शय्या बिछाती हैं,—भूमि: खवन कव, सोने
का कपड़ा ।

शरशेषः शयन फेंकने की दूरी का परास ।

शरथम् [शु+स्यट्] 1 प्ररक्षण, सहस्रता 2 शरभावार,
शरभाथम् 3 आवास, वर 4 विद्यामन्त्रक 5. आहत
कम्पा, हत्या करना । सम०—शालिः प्ररथपार्श्वं
पहूँचना,—आशयः गरथम्ह,—इ (वि०),—श्रव
(वि०) शरण देने वाला ।

शरथ्योत्सना [शरद्+ज्योत्सना] शरदुत् की शीतनी,
—शरथ्योत्सनाशुशुं शशियुनजटाभूटमकुटाम्—नौन्द्यं
सहरी ।

शरीरशिला शरीर की देवमाला ।

शरीरभासुः शूद्र के शरीर की अवशिष्ट भस्म ।

शरीरकारः, } शारीरिक दर्शन, देह का आकार-प्रकार,
शरीररक्षितः } सुरत, शक, शरीर का बीजबील ।

शर्करा [शु+करन्, कस्य नेत्यम्] 1 शर्से से निर्मित शर्कर
2 कण्डू 3 पत्थरो के टुकड़ों से बहुल भूमि 4 देव
5 ठीकरा 6 सुनहरी भूमि—निर्मितजलो मणि-
शुकरं रा० २।८।११६ ।

शर्कराल (वि०) [शर्करा+जलच्] कण्डू के कणों से
बुका (जैसे कि देतोले तट की हवा) ।

शर्मन् (वि०) [शर्मन्+इ] शरण देने वाला, प्ररक्षण देने
वाला ।

शरणा [शल्+आक] 1 शूटी, कीच 2 अमूलो—शाना-
कानशपाटीय—महा० ४।१३।२९ । सम०—शरीक्षा
विद्यार्थी की परीक्षा लेने की रीति जिसके अनुसार
पुस्तक में कहीं भी सलाका से सकेल किया जा सकता
है,—शुष्काः ६३ दिव्य जैन,—शर्मन् शल्य चिकित्सा
से संबद्ध एक उपकरण,—शर्म (पुं०) शरीर, शल्य-
चिकित्सक,—शिका शरीर में घुसे हुए काटे भागि
किसी पदार्थ को बाहर निकालना,—शर्मन् महाभारत
का नवी शब्द (पर्व) ।

शरणाभयम् इकरिस्ताल ।

शरणाशिका शर्मा, शय को ले जाने वाली पाठकी ।

शरणाशुकी एक प्रकार की मछली ।

शरथम् [शस्+स्यट्] 1 हथियार 2 मोहा 3 इत्यात
4 शीघ्र । सम०—शर्मन् शल्यशिका,—शिकित्तम्
शल्यशिका,—शुष्कारः हथियार चकाने का शब्दात् ।

शरथकाम्यकः लघुन, प्याज जैसी एक मोठदार कण ।

शरथकाम्य सम्भी की तस्त्री ।

शरथा परम्परा प्राय वेद का पाठ, किसी विशेष शाखा
द्वारा अनुष्ठित वेद पाठ जैसे शाकल शाखा, शाल्यशाख
शाखा, शाल्यक शाखा आदि । इय०—शरथ्ये वेद की

किसी विशेष शाखा १. पाठ का पढ़ने वाला विद्यार्थी,
—शाल्य शयु के कारण अर्थात् में पीठा ।

शारदुरपीठ शारदुराचार्य द्वारा स्थापित पाँच शास्त्राधिक
केन्द्रों में से कोई सा एक ।

शास्त्राचार्य वेद का एक अध्यापक ।

शास्त्रिकथयस्मृति शास्त्रिक्य द्वारा प्रणीत एक धर्मग्रन्थ या
विधि की पुस्तक ।

शातकल्य (वि०) [शातकतु+अच्] इन्द्र सबन्धी ।

शातलम् [शो+शिल्, शक+स्यट्] पैनाना, नेत्र करना,
धमकाना ।

शातल (वि०) [शम्+कल्] प्रभावहीन किया हुआ, ठूँठा
किया हुआ । सम०—शुभ (वि०) उपरत, मून
—नृपे शानपुत्रे जाते रा० २।६५।२४,—रक्ष्
(वि०) 1 बल रहित 2 निराश्रय ।

शार्ति (स्त्री०) [शम्+शित्] विनाश, कल । सम०
—शर्मन् पाप को दूर करने का कोई धार्मिक अनुष्ठान,
—शार्थन् एते वेद शर्षो का सत्वर पाठ जो पाप को
दूर करने वाले समझे जाते हैं ।

शापशत (वि०) शाप के दुष्टभाष से जकड़ा हुआ ।

शापशम् } शाप का उच्छ्वास करते समय दिये जाने
शापीवकम् } वाले पानी के छीटे ।

शाबरभाष्यम् शीमाना सूत्रों पर किया गया भाष्य ।

शार्थिन् [शम्+शिल्+इश्च्] पशु बलि देने का
स्थान ।

शार्थारिक [शम्भर+ठक्] बाड़ीयार ।

शारथ (वि०) [शरद्+अच्] चतुर, निपुण ।

शारद्वत 'रूप' का नाम ।

शारिभुङ्गकला एक प्रकार का पासा, शूलरज शेलने की गोद ।
शार्ई (वि०) [शार्+अच्] शिव से सम्बन्ध रखने
वाला ।

शारतकुपय, एक श्रुति का नाम ।

शारतकि पाणिनि का नाम ।

शारत (वि०) [शय+अच्] शरयोग से प्राप्त, शरयोग
सम्बन्धी ।

शारतम् [शाम्+स्यट्] 1 धार्मिक मिडाल 2 शरेश ।
सम०—शुक्र (वि०) शरेश का पालन न करने
वाला,—शरथकम् जाता का उत्सवचन करना ।

शारथम् [शाम्+स्यट्] 1 शरेश, आशा 2 पावन,
मिडाल, वेद का शरेश 3 शान का कोई विभाग
4 किसी विषय का नैदानिक पहलु—इय माँथ
शारथे थ विन्धतु—माल० १ । सम०—अशित
(वि०) शास्त्रीय नियमों के अनुकूल,—शम् (पुं०)
शास्त्रीय पुस्तकों का व्याख्याता,—शार्ति (वि०)
शय प्रकार के नियम या विधि से युक्त,—शार शरथ
के आकार पर दिया गया शर्क ।

सिक्खपासा: छोका लटकाने के लिए रखी ।

सिखा [सिम् + ख + टाप्] 1 दृष्ट 2. गृह के निकट विद्याभ्यास 3. उपदेश 4. सलाह । सम०—आचार (वि०) (गृह के) उपदेशों के अनुसार आचरण करने वाला ।

सिखल्लस [सिखल्ल + क्त्] 1. कस्तूरे के नीचे शरीर का बासल भाग 2 शैबचार में मुक्ति की एक विशेष अवस्था ।

सिखल्लस्य सिर के बालों का पुच्छा, चोटी बाधना ।
सिखिन् (वि०) [सिखा + इनि] 1 नोकदार 2 चोटी-बारी 3. ज्ञान की चोटी पर पहुँचा हुआ 4 अविद्यानी (पु०) 1 मोर 2 अग्नि । सम० कण. भाग की धिनगारी, —सु: स्कन्द का नाम, - मय्यु कामदेव ।

सिलालस्य 1. प्रस्तरमृदाय, पत्थर के द्वारा छापने की प्रक्रिया 2 सिलालेख, पत्थर पर मूढवाया हुआ अनुशासन ।
सिलालिखित सिलालेख, शिलालेख ।

सिलालित (वि०) पत्थर पर बनाया हुआ ।
सिलालेख पादस्मृति, फोन पत्र रोग ।
सिलालेख्य सिलकार का कारखाना, कारीगर के काम करने का स्थान ।

सिलालेखिन् (वि०) कारीगरी का काम करने जीविको-पार्जन करने वाला अर्थवि. शिल्पी ।

सिख (वि०) [सी + क्त्] 1 गुप्त, मगलमय, सौभाग्यसूचक 2 स्वस्थ, प्रसन्न, भाग्यशाली, (पु०) 1. हिन्दुओं के विदेव में से तीसरा 2 पारा 3 सुरा, लिपि 4 समय 5 तक्ष, छात्र । सम० ब्रह्मते शैबवाद का दर्शनवाचक, अर्धमणिवीरिका अप्यय-दीक्षित द्वारा रचित शैबवाद पर एक धर्म, —काम-सुचरी पाथनी का विशेषण, पश्चिम् मोक्ष, मुक्ति, शीघ्रम्, पारा ।

सिखलिया [सी + मन् + अङ् + टाप् धातोर्हित्यम्] मोने की दृष्टा ।

सिखिरवर्षित (वि०) सर्दों से टिड्डरा हुआ ।
सिखु: [सी + कु, लन्वङ्गाव, द्वित्यम्] 1 बच्चा, बाल 2 किसी भी जन्तु का बच्चा (बछड़ा, पिल्ला, किलोटना आदि) 3 छठें वर्ष में हाथी । सम० - मासम् (पु०) उट्टे ।

सिखमन्वर (वि०) विषयी, कामलोभय ।
सिखल्लिख्यन्त्, बुद्धियान् अन्वितयो द्वारा की जाने वाली निष्ठा ।

सिखल्लसत्त (वि०) विद्वान् पुत्रों द्वारा माला हुआ ।
सी श्लोकेश्वर बहुसंयोग से हुरी, फासला ।
सी श्लोकेश्वरि: (पु०) बहुसंयोग का अधिपक्ष ।
सीशर (वि०) 1 मोरमय, रचनीय 2 आनन्दप्रद, सुखमय ।

सीर्षकेशिक } (वि०) कांठी पर बढ़ाये जाने के योग्य,
सीर्षकेश } - सीर्षकेश सते राम त हृत्वा जीवय
द्विजम्—उत्तर० २।२८ ।

सीर्षकेश्य सारसभाष, टोप ।
सीर्षकेशुक दुपट्टा, साफा, पगड़ी ।
सुखल्लपसि: एक तोंटे के द्वारा अपनी स्वामिनी को मुनाई गई मत्सर कहानियों का संग्रह ।

सुखम् [सुप् + रक्, वि० कृत्वम्] 1 उज्ज्वलता 2. सोना पीलत 3 बीज 4. किसी बीज का सत् 5 पुस्तक-रचित, स्वीकृतचित । सम०—सुखम्, सूत्रसुखम् रोग, —बीज बीज का बीज ।

सुखल्ल [सुप् + सुक्, कृत्वम्] 1 उज्ज्वलता 2 श्वेत धम्मा 3 चाँदी 4 आँसू की सफरी का रोग । सम०—बीज-एक प्रकार का पोषा, —वेष्टु(वि०)पवित्र शरीर का ।
सुखल्लयम् एक मञ्जीन जिसके द्वारा आतिसबाजी का प्रदर्शन किया जाता है ।

सुखल्लयम् (पु०) विष्णु का नाम ।
सुखल्लयम् (वि०) मरणापर पर चलने वाला ।
सुखल्लयिका सुखन्दर ।
सुखल्लयिक हाथी का सूत्र ।

सुद्ध (वि०) सुद्ध + क्त] 1 जांचा हुआ, बाधभाया हुआ, परीक्षित 2. पवित्र, निष्कलक 3. ईमानदार, धर्माला 4 विद्युत्, शक्ति विद्युत् सुद्ध सिलालेख न हो (वि०) सिद्ध । सम०—सुद्धितम् मईन की वह स्थिति जहाँ कि जीव और ईश्वर का सापेक्ष मायारहित माना जाता है,—शोध (वि०) (वेदान्त०) विद्युत् ज्ञान से युक्त, भाव (वि०) पवित्र मन वाला, निष्कलक नाटक का वह भाग जहाँ केवल मन्कृत बोलने वाले पात्र ही दिखाई दे ।

सुद्धि [सुप् + क्त्] (गणित० में) शेष न छोड़ना ।
सुद्धयन्तुम् सौभाग्य, कल्याण, सम्पद ।
सुद्धयन्तु बनी का अध्ययन ।

सुद्धयन्तु सुद्धयन्तु जिसमें भीत यज्ञकार्यों की विधि गणनाशिका समाहित है ।

सुद्धयन्तु सुद्धी सौमी ।
सुद्धयन्तुम्, ऐसा रोना जिसमें जित् न भाव ।
सुद्ध [सिध + क्त्, सप्तसारायम्] 1. प्रकिय, सुराज्य 2 समीर ।

सुद्ध [सुप् + रक्, पु०] कस्य व. शीर्षक] हिन्दु समाज में चौथे वर्ष का पुत्र (बड़ा बाला है कि वह पुत्र के पैरों में उत्पन्न हुआ—पद्म्यां सुद्धोऽजायत—सु० १०।१०।१२।) । सम०—असुद्ध सुद्ध द्वारा दिया गया वा परोक्षा बया नोक्तम्, -ज (वि०) सुद्ध की हृत्वा करने वाला, -वृत्ति: सुद्ध का अन्वयार्थ, लोचनी: सुद्ध से सुद्धाया ।

सूर [सूर+अच्] 1. नायक, योद्धा 2. घेर 3. रीक 4. सूर्य 5. साक का वृक्ष 6. मदार का पीला 7. चित्रक वृक्ष 8. कुत्ता 9. मूर्गा । सम०—बाहः शीतों का अनामिताह सिद्धांत ।

सूत्र [सूत्र+क] 1. विषय 2. बेचने योग्य पदार्थ 3. शोकदार हृषिकार 4. लोहे की सलाख (बिज पर रख कर मीठ भूना जाता है) 5. किसी भी प्रकार का बर्त 6. नृत्य । सम०—अङ्गु. गिण का विशेषण —ये समाराध्य सूत्राङ्ग—महा० १०।७।५७, -अथल तिल (वि०) सलाख पर लटकाना हुआ, सूली पर चढ़ाना हुआ, -आरोपः सूली पर चढ़ाना ।

सूत्र्यमात्मन् मुना हुआ मास ।
सूत्र (वि०) [सूत्र+अच्] 1. नृवायनाल 2. साहसी ।
सूत्रम् [सू+गन् सून्, ह्रस्वश्च] 1. सीप 2. पर्वत की बाटी 3. ऊँचाई 4. स्त्री का स्तन 5. एक विशेष प्रकार का लैतिक ब्यूह । सम०—बाह्लिका 1 प्रत्यक्ष रीति 2. (तर्क० में) एक पक्ष लेना ।

सूत्रिन् (वि०) [सूत्र्+इनि] स्त्रीगो बाला जानवर (पु०) बैल ।

सूत्रपाक (वि०) पूर्णतः पका हुआ ।
सूत्रशील (वि०) उबाल कर उठा किया हुआ ।

सूत्र [सिद्+अच्] 1. अङ्गभूत वस्तु 2. प्रसाद, कृपा ।

सूत्राचम { तिरुपति की पहचिर्वा ।
सूत्राचि {

सूत्र्य [सिच्य+अच्] 1. एक प्रकार का गोफिया 2. लटकाया हुआ बर्तन ।

सूत्रियम् [सिचिल+अच्] 1. अस्थिरता 2. सिचिलता, मुस्ती 3. (दृष्टि की) धुन्धता 4. अबहेलना ।

सूत्र्यश्च (वि०) पहाड़ जैसा भारी ।
सूत्र्योश्च मिलाना ।

सूत्र्यी [सिच्य+अच्+शीप] नदी, नतीकी ।
सूत्र्यमित्त { (वि०) शोकपीडित, गम का मारा ।
सूत्र्यस्त {

सूत्र्य [सोन्+अच्] माल ।
सूत्र्यित्य (वि०) [सोणित+पा+क] शहर पीने वाला ।
सूत्र्यित्यित्यम् शहरसाध ।

सूत्र्य [सूत्र्+अच्] सुदि, सज्जार्, विरेचन ।
सूत्र्यम् [सूत्र्+अच्+स्यट्] 1. मार्बन, परिष्कारण 2. पाप अपराधादि से सुदि ।

सूत्र्यमाचरित् सुन्दर आचरण, सवाचरण ।
सूत्र्यी ननहरिदा, पीसी हल्दी ।

सूत्र्यमित्तुः [सूत्र्+इत्तुच्] सुयं ।
सूत्र्यः 1. गच्छ 2. बाह, स्पेन ।

सूत्र्य [सूत्र्+अच्] (तर्क के लिए) अक्ष ।

सूत्र्यीर्ष्यम् [सूत्र्यीर्ष्य+अच्] 1. सूर्यरीता, पराक्रम 2. अभिमान, घमड़ ।

सूत्र्यकम् (नपु०) सूर्यरीता का कार्य ।
सूत्र्य (वि०) [सूत्र्+अच्, टिलीपः] आगामी कल से मकप रखने वाला ।

सूत्र्यकर गार्द, हुआमत बनाने वाला ।
सूत्र्यकोकर नाट्यल का पेड़ ।

सूत्र्य [सूत्र्+अच्] तयाक का पेड़ ।
सूत्र्यालम्बी काली मिर्च ।

सूत्र्याना युगदिदी का तांत्रिक रूप ।
सूत्र्यकपोलीय (वि०) आकस्मिक संकट ।

सूत्र्यपात बाघ का सप्टा ।
सूत्र्यावाचयम् अथ विस्वास ।

सूत्र्य (वि०) [सूत्र्+अच्+अच्] विस्वासपात्र, -अर्थेदा विप्रलम्भार—कि० ११।३५ ।

सूत्र्य (प्रेर०—अच्+अच्) 1. बकाना 2. जीतना, हराना ।
सूत्र्यविशेष कलाति दूर करना, विश्वास करना ।

सूत्र्यलं (वि०) बक कर चूर-चूर, बकान से पीडित ।
सूत्र्यश्चम् कान की बाली ।

सूत्र्यम्, -म् [सूत्र्+स्यट्] 1. कान 2. चिकोण की एक रेखा 3. मुलने की क्रिया । सम०—सूत्रक. कर्मविबर, सूत्रकः कान की बाली, कर्णफूल, -प्राच्युक्तिः श्वबल गोशर वस्तु, कानों में आना, -भूत (वि०) कहा गया ।

सूत्र्ययिः श्राद्ध के द्वारा बनाना गया मित्र ।
सूत्र्यार्थं { (वि०) श्राद्ध के लिए उपयुक्त ।
सूत्र्यश्च {

सूत्र्यक [सूत्र्+अच्] बहु ध्वनि जो दूर से सुनी जाय ।
सूत्र्यलम् (वि०) स्वस्थ, शान्त ।

सूत्र्यलम्ब (वि०) जिसने माहस का आश्रय लिया है, साहसी, दिलेर ।

सूत्र्य [सूत्र्+अच्] 1. बाणी 2. कीर्ति 3. उपयोग, नाम 4. विद्वाना, शास्त्रिय । सम० अर्थः वैदिक अर्थसूचन, -बाहिः नाना प्रकार के दिक्स्वर, सूत्र्यक (वि०) कानों को कष्ट देने वाला, -बेच कान बीजना-सूत्र्यस्तु उपनिषदें श्रुतिभिरस्मीमन्सुप्तामिष्- प्रत्याप० १।१ ।

सूत्र्योन्माकित् (वि०) कस्याप चाहने वाला ।
सूत्र्योन्माकित् कस्तुरी ।

सूत्र्योन्माकित् (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न ।
सूत्र्योन्माकित् माल नितम्ब--श्रीनिबिचकदम्बर मजल राक्षसिरसकम्बरम्—नारा० ।

भौतस्वामी (हि० व०) देव और स्वृति से संबन्ध रखने वाला ।

इत्यथश्चन्मन् १. घुट्टो का विद्याम देना 2 डीली गाठ । इत्याचार्यपर्यन्तः सेवी बचाने का अभाव, प्रशंसा या चार-मुसी का न होना ।

इत्यथश्चन्मन् इत्येयमुत्त रूपक अलंकार, जिस रूपक के एक से अधिक अर्थ होते हैं ।

इत्येवः [चित् + चञ्] 1. आसिग, मँपुन 2. व्याकरण विषयक आगम सयोग 3 एक अन्धालंकार जहाँ एक शब्द के कई अर्थों द्वारा काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है ।

इत्येवोपमा उपमा अलंकार जिसके दो अर्थ होते हैं ।

इत्येवकटाहः पुरुषदान ।

इत्येव्य (वि०) [इत्यां + व्यञ्] प्रशस्तगीय ।

इत्येवोविद्या कुतों का जीवन, दायना ।

इत्येव्यु 1 कुतों की शय् 2 गांछक का पीषा ।

इत्येवोधिः [इत्यन्तेः चित्] चक्षमा ।

इत्येवुरगुम् इत्युरात्म्य ।

इत्येवमन्वोय (वि०) वायु और मन की गति संबन्ध ।

इत्येवत्तच्छब्द (ताक का) चक्षमा ।

इत्येवमसमीरन्मन् स्वास, शीत ।

इत्याश् [चित् + चञ्] व्यञ्जनों के उच्चारण में गद्गल-प्राणता ।

इत्युत्प्रवृत्ति (व०) आगामी काल से लेकर ।

इत्येवोसीम्ब (वि०) प्रसन्न, सुम, यङ्गलमय ।

इत्येव [चित् + चञ्, चञ्, हा] 1 सफेद बकरी 2 घुमकेतु,

घुषुषुन्नारा 3 बाँधी का सिक्का 4 जीरे का बीज

5 शय 6 सफेद रंग 7, सुफ तारा । सम० संक्षुः

चक्षुः, — शब्द वर्द्धन, कर्पोरः 1. एक प्रकार का

बूढ़ा 2 एक प्रकार का शय, — आरः यन्तार, सोरा,

— रक्तः छाछ और पानी बराबर-बराबर मिले हुए

— चारुः सैन्य का नाम जो आश्चर्यक वीर रहा है ।

बद्धस स्रष्टा भाग ।

बद्धश्चकम् फलित श्योतिष का एक शाग ।

बद्धुभि अस्तित्व की छ लहरें ।

बद्धय 1 मन्मन्वो, भीरा 2 गीति छन्द ।

बद्धुत्तु (पु०, व० व०) छ चतुर ।

बद्धभाषवाद् इत्य, युग, कर्म, सामान्य, विशेष और

समवाय' इन छ इत्यो की स्वीकृति पर आधारित सिद्धान्त ।

बाह्य 1 रसगण की एक जाति जिसमें केवल छ. स्वर आते हैं 2. मिर्झाई, हनुमार्दी का काव्य ।

बाह्यहातु पाकनाम्ना का एक चक ।

स

सच्य (स्त्री०) [सम् + च् + चित्] युद्ध, लडाई, सङ्ग्राम ।

सम० बाह्य (वि०) उल सबको एकत्र करने काका को सुख्य है ।

सच्यमित (वि०) [सच्यन् + इत्थ] रोका हुआ, बन्द किया हुआ ।

सच्यम् (स्त्री० पर०) 1 रोकना, दमन करना, दवाना 2 सताना, मीचता ।

सच्यार्थकम् (वि०) जिसने सच्य करना त्याग दिया है ।

सच्यति [सम् + च् + चित्] तपश्चर्चा, निरोध, समन्य ।

सच्यन् [सम् + च् + चञ्] प्रयत्न, उद्योग ।

सच्येय [सम् + च् + चञ्] 1 (रक्षेन्) भीतिक संपर्क

2 सारोचिक संपर्क 3 योगफल । सम०—विधिः

1. सच्येय की प्रजाती 2 जीव और ईश्वर के

सायुज्य को बध्निवाली देवात की उक्ति ।

सच्यति [सम् + च् + चित्] (पणित०) दो या दो से अधिक सख्याओं का योगफल ।

सच्य (स्त्री० वा०) बरना—प्रवृत्त रव इत्येव तत्र सच्य चित्तमेत्—महा० १२।१९।३२ ।

सच्यमेव (वि०) जिसकी ओरें सुच गई हैं ।

सच्यमान (वि०) जिसके अधिपान की आगत लय चुका है ।

सच्यम् [सम् + च् + चञ्, घृन्] 1. वृषा, द्वेष—सच्य-योगेन चित्तं तत्सक्यताम् आच० ७।१।२८.२. (सुद्ध का) देव, आक्रमण की प्रवणता ।

सच्यदि [सम् + च् + चित्] निष्पत्ति, सफलता ।

सच्य (वि०) [सम् + च् + चञ्] 1. वाचायुक्त (वति)

—वाचुनी वाचसक्ती देवदेवेन भारत—महा० ३।

३१।६२.२ काराचक ।

सम्ब (वि०) [सम् + बन्] 1 मूल में पिरोया हुआ
 2 अनुप की डोरी पर ताना हुआ।
 सम्बन्ध [सम् + धि + ङ, स्वाधेयम्] यथा (जैसा कि
 ईद पाषण्डे वाले प्रयत्न करते हैं)।
 सम्बन्ध [सम् + बन् + धि + ङ] 1 मुग्ध करना
 -सन्धार अथवा बन्धनाम्ना परमोहनम्—महा०
 १२।५।१४ पर भाष्य 2 (बंयनी जानबरो के)
 पदचिह्न।
 सम्बन्धकारिण्यु (वि०) शौचसंबन्धी धर्मरूपो का अनुष्ठान
 कराने का इच्छुक।
 सम्बन्धन्य (वि०) [सम् + बन् + ल्युट] पैदा करने वाला
 उत्पादक।
 सम्बन्धात्मिके (वि०) निरत, अनसत, उदास।
 सम्बन्धात्मिक्य (वि०) विषयस्तः श्रोते भ्रष्टः।
 सम्बन्धम् (म्बा० पर०) प्रतिबेदन देना, बलस्य देना।
 सन्धिज्ञान (वि०) [सम् + हा + ज्ञानच्] शान्तिज्ञानम्
 त्यागने वाला, छोड़ने वाला।
 संक (वि०) [सम् + कन्] माया करने वाला—कदा
 चय करिष्याय सत्यासं दुःखसंशयम्—महा०
 १२।७।१३।
 संकल्पित (वि०) [सम् + प्रा + पिच् + क्त, पुकागम्] बलि
 दिया गया, नष्ट किया गया—भाष० ४।२८।२५।
 संका [सम् + प्रा + क] 1 पगबंदी, पदचिह्न 2 रिखा
 3 पारिभाषिक सम्ब।
 संकासुम्बु बहु भुष जिसके आधार पर किता पारिभाषिक
 सम्ब का निर्माण होता है।
 सदासेवः अयाल (केसर) का सहगाना—सदासेवसिन्धु-
 नक्षत्रमहृतिः—पुरा० ७।
 सतोष (वि०) पीड़ित, चुपन जैसे पीडा से वस्तु।
 सतिष्या सनारोह, अनुष्ठान।
 सत्तम (वि०) उत्तम, श्रेष्ठ (समस्त सत्तों के अल्प में
 प्रवृत्त होने आधारसत्तम)।
 सत्तम् [सत् + ष्टम्] बगारटी रूप, छपरेषे।
 सतिष्यु (दु०) [सत् + धि] 1 सहपाठी की० अ०
 १।१।२ 2 विवेकस्य गन्तव्यम्।
 सत्तम् [सत् + ष्य] 1 बुद्धि 2 सूचन गरीर।
 सत्तन्तुः सिन्धु का विशेषण।
 सत्तन्तुः 1 सर्वादा 2 जीवन-प्रकाशन, प्राण प्रदान
 -विषे विवेक्य परिश्रित्यनसत्तन्तुः—श० २।१०।
 सत्तम् [सत् + ष्य] 1 मोक्ष 2 सन्धि 3 निष्कपटता
 4 पवित्रता 5 प्रतिभा 6 जल 7 ईश्वर। सत्त०
 -सत्तमकः सत्तान्, -सिन्धा, सत्तप इहण करना,
 -सतिष्यु (वि०) प्रतिभा मन करने वाला, -सत्तन्तु
 सार्वभौम माप, -सतिष्यु सार्वभौमिक जीर सौतिक
 विषय, -सतिष्यु (वि०) सच बोझने वाला,

-सत्तमः सत्तनी, -सिन्धा, -सत्तन्तु (वि०) जिसका
 प्रयोजन या धारणा सत्य है।
 सत्तन्तुः मोमासा का एक निरवम जिसके आधार पर एक
 से अधिक स्थायित्वो द्वारा अनुष्ठान होने पर वर में
 एक ही स्वाधी को प्रतिनिधित्व विद्या जाता है की०
 सू० ६।३।२७ पर शा० भा०।
 सतिष्यु (दु०) [सत् + धि] सहयोगी, सहपाठी।
 सत्तये मुख्य विषय या प्रकरण।
 सत् [सत् + विवच्] सत्ता - भाष० ७।१।२१।
 सत्तासिन्धु [सत्तम् + सिन्धु] दासान, दहलीज।
 सत्तन्तुः [सत्तम् सत्तान्] सत्तापति।
 सत्तासिन्धु (वि०) सदैव सक्रिय।
 सत्तास्य (वि०) सदा रहने वाला, श्राव्यत।
 सत्तन्तुः [सत्तम् + ष्य] सत्तापति, सत्तान् विषयों में मूल करने वाला।
 सत्तन्तुः शान्तिकि कर्मण्य।
 सत्तन्तुः (वि०) सुग्त ही अनुष्ठित होने वाला।
 सत्तन्तुः [सत्तम् + ष्य] जिसके पास केवल एक ही रिण की
 भोजन सामग्री विद्यमान है—सद्य प्रज्ञानो वा
 स्यान्मानवश्चिकीर्षि वा -मनु० ६।१।८।
 सत्तन्तुः शब्दा के मात मानत पुर्णों में एक।
 सत्तन्तुः महाभारत का एक अध्याय जिसमें मननुज्ञान
 का शारीरिक व्याख्यान निहित है।
 सत्तन्तुः वेदों में प्रतिपादित अत्यन्त प्राचीन धर्म।
 सतिष्युः (वि०) ब्रह्मज्ञानस्य।
 सत्तन्तुः [सत् + ष्य + ष्य + कन्] 1 स्वर्ग के पाप
 बुद्धों में से एक, कल्पतत वा उसका फल 2 लोक-
 विशेष।
 सत्तन्तुः [सत् + तु + पिच् + ल्युट] तुष्य दे०
 प्रसन्नता देना, सन्तुष्ट करना।
 सत्तन्तु (वि०) [सत् + तु + क्त] सत्तुल, घिसाकर
 बांधा हुआ।
 सत्तारः [सत् + त् + ष्य] 1 पार करना 2 तीर्थ,
 घाट।
 सत्तन्तुः [सत् + ष्य + ष्य] 1 वृत्तक का एक अनुभाष
 2 गवि का एक किनारा।
 सत्तन्तुः [सत् + दो + ल्युट] हाथी के सत्तन्तु का वह
 भाग जहाँ से दात भरता है।
 सत्तन्तुः सत्तन्तु के अर्थ।
 सत्तन्तुः सत्तन्तु (अर्थ०) सत्तन्तुना के कारण दोबारा
 कहना।
 सत्तन्तुः सत्तन्तुः सत्तन्तु (अर्थ०) सत्तन्तु बना रहता है।
 सत्तन्तु (वि०) [सत् + सिद् + ष्य] सतिष्य, सत्तन्तु से
 पुर्ण।
 सत्तन्तु (वि०) [सत् + तु + क्त] घिसाकर बांधने में
 पिरोया हुआ।

लम्बकः [सम् + लृप् + कम्] प्रतीति, वृष्टि ।
 लम्बकानम् [सम् + लृप् + कम् + लृप्] काम, उपयोग ।
 लम्बकः [सम् + लृप् + कम्] मूढ को मन्दिर के लिए
 चर्चा देना मना हो शीत १ में डा० राधकान की
 टिप्पणी वृत्तिप्रतिपादकः ।
 लम्बकम् (वृ०) [सम् + लृप् + कम्] लम्बि इत्यदि का काम
 करने वाला मन्त्री ।
 लम्बकत्वोः मन्त्राकाशीन इत्यत्र ।
 लम्बकम् (वि०) जिसकी जिह्वा लम्बी हुई है, जो
 रूप है ।
 लम्बकी (वि०) हतोत्साह, उत्साहहीन ।
 लम्बकम् (वि०) निरास ।
 लम्बकम् (वि०) मन्द स्वर से बोलने वाला ।
 लम्बकः [सम् + लृप् + कम्] योग्य, हुल्लाह ।
 लम्बक (वि०) [सम् + लृप् + कम्] पूर्ण, भग्न हुआ
 -- परधान्यमन्त्रो मन्त्री दश० ११३ ।
 लम्बकानी मुँके हुए भर्गर बानी यहिहा ।
 लम्बकम् (वि०) मनुष्यविलासयुक्त, ग्योरी चढ़ाए हुए ।
 लम्बकत्वोः (वि०) जिसकी मेला लम्बने के लिए पूरी तरह
 तैयार है ।
 लम्बकः [सम् + लृप् + कम्] 1 आधुनिक विषय
 या विचार वेदादर्शके मन्त्रिकर्ष पुस्तकाद्या -- बी० नू०
 १११००१ ।
 लम्बकम् (वृ०) [सम् + लृप् + कम् + य (क्वा)], सुरल,
 प्रत्यक्ष, सीधे ।
 लम्बकत्वोःकारिण (वि०) भाग या अङ्ग जो नीचा प्रधान
 का काम दे -- बी० नू० १०१११११ पर भा० भा० ।
 लम्बकम् [सम् + लृप् + कम्] 1 मन्त्र 2 युद्ध
 3 वहाँ का विषय सयोग ।
 लम्बकत्वोः (वि०) [सम् + लृप् + कम्] ऐसा अंग जो प्रधान
 का कार्य करे -- मन्त्राध्य मन्त्रियाणां वा -- बी० नू०
 १२१११११ ।
 लम्बकम् (वि०) [सम् + लृप् + कम्] 1 युद्ध 2 चतुर,
 जित ।
 लम्बकम् (वि०) [सम् + लृप् + कम् + क्त] 1 नियन्त्रण,
 रोका हुआ 2 पूर्ण, भग्न हुआ ।
 लम्बकत्वोः [सम् + लृप् + कम् + क्त] 1 कर्त 2 सकीर्णता ।
 लम्बकत्वोः [सम् + लृप् + कम् + क्त] लम्बकत्व, समुच्चय ।
 लम्बकत्वोः [सम् + लृप् + कम् + क्त] डेरा डालना, निश्चित
 स्थापित करना (वैया कि "मेलाजितिवे") ।
 लम्बकत्वोः [सम् + लृप् + कम् + क्त] अक्षा स्वभाव, मल-
 मनसाह्व, उदारभावता ।
 लम्बी (व्या० पर०) भरवा, पूर्ण करना ।
 लम्बकः [सम् + लृप् + कम् + क्त] उद्धार, करार ।
 लम्बकत्वोः (वि०) लम्बका शक्ति ।

लम्बकत्वोः (वि०) आभयक बस्तुओं से मुक्तिप्राप्त, दलबल
 के साथ ।

लम्बकत्वोः (वृ०) आरक्षण इति ।

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः
 लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

लम्बकत्वोः (वि०) आरक्षण की शक्ति -- लम्बकत्वोः आरक्षणत्वोः

3. उत्सवण किया हुआ,—अधिवसः पुरी उत्सव,
—अनुचरिणम् (वि०) आशाकारी,—अभिहृत (वि०)
निल पढ़ने वाला,—अभ्यासः निकटता, उपस्थिति ।
सम्यक्श्रुतिः ठीक समझ का बूझना ।
समयकः 1 उपयुक्त समय का आता 2 जो अपने पक्ष
बचनों को याद रखता है ।
सम्यक्विद्या श्रुतिय, प्रविष्यद्वाचन ।
समरस्यकः मठारं का फूट पड़ना ।
समर्थक (वि०) [समर्थ + क्त] 1 समर्थन करने वाला,
प्रमाणित करने वाला 2 सजम, योग्य,—कम् (तृ०)
अगर काट, चमन की तकड़ी ।
समर्थनम् [समर्थ + ल्युट्] किसी हानि वा अपराध की क्षति
पूति करना ।
समर्थविम् (अ०) निश्चय में, यथावं कथ मे ।
समस्तस्त्वः [सम् + अव + स्वल् + चञ्] तुमप्राचीर, पर-
कोटा ।
समस्तहारः [सम् + अव + हृ + चञ्] मिथल महर ।
समस्तकणम् [सम् + अव + ई + ल्युट्] निरीक्षण, मुद्रा-
यना ।
समस्तार्थं (वि०) सार्थक, शिवाग्रद, बोधगम्य ।
समस्तानुरक्तम् } किसी ऐसे श्लोक की पूति करना श्रितश
समस्तश्रुतिः } पढ़ना बरन दिया गया हो ।
समस्तता (वि०) एक बरं से अधिक भायु कः, दो एक बरं
पुरा कर चुका है ।
समाकल्प (वि०) [सम् + आ + कल्प + क्त] 1 रीटा हुआ,
बुझा हुआ 2 जिस पर आक्रमण कर दिया गया है ।
समाक्रिय (वि०) ग्रहण किया हुआ पदार्थ ।
समाकम्पा [सम् + आ + क्पा + बह + टाप्] व्याकम्पा ।
समाकषेयितम् [सम् + आ + कषे + क्त] 1 अन्वहार
2 प्रक्षिपा ।
समाकः [सम् + आ + अक्ष + चञ्] समागम, सम्हाय,
—भा० १०१६०३३८ ।
समाकृत (वि०) [सम् + आ + कृत + क्त] 1 चिन्तागिन
रंजना हुआ 2 व्यापार ।
समक्षि [सम् + दिक् + क्त] विचारिण, आदिष्ट ।
समाकृत (वि०) 1. (सम्) बहना 2 कथ करना
3. महाशक्ति शक्ति 4 स्वीकार करना ।
समाकृतम् [समा + आ + ल्युट्] 3. (किसी उक्ति का)
अनुगत 2. समझना कर लेना, समझना का हक कर
लेना ।
समाकृतकणम् कणक बलकार का एक भेद जिसमें किसी
उक्ति का शीकिय सम्मिलित होता है ।
समाधिक्त् (पं०) ध्यान में लीन, समाधि में स्थित ।
समाधिविन्धः ध्यान-जन का अन्वहार ।
समाधुत् (वि०) [समा + धृ + क्त] बसेरा हुआ ।

समान (वि०) [सम् + अन् + अन्] 1 साधारण
2 समस्त (सम्पा०) 3 बराबर का, बँसा ही । सम०
—करत् (वि०) उच्चारण की समान इन्द्रिय वाला,
एक ही उच्चारण स्थान वाला (स्वर) ।
समानप्रतिपत्ति (वि०) 1 समान अनुदाय वाला 2 व्यच-
हार कुशल, बुद्धिमान् ।
समानवाच्य (वि०) समान कर से सम्मानित ।
समानवधि (वि०) एक ही गति वाला ।
समापिका शब्द शब्द का बहु भाव जो शब्द की पूति
करता है ।
समापि [सम् + आप् + कितन] (गरीर का) बिचटन,
मृत्यु, मनु० २०२४४ ।
समापित [सम् + आ + प् + क्त] 1 मूल रूप का
धारण करना 2 सपुति ।
समानाल (वि०) [सम् + आ + म्ना + क्त] 1 दोहराया
गया, साब हँस बनेन किया गया 2 परम्परा से
प्राण ।
समान्नायः [सम् + आ + म्ना + य] 1 सामान्यत वेदपाठ
2 परंपरा से प्राण शास्त्रीय बचनों का मन्त्रः ।
समारम्भ [सम् + आ + ऋ + चञ्, युम्] साहसिक
कार्य का भावना, माहसतुर्षे कार्य ।
समारम्भम् [सम् + आ + ऋ + ल्युट्] प्रवृत्त करना,
आराधना ।
समारम्भ (वि०) [सम् + आ + र् + क्त] मवार, पडा
हुआ ।
समारम्भिकार्म्भक (वि०) जिसने धन्यु ताव लिया है ।
समाभं (वि०) एक ही प्रवर से मन्त्र, समान प्रवर
वाला ।
समाभोकनम् [सम् + आ + भोक + ल्युट्] 1 निरीक्षण
2 मविचार, मनन ।
समाभित्त (वि०) [सम् + आ + भ्य + क्त, सप्रसारणम्]
1 कम्पित, शम्भ 2 प्रहृत, आघात शान्त ।
समाभित्त (वि०) [सम् + आ + चिन् + क्त] बरा हुआ,
बुझा (सैनाकि 'कौतुकसमाभित्त') ।
समाभक्त (वि०) [सम् + आ + भक्त + क्त] 1 दाहन
बचाया हुआ, मातृवना ही हुई 2 बिबलात करने
वाला ।
समाभुत् (वि०) [सम् + आ + हृ + क्त] शीका हुआ
(सैने कनुष की डोरी) ।
समाभुत् (अ०) [सम् + आ + हृ + य (लृत्)] सब
एक रूप मिल कर ।
समाभित्त (वि०) [सम् + आ + भा + क्त] 1. समान,
साधारण 2. विचारा बुझता 3. प्रेषित ।
समाभित्तः [सम् + भ + क्त] सवाचरण का विचय
(सै०) ।

सविधावात्मन् १ यथावि पर सविधाए रक्षना २ बट्टा-
 चारी के सिद्ध विहित वैदिक क्रमिहोम ।
 सवीक्षा [सम् + ईप् + श्च + टन्] १ देखने की इच्छा,
 विज्ञान २. भाष्यात्मिक ज्ञान ।
 सवीरथ [सम् + ईर् + शिच् + श्वत्] शीघ्र की शब्दा ।
 समुच्चयानुकार एक मन्त्रकार का नाम ।
 समुच्चयौपमा समुच्चयानुकार से कपी उपमा ।
 समुच्चय [सम् + उच् + शि + श्वत्] १ शयन २ मृद,
 सहाई ३ बुद्धि, विकास ।
 समुच्चित्त (वि०) [सम् + उच् + शि + क्त] १. सूत्र
 उठाया हुआ २ हिकोरे मेला हुआ ।
 समुच्छाद (वि०) उंचा, समुच्छात ।
 समुच्छात्मन् [सम् + उच् + श्वा + श्वत्] १. उद्योग
 -- महा० १२।२३।१० २. (शंभा) सहाराणा ३ (पेट
 की) सुजन ।
 समुच्छावाचक (वि०) वस्तुओं के तरह को प्रकट करने
 वाला (उपम) ।
 समुच्छावशब्दः 'मघह' की अभिव्यक्ति करने वाला मघ ।
 समुच्छात (वि०) [सम् + उच् + श्वा + क्त] पकन, प्रचण्ड,
 समुच्छात (वि०) [सम् + उच् + श्वा + क्त] १ उठाया
 हुआ, समुच्छात २. उंचा, उत्तर ३. निष्काम ।
 समुद्रः मत्स्य उंची मत्स्या ।
 समुद्रधनिया } नदी, दरिया ।
 समुद्र कल्पी }
 समुद्र धोमिन् }
 समुद्रधम्भ [सम् + उप + स्तम् + श्वन्] उहारा, १२३
 टंक ।
 सम्पत्ता [सम् + पत् + श्वन्] संश्लेषण (वेदा कि 'सूत-
 सपात' में) ।
 सम्पत् (स्त्री०) [सम् + पत् + शिच्] अधिग्रहण ।
 सम्पन्नम् [सम् + पद् + क्त] पर्याप्त (बाढ़ के परधान
 मत्स्य का चिह्न) ।
 सम्प्रेत (वि०) [सम् + पर + श् + क्त] मृत ।
 सम्पुट [सम् + पुट् + क] नोलाई ।
 सम्पुत्रकाल (वि०) जिसकी काक्या पूरी हो गई हो ।
 सम्पुत्रकालवात् (वि०) पूरा फल पाने वाला ।
 सम्पुत्रः [सम् + पुत्र् + श्वन्] शीघ्रकाल ।
 सम्पुत्र (वि०) [सम् + पुत्र् + क्त] विन वश हुआ ।
 सम्पुत्रात् [सम् + प्र + श्वा + क्त] शेष की एक श्रवाधि
 जिसमें मूलन का विषय स्पष्ट उक्त है (वि०)
 मधप्रजात) ।
 सम्पुत्रिणीयः [सम् + प्र + पद् + शिच्] मत्स्यधमनित्य ।
 सम्पुत्रात्कालकः वैदिक परम्परा की शक्ति वाला -- सम्प्र-
 दायप्रयोगकी अनुसंधानकालीन पालककालः ।
 सम्पुत्रात्कालिकः परम्परा का जीव ।

सम्पुत्र (वि०) [सम् + प्र + पुद् + क्त] प्रेरित,
 प्रोत्साहित ।
 सम्पुत्रोपः (वि०) [सम् + प्र + पुद् + श्वन्] (यौत्सि०)
 चन्द्रमा और मन्त्रों का संयोग ।
 सम्पुत्रात् [सम् + प्र + सद् + श्वन्] मानसिक क्षाति ।
 सम्पुत्र (वि०) [सम् + प्र + श्वा + क्त] पतुंवा हुआ,
 प्रकट हुआ, अधिगत ।
 सम्पुत्र [सम् + पुद् + श्वन्] १. अभ्यवस्था २. मदनति
 ३ तुम्ह ४. अन्त, समाप्ति ।
 सम्पुत्र (वि०) [सम् + शिच् + क्त] १. टोड, मरा हुआ
 २. डोही, देखाडोही ।
 सम्पुत्र [सम् + शिच् + श्वन्] १. मूट्टी मीथना, बूला
 लायना २. जिहोह ३. बनावत, देखाडोह ।
 सम्पुत्रोपेक्षन् रक्षित का घर ।
 सम्पुत्र [सम् + पु + श्वन्] १. शयन वात २. सर्पित, धन
 महा० १३।५।११३ ज्ञान ईशोप० १३ ।
 सम्पुत्रिण्यु (वि०) [सम् + पु + श्वन्] उदारक रचयिता ।
 सम्पुत्रिणी (वि०) [सम् + पु + शिच् + क्त] जिसके
 घरने की आशा हो -- त्वधि सम्पुत्रिणीयति पीरयन्
 कि० २।७ ।
 सम्पुत्रिण्यु अनुनास ।
 सम्पुत्रिणी उभ० उठाया-दक्षिण दक्षिणः कामे सम्पुत्र
 स्वयम् तथा -- महा० ११।७।८२ ।
 सम्पुत्र (वि०) [सम् + पु + क्त] १. सम्पुत्रित २. उंची
 (पवि) ।
 सम्पुत्रित (वि०) ज्ञान से युक्त ।
 सम्पुत्रितकार (वि०) सर्वथा उदात्त, पूरी तरह उंचा ।
 सम्पुत्रित्येह (वि०) अनुनास से युक्त, अनुनास ।
 सम्पुत्रित्येह (वि०) श्वरामे हूए मन वाला ।
 सम्पुत्रिः [सम् + मन् + शिच्] सम्मान देना ।
 सम्पुत्रित्येह न्यायाधिकरण का निर्णय -- मुक्त० २।३०४ ।
 सम्पुत्रित (वि०) [सम् + श्वा + क्त] १. समान बहुत्व का
 -- पुराण ब्रह्मसिद्धसम्-नाम० १।३।१० २. भाष्यलेख
 -- महा० ५।१८।१ ।
 सम्पुत्रिणी (वि०) [सम्पुत्र + श्वन्] शीघ्र, उपयुक्त ।
 सम्पुत्रिणीयु [सम् + पुत्रिणी + श्वत्] शिघ्र ।
 सम्पुत्रिणीयु [सम्पुत्र + श्वन्] (कट्टी की) टक्कर ।
 सम्पुत्रिणीयु सही ज्ञान, शक्ती मानकारी ।
 सम्पुत्रिणीयुः अन्तर्दृष्टि, मन्त्रसंकोचन ।
 सम्पुत्रिणीयुः [सम् + श्वन्] (काल०) हूए त्वर ।
 सम्पुत्रिणीयुः [सम् + श्वन्] (काल०) हूए त्वर ।
 सम्पुत्रिणीयुः [सम् + श्वन्] (काल०) हूए त्वर ।
 सम्पुत्रिणीयुः [सम् + श्वन्] (काल०) हूए त्वर ।
 सम्पुत्रिणीयुः [सम् + श्वन्] (काल०) हूए त्वर ।

सर्वपति [व० त०] सोप की धाम, (कुपती या मन्त्रपुत्र में पति) ।

सर्वपथ कीधाल, विधि, सुव्यवस्थित ।

सर्व (सर्व० वि०) [सूत्रमयेन विषयम्—सु+व] 1 सब, प्रत्येक 2 समस्त, सब मिल कर । सर्व०—अन्वय सब का अनस्तित्व, सब की विषयता, सर्वव्यापक. महाप्राणसक,—सर्विन् (वि०) सब कुछ का जाने वाला,—अस्तित्वात्: एक विद्वान् जिसके ज्ञान पर सभी वस्तुएँ वास्तविक मानी जाती हैं,—काम्य जिससे सब प्रेय करे, पुम् (वि०) सब कुछ देखने वाला,—ब्रह्मणम् (अ०) सबसे पहले,—वैश्विन् (पु०) नट, नाटक का पात्र,—सर्व्व (वि०) सर्व्वव्यापक,—सर्व्व श्रुति-श्रान्तो सर्व्व उत सर्व्वसंस्तरादि—श्राव० १०। ८। १५५ सम्बन्ध. बहु सब को बध्भिष्ट बधा है,—स्वार एक वैदिक याम जिसमें असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति के लिए आनन्दमिथुन का निधान है ।

सर्व्वपत्त (वि०) सर्व्वव्यापक, विषयव्यापी ।

सर्व्वथा (अ०) [सर्व्व+था] सब प्रकार से ।

सर्व्विकल्पम् (नपु०) सब से सर्व्व ।

सर्व्विकल्पिन् पुंलर ।

सर्व्विकल्प. [व० त०] सब से प्रभाव को धारित ।

सर्व्वम् [सु—सु+वम्] (वेद०) भाष्य, भाष्य ।

सर्व्वकर्मन् (नपु०) निरप होने वाला पुर्व्वित वैदिक बर्णकृत्य—अभिहोषाधिक ।

सर्व्वक (वि०) समान हूँ वाली विषयता ।

सर्व्विकार (वि०) 1 अपनी बन्ध उपय समेत 2 सकने वाला, जो सड़ पक रहा हो ।

सर्व्विकल्पः [व० त०] समि बहु ।

सर्व्विकल्पम् हस्त नख ।

सर्व्विकल्पणम् (अ०) अन्वया के साथ, चवराहट या उल्लस के साथ ।

सर्व्व (वि०) [सु+वत्] अनविशुद्ध, जिस पर भी न छिड़का गया हो, शुद्ध—मी० पू० ४। १। १११ पर धा० भा० ।

सर्व्वापसम्ब (वि०) 1 बायाँ और दायाँ 2 साम्यिक पूजा की स्थाई तथा कील रीतिर्मा—सम्बन्धसम्बन्ध-सम्बन्ध—सम्बन्ध ।

सर्व्वः ईश्वर की श्रुता में विवकाय रखने वाला ।

सर्व्वपत्तः श्रेष्ठ का रत्नवाला ।

सर्व्वपत्तरी अनाय की धाम ।

सर्व्वपैतः कुम्भविज्ञान ।

सर्व्वपुत्रम् अनाय (नपु०) की धामि का हूँ, अनाय की धाम ।

सर्व्व (वि०) [सर्व्व+वम्] 1 वीर 2 सकल, हूँ (पु०) मार्गशीर्ष का श्रुति, ह्य (नपु०) एक

प्रकार का मुख्य (अ०) के साथ, सहित । सर्व०—अपवाद (वि०) अस्तहान होने वाला, अलक्ष्य. समाहार, मिल कर बातचीत करना,—अन्वयिन् (वि०) बिहोही, पदयन्त्रकारी, कर्तुं (पु०) सहकारी—सर्व्वपत्तम् एक ही साठ पर मिलकर बैठना,—श्राव. 1. माहर्षय 2 सहानुवृत्तता,—सर्व्व वैदिकीक संपत् ।

सर्व्वपुत्रः श्रेष्ठ लिया हुआ पुत्र ।

सर्व्वम् [समान हवाति—हृत्+र] 1 हजार 2 बड़ी लम्बा । सर्व०—अर, अरम् चिर की छोटी में उलट करम के समान गर्त जो आरना का आसन माना जाता है, वृ इन्द्र का विशेषण, धूम का विशेषण,—सर्व्व कर्म का पुत्र,—सर्व्वम् विष्णु के हजार नामों के पाठ करने के समान एक हजार श्राद्धों को प्रोचन कराना (श्रावणित कर्म) ।

- शिव् (पु०) कस्तुरी,—वैश्विन् (पु०) कस्तुरी

सर्व्वार्थम् (अ०) साथ के लिए, सहायता के लिए ।

सर्व्विक (वि०) प्रलय काम से सब रखने वाला ।

सर्व्विक (वि०) [सर्व्व+ठम्] सर्व्व से उल्लस कृत के (रोग) ।

सर्व्विकारिक (वि०) [संस्कार+ठम्] 1. सत्कारों से सब रखने वाला 2 (प्राचुरिक शील धाम में) शक्तिविक ।

सर्व्विकेषीसम्बन्ध बीमांसा का एक नियम जब कि विकृति में उसकी अपनी प्रकृति के मूल या धर्म नहीं पाये जाते मी० पू० ५। १। ११-२० पर सा० भा० ।

सर्व्विकल्पः सार्थक मुक्तराहट ।

सर्व्विकल्पक अन्वयान परक प्रत्यक्षज्ञान ।

सर्व्विकरिका साक्षात् परीक्षण ।

सर्व्विकल्प. शक्तिविज्ञान ।

सर्व्विकल्पक पुत्री, बरती ।

सर्व्विकल्पक मन्त्री ।

सर्व्विकल्पः समुद्र की बाड़ी ।

सर्व्विकल्प [संकेत+व्यम्] 1. सहवृत्ति 2 एककार्य 3. विशुद्ध, वा उपनाम—सर्व्विकल्प परिहास्य वा ...

सर्व्विकल्पकसर्व्विकल्प धाम० १। २ ।

सर्व्विकल्पकारिका साक्ष्यदर्शन पर ईश्वरकृप्य द्वारा रचित एक कृप्य ।

सर्व्विकल्पक (वि०) अपने मुख्य तथा सहायक दोनों सहित (वेद०) ।

सर्व्विकल्पके (अ०) स्वीकृति के बहाने एक आक्षेप ।

सर्व्विकल्प (वि०) श्रावणिक, श्रेष्ठता ।

सर्व्विकल्प (वि०) स्वास्विकर, प्रकृति के अनुकूल ।

सर्व्विकल्पः 1. वास्तव, स्वभाव 2. प्रकृति के अनुकूल होने का भाव ।

सात्वत्यम् समता, बराबरी ।
 सार्विकः [सरव + ठञ्] सरव् श्रुत की राशि ।
 सार्वतः 1. समता 2. पारंपर्य साम्रा से संबंध रखने वाला ,
 सार्वसर्वत्र छान्न का विशेषण ।
 सार्वक (वि०) [सार्व् + क्तृन्] उपसहागत्यक, उप-
 सहाय परक ।
 सार्वक्यम् [सार्व् + क्तृन्] 1. उपकरण, अधिकारक
 2. तीवारी 3. समकला ।
 सार्वभौम् (म्वा० पर०) साधन होना, उपाय होना ।
 सार्वभौष (वि०) [सार्व् + भौष] सिद्ध करने योग्य,
 कार्य को सफल करने के लिए उपयोगी 2. प्राप्त करने
 योग्य ।
 सार्वभौष्यक (वि०) सिद्ध करने योग्य वस्तु में अन्तर्हित
 तत्त्व के लिए तर्कशास्त्र का पारिभाषिक शब्द ।
 सार्वभौष्यकः मुठमूठ का आवेष (तर्क०) ।
 साधारण्यः न्याय में एक विषय जो सम्बन्धी हो और सर्वत्र
 समान रूप से लागू हो ।
 साधारण्यकः समान शब्दक, सम्बन्धी तत्त्व ।
 साधारण्यकम् (म्वा० पर०) समान होना ।
 साम् (वि०) [साम् + उन्] 1. अच्छा, उत्तम 2. योग्य,
 उचित 3. माला, सुनी 4. मही 5. मुसल । सम०
 -कृत (वि०) उचित रूप में किया हुआ, -देवी प्राप्त,
 -कृत (वि०) सुविचारित, शीघ्र (वि०) बयलिया,
 -संसल (वि०) बने व्यक्तियों को मान्य ।
 साम्प्रदाय (वि०) [सं + प्र] अन्तर्गत या अन्तर्गत स्थित ।
 साम्प्रदायिक [सम्प्रदाय + ठञ्] सम्प्रदाय का इच्छुक - ग्राहू त्वा
 प्रथमतः कुर्वा विषय मान्यतादि यदि प्राय०
 १।१।११ ।
 साम्प्रदायिक (वि०) जो अपने में मूढ़ हो, विचरिषा हो ।
 साम्प्रदायिक आध्यात्मिक सुख -साधनाम्बोधोद्योगकथन-
 पमितम् शारा० १।१ ।
 साम्प्रदायिक [सम्प्रदाय + क्तृन्] कथनात्, कुशलार्थे - अवि लक्षण
 शीलात्वात् । साम्प्रदायिक प्राप्तिवाचक - रा० ३।५।३२० ।
 साम्प्र (सम्प्र०) [सो + सम्प्र] आभाव, सम्प्र, ध्वनि स्वरः
 साम्प्रदायिक शोके अनिर्णीते - वी० सू० ७।१।१० पर
 सा० प्रा० । सम० कालम् मित्र के स्वर में,
 -सम्प्रदाय (वि०) पूर्णतः इत्याम् या विषयसूत्र,
 -विद्यालयम् 1. एक छात्रालय का मूल पाठ 2. साम का
 प्रयोग ।
 साम्प्रदायिकम् अधीनस्थ राजाओं का मन्त्रण ।
 साम्प्रदायिकम् (वि०) पक्षीनी ।
 सार्वभौष्यक [सरव + ठञ्] 1. समानता 2. सार्व विषयक
 सिद्धांत ।
 साम्प्रदायिक [सम्प्रदाय + ध्वञ्] 1. सामान्य बलात् 2. एक
 अर्थसाधार 3. सार्वभौषिक कार्य 4. साधारण्य लक्षण

5 पहुंचान । सम० सर्वः (सर्व०) (उपमान और
 उपमेय) का समान रूप, -सार्वभौष्य (वि०) समानता
 को कहने वाला, -सार्वभौष्य बहु मात्रा जो सब पर
 लागू हो ।
 सार्विक (वि०) सात्विक ।
 सार्वभौषिक (वि०) [सम्प्रदाय + ठञ्] समूह से संबंध रखने
 वाला, साम्प्रिक ।
 सार्वभौष्य 1. सहायक 2. आवश्यकता, 3. उक्त ।
 सार्वभौषिक (वि०) [सम्प्रदाय + ठञ्] 1. पारसीकिक,
 2. दाहकर्म संबंधी - रा० ४।३।४० ।
 सार्वभौष्य [सम्प्रदाय + ध्वञ्] 1. साय 2. समय ।
 साय [सो + धञ्] 1. समर्थित, जन्त 2. श्रद्धा 3. शाय ।
 सम० - अन्तर्गत सायकाल का भोजन, -कूर्तः 1. छठ
 2. चन्द्रमा, -सम्प्रदायिक सुवर्णित ।
 सार्वभौष्यक (वि०) सुवर्णित ।
 सार्वभौष्यक सायकालीन वर्णानुष्ठान ।
 सायक (वि०) सायक ।
 सार्वभौष्यक [सम्प्रदाय + क्तृन्] 1. श्रम, शक्ति 2. प्रथमवर्ष
 3. शीघ्र 4. प्रसाद, पक्ष । सम० - साय (वि०)
 सबक बर्णों वाला, -सायः प्रधानसूत्र या सर्व सूत्र
 (वि०) बोझ, बोझ के कारण शरीर, -कृत्य
 (वि०) शक्ति और शक्ति, उपयोगी और अर्थ,
 -सार्वभौष्य सूत्रे या वक्ता का वृत्तान्त ।
 सार्वभौष्यक शरीर का एक विशेष रूप ।
 सार्वभौष्यक शरीर, शरीर ।
 सार्वभौष्यक [सम्प्रदाय + क्तृन्] 1. सबक, सह रचने सरव (शब्दकः तत्र
 निवृत्त) दृष्ट्वा वा 1. रचना 2. पत्रसहित ।
 सार्वभौष्यक एक प्रकार का साय ।
 सार्वभौष्यक समतः वैया मुन्दर वीरों वाली पहिळा, पद-
 भीषता ।
 सार्वभौष्यक शरीरकाय, कथय ।
 सार्वभौष्यक (वि०) समूह से छूटा हुआ, सूत्रसूत्र ।
 सार्वभौष्यक (वि०) देव सर्व तक रहने वाला ।
 सार्वभौष्यक देव सर्व ।
 सार्वभौष्यक (वि०) सुवर्णित, अन्तर्गत से वृत्त ।
 सार्वभौष्यक (वि०) सौम्य, निर्दम्यित ।
 सार्वभौष्यक (वि०) विषका जीवन बनी शेष है, विरले
 शरीर, और शीला है ।
 सार्वभौष्यक (वि०) वह अर्थ, जिसके शरीरों और दो सुनी
 पार्वंवीरिणी (सुने दावान) हैं ।
 सार्वभौष्यक यशोवीर ।
 सार्वभौष्यक (वि०) सार्वभौष्यक साधारण्य शाय ।
 सार्वभौष्यक [सम्प्रदाय + क्तृन्] 1. सार्वभौष्य 2. जो अतिथी
 का प्रकथन कर लके 3. शीघ्र साय ।
 सार्वभौष्यक (वि०) शक्तिशाली से वृत्त ।

साहित्यवाक्यम् (ब०) हृदिगर्भ की बटलने की ध्वनि के साथ ।

साहित्यकारणम् प्रथम कार्य, असाध्य काम करना ।

साहित्यिकम् उपासकपत्र ।

साहस्य (वि०) [सहस्य + अच्] हकारो, बसन्त्य, अनमित्त ।

साहस्यकार (वि०) सहायता करने वाला ।

साहस्यवाक्यम् सहायता देना ।

सिद्ध [हिम् - अच् + घञ्] एक प्रकार की संगीत ध्वनि ।

सिद्धकम् एक प्रकार का पीपल ।

सिच् (पुत्रा० उच०) विगोना, दुबकी लेना ।

सिचिञ्जली [सिञ्जा + इति, पूषा०] धनुष की ज्व । या हारी ।

सिक्ता [सो + क्त, सिक्ता टाप्] 1 चीनी, साँठ 2 गन्ना ।

सिक्तासित (वि०) स्नेह और कामा मिश्र हुआ ।

सिक्ताकथ सफेद गरदन वाला, चायक पत्ती, जलकुचकट्ट ।

सिक्ताकथ राजहंस, मराल, हंसनी ।

सिक्ताकथ हंस, मराल, हंसनी ।

सिक्ताकारक सफेदहाथी, सितकुञ्जर ।

सिक्ताकथ एक प्रकार की साँठ, मिथी का उष्ण ।

सिद्ध (वि०) [सिच् + क्त] 1 विधिगत, अपरिचिन्तनीय

2. सिद्धि, पक्का 3 सफल, — [पु०] जिसे हमी जीवन में सिद्धि प्राप्त हो गई है । सम०—अञ्जलम् एक प्रकार का अन्न (कहते हैं, इसके प्रयोग से मूर्खों की बस्तुएँ दिखाई देने लगती हैं) ।—अञ्जल सफेद मरली, आसैक 1 च्पि की मरिच्य जाती

2. मरिच्य बकता, ग्योतिषी, —जीवकम् विभिन्न औषधोपचार, काण्ड (वि०) जिसकी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं, —पचः आकाश—सिद्ध पूर्णत अचूक, —हेमम् सुदृग् स्वर्ण लग सोना ।

सिद्धिः (स्त्री०) [सिच् + क्त] अचूकपना, पर्याप्त ।

सिद्धिचिन्तायक नभस का एक रूप ।

सिद्धिपरमवति गणेश की मूर्ति ।

सिद्धिपरमवत् संज्ञा नमक ।

सिद्धिपूर्वोत्तरा सिन्धु नदी के आमवास के प्रदेश में रहने वाले ।

सिद्धिपरमः पीपल का वृक्ष ।

सिद्धिपरमम् नाति ।

सिद्धास्य (वि०) [सिच् + आस्य] अनाप पत्नी वाला, नन्-वाहियों के जाल में मुक्त ।

सिन्धुनाथु (वि०) [सिन् - सन् + ठ, वातोद्धारक्य] स्नाय करने की इच्छा वाला ।

सिद्धिनाथु [सिच् + सन् + भा, वातोद्धारक्य] सिद्धिकने की इच्छा ।

सौभाग्यकथ इयिका अथीशक ।

सौभाग्यकथ सुधान, सराय पीना ।

सौभाग्यकथ [सौमा + अज्ञानम्] सौमा की जानकारी न होना ।

सौभाग्यकथ (वि०) सौमाचिह्न के कितारे हल चलाने वाला ।

सौमातेषु पर्वतश्रमला या शीघ आदि जो सौमा का काम वे ।

सौरवाहक हनवाहा, हुपक, शेरिहर ।

सुकरम् बजली ।

सुकरम् (वि०) दल, मुद्रांध ।

सुकरिपत (वि०) सुपरिज्ञत, हृदिपारो से नैम ।

सुचम् अच्छा सौपा ।

सुचम् (वि०) अच्छी कोस से उत्पन्न ।

सुचोच (वि०) यष्टरध्वनि से युक्त, सीटी आवाज वाला ।

सुचयम् मूर्ख ब्रह्म, भोजपत्र ।

सुत्पत्त (वि०) 1 अत्यन्त पीपल 2 कष्टयन्त्र 3 अत्यन्त कठोर (तराचरण) ।

सुत्पत्त (वि०) मुरीला, मयूरम्बर से युक्त ।

सुत्पत्त (वि०) 1 अत्यन्त उज्ज्वल 2 बहुत ऊँचे स्वर वाला 3 जिसकी आँखा की पुनर्निर्माण अत्यन्त सुन्दर हैं ।

सुत्पत्त मीन-श्रीकृष्ण के ली अंशों में से एक (नाम्य०) ।

सुत्पत्त (वि०) 1 अत्यन्त सुन्दर 2 निर्निर्वाण ।

सुत्पत्त (वि०) सुदुर्लभ, जो बड़ी कठिनाई में किया जा सके ।

सुत्पत्तकथित (वि०) असाध्य रोग से उत्पन्न, जिसके रोग की प्राय चिकित्सा न हो सके ।

सुत्पत्तकथित अच्छा पचप्रदोषक या अघ्रायक ।

सुत्पत्तकथित अलराय की मद्य ।

सुत्पत्तकथित (वि०) भन्नी प्रकार चमकाया हुआ ।

सुत्पत्त (वि०) सुभाष, जो पढ़ा जा सके ।

सुत्पत्त पत्नी, परित्रा ।

सुत्पत्त (वि०) सुन्दर, सुकुमार ।

सुत्पत्तकथित (वि०) बहुत बड़े आकार का ।

सुत्पत्त (वि०) गहरी मृग, धूमर ।

सुत्पत्त 1 सुदासिन 2 कम्पूरी ।

सुत्पत्तकथित बारी ।

सुत्पत्त [सु + च् + क्त] 1 मयक समृद्धि 2 तीक्ष्ण पत्नी ।

सुत्पत्तकथित (वि०) अकंठ दुर्भाग्यपूर्ण ।

सुत्पत्तकथित (वि०) [सु + च् + स्य + स्यट्] महानदीय ।

सुत्पत्त (वि०) क्लिप्तकृत उष्ण, क्लिप्तकृत मुरी ।

सुत्पत्तकथित सुन सुहृत् ।

सुत्पत्तकथित (वि०) अत्यन्त धनुर ।

सुत्पत्तकथित (वि०) पूर्ण विकसित ।

सुत्पत्तकथित (वि०) 1 अकंठ 2 निर्वाण ।

सुसंभृतिः (स्त्री०) [सु + सं + भृ + क्तिन्] मन्त्री प्रकार
छिपाता ।

सुसंस्थ (वि०) अपने बचन का पालन करने वाला ।
सुसंस्थ (वि०) ठीक निजाने पर तथा (तीर आदि) ।
सुसौम्य (वि०) सेवा किए जाने योग्य, जिसका आसानी से
अनुसरण किया जा सके ।
सुसार्थिकालम् आनन्द का स्थान ।
सुसार्थियोग्य (वि०) जिस पर आसानी से बड़ाई की
जा सके ।

सुसाराध्य (वि०) जिसकी सेवा आसानी से की जा सके,
जो आसानी से प्रमत्त किया जा सके ।
सुसंश्रयः कुशलशंभु पूजना ।
सुसंश्रय (वि०) मनोरम, शिव, योग ।
सुसंवेदनम् आनन्द की अनुभूति ।
सुसंवेद्य (वि०) दे० 'सुसंवेद्य सुसंभ्र' ।
सुसंवेद्यः कोपन ।

सुसंस्कारः सखेंदी (वृत्ता) करने वाला ।
सुसंस्कारित (वि०) सखेंदी किया हुआ ।
सुसंस्कारितः बटव्या ।
सुसंस्कारः धने का उपहार ।
सुसंस्कार अनिदिशाध्य का एक पाठ ।
सुसंश्रय (वि०) [सु + श्र + क्तृन्] विशेषरूपणं व्यवहार
में यत्न, दृष्टियों, मनीषी ।

सुसंस्कारम् रामायण का तीसरी काण्ड ।
सुसंस्तुतः—पाठक मान दृष्ट का मारने वाला, घोष्येहात्र,
हृत्पात्र ।

सुरादिः । मंत्र पर्वण, सुमर पहाड़ ।
सुरपर्वतः ।
सुरेश (सुर + इम) पेशकत हाथी ।
सुरेश्वरः (सु + इष्ट) भास का ब्रह्म ।
सुरीश्वर (वि०) (सुर + इश) देवदत्तमान ।
सुरपर्वतः एक प्रकार का कंकार, सिद्धार्थ, जह्नवपाद ।
सुरतस्त्रिन्-सरस्त्रिन्की, सुनी, सरती, सरित्, आषया (स्त्री०)
मगानवी ।

सुरपाशः कल्पवृक्ष ।
सुरविक्रान्तिनी अस्त्रा ।
सुरपर्वता छिपावनी ।
सुरासिन्धुम् यत्, मीर्ष, बैल ।
सुरासिन्धु (वि०) सराव बेचने वाला, कलाक ।
सुरासासः मनीष ।
सुसंभोदिका सोने की चोरी ।
सुसंभोदः स्वर्ण विजित वायु जो उपहार में दी जाय ।
सुसंभोदम् स्वर्णमयुषा ।
सुसंभोदम् (दु०) सुसहृदी सोनी वाला देव ।
सुसंभोदम्ः मेरु पर्वत ।

सुषिः (स्त्री०) छिद्र, सुरास ('सुषिर' का वैदिक रूप)
सुसुष्का [स्वप् + सुप् + ष + टाप् धातोर्द्विवचम्] सोने
की इच्छा ।

सुसुष्क [सुप् + मन् सुप् + च नेट्] 1. दांत का शोथलापन
2. बला, चर्बी 3. कण । सम० - बलः भरती, -मृतम्
सुसुष्क तप्य, बलि (वि०) तीक्ष्णदृष्टिवाला,
—शरीरम् सुसुष्क शरीर (विप०) सुसुष्क शरीर),
स्कोटः एक प्रकार का कोट ।

सुसुष्की विषयो की मालिका या सुषि ।
सुषी [सुप् + षीप्] (दन्तार्थे) की चटखनी ।
सुषीकर्मन् (मपु०) सिलाई का कार्य ।
सुषीरवन् नवला ।
सुषीशिक्षा सुई की शंका ।
सुषीकर्म, सुई का छिद्र ।
सुषीसूत्रम् सोने के लिए धागा ।
सूतः सञ्जय ।

सुसुषीराधिकः पुत्राणी में बलिबत धारण (कहते हैं कि उसने
ही समस्त महाभारत और पुराण सुनाए थे) ।
सुसुषीराधः प्रथम वेदना ।

सुसुष्म [सुप् - अच्] 1. मेथला 2. रेखाचिब, आरेख
3. मकन आद्यम् 4. धारा, होरा 5. देश । सम०
—अध्वलाः क्यमाध्वल, बुनाई का अधोसूत्रक, -छिद्रा
रत्नयो का शेष, (५४ कलाओं में से एक) ।
अध्वः सुषो को पुलक, सुष् (दु०) 1. सुषुषार
सिन्धी 2. रणमय का प्रबलक, धातः 1. माप करने
सूत्र से मापने का कार्य करना 2. कार्य का आरम्भ
—स्वात्मम् आपूर्वद के एक द्वय का प्रथम लक्ष्य ।

सुसुष्मलः प्रवाल रमोडवा ।
सुसुष्मलम् पाक विज्ञान ।
सुसुष्मलकः-शूरः कामदेव - सुसुष्मलकनिदेशविश्वमेरुपत्नी-
चरवेदेनाश्वम् ने० १८।१२९ ('सुसुष्मलक' पाठ भी
मिलता है) ।

सुसुष्मलः (सुवा + अश्वस) सूचक जाने का अधोसूत्रक ।
सुसुष्मलः सूत्र, सूत्र की फली ।
सुसुष्म (सु + सुषाय) अन्ध्रा साधन, तरकीब ।
सुरि [सु + क्तिन्] बृहस्पति ।
सुसुष्मलम् उत राशय धर्म ।
सुसुष्मलः रविवार, मादित्यवार ।
सुसुष्मी सूय की पत्नी ।

सु (धा०, उभो० पर०) पार करना, धार-धार ज्ञाना,
धेर० प्रकट करना, व्यक्त करना ।

सुका [सु + कृ + टाप्] 1. मोचक 2. लारक ।
सुका (स्त्री०) 1. इन-इन करती हुई रत्नों की लकी
2. शर्म, वच ।

सुक्तिः [सु + क्तिन्] 1. कल्प-नरक का चक्र—स्थाने

तवाङ्गितरत्नं कृतिनिर्घण्टव्या—भा० १०१०।
४३ २. वृद्धि ।

वेकः [विच् + चञ्] बहुने के लिए प्रोचारा ।

वेक्यम् [विच् + क्यट्] १. निर्गम्य, उच्चार २. अनियेक ।

वेक्युः [वि + क्यु] १. बलाघ्न्य, शरीरर २. व्याख्या-
परक भाष्य ।

वेक्युत्तम् शयनविशेष ।

वेक्युत्तम् वेना पति का पद ।

वेक्युत्तम् वेनाधीन, वेनाध्यक्ष ।

वेक्युत्तम् सैनिक, निपाटी ।

वेक्युत्तौ १. वृद्ध २. लीन, टांका ३ शिर की दो हृदयियों
का बोट ।

वेक्युत्त (वि०) [वेच् + चिनि] व्यभिच, उपासक, आराधक ।

वेक्युत्त (वि०) ईश्वर की सत्ता मानने वाला ।

वेक्युत्तवाह ईश्वर की सत्ता के समर्थन में तर्क ।

वेक्युत्तवाह्यम् सायब की एक भाषा जो ईश्वर की सत्ता
को मानती है ।

वेक्युत्तानी [विकटा + इन् + क्रीप्] देत से बरी हुई ।

वेक्युत्त [सेना + अय] चिह्नित ।

वेक्युत्तौ वेना का विग्रह ।

वेक्युत्तौ (अ०) अमावसानी से, उदासोदना के साथ ।

वेक्युत्तौ (वि०) शयनानी, बचरी ।

वेक्युत्त (वि०) : उदय से सव्य रखने वाला २. वृत्
सहित, स्वाज के साथ ।

वेक्युत्तम् (अ०) मैत्रीपूर्ण इय से ।

वेक्युत्तकर (वि०) सहायक बन्धुओं से युक्त ।

वेक्युत्तकम् (वि०) सामग्री से युक्त ।

वेक्युत्त [सू + मन्] १. मन्त्र २ एक पितर ३ सोमवार ।

वेक्युत्तकः सोमवार के लिए पुराहितों को नियत करने
के अधिकारों से सम्पन्न व्यक्ति ।

वेक्युत्तक (ए०) पितरों की एक विशेष भाषा ।

वेक्युत्त (वि०) जिसकी दोनों ओहों के बीच में शर्मों का
एक वृत्त है ।

वेक्युत्तक (वि०) [सुवराणि + ठक्] को दूसरी व्यभिक्त
की पुकटा है कि तुम रात को तो सुक से सोये हो ।

वेक्युत्त [मू + अन्] १. बुलाहा २. बुना हुआ कपडा ।

वेक्युत्तकः [य० त०] महल की उमरी हुई लुकी छत ।

वेक्युत्तः शास्त्रों का राजा ।

वेक्युत्तकम् [सुमन्त्र + अयम्] शीघ्राय की महकमय
निष्पत्ति, कल्याण, सम्पृद्धि ।

वेक्युत्त (वि०) [सोम + अन्] उत्तर दिशा से संबंध रखने
वाला ।

वेक्युत्त [सोम + अन्] १. बाह्य को संबोधित करने का
उपयुक्त विशेषण—आयुष्मन् जब सोमोति वाच्यो
विशोभिषाव्ये—मन्० २।१२५ २. वृत्त वृद्धि

३ चिनीत छात्र ४ शर्मा हाथ ५. यान्त्रीयों का
महीना ।

वेक्युत्तकम् [य० त०] मूत्र की गति पर आधारित ज्यो-
तिष्य की सभ्यता ।

वेक्युत्त (वि०) [सुवत् + अन्] सभोय संबंधी ।

वेक्युत्तकम् [सुवत् + अयम्] सुस्वरा, स्वरानुबन्ध, स्वर-
योग्यता ।

वेक्युत्त [एकन् + अन्] १ शरत् २. वृद्ध ।

वेक्युत्तकमी पार्वती ।

वेक्युत्तकम् : एकन् का बेटा (भोर के लिए प्रयुक्त सिद्ध
नाम) ।

वेक्युत्त [एकन् + अन्] १ कंबा २. वृद्ध, अश, भाग
३. पेठ का सना ४. वन्ध का अध्याय ५. मेना का कोई
भाग ६. पीछों ज्ञानेन्द्रियों के विषय ।

वेक्युत्तकः सज्जन भी० मू० १।१।५ पर गा० भा० ।

वेक्युत्तकम् [म्वाच् + अयट्] बीजपात ।

वेक्युत्त (वि०) [वेक्युत्त + क्त] १ धावत् २. ज्युर्न
अधुरा ।

वेक्युत्तकम् (नपु०) ज्ञानि, विद्वान् ।

वेक्युत्त-वृत्, कृत्, तैत्तस्य वृत्तस्य वा स्तका—भी० मू०
१।२।२० पर गा० भा० ।

वेक्युत्तकम् स्त्री के उठने हुए स्नान ।

वेक्युत्तकम् वृषी, देपनी ।

वेक्युत्तकम् : वृषी, देपनी ।

वेक्युत्तकम् गोमो जगनों के बीच का अन्तराल ।

वेक्युत्तकम् (वि०) अगने मन्त्रों से वृत्त पिपाने वाला
पद (गाय) ।

वेक्युत्तकम् (अ०) देवताओं की एक श्रेणी ।

वेक्युत्तकम् (अ०) सुन्दर वर्जनम्बनि के साथ ।

वेक्युत्त (वि०) स्नान पान करने वाला, वृषीहा कम्पा ।

वेक्युत्तकम् (वि०) जिसके पैर मतिहीन हो गये हों, अकष्ट
मिसे हो ।

वेक्युत्तकम्—वाङ् (वि०) जिसके हाथ निष्पेष्ट हो गये हों ।

वेक्युत्तकम् (वि०) जिसकी बुद्धि कुटिल हो गई हो,
मदबुद्धि ।

वेक्युत्त (अ० भा०) अधिकार करना, फैलाता, प्रेर०
बहाना, रोकना ।

वेक्युत्त [वेक्युत्त + अन्] १ अकष्टाष्ट, निष्पेष्टता
२ शरत्, भरती ।

वेक्युत्तकम् (वि०) जिसने अध्यापन रोक दिया,
बाँध रोकने वाला ।

वेक्युत्तकम् (वि०) वादल विषये सवत्त पानी की बपने
अन्तर रोक दिया है—वेप० ।

वेक्युत्तकम् [वेक्युत्त + अन्] हाथी से संबंध रखने वाला ।
निष्पेष्टकम् (वि०) टकटकी लगा कर वृद्धि बनावे हुए ।

स्तिमितप्रकाश (वि०) बहुत धीमी षटि से बहने वाला ।
 स्त्रीकः [स्तु + क्तिन्] शत्रु, डर ।
 स्तेम् (पु० उ०) अज्ञान भाव्य के लक्ष्मी की अपवित्र
 करना—ता तु य स्तेनयेद्वाचम् मन्० ४।२५५ ।
 स्तोत्रकामम् (वि०) कुछ काम, जिसमें शीघ्र शंभेर ही ।
 स्तोत्रागुम् (वि०) शीघ्री वायु वाला ।
 स्तोत्र 'साम' के रूप में गाये जाने वाले ऋग् यजुषी की
 साम की अपेक्षा विविधाभ्यनि—य ऋग्यजुषीयिको
 न च नै- तर्कनं स स्तोत्रो नाम श्री० सू० १।२।३९
 पर शा० शा० ।
 स्तोत्रधार साधु ।
 स्त्री [स्तु + क्तिन्] दीपक, लक्ष्मी शीटी ।
 स्त्रीकृतः श्रियो को नुसला कर छनने वाला ।
 स्त्रीकृत्य संयुक्त ।
 स्वल्प कृष्णुकी—स्वपायमुद्गाल जनः परीता—जानकी०
 ७।१ ।
 स्वल्पकामः (पु०) स्वल्पक, (माजूकी) भूकमल, स्वल्प
 पर उगने वाला कवच पुष्प ।
 स्वकीयायिन् (वि०) बिना कुछ बिछाये (बोरें) भूमि
 पर खड़े वाला ।
 स्वविरह्यति (वि०) बड़ी की मर्यादा रखने वाला ।
 स्वात्मः [स्वा + न्, पु०] करम्] 1 तथा, वेद का दूठ
 2 वेदों की एक विशेष मूला ।
 स्वात्मभूत (वि०) जो वेद के दूठ की तरह गति हीन हो
 गया हो ।
 स्वात्म [स्वा + म् + क्त] 1 जीवन कर्म 2 जीवित रहना
 3 मृत में आक्रमण की एक रीति 4 आनेप्रिय ।
 स्वानकुटिकामन्त्र पर छोड़कर शीघ्र ही में रहना शिरसो
 मूत्रहनाद्यापि न स्वानकुटिकामन्त्र—महा० ३।२००।
 १०५ ।
 स्वानेपति (वि०) [अल्पकामात्] दूसरे के स्वात्म पर
 अधिकार करने वाला ।
 स्वापनम् [स्वा + पिच् + क्त, पुकागमः] 1 बाँधना
 2 दीर्घानु होना 3 आच्छादित ।
 स्वापना [स्वापन + टप्] 1 भाटक की प्रस्तावना या
 आग्रह 2 अक्षर करना ।
 स्वाप्य (वि०) [स्वा + पिच् + क्त] 1 बंध किये जाने
 या बंध किये जाने योग्य 2 (शोक में) दूध जाने
 योग्य ।
 स्वाधिका 1 नैरन्तर्य 2 टिकाकरण ।
 स्वासीपुरीष्य पाकपात्र की लमी में बची तरीक या रसक ।
 स्वासीतिल (वि०) वह पुष्प जिसका तिल उरीष्यना-
 यस्या में है ।
 स्वासीतिल,—संविद्य (वि०) प्रतीक्षा का पाक्य करने
 वाला ।

स्वविक्रम (वि०) नैतिकता की सीमा को भंगने वाला ।
 स्वविक्रिय (वि०) सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने
 वाला ।
 स्वियर (वि०) [स्वा + किरच्] 1 दुःख, क्रमा हुआ
 2 अल्प, निरपेक्ष 3 स्वाधी 4 निरापेक्ष 5 फोहर
 उला 6 ठीक 7 मयदुतः । सम - अल्प्य (वि०)
 अयधीक, जिसका निरंतर हुआ हो रहा है, अल्प्य
 (वि०) टिकाऊ, देर तक चलने वाला,—वायु (वि०)
 जिसकी शक्त का विघात किया जाय,—विषय
 (वि०) दुःखता पूर्वक कदम बढ़ाने वाला ।
 स्वयत्कर्मः 1. एक प्रकार का संन्यम्बुह 2. यज्ञ का एक
 रूप 3. शिव का एक अवतार ।
 स्वयंभूतः वह शीघ्र जो अपनी श्वारी करने के काम न
 गया हो—वि० १।८।२२ ।
 स्वयं (वि०) [स्वयं + क्त] जो शारीकी या शरीर
 (आत्म्या या विचरन्) के साथ न देकर मोटे तौर
 पर बिना क्या हो, शक्ति । सम० इच्छ (वि०)
 जिसकी इच्छाएँ बहुत बड़ी हुई हों,—कलात्मिः
 स्वयंभिः, वेद के अन्ते हुए तर्क की मात्र,—अल्प्य
 शक्ति करता ।
 स्वयंभू [स्वयं + ध्यम्] इन्द्रियों का समन या नियन्त्रण ।
 स्वयंभूतः, भूतः, नहाने के लिये बल का बड़ा ।
 स्वयंभूतः नहाने के लिए पुण्यस्वाय, पाठ ।
 स्वयंभूतः नहाने का शक्ति, शरीरवत् ।
 स्वयंभूतः अनुष्ण की शरीर, ज्या ।
 स्वयंभूतः शरीर ।
 स्वयंभूतः देव रखने का वर्णन ।
 स्वयंभूतः (पु०) परद ।
 स्वयंभूतः (वि०) जिसके शरीर में शक्ति मला गया हो ।
 स्वयं (महा० शा०) अल्पमात् किर ज्ञान या ज्ञान,
 शरीर बन्ने लगना ।
 स्वयंभूतः (वि०) कृते पर अल्प्य लगने वाला ।
 स्वयंभूतः,—अर (वि०) कृते में क्या या पीडा
 कर ।
 स्वयंभूतः [व० श०] कृते का मूल (बैले कि शायु का ।
 स्वयंभूतः (वि०) स्वयंभूत से बोला गया ।
 स्वयंभूतः (वि०) कृते पहले कृ पृके रहे ।
 स्वयंभूतः (वि०) कृते केवल हुआ ही गया है ।
 स्वयं (वि०) [स्वयं + क्त, स्त्रीधातुः] बड़ा हुआ,
 पूरना हुआ ।
 स्वयंभूतः (वि०) अल्प्य प्रसन्न, परम आनन्दित ।
 स्वयं (महा० शा०) १. कृत् वदना, घटना, दृष्टना
 2 क्लिप्ता, क्लिप्ता 3. (रीज) खाल होना ।
 स्वयं (वि०) [स्वयं + क्त] अद्वयता असाधारण ।
 स्वयंभूतः [स्वयं + क्त] क्लिप्ता, वदना, क्लिप्ता होना ।

स्मृति (स्त्री०) [स्मृ + क्त] आत्मस्मया करना, डींग मारना, सीधी बचाना ।
 स्मरौपीय (वि०) कामोदीयक, प्रेम का बहाने वाला ।
 स्मरुका प्रवचानाय, प्रेमाकाय ।
 स्मरुतात्मन् कामसास्त्र ।
 स्मार्त्तविधि, प्रवीचः स्मृतियों में विहित प्रक्रिया ।
 स्मयदानम् दिवागती दान ।
 स्मयनृतिः गर्व बुर करना ।
 स्मरनाम (वि०) जो आदर्श करता है ।
 स्मृ (म्वा० पर०) विद्या देना ।
 स्मृतम् [स्मृ + क्त] स्मरण, याद ।
 स्मृतनाम (वि०) जिसको केवल स्मरण ही किया हो, यथाही मोक्षा त्योही ।
 स्मृतितन्त्रम् विधिग्रन्थ ।
 स्मृतिविषयः जाने करने का ध्यान दिवाने के लिए अभि-
 प्रेत डांट फटकार ।
 स्मर्यः [स्मृ + क्त] 1. बुर-बुर टपकना, पसीना 2. आँसु का रोग विषय 3. चन्दा ।
 स्मृ (म्वा० आ०) नष्ट होना ठहरना ।
 स्मृतहस्त (वि०) जिसने पकड़ डीली कर दी हो ।
 स्मरन्मथः मृत्युवात् रज्जु जिसके बीच से पानी सरता दिखाई देता है ।
 स्मृतिभङ्गः अग्नि, जाप ।
 स्मृत्यु (नपु०) 1. अरीर के रस (को पुरुषों में ९ तथा स्त्रियों में ११ होने हैं) 2. वसा परम्परा ।
 स्मर्यन्ति (वि०) अपना समझा हुआ ।
 स्मरन्तः अपने, आप में आनन्द ।
 स्मर्यन्त्य (वि०) अपने कर्म में लीन, अपने काम में व्यस्त ।
 स्मर्यन्तु अपना किया हुआ कार्य ।
 स्मर्योचर (वि०) अपने कार्य तक ही सीमित ।
 स्मर्योचः आराम ।
 स्मर्योचो अपना मत या विचार ।
 स्मर्युतिः आभारदेखा जो कर्म तथा कर्म देखा के लिये जो बिलाली है ।
 स्मर्यन्ता 1. स्वातन्त्र्य, स्वाधीनता 2. मौलिकता ।
 स्मर्यन्तिकम् स्वयंकारिक केतना ।
 स्मर्यन्थ (वि०) नीच में उत्थार ।
 स्मर्यन्तिकस (वि०) 1. सुद प्राप्त किया हुआ 2. स्वयं पड़ा हुआ ।
 स्मर्यन्तिकसः बहु जो अपना पूर्व अनु हो, परमेस्वर ।
 स्मर्यन्तिकस (वि०) स्वेच्छा के तैयार ।
 स्मर्यन्तिकसः स्वयं को अधिकार में कुछ पहुँचना ।

स्मर्यन्ति सुर्वे ।
 स्मर्यन्तु सुर्वे ।
 स्मर्यन्ति सुर्वे ।
 स्मर्यन्तुः एक प्रकार की शीत रचना ।
 स्मर्योचसतः स्मर्यन्थ ।
 स्मर्यन्तः स्वर का हिकमा ।
 स्मर्यन्तुम् वाँसुटी का स्वरवाला छेद ।
 स्मर्यन्तुम् नाचवाड़ा, स्मर्यन्तिकसः स्वरो का पथककरण ।
 स्मर्यन्तुम् स्वमिदिशास्त्र, स्वविज्ञान ।
 स्मर्यन्ति (वि०) [स्मर + क्त] 1. युक्त, भिन्न 2. उन्मरित, स्थित 3. उदात्त अनुशात के बीच का स्वर, मध्यस्वर ।
 स्मर्यन्तिः—अपने सुर्वे, स्वयं चले जाना ।
 स्मर्यन्तः 1. स्वयं जाने का मार्ग 2. स्वयंता ।
 स्मर्यन्तु (पु०) सुर्वे ।
 स्मर्यन्तुतिः कनिष्ठा, कर्मो अगुति ।
 स्मर्यन्तु (वि०) अक्षररही ।
 स्मर्यन्तुति (वि०) जिसे बहुत कम वाद रहे ।
 स्मर्यन्तुम् (नपु०) कलाप करना ।
 स्मर्यन्तुम् स्वस्ति का उच्चारण करने वाला बंदी, चारण ।
 स्मर्यन्तुः स्मर्यन्तु करने वाला, चारण ।
 स्मर्यन्तुम् निम्न पर स्वास्थ्यादि के संभव में पूछना, कुशल खेम की पूछना ।
 स्मर्यः (काव्य के अर्थ वा पठन से) रक्षानुभव ।
 स्मर्युपिष्ठा पिष्ठाचर ।
 स्मर्युपिष्ठा मीठा नीच ।
 स्मर्यन्तुम् निष्ठात्ता ।
 स्मर्यन्तु (पु०) 1. यज्ञ का व्यवधान 2. मन्दिर में स्थापित देवमूर्ति ।
 स्मर्यन्तु (शरीर और आत्मा की) स्वयं स्थिति ।
 स्मर्यन्तु (वि०) जो अपने ही अधिकारी हो, अपने ही अधिकार में हो ।
 स्मर्यन्ति (वि०) 1. जिसे पत्नी निकल गया हो, पत्नी से तर 2. पिशाच हुआ पत्नीका हुआ ।
 स्मर्यन्ति (वि०) काश्चित्, शिव, मुमुक्षुति ।
 स्मर्यन्तुम् जिसने अक्षर दिया था, पत्नी लाने वाला बन्ध ।
 स्मर्यन्तु बंधाचित् वाशीकान् ।
 स्मर्यन्तुम् इच्छानुसार अग्रम करने वाला ।
 स्मर्यन्तुम् बन्धनात् ।

६

हंसः [हन् + अच्, पयो० कर्णायाम्] 1. घोड़ा 2 उत्तम, श्रेष्ठ (यस्य सनातान्यत्वं प्रयुक्तं हो) 3 चौबी 4 बड़ी बड़ी शीशो में रहने वाला एक जलपक्षी 5 आर्या, श्रीवर्णमा। सम०—उदकम् एक प्रकार की पुष्टिदायक मदिरा, अक्षयम् सोठ, डारम् मानस शील के पास की एक चाटी हमझार भूगुणितयसोवन्त्य यत्कीञ्ज्वरप्रभम्—मेघ०—सर्वेशः वेदान्तदशिक द्वारा रचित एक मोतिकाव्य।

हृक्काहृक्क. वृनीता, ललाकार।

हृष्टः [हृ + ट, टस्य नेलम्] मद्यी, बाजार, मेला। सम० अर्थक्य मद्यी का अधीनक, बाहिनो बाजार में बने हुई पानी निकलने की नाली, वेदमाली बाजार की गली।

हृत्पथी 1 मोथा 2 जंबाल।

हृत्काविन् (पु०) जा हिमा का प्रचार करता है।

हृत् (अदा० पर०) दूर करना, नष्ट करना।

हृत् (वि०) [हन् + क्त] 1 पीड़ित, पावल 2 बलात्कार किया हुआ, अष्ट किया हुआ 3 मदाप 4 शापग्रस्त, विपद्ग्रस्त। सम०—उत्तर (वि०) निलस, जो कुछ बचाव न दे सके,—किन्चि (वि०) जिसके पाप नष्ट हो गये हो ऋष (वि०) निर्लेख, वेगमं चिन्मय (वि०) जिसमें शिष्टता न हो, बेव्या।

हृत्मेघः 1 जवड़े का चलना 2 एक प्रकार का पहल हनुस्वन् जबड़े से निकलनेवाला स्वर।

हृत्पथयन्ती शंखमुक्ता पूर्वा जो हनुमान् जी का मांगलिक दिवस है।

हृत् [हन् + अच्] 1 घनुराशि 2 घोड़ा। सम०—अङ्ग घनुराशि,—आश्रम, आला भूदमाल, अस्तबल अस्तमाला,—अष्टा अस्तदल, पीथ मुक्कः बदन 1 विष्णु का एक रूप 2 एक राजस का काम।

हृत् (पु०) [हन् + इन्] कामना, इच्छा, बमिलाया।

हृत् [ह् + अच्] 1 निव 2 अग्नि 3 गथा 4 भाजक 5 पकड़ना, मेला। सम०—अग्नि कैलाश पर्वत, - बाल्मि वनुरे का फल,—सख कुबेर।

हृत् [ह् + इन्] 1 विष्णु 2 इन्द्र 3 सूर्य 4 अग्नि 4 वायु 6 सिंह 7 घोड़ा 8 इन्द्र 9 कोयल 10 हाथ 11 मोर 12 मिह राशि। सम०—चाप इन्द्रधनुष,—बीजम् हरनाल, मेघ (पु०) विष्णु।

हृत्पलाशम् वनप्रया।

हृत्पति दिवा का स्वामी।

हृत्कविता (वि०) पीलापन लिये हुए भूरा।

हृत्पेक्ष मरकतमणि।

हृत्प्राङ्गः हरिताल पक्षी, एक प्रकार का कबूतर।

हृत् 1 मूत्रं 2 कलुषा।

हृत्पलम्, पृष्ठम्,—कलबी चौबारा, मकान की ऊपर की मजिल।

हृत् [ह् + पञ्] 1 जननेन्द्रिय की उत्तेजना 2 प्रबल दृष्टा 3 प्रसन्नता। सम०—अन् वीर्यं, संयुत एक प्रकार का रनिबन्ध,—स्वयं मानन्द प्वि।

हृत् [ह् + क्त] 1. हृत् 2. कुम्पता 3. बाधा 4. कलह सम०—कलुष (स्त्री०) हृत् का यह भाग जिस निचले भाग में फानी कमी होती है,—बन्ध हृत्स, हृत् की लम्बी लकड़ी जिसमें बूझा लगाते हैं,—भार्गु जुलाई से बनी लकीर, बृह, मुक्कम् फाल।

हृत्पथी कामधेनु का विग्रहण।

हृत्पती 1 दीवट 2 एक प्रकार की परी।

हृत् [ह् + त्] 1 हाथ 2. हाथों का मूँड 3 हस्त नक्षत्र 4 भूरा। सम०—अष्टः (वि०) जो बच निकला हा, -रोषम् (अ०) हाथों में, बाल (वि०) बाईं ओर स्थित, शिष्यः हाथों की स्थिति—स्वस्तिक हाथों को स्वस्तिक की शकल में रचना।

हृत्प्राचीय पीपलान, हृत्प्राचीयवायी।

हृत्प्रासा हाथी की मूँड।

हृत्प्रास्य —वध, बधकः पण्डित।

हृत्कार विरमयादिश्लोक 'हृ' स्थिति।

हृत् (वि०) [हा + क्त] परिपुष्प, छोड़ा हुआ।

हृत् [हा + स्फुट] 1 छोड़ना, त्यागना 2 हानि, विफलता 3 अभाव, कमी 4 पराक्रमल, बल 5 विश्रान्ति, विराम, अवसान।

हृत्कहादिका मिट्टी का वर्तन।

हृत् (वि०) [ह् + णिच् + क्त] 1 मोथा गया, चुराया हुआ 2 मात दिया हुआ, जागे बड़ा हुआ।

हृत् एक हानस्पतिक विष।

हृत् (वि०) [ह् + प्यत्] 1. हटाये जाने योग्य 2 मनोहर, आकर्षक।

हृत्पिक्कः मेल का साथी, सह फीदक।

हृत्पिक्क (वि०) [ह् + अनीय] मार डाले जाने योग्य, हिंसा से पीड़ित किये जाने योग्य।

हृत्पिक्कम् प्रह्वयं, आकलनीय।

हृत्पिक्क (वि०) बहुधा हानिकारक।

हृत् [ह् + त्] दूरतों के उत्पीडन में मानन्द मानने वाला व्यक्ति।

हृत्पिक्का, हृत्पिक्कम् } हृत्पिक्का की रोग।

हृत्पिक्का 1 बसा चाहना 2 अधिनन्दन, बघाई।

हिस्रमूल (वि०) मलाई में लगा हुआ ।

हिस्राय भीषीपूर्ण परामर्श, सत्यपरामर्श, मलाई की बात ।

हिन्दुधर्म हिन्दू (भारत) देश में रहने वालों का धर्म ।

हिन्दु [हिं+मन्] 1 पाला, कुहरा 2 उर 3 कमल

4. ताजा मक्खन 5. मोती 6 रात 7 चदन । सम०

—अश्वः कपूर, श्वसुः जाड़े का बीसम, शम्भुः

ओला, श्वोतित् चन्द्रमा,—श्विः घुष, कोहरा,

—शर्करा एक प्रकार की खाई ।

हिरण्यकर्तुः—कारः स्वर्णकार, सुनार ।

हिरण्यवर्णम् (वि०) सुनहरी आभा से युक्त ।

हीन (वि०) [हा+क्त, तस्य न, ईत्वं च] 1 जो मुकदमा

हार गया है 2. मूषाच्छट 3 परित्यक्त, मुझाया हुआ

4 शीघ्र । सम० पक्ष [वि०] अरिस्त पु० दलील

की दृष्टि से कमजोर पक्ष,—साक्ष्यः गरी से उतारा

हुआ अधीनस्थ राजा, क्षत्रियः अधम राजा के साथ

की गई सन्धि ।

हुतशेषम् यज्ञशेष, हुनन का बचा हुआ अन्न ।

हुष्कः (पु०) (स्त्री०) [हुष्+ङ्] पित्रित ओदन ।

हुष् (नपु०) [हुत्, पृथो० तस्य ष] (इस शब्द के पहले

पौष रूप नहीं होते, शेष बचनों में यह विकल्प से

'हुदय' के स्थान में आवेश होता है) 1 मन, दिल

2. आत्मा 3. किरा भी वस्तु का सत् 4 छाती ।

सम०—आवयः हुदय का रोम,—छोतल (वि०) दिल

को तोड़ने वाला,—शरः साहस, हिम्मत, स्वप्नः

हुदय को लकवा मार जाना, श्वोष्टः हुदय का

विषीर्ण होना ।

हुषकम् [हु+कम्, पुकागम्.] 1 मन, दिल, आत्मा

2 छाती 3. प्रेम, अनुराग 3. दिव्य ज्ञान 4 वस्तु का

सत् 5 इच्छा, प्रयोजन । सम० जबहुष्कः आह भगना,

—उद्दोष्यन्म् दिल का सिद्धिदान, शोषः दिल की

बर्धन, कः पुष, अ जो दिल की बात जानता है,

—शौषिकम् दिल की कमजोरी, —शौषिकम् विषम्भता,

अवसाद ।

हुष (वि०) [हुष्+यत्] स्वादिष्ट, शक्तिर ।

हुषित (वि०) [हुष्+क्त, वा० षट्] कुठित, टूटा ।

हुषिः (पु०) (स्त्री०) [हुष्+क्तिन्, वि०] नया अक्षर ।

हुषुः [हिं+हुत्] 1. प्रेरणाार्थक क्रिया का अतिकर्ता—पा०

१।४।५५ 2. प्राथमिक कारण (बृ०) 3 बाह्य

संसार और उसके विषय (पाशुपत०) 4 मूल्य, कीमत

—धान्यसारीकम् हेतु—राज० ५।७। 5 कारण ।

सम० अक्षरारण्यम् तर्क करना (ताटक), उपमा

तर्क युक्त उपमा अलंकार, तर्क सगत तुलना,—दृष्टिः

कारण की परीक्षा,—कृपकम् एक प्रकार का

रूपकालंकार,—विशेषोक्तिः एक अलंकार जिसमें

दो पदार्थों का अंतर तर्क देकर बतलाया जाता है

काव्य० २।३२८-९ ।

हेतुर्धर्मिवरः वेद के मूल पाठ का लेखात् जिसके साथ

प्रयोजन भी दिया गया हो मी० सू० ४।२।४२ पर

शा० भा० ।

हेमन् (नपु०) [हिं+मनिन्] 1 स्वर्ण, सोना 2 जल

3. बर्फ 4 धतूरा ० बेसर का फल 6. बुधग्रह 7 जाड़े

की श्लु। सम०—कलशः सोने की कलशों, स्वर्ण

निमित्त भूयकलश,—वर्षं (वि०) जिसके अंदर सोना

हो,—धन्य मोसा,—धनी हल्दी, भास्त्रिकम् सोना-

मासी (एक उपधातु),—व्याकरणम् हेमचन्द्र प्रणीत

व्याकरण का एक ग्रन्थ ।

हेमिष्मि } [हिमिष्मिः वा अन्, इच्, वा] त्रिजिवा का पुत्र,

हेमिष्मि } यटोत्कच ।

हेतुकर्मन् यज्ञ में होता का कार्य ।

हेतुप्रवरः होता का वरक करना ।

हेतुस (वि०) इन्म् होता का आसन ।

होलाकाधिकरणव्यायः बीमाया का एक नियम । इसके

अनुसार यदि स्मृति या कल्पसूत्र की कोई उक्ति श्रुति

द्वारा समर्थन नहीं प्राप्त कर सकी, तो उसके समर्थन में

वेद का कोई अन्य सामान्य मंत्र, अनुमान के आधार

पर बुद्धिवा चाहिए—मी० सू० २।३।२५ २८ ।

हृष्य (वि०) [हृष्+ङ्] जो महत्त्वपूर्ण न हो, अना-

वश्यक, नगण्य ।

हृत्तः [हृत्+ङ्] 1 ध्वनि, आवाज 2 क्षय, शीतला,

अभाव, कमी 3 छोटी लम्बा ।

ह्रीका [ह्री+कन्] 1 लज्जा 2 भय,—क (पु०)

1. पिता 2 नवला ।

ह्रीपद्यम् लज्जा का कारण ।

वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

काल न० 030. C - भाष्ट

लेखक भाष्ट, श्रीव राम वामन.

शीर्षक संस्कृत हिन्दी श्लोक

खण्ड 8516 क्रम संख्या